वचन देह में प्रकट होता है

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कलीसिया

कॉपीराइट © 2021 The Church of Almighty God
सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तक को या इसके किसी भी हिस्से को कॉपीराइट मालिक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, किसी भी तरीके से पुनर्प्रस्तुत या इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए, इस पते पर ईमेल करें:
contact.hi@kingdomsalvation.org

इस पुस्तक की अंतर्वस्तु का अनुवाद पूरी तरह से पेशेवर अनुवादकों द्वारा किया गया है। तथापि, भाषाई विभिन्नताओं या अन्य कारकों के कारण कुछ त्रुटियाँ अपरिहार्य हैं। यदि आपको ऐसी किसी त्रुटि का पता चले, तो कृपया मूल चीनी पाठ देखें। कृपया हमसे संपर्क करने में भी संकोच न करें, ताकि पुस्तक के पुन: प्रकाशन के समय इसमें सुधार किया जा सके।

प्रस्तावना

यद्यपि बहुत सारे लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन कुछ ही लोग समझते हैं कि परमेश्वर में विश्वास करने का क्या अर्थ है, और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यद्यपि लोग "परमेश्वर" शब्द और "परमेश्वर का कार्य" जैसे वाक्यांशों से परिचित हैं, लेकिन वे परमेश्वर को नहीं जानते और उससे भी कम वे उसके कार्य को जानते हैं। तो कोई आश्चर्य नहीं कि वे सभी, जो परमेश्वर को नहीं जानते, उसमें अपने विश्वास को लेकर भ्रमित रहते हैं। लोग परमेश्वर में विश्वास करनेको गंभीरता से नहीं लेते और यह सर्वथा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर में विश्वास करना उनके लिए बहुत अनजाना, बहुत अजीब है। इस प्रकार वे परमेश्वर की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते। दूसरे शब्दों में, यदि लोग परमेश्वर और उसके कार्य को नहीं जानते, तो वे उसके इस्तेमाल के योग्य नहीं हैं, और उसकी इच्छा पूरी करने के योग्य तो बिलकुल भी नहीं। "परमेश्वर में विश्वास" का अर्थ यह मानना है कि परमेश्वर है; यह परमेश्वर में विश्वास की सरलतम अवधारणा है। इससे भी बढ़कर, यह मानना कि परमेश्वर है, परमेश्वर में सचमुच विश्वास करने जैसा नहीं है; बल्कि यह मजबूत धार्मिक संकेतार्थों के साथ एक प्रकार का सरल विश्वास है। परमेश्वर में सच्चे विश्वास का अर्थ यह है: इस विश्वास के आधार पर कि सभी वस्तुओं पर परमेश्वर की संप्रभुता है, व्यक्ति परमेश्वर के वचनों और कार्यों का अनुभव करता है, अपने भ्रष्ट स्वभाव को शुद्ध करता है, परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है और परमेश्वर को जान पाता है। केवल इस प्रकार की यात्रा को ही "परमेश्वर में विश्वास" कहा जा सकता है। फिर भी लोग परमेश्वर में विश्वास को अकसर बहुत सरल और हल्के रूप में लेते हैं। परमेश्वर में इस तरह विश्वास करने वाले लोग, परमेश्वर में विश्वास करने का अर्थ गँवा चुके हैं और भले ही वे बिलकुल अंत तक विश्वास करते रहें, वे कभी परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त नहीं करेंगे, क्योंकि वे गलत मार्ग पर चलते हैं। आज भी ऐसे लोग हैं, जो परमेश्वर में शब्दशः और खोखले सिद्धांत के अनुसार विश्वास करते हैं। वे नहीं जानते कि परमेश्वर में उनके विश्वास में कोई सार नहीं है और वे परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त नहीं कर सकते। फिर भी वे परमेश्वर से सुरक्षा के आशीषों और पर्याप्त अनुग्रह के लिए प्रार्थना करते हैं। आओ रुकें, अपने हृदय शांत करें और खुद से पूछें: क्या परमेश्वर में विश्वास करना वास्तव में पृथ्वी पर सबसे आसान बात हो सकती है? क्या परमेश्वर में विश्वास करने का अर्थ

परमेश्वर से अधिक अनुग्रह पाने से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता है? क्या परमेश्वर को जाने बिना उसमें विश्वास करने वाले या उसमें विश्वास करने के बावजूद उसका विरोध करने वाले लोग सचमुच उसकी इच्छा पूरी करने में सक्षम हैं?

परमेश्वर और मनुष्य की बराबरी पर बात नहीं की जा सकती। परमेश्वर का सार और कार्य मनुष्य के लिए सर्वाधिक अथाह और समझ से परे है। यदि परमेश्वर मनुष्य के संसार में व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य न करे और अपने वचन न कहे, तो मनुष्य कभी भी परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझ पाएगा। और इसलिए वे लोग भी, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, उसका अनुमोदन प्राप्त करने में सक्षम नहीं होंगे। यदि परमेश्वर कार्य करने के लिए तैयार न हो, तो मनुष्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न करे, वह सब व्यर्थ हो जाएगा, क्योंकि परमेश्वर के विचार मनुष्य के विचारों से सदैव ऊँचे रहेंगे और परमेश्वर की बुद्धि मनुष्य की समझ से परे है। और इसीलिए मैं कहता हूँ कि जो लोग परमेश्वर और उसके कार्य को "पूरी तरह से समझने" का दावा करते करते हैं, वे मूर्खों की जमात हैं; वे सभी अभिमानी और अज्ञानी हैं। मनुष्य को परमेश्वर के कार्य को परिभाषित नहीं करना चाहिए; बल्कि, मनुष्य परमेश्वर के कार्य को परिभाषित नहीं कर सकता। परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य एक चींटी जितना महत्वहीन है; तो फिर वह परमेश्वर के कार्य की थाह कैसे पा सकता है? जो लोग गंभीरतापूर्वक यह कहना पसंद करते हैं, "परमेश्वर इस तरह से या उस तरह से कार्य नहीं करता," या "परमेश्वर ऐसा है या वैसा है"—क्या वे अहंकारपूर्वक नहीं बोलते? हम सबको जानना चाहिए कि मनुष्य, जो कि देहधारी है, शैतान द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका है। मानवजाति की प्रकृति ही है परमेश्वर का विरोध करना। मानवजाति परमेश्वर के समान नहीं हो सकती, परमेश्वर के कार्य के लिए परामर्श देने की उम्मीद तो वह बिलकुल भी नहीं कर सकती। जहाँ तक इस बात का संबंध है कि परमेश्वर मनुष्य का मार्गदर्शन कैसे करता है, तो यह स्वयं परमेश्वर का कार्य है। यह उचित है कि इस या उस विचार की डींग हाँकने के बजाय मनुष्य को समर्पण करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य धूल मात्र है। चूँकि हमारा इरादा परमेश्वर की खोज करने का है, इसलिए हमें परमेश्वर के विचार के लिए उसके कार्य पर अपनी अवधारणाएँ नहीं थोपनी चाहिए, और जानबूझकर परमेश्वर के कार्य का विरोध करने के लिए अपने भ्रष्ट स्वभाव का भरसक उपयोग तो बिलकुल भी नहीं करना चाहिए। क्या ऐसा करना हमें मसीह-विरोधी नहीं बनाएगा? ऐसे लोग परमेश्वर में विश्वास कैसे कर सकते हैं? चूँकि हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर है, और चूँकि हम उसे संतुष्ट करना और उसे देखना चाहते हैं, इसलिए हमें सत्य के मार्ग की

खोज करनी चाहिए, और परमेश्वर के अनुकूल रहने का मार्ग तलाशना चाहिए। हमें परमेश्वर के कड़े विरोध में खड़े नहीं होना चाहिए। ऐसे कार्यों से क्या भला हो सकता है?

आज परमेश्वर ने नया कार्य किया है। हो सकता है, तुम इन वचनों को स्वीकार न कर पाओ और वे तुम्हें अजीब लगें, पर मैं तुम्हें सलाह दूँगा कि तुम अपनी स्वाभाविकता प्रकट मत करो, क्योंकि केवल वे ही सत्य को पा सकते हैं, जो परमेश्वर के समक्ष धार्मिकता के लिए सच्ची भूख-प्यास रखते हैं, और केवल वे ही परमेश्वर द्वारा प्रबुद्ध किए जा सकते हैं और उसका मार्गदर्शन पा सकते हैं जो वास्तव में धर्मनिष्ठ हैं। परिणाम संयम और शांति के साथ सत्य की खोज करने से मिलते हैं, झगड़े और विवाद से नहीं। जब मैं यह कहता हूँ कि "आज परमेश्वर ने नया कार्य किया है," तो मैं परमेश्वर के देह में लौटने की बात कर रहा हूँ। शायद ये वचन तुम्हें व्याकुल न करते हों; शायद तुम इनसे घृणा करते हो; या शायद ये तुम्हारे लिए बड़े रुचिकर हों। चाहे जो भी मामला हो, मुझे आशा है कि वे सब, जो परमेश्वर के प्रकट होने के लिए वास्तव में लालायित हैं, इस तथ्य का सामना कर सकते हैं और इसके बारे में झटपट निष्कर्षों पर पहुँचने के बजाय इसकी सावधानीपूर्वक जाँच कर सकते हैं; जैसा कि बुद्धिमान व्यक्ति को करना चाहिए।

ऐसी चीज़ की जाँच-पड़ताल करना कठिन नहीं है, परंतु इसके लिए हममें से प्रत्येक को इस सत्य को जानने की ज़रूरत है: जो देहधारी परमेश्वर है, उसके पास परमेश्वर का सार होगा और जो देहधारी परमेश्वर है, उसके पास परमेश्वर की अभिव्यक्ति होगी। चूँकि परमेश्वर ने देह धारण किया है, इसलिए वह उस कार्य को सामने लाएगा, जो वह करना चाहता है, और चूँकि परमेश्वर ने देह धारण किया है, इसलिए वह उसे अभिव्यक्त करेगा जो वह है और वह मनुष्य के लिए सत्य को लाने, उसे जीवन प्रदान करने और उसे मार्ग दिखाने में सक्षम होगा। जिस देह में परमेश्वर का सार नहीं है, वह निश्चित रूप से देहधारी परमेश्वर नहीं है; इसमें कोई संदेह नहीं। अगर मनुष्य यह पता करना चाहता है कि क्या यह देहधारी परमेश्वर है, तो इसकी पुष्टि उसे उसके द्वारा अभिव्यक्त स्वभाव और उसके द्वारा बोले गए वचनों से करनी चाहिए। इसे ऐसे कहें, व्यक्ति को इस बात का निश्चय कि यह देहधारी परमेश्वर है या नहीं और कि यह सही मार्ग है या नहीं, उसके सार से करना चाहिए। और इसलिए, यह निर्धारित करने की कुंजी कि यह देहधारी परमेश्वर की देह है या नहीं, उसके बाहरी स्वरूप के बजाय उसके सार (उसका कार्य, उसके कथन, उसका स्वभाव और कई अन्य पहलू) में निहित है। यदि मनुष्य केवल उसके बाहरी स्वरूप की ही जाँच करता है, और परिणामस्वरूप उसके सार की अनदेखी करता है, तो इससे उसके अनाड़ी और अज्ञानी होने का पता

चलता है। बाहरी स्वरूप सार का निर्धारण नहीं कर सकता; इतना ही नहीं, परमेश्वर का कार्य कभी भी मनुष्य की अवधारणाओं के अनुरूप नहीं हो सकता। क्या यीशु का बाहरी रूपरंग मनुष्य की अवधारणाओं के विपरीत नहीं था? क्या उसका चेहरा और पोशाक उसकी वास्तविक पहचान के बारे में कोई सुराग देने में असमर्थ नहीं थे? क्या आरंभिक फरीसियों ने यीशु का ठीक इसीलिए विरोध नहीं किया था क्योंकि उन्होंने केवल उसके बाहरी स्वरूप को ही देखा, और उसके द्वारा बोले गए वचनों को हृदयंगम नहीं किया? मुझे उम्मीद है कि परमेश्वर के प्रकटन के आकांक्षी सभी भाई-बहन इतिहास की त्रासदी को नहीं दोहराएँगे। तुम्हें आधुनिक काल के फरीसी नहीं बनना चाहिए और परमेश्वर को फिर से सलीब पर नहीं चढ़ाना चाहिए। तुम्हें सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि परमेश्वर की वापसी का स्वागत कैसे किया जाए और तुम्हारे मस्तिष्क में यह स्पष्ट होना चाहिए कि ऐसा व्यक्ति कैसे बना जाए, जो सत्य के प्रति समर्पित होता है। यह हर उस व्यक्ति की जिम्मेदारी है, जो यीशु के बादल पर सवार होकर लौटने का इंतजार कर रहा है। हमें अपनी आध्यात्मिक आँखों को मलकर उन्हें साफ़ करना चाहिए और अतिरंजित कल्पना के शब्दों के दलदल में नहीं फँसना चाहिए। हमें परमेश्वर के व्यावहारिक कार्य के बारे में सोचना चाहिए और परमेश्वर के व्यावहारिक पक्ष पर दृष्टि डालनी चाहिए। खुद को दिवास्वप्नों में बहने या खोने मत दो, सदैव उस दिन के लिए लालायित रहो, जब प्रभु यीशु बादल पर सवार होकर अचानक तुम लोगों के बीच उतरेगा और तुम्हें, जिन्होंने उसे कभी जाना या देखा नहीं और जो नहीं जानते कि उसकी इच्छा कैसे पूरी करें, ले जाएगा। अधिक व्यावहारिक मामलों पर विचार करना बेहतर है!

हो सकता है, तुमने इस पुस्तक को अनुसंधान के प्रयोजन से खोला हो या फिर स्वीकार करने के अभिप्राय से; तुम्हारा दृष्टिकोण जो भी हो, मुझे आशा है कि तुम इसे अंत तक पढ़ोगे, और इसे आसानी से अलग उठाकर नहीं रख दोगे। शायद इन वचनों को पढ़ने के बाद तुम्हारा दृष्टिकोण बदल जाए, किंतु यह तुम्हारी अभिप्रेरणा और समझ के स्तर पर निर्भर करता है। हालाँकि एक बात है, जो तुम्हें अवश्य जाननी चाहिए : परमेश्वर के वचन को मनुष्य का वचन नहीं समझा जा सकता, और मनुष्य के वचन को परमेश्वर का वचन तो बिलकुल भी नहीं समझा जा सकता। परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया गया व्यक्ति देहधारी परमेश्वर नहीं है, और देहधारी परमेश्वर, परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया गया मनुष्य नहीं है। इसमें एक अनिवार्य अंतर है। शायद इन वचनों को पढ़ने के बाद तुम इन्हें परमेश्वर के वचन न मानकर केवल मनुष्य द्वारा प्राप्त प्रबुद्धता मानो। उस हालत में, तुम अज्ञानता के कारण अंधे हो। परमेश्वर के वचन मनुष्य द्वारा

प्राप्त प्रबुद्धता के समान कैसे हो सकते हैं? देहधारी परमेश्वर के वचन एक नया युग आरंभ करते हैं, समस्त मानवजाति का मार्गदर्शन करते हैं, रहस्य प्रकट करते हैं, और मनुष्य को वह दिशा दिखाते हैं, जो उसे नए युग में ग्रहण करनी है। मनुष्य द्वारा प्राप्त की गई प्रबुद्धता अभ्यास या ज्ञान के लिए सरल निर्देश मात्र हैं। वह एक नए युग में समस्त मानवजाति को मार्गदर्शन नहीं दे सकती या स्वयं परमेश्वर के रहस्य प्रकट नहीं कर सकती। अंतत: परमेश्वर, परमेश्वर है और मनुष्य, मनुष्य। परमेश्वर में परमेश्वर का सार है और मनुष्य में मनुष्य का सार। यदि मनुष्य परमेश्वर द्वारा कहे गए वचनों को पवित्र आत्मा द्वारा प्रदत्त साधारण प्रबुद्धता मानता है, और प्रेरितों और नबियों के वचनों को परमेश्वर के व्यक्तिगत रूप से कहे गए वचन मानता है, तो यह मनुष्य की गलती होगी। चाहे जो हो, तुम्हें कभी सही और गलत को मिलाना नहीं चाहिए, और ऊँचे को नीचा नहीं समझना चाहिए, या गहरे को उथला समझने की गलती नहीं करनी चाहिए; चाहे जो हो, तुम्हें कभी भी जानबूझकर उसका खंडन नहीं करना चाहिए, जिसे तुम जानते हो कि सत्य है। हर उस व्यक्ति को, जो यह विश्वास करता है कि परमेश्वर है, समस्याओं की जाँच सही दृष्टिकोण से करनी चाहिए, और परमेश्वर द्वारा सृजित प्राणी के परिप्रेक्ष्य से परमेश्वर के नए कार्य और वचनों को स्वीकार करना चाहिए; अन्यथा परमेश्वर द्वारा उन्हें मिटा दिया जाएगा।

यहोवा के कार्य के बाद, यीशु मनुष्यों के मध्य अपना कार्य करने के लिए देहधारी हो गया। उसका कार्य अलग से किया गया कार्य नहीं था, बल्कि यहोवा के कार्य के आधार पर किया गया था। यह कार्य एक नए युग के लिए था, जिसे परमेश्वर ने व्यवस्था का युग समाप्त करने के बाद किया था। इसी प्रकार, यीशु का कार्य समाप्त हो जाने के बाद परमेश्वर ने अगले युग के लिए अपना कार्य जारी रखा, क्योंकि परमेश्वर का संपूर्ण प्रबंधन सदैव आगे बढ़ रहा है। जब पुराना युग बीत जाता है, तो उसके स्थान पर नया युग आ जाता है, और एक बार जब पुराना कार्य पूरा हो जाता है, तो परमेश्वर के प्रबंधन को जारी रखने के लिए नया कार्य शुरू हो जाता है। यह देहधारण परमेश्वर का दूसरा देहधारण है, जो यीशु का कार्य पूरा होने के बाद हुआ है। निस्संदेह, यह देहधारण स्वतंत्र रूप से घटित नहीं होता; व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग के बाद यह कार्य का तीसरा चरण है। हर बार जब परमेश्वर कार्य का नया चरण आरंभ करता है, तो हमेशा एक नई शुरुआत होती है और वह हमेशा एक नया युग लाता है। इसलिए परमेश्वर के स्वभाव, उसके कार्य करने के तरीके, उसके कार्य के स्थल, और उसके नाम में भी परिवर्तन होते हैं। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि मनुष्य के लिए नए युग में परमेश्वर के कार्य को स्वीकार करना कठिन होता है। परंतु इस बात की

परवाह किए बिना कि मनुष्य द्वारा उसका कितना विरोध किया जाता है, परमेश्वर सदैव अपना कार्य करता रहता है, और सदैव समस्त मानवजाति का प्रगति के पथ पर मार्गदर्शन करता रहता है। जब यीशु मनुष्य के संसार में आया, तो उसने अनुग्रह के युग में प्रवेश कराया और व्यवस्था का युग समाप्त किया। अंत के दिनों के दौरान, परमेश्वर एक बार फिर देहधारी बन गया, और इस देहधारण के साथ उसने अनुग्रह का युग समाप्त किया और राज्य के युग में प्रवेश कराया। उन सबको, जो परमेश्वर के दूसरे देहधारण को स्वीकार करने में सक्षम हैं, राज्य के युग में ले जाया जाएगा, और इससे भी बढ़कर वे व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का मार्गदर्शन स्वीकार करने में सक्षम होंगे। यद्यपि यीशु ने मनुष्यों के बीच अधिक कार्य किया, फिर भी उसने केवल समस्त मानवजाति की मुक्ति का कार्य पूरा किया और वह मनुष्य की पाप-बलि बना; उसने मनुष्य को उसके समस्त भ्रष्ट स्वभाव से छुटकारा नहीं दिलाया। मनुष्य को शैतान के प्रभाव से पूरी तरह से बचाने के लिए यीशु को न केवल पाप-बलि बनने और मनुष्य के पाप वहन करने की आवश्यकता थी, बल्कि मनुष्य को उसके शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए स्वभाव से मुक्त करने के लिए परमेश्वर को और भी बड़ा कार्य करने की आवश्यकता थी। और इसलिए, अब जबकि मनुष्य को उसके पापों के लिए क्षमा कर दिया गया है, परमेश्वर मनुष्य को नए युग में ले जाने के लिए वापस देह में लौट आया है, और उसने ताड़ना एवं न्याय का कार्य आरंभ कर दिया है। यह कार्य मनुष्य को एक उच्चतर क्षेत्र में ले गया है। वे सब, जो परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन समर्पण करेंगे, उच्चतर सत्य का आनंद लेंगे और अधिक बड़े आशीष प्राप्त करेंगे। वे वास्तव में ज्योति में निवास करेंगे और सत्य, मार्ग और जीवन प्राप्त करेंगे।

यदि लोग अनुग्रह के युग में अटके रहेंगे, तो वे कभी भी अपने भ्रष्ट स्वभाव से छुटकारा नहीं पाएँगे, परमेश्वर के अंतर्निहित स्वभाव को जानने की बात तो दूर! यदि लोग सदैव अनुग्रह की प्रचुरता में रहते हैं, परंतु उनके पास जीवन का वह मार्ग नहीं है, जो उन्हें परमेश्वर को जानने और उसे संतुष्ट करने का अवसर देता है, तो वे उसमें अपने विश्वास से उसे वास्तव में कभी भी प्राप्त नहीं करेंगे। इस प्रकार का विश्वास वास्तव में दयनीय है। जब तुम इस पुस्तक को पूरा पढ़ लोगे, जब तुम राज्य के युग में देहधारी परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण का अनुभव कर लोगे, तब तुम महसूस करोगे कि अनेक वर्षों की तुम्हारी आशाएँ अंततः साकार हो गई हैं। तुम महसूस करोगे कि केवल अब तुमने परमेश्वर को वास्तव में आमने-सामने देखा है; केवल अब तुमने परमेश्वर के चेहरे को निहारा है, उसके व्यक्तिगत कथन सुने हैं, उसके कार्य की बुद्धिमत्ता को सराहा है, और वास्तव में महसूस किया है कितना वास्तविक और सर्वशक्तिमान है वह। तुम

महसूस करोगे कि तुमने ऐसी बहुत-सी चीजें पाई हैं, जिन्हें अतीत में लोगों ने न कभी देखा था, न ही प्राप्त किया था। इस समय, तुम स्पष्ट रूप से जान लोगे कि परमेश्वर पर विश्वास करना क्या होता है, और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होना क्या होता है। निस्संदेह, यदि तुम अतीत के विचारों से चिपके रहते हो, और परमेश्वर के दूसरे देहधारण के तथ्य को अस्वीकार या उससे इनकार करते हो, तो तुम खाली हाथ रहोगे और कुछ नहीं पाओगे, और अंततः परमेश्वर का विरोध करने के दोषी ठहराए जाओगे। वे जो सत्य का पालन करते हैं और परमेश्वर के कार्य के प्रति समर्पण करते हैं, उनका दूसरे देहधारी परमेश्वर—सर्वशक्तिमान—के नाम पर दावा किया जाएगा। वे परमेश्वर का व्यक्तिगत मार्गदर्शन स्वीकार करने में सक्षम होंगे, वे अधिक और उच्चतर सत्य तथा वास्तविक जीवन प्राप्त करेंगे। वे उस दृश्य को निहारेंगे, जिसे अतीत के लोगों द्वारा पहले कभी नहीं देखा गया था : "तब मैं ने उसे, जो मुझ से बोल रहा था, देखने के लिये अपना मुँह फेरा; और पीछे घूमकर मैं ने सोने की सात दीवटें देखीं, और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सदृश एक पुरुष को देखा, जो पाँवों तक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए था। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के समान उज्ज्वल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्ठी में तपाया गया हो, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था। वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्ज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है" (प्रकाशितवाक्य 1:12-16)। यह दृश्य परमेश्वर के संपूर्ण स्वभाव की अभिव्यक्ति है, और उसके संपूर्ण स्वभाव की यह अभिव्यक्ति वर्तमान देहधारण में परमेश्वर के कार्य की अभिव्यक्ति भी है। ताड़ना और न्याय की बौछारों में मनुष्य का पुत्र कथनों के माध्यम से अपने अंतर्निहित स्वभाव को अभिव्यक्त करता है, और उन सबको जो उसकी ताड़ना और न्याय स्वीकार करते हैं, मनुष्य के पुत्र के वास्तविक चेहरे को निहारने की अनुमति देता है, जो यूहन्ना द्वारा देखे गए मनुष्य के पुत्र के चेहरे का ईमानदार चित्रण है। (निस्संदेह, यह सब उनके लिए अदृश्य होगा, जो राज्य के युग में परमेश्वर के कार्यों को स्वीकार नहीं करते।) परमेश्वर का वास्तविक चेहरा मनुष्य की भाषा के इस्तेमाल द्वारा पूर्णतः व्यक्त नहीं किया जा सकता, और इसलिए परमेश्वर उन साधनों का इस्तेमाल करता है, जिनके द्वारा वह मनुष्य को अपना वास्तविक चेहरा दिखाने के लिए अपना अंतर्निहित स्वभाव अभिव्यक्ति करता है। अर्थात्, जिन्होंने मनुष्य के पुत्र के अंतर्निहित स्वभाव को सराहा है, उन सबने मनुष्य के पुत्र का वास्तविक चेहरा देखा है, क्योंकि

परमेश्वर बहुत महान है और मनुष्य की भाषा के इस्तेमाल द्वारा उसे पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता। एक बार जब मनुष्य राज्य के युग में परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण का अनुभव कर लेगा, तब वह यूहन्ना के वचनों का वास्तविक अर्थ जान लेगा, जो उसने दीवटों के बीच मनुष्य के पुत्र के बारे में कहे थे : "उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के समान उज्ज्वल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्ठी में तपाया गया हो, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था। वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।" उस समय तुम निस्संदेह जान जाओगे कि इतना कुछ कहने वाला यह साधारण देह निर्विवाद रूप से दूसरा देहधारी परमेश्वर है। इतना ही नहीं, तुम्हें वास्तव में अनुभव होगा कि तुम कितने धन्य हो, और तुम स्वयं को सबसे अधिक भाग्यशाली महसूस करोगे। क्या तुम इस आशीष को प्राप्त करने के इच्छुक नहीं हो?

इस पुस्तक का पहला भाग "आरंभ में मसीह के कथन" है। ये वचन अनुग्रह के युग के अंत से राज्य के युग के आरंभ में जाने का प्रतिनिधित्व करते हैं, और ये कलीसियाओं के लिए मनुष्य के पुत्र हेतु पवित्र आत्मा की सार्वजनिक गवाही हैं। ये प्रकाशितवाक्य के इन वचनों की पूर्ति भी हैं : "जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।" ये वचन उस कार्य के आरंभिक चरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे परमेश्वर ने राज्य के युग में आरंभ किया था। इस पुस्तक का दूसरा भाग मनुष्य के पुत्र द्वारा स्वयं को औपचारिक रूप से प्रकट करने के बाद व्यक्तिगत रूप से बोले गए वचनों से निर्मित है। इसमें विभिन्न प्रकार के कथन और वचन शामिल हैं, जैसे कि भविष्यवाणी, रहस्यों का प्रकटन, और जीवन का मार्ग, जिनकी सामग्री बहुत समृद्ध है—इसमें राज्य के भविष्य के संबंध में भविष्य-कथन, परमेश्वर की प्रबंधन योजना के रहस्यों के प्रकटन, मनुष्य के स्वभाव का विश्लेषण, उपदेश और चेतावनियाँ, कठोर न्याय, सांत्वना के हृदयस्पर्शी वचन, जीवन की चर्चा, प्रवेश के संबंध में प्रवचन इत्यादि शामिल हैं। संक्षेप में, परमेश्वर की सत्ता और स्वरूप के साथ-साथ उसका स्वभाव भी, सब उसके कार्य और वचनों में अभिव्यक्ति किए गए हैं। निस्संदेह, वर्तमान देहधारण में परमेश्वर का कार्य मुख्य रूप से ताड़ना और न्याय के द्वारा अपने स्वभाव को व्यक्त करना है। इस नींव पर निर्माण करते हुए वह मनुष्य तक अधिक सत्य पहुँचाता है और उसे अभ्यास करने के और अधिक तरीके बताता है और ऐसा करके मनुष्य को जीतने और उसे उसके भ्रष्ट स्वभाव से बचाने का अपना उद्देश्य हासिल करता है। यही वह चीज़ है, जो राज्य के

युग में परमेश्वर के कार्य के पीछे निहित है। क्या तुम नए युग में प्रवेश करना चाहते हो? क्या तुम खुद को अपने भ्रष्ट स्वभाव से छुटकारा दिलाना चाहते हो? क्या तुम उच्चतर सत्य पाना चाहते हो? क्या तुम मनुष्य के पुत्र का वास्तविक चेहरा देखना चाहते हो? क्या तुम इस जीवन को सार्थक बनाना चाहते हो? क्या तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना चाहते हो? तो फिर तुम यीशु की वापसी का स्वागत किस प्रकार करने जा रहे हो?

विषय-वस्तु

प्रस्तावना

भाग एक आरंभ में मसीह के कथन —कलीसियाओं के लिए पवित्र आत्मा के वचन (11 फरवरी, 1991 से 20 नवम्बर, 1991)

परिचय

अध्याय 1

अध्याय 2

अध्याय 3

अध्याय 4

अध्याय 5

अध्याय 6

अध्याय 7

अध्याय 8

अध्याय 9

अध्याय 10

अध्याय 11

अध्याय 12

अध्याय 13

अध्याय 14

अध्याय 15

अध्याय 16

अध्याय 17

अध्याय 18

अध्याय 19

अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22
अध्याय 23
अध्याय 24
अध्याय 25
अध्याय 26
अध्याय 27
अध्याय 28
अध्याय 29
अध्याय 30
अध्याय 31
अध्याय 32
अध्याय 33
अध्याय 34
अध्याय 35
अध्याय 36
अध्याय 37
अध्याय 38
अध्याय 39
अध्याय 40
अध्याय 41
अध्याय 42
अध्याय 43
अध्याय 44
अध्याय 45
अध्याय 46

अध्याय 47
अध्याय 48
अध्याय 49
अध्याय 50
अध्याय 51
अध्याय 52
अध्याय 53
अध्याय 54
अध्याय 55
अध्याय 56
अध्याय 57
अध्याय 58
अध्याय 59
अध्याय 60
अध्याय 61
अध्याय 62
अध्याय 63
अध्याय 64
अध्याय 65
अध्याय 66
अध्याय 67
अध्याय 68
अध्याय 69
अध्याय 70
अध्याय 71
अध्याय 72
अध्याय 73

अध्याय 74
अध्याय 75
अध्याय 76
अध्याय 77
अध्याय 78
अध्याय 79
अध्याय 80
अध्याय 81
अध्याय 82
अध्याय 83
अध्याय 84
अध्याय 85
अध्याय 86
अध्याय 87
अध्याय 88
अध्याय 89
अध्याय 90
अध्याय 91
अध्याय 92
अध्याय 93
अध्याय 94
अध्याय 95
अध्याय 96
अध्याय 97
अध्याय 98
अध्याय 99
अध्याय 100

अध्याय 101
अध्याय 102
अध्याय 103
अध्याय 104
अध्याय 105
अध्याय 106
अध्याय 107
अध्याय 108
अध्याय 109
अध्याय 110
अध्याय 111
अध्याय 112
अध्याय 113
अध्याय 114
अध्याय 115
अध्याय 116
अध्याय 117
अध्याय 118
अध्याय 119
अध्याय 120
भाग दो संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन (20 फरवरी, 1992 से 1 जून, 1992)
परिचय
अध्याय 1
अध्याय 2
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5

अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
राज्य गान
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17
अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22
अध्याय 23
अध्याय 24
अध्याय 25
ओ लोगो! आनंद मनाओ!
अध्याय 26
अध्याय 27
अध्याय 28
अध्याय 29
अध्याय 30

अध्याय 31
अध्याय 32
अध्याय 33
अध्याय 34
अध्याय 35
अध्याय 36
अध्याय 37
अध्याय 38
अध्याय 39
अध्याय 40
अध्याय 41
अध्याय 42
अध्याय 43
अध्याय 44
अध्याय 45
अध्याय 46
अध्याय 47
परिशिष्ट: संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचनों के रहस्य की व्याख्या (कुछ अध्यायों की व्याख्या)
अध्याय 1
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
पतरस के जीवन पर
अध्याय 8
अध्याय 9
परिशिष्ट : अध्याय 1

अध्याय 10
अध्याय 11
परिशिष्ट : अध्याय 2
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17
अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22 और अध्याय 23
अध्याय 24 और अध्याय 25
अध्याय 26
अध्याय 27
अध्याय 28
अध्याय 29
अध्याय 30
अध्याय 31
अध्याय 32
अध्याय 33
अध्याय 35
अध्याय 36
अध्याय 38
अध्याय 39

अध्याय 40
अध्याय 41
अध्याय 42
अध्याय 44 और अध्याय 45
अध्याय 46
भाग तीन कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (जून 1992 से अगस्त 2014)
परिचय
कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (I) (जून 1992 से अक्टूबर 1992)
मार्ग... (1)
मार्ग... (2)
मार्ग... (3)
मार्ग... (4)
मार्ग... (5)
मार्ग... (6)
मार्ग... (7)
मार्ग... (8)
विश्वासियों को क्या दृष्टिकोण रखना चाहिए
परमेश्वर के कार्य के चरणों के विषय में
भ्रष्ट मनुष्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में अक्षम है
धार्मिक सेवाओं का शुद्धिकरण अवश्य होना चाहिए
परमेश्वर में अपने विश्वास में तुम्हें परमेश्वर का आज्ञापालन करना चाहिए
परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है
एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन लोगों को सही मार्ग पर ले जाता है
प्रतिज्ञाएँ उनके लिए जो पूर्ण बनाए जा चुके हैं
दुष्टों को निश्चित ही दंड दिया जाएगा
एक सामान्य अवस्था में प्रवेश कैसे करें
परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सेवा कैसे करें

वास्तविकता को कैसे जानें
एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन के विषय में
कलीसियाई जीवन और वास्तविक जीवन पर विचार-विमर्श
सभी के द्वारा अपना कार्य करने के बारे में
परमेश्वर द्वारा मनुष्य को इस्तेमाल करने के विषय में
सत्य को समझने के बाद, तुम्हें उस पर अमल करना चाहिए
वह व्यक्ति उद्धार प्राप्त करता है जो सत्य का अभ्यास करने को तैयार है
एक योग्य चरवाहे को किन चीज़ों से लैस होना चाहिए
अनुभव पर
नये युग की आज्ञाएँ
सहस्राब्दि राज्य आ चुका है
परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध कैसा है?
वास्तविकता पर अधिक ध्यान केंद्रित करो
आज्ञाओं का पालन करना और सत्य का अभ्यास करना
तुम्हें पता होना चाहिए कि व्यावहारिक परमेश्वर ही स्वयं परमेश्वर है
केवल सत्य का अभ्यास करना ही इंसान में वास्तविकता का होना है
आज परमेश्वर के कार्य को जानना
क्या परमेश्वर का कार्य उतना सरल है जितना मनुष्य कल्पना करता है?
तुम्हें सत्य के लिए जीना चाहिए क्योंकि तुम्हें परमेश्वर में विश्वास है
सात गर्जनाएँ गूँजती हैं—भविष्यवाणी करती हैं कि राज्य के सुसमाचार पूरे ब्रह्मांड में फैल जाएँगे
देहधारी परमेश्वर और परमेश्वर द्वारा उपयोग किए गए लोगों के बीच अनिवार्य अंतर
अंधकार के प्रभाव से बच निकलो और तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाओगे
इंसान को अपनी आस्था में, वास्तविकता पर ध्यान देना चाहिए, धार्मिक रीति-रिवाजों में लिप्त रहना आस्था नहीं है
जो परमेश्वर के आज के कार्य को जानते हैं केवल वे ही परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं
परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम स्वाभाविक है
प्रार्थना के अभ्यास के बारे में

परमेश्वर के सबसे नए कार्य को जानो और उसके पदचिह्नों का अनुसरण करो
जिनके स्वभाव परिवर्तित हो चुके हैं, वे वही लोग हैं जो परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश कर चुके हैं
परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत रखने के बारे में
पूर्णता प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखो
परमेश्वर उन्हें पूर्ण बनाता है, जो उसके हृदय के अनुसार हैं
जो सच्चे हृदय से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं वे निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा हासिल किए जाएँगे
राज्य का युग वचन का युग है
परमेश्वर के वचन के द्वारा सब-कुछ प्राप्त हो जाता है
जो परमेश्वर से सचमुच प्यार करते हैं, वे वो लोग हैं जो परमेश्वर की व्यावहारिकता के प्रति पूर्णतः समर्पित हो सकते हैं
जिन्हें पूर्ण बनाया जाना है उन्हें शुद्धिकरण से अवश्य गुज़रना चाहिए
पीड़ादायक परीक्षणों के अनुभव से ही तुम परमेश्वर की मनोहरता को जान सकते हो
केवल परमेश्वर से प्रेम करना ही वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करना है
"सहस्राब्दि राज्य आ चुका है" के बारे में एक संक्षिप्त वार्ता
केवल परमेश्वर को जानने वाले ही परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं
पतरस ने यीशु को कैसे जाना
केवल शुद्धिकरण का अनुभव करके ही मनुष्य सच्चे प्रेम से युक्त हो सकता है
परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोग सदैव उसके प्रकाश के भीतर रहेंगे
केवल उन्हें ही पूर्ण बनाया जा सकता है जो अभ्यास पर ध्यान देते हैं
पवित्र आत्मा का कार्य और शैतान का कार्य
जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं उनके लिए एक चेतावनी
तुम्हें परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति बनाए रखनी चाहिए
क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो जीवित हो उठा है?
एक अपरिवर्तित स्वभाव का होना परमेश्वर के साथ शत्रुता में होना है
परमेश्वर को न जानने वाले सभी लोग परमेश्वर का विरोध करते हैं
कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (II) (नवम्बर 1992 से जून 1993)

कार्य और प्रवेश (1)
कार्य और प्रवेश (2)
कार्य और प्रवेश (3)
कार्य और प्रवेश (4)
कार्य और प्रवेश (5)
कार्य और प्रवेश (6)
कार्य और प्रवेश (7)
कार्य और प्रवेश (8)
कार्य और प्रवेश (9)
कार्य और प्रवेश (10)
परमेश्वर के कार्य का दर्शन (1)
परमेश्वर के कार्य का दर्शन (2)
परमेश्वर के कार्य का दर्शन (3)
बाइबल के विषय में (1)
बाइबल के विषय में (2)
बाइबल के विषय में (3)
बाइबल के विषय में (4)
अभ्यास (1)
अभ्यास (2)
देहधारण का रहस्य (1)
देहधारण का रहस्य (2)
देहधारण का रहस्य (3)
देहधारण का रहस्य (4)
दो देहधारण पूरा करते हैं देहधारण के मायने
क्या त्रित्व का अस्तित्व है?
अभ्यास (3)
अभ्यास (4)

अभ्यास (5)
विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (1)
तुम विषमता होने के अनिच्छुक क्यों हो?
विजय-कार्य के दूसरे चरण के प्रभावों को कैसे प्राप्त किया जाता है
विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (2)
विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (3)
विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (4)
अभ्यास (6)
अभ्यास (7)
अभ्यास (8)
इस्राएलियों की तरह सेवा करो
क्षमता को बढ़ाना परमेश्वर द्वारा उद्धार पाने के लिए है
मोआब के वंशजों को बचाने का अर्थ
पतरस के अनुभव: ताड़ना और न्याय का उसका ज्ञान
तुम लोगों को कार्य को समझना चाहिए—भ्रम में अनुसरण मत करो!
अपने मार्ग के अंतिम दौर में तुम्हें कैसे चलना चाहिए
कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (III) (जुलाई 1993 से मार्च 1994)
तुझे अपने भविष्य के मिशन पर कैसे ध्यान देना चाहिए?
मानव-जाति के प्रबंधन का उद्देश्य
मनुष्य का सार और उसकी पहचान
मनुष्य की अंतर्निहित पहचान और उसका मूल्य : उनका स्वरूप कैसा है?
जो लोग सीखते नहीं और अज्ञानी बने रहते हैं : क्या वे जानवर नहीं हैं?
चीन के चुने हुए लोग इस्राएल की किसी जनजाति का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम नहीं हैं
आशीषों से तुम लोग क्या समझते हो?
परमेश्वर के बारे में तुम्हारी समझ क्या है?
एक वास्तविक व्यक्ति होने का क्या अर्थ है
तुम विश्वास के बारे में क्या जानते हो?

जब झड़ते हुए पत्ते अपनी जड़ों की ओर लौटेंगे, तो तुम्हें अपनी की हुई सभी बुराइयों पर पछतावा होगा
कोई भी जो देह में है, कोप के दिन से नहीं बच सकता
उद्धारकर्ता पहले ही एक "सफेद बादल" पर सवार होकर वापस आ चुका है
सुसमाचार को फैलाने का कार्य मनुष्य को बचाने का कार्य भी है
तुम सभी कितने नीच चरित्र के हो!
व्यवस्था के युग का कार्य
छुटकारे के युग के कार्य के पीछे की सच्ची कहानी
युवा और वृद्ध लोगों के लिए वचन
तुम्हें पता होना चाहिए कि समस्त मानवजाति आज के दिन तक कैसे विकसित हुई
पदवियों और पहचान के सम्बन्ध में
केवल पूर्ण बनाया गया मनुष्य ही सार्थक जीवन जी सकता है
मनुष्य के उद्धार के लिए तुम्हें सामाजिक प्रतिष्ठा के आशीष से दूर रहकर परमेश्वर की इच्छा को समझना चाहिए
वो मनुष्य, जिसने परमेश्वर को अपनी ही धारणाओं में सीमित कर दिया है, किस प्रकार उसके प्रकटनों को प्राप्त कर सकता है?
जो परमेश्वर को और उसके कार्य को जानते हैं, केवल वे ही परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हैं
देहधारी परमेश्वर की सेवकाई और मनुष्य के कर्तव्य के बीच अंतर
परमेश्वर संपूर्ण सृष्टि का प्रभु है
तेरह धर्मपत्रों पर तुम्हारा दृढ़ मत क्या है?
सफलता या विफलता उस पथ पर निर्भर होती है जिस पर मनुष्य चलता है
परमेश्वर का कार्य और मनुष्य का कार्य
परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों को जानना ही परमेश्वर को जानने का मार्ग है
भ्रष्ट मनुष्यजाति को देहधारी परमेश्वर द्वारा उद्धार की अधिक आवश्यकता है
परमेश्वर द्वारा धारण किये गए देह का सार
परमेश्वर का कार्य और मनुष्य का अभ्यास
स्वर्गिक परमपिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता ही मसीह का सार है
मनुष्य के सामान्य जीवन को बहाल करना और उसे एक अद्‌भुत मंज़िल पर ले जाना

परमेश्वर और मनुष्य साथ-साथ विश्राम में प्रवेश करेंगे
कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (IV) (1994 से 1997, 2003 से 2005)
जब तक तुम यीशु के आध्यात्मिक शरीर को देखोगे, परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी को नया बना चुका होगा
वे सभी जो मसीह से असंगत हैं निश्चित ही परमेश्वर के विरोधी हैं
बहुत बुलाए जाते हैं, पर कुछ ही चुने जाते हैं
तुम्हें मसीह के साथ अनुकूलता का तरीका खोजना चाहिए
क्या तुम परमेश्वर के एक सच्चे विश्वासी हो?
मसीह न्याय का कार्य सत्य के साथ करता है
क्या तुम जानते हो? परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच एक बहुत बड़ा काम किया है
केवल अंत के दिनों का मसीह ही मनुष्य को अनंत जीवन का मार्ग दे सकता है
अपनी मंज़िल के लिए पर्याप्त संख्या में अच्छे कर्मों की तैयारी करो
तुम किसके प्रति वफादार हो?
गंतव्य के बारे में
तीन चेतावनियाँ
अपराध मनुष्य को नरक में ले जाएँगे
परमेश्वर के स्वभाव को समझना अति महत्वपूर्ण है
पृथ्वी के परमेश्वर को कैसे जानें
एक बहुत गंभीर समस्या : विश्वासघात (1)
एक बहुत गंभीर समस्या : विश्वासघात (2)
दस प्रशासनिक आदेश जो राज्य के युग में परमेश्वर के चुने लोगों द्वारा पालन किए जाने चाहिए
तुम लोगों को अपने कर्मों पर विचार करना चाहिए
परमेश्वर मनुष्य के जीवन का स्रोत है
सर्वशक्तिमान की आह
परमेश्वर के प्रकटन ने एक नए युग का सूत्रपात किया है
परमेश्वर संपूर्ण मानवजाति के भाग्य का नियंता है
मनुष्य को केवल परमेश्वर के प्रबंधन के बीच ही बचाया जा सकता है
कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (जारी है) (17 अक्टूबर, 2013 से 18 अगस्त

2014)
परमेश्वर को जानना परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग है
परमेश्वर का स्वभाव और उसका कार्य जो परिणाम हासिल करेगा, उसे कैसे जानें
परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर I
परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर II
परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर III
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है I
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है II
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है III
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है IV
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है V
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है VI
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है VII
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है VIII
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है IX
स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है X
परिशिष्ट : परमेश्वर के प्रकटन को उसके न्याय और ताड़ना में देखना
अंतभाषण

भाग एक
आरंभ में मसीह के कथन
—कलीसियाओं के लिए पवित्र आत्मा के वचन
(11 फरवरी, 1991 से 20 नवम्बर, 1991)

परिचय

11 फरवरी 1991 को परमेश्वर ने कलीसिया में अपना पहला कथन कहा, और इस कथन का उस समय पवित्र आत्मा की धारा में रहने वाले एक-एक व्यक्ति पर असाधारण प्रभाव पड़ा। इस कथन में उल्लेख किया गया था कि "परमेश्वर का निवास स्थान-प्रकट हो गया है" और "ब्रह्मांड का मुखिया, अंत के दिनों का मसीह—वह जगमगाता सूर्य है।" इन गहन महत्वपूर्ण वचनों के साथ सभी लोगों को एक नए क्षेत्र में लाया गया था। जिन्होंने भी इस वचन को पढ़ा, उन सभी ने नए कार्य का, उस महान कार्य का जिसे परमेश्वर शुरू करने वाला था, संकेत महसूस किया। यह वह सुंदर, मधुर और संक्षिप्त कथन था, जो संपूर्ण मानव-जाति को परमेश्वर के नए कार्य में और एक नए युग में लाया, और जिसने इस देहधारण में परमेश्वर के कार्य की नींव रखी और मंच तैयार किया। कोई यह कह सकता है कि परमेश्वर ने इस समय जो कथन कहा है, वह ऐसा है जो युगों को पाटता है, कि अनुग्रह के युग की शुरुआत के बाद से यह पहली बार है कि परमेश्वर ने सार्वजनिक रूप से मानव-जाति से बात की है, कि यह पहली बार है जब उसने दो हजार वर्षों तक छिपे रहने के बाद बात की है; और, इतना ही नहीं, यह उस कार्य के लिए एक भूमिका, एक महत्वपूर्ण प्रस्थान-बिंदु है, जिसे परमेश्वर राज्य के युग में करने वाला है।

पहली बार जब परमेश्वर ने कोई कथन कहा, तो ऐसा उसने एक तीसरे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से प्रशंसा के रूप में, ऐसी भाषा में किया, जो सुरुचिपूर्ण और सादी एक-साथ थी, और साथ ही जीवन के एक पोषण के रूप में, जिसे तत्परता और आसानी से समझ लिया गया। इसके साथ उसने लोगों के इस छोटे-से समूह को लिया, जो उत्सुकता से प्रभु यीशु की वापसी की आशा रखते हुए केवल उसके अनुग्रह का आनंद लेना

जानते थे, और उन्हें चुपचाप परमेश्वर की प्रबंधन-योजना में कार्य के एक अन्य चरण में ले आया। इन परिस्थितियों में, मानवजाति को पता नहीं था, और उसने कल्पना करने की हिम्मत तो बिलकुल भी नहीं की, कि अंततः परमेश्वर किस तरह का कार्य करने जा रहा है, या आगे के मार्ग पर क्या होने वाला है। इसके बाद परमेश्वर ने मानव-जाति को उत्तरोत्तर नए युग में लाने के लिए और अधिक कथन कहना जारी रखा। आश्चर्यजनक ढंग से, परमेश्वर का हर कथन विषयवस्तु में भिन्न है और, इसके अतिरिक्त, वह प्रशंसा के विभिन्न रूपों और अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीकों का उपयोग करता है। ये कथन, जो कि लहजे में समान किंतु विषयवस्तु में वैविध्यपूर्ण हैं, निरपवाद रूप से परमेश्वर की देखभाल और चिंता की भावनाओं से भरे हुए हैं, और लगभग प्रत्येक कथन भिन्न विषयवस्तु के साथ जीवन के प्रावधानों और साथ ही अनुस्मारक, उपदेश और परमेश्वर की ओर से मनुष्य के लिए सांत्वना के वचनों से युक्त है। इन कथनों में इस तरह के अंश बार-बार प्रकट होते हैं : "एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने देहधारण किया है, कि वह ब्रह्मांड का मुखिया है जो सभी चीज़ों को नियंत्रित करता है"; "विजयी राजा अपने शानदार सिंहासन पर बैठता है"; "वह ब्रह्मांड को अपने हाथों में धारण करता है"; इत्यादि। इन अंशों में एक संदेश व्यक्त किया गया है, या कोई यह कह सकता है कि ये अंश मानवजाति को एक संदेश देते हैं : परमेश्वर पहले ही मानव-संसार में आ चुका है, परमेश्वर एक और भी बड़ा कार्य शुरू करने जा रहा है, परमेश्वर का राज्य पहले ही लोगों के एक निश्चित समूह में उतर चुका है, और परमेश्वर ने पहले ही महिमा प्राप्त कर ली है और बड़ी संख्या में अपने दुश्मनों को हरा दिया है। परमेश्वर का प्रत्येक कथन हर एक इंसान के हृदय को गिरफ्त में ले लेता है। संपूर्ण मानवजाति परमेश्वर का उत्सुकता से इंतजार करती है कि वह और भी अधिक नए वचन कहे, क्योंकि हर बार जब परमेश्वर बोलता है, तो वह मनुष्यों के हृदय को उसकी जड़ों तक हिला देता है, और इतना ही नहीं, वह मनुष्य की हर गतिविधि और हर भावना का संचालन करता है और उसे बनाए रखता है, ताकि मानवजाति परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करना, और इससे भी बढ़कर, उनकी प्रशंसा करना शुरू कर दे...। इस तरह, अनजाने में, बहुत-से लोग बाइबल को अनिवार्य रूप से भूल गए, और उन्होंने पुरानी शैली के धर्मोपदेशों और आध्यात्मिक व्यक्तियों के लेखन पर और भी कम ध्यान दिया, क्योंकि वे अतीत की रचनाओं में परमेश्वर के इन वचनों के लिए कोई आधार ढूँढ़ने में असमर्थ थे, न ही वे कहीं इन कथनों को कहने के परमेश्वर के उद्देश्य को खोजने में समर्थ थे। ऐसा होने से, मानवजाति के लिए यह स्वीकार करना कितना उचित था कि ये कथन परमेश्वर की ऐसी वाणी हैं, जिन्हें समय की शुरुआत से न तो

सुना और न ही देखा गया है, कि वे ऐसे किसी भी व्यक्ति की पहुँच से परे हैं जो परमेश्वर में विश्वास करता है, और वे पिछले युगों में किसी भी आध्यात्मिक व्यक्ति द्वारा कही गई किसी भी बात या परमेश्वर के पिछले कथनों से श्रेष्ठ हैं। इनमें से प्रत्येक कथन द्वारा प्रोत्साहित मानवजाति ने अनजाने ही पवित्र आत्मा के कार्य के प्रभामंडल में, नए युग की आगे की श्रेणियों पर जीवन में प्रवेश किया। परमेश्वर के वचनों से प्रोत्साहित मानवजाति ने प्रत्याशा से भरकर परमेश्वर के वचनों द्वारा व्यक्तिगत रूप से की जा रही अगुआई की मिठास का स्वाद लिया। मैं इस क्षणिक अवधि को ऐसा समय मानता हूँ, जिसे हर इंसान स्थायी यादों के साथ वापस देखेगा, जब वास्तव में इस अवधि के दौरान मानवजाति ने जो आनंद लिया था, वह पवित्र आत्मा के कार्य के एक प्रभामंडल से अधिक नहीं था, या कोई इसे उस शक्कर का मीठा स्वाद कह सकता है, जिसके नीचे गोली लिपटी होती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इस बिंदु से आगे, अभी भी परमेश्वर के वचनों के मार्गदर्शन के अधीन, अभी भी पवित्र आत्मा के कार्य के प्रभामंडल में, मानवजाति को अनजाने ही परमेश्वर के वचनों के एक अन्य चरण में ले जाया गया था, जो राज्य के युग में परमेश्वर के कार्य और कथनों का पहला कदम—सेवाकर्ताओं का परीक्षण—था।

सेवाकर्ताओं के परीक्षण से पहले कहे गए कथन अधिकांशतः निर्देश, उपदेश, फटकार और अनुशासन के रूप में थे, और कुछ स्थानों में उन्होंने अनुग्रह के युग में काम में लाए गए संबोधन के पुराने रूप का उपयोग किया था—उन लोगों के लिए "मेरे पुत्रो" का उपयोग करते हुए, जो परमेश्वर का अनुसरण करते थे, ताकि मानवजाति के लिए परमेश्वर के निकट आना आसान बनाया जा सके, या ताकि मानवजाति परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को करीबी मान सके। इस तरह, मानवजाति की ऐंठ, अहंकार और अन्य भ्रष्ट स्वभावों पर परमेश्वर ने जो भी न्याय दिया, उससे मनुष्य "पुत्र" की अपनी पहचान में, "परमपिता परमेश्वर" के वचनों के प्रति बैर रखे बिना, निपटने और उसे स्वीकार करने में सक्षम होगा, जिसके शीर्ष पर "परमपिता परमेश्वर" द्वारा अपने "पुत्रों" से किया गया वादा कभी भी संदेहास्पद नहीं था। इस अवधि के दौरान संपूर्ण मानवजाति ने ऐसे अस्तित्व का आनंद लिया, जो एक शिशु के अस्तित्व की तरह परेशानी से मुक्त था, और इसने परमेश्वर का उद्देश्य पूरा किया, जो यह है कि, उनके "वयस्कता" में प्रवेश करने पर परमेश्वर उनका न्याय करना शुरू कर देगा। इसने मानवजाति का न्याय करने के कार्य की नींव भी रखी, जिसे परमेश्वर औपचारिक रूप से राज्य के युग में आरंभ करता है। चूँकि इस देहधारण में परमेश्वर का कार्य मुख्य रूप से संपूर्ण मानवजाति का न्याय करना और उसे जीतना है, इसलिए जैसे ही मनुष्य ने अपने

पैर जमीन पर मजबूती से जमाए, परमेश्वर ने तुरंत अपने कार्य की रीति में प्रवेश कर लिया—वह कार्य, जिसमें वह मनुष्य का न्याय करता है और उसे ताड़ित करता है। प्रकट रूप से, सेवाकर्ताओं के परीक्षण से पहले के सभी कथन संक्रमण-काल से गुजरने के वास्ते कहे गए थे, जबकि वास्तविक उद्देश्य उससे अलग था जो दिखाई देता था। परमेश्वर का उत्सुक इरादा यह था कि वह राज्य के युग में यथाशीघ्र औपचारिक रूप से अपना कार्य शुरू करने में सक्षम हो सके। किसी भी तरह से वह शक्कर-लेपित गोलियाँ खिलाकर मानवजाति को आगे बढ़ने के लिए फुसलाना जारी नहीं रखना चाहता था; बल्कि वह अपने न्याय के आसन के सामने हर इंसान के असली चेहरे को देखने के लिए उत्सुक था, और इससे भी अधिक उत्सुकता से वह उस असली प्रवृत्ति को देखना चाहता था, जो उसका अनुग्रह खोने के बाद संपूर्ण मानवता उसके प्रति रखेगी। वह केवल परिणाम देखना चाहता था, प्रक्रिया नहीं। किंतु उस समय परमेश्वर के उत्सुक इरादे को समझने वाला कोई नहीं था, क्योंकि मानव-हृदय केवल अपनी मंजिल और अपनी भविष्य की संभावनाओं के बारे में चिंतित था। बहुत आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेश्वर का न्याय बार-बार संपूर्ण मानवजाति पर निर्देशित था। जब परमेश्वर के मार्गदर्शन के अधीन मानवजाति ने मनुष्य का सामान्य जीवन जीना शुरू कर दिया, केवल तभी ऐसा हुआ कि मानवजाति के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण बदला।

1991 एक असामान्य वर्ष था; आओ, हम इस वर्ष को एक "सुनहरा वर्ष" कहें। परमेश्वर ने राज्य के युग के नए कार्य का सूत्रपात किया और अपने कथन को संपूर्ण मानवजाति पर निर्देशित किया। साथ ही, मानवजाति ने अभूतपूर्व गर्मजोशी का आनंद लिया और, इससे भी बढ़कर, उस पीड़ा का अनुभव किया, जो परमेश्वर द्वारा मनुष्य के अभूतपूर्व न्याय के बाद आती है। मानवजाति ने अब तक अज्ञात मिठास का स्वाद लिया और साथ ही अब तक अज्ञात न्याय और त्याग को महसूस किया, मानो उसने परमेश्वर को प्राप्त कर लिया था, और फिर मानो उसने परमेश्वर को खो दिया था। प्राप्त करके पीड़ित होना और खोकर पीड़ित होना—ये भावनाएँ केवल उन लोगों द्वारा ही जानी जाती हैं, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से उनका अनुभव किया हो; ये ऐसी बातें हैं, जिनका वर्णन करने के लिए न तो मनुष्य के पास क्षमता है और न ही साधन हैं। इस तरह के घावों को परमेश्वर ने हर इंसान को अमूर्त अनुभव और परिसंपत्ति के रूप में प्रदान किया है। परमेश्वर द्वारा इस वर्ष कहे गए कथनों की विषयवस्तु वास्तव में दो प्रमुख प्रभागों में आती है : पहला वह, जहाँ मानवजाति को अतिथियों के रूप में अपने सिंहासन के सामने आने के लिए आमंत्रित करने हेतु परमेश्वर मनुष्यों की दुनिया में उतरा था; और दूसरा वह, जहाँ भरपेट खाने और पीने के बाद

मानवजाति परमेश्वर द्वारा सेवाकर्ताओं के रूप में काम में लगाई गई थी। निस्संदेह यह स्पष्ट है कि पहला भाग मानवजाति की सबसे प्यारी और सबसे ईमानदार कामना है, और भी अधिक इसलिए, क्योंकि मनुष्य लंबे समय से परमेश्वर की हर चीज के आनंद को परमेश्वर में अपने विश्वास का उद्देश्य बनाने का आदी रहा है। यही कारण है कि जैसे ही परमेश्वर ने अपने कथन कहने शुरू किए, मानवजाति राज्य में प्रवेश करने और वहाँ परमेश्वर द्वारा विभिन्न पुरस्कार दिए जाने की प्रतीक्षा करने के लिए तैयार थी। इन परिस्थितियों में लोगों ने अपने स्वभाव रूपांतरित करने, परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयास करने, परमेश्वर की इच्छा पर ध्यान देने, इत्यादि के द्वारा उचित मूल्य का भुगतान किया ही नहीं। सतही नजर से, मनुष्य परमेश्वर के लिए अपने आप को खपाते और कार्य करते हुए लगातार दौड़-धूप करते प्रतीत होते थे, जबकि उस दौरान वे वास्तव में अपने हृदयों की गुप्त कोटरिकाओं में यह गणना कर रहे थे कि आशीष प्राप्त करने या राजाओं की तरह शासन करने के लिए उन्हें अगला कदम कौन-सा उठाना चाहिए। कोई यह कह सकता है कि जब मानव-हृदय परमेश्वर का आनंद ले रहा था, उसी समय वह परमेश्वर के प्रति स्वार्थी भी हो रहा था। इस स्थिति में मानवजाति को परमेश्वर की गहनतम जुगुप्सा और घृणा ही मिलती है; परमेश्वर का स्वभाव यह सहन नहीं करता कि कोई इंसान उसे धोखा दे या उसका इस्तेमाल करे। किंतु परमेश्वर की बुद्धि किसी भी इंसान के लिए अगम्य है। इन सभी पीड़ाओं को सहन करने के बीच ही उसने अपने कथनों का पहला हिस्सा बोला था। इस समय परमेश्वर ने कितनी पीड़ा सहन की, और उसने कितनी देखभाल और विचार खपाया, इसकी कल्पना करने में कोई मनुष्य सक्षम नहीं है। इन कथनों के पहले हिस्से का उद्देश्य उन सभी प्रकार की कुरूपताओं को उजागर करना, जो मनुष्य पद और लाभ का सामना करते समय दिखाता है, और मनुष्य के लालच और अवज्ञा को उजागर करना है। भले ही बोलने में परमेश्वर अपने वचन एक प्रेमपूर्ण माँ के सच्चे और ईमानदार लहजे में बोलता है, किंतु उसके अंतरतम हृदय में कोप दोपहर के सूरज की तरह धधकता है, मानो वह उसके शत्रुओं के विरुद्ध निर्देशित हो। परमेश्वर किसी भी परिस्थिति में लोगों के ऐसे समूह से बात करने का अनिच्छुक है, जिनमें मानवजाति की सामान्य सदृशता का अभाव है, और इसलिए, जब भी वह बोलता है, तो वह अपने हृदय के भीतर के कोप को दबा रहा होता है, जबकि साथ ही वह अपने कथनों अभिव्यक्ति देने के लिए स्वयं को बाध्य कर रहा होता है। और तो और, वह ऐसी मानवजाति से बात कर रहा होता है, जो सामान्य मानवता से विहीन, तर्क से वंचित, चरम सीमा तक भ्रष्ट है, जिसके लालच ने उसकी आदत के रूप में जड़ पकड़ ली है, और जो परमेश्वर के विरुद्ध चरम सीमा

तक अवज्ञाकारी और विद्रोही है। मानवजाति के पतन की गहराइयों और मानवजाति के लिए परमेश्वर की घृणा और अरुचि की सीमा की कल्पना आसानी से की जा सकती है; मानवजाति के लिए जिस चीज की कल्पना करना कठिन है, वह वो चोट है जो उसने परमेश्वर को पहुँचाई है—उसका शब्दों में वर्णन करना असंभव है। किंतु यह ठीक इसी पृष्ठभूमि में था—जहाँ कोई भी यह जानने में सक्षम नहीं था कि परमेश्वर का हृदय कैसे पीड़ित हो रहा है, और इतना ही नहीं, किसी ने भी यह नहीं जाना कि मानवजाति कितनी अविवेकी और सुधार से परे है—कि हर एक व्यक्ति ने, जरा-सी भी शर्म या रत्ती भर भी हिचक के बिना, यहाँ तक कि एक-दूसरे से होड़ करने की हद तक, जहाँ कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता था और सभी हारने से बेहद डरते थे, यह मान लिया था कि उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में वे सभी पुरस्कार प्राप्त करने का अधिकार है, जो परमेश्वर ने मनुष्य के लिए तैयार किए हैं। अब तक तुम्हें पता हो जाना चाहिए कि उस समय परमेश्वर की नजरों में लोगों की क्या स्थिति हो गई थी। इस तरह की मानवजाति परमेश्वर के पुरस्कार कैसे प्राप्त कर सकती है? किंतु मनुष्य को परमेश्वर से जो प्राप्त होता है, वह हर समय सबसे मूल्यवान खजाना होता है, और इसके विपरीत परमेश्वर मनुष्य से जो प्राप्त करता है, वह सर्वोच्च पीड़ा है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंधों की शुरुआत के बाद से, यही है जो मनुष्य ने हमेशा परमेश्वर से प्राप्त किया है, और यही है जो उसने हमेशा बदले में परमेश्वर को दिया है।

भले ही परमेश्वर चिंता में जला हो, लेकिन जब उसने इस मानवजाति को देखा जो पूरी तरह से भ्रष्ट थी, तो उसके पास उसे आग की झील में फेंकने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, ताकि उसका शुद्धिकरण किया जा सके। यह परमेश्वर के कथनों का दूसरा भाग है, जिसमें परमेश्वर ने मानवजाति को अपने सेवाकर्ताओं के रूप में नियोजित किया। इस भाग में, मनुष्य की भ्रष्ट प्रकृति को उजागर करने के लिए चारे के रूप में "परमेश्वर के व्यक्ति" की स्थिति का उपयोग करते हुए, पद्धति और अवधि दोनों के अनुसार, परमेश्वर नरम से कठोर और कुछ से बहुत हुआ, और साथ ही उसने मानवजाति के चुनने के लिए सेवाकर्ताओं, परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर के पुत्रों की विभिन्न श्रेणियाँ[क] प्रस्तुत कीं। निश्चित रूप से, ठीक जैसा कि परमेश्वर ने भविष्यवाणी की थी, किसी ने भी परमेश्वर के लिए सेवाकर्ता होना नहीं चुना, और उसके बजाय सभी परमेश्वर का व्यक्ति बनने का प्रयत्न करते रहे। भले ही इस अवधि के दौरान जिस कठोरता से परमेश्वर बोला, वह ऐसी थी जिसका मनुष्यों ने कभी अनुमान नहीं लगाया था, और उसके बारे में सुना तो बिलकुल भी नहीं था, फिर भी, हैसियत के प्रति अत्यधिक चिंतित होने, और इससे भी बढ़कर,

आशीष प्राप्त करने के लिए उत्तेजना से बेचैन होने के कारण, उनके पास परमेश्वर के बोलने के लहजे और तरीके के बारे में कोई धारणा बनाने का समय नहीं था, बल्कि इसके बजाय उनकी अपनी हैसियत का और भविष्य के गर्भ में उनके लिए क्या संचित है, इसका बोझ उनके दिमाग पर हमेशा रहता था। इस तरह मानव जाति को अनजाने ही परमेश्वर के कथनों द्वारा उस "भूलभुलैया" में ले आया गया, जो परमेश्वर ने उनके लिए बनाई थी। भविष्य के प्रलोभन और अपनी नियति द्वारा जबरदस्ती फुसलाए गए मनुष्य अपने को परमेश्वर का व्यक्ति बनने के लिए अपर्याप्त समझते थे, और फिर भी वे उसके सेवाकर्ताओं के रूप में कार्य करने के अनिच्छुक थे। इन परस्पर-विरोधी मानसिकताओं के बीच विदीर्ण, उन्होंने बिना सोचे-समझे एक अभूतपूर्व न्याय और ताड़ना को स्वीकार कर लिया, जिसे परमेश्वर ने मानवजाति के लिए निर्धारित किया था। स्वाभाविक रूप से, न्याय और शुद्धिकरण का यह रूप ऐसा था, जिसे मानवजाति किसी भी तरह से स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। फिर भी, इस भ्रष्ट मानवजाति से विनम्र आत्मसमर्पण करवाने की बुद्धि और सामर्थ्य केवल परमेश्वर के पास ही है, जिसकी वजह से, इच्छा से या अनिच्छा से, वे सभी अंत में मान गए। मानवजाति के पास चुनने के लिए कोई विकल्प नहीं था। केवल परमेश्वर का कहा अंतिम होता है, और केवल परमेश्वर ही मनुष्य को सत्य और जीवन प्रदान करने और उसे दिशा दिखाने के लिए इस तरह की पद्धति का उपयोग करने में सक्षम है। यह पद्धति मनुष्य पर परमेश्वर के कार्य की अनिवार्यता है, और यह, संदेह या विवाद से परे, मनुष्य की अपरिहार्य आवश्यकता भी है। परमेश्वर मानवजाति को यह तथ्य संप्रेषित करने के लिए इस पद्धति से बोलता और कार्य करता है : मानवजाति को बचाने में, परमेश्वर अपने प्रेम और दया के कारण और अपने प्रबंधन के वास्ते ऐसा करता है; परमेश्वर का उद्धार प्राप्त करने में, मानवजाति ऐसा इसलिए करती है क्योंकि उसका उस सीमा तक पतन हो गया है, जहाँ परमेश्वर के पास व्यक्तिगत रूप से बोलने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। जब मनुष्य परमेश्वर का उद्धार प्राप्त करता है, तो यह सबसे बड़ा अनुग्रह है, और यह एक विशेष कृपा भी है, अर्थात्, यदि परमेश्वर अपने कथनों को व्यक्तिगत रूप से वाणी न देता, तो मानव-जाति का भाग्य नष्ट हो जाता। मानवजाति से घृणा करने के साथ ही, परमेश्वर अभी भी मनुष्य के उद्धार के लिए किसी भी कीमत का भुगतान करने को तैयार और इच्छुक है। इस बीच, जिस समय मनुष्य परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम की और इस बात की रट लगाता रहता है कि कैसे वह अपना सर्वस्व परमेश्वर को अर्पित करता है, उसी समय वह परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहा होता है और परमेश्वर से हर तरह की कृपा ऐंठ रहा होता है, यहाँ तक कि परमेश्वर को ठेस भी पहुँचा रहा

होता है और उसके हृदय पर अकथनीय पीड़ा डाल रहा होता है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच स्वार्थहीनता और स्वारपरता का ऐसा स्पष्ट अंतर है!

कार्य करने और बोलने में परमेश्वर किसी विशेष पद्धति का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है, किंतु परिणाम प्राप्त करने को वह अपना लक्ष्य बनाता है। इस कारण से, अपने कथनों के इस भाग में परमेश्वर ने अपनी पहचान स्पष्ट रूप से प्रकट न करने, बल्कि केवल "अंत के दिनों का मसीह," "ब्रह्मांड का प्रमुख" जैसे कुछ शब्द प्रकट करने का ध्यान रखा। यह किसी भी तरह से मसीह की सेवकाई या मानवजाति के परमेश्वर के ज्ञान को प्रभावित नहीं करता, विशेष रूप से इसलिए, क्योंकि उन शुरुआती दिनों में मानवजाति "मसीह" और "देहधारण" की अवधारणाओं से पूरी तरह से अनभिज्ञ थी, इसलिए परमेश्वर को अपने कथन व्यक्त करने के लिए स्वयं को एक "विशेष कार्य" वाले व्यक्ति के रूप में विनम्र करना पड़ा था। यह परमेश्वर की श्रमसाध्य देखभाल और विचार था, क्योंकि उस समय लोग संबोधन का केवल यही रूप स्वीकार कर सकते थे। परमेश्वर जिस भी प्रकार के संबोधन का उपयोग करे, उसके कार्य के परिणाम प्रभावित नहीं होते, क्योंकि वह जो कुछ भी करता है, उस सबमें परमेश्वर का उद्देश्य मनुष्य को बदलना, मनुष्य को परमेश्वर का उद्धार पाने में सक्षम बनाना होता है। परमेश्वर चाहे कुछ भी क्यों न करे, वह हमेशा मनुष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखता है। परमेश्वर के कार्य करने और बोलने के पीछे यही इरादा है। भले ही परमेश्वर मानवजाति के सभी पहलुओं पर विचार करने में बहुत अच्छी तरह से चौकस है, और वह जो कुछ भी करता है उसमें इतनी पूर्णता से बुद्धिमान है, फिर भी मैं यह कह सकता हूँ : यदि परमेश्वर ने स्वयं की गवाही न दी होती, तो सृजित मनुष्यों में से एक भी ऐसा न होता, जो स्वयं परमेश्वर को पहचानने या स्वयं परमेश्वर की गवाही देने में सक्षम होता। यदि परमेश्वर ने अपने कार्य में संबोधन के रूप में "एक विशेष कार्य वाले व्यक्ति" का उपयोग करना जारी रखा होता, तो एक भी इंसान ऐसा न होता, जो परमेश्वर को परमेश्वर मान सकता—यह मानवजाति का दुःख है। अर्थात्, सृजित मनुष्यों की जाति में से ऐसा कोई नहीं है, जो परमेश्वर को जानने में समर्थ हो, परमेश्वर से प्रेम करने, परमेश्वर की परवाह करने और परमेश्वर के नजदीक आने वाला तो बिलकुल भी कोई नहीं है। मनुष्य की आस्था केवल आशीष पाने के लिए है। एक विशेष कार्य वाले व्यक्ति के रूप में परमेश्वर की पहचान ने हर एक इंसान को यह संकेत दिया है : मानवजाति परमेश्वर को सृजित मनुष्यों में से एक मानना आसान समझती है; सबसे बड़ी पीड़ा और अपमान जो इंसान परमेश्वर को देता है, वह निश्चित रूप से यह है कि, जब परमेश्वर खुलेआम प्रकट होता

या कार्य करता है, तो तब भी वह मनुष्य द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाता है और उसके द्वारा विस्मृत तक कर दिया जाता है। मानवजाति को बचाने के लिए परमेश्वर सबसे बड़ा अपमान सहता है; हर चीज देने में उसका उद्देश्य मानवजाति को बचाना, मानवजाति की पहचान प्राप्त करना है। इस सबके लिए परमेश्वर ने जो कीमत चुकाई है, वह ऐसी है जिसकी किसी भी विवेकशील व्यक्ति को सराहना करने में सक्षम होना चाहिए। मानवजाति ने परमेश्वर के कथन और कार्य प्राप्त किए हैं, और उसने परमेश्वर का उद्धार प्राप्त किया है। फिर भी, किसी ने यह पूछने की नहीं सोची कि : वह क्या है, जो परमेश्वर ने मानवजाति से प्राप्त किया है? परमेश्वर के हर एक कथन से मानवजाति ने सत्य प्राप्त किया है, वह खुद को बदलने में सफल रही है, उसने जीवन में दिशा पाई है; किंतु परमेश्वर ने जो कुछ प्राप्त किया है, वह उन वचनों से, जिनका उपयोग मनुष्य परमेश्वर के प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए करते हैं, और प्रशंसा की कुछ हलकी फुसफुसाहटों से अधिक कुछ नहीं है। निश्चित रूप से यह वह प्रतिफल नहीं है, जिसकी परमेश्वर मनुष्य से माँग करता है।

यद्यपि अब परमेश्वर के कई वचन व्यक्त किए जा चुके हैं, फिर भी अधिसंख्य लोग अभी भी परमेश्वर के अपने ज्ञान और समझ के भीतर परमेश्वर के वचनों द्वारा आरंभ में दर्शाए गए चरण पर ही रुक गए हैं, जहाँ से वे आगे नहीं बढ़े हैं—यह वास्तव में एक पीड़ादायक विषय है। "आरंभ में मसीह के कथन" का यह हिस्सा मानव-हृदय को खोलने की एक कुंजी मात्र है; यहाँ पर रुकना परमेश्वर के इरादे को पूरा करने में असफल रहना है। अपने कथनों के इस हिस्से को बोलने में परमेश्वर का लक्ष्य मानवजाति को अनुग्रह के युग से राज्य के युग में ले जाना मात्र है; वह यह कदापि नहीं चाहता कि मानवजाति उसके कथनों के इस हिस्से में ठहरी रहे या उसके वचनों के इस हिस्से को दिशानिर्देश के रूप में भी ले, अन्यथा परमेश्वर के भविष्य के कथन न तो आवश्यक होंगे, न ही अर्थपूर्ण। यदि कोई ऐसा है, जो अभी तक उस स्थिति में प्रवेश करने में असमर्थ है, जिसकी परमेश्वर अपने कथनों के इस हिस्से में मनुष्य से अपेक्षा करता है, तो उस व्यक्ति की प्रविष्टि अज्ञात बनी हुई है। परमेश्वर के कथनों का यह हिस्सा वह सबसे बुनियादी अपेक्षा है, जो राज्य के युग में परमेश्वर मनुष्य से करता है, और यही एकमात्र तरीका है जिसके द्वारा मानवजाति सही मार्ग पर प्रवेश करेगी। यदि तुम वह व्यक्ति हो जो कुछ नहीं समझता, तो सबसे अच्छा होगा कि तुम इस हिस्से के वचनों को पढ़ना शुरू करो!

फुटनोट :

क. मूल पाठ में "की विभिन्न श्रेणियाँ" वाक्यांश नहीं है।

अध्याय 1

स्तुति सिय्योन तक आ गई है और परमेश्वर का निवास स्थान-प्रकट हो गया है। सभी लोगों द्वारा प्रशंसित, महिमामंडित पवित्र नाम फैल रहा है। आह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! ब्रह्मांड का मुखिया, अंत के दिनों का मसीह—वह जगमगाता सूर्य है, जो पूरे ब्रह्मांड में प्रताप और वैभव में ऊँचे पर्वत सिय्योन पर उदित हुआ है ...

सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम हर्षोल्लास में तुझे पुकारते हैं; हम नाचते और गाते हैं। तू वास्तव में हमारा उद्धारकर्ता, ब्रह्मांड का महान सम्राट है! तूने विजेताओं का एक समूह बनाया है और परमेश्वर की प्रबंधन-योजना पूरी की है। सभी लोग इस पर्वत की ओर बढ़ेंगे। सभी लोग सिंहासन के सामने घुटने टेकेंगे! तू एकमेव सच्चा परमेश्वर है और तू ही महिमा और सम्मान के योग्य है। समस्त महिमा, स्तुति और अधिकार सिंहासन का हो! जीवन का झरना सिंहासन से प्रवाहित होता है, जो बड़ी संख्या में परमेश्वर के लोगों को सींचता और पोषित करता है। जीवन प्रतिदिन बदलता है; नई रोशनी और नए प्रकटन हमारा अनुसरण करते हैं, जो लगातार परमेश्वर के बारे में अंतर्दृष्टियाँ देते हैं। अनुभवों के बीच हम परमेश्वर के बारे में पूर्ण निश्चितता पर पहुँचते हैं। उसके वचन लगातार प्रकट किए जाते हैं, उनके भीतर प्रकट किए जाते हैं, जो सही हैं। हम सचमुच बहुत धन्य हैं! परमेश्वर से रोज़ाना आमने-सामने मिल रहे हैं, सभी बातों में परमेश्वर के साथ संवाद कर रहे हैं, और हर बात में परमेश्वर को संप्रभुता दे रहे हैं। हम सावधानीपूर्वक परमेश्वर के वचन पर विचार करते हैं, हमारे हृदय परमेश्वर में शांति पाते हैं, और इस प्रकार हम परमेश्वर के सामने आते हैं, जहाँ हमें उसका प्रकाश मिलता है। रोज़ाना अपने जीवन, कार्यों, वचनों, विचारों और धारणाओं में हम परमेश्वर के वचन के भीतर जीते हैं, और हम हमेशा पहचान करने में सक्षम होते हैं। परमेश्वर का वचन सुई में धागा पिरोता है; अप्रत्याशित ढंग से हमारे भीतर छिपी हुई चीज़ें एक-एक करके प्रकाश में आती हैं। परमेश्वर के साथ संगति देर सहन नहीं करती; हमारे विचार और धारणाएँ परमेश्वर द्वारा उघाड़कर रख दी जाती हैं। हर पल हम मसीह के आसन के सामने जी रहे हैं, जहाँ हम न्याय से गुज़रते हैं। हमारे शरीर के भीतर हर जगह पर शैतान का कब्ज़ा है। आज, परमेश्वर की संप्रभुता पुन: प्राप्त करने के लिए, उसके मंदिर को स्वच्छ करना होगा। पूरी तरह से परमेश्वर के अधीन होने के लिए हमें जीवन-मरण के संघर्ष में

संलग्न होना होगा। केवल हमारी पुरानी अस्मिता को सलीब पर चढ़ाए जाने के बाद ही मसीह का पुनरुत्थित जीवन संप्रभुता में शासन कर सकता है।

अब पवित्र आत्मा हमारे उद्धार की लड़ाई लड़ने के लिए हमारे हर कोने में धावा बोलता है! जब तक हम अपने आपको नकारने और परमेश्वर के साथ सहयोग करने के लिए तैयार हैं, तब तक परमेश्वर निश्चित रूप से हमें हर समय भीतर से रोशन और शुद्ध करेगा, और उसे नए सिरे से प्राप्त करेगा, जिस पर शैतान ने कब्ज़ा कर रखा है, ताकि हम परमेश्वर द्वारा शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण किए जा सकें। समय बरबाद मत करो—और हर क्षण परमेश्वर के वचन के भीतर रहो। संतों के साथ बढ़ो, राज्य में लाए जाओ, और परमेश्वर के साथ महिमा में प्रवेश करो।

अध्याय 2

फ़िलाडेल्फ़िया की कलीसिया ने अपना आकार ले लिया है, और यह पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह और दया के कारण हुआ है। परमेश्वर के लिए प्रेम अनेक संतों में जगता है जो बिना डगमगाए अपने आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हैं। वे अपने इस विश्वास पर दृढ़ रहते हैं कि एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने देहधारण किया है, कि वह ब्रह्मांड का मुखिया है जो सभी चीज़ों को नियंत्रित करता है : इसकी पुष्टि पवित्र आत्मा द्वारा की जा चुकी है और यह पर्वतों की तरह अचल है! यह कभी नहीं बदल सकता!

ओह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! आज तुमने हमारी आध्यात्मिक आँखें खोल दी हैं, जिससे अंधे देख रहे हैं, लंगड़े चल रहे हैं, और कुष्ठरोगी चंगे हो रहे हैं। यह तुम ही हो जिसने स्वर्ग की ओर की खिड़की खोल दी है और इसके द्वारा हमें आध्यात्मिक दुनिया के रहस्यों को समझने दिया है। तुम्हारे पवित्र शब्द हमारे भीतर जज़्ब हो गए हैं, और शैतान द्वारा दूषित हमारी मानवता से हम बचा लिए गए हैं। यह तुम्हारा अपरिमेय महान काम है और तुम्हारी महान अपरिमेय दया है। हम तुम्हारे गवाह हैं!

तुम लंबे समय से विनम्रता और ख़ामोशी में छिपे रहे हो। तुम मृत्यु से पुनरुत्थित हुए हो और सूली पर चढ़ने की पीड़ा सहने का, मानव जीवन के सुखों और दुखों का, और साथ-साथ उत्पीड़न और विपत्ति का अनुभव किया है; तुमने मानव संसार के दर्द का अनुभव और स्वाद लिया है, और तुम्हें युग द्वारा त्यागा गया है। देहधारी परमेश्वर स्वयं परमेश्वर है। तुमने हमें परमेश्वर की इच्छा की खातिर मैले के ढेर से बचाया है,

हमें अपने दाहिने हाथ से उठाया है और मुक्त रूप से अपना अनुग्रह हमें दिया है। कोई प्रयास बाकी न रखते हुए, तुमने अपना जीवन हममें गढ़ा है; अपने रक्त, पसीने, और आँसूओं से जो कीमत तुमने चुकाई है, वह संतों में ठोस रूप में उपस्थित है। हम तुम्हारे श्रमसाध्य प्रयासों के परिणाम[क] हैं; हम वह कीमत हैं जो तुमने चुकाई है।

ओह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तुम्हारी प्रेमपूर्ण दया और कृपा, तुम्हारी धार्मिकता और महिमा, तुम्हारी पवित्रता और नम्रता के कारण ही सभी लोग तुम्हारे सामने झुकेंगे और अनंत काल तक तुम्हारी आराधना करेंगे।

आज तुमने सभी कलीसियों को पूरा किया है—फ़िलाडेल्फ़िया की कलीसिया—और इस प्रकार अपनी 6,000 साल की प्रबंधन योजना को पूरा किया है। सभी संत अब नम्रता से तुम्हारे सामने समर्पित हो सकते हैं; वे एक दूसरे से आत्मा में जुड़े हुए हैं और एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक आगे बढ़ते हैं। वे झरने के स्रोत से जुड़े हैं। जीवन का जीवित पानी निरंतर बहता है और वह कलीसिया की सभी गंदगी और कीचड़ को बहा ले जाता है, और एक बार फिर तुम्हारे मंदिर को शुद्ध करता है। हमने व्यावहारिक सच्चे परमेश्वर को जाना है, उसके वचनों में चले हैं, अपने कार्यों और कर्तव्यों को पहचाना है, और कलीसिया के लिए खुद को खपाने के लिए जो कुछ हम कर सकते थे वो हमने किया है। तुम्हारे सामने हर एक पल शांत रहते हुए, हमें पवित्र आत्मा के काम पर ध्यान देना चाहिए ताकि तुम्हारी इच्छा हमारे भीतर अवरुद्ध न हो। संतों के बीच आपसी प्रेम है, और कुछ की मज़बूतियां दूसरों की विफलताओं की भरपाई करेंगी। वे हर पल आत्मा में चल सकते हैं और पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध और प्रकाशित किए गए हैं। सत्य समझने के तुरंत बाद वे उसे अभ्यास में ले आते हैं। वे नई रोशनी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं और परमेश्वर के पदचिह्नों का अनुसरण करते हैं।

सक्रिय रूप से परमेश्वर के साथ सहयोग करो; उसे नियंत्रण सौंपने का अर्थ है उसके साथ चलना। हमारे सभी विचार, धारणाएं, सोच और धर्मनिरपेक्ष उलझनें, धुएं की तरह हवा में गायब हो जाती हैं। हम परमेश्वर को अपनी आत्माओं पर शासन करने देते हैं, उसके साथ चलते हैं और इस तरह उत्थान हासिल करते हुए दुनिया पर विजय प्राप्त करते हैं, और हमारी आत्माएं मुक्त हो जाती हैं और रिहाई प्राप्त करती हैं : जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर राजा बनेगा तो येपरिणाम होंगे। ऐसा कैसे हो सकता है कि हम नृत्य न करें और स्तुति में न गाएं, अपनी प्रशंसा भेंट न करें, और अपने नए भजन न पेश करें?

वास्तव में परमेश्वर की स्तुति करने के कई तरीके हैं : उसका नाम पुकारना, उसके पास आना, उसके बारे में सोचना, प्रार्थना करते हुए पढ़ना, साहचर्य में शामिल होना, चिंतन करना, सोच-विचार करना, प्रार्थना करना और प्रशंसा के गीत गाना। इस तरह की स्तुति में आनंद है, और अभिषेक है; स्तुति में शक्ति है और एक दायित्व भी है। स्तुति में विश्वास है, और एक नई अंतर्दृष्टि भी है।

सक्रिय रूप से परमेश्वर के साथ सहयोग करो, सेवा में समन्वय करो और एक हो जाओ, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छाओं को पूरा करो, एक पवित्र आध्यात्मिक शरीर बनने के लिए तत्पर रहो, शैतान को कुचलो, और उसकी नियति समाप्त करो। फ़िलाडेल्फ़िया की कलीसिया परमेश्वर के सामने आरोहित की गयी है और परमेश्वर की महिमा में प्रकट की जाती है।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "के परिणाम" यह वाक्यांश नहीं है।

अध्याय 3

विजयी राजा अपने शानदार सिंहासन पर बैठता है। उसने छुटकारा दिलाने का कार्य पूरा कर लिया है और महिमा में प्रकट होने के लिए अपने सभी लोगों की अगुआई की है। वह ब्रह्मांड को अपने हाथों में धारण करता है और अपने दिव्य ज्ञान और पराक्रम से उसने अटल सिय्योन का निर्माण किया है। अपने प्रताप से वह पापी दुनिया का न्याय करता है; उसने सभी देशों और सभी लोगों, पृथ्वी और समुद्र और उनमें रहने वाले सभी जीवों पर, और साथ ही स्वच्छंद भोग की मदिरा के नशे में डूबे लोगों पर फैसला सुनाया है। परमेश्वर उनका न्याय ज़रूर करेगा, और वह निश्चित रूप से उन पर क्रोधित होगा और इसमें परमेश्वर की महिमा प्रकट होगी, जिसका न्याय तत्क्षण होता है और अविलंब प्रदान किया जाता है। उसके क्रोध की अग्नि उनके घृणित अपराधों को भस्म कर देगी और किसी भी क्षण उन पर विपत्ति टूटेगी; उन्हें बच निकलने के लिए किसी भी मार्ग और छिपने के किसी भी स्थान का पता नहीं होगा, वे रोएँगे और अपने दाँत पीसेंगे, और अपने ऊपर विनाश ले आएँगे।

परमेश्वर के प्यारे विजयी पुत्र निश्चित रूप से सिय्योन में रहेंगे, उससे कभी विदा नहीं होंगे। बड़ी संख्या में लोग करीब से उसकी आवाज़ सुनेंगे, वे सावधानी से उसके कार्यों पर ध्यान देंगे, और उनकी प्रशंसा की

आवाजें कभी बंद नहीं होंगी। एक सच्चा परमेश्वर प्रकट हुआ है! हम आत्मा में उसके बारे में निश्चित होंगे और ध्यानपूर्वक उसका अनुसरण करेंगे; हम अपनी पूरी ताकत से आगे बढ़ेंगे और अब और नहीं झिझकेंगे। दुनिया का अंत हमारे सामने प्रकट हो रहा है; चर्च के एक उपयुक्त जीवन के साथ-साथ लोग, कामकाज और चीजें, जिनसे हम घिरे हैं, हमारे प्रशिक्षण को घनीभूत कर रही हैं। आओ, जल्दी से अपने हृदयों को वापस लें, जो दुनिया से बहुत प्रेम करते हैं! आओ, जल्दी से अपनी दृष्टि वापस लें, जो इतनी धुँधली है! आओ, अपने कदम रोक लें, ताकि हम सीमाएँ न लाँघ जाएँ। आओ, अपना मुँह बंद करें, ताकि हम परमेश्वर के वचन में जा सकें, और अब अपनी लाभ-हानियों पर झगड़ा न करें। आह, धर्मनिरपेक्ष दुनिया और धन-दौलत के प्रति तुम्हारा लालची शौक—इसे त्याग दो! पतियों, बेटियों और बेटों के साथ तुम्हारा अडिग लगाव—इससे अपने को मुक्त करो! आह, तुम्हारे दृष्टिकोण और पूर्वाग्रह—इनसे पीठ मोड़ लो! आह, जागो; समय कम है! आत्मा के भीतर से देखो, ऊपर देखो, और परमेश्वर को नियंत्रण करने दो। कुछ भी हो जाए, लूत की दूसरी पत्नी न बनो। बेकार समझकर छोड़ दिया जाना कितना दयनीय होता है! सचमुच, कितना दयनीय! आह, जागो!

अध्याय 4

प्रति क्षण हम देखेंगे और प्रतीक्षा करेंगे, आत्मा में शांत रहते हुए और शुद्ध हृदय से खोजते हुए। हम पर चाहे जो भी बीते, हमें आँख मूँदकर संगति में संलग्न नहीं होना चाहिए। हमें परमेश्वर के सम्मुख शांत रहने और निरंतर उसकी संगति में रहने की आवश्यकता है, और तब उसके उद्देश्य निश्चित रूप से हम पर प्रकट होंगे। आत्मा के भीतर, हमें हर समय अंतर करने के लिए तैयार रहना चाहिए, और हमारी आत्मा ऐसी होनी चाहिए जो उत्सुक और अडिग हो। हमें परमेश्वर के सम्मुख जीवन के जल में से ग्रहण करना चाहिए, वह जल जो हमारी सूखी आत्माओं को पोषण देता और फिर से भर देता है। हमें किसी भी समय अपने शैतानी स्वभाव से शुद्ध होने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो दंभी, अभिमानी, उद्धत और आत्म-संतुष्ट है। हमें परमेश्वर के वचन प्राप्त करने के लिए अपने हृदय खोल देने चाहिए, और उसके वचन के आधार पर कार्रवाई करनी चाहिए। हमें उसके वचन का अनुभव करना और उसके प्रति निश्चित होना चाहिए और उसके वचन की समझ हासिल करनी चाहिए, और उसके वचन को अपना जीवन बनने देना चाहिए। यही हमारा स्वर्ग-प्रेषित आह्वान है! जब हम परमेश्वर के वचन द्वारा जीते हैं, केवल तभी हम विजेता

हो सकते हैं!

अब हमारी धारणाएँ बहुत भारी-भरकम हैं, और हम धाराप्रवाह बोलते और उतावलेपन से कार्य करते हैं, और आत्मा के अनुसार कार्य करने में असमर्थ हैं। आज का दिन वैसा नहीं है, जैसा वह पहले हुआ करता था। पवित्र आत्मा का कार्य तेजी से आगे बढ़ता है। हमें परमेश्वर के वचन का विस्तार से अनुभव करना चाहिए; अपने हृदय में हर भाव और विचार, हर गतिविधि और प्रतिक्रिया को स्पष्ट रूप से पहचानने में सक्षम होना चाहिए। किसी के मुँह पर या उसकी पीठ-पीछे हम जो कुछ करते है, उसमें से कुछ भी यीशु के सिंहासन के सामने न्याय से नहीं बच सकता। पवित्र आत्मा हमें गहरे अनुभव के क्षेत्र में मार्गदर्शन देने की प्रक्रिया में है, जहाँ हम सर्वशक्तिमान के संबंध में निश्चित होने के करीब आ जाएँगे।

ब्रह्मांड के परमेश्वर ने हमारी आध्यात्मिक आँखें खोल दी हैं, और आत्मा के रहस्य हम पर लगातार प्रकट किए जा रहे हैं। शुद्ध हृदय से खोजो! कीमत चुकाने के लिए तैयार रहो, एकता से आगे बढ़ो, अपने आपको नकारने के लिए तैयार रहो, अब लालची न बनो, पवित्र आत्मा का अनुसरण करो और परमेश्वर के वचन का आनंद लो, और तब एक संपूर्ण सार्वभौमिक नया मनुष्य प्रकट होगा। वह पल निकट है, जब शैतान अपने अंत को प्राप्त होगा, परमेश्वर की इच्छा पूर्ण होगी, संसार के सारे देश मसीह के राज्य बन जाएँगे, और मसीह हमेशा-हमेशा के लिए राजा की तरह पृथ्वी पर राज करेगा!

अध्याय 5

पर्वत और नदियां बदल जाती हैं, धाराएं अपनी दिशा में बहती रहती हैं, और मनुष्य का जीवन उतना स्थायी नहीं होता जितना पृथ्वी और आकाश का। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर का शाश्वत और पुनर्जीवित जीवन है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी शाश्वत रूप से चलता रहता है! सभी चीज़ें और घटनाएं उसके हाथों में हैं, और शैतान उसके पैरों तले है।

आज परमेश्वर अपने पूर्वनिर्धारित चयन के कारण ही हम लोगों को शैतान के चंगुल से बचाता है। वह वास्तव में हमारा उद्धारक है। मसीह का शाश्वत, पुनर्जीवित जीवन हमारे भीतर निश्चय ही गढ़ दिया गया है, जो हमें परमेश्वर के जीवन से जुड़ने के लिए नियत कर रहा है, ताकि हम निश्चित रूप से उसके रूबरू आ सकें, उसे खा सकें, उसे पी सकें और उसका आनंद ले सकें। यह वह निस्वार्थ बलिदान है जिसे परमेश्वर ने

अपने दिल के खून की कीमत से चुकाया है।

मौसम आते हैं, जाते हैं, आँधी-तूफान से गुज़रते, जीवन के कितने ही दुख-दर्द, उत्पीड़न और यातनाओं को झेलते हुए, दुनिया के कितने ही अस्वीकरण और अभिशाप बर्दाश्त करते हुए, सरकार के कितने ही झूठे आरोपों का सामना करते हुए, फिर भी न तो परमेश्वर में विश्वास और न ही उसका संकल्प ज़रा-सा कम होता है। पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को समर्पित, परमेश्वर के प्रबंधन और योजना को पूरा करने के लिए तहेदिल से काम करते हुए, वह अपने जीवन की परवाह नहीं करता। अपने सभी लोगों के लिए, वह कोई प्रयास नहीं छोड़ता, सावधानी से उनका पोषण और सिंचन करता है। हम चाहे कितने भी अनाड़ी हों, या कितने भी जिद्दी हों, हमें केवल उसके प्रति समर्पित होने की ज़रूरत है, और मसीह का पुनर्जीवित जीवन हमारी पुरानी प्रकृति को बदल देगा...। इन सभी पहले जन्मे पुत्रों के लिए, वह अथक परिश्रम करता है, खाने और आराम की परवाह नहीं करता। कितने ही दिन और रात गुज़रें, कितनी ही तेज़ गर्मी और जमाने वाली ठंड से गुज़रना पड़े, वह सिय्योन में तहेदिल से निगरानी करता है।

दुनिया, घर, काम और हर चीज़ को प्रसन्नता और स्वेच्छा से त्याग देता है, सांसारिक सुख-सुविधाओं से उसे कोई लेना-देना नहीं...। उसके मुँह के वचन हमारे भीतर वार करते हैं, हमारे दिल में गहरी छिपी चीज़ों को उजागर करते हैं। हम कैसे आश्वस्त नहीं हो सकते? उसके मुँह से निकलने वाला हर वाक्य हमारे भीतर किसी भी समय सच साबित हो सकता है। हम जो भी करते हैं, उसके सामने या उससे छिपाकर, ऐसा कुछ नहीं है जो वो नहीं जानता, ऐसा कुछ नहीं है जो वो नहीं समझता। हमारी योजनाओं और व्यवस्थाओं के बावजूद सब उसके सामने प्रकट होगा।

उसके सामने बैठकर, अपनी आत्मा में आनंद महसूस करते हुए, सुखी और शांत रहते हुए, फिर भी हमेशा खालीपन और परमेश्वर के प्रति सचमुच ऋणी महसूस करना : यह एक अकल्पनीय आश्चर्य है और इसे हासिल करना असंभव है। पवित्र आत्मा पर्याप्त रूप से साबित करता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक सच्चा परमेश्वर है! यह एक अकाट्य प्रमाण है! इस समूह के हम लोग, वास्तव में अवर्णनीय रूप से धन्य हैं! यदि परमेश्वर का अनुग्रह और दया नहीं होती, तो हमारा विनाश हो जाता और हमें शैतान का अनुसरण करना पड़ता। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही हमें बचा सकता है!

आह! सर्वशक्तिमान परमेश्वर, व्यवहारिक परमेश्वर! तुम ही हो जिसने हमारी आध्यात्मिक आंखें खोली

हैं, और हमें आध्यात्मिक दुनिया के रहस्यों को देखने दिया है। राज्य की संभावनाएँ अनंत हैं। आइए सावधान रहकर प्रतीक्षा करें। वह दिन बहुत दूर नहीं हो सकता।

युद्ध की लपटें चक्कर लगाती हैं, तोप का धुआं हवा में भर गया है, मौसम गर्म हो गया, जलवायु परिवर्तित हो रही है, महामारी फैलेगी, लोग मरेंगे और बचने की कोई उम्मीद न होगी।

आह! सर्वशक्तिमान परमेश्वर, व्यवहारिक परमेश्वर! तुम हमारे मज़बूत किले हो। तुम हमारा आश्रय हो। हम तुम्हारे पंखों के नीचे सिमटते हैं, और आपदा हम तक नहीं पहुंच सकती। ऐसी है तुम्हारी दिव्य सुरक्षा और देखभाल।

हम सब ऊँचे सुर में गाते हैं; स्तुति करते हैं और हमारा स्तुति-गान पूरे सिय्योन में गूंजता है! सर्वशक्तिमान परमेश्वर, व्यवहारिक परमेश्वर ने हमारे लिए गौरवशाली मंज़िल तैयार की है। सावधान रहो—नज़र रखो! अभी भी देर नहीं हुई है।

अध्याय 6

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, समस्त पदार्थों का मुखिया, अपने सिंहासन से अपनी राजसी शक्ति का निर्वहन करता है। वह समस्त ब्रह्माण्ड और सब वस्तुओं पर राज और सम्पूर्ण पृथ्वी पर हमारा मार्गदर्शन करता है। हम हर क्षण उसके समीप होंगे, और एकांत में उसके सम्मुख आयेंगे, एक पल भी नहीं खोयेंगे और हर समय कुछ न कुछ सीखेंगे। हमारे इर्द-गिर्द के वातावरण से लेकर लोग, विभिन्न मामले और वस्तुएँ, सबकुछ उसके सिंहासन की अनुमति से अस्तित्व में हैं। किसी भी वजह से अपने दिल में शिकायतें मत पनपने दो, अन्यथा परमेश्वर तुम्हें अनुग्रह प्रदान नहीं करेगा। बीमारी का होना परमेश्वर का प्रेम ही है और निश्चित ही उसमें उसके नेक इरादे निहित होते हैं। हालाँकि, हो सकता है कि तुम्हारे शरीर को कुछ पीड़ा सहनी पड़े, लेकिन कोई भी शैतानी विचार मन में मत लाओ। बीमारी के मध्य परमेश्वर की स्तुति करो और अपनी स्तुति के मध्य परमेश्वर में आनंदित हो। बीमारी की हालत में निराश न हो, खोजते रहो और हिम्मत न हारो, और परमेश्वर तुम्हें अपने प्रकाश से रोशन करेगा। अय्यूब का विश्वास कैसा था? सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक सर्वशक्तिशाली चिकित्सक है! बीमारी में रहने का मतलब बीमार होना है, परन्तु आत्मा में रहने का मतलब स्वस्थ होना है। जब तक तुम्हारी एक भी सांस बाकी है, परमेश्वर तुम्हें

मरने नहीं देगा।

पुनरुत्थित मसीह का जीवन हमारे भीतर है। निस्संदेह, परमेश्वर की उपस्थिति में हममें विश्वास की कमी रहती है : परमेश्वर हममें सच्चा विश्वास जगाये। परमेश्वर के वचन निश्चित ही मधुर हैं! परमेश्वर के वचन गुणकारी दवा हैं! वे दुष्टों और शैतान को शर्मिन्दा करते हैं! परमेश्वर के वचनों को समझने से हमें सहारा मिलता है। उसके वचन हमारे हृदय को बचाने के लिए शीघ्रता से कार्य करते हैं! वे शेष सब बातों को दूर कर सर्वत्र शान्ति बहाल करते हैं। विश्वास एक ही लट्ठे से बने पुल की तरह है: जो लोग घृणास्पद ढंग से जीवन से चिपके रहते हैं उन्हें इसे पार करने में परेशानी होगी, परन्तु जो आत्म बलिदान करने को तैयार रहते हैं, वे बिना किसी फ़िक्र के, मज़बूती से कदम रखते हुए उसे पार कर सकते हैं। अगर मनुष्य कायरता और भय के विचार रखते हैं तो ऐसा इसलिए है कि शैतान ने उन्हें मूर्ख बनाया है क्योंकि उसे इस बात का डर है कि हम विश्वास का पुल पार कर परमेश्वर में प्रवेश कर जायेंगे। शैतान अपने विचारों को हम तक पहुँचाने का हर संभव प्रयास कर रहा है। हमें हर पल परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें अपने प्रकाश से रोशन करे, अपने भीतर मौजूद शैतान के ज़हर से छुटकारा पाने के लिए हमें हर पल परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। हमें हमेशा अपनी आत्मा के भीतर यह अभ्यास करना चाहिए कि हम परमेश्वर के निकट आ सकें और हमें अपने सम्पूर्ण अस्तित्व पर परमेश्वर का प्रभुत्व होने देना चाहिए।

अध्याय 7

हमारे आस-पास परिवेशों का उठना आत्मा में हमारी वापसी को बढ़ाता है। एक कठोर दिल से काम मत करो, इस बात की अवहेलना मत करो कि पवित्र आत्मा चिंतित है या नहीं, चालाक बनने की कोशिश न करो और बेपरवाह तथा आत्म-तुष्ट न बनो, या अपनी कठिनाइयों को न बढ़ाओ; केवल एक ही चीज़ जो तुम्हें करनी है वह है भाव और सच्चाई में परमेश्वर की आराधना करना। तुम परमेश्वर के वचनों को पीछे छोड़ नहीं सकते, या उन्हें अनसुना नहीं कर सकते; तुम्हें उन्हें सावधानी से समझना चाहिए, अपनी प्रार्थना पढ़ने को दोहराना चाहिए, और वचनों के भीतर निहित जीवन को आत्मसात करना चाहिए। उन्हें पचाने के लिए समय दिए बिना, भेड़िये की तरह उन्हें व्यर्थ में निगलते न रहो। क्या तुम जो कुछ भी करते हो उसमें परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करते हो? किसी बड़े बच्चे की तरह शेखी न बघारो और जब भी कोई बात घटित हो, तो सब कुछ गड़बड़ न कर डालो। तुम्हें हर दिन, हर घंटे में आध्यात्मिक जीवन से सम्बंधित

अपनी भावना का अभ्यास करना चाहिए, एक पल के लिए भी आराम न करो। तुम्हारी आत्मा कुशाग्र होनी चाहिए। चाहे कोई भी व्यक्ति, घटना, या चीज़ तुम पर पड़े, अगर तुम परमेश्वर के सामने आते हो, तो तुम्हारे पास अनुसरण के लिए एक मार्ग होगा। तुम्हें प्रतिदिन परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना चाहिए, बिना लापरवाही के उनके वचनों को समझना चाहिए, अधिक प्रयास करना चाहिए, इसे विस्तारपूर्वक बिलकुल सही तरीके से प्राप्त करना चाहिए और स्वयं को पूरी सच्चाई से लैस करना चाहिए, ताकि तुम परमेश्वर की इच्छा को गलत समझने से बच सको। तुम्हें अपने अनुभव की सीमा को विस्तृत करना चाहिए और परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने पर ध्यान देना चाहिए। अनुभव के माध्यम से तुम परमेश्वर के बारे में अधिक निश्चित हो पाओगे; अनुभव के बिना, यह कहना कि तुम उसके बारे में निश्चित हो, केवल खोखले शब्द होंगे। हमें अपने दिमाग में स्पष्ट होना चाहिए! जागो! अब और ढील न करो; यदि तुम एक लापरवाह तरीक़े से चीज़ों से निपटते हो और प्रगति के लिए प्रयास नहीं करते हो, तो तुम वास्तव में बिलकुल अंधे हो। तुम्हें पवित्र आत्मा के कार्य पर ध्यान देना चाहिए, पवित्र आत्मा की आवाज़ को सावधानीपूर्वक सुनना चाहिए, परमेश्वर के वचनों के प्रति अपने कानों को खोलना चाहिए, जो भी समय बचा है उसे संजोना चाहिए और जो भी कीमत हो, उसका भुगतान करना चाहिए। अगर तुम्हारे पास फौलाद हो तो इसका इस्तेमाल वहाँ करो जहाँ इसका महत्व हो जैसे कि एक मजबूत तलवार बनाने में; महत्वपूर्ण बात पर अच्छी पकड़ बनाओ और परमेश्वर के वचनों का पालन करने पर ध्यान दो। परमेश्वर के वचनों को छोड़ने के बाद चाहे तुम बाहर से कितना भी अच्छा करो, इसका कोई लाभ नहीं है। केवल बातें बनाकर अभ्यास करना परमेश्वर के लिए अस्वीकार्य होता है—परिवर्तन तुम्हारे व्यवहार, स्वभाव, विश्वास, साहस और अंतर्दृष्टि के माध्यम से आना चाहिए।

वो समय इतना करीब है! चाहे दुनिया की चीज़ें कितनी भी अच्छी हों, उन सभी को किनारे करना होगा। अनेक कठिनाइयाँ और ख़तरे हमें डरा नहीं सकते हैं, न ही टूटता आकाश हमें अभिभूत कर सकता है। इस तरह के संकल्प के बिना तुम्हारे लिए एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बनना बहुत कठिन होगा। जो लोग बुझदिल हैं और जीवन से चिपके रहते हैं, वे परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य नहीं हैं।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक व्यावहारिक परमेश्वर है। चाहे हम कितने भी अज्ञानी हों, वह अभी भी हम पर दया करेगा, उसके हाथ निश्चित रूप से हमें बचाएँगे और वह हमें अब भी परिपूर्ण कर देगा। जब तक हमारे पास एक ऐसा दिल है जो वास्तव में परमेश्वर को चाहता हो, जब तक हम ध्यानपूर्वक अनुपालन

करते हैं और निराश नहीं होते हैं, और हम एक तात्कालिक आवश्यकता की भावना के साथ खोज करते हैं, तब तक वह बिल्कुल हममें से किसी के साथ भी अन्याय नहीं करेगा, वह निश्चित रूप से हममें जिसकी कमी है उसे पूरा कर देगा, और वह हमें संतुष्ट करेगा—यह सब सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दया है।

अगर कोई पेटू और आलसी है, एक संतृप्त, निष्क्रिय जीवन जीता है और हर चीज़ के प्रति बेपरवाह है, तो उसके लिए नुकसान से बचना मुश्किल होगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी चीज़ों और घटनाओं पर वर्चस्व रखता है! जब तक हमारे दिल आशा से हर वक्त उसकी ओर देखते हैं और हम आत्मा में प्रवेश करते हैं और उसके साथ सहभागिता करते हैं, तब तक वह हमें उन सभी चीज़ों को दिखाएगा जिन्हें हम चाहते हैं और उसकी इच्छा का हमारे सामने प्रकट होना निश्चित है; तब हमारे दिल आनंद और शांति में होंगे, और पूर्ण स्पष्टता के साथ स्थिर होंगे। उसके वचनों के अनुसार कार्य करने में सक्षम होना अत्यंत महत्वपूर्ण है; उसकी इच्छा को समझने और उसके वचनों पर निर्भर रहकर जीने में सक्षम होना—केवल यही सच्चा अनुभव है।

केवल परमेश्वर के वचनों को समझने से परमेश्वर के वचनों की सच्चाई हमारे अंदर प्रवेश करने, और हमारा जीवन बनने में, सक्षम होगी। किसी भी व्यावहारिक अनुभव के बिना, तुम कैसे परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करने में सक्षम होगे? यदि तुम परमेश्वर के वचनों को अपने जीवन के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते हो, तो तुम्हारा स्वभाव बदल नहीं पाएगा।

पवित्र आत्मा का काम अब बहुत तेज़ी से आगे बढ़ता है! यदि तुम ध्यानपूर्वक पालन नहीं करते हो और प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करते हो, तो पवित्र आत्मा की द्रुत गति के साथ कदम बनाए रखना मुश्किल होगा। जल्दी करो और सम्पूर्ण परिवर्तन ले आओ अन्यथा तुम शैतान के पैरों तले कुचले जाओगे और उस आग और गंधक की झील में प्रवेश करोगे जिससे बचने को कोई रास्ता नहीं है। जाओ, यथाशक्ति अपनी सर्वोत्तम खोज करो ताकि तुम किनारे न कर दिए जाओ।

अध्याय 8

जब से सर्वशक्तिमान परमेश्वर—राज्य के राजा—की गवाही दी गई है, तब से पूरे ब्रह्मांड में परमेश्वर के प्रबंधन का दायरा पूरी तरह खुलकर सामने आ गया है। परमेश्वर के प्रकटन की गवाही न केवल चीन में

दी गई है, बल्कि सभी राष्ट्रों और सभी स्थानों में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम की गवाही दी गई है। वे सभी इस पवित्र नाम को पुकार रहे हैं, किसी भी तरह से परमेश्वर के साथ सहभागिता करने का प्रयास कर रहे हैं, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छा को समझ रहे हैं और कलीसिया में मिल कर सेवा कर रहे हैं। पवित्र आत्मा इसी अद्‌भुत तरीके से काम करता है।

विभिन्न राष्ट्रों की भाषाएँ एक दूसरे से अलग हैं लेकिन आत्मा एक ही है। यह आत्मा संसार भर की कलीसियाओं को जोड़ता है और बिना किसी भेदभाव के, परमेश्वर के साथ एक है, और इसमें कोई शक नहीं है। पवित्र आत्मा अब उन्हें पुकारता है और उसकी वाणी उन्हें जगाती है। यह परमेश्वर की दया की वाणी है। वे सब सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पवित्र नाम को पुकार रहे हैं! वे स्तुति भी करते हैं और गाते भी हैं। पवित्र आत्मा के कार्य में कभी भी कोई चूक नहीं हो सकती : और सही मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए ये लोग किसी भी हद तक जाते हैं, वे पीछे नहीं हटते हैं—चमत्कारों पर चमत्कार होते रहते हैं। लोगों के लिए इसकी कल्पना करना भी मुश्किल होता है और इसका अनुमान लगाना उन्हें असंभव लगता है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर सारे ब्रह्मांड में जीवन का राजा है! वह महिमामय सिंहासन पर बैठता है और दुनिया का न्याय करता है, सभी पर वर्चस्व रखता है, और सभी राष्ट्रों पर शासन करता है; सभी लोग उसके सामने घुटने टेकते हैं, उससे प्रार्थना करते हैं, उसके करीब आते हैं और उसके साथ संवाद करते हैं। चाहे तुमने परमेश्वर में कितने भी लम्बे समय से विश्वास रखा हो, चाहे तुम्हारा रुतबा कितना भी ऊंचा हो या तुम्हारी वरिष्ठता कितनी भी अधिक हो, यदि तुम अपने दिल में परमेश्वर का विरोध करते हो तो तुम्हारा न्याय किया जाना चाहिए और तुम्हें परमेश्वर के सामने दंडवत होकर दर्द भरा अनुनय-विनय करना चाहिए; यह वास्तव में तुम्हारा अपने कर्मों के फल को भुगतना है। यह विलाप का स्वर अग्नि और गंध की झील में पीड़ा सहने का स्वर है, और यह परमेश्वर की लोहे की छड़ी से प्रताड़ित होने का क्रंदन है; यह मसीह के आसन के सामने किया गया न्याय है।

कुछ लोग डरते हैं, कुछ अपराधबोध-ग्रस्त महसूस करते हैं, कुछ सतर्क होते हैं, कुछ लोग सावधानीपूर्वक सुनने पर ध्यान देते हैं, कुछ को अत्यधिक पछतावा महसूस होता है और वे पश्चाताप करते हैं और नई शुरुआत करते हैं, कुछ दर्द में फूट-फूटकर रोते हैं, कुछ लोग सबकुछ त्याग देते हैं और बेतहाशा खोज करते हैं, कुछ लोग खुद की जाँच करते हैं और आगे अंधाधुंध ढंग से काम करने की हिम्मत नहीं करते, कुछ परमेश्वर के करीब आने की कोशिश करते हैं, कुछ अपने विवेक की जाँच करते हैं, और

पूछते हैं कि उनका जीवन प्रगति क्यों नहीं कर सकता। कुछ लोग दुविधा में ही रहते हैं, कुछ अपने पैरों की बेड़ियों को खोलकर, साहसपूर्वक आगे बढ़ते हैं, वे मूल बात को समझ लेते हैं और अपने जीवन की देखभाल करने में कोई समय नहीं खोते। कुछ अभी भी संशय करते हैं और अपने दर्शन में अस्पष्ट हैं, और वे जो बोझ उठाते और अपने दिल पर ढोते हैं वह वास्तव में भारी होता है।

यदि तुम्हारा मन स्पष्ट नहीं है, तो पवित्र आत्मा के पास तुम्हारे अन्दर कार्य करने का कोई तरीक़ा नहीं होगा। तुम जिस पर अपना ध्यान केंद्रित करते हो, जिस मार्ग पर चलते हो और तुम्हारा दिल जिसकी लालसा करता है, वह सब तुम्हारी धारणाओं और तुम्हारी आत्म-तुष्टि से भरा होता है! मैं अधीरता में झुलसता हूँ—काश मैं तुम सभी को तुरंत पूर्ण कर सकता ताकि तुम जल्दी ही मेरे द्वारा प्रयुक्त किए जाने योग्य बन सको, और मेरे भारी बोझ को हल्का कर सको। लेकिन तुम सभी को इस तरह देखकर, मुझे इस प्रकार से तेज़ी से परिणाम हासिल नहीं होंगे। मैं केवल धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकता हूँ, धीरे-धीरे चल सकता हूँ और धीरे-धीरे सहारा देकर तुम्हारा नेतृत्व कर सकता हूँ। आह, तुम लोगों को अपना दिमाग स्पष्ट करना चाहिए! क्या छोड़ देना चाहिए, तुम्हारे ख़जाने क्या हैं? तुम्हारी घातक कमज़ोरियाँ क्या हैं, तुम्हारी बाधाएँ क्या हैं, इन प्रश्नों पर अपनी आत्मा में विचार करो और मेरे साथ सहभागिता करो। मैं चाहता हूँ कि तुम सब अपने दिलों में ख़ामोशी से मेरी ओर देखो; मैं तुम लोगों की कोरी बातें नहीं चाहता। तुममें से जो सच्चाई से मेरे सामने खोजते हैं, मैं उनके लिए सब कुछ प्रकट कर दूँगा। मेरी गति तेज़ होती जाती है; यदि तुम्हारा दिल मेरा आदर करता है और तुम हर समय अनुपालन करते हो, तो मेरी इच्छा तुम्हें प्रेरणा के माध्यम से किसी भी समय प्रदान की जा सकती है और तुम्हारे लिए प्रकट की जा सकती है। जो लोग प्रतीक्षा करने पर ध्यान देते हैं, वे पोषण पाएँगे और आगे बढ़ेंगे। जो लोग विचारशून्य हैं, उनके लिए मेरे दिल को समझना मुश्किल होगा, और वे एक बंद रास्ते पर निकल पड़ेंगे।

मैं चाहता हूँ कि तुम सब जल्दी से उठ जाओ और मेरे साथ सहयोग करो, और सिर्फ़ एक दिन और एक रात के लिए नहीं बल्कि हमेशा के लिए मेरे करीब हो जाओ। मेरा हाथ हमेशा तुम सभी को आगे खींचता रहे और तुम सब को प्रेरणा देता रहे, तुम लोगों को आगे धकेलता रहे, तुम सभी को आगे बढ़ने के लिए मनाता रहे और आग्रह करता रहे! तुम लोग तो मेरी इच्छा को समझ ही नहीं पाते हो। तुम्हारी अपनी धारणाओं की और सांसारिक उलझनों की बाधाएँ बहुत गंभीर हैं, और तुम मेरे साथ गहरी निकटता पाने में असमर्थ हो। स्पष्ट कहूँ तो, तुम मेरे पास तभी आते हो जब तुम्हारे पास कोई समस्या होती है, लेकिन जब

कोई समस्या नहीं होती तो तुम्हारे दिल परेशान हो जाते हैं। तुम्हारे दिल एक खुले बाज़ार की तरह बन जाते हैं और शैतानी स्वभाव से भर जाते हैं; वे सांसारिक चीज़ों में व्यस्त रहते हैं और तुम नहीं जान पाते कि मेरे साथ सहभागिता कैसे करनी है। मैं तुम लोगों के बारे में चिंता कैसे न करूँ? लेकिन चिंता करने से कोई बात नहीं बनेगी। समय निकला जा रहा है और कार्य बहुत कठिन है। मेरे कदम बहुत तेज़ी से आगे बढ़ते हैं; तुम लोगों को अपना सब कुछ मजबूती से थामे रखना होगा, हर पल मेरी ओर देखो, और मेरे साथ घनिष्ठता से सहभागिता करो। तब निश्चित रूप से मेरी इच्छा किसी भी समय तुम्हारे सामने प्रकट की जाएगी। जब तुम सभी मेरे दिल को समझ लेते हो, तो तुम्हारे पास आगे बढ़ने का तरीक़ा होता है। तुम्हें अब और संकोच नहीं करना चाहिए। मेरे साथ सच्ची सहभागिता करो, और धोखा देने या चालाक बनने की कोशिश मत करो; यह केवल खुद को धोखा देना होगा और मसीह के आसन के सामने यह किसी भी क्षण प्रकट हो जाएगा। खरे सोने को आग में परखे जाने का भय नहीं होता—यह सच्चाई है! कोई हिचकिचाहट मत रखो, निराश या दुर्बल मत बनो। अपनी आत्मा में सीधे मेरे साथ अधिक सहभागिता करो, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करो और मैं निश्चित रूप से अपने समय के अनुसार तुम्हारे सामने प्रकट हूँगा। तुम्हें, पूरी तरह से ध्यान रखना होगा और मेरे प्रयासों को तुम पर बर्बाद नहीं होने देना है; और एक पल को भी खोना नहीं। जब तुम्हारा दिल मेरे साथ निरंतर सहभागिता में रहता है, जब तुम्हारा दिल लगातार मेरे सामने रहता है, तो कोई भी व्यक्ति, कोई भी घटना, कोई भी बात, कोई पति, बेटा या बेटी तुम्हारे दिल में मेरे साथ सहभागिता करने में विघ्न नहीं डाल सकते। जब तुम्हारा दिल पवित्र आत्मा द्वारा लगातार प्रतिबंधित किया जाएगा और जब तुम हर पल मेरे साथ सहभागिता करोगे, तो मेरी इच्छा निश्चित रूप से तुम्हारे लिए प्रकट की जाएगी। जब तुम लगातार इस तरह से मेरे करीब आते हो, चाहे तुम्हारा परिवेश कैसा भी हो या तुम्हें किसी भी व्यक्ति, घटना या चीज़ का सामना करना पड़े, तुम भ्रमित नहीं होगे बल्कि तुम्हारे पास आगे बढ़ने का एक मार्ग होगा।

यदि आम तौर पर तुम बड़े या छोटे मामलों में कुछ भी गड़बड़ी नहीं करते हो, यदि तुम्हारी हर सोच और विचार शुद्ध है, और यदि तुम अपनी आत्मा में शांत हो, तो जब भी तुम्हारे सामने कोई समस्या आएगी तो मेरे वचन तुम्हारे भीतर तुरंत प्रेरित होंगे, एक उज्ज्वल दर्पण की तरह, जिसमें तुम स्वयं को जाँच सको, और तब तुम्हारे पास आगे बढ़ने का एक मार्ग होगा। इसे सही बीमारी के लिए सही दवा लेना कहते हैं! और स्थिति निश्चित रूप से ठीक हो जाएगी—ऐसी है परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता। मैं निश्चित रूप से उन

सभी को प्रकाशित और प्रबुद्ध कर दूँगा जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं और जो सच्ची निष्ठा से खोज करते हैं। मैं तुम सभी को आध्यात्मिक दुनिया के रहस्य और आगे का मार्ग दिखाऊँगा, जिससे तुम जितनी जल्दी हो सके अपने पुराने भ्रष्ट स्वभाव को दूर कर सको, ताकि तुम जीवन की परिपक्वता को प्राप्त कर सको और मेरे उपयुक्त बन सको, और सुसमाचार का काम तेज़ी से और बिना किसी बाधा के आगे बढ़ सके। तभी मेरी इच्छा संतुष्ट होगी, तभी परमेश्वर की छः हजार साल की प्रबंधन योजना, कम से कम समय में पूरी होगी। परमेश्वर राज्य को हासिल करेगा और नीचे पृथ्वी पर आ जाएगा, और हम एक साथ महिमा में प्रवेश करेंगे!

अध्याय 9

मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि मेरे वचन के बारे में थोड़ी भी अस्पष्टता या लापरवाही अस्वीकार्य है; तुम्हें मेरे इरादों पर ध्यान देना, उनका पालन करना और उन्हें आचरण में लाना चाहिए। तुम्हें सदैव सतर्क रहना चाहिए और कभी भी अहंकारी और दम्भी स्वभाव प्रदर्शित नहीं करना चाहिए; और तुम्हें अपने भीतर जड़ें जमाए बैठे उस पुराने प्राकृतिक स्वभाव को उखाड़ फेंकने के लिए सदैव मुझ पर भरोसा करना चाहिए। तुम्हें मेरे सामने सदैव सामान्य मनःस्थिति बनाए रख पाना चाहिए, और स्थिरचित्त स्वभाव रखना चाहिए। तुम्हारी सोच धीर-गंभीर और स्पष्ट होनी चाहिए और यह किसी भी व्यक्ति, घटना या चीज़ से नियंत्रित होनी या डोलनी नहीं चाहिए। तुम्हें मेरी उपस्थिति में सदैव नीरवता में समर्थ होना चाहिए और मेरे साथ निरंतर निकटता और सहभागिता बनाए रखनी चाहिए। मेरे लिए अपनी गवाही में तुम्हें ताक़त और रीढ़ दिखानी चाहिए और अडिग रहना चाहिए; उठ और मेरी तरफ़ से बोल और डर मत कि दूसरे लोग क्या कहते हैं। बस मेरे इरादों को संतुष्ट कर और दूसरों को अपने पर नियंत्रण मत करने दे। मैं तेरे समक्ष जो प्रकट करता हूँ, उसका पालन मेरे इरादों के अनुसार किया जाना चाहिए और इसमें विलंब नहीं किया जा सकता है। तू अंतर्मन की गहराई में कैसा महसूस करता है? तू असहज है, नहीं है क्या? तू समझ जाएगा। ऐसा क्यों है कि मेरे दायित्व पर विचार करते समय तू न तो मेरी तरफ़ से खड़ा हो पाता है और न बोल पाता है? तू छोटे-छोटे कुचक्र रचने पर अड़ा है, लेकिन मैं सब कुछ बिल्कुल साफ़-साफ़ देखता हूँ। मैं तेरा सहारा और तेरी ढाल हूँ, और सब कुछ मेरे हाथों में है। तो फिर तुझे किस बात का डर है? क्या तू ज़रूरत से ज़्यादा भावुक नहीं हो रहा है? तुझे शीघ्रातिशीघ्र अपनी भावनाओं को निकाल फेंकना चाहिए; मैं

भावनाओं के वशीभूत कार्य नहीं करता हूँ, बल्कि धार्मिकता का प्रयोग करता हूँ। यदि तेरे माता-पिता कुछ भी ऐसा करते हैं जिससे कलीसिया को कोई लाभ नहीं होता, तो वे बच नहीं सकते हैं! मेरे इरादे तेरे समक्ष प्रकट कर दिए गए हैं और तू उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता है। बल्कि, तुझे अपना पूरा ध्यान उन पर लगाना चाहिए और पूरे मनोयोग से उनका पालन करने के लिए शेष सब कुछ छोड़ देना चाहिए। मैं सदैव तुझे अपने हाथों में रखूँगा। सदैव डरपोक मत बन और अपने पति या पत्नी के नियंत्रण के अधीन मत रह; तुझे मेरी इच्छा अवश्य पूरी होने देना चाहिए।

आस्था रख! विश्वास रख! मैं तेरा सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। शायद तुझमें इसे देखने की कुछ अंतर्दृष्टि है, लेकिन फिर भी तुझे सतर्क रहना ही होगा। कलीसिया, मेरी इच्छा और मेरे प्रबंधन की ख़ातिर, तुझे पूरी तरह समर्पित होना होगा, और सभी रहस्य और परिणाम तुझे स्पष्ट रूप से दिखाए जाएँगे। इसमें अब और विलंब नहीं होगा; और दिन समापन की ओर बढ़ रहे हैं। तुझे क्या करना चाहिए? तुझे अपने जीवन में बढ़ने और परिपक्व होने का प्रयास कैसे करना चाहिए? तू अपने आप को मेरे लिए जल्दी से जल्दी कैसे उपयोगी बना सकता है? तू मेरी इच्छा कैसे पूरी कर पाएगा? ये प्रश्न मेरे साथ बहुत सोच-विचार और अधिक गहरी संगति को आवश्यक बना देते हैं। मुझ पर भरोसा कर, मुझ पर विश्वास कर, कभी भी लापरवाह न बन, और अपना सामान्य कामकाज मेरे मार्गदर्शन के अनुसार करने में सक्षम बन। तुझे सत्य से सुसज्जित होना ही चाहिए और तुझे इसे अधिक अक्सर खाना और पीना चाहिए। इससे पहले कि हर सत्य को स्पष्ट रूप से समझा जा सके, इसे आचरण में लाना ही चाहिए।

क्या अब तुझे लगता है कि तेरे पास समय पर्याप्त नहीं है? क्या तुझे यह भी अनुभूति है कि भीतर से तू पहले से भिन्न है और तेरी ज़िम्मेदारी अब बहुत भारी प्रतीत होती है? मेरे इरादे तुझ पर हैं; तेरे विचार स्पष्ट होने ही चाहिए, उनसे अलग और दूर नहीं, और सदैव मुझसे जुड़ा रह। सदैव मेरे निकट रह, मेरे साथ वार्तालाप कर, मेरे हृदय को चोट न पहुँचाने का ध्यान रख, और दूसरों के साथ मिल-जुलकर सेवा करने में समर्थ बन, जिससे मेरे इरादे सदैव तुम लोगों के समक्ष प्रकट होंगे। घनिष्ठता से ध्यान दे! हर समय! घनिष्ठता से ध्यान! रत्ती भर भी ढीला मत पड़; यही तेरा कर्तव्य है और इसी के भीतर मेरा कार्य रहता है।

इस बिंदु पर तुझे थोड़ी-सी समझ और प्रतीति प्राप्त हुई हो सकती है कि यह बहुत अद्भुत है। अतीत में तेरे मन में संदेह रहे हो सकते हैं, तुझे लगा हो सकता है कि यह मनुष्य की धारणाओं, विचारों और चिंतन से बिल्कुल भिन्न था, लेकिन अब तू इसे मूलतः समझता है। यह मेरा चमत्कारिक कार्य है और यह

परमेश्वर का भी चमत्कारिक कार्य है; इसमें प्रवेश करते हुए तुझे पूरी तरह चौतरफा जागृत और प्रतीक्षारत होना चाहिए। समय मेरे हाथ में है; इसे बर्बाद मत कर और पल भर के लिए भी ढीला मत पड़; समय बर्बाद करने से मेरे कार्य में विलंब होता है और इसके कारण तेरे भीतर मेरी इच्छा बाधित होती है। तुझे बारंबार चिंतन-मनन और मेरे साथ संगति करनी चाहिए। तुझे अपने सभी कार्यकलापों, गतिविधियों, चिंतन, विचारों, अपने परिवार, अपने पति, अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों को भी अवश्य मेरे समक्ष लाना चाहिए। अपना अभ्यास करते हुए आत्म पर भरोसा मत कर, अन्यथा मुझे क्रोध आ जाएगा, और तब तेरे नुक़सान बहुत भारी होंगे।

हर समय अपने कदमों पर अंकुश रख और सदैव मेरे वचनों के भीतर चल। तेरे भीतर मेरी बुद्धि होनी ही चाहिए। यदि कठिनाइयाँ तेरे सामने आती हैं तो तू मेरे समक्ष आ और मैं तुझे मार्गदर्शन दूँगा। परेशानी उत्पन्न मत कर और न ही बेतरतीब ढंग से वार्तालाप कर। यदि तेरे जीवन को कोई लाभ नहीं मिलता है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि तुझमें ज्ञान का अभाव है और तू अच्छे और बुरे वचनों के बीच अंतर नहीं कर सकता है। जब तक तुझे नुक़सान नहीं पहुँचता, तू बूरी दशा में नहीं होता, और तू पवित्र आत्मा की उपस्थिति से वंचित नहीं हो जाता, तब तक तुझे इसका अहसास नहीं होगा। लेकिन तब तक, बहुत देर हो चुकी होगी। समय का इतना दबाव है अब, इसलिए तुझे जीवन की दौड़ में थोड़ा भी पिछड़ना नहीं चाहिए; तुझे मेरे पदचिह्नों का बारीकी से अनुसरण करना चाहिए। जब कोई कठिनाई उत्पन्न हो, तो मेरे निकट और सीधे मेरी संगति में रहकर बारंबार चिंतन-मनन में लिप्त हो। यदि तू इस मार्ग को समझ पाता है, तो तेरे आगे प्रवेश आसान होता जाएगा।

मेरे वचन सिर्फ तेरी ओर निर्देशित नहीं हैं। कलीसिया में सभी में विभिन्न दृष्टियों से कमियाँ हैं। तुम लोगों को अपने आध्यात्मिक समर्पणों के दौरान और अधिक सहभागिता करनी चाहिए, वचनों को स्वतंत्र रूप से खाने और पीने में सक्षम होना चाहिए, और प्रमुख सत्यों को समझकर उन्हें तत्काल अभ्यास में लाना चाहिए। तुझे मेरे वचन की वास्तविकता का अभ्यस्त हो जाना चाहिए: इसके मर्म और सिद्धांतों को समझ; और अपनी पकड़ को ढीला मत पड़ने दे। सदैव मनन कर और सदैव मेरे साथ संगति कर, और उत्तरोत्तर चीज़ें प्रकट होती जाएँगी। ऐसा नहीं हो सकता कि तू कुछ देर के लिए परमेश्वर के समक्ष आए, और फिर उसके समक्ष अपने हृदय के शांत होने की प्रतीक्षा किए बिना अपने साथ होने वाली किसी और घटना से परेशान हो जाए। तू चीज़ों के बारे में सदैव उलझन में और अस्पष्ट रहता है और मेरा चेहरा नहीं

देख पाता; इस तरह तो तू मेरे हृदय की स्पष्ट समझ प्राप्त नहीं कर सकता और यदि तू इसे थोड़ा-सा समझ भी ले, तब भी तू अनिश्चित और संदेह में रहता है। जब तक तेरा हृदय पूर्णतः मेरा नहीं हो जाता, और तेरा मन किसी भी सांसारिक चीज़ से अब और विचलित नहीं होता, और जब तू स्पष्ट और शांत मन से प्रतीक्षा कर सकता है, तभी मैं अपने इरादों के अनुसार, तुम लोगों के समक्ष एक-एक कर प्रकाशन करूँगा। तुम लोगों को मेरे प्रति निकटता के इस मार्ग को समझना चाहिए। जो भी तुझ पर प्रहार करता और तुझे श्राप देता है, या लोगों द्वारा तुझे दी गई चीज़ें चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हों, यदि वे तुझे परमेश्वर के निकट रहने से रोकती हैं तो यह अस्वीकार्य है। अपने हृदय को मेरी पकड़ में रहने दे और मेरी बगल से कभी न जा। इस तरह की निकटता और सहभागिता के साथ, तेरे माता-पिता, पति, बच्चे, अन्य रिश्ते-नाते, या सांसारिक उलझनें सभी दूर बह जाएँगे। तू अपने हृदय में लगभग अवर्णनीय मिठास का आनंद लेगा, और तू एक सुगंधित और रुचिकर स्वाद का अनुभव करेगा; इतना ही नहीं, तू सचमुच मेरा अभिन्न बन जाएगा। यदि तू इसी तरह बना रहता है, तो तुम लोग समझोगे कि मेरे हृदय में क्या है। जीवन में आगे बढ़ते हुए तू अपने मार्ग से कभी न भटकेगा, क्योंकि मैं तुम लोगों का मार्ग हूँ, और सब कुछ मेरे कारण विद्यमान है। तेरा जीवन कितना परिपक्व है, जब तू सांसारिकता से संबंध तोड़ पाएगा, जब तू अपनी भावनाओं को निकाल फेंक पाएगा, कब तू अपने पति और बच्चों को पीछे छोड़ पाएगी, तब तेरा जीवन कितना परिपक्व होगा, जब तेरा जीवन परिपक्व होगा ... ये सभी चीजें मेरे समय के अनुसार घटित होंगी। उद्विग्न होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

तुझे सकारात्मक की तरफ़ से प्रवेश प्राप्त करना चाहिए। यदि तू हाथ पर हाथ धरे प्रतीक्षा करता है, तो तू अब भी नकारात्मक हो रहा है। तुझे आगे बढ़कर मेरे साथ सहयोग करना चाहिए; मेहनती बन, और आलसी कभी न बन। सदैव मेरी संगति में रह और मेरे साथ कहीं अधिक गहरी अंतरंगता प्राप्त कर। यदि तेरी समझ में नहीं आता है, तो त्वरित परिणामों के लिए अधीर मत बन। ऐसा नहीं है कि मैं तुझे नहीं बताऊँगा; बात यह है कि मैं देखना चाहता हूँ कि जब तू मेरी उपस्थिति में होता है क्या केवल तभी तू मुझ पर भरोसा करता है; और मुझ पर अपनी निर्भरता में तू आत्मविश्वास से पूर्ण है या नहीं। तुझे सदैव मेरे निकट रहना चाहिए और सभी विषय मेरे हाथों में रख देने चाहिए। खाली हाथ वापस मत जा। जब तू कुछ समयावधि के लिए बिना जाने-बूझे मेरे निकट रह लिया होगा, उसके पश्चात मेरे इरादे तुझ पर प्रकट होंगे। यदि तू उन्हें समझ लेता है, तो तू वास्तव में मेरे आमने-सामने होगा, और तूने वास्तव में मेरा चेहरे पा लिया

होगा। तेरे भीतर अधिक स्पष्टता और दृढ़ता होगी, और तेरे पास भरोसा करने के लिए कुछ होगा। तब तेरे पास सामर्थ्य के साथ-साथ आत्मविश्वास भी होगा, तेरे पास आगे का मार्ग भी होगा। हर चीज़ तेरे लिए आसान हो जाएगी।

अध्याय 10

तुम्हें किसी भी चीज़ से भयभीत नहीं होना चाहिए; चाहे तुम्हें कितनी भी मुसीबतों या खतरों का सामना करना पड़े, तुम किसी भी चीज़ से बाधित हुए बिना, मेरे सम्मुख स्थिर रहने के काबिल हो, ताकि मेरी इच्छा बेरोक-टोक पूरी हो सके। यह तुम्हारा कर्तव्य है; अन्यथा मैं तुम पर क्रोधित हो जाऊँगा और अपने हाथ से मैं...। फिर तुम अनंत मानसिक पीड़ा भोगोगे। तुम्हें सबकुछ सहना होगा; मेरे लिए, तुम्हें अपनी हर चीज़ का त्याग करने को तैयार रहना होगा, और मेरा अनुसरण करने के लिए सबकुछ करना होगा, अपना सर्वस्व व्यय करने के लिए तैयार रहना होगा। अब वह समय है जब मैं तुम्हें परखूंगा : क्या तुम अपनी निष्ठा मुझे अर्पित करोगे? क्या तुम ईमानदारी से मार्ग के अंत तक मेरे पीछे चलोगे? डरो मत; मेरी सहायता के होते हुए, कौन इस मार्ग में बाधा डाल सकता है? यह स्मरण रखो! इस बात को भूलो मत! जो कुछ घटित होता है वह मेरी नेक इच्छा से होता है और सबकुछ मेरी निगाह में है। क्या तुम्हारा हर शब्द व कार्य मेरे वचन के अनुसार हो सकता है? जब तुम्हारी अग्नि परीक्षा होती है, तब क्या तुम घुटने टेक कर पुकारोगे? या दुबक कर आगे बढ़ने में असमर्थ होगे?

तुम में मेरी हिम्मत होनी चाहिए, जब उन रिश्तेदारों का सामना करने की बात आए जो विश्वास नहीं करते, तो तुम्हारे पास सिद्धांत होने चाहिए। लेकिन तुम्हें मेरी खातिर किसी भी अन्धकार की शक्ति से हार नहीं माननी चाहिए। पूर्ण मार्ग पर चलने के लिए मेरी बुद्धि पर भरोसा रखो; शैतान के किसी भी षडयंत्र को काबिज़ न होने दो। अपने हृदय को मेरे सम्मुख रखने हेतु पूरा प्रयास करो, मैं तुम्हें आराम दूँगा, तुम्हें शान्ति और आनंद प्रदान करूँगा। दूसरों के सामने एक विशेष तरह का होने का प्रयास मत करो; क्या मुझे संतुष्ट करना अधिक मूल्य और महत्व नहीं रखता? मुझे संतुष्ट करने से क्या तुम और भी अनंत और जीवनपर्यंत शान्ति या आनंद से नहीं भर जाओगे? तुम्हारी आज की तकलीफ़ें बताती हैं कि तुम्हारी आशीष भविष्य में कितनी बड़ी होगी; वे अवर्णनीय हैं। तुम्हें जो आशीष प्राप्त होगी, वे कितनी बड़ी होंगी, ये तुम नहीं जानते; तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। आज वह साकार हो गयी है; बिल्कुल वास्तविक! यह

बहुत दूर नहीं है—क्या तुम उसे देख सकते हो? इसका हर अंतिम अंश मुझमें है; आगे का मार्ग कितना रोशन है! अपने आंसू पोंछो, तथा दुःख और दर्द महसूस मत करो। सब-कुछ मेरे हाथों से व्यवस्थित किया जाता है, और मेरा लक्ष्य यह है कि तुम्हें जल्द विजेता बनाऊं और तुम्हें अपने साथ महिमा में ले चलूँ। तुम्हारे साथ जो कुछ होता है, उसके अनुरूप तुम्हें आभारी होना चाहिए और भरपूर स्तुति करनी चाहिए; इससे मुझे गहरी संतुष्टि मिलेगी।

मसीह का सर्वोत्कृष्ट जीवन पहले ही प्रकट हो चुका है; ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे तुम डरो। शैतान हमारे पैरों के नीचे हैं, और उनका समय अधिक लंबा नहीं होगा। जागो! अनैतिकता के संसार को त्यागो; मृत्यु के गर्त से खुद को स्वतंत्र करो! चाहे कुछ भी हो जाए, मेरे प्रति निष्ठावान रहो, और बहादुरी से आगे बढ़ो; मैं तुम्हारी शक्ति की चट्टान हूँ, इसलिए मुझ पर भरोसा रखो!

अध्याय 11

क्या मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ? क्या मैं तुम्हारा राजा हूँ? क्या तुमने वास्तव में मुझे अपने भीतर राजा के रूप में शासन करने की अनुमति दी है? तुम्हें अपने बारे में पूरी तरह से चिंतन करना चाहिए। क्या तुमने नई रोशनी के आने पर उसकी जाँच-पड़ताल कर उसे नकारा नहीं था, यहाँ तक कि उसका अनुसरण किए बिना ही रुक नहीं गए थे? इसके लिए तुम न्याय से गुजरोगे और अपनी कयामत में गिरोगे; लोहे की छड़ी से तुम्हारा न्याय और पिटाई की जाएगी, और तुम पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव नहीं करोगे। तुम जल्दी ही जोर से चिल्लाते हुए रोने लगोगे और आराधना में अपने घुटने मोड़ लोगे। मैंने हमेशा तुम लोगों को बताया है और हमेशा तुमसे बात की है; मैंने कभी तुम लोगों को अपने वचन देने से मना नहीं किया है। याद करो : मैं कब तुम लोगों को कुछ बताने से चूका हूँ? फिर भी, कुछ लोग हैं, जो चीजों को गलत तरीके से करने में लगे रहते हैं। वे संदेह की उस धुंध में खो गए हैं, जो सूर्य को ढक लेती है, और वे कभी रोशनी नहीं देखते। क्या ऐसा इसलिए नहीं है, क्योंकि उनका "अहं" का भाव बहुत ज्यादा मजबूत है, और उनकी अपनी धारणाएँ बहुत बड़ी हैं? तुम्हारे मन में मेरे लिए कब से सम्मान रहा है? तुम्हारे दिल में मेरे लिए कब से जगह रही है? जब तुम असफल हुए, जब तुमने खुद को अक्षम पाया, और जब तुम पूरी तरह से विकल्पहीन हो जाते हो, केवल तभी तुम मेरी प्रार्थना करते हो! तो ठीक है : अब तुम अपने दम पर चीजें क्यों नहीं करते? तुम मनुष्यो! यह तुम्हारा पुराना अहं ही है, जिसने तुम्हें बरबाद किया है!

कुछ लोग मार्ग नहीं पा सकते, और वे नई रोशनी के साथ नहीं चल सकते। वे केवल उन चीजों के बारे में संगति करते हैं, जो उन्होंने पहले देखी हैं; उनके लिए कुछ भी नया नहीं है। ऐसा क्यों है? तुम अपने भीतर रहते हो और तुमने मुझ पर दरवाजा बंद कर दिया है। पवित्र आत्मा के कार्य के तरीके बदलते देख तुम हमेशा गलत होने के बारे में सतर्क रहते हो। परमेश्वर के लिए तुम्हारा सम्मान कहाँ है? क्या तुमने उसे परमेश्वर की उपस्थिति की शांति में खोजा है? तुम बस आश्चर्य करते हो : "क्या पवित्र आत्मा वास्तव में इस तरह कार्य करता है?" कुछ लोगों ने देखा है कि यह पवित्र आत्मा का कार्य है, फिर भी उनके पास इस बारे में कहने के लिए चीजें हैं; अन्य लोग मानते हैं कि यह परमेश्वर का वचन है, फिर भी वे इसे स्वीकार नहीं करते। उनमें से प्रत्येक के भीतर विभिन्न धारणाएँ उमड़ पड़ती हैं, और वे पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं समझते। वे सुस्त और लापरवाह हैं, और लागत चुकाने तथा मेरी उपस्थिति में ईमानदार रहने के लिए तैयार नहीं हैं। पवित्र आत्मा ने उन्हें प्रबुद्ध किया है, किंतु वे संवाद या खोज करने के लिए मेरे समक्ष नहीं आएँगे। इसके बजाय वे, जो मन में आए वही करते हुए, अपनी ही इच्छाओं का अनुसरण करते हैं। यह किस तरह का इरादा है?

अध्याय 12

यदि तुम्हारा स्वभाव अस्थिर है—हवा और बारिश की तरह अचानक दिशा बदलने वाला, यदि तुम लगातार पूरी शक्ति के साथ आगे नहीं बढ़ सकते, तो मेरी छड़ी कभी तुमसे दूर नहीं होगी। जब तुम्हारे साथ व्यवहार किया जाए, तब परिस्थिति जितनी भी प्रतिकूल हो और जितना ज़्यादा तुम्हें सताया जाए, उतना ही परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम बढ़ेगा, और तुम दुनिया से लिपटना बंद कर दोगे। आगे बढ़ने का कोई अन्य मार्ग न होने पर, तुम मेरे पास आओगे, और तुम अपनी शक्ति और आत्मविश्वास दुबारा हासिल कर लोगे। परन्तु आसान परिस्थितियों में, तुम जैसे-तैसे काम चला लोगे। तुम्हें सकारात्मक भाव से प्रवेश करना होगा और सक्रिय होना होगा, निष्क्रिय नहीं। तुम्हें किसी भी स्थिति में किसी भी व्यक्ति या वस्तु के द्वारा विचलित नहीं होना है, और किसी के भी शब्दों से प्रभावित नहीं होना है। तुम्हारा स्वभाव स्थिर होना चाहिए, और चाहे लोग जो भी कहें, तुम फ़ौरन उसी पर अमल करना चाहिए जिसे तुम सच जानते हो। तुम्हारे मन में मेरे वचन सदैव कार्यरत रहें, चाहे तुम्हारे सामने कोई भी हो; तुम्हें मेरे लिए अपनी गवाही में दृढ़ और मेरे दायित्वों के प्रति विचारशील रहना होगा। तुम्हें बिना अपनी समझ-बूझ के लोगों के साथ

अंधाधुंध सहमत होते हुए, भ्रमित नहीं होना है बल्कि इसके बजाय तुम में उन बातों का विरोध करने का साहस होना चाहिए जो मुझसे नहीं आतीं। यदि तुम स्पष्ट रूप से जानते हो कि कुछ गलत है, फिर भी चुप रहते हो, तो तुम ऐसे व्यक्ति नहीं हो जो सत्य का अभ्यास करता है। यदि तुम जानते हो कि कुछ गलत है और तुम विषय को घुमा देते हो, और शैतान तुम्हारा रास्ता रोकता है,जिससे तुम जो बोलते हो उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता और तुम अंत तक टिके रहने में असमर्थ रहते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम्हारे दिल में अभी भी डर बैठा हुआ है। तब क्या ऐसा नहीं है कि तुम्हारा दिल अब भी शैतान से आने वाले विचारों से भरा हुआ है?

एक विजेता क्या है? मसीह के अच्छे सैनिकों को बहादुर होना चाहिए और आध्यात्मिक रूप से मजबूत होने के लिए मुझ पर निर्भर रहना चाहिए; उन्हें योद्धा बनने के लिए लड़ना होगा और शैतान का सामना मौत तक करना होगा। तुम्हें हमेशा जागते रहना चाहिए, और यही कारण है कि मैं तुम्हें हर क्षण मेरे साथ सक्रिय रूप से सहयोग करने और मेरे करीब आने का हुनर सीखने के लिए कहता हूँ। यदि, किसी भी समय और किसी भी परिस्थिति में, तुम मेरे सामने शांत रह पाते हो, मेरे प्रवचन को सुनने और मेरे वचनों और कार्यों पर ध्यान देने में सक्षम हो जाते हो, तो तुम विचलित नहीं होगे और अपनी जगह पर टिके रहोगे। जो भी तुम्हें मेरे भीतर से प्राप्त होता है, उसे व्यवहार में लाया जा सकता है। मेरा हर एक वचन तुम्हारी स्थिति की ओर निर्देशित है। वे तुम्हारे दिल भेदते हैं, और यदि तुम अपने मुंह से इन्हें नकार भी दो, तब भी तुम अपने दिल में इन्हें नकार नहीं सकते, और यदि तुम मेरे वचनों की जांच-पड़ताल करते हो, तो तुम्हारा न्याय किया जाएगा। अर्थात, मेरे वचन सत्य, जीवन, और मार्ग हैं; वे एक तेज़, दोधारी तलवार हैं, और वे शैतान को पराजित कर सकते हैं। जो लोग समझते हैं और जिनके पास मेरे वचनों को व्यवहार में लाने का रास्ता है, वे धन्य हैं, और जो उनका अभ्यास नहीं करते हैं उनका न्याय अवश्य ही किया जाएगा; यह बहुत व्यावहारिक है। अब, उन लोगों का दायरा, जिनका मैं न्याय करता हूँ, बढ़ गया है। मेरे समक्ष, न केवल उनका न्याय किया जाएगा जो मुझे जानते हैं, अपितु जो मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं और जो पवित्र आत्मा के कार्य का विरोध करने और उसे बाधित करने का अत्यधिक प्रयास करते हैं, उनका भी न्याय होगा। जो लोग मेरे सामने हैं, जो मेरे नक़्शे-कदम का अनुसरण करते हैं, वे सभी लोग यह देखेंगे कि परमेश्वर एक प्रचंड आग है! परमेश्वर प्रताप है! वो अपना न्याय निष्पादित कर रहा है, और उन लोगों को मृत्युदंड दे रहा है। कलीसिया में जो लोग पवित्र आत्मा के कार्य का पालन करने के प्रति ध्यान

नहीं देते, जो पवित्र आत्मा के काम को बाधित करते हैं, जो अपनी झूठी शान का प्रदर्शन करते हैं, जो त्रुटिपूर्ण इरादे और लक्ष्य रखते हैं, जो परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने में अपना प्रयास नहीं करते हैं, जो उलझन में हैं या शंका करते हैं, जो पवित्र आत्मा के कार्य की जांच-पड़ताल करते हैं—न्याय के वचन किसी भी समय उनके पास पहुँचेंगे। सभी लोगों के कामों को प्रकट किया जाएगा। पवित्र आत्मा लोगों के दिलों के अंतरतम का निरीक्षण करता है, इसलिए नासमझ न बनो; सावधान और सजग रहो, अंधाधुंध मनमानी न करो। यदि तुम्हारे कार्य मेरे वचनों के अनुसार नहीं हैं, तो तुम्हारा न्याय किया जाएगा। नक़ल करने से, दिखावटी होने से, वास्तव में न समझने से काम नहीं चलेगा; तुम्हें मेरे सामने आकर, अक्सर मेरे साथ संवाद करना चाहिए।

जो भी तुम मेरे भीतर से लेते हो, वह तुम्हें आचरण करने का एक मार्ग देगा, और तुम्हारे साथ मेरी शक्तियाँ होंगी, मेरी उपस्थिति होगी, और तुम हमेशा मेरे वचनों में चलोगे, तुम दुनिया में सब कुछ से ऊपर उठोगे, और पुनरुत्थान की शक्ति भी प्राप्त करोगे। यदि तुम्हारे शब्दों, तुम्हारे व्यवहार और तुम्हारे कार्यों में मेरे वचनों की और मेरी उपस्थिति नहीं है, यदि मुझसे दूर होकर तुम अपने ही भीतर रहते हो, अपने ही मन की धारणा में बने रहते हो, सिद्धांतों और नियमों में रहते हो, तो यह इसका प्रमाण है कि तुम पाप पर ध्यान लगाये हो। दूसरे शब्दों में, तुम अपने पुराने अहम को पकड़ कर रखते हो और दूसरों को तुम्हारे अहं को चोट या तुम्हारी आत्मा को थोड़ी-सी भी हानि नहीं पहुँचाने देते। जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी क्षमता बहुत कम होती है और वे बहुत बेतुके होते हैं, ऐसे लोग परमेश्वर की कृपा नहीं देख सकते हैं, न ही परमेश्वर के आशीर्वाद को पहचान सकते हैं। यदि तुम टालमटोल जारी रखते हो तो ऐसा कब हो पाएगा कि तुम मुझे अपने भीतर काम करने दोगे? जब मैं बोलना समाप्त करता हूँ, तो तुमने मुझे सुना तो है लेकिन कुछ भी याद नहीं रखा है, और जब तुम्हारी समस्याएं वास्तव में बताई जाती हैं तब तुम विशेष रूप से, कमजोर बन जाते हो; यह किस तरह का आध्यात्मिक कद है? जब तुम्हें सदैव मनाना–फुसलाना ही पड़ता है तो मैं तुम्हें पूरा कब करूँगा? यदि तुम धक्कों और खरोंचों से डरते हो, तो तुम्हें फ़ौरन दूसरों को चेतावनी दे देनी चाहिए, "मैं किसी को भी मेरे साथ कोई व्यवहार करने नहीं दूँगा, मैं खुद ही अपने प्राकृतिक, पुराने स्वभाव से छुटकारा पा सकता हूँ।" तब, कोई भी तुम्हारी आलोचना या तुम्हें स्पर्श नहीं करेगा और तुम जो चाहो उसमें विश्वास करने के लिए स्वतंत्र हो, कोई तुम्हारी परवाह नहीं करेगा। क्या तुम इस तरह मेरे नक़्शे-कदम पर चल सकते हो? यह दावा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर और प्रभु हूँ, केवल कोरे

शब्द हैं। यदि तुम वास्तव में संदेहरहित हो, तो ये चीजें कोई समस्या न होंतीं, और तुम्हें विश्वास होता कि यह परमेश्वर का प्रेम है और तुम पर परमेश्वर का आशीर्वाद है। जब मैं बोलता हूँ, तो अपने पुत्रों से बोलता हूँ, मेरे वचनों को धन्यवाद और प्रशंसा मिलनी चाहिए।

अध्याय 13

अपनी वर्तमान स्थिति में, तुम लोग स्वयं की धारणाओं से अत्यधिक चिपके रहते हो, और तुम्हारे अंदर काफ़ी गंभीर धार्मिक व्यवधान हैं। तुम आत्मा में कार्य करने में असमर्थ हो, तुम पवित्र आत्मा के काम को समझ नहीं पाते और नए प्रकाश को अस्वीकार करते हो। तुम दिन का सूरज नहीं देख पाते क्योंकि तुम अंधे हो, तुम लोगों को नहीं जानते, तुम अपने "माता-पिता" को कभी छोड़ नहीं पाते, तुम में आध्यात्मिक समझ की कमी है, तुम पवित्र आत्मा के काम को नहीं पहचानते, और तुम्हें नहीं पता कि मेरे वचनों को कैसे खाना और पीना चाहिए। यह एक समस्या है कि तुम्हें नहीं पता इन्हें कैसे स्वयं खाना और पीना चाहिए। पवित्र आत्मा का कार्य दिन-प्रतिदिन एक बेहद तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है; हर दिन नई रोशनी होती है, और हर दिन नई और ताज़ा चीज़ें भी होती हैं। लेकिन तुम समझते नहीं हो। इसके बजाए, तुम शोध करना पसंद करते हो, तुम उन पर सावधानीपूर्वक विचार किए बिना, अपनी निजी प्राथमिकताओं के चश्मे से चीज़ों को देखते हो और भ्रम की स्थिति में सुनते हो। तुम आत्मा में लगन से प्रार्थना नहीं करते, न तो तुम मेरी ओर देखते हो, न ही मेरे वचनों पर विचार करते हो। इस कारण, तुम्हारे पास केवल शाब्दिक अर्थ, नियम और सिद्धांत हैं। तुम्हें साफ तौर पर पता होना चाहिए कि मेरे वचनों को कैसे खाना और पीना चाहिए और तुम्हें मेरे वचनों को अक्सर मेरे सामने लाना चाहिए।

लोग आजकल स्वयं को छोड़ नहीं पाते; वे हमेशा सोचते हैं कि वही सही हैं। वे अपनी छोटी-सी दुनिया में फंसे रहते हैं और वे लोग सही किस्म के इंसान नहीं हैं। उनके उद्देश्य और इरादे गलत हैं, और यदि वे इन बातों पर अड़े रहे, तो निश्चित रूप से उनका न्याय किया जाएगा, और गंभीर मामलों में, उन्हें हटा दिया जाएगा। तुम्हें मेरे साथ निरंतर सहभागिता बनाए रखने के लिए अधिक प्रयास करने चाहिए, यह नहीं कि जिसके साथ चाहा सहभागिता कर ली। तुम्हें उन लोगों की समझ होनी चाहिए जिनके साथ तुम सहभागिता करते हो और तुम्हें जीवन में आध्यात्मिक मामलों पर सहभागिता करनी चाहिए; तभी तुम दूसरों के जीवन की आपूर्ति कर सकते हो और उनकी कमियों को दूर कर सकते हो। तुम्हें उनसे भाषण देने वाले

अंदाज़ में बात नहीं करनी चाहिए; ऐसा दृष्टिकोण रखना मूलत: गलत है। सहभागिता में तुम्हें आध्यात्मिक मामलों की समझ होनी चाहिए, तुम्हारे अंदर बुद्धि होनी चाहिए और तुम्हें यह समझना चाहिए कि लोगों के दिल में क्या है। यदि तुम्हें दूसरों की सेवा करनी है, तो तुम्हें सही व्यक्ति होना चाहिए और तुम्हारे पास जो कुछ भी है उसके साथ तुम्हें सहभागिता करनी चाहिए।

अब महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम मेरे साथ सहभागिता करो, मेरे साथ निकटता से संवाद करो, अपने आप खाओ और पिओ, और परमेश्वर के करीब हो जाओ। जितनी जल्दी हो सके, तुम्हें आध्यात्मिक मामलों को समझ लेना चाहिए और तुम्हें साफ तौर पर अपने परिवेश की थाह पा लेनी चाहिए और जान लेना चाहिए कि तुम्हारे आसपास क्या व्यवस्था की गई है। क्या तुम यह समझने में समर्थ हो कि मैं क्या हूं? यह महत्वपूर्ण है कि तुम अपनी कमियों के आधार पर खाओ और पिओ और मेरे वचन के अनुसार जीवन व्यतीत करो! मेरे हाथों को पहचानो और शिकायत न करो। यदि तुम शिकायत करते हो और अलग हो जाते हो, तो हो सकता है कि तुम परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने का अवसर खो दो। मेरे निकट आना शुरू कर दो : तुम में क्या कमी है, तुम्हें मेरे निकट कैसे आना चाहिए और मेरे दिल को कैसे समझना चाहिए? लोगों के लिए मेरे पास आना मुश्किल होता है क्योंकि वे अपनी इच्छाओं को त्याग नहीं पाते। उनका स्वभाव हमेशा अस्थिर बना रहता है, निरंतर गर्म और ठंडा होता रहता है, और जब उन्हें मिठास का थोड़ा-सा भी स्वाद प्राप्त हो जाता है, तो वे अभिमानी और स्वयं से संतुष्ट हो जाते हैं। कुछ लोग अभी तक नहीं जागे हैं; तुम जो कहते हो, उसमें वो कितना साकार होता है जो तुम हो? उसमें से कितनी आत्म-रक्षा है, उसमें से कितना दूसरों की नकल करना है और उसमें से कितना नियमों का पालन करना रहा है? तुम्हें पवित्र आत्मा के काम की समझ या बोध इसलिए नहीं है क्योंकि तुम नहीं जानते कि मेरे करीब कैसे आना है। बाहर से, तुम हमेशा चीज़ों पर विचार करते रहते हो, अपनी धारणाओं और अपने मस्तिष्क पर भरोसा करते हो; तुम गुप्त रूप से शोध करते और तुच्छ षडयंत्रों में लगे रहते हो, और उन्हें खुले में प्रकट भी नहीं कर पाते हो। इससे पता चलता है कि तुम पवित्र आत्मा के काम को वास्तव में नहीं समझते। यदि तुम वास्तव में समझते हो कि कोई चीज़ परमेश्वर से नहीं आती, तो तुम खड़े होकर उसे अस्वीकार करने से क्यों डरते हो? कितने हैं जो खड़े होकर मेरे लिए बोल सकें? तुम्हारे अंदर एक मर्द-बच्चे की चारित्रिक शक्ति का ज़रा-सा भी अंश नज़र नहीं आता।

जो कुछ भी वर्तमान में व्यवस्थित किया गया है वह तुम लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए है, ताकि

तुम लोग अपने जीवन में विकास कर सको, अपनी आत्माओं को उत्सुक और तीक्ष्ण कर सको, अपनी आध्यात्मिक आंखों को खोल सको ताकि उन चीज़ों को पहचान सको जो परमेश्वर से आती हैं। परमेश्वर से आने वाली हर चीज़ तुम्हें क्षमता और बोझ के साथ सेवा करने और आत्मा में दृढ़ होने में सक्षम बनाती है। जो चीज़ें मुझसे नहीं आतीं वे खाली हैं; वे तुम्हें कुछ नहीं देतीं, वे तुम्हारी आत्मा में एक शून्य पैदा कर देती हैं, तुम्हारा विश्वास खत्म कर देती हैं और तुम्हारे और मेरे बीच दूरी पैदा कर देती हैं, तुम्हें अपने ही मस्तिष्क में फंसा देती हैं। जब तुम आत्मा में जीते हो, तो धर्मनिरपेक्ष विश्व में हर चीज़ से ऊपर उठ सकते हो, लेकिन अपने मस्तिष्क में जीने का अर्थ है शैतान द्वारा कब्ज़ा; यह एक बंद गली है। अब यह बहुत सरल है : मुझे अपने दिल से देखो, तुम्हारी आत्मा तुरंत मजबूत हो जाएगी। तुम्हारे पास अभ्यास करने का मार्ग होगा और मैं हर कदम पर तुम्हारा मार्गदर्शन करूंगा। मेरा वचन हर समय और हर स्थान पर तुम्हारे लिए प्रकट किया जाएगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कहाँ या कब, या वातावरण कितना प्रतिकूल है, मैं तुम्हें स्पष्टता से दिखाऊंगा और मेरा दिल तुम्हारे लिए प्रकट किया जाएगा, यदि तुम मेरी ओर अपने दिल से देखते हो; इस तरह, तुम रास्ते में आगे निकल जाओगे और कभी अपने रास्ते से नहीं भटकोगे। कुछ लोग बाहर से अपना रास्ता खोजने की कोशिश करते हैं, लेकिन कभी अपनी आत्मा के भीतर से ऐसा नहीं करते। वे अक्सर पवित्र आत्मा के काम को समझ नहीं पाते। जब वे दूसरों के साथ सहभागिता करते हैं, तो वे और अधिक उलझन में पड़ जाते हैं और उनके पास अनुसरण करने के लिए कोई रास्ता नहीं होता और उन्हें नहीं मालूम होता कि उन्हें क्या करना है। ऐसे लोग नहीं जानते कि उन्हें क्या चीज़ परेशान कर रही है; उनके पास कई चीज़ें हो सकती हैं और वे आंतरिक रूप से परिपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन क्या इसका कोई उपयोग है? क्या तुम्हारे पास वास्तव में अनुसरण करने का कोई मार्ग है? क्या तुम्हारे पास कोई रोशनी या प्रबुद्धता है? क्या तुम्हारे पास कोई नई अंतर्दृष्टि है? क्या तुमने प्रगति की है या पीछे चले गए हो? क्या तुम नई रोशनी के साथ कदम से कदम मिला सकते हो? तुम में समर्पण नहीं है; जिस समर्पण का उल्लेख तुम अक्सर करते हो वह बातों के अलावा कुछ नहीं है। क्या तुमने आज्ञाकारी जीवन जिया है?

लोगों की आत्म-धार्मिकता, परितोष, आत्म-संतुष्टि और अहंकार द्वारा प्रस्तुत की गयी बाधा कितनी बड़ी है? जब तुम वास्तविकता में प्रवेश नहीं कर पाते हो, तो इसका दोषी कौन है? यह देखने के लिए कि तुम एक सही व्यक्ति हो या नहीं, तुम्हें सावधानीपूर्वक स्वयं की जाँच करनी चाहिए। क्या तुम्हारे लक्ष्य और इरादे मुझे ध्यान में रखकर बनाए गए हैं? क्या तुम्हारे शब्द और कार्य मेरी उपस्थिति में कहे और किए गए

हैं? मैं तुम्हारी सभी सोच और विचारों की जाँच करता हूँ। क्या तुम दोषी महसूस नहीं करते? तुम दूसरों को झूठा चेहरा दिखाते हो और शांति से आत्म-धार्मिकता का दिखावा करते हो; तुम यह अपने बचाव के लिए करते हो। तुम यह अपनी बुराई छुपाने के लिए करते हो, और किसी दूसरे पर उस बुराई को थोपने के तरीके भी सोचते हो। तुम्हारे दिल में कितना विश्वासघात भरा हुआ है! जो कुछ भी तुमने कहा है उसके बारे में सोचो। क्या यह तुम्हारे अपने फ़ायदे के लिए नहीं था कि इस डर से कि तुम्हारी आत्मा को नुकसान पहुंचेगा इसलिए तुमने शैतान को छुपा लिया, और फिर जबरन अपने भाइयों और बहनों का खाना और पीना उनसे छीन लिया? तुम्हें अपने लिए क्या कहना है? क्या तुम्हें लगता है कि शैतान ने इस बार जो खाना और पीना छीना है, उसकी पूर्ति तुम अगली बार कर सकोगे? इस प्रकार, अब तुम इसे स्पष्ट रूप से देखते हो; क्या यह ऐसा है जिसकी तुम क्षतिपूर्ति कर सकते हो? क्या तुम खोए हुए समय की पूर्ति कर सकते हो? तुम सबको यह देखने के लिए मेहनत से जाँच करनी चाहिए कि आखिर पिछली कुछ बैठकों में कोई खाना और पीना क्यों नहीं हुआ था और यह समस्या किसके कारण पैदा हुई थी। जब तक यह स्पष्ट न हो जाए, तब तक तुम्हें एक-एक करके सहभागिता करनी चाहिए। अगर ऐसे व्यक्ति को सख्ती से रोका नहीं गया, तो भाइयों और बहनों को समझ में नहीं आएगा, और यह फिर से होगा। तुम्हारी आध्यात्मिक आंखें बंद हैं; तुम में से कई व्यक्ति अंधे हैं! इसके अलावा, जो लोग देख सकते हैं, वे इस बारे में लापरवाह हैं। वे खड़े होकर बोलते नहीं हैं और वे भी अंधे हैं। जो देखते हैं लेकिन बोलते नहीं हैं, वे मूक हैं। यहाँ कई लोग विकलांग हैं।

कुछ लोग समझ नहीं पाते कि सत्य क्या है, जीवन क्या है, मार्ग क्या है, और वे आत्मा को नहीं समझते। वे मेरे वचनों को बस एक सूत्र मानते हैं। यह बहुत ही कठोर है। वे समझते नहीं कि सच्ची कृतज्ञता और प्रशंसा क्या होती है। कुछ लोग महत्वपूर्ण और प्राथमिक बातों को समझने में असमर्थ रहते हैं; वे केवल गौण बातों को समझते हैं। परमेश्वर के प्रबंधन में बाधा डालने का क्या मतलब है? कलीसिया की संरचना को ध्वस्त करने का क्या मतलब है? पवित्र आत्मा के काम को बाधित करने का क्या मतलब है? शैतान का अनुचर कौन है? इन सत्यों को स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए, न कि बस एक नज़र फेरनी चाहिए। इस बार कोई खाना और पीना नहीं हुआ, इसका क्या कारण है? कुछ लोग महसूस करते हैं कि उन्हें आज ज़ोर से परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, लेकिन उन्हें उसकी प्रशंसा कैसे करनी चाहिए? क्या उन्हें भजन गाकर और नृत्य करके उसकी प्रशंसा करनी चाहिए? क्या अन्य तरीकों की गिनती प्रशंसा

में नहीं होती? कुछ लोग इस धारणा के साथ बैठकों में आते हैं कि परमेश्वर की स्तुति करने का तरीका उल्लसित स्तुति है। लोगों की ये धारणाएं हैं, और वे पवित्र आत्मा के काम पर ध्यान नहीं देते हैं; अंतत: इसका परिणाम यह होता है कि उसके बाद भी बाधाएं आती रहती हैं। इस बैठक में कोई खाना और पीना नहीं था; तुम सभी कहते हो कि तुम परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील हो और कलीसिया की गवाही की रक्षा करोगे, लेकिन वास्तव में तुम में से कौन परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील रहा है? अपने आप से पूछो : क्या तुम उसके बोझ के प्रति विचारशील रहे हो? क्या तुम उसके लिए धार्मिकता का अभ्यास कर सकते हो? क्या तुम मेरे लिए खड़े होकर बोल सकते हो? क्या तुम दृढ़ता से सत्य का अभ्यास कर सकते हो? क्या तुम में शैतान के सभी दुष्कर्मों के विरूद्ध लड़ने का साहस है? क्या तुम अपनी भावनाओं को किनारे रखकर मेरे सत्य की खातिर शैतान का पर्दाफ़ाश कर सकोगे? क्या तुम मेरी इच्छा को स्वयं में पूरा होने दोगे? सबसे महत्वपूर्ण क्षणों में क्या तुमने अपने दिल को समर्पित किया है? क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो मेरी इच्छा पर चलता है? स्वयं से ये सवाल पूछो और अक्सर इनके बारे में सोचो। शैतान के उपहार तुम्हारे अंदर हैं और तुम इसके लिए दोषी हो क्योंकि तुम लोगों को नहीं समझते और तुम शैतान के विष को पहचानने में असफल हो; तुम स्वयं को मृत्यु की ओर ले जा रहे हो। शैतान ने तुम्हें इस हद तक धोखा दिया है कि तुम बुरी तरह से उलझन में हो; तुम संकीर्णता की शराब के नशे में डूबे हुए हो, तुम दृढ़ दृष्टिकोण बनाने में समर्थ हुए बिना डांवाडोल होते रहते हो, तुम्हारे पास अभ्यास का कोई मार्ग नहीं है। तुम ठीक से खाते और पीते नहीं हो, तुम जंगलियों की तरह लड़ते और झगड़ते हो, तुम गलत और सही के बीच का अंतर नहीं जानते और जो भी तुम्हारी अगुवाई करता है तुम उसके पीछे चल पड़ते हो। क्या तुम में थोड़ा-भी सत्य है? कुछ लोग स्वयं की रक्षा करते हैं, यहां तक कि धोखाधड़ी में लिप्त रहते हैं। वे दूसरों के साथ सहभागिता करते हैं, लेकिन यह उन्हें बंद गली में ले जाता है। क्या ये लोग मुझसे अपने इरादे, लक्ष्य, प्रेरणा, और स्रोत प्राप्त करते हैं? क्या तुम्हें लगता है कि तुम भाइयों और बहनों के खाने और पीने के छिन जाने के तथ्य की क्षतिपूर्ति कर सकते हो? कुछ लोगों को सहभागिता के लिए ढूंढो और उनसे पूछो; उन्हें स्वयं के लिए बोलने दो : क्या उन्हें कुछ भी प्रदान किया गया है? या उनका पेट गंदे पानी और कचरे से भर दिया गया है और अब उनके पास अनुसरण का कोई रास्ता नहीं बचा है? क्या यह कलीसिया को ध्वस्त नहीं करेगा? भाइयों और बहनों के बीच प्यार कहाँ है? तुम चुपके से शोध करते हो कि कौन सही है और कौन गलत है, लेकिन तुम कलीसिया के लिए बोझ क्यों नहीं उठाते? आमतौर पर तुम मशहूर कहावतों को

चिल्लाकर बोलने का काम अच्छी तरह से करते हो, लेकिन जब चीज़ें वास्तव में होती हैं तो तुम उनके बारे में गोलमोल बातें करते हो। कुछ लोग समझते हैं लेकिन केवल चुपचाप फुसफुसाते हैं, जबकि अन्य लोग वह बोलते हैं जो उन्हें समझ आता है, लेकिन कोई और एक शब्द नहीं कहता है। वे नहीं जानते कि परमेश्वर से क्या आता है और शैतान का काम क्या है। जीवन के बारे में तुम लोगों की आंतरिक भावनाएं कहाँ हैं? तुम पवित्र आत्मा के काम को बिल्कुल नहीं समझ पाते हो और न ही तुम उसे पहचानते हो। तुम्हारे लिए नई चीज़ें स्वीकार करना मुश्किल है। तुम केवल धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष चीज़ें ही स्वीकार करते हो, जो लोगों की धारणाओं के अनुरूप होती हैं। परिणामस्वरूप, तुम निर्दयतापूर्वक लड़ते हो। पवित्र आत्मा के काम को कितने लोग समझ पाते हैं? कलीसिया के लिए वास्तव में कितने लोगों ने बोझ उठाया है? क्या तुम इसे समझते हो? भजन गायन परमेश्वर की प्रशंसा करने का एक तरीका है, लेकिन तुम परमेश्वर की स्तुति करने के सत्य को स्पष्टता से नहीं समझते हो। इसके अलावा, तुम उसकी प्रशंसा करने के तरीके में ज़िद्दी हो। क्या यह तुम्हारी अपनी धारणा नहीं है जो तुम्हारे पास है? तुम हमेशा अपनी धारणाओं से सख्ती से चिपके रहते हो और इस पर ध्यान नहीं देते कि पवित्र आत्मा आज क्या करने जा रहा है, यह महसूस नहीं कर पाते हो कि तुम्हारे भाई-बहन क्या महसूस कर रहे हैं, और शांत तरीके से परमेश्वर की इच्छा की खोज नहीं कर पाते हो। तुम आँखें मूंदकर काम करते हो; तुम गाने अच्छे गा सकते हो, लेकिन नतीजा पूरी तरह से अस्तव्यस्त रहता है। क्या यह सचमुच खाना और पीना है? क्या तुम देखते हो कि वास्तव में बाधा कौन उत्पन्न कर रहा है? तुम आत्मा में बिल्कुल नहीं रहते; बल्कि विभिन्न धारणाओं पर कायम रहते हो। आखिर कलीसिया के लिए बोझ उठाने का यह कैसा तरीका है? तुम्हें देखना चाहिए कि पवित्र आत्मा का काम अब और भी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। यदि तुम अपनी धारणाओं को कसकर पकड़े रहते हो और पवित्र आत्मा का विरोध करते हो, तो क्या तुम अंधे नहीं हो? क्या यह दीवारों से टकराती हुई और चारों ओर भिनभिनाती हुई मक्खी की तरह नहीं है? यदि तुम इसी तरह से चलते रहे, तो तुम्हें दरकिनार कर दिया जाएगा।

जिन्हें आपदा से पहले पूर्ण किया जाता है वे परमेश्वर के प्रति समर्पित होते हैं। वे मसीह पर निर्भर होकर जीते हैं, वे उसकी गवाही देते हैं, और वे उसकी जयकार करते हैं। वे मसीह के विजयी मर्द-बच्चे और अच्छे सैनिक होते हैं। इस समय यह महत्वपूर्ण है कि तुम स्वयं को शांत करो, परमेश्वर के पास आओ और उसके साथ सहभागिता करो। यदि तुम परमेश्वर के करीब नहीं आओगे, तो तुम पर शैतान द्वारा

कब्ज़ा किए जाने का डर है। यदि तुम मेरे पास आकर मेरे साथ सहभागिता कर सकते हो, तो सभी सत्य तुम्हारे सामने प्रकट किए जाएंगे, और तुम्हारे पास जीने और कार्यों को करने का एक मानक होगा। चूँकि तुम मेरे नज़दीक हो, मेरे वचन कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे, न ही तुम कभी जीवन में मेरे वचनों से भटकोगे; शैतान के पास तुम्हारा फ़ायदा उठाने का कोई रास्ता नहीं होगा, बल्कि वह शर्मिंदा होगा और हारकर भाग जाएगा। यदि तुम बाहर से देखो कि तुम्हारे अंदर क्या कमी है, तो शायद तुम्हें कभी कुछ मिल जाए, लेकिन जो मिलेगा उसमें से अधिकतर ऐसे नियम और ऐसी चीज़ें होंगी जिनकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है। तुम्हें अपने आप को छोड़ना होगा, मेरे वचनों को अधिक खाना और पीना होगा और जानना होगा कि उन पर कैसे विचार किया जाए। अगर तुम्हें कुछ समझ में नहीं आए, तो मेरे करीब आओ और अक्सर मेरे साथ सहभागिता करो; इस तरह, तुम जो बातें समझोगे वे वास्तविक और सत्य होंगी। तुम्हें मेरे करीब आना आरंभ करना होगा। यह महत्वपूर्ण है! अन्यथा, तुम्हें नहीं पता होगा कि कैसे खाना और पीना है। तुम अपने आप खा और पी नहीं सकते; सच में, तुम्हारा आध्यात्मिक कद बहुत ही छोटा है।

अध्याय 14

अब समय सही में महत्वपूर्ण है। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के वचनों में ले जाने के लिए कई अलग-अलग तरीकों का उपयोग करता है। तुम्हें सभी सत्यों से लैस होना चाहिए, पवित्र होना चाहिए, मेरे साथ असलियत में निकटता और सहयोग रखना चाहिए; तुम्हारे पास चुनने के लिए कोई और विकल्प होगा भी नहीं। पवित्र आत्मा का कार्य भावना के बिना होता है और वह इसकी परवाह नहीं करता कि तुम किस प्रकार के व्यक्ति हो। जब तक तुम खोज और अनुसरण करने के लिए तैयार हो—बहाने नहीं बनाते हो, अपने फ़ायदे और नुकसान पर बहस नहीं करते हो, बल्कि धार्मिकता के लिए भूख और प्यास के साथ खोज करते हो, तो मैं तुम्हें प्रबुद्ध करूँगा। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम कितने मूर्ख और अज्ञानी हो, मैं इन बातों पर ध्यान केंद्रित नहीं करता। मैं तो यह देखता हूँ कि सकारात्मक पहलू पर तुम कितनी मेहनत करते हो। यदि तुम फिर भी स्वयं की अवधारणा को ज़ोर-से पकड़कर रखते हो, अपनी छोटी-सी दुनिया में गोल-गोल घूमते हो, तो मुझे लगता है कि तुम ख़तरे में हो... स्वर्गारोहण क्या है? त्याग दिए जाने का क्या मतलब है? आज तुम्हें परमेश्वर के सामने कैसे जीना चाहिए? तुम्हें मेरे साथ सक्रियता से सहयोग कैसे करना चाहिए? अपनी धारणाओं से छुटकारा पाओ, स्वयं का अवलोकन करो, अपना मुखौटा हटाओ,

अपने सच्चे रंगों को स्पष्टता से देखो, अपने आप से घृणा करो, एक ऐसा दिल रखो जो भूख और प्यास के साथ धार्मिकता की खोज करता हो, मानो कि तुम वास्तव में कुछ भी नहीं हो, स्वयं को छोड़ने के लिए तैयार रहो, चीज़ों को करने के अपने सभी तरीकों को रोकने में सक्षम बनो, मेरे सामने अपने आप को शांत करो, अधिक प्रार्थनाएं करो, ईमानदारी से मुझ पर निर्भर रहो, मेरी ओर देखो, और मेरे करीब आने और मेरे साथ बातचीत करना बंद न करो—इन चीज़ों में कुंजी मिलती है। लोग अक्सर अपने में मग्न हो जाते हैं और इसलिए परमेश्वर के सामने नहीं रहते।

लोगों के लिए पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य की कल्पना करना वास्तव में कठिन है और सब वास्तविकता में प्रवेश करता है; इस बारे में विचारहीन होने से नहीं चलेगा। यदि तुम्हारा दिल और मस्तिष्क गलत जगह हैं, तो तुम्हारे पास आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं होगा। शुरुआत से लेकर अंत तक, तुम्हें हर समय चौकन्ना रहना होगा और लापरवाही से स्वयं को बचाकर रखना होगा। धन्य हैं वे लोग जो लगातार चौकन्ने रहते हैं और प्रतीक्षा करते हैं और मेरे सामने शांत रहते हैं! धन्य हैं वे लोग जो लगातार दिल से मेरी ओर देखते हैं, जो मेरी आवाज़ को निकटता से सुनने पर ध्यान देते हैं, जो मेरे कार्यों पर ध्यान देते हैं और जो मेरे वचनों को अभ्यास में लाते हैं! सही में और देरी नहीं सही जा सकती है; सभी प्रकार की महामारियां तेज़ी से फैलेंगी, एक बाढ़ की तरह तुम लोगों को निगलने के लिए अपना क्रूर, खूनी मुँह खोलेंगी। मेरे बेटों! समय आ गया है! अब सोचने के लिए समय नहीं बचा है। एकमात्र तरीका जो तुम लोगों को मेरी सुरक्षा में लाएगा, वह है मेरे सामने वापस आना। तुम्हारे पास मर्द बच्चे के चरित्र की शक्ति होनी चाहिए; कमज़ोर या निराश न हो। तुम्हें मेरे कदमों के साथ चलना होगा, नई रोशनी अस्वीकार न करो और जब मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि कैसे मेरे वचनों को खाना-पीना है, तो तुम्हें समर्पण करना चाहिए और सही तरीके से उन्हें खाना और पीना चाहिए। क्या अभी भी मनमाने ढंग से एक दूसरे के साथ लड़ने या संघर्ष करने के लिए समय है? यदि तुम भरपेट नहीं खाते और सत्य से पूरी तरह सुसज्जित नहीं हो, तो क्या तुम युद्ध कर सकते हो? यदि तुम धर्म पर जीत चाहते हो, तो तुम्हें सत्य के साथ पूरी तरह सुसज्जित होना होगा। मेरे वचनों को अधिक खाओ और पिओ और मेरे वचनों पर अधिक विचार करो। तुम्हें मेरे वचनों को स्वतंत्र रूप से खाना और पीना चाहिए और परमेश्वर के करीब आने से आरंभ करना चाहिए। इसे अपने लिए चेतावनी मानो! तुम्हें ध्यान से सुनना चाहिए! जो लोग होशियार हैं, वे जल्दी से सच को पहचान जाएंगे! उन सभी चीज़ों को त्याग दो, जिन्हें तुम छोड़ने के इच्छुक नहीं हो। मैं तुम्हें एक बार फिर बताता हूँ कि ये चीज़ें वास्तव में

तुम्हारे जीवन के लिए हानिकारक हैं और इनका कोई लाभ नहीं है! मुझे उम्मीद है कि तुम अपने कार्यों में मुझ पर भरोसा कर पाओगे; अन्यथा आगे एकमात्र रास्ता मृत्यु का मार्ग है-फिर कहां तुम जीवन के मार्ग की खोज करने के लिए जाओगे? अपने उस दिल को पीछे खींच लो जो बाहरी चीज़ों के साथ व्यस्त रहना पसंद करता है! अपने उस दिल को पीछे खींच लो जो अन्य लोगों की अवज्ञा करता है! यदि तुम्हारा जीवन परिपक्व नहीं हो सकता और तुम्हें त्याग दिया जाता है, तो क्या तुम्हारे उलझने का कारण तुम नहीं होगे? पवित्र आत्मा का वर्तमान कार्य अब वैसा नहीं है जैसा तुम सोचते हो। यदि तुम अपनी धारणाओं को छोड़ नहीं पाते हो, तो तुम्हें बड़ी हानि सहन करनी होगी। यदि कार्य मनुष्यों की धारणाओं को ध्यान में रखते हुए होता, तो क्या तुम्हारी पुरानी प्रकृति और धारणाएं प्रकाश में आ पातीं? क्या तुम अपने आप को जान पाते? हो सकता है कि तुम्हें अभी भी लगता हो कि तुम्हारी कोई धारणाएं नहीं हैं, लेकिन इस बार तुम्हारे विभिन्न बदसूरत पहलू स्पष्टता से प्रकाश में आएंगे। सावधानी से अपने आप से पूछो:

क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो मुझे समर्पित है?

क्या तुम अपने आप को छोड़कर मेरा अनुसरण करने के इच्छुक और तैयार हो?

क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो साफ़ दिल से मेरा चेहरा खोजता है?

क्या तुम जानते हो कि मेरे करीब कैसे आना है और मेरे साथ कैसे बातचीत करनी है?

क्या तुम मेरे सामने अपने आप को शांत कर सकते हो और मेरी इच्छा तलाश सकते हो?

क्या तुम उन वचनों को अभ्यास में लाते हो जिन्हें मैं तुम्हारे सामने प्रकट करता हूँ?

क्या तुम मेरे सामने एक सामान्य स्थिति बनाए रख सकते हो?

क्या तुम शैतान की चालाक योजनाओं को देख पाते हो? क्या तुम उन्हें बेनकाब करने की हिम्मत रखते हो?

तुम परमेश्वर के बोझ के प्रति कैसे विचारशील हो?

क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील है?

तुम पवित्र आत्मा के कार्य को कैसे समझते हो?

तुम परमेश्वर के परिवार में समन्वय के साथ कैसे सेवा करते हो?

तुम मेरे लिए एक मजबूत गवाही कैसे देते हो?

सत्य के लिए तुम अच्छी लड़ाई कैसे लड़ते हो?

इन सत्यों पर अच्छी तरह से विचार करने के लिए तुम्हें समय निकालना चाहिए। तथ्य यह बात साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि दिन बहुत करीब है। आपदाओं से पहले तुम्हें पूर्ण किया जाना होगा—यह बहुत महत्वपूर्ण बात है जिसे तत्काल हल किया जाना चाहिए! मैं तुम लोगों को पूरा करने की इच्छा रखता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि तुम लोग वास्तव में कुछ हद तक बेलगाम हो। तुम में क्षमता है लेकिन तुम इसका सर्वोत्तम उपयोग नहीं करते हो और तुमने सबसे महत्वपूर्ण बातों को नहीं समझा है; बल्कि तुमने केवल मामूली बातों को समझा है। इन बातों पर विचार-विमर्श करने का क्या उपयोग है? क्या यह समय की बर्बादी नहीं है? मैं तुम लोगों पर इस तरह से दयालुता दिखाता हूँ लेकिन तुम लोग कोई भी सराहना दिखाने में असफल हो; तुम केवल आपस में लड़ते हो-तो क्या मेरे सभी मेहनती प्रयास बेकार नहीं चले गए हैं? यदि तुम इस तरह से चलते रहोगे, तो मैं तुम लोगों को मनाने में समय नहीं लगाऊँगा! मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि जब तक तुम लोग सत्य को नहीं समझते हो, तब तक पवित्र आत्मा का कार्य तुमसे खींच लिया जाएगा! तुम लोगों को खाने के लिए अधिक नहीं दिया जाएगा, और तुम लोगों को जो ठीक लगे, उस पर विश्वास करना। मैंने अपने वचनों को विस्तार से बोला है; सुनो या न सुनो, यह तुम लोगों पर निर्भर है। जब ऐसा समय आएगा जब तुम लोग उलझन में रहोगे और तुम लोगों के पास आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं दिखेगा और सच्चे प्रकाश को नहीं देख पाओगे, तो क्या तुम मुझे दोष दोगे? ऐसी अज्ञानता! यदि तुम अपने आप से कसकर चिपके रहोगे और छोड़ने से इनकार कर दोगे, तो परिणाम क्या होना चाहिए? क्या तुम्हारा काम महज़ निरर्थक अभ्यास नहीं होगा? आपदाओं के आने पर अलग कर दिया जाना कितना दयनीय है!

अब कलीसिया के निर्माण का महत्वपूर्ण चरण है। यदि तुम मेरे साथ सक्रियता से सहयोग करने में और मेरे सामने तहेदिल से समर्पण करने में असमर्थ हो, यदि तुम सब कुछ त्याग नहीं सकते, तो तुम्हें हानि का सामना करना होगा; क्या अभी भी तुम दूसरे इरादों को मन में जगह दे सकते हो? मैंने इस प्रकार से तुम लोगों पर उदारता दिखाई, तुम लोगों के पश्चाताप करने और फिर से आरंभ करने की प्रतीक्षा की। हालाँकि, वास्तव में अब समय इसकी अनुमति नहीं देता और मुझे अब समग्र स्थिति पर विचार करना होगा। परमेश्वर की प्रबंधन योजना के उद्देश्य के लिए, सब कुछ आगे बढ़ रहा है और मेरे कदम हर दिन,

हर घंटे, हर पल आगे बढ़ रहे हैं—जो लोग मेरे साथ नहीं चल पाएंगे, उन्हें त्याग दिया जाएगा। हर दिन नई रोशनी होती है; हर दिन नए कर्म किए जाते हैं, हर दिन नई चीज़ें होती हैं और जो प्रकाश नहीं देख पा रहे हैं वे अंधे हैं! जो लोग अनुसरण नहीं करते, उन्हें हटा दिया जाएगा...।

अध्याय 15

सभी कलीसियाओं में परमेश्वर पहले से ही प्रकट हो चुका है। आत्मा बोल रहा है, वह एक प्रबल अग्नि है, उसमें महिमा है और वह न्याय कर रहा है; वह मनुष्य का पुत्र है, जो पाँवों तक का वस्त्र पहने हुए है और छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए है। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन के समान उज्ज्वल हैं, और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान हैं; उसके पाँव उत्तम पीतल के समान हैं, मानो भट्ठी में तपे हुए हों; और उसका शब्द अनेक जल के शब्द के समान है। वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए है, और उसके मुख में तेज़ दोधारी तलवार है और उसका मुँह ऐसा प्रज्ज्वलित है, जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता हो!

मनुष्य के पुत्र को देखा गया है, और परमेश्वर ने अपने आप को खुले रूप से प्रकट किया है। जमकर चमकते सूरज की तरह परमेश्वर की महिमा प्रकट की गई है! परमेश्वर का तेजस्वी मुख अपनी चमक से चकाचौंध करता है; किसकी आंखें उसके विरोध की हिम्मत कर सकती हैं? विरोध का अर्थ है मृत्यु! अपने दिल में जो कुछ भी तुम सोचते हो, जो भी शब्द तुम कहते हो या जो कुछ भी तुम करते हो, उसके लिए थोड़ी-सी भी दया नहीं दिखाई जाती है। तुम लोग सब समझोगे और देखोगे कि तुम लोगों ने क्या पाया है—मेरे न्याय के अलावा कुछ नहीं! अगर तुम लोग मेरे वचनों को खाने और पीने के लिए अपना प्रयास नहीं करते हो, बल्कि मनमाने ढंग से बाधा डालते हो और मेरा निर्माण नष्ट करते हो, तो क्या मैं इसे बरदाश्त कर सकता हूँ? मैं इस तरह के व्यक्ति के साथ नरमी नहीं करूँगा! यदि तुम्हारा व्यवहार और अधिक बिगड़ा, तो तुम आग में भस्म हो जाओगे! सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक आध्यात्मिक शरीर में प्रकट हुआ है, और सिर से पैर तक देह या रक्त से बिल्कुल जुड़ा नहीं है। वह ब्रह्मांडीय दुनिया से परे है, और तीसरे स्वर्ग के गौरवशाली सिंहासन पर बैठा प्रशासन करता है! ब्रह्मांड और सभी चीज़ें मेरे हाथों में हैं। मैं जो भी कहूँगा वही होगा। मेरा आदेश पूरा होगा। शैतान मेरे पैरों के तले है; वह एक अथाह कुंड में है! मेरे एक आदेश के जारी होने पर तो आकाश और पृथ्वी गायब हो जाएंगे और उनका कोई अस्तित्व नहीं रहेगा!

सभी चीज़ें नवीनीकृत हो जाएंगी; यह एक अटल सत्य है, जो पूरी तरह सही है। मैंने दुनिया को जीत लिया है, सभी बुरों पर विजय प्राप्त की है। मैं यहाँ बैठा तुम लोगों से बात कर रहा हूँ; जिनके पास कान हैं, उन्हें सुनना चाहिए और जो जीवित हैं, उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

दिन समाप्त हो जाएंगे; दुनिया की सभी चीज़ों का कोई मूल्य नहीं रहेगा, और सब कुछ नया बनकर उत्पन्न होगा। यह याद रखना! भूलना नहीं! इस बात में कोई संदिग्धता नहीं हो सकती है! आकाश और पृथ्वी गायब हो जाएँगे, परन्तु मेरे वचन रहेंगे! एक बार फिर तुम लोगों को प्रेरित करता हूँ: व्यर्थ में भागो मत! जागो! पश्चाताप करो और उद्धार हाथ में होगा! मैं पहले ही तुम लोगों के बीच प्रकट हो चुका हूँ और मेरी वाणी उदय हो चुकी है। मेरी वाणी तुम लोगों के सामने उदय हो चुकी है, हर दिन वह तुम लोगों के सामने रूबरू होती है, हर दिन वह ताज़ी और नई होती है। तुम मुझे देखते हो और मैं तुम्हें देखता हूँ; मैं तुमसे निरंतर बात करता हूँ और तुम्हारे साथ आमने-सामने होता हूँ। फिर भी तुम मुझे अस्वीकार करते हो, तुम मुझे नहीं जानते हो; मेरी भेड़ें मेरे वचन सुनती हैं और फिर भी तुम लोग संकोच करते हो! तुम संकोच करते हो! तुम्हारा मन मोटा हो गया है, तुम्हारी आंखों को शैतान ने अंधा कर दिया है और तुम मेरे गौरवशाली मुख को देख नहीं पाते हो—तुम कितने दयनीय हो! कितने दयनीय!

मेरे सिंहासन के सामने उपस्थित सात आत्माओं को पृथ्वी के सभी कोनों में भेजा गया है और मैं कलीसियाओं से बात करने के लिए अपने संदेशवाहक भेजूंगा। मैं धार्मिक और विश्वासयोग्य हूँ; मैं वह परमेश्वर हूँ जो मनुष्यों के दिल की गहराइयों की जांच करता है। पवित्र आत्मा कलीसियाओं से बात करता है और ये मेरे वचन हैं जो मेरे पुत्र के भीतर से निकलते हैं; जिनके कान हैं उन्हें सुनना चाहिए! जो जीवित हैं उन्हें स्वीकार करना चाहिए! बस उन्हें खाओ और पिओ, और संदेह न करो। जो लोग मुझे समर्पित करेंगे और मेरे वचनों पर ध्यान देंगे, उन्हें महान आशीष प्राप्त होंगे! जो लोग ईमानदारी से मेरे मुख की खोज करेंगे, उनके पास निश्चित रूप से नई रोशनी, नई प्रबुद्धता और नई अंतर्दृष्टि होगी; सब कुछ ताज़ा और नया होगा। मेरे वचन तुम्हारे लिए किसी भी समय प्रकट होंगे और वे तुम्हारी आत्मा की आंखें खोल देंगे ताकि तुम आध्यात्मिक क्षेत्र के सभी रहस्यों को देख सको और देख सको कि राज्य मनुष्य के बीच है। शरण में प्रवेश करो और सभी अनुग्रह और आशीष तुम्हें प्राप्त होंगे, अकाल और महामारी तुम्हें छू नहीं सकेंगी, और भेड़िए, साँप, बाघ और तेंदुए तुम्हें नुकसान पहुंचाने में असमर्थ रहेंगे। तुम मेरे साथ जाओगे, मेरे साथ चलोगे और मेरे साथ महिमा में प्रवेश करोगे!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर! उसका गौरवशाली शरीर खुले रूप से प्रकट होता है, पवित्र आध्यात्मिक शरीर उदय होता है और वह स्वयं पूर्ण परमेश्वर है! दुनिया और देह दोनों बदल गए हैं और पहाड़ी पर उसका रूप-परिवर्तन परमेश्वर का व्यक्तित्व है। वह अपने सिर पर सुनहरा मुकुट पहने हुए है, उसके वस्त्र पूर्ण रूप से श्वेत हैं, छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए है और दुनिया की सभी चीज़ें उसकी चरण-पीठ हैं। उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान हैं, उसके मुख में तेज़ दोधारी तलवार है और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए है। राज्य का मार्ग असीम उज्ज्वल है और उसकी महिमा उदित हो रही और चमक रही है; पर्वत आनंदित हैं और जल हास्य मग्न हैं, और सूर्य, चंद्रमा और तारे सभी अपनी क्रमबद्ध व्यवस्था में घूमते हैं, और अद्वितीय, सच्चे परमेश्वर का स्वागत करते हैं, जिनकी विजयी वापसी उसके छह हज़ार वर्ष की प्रबंधन योजना को पूरा करने की घोषणा करती है। ख़ुशी से सब कूदते और नाचते हैं! जय हो! सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने गौरवशाली सिंहासन पर बैठा है! गाओ! सर्वशक्तिमान का विजयी ध्वज प्रतापी, भव्य सिय्योन पर्वत की ऊंचाई पर लहराता है! सभी राष्ट्र उत्साहित हैं, सभी लोग गा रहे हैं, सिय्योन पर्वत प्रसन्नता से हँस रहा है, और परमेश्वर की महिमा का उदय हुआ है! मैंने कभी सपनों में भी नहीं सोचा था कि मैं कभी परमेश्वर का चेहरा देखूंगा, फिर भी आज मैंने देखा है। हर दिन उसके साथ आमने-सामने, मैं अपना दिल खोलकर रखता हूँ। खाने पीने का सभी कुछ, वह प्रचुरता से प्रदान करता है। जीवन, वचन, कार्य, सोच, विचार—उसका महिमामय प्रकाश इन सभी को उज्जवल करता है। वह रास्ते के हर कदम पर अगुवाई करता है, और यदि कोई दिल विद्रोह करता है तो उसका न्याय तुरंत करता है।

परमेश्वर के साथ मिलकर खाना, साथ रहना, साथ जीना, उसके साथ होना, साथ चलना, साथ आनंद लेना, साथ-साथ महिमा और आशीष प्राप्त करना, परमेश्वर के साथ शासन साझा करना और राज्य में एक साथ होना—ओह, कितना आनंददायक है! ओह, कितना प्यारा है! हम हर दिन उसके साथ आमने-सामने होते हैं, हर दिन उससे बात करते हैं और निरंतर वार्तालाप करते हैं, हर दिन नई प्रबुद्धता और नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। हमारी आध्यात्मिक आंखें खुल गई हैं और हम सब कुछ देखते हैं; आत्मा के सभी रहस्य हमारे सामने प्रकट होते हैं। पवित्र जीवन कितना निश्चिंत है; तेज़ी से भागो और रुको मत, निरंतर आगे बढ़ो-आगे इससे भी अधिक अद्‌भुत एक जीवन है। केवल मीठे स्वाद से संतुष्ट न हो; हमेशा परमेश्वर में प्रवेश करने का प्रयास करो। वह सर्वव्यापी और प्रचुर है, और उसके पास सभी प्रकार की चीज़ें हैं जिनकी

हम में कमी है। सक्रियता से सहयोग करो, उसके अंदर प्रवेश करो और कुछ भी कभी भी पहले जैसा नहीं रहेगा। हमारे जीवन का उत्थान होगा और कोई भी व्यक्ति, मामला या बात हमें परेशान नहीं कर पाएगी।

उत्थान! उत्थान! सच्चा उत्थान! परमेश्वर का जीवन उत्थान भीतर है और सभी वस्तुएं वास्तव में शांत हो जाती हैं! हम दुनिया और सांसारिक चीज़ों से परे चले जाते हैं, पतियों या बच्चों से कोई मोह नहीं रहता। बीमारी और वातावरण के नियंत्रण के परे चले जाते हैं। शैतान हमें परेशान करने की हिम्मत नहीं कर सकता है। सभी आपदाओं से हम ऊपर हो जाते हैं—यह परमेश्वर को शासन की अनुमति देना है! हम शैतान को अपने कदमों के तले कुचल देते हैं, कलीसिया के लिए गवाही देते हैं और पूरी तरह से शैतान के बदसूरत चेहरे को बेनकाब करते हैं। कलीसिया का निर्माण मसीह में है, गौरवशाली शरीर का उदय हुआ है—यह स्वर्गारोहण में जीना है!

अध्याय 16

मनुष्य के पुत्र की गवाही के बाद सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वयं को हमारे सामने धार्मिकता के सूर्य के रूप में सार्वजनिक रूप से प्रकट किया। यही पहाड़ पर रूप-परिवर्तन है! यह अब अधिकाधिक वास्तविक बनता जा रहा है, वास्तविकता से भी बढ़कर। हमने देखा है कि पवित्र आत्मा किस तरह कार्य करता है, और स्वयं परमेश्वर देह से उत्पन्न हुआ है। वह न तो मनुष्य के नियंत्रण में है, न ही अंतरिक्ष के, न भूगोल के; वह पृथ्वी और समुद्र की सीमाओं से परे है, वह पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी के छोरों तक फैला हुआ है, और सभी राष्ट्र और सभी लोग चुपचाप उसकी वाणी सुन रहे हैं। जैसे ही हम अपनी आध्यात्मिक आँखें खोलते हैं, हम देखते हैं कि परमेश्वर का वचन उसके महिमामय शरीर से निकला है; देह से उत्पन्न यह स्वयं परमेश्वर है। वह वास्तविक और पूर्ण स्वयं परमेश्वर है। वह हमसे सार्वजनिक रूप से बात करता है, वह हमारे आमने-सामने है, वह हमें परामर्श देता है, वह हम पर दया करता है, वह हमारी प्रतीक्षा करता है, वह हमें दिलासा देता है, वह हमें अनुशासित करता है, और वह हमारा न्याय करता है। वह हमारा हाथ पकड़कर हमारी अगुआई करता है, और हमारे लिए उसकी चिंता उसके भीतर एक लौ की तरह जलती है; एक उत्सुक हृदय से वह हमें जाग्रत होने और अपने भीतर प्रवेश करने का आग्रह करता है। उसका अलौकिक जीवन हम सभी में गढ़ा गया है, और जो लोग उसके भीतर प्रवेश करेंगे वे उत्कर्ष हासिल करेंगे, और दुनिया और सभी दुष्टों पर विजय पाएँगे, और उसके साथ राजाओं की तरह शासन करेंगे।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, परमेश्वर का आध्यात्मिक शरीर है। यदि वह इसे नियत करता है, तो यह ऐसा ही होगा; यदि वह इससे बोलता है, तो यह ऐसा ही होगा, और यदि वह इसे आदेश देता है, तो यह ऐसा ही है। वह एक सच्चा परमेश्वर है! शैतान उसके पैरों के नीचे है, एक अथाह गड्ढे में। ब्रह्मांड में सब-कुछ उसके हाथों में है; समय आ गया है, और सब शून्यता में लौट जाएँगे और नए सिरे से पैदा होंगे।

अध्याय 17

कलीसिया निर्माणाधीन है और शैतान इसे ध्वस्त करने की पूरी कोशिश कर रहा है। यह मेरे निर्माण को किसी भी तरह से नष्ट कर देना चाहता है; इस कारण, कलीसिया को तुरंत शुद्ध किया जाना चाहिए। बुराई का ज़रा-सा भी तलछट शेष नहीं रहना चाहिए; कलीसिया को इस ढंग से शुद्ध किया जाना चाहिए ताकि यह निष्कलंक और उतनी ही शुद्ध हो जाए जितनी यह पहले थी और आगे भी वैसी ही रहे। तुम लोगों को जागते रहना चाहिए और समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए, और तुम लोगों को मेरे सामने अधिक बार प्रार्थना करनी चाहिए। तुम्हें शैतान की विभिन्न साजिशों और चालाक योजनाओं को पहचानना चाहिए, आत्माओं को पहचानना चाहिए, लोगों को जानना चाहिए और सभी प्रकार के लोगों, घटनाओं और चीजों को समझने में सक्षम होना चाहिए; तुम्हें मेरे वचनों को और अधिक खाना और पीना भी चाहिए, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम्हें उन्हें अपने आप खाने और पीने में सक्षम होना चाहिए। तुम अपने आप को पूरे सत्य से युक्त करो और मेरे सामने आओ, ताकि मैं तुम लोगों की आध्यात्मिक आँखें खोल सकूँ और तुम्हें आत्मा के भीतर निहित सभी रहस्यों को देखने का मौका दे सकूँ...। जब कलीसिया अपने निर्माण के चरण में आती है, तो संत युद्ध के लिए कूच करते हैं। शैतान के विभिन्न वीभत्स लक्षण तुम सभी के सामने रखे जाते हैं : क्या तुम रुकते और पीछे हट जाते हो, या तुम मुझ में भरोसा रखकर खड़े हो जाते हो और आगे बढ़ना जारी रखते हो? शैतान के भ्रष्ट और घिनौने लक्षणों को पूरी तरह से उजागर कर दो, कोई भावुकता न रखो और कोई दया मत दिखाओ! मौत तक शैतान से लड़ते रहो! मैं तुम्हारे पीछे हूँ और तुममें एक मर्द बच्चे की भावना होनी चाहिए! शैतान अपनी मौत की पीड़ा में अंतिम प्रहार कर रहा है, लेकिन फिर भी वह मेरे न्याय से बच निकलने में असमर्थ ही रहेगा। शैतान मेरे पैरों तले है और उसे तुम लोगों के पैरों तले भी कुचला जा रहा है—यह एक तथ्य है!

सभी धार्मिक बाधकों और कलीसिया की संरचना को ध्वस्त करने वालों के प्रति ज़रा-सी भी

सहनशीलता नहीं दिखायी जा सकती, बल्कि तुरंत उनका न्याय किया जाएगा; शैतान का पर्दाफ़ाश किया जाएगा, उसे पैरों तले कुचला जाएगा, उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा और उसके छिपने के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी जाएगी। सभी तरह के हैवान और भूत निश्चित रूप से मेरे सामने अपना असली रूप प्रकट कर देंगे और मैं उन सभी को अथाह कुंड में डाल दूंगा जिससे वे कभी मुक्त नहीं होंगे; वे सब हमारे पैरों तले होंगे। यदि तुम सत्य की खातिर एक अच्छी लड़ाई लड़ना चाहते हो, तो सबसे पहले, तुम्हें शैतान को काम करने का कोई मौका नहीं देना चाहिए—ऐसा करने के लिए तुम्हें एकमत होना पड़ेगा और मिलजुल कर सेवा करने में समर्थ होना होगा, अपनी सभी धारणाओं, विचारों, मतों और काम करने के तरीकों को छोड़ना होगा, मेरे भीतर अपने दिल को शांत करना होगा, पवित्र आत्मा की आवाज़ पर ध्यान देना होगा, पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति चौकस रहना होगा और परमेश्वर के वचनों का विस्तार से अनुभव करना होगा। तुम्हारी बस एक ही मंशा होनी चाहिए, और वह ये कि मेरी इच्छा पूरी हो। इसके अलावा तुम्हारी और कोई मंशा नहीं होनी चाहिए। तुम्हें अपने पूरे दिल से मेरी ओर देखना चाहिए, मेरे सारे कामों और चीजों को करने के मेरे तरीकों को बारीकी से देखना चाहिए और ज़रा-भी लापरवाह नहीं होना चाहिए। तुम्हारी आत्मा प्रखर हो और तुम्हारी आँखें खुली हों। आम तौर पर, जब उनकी बात आती है जिनके इरादे और उद्देश्य सही नहीं होते, और साथ ही उनकी जो दूसरों के द्वारा देखे जाना पसंद करते हैं, जो चीज़ों को करने के लिए उतावले होते हैं, जो बाधा डालने में उद्यत होते हैं, जो धार्मिक सिद्धांतों की झड़ी लगाने में अच्छे होते हैं, जो शैतान के अनुचर होते हैं, आदि—ऐसे लोग जब खड़े हो जाते हैं तो वे कलीसिया के लिए कठिनाइयाँ बन जाते हैं, और भाई-बहनों द्वारा परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने को व्यर्थ कर देते हैं। अगर तुम इस तरह के लोगों को ढोंग करते हुए पाओ, तो तुरंत उन पर प्रतिबंध लगा दो। यदि वे बार-बार फटकारे जाने पर भी न बदलें, तो उन्हें नुकसान उठाना पड़ेगा। यदि वे लोग जो अपने तौर-तरीक़ों में जिद्दी होते हैं, वे अपना बचाव करने और अपने पापों को ढँकने की कोशिश करें, तो कलीसिया को उन्हें तुरंत बहिष्कृत कर देना चाहिए और उनकी चालबाज़ी के लिए कोई जगह नहीं छोड़नी चाहिए। थोड़ा-सा बचाने की कोशिश में बहुत कुछ न खो देना; अपनी निगाह मुख्य बातों पर बनाये रखो।

अब तुम्हारी आध्यात्मिक आँखें खुल जानी चाहिए, और तुम्हें कलीसिया के अनेक प्रकार के लोगों को पहचानने में समर्थ होना चाहिए :

किस तरह के लोग आध्यात्मिक मामलों को समझते हैं और आत्मा को जानते हैं?

किस तरह के लोग आध्यात्मिक मामलों को नहीं समझते?

किस तरह के लोगों की आत्मा दुष्ट होती है?

किस तरह के लोगों में शैतान का काम होता है?

किस तरह के लोग बाधा डालने के आदी होते हैं?

किस तरह के लोगों में पवित्र आत्मा का कार्य होता है?

किस तरह के लोग परमेश्वर के भार के प्रति विचारशीलता दिखाते हैं?

किस तरह के लोग मेरी इच्छा पर चल सकते हैं?

मेरे वफ़ादार गवाह कौन हैं?

यह जान लो कि आज का सबसे ऊँचा दर्शन वह प्रबोधन है जो पवित्र आत्मा सभी कलीसियाओं को देता है। इन चीज़ों के बारे में उलझन में न पड़ो; बल्कि, उन्हें पूरी तरह से समझने के लिए समय निकालो—यह तुम लोगों के जीवन-विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण है! यदि तुम अपनी आँखों के सामने की इन चीज़ों को नहीं समझते हो, तो तुम आगे के रास्ते पर चलने में असमर्थ होगे; तुम हर समय प्रलोभन और दासत्व के खतरे में रहोगे, और मुमकिन है कि तुम निगल लिए जाओ। अब मुख्य बात यह है कि तुम अपने दिल में मेरे करीब आने में सक्षम होने पर ध्यान केंद्रित करो, मेरे साथ अधिक वार्तालाप करो। तुम्हारे अंदर जो भी कमी है या तुम्हारी जो तलाश है, वह मेरे करीब होकर और मेरे साथ वार्तालाप करने से पूरी हो जाएगी। तुम्हारे जीवन को निश्चित रूप से पोषण दिया जाएगा और तुम्हारे अंदर नया प्रबोधन होगा। मैं कभी इस बात पर ध्यान नहीं देता कि तुम पहले कितने अज्ञानी थे, न ही मैं अपने दिमाग में तुम लोगों के पिछले अपराधों पर अटका रहता हूँ। मैं तो यह देखता हूँ कि तुम मुझे किस तरह प्यार करते हो : क्या तुम मुझे बाकी सभी चीज़ों से अधिक प्यार कर सकते हो? मैं यह देखता हूँ कि क्या तुम अपने अज्ञान को मिटाने के लिए मुड़कर मुझ पर भरोसा कर सकते हो या नहीं। कुछ लोग मेरा विरोध करते हैं, खुले तौर पर मेरी अवज्ञा करते हैं, और दूसरों की आलोचना करते हैं; वे मेरे वचनों को नहीं जानते हैं, और वे मेरे मुखमंडल को ढूँढ पाएँ, इसकी संभावना और भी कम है। मेरे सम्मुख जो लोग ईमानदारी से मेरी खोज करते हैं, जिनके दिल में धार्मिकता के लिए भूख और प्यास होती है, मैं तुम्हें प्रबुद्ध करूँगा, तुम्हारे सामने प्रकट करूँगा, तुम्हारी आँखों से मुझे देखने दूँगा और मेरी इच्छा को व्यक्तिगत रूप से समझने दूँगा; मेरा

दिल निश्चित रूप से तुम्हारे सामने प्रकट किया जाएगा, ताकि तुम समझ सको। तुम्हें उसका अभ्यास करना चाहिए जिसे मैं अपने वचनों से तुम्हारे भीतर प्रबुद्ध करता हूँ; वर्ना तुम्हारा न्याय किया जाएगा। मेरी इच्छा का पालन करोगे तो तुम अपने मार्ग से भटकोगे नहीं।

जो लोग मेरे वचनों में प्रवेश करना चाहते हैं, उन पर अनुग्रह और आशीर्वाद दुगुने हो जाएँगे, वे हर दिन एक नया प्रबोधन और अंतर्दृष्टि प्राप्त करेंगे और रोज़ाना मेरे वचनों को खाने और पीने से वे अधिक ताज़ा महसूस करेंगे। वे अपने मुंह से इसका स्वाद चखेंगे : यह कितना मधुर है! ... तुम सावधान रहना, और तुम संतुष्ट न हो जाना जब तुम्हें कुछ अंतर्दृष्टि और मिठास का स्वाद मिले; मुख्य बात है आगे की खोज करते रहना! कुछ लोग सोचते हैं कि पवित्र आत्मा का कार्य सचमुच अद्भुत और वास्तविक है—यह यकीनन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के व्यक्तित्व का खुले तौर पर प्रकट होना है, और इससे भी बड़े संकेत और चमत्कार आगे होने वाले हैं। हर समय सावधान और जागते रहो, अपनी आँखों को स्रोत पर टिकाये रखो, मेरे सामने शांत रहो, ध्यान दो, सावधानीपूर्वक सुनो, और मेरे वचनों के बारे में निश्चित रहो। कोई अस्पष्टता नहीं रह सकती है; यदि तुम ज़रा-भी संदेह करोगे तो मुझे डर है कि तुम द्वार से बाहर निकाल दिये जाओगे। दृष्टि को स्पष्ट रखो, ठोस जमीन पर खड़े रहो, जीवन की इस धारा का अनुसरण करो और यह जहाँ भी बहे, इसका सावधानी से अनुसरण करो; तुम्हें ज़रा-सी भी इंसानी हिचकिचाहट बिलकुल नहीं रखनी चाहिए। बस खाओ, पिओ और प्रशंसा करो; निर्मल हृदय से खोज करो और कभी हार न मानो। तुम जो कुछ समझ न पाओ, उसे मेरे सामने लाते रहो और सुनिश्चित करो कि अपने मन में कोई संदेह न पालो ताकि तुम बड़ी हानि से बच सको। बढ़े चलो! बढ़े चलो! मेरे पास रहो! अपनी अड़चनों से मुक्त हो जाओ और स्वच्छंद न बनो। आगे बढ़ो, जी-जान से खोज करो और पीछे न हटो। तुम्हें हमेशा अपने हृदय को अर्पित करना चाहिए और एक भी पल खोना नहीं चाहिए। पवित्र आत्मा के पास करने के लिए लगातार नया कार्य होता है, वह हर दिन नया काम करता है और हर दिन उसके पास नया प्रबोधन भी होता है; पहाड़ पर एक रूपान्तरण, परमेश्वर का पवित्र आध्यात्मिक शरीर प्रकट हुआ है! धार्मिकता का सूर्य प्रकाश देता है और चमकता है; सभी राष्ट्रों और सभी लोगों ने तुम्हारे महिमापूर्ण मुखमंडल को देखा है। मेरी रोशनी उन सभी पर चमकेगी जो मेरे सामने आते हैं। मेरे वचन प्रकाश हैं, तुम्हें आगे की राह दिखाते हैं। चलते वक्त, तुम लोग दाएँ या बाएँ नहीं मुड़ोगे, बल्कि मेरे प्रकाश में चलोगे, तुम्हारा दौड़ना व्यर्थ का परिश्रम न होगा। तुम्हें पवित्र आत्मा के कार्य को स्पष्ट रूप से देखना चाहिए; मेरी इच्छा इसी में निहित है। सभी रहस्य गुप्त

हैं लेकिन वे धीरे-धीरे तुम्हारे सामने प्रकट किये जाएँगे। मेरे वचनों को हर समय ध्यान में रखो तथा मेरे साथ और अधिक संवाद करने के लिए, मेरे सामने आओ। पवित्र आत्मा का कार्य आगे बढ़ता है। मेरे पद-चिन्हों पर चलो; आगे महान चमत्कार हैं और वे तुम्हारे सामने एक-एक कर प्रकट किये जाएँगे। जो लोग ध्यान रखते हैं, प्रतीक्षा करते हैं और जागते हैं, वही उन्हें देखेंगे। सुनिश्चित करो कि ढीले न पड़ जाओ। परमेश्वर की प्रबंधन योजना अपने अंतिम चरण पर पहुंच रही है, कलीसिया की संरचना का निर्माण कामयाब होगा, विजेताओं की संख्या पहले से ही तय की जा चुकी है, विजयी नर-शिशुओं को तैयार किया जाएगा और वे मेरे साथ राज्य में प्रवेश करेंगे, मेरे साथ राज्य-भार उठाएंगे, लौह-दंड से सभी देशों पर शासन करेंगे और एक साथ महिमा में होंगे!

अध्याय 18

कलीसिया का निर्माण करना वास्तव में कोई आसान काम नहीं है! मैंने इसके निर्माण में अपना पूरा दिल लगा दिया, और शैतान इसे तोड़ गिराने के लिए वह सब-कुछ करेगा, जो उसके सामर्थ्य में होगा। यदि तुम निर्मित होना चाहते हो, तो तुम्हें ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जिसके पास दर्शन है; तुम्हें मुझ पर निर्भर रहना चाहिए, मसीह की गवाही देनी चाहिए, उसे ऊँचाई पर रखना चाहिए और मेरे प्रति निष्ठावान रहना चाहिए। तुम्हें बहाने नहीं बनाने चाहिए, बल्कि बिना शर्त आज्ञापालन करना चाहिए। तुम्हें किसी भी परीक्षण को सहना चाहिए, और जो कुछ भी मुझसे आता है, उसे स्वीकार करना चाहिए। तुम्हें पवित्र आत्मा का अनुसरण करना चाहिए, चाहे वह तुम्हारी किसी भी तरह से अगुआई करे। तुम्हारे पास तीव्र उत्साह और चीजों को परखने की क्षमता होनी चाहिए। तुम्हें लोगों को समझना चाहिए और उनका अंधानुसरण नहीं करना चाहिए; अपनी आध्यात्मिक आँखों को उज्ज्वल रखो और सभी चीजों की गहन जानकारी रखो। मेरे जैसे मन वाले लोगों को मेरी गवाही देनी चाहिए और शैतान के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़नी चाहिए। तुम्हें निर्मित होना और युद्ध में भाग लेना, दोनों काम करने चाहिए। मैं तुम लोगों के बीच हूँ, मैं तुम लोगों का समर्थन करता हूँ और मैं तुम लोगों का आश्रय हूँ।

पहली चीजें जो तुम्हें करनी चाहिए, वे हैं स्वयं को शुद्ध करना, एक बदला हुआ व्यक्ति बनना और एक स्थिर स्वभाव का होना। तुम्हें अपने जीवन में मुझ पर भरोसा करना चाहिए, चाहे तुम्हारा परिवेश अच्छा हो या बुरा; चाहे तुम घर पर हो या किसी अन्य माहौल में, तुम्हें किसी अन्य की वजह से, या किसी

घटना या मुद्दे की वजह से डगमगाना नहीं चाहिए। इतना ही नहीं, तुम्हें दृढ़ रहना चाहिए और हमेशा की तरह मसीह को जीना चाहिए और स्वयं परमेश्वर को अभिव्यक्त करना चाहिए। तुम्हें सामान्य रूप से अपना कार्य करना चाहिए और अपने कर्तव्य निभाने चाहिए; यह केवल एक बार नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे निरंतर करते रहना चाहिए। तुम्हें मेरे दिल को अपना दिल मानना चाहिए, मेरे इरादे तुम्हारे विचार बन जाने चाहिए, तुम्हें बड़ी तसवीर को ध्यान में रखना चाहिए, तुम्हें मसीह को अपने में से प्रकट होने देना चाहिए, और तुम्हें दूसरों के साथ समन्वय रखकर सेवा करनी चाहिए। तुम्हें पवित्र आत्मा के कार्य के साथ तालमेल रखना चाहिए और अपने आप को उसके उद्धार की पद्धति में झोंक देना चाहिए। तुम्हें स्वयं को खाली करना चाहिए और एक निर्दोष और खुला व्यक्ति बनना चाहिए। तुम्हें अपने भाइयों और बहनों के साथ सामान्य रूप से संगति करना और जुड़ना चाहिए, उत्साह से काम करने में सक्षम होना चाहिए, एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए, उनकी ताकत से अपनी कमजोरियाँ संतुलित करनी चाहिए, और कलीसिया के भीतर निर्मित होने की इच्छा रखनी चाहिए। केवल तभी वास्तव में राज्य में तुम्हारा हिस्सा होगा।

अध्याय 19

जैसे-जैसे पवित्र आत्मा का कार्य निरंतर आगे बढ़ रहा है, परमेश्वर एक बार फिर हमें एक नए तरीके की ओर ले गया है, जिसमें पवित्र आत्मा कार्य करता है। परिणामस्वरूप, कुछ लोगों ने मुझे अनिवार्य रूप से गलत समझा और मुझे उलाहने दिए हैं। कुछ लोगों ने मेरा प्रतिरोध और विरोध किया है और मेरी छानबीन की है। हालाँकि, मैं अभी भी करुणाशीलता से तुम लोगों के पश्चाताप करने और सुधरने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। पवित्र आत्मा के कार्य की पद्धति में हुआ परिवर्तन यह है कि स्वयं परमेश्वर स्पष्ट रूप से प्रकट हो गया है। मेरा वचन अपरिवर्तित रहेगा! चूँकि यह तुम हो, जिसे मैं बचा रहा हूँ, मैं तुम्हें बीच राह पर बिलकुल भी नहीं छोड़ना चाहता हूँ। यह तो तुम लोग अपने मन में संदेह रखते हो और खाली हाथ पीछे लौट जाना चाहते हो। तुम लोगों में से कुछ ने आगे बढ़ना बंद कर दिया है, जबकि कुछ लोग बस प्रतीक्षा कर रहे हैं और देख रहे हैं। कुछ लोग अभी भी निष्क्रियता से स्थिति का सामना कर रहे हैं, जबकि कुछ बस नकल उतारने में व्यस्त हैं। तुम लोगों ने सचमुच अपने हृदय को कठोर कर लिया है! मैंने तुम लोगों से जो कुछ कहा, तुमने उसे कुछ ऐसा बना दिया, जिस पर तुम्हें घमंड है या जिसके बारे में तुम बढ़-चढ़कर बातें करते हो। इस बारे में और सोचो : यह तुम्हारे पास भेजे गए करुणा और न्याय के वचनों के

अलावा और कुछ नहीं है। यह देखकर कि तुम लोग वास्तव में विद्रोही हो, पवित्र आत्मा स्पष्ट रूप से बोलने और विश्लेषण करने का कार्य करता है। तुम लोगों को डरना चाहिए। बिना सोचे-समझे व्यवहार मत करो या कोई भी काम जल्दबाजी में मत करो और ज़्यादा घमंड मत दिखाओ, अहंकार मत करो या हठधर्मी न बनो! तुम्हें मेरे वचनों को अभ्यास में लाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और जहाँ भी तुम जाओ, तुम्हें मेरे वचनों का पालन करना चाहिए, ताकि वे वास्तव में तुम्हें भीतर से बदल सकें और तुम मेरा स्वभाव पा सको। केवल ऐसे ही नतीजे प्रामाणिक हैं।

कलीसिया का निर्माण हो सके, इसके लिए तुम में एक विशेष आध्यात्मिक कद होना चाहिए और तुम्हें पूरे हृदय से निरंतर कोशिश करनी चाहिए। साथ ही साथ, एक बदला हुआ व्यक्ति बनने के लिए, तुम्हें पवित्र आत्मा के ताप और शुद्धिकरण को स्वीकार करना होगा। केवल ऐसी स्थितियों में ही कलीसिया निर्मित हो सकता है। पवित्र आत्मा के कार्य ने अब तुम लोगों को कलीसिया के निर्माण का प्रारंभ करने के लिए मार्ग दिखाया है। यदि तुम वैसे ही बौखलाए व शिथिल ढंग से व्यवहार करना जारी रखोगे, जैसा कि तुमने पहले किया था, तो तुम किसी भी तरह की उम्मीद छोड़ दो। तुम्हें स्वयं को सभी सच्चाइयों से लैस करना होना होगा और तुम्हारे पास आध्यात्मिक विवेक अवश्य होना चाहिए और तुम्हें मेरी बुद्धिमत्ता के अनुसार उचित मार्ग पर चलना चाहिए। कलीसिया को निर्मित करने के लिए केवल सतही तौर पर नकल करने के बजाय, तुम्हारा जीवन के आत्मा के भीतर होना ज़रूरी है। तुम्हारे जीवन में विकास की प्रक्रिया वही प्रक्रिया है, जिसमें तुम निर्मित हुए हो। हालाँकि, यह ध्यान रखो कि जो लोग उपहारों पर निर्भर होते हैं या जो आध्यात्मिक बातों को समझने में अक्षम हैं या जिनमें वास्तविकता नहीं है, वे कभी भी निर्मित नहीं हो सकते हैं, न ही वे निर्मित हो सकते हैं, जो हमेशा मेरे करीब होने और मेरे साथ संवाद बनाए रखने में असमर्थ होते हैं। जो लोग अवधारणाओं से घिरे रहते हैं या सिद्धांतों के अनुसार जीते हैं, उन्हें निर्मित नहीं किया जा सकता और न ही उन्हें जो अपने मनोभावों द्वारा निर्देशित होते हैं। चाहे परमेश्वर तुम्हारे साथ कैसा भी व्यवहार करे, तुम्हें उसके समक्ष पूरी तरह से समर्पण करना चाहिए। अन्यथा, तुम्हारा निर्माण नहीं किया जा सकता। जो लोग अपनी अभिमान, आत्मतुष्टता, गौरव और तुष्टि में डूबे रहते हैं और जो दूसरों को नीचा दिखाना या दिखावा करना पसंद करते हैं, उन्हें निर्मित नहीं किया जा सकता है। जो लोग दूसरों के साथ तालमेल बिठाकर सेवा नहीं कर सकते, उनका निर्माण नहीं किया जा सकता। यही बात उन लोगों के लिए भी सही है, जिनके पास कोई आध्यात्मिक विवेक नहीं है और जो कोई भी उनकी

अगुआई कर रहा था, उसका आँखें बंद कर अनुसरण करते हैं। इसी तरह, जो लोग मेरे इरादों को समझने में नाकामयाब रहते हैं और जो पुरानी स्थितियों में जीवन जीते हैं, उनका भी निर्माण नहीं किया जा सकता। न ही ऐसे लोगों को जो नई रोशनी को उठाने में बहुत धीमे हैं और जिनके पास आधार के रूप में कोई दूरदर्शिता नहीं है, उन्हें निर्मित नहीं किया जा सकता है।

बिना देरी किए कलीसिया का निर्माण किया जाना चाहिए; यह मेरे लिए अति आवश्यक विषय है। तुम्हें सकारात्मक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करके शुरू करना चाहिए और अपनी सारी शक्ति के साथ खुद को प्रस्तुत करके, निर्माण की धारा में स्वयं को शामिल करना चाहिए। अन्यथा, तुम्हें अस्वीकार कर दिया जाएगा। जो कुछ भी छोड़ देने के योग्य है, तुम्हें उसका पूरी तरह से त्याग कर देना चाहिए और जो खाने और पीने योग्य है उसे ही खाना और पीना चाहिए। तुम्हें मेरे वचन की वास्तविकता में जीना चाहिए और तुम्हें सतही और महत्वहीन मामलों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अपने आप से यह पूछो : तुमने मेरे वचन में से कितना ग्रहण किया है? तुम उनमें कितना जीते हो? तुम्हें एक स्पष्ट सोच रखनी चाहिए और जल्दबाजी में कुछ भी करने से बचना चाहिए; अन्यथा, इस तरह का व्यवहार जीवन में विकास करने में तुम्हारी मदद नहीं करेगा, वरन वास्तव में तुम्हारे विकास को बाधित करेगा। तुम्हें सत्य को समझना चाहिए, जानना चाहिए कि इसे कैसे अभ्यास में लाना चाहिए और मेरे वचन को सही मायने में अपना जीवन बनने देना चाहिए। यही इस बात का मूल बिंदु है!

चूँकि कलीसिया की इमारत का निर्माण अब एक महत्वपूर्ण क्षण पर पहुँच गया है, शैतान योजना बना रहा है और इसे ध्वस्त करने की पूरी कोशिश कर रहा है। तुम्हें असावधान नहीं रहना चाहिए, बल्कि सतर्कता से आगे बढ़ना चाहिए और आध्यात्मिक विवेकशीलता का पालन करना चाहिए। ऐसे विवेक के बिना, तुम्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। यह कोई महत्वहीन बात नहीं है; तुम्हें इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण मामले के रूप में देखना चाहिए। शैतान भी झूठे रूप लेने और जालसाजी करने में सक्षम है, पर इन चीज़ों की असली गुणवत्ता भिन्न है। लोग इतने मूर्ख और लापरवाह हैं और इस भिन्नता को देख नहीं पाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि वे हमेशा एक स्पष्ट सोच और स्थिरता कायम रखने में असमर्थ हैं। तुम लोगों के हृदय कहीं नहीं मिलते। एक दृष्टिकोण से सेवा गौरव की बात है, जबकि दूसरी ओर यह एक नुकसान भी हो सकती है। यह तुम्हारे लिए या तो आशीष बन सकती है या दुर्भाग्य। मेरी उपस्थिति में मौन रहो और मेरे वचन के अनुसार जियो और आध्यात्मिक रूप से तुम वास्तव में सतर्क रह पाओगे और विवेकशील बने

रहोगे। जब शैतान आएगा, तुम तुरंत उससे स्वयं की रक्षा कर पाओगे और उसके आने का पूर्वाभास भी हो जाएगा; तुम अपनी आत्मा के अंदर एक सच्ची बेचैनी महसूस करोगे। शैतान का वर्तमान काम प्रचलित रुझानों के बदलाव के अनुसार बदलता रहता है। जब लोग व्याकुल होकर व्यवहार करते हैं और सतर्क नहीं होते हैं, तो वे बंधन में ही रहेंगे। तुम्हें हर समय सतर्क रहना होगा और अपनी आँखें खुली रखनी होंगी। अपने स्वयं के लाभ और हानि पर विवाद न करो या अपने स्वयं के लाभ के ही बारे में केवल मत सोचो; बल्कि मेरी इच्छा पूरी करने की कोशिश करो।

वस्तुएँ बेशक एकसमान दिख सकती हैं लेकिन उनकी गुणवत्ता में भिन्नता हो सकती है। इस कारण, तुम्हें व्यक्तियों और साथ ही साथ आत्माओं को भी पहचानना होगा। तुम्हें विवेक को प्रयोग में लाना चाहिए और आध्यात्मिक रूप से स्पष्टता बनाए रखनी चाहिए। जब शैतान का विष प्रकट होगा, तो तुम्हें इस योग्य होना चाहिए कि उसे फ़ौरन पहचान लो; वह परमेश्वर के न्याय की रोशनी से बच नहीं सकता है। तुम्हें अपनी आत्मा में पवित्र आत्मा की वाणी को गौर से सुनने पर अधिक ध्यान देना चाहिए; दूसरों का बिना सोचे-समझे अनुकरण न करो या असत्य को सत्य मान लेने की भूल न करो। जो भी अगुआई करे, उसका यूँ ही अनुसरण न करने लगो, वरना तुम्हें भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। इससे तुम्हें कैसा लगता है? क्या तुम लोगों ने परिणामों को महसूस किया है? तुम्हें बिना सोचे-समझे सेवा में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए या उसमें अपनी राय नहीं देनी चाहिए, अन्यथा मैं तुम्हें गिरा दूँगा। इससे भी बदतर, यदि तुम समर्पण करने से इनकार करते हो और अपनी ही बात कहते हो, जो चाहते हो वही करते जाते हो, तो मैं तुमको अलग कर दूँगा! कलीसिया को और अधिक लोगों को बटोरने की ज़रूरत नहीं है; इसे केवल ऐसे लोग चाहिए जो ईमानदारी से परमेश्वर से प्रेम करते हैं और वास्तव में मेरे वचन के अनुसार जीते हैं। तुम्हें अपनी वास्तविक स्थिति के बारे में अवगत होना चाहिए। अगर गरीब लोग स्वयं को अमीर समझें तो क्या यह खुद को धोखा देना नहीं है? कलीसिया का निर्माण करने के लिए, तुम्हें आत्मा का अनुपालन करना चाहिए; बिना सोचे-समझे आगे न बढ़ो। बल्कि अपने स्थान पर ही रहो और अपने स्वयं के कार्य को पूरा करो। तुम्हें अपनी भूमिकाओं से बाहर कदम नहीं रखना चाहिए; जो भी कार्य तुम कर सकते हो, उन्हें पूरा करने के लिए, पूरी ताक़त लगा दो और तब मेरे हृदय को संतुष्टि मिलेगी। ऐसा नहीं है कि तुम सभी एक ही कार्य करोगे। बल्कि, तुममें से प्रत्येक को अपनी भूमिका निभानी चाहिए और कलीसिया में अन्य लोगों के साथ तालमेल बिठाते हुए अपनी सेवाएं समर्पित करनी चाहिए। तुम लोगों की सेवा इधर या उधर

भटकनी नहीं चाहिए।

अध्याय 20

पवित्र आत्मा का कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, और तुम लोगों को एक बिलकुल नए राज्य में लेकर आ रहा है, अर्थात् तुम लोगों के सामने राज्य के जीवन की वास्तविकता प्रकट हो गई है। पवित्र आत्मा द्वारा कहे गए वचनों ने सीधे तुम्हारे दिल की गहराई को प्रकट किया है, और तुम लोगों के सामने एक के बाद एक तसवीर प्रकट हो रही है। जिन लोगों में धार्मिकता की भूख और प्यास है, और जो समर्पण करने का इरादा रखते हैं, वे निश्चित रूप से सिय्योन में बने रहेंगे और नए यरुशलेम में रहेंगे; वे निश्चित रूप से महिमा और सम्मान प्राप्त करेंगे और मेरे साथ रहकर सुंदर आशीष साझा करेंगे। इस समय आध्यात्मिक दुनिया के कुछ रहस्य हैं जो तुमने अभी तक नहीं देखे हैं, क्योंकि तुम लोगों की आध्यात्मिक आँखें नहीं खुली हैं। सभी चीज़ें पूर्णत: अद्‌भुत हैं; चमत्कार और अचंभे, और ऐसी चीज़ें जिनके बारे में लोगों ने कभी सोचा भी नहीं, धीरे-धीरे सच हो जाएँगी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने महानतम चमत्कार दिखाएगा, ताकि ब्रह्मांड और पृथ्वी का कोना-कोना और सभी राष्ट्र और लोग उन्हें अपनी आँखों से देख सकें, और यह भी देखें कि मेरा प्रताप, धार्मिकता और सर्वशक्तिमत्ता किसमें है। वह दिन करीब आ रहा है! यह एक बहुत ही नाजुक पल है : क्या तुम पीछे हट जाओगे या तुम अंत तक दृढ़ रहोगे और कभी वापस नहीं मुड़ोगे? किसी भी व्यक्ति, घटना या वस्तु की ओर न देखो; दुनिया, अपने पति, अपने बच्चों, या जीवन के बारे में अपनी आशंकाओं को न देखो। बस, मेरे प्रेम और दया की ओर देखो, और देखो कि मैंने तुम लोगों को प्राप्त करने के लिए क्या कीमत चुकाई है, और यह भी कि मैं क्या हूँ। ये बातें तुम्हें प्रोत्साहित करने के लिए पर्याप्त होंगी।

समय बहुत करीब है और मेरी इच्छा जल्दी से जल्दी पूरी की जानी चाहिए। मैं उन्हें नहीं त्यागूँगा जो मेरे नाम पर हैं; मैं तुम सबको महिमा में लेकर आऊँगा। लेकिन अब इसे देखते हुए, यह एक नाजुक क्षण है; वे सभी जो अगला कदम उठाने में असमर्थ हैं, बाकी पूरा जीवन विलाप करेंगे और पश्चात्ताप अनुभव करेंगे, जबकि ऐसी भावना के लिए पहले ही बहुत देर हो चुकी होगी। इस समय तुम लोगों की कद-काठियाँ एक व्यावहारिक कसौटी पर कसी जा रही हैं, यह देखने के लिए कि कलीसिया बनाई जा सकती है या नहीं और तुम लोग एक-दूसरे का आज्ञापालन कर सकते हो या नहीं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए, तो

तुम्हारा आज्ञापालन वास्तव में वह है जिसे तुम सोच-विचारकर चुनते हो; तुम किसी एक व्यक्ति का आज्ञापालन भले ही कर सको, पर दूसरे का आज्ञापालन करना तुम्हें मुश्किल लगता है। जब तुम मानव-धारणाओं पर निर्भर रहते हो, तो वास्तव में तुम्हारे आज्ञाकारी होने का कोई उपाय नहीं है। परंतु, परमेश्वर के विचार हमेशा मनुष्य के विचारों से आगे रहते हैं! मसीह ने मृत्यु तक समर्पण किया और और सलीब पर मृत्यु पाई। उसने कोई शर्त नहीं रखी या कोई कारण नहीं बताया; चूँकि वह उसके पिता की इच्छा थी, इसलिए उसने स्वेच्छा से आज्ञापालन किया। तुम्हारी आज्ञाकारिता का वर्तमान स्तर बहुत ही सीमित है। मैं तुम सबसे कहता हूँ, लोगों का आज्ञापालन करना आज्ञाकारिता नहीं है; बल्कि इसका अर्थ है, पवित्र आत्मा के कार्य का आज्ञापालन करना, और स्वयं परमेश्वर का आज्ञापालन करना। मेरे वचन तुम लोगों को भीतर से नया बना रहे हैं और बदल रहे हैं; अगर वे ऐसा न करते, तो कौन किसका आज्ञापालन करता? तुम दूसरे लोगों के प्रति अवज्ञाकारी हो। तुम लोगों को यह समझ पाने के लिए समय देना चाहिए कि—आज्ञाकारिता क्या है और तुम लोग आज्ञाकारिता का जीवन कैसे जी सकते हो। तुम्हें मेरे सामने और अधिक आना चाहिए, और इस मामले पर संगति करनी चाहिए, धीरे-धीरे तुम इसे समझ जाओगे, और फलस्वरूप अपने अंदर की धारणाओं और विकल्पों को त्याग दोगे। मेरे कार्य करने का यह तरीका लोगों द्वारा पूर्ण रूप से समझ पाना मुश्किल है। बात यह नहीं है कि लोग किन रूपों में अच्छे या सक्षम हैं; मैं परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता प्रकट करने के लिए सबसे अज्ञानी और सबसे महत्वहीन व्यक्ति का भी उपयोग कर लेता हूँ, और साथ ही लोगों की कुछ धारणाएँ, मत और विकल्प उलट देता हूँ। परमेश्वर के कर्म इतने अद्भुत हैं कि मानव-मन उनकी थाह नहीं पा सकता!

यदि तुम वास्तव में ऐसा व्यक्ति बनना चाहते हो जो मेरे लिए गवाही देता है, तो तुम्हें सत्य को शुद्ध रूप में प्राप्त करना चाहिए, न कि अशुद्ध रूप में। तुम्हें मेरे वचनों को अभ्यास में लाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए, और अपने जीवन को जल्दी से परिपक्व बनाने की कोशिश करनी चाहिए। मूल्यहीन वस्तुओं की तलाश मत करो; वे तुम लोगों के जीवन की प्रगति के लिए लाभदायक नहीं हैं। तुम्हें केवल तभी बनाया जा सकता है, जब तुम्हारा जीवन परिपक्व हो जाए; और केवल तभी तुम्हें राज्य में लाया जा सकता है—यह अकाट्य है। मैं अभी भी तुमसे कुछ और भी कहना चाहता हूँ; मैंने तुम्हें बहुत दिया है, लेकिन तुम वास्तव में कितना समझते हो? जो मैं कहता हूँ, उसमें से कितना तुम्हारे जीवन की वास्तविकता बना है? जो मैं कहता हूँ, उसमें से कितने को तुम जी रहे हो? बाँस की टोकरी से पानी निकालने की कोशिश मत करो;

अंत में सिवाय खालीपन के तुम्हें कुछ हासिल नहीं होगा। दूसरों ने बहुत आसानी से वास्तविक लाभ प्राप्त किए हैं; मगर तुम्हारे बारे में क्या? यदि तुम निहत्थे हो और कोई हथियार नहीं रखते, तो क्या तुम शैतान को पराजित कर सकते हो? तुम्हें अपने जीवन में मेरे वचनों पर अधिक निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि वे आत्मरक्षा के लिए सबसे अच्छे हथियार हैं। तुम्हें ध्यान देना चाहिए : मेरे वचनों को अपनी संपत्ति की तरह मत देखो; यदि तुम उन्हें नहीं समझते, यदि तुम उन्हें नहीं खोजते, और यदि तुम उन्हें समझने और उनके बारे में मुझसे बात करने का प्रयास नहीं करते, और उसके बजाय आत्म-संतुष्ट और आत्म-तृप्त रहते हो, तो तुम नुकसान उठाओगे। अभी तुम्हें इस सबक से सीखना चाहिए, और तुम्हें स्वयं को अलग रखकर अपनी कमियों की भरपाई करने के लिए दूसरों की शक्तियों से लाभ उठाना चाहिए; केवल वही मत करो जो तुम चाहते हो। समय किसी का इंतज़ार नहीं करता। तुम्हारे भाइयों और बहनों का जीवन दिन-प्रतिदिन विकसित हो रहा है; वे सभी परिवर्तन का अनुभव कर रहे हैं और दिन-प्रतिदिन नए हो रहे हैं। तुम्हारे भाइयों और बहनों की शक्तियाँ बढ़ रही हैं, और यह एक बड़ी बात है! समापन-रेखा की ओर दौड़ो; कोई किसी अन्य का ध्यान नहीं रख पाएगा। मेरे साथ सहयोग करने के लिए बस अपने व्यक्तिपरक प्रयास करो। जिनके पास दर्शन हैं, जिनके पास आगे बढ़ने का रास्ता है, जो निराश नहीं हैं और जो हमेशा आगे की ओर देखते हैं, निस्संदेह उनका विजयी होना निश्चित है। यह एक नाजुक पल है। सुनिश्चित करो कि तुम निराश या हतोत्साहित नहीं होगे; तुम्हें हर चीज़ में आगे की ओर देखना चाहिए, और पीछे नहीं मुड़ना चाहिए। तुम्हें सब-कुछ बलिदान कर देना चाहिए, सभी उलझनें छोड़ देनी चाहिए, और अपनी पूरी शक्ति के साथ कोशिश करनी चाहिए। जब तक तुम्हारे भीतर एक भी साँस बाकी रहे, अंत तक प्रयत्नशील रहो; यही एक रास्ता है, जिससे तुम प्रशंसा के पात्र बनोगे।

अध्याय 21

पवित्र आत्मा का कार्य अब तुम लोगों को एक नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर ले आया है। सब-कुछ नया किया जा रहा है, सब-कुछ मेरे हाथों में है, सब-कुछ नए सिरे से शुरू हो रहा है! अपनी धारणाओं के कारण लोग इसे समझ पाने में असमर्थ हैं, और उन्हें यह निरर्थक लगता है, लेकिन यह मैं हूँ, जो कार्य कर रहा है, और इसमें मेरी बुद्धिमत्ता निहित है। इसलिए तुम लोगों को केवल अपनी सभी धारणाएँ और विचार छोड़ने, और समर्पण में परमेश्वर के वचन खाने और पीने में दिलचस्पी रखनी चाहिए; किसी तरह का संदेह

नहीं रखना चाहिए। चूँकि मैं इस तरह से काम कर रहा हूँ, इसलिए मैं एक पवित्र दायित्व उठाऊँगा। वास्तव में, लोगों को एक विशेष तरीके का होने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि, यह परमेश्वर है जो अपनी सर्वशक्तिमत्ता प्रकट करते हुए चमत्कारी चीज़ें कर रहा है। लोग तब तक शेखी नहीं बघार सकते, जब तक वे परमेश्वर के बारे में शेखी नहीं बघारते। अन्यथा तुम नुकसान उठाओगे। परमेश्वर ज़रूरतमंदों को धूल से उठाता है; विनम्र को उच्च बनाया जाना चाहिए। मैं विश्वव्यापी कलीसिया को नियंत्रित करने के लिए, सभी राष्ट्रों और सभी लोगों को नियंत्रित करने के लिए अपनी बुद्धिमत्ता का उसके सभी रूपों में उपयोग करूँगा, ताकि वे सभी मेरे भीतर हों, और ताकि कलीसिया में उपस्थित तुम सब मेरे सामने समर्पित हो सको। जो लोग पहले आज्ञा नहीं मानते थे, उन्हें अब मेरे सामने आज्ञाकारी होना चाहिए, एक-दूसरे के लिए समर्पित होना चाहिए, एक-दूसरे को सहन करना चाहिए; तुम्हारे जीवन आपस में जुड़े होने चाहिए, और तुम्हें एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए, सभी को अपनी कमियों की पूर्ति करने के लिए दूसरों की शक्तियों का उपयोग करना चाहिए, समन्वय के साथ सेवा करनी चाहिए। इस तरह से कलीसिया का निर्माण होगा, और शैतान को शोषण करने का कोई अवसर नहीं मिलेगा। केवल तब मेरी प्रबंधन योजना विफल नहीं होगी। यहाँ मैं तुम लोगों को एक और अनुस्मारक दे दूँ। अपने भीतर इस कारण से गलतफ़हमियाँ उत्पन्न न होने देना, कि ऐसे-ऐसे व्यक्ति का एक खास तरीका है, या वह ऐसे-ऐसे तरीके से कार्य करता है, जिसका परिणाम यह होता है कि तुम अपनी आत्मिक स्थिति में पतित हो जाते हो। जैसा कि मैं देखता हूँ, यह उचित नहीं है, और यह एक बेकार बात है। क्या जिस पर तुम विश्वास करते हो, वह परमेश्वर नहीं है? यह कोई व्यक्ति नहीं है। कार्य समान नहीं हैं। एक शरीर है। प्रत्येक अपना कर्तव्य करता है, प्रत्येक अपनी जगह पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है—प्रत्येक चिंगारी के लिए प्रकाश की एक चमक है—और जीवन में परिपक्वता की तलाश करता है। इस प्रकार मैं संतुष्ट हूँगा।

तुम लोगों को केवल मेरे सामने शांतिपूर्ण रहने के बारे में चिंता करनी चाहिए। मेरे साथ घनिष्ठ समागम में रहो, जहाँ तुम्हें समझ न आए वहाँ अधिक जिज्ञासा करो, प्रार्थनाएँ करो, और मेरे समय की प्रतीक्षा करो। सब-कुछ आत्मा से स्पष्ट रूप से देखो। लापरवाही से कार्य न करो, ताकि खुद को भटकने से बचा सको। तुम्हारा मेरे वचनों को खाना और पीना केवल इसी तरह से फलीभूत होगा। मेरे वचनों को अकसर खाओ और पिओ, मैंने जो कहा है उस पर विचार करो, मेरे वचनों के अभ्यास पर ध्यान दो, और मेरे वचनों की वास्तविकता जिओ; यह मुख्य मुद्दा है। कलीसिया के निर्माण की प्रक्रिया जीवन के विकास

की प्रक्रिया भी है। यदि तुम्हारे जीवन का विकास रुक जाता है, तो तुम्हारा निर्माण नहीं किया जा सकता। स्वाभाविकता पर, देह पर, उत्साह पर, योगदान पर, योग्यता पर निर्भरता फ़िज़ूल है; तुम कितने भी अच्छे क्यों न हो, अगर तुम इन चीज़ों पर निर्भर रहोगे, तो तुम्हारा निर्माण नहीं किया जाएगा। तुम्हें जीवन के वचनों में जीना चाहिए, पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी में जीना चाहिए, अपनी वास्तविक स्थिति जाननी चाहिए, और एक परिवर्तित व्यक्ति बनना चाहिए। तुम्हारी आत्मा में समान अंतर्दृष्टि होनी चाहिए, नई प्रबुद्धता होनी चाहिए, और तुम्हें नई रोशनी के साथ बढ़ते रहने में सक्षम होना चाहिए। तुम्हें लगातार मेरे करीब आने और मेरे साथ संवाद करने में सक्षम होना चाहिए, दैनिक जीवन के अपने कार्यों को मेरे वचनों पर आधारित करने में सक्षम होना चाहिए, सभी प्रकार के लोगों, घटनाओं और चीज़ों को मेरे वचनों के आधार पर सही तरह से सँभालने में सक्षम होना चाहिए, और मेरे वचनों को अपना मानक समझना चाहिए और अपने जीवन की सभी गतिविधियों में मेरे स्वभाव को जीना चाहिए।

यदि तुम मेरी इच्छा की थाह पाना और उसका ख्याल रखना चाहते हो, तो तुम्हें मेरे वचनों पर ध्यान देना चाहिए। उतावलेपन से काम मत करो। वह सब जो मुझे स्वीकार नहीं है, उसका बुरा अंत होगा। आशीष केवल उसमें आते हैं, जिसकी मैंने सराहना की है। अगर मैं कहता हूँ, तो वह होगा। अगर मैं आज्ञा देता हूँ, तो वह अटल रहेगा। मुझे क्रोधित करने से बचने के लिए, तुम लोगों को वह बिलकुल नहीं करना चाहिए, जिसकी मैंने अनुमति नहीं दी है। अगर तुम ऐसा करते हो, तो तुम्हें पछताने का भी समय नहीं मिलेगा!

अध्याय 22

परमेश्वर में विश्वास करना कोई आसान काम नहीं है। तुम गड़बड़ करते रहते हो, हर चीज खाते हो और सोचते हो कि यह सब कितना दिलचस्प है, कितना स्वादिष्ट! कुछ लोग हैं, जो अब भी इसे सराहते हैं—उनकी आत्मा में कोई विवेक नहीं है। यह तुम लोगों के लिए गहन विश्लेषण करने लायक अनुभव है। अंत के दिनों में, सभी तरह की आत्माएँ अपनी भूमिकाएँ निभाने के लिए प्रकट होती हैं, वे खुले तौर पर परमेश्वर के बच्चों की प्रगति का विरोध करती हैं और कलीसिया के निर्माण को नुकसान पहुँचाने में शामिल होती हैं। यदि तुम इसे हल्के में लेते हो और शैतान को अपना काम करने के अवसर देते हो, तो कलीसिया अस्त-व्यस्त हो जाएगा, लोग घबरा जाएँगे और निराश हो जाएँगे, और गंभीर मामलों में लोग अपनी दूरदृष्टि

खो बैठेंगे। इस तरह, कई वर्षों से मेरे द्वारा चुकाया जा रहा कड़ी मेहनत भरा मूल्य व्यर्थ हो जाएगा।

कलीसिया के निर्माण का समय शैतान के उन्माद के चरम स्थिति पर पहुँचने का समय भी होता है। शैतान कुछ लोगों के माध्यम से अक्सर परेशानियाँ और बाधाएँ उत्पन्न करता रहता है, और वे लोग जो आत्मा को नहीं जानते या जो नए विश्वासी होते हैं, शैतान की भूमिका को सबसे ज्यादा आसानी से निभा सकते हैं। चूँकि लोग पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं समझते हैं, इसलिए वे अक्सर मनमाने ढंग से, पूरी तरह से अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार, काम करने के अपने तरीकों और अपनी धारणाओं के अनुसार व्यवहार करते रहते हैं। ज्यादा जुबान न चलाओ—यह तुम लोगों की अपनी सुरक्षा के लिए है। सुनो और अच्छी तरह से इसका पालन करो। कलीसिया समाज से अलग है। तुम जो मन में आए, या जो भी तुम सोचो, वह नहीं कह सकते। यह यहाँ नहीं चलेगा, क्योंकि यह परमेश्वर का घर है। परमेश्वर लोगों के काम करने के तरीक़े को स्वीकार नहीं करता। तुम्हें आत्मा का अनुसरण करते हुए काम करना चाहिए; तुम्हें परमेश्वर के वचनों को जीना चाहिए, तो फिर दूसरे लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। पहले तुम्हें परमेश्वर पर भरोसा करके अपने भीतर की सभी कठिनाइयों को हल करना होगा। अपने पतित स्वभाव को छोड़ दो और अपनी अवस्था को वास्तव में समझने में सक्षम बनो और यह जानो कि तुम्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए; जो कुछ भी तुम्हें समझ में न आए, उसके बारे में सहभागिता करते रहो। व्यक्ति का खुद को न जानना अस्वीकार्य है। पहले अपनी बीमारी ठीक करो, और मेरे वचनों को खाने और पीने और उन पर चिंतन-मनन द्वारा, अपना जीवन मेरे वचनों के अनुसार जीओ और उन्हीं के अनुसार अपने कर्म करो; चाहे तुम घर पर हो या किसी अन्य जगह पर, तुम्हें परमेश्वर को अपने भीतर शक्ति के प्रयोग की अनुमति देनी चाहिए। देह और स्वाभाविकता को त्याग दो। अपने भीतर हमेशा परमेश्वर के वचनों का प्रभुत्व बना रहने दो। यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि तुम लोगों का जीवन बदल नहीं रहा है; समय के साथ, तुम महसूस करोगे कि तुम्हारे स्वभाव में एक बड़ा परिवर्तन हुआ है। पहले तुम चर्चा में रहने के लिए उतावले रहते थे, किसी की आज्ञा नहीं मानते थे या महत्वाकांक्षी, आत्मतुष्ट या दंभी थे—पर तुम धीरे-धीरे इन चीजों से छुटकारा पा लोगे। यदि तुम इन्हें अभी छोड़ना चाहते हो, तो यह संभव नहीं है! क्योंकि तुम्हारा पुराना अहं दूसरों को इसे छूने की अनुमति नहीं देगा, इसकी जड़ें इतनी गहरी हैं। अत: तुम्हें व्यक्तिपरक प्रयास करने होंगे, सकारात्मक और सक्रिय रूप से पवित्र आत्मा के कार्य का अनुपालन करना होगा, परमेश्वर के साथ सहयोग करने के लिए अपनी इच्छा-शक्ति का उपयोग करना होगा, और मेरे वचनों को अभ्यास में

लाने के इच्छुक रहना होगा। यदि तुम पाप करते हो, तो परमेश्वर तुम्हें अनुशासित करेगा। जब तुम वापस लौटते हो और समझने लगते हो, तो तुम्हारे भीतर तुरंत सब-कुछ ठीक हो जाएगा। यदि तुम मनमाने ढंग से बोलते हो, तो तुम्हें तुरंत तुम्हारे भीतर से अनुशासित कर दिया जाएगा। तुम जानते हो कि परमेश्वर को इस तरह की चीजों में कोई आनंद नहीं आता, इसलिए यदि तुम तुरंत रुक जाते हो, तो तुम्हें आंतरिक शांति का अनुभव होगा। कुछ नए विश्वासी ऐसे हैं, जो नहीं समझ पाते कि जीवन की भावनाएँ क्या हैं या उन भावनाओं के भीतर कैसे जीना है। कभी-कभी तुम सोचते हो, हालांकि तुमने कुछ भी नहीं कहा है, तुम भीतर से इतने बेचैन क्यों महसूस करते हो? ऐसे समय में तुम्हारे विचार और तुम्हारा मन ग़लत होते हैं। कभी-कभी तुम्हारे पास अपने स्वयं के विकल्प होते हैं, तुम्हारी अपनी धारणाएँ और मत होते हैं; कभी-कभी तुम दूसरों को अपने से कम समझते हो; कभी-कभी तुम अपनी खुद की स्वार्थपूर्ण गणनाएँ कर लेते हो और प्रार्थना या आत्मावलोकन नहीं करते। इसी कारण तुम अपने भीतर बेचैन महसूस करते हो। शायद तुम जानते हो कि समस्या क्या है, इसलिए सीधे अपने दिल में परमेश्वर का नाम पुकारो, परमेश्वर के समीप आ जाओ, और तुम ठीक हो जाओगे। जब तुम्हारा दिल बहुत घबराने और बेचैन होने लगता है, तो तुम्हें यह बिलकुल नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर तुम्हें बोलने की अनुमति दे रहा है। नए विश्वासियों को इस मामले में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने पर विशेष रूप से ज्यादा ध्यान देना चाहिए। परमेश्वर जिन भावनाओं को मनुष्य के अंदर रखता है, वे हैं शांति, आनंद, स्पष्टता और निश्चितता। ऐसे लोग होते हैं जो यह सब समझ नहीं पाते, जो गड़बड़ करेंगे और मनमाने ढंग से व्यवहार करेंगे—ये सभी रुकावटें हैं, इस पर बहुत सावधानी से ध्यान दो। यदि तुम्हारे इस अवस्था के शिकार होने की संभावना है तो इसे रोकने के लिए तुम्हें "निवारक दवा" लेनी चाहिए, अन्यथा तुम रुकावटें पैदा करोगे और परमेश्वर तुम पर प्रहार करेगा। आत्मतुष्ट मत बनो; अपनी कमियों को दूर करने के लिए दूसरों से ताकत बटोरो, और देखो कि दूसरे परमेश्वर के वचनों के अनुसार कैसे जीते हैं; और देखो कि क्या उनके जीवन, कर्म और बोल अनुकरणीय हैं। यदि तुम दूसरों को अपने से कम मानते हो, तो तुम आत्मतुष्ट और दंभी हो और किसी के भी काम के नहीं हो। अब जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है वह है जीवन पर ध्यान केंद्रित करना, मेरे वचनों को और ज्यादा खाना-पीना, मेरे वचनों का अनुभव करना, मेरे वचनों को जानना, मेरे वचनों को सचमुच ही अपना जीवन बना लेना—ये सब मुख्य बातें हैं। जो व्यक्ति परमेश्वर के वचनों के अनुसार नहीं जी सकता, क्या उसका जीवन परिपक्व हो सकता है? नहीं, यह नहीं हो सकता। तुम्हें हर समय मेरे वचनों के अनुसार

जीना चाहिए और मेरे वचनों को जीवन की आचार-संहिता बना लेना चाहिए, इससे तुम लोग महसूस करोगे कि इस आचार-संहिता के साथ व्यवहार करने से परमेश्वर आनंदित होता है, और ऐसा नहीं करने से परमेश्वर घृणा करता है; और धीरे-धीरे तुम सही मार्ग पर चलने लगोगे। तुम्हें यह समझना चाहिए कि वह क्या है, जो परमेश्वर से आता है और वह क्या है, जो शैतान से आता है। जो परमेश्वर से आता है, वह तुम लोगों को और ज्यादा स्पष्टता के साथ एक दूरदृष्टि देता है और तुम्हें ईश्वर के और ज्यादा निकट लाता है; तुम अपने भाइयों और बहनों के साथ सच्चा प्यार साझा करते हो, तुम परमेश्वर के दायित्व-भार को लेकर ज्यादा विचारशीलता दिखा पाते हो, और तुम्हारे पास एक परमेश्वर-प्रेमी दिल होता है, जो कभी भी मिटता नहीं है। तुम्हारे सामने चलने के लिए एक रास्ता होता है। जो कुछ शैतान से आता है, वह तुम्हारी दूरदृष्टि को खत्म कर देता है, और तुम वह सब खो बैठते हो जो तुम्हारे पास होता है; तुम परमेश्वर से विमुख हो जाते हो, तुम्हें अपने भाइयों और बहनों से भी प्यार नहीं रहता, और तुम्हारा दिल घृणा से भर जाता है। तुम बेवश हो जाते हो, तुम अब कलीसियाई जीवन को और नहीं जीना चाहते, और तुम्हारा दिल भी अब परमेश्वर-प्रेमी नहीं रहता। यह शैतान का काम होता है, और यह दुष्ट आत्माओं के काम का परिणाम होता है।

अब यह एक निर्णायक क्षण है। तुम्हें अपनी अंतिम पाली तक अपने पद पर तैनात रहना होगा, अच्छाई और बुराई में भेद करने के लिए तुम्हें अपनी आत्मा की आँखों को साफ़ करना होगा, और तुम लोगों को कलीसिया के निर्माण में अपना समस्त प्रयास झोंक देना होगा। शैतान के अनुचरों, धार्मिक उत्पातों और दुष्ट आत्माओं के काम को दूर झटक दो। कलीसिया का शुद्धिकरण करो, मेरी इच्छा का निर्बाध रूप से अनुपालन होने दो, और सच में, आपदाओं से पहले के इस संक्षिप्त समय में मैं तुम सबको यथाशीघ्र सम्पूर्ण बना दूँगा, और तुम्हें महिमा में ले जाऊँगा।

अध्याय 23

उन सभी भाइयों और बहनों के लिए, जिन्होंने मेरी आवाज सुनी है : तुम लोगों ने मेरे प्रचंड न्याय की आवाज सुनी है और तुमने चरम पीड़ा सहन की है। लेकिन तुम लोगों को पता होना चाहिए कि मेरी कठोर आवाज के पीछे मेरे इरादे छिपे हैं! मैं तुम लोगों को इसलिए अनुशासित करता हूँ, ताकि तुम लोगों को बचाया जा सके। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि अपने प्यारे पुत्रों की खातिर मैं निश्चित रूप से तुम

लोगों को अनुशासित करूँगा, तुम लोगों की काट-छाँट करूँगा और शीघ्र ही तुम लोगों को पूर्ण कर दूँगा। मेरा हृदय बहुत उत्सुक है, लेकिन तुम लोग मेरे हृदय को नहीं समझते और मेरे वचन के अनुसार कार्य नहीं करते। मेरे वचन आज तुम लोगों पर आते हैं और तुम लोगों को वास्तव में यह पहचान करवाते हैं कि परमेश्वर एक प्रेम करने वाला परमेश्वर है, और वे तुम सबको परमेश्वर के सच्चे प्रेम का अनुभव कराते हैं। हालाँकि, एक छोटी संख्या में ऐसे लोग भी हैं, जो ढोंग कर रहे हैं। जब वे अन्य लोगों का दु:ख देखते हैं, तो वे अपनी आँखों में भी आँसू भरकर उनकी नकल करते हैं। कुछ अन्य लोग हैं, जो—सतह पर—परमेश्वर के ऋणी दिखते हैं और और पश्चात्ताप करते प्रतीत होते हैं, किंतु अपने भीतर वे वास्तव में परमेश्वर को नहीं समझते, न ही वे उसके बारे में निश्चित हैं; बल्कि, वे बस मुखौटा लगाते हैं। मैं इन लोगों से सबसे ज्यादा घृणा करता हूँ! देर-सबेर ये लोग मेरे शहर से कट जाएँगे। मेरा इरादा यह है : मैं उन लोगों को चाहता हूँ जो उत्कंठा से मुझे चाहते हैं, और केवल वे, जो सच्चे हृदय से मेरी खोज करते हैं, मुझे प्रसन्न कर सकते हैं। ये वे लोग हैं, जिन्हें मैं निश्चित रूप से अपने हाथों से सहारा दूँगा, और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि उन्हें किसी भी आपदा का सामना न करना पड़े। जो लोग वास्तव में परमेश्वर को चाहते हैं, वे परमेश्वर के हृदय का ध्यान रखेंगे और मेरी इच्छा पूरी करेंगे। तो, तुम लोगों को शीघ्र ही वास्तविकता में प्रवेश करना चाहिए और मेरे वचन को अपने जीवन के रूप में स्वीकार करना चाहिए—यह मेरा सबसे बड़ा बोझ है। यदि सभी कलीसियाएँ और संत वास्तविकता में प्रवेश करते हैं और वे सब मेरे साथ सीधे संगति करने में सक्षम होते हैं, मेरे साथ आमने-सामने आ सकते हैं और सत्य और धार्मिकता का अभ्यास कर सकते हैं, तो केवल तभी वे मेरे प्यारे पुत्र होंगे, ऐसे लोग, जिनसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। इन लोगों को मैं सभी महान आशीष प्रदान करूँगा।

अध्याय 24

समय बहुत नजदीक आता जा रहा है। जागो! सभी संतो! मैं तुम लोगों से बात करूँगा, और जो सुनेंगे, वे सभी जाग जाएँगे। मैं ही वह परमेश्वर हूँ, जिस पर तुम लोगों ने इन कई वर्षों के दौरान विश्वास किया है। आज मैं देह बन गया हूँ और तुम लोगों की आँखों के सामने आ गया हूँ, और इस प्रकार यह प्रकट कर रहा हूँ कि कौन वास्तव में मुझे चाहता है, कौन मेरे लिए कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार है, कौन वास्तव में मेरे वचन को सुनता है, और कौन सत्य को अभ्यास में लाने के लिए तैयार है। क्योंकि मैं सर्वशक्तिमान

परमेश्वर हूँ—मैं मनुष्य के अँधेरे में छिपे हुए सभी रहस्य देख सकता हूँ, मैं जानता हूँ कि कौन वास्तव में मुझे चाहता है, और मैं जानता हूँ कि कौन मेरा विरोध करता है। मैं सभी चीजों को देखता हूँ।

अब मैं यथाशीघ्र उन लोगों का एक समूह बनाना चाहता हूँ, जो मेरे हृदय के अनुरूप हैं, ऐसे लोगों का समूह, जो मेरे बोझ पर ध्यान देने में सक्षम हैं। किंतु मैं अपनी कलीसिया की सफाई और शुद्धि करने से नहीं रुक सकता; कलीसिया मेरा हृदय है। मैं उन सभी दुष्ट लोगों से घृणा करता हूँ, जो तुम लोगों को मेरे वचन को खाने और पीने से रोकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि कुछ दूसरे लोग हैं, जो वास्तव में मुझे नहीं चाहते। वे लोग छल से भरे हुए हैं, वे अपने सच्चे हृदय से मेरे पास नहीं आते; वे दुष्ट हैं, और वे ऐसे लोग हैं जो मेरी इच्छा पूरी करने में बाधा डालते हैं; वे ऐसे लोग नहीं हैं जो सत्य को अमल में लाते हैं। वे लोग दंभ और अहंकार से भरे हुए हैं, वे बेतहाशा महत्वाकांक्षी हैं, वे दूसरों को नीचा दिखाना पसंद करते हैं, और हालाँकि वे जो वचन बोलते हैं वे सुनने में सुखद होते हैं, लेकिन एकांत में वे सत्य का अभ्यास नहीं करते। इन सभी दुष्ट लोगों को अलग कर बुहार दिया जाएगा; वे आपदा में मुरझा जाएँगे। ये वचन तुम लोगों को यह याद दिलाने और चेतावनी देने के लिए हैं कि अपने पैर उस मार्ग पर रखो, जो मेरे हृदय के अनुरूप है। सदैव अपनी आत्मा में लौटो, क्योंकि मैं उन लोगों से प्रेम करता हूँ, जो अपने पूरे हृदय से मुझसे प्रेम करते हैं। चूँकि तुम लोग मेरे करीब आते हो, इसलिए मैं तुम लोगों की रक्षा करूँगा और तुम्हें उन दुष्टों से दूर रखूँगा; मैं तुम लोगों को अपने घर में सुदृढ़ करूँगा और अंत तक तुम लोगों की रक्षा करूँगा।

अध्याय 25

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, शाश्वत पिता, शांति का राजकुमार, हमारा परमेश्वर राजा है! सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने चरण जैतून के पर्वत पर रखता है। यह कितना खूबसूरत है! सुनो! हम प्रहरी पुकार रहे हैं; एक साथ गा रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर सिय्योन में लौट आया है। हम अपनी आँखों से यरूशलेम की वीरानी देख रहे हैं। तेज़ स्वर में उमंग से एक साथ गाओ, क्योंकि परमेश्वर ने हमें शान्ति दी है और यरूशलेम को छुड़ा लिया है। परमेश्वर ने सारे राष्ट्रों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रकट की है, परमेश्वर का वास्तविक स्वरूप प्रकट हुआ है! पृथ्वी के सभी छोरों ने हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखा है।

हे, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तेरे समस्त रहस्यों को उजागर करने के लिए, तेरे सिंहासन से सात आत्माओं को प्रत्येक कलीसिया में भेजा गया है। अपने महिमा के सिंहासन पर बैठकर, तूने अपने राज्य का

संचालन किया है और इसे न्याय और धार्मिकता द्वारा मजबूत और स्थिर बनाया है, और तूने सभी राष्ट्रों को अपने अधीन कर लिया है। हे, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तूने राजाओं के कमरबंद को ढीला कर दिया है, अपने सामने फाटकों को फिर कभी न बंद होने के लिए खोल दिया है। क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है और तेरी महिमा उदित हो गई है, और अपनी चमक फैला रही है। पृथ्वी पर अन्धियारा और लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है। हे परमेश्वर! परन्तु तू हम पर प्रकट हुआ है, और तूने अपना प्रकाश हम पर चमकाया है और तेरी महिमा हम पर प्रगट होगी; सारे राष्ट्र तेरी रोशनी में और सारे राजा तेरी चमक में आएँगे। तू अपनी आँखें उठाकर चारों ओर देखता है : तेरे पुत्र तेरे सामने इकट्ठे होते हैं और वे बहुत दूर से आए हैं और तेरी पुत्रियाँ हाथों-हाथ पहुँचाई जा रही हैं। हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तेरे महान प्रेम ने हमें अपनी गिरफ्त में ले लिया है; यह तू ही है, जो हमें तेरे राज्य की ओर जाने वाले मार्ग पर चलने के लिए आगे बढ़ाता है और ये तेरे पवित्र वचन ही हैं जो हमें भिगोते हैं।

हे, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम तुझे धन्यवाद देते हैं और हम तेरी प्रशंसा करते हैं! हमें तेरा सम्मान करने दे, तेरी गवाही देने दे, तुझे ऊँचा उठाने दे, और ऐसे हृदय से तेरे लिए गाने दे जो निष्कपट है, शांत है और अविभाजित है। हमें एक मन हो जाने दे और हमें एक ही गठन बन जाने दे, और काश! तू जल्द ही, हमें उनके जैसा बना दे जो तेरे हृदय के अनुसार हैं, ताकि हम तेरे द्वारा काम में लाए जाएँ। तेरी इच्छा बिना किसी बाधा के पृथ्वी पर पूरी हो।

अध्याय 26

मेरे पुत्रो, मेरे वचनों पर ध्यान दो, शांतिपूर्वक मेरी आवाज सुनो और मैं तुम्हें प्रकाशन दूँगा। मेरे भीतर शांत रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ, तुम लोगों का एकमात्र उद्धारक। तुम लोगों को हर समय अपने हृदय शांत रखने चाहिए और मेरे भीतर रहना चाहिए; मैं तुम्हारी चट्टान हूँ, तुम्हारा पुश्ता। कोई दूसरा विचार मत करो, बल्कि अपने पूरे दिल से मुझ पर भरोसा करो और मैं निश्चित रूप से तुम्हारे सामने प्रकट हूँगा—मैं तुम लोगों का परमेश्वर हूँ! आह, वे शक्की लोग! वे निश्चित रूप से दृढ़ नहीं रह सकते और उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। तुम्हें पता होना चाहिए कि अब क्या समय है, यह कैसा निर्णायक पल है! यह कितना महत्वपूर्ण है! अपने को उन चीजों में व्यस्त मत करो, जो किसी काम की नहीं हैं; जल्दी से मेरे करीब आ जाओ, मेरे साथ संगति करो, और मैं सारे रहस्य तुम्हारे सामने प्रकट कर दूँगा।

तुम्हें पवित्र आत्मा की अगुआई का प्रत्येक वचन सुनना चाहिए; उन्हें मार्ग के किनारे मत गिराओ। कितनी ही बार तुमने मेरे वचनों को सुना है और फिर उन्हें भुला दिया है। अरे विचारहीन लोगो! तुमने बहुत सारे आशीष खो दिए हैं! अब तुम्हें ध्यान से सुनना चाहिए और मेरे वचनों पर ध्यान देना चाहिए, मेरे साथ अधिक संगति करो और मेरे अधिक करीब आओ। उस सबमें, जिसे तुम नहीं समझते, मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा, और मैं तुम लोगों को आगे ले जाऊँगा। दूसरों के साथ अधिक संगति करने पर ध्यान न दो। अब बहुत लोग ऐसे हैं, जो शब्दों और सिद्धांतों का प्रचार करते हैं, और ऐसे बहुत कम हैं, जिनके पास सचमुच मेरी वास्तविकता है। उनकी संगति व्यक्ति को भ्रमित और जड़ बना देती है, और वे नहीं जान पाते कि प्रगति कैसे करें। उन्हें सुनकर व्यक्ति केवल शब्दों और सिद्धांतों के बारे में थोड़ा और समझ सकता है। तुम लोगों को सावधान रहना चाहिए, अपने दिल को हर समय मेरे समक्ष रहने देना चाहिए; तुम्हें मेरे साथ संवाद करना चाहिए और मेरे करीब आना चाहिए, और मैं तुम्हें वह दिखाऊँगा, जिसे तुम समझ नहीं पाते। अपने बोलने पर ध्यान दो, हर समय अपने दिल का निरीक्षण करो, और उस मार्ग पर चलो, जिस पर मैं चलता हूँ।

यह अब लंबा नहीं होगा, अभी थोड़ा ही समय बाकी है। जल्दी से मेरे अलावा सारी चीजों को त्याग दो और मेरे पीछे आओ! मैं तुम लोगों के साथ दुर्व्यवहार नहीं करूँगा। बहुत बार तुम लोगों ने मेरे कार्यों को गलत समझा है, लेकिन क्या तुम जानते हो कि मैं तुम लोगों से कितना प्रेम करता हूँ? आह, तुम बस मेरे दिल को नहीं समझते। चाहे तुमने कितना भी संदेह किया, चाहे तुम मेरे कितने भी ऋणी रहे, मैं उसे याद नहीं करूँगा, और फिर भी मैंने आगे बढ़ने और मेरी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए तुम्हें चुना।

अब देर करने का समय नहीं है। अब से तुमने कोई गुप्त इरादा पाला, तो मेरा न्याय तुम लोगों पर आ पड़ेगा। यदि तुम लोग मुझे एक पल के लिए भी छोड़ोगे, तो तुम्हारा हाल लूत की पत्नी जैसा होगा। अब पवित्र आत्मा का कार्य तेज हो गया है, और जो लोग नई रोशनी के साथ कदम से कदम नहीं मिला सकते, वे संकट में हैं। जो लोग ध्यान नहीं रखते, उन्हें त्याग दिया जाएगा; तुम्हें अपनी रक्षा करनी चाहिए। तुम जानते हो कि तुम्हारे आसपास के परिवेश में सभी चीजें मेरी अनुमति से हैं, सब मेरे द्वारा आयोजित हैं। स्पष्ट रूप से देखो और अपने को मेरे द्वारा दिए गए परिवेश में मेरे दिल को संतुष्ट करो। डरो मत, समुदायों का सर्वशक्तिमान परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारे साथ होगा; वह तुम लोगों के पीछे खड़ा है और तुम्हारी ढाल है। आज लोग बहुत सारी धारणाएँ रखते हैं, जो मुझे उन लोगों के माध्यम से अपनी इच्छा व्यक्त करने

के लिए बाध्य करती हैं, जिन्हें दूसरे नीची निगाह से देखते हैं, जो उनके लिए शर्म की बात है, जो अहंकारी और दंभी, अभिमानी, महत्वाकांक्षी और उच्च हैसियत वाले हैं। जब तक तुम लोग मेरे बोझ का गंभीरता से ध्यान रखते हो, तब तक मैं तुम लोगों के लिए सब-कुछ तैयार करूँगा। बस, मेरे पीछे आओ!

अध्याय 27

वो एकमात्र सच्चा परमेश्वर जो ब्रह्मांड और सभी चीजों के ऊपर शासन करता है—सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अंत के दिनों का मसीह! यह पवित्र आत्मा की गवाही है, अकाट्य साक्ष्य! पवित्र आत्मा हर जगह गवाही देने के लिए कार्य कर रहा है, ताकि किसी को कोई संदेह न हो। विजयी राजा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! वह दुनिया भर में विजयी हो गया है, उसने पाप पर विजय प्राप्त कर ली है और उसने अपने छुटकारे के कार्य को संपन्न कर लिया है! उसने हमें, शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए इस समूह के लोगों को, बचाया है और अपनी इच्छा पर चलने के लिए हमें पूर्ण बनाया है। वह पूरी पृथ्वी पर राजा की शक्ति का उपयोग करता है, इस धरती को वापस ले रहा है और शैतान को अथाह कुंड तक खदेड़ रहा है। वह दुनिया का न्याय करता है और कोई भी उसके हाथों से बचकर नहीं निकल सकता है। वह राजा के रूप में शासन करता है।

संपूर्ण पृथ्वी खुशी से झूम उठी है! वह विजयी राजा—सर्वशक्तिमान परमेश्वर की स्तुति करती है! सदैव सदैव के लिए! तू सम्मान और प्रशंसा के योग्य है। ब्रह्मांड के महान राजा का अधिकार और उसकी महिमा हो!

समय कम है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पदचिह्नों का अनुसरण करो और आगे बढ़ते रहो। गलती को लेकर बहुत सावधान रहो, उसकी ज़िम्मेदारी की ओर विचारशील बनो, उसके साथ एकचित्त बनो और खुद को उसकी प्रबंधन योजना के लिए खपाओ। तुम्हें संपत्ति नहीं रखनी चाहिए। बहुत कम समय बचा है। उन्हें भेंट कर दो! उन्हें रखो मत! उन्हें भेंट कर दो! उन्हें रखो मत!

अध्याय 28

जब तुम देखो कि समय इस तरह भाग रहा है और पवित्र आत्मा का काम तेज़ी से आगे बढ़ रहा है,

जिससे तुम्हें ऐसे महान आशीष प्राप्त हुए हैं और ब्रह्मांड के राजा, चमकते हुए सूर्य, सर्वशक्तिमान परमेश्वर का स्वागत करने का तुम्हें अवसर मिला है—यह सब मेरा अनुग्रह और दया है। ऐसा और क्या है जो तुम्हें मेरे प्यार से दूर कर सके? सावधानी से विचार करो, बचने की कोशिश न करो, हर पल मेरे सामने शांति से प्रतीक्षा करो और हमेशा बाहर न भटको। तुम्हारा दिल मेरे दिल के करीब रहना चाहिए, और चाहे कुछ हो जाए, आँख मूंदकर या मनमाने ढंग से कार्य न करो। तुम्हें मेरी इच्छा पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए, जो कुछ भी मैं चाहूँ वही करना और जो मैं नहीं चाहता उसे त्यागने के लिए दृढ़ रहना चाहिए। तुम्हें अपनी भावनाओं के आधार पर कार्य नहीं करना चाहिए, बल्कि मेरी तरह धार्मिकता का अभ्यास करना चाहिए; यहाँ तक कि अपने माता-पिता के प्रति भी कोई भावुकता नहीं रखनी चाहिए। जो सत्य के अनुरूप न हो, उसका त्याग कर दो, ऐसे शुद्ध हृदय से जो मुझसे प्रेम करता है, तुम स्वयं को मुझे अर्पित कर दो और खुद को मेरे लिए खपाओ। किसी भी व्यक्ति, घटना या चीज़ के नियंत्रण में न रहो; अगर यह मेरी इच्छा के अनुरूप हो, तो मेरे वचनों के अनुसार इसका अभ्यास करो। डरो मत, क्योंकि मेरे हाथ तुम्हें सहारा देते हैं, और मैं तुम्हें सभी दुष्टों से दूर रखूँगा। तुम्हें अपने दिल की रक्षा करनी चाहिए, हमेशा मेरे भीतर रहना चाहिए; क्योंकि तुम्हारा जीवनयापन स्वयं मुझ पर निर्भर है। यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो तुम तुरंत मुरझा जाओगे।

तुम्हें पता होना चाहिए कि ये अंत के दिन हैं। दुष्ट शैतान, दहाड़ते हुए शेर की तरह घूम रहा है और ऐसे लोगों की तलाश कर रहा है जिन्हें वह फाड़ खाये। सभी तरह की महामारियाँ हो रही हैं और हर प्रकार की अनेक बुरी आत्माएं उपस्थित हैं। केवल मैं ही सच्चा परमेश्वर हूँ; केवल मैं ही तुम्हारा आश्रय हूँ। अब तुम केवल मेरे गुप्त स्थान पर, केवल मुझमें छिपने के अलावा कुछ नहीं कर सकते, और तुम पर आपदाएं नहीं आएंगी और कोई भी आफ़त तुम्हारे घर के पास नहीं पहुंचेगी। तुम्हें अधिक बार मेरे अधिक निकट आना चाहिए, मेरे गुप्त स्थान में मेरे साथ सहभागिता करनी चाहिए; अन्य लोगों के साथ ढीलेपन से सहभागिता मत करो। तुम्हें मेरे वचनों में निहित अर्थ को समझना चाहिए—मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम्हें सहभागिता करने की अनुमति नहीं है, केवल इतना कि अभी भी तुम्हारे अंदर विवेक नहीं है। इस समय, दुष्ट आत्माओं का काम अनियंत्रित रूप से चल रहा है। वे तुम्हें सहभागिता देने के लिए हर प्रकार के लोगों का इस्तेमाल करती हैं। उनके शब्द बहुत सुखद लगते हैं, लेकिन उनके भीतर विष भरा है। वे चीनी में लिपटी बंदूक की गोलियां हैं और इससे पहले कि तुम्हें समझ में आए, वे अपना विष तुम्हारे भीतर डाल

देंगी। तुम्हें पता होना चाहिए कि आज अधिकांश लोग अस्थिर हैं, मानो वे नशे में हों। जब तुम अपने जीवन की कठिनाइयों के बारे में दूसरों के साथ सहभागिता करते हो, तो वे तुम्हें केवल नियम और सिद्धांत बताते हैं, और यह मेरे साथ सीधे सहभागिता करने के समान लाभदायक नहीं है। मेरे पास आओ और पूरी तरह से अपने भीतर की पुरानी चीज़ें बाहर निकाल दो; अपना दिल मेरे सामने खोलो, मेरा दिल निश्चित रूप से तुम्हारे लिए प्रकट होगा। तुम्हारा दिल मेरे सामने एकाग्रचित्त होना चाहिए। आलसी मत बनो, बल्कि अक्सर मेरे करीब आओ—तुम्हारे जीवन के विकास के लिए यह सबसे तेज़ तरीका है। तुम्हें मेरे भीतर रहना चाहिए और मैं तुम्हारे भीतर रहूँगा, मैं तुम्हारे भीतर राजा की तरह रहूँगा, सभी चीज़ों में तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा, और राज्य का एक हिस्सा तुम्हारा होगा।

अपने आप को इसलिए कम मत समझो क्योंकि तुम कम उम्र हो; तुम्हें अपने आप को मुझे अर्पित कर देना चाहिए। मैं यह नहीं देखता कि लोग सतही तौर पर कैसे दिखते हैं या उनकी उम्र कितनी है। मैं केवल यह देखता हूँ कि वे मुझे ईमानदारी से प्यार करते हैं या नहीं, वे मेरे मार्ग का पालन करते हैं या नहीं, और अन्य सभी चीज़ों को अनदेखा करके सत्य का अभ्यास करते हैं या नहीं। यह चिंता न करो कि कल कैसा होगा या भविष्य कैसा रहेगा। अगर तुम हर दिन को जीने के लिए मुझ पर निर्भर रहोगे, तो मैं निश्चित रूप से तुम्हारी अगुवाई करूंगा। इसी विचार पर टिके न रहो "मेरा जीवन बहुत छोटा है, मुझे कुछ भी समझ में नहीं आता," यह शैतान द्वारा भेजा गया विचार है। तुम्हें हर समय मेरे निकट आने के लिए केवल अपने दिल का उपयोग करना है, मार्ग के अंत तक मेरा अनुसरण करना है। जब तुम फटकार और चेतावनी के मेरे वचनों को सुनो, तो फ़ौरन जागो और आगे दौड़ो; बिना रुके मेरे करीब आओ, झुंड से कदम मिलाकर चलो और अपनी नज़रें आगे रखो। मेरी उपस्थिति में, तुम्हें पूरे दिल और आत्मा से अपने परमेश्वर से प्यार करना चाहिए। सेवा के मार्ग पर मेरे वचनों पर और अधिक विचार करो। सत्य का अभ्यास करते समय, कमज़ोर दिल के न बनो, मज़बूत दिल के बनो, मर्द के बच्चे का संकल्प और हिम्मत रखो; एक शक्तिशाली हृदय रखो। यदि तुम मुझसे प्यार करना चाहते हो, तो तुम्हें उन सभी चीज़ों के साथ मुझे संतुष्ट करना चाहिए जो मैं तुम में करना चाहता हूँ। यदि तुम मेरा अनुसरण करना चाहते हो, तो तुम्हें वो सब छोड़ देना चाहिए जो भी तुम्हारे पास है, तुम जिसे भी प्यार करते हो; तुम्हें मेरे सामने विनम्रता से, एक सरल मन से समर्पण कर देना चाहिए, लापरवाही से शोध या विचार न करो; बल्कि पवित्र आत्मा के काम के साथ बने रहो।

यहाँ मैं तुम्हें एक सलाह दूँगा : मैं जो भी प्रबुद्धता तुम्हें देता हूँ, निश्चित तौर पर उसे मज़बूती से पकड़कर रखो और पक्के तौर पर उसका अभ्यास करो!

अध्याय 29

क्या तुम जानते हो कि समय बहुत कम है? अत: तुम्हें मुझ पर शीघ्र भरोसा करना होगा और अपने में से उन सभी चीजों को दूर करना होगा, जो मेरे स्वभाव से मेल नहीं खातीं : अज्ञानता, प्रतिक्रिया करने में सुस्ती, अस्पष्ट विचार, नर्मदिली, कमजोर इच्छा-शक्ति, बेहूदगी, अति उत्तेजित भावनाएँ, भ्रम और सूझ-बूझ की कमी। इन्हें यथाशीघ्र दूर करना होगा। मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ! जब तक तुम मेरे साथ सहयोग करने को तैयार हो, मैं तुम्हें परेशान करने वाली सभी चीजें ठीक कर सकता हूँ। मैं वह परमेश्वर हूँ, जो लोगों के दिलों में गहरे झाँकता है; मैं तुम्हारी सभी बीमारियों को जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि तुम्हारी कमियाँ कहाँ रहती हैं। ये वे चीजें हैं, जो तुम्हें तुम्हारे जीवन में उन्नति करने से रोकती हैं, और इन्हें शीघ्र दूर करना जरूरी है। वरना मेरी इच्छा तुम में कार्यान्वित नहीं की जा सकती। अपनी हर उस चीज को, जिसे मैं रोशन करता हूँ, दूर करने के लिए मुझ पर भरोसा करो, हमेशा मेरे संग रहो, मेरे नजदीक रहो, और सभी कार्य और व्यवहार मेरे अनुरूप करो। जो तुम नहीं समझते, उसके बारे में मेरे साथ अधिक बार संगति करो, और मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा, ताकि तुम आगे बढ़ सको। अगर तुम अनिश्चित हो, तो उतावलेपन से काम मत करो; बल्कि मेरे समय की प्रतीक्षा करो। एक स्थिर स्वभाव बनाए रखो और अपना जोश कम-ज्यादा मत होने दो; तुम्हारे पास ऐसा हृदय होना चाहिए, जो सदा मुझे सम्मान दे। तुम मेरे सामने या पीठ-पीछे जो भी करो, वह मेरी इच्छा के अनुसार होना चाहिए। मेरी ओर से किसी के भी प्रति उदार मत बनो, चाहे वह तुम्हारा पति हो या परिवार; यह अस्वीकार्य है, चाहे वे कितने भी अच्छे क्यों न हों। तुम्हें सत्य के आधार पर कार्रवाई करनी चाहिए। अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मैं तुम्हें बड़े आशीष दूँगा। जो कोई विरोध करेगा, मैं उसे बिलकुल नहीं सहूँगा। उनसे प्रेम करो, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, और उनसे घृणा करो, जिनसे मैं घृणा करता हूँ। किसी मनुष्य, घटना या चीज पर ध्यान न दो। अपनी आत्मा से देखो और मेरे द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले लोगों को स्पष्ट रूप से निहारो; आध्यात्मिक लोगों के साथ अधिक संपर्क बनाओ। अज्ञानी मत बनो—तुम्हें अंतर करना चाहिए। गेहूँ हमेशा गेहूँ ही रहेगा और जंगली बीज कभी गेहूँ नहीं बन सकते—तुम्हें विभिन्न प्रकार के लोगों को पहचानना होगा। तुम्हें विशेषत: अपने बोलने में

सावधान रहना होगा और अपने कदम मेरी पसंद के मार्ग पर बनाए रखने होंगे। इन सब वचनों पर ध्यानपूर्वक विचार करो। तुम्हें अपनी विद्रोहशीलता तुरंत त्यागनी होगी और मेरे उपयोग के लायक बनना होगा, ताकि तुम मेरे हृदय को संतुष्ट कर सको।

अध्याय 30

जागो, भाइयो! जागो, बहनो! मेरे दिन में देरी नहीं होगी; समय जीवन है, और समय को थाम लेना जीवन बचाना है! वह समय बहुत दूर नहीं है! यदि तुम लोग महाविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होते, तो तुम पढ़ाई कर सकते हो और जितनी बार चाहो फिर से परीक्षा दे सकते हो। लेकिन, मेरा दिन अब और देरी बर्दाश्त नहीं करेगा। याद रखो! याद रखो! मैं इन अच्छे वचनों के साथ तुमसे आग्रह करता हूँ। दुनिया का अंत खुद तुम्हारी आँखों के सामने प्रकट हो रहा है, और बड़ी-बड़ी आपदाएँ तेज़ी से निकट आ रही हैं। क्या अधिक महत्वपूर्ण हैः तुम लोगों का जीवन या तुम्हारा सोना, खाना-पीना और पहनना-ओढ़ना? समय आ गया है कि तुम इन चीज़ों पर विचार करो। अब और संशय में मत रहो, और सच्चाई से भागो मत!

मानवजाति कितनी दयनीय! कितनी अभागी! कितनी विचारहीन और कितनी क्रूर है! वास्तव में, तुम लोग मेरे वचनों को अनसुना करते हो—क्या मैं व्यर्थ में तुम लोगों से बात कर रहा हूँ? तुम लोग अभी भी बहुत लापरवाह हो, क्यों? ऐसा क्यों है? क्या सच में तुम लोगों के मन में कभी ऐसा विचार नहीं आया? मैं किनके लिए इन बातों को कहता हूँ? मुझ पर विश्वास रखो! मैं ही तुम लोगों का उद्धारकर्ता हूँ! मैं ही तुम लोगों का सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ! नज़र रखो! नज़र रखो! बीता हुआ समय फिर कभी नहीं आएगा, यह याद रखो! दुनिया में ऐसी कोई दवाई नहीं है जो पछतावे का इलाज कर सके! तो, मैं तुम लोगों से कैसे बात करूँ? क्या मेरे वचन इस योग्य नहीं कि तुम उन पर सावधानीपूर्वक बार-बार सोच-विचार करो? तुम लोग मेरे वचनों के मामले में अत्यधिक लापरवाह हो और अपने जीवन के प्रति बहुत गैर-ज़िम्मेदार हो; मैं इसे कैसे सहन कर सकता हूँ? यह मैं कैसे सह सकता हूँ?

क्यों, इस पूरे समय में, तुम लोगों के बीच में एक उचित कलीसिया जीवन उत्पन्न नहीं हो पाया है? ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम लोगों में विश्वास की कमी है, तुम लोग कीमत नहीं चुकाना चाहते हो, अपने आप को अर्पित करने के इच्छुक नहीं हो, और मेरे सामने अपने आप को खपाने को इच्छुक नहीं हो।

जागो, मेरे पुत्रो! मुझ पर विश्वास रखो, मेरे पुत्रो! मेरे प्यारो, मेरे हृदय में जो है उसे तुम समझ क्यों नहीं पा रहे हो?

अध्याय 31

मैं उन सभी से प्रेम करता हूँ, जो ईमानदारी से मुझे चाहते हैं। यदि तुम लोग मुझसे प्रेम करने पर ध्यान केंद्रित करते हो, तो मैं निश्चित रूप से तुम लोगों को अत्यधिक आशीष दूँगा। क्या तुम लोग मेरे इरादों को समझते हो? मेरे घर में उच्च और निम्न हैसियत के बीच कोई भेद नहीं है। हर कोई मेरा पुत्र है, और मैं तुम लोगों का पिता, तुम लोगों का परमेश्वर हूँ। मैं सर्वोच्च और अद्वितीय हूँ। मैं ब्रह्मांड को और उसके भीतर की हर चीज को नियंत्रित करता हूँ!

तुम्हें मेरे घर में "विनम्रता के साथ और गुमनामी में मेरी सेवा" करनी चाहिए। यह वाक्यांश तुम्हारा आदर्श वाक्य होना चाहिए। पेड़ का पत्ता मत बनो, बल्कि पेड़ की जड़ बनो और जीवन में गहराई तक जड़ जमाओ। जीवन के वास्तविक अनुभव में प्रवेश करो, मेरे वचनों के अनुसार जियो, हर मामले में मुझे और अधिक खोजो, और मेरे निकट आओ और मेरे साथ संगति करो। किसी भी बाहरी चीज पर ध्यान मत दो, और किसी भी व्यक्ति, घटना या चीज के द्वारा नियंत्रित मत हो, बल्कि मैं क्या हूँ, इस बारे में केवल आध्यात्मिक लोगों के साथ संगति करो। मेरे इरादों को समझो, मेरे जीवन को अपने में प्रवाहित होने दो, और मेरे वचनों को जियो और मेरी अपेक्षाओं का पालन करो।

अपनी सारी शक्ति उन मामलों के लिए समर्पित कर दो, जिनके लिए मैंने तुम्हें आदेश दिया है; मेरे हृदय को संतुष्ट करने के लिए वह सब करो, जो तुम कर सकते हो। मैं तुम्हारा सामर्थ्य हूँ और मैं तुम्हारा आनंद हूँ...। मैं तुम्हारा सब-कुछ हूँ। बस मेरा अनुसरण करो। मैं तुम्हारे हृदय की वास्तविक इच्छाओं को जानता हूँ और यह कि तुम ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाते हो, लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि मेरे घर में मेरे प्रति वफादारी कैसे दिखानी है और अंत तक मेरा अनुसरण कैसे करना है।

कलीसिया मेरा हृदय है और मैं अपनी कलीसिया के निर्माण की चिंता से जल रहा हूँ। तुम्हें जरा-से भी संदेह के बिना अपने आप को पेश करके अपने आप को मेरे लिए खपाना चाहिए, और मेरे इरादों के प्रति विचारशीलता दर्शानी चाहिए, ताकि मेरा हृदय संतुष्ट हो सके।

अध्याय 32

प्रकाश क्या है? अतीत में तुम लोग वास्तव में पवित्र आत्मा के कार्य के रूपांतरण को प्रकाश मानते थे। सच्चा प्रकाश हर समय है : अर्थात्, मेरे निकट आने और मेरे साथ संगति करने के माध्यम से वह प्राप्त करना जो परमेश्वर है। परमेश्वर के वचनों में अंतर्दृष्टि होना और परमेश्वर के वचनों में उसकी इच्छा को समझना—अर्थात्, परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते समय उनमें आत्मा को महसूस करना और अपने भीतर परमेश्वर के वचनों को प्राप्त करना; अनुभव के माध्यम से तुम यह समझते हो कि वह क्या है, और परमेश्वर के साथ संवाद करते समय उसकी रोशनी प्राप्त करते हो; यह सब प्रकाश है। विचार और चिंतन करते हुए तुम किसी भी क्षण परमेश्वर के वचनों में प्रबुद्ध हो सकते हो और नई अंतर्दृष्टि पा सकते हो। यदि तुम परमेश्वर के वचन को समझते हो और नया प्रकाश महसूस करते हो, तो क्या तुम्हारी सेवा में सामर्थ्य नहीं होगा? तुम लोग सेवा देते हुए बहुत चिंता करते हो! ऐसा इसलिए है, क्योंकि तुम लोगों ने वास्तविकता को नहीं छुआ है, और तुम्हें वास्तविक अनुभव या अंतर्दृष्टि नहीं है। यदि तुम्हारे पास वास्तविक अंतर्दृष्टि होती, तो क्या तुम यह न जानते कि सेवा कैसे की जाए? जब तुम पर कुछ चीजें आकर पड़ती हैं, तो तुम्हें उन्हें तत्परता से अनुभव करना चाहिए। यदि एक आसान और सुविधाजनक माहौल में तुम परमेश्वर के मुख-मंडल के प्रकाश में भी रह सकते हो, तो तुम हर दिन परमेश्वर का चेहरा देखोगे। यदि तुमने परमेश्वर का चेहरा देखा होता और परमेश्वर के साथ संवाद किया होता, तो क्या तुम्हारे पास प्रकाश न होता? तुम लोग वास्तविकता में प्रवेश नहीं करते, और तुम खोज करते हुए सदैव बाहर ही रहते हो; परिणामस्वरूप तुम्हें कुछ नहीं मिलता और जीवन में तुम्हारी प्रगति में विलंब होता है।

बाहर ध्यान केंद्रित मत करो; बल्कि, बस भीतर परमेश्वर के निकट आओ, पर्याप्त गहराई से संवाद करो और परमेश्वर की इच्छा को समझो; तब क्या तुम्हारे पास अपनी सेवा में कोई मार्ग नहीं होगा? तुम लोगों को तत्परतापूर्वक ध्यान देने और आज्ञापालन करने की आवश्यकता है। यदि तुम सभी चीजें केवल मेरे वचनों के अनुसार करते हो और उन मार्गों में प्रवेश करते हो, जिन्हें मैं इंगित करता हूँ, तो क्या तुम्हारे पास कोई मार्ग नहीं होगा? यदि तुम्हें वास्तविकता में प्रवेश करने का मार्ग मिल जाता है, तो तुम्हारे पास परमेश्वर की सेवा करने का मार्ग भी है। यह सरल है! परमेश्वर की उपस्थिति में और अधिक आओ, परमेश्वर के वचनों पर और अधिक विचार करो, और तुम वह प्राप्त करोगे जिसकी तुम्हारे अंदर कमी है। तुम्हारे पास नई अंतर्दृष्टि, नई प्रबुद्धता भी होगी, और तुम्हारे पास प्रकाश होगा।

अध्याय 33

मेरे राज्य को उन लोगों की ज़रूरत है जो ईमानदार हैं, उन लोगों की जो पाखंडी और धोखेबाज़ नहीं हैं। क्या सच्चे और ईमानदार लोग दुनिया में अलोकप्रिय नहीं हैं? मैं ठीक विपरीत हूँ। ईमानदार लोगों का मेरे पास आना स्वीकार्य है; इस तरह के व्यक्ति से मुझे प्रसन्नता होती है, और मुझे इस तरह के व्यक्ति की ज़रूरत भी है। ठीक यही तो मेरी धार्मिकता है। कुछ लोग अज्ञानी होते हैं; वे पवित्र आत्मा के कार्य को महसूस नहीं कर सकते और वे मेरी इच्छा को नहीं समझ सकते हैं। वे उस परिवेश को स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते हैं जिसमें उनके अपने परिवार और आस-पड़ोस मौजूद हैं, वे आँख बंद करके चीज़ों को करते हैं और अनुग्रह पाने के कई अवसरों को गँवा देते हैं। वे अपने कृत्यों के लिए बार-बार अफ़सोस करते हैं और जब किसी मामले से उनका सामना होता है, तब फिर वे इसे स्पष्ट नहीं देख पाते। कभी-कभी किसी न किसी तरह जीत हासिल करने के लिए वे परमेश्वर पर भरोसा कर पाते हैं, लेकिन बाद में जब उसी तरह के मामले से उनका सामना होता है, तो पुरानी बीमारी लौट आती है, और वे मेरी इच्छा को समझ नहीं पाते। लेकिन मैं इन चीजों को नहीं देखता हूँ, और मैं तुम लोगों के अपराधों को याद नहीं रखता हूँ। इसके बजाय, मैं तुम लोगों को इस अमर्यादित भूमि से बचाना चाहता हूँ और तुम लोगों को अपने जीवन को नया बनाने देता हूँ। मैंने तुम लोगों को बार-बार माफ़ किया है। हालाँकि, सर्वाधिक महत्वपूर्ण कदम अब है। तुम लोग अब और भ्रमित नहीं रह सकते हो और उस तरह से, रुकने-चलने के उस तरीके से अब और आगे नहीं बढ़ सकते हो। तुम लोग मंजिल पर कब पहुँच सकोगे? तुम लोगों को बिना रुके समापन रेखा की ओर दौड़ने में अपनी जी-जान लगा देनी है। इस अत्यंत महत्वपूर्ण समय में धीमे और कमजोर मत पड़ो, साहसपूर्वक आगे बढ़ो, और एक भरपूर दावत तुम लोगों के सामने है। अपनी शादी के लिबास और धार्मिकता के वस्त्रों में जल्दी से तैयार हो जाओ और मसीह के विवाह के रात्रिभोज में भाग लो; समूचे अनंतकाल के लिए पारिवारिक आनंद का भोग लो! तू पहले की तरह अब और कभी उदास, दुःखी नहीं होगा और आहें नहीं भरेगा। उस समय का सब कुछ धुएँ की तरह गायब हो चुका होगा और तुझमें केवल मसीह के पुनर्जीवित जीवन की सामर्थ्य होगी। तेरे अंदर, धुलाई-सफाई करके शुद्ध किया गया एक मंदिर होगा और तेरे द्वारा प्राप्त किया गया पुनरुत्थान का जीवन सदा-सर्वदा के लिए तुझमें बसा रहेगा!

अध्याय 34

सर्वशक्तिमान परमेश्वर सर्वशक्तिसंपन्न, सर्वस्व प्राप्त करने वाला और पूरा सच्चा परमेश्वर है! वह न केवल सात सितारों को थामता है, सात आत्माओं को धारण करता है, उसकी सात आँखें हैं, वह सात मुहरें तोड़ता है और पुस्तक को खोलता है, लेकिन उससे भी अधिक वह सात विपत्तियों और सात कटोरों का प्रशासन करता है और सात गर्जनों को खोलता है। बहुत पहले उसने भी सात तुरही बजाई हैं! उसके द्वारा बनाई और पूर्ण की गई सभी चीज़ों को उसकी प्रशंसा करनी चाहिए, उसे महिमा देनी चाहिए और उसके सिंहासन को ऊंचा करना चाहिए। हे, सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तुम सर्वस्व हो, तुमने सब कुछ पूरा कर लिया है और तुम्हारे साथ सब कुछ पूर्ण है, सब कुछ उज्ज्वल, बंधन से मुक्त, स्वतंत्र, मजबूत और शक्तिशाली है! गुप्त या छिपा हुआ बिल्कुल भी कुछ नहीं है; तुम्हारे साथ सभी रहस्य प्रकट हो जाते हैं। इसके अलावा, तुमने अपने बहुसंख्य दुश्मनों का न्याय किया है, तुम अपना प्रताप प्रदर्शित करते हो, अपनी उग्रता की आग दिखाते हो, अपना क्रोध दिखाते हो और उससे भी अधिक तुम अपनी अभूतपूर्व, अनंत, पूरी तरह से असीम महिमा को प्रदर्शित करते हो! सभी लोगों को जागृत होना चाहिए और बिना किसी झिझक के जय-जयकार और गायन करना चाहिए, इस सर्वशक्तिमान, सर्वथा-सच्चे, सर्वथा-जीवंत, उदार, महिमावान और सच्चे परमेश्वर का गुणगान करना चाहिए, जो हमेशा से चिरस्थायी है। उसके सिंहासन को लगातार सराहना चाहिए, उसके पवित्र नाम की प्रशंसा और महिमा करनी चाहिए। यह मेरे—परमेश्वर की—शाश्वत इच्छा है और यह वह अनंत आशीर्वाद है, जो वह हमारे लिए प्रकट करता है और हमें देता है! हममें से कौन इसका वारिस नहीं है? परमेश्वर के आशीर्वाद को विरासत में पाने के लिए, व्यक्ति को परमेश्वर के पवित्र नाम को सराहना चाहिए और सिंहासन की चारों ओर से आराधना करने के लिए आना चाहिए। वे सभी लोग जो उसके सामने अन्य उद्देश्यों और इरादों के साथ जाते हैं, वे उसकी उग्र आग से पिघल जाएँगे। आज वह दिन है, जब उसके दुश्मनों का न्याय किया जाएगा और वे इसी दिन नष्ट भी हो जाएँगे। इसके अलावा, यही वह दिन है, जब मैं, सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रकट होऊँगा और महिमा और सम्मान प्राप्त करूँगा। सारे लोगों! उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सराहना और स्वागत करने के लिए शीघ्र उठो, जो सदा-सर्वदा के लिए हमें प्रेमपूर्ण दयालुता देता है, उद्धार को अमल में लाता है, हमें आशीर्वाद प्रदान करता है, अपने पुत्रों को पूरा करता है और सफलतापूर्वक अपने राज्य को हासिल करता है! यह परमेश्वर का अद्‌भुत कर्म है! यह परमेश्वर का शाश्वत प्रारब्ध और व्यवस्था है-कि हमें बचाने, हमें पूरा करने और हमें महिमा में लाने के लिए वह स्वयं ही आया है।

वे सभी जो उठकर गवाही नहीं देते हैं, वे अंधों के अग्रगामी हैं और अज्ञानता के राजा हैं। वे शाश्वत अज्ञानी, सतत मूर्ख बनेंगे; अनंत काल के लिए मृतक, जो अंधे हैं। इसलिए हमारी आत्माओं को जागृत होना चाहिए! सभी लोगों को उठ खड़े होना चाहिए! महिमा के राजा, दया के पिता, उद्धार के पुत्र, उदार सात आत्माओं की, सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो प्रतापी उग्र आग और धार्मिक न्याय लाता है और जो सर्व-पर्याप्त, उदार, सर्वशक्तिमान और पूर्ण है, उसकी अनंत जय-जयकार, प्रशंसा और सराहना करो। उसके सिंहासन की हमेशा के लिए सराहना होगी! सभी लोगों को देखना चाहिए कि यह परमेश्वर की बुद्धि है; उद्धार का यह उसका अद्‌भुत तरीका है और उसकी महिमामय इच्छा की पूर्ति है। अगर हम नहीं उठते हैं और गवाही नहीं देते हैं, तो इस पल के बीत जाने के बाद, हम लौट कर नहीं जा सकेंगे। हम आशीर्वाद प्राप्त करेंगे या दुर्भाग्य, यह हमारी यात्रा के इस वर्तमान चरण में तय किया जा रहा है, अर्थात इस समय हम क्या करते हैं, क्या सोचते हैं और अभी कैसे जीते हैं। तो तुम सभी को कैसे कार्य करना चाहिए? गवाही दो और परमेश्वर की हमेशा सराहना करो; सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अंत के दिनों के मसीहा—शाश्वत, अद्वितीय, सच्चे परमेश्वर का उत्कर्ष करो!

अब से तुम्हें स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि जो लोग परमेश्वर के लिए गवाही नहीं देते—जो अद्वितीय, सच्चे परमेश्वर के लिए गवाही नहीं देते, साथ ही जो उसके बारे में संदेह रखते हैं—वे सभी बीमार और मरे हुए लोग हैं और ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं! प्राचीन काल से ही परमेश्वर के वचन सच साबित हो चुके हैं : जो लोग मेरे साथ नहीं हैं, वे बिखर जाते हैं, और जो भी मेरे साथ नहीं हैं, वे मेरे विरुद्ध हैं; पत्थर में तराशा गया यह एक अटल सत्य है! जो लोग परमेश्वर के लिए गवाही नहीं देते, वे शैतान के अनुचर हैं। ये लोग परमेश्वर की संतानों को परेशान करने और धोखा देने और उसके प्रबंधन में बाधा डालने के लिए आए हैं; उनका नाश किया जाना चाहिए! जो कोई भी उनके प्रति अच्छे इरादे प्रकट करते हैं, वो अपना विनाश चाहते हैं। तुम्हें परमेश्वर के आत्मा के कथनों को सुनना और उन पर विश्वास करना चाहिए, परमेश्वर के आत्मा के मार्ग पर चलना चाहिए और परमेश्वर के आत्मा के वचनों को जीना चाहिए। उससे भी बढ़कर, तुम्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिंहासन की अंत के दिनों तक सराहना करनी चाहिए!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर सात आत्माओं का परमेश्वर है! सात आँखों और सात तारों वाला भी, वही है; वह सात मुहरों को खोलता है और सारी पुस्तक भी उसी के द्वारा खोली गई है! उसने सात तुरहियों को बजाया है, सात कटोरे और सात विपत्तियाँ भी उसी के नियंत्रण में हैं, जिन्हें वह अपनी इच्छानुसार उपयोग

में लाता है। ओह, वे सात गर्जनाएं जो हमेशा मुहर-बंद थीं! उन्हें प्रकट करने का समय आ गया है! वह, जो उन सात गर्जनाओं को खोलेगा, पहले ही हमारी आँखों के सामने प्रकट हो चुका है!

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तुम्हारे साथ सब कुछ बंधनमुक्त और स्वतंत्र होता है; कोई कठिनाइयाँ नहीं होती हैं और सब कुछ आसानी से चलता है! तुम्हें कुछ भी अवरुद्ध या बाधित करने का साहस नहीं कर सकता और सभी तुम्हारे सामने समर्पित हो जाते हैं। जो समर्पण नहीं करते, मृत्यु को प्राप्त होंगे!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सात आँखों वाले परमेश्वर! सब कुछ पूर्ण रूप से स्पष्ट है, सब कुछ उज्ज्वल है और खुला हुआ है और सभी कुछ प्रकट और अनावृत किया गया है। उसके होते हुए, सब कुछ बिल्कुल साफ़ है और न केवल स्वयं परमेश्वर इस तरह है, बल्कि उसके पुत्र भी ऐसे ही हैं। कोई भी व्यक्ति, वस्तु को और कोई भी बात, परमेश्वर या उसके पुत्रों से छिपाकर नहीं रखी जा सकती!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सात सितारे उज्ज्वल हैं! कलीसिया को उसके द्वारा परिपूर्ण किया गया है; वह कलीसिया के संदेशवाहकों को निर्धारित करता है और समग्र कलीसिया उसकी देखरेख में होती है। वह सभी सात मुहरों को खोलता है, वह स्वयं अपनी प्रबंधन योजना को और उसे पूरा करने की अपनी इच्छा को लाता है। वह पुस्तक उसकी प्रबंधन योजना की रहस्यमयी आध्यात्मिक भाषा है और उसने इसे खोलकर प्रकट कर दिया है!

सभी लोगों को उसकी सात गुंजायमान तुरहियों को ध्यान लगाकर सुनना चाहिए। उसके साथ सब कुछ स्पष्ट कर दिया जाता है, फिर कभी न छिपने के लिए और अब कोई दुख नहीं होता। सब कुछ प्रकट है, सब कुछ विजयी है!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सात तुरहियाँ खुली, महिमामय और विजयी तुरहियाँ हैं! यही वो तुरहियाँ भी हैं, जो उसके शत्रुओं का न्याय करती हैं! उसकी विजय के बीच, उसके सींग को ऊँचा उठाया जाता है! वह पूरे ब्रह्मांड पर राज्य करता है!

उसने विपत्तियों के सात कटोरे तैयार किए हैं, उसके शत्रुओं पर निशाना लगाया गया है और वे चरम सीमा तक खोले गए हैं और वे शत्रु उसकी उग्र आग की लपटों में भस्म हो जाएँगे। सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने अधिकार की शक्ति दिखाता है और उसके सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं। अंतिम सात गर्जनाएं अब सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने मुहर-बंद नहीं हैं; वे सभी प्रकट हैं! वे सभी प्रकट हैं! उन सात गर्जनाओं

के साथ वह अपने शत्रुओं को मौत के घाट उतारता है, ताकि पृथ्वी स्थिर हो जाए, उसकी सेवा कर सके, और फिर से बर्बाद न हो!

हे धार्मिक सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम निरंतर तुम्हारा गुणगान करते हैं! तुम अनंत प्रशंसा, अनंत अभिनन्दन और अनंत सराहना के योग्य हो! तुम्हारी सात गर्जनाएं केवल तुम्हारे न्याय के लिए ही नहीं हैं, बल्कि उससे भी ज्यादा वे तुम्हारी महिमा और तुम्हारे अधिकार के लिए हैं, ताकि सब कुछ पूर्ण हो सके!

सभी लोग सिंहासन के सामने खुशियाँ मनाते हैं, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अंत के दिनों के मसीहा का गुणगान और उसकी स्तुति करते हैं! उनकी आवाजें समस्त विश्व को गर्जना की तरह कँपाती हैं! सभी चीज़ें बिलकुल उसी के कारण मौजूद हैं और उसी से उत्पन्न होती हैं। कौन है जो उसे समस्त महिमा, सम्मान, अधिकार, ज्ञान, पवित्रता, विजय और प्रकटन का पूर्ण श्रेय न देने का साहस करेगा? यह उसकी इच्छा की उपलब्धि है और यह उसके प्रबंधन की रचना का अंतिम समापन है!

अध्याय 35

सिंहासन से सात गर्जनें निकलती हैं, वे ब्रह्मांड को हिला देती हैं, स्वर्ग और पृथ्वी को उलट-पुलट कर देती हैं, और आकाश में गूँजती हैं! यह आवाज़ कानों के परदे फाड़ देती है, लोग न तो इससे बचकर भाग सकते हैं, और न ही इससे छिप सकते हैं। बिजली की चमक और गरज की गूँजें फूट निकलती हैं, एक क्षण में स्वर्ग और पृथ्वी दोनों रूपांतरित हो जाते हैं, और लोग मृत्यु की कगार पर हैं। फिर, आकाश से बरसता एक प्रचंड तूफ़ान बिजली की रफ़्तार से समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी लपेट में ले लेता है! धरती के सुदूर कोनों तक, मूसलाधार वर्षा के समान सब कुछ को सिर से पैर तक धो डालता है, कहीं एक दाग़ तक बाक़ी नहीं रहता है; उससे कुछ भी छिपा नहीं रह सकता है और न ही कोई व्यक्ति इससे बचाया जा सकता है। बिजली की कौंध की तरह ही, गर्जन की गड़गड़ाहट, सर्द रोशनी के साथ दमकती है और मनुष्यों को भय से थरथरा देती है! तेज दुधारी तलवार विद्रोह के पुत्रों को मार गिराती है और शत्रुओं को घोर विपत्ति का सामना करना पड़ता है, ऐसा कोई आश्रय नहीं बचता है जहाँ वे भाग कर छिप सकें; आँधी-बरसात की प्रचंडता से वे चकरा जाते हैं, और उसके वार से लड़खड़ाते हुए वे तुरंत बेहोश होकर बहते पानी में गिर जाते हैं और बहा लिए जाते हैं। केवल मौत होती है, उनके पास बचने का कोई रास्ता नहीं होता। सात गर्जनें मुझसे निकलती हैं, और मिस्र के ज्येष्ठ पुत्रों को मार गिराने, दुष्टों को दंडित करने और

मेरी कलीसियाओं को शुद्ध करने के मेरे इरादे को व्यक्त करती हैं, ताकि सभी कलीसियाएँ एक-दूसरे से निकटता से जुड़ी रहें, भीतर-बाहर से एक हों, और वे मेरे साथ एक ही दिल की हों, ताकि ब्रह्मांड की सभी कलीसियाओं को एक बनाया जा सके। यह मेरा उद्देश्य है।

गर्जना होती है, और रोने-चीखने की आवाज़ें फूट निकलती हैं। कुछ अपनी नींद से जगा दिए जाते हैं, और, बहुत घबड़ा कर, वे अपनी आत्माओं को गहराई से जाँचते हुए सिंहासन के सामने वापस भाग आते हैं। वे अपनी अनियंत्रित चालाकी, नीच हरकतें करना बंद कर देते हैं; ऐसे लोगों के जागने में अभी देर नहीं हुई है। मैं सिंहासन से देखता हूँ। मैं लोगों के दिलों की गहराई में झाँकता हूँ। मैं उन लोगों को बचाता हूँ जो मुझे ईमानदारी और लगन से चाहते हैं, और मैं उन पर दया करता हूँ। मैं अनंत काल तक उन लोगों को बचाऊँगा जो अपने दिलों में मुझे सब से अधिक प्यार करते हैं, जो मेरी इच्छा को समझते हैं, और जो मार्ग के अंत तक मेरा अनुसरण करते हैं। मेरा हाथ उन्हें सुरक्षित रखेगा ताकि वे इस परिस्थिति का सामना न करें और उन्हें कोई भी नुकसान न पहुँचे। जब कुछ लोग चमकती बिजली के इस दृश्य को देखते हैं, तो उनके दिल में एक ऐसा क्लेश होता है जिसे व्यक्त करना उनके लिए बहुत कठिन होता है, और उन्हें अत्यधिक पश्चाताप होता है। अगर वे इस तरह के व्यवहार करते रहते हैं, तो उनके लिए बहुत देर हो चुकी है। ओह, सब कुछ, सब कुछ! यह सब कुछ किया जाएगा। यह भी उद्धार के मेरे साधनों में से एक है। मैं उन लोगों को बचाता हूँ जो मुझसे प्यार करते हैं और मैं दुष्टों को मार गिराता हूँ। मैं पृथ्वी पर अपने राज्य को स्थायी और सुस्थिर बनाता हूँ सभी राष्ट्रों और लोगों को, कायनात में और पृथ्वी के अंतिम छोरों के सभी लोगों को पता लगने देता हूँ कि मैं प्रताप हूँ, मैं भड़कती आग हूँ, मैं वो परमेश्वर हूँ जो हर व्यक्ति के अंतरतम हृदय की जांच करता है। इस समय से, महान श्वेत सिंहासन का न्याय लोगों के सामने सार्वजनिक रूप से प्रकट किया जाता है और सभी लोगों के सामने यह घोषणा की जाती है कि न्याय शुरू हो गया है! यह बात संदेह से परे है कि जिनकी बात दिल से नहीं निकलती है, जो संदेह करते हैं और निश्चित होने की हिम्मत नहीं रखते हैं, समय बर्बाद करने वाले, जो मेरी इच्छाओं को समझते तो हैं लेकिन उन्हें अभ्यास में लाने के इच्छुक नहीं हैं, उनका न्याय किया जाना चाहिए। तुम लोगों को अपने इरादों और उद्देश्यों की सावधानी से जाँच करनी चाहिए, और अपना उचित स्थान ले लेना चाहिए; मेरे वचनों का गंभीरता से अभ्यास करो, अपने जीवन के अनुभवों को महत्व दो, ऊपरी जोश से काम मत करो, बल्कि अपने जीवन का विकास करो, उसे परिपक्व, स्थिर और अनुभवी बनाओ, केवल तब ही तुम मेरे दिल के अनुसार होगे।

शैतान के अनुचरों को और उन दुष्ट आत्माओं को जो मेरे निर्माण को बाधित और नष्ट करते हैं, चीज़ों को अपने हित के लिए शोषित करने का कोई भी मौका न दो। उन्हें कठोरता से सीमित और नियंत्रित किया जाना चाहिए; उनके साथ केवल तेज़ तलवार से निपटा जा सकता है। उनमें जो सबसे बुरे हैं, उन लोगों को तत्काल जड़ से उखाड़ दिया जाना चाहिए ताकि वे भविष्य में कोई खतरा पैदा न करें। और कलीसिया को पूर्ण किया जाएगा, किसी भी विरूपता से मुक्त, और वह स्वास्थ्य, जीवनशक्ति और ऊर्जा से भरपूर होगी। चमकती बिजली के बाद, गड़गड़ाहटें गूँज उठती हैं। तुम लोगों को उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, और हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि जो छूट गया है उसे पकड़ने का पूरा प्रयास करना चाहिए, और तुम सब निश्चित रूप से देख सकोगे कि मेरा हाथ क्या करता है, मैं क्या हासिल करना चाहता हूँ, किसे हटाना चाहता हूँ, किसे पूर्ण करना चाहता हूँ, किसे जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता हूँ, और किसे मार गिराना चाहता हूँ। यह सब तुम लोगों की आँखों के सामने घटित होगा ताकि तुम सब स्पष्ट रूप से मेरी सर्वशक्तिमत्ता को देख सको।

सिंहासन से लेकर पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी के सिरों तक, सात गर्जनें गूँज उठती हैं। लोगों का एक बड़ा समूह बचाया जाएगा और मेरे सिंहासन के सामने समर्पित होगा। जीवन के इस प्रकाश का अनुसरण करते हुए लोग जीवित रहने के साधनों को तलाशते हैं और वे स्वयं को मेरे पास आकर, घुटने टेककर आराधना करने अपने मुंह से सर्वशक्तिमान सच्चे परमेश्वर के नाम को पुकारने, और अपनी प्रार्थनाओं को व्यक्त करने से नहीं रोक पाते। लेकिन जो लोग मेरा विरोध करते हैं, जो अपने दिल को कठोर कर लेते हैं, उनके कानों में गर्जन गूँजती है और बिना किसी संदेह के, उन्हें मरना ही होगा। उनके लिए केवल यही अंतिम परिणाम प्रतीक्षारत है। मेरे प्यारे पुत्र जो विजयी हैं, सिय्योन में रहेंगे और सभी लोग देखेंगे कि वे क्या प्राप्त करेंगे, और तुम सब के सामने विशाल महिमा प्रकट होगी। सचमुच यह एक महान आशीर्वाद है, और ऐसी मधुरता है जिसका वर्णन करना मुश्किल है।

गर्जन के सात शब्दों की गड़गड़ाहट गूँज आ रही है, जो मुझसे प्यार करते हैं, जो मुझे सच्चे दिल से चाहते हैं, ये उन लोगों का उद्धार है। जो मेरे हैं और जिन्हें मैंने पूर्वनिर्धारित किया और चुना है, वे सभी मेरे नाम की शरण में आ पाते हैं। वे मेरी आवाज़ सुन सकते हैं, जो उनके लिए परमेश्वर की पुकार है। पृथ्वी के सिरों पर रहने वालों को देखने दो कि मैं धार्मिक हूँ, मैं वफ़ादार हूँ, मैं प्रेममय दया हूँ, मैं करुणा हूँ, मैं प्रताप हूँ, मैं प्रचंड अग्नि हूँ, और अंततः मैं निर्मम न्याय हूँ।

दुनिया में सभी को देखने दो कि मैं वास्तविक और संपूर्ण परमेश्वर स्वयं हूँ। सभी मनुष्य पूरी तरह आश्वस्त हैं और फिर से कोई भी मेरा विरोध, मेरी आलोचना करने की, या मेरी निंदा करने की हिम्मत नहीं करता है। अन्यथा, उन्हें तुरंत शाप मिलता है और उन पर विपत्ति आती है। वे केवल रो सकते हैं और अपने दांत पीस सकते हैं चूंकि वे खुद अपना विनाश लाए हैं।

सभी लोगों को जान लेने दो, पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी के सिरों को ज्ञात होने दो और प्रत्येक गृहस्थी और सभी लोग ये जान जाएँ : सर्वशक्तिमान परमेश्वर एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। सभी लोग एक के बाद एक घुटने टेक कर मेरी आराधना करेंगे और यहाँ तक कि वे बच्चे भी जिन्होंने अभी बात करना सीखा ही है, वे भी "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" बोल उठेंगे! सत्ताधारी अधिकारी अपनी ही आँखों के सामने सच्चे परमेश्वर को प्रकट होते देखेंगे और वे भी उपासना में साष्टांग करेंगे, दया और क्षमा की भीख माँगेंगे, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है क्योंकि उनकी मृत्यु का समय आ चुका है। उन्हें तो बस खत्म करके असीम रसातल की सज़ा ही दी जा सकती है। मैं पूरे युग को समाप्त कर दूँगा, और अपने राज्य को और भी मजबूत करूँगा। सभी राष्ट्र और समस्त लोग अनंत काल के लिए मेरे सामने समर्पण कर देंगे!

अध्याय 36

सर्वशक्तिमान सच्चा परमेश्वर, सिंहासन पर विराजमान राजा, सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के सामने, पूरे ब्रह्मांड पर शासन करता है, और स्वर्ग के नीचे सब-कुछ परमेश्वर की महिमा से चमकता है। ब्रह्मांड में और पृथ्वी के अंतिम छोर तक सभी जीवित प्राणी देखेंगे। सच्चे परमेश्वर के चेहरे के प्रकाश में पर्वतों, नदियों, झीलों, मैदानी इलाकों, महासागरों और सभी जीवित प्राणियों ने अपने पर्दे खोल दिए हैं, और वे पुनर्जीवित हो गए हैं, मानो किसी सपने से जाग उठे हों, मानो वे मिट्टी को चीरकर फूट निकलने वाले अंकुर हों!

आह! वह एकमात्र सच्चा परमेश्वर दुनिया के सामने प्रकट होता है। कौन प्रतिरोध के साथ उसके पास आने का दुस्साहस कर सकता है? सभी भय से काँपते हैं। सभी पूरी तरह से आश्वस्त हैं, और सभी बारंबार क्षमा-याचना करते हैं। सभी लोग उसके सामने घुटने टेक देते हैं, और सभी लोग उसकी पूजा करते हैं! महाद्वीप और महासागर, पहाड़, नदियाँ—सभी चीज़ें उसकी निरंतर प्रशंसा करती हैं! वसंत ऋतु अपनी गर्म हवाओं के साथ आती है, जिससे वसंत की सुहावनी बारिश होती है। समस्त लोगों की तरह, नदियों की

धाराएँ कृतज्ञता और आत्मग्लानि के आँसू बहाती हुई शोक और हर्ष के साथ बहती हैं। नदियाँ, झीलें, लहरें और हिलोरें, सभी गा रही हैं, सच्चे परमेश्वर के पवित्र नाम की प्रशंसा करते हुए! प्रशंसा की ध्वनि इतनी स्पष्ट सुनाई देती हैं! पुरानी चीज़ें, जिन्हें कभी शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया था—उनमें से प्रत्येक को नवीनीकृत किया जाएगा, परिवर्तित किया जाएगा, और वे पूर्णत: एक नए राज्य में प्रवेश करेंगी ...

यह पवित्र तुरही है, और इसने बजना शुरू कर दिया है! ध्यान से सुनो। वह इतनी मधुर आवाज़ सिंहासन की आवाज़ है, जो सभी देशों और लोगों के लिए घोषणा कर रही है कि समय आ गया है, निर्णायक अंत आ गया है। मेरी प्रबंधन योजना पूरी हो गई है। मेरा राज्य पृथ्वी पर खुलकर प्रकट हो गया है। धरती के राज्य मेरे, यानी परमेश्वर के राज्य बन गए हैं। सिंहासन से मेरी सात तुरहियाँ बजती हैं, और ऐसी चमत्कारी चीज़ें घटित होंगी! धरती के कोने-कोने से लोग हिमस्खलन और वज्रपात की प्रचंडता के साथ हर दिशा से एक-साथ लपककर आएँगे, कुछ समुद्र की यात्रा करते हुए, तो कुछ विमानों में उड़कर, कुछ हर आकार और स्वरूप के वाहनों पर सवार होकर, तो कुछ घोड़ों की सवारी करके। नज़दीक से देखो। ध्यान से सुनो। हर रंग के घोड़ों के ये सवार, बुलंद हौसलों के साथ, पराक्रमी और भव्य लगते हैं, मानो युद्ध के मैदान में जा रहे हों और उन्हें मृत्यु की परवाह न हो। घोड़ों की हिनहिनाहट और सच्चे परमेश्वर के लिए चीखते-चिल्लाते लोगों के कोलाहल के बीच बहुत सारे पुरुष, महिलाएँ और बच्चे पल भर में उनके खुरों से कुचले जाएँगे। कुछ लोग मारे जाएँगे, कुछ अंतिम श्वास ले रहे होंगे, कुछ क्षत-विक्षत होंगे, कोई भी उनकी देखभाल के लिए न होगा, वे उन्मत्त होकर चीखेंगे, दर्द से चिल्लाएँगे। विद्रोह के पुत्र! क्या यह तुम लोगों का अंतिम परिणाम नहीं है?

मैं अपने लोगों को ख़ुशी से देखता हूँ, जो मेरी आवाज़ सुनते हैं, हर देश और भूमि से आकर इकट्ठे होते हैं। सभी लोग सच्चे परमेश्वर को हमेशा अपनी जुबान पर रखकर उसकी प्रशंसा करते हैं और खुशी से लगातार उछलते-कूदते हैं! वे दुनिया को गवाही देते हैं, और सच्चे परमेश्वर के लिए उनकी गवाही की आवाज़ कई समुद्रों के गरजने जैसी है। सभी लोग मेरे राज्य में आकर भीड़ लगाएँगे।

मेरी सात तुरहियाँ बजकर सोए हुए लोगों को जगाती हैं! जल्दी उठो, ज्यादा देर नहीं हुई। अपने जीवन को देखो! अपनी आँखें खोलो और देखो कि अभी क्या समय हुआ है। खोजने लायक क्या चीज़ है? सोचने के लिए क्या रखा है? और चिपके रहने के लिए क्या है? क्या तुमने कभी मेरे जीवन को पाने और उन सभी चीज़ों को पाने के मूल्य के अंतर पर विचार नहीं किया, जिनसे तुम प्यार करते हो और जिनसे

चिपके रहते हो? अब और ज़िद या मनमानी मत करो। इस अवसर को मत गँवाओ। यह समय फिर नहीं आएगा! तुरंत खड़े हो जाओ, अपनी आत्मा से काम लेने का अभ्यास करो, शैतान की हर साजिश और चाल का भेद जानने और उसे नाकाम करने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग करो, और शैतान पर विजय प्राप्त करो, ताकि तुम्हारे जीवन का अनुभव गहरा हो सके और तुम मेरे स्वभाव को जी सको, ताकि तुम्हारा जीवन परिपक्व और अनुभवी बन सके और तुम हमेशा मेरे पदचिह्नों का अनुसरण कर सको। निडर, मज़बूत, हमेशा आगे बढ़ते हुए, कदम-दर-कदम, ठीक मार्ग के अंत तक!

जब सात तुरहियाँ फिर से बजेंगी, तो यह न्याय के लिए पुकार होगी, विद्रोह के पुत्रों के न्याय के लिए, सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के न्याय के लिए, और प्रत्येक राष्ट्र परमेश्वर के सामने आत्मसमर्पण करेगा। परमेश्वर का भव्य मुख-मंडल निश्चित रूप से सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के सामने प्रकट होगा। हर कोई पूरी तरह से आश्वस्त हो जाएगा, और निरंतर चीखते-चिल्लाते हुए सच्चे परमेश्वर को पुकारेगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर और अधिक महिमा-मंडित होगा, और मेरे पुत्र इस महिमा में हिस्सा बँटाएँगे, मेरे साथ राजसत्ता साझी कर सभी राष्ट्रों और सभी लोगों का न्याय करेंगे, बुरे को दंडित करेंगे, जो मेरे हैं उन्हें बचाएँगे और उन पर दया करेंगे, और राज्य को मज़बूत और स्थिर बनाएँगे। सात तुरहियों की आवाज़ से बहुत सारे लोगों को बचाया जाएगा, जो निरंतर प्रशंसा के साथ मेरे सामने घुटने टेकने और मेरी आराधना करने के लिए लौट आएँगे!

जब सात तुरहियाँ एक बार फिर से बजेंगी, तो यह युग का समापन होगा, दुष्ट शैतान पर जीत का तूर्यनाद, पृथ्वी पर राज्य में खुलकर जीने की शुरुआत की सूचना देने वाली सलामी! कितनी बुलंद आवाज़ है, वह आवाज़ जो सिंहासन के चारों ओर गूँजती है, यह तूर्यनाद स्वर्ग और पृथ्वी को हिला देता है, जो मेरी प्रबंधन योजना की जीत का संकेत है, जो शैतान का न्याय है; यह इस पुरानी दुनिया को पूरी तरह से मौत की सज़ा और अथाह कुंड में गिरने की सज़ा देता है! तुरही का यह तूर्यनाद दर्शाता है कि अनुग्रह का द्वार बंद होने वाला है, पृथ्वी पर राज्य का जीवन शुरू होगा, जो पूरी तरह से उचित और उपयुक्त है। परमेश्वर उन्हें बचाता है, जो उससे प्रेम करते हैं। एक बार जब वे उसके राज्य में वापस लौट जाएँगे, तो धरती पर लोग अकाल और महामारी का सामना करेंगे, परमेश्वर के सात कटोरे और सात विपत्तियाँ एक के बाद एक प्रभावी होंगी। पृथ्वी और स्वर्ग मिट जाएँगे, परंतु मेरा वचन नहीं!

अध्याय 37

तुम लोगों में वास्तव में मेरी उपस्थिति के बारे में विश्वास की कमी है और कुछ भी करने के लिए तुम अकसर ख़ुद पर निर्भर रहते हो। "तुम लोग मेरे बिना कुछ नहीं कर सकते!" लेकिन तुम भ्रष्ट लोग हमेशा मेरे वचनों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हो। जीवन आजकल वचनों का जीवन है; वचनों के बिना कोई जीवन नहीं है और कोई अनुभव नहीं है, इतना ही नहीं, बल्कि कोई विश्वास भी नहीं है। विश्वास वचनों में है; केवल परमेश्वर के वचनों में ख़ुद को और अधिक झोंककर ही तुम्हें सब-कुछ मिल सकता है। बड़े न होने के बारे में चिंता मत करो; जीवन विकास के ज़रिये आता है, चिंता के ज़रिये नहीं।

तुम लोग चिंतित होने के लिए हमेशा तत्पर रहते हो और मेरे निर्देश नहीं सुनते। तुम हमेशा गति में मुझसे आगे निकल जाना चाहते हो। इसका क्या मतलब है? ये लोगों की जंगली महत्वाकांक्षाएँ हैं। तुम लोगों को स्पष्ट रूप से अंतर करना चाहिए कि परमेश्वर से क्या आता है और ख़ुद तुमसे क्या आता है। मेरी उपस्थिति में उत्साह की कभी प्रशंसा नहीं की जाएगी। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग शुरू से लेकर अंत तक श्रद्धापूर्वक और अडिग रहकर मेरा अनुसरण करो। लेकिन तुम यह मानते हो कि इस तरह का व्यवहार ही परमेश्वर की भक्ति है। तुम लोग अंधे हो! तुम क्यों नहीं अकसर मेरे सामने आते और खोज करते? तुम बस आँख मूँदकर काम क्यों कर रहे हो? तुम्हें स्पष्ट रूप से देखना चाहिए! जो अभी कार्य कर रहा है, वह निश्चित रूप से कोई मानव नहीं है, बल्कि सभी का शासक, सच्चा परमेश्वर है—सर्वशक्तिमान! तुम्हें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि तुम लोगों के पास जो भी चीज़ है, उसे थामे रहना चाहिए, क्योंकि मेरा दिन निकट है। ऐसे समय में भी, जैसा कि यह होगा, तुम लोग सोते ही रहोगे? क्या तुम अभी भी स्पष्ट रूप से नहीं देखते? तुम अभी भी दुनिया से जुड़ रहे हो और उससे नाता नहीं तोड़ सकते। क्यों? क्या तुम सचमुच मुझसे प्रेम करते हो? क्या तुम अपने हृदय मेरे सामने खोल सकते हो? क्या तुम अपना संपूर्ण अस्तित्व मुझे प्रस्तुत कर सकते हो?

मेरे वचनों के बारे में और अधिक सोचो, और हमेशा उनकी स्पष्ट समझ रखो। भ्रमित और अनमने न बनो। मेरी उपस्थिति में अधिक समय बिताओ, मेरे शुद्ध वचनों को और अधिक ग्रहण करो, और मेरे इरादों को गलत मत समझो। मैं तुम लोगों से और अधिक क्या कह सकता हूँ? लोगों के हृदय कठोर हैं और वे धारणाओं से बहुत ज्यादा लदे हैं। वे हमेशा सोचते हैं कि बस जैसे-तैसे निभा देना ही पर्याप्त है, और वे

हमेशा अपने जीवन का मज़ाक बना लेते हैं। मूर्ख बच्चो! यह समय से पूर्व नहीं है, और यह खुद को सिर्फ़ खेलने से संबंधित रखने का समय नहीं है। तुम्हें अपनी आँखें खोलनी चाहिए और देखना चाहिए कि यह कौन-सा समय है। सूर्य क्षितिज पार करने और पृथ्वी को रोशन करने वाला है। अपनी आँखें पूरी खोलो और देखो, लापरवाह मत बनो।

यह एक बड़ा मामला है, और तुम लोग फिर भी इसे हलके ढंग से लेते हो और ऐसा बर्ताव करते हो! मेरा हृदय व्याकुल है, लेकिन कुछ ही लोग हैं, जो मेरे हृदय के प्रति विचारशील हैं और मेरी अच्छी बातें सुनने और मेरी सलाह मानने में सक्षम हैं! लक्ष्य कठिन है, लेकिन तुममें से कुछ लोग हैं, जो मेरे लिए इस भार को बाँट सकते हैं; तुम्हारी प्रवृत्ति अभी भी ऐसी है। हालाँकि अतीत की तुलना में तुमने कुछ प्रगति की है, लेकिन तुम लगातार इस स्थिति में नहीं बने रह सकते! मेरे कदम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन तुम लोगों की गति अभी भी जस की तस है। तुम आज के प्रकाश के साथ कैसे तालमेल रख सकते हो और मेरे कदमों के साथ कदम मिलाकर चल सकते हो? दोबारा मत हिचकिचाओ। मैंने तुम लोगों से बार-बार ज़ोर देकर कहा है, मेरा दिन आने में अब और देर नहीं होगी!

आज का प्रकाश आखिरकार आज का है। इसकी तुलना बीते हुए कल के प्रकाश से नहीं की जा सकती और न ही इसकी तुलना आने वाले कल के प्रकाश से की जा सकती है। हर गुज़रते दिन के साथ नए प्रकाशन और नया प्रकाश अधिक मजबूत और अधिक चमकदार होते जाते हैं। अपनी स्तब्धता से बाहर निकलो! अब और मूर्ख मत बनो, अब और पुराने तरीकों से न चिपके रहो, अब और देर मत करो और मेरा समय और ख़राब मत करो।

चौकस रहो! चौकस रहो! मुझसे और अधिक प्रार्थना करो, मेरी उपस्थिति में और अधिक समय बिताओ, और तुम्हें निश्चित रूप से सब-कुछ मिलेगा! विश्वास करो कि इस तरह से तुम निश्चित रूप से सब-कुछ पा लोगे!

अध्याय 38

ऐसा नहीं कि तुम्हारा विश्वास अच्छा और शुद्ध है, बल्कि मेरा कार्य चमत्कारी है! यह सब-कुछ मेरी दया के कारण है! तुममें स्वार्थ या दंभ का जरा-सा भी भ्रष्ट स्वभाव नहीं होना चाहिए, वरना मैं तुम पर कार्य

नहीं करूँगा। तुम्हें स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि मनुष्य चाहे गिरें या दृढ़ता से खड़े रहें, यह उनकी वजह से नहीं है, यह मेरी वजह से है। आज अगर तुम इस कदम को स्पष्ट रूप से नहीं समझते, तो तुम निश्चय ही राज्य में प्रवेश करने में असफल हो जाओगे! तुम्हें यह अवश्य समझना चाहिए कि आज जो किया जा रहा है, वह परमेश्वर का चमत्कारी कार्य है; इसका मनुष्य से कुछ लेना-देना नहीं। मनुष्य के कार्य क्या महत्व रखते हैं? जब वे स्वार्थी, दंभी और अभिमानी नहीं होते, तब वे परमेश्वर के प्रबंधन को बाधित और उसकी योजनाओं को नष्ट कर रहे होते हैं। अरे, भ्रष्ट जनो! तुम्हें आज मुझ पर भरोसा अवश्य करना चाहिए; अगर तुम नहीं करते, तो आज मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम कभी कुछ हासिल नहीं कर पाओगे! सब-कुछ व्यर्थ होगा और तुम्हारे उपक्रम मूल्यहीन होंगे!

देर मत करो, न हिचकिचाओ; आज मुझसे प्रेम करने वाले हर व्यक्ति पर चमत्कारी कार्य होगा। जो स्वयं को विनम्र नहीं बनाते, वे मेरे किसी उपयोग के नहीं हैं, और आज मैं केवल उनका उपयोग करता हूँ, जो पूर्णत: विनम्र हैं। मैं तुममें से केवल उन लोगों के लिए खुला रहूँगा, जो मुझे सच्चे दिल से प्रेम करते हैं, जिन्हें दूसरों द्वारा तुच्छ समझा जाता है, और जो खुद को मेरे प्रति पूरी तरह खोलने में सक्षम हैं। मैं तुम्हें अपने इरादों को समझने दूँगा और तुम हर समय मेरे आशीष प्राप्त करते हुए मेरे सम्मुख रहोगे। आज जो अपने आपको मेरे लिए खपाते हैं, अपने आपको मेरे लिए अर्पित करते हैं और मेरे लिए बोझ सहन करते हैं, मैं उनके साथ जरा भी अनुचित व्यवहार नहीं करूँगा—इस तरह मेरी धार्मिकता प्रकट होती है। मेरे बारे में शिकायत न करो; मेरा अनुग्रह तुम लोगों के लिए काफी है। तुम भी आकर इसे ग्रहण कर सकते हो, ताकि तुम अतुलनीय मधुरता का स्वाद ले सको। इससे न केवल तुम्हारे भीतर मेरे प्रति प्रेम उत्पन्न होगा, बल्कि इससे तुम्हारा वह प्रेम गहरा भी होगा।

मेरा कार्य चरण-दर-दर किया जाता है और वह बिलकुल लापरवाही से भरा या गड़बड़ नहीं है। मेरा अनुसरण करने के लिए तुम लोगों को भी चीज़ें इस तरह से करनी चाहिए। मेरा आचरण देखो और मुझसे सीखो; इस तारा से, अगर तुम मेरे पदचिह्नों का अनुसरण करते हो, तो तुम लोगों को राज्य की अभिव्यक्ति में लाया जाएगा। एक स्वर से जयकार करो! मेरे पुत्रो! परमेश्वर का कार्य तुम लोगों के इस समूह पर संपन्न होगा। क्या तुम लोग धन्य महसूस नहीं करते?

इसकी थाह पाना सचमुच कठिन है! मैं तुम लोगों को आज यहाँ लाया हूँ, ताकि तुम मेरे चमत्कारी कार्य को देख सको!

अध्याय 39

अपनी आँखें खोलो और देखो, और तुम हर जगह मेरे महान सामर्थ्य को देख सकते हो! तुम हर जगह मेरे बारे में निश्चित हो सकते हो। ब्रह्मांड और गगन-मंडल मेरे महान सामर्थ्य को फैला रहे हैं। मैंने जो वचन बोले हैं, वे मौसम के गर्म होने, जलवायु-परिवर्तन, लोगों के भीतर की विसंगतियों, सामाजिक गतिशीलता के विकार और लोगों के हृदयों के भीतर के छल में सच हो गए हैं। सूरज सफेद हो जाता है और चंद्रमा लाल हो जाता है; यह सब संतुलन से बाहर है। क्या तुम लोग सचमुच अभी भी इन्हें नहीं देखते?

परमेश्वर का महान सामर्थ्य यहाँ प्रकट है। निस्संदेह वही एक सच्चा परमेश्वर है—सर्वशक्तिमान—जिसका लोगों ने कई वर्षों तक अनुसरण किया है! केवल शब्द बोलकर कौन चीज़ों को अस्तित्व में ला सकता है? केवल हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर। जैसे ही वह बोलता है, सत्य प्रकट हो जाता है। तुम कैसे नहीं कह सकते कि वही सच्चा परमेश्वर है?

मुझे दिल की गहराई से पता है कि तुम सभी लोग मेरे साथ सहयोग करने के इच्छुक हो, और मेरा मानना है कि मेरे चुने हुए लोगों, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों में इस तरह की आकांक्षा है, लेकिन वे बस प्रवेश नहीं कर सकते या वास्तव में अभ्यास नहीं कर सकते, और वास्तविकताओं के घटित होने का सामना करने पर धैर्यवान और शांत नहीं रह सकते। तुम कभी परमेश्वर के इरादों पर कोई ध्यान नहीं देते, और तुम अपने निजी हितों को पहले रखते हो और बिना प्रतीक्षा किए अपने आप कार्य कर डालते हो। मैं तुम लोगों को बता दूँ, इस तरह से मेरे इरादे कभी पूरे नहीं होंगे! बच्चे! बस अपना हृदय पूरी तरह से मुझे दे दो। स्पष्ट रहो! मैं तुम्हारा धन नहीं चाहता, न ही तुम्हारी संपत्ति, और न ही मैं यह चाहता हूँ कि तुम मेरे पास सेवा करने के लिए जोश से, कपट से या संकीर्ण मन से आओ। शांत और शुद्ध हृदय वाले बनो, जब समस्याएँ उत्पन्न हों तो प्रतीक्षा करो और खोजो, मैं तुम्हें उत्तर दूँगा। संदेह में मत रहो! तुम मेरे वचनों को कभी सच क्यों नहीं मानते? तुम मेरे वचनों पर विश्वास क्यों नहीं कर सकते? तुम चरम सीमा तक जिद्दी हो और इस जैसे समय में भी तुम अभी भी वैसे ही हो; तुम बहुत अज्ञानी हो और बिलकुल भी प्रबुद्ध नहीं हो! तुम लोगों को कितना महत्वपूर्ण सत्य याद है? क्या तुमने वास्तव में उसका अनुभव किया है? समस्याओं से सामना होने पर तुम उलझन में पड़ जाते हो और बिना विचारे कार्य करते हो! आज मुख्य बात यह है कि

तुम आत्मा में प्रवेश करो और मेरे साथ और अधिक संगति करो, वैसे ही जैसे तुम लोगों के हृदय अकसर सवालों पर विचार करते हैं। क्या तुम समझे? यह कुंजी है! देरी से किया गया अभ्यास वास्तव में एक समस्या है। जल्दी करो, और देर मत करो! जो लोग मेरे वचनों को सुनते हैं और देर नहीं करते, बल्कि तुरंत उनका अभ्यास करते हैं, वे बहुत धन्य होंगे! मैं तुम लोगों पर दोगुनी कृपा करूँगा! चिंता मत करो! एक क्षण की भी देरी किए बिना, जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो! तुम मनुष्यों की धारणाएँ अकसर ऐसी ही होती हैं, और तुम चीजों को टालने के आदी हो, हमेशा देर करते हुए, जिसे आज किया जाना चाहिए, उसे कल करते हो। इतने आलसी और इतने फूहड़। शब्द इसका वर्णन नहीं कर सकते! मैं बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कह रहा हूँ—यह तथ्य है। यदि तुम इसे नहीं मानते, तो ध्यान से खुद की जाँच करो और अपनी स्थिति की पड़ताल करो, और तुम पाओगे कि वास्तव में ऐसा ही है!

अध्याय 40

तुम इतने मंद-बुद्धि क्यों हो? तुम इतने सुन्न क्यों हो? बहुत बार याद दिलाने पर भी तुम लोग नहीं जागे हो, और यह बात मुझे परेशान कर रही है। सच में मेरे पास वह हृदय नहीं है, जो अपने पुत्रों को इस तरह देख सकूँ। मेरा हृदय यह कैसे सहन कर सकता है? आह! मुझे तुम लोगों को खुद अपने हाथ से सिखाना होगा। मेरी गति लगातार तेज हो रही है। मेरे पुत्रो! जल्दी से उठो और मेरे साथ सहयोग करो। कौन अब ईमानदारी से मेरे लिए खुद को खर्च करता है? कौन शिकायत के एक भी शब्द के बिना खुद को पूरी तरह से समर्पित करने में सक्षम है? तुम लोग हमेशा से इतने सुन्न और मंदबुद्धि हो! तुममें से कितने मेरी भावनाओं के प्रति विचारशील होने में सक्षम हैं, और कितने वास्तव में मेरे वचनों की आत्मा को समझ सकते हैं? मैं बस इतना कर सकता हूँ कि व्याकुलता से प्रतीक्षा और आशा करूँ; यह देखते हुए कि तुम लोगों का कोई भी कदम मेरे हृदय को संतुष्ट नहीं कर सकता, मैं क्या कह सकता हूँ? मेरे पुत्रो! तुम्हारा पिता आज जो कुछ भी करता है, वह अपने पुत्रों के लिए करता है। क्यों मेरे पुत्र कभी मेरे हृदय को नहीं समझ सकते, और क्यों मेरे पुत्र हमेशा मुझे, अपने पिता को, चिंता में डालते हैं? मेरे पुत्र कब बड़े होंगे, मुझे चिंता में नहीं डालेंगे, और मुझे अपने बारे में निश्चिंत होने देंगे? मेरे पुत्र कब स्वतंत्र रूप से जीने में सक्षम होंगे, खड़े होंगे, और अपने पिता के कंधों का बोझ हलका करेंगे? मैं बस अपने पुत्रों के लिए चुपचाप आँसू बहाता हूँ, और मैं परमेश्वर की प्रबंधन-योजना पूरी करने और अपने पुत्रों, अपने प्रियजनों को बचाने

के लिए सब-कुछ लगाता हूँ। मेरे पास और कोई विकल्प नहीं है।

मेरे वादे पूरे हो चुके हैं और तुम्हारी आँखों के आगे साकार हो गए हैं। तुम मेरे हृदय के प्रति विचारशील क्यों नहीं हो सकते? क्यों? क्यों? अब तक, क्या तुम लोगों ने गिना है : तुमने ऐसी कितनी चीजें की हैं, जिन्होंने मेरे हृदय को संतुष्ट किया, और तुमने ऐसी कितनी चीजें की हैं, जिन्होंने कलीसिया का भरण-पोषण किया? इस पर ध्यान से विचार करो; लापरवाह मत बनो। सत्य के एक भी कण को जाने न दो। तुम केवल दिखावों पर ध्यान केंद्रित कर सार को नजरअंदाज़ नहीं कर सकते। तुम लोगों को हर समय यह जाँचना चाहिए कि क्या तुम्हारा प्रत्येक वचन और कार्य और तुम्हारा हर एक कदम मसीह के आसन के सामने न्याय से गुजरा है, और क्या तुम एक नए व्यक्ति की छवि में रूपांतरित हुए हो—नकल में नहीं, बल्कि जीवन की अभिव्यक्ति के साथ भीतर गहराई से उभरते हुए। अपने जीवन में देरी न करो, ताकि तुम नुकसान उठाने से बच सको। जल्दी करो और इस स्थिति का समाधान करो, मेरे हृदय को संतुष्ट करो, और आचरण के सिद्धांतों को ध्यान में रखो : चीजों को धार्मिकता और शुचिता से करो और मेरे हृदय को संतुष्ट करो। लापरवाह मत बनो। क्या तुम इसे याद रख सकते हो?

अध्याय 41

कलीसिया में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के बारे में इतने भारी संदेहों से मत भरो। कलीसिया के निर्माण के दौरान गलतियाँ होना अपरिहार्य है, लेकिन जब तुम्हारे सामने समस्याएँ आएँ, तो घबराओ मत; बल्कि शांत और स्थिर रहो। क्या मैंने तुम लोगों को पहले ही नहीं बता दिया है? अकसर मेरे सामने आओ और प्रार्थना करो, और मैं तुम्हें अपने इरादे स्पष्ट रूप से दिखाऊँगा। कलीसिया मेरा दिल है और यह मेरा अंतिम प्रयोजन है, इसलिए मैं कैसे इसे प्यार नहीं कर सकता? डरो मत—जब कलीसिया में इस तरह की चीज़ें होती हैं, तो वे मेरी अनुमति से होती हैं। खड़े होकर मेरी ओर से बोलो। विश्वास रखो कि सभी चीज़ों और मामलों को मेरे सिंहासन की अनुमति है और उनमें मेरे इरादे निहित हैं। यदि तुम अनियंत्रित तरीके से सहभागिता जारी रखोगे, तो समस्याएँ होंगी। क्या तुमने परिणामों के बारे में सोचा है? यह उसी तरह की चीज़ है, जिसका लाभ शैतान उठाएगा। मेरे पास अकसर आओ। मैं स्पष्ट रूप से बोलूँगा : यदि तुम मेरे समक्ष आए बिना कुछ करने जा रहे हो, तो यह न सोचना कि तुम उसे पूरा कर पाओगे। तुम्हीं लोगों ने मुझे इस स्थिति के लिए मजबूर किया है।

निराश न हो, कमज़ोर न बनो, मैं तुम्हारे लिए चीज़ें स्पष्ट कर दूँगा। राज्य की राह इतनी आसान नहीं है; कुछ भी इतना सरल नहीं है! तुम चाहते हो कि आशीष आसानी से मिल जाएँ, है न? आज हर किसी को कठोर परीक्षणों का सामना करना होगा। बिना इन परीक्षणों के मुझे प्यार करने वाला तुम लोगों का दिल मजबूत नहीं होगा और तुम्हें मुझसे सच्चा प्यार नहीं होगा। यदि ये परीक्षण केवल मामूली परिस्थितियों से युक्त भी हों, तो भी सभी को इनसे गुज़रना होगा; अंतर केवल इतना है कि परीक्षणों की कठिनाई हर एक व्यक्ति के लिए अलग-अलग होगी। परीक्षण मेरे आशीष हैं, और तुममें से कितने मेरे सामने आकर घुटनों के बल गिड़गिड़ाकर मेरे आशीष माँगते हैं? बेवकूफ़ बच्चे! तुम्हें हमेशा लगता है कि कुछ मांगलिक वचन ही मेरा आशीष होते हैं, किंतु तुम्हें यह नहीं लगता कि कड़वाहट भी मेरे आशीषों में से एक है। जो लोग मेरी कड़वाहट में हिस्सा बँटाते हैं, वे निश्चित रूप से मेरी मिठास में भी हिस्सा बँटाएँगे। यह मेरा वादा है और तुम लोगों को मेरा आशीष है। मेरे वचनों को खाने-पीने और उनका आनंद लेने में संकोच न करो। जब अँधेरा छँटता है, रोशनी हो जाती है। भोर होने से पहले अँधेरा सबसे घना होता है; उसके बाद धीरे-धीरे उजाला होता है, और तब सूर्य उदित होता है। डरपोक या कायर मत बनो। आज मैं अपने पुत्रों का समर्थन करता हूँ और उनके लिए अपनी शक्ति का उपयोग करता हूँ।

जब कलीसिया के काम की बात आती है, तो हमेशा अपने उत्तरदायित्व से मुँह मत मोड़ो। यदि तुम मामले को ईमानदारी से मेरे पास लाओगे, तो तुम्हें कोई राह मिल जाएगी। जब ऐसी कोई मामूली समस्या उत्पन्न होती है, तो क्या तुम डर जाते हो और घबरा जाते हो, और तुम्हें समझ नहीं आता कि क्या करूँ? मैंने कई बार कहा है, "अकसर मेरे पास आओ!" क्या तुम लोगों ने ईमानदारी से उन चीज़ों का अभ्यास किया है, जो मैं तुम्हें करने के लिए कहता हूँ? तुमने मेरे वचनों पर कितनी बार विचार किया है? अगर तुमने ऐसा नहीं किया है, तो तुम्हारे पास कोई स्पष्ट अंतर्दृष्टि नहीं है। क्या यह तुम्हारी अपनी करनी नहीं है? तुम दूसरों को दोष देते हो, लेकिन उसके बजाय तुम अपने आप से नफ़रत महसूस क्यों नहीं करते? तुम चीज़ें ख़राब कर देते हो और फिर लापरवाह और असावधान हो जाते हो; तुम्हें मेरे वचनों पर ध्यान देना चाहिए।

आज्ञाकारी और विनम्र व्यक्ति महान आशीष प्राप्त करेंगे। कलीसिया में मेरी गवाही में दृढ़ रहो, सत्य पर टिके रहो; सही सही है और गलत गलत है। काले और सफ़ेद के बीच भ्रमित मत होओ। तुम शैतान के साथ युद्ध करोगे और तुम्हें उसे पूरी तरह से हराना होगा, ताकि वह फिर कभी न उभरे। मेरी गवाही की

रक्षा के लिए तुम्हें अपना सब-कुछ देना होगा। यह तुम लोगों के कार्यों का लक्ष्य होगा—इसे मत भूलना। लेकिन अभी तुम लोगों में विश्वास की और चीज़ों में अंतर करने की क्षमता में कमी है और तुम हमेशा मेरे वचनों और इरादों को समझने में असमर्थ रहते हो। फिर भी, चिंता मत करो; हर चीज़ मेरे चरणों के अनुसार आगे बढ़ती है और चिंता केवल परेशानी पैदा करती है। मेरे समक्ष अधिक समय बिताओ और भोजन और कपड़ों को महत्त्व न दो, जो केवल भौतिक शरीर के लिए हैं। अकसर मेरे इरादों का पता लगाओ, और मैं स्पष्ट रूप से तुम्हें दिखाऊँगा कि वे क्या हैं। धीरे-धीरे तुम्हें हर चीज़ में मेरा इरादा दिखाई देगा, क्योंकि हर इंसान के लिए मेरे पास एक निर्बाध मार्ग होगा। इससे मेरे दिल को संतुष्टि मिलेगी और तुम लोग हमेशा के लिए मुझसे आशीष प्राप्त करोगे!

अध्याय 42

महान हैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कर्म! कितने आश्चर्यजनक! कितने अद्भुत! सात तुरहियाँ बजती हैं, सात गर्जनाएँ होती हैं, सात कटोरे उँड़ेले जाते हैं—ये तुरंत खुले तौर पर प्रकट होंगे, और इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। परमेश्वर का प्रेम हमें रोज़ प्राप्त होता है। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही हमें बचा सकता है; हमें दुर्भाग्य मिलता है या आशीष, यह पूरी तरह से उस पर निर्भर है, और हम मनुष्यों के पास इसका निर्णय करने का कोई उपाय नहीं है। जो लोग स्वयं को पूरे दिल से समर्पित करते हैं, वे निश्चित रूप से भरपूर आशीष प्राप्त करेंगे, जबकि अपने जीवन को संरक्षित रखने के आकांक्षी अपने जीवन को ही खो देंगे; सभी चीज़ें और सभी मामले सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथों में हैं। अपने कदम अब और मत रोको। स्वर्ग और पृथ्वी में ज़बरदस्त बदलाव आ रहा है, जिससे बचने का मनुष्य के पास कोई उपाय नहीं है। उसके पास तीव्र पीड़ा से क्रंदन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। पवित्र आत्मा जो कार्य आज कर रहा है, उसका अनुसरण करो। उसके काम की प्रगति किस चरण तक पहुँच गई है, इसके बारे में तुम्हें खुद ही ठीक से पता होना चाहिए, दूसरों के द्वारा याद दिलाए जाने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। अब जितनी ज्यादा बार संभव हो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में लौटो। उससे सब-कुछ माँगो। वह निश्चित रूप से तुम्हें भीतर से प्रबुद्ध करेगा और संकट के क्षणों में तुम्हारी रक्षा करेगा। बिलकुल मत डरो! तुम्हारा संपूर्ण अस्तित्व पहले से ही उसके अधिकार में है। उसकी सुरक्षा और देखभाल के होते हुए तुम्हारे लिए डरने की क्या बात है? आज परमेश्वर की इच्छा फलित होने को है, और जो भी भयभीत है, वह केवल

नुकसान में रहेगा। मैं तुमसे जो कह रहा हूँ, वह सच है। अपनी आध्यात्मिक आँखें खोलो : स्वर्ग एक पल में बदल सकता है, लेकिन तुम्हारे लिए डरने की क्या बात है? उसके हाथ की एक हलकी-सी हरकत से स्वर्ग और पृथ्वी तुरंत नष्ट हो जाते हैं। तो चिंतित होने से मनुष्य क्या हासिल कर सकता है? क्या सब-कुछ परमेश्वर के हाथों में नहीं है? अगर वह स्वर्ग और पृथ्वी को बदलने की आज्ञा देता है, तो वे बदल जाएँगे। अगर वह कहता है कि हमें पूर्ण किया जाना है, तो हम पूर्ण किए जाएँगे। मनुष्य को चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उसे शांति से आगे बढ़ना चाहिए। फिर भी, तुम्हें जितना हो सके, ध्यान देना चाहिए और सजग रहना चाहिए। स्वर्ग एक पल में बदल सकता है! मनुष्य चाहे कितनी भी आँखें फाड़-फाड़ कर देख ले, वह ज्यादा कुछ नहीं देख पाएगा। अब चौकस रहो। परमेश्वर की इच्छा पूरी हो गई है, उसकी परियोजना पूरी हो गई है, उसकी योजना सफल हो गई है, और उसके सभी पुत्र उसके सिंहासन पर पहुँच गए हैं। वे मिलकर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ सभी राष्ट्रों और सभी लोगों का न्याय करने बैठते हैं। जो लोग कलीसिया को सताते रहे हैं, और परमेश्वर के पुत्रों को नुकसान पहुँचाते रहे हैं, उन्हें कड़ी सज़ा मिलेगी : यह निश्चित है! जो ईमानदारी से स्वयं को परमेश्वर को अर्पित कर देते हैं, जो अपनी हर बात पर खरे उतरते हैं, परमेश्वर निश्चित रूप से उन्हें, कभी भी बदले बिना, अनंत काल तक प्रेम करेगा!

अध्याय 43

क्या मैंने तुम्हें याद नहीं दिलाया है? आशंकित मत हो; तुम मेरी बात सुनते ही नहीं, ऐसे विचारहीन लोग हो तुम! तुम कब मेरे दिल को समझने में सक्षम होगे? हर दिन एक नई प्रबुद्धता होती है, और हर दिन नई रोशनी होती है। तुम लोगों ने कितनी बार इसे अपने लिए समझा है? क्या खुद मैंने तुम लोगों को नहीं बताया है? तुम अभी भी निष्क्रिय हो, उन कीड़ों की तरह, जो केवल छेड़े जाने पर ही खिसकते हैं, और तुम मेरे साथ सहयोग करने की पहल करने में, और मेरे बोझ के प्रति विचारशील होने में, असमर्थ हो। मैं तुम सबकी जीवंत और सुंदर मुसकराहट, अपने पुत्रों के सक्रिय और जीवंत तरीके देखना चाहता हूँ, लेकिन मैं नहीं देख पाता। इसके बजाय, तुम दिमाग से कमजोर हो—अनाड़ी और मूर्ख। तुम लोगों को खोज करने की पहल करनी चाहिए। निडरता से अनुसरण करो! बस अपने दिल खोलो और मुझे अपने भीतर रहने दो। सतर्क और सजग रहो! कलीसिया में कुछ लोग दूसरे लोगों को धोखा देते हैं, और तुम्हें इन वचनों को हमेशा बहुत महत्व देना चाहिए, ऐसा न हो कि तुम्हारे जीवन पर बुरा प्रभाव पड़े या तुम्हें कुछ

नुकसान उठाना पड़े। निश्चिंत रहो, जब तक तुम्हारे अंदर मेरे लिए खड़े होने और बोलने का साहस है, तब तक मैं इस सबका भार उठा लूँगा, और तुम्हें सशक्त बनाऊँगा! जब तक तुम मेरे दिल को संतुष्ट करते रहोगे, मैं हमेशा तुम्हें अपनी मुसकराहट और अपनी इच्छा दिखाऊँगा। जब तक तुम्हारे पास एक मजबूत रीढ़ है और तुम एक मर्द बच्चे के स्वभाव को जीते हो, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा और तुम्हें एक महत्वपूर्ण स्थिति में रखूँगा। जब तुम मेरे सामने आते हो, तो बस मेरे करीब आओ। अगर तुम बात नहीं कर सकते, तो भी डरो मत। जब तक तुम्हारे पास एक जिज्ञासु हृदय है, मैं तुम्हें वचन प्रदान करता रहूँगा। मुझे चिकने-चुपड़े शब्दों की जरूरत नहीं है, और मुझे तुम्हारी चापलूसी की भी जरूरत नहीं है; इस तरह की चीजों से मुझे सबसे अधिक नफरत है। मैं इस प्रकार के व्यक्ति से सबसे अधिक नाराज होता हूँ। वे मेरी आँखों में एक किरच या मेरे देह में एक काँटे की तरह हैं, जिसे हटा दिया जाना चाहिए। अन्यथा मेरे पुत्र मेरे लिए शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते और वे एक दमघोंटू नियंत्रण के अधीन हो जाएँगे। मैं क्यों आया हूँ? मैं अपने पुत्रों की सहायता करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आया हूँ, ताकि उनके उत्पीड़न, धौंसियाए जाने, बेरहमी और दुर्व्यवहार सहने के दिन हमेशा के लिए खत्म हो जाएँ!

साहसी बनो। मैं हमेशा तुम्हारे साथ चलूँगा, तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम्हारे साथ बात करूँगा और तुम्हारे साथ कार्य करूँगा। डरो मत। बोलने में संकोच मत करो। तुम लोग हमेशा भावुक, भीरू और डरपोक रहते हो। जो लोग कलीसिया के निर्माण में किसी काम के नहीं हैं, उन्हें हटा दिया जाना चाहिए। इसमें कलीसिया के वे लोग शामिल हैं, जिनकी स्थितियाँ अच्छी नहीं हैं और जो मेरे वचनों के अनुसार कार्य नहीं कर सकते, तुम्हारे अविश्वासी माता-पिता का तो कहना ही क्या। मैं वे चीजें नहीं चाहता। उन्हें हटा दिया जाना चाहिए, और उनमें से एक भी नहीं रहना चाहिए। बस अपने हाथों और पैरों में लगी बेड़ियाँ हटा दो। यदि तुम अपने इरादों की जाँच करते हो और वे लाभ और हानि से संबंध नहीं रखते, न ही प्रसिद्धि और धन से, और न ही व्यक्तिगत संबंधों से, तो मैं तुम्हारा साथ दूँगा, तुम्हें चीजें बताऊँगा और तुम्हें हर समय स्पष्ट मार्गदर्शन दूँगा।

आह, मेरे पुत्रो! मैं क्या कहूँ? हालाँकि मैं ये बातें कहता हूँ, लेकिन तुम लोग अभी भी मेरे दिल के प्रति विचारशील नहीं हो, और तुम अभी भी बहुत भीरू हो। तुम किस बात से डरते हो? तुम अभी भी कानूनों और नियमों से क्यों बँधे हो? मैंने तुम लोगों को मुक्त किया है, लेकिन तुम लोगों के पास अभी भी कोई स्वतंत्रता नहीं है। ऐसा क्यों है? मेरे साथ अधिक संवाद करो और मैं तुम्हें बताऊँगा। मेरी परीक्षा मत लो। मैं

असली हूँ। मेरे साथ कुछ भी दिखावा नहीं है; सब असली है! मैं जो कुछ भी कहता हूँ, वह सच है। मैं कभी भी अपनी बात से पीछे नहीं हटता।

अध्याय 44

मैं धार्मिक हूँ, मैं विश्वासयोग्य हूँ, और मैं वो परमेश्वर हूँ जो मनुष्यों के अंतरतम हृदय की जाँच करता है! मैं एक क्षण में इसे प्रकट कर दूँगा कि कौन सच्चा और कौन झूठा है। घबराओ मत; सभी चीजें मेरे समय के अनुसार काम करती हैं। कौन मुझे ईमानदारी से चाहता है और कौन नहीं—मैं एक-एक करके तुम सब को बता दूँगा। तुम लोग वचनों को खाने-पीने का ध्यान रखो और जब तुम मेरी उपस्थिति में आओ तो मेरे करीब आ जाओ, और मैं अपना काम स्वयं करूँगा। तात्कालिक परिणामों के लिए बहुत चिंतित न हो जाओ; मेरा काम ऐसा नहीं है जो सारा एक साथ पूरा किया जा सके। इसके भीतर मेरे चरण और मेरी बुद्धि निहित है, इसलिए ही मेरी बुद्धि प्रकट की जा सकती है। मैं तुम सभी को देखने दूँगा कि मेरे हाथों द्वारा क्या किया जाता है—बुराई को दण्डित और भलाई को पुरस्कृत किया जाता है। मैं निश्चय ही किसी से पक्षपात नहीं करता। तुम जो मुझे पूरी निष्ठा से प्रेम करते हो, मैं भी तुम्हें निष्ठा से प्रेम करूँगा, और जहाँ तक उनकी बात है जो मुझे निष्ठा से प्रेम नहीं करते, उन पर मेरा क्रोध हमेशा रहेगा, ताकि वे अनंतकाल तक याद रख सकें कि मैं सच्चा परमेश्वर हूँ, ऐसा परमेश्वर जो मनुष्यों के अंतरतम हृदय की जाँच करता है। लोगों के सामने एक तरह से और उनकी पीठ पीछे दूसरी तरह से काम न करो; तुम जो कुछ भी करते हो, उसे मैं स्पष्ट रूप से देखता हूँ, तुम दूसरों को भले ही मूर्ख बना लो, लेकिन तुम मुझे मूर्ख नहीं बना सकते। मैं यह सब स्पष्ट रूप से देखता हूँ। तुम्हारे लिए कुछ भी छिपाना संभव नहीं है; सबकुछ मेरे हाथों में है। अपनी क्षुद्र और छोटी-छोटी गणनाओं को अपने फायदे के लिए कर पाने के कारण खुद को बहुत चालाक मत समझो। मैं तुमसे कहता हूँ : इंसान चाहे जितनी योजनाएँ बना ले, हजारों या लाखों, लेकिन अंत में मेरी पहुँच से बच नहीं सकता। सभी चीज़ें और घटनाएं मेरे हाथों से ही नियंत्रित होती हैं, एक इंसान की तो बिसात ही क्या! मुझसे बचने या छिपने की कोशिश मत करो, फुसलाने या छिपाने की कोशिश मत करो। क्या ऐसा हो सकता है कि तुम अभी भी नहीं देख सकते कि मेरा महिमामय मुख, मेरा क्रोध और मेरा न्याय सार्वजनिक रूप से प्रकट किये गए हैं? मैं तत्काल और निर्ममता से उन सभी का न्याय करूँगा जो मुझे निष्ठापूर्वक नहीं चाहते। मेरी सहानुभूति समाप्त हो गई है; अब और शेष नहीं रही। अब और पाखंडी मत

बनो, और अपने असभ्य एवं लापरवाह चाल-चलन को रोक लो।

मेरे पुत्र, ध्यान रखो; मेरी उपस्थिति में अधिक समय बिताओ, मैं तुम्हारा कार्यभार सँभाल लूँगा। डरो मत, मेरी तेज़ दुधारी तलवार को सामने लाओ, और मेरी इच्छा के अनुसार अंत तक शैतान के साथ पूरी ताकत से लड़ो। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा; कोई चिंता न करो। सभी छिपी हुई चीज़ें खोली जाएँगी और उजागर की जाएँगी। मैं वो सूर्य हूँ जो प्रकाश देता है, निर्दयतापूर्वक समस्त अँधेरे को प्रकाशित कर देता है। मेरा न्याय अपनी पूरी समग्रता में उतर आया है; कलीसिया एक युद्ध का मैदान है। तुम सभी को तैयार हो जाना चाहिए और तुम्हें अंतिम निर्णायक युद्ध के लिए अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ अर्पित हो जाना चाहिए; मैं निश्चित रूप से तुम्हारी रक्षा करूँगा ताकि तुम मेरे लिए अच्छी विजयपूर्ण लड़ाई लड़ो।

सावधान रहो, आजकल लोगों के दिल धोखेबाज़ हैं, उनका अनुमान नहीं लगाया जा सकता और वे किसी भी तरह से लोगों का भरोसा नहीं जीत सकते। केवल मैं ही पूरी तरह से तुम लोगों के लिए हूँ। मुझमें कोई छल नहीं है; तुम बस मेरे सहारे रहो! अंतिम निर्णायक युद्ध में मेरे पुत्र निश्चित रूप से विजयी होंगे और शैतान पक्के तौर पर मृत्यु-संघर्ष के लिए बाहर निकलकर आएगा। कोई भय न रखो! मैं तुम्हारी शक्ति हूँ, मैं तुम्हारा सर्वस्व हूँ। चीज़ों के बारे में लगातार सोचते मत रहो, तुम इतने सारे विचारों को संभाल नहीं सकते। मैंने पहले कहा है, अब मैं तुम लोगों को राह पर आगे खींचकर नहीं ले जाऊँगा क्योंकि वक़्त करीब आ चुका है। मेरे पास फिर से तुम लोगों को हर मोड़ पर, तुम्हारे कान पकड़कर, याद दिलाने का समय नहीं है—यह संभव नहीं है! तुम बस युद्ध के लिए अपनी तैयारियों को पूरा कर लो। मैं तुम्हारा सम्पूर्ण दायित्व लेता हूँ; हर चीज़ मेरे हाथों में है। यह जीवन-मृत्यु की लड़ाई है, इसमें दोनों में से एक पक्ष अवश्य नष्ट होगा। लेकिन तुम्हें इस पर स्पष्ट होना चाहिए : मैं हमेशा के लिए विजयी और अजेय हूँ, और शैतान निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा। यही मेरा दृष्टिकोण, मेरा काम, मेरी इच्छा और मेरी योजना है!

काम हो चुका है! सबकुछ हो गया है! बुज़दिल और डरपोक मत बनो। मैं तुम्हारे साथ और तुम मेरे साथ, हम सदा-सर्वदा के लिए राजा होंगे! एक बार मेरे द्वारा बोले गए वचन कभी बदलेंगे नहीं, और तुम सब के साथ शीघ्र घटनाएँ होंगी। ध्यान रखो! तुम्हें हर पंक्ति पर अच्छी तरह से विचार करना चाहिए; अब मेरे वचनों के बारे में अस्पष्ट न रहो! तुम्हें उनके बारे में स्पष्ट होना चाहिए! याद रखो—मेरी उपस्थिति में तुम जितना समय बिता सकते हो, बिताओ!

अध्याय 45

तुम सार्वजनिक रूप से अपने भाइयों और बहनों की आलोचना करते हो, मानो यह कोई बात ही न हो। तुम वास्तव में भले-बुरे का भेद नहीं जानते; तुम शर्मिंदगी नहीं जानते! क्या यह व्यवहार बहुत ही धृष्ट और मनमाना नहीं है? तुम लोगों में से प्रत्येक उलझन में है और उसका दिल भारी है; तुम इतना सामान ढोते हो और मेरे लिए तुम्हारे भीतर कोई जगह नहीं है। अंधे मनुष्यो! तुम्हारी क्रूरता इतनी चरम सीमा पर पहुँच गई है—यह कब खत्म होगी?

मैं बार-बार तुम लोगों से अपने दिल से बात करता हूँ और तुम लोगों को वह सबदेता हूँ, जो मेरे पास है, लेकिन तुम लोग बहुत कंजूस हो और तुम लोगों में जरा-सी भी मानवता नहीं है; यह वास्तव में समझ से परे है। तुम अपनी धारणाओं से क्यों चिपके रहते हो? तुम मुझे अपने अंदर कुछ जगह क्यों नहीं दे सकते? मैं तुम लोगों को संभवत: कैसे नुकसान पहुँचा सकता हूँ? तुम्हें इस तरह से व्यवहार नहीं करते रहना चाहिए—मेरा दिन अब वास्तव में दूर नहीं है। लापरवाही से बात मत करो, बिना सोचे-विचारे व्यवहार मत करो, या लड़ाई करके परेशानी पैदा मत करो; इससे तुम लोगों के जीवन में क्या भला हो सकता है? मैं तुम लोगों से सच कह रहा हूँ, जब मेरा दिन आएगा तो चाहे एक भी व्यक्ति न बचाया जाए, मैं फिर भी अपनी योजना के अनुसार ही मामलों को सँभालूँगा। तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ! कोई भी वस्तु, कोई भी व्यक्ति, कोई भी मामला मेरे कदम आगे बढ़ने से रोकने की हिम्मत नहीं करता। तुम लोगों को यह नहीं सोचना चाहिए कि मेरे पास तुम लोगों के बिना अपनी इच्छा पूरी करने का कोई तरीका नहीं है। मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि यदि तुम अपने जीवन के साथ इस नकारात्मक तरीके से पेश आते हो, तो तुम केवल अपना ही जीवन बरबाद ही करोगे; इससे मेरा कोई सरोकार नहीं रहेगा।

पवित्र आत्मा का कार्य एक निश्चित चरण तक प्रगति कर चुका है और गवाही एक शिखर तक पहुँच गई है। यह बिलकुल सच है। जल्दी करो, अपनी धुँधली आँखें खोलो, अपने में किए गए मेरे श्रमसाध्य प्रयासों को व्यर्थ न जाने दो, और अब अपने आप को और लिप्त न करो। तुम लोग मेरे सामने तो अच्छे कर्म करने में खुश होते हो, लेकिन जब मैं मौजूद नहीं होता, तो क्या तुम लोगों के कार्य और व्यवहार मेरे सामने रखे जा सकते हैं, ताकि मैं उन्हें देख सकूँ? तुम भले और बुरे का भेद नहीं जानते! तुम लोग मेरी बात नहीं सुनते, तुम मेरे सामने तो कुछ करते हो, और मेरी पीठ-पीछे कुछ और करते हो। तुम्हें अभी भी

यह एहसास नहीं हुआ है कि मैं वह परमेश्वर हूँ, जो मनुष्य के हृदय में गहरे झाँकता है। तुम परम अज्ञानी हो!

बाद में, आगे के मार्ग पर, तुम्हें चालाकी नहीं करनी चाहिए या धोखाधड़ी और कुटिलता में संलग्न नहीं होना चाहिए, अन्यथा परिणाम अकल्पनीय होंगे! तुम लोग अभी भी नहीं जानते कि धोखा और कुटिलता क्या होते हैं। कोई भी कार्य या व्यवहार जो तुम मुझे नहीं दिखा सकते, जिसे तुम खुले में नहीं ला सकते, वह धोखाधड़ी और कुटिलता है। अब तुम्हें यह समझ लेना चाहिए! यदि तुम भविष्य में धोखाधड़ी और कुटिलता में लिप्त होते हो, तो न समझने का ढोंग मत करना—यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम जानबूझकर गलत कर रहे हो, और तुम दोगुने दोषी हो। यह तुम्हें केवल आग में जलाए जाने की ओर, या इससे भी बदतर, खुद को बरबाद कर देने की ओर ही ले जाएगा। तुम्हें समझना चाहिए! आज तुम लोग जिस चीज का सामना कर रहे हो, वह प्रेम की ताड़ना है; यह निश्चित रूप से निर्मम न्याय नहीं है। यदि तुम इसे नहीं देख सकते, तो तुम बहुत दयनीय हो, और तुम बस सभी उम्मीदों से परे हो। यदि तुम प्रेम की ताड़ना स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हो, तो तुम लोगों पर जो पड़ सकता है, वह निर्मम न्याय ही हो सकता है। जब ऐसा हो, तो यह शिकायत न करना कि मैंने तुम्हें बताया नहीं था। यह मैं नहीं हूँ, जो अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हटा है, बल्कि तुम लोग हो, जिन्होंने मेरे वचनों को नहीं सुना है और मेरे वचनों को कार्यान्वित नहीं किया है। मैं तुम्हें यह अभी बता रहा हूँ, कहीं ऐसा न हो कि लोग बाद में मुझे दोषी न ठहराएँ।

अध्याय 46

जो कोई ईमानदारी से खुद को मेरे लिए खपाता और अर्पित करता है, मैं निश्चित रूप से तुम्हें बिलकुल अंत तक सुरक्षित रखूँगा; मेरा हाथ निश्चित रूप से तुम्हें थामे रहेगा ताकि तुम हमेशा शांति से और हमेशा खुश रहो, और हर दिन तुम्हारे पास मेरा प्रकाश और प्रकटीकरण हो। मैं निश्चित रूप से अपने आशीष तुम्हारे लिए दोगुने कर दूँगा, ताकि जो कुछ मेरे पास है वह तुम्हारे पास हो, और तुम मेरे स्वरूप को धारण करो। जो तुम्हारे भीतर दिया गया है, वह तुम्हारा जीवन है, और कोई उसे तुमसे नहीं ले सकता। अपने ऊपर परेशानी मत लाओ या अवसाद में मत पड़ो; मेरे भीतर केवल शांति और खुशी है। मैं तुमसे ईमानदारी से प्यार करता हूँ, बच्चे, तुमसे, जो ईमानदारी से मेरा ध्यान रखता है और मेरी आज्ञा का पालन

करता है। जो पाखंडी हैं, मैं उनसे सबसे ज्यादा नफरत करता हूँ; मैं निश्चित रूप से उन्हें मिटा दूँगा। मैं अपने घर से दुनिया का हर निशान मिटा दूँगा, और उन सभी चीजों को खत्म कर दूँगा, जिन्हें देखना भी मुझसे सहन नहीं होता।

अपने दिल में मुझे ठीक-ठीक पता है कि कौन मुझे ईमानदारी से चाहता है और कौन नहीं चाहता। हालाँकि वे खुद को अच्छी तरह से छिपा सकते हैं और भले लग सकते हैं, और यह तक कहा जा सकता है कि वे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता हैं, फिर भी मैं वह सब स्पष्ट रूप से देख लेता हूँ, जो वे अपने दिल में रखते हैं। यह मत सोचो कि मुझे पता नहीं है कि तुम्हारे दिल में क्या है; वास्तव में ऐसा कोई नहीं है, जो मुझसे अधिक स्पष्ट रूप से समझता हो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे दिल में क्या है; तुम परमेश्वर की खातिर अर्पित होने और खुद को खपाने के लिए तैयार हो, तुम केवल दूसरों को खुश करने के लिए मीठी बातों का उपयोग करना नहीं चाहते। ध्यान से देखो! आज का राज्य मनुष्य की शक्ति से नहीं बनाया जा रहा, बल्कि पूरी तरह से मेरी बहुमुखी बुद्धि और श्रमसाध्य प्रयास से सफलतापूर्वक बनाया जाएगा। जिसके पास भी बुद्धि है और जिसके भीतर भी मेरा स्वरूप है, उसका राज्य के निर्माण में योगदान होगा। अब और चिंता न करो; तुम हमेशा चिंता करके अपने आप को अस्वस्थ कर लेते हो, और तुम्हारे भीतर मेरी इच्छा के प्रकटीकरण या रोशनी के लिए कोई सम्मान नहीं होता। अब और ऐसा मत करो। जो भी मामला हो, उसके बारे में मेरे साथ अधिक संगति करो, ताकि तुम अपने ही कार्यों से पीड़ित होने से बच सको।

शायद सतह पर ऐसा लगता है कि मैं हर किसी के प्रति उदासीन हूँ, लेकिन क्या तुम जानते हो कि मैं अपने भीतर क्या सोचता हूँ? मैं हमेशा विनम्र लोगों को ऊपर उठाता हूँ, और हमेशा उन लोगों को नीचे ले आता हूँ जो अहंकारी और अभिमानी होते हैं। जो मेरी इच्छा को नहीं समझते, वे बहुत नुकसान उठाएँगे। तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं ऐसा ही हूँ, और यह मेरा स्वभाव है—इसे कोई नहीं बदल सकता, और कोई इसे पूरी तरह से नहीं समझ सकता। केवल मेरे प्रकटीकरण के माध्यम से ही तुम इसे समझ सकते हो, अन्यथा तुम भी इसे पूरी तरह से नहीं समझ पाओगे; घमंडी मत बनो। यद्यपि कुछ लोग अच्छी तरह से बात कर लेते हैं, किंतु उनके दिल कभी मेरे प्रति वफादार नहीं होते, और वे एकांत में हमेशा मेरा विरोध करते हैं; मैं इस तरह के व्यक्ति का न्याय करूँगा।

केवल दूसरों से संकेत लेने पर ही ध्यान केंद्रित न करो, तुम्हें मेरे ढंग और मेरे तरीके पर ध्यान देना चाहिए। केवल इसी तरह से तुम धीरे-धीरे मेरी इच्छा समझने लगोगे; तब तुम्हारे कार्य मेरी इच्छा के

अनुरूप होंगे, और तुम कोई गलती नहीं करोगे। रोओ मत, या दुखी मत हो; मैं स्पष्ट रूप से तुम्हारे समस्त कार्य, तुम्हारे समस्त व्यवहार और तुम्हारे समस्त चिंतन को देखता हूँ, और मैं तुम्हारी सच्ची इच्छाओं और अभिलाषाओं को जानता हूँ; मैं तुम्हारा उपयोग करूँगा। अब एक महत्वपूर्ण समय है; तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया है। क्या तुमने अभी भी नहीं देखा है? क्या तुमने अभी तक नहीं जाना है? मैं तुम्हारे प्रति ऐसा दृष्टिकोण क्यों रखता हूँ? क्या तुम्हें पता है? मैंने इन चीजों को तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है और तुम्हारे पास थोड़ी-सी अंतर्दृष्टि है। लेकिन रुको मत—अपने प्रवेश के साथ आगे बढ़ते रहो, और मैं तुम्हें प्रबुद्ध करता रहूँगा। क्या तुमने यह महसूस किया है कि जितना अधिक तुम मेरी आज्ञा का पालन करते और मेरा ध्यान रखते हो, तुम अंदर से उतने ही उज्ज्वल बन जाते हो और तुम्हारे भीतर उतना ही अधिक प्रकटीकरण होता है? क्या तुम जानते हो कि जितना अधिक तुम मेरी आज्ञा का पालन करते हो और मेरा ध्यान रखते हो, तुम्हारे पास मेरे बारे में उतना ही अधिक ज्ञान होता है और तुम उतना ही अधिक अनुभव प्राप्त करते हो? हमेशा अपनी ही धारणाओं के साथ बलपूर्वक चिपके न रहो, ऐसा करने से मेरे जीवन-जल का प्रवाह अवरुद्ध हो जाएगा और मेरी इच्छा के कार्यान्वियन में बाधा आ जाएगी। तुम्हें पता होना चाहिए कि एक व्यक्ति को पूरी तरह से हासिल करना कोई आसान बात नहीं है। जटिल तरीके से मत सोचो। बस अनुसरण करो, और अब और सोच-विचार मत करो!

अध्याय 47

धार्मिकता के सर्वशक्तिमान परमेश्वर—सर्वशक्तिमान! तुझमें बिल्कुल कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। अनादिकाल से अनन्तकाल तक का प्रत्येक रहस्य, जिसे मनुष्यों द्वारा कभी प्रकट नहीं किया गया है, तुझमें प्रकट और पूरी तरह से स्पष्ट है। हमें अब और तलाशने और टटोलने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आज तेरा व्यक्तित्व हमारे लिए खुले तौर पर प्रकट है, तू वो रहस्य है जिसे प्रकट किया गया है, और तू ही स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर है, क्योंकि आज तू हमारे आमने सामने आया है, और जैसे ही हम तेरे व्यक्तित्व को देखते हैं, हमें आध्यात्मिक क्षेत्र का हर रहस्य दिखाई देता है। वास्तव में यह कुछ ऐसा है जिसकी कोई भी कल्पना नहीं कर सकता था! तू आज हमारे बीच है, यहाँ तक कि हमारे भीतर है, इसलिए हमारे बहुत करीब है; इसका वर्णन करना असंभव है; इसके भीतर का रहस्य अतुलनीय है!

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपनी प्रबंधन योजना पूरी कर ली है। वह ब्रह्मांड का विजयी राजा है। सभी

चीज़ें और सभी बातें उसके हाथों के नियंत्रण में हैं। सभी लोग आराधना में घुटने टेकते हैं, सच्चे परमेश्वर—सर्वशक्तिमान—का नाम पुकारते हैं। सभी चीज़ें, उसके मुँह से निकली बातों के द्वारा, की जाती हैं। तुम लोग इतने ढीले क्यों हो, उसके साथ स्वयं को ईमानदारी से काम करवाने में, उसके साथ करीब से जुड़ने में, और उसके साथ महिमा के भीतर जाने में, असमर्थ क्यों हो? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम पीड़ित होना चाहते हो? निष्कासित किए जाना चाहते हो? क्या तुम लोग सोचते हो कि मुझे यह पता नहीं है कि कौन ईमानदारी से मेरे प्रति समर्पित है, और किसने ईमानदारी से स्वयं को मेरे लिए व्यय किया है? अज्ञानता! मूर्खो! तुम मेरे इरादों को नहीं जान सकते हो, और मेरे बोझों के प्रति विचारशीलता तो तुम और भी कम दिखा सकते हो, हमेशा तुम लोगों के बारे में मुझसे चिंता करवाते हो, तुम्हारे लिए परिश्रम करवाते हो। यह कब समाप्त होगा?

सभी चीज़ों में मुझे जीना, सभी चीज़ों में मुझे देखना—क्या यह केवल तुम लोगों के मुँह खोल कर कुछ शब्दों को एक साथ पिरोने जैसी कोई आसान बात है? तुम अच्छे और बुरे का अंतर नहीं जानते हो! तुम जो कुछ करते हैं, उसमें मेरे बिना हो और उससे भी कम मैं तुम्हारे दैनिक जीवन में विद्यमान हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम लोग परमेश्वर पर विश्वास करने को बिल्कुल भी गंभीरता से नहीं लेते हो, और इसलिए तुम लोगों को ये परिणाम मिलते हैं। तुम अभी भी जागे नहीं हो, और यदि तुम इसी तरह चलते रहोगे, तो तुम मेरा नाम बदनाम करोगे।

अपने आपसे पूछ, जब तू बोलता है, तो क्या मैं वहाँ तेरे साथ होता हूँ? जब तू खाता या अपने कपड़े पहनते है तो क्या इसमें मेरा वादा होता है? वास्तव में, तुम लोग विचारहीन हो! जब कभी भी तुम्हारी समस्याओ को सीधी चुनौती नहीं दी जाती है, तब तुम अपने सच्चे रंग दिखाते हो, और तुम लोगों में से कोई भी सहज अनुगामी नहीं है। यदि ऐसा न होता, तो तुम लोग अपने आपको महान समझ बैठते, और मानते कि तुम्हारे भीतर बहुत सी चीज़ें हैं। क्या तू नहीं जानता कि तेरे भीतर, जो तुझे भरे हुए है, शैतान की कुरूपता है? इन सभी चीज़ों को बाहर निकाल देने के लिए मेरे साथ काम कर। मेरा जो स्वरूप है, उसे पूरी तरह से अपने अन्दर जगह बनाने दे; केवल इस प्रकार से ही तू मुझे जी सकता है, अधिक वास्तविकता के साथ मेरी गवाही दे सकता है, और इस बात का कारण बन सकता है कि अधिक लोग मेरे सिंहासन के सामने समर्पित हों। तुम लोगों को अवश्य पता होना चाहिए कि तुम लोगों के कंधों पर कितना भारी बोझ है: मसीह का उत्कर्ष करना, मसीह को व्यक्त करना, मसीह की गवाही देना, ताकि अनगिनत लोग उद्धार

प्राप्त कर सकें, जिससे मेरा राज्य दृढ़ और अचल बना रहे। मैं यह सब बता देता हूँ ताकि तुम लोग आज के कार्य के महत्व को न समझते हुए बस अस्त-व्यस्त न बने रहो।

चीज़ों का सामना करते समय असहाय, जैसे कि गर्म कड़ाही में चींटियाँ, गोल-गोल घूमती हुईं: यही तुम लोगों का स्वभाव है। बाहर से तुम लोग वयस्कों की तरह दिखते हो, लेकिन तुम लोगों का आंतरिक जीवन एक बच्चे का है; तुम लोग केवल ऐसा ही करना जानते हो कि परेशानी पैदा करो और मेरे बोझ को बढ़ाओ। यदि कोई अत्यंत छोटी बात भी हो जिसकी ओर मैं स्वयं चिंता न करूँ, तो तुम लोग परेशानी खड़ी कर देते हो। क्या ऐसा नहीं है? आत्म-तुष्ट मत बनो। मैं जो कहता हूँ, वही सत्य है। हमेशा यह मत सोचो कि मैं तुम लोगों को लगातार भाषण दे रहा हूँ, मानो कि मैं मात्र बड़ी-बड़ी बातें कर रहा हूँ; तुम लोगों की वास्तविक स्थिति ऐसी ही है।

अध्याय 48

मैं चिंतित हूँ, लेकिन तुम लोगों में से कितने मेरे साथ एक मन और एक सोच के होने में सक्षम हैं? तुम मेरे वचनों पर कोई ध्यान ही नहीं देते, उनकी पूरी तरह से अवहेलना करते हो और उन पर ध्यान केंद्रित करने में विफल रहते हो, बल्कि केवल अपनी सतही चीजों पर ही ध्यान केंद्रित करते हो। तुम मेरे द्वारा की जाने वाली श्रमसाध्य देखभाल और मेरे प्रयास को व्यर्थ मानते हो; क्या तुम लोगों का विवेक निकम्मा नहीं है? तुम अज्ञानी और विवेकहीन हो; तुम सब मूर्ख हो, और मुझे बिलकुल भी संतुष्ट नहीं कर सकते। मैं पूरी तरह से तुम लोगों के लिए हूँ—तुम लोग कितने मेरे हो सकते हो? तुमने मेरे इरादे को गलत समझा है, और यह वास्तव में तुम्हारा अंधापन और चीजों को आरपार देखने की तुम्हारी असमर्थता है, जो मुझे हमेशा तुम लोगों के बारे में चिंतित कर देती है और मुझे तुम लोगों पर समय खर्च करना पड़ता है। अब, तुम लोग अपना कितना समय मुझ पर खर्च और समर्पित कर सकते हो? तुम्हें ये प्रश्न खुद से अधिक बार पूछने चाहिए।

मेरा सारा इरादा तुम लोगों के बारे में है—क्या तुम लोग वास्तव में इसे समझते हो? यदि तुम वास्तव में इसे समझते होते, तो तुम लोग बहुत पहले ही मेरे इरादे को जान चुके होते और मेरे बोझ के प्रति विचारशील हो गए होते। फिर से लापरवाह मत बनो, वरना पवित्र आत्मा तुम्हारे अंदर कार्य नहीं करेगा, जिससे तुम्हारी आत्माएँ मर जाएँगी और नरक में जा गिरेंगी। क्या यह तुम्हारे लिए बहुत भयानक नहीं है?

मुझे तुम्हें फिर से याद दिलाने की जरूरत नहीं है। तुम लोगों को अपनी अंतरात्मा में ढूँढ़ना चाहिए और खुद से पूछना चाहिए : क्या मुद्दा यह है कि मुझे तुम सब लोगों के लिए बहुत खेद है, या यह कि तुम लोग मेरे प्रति बहुत ऋणी हो? सही और गलत में भ्रम न करो; विवेकहीन न बनो! अब सत्ता और लाभ के लिए लड़ने या षड्यंत्र में लिप्त होने का समय नहीं है। बल्कि तुम्हें जल्दी से इन चीजों को हटा देना चाहिए, जो कि जीवन के लिए इतनी हानिकारक हैं, और वास्तविकता में प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए। तुम बहुत लापरवाह हो! तुम मेरे दिल को नहीं समझ सकते या मेरे इरादे को महसूस नहीं कर सकते। ऐसी कई चीजें हैं, जो मुझे नहीं कहनी चाहिए थीं, लेकिन तुम लोग ऐसे भ्रमित हो, जो समझ नहीं पाते हो, इसलिए मुझे उन्हें बार-बार कहना पड़ता है, और फिर भी, तुम लोगों ने अभी भी मेरे दिल को संतुष्ट नहीं किया है।

तुम्हें एक-एक करके गिनने पर, तुममें से कितने वास्तव में मेरे दिल के प्रति विचारशील हो सकते हैं?

अध्याय 49

समन्वय में सेवा करने के लिये, एक व्यक्ति को सही ढंग से ऊर्जा के साथ और सजीवता से समन्वय करना चाहिए। उसके अतिरिक्त, एक व्यक्ति में जीवन शक्ति एवं जोश होना चाहिये, और उसे दृढ़ विश्वास से पूरी तरह भरा हुआ होना चाहिये, ताकि दूसरे जब देखें तो उनकी आपूर्ति होगी सके और वे परिपूर्ण होंगे। मेरी सेवा करने के लिये, तुम सभी को ऐसी सेवा करनी चाहिये जैसी मैं चाहता हूँ, न केवल मेरे हृदय के अनुसार, बल्कि उसके अतिरिक्त मेरे इरादों को सन्तुष्ट करते हुए सेवा करनी होगी ताकि जो कुछ मैं तुम्हारे भीतर सम्पन्नकरूँ, मैं उससे संतुष्ट हो जाऊँ। अपने जीवन को मेरे वचनों से भर लो, अपनी वाणी को मेरी सामर्थ्य से भर लो—मेरा तुमसे यही अनुरोध है। क्या स्वयं की इच्छाओं का पालन करने से मेरी पसंद प्रगट होती है? क्या उससे मेरा दिल सन्तुष्ट होगा? क्या तुम वह व्यक्ति हो जिसने गम्भीरता से मेरे अभिप्रायों पर गौर किया है? क्या तुम वह व्यक्ति हो जिसने सचमुच में मेरे हृदय को समझने की कोशिश की है? क्या वास्तव में तुमने अपने आप को मुझे अर्पित किया है? क्या तुमने सचमुच अपने आपको मेरे लिये खपाया है? क्या तुमने मेरे वचनों पर मनन किया है?

एक व्यक्ति को हर एक पहलू में बुद्धि का प्रयोग करना होगा और मेरे सिद्ध मार्गों पर चलने के लिये बुद्धि का प्रयोग करना होग। ऐसे लोग जो मेरे वचनों के दायरे में आचरण करते हैं वे सबसे बुद्धिमान हैं

और ऐसे लोग जो मेरे वचनों के अनुसार आचरण करते हैं वे सबसे अधिक आज्ञाकारी हैं। जो कुछ मैं कहता हूँ वह होता है, और तुमको मेरे साथ बहस या तर्क करने की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ मैं कहता हूँ वह तुमको ध्यान में रखकर कहता हूँ (इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं सख्त हूँ या कोमल)। यदि तुम आज्ञाकारी होने पर ध्यान केन्द्रित करते हो तो ठीक है, और यह सच्ची बुद्धि का मार्ग है (और परमेश्वर के न्याय को अपने ऊपर आ पड़ने से रोकने का मार्ग है)। आज, मेरे भवन में, ऐसा न करो कि मेरे सामने विनम्र बनो और मेरी पीठ पीछे दूसरी तरह की बातें कहो। मैं चाहता हूँ कि तुम व्यवहारिक बनो; तुम्हें अलंकारिक भाषा में बातचीत करने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग व्यावहारिक हैं उनके लिए सब कुछ है। जो नहीं हैं, उनके लिए कुछ भी नहीं है। यहाँ तक कि उनका शरीर भी उनके साथ अस्तित्वहीनता में लौट जायेगा, क्योंकि व्यावहारिकता के बिना, सिर्फ खालीपन है; इसकी और कोई व्याख्या नहीं है।

मैं चाहता हूँ कि तुम सभी परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में ईमानदार रहो और इस पर विचार न करो कि तुम क्या प्राप्त कर सकते हो या गँवा सकते हो, न ही जो कुछ तुम्हारे पास है उस पर विचार करो; तुम लोगों को सिर्फ़ अपने कदम सही रास्ते पर रखने का प्रयास करना चाहिये, और किसी के बहकावे या नियंत्रण नहीं आना है। इसे ही कलीसिया के एक खम्भे एवं राज्य के एक विजेता के रूप में जाना जाता है; किसी अन्य तरीके से काम करने का अर्थ है कि तुम मेरे सामने जीवित रहने के योग्य नहीं हो।

भिन्न परिस्थितियों में, मेरे करीब आने के तरीके भी भिन्न हो सकते हैं। कुछ लोग अच्छे लगने वाले शब्दों को बोलना पसन्द करते हैं और मेरे सामने भक्ति का अभिनय करते हैं। लेकिन पर्दे के पीछे वे पूर्णतया अव्यवस्थित होते हैं और उनके कार्यों में मेरे वचन काफी हद तक अनुपस्थित होते हैं। वे घृणित एवं खिजाने वाले हैं; ऐसे लोग न तो किसी को शिक्षा दे सकते हैं और न ही किसी की आपूर्ति कर सकते हैं। तुम केवल इसलिये मेरे हृदय को समझने में सक्षम नहीं हो क्योंकि तुम मेरे अधिक करीब नहीं आ सकते या और संगति नहीं कर सकते; तुम हमेशा मुझे तुम्हारे लिए चिन्ता करने और तुम लोगों के लिये निरंतर कठिन परिश्रम करने को मजबूर करते हो।

अध्याय 50

सभी कलीसियाओं और सभी संतों को अतीत के बारे में सोचना चाहिए और इसके साथ ही, भविष्य की ओर भी देखना चाहिए : तुम्हारे पिछले कार्यों में से कितने योग्य हैं, और उनमें से कितने राज्य के

निर्माण में भागीदार रहे हैं? अपने-आपको होशियार न समझो! तुम्हें अपनी कमियों को स्पष्ट रूप से देखना चाहिए और अपनी परिस्थिति को समझना चाहिए। मुझे पता है कि तुम लोगों में से कोई भी इस संबंध में कोई प्रयास करने, और थोड़ा-भी समय देने का इच्छुक नहीं है, इसलिए तुम किन्हीं भी उपलब्धियों को पाने में सक्षम नहीं होते। तुम सब अपना पूरा समय खाने, पीने और मजे करने में व्यर्थ गँवा देते हो। जब तुममें से कुछ लोग एकजुट होते हैं तो तुम मस्ती करते हो, जीवन में आध्यात्मिक मामलों पर संगति करने या एक-दूसरे को जीवन प्रदान करने पर कोई ध्यान नहीं देते हो। जब तुम बातें करते हो तो तुम्हें हँसते और मज़ाक करते हुए देखना मैं सहन नहीं कर सकता, और फिर भी तुमलोग इतने बेतुके हो। मैंने कई बार कहा है, लेकिन तुम लोग मैं जो कहता हूँ उसका अर्थ ही नहीं जानते हो—क्या यह कुछ ऐसा नहीं है जो इतना स्पष्ट है कि मानो तुम्हारी नाक की नोंक पर धरा है? मैंने पहले भी इस तरह की बातें कही हैं, पर तुम लोगों को अभी भी विश्वास नहीं है और मैं जो भी कहता हूँ तुम उसे स्वीकार नहीं करते हो, यह सोचते हुए कि मैं तुम सभी को गलत समझता हूँ, यह सोचते हुए कि जो भी मैं कहता हूँ वह वास्तविक नहीं है। या क्या ऐसा हो सकता है कि यह बात न हो?

यदि तुम मेरे प्रति लापरवाही दिखाते हो तो मैं तुम्हें एक तरफ़ रख दूँगा। तुम एक बार फिर से बेपरवाह होने की हिम्मत तो करो! तुम एक बार फिर से विचारहीन और लापरवाह होने की हिम्मत तो करो! मेरे वचन एक तराशने वाला चाकू हैं; जो कुछ भी मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं है, उसे इस चाकू से काट कर हटा दिया जाएगा, और तुम्हें अपने आत्म-सम्मान के बारे में बहुत अधिक विचार करने की ज़रुरत नहीं है। मैं तुम्हें तराशता हूँ ताकि तुम मेरी इच्छा के अनुसार आकार ले सको और इसके अनुरूप हो सको। मेरे दिल को गलत मत समझो; एकमात्र स्वीकार्य तरीका यही है कि तुम यथासंभव मेरे दिल के प्रति विचारशील बनो। यदि तुम ज़रा-सी भी विचारशीलता दिखाते हो, तो मैं तिरस्कार से तुमसे मुँह नहीं मोड़ूँगा। इसे हमेशा कोई सोच-विचार किए बिना अनदेखा न करो; मेरी इच्छा को लगातार अपने-आप पर लागू होने दो।

संतों की भारी संख्या अलग-अलग पदों पर विराजमान है, इसलिए निसंदेह तुम सभी के अलग-अलग कार्य हैं। लेकिन तुम सबको ईमानदारी से मेरे लिए खुद को खपाने के वास्ते अपनी पूरी शक्ति से काम करनाचाहिए; तुम लोगों का कर्तव्य यह है कि तुम वह सब करो जो तुम कर सकते हो। तुम्हें इसमें वफ़ादार होना चाहिए और खुशी से तैयार रहना चाहिए। तुम्हें बिल्कुल भी अन्यमनस्क नहीं होना चाहिए!

अन्यथा मेरा न्याय सदैव तुम सब पर हावी रहेगा, तुम लोगों की देह और आत्मा इसे सहन नहीं कर पाएँगे, और तुम रोते और दांत पीसते रह जाओगे!

अध्याय 51

हे! सर्वशक्तिमान परमेश्वर! आमीन! तुझ में सब कुछ मुक्त है, सब कुछ स्वतंत्र है, सब कुछ खुला है, सब कुछ प्रकट है, सब कुछ उज्ज्वल है, कुछ भी जरा सा भी छिपा हुआ या गुप्त नहीं है। तू देहधारी सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। तूने राजा बनकर शासन किया है। तू खुले तौर पर प्रकट किया गया है—अब तू कोई रहस्य नहीं है, बल्कि सदा सर्वदा के लिए पूरी तरह से प्रकट है! मैं सचमुच पूरी तरह से प्रकट किया गया हूँ, मैं सार्वजनिक रूप से आ गया हूँ, और मैं धार्मिकता के सूर्य के रूप में प्रकट हुआ हूँ क्योंकि आज वह युग अब और नहीं है जिसमें सुबह का सितारा दिखाई देता है, न ही यह अभी भी छिपाव का चरण है। मेरा कार्य चमकती बिजली की तरह तीव्रता के साथ पूरा किया जाता है। मेरा कार्य इस वर्तमान चरण तक प्रगति कर चुका है, और जो कोई भी आलस्य में वक्त गँवाएगा या ढीला होगा, वह केवल निर्मम न्याय का सामना करेगा। तुझे विशेषतः यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि मैं प्रताप और न्याय हूँ और मैं अब करुणा और प्यार नहीं हूँ जैसा कि तुम लोग कल्पना करते हो। यदि तू इस मुद्दे पर अभी भी स्पष्ट नहीं है, तो तू जो प्राप्त करेगा, वह न्याय होगा, क्योंकि तू स्वयं उसका स्वाद लेगा जिसे तूने स्वीकार नहीं किया है; अन्यथा तू संदेह करता रहेगा और अपने विश्वास में दृढ़ रहने की हिम्मत नहीं करेगा।

जहाँ तक उसका संबंध है जो मैंने तुम लोगों कोसौंपा है, क्या तुम लोग लगन के साथ उसे पूरा करने में सक्षम हो? मैं कहता हूँ कि कोई भी दायित्व लेने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है, फिर भी तुम लोगों ने कितनी बार मेरे उपदेशों की छानबीन की है और उन पर आगे विचारहै? यहाँ तक कि यदि तुम्हें मेरे उपदेशों के एक वचन की समझ हो भी, और जब तुम इसे सुनते हो तब तुम्हें यह ठीक लगता है, तब भी इसके बाद तुम्हें इसकी कोई परवाह नहीं होती है। जब तुम इसे सुनते हो, तो इसे अपनी वास्तविक परिस्थितियों की ओर निर्देशित करते हो और तुम खुद से घृणा करते हो—परन्तु बाद में तुम मान लेते हो कि यह एक मामूली बातहै। आज सवाल यह है कि क्या तेरा जीवन प्रगति कर सकता है या नहीं; और यह उस बात का सवाल नहीं है कि तू बाहर से कैसे सँवरता है। तुम लोगों में से किसी में भी कोई संकल्प नहीं है और तुम दृढ़ संकल्प करने के इच्छुक नहीं हो। तुम क़ीमत का भुगतान करना नहीं चाहते हो, तुम

क्षणिक सांसारिक सुख को छोड़ना नहीं चाहते हो, मगर तुम स्वर्ग के आशीषों को खोने से डरते हो। तू किस तरह का व्यक्ति है? तू एक मूर्ख हो! तुम लोगों को व्यथित महसूस नहीं करना चाहिए; क्या मैंने जो कहा वह तथ्यात्मक नहीं है? क्या इसने मात्र उसे इंगित नहीं किया है जो तूने पहले ही स्वयं सोचा है? तेरे पास कोई मानवता नहीं है! तेरे पास एक सामान्य व्यक्ति की गुणवत्ता भी नहीं है। इसके अलावा, भले ही यह ऐसा ही है, फिर भी तू खुद को दरिद्र के रूप में नहीं देखता है। तू पूरे दिन आराम और बेपरवाही से रहता है, सर्वथा आत्मसंतुष्ट है! तू नहीं जानता है कि तेरी अपनी कमियाँ कितनी बड़ी हैं, अथवा तुझमें किसका अभाव है। यह कैसी मूर्खता है!

क्या तू नहीं देखते है कि मेरा काम पहले ही ऐसे बिंदु पर पहुँच चुका है? मेरी सारी इच्छा तुम लोगों में है। कब तुम लोग इसे समझ और इस पर कुछ विचार कर सकोगे? तुम आलसी हो! तुम क़ीमत का भुगतान करने के लिए तैयार नहीं हो, कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार नहीं हो, समय निकालने के लिए तैयार नहीं हो, और प्रयास करने के लिए तैयार नहीं हो। मैं तुम्हें कुछ बता दूँ! जितना अधिक तू कठिनाई का सामना करने से डरेगा, तेरे जीवन में उतने ही कम लाभ होंगे, इसके अलावा, जैसे-जैसे तेरे जीवन का विकास होगा तू उतनी ही अधिक बाधाओं का सामना करेगा, तथा तेरे जीवन की प्रगति करने की और भी कम संभावना होगी। मैं तुझे एक बार फिर याद दिलाता हूँ (मैं इसे फिर से नहीं कहूँगा)! जो भी अपने खुद के जीवन के लिए जिम्मेदारी नहीं लेता है, मैं ऐसे किसी के भी प्रति उदासीन रहूँगा और उसे त्याग दूँगा। मैंने पहले ही इसे कार्यान्वित करना शुरू कर दिया है; क्या तूने इसे स्पष्ट रूप से नहीं देखा है? यह एक व्यापारिक लेन-देन नहीं है न ही यह वाणिज्य है; यह जीवन है, क्या यह स्पष्ट है?

अध्याय 52

मैं धार्मिकता के सूर्य के रूप में उभरता हूँ, तथा तुम सब और मैं मिलकर, सदा-सदा के लिए, महिमा और शुभ आशीषों को साझा करते हैं! यह पूर्णतः एक अकाट्य तथ्य है और इसकी पुष्टि तुम सभी में दिखाई देनी शुरू हो चुकी है। इसका कारण यह है कि मैंने जो भी वादे किए हैं, उन्हें मैं तुम सभी के लिए पूरा करूँगा; मैं जो भी कहता हूँ वह सच्चाई है, और वह कभी भी खारिज नहीं होगा। ये शुभ आशीषें तुम सभी के लिए हैं, कोई अन्य उनका दावा नहीं कर सकता है; वे मेरे साथ समन्वय में और एकजुट होकर की गई तुम सबकी सेवा के फल हैं। अपनी धार्मिक धारणाओं को दूर झटक दो; मेरे वचनों को सच मानो और

शंकालु न बनो! मैं तुम लोगों के साथ मज़ाक नहीं करता हूँ, मैं जो कहता हूँ वही मेरा आशय है। जिन्हें मैं अपनी आशीषें देता हूँ वे उन्हें इसी तरह प्राप्त करते हैं; जिन्हें मैं आशीषें नहीं देता हूँ, वे उन्हें प्राप्त नहीं करते हैं। यह सब मेरे द्वारा निर्धारित किया जाता है। सांसारिक भाग्य क्या होता है? मेरे विचार में यह गोबर के अलावा कुछ भी नहीं है, जिसका मूल्य फूटी कौड़ी भी नहीं है। इसलिए सांसारिक सुखों को बहुत मूल्यवान न समझो; क्या मेरे साथ स्वर्गिक आशीष का आनंद लेना अधिक अर्थपूर्ण, अधिक उपयोगी नहीं है?

पहले सत्य प्रकाशित नहीं हुआ था, और मैं खुले तौर पर प्रकट नहीं हुआ था; तुम सभी ने मुझ पर संदेह किया और मेरे बारे में अनिश्चित रहने की हिम्मत की। बहरहाल, अब सारी चीजें प्रकट हो चुकी हैं, और मैं धार्मिकता के सूर्य के रूप में उभर आया हूँ—तो यदि तुम सब अभी भी संदेह में हो तो तुम इस बारे में क्या कहोगे? जब अंधेरे ने धरती को ढक लिया था, तो तुम सभी का प्रकाश को नहीं देख पाना क्षमा के योग्य था, लेकिन अब सूर्य ने सभी अंधेरे कोनों को प्रकाशित कर दिया है; जो छिपा था वह अब छिपा नहीं है, जो गुप्त था वह अब और गुप्त नहीं है; यदि तुम लोग अभी भी संदेह में हो, तो मैं तुम लोगों को आसानी से क्षमा नहीं करूँगा! अब मेरे बारे में पूरी तरह निश्चित होने का समय है, अपने-आपको मुझे समर्पित करने और मेरे लिए खपने को तैयार होने का समय है। जो भी मेरा जरा-सा भी विरोध करता है, उसे दुबारा सोचे बिना या पल भर की देर किए बिना, तुरंत न्याय की अग्नि में झोंक दिया जाएगा। क्योंकि अब वह समय है जब निर्मम न्याय आ पहुँचा है; जिनके दिलोदिमाग सही नहीं हैं, उनके लिए तत्काल न्याय होगा; "मेरा कार्य चमकती बिजली की तरह है" कथन का यही सच्चा अर्थ है।

यह तेजी से प्रगति कर रहा है; यह लोगों को अचंभित किए बिना नहीं रह सकता है, यह लोगों को भयभीत किए बिना नहीं रह सकता है, इसमें अब और देर नहीं की जा सकती और इसे रोका नहीं जा सकता है। मेरा कार्य जितना अधिक किया जाता है, वह उतनी ही तेजी से आगे बढ़ता है; जो भी सतर्क और तैयार नहीं है, उसके अलग कर दिए जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। अब तुम प्रलोभन की भावना के और शिकार नहीं हो सकते। मेरा कार्य पूरी तरह से शुरू हो चुका है, जो अन्य जाति के राष्ट्रों और ब्रह्मांडीय दुनिया की तरफ विस्तार कर रहा है। न्याय की आग निर्मम है और इसमें किसी के भी प्रति दया या प्यार नहीं है। जो लोग ईश्वर के प्रति वफादार हैं, पर फिर भी गलत विचार और धारणाएँ रखते हैं, या थोड़ा भी प्रतिरोध करते हैं, उनका भी न्याय किया जाएगा; इसमें कोई भी संदेह नहीं है। जिस पर भी

मेरी रोशनी डाली जाती है, वह उस प्रकाश के भीतर रहेगा, और प्रकाश में कार्य करेगा, और मार्ग के अंत तक मेरी सेवा करेगा। जो लोग प्रकाश के भीतर नहीं रहते, वे अंधेरे में रहते हैं। अपने अपराध के प्रति उनके रवैये के आधार पर उनका आकलन करने के बाद मैं अपना निर्णय लूँगा।

मेरा दिन आ गया है, मेरा वह दिन जिसका मैंने अतीत में उल्लेख किया था, अब तुम सबकी आँखों के सामने है, क्योंकि तुम सब मेरे साथ ही उतरे हो। मैं तुम्हारे साथ, तुम मेरे साथ, हम हवा में मिले हैं, और हमने मिलकर महिमा को साझा किया है। मेरा दिन वास्तव में पूरी तरह से आ चुका है!

अध्याय 53

मैं शुरुआत हूँ, और मैं अंत हूँ। मैं ही पुनर्जीवित और संपूर्ण एकमात्र सच्चा परमेश्वर हूँ। मैं तुम लोगों के सामने अपने वचन बोलता हूँ और जो मैं कहता हूँ, तुम लोगों को उस पर दृढ़ता से विश्वास करना चाहिए। आकाश और धरती समाप्त हो सकते हैं, लेकिन जो भी मैं कहता हूँ उसका एक अक्षर या एक रेखा भी कभी नहीं टलेगी। यह याद रखना! इसे याद रखना! एक बार जब मैंने बोल दिया, तो एक वचन भी कभी वापस नहीं लिया गया है, और प्रत्येक वचन पूरा होगा। अब समय आ गया है और तुम लोगों को शीघ्र वास्तविकता में प्रवेश करना होगा। अब ज्यादा समय नहीं है। मैं अपने बेटों को महिमामय राज्य में ले जाऊँगा और जिसके लिए तुम लोगों नें प्रयास किया है और कामना की है, वह साकार हो जाएगा। मेरे बेटो! जल्दी से उठो और मेरे पीछे आओ! तुम लोगों के पास सोचते रहने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। खोया हुआ समय कभी वापस नहीं आएगा; अंधेरे के बाद प्रकाश होता है, और स्वर्गारोहण तुम्हारी आंखों के सामने है। क्या तुम लोग समझ रहे हो? अपनी आँखें खोलो! जल्दी से जागो! अब तुम्हें आपस में बात करते हुए फिजूल बातों में उलझने या ऐसा कुछ कहने की अनुमति नहीं है जो कलीसिया के निर्माण के लिए लाभदायक न हो। महत्वपूर्ण यह है कि तुम्हारे भाइयों और बहनों को तुम्हारे व्यावहारिक अनुभव प्रदान किए जाएँ या यह बताया जाए कि कैसे परमेश्वर के सामने तुम रोशन हुए हो और स्वयं को जान पाए हो। जो भी यह प्रदान कर पाएगा उसके पास आध्यात्मिक कद-काठी होगी! आजकल तुममें से कुछ लोग अभी भी डरते नहीं हैं, और मैं चाहे जो भी बोलूँ या जितनी भी चिंता करूँ, तुम निडर बने रहते हो; तुम्हारा पुराना व्यक्तित्व स्वयं को ज़रा-सा भी छूने की अनुमति नहीं देता है। तो फिर ठीक है, इसी तरह काम करते रहो! फिर देखो कौन बर्बाद होता है! तुम हमेशा दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने की सोचते रहते हो,

धन की लालसा करते रहते हो, अपने बेटों, बेटियों और पति के लिए गहरा लगाव महसूस करते रहते हो। तो फिर ठीक है, लगाव महसूस करते रहो! ऐसा नहीं है कि मेरे वचन तुम लोगों को संबोधित नहीं किए गए हैं, और तुम जैसे चाहो वैसे चलते रहो! निकट भविष्य में तुम लोग सब कुछ समझ जाओगे, लेकिन तब तक पहले ही बहुत देर हो चुकी होगी। केवल न्याय तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा होगा।

अध्याय 54

मैं प्रत्येक कलीसिया की स्थिति को अपने हाथ की रेखाओं की तरह जानता हूँ। ऐसा मत सोचना कि मैं नहीं समझता हूँ या उनके बारे में स्पष्ट नहीं हूँ। जहाँ तक कलीसियाओं के विभिन्न लोगों की बात है, मैं उन्हें और भी स्पष्ट रूप से समझता हूँ और जानता हूँ। अब तुम्हें प्रशिक्षित करने की मेरी तात्कालिक इच्छा है, ताकि तुम तेजी से वयस्कता की ओर बढ़ सको; ताकि वह दिन जल्दी ही आ जाए जब तुम मेरे काम आ सको; ताकि तुम लोगों के कार्य मेरी बुद्धि से ओतप्रोत हों और तुम लोग जहाँ भी रहो वहाँ परमेश्वर को अभिव्यक्त कर सको। इस तरह मेरा अंतिम उद्देश्य हासिल किया जाएगा। मेरे पुत्रो! तुम्हें मेरी इच्छा पर ध्यान देना चाहिए, तुम्हें सिखाते समय मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ने को मजबूर न करो। तुम्हें मेरी इच्छा को समझना और मामलों की तह में जाना सीखना चाहिए। इससे तुम आसानी से सामने आने वाले हर मामले को संभालने में सक्षम हो सकोगे, मानो चुटकियों में इसे कर लोगे। शायद अपने प्रशिक्षण के दौरान तुम इसे पहली बार में समझने में सक्षम न हो पाओ, लेकिन दूसरी बार, तीसरी बार, आदि.. अंततः तुम मेरी इच्छा को समझने में सक्षम हो जाओगे।

तुम लोगों के शब्दों में हमेशा एक अभेद्य गुण होता है। तुम लोग यह सोचते हो कि यह बुद्धि है, है न? कभी-कभी तुम्हारे शब्दों में अवज्ञाकारिता होती है; कभी हास्य-विनोद करते हुए बोलते हो; तो कभी तुम मानवीय धारणाओं और ईर्ष्या के तत्वों के साथ बात करते हो...। संक्षेप में, तुम्हारी बातों में स्थिरता नहीं होती, तुम यह नहीं जानते कि दूसरों को जीवन की आपूर्ति कैसे करें या उनकी परिस्थितियों को कैसे समझें, बल्कि तुम s ढंग से संवाद करते हो। तुम लोगों की सोच अस्पष्ट है, तुम नहीं जानते कि बुद्धि क्या होती है, छल-कपट क्या होता है। तुम बहुत ही उलझे हुए हो। तुम छक-कपट और कुटिलता को ही बुद्धि मानते हो; क्या यह मेरे नाम को शर्मिंदा नहीं करता है? क्या यह मेरी निंदा नहीं है? क्या इससे मेरे खिलाफ झूठे आरोप नहीं लगते हैं? तो तुम्हारा निर्धारित लक्ष्य क्या है? क्या तुम लोगों ने इसके बारे में सावधानी से

सोचा है? क्या तुमने इस बारे में कोई तलाश m की है? मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरी इच्छा ही वह दिशा और उद्देश्य है जिसे तुम सब खोजते हो। अगर ऐसा न होता तो सब कुछ व्यर्थ होता। जो लोग मेरी इच्छा को नहीं जानते हैं वे ऐसे लोग हैं जो यह भी नहीं जानते कि कैसे खोजना चाहिए, जो त्याग दिए जाएँगे और बाहर निकाल दिए जाएँगे! मेरी इच्छा को खोजना वह पहला सबक़ है जो तुम सभी के लिए सीखना ज़रूरी है। यह सबसे ज़रूरी काम है, और इसमें किसी विलंब की गुंजाइश नहीं है! इसका इंतजार मत करो कि मैं तुम लोगों की एक-एक करके कठोर निंदा करूँ! तुम पूरा-पूरा दिन एक सुन्न अवस्था के कोहरे में गुज़ार देते हो। कितनी वाहियात बात है! तुम्हारा सिरफिरापन चकित कर देने वाला है; तुम्हें मेरी इच्छा की परवाह नहीं है! अपने-आपसे पूछो : कितनी बार कोई काम करते हुए तुमने मेरी इच्छा समझी है? अब समय आ गया है कि तुम लोग स्वयं को प्रशिक्षित करो! तुम लोगों से एक-एक करके निपटना असंभव है! तुम्हें काम करने के साथ-साथ अनुभव प्राप्त करना और अंतर्दृष्टि और बुद्धि प्राप्त करना सीखना चाहिए। तुम लोगों के मुँह से निकलने वाले शब्द सही और ठीक हैं, लेकिन वास्तविकता क्या है? जब तुम वास्तविकता का सामना करते हो, तो तुम उसके बारे में कुछ भी करने में सक्षम नहीं होते। तुम जो कहते हो वह कभी भी वास्तविकता से मेल नहीं खाता है। सच्चाई यह है कि तुम लोग जो कर रहे हो, उसे मैं देखना भी सहन नहीं कर सकता; जब मैं देखता हूँ तो मैं अत्यंत दुखी हो जाता हूँ। याद रखो! भविष्य में, मेरी इच्छा को समझना सीखो!

अध्याय 55

तथाकथित सामान्य मानवता इतनी अलौकिक नहीं होती जितनी कि लोग कल्पना करते हैं, लेकिन यह सभी मनुष्यों, घटनाओं और वस्तुओं के बंधनों से ऊपर उठने में सक्षम होती है, और किसी व्यक्ति के परिवेश से उत्पन्न होने वाले अत्याचारों से ऊपर उठने में सक्षम होती है, और यह किसी भी जगह और किसी भी परिस्थिति में मेरे करीब आने और मेरे साथ संवाद करने में सक्षम होती है। तुम मनुष्य लोग हमेशा मेरे इरादों को गलत समझते हो। जब मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें एक सामान्य मानवता को जीना चाहिए, तो तुम सब आत्म-संयम का अभ्यास करते हो और अपनी देह पर नियंत्रण रखते हो। पर तुम अपने आत्मा के भीतर सावधानी से खोजने की ओर कोई ध्यान नहीं देते, तुम केवल अपने बाहरी स्वरूप पर ध्यान देते हो, प्रकाशितवाक्य और अपने भीतर मेरे द्वारा पैदा की गई हलचलों की अवहेलना करते हो। तुम

कितने लापरवाह हो! बहुत ही लापरवाह! क्या यह हो सकता है कि जो कुछ मैंने तुम्हारे जिम्मे सौंपा है, उसे पूरा करना तुम एक महान उपलब्धि समझते हो? तुम मूर्ख हो! तुम अपनी जड़ों को गहरी बनाने पर ध्यान नहीं दे रहे हो! "पेड़ का एक पत्ता न बनो, बल्कि पेड़ की जड़ बनो"—क्या यह सचमुच तुम्हारा नीति-वाक्य है? विचारहीन! लापरवाह! जैसे ही तुम्हें लगता है कि तुमने थोड़ा-बहुत पा लिया है, तुम संतुष्ट हो जाते हो। मेरी इच्छा की तुम कितनी कम परवाह करते हो! अब आगे से ध्यान रखो! निष्क्रिय न बनो! और नकारात्मक न बनो! जब तुम सेवा करते हो, तो अक्सर मेरे करीब आते रहा करो, और मुझसे और ज्यादा संवाद किया करो। बचाव का तुम्हारे लिए यही एक रास्ता है। मैं जानता हूँ कि तुम पहले ही खुद को नकार चुके हो, तुम पहले ही अपनी कमियों और अपनी कमजोरियों को जानते हो। लेकिन सिर्फ जान लेना पर्याप्त नहीं है। तुम्हें मेरे साथ सहयोग करने की आवश्यकता है, और एक बार जब तुम मेरे इरादों को समझ लेते हो, तो तुरंत उन पर अमल करो। यह मेरे बोझ के प्रति चिंता दिखाने का सबसे अच्छा तरीका है, और समर्पण का भी।

चाहे तुम मुझसे कैसा भी व्यवहार करो, मैं तुम पर और सभी संतों पर अपनी इच्छाओं को कार्यान्वित करना चाहता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि सारी धरती पर मेरी इच्छा बिना किसी बाधा के पूरी की जाए। इस बारे में पूरी तरह से अवगत रहो! इसका संबंध मेरे प्रशासनिक आदेशों से है! क्या तुम जरा भी भयभीत नहीं हो? क्या तुम अपने काम और अपने व्यवहार को लेकर भय से काँप नहीं रहे हो? सभी संतों में शायद ही कोई ऐसा है जो मेरे इरादों को समझ सके। क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति के रूप में असाधारण बनना नहीं चाहते हो जो मेरी इच्छा को सचमुच जानता हो? क्या तुम्हें यह बोध है? वर्तमान में मेरा तात्कालिक इरादा उन लोगों के एक समूह की तलाश करना है जो मेरी इच्छा को पूरी तरह से ध्यान में रख सकें। क्या तुम उनमें से एक बनना नहीं चाहते हो? क्या तुम मेरे लिए खुद को खपाना, मेरे लिए खुद को अर्पित कर देना नहीं चाहते हो? तुम कम-से-कम मूल्य चुकाने और थोड़े-से प्रयास का योगदान करने के लिए भी तैयार नहीं हो! यदि यही बात जारी रहती है, तो तुम पर कड़ी मेहनत से किए गए मेरे प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे। अब जब मैंने तुम्हें यह बता दिया है, तो क्या अब भी तुम इस मामले की गंभीरता को नहीं समझ पाए हो?

"जो ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाता है, मैं निश्चित रूप से तुझे बहुत आशीष दूँगा।" समझे तुम! मैंने तुम्हें यह कई बार बताया है, पर अभी भी तुम्हें कई आशंकाएँ हैं, और अपनी पारिवारिक परिस्थितियों और बाहरी परिवेश से जुड़े हुए डर हैं। तुम सचमुच नहीं जानते कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है!

मैं केवल ईमानदार, सरल और खुले दिल के लोगों का उपयोग करता हूँ। तुम मेरे द्वारा उपयोग में लाए जाने के विषय में प्रसन्न और इच्छुक रहे हो, लेकिन तुम अभी भी इतने चिंतित क्यों हो? क्या यह हो सकता है कि मेरे वचनों का तुम पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा है? मैंने कहा है कि मैं तुम्हारा उपयोग कर रहा हूँ, फिर भी तुम दृढ़ता से उस पर विश्वास नहीं कर पा रहे हो। तुम हमेशा संदेह करते रहते हो, डरते हो कि मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। तुम्हारी धारणाएँ बहुत मजबूती से जड़ें जमाए हुए हैं! जब मैं कहता हूँ कि मैं तुम्हारा उपयोग कर रहा हूँ, तो उसका अर्थ है कि मैं तुम्हारा उपयोग कर रहा हूँ। तुम हमेशा इतने शंकालु क्यों रहते हो? क्या मैंने साफ-साफ नहीं कहा है? हर वचन जो मैंने कहा है, वह सच है! एक भी कथन ऐसा नहीं है जो असत्य हो। मेरे पुत्र! मेरा विश्वास करो। मेरे प्रति प्रतिबद्ध रहो, और मैं निश्चित रूप से तुम्हारे प्रति प्रतिबद्ध रहूँगा!

अध्याय 56

मैंने उन लोगों को सज़ा देने का कार्य शुरू कर दिया है, जो बुराई करते हैं और जो शक्ति का प्रयोग करते हैं और जो परमेश्वर के पुत्रों पर अत्याचार करते हैं। अब से, मेरे प्रशासनिक नियमों का हाथ हमेशा उनके ऊपर होगा, जो अपने दिल में मेरा विरोध करते हैं। इसे जान लो! यह मेरे न्याय की शुरुआत है और किसी के प्रति कोई दया नहीं दिखाई जाएगी, न ही किसी को छोड़ा जाएगा क्योंकि मैं निष्पक्ष परमेश्वर हूँ, जो धार्मिकता का पालन करता है और इसे पहचान लेना तुम सभी लोगों के लिए अच्छा होगा।

ऐसा नहीं है कि मैं उन लोगों को दंडित करने का इच्छुक हूँ, जो बुराई करते हैं बल्कि यह उनके खुद के बुरे कामों से उन्हीं पर लाया गया प्रतिशोध है। मैं किसी को दंडित करने में जल्दबाजी नहीं करता, न ही मैं किसी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करता हूँ—मैं सभी के प्रति धार्मिक हूँ। मैं निश्चित रूप से अपने पुत्रों से प्रेम करता हूँ और मैं निश्चित रूप से उन दुष्टों से नफ़रत करता हूँ, जो मेरी अवहेलना करते हैं; मेरे कार्यों के पीछे यह सिद्धांत है। तुम लोगों में से प्रत्येक को मेरे प्रशासनिक नियमों के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि होनी चाहिए; यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो तुम लोगों को ज़रा भी भय न होगा और तुम सब मेरे सामने लापरवाही से काम करोगे। तुम्हें यह भी पता नहीं होगा कि मैं क्या प्राप्त करना चाहता हूँ, मैं किसे सिद्ध करना चाहता हूँ, मैं क्या हासिल करना चाहता हूँ या किस तरह के व्यक्ति की मेरे राज्य को आवश्यकता है।

मेरे प्रशासनिक आदेश इस प्रकार हैं:

1. चाहे तुम कोई भी हो, यदि तुम अपने दिल में मेरा विरोध करते हो, तो तुम्हारा न्याय किया जाएगा।

2. जिन लोगों को मैंने चुना है, उन्हें किसी भी गलत सोच के लिए तुरंत अनुशासित किया जाएगा।

3. मैं उन लोगों को एक तरफ़ कर दूँगा, जो मुझ पर विश्वास नहीं करते। मैं उन्हें अंत तक लापरवाही से बोलने और काम करने दूँगा, जब मैं उन्हें पूरी तरह से दंडित करूँगा और उनसे निपटूंगा।

4. मैं उनकी देखभाल और हर समय उनकी रक्षा करूँगा, जो मुझ पर विश्वास करते हैं। सदा के लिए मैं उद्धार के मार्ग के जरिए उनके लिए जीवन की आपूर्ति करूँगा। इन लोगों के पास मेरा प्यार होगा और वे निश्चित रूप से न तो गिरेंगे, न ही अपनी राह से भटकेंगे। उनकी कोई भी कमज़ोरी केवल अस्थायी होगी और मैं निश्चित रूप से उनकी कमज़ोरियों को याद नहीं रखूँगा।

5. वे लोग जो विश्वास करते हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन जो वास्तव में ऐसा नहीं करते—जो लोग विश्वास करते हैं कि एक परमेश्वर है, लेकिन जो मसीह की तलाश नहीं करते हैं, फिर भी जो विरोध भी नहीं करते—ये सबसे दयनीय किस्म के लोग होते हैं और मेरे कर्मों के माध्यम से मैं उन्हें स्पष्ट रूप से दिखाऊंगा। अपने कार्यों के माध्यम से, मैं ऐसे लोगों को बचाऊंगा और उन्हें वापस लाऊंगा।

6. ज्येष्ठ पुत्रों को, पहले मेरे नाम को स्वीकार करने वालों को, आशीष मिलेगी! मैं निश्चित रूप से तुम लोगों को सबसे अच्छी आशीषें प्रदान करूँगा और तुम लोगों को जी भर कर आनंद लेने की अनुमति दूँगा; कोई भी इसमें बाधा डालने की हिम्मत नहीं करेगा। यह सब तुम लोगों के लिए पूरी तरह से तैयार किया गया है, क्योंकि यह मेरा प्रशासनिक आदेश है।

हर तरह से तुम लोगों को मेरे हाथ के सभी कार्य और मेरे मन के सभी विचार देखने में सक्षम होना चाहिए। क्या यह सब तुम लोगों की खातिर नहीं है? तुम लोगों में से कौन मेरे लिए है? क्या तुमने अपने दिलों के विचारों या अपने होठों पर मौजूद वचनों की जांच की है? क्या तुमने इन चीजों के प्रति एक शुद्ध अंत:करण वाला दृष्टिकोण लिया है? बेवकूफ़! लम्पट! तुम पवित्र आत्मा के प्रतिबंधों को स्वीकार नहीं करते! मैं अपनी आवाज़ को तुम्हारे भीतर बार-बार जारी कर रहा हूँ, फिर भी अभी तक इस पर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं हुई है। अब और मंदबुद्धि मत बनो! तुम्हारा कर्तव्य मेरी इच्छा को समझना है; इसके अलावा, यह वो पथ है, जिसमें तुम्हें प्रवेश करना चाहिए। तुम बेसुध हो, तुम्हारे पास कोई अंतर्दृष्टि नहीं है और तुम स्पष्ट रूप से नहीं देखते हो कि मैं तुम में क्या पूरा करने का इच्छुक हूँ या हासिल करना चाहता

हूँ! मेरी इच्छा को समझने के लिए, तुम्हें मेरे करीब आने और मेरे साथ अधिक संवाद करने से शुरू करना होगा। तुम हमेशा कहते हो कि तुम मेरी इच्छा को समझने में असमर्थ हो; तुम पहले से अपनी ही चीज़ों से भरे हुए रहते हो, तो मैं तुम पर कैसे काम कर सकता हूँ? तुम पहल नहीं करते और मेरे सामने नहीं आते, बल्कि निष्क्रिय होकर प्रतीक्षा करते रहते हो। मैं कहता हूँ कि तुम एक कीड़े की तरह हो, फिर भी तुम अन्याय महसूस करते हो और इसे स्वीकार करने से इनकार करते हो। इस बार तुम्हें उठना चाहिए और मेरे साथ सहयोग करना चाहिए! निष्क्रिय मत बनो! यह तुम्हारे जीवन को पीछे धकेल देगा। सक्रिय होना दूसरों को नहीं, तुम्हें लाभ पहुँचाता है। क्या तुमने अभी भी इसे पहचाना और समझा नहीं है? मेरी इच्छा लगातार तुम में प्रकट होती है। क्या तुमने इसे नहीं जाना है? तुमने कभी भी इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया है? और क्यों तुम मेरी इच्छा को समझने में कभी भी सक्षम नहीं रहे हो? क्या मेरी इच्छा समझने से तुम्हें सचमुच कोई लाभ नहीं हो सकता?

मैं चाहता हूँ कि तुम सभी मामलों में मेरी इच्छा के प्रति विचारशील रहो ताकि तुम्हारे जरिए मेरे पास आगे का एक मार्ग और आराम करने के लिए एक घर होगा। अब मुझे और बाधित न करो, यह अत्यधिक निर्मम है! तुम्हें मेरे वचनों की कोई समझ नहीं है और उनके प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं देते। देखो कि क्या समय हुआ है; अब और इंतज़ार नहीं किया जा सकता! यदि तुम सावधानी से मेरे कदमों का अनुसरण नहीं करते, तो बहुत देर हो जाएगी और इसे बचाने की संभावना तो उससे भी कम होगी!

अध्याय 57

क्या तुमने अपनी प्रत्येक सोच और विचार और अपने हर कार्य की जांच की है? क्या तुम स्पष्ट हो कि इनमें से कौनसे मेरी इच्छा के अनुसार हैं और कौनसे नहीं हैं? तुम्हारे पास यह अंतर समझने की किंचित भी क्षमता नहीं है! तुम मेरे पास क्यों नहीं आए हो? क्या इसलिए कि मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा, या किसी अन्य कारण से? तुम्हें यह पता होना चाहिए! यह जान लो कि जो लोग लापरवाह हैं वे मेरी इच्छा को बिल्कुल भी समझ नहीं सकते हैं या कोई महान प्रकाश या प्रकाशन प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

क्या तुमने उन कारणों की खोज की है जिनकी वजह से कलीसिया फल-फूल नहीं पाया है और जिनकी वजह से वास्तविक संगत की कमी है? क्या तुम जानते हो कि इसका कारण बनने वाले कितने कारकों का तुमसे लेना-देना है? मैंने तुम्हें जीवन प्रदान करने और मेरी वाणी को फैलाने के निर्देश दिए थे।

क्या तुमने ऐसा किया है? क्या अपने भाइयों और बहनों के जीवन में प्रगति में देर करने की तुम ज़िम्मेदारी ले सकते हो? जब समस्याएं आती हैं, तो शांत और स्थिर होने की बजाय तुम परेशान हो जाते हो। तुम सही में अज्ञानी हो! मेरी आवाज़ को संतों के बीचे फैलाया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा के कार्य को दबाओ मत और कल पर टालते रहकर मेरे लिए देरी न करो; इससे किसी को लाभ नहीं होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम शरीर और मस्तिष्क से, पूरी तरह से, मेरे प्रति समर्पित रहो, ताकि तुम्हारी हर सोच और हर विचार मेरे लिए हो, ताकि तुम मेरे विचारों और चिंताओं को साझा करो, और ताकि जो भी तुम करो वह आज के राज्य और मेरे प्रबंधन की खातिर हो, न कि तुम्हारे अपने लिए नहीं। केवल यही मेरे दिल को संतुष्ट करेगा।

मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जिसका प्रमाण न हो। तुमने मेरा अनुकरण क्यों नहीं किया है? तुम जो भी करते हो, उसके लिए तुमने सबूत क्यों नहीं ढूंढे हैं? तुम मुझसे और क्या कहलवाना चाहते हो? मैंने तुम्हें सिखाने के लिए तुम्हारा हाथ पकड़ा था, लेकिन तुम सीखने में असमर्थ रहे हो—तुम कितने बेवकूफ हो! क्या तुम फिर से शुरू करना चाहते हो? निराश मत हो। तुम्हें एक बार फिर अपने-आपको संभालना होगा और संतों की साझा उम्मीदों और साझा इच्छाओं के लिए अपने-आपको समर्पित करना होगा। उन वचनों को याद करो: "जो ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाता है, मैं निश्चित रूप से तुझे बहुत आशीष दूँगा।"

तुम जो कुछ भी करो, वह तुम्हें व्यवस्थित तरीके से करना होगा, अव्यवस्थित ढंग से नहीं। क्या तुम लोग वास्तव में यह कहने की हिम्मत कर सकते हो कि तुम संतों की स्थिति के बारे में अपने हाथ की रेखाओं की तरह जानते हो? इससे पता चलता है कि तुममें बुद्धि की कमी है, कि तुमने इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया है, और इस पर कोई समय खर्च नहीं किया है। यदि तुम सचमुच उस पर अपना पूरा समय व्यतीत कर पाते, तो तुम देखते कि तुम्हारी आंतरिक स्थिति कैसी होती। तुम व्यक्तिपरक प्रयास करने की कोशिश नहीं करते हो, बल्कि केवल वस्तुनिष्ठ कारणों की तलाश करते हो और मेरी इच्छा के लिए जरा-सी भी चिंता नहीं दिखाते हो—इसने मुझे अत्यंत चोट पहुंचाई है! इस तरह से चलना जारी मत रखो! क्या यह भी हो सकता है कि मैंने जो आशीष तुम्हें दिए हैं, तुमने उन्हें स्वीकार न किया हो?

हे परमेश्वर! तुम्हारा बच्चा तुम्हारा ऋणी है। मैंने तुम्हारे कार्यों को गंभीरता से नहीं लिया है, या तुम्हारी इच्छाओं की चिंता नहीं की है, न ही मैं तुम्हारे उपदेशों के प्रति वफ़ादार रहा हूं। तुम्हारा बच्चा यह सब बदलना चाहता है। कृपया तुम मेरा त्याग न करो, और मेरे माध्यम से अपना कार्य जारी रखो। हे परमेश्वर!

अपने बच्चे को अकेला मत छोड़ो, बल्कि हर पल मेरे साथ रहो। हे परमेश्वर! तुम्हारा बच्चा जानता है कि तुम मुझसे प्यार करते हो, लेकिन मैं तुम्हारी इच्छाओं को समझ नहीं पाता हूं, मुझे नहीं पता कि तुम्हारे बोझ के लिए विचारशील कैसे होना चाहिए, और मुझे नहीं पता कि तुमने जो काम मुझे सौंपा है उसे मैं कैसे पूरा करूं, उससे भी कम मुझे यह पता है कि कलीसिया को आगे कैसे बढ़ाऊं। तुम जानते हो कि मैं इसकी वजह से निराश और परेशान हूं। हे परमेश्वर! कृपया हर समय मेरा मार्गदर्शन करो। सिर्फ अब जाकर मुझे अहसास हुआ है कि मुझमें कितनी कमी है, मुझमें बहुत ज्यादा कमी है! मैं बता नहीं सकता कि कितनी ज्यादा! अपने सर्वशक्तिमान हाथों से अपने बच्चे पर अनुग्रह करो, अपने बच्चे को हर समय सहारा दो, और अपने बच्चे को पूरी तरह से तुम्हारे सामने झुकने में सक्षम बनाओ, ताकि अब मैं खुद और चुनाव न करूँ, ताकि अब मेरे खुद की सोच और विचार न हों। हे परमेश्वर! तुम जानते हो कि तुम्हारा बच्चा पूरी तरह से सब कुछ तुम्हारे लिए, आज के राज्य के लिए करना चाहता है। तुम जानते हो कि इस क्षण मैं क्या सोच रहा हूं और क्या कर रहा हूं। हे परमेश्वर! तुम स्वयं मुझे ढूंढो। मैं बस यही मांगता हूं कि तुम मेरे साथ चलो और जिंदगी में हर समय हमेशा मेरे साथ रहो, ताकि तुम्हारी शक्तियां मेरे सभी कृत्यों में मेरे साथ रहें।

अध्याय 58

मेरा इरादा समझ कर, तू मेरे बोझ के प्रति विचारशील होने में सक्षम हो जाएगा, और तू रोशनी और प्रकाशन प्राप्त कर सकता है, और मुक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। यह मुझे संतुष्ट करेगा और तेरे लिए मेरी इच्छा को पूरा करेगा, सभी संतों के लिए आत्मिक उन्नति लाएगा, और पृथ्वी पर मेरे राज्य को दृढ़ और स्थिर बनाएगा। इस समय महत्वपूर्ण बात है मेरा इरादा समझना; यह वह मार्ग है जिसमें तुम लोगों को प्रवेश करना चाहिए, और इससे भी अधिक, यह वह कर्तव्य है जिसे हर व्यक्ति को पूरा करना चाहिए।

मेरा वचन अच्छी दवा है जो सभी प्रकार की बीमारियों को ठीक करती है। जब तक तू मेरे पास आने का इच्छुक रहेगा, मैं तुझे चंगा करूँगा, और तुझे अपनी सर्वशक्तिमत्ता, मेरे अद्भुत कर्मों, मेरी धार्मिकता और प्रताप को देखने दूँगा। इसके अलावा, मैं तुम लोगों को तुम्हारी स्वयं की भ्रष्टता और कमज़ोरियों की एक झलक दूँगा।। मैं तेरे भीतर की हर स्थिति को पूरी तरह से समझता हूँ; तू हमेशा अपने दिल के अन्दर चीज़ों को करता है, और उन्हें बाहर नहीं दिखाता है। तेरे द्वारा की जाने वाली हर एक चीज़ के बारे में मैं

और भी स्पष्ट हूँ। हालाँकि, तुझे पता होना चाहिए कि मैं किन चीज़ों की प्रशंसा करता हूँ, और किन चीज़ों की प्रशंसा नहीं करता हूँ; तुझे इन दोनों के बीच स्पष्ट रूप से अंतर करना चाहिए, और इसके प्रति लापरवाही की प्रवृत्ति नहीं अपनानी चाहिए।

यह कर कह कि, "हमें परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील अवश्य होना चाहिए" तू केवल दिखावटी प्रेम दर्शा रहा है। हालाँकि जब तू तथ्यों का सामना करता है, तो तू इसकी कोई चिंता नहीं करता है, भले तू पूरी तरह से जानता है कि परमेश्वर का बोझ क्या है। तू वास्तव में बिल्कुल नासमझ और बेवकूफ़ है, और उससे भी अधिक, तू अत्यंत अज्ञानी है। यह बताता है कि मनुष्य से निपटना कितना मुश्किल है; और वे केवल अच्छे सुनाई देने वाले शब्द बोलते हैं जैसे कि "मुझे परमेश्वर के इरादे समझ में नहीं आते हैं, लेकिन अगर मैं इसे समझने में सफल हो जाऊँ, तो मैं निश्चित रूप से इसके अनुरूप कार्य करूँगा।" क्या यह तुम लोगों की वास्तविक स्थिति नहीं है? यद्यपि तुम सभी लोगों को परमेश्वर के इरादे पता हैं, और तुम जानते हो कि तुम्हारी बीमारी का कारण क्या है, महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम अभ्यास करने के इच्छुक बिल्कुल नहीं हो; यह तुम्हारी सबसे बड़ी कठिनाई है। यदि तुम तुरंत इसका समाधान नहीं करते हो, तो यह तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी बाधा होगी।

अध्याय 59

जिन परिस्थितियों का सामना तू करे, वहाँ मेरी इच्छा की अधिक खोज कर और तुझे निश्चित रूप से मेरी स्वीकृति प्राप्त होगी। जब तक तू खोज करने का इच्छुक है और मेरे लिए आदर बनाए रखता है, तब तक मैं तुझे वे सब चीज़ें दूँगा जिनकी तेरे पास कमी है। कलीसिया अब एक औपचारिक प्रशिक्षण में प्रवेश कर रहा है, और सभी चीज़ें सही रास्ते पर हैं। चीज़ें अब वैसी नहीं हैं जैसी वे तब थी जब आने वाली चीज़ों का पूर्वानुभव हो जाता था; तुम लोगों को अब और भ्रमित अवश्य नहीं होना चाहिए या अंतर समझने की क्षमता के बिना नहीं होना चाहिए। मुझे क्यों आवश्यकता है कि तुम लोग हर चीज़ में वास्तविकता में प्रवेश करो? क्या तूने वास्तव में इसका अनुभव किया है? क्या तुम लोग वास्तव में मुझे उन चीज़ों में संतुष्ट कर सकते हो जो मुझे तुम लोगों से चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे मैं तुम लोगों को संतुष्ट करता हूँ? कपटी मत बनो! मैं तुम लोगों को बार-बार बर्दाश्त करता रहता हूँ, फिर भी तुम लोग अच्छे और बुरे के बीच अंतर बताने और अपना आभार दिखाने में असफल रहते हो!

मेरी धार्मिकता, मेरा प्रताप महिमा, मेरा न्याय और मेरा प्यार—ये सब चीज़ें जिन्हें मैं धारण करता हूँ, और जो चीज़ें मैं हूँ—क्या तूने वास्तव में इनका स्वाद लिया है? तू वास्तव में बहुत विचारहीन है, और तू मेरी इच्छा को नहीं समझने पर ज़ोर देता है। मैंने तुम लोगों को बार-बार कहा है कि जिन दावतों को मैं तैयार करता हूँ, उनका स्वाद तुम्हें स्वयं लेना चाहिए, मगर तुम लोग बार-बार उन्हें उलट देते हो, और अच्छे और बुरे वातावरण के बीच अंतर नहीं बता सकते हो। इनमें से कौन-से वातावरण तुम्हारे द्वारा स्वयं बनाये गये थे? और किन्हें मेरे हाथों द्वारा व्यवस्थित किया गया था? अपना बचाव करना बंद कर! मैं सब कुछ पूरी स्पष्टता से देखता हूँ, और वास्तविकता यह है कि तू बस खोज नहीं करता है। इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ?

मैं हमेशा उन सभी को आराम पहुँचाऊँगा जो मेरी इच्छा को समझेंगे, और मैं उन्हें पीड़ा सहने या कोई नुकसान पहुँचने नहीं दूँगा। इस समय महत्वपूर्ण बात यह है मेरी इच्छा के अनुसार कार्य करने में सक्षम बनना। जो लोग ऐसा करेंगे, वे निश्चित रूप से मेरे आशीषों को प्राप्त करेंगे और मेरी सुरक्षा के अंतर्गत रहेंगे। कौन वास्तव में पूरी तरह से मेरे लिए समर्पित हो सकता है और मेरे वास्ते अपना सब कुछ भेंट कर सकता है? तुम सभी अधूरे मन वाले हो; तुम्हारे विचार इधर-उधर घूमते हैं, तुम घर, बाहरी दुनिया, भोजन और कपड़ों के बारे में सोचते रहते हो। इस तथ्य के बावज़ूद कि तू मेरे सामने है, मेरे लिए चीज़ों को कर रहा है, अपने दिल में तू अभी भी घर पर उपस्थित अपनी पत्नी, बच्चों और माता-पिता के बारे में सोच रहा है। क्या ये सभी चीज़ें तेरी संपत्ति हैं? तू उन्हें मेरे हाथों में क्यों नहीं सौंप देता है? क्या तू मुझ पर पर्याप्त विश्वास नहीं करता है? या क्या ऐसा है कि तुझे डर है कि मैं तेरे लिए अनुचित व्यवस्थाएँ करूँगा? तू हमेशा अपने देह के परिवार के बारे में चिंता क्यों महसूस करता है? तू हमेशा अपने प्रियजनों के लिए विलाप करता है! क्या तेरे दिल में मेरा कोई निश्चित स्थान है? और तू फिर भी मुझे तेरे भीतर प्रभुत्व करने देने और तेरे पूरे अस्तित्व पर कब्ज़ा करने देने के बारे में बात करता है—ये सभी कपटपूर्ण झूठ हैं! तुम में से कितने लोग कलीसिया के लिए पूरे दिल से समर्पित हो? और तुम में से कौन अपने बारे में नहीं सोचता है, बल्कि आज के राज्य के वास्ते कार्य कर रहा है? इस बारे में बहुत ध्यानपूर्वक सोचो।

तुम लोगों ने मुझे इस हद तक मज़बूर कर दिया है कि मैं तुम्हें मार कर आगे की ओर ढकेलने के लिए केवल अपने हाथों का उपयोग कर सकता हूँ; मैं तुम लोगों को अब और नहीं मनाऊँगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं एक बुद्धिमान परमेश्वर हूँ, और मैं भिन्न-भिन्न लोगों के साथ भिन्न-भिन्न ढंग से व्यवहार करता

हूँ, इस बात के अनुसार कि तुम लोग मेरे प्रति कितने वफ़ादारी हो। मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ—किसकी हिम्मत है कि मेरे आगे बढ़ते कदमों को रोक सके? अब से, मेरे साथ अनिष्ठता से व्यवहार करने की हिम्मत करने वाले सभी निश्चित रूप मेरे प्रशासनिक आदेशों के हाथ के अधीन आ जाएँगे, ताकि उन्हें मेरी सर्वशक्तिमत्ता ज्ञात करायी जाएगी। मैं जो चाहता हूँ वह बड़ी संख्या में लोग नहीं, बल्कि उत्कृष्टता है। जो भी निष्ठाहीन, बेईमान होगा, और कुटिल व्यवहार और कपट में संलग्न होगा, मैं उसे त्याग दूँगा और दंडित करूँगा। अब यह मत सोचो कि मैं करुणाशील हूँ, या कि मैं प्रेममय और दयालु हूँ; ऐसे विचार केवल आत्मनिरति हैं। मुझे पता है कि जितना अधिक मैं तुम्हारे साथ हास्य करता हूँ तुम उतना ही अधिक नकारात्मक और निष्क्रिय हो जाते हो और तुम उतना ही अधिक अपने आप को छोड़ देने के लिए तैयार नहीं होते हो। जब लोग इस हद तक ज़िद्दी हों, तो मैं केवल उन्हें आगे बढ़ने के लिए लगातार प्रोत्साहित कर सकता हूँ और अपने साथ खींच सकता हूँ। यह जान लो! अब से, मैं वह परमेश्वर हूँ जो न्याय करता है; अब से, मैं वह करुणाशील, दयालु और प्रेममय परमेश्वर नहीं हूँ जैसा लोग मेरे होने की कल्पना करते हैं!

अध्याय 60

जीवन का विकास कोई आसान बात नहीं है; इसके लिए एक प्रक्रिया की आवश्यकता होती है, और इससे भी अधिक, ज़रूरी यह है कि तुम लोग इसकी कीमत चुका सको और पूरी सहमति के साथ मेरा सहयोग करो, और तब तुम्हें मेरी प्रशंसा प्राप्त होगी। मेरे वचनों से आकाश और पृथ्वी एवं सभी चीज़ें स्थापित और पूर्ण की गई हैं और मेरे साथ कोई भी चीज़ हासिल की जा सकती है। मेरी एकमात्र इच्छा यह है कि तुम लोग शीघ्र विकास करो, मेरे कंधों से बोझ लेकर अपने ऊपर रख लो, मेरे लिए मेरा श्रम करो, और यह मेरे दिल को संतुष्ट करेगा। कौन पुत्र अपने पिता के बोझ को अस्वीकार करेगा? कौन पिता अपने पुत्र के लिए दिन-रात श्रम नहीं करेगा? लेकिन तुम लोग मेरी इच्छा को समझते ही नहीं, और तुम्हें मेरे बोझ की चिंता नहीं है; मेरे वचन तुम लोगों के लिए कोई मायने नहीं रखते और तुम मेरे वचनों के अनुसार कार्य नहीं करते हो। तुम लोग हमेशा अपने मालिक स्वयं हो; कितने स्वार्थी हो! तुम केवल अपने बारे में सोचते हो!

क्या तुम वास्तव में मेरी इच्छा समझते हो या नाटक कर रहे कि तुम्हें समझ नहीं आ रहा है? तुम हमेशा अपने व्यवहार में इतने लापरवाह क्यों हो? क्या तुम्हारा ज़मीर यह कहता है कि इस तरह व्यवहार

कर तुम मेरे साथ सही कर रहे हो? बीमारी का कारण पता चल जाने पर तुम इलाज के लिए मुझसे बात क्यों नहीं करते? मैं तुम्हें बताऊंगा: आज से अब कभी तुम्हारे शरीर में कोई भी रोग नहीं होगा। यदि तुम्हारा कोई भी अंग कभी अस्वस्थ महसूस करता है, तो किसी बाहरी कारण की तलाश में व्यस्त न रहो। इसके बजाय, मेरे पास आओ और मेरा इरादा जानने का प्रयास करो—क्या तुम्हें यह याद रहेगा? यह मेरा वादा है: इस दिन से तुम पूरी तरह अपने भौतिक शरीर से दूर जाकर आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करोगे, यानी, तुम लोगों के शरीर पर बीमारी का कोई बोझ नहीं होगा। क्या तुम इससे ख़ुश हो? क्या तुम्हें आनंद महसूस हो रहा? यह मेरा वादा है। इससे भी अधिक, यह वह चीज है जिसकी अपेक्षा तुम्हें लंबे समय से थी। आज तुम धन्य लोगों ने यह हासिल कर लिया है; कितना अद्‌भुत और अपरिमेय है यह!

मेरा काम दिन-रात प्रगति कर रहा है; पल-प्रतिपल, यह कभी रुकता नहीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरी तत्काल इच्छा है कि मैं तुम्हें अपने दिल के अनुरूप बना लूं और मेरे दिल को तुम लोग शीघ्र ही सांत्वना दो। मेरे बेटों! समय आ गया है कि तुम लोग अच्छाई के मेरे आशीषों को साझा करो! अतीत में, तुम लोगों ने मेरे नाम के लिए पीड़ा सही थी, लेकिन अब तुम लोगों के परीक्षण के दिन समाप्त हो गए हैं। यदि किसी ने भी मेरे बेटों के सिर के एक बाल को भी नुकसान पहुँचाने की हिम्मत की, तो मैं उन्हें आसानी से माफ़ नहीं करूँगा, न ही वे फिर कभी दोबारा ऊपर उठने में समर्थ होंगे। यह मेरा प्रशासनिक आदेश है और जो भी इसका उल्लंघन करेगा वह ऐसा अपने जोखिम पर करेगा। मेरे बेटों! दिल के संतुष्ट होने तक आनंद उठाओ! ख़ुशी में गाओ और चिल्लाओ! तुम लोगों को अब धमकाया और उत्पीड़ित नहीं किया जाएगा और तुम लोगों पर अत्याचार नहीं किया जाएगा। मुझ पर अपने विश्वास के लिए तुम्हें अब कभी डरना नहीं होगा; तुम्हें अपने भरोसे की सार्वजनिक घोषणा कर देनी चाहिए। मेरे पवित्र नाम को इतनी ज़ोर से पुकारो कि ब्रह्मांड और पृथ्वी का कोना-कोना कंपित हो उठे। वे देखें कि जिन्हें वे तुच्छ समझते थे, जिन्हें उनके द्वारा तबाही और अत्याचार का सामना करना पड़ा, आज वे उनसे ऊपर पहुंच कर उन पर शासन कर रहे, उन्हें नियंत्रित कर रहे, और, इससे भी महत्त्वपूर्ण, उनपर फैसला दे रहे हैं।

तुम लोग केवल अपनी प्रविष्टि के बारे में चिंता करो, और मैं तुम लोगों पर इससे भी बेहतर आशीष बरसाऊंगा ताकि तुम लोग उनका आनंद उठा सको, और अप्रतिम माधुर्य, असीम रहस्यों और अथाह गहराई का बेहतर आस्वाद पा सको!

अध्याय 61

जब तुम अपनी स्थिति के प्रति जागरूक होते हो, तब तुम मेरी इच्छा की पूर्ति कर सकते हो। वास्तव में, मेरी इच्छा को समझना मुश्किल नहीं है, बात केवल इतनी-सी है कि अतीत में तुमने कभी भी मेरे इरादों के अनुसार प्रयास नहीं किया। मुझे लोगों की धारणाएँ या विचार नहीं चाहिए, मुझे तुम्हारा धन या संपत्ति तो बिलकुल भी नहीं चाहिए। मुझे बस तुम्हारा दिल चाहिए। समझे? यह मेरी इच्छा है; और इतना ही नहीं, मैं बस यही प्राप्त करना चाहता हूँ। लोग मुझे समझने के लिए हमेशा अपनी धारणाओं का उपयोग करते हैं, और मेरी कद-काठी का मूल्यांकन अपनी कसौटी पर करते हैं। मानवजाति के साथ, इस चीज़ से निपटना सबसे कठिन है, और इसी से मैं सबसे अधिक घृणा करता हूँ और इसी को सबसे अधिक नापसंद करता हूँ। क्या अब तुम्हें समझ आ रहा है? ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह शैतान का सबसे अधिक दिखने वाला स्वभाव है। इसके अतिरिक्त, तुम लोगों की कद-काठी इतनी छोटी है कि तुम अक्सर शैतान की कुटिल योजनाओं में फँस जाते हो। तुम उन्हें पहचान ही नहीं पाते! मैंने तुम लोगों से कई बार हर समय और हर मामले में सतर्क रहने के लिए कहा है, ताकि तुम शैतान के झाँसे में न आ जाओ। लेकिन फिर भी, तुम लोग सुनते नहीं हो और मैं जो कहता हूँ, उसे सहर्ष अनदेखा कर देते हो। परिणामस्वरूप, तुम्हें अपने जीवन में नुक़सान उठाना पड़ता है और तब तक पछतावे के लिए बहुत देर हो चुकी होती है। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम इसे भविष्य के प्रयास के लिए सबक के रूप में ग्रहण करो? मैं तुमसे कहता हूँ! नकारात्मकता में प्रवृत्त होने से तुम्हारे जीवन में भीषण नुक़सान होगा। यह जान लेने पर, क्या यह तुम्हारे जागने का समय नहीं है?

लोग त्वरित परिणामों के लिए अधीर रहते हैं, और वे केवल वही देखते हैं, जो उनकी आँखों के ठीक सामने होता है। जब मैं कहता हूँ कि मैंने सत्ताधारी लोगों को दंडित करना शुरू कर दिया है, तो तुम लोग और भी चिंतित हो जाते हो, और पूछते हो : "वे लोग अभी भी सत्ता में क्यों हैं? क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के वचन खोखले हैं?" मनुष्य की धारणाएँ कितनी मज़बूत हैं! मैं जो कहता हूँ, तुम लोग उसका अर्थ नहीं समझते। मैं जिन लोगों को दंडित करता हूँ, वे बुरे लोग हैं, जो मेरा विरोध करते हैं और मुझे नहीं जानते, और मैं उन लोगों को नज़रअंदाज़ करता हूँ, जो केवल मुझ पर विश्वास करते हैं लेकिन सत्य की तलाश नहीं करते। तुम वास्तव में अज्ञानी हो! मैंने जो कहा है, तुम उसे रत्ती भर भी नहीं समझे हो! फिर भी तुम यह सोचकर अपनी पीठ थपथपाते हो कि तुम परिपक्व हो गए हो, कि तुम चीज़ों को समझते हो और

तुम मेरी इच्छा को समझने में सक्षम हो। मैं अक्सर कहता हूँ कि सभी चीज़ें और मामले मसीह को सेवा प्रदान करते हैं, लेकिन क्या तुम वास्तव में इन वचनों को समझते हो? क्या तुम सचमुच उनका अर्थ जानते हो? मैंने पहले भी कहा है कि मैं किसी को भी बेतहाशा दंडित नहीं करता। ब्रह्मांड की दुनिया का हर एक व्यक्ति मेरी उचित व्यवस्था का पालन करता है। जो मेरे दंड के पात्र हैं, जो मसीह को सेवा प्रदान करते हैं (जिन्हें मैं नहीं बचाऊँगा), जिन्हें मैंने चुना है, और जो मेरे द्वारा चुने जाने के बाद हटाए जाने के पात्र बन गए हैं—इन सबको मैं अपने हाथों से थाम लेता हूँ, तुम्हारा तो कहना ही क्या, जो उनमें से एक है जिन्हें मैंने चुना है और जिसे मैं और भी ज्यादा समझता हूँ। इस चरण के दौरान मैं जो करता हूँ और अगली सब चीज़ें मेरी बुद्धिमान व्यवस्था के अनुरूप हैं। तुम्हें मेरे लिए कुछ भी पहले से व्यवस्थित करने की आवश्यकता नहीं है; केवल प्रतीक्षा करो और आनंद लो! तुम इसके योग्य हो। मेरा अपनी चीज़ों पर प्रभुत्व है, और मैं उन लोगों को आसानी से नहीं छोड़ता, जो शिकायत करने या मेरे बारे में अन्य राय रखने की हिम्मत करते हैं। मैं इन दिनों अक्सर क्रोध से भड़क जाता हूँ, क्योंकि प्रशासनिक नियमों के जिस कार्यक्रम की व्यवस्था मैंने की है, वह इस चरण तक आने वाला है। यह मत सोचो कि मेरी कोई भावना नहीं है। इसका कारण यह है कि, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, कोई भी चीज़, व्यक्ति या घटना मेरे कदम आगे बढ़ने से रोकने की हिम्मत नहीं कर सकती। मैं जो कहता हूँ वह करता हूँ, और मैं ऐसा ही हूँ; और इतना ही नहीं, यह मेरे स्वभाव की सबसे अधिक दिखाई देने वाली अभिव्यक्ति है। मैं सभी लोगों के साथ समान व्यवहार करता हूँ, क्योंकि तुम सब मेरे पुत्र हो, और मैं तुम सबसे प्यार करता हूँ। कौन पिता है, जो अपने बेटे के जीवन की ज़िम्मेदारी नहीं लेता? कौन पिता है, जो अपने बेटे के भविष्य के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत नहीं करता? तुम लोगों में से कौन इसे पहचानता है? मेरा दिल किसके लिए विचारशीलता दिखा सकता है? तुम लोग अपने शारीरिक सुखों के लिए लगातार योजनाएँ बनाते और व्यवस्था करते हो, और तुम्हें मेरे दिल की बिल्कुल चिंता नहीं है। मैं तुम लोगों के लिए इतनी चिंता करता हूँ कि मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, लेकिन तुम लोग निरंतर शारीरिक सुखों, खाने-पीने, सोने और कपड़ों के लिए ही लालायित रहते हो। क्या तुम लोगों में थोड़ा-सा भी विवेक नहीं है? यदि ऐसा है, तो तुम मानव के भेस में पशु हो। मैं जो कहता हूँ वह अनुचित नहीं है, और तुम में इन वचनों को सहन करने की क्षमता होनी चाहिए। तुम लोगों को बचाने का यह सबसे अच्छा तरीका है, और इतना ही नहीं, यहीं मेरी बुद्धि रहती है : शैतान की सबसे बड़ी कमज़ोरी पर हमला करो, उसे पूरी तरह से पराजित कर दो और उसे पूरी तरह से नष्ट कर डालो। जब

तक तुम पश्चात्ताप करोगे और यह सुनिश्चित करोगे कि तुम अपनी पुरानी प्रकृति को मिटा देने और एक नए व्यक्ति की छवि को जीने के लिए मुझ पर भरोसा करते हो, मैं पूरी तरह से संतुष्ट रहूँगा, क्योंकि सामान्य मानवता के रूप में जीने और मेरे नाम की गवाही देने का यही अर्थ है। मुझे और कोई चीज़ इससे ज्यादा खुश नहीं कर सकती।

तुम्हें हमेशा मेरे करीब रहना चाहिए। यह स्पष्ट है कि मेरी गति दिन-प्रतिदिन तेज़ हो रही है। यदि तुम पल भर के लिए भी आध्यात्मिक संगति में कमी करोगे, तो मेरा न्याय फौरन तुम पर लागू हो जाएगा। इस बिंदु पर, तुम्हें एक गहरा एहसास हुआ है। मैं तुम्हें इसलिए ताड़ना नहीं देता कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता; बल्कि मैं तुम्हें प्यार के कारण ही अनुशासित करता हूँ। अन्यथा, तुम विकसित नहीं होगे, और तुम पवित्र आत्मा के संयम के बिना हमेशा पथभ्रष्ट रहोगे। यह मेरी बुद्धि को और भी प्रदर्शित करता है।

अध्याय 62

मेरी इच्छा को समझना केवल इसलिए आवश्यक नहीं कि तुम उसे जान सको, बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि तुम मेरे इरादों के अनुसार कार्य कर सको। लोग बस मेरे दिल को नहीं समझते। जब मैं कहता हूँ कि यह पूर्व दिशा है, तो वे उसका विवेचन किए बिना नहीं रह सकते, और वे सोचते हैं, "क्या यह वास्तव में पूर्व है? शायद नहीं। मैं इतनी आसानी से विश्वास नहीं कर सकता। मुझे स्वयं देखना होगा।" तुम लोगों को सँभालना इस हद तक मुश्किल है; तुम नहीं जानते कि असली आज्ञाकारिता क्या है। जब तुम्हें मेरे इरादों का पता चल जाए, तो बस उन्हें पूरा करने में लग जाओ—सोचो मत! मैं जो कुछ भी कहता हूँ, तुम हमेशा उस पर संदेह करते हो और उसे बेतुके ढंग से स्वीकार करते हो। यह तुम्हें सच्ची अंतर्दृष्टि कैसे दे सकता है? तुम कभी भी मेरे वचनों में प्रवेश नहीं करते। जैसा कि मैंने पहले कहा है, मुझे बस उत्कृष्ट लोग चाहिए, संख्या में अधिक लोग नहीं। जो लोग मेरे वचनों में प्रवेश करने पर ध्यान नहीं देते, वे मसीह के अच्छे सैनिक होने के लायक नहीं हैं, बल्कि वे शैतान के नौकर की तरह काम करते हैं और मेरे काम में बाधा डालते हैं। इसे छोटा मामला न समझो। जो कोई मेरे काम में बाधा पहुँचाता है, वह मेरे प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन करता है, और यह निश्चित है कि मैं उन्हें गंभीरता से अनुशासित करूंगा। इसका अर्थ यह है कि अब से यदि तुम पल भर के लिए भी मुझसे दूर जाते हो, तो मेरा न्याय तुम पर पड़ेगा। यदि तुम्हें मेरे वचनों पर विश्वास न हो, तो स्वयं देख लेना, मेरे मुखमण्डल के प्रकाश में रहकर तुम्हारी स्थिति कैसी है,

और मुझे छोड़ने पर तुम्हारी स्थिति कैसी होगी।

मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं कि तुम आत्मा में नहीं रहते। मेरा काम वर्तमान चरण तक आ गया है, तो तुम क्या कर सकते हो? व्याकुल मत हो, क्योंकि जो भी मैं करता हूँ, उसके चरण होते हैं, और मैं अपना कार्य स्वयं करूँगा। जैसे ही मैं कार्रवाई करता हूँ, सभी लोग पूरी तरह से आश्वस्त हो जाते हैं; यदि वे नहीं होते, तो मैं उन्हें और अधिक सख्ती से ताड़ना दूँगा, जो मेरे प्रशासनिक आदेशों को और ज्यादा स्पर्श करता है। यह देखा जा सकता है कि मेरे प्रशासनिक आदेश पहले से ही प्रचारित और लागू होने शुरू हो चुके हैं और अब छिपे नहीं रहे। तुम्हें इसे स्पष्टता से देखना चाहिए! अब सब-कुछ मेरे प्रशासनिक आदेशों को स्पर्श करता है, और जो कोई भी उनका उल्लंघन करता है, उसे नुकसान उठाना पड़ेगा। यह कोई छोटा मामला नहीं है। क्या तुम लोगों को इसकी कोई परख है? क्या तुम लोग इसे स्पष्टता से देखते हो? मैं संगति करना शुरू करूँगा: दुनिया के सभी राष्ट्र और सभी लोग मेरे हाथों में प्रशासित होते हैं, और चाहे वे किसी भी धर्म के हों, उन्हें वापस मेरे सिंहासन तक आना होगा। निस्संदेह, ऐसे कुछ लोगों को, जिनका न्याय किया जा चुका है, एक अथाह गड्ढे में डाल दिया जाएगा (वे विनाश की वस्तुएँ हैं, जिन्हें पूरी तरह से जला दिया जाएगा, और वे अब नहीं बचेंगे), जबकि कुछ लोग न्याय किए जाने पर मेरा नाम स्वीकार करेंगे और मेरे राज्य के लोग बन जाएँगे (जिसका वे केवल एक हजार वर्षों तक आनंद उठाएँगे)। लेकिन तुम लोग मेरे साथ अनंत काल तक राजपाट सँभालोगे, और चूँकि तुम लोगों ने पहले मेरे लिए कष्ट उठाए हैं, मैं तुम्हारे कष्टों को आशीषों से बदल दूँगा, जो मैं तुम लोगों पर बेइंतिहा बरसाता हूँ। जो मेरे लोग हैं, वे केवल मसीह को सेवा प्रदान करते रहेंगे। जिसे यहाँ आनंद कहा जाता है, उसका अर्थ केवल आनंद नहीं है, बल्कि यह भी है कि उन लोगों को आपदाओं से बचाया जाएगा। मेरी तुम लोगों से अब इतनी सख्त अपेक्षाएँ होने का, और उस सबका जो अब मेरे प्रशासनिक आदेशों को स्पर्श करता है, यही आंतरिक अर्थ है। इसका कारण है कि यदि तुम लोगों ने मेरा प्रशिक्षण स्वीकार नहीं किया, तो मेरे पास तुम लोगों को वह देने का कोई उपाय नहीं होगा, जो तुम्हें विरासत में मिलना है। इसके बावजूद, तुम लोग अभी भी कष्टों से डरते हो, और भयभीत हो कि तुम्हारी आत्माएँ घायल हो जाएँगी, हमेशा देह के बारे में सोचते रहते हो और लगातार अपने लिए व्यवस्था करते और योजनाएँ बनाते रहते हो। क्या मेरी व्यवस्थाएँ तुम लोगों के लिए अनुपयुक्त हैं? तो फिर तुम अपने लिए व्यवस्थाएँ क्यों करते रहते हो? तुम मुझे बदनाम करते हो! क्या ऐसा नहीं है? मैं तुम्हारे लिए कुछ व्यवस्था करता हूँ, लेकिन तुम उसे पूरी तरह से नकार देते हो और अपनी खुद

की योजनाएँ बनाते हो।

तुम लोग वाक्पटु हो सकते हो, लेकिन वास्तव में तुम मेरी इच्छा का पालन बिल्कुल नहीं करते। मेरी बात सुनो! मैं यह बिल्कुल नहीं कहूँगा कि तुम लोगों में कोई एक भी मेरी इच्छा का सच में लिहाज़ करने वाला है। हालाँकि तुम्हारे कार्य मेरी इच्छा के अनुरूप हो सकते हैं, फिर भी मैं निश्चित रूप से तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूँगा। यह मेरा उद्धार का तरीका है। फिर भी, तुम लोग अभी भी कभी-कभी आत्मसंतुष्ट हो जाते हो, स्वयं को अद्‌भुत समझते हो और बाकी सभी की अवमानना करते हो। यह मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव का एक पहलू है। जो बात मैं कह रहा हूँ, तुम सब उसको स्वीकार करते हो, लेकिन केवल सतही तौर पर। वास्तव में बदल पाने के लिए तुम्हें मेरे करीब आना होगा। मेरे साथ संगति करो, और मैं तुम पर अनुग्रह करूँगा। कुछ लोग बेकार बैठकर दूसरों के बोए हुए को काटना चाहते हैं, और यह महसूस करते हैं कि कपड़े पहनने के लिए उन्हें केवल अपने हाथ फैलाने की और खाना खाने के लिए केवल अपना मुँह खोलने की आवश्यकता है, वे यहाँ तक चाहते हैं कि दूसरे ही उनके भोजन को चबा दें और फिर उसे उनके मुँह में डाल दें, उसके बाद वे उसे निगलें। ऐसे लोग सबसे अधिक मूर्ख होते हैं, जो दूसरों के चबाए हुए को खाना पसंद करते हैं। यह भी मनुष्य के सबसे आलसी पहलू की एक अभिव्यक्ति है। मेरे इन वचनों को सुनकर तुम्हें इन्हें अब और अनदेखा नहीं करना चाहिए। अपना ध्यान अत्यधिक बढ़ाकर ही तुम ठीक काम करोगे, और सिर्फ़ तभी तुम मेरी इच्छा को संतुष्ट करोगे। यह सबसे उत्तम प्रकार की अधीनता और आज्ञाकारिता है।

अध्याय 63

तुम्हें अपनी स्वयं की स्थिति समझनी चाहिए, और इससे भी अधिक, तुम्हें जिस मार्ग पर चलने की आवश्यकता है, उसके बारे में स्पष्ट होना चाहिए; मेरे लिए अब और प्रतीक्षा न करो कि मैं तुम्हारे कान खींचूँ और तुम्हें चीज़ें दिखाऊँ। मैं परमेश्वर हूँ, जो मनुष्य के अंतरतम हृदय को ध्यान से देखता है, और मैं तुम्हारा प्रत्येक विचार और भाव जानता हूँ। इससे भी अधिक, मैं तुम्हारे क्रियाकलापों और व्यवहार को समझता हूँ—लेकिन क्या इन सबमें मेरी प्रतिज्ञा है? क्या इन सबमें मेरी इच्छा है? क्या तुमने वास्तव में पहले कभी इनकी तलाश की है? क्या तुमने वास्तव में इस पर कोई समय व्यय किया है? क्या तुमने सचमुच कोई प्रयास किया है? मैं तुम्हारी आलोचना नहीं कर रहा हूँ; तुम लोगों ने बस इस पहलू को

अनदेखा कर दिया है! तुम लोग हमेशा इतने संभ्रमित रहते हो, और कुछ भी स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते। क्या तुम जानते हो कि इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि तुम लोगों के विचार अस्पष्ट हैं और तुम लोगों की धारणाएँ बहुत गहराई से जड़ें जमाए हैं; इतना ही नहीं, तुम मेरी इच्छा के प्रति कोई विचारशीलता नहीं दर्शाते। कुछ लोग कहेंगे, "तुम यह दावा कैसे कर सकते हो कि हम तुम्हारी इच्छा के प्रति कोई विचारशीलता नहीं दर्शाते? हम निरंतर तुम्हारी इच्छा को समझने का प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन हम कभी सफल नहीं होते—तो हमें क्या करना चाहिए? क्या तुम वास्तव में कह सकते हो कि हम कोई प्रयास नहीं करते?" मैं तुमसे यह पूछता हूँ : क्या तुम यह दावा करने की हिम्मत करोगे कि तुम सचमुच मेरे प्रति वफ़ादार हो? और कौन यह कहने की हिम्मत करता है कि वह पूर्ण निष्ठा के साथ खुद को मुझ पर अर्पित करता है? मुझे डर है कि तुम लोगों में से कोई भी यह नहीं कह सकता, क्योंकि, मेरे लिए यह कहना ज़रूरी नहीं, कि तुम लोगों में से प्रत्येक के अपने चुनाव हैं, अपनी पसंद हैं, और इससे भी अधिक, तुम्हारे अपने इरादे हैं। धोखेबाज़ मत बनो! मैंने तुम सब लोगों के अंतरतम विचारों की गहरी समझ बहुत पहले ही प्राप्त कर ली थी। क्या मुझे अभी भी इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता है? तुम्हें हर पहलू (तुम्हारे विचार और भाव, वह सब जो तुम कहते हो, हर शब्द, तुम्हारे उठाए हर कदम के पीछे निहित तुम्हारा प्रत्येक अभिप्राय और प्रेरणा) से और अधिक जाँच करनी चाहिए; इस तरह तुम हर पहलू में प्रवेश प्राप्त करोगे। साथ ही, तुम स्वयं को पूर्ण सत्य से युक्त कर सकोगे।

यदि मैं तुम लोगों को ऐसी चीजें नहीं बताता, तो तुम लोग अब भी संभ्रमित रहते, दिन भर शारीरिक सुखों की लालसा में डूबे रहते और मेरी इच्छा के लिए सोच-विचार की ज़रा भी चाह नहीं दर्शाते। मैं लगातार तुम लोगों को बचाने के लिए अपने स्नेहशील हाथ का उपयोग कर रहा हूँ। क्या तुम लोग यह जानते हो? क्या तुम लोगों को यह एहसास हो पाया है? मैं तुमसे ईमानदारी से प्यार करता हूँ। क्या तुममें हिम्मत है यह कहने की कि तुम भी मुझसे ईमानदारी से प्यार करते हो? बारंबार अपने आपसे यह पूछो : क्या तुम अपना प्रत्येक कार्यकलाप मेरे निरीक्षण के वास्ते प्रस्तुत करने के लिए सच्चे अर्थों में मेरे समक्ष आने में समर्थ हो? क्या तुम सचमुच मुझे अपने प्रत्येक कार्यकलाप की जाँच करने दे सकते हो? मैं कहता हूँ कि तुम लंपट हो, और तुम अपना बचाव करने के लिए कूद पड़ते हो। तुम पर मेरा न्याय आता है; अब तुम्हें सत्य के प्रति जाग्रत होना चाहिए! मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह सत्य है; मेरे वचन तुम्हारे भीतर की वास्तविक स्थिति बताते हैं। आह, मानवजाति! तुझसे निपटना बहुत मुश्किल है। जब मैं तुम्हारी वास्तविक

स्थिति बताता हूँ, केवल तभी तुम लोग पूरे दिल से वह स्वीकार करते हो, जो मैं कहता हूँ। अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो तुम लोग हमेशा अपने पुराने पड़ चुके विचारों से कसकर चिपके रहते और सोचने के अपने तरीकों से जकड़े रहते, यह मानते हुए कि पृथ्वी पर तुमसे अधिक होशियार कोई नहीं है। ऐसा करते हुए क्या तुम दंभी नहीं हो रहे हो? क्या तुम आत्म-संतोष और आत्म-तुष्टि में लिप्त और उद्दंड तथा अहंकारी नहीं हो रहे हो? तुम्हें अब तक यह पहचान लेना चाहिए! तुम्हें अपने को होशियार या असाधारण नहीं समझना चाहिए; इसके बजाय, तुम्हें अपनी कमियों और कमज़ोरियों से लगातार अवगत होना चाहिए। इस तरीके से, मुझे प्यार करने का तुम्हारा संकल्प कमज़ोर नहीं पड़ेगा, बल्कि अधिकाधिक मज़बूत होता जाएगा, और तुम्हारी अपनी स्थिति लगातार बेहतर होती जाएगी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि तुम्हारा जीवन दिन-प्रतिदिन और आगे बढ़ता जाएगा।

जब तुम मेरी इच्छा को समझने लगोगे, तो तुम अपने आपको जानने लगोगे, और इसके परिणामस्वरूप तुम मेरे बारे में बेहतर समझ प्राप्त करोगे और मेरे बारे में तुम्हारी निश्चितता और अधिक बढ़ जाएगी। वर्तमान में, यदि कोई मेरे बारे में नब्बे प्रतिशत निश्चितता प्राप्त नहीं कर सकता, बल्कि इसके बजाय कभी इधर और कभी उधर लुढ़कते हुए पल में माशा और पल में तोला होता रहता है, तो मैं कहूँगा कि वह ऐसा व्यक्ति हैं जिसे निश्चित रूप से निकाल फेंका जाएगा। शेष दस प्रतिशत पूरी तरह मेरी प्रबुद्धता और रोशनी के साथ रहते हैं; इनके साथ लोग मेरे बारे में शत-प्रतिशत निश्चितता प्राप्त कर सकते हैं। अभी—अर्थात् आज—इस प्रकार की कद-काठी कितने लोग प्राप्त कर सकते हैं? मैं अपनी इच्छा निरंतर तुम्हारे समक्ष प्रकट कर रहा हूँ और जीवन की अनुभूतियाँ निरंतर तुम्हारे भीतर प्रवाहित हो रही हैं। तो फिर तुम पवित्रात्मा के अनुरूप कार्य क्यों नहीं करते? क्या तुम गलतियाँ करने से डरते हो? यदि ऐसा है, तो फिर तुम प्रशिक्षण पर ध्यान क्यों नहीं देते? मैं तुमसे कहता हूँ कि लोग मात्र एक या दो बार आज़माकर मेरी इच्छा को नहीं समझ सकते; उन्हें एक प्रक्रिया से गुज़रना चाहिए। मैंने यह कई बार बताया है, तो फिर तुम इसे अभ्यास में क्यों नहीं लाते? क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम अवज्ञाकारी हो रहे हो? तुम सब-कुछ एक पल में समाप्त करने की कामना करते हो और तुम कभी किसी भी चीज़ के लिए न तो प्रयास करने और न ही समय व्यय करने के इच्छुक हो। तुम कितने मूर्ख हो और, इतना ही नहीं, तुम कितने अज्ञानी हो!

क्या तुम लोग नहीं जानते कि मैं हमेशा शब्दों को चबा-चबाकर बोले बिना चीज़ों के बारे में बात कर रहा हूँ? तुम लगातार कुंद, सुन्न और मंदबुद्धि क्यों बने रहते हो? तुम्हें अपने आपको अधिक जाँचना

चाहिए, और यदि ऐसी कोई बात है जो तुम्हें समझ नहीं आती, तो तुम्हें मेरे पास बार-बार आना चाहिए। मैं तुम्हें यह बताता हूँ : मेरे इस तरह से या उस तरह से बोलने का उद्देश्य यह है कि तुम लोगों को अपने समक्ष लेकर आ सकूँ। इतने लंबे समय के बाद भी तुम लोगों को अब भी इसका एहसास क्यों नहीं होता? क्या ऐसा इसलिए है कि मेरे वचनों ने तुम लोगों को पूरी तरह हक्का-बक्का कर दिया है? या ऐसा इसलिए है कि तुम लोगों ने मेरे वचनों में से किसी एक भी वचन को गंभीरता से नहीं लिया है? जब तुम लोग उन्हें पढ़ते हो, तो तुम अपने बारे में अच्छा ज्ञान प्राप्त करते हो, और तुम इसी तरह की चीज़ें कहते चले जाते हो कि तुम मेरे ऋणी हो और मेरी इच्छा को समझ नहीं सकते। परंतु फिर इसके बाद के बारे में क्या? यह ऐसा है, मानो इन चीज़ों के साथ तुम्हारा कुछ लेना-देना ही नहीं है; मानो तुम ऐसे व्यक्ति हो ही नहीं, जो परमेश्वर में विश्वास करता है। क्या तुम स्वयं को जानकारी पचाने का समय दिए बिना उसे केवल भकोसते नहीं जा रहे हो? जब तुम मेरे वचनों का आनंद लेते हो, तो ऐसा लगता है मानो तुम घोड़े की पीठ पर सवार सरपट दौड़ते हुए फूलों की एक सरसरी झलक भर पा रहे हो; तुम मेरे वचनों से यह समझने की कोशिश वास्तव में कभी नहीं करते कि मेरी इच्छा क्या है। लोग ऐसे होते हैं : वे हमेशा विनम्र दिखना पसंद करते हैं। ऐसे लोग ही सबसे घृणास्पद प्रकार के लोग होते हैं। जब वे दूसरों के साथ संगति के लिए एक-साथ इकट्ठा होते हैं, तब वे हमेशा अपना ज्ञान अन्य लोगों के साथ साझा करना पसंद करते हैं, ताकि दूसरों को यह दिखा सकें कि वे ऐसे व्यक्ति हैं, जो मेरे भार के लिए सोच-विचार दर्शाते हैं—जबकि वास्तविकता में, वे मूर्खों में भी सबसे मूर्ख हैं। (वे अपने भाइयों और बहनों के साथ मेरे बारे में अपनी सच्ची अंतर्दृष्टियों या ज्ञान के बारे में संगति नहीं करते; इसके बजाय वे अपना प्रदर्शन करते हैं और दूसरे लोगों के सामने दिखावा करते हैं; मैं ऐसे लोगों से सबसे अधिक घृणा करता हूँ, क्योंकि वे मेरा तिरस्कार करते हैं और मुझे नीचा दिखाते हैं।)

मैं अक्सर अपने महानतम चमत्कार तुम लोगों में प्रकट करता हूँ। क्या तुम लोग उन्हें देख नहीं सकते? तथाकथित "वास्तविकता" उन लोगों द्वारा जी जाती है, जो ईमानदारी से मुझसे प्यार करते हैं। क्या तुम लोगों ने यह देखा नहीं है? क्या यह सबसे अच्छा प्रमाण नहीं है, जिसके माध्यम से तुम लोग मुझे जान सकते हो? क्या यह मेरे लिए बेहतर गवाही नहीं देता? और फिर भी तुम लोग इसे नहीं पहचानते। मुझे बताओ : कौन है जो इस गंदी, मैली, शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दी गई स्वेच्छाचारी पृथ्वी पर वास्तविकता को जी सकता है? क्या सभी मनुष्य भ्रष्ट और खोखले नहीं हैं? कुछ भी हो, मेरे वचन अपने शिखर पर पहुँच गए हैं;

कोई भी वचन इनसे अधिक आसानी से नहीं समझे जा सकते। यहाँ तक कि कोई निरा मूर्ख भी मेरे वचनों को पढ़ और समझ सकता है—तो क्या बस ऐसा नहीं है कि तुम लोगों ने पर्याप्त प्रयास ही नहीं किया है?

अध्याय 64

तुम्हें मेरे वचनों को तोड़-मरोड़कर या भ्रामक तरीके से नहीं समझना चाहिए; तुम्हें उन्हें सभी पहलुओं से समझना चाहिए और उन्हें और ज्यादा गहराई से समझने के लिए उन पर बार-बार विचार करने की कोशिश करनी चाहिए, सिर्फ एक दिन या एक रात के लिए नहीं। तुम नहीं जानते कि मेरी इच्छा कहाँ निहित है या मैंने किन पहलुयों से अपने परिश्रम का मूल्य चुकाया है; तुम मेरी इच्छा के प्रति विचारशीलता कैसे दिखा सकते हो? तुम लोग ऐसे ही हो; तुम विस्तार में जाने में असमर्थ रहते हो, केवल ऊपरी बातों पर ध्यान देते हो और केवल नकल कर सकते हो। इसे आध्यात्मिकता कैसे कहा जा सकता है? यह केवल मनुष्य का उत्साह है, यह ऐसी चीज है जिसकी मैं सराहना नहीं करता हूं, और इससे भी बढ़कर यह ऐसी चीज है जिससे मैं घृणा करता हूं। मैं तुमसे यह कहता हूं : जिन चीजों से मैं घृणा करता हूं उन सबको मिटा देना होगा, उन्हें आपदाओं में फंसे रहना होगा, और उन्हें मेरे ताप और मेरे न्याय की प्रक्रिया से गुजरना होगा। अन्यथा लोग नहीं जान पाएंगे कि "डर" का अर्थ क्या है और वे बहुत दूषित रहेंगे, हमेशा मुझे मनुष्य की आंखों से देखेंगे—वे कितने मूर्ख हैं! मेरे करीब आना और मेरे साथ संवाद करना शैतान के विचारों से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा तरीका है। मेरी इच्छा है कि तुम सभी इस नियम के अनुसार चलो, ताकि तुम जीवन में न्याय की प्रक्रिया से गुजरने और क्षति भुगतने से बच सको।

मनुष्यों से निपटना बहुत मुश्किल है, वे हमेशा बाहरी लोगों, घटनाओं, और चीजों के नियंत्रण में और अपनी खुद की धारणाओं के नियंत्रण में रहते हैं, जिसकी वजह से वे मेरे लिए अच्छे गवाह नहीं बन पाते, और मेरे साथ सहयोग नहीं कर पाते। मैं निरंतर तुम लोगों की सहायता और देखभाल करता हूं, फिर भी तुम मेरे साथ सहयोग करने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश नहीं कर पाते हो। ये सभी चीजें मेरे प्रति तुम्हारी समझ की कमी को दर्शाती हैं। जब समय आएगा और तुम्हें मेरे बारे में कोई संदेह नहीं रहेगा, तो कोई भी तुम्हारे सही रास्ते पर चलने में बाधा नहीं डाल सकेगा, और कोई भी मानवीय धारणा तुम्हें रोक नहीं पाएगी। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं? क्या तुम सचमुच मेरे कथनों का अर्थ समझते हो? सिर्फ तब जब मैं इस तरह के वचनों को स्पष्ट करता हूं, तुम लोग थोड़ी समझ हासिल कर पाते हो। लोग बहुत बेवकूफ़ हैं

और उनका मस्तिष्क भी उतना ही कमजोर है। जब सुई हड्डी में चुभती है, केवल तभी उन्हें थोड़ा दर्द महसूस होता है। यानी, जब मेरे वचन तुम्हारी बीमरी के स्रोत की ओर संकेत करते हैं, केवल तभी तुम पूरी तरह से आश्वस्त हो पाते हो। फिर भी, कभी-कभी तुम लोग मेरे वचनों को अभ्यास में लाने के इच्छुक नहीं होते, या स्वयं को जानना नहीं चाहते। इस बिंदु पर, ऐसा क्यों है कि तुम लोग अभी तक भी यह नहीं समझ पाए हो कि मनुष्य से निपटना कितना मुश्किल है? क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे वचन इतने स्पष्ट या पारदर्शी नहीं हैं? मैं चाहता हूं कि तुम लोग मेरे साथ ईमानदारी से और तहेदिल से सहयोग करो; भले ही तुम कानों को मीठे लगने वाले शब्द बोलते हो या नहीं, जब तक तुम मेरे साथ सहयोग करने के इच्छुक हो और सच्चे दिल से मेरी आराधना कर सकते हो, तुम मेरी सुरक्षा में रहोगे। भले ही इस तरह के व्यक्ति बहुत अज्ञानी हों, मैं उन्हें प्रबुद्ध करूंगा ताकि वे अपनी अज्ञानता को दूर कर सकें। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे कार्य मेरे वचनों के अनुरूप ही होते हैं; मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं, जो कभी ऐसा वादा नहीं करता जिसे वह पूरा न कर सके।

मैं अपनी इच्छा तुरंत सभी कलीसियाओं और सभी ज्येष्ठ पुत्रों के लिए प्रकट कर दूँगा, और फिर कभी भी कुछ छिपा नहीं रह जाएगा, क्योंकि सब कुछ प्रकट करने का दिन करीब आ गया है। कहने का मतलब यह है कि अब से "छिपा" शब्द का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा, अब कोई भी चीज छिपी नहीं रह जाएगी। सभी छिपे हुए लोगों, घटनाओं और चीजों को एक-एक करके उजागर किया जाएगा। मैं एक बुद्धिमान परमेश्वर हूं जो पूर्ण अधिकार रखता है। सभी घटनाएं, सभी चीजें, और हर व्यक्ति मेरे हाथों में है। मैं उन्हें उजागर करने के लिए अपने खुद के कदम उठाता हूं और मैं उन्हें एक-एक करके व्यवस्थित तरीके से उजागर करूंगा। जहाँ तक उनकी बात है जो मुझे फुसलाने या मुझसे कुछ छुपाने की हिम्मत करते हैं, मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि वे फिर कभी भी दोबारा न उठें। मैं इस तरह से कार्रवाई करूंगा कि यह तुम लोगों के सामने स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप में हो। ध्यान से देखो! मैंने परिश्रम का जो मूल्य चुकाया है वह व्यर्थ नहीं गया, बल्कि इसका फल मिलेगा। जो कोई भी मेरी बात नहीं सुनता या उसका पालन नहीं करता, वह तुरंत मेरे न्याय का सामना करेगा। मेरे विरुद्ध जाने की अभी भी किसकी हिम्मत है? तुम सभी को मेरी आज्ञा माननी होगी। मैं तुमसे यह कहना चाहता हूं : मैं जो भी कहता और करता हूं, और आज का मेरा हर कदम, हर विचार, हर सोच और इरादा पूरी तरह से सही है, और वे मनुष्य के लिए और आगे विचार करने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ते हैं। मैं तुम लोगों से बार-बार क्यों कहता हूं कि तुम्हें बस अनुसरण करने की

आवश्यकता है और अब इसके बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है? इसका यह कारण है : क्या मुझे अभी भी इसे स्पष्ट करके तुम्हें समझाने की आवश्यकता है?

तुम लोगों की धारणाएं तुम पर कब्जा जमाए हुए हैं, फिर भी तुम लोग यह नहीं सोचते हो कि ऐसा इसलिए है क्योंकि तुमने स्वयं पर्याप्त प्रयास नहीं किया है, इसकी बजाय तुम कारणों के लिए मेरी ओर देखते हो, और कहते हो कि मैंने तुम्हें प्रबुद्ध नहीं किया है—यह किस तरह की बात है? तुम खुद कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेते हो, और हमेशा मुझसे शिकायत करते हो। मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ! यदि तुम इसी तरह चलते रहे, और तुमने कोई कीमत न चुकाना जारी रखा, तो तुम्हें त्याग दिया जाएगा! मैं तुम लोगों को डराने के लिए दिन भर बड़ी-बड़ी बातें नहीं करता हूं। यह वास्तव में एक तथ्य है : मैं जो कहता हूं वह करता हूं। जैसे ही मेरे वचन मेरे मुंह से निकलते हैं, वे तुरंत पूरे होने लगते हैं। पहले, मैं जो वचन बोलता था वे धीरे-धीरे पूरे होते थे। लेकिन अब चीजें अलग हैं, और वे अब धीरे-धीरे नहीं होंगी। स्पष्ट रूप से कहा जाए, तो मैं अब समझाऊंगा और मनाऊंगा नहीं, इसकी बजाय मैं तुम लोगों को हांकूँगा और बाध्य करूंगा। इससे भी सीधे शब्दों में कहा जाए तो, जो लोग साथ रह सकते हैं, वे रहेंगे; जो लोग साथ नहीं रह सकते हैं और साथ नहीं चल सकते हैं, उन्हें हटा दिया जाएगा। मैं तुम लोगों से यथासंभव धैर्यपूर्वक बात किया करता था, लेकिन तुम लोगों ने इसे कभी नहीं सुना। अब जब कार्य इस चरण तक जारी है, तो तुम लोग क्या करोगे? क्या तुम स्वयं में लिप्त रहना जारी रखोगे? ऐसे लोगों को पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, उन्हें निश्चित रूप से मेरे द्वारा हटा दिया जाएगा!

अध्याय 65

मेरे वचन हमेशा तुम लोगों की कमजोरियों पर चोट कर रहे हैं, यानी वे तुम लोगों की घातक कमज़ोरियों की ओर संकेत करते हैं, वरना तुम लोग अभी भी एड़ियाँ घसीट रहे होते, और तुम लोगों को यह अंदाज़ा भी नहीं होता कि अभी क्या समय है। यह जान लो! मैं तुम लोगों को बचाने के लिए प्रेम के तरीके का उपयोग करता हूँ। तुम लोग चाहे जैसे कार्य करो, मैं निश्चित रूप से वे चीज़ें पूरी करूँगा, जिन्हें मैंने अनुमोदित किया है, और किसी तरह की कोई ग़लती नहीं करूँगा। क्या मैं, धार्मिक सर्वशक्तिमान परमेश्वर, कोई ग़लती कर सकता हूँ? क्या यह मनुष्य की धारणा नहीं है? मुझे बताओ : क्या मैं जो कुछ भी करता और कहता हूँ, वह तुम लोगों के लिए नहीं है? कुछ लोग विनम्रतापूर्वक कहेंगे : "हे परमेश्वर! तू सब-

कुछ हमारे लिए करता है, लेकिन हम नहीं जानते कि तेरे साथ सहयोग करने के लिए हम किस तरह कार्य करें।" ऐसी अज्ञानता! तुम यह तक कहते हो कि तुम नहीं जानते कि मेरे साथ कैसे सहयोग करो! ये सब शर्मनाक झूठ हैं! यह देखते हुए कि तुम लोगों ने इस तरह की बातें कही हैं, वास्तव में तुम बार-बार देह के प्रति इतनी विचारशीलता क्यों दर्शाते हो? तुम्हारे शब्द सुनने में अच्छे लगते हैं, लेकिन तुम एक सरल और सुखद तरीके से कार्य नहीं करते। तुम्हें यह समझना चाहिए : मैं आज तुम लोगों से अधिक अपेक्षाएँ नहीं करता, न ही मेरी अपेक्षाएँ तुम्हारी समझ के बाहर हैं, बल्कि उन्हें मनुष्यों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। मैं तुम लोगों को ज़रा भी अधिक नहीं आँकता। क्या मैं मनुष्य की क्षमताओं की सीमा से अवगत नहीं हूँ? मुझे इसकी पूर्णतया स्पष्ट समझ है।

मेरे वचन निरंतर तुम लोगों को प्रबुद्ध करते हैं, लेकिन तुम लोगों के हृदय बहुत कठोर हैं, और तुम लोग अपनी आत्माओं में मेरी इच्छा को समझने में असमर्थ हो! मुझे बताओ : मैंने तुम लोगों को कितनी बार याद दिलाया है कि भोजन, कपड़े और अपने रंग-रूप पर ध्यान केंद्रित मत करो, बल्कि इसके बजाय अपने आंतरिक जीवन पर ध्यान केंद्रित करो? लेकिन तुम लोग बस सुनते ही नहीं हो। मैं बोल-बोलकर थक गया हूँ। क्या तुम लोग इतने सुन्न हो गए हो? क्या तुम पूरी तरह संवेदनहीन हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरे वचन व्यर्थ में कहे गए हैं? क्या मैंने कुछ ग़लत कहा है? मेरे पुत्रो! मेरे निष्कपट इरादों के प्रति विचारशील बनो! जब तुम लोगों का जीवन परिपक्व हो जाएगा, तो फिर चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी, और सब-कुछ प्रदान किया जाएगा। अभी उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने का कोई महत्व नहीं है। मेरा राज्य पूरी तरह से साकार हो गया है और वह सार्वजनिक रूप से दुनिया में उतर आया है; यह इस बात का और भी अधिक द्योतक है कि मेरा न्याय पूरी तरह से आ चुका है। क्या तुमने इसका अनुभव किया है? मुझे तुम लोगों का न्याय करना अच्छा नहीं लगता, लेकिन तुम लोग मेरे हृदय के प्रति बिलकुल भी विचारशीलता नहीं दर्शाते। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग निर्मम न्याय के बजाय लगातार मेरे प्रेम की देखरेख और सुरक्षा प्राप्त करो। क्या ऐसा हो सकता है कि तुम लोग न्याय किए जाने के इच्छुक हो? यदि नहीं, तो तुम क्यों बार-बार मेरे पास नहीं आते, मेरे साथ संगति नहीं करते, और मेरे साथ संबंध नहीं रखते? तुम मेरे साथ इतना उदासीनताभरा व्यवहार करते हो, लेकिन जब शैतान तुम्हें विचार देता है, तो तुम यह सोचते हुए कि वे तुम्हारी इच्छा से मेल खाते हैं, उल्लसित महसूस करते हो—लेकिन तुम मेरे वास्ते कुछ नहीं करते। क्या तुम हमेशा मेरे साथ इतनी ही क्रूरता से व्यवहार करने की इच्छा रखते हो?

ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें देना नहीं चाहता, बल्कि बात यह है कि तुम लोग कीमत चुकाने को तैयार नहीं हो। इसलिए तुम लोगों के हाथ खाली हैं, उनमें कुछ भी नहीं है। क्या तुम लोगों को दिखाई नहीं देता कि पवित्र आत्मा का कार्य कितनी शीघ्रता से चल रहा है? क्या तुम लोगों को दिखाई नहीं देता कि मेरा दिल चिंता से जलता है? मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि मेरे साथ सहयोग करो, लेकिन तुम लोग अनिच्छुक रहते हो। एक के बाद एक सभी तरह की आपदाएँ आ पड़ेंगी; सभी राष्ट्र और स्थान आपदाओं का सामना करेंगे : हर जगह महामारी, अकाल, बाढ़, सूखा और भूकंप आएँगे। ये आपदाएँ सिर्फ एक-दो जगहों पर ही नहीं आएँगी, न ही वे एक-दो दिनों में समाप्त होंगी, बल्कि इसके बजाय वे बड़े से बड़े क्षेत्र तक फैल जाएँगी, और अधिकाधिक गंभीर होती जाएँगी। इस दौरान, एक के बाद एक सभी प्रकार की कीट-जनित महामारियाँ उत्पन्न होंगी, और हर जगह नरभक्षण की घटनाएँ होंगी। सभी राष्ट्रों और लोगों पर यह मेरा न्याय है। मेरे पुत्रो! तुम लोगों को आपदाओं की पीड़ा या कठिनाई नहीं भुगतनी चाहिए। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग शीघ्र वयस्क हो जाओ और जितनी जल्दी हो सके, मेरे कंधों का बोझ उठा लो। तुम लोग मेरी इच्छा क्यों नहीं समझते? आगे का काम अधिकाधिक दुरूह होता जाएगा। क्या तुम लोग इतने निष्ठुर हो कि सारा काम मेरे हाथों में रहने देकर, मुझे अकेले इतना कठिन काम करने के लिए छोड़ रहे हो? मैं स्पष्ट कहता हूँ : जिनके जीवन परिपक्व होंगे, वे शरण में लिए जाएँगे और वे पीड़ा या कठिनाई का सामना नहीं करेंगे; जिनके जीवन परिपक्व नहीं होंगे, उन्हें पीड़ा और नुकसान भुगतना पड़ेगा। मेरे वचन पर्याप्त स्पष्ट हैं, है न?

मेरा नाम सभी दिशाओं में और सभी स्थानों तक फैलना चाहिए, ताकि हर कोई मेरे पवित्र नाम को और मुझे जान सके। अमेरिका, जापान, कनाडा, सिंगापुर, सोवियत संघ, मकाऊ, हांगकांग और अन्य देशों से जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग सच्चे मार्ग की खोज में तुरंत चीन में जमा हो जाएँगे। उनके सामने मेरे नाम की गवाही पहले ही दी जा चुकी है; बस तुम लोगों का जितनी जल्दी हो सके, परिपक्व होना बाकी है, ताकि तुम उनकी चरवाही और अगुआई कर सको। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अभी और काम करना बाकी है। आपदाओं के परिणामस्वरूप मेरा नाम व्यापक रूप से फैलेगा, और यदि तुम लोग सजग नहीं रहे, तो तुम लोग अपने हक़ के हिस्से को गँवा दोगे। क्या तुम्हें डर नहीं लगता? मेरा नाम सभी धर्मों, जीवन के सभी क्षेत्रों, सभी राष्ट्रों और सभी संप्रदायों तक फैला है। यह मेरा कार्य है जो, निकट संयोजन में, व्यवस्थित तरीके से किया जा रहा है; यह सब मेरी बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्था द्वारा होता है। मैं केवल यही चाहूँगा कि तुम

लोग मेरे पदचिह्नों का निकटता से अनुसरण करते हुए हर कदम पर आगे बढ़ने में सक्षम रहो।

अध्याय 66

मेरा कार्य इस चरण तक जारी रहा है और इस समूचे कार्य ने मेरे हाथों की बुद्धिमानी भरी व्यवस्थाओं का अनुसरण किया है, और यह सब मेरी एक बड़ी सफलता भी रहा है। मनुष्य के बीच ऐसा कौन है जो ऐसी कोई चीज कर सकता है? बल्कि इसकी बजाय क्या वे मेरे प्रबंधन को बाधित नहीं करते हैं? फिर भी, तुम्हें पता होना चाहिए कि ऐसा कोई तरीका नहीं है कि मेरे कार्य को कोई दूसरा मेरी जगह कर सके, इसमें बाधा डालना तो दूर की बात है, क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो वह कह सके जो मैं कहता हूँ, या जो वह कर सके जो मैं करता हूँ। यद्यपि यह मामला है, फिर भी लोग मुझे—बुद्धिमान सर्वशक्तिमान परमेश्वर को—नहीं जानते हैं! बाहर से तुम लोग खुलकर मेरा विरोध करने की हिम्मत नहीं करते हो, मगर अपने हृदय और मस्तिष्क में मेरा विरोध करते हो। मूर्खो! क्या तुम नहीं जानते कि मैं ही वह परमेश्वर हूँ जो मनुष्य के अंतर्तम हृदय को देखता है? क्या तुम नहीं जानते हो कि मैं तुम्हारी हर कथनी और करनी को देखता हूँ? मैं तुमसे कहता हूँ, मैं दोबारा कभी भी अपने होंठों से नम्र वचन नहीं कहूँगा। इसकी बजाय, वे सभी कठोर न्याय के वचन होंगे, और मैं देखूँगा कि तुम उन्हें सहन कर सकते हो या नहीं। अब आगे से, जिनके हृदय मेरे नज़दीक नहीं हैं, अर्थात् जो सच्चे हृदय से मुझे प्रेम नहीं करते हैं, ये वे लोग हैं जो खुलेआम मेरा अनादर करते हैं।

आज, पवित्र आत्मा का कार्य उस स्थिति तक पहुँच गया है जहाँ पिछली विधि का उपयोग अब और नहीं किया जाएगा, बल्कि इसकी बजाय अब एक नई विधि लागू की जा रही है। जो लोग मेरे साथ सकारात्मक और सक्रिय रूप से सहयोग नहीं करेंगे वे मृत्यु की खाई, अधोलोक, में जा गिरेंगे (और ये लोग हमेशा नरक-वास भुगतेंगे)। नई विधि इस प्रकार है : यदि तुम्हारा हृदय और मस्तिष्क सही नहीं हैं, तो मेरा न्याय तुरंत तुम पर टूट पड़ेगा। इसमें दुनिया, संपत्ति, परिवार, पति, पत्नी, बच्चे, माता-पिता, खान-पान, कपड़े और ऐसी हर चीज जो आध्यात्मिक दुनिया का हिस्सा नहीं है, से चिपके रहना शामिल है। संतों की प्रबुद्धता दिनोदिन अधिक दिखाई देने लगेगी, अर्थात्, जीवन की भावनाएँ और अधिक स्पष्ट हो जाएंगी और निरंतर गतिशील रहेंगी। जो कोई मामूली-सी भी बाधा उत्पन्न करेगा, वह विनाशकारी पतन को भुगतेगा और जीवन के मार्ग पर बहुत पीछे छूट जाएगा। जो लोग उदासीन रवैया अपनाते हैं, जो भक्ति के साथ

खोज नहीं करते हैं, मैं बिना किसी अपवाद के उनका पूरी तरह से परित्याग कर दूँगा और उन सभी को अनदेखा कर दूँगा। वे एक हज़ार साल तक आपदाओं में दिन काटेँगे। जो लोग उत्साहपूर्वक खोज करते हैं, अर्थात्, जो हमेशा बाधा डालते हैं, मैं उनकी अज्ञानता को दूर कर दूँगा और उन्हें अपने प्रति वफादार बना दूँगा। साथ ही, उन्हें बुद्धि और सूझबूझ प्राप्त होगी, और इस तरह वे और अधिक आस्था के साथ खोज करेंगे। मैं अपने सभी ज्येष्ठ पुत्रों पर अपने आशीषों को दुगना कर देता हूँ और तुम लोगों को मेरा प्यार हर समय मिलता है। मैं तुम लोगों की देखभाल और रक्षा करता हूँ और मैं तुम लोगों को शैतान के जाल में नहीं फँसने दूँगा। मैंने सभी लोगों के बीच अपने कार्य की शुरुआत कर दी है, अर्थात्, मैंने एक अन्य कार्य परियोजना जोड़ दी है। ये वे लोग हैं जो एक हजार साल तक मसीह को सेवा प्रदान करेंगे, और लोग भारी संख्या में मेरे राज्य का रुख करेंगे।

मेरे पुत्रो, तुम लोगों को अपने अभ्यास को और प्रखर करना चाहिए। तुम लोगों के लिए बहुत-सा कार्य प्रतीक्षा कर रहा है जिसका तुम्हें जिम्मा उठाना है और उसे पूरा करना है। मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि तुम लोग जल्दी से परिपक्व बनो, ताकि तुम उस कार्य को पूरा करो जो मैंने तुम लोगों को सौंपा है। यह तुम लोगों की पवित्र ज़िम्मेदारी है, और ऐसा कर्तव्य है जो तुम लोगों में से उनके द्वारा किया जाना चाहिए जो मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं। मैं पथ के अंत तक पहुँचने तक तुम लोगों की रक्षा करूँगा और तुम लोगों को सुरक्षित रखूँगा, ताकि तुम लोग मेरे साथ हमेशा परम आनंद का अनुभव कर सको! तुम लोगों में से हरेक को इस तथ्य का परिज्ञान होना चाहिए कि मैंने कई बलिदानों और कई पर्यावरणों की व्यवस्था की है, ताकि तुम लोग पूर्ण बनाए जा सको। तुम लोग जानते हो कि ये सभी मेरे आशीष हैं, जानते हो न? तुम सभी लोग मेरे प्यारे पुत्र हो। जब तक तुम लोग ईमानदारी से मुझे प्यार करोगे, मैं तुम लोगों में से एक को भी नहीं त्यागूँगा, यद्यपि यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम लोग मेरे साथ समरसता से सहयोग करने में सक्षम हो या नहीं।

अध्याय 67

मेरे पुत्र खुले में और सभी लोगों के सामने दिखाई देते हैं। मैं उन लोगों को गंभीर रूप से ताड़ना दूँगा, जो खुले आम उनका अनादर करने का साहस करते हैं; यह निश्चित है। आज, जो लोग उठकर कलीसिया की चरवाही करने में सक्षम हैं, उन्होंने मेरे ज्येष्ठ पुत्र की हैसियत प्राप्त कर ली है, और अब वे महिमा में मेरे

साथ हैं—जो कुछ मेरा है, वह तुम लोगों का भी है। जो लोग ईमानदारी से मेरे प्रति समर्पण करते हैं, मैं उन सभी को प्रचुर मात्रा में अपना अनुग्रह प्रदान करता हूँ, ताकि तुम शक्तिशाली बन सको, जिनमें अन्य मनुष्यों से अधिक शक्ति हो। मेरी इच्छा अपनी समग्रता में तुम लोगों, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के ऊपर है, और मैं केवल यही चाहता हूँ कि जितनी जल्दी हो सके, तुम लोग परिपक्व हो जाओ और उसे पूरा करो, जो मैंने तुम्हें सौंपा है। यह जान लो! जो मैं तुम लोगों को सौंपता हूँ, वह मेरी प्रबंधन योजना की अंतिम परियोजना है। मैं केवल यही आशा करता हूँ कि तुम लोग अपने पूरे हृदय, मन और शक्ति के साथ अपना पूरा अस्तित्व मुझे अर्पित कर सको, और मेरे लिए पूर्ण रूप से इन्हें खपा सको। समय वास्तव में किसी भी मनुष्य की प्रतीक्षा नहीं करता, और कोई भी व्यक्ति, घटना या चीज़ मेरे कार्य में बाधा नहीं डाल सकती। यह जान लो! मेरा कार्य हर कदम पर बिना किसी अवरोध के सुचारु रूप से आगे बढ़ता है।

मेरे पदचिह्न पूरे ब्रह्मांड में और पृथ्वी के सिरों तक जाते हैं, मेरी आँखें लगातार हर व्यक्ति की जाँच करती हैं, और इससे भी अधिक, मैं ब्रह्मांड को पूरा देखता हूँ। मेरे वचन वास्तव में ब्रह्मांड के हर कोने में कार्य कर रहे हैं। जो कोई भी मेरे लिए सेवा प्रदान नहीं करने का साहस करता है, जो कोई भी मेरे प्रति वफ़ादार नहीं होने का साहस करता है, जो कोई भी मेरे नाम की आलोचना करने का साहस करता है, और जो कोई भी मेरे पुत्रों को बुरा-भला कहने और उनकी बदनामी करने का साहस करता है—जो वास्तव में इन चीज़ों को करने में सक्षम हैं, उन्हें कठोर न्याय से गुज़रना ही होगा। मेरा न्याय अपनी पूरी समग्रता में पड़ेगा, जिसका अर्थ है कि अब न्याय का युग है, और सतर्क अवलोकन से तुम पाओगे कि मेरा न्याय पूरे ब्रह्मांड की दुनिया में फैला हुआ है। निस्संदेह, मेरा घर भी नहीं छूटेगा; जिनके विचार, शब्द और कार्यकलाप मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं हैं, उनका न्याय किया जाएगा। इसे समझो! मेरा न्याय समस्त ब्रह्मांड की दुनिया पर निर्देशित है, लोगों या चीज़ों के एक समूह मात्र पर नहीं। क्या तुम इसे समझ रहे हो? यदि भीतर से तुम अपने विचारों में मुझे लेकर दुविधा में हो, तो अंदर से तुरंत तुम्हारा न्याय किया जाएगा।

मेरा न्याय सभी आकारों और रूपों में आता है। यह जान लो! मैं ब्रह्मांड की दुनिया का अद्वितीय और बुद्धिमान परमेश्वर हूँ! कुछ भी मेरे सामर्थ्य से परे नहीं है। मेरे सभी न्याय तुम लोगों पर प्रकट किए जाते हैं : यदि तुम अपने विचारों में मुझे लेकर दुविधा में हो, तो एक चेतावनी के रूप में मैं तुम्हें प्रबुद्ध करूँगा। यदि तुम नहीं सुनोगे, तो मैं तुरंत तुम्हें त्याग दूँगा (इसमें मैं अपने नाम पर संदेह करने को नहीं, बल्कि दैहिक सुखों से संबंधित बाहरी व्यवहारों को संदर्भित कर रहा हूँ)। यदि मेरे प्रति तुम्हारे विचार अवज्ञापूर्ण हैं, यदि

तुम मुझसे शिकायत करते हो, यदि तुम शैतान के विचारों को बार-बार स्वीकार करते हो, और यदि तुम जीवन की भावनाओं का अनुसरण नहीं करते, तो तुम्हारी आत्मा अँधेरे में रहेगी और तुम्हारी देह पीड़ा भुगतेगी। तुम्हें मेरे करीब आना चाहिए। तुम संभवत: केवल एक या दो दिनों में ही अपनी सामान्य स्थिति बहाल करने में असमर्थ रहोगे, और तुम्हारा जीवन स्पष्ट रूप से बहुत पीछे रह जाएगा। जो लोग वाणी से स्वच्छंद हैं, मैं तुम लोगों के मुँह और ज़बान को अनुशासित कर दूँगा और तुम्हारी ज़बान का निपटारा करवा दूँगा। जो लोग कर्म में असंयमित रूप से स्वच्छंद हैं, मैं तुम लोगों को तुम्हारी आत्मा में चेतावनी दूँगा, और जो लोग नहीं सुनेंगे, उन्हें गंभीर रूप से ताड़ना दूँगा। जो लोग खुले आम मेरी आलोचना और अवज्ञा करते हैं, जो वचन या कर्म से अवज्ञा प्रदर्शित करते हैं, मैं उन्हें पूरी तरह से हटा दूँगा और उनका त्याग कर दूँगा, उनके नष्ट होने और उनके उच्चतम आशीषों के खोने का कारण बनूँगा; ये वे लोग हैं, जो चुने जाने के बाद हटा दिए जाएँगे। जो लोग अज्ञानी हैं, अर्थात्, जिनकी दृष्टि स्पष्ट नहीं है, मैं फिर भी उन्हें प्रबुद्ध करूँगा और बचाऊँगा; लेकिन जो लोग सत्य को समझते हैं, परंतु फिर भी उसका अभ्यास नहीं करते, उन्हें पूर्वोक्त नियमों के अनुसार प्रशासित किया जाएगा, चाहे वे अज्ञानी हों या न हों। जहाँ तक उन लोगों की बात है, जिनके इरादे शुरू से ही ग़लत हैं, मैं उन्हें हमेशा के लिए वास्तविकता को समझने में असमर्थ बना दूँगा और अंततः वे धीरे-धीरे, एक-एक करके, समाप्त कर दिए जाएँगे। एक भी नहीं बचेगा, हालाँकि वे अभी मेरी व्यवस्था के अनुसार बने हुए हैं (क्योंकि मैं चीज़ों को जल्दबाज़ी में नहीं, बल्कि व्यवस्थित ढंग से करता हूँ)।

मेरा न्याय पूरी तरह से प्रकट है; यह विभिन्न लोगों को संबोधित करता है, उन सबको अपने उचित स्थान ले लेने चाहिए। मैं लोगों का प्रशासन और न्याय उनके द्वारा तोड़े गए नियमों के अनुसार करूँगा। जहाँ तक उनकी बात है, जो इस नाम में नहीं हैं और जो अंत के दिनों के मसीह को स्वीकार नहीं करते, उन पर केवल एक ही नियम लागू होता है : जो कोई मेरी अवज्ञा करेंगे, मैं तुरंत उनकी आत्मा, जीव और देह ले लूँगा और उन्हें अधोलोक में फेंक दूँगा; जो मेरी अवज्ञा नहीं करते, मैं दूसरा न्याय करने से पहले तुम लोगों के परिपक्व होने की प्रतीक्षा करूँगा। मेरे वचन हर चीज़ पूरी स्पष्टता के साथ समझाते हैं और कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। मैं केवल यह आशा करता हूँ कि तुम लोग हर समय उन्हें ध्यान में रखने में सक्षम होगे!

अध्याय 68

मेरा वचन हर देश, स्थान, राष्ट्र और संप्रदाय में कार्यान्वित किया जा रहा है और हर कोने में हर समय यह पूरा हो रहा है। हर जगह होने वाली आपदाएँ लोगों के बीच के युद्ध नहीं हैं, न ही वे हथियारों से लड़ी जा रही लड़ाइयाँ हैं। इसके बाद, अब और युद्ध नहीं होंगे। सभी मेरी मुट्ठी में हैं। सब मेरे न्याय का सामना करेंगे और आपदा के बीच दिन काटेंगे। जो लोग मेरा विरोध करते हैं, साथ ही जो मेरे साथ सहयोग करने की पहल नहीं करते, उन्हें विभिन्न आपदाओं की पीड़ा भुगतने दो; उन्हें अनंत काल तक रोने और अपने दाँतों को पीसने दो, हमेशा के लिए अंधकार में रहने दो। वे जीवित नहीं बचेंगे। मैं स्पष्टवादिता और फुर्ती के साथ कार्य करता हूँ और इस बात पर विचार नहीं करता हूँ कि तुम अतीत में मेरे प्रति कितना वफ़ादार रहे हो; जब तक तुम मेरा विरोध करोगे, तो ज़रा सी, यहाँ तक कि एक पल की भी देरी के बिना, ज़रा सी भी दया के बिना मेरे न्याय का हाथ तेज़ी से तुम पर कोप बरसाएगा। मैं निरंतर कहता रहा हूँ कि मैं वह परमेश्वर हूँ, जो अपना वचन निभाता है। हर एक वचन जो मैं कहूँगा वह पूरा होगा और तुममें से हर एक इसे देखेगा। हर चीज़ में वास्तविकता में प्रवेश करने का यही सच्चा अर्थ है।

बड़ी आपदाएँ निश्चित रूप से मेरे प्रिय पुत्रों, मेरे प्यारे लोगों पर नहीं पड़ेंगी। मैं हर समय और हर पल अपने पुत्रों की देखरेख करूँगा। तुम लोगों को निश्चित रूप से उस पीड़ा और कष्ट को नहीं भुगतना पड़ेगा। इसके बजाय, इसका होना मेरे पुत्रों की पूर्णता और उनमें मेरे वचन की पूर्ति के लिए है। परिणामस्वरूप, तुम लोग मेरी सर्वशक्तिमत्ता को पहचान सकते हो, जीवन में आगे बढ़ सकते हो, शीघ्र ही मेरी खातिर ज़िम्मेदारी कंधे पर ले सकते हो और मेरी प्रबंधन योजना की पूर्णता के लिए अपनी संपूर्ण अस्मिता समर्पित कर सकते हो। तुम लोगों को इसकी वजह से ख़ुशी और प्रसन्नता से आनंदित होना चाहिए। मैं तुम लोगों को सब कुछ सौंप दूँगा ताकि तुम लोग नियंत्रण ले सको; मैं इसे तुम लोगों के हाथों में रख दूँगा। अगर यह सच है कि कोई पुत्र अपने पिता की पूरी संपत्ति की विरासत पाता है, तो तुम लोगों, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए यह कितना अधिक सच होगा? तुम लोग वास्तव में धन्य हो। बड़ी आपदाओं से पीड़ित होने के बजाय, तुम लोग अनंत आशीषों का आनंद लोगे। कैसी महिमा है! कैसी महिमा है!

अपनी गति बढ़ाओ और हर समय मेरे पदचिह्नों का अनुसरण करो और पीछे मत छूट जाओ। अपने हृदयों को मेरे हृदय का अनुसरण करने दो; अपने मन को मेरे मन का अनुसरण करने दो। मेरे साथ

सहयोग करो और एक हृदय, एक मन के हो जाओ। मेरे साथ खाओ, मेरे साथ रहो और मेरे साथ आनंद लो। आनंद लेने और प्राप्त करने के लिए अद्भुत आशीष तुम लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मेरे भीतर ऐसी अतुलनीय प्रचुरता मौजूद है। इसका ज़रा-सा भी किसी और के लिए तैयार नहीं किया गया है; मैं इसे पूरी तरह से अपने पुत्रों के लिए करता हूँ।

इस समय, मेरे मन में जो है, वह पूरा होगा। जब तक मैं तुम लोगों से बात करना समाप्त करूँगा, ये मामले पहले ही पूरे हो चुके होंगे। कार्य वास्तव में इतनी ही जल्दी आगे बढ़ता है और यह हर पल बदल रहा है। यदि तुम लोगों का ध्यान एक पल के लिए भी भटकता है, तो "अपकेन्द्री" घटना घटेगी और तुम्हें बहुत दूरी पर फेंक दिया जाएगा और तुम इस धारा से बाहर हो जाओगे। यदि तुम लोग ईमानदारी से नहीं खोजोगे, तो तुम लोग मेरे मेहनती प्रयासों को व्यर्थ जाने का कारण बनोगे। भविष्य में, विभिन्न राष्ट्रों के लोग किसी भी समय भीड़ लगाएँगे : अपने वर्तमान स्तर पर, क्या तुम लोग उनकी अगुआई कर पाओगे? अपने कार्यभार को पूरा करने के लिए मैं इस छोटी सी समयावधि के भीतर अच्छे सैनिक बनने के लिए तुम लोगों को पूरी तरह से प्रशिक्षित करूँगा। मेरी इच्छा है कि तुम लोग सभी मामलों में मेरे नाम को महिमामंडित करो और मेरे लिए अद्भुत गवाही दो। जिनका वे तिरस्कार करते थे, आज उन्हें उनसे ऊपर खड़े होने दो, उन्हें अगुआई और शासन करने दो। क्या मेरे इरादे तुम लोगों की समझ में आते हैं? क्या तुमने मेहनती प्रयासों को अनुभव किया है, जो मैंने किए हैं? मैं यह सब तुम लोगों के वास्ते करता हूँ। यह बस इस बात पर निर्भर करता है कि तुम लोग मेरे आशीषों का आनंद लेने में सक्षम हो या नहीं।

मैं, वो परमेश्वर हूँ जो मानवता के मन और हृदय को टटोलता है, पृथ्वी के सिरों तक यात्रा करता है। कौन मेरी सेवा न करने का साहस करेगा? सभी राष्ट्रों में तनाव बढ़ रहा है और वे बुरी तरह से संघर्ष कर रहे हैं; अंत में, हालाँकि वे मेरी पकड़ से नहीं बच पाएंगे। मैं निश्चित रूप से उन्हें आसानी से नहीं छोड़ूँगा। मैं उनके कार्यकलापों, सांसारिक हैसियत और सांसारिक सुखों के आधार पर एक-एक करके उनका न्याय करूँगा। मैं किसी को भी नहीं छोड़ूँगा। मेरा कोप प्रकट होना शुरू हो गया है और इस सबकी उन पर बौछार होगी। उनमें सब कुछ एक-एक करके पूरा होगा और वे अपने आप पर यह सब लाएंगे। जो लोग मुझे जानने में असफल रहे हैं या जिन्होंने अतीत में मेरा तिरस्कार किया है, वे अब मेरे न्याय का सामना करेंगे। जहाँ तक उन लोगों की बात है, जिन्होंने मेरे पुत्रों को सताया है, मैं अतीत में कहे गए उनके वचनों और कर्मों के लिए उन्हें विशेष रूप से ताड़ना दूँगा। मैं बच्चों को भी नहीं छोड़ूँगा; ये सब लोग शैतान की

किस्में हैं। भले ही वे कुछ भी कहते या करते नहीं हैं, किंतु यदि वे कहीं गहरे मेरे पुत्रों के लिए घृणा पालते हैं, तो मैं उनमें से एक को भी नहीं छोड़ूँगा। मैं उन सभी को यह दिखा दूँगा कि हम-लोगों का यह समूह-आज शासन करता है और सत्ता उसके हाथ है; निश्चित रूप से ये वे नहीं हैं। इस कारण से, यह और भी जरूरी है कि तुम अपनी पूरी ताकत लगाओ और स्वयं को मुझमें खपाओ, ताकि तुम मेरे नाम को हर जगह, हर कोने में, हर धर्म और संप्रदाय में महिमामंडित कर सको और गवाही दे सको और इसे पूरे ब्रह्मांड और धरती के छोरों तक फैला दो!

अध्याय 69

जब मेरी इच्छा जारी होगी, तो जो कोई भी विरोध करने की हिम्मत करेगा और जो कोई भी आलोचना या संदेह करने की हिम्मत करेगा, मैं उसका तुरंत सफाया कर दूँगा। आज, जो कोई भी मेरी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करता है, या जो भी मेरी इच्छा को गलत ढंग से समझता है, उसे अवश्य ही हटाकर मेरे राज्य से बाहर निकाल दिया जाना चाहिए। मेरे राज्य में कोई और नहीं है—सब मेरे पुत्र हैं, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ और जो मेरे प्रति विचारशील हैं। इसके अलावा, यही वे लोग हैं जो मेरे वचन के अनुसार कार्य करते हैं और जो सभी देशों और सभी लोगों का न्याय करने के लिए शासन करने में सक्षम हैं। साथ ही, वे ज्येष्ठ पुत्रों का एक समूह हैं, जो निर्दोष और जीवंत हैं; सादे और खुले हैं; और ईमानदार और बुद्धिमान दोनों ही हैं। मेरी इच्छा तुम लोगों में संतुष्ट होती है, और जो मैं करना चाहता हूँ वह तुम लोगों में पूर्ण होता है, बिना किसी गलती के, पूरी तरह से खुले और प्रकट रूप में। जिनके इरादे और उद्देश्य गलत हैं—मैंने उन्हें त्यागना शुरू कर दिया है, और मैं उन्हें एक-एक करके पतन की ओर ले जाऊंगा। मैं उन्हें एक-एक करके इस स्तर तक नष्ट कर दूँगा कि वे जी नहीं पाएंगे—और यह सब उनकी भावनाओं, उनकी आत्माओं, और उनकी देहों को संदर्भित करता है।

यह बात समझो कि मेरे हाथ जो काम कर रहे हैं—वे गरीबों को सहारा दे रहे हैं, जो मुझे प्यार करते हैं उनकी देखभाल और रक्षा कर रहे हैं, जो मेरे प्रबंधन में हस्तक्षेप नहीं करते हैं उन अज्ञानी और उत्साही लोगों को बचा रहे हैं, जो मेरा विरोध करते हैं और जो सक्रिय रूप से मेरे साथ सहयोग नहीं करते हैं उन्हें दंड दे रहे हैं—इन सभी चीजों की एक-एक करके मेरे कथनों के अनुसार पुष्टि होगी। क्या तू कोई ऐसा व्यक्ति है जो वास्तव में मुझसे प्यार करता है? क्या तू कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने-आपको निष्ठापूर्वक मेरे

लिए खपाता है? क्या तू कोई ऐसा व्यक्ति है जो मेरे वचन को सुनता है और तदनुसार कार्य करता है? क्या तू कोई ऐसा व्यक्ति है जो मेरे विरुद्ध है, या क्या तू मेरे साथ संगत में है? क्या इन मुद्दों पर तेरे मन की गहराइयों में कोई स्पष्ट विचार है? क्या तू इन चीजों में से प्रत्येक का उत्तर दे सकता है जो मैंने कही हैं? यदि नहीं, तो तू एक ऐसा व्यक्ति है जो उत्साहपूर्वक खोज तो करता है, लेकिन मेरी इच्छा को नहीं समझता है। ऐसे लोग आसानी से मेरे प्रबंधन में हस्तक्षेप करेंगे और मेरी इच्छा को गलत ढंग से समझेंगे। अगर उनका क्षण भर के लिए भी गलत इरादा होगा, तो उन्हें मेरे द्वारा सफाई और विनाश को झेलना होगा।

मुझमें अनंत रहस्य हैं, जो अथाह हैं। मैं उन्हें अपनी योजना के अनुसार लोगों के सामने एक-एक करके प्रकट करूँगा। अर्थात्, मैं उन्हें अपने ज्येष्ठ पुत्रों के लिए प्रकट करूँगा। जो लोग अविश्वासी हैं और जो मेरा विरोध करते हैं, मैं उन्हें प्रवाह के साथ बहने दूँगा, लेकिन अंत में मैं उन्हें अवश्य समझा दूँगा कि मैं प्रताप और न्याय हूँ। आज के अविश्वासियों को केवल वही पता है जो उनकी आँखों के सामने होता है, लेकिन वे मेरी इच्छा को नहीं जानते हैं। केवल मेरे पुत्र, वे जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, मेरी इच्छा को जानते और समझते हैं। अपने पुत्रों के लिए, मैं खुले तौर पर प्रकट हूँ : शैतान के लिए मैं प्रताप और न्याय हूँ, और बिल्कुल भी छुपा हुआ नहीं हूँ। आज के दिनों में केवल मेरे ज्येष्ठ पुत्र ही मेरी इच्छा को जानने के योग्य हैं—अन्य कोई योग्य नहीं है—और मैंने सृजन से पहले ही यह सब व्यवस्थित किया था। कौन धन्य है और कौन अभिशप्त है, यह पूर्व में मेरे द्वारा पहले ही सुचारु रूप से व्यवस्थित किया जाता था, मैं इस बारे में स्पष्ट था, और आज यह पूरी तरह से अभिव्यक्त हो चुका है : जो लोग धन्य हैं, उन्होंने अपने आशीषों का आनंद लेना शुरू कर दिया है, जबकि जो लोग अभिशप्त हैं उन्होंने आपदा को झेलना शुरू कर दिया है। जो लोग अभिशाप को झेलना नहीं चाहते हैं, वे तब भी झेलेंगे क्योंकि मैंने यही निर्धारित किया है और प्रशासनिक आदेशों के मेरे हाथों ने यही व्यवस्थित किया है। वास्तव में किस प्रकार का व्यक्ति धन्य है और किस प्रकार का व्यक्ति अभिशप्त है? मैं पहले ही इन चीजों को प्रकट कर चुका हूँ; यह तुम लोगों के लिए कोई रहस्य नहीं है, बल्कि यह खुले रूप में प्रकट है: जो मुझे स्वीकार करते हैं लेकिन जिनके इरादे गलत हैं; जो मुझे स्वीकार करते हैं लेकिन खोजते नहीं हैं; जो मुझे जानते हैं लेकिन समर्पण नहीं करते हैं; जो मुझे धोखा देने के लिए कुटिलता और विश्वासघात में संलग्न रहते हैं; जो मेरे वचनों को पढ़ते हैं लेकिन नकारात्मकता उगलते हैं; और जो स्वयं को नहीं जानते हैं, जो नहीं जानते हैं कि वे क्या हैं, जो सोचते हैं कि वे महान हैं, और जो सोचते हैं कि वे परिपक्वता तक पहुँच चुके हैं (शैतान का उदाहरण), ये सभी लोग अभिशाप के

लक्ष्य हैं। जो मुझे स्वीकार करते हैं और जिनके इरादे मेरी खातिर हैं (और यदि वे बाधा उत्पन्न करते हैं तो मैं उनके उल्लंघनों को याद नहीं रखूँगा, लेकिन उनके इरादे अवश्य सही होने चाहिए और उन्हें हमेशा सतर्क और सावधान रहना चाहिए और स्वच्छंद नहीं होना चाहिए, और उन्हें मेरी बात सुनने और मेरे आज्ञापालन का हमेशा इच्छुक होना चाहिए); जो शुद्ध हैं; जो खुले स्वभाव के हैं; जो ईमानदार हैं; जो किसी भी व्यक्ति, चीज़ या पदार्थ द्वारा नियंत्रित नहीं हैं; जो दिखने में बालसुलभ हैं और जीवन में परिपक्व हैं, ये लोग मेरे प्रिय लोग हैं, मेरे आशीषों के लक्ष्य हैं। अब, तुममें से प्रत्येक अपनी स्थिति के अनुसार अपनी उचित जगह लेगा। और साथ ही, तुझे पता चल जाएगा कि तू धन्य है या अभिशप्त है—मुझे सीधे-सीधे यह कहने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग धन्य हैं उन्हें आनन्दित और प्रसन्न होना चाहिए, जबकि जिन्हें अभिशाप भुगतना है उन्हें व्यथित नहीं होना चाहिए। दोनों को मेरे हाथों द्वारा व्यवस्थित किया गया है, लेकिन मुझे दोष नहीं दिया जा सकता : यह मेरे साथ तेरे सक्रिय सहयोग की तेरी स्वयं की कमी है, और यह समझने में तेरी विफलता है कि मैं एक परमेश्वर हूँ जो मनुष्य के हृदय के अंतर्तम को टटोलता है; यही है वह जो मैंने पहले से निर्धारित किया है, और तूने अपनी तुच्छ चालों से स्वयं को नुकसान पहुँचाया है; यह तेरा खुद का करा-धरा है! तेरा अधोलोक में गिरना तेरे साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं है! य तेरा अंत है; यह तेरा परिणाम है!

धन्य ज्येष्ठ पुत्रो! जयजयकार करने के लिए शीघ्र उठो! स्तुतिगान के लिए शीघ्र उठो! अब आगे से, कोई और कड़वाहट नहीं होगी, और कोई और कष्ट नहीं होगा, और सब कुछ हमारे अपने हाथों में है। जिसके भी विचार पूरी तरह मेरे अनुरूप हैं मैं उससे प्रेम करता हूँ, और वह आपदा के कष्ट नहीं झेलेगा। जो कुछ भी तेरे हृदय की इच्छा है, मैं उसे पूरा करूँगा (लेकिन यह मनमाना नहीं हो सकता), यह मेरा कार्य है।

अध्याय 70

यह पूरी तरह से मेरे अनुग्रह और मेरी दया के माध्यम से ही है कि मेरा रहस्य प्रकट और खुले तौर पर व्यक्त होता है, अब और छुपा नहीं है। इसके अतिरिक्त, मेरे वचन का मनुष्यों के बीच प्रकट होना, अब इसका छुपा न होना भी मेरे अनुग्रह और मेरी दया के कारण है। मैं उन सभी से प्यार करता हूँ जो ईमानदारी से मेरे लिए खुद को व्यय करते हैं और खुद को मेरे प्रति समर्पित करते हैं। मैं उन सभी से

नफ़रत करता हूँ जो मुझ से जन्मे तो हैं, मगर मुझे नहीं जानते हैं, यहाँ तक कि मेरा विरोध भी करते हैं। मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति का परित्याग नहीं करूँगा जो ईमानदारी से मेरे लिए है; बल्कि मैं उसके आशीषों को दुगुना कर दूँगा। जो लोग कृतघ्न हैं और मेरी दयालुता का अपमान करते हैं, उन्हें मैं दुगुनी सजा दूँगा और हल्के में नहीं छोड़ूँगा। मेरे राज्य में कोई कुटिलता या छल नहीं है, कोई सांसारिकता नहीं है; अर्थात् मृतकों की कोई गंध नहीं है। बल्कि सारी सत्यपरायणता, धार्मिकता है, सारी शुद्धता और सारा खुलापन है, कुछ भी छुपाया गया या परदे में रखा गया नहीं है। सब कुछ ताज़ा है, आनंदपूर्ण है, सब कुछ आत्मिक उन्नति है। अगर किसी से अभी भी मृतकों की गंध आती है, तो वह किसी भी तरीके से मेरे राज्य में नहीं रह सकता है, बल्कि मेरे लौहदण्ड द्वारा उसका फैसला किया जाएगा। पुरातन काल से लेकर वर्तमान समय तक के सभी अंतहीन रहस्य, पूरी तरह से तुम लोगों को प्रकट किये गए हैं—तुम सब लोगों का वो समूह जो अंत के दिनों में मेरे द्वारा प्राप्त किया जाता है—क्या तुम सब धन्य महसूस नहीं करते हो? वे दिन जब सब खुले तौर पर प्रकट किया जाता है, इसके अतिरिक्त वे दिन जब तुम लोग मेरे शासन को साझा करते हो।

लोगों का समूह जो वास्तव में राजाओं के रूप में शासन करता है, वह मेरे द्वारा पूर्वनियति और चयन पर निर्भर करता है, और इसमें बिलकुल कोई मानवीय इच्छा नहीं होती। यदि कोई इसमें हिस्सा लेने की हिम्मत करता है, तो उसे अवश्य मेरे हाथ के प्रहार को झेलना होगा, और वह मेरी उग्र अग्नि का लक्ष्य होगा; यह मेरी धार्मिकता और प्रताप का एक अन्य पक्ष है। मैंने कहा है कि मैं सभी चीज़ों पर शासन करता हूँ, मैं ही वह बुद्धिमान परमेश्वर हूँ जो पूर्ण अधिकार का उपयोग करता है, और मैं किसी भी व्यक्ति के प्रति उदार नहीं हूँ; मैं अत्यंत निष्ठुर हूँ, व्यक्तिगत भावना से पूरी तरह रहित हूँ। मैं हर किसी के साथ अपनी धार्मिकता, सत्यपरायणता, और अपने प्रताप के साथ व्यवहार करता हूँ (चाहे कोई कितना भी अच्छा क्यों न बोलता हो, मैं उसे नहीं छोड़ूँगा), और इस बीच मैं हर किसी को मेरे कर्मों के चमत्कार को बेहतर ढंग से देखने, मेरे कर्मों के अर्थ को समझने देता हूँ। मैंने दुष्ट आत्माओं के सभी प्रकार के कर्मों को एक-एक करके दण्डित किया, उन्हें एक-एक करके अथाह गड्ढे में डाल दिया। उनके लिए कोई पद न छोड़ते हुए, उनके लिए उनके कार्य करने की कोई जगह न छोड़ते हुए, समय शुरू होने से पहले ही इस कार्य को मैंने पूरा कर लिया था। मेरे चुने लोगों में से—जो मेरे द्वारा पूर्वनियत और चयनित हैं—कोई दुष्टात्माओं के कब्ज़े में नहीं हो सकता है, बल्कि वो हमेशा पवित्र रहेगा। जहाँ तक उनकी बात है जिन्हें मैंने पूर्वनियत और

चयनित नहीं किया है, उन्हें मैं शैतान को सौंप दूँगा और उन्हें अब और नहीं रहने दूँगा। सभी पहलुओं में, मेरे प्रशासनिक आदेशों में मेरी धार्मिकता, मेरा प्रताप शामिल हैं। मैं उन लोगों में से एक को भी नहीं जाने दूँगा जिन पर शैतान कार्य करता है बल्कि उन्हें सशरीर अधोलोक में डाल दूँगा, क्योंकि मैं शैतान से नफ़रत करता हूँ। मैं इसे किसी भी तरह से आसानी से नहीं छोड़ूँगा बल्कि इसे पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा और इसके लिए कार्य को करने का ज़रा-सा भी मौका नहीं छोड़ूँगा। जिन्हें शैतान ने एक निश्चित सीमा तक भ्रष्ट कर दिया है (अर्थात, वे जो आपदा के लक्ष्य हैं) वे मेरे स्वयं के हाथ की बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्था के अधीन हैं। ऐसा मत सोच कि यह शैतान की क्रूरता की वजह से है; जान ले कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ, जो ब्रह्मांड और सभी चीज़ों पर शासन करता है! मेरे लिए ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसे हल नहीं किया जा सकता है, ऐसी कोई चीज़ बिल्कुल भी नहीं है जिसे पूरा नहीं किया जा सकता, या ऐसा कोई वचन नहीं है जिसे कहा नहीं जा सकता है। मनुष्यों को मेरे सलाहकारों के रूप में कार्य बिलकुल नहीं करना चाहिए। मेरे हाथ से मारे जाने और अधोलोक में डाल दिए जाने के प्रति सावधान रह। मैं तुझे बताता हूँ! आज जो मेरे साथ अग्रसक्रिय रूप से सहयोग करते हैं वे ही सबसे चतुर लोग हैं, वे नुकसान से दूर रहेंगे और न्याय की पीड़ा से बचे रहेंगे। यह सब मेरी व्यवस्था है, मेरे द्वारा पूर्वनियत है। यह सोचते हुए कि तू बहुत महान है, बड़ी-बड़ी बातें मत कर, अविवेकपूर्ण टीका-टिप्पणियाँ मत कर। क्या यह सब मेरे द्वारा पूर्वनियति के माध्यम से नहीं है? तुम लोगों को, जो मेरे सलाहकार होंगे, कोई शर्म नहीं है! तुम लोग अपनी स्वयं की क़द-काठी को नहीं जानते हो; यह दयनीय रूप से कितनी तुच्छ है! फिर भी, तुम सोचते हो कि ये कोई बड़ा मामला नहीं है, और खुद को नहीं समझते हो। बार-बार तुम लोग मेरे वचनों को अनसुना कर देते हो, मेरे मेहनती प्रयासों को व्यर्थ होने देते हो, तुम बिलकुल नहीं समझते हो कि यह मेरा अनुग्रह और मेरी कृपा है। इसके बजाय, तुम लोग बार-बार अपनी चालाकी दिखाने की कोशिश करते हो। क्या तुम लोगों को यह याद है? उन लोगों को कैसी ताड़ना मिलनी चाहिए जो सोचते हैं कि वे चतुर हैं? मेरे वचनों के प्रति उदासीन और अविश्वासी रहकर, उन्हें अपने हृदय में नहीं उकेरते हुए, तुम लोग तमाम चीज़ें करने के लिए दिखावे के रूप में मेरा उपयोग करते हो। कुकर्मियो! तुम लोग कब मेरे हृदय पर पूरी तरह से विचार कर पाओगे? तुम लोग मेरे हृदय पर विचार नहीं करते, और इसलिए तुम लोगों को "कुकर्मी" कहना तुम लोगों के प्रति दुर्व्यवहार नहीं होगा। यह तुम्हारे लिए बिलकुल उपयुक्त है!

आज मैं तुम लोगों को, एक-एक करके, उन चीज़ों को दिखाता हूँ जो कभी छुपी हुई थीं। बड़े लाल

अजगर को अथाह गड्ढे में डाल दिया जाता है और वह पूरी तरह नष्ट कर दिया जाता है, क्योंकि इसे रखने का कोई उपयोग नहीं होगा; जिसका अर्थ है कि यह मसीह की सेवा नहीं कर सकता है। इसके बाद लाल चीज़ें अब और अस्तित्व में नहीं रहेंगी; धीरे-धीरे इन्हें कमज़ोर होकर मिट जाना होगा। मैं जो कहता हूँ वह करता हूँ; यह मेरे कार्य की पूर्णता है। मानवीय धारणाओं को हटा दे, मैंने जो कुछ भी कहा है, उसे मैंने किया है। जो कोई भी चालाक होने का प्रयास करता है, वह खुद पर विनाश और तिरस्कार ला रहा है, और जीना नहीं चाहता है। इसलिए मैं तुझे संतुष्ट करूँगा और निश्चित रूप से ऐसे लोगों को नहीं रखूँगा। इसके बाद, आबादी उत्कृष्टता में बढ़ेगी, जबकि जो लोग मेरे साथ अग्रसक्रिय रूप से सहयोग नहीं करते हैं, उनका नामो-निशान तक मिटा दिया जाएगा। जिन्हें मैंने स्वीकार किया है, ये वे लोग हैं जिन्हें मैं पूर्ण करूँगा। मैं एक को भी नहीं निकालूँगा। मैं जो कहता हूँ, उसमें कोई विरोधाभास नहीं है। जो लोग मेरे साथ अग्रसक्रिय रूप से सहयोग नहीं करते हैं, वे और अधिक ताड़ना भुगतेंगे, भले ही अंततः मैं उन्हें निश्चित रूप से बचाऊँगा फिर भी उस समय तक उनके जीवन का विस्तार काफी अलग होगा। क्या तू ऐसा व्यक्ति बनना चाहता है? उठ, और मेरे साथ सहयोग कर! मैं निश्चित रूप से उन लोगों के साथ क्षुद्रता से व्यवहार नहीं करूँगा जो ईमानदारी से खुद को मेरे लिए खपाते हैं। जो अपने आप को ईमानदारी से मेरे प्रति समर्पित करता है, मैं तुझे अपने सभी आशीष प्रदान करूँगा। अपने आप को पूरी तरह से मेरे प्रति अर्पित कर दे! तू क्या खाता है, क्या पहनता है, और तेरा भविष्य, ये सब मेरे हाथों में है; मैं सब को ठीक से व्यवस्थित कर दूँगा, ताकि तू अनंत आनंद पा सके जो कभी ख़त्म न हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने कहा है, "जो ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाता है, मैं निश्चित रूप से तुझे बहुत आशीष दूँगा।" सारी आशीष हर उस व्यक्ति पर आएगी जो खुद को ईमानदारी से मेरे लिए खपाता है।

अध्याय 71

मैंने अपना सब-कुछ तुम लोगों पर प्रकट कर दिया है, फिर भी तुम लोग मेरे वचनों पर अपने हृदय और आत्मा की संपूर्णता से चिंतन क्यों नहीं कर सकते? तुम मेरे वचनों को निरर्थक क्यों समझते हो? क्या मैं जो कहता हूँ, वह गलत है? क्या मेरे वचन तुम्हारे मर्मस्थलों पर चोट करते हैं? तुम लगातार देरी कर रहे हो और लगातार हिचक रहे हो। तुम लोग ऐसा क्यों करते हो? क्या मैंने स्पष्ट रूप से नहीं बोला है? मैंने कई बार कहा है कि मेरे वचनों पर ध्यानपूर्वक चिंतन करना चाहिए, और तुम्हें उन पर बारीकी से ध्यान

देना चाहिए। क्या तुम लोगों में से कोई आज्ञाकारी और विनम्र बच्चे हैं? क्या मेरे वचन व्यर्थ गए? क्या उनका बिलकुल भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा? तुममें से कितने मेरी इच्छा के अनुरूप हो सकते हैं? यदि एक पल के लिए भी तुमसे बात न की जाए, तो तुम स्वच्छंद और अनियंत्रित हो जाओगे। यदि मैं स्पष्ट रूप से यह नहीं बताता कि कैसे कार्य करना और बोलना है, तो क्या यह हो सकता है कि तुम्हें अपने हृदय की गहराई में कुछ पता न हो? मैं तुम्हें बताता हूँ! जो अवज्ञाकारी है, जो समर्पण नहीं करता, और जो मूर्खतापूर्ण ढंग से विश्वास करता है, वही नुकसान उठाता है! जो लोग मेरे कहे पर ध्यान नहीं देते और ब्योरों को नहीं समझ सकते, वे मेरे इरादों की थाह पाने में सक्षम नहीं होंगे, न ही वे मेरी सेवा करने में सक्षम होंगे। इस तरह के लोग मेरे द्वारा निपटे जाएँगे, और वे मेरे न्याय का सामना करेंगे। ब्योरों को न समझना अत्यधिक धृष्ट होने के साथ-साथ जानबूझकर उतावला होना भी है; इसलिए मैं ऐसे लोगों से नफरत करता हूँ और उनके साथ नरमी नहीं बरतूँगा। मैं उन पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा; मैं उन्हें सिर्फ अपना प्रताप और न्याय दिखाऊँगा। तो देखो, कहीं तुम अभी भी मुझे धोखा देने की हिम्मत तो नहीं करते? मैं परमेश्वर हूँ, जो मनुष्य के हृदय की अंतरतम गहराइयों को परखता है। यह बात हर किसी को स्पष्ट होनी चाहिए; अन्यथा, वे लापरवाही से अपना कार्य करेंगे और मेरे प्रति यंत्रवत् पेश आएँगे। यही कारण है कि कुछ लोग अनजाने में मेरे द्वारा मारे जाते हैं। मैंने कहा है कि मैं किसी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा, कि मैं कोई गलत काम नहीं करता, और कि मेरे सभी कृत्य मेरे हाथ की बुद्धिमान व्यवस्थाओं के अनुसार किए जाते हैं।

मेरा न्याय उन सभी लोगों पर टूटा है, जो मुझसे वास्तव में प्रेम नहीं करते। यह ठीक इसी समय स्पष्ट होगा कि मैंने किनको पूर्वनियत किया और चुना है, और कौन मेरे निष्कासन के लक्ष्य होंगे। ये सब एक-एक करके प्रकट जाएँगे, और कुछ भी छिपा नहीं रहेगा। सभी लोगों, घटनाओं और चीजों का अस्तित्व मेरे वचन पूरे करने के लिए है, और वे सब मेरे मुँह से बोले गए वचनों को सच करने में लगे हैं। ब्रह्मांड और पृथ्वी के छोर अकेले मेरे द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं। मुझे उस व्यक्ति पर प्रहार करना चाहिए, जो मेरे वचनों का उल्लंघन करने की हिम्मत दिखाता है या मेरे कर्मों को अमल में लाने से इनकार करता है, जिससे वह व्यक्ति अधोलोक में डूब जाएगा और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मेरे सभी वचन उपयुक्त और उचित हैं, और अशुद्धता से पूर्णत: रहित हैं। क्या तुम लोगों के बोलने का ढंग मेरे बोलने के ढंग जैसा हो सकता है? तुम इतने शब्दाडंबर से भरे हो; तुम्हारी बात का कोई अर्थ नहीं है और तुम अपने

को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करते, फिर भी तुम्हें लगता है कि तुमने कुछ चीजें प्राप्त कर ली हैं, और तुमने इसे लगभग हासिल कर लिया है। मैं तुम्हें बताता हूँ! लोग जितने अधिक आत्म-संतुष्ट होते हैं, उतने ही वे मेरे मानकों की पूर्ति से दूर होते हैं। वे मेरी इच्छा के प्रति कोई विचारशीलता नहीं दिखाते, और वे मुझे धोखा देते हैं और मेरे नाम को निर्दयतापूर्वक अपमानित करते हैं! कितने बेशर्म हो! तुम यह नहीं देखते कि तुम्हारी अपनी कद-काठी किस तरह की है। तुम कितने मूर्ख और अज्ञानी हो!

मेरे वचन लगातार, और हर पहलू से, चीजों की ओर इशारा कर रहे हैं। क्या यह हो सकता है कि तुम्हें अभी भी पता नहीं चला? क्या तुम अभी भी नहीं समझे? क्या तुम्हारा इरादा मुझे निराश करने का है? अपनी आत्मा को जगाओ और अपनी हिम्मत जुटाओ। मैं ऐसे एक भी व्यक्ति से भद्दे ढंग से व्यवहार नहीं करता, जो मुझसे प्रेम करता है। मैं मनुष्य के हृदय की अंतरतम गहराइयों को परखता हूँ और सभी लोगों के हृदय में मौजूद हर चीज को जानता हूँ। इन सभी चीजों को एक-एक करके प्रकट किया जाएगा और सभी को मेरे द्वारा जाँचा जाएगा। मैं उनमें से किसी एक भी व्यक्ति को कभी नजरअंदाज नहीं करूँगा, जो वास्तव में मुझसे प्रेम करते हैं; उन सभी को आशीष प्राप्त हैं, और वे ज्येष्ठ पुत्रों का समूह हैं, जिन्हें मैंने राजा बनने के लिए पूर्वनियत किया है। जो लोग मुझसे वास्तव में प्रेम नहीं करते, वे अपने ही धोखों के निशाने हैं, और वे दुर्भाग्य का सामना करेंगे; और यह भी मेरे द्वारा पूर्वनियत किया गया है। चिंता न करो; मैं उन्हें एक-एक करके उजागर करूँगा। मैंने यह कार्य काफी पहले से ही तैयार किया हुआ है, और मैंने इसे पहले ही करना शुरू कर दिया है। यह सब व्यवस्थित रूप से किया जा रहा है; यह बिलकुल भी अस्त-व्यस्त नहीं है। मैंने पहले ही तय कर लिया है कि किसे चुना जाना है और किसे छोड़ा जाना है। एक-एक करके उन सबको तुम लोगों के देखने के लिए प्रकट किया जाएगा। इस दौरान तुम लोग देखोगे कि मेरा हाथ क्या कर रहा है। सभी लोग देखेंगे कि मेरी धार्मिकता और प्रताप किसी के भी द्वारा कोई अपमान या प्रतिरोध नहीं होने देता, और जो कोई अपमान करता है, उसे कठोर दंड दिया जाएगा।

मैं वह हूँ, जो लगातार हर किसी के हृदय की अंतरतम गहराइयों की खोज करता है। मुझे केवल बाहर से मत देखो। अंधे लोगो! तुम उन वचनों को नहीं सुनते, जिन्हें मैंने इतने स्पष्ट रूप से बोला है, और तुम लोग बस मुझ स्वयं पूर्ण परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते। मैं निश्चित रूप से ऐसे किसी को बरदाश्त नहीं करूँगा, जो मुझे फुसलाने या मुझसे कुछ भी छिपाने की हिम्मत करता है।

क्या तुम्हें मेरा प्रत्येक कथन याद है? "मुझे देखना अनंत से अनंत तक हर एक छिपे रहस्य को देखने

जैसा है।" क्या तुमने इस कथन पर ध्यानपूर्वक विचार किया है? मैं परमेश्वर हूँ और मेरे रहस्य तुम लोगों के देखने के लिए प्रदर्शित किए गए हैं। क्या तुम लोगों ने उन्हें नहीं देखा है? तुम मुझ पर कोई ध्यान क्यों नहीं देते? और तुम उस अस्पष्ट परमेश्वर की इतनी आराधना क्यों करते हो, जो तुम्हारे दिमाग में है? मैं—एक सच्चा परमेश्वर—कुछ भी गलत कैसे कर सकता हूँ? इसे अच्छी तरह से समझ लो! इसके बारे में निश्चित रहो! मेरा हर वचन और कार्य, मेरा हर कर्म और हर गतिविधि, मेरी मुसकराहट, मेरा खाना, मेरे कपड़े, मेरा सब-कुछ स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाता है। तुम लोग मुझे आँकते हो : क्या यह हो सकता है कि तुम लोगों ने मेरे आगमन से पहले ही परमेश्वर को देख लिया हो? यदि नहीं, तो फिर तुम हमेशा मेरे और अपने परमेश्वर के बीच मानसिक तुलनाएँ क्यों करते रहते हो? यह पूरी तरह से मनुष्यों की धारणाओं का उत्पाद है! मेरे कार्य और व्यवहार तुम्हारी कल्पनाओं के अनुरूप नहीं हैं, है ना? मैं किसी भी व्यक्ति को यह कहने की अनुमति नहीं देता कि मेरे कार्य और व्यवहार सही हैं या नहीं। मैं एक सच्चा परमेश्वर हूँ और यह एक अटल और अपरिवर्तनीय सत्य है! अपने ही धोखों के शिकार मत बनो। मेरे वचनों ने इसे पूरी स्पष्टता से इंगित कर दिया है। मुझमें मनुष्य का कोई दाग नहीं है; मेरा सब-कुछ स्वयं परमेश्वर है, जिसे तुम लोगों पर पूरी तरह से प्रकट कर दिया गया है, एक भी चीज छिपाई नहीं गई है!

अध्याय 72

यदि तुम्हें अपने में किसी कमी या कमजोरी का पता चले, तो उससे छुटकारा पाने के लिए तुम्हें फौरन मुझ पर भरोसा करना चाहिए। देर मत करो; वरना पवित्र आत्मा का कार्य तुमसे बहुत दूर हो जाएगा, और तुम बहुत पीछे रह जाओगे। जो कार्य मैंने तुम्हें सौंपा है, वह केवल तुम्हारे लगातार मेरे पास आने, प्रार्थना करने और मेरी उपस्थिति में सहभागिता करने पर ही पूरा हो सकता है। यदि तुम ये काम नहीं करते, तो कोई परिणाम प्राप्त नहीं होगा, और सब-कुछ व्यर्थ हो जाएगा। आज मेरा कार्य वैसा नहीं है, जैसा वह अतीत में था; उन लोगों में, जिनसे में प्रेम करता हूँ, जीवन का विस्तार वैसा नहीं है, जैसा वह पहले था। उन सबमें मेरे वचनों की स्पष्ट समझ है और साथ ही उनमें एक तीक्ष्ण अंतर्दृष्टि भी है। यह सबसे स्पष्ट पहलू है, जो मेरे कार्य की अद्भुतता को प्रतिबिंबित करने मे सबसे अधिक सक्षम है। मेरे कार्य की गति बढ़ गई है, और यह कार्य निश्चित रूप से अतीत से भिन्न है। लोगों के लिए इसकी कल्पना करना कठिन है, और उससे भी अधिक, लोगों के लिए इसकी थाह पाना असंभव है। अब तुम लोगों के लिए कुछ

भी रहस्य नहीं है; बल्कि सब-कुछ ज्ञात और व्यक्त कर दिया गया है। यह पारदर्शी है, मुक्त किया हुआ है और, इतना ही नहीं, यह पूर्णत: स्वतंत्र है। जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, वे निश्चित रूप से किसी भी व्यक्ति, घटना या चीज से प्रतिबंधित नहीं होंगे, न ही किसी स्थान या भूगोल से सीमित होंगे; वे सभी परिवेशों द्वारा लगाए जाने वाले नियंत्रण का अतिक्रमण कर जाएँगे तथा देह से उभरेंगे। यह मेरे महान कार्य का समापन है। बाद में करने के लिए और कुछ नहीं होगा; यह पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा।

महान कार्य के पूरे होने का उल्लेख सभी ज्येष्ठ पुत्रों और उन सभी लोगों, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, के संदर्भ में किया जाता है। इसके बाद तुम कभी भी किसी व्यक्ति, घटना या चीज के द्वारा नियंत्रित नहीं किए जाओगे। तुम विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में यात्रा करोगे, संपूर्ण ब्रह्मांड में घूमोगे और सभी जगह अपने पदचिह्न छोड़ोगे। इसे अधिक दूर न समझो; यह अतिशीघ्र ठीक तुम्हारी आँखों के सामने साकार होगा। मैं जो करता हूँ, उसे तुम लोगों को सौंप दिया जाएगा, और जिन स्थानों पर मैं पग रखता हूँ, वहाँ तुम लोगों के पदचिह्न होंगे। इसके अतिरिक्त, यह हमारे—तुम लोगों के और मेरे—एक-साथ राजाओं के रूप में शासन करने का वास्तविक अर्थ है। क्या तुमने सोचा है कि ऐसा क्यों है कि जो प्रकाशन मैं देता हूँ, वे निरंतर और अधिक स्पष्ट और अधिकाधिक प्रत्यक्ष होते जा रहे हैं, जरा भी छिपाए नहीं जा रहे? क्यों मैंने सर्वोच्च साक्ष्य दिया है, और ये सभी रहस्य और ये सभी वचन तुम लोगों को बताए हैं? इसका कारण पूर्व में उल्लिखित कार्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। लेकिन तुम लोगों के काम की प्रगति अभी भी बहुत धीमी है। तुम मेरे डगों के साथ अपनी चाल नहीं बैठा पा रहे हो, मेरे साथ बहुत अच्छे से सहयोग नहीं कर पा रहे हो, और अभी तुम मेरी इच्छा पूरी करने में असमर्थ हो। मुझे तुम लोगों को और तीव्रता से प्रशिक्षित करना होगा, और अपने द्वारा तुम लोगों की पूर्णता को और वेग देना होगा, ताकि तुम लोग मेरे हृदय को यथाशीघ्र संतुष्ट कर सको।

वर्तमान में सबसे स्पष्ट बात यह है कि ज्येष्ठ पुत्रों का एक समूह पूर्ण रूप से बन गया है। वे सब मेरे द्वारा अनुमोदित किए गए थे, यहाँ तक कि संसार की रचना के समय से मेरे द्वारा पूर्वनियत भी किए गए थे और चुने भी गए थे। प्रत्येक को मैंने अपने हाथों से उन्नत किया था। इसमें किसी मानवीय सोच-विचार के लिए कोई जगह नहीं है। यह तुम्हारे नियंत्रण से बाहर है। अभिमानी न बनो; यह सब मेरी दया और करुणा है। मेरे दृष्टिकोण से सब-कुछ पहले ही संपन्न हो चुका है। बस, तुम लोगों की आँखें बहुत धुँधलाई हुई हैं, और अभी भी तुम मेरे कर्मों की अद्भुतता का स्पष्ट दर्शन पाने में असमर्थ हो। तुम लोगों में से किसी के

पास भी मेरी सर्वशक्तिमत्ता, मेरी बुद्धि, मेरे हर कृत्य या मेरे प्रत्येक वचन और कर्म की स्पष्ट समझ नहीं है। इस कारण से मैं स्पष्ट रूप से बोलता हूँ। अपने पुत्रों, अपने प्रिय जनों के लिए मैं समस्त लागतों का भुगतान करने, श्रम करने और स्वयं को खर्च करने के लिए तैयार हूँ। क्या तुम मुझे मेरे वचनों के माध्यम से जानते हो? क्या तुम मुझसे उन्हें और स्पष्टता से कहलवाना चाहते हो? अब हठी न बनो; मेरे हृदय के प्रति विचारशीलता दिखाओ! अब जबकि इतना महान रहस्य तुम लोगों को बताया जा चुका है, तो तुम लोगों को क्या कहना है? क्या तुम्हें अभी भी कोई शिकायत है? यदि तुम मूल्य नहीं चुकाते और कड़ा परिश्रम नहीं करते, तो क्या तुम मेरे द्वारा किए गए श्रमसाध्य प्रयास के योग्य हो सकते हो?

इन दिनों लोग स्वयं को नियंत्रित नहीं कर सकते। जिन लोगों पर मैं अनुग्रह नहीं करता, यदि वे चाहें तो भी, उनमें मेरे प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता। किंतु जिन लोगों को मैंने पूर्वनियत किया और चुना है, वे चाहकर भी नहीं बच पाएँगे; वे चाहे कहीं भी जाएँ, मेरे हाथ से नहीं बच सकते। ऐसा मेरा प्रताप है, और इससे भी अधिक, ऐसा मेरा न्याय है। सभी लोगों को अपने कार्य मेरी योजना और मेरी इच्छा के अनुसार करने चाहिए। इस दिन से, पूर्णतया सब-कुछ मेरे हाथों में वापस आता है, और उनके नियंत्रण से परे है। सब-कुछ मेरे द्वारा नियंत्रित और व्यवस्थित किया जाता है। यदि लोग छोटे तरीके से भाग लेते हैं, तो मैं उन्हें हलके में नहीं छोड़ूँगा। आज से शुरू करके, मैं सभी लोगों को यह अवसर दूँगा कि वे मुझे—एकमात्र सच्चे परमेश्वर को—जानना प्रारंभ करें, जिसने सभी कुछ रचा, जो मनुष्यों के बीच आया और उनके द्वारा अस्वीकृत और कलंकित किया गया, और जो हर चीज को उसकी समग्रता में नियंत्रित और व्यवस्थित करता है; जो राज्य का प्रभारी राजा है; जो ब्रह्मांड का प्रबंधन करने वाला स्वयं परमेश्वर है, और इससे भी बढ़कर, जो मनुष्यों के जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करने वाला वह परमेश्वर है, जिसके पास अधोलोक की चाबी है। मैं सभी मनुष्यों (वयस्क और बच्चे, चाहे उनमें आत्मा हो या न हो, या चाहे वे मूर्ख हों या न हों अथवा उनमें कोई अक्षमता हो या न हो, आदि) को यह अवसर दूँगा कि वे मुझे जानें। मैं किसी को भी इस कार्य से बचने नहीं दूँगा; यह सबसे गंभीर कार्य है, एक ऐसा कार्य जिसे मैंने अच्छे से तैयार किया है, और जो ठीक अभी से शुरू करके क्रियान्वित किया जा रहा है। मैं जो कहता हूँ, वह होगा। अपनी आध्यात्मिक आँखें खोलो, अपनी व्यक्तिगत धारणाएँ छोड़ दो, और यह पहचानो कि केवल मैं ही वह सच्चा परमेश्वर हूँ जो ब्रह्मांड का प्रशासन चलाता है! मैं किसी से छिपा हुआ नहीं हूँ, और मैं अपनी प्रशासकीय आज्ञाएँ सभी पर लागू करता हूँ।

अपनी सभी चीजें एक ओर रख दो। क्या जो चीजें तुम्हें मुझसे प्राप्त होती हैं, वे अधिक मूल्यवान और कहीं अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं? क्या उनमें और तुम्हारे उस कूड़े-करकट में जमीन-आसमान का अंतर नहीं है? जल्दी करो और हर बेकार चीज फेंक दो। यह अभी तय किया जा रहा है कि तुम्हें आशीष प्राप्ति होंगे या तुम दुर्गति का सामना करोगे। यह निर्णायक क्षण है; यह सबसे नाजुक घड़ी भी है। क्या तुम इसे वास्तव देख पा रहे हो?

अध्याय 73

मेरे वचन मेरे द्वारा बोले जाते ही पूरे हो जाते हैं; वे कभी नहीं बदलते और पूरी तरह से सही होते हैं। इसे याद रखो! तुम्हें मेरे मुँह से निकले हर वचन और हर वाक्यांश पर ध्यान से विचार करना चाहिए। अतिरिक्त सावधान रहो, कहीं तुम्हें नुकसान न उठाना पड़े और केवल मेरा न्याय, क्रोध और ताप ही प्राप्त न हो। मेरा कार्य अब बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है, हालाँकि यह अधूरा नहीं है; यह इतनी बारीकी से परिष्कृत है कि यह नग्न आँखों के लिए व्यावहारिक रूप से अदृश्य है और मनुष्य के हाथों द्वारा पकड़ा नहीं जा सकता। यह विशेष रूप से सूक्ष्म है। मैं कभी खोखले वचन नहीं बोलता; मैं जो कुछ कहता हूँ, वह सब सच होता है। तुम्हें विश्वास करना चाहिए कि मेरा हर वचन सत्य और सटीक है। लापरवाह न बनो; यह एक महत्वपूर्ण क्षण है! तुम आशीष पाओगे या दुर्भाग्य, यह इसी पल में निश्चित किया जाएगा, और इनका अंतर स्वर्ग और पृथ्वी की तरह है। तुम स्वर्ग में जाओगे या नरक में, यह पूरी तरह से मेरे नियंत्रण में है। नरक में जाने वाले लोग अपनी मृत्यु के अंतिम संघर्ष में संलग्न हैं, जबकि स्वर्ग में जाने वाले लोग अपनी पीड़ा के आखिरी दौर में हैं और मेरे लिए आखिरी बार खप रहे हैं। भविष्य में वे जो कुछ भी करेंगे, उसमें आनंद लेना और प्रशंसा करना शामिल है, उन सभी क्षुद्र चीजों के बिना, जो लोगों को परेशान करती हैं (शादी, नौकरी, कष्टदायक धन, हैसियत इत्यादि)। किंतु नरक में जाने वाले लोगों की पीड़ा शाश्वत है (यह उनकी आत्मा, प्राण और शरीर को संदर्भित करता है); वे कभी दंड देने वाले मेरे हाथ से नहीं बचेंगे। ये दोनों पक्ष अग्नि और जल की तरह बेमेल हैं। उन्हें एक-साथ बिलकुल नहीं मिलाया जाता: जो लोग दुर्भाग्य झेलते हैं, वे दुर्भाग्य झेलते रहेंगे, जबकि जो लोग धन्य हैं, वे जी भरकर आनंद लेंगे।

सभी घटनाएँ और चीजें मेरे द्वारा नियंत्रित की जाती हैं, इतना ही नहीं, इसका उल्लेख करने की जरूरत नहीं है कि तुम लोग—मेरे पुत्र, मेरे प्रिय जन—मेरे हो। तुम लोग मेरी छह-हजार-वर्षीय प्रबंधन-

योजना का ठोस रूप हो; तुम मेरे खजाने हो। जिन लोगों से मैं प्यार करता हूँ, वे सभी मेरी आँखों को भाते हैं, क्योंकि वे मुझे प्रकट करते हैं; जिन लोगों से मैं नफरत करता हूँ, उन सबका मैं उनकी ओर देखे बिना ही तिरस्कार करता हूँ, क्योंकि वे शैतान के वंशज हैं और शैतान से संबंध रखते हैं। आज सभी लोगों को अपनी जाँच करनी चाहिए: यदि तुम्हारे इरादे सही हैं और तुम वास्तव में मुझसे प्रेम करते हो, तो मैं निश्चित रूप से तुमसे प्रेम करूँगा। तुम्हें मुझसे वास्तव में प्रेम करना चाहिए और मुझे धोखा नहीं देना चाहिए! मैं वह परमेश्वर हूँ, जो लोगों के अंतरतम दिलों की जाँच करता है! यदि तुम्हारे इरादे गलत हैं और तुम मेरे प्रति उदासीन और निष्ठाहीन हो, तो मैं तुमसे निश्चित रूप से घृणा करूँगा; मैंने न तो तुम्हें चुना था, न ही पूर्वनियत किया था। बस इंतजार करो कि तुम कब नरक में जाते हो! संभव है कि अन्य लोग इन चीजों को देखने में सक्षम न हों, लेकिन केवल तुम और मैं, वह परमेश्वर, जो लोगों के दिलों में गहरे देखता है, उन्हें जानते हैं। वे सभी एक निश्चित समय पर प्रकट की जाएँगी। ईमानदारलोगों को चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है और बेईमान लोगों को डरने की आवश्यकता है। यह सब मेरी बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्थाओं का हिस्सा है।

हाथ का यह कार्य बहुत जरूरी और दूभर है, और इसके लिए आवश्यक है कि तुम लोग इस अंतिम कार्य को पूरा करने के लिए आखिरी बार मेरे लिए खपो। मेरी अपेक्षाएँ वस्तुत: बहुत कठिन नहीं हैं : मैं बस यह चाहता हूँ कि तुम लोग मेरे साथ समन्वय का एक अच्छा काम करने, हर बात में मुझे संतुष्ट करने, और मेरे द्वारा दिए जाने वाले मार्गदर्शन का अपने भीतर से पालन करने में सक्षम हो सको। अंधे मत बनो; एक लक्ष्य रखो, और सभी पहलुओं से और सभी बातों में मेरे इरादे महसूस करो। ऐसा इसलिए है, क्योंकि तुम लोगों के लिए मैं अब एक छिपा हुआ परमेश्वर नहीं हूँ, और मेरे इरादों को समझने के लिए तुम्हें इस बारे में बहुत स्पष्ट होना चाहिए। बहुत ही कम समय में तुम लोग न केवल सही मार्ग खोजने वाले विदेशियों से मिलोगे, बल्कि और भी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम लोगों में उनकी चरवाही करने की क्षमता होनी चाहिए। यह मेरा अत्यावश्यक इरादा है; अगर तुम इसे नहीं देख सकते, तो काम नहीं चलेगा। बहरहाल, तुम्हें मेरी सर्वशक्तिमत्ता में विश्वास करना चाहिए। जब तक लोग सही हैं, मैं निश्चित रूप से उन्हें अच्छे सैनिक बनने के लिए प्रशिक्षित करूँगा। सब-कुछ मेरे द्वारा उचित रूप से व्यवस्थित कर दिया गया है। तुम लोगों को मेरे लिए कष्ट सहन करने की आकांक्षा रखनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण क्षण है। इसे खोना नहीं! मैं तुम लोगों द्वारा अतीत में की गई चीजों पर ध्यान नहीं दूँगा। तुम्हें अकसर मेरे सामने प्रार्थना और विनती

करनी चाहिए; मैं तुम्हारे आनंद और उपयोग के लिए तुम्हें पर्याप्त अनुग्रह प्रदान करूँगा। अनुग्रह और आशीष एक ही चीज नहीं हैं। अभी तुम लोग जिसका आनंद ले रहे हो, वह मेरा अनुग्रह है, और मेरी दृष्टि में यह उल्लेखनीय नहीं है, जबकि आशीष वे हैं, जिनका तुम भविष्य में असीम रूप से आनंद लोगे। ये वे आशीष हैं, जो लोगों पर घटित नहीं हुए हैं और जिनकी वे कल्पना नहीं कर सकते हैं। मैं इसीलिए कहता हूँ कि तुम लोग धन्य हो, और सृष्टि की रचना के बाद से मनुष्य ने कभी इन आशीषों का आनंद नहीं लिया है।

मैंने पहले ही तुम लोगों के सामने अपना सब-कुछ प्रकट कर दिया है। मैं केवल यही उम्मीद करता हूँ कि तुम लोग मेरे हृदय के प्रति विचारशील हो सको, अपने हर काम में अपने विचार मुझे समर्पित कर सको, और सभी मामलों में मेरा ध्यान रख सको, और मैं हमेशा तुम्हारे मुसकराते हुए चेहरे देखूँ। अब से जो लोग ज्येष्ठ पुत्रों की स्थिति प्राप्त करेंगे, वे वो लोग होंगे जो मेरे साथ राजाओं के रूप में शासन करेंगे। उन्हें किसी भी भाई द्वारा धौंस नहीं दी नहीं जाएगी, न ही उन्हें मेरे द्वारा ताड़ित किया या उनसे निपटा जाएगा, क्योंकि वह सिद्धांत, जिससे मैं कार्य करता हूँ, यह है : ज्येष्ठ पुत्र के समूह में वे लोग हैं, जिन्हें दूसरों के द्वारा तुच्छ समझा गया और धौंसियाया गया है, और जिन्होंने जीवन के सभी अन्याय झेले हैं। (वे मेरे द्वारा अग्रिम रूप से निपटे और तोड़े जा चुके हैं और अग्रिम रूप से पूर्ण भी बनाए जा चुके हैं)। ये लोग अग्रिम रूप से मेरे साथ उन आशीषों का आनंद ले चुके हैं, जो उन्हें देय हैं। मैं धार्मिक हूँ और किसी के प्रति भी पक्षपाती नहीं हूँ।

अध्याय 74

धन्य हैं वे, जिन्होंने मेरे वचन पढ़े हैं और जो यह विश्वास करते हैं कि वे पूरे होंगे। मैं तुम्हारे साथ बिलकुल भी दुर्व्यवहार नहीं करूंगा; जो तुम विश्वास करते हो, उसे तुम्हारे भीतर पूरा करूँगा। ये तुम पर आता हुआ मेरा आशीष है। मेरे वचन हर व्यक्ति के भीतर छिपे रहस्यों पर सटीकता से वार करते हैं; सभी में प्राणघातक घाव हैं, और मैं वह अच्छा चिकित्सक हूँ, जो उन्हें चंगा करता है : बस मेरी उपस्थिति में आ जाओ। मैंने क्यों कहा कि भविष्य में कोई दु:ख नहीं होगा और न ही कोई अश्रु होंगे? उसका कारण यही है। मुझमें सभी चीज़ें संपन्न होती हैं, परंतु मनुष्य में सभी बातें दूषित, खोखली और मनुष्यों को धोखा देने वाली हैं। मेरी उपस्थिति में तुम निश्चित रूप से सभी चीज़ें पाओगे, और निश्चित रूप से उन सभी आशीषों को देखोगे और उनका आनंद भी उठाओगे, जिनकी तुम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते। जो मेरे समक्ष

नहीं आते, वे निश्चित रूप से विद्रोही हैं और पूरी तरह से मेरा विरोध करने वाले हैं। मैं निश्चित रूप से उन्हें हलके में नहीं छोड़ूंगा; मैं ऐसे लोगों को कठोरता से ताड़ित करूंगा। इसे स्मरण रखो! लोग जितना अधिक मेरे सामने आएँगे, उतना ही अधिक वे प्राप्त करेंगे—हालाँकि वह सिर्फ़ अनुग्रह होगा। बाद में वे और बड़े आशीष प्राप्त करेंगे।

संसार के सृजन के समय से मैंने लोगों के इस समूह को—अर्थात् आज के तुम लोगों को—पूर्वनिर्धारित करना तथा चुनना प्रारंभ कर दिया है। तुम लोगों का मिज़ाज, क्षमता, रूप-रंग, कद-काठी, वह परिवार जिसमें तुमने जन्म लिया, तुम्हारी नौकरी और तुम्हारा विवाह—अपनी समग्रता में तुम, यहां तक कि तुम्हारे बालों और त्वचा का रंग, और तुम्हारे जन्म का समय—सभी कुछ मेरे हाथों से तय किया गया था। यहां तक कि हर एक दिन जो चीज़ें तुम करते हो और जिन लोगों से तुम मिलते हो, उसकी व्यवस्था भी मैंने अपने हाथों से की थी, साथ ही आज तुम्हें अपनी उपस्थिति में लाना भी वस्तुतः मेरा ही आयोजन है। अपने आप को अव्यवस्था में न डालो; तुम्हें शांतिपूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। आज जिस बात का मैं तुम्हें आनंद लेने देता हूँ, वह एक ऐसा हिस्सा है जिसके तुम योग्य हो, और यह संसार के सृजन के समय मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारित किया गया है। सभी मनुष्य बहुत चरमपंथी हैं : या तो वे अत्यधिक दुराग्रही हैं या पूरी तरह से निर्लज्ज। वे मेरी योजना और व्यवस्था के अनुसार कार्य करने में असमर्थ हैं। अब और ऐसा न करो। मुझमें सभी मुक्ति पाते हैं; स्वयं को बांधो मत, क्योंकि इससे तुम्हारे जीवन के संबंध में हानि होगी। इसे स्मरण रखो!

विश्वास करो कि सब-कुछ मेरे हाथों में है। अतीत में जो तुम लोगों को रहस्य लगते थे, वे आज खुले तौर पर प्रकट कर दिए गए हैं; वे अब छिपे नहीं रहे (क्योंकि मैंने कहा है कि भविष्य में कुछ भी छिपा नहीं रहेगा)। लोग अकसर धैर्यहीन होते हैं; वे चीज़ें पूरी करने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं, और इस बात का ध्यान नहीं रखते कि मेरे हृदय में क्या है। मैं तुम लोगों को प्रशिक्षित कर रहा हूँ, ताकि तुम मेरा बोझ बाँट सको और मेरे घर का प्रबंधन कर सको। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग शीघ्रता से बड़े हो जाओ, ताकि अपने से छोटे भाइयों का नेतृत्व कर सको, और ताकि हम पिता और पुत्रों का शीघ्र पुनर्मिलन हो सके और हम फिर कभी अलग न हों। इससे मेरे इरादे पूरे होंगे। रहस्य पहले ही सभी लोगों पर प्रकट कर दिए गए हैं, और कुछ भी बिलकुल छिपा नहीं रहा है : मैं—स्वयं संपूर्ण परमेश्वर, जिसमें सामान्य मानवता और पूर्ण दिव्यता दोनों हैं—आज ठीक तुम लोगों की आंखों के सामने प्रकट कर दिया गया हूँ। मेरा पूरा अस्तित्व

(वेशभूषा, बाहरी रूप-रंग, और शारीरिक आकार) स्वयं परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति है; यह परमेश्वर के व्यक्तित्व का मूर्त रूप है जिसकी कल्पना मनुष्य ने संसार के सृजन के समय से की है, परंतु जिसे किसी ने देखा नहीं। मेरे कृत्य मेरे वचनों जितने ही अच्छे होने का यह कारण है कि मेरी सामान्य मानवता और मेरी संपूर्ण दिव्यता एक-दूसरे की पूरक हैं; इतना ही नहीं, इससे सभी लोग यह देख पाते हैं कि एक सामान्य व्यक्ति वास्तव में इतना ज़बर्दस्त सामर्थ्य रखता है। तुममें से जो लोग सचमुच मुझमें विश्वास रखते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि मैंने तुममें से प्रत्येक को एक सच्चा हृदय दिया है ताकि तुम मुझसे प्रेम कर सको। जब मैं तुम्हारे साथ व्यवहार करता हूँ, तो मैं तुम पर प्रकाश डालता हूँ और तुम्हें प्रबुद्ध करता हूँ, और इसी के माध्यम से मैं तुम्हें अपने को जानने देता हूँ। नतीजतन, मैं चाहे तुमसे किसी भी तरह व्यवहार करूं, तुम भागोगे नहीं; बल्कि तुम मुझे लेकर अधिक से अधिक निश्चित हो जाओगे। जब तुम दुर्बल होते हो, तो वह भी मेरी व्यवस्था होती है, जो तुम्हें यह देखने देती है कि अगर तुम मुझे छोड़ोगे, तो तुम मुरझा जाओगे और मर जाओगे। उससे तुम यह सीख सकते हो कि मैं तुम्हारा जीवन हूँ। दुर्बल रहने के पश्चात् सबल बनने से तुम यह देख पाते हो कि दुर्बल या सबल होना तुम्हारे वश में नहीं है; यह पूरी तरह से मुझ पर निर्भर करता है।

सभी रहस्य पूर्ण रूप से प्रकट हैं। तुम लोगों की भावी गतिविधियों में मैं तुम्हें कार्य-दर-कार्य अपने निर्देश दूंगा। मैं अस्पष्ट नहीं रहूँगा; मैं सर्वथा सुस्पष्ट रहूँगा, यहां तक कि तुमसे सीधे बात करूंगा; ताकि तुम लोगों को चीज़ों पर स्वयं विचार करने की आवश्यकता न रहे, वरना कहीं तुम मेरा प्रबंधन अस्तव्यस्त न कर दो। इसीलिए मैं बार-बार इस बात पर ज़ोर देता हूँ कि अब से कुछ भी छिपा नहीं रहेगा।

अध्याय 75

मेरे वचन, जरा-से भी विचलन के बिना, बोले जाते ही पूरे हो जाएँगे। अब से सभी छिपे हुए रहस्य बिलकुल भी अस्पष्ट या छिपे हुए नहीं रहेंगे, और उन्हें तुम लोगों के सामने प्रकट कर दिया जाएगा—मेरे प्यारे पुत्रो। मैं तुम्हें अपने में और भी बड़े संकेत और चमत्कार, यहाँ तक कि और भी बड़े रहस्य दिखाऊँगा। ये चीजें निश्चित रूप से तुम लोगों को चकित कर देंगी और तुम लोगों को मेरी—सर्वशक्तिमान परमेश्वर की—एक बेहतर समझ प्रदान करेंगी, और तुम्हें उनमें निहित मेरी बुद्धि को समझने देंगी। आज तुम लोगों को उस सच्चे परमेश्वर के रूबरू लाया जाता है, जिसे मनुष्यों ने सृष्टि की रचना से लेकर अब

तक कभी नहीं देखा है, और मेरे बारे में कुछ भी खास नहीं है। मैं तुम लोगों के साथ खाता, रहता, बोलता और हँसता हूँ, और मैं हमेशा तुम लोगों के भीतर रहता हूँ, और इसके साथ ही, तुम लोगों के बीच घूमता भी हूँ। जो लोग विश्वास नहीं करते या जिनकी अपनी गहरी धारणाएँ हैं, उन लोगों के लिए यह एक ठोकर है। यह मेरी बुद्धि है। मैं कुछ लोगों के लिए वे चीजें भी प्रकट करूँगा, जिन्हें मेरी सामान्य मानवता नहीं जानती, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं स्वयं परमेश्वर नहीं हूँ। इसके विपरीत, यह ये साबित करने के लिए पर्याप्त है कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। जो लोग विश्वास करते हैं, उन पर इस बात का एक निर्णायक प्रभाव पड़ता है, और केवल इस बात के कारण ही उनमें मेरे बारे में एक सौ प्रतिशत निश्चितता है। अत्यधिक चिंता मत करो; मैं एक-एक करके चीजें तुम्हारे सामने प्रकट करूँगा।

तुम लोगों के लिए मैं खुला हूँ, छिपा हुआ नहीं। किंतु अविश्वासियों के लिए—जो धोखेबाज हैं, जो शैतान द्वारा कुछ हद तक भ्रष्ट कर दिए गए हैं—मैं छिपा रहूँगा। बहरहाल, जब मैंने पहले सभी लोगों के सामने खुद को प्रकट करने की बात कही थी, तो मैं अपनी धार्मिकता, न्याय और प्रताप की बात कर रहा था, ताकि वे खुद को प्राप्त होने वाले परिणाम से जान सकें कि मैं ब्रह्मांड और सभी चीजों का प्रभारी हूँ। हिम्मत से काम लो! बस, अपने सिर उठाए रखो! डरो मत : मैं—तुम लोगों का पिता—तुम लोगों की सहायता के लिए यहाँ मौजूद हूँ, और तुम लोग पीड़ित नहीं होगे। जब तक तुम अकसर मेरे सामने प्रार्थना और अनुनय करते हो, तब तक मैं तुम लोगों पर पूरा विश्वास रखूँगा। सत्ता में रहने वाले लोग बाहर से दुष्ट लग सकते हैं, लेकिन डरो मत, क्योंकि ऐसा इसलिए है कि तुम लोगों में विश्वास कम है। जब तक तुम लोगों का विश्वास बढ़ता रहेगा, तब तक कुछ भी ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। प्रसन्न रहो और जी भरकर उछलो! सब-कुछ तुम लोगों के पैरों-तले और मेरी पकड़ में है। क्या सिद्धि या विनाश मेरे एक वचन से तय नहीं होता?

जिन लोगों का मैं अभी उपयोग कर रहा हूँ, वे सभी मेरे द्वारा बहुत पहले एक-एक करके अनुमोदित किए गए थे। अर्थात्, ज्येष्ठ पुत्रों के समूह के लोगों को पहले ही निर्धारित किया जा चुका है, और उन्हें तब से निर्धारित किया जा चुका है, जब मैंने दुनिया बनाई थी। इसे कोई नहीं बदल सकता, और सभी कुछ मेरे आदेश के अनुसार होना चाहिए। कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता; ये सब मेरी व्यवस्थाएँ हैं। मेरे साथ हर चीज स्थिर और सुरक्षित होगी; मेरे साथ सब-कुछ उचित और उपयुक्त तरीके से किया जाएगा और इसमें जरा-सा भी प्रयास नहीं करना पड़ेगा। मैं बोलता हूँ और यह स्थापित हो जाता है; मैं बोलता हूँ और

यह पूरा हो जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्थिति में मची खलबली को देखते हुए, तुम लोगों ने अपना प्रशिक्षण शुरू करने की जल्दी क्यों नहीं की? तुम कब तक इंतजार करोगे? क्या तुम तब तक इंतजार करते रहोगे, जब तक विदेशी चीन में तुम लोगों से मिलने के लिए न उमड़ पड़ें? हो सकता है कि तुम पहले कुछ धीमे रहे हो, लेकिन तुम अपने आप में लिप्त रहना जारी नहीं रख सकते! मेरे पुत्रो! मेरे श्रमसाध्य इरादों के प्रति विचारशील बनो! जो लोग अधिक बार मेरे करीब आते हैं, वे सब-कुछ हासिल करेंगे। क्या तुम मुझ पर अविश्वास करते हो?

मेरे कार्य की गति बिजली की एक चमक है, लेकिन निश्चित रूप से यह गर्जन की गड़गड़ाहट नहीं है। क्या तुम इन वचनों का सही अर्थ समझते हो? तुम लोगों को मेरे साथ बेहतर समन्वय करने और मेरे इरादों के प्रति विचारशील होने में सक्षम होना चाहिए। तुम आशीष प्राप्त करना चाहते हो, लेकिन पीड़ा से डरते भी हो; क्या यह तुम लोगों की दुविधा नहीं है? मैं तुम्हें बता दूँ! यदि आज कोई आशीष प्राप्त करना चाहता है किंतु वह उस दिशा में समस्त बलिदान नहीं करता, तो वह सिर्फ मेरा दंड और मेरा न्याय ही पाएगा। किंतु जो लोग समस्त बलिदान करते हैं, वे सभी चीजों में शांति का अनुभव करेंगे और उनके लिए सब-कुछ प्रचुर मात्रा में होगा, और जो कुछ भी वे प्राप्त करेंगे, वे मेरे आशीर्वाद होंगे। आज जिस चीज की तत्काल आवश्यकता है, वह है तुम लोगों का विश्वास, और तुम लोगों द्वारा एक कीमत चुकाना। सब-कुछ होकर रहेगा, और इसे तुम लोग अपनी आँखों से देखोगे और व्यक्तिगत रूप से अनुभव करोगे। मेरे पास एक भी गलत वचन या झूठ नहीं है; जो कुछ भी मैं कहता हूँ वह पूरी तरह सत्य है, और वह बुद्धि से रहित नहीं है। आधा विश्वास और आधा संदेह मत करो। यह मैं हूँ, जो तुम लोगों के बीच हर चीज पूरी करता है, और यह भी मैं हूँ, जो बुराई करने वालों का न्याय और निपटान करता है। मैं तुम लोगों से प्यार करता हूँ और तुम लोगों को पूर्ण बनाता हूँ। किंतु उनके लिए मैं पूरा विपरीत हूँ : घृणा और विनाश, बिना किसी छूट के और बिना कोई निशान छोड़े। मैं जो कुछ भी कहता और करता हूँ, उसमें मेरी प्रचुरता निहित है। क्या तुम लोगों ने थोड़ा-थोड़ा करके उनके जाँच की है? कुछ वचन मैंने कई बार कहे हैं, तो फिर तुम लोग मेरा अभिप्राय क्यों नहीं समझते? मेरे वचनों को पढ़ लेने के बाद क्या सब-कुछ ठीक वैसा हो जाएगा, जैसा कि होना चाहिए? क्या तब सब-कुछ संपन्न हो जाएगा? तुम्हारा मेरे दिल के प्रति विचारशील होने का कोई इरादा नहीं है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि मैं पूरी तरह से अधिकार-युक्त, सर्व-बुद्धिमान, एक सच्चा परमेश्वर हूँ, जो लोगों के दिलों में गहरे देखता है? क्या तुम अभी भी इन वचनों का अर्थ नहीं समझते? क्या तुमने वह

प्रत्येक वचन याद कर लिया है, जिस पर मैंने जोर दिया है? क्या वे वास्तव में तुम्हारे लिए कार्य करने के सिद्धांत बन गए हैं?

मैं पूरे ब्रह्मांड की निगरानी करते हुए हर चीज से ऊपर खड़ा हूँ। मैं हर राष्ट्र और व्यक्ति को अपना महान सामर्थ्य और अपनी पूरी बुद्धि दिखाऊँगा। अभी तुम लोग बस वह न करो, जो तुम आनंद की खोज के लिए कर सकते हो। जब दुनिया के सभी देश एकजुट हो जाएँगे, तो ऐसा क्या होगा जो तुम लोगों का न हो? फिर भी, मैं तुम लोगों को अब कमी नहीं होने दूँगा, न ही मैं तुम लोगों को पीड़ित होने दूँगा। विश्वास करो कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ! हर चीज पूरी होगी और बेहतर से बेहतर होती जाएगी! मेरे ज्येष्ठ पुत्रो! सारे आशीष तुम लोगों के पास आएँगे! तुम लोग उनका अंतहीन आनंद लोगे और वे अटूट आपूर्ति वाले, समृद्ध और प्रचुर, और संख्या में पूर्ण होंगे!

अध्याय 76

मेरे सभी कथन मेरी इच्छा की अभिव्यक्तियाँ हैं। मेरे बोझ का खयाल कौन रख सकता है? मेरे इरादे को कौन समझ सकता है? क्या तुमलोगों ने मेरे हर प्रश्न पर विचार किया है जो मैंने तुम्हारे सामने रखे हैं? ऐसी लापरवाही! तुम मेरी योजनाओं में बाधा डालने की हिम्मत कैसे करते हो? तुम नियंत्रण के परे हो! यदि दुष्ट आत्माओं का ऐसा काम जारी रहता है, तो मैं उन्हें तुरंत अथाह गड्ढे में मरने के लिए डाल दूँगा! मैंने लंबे समय से दुष्ट आत्माओं के विभिन्न दुष्कर्मों को स्पष्ट रूप से देखा है। और दुष्ट आत्माओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले लोगों (गलत इरादों वाले लोग, जो देह-सुख या धन की लालसा करते हैं, जो खुद को ऊंचा उठाते हैं, जो कलीसिया को बाधित करते हैं, आदि) की असलियत भी मैं स्पष्ट रूप से जान गया हूँ। यह मत समझो कि दुष्ट आत्माओं को बाहर निकालते ही सब कुछ खत्म हो जाता है। मैं तुम्हें बता दूँ! अब से, मैं इन लोगों का एक-एक करके निपटारा करूँगा, कभी उनका उपयोग नहीं करूँगा! कहने का तात्पर्य है, दुष्ट आत्माओं द्वारा भ्रष्ट किसी भी व्यक्ति का उपयोग मेरे द्वारा नहीं किया जाएगा, और उसे बाहर निकाल दिया जाएगा! ऐसा मत सोचना कि मैं भावनाविहीन हूँ! जान लो! मैं पवित्र परमेश्वर हूँ, और मैं एक गंदे मंदिर में नहीं रहूँगा! मैं केवल ईमानदार और बुद्धिमान लोगों का उपयोग करता हूँ जो मेरे प्रति पूरी तरह वफ़ादार और मेरे बोझ के प्रति विचारशील हो सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसे लोगों को मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारित किया गया था। कोई भी दुष्ट आत्मा उनपर बिलकुल काम नहीं करता है। मुझे यह बात स्पष्ट करने दो: अब

से, जिन सब लोगों के पास पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है, उनके पास दुष्ट आत्माओं का काम है। मैं एक बार फिर बता दूँ: मैं एक भी ऐसे व्यक्ति को नहीं चाहता जिसपर दुष्ट आत्माएँ काम करती हैं। वे सभी अपनी देह के साथ नरक में डाल दिए जाएँगे!

अतीत में तुमलोगों से मेरी अपेक्षाएँ थोड़ी नर्म थीं, और जहां तक देह की बात है, तो तुमलोग स्वच्छन्द रहे हो। अब आज के बाद, मैं तुम्हें इसे जारी रखने की अनुमति नहीं दूँगा। यदि तुम्हारे शब्द और कार्य मुझे हर तरह से प्रकट नहीं करते हैं, या यदि वे ज़रा भी मेरी अनुरूपता में नहीं हैं, तो निश्चित रूप से मैं तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ूँगा। अन्यथा, तुमलोग हमेशा बिना किसी नियंत्रण के, हँसते और मज़ाक करते रहोगे, ठहाके लगाते रहोगे। जब तुम कुछ गलत करते हो, तो क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैंने तुम्हें त्याग दिया है? जबकि तुम जानते हो, फिर भी तुम क्यों स्वच्छन्द हो? क्या तुम न्याय में उठे मेरे हाथ के स्पर्श की प्रतीक्षा कर रहे हो? आज से, जो कोई एक भी पल के लिए मेरे इरादे से सहमत नहीं होता है, उसे मैं तुरंत दंडित करूँगा। यदि तुम इधर-उधर साथ बैठकर बकवाद करते हो, तो मैं तुम्हें त्याग दूँगा। अगर तुम आध्यात्मिक बातें नहीं करते हो, तो मत बोलो। मैं तुम पर रोक-टोक लगाने के लिए यह नहीं कह रहा हूँ बल्कि मेरा मतलब यह है कि चूँकि मेरा काम इस चरण तक बढ़ चुका है, तो अब मैं अपनी योजना के अनुसार इसे जारी रखूँगा। यदि तुमलोग साथ बैठकर जीवन की आध्यात्मिक चीज़ों के बारे में संवाद करते हो, तो मैं तुम सभी के साथ रहूँगा। मैं तुमलोगों में से किसी से भी अनुचित व्यवहार नहीं करूँगा। जब तुम अपना मुंह खोलोगे, तो मैं तुम्हें उचित शब्द प्रदान करूँगा। तुम्हें मेरे वचनों में अंतर्निहित मेरे दिल की सराहना करनी चाहिए। मैं तुमलोगों से मूक होने का ढोंग करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, न ही मैं तुम सभी से तुच्छ बातों में शामिल होने के लिए कह रहा हूँ।

मैं क्यों कहता रहता हूँ कि ज्यादा समय नहीं बचा है, और मेरे दिन के आने में देर नहीं होनी चाहिए? क्या तुमलोगों ने इस बारे में सावधानी से सोचा है? क्या तुम वास्तव में मेरे वचनों का अर्थ समझते हो? अर्थात, जब से मैंने बात करनी शुरू की थी तब से मैं काम करता रहा हूँ। तुमलोगों में से हर एक व्यक्ति मेरे कार्य का उद्देश्य रहा है। विशेष कोई एक ही व्यक्ति नहीं; और इसके अलावा, कोई और व्यक्ति नहीं। तुमलोग केवल आशीर्वाद का आनंद नहीं ले पाने के बारे में चिंतित हो, लेकिन तुम अपने जीवन के विषय में नहीं सोचते हो। तुम कितने मूर्ख हो! तुम कितने दयनीय हो! तुम्हें मेरे बोझ का बिलकुल भी खयाल नहीं है!

मेरे सभी श्रमसाध्य प्रयास और वो क़ीमत जो मैंने चुकाई है, वे तुम्हारे लिए हैं। यदि तुम मेरे बोझ के बारे में विचारशील नहीं हो, तो तुमलोग मेरी उन अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर रहे हो जो मुझे तुम सभी से हैं। सभी राष्ट्र तुमलोगों के शासन का इंतजार कर रहे हैं, और सभी लोग तुम्हारे द्वारा शासित होने का इंतज़ार कर रहे है। मैंने सब कुछ तुमलोगों के हाथों में दे दिया है। अब, सत्ता में रहने वाले सभी लोग पद त्याग करने लगे हैं और गिर पड़े हैं, और वे सिर्फ मेरे न्याय का सामना करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ध्यान से देखो! दुनिया अब टुकड़े-टुकड़े हो रही है, जबकि मेरा राज्य सफलतापूर्वक निर्मित हुआ है। मेरे पुत्र प्रकट हुए हैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे साथ राजाओं के रूप में विभिन्न राष्ट्रों और लोगों पर शासन करते हैं। ऐसा मत सोचो कि यह कोई अस्पष्ट बात है; यह सीधा-सादा सच है। क्या ऐसा नहीं है? जैसे ही तुम सब प्रार्थना करते हो और मुझसे अनुनय करते हो, मैं तुरंत कार्यवाही करूँगा और तुम सभी को सताने वालों को दंडित करूँगा, जो तुम्हें परेशान करते हैं उनसे निपटूँगा, उनलोगों को नष्ट कर दूँगा जिनसे तुम नफ़रत करते हो, और उन लोगों, घटनाओं, और चीज़ों का प्रबंधन करूँगा जो तुम्हारी सेवा में रत हैं। मैंने इसे कई बार कहा है: मैं उस व्यक्ति का उद्धार नहीं करूँगा जो मसीह की सेवा करता है (यानी कोई भी जो मेरे पुत्र के लिए सेवा प्रदान करता है)। मेरे पुत्र की सेवा करने का मतलब यह नहीं है कि वे अच्छे लोग हैं; यह पूरी तरह से मेरी महान शक्ति और मेरे अद्‌भुत कार्यों का परिणाम है। मानवता को बहुत ज्यादा महत्व मत दो। ऐसे लोगों के पास निश्चित रूप से पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है और वे आध्यात्मिक चीज़ों को बिलकुल ही नहीं समझते। मैं जब उन्हें समाप्त कर देता हूँ, तब उनका कोई उपयोग नहीं रहेगा। इसे याद रखना! यह तुम सब के लिए मेरी पुष्टि है। अव्यवस्थित ढंग से जानने की कोशिश मत करो, समझे?

लोग लगातार कम होते जा रहे हैं, लेकिन सदस्य हमेशा से अधिक परिष्कृत हैं। यह मेरा कार्य है, मेरी प्रबंधन योजना, और इसके अलावा यह मेरी बुद्धि और मेरी सर्वशक्तिमत्ता है। यह मेरी सामान्य मानवता और मेरी पूर्ण दिव्यता का समन्वय है। क्या तुम सब इसे स्पष्ट रूप से देख रहे हो? क्या तुम्हें इस मुद्दे की कोई वास्तविक समझ है? मैं अपनी दिव्यता के माध्यम से एक-एक कर उन सभी चीजों को पूरा करूँगा जिनकी बात मैंने अपनी सामान्य मानवता के द्वारा की है। इसी कारण मैं यह कहता रहता हूँ कि जो भी मैं बोलता हूँ वह निस्संदेह होकर रहेगा; बल्कि, यह सब बहुत स्पष्ट और प्रकट होगा। जो भी मैं कहता हूँ वह पूरा होगा, और निश्चित रूप से यह लापरवाही से नहीं किया जाएगा। मैं खोखले वचनों को नहीं कहता और मैं भूल नहीं करता हूँ। जो भी मुझे मापने की हिम्मत करता है, उसका न्याय किया जाएगा, और निश्चित

रूप से मेरी हथेली से बच नहीं पाएगा। जैसे ही मेरे वचन बोले जाते हैं, कौन विरोध करने की हिम्मत करता है? मुझे फुसलाने या मुझसे कुछ भी छिपाने का दुस्साहस कौन करता है? मैं पहले यह कह चुका हूँ: मैं एक बुद्धिमान परमेश्वर हूँ। मैं अपनी सामान्य मानवता का उपयोग सभी लोगों और शैतानी व्यवहार को प्रकट करने के लिए करता हूँ, उन लोगों को उघाड़ता हूँ जो गलत इरादे वाले हैं, जो दूसरों के सामने तो एक तरह से पेश आते हैं और उनकी पीठ के पीछे दूसरी तरह से, जो मेरा विरोध करते हैं, जो मेरे प्रति विश्वासघाती हैं, जो दौलत के लालच में हैं, जो मेरे बोझ के प्रति विचारशील नहीं हैं, जो अपने भाइयों और बहनों के साथ धोखाधड़ी और कुटिलता में लगे हुए हैं, जो लोगों को खुश करने के लिए चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं, और जो अपने भाइयों और बहनों के साथ अपने दिलोदिमाग में सर्वसम्मति से सहयोग नहीं कर सकते हैं। मेरी सामान्य मानवता के कारण, बहुत से लोग गुप्त रूप से मेरा विरोध करते हैं और धोखाधड़ी और कुटिलता में लगे होते हैं, वे यह मान लेते हैं कि मेरी सामान्य मानवता को पता नहीं होता है। और बहुत से लोग मेरी सामान्य मानवता पर विशेष ध्यान देते हैं, मुझे खाने और पीने के लिए अच्छी चीज़ें देते हैं, सेवकों की तरह मेरी सेवा करते हैं, और उनके दिल में जो कुछ भी होता है, उसे कहते हैं, जबकि मेरी पीठ के पीछे बिलकुल दूसरी तरह से काम करते हैं। अंधे मनुष्यो! तुम मुझे—उस परमेश्वर को जो मनुष्य के दिल में गहराई से देखता है—कितना कम जानते हो। तुम अभी भी मुझे नहीं जानते; तुम अभी भी सोचते हो कि मुझे पता नहीं है कि तुम क्या करने जा रहे हो। इसके बारे में सोचो: मेरी सामान्य मानवता के कारण कितने लोगों ने खुद को बर्बाद कर दिया है? जागो! मुझे अब और धोखा मत दो। तुम्हें अपने समस्त आचरण और व्यवहार को, अपने प्रत्येक शब्द और कार्य को, मेरे सामने अर्पित कर देना चाहिए, और मेरे द्वार इसकी पड़ताल को स्वीकार करना चाहिए।

अध्याय 77

मेरे वचनों को लेकर अनिश्चित रहना मेरे कार्यों के प्रति अस्वीकृति का रवैया रखने के समान है। अर्थात्, मेरे वचन मेरे पुत्र के भीतर से प्रवाहित हुए हैं, फिर भी तुम लोग उन्हें महत्व प्रदान नहीं करते। तुम इतने तुच्छ हो! मेरे पुत्र के भीतर से कई वचन प्रवाहित हुए हैं, फिर भी तुम लोग शंकित और अनिश्चित रहते हो। तुम अंधे हो! जो कार्य मैंने किए हैं, उनमें से एक का भी उद्देश्य तुम नहीं समझते। क्या जो वचन मैं अपने पुत्र के माध्यम से कहता हूँ, वे मेरे वचन नहीं हैं? कुछ बातें हैं, जिन्हें मैं

सीधे कहने का इच्छुक नहीं हूँ, अत: मैं अपने पुत्र के माध्यम से कहता हूँ। फिर भी, तुम लोग इतने बेतुके क्यों हो कि तुम मेरे सीधे बोलने पर जोर देते हो? तुम मुझे नहीं समझते, और तुम्हें मेरे कृत्यों और कर्मों को लेकर सदैव संदेह रहता है। क्या मैंने पहले नहीं कहा है कि मेरी हर गतिविधि और मेरा हर कृत्य और कर्म सही है? लोगों को उनकी जाँच करनी बंद करनी चाहिए। अपने गंदे हाथ हटा लो! मैं तुम्हें कुछ बताता हूँ : जिन लोगों का भी मैं उपयोग करता हूँ, वे सभी मेरे द्वारा संसार की रचना से पहले ही पूर्वनियुक्त कर दिए गए थे, और वे आज भी मेरे द्वारा अनुमोदित किए जाते हैं। तुम लोग निरंतर ऐसी बातों के लिए प्रयास करते रहते हो, उस व्यक्ति की जाँच करते रहते हो जो मैं हूँ और मेरे कृत्यों की पड़ताल करते रहते हो। तुम सभी में लेनदेन की मानसिकता है। यदि यह दोबारा हुआ, तो तुम निश्चित ही मेरे हाथों मारे जाओगे। मेरा कहना यह है कि : मुझ पर संदेह न करो, और जो चीजें मैंने की हैं, उनका विश्लेषण या उन पर सोच-विचार मत करो। इन चीजों में हस्तक्षेप तो तुम्हें बिलकुल भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसका संबंध मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं से है। यह कोई छोटी बात नहीं है।

जो भी समय तुम्हारे पास है, उसे वह सब करने में लगाओ, जिसका मैंने निर्देश दिया है। मैं पुन: यह कहता हूँ, और यह एक चेतावनी भी है : चीन में विदेशियों की बाढ़ आने वाली है। यह पूरी तरह सच है! मैं जानता हूँ कि अधिकांश लोगों को इस बारे में संदेह है और वे निश्चित नहीं हैं, अत: मैं तुम्हें बारंबार स्मरण कराता हूँ, ताकि तुम लोग शीघ्रता से जीवन के विकास की खोज कर सको और शीघ्रता से मेरी इच्छा पूरी कर सको। आज से अंतरराष्ट्रीय स्थिति और अधिक तनावपूर्ण होने लगेगी, और विभिन्न देश भीतर से नष्ट होने शुरू हो जाएँगे। चीन में खुशी के दिन समाप्ति पर हैं। इसका अर्थ है कि कर्मचारी हड़ताल पर चले जाएँगे, विद्यार्थी अपनी कक्षाओं से बाहर आ जाएँगे, व्यवसायी व्यवसाय करना बंद कर देंगे, और सभी कारखाने बंद हो जाएँगे और बचे रहने में नाकाम रहेंगे। वे संवर्ग बचने के लिए निधियाँ तैयार करना प्रारंभ कर देंगे (यह भी मेरी प्रबंधन-योजना के काम आएगा), और केंद्र सरकार के सभी स्तरों के नेता तैयारियाँ करते हुए दूसरों की कीमत पर कुछ चीजों पर ध्यान केंद्रित करने में अत्यधिक व्यस्त हो जाएँगे (यह अगले कदम में काम आने के लिए है)। इसे अच्छी तरह से देखो! यह ऐसी चीज है, जिसमें केवल चीन ही नहीं, पूरी कायनात सम्मिलित है, क्योंकि मेरा कार्य पूरी दुनिया की ओर उन्मुख है। किंतु यह उन लोगों के समूह में से, जो कि ज्येष्ठ पुत्र हैं, राजा बनाने के काम के लिए भी है। क्या तुम इसे स्पष्ट रूप से देखते हो? शीघ्रता करो और खोजो! मैं तुम लोगों के साथ गलत व्यवहार नहीं

करूँगा; मैं तुम लोगों को तुम्हारे हृदय तृप्त होने तक आनंद का अनुभव करने दूँगा।

मेरे कृत्य अद्भुत हैं। जब दुनिया में महान आपदाएँ आएँगी, और जब सभी दुष्कर्मी और शासक दंड पाएँगे—या और सटीक रूप से, जब मेरे नाम के बाहर रहने वाले सभी दुष्कर्मी कष्ट भोगेंगे—तब मैं तुम लोगों को अपने आशीष प्रदान करना शुरू करूँगा। यह मेरे इन वचनों का आंतरिक अर्थ है, "तुम लोग निश्चित रूप से आपदाओं की पीड़ा या नुकसान नहीं भुगतोगे," जिन्हें मैंने अतीत में बार-बार कहा है। क्या तुम लोग इसे समझते हो? मेरे द्वारा कथित "इस बार" उस समय को संदर्भित करता है, जब वचन मेरे मुख से निकलते हैं। पवित्र आत्मा का कार्य बहुत तीव्र गति से होता है; मैं एक क्षण, बल्कि एक क्षणांश की भी देरी नहीं करूँगा। इसके बजाय, मैं ठीक उसी क्षण अपने वचनों के अनुसार कार्य करूँगा, जब वे बोले जाते हैं। यदि मैं कहता हूँ कि आज मैं किसी को हटा रहा हूँ, या कि मैं किसी से घृणा करता हूँ, तो वह उस व्यक्ति के लिए तत्क्षण घटित हो जाएगा। दूसरे शब्दों में, मेरा पवित्र आत्मा तुरंत ही उनमें से वापस ले लिया जाएगा और वे एकदम बेकार, चलती-फिरती लाशें बन जाएँगे। ऐसे लोग फिर भी साँस लेते, चलते और बात करते रह सकते हैं, और मेरे समक्ष प्रार्थना भी कर सकते हैं, परंतु वे यह कभी नहीं जान पाएँगे कि मैंने उन्हें छोड़ दिया है। वे अनिवार्य रूप से बेकार लोग हो जाएँगे। यह बिलकुल सच और वास्तविक है!

मेरे वचन उस मनुष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मैं हूँ। इसे स्मरण रखो! संदेह मत करो, तुम्हें बिलकुल निश्चित होना चाहिए। यह जीवन और मृत्यु का मामला है! यह अत्यंत गंभीर है! जिस क्षण मेरे वचन बोले जाते हैं, उस क्षण मैं जो करना चाहता हूँ, वह पहले ही साकार हो चुका होता है। ये सभी वचन मेरे पुत्र के माध्यम से कहे जाने चाहिए। तुम लोगों में से किसने इस मामले पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है? मैं इसे और किस तरह स्पष्ट कर सकता हूँ? हर समय भयभीत और घबराए रहना बंद करो। क्या मुझे सचमुच लोगों की भावनाओं का कोई खयाल नहीं है? क्या मैं यूँ ही उन लोगों को त्याग दूँगा, जिन्हें मैं अनुमोदित करता हूँ? जो भी मैं करता हूँ, वह सिद्धांत से युक्त होता है। जो वाचा मैंने स्वयं बाँधी है, मैं उसे नहीं तोड़ूँगा, न ही मैं अपनी खुद की योजना भंग नहीं करूँगा। मैं तुम लोगों जैसा भोला नहीं हूँ। मेरा कार्य एक बड़ी चीज है; यह ऐसी चीज है, जिसे कोई मनुष्य नहीं कर सकता। मैंने कहा है कि मैं धार्मिक हूँ, और जो मुझसे प्रेम करते हैं, उनके लिए मैं प्रेम हूँ। क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता कि यह सच है? तुम निरंतर गलतफहमियाँ पाले रहते हो! अगर तुम्हारा अंतःकरण

हर चीज को लेकर शुद्ध है, तो तुम क्यों अभी भी भयभीत हो? यह सब इसलिए है, क्योंकि तुमने स्वयं को बाँध लिया है। मेरे पुत्र! मैंने तुम्हें कई बार स्मरण कराया है कि दुखी न हो और आँसू न बहाओ, और मैं तुम्हें त्यागूँगा नहीं। क्या तुम अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं कर पाते? मैं तुम्हें थामे रहूँगा और छोडूँगा नहीं; मैं तुम्हें सदैव प्रेम से गले लगाऊँगा। मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा, तुम्हारी रक्षा करूँगा और हर चीज में तुम्हें प्रकाशन और अंतर्दृष्टियाँ दूँगा, ताकि तुम देख सको कि मैं तुम्हारा पिता हूँ, और कि मैं वह हूँ, जो तुम्हें सहारा देता है। मैं जानता हूँ कि तुम सदा यह सोचते रहते हो कि किस तरह तुम अपने पिता के कंधों पर बोझ हलका कर सको। यह वह बोझ है, जो मैंने तुम्हें दिया है। इसे हटाने का प्रयास न करो! आजकल कितने लोग मेरे प्रति निष्ठावान रह सकते हैं? मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम अपना प्रशिक्षण तीव्रता से ले सको और मेरे हृदय को संतुष्ट करने के लिए तेजी से विकसित हो सको। पिता पुत्र के लिए दिन-रात श्रम करता है, तो पुत्र को भी पिता की प्रबंधन-योजना पर हर क्षण विचार करना चाहिए। यह मेरे साथ वह अग्रसक्रिय सहयोग है, जिसकी मैं बात किया करता था।

सब मेरा किया हुआ है। मैं उन लोगों पर बोझ डालूँगा, जिनका मैं आज उपयोग कर रहा हूँ, और उन्हें बुद्धि दूँगा, ताकि सारे कृत्य मेरी इच्छा के अनुरूप हो सकें, ताकि मेरा राज्य साकार हो सके, और ताकि एक नए स्वर्ग और पृथ्वी का आविर्भाव हो सके। जिन लोगों का मैं उपयोग नहीं कर रहा, वे पूरी तरह से विपरीत हैं; वे निरंतर स्तब्ध रहते हैं, वे भोजन करने के बाद सो जाते हैं और सोने के बाद भोजन कर लेते हैं, उन्हें इस बात का बिलकुल भी पता नहीं कि बोझ का क्या अर्थ है। ऐसे लोग पवित्र आत्मा के कार्य से विहीन हैं और मेरी कलीसिया से यथाशीघ्र निकाल दिए जाने चाहिए। अब मैं दर्शनों से संबंधित कुछ मामलों के बारे में बात करूँगा : कलीसिया राज्य की एक पूर्वशर्त है; कलीसिया का एक हद तक निर्माण हो जाने के बाद ही लोग राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। कोई भी राज्य में सीधे प्रवेश नहीं कर सकता (यदि मैने वादा न किया हो तो)। कलीसिया पहला कदम है, किंतु यह राज्य है, जो मेरी प्रबंधन-योजना का लक्ष्य है। लोगों के राज्य में प्रवेश करते ही हर चीज आकार ले लेगी, और डरने की कोई बात नहीं होगी। इस समय केवल मेरे ज्येष्ठ पुत्रों और मैंने ही राज्य में प्रवेश किया है और सभी राष्ट्रों और लोगों को शासित करना प्रारंभ कर दिया है। अर्थात्, मेरा राज्य संगठित होना शुरू हो रहा है, और जो भी राजा या मेरे लोग होंगे, उनकी घोषणा सार्वजनिक तौर पर की दी गई है। भविष्य

की घटनाएँ तुम लोगों को कदम-दर-कदम और क्रम से बता दी जाएँगी; अधिक उद्विग्न या चिंतित मत हो। क्या तुम्हें मेरे द्वारा तुमसे कहा गया प्रत्येक वचन याद है? यदि तुम वाकई मेरे लिए हो, तो मैं तुमसे सच्चाई से बात करूँगा। जहाँ तक धोखे और कुटिलता का व्यवहार करने वालों की बात है, बदले में मैं भी उनके साथ बेमन से व्यवहार करूँगा और इस बात का स्पष्ट दर्शन कराऊँगा कि वह कौन है, जिसे इस तरह का व्यवहार नष्ट करेगा!

अध्याय 78

मैं पहले कह चुका हूँ कि वह मैं हूँ जो यह कार्य कर रहा है, कोई एक मनुष्य इसे नहीं कर रहा। मेरे साथ हर चीज़ आराम से और खुश है, लेकिन तुम लोगों के साथ बात बहुत अलग है; तुम अपने हर काम में अत्यधिक कठिनाई का सामना करते हो। जिस चीज़ को मैं अनुमोदित करता हूँ, उसे मैं निश्चित रूप से पूरा करूँगा; जिस व्यक्ति को मैं अनुमोदित करता हूँ, उसे मैं पूर्ण बनाऊँगा। मनुष्यो : मेरे कार्य में दखल मत दो! तुम लोगो को केवल मेरी अगुआई का अनुसरण करते हुए काम करना है, जो कुछ मुझे प्रिय है उसे करो, जिससे मुझे नफरत है उस सबको अस्वीकार क r ओ, खुद को पाप से दूर हटाओ और मेरे प्रेम भरे आलिंगन में दौड़े चले आओ। मैं तुम लोगों के सामने डींगें नहीं हाँक रहा, न ही मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ; यह वास्तव में सच है। अगर मैं कहता हूँ कि मैं दुनिया को नष्ट करने जा रहा हूँ, तो जितना समय तुम लोगों को पलक झपकाने में लगता है, उतने समय में दुनिया राख में बदल जाएगी। इस बात से बहुत भयभीत होकर कि मेरे वचन खोखले हैं, तुम लोग अकसर कुछ ज़्यादा ही चिंतित हो जाते हो और अपना ही बोझ बढ़ा लेते हो। इस तरह तुम लोग मेरे लिए "बच निकलने का रास्ता तलाशने" की कोशिश करते हुए भाग-दौड़ करते हो। अंधो! मूर्खो! तुम अपनी खुद की कीमत भी नहीं जानते, फिर भी तुम मेरे सलाहकार बनने की कोशिश करते हो। क्या तुम योग्य हो? दर्पण में एक बार ठीक से देखो!

मैं तुम्हें कुछ बता दूँ! भीरू लोगों को उनकी भीरुता के लिए ताड़ित किया जाना चाहिए, जबकि सर्वोच्च आस्था वाले अपनी आस्था के लिए आशीष अर्जित करेंगे। स्पष्ट कहा जाए तो, अब सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा "आस्था" है। इससे पहले कि तुम लोगों को मिलने वाले आशीष प्रकट किए जाएँ, तुम लोगों को—अभी—मेरे लिए खपाने के वास्ते सब-कुछ त्यागने की ज़रूरत है। यह ठीक वही पहलू है, जिसे "आशीष प्राप्त करना" और "आपदा भुगतना" संदर्भित करते हैं। मेरे पुत्रो! क्या मेरे वचन अभी भी तुम्हारे दिल में खुदे हुए

हैं? "जो ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाता है, मैं निश्चित रूप से तुझे बहुत आशीष दूँगा।" आज क्या तुम वास्तव में इसके भीतर निहित अर्थ को समझते हो? मैं खोखले वचन नहीं बोलता; अब से कुछ भी छिपाया नहीं जाएगा। अर्थात् जो चीज़ें मेरे वचनों में छिपी रहती थीं, वे अब तुम लोगों को एक-एक करके, बिना कुछ भी छिपाए, बताई जाएँगी। इसके अलावा, प्रत्येक वचन मेरा असली अभिप्राय होगा, साथ ही मेरे सामने छिपे हुए सभी लोगों, घटनाओं और चीज़ों को आसानी से उजागर कर दिया जाएगा और मेरे लिए यह बिलकुल भी मुश्किल नहीं होगा। मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसमें मेरी सामान्य मानवता के पहलू के साथ-साथ मेरी पूर्ण दिव्यता का पहलू भी निहित होता है। क्या तुम लोग वास्तव में इन वचनों की स्पष्ट समझ रखते हो? यही कारण है कि मैं दोहराता रहता हूँ कि तुम्हें ज़्यादा जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। किसी व्यक्ति या चीज़ को उजागर करना मेरे लिए मुश्किल नहीं है, और इसका हमेशा एक समय होता है। क्या ऐसा नहीं है? बहुत सारे लोग मेरे सामने अपने असली रूप उजागर कर चुके हैं। चाहे वे लोमड़ी की आत्मा वाले हों या कुत्ते या भेड़िये की आत्मा वाले, वे सब एक निश्चित समय पर अपना असली रूप प्रकट कर देते हैं, जिसे मैं निर्धारित करता हूँ, क्योंकि जो कुछ भी मैं करता हूँ, वह मेरी योजना का हिस्सा होता है। इस बिंदु पर तुम्हारी समझ पूरी तरह से स्पष्ट होनी चाहिए!

क्या तुम वास्तव में समझते हो कि "वह समय बहुत दूर नहीं है" कथन किसे संदर्भित करता है? अतीत में तुम हमेशा समझते थे कि यह मेरे दिन को संदर्भित करता है, लेकिन तुम मेरे वचनों की व्याख्या अपनी धारणाओं के आधार पर करते रहे हो। मैं तुम्हें बता दूँ! अब से जो कोई भी मेरे वचनों की गलत व्याख्या करेगा, वह निस्संदेह बेतुका होगा! मेरे द्वारा कहा गया यह वचन कि "समय बहुत दूर नहीं है" तुम लोगों के द्वारा आशीषों का आनंद लेने के दिनों को संदर्भित करता है, अर्थात उन दिनों को, जिनमें सभी दुष्ट आत्माएँ नष्ट कर दी जाएँगी और मेरी कलीसिया से बाहर निकाल दी जाएँगी, और चीज़ों को करने के सभी मानवीय तरीके अस्वीकार कर दिए जाएँगे। इसके अलावा, यह वचन उन दिनों को संदर्भित करता है, जब सभी महान आपदाएँ उतर आएँगी। इसे याद रखो! यह सभी महान आपदाएँ है, अब इसकी गलत व्याख्या मत करना। मेरी महान आपदाएँ मेरे हाथों से सारी दुनिया पर एक-साथ उतरेंगी। जिन लोगों ने मेरे नाम को प्राप्त किया है, वे धन्य हो जाएँगे और निश्चित रूप से उन्हें यह पीड़ा नहीं सहनी होगी। क्या तुम्हें अब भी यह याद है? क्या तुम समझते हो, मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ? मेरे बोलने का समय ठीक मेरे कार्य शुरू करने का समय है (जब महान आपदाएँ उतरती हैं, बस वही समय)। तुम लोग मेरे इरादों को

वास्तव में नहीं समझते। क्या तुम लोग जानते हो कि मैं तुम लोगों के प्रति कोई नरमी दिखाए बिना तुम लोगों से ऐसी सख्त माँगें क्यों करता हूँ? जब अंतर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण है और चीन के भीतर (तथाकथित) सत्ताधारी लोग सभी तैयारियाँ कर रहे हैं, ठीक यही वह समय है, जब एक टाइम बम फटने वाला है। सात राष्ट्रों से सच्चे मार्ग की तलाश करने वाले लोग, लागत की परवाह किए बगैर, बाँध तोड़कर बहते पानी की तरह चीन में बेतहाशा उमड़ आएँगे। उनमें से कुछ मेरे द्वारा चुने गए हैं, और अन्य मेरी सेवा करने के लिए हैं, लेकिन उनमें से कोई भी ज्येष्ठ पुत्र नहीं है। यह मेरा कार्य है! यह तभी कर दिया गया था, जब मैंने दुनिया बनाई थी। अपनी मानवीय धारणाओं से मुक्ति पाओ। यह मत समझो कि मैं बकवास कर रहा हूँ! मैं जो सोचता हूँ, वह वही होता है जिसे मैं पहले ही कर चुका हूँ, और मेरी योजना भी ऐसी है, जिसे मैं पहले ही पूरा कर चुका हूँ। क्या तुम्हें यह स्पष्ट है?

सब-कुछ मेरे विचारों और मेरी योजना पर निर्भर करता है। मेरे पुत्र! मैंने तुम्हें तुम्हारी खातिर चुना है और, इसके अलावा, इसलिए भी कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। जो कोई भी अपने विचारों में अवज्ञा करने या ईर्ष्या से ग्रस्त होने की हिम्मत करेगा, वह मेरे शाप और दहन से मर जाएगा। इसमें मेरे राज्य के प्रशासनिक आदेश शामिल हैं, क्योंकि आज का राज्य पहले ही गठित हो चुका है। लेकिन मेरे पुत्र, तुम्हें सावधान रहना चाहिए और इसे एक तरह की पूँजी नहीं समझना चाहिए। तुम्हें अपने पिता के दिल का खयाल करना चाहिए और इसके माध्यम से उसके श्रमसाध्य प्रयासों को समझना चाहिए। इससे मेरे पुत्र को यह समझना चाहिए कि मैं किस प्रकार के व्यक्ति से सबसे ज़्यादा प्रेम करता हूँ, दूसरे स्थान पर किस तरह के व्यक्ति को प्रेम करता हूँ, किस प्रकार के व्यक्ति से मुझे सबसे ज़्यादा नफरत है, और किस प्रकार के व्यक्ति को मैं घृणा करता हूँ। खुद पर दबाव मत बढ़ाते जाओ। तुम्हारा जो भी स्वभाव है, वह मेरे द्वारा पूर्व-व्यवस्थित किया गया था और वह मेरे दिव्य स्वभाव के एक पहलू का प्रकटन है। अपनी गलतफहमियाँ दूर करो! मैं तुम्हारे प्रति नफरत नहीं पालता। मुझे कैसे कहूँ? क्या तुम अभी भी नहीं समझते? क्या तुम अभी भी अपने भय से लाचार हो? कौन वफादार है, कौन भावुक है, कौन ईमानदार है, कौन धोखेबाज है—मैं सब जानता हूँ, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले कहा है, मैं संतों की स्थिति को अपनी हथेली की तरह जानता हूँ।

मेरी दृष्टि में सब-कुछ लंबे समय से पूरा और प्रकट हो चुका है। (मैं वह परमेश्वर हूँ, जो लोगों के अंतरतम हृदय की जाँच करता है; मेरा प्रयोजन बस तुम लोगों को अपनी सामान्य मानवता का पहलू

दिखाना है।) लेकिन तुम्हारे दृष्टिकोण से सब-कुछ अभी भी छिपा हुआ है और कुछ भी पूरा नहीं हुआ है। यह सब पूर्णत: इस तथ्य के कारण है कि तुम लोग मुझे नहीं जानते। सब-कुछ मेरे हाथों में है, सब-कुछ मेरे पैरों तले है, और मेरी आँखें सब चीज़ों की जाँच करती हैं; मेरे न्याय से कौन बच सकता है? जो लोग अशुद्ध हैं, जिनके पास छिपाने के लिए चीज़ें हैं, जो मेरी पीठ-पीछे मेरा आकलन करते हैं, जो अपने दिलों में प्रतिरोध पालते हैं, इत्यादि—उन सभी लोगों को, जिन्हें मैं अपनी दृष्टि में कीमती नहीं समझता, मेरे सामने घुटने टेककर खुद को बोझ से मुक्त कर लेना चाहिए। शायद यह सुनने के बाद कुछ लोग थोड़े प्रेरित होंगे, जबकि अन्य लोग इसे इतना गंभीर मामला नहीं समझेंगे। मैं तुम लोगों को चेतावनी देता हूँ! जो बुद्धिमान हैं, वे जल्दी से पश्चात्ताप करें! यदि तुम मूर्ख हो, तो बस प्रतीक्षा करो! समय आने पर देखना कि वह कौन है, जो आपदा भुगतेगा!

स्वर्ग अभी भी मूल स्वर्ग है और पृथ्वी अभी भी मूल पृथ्वी है, लेकिन मेरी दृष्टि में स्वर्ग और पृथ्वी पहले ही बदल चुके हैं और वे वही स्वर्ग और पृथ्वी नहीं हैं, जो वे पहले हुआ करते थे। स्वर्ग किसे संदर्भित करता है? क्या तुम जानते हो? और आज का स्वर्ग किसे संदर्भित करता है? अतीत के स्वर्ग ने किसे संदर्भित किया था? आओ, मैं तुम लोगों को इस बारे में बताता हूँ : अतीत का स्वर्ग उस परमेश्वर को संदर्भित करता था, जिस पर तुम लोग विश्वास करते थे, लेकिन जिसे किसी ने देखा नहीं था, और वह वो परमेश्वर था, जिस पर लोग पूरी ईमानदारी से विश्वास करते थे (क्योंकि वे उसे देख नहीं पाते थे)। दूसरी ओर, आज का स्वर्ग मेरी सामान्य मानवता और मेरी पूर्ण दिव्यता, दोनों को संदर्भित करता है; अर्थात् यह इस स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर को संदर्भित करता है। दोनों वही परमेश्वर हैं, तो फिर मैं क्यों कहता हूँ कि मैं नया स्वर्ग हूँ? यह सब मनुष्यों की धारणाओं की ओर निर्देशित है। आज की पृथ्वी उसे संदर्भित करती है, जहाँ तुम लोग स्थित हो। अतीत की पृथ्वी में एक भी स्थान ऐसा नहीं था जो पवित्र हो, जबकि जिन स्थानों पर तुम लोग आज जाते हो, वे पवित्र स्थानों के रूप में अलग रखे गए हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह एक नई पृथ्वी है। यहाँ "नई" का मतलब "पवित्र" है। नया स्वर्ग और नई पृथ्वी अब पूरी तरह से साकार हो चुके हैं। क्या तुम लोग अब इसे समझे? मैं तुम लोगों पर सभी रहस्य, पृष्ठ-दर-पृष्ठ, प्रकट करूँगा। जल्दबाजी मत करो, और भी बड़े रहस्य तुम लोगों पर प्रकट किए जाएँगे!

अध्याय 79

अंधे! अज्ञानी! बेकार कचरे के ढेर! तुम मेरी सामान्य मनुष्यता को मेरी पूर्ण दिव्यता से अलग करते हो! क्या तुम लोग नहीं देखते कि यह मेरे विरुद्ध पाप है? इतना ही नहीं, यह ऐसी चीज़ है, जिसे क्षमा करना कठिन है! व्यावहारिक परमेश्वर आज तुम लोगों के मध्य आया है, फिर भी तुम लोग मेरे केवल एक पक्ष—मेरी सामान्य मनुष्यता—को जानते हो और तुम सबने मेरा वह पक्ष तो बिलकुल नहीं देखा है, जो पूर्ण रूप से दिव्य है। क्या तुम यह सोचते हो कि मैं यह जानता नहीं कि कौन मेरी पीठ पीछे मुझे धोखा देने का प्रयास करता है? मैं तुम्हारी आलोचना नहीं कर रहा; मात्र यह देख रहा हूँ कि तुम किस स्तर तक जा सकते हो और तुम्हारा अंतिम हश्र क्या होगा। मेरे वचन लाखों की संख्या में कहे गए हैं, फिर भी तुम लोगों ने कई बुरी बातें की हैं। तुम मुझे बार-बार छलने का प्रयास क्यों करते हो? सावधान रहो कि कहीं अपना जीवन न खो बैठो! यदि तुम मेरे क्रोध को एक निश्चित स्तर तक भड़काते हो, तो मैं तुम पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा और तुम धक्के मारकर बाहर निकाल दिए जाओगे। मैं इस बात पर ध्यान नहीं दूँगा कि तुम पहले कैसे थे, कि क्या तुम निष्ठावान या उत्साही थे, कि तुम कितना दौड़े-भागे, तुमने खुद को मेरे लिए कितना खपाया; मैं इन चीज़ों को बिलकुल नहीं देखूँगा। अब तुम्हें केवल मुझे उकसाने भर की जरूरत है, और मैं तुम्हें अथाह गड्ढे में फेंक दूँगा। कौन अभी भी मुझसे छल करने की कोशिश करने का साहस करता है? इसे याद रखो! अब से मैं जब भी क्रोधित होऊँगा, फिर चाहे वह कोई भी क्यों न हो, मैं तुरंत तुम्हें धो डालूँगा, ताकि भविष्य में कोई मुसीबत न हो और ताकि मुझे तुम्हें और न देखना पड़े। यदि तुम मेरी अवहेलना करते हो, तो मैं तुरंत तुम्हारी ताड़ना करूँगा। क्या तुम लोग इसे ध्यान में रखोगे? तुम लोगों में से जो होशियार हैं, उन्हें तुरंत पश्चात्ताप करना चाहिए।

आज—अर्थात् अभी—मैं कुपित हूँ। तुम सभी लोगों को मेरे प्रति निष्ठावान होना चाहिए और अपना पूरा अस्तित्व मुझे सौंप देना चाहिए। तुम्हें अब और देर नहीं करनी चाहिए। यदि तुम मेरे वचनों पर ध्यान नहीं देते, तो मैं अपना हाथ आगे बढ़ाकर तुम्हें मार डालूँगा। ऐसा करके मैं सबको अपने से अवगत करा दूँगा; आज के दिन मैं सभी के प्रति कुपित और प्रतापी हूँ (जो मेरे न्याय से भी अधिक कठोर है)। मैंने इतने सारे वचन कहे हैं, लेकिन तुम लोगों ने बिलकुल भी प्रतिक्रिया नहीं की; क्या तुम वास्तव में इतने मंदबुद्धि हो? मुझे नहीं लगता कि तुम हो। यह तुम लोगों के भीतर का पुराना शैतान है, जो शरारत कर रहा है। क्या तुम लोग इसे स्पष्ट रूप से देखते हो? आमूलचूल परिवर्तन लाने की शीघ्रता करो! आज, पवित्र आत्मा का कार्य इस स्तर तक प्रगति कर चुका है; क्या तुम लोगों ने इसे नहीं देखा है? मेरा नाम घर-घर में, सभी राष्ट्रों

में और सभी दिशाओं में फैलेगा और दुनिया भर में वयस्कों और बच्चों के मुख से समान रूप से पुकारा जाएगा; यह एक परम सत्य है। मैं स्वयं अद्वितीय परमेश्वर हूँ, इसके अतिरिक्त मैं परमेश्वर का एकमात्र प्रतिनिधि हूँ। इतना ही नहीं, मैं, देह की समग्रता के साथ परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति हूँ। जो कोई मेरा सम्मान न करने का साहस करता है, जो कोई अपनी आँखों में प्रतिरोध प्रदर्शित करने का साहस करता है, और जो कोई मेरे विरुद्ध अवज्ञा के शब्द बोलने की धृष्टता करता है, वह निश्चित रूप से मेरे शापों और कोप से मारा जाएगा (मेरे कोप के कारण शाप दिए जाएँगे)। इतना ही नहीं, जो कोई मेरे प्रति निष्ठावान अथवा संतानोचित नहीं होता, और जो कोई मुझसे चालबाज़ी करने का प्रयास करता है, वह निश्चित रूप से मेरी घृणा से मर जाएगा। मेरी धार्मिकता, प्रताप और न्याय सदा-सदा के लिए कायम रहेंगे। पहले मैं प्रेममय और दयालु था, परंतु यह मेरी पूरी दिव्यता का स्वभाव नहीं है; केवल धार्मिकता, प्रताप और न्याय ही मेरे, स्वयं पूर्ण परमेश्वर के, स्वभाव में शामिल हैं। अनुग्रह के युग में मैं प्रेममय और दयालु था। जो कार्य मुझे पूरा करना था, उसके कारण मुझमें प्रेममय-कृपालुता और दयालुता थी; उसके बाद ऐसी चीज़ों की कोई आवश्यकता न रही (और तबसे कोई भी नहीं रही है)। यह सब धार्मिकता, प्रताप और न्याय है और यह मेरी सामान्य मानवता के साथ जुड़ी मेरी पूर्ण दिव्यता का संपूर्ण स्वभाव है।

जो लोग मुझे नहीं जानते, वे अथाह गड्ढे में नष्ट हो जाएँगे, जबकि जो लोग मेरे बारे में निश्चित हैं, वे हमेशा जिएँगे और उनकी मेरे प्रेम के अंतर्गत देखभाल और सुरक्षा की जाएगी। जिस क्षण मैं एक शब्द भी बोलता हूँ, पूरा ब्रह्मांड और पृथ्वी के छोर काँपने लगते हैं। कौन मेरे वचन सुनकर भय से नहीं काँप उठेगा? कौन खुद को मेरे सम्मान में उमड़ने से रोक सकता है? और कौन मेरे कर्मों से मेरी धार्मिकता और प्रताप को जानने में अक्षम है? और कौन मेरे कर्मों में मेरी सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धिमता नहीं देख सकता? जो कोई भी ध्यान नहीं देता, वह निश्चित रूप से मर जाएगा। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जो ध्यान नहीं देते, वे ऐसे लोग हैं जो मेरा प्रतिरोध करते हैं और मुझे नहीं जानते; वे प्रधान दूत हैं और सर्वाधिक निरंकुश हैं। अपने आप को जाँचो : जो कोई निरंकुश, दंभी, उद्धत और अभिमानी है, वह निश्चित रूप से मेरी घृणा का पात्र है, और वह नष्ट होने के लिए बाध्य है!

अब मैं अपने राज्य की प्रशासनिक आज्ञाओं की घोषणा करता हूँ : सभी चीज़ें मेरे न्याय के अंतर्गत हैं, सभी चीज़ें मेरी धार्मिकता के अंतर्गत हैं, सभी चीज़ें मेरे प्रताप के अंतर्गत हैं, और मैं अपनी धार्मिकता सब पर लागू करता हूँ। जो यह कहते हैं कि वे मुझमें विश्वास रखते हैं परंतु गहराई में मेरा खंडन करते हैं, या

जिनके हृदयों ने मेरा त्याग कर दिया है, वे निकाल बाहर किए जाएँगे—परंतु सब मेरे यथोचित समय पर। जो मेरे बारे में व्यंग्यात्मक ढंग से बात करते हैं, परंतु इस तरह से कि दूसरों के ध्यान में न आए, वे तुरंत मृत्यु को प्राप्त होंगे (वे आत्मा, देह और मन से नष्ट हो जाएँगे)। जो लोग मेरे प्रियजनों पर अत्याचार करते हैं अथवा उनसे रूखा व्यवहार करते हैं, मेरे कोप द्वारा उनका तत्काल न्याय किया जाएगा। इसका अर्थ है कि जो मेरे प्रियजनों के प्रति ईर्ष्यालु हैं, और जो मुझे अधार्मिक समझते हैं, उन्हें न्याय किए जाने के लिए मेरे प्रियजनों को सौंप दिया जाएगा। जो सभ्य, सरल और ईमानदार हैं (वे भी, जिनमें बुद्धिमत्ता की कमी है), और जो मेरे साथ एकचित्त होकर ईमानदारी से व्यवहार करते हैं, वे सभी मेरे राज्य में रहेंगे। जो लोग प्रशिक्षण से नहीं गुज़रे—यानी ऐसे ईमानदार लोग, जिनमें बुद्धिमत्ता और अंतर्दृष्टि का अभाव है—उन्हें मेरे राज्य में सामर्थ्य प्राप्त होगा। हालाँकि उन्हें भी निपटाया और तोड़ा गया है। वे प्रशिक्षण से नहीं गुज़रे, यह परम तथ्य नहीं है। बल्कि इन्हीं चीज़ों के माध्यम से मैं सभी को अपनी सर्वशक्तिमत्ता और अपनी बुद्धिमत्ता दिखाऊँगा। मैं उन सभी को निकाल बाहर करूँगा, जो अभी भी मुझ पर संदेह करते हैं; मैं उनमें से किसी एक को भी नहीं चाहता (मैं उन लोगों से घृणा करता हूँ, जो ऐसे समय में भी मुझ पर संदेह करते हैं)। उन कर्मों के माध्यम से, जो मैं पूरे ब्रह्मांड में करता हूँ, मैं ईमानदार लोगों को अपने कार्य की अद्भुतता दिखाऊँगा, जिससे उनकी बुद्धिमत्ता, अंतर्दृष्टि और विवेक में वृद्धि होगी। मैं अपने अद्भुत कर्मों के परिणामस्वरूप धोखेबाज लोगों को एक ही पल में नष्ट कर दूँगा। मेरा नाम सबसे पहले स्वीकार करने वाले सभी ज्येष्ठ पुत्र (यानी वे पवित्र और निष्कलंक, ईमानदार लोग) ही सबसे पहले राज्य में प्रवेश करेंगे और मेरे साथ सभी राष्ट्रों और सभी लोगों पर शासन करेंगे, और राज्य में राजाओं की तरह राज करेंगे तथा सभी राष्ट्रों और सभी लोगों का न्याय करेंगे (यह राज्य में सभी ज्येष्ठ पुत्रों को संदर्भित करता है, किसी और को नहीं)। सभी राष्ट्रों और सभी लोगों में से जिनका न्याय हो चुका है और जो पश्चात्ताप कर चुके हैं, वे मेरे राज्य में प्रवेश करेंगे और मेरे लोग बन जाएँगे, जबकि जो जिद्दी हैं और जिन्हें पछतावा नहीं है, वे अथाह गड्ढे में फेंक दिए जाएँगे (हमेशा के लिए नष्ट होने हेतु)। राज्य में न्याय अंतिम होगा, और यह दुनिया की मेरी ओर से पूरी सफ़ाई होगी। उसके पश्चात् कोई अन्याय, दुःख, आँसू या आहें नहीं होंगी, और यहाँ तक कि कोई दुनिया भी नहीं रहेगी। सब-कुछ मसीह की अभिव्यक्ति होगा, और सब मसीह का राज्य होंगे। ऐसी महिमा होगी! ऐसी महिमा होगी!

अध्याय 80

किसी को प्रबुद्ध और रोशन होने के लिए सभी चीजों में, मेरे साथ वास्तविक संवाद की आवश्यकता होती है; केवल इसके माध्यम से ही आत्मा शांत हो सकती है। अन्यथा, आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। फिलहाल, तुम लोगों की सबसे गंभीर बीमारी मेरी सामान्य मानवता को मेरी पूर्ण दिव्यता से अलग करना है; इसके अलावा, तुममें से अधिकांश मेरी सामान्य मानवता पर ज़ोर देते हैं, मानो तुम्हें पता ही न हो कि मेरे पास पूर्ण दिव्यता भी है। यह मुझे तिरस्कृत करता है! क्या तुम्हें इसका पता है? तुम लोगों की बीमारी इतनी गंभीर है कि यदि तुम इसे जल्दी नहीं करते और ठीक नहीं होते हो, तो तुम मेरे हाथों मारे जाओगे। मेरे सामने तुम एक तरह से व्यवहार करते हो (एक सम्माननीय व्यक्ति के रूप में दिखाई देना; विनम्र और धैर्यवान), फिर भी मेरी पीठ के पीछे तुम पूरी तरह से अलग व्यवहार करते हो (पूरी तरह से पाखंडी, लंपट और असंयमित, अपनी मनमानी करते हुए, गुट बनाते हुए, स्वतंत्र राज्य स्थापित करते हुए, मुझे धोखा देने की इच्छा रखते हुए)। तुम अंधे हो! अपनी आँखों को खोलो, जो शैतान द्वारा भ्रमित की गई हैं! देखो कि मैं वास्तव में कौन हूँ! तुम्हें कोई शर्म नहीं है! तुम नहीं जानते कि मेरे कार्य आश्चर्यजनक होते हैं! तुम मेरी सर्वशक्तिमत्ता के बारे में नहीं जानते हो! किसके बारे में यह कहा जाएगा कि वह मसीह की सेवा करता है फिर भी बचाया नहीं गया है? तुम नहीं जानते कि तुम कौन सी भूमिका अदा कर रहे हो! तुम वास्तव में मेरे सामने वेश बदल कर आते हो, अपनी मनोहरता दिखाते हो, कमबख्त! मैं तुम्हें अपने घर से बाहर धकेल दूँगा, मैं इस प्रकार के व्यक्ति का उपयोग नहीं करता क्योंकि न तो मैंने उन्हें पूर्व नियत किया, न ही चुना था।

मैं जो कहता हूँ, वही करता हूँ। जो बुराई करते हैं उन्हें डरना नहीं चाहिए; मैं किसी भी व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं करता हूँ। मैं हमेशा अपनी योजना के अनुसार कार्य करता हूँ और अपनी धार्मिकता के अनुरूप व्यवहार करता हूँ। चूँकि जो बुराई करते हैं, वे सृष्टि के समय से ही शैतान के वंशज रहे हैं, मैंने उन्हें नहीं चुना, यही अर्थ है इस कहावत का कि "चाहे पहाड़ और नदियां खिसक जाएँ और बदल जाएँ, किसी की प्रकृति नहीं बदलेगी।" उन मुद्दों पर जो मानवजाति नहीं समझ सकती, सब कुछ स्पष्ट कर दिया गया है और मेरे लिए कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। तुम कुछ लोगों की आँखों से कुछ छिपा सकते हो, थोड़े-बहुत लोगों का भरोसा हासिल कर सकते हो, लेकिन मेरे साथ यह करना इतना आसान नहीं है। आखिरकार तुम मेरे न्याय से नहीं बच सकते। मानवजाति की नज़र सीमित होती है और जो वर्तमान स्थिति

के एक छोटे से हिस्से को भी समझ पाते हैं, उनके पास भी कुछ कौशल होता है। मेरे लिए सब कुछ सुचारू रूप से आगे बढ़ता जाता है और हल्का सा कुछ भी मेरे रास्ते में बिलकुल नहीं आता क्योंकि सब कुछ मेरे नियंत्रण और मेरी व्यवस्था में है। कौन मेरे नियंत्रण के प्रति समर्पित न होने की हिम्मत करेगा! कौन मेरे प्रबंधन में बाधा डालने की हिम्मत करेगा! कौन मेरे प्रति निष्ठाहीन या संतानोचित न होने का साहस करेगा! कौन मुझे कुछ ऐसा बताने की हिम्मत करेगा, जो सच न हो और इसके बजाय झूठ का एक पुलिंदा हो! उनमें से कोई भी मेरे क्रुद्ध हाथों से बच नहीं पाएगा। यदि तुम अब हार मान भी चुके हो और ताड़ना पाने और अथाह कुंड में प्रवेश करने के लिए तैयार हो, तो भी मैं तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ूँगा। मुझे तुम्हें अथाह कुंड से पुनः निकालना होगा ताकि तुम एक बार फिर मेरी क्रोधपूर्ण सजा (अत्यधिक घृणा) के अधीन आओ। क्या तुम कहीं भाग सकते हो? मुझे सबसे ज्यादा नफ़रत तब होती है, जब लोग मेरी सामान्य मानवता को मेरी पूर्ण दिव्यता से अलग कर देते हैं।

जो मेरे प्रति वफ़ादार हैं वे धन्य हैं; अर्थात वे लोग धन्य हैं, जो वास्तव में मुझे स्वयं ऐसे परमेश्वर के रूप में पहचानते हैं, जो मानव हृदय की बारीकी से जाँच करता हो। मैं निश्चित रूप से तुम्हारे लिए आशीषों को कई गुना बढ़ा दूँगा, जिससे तुम हमेशा के लिए मेरे राज्य में अच्छे आशीषों का आनंद लोगे। शैतान को शर्मिंदा करने का यह सबसे प्रभावी तरीका भी है। बहरहाल, बहुत अधीर या चिंतित न हो; हर चीज के लिए मैंने एक समय निर्धारित किया है। यदि मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारित समय अभी नहीं आया है, तो भले ही पल भर ही बाक़ी हो, मैं कार्य नहीं करूँगा। मैं सटीक रूप से और एक लय में कार्य करता हूँ; अकारण कार्य नहीं करता। मानवीय दृष्टिकोण से, मैं चिंता से परेशान नहीं हूँ; मैं ताइ पर्वत की तरह स्थिर हूँ-लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि मैं ही स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ? बहुत अधीर मत बनो; सब कुछ मेरे हाथों में है। सब कुछ बहुत समय से तैयार है और वे मेरी सेवा करने के लिए अधीर हैं। पूरी ब्रह्मांडीय दुनिया में बाहर से अराजकता दिखती है, लेकिन मेरे परिप्रेक्ष्य से सब कुछ सुव्यवस्थित है। मैंने तुम लोगों के लिए जो तैयार किया है, वह केवल तुम लोगों के आनंद के लिए है, क्या तुम्हें इसका अहसास है? मेरे प्रबंधन में अपना दख़ल मत डालो। सभी लोगों और सभी राष्ट्रों को मैं अपने कार्यों से अपनी सर्वशक्तिमत्ता को देखने दूँगा और मेरे अद्भुत कृत्यों के लिए मेरे पवित्र नाम को धन्य करने और उसकी प्रशंसा करने दूँगा। यह इसलिए क्योंकि मैंने कहा है कि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह निराधार नहीं होता, बल्कि सब कुछ मेरी बुद्धि और मेरी शक्ति से, मेरी धार्मिकता और प्रताप से और इससे भी अधिक मेरे क्रोध से भरा होता है।

जो लोग मेरे वचनों को सुनते ही तुरंत जाग उठते हैं, वे निश्चित रूप से मेरे आशीर्वाद को प्राप्त करेंगे और निश्चित रूप से मेरी सुरक्षा और देखभाल को प्राप्त करेंगे। वे ताड़ना की पीड़ा का अनुभव नहीं करेंगे; बल्कि परिवार के सुख का आनंद लेंगे। क्या तुम यह जानते हो? पीड़ा अनंत होती है और आनंद और भी अधिक शाश्वत होता है; वे दोनों अब से अनुभव किए जाएँगे। तुम पीड़ित होते हो या आनंद का अनुभव करते हो, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जब तुम अपने पाप को स्वीकार करते हो, तो तुम किस प्रकार की प्रवृत्ति धारण करते हो। जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि तुम मेरे पूर्वनिर्धारित और चुने गए लोगों में से एक हो या नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसके प्रकाश में तुम्हें सुनिश्चित होना चाहिए। तुम मनुष्यों को मूर्ख बना सकते हो, लेकिन तुम मुझे मूर्ख नहीं बना सकते। जिन लोगों को मैंने पूर्व निर्धारित किया और चुना है, वे अब से लेकर आगे बहुत ही धन्य होंगे; जिन लोगों को मैंने पूर्व निर्धारित और चयनित नहीं किया है, उन्हें अब से आगे मैं कठोर ताड़ना दूँगा। यह तुम लोगों के लिए मेरा प्रमाण होगा। जो लोग अभी धन्य हैं, वे निस्संदेह मेरे प्यारे हैं; यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिन्हें ताड़ना मिलती है, वे लोग मेरे द्वारा पूर्व निर्धारित और चुने हुए नहीं हैं। तुम्हें इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए! कहने का तात्पर्य है, यदि अब तुम जो पाते हो वह मेरा निपटारा है और जो तुम पाते हो यदि वे मेरे कठोर न्याय के वचन हैं, तो तुम मेरे दिल में घृणित और तिरस्कृत हो और तुम उनमें से एक होगे, जिन्हें मैं अलग हटा दूँगा। अगर तुम्हें मेरी सांत्वना मिलती है और अगर तुम्हें जीवन के लिए मेरा प्रावधान मिलता है, तो तुम मेरी शरण में हो; तुम मेरे प्यारों में से एक हो। मेरे बाहरी प्रकटन के आधार पर तुम इसे तय नहीं कर सकते। इस पर अपना दिमाग़ खराब मत करो!

मेरे वचन हर व्यक्ति की वास्तविक स्थिति से बात करते हैं। क्या तुम लोग यह मानते हो कि मैं यूँ ही किसी भी विषय पर बोलता हूँ या जो भी मेरे मन में आए वही कह देता हूँ? बिलकुल नहीं! मेरे हर वचन में मेरी बुद्धि छिपी हुई है। बस मेरे वचनों को सच मानो। बहुत ही कम समय में, वे विदेशी लोग जो सही मार्ग की खोज कर रहे हैं, आ पहुँचेंगे। जब यह होगा, उस समय तुम लोग हक्के-बक्के रह जाओगे और बिना किसी कठिनाई के सब कुछ पूरा कर दिया जाएगा। क्या तुम नहीं जानते कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ? मेरे इन वचनों को सुनते ही तुम लोग दृढ़ता से उन पर विश्वास करते हो, है ना? मैं भूल नहीं करता, गलत बयान देने की बात तो छोड़ ही दो। क्या तुम इसे जानते हो? इसलिए, मैंने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि तुम लोगों को शीघ्रता से मेरा प्रशिक्षण स्वीकार करना है, ताकि उनका नेतृत्व और उनकी चरवाही

की जाए। क्या तुम यह जानते हो? तुम लोगों के माध्यम से मैं उन्हें पूर्ण करूँगा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम सब के माध्यम से मैं अपने महान संकेतों और चमत्कारों को प्रकट कर दूँगा; अर्थात्, उन लोगों में से जिन्हें मानव जाति तुच्छ मानती है, मैंने लोगों के एक समूह को मुझे प्रकट करने के लिए, मेरे नाम की महिमा करने के लिए, मेरी खातिर सारा दायित्व लेने के लिए, मेरे साथ राजाओं के रूप में शासन करने के लिए चुना है। इस प्रकार, तुम लोगों को मेरा मौजूदा प्रशिक्षण दुनिया का सबसे बड़ा प्रबंधन है; यह एक अद्भुत चीज़ है, जिसे मानवजाति कार्यान्वित नहीं कर सकती है। तुम लोगों को पूर्ण करने के माध्यम से मैं शैतान को आग और गंधक की झील और अथाह कुंड में डाल दूँगा, बड़े लाल अजगर को पूरी तरह उसकी मृत्यु के लिए, फिर कभी न उठने के लिए फ़ेंक दूँगा। इसलिए, जो भी अथाह कुंड में फेंके जा रहे हैं, वे बड़े लाल अजगर के वंशज हैं। मैं उनसे एक चरम सीमा तक नफ़रत करता हूँ। मैंने यह हासिल कर लिया है। क्या तुम लोग देख नहीं सकते? वे सब जो विश्वासघाती हैं, वे जो कुटिलता और धोखाधड़ी से काम करते हैं, उजागर कर दिए गए हैं। जो अभिमानी, दंभी, आत्मतुष्ट और ढीठ हैं, वे महादूत के वंशज हैं और वे बहुत कुछ शैतान जैसे ही हैं—वे सभी मेरे शपथबद्ध दुश्मन, मेरे विरोधी हैं। अपने दिल की घृणा को बुझाने के लिए मुझे उन्हें एक-एक करके दंडित करना होगा। मैं इसे एक बार में एक के क्रम से करूँगा और प्रत्येक को हल कर दूँगा।

अब, आग और गंधक की झील और अथाह कुंड आखिर सही-सही क्या हैं? मानव की कल्पना में आग और गंधक की झील एक भौतिक चीज़ है, लेकिन मानवजाति को यह नहीं पता कि यह एक बेहद गलत व्याख्या है। हालांकि फिर भी यह लोगों के दिमागों में एक निश्चित स्थान रखती है। आग और गंधक की झील मेरा हाथ है, जो मानवजाति में ताड़ना बाँटता है; जो भी आग और गंधक की झील में फेंक दिया गया है, वह मेरे हाथ से मारा गया है। इन लोगों का उत्साह, इनकी आत्माएँ और शरीर हमेशा के लिए पीड़ित रहते हैं। जब मैंने कहा कि सब मेरे हाथों में हैं, तो यही मेरे वचनों का वास्तविक अर्थ है। तो अथाह कुंड का क्या अर्थ है? मानवीय अवधारणाओं में यह एक बड़ा रसातल है जो अंतहीन और अगाध रूप से गहरा है। वास्तविक अथाह कुंड शैतान का प्रभाव है। यदि कोई व्यक्ति शैतान के हाथों में पड़ जाता है, तो वह व्यक्ति अथाह कुंड में है; यदि वह पंख उगा ले, तो भी वह उड़कर बाहर नहीं जा सकेगा। इसीलिए इसे अथाह कुंड कहा जाता है। ऐसे लोगों को अनंत ताड़ना के अधीन किया जाएगा; इस तरह मैंने इसे व्यवस्थित किया है।

अध्याय 81

कितना बुरा और व्यभिचारी है यह पुराना युग! मैं तुझे निगल जाऊँगा! सिय्योन पर्वत! मेरा अभिवादन करने के लिए उठ! मेरी प्रबंधन योजना के समापन के लिए, मेरे महान कार्य के सफल निष्पादन के लिए, कौन है जो उठकर जयजयकार नहीं करने का साहस करता है! कौन है जो ख़ुशी से लगातार नहीं उछलने-कूदने का साहस करता है! वे मेरे हाथों मारे जाएँगे। मैं करुणा या प्रेम-सिक्त दया के बिना, और निष्पक्ष रूप से, सभी पर धार्मिकता कार्यान्वित करता हूँ। सभी लोगो! स्तुति करने के लिए उठो, मुझे महिमा दो! अनन्त महिमा, अनन्त से अनन्त तक, मेरे कारण ही मौजूद है और मेरे द्वारा ही स्थापित की गई थी। कौन खुद के लिए महिमा लेने का साहस करेगा? कौन मेरी महिमा को भौतिक चीज़ समझने का साहस करेगा? वे मेरे हाथों मारे जाएँगे! हे, क्रूर मनुष्यो! मैंने तुमलोगों को बनाया और तुमलोगों का भरण-पोषण किया, और मैंने तुमलोगों की आज तक अगुआई की है, फिर भी तुमलोग मेरे बारे में जरा-सा भी नहीं जानते हो और तुम मुझसे बिलकुल भी प्यार नहीं करते हो। मैं तुमलोगों के लिए फिर से दया कैसे दिखा सकता हूँ? मैं तुमलोगों को कैसे बचा सकता हूँ? मैं तुमलोगों के प्रति केवल अपने कोप के साथ ही पेश आ सकता हूँ! मैं तुमलोगों का भुगतान तुम्हारे विनाश और तुम्हारी शाश्वत ताड़ना के साथ करूँगा। यह धार्मिकता है; यह केवल इसी तरह हो सकता है।

मेरा राज्य दृढ़ और स्थिर है; यह कभी नहीं ढहेगा। यह अनंत काल तक अस्तित्व में रहेगा! मेरे पुत्र, मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मेरे लोग सदा सर्वदा के लिए मेरे साथ आशीषों का आनंद लेंगे! जो लोग आध्यात्मिक मामलों को नहीं समझते हैं और जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा प्रकाशन प्रदान नहीं किया जाता, उन्हें देर-सबेर मेरे राज्य से अलग कर दिया जाएगा। वे अपनी मर्जी से नहीं निकलेंगे, बल्कि मेरे लौहदण्ड के शासन द्वारा, मेरे प्रताप द्वारा निकल जाने के लिए मजबूर किये जाएँगे; इसके अलावा, उन्हें मेरे पैर की ठोकर से निकाल दिया जाएगा। वे लोग जिन पर दुष्ट आत्माओं ने एक अवधि के लिए (जन्म के बाद से) कब्ज़ा कर रखा था, उन सभी को अब प्रकट किया जाएगा। मैं तुझे लात मारकर बाहर निकाल दूँगा! क्या तुझे अभी भी वह याद है जो मैंने कहा था? मैं—पवित्र और निष्कलंक परमेश्वर—एक कलुषित और गंदे मंदिर में नहीं रहता हूँ। जो लोग दुष्ट आत्माओं के कब्ज़े में थे, वे खुद जानते हैं, और मुझे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने तुझे पूर्वनियत नहीं किया है! तू पुराना शैतान है, फिर भी तू मेरे राज्य में घुसपैठ करना चाहता है! बिलकुल नहीं! मैं तुझे कह रहा हूँ! आज मैं इसे तेरे लिए बहुत स्पष्ट कर दूँगा। जिन्हें मैंने मानवजाति के सृजन के

समय चुना था, मैंने उन्हें अपने गुणों और अपने स्वभाव से भर दिया है; इसलिए, आज केवल वे ही मेरे प्रति वफ़ादार हैं, वे कलीसिया के लिए एक ज़िम्मेदारी वहन कर सकते हैं, और वे मेरे लिए खुद को व्यय करने और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को मुझे अर्पित करने के लिए तैयार हैं। इसलिए जिन्हें मैंने नहीं चुना है, वे शैतान द्वारा एक निश्चित सीमा तक भ्रष्ट किए जा चुके हैं, और उनके पास मेरा कोई भी गुण और मेरा कोई भी स्वभाव नहीं है। तुमलोग सोचते हो कि मेरे वचन विरोधाभासी हैं, लेकिन ये वचन कि, "तुम लोग मेरे द्वारा पूर्वनियत और चयनित हो, फिर भी तुमलोग अपने कर्मों के फल को भुगतते हो", सब शैतान को संदर्भित हैं। अब मैं एक बात समझाऊँगा: आज, जो लोग उठ खड़े हो सकते हैं और कलीसियाओं का अधिकार ग्रहण कर सकते हैं, कलीसियाओं की चरवाही कर सकते हैं, मेरी ज़िम्मेदारी का ध्यान रख सकते हैं, और विशेष प्रकार्यों को धारण करते हैं—इनमें से कोई एक भी मसीह की सेवा में नहीं है; ये सभी वे लोग हैं जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया और चुना है। मैं तुमलोगों को यह बताता हूँ ताकि तुम सब अत्यधिक चिंता न करो और अपने जीवन की प्रगति में विलम्ब न करो। कितने लोग ज्येष्ठ पुत्रों की हैसियत को प्राप्त कर सकते हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि यह एक डिप्लोमा प्राप्त करने जितना आसान है? असंभव! अगर मैं तुमलोगों को सिद्ध न करता, तो तुमलोग बहुत पहले शैतान द्वारा एक निश्चित सीमा तक भ्रष्ट कर दिए गए होते। इसी वजह से मैंने इस बात पर बार-बार ज़ोर दिया है कि जो मेरे प्रति वफ़ादार हैं मैं उन लोगों की हमेशा देखभाल करूँगा और उनकी रक्षा करूँगा और उन्हें नुकसान और कष्टों से बचाऊँगा। जिन्हें मैंने पूर्वनियत नहीं किया है, ये वे लोग हैं जिन पर दुष्ट आत्माओं ने कब्ज़ा कर रखा है; ये वे लोग हैं जो सुस्त, मंद-बुद्धि, और आध्यात्मिक रूप से अविकसित हैं, और जो कलीसियाओं की चरवाही नहीं कर सकते (अर्थात जिनमें उत्साह तो है किन्तु जो दर्शनों के बारे में अस्पष्ट हैं)। तुम्हें जल्द ही मेरी दृष्टि के सामने से हटा दिया जाना चाहिए, और यह जितनी जल्दी हो सके उतना बेहतर होगा ताकि तुझे देखकर मुझे चिढ़ और गुस्सा न हो। यदि तू जल्दी से दूर हो जाता है, तो तुझे कम ताड़ना मिलेगी, लेकिन जितना अधिक समय तू लेगा, ताड़ना भी उतनी ही कठोर होगी। क्या तेरी समझ में आया? इतनी बेशर्मी से काम करना बंद कर! तू लम्पट और असंयमी है, विचारशून्य और लापरवाह है, और तुझे बिलकुल नहीं पता कि तू किस प्रकार का कचरा है! तू अंधा है!

जिन लोगों के पास मेरे राज्य की सत्ता है वे सभी मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक चुने गए हैं और बार-बार परीक्षाओं से गुज़रे हैं; कोई भी उन्हें पराजित नहीं कर सकता। मैंने उन्हें शक्ति दी है, इसलिए वे कभी

गिरेंगे या भटकेंगे नहीं। उन्होंने मेरा अनुमोदन प्राप्त कर लिया है। आज के दिन से, पाखंडी लोग अपने सच्चे रंग दिखाएँगे। वे सभी प्रकार की शर्मनाक चीजें करने में सक्षम हैं, लेकिन अंततः वे मेरे हाथ से बच कर नहीं निकलेंगे, जो शैतान को ताड़ित और भस्म कर देता है। मेरा मंदिर पवित्र और निर्दोष हो जाएगा। यह सब मेरे लिए एक गवाही है, मेरी एक अभिव्यक्ति है, और मेरे नाम की महिमा है। मेरा मंदिर मेरा शाश्वत धाम और मेरे शाश्वत प्रेम की वस्तु है; मैं अक्सर इसे अपने प्रेम के हाथ से सहलाता हूँ, प्रेम की भाषा में इसे सांत्वना देता हूँ, प्रेम की दृष्टि से इसकी देखभाल करता हूँ, और प्रेम-भरे सीने से इसका आलिंगन करता हूँ, ताकि यह दुष्ट लोगों के फंदे में न गिर जाए, या शैतान से धोखा न खा ले। आज, जो मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं लेकिन बचाए नहीं जाते हैं, वे अंतिम समय में मेरे द्वारा उपयोग किए जाएँगे। क्यों मैं इन चीज़ों को अपने राज्य से बाहर निकालने की जल्दी में हूँ? क्यों मुझे अवश्य उन्हें अपनी दृष्टि से दूर कर देना चाहिए? मैं अपनी अस्थियों की मज्जा की गहराई तक, उनसे नफ़रत करता हूँ! क्यों मैं उनसे नफ़रत करता हूँ? क्यों मुझे उन्हें अवश्य मार डालना चाहिए? क्यों मुझे उन्हें अवश्य नष्ट कर देना चाहिए? (उनकी राख सहित, उनका एक भी अंश मेरी दृष्टि में नहीं रह सकता है।) क्यों? बड़ा लाल अजगर, प्राचीन सर्प, और पुराना शैतान भी मेरे राज्य के टुकड़ों पर पलना चाहता है! अब और हवाई किले न बनाओ! उन सब का नामोनिशान तक नहीं रहेगा, वे राख में बदल जाएँगे!

मैं इस युग को नष्ट कर दूँगा, इसे अपने राज्य में बदल दूँगा, और उन लोगों के साथ अनंत काल तक आनंद से रहूँगा जिन्हें मैं प्यार करता हूँ। उन गन्दी चीज़ों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे मेरे राज्य में रह सकती हैं। क्या तुम्हें लगता है कि तुम गंदे पानी में मछली पकड़ सकते हो? ऐसी कल्पनाओं को भूल जाओ! तुम नहीं जानते हो कि सब कुछ मेरी निगाहों से परखा जाता है! तुम नहीं जानते कि सब कुछ मेरे हाथों से व्यवस्थित किया जाता है! यह न सोचो कि तुमलोग अत्यंत सम्मानित हो! तुमलोगों में से हर एक को अपना योग्य स्थान अवश्य ग्रहण करना होगा। विनम्र होने का दिखावा मत करो (यह उनके लिए है जो धन्य हैं), या काँपो और डरो नहीं (उनके लिए है जो दुर्भाग्य झेलते हैं)। ठीक अभी, सभी को स्वयं अपने हृदय टटोलकर जान लेना चाहिए। भले ही मैं तुमलोगों के नाम का उल्लेख न करूँ, तब भी तुमलोगों को आश्वस्त हो जाना चाहिए, क्योंकि मैंने अपने वचन से हर व्यक्ति को लक्षित किया है। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम मेरे द्वारा चुने गए हो या नहीं, मेरे वचन तुमलोगों की समस्त परिस्थितियों के लिए हैं। अर्थात यदि तुमलोग मेरे चयनित में से हो, तो मैं अपने द्वारा चुने हुए लोगों की अवस्था की बात इस आधार पर करता हूँ

कि तुमने स्वयं को किस तरह प्रस्तुत किया है; जहाँ तक उन लोगों की बात है जो मेरे द्वारा चुने गए लोगों में से नहीं हैं, मैं उनकी अवस्था के अनुसार भी बोलता हूँ। इसलिए, मेरे वचन एक स्थिति तक कहे गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इसकी एक अच्छी समझ होनी चाहिए। अपने आप को धोखा मत दो! डरो मत! क्योंकि लोगों की संख्या सीमित है, केवल कुछ गिने-चुने ही हैं, इसलिए धोखाधड़ी नहीं चलेगी! जिस किसी को भी मैं चुना गया कहता हूँ, वह चुना गया है, और चाहे तू कितनी ही अच्छी तरह से दिखावा कर ले, मेरे गुण के बिना तू असफल रहेगा। क्योंकि मैं अपना वचन निभाता हूँ, इसलिए मैं अपनी स्वयं की योजनाओं को यूँ ही बाधित नहीं करता; मैं जो भी करना चाहता हूँ वह करता हूँ, क्योंकि जो कुछ भी मैं करता हूँ वह सही होता है, मैं सर्वोच्च हूँ, और मैं अद्वितीय हूँ। क्या तू इस बारे में स्पष्ट है? क्या तेरी समझ में आया?

अब, मेरे वचनों को पढ़ने के बाद, जो लोग दुष्टता करते हैं और जो कुटिल और धोखेबाज हैं, वे भी अपनी प्रगति और व्यक्तिगत प्रयास के लिए कड़ी मिहनत कर रहे हैं। वे मेरे राज्य में घुसने का रास्ता बनाने के लिए एक छोटी-सी क़ीमत का भुगतान करना चाहते हैं। उन्हें ऐसे विचार दरकिनार कर देने चाहिए! (इन लोगों के लिए कोई उम्मीद नहीं है क्योंकि मैंने उन्हें पश्चाताप करने का कोई अवसर नहीं दिया है।) मैं अपने राज्य के प्रवेशद्वार की रक्षा करता हूँ। क्या तू मानता है कि लोग अपनी इच्छानुसार मेरे राज्य में प्रवेश कर सकते हैं? क्या तू मानता है कि मेरा राज्य किसी भी प्रकार के कबाड़ को स्वीकार कर लेगा? कि मेरा राज्य किसी भी प्रकार के बेकार कचरे को ले लेगा? तू ग़लत समझ रहा है! आज राज्य में जो लोग हैं ये वे लोग हैं जो मेरे साथ राजसी सामर्थ्य रखते हैं; मैंने उन्हें सावधानीपूर्वक विकसित किया है। यह कुछ ऐसी चीज़ नहीं है जो केवल चाहने मात्र से ही प्राप्त की जा सकती है—तुझे अवश्य मेरे द्वारा अनुमोदित होना चाहिए। इसके अलावा, यह कुछ ऐसा नहीं है कि इसपर किसी के साथ विचार-विमर्श किया जाता है; यह कुछ ऐसा है जिसे मैं स्वयं व्यवस्थित करता हूँ। जो भी मैं कहता हूँ, वह हो जाता है। मेरे रहस्य उनलोगों के सामने प्रकट किए जाते हैं जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ। जो लोग दुष्टता करते हैं, अर्थात जिन्हें मैंने चुना नहीं है, वे उन्हें प्राप्त करने के अधिकारी नहीं हैं। भले ही वे उन्हें सुन लें, तब भी उनकी समझ में नहीं आएगा, क्योंकि शैतान ने उनकी आँखों को ढक दिया है और उनके हृदयों पर कब्ज़ा कर लिया है, उनके पूरे अस्तित्व को बर्बाद कर दिया है। ऐसा क्यों कहा जाता है कि मेरे कार्यकलाप अद्‌भुत और बुद्धिमत्तापूर्ण हैं, और यह कि मैं अपनी सेवा में सब कुछ संगठित करता हूँ? जिन लोगों को मैंने पूर्वनियत नहीं किया है और चुना नहीं है, मैं उन्हें दण्डित और भ्रष्ट करने के लिए शैतान को सौंप दूँगा, और मैं अपने हाथ से उन्हें

दंडित नहीं करूँगा; मैं इतना बुद्धिमान हूँ! किसने कभी इस बारे में सोचा है? बिल्कुल ही बिना किसी प्रयास के, मेरा महान कार्य सम्पन्न किया गया है, क्या नहीं?

अध्याय 82

मेरे वचन सुनकर सभी भयभीत हो जाते हैं; हर एक व्यक्ति घबराहट से भर जाता है। तुम किस बात से भयभीत हो? मैं तुम लोगों को जान से मारने वाला नहीं हूँ! ऐसा है कि तुम लोगों का अंतःकरण दोषी है; मेरी पीठ-पीछे तुम जो करते हो, वह बहुत तुच्छ और बेकार होता है। इससे मुझे तुमसे इतनी नफ़रत हो गई है कि मैं उग्रता से सोचता हूँ कि काश मैंने उन सभी लोगों को, जिन्हें मैंने पूर्वनिर्धारित और चयनित नहीं किया था, टुकड़े-टुकड़े हो जाने के लिए अगाध गड्ढे में फेंक दिया होता। बहरहाल, मेरे पास अपनी योजना है; मेरे पास अपने लक्ष्य हैं। फिलहाल मैं तुम्हारे क्षुद्र जीवन को बख्श दूँगा, अपने प्रति तुम्हारी सेवा के समाप्त होने तक तुम्हें ठोकर मारकर बाहर नहीं निकालूँगा। मैं ऐसे प्राणियों को देखना नहीं चाहता; वे मेरे नाम पर कलंक हैं! क्या तुम यह जानते हो? क्या तुम समझते हो? निकम्मे अभागो! इसे समझो! जब तुम उपयोग में लाए जाते हो, तो यह मैं ही होता हूँ जो ऐसा करता है और जब तुम उपयोग में नहीं लाए जाते, तो यह भी मेरी वजह से ही होता है। सब-कुछ मेरे द्वारा आयोजित होता है, और मेरे हाथों में सब-कुछ शिष्ट और व्यवस्थित है। जो भी बिना बारी के जाने की हिम्मत करेगा, उसे तुरंत मेरे हाथों मार गिराया जाएगा। मैं अक्सर "मार गिराने" की बात कहता हूँ; क्या तुम सोचते हो कि मैं वास्तव में ऐसा अपने हाथों से करता हूँ? मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है! मेरे कार्य ऐसे मूर्खतापूर्ण नहीं हैं, जैसा कि मनुष्य कल्पना करते हैं। इसका क्या अर्थ होता है, जब यह कहा जाता है कि सब-कुछ मेरे वचनों के द्वारा स्थापित और संपन्न किया जाता है? सब-कुछ मेरे द्वारा एक उँगली भी उठाए बिना संपन्न हो जाता है। क्या तुम मेरे वचनों का सही अर्थ समझते हो?

मैं उन लोगों में से किसी का भी उद्धार नहीं करूँगा, जो मेरे लिए सेवा करते हैं; मेरे राज्य में उनका कोई हिस्सा नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि ये लोग मेरी इच्छा पर चलने की जगह स्वयं को केवल बाहरी मामलों में व्यस्त रखते हैं। यद्यपि मैं अभी उनका उपयोग कर रहा हूँ, किंतु असल में ये ऐसे लोग हैं, जिनसे मैं सबसे ज्यादा नफ़रत करता हूँ; ऐसे लोग, जिन्हें मैं सबसे ज्यादा तुच्छ मानता हूँ। आज, मुझे वह आदमी पसंद है, जो मेरी इच्छा पर चल सके, जो मेरी ज़िम्मेदारियों का ध्यान रख सके, और जो मेरे लिए सच्चे दिल

और ईमानदारी से अपना सब-कुछ दे सके। मैं उन्हें लगातार प्रबुद्ध करूँगा, उन्हें अपने से दूर नहीं जाने दूँगा। मैं अकसर कहता हूँ, "जो ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाता है, मैं निश्चित रूप से तुझे बहुत आशीष दूँगा।" "आशीष" किस चीज़ का संकेत करता है? क्या तुम जानते हो? पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य के संदर्भ में, यह उन ज़िम्मेदारियों का संकेत करता है, जो मैं तुम्हें देता हूँ। वे सभी, जो कलीसिया के लिए ज़िम्मेदारी वहन कर पाते हैं, और जो ईमानदारी से मेरे लिए खुद को अर्पित करते हैं, उनकी ज़िम्मेदारियाँ और उनकी ईमानदारी दोनों आशीष हैं, जो मुझसे आते हैं। इसके अलावा, उनके लिए मेरे प्रकटन भी मेरे आशीष हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जिनके पास अभी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, वे मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारित और चयनित नहीं हैं; मेरे शाप पहले ही उन पर आ चुके हैं। दूसरे शब्दों में, जिन्हें मैंने पूर्वनिर्धारित और चयनित किया है, उनका मेरे द्वारा कही गई बातों के सकारात्मक पहलुओं में एक हिस्सा है, जबकि जिन्हें मैंने पूर्वनिर्धारित और चयनित नहीं किया है, उनका मेरे कथनों के केवल नकारात्मक पहलुओं में एक हिस्सा है। मेरे वचन जितने अधिक बोले जाते हैं, उतना ही स्पष्टतर उनका अर्थ होता है; जितना अधिक मैं उन्हें बोलता हूँ, वे उतने ही अधिक पारदर्शी हो जाते हैं। उन सभी कुटिल और धोखेबाज़ लोगों को, और उन लोगों में से हर एक को, जिन्हें मैंने पूर्वनिर्धारित नहीं किया है, दुनिया के निर्माण से पहले ही मेरे द्वारा शाप दे दिया गया था। ऐसा क्यों कहा जाता है कि तुम लोगों के जन्मों के वर्ष, महीने, दिन, यहाँ तक कि घंटे, मिनट और सेकंड भी सब मेरे द्वारा उपयुक्त रूप से नियोजित किए गए थे? मैंने बहुत समय पहले पूर्वनिर्धारित कर दिया था कि कौन-से लोग ज्येष्ठ पुत्रों की हैसियत प्राप्त करेंगे। वे मेरी नज़रों में हैं; वे लंबे समय से मेरे द्वारा क़ीमती समझे गए हैं, और लंबे समय से मेरे दिल में उनके लिए एक जगह रही है। मेरे द्वारा बोले गए प्रत्येक वचन में वज़न है और उसमें मेरे मत निहित हैं। आदमी क्या है? उन कुछ लोगों को छोड़कर, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, जो ज्येष्ठ पुत्रों की हैसियत रखते हैं, कितने कम लोग मेरी इच्छा के प्रति कोई विचारशीलता दर्शाते हैं? मेरे पुत्र किसके योग्य हैं? मेरे लोग किसके लायक हैं? अतीत में "मेरे पुत्र" मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए एक पदवी थी, लेकिन मेरे उन पुत्रों और मेरे उन लोगों में से जिनमें ज़रा भी शर्म नहीं थी, उन्हें लगा कि यह उनके लिए एक सम्मानसूचक उपाधि है। मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की भूमिका निर्लज्जता से मत निभाओ। क्या तुम इस पदवी के योग्य हो? आज, एकमात्र सत्यापित लोग वे ही हैं, जो मेरे सामने महत्वपूर्ण पदों पर रखे गए हैं; इन लोगों ने ज्येष्ठ पुत्रों की हैसियत प्राप्त कर ली है। उनका पहले से ही मेरे सिंहासन, मेरे मुकुट, मेरी महिमा और मेरे राज्य में एक हिस्सा है। सब-कुछ मेरे द्वारा

ध्यानपूर्वक व्यवस्थित किया गया है। जिन लोगों ने आज ज्येष्ठ पुत्रों की हैसियत हासिल की है, उन सभी ने बहुत कष्ट, उत्पीड़न और विपत्तियाँ झेली हैं, जिनमें उनका वह अनुभव शामिल है, जो उन्होंने जन्म के बाद से अपने परिवारों में, अपनी स्वयं की व्यक्तिगत संभावनाओं में, अपने काम, अपने विवाह इत्यादि में प्राप्त किया है। इन ज्येष्ठ पुत्रों ने यह हैसियत बिना कोई क़ीमत चुकाए नहीं पाई है; बल्कि वे पहले से ही जीवन के सभी पहलुओं से गुज़र चुके हैं : अच्छे, बुरे, उतार के, चढ़ाव के। वे सभी, जो पहले दुनिया के लोगों द्वारा बहुत सम्मानित माने जाते थे और जो घर पर आराम से रहते थे, उनका ज्येष्ठ पुत्रों में कोई हिस्सा नहीं है। वे ज्येष्ठ पुत्र होने के योग्य नहीं हैं; वे मेरे नाम को लज्जित करते हैं, मैं उन्हें बिलकुल भी नहीं चाहता। मेरे पुत्रों और मेरे लोगों, जिन्हें मैंने चुना है, के पास भी दुनिया में अच्छी प्रतिष्ठा है, लेकिन वे मेरे ज्येष्ठ पुत्रों से बहुत ही कम योग्य हैं। मैं वर्तमान में कुछ लोगों का उपयोग कर रहा हूँ, लेकिन उनमें से बहुत से मेरे लोग बनने के योग्य भी नहीं हैं। बल्कि वे शाश्वत तबाही की वस्तुएँ हैं; वे कुछ समय के लिए मेरी सेवा करने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं, वे लंबे समय के उपयोग के मतलब के नहीं हैं। मैंने अपने दिल की गहराई में पहले से ही निर्धारित कर लिया है कि किसे लंबी अवधि के लिए उपयोग किया जाना है। अर्थात्, जिन्हें मैं महत्वपूर्ण स्थितियों में रखता हूँ, वे, वे हैं जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, और मैंने बहुत पहले से उनका उपयोग करना शुरू कर दिया है। दूसरे शब्दों में, उनके काम पहले ही तय हो चुके हैं। जहाँ तक उन लोगों का संबंध है, जिनसे मैं घृणा करता हूँ, वर्तमान चरण में उनका केवल अस्थायी रूप से ही उपयोग किया जा रहा है। जब विदेशी आएँगे, तब ज्येष्ठ पुत्रों को तुम लोगों के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट किया जाएगा।

अभी मेरी आवश्यकता यह है कि तुम लोग तेज़ी से बढ़ो और मेरी ज़िम्मेदारी के प्रति विचारशीलता दर्शाओ। यह ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी नहीं है, और मैं तुम लोगों से केवल वही करवाऊँगा जो तुम्हारी क्षमताओं के भीतर है। मैं तुम लोगों का आध्यात्मिक क़द जानता हूँ; मुझे पता है कि तुम लोग क्या काम कर सकते हो। मैं यह सब जानता हूँ, और मैं इन चीज़ों को समझता हूँ; मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि मेरे पुत्रो, तुम लोग स्वेच्छा से अपने आपको नकार दोगे और उससे प्यार करने में जिससे मैं प्यार करता हूँ, उससे घृणा करने में जिससे में घृणा करता हूँ, वह करने में जो मैं करता हूँ, और वह कहने में जो मैं कहता हूँ, सचमुच सफल होगे। आकाश, भूगोल, समय, या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नियंत्रित न हो। मेरी इच्छा है कि तुम लोगों की आत्माएँ हर जगह मुक्त हों, और यह कि तुम लोगों में से प्रत्येक, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की स्थिति में खड़ा हो सके। आज कौन मेरे प्रति अपना संपूर्ण अस्तित्व अर्पित करता है? कौन मेरे लिए निष्ठा से अपने

को खपाता है? कौन मेरे लिए रात-दिन प्रस्तुत रहता है? कौन मेरे लिए मेरे घरेलू मामलों को चलाता है? कौन मेरे लिए मेरे कंधों का भार कम करता है? क्या वे मेरे पुत्र नहीं हैं? मैं जो कुछ भी करता हूँ, वह मेरे पुत्रों को पूर्ण बनाने के लिए है और मेरे पुत्रों की सेवा के लिए किया जाता है। क्या तुम समझे? सब मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए है और मैं कोई भूल नहीं करता। इस ग़लतफहमी में मत रहना कि मैं लोगों को ग़लत समझता हूँ, और यह मत सोचना कि मैं तुम्हें तुच्छ समझता हूँ। यह मत समझो कि मैं महान प्रतिभा का पर्याप्त उपयोग नहीं करता, या कि मैंने तुम्हें पूर्वनिर्धारित न करके कोई भूल की है। ऐसा नहीं है; बल्कि ऐसा है कि तुम इसके योग्य नहीं हो! क्या तुम यह जानते हो? अब मैं तुम लोगों के लिए कुछ बातों की पुष्टि करूँगा : जो कोई भी अकसर मेरे क्रोध को जगाता है और अकसर मेरी आलोचना या निपटारे का लक्ष्य होता है, वह निश्चित रूप से मेरी घृणा का लक्ष्य है। ऐसे लोग निश्चित रूप से मरेंगे—यह पत्थर की लकीर है। मैंने कहा है कि अब मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से नहीं निपटूँगा, क्योंकि ये लोग पहले ही मेरे गंभीर परीक्षण से गुज़र चुके हैं और मेरी मंजूरी प्राप्त कर चुके हैं। जिसे भी मैं एक कठोर अभिव्यक्ति के साथ देखता हूँ, वह ख़तरे में है। क्या तुम भयभीत नहीं हो? कई लोग मेरे मुँह से मेरे वचनों के निकलते ही मर जाएँगे। हालाँकि, कुछ लोग अभी भी अपनी देह को बनाए रखेंगे; बात सिर्फ इतनी होगी कि उनकी आत्मा मर चुकी होगी। उनका सबसे स्पष्ट संकेतक यह है कि वे पवित्र आत्मा का कार्य धारण नहीं करते और उनके पास उन्हें रोककर रखने वाला कुछ नहीं है। (वे पहले से ही शैतान द्वारा एक गहन अंश तक भ्रष्ट किए जा चुके हैं।) जब भी उनकी देह नष्ट की जाती है, तो ऐसा मेरे द्वारा उपयुक्त योजना के बाद और ऐसे समय पर होता है, जो मैं निर्दिष्ट करता हूँ। उनकी आत्मिक मृत्यु मेरे लिए कोई महान सेवा नहीं कर सकती; मैं अपने कर्मों का चमत्कार दिखाने के लिए उनकी देह का उपयोग करूँगा। इससे लोग आश्वस्त हो जाएँगे; वे अंतहीन प्रशंसा करेंगे, और ऐसा कोई नहीं होगा जो मेरा सम्मान न करता हो और मुझसे डरता न हो। मैं किसी भी बात को हलके में नहीं लेता; सभी को मेरे लिए ही जीना और मरना होगा, और कोई भी मेरे लिए अपनी सेवा पूरी किए बिना नहीं जा सकता। यहाँ तक कि शैतान भी तब तक वापस अगाध गड्ढे में नहीं गिर सकता, जब तक वह मेरे लिए अपनी सेवा पूरी नहीं कर लेता। मेरे द्वारा उठाया गया हर एक कदम स्थिर, सुरक्षित और ठोस जमीन पर होता है; मेरे द्वारा उठाया गया कोई कदम अव्यावहारिक नहीं होता है—जरा भी नहीं।

कौन मेरे साथ तुलना करने का साहस करेगा? कौन मेरा विरोध करने की हिम्मत करेगा? मैं तुम्हें

फ़ौरन मार गिराऊँगा! मैं नामोनिशान नहीं छोड़ूँगा, और तुम्हारी देह को पूरी तरह से मिटा दिया जाएगा; यह पूर्णतया सत्य है। जैसे ही मैं इन बातों को कहता हूँ, मैं इन पर तत्काल क्रिया करता हूँ, और इसे पलटा नहीं जाएगा। दुनिया दिन-प्रतिदिन टूट रही है, और मानव-जाति दिन-प्रतिदिन नष्ट हो रही है। हर गुज़रते दिन के साथ, मेरा राज्य आकार ले रहा है और मेरे ज्येष्ठ पुत्र बढ़ रहे हैं। दिन-प्रतिदिन मेरा क्रोध बढ़ रहा है, मेरी ताड़ना अधिक गंभीर होती जा रही है, और मेरे वचन अधिक कठोर हो रहे हैं। तुम लोग अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हो कि मैं तुमसे अधिक नरमी से बोलूँ और मेरा स्वर हलका हो, किंतु फिर से सोचो! मेरा स्वर इस बात पर निर्भर करता है कि मैं किन लोगों से निपट रहा हूँ। जिन लोगों से मैं प्यार करता हूँ, उनके लिए मेरा स्वर नरम और हमेशा सांत्वना देने वाला होता है, किंतु तुम लोगों के प्रति मैं केवल कठोरता और न्याय ही दर्शा सकता हूँ, जिसके शीर्ष पर मैं ताड़ना और क्रोध को जोड़ता हूँ। किसी के भी अवगत हुए बिना, दुनिया के हर देश की स्थिति तेज़ी से तनावपूर्ण होती जा रही है, दिन-प्रतिदिन चूर-चूर और अराजक होती जा रही है। प्रत्येक देश के नेता अंत में सत्ता जीतने की उम्मीद करते हैं। उनके दिमाग में यह बिलकुल नहीं आया है कि मेरी ताड़ना पहले से ही उन पर है। वे मेरी ताक़त को ज़ब्त करने की कोशिश करते हैं—लेकिन यह केवल उनकी कल्पना है! यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र के नेता को भी मुझसे क्षमा माँगनी होगी। उसने जो बुरे कर्म किए हैं, वे असंख्य हैं। अब ताड़ना का समय है, और मैं उसे हलके में नहीं छोड़ूँगा। सत्ता में रहने वाले सभी लोगों को अपने मुकुट उतारने होंगे; केवल मैं ही सभी चीज़ों पर शासन करने के लायक हूँ। सब-कुछ मुझ पर निर्भर करता है—सब-कुछ, यहाँ तक कि मुट्ठीभर विदेशी लोग भी। मैं ऐसे सभी लोगों को तुरंत मार गिराऊँगा, जो मेरी जाँच करते हैं, क्योंकि मेरा काम यहाँ तक पहुँच चुका है। हर दिन नया प्रकाशन दिखाई देता है; हर दिन नई रोशनी होती है। सब-कुछ तेजी से पूरा हो रहा है। शैतान का अंतिम दिन अधिकाधिक निकट और अधिक स्पष्ट होता जा रहा है।

अध्याय 83

तुम लोग नहीं जानते कि मैं ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ, न ही तुम लोग जानते हो कि सभी घटनाएँ और चीज़ें मेरे नियंत्रण में हैं! इसका क्या अर्थ है कि सब कुछ मेरे द्वारा स्थापित और पूरा किया जाता है? प्रत्येक व्यक्ति के आशीष या दुर्भाग्य सभी मेरी तृप्ति पर और मेरे कार्यकलापों पर निर्भर करते हैं। मनुष्य क्या कर सकता है? मनुष्य सोच के द्वारा क्या संपन्न कर सकता है? इस अंतिम युग में, इस पथभ्रष्ट युग में,

इस अंधकारमय दुनिया में जिसे शैतान ने एक हद तक भ्रष्ट कर दिया है, मेरी इच्छा के अनुरूप क्या कुछ सामंजस्य में हो सकता है? चाहे आज हो, बीता हुआ कल हो या निकट भविष्य हो, सभी लोगों के जीवन मेरे द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। चाहे वे आशीषों को प्राप्त करें या दुर्भाग्य को भुगतें और चाहे मेरे द्वारा उन्हें प्रेम मिले या नफ़रत, सब कुछ ठीक-ठीक मेरे द्वारा एक ही झटके में निर्धारित किया गया था। तुममें से कौन यह दावा करने का साहस करता है कि तुम्हारे कदम आत्म-निर्धारित हैं और तुम्हारा भाग्य तुम्हारे नियंत्रण में है, कौन ऐसा कहने का साहस करता है? कौन इतना अवज्ञाकारी होने का साहस करता है? कौन मुझसे नहीं डरता है? कौन अपने मन में मेरे प्रति अवज्ञाकारी है? कौन अपनी मनमानी करने का साहस करता है? मैं उन्हें मौके पर ही ताड़ना दूँगा और निश्चित रूप से मानवजाति पर अब और दया नहीं करूँगा या उसका अब और उद्धार नहीं करूँगा। इस बार-अर्थात् जिस क्षण तुम लोगों ने मेरे नाम को स्वीकार कर लिया है-अंतिम बार है कि मैं मानवता के प्रति किसी तरह की उदारता दिखाऊँगा। कहने का अर्थ है कि मैंने मानवजाति के एक हिस्से को चुना है जिसके यद्यपि आशीष शाश्वत न हों, फिर भी वे मेरे प्रचुर अनुग्रह का आनंद उठा चुके हैं; इसलिए, भले ही यह पूर्वनियत नहीं है कि तुम शाश्वत रूप से धन्य रहोगे, इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा और तुम उन लोगों की तुलना में बहुत बेहतर हो जो सीधे दुर्भाग्य को भुगतेंगे।

वास्तव में, मेरा न्याय पहले ही एक उच्च बिंदु पर पहुँच चुका है और एक अभूतपूर्व क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है। मेरा न्याय हर व्यक्ति पर है और अब यह एक कोपपूर्ण न्याय है। अतीत में यह एक प्रतापी न्याय था लेकिन अब यह बहुत भिन्न है। अतीत में लोगों को रत्ती भर भी डर महसूस नहीं होता था जब तक कि वे मेरे न्याय किए जाने का सामना नहीं करते थे; हालाँकि अब जैसे ही वे एक वचन भी सुनते हैं तो वे बुरी तरह घबरा जाते हैं। कुछ तो मेरे मुँह खोलने से भी डरते हैं। जब मैं बोलना शुरू करता हूँ, तो यदि मेरी आवाज़ भी निकलती है, तो वे इतना डर जाते हैं कि वे नहीं जानते कि क्या करें, उस समय वे ईमानदारी से यही चाहते हैं कि अपने आप को ज़मीन में किसी गड्ढे में छुपा लें या किसी सबसे अँधेरे कोने में छिपे रहें। इस तरह के व्यक्ति को बचाया नहीं जा सकता क्योंकि वे दुष्ट आत्माओं के कब्ज़े में हैं। जब मैं बड़े लाल अजगर और उस प्राचीन सर्प का न्याय करता हूँ, तो वे बुज़दिल हो जाते हैं और यहां तक कि दूसरों के देखे जाने से भी डरते हैं; सचमुच वे शैतान के वंशज हैं जो अंधकार में पैदा हुए हैं।

मैं अक्सर "पूर्वनियति और चयन" शब्दों को बोला करता था, इनका सही-सही क्या अर्थ है? मैं कैसे

पूर्वनियत और चयन करता हूँ? क्यों कोई व्यक्ति पूर्वनियत और चयनित लोगों में नहीं होगा? तुम इसे कैसे समझ सकते हो? इन चीजों को मेरी कुछ स्पष्ट व्याख्या की आवश्यकता है और वे मुझे सीधे बोलने को मजबूर करते हैं। यदि मैं तुम लोगों में ये चीजें प्रकट करता, तो भ्रमित व्यक्ति ग़लत ढंग से विश्वास करता कि यह शैतान द्वारा दिया गया विचार है! मैं अन्यायपूर्वक तिरस्कृत हो जाऊँगा! अब मैं कुछ भी छिपाकर न रखते हुए रुखाई से बोलूँगा : जब मैंने सभी चीज़ों का सृजन किया, तो मैंने मानव जाति की सेवा में सबसे पहले उन सामग्रियों को बनाया (फूल, घास, पेड़, लकड़ी, पर्वत, नदियाँ, झीलें, भूमि और सागर, सभी प्रकार के कीड़े, पक्षी और जानवर; कुछ मानवजाति के खाने के लिए हैं और कुछ मानवजाति के देखने के लिए हैं)। मानवजाति के लिए विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव के आधार पर विभिन्न प्रकार के अनाज बनाए गए; केवल इन सब चीजों को बनाने के बाद ही मैंने मनुष्यों का सृजन शुरू किया। दो तरह के लोग होते हैं : पहले मेरे द्वारा चयनित और पूर्वनियत हैं; दूसरों में शैतान के गुण हैं और इस प्रकार के लोगों को मैंने दुनिया का सृजन करने से पहले ही बनाया था, लेकिन चूँकि वे शैतान द्वारा पूरी तरह से भ्रष्ट कर दिए गए थे, इसलिए मैंने उनका परित्याग कर दिया है। तब मैंने पूर्वनियत और चयनित किस्म के लोगों को बनाया, इनमें से प्रत्येक के पास अलग-अलग अंशों में मेरे गुण हैं; इसलिए, आज मेरे द्वारा चुने गए प्रत्येक व्यक्ति के पास कम-ज्यादा अंशों में मेरे गुण हैं। यद्यपि उन्हें शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, फिर भी वे मुझसे संबंधित हैं; प्रत्येक चरण मेरी प्रबंधन योजना का एक भाग है। राज्य में ईमानदार लोग शासन करते हैं क्योंकि मैंने इसकी पहले ही योजना बना ली थी। जो लोग कुटिल और धोखेबाज हैं, वे ईमानदार नहीं हो सकते क्योंकि वे शुरुआत से अंत तक शैतान के वंशज हैं और शैतान के कब्ज़े में हैं, वे शैतान के सेवक हैं और उसके अधीन हैं। हालाँकि इस सबका उद्देश्य मेरी इच्छा पूरी करने के लिए है। मैंने इसे स्पष्ट कर दिया है ताकि तुम लोगों को अनुमान न लगाना पड़े। जिन्हें मैं पूर्ण करूँगा, मैं उनका ख्याल रखूँगा और उनकी रक्षा करूँगा; जिस तरह जिनसे मैं घृणा करता हूँ, एक बार उनकी सेवा खत्म हो गई तो वे मेरे स्थान से बाहर निकल जाएँगे। जब इन लोगों के बारे में बोला जाता है तो मैं क्रोधित हो जाता हूँ; उनका ज़िक्र होते ही मैं उनसे तुरंत निपटना चाहता हूँ। फिर भी मैं अपने कार्यकलापों में संयमित रहता हूँ; मुझे मेरे कार्यों और भाषण में मापा जाता है। मैं क्रोध के एक दौर में दुनिया को विषादग्रस्त कर सकता हूँ, पर जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया है, वे अपवाद हैं; शांत होने के बाद मैं दुनिया को अपने हाथ की हथेली में थाम सकता हूँ। दूसरे शब्दों में, मैं सब कुछ नियंत्रित करता हूँ। जब मुझे महसूस होता है कि दुनिया एक हद तक भ्रष्ट हो

गई है कि लोग इसे सहन नहीं कर सकते, तो मैं इसे तुरंत नष्ट कर दूँगा। क्या मैं इसे सिर्फ एक वचन के उच्चारण से नहीं कर सकता था?

मैं स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर हूँ; मैं अलौकिक चिह्नों या चमत्कारों का प्रदर्शन नहीं करता हूँ-लेकिन मेरे अद्‌भुत कार्य हर जगह हैं। आगे की राह अतुलनीय रूप से अधिक दीप्तिमान हो जाएगी। मेरे द्वारा प्रत्येक चरण का प्रकाशन, तुम लोगों को इंगित करने का मेरा तरीक़ा है और यह मेरी प्रबंधन योजना है। अर्थात्, भविष्य में ये प्रकाशन और भी बहुसंख्यक और स्पष्टतर हो जाएँगे। यहाँ तक कि सहस्राब्दि राज्य में भी-निकट भविष्य में-तुम लोगों को अवश्य मेरे प्रकाशनों और मेरे चरणों के अनुसार आगे बढ़ना चाहिए। सब कुछ साकार हो चुका है और सब कुछ तैयार किया जा चुका है, तुम लोगों में से जो धन्य हुए हैं, अनंत आशीष उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं जबकि जो अभिशप्त हैं, उनके लिए शाश्वत ताड़ना प्रतीक्षा कर रही है। मेरे रहस्य तुम लोगों के लिए बहुत अधिक हैं; जो वचन मेरे लिए सबसे सरल हैं, वे तुम लोगों के लिए सबसे कठिन हैं। इसलिए, मैं अधिक से अधिक बोलता हूँ, क्योंकि तुम लोगों की समझ में बहुत कम आता है और तुम लोगों को हर वचन को विस्तार से समझाने के लिए मेरी आवश्यकता है। बहुत ज्यादा चिंता मत करो, मैं अपने कार्य के अनुसार तुम लोगों से बात करूँगा।

अध्याय 84

मेरे बारे में ज्ञान की कमी के कारण, मनुष्य ने अनगिनत बार मेरे प्रबंधन को बाधित और मेरी योजनाओं को कमज़ोर किया है, लेकिन वे मेरे आगे बढ़ते कदमों को रोक पाने में कभी भी समर्थ नहीं हुए। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं बुद्धि का परमेश्वर हूँ। मेरे साथ असीम ज्ञान है; मेरे साथ असीम और अथाह रहस्य है। मनुष्य अतिप्राचीन काल से अबतक इसकी थाह पाने और इसे पूरी तरह से समझने में कभी सक्षम नहीं रहा। क्या ऐसा नहीं है? मेरे द्वारा बोले गए प्रत्येक वचन में केवल ज्ञान ही नहीं, मेरा छिपा हुआ रहस्य भी है। मेरा सब कुछ रहस्य है; मेरा हर हिस्सा एक रहस्य है। तुमलोगों ने आज केवल रहस्य को देखा है, मतलब तुमने मेरे व्यक्तित्व को देखा है—लेकिन अभी तक भीतर छिपे इस रहस्य को सुलझाया नहीं है। केवल मेरी अगुआई का अनुसरण करके ही मनुष्य मेरे राज्य में प्रवेश कर सकते हैं; अन्यथा, वे दुनिया के साथ नष्ट हो जाएँगे और राख बन जाएँगे। मैं संपूर्ण परमेश्वर स्वयं हूँ, और स्परमेश्वर स्वयं के अलावा कुछ नहीं हूँ। पूर्व की उक्तियाँ, जैसे "परमेश्वर का प्रत्यक्षीकरण" पहले ही पुरानी पड़ चुकी हैं; वे

घिसी-पिटी पुरानी बातें हैं जो अब वर्तमान में लागू नहीं होतीं। तुममें से कितने लोग इसे समझ पाए हो? कितने लोग मेरे बारे में इस हद तक निश्चित हो? सब कुछ मुझे अवश्य ही स्पष्ट रूप से समझाना और बताना है।

शैतान का राज्य नष्ट कर दिया गया है और इसके लोग जल्द ही मेरे प्रति अपनी सेवा पूरी करते हुए समाप्त कर दिए जाएंगे। उन्हें मेरे घर से एक-एक कर बाहर खदेड़ दिया जाएगा, इसका अर्थ यह है कि उन सभी लोगों के असली रंग आज दिख गए हैं जो विभिन्न भूमिकाओं का स्वांग रचते आ रहे हैं, और वे सभी लोग मेरे राज्य से अलग कर दिए जाएंगे। भूलो मत! आज से, जिन्हें मैं त्यागता हूँ, जिनमें अतीत में छोड़े गए लोग भी शामिल हैं, ये वे लोग हैं जो केवल नाटक कर रहे हैं, जो ढोंगी हैं। वे केवल मुझे दिखाने के लिए एक नाटक कर रहे थे, और नाटक खत्म हो जाने के बाद उन्हें रंगमंच अवश्य छोड़ना होगा। जो लोग सचमुच मेरे पुत्र हैं, वे मेरा प्रेम प्राप्त करने और उन आशीषों का आनंद लेने के लिए आधिकारिक तौर पर मेरे राज्य में रहेंगे, जो मैंने तुमलोगों के लिए पहले से तैयार रखे हैं! ज्येष्ठ पुत्र धन्य हैं! आज तुमलोग मेरे उपयोग के योग्य हो क्योंकि तुमलोगों ने पहले ही मेरे प्रशिक्षण को प्राप्त कर लिया है। विश्वास करो कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। लोग जिन चीज़ों को निष्पादित नहीं कर सकते हैं, मैं बिना किसी रुकावट के उन्हें पूरा कर सकता हूँ और इसमें प्रतियोगिता के लिए बिल्कुल भी कोई जगह नहीं है। ऐसा मत सोचो कि तुमलोग कुछ नहीं कर सकते हो और तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र बनने के योग्य नहीं हो। तुम पूर्णतः योग्य हो! ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी चीज़ें कार्यान्वित होने के लिए मुझपर निर्भर हैं, वे सभी निष्पादित होने के लिए मुझपर भरोसा करती हैं। अभी ऐसा महसूस क्यों करते हो कि तुमलोग ऐसी क़द-काठी के हो? ऐसा केवल इसलिए है कि मेरे द्वारा तुम सभी का उपयोग करने का समय वास्तव में नहीं आया है। बड़ी प्रतिभाओं का तुच्छ उद्देश्यों के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता; क्या तुमलोग समझते हो? क्या तुमलोग पूरे ब्रह्माण्ड की दुनिया में से केवल एक छोटे-से चीन तक ही सीमित हो? अर्थात, पूरे ब्रह्माण्ड की दुनिया के सभी लोग तुम्हारी चरवाही और अगुआई के लिए तुमलोगों को दिए जाएँगे, क्योंकि तुमलोग ज्येष्ठ पुत्र हो और भाइयों की अगुआई करना ऐसा कर्तव्य है जिसे तुमलोगों को पूरा करना चाहिए। इसे जान लो! मैं ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ! मैं एक बार पुनः इस बात पर ज़ोर देता हूँ कि मैं तुमलोगों को आनंद लेने की अनुमति दे रहा हूँ। मैं ही वह हूँ जो कार्य कर रहा है—पवित्र आत्मा हर जगह कार्य कर रहा है और व्यक्तिगत रूप से अगुआई कर रहा है।

लोग अतीत में मेरे द्वारा उद्धार को समझ नहीं पाए थे—क्या अब तुम समझते हो? मेरे उद्धार के कई पहलू हैं: उनमें से एक यह है कि कुछ लोगों के लिए मेरा उद्धार बिल्कुल भी पूर्वनियत नहीं है, जिसका अर्थ है कि वे मेरे अनुग्रह का आनंद बिल्कुल नहीं ले सकते; दूसरा पहलू है कि कुछ लोग ऐसे हैं जो आरंभ में पूर्वनियत किए जाते हैं, जो एक समयाविधि तक मेरे अनुग्रह का आनंद लेते हैं लेकिन जिन्हें मेरे द्वारा पूर्वनिश्चित कुछ समय बाद, हटा दिया जाएगा, और फिर उनके जीवन पूरी तरह समाप्त हो जाएँगे; एक और भी पहलू है कि ऐसे लोग हैं जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया और चुना है, जो अनंत आशीषों का आनंद लेते हैं; वे शुरू से लेकर अंत तक मेरे अनुग्रह का आनंद लेते हैं, जिनमें मुझे स्वीकार करने से पहले और उसके बाद उनके द्वारा भुगती गई कठिनाइयाँ और साथ ही मुझे स्वीकार करने के बाद उन्हें प्राप्त प्रबुद्धता और रोशनी शामिल हैं। तब से, वे आशीषों का आनंद लेना शुरू कर देंगे, अर्थात, ये वे लोग हैं जिन्हें मैं पूरी तरह से बचाता हूँ। यह मेरे महान कार्य के पूर्ण होने की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति है। तब फिर, आशीष का अर्थ क्या है? मैं पूछना चाहूँगा, तुमलोग सबसे ज्यादा क्या करना चाहते हो? तुमलोग सबसे ज्यादा किससे नफ़रत करते हो? तुमलोग सबसे अधिक क्या पाने की आशा करते हो? केवल मुझे पाने के वास्ते, और अपने जीवन को विकसित करने के लिए, तुमलोगों ने अतीत में कष्ट और कठिनाइयाँ झेली हैं; ये अनुग्रह के ही हिस्से हैं। आशीष का अर्थ है कि जिन चीज़ों से तुमलोग घृणा करते हो वे भविष्य में तुमलोगों के साथ अब और नहीं होंगी, जिसका अर्थ है कि ये चीज़ें तुम्हारे वास्तविक जीवन में अब और मौजूद नहीं रहेंगी; वे तुम्हारी आँखों के सामने पूरी तरह से हटा दिए जा चुके होंगे। परिवार, कार्य, पत्नी, पति, बच्चे, मित्र और रिश्तेदार, और यहाँ तक कि दिन में तीन बार का भोजन भी जिससे तुम नफ़रत करते हो, समाप्त हो जाएँगे। (इसका अर्थ है समय के द्वारा सीमित नहीं होना और देह से पूरी तरह निकल जाना। केवल तुम्हारी तुष्ट आत्मा ही तुम्हारे शरीर को बनाए रख सकती है। मैं तुम्हारे शरीर की बात कर रहा, न कि देह की। तुम पूरी तरह से मुक्त और ज्ञानातीत हो जाओगे। संसार के सृजन से लेकर अबतक, परमेश्वर द्वारा व्यक्त किया गया यह सबसे महान और सबसे स्पष्ट चमत्कार है।) तुमलोगों के शरीर से मिट्टी के सारे कण हटा दिए जाएँगे और तुमलोग पूरी तरह से आध्यात्मिक शरीर बन जाओगे जो पवित्र और निष्कलंक है, और पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी के छोरों तक यात्रा करने में समर्थ है। तब से आगे उन सभी कष्टप्रद धुलाई और रगड़ाई से भी मुक्ति मिल जाएगी और, तुमलोग पूरा आनंद उठाओगे। उसके बाद से, तुमलोग विवाह के बारे में नहीं सोचोगे (क्योंकि मैं एक युग को समाप्त कर रहा हूँ, संसार का सृजन नहीं कर रहा), और अब वे

प्रसव-पीड़ाएँ नहीं होंगी जो महिलाओं के लिए अत्यंत यातनापूर्ण हैं। न ही तुमलोग भविष्य में अब और काम या परिश्रम करोगे। तुमलोग पूरी तरह से मेरे प्रेमालिंगन में डूब जाओगे और उन आशीषों का आनंद उठाओगे जो मैंने तुम्हें दिए हैं। यह पूर्ण सत्य है। जब तुमलोग इन आशीषों का आनंद ले रहे होगे, अनुग्रह तुमलोगों को मिलता रहेगा। वे सारी चीजें जो मैंने तुमलोगों के लिए तैयार की हैं—अर्थात, दुनिया भर के दुर्लभ और अनमोल ख़जाने—तुम्हें दी जाएँगी। वर्तमान में तुमलोग इनके बारे में अनुमान या कल्पना भी नहीं कर सकते हो, और किसी भी मनुष्य ने इससे पहले इनका आनंद नहीं लिया है। जब ये आशीष तुमलोगों को प्राप्त होंगे, तो तुमलोग एक अंतहीन हर्षोन्माद की स्थिति में होगे, किन्तु यह न भूलना कि ये सब मेरी सामर्थ्य, मेरे कार्यकलाप, मेरी धार्मिकता और उनसे भी बढ़कर, मेरे प्रताप से हैं। (मैं उनलोगों के प्रति अनुग्रहशील रहूँगा जिन्हें मैं अपने अनुग्रह के लिए चुनता हूँ, और मैं उनलोगों के प्रति दयालु रहूँगा जिन्हें मैं अपनी दया के लिए चुनता हूँ।) उस समय तुमलोगों के कोई माता-पिता नहीं होंगे, और कोई रक्त-संबंधी नहीं होंगे। मेरे प्यारे पुत्रो, तुम सब वे लोग हो जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। तब से कोई भी तुमलोगों को सताने का साहस नहीं करेगा। यह तुमलोगों के लिए वयस्क बनने का समय होगा, और राष्ट्रों पर एक लौह दण्ड के साथ शासन करने का समय होगा। कौन मेरे प्यारे पुत्रों को रोकने का साहस करता है? कौन मेरे प्यारे पुत्रों पर हमला करने का साहस करता है? वे सभी मेरे प्रिय पुत्रों का आदर करेंगे क्योंकि परमपिता की महिमा हुई है। वे सभी चीज़ें जिनकी कभी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था, तुमलोगों की आँखों के सामने दिखाई देंगी। वे असीम, अक्षय और अंतहीन होंगी। शीघ्र ही, निश्चय ही तुमलोगों को धूप से झुलसने और अति कष्टदायी गर्मी को सहने की अब और आवश्यकता नहीं होगी। न तो तुमलोगों को सर्दी झेलनी पड़ेगी, और न ही वर्षा, बर्फ या हवाएँ तुमलोगों तक पहुँच पाएँगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं तुमलोगों से प्रेम करता हूँ, और यह पूरी तरह से मेरे प्रेम की दुनिया होगी। मैं तुमलोगों को वह सबकुछ दूँगा जो तुमलोग चाहते हो, और मैं उस हर चीज़ को तैयार कर दूँगा जिसकी तुमलोगों को आवश्यकता है। कौन यह कहने की हिम्मत करता है कि मैं धार्मिक नहीं हूँ? मैं तुझे फ़ौरन मार डालूँगा, क्योंकि मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मेरा कोप (दुष्ट लोगों के खिलाफ़) अनंत काल तक चलेगा, और मैं ज़रा-सी भी नरमी नहीं दिखाऊँगा। हालाँकि, मेरा प्रेम (मेरे प्रिय पुत्रों के लिए) भी अनंत काल तक चलेगा; मैं इसे ज़रा-सा भी रोक कर नहीं रखूँगा।

आज, जो लोग मेरे वचनों को न्याय के रूप में सुनते हैं वे सही स्थिति में नहीं हैं, लेकिन जबतक उन्हें

इसका पता चलता है, पवित्र आत्मा उन्हें पहले ही त्याग चुका होता है। ज्येष्ठ पुत्रों को पूरे ब्रह्मांडीय जगत में तुम सभी लोगों के बीच से चुना जाता है, जबकि पुत्र और मेरे लोग मिलकर तुमलोगों का एक छोटा-सा हिस्सा ही हैं। मेरा जोर पूरे ब्रह्मांडीय जगत पर है, जिसका अर्थ है कि पुत्रों और लोगों को दुनिया के सभी राष्ट्रों में से चुना जाता है। क्या तुमलोग समझते हो? मैं क्यों इस बात पर जोर देता रहता हूँ कि ज्येष्ठ पुत्रों को जल्दी बड़ा हो जाना चाहिए और उन विदेशियों की अगुआई के लिए निकल जाना चाहिए? क्या तुमलोग मेरे वचनों के सही अर्थ को समझते हो? ऐसा इसलिए है क्योंकि चीन एक ऐसा राष्ट्र है जिसे मैंने शाप दिया है, उसने मुझे सबसे ज्यादा उत्पीड़ित किया है, और मैं इससे सबसे अधिक घृणा करता हूँ। तुमलोगों को यह अवश्य पता होना चाहिए कि मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र स्वर्ग से आते हैं और हमलोग सार्वभौमिक हैं। हम किसी एक देश के नहीं हैं। मानवीय अवधारणाओं से चिपके रहना छोड़ो! ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने तुमलोगों को अपना व्यक्तित्व दिखा दिया है। सब कुछ मुझ पर निर्भर है। क्या तुम्हें मेरे वचन याद हैं? मैं क्यों ऐसा कहता हूँ कि तुमलोगों के बीच बहुत ही कम लोग हैं और आबादी उत्तरोत्तर अधिक परिष्कृत हो गई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे द्वारा उद्धार क्रमशः ब्रह्माण्डीय दुनिया की ओर मुड़ रहा है। जिन लोगों को बाहर निकाल दिया गया है, जिन्होंने मेरे नाम को स्वीकार कर लिया है, ये सभी वे लोग हैं जिन्होंने मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को सिद्ध बनाने के लिए सेवा की थी। क्या तुमलोग समझते हो? मैं क्यों कहता हूँ कि ये सभी वे लोग हैं जिन्होंने मेरे पुत्रों के लिए सेवा की है? अब तुम वाकई समझते हो, है ना? उनकी संख्या वास्तव में बहुत कम है, वे निश्चित रूप से बहुत थोड़े से हैं, हालाँकि उनलोगों ने मेरे पुत्रों की वजह से काफी लाभ पाया है और मेरे बहुत अनुग्रह का आनंद लिया है—और इसीलिए मैंने कहा कि मैं अंतिम बार मानवजाति को बचा रहा हूँ। अब तुमलोग मेरे वचनों के सही अर्थ को जानते हो! जो कोई भी मेरा विरोध करेगा, उसे मैं कठोरतापूर्वक ताड़ना दूँगा, और जो भी मेरा समर्थन करेगा, मैं अपना चेहरा उसकी ओर मोड़ लूँगा, क्योंकि मैं हमेशा, शुरू से अंत तक, प्रतापी और धार्मिक परमेश्वर रहा हूँ, और तुमलोगों के सामने सब कुछ प्रकट कर दिया जाएगा। अद्‌भुत तरीकों से मैं तेज़ी से कार्य करता हूँ, और शीघ्र ही, मनुष्य के लिए अकल्पनीय, आश्चर्यजनक चीज़ें घटित होंगी। यकीनन, मेरा तात्पर्य फौरन और तुरंत से है, क्या तुमलोग समझते हो? अविलंब जीवन में प्रवेश करने की कोशिश करो! मेरे प्यारे पुत्रो, यहाँ सभी चीज़ें तुम्हारे के लिए हैं, और सभी चीजों का अस्तित्व तुम्हारे लिए है।

अध्याय 85

अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मैं विभिन्न लोगों का उपयोग करता हूँ: मेरे शाप उन लोगों पर साकार होते हैं जिन्हें मैं ताड़ना देता हूँ, वैसे ही जैसे मेरे आशीष साकार होते हैं उन लोगों पर जिन्हें मैं प्यार करता हूँ। अब किसे मेरे आशीष मिलेंगे और कौन मेरे शापों से पीड़ित होगा, यह प्रश्न पूरी तरह मेरे मात्र एक वचन पर निर्भर करता है; यह सब मेरे कथनों से निर्धारित होता है। तू जानता है कि जिस किसी के प्रति मैं अच्छा हूँ, उसे अब हमेशा मेरे आशीष मिलना तय है (अर्थात् धीरे-धीरे मुझे जानना आरम्भ करना, और मेरे बारे में अधिकाधिक सुनिश्चित होते जाना, नई रोशनी और प्रकाशन प्राप्त करना, और हमेशा मेरे कार्य के साथ कदम मिलाकर चल पाना)। जिस किसी से भी मैं घृणा करता हूँ (यह कुछ ऐसा है जो मेरे अन्दर है जिसे लोग बाहर से नहीं देख सकते हैं), ये वे लोग हैं जो निश्चित रूप से मेरे शाप भुगतेंगे, और ये निस्संदेह बड़े लाल अजगर की संतानों में से हैं; इस रूप में वे इसको दिए गए मेरे शाप में सहभागी होंगे। जहाँ तक उन लोगों की बात है, जिनकी एक झलक भी मैं सहन नहीं कर सकता, जिनमें मुझे गुणवत्ता का अभाव दिखाई देता है, और जो मेरे द्वारा पूर्ण या उपयोग नहीं किए जा सकते हैं, उनके पास अब भी बचाए जाने का एक अवसर होगा, और वे मेरे पुत्रों में से एक होंगे। अगर किसी में मेरा कोई भी गुण नहीं है, वह आध्यात्मिक विषयों को नहीं समझ सकता, और मुझे नहीं जानता है लेकिन उसके पास उत्साही मनोवृत्ति है, तो उस व्यक्ति को मेरे लोगों में से एक के रूप में नामित किया जाएगा। मैं मानता हूँ कि वे लोग जो मेरे शापों के भागी बनते हैं, उद्धार से परे हैं, और यही वे लोग हैं जो बुरी आत्माओं के वशीभूत हैं। मैं उन्हें लात मारकर बाहर निकालने को आतुर हूँ। वे बड़े लाल अजगर से जन्मे थे, और यही वे हैं जिनसे मैं सबसे ज्यादा नफ़रत करता हूँ। इस बिंदु से आगे, अपनी सेवा के लिए मुझे उनकी आवश्यकता नहीं है। मैं बस अब और उन्हें नहीं चाहता! मैं उनमें से किसी को भी नहीं चाहता! यहाँ तक कि उनके मेरे सामने रोने और दाँत पीसने का भी कोई असर नहीं पड़ता है; मैं उनमें से किसी की ओर देखता तक नहीं हूँ। मैं बस उन्हें लात मार कर दूर कर देता हूँ। तू किस प्रकार की चीज़ है? क्या तुझे मेरे सामने आने का अधिकार है? क्या तू लायक है? तू अभी भी भला व्यक्ति होने का बहाना और विनम्रता का ढोंग कर रहा है! तेरे द्वारा वे सारे अनगिनत दुष्कर्म किए जाने के बाद, क्या मैं तुझे छोड़ सकता हूँ? और फिर, मेरे सामने तू उठता बाद में हैं और पुनः मेरी अवज्ञा पहले करने लगता है। तेरे कभी कोई अच्छे इरादे थे ही नहीं; और तू बस मुझे चकमा देना चाहता है! जब तू बड़े लाल अजगर का वंशज है, तो फिर क्या तू कभी भला हो सकता है? असंभव! तू

पहले ही मेरे द्वारा शापित किया जा चुका है और मैं पूरी तरह से तेरा न्याय करता हूँ! पूरे मन से, ईमानदारी से और अनुशासित तरीके से मेरे लिए सेवा प्रदान कर, और फिर अपने अथाह कुन्ड में लौट जा! क्या तू मेरे राज्य में हिस्सा चाहता है? तू सपना देख रहा है! कितना बेशर्म! अपने मैले और गंदे शरीर के साथ, तू एक निश्चित सीमा तक भ्रष्ट किया जा चुका है, मगर अब भी मेरे सामने खड़े होने की हिम्मत तुझमें है! दूर हट! यदि तूने अब और देरी की, तो मैं तुझे कठोर दण्ड दूँगा! जो मेरे सामने कुटिलता और धोखाधड़ी में लिप्त होते हैं, उन सभी को उजागर किया ही जाना चाहिए। तू कहाँ छिप सकता है? तू खुद को कहाँ छिपा सकता है? तू चाहे कितना भी चकमा दे और आड़ ले, क्या तू मेरे नियंत्रण से बच सकता है? यदि तू मेरे लिए अच्छी तरह से सेवा प्रदान नहीं करता है, तो तेरी दीर्घायु और भी छोटी हो जाएगी—तुझे तुरंत मार डाला जाएगा!

मैं तुम लोगों को पूरी स्पष्टता से बताता हूँ कि किस तरह के लोग मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं, और मैं तुम लोगों को अचूक प्रमाण देता हूँ। अन्यथा, तुम लोग अपने उचित स्थान ग्रहण नहीं कर पाओगे, और इसके बजाय अंधाधुँध निर्णय लोगे कि तुम्हारे स्थान क्या होने चाहिए। कुछ बहुत विनम्र होंगे, और कुछ बहुत अमर्यादित होंगे; और जिनमें मेरा गुण नहीं है, या जिनमें गुणवत्ता का अत्यधिक अभाव है, वे सब मेरे ज्येष्ठ पुत्र होना चाहेंगे। वे जो मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं, क्या अभिव्यक्तियाँ बनाते हैं? सबसे पहले, वे मेरी इच्छा को समझने पर ध्यान केंद्रित करते हैं और इसके लिए सोच-विचार दर्शाते हैं। इतना ही नहीं, पवित्र आत्मा उन सबके ऊपर काम कर रहा होता है। दूसरा, वे अपने जीव के भीतर निरन्तर खोज करते रहते हैं, लम्पटता से दूर रहते हैं, वे हर समय स्वयं को मेरी सीमाओं के भीतर रखते हैं; वे नितान्त सामान्य होते हैं। यही नहीं, इस तरह कार्य करते हुए वे नकल नहीं कर रहे होते हैं। (क्योंकि उनका ध्यान पवित्र आत्मा के कार्य को समझने पर केन्द्रित होता है, और वे अपने प्रति मेरे प्रेम का लिहाज़ करते हैं, वे हर समय सतर्क रहते हैं और उन्हें मेरे विरुद्ध विश्वासघात या अवज्ञा की मानसिकता में पड़ने का गहरा भय होता है।) तीसरा, वे मेरे लिए पूरे दिल से कार्य करते हैं, वे अपना सर्वस्व अर्पित करने में सक्षम हैं, और वे अपने भविष्य की संभावनाओं, अपने जीवनों, वे क्या खाते, पहनते, उपयोग करते हैं और वे कहाँ रहते हैं, इस सबके बारे में किसी भी विचार को पहले ही समाप्त चुके हैं। चौथा, वे धार्मिकता के लिए निरंतर भूखे और प्यासे रहते हैं, और वे मानते हैं कि उनमें बहुत कमियाँ हैं और कद-काठी से अत्यधिक अपरिपक्व हैं। पाँचवाँ, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, संसार में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा है, लेकिन उन्हें संसार के लोगों ने दरकिनार कर दिया है। विपरीत

लैंगिकों के साथ उनके संबंधों में एक नैतिक अखंडता है। ये सब प्रमाण हैं, लेकिन अभी मैं उन्हें पूरी तरह से तुम लोगों के सामने प्रकट नहीं कर सकता हूँ, क्योंकि मेरा कार्य अभी उस चरण तक नहीं पहुँचा है। ज्येष्ठ पुत्रो, याद रखो! तुम्हारे भीतर जीवन की अनुभूतियाँ, मेरे प्रति तुम्हारा आदर, मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम, मेरे बारे में तुम्हारा ज्ञान, मेरे लिए तुम्हारी खोज, तुम लोगों का विश्वास—ये सभी चीज़ें तुम लोगों के प्रति मेरे प्रेम को मूर्त रूप देती हैं; और ये सभी वे प्रमाण हैं जो मैं तुम लोगों को देता हूँ, ताकि तुम लोग वास्तव में मेरे प्यारे पुत्र बन सको और अद्वितीय महिमा में मेरे साथ खाते, जीते, और आशीषों का आनंद लेते हुए मेरे समान बन सको।

मैं ऐसे किन्हीं भी लोगों के प्रति नरमी नहीं दिखा सकता जिन्होंने मुझे उत्पीड़ित किया, जिन्हें मेरे बारे में कोई ज्ञान नहीं है (मेरे नाम की गवाही दिए जाने से पहले के समय सहित), जो मुझे मनुष्य मानते हैं, और जिन्होंने अतीत में मेरे खिलाफ़ ईशनिन्दा की थी और मुझ पर लांछन लगाए थे। यहाँ तक कि यदि अब वे मेरे लिए सबसे गुंजायमान गवाही दें, तो भी इससे काम नहीं चलेगा। अतीत में मुझे प्रताड़ित करना मेरे लिए सेवा प्रदान करने का एक तरीक़ा था, और वे लोग यदि अब मेरे लिए गवाही दें, तो भी वे मेरे साधन ही होंगे। केवल वे लोग जिन्हें आज मेरे द्वारा सचमुच में पूर्ण किया जाता है, मेरे किसी उपयोग के हैं, क्योंकि मैं धार्मिक परमेश्वर स्वयं हूँ, और मैं देह से बाहर आ गया हूँ और उन सभी रिश्तों से स्वयं को अलग कर चुका हूँ जो पार्थिव हैं। मैं परमेश्वर स्वयं हूँ और सभी लोग, विषय और वस्तुएँ जो मेरे चारों ओर हुआ करती थीं, मेरे हाथों में हैं। मैं भावना रहित हूँ और मैं सभी चीज़ों के साथ धार्मिकता का अभ्यास करता हूँ। मैं सीधा-सच्चा हूँ, और मुझ पर गंदगी का एक दाग़ तक नहीं है। क्या तुम मेरे वचनों का अर्थ समझते हो? क्या तुम लोग भी यह प्राप्त कर सकते हो? लोग सोचते हैं कि मैं भी सामान्य मानवता से युक्त हूँ, मेरा परिवार और भावनाएँ हैं—लेकिन क्या तुम लोग जानते हो कि तुम लोग पूरी तरह से ग़लत हो? मैं परमेश्वर हूँ! क्या तुम लोग यह भूल गए हो? क्या तुम लोग भ्रमित हो? तुम अब भी मुझे नहीं जानते!

मेरी धार्मिकता तुम लोगों के सामने पूरी तरह से प्रकट की गई है। किसी भी तरह के व्यक्ति के साथ मेरा किसी भी तरह से निपटना मेरी धार्मिकता और मेरे प्रताप दोनों को प्रकट करता है। चूँकि मैं परमेश्वर स्वयं हूँ जो अपने साथ कोप लेकर आता है, इसलिए मैं एक भी ऐसे व्यक्ति को दण्ड से बचने नहीं दूँगा जिसने मुझे प्रताड़ित किया या धिक्कारा है। इतनी कठोर अपेक्षाओं के अधीन, क्या तुम लोग यह पहचानते हो? जिन्हें मैंने चुना और पूर्वनियत किया है, वे दुर्लभ मोती या गोमेद के टुकड़ों की तरह हैं; वे बिरले ही हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि जो राजाओं के रूप में शासन करेंगे, उनका बिरला होना तय है, उन लोगों की तुलना में जो मेरे लोग होंगे, और यह मेरी सामर्थ्य और मेरे अद्‌भुत कर्मों का प्रमाण है। मैं अक्सर कहता हूँ कि मैं तुम लोगों को पुरस्कार दूँगा, तुम लोगों को ताज प्रदान करूँगा, और मेरे साथ अंतहीन महिमा है। पुरस्कार, ताज और महिमा से मेरा क्या तात्पर्य है? लोग इस धारणा के अधीन हैं कि पुरस्कार भौतिक वस्तुएँ हैं, जैसे भोजन, कपड़े या अन्य वस्तुएँ जिनका उपयोग किया जा सकता है, लेकिन यह सोचने का पूर्णतः पुराना तरीक़ा है; यह वह नहीं है जो इन शब्दों से मेरा तात्पर्य है, और इसके बजाय यह भ्रांत धारणा है। पुरस्कार वे चीज़ें हैं जो अभी प्राप्त की जाती हैं और वे अनुग्रह का एक हिस्सा हैं। यद्यपि कुछ ऐसे पुरस्कार भी हैं जो दैहिक सुख से संबंधित हैं, और जो लोग मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं लेकिन जिन्हें मैं नहीं बचाऊँगा, वे भी कुछ भौतिक आनंद प्राप्त कर सकते हैं (यद्यपि, वे अब भी मात्र भौतिक चीज़ें ही हैं जो मेरे लिए सेवा करती हैं)। ताज कोई पदवी का चिह्न नहीं है; अर्थात्, यह कोई भौतिक वस्तु नहीं है जो मैं तुम लोगों को इसलिए देता हूँ ताकि तुम इसका आनंद ले सको। बल्कि यह एक नया नाम है जो मैं तुम लोगों को प्रदान करता हूँ, और जो कोई भी अपने इस नए नाम के अनुरूप आचरण कर पाएगा, वही वह व्यक्ति होगा जिसने ताज प्राप्त किया है, जो मेरे आशीषों को प्राप्त कर रहा है। पुरस्कार और ताज आशीषों के हिस्से हैं, लेकिन जब आशीषों से तुलना की जाए, तब उनमें ज़मीन और आसमान जितना अंतर हैं। मनुष्य की धारणाओं के साथ महिमा की कल्पना ही नहीं की जा सकती है, क्योंकि महिमा कोई भौतिक वस्तु नहीं है। उनके लिए यह अत्यंत अमूर्त अवधारणा है। तो महिमा वास्तव में क्या है? यह कहने का क्या तात्पर्य है कि तुम लोग मेरे साथ महिमा में उतरोगे? मेरी समग्रता—अर्थात्, जो मैं हूँ और जो कुछ मेरे पास है, दया और प्रेमपूर्ण दयालुता (मेरे पुत्रों के प्रति), और धार्मिकता, प्रताप, न्याय, कोप, शाप और दाह (सभी लोगों के लिए)—मेरा व्यक्तित्व महिमा है। मैं क्यों कहता हूँ कि मेरे साथ अंतहीन महिमा है? ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे साथ अनंत बुद्धि के साथ-साथ अतुल्य प्रचुरता है। इसलिए, मेरे साथ महिमा में उतरने का अर्थ है कि तुम लोगों को मेरे द्वारा पहले ही परिपूर्ण कर दिया गया है, तुम उस सबसे युक्त हो जो मैं हूँ और जो भी मेरे पास है, तुम्हें मेरे द्वारा पूर्ण किया गया है, तुम मेरा आदर करते हो और तुम मेरा विरोध नहीं करते हो। निश्चय ही अब तक तुम्हारे समक्ष यह स्पष्ट है!

पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों की तनावपूर्ण स्थिति चरमबिन्दु पर पहुँच गई है, और वे सब मेरे लिए सेवा प्रदान करने और जो दाह मैं उन तक लाता हूँ उसे स्वीकार करने की निरंतर तैयारी कर रहे हैं। जब मेरा कोप

और दहन आएँगे तो इनकी पहले से कोई भनक नहीं लगेगी। फिर भी, मुझे पता है कि मैं क्या करता हूँ और मैं इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट हूँ। तुम्हें मेरे वचनों के बारे में निश्चित हो जाना चाहिए और तुम्हें सब कुछ तैयार करने के लिए शीघ्रता करनी चाहिए। उन लोगों की चरवाही करने के लिए तैयार रहो जो विदेश से खोज करते हुए आते हैं। यह याद रखो! चीन—अर्थात्, चीन के भीतर एक-एक व्यक्ति और एक-एक जगह —मेरे शाप के अधीन है। क्या तुम मेरे वचनों का अर्थ समझते हो?

अध्याय 86

लोग कहते हैं कि मैं एक दयालु परमेश्वर हूँ; वे कहते हैं कि मैंने जिसे भी बनाया है, उसके लिए मैं उद्धार लाऊँगा। ये सभी बातें मानव जाति की धारणाओं के आधार पर कही जाती हैं। यह कि मैं एक दयालु परमेश्वर हूँ, जो मेरे पहलौठे पुत्रों के लिए कहा जाता है और मैं सभी का उद्धार करूँगा, यह मेरे पुत्रों और मेरे प्रजाजनों के लिए कहा जाता है। क्योंकि मैं एक बुद्धिमान परमेश्वर हूँ, यह बात मेरे मन में स्पष्ट है कि मैं किन लोगों से प्यार करता हूँ और किनसे नफ़रत करता हूँ। जिन लोगों से मैं प्यार करता हूँ, उन्हें मैं हमेशा अंत तक प्यार करूँगा और यह प्यार कभी नहीं बदलेगा। जिन लोगों से मैं नफ़रत करता हूँ, उनके लिए मेरा दिल थोड़ा भी नहीं पसीजता, चाहे वे कितने भी अच्छा व्यवहार करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे मुझसे पैदा नहीं हुए हैं और उनमें मेरे गुण नहीं हैं या मेरा जीवन नहीं है। दूसरे शब्दों में, वे मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारित और चुने हुए नहीं थे, क्योंकि मैं अचूक हूँ। अर्थात मेरे सभी कर्म पवित्र और सम्मानजनक कहलाते हैं और मुझे कभी कोई पछतावा नहीं होता है। लोगों की निगाहों में, मैं बहुत निर्मम हूँ-लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि मैं स्वयं धार्मिक और प्रतापी परमेश्वर हूँ? मेरा सब कुछ सही होता है; जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ, वे निश्चित रूप से मेरे शाप को प्राप्त करेंगे और जिन्हें मैं प्यार करता हूँ उन्हें निश्चित रूप से मेरे आशीर्वाद प्राप्त होंगे। यह मेरा पवित्र और अकाट्य स्वभाव है और कोई भी इसे नहीं बदलेगा। यह परम सत्य है!

आज, जो वास्तव में मेरी इच्छाओं के अनुसार हैं, वे निश्चित रूप से मेरे द्वारा परिपूर्ण किए जाएँगे, क्योंकि मेरा काम स्पष्ट और पूर्ण दोनों है और मैं कुछ भी अधूरा नहीं छोड़ता। जिन्हें मैं शाप देता हूँ, उन्हें भस्म किया जाएगा। तो ऐसा क्यों है कि अधिकांश लोगों को मैंने शाप दिए हैं और फिर भी पवित्र आत्मा अभी उन पर कार्य कर रहा है (यह मेरे एक गंदे मंदिर में न रहने के संबंध में कहा गया है)? क्या तुम लोग उन सभी मामलों और चीज़ों के पीछे कहावत के सच्चे अर्थ को समझते हो, जो मसीह के लिए सेवा प्रदान

करती हैं? जब मैं उनकी सेवा का उपयोग करता हूँ, तो पवित्र आत्मा उनके माध्यम से अपना कार्य करता है, लेकिन आमतौर पर जब वे मेरी सेवा में नहीं होते हैं, तो वे मूल रूप से आध्यात्मिक प्रबुद्ध नहीं होते हैं। यहां तक कि यदि वे खोजते भी हैं, तो वे ऐसा जोश के कारण करते हैं और यह शैतान की चाल होती है—क्योंकि सामान्य समय में, वे मेरे कार्य पर बिलकुल ध्यान नहीं देते और वे मेरे बोझ के बारे में पूरी तरह असंवेदनशील होते हैं। अब मेरे पहलौठे पुत्र बड़े हो गए हैं, इसलिए मैं इन्हें दूर भगा रहा हूँ; इस कारण मेरा आत्मा हर जगह से वापस लौट आया है और मेरे पहलौठे पुत्रों पर विशेष ज़ोर दिया गया है। क्या तुम समझते हो? सभी चीज़ें मेरे कर्मों पर निर्भर करती हैं, मेरे पूर्वनिर्धारण पर निर्भर करती हैं और उन सभी वचनों पर निर्भर करती हैं, जो मेरे मुँह से निकलते हैं। मेरे आशीर्वाद प्राप्त करने वाले सभी स्थान निश्चित तौर पर वे स्थान हैं, जहाँ मैं कार्य करता हूँ और वे स्थान भी जहाँ मेरा कार्य क्रियान्वित किया गया है। चीन वह राष्ट्र है, जहां शैतान की सबसे अधिक उपासना की जाती है, इसलिए मैंने इसे शाप दे दिया है। इसके अलावा, यही वह देश भी है, जिसने मुझे सबसे अधिक सताया है। मैं निश्चित रूप से उन लोगों पर कार्य नहीं करूँगा जो बड़े लाल अजगर के प्रभाव में हैं। क्या तुम मेरे वचनों का सही अर्थ समझते हो? आखिरकार, मेरे पुत्र और मेरे प्रजाजन कम हैं। सब कुछ बिलकुल मेरे हाथों में है; ऊर्जा को केंद्रित होना चाहिए और उन लोगों पर अधिक प्रयास लगाने चाहिए, जिन्हें मैंने चुना है और पूर्वनिर्धारित किया है। कहने का अर्थ है, जो मेरे पहलौठे पुत्र हैं, उन्हें जल्दी करनी चाहिए और अभ्यास करना चाहिए ताकि वे मेरे कंधों के बोझ को जितनी जल्दी हो सके हल्का कर सकें और मेरे कार्य में अपने सभी प्रयास लगा सकें।

मेरे लिए सेवा करने वालों, सुनो! मेरी सेवा करते समय तुम मेरा कुछ अनुग्रह प्राप्त कर सकते हो। अर्थात, तुम लोग मेरे बाद के काम और भविष्य में होने वाली चीजों के बारे में कुछ समय के लिए जानोगे- लेकिन तुम बिलकुल ही इनका आनंद नहीं भोगोगे। यह मेरा अनुग्रह है। जब तुम्हारी सेवा पूरी हो जाती है, तो तुरंत चले जाओ, ठहरे न रहो। तुममें से जो मेरे पहलौठे पुत्र हैं, वे घमंडी न बनें, लेकिन तुम गर्व कर सकते हो क्योंकि मैंने तुम लोगों को अनंत आशीर्वाद प्रदान किए हैं। तुममें से जो विनाश के लक्ष्य हैं, खुद पर परेशानी न लाओ या अपने भाग्य के लिए दुख महसूस न करो। तुम लोगों को शैतान का वंशज किसने बनाया? मेरे लिए अपनी सेवा पूरी करने के बाद तुम अथाह कुंड में लौट सकते हो, क्योंकि तुम अब मेरे लिए किसी काम के नहीं रहोगे। फिर मैं तुम लोगों से अपनी ताड़ना के साथ निपटना शुरू कर दूँगा। एक बार जब मैं अपना काम शुरू कर दूँगा तो मैं अंत तक जाऊंगा; मेरे कर्म पूरे किए जाएंगे और मेरी

उपलब्धियां हमेशा के लिए बनी रहेंगी। यह मेरे पहलौठे पुत्रों, मेरे बेटों और मेरे प्रजाजनों पर लागू है और यह तुम लोगों के लिए भी है : तुम लोगों के लिए मेरी ताड़नाएँ हमेशा के लिए होंगी। मैंने तुम लोगों को पहले कई बार बताया है कि मेरा विरोध करने वाले बुरे लोग निश्चित रूप से मेरे द्वारा प्रताड़ित किए जाएँगे। यदि मेरा विरोध करने के बाद तुम्हें पवित्र आत्मा की डांट नहीं पड़ती, तो तुम पहले ही शापित हो और उसके बाद तुम मेरे हाथ से मारे जाओगे। यदि तुम पवित्र आत्मा के अनुशासन को उस समय प्राप्त करते हो, जब तुम मेरे बारे में बुरे विचार रखते हो, तो तुमने मेरा आशीर्वाद प्राप्त किया है; हालाँकि तुम्हें हमेशा सावधान रहना चाहिए, कभी लापरवाह नहीं बनना चाहिए और कभी भी असावधान नहीं होना चाहिए।

अध्याय 87

तुम्हें अपनी गति को तेज़ करना चाहिए और मैं जो कराना चाहता हूँ, उसे करना चाहिए-यह तुम लोगों के लिए मेरा इरादा है। क्या ऐसा हो सकता है कि अब तक भी तुम लोगों ने मेरे वचनों का अर्थ नहीं समझा हो? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम अभी भी मेरे इरादे को नहीं जानते हो? मैंने निरंतर स्पष्टता के साथ बात की है और अधिक से अधिक कहा है, लेकिन क्या तुम लोगों ने मेरे वचनों की थाह लेने का प्रयास नहीं किया है? शैतान, तू यह कल्पना मत कर कि तू मेरी योजना को नष्ट कर सकता है! जो लोग शैतान की सेवा करते हैं-अर्थात् जो शैतान के वंशज हैं (यह उन लोगों के बारे में है जो शैतान के कब्ज़े में हैं। इस तरह जिनके पास निश्चित रूप से शैतान का जीवन है और इसलिए वे उसके वंशज कहलाते हैं), वे मेरे पैरों पर गिरकर दया की भीख माँगते हैं, रोते हैं और अपने दाँतों को भींचते हैं। हालाँकि मैं ऐसा बेवकूफ़ी का काम नहीं करूँगा! क्या मैं शैतान को माफ़ कर सकता हूँ? क्या मैं शैतान का उद्धार कर सकता हूँ? यह असंभव होगा! मैं जो कहता हूँ, उसे करता हूँ और मैं कभी इसका अफ़सोस नहीं करूँगा!

मैं जो भी उच्चारित करता हूँ, वह उत्पन्न हो जाता है, ऐसा नहीं है क्या? हालाँकि तुम लोग लगातार मुझ पर अविश्वास करते हो, मेरे वचनों पर संदेह करते हो और सोचते हो कि मैं तुम लोगों के साथ बस मज़ाक कर रहा हूँ। यह सिर्फ हास्यास्पद ही है। मैं स्वयं परमेश्वर हूँ! क्या तुम लोग समझते हो? मैं स्वयं परमेश्वर हूँ! यदि मेरे पास कोई बुद्धि या सामर्थ्य न होती, तो क्या मैं जैसा चाहूँ वैसा कर या बोल सकता था? फिर भी तुम लोग मुझ पर अविश्वास करते हो। मैंने बार-बार इन चीजों पर जोर दिया है और मैंने इन्हें बार-बार तुम लोगों को बताया है। ऐसा क्यों है कि तुममें से अधिकांश अभी भी विश्वास नहीं करते? तुम

लोगों को अभी भी संदेह क्यों हैं? तुम प्यारे जीवन के लिए अपनी स्वयं की धारणाओं से क्यों चिपकते हो? क्या वे तुम्हें बचा सकती हैं? मैं जो कहता हूँ, उसे करता हूँ। मैंने तुम लोगों को कई बार बताया है : मेरे वचनों को सच समझो और संदेह मत करो। क्या तुम लोगों ने उन्हें गंभीरता से लिया है? तुम अपने दम पर कुछ नहीं कर सकते, फिर भी मैं जो करता हूँ, तुम उस पर विश्वास भी नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या कहा जा सकता है? रूख़े शब्दों में कहें तो ऐसा लगता है मानो मैंने तुम लोगों को कभी बनाया ही नहीं। दूसरे शब्दों में, तुम मेरे सेवाकर्मी होने के लिए हर तरह से अयोग्य हो। हर किसी को मेरे वचनों पर विश्वास करना चाहिए। सभी को परीक्षण से अवश्य गुज़रना चाहिए; मैं किसी को भी बच निकलने नहीं दूँगा। निस्संदेह, जो विश्वास करते हैं, वो अपवाद हैं। जो लोग मेरे वचनों पर विश्वास करते हैं, वे निश्चित रूप से मेरा आशीष प्राप्त करेंगे, जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हें प्रदान किया जाएगा और तुममें पूरा किया जाएगा। मेरे पहलौठे पुत्रों! अब मैं तुम लोगों को अपने सभी आशीष देना शुरू कर रहा हूँ! तुम लोग अब थोड़ा-थोड़ा करके अपनी देह के घृणित बंधनों को त्यागना प्रारंभ कर दोगे : विवाह, परिवार, भोजन करना, कपड़े पहनना, सोना और सारी प्राकृतिक विपदाएँ (हवा, धूप, वर्षा, प्रचंड झंझावात, हिमपात की विपदा और वे सभी चीज़ें जिनसे तुम नफ़रत करते हो)। तुम लोग आकाश, समय या भूगोल के प्रतिबंधों से प्रभावित हुए बिना समुद्र के पार, ज़मीन पर और हवा में यात्रा करोगे, मेरी प्रेमपूर्ण देखभाल के तहत हर चीज़ के प्रभारी होते हुए, मेरे प्रेमपूर्ण आलिंगन का जी भरकर आनंद लोगे।

कौन मेरे पहलौठे पुत्रों पर गर्व नहीं करता है, जिन्हें मैंने परिपूर्ण किया है? कौन उनके कारण मेरे नाम की स्तुति नहीं करेगा? क्यों अब मैं तुम लोगों को इतने सारे रहस्य प्रकट करना चाहता हूँ? अभी क्यों और अतीत में क्यों नहीं? यह भी अपने आप में एक रहस्य है; क्या तुम यह जानते हो? मैंने अतीत में क्यों नहीं जिक्र किया कि चीन एक ऐसा राष्ट्र है जिसे मैंने शाप दिया है? और क्यों मैंने उन लोगों के बारे में नहीं बताया जो मेरे लिए सेवा करते हैं? आज मैं तुम लोगों को यह भी बताऊँगा : आज, मेरी राय में, सब कुछ निष्पादित हो गया है और यह मैं अपने पहलौठे पुत्रों के संबंध में कह रहा हूँ (क्योंकि आज मेरे पहलौठे पुत्र मेरे साथ शासन करने आए हैं-और उन्होंने न केवल आकार लिया है, बल्कि वास्तव में मेरे साथ शासन कर रहे हैं। इस समय जिसमें भी पवित्र आत्मा कार्य करता है, वह अवश्य मेरे साथ शासन करता है-और यह अब प्रकट किया जा रहा है; बीते हुए कल और आने वाले कल नहीं।) आज मैं अपनी सामान्य मानवता के सारे रहस्यों को रोशनी में ला रहा हूँ क्योंकि जिन लोगों को मैं प्रकट करना चाहता हूँ, वे प्रकट किए जा

चुके हैं और यह मेरी बुद्धि है। मेरा कार्य इस चरण तक प्रगति कर चुका है : अर्थात्, इस समय मुझे उन प्रशासनिक आदेशों की योजना को कार्यान्वित करना होगा, जिसे मैंने खासतौर पर इस समयावधि के लिए तय किया है। वैसे तो, मैं पहलौठे पुत्रों, पुत्रों, लोगों और सेवाकर्मियों को यथोचित सत्यापन प्रदान कर रहा हूँ क्योंकि मेरे पास अधिकार है और मैं न्याय करूँगा और लौह-दंड से शासन करूँगा। कौन आज्ञाकारिता के साथ मेरी सेवा न करने का साहस करता है? कौन मुझसे शिकायत करने का साहस करता है? कौन यह कहने का साहस करेगा कि मैं धार्मिकता का परमेश्वर नहीं हूँ? मुझे मालूम है, तुम लोगों की राक्षसी प्रकृति बहुत पहले ही मेरे सामने प्रकट हो चुकी है : मैं जिस किसी के प्रति भी अच्छा होता हूँ, तुम लोग उससे ईर्ष्या और नफ़रत करते हो। यह पूरी तरह से शैतान की प्रकृति है! मैं अपने पुत्रों के प्रति अच्छा हूँ; क्या तुम यह कहने का साहस करोगे कि मैं अधार्मिक हूँ? मैं तुम्हें लात मारकर बिलकुल बाहर निकाल सकता हूँ। सौभाग्य से तुम मेरे लिए सेवा दे रहे हो और अभी इसका समय नहीं है; अन्यथा, मैंने तुम्हें लात मारकर बाहर निकाल दिया होता!

शैतान की किस्म! वहशी होना बंद करो! अब और कुछ मत बोलो! अब और ढोंग मत करो! मेरे चुने हुए पुत्रों और लोगों में मेरा कार्य कार्यान्वित होना शुरू हो चुका है और यह पहले से ही चीन के बाहर के सभी देशों, सभी संप्रदायों, सभी धर्मों, और जीवन के सभी क्षेत्रों में फैल रहा है। ऐसा क्यों है कि जो लोग मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं, वे हमेशा आध्यात्मिक रूप से अवरुद्ध होते हैं? क्यों वे आध्यात्मिक मामलों को कभी नहीं समझते हैं? क्यों ऐसा होता है कि मेरा आत्मा इन लोगों में कभी कार्य नहीं करता है? आमतौर पर, मैं उन लोगों पर बहुत अधिक प्रयास व्यय नहीं कर सकता हूँ, जिन्हें मैंने न तो पूर्वनियत किया है न ही चयनित। मेरी पिछली सभी पीड़ाएँ, मेरी समस्त श्रमसाध्य देखभाल और कोशिशें मेरे पहलौठे पुत्रों और मेरे पुत्रों और लोगों के एक छोटे से हिस्से के लिए की गई हैं और इसके अलावा मैंने ये काम किए हैं ताकि मेरे भविष्य का कार्य बगैर अटके संपन्न हो जाए ताकि मेरी इच्छा अबाधित रहे। चूँकि मैं स्वयं बुद्धिमान परमेश्वर हूँ, इसलिए मैंने हर कदम को उचित रूप से व्यवस्थित किया है। न तो मैं किसी भी व्यक्ति को रोकने का प्रयास करता हूँ (यह उन लोगों पर निर्देशित है, जो पूर्वनियत या चयनित नहीं थे) और न ही मैं यूँ ही किसी को मार गिराता हूँ (यह चयनित और पूर्वनियत पर निर्देशित है) : यह मेरा प्रशासनिक आदेश है, जिसे कोई नहीं बदल सकता है! उन लोगों के प्रति जिनसे मैं घृणा करता हूँ, मैं बहुत कठोर हूँ; जिनसे मैं प्रेम करता हूँ उनके लिए, मैं उनकी देखभाल करता हूँ और उनकी रक्षा करता हूँ। इस

तरह, मैं जो कहता हूँ, उसे करता हूँ (जिन्हें मैं चुनता हूँ, वे चुने जाते हैं; जिन्हें मैं पूर्वनियत करता हूँ, वे पूर्वनियत होते हैं; ये मेरे मामले हैं, जिन्हें मेरे द्वारा सृजन के पहले व्यवस्थित किया गया है)।

मेरे हृदय को कौन परिवर्तित कर सकता है? अपनी इच्छा से बनाई गई मेरी योजनाओं के अनुसार मेरे कार्य करने के अलावा, कौन उतावलेपन से कार्य करने और मेरी आदेशों की अवज्ञा करने का साहस करेगा? ये सब मेरे प्रशासनिक आदेश हैं; कौन उनमें से एक को भी मुझसे दूर हटाने का साहस करेगा? सभी को मेरे नियंत्रण में होना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति ने बहुत कठिनाई झेली है और वह ईमानदार है और पूर्ण रूप से मेरे हृदय के बारे में विचारशील है। फिर भी मैंने उसे क्यों नहीं चुना? यह भी मेरा एक प्रशासनिक आदेश है। यदि मैं कहता हूँ कि कोई मेरी इच्छाओं के अनुरूप है, तो वह व्यक्ति मेरी इच्छाओं के अनुरूप है और वह है जिसे मैं प्यार करता हूँ; यदि मैं कहता हूँ कि कोई शैतान का बच्चा है, तो वह व्यक्ति वह है जिससे मैं नफ़रत करता हूँ। किसी की खुशामद मत करो। क्या तुम उस व्यक्ति की वास्तविक प्रकृति का पता लगा सकते हो? इन सभी चीजों फैसला मैं करता हूँ। एक पुत्र हमेशा एक पुत्र रहेगा और शैतान हमेशा शैतान रहेगा, अर्थात्, मनुष्य की प्रकृति नहीं बदलती है। जब तक मैं उन्हें बदल नहीं देता हूँ, तब तक सभी अपनी-अपनी किस्म का अनुसरण करेंगे और अपरिवर्तनीय हैं!

जैसे-जैसे मेरा कार्य प्रगति करता है, मैं अपने रहस्यों को तुम लोगों के सामने प्रकट करता जाता हूँ। क्या तुम लोग वास्तव में जानते हो कि किस चरण तक मेरा कार्य प्रगति कर चुका है? क्या तुम लोग वही करने के लिए जो मैं करता हूँ और वही कहने के लिए जो मैं कहता हूँ, वास्तव में मेरे आत्मा की अगुआई का अनुसरण करोगे? मैं क्यों कहता हूँ कि चीन एक ऐसा राष्ट्र है, जिसे मैंने शाप दिया है? सबसे पहले, आज चीन के जो लोग हैं, उन्हें मैंने अपनी छवि में बनाया था। उनमें कोई आत्मा नहीं था और शुरु में ही उन्हें शैतान द्वारा भष्ट कर दिया गया था और उन्हें बचाया नहीं जा सका था। इस कारण मैं इन लोगों से नाराज़ हो गया और मैंने उन्हें शाप दे दिया था। मैं इन लोगों से सबसे ज्यादा नफ़रत करता हूँ और जब उनका उल्लेख भी किया जाता है, तो मैं क्रोधित हो जाता हूँ क्योंकि वे बड़े लाल अजगर के बच्चे हैं। इससे कोई उस युग को याद कर सकता है, जिसमें दुनिया के देशों ने चीन को हड़प लिया था। यह आज के दिन तक ऐसा ही है और यह सब मेरा अभिशाप रहा है—बड़े लाल अजगर के खिलाफ़ मेरा सबसे शक्तिशाली न्याय। अंततः, मैंने एक अन्य किस्म के लोग बनाए, जिनके भीतर मैंने अपने पहलौठे पुत्रों, मेरे पुत्रों और मेरे लोगों को और उन्हें पूर्वनियत किया जो मेरी सेवा करते हैं। इसलिए आज जो मैं करता हूँ, उसकी मैंने

बहुत पहले ही व्यवस्था कर ली थी। क्यों चीन में सत्ता में रहने वाले लोग तुम लोगों को बार-बार प्रताड़ित करते और सताते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि बड़ा लाल अजगर मेरे अभिशाप से दुःखी है और मेरा विरोध करता है। हालाँकि यह ठीक इसी तरह के उत्पीड़न और खतरे के तहत ही है कि बड़े लाल अजगर और उसके बच्चों के खिलाफ़ मैं अपने पहलौठे पुत्रों को परिपूर्ण करता हूँ, ताकि वे एक ठोस जवाबी हमला कर सकें। बाद में मैं उन्हें व्यवस्थित कर दूँगा। अब मेरे वचनों को सुनने के बाद क्या अपने साथ शासन करने की अनुमति देने के महत्त्व को तुम लोग सच में समझते हो? उस समय जब मैं कहता हूँ कि बड़े लाल अजगर को पूरी तरह से मौत के घाट उतार दिया गया है, तो यही वह समय भी है जब मेरे पहलौठे पुत्र मेरे साथ शासन करते हैं। बड़े लाल अजगर के द्वारा पहलौठे पुत्रों का उत्पीड़न मुझे बहुत सेवा प्रदान करता है और एक बार मेरे पुत्र बड़े हो गए और मेरे घर के मामलों का प्रबंधन करने लगे, तो उन दुष्ट नौकरों (सेवाकर्मियों) को लात मारकर एक ओर कर दिया जाएगा। चूँकि मेरे साथ मेरे पहलौठे पुत्र शासन कर रहे होंगे और वे मेरे इरादों को पूरा कर चुके होंगे, मैं एक-एक करके सेवाकर्मियों को आग और गंधक की झील में झोंक दूँगा। उन्हें हर हाल में जाना होगा! मैं पूरी तरह जानता हूँ कि शैतान की किस्म के लोग भी मेरे आशीषों का आनंद लेना चाहते हैं और शैतान के अधिकार-क्षेत्र में लौटना नहीं चाहते हैं; हालाँकि मेरे अपने प्रशासनिक आदेश हैं, जिनका हर एक को पालन करना होगा और जिन्हें कार्यान्वित किया जाना चाहिए और किसी को भी छूट नहीं होगी। बाद में, मैं तुम लोगों को एक-एक करके अपने प्रशासनिक आदेश बताऊँगा, ताकि तुम लोग उन्हें न तोड़ो।

अध्याय 88

लोग इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि मेरी गति किस हद तक तेज़ हो गई है : यह एक ऐसा चमत्कार हुआ है, जो मनुष्य के लिए अथाह है। दुनिया के सृजन के बाद से मेरी गति जारी रही है और मेरा कार्य कभी नहीं थमा है। समस्त ब्रह्मांडीय दुनिया दिन-प्रतिदिन बदलती है, और लोग भी लगातार बदल रहे हैं। ये सब मेरे कार्य का हिस्सा हैं, सब मेरी योजना के भाग हैं, और इससे भी ज्यादा, वे मेरे प्रबंधन से संबंधित हैं, कोई भी व्यक्ति इन चीज़ों को नहीं जानता या समझता। केवल जब मैं स्वयं तुम लोगों को बताता हूँ, केवल जब मैं तुम लोगों के साथ आमने-सामने संवाद करता हूँ, तब तुम लोगों को थोड़ा-सा पता चलता है; अन्यथा कोई भी मेरी प्रबंधन योजना की रूपरेखा को नहीं जान सकता। ऐसा मेरा महान

सामर्थ्य है और उससे भी अधिक, मेरे आश्चर्यजनक कार्यकलाप ऐसे हैं। ये वे चीज़ें हैं, जिन्हें कोई नहीं बदल सकता। इसलिए, जो मैं आज कहता हूँ, वह अवश्य होगा, और यह बदल नहीं सकता। मनुष्य की धारणाओं में मेरे बारे में ज़रा-सा भी ज्ञान निहित नहीं है—वे सब मूर्खतापूर्ण बकवास हैं! यह मत सोचो कि तुम्हारे पास पर्याप्त है, या यह कि तुम संतुष्ट हो! मैं तुम्हें यह बताता हूँ : अभी भी तुम्हें बहुत दूर जाना है! मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना में से तुम लोग बहुत थोड़ा जानते हो, इसलिए जो कुछ मैं कहता हूँ, तुम लोगों को उसे अवश्य सुनना चाहिए, और जो कुछ करने के लिए मैं तुम लोगों से कहता हूँ, वह करना चाहिए। हर चीज़ में मेरी इच्छा के अनुसार कार्य करो और तुम्हें निश्चित रूप से मेरे आशीष प्राप्त होंगे; जो कोई विश्वास करता है, वह प्राप्त कर सकता है, जबकि जो भी विश्वास नहीं करते, उनमें वह "कुछ नहीं" जिसकी उन्होंने कल्पना की थी, पूरा हो जाएगा। यह मेरी धार्मिकता है, और, उससे भी बढ़कर, यह मेरा प्रताप, मेरा कोप और मेरी ताड़ना है—मैं किसी को भी एक भी विचार या कार्रवाई से बचकर नहीं जाने दूँगा।

मेरे वचनों को सुनकर ज्यादातर लोग डर जाते हैं और काँपने लगते हैं, उनके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ उभर आती हैं और भौंहें चढ़ जाती हैं। क्या मैंने तुम्हारे साथ कुछ ग़लत किया है? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम बड़े लाल अजगर के बच्चों में से एक नहीं हो? तुम अच्छे होने का ढोंग कर रहे हो! तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र होने का नाटक कर रहे हो! क्या तुम्हें लगता है कि मैं अंधा हूँ? क्या तुम्हें लगता है कि मैं लोगों के बीच भेद नहीं कर सकता? मैं परमेश्वर हूँ, जो लोगों के अंतर्तम हृदयों को टटोलता है : यही मैं अपने पुत्रों से कहता हूँ, और यही मैं तुम—बड़े लाल अजगर के बच्चों—से भी कहता हूँ। मैं सब-कुछ स्पष्ट रूप से देखता हूँ, ज़रा-सी भी त्रुटि नहीं करता। मैं वह कैसे नहीं जान सकता, जो मैं करता हूँ? मैं जो कुछ करता हूँ, उसके बारे में बिलकुल स्पष्ट हूँ! मैं क्यों कहता हूँ कि मैं स्वयं परमेश्वर, ब्रह्मांड और सभी चीज़ों का सृजनकर्ता हूँ? मैं क्यों कहता हूँ कि मैं परमेश्वर हूँ, जो लोगों के अंतर्तम हृदयों की जाँच करता है? मैं हर व्यक्ति की स्थिति से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ। क्या तुम लोगों को लगता है कि मुझे नहीं पता कि मुझे क्या करना या क्या कहना चाहिए? यह तुम्हारी चिंता नहीं है। सावधान रहो, ताकि मेरे हाथ से न मारे जाओ; इस तरह से तुम्हें नुकसान होगा। मेरे प्रशासनिक आदेश क्षमाशील नहीं हैं। क्या तुम समझे? उपर्युक्त सभी मेरे प्रशासनिक आदेशों का हिस्सा हैं। जिस दिन से मैं उन्हें तुम्हें बताता हूँ, यदि तुम आगे कोई अपराध करते हो, तो दंड मिलेगा, क्योंकि पहले तुम लोग समझे नहीं थे।

अब मैं तुम लोगों के लिए अपने प्रशासनिक आदेशों की घोषणा करता हूँ (जो घोषणा के दिन से

प्रभावी होंगे और भिन्न-भिन्न लोगों को भिन्न-भिन्न ताड़नाएँ देंगे) :

मैं अपने वादे पूरे करता हूँ, और सब-कुछ मेरे हाथों में है : जो कोई भी संदेह करेगा, वह निश्चित रूप से मारा जाएगा। किसी भी लिहाज के लिए कोई जगह नहीं है; वे तुरंत नष्ट कर दिए जाएँगे, जिससे मेरे हृदय को नफ़रत से छुटकारा मिलेगा। (अब से यह पुष्टि की जाती है कि जो कोई भी मारा जाता है, वह मेरे राज्य का सदस्य बिलकुल नहीं होगा, और वह अवश्य ही शैतान का वंशज होगा।)

ज्येष्ठ पुत्रों के रूप में तुम लोगों को अपनी खुद की स्थिति को बनाए रखना चाहिए और अपने कर्तव्य अच्छी तरह से पूरे करने चाहिए, और दखलंदाज नहीं बनना चाहिए। तुम लोगों को मेरी प्रबंधन योजना के लिए खुद को अर्पित कर देना चाहिए, हर जगह जहाँ भी तुम जाओ, तुम्हें मेरी अच्छी गवाही देनी चाहिए और मेरे नाम को महिमा-मंडित करना चाहिए। शर्मनाक कृत्य मत करो; मेरे सभी पुत्रों और मेरे लोगों के लिए उदाहरण बनो। एक पल के लिए भी पथभ्रष्ट मत होओ : तुम्हें सभी के सामने हमेशा मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की पहचान के साथ दिखाई देना चाहिए, और गुलाम न बनो; बल्कि तुम्हें सिर ऊँचा करके आगे बढ़ना चाहिए। मैं तुम लोगों से अपने नाम को महिमा-मंडित करने के लिए कह रहा हूँ, उसे अपमानित करने के लिए नहीं। जो लोग मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं, उनमें से प्रत्येक का अपना व्यक्तिगत कार्य है, और वे हर चीज़ नहीं कर सकते। यह वह ज़िम्मेदारी है, जो मैंने तुम लोगों को दी है, और इससे जी नहीं चुराना है। तुम लोगों को स्वयं को अपने पूरे हृदय से, अपने पूरे मन से और अपनी पूरी शक्ति से उस काम को पूरा करने के लिए समर्पित करना चाहिए, जो मैंने तुम्हें सौंपा है।

इस दिन से आगे, समस्त ब्रह्मांडीय दुनिया में मेरे सभी पुत्रों और मेरे सभी लोगों की चरवाही करने का कर्तव्य पूरा करने के लिए मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को सौंपा जाएगा, और जो कोई भी अपने पूरे हृदय और पूरे मन से उसे पूरा नहीं कर सकेगा, मैं उसे ताड़ना दूँगा। यह मेरी धार्मिकता है। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को क्षमा नहीं करूँगा, न ही उनके साथ नरमी बरतूँगा।

यदि मेरे पुत्रों या मेरे लोगों में से कोई मेरे ज्येष्ठ पुत्रों में से किसी का उपहास और अपमान करता है, तो मैं उसे कठोर दंड दूँगा, क्योंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र स्वयं मेरा प्रतिनिधित्व करते हैं; कोई उनके साथ जो करता है, वह मेरे साथ भी करता है। यह मेरे प्रशासनिक आदेशों में से सबसे गंभीर आदेश है। मेरे पुत्रों और मेरे लोगों में से जो कोई भी इस आदेश का उल्लंघन करेगा, उसके विरुद्ध मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को

उनकी इच्छाओं के अनुसार अपनी धार्मिकता लागू करने दूँगा।

मैं धीरे-धीरे उस व्यक्ति का परित्याग कर कर दूँगा, जो मेरे साथ ओछेपन से पेश आता है और केवल मेरे भोजन, कपड़े और नींद पर ध्यान केंद्रित करता है; केवल मेरे बाह्य मामलों पर ध्यान देता है और मेरे बोझ का विचार नहीं करता; और अपने स्वयं के कार्य सही ढंग से पूरे करने पर ध्यान नहीं देता। यह निर्देश उन सभी के लिए है, जिनके कान हैं।

जो कोई भी मेरे लिए सेवा करने का काम समाप्त कर लेता है, उसे बिना किसी उपद्रव के, आज्ञाकारी ढंग से अलग हो जाना चाहिए। सावधान रहो, मैं तुम्हें बाहर कर दूँगा। (यह एक पूरक आदेश है।)

अब से मेरे ज्येष्ठ पुत्र लोहे की छड़ी उठाएँगे और सभी राष्ट्रों और लोगों पर शासन करने के लिए, सभी राष्ट्रों और लोगों के बीच चलने के लिए, और सभी राष्ट्रों और लोगों के बीच मेरे न्याय, धार्मिकता और प्रताप को कार्यान्वित करने के लिए मेरे अधिकार को निष्पादित करना शुरू करेंगे। मेरे पुत्र और मेरे लोग मुझसे डरेंगे, बिना रुके मेरी स्तुति, मेरी जयजयकार और मेरा महिमा-मंडन करेंगे, क्योंकि मेरी प्रबंधन योजना पूरी हो गई है और मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे साथ शासन कर सकते हैं।

यह मेरे प्रशासनिक आदेशों का एक हिस्सा है; इसके बाद जैसे-जैसे काम आगे बढ़ेगा, मैं तुम लोगों को उनके बारे में बताऊँगा। उपर्युक्त प्रशासनिक आदेशों से तुम लोग उस गति को देखोगे, जिससे मैं अपना कार्य करता हूँ, और उस कदम को देखोगे, जहाँ तक मेरा कार्य पहुँच चुका है। यह एक पुष्टि होगी।

मैं पहले ही शैतान का न्याय कर चुका हूँ। चूँकि मेरी इच्छा अबाधित है, और चूँकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे साथ महिमा-मंडित किए गए हैं, इसलिए मैंने पहले ही दुनिया पर और शैतान से संबंधित सभी चीज़ों पर अपनी धार्मिकता और प्रताप का प्रयोग कर लिया है। मैं शैतान की तरफ एक उँगली तक नहीं उठाता या उसकी तरफ बिलकुल ध्यान नहीं देता (क्योंकि वह मुझसे बात करने लायक भी नहीं है)। मैं बस वह करता रहता हूँ, जो मैं करना चाहता हूँ। मेरा कार्य सुचारु रूप से कदम-दर-कदम आगे बढ़ता है, और मेरी इच्छा सारी धरती पर अबाधित है। इसने शैतान को एक सीमा तक शर्मिंदा कर दिया है, और उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया है, लेकिन इससे मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई है। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपने प्रशासनिक आदेश उन पर भी कार्यान्वित करने की अनुमति देता हूँ। एक ओर तो मैं शैतान को अपना कोप देखने

देता हूँ, और दूसरी ओर मैं उसे अपनी महिमा देखने देता हूँ (देखो कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र शैतान को दिए गए अपमान के ज़बरदस्त गवाह हैं)। मैं उसे व्यक्तिगत रूप से दंड नहीं देता, बल्कि अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपनी धार्मिकता और प्रताप को कार्यान्वित करने देता हूँ। चूँकि शैतान मेरे पुत्रों के साथ दुर्व्यवहार करता था, मेरे पुत्रों को सताता था और मेरे पुत्रों का दमन करता था, अत: आज जब उसका काम पूरा हो गया है, तो मैं अपने परिपक्व ज्येष्ठ पुत्रों को उससे निपटने देता हूँ। इस पतन के सामने शैतान शक्तिहीन रहा है। दुनिया के सभी राष्ट्रों का पक्षाघात इसकी सबसे अच्छी गवाही है; आपस में लड़ते हुए लोग और युद्धरत राष्ट्र शैतान के राज्य के ढहने की प्रकट अभिव्यक्तियाँ हैं। मेरे द्वारा पहले कोई चिह्न और चमत्कार न दिखाया जाना शैतान को अपमानित करने और अपने नाम को उत्तरोत्तर महिमा-मंडित करने के लिए था। जब शैतान पूरी तरह खत्म हो जाता है, तब मैं अपना सामर्थ्य दिखाना शुरू करता हूँ : मैं जो भी कहता हूँ वह साकार हो जाता है, और वे अलौकिक चीज़ें जो मानवीय धारणाओं के अनुरूप नहीं हैं, पूरी हों जाएँगी (यह शीघ्र ही आने वाले आशीषों को संदर्भित करता है)। चूँकि मैं स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर हूँ और मेरे पास कोई नियम नहीं हैं, और चूँकि मैं अपनी प्रबंधन योजना में होने वाले बदलावों के अनुसार बोलता हूँ, इसलिए अतीत में मैंने जो कुछ कहा, उसका वर्तमान में लागू होना ज़रूरी नहीं है। अपनी धारणाओं से चिपके मत रहो! मैं नियमों का पालन करने वाला परमेश्वर नहीं हूँ; मेरे साथ हर चीज़ स्वतंत्र, उत्कृष्ट और पूरी तरह मुक्त है। शायद कल जो कहा गया था, वह आज पुराना पड़ गया हो, या आज उसे अलग कर दिया जाए (लेकिन मेरे प्रशासनिक आदेश, जब से घोषित हुए हैं, कभी नहीं बदलेंगे)। ये मेरी प्रबंधन योजना के कदम हैं। विनियमों से चिपके मत रहो। हर दिन नया प्रकाश होता है, नए प्रकटीकरण होते हैं, और यह मेरी योजना है। हर दिन मेरा प्रकाश तुम में प्रकट होगा, और मेरी वाणी ब्रह्मांड की दुनिया में जारी की जाएगी। समझे तुम? यह तेरा कर्तव्य है, यह वह उत्तरदायित्व है जो मैंने तुम्हें सौंपा है। तुम्हें एक पल के लिए भी इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जिन लोगों का मैं अनुमोदन करूँगा, उनका मैं अंत तक उपयोग करूँगा, और यह कभी नहीं बदलेगा। चूँकि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ, इसलिए मुझे पता है कि किस तरह के व्यक्ति को क्या कार्य करना चाहिए, और किस प्रकार का व्यक्ति क्या करने में सक्षम है। यह मेरी सर्वशक्तिमत्ता है।

अध्याय 89

हर काम मेरे इरादों के अनुरूप करना आसान नहीं है; यह खुद को ढोंग करने के लिए मजबूर करने की बात नहीं है, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या मैंने दुनिया के निर्माण से पहले तुम्हें अपनी खूबियाँ प्रदान की थीं। ये सभी चीज़ें मुझ पर निर्भर करती हैं। ये ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिन्हें मनुष्य पूरा कर सकते हों। मैं जिससे प्रेम करना चाहता हूँ, उससे प्रेम करता हूँ, और मैं जिसे भी मैं कहता हूँ कि वह ज्येष्ठ पुत्र है, वह निश्चित रूप से ज्येष्ठ पुत्र है, यह बिल्कुल सही है! तुम यह होने का दिखावा करना चाह सकते हो, लेकिन ऐसा करना व्यर्थ होगा! क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें पहचान नहीं सकता कि तुम क्या हो? क्या तुम्हारे लिए मेरे सामने होने पर तुम थोड़ा अच्छा व्यवहार भर कर लेना काफ़ी है? क्या यह इतना आसान है? बिलकुल नहीं; तुम्हारे पास मेरा वादा होना चाहिए, और तुम्हारे पास मेरा प्रारब्ध होना चाहिए। क्या तुम सोचते हो कि मुझे पता नहीं कि तुम मेरी पीठ पीछे क्या करते हो? तुम पथभ्रष्ट हो! जैसे ही मेरे प्रति तुम्हारी सेवा पूरी हो जाए, आग और गंधक की झील में फ़ौरन लौट जाना! मैं घृणा से भर गया हूँ; मुझे तुम्हारी सूरत से भी नफ़रत है। मेरी सेवा करने वाले वे सभी लोग, जो खुद को वफ़ादारी से मेरे लिए नहीं खपाते हैं, वे सभी जो ज़िद्दी और अनियंत्रित हैं और जो मेरे इरादों को समझ नहीं सकते हैं—जब तुम्हारी सेवा पूरी हो जाये, मेरी दृष्टि से फ़ौरन दूर हो जाना! अन्यथा, मैं तुम्हें धक्के देकर बाहर निकाल दूँगा! ये लोग और एक पल के लिए भी मेरे घर (अर्थात् कलीसिया) में नहीं रह सकते हैं। उन सभी को यहाँ से बाहर निकल जाना चाहिए ताकि वे मेरे नाम को न लजाएँ मेरी प्रतिष्ठा को बर्बाद न करें। ये सभी लोग बड़े लाल अजगर के वंशज हैं, वे मेरे प्रबंधन को बाधित करने के लिए बड़े लाल अजगर के द्वारा भेजे गए थे। वे मेरे काम में रुकावट डालने के लिए धोखेबाज़ी में विशेषज्ञ हैं। मेरे पुत्र! तुम्हें इसके धोखे में न आकर सच्चाई को देखना होगा! ऐसे लोगों के साथ सम्बन्ध मत रखो। जब भी तुम इस प्रकार के लोगों को देखो, तो फ़ौरन उनसे दूर हो जाओ ताकि उनके जाल में फँसने से बच सको; वह तुम्हारे जीवन के लिए नुकसानदायक है! मैं उन लोगों से सबसे अधिक घृणा करता हूँ जो लापरवाही से बात करते हैं, बिना सोचे-समझे कार्य करते हैं, जो सिर्फ हँसी-मज़ाक करते हैं और जो बेकार की गपशप में लगे रहते हैं। मैं इन लोगों में से किसी को भी नहीं चाहता, वे सब शैतान की क़िस्म के हैं! वे अकारण ही चिढ़ाते हैं। ये कैसे प्राणी हैं? वे बकवास करते हैं और निरंकुश होते हैं। क्या उन्हें फिर भी शर्म नहीं आती? दरअसल, इस प्रकार के व्यक्ति का सबसे कम मान होता है और मैंने उन्हें बहुत पहले ही समझ लिया है और त्याग दिया है। अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता तो वे मेरे अनुशासन के अधीन न रहते हुए बार-बार बकवास क्यों करते? वे वास्तव में बड़े

लाल अजगर के वंशज हैं! अब, मैंने इन चीज़ों को एक-एक करके हटाना शुरू कर दिया है। क्या मैं शैतान के वंशजों का मेरे ज्येष्ठ पुत्रों, अपने पुत्रों और अपने लोगों के रूप में उपयोग कर सकता हूँ? अगर मैं ऐसा करूँ तो क्या मैं भ्रमित नहीं हूँ? मैं निश्चित रूप से ऐसा नहीं करूँगा। क्या तुम लोग इसे स्पष्ट रूप से समझते हो?

आज तुम लोग जिसका भी सामना करते हो, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, सब कुछ मेरे कुशल हाथों द्वारा व्यवस्थित किया गया था; सब मेरे द्वारा आयोजित और नियंत्रित है। यह निश्चित रूप से ऐसा कुछ नहीं है जो मानवजाति आसानी से कर सकती हो। कुछ लोग अभी भी मेरे बारे में चिंता करते हुए घबराने लगते हैं; लेकिन उन्हें सच में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है! वे अपने मुख्य कार्य की अवहेलना करते हैं, और आत्मा में प्रवेश करने की कोशिश नहीं करते फिर भी जीवन में विकास चाहते हैं; वे व्यर्थ की आशा करते हैं! उन्हें कोई फ़िक्र नहीं है, लेकिन वे फिर भी मेरी इच्छा को संतुष्ट करना चाहते हैं! तुम मेरे लिए चिंता करते हो, लेकिन मुझे चिंता नहीं है। तुम किस लिए चिंतित हो? मेरे लिए किये गए तुम्हारे काम लापरवाही भरे हैं, और तुम साफ़-साफ़ झूठ बोलते हो। मैं तुम्हें बता दूँ! तुम जैसे लोगों को इसी पल मैं अपने घर से बाहर निकाल दूँगा। ऐसे लोग मेरे घर में मेरी सेवा करने के योग्य नहीं हैं। मैं उनसे घृणा करता हूँ क्योंकि वे अपने कर्म के द्वारा मेरी निंदा करते हैं। जब यह कहा गया था कि "मेरी निन्दा एक अक्षम्य पाप है," तो यह किसके सन्दर्भ में था? क्या तुम लोग इस बारे में स्पष्ट हो? ऐसा व्यक्ति मानता है कि समस्या अभी इतनी गंभीर नहीं हुई है, भले ही वह पहले ही यह पाप कर चुका है। सचमुच यह उलझा हुआ व्यक्ति अंधा और अज्ञानी है, और उसकी आत्मा अवरुद्ध है! मैं तुम्हें धक्के मारकर बाहर निकाल दूँगा! (क्योंकि मेरे लिए यह शैतान का प्रलोभन है, मुझे इससे बहुत नफ़रत है और इस विषय का बार-बार उल्लेख किया जा चुका है, हर बार यह मुझे क्रोधित करता है। मैं अपने क्रोध को रोक नहीं सकता कोई भी इसे रोक नहीं सकता। इसका समय अभी नहीं आया है, अन्यथा मैं उस व्यक्ति के साथ बहुत पहले ही निपट चुका होता!) (यह इस तथ्य के संबंध में है कि वर्तमान में ऐसे कई लोग हैं जो अभी भी विश्वास नहीं करते कि विदेशी चीन में भीड़ लगाने का प्रयास करेंगे, वे अब भी विश्वास नहीं करते हैं, जिससे मेरा क्रोध आन्दोलित होता और उबलता है।)

मेरे घर में किस तरह का व्यक्ति पूरी तरह से मेरे दिल के अनुरूप है? अर्थात, सृष्टि से पहले, मैंने अपने घर में हमेशा रहने के लिए, किस तरह के लोगों को पूर्वनिर्धारित किया था? क्या तुम लोग जानते हो?

क्या तुम लोगों ने सोचा है कि मुझे किस तरह के लोगों से प्रेम है और मैं किस तरह के लोगों से नफ़रत करता हूँ? मेरा घर उन लोगों के लिए है जिनकी सोच मेरे जैसी है और जो मेरे साथ अच्छे समय और कष्टों को साझा करते हैं, दूसरे शब्दों में, वे लोग आशीषों और कष्टों, दोनों में साझेदारी करते हैं। जिससे भी मैं प्रेम करता हूँ, ये लोग उससे प्रेम कर सकते हैं, और जिससे मैं नफ़रत करता हूँ, उससे नफ़रत भी कर सकते हैं। वे उसे त्याग सकते हैं जिससे मुझे घृणा होती है। अगर मैं कहूँ कि वे न खाएँ, तो वे मेरे इरादे पूरे करने के लिए खाली पेट रहने को तैयार हो जाते हैं। इस तरह का व्यक्ति मेरे प्रति वफ़ादार रहने और मेरे लिए खुद को खपाने का इच्छुक होता है, और हमेशा मेरे लिए कड़ी मेहनत करते हुए मेरे श्रमसाध्य प्रयासों के प्रति विचारशील हो सकता है, इसलिए, इस तरह के लोगों को मैं अपना सब-कुछ देते हुए ज्येष्ठ पुत्र का दर्जा देता हूँ, मेरे पास सभी कलीसियाओं का नेतृत्व करने की क्षमता है, यह मैं उन्हें देता हूँ; मेरे पास बुद्धि है, यह भी मैं उन्हें देता हूँ; सत्य का पालन करने के लिए मैं पीड़ा सह सकता हूँ, और मैं इन लोगों को दृढ़ निश्चय भी दूँगा, जिससे वे मेरी खातिर सब कुछ सहन कर सकें; मेरे पास खूबियाँ हैं और मैं यह भी उन्हें प्रदान करूँगा, मैं उन्हें बिल्कुल अपने जैसा बना दूँगा, थोड़ा भी अंतर न होगा, ताकि अन्य लोग जब इन लोगों को देखेंगे तो वे मुझे देखेंगे। अब, मैं इन लोगों के भीतर अपनी पूर्ण दिव्यता डाल रहा हूँ ताकि वे मेरी पूर्ण दिव्यता के एक पहलू को जीने में सक्षम हो सकें, मुझे पूरी तरह से प्रकट कर सकें; यह मेरा इरादा है। बाहरी चीज़ों में मेरे जैसा बनने की कोशिश मत करो (मेरे जैसा भोजन करना, मेरे जैसे कपड़े पहनना), यह सब बेकार है, और अगर तुम इन चीज़ों को खोजते हो, तो खुद को बर्बाद ही करोगे। ऐसा इसलिए क्योंकि जो लोग मेरे बाहरी रूप का अनुकरण करना चाहते हैं, वे शैतान के अनुचर हैं, और इस तरह का प्रयास शैतान की चाल है, यह शैतान की महत्वाकांक्षा को प्रतिबिम्बित करता है। तुम मेरे जैसा बनना चाहते हो, लेकिन क्या तुम इसके योग्य हो? मैं तुम्हें कुचल कर मार दूँगा! मेरा काम हमेशा जारी है, दुनिया के हर देश में फैल रहा है। जल्दी से मेरे पद-चिन्हों का अनुसरण करो!

अध्याय 90

वे सब लोग जो अंधे हैं, उन्हें मेरे पास से अवश्य ही चले जाना चाहिए और एक पल के लिए भी नहीं ठहरना चाहिए, क्योंकि जिन लोगों को मैं चाहता हूँ वे ऐसे लोग हैं जो मुझे जान सकते हैं, जो मुझे देख सकते हैं और जो मुझसे सभी चीजें प्राप्त कर सकते हैं। और कौन मुझसे सभी चीजें सचमुच प्राप्त कर

सकता है? इस तरह के लोग निश्चित ही बहुत कम हैं और वे अवश्य ही मेरे आशीषों को प्राप्त करेंगे। मैं इन लोगों से प्रेम करता हूँ और मैं इन्हें एक-एक करके मेरा दायाँ हाथ बनने, मेरी अभिव्यक्तियाँ बनने के लिए चुनूँगा। मैं सभी राष्ट्रों और सभी लोगों से इन लोगों की खातिर अपना निरंतर गुणगान और जयकार करवाऊँगा। हे, पर्वत सिय्योन! जीत का झंडा उठा और मेरी जयजयकार कर! क्योंकि मैं, एक बार फिर यहाँ वापस लौटने से पहले, पर्वतों, नदियों के कोने-कोने और सभी चीजों को लांघते हुए, पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी के अंत तक जाता हूँ। मैं धार्मिकता, न्याय, कोप और दहन के साथ और उससे भी बढ़कर अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ विजेता के रूप में लौटता हूँ। उन सभी चीजों को जिनसे मैं घृणा करता हूँ और उन सभी लोगों, मामलों, और पदार्थों को जिनसे मैं घृणा करता हूँ, मैं बहुत दूर फेंक देता हूँ। मैं विजेता हूँ और मैंने वह सब कार्य पूरा कर लिया है जो मैं करना चाहता हूँ। कौन ऐसा कहने का साहस करता है कि मैंने अपना कार्य पूरा नहीं किया है? कौन ऐसा कहने का साहस करता है कि मैंने अपने ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त नहीं किया है? कौन ऐसा कहने का साहस करता है कि मैं विजयी होकर नहीं लौटा हूँ? ऐसे लोग निश्चित रूप से शैतान के किस्म के लोग हैं; वे ऐसे लोग हैं जिन्हें मेरी क्षमा पाना मुश्किल लगता है। वे अंधे हैं, वे घिनौने राक्षस हैं और मैं उनसे सर्वाधिक घृणा करता हूँ। इन चीजों पर मैं अपने कोप और अपने न्याय की समग्रता को प्रकट करना शुरू करूँगा और, अपनी धधकती हुई ज्वाला से, ब्रह्मांड और पृथ्वी को एक छोर से दूसरे छोर तक जला दूँगा, कोने-कोने को रोशन करते हुए—यह मेरा प्रशासनिक आदेश है।

जब मेरे वचन तुम्हारी समझ में आ जाएँ तो तुम्हें उनसे सान्त्वना मिलनी चाहिए; तुम्हें उन्हें ध्यान में धरे बिना नहीं जाने देना चाहिए। न्याय के कथन हर दिन बरसते हैं, तो फिर तुम लोग इतने मंदबुद्धि और सुन्न क्यों हो? तुम मेरे साथ सहयोग क्यों नहीं करते हो? क्या तुम नरक में जाने के इतने इच्छुक हो? मैं कहता हूँ कि मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों के लिए, अपने पुत्रों और लोगों के लिए, दया का परमेश्वर हूँ, तो तुम सब इसका क्या अर्थ समझते हो? यह कोई साधारण वक्तव्य नहीं है, और इसे एक सकारात्मक परिप्रेक्ष्य से समझा जाना चाहिए। ओह, अंधी मानवजाति! मैंने, तुम लोगों को शैतान के चंगुल से छुड़ाया है और ताड़ना से बाहर निकाला है, ताकि तुम मेरा वादा पा सको, तो तुम लोग मेरे हृदय के प्रति कोई सम्मान क्यों नहीं दिखाते? क्या इस तरह से तुम लोगों में से किसी को भी बचाया जा सकता है? मेरी धार्मिकता, प्रताप और न्याय शैतान के प्रति कोई दया नहीं दिखाते हैं। लेकिन जहाँ तक तुम लोगों की बात है, इन चीजों का उद्देश्य तुम्हें बचाना है, फिर भी तुम लोग मेरे स्वभाव को समझने में अक्षम हो, और न ही तुम मेरे कार्यों के

पीछे के सिद्धांतों को जानते हो। तुम लोगों ने सोचा था कि मैं अपने विभिन्न कृत्यों की गंभीरता में कोई भेद नहीं करता, या इन कृत्यों के लक्ष्यों में कोई भेद नहीं करता—कितने अज्ञानी हो! मैं सभी लोगों, घटनाओं और चीज़ों को स्पष्ट रूप से देखने में समर्थ हूँ। मैं हर व्यक्ति के सार को पूरी स्पष्टता के साथ समझता हूँ, जिसका अर्थ है कि, मैं हर व्यक्ति के भीतर की सभी चीजों को आर-पार से पूरी तरह भाँप लेता हूँ। मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ कि कोई व्यक्ति इजेबेल है या वेश्या, और मैं जानता हूँ कि कौन गुप्त रूप से क्या करता है। मेरे सामने अपने आकर्षण का दिखावा न करो—कमबख्तो! यहाँ से अभी दफा हो जाओ! ताकि मेरा नाम लज्जित न हो, मेरे पास इस तरह के व्यक्तियों के लिए कोई उपयोग नहीं है! वे मेरे नाम की गवाही नहीं दे सकते हैं, बल्कि इसकी बजाय वे प्रतिकूल ढंग से कार्य और व्यवहार करते हैं और मेरे परिवार को लज्जित करते हैं! उन्हें तुरंत मेरे घर से निष्कासित कर दिया जाएगा। मुझे वे नहीं चाहिए। मैं एक पल का विलंब भी सहन नहीं करूँगा! क्योंकि ये लोग कैसे भी खोजें, सब व्यर्थ है। मेरे राज्य में सभी पवित्र और हर तरह से निष्कलंक हैं। यदि मैं कहता हूँ कि मुझे कोई व्यक्ति नहीं चाहिए, जिसमें मेरे अपने लोग भी शामिल हैं, तो मुझे वह सच में नहीं चाहिए; मेरा मन बदलने की प्रतीक्षा मत करो। मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि तुम मेरे प्रति पहले कितने अच्छे थे!

मैं हर दिन तुम लोगों के सामने रहस्यों को प्रकट करता हूँ। क्या तुम लोग मेरे बोलने की विधि को जानते हो? मैं किस आधार पर अपने रहस्यों को प्रकट करता हूँ? क्या तुम लोग यह जानते हो? तुम अक्सर कहते हो कि मैं वह परमेश्वर हूँ जो सही समय पर तुम्हारा भरण-पोषण करता है, तो तुम इन पहलुओं को कैसे समझते हो? मैं अपने कार्य के चरणों के अनुसार एक-एक करके तुम लोगों पर अपने रहस्यों को प्रकट करता हूँ, और मैं अपनी योजनानुसार और उससे भी ज्यादा तुम लोगों की वास्तविक आध्यात्मिक कद-काठी के अनुसार तुम्हारा भरण-पोषण करता हूँ, (जब भी मेरे द्वारा भरण-पोषण का उल्लेख होता है, यह राज्य के हर एक व्यक्ति के संदर्भ में होता है)। मेरे बोलने की विधि इस प्रकार है : अपने घर के लोगों को मैं सुख-सुविधा प्रदान करता हूँ, मैं उनका भरण-पोषण करता हूँ और उनका न्याय करता हूँ; शैतान के लिए मैं दया नहीं दिखाता, जरा-सी भी नहीं, उसके लिए केवल कोप और दहन है। जिन लोगों को मैंने पूर्वनियत या चयनित नहीं किया है, उन्हें एक-एक करके अपने घर से बाहर फेंकने के लिए मैं अपने प्रशासनिक आदेशों का उपयोग करूँगा। चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब मैं उनसे उनके मूल स्वरूप प्रकट करवा लूँगा (अंत समय आने पर उनके द्वारा मेरे पुत्रों को सेवा प्रदान किए जाने के

बाद), तो वे अथाह गड्ढे में लौट जाएँगे, नहीं तो मैं इस मामले को खत्म नहीं होने दूँगा और इसे कभी नहीं छोड़ूँगा। लोग अक्सर नरक और अधोलोक का उल्लेख करते हैं। किंतु ये दोनों शब्द क्या इंगित करते हैं, और उनके बीच क्या अंतर है? क्या ये सचमुच किसी ठंडे, अंधकारमय कोने को इंगित करते हैं? मानव मस्तिष्क मेरे प्रबंधन में हमेशा व्यवधान डालता रहता है, वे अपने निरुद्देश्य विचारों को बहुत अच्छी चीज मानते हैं। पर ये उनकी अपनी कपोल-कल्पनाओं के अलावा और कुछ भी नहीं हैं। अधोलोक और नरक दोनों गंदगी के मंदिर को संदर्भित करते हैं जहाँ पहले शैतान या दुष्ट आत्माओं का वास था। कहने का अर्थ है कि जिस किसी पर भी पहले शैतान या बुरी आत्माओं का कब्जा रह चुका है, वही वे लोग हैं जो अधोलोक हैं और वही वे लोग हैं जो नरक हैं—इसमें कोई संदेह नहीं है! यही कारण है कि मैंने अतीत में बार-बार जोर दिया है कि मैं गंदगी के मंदिर में नहीं रहता हूँ। क्या मैं (परमेश्वर स्वयं) अधोलोक में, या नरक में रह सकता हूँ? क्या यह हास्यास्पद बकवास नहीं होगी? मैंने यह कई बार कहा है लेकिन तुम लोगों की समझ में अभी भी नहीं आता है कि मेरा मतलब क्या है। नरक की तुलना में, अधोलोक को शैतान द्वारा कहीं ज्यादा दूषित किया जाता है। जो लोग अधोलोक के लिए हैं वे सबसे गंभीर मामले हैं, और मैंने इन लोगों को पूर्वनियत किया ही नहीं है; जो लोग नरक के लिए हैं ये वे ऐसे लोग हैं जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया है, किंतु उन्हें निकाल दिया गया है। आसान भाषा में कहें तो, मैंने इन लोगों में से एक को भी नहीं चुना है।

लोग अक्सर दर्शाते हैं कि वे मेरे वचनों को गलत ढंग से समझने वाले विशेषज्ञ हैं। यदि मैं थोड़ा-थोड़ा करके चीजों को स्पष्ट रूप से नहीं दिखाता और समझाता, तो तुम लोगों में से कौन उसे समझता? मैं जो वचन बोलता हूँ उनमें भी तुम लोग केवल आधा ही विश्वास करते हो, उन चीजों की तो बात ही रहने दो जिनके बारे में पहले उल्लेख नहीं किया गया है। अब, सभी देशों के भीतर आंतरिक विवाद शुरू हो गए हैं: मजदूरों और नेताओं के बीच, छात्रों और शिक्षकों के बीच, नागरिकों और सरकारी पदाधिकारियों के बीच, और इस तरह की सभी गतिविधियाँ जो अशांति का कारण बनती हैं, पहले हर देश में उत्पन्न होती हैं, और यह सब मुझे प्रदान की गई सेवा का केवल एक हिस्सा है। और मैं क्यों कहता हूँ कि ये चीजें मुझे सेवा प्रदान करती हैं? क्या मैं लोगों के दुर्भाग्य में आनंद लेता हूँ? क्या मैं बेपरवाह बैठा रहता हूँ? निस्संदेह नहीं! क्योंकि यह शैतान है जो अपनी मौत की बिलबिलाहट में प्रहार कर रहा है, और इन सारी चीजों का लक्ष्य नकारात्मक शक्तियों का प्रयोग कर, मेरी सत्ता और मेरे अद्भुत कर्मों के विरुद्ध छद्मरूप में कार्य करना

है। यह सब एक ठोस साक्ष्य है जो मेरी गवाही देता है, और यह शैतान पर हमला करने का एक हथियार है। जब दुनिया के सभी राष्ट्र भूमि और प्रभाव के लिए लड़ रहे होते हैं, तो मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र साथ मिलकर राजाओं के रूप में शासन करते हैं और उनसे निपटते हैं, और यह सर्वथा उनकी कल्पनाओं से परे है कि इन दयनीय पर्यावरणीय परिस्थितियों में, मेरा राज्य मनुष्य के बीच पूरी तरह से साकार होता है। साथ ही, जब वे सत्ता के लिए होड करते हैं और दूसरों की आलोचना करने की इच्छा रखते हैं, तो दूसरे भी उनकी आलोचना करते हैं और वे मेरे कोप से भस्म हो जाते हैं—कितना दयनीय है! कितना दयनीय! मेरा राज्य मनुष्य के बीच साकार होता है—कितनी महिमामयी घटना है यह!

मनुष्य होने के नाते (चाहे मेरे राज्य के लोग हों या शैतान के वंशज), तुम सभी लोगों को मेरे अद्‌भुत कर्मों को अवश्य देखना चाहिए, अन्यथा मैं इस मामले को कभी भी खत्म नहीं करूँगा। भले ही तुम मेरे न्याय को स्वीकार करने के लिए तैयार हो, फिर भी अगर तुमने मेरे अद्‌भुत कर्मों को नहीं देखा है, तो काम नहीं चलेगा। सभी लोगों को मन से, वचन से और दृष्टि से अवश्य ही आश्वस्त होना चाहिए, और किसी को भी आसानी से नहीं छोड़ा जा सकता। सभी लोगों को मुझे महिमा प्रदान करनी होगी। अंत में, मैं बड़े लाल अजगर को भी उठकर मेरा विजय-गान करने के लिए बाध्य कर दूँगा। यह मेरा प्रशासनिक आदेश है—क्या यह तुम्हें याद रहेगा? सभी लोगों को अवश्य ही निरंतर मेरा गुणगान करना चाहिए और मुझे महिमामंडित करना चाहिए!

अध्याय 91

मेरा आत्मा लगातार मेरी वाणी बोलता और कथन कहता है—तुम लोगों में से कितने मुझे जान सकते हैं? मुझे क्यों देह बन कर तुम लोगों के बीच आना होगा? यह एक बड़ा रहस्य है। तुम लोग मेरे बारे में सोचते हो और पूरे दिन मेरे लिए लालायित रहते हो और तुम लोग मेरी स्तुति करते हो, मेरा आनंद लेते हो और हर दिन मुझे खाते और पीते हो और फिर भी आज मुझे नहीं जानते हो। तुम कितने अज्ञानी और अंधे हो! तुम लोग मुझे कितना कम जानते हो! तुम लोगों में से कितने मेरी इच्छा के प्रति विचारशील हो सकते हैं? अर्थात्, तुममें से कितने मुझे जान सकते हैं? तुम सब चालाक, शैतान की तरह हो, फिर भी तुम मेरी इच्छा को पूरा करना चाहते हो? रहने भी दो! मैं तुम्हें बता दूँ; शैतान के कार्य चाहे कितने ही अच्छे क्यों न हों, वे सब मेरे निर्माण को ध्वस्त करने और मेरे प्रबंधन को बाधित करने के लिए हैं। चाहे इसके कार्य

कितने अच्छे क्यों न हों, इसका सार नहीं बदलता—यह मेरा अनादर करता है। इसलिए, बहुत से लोग अनजाने में मेरे हाथ से मार गिराए जाते हैं और अनजाने में मेरे परिवार से बाहर निकाल दिए जाते हैं। आज, कोई भी मामला (चाहे बड़ा हो या छोटा) मनुष्य द्वारा आयोजित नहीं किया जाता है; सब कुछ मेरे हाथों में है। यदि कोई कहता है कि सभी चीज़ें मनुष्य के नियंत्रण में हैं, तो मैं कहता हूँ कि तू मेरा अनादर करता है और मैं निश्चित रूप से तुझे गंभीर रूप से ताड़ना दूँगा और तेरे आराम के लिए कोई जगह नहीं छोड़ूँगा। सभी घटनाओं और चीज़ों में से क्या मेरे हाथों के भीतर नहीं है? क्या मेरे द्वारा स्थापित या मेरे द्वारा निर्धारित नहीं है? और तू अभी भी मुझे जानने के बारे में बात करता है! ये शैतानी शब्द हैं। तूने दूसरों को धोखा दिया है इसलिए तू सोचता है कि तू मुझे भी धोखा दे सकता है? तू सोचता है कि यदि तूने जो किया है, उसके बारे में कोई नहीं जानता तो उससे कुछ नहीं होगा? ऐसा मत सोच कि तू हल्के में बच जाएगा! मुझे अवश्य तुझसे अपने सामने घुटने टिकवाने हैं और इसके बारे में कहलवाना है। न बोलना अस्वीकार्य है; यह मेरा प्रशासनिक आदेश है!

क्या तुम लोग वास्तव में समझते हो कि मेरा आत्मा कौन है, और मेरा देहधारी स्व कौन है? मेरे देहधारण का अर्थ क्या है? तुम लोगों में से किसने इस महत्वपूर्ण मामले पर सावधानी से विचार किया है और मुझसे कुछ प्रकाशन प्राप्त किया है? तुम सब लोग स्वयं को बेवकूफ़ बना रहे हो! मैं क्यों कहता हूँ कि तू बड़े लाल अजगर की संतान है? आज मैं तुम लोगों के लिए अपने देहधारण के रहस्य को प्रकट करता हूँ, ऐसा रहस्य जिसे मनुष्य दुनिया के सृजन के बाद से ही उजागर करने में असमर्थ रहा है, जिसने मेरी नफ़रत की बहुत सी वस्तुओं का ध्वंस कर दिया है। और इसलिए यह आज है। मेरी देह की वजह से, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, उनमें से बहुतों को पूर्ण बना दिया गया है। मुझे वास्तव में देह क्यों बनना होगा? और मैं ऐसा क्यों दिखता हूँ जैसा हूँ (जिनमें मेरी ऊँचाई, मेरा प्रकटन और आध्यात्मिक कद आदि सभी चीज़ें शामिल हैं)? इसके बारे में कौन कह सकता है? मेरे देहधारण का इतना अधिक महत्व है कि बस सब कुछ नहीं बताया जा सकता है। मैं तुम लोगों को इसका बस एक अंश बताऊँगा (क्योंकि मेरे काम के चरणों ने इसे यहाँ तक पहुँचाया है, इसलिए मुझे यह करना और यह कहना चाहिए) : मेरा देहधारण प्राथमिक रूप से मेरे पहलौठे पुत्रों पर निर्देशित है, ताकि मैं अवश्य उनकी चरवाही करूँ और ताकि वे मेरे साथ आमने-सामने बातचीत कर सकें और बोल सकें; यह ये भी दिखाता है कि मैं और मेरे पहलौठे पुत्र एक दूसरे के साथ अंतरंग हैं (जिसका अर्थ है कि हम एक साथ खाते हैं, एक साथ रहते हैं, एक साथ जीते हैं और एक

साथ कार्य करते हैं), ताकि उन्हें वास्तविकता में मेरे द्वारा खिलाया जा सके—ये खोखले वचन नहीं हैं बल्कि यह वास्तविकता है। पहले, लोग मुझ पर विश्वास करते थे लेकिन वास्तविकता को समझ नहीं सके थे और ऐसा इसलिए था क्योंकि मैंने अभी तक देहधारण नहीं किया था। आज, मेरा देहधारण तुम सभी लोगों को वास्तविकता को समझने देता है और मेरे भाषणों और आचरण और जिस तरह से मैं—स्वयं बुद्धिमान परमेश्वर—मामलों को सँभालता हूँ, उनके पीछे के सिद्धांतों के माध्यम से उन लोगों को मुझे जानने देता है, जो मुझे ईमानदारी से प्रेम करते हैं। जो ईमानदारी से मेरी तलाश नहीं करते हैं, यह उन लोगों को भी मेरे अगोचर कार्यों में मेरी मानवता के पहलू को देखने देता है और इस तरह मेरा अनादर करने देता है और फिर मेरे द्वारा मार गिराए जाने से "बिना किसी भी कारण" मरने देता है। शैतान को अपमानित करने में, देहधारण मेरे लिए सबसे जबरदस्त गवाही देता है; मैं न केवल देह से सामने आने में सक्षम हूँ बल्कि मैं देह के भीतर भी रह सकता हूँ। मैं किसी भी स्थानिक या भौगोलिक प्रतिबंध से प्रभावित नहीं हूँ; मेरे लिए किसी भी तरह की कोई बाधाएँ नहीं हैं और सब कुछ अबाध गति से चलता है। इससे शैतान सर्वाधिक शर्मिंदा होता है और जब मैं देह से सामने आता हूँ, तब भी मैं अपनी देह में कार्य करता हूँ और बिल्कुल भी प्रभावित नहीं होता हूँ। मैं अभी भी पर्वतों, नदियों, झीलों और ब्रह्मांड के हर कोने में और साथ ही उसमें विभिन्न चीजों पर लंबे डग भरता हूँ। उन सभी को प्रकट करने के लिए मेरा देहधारण हुआ है, जो मुझसे जन्मे तो थे लेकिन मेरा अनादर करने के लिए खड़े हो गए हैं। यदि मैं देह नहीं बनता, तो उन्हें प्रकट करने का कोई तरीका नहीं होता (उनका जिक्र जो मेरे सामने एक तरह से क्रिया करते हैं और मेरी पीठ पीछे दूसरी तरह से)। यदि मैं एक पवित्रात्मा के रूप में बना रहता, तो लोग अपनी धारणाओं में मेरी आराधना करते और सोचते कि मैं एक निराकार और अगम्य परमेश्वर हूँ। मेरा देहधारण आज लोगों की धारणाओं (कहें तो मेरी ऊँचाई और मेरे प्रकटन के संबंध में) के पूरी तरह विपरीत है, क्योंकि वह बहुत साधारण दिखता है और बहुत लंबा नहीं है। यही स्थिति शैतान को सर्वाधिक अपमानित करती है और लोगों की धारणाओं (शैतान की ईशनिंदा) का सबसे शक्तिशाली प्रत्युत्तर है। यदि मेरा प्रकटन हर किसी से भिन्न होता, तो यह परेशानी उत्पन्न करता—सभी मेरी आराधना करने आते और अपनी धारणाओं के माध्यम से मुझे समझते और वे मेरे लिए उस सुंदर गवाही को देने में समर्थ नहीं होते। इस प्रकार, मैंने स्वयं उस छवि को अपनाया जो आज मेरी है, जिसे समझना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। सभी को इंसानी धारणाओं से बाहर निकलना चाहिए और शैतान के कुटिल षड़यंत्रों से धोखा नहीं खाना चाहिए। अपने कार्य की

आवश्यकताओं के अनुसार भविष्य में मैं तुम लोगों को बारी-बारी से और अधिक बताऊँगा।

आज, मेरे महान कार्य को सफलता मिली है और मेरी योजना पूरी हो गई है। मैंने उन लोगों का एक समूह प्राप्त कर लिया है जो एक चित्त होकर मेरे साथ सहयोग करते हैं। यह मेरे लिए सबसे गौरवशाली समय है। मेरे प्यारे पुत्र (वे सभी जो मुझसे प्रेम करते हैं) सभी चीज़ों को पूरा करने में मेरे साथ-साथ एक दिल और दिमाग वाले होने में सक्षम हैं। यह एक अदभुत बात है। आज के बाद, जिन्हें मैं प्रतिकूल मानता हूँ, उनके पास पवित्र आत्मा का कार्य नहीं होगा, अर्थात् मैं उन लोगों को निकाल दूँगा जो अतीत में मेरे कहे के अनुरूप नहीं हैं। जो कुछ भी मैं कहता हूँ लोगों को पूरी तरह से उसके अनुरूप होना चाहिए। इसे याद रखो! तुम्हें पूरी तरह से अनुरूप होना है। ग़लत ढंग से मत समझो; सब मेरे ऊपर है। लोगो, मेरे साथ शर्तों की बात मत करो। यदि मैं कहता हूँ कि तुम योग्य हो तो यह पत्थर की लकीर है; यदि मैं कहता हूँ कि तुम योग्य नहीं हो, तो दुःखी मत हो और स्वर्ग और धरती को दोष मत दो। ये सभी मेरी व्यवस्थाएँ हैं। किसने तुमसे कहा कि तुम्हें स्वयं अपना अपमान करना चाहिए? किसने तुमसे कहा कि तुम्हें ऐसी शर्मनाक मूर्खता करनी चाहिए? भले ही तुम कुछ न कहो, तुम मुझसे सत्य को छिपा नहीं सकते। जब मैं कहता हूँ कि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ जो मनुष्य के अंतर्तम हृदय की जाँच करता है, तो मेरे शब्द किसे लक्षित कर रहे हैं? यह मैं उन लोगों से कहता हूँ, जो बेईमान हैं। मेरी पीठ पीछे इस प्रकार की चीज़ को करना, कितनी बेशर्मी की बात है! क्या तुम लोग असत्य बोलकर मुझे धोखा देना चाहते हो? यह इतना आसान नहीं है! यहाँ से तुरंत निकल जाओ! विद्रोह के पुत्र! तुम खुद से प्यार नहीं करते और तुम खुद का सम्मान नहीं करते! तुम अपने बारे में परवाह नहीं करते हो, फिर भी चाहते हो कि मैं तुम लोगों से प्यार करूँ? भूल जाओ! मुझे इस तरह का एक भी अभागा नहीं चाहिए। तुम सब मुझसे दूर हो जाओ! यह मेरे नाम को सबसे गंभीर रूप से शर्मिंदा करता है; यदि तुम इसे स्पष्ट रूप से नहीं देखते तो ऐसे नहीं चलेगा। इस दुष्ट और कामुकतापूर्ण पुराने युग में किसी भी गंदगी से दूषित होने से तुम लोगों को खुद को बचाना चाहिए; तुम लोगों को पूरी तरह पवित्र और बेदाग होना चाहिए। आज, जो मेरे साथ राजाओं के रूप में शासन करने के लिए योग्य हैं, ये वे लोग हैं जो किसी भी गंदगी से दूषित नहीं हैं क्योंकि मैं स्वयं पवित्र परमेश्वर हूँ और मैं ऐसे किसी को भी नहीं चाहता हूँ जो मेरे नाम को शर्मिंदा करता हो। ऐसे लोग मेरी परीक्षा लेने के लिए शैतान द्वारा भेजे जाते हैं और सचमुच वे शैतान के अनुचर हैं जिन्हें मारकर भगा दिया जाना चाहिए (अथाह कुंड में डालते हुए)।

मेरा परिवार पवित्र और बेदाग है और मेरा मंदिर आलीशान और प्रतापी है (जिसका अर्थ है कि वे लोग जिनके पास मेरा स्वरूप है)। कौन प्रवेश करने और उपद्रव मचाने का साहस करता है? मैं निश्चित रूप से उन्हें माफ नहीं करूँगा। वे पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे और बहुत शर्मिंदा किए जाएँगे। मैं बुद्धिमानी से काम करता हूँ। चाकू के बिना, बंदूक के बिना और एक भी अँगुली उठाए बिना मैं उन लोगों को पूरी तरह से पराजित कर दूँगा जो मेरा अनादर करते हैं और मेरे नाम को शर्मिंदा करते हैं। मैं उदारचरित हूँ और तब भी एक स्थिर गति से अपना काम करता रहता हूँ, जब शैतान इस हद तक परेशानी पैदा करता है; मैं इस पर कोई ध्यान नहीं देता हूँ और मैं अपनी प्रबंधन योजना की पूर्णता के साथ इसे पराजित कर दूँगा। यह मेरी सामर्थ्य और मेरी बुद्धि है और इससे भी अधिक यह मेरी अनंत महिमा का एक छोटा सा हिस्सा है। मेरी नज़रों में, जो मेरा अनादर करते हैं वे गंदगी में रेंगने वाले कीड़ों की तरह हैं और जब चाहूँ मैं उन्हें किसी भी समय पैरों तले कुचलकर मार सकता हूँ। हालाँकि, मैं बुद्धि के साथ चीज़ों को करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे पहलौठे पुत्र जाकर उनसे निपटें; मैं किसी जल्दी में नहीं हूँ। मैं विधिवत रूप से, व्यवस्थित रीति में और बिना किसी त्रुटि के कार्य करता हूँ। उन पहलौठे पुत्रों के पास, जो मुझसे जन्मे हैं, वह होना चाहिए जो मैं हूँ और उन्हें मेरे कर्मों में मेरी अनंत बुद्धि देखने में समर्थ होना चाहिए!

अध्याय 92

मेरे वचनों और मेरे कार्यों के भीतर हर व्यक्ति मेरी सर्वशक्तिमत्ता और मेरी बुद्धि को देख सकता है। मैं जहाँ कहीं भी जाता हूँ, वहाँ मेरा कार्य होता है। मेरे पदचिह्न केवल चीन में नहीं हैं; जो सबसे महत्वपूर्ण बात है वह यह है कि वे दुनिया के सभी देशों में हैं। हालाँकि, इस नाम को सबसे पहले प्राप्त करने वाले केवल सात राष्ट्र हैं, जिनके बारे में पहले चर्चा की गई है क्योंकि यह मेरे कार्य का क्रम है; निकट भविष्य में तुम लोग इसके बारे में पूरी तरह से स्पष्ट हो जाओगे और इसे पूरी तरह समझ जाओगे। यदि मैं तुम लोगों को अभी बताता हूँ, तो मुझे डर है कि इसके कारण अधिकांश गिर जाओगे, क्योंकि मैंने पहले कहा है कि मैं तुम लोगों के आध्यात्मिक कद के अनुसार तुम लोगों से बात करता हूँ और तुम लोगों को अपनी वाणी का कथन करता हूँ और जो भी मैं करता हूँ उसके भीतर मेरी अनंत बुद्धि होती है, जिसकी थाह कोई नहीं पा सकता; तुम लोगों को इसे बताने का एकमात्र तरीका है, इसे खेप में बताया जाए। इसे जानो! मेरी नज़रों में तुम लोग हमेशा बच्चे हो; हर कदम जो तुम लोग लेते हो, उसमें तुम लोगों की मेरे द्वारा अगुआई की

जानी चाहिए और मेरे द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए। लोगों-केवल मेरे मार्गदर्शन के तहत ही तुम अपना पूरा जीवन जी सकते हो; इसके बिना कोई भी जीवित रहने में सक्षम नहीं होगा। समस्त ब्रह्मांड की दुनिया मेरे हाथों में है, फिर भी तुम मुझे इधर-उधर दौड़-धूप करता हुआ नहीं देखते। इसके विपरीत, मैं तनावमुक्त और खुश हूँ। लोग मेरी सर्वशक्तिमत्ता को नहीं जानते हैं और मेरे लिए चिंतित होते हैं—तुम लोग अपने आप को कितना कम जानते हो! तब भी तुम लोग मेरे सामने अपनी फालतू चीजों का प्रदर्शन करते हो, अपनी प्रशंसा करते हो! मैंने इस असलियत को बहुत पहले देख लिया था। और तुम तुच्छ अभागों, मेरे सामने चालाकियाँ करने में लगे हो! मेरे घर से तुरंत निकल जाओ! मुझे तुम लोगों जैसे अभागे नहीं चाहिए। तुम लोगों जैसे तुच्छ अभागों की अपेक्षा मैं अपने राज्य में किसी को भी नहीं रखना पसंद करूँगा! क्या तुम्हें पता है कि मैंने पहले से ही तुम पर कार्य करना बंद कर दिया है, इस तथ्य के बावजूद कि तुम अभी भी हमेशा की तरह से खा रहे हो और कपड़े पहन रहे हो? मगर क्या तुम्हें पता था कि तुम शैतान के लिए जी रहे हो, कि तुम शैतान के लिए सेवा प्रदान कर रहे हो? फिर भी तुममें मेरे सामने खड़े होने की धृष्टता है! तुम सच में बेशर्म हो!

अतीत में, मैंने प्रायः कहा है, "बड़ी आपदाएँ जल्दी ही आएँगी; बड़ी आपदाएँ पहले ही मेरे हाथों से निकल चुकी हैं।" "बड़ी आपदाएँ" किस चीज़ का संकेत करती हैं और इस "निकलने" को कैसे समझाया जाना चाहिए? तुम लोग सोचते हो कि ये बड़ी आपदाएँ अपरिहार्य आपदाओं का संकेत करती हैं, जो मनुष्य के प्राण, आत्मा और शरीर को चोट पहुँचाती हैं और तुम सोचते हो कि "भूकंप, अकाल और महामारियाँ" जिनके बारे में मैं बात करता हूँ ये वे बड़ी आपदाएँ हैं। किंतु तुम लोगों को नहीं पता कि तुम लोगों ने मेरे वचनों की ग़लत व्याख्या की है। और तुम लोग सोचते हो कि इस "निकलने" का मतलब है कि बड़ी आपदाएँ शुरू हो गई हैं-यह हास्यास्पद है! तुम वास्तव में इसी तरह समझते हो और तुम लोगों की व्याख्याएँ सुनने के बाद मुझे सच में गुस्सा आता है। लोग जिस रहस्य को सुलझाने में असमर्थ रहे हैं (जो सर्वाधिक गुप्त रहस्य है) वही है, जिसकी युगों से गंभीर रूप से ग़लत व्याख्या की गई है और यह रहस्य है, जिसका पहले कभी किसी को निजी अनुभव नहीं रहा है (क्योंकि यह केवल अंत के दिनों में काम में लाया गया है और केवल अंत के युग में ही मनुष्य इसे देख सकता है, हालाँकि वे इसे नहीं पहचानेंगे) क्योंकि मैं इसे बहुत कसकर मुहरबंद करता हूँ, इस तरह कि मनुष्य इसमें नहीं घुस सकता है (यहां तक कि इसका सबसे छोटा हिस्सा भी नहीं देख सकता)। अब चूँकि मेरा कार्य इस चरण तक कार्यान्वित किया जा चुका है,

इसलिए मैं तुम लोगों को मेरे कार्य की आवश्यकताओं के अनुसार प्रेरित करता हूँ; अन्यथा लोगों के पास समझने का कोई तरीका नहीं होगा। अब मैं संगति देना शुरू करता हूँ; हर कोई ध्यान दे, अन्यथा मेरे पहलौठे पुत्रों सहित जो भी सावधान नहीं रहता, वह मेरे न्याय को भुगतेगा और सर्वाधिक गंभीर मामलों में उसे मेरे हाथ से मारा गिराया जाएगा (जिसका अर्थ है कि उनके प्राण, आत्मा और शरीर को ले लिया जाएगा)। बड़ी आपदाएँ मेरे राज्य के प्रत्येक प्रशासनिक आदेश के संबंध में बोली जाती हैं और मेरा हर एक प्रशासनिक आदेश बड़ी आपदाओं का एक हिस्सा है। (मेरे प्रशासनिक आदेशों को तुम लोगों पर पूरी तरह से प्रकट नहीं किया गया है, किंतु इस बारे में चिंतित या उद्विग्न न हो; ऐसी कुछ चीज़ें हैं यदि वे तुम लोगों को बहुत जल्दी पता चल जाएँ, तो उनसे तुम लोगों को थोड़ा लाभ मिलेगा। इसे याद रखना! मैं एक बुद्धिमान परमेश्वर हूँ)। तो अन्य हिस्सा क्या है? बड़ी आपदाओं के दो भाग हैं: मेरे प्रशासनिक आदेश और मेरा कोप। जिस समय बड़ी आपदाएँ आएँगी यही वह समय भी होगा जब मैं क्रोध में धधकना शुरू करूँगा और अपने प्रशासनिक आदेशों को लागू करूँगा। यहाँ मैं अपने पहलौठे पुत्रों को बताता हूँ : तुम्हें इसके कारण पतित नहीं होना चाहिए। क्या तुम भूल गए हो कि सभी चीजें और सभी मामले मेरे द्वारा पूर्वनियत हैं? मेरे पुत्र, डरो मत! मैं निश्चित रूप से तुम्हारी रक्षा करूँगा, तुम मेरे साथ हमेशा अच्छे आशीषों का आनंद लोगे और अनंत काल तक मेरे साथ रहोगे। क्योंकि तुम मेरे प्रियजन हो, मैं तुम्हें नहीं त्यागूँगा। मैं मूर्खतापूर्ण चीज़ें नहीं करता हूँ, फिर भी यदि मैं उस चीज को नष्ट कर देता हूँ जिसे कठिनाई से पूरा किया गया है, तो क्या मैं स्वयं अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी नहीं मार रहा होऊँगा? मुझे पता है कि तुम अपने दिल में क्या सोचते हो। क्या तुम्हें याद आया? तुम मुझसे और क्या कहलवाओगे? मैं बड़ी आपदाओं के बारे में और अधिक बात करूँगा। जिस समय बड़ी आपदाएँ आएँगी, वह सबसे डरावना समय होगा और वे मनुष्यों की कुरूपता को सबसे अधिक प्रकट करेंगी। मेरे चेहरे के प्रकाश में सभी तरह के राक्षसी चेहरों को उजागर किया जाएगा और उनके पास छिपने की कोई जगह नहीं होगी, आड़ लेने की कोई जगह नहीं होगी; उन्हें पूरी तरह से उजागर कर दिया जाएगा। बड़ी आपदाओं का परिणाम यह होगा कि वे सभी जो मेरे द्वारा चुने और पूर्वनियत नहीं किए गए हैं, रोते हुए और दाँतों को पीसते हुए, मेरे सामने घुटने टेकेंगे और क्षमा की भीख माँगेंगे। यह शैतान के बारे में मेरा न्याय, मेरा कोपपूर्ण न्याय है। मैं वर्तमान में इस कार्य में व्यस्त हूँ और हो सकता है कि कुछ ऐसे हों जो योग्यता रखने का ढोंग करना और अपने आप को सक्षम दिखाना चाहते हों, किंतु वे जितना अधिक ऐसा करेंगे, उतना ही अधिक शैतान उन पर कार्य करेगा, जब

तक कि एक निश्चित स्थिति तक उनके मूल रूप प्रकट होते हैं।

मुझे अपना कार्य करने की कोई जल्दी नहीं है और मैं हर व्यक्ति को स्वयं आयोजित करता हूँ (यह उनका मजाक है जो साबित करता है कि वे बड़े लाल अजगर के वंशज हैं और मैं उन पर कोई ध्यान नहीं देता हूँ, इसलिए "आयोजित" शब्द का उपयोग हद से ज्यादा नहीं है) और हर कर्म को स्वयं करता हूँ। हर चीज़ मेरे साथ ही सफल होती है और यह एक सुरक्षित और निरापद सफलता है; मैं जो भी करता हूँ वह, कदम-दर-कदम, पहले से ही व्यवस्थित है। मैं तुम लोगों को अपनी इच्छा और अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में एक बार में थोड़ा सा बताता हूँ। इस स्थिति से, मेरे वचन सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के सामने प्रकट होना शुरू होते हैं। क्योंकि मेरे पहलौठे पुत्रों को पहले ही पूर्ण बना दिया गया है (मेरे वचनों का केंद्रबिंदु मेरे पुत्रों और मेरे लोगों पर है), इसलिए जिस तरीके से मैं कार्य करता हूँ वह फिर से बदलना शुरू हो गया है। क्या यह तुम लोगों को स्पष्ट रूप से दिखाई देता है? क्या तुम लोगों ने इन पिछले कुछ दिनों में मेरे वचनों के स्वर को महसूस किया है? मैं अपने पहलौठे पुत्रों को रास्ते के हर कदम पर सांत्वना देता हूँ, किंतु अब से (क्योंकि मेरे पहलौठे पुत्रों को पहले ही पूर्ण बनाया जा चुका है) मैं अपने हाथ में एक चाकू रखता हूँ ("चाकू" अर्थात सबसे कठोर "वचन")। जिसको भी मैं क्षण भर के लिए प्रतिकूल मानता हूँ (जिसका अर्थ है कि जिन्हें पूर्वनियत या चयनित नहीं किया गया है और इसलिए कोई विरोधाभास नहीं है), मैं परवाह नहीं करता हूँ कि वे मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं या क्या वे कुछ और हैं; मैं उन्हें तुरंत फेंक दूँगा। मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ और मैं अपने लिए सभी लोगों से सेवा प्रदान करवा सकता हूँ। मैं ऐसे लोगों से अलग होने का बिल्कुल भी अनिच्छुक नहीं हूँ; यदि मैं कहता हूँ कि मुझे वे नहीं चाहिए तो वे मुझे नहीं चाहिए। अब चूँकि समय आ गया है, इसलिए मुझे केवल ऐसे किसी व्यक्ति को देखने की आवश्यकता है, जो मुझे अप्रसन्न करता हो और मैं उसे जाँच के बिना तुरंत त्याग दूँगा क्योंकि मैं ही वह परमेश्वर हूँ, जो वही करता है जो वह कहता है। जिन लोगों को मैंने अपनी सेवा में रहने के लिए पूर्वनियत किया है-चाहे तुम कितने ही अच्छे क्यों न हो और चाहे तुमने कोई ऐसी चीज़ की हो जो मेरा अनादर करती हो या नहीं, यदि तुम मुझे अप्रसन्न करते हो, तो मैं तुम्हें लात मारकर बाहर कर दूँगा। मुझे भविष्य की किसी परेशानी का डर नहीं है। मेरे अपने प्रशासनिक आदेश हैं, मैं जो कहता हूँ वो करता हूँ और मेरा वचन पूरा होगा। क्या मैं शैतान को रहने दूँगा? तुम लोग, मेरी बात सुनो! तुम लोगों को डरने की आवश्यकता नहीं है; जब भी मैं तुम्हें बाहर निकलने के लिए कहूँ, तुम्हें बाहर निकलना होगा। मेरे सामने बहाने मत बनाओ; मेरे पास तुमसे

कहने के लिए कोई वचन नहीं है! क्योंकि मैंने बहुत धैर्य रखा है और मेरे प्रशासनिक आदेशों को लागू करने का समय आ गया है और तुम लोगों के अंत का दिन भी आ पहुँचा है। हजारों वर्षों से तुम लोग लंपट थे और तुम लोगों ने हमेशा अड़ियल, उद्दंड तरीके से चीजें कीं, पर मैं हमेशा सहिष्णु रहा (क्योंकि मैं उदारचरित हूँ और मैं तुम्हारी भ्रष्टता को कुछ हद तक अनुमति देता हूँ)। किंतु अब मेरी उदारता की समाप्ति तिथि आ गई है और तुम लोगों को पकड़ने और आग और गंधक की झील में फेंकने का समय आ गया है। जल्दी करो और रास्ते से हटो। मैं औपचारिक रूप से अपने न्याय को लागू करना शुरू करता हूँ और अपने कोप को जारी करना शुरू करता हूँ।

दुनिया के सभी राष्ट्रों और सभी स्थानों में भूकंप, अकाल, महामारियाँ और सभी प्रकार की आपदाएँ बार-बार होती हैं। जैसे-जैसे मैं सभी राष्ट्रों और सभी जगहों पर अपना महान कार्य करता हूँ, ये आपदाएँ दुनिया के निर्माण के बाद के किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक गंभीर रूप से उभरेंगी। यह सभी लोगों के बारे में मेरे न्याय की शुरुआत है; किंतु मेरे पुत्र आराम कर सकते हैं; तुम लोगों पर कोई आपदा नहीं पड़ेगी और मैं तुम लोगों की रक्षा करूँगा (जिसका अर्थ है कि तुम लोग बाद में शरीर में रहोगे, किंतु देह में नहीं, इसलिए तुम किसी भी आपदा की पीड़ा को नहीं भुगतोगे)। तुम लोग बस मेरे साथ राजाओं के रूप में शासन करोगे और ब्रह्मांड और पृथ्वी के अंतिम छोर तक हमेशा मेरे साथ अच्छे आशीषों का आनंद लेते हुए सभी राष्ट्रों और सभी लोगों का न्याय करोगे। ये सभी वचन पूरे होंगे और उन्हें शीघ्र ही तुम लोगों की आँखों के सामने प्राप्त कर लिया जाएगा। मैं न तो एक घंटा की देरी करता हूँ न एक दिन की, मैं चीजों को अविश्वसनीय रूप से शीघ्रता से करता हूँ। चिंतित या व्याकुल मत हो और जो आशीष मैं तुम्हें देता हूँ वह कुछ ऐसा है, जिसे कोई तुमसे दूर नहीं कर सकता है—यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। मेरे कर्मों की वजह से सभी लोग मेरे प्रति आज्ञाकारी होंगे; वे जयजयकार ही जयजयकार करेंगे, बल्कि इससे भी अधिक खुशी से छलाँग पर छलाँग लगाएँगे।

अध्याय 93

वास्तविकता व्यक्ति की आँखों के सामने हासिल की जाती है और हर एक चीज पहले ही हासिल की जा चुकी है; मेरे कार्य की गति तेज हो जाती है, ऊंची हो जाती है जैसे प्रक्षेपण के बाद रॉकेट। कभी किसी ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। केवल चीज़ों के होने के बाद ही तुम लोग मेरे वचनों के सही अर्थ को

समझोगे। बड़े लाल अजगर की संतान कोई अपवाद नहीं हैं और उन्हें उनकी ही आँखों से मेरे अद्‌भुत कर्म दिखाए जाने चाहिए। ऐसा मत सोचो कि चूँकि तुम मेरे कर्मों को देखने के बाद मेरे बारे में निश्चित हो, तो मैं तुम्हें नहीं त्यागूँगा—तो यह इतना आसान नहीं है! मैं निश्चित रूप से उन वचनों को पूरा करूँगा, जिन्हें मैंने कहा है और जो घटनाएँ मैंने निर्धारित की हैं और वे मेरे पास ख़ाली वापस नहीं आएँगे। चीन में, उन अल्पसंख्य लोगों के अलावा जो मेरे पहलौठे पुत्र हैं, कुछ हैं जो मेरे लोग हैं। तो मैं आज तुम लोगों (बड़े लाल अजगर की संतान, जिन्होंने मुझे सबसे ज्यादा भयानक रूप से उत्पीड़ित किया है) को स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि तुम लोगों को कोई भी बड़ी उम्मीद नहीं रखनी चाहिए और यह कि मेरे कार्य का केंद्र (सृष्टि के सृजन के बाद से) मेरे पहलौठे पुत्रों और चीन से परे कई देशों पर रहा है। इस कारण से जब मेरे पहलौठे पुत्र बड़े हो जाएँगे, तो मेरी इच्छा पूरी हो जाएगी। (एक बार मेरे पहलौठे पुत्र बड़े हो जाएँ तो सब कुछ किया जाएगा, क्योंकि आगे का कार्य उन्हें दिया जाता है।) अब मैं इन लोगों को केवल अपने अद्‌भुत कर्मों का एक हिस्सा देखने की अनुमति देता हूँ ताकि बड़े लाल अजगर को शर्मिंदा किया जा सके। ये लोग उसमें आनंद लेने में समर्थ ही नहीं हैं बल्कि केवल इस बात से खुश रह सकते हैं कि वे मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं। और उनके पास कोई विकल्प नहीं है क्योंकि मेरे अपने प्रशासनिक आदेश हैं और कोई भी उनका अपमान करने का साहस नहीं करता।

अब मैं कुछ परिस्थितियों के बारे में संगति करूँगा, जिसमें विदेशियों का आगमन शामिल है ताकि तुम लोगों को इसका पूर्वज्ञान हो सके, मेरे नाम की गवाही देने के लिए हर चीज़ ठीक से तैयार कर सको और उनके ऊपर जाकर खड़े हो सको और उन पर शासन कर सको। (मैं कहता हूँ कि तुम "उनसे ऊपर खड़े रहो और उन पर शासन करो" क्योंकि उनमें से सबसे बड़ा अभी भी तुम लोगों के बीच सबसे छोटा है।)। इन सभी लोगों ने पवित्र आत्मा का प्रकाशन प्राप्त कर लिया है और भविष्य में वे सभी चीन में एक साथ इकट्ठा होंगे, मानो पूर्व व्यवस्था से ऐसा हुआ हो। बड़ा लाल अजगर चौंक जाता है और विरोध करने की अपनी पूरी कोशिश करता है, लेकिन एक बात याद रखो! मेरी प्रबंधन योजना सर्वथा साकार हो गई है और कुछ भी और कोई भी व्यक्ति मेरे कदमों को बाधित करने का साहस नहीं करता है। मैं उन्हें हर समय प्रकाशन देता हूँ और वे पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करके कार्य करते हैं। वे निश्चित रूप से बड़े लाल अजगर के बंधन को नहीं भुगतेंगे क्योंकि मुझमें सभी को मुक्त और स्वतंत्र कर दिया जाता है। तुम लोग उनकी चरवाही करने के प्रारंभिक कार्य को करो इसकी प्रतीक्षा करते हुए मैंने सभी चीज़ों को उचित

तरीके से व्यवस्थित किया है। मैंने ऐसा हमेशा कहा है किंतु तुम लोगों में से अधिकांश अभी भी केवल आधा विश्वास करते हो। अभी के बारे में क्या है? तुम लोग हक्के-बक्के हो गए हो, है ना?

ये सभी बातें गौण हैं; तुम लोगों के लिए मुख्य बात समस्त प्रारंभिक कार्य को जितना जल्दी हो सके पूरा करना है। भयभीत मत हो। एकमात्र जो कार्य करता है वह मैं हूँ और जब समय आएगा, तो मैं अपना कार्य स्वयं करूँगा। मैंने बड़े लाल अजगर को चूर-चूर कर दिया है। कहने का मतलब है, मेरा आत्मा मेरे पहलौठे पुत्रों के अलावा सभी लोगों से वापस हट गया है (और अब यह प्रकट करना आसान है कि कौन बड़े लाल अजगर की संतान हैं)। इन लोगों ने मेरे लिए सेवा प्रदान करना समाप्त कर दिया है और मैं उन्हें वापस अथाह कुंड में भेज दूँगा। (इसका मतलब है कि मैं उनमें से किसी का भी उपयोग नहीं करूँगा। अब से मेरे पहलौठे पुत्रों को पूरी तरह प्रकट किया जाएगा और जो मेरी ओर हैं और जो मेरे उपयोग के लिए उपयुक्त हैं, वे मेरे पहलौठे पुत्र होंगे।) मेरे पहलौठे पुत्रों, तुम लोग आधिकारिक रूप से उन आशीषों का आनंद लेते हो जो मैं तुम लोगों को प्रदान करता हूँ (क्योंकि जिनसे मैं घृणा करता हूँ उन सभी ने अपने असली रंग दिखा दिए हैं) और अब से तुम लोगों के बीच मेरे विरुद्ध अवज्ञा के उदाहरण नहीं होंगे। तुम लोग वास्तव में मेरे बारे में एक सौ प्रतिशत निश्चित हो। (केवल आज ही यह पूरी तरह से निष्पादित होता है और इस बार मैंने पूर्वनिर्धारित किया)। जो कुछ भी तुम लोग अपने मन और मस्तिष्क में रखते हो, वह मेरे लिए अंतहीन प्रेम और सम्मान है और तुम लोग मेरी स्तुति करते हो और हर समय मुझे महिमा देते हो। तुम लोग सच में, मेरे प्रेम की देखभाल और सुरक्षा के अधीन तीसरे स्वर्ग में रह रहे हो। कितना अनुपम आनंद और खुशी! यह एक अन्य क्षेत्र है जिसकी कल्पना करना लोगों को मुश्किल लगता है—सच्ची आध्यात्मिक दुनिया!

सभी आपदाएँ एक के बाद एक उत्पन्न होती हैं, प्रत्येक अंतिम से अधिक गंभीर होती है और स्थिति दिन—प्रतिदिन अधिक तनावपूर्ण होती जाती है। यह आपदाओं की केवल शुरुआत है; आने वाली अधिक गंभीर आपदाएँ मनुष्य के लिए अकल्पनीय हैं। मेरे पुत्रों को उन्हें निबटाने दो; यह मेरा प्रशासनिक आदेश है और इसे मैंने बहुत पहले व्यवस्थित किया था। सभी संकेत और अद्‌भुत काम जो मनुष्य ने पहले कभी नहीं देखे हैं, सभी लोगों (अर्थात मेरे राज्य के सभी लोगों) के सामने एक के बाद एक प्रकट होते हुए मुझसे उत्पन्न होते हैं। किंतु यह ऐसा कुछ है, जो निकट भविष्य में होगा। चिंता मत करो। राज्य में प्रवेश, जिसके बारे में पहले प्रत्येक ने बोला है-राज्य में प्रवेश करने की अवस्था क्या है? और राज्य क्या है? क्या यह एक

भौतिक शहर है? तुम लोग ग़लत समझते हो। राज्य पृथ्वी पर नहीं है, न ही भौतिक आकाश में है, बल्कि आध्यात्मिक दुनिया है जिसे मनुष्य द्वारा देखा या छुआ नहीं जा सकता। केवल वे जिन्होंने मेरा नाम स्वीकार कर लिया है, जो मेरे द्वारा पूरी तरह से पूर्ण किए गए हैं और मेरे आशीष का आनंद लेते हैं, वे ही इसमें प्रवेश करने में समर्थ होंगे। आध्यात्मिक दुनिया जिसका पहले बार-बार उल्लेख किया गया है, वह राज्य की सतह है। सच में राज्य में प्रवेश करना, हालाँकि, कोई आसान बात नहीं है। जो लोग इसमें प्रवेश करते हैं उन्हें मेरी प्रतिज्ञा प्राप्त करनी होगी और वे ऐसे लोग होने चाहिए जिन्हें मैंने स्वयं पूर्वनियत किया है और चुना है। इसलिए आध्यात्मिक दुनिया ऐसी जगह नहीं है जहाँ लोग जैसे चाहें वैसे आ और जा सकते हैं। इस बारे में लोगों की समझ बहुत सतही हुआ करती थी और यह केवल मनुष्य की धारणाएँ ही थीं। केवल वे जो राज्य में प्रवेश करते हैं, आशीषों का आनंद ले सकते हैं, इसलिए न केवल इन आशीषों का आनंद मनुष्य नहीं ले सकता है, बल्कि इससे भी अधिक वह उन्हें देख भी नहीं सकता। यह मेरा अंतिम प्रशासनिक आदेश है।

अध्याय 94

मैं अपने पहलौठे पुत्रों के साथ सिय्योन लौटता हूँ—क्या तुम लोग इन वचनों के सही अर्थ को वास्तव में समझते हो? मैंने बार—बार तुम लोगों को याद दिलाया है कि मैं चाहता हूँ कि तुम लोग जल्दी बड़े हो जाओ और मेरे साथ शासन करो। क्या तुम लोगों को याद है? ये बातें सीधे मेरे देहधारण से संबंधित हैं : सिय्योन से दुनिया में मैं देह में आया ताकि देह के माध्यम से ऐसे लोगों के एक समूह को प्राप्त कर सकूँ, जो मेरे साथ एक मन वाले हों और ऐसा करके फिर मैं सिय्योन लौट जाऊँगा। इसका मतलब है कि हमें अभी भी देह से मूल शरीर में वापस लौटने की जरूरत है। "सिय्योन लौटने" का यही असली अर्थ है। यही मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना का सच्चा अर्थ और केंद्रबिंदु भी है और उससे भी अधिक यह मेरी प्रबंधन योजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता है और जिसे तुरंत प्राप्त किया जाएगा। जब तक कोई व्यक्ति देह में है तो वह कभी मानवीय धारणाओं और सोच से छुटकारा नहीं पा सकता, पार्थिव हवा को त्यागना, धूल से पीछा छुड़ाना तो दूर की बात है, व्यक्ति हमेशा मिट्टी ही रहेगा; केवल शरीर में रहते हुए ही व्यक्ति आशीषों का आनंद लेने का पात्र हो सकता है। आशीष क्या हैं? क्या तुम लोगों को याद है? देह में आशीषों के बारे में कोई मनन नहीं किया जा सकता है, इसलिए हर पहलौठे

पुत्र को देह से शरीर तक के पथ का अनुसरण करना होगा। देह में तुम बड़े लाल अजगर द्वारा उत्पीड़ित और सताए जाते हो (ऐसा इसलिए क्योंकि तुम्हारे पास कोई सामर्थ्य नहीं है, तुमने कोई महिमा प्राप्त नहीं की है), लेकिन शरीर में यह बहुत अलग होगा और तुम गर्व करोगे और उल्लसित होगे। उत्पीड़न के दिन पूरी तरह से चले जाएँगे और तुम हमेशा के लिए मुक्त और स्वतंत्र होगे। केवल इसी तरह से मैं अपने स्वरूप में तुम लोगों से जुड़ सकता हूँ। अन्यथा, तुम लोगों के पास केवल मेरे गुण होंगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति बाह्य रूप से किसी अन्य व्यक्ति का अनुकरण कैसे करता है, वह बिल्कुल उसी के समान नहीं हो सकता है। केवल पवित्र आध्यात्मिक शरीर में (यह शरीर को संदर्भित करता है) हम बिल्कुल समान हो सकते हैं। (यह एक ही गुण, एक ही अस्तित्व, एक ही संपत्तियों का होना और एक मन, अखंडित और अविभाजित होने में सक्षम हो पाना है क्योंकि सब पवित्र आध्यात्मिक शरीर है।)

तुम लोगों ने अब दुनिया से नफ़रत करना, खाने, कपड़े पहनने और ऐसी सभी खीझ दिलाने वाली चीज़ों में अरुचि रखना क्यों शुरू कर दिया है और इसके अलावा उनसे मुक्त होने को इतने तत्पर क्यों हो? यह संकेत है कि तुम लोग आध्यात्मिक दुनिया (शरीर) में प्रवेश करोगे और तुम सभी लोगों को इसका एक पूर्वाभास है (हालाँकि सभी को एक समान अंश में नहीं है)। मैं अपने सबसे महत्वपूर्ण कदम को पूरा करने के लिए विभिन्न लोगों, विभिन्न घटनाओं और विभिन्न चीज़ों का उपयोग करूँगा और वे सभी मेरे लिए सेवा प्रदान करेंगे। मुझे ऐसा अवश्य करना होगा। (निस्संदेह मैं इसे देह में पूरा नहीं कर सकता हूँ और केवल स्वयं मेरा आत्मा ही इस कार्य को कर सकता है क्योंकि अभी समय नहीं आया है।) यह समस्त ब्रह्मांड की दुनिया के लिए अंतिम कार्य है। हर कोई मेरी स्तुति करेगा और हर्षपूर्वक मेरी जयजयकार करेगा। मेरा महान कार्य पूरा हो गया है। ब्रह्मांड की दुनिया की ओर, सभी राष्ट्रों और सभी लोगों की ओर, पर्वतों, नदियों और सभी चीज़ों की ओर, महामारियों के सात कटोरे मेरे हाथ से उँड़ेले जाते हैं, गर्जना की सात आवाजें होती हैं, सात तुरहियाँ बजती हैं और सात मुहरें खोली जाती हैं। महामारियों के सात कटोरे क्या हैं? उनका ठीक-ठीक लक्ष्य क्या है? मैं क्यों कहता हूँ कि वे मेरे हाथ से उँड़ेले जाएँगे? हर किसी के यकीन करने और समझने के पहले एक लंबा समय बीतेगा। भले ही मैं अभी तुम्हें बता भी दूँ तब भी तुम लोग केवल एक छोटे से हिस्से को ही समझोगे। मानवीय कल्पना के अनुसार, महामारियों के सात कटोरे दुनिया के सभी देशों और लोगों पर लक्षित हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। "महामारियों के सात कटोरे" दुष्ट शैतान के प्रभाव और बड़े लाल अजगर (वह वस्तु, जिसे मैं अपने लिए सेवा प्रदान करने हेतु उपयोग करता हूँ) की

साजिश का संकेत करते हैं। उस समय मैं पुत्रों और लोगों को ताड़ित करने के लिए शैतान और बड़े लाल अजगर को मुक्त कर दूँगा, जो प्रकट करेगा कि कौन पुत्र हैं और कौन लोग हैं। धोखा खाने वाले वे हैं जो मेरे द्वारा पूर्वनियति के लक्ष्य नहीं थे, जबकि मेरे पहलौठे पुत्र उस समय मेरे साथ शासन कर रहे होंगे। इस प्रकार, मैं पुत्रों और लोगों को पूरा कर दूँगा। महामारियों के सात कटोरों को उँड़ेलने से सभी राष्ट्र और सभी लोग प्रभावित नहीं होंगे, बल्कि केवल मेरे बेटे और मेरे लोग प्रभावित होंगे। आशीष आसानी से नहीं मिलते; पूरी क़ीमत चुकाई जानी चाहिए। जब पुत्र और लोग बड़े हो जाएँगे, तो महामारियों के सात कटोरों को पूरी तरह से हटा दिया जाएगा और वे बाद में अस्तित्व में नहीं रहेंगे। "गर्जना की सात आवाजें" क्या हैं? इसे समझना मुश्किल नहीं है। जिस क्षण मैं और मेरे पहलौठे पुत्र देह बनेंगे, तो गर्जना की सात आवाजें होंगी। इससे पूरा ब्रह्मांड इस तरह डाँवाडोल हो जाएगा, मानो स्वर्ग और पृथ्वी को उल्टा कर दिया गया हो। हर किसी को इसका पता लगेगा; ऐसा कोई भी नहीं होगा जिसे इसका पता नहीं लगेगा। उस समय मैं और मेरे पहलौठे पुत्र एक साथ महिमा में होंगे और कार्य के अगले कदम को शुरू करेंगे। गर्जन के सात शब्द गूँजने की वजह से कई लोग दया और माफी के लिए घुटने टेकेंगे। किंतु यह अनुग्रह का युग अब और नहीं रहेगा : यह कोप का समय होगा। जहाँ तक उन सभी लोगों की बात है जो बुराई करते हैं (जो व्यभिचार करते हैं या काले धन में सौदा करते हैं या जिनमें पुरुषों और महिलाओं के बीच अस्पष्ट सीमाएँ हैं या जो मेरे प्रबंधन को बाधित करते हैं या नुकसान पहुँचाते हैं या जो आध्यात्मिक मामले नहीं समझते या जो दुष्ट आत्माओं के कब्ज़े में हैं, इत्यादि—मेरे चुने हुओं के अलावा सभी), उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ा जाएगा, न ही माफ़ किया जाएगा, बल्कि सभी को नरक के कुंड में उतार दिया जाएगा और वे हमेशा के लिए नष्ट हो जाएँगे! "सात तुरहियों का बजना" बड़े शत्रुतापूर्ण माहौल का संकेत नहीं करता है, न ही यह दुनिया को घोषित की जाने वाली किसी चीज़ का संकेत करता है; ये पूरी तरह से मानवीय धारणाएँ हैं। "सात तुरहियाँ" मेरे कोपपूर्ण कथन का उल्लेख करती हैं। जब मेरी वाणी (प्रतापी न्याय और कोपपूर्ण न्याय) जारी होती है, तो सात तुरहियाँ बजती हैं। (अभी मेरे घर के संदर्भ में यह सबसे गंभीर है, जिससे कोई भी बचकर नहीं निकल सकता है।) और नरक के कुंड और नरक में सभी राक्षस, बड़े या छोटे, अपने सिरों को अपने हाथों में थाम रोते और अपने दाँतों को पीसते हुए, सभी दिशाओं में भागेंगे और उनके पास मुँह छिपाने को कोई जगह नहीं होगी। इस समय सात तुरहियाँ बजना शुरू नहीं हुईं हैं, बल्कि यह मेरा प्रचंड प्रकोप है और मेरा सबसे गंभीर न्याय भी है, जिससे कोई बचकर नहीं निकल सकता और सभी को इससे

गुज़रना होगा। इस समय जो प्रकट किया गया है वह सात मुहरों की विषयवस्तु नहीं है। सात मुहरें वे आशीष हैं जिनका तुम लोग भविष्य में आनंद लोगे। "खोलना" केवल तुम लोगों को उनके बारे में बताने का संकेत है, किंतु तुमने अभी तक इन आशीषों का आनंद नहीं लिया है। जब तुम लोग आशीषों का आनंद लोगे, तब तुम सात मुहरों की विषयवस्तुओं को जानोगे। अभी तुम लोग केवल उस हिस्से पर स्पर्श कर रहे हो जो अब भी पूरा नहीं हुआ है। मैं भविष्य के कार्य में तुम लोगों को केवल कदम-दर-कदम बता सकता हूँ, ताकि तुम लोग इसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव करोगे और एक अतुलनीय महिमा महसूस करोगे और तुम लोग अंतहीन परमानंद की दशा में बने रहोगे।

पहलौठे पुत्रों के आशीष का आनंद लेने में सक्षम होना न तो कोई आसान बात है और न ही कोई ऐसी चीज़ है जिसे औसत व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। मैं एक बार फिर जोर दूँगा और अधिक बलपूर्वक कहूँगा कि मुझे अपने पहलौठे पुत्रों से सख्त अपेक्षाएँ करनी चाहिए। अन्यथा वे मेरे नाम की महिमा नहीं कर सकते हैं। जो कोई भी दुनिया में बदनाम है, मैं उसे दृढ़ता से अस्वीकार करता हूँ और इससे भी ज्यादा मैं ऐसे किसी को भी अस्वीकार करता हूँ जिसकी नैतिकता कमजोर है या जो कामुकतापूर्ण है। (उनका परमेश्वर के लोग बनने में कोई हिस्सा नहीं है—इस पर मैं विशेष रूप से जोर देता हूँ।) ऐसा मत सोचना कि तुम लोगों ने अतीत में जो किया, वह पूर्णतया समाप्त हो गया है—इस तरह की अच्छी बात कैसे हो सकती है! क्या पहलौठे पुत्र की हैसियत प्राप्त करना इतना आसान है? इसी तरह से मैं ऐसे सभी लोगों को जो मेरे खिलाफ हैं, जो मुझे मेरी देह में नहीं पहचानते, जो तब मुझमें हस्तक्षेप करते हैं जब मैं अपनी इच्छा पर चल रहा होता हूँ और जो मुझे उत्पीड़ित करते हैं, अस्वीकार करता हूँ—मैं बहुत कठोर हूँ (क्योंकि मैंने अपनी सामर्थ्य को पूरी तरह से वापस ले लिया है)! आखिर में, मैं इसी तरह ऐसे किसी को भी अस्वीकार करता हूँ, जिसे जीवन में कोई असफलता नहीं मिली है। मुझे ऐसे लोग चाहिए जो मेरी तरह अपने कष्टों से उभरते हैं, भले ही वे छोटे कष्ट हों। अगर उन्होंने कष्ट नहीं झेले हैं तो वे उनमें हैं, जिन्हें मैं लात मारकर बाहर कर दूँगा। बेशर्म मत बनो, मेरे सामने खुद का दिखावा करते हुए मेरे पहलौठे पुत्र बनना चाहते हो। मुझसे तुरंत दूर हो जाओ! तुमने मेरी कृपा पाने की कोशिश में पहले मुझे मामूली बातें बताई हैं! यह अंधापन है! क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं तुम कमबख्त से नफ़रत करता हूँ! क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारे संदेहात्मक व्यवसाय को नहीं जानता? तुम बार—बार छिपते हो! क्या तुम्हें नहीं पता कि तुमने अपने शैतान चेहरे को दिखा दिया है? यद्यपि लोग इसे नहीं देख सकते हैं, क्या तुम्हें लगता है कि मैं इसे नहीं देख सकता? जो मेरे

लिए सेवा प्रदान करते हैं, वे अच्छे नहीं हैं बल्कि कमबख्तों का झुंड है। मुझे उनसे निपटना होगा और मैं उन्हें अथाह कुंड में फेंककर जला दूँगा!

तुम अनैतिक ढंग से बोलते हो, अविश्वासपूर्वक काम करते हो और दूसरों के साथ सही तरीके से सहयोग नहीं करते; कि ऐसा व्यक्ति अब भी राजा बनना चाहता है—क्या तुम सपना नहीं देख रहे हो? क्या तुम भ्रांति में नहीं हो? क्या तुम्हें नहीं दिखाई देता कि तुम क्या हो? तुम एक कमबख्त हो! क्या ऐसे व्यक्ति का कोई उपयोग है? मेरी नज़र से जल्दी से दूर हो जाओ! जो कुछ भी मैं कह रहा है, उसे प्रत्येक व्यक्ति को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए, मेरे वचनों से प्रेरित होना, मेरी सर्वशक्तिमत्ता को पहचानना और मेरी बुद्धि को जानना चाहिए। अक्सर यह कहा गया है कि पवित्र आध्यात्मिक शरीर प्रकट हुआ है। आखिरकार, क्या तुम लोग कहोगे कि पवित्र आध्यात्मिक शरीर प्रकट हुआ है या नहीं? क्या जो मैं कहता हूँ वह खोखली बात है? पवित्र आध्यात्मिक शरीर क्या है? किन परिस्थितियों में पवित्र आध्यात्मिक शरीर का अस्तित्व होता है? मनुष्यों के लिए यह अकल्पनीय है और इसे समझा नहीं जा सकता है। मैं तुम लोगों को बताता हूँ : मैं दोषरहित हूँ और मुझ में सब कुछ खुला है और सभी चीजें मुक्त हैं (क्योंकि मैं बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करता हूँ और स्वतंत्र रूप से बोलता हूँ)। मेरे द्वारा की जाने वाली चीज़ों में कुछ भी शर्मनाक नहीं है और सब कुछ प्रकाश में किया जाता है, ताकि हर एक को पूरी तरह से आश्वस्त किया जा सके। इसके अलावा, कोई भी व्यक्ति मेरे विरुद्ध उनका उपयोग करने के लिए उनमें किसी चीज़ को गिरफ्त में नहीं ले सकता। यह "पवित्र आध्यात्मिक शरीर" में "पवित्र" की एक व्याख्या है। इसलिए मैंने बार—बार जोर दिया है कि मुझे उन लोगों में से ऐसा कोई नहीं चाहिए, जो शर्मनाक चीज़ें करता हो। यह मेरे प्रशासनिक आदेशों की एक मद है और मेरे स्वभाव का एक हिस्सा भी है। "आध्यात्मिक शरीर" मेरे कथनों की ओर संकेत करता है। जो मैं कहता हूँ, उसका हमेशा उद्देश्य होता है, उसमें हमेशा बुद्धि होती है, किंतु नियंत्रण के अधीन नहीं होता है। (मैं जो कहना चाहता हूँ वह कहता हूँ और यह मेरा आत्मा है, जो उसकी वाणी उच्चारित कर रहा है और यह मेरा व्यक्तित्व है जो बोल रहा है)। मैं जो कहता हूँ वह उदारता से प्रकट किया जाता है और जब यह लोगों की धारणाओं को पूरा नहीं करता, तो वह लोगों को प्रकट करने का समय होता है। यह मेरी उचित व्यवस्था है। इसलिए, जब कभी भी मैं जो व्यक्ति हूँ, वह बोलता या कार्य करता है, तो यह शैतान के सार को उजागर करने का हमेशा एक अच्छा अवसर होता है। जब मैं जो व्यक्ति हूँ, उसे अभिषिक्त किया गया है तो पवित्र आध्यात्मिक शरीर उभरता है। भविष्य में, "पवित्र

आध्यात्मिक शरीर", शरीर को संदर्भित करेगा और इस अर्थ के दो पहलू हैं। अर्थ का एक पहलू है वर्तमान में और अर्थ का अन्य पहलू है भविष्य में। किंतु भविष्य में पवित्र आध्यात्मिक शरीर वर्तमान से बहुत भिन्न होगा—यह अंतर स्वर्ग और पृथ्वी के बीच अंतर के समान होगा। कोई भी इसकी थाह नहीं पा सकता है और मुझे इसे तुम लोगों के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रकट करना होगा।

अध्याय 95

लोगों को लगता है कि हर चीज़ बेहद सरल है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। हर चीज़ के भीतर रहस्य छिपे होते हैं, मेरी बुद्धि और मेरी व्यवस्था निहित होती है। किसी भी विवरण को अनदेखा नहीं किया जाता, हर चीज़ मेरे द्वारा व्यवस्थित की जाती है। उन सभी को विशेष दिन का न्याय भुगतना पड़ता है जो मुझे ईमानदारी से प्रेम नहीं करते (याद रखो, विशेष दिन के न्याय का लक्ष्य हर वह व्यक्ति है जो इस नाम को प्राप्त करता है) और उन्हें रोना तथा दाँत पीसने पड़ते हैं। विलाप की यह आवाज़ अधोलोक और नरक से आती है; उस दिन लोग नहीं, बल्कि राक्षस रोते हैं। मेरा न्याय उन्हें रुलाता है, लोगों को मेरी प्रबंधन योजना का अंतिम उद्धार प्राप्त होता है। मुझे कुछ लोगों से थोड़ी उम्मीदें थी। लेकिन अभी का नज़ारा देखते हुए, मुझे इन लोगों को एक-एक करके त्यागना होगा, क्योंकि मेरा कार्य इस चरण तक आ गया है और इसे कोई नहीं बदल सकता। जो लोग मेरे ज्येष्ठ पुत्र या मेरे लोग नहीं हैं, उन्हें त्याग दिया जाना चाहिए और यहाँ से निकल जाना चाहिए! तुम लोगों को समझना चाहिए कि चीन में, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों और मेरे लोगों के अलावा, अन्य सभी बड़े लाल अजगर की संतान हैं और उन्हें त्याग दिया जाना चाहिए। तुम लोगों को समझना चाहिए कि आखिरकार चीन मेरे द्वारा शापित राष्ट्र है और वहाँ मेरे कुछ लोग हैं जो भविष्य के मेरे कार्य के लिए सेवा प्रदान करने वालों से अधिक कुछ नहीं हैं। इसे दूसरे ढंग से कहें तो, वहाँ मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा और कोई नहीं है—बाकी सब नष्ट होने के लिए हैं। यह मत सोचो कि मैं अपने कर्मों में बहुत अति करता हूँ—यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। जो मेरे शाप से पीड़ित होते हैं वे मेरी नफ़रत की वस्तुएँ हैं और यह पत्थर की लकीर है। मैं कोई गलती नहीं करता; यदि मैं किसी ऐसे को देखता हूँ जो मुझे अप्रसन्न करता है तो मैं उसे लात मार कर बाहर निकाल दूँगा और यह पर्याप्त सबूत है कि तू मेरे द्वारा शापित है और बड़े लाल अजगर का वंशज है। मैं तुझे फिर से समझा दूँ कि चीन में केवल मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं (सेवा प्रदान करन वाले मेरे लोगों के अलावा) और यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। लेकिन मेरे ज्येष्ठ पुत्र बहुत

कम हैं और सभी मेरे द्वारा पूर्वनियत हैं—मुझे पता है कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं तेरी नकारात्मकता से नहीं डरता और मैं इस बात से भी नहीं डरता कि तू पलट कर मुझे काट लेगा, क्योंकि मेरे अपने प्रशासनिक आदेश हैं और मुझमें कोप है। अर्थात्, मेरे हाथ में बड़ी आपदाएँ हैं और मुझे किसी चीज़ का डर नहीं है, क्योंकि मैंने सभी चीज़ों को पहले ही प्राप्त कर लिया गया मानता हूँ और जब वह दिन आएगा तो मैं पूरी तरह से तुझ पर कार्रवाई करूँगा। इंसान किसी को भी मेरा ज्येष्ठ पुत्र बनाने के लिए पूर्ण या शिक्षित नहीं कर सकता, बल्कि यह पूरी तरह से मेरी पूर्वनियति पर निर्भर करता है। जिस किसी को भी मैं कहता हूँ कि वह ज्येष्ठ पुत्र है तो वह ज्येष्ठ पुत्र है; मुझसे स्पर्धा करने या इसे छीनने की कोशिश मत करो। सभी चीजें मुझ सर्वशक्तिमान स्वयं परमेश्वर पर निर्भर करती हैं।

एक दिन मैं तुम सभी लोगों को यह देखने दूँगा कि मेरे प्रशासनिक आदेश क्या हैं और मेरा कोप क्या है (सब मेरे सामने घुटने टेकेंगे, मेरी आराधना करेंगे, मुझसे क्षमा माँगेंगे और सभी आज्ञाकारिता में रहेंगे; अभी मैं केवल अपने ज्येष्ठ पुत्रों को इसका एक हिस्सा देखने देता हूँ)। मैं बड़े लाल अजगर की सभी संतानों को दिखाऊँगा कि मैंने अपने ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बनाने के लिए कई लोगों (मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को छोड़कर सभी को) को बलिदान देने के लिए चुना है, कि मैंने बड़े लाल अजगर को उसी के कुटिल षड्यंत्र में फँसा दिया है। (मेरी प्रबंधन योजना में, बड़ा लाल अजगर मेरी प्रबंधन योजना को बाधित करने के लिए उन लोगों को —मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा हर एक को—भेजता है जो मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं; फिर भी वह अपने ही कुटिल षड़यंत्र में फँस गया है और वे सभी मेरे कार्य के लिए सेवा प्रदान करते हैं। यह मुझे सेवा प्रदान करने के लिए सभी को संगठित करने के वास्तविक अर्थ का एक हिस्सा है)। आज, जब सभी चीजें प्राप्त कर ली गई हैं, तो मैं उन सभी का निपटारा करूँगा, उन्हें अपने पैरों के नीचे कुचल दूँगा, इसके माध्यम से मैं बड़े लाल अजगर को अपमानित करूँगा और उसे पूरी तरह से शर्मिंदा कर दूँगा (वे आशीष प्राप्त करने के लिए धोखाधड़ी का मार्ग अपनाने का प्रयास करते हैं, लेकिन उन्होंने कभी नहीं सोचा होगा कि वे मेरे लिए सेवा प्रदान करेंगे)—यह मेरी बुद्धि है। यह सुनकर, लोग सोचते हैं कि मैं भावनाओं या दया से रहित हूँ, मुझमें मानवता नहीं है। मैं वास्तव में शैतान के प्रति भावनाओं या करुणा से रहित हूँ, इसके अलावा मैं स्वयं परमेश्वर हूँ जो मानवता से बढ़ कर है। तू कैसे कह सकता है कि मैं मानवता सहित परमेश्वर हूँ? क्या तू नहीं जानता कि मैं दुनिया का नहीं हूँ? क्या तू नहीं जानता कि मैं सभी चीज़ों से ऊपर हूँ? मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा, मेरे जैसा कोई नहीं है, ऐसा कोई नहीं है जिसका स्वभाव मेरे जैसा हो (मानवीय स्वभाव नहीं

बल्कि दिव्य स्वभाव) और ऐसा कोई नहीं है जिसमें मेरे गुण हों।

जब आध्यात्मिक दुनिया का द्वार खुलेगा, तो तुम लोग सभी रहस्यों को देखोगे, जिससे तुम लोग एक पूरी तरह से मुक्त क्षेत्र में प्रवेश करने में, मेरे प्रेमपूर्ण आलिंगन में प्रवेश करने में और मेरे अनंत आशीषों में प्रवेश करने में सक्षम बनोगे। मेरे हाथों ने हमेशा मानवजाति को सहारा दिया है। लेकिन मानवजाति का एक हिस्सा ऐसा है जिसे मैं बचाऊँगा और एक हिस्सा ऐसा है जिसे मैं नहीं बचाऊँगा। (मैं "सहारा" कहता हूँ क्योंकि यदि मैंने पूरी दुनिया को सहारा नहीं दिया होता, तो यह बहुत पहले ही अधोलोक में गिर गयी होती।) इसका एहसास करो! यह मेरी प्रबंधन योजना है। और मेरी प्रबंधन योजना क्या है? मैंने मानवजाति को बनाया, किन्तु मैंने कभी भी हर एक व्यक्ति को प्राप्त करने की नहीं, बल्कि केवल मानवजाति के एक छोटे से हिस्से को प्राप्त करने की योजना बनाई थी। तो मैंने इतने सारे लोगों को किसलिए बनाया? मैं पहले कह चुका हूँ कि मेरे साथ, पूरी स्वतंत्रता और मुक्ति है और मैं जो कुछ भी चाहता हूँ वही करता हूँ। जब मैंने मानवजाति का सृजन किया, तो यह केवल इसलिए था कि वह एक सामान्य जीवन जी सके और फिर मानवजाति का एक छोटा सा हिस्सा उठ सके जो मेरे ज्येष्ठ पुत्र, मेरे पुत्र और मेरे लोग होंगे। यह कहा जा सकता है कि मेरे ज्येष्ठ पुत्रों, मेरे लोगों और मेरे पुत्रों के अलावा, सभी लोग, चीज़ें और वस्तुएँ सभी सेवाकर्मी हैं और सभी को नष्ट होना है। इस तरह से मेरी पूरी प्रबंधन योजना का समापन होगा। यह मेरी प्रबंधन योजना है, यह मेरा कार्य है और ये वो चरण हैं जिनके अनुसार मैं कार्य करता हूँ। जब सब कुछ खत्म हो जाएगा तो मैं पूरी तरह आराम करूँगा। उस समय, सब कुछ ठीक होगा; और सब-कुछ शांतिपूर्ण और सुरक्षित होगा।

मेरे कार्य की गति इतनी तेज़ है कि कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। यह दिन-प्रतिदिन बदलती रहती है और जो गति नहीं बनाए रख सकता, उसे नुकसान होगा; इंसान केवल हर दिन नई रोशनी को कसकर थामे रह सकता है (यद्यपि मेरा प्रशासनिक आदेश, दर्शन और सत्य जिसकी मैं संगति करता हूँ, कभी नहीं बदलते)। मैं हर दिन क्यों बोलता हूँ? मैं लगातार तुझे क्यों प्रबुद्ध करता हूँ? क्या तू सच्चे अर्थ को समझता है? अधिकांश लोग अभी भी हँसी-मज़ाक करते रहते हैं, वे गंभीर नहीं हो पाते। वे मेरे वचनों पर कोई ध्यान नहीं देते, लेकिन जब वे उन्हें सुनते हैं तो बस एक सरसरी उत्कंठा महसूस करते हैं। उसके बाद, मेरे वचनों को शीघ्र ही भूलकर, अपनी पहचान से अनजान और लापरवाह हो जाते हैं। क्या तू जानता है कि तेरी हैसियत क्या है? कोई मेरे लिए सेवा प्रदान करता है या नहीं अथवा उसे मेरे द्वारा

पूर्वनियत और चुना जाता है या नहीं, इसे केवल मेरे हाथ तय करते हैं; इसे कोई इसे बदल नहीं सकता है—यह मुझे ही करना होता है, उन्हें मुझे ही चुनना और पूर्वनियत करना होगा। कौन कहने का साहस करता है कि मैं एक अज्ञानी परमेश्वर हूँ? मेरा बोला हर वचन और हर कार्य मेरी बुद्धि है। कौन एक बार फिर से मेरे प्रबंधन को बाधित करने या मेरी योजनाओं को नष्ट करने का साहस करता है? मैं निश्चित रूप से उन्हें माफ नहीं करूँगा! समय मेरे हाथों में रहता है और मुझे किसी विलंब का भय नहीं है; क्या मैं ही एकमात्र वह नहीं हूँ जो अपनी प्रबंधन योजना के समाप्त होने का समय तय करता है? क्या यह सब मेरे एक विचार पर निर्भर नहीं करता? जब मैं कहता हूँ कि यह पूरा हो गया, तो यह पूरा हो गया और जब मैं कहता हूँ कि यह समाप्त हो गया तो समाप्त हो गया। मुझे कोई जल्दबाजी नहीं है और मैं उचित व्यवस्थाएँ करूँगा। मनुष्य को मेरे कार्य में अपनी टाँग नहीं अड़ानी चाहिए और उसे मेरे लिए कार्य वैसे नहीं करना चाहिए जैसा वह चाहे। जो कोई भी अपनी टाँग अड़ाता है मैं उसे शाप देता हूँ—यह मेरे प्रशासनिक आदेशों में से एक है। मैं अपना कार्य स्वयं करता हूँ, मुझे किसी अन्य की आवश्यकता नहीं है (मैं उन सेवाकर्मियों को कार्य करने की अनुमति देता हूँ, अन्यथा वे उतावलेपन से या बिना देखे कार्य करने की हिम्मत नहीं करते)। समस्त कार्य मेरे द्वारा व्यवस्थित किया जाता है, मेरे द्वारा तय किया जाता है, क्योंकि मैं ही एकमात्र स्वयं परमेश्वर हूँ।

दुनिया के सभी राष्ट्र एक-दूसरे के साथ ताकत और लाभ के लिए होड़ करते हैं, जमीन के लिए लड़ाई करते हैं, लेकिन चिंतित न हों, क्योंकि ये सभी चीज़ें मेरी सेवा में हैं। मैं क्यों कहता हूँ कि वे मेरी सेवा में हैं? मैं अँगुली उठाए बिना ही कार्य करता हूँ। शैतानों का न्याय करने के लिए मैं सबसे पहले उनमें आपस में विवाद करवाता हूँ और अंत में उनका ध्वंस कर देता हूँ और उन्हें उनके ही कुटिल षड्यंत्रों में फँसा देता हूँ (वे ताकत के लिए मेरे साथ होड़ करना चाहते हैं, लेकिन अंत में वे मेरे लिए सेवा प्रदान करने लगते हैं)। मैं केवल बोलता हूँ और आदेश देता हूँ और हर कोई वही करता है जो मैं कहता हूँ, अन्यथा मैं उसे तुरंत नष्ट कर देता हूँ। ये सारी चीज़ें मेरे न्याय का हिस्सा हैं, क्योंकि मैं सभी चीज़ों को नियंत्रित करता हूँ, सभी चीज़ें मेरे द्वारा नियत की जाती हैं। जो कोई भी कुछ भी करता है तो वह ऐसा अनजाने में करता है, मेरी ही व्यवस्था के अनुसार ऐसा कर रहा होता है, मुझे आशा है कि तुम लोग शीघ्र ही घटने वाली घटनाओं में मेरी बुद्धि से भरपूर हो सकते हो। इसके प्रति लापरवाही का रवैया न अपनाओ, बल्कि जब तुम लोगों पर मुसीबत आए तो मेरे और करीब आ जाओ; मेरी ताड़ना को अपमानित करने और शैतान के कुटिल

षड्यंत्रों में फँसने से बचने के लिए हर बात में अधिक सावधान और सतर्क रहो। तुम लोगों को मेरे वचनों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करनी चाहिए, जानना चाहिए कि मैं कौन हूँ, देखना चाहिए कि मेरे पास क्या है। तुम लोगों को मेरे सार्थक रूप के अनुसार कार्य करना चाहिए, लापरवाही से कार्य नहीं करना चाहिए। वह करो जो मैं करता हूँ और वह कहो जो मैं कहता हूँ। मैं ये बातें तुम लोगों को पहले ही कह देता हूँ ताकि तुम लोग गलतियाँ करने से बच सको और लालच में न पड़ो। "मेरा अस्तित्व" क्या है? "मेरा स्वरूप" क्या है? क्या तुम लोग वास्तव में जानते हो? जिस पीड़ा को मैं सहन करता हूँ वह मेरे अस्तित्व का हिस्सा है, क्योंकि यह मेरी सामान्य मानवता का हिस्सा है, मेरे अस्तित्व को मेरी पूर्ण दिव्यता में भी पाया जा सकता है—क्या तुम लोग यह जानते हो? मेरा अस्तित्व दो पहलुओं से बना है: एक पहलू मेरी मानवता का है, जबकि दूसरा मेरी पूर्ण दिव्यता का है। ये दो पहलू मिलकर ही पूर्ण स्वयं परमेश्वर बनता है। मेरी पूर्ण दिव्यता में बहुत-सी चीजें शामिल हैं : मैं किसी भी व्यक्ति, पदार्थ या चीज़ से बाधित नहीं होता; मैं सभी वातावरणों से बढ़कर हूँ; मैं समय, स्थान या भूगोल के किसी भी प्रतिबंध से परे हूँ; मैं सभी लोगों, मामलों और चीज़ों को अच्छी तरह जानता हूँ; तब भी मैं हाड़-माँस का हूँ और मूर्त रूप में उपस्थित हूँ; मैं तब भी लोगों की नज़रों में यही व्यक्ति हूँ, लेकिन प्रकृति बदल गई है—यह देह नहीं, शरीर है। ये चीज़ें इसका एक छोटा-सा हिस्सा मात्र हैं। मेरे सभी ज्येष्ठ पुत्र भी भविष्य में इसी तरह के होंगे; इसी मार्ग पर चलना चाहिए, जो अभिशप्त हो गए हैं वे बच नहीं सकते। जब मैं यह कर रहा हूँ, तो उन सभी को जिन्हें पूर्वनियत नहीं किया गया है, निष्कासित कर दिया जाएगा (क्योंकि शैतान यह देखने के लिए मेरा परीक्षण कर रहा है कि मेरे वचन अचूक हैं या नहीं)। जो लोग पूर्वनियत हैं वे इससे बच नहीं सकते हैं, चाहे वे कहीं भी चले जाएँ, फलस्वरूप तुम लोग मेरे इस कार्य के पीछे के सिद्धांतों को देखोगे। "मेरे स्वरूप" का अर्थ है मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान, मेरी साधन-संपन्नता और मेरे द्वारा बोला गया हर वचन। यह मेरी मानवता और मेरी दिव्यता दोनों में है। अर्थात्, वह सब-कुछ जो मेरी मानवता और मेरी दिव्यता द्वारा किया जाता है वही मेरा स्वरूप है; कोई भी इन चीज़ों को न तो दूर कर सकता है और न ही उन्हें हटा सकता है, वे मेरे कब्जे में हैं और उन्हें कोई बदल नहीं सकता। यह मेरा सबसे गंभीर प्रशासनिक आदेश है (क्योंकि मनुष्य की अवधारणाओं में, बहुत सी चीज़ें जो मैं करता हूँ वे उसकी अवधारणाओं के अनुरूप नहीं है और मनुष्य की समझ से परे हैं; हर व्यक्ति इस आदेश का अपमान बड़ी आसानी से कर देता है और यह सबसे कठोर भी है। इसलिए उसमें उनका जीवन नुकसान उठाता है)। मैं फिर से कहूँगा, तुम लोगों को उसके प्रति एक शुद्ध अंतःकरण वाला

दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जिसे करने के लिए मैं तुम लोगों को उपदेश देता हूँ—तुम लोगों को लापरवाह नहीं होना चाहिए!

अध्याय 96

मैं अपने समस्त कोप, अपने असीम सामर्थ्य और अपनी पूरी बुद्धि को प्रकट करने के लिए, मुझसे जन्मे हर उस व्यक्ति को ताड़ना दूँगा जो अभी तक मुझे नहीं जानता है। मुझमें सब कुछ धार्मिक है, कोई अधार्मिकता, कोई धोखेबाज़ी और कोई कुटिलता नहीं है; जो कोई भी कुटिल और धोखेबाज़ है, वह अवश्य ही अधोलोक में पैदा हुआ नरक का पुत्र होगा। मुझमें सब कुछ प्रत्यक्ष है; जो कुछ भी मैं कहता हूँ कि पूरा होगा, वह यकीनन पूरा होगा; जो कुछ भी मैं कहता हूँ कि स्थापित होगा, वह ज़रूर स्थापित होगा, और कोई भी इन चीज़ों को बदल नहीं सकता या इनकी नकल नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ही एकमात्र स्वयं परमेश्वर हूँ। जो आने वाला है उसमें, मेरे पूर्वनियत और चयनित प्रथम संतानों के समूह वाला हर व्यक्ति एक-एक करके प्रकट किया जाएगा और जो कोई प्रथम संतानों के समूह में नहीं है, उसे इसके माध्यम से मेरे द्वारा निकाल दिया जाएगा। मैं अपना कार्य इसी तरह करता हूँ और उसे पूरा करता हूँ। अभी मैं केवल कुछ लोगों को ही उजागर कर रहा हूँ ताकि मेरी प्रथम संतानें मेरे अद्भुत कर्मों को देख सकें, किन्तु बाद में मैं इस तरह से कार्य नहीं करूँगा। बल्कि, बजाय इसके कि वे एक-एक करके अपनी वास्तविक प्रकृति दिखाएँ, मैं सामान्य स्थिति से आगे बढ़ूँगा (क्योंकि मूल रूप से सभी दुष्ट की तरह ही होते हैं, उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए केवल कुछ को छाँटना ही पर्याप्त है)। मेरी सभी प्रथम संतानें अपने हृदय में स्पष्ट हैं, और मुझे इसे और विस्तारपूर्वक कहने की कोई आवश्यकता नहीं है (क्योंकि नियत समय पर वे निश्चित रूप से एक के बाद एक प्रकट किए जाएँगे)।

अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करना मेरा स्वभाव है और मुझमें कुछ भी छुपा हुआ या अप्रकट नहीं है। जो कुछ भी तुम लोगों को समझना चाहिए, मैं वह सब तुम लोगों को बताऊँगा, किन्तु जो कुछ तुम्हें पता नहीं होना चाहिए, मैं वह तुम लोगों को बिल्कुल नहीं बताऊँगा, शायद तुम लोग अडिग न रह पाओ। तुच्छ चीजों से चिपके न रहो जिससे कि महत्वपूर्ण चीज़ें छूट जाएँ—ऐसा करना निरर्थक होगा। विश्वास करो कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ और सब-कुछ सम्पन्न हो जाएगा, सब आसान और सुखद हो जाएगा। मैं इसी तरह से कार्य करता हूँ। जो विश्वास करता है, मैं उसे देखने देता हूँ, और जो विश्वास नहीं करता, मैं उसे

जानने नहीं देता और मैं उसे कभी समझने नहीं देता। मुझमें कोई भावना या दया नहीं है, जो कोई मेरी ताड़ना को अपमानित करता है, मैं खुद को रोके बिना उसे मार डालूँगा और मैं उन सभी के साथ यही व्यवहार करूँगा। मैं सभी के प्रति समान हूँ—मुझमें कोई व्यक्तिगत भावना नहीं है और मैं किसी भी तरह भावुकतावश कार्य नहीं करता। इसके द्वारा लोग मेरी धार्मिकता और प्रताप को कैसे नहीं देख सके? यह मेरी बुद्धि और मेरा स्वभाव है, जिसे कोई नहीं बदल सकता, और कोई भी पूरी तरह से नहीं जान सकता। हर चीज़ हर समय मेरे हाथों के नियंत्रण में है, और मैं सदैव हर चीज़ को मेरी सेवा करने हेतु मेरा आज्ञाकारी होने के लिए व्यवस्थित करता हूँ। मेरी प्रबंधन योजना को पूरा करने के लिए अनगिनत लोग मेरी ओर से सेवा प्रदान कर रहे हैं, किन्तु अंत में वे आशीष देखते हैं लेकिन उनका आनंद नहीं ले पाते—कितने अफसोस की बात है! किन्तु कोई भी मेरे हृदय को नहीं बदल सकता। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञा है (जब भी प्रशासनिक आदेशों का उल्लेख किया जाता है, तो यह ऐसी चीज़ को संदर्भित करता है, जिसे कोई नहीं बदल सकता, इसलिए जब मैं भविष्य के बारे में बात करता हूँ, तब यदि किसी चीज़ पर मैंने अपना मन बना लिया है, तो वह निश्चित रूप से मेरा प्रशासनिक आदेश है। याद रखो! इसका अपमान मत करो, अन्यथा तुम लोग नुकसान उठाओगे), और यह मेरी प्रबंधन योजना का हिस्सा भी है। यह मेरा अपना कार्य है, यह ऐसा कार्य नहीं है जिसे कोई भी व्यक्ति कर सके। मुझे यह करना है—मुझे इसे व्यवस्थित करना है, जो मेरी सर्वशक्तिमत्ता को दर्शाने और मेरे कोप को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है।

अधिकांश लोग मेरी मानवता के बारे में अभी भी नहीं जानते, वे अभी भी स्पष्ट नहीं हैं। मैंने यह बात कई बार बता चुका हूँ, किन्तु तुम लोग अभी भी अस्पष्ट हो, तुम लोगों की समझ में अधिक नहीं आता। किन्तु यह मेरा कार्य है, और अब इस समय जो कोई भी जानता है, वह जानता है, और जो नहीं जानता, मैं उसे विवश नहीं करता। यह केवल इसी तरह से हो सकता है। मैंने इसे स्पष्ट रूप से बता चुका हूँ, आगे इसके बारे में नहीं बताऊँगा (क्योंकि मैं बहुत अधिक बता चुका हूँ, और बहुत स्पष्ट रूप से बता चुका हूँ। जो मुझे जानता है उसमें निश्चित रूप से पवित्र आत्मा का कार्य है और वह निस्संदेह मेरी प्रथम संतानों में से एक है। जो मुझे नहीं जानता, वह निश्चित रूप से मेरा पुत्र नहीं है, जिससे यह सिद्ध होता है कि मैंने पहले ही उससे अपनी आत्मा को वापस ले लिया है)। किन्तु अंत में, मैं हर एक को अपना ज्ञान करा दूँगा—पूरी तरह से अपना ज्ञान करा दूँगा, अपनी मानवता का भी और अपनी दिव्यता का भी। ये मेरे कार्य के चरण हैं, और मुझे इसी तरह से कार्य करना है। यह मेरा प्रशासनिक आदेश भी है। हर एक को मुझे ही एकमात्र

सच्चा परमेश्वर कहना और निरंतर मेरी स्तुति और जयजयकार करनी है।

मेरी प्रबंधन योजना पहले ही पूरी हो चुकी है, और हर कार्य बहुत पहले ही सम्पन्न हो चुका है। मनुष्य की आँखों को ऐसा लगता है मानो मेरा बहुत-सा कार्य अभी चल रहा है, किन्तु मैंने इसे पहले ही ठीक से व्यवस्थित कर दिया है और मात्र मेरे कदमों के अनुसार एक बार में एक कार्य के अनुसार उनका पूरा होना शेष है (क्योंकि दुनिया के सृजन से पहले ही मैंने पूर्वनियत कर दिया था कि कौन परीक्षण के दौरान दृढ़ रहने में सक्षम है, किसे मेरे द्वारा चुना और पूर्वनियत नहीं किया जा सकता और कौन मेरी पीड़ा को साझा नहीं कर सकता। जो मेरी पीड़ा को साझा कर सकते हैं, अर्थात् जो मेरे द्वारा पूर्वनियत किए और चुने गए हैं, उन्हें मैं निश्चित रूप से अपने साथ रखूँगा और उन्हें हर चीज़ से परे जाने में सक्षम बनाऊँगा)। मैं इस बारे में अपने हृदय में स्पष्ट हूँ कि कौन किस भूमिका में है। मुझे अच्छी तरह से पता है कि कौन मेरे लिए सेवा प्रदान करता है, कौन प्रथम संतान है और कौन मेरी संतानों और मेरे लोगों में से है। मैं इसे बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। अतीत में मैंने जिसे प्रथम संतान कहा था, वह अभी भी प्रथम संतान ही है, और अतीत में मैंने जिसे प्रथम संतान नहीं कहा, वह अभी भी प्रथम संतान नहीं है। मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसका मुझे खेद नहीं होता और मैं उसे आसानी से नहीं बदलता। जो मैं कहता हूँ उसके मायने होते हैं (मुझमें कुछ भी तुच्छ नहीं है) और वह कभी नहीं बदलता! जो मेरे लिए सेवा प्रदान करते हैं, वे सदैव मुझे सेवा प्रदान करते हैं: वे मेरे मवेशी हैं; वे मेरे घोड़े हैं (किन्तु इन लोगों की आत्मा को कभी प्रबुद्ध नहीं किया गया है; जब मैं उनका उपयोग करता हूँ तो वे उपयोगी होते हैं, किन्तु जब मैं उनका उपयोग नहीं करता तो मैं उन्हें मार डालता हूँ। जब मैं मवेशियों और घोड़ों की बात करता हूँ, तो मेरा मतलब होता है कि उनकी आत्मा प्रबुद्ध नहीं हैं, जो मुझे नहीं जानते और जो मेरी अवज्ञा करते हैं और यदि वे आज्ञाकारी, विनम्र, सरल और ईमानदार हो भी जाएँ, तब भी वे असली मवेशी और घोड़े ही रहेंगे)। अब अधिकांश लोग यूँ ही बात करते हुए और पागलों की तरह हँसते हुए, अपमानजनक ढंग से व्यवहार करते हुए, मेरे सामने आवारा और निरंकुश रहते हैं—वे केवल मेरी मानवता देखते हैं, मेरी दिव्यता नहीं देखते। मेरी मानवता में इनका ऐसा व्यवहार अनदेखा किया जा सकता है और मैं उन्हें क्षमा कर सकता हूँ, किन्तु मेरी दिव्यता में यह इतना आसान नहीं है। भविष्य में मैं यह तय करूँगा कि तुमने ईशनिंदा का पाप किया है। दूसरे शब्दों में, मेरी मानवता को अपमानित किया जा सकता है, किन्तु मेरी दिव्यता को नहीं, और जो कोई भी मेरे साथ थोड़ा-सा भी प्रतिकूल होगा, मैं बिना किसी विलंब के, तुरंत उसका न्याय करूँगा। ऐसा मत सोचना

कि चूँकि तुम मेरे साथ कई वर्षों से जुड़े रहे हो, मुझसे परिचित हो गए हो, तो तुम स्वच्छंदता से बोल सकते हो, कार्य कर सकते हो। मैं वाकई परवाह नहीं करता! चाहे कोई भी हो, मैं उसके साथ धार्मिकता से व्यवहार करूँगा। यही मेरी धार्मिकता है।

मेरे रहस्य दिन-प्रतिदिन लोगों के सामने प्रकट होते जाते हैं और प्रकाशन के चरणों के बाद, वे दिन-ब-दिन स्पष्ट होते जाते हैं, जो मेरे कार्य की गति को दर्शाने के लिए पर्याप्त है। यह मेरी बुद्धि है (मैं इसे सीधे नहीं कहता। मैं अपनी प्रथम संतानों को प्रबुद्ध कर देता हूँ और बड़े लाल अजगर की संतान को अंधा कर देता हूँ)। इसके अलावा, आज मैं अपने पुत्र के माध्यम से तुम्हारे लिए अपने रहस्य प्रकट करूँगा। जो चीज़ें लोगों के लिए अकल्पनीय हैं, उन्हें आज मैं तुम लोगों के लिए प्रकट करूँगा ताकि तुम लोग उन्हें पूरी तरह से जान सको और उनकी एक स्पष्ट समझ बना सको। इसके अलावा, यह रहस्य मेरी प्रथम संतानों के अतिरिक्त हर किसी में विद्यमान है, किन्तु कोई इसे समझ नहीं सकता। यद्यपि यह प्रत्येक व्यक्ति के भीतर है, फिर भी कोई इसे पहचान नहीं पाता। मैं क्या कह रहा हूँ? इस अवधि में मेरे कार्य में और मेरे कथनों में, मैं प्रायः बड़े लाल अजगर, शैतान, दुष्ट और महादूत का उल्लेख करता हूँ। वे क्या हैं? उनके आपसी संबंध क्या हैं? इन चीज़ों में क्या अभिव्यक्त होता है? बड़े लाल अजगर की अभिव्यक्ति मेरे प्रति प्रतिरोध, मेरे वचनों के अर्थों की समझ और बोध की कमी, बार-बार मेरा उत्पीड़न और मेरे प्रबंधन को बाधित करने के लिए षड़यंत्र करने की कोशिश करना है। शैतान इस प्रकार से अभिव्यक्त होता है: सामर्थ्य के लिए मेरे साथ संघर्ष करना, मेरे चुने हुए लोगों पर कब्ज़ा करने की इच्छा करना और मेरे लोगों को धोखा देने के लिए नकारात्मक बातें करना। शैतान (जो लोग मेरे नाम को स्वीकार नहीं करते, जो विश्वास नहीं करते, वे सभी शैतान हैं) की अभिव्यक्तियाँ इस प्रकार हैं: देह के सुखों की अभिलाषा करना, वासनाओं में लिप्त होना, शैतान के बंधन में रहना, कुछ लोगों द्वारा मेरा विरोध करना और कुछ के द्वारा मेरा समर्थन किया जाना (किन्तु यह साबित नहीं करना कि वे मेरे प्रिय पुत्र हैं)। महादूत की अभिव्यक्तियाँ इस प्रकार है: गुस्ताखी से बोलना, धर्मभ्रष्ट होना, लोगों को व्याख्यान देने के लिए प्रायः मेरा स्वर अपनाना, केवल बाहरी तौर पर मेरी नकल करना, जो मैं खाता हूँ वह खाना और जो मैं उपयोग करता हूँ उसका उपयोग करना; संक्षेप में, मेरे साथ बराबरी करने की इच्छा करना, महत्वाकांक्षी होना, किन्तु मेरी काबिलियत का अभाव और मेरा जीवन नहीं होना, और निकम्मा होना। शैतान, दुष्ट और महादूत, सभी बड़े लाल अजगर के विशिष्ट प्रदर्शन हैं, इसलिए जो लोग मेरे द्वारा पूर्वनियत और चयनित नहीं हैं, वे सभी बड़े लाल अजगर की

संतान हैं: यह बिल्कुल ऐसा ही है! ये सभी मेरे दुश्मन हैं। (हालाँकि शैतान के व्यवधानों को बाहर रखा गया है। यदि तुम्हारी प्रकृति मेरी खूबी है, तो इसे कोई भी बदल नहीं सकता। क्योंकि तुम अभी भी देह में रहते हो, इसलिए कभी-कभी तुम्हें शैतान के प्रलोभनों का सामना करना पड़ेगा—यह अपरिहार्य है—किन्तु तुम्हें सदा सावधान रहना चाहिए।) इसलिए, मैं अपनी प्रथम संतानों के अतिरिक्त, बड़े लाल अजगर की सभी संतानों को त्याग दूँगा। उनकी प्रकृति कभी नहीं बदल सकती और यह शैतान का गुण है। वे लोग शैतान को अभिव्यक्त करते हैं और महादूत को जीते हैं। यह पूरी तरह सच है। जिस बड़े लाल अजगर की मैं बात करता हूँ वह बड़ा लाल अजगर नहीं है; बल्कि यह मेरी विरोधी दुष्ट आत्मा है, जिसके लिए "बड़ा लाल अजगर" एक समानार्थी है। इसलिए पवित्र आत्मा के अतिरिक्त सभी आत्माएँ दुष्ट आत्माएँ हैं और उन्हें बड़े लाल अजगर की संतान भी कहा जा सकता है। सभी को यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाना चाहिए।

अध्याय 97

मैं हर एक व्यक्ति को अपने अद्‌भुत कर्म दिखाऊँगा और अपने बुद्धिमत्तापूर्ण वचन सुनाऊँगा। इसमें प्रत्येक व्यक्ति शामिल होना चाहिए और यह हर एक चीज़ के माध्यम से होना चाहिए। यह मेरा प्रशासनिक आदेश है और यह मेरा कोप है। मैं हर एक व्यक्ति और हर एक मामले को स्पर्श करूँगा, ताकि ब्रह्मांड में हर जगह और पृथ्वी के आखिरी छोर तक सभी लोग अपनी आँखों से देख लें; जब तक यह हासिल नहीं हो जाता, मैं कभी नहीं रुकूँगा। मेरा कोप पूरी तरह से बाहर उमड़ आया है और उसका एक कतरा भी भीतर नहीं बचा है। यह हर उस व्यक्ति पर निर्देशित है, जो इस नाम को स्वीकार करता है (इसे शीघ्र ही दुनिया के सभी राष्ट्रों पर गिराया जाएगा)। और मेरा कोप क्या है? यह कितना गंभीर है? किस प्रकार के लोगों पर मेरा कोप गिरता है? ज्यादातर लोग सोचते हैं कि कोप क्रोध की सबसे गंभीर स्थिति है, लेकिन इससे बात पूरी तरह से स्पष्ट नहीं होती। मेरा कोप और मेरे प्रशासनिक आदेश दोनों अविभाज्य अंग हैं; जब मैं अपने प्रशासनिक आदेश कार्यान्वित करता हूँ, तो उसके परिणामस्वरूप कोप पीछे-पीछे चलता है। तो कोप वास्तव में क्या है? कोप न्याय की एक मात्रा है, जो मैं लोगों को देता हूँ और यह मेरे किसी भी प्रशासनिक आदेश के कार्यान्वयन के पीछे का सिद्धांत है। जो कोई भी मेरे किसी आदेश का उल्लंघन करेगा, तो उस पर मेरे कोप का परिमाण इस बात पर निर्भर होगा कि किस आदेश का उल्लंघन किया गया है। जब मेरा कोप मौजूद होता है, तो यह निश्चित है कि मेरे प्रशासनिक आदेश भी मौजूद होते हैं, और जब मेरे

प्रशासनिक आदेश मौजूद होते हैं, तो उनके साथ मेरा कोप भी निश्चित रूप से मौजूद होता है। मेरे प्रशासनिक आदेश और कोप एक अविभाज्य इकाई बनाते हैं। यह न्यायों में कठोरतम है और कोई भी इसका उल्लंघन नहीं कर सकता। सभी लोगों को इसका पालन करना चाहिए, वरना मेरे हाथों मारे जाने से बचना उनके लिए मुश्किल होगा। युगों-युगों से लोग इसके बारे में कभी नहीं जानते थे (हालाँकि कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने बड़ी आपदाओं के कारण पीड़ा भुगती, फिर भी उन्हें इसके बारे में पता नहीं था; हालाँकि इस प्रशासनिक आदेश का कार्यान्वयन मुख्य रूप से अब शुरू होता है), पर आज मैं यह सब तुम लोगों पर प्रकट करता हूँ, ताकि तुम लोग उल्लंघन करने से बच सको।

सभी लोगों को मेरी वाणी सुननी चाहिए और मेरे वचनों पर विश्वास करना चाहिए। अन्यथा मैं कार्रवाई नहीं करूँगा और न ही कोई कार्य करूँगा। मेरा हर वचन और कार्रवाई ऐसे उदाहरण हैं, जिनका तुम लोगों को अनुसरण करना चाहिए; वे तुम लोगों के लिए प्रतिमान हैं और तुम लोगों के अनुसरण के लिए एक आदर्श हैं। मेरे देह बनने का कारण यह है कि तुम लोग देख सको कि अपनी मानवता में मेरा स्वरूप और सत्ता क्या है। भविष्य में मैं तुम लोगों देखने दूँगा कि मेरी दिव्यता में मेरा स्वरूप और सत्ता क्या है। चीज़ें इसी तरह से कदम-दर-कदम आगे बढ़नी चाहिए। अन्यथा लोग विश्वास करने में बिलकुल असमर्थ होंगे, और उन्हें मेरे बारे में कोई जानकारी नहीं होगी। इसके बजाय वे केवल अस्पष्ट और धुँधले दर्शनों में ही सक्षम होंगे और मेरे बारे में स्पष्ट समझ प्राप्त करने में असमर्थ होंगे। मेरे वचनों ने दर्शा दिया है कि मेरा व्यक्तित्व पूरी तरह से तुम लोगों के सामने प्रकट हो गया है, फिर भी लोग मेरे वचनों को सुनते हैं और फिर भी मुझे नहीं जानते—केवल इस कारण से कि वे मूर्ख और अज्ञानी हैं। अब भी, जबकि मैंने देह धारण कर लिया है, लोग मेरी उपेक्षा करते हैं, और इसलिए, इस दुष्ट और कामुकतापूर्ण पुराने युग को दंडित करने और शैतान और दुष्टों को पूरी तरह से शर्मिंदा करने के लिए, मैं अपने कोप और प्रशासनिक आदेशों का उपयोग करता हूँ। यही एकमात्र मार्ग है, यही मानवजाति की मंज़िल है, और यही वह अंत है, जो मानवजाति की प्रतीक्षा कर रहा है। इसका परिणाम एक पूर्व-निश्चित निष्कर्ष है, जिसे कोई नहीं बदल सकता या जिससे कोई बहाने बनाकर बच नहीं सकता। केवल मेरा कथन ही निर्णायक है; यह मेरा प्रबंधन है और यह मेरी योजना है। सभी लोगों को विश्वास करना चाहिए तथा मन और वचन से आश्वस्त होना चाहिए। जिन लोगों को इस जीवन में सौभाग्य प्राप्त है, वे निश्चित रूप से अनंत काल तक पीड़ित होंगे, जबकि जो लोग इस जीवन में कष्ट उठाते हैं, वे निश्चित रूप से अनंत काल तक धन्य होंगे—मैंने यह

पूर्वनियत किया है और कोई इसे बदल नहीं सकता। कोई ऐसा नहीं है, जो मेरे हृदय को बदल सके, और कोई ऐसा नहीं है, जो मेरे वचनों में एक अतिरिक्त वचन भी जोड़ सके, उन्हें किसी एक वचन को भी मनमाने ढंग से हटाने की अनुमति तो बिलकुल भी नहीं है; जो इसका उल्लंघन करेगा, मैं निश्चित रूप से उसकी ताड़ना करूँगा।

मेरे रहस्य रोज़ तुम लोगों के सामने प्रकट होते हैं—क्या तुम लोग वास्तव में उन्हें समझते हो? क्या तुम लोग उनके बारे में वास्तव में निश्चित हो? क्या जब शैतान तुझे धोखा दे रहा होता है, तब क्या तुम इसे आर-पार देख पाने में सक्षम होते हो? यह जीवन में तुम लोगों के आध्यात्मिक कद के अनुसार निर्धारित किया जाता है। चूँकि मैं कहता हूँ कि सभी चीज़ें मेरे द्वारा पूर्वनियत की जाती हैं, तो फिर मैंने क्यों अपने ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से देह धारण किया है? इसके अलावा, मैंने इतना कार्य क्यों किया है कि लोग उसे बेकार समझते हैं? क्या यह मैं हूँ, जो भ्रमित है? याद रखो! जो कुछ भी मैं करता हूँ, वह न केवल मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण रूप से, वह शैतान को शर्मिंदा करने के लिए किया जाता है। यद्यपि शैतान मेरी अवहेलना करता है, फिर भी मेरे पास उसके वंशजों से उसके विरुद्ध विद्रोह करवाने और उनसे अपनी स्तुति करवाने का सामर्थ्य है। इतना ही नहीं, मैं जो कुछ भी करता हूँ, वह इसलिए करता हूँ कि कार्य का अगला चरण सुचारु रूप से चले, और पूरी दुनिया मेरी जयजयकार तथा स्तुति करे और साँस लेने वाली सभी चीज़ें मेरे सामने घुटने टेक दें और मेरा महिमा-मंडन करें; वह दिन सच में गौरव का दिन होगा। मैं सभी चीज़ों को अपने हाथों में रखता हूँ, और जब सात गरजनें फूटेंगी, तो सभी चीज़ें पूरी तरह से संपन्न हो जाएँगी, कभी नहीं बदलेंगी, सभी स्थिर हो जाएँगी। उस समय से नए स्वर्ग और पृथ्वी के नए जीवन को प्रवेश कराया जाएगा, पूरी तरह से नई परिस्थितियों में प्रवेश कराया जाएगा, और राज्य का जीवन शुरू हो जाएगा। लेकिन राज्य के भीतर का हाल कैसा है? लोग इसे स्पष्ट रूप से समझ ही नहीं सकते (क्योंकि पहले किसी ने कभी भी राज्य के जीवन का स्वाद नहीं लिया है, और इसलिए लोगों ने केवल अपने मन में इसकी कल्पना की है और अपने हृदय में इस पर सोच-विचार किया है)। कलीसिया के जीवन से राज्य के जीवन की ओर मुड़ने, जो कि वर्तमान स्थिति से भविष्य की स्थिति की ओर मुड़ना है, के दौरान कई ऐसी चीज़ें घटित होंगी, जिनकी लोगों ने पहले कभी कल्पना नहीं की होगी। कलीसिया का जीवन राज्य के जीवन में प्रवेश करने के लिए अग्रदूत है, इसलिए राज्य का जीवन प्रारंभ होने से पहले मैं कलीसिया के जीवन को बढ़ावा देने का कोई प्रयास

नहीं छोड़ूँगा। कलीसिया का जीवन क्या है? यह ऐसा है : मेरे ज्येष्ठ पुत्रों सहित हर किसी का मेरे वचनों को खाना, पीना और आनंद लेना तथा मुझे जानना, और उसके द्वारा मुझसे दहन और शुद्धिकरण प्राप्त करना, ताकि वे मेरे प्रशासनिक आदेशों, मेरे न्याय और मेरे कोप को समझ सकें और राज्य के जीवन में अपमान का कारण बनने से बच सकें। और "राज्य का जीवन" क्या है? राज्य का जीवन वह है, जहाँ मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे साथ सभी लोगों और सभी राष्ट्रों पर शासन करते हुए राजाओं के रूप में राज करते हैं (केवल मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य के जीवन का आनंद लेने में सक्षम हैं)। यद्यपि मेरे पुत्र और सभी राष्ट्रों से मेरे लोग तथा सभी लोग राज्य में प्रवेश करते हैं, किंतु वे राज्य के जीवन का आनंद लेने में सक्षम नहीं हैं। राज्य के जीवन का आनंद केवल उन्हीं लोगों द्वारा लिया जा सकता है, जो आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करते हैं। इसलिए केवल मैं ओर मेरे ज्येष्ठ पुत्र ही शरीर में रहने में सक्षम हैं, जबकि मेरे पुत्र और मेरे लोग देह में जीते रहते हैं। (फिर भी यह वह देह नहीं है, जो शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दी गई है। मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के मेरे साथ राजाओं के रूप में शासन करने का यह अर्थ है)। अन्य सभी लोगों के प्राण, आत्माएँ और शरीर ले लिए जाएँगे और उन्हें अधोलोक में डलवा दिया जाएगा। अर्थात् ये लोग पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे और अस्तित्व में नहीं रहेंगे (फिर भी उन्हें मुसीबतों और आपदाओं जैसे, शैतान के सभी बंधनों और क्रूरताओं से गुज़रना होगा)। एक बार ऐसा हो जाने पर राज्य का जीवन आधिकारिक रूप से पटरी पर आ जाएगा, और मैं आधिकारिक रूप से अपने कर्मों को प्रकट करना शुरू कर दूँगा (वे खुले तौर पर प्रकट होंगे और छिपे न रहेंगे)। तब से, निश्चित रूप से कोई आहें और कोई आँसू नहीं होंगे। (क्योंकि अब ऐसी कोई चीज़ नहीं होगी, जो लोगों को आहत कर सकती हो, या उन्हें रुलाने या पीड़ित करने का कारण बन सकती हो, और यह मेरे पुत्रों और मेरे लोगों पर भी लागू होता है, किंतु एक बिंदु है जिस पर ज़ोर दिया जाना आवश्यक है, और वह यह कि मेरे पुत्र और मेरे लोग हमेशा देह होंगे)। सभी हर्षित होंगे—एक आनंददायक दृश्य। यह कुछ भौतिक नहीं होगा, बल्कि कुछ ऐसा होगा, जिसे भौतिक आँखों से नहीं देखा जा सकता। जो मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं, वे भी इसका आनंद लेने में सक्षम होंगे; यह मेरा अद्‌भुत कर्म है, और मेरा महान सामर्थ्य है।

मेरी अभिलाषा है कि तुम लोग मेरी इच्छा जानने में सक्षम हो सको और हर समय मेरे हृदय के प्रति विचारशील रहो। क्षणिक आनंद तुम्हारे पूरे जीवन को नष्ट कर सकता है, जबकि क्षणिक पीड़ा आशीषों की शाश्वतता का सूत्रपात कर सकती है। खिन्न मत हो; यही वह मार्ग है, जिस पर चलना चाहिए। मैंने पहले अकसर कहा है : "जो ईमानदारी से मेरे लिए स्वयं को खपाता है, मैं निश्चित रूप से तुझे बहुत आशीष

दूँगा।" और आशीष क्या हैं? ये न केवल वे हैं, जो आज प्राप्त किए जाते हैं, बल्कि इससे भी बढ़कर ये वे हैं, जिनका भविष्य में आनंद लिया जाना है—केवल ये ही सच्चे आशीष हैं। जब तुम लोग सिय्योन पर्वत पर लौटोगे, तो तुम अपने वर्तमान दुःखों के लिए अंतहीन कृतज्ञता दिखाओगे, क्योंकि यह मेरा आशीष है। अब देह में रहना सिय्योन पर्वत पर होना है (जिसका अर्थ है कि तुम मेरे भीतर रहते हो), जबकि कल शरीर में रहना महिमा का दिन होगा, और यह और भी अधिक सिय्योन पर्वत पर होना होगा। मेरे द्वारा कहे गए इन वचनों को सुनने के बाद, तुम लोग समझते हो कि सिय्योन पर्वत का क्या अर्थ है। सिय्योन पर्वत राज्य का पर्यायवाची है, और यह आध्यात्मिक दुनिया भी है। आज के सिय्योन पर्वत पर तुम देह में हो और सुख प्राप्त कर रहे हो तथा मेरा अनुग्रह हासिल कर रहे हो; भविष्य के सिय्योन पर्वत पर तुम शरीर में होगे और राजाओं के रूप में शासन करने के आशीष का आनंद ले रहे होगे। इसे स्पष्ट रूप से बिलकुल नजरअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। और किसी भी तरह ऐसे समयों को न आने दो, जब आशीष प्राप्त होने के बाद हाथ से फिसल सकते हों; आज आखिर आज है, और यह आने वाले कल से बहुत भिन्न है। जब तुम आशीषों का आनंद प्राप्त करने के लिए आओगे, तो तुम सोचोगे कि आज का अनुग्रह उल्लेख करने लायक नहीं है। यही मैं तुम्हें सौंपता हूँ, और यह मेरा अंतिम परामर्श है।

अध्याय 98

सभी चीज़ें तुम लोगों में से प्रत्येक पर आएँगी, वे तुम लोगों को मेरे बारे में और अधिक जानने देंगी, मेरे बारे में और अधिक निश्चित होने देंगी। वे तुम लोगों को मुझ एकमात्र स्वयं परमेश्वर के बारे में जानने देंगी, मुझ सर्वशक्तिमान के बारे में जानने देंगी, मुझ स्वयं देहधारी परमेश्वर के बारे में जानने देंगी। इसके बाद, मैं देह में से बाहर आ जाऊँगा, सिय्योन लौट जाऊँगा, कनान की अच्छी भूमि पर लौट जाऊँगा, जो कि मेरा निवास है, मेरा गंतव्य है और यही वह ठिकाना है जहाँ से मैंने सभी चीज़ों सृजन किया। अब तुम लोगों में से कोई भी उन वचनों के अर्थ को नहीं समझता है जो मैं कह रहा हूँ; एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इन वचनों के अर्थ को समझ सकता हो। जब तुम लोगों के लिए सब-कुछ प्रकट कर दिया जाएगा, तभी तुम लोग समझोगे कि मैं ये वचन क्यों कह रहा हूँ। मैं दुनिया का नहीं हूँ और मैं ब्रह्मांड का तो बिल्कुल नहीं हूँ, क्योंकि मैं ही एकमात्र स्वयं परमेश्वर हूँ। मैं संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने हाथ में रखता हूँ, मैं स्वयं ही इसका प्रभारी हूँ और लोग केवल मेरे ही अधिकार को समर्पित हो सकते हैं, मेरा पवित्र नाम बोल सकते हैं, मेरी

जयजयकार और स्तुति कर सकते हैं। धीरे-धीरे तुम लोगों के सामने सब-कुछ प्रकट कर दिया जाएगा। यद्यपि कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, तब भी तुम लोग मेरे बोलने के तरीके को या मेरे वचनों के लहजे को नहीं समझ सकते। अभी भी तुम लोगों की समझ में नहीं आ रहा है कि मेरी समस्त प्रबंधन योजना किस बारे में है। तो, मैं तुम लोगों को उन सभी चीज़ों के बारे में बाद में बताऊँगा जो मेरी कही बातों में से तुम लोगों को समझ में नहीं आ रही हैं, क्योंकि मेरे लिए सब-कुछ सरल और स्पष्ट है, जबकि तुम लोगों के लिए, यह बेहद मुश्किल है, ये तुम लोगों की समझ में बिल्कुल नहीं आतीं। इसलिए, मैं अपने बोलने की पद्धति को बदल दूँगा, जब मैं बोलूँगा तो मैं चीज़ों को एकसाथ नहीं जोड़ूँगा, बल्कि एक-एक करके प्रत्येक बिंदु को स्पष्ट करूँगा।

मर कर जी उठने का क्या अर्थ है? क्या यह देह में मरना है और फिर मृत्यु के बाद शरीर में लौट आना है? क्या मर कर जी उठने का यही अर्थ है? क्या यह इतना आसान है? मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; तू इस बारे में क्या जानता है? तू इसे कैसे समझता है? क्या मेरे पहले देहधारण के दौरान मर कर जी उठने को वास्तव में अक्षरशः लिया जा सकता है? क्या प्रक्रिया वास्तव में वैसी ही थी जैसी कि उन ग्रंथों में उसका वर्णन किया गया है? मैं कह चुका हूँ कि यदि मैं स्पष्ट रूप से नहीं बोलता हूँ, यदि मैं लोगों को स्पष्ट रूप से नहीं बताता हूँ, तो कोई भी मेरे वचनों के अर्थ को नहीं समझ पाएगा। युग-युगांतर में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जिसने यह नहीं सोचा कि मर कर जी उठना वैसा ही होता है। दुनिया के सृजन से लेकर आज तक, किसी ने भी इसके असली अर्थ को नहीं समझा है। क्या मुझे वास्तव में सलीब पर चढ़ाया गया था? और मृत्यु के बाद, क्या मैं कब्र में से बाहर आ गया था? क्या वास्तव में ऐसा ही हुआ था? क्या यह वाकई सच हो सकता है? युगों-युगों तक किसी ने भी इस ओर कोई प्रयास नहीं किया, कोई भी इससे मेरे बारे में नहीं जान पाया है और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो इस पर विश्वास न करता हो; हर कोई सोचता है कि यही सच है। उन्हें पता ही नहीं कि मेरे हर वचन का निहितार्थ होता है। तो फिर, मर कर जी उठना वास्तव में क्या है? (निकट भविष्य में, तुम लोग इसका अनुभव करोगे, इसलिए मैं तुम लोगों को इसके बारे में पहले से ही बता रहा हूँ।) कोई भी सृजित प्राणी मरना नहीं चाहता। मेरे परिप्रेक्ष्य से, देह की मृत्यु वास्तविक मृत्यु नहीं है। जब मेरे आत्मा को किसी व्यक्ति से वापस ले लिया जाता है, तो वह व्यक्ति मर जाता है। इसलिए, मैं शैतान द्वारा भ्रष्ट की गयी उन सभी दुष्टात्माओं को (उन सभी अविश्वासियों को जिनके अंदर कोई विश्वास नहीं है) मरा हुआ कहता हूँ। दुनिया के सृजन के बाद से, मैंने अपना आत्मा हर उस

व्यक्ति पर प्रदान किया है जिसे मैंने चुना है। लेकिन एक चरण के बाद जो कि सृजन के बाद आया था, उस दौरान शैतान ने लोगों पर कब्जा कर लिया था। इसलिए मैं छोड़ कर चला गया और लोग पीड़ित होने लगे (पीड़ा जो मैंने देहधारण करने और सलीब पर चढ़ाए जाने पर झेली थी, जिसके बारे में बताया जा चुका है)। लेकिन, मेरे द्वारा पूर्वनियत समय पर (वह समय जब मेरे द्वारा लोगों का परित्याग समाप्त हो गया), मैंने उन लोगों को वापस ले लिया जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया था और मैंने एक बार फिर अपना आत्मा तुम लोगों में डाल दिया ताकि तुम लोग फिर से जीवन पा सको। इसे "मृत से पुनरुत्थान" कहा जाता है। अब जो वास्तव में मेरे आत्मा में रहते हैं वे सभी पहले से ही सभी सीमाओं से परे हैं और वे सभी शरीर में रहते हैं। हालाँकि, शीघ्र ही तुम लोग भी अपनी सोच बदल दोगे, अपनी अवधारणाओं और सभी सांसारिक झमेलों को त्याग दोगे। किन्तु जैसा कि लोग सोचते हैं, यह पीड़ा झेलने के बाद मृत से जी उठना नहीं है। अब तुम लोग जीवित हो यह शरीर में जीने के लिए पूर्वशर्त है; यह आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने का आवश्यक मार्ग है। जिस सामान्य मानवता के बारे में मैं बोलता हूँ उससे पार होने का मतलब है कोई परिवार, कोई पत्नी, कोई बच्चा और कोई मानवीय आवश्यकताएँ नहीं होना। यह केवल मेरी छवि को ही जीना, मेरे भीतर प्रवेश करने पर ही एकाग्र होना है, यह मेरे से बाहर की अन्य चीज़ों के बारे में विचार नहीं करना है। तुम कहाँ कहीं भी जाओ, वही तुम्हारा का घर है। यह सामान्य मानवता से पार जाना है। तुम लोगों ने मेरे उन वचनों को एकदम गलत समझा है; तुम लोगों की समझ बहुत सतही है। मैं सभी राष्ट्रों और लोगों को वास्तव में कैसे दिखाई दूँगा? आज, देह में? नहीं! जब समय आएगा, तो मैं ब्रह्मांड के हर देश में अपने शरीर में दिखाई दूँगा। वह समय अभी नहीं आया है, जब विदेशियों को चरवाही के लिए तुम लोगों की आवश्यकता होगी। उस समय चरवाही करने के लिए तुम लोगों को देह से बाहर निकलने और शरीर में प्रवेश करने की आवश्यकता होगी। यह सच है लेकिन यह "मृत से पुनरुत्थान" नहीं है जैसा लोग सोचते हैं, नियत समय पर, तुम लोग अनजाने में ही देह से बाहर आकर आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करोगे और मेरे साथ सभी राष्ट्रों पर शासन करोगे। लेकिन अभी तक वह समय नहीं आया है। जब मुझे तुम्हारे देह में होने की आवश्यकता होगी तो तुम लोग देह में होगे (मेरे कार्य की आवश्यकताओं के अनुसार, अब तुम लोगों की एक सोच होनी चाहिए और तुम लोगों को अभी भी देह में ही रहना चाहिए, इसलिए तुम लोगों को अभी भी वो कार्य करने चाहिए जिन्हें तुम लोगों को मेरे चरणों के अनुसार देह में करने चाहिए; निष्क्रिय होकर प्रतीक्षा मत करो क्योंकि इससे विलंब होगा)। जब मुझे आवश्यकता होगी कि तुम लोग कलीसिया के

चरवाहों के रूप में शरीर में कार्य करो, तो तुम लोग देह से बाहर आ जाओगे, अपनी सोच को त्याग दोगे और जीने के लिए पूरी तरह से मुझ पर निर्भर रहोगे। मेरे सामर्थ्य और मेरी बुद्धि में विश्वास रखो। सबकुछ मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाएगा। तुम लोगों को केवल आनंद लेने के लिए प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है। तुम लोगों को सारे आशीष प्राप्त हो जाएँगे और उनकी अक्षय और अंतहीन आपूर्ति मिलती रहेगी। जब वह दिन आएगा, तो तुम लोग उस सिद्धांत को समझ जाओगे कि मैं यह कैसे करता हूँ, तुम लोग मेरे अद्‌भुत कर्मों को जान जाओगे और समझ जाओगे कि मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को वापस सिय्योन में कैसे लाता हूँ। दरअसल यह उतना जटिल नहीं है जितना तुम लोग सोचते हो लेकिन यह उतना आसान भी नहीं है जितना तुम लोग समझते हो।

मुझे पता है कि जब मैं ऐसा कहता हूँ तो तुम लोग इसके पीछे के मेरे उद्देश्य को और भी कम समझते हो तथा और भी ज्यादा उलझन में पड़ जाते हो। तुम इसे उसके साथ मिला देते हो जो मैंने पहले कहा है जिसकी वजह से तुम लोगों की समझ में कुछ नहीं आ पाता, ऐसा प्रतीत लगता है मानो कि इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है। हालाँकि, चिंता मत करो, मैं तुम लोगों को सब-कुछ बताऊँगा। मैं जो कुछ भी कहता हूँ उसका अर्थ होता है। मैंने कहा है कि मैं मौजूदा चीज़ों को शून्य में बदल सकता हूँ और शून्य में से असंख्य चीजें उत्पन्न कर सकता हूँ। मानवीय कल्पना में, देह से शरीर में प्रवेश करने के लिए, इंसान को मृत्यु से पुनर्जीवित होना होगा। अतीत में, मैंने इस विधि का उपयोग करके बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए थे, लेकिन आज का समय पहले जैसा नहीं है। मैं तुम लोगों को देह से सीधे शरीर में ले जाऊँगा। क्या यह और भी बड़ा संकेत और चमत्कार नहीं है? क्या यह मेरी सर्वशक्तिमत्ता की और भी बड़ी अभिव्यक्ति नहीं है? मेरी अपनी योजना है, अपने इरादे हैं। कौन मेरे हाथों में नहीं है? मैं जो कार्य करता हूँ उसे जानता हूँ। आखिरकार, आज मेरे कार्य करने के तरीके अतीत से भिन्न हैं। मैं युगों के परिवर्तन के अनुसार अपने कार्य करने के तरीकों को समायोजित करता हूँ। जब मुझे सलीब पर चढ़ाया गया, तो वह अनुग्रह का युग था, किन्तु अब अंतिम युग है। मेरे कार्य की गति तेज हो रही है; इसकी गति पहले जैसी नहीं है, अतीत की तुलना में यह धीमी तो बिल्कुल नहीं है। बल्कि, यह अतीत की तुलना में बहुत तेज है। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता और इतनी सारी जटिल प्रक्रियाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हूँ; क्या यह सच नहीं है कि यह तय करने के लिए कि मेरी इच्छा कैसे पूरी होगी और कैसे मैं तुम लोगों को पूर्ण बनाऊँगा, मेरे अधिकार का केवल एक वचन ही काफी है?

जो भी मैं कहता हूँ वह निश्चित रूप से पूरा होगा। अतीत में, मैं प्रायः कहता था कि मैं पीड़ा सहूँगा, लेकिन मैंने लोगों को उस पीड़ा का उल्लेख करने की अनुमति नहीं दी जो मैंने सही; इसका उल्लेख करना मेरे प्रति ईशनिंदा थी। क्योंकि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ और मेरे लिए कोई कठिनाई नहीं है; जब तू इस पीड़ा का जिक्र करता है तो तू लोगों को रुलाता है। मैं कह चुका हूँ कि भविष्य में न आहें और न ही कोई आँसू होंगे। इसे इस पहलू से समझाया जाना चाहिए, तभी मेरे वचनों का अर्थ समझा जा सकता है। "इंसान इस पीड़ा को नहीं सह सकता" का अर्थ यह है कि मैं सभी मानवीय अवधारणाओं और सोच से मुक्त हो सकता हूँ, देह की भावनाओं से मुक्त हो सकता हूँ, सांसारिक होने के निशान से मुक्त हो सकता हूँ और देह से बाहर निकल सकता हूँ, और जब हर कोई मुझे झूठा ठहरा रहा हो, तो मैं डटा रह सकता हूँ। यह इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि मैं ही एकमात्र स्वयं परमेश्वर हूँ। मैंने कहा है, "हर ज्येष्ठ पुत्र को देह से आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करना चाहिए; उन्हें राजाओं के रूप में मेरे साथ शासन करने के लिए यही मार्ग अपनाना चाहिए।" इस वाक्य का अर्थ यह है कि जब तुम लोग उस चीज़ का सामना करते हो जिसकी कल्पना तुम लोगों ने अतीत में की थी, तो तुम लोग आधिकारिक रूप से उन राजकुमारों और राजाओं का न्याय करने के लिए देह से बाहर आ जाओगे और शरीर में प्रवेश करोगे। इस समय होने वाली चीज़ों के आधार पर उनका न्याय किया जाएगा। हालाँकि, यह उतना जटिल नहीं है जितना तुम लोग सोचते हो, यह पल भर में हो जाएगा। तुम लोगों को मृत्यु से पुनर्जीवित होने की भी आवश्यकता नहीं होगी और तुम लोगों को पीड़ित होने की भी आवश्यकता नहीं होगी (क्योंकि धरती पर तुम लोगों की पीड़ा और कठिनाइयों का पहले ही अंत हो चुका है और मैं कह चुका हूँ कि उसके बाद मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ नहीं निपटूँगा)। ज्येष्ठ पुत्र आशीष का आनंद लेंगे, जैसा कि कहा जा चुका है, जिसका अर्थ है कि तुम लोग अनजाने में ही आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश कर लोगे। मैं इसे अपनी दया और अनुग्रह क्यों कहता हूँ? यदि कोई पुनर्जीवित होकर केवल आध्यात्मिक दुनिया में ही प्रवेश कर पाता, तो यह दयालु और अनुग्रहशील बिल्कुल न होता। तो यह मेरी दया और अनुग्रह की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति है। इसके अलावा, यह मेरे द्वारा पूर्वनियति और लोगों के चयन को भी प्रकट करता है। यह साफ तौर पर दिखाता है कि मेरा प्रशासनिक आदेश कितना सख्त है। मैं जिस पर चाहूँ उस पर अनुग्रहशील रहूँगा और जिस पर चाहूँ उस पर दयालु रहूँगा। कोई भी संघर्ष या लड़ाई नहीं करेगा। यह सब मैं तय करूँगा।

लोग इसे समझ नहीं पाते और वे तब तक अपने आप पर दबाव डालते हैं जब तक कि उनकी साँस

बंद नहीं हो जातीं और उसके बावजूद वे अपने आपको बाँध लेते हैं। लोगों की सोच वास्तव में सीमित होती है, इसलिए उन्हें मानवीय सोच और अवधारणाओं से छुटकारा पा लेना चाहिए। इसलिए, हर चीज़ को नियंत्रण में लेने के लिए, हर चीज़ को प्रबंधित करने के लिए, मुझे देह से बाहर आ कर आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करना होगा। सभी लोगों और सभी राष्ट्रों पर शासन करने और मेरी इच्छा को पूरा करने का यही एकमात्र तरीका है। यह बहुत दूर नहीं है। तुम लोगों को मेरी सर्वशक्तिमत्ता पर विश्वास नहीं है, तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ। तुम लोगों को लगता है कि मैं केवल एक मनुष्य हूँ, तुम लोग मेरी दिव्यता को बिल्कुल नहीं देख पाते। जब मैं चाहूँगा तब कार्य पूरे हो जाएँगे। इनके होने के लिए केवल मेरे मुँह से वचन की आवश्यकता है। तुम लोगों ने केवल हाल ही में मैंने जो कहा है उसमें मेरी मानवता के पहलू पर और मेरे हर कदम पर ध्यान दिया है, लेकिन तुम लोगों ने मेरी दिव्यता के पहलू पर ध्यान नहीं दिया है। अर्थात् तुम लोग सोचते हो कि मेरी भी सोच और अवधारणाएँ हैं। लेकिन मैं कह चुका हूँ कि मेरा चिंतन, विचार और मन, मेरा हर कदम, जो कुछ भी मैं करता हूँ और कहता हूँ, वे स्वयं परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति है। क्या तुम लोग यह सब भूल गए हो? तुम सभी संभ्रमित लोग हो! तुम लोग मेरे वचनों का अर्थ नहीं समझते। जो कुछ मैंने कहा है उससे मैंने तुम लोगों को मेरी सामान्य मानवता के पहलू को देखने की अनुमति दी है (मैंने तुम लोगों को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में, वास्तविकता में, अपनी सामान्य मानवता को देखने की अनुमति दी है, क्योंकि इस अवधि में जो कुछ मैंने कहा है उससे तुम लोग अभी भी मेरी सामान्य मानवता के पहलू को नहीं समझते हो), फिर भी तुम लोग मेरी सामान्य मानवता को नहीं समझते हो, तुम लोग केवल किसी ऐसी चीज़ को पकड़ने की कोशिश करते हो जिसे मेरे विरुद्ध उपयोग किया जा सके, तुम लोग मेरे सामने उच्छृंखल हो। तुम लोग अंधे हो! तुम लोग अज्ञानी हो! तुम लोग मुझे नहीं जानते! मैं इतने लंबे समय तक व्यर्थ ही बोलता रहा! तुम लोग मुझे बिल्कुल नहीं जानते और मेरी सामान्य मानवता को संपूर्ण स्वयं परमेश्वर के हिस्से के रूप में बिल्कुल नहीं मानते हो! मुझे गुस्सा कैसे नहीं आएगा? मैं फिर से दयालु कैसे हो सकता हूँ? मैं इन अवज्ञाकारी बच्चों को केवल अपने कोप से जवाब दे सकता हूँ। तुम कितने ढीठ हो, मुझे बिल्कुल नहीं जानते! तुम लोगों को लगता है कि मैंने गलत किया है! क्या मैं गलत कर सकता हूँ? देहधारी होने के लिए क्या मैं किसी का चयन लापरवाही से करूँगा? मेरी मानवता और मेरी दिव्यता दो अविभाज्य हिस्से हैं जो मिलकर पूर्ण स्वयं परमेश्वर को बनाते हैं। अब तुम लोगों को इस बारे में पूरी तरह से स्पष्ट हो जाना चाहिए! मेरे वचन पहले ही चरम पर पहुँच चुके हैं, मेरे वचनों को अब और

अधिक विस्तार से नहीं समझाया जा सकता!

अध्याय 99

चूँकि मेरे कार्य की गति तेज़ हो रही है, इसलिए कोई भी मेरे पदचिह्नों के साथ गति बनाए नहीं रख सकता और कोई भी मेरे मन में प्रवेश नहीं कर सकता, किन्तु आगे बढ़ने का यही एकमात्र मार्ग है। यह "मृत से पुनर्जीवित होना" वाली उक्ति का ही "मृत" है जिसकी चर्चा पहले ही की जा चुकी है। (इसका आशय मेरी इच्छा को समझने में असमर्थ होना है, अपने वचनों से मेरा जो मतलब है उसे समझने में असमर्थ होना है; यह "मृत" की एक और व्याख्या है, इसका अर्थ "मेरे आत्मा द्वारा त्याग दिया जाना नहीं है")। जब तुम लोग और मैं इस चरण से शरीर में परिवर्तन कर लेंगे, तो "मृत से जी उठने" का मूल अर्थ पूरा हो जाएगा (अर्थात्, यह मृत से पुनर्जीवित होने का मूल अर्थ है)। तुम लोगों की स्थिति यह है : तुम लोग न तो मेरी इच्छा को समझ सकते हो और न ही मेरे पदचिह्नों को ढूँढ सकते हो। इसके अलावा, तुम लोगों की आत्मा शांत नहीं हो सकती है, इसलिए तुम लोग अशांत हो जाते हो। इस तरह की हालत वास्तव में वही "पीड़ा" है जिसका मैंने उल्लेख किया है। इस पीड़ा में, जिसे लोग सहन नहीं कर पाते, एक तरफ तो तुम लोग अपने भविष्य के बारे में सोच रहे हो और दूसरी तरफ तुम मेरे द्वारा दहन और मेरे न्याय को स्वीकार कर रहे हो, जो हर तरफ से तुम लोगों पर प्रहार कर रही है। इसके अलावा, जिस स्वर और तरीके से मैं बोलता हूँ, उसमें तुम लोग किसी भी नियम को नहीं समझ सकते, एक दिन के कथन में कई प्रकार के स्वर होते हैं जिसकी वजह से तुम लोग बहुत पीड़ित होते हो। ये मेरे कार्य के चरण हैं। यह मेरी बुद्धि है। भविष्य में तुम लोग इस संबंध में और अधिक पीड़ा का अनुभव करोगे जो कि पूरा का पूरा पाखंडी लोगों को उजागर करने के लिए है—यह अब स्पष्ट हो जाना चाहिए! मैं इसी तरह से कार्य करता हूँ। इस तरह की पीड़ा की प्रेरणा से और मृत्यु जैसी इस पीड़ा को सहने के बाद, तुम लोग एक अन्य क्षेत्र में प्रवेश करोगे। तुम लोग शरीर में प्रवेश करोगे और सभी राष्ट्रों एवं लोगों पर मेरे साथ शासन करोगे।

हाल ही में मैं अधिक गंभीर स्वर में क्यों बोलता रहा हूँ? मेरा स्वर इतनी बार बदला क्यों है और मेरे कार्य करने का तरीका भी इतनी बार क्यों बदला है? इन चीजों में मेरी बुद्धि रही है। मेरे वचन उन सभी के लिए बोले जाते हैं जिन्होंने इस नाम को स्वीकार कर लिया है (चाहे वे विश्वास करें या न करें, मेरे वचन पूरे किए जा सकते हैं), इसलिए मेरे वचन हर किसी के द्वारा सुने और देखे जाने चाहिए, उन्हें दबाया नहीं जाना

चाहिए क्योंकि मेरा कार्य करने का अपना तरीका है और मेरी अपनी बुद्धि है। मैं लोगों का न्याय करने, लोगों को प्रकट करने और मानवीय प्रकृति को उजागर करने के लिए अपने वचनों का उपयोग करता हूँ। इस प्रकार, मैं उन लोगों का चयन करता हूँ जिन्हें मैंने चुन लिया है, मैं उन लोगों को हटा देता हूँ जिन्हें मैंने पूर्वनियत नहीं किया है या चुना नहीं है। यह सब मेरी बुद्धि है और मेरे कार्य की अद्‌भुतता है। मेरे कार्य के इस चरण में यह मेरी विधि है। लोगों में क्या कोई ऐसा है जो मेरी इच्छा को समझ सके? लोगों में क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो मेरी ज़िम्मेदारी के बारे में विचारशील हो सके? एकमात्र जो कार्य कर रहा है वह मैं स्वयं परमेश्वर हूँ। एक दिन आएगा जब तुम लोग मेरे इन वचनों की महत्ता को अच्छी तरह से समझोगे और तुम लोगों को पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगा कि मैं ये वचन क्यों बोलना चाहता हूँ। मेरी बुद्धि असीम, अनंत और अथाह है और यह मनुष्यों के लिए पूरी तरह से अभेद्य है। मेरे द्वारा किए गए कार्यों से लोग केवल इसके एक हिस्से को ही देख सकते हैं, लेकिन जो वे देखते हैं वह भी दोषपूर्ण और अधूरा ही होता है। जब तुम लोग इस चरण से अगले चरण में पूरी तरह से परिवर्तन कर लोगे, तब तुम लोग इसे स्पष्ट रूप से देख पाओगे। याद रखो! यह युग अनमोल युग है—यह अंतिम चरण है जिसमें तुम लोग देह में हो। तुम लोगों का जीवन तुम्हारे भौतिक जीवन का अंतिम जीवन है। जब तुम लोग देह से आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करोगे, तो उस समय तुम लोग सारी पीड़ाओं से मुक्त हो जाओगे। तुम लोग बहुत आनंदित और हर्षित हो जाओगे और खुशी से अनवरत कूदोगे। लेकिन तुम लोगों को यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि मैं जो वचन बोलता हूँ वे केवल ज्येष्ठ पुत्रों के लिए हैं, क्योंकि केवल ज्येष्ठ पुत्र ही इस आशीष के योग्य हैं। आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश ही सबसे बड़ा आशीष, सर्वोच्च आशीष और सबसे मूल्यवान आनंद है। अभी तुम लोगों को खाने और पहनने के लिए जो कुछ भी मिलता है वह देह के सुख से ज्यादा कुछ नहीं है; यह अनुग्रह है, जिसका मैं कोई सम्मान नहीं करता। मेरे कार्य का केन्द्र अगले चरण में है (आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करना और ब्रह्मांड की दुनिया का सामना करना)।

मैं कह चुका हूँ कि बड़े लाल अजगर को मेरे द्वारा पहले ही निष्कासित कर दिया और कुचल दिया गया है। तुम लोग मेरे वचनों पर विश्वास क्यों नहीं कर पाते? तुम लोग अभी भी मेरे लिए उत्पीड़न और विपत्ति का सामना क्यों करना चाहते हो? क्या यह तुम्हारे लिए बेकार की कीमत चुकाना नहीं है? मैंने तुम लोगों को कई बार याद दिलाया है कि मैं कार्य करूँ, तो तुम केवल आनंद लो : तुम लोग कार्रवाई करने के लिए इतने क्यों उत्सुक हो? तुम लोग वास्तव में नहीं जानते कि कैसे आनंद लेना है! मैंने तुम लोगों के लिए

सबकुछ पूरी तरह से तैयार कर दिया है—तुम लोगों में से कोई भी इसे लेने के लिए मेरे पास क्यों नहीं आया? मैंने जो कहा है उसके बारे में तुम लोग अभी भी अनिश्चित हो! तुम लोग मुझे नहीं समझते! तुम लोगों को लगता है कि मैं खाली खुश करने वाली बातें बोल रहा हूँ; तुम लोग वास्तव में भ्रमित हो! (मैं जिस पूरी तैयारी की बात कर रहा हूँ उसका अर्थ है कि तुम लोगों को मेरा और अधिक आदर करना चाहिए और मेरे सामने और अधिक प्रार्थना करनी चाहिए, जबकि मैं अपना विरोध करने वाले हर किसी को शाप देने और तुम लोगों को सताने वाले हर किसी को दंडित करने के लिए व्यक्तिगत रूप कार्य करूँगा।) तुम लोग मेरे वचनों के बारे में कुछ नहीं जानते! मैं तुम लोगों के सामने अपने सभी रहस्यों को प्रकट कर देता हूँ, लेकिन तुममें से कितने लोग वास्तव में उन्हें समझते हैं? तुममें से कितने उन्हें गहराई से समझते हैं? मेरा सिंहासन क्या है? मेरा लौहदण्ड क्या है? तुम लोगों में से कौन जानता है? जब मेरे सिंहासन की बात आती है, तो ज्यादातर लोग सोचते हैं कि मैं वहीं बैठता हूँ या इसका अर्थ मेरे निवास स्थान से है या इसका अर्थ उस व्यक्ति से है जो मैं हूँ। ये सारी समझ गलत है—गलतियों का घालमेल है! उनमें से कोई भी व्याख्या सही नहीं है, है ना? तुम सभी लोग इसे इसी तरह से जानते और समझते हो—यह समझ का चरम भटकाव है? अधिकार क्या है? अधिकार और सिंहासन के बीच क्या संबंध है? सिंहासन मेरा अधिकार है। जब मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे सिंहासन को ऊँचा रखेंगे, तभी मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को मुझसे अधिकार प्राप्त होगा। केवल मेरे पास ही अधिकार है, इसलिए केवल मेरे पास ही सिंहासन है। दूसरे शब्दों में, जब मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरी तरह ही पीड़ित होंगे, तभी वे मेरे स्वरूप को स्वीकार करेंगे और मुझसे सबकुछ प्राप्त करेंगे; और इसी प्रक्रिया से वे ज्येष्ठ पुत्र होने की हैसियत प्राप्त करेंगे। इसी समय मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे सिंहासन को ऊँचा रखेंगे, और इसी समय वे मुझसे अधिकार स्वीकार करेंगे। अब यह तुम लोगों की समझ में आ जाना चाहिए! जो कुछ भी मैं कहता हूँ वह स्पष्ट और पूर्णतः असंदिग्ध है ताकि हर कोई समझ जाए। अपनी अवधारणाओं को अलग रखो और उन रहस्यों को स्वीकार करने के लिए प्रतीक्षा करो जो मैं तुम लोगों के लिए प्रकट करता हूँ! तो लौहदण्ड क्या है? पिछले चरण में, इसका आशय मेरे कठोर वचनों से था, किन्तु अब यह अतीत से भिन्न है : आज लौहदण्ड का तात्पर्य मेरे कर्मों से है, जिनमें बड़ी आपदाओं के साथ अधिकार व्याप्त है। इसलिए जहाँ-कहीं भी लौहदण्ड का उल्लेख होता है, उसमें अधिकार का संयोजन होता है। लौहदण्ड का मूल अर्थ बड़ी आपदाएँ है—यह अधिकार का हिस्सा है। हर किसी को इसे स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए, तभी वे मेरी इच्छा को समझ सकते हैं और मेरे वचनों से प्रकाशन प्राप्त कर सकते हैं।

जिस किसी में भी पवित्र आत्मा का कार्य है, वह अपने हाथ में लौहदण्ड रखता है उसी के पास अधिकार होता है और उसी के पास किसी भी बड़ी आपदा को निष्पादित करने का अधिकार होता है। यह मेरे प्रशासनिक आदेशों में से एक है।

हर चीज़ तुम लोगों के सामने खुली है (इसका तात्पर्य उस हिस्से से है जिसे स्पष्ट रूप से बताया जा चुका है) और हर चीज़ तुम लोगों से छिपी हुई है (इसका तात्पर्य मेरे वचनों के गुप्त हिस्से से है)। मैं बुद्धि से बोलता हूँ : मैं तुम लोगों को अपने कुछ वचनों के केवल शाब्दिक अर्थ को ही समझने देता हूँ, जबकि मैं दूसरे वचनों का अर्थ समझने देता हूँ (लेकिन अधिकांश लोग समझ नहीं पाते) क्योंकि यह मेरे कार्य का अनुक्रम है। जब तुम लोग विशेष आध्यात्मिक कद प्राप्त कर लोगे, तभी मैं तुम लोगों को अपने वचनों का सही अर्थ बता सकता हूँ। यही मेरी बुद्धि है और यही मेरे अद्‌भुत कर्म हैं (ताकि तुम लोगों को पूर्ण बनाकर शैतान को पूरी तरह से पराजित और दुष्टों को अपमानित किया जाए)। जब तक तुम लोग अन्य क्षेत्र में प्रवेश न कर लो, तब तक तुम लोग पूरी तरह से समझ नहीं पाओगे। मुझे ऐसा इसलिए करना पड़ता है क्योंकि मानवीय अवधारणाओं में ऐसी कई चीज़ें हैं जिन्हें लोग आसानी से नहीं समझ पाते। यदि मैं स्पष्ट रूप से भी बोलूँ तब भी तुम लोगों की समझ में नहीं आएँगी। आखिरकार, लोगों का दिमाग सीमित होता है। बहुत-सी चीज़ें मैं तुम्हें तभी बता सकता हूँ जब तुम आध्यात्मिक जगत में प्रवेश कर जाओ; अन्यथा मानवीय देह उपयोगी नहीं होती, बल्कि यह मेरे प्रबंधन को बाधित ही करेगी। यही "मेरे कार्य के अनुक्रम" का सही अर्थ है जिसके बारे में मैं बात करता हूँ। अपनी अवधारणाओं में, तुम लोग मुझे कितना समझते हो? क्या तुम लोगों की समझ दोषरहित है? क्या यह आत्मा का ज्ञान है? इसलिए, मुझे तुम लोगों को अन्य क्षेत्र में परिवर्तन करने देना चाहिए ताकि तुम लोग मेरे कार्य को पूरा करो और मेरी इच्छा पर चलो। वास्तव में यह अन्य क्षेत्र क्या है? क्या यह वास्तव में, जैसा कि लोग सोचते हैं, एक प्रकार का ज्ञानातीत दृश्य है? क्या यह वास्तव में हवा के समान है जिसे देखा या महसूस नहीं किया जा सकता है, लेकिन फिर भी उसका अस्तित्व है? जैसा कि मैंने कहा है, शरीर में होने की स्थिति मांस और हड्डी की स्थिति है, यह रूप और आकार धारण करने की स्थिति है। यह बिल्कुल सही और संशयहीन है और हर किसी को इस पर विश्वास करना करना चाहिए। यह शरीर की वास्तविक अवस्था है। इसके अलावा, शरीर में ऐसा कोई पदार्थ नहीं हैं जिससे लोग नफ़रत करते हों। किन्तु यह अवस्था वास्तव में क्या है? जब लोग देह से शरीर में जाएं, तो एक बड़ा समूह प्रकट होना चाहिए। यानी, वे अपने दैहिक घर से मुक्त हो जाएँगे। यह कहा जा

सकता है कि प्रत्येक अपने प्रकार का अनुसरण करेगा : देह देह को खींचता है और शरीर शरीर को। अब जो लोग अपने घर, माता—पिता, पत्नी, पति और पुत्र-पुत्री से अलग हो जाते हैं, वे लोग आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करना शुरू कर देते हैं। अंत में, ऐसा होता है : आध्यात्मिक दुनिया की स्थिति यह है कि ज्येष्ठ पुत्र एक साथ इकट्ठे होते हैं, नाचते-गाते हैं, मेरे पवित्र नाम की स्तुति और जयजयकार करते हैं। यह एक ऐसा दृश्य है जो सुंदर और हमेशा नया रहता है। सभी मेरे प्यारे पुत्र हैं, जो हमेशा निरंतर मेरी स्तुति करते रहते हैं, मेरे पवित्र नाम को हमेशा ऊँचा रखते हैं। आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश के बाद यही स्थिति होती है, आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश के बाद यही कार्य भी है और यही आध्यात्मिक दुनिया में कलीसिया की चरवाही करने की वह स्थिति भी है जिसके बारे में मैंने बोला है। इसके अलावा, मेरे अधिकार, मेरे कोप और मेरे न्याय को धारण किए हुए, और इससे भी अधिक, सभी राष्ट्रों और सभी लोगों को नियंत्रित करने के लिए मेरे लौहदण्ड को धारण किए हुए, मेरा व्यक्तित्व ब्रह्मांड के हर देश में और सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के बीच प्रकट होता है। यह सभी लोगों में और पूरे ब्रह्मांड में मेरी गवाही देता है जो स्वर्ग और पृथ्वी को कँपा देती है, जिसके कारण सभी लोग, पर्वतों पर, नदियों में, झीलों में और पृथ्वी के सिरों पर की सभी चीज़ें मेरी स्तुति करती हैं, मुझे महिमान्वित करती हैं और मुझे, एकमात्र स्वयं परमेश्वर को, जानने लगती हैं, जो कि सभी चीज़ों का सृजनकर्ता है, जो हर चीज़ का मार्गदर्शन करता है, हर चीज़ प्रबंधन करता है, हर चीज़ का न्याय करता है, हर चीज़ संपन्न करता है, हर चीज़ को दंडित करता है और हर चीज़ को नष्ट करता है। यही मेरे व्यक्तित्व का प्रकटन है।

अध्याय 100

मैं उन सभी से नफ़रत करता हूँ, जिन्हें मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारित नहीं किया गया और चुना नहीं गया है। इसलिए मुझे इन लोगों को एक-एक करके अपने घर से बाहर निकालना चाहिए, जिससे मेरा मंदिर पवित्र और निर्दोष हो जाएगा, मेरा घर सदैव नया रहेगा और कभी पुराना नहीं पड़ेगा, मेरा पवित्र नाम सदा के लिए फैल जाएगा और मेरे पवित्र लोग मेरे प्रियजन बन जाएँगे। इस तरह का दृश्य, इस तरह का घर, इस तरह का राज्य मेरा लक्ष्य और मेरा धाम है; यही मेरे द्वारा सभी चीज़ों के निर्माण का आधार है। कोई भी इसे प्रभावित या परिवर्तित नहीं कर सकता। इसमें केवल मैं और मेरे प्यारे पुत्र ही एक-साथ रहेंगे, और किसी को भी इसे कदमों के नीचे कुचलने नहीं दिया जाएगा, किसी को भी इस पर कब्जा नहीं करने दिया

जाएगा, और कुछ अप्रिय तो बिलकुल भी घटित नहीं होने दिया जाएगा। सभी जगह प्रशंसा और उल्लास होगा, और यह सारा दृश्य मनुष्य के लिए अकल्पनीय होगा। मेरी केवल यही कामना है कि तुम लोग अपने संपूर्ण हृदय और मन के साथ और अपनी सर्वोत्तम क्षमता के साथ अपनी समस्त शक्ति मुझे अर्पित कर दो। चाहे आज या कल, चाहे तुम लोग मुझे सेवा प्रदान करने वाले हो या आशीष प्राप्त करने वाले, तुम सभी लोगों को अपनी शक्ति का परिमाण मेरे राज्य के लिए लगाना चाहिए। यह दायित्व सभी सृजित लोगों को लेना चाहिए, और इसे इसी तरह से संपन्न और कार्यान्वित किया जाना चाहिए। मैं सभी चीज़ों को अपने राज्य की सुंदरता सदैव नई बनाए रखने और अपना घर सामंजस्यपूर्ण और एकजुट रखने हेतु सेवा प्रदान करने के लिए जुटाऊँगा। किसी को भी मेरी अवज्ञा करने की अनुमति नहीं है, और जो कोई ऐसा करता है, उसे न्याय भुगतना और शापित होना पड़ेगा। अब मेरे शाप सभी राष्ट्रों और सभी लोगों पर पड़ने शुरू हो गए हैं, और मेरे शाप मेरे न्याय से भी अधिक कठोर हैं। अब सभी लोगों की निंदा शुरू करने का समय है, इसलिए इसे शाप कहा जाता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अब अंतिम युग है, और सृजन का समय नहीं है। चूँकि युग बदल गए हैं, इसलिए अब मेरे कार्य की गति बहुत भिन्न है। मेरे कार्य की आवश्यकताओं के कारण, मुझे जिन लोगों की आवश्यकता है, वे भी भिन्न हैं; जिनका त्याग किया जाना चाहिए उनका त्याग किया जाएगा; जिन्हें छाँट दिया जाना चाहिए उन्हें छाँट दिया जाएगा; जिन्हें मार दिया जाना चाहिए उन्हें मार दिया जाएगा, और जिन्हें रखा जाना चाहिए, उन्हें रखा ही जाना चाहिए। यह एक अपरिहार्य प्रवृत्ति है, जो मनुष्य की इच्छा से स्वतंत्र है, और कोई भी व्यक्ति इसे बदल नहीं सकता। यह मेरी इच्छा के अनुसार किया जाना चाहिए! मैं उन लोगों को त्याग देता हूँ जिन्हें मैं त्यागना चाहता हूँ, और उन्हें खत्म कर देता हूँ जिन्हें मैं खत्म करना चाहता हूँ; कोई मनमाने ढंग से काम नहीं करेगा। मैं उन्हें रखता हूँ जिन्हें मैं रखना चाहता हूँ और मैं उनसे प्रेम करता हूँ जिनसे मैं प्रेम करना चाहता हूँ; यह मेरी इच्छा के अनुसार किया जाना चाहिए! मैं भावनाओं पर कार्रवाई नहीं करता; मेरे साथ केवल धार्मिकता, न्याय और कोप है—कोई भी भावना बिलकुल नहीं है। मुझमें मनुष्य का धुँधला-सा भी चिह्न नहीं है, क्योंकि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ, परमेश्वर का व्यक्तित्व हूँ। क्योंकि सभी लोग मेरी मनुष्यता वाले पहलू को देखते हैं और उन्होंने मेरी दिव्यता वाले पहलू को नहीं देखा है। सच में, वे बड़े अंधे और भ्रमित हैं!

तुम लोगों को उस चीज़ को अपने हृदय में रखना चाहिए, जो मैं तुम लोगों को बताता हूँ, तुम्हें मेरे वचनों के माध्यम से मेरे हृदय को समझना चाहिए और मेरी ज़िम्मेदारी के प्रति विचारशीलता दिखानी

चाहिए। तब तुम मेरी सर्वशक्तिमत्ता को जानोगे और मेरे व्यक्तित्व को देखोगे। क्योंकि मेरे वचन बुद्धिमत्ता के वचन हैं और कोई मेरे वचनों के पीछे के सिद्धांतों या व्यवस्थाओं को नहीं समझ सकता। लोग सोचते हैं कि मैं छल और कुटिलता का अभ्यास करता हूँ और वे मेरे वचनों के माध्यम से मुझे नहीं जानते, इसके विपरीत वे मेरे विरुद्ध निंदा करते हैं। वे इतने अंधे और अज्ञानी हैं! उनमें ज़रा-सा भी विवेक नहीं है। हर एक वाक्य जो मैं कहता हूँ, उसमें अधिकार और न्याय होता है, और कोई मेरे वचनों को बदल नहीं सकता। एक बार जब मेरे वचन निर्गत हो जाते हैं, तो चीज़ें मेरे वचनों के अनुसार संपन्न होनी निश्चित हैं; यह मेरा स्वभाव है। मेरे वचन अधिकार हैं और जो कोई उन्हें संशोधित करता है, वह मेरी ताड़ना को अपमानित करता है, और मुझे उन्हें मार गिराना होगा। गंभीर मामलों में वे अपने जीवन पर बरबादी लाते हैं और वे अधोलोक में या अथाह गड्ढे में जाते हैं। यही एकमात्र तरीका है, जिससे मैं मानवजाति से निपटता हूँ, और मनुष्य के पास इसे बदलने का कोई तरीका नहीं है—यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। इसे याद रखना! किसी को भी मेरे आदेश का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं है; चीज़ें मेरी इच्छा के अनुसार की जानी चाहिए! अतीत में, मैं तुम लोगों के प्रति बहुत नरम था और तुमने केवल मेरे वचनों का सामना किया था। लोगों को मार गिराने के बारे में मैंने जो वचन बोले थे, वे अभी तक घटित नहीं हुए हैं। किंतु आज से, उन सभी लोगों पर सभी आपदाएँ (मेरे प्रशासनिक आदेशों से संबंधित) एक-एक करके पड़ेंगी, जो मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं हैं। तथ्यों का आगमन अवश्य होना चाहिए—अन्यथा लोग मेरे कोप को देखने में सक्षम नहीं होंगे, बल्कि बार-बार व्यभिचार में लिप्त होंगे। यह मेरी प्रबंधन योजना का एक चरण है, और यह वह तरीका है, जिससे मैं अपने कार्य का अगला चरण करता हूँ। मैं तुम लोगों से यह अग्रिम रूप से कहता हूँ, ताकि तुम लोग सदैव के लिए अपराध करने और नरक-यंत्रणा भुगतने से बच सको। अर्थात्, आज से मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को छोड़कर सभी लोगों को मेरी इच्छा के अनुसार अपनी उचित जगह लेने के लिए मजबूर कर दूँगा, और मैं उन्हें एक-एक करके ताड़ना दूँगा। मैं उनमें से एक को भी दोषमुक्त नहीं करूँगा। तुम लोग ज़रा फिर से लंपट होने की हिम्मत तो करो! तुम लोग ज़रा फिर से विद्रोही होने की हिम्मत तो करो! मैं पहले कह चुका हूँ कि मैं सभी के लिए धार्मिक हूँ, कि मुझमें भावना का लेशमात्र भी नहीं है, जो यह दिखाता है कि मेरे स्वभाव को ठेस नहीं पहुँचाई जानी चाहिए। यह मेरा व्यक्तित्व है। इसे कोई नहीं बदल सकता। सभी लोग मेरे वचनों को सुनते हैं और सभी लोग मेरे गौरवशाली चेहरे को देखते हैं। सभी लोगों को पूर्णतया और सर्वथा मेरा आज्ञापालन करना चाहिए—यह मेरा प्रशासनिक आदेश है।

पूरे ब्रह्मांड में और पृथ्वी के छोरों तक सभी लोगों को मेरी प्रशंसा करनी चाहिए और मुझे गौरवान्वित करना चाहिए, क्योंकि मैं स्वयं अद्वितीय परमेश्वर हूँ, क्योंकि मैं परमेश्वर का व्यक्तित्व हूँ। कोई मेरे वचनों और कथनों को, मेरे भाषण और तौर-तरीकों को नहीं बदल सकता, क्योंकि ये केवल मेरे अपने मामले हैं, और ये वे चीज़ें हैं, जो मुझमें प्राचीनतम काल से हैं और हमेशा रहेंगी।

लोग मेरी परीक्षा करने के इरादे रखते हैं, और वे मेरे वचनों में से कोई ऐसी चीज़ ढूँढ़ना चाहते हैं, जिसे वे मेरे विरुद्ध इस्तेमाल कर सकें, ताकि मुझे कलंकित किया जा सके। क्या मैं तुम्हारे द्वारा कलंकित किए जाने के लिए हूँ? क्या मैं यूँ ही आलोचना किए जाने के लिए हूँ? क्या मेरा काम-काज यूँ ही चर्चा किए जाने के लिए है? तुम लोग वास्तव में एक ऐसा समूह हो, जो नहीं जानता कि उसके लिए क्या अच्छा है! तुम मुझे बिलकुल नहीं जानते! सिय्योन पर्वत क्या है? मेरा धाम क्या है? कनान की अच्छी भूमि क्या है? सृष्टि का आधार क्या है? पिछले कुछ दिनों से मैं क्यों इन शब्दों का उल्लेख करता जा रहा हूँ? सिय्योन पर्वत, मेरा धाम, कनान की अच्छी भूमि, सृष्टि का आधार—ये सभी मेरे व्यक्तित्व के संदर्भ में (शरीर के संदर्भ में) कहे गए हैं। सभी लोग सोचते हैं कि ये कोई ऐसे स्थान हैं, जो भौतिक रूप से मौजूद हैं। मेरा व्यक्तित्व सिय्योन पर्वत है; वह मेरा धाम है। जो कोई आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करता है, वह सिय्योन पर्वत पर चढ़ेगा और मेरे धाम में प्रवेश करेगा। मैंने सभी चीज़ें अपने व्यक्तित्व के भीतर सृजित कीं; अर्थात्, सभी चीज़ें शरीर के अंदर सृजित की गईं, इसलिए यह आधार है। मैं क्यों कहता हूँ कि तुम लोग मेरे साथ शरीर में लौटोगे? इसमें मूल अर्थ निहित है। ठीक "परमेश्वर" संज्ञा की तरह, इन संज्ञाओं का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है, बल्कि ये विभिन्न नाम हैं, जो मैं विभिन्न स्थानों को देता हूँ। इसलिए उनके शाब्दिक अर्थों पर बहुत अधिक ध्यान मत दो, बल्कि केवल मेरे वचनों को सुनने पर ध्यान केंद्रित करो। तुम लोगों को उन्हें इसी तरीके से देखना चाहिए, और तब तुम लोग मेरी इच्छा को समझने में सक्षम होगे। मैं तुम लोगों को बार-बार क्यों याद दिलाता हूँ कि मेरे वचनों में बुद्धिमत्ता है? तुम लोगों में से कितनों ने इसके पीछे के अर्थ को समझने का प्रयास किया है? तुम सभी लोग आँख बंद करके विश्लेषण कर रहे हो और अविवेकी हो रहे हो!

तुम लोग अभी भी मेरे द्वारा अतीत में कही गई अधिकतर बातें नहीं समझते। तुम संदेह की स्थिति में रहते हो और मेरे हृदय को संतुष्ट नहीं कर पाते। जिस किसी भी समय तुम लोग मेरे द्वारा कहे जाने वाले हर वाक्य के बारे में निश्चित हो सकोगे, उसी क्षण तुम लोगों का जीवन परिपक्व हो जाएगा। मेरे लिए एक

दिन एक हजार सालों जैसा और एक हजार साल एक दिन जैसे हैं; तुम लोग उस समय के बारे में कैसे सोचते हो, जिसके बारे में मैं बोलता हूँ? तुम उसकी व्याख्या कैसे करोगे? तुम इसकी ग़लत व्याख्या करते हो! और इसके अलावा, अधिकतर लोग इस पर मेरे साथ हंगामा करते हैं, मेरे विरुद्ध इस्तेमाल करने के लिए कुछ ढूँढ़ना चाहते हैं—तुम लोग नहीं जानते कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है! सावधान रहो, अन्यथा मैं तुम्हें मार गिराऊँगा! जब वह दिन आएगा, जब सब-कुछ स्पष्ट कर दिया जाता है, तो तुम लोग पूरी तरह से समझ जाओगे। मैं अभी भी तुम लोगों को नहीं बताता (अभी लोगों को उजागर करने का समय है; हर किसी को मेरी इच्छा पूरी करने में सक्षम होने के लिए सावधान और सतर्क रहना चाहिए)। मैं अपने वचनों के माध्यम से सभी लोगों को उजागर कर दूँगा, और यह दर्शाने के लिए उनके मूल रूपों को प्रकट कर दिया जाएगा कि वे सच्चे हैं या नहीं। यदि कोई वेश्या या ईज़ेबेल है, तो मुझे उसे अवश्य उजागर करना होगा। मैं पहले कह चुका हूँ कि मैं एक उँगली भी उठाए बिना चीज़ों को करता हूँ और कि मैं लोगों को उजागर करने के लिए केवल अपने वचनों का उपयोग करता हूँ। मुझे किसी छद्मवेश का डर नहीं है; एक बार जब मेरे वचन कह दिए जाते हैं, तो तुम्हें अपना मूल रूप प्रकट कर देना चाहिए, और तुम अपने आप को कितनी भी अच्छी तरह से क्यों न छिपा लो, मैं निश्चित रूप से उसका पता लगा लूँगा। यह मेरे कर्मों का सिद्धांत है—केवल कथनों का उपयोग करना और किसी भी तरह की शक्ति व्यय न करना। लोग इस बारे में व्यग्र हो जाते हैं कि मेरे वचन पूरे होंगे या नहीं, वे मेरे लिए उद्विग्न होते हैं और मेरी चिंता करते हैं, किंतु इन प्रयासों की वास्तव में आवश्यकता नहीं है; वे ऐसी कीमत हैं, जिसे चुकाना आवश्यक नहीं है। तुम मेरे बारे में चिंता करते हो, किंतु क्या तुम्हारा अपना जीवन परिपक्व हो गया है? तुम्हारी अपनी नियति के बारे में क्या ख़याल है? स्वयं से बार-बार पूछो और फूहड़ मत बनो। सभी लोगों को मेरे कार्य पर विचार करना चाहिए और—मेरे कर्मों और मेरे वचनों के माध्यम से—मेरे व्यक्तित्व को देखना चाहिए, मेरे बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, मेरी सर्वशक्तिमत्ता को जानना चाहिए, मेरी बुद्धिमत्ता को जानना चाहिए और उन साधनों और तरीकों को जानना चाहिए, जिनके द्वारा मैंने सभी चीज़ों का सृजन किया है, और उसके लिए मेरी अनंत प्रशंसा करनी चाहिए। मैं सभी लोगों को यह दिखाऊँगा कि किस पर मैं अपने प्रशासनिक आदेशों के हाथ रखता हूँ, किस पर मैं कार्य करता हूँ, वह क्या है जो मैं करना चाहता हूँ और वह क्या है जिसे मैं पूरा करना चाहता हूँ। यह ऐसी चीज़ है, जिसे हर एक व्यक्ति को हासिल करना चाहिए, क्योंकि यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। मैं जो कहता हूँ, वह पूरा करूँगा। किसी को भी मेरे वचनों का यूँ ही

आकलन नहीं करना चाहिए, सभी को मेरे वचनों के माध्यम से मेरे कर्मों के पीछे के सिद्धांत देखने चाहिए, और मेरे वचनों से जानना चाहिए कि मेरा कोप क्या है, मेरा शाप क्या है और मेरा न्याय क्या है। ये सभी चीज़ें मेरे वचनों पर निर्भर करती हैं और ये ऐसी चीजें हैं, जो मेरे प्रत्येक वचन के भीतर हर एक व्यक्ति द्वारा देखी जानी चाहिए।

अध्याय 101

मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति के प्रति उदार नहीं होऊँगा जो मेरे प्रबंधन को बाधित करता है या जो मेरी योजनाओं को बर्बाद करने की कोशिश करता है। हर किसी को मेरे कहे वचनों से मेरे अर्थ को समझ जाना चाहिए और जिस बारे में मैं बात कर रहा हूँ, उस बारे में स्पष्ट हो जाना चाहिए। वर्तमान स्थिति को देखते हुए, हर एक को स्वयं की जाँच करनी चाहिए : तू किस भूमिका को निभा रहा है? तू मेरे वास्ते जी रहा है या तू शैतान की सेवा कर रहा है? क्या तेरा क्रिया-कलाप मुझसे निकलता है या शैतान से? तुम लोगों को यह सब स्पष्ट हो जाना चाहिए ताकि मेरे प्रशासनिक आदेशों को अपमानित करने और इस तरह मेरे प्रचण्ड प्रकोप को भड़काने से बचा जा सके। अतीत में देखने पर पता चलता है कि लोग कभी भी मेरे लिए निष्ठाहीन और संतानोचित नहीं रहे हैं, वे अशिष्ट रहे हैं और उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है। इन कारणों से लोग आज मेरे न्याय का सामना करते हैं। यद्यपि मैं सिर्फ एक मनुष्य प्रतीत होता हूँ, जिन लोगों को मैं अनुमोदित नहीं करता (तुम लोगों को इससे मेरा अर्थ समझना चाहिए : सवाल यह नहीं है कि तू कितना सुंदर दिखता है या तू कितना आकर्षक है, बल्कि यह है कि मैंने तुझे पूर्वनियत किया और चुना है या नहीं) वे सभी मेरे द्वारा हटाए जाने के निशाने पर होंगे। यह बिल्कुल सच है। क्योंकि मैं मनुष्य प्रतीत हो सकता हूँ, लेकिन मेरी दिव्यता को समझने के लिए तुझे मेरी मानवता के पार देखना होगा। जैसा कि मैंने कई बार कहा है कि "सामान्य मानवता और पूर्ण दिव्यता पूर्ण स्वयं परमेश्वर के दो अविभाज्य अंग हैं।" तब भी, तुम लोग मुझे नहीं समझते; तुम लोग केवल अपने उस अज्ञात परमेश्वर को ही महत्व देते हो। तुम ऐसे लोग हो जो आध्यात्मिक मामलों को नहीं समझते। फिर भी ऐसे लोग मेरे ज्येष्ठ पुत्र बनना चाहते हैं। कैसे बेशर्म हैं! वे दरअसल अपनी हैसियत नहीं देखते! उनकी हैसियत तो मेरे जन की तरह सेवा करने लायक भी नहीं है, फिर वे मेरे ज्येष्ठ पुत्र बनकर मेरे साथ राजा कैसे हो सकते हैं? ऐसे लोग अपने आपको ही नहीं जानते; वे शैतान के प्रकार हैं और मेरे घर में स्तंभ होने के योग्य नहीं हैं। वे मेरे सामने सेवा करने योग्य तो

बिल्कुल भी नहीं हैं। इसलिए मैं उन्हें एक-एक करके हटा दूँगा और एक-एक करके उनका असली चेहरा प्रकट कर दूँगा।

मेरा कार्य बेरोक और अबाध गति से कदम दर कदम आगे बढ़ता है क्योंकि मैंने विजय प्राप्त कर ली है और पूरे ब्रह्मांड में राजा के रूप में शासन किया है। (मेरे कहने का अर्थ यह है कि दुष्ट शैतान को पराजित करने के बाद से मैंने अपना सामर्थ्य फिर से प्राप्त कर लिया है।) जब मैं सारे ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करूँ लूँगा, तो सिय्योन पर्वत पर विजय का झण्डा लहराएगा। अर्थात्, मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरी विजय पताका, मेरी महिमा हैं जिन पर, मुझे गर्व है; वे इस बात का संकेत हैं कि मैंने शैतान को अपमानित कर दिया है और वे ऐसी विधि हैं जिनके द्वारा मैं कार्य करता हूँ। (उन लोगों के एक समूह के माध्यम से जिन्हें मेरे द्वारा पूर्वनियत कर दिए जाने के बाद शैतान ने भ्रष्ट कर दिया था, लेकिन जो फिर से मेरे पास लौट आए, मैं बड़े लाल अजगर को अपमानित करता हूँ और विद्रोह के सभी पुत्रों पर शासन करता हूँ।) जहाँ मेरी सर्वशक्तिमत्ता है, वहीं मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं; वे मेरी बड़ी सफलता हैं, जो अपरिवर्तनीय और निर्विवाद है। मैं उन्हीं के माध्यम से अपनी प्रबंधन योजना को पूरा करूँगा। मेरे कहने का यही मतलब था जब मैंने अतीत में कहा : "तुम्हीं लोगों के माध्यम से मैं सभी राष्ट्रों और सभी लोगों को अपने सिंहासन के समक्ष वापस लाऊँगा।" जब मैंने ये वचन बोले, "तुम लोगों के कंधों पर भारी ज़िम्मेदारी", इनसे भी मेरा यही मतलब था। क्या यह बात स्पष्ट हो गयी? क्या तुम लोगों की समझ में आ गयी? ज्येष्ठ पुत्र मेरी पूरी प्रबंधन योजना का क्रिस्टलीकरण हैं। इसलिए, मैं इस समूह के साथ कभी भी नरमी से पेश नहीं आया हूँ, मैंने हमेशा उन्हें सख्ती से अनुशासित किया है। (वह सख्त अनुशासन है दुनिया में झेले जा रहे दुःख, परिवारों का दुर्भाग्य और माता-पिता, पति-पत्नी और बच्चों द्वारा छोड़ दिया जाना—संक्षेप में, दुनिया के द्वारा परित्याग और युग द्वारा त्यागा जाना), इसलिए तुम लोगों की किस्मत अच्छी है जो आज तुम मेरे सामने आये हो। यह उस प्रश्न का उत्तर है जिसके बारे में प्रायः तुम लोगों ने सोचा है : "अन्य लोगों ने इस नाम को क्यों स्वीकार नहीं किया, जबकि मैंने स्वीकार कर लिया?" अब तुम लोग जान गए हो!

आज कुछ भी पहले जैसा नहीं है। मेरी प्रबंधन योजना ने नए तरीकों को अपना लिया है, मेरा कार्य भी अब पहले से अलग है और मेरे कथन अब और भी अधिक अभूतपूर्व हैं। इसलिए, मैंने बार-बार जोर दिया है कि तुम लोगों को ढंग से मेरी सेवा करनी चाहिए (यह सेवाकर्मियों के लिए कहा गया है)। अपने साथ नकारात्मक ढंग से व्यवहार मत करो, बल्कि एक ईमानदार अनुसरण करते रहो। क्या कुछ अनुग्रह प्राप्त

कर लेना आनंददायक नहीं है? यह दुनिया में पीड़ा झेलने से कहीं बेहतर है। मैं तुझे बताता हूँ! यदि तू पूरे हृदय से मेरी सेवा नहीं करेगा, बल्कि यह शिकायत करेगा कि मैं अधर्मी हूँ, तो कल अधोलोक और नरक में तेरा पतन हो जाएगा। कोई भी समय-पूर्व मृत्यु नहीं चाहता, है ना? जीवन का एक-एक दिन मायने रखता है, इसलिए तुझे अपने आपको पूरी तरह से मेरी प्रबंधन योजना के लिए अर्पित करना चाहिए और फिर अपने बारे में मेरे न्याय की प्रतीक्षा कर, अपने ऊपर पड़ने वाली मेरी धार्मिक ताड़ना की प्रतीक्षा कर। यह मत सोच कि मैं बकवास कर रहा हूँ; मैं अपनी धार्मिकता से और अपने स्वभाव से बोलता हूँ। इसके अलावा, मैं अपने प्रताप और अपनी धार्मिकता से कार्य करता हूँ। लोग कहते हैं कि मैं धार्मिक नहीं हूँ, वे ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि वे मुझे नहीं जानते; यह उनके विद्रोही स्वभाव की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। मेरे लिए भावनाओं का कोई अर्थ नहीं है, बल्कि मेरे लिए केवल धार्मिकता, प्रताप, न्याय और कोप है। जैसे-जैसे समय गुज़रेगा, तू उतना ही अधिक मेरा भाव देखेगा। वर्तमान एक परिवर्ती चरण है, और तुम लोग इसके केवल एक छोटे से हिस्से को ही देख पाते हो, तुम लोग केवल कुछ बाह्य रुप से अभिव्यक्त चीजों को ही देख पाते हो। जब मेरे ज्येष्ठ पुत्र प्रकट होंगे, तो मैं तुम लोगों को सब-कुछ देखने दूँगा और सब-कुछ समझने दूँगा। हर कोई अपने हृदय में और अपने शब्दों में आश्वस्त हो जाएगा। मैं अपनी गवाही तुम लोगों से दिलवाऊँगा, सदैव अपनी स्तुति करवाऊँगा और अपनी सराहना करवाऊँगा। यह अपरिहार्य है और किसी के भी द्वारा बदला नहीं जा सकता। लोग इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते, इस पर विश्वास करने की तो बात ही छोड़ दो।

जो ज्येष्ठ पुत्र हैं वे दर्शनों के बारे में उत्तरोत्तर स्पष्ट हो रहे हैं, मेरे लिए उनका प्रेम अब और अधिक बढ़ रहा है। (यह रूमानी प्रेम नहीं है, जो कि मेरे बारे में शैतान का प्रलोभन है, जिसकी वास्तविक प्रकृति का पता लगाया जाना चाहिए। इसलिए अतीत में मैंने कहा था कि ऐसे भी लोग हैं जो मेरे सामने अपने आकर्षण का दिखावा करते हैं। ऐसे लोग शैतान के अनुचर होते हैं, जो मानते हैं कि मैं उनके हावभाव से आकर्षित हो जाऊँगा। बेशर्म! ऐसे लोग बेहद नीच होते हैं!) हालाँकि, इस अवधि के दौरान मैंने ये जो वचन कहे हैं उनके माध्यम से, जो लोग स्वयं ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं, वे दर्शनों के बारे में उत्तरोत्तर अस्पष्ट हो गए हैं, और उन्होंने मेरे व्यक्तित्व में आस्था गँवा दी है। इसके बाद वे धीरे-धीरे उदासीन होने लगते हैं जब तक कि वे अंततः पतित नहीं हो जाते। ऐसे लोग अपनी सहायता नहीं कर पाते। इस अवधि के दौरान मैं जो कह रहा हूँ उसका लक्ष्य यही है; हर किसी को इसे देखना चाहिए (मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से बात कर रहा हूँ), मेरे

कथनों और कार्यों से, मेरी अद्‌भुतता को देखना चाहिए। ऐसा क्यों कहा जाता है कि मैं शांति का राजकुमार हूँ, शाश्वत परमपिता हूँ, कि मैं अद्‌भुत हूँ, परामर्शदाता हूँ? अपनी पहचान, अपने कथनों या जो कुछ मैं करता हूँ, उससे यह समझाना बहुत ही सतही होगा; यह तो उल्लेख करने योग्य भी नहीं होगा। मुझे शांति का राजकुमार बुलाए जाने का कारण है ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण करने का मेरा सामर्थ्य, शैतान के बारे में मेरा न्याय और असीम आशीष जो मैंने ज्येष्ठ पुत्रों को प्रदान किए हैं। अर्थात्, केवल ज्येष्ठ पुत्र ही मुझे शांति का राजकुमार कहने के योग्य हैं, क्योंकि मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से प्रेम करता हूँ और शांति का राजकुमार विशेषण उनके मुख से आना चाहिए। उनके लिए, मैं शांति का राजकुमार हूँ। अपने पुत्रों और अपने जनों के लिए मैं शाश्वत परमपिता हूँ। मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अस्तित्व की वजह से और क्योंकि वे मेरे साथ राजसत्ता का सामर्थ्य संभाल सकते हैं और सभी राष्ट्रों एवं सभी लोगों को नियंत्रित कर सकते हैं, यानी पुत्रों और जनों को, इसलिए, पुत्रों और लोगों को मुझे शाश्वत परमपिता बुलाना चाहिए, जिसका अर्थ है स्वयं परमेश्वर, जो ज्येष्ठ पुत्रों से ऊपर है। मैं उन लोगों के लिए अदभुत हूँ जो पुत्र, जन और ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं। मेरे कार्य की अद्‌भुतता के कारण, अविश्वासी मुझे बिल्कुल भी नहीं देख सकते (क्योंकि मैंने उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया है), वे मेरे कार्य को ज़रा भी स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते, इसलिए उनके लिए मैं अद्‌भुत हूँ। सभी दुष्टों और शैतान के लिए मैं परामर्शदाता हूँ क्योंकि जो कुछ मैं करता हूँ वह उन्हें शर्मिंदा करने का काम करता है; मेरे सारे क्रिया-कलाप मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए हैं। मेरा हर कदम सुचारू रूप से आगे बढ़ता है और मैं प्रत्येक चरण के साथ विजय प्राप्त करता जाता हूँ। इसके अलावा, मैं शैतान के सभी षड़यंत्रों की वास्तविक प्रकृति का पता लगा सकता हूँ और उसके षड़यंत्रों का उपयोग अपनी सेवा के लिए कर सकता हूँ, नकारात्मक पक्ष से अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इसे एक वस्तु बना सकता हूँ। "परामर्शदाता" होने का मेरा यही अर्थ है, जिसे न तो कोई बदल सकता है और न ही कोई पूरी तरह से समझ सकता है। लेकिन अपने व्यक्तित्व के संदर्भ में, मैं शांति का राजकुमार, शाश्वत परमपिता, परामर्शदाता और अद्‌भुत हूँ। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो असत्य हो। यह अखंडनीय और अपरिवर्तनशील सत्य है!

मेरे पास कहने के लिए बहुत कुछ है; उसकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम लोग धैर्य रखो और प्रतीक्षा करो। तुम लोग जो कुछ भी करो, लेकिन आवेग में आ कर छोड़ो मत। क्योंकि अतीत में तुम लोगों ने जो समझा था, वह आज पुराना हो चुका है, अब वह प्रासंगिक नहीं है, वर्तमान समय परिवर्तन का समय है—राजवंशों के बीच परिवर्तन की तरह, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम

लोग अपनी सोच बदलो और अपनी पुरानी अवधारणाएँ बदलो। "धार्मिकता के पवित्र लबादे को ओढ़ने" का यही असली अर्थ है। अपने वचनों को केवल मैं ही समझा सकता हूँ, केवल मुझे ही पता है कि मैंने क्या करने का बीड़ा उठाया है। इसलिए केवल मेरे वचन ही अशुद्धता से रहित हैं और पूरी तरह से मेरे आशय के अनुरूप हैं, इसलिए यह धार्मिकता का पवित्र लबादा ओढ़ना है। मानव मन की समझ कल्पना-मात्र है; इंसानी समझ अशुद्ध है और मेरे इरादों को समझने में असमर्थ है। इसलिए मैं स्वयं ही बोलता हूँ, मैं स्वयं ही समझाता हूँ, और जो कुछ मैंने कहा, उसका अर्थ यह है, "मैं स्वयं कार्य करता हूँ।" यह मेरी प्रबंधन योजना का एक अपरिहार्य अंग है, सभी लोगों को मुझे महिमा प्रदान करनी चाहिए और मेरी स्तुति करनी चाहिए। जहाँ तक मेरे वचनों को समझने की बात है, मैंने कभी भी लोगों को वह सामर्थ्य प्रदान नहीं किया है और न ही उनमें ऐसी ज़रा-सी भी योग्यता है। शैतान को अपमानित करने की यह मेरी विधियों में से एक है। (यदि लोग मेरे कथनों को समझ जाते और वे हर कदम पर मेरे इरादों की जाँच कर पाते, तो शैतान जब चाहता लोगों को काबू में कर सकता था, परिणामस्वरूप लोग मेरे विरुद्ध हो जाते और ज्येष्ठ पुत्रों का चयन करने के मेरे लक्ष्य को हासिल करना असंभव बना देते। यदि मैं हर रहस्य को समझ जाता और मैं जो व्यक्ति हूँ, वो उन कथनों को बोल पाता जिनकी कोई थाह नहीं पा सकता, तो मैं भी शैतान के द्वारा काबू किया जा सकता था। यही कारण है कि जब मैं देह में हूँ, तो मैं बिल्कुल भी अलौकिक नहीं हूँ।) हर एक के लिए इन वचनों की महत्ता को स्पष्ट रूप से समझना और मेरी अगुआई का अनुसरण करना आवश्यक है। गहन वचनों और सिद्धांतों को अपने आप समझने का प्रयास मत करो।

अध्याय 102

मैंने एक हद तक बात की है और मेरा कार्य एक खास बिंदु पर पहुंचा है; तुम सभी लोगों को मेरी इच्छा को समझना चाहिए और अलग-अलग स्तरों पर मेरी ज़िम्मेदारी के प्रति विचारशील होने में सक्षम होना चाहिए। यह एक ऐसा मोड़ है जहां से देह आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करती है, तुम लोग एक युग से दूसरे युग में जा रहे अग्रदूत हो, सार्वभौमिक लोग जो ब्रह्मांड और पृथ्वी के छोरों के आरपार जाते हैं। तुम मुझे सबसे प्यारे हो; तुम्हीं लोग हो जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। कहा जा सकता है कि तुम लोगों के अलावा मुझे किसी और से प्रेम नहीं है, क्योंकि मेरा समस्त श्रमसाध्य प्रयास तुम लोगों के लिए रहा है—क्या ऐसा हो सकता है कि इसे तुम लोग न जानो? मैं सारी चीजों की सृष्टि क्यों करता? मैं तुम लोगों की सेवा करने के

लिए सारी चीजों का प्रबंध क्यों करता? ये सारी क्रियाएं तुम लोगों के लिए मेरे प्रेम की अभिव्यक्ति थीं। पर्वत और पर्वतों की सभी चीज़ें, पृथ्वी और पृथ्वी की सभी चीज़ें मेरी स्तुति और मेरा महिमामंडन करती हैं, क्योंकि मैंने तुम लोगों को प्राप्त कर लिया है। वास्तव में, सब कुछ किया जा चुका है; और इसके अलावा, सब कुछ अच्छी तरह से पूर्ण कर लिया गया है। तुम लोगों ने मेरी शानदार गवाही दी है, मेरे लिए दुष्टात्माओं और शैतान को अपमानित किया है। मुझ से बाहर के सभी लोग, मामले और चीज़ें मेरे अधिकार को समर्पित होती हैं, और सभी, मेरी प्रबंधन योजना की पूर्णता के कारण, अपनी किस्म का अनुसरण करती हैं (मेरे लोग मेरे हैं, और शैतान की किस्म के सभी लोग आग की नदी के हैं—वे अथाह गड्ढे में गिरते हैं, जहाँ वे शाश्वत रूप से विलाप करते हुए सदा के लिए नष्ट हो जाएँगे)। जब मैं "नष्ट होने" और "उस समय से उनके प्राण, आत्मा और शरीर को ले जाने" के बारे में बोलता हूँ, तो मैं उन्हें शैतान को सौंपने और उसके द्वारा उन्हें कुचलने देने की बात कर रहा हूँ। दूसरे शब्दों में, जो लोग मेरे घर के नहीं हैं वे विनाश की वस्तु होंगे तथा उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। यह ऐसा नहीं है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं, कि वे चले जाएँगे। यह भी कहा जा सकता है कि, मेरी राय में, मुझ से बाहर की सारी चीजें, अस्तित्व में नहीं रहतीं, यही तबाही का सही अर्थ है। इंसान की नज़र में उनका अस्तित्व प्रतीत होता है, किन्तु मेरी नज़र में उनका अस्तित्व समाप्त हो चुका होता है और वे हमेशा के लिए नष्ट हो जाती हैं। (मेरा जोर इस बात पर है कि जिन पर मैं अब कार्य नहीं करता, वे मुझ से बाहर के लोग हैं।) मनुष्य, चाहे वे कैसे भी क्यों न सोचें, इसे समझ नहीं सकते, और चाहे इसे कैसे भी क्यों न देखें, वे इसे भेद नहीं सकते। लोग इसे तब तक स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते, जब तक कि मैं उन्हें प्रबुद्ध नहीं कर देता, उन्हें रोशन नहीं कर देता, और स्पष्ट रूप से इसके बारे में उन्हें बता नहीं देता। इसके अलावा, वे इसके बारे में अधिक से अधिक अस्पष्ट होते जाएंगे, और अधिक खाली महसूस करेंगे, और उत्तरोत्तर महसूस करेंगे कि अनुसरण करने का कोई मार्ग नहीं है—वे लगभग मृत लोगों की तरह हैं। अभी अधिकांश लोग (मतलब ज्येष्ठ पुत्रों को छोड़कर सभी लोग) इसी स्थिति में हैं। मैं इन चीज़ों को बहुत स्पष्ट रूप से कहता हूँ, फिर भी इन लोगों की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती और ये लोग अपने शारीरिक सुख में ही लगे रहते हैं—खाते हैं और सो जाते हैं; सोते हैं और फिर खाते हैं, मेरे वचनों पर विचार नहीं करते। जब वे उत्साहित भी होते हैं, तो ऐसा केवल थोड़ी देर के लिए होता है, और बाद में वे वैसे ही बन जाते हैं जैसे थे, पूरी तरह से अपरिवर्तित, मानो उन्होंने मुझे सुना ही नहीं। ये अजीब से, बेकार इंसान हैं जिनके पास कोई ज़िम्मेदारी नहीं है—ये साफ तौर पर बेहद

मुफ़्तखोर लोग होते हैं। बाद में, मैं उन्हें एक-एक कर त्याग दूँगा। चिंता मत करो! एक-एक कर, मैं उन्हें वापस अथाह-कुंड में भेज दूँगा। पवित्र आत्मा ने ऐसे लोगों पर कभी कार्य नहीं किया, और वे जो कुछ भी करते हैं, वह उन उपहारों से आता है जो उन्होंने प्राप्त किये हैं। जब मैं उपहारों की बात करता हूँ, तो मेरा मतलब है कि ये निष्प्राण लोग हैं, जो मेरे सेवादार हैं। मैं उनमें से किसी को भी नहीं चाहता, मैं उन्हें हटा दूँगा (किन्तु फिलहाल वे थोड़े उपयोगी हैं)। तू जो सेवादार है, मेरी बात सुन! यह मत सोच कि तेरा उपयोग करने से मेरा मतलब है कि मैं तेरा पक्ष लेता हूँ। यह इतना आसान नहीं है। यदि तू चाहता है कि मैं तेरा पक्ष लूँ, तो तुझे ऐसा व्यक्ति बनना होगा जिसका मैं अनुमोदन करूँ और जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से पूर्ण बनाऊँ। मैं ऐसे ही व्यक्ति से प्रेम करता हूँ। भले ही लोग कहें कि मैंने ग़लती की है, मैं कभी इनकार नहीं करूँगा। क्या तू जानता है? जो लोग सेवा प्रदान करते हैं वे मवेशी और घोड़े हैं। वे मेरे ज्येष्ठ पुत्र कैसे हो सकते हैं? क्या यह बेवकूफी नहीं होगी? क्या यह प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं होगा? जिनके पास भी मेरा जीवन है, मेरी गुणवत्ता है, वे मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं। यह एक तर्कसंगत बात है—कोई भी इसका खंडन नहीं कर सकता। ऐसा ही होना चाहिए, अन्यथा ऐसा कोई भी नहीं होगा जो यह भूमिका निभा सके, कोई भी नहीं होगा जो इसका विकल्प बन सके। यह कोई भावुकता में की गई बात नहीं है, क्योंकि मैं स्वयं ही धार्मिक परमेश्वर हूँ; मैं स्वयं ही पवित्र परमेश्वर हूँ; मैं प्रतापी, अनुलंघनीय परमेश्वर हूँ!

हर वह चीज जो इंसान के लिए असंभव है, मेरे लिए सहज और सुलभ है। कोई भी इसे रोक नहीं सकता, न ही कोई इसे बदल सकता है। इतनी बड़ी दुनिया मेरे हाथों में है, तुच्छ दुष्ट शैतान की तो औकात की क्या है। यदि मेरी प्रबंधन योजना, और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की बात नहीं होती, तो मैंने बहुत पहले ही इस पुरानी बुराई के साथ ही इस स्वच्छंद भोगी युग को भी नष्ट कर दिया होता जिसमें मृत्यु की इतनी दुर्गंध व्याप्त है। किन्तु मैं औचित्य को ध्यान में रख कर कार्य करता हूँ और बिना सोचे-समझे बात नहीं करता। जैसे ही मैं कोई बात बोलूँगा, वह पूरी हो जाएगी; यदि ऐसा नहीं भी हुआ, तो भी हमेशा मेरी बुद्धि का पहलू है, जो मेरे लिए सब कुछ सम्पन्न करेगा और मेरे कार्यों के लिए रास्ता खोल देगा। क्योंकि मेरे वचन मेरी बुद्धि हैं; मेरे वचन सब कुछ हैं। लोग मूल रूप से उन्हें समझ नहीं पाते। मैं प्रायः "आग की नदी" की बात करता हूँ। इसका क्या अर्थ है? यह आग और गंधक की नदी से भिन्न कैसे है? आग और गंधक की नदी का अर्थ है शैतान का प्रभाव और आग की नदी का मतलब शैतान के अधिकार क्षेत्र में पूरी दुनिया से है। दुनिया में हर किसी को आग की नदी में आहुति देनी पड़ सकती है (अर्थात्, वे उत्तरोत्तर भ्रष्ट होते जाते हैं

और, जब उनकी भ्रष्टता एक निश्चित स्तर तक पहुँच जाएगी, तो वे मेरे द्वारा एक-एक करके नष्ट कर दिए जाएँगे, जो काम मैं केवल एक शब्द बोल कर संपन्न कर सकता हूँ)। जितना अधिक मेरा कोप होगा, उतनी ही अधिक धधकती हुई लपटें पूरी आग की नदी में होंगी। यह उन लोगों के संदर्भ में है जो अधिकाधिक दुष्ट होते जा रहे हैं। जिस समय मेरा कोप फूटेगा उसी समय आग की नदी में विस्फोट होगा; अर्थात्, यही वह समय होगा जब संपूर्ण ब्रह्मांड नष्ट हो जाएगा। उस दिन पृथ्वी पर मेरा राज्य पूरी तरह से साकार हो जाएगा और एक नया जीवन शुरू होगा। ऐसा शीघ्र ही पूरा होगा। मेरे बोलने के बाद, देखते ही देखते सब-कुछ पूरा हो जाएगा। यह इस मामले का मानवीय दृष्टिकोण है, किन्तु मेरी दृष्टि में चीज़ें पहले ही पूरी हो चुकी हैं, क्योंकि मेरे लिए सब कुछ आसान है। मैं बोलता हूँ और यह हो जाता है; मैं बोलता हूँ और यह स्थापित हो जाता है।

हर दिन तुम लोग मेरे वचनों को खाते हो; तुम लोग मेरे मंदिर में मोटापे का आनंद लेते हो; तुम लोग मेरी जीवन की नदी से जल पीते हो; तुम लोग मेरे जीवन के वृक्ष से फल तोड़ते हो। तो फिर, मेरे मंदिर में मोटापा क्या है? मेरी जीवन की नदी का पानी क्या है? जीवन का वृक्ष क्या है? जीवन के वृक्ष का फल क्या है? हो सकता है ये वाक्यांश सामान्य हों, इसके बावजूद ये सभी मनुष्य की समझ से बाहर हैं, वे सभी लोग उलझन में हैं। वे उन्हें गैर-ज़िम्मेदाराना ढंग से बोलते हैं, उनका लापरवाही से उपयोग करते हैं, और उन्हें बेतरतीब ढंग से लागू करते हैं। मंदिर में मोटापे का मतलब न तो मेरे द्वारा बोले गए वचनों से है और न ही उस अनुग्रह से जो मैंने तुम लोगों पर किया है। तो, इसका अर्थ वास्तव में है क्या? प्राचीन काल से ही कोई भी इतना भाग्यशाली नहीं रहा है जो मेरे मंदिर में मोटापे का आनंद ले सके। केवल अंत के दिनों में, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों में से ही, लोग देख सकते हैं कि मेरे मंदिर में मोटापा क्या है। इस वाक्यांश में "मंदिर" का मतलब है मेरा व्यक्तित्व है; इसका अर्थ है सिय्योन पर्वत, मेरा धाम। मेरी अनुमति के बिना कोई भी इसमें न प्रवेश कर सकता है और न इससे बाहर निकल सकता है। "मोटापा" का क्या अर्थ है? मोटापा का अर्थ मेरे शरीर में मेरे साथ शासन कर पाने के आशीष से है। साधारण तौर पर बोलें तो, इसका मतलब शरीर में मेरे साथ शासन करने योग्य बनने के लिए ज्येष्ठ पुत्रों को मिले आशीष से है, और इसे समझना मुश्किल नहीं है। जीवन की नदी के जल के दो अर्थ हैं: एक तरफ यह जीवित जल का उल्लेख करता है जो मेरे अंतर्तम अस्तित्व से प्रवाहित होता है, अर्थात्, मेरे मुँह से निकलने वाला हर वचन। दूसरी ओर, यह मेरे कार्य-विवेक व कार्यनीति का और साथ ही मेरे स्वरूप का उल्लेख करता है। मेरे वचनों में अंतहीन, छुपे

हुए रहस्य हैं (कि रहस्य अब छुपे हुए नहीं हैं यह बात अतीत के संदर्भ में कही जाती है, किन्तु भविष्य में होने वाले सार्वजनिक प्रकाशन की तुलना में, वे अभी भी छुपे हुए हैं। यहाँ "छुपे हुए हैं" निरपेक्ष नहीं, बल्कि सापेक्ष है)। दूसरे शब्दों में, जीवन की नदी का जल सदा से बह रहा है। मुझमें अनंत बुद्धि है, और लोग पूरी तरह से नहीं समझ पाते कि मेरा स्वरूप क्या है; अर्थात, जीवन की नदी का जल सदा से बह रहा है। इंसान की नज़र में कई प्रकार के भौतिक वृक्ष हैं, किन्तु किसी ने कभी भी जीवन के वृक्ष पर दृष्टि नहीं डाली है। हालाँकि, आज इसे देखने के बावजूद, लोग इसे पहचानते नहीं, और फिर भी, वे जीवन के वृक्ष से खाने की बात भी करते हैं। यह वास्तव में हास्यास्पद है! वे इसे अंधाधुंध तरीके से खाएँगे! मैं क्यों कहता हूँ कि आज लोग इसे देखते हैं किन्तु यह उनकी समझ में नहीं आता? मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? क्या तू मेरे वचनों के अर्थ समझता है? आज का व्यावहारिक परमेश्वर वह व्यक्ति है जो मैं स्वयं हूँ, और वो जीवन का वृक्ष है। मुझे मापने के लिए मानव अवधारणाओं का उपयोग मत कर—बाहर से मैं किसी वृक्ष की तरह नहीं दिखता, किन्तु क्या तू जानता है मैं वास्तव में जीवन का वृक्ष हूँ? मेरी हर क्रिया, मेरा भाषण और मेरा तरीका, जीवन के वृक्ष के फल हैं, और वे मेरा व्यक्तित्व हैं—ये वे चीजें हैं जो मेरे ज्येष्ठ पुत्रों द्वारा खाए जाने चाहिए, इसलिए अंततः केवल मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं बिल्कुल एक ही होंगे। वे मुझे जी पाएँगे और मेरी गवाही दे पाएँगे। (ये चीज़ें आध्यात्मिक दुनिया में हमारे प्रवेश करने के बाद घटित होंगी। केवल शरीर में हम बिल्कुल एकरूप हो सकते हैं; देह में हम केवल मोटे तौर पर ही एक समान हो सकते हैं, किन्तु फिर भी हमारी पसंद अलग-अलग है।)

मैं न केवल अपने ज्येष्ठ पुत्रों में अपनी सामर्थ्य प्रकट करूँगा, बल्कि मैं सभी राष्ट्रों और सभी लोगों पर उनके शासन में भी इसे प्रकट करूँगा। यह मेरे कार्य का एक कदम है। यही समय मुख्य है, और यही नए मोड़ का समय है। जब सब कुछ सम्पन्न हो जाएगा, तो तुम लोग देखोगे कि मेरे हाथ क्या कर रहे हैं, मैं कैसे योजना बनाता हूँ और कैसे प्रबंधन करता हूँ, हालांकि यह कोई अस्पष्ट चीज़ नहीं है। दुनिया के हर देश की गतिशीलता के मद्देनज़र, यह बहुत दूर नहीं है; लोग न तो इसकी कल्पना कर सकते हैं, और न ही इसका पूर्वानुमान लगा सकते हैं। तुझे ज़रा-सा भी लापरवाह या असावधान नहीं होना चाहिए ताकि तू आशीष प्राप्त करने और पुरस्कृत होने के अवसर को गँवा न दे। राज्य की संभावना दिखाई पड़ रही है और पूरी दुनिया धीरे-धीरे मर रही है। अथाह गड्ढे तथा आग और गंधक की नदी से विलाप के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं, इससे लोग भयाक्रांत होते हैं, उन्हें डर लगता है, छुपने की कोई जगह नहीं मिलती। जिस किसी

को भी मेरे नाम पर चुना जाता है और फिर निष्कासित कर दिया जाता है, वह अथाह गड्ढे में गिरता है। इसलिए जैसा कि मैंने कई बार कहा है, मैं निष्कासन की वस्तुओं को अथाह गड्ढे में डाल दूँगा। जब पूरी दुनिया नष्ट हो जाएगी तो हर चीज़ जो नष्ट कर दी गई है, वह आग और गंधक की नदी में फेंक दी जाएगी—अर्थात्, इसे आग की नदी से आग और गंधक की नदी में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। उस समय हर कोई या तो अनन्त विनाश के लिए (जिसका मतलब है वे सभी जो मुझ से बाहर हैं) या अनंत जीवन के लिए (जिसका अर्थ है वे सभी जो मेरे भीतर हैं) निर्धारित किया जा चुका होगा। उस समय मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र साम्राज्य से बाहर आएंगे और अनंत में प्रवेश करेंगे। यह बाद में पूरा होगा; अगर मैं अभी तुम लोगों को बता भी दूँ, तो भी तुम लोगों की समझ में नहीं आएगा। तुम लोग केवल मेरी अगुआई का अनुसरण कर सकते हो, मेरी रोशनी में चल सकते हो, मेरे प्रेम में मेरा साथ दे सकते हो, मेरे घर में मेरे साथ आनंद ले सकते हो, मेरे राज्य में मेरे साथ शासन कर सकते हो, और मेरे अधिकार में सभी राष्ट्रों और लोगों पर मेरे साथ शासन कर सकते हो। उपर्युक्त वर्णित सारी बातें अनंत आशीष हैं जो मैं तुम लोगों को दे रहा हूँ।

अध्याय 103

एक गरजदार आवाज़ गूँजती है, पूरे ब्रह्माण्ड को थरथरा देती है। यह इतनी गगनभेदी है कि लोग समय रहते बचकर निकल नहीं पाते हैं। कुछ मारे जाते हैं, कुछ नष्ट हो जाते हैं, और कुछ का न्याय किया जा है। यह सचमुच एक नज़ारा है, कुछ उस तरह का जैसा पहले कभी किसी ने नहीं देखा। ध्यान से सुनो : बिजली कड़कने की गर्जनाओं के साथ रोने की आवाज़ आ रही है। यह आवाज़ अधोलोक से आ रही है, यह नरक से आ रही है। यह विद्रोह के उन पुत्रों की कटु आवाज़ है जिनका मेरे द्वारा न्याय किया गया है। जिन्होंने मेरा कहा ध्यान से नहीं सुना और जो मेरे वचनों को अभ्यास में नहीं लाए, उनका कठोरतापूर्वक न्याय किया गया है और वे मेरे प्रचंड कोप के शाप के भागी बने हैं। मेरी आवाज़ न्याय और कोप है; मैं किसी के भी साथ नरमी नहीं बरतता और किसी के भी प्रति दया नहीं दिखाता हूँ, क्योंकि मैं धार्मिक परमेश्वर स्वयं हूँ, और मैं कोप से युक्त हूँ; मैं ज्वलन, प्रक्षालन, और विनाश से युक्त हूँ। मुझमें कुछ भी छिपा हुआ, या भावुकतापूर्ण नहीं है, बल्कि इसके विपरीत, सब कुछ खुला, धार्मिक, और निष्पक्ष है। चूँकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र पहले ही सिंहासन पर मेरे साथ हैं, सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के ऊपर शासन कर रहे हैं, जो चीज़ें और लोग अन्यायी और अधार्मिक हैं, उनका न्याय किया जाना अब शुरू हो रहा है। मैं एक-एक कर

उनकी जाँच-पड़ताल करूँगा, कुछ भी नहीं छोड़ूँगा, और उन्हें पूर्णतः प्रकट करूँगा। चूँकि मेरा न्याय पूरी तरह प्रकट हो गया है और पूरी तरह खोल दिया गया है, और मैंने बिल्कुल कुछ भी छिपाया नहीं है; इसलिए मैं उस सबको निकाल फेंकूँगा जो मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं है, और उसे अथाह कुंड में अनंत काल के लिए नष्ट हो जाने दूँगा। वहाँ मैं उसे सदा के लिए जलने दूँगा। यह मेरी धार्मिकता है; यह मेरा खरापन है। कोई भी इसे बदल नहीं सकता है, और सब मेरी प्रभुता के अधीन होना ही चाहिए।

अधिकांश लोग मेरे कथनों को अनदेखा करते हैं, यह सोचकर कि वचन तो बस वचन हैं और तथ्य तो तथ्य हैं। वे अंधे हैं! क्या वे नहीं जानते हैं कि मैं निष्ठावान परमेश्वर स्वयं हूँ? मेरे वचन और तथ्य एक साथ घटित होते हैं। क्या सचमुच ऐसा नहीं है? लोग मेरे वचनों को बूझते ही नहीं, और केवल वे ही सच में समझते हैं जो प्रबुद्ध किए गए हैं। यह तथ्य है। लोग ज्यों ही मेरे वचनों को देखते हैं, वे बुरी तरह भयभीत हो जाते हैं, और छिपने के लिए घबराहट में चारों तरफ भागने लगते हैं। यह तब और अधिक होता है जब मेरा न्याय बरसता है। जब मैंने सभी चीज़ों का सृजन किया, जब मैं दुनिया को नष्ट करता हूँ, और जब मैं ज्येष्ठ पुत्रों को पूरा करता हूँ—तब ये सारी चीज़ें मेरे मुख से निकले एक ही वचन से संपन्न होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरा वचन अपने आप में अधिकार है; यह न्याय है। कहा जा सकता है कि यह व्यक्तित्व जो मैं हूँ, यही न्याय, और प्रताप है; यह अकाट्य तथ्य है। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का एक पहलू है; यह मात्र एक तरीक़ा है जिससे मैं लोगों का न्याय करता हूँ। मेरी नज़रों में, सारे लोगों, सारे मामलों, और सारी चीज़ों सहित सब कुछ मेरे हाथों में और मेरे न्याय के अधीन है। कोई भी व्यक्ति और कोई भी चीज़ अंधाधुंध या मनमाने ढंग से व्यवहार करने की हिम्मत नहीं करती है, और सब कुछ मेरे कहे वचनों के अनुसार संपन्न होना ही चाहिए। मनुष्य की धारणाओं के भीतर, हर कोई मैं जो व्यक्तित्व हूँ, उस व्यक्तित्व के वचनों पर विश्वास करता है। जब मेरा आत्मा बोलता है, हर कोई संशय से भरा जाता है। लोगों को मेरी सर्वशक्तिमत्ता का रत्ती भर ज्ञान नहीं है, यहाँ तक कि वे मेरे विरुद्ध अभियोग भी लगाते हैं। अब मैं तुझे बताता हूँ, जो भी मेरे वचनों पर संदेह करते हैं, जो भी मेरे वचन का तिरस्कार करते हैं, यही वे हैं जो नष्ट कर दिए जाएँगे; वे विनाश के शाश्वत पुत्र हैं। इससे देखा जा सकता है कि बहुत कम हैं जो ज्येष्ठ पुत्र हैं, क्योंकि मैं इसी तरह कार्य करता हूँ। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, मैं एक अंगुली भी हिलाए बिना सब कुछ संपन्न करता हूँ: मैं बस अपने वचनों का प्रयोग करता हूँ। यही वह है जहाँ मेरी सर्वशक्तिमत्ता निहित है। मेरे वचनों में, कोई भी मेरे कहे के स्रोत और उद्देश्य का पता नहीं लगा सकता है। लोग यह नहीं कर

सकते, और वे तभी कुछ कर सकते हैं जब वे मेरे मार्गदर्शन में रहें, और मेरी धार्मिकता के अनुसार, मेरी इच्छा के अनुरूप सब कुछ करें, जिससे मेरा परिवार धार्मिकता और शांति प्राप्त करे, सदा के लिए जीवित रहे, और अनंतकाल तक दृढ़ और अटल रहे।

मेरा न्याय हरेक तक पहुँचता है, मेरी प्रशासनिक आज्ञाएँ हरेक को स्पर्श करती हैं, और मेरे वचन तथा मेरा व्यक्तित्व हरेक पर प्रकट किया जाता है। यह मेरे आत्मा के महान कार्य का समय है (इस समय वे जिन्हें धन्य किया जाएगा और वे जो दुर्भाग्य झेलेंगे, एक दूसरे से अलग किए जाते हैं)। मेरे वचनों के निकलते ही, मैंने उन लोगों को अलग कर दिया जिन्हें धन्य किया जाएगा और साथ ही उन्हें भी जो दुर्भाग्य झेलेंगे। यह सब शीशे की तरह साफ़ है, और मैं एक नज़र में यह सब देख सकता हूँ। (मैं यह अपनी मानवता के संबंध में कह रहा हूँ; इसलिए ये वचन मेरे प्रारब्ध और चयन का खंडन नहीं करते।) मैं पहाड़ों और नदियों और सारी चीज़ों के बीच फिरता हूँ, ब्रह्माण्ड के अंतरिक्षों में चारों ओर, प्रत्येक स्थान को ध्यान से देखता और स्वच्छकरता हूँ, जिससे मेरे वचनों के परिणामस्वरूप उन सब अस्वच्छ ठिकानों और कामुक भूमियों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा और वे भस्म होकर शून्यता में विलीन हो जाएँगी। मेरे लिए, सब कुछ आसान है। यदि अभी वह समय होता जो मैंने दुनिया को नष्ट करने के लिए पूर्वनिर्धारित किया था, तो मैं मात्र एक वचन के कथन के साथ इसे निगल सकता था। लेकिन अभी वह समय नहीं है। इससे पहले कि मैं यह कार्य करूँ, सब-कुछ तैयार होना चाहिए, ताकि मेरी योजना बाधित न हो और मेरे प्रबंधन में खलल न पड़े। मैं जानता हूँ कि इसे यथोचित ढंग से कैसे करना है : मेरे पास मेरी बुद्धि है, और मेरे पास मेरी अपनी व्यवस्थाएँ हैं। लोगों को एक अंगुली भी नहीं हिलानी चाहिए; उन्हें सावधान रहना चाहिए कि मेरे हाथों मारे न जाएँ। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का पहले ही ज़िक्र कर चुका है। इसमें मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं की कठोरता, और साथ ही उनके पीछे निहित सिद्धांतों को देखा जा सकता है, जिनके दो पहलू हैं : एक ओर, मैं उन सभी को मार देता हूँ जो मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं होते और मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं; दूसरी ओर, अपने कोप में मैं उन सभी को शाप देता हूँ जो मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं। ये दोनों पहलू अपरिहार्य हैं और मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं के पीछे के कार्यकारी सिद्धांत हैं। चाहे कोई कितना भी वफ़ादार क्यों न हो, प्रत्येक को भावना से रहित होकर, इन्हीं दो सिद्धांतों के अनुसार, संभाला जाता है। यह मेरी धार्मिकता, मेरा प्रताप, और मेरा कोप दिखाने के लिए पर्याप्त है, जो सभी पार्थिव चीज़ों, सभी सांसारिक चीज़ों और उन सभी चीज़ों को भस्म कर देगा जो मेरी इच्छा के

अनुरूप नहीं हैं। मेरे वचनों में रहस्य हैं जो छिपे रहते हैं, और मेरे वचनों में ऐसे रहस्य भी हैं जो प्रकट कर दिए गए हैं। इस तरह, मनुष्य की धारणाओं के अनुसार, और मानव मन में, मेरे वचन सदा के लिए अबूझ हैं, और मेरा हृदय सदा के लिए अज्ञेय है। अर्थात, मुझे मनुष्यों को उनकी धारणाओं और सोच से बाहर निकालना ही होगा। यह मेरी प्रबंधन योजना का सबसे महत्वपूर्ण अंश है। मुझे अपने ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करने और उन कामों को पूरा करने के लिए जिन्हें मैं करना चाहता हूँ, इसे इस तरह से करना होगा।

दुनिया की आपदाएँ प्रति दिन ज़्यादा विकराल होती जा रही हैं, और मेरे भवन में, विनाशकारी आपदाएँ पहले हमेशा से अधिक बलशाली होती जा रही हैं। लोगों के पास छिपने के लिए, स्वयं को छिपाने के लिए सचमुच कोई जगह नहीं है। चूँकि परिवर्तन इसी समय घटित हो रहा है, इसलिए लोग नहीं जानते कि वे अपना अगला क़दम कहाँ रखेंगे। यह मेरे न्याय के बाद ही स्पष्ट होगा। याद रखो! ये मेरे कार्य के सोपान हैं, और यह वह तरीक़ा है जिससे मैं कार्य करता हूँ। मैं एक-एक कर अपने सभी ज्येष्ठ पुत्रों को आराम दूँगा, और उन्हें एक बार में एक सोपान ऊपर उठाऊँगा; जहाँ तक सभी सेवा-टहल करने वालों की बात है, मैं उन्हें एक-एक कर हटा दूँगा और त्याग दूँगा। यह मेरी प्रबंधन योजना का एक भाग है। सभी सेवा-टहल करने वालों को प्रकट कर देने के बाद, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को भी प्रकट किया जाएगा। (मेरे लिए, यह अत्यंत आसान है। मेरे वचन सुनने के बाद, वे सारे सेवा-टहल करने वाले मेरे वचनों के न्याय और ख़तरे के सम्मुख उत्तरोत्तर हटते जाएँगे, और केवल मेरे ज्येष्ठ पुत्र बचेंगे। यह कुछ ऐसा नहीं है जो स्वैच्छिक हो, न ही कुछ ऐसा है जिसे मनुष्य की इच्छाशक्ति बदल सके, बल्कि यह व्यक्तिक रूप से कार्यरत मेरा पवित्रात्मा है।) यह कोई दूर-दराज़ की घटना नहीं है, और तुम लोगों को मेरे कार्य और मेरे वचनों के इस चरण के भीतर से कुछ हद तक इसका बोध कर पाना चाहिए। मैं इतना अधिक क्यों कहूँगा, साथ ही मेरे कथनों की अपूर्वानुमेय प्रकृति लोगों के लिए अज्ञेय है। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से सांत्वना, दया और प्रेम के स्वरों में बात करता हूँ (क्योंकि मैं सदैव इन लोगों को प्रबुद्ध करता हूँ, और मैं उन्हें नहीं छोड़ूँगा, क्योंकि मैंने उन्हें पूर्वनियत किया है), जबकि मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से इतर अन्य लोगों के साथ कठोर न्याय का, धमकियों का, और डाँट-डपट का बर्ताव करता हूँ, उन्हें लगातार इस हद तक भयभीत रखता हूँ कि उनकी तंत्रिकाएँ सदैव सक्रिय रहें। एक बार जब स्थिति एक निश्चित सीमा तक विकसित हो जाती है, तो वे इस अवस्था से बच निकलेंगे (जब मैं दुनिया को नष्ट कर दूँगा, तब ये लोग अथाह कुंड में होंगे), तो भी वे मेरे न्याय की भुजा से कदापि नहीं बचेंगे या कभी इस स्थिति की जकड़ से मुक्त नहीं होंगे। उस दशा में, यह

उनका न्याय है; यह उनकी ताड़ना है। जिस दिन विदेशी आएँगे, उस दिन मैं इन लोगों को एक-एक कर प्रकट करूँगा। ये मेरे कार्य के सोपान हैं। क्या अब तुम लोग उन वचनों पर मेरे पिछले कथनों के पीछे निहित अभिप्राय समझे? मेरी राय में, कोई अपूर्ण चीज़ कुछ ऐसी चीज़ भी है जो पूर्ण हो चुकी है, लेकिन कोई चीज़ जो पूर्ण हो चुकी है, ज़रूरी नहीं कि ऐसी चीज़ हो जिसे संपन्न कर लिया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरी अपनी बुद्धि है, और कार्य करने का मेरा अपना तरीक़ा है, जो मनुष्यों के लिए बिल्कुल अगम्य है। एक बार जब मैंने इस सोपान से जुड़े परिणाम प्राप्त कर लिए (जब मैंने अपना प्रतिरोध करने वाले सारे दुर्जनों को प्रकट कर दिया), मैं अगला क़दम शुरू करूँगा, क्योंकि मेरी इच्छा निर्बाध है और कोई भी मेरी प्रबंधन योजना में बाधा डालने का साहस नहीं करता और कोई भी चीज़ अडंगे लगाने का साहस नहीं करती—उन सबको रास्ता साफ़ करना ही होगा! बड़े लाल अजगर की औलादो, मुझे सुनो! मैं सिय्योन से आया और अपने ज्येष्ठ पुत्रों को पाने के लिए, तुम लोगों के पिता को अपमानित करने के लिए (इन वचनों का लक्ष्य बड़े लाल अजगर के वंशज हैं), अपने ज्येष्ठ पुत्रों को सहारा देने के लिए, और अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ हुई नाइंसाफ़ियों को दुरुस्त करने के लिए दुनिया में देह बना। इसलिए पुनः बर्बर मत बनो; मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को तुम लोगों से निपटने दूँगा। अतीत में, मेरे पुत्रों को धमकाया और दबाया गया था, और चूँकि पिता अपने पुत्रों के लिए सामर्थ्य का प्रयोग करता है, इसलिए मेरे पुत्र मेरे स्नेही आलिंगन में लौटेंगे, अब और धमकाए तथा दबाए नहीं जाएँगे। मैं अधार्मिक नहीं हूँ; यह मेरी धार्मिकता को दर्शाता है, और यही सच्चे अर्थों में "जिनसे मैं प्रेम करता हूँ उनसे प्रेम करना और जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ उनसे नफ़रत करना" है। यदि तुम लोग कहते हो कि मैं अधार्मिक हूँ, तो तुम लोगों को फ़ौरन दफ़ा हो जाना चाहिए। मेरे घर में बेशर्म और मुफ़्तखोर मत बनो। तुम्हें फुर्ती से अपने घर वापस चले जाना चाहिए ताकि मुझे अब और तुम्हें न देखना पड़े। तुम लोगों की मंजिल अथाह कुंड है और वहीं तुम लोग विश्राम करोगे। यदि तुम लोग मेरे घर में होगे, तो तुम लोगों के लिए कोई जगह नहीं होगी क्योंकि तुम लोग बोझा ढोने वाले जानवर हो; तुम मेरे इस्तेमाल के औजार हो। जब मेरे लिए तुम्हारा कोई उपयोग नहीं रह जाएगा, मैं तुम लोगों को भस्म करने के लिए आग में डाल दूँगा। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञा है; मुझे इसे इसी तरह करना होगा, और केवल यही मेरे कार्य करने का ढंग दर्शाता है और मेरी धार्मिकता तथा मेरे प्रताप को प्रकट करता है। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि बस इसी तरीक़े से मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को सत्ता में मेरे साथ शासन करने दिया जाएगा।

अध्याय 104

मुझसे बाहर के सभी लोग, घटनाएँ और चीज़ें शून्य में विलीन हो जाएँगी, जबकि मेरे भीतर के सभी लोग, घटनाएँ और चीज़ें मुझसे सब कुछ पा लेंगी और मेरे साथ महिमा में प्रवेश कर जाएँगी, मेरे सिय्योन पर्वत, मेरे निवास में प्रवेश कर जाएँगी, और सदा के लिए मेरे साथ मिलजुल कर रहेंगी। मैंने शुरू में सभी चीज़ें बनाईं और अंत में अपना काम पूरा करूँगा। मैं सदा के लिए अस्तित्व में रहूँगा और राजा के रूप में शासन करूँगा। बीच की अवधि में, मैं पूरे ब्रह्मांड का नेतृत्व करता हूँ और उसकी कमान भी संभालता हूँ। कोई भी मेरे अधिकार को नहीं छीन सकता, क्योंकि मैं स्वयं एकमात्र परमेश्वर हूँ। साथ ही मेरे पास अपने पहलौठे पुत्रों को अपना अधिकार सौंपने की शक्ति भी है, ताकि वे मेरे साथ-साथ शासन कर सकें। ये चीज़ें हमेशा मौजूद रहेंगी और इन्हें कभी भी बदला नहीं जा सकता। यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। (जहाँ भी मैं अपने प्रशासनिक आदेश की चर्चा करता हूँ, मैं यह उल्लेख कर रहा होता हूँ कि मेरे राज्य में क्या होता है और हमेशा क्या अस्तित्व में रहेगा और जिसे कभी भी बदला नहीं जा सकता है।) हर किसी को पूरे मन से आश्वस्त होना चाहिए, और उन लोगों में मेरी महान शक्ति को देखना चाहिए जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ। कोई भी मेरे नाम को लज्जित नहीं कर सकता; जो भी ऐसा करता है उसे यहाँ से बाहर निकलना होगा! ऐसा नहीं है कि मैं निर्दयी हूँ, बल्कि बात यह है कि तुम अधर्मी हो। यदि तुम मेरी ताड़ना का उल्लंघन करते हो तो मैं तुमसे निपट लूँगा और तुम्हें अनंत काल के लिए नष्ट कर दूँगा। (निस्संदेह, यह सब उन लोगों पर लक्षित है जो मेरे पहलौठे पुत्र नहीं हैं।) मेरे घर में ऐसे कूड़े-कचरे का स्वागत नहीं है, इसलिए जल्दी करो और यहाँ से दफ़ाहो जाओ! एक मिनट की भी देर न करो, एक सेकंड की भी नहीं! तुम्हें वह अवश्य करना होगा जो मैं कहता हूँ, अन्यथा मैं तुम्हें एक वचन से नष्ट कर दूँगा। अच्छा होगा कि तुम अब और संकोच न करो और अच्छा होगा कि तुम अब भी मुझे धोखा देने की कोशिश न करो। तुम मेरे सम्मुख बकवास करते हो और मेरे मुँह पर झूठ बोलते हो। जल्दी से यहाँ से दफ़ा हो जाओ! मेरे पास ऐसी चीज़ों के लिए बहुत सीमित समय है। (जब सेवा करने का समय होगा तो ये लोग सेवा करेंगे, और जब जाने का समय होगा तो ये चले जाएँगे। मैं बुद्धिमत्ता के साथ काम करता हूँ, एक मिनट या सेकंडभी इधर-उधर नहीं; कभी भी जरा-सा भी नहीं। मेरे सभी कृत्य धर्मसम्मत और पूरी तरह से सही हैं।) फिर भी, अपने पहलौठे पुत्रों के प्रति मैं असीमरूप से सहिष्णु हूँ और तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम सनातन है, जिसके कारण तुम लोग सदा मेरे वरदानों का और मेरे साथ अनंत जीवन का आनंद ले सकतेहो। इस बीच तुम्हें कभी भी विघ्नों या मेरे न्याय का

सामना नहीं करना होगा। (इसका संदर्भ उस समय से है जब तुम मेरे वरदानों का आनंद लेना शुरू करते हो।) यह वो शाश्वत वरदान और वचन है जो मैंने दुनिया का सृजन करने परअपने पहलौठेपुत्रों को दिया था। तुम लोगों को इसमें मेरी धर्मपरायणता दिखाई देनी चाहिए—मैं उनसे प्रेम करता हूँ जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया है, और उन लोगों से घृणा करता हूँ जिन्हें मैंने हमेशा-हमेशा के लिए त्याग दिया है और मिटा दिया है।

मेरे पहलौठे पुत्रों के तौर पर, तुम सभी को अपने कर्तव्यों पर डटे रहना चाहिए और अपनी स्थिति में दृढ़रहना चाहिए। मेरे सामने उठाए गए पहले पके फल बनो और मेरा व्यक्तिगत निरीक्षण स्वीकार करो, ताकि तुम लोग मेरी महिमामयी छवि को जी सको और मेरी महिमा का प्रकाश तुम लोगों के चेहरों से झलक सके, ताकि मेरे कथनों को तुम्हारे मुखों से फैलाया जा सके, ताकि मेरा राज्य तुम लोगों द्वारा चलाया जा सके, और ताकि मेरे लोग तुम लोगों द्वारा शासित हो सकें। यहाँ मैं "पहले पके फलों" और "उठाए गए" जैसे शब्दों का उल्लेख कर रहा हूँ। "पहले पके फल" क्या हैं? लोगों की धारणाओं में, वे उठाए गए लोगों का पहला जत्था हैं, या विजयी लोग हैं, या वे लोग हैं जो पहलौठे पुत्र हैं। ये सभी मेरे वचनों की भ्रांतिपूर्ण और ग़लत व्याख्याएँ हैं। पहले पके फल वे लोग हैं जिन्होंने मुझसे प्रकाशन ग्रहण किया है और जिन्हें मेरे द्वारा अधिकार प्रदान किया गया है। "पहले पके" का अर्थ मेरे अधिकारमें होने, मेरे द्वारा पूर्वनियत और चयनित होने से है। "पहले पके" का अर्थ "अनुक्रम में सबसे पहले होना" नहीं है। "पहले पके फल" मनुष्य की आँखों से देखी जा सकने वाली कोई कोई भौतिक चीज़ नहीं। ये तथाकथित "फल" उस चीज़ को इंगित करते हैं जिससे सुगंध निकलती है (यह एक प्रतीकात्मक अर्थ है), अर्थात्, यह उन लोगों के संदर्भ में है जो मुझे जी सकते हैं, मुझे अभिव्यक्त कर सकते हैं, और जो सदा मेरे साथ रहते हैं। जब मैं "फलों" की बात करता हूँ, तो मैं अपने सभी पुत्रों और लोगों की बात कर रहा होता हूँ, जबकि "पहले पके फल" पहलौठे पुत्रों को इंगित करते हैं, जो मेरे साथ राजाओं के रूप में शासन करेंगे। इसलिए, "पहले पके" की व्याख्या अधिकार वहन करने वालों के रूप में की जानी चाहिए। यही इसका सच्चा अर्थ है। "उठाया जाना" निचले स्थान से किसी ऊँचे स्थान पर ले जाया जाना नहीं है जैसा कि लोग सोच सकते हैं; यह एक बहुत बड़ी मिथ्या धारणा है। "उठाया जाना" मेरे द्वारा पूर्वनियत और फिर चयनित किए जाने को इंगित करता है। यह उन सभी के लिए है जिन्हें मैंने पूर्वनियत और चयनित किया है। उठाए गए लोग वे सभी लोग हैं जिन्होंने पहलौठे पुत्रों या पुत्रों का स्तर प्राप्त कर लिया है या जो परमेश्वर के लोग हैं। यह लोगों की धारणाओं के

बिलकुल भी संगत नहीं है। वे सभी लोग जिन्हें भविष्य में मेरे घर में हिस्सा मिलेगा, ऐसे लोग हैं जो मेरे सामने उठाए जा चुके हैं। यह एक सम्पूर्ण सत्य है, कभी न बदलने वाला और जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। यह शैतान के विरुद्ध एक जवाबी हमला है। जिस किसी को भी मैंने पूर्वनियत किया है, वह मेरे सामने उठाया जाएगा।

"पवित्र तुरही" को कैसे समझाया जा सकता है? इस बारे में तुम लोगों की क्या समझ है? ऐसा क्यों कहा जाता है कि यह पवित्र है और पहले से ही बजाई जा चुकी है? इसे मेरे कार्य के चरणों से समझाया जाना चाहिए और मेरी कार्य की विधि से समझा जाना चाहिए। जब मेरा न्याय सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाता है तो मेरा स्वभाव सभी राष्ट्रों और लोगों के सामने प्रकट हो जाता है। यही वह समय होता है जब पवित्र तुरही बजाई जाती है। अर्थात्, मैं प्रायः कहता हूँ कि मेरा स्वभाव पवित्र है और अपमानित नहीं किया जा सकता है, यही कारण है कि "तुरही" का वर्णन करने के लिए "पवित्र" का उपयोग किया जाता है। इससे यह प्रमाणित होता है कि "तुरही" मेरे स्वभाव को इंगित करती है और इसका प्रतिनिधित्व करती है कि मैं क्या हूँ और मेरे पास क्या है। यह भी कहा जा सकता है कि मेरा न्याय हर दिन प्रगति पर होता है, मेरा कोप हर दिन छलक रहा है, और मेरा शाप प्रतिदिन हर उस चीज़ पर पड़ता है जो मेरे स्वभाव के अनुरूप नहीं है। तब यह कहा जा सकता है कि मेरा न्याय उस समय शुरू होता है जब पवित्र तुरही बजती है, और यह एक पल के लिए भी ठहरे बिना और एक मिनट या एक सेकंडके लिए भी रुके बिना, हर दिन बजती रहती है। अब से, एक के बाद एक भारी आपदाओं के आने के साथ हीपवित्र तुरही और तेज़ आवाज़ में बजेगी। दूसरे शब्दों में, मेरे धार्मिक न्याय के प्रकटन के साथ-साथ मेरा स्वभाव अधिकाधिक सार्वजनिक रूप से स्पष्ट होता जाएगा, और मैं जो हूँ और मेरे पास जो है, वह उत्तरोत्तर मेरे पहलौठेपुत्रों में जुड़ता जाएगा। मैं भविष्य में इसी तरह से काम करूँगा: एक तरफ, उन लोगों को बनाए और बचाए रखना जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, और दूसरी तरफ अपने वचनों का उपयोग करके उन सभी को उजागर करना जिनसे मैं घृणा करता हूँ। याद रखो! यही मेरी कार्यविधि है, मेरे कार्य के चरण हैं, जो पूर्णतः सत्य है। सृजन के समय से ही मैं इसकी योजना बनाता रहा हूँ, और कोई भी इसे बदल नहीं सकता।

मेरे वचनों के अभी भी कई भाग हैं जिन्हें समझना लोगों के लिए मुश्किल है, इसलिए मैंने अपने बोलने की शैली और रहस्यों को प्रकट करने के अपने तरीकों में और सुधार किया है। अर्थात् मेरे बोलने की शैली, अलग स्वरूपों और विधियों के साथ हर दिन बदल और सुधर रही है। ये मेरे कार्य के चरण हैं

और ये किसी के द्वारा भी बदले नहीं जा सकते। लोग केवल उसके अनुरूप ही कुछ बोल और कर सकते हैं, जो मैं कहता हूँ। यह एक पूर्ण सत्य है। मैंने अपने व्यक्तित्व और अपनी देह दोनों में उपयुक्त व्यवस्थाएँ की है। मेरी मानवता के हर कार्य और कर्म के भीतर मेरी दिव्यता की बुद्धिमत्ता का एक पहलू होता है। (चूँकि मानवजाति के पास बिल्कुल भी बुद्धिमत्ता नहीं है, इसलिए यह कहना कि पहलौठे पुत्रों के पास मेरी बुद्धिमत्ता है इस तथ्य को इंगित करना है कि उनमें मेरा दिव्य स्वभाव है।) जब पहलौठे पुत्र मूर्खतापूर्ण काम करते हैं, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि तुम लोगों में अब भी मानवता के तत्व हैं। इसलिए तुम लोगों को ऐसी मानवीय मूर्खता से छुटकारा पाना होगा और वह करना होगा जो मुझे पसंद है और वह अस्वीकार करना होगा जिससे मैं घृणा करता हूँ। जो कोई भी मुझसे आता है उसे मेरे भीतर रहने के लिए अवश्य लौटना चाहिए और जो कोई भी मुझसे पैदा हुआ है उसे मेरी महिमा के भीतर अवश्य वापस लौटना चाहिए। जिनसे मुझे घृणा है, मुझे उन्हें एक-एक करके त्यागना और खुद से अलग करना होगा। ये मेरे कार्य के चरण हैं; यह मेरा प्रबंधन है और मेरे छह हजार वर्ष के सृजन की योजना है। जिन लोगों का मैं परित्याग करता हूँ, उन सभी को समर्पण करना चाहिए और आज्ञाकारी तरीके से मुझे छोड़ देना चाहिए। जिन लोगों से मैं प्रेम करता हूँ उन सभी को, मेरे द्वारा उन्हें दिए गए वरदानों के कारण मेरी स्तुति करनी चाहिए, ताकि मेरे नाम की महिमा और ज्यादा बढ़ती रहे, और ताकि महिमामयी प्रकाश को मेरे महिमामयी मुखमंडल में जोड़ा जा सके, ताकि वे मेरी महिमा में मेरी बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण हो सकें, और मेरे महिमामयी प्रकाश में मेरे नाम को और भी महिमामंडित कर सकें!

अध्याय 105

मेरे वचनों के सिद्धांतों और मेरे कार्य करने के तरीके के कारण, लोग मुझे नकारते हैं; इतने लंबे समय से मेरे बोलने का यही उद्देश्य है (बड़े लाल अजगर के सभी वंशज इन वचनों के निशाने पर हैं)। यह मेरे कार्य करने का विवेकपूर्ण तरीका है; यह बड़े लाल अजगर के लिए मेरा न्याय है। यह मेरी कार्यनीति है और एक भी व्यक्ति इसे पूरी तरह से समझ नहीं सकता। हर नये मोड़ पर, अर्थात्, मेरी प्रबंधन योजना के हर परिवर्ती चरण में, कुछ लोगों को हटाया जाना चाहिए; वे मेरे कार्य के अनुक्रम के अनुसार हटा दिए जाते हैं। केवल यही मेरी पूरी प्रबंधन योजना का कार्य करने का तरीका है। जब मैं एक-एक करके, उन लोगों को बाहर निकाल देता हूँ जिन्हें मैं हटाना चाहता हूँ, तब मैं अपने कार्य का अगला चरण शुरू करता

हूँ। लेकिन यह हटाया जाना अंतिम बार है (और इसका अर्थ है चीन की कलीसियाओं में) और इसी अवधि में, विश्व के सृजन के बाद से, परिवर्ती चरण में बड़ी संख्या में लोगों को हटाया जाएगा। पूरे इतिहास में, जब भी लोगों को हटाया गया है, तो बाद के सेवा-कार्य के लिए एक हिस्सा बच जाता है। लेकिन यह समय पहले जैसा नहीं है; यह निर्मल और चुस्त है, यह सबसे महत्वपूर्ण और सबसे व्यापक है। हालाँकि मेरे वचनों को पढ़कर, अधिकांश लोग अपने मन से संदेह निकालने का प्रयास करते हैं, किन्तु आखिर में वे इसे काबू नहीं कर पाते और अंततः संघर्ष में पड़ जाते हैं। यह निर्णय करना मनुष्य पर निर्भर नहीं है, क्योंकि जिन्हें मैंने पूर्वनियत कर दिया है वे बच नहीं सकते और जिन्हें मैंने पूर्वनियत नहीं किया है, उनसे मैं केवल घृणा ही कर सकता हूँ। जिन लोगों को मैं कृपापूर्वक देखता हूँ, मैं केवल उन्हीं से प्रेम करता हूँ, अन्यथा, कोई भी व्यक्ति आज़ादी से न तो मेरे राज्य को छोड़कर जा सकता है, न ही उसमें प्रवेश कर सकता है। यह लौहदंड है और यही मेरे प्रशासनिक आदेशों को संपन्न करने की सामर्थ्यवान गवाही और पूर्ण अभिव्यक्ति है। यह निश्चित रूप से मात्र एक जोशीला होने का मामला नहीं है। मैंने क्यों कहा है कि शैतान पतन के सामने दुर्बल है? पहले उसके पास ताकत थी, किन्तु वह मेरे हाथों में है; यदि मैं उसे लेटने के लिए कहूँ, तो उसे लेटना होगा; यदि मैं उसे उठकर सेवा करने के लिए कहूँ, तो उसे उठकर अच्छी तरह से मेरी सेवा करनी होगी। ऐसा नहीं है कि शैतान ऐसा करने को तैयार है, बल्कि मेरा लौहदंड शैतान पर शासन करता है, वह इसी तरीके से आश्वस्त होकर मेरे वचन पर विश्वास करता है। मेरे प्रशासनिक आदेश उसे नियंत्रित करते हैं, मेरे पास शक्ति है, इसलिए उसके पास विश्वास करने के अलावा और रास्ता नहीं है; उसे रत्तीभर भी प्रतिरोध किए बिना, मेरे पैरों तले रौंद दिया जाना चाहिए। अतीत में जब शैतान मेरे पुत्रों की सेवा कर रहा था, तो वह बेहद धृष्ट था और जानबूझकर मेरे पुत्रों को धमकाता था, मुझे शर्मिंदा करने की उम्मीद लगाए रहता था, वह कहता था कि मुझमें क्षमता नहीं है। कितना अंधा है! मैं तुझे कुचल कर मार डालूँगा! चल आ! तू फिर से क्रूर होने का दुस्साहस तो कर! तू फिर से मेरे पुत्रों के साथ उपेक्षा का व्यवहार करने का दुस्साहस तो कर! लोग जितना अधिक ईमानदार होते हैं, जितना अधिक वे मेरे वचनों को सुनते हैं और मेरी आज्ञा का पालन करते हैं, तू उतना ही अधिक उन्हें धमकाता है, उतना ही अधिक तू उन्हें अलग करता है (यहाँ मैं तेरे अपने अनुचरों को इकट्ठा करके गुट बनाने की बात कर रहा हूँ)। अब तेरी क्रूरता के दिन लदने का वक्त आ गया है, मैं थोड़ा-थोड़ा करके तेरे साथ विवादों का खात्मा रहा हूँ; जो कुछ तूने किया है, उसके लिए मैं तुझे रत्तीभर भी बचकर नहीं निकलने दूँगा। शैतान, अब सत्ता तेरे हाथों में

नहीं है; मैंने वो सत्ता वापस ले ली है और अब अपने पुत्रों को बुलाकर तुझसे निपटने का समय आ गया है। आज्ञाकारी बन और प्रतिरोध करना बिल्कुल छोड़ दे। मेरे सामने तूने पहले कितना ही अच्छा व्यवहार किया हो, आज उससे तुझे कोई सहायता नहीं मिलेगी। यदि तू उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, तो मुझे तेरी ज़रूरत नहीं है। अधिक लोग मुझे स्वीकार्य नहीं; यह वही संख्या होनी चाहिए जो मैंने पूर्व निर्धारित की है; उससे एक भी कम और भी बदतर है। शैतान, अवरोधक मत बन! क्या ऐसा हो सकता है कि मैं अपने हृदय में स्पष्ट नहीं हूँ कि मैं किससे प्रेम करता हूँ और किससे नफरत करता हूँ? क्या मुझे तेरे द्वारा याद कराने की आवश्यकता है? क्या शैतान मेरे पुत्रों को जन्म दे सकता है? सभी बेतुके हैं! सभी अधम हैं! मैं सभी को अच्छी तरह से और पूरी तरह से त्याग दूँगा। मुझे किसी एक भी आवश्यकता नहीं है; सब लोग चले जाओ! छः-हजार-वर्षीय प्रबंधन योजना समाप्ति पर है, मेरा कार्य हो गया है और मुझे जानवरों एवं नीच लोगों के इस झुंड को दूर करना है!

जो मेरे वचनों पर विश्वास करते हैं और मेरे वचनों को पूरा करते हैं, वे अवश्य ही ऐसे लोग हैं जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ; मैं उनमें से एक को भी नहीं त्यागूँगा और किसी को भी जाने नहीं दूँगा। इसलिए जो ज्येष्ठ पुत्र हैं उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। चूँकि यह मेरे द्वारा प्रदान किया जाता है, इसलिए इसे कोई नहीं ले जा सकता और मैं इसे उन लोगों को प्रदान करने के लिए बाध्य हूँ जिन्हें मैं आशीष देता हूँ। जिन्हें मैं स्वीकार कर चुका हूँ (दुनिया के सृजन से पहले), (आज) उन्हें मैं आशीष देता हूँ। मैं इसी तरह से कार्य करता हूँ, यह मेरे प्रशासनिक आदेशों के प्रत्येक अनुच्छेद का मुख्य सिद्धांत भी है, कोई इसे बदल नहीं सकता; इसमें एक भी और वचन, एक भी और वाक्य नहीं जोड़ा जा सकता, न ही इसमें से एक भी वचन और एक भी वाक्य को छोड़ा जा सकता है। अतीत में मैंने बार-बार कहा है कि मेरा व्यक्तित्व तुम लोगों के सामने प्रकट होता है। तो फिर मेरा "व्यक्तित्व" कैसा है और यह कैसे प्रकट होता है? क्या इसका तात्पर्य मात्र उस व्यक्ति से है जो मैं हूँ? क्या इसका तात्पर्य मात्र हर उस वाक्य से है जो मैं कहता हूँ? ये दोनों अपरिहार्य पहलू का केवल एक छोटा-सा हिस्सा हैं; अर्थात, ये दोनों ही मेरे व्यक्तित्व की पूर्ण व्याख्या नहीं हैं। मेरे व्यक्तित्व में मेरा दैहिक आत्म, मेरे वचन और मेरे कर्म भी शामिल हैं, किन्तु सबसे सटीक व्याख्या यह है कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं ही मेरा व्यक्तित्व हैं। अर्थात्, संगठित ईसाइयों का एक समूह, जो शासन करता है और जिसके पास सत्ता है, मेरा व्यक्तित्व है। इसलिए, प्रत्येक ज्येष्ठ पुत्र अपरिहार्य है, मेरे व्यक्तित्व का एक अंग है, इसलिए मैं जोर देता हूँ कि लोगों की संख्या न तो एक भी अधिक (इस तरह मेरे नाम को

अपमानित करना) हो सकती है तथा न ही, और भी महत्वपूर्ण रूप से, एक भी कम (इस तरह मेरी पूर्ण अभिव्यक्ति होने में असमर्थ होना) हो सकती है। इसके अलावा, मैं बार—बार जोर देता हूँ कि ज्येष्ठ पुत्र मुझे सबसे प्रिय हैं, मेरा खजाना हैं और मेरी छः-हजार-वर्षीय प्रबंधन योजना का क्रिस्टलीकरण हैं; केवल वही मेरी पूर्ण और मुकम्मल अभिव्यक्ति हो सकते हैं। केवल मैं स्वयं ही अपने व्यक्तित्व की मुकम्मल अभिव्यक्ति हो सकता हूँ; केवल ज्येष्ठ पुत्रों के साथ मिलकर ही मुझे पूर्ण और मुकम्मल अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। इसलिए, किसी भी चीज़ को अनदेखा किए बिना, मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से कठोर अपेक्षाएँ रखता हूँ और अपने ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा सभी को बार-बार कम कर देता हूँ और मार डालता हूँ; मेरे कहे का यही मूल है और मैंने जो कुछ कहा है यह उसका अंतिम लक्ष्य है। इसके अलावा, मैं बार-बार इस बात पर जोर देता हूँ कि ये वही लोग होंगे जिन्हें मैं स्वीकार कर चुका हूँ, जिन्हें मैंने दुनिया के सृजन के समय से खुद चुना है। तो फिर "प्रकट होना" को कैसे समझाया जाए? क्या यह आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने का समय है? अधिकांश लोग मानते हैं कि यह वह समय है जब मेरे दैहिक-आत्म को अभिषिक्त किया गया था या यह वह समय था जब उन्होंने मेरे दैहिक-आत्म को देखा था, लेकिन यह सब झूठ है; यह उसके आसपास भी नहीं है। अपने मूल अर्थ के अनुसार "प्रकट होना" को समझना किसी भी तरह मुश्किल नहीं है, किन्तु इसे मेरे इरादे के अनुसार समझना ज्यादा कठिन है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है : जब मैं मानवजाति को बना रहा था, तो मैं अपनी गुणवत्ता को लोगों के इस समूह में डाल रहा था जिसे मैं प्रेम करता था, और लोगों का यही समूह मेरा व्यक्तित्व था। इसे दूसरी तरह से कहें तो, तब तक मेरा व्यक्तित्व पहले ही प्रकट हो चुका था। ऐसा नहीं है कि इस नाम को प्राप्त करने के बाद ही मेरा व्यक्तित्व प्रकट हुआ था; बल्कि मेरे द्वारा लोगों के इस समूह को पूर्वनियत करने के बाद ही यह प्रकट हुआ था, क्योंकि उनमें मेरी गुणवत्ता थी (उनकी प्रकृति नहीं बदलती, वे अभी भी मेरे व्यक्तित्व का अंग हैं)। इस प्रकार, मेरा व्यक्तित्व, दुनिया के सृजन से लेकर आज तक, सदा प्रकट हुआ है। अधिकांश लोग इस अवधारणा में विश्वास करते हैं कि मेरा दैहिक-आत्म ही मेरा व्यक्तित्व है, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है; यह विचार महज़ उनके चिंतन और अवधारणाओं में पैदा होता है। यदि मात्र मेरा दैहिक-आत्म ही मेरा व्यक्तित्व होता, तो वह शैतान को शर्मिंदा न कर पाता। वह मेरे नाम को महिमान्वित न कर पाता, बल्कि उसका प्रतिकूल प्रभाव हुआ होता, इस प्रकार मेरे नाम को शर्मिंदा करता और युग-युगांतर तक मेरे नाम को शर्मिंदा करने का शैतानी-चिह्न बन जाता। मैं स्वयं बुद्धिमान परमेश्वर हूँ और मैं कभी ऐसा मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं करूँगा।

मेरे कार्य के परिणाम अवश्य होने चाहिए, इसके अलावा, मुझे वचनों को विधिपूर्वक बोलना चाहिए; मेरे सभी वचन और कथन मेरे आत्मा के साथ-साथ बोले जाते हैं और मैं सब-कुछ उसके अनुसार बोलता हूँ जो मेरा आत्मा करता है। इसलिए सभी को, मेरे वचनों के माध्यम से, मेरे आत्मा को महसूस करना चाहिए, देखना चाहिए कि मेरा आत्मा क्या कर रहा है; देखना चाहिए कि मैं वास्तव में क्या करना चाहता हूँ, उन्हें मेरे वचनों के अनुसार मेरे कार्य करने के तरीके को देखना चाहिए और देखना चाहिए कि मेरी समस्त प्रबंधन योजना के सिद्धांत क्या हैं। मैं ब्रह्मांड की पूरी तस्वीर को देखता हूँ : हर व्यक्ति, हर घटना और हर स्थान मेरे नियंत्रण के अधीन आते हैं। ऐसा कोई भी नहीं है जो मेरी योजना का उल्लंघन करने का साहस करता हो; सभी कदम-दर-कदम उस क्रम में आगे बढ़ते हैं जो मैंने निर्धारित कर दिया है। यह मेरी शक्ति है; मेरी पूरी योजना का प्रबंधन करने की बुद्धि इसी स्थान पर है। न तो कोई पूरी तरह से समझ सकता है और न ही कोई स्पष्ट रूप से बोल सकता है; सब-कुछ स्वयं मेरे द्वारा किया जाता है और केवल मेरे द्वारा ही नियंत्रित किया जाता है।

अध्याय 106

जो मेरे वचनों को नहीं जानते, जो मेरी सामान्य मानवता को नहीं जानते और जो मेरी दिव्यता का अनादर करते हैं, उनका अस्तित्व मिटा दिया जाएगा। इससे किसी को भी छूट नहीं दी जाएगी, ये मानक सभी को पूरे करने होंगे, क्योंकि यह मेरा प्रशासनिक आदेश है और अभ्यास में लाने के लिए यह सबसे गंभीर आदेश है। जो लोग मेरे वचनों को नहीं जानते, ये वे लोग हैं जिन्होंने उन बातों को सुना तो है जो मैंने स्पष्ट रूप से बतायीं हैं, फिर भी उन्हें इनका कोई ज्ञान नहीं है; दूसरे शब्दों में, ये वे लोग हैं जो आध्यात्मिक मामलों को नहीं समझते (चूँकि मैंने ऐसा मानवीय गुण नहीं बनाया जो आध्यात्मिक मामलों के अनुरूप हो, इसलिए मैं उनसे अधिक अपेक्षा नहीं करता; मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि वे मेरे वचनों को सुनकर उनका अभ्यास करें)। वे मेरे घर के लोग नहीं हैं, न ही वे मेरे प्रकार के हैं; वे शैतान के क्षेत्र के हैं। इसलिए मुझे इन लोगों में से एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं चाहिए जो आध्यात्मिक मामलों को न समझता हो। पहले तुम लोगों को लगता था कि मेरा व्यवहार बहुत अनुचित है, लेकिन अब तक तुम्हें समझ में आ जाना चाहिए। संभवतः जानवर परमेश्वर से कैसे बातचीत कर सकते हैं? क्या वह बेतुका नहीं होगा? जो लोग मेरी सामान्य मानवता को नहीं जानते, ये वे लोग हैं जो मेरी सामान्य मानवता में किए गए कार्यों को मापने के लिए अपनी

अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। समर्पण के बजाए, वे अपनी दैहिक आँखों से, छोटी-छोटी बातों में मेरी आलोचना करते हैं। शायद मेरे बोले हुए वचन व्यर्थ हैं? मैंने कहा है कि मेरी सामान्य मानवता मेरे व्यक्तित्व, स्वयं पूर्ण परमेश्वर का एक अपरिहार्य अंग है और यही वह उचित तरीका है जिसमें मेरी सामान्य मानवता और पूर्ण दिव्यता एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हैं : सामान्य मानवता में किए मेरे कार्य इंसानी अवधारणाओं के अनुरूप नहीं होते, तो जो मेरा अनादर करते हैं और जो मेरे अनुरूप नहीं होते, वे उजागर हो जाते हैं। उसके बाद, मेरी पूर्ण दिव्यता मानवता के माध्यम से व्यक्त होती है। इस तरह, मैं कुछ लोगों से निपटा हूँ। यदि जो मैं करता हूँ वह तेरी समझ में नहीं आता है, किन्तु उसके बावजूद तू आज्ञापालन करता है, तो इस तरह के व्यक्ति की मैं निंदा नहीं करता, बल्कि मैं उसे प्रबुद्ध करता हूँ। इसी प्रकार के व्यक्ति को मैं प्रेम करता हूँ और तेरी आज्ञाकारिता की वजह से मैं तुझे प्रबुद्ध करता हूँ। जो लोग मेरी दिव्यता का अनादर करते हैं, उनमें वे लोग शामिल हैं जो मेरे वचनों को नहीं जानते, जो मेरी सामान्य मानवता के अनुरूप नहीं हैं और जो दिव्यता में किए गए मेरे कार्य को नकारते हैं (उदाहरण के लिए, मेरा नाराज होना या कलीसिया का निर्माण करना इत्यादि)। वे सभी मेरी दिव्यता का अनादर करने की अभिव्यक्तियाँ हैं। किन्तु एक बात है जिस पर मैं जोर देता हूँ और तुम सभी को इस पर ध्यान देना चाहिए : जो लोग, आज मैं जो व्यक्ति हूँ, उसके अनुरूप नहीं हैं, वे मेरी दिव्यता का अनादर कर रहे हैं। मैं यह क्यों कहता रहता हूँ कि मैं जो व्यक्ति हूँ वह स्वयं पूर्ण परमेश्वर है? मैं जो व्यक्ति हूँ उसका स्वभाव दिव्य स्वभाव की संपूर्णता है; मुझे मानवीय अवधारणाओं से मत मापो। आज भी, बहुत से लोग कहते हैं कि मुझमें सामान्य मानवता है, इसलिए जिन चीज़ों को मैं करता हूँ वे ज़रूरी नहीं कि सभी सही हों। जब लोग ऐसे होते हैं, तो क्या तू बस मरने की चाहत नहीं कर रहा है? जो मैं कह रहा हूँ वे उसका एक भी वचन नहीं जानते, वे पूरी तरह से अंधे के वंशज हैं, बड़े लाल अजगर के सपोले हैं! मैं एक बार फिर सबसे कहूँगा (उसके बाद मैं यह फिर कभी नहीं कहूँगा, यदि कोई फिर से इसका उल्लंघन करता है, तो उसे निश्चित रूप से शाप दिया जाएगा): मेरे वचन, मेरी हँसी, मेरा खाना, मेरा रहना, मेरा भाषण और मेरा व्यवहार सब मेरे द्वारा, यानी स्वयं परमेश्वर द्वारा ही किए जाते हैं, उसमें मानव का नामोनिशां भी नहीं होता, कुछ नहीं होता! बिलकुल नहीं होता! लोगों को दिमागी खेल खेलना बंद कर देना चाहिए और अपने क्षुद्र हिसाब-किताब बंद कर देने चाहिए। लोग जितना इसे जारी रखेंगे, वे उतने बर्बाद होंगे। मेरी सलाह पर गौर करो!

मैं सदा हर किसी के हृदय के अंतर्तम को टटोलता हूँ, हर इंसान के प्रत्येक शब्द और कृत्य की जाँच

करता रहता हूँ। मैं उन लोगों को एक-एक करके स्पष्ट रूप से देखता हूँ जिन्हें मैं पसंद करता हूँ और जिन्हें मैं नापसंद करता हूँ। लोग इसकी कल्पना नहीं कर पाते, इसके अलावा, लोग इसका क्रियान्वयन नहीं कर पाते। मैंने बहुत कुछ कहा है और बहुत सारा कार्य किया है; कौन पता लगा पाएगा कि मेरे वचनों का और मेरे कार्य का उद्देश्य क्या है? कोई पता नहीं कर सकता। इसके बाद, मैं और अधिक वचन बोलूँगा; एक ओर यह उन सभी लोगों को हटा देगा जिन्हें मैं नापसंद करता हूँ और दूसरी ओर, यह तुम लोगों को इस संबंध में थोड़ा और अधिक पीड़ित करेगा, ताकि तुम लोग एक बार फिर और अधिक कठोरता के साथ मृत से पुनर्जीवन का अनुभव कर सको। इसे लोगों द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता, न ही कोई इसे होने से बचा सकता है। यदि तुम्हें इस बारे में पता भी चल जाए, तब भी समय आने पर तुम लोग इस तरह की पीड़ा से नहीं बच पाओगे, क्योंकि यही मेरे कार्य करने का तरीका है। मुझे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ऐसे ही कार्य करना होगा, तुम लोगों पर मेरी इच्छा पूरी हो सके। यही कारण है कि इसे "अंतिम पीड़ा जिसे तुम लोगों को सहना चाहिए" कहा जाता है। इसके बाद तुम लोगों की देह फिर कभी पीड़ित नहीं होगी, क्योंकि बड़े लाल अजगर को मेरे द्वारा पूर्णतः नष्ट किया जा चुका होगा, वह फिर से कोई उपद्रव करने का साहस नहीं करेगा। शरीर में प्रवेश करने से पहले यह अंतिम कदम है; यह एक परिवर्ती चरण है। किन्तु डरो मत, मैं हर संकट में तुम लोगों की अगुआई करूँगा। विश्वास करो कि मैं स्वयं धार्मिक परमेश्वर हूँ और मैं जो कहता हूँ वह निश्चित रूप से पूरा होकर रहेगा। मैं भरोसेमंद स्वयं परमेश्वर हूँ। सभी देश, सभी राष्ट्र, सभी संप्रदाय मेरे पास लौट रहे हैं और मेरे सिंहासन के पास इकट्ठा हो रहे हैं। यह मेरा महान सामर्थ्य है, मैं विद्रोह की हर एक संतान का न्याय करूँगा, उसे बिना किसी अपवाद के आग और गंधक की झील में डाल दूँगा। सभी को पीछे हटना होगा। यह मेरी प्रबंधन योजना का अंतिम चरण है और जब यह पूरा हो जाएगा, तो मैं विश्राम में प्रवेश करूँगा, क्योंकि सब-कुछ किया जा चुका होगा और मेरी प्रबंधन योजना समाप्त हो चुकी होगी।

चूँकि मेरे कार्य की गति बढ़ गई है (हालाँकि मैं बिल्कुल भी चिंतित नहीं हूँ), इसलिए मैं हर दिन तुम लोगों के लिए वचन प्रकट करता हूँ, मैं हर दिन तुम लोगों के लिए अपने रहस्यों का खुलासा करता हूँ, ताकि तुम लोग ध्यानपूर्वक मेरे पदचिह्नों का अनुसरण कर सको। (यह मेरी बुद्धि है; लोगों को पूर्ण बनाने के लिए अपने वचनों का उपयोग करता हूँ, लेकिन लोगों को मारने के लिए भी उनका उपयोग करता हूँ। सभी मेरे वचनों को पढ़ते हैं और मेरे वचनों में मेरी इच्छा के अनुसार कार्य कर पाते हैं। जो नकारात्मक हैं

वे नकारात्मक ही रहेंगे और जिन्हें उजागर किया जाना है, वे अपना असली रंग दिखाएँगे; विद्रोही प्रतिरोध करेंगे और जो मुझसे निष्ठापूर्वक प्रेम करते हैं वे और भी अधिक निष्ठावान हो जाएँगे। इस प्रकार, सभी मेरे पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे। ये सारी स्थितियाँ जिनका मैंने वर्णन किया है, मेरे कार्य करने का तरीका हैं और लक्ष्य हैं जो मैं प्राप्त करना चाहता हूँ)। अतीत में मैं इस तरह की बात कह चुका हूँ : मैं जैसे भी तुम लोगों की अगुआई करता हूँ, तुम लोगों को उसी तरह आगे बढ़ना चाहिए; मैं जो कुछ भी तुम लोगों से कहूँ, तुम लोगों को वह बात माननी चाहिए। इससे मेरा क्या तात्पर्य है? क्या तुम लोग जानते हो? मेरे वचन का लक्ष्य और महत्ता क्या है? क्या तुम लोग समझते हो? कितने लोग इसे पूरी तरह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं? जब मैं कहता हूँ कि "मैं जैसे भी तुम लोगों की अगुआई करता हूँ, तुम लोगों को उसी तरह आगे बढ़ना चाहिए," मैं केवल उस मार्गदर्शन का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ जो मैं उस व्यक्ति के तौर पर प्रदान करता हूँ जो मैं हूँ; बल्कि इसके अलावा मैं उन वचनों का भी उल्लेख कर रहा हूँ जो मैं बोलता हूँ और उस मार्ग का जिस पर मैं चलता हूँ। आज ये वचन सचमुच पूरे हो गए हैं। जैसे ही मैंने अपने वचन बोले, मेरी उपस्थिति के प्रकाश में सभी प्रकार की दुष्टात्माओं के चेहरे उजागर हो गए हैं, ताकि तुम लोग उन सभी को स्पष्ट रूप से देख सको। मेरे ये वचन न केवल शैतान के लिए घोषणा हैं, बल्कि यह तुम सभी लोगों के लिए सुपुर्दगी भी हैं। तुममें से अधिकांश लोग इन वचनों को अपने लिए सुपुर्दगी मानते हुए अनदेखा कर देते हो; लेकिन यह नहीं समझते कि ये न्याय के एक वचन हैं, ऐसे वचन जिनमें अधिकार है। मेरे वचनों का उद्देश्य शैतान को आदेश देना है कि वह मेरे लिए उपयुक्त सेवा प्रदान करे और मेरे प्रति पूरी तरह से समर्पण करे। पहले मैं जिन रहस्यों को प्रकट कर चुका हूँ उनमें से अभी भी बहुत से ऐसे हैं जिन्हें तुम लोग समझते नहीं हो। इसलिए भविष्य में मैं तुम लोगों के लिए और अधिक रहस्य प्रकट करूँगा, ताकि तुम लोगों को अधिक स्पष्ट और संपूर्ण समझ प्राप्त हो सके।

जब तबाहियाँ आती हैं, तो हर इंसान डर जाता है। लोग दुःख से चीख़ते हैं और अतीत में किए गए अपने बुरे कामों से नफ़रत करने लगते हैं, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है क्योंकि यह कोप का युग है। यह लोगों को बचाने और अनुग्रह प्रदान करने का समय नहीं है, बल्कि सभी सेवाकर्मियों को हटाकर मेरे पुत्रों को मेरे लिए शासन करने देने का समय है। यह वास्तव में पहले से अलग समय है; यह दुनिया के सृजन के बाद का सबसे अभूतपूर्व समय है। क्योंकि मैंने एक बार ही दुनिया बनाई है, इसलिए मैं दुनिया को एक बार ही नष्ट करूँगा, मैंने जो पूर्वनियत किया है, उसे किसी के द्वारा बदला नहीं जा सकता।

इन दो उक्तियों "सामूहिक ईसाई मनुष्य" और "सामूहिक सार्वभौमिक नवीन मनुष्य" का पहले अक्सर उल्लेख किया गया है। उनकी व्याख्या कैसे की जानी चाहिए? क्या "सामूहिक ईसाई मनुष्य" से तात्पर्य ज्येष्ठ पुत्र से है? क्या "सामूहिक सार्वभौमिक नवीन मनुष्य" से भी तात्पर्य ज्येष्ठ पुत्र से है? नहीं; लोगों ने उक्तियों की व्याख्या सही ढंग से नहीं की है। क्योंकि मानव अवधारणाएँ चीज़ों को उन्हें केवल इसी अंश तक समझने में मदद कर सकती हैं, इसलिए मैं तुम लोगों को यहीं और अभी यह स्पष्ट कर दूँगा। सामूहिक ईसाई मनुष्य और सामूहिक सार्वभौमिक नवीन मनुष्य एक ही नहीं हैं; इनके अलग-अलग अर्थ हैं। यद्यपि इन दो उक्तियों की शब्दावली बहुत समान है, इसलिए वे एक ही चीज़ प्रतीत हो सकते हैं, जबकि वास्तविक स्थिति पूरी तरह से विपरीत है। "सामूहिक ईसाई मनुष्य" से वास्तव में क्या तात्पर्य है? या इनका क्या अर्थ है? ईसाई मनुष्यों की बात करते समय, हर कोई सर्वसम्मति से मेरे बारे में ही सोचेगा। ऐसा करके वे बिल्कुल भी गलत नहीं हैं। इसके अलावा, मानवीय धारणाओं में, "मनुष्य" शब्द का तात्पर्य निश्चित रूप से इंसानों से है, एक भी व्यक्ति इसे किसी और चीज़ से संबद्ध नहीं करेगा। "सामूहिक" शब्द की बात करते समय लोग सोचेंगे कि यह कई लोगों का एक समूह है और एक इकाई है, इसलिए उसे "सामूहिक" कहा जाता है। यहाँ यह देखा जा सकता है कि मानव मन बहुत सरल है, और वे लोग मेरा अर्थ बिल्कुल नहीं समझ पाते हैं। अब मैं आधिकारिक रूप से संगति शुरू करूँगा कि सामूहिक ईसाई मनुष्य क्या हैं (लेकिन लोगों को अपनी अवधारणाओं को एक ओर रखना होगा; अन्यथा कोई भी नहीं समझ पाएगा, फिर भले ही मैं इस उक्ति को समझा दूँ, तब भी लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे, न ही इसे समझेंगे): जैसे ही मेरे वचन बोले जाएँगे, मेरे सभी ज्येष्ठ पुत्र मेरी इच्छा के अनुरूप कार्य और मेरी इच्छा को व्यक्त कर पाएँगे, ताकि वे एक मन और एक मुख के हो जाएँ। जब वे सभी राष्ट्रों और लोगों का न्याय कर रहे होंगे, तो वे मेरी धार्मिकता को पूरा करने और मेरे प्रशासनिक आदेशों को कार्यान्वित करने में सक्षम होंगे; वे मेरी अभिव्यक्ति और मेरा प्रकटीकरण हैं। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि सामूहिक ईसाई मनुष्य मेरे प्रशासनिक आदेशों को कार्यान्वित करने वाले ज्येष्ठ पुत्रों के तथ्य हैं; वे ज्येष्ठ पुत्रों के हाथों का अधिकार हैं। यह सब मसीह से संबंधित है, इसलिए "ईसाई मनुष्य" का उपयोग किया गया है। इसके अलावा, सभी ज्येष्ठ पुत्र मेरी इच्छा के अनुसार कार्य कर सकते हैं, इसलिए मैं "सामूहिक" उक्ति का प्रयोग करता हूँ। "सामूहिक सार्वभौमिक नवीन मनुष्य" का अर्थ है मेरे नाम में सभी जन; यानी मेरे ज्येष्ठ पुत्र, मेरे पुत्र और मेरे जन। "नवीन" शब्द मेरे नाम के संदर्भ में है। क्योंकि वे मेरे नाम में हैं (मेरे नाम में सब-कुछ है और यह

सदा नया रहता है, कभी पुराना नहीं होता; यह मनुष्य द्वारा अपरिवर्तनीय है) और क्योंकि वे भविष्य में सदा जीवित रहेंगे, इसलिए वे सार्वभौमिक नवीन मनुष्य हैं। यहाँ "सामूहिक" शब्द लोगों की संख्या के संबंध में है, पूर्ववर्ती मामले के समान नहीं है। जब मेरा वचन बोला जाए, तो सभी को इसमें विश्वास करना चाहिए। संदेह मत करो। अपनी मानवीय अवधारणाओं और मानवीय विचारों को हटा दो। रहस्यों को प्रकट करने की मेरी वर्तमान प्रक्रिया वास्तव में मानव अवधारणाओं और विचारों को हटाने की प्रक्रिया है (क्योंकि लोग मुझे और जो मैं कहता हूँ उसे मापने के लिए अपनी अवधारणाओं का उपयोग करते हैं, इसलिए मैं मानवीय अवधारणाओं और मानवीय विचारों को हटाने के लिए अपने द्वारा प्रकट किए गए रहस्यों का उपयोग करता हूँ)। यह कार्य शीघ्र ही पूरा हो जाएगा। जब मेरे रहस्य एक निश्चित स्तर तक प्रकट हो जाएँगे, तो लोगों के पास मेरे वचनों के लिए लगभग कोई विचार प्रक्रिया नहीं होगी और वे मुझे अपनी मानवीय अवधारणाओं से मापना बंद कर देंगे। वे हर दिन जो सोचेंगे, मैं उसे प्रकट कर दूँगा और जवाबी प्रहार करूँगा। एक निश्चित स्तर पर लोग सोचना बंद कर देंगे; उनका मस्तिष्क विचार-शन्य हो जाएगा और वे पूरी तरह से मेरे वचनों को समर्पित हो जाएँगे। उसी समय तुम लोग आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करोगे। इससे पहले कि मैं तुम लोगों को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति दूँ, मेरे कार्य में यह चरण पहले आएगा। इससे पहले कि तुम लोग पवित्र और निर्दोष बनाए जा सको और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर सको, तुम्हें अपने आपको मानवीय अवधारणाओं से मुक्त करना होगा। और यही "मैं एक पवित्र आध्यात्मिक शरीर हूँ" का मूल अर्थ है। किन्तु तुम लोगों को मेरे कदमों के अनुसार कार्य करना होगा और इससे पहले कि तुम लोग समझ सको, मेरा समय आ जाएगा।

अध्याय 107

जब मेरे वचन कठोरता के एक निश्चित स्तर तक पहुँच जाते हैं, तो अधिकांश लोग उनकी वजह से पीछे हट जाते हैं—और ठीक उसी समय मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को प्रकट किया जाता है। मैंने कहा है कि मैं अँगुली नहीं उठाऊँगा, बल्कि सभी कार्य करने के लिए केवल अपने वचनों का उपयोग करूँगा। मैं अपने वचनों से हर उस चीज़ को नष्ट कर देता हूँ जिससे मैं नफ़रत करता हूँ और मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बनाने के लिए भी उन्हीं का उपयोग करता हूँ। (जब मेरे वचन बोले जाएँगे, तो सात गरजनें सुनाई देंगी, उस पल मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं रूप बदलेंगे और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करेंगे)। जब मैंने कहा कि मेरा आत्मा

व्यक्तिगत रूप से कार्य करता है, तो मेरा मतलब था कि मेरे वचन सब-कुछ प्राप्त कर लेते हैं। इससे यह ज़ाहिर होता है कि मैं सर्वशक्तिमान हूँ। इसलिए इंसान मेरे बोले प्रत्येक वाक्य के लक्ष्य और प्रयोजन को अधिक स्पष्टता के साथ देख सकता है। जैसा मैंने पहले कहा है कि मैं अपनी मानवता के भीतर जो कुछ भी कहता हूँ वह मेरी अभिव्यक्ति का एक पहलू है। इसलिए जो कुछ मैं अपनी सामान्य मानवता के भीतर कहता हूँ उसके बारे में जो लोग निश्चित नहीं हो पाते और उसमें सचमुच विश्वास नहीं करते, वे हटा दिए जाने चाहिए! मैंने बार-बार जोर देकर कहा है कि मेरी सामान्य मानवता मेरी संपूर्ण दिव्यता का एक अपरिहार्य पहलू है, फिर भी बहुत से लोग मेरी मानवता को अनदेखा करते हुए अभी भी मेरी संपूर्ण दिव्यता पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। तू अंधा है! तू कहता है कि मैं तेरी अवधारणाओं के अनुरूप नहीं हूँ, कि जो मनुष्य मैं हूँ वह तेरे परमेश्वर के अनुरूप नहीं है। क्या ये लोग मेरे राज्य में रह सकते हैं? मैं तुझे अपने पैरों तले कुचल दूँगा! तू अब मेरे विरुद्ध विद्रोह करके दिखा! तू अपनी मनमानी जारी रखकर दिखा! मेरी मुस्कुराहट तेरी अवधारणाओं से मेल नहीं खाती। मेरा भाषण तेरे कानों के लिए सुखद नहीं है और मेरे क्रिया-कलाप तेरे लिए फायदेमंद नहीं हैं, है ना? ये सभी चीज़ें तेरी पसंद की होनी चाहिए। क्या परमेश्वर ऐसा है? और क्या ये लोग अभी भी मेरे घर में रहकर मेरे राज्य में आशीष प्राप्त करना चाहते हैं? क्या तू दिवास्वप्न नहीं देख रहा है? चीजें इतनी अद्‌भुत कब से हो गयीं! तू मेरी अवज्ञा करना चाहता है, उसके बावजूद मुझसे आशीष भी प्राप्त करना चाहता है। मैं तुझसे कहता हूँ : बिल्कुल नहीं! जैसा कि मैं कई बार कह चुका हूँ, जो लोग मेरे राज्य में प्रवेश करके आशीष पाना चाहते हैं, ये वे लोग होने चाहिए जिन्हें मैं प्यार करता हूँ। मैं इन वचनों पर जोर क्यों देता हूँ? मैं जानता और समझता हूँ कि हर कोई अपने मन में क्या सोच रहा है, मुझे एक-एक करके उन सभी विचारों का ज़िक्र करने की आवश्यकता नहीं है। मेरे न्याय के वचनों से उनका असली रूप उजागर हो जाएगा और सभी मेरी न्यायपीठ के सामने दुःख से रोएँगे। इस स्पष्ट तथ्य को कोई नहीं बदल सकता! अंत में, मैं उन्हें एक-एक करके अथाह गड्ढे में प्रवेश करवाऊँगा। दुष्ट शैतान के बारे में मेरे न्याय का यह अंतिम परिणाम है। हर व्यक्ति से पेश आने के लिए मैं अपने न्याय और प्रशासनिक आदेशों का उपयोग करूँगा, मैं इसी तरीके से लोगों को ताड़ना देता हूँ। क्या तुम लोगों में इसकी सच्ची अंतर्दृष्टि है? मुझे शैतान को कोई कारण बताने की आवश्यकता नहीं है; मैं अपने लौहदंड से उसे तब तक पीटता हूँ जब तक कि वह लगभग मरने के कगार पर आकर बार-बार दया की भीख न माँग रहा हो। इसलिए जब लोग मेरे न्याय के वचन पढ़ते हैं, तो वे उन्हें बिल्कुल नहीं समझ पाते, लेकिन मेरे

परिप्रेक्ष्य से, हर पंक्ति और हर वाक्य मेरे प्रशासनिक आदेशों का एक कार्यान्वयन है। यह एक स्पष्ट तथ्य है।

चूँकि आज मैंने न्याय की बात की है, इसलिए यह विषय न्यायपीठ की बात करता है। पहले तुम लोग बार-बार कह चुके हो कि तुम मसीह के आसन के समक्ष न्याय प्राप्त करोगे। तुम लोगों को न्याय की थोड़ी-बहुत समझ है, लेकिन तुम लोग न्यायपीठ की कल्पना नहीं कर पाते। शायद कुछ लोगों को लगता है कि न्यायपीठ कोई भौतिक वस्तु है या वे इसकी कल्पना एक बड़ी मेज के रूप में कर हों या शायद वे इसे धर्मनिरपेक्ष दुनिया में न्यायाधीश की कुर्सी के रूप में देखते हों। निस्संदेह, इस बार अपनी व्याख्या में मैं तुम लोगों की बात को नकारूँगा नहीं, बल्कि मेरे लिए लोगों की कल्पनाओं की चीज़ों का अर्थ अभी भी प्रतीकात्मक है। इसलिए लोगों की कल्पनाओं और मेरे अर्थ के बीच अभी भी स्वर्ग और पृथ्वी जितनी दूरी है। लोगों की अवधारणाओं में, न्यायपीठ के सामने बहुत से लोग दुःख से रोते हुए और दया की भीख माँगते हुए दंडवत पड़े हैं। इसमें मानव-कल्पना शिखर तक पहुँच गयी है, कोई भी इससे ज्यादा किसी चीज़ की कल्पना नहीं कर पाता। तो फिर न्यायपीठ क्या है? इससे पहले कि मैं यह रहस्य प्रकट करूँ, तुम लोगों को अपनी मिथ्या-धारणा को ठुकरा देना चाहिए; तभी मेरा लक्ष्य पूरा हो सकता है। एकमात्र इसी तरीके से इस विषय में तुम लोगों की अवधारणाओं और विचारों को दूर किया जा सकता है। मैं जब भी बोलूँ, तो तुम लोगों को ध्यान देना चाहिए। तुम लोगों को लापरवाही बिल्कुल नहीं दिखानी चाहिए। मेरी न्यायपीठ दुनिया के सृजन के समय से ही स्थापित है। युग-युगांतर और पीढ़ियों से अनेक लोग अपनी जान गँवा चुके हैं और अनेक लोग इसके सामने जीवित होकर हैं, जीवन में लौट भी चुके हैं। यह भी कहा जा सकता है कि शुरू से लेकर अंत तक मेरा न्याय कभी नहीं रुकता, इसलिए मेरी न्यायपीठ सदैव विद्यमान रहती है। जब न्यायपीठ का उल्लेख किया जाता है, तो सभी मनुष्यों में भय व्याप्त हो जाता है। निस्संदेह, मैंने ऊपर जो कुछ कहा है उससे तुम लोगों को कोई अंदाज़ा नहीं है कि यह न्यायपीठ क्या है। न्यायपीठ और न्याय दोनों का अस्तित्व एक साथ होता है, लेकिन दोनों अलग-अलग पदार्थ हैं। (यह पदार्थ कोई भौतिक वस्तु नहीं है, बल्कि इनका तात्पर्य वचनों से है। मनुष्य इसे देख नहीं पाता)। न्याय का अर्थ है मेरे वचन। (चाहे वे कठोर हों या नरम, वे सब मेरे न्याय में शामिल हैं। इस प्रकार जो कुछ भी मेरे मुँह से निकलता है वह न्याय होता है।) पहले लोग मेरे वचनों को कई अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित कर दिया करते थे जैसे न्याय के वचन, सौम्य वचन और जीवन देने वाले वचन। आज मैं तुम लोगों के लिए स्पष्ट कर दूँ कि न्याय और मेरे

वचन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यानी, न्याय मेरे वचन हैं और मेरे वचन ही न्याय हैं; तुम लोगों को उनके बारे में बिल्कुल नहीं बोलना चाहिए। लोगों को लगता है कि कठोर वचन न्याय होते हैं, लेकिन उनकी समझ पूरी नहीं है। मैं जो कुछ भी कहता हूँ वह सब न्याय है। पहले जिस न्याय के आरंभ की बात की गयी है, उसका अर्थ है जब मेरे आत्मा ने हर जगह आधिकारिक रूप से कार्य करना शुरू करके मेरे प्रशासनिक आदेशों को कार्यान्वित करना आरंभ किया। इस वाक्य में "न्याय" का अर्थ है यथार्थ वास्तविकता। अब मैं न्यायपीठ की व्याख्या करूँगा : मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि न्यायपीठ का अस्तित्व अनंतकाल से अनंतकाल तक रहता है और मेरे न्याय के साथ-साथ चलता है? क्या न्याय की मेरी व्याख्या से तुम लोगों की समझ में कुछ आया है? न्यायपीठ का तात्पर्य मनुष्य से है जो मैं हूँ। अनंतकाल से अनंतकाल तक, मैं हमेशा अपनी वाणी से बोल रहा हूँ। मैं सार्वकालिक हूँ, इसलिए मेरी न्यायपीठ और मेरे न्याय का अस्तित्व भी साथ-साथ रहता है। यह अब स्पष्ट हो जाना चाहिए! लोग मुझे अपनी कल्पनाओं में एक वस्तु के रूप में देखते हैं, लेकिन इस संबंध में मैं तुम लोगों को न तो कोई दोष देता हूँ और न ही मैं तुम लोगों की निंदा करता हूँ। मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि तुम लोगों में एक आज्ञाकारी हृदय हो, तुम लोग मेरे प्रकाशन को स्वीकार करो और इससे जानो कि मैं सर्वव्यापी स्वयं परमेश्वर हूँ।

मेरे वचन पूरी तरह से लोगों की समझ से परे हैं, उनके लिए मेरे पदचिह्नों को ढूँढना असंभव है और मेरी इच्छा को समझना उनके लिए नामुमकिन है। इस तरह आज तुम लोग जिस अवस्था में हो (मेरे प्रकाशन को प्राप्त करने में सक्षम होना, उससे मेरी इच्छा को समझना और उसके ज़रिए मेरे पदचिह्नों का अनुसरण करना) वह पूरी तरह से मेरे अद्भुत कार्यों, मेरे अनुग्रह और मेरी करुणा का परिणाम है। एक दिन मैं तुम लोगों को अपनी बुद्धि भी दिखाऊँगा, दिखाऊँगा कि मैंने अपने हाथों से क्या किया है और अपने कार्य के चमत्कार का अवलोकन कराऊँगा। तब तुम लोगों की नज़रों के सामने मेरी पूरी प्रबंधन योजना की रूपरेखा पूरी तरह से प्रकट हो जाएगी। ब्रह्मांड की दुनिया में हर दिन मेरे अद्भुत कार्य अभिव्यक्त होते रहते हैं, और मेरी प्रबंधन योजना को पूरा करने के लिए सभी सेवा प्रदान करते हैं। जब यह पूरी तरह से प्रकट हो जाएगा, तो तुम लोग देखोगे कि सेवा प्रदान करने के लिए मैंने किस तरह के लोगों की व्यवस्था की है, अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए मैंने किस तरह के लोगों की व्यवस्था की है, शैतान का शोषण करके मैंने क्या प्राप्त किया है, मैंने अकेले क्या संपन्न किया है, किस तरह के लोग रो रहे हैं, किस तरह के लोग अपने दाँत पीस रहे हैं, किस प्रकार के लोग विनाश की पीड़ा झेलेंगे और किस

प्रकार के लोग नरक भुगतेंगे। "विनाश" से मेरा तात्पर्य उन लोगों से है जिन्हें आग और गंधक की झील में डालकर जला दिया जाएगा; "नरक" से मेरा अर्थ उन लोगों से है जिन्हें अनंतकाल तक दिन काटने के लिए अथाह गड्ढे में डाल दिया जाएगा। इसलिए विनाश और नरक को एक ही चीज़ समझने की गलती मत करो। बल्कि ये दोनों बहुत ही अलग हैं। आज मेरे नाम को छोड़ने वाले सेवाकर्मी नरक भुगतेंगे और जो मेरे नाम के नहीं हैं, उन्हें विनाश झेलना होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि जो लोग नरक भुगतेंगे वे मेरे न्याय के बाद मेरी अनंत स्तुति करेंगे; किन्तु वे लोग मेरी ताड़ना से कभी छुटकारा नहीं पाएँगे और हमेशा मेरे नियम को स्वीकार करेंगे। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अथाह गड्ढा ही वह हाथ है जिसका उपयोग मैं लोगों को ताड़ना देने के लिए करता हूँ। मैं यह भी कहता हूँ कि सब-कुछ मेरे हाथों में है। भले ही मैंने कहा है कि "अथाह गड्ढा" से तात्पर्य शैतान का प्रभाव है, लेकिन यह भी मेरे हाथों में है जिसका उपयोग मैं लोगों को ताड़ना देने के लिए करता हूँ। इसलिए सब-कुछ मेरे हाथों में है, इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। मेरे वचन गैर-जिम्मेदार नहीं हैं; वे उचित और सुसंगत हैं। वे न तो बनावटी हैं, न ही उटपटांग हैं, सभी को मेरे वचनों पर विश्वास करना चाहिए। भविष्य में, तुम लोग इसी की वजह से भुगतोगे। मेरे वचनों की वजह से, बहुत से लोग निरुत्साहित, आशाहीन या निराश हो जाते हैं या बुरी तरह से चीखते, रोते हैं। सभी प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होंगी। एक दिन जब वे सभी लोग पीछे हट जाएँगे जिनसे मुझे नफ़रत है, तो मेरा कार्य पूरा हो जाएगा। भविष्य में ज्येष्ठ पुत्रों की वजह से बहुत से लोगों का पतन हो जाएगा और अंत में वे कदम दर कदम छोड़कर चले जाएँगे। दूसरे शब्दों में, मेरा घर धीरे-धीरे पवित्र हो जाएगा और सभी प्रकार की दुष्टात्माएँ धीरे-धीरे मेरी ओर से, चुपचाप, विनम्रतापूर्वक और बिना कोई शिकायत किए वापस चली जाएँगी। उसके बाद, मेरे सभी ज्येष्ठ पुत्रों को प्रकट किया जाएगा और मैं अपने कार्य का अगला चरण शुरू करूँगा। तभी ज्येष्ठ पुत्र मेरे साथ राजा होंगे और पूरे ब्रह्मांड पर शासन करेंगे। ये मेरे कार्य के चरण हैं और मेरी प्रबंधन योजना का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। इसे अनदेखा मत करो; अन्यथा तुम लोग गलती कर बैठोगे।

जब मेरे वचन तुम लोगों के लिए प्रकट किए जाते हैं, तो उसी समय मैं अपना कार्य शुरू करता हूँ। मेरा एक भी वचन अधूरा नहीं रहेगा। मेरे लिए एक दिन एक हजार वर्ष की तरह है और एक हजार वर्ष एक दिन की तरह हैं। तुम लोग इसे कैसे देखते हो? तुम लोगों की समय की धारणा मुझसे बहुत भिन्न है, क्योंकि मैं ब्रह्मांड की दुनिया को नियंत्रित करता हूँ और सभी कार्य पूरे करता हूँ। मेरा कार्य दिन-प्रतिदिन, कदम-दर-कदम और चरण दर चरण किया जाता है; इसके अलावा, मेरे कार्य की गति एक सेकंड के लिए

भी नहीं रुकती : यह हर पल जारी रहता है। दुनिया के सृजन से आज तक, मेरे वचनों में कभी कोई बाधा नहीं आई है। मैंने आज तक बोलना और अपने कथन व्यक्त करना जारी रखा है; यह भविष्य में अपरिवर्तित रहेगा। लेकिन मेरा समय सावधानी से व्यवस्थित और संगठित होता है, एकदम यथाक्रम होता है। मुझे जब और जो कार्य करना होता है, मैं करता हूँ (मेरे साथ सब मुक्त हो जाएँगे, सभी स्वतंत्र हो जाएँगे), मेरे कार्य के चरण रत्तीभर भी बाधित नहीं होते। मैं अपने घर में सभी को व्यवस्थित कर सकता हूँ, मैं दुनिया में हर एक को व्यवस्थित कर सकता हूँ, लेकिन मैं बिल्कुल व्यस्त नहीं होता, क्योंकि मेरा आत्मा कार्य कर रहा होता है। मेरा आत्मा हर स्थान को भर देता है, क्योंकि मैं ही अद्वितीय स्वयं परमेश्वर हूँ और पूरे ब्रह्मांड का जगत मेरे हाथों में है। इस प्रकार, कोई भी यह देख सकता है कि मैं सर्वशक्तिमान हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ और मेरी महिमा ब्रह्मांड के हर कोने में व्याप्त है।

अध्याय 108

मेरे भीतर, सभी विश्राम पा सकते हैं और सभी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। जो मुझसे बाहर हैं, वे न स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं, न खुशी, क्योंकि मेरा आत्मा उनके साथ नहीं है। ऐसे लोगों को आत्माहीन मृत कहा जाता है, जबकि मैं उन लोगों को जो मेरे भीतर हैं, "आत्मा से युक्त जीवित प्राणी" बुलाता हूँ। वे मेरे हैं, और उनका मेरे सिंहासन की ओर लौटना निश्चित है। जो सेवा प्रदान करते हैं और जो शैतान से संबंधित हैं, वे आत्माहीन मृत हैं, और उन सबको मिटाना और शून्य बना दिया जाना चाहिए। यह मेरी प्रबंधन योजना का एक रहस्य है, और मेरी प्रबंधन योजना का एक भाग है जिसे मानवजाति समझ नहीं सकती; लेकिन, साथ ही साथ, मैंने इसे हर एक के लिए सार्वजनिक कर दिया है। जो मेरे नहीं हैं, वे मेरे विरुद्ध हैं; जो मेरे हैं, वे वो लोग हैं जो मेरे अनुरूप हैं। यह पूरी तरह अकाट्य है, और शैतान के मेरे न्याय के पीछे यही सिद्धांत है। यह सिद्धांत सभी को ज्ञात होना चाहिए ताकि वे मेरी धार्मिकता और न्यायता देख सकें। हर कोई जो शैतान से आता है, उसका न्याय किया जाएगा, वो जलाया, और राख में बदल दिया जाएगा। यह भी मेरा कोप है, और इससे मेरा स्वभाव और अधिक स्पष्ट कर दिया गया है। अब से, मेरा स्वभाव खुलेआम घोषित किया जाएगा; यह सभी लोगों के लिए, और सभी राष्ट्रों के लिए, सभी धर्मों के लिए, सभी संप्रदायों के लिए और जीवन के सभी क्षेत्रों के व्यक्तियों के लिए धीरे-धीरे प्रकट किया जाएगा। कुछ छिपा हुआ नहीं होगा; सब प्रकट किया जाएगा। क्योंकि मेरा स्वभाव और मेरे कार्यों के पीछे निहित सिद्धांत

मानवजाति के लिए सर्वाधिक छिपे हुए रहस्य हैं इसलिए मुझे यह करना ही होगा (ताकि ज्येष्ठ पुत्र मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं करेंगे, और साथ ही इसलिए भी कि सभी लोगों और सभी राष्ट्रों का न्याय करने के लिए मेरे प्रकट किए गए स्वभाव का उपयोग किया जाए)। यह मेरी प्रबंधन योजना है, और ये मेरे कार्य के सोपान हैं। कोई भी इसे बिना सोचे-विचारे नहीं बदलेगा। मैं अपनी मानवता के भीतर अपनी दिव्यता के पूर्ण स्वभाव को पहले ही जी चुका हूँ, इसलिए मैं किसी को भी अपनी मानवता को अपमानित नहीं करने देता हूँ। (वह सब जो मैं जीता हूँ, दिव्य स्वभाव है; यही कारण है कि मैंने पूर्व में कहा है कि मैं ही परमेश्वर स्वयं हूँ जो सामान्य मानवता से ऊपर उठ चुका है।) मैं निश्चित रूप से उस किसी को भी क्षमा नहीं करूँगा जो मुझे अपमानित करता है, और मैं उसे अनंतकाल तक नष्ट होने दूँगा! याद रख! मैंने यही निर्णय लिया है; दूसरे शब्दों में, यह मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का अपरिहार्य भाग है। हर किसी को यह देखना चाहिए : मैं जो व्यक्तित्व हूँ, वह परमेश्वर, और उससे बढ़कर, परमेश्वर स्वयं है। अब तक यह स्पष्ट हो जाना चाहिए! मैं कुछ भी लापरवाही से नहीं कहता हूँ। मैं सब कुछ स्पष्ट रूप से कहता और बताता हूँ, जब तक तू पूर्ण समझ न प्राप्त कर ले।

स्थिति बहुत तनावपूर्ण है; न केवल मेरे घर में, बल्कि उससे भी अधिक मेरे घर के बाहर, मैं अपेक्षा करता हूँ कि तुम लोग मेरे नाम की गवाही दो, मुझे जियो, और हर दृष्टि से मेरी गवाही दो। चूँकि यह अंत का समय है, अब सब कुछ तैयार है और सब कुछ अपना मूल प्रकटन बनाए रखता है, और इसमें से कुछ भी नहीं बदलेगा। जिन्हें निकाल फेंकना चाहिए उन्हें निकाल फेंका जाएगा, और जिन्हें रखा जाना चाहिए उन्हें रखा जाएगा। बलपूर्वक थामे रखने या दूर धकेलने की कोशिश मत करो; मेरे प्रबंधन को बाधित या मेरी योजना को नष्ट करने का प्रयास मत करो। मानवीय दृष्टिकोण से, मैं मानव जाति के प्रति सदैव प्रेममय और करुणामय हूँ, किंतु मेरे दृष्टिकोण से, मेरा स्वभाव मेरे कार्य के चरणों के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है, क्योंकि मैं व्यावहारिक परमेश्वर स्वयं हूँ; मैं अद्वितीय परमेश्वर स्वयं हूँ! मैं अपरिवर्त्य और निरंतर-परिवर्तनशील दोनों हूँ। यह कुछ ऐसा है जिसकी कोई थाह नहीं पा सकता है। जब मैं तुम लोगों को इसके बारे में बताऊँगा और तुम लोगों को यह समझाऊँगा, केवल तभी तुम लोगों को इसकी स्पष्ट समझ प्राप्त होगी और इसे बूझ पाओगे। अपने पुत्रों के लिए, मैं प्रेममय, करुणामय, धार्मिक और अनुशासनकारी हूँ, किन्तु न्यायकारी नहीं हूँ (और इससे मेरा आशय यह है कि मैं ज्येष्ठ पुत्रों को नष्ट नहीं करता हूँ)। मेरे पुत्रों से इतर अन्य लोगों के लिए, मैं युगों के बदलने के आधार पर किसी भी समय बदल जाता हूँ : मैं प्रेममय,

करुणामय, धार्मिक, प्रतापी, न्यायकारी, कोपपूर्ण, शाप देने वाला, जलाने वाला, और अंत में, उनकी देह का विनाश करने वाला हो सकता हूँ। जिन्हें नष्ट किया जाता है, वे अपने प्राणों और आत्माओं के साथ नष्ट हो जाएँगे। पर जो लोग सेवा प्रदान करते हैं, केवल उनके प्राणों और आत्माओं को रहने दिया जाएगा (मैं इसे अभ्यास में कैसे लाता हूँ इसके बारे में सुनिश्चित विवरण के संबंध में, मैं तुम लोगों को बाद में बताऊँगा, ताकि तुम लोग समझ सको)। फिर भी, उन्हें कभी स्वतंत्रता नहीं होगी और कभी रिहा नहीं किए जाएँगे, क्योंकि वे मेरे लोगों के नीचे हैं, और मेरे लोगों के नियंत्रण के अधीन हैं। मैं सेवाकर्ताओं से इतनी घृणा इसलिए करता था, क्योंकि वे सभी बड़े लाल अजगर के वंशज हैं, और जो सेवाकर्ता नहीं हैं, वे भी बड़े लाल अजगर के वंशज हैं। दूसरे शब्दों में, वे सब लोग जो ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं, बड़े लाल अजगर के वंशज हैं। जब मैं कहता हूँ कि वे जो नरकवास में हैं मेरी अनंत स्तुति करते हैं, तब मेरा आशय यह होता है कि वे सदा के लिए मुझे सेवा प्रदान करेंगे। यह पत्थर की लकीर है। वे लोग सदैव दास, मवेशी और घोड़े होंगे। मैं किसी भी समय उनका वध कर सकता हूँ और मैं जैसे चाहूँ उन पर हावी हो सकता हूँ, क्योंकि वे बड़े लाल अजगर के वंशज हैं और उनके पास मेरा स्वभाव नहीं है। और वे बड़े लाल अजगर के वंशज हैं, इसलिए भी उनके पास उसका स्वभाव है; अर्थात्, वे पशुओं के स्वभाव से युक्त हैं। यह बिल्कुल सत्य है, और शाश्वत रूप से अपरिवर्तनशील है! ऐसा इसलिए है क्योंकि यह सब मेरे द्वारा पूर्वनियत किया गया था। कोई भी इसे बदल नहीं सकता (मेरा मतलब है, मैं किसी को भी इस नियम के विरुद्ध कार्य करने की अनुमति नहीं दूँगा); यदि तूने कोशिश की, तो मैं तुझे मार डालूँगा!

यह देखने के लिए कि मेरी प्रबंधन योजना और मेरा कार्य किस चरण में पहुँच गए हैं, तुम लोगों को मेरे द्वारा प्रकट किए गए रहस्यों पर दृष्टि डालनी चाहिए। देखो कि मैं अपने हाथों से क्या करता हूँ, और देखो कि मेरे न्याय और मेरा कोप किन लोगों पर टूटते हैं। यह मेरी धार्मिकता है। मैं अपने कार्य का विन्यास और मैं अपनी योजना का प्रबंध उन रहस्यों के अनुसार करता हूँ जिन्हें मैंने प्रकट किया है। कोई भी इसे बदल नहीं सकता है; यह मेरी आकांक्षा के अनुसार, क़दम-दर-क़दम ही किया जाना चाहिए। रहस्य वह मार्ग हैं जिन पर मेरा कार्य संचालित होता है और वे मेरी प्रबंधन योजना के चरणों का महत्व बताने वाले संकेत हैं। कोई भी मेरे रहस्यों में कुछ भी जोड़ेगा या घटाएगा नहीं, क्योंकि यदि रहस्य ग़लत हैं, तो मार्ग ग़लत है। मैं अपने रहस्य तुम लोगों पर प्रकट क्यों कर रहा हूँ? क्या कारण है? तुम लोगों में से कौन स्पष्ट रूप से कह सकता है? इसके अतिरिक्त, मैं कह चुका हूँ कि रहस्य ही मार्ग हैं, तो इस मार्ग का

क्या अर्थ है? यह वह प्रक्रिया है जिससे गुज़रकर तुम लोग देह से शरीर में जाते हो, और यह महत्वपूर्ण चरण है। मैं अपने रहस्यों को प्रकट करता हूँ, उसके बाद लोगों की धारणाएँ धीरे-धीरे हट जाती हैं और उनके विचार धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ जाते हैं। यह आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने की प्रक्रिया है। इस प्रकार, मैं कहता हूँ कि मेरा कार्य चरणों में होता है, और यह अस्पष्ट नहीं है; यही वास्तविकता है, और यह कार्य करने का मेरा तरीक़ा है। कोई भी इसे बदल नहीं सकता है, न ही कोई इसे प्राप्त कर सकता है, क्योंकि मैं अद्वितीय परमेश्वर स्वयं हूँ! मेरा कार्य व्यक्तिगत रूप से मेरे द्वारा पूरा किया जाता है। पूरा ब्रह्माण्ड जगत मुझ अकेले के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, और मुझ अकेले के द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। कौन मेरी बात नहीं सुनने की हिम्मत करता है? ("मुझ अकेले" से मेरा आशय परमेश्वर स्वयं से है, क्योंकि मैं जो व्यक्तित्व हूँ वह परमेश्वर स्वयं है—इसलिए अपनी धारणाओं को इतने कसकर मत पकड़े रहो।) कौन मेरे विरुद्ध जाने की हिम्मत करता है? उन्हें कठोरतापूर्वक दंडित किया जाएगा! तुम लोग बड़े लाल अजगर का परिणाम देख चुके हो! यह उसका अंत है, लेकिन यह अवश्यंभावी भी है। यह कार्य मुझ स्वयं द्वारा ही किया जाना चाहिए जिससे बड़ा लाल अजगर शर्मसार किया जाएगा, यह फिर कभी उठ नहीं सकता, और समूचे अनंत काल के लिए इसका नाश हो जाएगा! अब मैं रहस्यों को प्रकट करना शुरू करता हूँ। (याद रखो! प्रकट किए गए अधिकांश रहस्य ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें तुम लोग प्रायः कहते हो लेकिन जिन्हें कोई नहीं समझता।) मैं कह चुका हूँ कि वे सभी चीज़ें जिन्हें लोग अपूर्ण देखते हैं, वे मेरी नज़रों में पहले ही पूर्ण की जा चुकी हैं, और जिन चीजों को मैं मात्र शुरुआत के रूप में देखता हूँ, वे लोगों को पहले ही पूर्ण हो चुकी प्रतीत होती हैं। क्या यह विरोधाभासी है? ऐसा नहीं है। लोग उस तरह से इसलिए सोचते हैं क्योंकि उनकी अपनी धारणाएँ और विचार हैं। जिन चीज़ों की मैं योजना बनाता हूँ, वे मेरे वचनों के माध्यम से पूरी की जाती हैं (वे तभी स्थापित हो जाती हैं जब मैं ऐसा कहता हूँ, और वे तभी पूरी हो जाती हैं जब मैं ऐसा कहता हूँ)। तो भी मुझे ऐसा नहीं लगता है कि मैंने जो चीज़ें कही हैं, वे पूरी हो गई हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं जो चीज़ें करता हूँ उनकी एक समय सीमा है। इस प्रकार, मैं इन चीज़ों को अपूर्ण देखता हूँ, यद्यपि लोगों की दैहिक आँखों में (समय की उनकी धारणा में भिन्नताओं के कारण), ये चीज़ें पहले ही पूरी हो चुकी हैं। मैं जो रहस्य प्रकट करता हूँ, उनके कारण आजकल अधिकांश लोग मेरे प्रति शंकालु हैं। वास्तविकता की शुरुआत के कारण, और इसलिए कि मेरे अभिप्राय लोगों की धारणाओं से मेल नहीं खाते, वे मेरे प्रति प्रतिरोधक हैं और मेरा प्रतिवाद करते हैं। यह शैतान है जो स्वयं को अपने ही षड्यंत्रों में फँसा

रहा है। (वे आशीष प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें अपेक्षा नहीं थी कि परमेश्वर उनकी धारणाओं से इस हद तक बेमेल होगा, इसलिए वे पीछे हट जाते हैं।) यह मेरे कार्य का एक प्रभाव भी है। सभी लोगों को मेरी स्तुति करनी चाहिए, मेरी जयजयकार करनी चाहिए, और मुझे महिमा देनी चाहिए। सब कुछ सर्वथा मेरे हाथों में है, और सब कुछ सर्वथा मेरे न्याय के दायरे में है। जब सभी लोग मेरे पर्वत की ओर प्रवाहित होंगे, जब ज्येष्ठ पुत्र विजयी होकर लौटेंगे, तब यह मेरी प्रबंधन योजना का अंतबिंदु होगा। यह मेरी छह हजार वर्षों की प्रबंधन योजना की पूर्णता का क्षण होगा। सब कुछ व्यक्तिगत रूप से मेरे द्वारा व्यवस्थित किया जाता है; मैं यह पहले ही कई बार कह चुका हूँ। चूँकि तुम लोग अब भी अपनी धारणाओं में रहते हो, इसलिए मुझे इस पर बार-बार बल देना ही होगा ताकि तुम लोग यहाँ ऐसी कोई ग़लतियाँ न करो जो मेरी योजना को बाधित करें। लोग मेरी सहायता नहीं कर सकते, न ही वे मेरे प्रबंधन में भाग ले सकते हैं, क्योंकि इस समय तुम लोग अब भी हाड़-माँस और रक्त के हो (यद्यपि तुम मेरे हो, फिर भी तुम देह में रहते हो)। वैसे मैं कहता हूँ कि जो माँस और रक्त के हैं, वे मेरी विरासत प्राप्त नहीं कर सकते हैं। तुम लोगों को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करवाने का यह भी मुख्य कारण है।

संसार में, भूकंप आपदा की शुरुआत हैं। सबसे पहले, मैं संसार—अर्थात् पृथ्वी—को बदलता हूँ और उसके बाद महामारियाँ और अकाल आते हैं। यह मेरी योजना है, ये मेरे सोपान हैं, और अपनी प्रबंधन योजना को पूरा करने के उद्देश्य से, मैं अपनी सेवा करवाने के लिए सभी को तैयार करूँगा। इस प्रकार पूरा ब्रह्माण्ड जगत, मेरे सीधे हस्तक्षेप के बिना भी, नष्ट कर दिया जाएगा। जब मैं पहली बार देह बना और सलीब पर चढ़ाया गया, तब पृथ्वी प्रचण्ड रूप से हिल गई थी, जब अंत आएगा तब भी ऐसा ही होगा। जिस पल मैं देह से आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करूँगा, उसी पल भूकंप आने शुरू हो जाएँगे। इस प्रकार, ज्येष्ठ पुत्र बिल्कुल भी आपदा का कष्ट नहीं झेलेंगे, जबकि वे जो ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं कष्ट झेलने के लिए आपदाओं के बीच छोड़ दिए जाएँगे। इसलिए, मानवीय दृष्टिकोण से, हर कोई ज्येष्ठ पुत्र बनने का इच्छुक है। लोगों के पूर्वाभासों में, यह आशीषों के आनंद के लिए नहीं है, बल्कि आपदा के कष्ट से बचने के लिए है। यह बड़े लाल अजगर का षड़यंत्र है। तो भी मैं इसे कभी बचकर नहीं जाने दूँगा; मैं इसे मेरा कठोर दण्ड भुगतवाऊँगा और फिर खड़ा करके इससे अपनी सेवा करवाऊँगा (इसका अर्थ मेरे पुत्रों और मेरे लोगों को पूरा करना है), उसे सदा अपने ही षडयंत्रों के धोखे में फँसने, सदा मेरा न्याय स्वीकार करने, और सदा मेरे द्वारा जलाया जाने पर मजबूर करूँगा। यही सेवा करने वालों से स्तुति करवाने (अर्थात, मेरी महान सामर्थ्य

को प्रकट करने के लिए उनका उपयोग करने) का सच्चा अर्थ है। मैं बड़े लाल अजगर को अपने राज्य में चोरी-छिपे घुसने नहीं दूँगा, न ही मैं इसे अपनी स्तुति करने का अधिकार दूँगा! (क्योंकि यह लायक नहीं है, यह कभी लायक नहीं होगा!) मैं बड़े लाल अजगर से अनंत काल तक अपनी केवल सेवा करवाऊँगा! मैं इसे अपने सामने केवल दण्डवत होने दूँगा। (जो नष्ट कर दिए जाते हैं, वे उनसे बेहतर स्थिति में होते हैं जो नरकवास में हैं; विनाश कठोर दण्ड का अस्थायी रूप मात्र है, जबकि जो लोग नरकवास में हैं, वे अनंत काल के लिए कठोर दण्ड भुगतेंगे। इसी कारण से मैं "दण्डवत" शब्द का प्रयोग करता हूँ। चूंकि ये लोग चोरी-छिपे मेरे घर में घुस आते हैं और मेरे काफ़ी अनुग्रहों का आनंद लेते हैं, और मेरे कुछ ज्ञान से युक्त हो जाते हैं, इसलिए मैं कठोर दण्ड का प्रयोग करता हूँ। जहाँ तक उनकी बात है जो मेरे घर के बाहर हैं, तुम कह सकते हो कि अज्ञानी कष्ट नहीं भुगतेंगे।) अपनी धारणाओं में, लोग सोचते हैं कि जिन लोगों को नष्ट कर दिया जाता है, वे उनसे बदतर स्थिति में हैं जो नरकवास में हैं, लेकिन इसके विपरीत, नर्क में पड़े लोगों को सदा के लिए कठोरतापूर्वक दंडित करना पड़ता है, और जिन्हें नष्ट कर दिया जाता है वे समूचे अनंत काल के लिए शून्यता में लौट जाएँगे।

अध्याय 109

मैं हर दिन कथन कह रहा हूँ, बोल रहा हूँ और अपने महान संकेत एवं चमत्कार प्रकट कर रहा हूँ। ये सभी मेरे आत्मा के कार्य हैं। लोगों की नज़रों में मैं मात्र एक मनुष्य हूँ, लेकिन वास्तव में इसी मनुष्य रूप में मैं अपना सर्वस्व और अपना महान सामर्थ्य प्रकट करता हूँ।

चूँकि लोग मेरे मनुष्य रूप को और मेरे कार्यों को अनदेखा करते हैं, इसलिए उन्हें लगता है कि ये कार्य मनुष्यों द्वारा किए गए हैं। लेकिन तू ऐसा क्यों नहीं सोचता है कि क्या मनुष्य वह सब कर सकता है जो मैं करता हूँ? लोग मुझे इस हद तक नहीं जानते; उन्हें न तो मेरे वचन समझ में आते हैं और न ही मेरे कर्म। दुष्ट, भ्रष्ट मनुष्य! मैं तुझे कब निगलूँगा? मैं तुझे आग और गंधक की झील में कब दफ्न करूँगा? मैं बहुत बार तुम लोगों के समूह से भगाया गया हूँ, बहुत बार लोगों ने मुझे अपमानित किया, मेरा उपहास उड़ाया और मुझे बदनाम किया है, बहुत बार लोगों ने खुलेआम मेरी आलोचना की है और मेरी उपेक्षा की है? अंधे मनुष्य! क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोग मेरे हाथों में सिर्फ मुट्ठीभर कीचड़ हो? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोग मेरी सृष्टि की ही एक वस्तु हो? अब मेरा कोप भड़क कर बाहर आ रहा है

और कोई अपना बचाव नहीं कर सकता। लोग केवल दया की भीख माँग सकते हैं। लेकिन क्योंकि मेरा कार्य इस सीमा तक प्रगति कर चुका है, इसलिए कोई भी इसे नहीं बदल सकता। सृजित लोगों को अवश्य ही कीचड़ में वापस जाना होगा। ऐसा नहीं है कि मैं अधार्मिक हूँ, बल्कि तुम लोग बहुत भ्रष्ट, बहुत निरंकुश हो, और ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम लोग शैतान के कब्जे में हो और उसके औजार बन गए हो। मैं स्वयं पवित्र परमेश्वर हूँ, मुझे दूषित नहीं किया जा सकता और न ही मेरा मंदिर अपवित्र हो सकता है। अब से मेरा प्रचण्ड क्रोध (कोप से अधिक गंभीर) सभी राष्ट्रों और लोगों पर बरसना शुरू हो जाएगा और मुझसे आने वाले, लेकिन मुझे न जानने वाले सभी नीच लोगों को दंडित करना शुरू कर देगा। मैं मनुष्यों से बेहद घृणा करता हूँ, अब मैं उन पर कोई दया नहीं करूँगा; बल्कि मैं उन पर अपने सारे शापों की बारिश करूँगा। अब न तो कोई करुणा होगी और न ही कोई प्रेम होगा, सब-कुछ भस्म कर दिया जाएगा, केवल मेरा राज्य ही शेष रहेगा, ताकि मेरे लोग मेरे घर में मेरी स्तुति करें, मुझे महिमा दें और सदा मेरी जयजयकार करें (यही मेरे लोगों का कार्य है)। मेरा हाथ आधिकारिक रूप से मेरे घर के अंदर के और बाहर के दोनों तरह के लोगों को ताड़ना देना शुरू करेगा। कोई भी दुष्कर्मी मेरे चंगुल और न्याय से बच नहीं पाएगा; हर एक को इस अग्निपरीक्षा से गुजरकर मेरी आराधना करनी होगी। यह मेरा प्रताप है, इसके अलावा, यह मेरा प्रशासनिक आदेश भी है जिसे मैं दुष्कर्मियों के लिए घोषित करता हूँ। कोई भी किसी और को नहीं बचा सकता। लोग केवल अपनी ही देखभाल कर सकते हैं, लेकिन चाहे वे कुछ भी कर लें, मेरे ताड़ना के हाथ से नहीं बच सकेंगे। इसका कारण यह है कि मेरे प्रशासनिक आदेश कठोर हैं; इस सच्चाई को लोग अपनी आँखों से देख सकते हैं।

जब मैं क्रोधित होना शुरू करूँगा, तो बड़े-छोटे सभी राक्षस इस बात से बुरी तरह भयभीत हो जाएँगे और तितर-बितर होकर भाग जाएँगे कि कहीं मेरा हाथ उन्हें जान से न मार डाले। लेकिन कोई भी मेरे हाथों से बच नहीं सकता है। दंड देने के सभी उपकरण मेरे हाथ में हैं, मेरा हाथ सब-कुछ नियंत्रित करता है, सब-कुछ मेरी पकड़ में है, कोई इससे मुक्त नहीं हो सकता। यह मेरी बुद्धि है। जब मैं मानव-देश में आया, तो मैंने मनुष्यों के बीच अपना कार्य शुरू करने की नींव रखते हुए, सभी प्रकार की तैयारियों के कार्य पहले ही पूरे कर लिए थे (क्योंकि मैं बुद्धिमान परमेश्वर हूँ, क्या किया जाना चाहिए और क्या नहीं किया जाना चाहिए, इस चीज़ से मैं उचित प्रकार से निपटता हूँ)। सब-कुछ ठीक से व्यवस्थित हो जाने के बाद, मैं देह बनकर मानव-देश में आ गया, लेकिन किसी ने भी मुझे नहीं पहचाना। जिन लोगों को मैंने

प्रबुद्ध किया उनके अलावा, विद्रोह के सभी पुत्र मेरा विरोध करते हैं, मुझे अपमानित करते हैं और मुझ पर जानबूझकर ध्यान नहीं देते। लेकिन अंत में, मैं उन्हें सभ्य और समर्पित बना दूँगा। हालाँकि लोगों को ऐसा प्रतीत हो सकता है जैसे कि मैं बहुत कुछ नहीं कर रहा हूँ, किन्तु मेरा महान कार्य पहले ही पूरा हो चुका है। (लोग मुझ मनुष्य का, मन और वचन दोनों से, पूरी तरह से आज्ञापालन करते हैं; यह एक संकेत है)। आज मैं उठकर, मेरी उपेक्षा करने वाली सभी प्रकार की दुष्ट आत्माओं को ताड़ना देता हूँ। वे चाहे कितने ही समय से मेरा अनुसरण कर रही हों, उन्हें मेरा पक्ष छोड़ना होगा। मुझे ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं चाहिए जो मेरे विरुद्ध हो (ये वे लोग हैं जिनमें आध्यात्मिक समझ की कमी है, जो अस्थायी रूप से दुष्ट आत्माओं के कब्जे में हैं और जो मुझे नहीं जानते)। मुझे उनमें से एक भी नहीं चाहिए! उन सभी को हटा दिया जाएगा और वे नरक के पुत्र बन जाएँगे! आज मेरे लिए सेवा करने के बाद, उन सभी को चले जाना चाहिए! मेरे घर में मटरगश्ती मत करो; बेशर्म और मुफ़्तखोर मत बनो। शैतान से संबंधित सभी लोग शैतान के पुत्र हैं, वे लोग सदा के लिए नष्ट हो जाएँगे। मेरी उपेक्षा करने वाले सभी लोग चुपचाप मेरे पक्ष को छोड़ देंगे, जिससे कि मेरे कार्य की गति की रुकावटें कम हो जाएँगी और आगे कोई चीज़ बाधा नहीं बनेगी। सभी काम मेरे आदेश पर होंगे, फिर न कोई बाधा होगी और न कोई अवरोध होगा। मेरी नज़रों के सामने ही सभी का पतन हो जाएगा और सभी मेरे दाह में नष्ट हो जाएँगे। यह मेरी सर्वशक्तिमत्ता, मेरी पूर्ण बुद्धिमत्ता को दर्शाता है (जो मैंने ज्येष्ठ पुत्रों में किया था)। यह मेरे नाम की महिमा को और अधिक बढ़ाएगा और मेरी महिमा में भी वृद्धि करेगा। जो कुछ मैं करता हूँ उससे और मेरी वाणी के स्वर से, तुम सभी लोग देख सकते हो कि मैंने अपने घर में अपना सारा कार्य पूरा कर लिया है और अन्यजाति देशों की ओर मुड़ना शुरू कर दिया है। मैं वहाँ अपना कार्य शुरू कर रहा हूँ और अपने कार्य के अगले चरण का निष्पादन कर रहा हूँ।

मेरे अधिकांश वचन तुम लोगों की अवधारणाओं से मेल नहीं खाते, किन्तु मेरे पुत्रो, छोड़ कर मत जाना। मानवीय अवधारणाओं से मेल नहीं खाने का अर्थ यह नहीं है कि ये मेरे कथन नहीं हैं। इसका अर्थ यही है कि ये वाकई मेरे कथन हैं। यदि मेरे वचन मानवीय अवधारणाओं के अनुरूप होते, तो यह दुष्ट आत्माओं का कार्य होता। इसलिए, तुम लोगों को मेरे वचनों में और अधिक प्रयास करने चाहिए, जो मैं करता हूँ वही करो, और जिससे मैं प्रेम करता हूँ उसी से प्रेम करो। यह अंत का युग वह युग भी है जब सभी आपदाएँ फिर से उत्पन्न होती हैं और इसके अलावा वह युग है जब मैं अपने सभी स्वभावों को प्रकट

करता हूँ। जब मेरी तमाम पवित्र तुरहियाँ बजेंगी तो लोग सचमुच भयभीत हो जाएँगे; और तब कोई भी बुराई करने का साहस नहीं करेगा, बल्कि मेरे सामने दण्डवत करेंगे, मेरी बुद्धि और मेरी सर्वशक्तिमत्ता को समझेंगे। मैं आखिरकार बुद्धिमान स्वयं परमेश्वर हूँ! कौन मेरा खंडन कर सकता है? कौन मेरे विरुद्ध खड़ा होने का साहस करेगा? कौन मेरी बुद्धि को स्वीकार नहीं करने का साहस करेगा? मेरी सर्वशक्तिमत्ता को नहीं जानने का साहस कौन करेगा? जब मेरा आत्मा सभी जगहों पर महान कार्य कर रहा है, तो सभी लोग मेरी सर्वशक्तिमत्ता को जानते हैं, किन्तु मेरा लक्ष्य अभी पूरा नहीं हुआ है। मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे कोप की वजह से मेरी सर्वशक्तिमत्ता को देखें, मेरी बुद्धिमत्ता को देखें, और मेरे व्यक्तित्व की महिमा को देखें। (यह सब ज्येष्ठ पुत्रों में अभिव्यक्त हुआ है। यह एकदम सच है। उनके अलावा, कोई भी मेरे व्यक्तित्व का अंग नहीं हो सकता; इसे मेरे द्वारा नियत किया गया है।) मेरे घर में अनंत रहस्य हैं लोग जिनकी थाह नहीं पा सकते। जब मैं बोलता हूँ, तो लोग कहते हैं कि मैं बहुत निर्दयी हूँ, वे कहते हैं कि बहुत से लोग पहले ही मुझे एक हद तक प्रेम करते हैं। तो फिर मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि वे बड़े लाल अजगर के वंशज हैं? इसके अलावा, मैं एक-एक करके उनका त्याग क्यों करूँगा? क्या मेरे घर में अधिक लोगों का होना बेहतर नहीं है? फिर भी मैं अभी भी इसी तरह से कार्य करता हूँ। मेरे द्वारा पहले से पूर्वनिर्धारित संख्या से न तो एक अधिक हो सकता है और न ही एक कम। (यह मेरा प्रशासनिक आदेश है। इसे न तो इंसान बदल सकता है, न ही मैं स्वयं बदल सकता हूँ, क्योंकि मुझे शैतान के सामने नहीं झुकना है। मेरी बुद्धि और मेरा प्रताप दिखाने के लिए इतना पर्याप्त है। मैं एकमात्र स्वयं परमेश्वर हूँ। लोग मेरे सामने झुकते हैं; मैं लोगों के सामने नहीं झुकता)। यही बात शैतान को सर्वाधिक अपमानित करती है। जिन लोगों को मैंने चुना है वे सभी विनम्र, समर्पित, आज्ञाकारी और ईमानदार हैं, वे विनम्रता से, गुमनामी में रहकर मेरी सेवा कर सकते हैं। (मुझे अपमानित करने के लिए शैतान इस तथ्य का उपयोग करना चाहता था, किन्तु मैंने उसे मारकर वापस भगा दिया)। इन लोगों में मेरे स्वभाव को देखा जा सकता है। जब मैं युद्ध में जीतने के बाद लौटकर आऊँगा, तो मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपने राज्य में राजा बनाने के लिए अभिषिक्त करूँगा, तभी मैं आराम करूँगा, क्योंकि वे मेरे साथ-साथ शासन करेंगे। मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरा प्रतिनिधित्व और मुझे अभिव्यक्त करते हैं। वे विनम्र और गुमनाम सेवा में रहकर, मेरे प्रति समर्पित रहते हैं; वे ईमानदारी से मेरे वचनों का पालन करते हैं; अपनी ईमानदारी में वे वही कहते हैं जो मैं कहता हूँ और अपनी विनयशीलता से वे मेरे नाम को महिमान्वित करते हैं (धृष्टता या अशिष्टता से नहीं, बल्कि प्रताप और

कोप से)। मेरे ज्येष्ठ पुत्रो! ब्रह्मांड की दुनिया का न्याय करने का समय आ गया है! मैं तुम लोगों को आशीष प्रदान करता हूँ, मैं तुम लोगों को अधिकार देता हूँ और आशीषों का पुरस्कार प्रदान करता हूँ! सब-कुछ पहले ही पूरा हो चुका है, यह सब तुम लोगों द्वारा नियंत्रित और व्यवस्थित है, क्योंकि मैं तुम लोगों का पिता हूँ; मैं तुम लोगों की मज़बूत मीनार हूँ, मैं तुम लोगों का आश्रय हूँ, मैं तुम लोगों के पीछे खड़ा आधार हूँ, इसके अलावा, मैं तुम लोगों का एकमात्र सर्वशक्तिमान हूँ; और मैं तुम लोगों का सब-कुछ हूँ! सब-कुछ मेरे हाथों में है और सब-कुछ तुम लोगों के हाथों में भी है। इसमें आज ही नहीं बल्कि बीता हुआ कल और आने वाले कल भी शामिल है! क्या यह उत्सव मनाने लायक नहीं है? क्या यह तुम लोगों की जयजयकार के लायक नहीं है? तुम सभी लोग, मुझसे उस हिस्से को स्वीकार करो जिसके लायक तुम लोग हो! मैं तुम लोगों को सब-कुछ देता हूँ, मैं अपने लिए रत्तीभर भी नहीं बचाता हूँ, क्योंकि मेरी सारी संपत्ति तुम लोगों की है और मेरा वैभव भी तुम लोगों का है। यही कारण है कि तुम लोगों का सृजन करने के बाद मैंने "बहुत अच्छा" कहा था।

क्या तुम लोग जानते हो कि तुम लोग आज जो कुछ भी करते, सोचते और कहते हो, उसका संचालन कौन करता है? तुम लोगों के क्रिया-कलापों का प्रयोजन क्या है? मैं तुम लोगों से पूछता हूँ : तुम लोग मेमने के विवाह भोज में किस प्रकार से भाग लेते हो? क्या यह आज है? या यह भविष्य में होगा? मेमने का विवाह भोज क्या है? तुम लोग नहीं जानते, है न? तो ठीक है, मैं समझाता हूँ : जब मैं मानव-लोक में आया, तो मैंने अपने आज के मनुष्य रूप की सेवा के लिए सभी प्रकार के लोगों, मामलों और चीज़ों की व्यवस्था की थी। अब जबकि सब-कुछ पूरा हो गया है, तो मैं सेवाकर्मियों को दर-किनार कर रहा हूँ। इसका विवाह भोज से क्या लेना-देना है? जब ये लोग मुझे सेवा प्रदान करते हैं, अर्थात्, जब मैं मेमना बना दिया जाता हूँ, तो मुझे विवाह भोज का स्वाद महसूस होता है। अर्थात्, अपने जीवन में मैंने जो भी पीड़ा भुगती है, जो भी कार्य किए हैं, जो कुछ भी कहा है, जिस किसी भी समस्या का सामना किया है और जो कुछ भी किया है, वह सब मिलकर विवाह भोज बना है। मेरा जो मनुष्य रूप है, उसके अभिषिक्त होने के बाद, तुम लोगों ने मेरा अनुसरण करना शुरू किया (और इसी समय मैं मेमना बना था); इस तरह, मेरी अगुआई में, तुम लोगों ने सभी तरह की पीड़ा, आपदा सही, दुनिया द्वारा त्यागे जाने का, तिरस्कृत किए जाने का और परिवार द्वारा छोड़ दिए जाने का अनुभव किया है और तुम लोग मेरे आशीष में रहे हो। ये सभी चीजें मेमने के विवाह भोज का अंग हैं। मैं "विवाह भोज" का प्रयोग इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं तुम लोगों की अगुआई

करने के लिए जो कुछ भी करता हूँ, वह तुम लोगों को प्राप्त करने हेतु है। किन्तु यह सब भोज का हिस्सा है। भविष्य में या कह सकते हो कि आज, जिस किसी चीज का भी तुम लोग आनंद लेते हो, जो कुछ भी तुम लोग प्राप्त करते हो और जो राजसी सामर्थ्य तुम लोग मेरे साथ साझा करते हो, वो सब भोज है। मेरा प्रेम उन सभी को मिलता है जो मुझसे प्रेम करते हैं। जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ वे सदा रहेंगे, कभी नहीं हटाये जाएँगे, अनंतकाल तक मेरे प्रेम में रहेंगे। यह शाश्वत है!

अध्याय 110

जब सब-कुछ प्रकट हो जाएगा तभी वह समय होगा कि मैं आराम करूँगा, इसके अलावा, यह वह समय भी होगा जब सब कुछ व्यवस्थित हो जाएगा। मैं खुद अपना कार्य करता हूँ; मैं स्वयं हर चीज़ का आयोजन और व्यवस्था करता हूँ। जब मैं सिय्योन से बाहर निकलकर, लौटकर अपने ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बना दूँगा, तो मेरा विशाल कार्य पूरा हो चुका होगा। लोगों की अवधारणा है कि जो भी कार्य किया जाए, वो देखने और छूने योग्य होना चाहिए। किन्तु जिस तरह से मैं इसे देखता हूँ, जिस समय मैं अपनी योजना बनाता हूँ, तभी सब-कुछ पूरा हो जाता है। सिय्योन वह जगह है जहाँ मैं रहता हूँ और यह मेरा गंतव्य भी है; यहीं पर मैं अपनी सर्वशक्तिमत्ता प्रकट करता हूँ और यहीं पर मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं अपनी पारिवारिक खुशी को साझा करेंगे। इसी जगह पर मैं अनंत काल तक उनके साथ रहूँगा। सिय्योन एक खूबसूरत जगह; सिय्योन ऐसी जगह जिसके लिए लोग चाहत रखते हैं; युगों-युगों से अनगिनत लोगों ने इसकी कामना की है, किन्तु शुरुआत से ही, एक भी व्यक्ति ने सिय्योन में प्रवेश नहीं किया है। (युगयुगांतर से संतों और नबियों में से भी किसी ने प्रवेश नहीं। किया है; क्योंकि मैं अंत के दिनों में अपने ज्येष्ठ पुत्रों का चयन कर रहा हूँ और वे सभी इस समय पैदा हो रहे हैं; इससे मेरी दया और मेरे अनुग्रह, जिनके बारे में मैंने बोला है, अधिक स्पष्ट हो जाते हैं।) हर एक व्यक्ति जो अब ज्येष्ठ पुत्र है, मेरे साथ सिय्योन में प्रवेश करेगा और उस आशीष का आनंद उठाएगा। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को एक निश्चित सीमा तक उठा रहा हूँ क्योंकि उनमें मेरी क्षमता और मेरी महिमामयी छवि है और वे मेरे लिए गवाही देने और मेरी महिमा का गायन करने और मुझे जीने में सक्षम हैं। इसके अलावा, वे शैतान को हराने और बड़े लाल अजगर को अपमानित करने में भी सक्षम हैं। क्योंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र शुद्ध कुँवारियाँ हैं; मैं इन्हीं से प्रेम करता हूँ, मैंने इन्हें ही चुना है और यही मेरे कृपापात्र हैं। मैं इन्हें ही ऊपर उठाता हूँ क्योंकि यही डटे रहकर नम्रतापूर्वक चुपचाप मेरी सेवा कर सकते

हैं और मेरे लिए शानदार गवाही दे सकते हैं। मैंने अपनी समस्त ऊर्जा अपने ज्येष्ठ पुत्रों पर व्यय कर दी है, मैंने उनकी सेवा के लिए सभी प्रकार के लोगों, घटनाओं और चीज़ों को सावधानी से व्यवस्थित कर दिया है। अंत में सभी लोग मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के माध्यम से मेरी पूरी महिमा को देख पाएँगे और उन्हीं के कारण हर कोई मुझसे आश्वस्त हो जाएगा। मैं किसी शैतान को मजबूर नहीं करूँगा और मैं उनकी उछल-कूद या उनकी उद्दंडता से भी नहीं डरता क्योंकि मेरे पास गवाह हैं, और मेरे हाथों में अधिकार है। सुनो, शैतान जैसे लोगो! मेरे बोले सभी वचन और किए गए हर कार्य मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बनाने के लिए हैं। इसलिए तुम्हें मेरे आदेश को सुनना होगा और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का आज्ञापालन करना होगा; अन्यथा मैं तुमसे निपटूँगा और तुम्हें आसन्न विनाश की यातना में डाल दूंगा! मेरे ज्येष्ठ पुत्रों ने पहले ही मेरे प्रशासनिक आदेशों को पूरा करना शुरू कर दिया है, क्योंकि मात्र वही मेरे सिंहासन को सँभालने के योग्य हैं; मैंने उन्हें पहले ही अभिषिक्त कर दिया है। जो कोई भी मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का आज्ञापालन नहीं करता है वह निश्चित रूप से अच्छा नहीं है, मेरी प्रबंधन योजना को अस्त-व्यस्त करने के लिए उन्हें निस्संदेह बड़े लाल अजगर द्वारा भेजा गया है। और इस प्रकार के नीच लोगों को तुरंत मेरे घर से बाहर धकेल दिया जाएगा। मैं नहीं चाहता कि इस तरह के लोग मेरी सेवा में हों; वे अनन्त विनाश झेलेंगे—और उन्हें इसे शीघ्र ही झेलना पड़ेगा! जो लोग मेरी सेवा में हैं उन्हें निश्चय ही पहले से मेरा अनुमोदन प्राप्त है; उन्हें उस कीमत की चिंता किए बिना आज्ञाकारी होना चाहिए जो उन्हें चुकानी पड़ सकती है। यदि वे विद्रोही हैं तो वे मेरे लिए सेवा प्रदान करने के योग्य नहीं हैं और मुझे इस तरह के प्राणियों की आवश्यकता नहीं है। वे तुरंत यहां से चले जाएं; मैं उन्हें ज़रा भी नहीं चाहता! तुम्हें इस बारे में अब स्पष्ट हो जाना चाहिए! जो लोग मेरे लिए सेवा करते हैं उन्हें यह सेवा अच्छी तरह से करनी चाहिए और कोई समस्या पैदा नहीं करनी चाहिए। यदि तुम्हें लगता है कि तुम्हारे लिए कोई आशा नहीं है और तुम समस्याएँ पैदा करना शुरू कर देते हो, तो मैं तुम्हें तुरंत ही समाप्त कर दूँगा! तुझमें में से जो मेरी सेवा में हैं, क्या वो इस बारे में स्पष्ट है? यह मेरा प्रशासनिक आदेश है।

मेरे लिए गवाही देना मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का कर्तव्य है, इसलिए तुम लोगों को मेरे लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है; मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि तुम लोग अपने कर्तव्य को सही तरीके से करो और उन आशीषों का आनंद लो जिन्हें मैं तुम लोगों को प्रदान करता हूँ। जब मैंने पूरे ब्रह्मांड में और धरती के छोरों तक यात्रा की, तो मैंने अपने ज्येष्ठ पुत्रों को चुन लिया और उन्हें पूर्ण बना दिया। यह कार्य मैंने दुनिया को बनाने से पहले पूरा कर लिया था; इस बात को कोई नहीं जानता, मैंने इस काम को चुपचाप पूरा

किया। यह तथ्य मानव अवधारणाओं के अनुरूप नहीं है! किन्तु तथ्य तो तथ्य हैं और उन्हें कोई नहीं बदल सकता। छोटे-बड़े दोनों तरह के राक्षसों ने अपने मिथ्याभिमानों से अपना असली रूप प्रकट कर दिया है और उन्हें मेरी अलग-अलग तरह की ताड़नाओं से गुज़रना पड़ा है। मेरे कार्य के चरण हैं और मेरे वचनों में बुद्धि है। क्या मेरे वचनों और कार्यों से तुम लोगों ने कुछ देखा है? क्या मैं केवल कहता और करता हूँ? क्या मेरे वचन सिर्फ़ कठोर, न्याय करने वाले, या मात्र सांत्वना देने वाले होते हैं? यह कहना बहुत आसान है, लेकिन इंसान के लिए इसे समझना बिल्कुल भी आसान नहीं है। मेरे वचनों में न केवल बुद्धि, न्याय, धार्मिकता, प्रताप और सांत्वना है, बल्कि इनमें मेरा स्वरूप भी है। मेरा हर एक वचन एक रहस्य है जिसे इंसान उजागर नहीं कर सकता; मेरे वचन पूरी तरह से गूढ़ हैं, हालाँकि रहस्य प्रकट किए गए हैं, फिर भी इंसान की योग्यताओं के आधार पर वे अभी भी उनकी कल्पना और समझ के दायरे से बाहर हैं। जो बात समझने में मेरे लिए सबसे आसान है वही लोगों के लिए समझने में सबसे कठिन है, इसलिए मेरे और मनुष्य के बीच का अंतर स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का अंतर है। इसीलिए मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों के रूप को पूरी तरह से बदलना चाहता हूँ और उन्हें पूरी तरह से शरीर में प्रवेश करवाना चाहता हूँ। भविष्य में, वे न केवल देह से शरीर में प्रवेश करेंगे, बल्कि वे शरीर के भीतर रहते हुए अलग-अलग स्तर पर अपने रूप बदलेंगे। यही मेरी योजना है। यह कार्य मनुष्य नहीं कर सकता; उसके पास इस कार्य को करने का कोई तरीका नहीं है—इसलिए अगर मैं तुम लोगों को विस्तार से बता भी दूँ, तो भी ये तुम लोगों की समझ में नहीं आएगा; तुम लोग केवल अलौकिक की भावना में प्रवेश कर सकते हो। क्योंकि मैं बुद्धिमान स्वयं परमेश्वर हूँ।

जब तुम लोग रहस्यों को देखते हो तो तुम सभी लोगों में किसी न किसी रूप में प्रतिक्रिया होती है। भले ही तुम लोग उन्हें स्वीकार नहीं करते हो या मानते नहीं हो, फिर भी तुम लोग उन्हें ज़बानी तौर पर स्वीकार कर लेते हो। इस तरह के लोग धोख़ेबाज होते हैं और जब मैं रहस्य प्रकट करूँगा, तो मैं उन्हें एक-एक करके हटा दूँगा। किन्तु मैं जो कुछ भी करता हूँ वह चरणबद्ध तरीके से किया जाता है। मैं न तो जल्दबाजी में कोई कार्य करता हूँ और न ही आँख बंद करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ; क्योंकि मेरा स्वभाव दिव्य है। लोग साफ तौर पर यह नहीं देख पाते कि फिलहाल मैं क्या कर रहा हूँ, या मैं अपने अगले चरण में क्या करूँगा। जब मैं एक चरण के बारे में बोलता हूँ तो उसी समय, जिस तरह से मैं कार्य करता हूँ वह भी मेरे साथ एक कदम आगे बढ़ जाता है। सब-कुछ मेरे वचनों के भीतर होता है, सब-कुछ मेरे वचनों

के भीतर प्रकट होता है, इसलिए किसी को भी अधीर नहीं होना चाहिए; ठीक से मेरी सेवा करना ही पर्याप्त है। युगों पहले मैंने अंजीर के पेड़ के बारे में भविष्यवाणी की थी, किन्तु युगों के दौरान किसी ने भी अंजीर का पेड़ नहीं देखा और कोई भी इसे नहीं समझा सकता था, हालाँकि इन वचनों का उल्लेख पहले की स्तुतियों में किया गया था, लेकिन कोई भी इसका असली अर्थ नहीं बता पाया। इन वचनों ने लोगों को उसी तरह भ्रमित कर दिया जैसे "भयानक आपदा" वाले वाक्यांश ने किया था और यह एक रहस्य था जिसे मैंने मानवजाति के आगे कभी बेपर्दा नहीं किया। लोग सोचते थे कि अंजीर का पेड़ संभवतः एक अच्छे फल वाला पेड़ है, या शायद एक कदम आगे बढ़कर कहें तो यह शायद इसका तात्पर्य संतों से है, किन्तु वे फिर भी सही अर्थ से बहुत दूर थे। जब मैं अंत के दिनों में अपनी सूचीपत्र खोलूँगा तब मैं तुम लोगों को बताऊँगा। ("सूचीपत्र" से तात्पर्य उन सभी वचनों से है जो मैंने बोले हैं, जो मैंने अंत के दिनों में बोले हैं—इसमें वे सभी वचन हैं।) "अंजीर का पेड़" का तात्पर्य मेरे सभी प्रशासनिक आदेशों है। किन्तु यह इसके अर्थ का सिर्फ एक हिस्सा है। अंजीर के पेड़ का अंकुरित होने का तात्पर्य मेरे कार्य आरंभ करने और देह में बोलने से है, किन्तु मेरे प्रशासनिक आदेशों को अभी भी ज़ाहिर नहीं किया गया था (क्योंकि उस समय तक, मेरे नाम का कोई भी गवाह जन्मा नहीं था और कोई भी मेरे प्रशासनिक आदेशों को नहीं जानता था)। जब मेरे नाम की गवाही दी जाएगी और यह फैलेगा, जब सभी लोगों द्वारा इसकी स्तुति की जाएगी, जब मेरे प्रशासनिक आदेश सफल होंगे, तो यही अंजीर के पेड़ पर फल लगने का समय होगा। यही पूर्ण व्याख्या है जिसमें कुछ भी छोड़ा नहीं गया है; यहां सब-कुछ प्रकट कर दिया गया है। (मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि मेरे पिछले वचनों में, एक हिस्सा ऐसा था जिसे मैंने अभी तक पूरी तरह से प्रकट नहीं किया था; इसलिए तुम लोगों को धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने और तलाश करने की आवश्यकता थी।)

जब मैं ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बनाऊँगा, तो मैं ब्रह्मांड के आगे अपनी संपूर्ण महिमा को और समस्त स्वरूपों को प्रकट करूँगा। यह शरीर में होगा और यह सभी लोगों से ऊपर, मेरे अपने व्यक्तित्व में होगा; यह मेरे सिय्योन पर्वत पर और मेरी महिमा में होगा और खासतौर से, यह स्तुति के कोलाहल के बीच किया जाएगा। इसके अलावा, मेरे आस-पास जितने भी दुश्मन हैं, वो पीछे हट जाएँगे, वो अथाह गड्ढे, आग और गंधक की झील में जा पड़ेंगे। आज लोगों की कल्पना बहुत ही सीमित दायरे में है और वह मेरे मूल इरादों के अनुरूप भी नहीं है; यही कारण है कि जब मैं हर दिन बोलता हूँ तो लोगों की अवधारणाओं और विचारों को निशाना बनाता हूँ। एक दिन आएगा (शरीर में प्रवेश करने का दिन) जब जो मैं कहूँगा तो वह तुम लोगों

के लिए पूरी तरह से उपयुक्त होगा और तुम्हारी तरफ से कोई भी प्रतिरोध नहीं होगा, उस समय तुम लोगों में कोई विचार नहीं होंगे और तब मैं भी नहीं बोलूँगा। क्योंकि तुम लोगों की अपनी कोई सोच नहीं होगी, इसलिए मैं तुम लोगों को सीधे प्रबुद्ध कर दूँगा—ज्येष्ठ पुत्रों को इसी आशीष का आनंद प्राप्त होगा, और यह तब होगा जब वे राजाओं के रूप में मेरे साथ शासन करेंगे। मनुष्य जिन चीज़ों की कल्पना नहीं कर पाता, वह उन पर विश्वास भी नहीं करता, अगर कुछ लोग इस पर विश्वास करते भी हैं, तो मेरी विशेष प्रबुद्धता के कारण ही करते है। वरना कोई विश्वास नहीं करेगा, इसका अनुभव सबको करना चाहिए। (इस चरण से गुज़रे बिना, मेरी महान शक्ति को इसके माध्यम से प्रकट नहीं किया जा सकता, इसका अर्थ है कि मैं मात्र अपने वचनों से लोगों को उनकी अवधारणाओं से छुटकारा दिलाता हूँ। दूसरा कोई इस कार्य को नहीं कर सकता और कोई मेरी जगह नहीं ले सकता। केवल मैं ही इसे पूरा कर सकता हूँ; हालाँकि, यह पूर्ण नहीं है। मुझे यह कार्य लोगों के ज़रिए करना चाहिए।) मेरे वचनों को सुनकर लोग उत्साहित हो जाते हैं, लेकिन अंत में सभी पीछे हट जाते हैं। उनके पास ऐसा करने के अलावा और कोई चारा नहीं होता। ऐसे रहस्य होते हैं जिन्हें लोग समझ नहीं पाते। कोई सोच भी नहीं सकता कि क्या होगा और मैं जो प्रकट करूँगा, उसमें तुम लोगों को इसे दिखाऊँगा। उसके माध्यम से मेरे इन वचनों के अर्थ स्पष्ट हो जाएँगे: "मैं उन सभी को उखाड़ कर फेंक दूँगा जो मेरे उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं हैं।" मेरे ज्येष्ठ पुत्रों में मेरे शत्रुओं की तरह ही कई प्रकार की अभिव्यक्तियाँ हैं हैं। एक-एक करके वे सब तुम लोगों के लिए प्रकट की जाएँगी। याद रखना! ज्येष्ठ पुत्रों के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति हो उसमें दुष्ट आत्माओं का कार्य होता है। वे सभी शैतान के अनुचर हैं। (उन्हें शीघ्र ही, एक-एक करके प्रकट किया जाएगा, लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें अंत तक सेवा करनी पड़ती है और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें केवल कुछ समय तक ही सेवा करने की आवश्यकता होती है।) मेरे वचनों के कार्य के अधीन, सभी अपने असली चेहरे दिखाएँगे।

हर देश, हर स्थान और हर संप्रदाय मेरे नाम की समृद्धियों का आनंद ले रहे हैं। चूँकि इस समय आपदा मंडरा रही है और मेरी मुट्ठी में है, मैं इसे धीरे-धीरे नीचे भेजने की तैयारी कर रहा हूँ, इसलिए हर व्यक्ति तत्परता से सत्य के मार्ग की खोज कर रहा है, जिसकी तलाश अवश्य की जानी चाहिए भले ही इसकी कीमत सब कुछ गंवाकर चुकानी पड़े। सभी चीज़ों में मेरा अपना समय है। जब कभी भी मैं कहता हूँ कि यह पूरा हो जाएगा, तो यह तभी पूरा हो जाएगा, ठीक उसी पल, उसी क्षण। कोई भी इसे बाधित नहीं कर सकता या इसे रोक नहीं सकता। आखिरकार, बड़ा लाल अजगर मेरा परास्त किया हुआ शत्रु ही तो है;

वह मेरे लिए एक सेवाकर्मी है और मैं उसे जो कुछ भी करने के लिए कहता हूँ, वह उसे बिना किसी प्रतिरोध के करता है। यह वास्तव में मेरा बोझ ढोने वाला जानवर है। जब मेरा कार्य पूरा हो जाएगा, तो मैं इसे अथाह गड्ढे, आग और गंधक की झील में डाल दूँगा (मैं उन लोगों का जिक्र कर रहा हूं जो नष्ट हो चुके हैं)। नष्ट किए गए लोग न केवल मृत्यु का स्वाद चखेंगे, बल्कि उन्हें मेरा उत्पीड़न करने के कारण भयंकर दंड भी दिया जाएगा। मैं इस कार्य को सेवाकर्मियों के माध्यम से करता रहूँगा। मैं शैतान को उसी के हाथों मरवाऊँगा और नष्ट करवाऊँगा और बड़े लाल अजगर के वंशजों को पूरी तरह से मिटा दूँगा। यह मेरे कार्य का एक हिस्सा है; और उसके बाद, मैं अन्यजाति राष्ट्रों की ओर मुड़ जाऊँगा। ये मेरे कार्य के चरण हैं।

अध्याय 111

तुम्हारी वजह से सभी राष्ट्र धन्य हो जाएँगे; तुम्हारी वजह से सभी लोग मेरी जयजयकार और स्तुति करेंगे। मेरा राज्य संपन्न और विकसित होगा, और सदैव कायम रहेगा। किसी को भी इसे रौंदने नहीं दिया जाएगा और किसी भी ऐसी चीज़ को अस्तित्व में नहीं रहने दिया जाएगा, जो मेरे अनुरूप नहीं होगी, क्योंकि मैं स्वयं प्रतापी परमेश्वर हूँ, जो कोई अपराध सहन नहीं करता। मैं किसी को भी अपना आकलन नहीं करने देता, और मैं किसी को भी अपने साथ असंगत नहीं होने देता। यह मेरा स्वभाव और मेरा प्रताप दिखाने के लिए पर्याप्त है। जब कोई मेरा विरोध करता है, तो मैं उसे अपने समय में दंड दूँगा। किसी ने मुझे किसी को दंडित करते हुए क्यों नहीं देखा है? केवल इसलिए कि अभी मेरा समय नहीं आया है और मेरे हाथ ने अभी तक वास्तव में कार्य नहीं किया है। यद्यपि बड़ी आपदाएँ बरसी हैं, लेकिन सिर्फ यह बताने के लिए कि बड़ी आपदाओं में क्या होता है, जबकि बड़ी आपदाओं की वास्तविकता किसी भी व्यक्ति पर नहीं पड़ी है। क्या तुम लोगों ने मेरे वचनों से कुछ भी समझा है? आज मैं बड़ी आपदाओं की वास्तविकता जारी करना शुरू करूँगा। इसके बाद, जो कोई भी मेरा विरोध करेगा, वह मेरे हाथों मार डाला जाएगा। अतीत में मैंने बस कुछ ही लोगों को उजागर किया है; अभी तक कोई बड़ी आपदा नहीं आई है। वर्तमान अतीत से भिन्न है। चूँकि मैंने तुम सबको बताया है कि बड़ी आपदाओं में क्या होता है, अत: एक निर्दिष्ट समय पर मैं जनता के लिए बड़ी आपदाओं की वास्तविकता घोषित करूँगा। इससे पहले, किसी को किसी बड़ी आपदा द्वारा स्पर्श नहीं किया गया है, इसलिए अधिकतर लोगों (अर्थात् बड़े लाल अजगर के पुत्रों) ने बिना विचारे और मनमाने ढंग से कार्य करना जारी रखा है। जब वास्तविकता आएगी, तो ये घृणित प्राणी

पूरी तरह से कायल हो जाएँगे। अन्यथा हर कोई मेरे बारे में अनिश्चित होगा, और कोई मेरे बारे में स्पष्ट नहीं होगा। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञा है। इससे यह देखा जा सकता है कि मेरा कार्य करने का तरीका (मैं सभी लोगों में अपने कार्य करने के तरीके को संदर्भित कर रहा हूँ) बदलना शुरू हो गया है : मैं बड़े लाल अजगर के वंशजों के जरिये अपना कोप, अपना न्याय और अपना शाप दिखा रहा हूँ, और मेरे हाथ ने उन सभी को ताड़ना देनी शुरू कर दी है, जो मेरा विरोध करते हैं। ज्येष्ठ पुत्रों में मैं अपना प्रेम और दया दिखा रहा हूँ। इससे भी बढ़कर, ज्येष्ठ पुत्रों में मैं अपना पवित्र स्वभाव दिखा रहा हूँ, जो कोई अपराध सहन नहीं करता; मैं अपना अधिकार दिखा रहा हूँ, और मैं अपना व्यक्तित्व दिखा रहा हूँ। सेवाकर्मी मुझे सेवा प्रदान करने के लिए बस गए हैं, और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को अधिकाधिक ज्ञात करवाया जा रहा है। अपना विरोध करने वालों को मार डालकर मैं सेवा करने वालों को अपना निर्मम हाथ देखने देता हूँ, ताकि वे डरते-काँपते हुए मुझे सेवा प्रदान करें, और मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपना अधिकार देखने देता हूँ और अपने को बेहतर ढंग से समझने देता हूँ, ताकि वे जीवन में आगे बढ़ सकें। पिछली अवधि में मैंने जो वचन बोले थे (प्रशासनिक आज्ञाओं, भविष्यवाणी, और सभी प्रकार के लोगों के न्याय सहित), वे क्रम से पूरे होने लगे हैं, अर्थात्, लोग अपनी आँखों के सामने मेरे वचनों को साकार होता हुआ देखेंगे, वे देखेंगे कि मेरा कोई भी वचन निष्फल नहीं हैं; बल्कि उनमें से प्रत्येक वचन व्यावहारिक है। मेरे वचन पूरे होने से पहले कई लोग छोड़कर चले जाएँगे, क्योंकि वे पूरे नहीं हुए हैं। यह मेरे कार्य करने का तरीका है—यह न केवल मेरे लौहदंड का कार्य है, बल्कि उससे भी अधिक यह मेरे वचनों की बुद्धिमत्ता है। इनसे व्यक्ति मेरी सर्वशक्तिमत्ता और बड़े लाल अजगर के लिए मेरी नफ़रत देख सकता है। (इसे केवल मेरे द्वारा कार्य शुरू करने के बाद ही देखा जा सकता है। अब कुछ लोगों को प्रकट किया जा रहा है—यह मेरी ताड़ना का केवल एक छोटा-सा हिस्सा है, इसे बड़ी आपदाओं में शामिल नहीं किया जा सकता। इसे समझना कठिन नहीं है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि अब से कार्य करने के मेरे तरीके को समझना लोगों के लिए और भी कठिन हो जाएगा। आज मैं तुम लोगों को बता रहा हूँ, ताकि समय आने पर तुम लोग इसकी वजह से कमजोर न पड़ो। यही है, जिसे मैं तुम लोगों को सौंप रहा हूँ, क्योंकि ऐसी चीज़ें घटित होंगी, जिन्हें प्राचीन काल से लोगों ने नहीं देखा है, और जो लोगों के लिए अपनी भावनाओं और दंभ को अलग करना कठिन बना देंगी)। मैं बड़े लाल अजगर को दंडित करने के लिए भिन्न-भिन्न साधनों का उपयोग इसलिए करता हूँ, क्योंकि वह मेरा दुश्मन और मेरा विरोधी है। मुझे इसके सभी वंशजों को नष्ट करना होगा—केवल तभी मैं

अपने हृदय से नफ़रत हटा सकता हूँ, और केवल तभी मैं बड़े लाल अजगर को सही तरह से अपमानित कर सकता हूँ। केवल यही बड़े लाल अजगर को पूरी तरह से नष्ट करना और उसे आग और गंधक की झील में, अथाह गड्ढे में फेंकना है।

यह केवल कल ही नहीं था कि मैंने अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपने साथ शासन करने दिया और सभी राष्ट्रों को नियंत्रित करने और आशीषों का आनंद लेने में अपने साथ शामिल होने दिया; मैं आज भी ऐसा करता हूँ और इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मैं कल भी ऐसा करूँगा। मैंने अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है—मैं शुरू से ऐसा कहता आ रहा हूँ, और यह भी कहा जा सकता है कि मैंने सृष्टि की शुरुआत के समय से ही ऐसा कहना शुरू कर दिया था, लेकिन मनुष्य नहीं समझते कि मैं क्या कह रहा हूँ। सृष्टि के समय से अब तक मैंने व्यक्तिगत रूप से कार्य नहीं किया है; दूसरे शब्दों में, बोलने और कार्य करने के लिए मेरा आत्मा कभी भी मनुष्य पर पूरी तरह से नहीं उतरा है। लेकिन आज अतीत से भिन्न है : मेरा आत्मा ब्रह्मांड की दुनिया में हर जगह व्यक्तिगत रूप से कार्य कर रहा है। क्योंकि अंत के दिनों में मैं ऐसे लोगों का एक समूह प्राप्त करना चाहता हूँ, जो मेरे साथ सत्ता में शासन करेंगे, पहले मैं ऐसा व्यक्ति प्राप्त करता हूँ जो मेरे साथ एकचित्त हो, जो मेरी ज़िम्मेदारी के बारे में विचारशील हो। उसके बाद मेरी आवाज़ को व्यक्त करने के लिए और मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं को जारी करने तथा ब्रह्मांड की दुनिया के लिए मेरे रहस्यों को प्रकट करने के लिए मेरा आत्मा पूरी तरह से उस पर उतर जाएगा। मेरा आत्मा व्यक्तिगत रूप से उसे पूर्ण करेगा; मेरा आत्मा व्यक्तिगत रूप से उसे अनुशासित करेगा। क्योंकि वह सामान्य मानव के रूप में रहता है, इसलिए कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता। जब मेरे ज्येष्ठ पुत्र शरीर में प्रवेश करेंगे, तो यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगा कि अब मैं जो करता हूँ, वह वास्तविकता है या नहीं। निस्संदेह, मनुष्य की आँखों में, मनुष्य की धारणा में, कोई भी विश्वास नहीं करता और कोई भी आज्ञाकारी नहीं हो सकता। किंतु ऐसी मेरी लोगों के प्रति सहिष्णुता है। चूँकि वास्तविकता अभी तक नहीं आई है, इसलिए लोग विश्वास नहीं कर सकते या समझ नहीं सकते। ऐसा कभी कोई नहीं रहा, जिसने अपनी मानवीय धारणाओं के बीच मेरे वचनों पर विश्वास किया हो। सभी लोग इस तरह के हैं : या तो वे केवल उस पर विश्वास करते हैं जो मेरा दैहिक अस्तित्व कहता है, या वे केवल मेरे आत्मा की आवाज़ पर विश्वास करते हैं। लोगों के साथ व्यवहार करने में यह सबसे कठिन चीज़ है। यदि उन्होंने अपनी आँखों से कुछ होते हुए नहीं देखा है, तो कोई भी अपनी धारणाओं को नहीं छोड़ सकता, और कोई भी मेरे कहने पर विश्वास नहीं कर सकता।

इसीलिए मैं अवज्ञा के उन पुत्रों को दंडित करने के लिए अपनी प्रशासनिक आज्ञाओं का उपयोग करता हूँ।

मैंने पहले भी ऐसी बातें कही हैं : मैं ही प्रथम और अंतिम हूँ, और मैं ही आदि से अंत तक हर चीज़ का प्रभारी हूँ। अंत के दिनों में, मैं 144,000 विजयी नर बालकों को प्राप्त करूँगा। तुम लोगों को इन "विजयी नर बालक" शब्दों की थोड़ी, शाब्दिक समझ है, लेकिन तुम लोग 144,000 की संख्या के बारे में स्पष्ट नहीं हो। मानवीय धारणा में किसी संख्या को लोगों या चीजों की संख्या के बारे में बताना चाहिए। "144,000" की संख्या वाले "विजयी नर बालकों"—"144,000 विजयी नर बालकों"—के बारे में लोग सोचते हैं कि कुल 144,000 विजयी नर बालक हैं। इतना ही नहीं, कुछ लोग सोचते हैं कि इस संख्या के तथ्य के भीतर कोई प्रतीकात्मक अर्थ है, और वे 140,000 और 4,000 को अलग-अलग भागों के रूप में लेते हैं। लेकिन ये दोनों व्याख्याएँ ग़लत हैं। यह किसी वास्तविक संख्या को संदर्भित नहीं करता, और इसका कोई प्रतीकात्मक अर्थ तो बिलकुल भी नहीं है। मनुष्यों में कोई भी ऐसा नहीं है, जो इसे समझ सके—पिछली पीढ़ियों के सभी लोग सोचते थे कि इसका कोई प्रतीकात्मक अर्थ हो सकता है। "144,000" की संख्या विजयी नर बालकों से संबंधित है। इस प्रकार, 144,000 अंत के दिनों में लोगों के उस समूह को संदर्भित करता है, जो शासन करेंगे, और जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। अर्थात्, 144,000 का अर्थ उन लोगों के समूह के रूप में समझा जाना चाहिए, जो सिय्योन से आए थे और सिय्योन लौट आएँगे। 144,000 विजयी नर बालकों की पूरी व्याख्या निम्नानुसार है : ये वे लोग हैं, जो सिय्योन से दुनिया में आए थे और शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिए गए थे, और ये वही हैं, जो अंतत: मेरे द्वारा पुनः प्राप्त कर लिए जाएँगे और मेरे साथ सिय्योन लौट जाएँगे। मेरे वचनों से व्यक्ति मेरे कार्य के चरणों को देख सकता है, जिसका अर्थ है कि वह समय दूर नहीं है, जब तुम लोग शरीर में प्रवेश करोगे। यही कारण है कि मैंने यह पहलू तुम्हें बार-बार समझाया है और इसके बारे में तुम्हें अनुस्मारक दिए हैं। तुम लोग स्पष्ट रूप से देखोगे, और मेरे वचनों से तुम्हें अभ्यास करने का तरीका पता चलेगा; और मेरे वचनों से तुम्हें मेरे कार्य की गति का पता चलेगा। पवित्र आत्मा के कार्य की गति का पता लगाने के लिए तुम्हें इसे उन रहस्यों से जानना चाहिए, जिन्हें मैं प्रकट करता हूँ (क्योंकि पवित्र आत्मा के कार्य को कोई भी नहीं देख सकता और कोई भी उसे नहीं समझ सकता)। यही कारण है कि मैं अंत के दिनों में रहस्य प्रकट करता हूँ।

मेरे घर में ऐसा कुछ नहीं होगा जो मेरे अनुरूप न हो, और अब से मैं थोड़ा-थोड़ा करके शुद्ध और साफ़ करना शुरू कर दूँगा। लोगों में से कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता, और कोई भी इस कार्य को

नहीं कर सकता। इससे प्रकट होता है कि क्यों मैं अंत के दिनों में व्यक्तिगत रूप से कार्य कर रहा हूँ। और यही कारण है कि मैंने तुम लोगों को कई बार बताया है कि तुम लोगों को बस आनंद लेने की आवश्यकता है और उँगली हिलाने की भी आवश्यकता नहीं है। इसी के माध्यम से मेरा सामर्थ्य प्रकट होता है, मेरी धार्मिकता और मेरा प्रताप प्रकट होते हैं, और मेरे वे सभी रहस्य, जिन्हें लोग नहीं खोल सकते हैं, प्रकट होते हैं। (चूँकि लोगों को कभी भी मेरी प्रबंधन योजना का ज्ञान या मेरे कार्य के चरणों की कोई समझ नहीं रही है, इसलिए उन्हें "रहस्य" कहा जाता है।) अंत के दिनों में मैं क्या प्राप्त करूँगा और क्या कार्य करूँगा, ये रहस्य हैं। दुनिया का निर्माण करने से पहले मैंने वह कभी नहीं किया, जो मैं आज कर रहा हूँ और मैंने कभी भी लोगों को अपना महिमामयी चेहरा या अपने व्यक्तित्व का कोई भी हिस्सा नहीं दिखाया; केवल मेरे आत्मा ने कुछ लोगों पर कार्य किया। चूँकि सृष्टि के समय से कोई भी मुझे अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं रहा है और कोई भी मुझे व्यक्त करने में समर्थ नहीं हुआ है, इसलिए मैंने लोगों को कभी भी अपनेना व्यक्तित्व नहीं देखने दिया है, और मेरे आत्मा ने कुछ लोगों पर कार्य किया है।) केवल आज ही मैंने अपनी महिमामयी छवि और अपना व्यक्तित्व लोगों पर प्रकट किया है, और केवल अब उन्होंने उन्हें देखा है। लेकिन आज भी तुम लोग जो देखते हो, वह अभी भी अधूरा है, और यह अभी भी वह नहीं है, जो मैं चाहता हूँ कि तुम लोग देखो। मैं जो चाहता हूँ कि तुम लोग देखो, वह केवल शरीर में ही है, और अभी कोई भी यह शर्त पूरी नहीं करता। दूसरे शब्दों में, कोई भी शरीर में प्रवेश करने से पहले मेरे व्यक्तित्व को नहीं देख सकता। इसलिए मैं कहता हूँ कि मैं ब्रह्मांड की दुनिया के लिए अपना व्यक्तित्व सिय्योन पर्वत पर प्रकट करूँगा। इससे यह देखा जा सकता है कि सिय्योन पर्वत में प्रवेश करना मेरी परियोजना का अंतिम हिस्सा है। सिय्योन पर्वत में प्रवेश के समय, मेरा राज्य सफलतापूर्वक बनाया जाएगा। दूसरे शब्दों में, मेरा व्यक्तित्व ही राज्य है। जिस समय ज्येष्ठ पुत्र शरीर में प्रवेश करेंगे, वह ठीक वही समय होगा, जब राज्य साकार होगा, इसीलिए मैंने बार-बार ज्येष्ठ पुत्रों के सिय्योन पर्वत में प्रवेश करने की बात की है। यह मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना का केंद्रीय बिंदु है, जिसे पहले कभी किसी ने नहीं समझा है।

एक बार जब मैं कार्य करने का अपना तरीका बदल दूँगा, तो ऐसी और भी चीजें होंगी, जो मनुष्य के विचारों की पहुँच से परे हैं, इसलिए इस संबंध में सावधान रहना। ऐसी चीजें हैं, जो मनुष्य के विचारों की पहुँच से परे हैं, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं जो कहता हूँ, वह ग़लत है। बात बस इतनी है कि लोगों का पीड़ा सहना और भी अधिक आवश्यक है, और लोगों का मेरे साथ सहयोग करना और भी

अधिक आवश्यक है। बेधड़क असंयमित मत बनो, और बस अपनी धारणाओं का ही अनुसरण मत करो। क्योंकि जो मुझे सेवा प्रदान करते हैं, उनमें से अधिकतर लोग इस संबंध में गिर जाते हैं। मैं अपने वचनों का उपयोग मनुष्य की प्रकृति को उजागर करने और उसकी धारणाओं को प्रकट करने के लिए कर रहा हूँ। (किंतु जो लोग मुझे सेवा प्रदान करते हैं, वे गिर जाते हैं, क्योंकि मैंने उनकी धारणाओं को नहीं बदला है, जबकि मैं उन लोगों की धारणाओं को बदल देता हूँ, जो मेरे ज्येष्ठ पुत्र हैं, और इसके माध्यम से उनकी सोच हटा देता हूँ।) तो अंत में, मेरे सभी ज्येष्ठ पुत्र मेरे द्वारा प्रकट किए गए रहस्यों की वजह से पूर्ण बनाए जाएँगे।

अध्याय 112

"वचन और वास्तविकता साथ-साथ चलते हैं" यह मेरे धार्मिक स्वभाव का अंग है। इन वचनों से मैं निश्चित रूप से हर एक को मेरा स्वभाव उसकी समग्रता में देखने दूँगा। लोगों को लगता है कि इसे हासिल नहीं किया जा सकता, किंतु मेरे लिए यह आसान और सुखद है, और इसमें कोई प्रयास नहीं लगता। जब मेरे वचन मेरे मुँह से बाहर निकलते हैं, तो तुरंत एक तथ्य घटित हो जाता है, जिसे हर कोई देख सकता है। यह मेरा स्वभाव है। चूँकि मैंने कुछ चीज़ों के बारे में बात की है, इसलिए वे चीज़ें पूरी अवश्य होंगी। अन्यथा मैं नहीं बोलूँगा। मानवीय धारणाओं में "उद्धार" शब्द सभी लोगों के लिए बोला जाता है, किंतु यह मेरे इरादे से मेल नहीं खाता। अतीत में मैंने कहा था, "मैं सदैव उन लोगों को बचाता हूँ, जो अज्ञानी हैं और जो उत्साही जिज्ञासु हैं।" यहाँ "बचाना" शब्द उन लोगों के बारे में बोला गया था जो मुझे सेवा प्रदान करते हैं, और इसका मतलब था कि मैं ऐसे सेवाकर्मियों के साथ विशेष व्यवहार करूँगा। दूसरे शब्दों में, मैं उन लोगों के लिए जुर्माना कम कर दूँगा। हालाँकि, वे कुटिल और धोखेबाज़ सेवाकर्मी विनाश के पात्रों में शामिल होंगे, जिसका अर्थ है कि मैं उन्हें गंभीर दंड दूँगा। (यद्यपि वे विनाश के पात्रों में शामिल हैं, फिर भी वे उनसे बहुत भिन्न हैं, जिन्हें नष्ट किया जाना है : उन्हें शाश्वत गंभीर दंड मिलेगा, और उन लोगों को जो दंड मिलेगा, वह दुष्ट शैतान का दंड है। यह मेरे उस कथन का भी वास्तविक अर्थ है, कि वे लोग बड़े लाल अजगर के वंशज हैं।) किंतु मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों के बारे में इस तरह के वचनों का उपयोग नहीं करता; उनके बारे में तो मैं कहता हूँ कि मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को पुनः प्राप्त करूँगा और वे एक बार फिर सिय्योन लौटेंगे। इसलिए मैंने सदैव कहा है कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे पूर्वनियत और चुने गए लोग हैं। मेरे ज्येष्ठ पुत्र मूल

रूप से मुझसे संबंधित थे और वे मुझसे आए थे, इसलिए उन्हें यहाँ मेरे पास वापस आना चाहिए। पुत्रों और लोगों की ज्येष्ठ पुत्रों से तुलना करना—यह वास्तव में स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का अंतर है : यद्यपि पुत्र और लोग सेवाकर्मियों से बहुत बेहतर हैं, फिर भी वे किसी भी तरह से ऐसे लोग नहीं हैं, जो मुझसे संबंधित हैं। यह भी कहा जा सकता है कि पुत्रों और लोगों को मानवजाति के बीच में से अतिरिक्त रूप से चुना जाता है। इसलिए मैंने सदैव अपनी ऊर्जा ज्येष्ठ पुत्रों पर केंद्रित की है, और फिर मैं ज्येष्ठ पुत्रों को इन पुत्रों और लोगों को पूर्ण करने दूँगा। ये मेरे भविष्य के कार्य के चरण हैं। अभी तुम लोगों को बताने का कोई फायदा नहीं है, इसलिए मैंने शायद ही कभी पुत्रों और लोगों से इसका उल्लेख किया है, किंतु केवल ज्येष्ठ पुत्रों से मैंने बार-बार बोला है और बार-बार इन मामलों का उल्लेख किया है। यही मेरे बोलने और कार्य करने का तरीका है। कोई इसे बदल नहीं सकता है—हर चीज़ के बारे में केवल मेरा कहा ही अंतिम होता है।

हर दिन मैं तुम लोगों की धारणाओं के खिलाफ़ लड़ रहा हूँ, और दिन-प्रतिदिन मैं तुम लोगों में से प्रत्येक का विश्लेषण कर रहा हूँ। जब मैं एक निश्चित बिंदु तक बोल लेता हूँ, तो तुम लोग पूर्व दशा को प्राप्त हो जाते हो और पुनः मेरी मानवता को मेरी दिव्यता से पृथक कर देते हो। इस बिंदु पर लोगों को प्रकट करने का समय आ गया है : लोग सोचते हैं कि मैं अभी भी देह में रहता हूँ और मैं स्वयं परमेश्वर बिलकुल भी नहीं हूँ, कि मैं अभी भी इंसान हूँ और परमेश्वर अभी भी परमेश्वर है, और परमेश्वर का उस व्यक्ति से कुछ लेना-देना नहीं है, जो मैं हूँ। यह मानवजाति कितनी भ्रष्ट है! मैंने पहले बहुत-से वचन बोले हैं, लेकिन तुम लोगों ने उनके साथ लंबे समय से ऐसे व्यवहार किया है, मानो वे अस्तित्व में ही न हों, और यह मुझे तुम्हारे प्रति नफ़रत से भर देता है, जो मेरी हड्डियों में उत्कीर्ण हो गई है! सच में, इसके कारण मुझे तुमसे घृणा होती है! कौन यों ही मेरा अपमान करने की हिम्मत करता है, मैं जो कि स्वयं पूर्ण परमेश्वर हूँ, मैं जो कि मानवता और पूर्ण दिव्यता दोनों से युक्त हूँ? कौन अपने विचारों में मेरा विरोध करने की हिम्मत करता है? जब मेरी प्रलयंकारी आपदा उतरनी शुरू होगी, तो उसके बाद मैं उन्हें एक-एक करके दंडित करूँगा, किसी को भी नहीं छोड़ूँगा, बल्कि उन सभी को गंभीर रूप से दंडित करूँगा। मेरा आत्मा वैयक्तिक रूप से कार्य करता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं स्वयं परमेश्वर नहीं हूँ, इसके विपरीत, इसका और भी ज्यादा यह अर्थ है कि मैं ही स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। लोग मुझे नहीं जानते—वे सभी मेरा विरोध करते हैं और मेरे वचनों से मेरी सर्वशक्तिमत्ता को नहीं देखते, बल्कि इसके बजाय वे मेरे वचनों में कुछ ऐसा खोजने का प्रयास करते हैं, जिसका वे मेरे खिलाफ़ उपयोग कर सकें, और मेरी ग़लती खोजने का

प्रयास करते हैं। एक दिन जब मैं सिय्योन में अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ प्रकट होऊँगा, तो मैं इन घृणित प्राणियों से निपटना शुरू कर दूँगा। इस अवधि में, मैं मुख्य रूप से यह कार्य कर रहा हूँ। जब मैं एक निश्चित बिंदु तक बोल चुका होऊँगा, तो एक बड़ी संख्या में सेवाकर्मी पीछे हट चुके होंगे, और ज्येष्ठ पुत्र भी सभी तरह की कठिनाइयाँ भुगत चुके होंगे। कार्य के इन दो चरणों की प्रगति के साथ मेरा कार्य समाप्त हो जाएगा। इसी समय मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को वापस सिय्योन ले जाऊँगा। ये मेरे कार्य के चरण हैं।

मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे राज्य का एक अनिवार्य अंग हैं, जिससे यह देखा जा सकता है कि मेरा व्यक्तित्व ही वास्तव में राज्य है—मेरे राज्य का जन्म मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के जन्म के साथ होता है। दूसरे शब्दों में, मेरा राज्य दुनिया के सृजन के समय से अस्तित्व में रहा है, और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करना (अर्थात् मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को पुनः प्राप्त करना) मेरे राज्य को बहाल करना है। इससे तुम लोग देख सकते हो कि ज्येष्ठ पुत्रों का विशेष महत्व है। केवल यदि मेरे ज्येष्ठ पुत्र अस्तित्व में होंगे, तभी राज्य अस्तित्व में आएगा, तभी सत्ता में शासन करने की वास्तविकता साकार होगी, तभी नया जीवन सामने आएगा, और तभी पुराना युग अपनी समग्रता में समाप्त किया जा सकेगा। यह अपरिहार्य प्रवृत्ति है। चूँकि ज्येष्ठ पुत्र इस स्थिति में हैं, इसलिए वे दुनिया के विनाश के, शैतान की तबाही के, सेवाकर्मियों के असली रंग और इस तथ्य को प्रकट करने के प्रतीक हैं कि बड़े लाल अजगर के कोई वंशज नहीं होंगे और वह आग और गंधक की झील में जाकर गिरेगा—इसलिए जो लोग सत्ता का प्रयोग करते हैं और वे सभी, जो बड़े लाल अजगर के वंशज हैं, वे बार-बार अवरोध, प्रतिरोध और विनाश में संलग्न होते हैं। इस बीच, मैं बार-बार अपने ज्येष्ठ पुत्रों को उन्नत करता हूँ, उनकी गवाही देता हूँ, और उन्हें प्रकट करता हूँ। क्योंकि केवल वे ही, जो मुझसे हैं, मेरे लिए गवाही देने के पात्र हैं; अकेले वे ही मुझे जीने के योग्य हैं, और अकेले उन्हीं के पास युद्ध में लड़ने और मेरे लिए सुंदर विजय प्राप्त करने की नींव है। जो मुझसे अलग हैं, वे मेरे हाथ में थोड़ी-सी मिट्टी से अधिक कुछ नहीं हैं—उनमें से प्रत्येक सृजित चीज़ है। जो पुत्र और लोग हैं, वे सृष्टि के सृजित प्राणियों में से चयनित बेहतर लोगों से ज्यादा कुछ नहीं हैं, किंतु वे मुझसे संबंधित नहीं हैं। इसलिए ज्येष्ठ पुत्रों और पुत्रों के बीच एक बड़ा अंतर है। पुत्र ज्येष्ठ पुत्रों के साथ तुलना करने के बिलकुल भी योग्य नहीं हैं—उन पर ज्येष्ठ पुत्रों द्वारा शासन किया जाता और प्रभुत्व रखा जाता है। अब तुम लोगों को इस बारे में बिलकुल स्पष्ट हो जाना चाहिए! मेरे द्वारा बोला गया हर वचन सत्य है, और किसी भी तरह झूठ नहीं है। यह सब मेरे व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का हिस्सा है, और यह मेरा कथन है।

मैंने कहा है कि मैं खोखले वचन नहीं बोलता, और मैं ग़लती नहीं करता; यह मेरा प्रताप दिखाने के लिए पर्याप्त है। किंतु लोग अच्छे और बुरे में अंतर करने में असमर्थ हैं, और केवल जब मेरी ताड़ना उन पर पड़ती है, तभी वे पूरी तरह से आश्वस्त होते हैं; अन्यथा वे विद्रोही और दुराग्रही बने रहते हैं। इसीलिए मैं समस्त मानवजाति पर जवाबी प्रहार करने के लिए ताड़ना का उपयोग करता हूँ। मानव-धारणाओं में, चूँकि केवल स्वयं परमेश्वर ही है, तो फिर इतने सारे ज्येष्ठ पुत्र क्यों हैं, जो मुझसे आते हैं? मैं इसे इस तरह से कह सकता हूँ : अपने मामलों में मैं जो कहना चाहता हूँ, वह कहता हूँ। मनुष्य मेरा क्या करने में सक्षम है? मैं इसे इस तरह से भी कह सकता हूँ : यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र और मैं एक छवि के नहीं हैं, फिर भी हम एक ही पवित्रात्मा के हैं, इसलिए वे सभी मेरे साथ एकचित्तता से कार्य कर सकते हैं। हम एक छवि के इसलिए नहीं हैं, ताकि सभी लोग मेरे व्यक्तित्व के हर हिस्से को असाधारण स्पष्टता के साथ देखने में सक्षम हो सकें। इसीलिए मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपने साथ सभी राष्ट्रों और सभी लोगों पर अधिकार रखने देता हूँ। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का अंतिम टिप्पण है (जिस "अंतिम टिप्पण" की मैं बात करता हूँ, उसका अर्थ है कि मेरा स्वर मध्यम है और मैंने पुत्रों और लोगों से बात करनी शुरू कर दी है)। अधिकतर लोगों को इस पहलू के बारे में संदेह हैं, किंतु उन्हें इतने संदेहों से भरने की आवश्यकता नहीं है। मैं सभी लोगों की धारणाओं को एक-एक करके उजागर करूँगा, जिससे कि उन्हें शर्मिंदा महसूस करवाऊँ और उन्हें छिपने को जगह न मिले। मैं पूरे ब्रह्मांड में और पृथ्वी के सिरों तक यात्रा करता हूँ, और ब्रह्मांड की पूरी तसवीर देखता हूँ। मैं हर तरह के व्यक्ति की जाँच करता हूँ—ऐसा कोई नहीं है, जो मेरे हाथों से बच सके। मैं हर तरह की चीज़ में सहभागिता करता हूँ, और ऐसा कुछ नहीं है, जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से नहीं सँभालता। कौन मेरी सर्वशक्तिमत्ता से इनकार करने की हिम्मत करता है? कौन मेरे बारे में पूरी तरह से आश्वस्त न होने की हिम्मत करता है? कौन मेरे सामने पूरी तरह से दंडवत न होने की हिम्मत करता है? मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की वजह से संपूर्ण स्वर्ग बदल जाएगा, और इससे भी बढ़कर, मेरी और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की वजह से संपूर्ण पृथ्वी तेज़ी से काँप उठेगी। सभी लोग मेरे व्यक्तित्व के सामने घुटने टेकेंगे, और सभी चीजें मेरे हाथों के नियंत्रण में आ जाएँगी—बिना ज़रा-सी भी त्रुटि के। हर किसी को पूरी तरह से आश्वस्त हो जाना चाहिए और हर एक चीज़ मेरे घर आएगी और मुझे सेवा प्रदान करेगी। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का अंतिम भाग है। अब से मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं के विभिन्न अनुच्छेद, जो विभिन्न लोगों को लक्षित करते हैं, परिणाम देने शुरू कर देंगे (क्योंकि मेरी प्रशासनिक आज्ञाएँ पूरी तरह से सार्वजनिक कर दी गई हैं, और हर तरह के व्यक्ति और

हर एक चीज़ के लिए उचित व्यवस्थाएँ कर दी गई हैं। मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं की वजह से सभी लोग अपने-अपने उचित स्थान पर होंगे, और हर प्रकार के व्यक्ति के असली रंग उजागर किए जाएँगे)। इस प्रकार सच्ची, वास्तविक प्रशासनिक आज्ञाओं का आगमन होगा।

अब, अपने कार्य के चरणों के अनुसार, मैं वह कहता हूँ जो मैं कहना चाहता हूँ, और हर एक को मेरे वचन गंभीरता से लेने चाहिए। युगों-युगों में, प्रत्येक संत ने "नए यरूशलेम" के बारे में बोला है, और हर कोई इसे जानता है, किंतु कोई भी इस शब्द के सही अर्थ को नहीं समझता। चूँकि आज का कार्य इस चरण तक आगे बढ़ गया है, इसलिए मैं तुम लोगों पर इस शब्द का वास्तविक अर्थ प्रकट करूँगा, ताकि तुम लोग इसे समझ सको। किंतु मेरे प्रकट करने की एक सीमा है—मैं इसे कैसे भी क्यों न समझाऊँ, और चाहे मैं इसे कितनी भी स्पष्टता से क्यों न कहूँ, तुम लोग पूरी तरह से नहीं समझ सकते, क्योंकि कोई भी मनुष्य इस शब्द की वास्तविकता को स्पर्श नहीं कर सकता। अतीत में यरूशलेम धरती पर मेरे निवास-स्थान को संदर्भित करता था, अर्थात् वह स्थान, जहाँ मैं टहलता हूँ और चलता-फिरता हूँ। किंतु "नया" शब्द इस शब्द को बदल देता है और अब यह वैसा कुछ नहीं है, जैसा पहले हुआ करता था। लोग इसे ज़रा भी नहीं समझ सकते। कुछ लोग सोचते हैं कि यह मेरे राज्य को संदर्भित करता है; कुछ लोग सोचते हैं कि यह वह व्यक्ति है जो मैं हूँ; कुछ लोग सोचते हैं कि यह एक नया स्वर्ग और पृथ्वी है; और कुछ लोग सोचते हैं कि यह नई दुनिया है, जो तब अस्तित्व में आएगी, जब मैं इस दुनिया को नष्ट कर दूँगा। भले ही किसी व्यक्ति का दिमाग अत्यधिक जटिल और ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करने में सक्षम हो, तब भी वह इसके बारे में कुछ नहीं समझ सकता। युगों-युगों से लोग इस शब्द का सही अर्थ जानने या देखने की उम्मीद करते रहे हैं, किंतु वे अपनी इच्छाएँ पूरी करवा पाने में सक्षम नहीं रहे—वे सभी निराश हुए और अपने अरमानों को पीछे छोड़कर मर गए; चूँकि तब तक मेरा समय नहीं आया था, इसलिए मैं आसानी से किसी को नहीं बता सका। चूँकि मेरा कार्य इस चरण तक किया जा चुका है, इसलिए मैं तुम लोगों को सब-कुछ बताऊँगा। नए यरूशलेम में ये चार चीज़ें शामिल हैं : मेरा कोप, मेरी प्रशासनिक आज्ञाएँ, मेरा राज्य, और अंतहीन आशीष जो मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को देता हूँ। "नया" शब्द का उपयोग मैं इसलिए करता हूँ, क्योंकि ये चार भाग छिपे हुए हैं। चूँकि कोई मेरे कोप को नहीं जानता है, कोई मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं को नहीं जानता है, किसी ने मेरे राज्य को नहीं देखा है, और किसी ने भी मेरे आशीषों का आनंद नहीं लिया है, इसलिए "नया" उसे संदर्भित करता है जो छिपा हुआ है। मैंने जो कहा है, उसे कोई भी पूरी तरह से नहीं समझ

सकता, क्योंकि नया यरूशलेम धरती पर उतर चुका है, किंतु किसी ने भी व्यक्तिगत रूप से नए यरूशलेम की वास्तविकता का अनुभव नहीं किया है। मैं इसके बारे में कितनी भी पूर्णता से बात क्यों न करूँ, लोग पूरी तरह से नहीं समझेंगे। यदि कुछ लोग समझते भी हैं, तो यह समझ केवल उनके शब्द, उनका दिमाग, और उनकी धारणाएँ है। यह एक अपरिहार्य प्रवृत्ति है; यही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है, और कोई इससे खुद को मुक्त नहीं कर सकता।

अध्याय 113

मेरी बुद्धि मेरे द्वारा किए जाने वाले हर कार्य के भीतर होती है, किंतु मनुष्य उसकी थाह पाने में एकदम असमर्थ है; मनुष्य केवल मेरे कार्यों और मेरे वचनों को देख सकता है, मेरी महिमा या मेरे व्यक्तित्व के प्रकटन को नहीं, क्योंकि मनुष्य में मूलत: इस क्षमता का अभाव है। इसलिए, मेरे द्वारा मनुष्य में बदलाव न करते हुए, मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं सिय्योन लौट जाएँगे और रूप बदल लेंगे, ताकि मनुष्य मेरी बुद्धि और मेरी सर्वशक्तिमत्ता को देख सके। मेरी बुद्धि और मेरी सर्वशक्तिमत्ता, जो मनुष्य अभी देखता है, मेरी महिमा का केवल एक छोटा-सा अंश हैं—यहाँ तक कि उल्लेख करने लायक भी नहीं हैं। इससे यह देखा जा सकता है कि मेरी बुद्धि और मेरी महिमा अनंत है—बेहद गहन—और मनुष्य का मन इसे विचारने या समझने में मूलत: असमर्थ है। राज्य का निर्माण करना मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का कर्तव्य है, और यह मेरा काम भी है। अर्थात् यह मेरी प्रबंधन योजना की एक मद है। राज्य का निर्माण कलीसिया के निर्माण के समान नहीं है; क्योंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं मेरा व्यक्तित्व और राज्य हैं, इसलिए जब मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र सिय्योन पर्वत में प्रवेश करेंगे, तो राज्य का निर्माण हो चुका होगा। दूसरे शब्दों में, राज्य का निर्माण कार्य का एक कदम है—आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने का कदम। (हालाँकि, दुनिया बनाने के बाद से मैंने जो कुछ भी किया है, वह इस कदम के वास्ते किया गया है। यद्यपि मैं कहता हूँ कि यह एक कदम है, फिर भी, वास्तव में यह कदम बिलकुल नहीं है।) इस प्रकार, मैं इस कदम की सेवा में सभी सेवाकर्ताओं का उपयोग करता हूँ, और परिणामस्वरूप, अंत के दिनों के दौरान, बड़ी संख्या में लोग पीछे हट जाएँगे; वे सभी ज्येष्ठ पुत्रों को सेवा प्रदान करते हैं। जो कोई इन सेवाकर्ताओं के प्रति दयालुता दिखाता है, वह मेरे शापों से मर जाएगा। (सभी सेवाकर्ता बड़े लाल अजगर की साज़िशों का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे सभी शैतान के अनुचर हैं, इसलिए जो इन लोगों के प्रति दयालुता दिखाते हैं, वे बड़े लाल अजगर के सह-

अपराधी हैं और शैतान से संबंध रखते हैं।) मैं उन सबसे प्रेम करता हूँ जो मुझे पसंद हैं, और उन सबसे घृणा करता हूँ जो मेरे शाप और दहन के लक्ष्य हैं। क्या तुम लोग भी ऐसा करने में सक्षम हो? मैं उन्हें निश्चित रूप से माफ़ नहीं करूँगा, जो कोई मेरे विरुद्ध खड़ा होगा, न ही मैं उसे छोड़ूँगा! प्रत्येक कर्म करते समय मैं अपनी सेवा करवाने के लिए बड़ी संख्या में सेवाकर्ताओं की व्यवस्था करता हूँ। इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि पूरे इतिहास में, यह आज के कदम के लिए रहा है कि सभी नबियों और प्रेरितों ने सेवा प्रदान की है, और वे मेरे हृदय के अनुरूप नहीं हैं, मुझसे नहीं हैं। (यद्यपि उनमें से अधिकतर मेरे प्रति वफ़ादार हैं, फिर भी मुझसे कोई संबंधित नहीं है। इसलिए, उनकी दौड़-भाग मेरे लिए इस अंतिम चरण की नींव बनाना है, किंतु जहाँ तक उनका अपना संबंध है, उनके समस्त प्रयास व्यर्थ हैं।) इसलिए, अंत के दिनों के दौरान पीछे हटने वाले लोग और भी अधिक बड़ी संख्या में होंगे। (मेरे "बड़ी संख्या" में कहने का कारण यह है कि मेरी प्रबंधन योजना अपने समापन पर पहुँच गई है, मेरे राज्य का निर्माण सफल हो गया है, और ज्येष्ठ पुत्र सिंहासन पर बैठ गए हैं।) यह सब ज्येष्ठ पुत्रों के प्रकटन के कारण है। चूँकि ज्येष्ठ पुत्र प्रकट हुए हैं, अत: बड़ा लाल अजगर क्षति पहुँचाने के हर संभव उपाय करता है और सारे रास्ते बंद कर देता है। वह सभी प्रकार की दुष्ट आत्माओं को भेजता है, जो मेरे लिए सेवा करने आती हैं, जिन्होंने वर्तमान अवधि में अपने असली रंग दिखाए हैं, और जिन्होंने मेरे प्रबंधन को बाधित करने की कोशिश की है। इन्हें नग्न आँखों से नहीं देखा जा सकता; और ये सभी आध्यात्मिक दुनिया की चीज़ें हैं। इसलिए लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते कि पीछे हटने वाले लोग बड़ी संख्या में होंगे, फिर भी, मैं जानता कि मैं क्या करता हूँ, मैं अपने प्रबंधन को समझता हूँ; और मनुष्य को हस्तक्षेप न करने देने का यही कारण है। (एक दिन आएगा, जब हर तरह की नीच दुष्ट आत्मा अपनी वास्तविक अस्मिता को प्रकट करेगी, और सभी मनुष्य सचमुच आश्वस्त हो जाएँगे।)

मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से प्रेम करता हूँ, किंतु बड़े लाल अजगर के उन वंशजों से, जो मुझे बड़ी ईमानदारी से प्रेम करते हैं, मैं बिलकुल भी प्रेम नहीं करता; वास्तव में मैं उनसे और भी अधिक घृणा करता हूँ। (ये लोग मेरे नहीं हैं, और यद्यपि वे अच्छे इरादे दर्शाते हैं और मीठे शब्द बोलते हैं, किंतु यह बड़े लाल अजगर का एक षड्यंत्र है, इसलिए मैं उनसे एकदम गहराई से नफ़रत करता हूँ।) यह मेरा स्वभाव है, और यह मेरी समग्र धार्मिकता है। मनुष्य इसकी बिलकुल भी थाह नहीं पा सकता। मेरी धार्मिकता की समग्रता यहाँ क्यों प्रकट की जाती है? इससे व्यक्ति मेरे स्वभाव को समझ सकता है, जो कोई अपराध बरदाश्त

नहीं करता। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों से प्रेम कर सकता हूँ और उन सभी से नफ़रत कर सकता हूँ, जो मेरे ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं (भले ही वे निष्ठावान लोग हों)। यह मेरा स्वभाव है। क्या तुम लोग नहीं देख सकते? लोगों की धारणाओं में मैं सदैव एक दयालु परमेश्वर हूँ, और मैं उन सभी से प्रेम करता हूँ, जो मुझसे प्रेम करते हैं; क्या यह व्याख्या ईश-निंदा नहीं है? क्या मैं पशुओं और दरिंदों से प्रेम कर सकता हूँ? क्या मैं शैतान को अपने ज्येष्ठ पुत्र के रूप में ग्रहण कर सकता हूँ और आनंदित हो सकता हूँ? बकवास! मेरा कार्य मेरे ज्येष्ठ पुत्रों पर किया जाता है, और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा, मेरे पास प्रेम करने के लिए और कुछ नहीं है। (पुत्र और लोग अतिरिक्त हैं, पर महत्वपूर्ण नहीं हैं।) लोग कहते हैं कि मैं बहुत बेकार काम करता था, किंतु मेरी दृष्टि में वह कार्य वास्तव में सर्वाधिक मूल्यवान और सर्वाधिक सार्थक था। (यह पूर्णत: दो देहधारणों के दौरान किए गए कार्य को संदर्भित करता है; चूँकि मैं अपनी शक्ति को प्रकट करना चाहता हूँ, इसलिए मुझे अपना कार्य पूरा करने के लिए देह बनना चाहिए)। मेरे यह कहने का कारण, कि मेरा आत्मा व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए आता है, यह है कि मेरा कार्य देह में पूरा किया जाता है। अर्थात्, मेरे ज्येष्ठ पुत्र और मैं विश्राम में प्रवेश करना शुरू करते हैं। देह में शैतान के साथ युद्ध आध्यात्मिक दुनिया में शैतान के साथ युद्ध से अधिक भयंकर है; यह सभी मनुष्यों द्वारा देखा जा सकता है, इसलिए शैतान के वंशज भी मेरे लिए सुंदर गवाही दे सकते हैं, और छोड़ने के अनिच्छुक हैं; यह अपने आपमें देह में मेरे कार्य करने का अर्थ है। यह मुख्य रूप से शैतान के वंशजों से स्वयं शैतान को अपमानित करवाने के लिए है; यह दुष्ट शैतान के लिए सबसे शक्तिशाली शर्मिंदगी की बात है, इतनी शक्तिशाली कि उसे मुँह छिपाने के लिए जगह नहीं मिलती, और वह बार-बार मेरे सामने दया की भीख माँगता है। मैं जीत गया हूँ, मैंने हर चीज़ पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया है, मैं तीसरे स्वर्ग को तोड़कर बाहर आ गया हूँ और सिय्योन पर्वत तक पहुँच गया हूँ, ताकि अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ पारिवारिक खुशी का आनंद ले सकूँ और हमेशा के लिए स्वर्ग के राज्य के महान भोज में निमग्न हो जाऊँ!

ज्येष्ठ पुत्रों के लिए मैंने हर मूल्य चुकाया है और अपने प्रयास में सभी कष्ट उठाए हैं। (मनुष्य जानता ही नहीं कि जो कुछ मैंने किया है, जो कुछ मैंने कहा है, और यह तथ्य कि मैं हर तरह की दुष्ट आत्मा के आर-पार देख लेता हूँ, और यह तथ्य कि मैंने हर तरह के सेवाकर्ता को निर्वासित कर दिया है—सब ज्येष्ठ पुत्रों के लिए रहा है)। किंतु मेरे अधिकांश कार्य के भीतर मेरी व्यवस्था सुव्यवस्थित है; वह निश्चित रूप से आँख मूँदकर नहीं किया जाता। तुम लोगों को प्रतिदिन के मेरे वचनों में मेरे कार्य की पद्धति और चरण

देखने में सक्षम होना चाहिए, तुम्हें मामलों से निपटने में मेरी बुद्धि और मेरे सिद्धांत देखने चाहिए। जैसा कि मैंने कहा है, शैतान ने मेरे प्रबंधन को बाधित करने के लिए उन लोगों को भेजा है, जो मेरी सेवा करते हैं। ये सेवाकर्ता जंगली दाने हैं, फिर भी "गेहूँ" ज्येष्ठ पुत्रों को नहीं, बल्कि उन सभी पुत्रों और लोगों को संदर्भित करता है, जो ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं। "गेहूँ सदैव गेहूँ रहेगा, जंगली दाने सदैव जंगली दाने रहेंगे"; इसका अर्थ है कि शैतान के लोगों की प्रकृति कभी नहीं बदल सकती। इसलिए, संक्षेप में, वे शैतान ही रहते हैं। "गेहूँ" का अर्थ है पुत्र और लोग, क्योंकि मैंने दुनिया के सृजन से पहले इन लोगों में अपनी गुणवत्ता भर दी थी। मैंने पहले ही कहा है कि मनुष्य की प्रकृति नहीं बदलती, और यही कारण है कि गेहूँ सदैव गेहूँ रहेगा। तो फिर ज्येष्ठ पुत्र क्या हैं? ज्येष्ठ पुत्र मुझसे आते हैं, वे मेरे द्वारा सृजित नहीं किए जाते, इसलिए उन्हें गेहूँ नहीं कहा जा सकता है (क्योंकि गेहूँ का हर उल्लेख हमेशा "बोने" से जुड़ जाता है और "बोने" का अर्थ है "सृजन करना"; सभी जंगली दाने सेवाकर्ताओं के रूप में कार्य करने के लिए गुप्त रूप से शैतान द्वारा बोए जाते हैं)। कोई केवल यह कह सकता है कि ज्येष्ठ पुत्र मेरे व्यक्तित्व की पूर्ण और प्रचुर अभिव्यक्ति हैं, उन्हें सोने और चाँदी और बहुमूल्य रत्नों द्वारा दर्शाया जाना चाहिए। यह इस तथ्य से जुड़ता है कि मेरा आना चोर के आने की तरह है, और मैं सोने और चाँदी और बहुमूल्य रत्न चुराने आया हूँ (क्योंकि ये सोने और चाँदी और बहुमूल्य रत्न मूल रूप से मेरे हैं, और मैं उन्हें वापस अपने घर ले जाना चाहता हूँ)। जब ज्येष्ठ पुत्र और मैं एक-साथ सिय्योन लौटेंगे, तो ये सोने, चाँदी और बहुमूल्य रत्न मेरे द्वारा चुरा लिए गए होंगे। इस दौरान शैतान की बाधाएँ और विघ्न होंगे, और इसलिए मैं सोने, चाँदी और बहुमूल्य रत्नों को ले जाऊँगा और शैतान के साथ एक निर्णायक लड़ाई शुरू करूँगा। (यहाँ मैं निश्चित रूप से कोई कहानी नहीं सुना रहा हूँ; यह आध्यात्मिक दुनिया की घटना है, इसलिए लोग इस बारे में पूरी तरह से अस्पष्ट हैं, और वे इसे केवल एक कहानी के रूप में सुन सकते हैं। किंतु तुम लोगों को मेरे वचनों से देखना चाहिए कि मेरी छह-हजार-वर्षीय प्रबंधन योजना क्या है, और तुम लोगों को इसे मज़ाक के रूप में बिलकुल नहीं लेना चाहिए। अन्यथा मेरा आत्मा सभी मनुष्यों में से चला जाएगा।) आज यह लड़ाई पूरी तरह ख़त्म हो गई है, और मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को (अपने सोने, चाँदी और बहुमूल्य रत्नों को) अपने साथ वापस अपने सिय्योन पर्वत लाऊँगा। सोने, चाँदी और बहुमूल्य रत्नों की दुर्लभता की वजह से, और क्योंकि वे बहुमूल्य हैं इसलिए, शैतान उन्हें छीनकर ले जाने के लिए हर संभव प्रयास करता है, किंतु मैं बार-बार कहता हूँ कि जो मुझसे है, वह वापस मेरे पास आना चाहिए, जिसका अर्थ ऊपर उल्लिखित है। मेरा यह कहना कि ज्येष्ठ पुत्र मुझसे हैं और मेरे हैं, शैतान

के लिए एक घोषणा है। इसे कोई भी नहीं समझता, और यह पूर्णत: आध्यात्मिक दुनिया की घटना है। इसलिए मनुष्य की समझ में नहीं आता कि क्यों मैं बार-बार जोर देता हूँ कि ज्येष्ठ पुत्र मेरे हैं; आज तुम्हें समझ जाना चाहिए! मैंने कहा है कि मेरे वचनों में उद्देश्य और बुद्धिमत्ता है, किंतु तुम लोग इसे केवल बाहर से ही समझते हो—एक भी व्यक्ति इसे आत्मा में स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता।

मैं अधिक से अधिक बोलता हूँ, और जितना अधिक मैं बोलता हूँ, उतने अधिक कठोर मेरे वचन बन जाते हैं। जब यह एक निश्चित मात्रा तक पहुँच जाएगा, तो मैं अपने वचनों का प्रयोग करके लोगों को एक निश्चित मात्रा तक कार्य करने के लिए बाध्य करूँगा, उन्हें न केवल हृदय में और वचन से आश्वस्त करवाने के लिए, बल्कि उससे भी अधिक, उन्हें जीवन और मृत्यु के बीच झूलने के लिए बाध्य करूँगा; यह मेरे कार्य की पद्धति है और इस तरह मेरा कार्य अपने चरणों में आगे बढ़ता है। यह इसी तरह से होना चाहिए; केवल इसी तरह से यह शैतान को शर्मिंदा कर सकता है और ज्येष्ठ पुत्रों को पूरा कर सकता है (अंततः ज्येष्ठ पुत्रों को पूर्ण बनाने, उन्हें देह से मुक्त होने देने और आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने देने के लिए मेरे वचनों का उपयोग करते हुए)। मनुष्य मेरे कथनों की पद्धति और स्वर नहीं समझता। मेरी व्याख्या से तुम सभी को कुछ परिज्ञान मिलना चाहिए, और जो कार्य तुम्हें करना चाहिए, उसे करने के लिए तुम सभी को मेरे कथनों का अनुसरण करना चाहिए। मैंने तुम लोगों को यही सौंपा है। तुम लोगों को इसके बारे में न केवल बाहरी दुनिया से, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से आध्यात्मिक दुनिया से, अवगत होना चाहिए।

अध्याय 114

मैंने ब्रह्माण्ड जगत की सृष्टि की; मैंने पर्वतों, नदियों और सभी चीज़ों की सृष्टि की; मैंने ब्रह्माण्ड और पृथ्वी के सिरों को गढ़ा; मैंने अपने पुत्रों और अपने लोगों की अगुआई की; मैंने सभी चीज़ों और पदार्थों पर शासन किया। अब, मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को वापस अपने सिय्योन पर्वत पर ले जाऊँगा, जहाँ मैं रहता हूं वापस वहाँ, और यह मेरे कार्य का अंतिम सोपान होगा। मैंने जो कुछ भी किया है (सृजन के समय से अब तक किया गया सब कुछ), वह मेरे कार्य के आज के चरण के लिए था, और इससे भी अधिक यह कल के शासन, कल के राज्य के लिए, और मेरे एवं मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अनन्त आनन्द के लिए है। सभी चीज़ों के सृजन के पीछे यही मेरा लक्ष्य है और यह मैं अपने सृजन के माध्यम से अंततः प्राप्त करूँगा। मैं जो कहता और करता हूँ उसका एक उद्देश्य और एक योजना होती है; कुछ भी बेतरतीब ढंग से नहीं किया जाता है।

यद्यपि मैं कहता हूँ कि मेरे पास सारी स्वतंत्रता और स्वाधीनता है, तथापि मैं जो भी करता हूँ वह सिद्धांत-सम्मत तथा मेरी बुद्धि और स्वभाव पर आधारित होता है। क्या इस संबंध में तुम्हारे पास कोई अंतर्दृष्टि है? सृजन के समय से लेकर आज तक, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा, कोई भी मुझे नहीं जान पाया है, और किसी ने भी मेरा सच्चा स्वरूप नहीं देखा है। अपने ज्येष्ठ पुत्रों को मैंने अपवाद में इसलिए रखा क्योंकि वे मूलतः मेरे व्यक्तित्व का हिस्सा हैं।

जब मैंने जगत की सृष्टि की, मैंने अपनी आवश्यकतानुसार मनुष्य को चार क्रमबद्ध कोटियों में बाँटा, जो इस प्रकार हैं: मेरे पुत्र, मेरे लोग, वे जो सेवा-टहल करते हैं, और वे जो नष्ट कर दिए जाएँगे। मेरे ज्येष्ठ पुत्र इस सूची में सम्मिलित क्यों नहीं हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र सृष्टि के प्राणी नहीं हैं; वे मुझसे हैं, और मानवजाति के नहीं हैं। मैंने देह बनने से पहले अपने ज्येष्ठ पुत्रों के लिए व्यवस्थाएँ कर दी थीं; वे किस घर में जन्म लेंगे और वहाँ उनकी सेवा करने के लिए कौन होंगे—इन सभी चीज़ों की पूरी योजना मैंने बना ली थी। मैंने यह भी योजना बना ली थी कि उनमें से कौन किस समय मेरे द्वारा पुनः प्राप्त किया जाएगा। अंत में, हम एक साथ सिय्योन लौट जाएँगे। इन सबकी योजना सृजन से पहले बना ली गई थी, इसलिए कोई भी मनुष्य इसके बारे में नहीं जानता और यह किसी पुस्तक में अभिलिखित नहीं है, क्योंकि ये सिय्योन के मामले हैं। यही नहीं, जब मैं देह बना, तब मैंने मनुष्य को यह शक्ति नहीं दी, और इसलिए कोई भी उन चीजों को नहीं जानता था। जब तुम सिय्योन लौटोगे, तब जान लोगे कि अतीत में तुम किस तरह के थे, अब तुम किस तरह के हो, और इस जीवन में तुमने क्या किया है। अभी तो मैं तुमलोगों को ये बातें बस स्पष्ट रूप से और थोड़ा-थोड़ा कर बता रहा हूँ, अन्यथा चाहे जितना प्रयास कर लो, तुम नहीं समझोगे, और तुम मेरे प्रबंधन में बाधा डालोगे। आज, भले ही मैं अपने अधिकांश ज्येष्ठ पुत्रों से देह की दृष्टि से पृथक हूँ, किन्तु हम एक ही पवित्रात्मा के हैं, और शारीरिक रूप में भले ही हम भिन्न हों, आरंभ से अंत तक, हम एक ही पवित्रात्मा हैं। यद्यपि, शैतान के वंशज को इसका उपयोग शोषण करने के अवसर के रूप में नहीं ही करना चाहिए। तू जैसे भी अपना रूप बदल ले, यह बाह्य स्तर पर ही होगा, और मैं अनुमोदन नहीं करूँगा। इसलिए कोई भी इससे देख सकता है कि जो सतही चीज़ों पर ध्यान देते हैं और बाह्य तौर पर मेरी नक़ल करने की चेष्टा करते हैं, उनका शैतान होना शत-प्रतिशत निश्चित है। चूंकि उनकी आत्मा भिन्न है और वे मेरे प्रिय लोगों में से नहीं हैं, इसलिए वे चाहे कितनी भी मेरी नक़ल करें, वे मेरी तरह ज़रा भी नहीं हैं। इतना ही नहीं, चूंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र मूलतः मेरे साथ एक पवित्रात्मा के हैं, इसलिए भले ही वे

मेरी नक़ल न करते हों, किन्तु वे मेरी तरह ही बोलते हैं और कार्य करते हैं, और वे सभी ईमानदार, शुद्ध और खुले हैं (उन लोगों में बुद्धि की कमी इसलिए है क्योंकि संसार का उनका अनुभव सीमित है, और इसलिए मेरे ज्येष्ठ पुत्रों में बुद्धि का कम होना कोई दोष नहीं है, जब वे शरीर में लौटेंगे, तब सब ठीक हो जायेगा)। तो ऊपर वर्णित यही कारण है कि अधिकांश लोग, अपनी पुरानी प्रकृति नहीं बदलते हैं, फिर उनके साथ मैं जैसे भी पेश आऊँ। तो भी मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरी इच्छा के अनुरूप चलते हैं, और मुझे उनसे निपटना भी नहीं पड़ता। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम एक पवित्रात्मा के हैं। वे अपने आत्मा में मेरे लिए पूर्णतः व्यय होने की तत्परता महसूस करते हैं। इसलिए मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के अलावा, कोई भी ऐसा नहीं है जो सच्चे अर्थ में और ईमानदारी से मेरी इच्छा का ध्यान रखता हो; मेरे द्वारा शैतान को जीत लेने के बाद ही वे मेरी सेवा करने के इच्छुक होते हैं।

मेरी बुद्धि और मेरे ज्येष्ठ पुत्र सबसे ऊपर हैं, और सबके ऊपर हावी हैं, और कोई भी वस्तु या व्यक्ति या विषय रास्ते में आने की हिम्मत नहीं करता है। इतना ही नहीं, कोई भी व्यक्ति, विषय या वस्तु नहीं है जो उन पर हावी हो सके, और इसके बजाय सब मेरे व्यक्तित्व के समक्ष आज्ञाकारी ढंग से समर्पित होते हैं। यह सच्चाई है जो एकदम आँखों के सामने घटित होती है, और इस सच्चाई को मैंने पहले ही प्राप्त कर लिया है। वह जो अवज्ञा पर अड़ा है (जो अवज्ञाकारी हैं, उनका सम्बन्ध अब भी शैतान से है और जो शैतान के कब्जे में हैं, वे निस्संदेह शैतान के सिवा कुछ नहीं हैं), मैं उन्हें निश्चित रूप से समूल नष्ट कर दूँगा, ताकि भविष्य में कोई परेशानी न हो; वे मेरी ताड़ना से तुरंत मर जाएँगे। वे इस प्रकार के शैतान हैं जो मेरी सेवा-टहल करने के इच्छुक नहीं हैं। सृजन के समय से ही ये चीजें सदैव मेरे प्रति अटल विरोध में खड़ी हैं, और आज वे मेरी अवज्ञा करने पर अड़ी हैं (लोग इसे देख नहीं पाते हैं क्योंकि यह बस पवित्रात्मा से संबंधित मामला है। इस प्रकार का व्यक्ति इसी प्रकार के शैतान का प्रतिनिधित्व करता है)। अन्य सब कुछ तैयार होने से पहले ही मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा, उन्हें सदा के लिए कठोर दण्ड का अनुशासन प्राप्त करने दूँगा (यहाँ "नष्ट" का अर्थ "उन्हें अब और जीवित नहीं रहने दिए जाने" से नहीं है, बल्कि इसके बजाय इसका अर्थ है कि उन्हें किस सीमा तक निर्दयता झेलनी होगी। यहाँ "नष्ट" शब्द उस "नष्ट" शब्द से भिन्न है जो उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है जिन्हें नष्ट कर दिया जाएगा।) वे सदा-सर्वदा रोएँगे और अपने दाँत पीसेंगे, और इसका कोई अंत नहीं होगा। मनुष्य की कल्पना उस दृश्य की परिकल्पना करने में नितांत असमर्थ है। मानवजाति की नश्वर सोच के साथ, वे आध्यात्मिक चीज़ों को समझ नहीं पाते हैं, और इसलिए और भी चीज़ें

हैं जिन्हें तुमलोग सिय्योन लौटने के बाद ही समझोगे।

मेरे भविष्य के घर में मेरे ज्येष्ठ पुत्रों और मेरे अलावा कोई नहीं होगा, और केवल उस समय मेरा लक्ष्य पूरा होगा और मेरी योजना पूर्णतः फलीभूत होगी, क्योंकि सब कुछ अपनी मूल अवस्था में लौट आएगा और प्रत्येक को उनके प्रकार के अनुसार छाँट दिया जाएगा। मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे होंगे, मेरे पुत्र और लोग सृजित प्राणियों की श्रेणी में उनके बीच होंगे, और सेवा करने वाले और विनष्ट लोग शैतान के होंगे। संसार का न्याय करने के बाद, मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र एक बार फिर दिव्य जीवन आरम्भ करेंगे और वे कभी मुझे छोड़कर नहीं जाएँगे और सदैव मेरे साथ होंगे। वे सारे रहस्य जो मानव मस्तिष्क द्वारा समझे जा सकते हैं, थोड़ा-थोड़ा करके, तुम लोगों के समक्ष प्रकट किए जाएँगे। समूचे इतिहास में, अनगिनत लोग रहे हैं जो स्वयं को पूरी तरह मुझे अर्पित करते हुए, मेरे कारण शहीद हुए हैं, परन्तु अंततः लोग सृजित प्राणी ही हैं और चाहे वे कितने ही अच्छे क्यों न हों, उन्हें परमेश्वर की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता; यह एक अवश्यंभावी घटनाक्रम है और कोई भी इसे बदल नहीं सकता। अंततः, परमेश्वर ही सभी चीज़ों का सृजन करता है, जबकि लोग सृजित प्राणी हैं, और शैतान अंततः मेरे विनाश का लक्ष्य है और मेरा घृणित शत्रु है—यह इन शब्दों का सर्वाधिक सच्चा अर्थ है, "पर्वत और नदियाँ अपना स्थान और रूप भले बदल लें, किसी व्यक्ति की प्रकृति नहीं बदलेगी।" अब इस स्थिति और इस चरण में होना शुभ संकेत है कि मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र विश्राम में प्रवेश करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि संसार में मेरा कार्य सर्वथा पूर्ण हो गया है, और अपने कार्य का अगला चरण पूरा करने के लिए मुझे शरीर में लौटने की आवश्यकता होगी। ये मेरे कार्य के सोपान हैं, जिनकी योजना मैंने बहुत पहले बनाई थी। इस बिन्दु को स्पष्ट समझ लेना चाहिए, अन्यथा अधिकांश लोग मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन करेंगे।

अध्याय 115

तेरे कारण, मेरा हृदय अत्यधिक आनंद विभोर होगा; तेरे कारण, मेरा हाथ आनंद से थिरकेगा, और मैं तुझे अनंत आशीष दूँगा, क्योंकि सृजन के समय से पहले तू मुझसे ही आया था। आज तुझे मेरी तरफ़ लौट ही आना चाहिए, क्योंकि तू न तो इस संसार का है या न ही इस पृथ्वी का है, बल्कि, तू मेरा है। मैं सदैव तुझे प्रेम करूँगा, मैं सदैव तुझे आशीष दूँगा और मैं सदैव तेरी रक्षा करूँगा। जो मुझ से आए हैं केवल वे ही मेरी इच्छा जानते हैं, केवल वे ही मेरी ज़िम्मेदारी पर सोच-विचार दर्शाएँगे, और केवल वे ही वही सब करेंगे जो

मैं करना चाहता हूँ। आज, सब कुछ सम्पन्न किया जा चुका है। मेरा हृदय आग के गोले की तरह है, जो मेरे प्यारे पुत्रों के शीघ्र ही मेरे साथ पुनः एक होने, और मेरे व्यक्तित्व के पूरी तरह शीघ्र ही सिय्योन लौटने के लिए ललक रहा है। तुझे इसका कुछ ज्ञान है। यद्यपि हम आत्मा में प्रायः एक दूसरे का अनुसरण नहीं कर सकते हैं, फिर भी हम प्रायः आत्मा में एक दूसरे के साथ हो सकते हैं और देह में मिल सकते हैं। परमपिता और पुत्र सदा के लिए अविभाज्य हैं, वे घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। सिय्योन पर्वत लौटने के दिन तक कोई भी तुझे मेरे पहलू से दूर नहीं ले जा सकता है। मैं उन सभी ज्येष्ठ पुत्रों से प्रेम करता हूँ जो मुझसे आते हैं, और मैं उन सभी दुश्मनों से नफ़रत करता हूँ जो मेरा विरोध करते हैं। मैं उन सबको वापस सिय्योन लाऊँगा जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ और उन सबको पाताल लोक में, नरक में, डालूँगा जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ। मेरी सभी प्रशासनिक आज्ञाओं का यही मुख्य सिद्धांत है। मेरे ज्येष्ठ पुत्र जो भी कहते या करते हैं, वह मेरी पवित्रात्मा की अभिव्यक्ति है। इसकी स्पष्ट समझ के साथ हर एक को मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही देनी ही चाहिए। यह मेरे कार्य का अगला कदम है, और यदि कोई प्रतिरोध करता है, तो मेरे पास उनसे निपटने के लिए मेरे प्यारे पुत्र होंगे। अब पहले से भिन्न है। मैं जिनसे प्रेम करता हूँ, यदि वे न्याय का वचन बोलते हैं, तो पाताल लोक में शैतान उसी समय मर जाता है, क्योंकि मैंने पहले ही अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अधिकार दे दिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि अब से, यह मेरा और मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का साथ-साथ शासन करने का समय है। (यह देह के चरण में है, जो शरीर में साथ-साथ शासन करने से थोड़ा भिन्न है।) कोई भी जो विचार में अवज्ञा करता है, वह उन्हीं के समान प्रारब्ध झेलेगा जो उस व्यक्तित्व का जो मैं हूँ, प्रतिरोध करते हैं। मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा मेरे साथ किया जाता है, क्योंकि हम एक ही शरीर के हैं और कभी भी पृथक नहीं किये जा सकते हैं। जिस प्रकार अतीत में मेरे लिए गवाही दी गई थी, उसी प्रकार आज मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए दी जानी चाहिए। यह मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं में से एक है; हरेक को उठना और गवाही देना ही चाहिए।

मेरा राज्य पृथ्वी के छोरों तक फैला हुआ है, मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे साथ पृथ्वी के छोरों तक यात्रा करते हैं। कई वचन हैं जो तुम लोग अपनी देह की बाधाओं के कारण नहीं समझते, यद्यपि मैंने उन्हें बोला है, इसलिए अधिकांश कार्य सिय्योन लौटने के बाद पूरा किया ही जाना चाहिए। मेरे वचनों से देखा जा सकता है कि यह वापसी बहुत दूर नहीं है, वास्तव में वह क्षण लगभग आ ही गया है। यही कारण है कि मैं लगातार सिय्योन और सिय्योन के विषयों की बात कर रहा हूँ। क्या तुम लोग जानते हो कि मेरे वचनों का उद्देश्य

क्या है? क्या तुम लोग जानते हो कि मेरे हृदय में क्या है? मेरा हृदय शीघ्र ही सिय्योन लौटने, पुराने युग को उसकी संपूर्णता में समाप्त करने, पृथ्वी पर हमारे जीवन को समाप्त करने (क्योंकि मैं सांसारिक लोगों, विषयों, वस्तुओं से घृणा करता हूँ, और देह के जीवन से और भी अधिक नफ़रत करता हूँ, और देह की बाधाएँ बहुत विशाल हैं और यह केवल सिय्योन लौटने पर ही होगा कि सब कुछ समृद्ध होने लगेगा), और राज्य में हमारा जीवन पुनः प्राप्त करने के लिए लालायित है। मेरे प्रथम देहधारण का उद्देश्य मेरे दूसरे देहधारण की नींव रखना था। यह वह मार्ग था जिस पर यात्रा करनी पड़ी। स्वयं को पूर्णतः शैतान को देकर ही मैं तुम लोगों को छुटकारा दिला सका, ताकि अंतिम चरण के दौरान तुम मेरे शरीर में लौट सको। (यदि मेरा प्रथम देहधारण नहीं होता, तो मैं महिमान्वित नहीं हो पाता, और मैं पापबलि वापस नहीं ले पाता, ऐसे में तुम लोग संसार में पापियों के रूप में आते।) चूंकि मेरे पास अनंत बुद्धि है, अतः इस तथ्य का कि मैं तुम लोगों को सिय्योन से बाहर ले गया, अर्थ यह है कि मैं तुम लोगों को निश्चित ही सिय्योन वापस लाऊँगा। रास्ता रोकने के शैतान के प्रयास सफल नहीं होंगे, क्योंकि मेरा महान कार्य बहुत पहले ही सम्पन्न हो चुका था। मेरे ज्येष्ठ पुत्र वैसे ही हैं जैसा मैं हूँ—वे पवित्र और निष्कलंक हैं, इसलिए मैं अब भी अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ सिय्योन लौटूँगा, और हम कभी अलग नहीं होंगे।

मेरी पूरी प्रबंधन योजना धीरे-धीरे तुम लोगों के लिए प्रकट हो रही है। मैंने सभी देशों में और सभी लोगों के बीच अपना कार्य करना आरम्भ कर दिया है। यह इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि मेरी सिय्योन वापसी का समय बहुत दूर नहीं है, क्योंकि सभी देशों में और सभी लोगों के बीच मेरा कार्य करना कुछ ऐसा है जो सिय्योन लौटने के बाद किया जाना है। मेरी गति अधिक तेजी से बढ़ रही है। (क्योंकि मेरी सिय्योन वापसी का दिन निकट आ रहा है, मैं लौटने से पहले पृथ्वी पर अपना कार्य समाप्त करना चाहता हूँ।) मैं अपने कार्य में निरंतर और अधिक व्यस्त होता जा रहा हूँ, और फिर भी पृथ्वी पर मेरे करने के लिए कार्य बहुत कम—लगभग बिल्कुल नहीं है। (मेरी व्यस्तता का उद्देश्य पवित्रात्मा में कार्य है, जिसे मनुष्य द्वारा नग्न आँख से नहीं देखा जा सकता है किन्तु केवल मेरे वचनों से बटोरा जा सकता है; मेरी व्यस्तता वैसी नहीं है जैसा देह में व्यस्त होना होता है, बल्कि इसका अर्थ है मेरे द्वारा कई कार्यों की योजना बनाना।) ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा है, पृथ्वी पर मेरा कार्य आद्यांत पूर्ण हो चुका है और मेरे शेष कार्य को तब तक प्रतीक्षा करनी ही होगी जब तक मैं सिय्योन नहीं लौटता हूँ। (कार्य के लिए मुझे सिय्योन लौटना ही चाहिए, इसका कारण यह है कि भविष्य का कार्य देह में सम्पन्न नहीं किया जा सकता

है, और यदि यह कार्य देह में किया गया, तो इससे मेरे नाम की रुसवाई होगी।) जब मैं अपने दुश्मनों को पराजित करके सिय्योन लौटूँगा, तो जीवन युगों पहले के जीवन से कहीं अधिक सुंदर और शांतिपूर्ण होगा। (ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने संसार पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर ली है, और मेरे प्रथम देहधारण और मेरे दूसरे देहधारण की बदौलत मैं पूरी तरह से महिमान्वित हो गया हूँ। मेरे प्रथम देहधारण में मैं बस आंशिक रूप से महिमान्वित था, किन्तु मेरे दूसरे देहधारण में, मेरा व्यक्तित्व पूर्णतः महिमान्वित हो गया है, इसलिए शैतान के पास शोषण करने का अब और कोई अवसर नहीं हैं। इसलिए, सिय्योन में भावी जीवन और भी अधिक सुंदर और शांतिपूर्ण होगा।) मेरा व्यक्तित्व संसार और शैतान के सामने और भी अधिक महिमापूर्वक प्रकट होगा ताकि बड़ा लाल अजगर अपमानित हो; यह मेरी समूची बुद्धि का केन्द्र बिन्दु है। मैं बाहरी चीज़ों के बारे में जितनी अधिक बात करता हूँ, उतना ही अधिक तुम लोग समझ पाते हो; मैं सिय्योन की उन चीज़ों के बारे में जिन्हें मनुष्य नहीं देख सकते, जितनी अधिक बात करूँगा, उतना ही अधिक तुम लोग सोचोगे कि ये चीजें निस्सार हैं, और तुम्हारे लिए उनकी कल्पना करना उतना ही अधिक कठिन हो जाएगा; तुम्हें लगेगा कि मैं परियों की कहानियाँ सुना रहा हूँ। फिर भी, तुम लोगों को चौकन्ना रहना ही चाहिए। मेरे मुँह में कोई खोखले वचन नहीं हैं, मेरे मुँह से जो वचन निकलते हैं वे विश्वासयोग्य हैं। यह बिल्कुल सच है, यद्यपि तुम लोगों के सोचने के ढंग से इसे समझ पाना कठिन है। (मैं जो कहता हूँ उसे मनुष्य देह की सीमाओं के कारण पूरी तरह और आद्यांत समझ नहीं पाते हैं, और मेरे द्वारा कही गई कई बातें मैंने पूरी तरह प्रकट नहीं की हैं। फिर भी, जब हम सिय्योन लौटेंगे, तो मुझे समझाने की आवश्यकता नहीं होगी; तुम लोग सहज ही समझ जाओगे।) इसे हल्के ढंग से नहीं ही लिया जाना चाहिए।

यद्यपि मानव देह और धारणाओं की सीमाएँ हैं, फिर भी मैं तुम लोगों की दैहिक सोच को सुधारना चाहता हूँ और प्रकटित रहस्यों के माध्यम से तुम लोगों की धारणाओं के विरुद्ध लड़ना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने कई बार कहा है, यह मेरे कार्य का एक सोपान है (यह कार्य सिय्योन में प्रवेश करने तक रुकेगा नहीं)। प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक "सिय्योन पर्वत" है और यह प्रत्येक के लिए भिन्न है। चूँकि मैं सिय्योन पर्वत का उल्लेख करता रहता हूँ, इसलिए मैं तुम लोगों को इसके बारे में कुछ सामान्य जानकारी दूँगा, ताकि तुम लोग इसके बारे में थोड़ा जान सको। सिय्योन पर्वत पर होना आध्यात्मिक संसार में लौटना है। यद्यपि इसका अर्थ आध्यात्मिक संसार है, किन्तु यह ऐसा स्थान नहीं है जिसे मनुष्य देख या स्पर्श नहीं कर सकते; यह शरीर के लिए लागू होता है। यह पूर्णतः अदृश्य या अस्पृश्य नहीं है, क्योंकि जब शरीर प्रकट होता है, तब

इसका एक रूप और आकार होता है, किन्तु जब शरीर प्रकट नहीं होता, तब इसका कोई रूप या आकार नहीं होता है। सिय्योन पर्वत पर, भोजन, कपड़े, रोज़मर्रा की ज़रूरतों और आश्रय के बारे में कोई चिंता नहीं होगी, न ही विवाह या परिवार होगा, और लिंग का कोई विभाजन नहीं होगा (वे सब जो सिय्योन पर्वत पर हैं मेरा व्यक्तित्व हैं, एक शरीर में, इसलिए कोई विवाह, परिवार या लिंग का विभाजन नहीं है), और मेरा व्यक्तित्व जो भी बोलेगा वह प्राप्त किया जाएगा। जब लोग चौकन्ने नहीं होंगे, तब मेरा व्यक्तित्व उनके बीच प्रकट होगा, और जब लोग ध्यान नहीं दें रहे होंगे, तब मेरा व्यक्तित्व ओझल हो जाएगा। (यह कुछ ऐसा है जिसे हाड़-मांस और रक्त के लोग साध नहीं सकते, इसलिए अभी तुम लोगों के लिए कल्पना कर पाना कठिन है।) भविष्य में एक सूर्य, एक चंद्रमा और भौतिक आकाश और पृथ्वी तो होंगे, किन्तु चूंकि मेरा व्यक्तित्व सिय्योन में होगा, इसलिए सूर्य की तपिश नहीं होगी, न दिन का प्रकाश होगा, और न ही प्राकृतिक आपदाओं की यंत्रणा होगी। जब मैंने कहा हमें न दीपक न सूर्य के उजियाले की आवश्यकता होगी क्योंकि परमेश्वर हमें उजियाला देगा, तब मैं सिय्योन में होने के बारे में ही बात कर रहा था। मनुष्यों की धारणा के अनुसार, ब्रह्माण्ड में सब कुछ हटा दिया जाना चाहिए, और सभी लोगों को मेरे उजियाले में ही रहना चाहिए। वे सोचते हैं "हमें न दीपक न सूर्य के उजियाले की आवश्यकता होगी क्योंकि परमेश्वर हमें उजियाला देगा," का वास्तविक अर्थ यही है, किन्तु वास्तव में यह ग़लत व्याख्या है। जब मैंने कहा "हर महीने, पेड़ पर बारह प्रकार के फल लगेंगे," तब मैं सिय्योन के विषयों का ही उल्लेख कर रहा था। यह वाक्य सिय्योन में जीवन की स्थितियों को उनकी संपूर्णता में निरूपित करता है। सिय्योन में, समय परिसीमित नहीं होगा, न ही भूगोल और अंतरिक्ष की सीमाएँ होंगी। यही कारण है कि मैंने "हर महीने" कहा। "बारह प्रकार के फल" उस व्यवहार को नहीं दर्शाता जो तुम लोग आज जी रहे हो; बल्कि इसका अर्थ है सिय्योन में स्वतंत्रता का जीवन। ये वचन सिय्योन में जीवन का सामान्यीकरण हैं। इससे देखा जा सकता है कि सिय्योन में जीवन समृद्ध और विविधतापूर्ण होगा (क्योंकि यहाँ, "बारह" का अर्थ है पूर्णता)। यह दु:ख और आँसुओं से रहित जीवन होगा, यहाँ न कोई शोषण होगा न दमन, इसलिए सभी बंधनमुक्त और स्वतंत्र होंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि सब कुछ मेरे व्यक्तित्व के भीतर विद्यमान है, किसी भी व्यक्ति द्वारा अवियोज्य, और सब कुछ सुंदरता और शाश्वत नवीनता का नज़ारा होगा। यह वह समय होगा जब सब कुछ तैयार, और हमारे सिय्योन लौटने के बाद हमारे जीवन का आरम्भ है।

यद्यपि पृथ्वी पर मेरा कार्य आद्यांत पूर्ण हो गया है, फिर भी मुझे पृथ्वी पर कार्य करने के लिए अपने

ज्येष्ठ पुत्रों की आवश्यकता है, इसलिए मैं अभी सिय्योन नहीं लौट सकता हूँ। मैं सिय्योन अकेला नहीं लौट सकता हूँ। मैं पृथ्वी पर मेरे ज्येष्ठ पुत्रों द्वारा अपना कार्य समाप्त कर लेने के बाद उनके साथ सिय्योन लौटूँगा। इस तरह, उचित ही कहा जा सकता है कि हम साथ-साथ महिमा प्राप्त कर रहे हैं; यह मेरे व्यक्तित्व का पूर्ण आविर्भाव होगा। (मैं कहता हूँ कि पृथ्वी पर मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है क्योंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का अभी आविर्भाव नहीं किया गया है। यह कार्य अब भी वफ़ादार और ईमानदार सेवा-टहल करने वालों के द्वारा ही किया जाना चाहिए।)

अध्याय 116

मेरे कई वचन लोगों को डराते हैं। मेरे कई वचन लोगों को ख़ौफ़ से कँपाते हैं, और मेरे कई वचन लोगों को पीड़ित करते हैं और उनकी आशा खंडित कर देते हैं, यहाँ तक कि कई वचन लोगों के विनाश का कारण भी बन जाते हैं। मेरे वचनों की समृद्धि की कोई भी थाह नहीं पा सकता या उन्हें स्पष्ट रूप से समझ नहीं सकता। केवल जब मैं तुम लोगों से अपने वचन कहता हूँ और उन्हें वाक्य-दर-वाक्य तुम लोगों पर प्रकट करता हूँ, तभी तुम लोग उनके बारे में कुछ सामान्य जानकारी प्राप्त कर पाते हो, जबकि विशिष्ट तथ्यों के सत्य फिर भी अस्पष्ट रह जाते हैं। इसलिए मैं अपने सभी वचनों को प्रकट करने के लिए तथ्यों का उपयोग करूँगा, जिससे तुम लोगों को अधिक समझ में आ सके। मेरे बोलने के ढंग से देखा जाए तो, मैं न केवल अपने वचनों से बोल रहा हूँ, बल्कि इससे भी अधिक, मैं अपने वचनों से कार्य कर रहा हूँ; केवल यही "वचनों और कार्यों के एक-साथ घटित होने" का सही अर्थ है। क्योंकि मेरे साथ सब-कुछ मुक्त और स्वतंत्र है, और इस बुनियाद पर जो कुछ भी मैं करता हूँ, वह बुद्धिमत्ता से भरा होता है। मैं लापरवाही से नहीं बोलता, और लापरवाही से कार्य भी नहीं करता। (चाहे मानवता में हो या दिव्यता में, मैं बुद्धिमत्ता के साथ बोलता और कार्य करता हूँ, क्योंकि मेरी मानवता मेरा एक अविभाज्य अंग है)। फिर भी जब मैं बोलता हूँ, तो कोई मेरे भाषण के लहजे पर ध्यान नहीं देता; जब मैं कार्य करता हूँ, तो कोई मेरे कार्य की पद्धति पर ध्यान नहीं देता। यह मनुष्य की कमी है। मैं केवल अपना पराक्रम अपने ज्येष्ठ पुत्रों पर ही नहीं, बल्कि सभी मनुष्यों पर प्रकट करूँगा, बल्कि इससे भी अधिक, मैं अपना पराक्रम सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के बीच प्रकट करूँगा; यही वास्तव में शक्तिशाली गवाही है; गवाही, जो शैतान को शर्मिंदा करती है। मैं मूर्खता से कार्य नहीं करता। बहुत-से लोग सोचते हैं कि ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही देना मेरी एक ग़लती है; वे

कहते हैं कि मुझसे बाहर अन्य परमेश्वर हैं, कि मैं मूर्खतापूर्ण ढंग से कार्य करता हूँ, कि मैं अपनी प्रतिष्ठा गिराता हूँ; इसके भीतर मनुष्य की भ्रष्टता और भी अधिक उजागर हो जाती है। क्या ऐसा हो सकता है कि ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही देना मेरी ग़लती है? तुम लोग कहते हो कि मैं ग़लत हूँ, तो क्या तुम लोग गवाही दे सकते हो? यदि मेरे द्वारा उत्थान न किया जाता, मेरी गवाही नहीं होती, तो तुम लोग अभी भी मेरे पुत्र को अपने नीचे दबा देते, अभी भी उसके साथ ठंडी उदासीनता से व्यवहार करते, अभी भी उसके साथ अपने सेवक जैसा व्यवहार करते। तुम सूअरों के झुंड! मैं एक-एक करके तुमसे निपटूँगा! किसी को भी नहीं छोड़ा जाएगा! मुझे बताओ, सामान्य मानवता वाले व्यक्ति के साथ मेल न खाने वाली चीज़ क्या होती है? बेशक वे सूअर हैं! मैं उन्हें देखना बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकता। यदि मैंने तुम लोगों की गवाही की प्रतीक्षा की होती, तो मेरे कार्य में पहले ही विलंब हो चुका होता! तुम सूअरों के झुंड! तुम लोगों में बिलकुल भी मानवता नहीं है! मुझे तुम्हारी सेवा की आवश्यकता नहीं है! यहाँ से तुरंत निकल जाओ! तुमने इतने लंबे समय तक मेरे पुत्र को धमकाया और दबाया है; मैं तुम्हें कुचलकर भुर्ता बना दूँगा! तुम फिर से जंगली होने का साहस तो करो, मुझे फिर से शर्मिंदा करने का साहस तो करो! मैंने अपना महान कार्य पहले से ही संपन्न कर लिया है; मुझे पलटकर जानवरों के इस झुंड को भगाना चाहिए!

सब मेरे हाथों में संपन्न होता है (जहाँ तक उनका संबंध है, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ), और सब मेरे हाथों में ही नष्ट भी होता है (जहाँ तक उन जानवरों का संबंध है, जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ, और उन लोगों, मामलों और चीज़ों का, जिनसे मैं घृणा करता हूँ)। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को वह सब देखने देता हूँ, जो मैं करना चाहता हूँ; उन्हें वह सब अच्छी तरह से देखने-समझने देता हूँ, जो मैंने सिय्योन से बाहर आने के बाद किया है। उसके बाद हम सिय्योन पर्वत में साथ-साथ, युगों पहले के अपने निवास-स्थान में प्रवेश करेंगे, और अपने जीवन को नए सिरे से जीएँगे। उसके बाद हमारा दुनिया से और सूअरों के इस झुंड से कोई संपर्क नहीं रहेगा, बल्कि पूर्ण स्वतंत्रता होगी, सभी निर्विघ्न और व्यवधान-रहित होंगे। मेरे ज्येष्ठ पुत्रों में से किसी का भी विरोध करने का साहस कौन करता है? मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का विरोध जारी रखने का साहस कौन करता है? मैं उन्हें हलके में नहीं छोड़ूँगा! तुमने अतीत में जैसे मेरा सम्मान किया है, उसी तरह आज तुम्हें मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का भी सम्मान करना होगा। मेरे सामने कुछ और, और मेरे पीठ-पीछे कुछ और मत बनो; हर एक इनसान कैसा है, इसे मैं अत्यधिक स्पष्टता के साथ जानता हूँ। मेरे पुत्र के प्रति वफादार न होना मेरे साथ संतानोचित नहीं होना है, जो कि एक स्पष्ट तथ्य है, क्योंकि हम एक शरीर के हैं। यदि कोई

मेरे प्रति अच्छा है, पर मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के प्रति अलग रवैया रखता है, तो वे नि:संदेह ठेठ बड़े लाल ड्रैगन के वंशज हैं, क्योंकि वे मसीह के शरीर को तोड़ते हैं; इस पाप को कभी क्षमा नहीं किया जा सकता! तुम लोगों में से प्रत्येक को यह अवश्य समझना चाहिए। मेरी गवाही देना तुम लोगों का कर्तव्य है, और इससे भी अधिक, मेरे ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही देना तुम लोगों का दायित्व है। तुम लोगों में से किसी को भी अपने उत्तरदायित्व से जी नहीं चुराना है; जो कोई भी बाधा डालेगा, मैं उससे तुरंत निपटूँगा! अपने को कुछ खास मत समझो। अब मैं तुम्हें बताए देता हूँ! जितने अधिक तुम इस तरह के होगे, उतना ही अधिक मेरी कठोर सज़ा का लक्ष्य बनोगे! जितना अधिक तुम इस तरह के होगे, उतना ही अधिक तुम निकम्मे होगे, और उतना ही अधिक तुम विनाश के पुत्र होगे। मैं तुम्हें हमेशा ताड़ना दूँगा!

मेरा समस्त कार्य मेरे आत्मा द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है, और मैं किसी भी तरह के शैतान को इसमें हस्तक्षेप नहीं करने देता। यह मेरी योजनाओं को बाधित होने से बचाने के लिए है। अंत में मैं वयस्कों और बच्चों दोनों को उठकर अपनी और अपने ज्येष्ठ पुत्रों की स्तुति करने दूँगा, अपने अद्‌भुत कर्मों की स्तुति करने दूँगा, और अपने व्यक्तित्व के प्रकटन की स्तुति करने दूँगा। मैं स्तुति की आवाज़ पर्वतों, नदियों और सभी चीज़ों को कँपाते हुए ब्रह्मांड में और पृथ्वी के छोर तक गूँजने दूँगा और शैतान को पूरी तरह से अपमानित करूँगा। मैं अपनी गवाही का इस्तेमाल समस्त गंदी और घिनौनी पुरानी दुनिया को नष्ट करने और एक पवित्र और निर्मल नई दुनिया बनाने के लिए करूँगा। (ऐसा कहने से कि भविष्य में सूरज, चाँद, सितारे और खगोलीय पिंड नहीं बदलेंगे, मेरा यह अर्थ नहीं है कि पुरानी दुनिया तब भी विद्यमान रहेगी, बल्कि यह अर्थ है कि पूरी दुनिया नष्ट हो जाएगी और बदल दी जाएगी। मेरा ब्रह्मांड को बदलने का आशय नहीं है।) केवल तभी यह मेरी इच्छा के साथ मेल खाने वाली दुनिया होगी; इसके भीतर आज की तरह का दमन नहीं होगा, न ही एक-दूसरे का शोषण करने की आज की तरह की घटना होगी। इसके बजाय, देह के भीतर पूरी तरह से निष्पक्षता और तर्कसंगतता होगी। (यद्यपि मैं कहता हूँ कि निष्पक्षता और तर्कसंगतता होगी, यह देह के भीतर होगा; लेकिन मेरे राज्य से तुलना किए जाने पर, यह बहुत भिन्न होगा—स्वर्ग और पृथ्वी जितना भिन्न—तुलना करने का कोई तरीका ही नहीं है—आखिरकार, मानवीय दुनिया, मानवीय दुनिया है, और आध्यात्मिक दुनिया, आध्यात्मिक दुनिया।) उस समय मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र इस तरह की दुनिया पर क्षेत्राधिकार का प्रयोग करेंगे (इस दुनिया में शैतान की तरफ से कोई गड़बड़ी नहीं होगी, क्योंकि शैतान को मेरे द्वारा पूरी तरह से हटा दिया गया होगा), किंतु हमारे जीवन अभी भी राज्य के

जीवन होंगे, और इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता। युगों-युगों में कभी कोई मनुष्य ऐसा नहीं हुआ (चाहे वह कितना भी वफादार क्यों न रहा हो), जिसने इस तरह के जीवन का अनुभव किया हो, क्योंकि युगों-युगों में मेरे ज्येष्ठ पुत्र के रूप में कार्य करने वाला एक भी नहीं हुआ है, और वे बाद में भी मेरे लिए सेवा प्रदान करते रहेंगे। यद्यपि ये सेवा करने वाले वफादार हैं, लेकिन वे अंततः शैतान के ही वंशज हैं, जिसे मेरे द्वारा जीत लिया गया है, इसलिए अपनी देह की मृत्यु के बाद वे अभी भी मेरी सेवा करने के लिए मानवीय दुनिया में पैदा होते हैं; यही "पुत्र अंततः पुत्र हैं, और सेवा करने वाले अंततः शैतान के वंशज हैं" का सही अर्थ है। युगों-युगों से यह अज्ञात है कि आज के ज्येष्ठ पुत्रों की सेवा करने के लिए कितने लोग हैं; सभी सेवा-कर्मियों में से कोई भी भाग नहीं सकता, और मैं उनसे सदैव अपनी सेवा करवाऊँगा। जहाँ तक उनकी प्रकृति का संबंध है, वे सभी शैतान के बच्चे हैं, सभी मेरा विरोध करते हैं, और यद्यपि वे मेरे लिए सेवा करते हैं, किंतु सभी को इसके लिए बाध्य किया जाता है, और किसी के पास कोई विकल्प नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि सब-कुछ मेरे हाथ से नियंत्रित होता है; और जिन सेवा करने वालों का मैं उपयोग करता हूँ, उन्हें अंत तक मेरे लिए सेवा प्रदान करनी होगी। इस प्रकार, आज भी ऐसे कई लोग हैं, जिनकी प्रकृति युगों-युगों के नबियों और प्रेरितों के समान है, क्योंकि वे एक ही आत्मा के हैं। इस प्रकार, अभी भी कई ऐसे वफादार सेवा करने वाले हैं, जो मेरे लिए दौड़-भाग कर रहे हैं, किंतु अंत में (वे छह हजार वर्षों से लगातार मेरी सेवा करते आ रहे हैं, इसलिए ये लोग सेवा करने वालों से संबंधित हैं) कोई भी वह चीज़ प्राप्त नहीं कर सकता, जिसकी उन सबने युगों-युगों से आशा की है, क्योंकि जो कुछ मैंने तैयार किया है, वह उनके लिए नहीं है।

मेरा सब-कुछ मेरी आँखों के सामने पहले ही संपन्न हो चुका है; मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को वापस अपने घर लौटा लूँगा, अपनी तरफ लौटा लूँगा और फिर से एक कर दूँगा। क्योंकि मैं सफल और विजयी होकर लौटा हूँ और मैंने पूरी तरह से महिमा प्राप्त कर ली है, इसलिए मैं तुम लोगों को वापस लेने के लिए आया हूँ। अतीत में कुछ लोगों ने "पाँच समझदार कुँआरियों और पाँच मूर्ख कुँआरियों" की भविष्यवाणी की है। यद्यपि भविष्यवाणी सटीक नहीं है, पर यह पूरी तरह से ग़लत भी नहीं है, इसलिए मैं तुम लोगों को कुछ स्पष्टीकरण दे सकता हूँ। ऐसा निश्चित रूप से नहीं है कि "पाँच समझदार कुँआरियाँ और पाँच मूर्ख कुँआरियाँ", दोनों लोगों की संख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं, और न वे क्रमशः किसी एक प्रकार के लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। "पाँच समझदार कुँआरियाँ" लोगों की संख्या को संदर्भित करती है, और "पाँच

मूर्ख कुँआरियाँ" एक प्रकार के लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं, लेकिन इन दोनों में से कोई भी ज्येष्ठ पुत्रों को संदर्भित नहीं करती। इसके बजाय वे सृजन को दर्शाती हैं। यही कारण है कि उन्हें अंत के दिनों में तेल तैयार करने के लिए कहा गया है। (सृजन में मेरी गुणवत्ता नहीं होती; यदि वे समझदार बनना चाहते हैं, तो उन्हें तेल तैयार करने की आवश्यकता है, और इस प्रकार उन्हें मेरे वचनों से सुसज्जित होने की आवश्यकता है।) "पाँच समझदार कुँआरियाँ" मेरे द्वारा सृजित मनुष्यों के बीच में से मेरे पुत्रों और मेरे लोगों को दर्शाती हैं। उन्हें "कुँवारियाँ" इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे पृथ्वी पर पैदा होने पर भी मेरे द्वारा प्राप्त किए गए हैं; उन्हें पवित्र कहा जा सकता है, इसलिए उन्हें "कुँआरियाँ" कहा जाता है। पूर्वोक्त "पाँच" मेरे पुत्रों और मेरे लोगों की संख्या को दर्शाता है, जिन्हें मैंने पूर्वनियत किया है। "पाँच मूर्ख कुँआरियाँ" सेवा करने वालों को संदर्भित करता है। वे जीवन को जरा-सा भी महत्व दिए बिना केवल बाहरी चीज़ों का अनुसरण करते हुए मेरे लिए सेवा करते हैं (क्योंकि उनमें मेरी गुणवत्ता नहीं है, चाहे वे कुछ भी क्यों न करें, वह बाहरी चीज़ ही होती है), और वे मेरे सक्षम सहायक होने में असमर्थ हैं, इसलिए उन्हें "मूर्ख कुँआरियाँ" कहा जाता है। पूर्वोक्त "पाँच" शैतान का प्रतिनिधित्व करता है, और उन्हें "कुँआरियाँ" कहे जाने के तथ्य का अर्थ है कि वे मेरे द्वारा जीते जा चुके हैं और मेरे लिए सेवा करने में सक्षम हैं, किंतु इस तरह के व्यक्ति पवित्र नहीं हैं, इसलिए उन्हें सेवा करने वाले कहा जाता है।

अध्याय 117

एकमात्र तू ही सूचीपत्र खोलता है, एकमात्र तू ही सात मोहरें तोड़ता है, क्योंकि सभी रहस्य तुझसे आते हैं और सभी आशीष तेरे द्वारा प्रकट किए जाते हैं। मैं अनंतकाल तक तुझसे प्रेम करने के लिए बाध्य हूँ सभी लोगों से तेरी आराधना करवाने के लिए बाध्य हूँ; क्योंकि तू मेरा व्यक्तित्व है, तू मेरे उदार और पूर्ण प्रकटीकरण का और मेरे शरीर का एक अनिवार्य अंग है। इसलिए, मुझे विशेष गवाही देनी चाहिए। मेरे व्यक्तित्व के भीतर जो एक है उसके अलावा और कौन मेरे हृदय के अनुरूप है? स्वयं तू ही नहीं है जो अपने लिए गवाही देता है, बल्कि मेरा आत्मा भी तेरे लिए गवाही देता है। मैं निश्चित रूप से उसे क्षमा नहीं करूँगा जो तेरी अवहेलना करने का साहस कररेगा, क्योंकि इसका संबंध मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं से है। तू जो कुछ कहेगा, मैं निश्चित रूप से उसे पूरा करूँगा और जो कुछ तू सोचेगा, मैं उसे निश्चित रूप से स्वीकार करूँगा। यदि कोई तेरे साथ वफ़ादार नहीं है, तो वह खुलेआम मेरा विरोध कर रहा है और मैं

निश्चित रूप से उसे माफ़ नहीं करूँगा। जो लोग मेरे पुत्र का विरोध करेंगे, मैं उन सभी को कठोर ताड़ना दूँगा और मैं उन लोगों को आशीष दूँगा जो तेरे अनुकूल हैं। मैं यह अधिकार तुझे प्रदान करता हूँ। जिसके बारे में अतीत में बात की गयी थी—ज्येष्ठ पुत्रों से की गयीं अपेक्षाएँ और मानक—उसमें तू आदर्श है। अर्थात्, जैसा तू है, मैं वैसी ही अपेक्षा ज्येष्ठ पुत्रों से करूँगा। यह सब मनुष्य नहीं कर सकते, इसे मेरा आत्मा स्वयं करता है। यदि कोई मानता है कि इंसान तेरे लिए गवाही दे रहे हैं तो वह प्राणी निस्संदेह शैतान का अंश और मेरा दुश्मन है! इसलिए गवाही निर्णायक, अनंत रूप से अचल और ऐसी है जिसकी पुष्टि पवित्र आत्मा करता है! कोई भी उसमें आसानी से बदलाव नहीं कर सकता और यदि कोई करता है, तो मैं उसे माफ़ नहीं करूँगा! चूँकि मनुष्य मेरे लिए गवाही नहीं दे सकते, इसलिए मैं अपने व्यक्तित्व के लिए स्वयं गवाही देता हूँ, लोगों को मेरे कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए! ये कठोर न्याय के वचन हैं और हर व्यक्ति को इनसे सचेत रहना चाहिए!

तुम लोगों को मेरी हर बात पर विचार करना चाहिए और विस्तार से ध्यान देना चाहिए। मेरे वचनों को हल्के में लेने के बजाय, उन्हें ध्यान से सुनो। मैं ज्येष्ठ पुत्रों को अपना व्यक्तित्व और अपने राज्य का अनिवार्य अंग क्यों कहता हूँ? सभी युगों से पहले, हम एक साथ रहते थे और कभी अलग नहीं हुए थे। शैतान के व्यवधानों के कारण, जब मैंने पहली बार देहधारण किया तो मैं सिय्योन लौट गया था। वहाँ से आगे बढ़ते हुए, हम सभी लोग संसार में आ गए, और अंत के दिनों में जब मैं विजयी हो जाऊँगा—यानी, जब मैंने तुम लोगों को उस देह से प्राप्त लूँगा जिसे शैतान ने भ्रष्ट कर दिया था—तो मैं तुम लोगों को वापस सिय्योन में ले आऊँगा ताकि मेरे व्यक्तित्व का पुनर्मिलन हो जाए और फिर कभी अलग न हो। उसके बाद मेरा पुनः देहधारण नहीं होगा और तुम लोग निश्चित रूप से मेरे शरीर से बाहर नहीं आओगे। अर्थात्, उसके बाद मैं फिर से दुनिया सृजन नहीं करूँगा, बल्कि सिय्योन में अपने ज्येष्ठ पुत्रों से सदैव के लिए अविभाज्य रहूँगा, क्योंकि सब-कुछ पूरा हो चुका है और मैं संपूर्ण पूरे युग का समापन करने वाला हूँ। केवल सिय्योन में ही नये स्वर्ग और पृथ्वी का जीवन है, क्योंकि मेरा व्यक्तित्व सिय्योन में विद्यमान है। ऐसा कोई नया स्वर्ग या नई पृथ्वी नहीं होगी जो इससे अलग अस्तित्व में हो। मैं ही नया स्वर्ग हूँ और मैं ही नई पृथ्वी भी हूँ, क्योंकि मेरा व्यक्तित्व समस्त सिय्योन को भर देता है। यह भी कहा जा सकता है कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र नए स्वर्ग हैं, मेरे ज्येष्ठ पुत्र नई पृथ्वी हैं। मैं और मेरे ज्येष्ठ पुत्र एक शरीर हैं और अविभाज्य हैं। मेरे बारे में बात करते समय ज्येष्ठ पुत्र अनिवार्यत: शामिल होते हैं, और यदि कोई हमें अलग करने की कोशिश

करेगा, तो मैं निश्चित रूप से उसे क्षमा नहीं करूँगा। जब मैं सभी राष्ट्रों और लोगों को अपने सिंहासन के सामने वापस लाऊँगा, तो सभी शैतान बुरी तरह से अपमानित होंगे और सभी कलुषित राक्षस मुझसे दूर हट जाएँगे। तब यह निश्चित है कि सभी लोगों (अर्थात् मेरे पुत्रों और लोगों के बीच) में धार्मिकता विद्यमान होगी, और यह निश्चित है कि सभी राष्ट्रों के बीच शैतान की कोई भी बाधा नहीं होगी, क्योंकि मैं सभी राष्ट्रों और लोगों पर शासन करूँगा, पूरे ब्रह्मांड की दुनिया पर सामर्थ्य का प्रयोग करूँगा, सभी शैतान पूरी तरह से तबाह हो जाएँगे, बुरी तरह से पराजित हो जाएगा और मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं के दण्ड के भागी बनेंगे।

मैं सभी लोगों के बीच अपने कार्य के साथ आगे बढ़ रहा हूँ, किन्तु उनमें केवल मेरे आत्मा की प्रबुद्धता है, उनमें से कोई भी मेरे रहस्यों का अनावरण करने योग्य नहीं है, कोई भी मुझे व्यक्त करने योग्य नहीं है। केवल वही एक जो मुझसे आता है मेरा कार्य करने के योग्य है, जहाँ तक बाकी लोगों की बात है, मैं केवल अस्थायी रूप से उनका उपयोग करता हूँ। मेरा आत्मा मनमाने ढंग से किसी व्यक्ति पर नहीं उतरेगा, क्योंकि मुझमें सब-कुछ अनमोल है। मेरे आत्मा का किसी के ऊपर उतरना और मेरे आत्मा का किसी पर कार्य करना, दोनों पूर्णतया भिन्न बातें हैं। मेरा आत्मा उन लोगों पर कार्य करता है जो मुझसे बाहर हैं, किन्तु मेरा आत्मा उसी पर उतरता है जो मुझ से आता है। ये दोनों पूर्णतया अलग-अलग मामले हैं। क्योंकि जो मुझसे आता है वह पवित्र है, किन्तु जो मुझसे बाहर हैं वे पवित्र नहीं हैं, चाहे वे कितने ही अच्छे क्यों न हों। मेरा आत्मा किसी छोटे से कारण से किसी व्यक्ति पर नहीं उतरेगा। लोगों को चिंतित नहीं होना चाहिए। मैं कोई गलती नहीं करता और मैं जो करता हूँ उसके बारे में मैं सौ प्रतिशत निश्चित होता हूँ! चूँकि मैंने उसकी गवाही दी है, इसलिए मैं निश्चित रूप से उसकी रक्षा भी करूँगा; वह व्यक्ति निश्चित रूप से मुझसे आता है और मेरे व्यक्तित्व के लिए अनिवार्य है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि लोग अपनी अवधारणाओं को अलग कर दें, शैतान द्वारा दिए गए विचारों को छोड़ दें, मेरे हर कथन को सत्य मानें और अपने मन में कोई संदेह न पैदा होने दें। यह मानवजाति के लिए मेरा आदेश है, मानवजाति के लिए मेरा उपदेश है। हर एक को इन बातों के अनुसार चलना चाहिए, हर एक को ईमानदारी से उनका पालन करना चाहिए और जो भी मैं कहता हूँ उसे मानक मानना चाहिए।

मैं न केवल सभी राष्ट्रों और लोगों के बीच अपना कार्य शुरू करने वाला हूँ, बल्कि ब्रह्मांड की दुनिया में भी हर जगह अपना कार्य शुरू करने वाला हूँ, और यह और भी अधिक ये दर्शाता है कि सिय्योन में मेरे

लौटने का दिन बहुत दूर नहीं है (क्योंकि इससे पहले कि मैं सभी लोगों के बीच और तमाम ब्रह्मांड की दुनिया में कार्य शुरू कर सकूँ, मेरे लिए सिय्योन लौटना आवश्यक है)। क्या कोई ऐसा है जो मेरे कार्य के कदमों को और जिस तरह से मैं कार्य करता हूँ, उसे समझ सके? मैं कहता हूँ कि मैं विदेशियों से आत्मा में मिलूँगा तो उसका कारण है कि यह मौलिक रूप से देह में नहीं किया जा सकता और क्योंकि मैं दूसरी बार जोख़िम नहीं उठा सकता। विदेशियों के साथ आत्मा में संगति करने के यही कारण हैं। यह वास्तविक आध्यात्मिक दुनिया में होना है, न कि कुछ अस्पष्ट आध्यात्मिक दुनिया में, जैसा कि देह में रहने वाले लोग मानते हैं।[क] उस समय जो मैं कहता हूँ वह मात्र मेरे बोलने के तरीके में भिन्न होगा क्योंकि मैं एक अलग युग में बोलूँगा। इसलिए मैं जिस तरह से बोलता हूँ उस पर ध्यान देने के लिए मैं बार-बार मानवजाति को याद दिला रहा हूँ। मैं मानवजाति को यह भी याद दिलाता हूँ कि जो मैं कहता हूँ उसमें ऐसे रहस्य हैं जिनका लोग अनावरण नहीं कर सकते। किन्तु कोई नहीं समझता कि मैं ये बातें क्यों कहता हूँ। मैं तुम लोगों को भी आज ये बातें इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि तुम लोग इन्हें थोड़ा-बहुत समझ सकते हो, लेकिन तुम भी पूरा नहीं समझ सकते। अपने कार्य में इस चरण के बाद, मैं तुम लोगों को कदम-दर-कदम बताऊँगा। (मैं इसके माध्यम से अभी भी कुछ लोगों को हटा देना चाहता हूँ, इसलिए अभी मैं कुछ नहीं कहूँगा।) यह मेरे कार्य के अगले चरण की पद्धति है। हर एक को ध्यान देना चाहिए और स्पष्ट रूप से देखना चाहिए कि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ जो बुद्धिमान है।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "जैसा कि देह में रहने वाले लोग मानते हैं" यह वाक्यांश नहीं है।

अध्याय 118

जो कोई भी मेरे पुत्र के लिए गवाही देने के लिए उठेगा, मैं उसे अनुग्रह प्रदान करूँगा; जो कोई भी मेरे पुत्र के लिए गवाही देने नहीं उठेगा, बल्कि इसके बजाय उसका विरोध करेगा और अपनी खुद की राय बनाने के लिए मनुष्य की अवधारणाओं का उपयोग करेगा, मैं उसे नष्ट कर दूँगा। सभी को स्पष्ट समझ लेना होगा! मेरे पुत्र के लिए गवाही देना मुझे सम्मान देने का कार्य है और यह मेरी इच्छा को संतुष्ट करता है। पुत्र को धमकाते, उत्पीड़ित करते हुए केवल परमपिता का सम्मान मत करो। जो ऐसा करते हैं वे बड़े लाल अजगर के वंशज हैं और मेरे पुत्रों की गवाही देने के लिए मुझे ऐसे अभागों की आवश्यकता नहीं है; मैं

उन्हें अथाह गड्ढे में डालकर नष्ट कर दूँगा। अपने पुत्र की सेवा के लिए मुझे वफ़ादार और ईमानदार सेवा करने वालों की जरूरत है, और जहाँ तक बाकी लोगों की बात है, मुझे उनकी आवश्यकता नहीं है। यह मेरा धार्मिक स्वभाव है और यह इस बात को दिखाने में सहायक है कि मैं स्वयं पवित्र और निष्कलंक परमेश्वर हूँ। मैं ऐसे किसी को भी माफ़ नहीं करूँगा जो मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का अपमान करता है। जिस किसी ने भी अतीत में तेरी अवहेलना की है या तुझे सताया है, चाहे परिवार में हो या दुनिया में, मैं उन्हें एक-एक करके ताड़ना दूँगा और किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, क्योंकि मुझमें ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं है जो मांस और रक्त का हो। आज तेरे लिए गवाही देना दर्शाता है कि उन सेवा करने वालों ने मुझे सेवा प्रदान करने का काम पूरा कर लिया है, इसलिए उन्हें किसी भी प्रकार का कोई संदेह या चिंता नहीं है। वे आख़िरकार तेरी सेवा करने वाले हैं और जब सब कुछ संपन्न हो जाता है तो तू स्वर्ग का हो जाता है, और अंत में तू मेरे शरीर में लौट आएगा, क्योंकि तेरे बिना मेरे शरीर का अस्तित्व नहीं हो सकता। अतीत में जो लोग तेरी अवहेलना करते थे और जो तेरे अनुकूल नहीं थे (यह कुछ ऐसा है जिसे दूसरे नहीं देख सकते हैं; केवल तू ही इसे अपने हृदय में जानता है) उन्होंने अब अपने मूल स्वरूप को प्रकट कर दिया है और वे पतित हो गए हैं, क्योंकि तू स्वयं परमेश्वर है और तेरी अवहेलना करने या तुझे अपमानित करने वाले किसी को भी तू सहन नहीं करेगा। यद्यपि इसे बाहर से बिल्कुल भी नहीं देखा जा सकता है, मेरा आत्मा तेरे भीतर है; यह प्रश्नातीत है। सभी लोगों को अवश्य इसमें विश्वास करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि मेरी लोहे की छड़ी उन सभी को मार डाले जो मेरी अवहेलना करते हैं! चूँकि मैं तेरे लिए गवाही देता हूँ, इसलिए तू निश्चित रूप से अधिकार रखता है, और जो कुछ भी तू कहता है वह मेरी अभिव्यक्ति है, जो कुछ भी तू करता है वह मेरा प्रदर्शन है, क्योंकि तू मेरा प्रिय है और तू ऐसा हिस्सा है जिसके बिना मेरा व्यक्तित्व नहीं हो सकता है। इसलिए तेरी हर क्रिया, तू क्या पहनता है, तू क्या उपयोग करता है, और तू कहाँ रहता है—वे भी निश्चित रूप से मेरे ही कर्म हैं। किसी को भी तेरे विरुद्ध कुछ खोजने की कोशिश बिल्कुल नहीं करनी चाहिए और किसी को तुझमें दोष नहीं ढूँढने चाहिए। अगर कोई ऐसा करता है, तो मैं उसे माफ़ नहीं करूँगा!

मैं अपने घर से सभी दुष्ट सेवकों को निकाल दूँगा, और अपने घर के भीतर अपने वफादार सेवकों से अपने ज्येष्ठ पुत्रों के लिए गवाही दिलवाऊँगा; यह मेरी योजना है और मैं इसी तरीके से कार्य करता हूँ। जब दुष्ट सेवक मेरे पुत्र के लिए गवाही देते हैं तो इससे मृतकों की गंध आती है और यह मेरे लिए घृणास्पद है।

जब वफादार सेवक मेरे पुत्र के लिए गवाही देते हैं तो यह सच्ची और ईमानदार होती है, और यह मुझे स्वीकार्य है। तो, जो कोई भी मेरे पुत्रों के लिए गवाही देने का इच्छुक नहीं है, वह तुरंत यहाँ से निकल जाए! मैं ऐसा करने के लिए तुझे बाध्य नहीं करूँगा—यदि मैं तुझे चले जाने के लिए कहता हूँ तो तुझे अवश्य चले जाना चाहिए! देख कि तेरे लिए क्या परिणाम हैं और क्या तेरी प्रतीक्षा कर रहा है; जो सेवा प्रदान करने वाले लोग हैं वे इस बात को अन्य किसी भी व्यक्ति से अधिक समझते हैं। मेरा न्याय, मेरा कोप, मेरा शाप, मेरा जलना और मेरा प्रचण्ड क्रोध किसी भी समय मेरी अवहेलना करने वाले किसी पर भी पड़ जाएगा। मेरा हाथ किसी के प्रति दया नहीं दिखाता है; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि सेवा करने वाले पहले कितने वफादार थे, यदि वे आज मेरे पुत्र की अवहेलना करते हैं तो मैं उन्हें तुरंत नष्ट कर दूँगा और मैं उन्हें अपने सामने नहीं रहने दूँगा। इससे कोई मेरे निष्ठुर हाथ को देख सकता है। क्योंकि लोग मुझे नहीं जानते हैं और उनकी प्रकृति मेरी अवहेलना करती है, यहाँ तक कि वे लोग भी जो मेरे प्रति वफादार हैं केवल अपनी खुशी के लिए वफादार हैं। यदि कुछ ऐसा होता है जो उन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, तो उनके हृदय एकाएक बदल जाते हैं और वे मेरी तरफ से पीछे हटना चाहते हैं। यह शैतान की प्रकृति है। तुझे अपने आप को वफादार मानने में दुराग्रही बिल्कुल नहीं होना चाहिए! यदि उनके लिए इसमें कुछ नहीं है, तो जानवरों का यह झुंड मेरे प्रति वफादार होने में समर्थ है ही नहीं। यदि मैंने अपनी प्रशासनिक आज्ञाओं की घोषणा नहीं की होती, तो तुम लोग बहुत पहले पीछे हट गए होते। अब तुम लोगों की स्थिति इधर कुआँ उधर खाई जैसी है, तुम मेरे लिए सेवा प्रदान करने के इच्छुक नहीं हो किन्तु मेरे हाथ से मार गिराए जाने के लिए तैयार नहीं हो। यदि मैंने यह घोषणा नहीं की होती कि मेरी अवहेलना करने वाले किसी पर भी किसी भी समय बड़ी आपदाएँ पड़ेंगी, तो तुम लोग बहुत पहले पीछे हट गए होते। क्या मुझे नहीं पता कि लोग कौन-से छ्ल कर सकते हैं? अधिकांश लोग अब एक छोटी-सी आशा बनाए रखते हैं, किन्तु जब वह आशा निराशा में बदल जाती है तो वे और आगे जाने के लिए तैयार नहीं होते हैं और वापस लौटने के लिए कहते हैं। मैंने इससे पहले कहा है कि मैं यहाँ किसी को अपनी इच्छानुसार नहीं रखता हूँ, बल्कि इस बारे में विचार करने के लिए सावधान रहता हूँ कि तेरे लिए क्या परिणाम होंगे। मैं तुम्हें धमकी नहीं दे रहा; यह तथ्यों की बात है। मेरे सिवाय कोई भी मनुष्य की प्रकृति की थाह नहीं पा सकता है, और वे सभी, इस बात से अनभिज्ञ रहते हुए कि उनकी वफ़ादारी अशुद्ध है, सोचते हैं कि वे मेरे प्रति वफ़ादार हैं। ये अशुद्धताएँ लोगों को बर्बाद कर देंगी क्योंकि वे बड़े लाल अजगर का एक षड़यंत्र हैं। यह मेरे द्वारा बहुत पहले स्पष्ट

कर दिया गया था; मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ, तो मैं इतनी-सी आसान चीज़ को कैसे नहीं समझ सकता? तेरे इरादों को देखने के लिए मैं तेरे रक्त और मांस में घुसने में सक्षम हूँ। मनुष्य की प्रकृति को समझना मेरे लिए मुश्किल नहीं है, किन्तु लोग, यह सोचते हुए चालाक बनने की कोशिश करते हैं कि उनके इरादों को उनके अलावा और कोई नहीं जानता। क्या वे नहीं जानते कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर आकाश और पृथ्वी और सभी चीज़ों के भीतर विद्यमान है?

मैं बिल्कुल अंत तक अपने पुत्र से प्रेम करूँगा और मैं सदा-सदा के लिए बड़े लाल अजगर और शैतान से नफ़रत करूँगा। मेरी ताड़ना उन सभी पर पड़ेगी जो मेरी अवहेलना करते हैं और एक भी दुश्मन को छोड़ा नहीं जाएगा। मैं पहले कह चुका हूँ, "मैं सिय्योन में एक बड़ा पत्थर रखता हूँ। विश्वासियों के लिए, यह पत्थर उनके निर्माण की नींव है। जो विश्वास नहीं करते हैं उनके लिए, यह एक चट्टान है जिससे वे ठोकर खाते हैं। शैतान के पुत्रों के लिए, यह वह पत्थर है जो उन्हें कुचल कर मार देता है।" इन वचनों को केवल मैंने ही पहले नहीं कहा है, बल्कि कई लोगों ने इनकी भविष्यवाणी की है और कई लोगों ने इस युग में इन्हें पढ़ा है। इसके अलावा, कुछ लोगों ने इन वचनों को समझाने की कोशिश की है, किन्तु किसी ने पहले कभी इस रहस्य को उद्‌घाटित नहीं किया है, क्योंकि यह कार्य केवल अंत के दिनों के वर्तमान समय के दौरान ही किया जाता है। इसलिए, भले ही कुछ लोगों ने इन वचनों को समझाने की कोशिश की है, किन्तु उनकी सारी व्याख्याएँ भ्रांतियाँ हैं। आज, मैं तुम लोगों के लिए पूरा अर्थ प्रकट करता हूँ ताकि तुम लोग मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए मेरी गवाही देने की गंभीरता को, और ऐसा करने के मेरे उद्देश्य को जान सको। मैं सिय्योन में एक बड़ा पत्थर रखता हूँ और यह पत्थर मेरे उन ज्येष्ठ पुत्रों को संदर्भित करता है जिनकी गवाही दी जा रही है। "बड़ा" शब्द का यह अर्थ नहीं है कि यह गवाही देना किसी विशाल पैमाने पर किया जाता है, बल्कि यह है कि मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए गवाही देने में, अनेक सेवा करने वाले पीछे हट जाएँगे। यहाँ, "जो विश्वास नहीं करते हैं" उन लोगों को संदर्भित करता है जो पीछे हटते हैं क्योंकि मेरे पुत्र की गवाही दी जाती है, इसलिए यह पत्थर इस तरह के व्यक्ति के लिए एक रुकावट वाली चट्टान है। मैं कहता हूँ कि यह एक चट्टान है क्योंकि इस तरह के व्यक्ति को मेरे हाथ से मार गिराया जाएगा, इसलिए यह चट्टान जो लोगों को ठोकर लगने का कारण बनती है, गिरने या कमजोर होने के संबंध में नहीं कही जाती है, बल्कि मेरे हाथ से मार गिराए जाने के संबंध में कही जाती है। "विश्वासियों के लिए, यह पत्थर उनके निर्माण की नींव है" में "विश्वासियों" उन सेवा करने वालों को संदर्भित करता है जो वफ़ादार हैं, और "उनके निर्माण

की नींव" उन अनुग्रह और आशीषों को संदर्भित करता है जो वे मुझे वफादार सेवा प्रदान करने के बाद प्राप्त करेंगे। ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही दी जा चुकी है यह दिखाता है कि यह संपूर्ण पुराना युग जल्दी ही गुज़र जाएगा, और यह शैतान के राज्य के विनाश का प्रतीक है; इसलिए, अन्य जातियों के लिए यह चट्टान है जो उन्हें कुचल कर मार देती है। इसलिए सभी राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े करना संपूर्ण दुनिया के पूर्ण नवीकरण को संदर्भित करता है; पुराना गुज़र जाएगा और नया स्थापित किया जाएगा—"टुकड़े-टुकड़े करना" का यही असली अर्थ है। क्या तुम लोगों की समझ में आया? इस अंतिम चरण में जो कार्य मैं करता हूँ उसका खुलासा बस इन कुछ वचनों द्वारा किया जा सकता है। यह मेरा चमत्कारिक कर्म है और तुमलोगों को मेरे वचनों में निहित मेरी इच्छाओं को समझना चाहिए।

अध्याय 119

तुम सभी लोगों को मेरे इरादे समझने चाहिए, और तुम सभी लोगों को मेरी मनोदशा समझनी चाहिए। अब सिय्योन लौटने के लिए तैयार होने का समय है। मेरा इसके अलावा कुछ भी करने का मन नहीं है। मैं केवल जल्दी ही किसी दिन तुम लोगों से पुन: मिलने और सिय्योन में हर पल और हर घड़ी तुम लोगों के साथ बिताने की आशा करता हूँ। मैं संसार से नफ़रत करता हूँ, मैं देह से नफ़रत करता हूँ, और इससे भी बढ़कर, मैं पृथ्वी पर हर इंसान से नफ़रत करता हूँ। मैं उन्हें देखने का इच्छुक नहीं हूँ, क्योंकि वे सभी राक्षसों जैसे हैं, जिनमें मानव-प्रकृति का जरा-सा भी निशान नहीं है। मैं धरती पर रहने का इच्छुक नहीं हूँ; मैं सभी प्राणियों से नफ़रत करता हूँ, मैं उन सभी से नफ़रत करता हूँ, जो मांस और रक्त के हैं। समस्त पृथ्वी से लाशों की दुर्गंध आती है; मैं तुरंत सिय्योन लौटना चाहता हूँ, ताकि पृथ्वी से लाशों की समस्त दुर्गंध हटा सकूँ और संपूर्ण पृथ्वी को अपने लिए प्रशंसा से भर दूँ। मैं सिय्योन लौटूँगा, मैं देह और संसार से अलग हो जाऊँगा, और कोई भी मेरे रास्ते में खड़ा नहीं हो सकता। मनुष्य का वध करने वाला मेरा हाथ भावना से रहित है! अब से कोई भी कलीसिया के निर्माण के बारे में बात नहीं कर सकता। अगर कोई करेगा, तो मैं उन्हें माफ़ नहीं करूँगा। (ऐसा इसलिए है, क्योंकि अब मेरे ज्येष्ठ पुत्रों के लिए गवाही देने का समय है, और यह राज्य के निर्माण का समय है; जो कोई कलीसिया के निर्माण की बात करता है, वह राज्य के निर्माण को ढहा रहा है और मेरे प्रबंधन को बाधित कर रहा है।) सब तत्पर है, सब तैयार है; अगर कुछ बाकी बचा है तो वह है ज्येष्ठ पुत्रों का उत्कर्ष करना और उनकी गवाही देना। जब वह हो जाएगा, तो मैं एक पल की

भी देरी किए बिना और तरीके पर विचार किए बिना, तुरंत सिय्योन वापस लौट जाऊँगा—वह जगह, जिसे तुम लोग दिन-रात अपने मन में रखते हो। केवल यह मत देखो कि वर्तमान दुनिया कैसे जारी है, सुचारु और स्थिर। बल्कि यह समस्त कार्य सिय्योन लौटने का कार्य है, इसलिए अभी इन चीज़ों पर ध्यान मत दो; जब सिय्योन लौटने का दिन आएगा, तो सब पूरा हो जाएगा। कौन शीघ्र सिय्योन लौटने की इच्छा नहीं रखता? कौन नहीं चाहता कि पिता और पुत्रों का शीघ्र पुनर्मिलन हो? सांसारिक सुख कितने भी आनंददायक क्यों न हों, वे हमारी देह को पकड़े नहीं रह सकते; हम अपनी देह का अतिक्रमण करेंगे और एक-साथ सिय्योन लौटेंगे। कौन बाधा डालने का साहस करता है? कौन अवरोध पैदा करने का साहस करता है? मैं निश्चित रूप से उन्हें माफ़ नहीं करूँगा! मैं सभी बाधाएँ हटा दूँगा। (इसी कारण से मैं कहता हूँ कि मैं सीधे सिय्योन नहीं लौट सकता। मैं यह स्वच्छता-कार्य कर रहा हूँ, और इसी के साथ मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही भी दे रहा हूँ; ये दोनों कार्य एक-साथ चल रहे हैं। जब स्वच्छता-कार्य पूरा हो जाएगा, तो वह मेरे लिए ज्येष्ठ पुत्रों को प्रकट करने का समय होगा। "बाधाएँ" बड़ी संख्या वाले सेवा-कर्मी हैं, इसीलिए मैं कहता हूँ कि ये दोनों कार्य साथ-साथ हो रहे हैं।) मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपने साथ पूरे ब्रह्मांड में और पृथ्वी के छोर तक, पहाड़ों और नदियों और सभी चीजों के पार ले जाऊँगा; कौन इसमें अड़चन डालने का साहस करता है? कौन बाधा डालने का साहस करता है? मेरा हाथ किसी भी मनुष्य को आसानी से नहीं छोड़ता; अपने ज्येष्ठ पुत्रों को छोड़कर, मैं सभी पर क्रोधित होता हूँ और सभी को शाप देता हूँ। संपूर्ण भूमि पर एक भी मनुष्य नहीं है, जो मेरे आशीष प्राप्त करता है; सभी मेरा शाप पाते हैं। दुनिया के सृजन के समय से ही मैंने किसी को आशीष नहीं दिया है; यहाँ तक कि जब मैंने आशीष दिए भी हैं, तो वे केवल वचन रहे हैं, वास्तविकता कभी नहीं रहे, क्योंकि मैं शैतान से अत्यंत नफ़रत करता हूँ; मैं उसे कभी आशीष नहीं दूँगा, केवल उसे दंडित करूँगा। केवल अंत में, जब मैं शैतान पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर लूँगा और मेरी पूरी जीत हो जाएगी, उसके बाद मैं सभी वफ़ादार सेवाकर्मियों को भौतिक आशीष दूँगा, और उन्हें मेरी प्रशंसा करने में आनंद प्राप्त करने दूँगा, क्योंकि मेरा समस्त कार्य पूरा हो चुका होगा।

निस्संदेह, मेरा समय दूर नहीं है। छह-हजार-वर्षीय प्रबंधन योजना तुम लोगों की आँखों के सामने पूरी होने वाली है। (वास्तव में यह तुम लोगों की आँखों के सामने है। यह कोई पूर्वकल्पना नहीं है; तुम इसे मेरी मनोदशा से देख सकते हो।) मैं अपने ज्येष्ठ पुत्रों को तुरंत सिय्योन में घर ले जाऊँगा। कुछ लोग कहेंगे, "जब यह केवल ज्येष्ठ पुत्रों के लिए है, तो इसमें छह हजार वर्ष क्यों लगते हैं? और इतने सारे लोगों को क्यों

बनाया गया?" मैंने पहले भी कहा है कि मेरा सब-कुछ मूल्यवान है। मेरे ज्येष्ठ पुत्र और भी अधिक मूल्यवान कैसे नहीं हो सकते? मैं सभी को अपनी सेवा करने के लिए जुटाऊँगा, और इसके अलावा, मैं अपना सामर्थ्य प्रकट करूँगा, ताकि प्रत्येक व्यक्ति देख सके कि संपूर्ण ब्रह्मांड की दुनिया में एक भी वस्तु ऐसी नहीं है जो हमारे हाथों में नहीं है, एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो हमारी सेवा में नहीं है, और एक भी चीज़ ऐसी नहीं है जो हमारी उपलब्धि के लिए नहीं है। मैं सब-कुछ हासिल करूँगा। मेरे लिए समय की कोई अवधारणा नहीं है; यद्यपि मेरा आशय अपनी योजना और कार्य छह हजार वर्षों में पूरा करने का है, फिर भी मेरे लिए सब बंधनमुक्त और स्वतंत्र है। यदि यह छह हजार वर्ष से कम भी हो, तो मेरे विचार में यदि समय आ गया है, तो कौन विरोध का एक शब्द भी कहने का साहस करेगा? कौन इच्छानुसार खड़े होने और आलोचना करने की हिम्मत करेगा? मेरा कार्य है, मैं स्वयं उसे करता हूँ; मेरा समय है, मैं स्वयं उसे व्यवस्थित करता हूँ। कोई व्यक्ति, कोई मामला, कोई चीज़ अपनी इच्छानुसार कार्य करने का साहस नहीं करती; मैं सबसे अपना अनुसरण करवाऊँगा। मेरे लिए कुछ सही या ग़लत नहीं है; यदि मैं कहता हूँ कि कोई चीज़ सही है, तो वह निश्चित रूप से सही है; यदि मैं कहता हूँ कि कोई चीज़ ग़लत है, तो वह भी वैसी ही है। मुझे मापने के लिए तुम्हें सदैव मानव-धारणाओं का उपयोग नहीं करना चाहिए! मैं कहता हूँ कि मैं और ज्येष्ठ पुत्र एक-साथ धन्य हैं—कौन समर्पण करने से मना करने का साहस करता है? मैं तुम्हें मौके पर ही नष्ट कर दूँगा! तुम समर्पण करने से मना करते हो! तुम विद्रोही हो! मैं बस किसी भी मनुष्य के लिए दया से रहित हूँ, और मेरी नफ़रत पहले ही अपनी सीमा पर पहुँच चुकी है; मैं बस अब और सहिष्णु नहीं हो सकता। जहाँ तक मेरा संबंध है, संपूर्ण ब्रह्मांड की दुनिया को तत्काल पूर्णतः नष्ट कर दिया जाना चाहिए—केवल तभी मेरा महान कार्य पूरा होगा, केवल तभी मेरी प्रबंधन योजना पूरी होगी; और केवल तभी मेरे हृदय से घृणा दूर होगी। अब मुझे केवल अपने ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही देने की परवाह है। मैं अन्य सभी मामले बगल में रख दूँगा; मैं महत्वपूर्ण कार्य पहले करूँगा, और उसके बाद मैं गौण कार्य करूँगा। ये मेरे कार्य के चरण हैं, जिनका किसी को भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए; सबको वही करना चाहिए जो मैं कहता हूँ, वरना ऐसा न हो कि वे मेरे शाप के लक्ष्य बन जाएँ।

अब जबकि मेरा कार्य संपन्न हो गया है, मैं आराम कर सकता हूँ। अब से मैं और कार्य नहीं करूँगा, बल्कि अपने ज्येष्ठ पुत्रों को वह सब करने के लिए कहूँगा, जो मैं चाहता हूँ, क्योंकि मेरे ज्येष्ठ पुत्र मैं हूँ, मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरा व्यक्तित्व हैं। यह जरा भी ग़लत नहीं है; निर्णय करने के लिए धारणाओं का उपयोग मत

करो। ज्येष्ठ पुत्रों को देखना मुझे देखना है, क्योंकि हम एक ही हैं। जो कोई भी हमें अलग करता है, वह इस प्रकार मेरा विरोध करता है, और मैं उसे क्षमा नहीं करूँगा। मेरे वचनों में रहस्य हैं, जो मनुष्य की समझ से बाहर हैं। केवल वे ही मुझे व्यक्त कर सकते हैं, जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, कोई अन्य नहीं; यह मेरे द्वारा निर्धारित किया गया है, और कोई इसे नहीं बदल सकता। मेरे वचन समृद्ध, व्यापक और अथाह हैं। सभी को मेरे वचनों पर बहुत श्रम करना चाहिए, अकसर उन पर विचार करने का प्रयास करना चाहिए, और एक भी वचन या वाक्य नहीं छोड़ना चाहिए—अन्यथा लोग त्रुटि के तहत श्रम करेंगे, और मेरे वचनों को ग़लत समझा जाएगा। मैंने कहा है कि मेरा स्वभाव अपराध सहन नहीं करता, जिसका अर्थ है कि मेरे ज्येष्ठ पुत्रों का, जिनकी कि गवाही दी जा चुकी है, विरोध नहीं किया जा सकता। मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरे स्वभाव के हर पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए जब मैं ज्येष्ठ पुत्रों की गवाही देना शुरू करता हूँ, तब पवित्र तुरही बजती है; और इस प्रकार पवित्र तुरही अब से जन-समुदाय के लिए मेरे स्वभाव की क्रमिक घोषणा होगी। दूसरे शब्दों में, जब ज्येष्ठ पुत्रों को प्रकट किया जाता है, तो यह तब होता है, जब मेरे स्वभाव को प्रकट किया जाता है। कौन इसकी थाह पा सकता है? मैं कहता हूँ कि जिन रहस्यों को मैंने प्रकट किया है, उनमें अभी भी ऐसे रहस्य हैं, जिन्हें लोग नहीं खोल सकते। तुम लोगों में से किसने वास्तव में इन वचनों का सही अर्थ समझने का प्रयास किया है? क्या मेरा स्वभाव किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व है, जैसा कि तुम लोगों ने कल्पना की है? ऐसा सोचना बहुत बड़ी गलती है! आज जो भी मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को देखता है, वह आशीष का पात्र है, और वह मेरे स्वभाव को देखता है—यह बिल्कुल सही है। मेरे ज्येष्ठ पुत्र मेरा पूरा प्रतिनिधित्व करते हैं; बिना किसी संदेह के वे मेरा व्यक्तित्व हैं। किसी को भी इस पर कोई शक नहीं हो सकता! आज्ञाकारियों को अनुग्रह के साथ आशीष दिया जाता है, और विद्रोहियों को शाप दिया जाता है। मैं यही आदेश देता हूँ, और कोई भी व्यक्ति इसे बदल नहीं सकता!

अध्याय 120

सिय्योन! ख़ुशी मनाओ! सिय्योन! गाओ-बजाओ! मैं जीतकर लौटा हूँ, मैं विजयी होकर लौटा हूँ! सभी लोगो! जल्दी से सही ढंग से पंक्तिबद्ध हो जाओ! सृष्टि की सभी चीज़ो! अब रुक जाओ, क्योंकि मेरा व्यक्तित्व पूरे ब्रह्मांड के सामने है और दुनिया के पूर्व में प्रकट हो रहा है! कौन आराधना में घुटने नहीं टेकने का साहस करता है? कौन मुझे सच्चा परमेश्वर नहीं कहने का साहस करता है? कौन श्रद्धा से नहीं देखने

का साहस करता है? कौन स्तुति नहीं करने का साहस करता है? कौन ख़ुशी नहीं मनाने का साहस करता है? मेरे लोग मेरी आवाज सुनेंगे, और मेरे पुत्र मेरे राज्य में जीवित रहेंगे! पर्वत, नदियाँ और सभी चीज़ें निरंतर जयजयकार करेंगी, और बिना रुके छलाँग लगाएँगी। इस समय कोई पीछे हटने का साहस नहीं करेगा, और कोई भी प्रतिरोध में उठने का साहस नहीं करेगा। यह मेरा अद्भुत कर्म है, और इससे भी बढ़कर, यह मेरा महान सामर्थ्य है! मैं अपने आपको सबसे उनके हृदयों में सम्मानित करवाऊँगा और इससे भी बढ़कर, मैं सबसे अपनी स्तुति करवाऊँगा। यह मेरी छह हजार वर्षीय प्रबंधन योजना का अंतिम उद्देश्य है, और यही मैंने नियत किया है। एक भी व्यक्ति, वस्तु या घटना मेरे प्रतिरोध में उठने या मेरा विरोध करने का साहस नहीं करती। मेरे सभी लोग मेरे पर्वत पर (दूसरे शब्दों में, उस दुनिया में, जिसे मैं बाद में बनाऊँगा) चले जाएँगे और वे मेरे सामने समर्पण करेंगे, क्योंकि मुझमें प्रताप और न्याय है, और मैं अधिकार रखता हूँ। (इसका आशय तब से है, जब मैं शरीर में होता हूँ। मेरे पास देह में भी अधिकार है, किंतु चूँकि देह में समय और स्थान की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं किया जा सकता, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि मैंने पूरी महिमा प्राप्त कर ली है। यद्यपि मैं देह में ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करता हूँ, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि मैंने महिमा प्राप्त कर ली है। केवल जब मैं सिय्योन लौटूँगा और अपना रूप बदलूँगा, तभी यह कहा जा सकेगा कि मैं अधिकार रखता हूँ—अर्थात् यह कि मैंने महिमा प्राप्त कर ली है।) मेरे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं होगा। मेरे मुँह के वचनों से सब नष्ट हो जाएँगे, और मेरे मुँह के वचनों से सब अस्तित्व में आ जाएँगे और पूर्ण बनाए जाएँगे। ऐसा महान मेरा सामर्थ्य है और ऐसा मेरा अधिकार है। चूँकि मैं सामर्थ्य से भरपूर और अधिकार से परिपूर्ण हूँ, इसलिए कोई व्यक्ति मुझे बाधित करने का साहस नहीं कर सकता। मैंने पहले ही हर चीज़ पर विजय प्राप्त कर ली है, और मैंने विद्रोह के सभी पुत्रों पर जीत हासिल कर ली है। मैं सिय्योन लौटने के लिए अपने ज्येष्ठ पुत्रों को अपने साथ ले जा रहा हूँ। मैं अकेला सिय्योन नहीं लौट रहा हूँ। इसलिए सभी मेरे ज्येष्ठ पुत्रों को देखेंगे और इस प्रकार अपने हृदय में मेरे लिए श्रद्धा का भाव विकसित करेंगे। ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करने का यही मेरा उद्देश्य है, और दुनिया के निर्माण के समय से ही यह मेरी योजना रही है।

जब सब-कुछ तैयार हो जाएगा, तो वह मेरे सिय्योन लौटने का दिन होगा, और वह दिन सभी लोगों द्वारा मनाया जाएगा। जब मैं सिय्योन लौटूँगा, तो पृथ्वी पर सभी चीज़ें चुप हो जाएँगी, और पृथ्वी पर सब शांत होगा। जब मैं सिय्योन लौट जाऊँगा, तो हर चीज़ पुन: अपने मूल रूप में आ जाएगी। फिर मैं सिय्योन

में अपना कार्य शुरू करूँगा। मैं दुष्टों को दंड दूँगा और अच्छे लोगों को इनाम दूँगा, और मैं अपनी धार्मिकता को लागू करूँगा और अपने न्याय को कार्यान्वित करूँगा। मैं हर चीज़ पूरी करने के लिए अपने वचनों का उपयोग करूँगा, और सभी लोगों और सभी चीज़ों को अपने ताड़ना देने वाले हाथ का अनुभव करवाऊँगा, और मैं सभी लोगों को अपनी पूरी महिमा, अपनी पूरी बुद्धि, अपनी पूरी उदारता दिखवाऊँगा। कोई भी व्यक्ति आलोचना करने के लिए उठने का साहस नहीं करेगा, क्योंकि मुझमें सभी चीज़ें पूरी होती हैं, और यहाँ, हर आदमी मेरी पूरी गरिमा देखे और मेरी पूरी जीत का स्वाद ले, क्योंकि मुझमें सभी चीज़ें अभिव्यक्त होती हैं। इससे मेरे महान सामर्थ्य और मेरे अधिकार को देखना संभव है। कोई मुझे अपमानित करने का साहस नहीं करेगा, और कोई मुझे बाधित करने का साहस नहीं करेगा। मुझमें सब खुला हुआ है। कौन कुछ छिपाने का साहस करेगा? मैं निश्चित रूप से उस व्यक्ति पर दया नहीं दिखाऊँगा! ऐसे अभागों को मेरी गंभीर सजा मिलनी चाहिए और ऐसे बदमाशों को मेरी नजरों से दूर कर दिया जाना चाहिए। मैं ज़रा-सी भी दया न दिखाते हुए और उनकी भावनाओं का ज़रा भी ध्यान न रखते हुए, उन पर लोहे की छड़ी से शासन करूँगा और मैं उनका न्याय करने के लिए अपने अधिकार का उपयोग करूँगा, क्योंकि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ, जो भावना से रहित है और प्रतापी है और जिसका अपमान नहीं किया जा सकता। सभी को यह समझना और देखना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि "बिना कारण या तर्क" के मेरे द्वारा मार डाले और नष्ट कर दिए जाएँ, क्योंकि मेरी छड़ी उन सभी को मार डालेगी, जो मुझे अपमानित करते हैं। मुझे इस बात की परवाह नहीं वे मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं को जानते हैं या नहीं; इसका मेरे लिए कोई महत्व नहीं होगा, क्योंकि मेरा व्यक्तित्व किसी के भी द्वारा अपमानित किया जाना बरदाश्त नहीं करता। इसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि मैं एक शेर हूँ; जिस किसी को भी छूता हूँ, उसे मार डालता हूँ। इसी कारण से ऐसा कहा जाता है कि अब यह कहना कि मैं करुणा और प्रेम का परमेश्वर हूँ, मेरी निंदा करना है। सारांश यह कि मैं मेमना नहीं, बल्कि शेर हूँ। कोई मुझे अपमानित करने का साहस नहीं करता; जो कोई मेरा अपमान करेगा, मैं बिना दया के तुरंत उसे मृत्युदंड दूँगा! यह मेरा स्वभाव दिखाने के लिए पर्याप्त है। इसलिए, अंतिम युग में लोगों का एक बड़ा समूह पीछे हट जाएगा, और यह लोगों के लिए सहना मुश्किल होगा, लेकिन जहाँ तक मेरा संबंध है, मैं आराम से और खुश हूँ और मैं इसे कठिन कार्य बिलकुल नहीं समझता। ऐसा मेरा स्वभाव है।

मुझे आशा है कि सभी लोग जो कुछ भी मेरा है, उसका पालन करने के लिए विनम्र हृदय रखेंगे;

अगर वे ऐसा करेंगे, तो मैं निश्चित रूप से मानवजाति को बहुत आशीष दूँगा, क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा है, जो मेरे अनुरूप हैं, उन्हें संरक्षित किया जाएगा, जबकि जो मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण है, वे शापित होंगे। मैंने यह नियत किया है, और कोई इसे बदल नहीं सकता। मैंने जिन चीज़ों को निर्धारित किया है, ये वे चीज़ें हैं जिन्हें मैंने पूरा कर दिया है और जो कोई उनके विरुद्ध जाएगा, उसे तुरंत ताड़ना दी जाएगी। मेरे पास वह सब-कुछ है, जिसकी मुझे सिय्योन में आवश्यकता है और वह सब-कुछ है, जिसकी मुझे इच्छा है। सिय्योन में दुनिया का कोई संकेत नहीं है और दुनिया की तुलना में वह एक समृद्ध और भव्य महल है; लेकिन किसी ने उसमें प्रवेश नहीं किया है, और इसलिए, मनुष्य की कल्पना में वह बिलकुल भी अस्तित्व में नहीं है। सिय्योन में जीवन पृथ्वी के जीवन जैसा नहीं है; पृथ्वी पर जीवन खाना, पहनना, खेलना और खुशी की तलाश करना है, जबकि सिय्योन में यह बहुत भिन्न है। यह आनंद में डूबे पिता और पुत्रों का जीवन है, जो सदैव ब्रह्मांड के पूरे स्थान को भरे रहते हैं, लेकिन सदैव एकजुट होकर एक-साथ आते भी हैं। अब जबकि बात यहाँ तक आ गई है, तो मैं तुम लोगों को बताऊँगा कि सिय्योन कहाँ स्थित है। सिय्योन वहाँ है जहाँ मैं रहता हूँ, यह मेरे व्यक्तित्व का ठिकाना है। इसलिए, सिय्योन एक पवित्र स्थान होना चाहिए, और यह पृथ्वी से बहुत दूर होना चाहिए। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मैं लोगों, चीज़ों और पृथ्वी के मामलों से नफ़रत करता हूँ, और मैं देह के खाने, पीने, खेलने और सुख तलाशने से नफ़रत करता हूँ, क्योंकि सांसारिक सुख कितने ही आनंददायक क्यों न हों, उनकी सिय्योन के जीवन के साथ तुलना नहीं की जा सकती; यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का अंतर है, और इन दोनों की तुलना करने का कोई तरीका नहीं है। पृथ्वी पर मनुष्य द्वारा कई पहेलियाँ हल न कर सकने का कारण यह है कि लोगों ने सिय्योन के बारे में कुछ नहीं सुना है। अच्छा, सिय्योन ठीक-ठीक कहाँ है? क्या यह किसी अन्य ग्रह पर है, जैसा कि लोग इसके होने की कल्पना करते हैं? नहीं! यह केवल मनुष्य के मन की फ़ंतासी है। तीसरा स्वर्ग, जिसका मैंने उल्लेख किया है, मनुष्यों द्वारा पूर्वाभासी अर्थ वाला माना जाता है, किंतु मनुष्य जो अपनी धारणाओं में समझते हैं, वह मेरे अर्थ के बिलकुल विपरीत है। यहाँ उल्लिखित तीसरा स्वर्ग जरा-सा भी मिथ्या नहीं है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मैं सूर्य, चंद्रमा, तारों और खगोलीय पिंडों को नष्ट नहीं करूँगा, और मैं स्वर्ग और पृथ्वी को नहीं मिटाऊँगा। क्या मैं अपने निवास-स्थान को नष्ट कर सकता हूँ? क्या मैं सिय्योन पर्वत को मिटा सकता हूँ? क्या यह हास्यास्पद नहीं है? तीसरा स्वर्ग मेरा निवास-स्थान है; यह सिय्योन पर्वत है, और यह परम तत्त्व है। (मैं क्यों कहता हूँ कि यह परम तत्व है? वह इसलिए, क्योंकि अब जो मैं कहता हूँ, वह मनुष्य द्वारा बिलकुल भी

नहीं समझा जा सकता; वह केवल इसे सुन सकता है। मनुष्य की सोच का दायरा इसे समेट ही नहीं सकता, और इसलिए मैं अब सिय्योन के बारे में और कुछ नहीं कहूँगा, कहीं ऐसा न हो कि लोग इसे एक कल्पित कथा मानने लगें।)

मेरे सिय्योन लौटने के बाद, पृथ्वी के लोग उसी तरह मेरी स्तुति करते रहेंगे, जैसा कि वे अतीत में करते थे। वे वफ़ादार सेवाकर्मी मुझे सेवा प्रदान करने के लिए हमेशा की तरह प्रतीक्षा करेंगे, किंतु उनका कार्य समाप्त हो गया होगा। सर्वोत्तम चीज़ जो वे कर सकते हैं, वह है पृथ्वी पर मेरी उपस्थिति की परिस्थितियों पर चिंतन करना। उस समय मैं उन लोगों पर आपदा लाना शुरू कर दूँगा, जो विपदा से पीड़ित होंगे; फिर भी हर कोई विश्वास करता है कि मैं एक धार्मिक परमेश्वर हूँ। मैं निश्चित रूप से उन वफ़ादार सेवा-कर्मियों को दंडित नहीं करूँगा, बल्कि उन्हें केवल अपना अनुग्रह प्राप्त करने दूँगा। क्योंकि मैंने कहा है कि मैं सभी दुष्कर्मियों को दंड दूँगा, और कि अच्छे कर्म करने वालों को मेरे द्वारा प्रदान किए जाने वाले भौतिक आनंद मिलेंगे, जो यह प्रदर्शित करता है कि मैं स्वयं धार्मिकता और ईमानदारी का परमेश्वर हूँ। सिय्योन लौटने पर मैं दुनिया के प्रत्येक देश की ओर मुड़ना शुरू करूँगा; मैं इस्राएलियों का उद्धार करूँगा और मिस्रवासियों को ताड़ना दूँगा। यह मेरे कार्य का अगला चरण है। तब मेरा कार्य वर्तमान कार्य जैसा नहीं होगा : यह देह में किया जाने वाला कार्य नहीं होगा, बल्कि पूरी तरह से देहातीत होगा—और चूँकि मैंने बोला है, इसलिए यह किया जाएगा; और जैसा मैंने आदेश दिया है, वैसा ही यह होगा। जो कुछ बोला जाता है, जब तक वह मेरे मुख से बोला जाता है, वह तुरंत वास्तविकता में पूरा हो जाएगा; यह मेरे वचन के बोले जाने और उसके उसी समय पूरा हो जाने का वास्तविक अर्थ है, क्योंकि मेरा वचन अपने आपमें अधिकार है। अब मैं पृथ्वी के लोगों को कुछ सुराग देने के तरीके के रूप में कुछ सामान्य चीज़ों के बारे में बता रहा हूँ, ताकि वे उन्हें अजीबोगरीब ढंग से न समझें। जब वह समय आएगा, तो हर चीज़ मेरे द्वारा व्यवस्थित की जाएगी, और कोई भी मनमाने ढंग से काम न करे, वरना कहीं ऐसा न हो कि वे मेरे हाथों मारे जाएँ। मनुष्यों की कल्पनाओं में, जो कुछ मैं बोलता हूँ वह अस्पष्ट है, क्योंकि अंततः मनुष्य के सोचने का तरीका सीमित है, और मनुष्य का विचार मेरे कहे से इतना दूर है, जितनी पृथ्वी स्वर्ग से। इसलिए, कोई भी इसे समझ नहीं सकता। करने के लिए केवल एक ही चीज़ है—जो कुछ मैं कहता हूँ, उसके अनुरूप हो जाना; यह चीज़ों का अनिवार्य घटना-क्रम है। मैंने कहा है : "अंत के दिनों में मेरे लोगों को उत्पीड़ित करने के लिए दरिंदा उभरेगा, और जो लोग मृत्यु से डरते हैं, उन्हें उस दरिंदे द्वारा उठाकर

ले जाए जाने के लिए एक मुहर से चिह्नित किया जाएगा। जिन्होंने मुझे देखा है, उन्हें उस दरिंदे द्वारा मार दिया जाएगा।" इन वचनों में "दरिंदा" निस्संदेह मानवजाति को धोखा देने वाले शैतान को संदर्भित करता है। कहने का अर्थ यह है कि जब मैं सिय्योन लौटूँगा, तो सेवाकर्मियों का एक बड़ा समूह पीछे हट जाएगा; अर्थात्, वे दरिंदे द्वारा उठा लिए जाएँगे। ये प्राणी मेरी शाश्वत ताड़ना प्राप्त करने के लिए अथाह गड्ढे में गिर जाएँगे। "जिन्होंने मुझे देखा है" उन वफादार सेवाकर्मियों को संदर्भित करता है, जिन्हें मेरे द्वारा जीता जा चुका है। "मुझे देखना" मेरे द्वारा उन लोगों को जीत लिए जाने को संदर्भित करता है। "दरिंदे द्वारा मार दिया जाएगा" शैतान को संदर्भित करता है, जो मेरे द्वारा जीत लिए जाने के बाद मेरा विरोध करने के लिए उठने का साहस नहीं कर रहा है। दूसरे शब्दों में, शैतान इन सेवाकर्मियों पर कोई कार्य करने का साहस नहीं करेगा, और इसलिए, इन लोगों की आत्माओं को बचा लिया जाएगा; यह मेरे प्रति वफ़ादार होने की उनकी योग्यता के कारण कहा गया है, और इसका अर्थ यह है कि वे वफ़ादार सेवाकर्मी मेरा अनुग्रह और मेरा आशीष प्राप्त करने में सक्षम होंगे। इसलिए, मैं कहता हूँ कि उनकी आत्माओं को बचा लिया जाएगा। (यह तीसरे स्वर्ग में आरोहण को संदर्भित नहीं करता, जो केवल मनुष्य की एक धारणा है।) किंतु उन दुष्ट सेवकों को शैतान द्वारा पुनः बाँध लिया जाएगा और फिर उन्हें अथाह गड्ढे में फेंक दिया जाएगा। यह उन्हें मेरा दंड है; यह उनका प्रतिफल है, और यह उनके पापों का इनाम है।

जैसे-जैसे मेरे कार्य की गति तेज हो रही है, पृथ्वी पर मेरा समय धीरे-धीरे घट रहा है। मेरे सिय्योन लौटने की तारीख़ क़रीब आ रही है। जब पृथ्वी पर मेरा कार्य समाप्त हो जाएगा, तो वह मेरा सिय्योन लौटने का समय होगा। मैं पृथ्वी पर बिलकुल भी नहीं रहना चाहता, किंतु अपने प्रबंधन के वास्ते, अपनी योजना के वास्ते, मैंने सभी पीड़ाएँ सहन की हैं। आज, समय पहले ही आ चुका है। मैं अपनी गति तेज कर दूँगा, और कोई भी मेरे साथ नहीं रह पाएगा। चाहे मनुष्य इसे समझ पाए या नहीं, मैं तुम लोगों को विस्तार से वह सब बताऊँगा, जिसे मनुष्य समझने में असमर्थ है, किंतु फिर भी जिसे तुम पृथ्वी के लोगों को जानना चाहिए। इसलिए, मैं कहता हूँ कि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ, जो समय और स्थान से परे है। यदि मेरा ज्येष्ठ पुत्रों को प्राप्त करने और इस प्रकार शैतान को हराने का प्रयोजन न होता, तो मैं पहले ही सिय्योन लौट चुका होता; अगर यह अन्यथा होता, तो मैंने कभी मानवजाति को बनाया ही न होता। मैं मनुष्य की दुनिया से नफ़रत करता हूँ, और मैं उन लोगों से, जो मुझसे अलग हैं, इस हद तक घृणा करता हूँ कि मैं सोचता हूँ, पूरी मानवजाति को एक ही झटके में नष्ट कर दूँ। किंतु मेरे कार्य में क्रम और संरचना, अनुपात और संयम

की भावना है, और वह बेतरतीब नहीं है। मैं जो कुछ भी करता हूँ, वह शैतान को हराने के लिए है, और इससे भी बढ़कर, वह इसलिए है, ताकि मैं यथाशीघ्र अपने ज्येष्ठ पुत्रों के साथ रह सकूँ। यह मेरा उद्देश्य है।

भाग दो
संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन
(20 फरवरी, 1992 से 1 जून, 1992)

परिचय

"संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन" स्वयं परमेश्वर की पहचान में मसीह द्वारा व्यक्त किए गए कथनों का द्वितीय भाग है। इसमें 20 फरवरी, 1992 से 1 जून 1992 तक की अवधि का वर्णन है और कुल सैंतालीस अध्याय हैं। इन कथनों में परमेश्वर के वचनों का परिप्रेक्ष्य, ढंग, विषयवस्तु पूरी तरह से "आरंभ में मसीह के कथन" से भिन्न है। "आरंभ में मसीह के कथन", लोगों के बाह्य व्यवहार और उनके साधारण आध्यात्मिक जीवन को उजागर करते और उनका मार्गदर्शन करते हैं। अंततः इसका अंत "सेवाकर्मियों के परीक्षण" से होता है। जबकि "संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन", लोगों की सेवाकर्मियों के रूप में पहचान की समाप्ति और परमेश्वर के लोगों के रूप में उनके जीवन की शुरुआत से आरंभ होता है। यह लोगों को परमेश्वर के कार्य के दूसरे शिखर में ले जाता है, जिसके दौरान वे आग की झील के परीक्षण से, मृत्यु के परीक्षण से और परमेश्वर को प्रेम करने के समय से गुजरते हैं। ये विभिन्न चरण परमेश्वर के सामने मनुष्य की कुरूपता और साथ ही उसके असली चेहरे को पूरी तरह उजागर कर देते हैं। अंततः परमेश्वर उस अध्याय को समाप्त कर देता है जहाँ वह मनुष्य से अलग होता है, इस प्रकार, लोगों के प्रथम समूह पर परमेश्वर की विजय के इस देहधारण के सभी चरणों को अंजाम देता है।

"संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन" में परमेश्वर, आत्मा के परिप्रेक्ष्य से वचन व्यक्त करता है। जिस ढंग से वह बोलता है, वह सृजित मानवजाति द्वारा अप्राप्य है। इसके अतिरिक्त, उसके वचनों की शब्दावली और शैली सुंदर और प्रेरक है, और मानव-साहित्य का कोई भी रूप उनका स्थान नहीं ले सकता। जिन वचनों से वह मनुष्य की बुराइयाँ दिखाता है, वे सटीक हैं, किसी भी दर्शनशास्त्र द्वारा उनका खंडन नहीं किया जा सकता और वे सभी लोगों से समर्पण करवाते हैं। परमेश्वर जिन वचनों से मनुष्य का

न्याय करता है वे एक पैनी तलवार की तरह लोगों की आत्मा पर इतनी गहराई से सीधे चोट करते हैं, इतने भीतर तक चीरते हैं कि उनके पास छिपने के लिए कोई जगह नहीं रहती। जिन वचनों से वह लोगों को सांत्वना देता है, उनमें दया और प्रेममयी अनुकंपा होती है, वे एक ममतामयी माँ के आलिंगन के समान स्नेही होते हैं और लोगों को पहले से कहीं अधिक सुरक्षित महसूस करवाते हैं। इन कथनों की अकेली सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस चरण के दौरान, परमेश्वर न तो यहोवा या यीशु मसीह की पहचान का और न ही अंत के दिनों के मसीह की पहचान का उपयोग करके बोलता है। बल्कि वह सृष्टिकर्ता की अपनी अंतर्निहित पहचान का उपयोग करते हुए, वह उन सभी लोगों से बोलता है, उन्हें शिक्षा देता है जो उनका अनुसरण करते हैं और उन्हें भी जिन्होंने अभी उसका अनुसरण करना शुरू नहीं किया है। यह कहना उचित है कि दुनिया के सृजन के बाद यह पहली बार है कि परमेश्वर ने समस्त मानवजाति को संबोधित किया है। इससे पहले परमेश्वर ने कभी भी इतने विस्तार से और इतने व्यवस्थित तरीके से सृजित मानवजाति से बात नहीं की है। निस्संदेह, यह भी पहली बार ही है कि उसने इतनी अधिक और इतने लंबे समय तक समस्त मानवजाति से बात की है। यह अभूतपूर्व है। इसके अलावा, ये कथन मानवता के बीच परमेश्वर द्वारा व्यक्त किया गया पहला पाठ हैं जिसमें वह लोगों को उजागर करता है, उनका मार्गदर्शन करता, उनका न्याय करता, उनसे खुलकर बात करता है और वे ऐसे पहले कथन भी हैं जिनमें परमेश्वर अपने पदचिह्नों को, उस स्थान को जिसमें वह रहता है, परमेश्वर के स्वभाव को, परमेश्वर के स्वरूप को, परमेश्वर के विचारों को और मानवता के लिए अपनी चिंता से लोगों को रूबरू कराता है। यह कहा जा सकता है कि ये ही पहले कथन हैं जो परमेश्वर ने सृजन के बाद तीसरे स्वर्ग से मानवजाति के लिए बोले हैं और पहली बार ऐसा हुआ है कि परमेश्वर ने मानवजाति हेतु वचनों के बीच अपने हृदय की वाणी प्रकट करने और व्यक्त करने के लिए अपनी अंतर्निहित पहचान का उपयोग किया है।

ये कथन गंभीर और अथाह हैं; इन्हें समझना आसान नहीं है, न ही परमेश्वर के वचनों के उद्गम और उद्देश्यों को समझना संभव है। इसलिए, कथन के बृहद् भाग को स्पष्ट करने के लिए, मसीह ने ऐसी भाषा का उपयोग करके जिसे समझना मनुष्य के लिए आसान है, प्रत्येक अध्याय के उपरांत, एक स्पष्टीकरण जोड़ा है। इन्हें कथनों के साथ जोड़कर देखने से, हर एक के लिए परमेश्वर के वचनों को समझना और जानना आसान हो जाता है। हमने इन वचनों को "संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन" का एक परिशिष्ट बना दिया है। उनमें समझने में सबसे आसान शब्दावली का उपयोग करके, मसीह स्पष्टीकरण

प्रदान करता है। इन दोनों का संयोजन दिव्यता और मानवता में परमेश्वर का आदर्श गठबंधन है। यद्यपि परिशिष्ट में परमेश्वर तीसरे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में बोलता है, लेकिन कोई इनकार नहीं कर सकता है कि ये वचन व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर द्वारा ही बोले गए थे, क्योंकि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के वचनों को स्पष्ट रूप से नहीं समझा सकता; केवल परमेश्वर ही अपने कथनों के उद्गम और उद्देश्यों को स्पष्ट कर सकता है। इसलिए, यद्यपि परमेश्वर कई साधनों का उपयोग करके बोलता है, किंतु उसके काम का लक्ष्य कभी नहीं बदलता, न ही कभी उसकी योजना का उद्देश्य बदलता है।

यद्यपि "संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन" की समाप्ति एक ऐसे अध्याय के साथ होती है जिसमें परमेश्वर मनुष्य से अलग हो जाता है, वास्तव में, इसी समय आधिकारिक तौर पर मनुष्य के बीच परमेश्वर का विजय एवं उद्धार-कार्य और लोगों को पूर्ण बनाने का कार्य अनावृत हुआ है। इस प्रकार, "संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन" को अंत के दिनों के परमेश्वर के काम की भविष्यवाणी मानना हमारे लिए अधिक उपयुक्त है। क्योंकि इसी बिंदु के बाद देहधारी मानव पुत्र ने कलीसियाओं के बीच घूमते हुए और अपने सभी लोगों को जीवन प्रदान करते हुए, उनका सिंचन और अगुआई करते हुए, आधिकारिक तौर पर काम करना और मसीह की पहचान का उपयोग करके बोलना आरंभ किया—जिसने "कलीसियाओं में भ्रमण के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन" में बहुत से कथनों को जन्म दिया।

अध्याय 1

क्या जिन लोगों ने मेरे वचनों को देखा है, वे वास्तव में उन्हें स्वीकार करते हैं? क्या तुम लोग वाकई मुझे जानते हो? क्या तुमने वाकई आज्ञाकारिता सीखी है? क्या तुम लोग ईमानदारी से मेरे लिए खपते हो? क्या तुमने बड़े लाल ड्रैगन के सामने वास्तव में मेरे लिए दृढ़ और अटल गवाही दी है? क्या तुम लोगों की भक्ति सचमुच बड़े लाल ड्रैगन को शर्मसार करती है? क्या मैं केवल अपने वचनों के परीक्षण के माध्यम से ही कलीसिया के शुद्धिकरण और मुझसे सचमुच प्रेम करने वालों को चुनने का अपना लक्ष्य हासिल कर सकता हूँ। अगर मैंने इस तरह से काम नहीं किया, तो क्या कोई मुझे जान पाएगा? कौन मेरे वचनों के द्वारा मेरी महिमा, मेरे क्रोध और मेरी बुद्धिमत्ता को जान सकता है? अपना काम शुरू करने के बाद मैं उसे अवश्य पूरा करूँगा, लेकिन फिर भी यह मैं ही हूँ, जो मनुष्यों के दिलों को उनकी गहराई तक मापता है। सच कहूँ तो, मनुष्यों में कोई ऐसा नहीं है, जो मुझे पूरी तरह से जानता हो, इसलिए मैं सभी मनुष्यों का

मार्गदर्शन करने के लिए वचनों का प्रयोग करता हूँ, ताकि इस तरह से मैं उन सबको एक नए युग में ले जा सकूँ। अंत में मैं अपना समस्त कार्य संपन्न करने के लिए वचनों का प्रयोग करूँगा, ताकि उन सबके लिए, जो मुझे ईमानदारी से प्रेम करते हैं, अपने सिंहासन के सामने जीने हेतु अपने राज्य में प्रस्तुत होने के लिए लौटने का कारण बन सकूँ। स्थिति अब वह नहीं है, जो कभी थी, और मेरा कार्य एक नए आरंभ-बिंदु में प्रवेश कर चुका है। ऐसा होने के कारण एक नया दृष्टिकोण होगा : वे सब, जो मेरा वचन देखते हैं और उसे ठीक अपने जीवन के रूप में स्वीकार करते हैं, वे लोग मेरे राज्य में हैं, और मेंरे राज्य में होने के कारण वे मेरे राज्य में परमेश्वर के लोग हैं। चूँकि वे मेरे वचनों का मार्गदर्शन स्वीकार करते हैं, अत: भले ही उन्हें परमेश्वर के लोग कहा जाता है, यह उपाधि मेरे "पुत्र" कहे जाने से किसी भी रूप में कम नहीं है। परमेश्वर के लोगों में शामिल होने के बाद सभी को मेरे राज्य में अधिकतम निष्ठा के साथ सेवा करनी चाहिए और मेरे राज्य में उन्हें अपने कर्तव्य पूरे करने चाहिए। जो कोई मेरे प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन करेगा, उसे मेरी सजा अवश्य मिलनी चाहिए। यह सभी के लिए मेरी सलाह है।

चूँकि अब हम एक नए दृष्टिकोण में प्रवेश कर चुके हैं, अत: अतीत का फिर से उल्लेख करने की ज़रूरत नहीं। फिर भी, जैसा कि मैंने पहले कहा है : मैं जो कहता हूँ, उस पर दृढ़ रहता हूँ, और जिस पर मैं दृढ़ रहता हूँ, उसे पूरा जरूर करता हूँ, और कोई इसे बदल नहीं सकता—यह असंदिग्ध है। चाहे वे मेरे द्वारा अतीत में कहे गए वचन हों या भविष्य कहे जाने वाले, मैं उन सबको एक-एक करके सच कर दूँगा, और समस्त मानव-जाति को इसे सच होते दिखाऊँगा। यह मेरे वचनों और कार्य के पीछे का सिद्धांत है। चूँकि कलीसिया का निर्माण पहले ही करवाया जा चुका है, अत: यह युग अब कलीसिया-निर्माण का नहीं है, बल्कि यह राज्य के सफल निर्माण का युग है। लेकिन चूँकि तुम लोग अभी भी पृथ्वी पर हो, इसलिए लोगों की सभाओं को "कलीसिया" के रूप में जाना जाएगा। फिर भी, कलीसिया का सार वैसा नहीं है, जैसा कभी था, यह एक कलीसिया है, जिसे सफलतापूर्वक बनाया गया है। इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरा राज्य पृथ्वी पर उतर आया है। कोई भी मेरे वचनों की जड़ नहीं पकड़ सकता, न कोई मेरे उन्हें बोलने का प्रयोजन ही जानता है। आज के मेरे बोलने के तरीके से तुम लोग एक आविर्भाव का अनुभव कर सकते हो। कुछ लोग जोर-जोर से और पीड़ा के साथ रोने लगेंगे; कुछ को यह भय लग सकता है कि मैं इस तरह से बोलता हूँ; मेरी हर गतिविधि पर नजर रखने वाले कुछ लोग रूढ़िवादी दृष्टिकोण रख सकते हैं; कुछ लोग उस समय शिकायत करने या मेरा प्रतिरोध करने के लिए पछता सकते हैं; कुछ लोग गुप्त रूप से आनंदित

हो सकते हैं कि वे कभी भी मेरे नाम से अलग न होने के कारण पुनर्जीवित कर दिए गए हैं। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं, जो बहुत पहले मेरे वचनों से अंदर तक हिल गए थे, जब तक कि वे अधमरे, मायूस और खिन्न नहीं हो गए, और अब जिनके पास मेरे द्वारा बोले गए वचनों पर ध्यान देने का साहस नहीं है, हालाँकि मैंने अपनी अभिव्यक्ति का ढंग बदल दिया है; या कुछ अन्य, जिन्होंने कभी शिकायत या संदेह न करते हुए एक निश्चित बिंदु तक निष्ठा के साथ मेरी सेवा की और आज इतने सौभाग्यशाली हैं कि छुटकारा पा गए हैं और अपने दिलों में मेरे प्रति शब्दों में व्यक्त न की जा सकने वाली कृतज्ञता अनुभव करते हैं। उपर्युक्त सभी परिस्थितियाँ हर मनुष्य पर अलग-अलग मात्रा में लागू होती हैं। लेकिन चूँकि अतीत तो अतीत है, और वर्तमान पहले ही आ चुका है, अत: याद से आतुर होकर बीते समय की चाह रखने या भविष्य के बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है। मनुष्य होने के नाते जो कोई वास्तविकता के खिलाफ जाता है और मेरे मार्गदर्शन के अनुसार काम नहीं करता, उसका अंत अच्छा नहीं होगा, बल्कि वह अपने लिए परेशानी ही मोल लेगा। संसार में घटित होने वाली समस्त चीज़ों में से ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसमें मेरी बात आखिरी न हो। क्या कोई ऐसी चीज़ है, जो मेरे हाथ में न हो? जो कुछ मैं कहता हूँ, वही होता है, और मनुष्यों के बीच कौन है, जो मेरे मन को बदल सकता है? क्या यह मेरे द्वारा पृथ्वी पर बनाई गई वाचा हो सकती है? कोई भी चीज़ मेरी योजना के आगे बढ़ने में बाधा नहीं डाल सकती; मैं अपने कार्य में और साथ ही अपनी प्रबंधन योजना में भी हमेशा उपस्थित हूँ। मनुष्यों में से कौन इसमें हस्तक्षेप कर सकता है? क्या मैंने ही इन व्यवस्थाओं को व्यक्तिगत रूप से नहीं बनाया है? आज इस क्षेत्र में प्रवेश करना मेरी योजना या मेरे पूर्वानुमान से बाहर नहीं है; यह सब बहुत पहले मेरे ही द्वारा निर्धारित किया गया था। तुम लोगों में से कौन मेरी योजना के इस चरण की थाह पा सकता है? मेरे लोग निश्चित ही मेरी आवाज़ सुनेंगे, और हर वह आदमी, जो ईमानदारी से मुझसे प्रेम करता है, निश्चित ही मेरे सिंहासन के सामने लौट आएगा।

20 फरवरी, 1992

अध्याय 2

नए दृष्टिकोण में प्रवेश करने के साथ मेरे कार्य में नए कदम होंगे। चूँकि यह राज्य में है, इसलिए मैं मार्ग के हर चरण की अगुआई करते हुए चीजों को सीधे दिव्यता के माध्यम से करूँगा, सूक्ष्मतम विवरण के साथ, जिनमें इंसानी आकांक्षाओं की मिलावट बिलकुल नहीं होगी। वास्तविक अभ्यास के तरीकों की

रूपरेखा इस प्रकार है : चूँकि उन्होंने कठिनाई और शुद्धिकरण के जरिये "लोग" की उपाधि हासिल की है, और चूँकि वे मेरे राज्य के लोग हैं, इसलिए मुझे उनसे कठोर अपेक्षाएँ करनी चाहिए, जिनका स्तर मेरे पिछली पीढ़ियों के कार्य की पद्धतियों से ऊँचा है। यह केवल वचनों की वास्तविकता नहीं है; उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से यह अभ्यास की वास्तविकता है। इन्हें पहले हासिल किया जाना चाहिए। तमाम वचनों और कर्मों में उन्हें राज्य के लोगों से अपेक्षित मानक पूरे करने चाहिए, और किसी भी अपराधी को तुरंत हटा दिया जाना चाहिए, ऐसा न हो कि वे मेरे नाम को लज्जित कर दें। हालाँकि वे अज्ञानी, जो स्पष्ट रूप से देख या समझ नहीं सकते, एक अपवाद हैं। मेरे राज्य के निर्माण में मेरे वचनों को खाने और पीने पर, मेरी बुद्धि को पहचानने पर और मेरे कार्य के जरिये पुष्टि प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करो। यदि कोई उन पुस्तकों को छोड़कर, जिनमें मेरे वचन शामिल हैं, अन्य पुस्तकों पर ध्यान देता है, तो मैं निश्चित रूप से उसे नहीं चाहता; ऐसे लोग वेश्या हैं, जो मेरी अवज्ञा करते हैं। एक प्रेरित के रूप में व्यक्ति को बहुत लंबे समय तक घर पर नहीं रहना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है, तो मैं उसे मजबूर नहीं करूँगा, पर उसे त्याग दूँगा और फिर उस व्यक्ति का उपयोग नहीं करूँगा। चूँकि प्रेरित लंबे समय तक घर पर नहीं रहते, इसलिए वे शिक्षित किए जाने के लिए अधिक समय कलीसियाओं में बिताते हैं। प्रेरितों को कलीसियाओं की हर दो सभाओं में से कम से कम एक सभा में भाग लेना चाहिए। इस प्रकार, सहकर्मियों की सभाओं (जिनमें प्रेरितों की समस्त सभाएँ, कलीसिया के अगुआओं की समस्त सभाएँ और स्पष्ट अंतर्दृष्टि वाले संतों के लिए समस्त सभाएँ शामिल हैं) में भाग लेना नित्य हो जाना चाहिए। कम से कम तुम लोगों में से कुछ को हर सभा में भाग लेना चाहिए, और प्रेरितों को केवल कलीसियाओं पर नजर रखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। संतों से पहले की गई अपेक्षाएँ अब और अधिक गहन हैं। मेरे द्वारा अपने नाम की गवाही दिए जाने से पूर्व जिन्होंने अपराध किए थे, उन्हें मैं अपने प्रति समर्पण के कारण, जाँच करने के बाद अभी भी उपयोग में लाऊँगा। किंतु जिन्होंने मेरी गवाही के बाद भी और अपराध किए हैं, पर जो पश्चात्ताप करने और नए सिरे से शुरुआत करने का कष्ट उठाने के लिए दृढ़-संकल्प हैं, ऐसे लोगों को केवल कलीसिया के अंदर ही रहना है। फिर भी, वे लापरवाह और अनियंत्रित नहीं हो सकते, बल्कि उन्हें दूसरों से अधिक संयमित होना चाहिए। जहाँ तक उनका सवाल है, जो मेरे बोलने के बाद भी अपने आपको नहीं सुधारते, उन्हें मेरा आत्मा तुरंत छोड़ देगा, और कलीसिया को यह अधिकार होगा कि वह मेरे न्याय को कार्यान्वित करे और उन्हें निकाल दे। यह निरपेक्ष है और इसमें सोच-विचार की कोई गुंजाइश नहीं है। यदि कोई परीक्षणों के दौरान

ढह जाता है, अर्थात यदि कोई छोड़कर चला जाता है, तो किसी को उस व्यक्ति पर ध्यान नहीं देना चाहिए, ताकि मेरे संयम की परीक्षा लेने और शैतान को उन्मत्त होकर कलीसिया में घुसने देने से बचा जा सके। यह ऐसे व्यक्ति के लिए मेरा न्याय है। यदि कोई छोड़कर जाने वाले व्यक्ति के प्रति अधार्मिकता से और भावनाओं में बहकर कार्य करता है, तो न केवल छोड़कर जाने वाला व्यक्ति अपना स्थान खो देगा, बल्कि दूसरा व्यक्ति भी मेरे लोगों में से बाहर निकाल दिया जाएगा। प्रेरितों का एक अन्य काम है सुसमाचार के प्रसार पर ध्यान केंद्रित करना। बेशक, संत भी यह कार्य कर सकते हैं, लेकिन उन्हें यह बहुत बुद्धिमानी से करना चाहिए और परेशानी पैदा करने से बचना चाहिए। उपर्युक्त तरीके अभ्यास के वर्तमान तरीके हैं। साथ ही, एक अनुस्मारक के रूप में, तुम्हें अपने धर्मोपदेशों को और गहन बनाने पर ध्यान देना चाहिए, ताकि सभी मेरे वचनों की वास्तविकता में प्रवेश कर सकें। तुम्हें मेरे वचनों का अनुसरण बड़ी बारीकी से करना चाहिए और उन्हें ऐसा बनाना चाहिए कि सभी लोग उन्हें सरलता और स्पष्टता से समझ सकें। यह सबसे महत्वपूर्ण है। मेरे लोगों में से जिनके विचार कपटपूर्ण हैं, उन्हें निकाल दिया जाना चाहिए, और अधिक समय तक मेरे घर में नहीं रहने देना चाहिए, ऐसा न हो कि वे मेरे नाम को लज्जित कर दें।

21 फरवरी, 1992

अध्याय 3

चूँकि तुम लोगों को मेरे लोग बुलाया जाता है, चीज़ें वैसी नहीं रहीं जैसी हुआ करती थीं; तुम लोगों को मेरे आत्मा के कथनों पर ध्यान देना और उनका पालन करना चाहिए, और मेरे कार्य का ध्यानपूर्वक अनुसरण करना चाहिए; तुम मेरे आत्मा और मेरे देह को संभवतः अलग न कर सको, क्योंकि हम अंतर्निहित रूप से एक हैं, और प्रकृति से अविभाज्य हैं। जो कोई भी आत्मा और व्यक्तित्व को विभाजित करेगा, और या तो व्यक्तित्व पर या आत्मा पर ध्यान केंद्रित करेगा, वो नुक़सान उठाएगा, और केवल अपने कड़वे प्याले से ही पी पाएगा, उसके पास कोई विकल्प न होगा। जो आत्मा और व्यक्तित्व को अविभाज्य संपूर्ण के रूप में देख पाते हैं, केवल उन्हें ही मेरा पर्याप्त ज्ञान है; उनके भीतर जो जीवन है, उत्तरोत्तर परिवर्तन से गुज़रेगा। ताकि मेरे कार्य का अगला चरण सुचारू रूप से और निर्बाध आगे बढ़ सके, मैं अपने घर के सभी लोगों की परीक्षा लेने के लिए वचनों के शुद्धिकरण का प्रयोग करूँगा, और जो मेरा अनुसरण करते हैं उनकी परीक्षा लेने के लिए कार्य की पद्धतियों का उपयोग करूँगा। इन परिस्थितियों में, कहा जा

सकता है कि वे सब आशा गँवा देते हैं; लोगों के रूप में, उनके बीच एक भी ऐसा नहीं है जिसकी परिस्थितियाँ नकारात्मक और निष्क्रिय नहीं हैं, मानो पूरा स्थान ही बदल गया हो। कुछ लोग स्वर्ग और पृथ्वी के विरुद्ध बुरा-भला कहते हैं; कुछ, अपनी निराशा में, कमर कस लेते हैं और मेरे वचनों की परीक्षा स्वीकार करते हैं; कुछ आसमानों की ओर देखते और गहरी आहें भरते हैं, आँसुओं से आँखें भरी होती हैं, मानो किसी नवजात शिशु के असामयिक निधन से व्यथित हों; कुछ यह तक महसूस करते हैं कि इस तरह जीना शर्मनाक है, और परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जल्द ही वह उन्हें उठा ले; कुछ पूरा दिन धुंध में बिताते हैं, मानो अभी-अभी गंभीर रूप से बीमार पड़े हों और अब भी सुध-बुध न पा सके हों; कुछ शिकायत करके चुपचाप निकल जाते हैं; और कुछ यद्यपि थोड़े नकारात्मक बने रहते हैं, फिर भी वे स्वयं अपने स्थान से मेरा गुणगान करते हैं। आज, जब सब कुछ प्रकट कर दिया गया है, मुझे अतीत की बात करने की अब और आवश्यकता नहीं है; अधिक महत्वपूर्ण यह है कि तुम्हें उस पद से जो आज मैं तुम लोगों को देता हूँ, सर्वाधिक निष्ठा दिखाने में समर्थ होना चाहिए, ताकि तुम सब लोग जो करो उस सबको मेरी स्वीकृति मिले, और तुम सब लोग जो कहो वह सब मेरी प्रबुद्धता और रोशनी का नतीजा हो, कि तुम लोग जो जियो वह अंततः मेरी छवि, और संपूर्ण रूप से मेरी अभिव्यंजना हो सके।

मेरे वचन किसी भी समय या स्थान पर निर्मुक्त और व्यक्त किए जाते हैं, और इसलिए तुम लोगों को भी हर समय मेरे समक्ष स्वयं को जानना चाहिए। क्योंकि आज का दिन, पहले जो कुछ बीता उससे भिन्न है, और तुम जो भी चाहते हो उसे अब और संपन्न नहीं कर सकते। इसके बजाय, तुम्हें मेरे वचनों के मार्गदर्शन में, अपने शरीर को वश में करने में सक्षम होना ही चाहिए; तुम्हें मेरे वचनों का उपयोग मुख्य सहारे के रूप में करना ही चाहिए, और तुम अंधाधुँध ढँग से कार्य नहीं कर सकते। कलीसिया के लिए वास्तविक अभ्यास के सभी मार्ग मेरे वचनों में पाए जा सकते हैं। जो मेरे वचनों के अनुसार कार्य नहीं करते, वे मेरे आत्मा का सीधे अपमान करते हैं, और मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा। चूँकि चीज़ें ऐसी स्थिति में पहुँच गई हैं जैसी वे आज हैं, इसलिए तुम लोगों को अतीत के अपने कर्मों और कार्यकलापों के विषय में खिन्नता और पछतावा महसूस करने की आवश्यकता नहीं है। मेरी उदारशीलता समुद्रों और आकाश के समान असीम है—ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं मनुष्य की क्षमताओं और अपने बारे में उसके ज्ञान से उतना ही परिचित न होऊँ जितना अपने हाथ की हथेली से परिचित हूँ? मनुष्यों के बीच भला कौन है जो मेरे हाथों में नहीं है? क्या तुम्हें लगता है कि मुझे पता नहीं कि तुम्हारी आध्यात्मिक कद-काठी कितनी बड़ी है, कि मैं इससे पूरी तरह अनजान

हूँ? यह असंभव है! इस प्रकार, जब सारे लोग अपनी सर्वाधिक हताशा में होते हैं, जब वे अब और इंतज़ार नहीं कर सकते और नए सिरे से आरंभ करना चाहते हैं, जब वे मुझसे पूछना चाहते हैं कि क्या हो रहा है, जब कुछ भोग-विलास में लिप्त हो जाते हैं और कुछ को विद्रोह करने की सूझती है, जब कुछ अभी भी निष्ठावान सेवा कर रहे होते हैं, तब मैं न्याय के युग का दूसरा भाग आरंभ करता हूँ : अपने लोगों को शुद्ध करना और उनका न्याय करना। कहने का तात्पर्य यह भी है कि मैं अपने लोगों को आधिकारिक रूप से सिखाना आरंभ कर देता हूँ, तुम लोगों को मेरे लिए न केवल सुंदर गवाही देने देता हूँ, बल्कि, इससे भी अधिक, मेरे लोगों के आसन से मेरे लिए लड़ाई में सुंदर विजय भी प्राप्त करने देता हूँ।

मेरे लोगों को, मेरे लिए मेरे घर के द्वार की रखवाली करते हुए, शैतान के कुटिल कुचक्रों से हर समय सावधान रहना चाहिए; उन्हें एक दूसरे को सहारा दे पाना और एक दूसरे का भरण-पोषण कर पाना चाहिए, ताकि शैतान के जाल में फँसने से बच सकें, न जाने किस समय पछतावों के लिए बहुत देर हो जाए। मैं ऐसी तात्कालिकता के साथ तुम लोगों को क्यों सिखला रहा हूँ? मैं तुम लोगों को आध्यात्मिक जगत के तथ्य क्यों बता रहा हूँ? मैं क्यों तुम लोगों को बार-बार याद दिलाता और नसीहत देता हूँ? क्या तुम लोगों ने कभी इस विषय में सोचा है? क्या तुम लोगों के चिंतन-मनन से कोई स्पष्टता आई है? इसलिए, तुम लोगों को न केवल अतीत की नींव के ऊपर निर्माण करके स्वयं को परिपक्व करने में समर्थ होना चाहिए, बल्कि, इससे भी अधिक, आज के वचनों के मार्गदर्शन में, अपने भीतर की अशुद्धताओं को बाहर निकाल देना चाहिए, मेरे प्रत्येक वचन को अपनी आत्माओं के भीतर जड़ पकड़ने और फलने-फूलने देने, और सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से और अधिक फल देने में समर्थ होना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं जो माँगता हूँ वे केवल उजले, रंग-बिरंगे फूल ही नहीं, बल्कि भरपूर फल हैं, फल जो हमेशा पके रहते हैं। क्या तुम मेरे वचनों का सही अर्थ समझते हो? पौधा-घर में फूल यद्यपि तारों जितने अनगिनत होते हैं, और प्रशंसकों की सारी भीड़ आकर्षित करते हैं, किंतु एक बार जब वे मुरझा जाते हैं, तब वे शैतान के कपटपूर्ण कुचक्रों की तरह जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं, और कोई भी उनमें रुचि नहीं दिखाता। तो भी हवा के थपेड़ों से घिरे और सूरज से झुलसे वे सब लोग जो मेरे लिए गवाही देते हैं, हालाँकि वैसे सुंदर नहीं होते जैसे खिलते समय होते हैं, किंतु जब ये फूल मुरझा गए होंगे तब फल आएँगे, क्योंकि मैं अपेक्षा करता हूँ कि वे ऐसे हों। जब मैं ये वचन बोलता हूँ, तब तुम लोग कितना समझते हो? एक बार जब फूल मुरझा गए होंगे और फल आ जाएगा, और एक बार जब यह समूचा फल मेरे आस्वादन के लिए प्रदान किया जा सकेगा, तब मैं पृथ्वी

पर अपना समस्त कार्य समाप्त कर दूँगा, और अपनी बुद्धिमता के निश्चित रूप धारण करने का आनंद लेना आरंभ करूँगा!

22 फरवरी, 1992

अध्याय 4

मेरे सभी लोगों को जो मेरे सम्मुख सेवा करते हैं, अतीत के बारे में सोचना चाहिए कि क्या मेरे लिये तुम्हारे प्रेम में अशुद्धता थी? क्या मेरे प्रति तुम्हारी निष्ठा शुद्ध और सम्पूर्ण थी? क्या मेरे बारे में तुम लोगों का ज्ञान सच्चा था? तुम लोगों के हृदय में मेरा स्थान कितना था? क्या मैंने तुम्हारे हृदय को पूरी तरह से भर दिया? मेरे वचनों ने तुम लोगों के भीतर कितना कार्य किया? मुझे मूर्ख न समझो! मैं ये सब बातें अच्छी तरह समझता हूँ! आज, जब मैंने उद्धार की वाणी बोली है, तो क्या मेरे प्रति तुम लोगों के प्रेम में कुछ वृद्धि हुई है? क्या मेरे प्रति तुम लोगों की निष्ठा का कुछ भाग शुद्ध हुआ है? क्या मेरे बारे में तुम लोगों का ज्ञान अधिक गहरा हुआ है? क्या अतीत की प्रशंसा ने तुम लोगों के आज के ज्ञान की एक मजबूत नींव डाली है? तुम लोगों के अंतःकरण का कितना भाग मेरी आत्मा से भरा हुआ है? तुम लोगों के भीतर मेरी छवि को कितना स्थान दिया गया है? क्या मेरे कथनों ने तुम लोगों के मर्मस्थल पर चोट की है? क्या तुम लोग सचमुच महसूस करते हो कि अपनी लज्जा को छिपाने के लिए तुम लोगों के पास कोई स्थान नहीं है? क्या तुम्हें सचमुच लगता है कि तुम मेरे जन होने के योग्य नहीं हो? यदि तुम उपरोक्त प्रश्नों के प्रति पूर्णतः अनजान हो, तो यह दिखाता है कि तुम मुसीबत में हो, तुम केवल संख्या बढ़ाने के लिए हो, मेरे द्वारा पूर्वनियत समय पर, तुम्हें निश्चित रूप से हटा दिया जाएगा और दूसरी बार अथाह कुंड में डाल दिया जाएगा। ये मेरे चेतावनी भरे वचन हैं, और जो कोई भी इन्हें हल्के में लेगा, उस पर मेरे न्याय की चोट पड़ेगी और नियत समय पर उस पर आपदा टूट पड़ेगी। क्या ऐसा ही नहीं है? क्या यह समझाने के लिए मुझे उदाहरण देने की आवश्यकता है? क्या तुम लोगों को कोई मिसाल देने के लिए मुझे और अधिक स्पष्ट रूप से बोलना होगा? सृष्टि के सृजन से लेकर आज तक, बहुत से लोगों ने मेरे वचनों की अवज्ञा की है और इस तरह उन्हें प्रतिलाभ की मेरी धारा से निकालकर हटा दिया गया है; अंततः उनके शरीर नष्ट हो जाते हैं और उनकी आत्माएँ अधोलोक में डाल दी जाती हैं, आज भी वे भयंकर सज़ा भुगत रहे हैं। बहुत से लोगों ने मेरे वचनों का अनुसरण किया है, परंतु वे मेरी प्रबुद्धता और रोशनी के विरोध में चले गए हैं, इसलिए मैंने उन्हें

अलग कर दिया है, वे शैतान के अधिकार क्षेत्र में गिरकर मेरे विरोधी बन गए हैं। (आज सीधे तौर पर मेरा विरोध करने वाले सभी लोग केवल सतही तौर पर मेरे वचनों का पालन करते हैं, और मेरे वचनों के सार की अवज्ञा करते हैं।) बहुत से ऐसे भी हैं जिन्होंने केवल मेरे उन वचनों को ही सुना है जो मैंने कल बोले थे, जिन्होंने अतीत के "कूड़े" को पकड़कर रखा है, और वर्तमान "उपज" को नहीं सँजोया है। ये लोग न केवल शैतान के द्वारा बंदी बना लिए गए हैं, बल्कि अनंतकाल के लिए पापी और मेरे शत्रु भी बन गए हैं, और सीधे तौर पर मेरा विरोध करते हैं। ऐसे लोग मेरे क्रोध की पराकाष्ठा पर मेरे दण्ड के भागी होते हैं, और वे अभी तक भी अंधे बने हुए हैं, आज भी अँधेरी कालकोठरियों में हैं (जिसका मतलब है कि ऐसे लोग शैतान द्वारा नियंत्रित सड़ी, सुन्न पड़ चुकी लाशें हैं; क्योंकि उनकी आँखों पर मैंने परदा डाल दिया है, इसलिए मैं कहता हूँ कि वे अंधे हैं)। तुम लोगों के संदर्भ के लिए एक उदाहरण देना बेहतर होगा, ताकि तुम लोग उससे सीख सको:

पौलुस का उल्लेख करने पर, तुम लोग उसके इतिहास के बारे में, और उसके विषय में कुछ ऐसी कहानियों के बारे में सोचोगे जो त्रुटिपूर्ण और वास्तविकता से भिन्न हैं। उसे छोटी उम्र से ही माता-पिता द्वारा शिक्षित कर दिया गया था, उसने मेरा जीवन प्राप्त कर लिया था, और मेरे द्वारा पूर्वनिर्धारण के परिणाम स्वरूप वह मेरी अपेक्षा के अनुसार क्षमता से सम्पन्न था। 19 वर्ष की आयु में, उसने जीवन के बारे में विभिन्न पुस्तकें पढ़ीं; इसलिए मुझे इस विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं कि कैसे, अपनी योग्यता, मेरी प्रबुद्धता और रोशनी की वजह से, वह न केवल आध्यात्मिक विषयों पर कुछ अंर्तदृष्टि के साथ बोल सकता था, बल्कि वह मेरे इरादों को समझने में भी समर्थ था। निस्सन्देह, इसमें आन्तरिक व बाहरी वजहें भी शामिल हैं। तथापि, उसकी एक अपूर्णता यह थी कि अपनी प्रतिभा की वजह से, वह प्रायः बकवादी और डींगें मारने वाला बन जाया करता था। परिणाम स्वरूप, अवज्ञा के कारण, जिसका एक हिस्सा प्रधान स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करता था, मेरे प्रथम देहधारण के समय, उसने मेरी अवहेलना का हर प्रयास किया। वह उनमें से था जो मेरे वचनों को नहीं जानते, और उसके हृदय से मेरा स्थान पहले ही तिरोहित हो चुका था। ऐसे लोग सीधे तौर पर मेरी दिव्यता का विरोध करते हैं, और मेरे द्वारा मार दिए जाते हैं, तथा अन्त में सिर झुका कर अपने पापों को स्वीकार करते हैं। इसलिए, जब मैंने उसकी दमदार बातों का उपयोग कर लिया—जिसका अर्थ है कि जब उसने कुछ समय तक मेरे लिए काम कर लिया—तो वह एक बार फिर अपने पुराने मार्ग पर चला गया, हालाँकि उसने सीधे तौर पर मेरे वचनों का विरोध नहीं किया,

फिर भी उसने मेरे आंतरिक मार्गदर्शन और प्रबुद्धता की अवहेलना की, और इसलिए पहले उसने जो कुछ भी किया वह व्यर्थ हो गया; दूसरे शब्दों में, जिस महिमा के मुकुट के बारे में उसने कहा था, वे खोखले वचन उसकी कल्पना बनकर रह गए थे, क्योंकि आज भी वह मेरे बंधनों के बीच मेरे न्याय के अधीन है।

उपरोक्त उदाहरण से देखा जा सकता है कि जो कोई भी मेरा विरोध करता है (न केवल मेरे देह रूप का बल्कि उससे भी अधिक अहम, मेरे वचनों और मेरे आत्मा का—कहने का अर्थ है, मेरी दिव्यता का विरोध करता है), वह अपनी देह में मेरा न्याय प्राप्त करता है। जब मेरा आत्मा तुम्हें छोड़ देता है, तो तुम सीधे नीचे गिरते हुए अधोलोक में उतर जाते हो। यद्यपि तुम्हारी देह पृथ्वी पर होती है, फिर भी तुम किसी मानसिक विकार से पीड़ित व्यक्ति के समान होते होः तुम अपनी समझ खो चुके हो, और तुरंत ऐसा महसूस करते हो मानो कि तुम कोई लाश हो, इतना अधिक कि तुम अपनी देह को अविलंब नष्ट कर देने के लिए मुझसे याचना करते हो। तुम में से अधिकांश आत्मवान लोग इन परिस्थितियों की गहरी समझ रखते हैं, इसलिए मुझे विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। अतीत में, जब मैंने सामान्य मानवता में कार्य किया, तो अधिकांश लोग मेरे कोप और प्रताप के विरूद्ध अपना आकलन पहले ही कर चुके थे, और मेरी बुद्धि व स्वभाव की थोड़ी समझ रखते थे। आज, मैं सीधे तौर पर दिव्यता में बोलता और कार्य करता हूँ, और अभी भी कुछ लोग हैं जो अपनी आँखों से मेरे कोप और न्याय को देखेंगे; इसके अतिरिक्त, न्याय के युग के दूसरे भाग का मेरा मुख्य कार्य अपने सभी लोगों को सीधे तौर पर देह में मेरे कर्मों का ज्ञान करवाना, और तुम लोगों को मेरे स्वभाव का अवलोकन करवाना है। तो भी, चूंकि मैं देह में हूँ, इसलिए मैं तुम लोगों की कमज़ोरियों के प्रति विचारशील हूँ। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग अपनी आत्मा, प्राण और देह से खिलवाड़ करते हुए इन्हें लापरवाही से शैतान को न सौंप दो। जो कुछ तुम लोगों के पास है उसे सँजो कर रखने, और इसे मज़ाक में न लेने में ही भलाई है, क्योंकि ऐसी बातों का संबंध तुम लोगों के भविष्य से है। क्या तुम लोग वास्तव में मेरे वचनों का सही अर्थ समझने में समर्थ हो? क्या तुम लोग वास्तव में मेरी सच्ची भावनाओं के बारे में विचारशील होने में सक्षम हो?

क्या तुम लोग पृथ्वी पर मेरे आशीष का आनंद लेना चाहते हो, ऐसे आशीष का जो स्वर्ग के समान है? क्या तुम लोग मेरी समझ को, मेरे वचनों के आनंद को और मेरे बारे में ज्ञान को, अपने जीवन की सर्वाधिक बहुमूल्य और सार्थक वस्तु के रूप संजोने को तैयार हो? क्या तुम लोग, अपने भविष्य की संभावनाओं पर विचार किए बिना, वास्तव में मेरे प्रति पूरी तरह से समर्पण कर सकते हो? क्या तुम लोग सचमुच अपना

जीवन-मरण मेरे अधीन करके एक भेड़ के समान मेरी अगुआई में चलने को राज़ी हो? क्या तुम लोगों में ऐसा कोई है जो यह करने में समर्थ है? क्या ऐसा हो सकता है कि ऐसे सभी लोग जो मेरे द्वारा स्वीकार किए जाते हैं और मेरी प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करते हैं, वे ही ऐसे लोग हैं जो मेरा आशीष पाते हैं? क्या तुम लोग इन वचनों से कुछ समझे हो? यदि मैं तुम लोगों की परीक्षा लूँ, तो क्या तुम लोग सचमुच स्वयं को मेरे हवाले कर सकते हो, और इन परीक्षणों के बीच, मेरे इरादों की खोज और मेरे हृदय को महसूस कर सकते हो? मैं नहीं चाहता कि तुम अधिक मर्मस्पर्शी बातें कहने, या बहुत-सी रोमांचक कहानियाँ सुनाने लायक बनो; बल्कि, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी उत्तम गवाही देने लायक बनो, पूरी तरह और गहराई से वास्तविकता में प्रवेश कर सको। यदि मैं सीधे तौर पर तुम से न बोलता, तो क्या तुम अपने आसपास की सब चीजों को त्याग कर मुझे अपना उपयोग करने दे सकते थे? क्या मुझे इसी वास्तविकता की अपेक्षा नहीं है? मेरे वचनों के अर्थ को कौन ग्रहण कर सकता है? फिर भी मैं कहता हूँ कि तुम लोग अब गलतफहमी में न पड़ना, तुम लोग अपने प्रवेश में सक्रिय बनो और मेरे वचनों के सार को ग्रहण करो। ऐसा करना तुम लोगों को मेरे वचनों के मिथ्याबोध और मेरे अर्थ के विषय में अस्पष्ट होने से और इस प्रकार मेरे प्रशासनिक आदेशों के उल्लंघन से बचाएगा। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग मेरे वचनों में तुम्हारे लिए मेरे जो इरादे हैं, उन्हें ग्रहण करो। अब केवल अपनी भविष्य की संभावनाओं पर ही विचार न करो, और तुम लोगों ने मेरे सम्मुख सभी चीज़ों में परमेश्वर के आयोजनों के प्रति समर्पित होने का जो संकल्प लिया है, ठीक उसी के अनुरूप कार्य करो। वे सभी जो मेरे कुल के भीतर हैं उन्हें जितना अधिक संभव हो उतना करना चाहिए; पृथ्वी पर मेरे कार्य के अंतिम भाग में तुम्हें अपना सर्वोत्तम अर्पण करना चाहिए। क्या तुम वास्तव में ऐसी बातों को अभ्यास में लाने के लिए तैयार हो?

23 फरवरी, 1992

अध्याय 5

मेरे आत्मा की आवाज मेरे संपूर्ण स्वभाव की अभिव्यक्ति है। क्या तुम लोग इस बात को समझते हो? इस बिंदु पर अस्पष्ट होना मेरा प्रत्यक्ष विरोध करने के समान होगा। क्या तुम लोगों ने इसमें निहित महत्व को सचमुच देखा है? क्या तुम लोगों को वास्तव में पता है कि मैं तुम पर कितना प्रयास, कितनी ऊर्जा, व्यय करता हूँ? तुम लोगों ने जो किया है और जैसा मेरे सामने व्यवहार किया है, क्या सच में उसे प्रकट करने

का साहस है तुममें? और क्या तुम लोगों में मेरे ही सामने अपने आप को मेरे लोग कहने का साहस है— तुम लोगों में ज़रा-सी भी शर्म नहीं है, विवेक होने का तो सवाल ही नहीं! कभी न कभी, तुम्हारे जैसे लोगों को मेरे घर से निर्वासित कर दिया जाएगा! यह सोचकर कि तुमने मेरी गवाही दी थी, मुझे बहकाने की कोशिश न करो! क्या कुछ ऐसा है जिसे मानवजाति करने में समर्थ है? यदि तुम्हारे इरादों और तुम्हारे लक्ष्यों का कुछ भी शेष नहीं रहा होता, तो तुमने बहुत पहले ही अपना कोई दूसरा रास्ता चुन लिया होता। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे पता नहीं है कि मनुष्य का हृदय कितना संयम रख सकता है? अब से, सभी चीज़ों में तुम्हें अभ्यास की वास्तविकता में प्रवेश करना होगा; मात्र बकवास करने से, जैसा कि तुम पहले किया करते थे, अब तुम कामयाब नहीं होगे। अतीत में, तुम में से अधिकांश लोग मेरी उदारता का फायदा उठाने में कामयाब रहे; वस्तुतः आज तुम लोग जो अडिग खड़े होने में सक्षम हो, वह पूरी तरह से मेरे वचनों की सख़्ती के कारण ही है। क्या तुम्हें लगता है कि मैं अंधाधुंध और बिना किसी उद्देश्य से बोलता हूँ? असंभव! मैं ऊपर से सारी चीज़ों को देखता हूँ, और ऊपर से सभी चीज़ों पर अपने प्रभुत्व का प्रयोग करता हूँ। इसी तरह से, मैंने अपने उद्धार को पृथ्वी के ऊपर यथोचित स्थान पर रखा है। ऐसा एक भी क्षण नहीं होता है जब मैं अपने गुप्त स्थान से, इंसान की हर गतिविधि और सब कुछ जो वे कहते और करते हैं उस पर नज़र नहीं रखता हूँ। इंसान मेरे लिए एक खुली किताब है : मैं उन सभी को देखता और जानता हूँ। गुप्त स्थान मेरा निवास है, और स्वर्ग का संपूर्ण विस्तार मेरा बिछौना है जिस पर मैं लेटता हूँ। शैतान की ताक़तें मुझ तक नहीं पहुँच सकती हैं, क्योंकि मैं प्रताप, धार्मिकता, और न्याय से लबालब भरा हुआ हूँ। मेरे वचनों में अवर्णनीय रहस्य रहता है। जब मैं बोल रहा होता हूँ, तो तुम लोग भ्रम से अभिभूत, उन बत्तखों के समान हो जाते हो जिन्हें अभी-अभी पानी में फेंका गया हो, या उन भयभीत शिशुओं जैसे बन जाते हो, मानो कुछ जानते ही नहीं, क्योंकि तुम लोगों की आत्मा स्तब्धता की अवस्था में गिर चुकी है। मैं क्यों कहता हूँ कि गुप्त स्थान मेरा निवास है? तुम क्या मेरे वचनों के गूढ़ अर्थ को जानते हो? इंसानों में कौन मुझे जानने में समर्थ है? कौन मुझे उस तरह से जानने में समर्थ है जिस तरह वह अपने स्वयं के माता-पिता को जानता है? अपने निवास में विश्राम करते हुए, मैं ध्यानपूर्वक देखता हूँ : पृथ्वी पर सभी लोग सिर्फ़ अपनी नियति और अपने भविष्य की खातिर "दुनियाभर की यात्रा करते हुए" इधर-उधर भागते, दौड़-धूप करते हैं। परन्तु किसी एक के पास भी मेरे राज्य का निर्माण करने के लिए ऊर्जा नहीं बची है, इतनी भी नहीं जितनी कि साँस लेने में लगती है। मैंने इंसान को बनाया, और कई बार मैंने उन्हें पीड़ा से बचाया है, परंतु ये सभी

मनुष्य कृतघ्न हैं : उनमें से कोई भी मेरे उद्धार की समस्त घटनाओं को गिनवाने में सक्षम नहीं है। संसार के सृजन से लेकर आज तक, अनेक वर्ष, अनेक सदियाँ बीत गयी हैं; मैंने अनेक चमत्कार किए हैं और बहुत बार अपनी बुद्धिमत्ता को प्रकट किया है। फिर भी, मेरे कार्यों पर थोड़ा-सा भी ध्यान देने का इरादा न रखते हुए, मनुष्य, एक मानसिक रोगी के समान उन्मत्त और स्तब्ध है, या कभी-कभी जंगल में जंगली जानवर के समान भटकता रहता है। कई बार मैंने मनुष्य को मृत्युदण्ड दिया है और उसे मरने के लिए दंडित किया है, परन्तु मेरी प्रबंधन योजना किसी के द्वारा भी नहीं बदली जा सकती है। और इसीलिए मनुष्य, मेरे हाथों में, उन पुरानी चीज़ों को उजागर करता रहता है जिनसे वह चिपका हुआ है। अपने कार्य के चरणों के कारण, मैंने एक बार फिर तुम सभी प्राणियों को, जो नीच, भ्रष्ट, गंदे, और घटिया बड़े परिवार में पैदा हुए थे, छुटकारा दिलाया है।

मेरा योजनाबद्ध कार्य पल भर भी रुके बिना आगे बढ़ता रहता है। राज्य के युग में रहने लगने के बाद, और तुम लोगों को अपने लोगों के रूप में अपने राज्य में ले जाने के बाद, मेरी तुम लोगों से अन्य माँगें होंगी; अर्थात्, मैं तुम लोगों के सामने उस संविधान को लागू करना आरंभ करूँगा जिसके साथ मैं इस युग पर शासन करूँगा :

चूँकि तुम सभी मेरे लोग कहलाते हो, इसलिए तुम्हें इस योग्य होना चाहिए कि मेरे नाम को महिमामंडित कर सको; अर्थात्, परीक्षण के बीच गवाही दे सको। यदि कोई मुझे मनाने की कोशिश करता है और मुझसे सच छुपाता है, या मेरी पीठ पीछे अपकीर्तिकर व्यवहार करता है, तो ऐसे लोगों को, बिना किसी छूट के मेरे घर से खदेड़ और बाहर निकाल दिया जाएगा ताकि वे इस बात के लिए मेरा इंतज़ार करें कि मैं उनसे कैसे निपटूँगा। अतीत में जो लोग मेरे प्रति विश्वासघाती रहे हैं और संतान की भांति नहीं रहे हैं, और आज फिर से खुलकर मेरी आलोचना करने के लिए उठ खड़े हुए हैं, उन्हें भी मेरे घर से खदेड़ दिया जाएगा। जो मेरे लोग हैं उन्हें लगातार मेरी ज़िम्मेदारियों के प्रति चिंता दर्शानी चाहिए और साथ ही मेरे वचनों को जानने की खोज करते रहना चाहिए। केवल इस तरह के लोगों को ही मैं प्रबुद्ध करूँगा, और वे निश्चित रूप से, कभी भी ताड़ना को प्राप्त न करते हुए, मेरे मार्गदर्शन और प्रबुद्धता के अधीन रहेंगे। जो मेरी ज़िम्मेदारियों के प्रति चिंता दर्शाने में असफल रहते हुए, अपने खुद के भविष्य की योजना बनाने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं—अर्थात वे जो अपने कार्यों के द्वारा मेरे हृदय को संतुष्ट करने का लक्ष्य नहीं रखते हैं, बल्कि इसके बजाय भोजन, धन, आदि सामान की तलाश में रहते हैं, मैं इन भिखारी-जैसे प्राणियों का

उपयोग करने से पूरी तरह इनकार करता हूँ, क्योंकि वे जब से पैदा हुए हैं, वे बिलकुल नहीं जानते कि मेरी ज़िम्मेदारियों के प्रति चिंता दर्शाने के मायने क्या हैं। वे ऐसे लोग हैं जिनमें सामान्य समझ का अभाव है; ऐसे लोग मस्तिष्क के "कुपोषण" से पीड़ित हैं, और उन्हें कुछ "पोषण" पाने के लिए घर जाने की आवश्यकता है। मेरे लिए ऐसे लोग किसी काम के नहीं हैं। जो मेरे लोग हैं उनमें से प्रत्येक को, मुझे अंत तक वैसे अनिवार्य कर्तव्य के रूप में जानना जरूरी होगा जैसे कि खाना, पहनना, सोना, जिसे कोई एक पल के लिए भी भूलता नहीं, ताकि अंत में, मुझे जानना खाना खाने जितनी जानी-पहचानी चीज़ बन जाए, जिसे तुम सहजतापूर्वक अभ्यस्त हाथों से करते हो। जहाँ तक उन वचनों की बात है जो मैं बोलता हूँ, तो प्रत्येक शब्द को अत्यधिक निष्ठा और पूरी तरह से आत्मसात करते हुए ग्रहण करना चाहिए; इसमें अन्यमनस्क ढंग से किए गए आधे-अधूरे प्रयास नहीं हो सकते हैं। जो कोई भी मेरे वचनों पर ध्यान नहीं देता है, उसे सीधे मेरा विरोध करने वाला माना जाएगा; जो कोई भी मेरे वचनों को नहीं खाता, या उन्हें जानने की इच्छा नहीं करता है, उसे मुझ पर ध्यान नहीं देने वाला माना जाएगा, और उसे मेरे घर के द्वार से सीधे बाहर कर दिया जाएगा। ऐसा इसलिए है, जैसा कि मैंने अतीत में कहा है, कि मैं जो चाहता हूँ, वह यह नहीं है कि बड़ी संख्या में लोग हों, बल्कि उत्कृष्टता हो। सौ लोगों में से, यदि कोई एक भी मेरे वचनों के द्वारा मुझे जानने में सक्षम है, तो मैं इस एक व्यक्ति को प्रबुद्ध और रोशन करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अन्य सभी को स्वेच्छा से छोड़ दूँगा। इससे तुम देख सकते हो कि यह अनिवार्य रूप से सत्य नहीं है कि बड़ी संख्या ही मुझे अभिव्यक्त कर सकती है, और मुझे जी सकती है। मैं गेहूँ (चाहे दाने पूरे भरे न हों) चाहता हूँ, न कि जंगली दाने (चाहे उसमें दाने इतने भरे हों कि मन प्रसन्न हो जाए)। उन लोगों के लिए जो तलाश करने की परवाह नहीं करते हैं, बल्कि इसके बजाय शिथिलता से व्यवहार करते हैं, उन्हें स्वेच्छा से चले जाना चाहिए; मैं उन्हें अब और देखना नहीं चाहता हूँ, अन्यथा वे मेरे नाम को अपमानित करते रहेंगे। मैं अपने लोगों से क्या अपेक्षा करता हूँ उस बारे में, अभी मैं इन निर्देशों पर रुकता हूँ, और परिस्थितियाँ कैसे बदलती हैं, इस बात पर निर्भर करते हुए और स्वीकृतियाँ देने के लिए प्रतीक्षा करूँगा।

अतीत के दिनों में, बहुसंख्यक लोग सोचते थे कि मैं बुद्धिमत्ता का परमेश्वर स्वयं था, कि मैं ही वह परमेश्वर था जिसने मनुष्यों के हृदयों में गहराई तक देखा; हालाँकि, यह सब सतही बात थी। यदि मनुष्य ने सचमुच में मुझे जान लिया होता, तो उसने निष्कर्षों पर पहुँचने की धृष्टता नहीं की होती, बल्कि वह मेरे वचनों के माध्यम से मुझे जानने की कोशिश करता रहता। केवल तभी जब वे एक ऐसी अवस्था में पहुँचते

हैं, जहाँ वे वास्तव में मेरे कर्मों को देखते हैं, वे मुझे बुद्धिमान और अद्‌भुत कहने के हकदार हैं। मेरे बारे में तुम लोगों का ज्ञान बहुत ही सतही है। युगों से, कितने ही लोगों ने कितने ही सालों तक मेरी सेवा की है और मेरे कर्मों को देखकर, वे मेरे बारे में सच में कुछ जान पाए हैं। इसी कारण, उनका हृदय मेरे प्रति हमेशा समर्पित था, मेरे पदचिह्नों को पाना कितना कठिन है, इस वजह से, उन्होंने मेरा विरोध करने का लेशमात्र भी इरादा अपने मन में रखने की हिम्मत नहीं की। यदि इन लोगों के बीच मेरा मार्गदर्शन अनुपस्थित होता, तो वे अविवेकपूर्ण ढंग से कार्य करने की हिम्मत नहीं करते। इसलिए, कई वर्षों के अनुभव के बाद, अंततः उन्होंने मेरे बारे में ज्ञान के एक अंश का सामान्यीकरण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला, कि मैं बुद्धिमान, अद्‌भुत और परामर्शदाता हूँ, कि मेरे वचन दुधारी तलवार जैसे हैं, कि मेरे कार्य महान, विस्मयकारी, और चमत्कारिक हैं, कि मैंने प्रताप का लबादा पहना हुआ है, कि मेरी बुद्धि आसमान, और अन्य अंतर्दृष्टियों से भी ऊपर पहुँचती है। हालाँकि, आज, मेरे बारे में तुम्हारा ज्ञान केवल उनके द्वारा रखी नींव पर ही आधारित है, इसलिए तुम लोगों में से अधिकाँश लोग—तोतों की तरह—केवल उनके द्वारा कहे गए शब्दों को दोहरा रहे हैं। केवल इसलिए क्योंकि मैं इस बात को ध्यान में रखता हूँ कि तुम लोग जिस तरीके से मुझे जानते हो वह कितना सतही है और तुम लोगों की "शिक्षा" कितनी ख़राब है कि मैंने कितनी ताड़ना से तुम्हें बख़्श दिया है। परन्तु तब भी, तुम लोगों में से अधिकाँश लोग, अभी भी अपने आप को नहीं जानते हो, या यह सोचते हो कि तुम लोग अपने कर्मों में मेरी इच्छा तक पहले ही पहुँच गए हो, और इसी कारण न्याय से बच गए हो; या तुम लोग सोचते हो कि देह बन जाने के बाद मैं मनुष्य के कार्यों से अवगत नहीं हूँ और इस कारण तुम लोग भी ताड़ना से बच कर निकल गए हो; या तुम लोग सोचते हो कि जिस परमेश्वर में तुम विश्वास करते हो वह ब्रह्माण्ड के विस्तृत फैलाव में विद्यमान नहीं है, और इसलिए, तुमने परमेश्वर को अपने हृदय में ऐसे कर्तव्य के रूप में धारण करने, जिसे अवश्य पूरा किया जाना चाहिए, के बजाय परमेश्वर को जानने को अपने खाली समय में किया जाने वाला काम बना दिया है, परमेश्वर में विश्वास का उपयोग तुम खाली समय में दिल बहलाने के एक तरीके के रूप में कर रहे हो। यदि मैंने तुम लोगों में योग्यता, तर्क-शक्ति और अंतर्दृष्टि की कमी पर दया नहीं की होती, तो तुम सभी मेरी ताड़ना के बीच ही नष्ट हो जाते, और तुम्हारा अस्तित्व तक मिट जाता। परन्तु जब तक पृथ्वी पर मेरा कार्य पूरा नहीं होता, मैं मानवजाति के प्रति उदार रहूँगा। यह ऐसी बात है जिसका ज्ञान तुम सभी को अवश्य होना चाहिए, और अच्छे और बुरे में भ्रमित होना बंद करो।

25 फरवरी, 1992

अध्याय 6

आत्मा से संबंधित मामलों में तुझे अनुभव करने में सक्षम होना चाहिए; मेरे वचनों पर तुझे ध्यान लगाना चाहिए। तुझे मेरा आत्मा और मेरे स्वरूप, मेरे वचनों और मेरे स्वरूप को एक अखंड इकाई की तरह समझने में वास्तव में समर्थ होना चाहिए, ताकि सभी लोग मुझे मेरी उपस्थिति में संतुष्ट कर सकें। जो कुछ भी है उस पर मैं अपने कदम रख चुका हूँ, ब्रह्मांड के पूरे विस्तार पर मैं नज़रें डाल चुका हूँ, और मैं सभी लोगों के बीच चला हूँ और मैंने मनुष्य के बीच मीठे और कड़वे स्वादों को चखा है—फिर भी मनुष्य मुझे कभी भी वास्तव में समझ नहीं पाया है, न ही मेरी यात्रा के दौरान उसने मुझ पर कभी कोई ध्यान दिया है। क्योंकि मैं शान्त था, और मैंने कोई अलौकिक कर्म नहीं किया, इसी कारण किसी ने भी मुझे वास्तव में नहीं देखा। आज का समय अतीत की तरह नहीं है : मैं ऐसी चीज़ें करूँगा जिन्हें सृष्टि की रचना के समय से कभी नहीं देखा गया है, मैं उन वचनों को बोलने वाला हूँ जिन्हें तमाम युगों के दौरान कभी भी नहीं सुना गया है, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सभी लोग मुझे देह में पहचानें। ये मेरे प्रबंधन के चरण हैं, जिनके बारे में मनुष्य को हल्का -सा भी आभास नहीं है। भले ही मैंने स्पष्टता से बोला है लेकिन लोग अभी भी भ्रमित हैं; उन्हें समझाना मुश्किल है। क्या यह मनुष्य की नीचता नहीं है? क्या यही वह बात नहीं है जिसका मैं समाधान करना चाहता हूँ? वर्षों तक, मैंने मनुष्य पर कोई भी कार्य नहीं किया; वर्षों तक, मेरी देहधारी देह के सीधे सम्पर्क में रहने के बावजूद किसी ने भी मेरी दिव्यता से सीधे आने वाली वाणी को कभी भी नहीं सुना। इस तरह, अपरिहार्य रूप से लोगों में मेरे बारे में ज्ञान की कमी है, हालाँकि इस बात ने तमाम युगों के दौरान मेरे प्रति उनके प्रेम को प्रभावित नहीं किया है। लेकिन आज, मैंने तुम लोगों पर चमत्कारी कार्य किया है जो कि अथाह और अगाध है, साथ-ही-साथ कई वचन भी बोले हैं। फिर भी, ऐसी परिस्थितियों में, अभी भी बहुत से लोग हैं जो सीधे मेरी उपस्थिति में मेरा विरोध करते हैं। मैं तुम्हें कुछ उदाहरण देता हूँ।

तुम प्रतिदिन एक अस्पष्ट परमेश्वर से प्रार्थना करते हो, मेरे इरादों को समझने की कोशिश करते हो और जीवन का बोध प्राप्त करते हो। परन्तु, मेरे वचनों का सामना करने पर, तुम उन्हें अलग ढंग से देखते हो; तुम मेरे वचनों और मेरे आत्मा को एक अविभाज्य इकाई के रूप में देखते हो, परन्तु तुम मेरे स्वरूप को दरकिनार कर देते हो, यह मानते हुए कि मैं जो व्यक्ति हूँ, वह मूल रूप से इस प्रकार के वचनों को

बोलने के योग्य नहीं है, और वे मेरे आत्मा द्वारा निर्देशित हैं। इस प्रकार की परिस्थिति के बारे में तुम्हारा क्या ज्ञान है? तुम मेरे वचनों पर एक निश्चित सीमा तक विश्वास करते हो, फिर भी जब उस देह की बात आती है जिससे मैं स्वयं को आवृत करता हूँ, तो उसके प्रति तुम्हारे अंदर अलग-अलग तीव्रता की धारणाएँ होती हैं। तुम प्रतिदिन इस पर सोच-विचार करते हो, और कहते हो : "वह इस प्रकार से कार्य क्यों करता है? क्या वे वास्तव में परमेश्वर की ओर से आते हैं? असंभव! वह लगभग मेरे ही समान है—वह एक साधारण, सामान्य व्यक्ति भी है।" इस प्रकार की परिस्थितियों को किस प्रकार से समझाया जा सकता है?

तुम लोगों में से ऐसा कौन है जिसमें उपरोक्त बातें नहीं है? ऐसा कौन है जो इन चीज़ों में व्यस्त नहीं है? ये ऐसी चीज़ें लगती हैं जिन्हें तुम ऐसे पकड़े रहते हो मानो वह कोई व्यक्तिगत सम्पति हो, और तुम कभी नहीं चाहते कि यह हाथ से निकल जाए। तुम व्यक्तिपरक प्रयास उससे भी कहीं कम करते हो; बल्कि, तुम मेरा इंतज़ार करते हो कि मैं खुद ही कर लूँ। सच कहा जाए तो, ऐसा एक भी इंसान नहीं है, जो खोजे बिना आसानी से मुझे जान जाए। ये सिर्फ उथले वचन नहीं हैं जिन्हें मैं तुम लोगों को सिखाता हूँ। क्योंकि मैं तुम्हारे संदर्भ के लिए किसी दूसरे दृष्टिकोण से अन्य उदाहरण भी दे सकता हूँ।

पतरस का उल्लेख होने पर, लोग उसके बारे में अच्छी बातें कहते नहीं थकते। वे तुरंत याद करते हैं कि उसने तीन बार परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया था, कैसे शैतान को अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए उसने परमेश्वर की परीक्षा ली, और कैसे अंत में परमेश्वर की ही खातिर क्रूस पर उल्टा लटकाया गया, इत्यादि। अब मैं तुम लोगों को यह बताने पर ध्यान केन्द्रित करने वाला हूँ कि पतरस ने मुझे कैसे जाना और उसका अंतिम परिणाम क्या था। पतरस के पास उत्कृष्ट क्षमता थी, परन्तु उसकी परिस्थितियाँ पौलुस से भिन्न थीं : उसके माता-पिता ने मुझे सताया था, वे ऐसे दुष्टात्मा थे जो शैतान के अधीन थे, और इसी कारण उन्होंने पतरस को परमेश्वर के बारे में कुछ नहीं सिखाया। पतरस बुद्धिमान, प्रतिभासम्पन्न था, बचपन से ही उसके माता-पिता उससे बहुत स्नेह करते थे। फिर भी, वयस्क होने पर, वह उनका शत्रु बन गया, क्योंकि उसने मेरे बारे में ज्ञान तलाशना कभी बंद नहीं किया, परिणामस्वरूप वह अपने माता-पिता से विमुख हो गया। यह इसलिए हुआ क्योंकि, सबसे ज़्यादा उसे यह विश्वास था कि स्वर्ग और पृथ्वी और सभी वस्तुएं सर्वशक्तिमान के हाथों में हैं, और सभी सकारात्मक बातें परमेश्वर से आती हैं, शैतान द्वारा संसाधित हुए बिना उसी से सीधे तौर पर जारी होती हैं। उसके माता-पिता की प्रतिकूलता ने उसे मेरे कृपालु प्रेम एवं दया का और भी ज्ञान दिया, इस प्रकार उसके भीतर मुझे खोजने की इच्छा और तीव्र हो गयी। उसने न केवल

मेरे वचनों को खाने और पीने पर ध्यान दिया, बल्कि मेरी इच्छा को समझने पर भी ध्यान दिया, और वह अपने हृदय में हमेशा सतर्क रहा। परिणामस्वरूप वह अपनी आत्मा में हमेशा संवेदनशील बना रहा और इस प्रकार वह अपने हर काम में मेरे हृदय के अनुकूल रहा। उसने खुद को आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने के लिए अतीत के लोगों की असफलताओं पर निरंतर ध्यान बनाए रखा, क्योंकि वह असफलता के जाल में फंसने से बुरी तरह डरता था। इसी प्रकार, उसने उन लोगों की आस्था और प्रेम को आत्मसात करने पर भी ध्यान दिया जो युगों से परमेश्वर से प्रेम करते आ रहे थे। इस प्रकार से न केवल नकारात्मक पहलू में, बल्कि और भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, सकारात्मक पहलू में उसने अधिक तेज़ी से विकास किया, कुछ इस तरह कि मेरी उपस्थिति में उसका ज्ञान सभी से बढ़कर हो गया। तो, इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है कि किस प्रकार से उसने अपना सब कुछ मेरे हाथों में दे दिया, यहाँ तक कि उसने खाने-पीने, कपड़े पहनने, सोने और रहने के निर्णय भी मुझे सौंप दिये, और इनके बजाय मुझे सभी बातों में संतुष्टि प्रदान करने के आधार पर उसने मेरे उपहारों का आनन्द लिया। मैंने उसके अनगिनत परीक्षण लिए, स्वभाविक रूप से उन्होंने उसे अधमरा कर दिया, परन्तु इन सैकड़ों परीक्षणों के मध्य, उसने कभी भी मुझमें अपनी आस्था नहीं खोई या मुझसे मायूस नहीं हुआ। जब मैंने उससे कहा कि मैंने उसे त्याग दिया है, तो भी वह निराश नहीं हुआ और पहले के अभ्यास के सिद्धांतों के अनुसार एवं व्यावहारिक ढंग से मुझे प्रेम करना जारी रखा। जब मैंने उससे कहा कि भले ही वह मुझ से प्रेम करता है, तो भी मैं उसकी प्रशंसा नहीं करूँगा, अंत में मैं उसे शैतान के हाथों में दे दूँगा। लेकिन ऐसे परीक्षण जो उसकी देह ने नहीं भोगे, मगर जो वचनों के परीक्षण थे, उन परीक्षणों के मध्य भी उसने मुझसे प्रार्थना की और कहा : "हे परमेश्वर! स्वर्ग, पृथ्वी और सभी वस्तुओं के मध्य, क्या ऐसा कोई मनुष्य है, कोई प्राणी है, या कोई ऐसी वस्तु है जो तुझ सर्वशक्तिमान के हाथों में न हो? जब तू मुझे अपनी दया दिखाता है, तब मेरा हृदय तेरी दया से बहुत आनन्दित होता है। जब तू मेरा न्याय करता है, तो भले ही मैं उसके अयोग्य रहूँ, फिर भी मैं तेरे कर्मों के अथाहपन की और अधिक समझ प्राप्त करता हूँ, क्योंकि तू अधिकार और बुद्धि से परिपूर्ण है। हालाँकि मेरा शरीर कष्ट सहता है, लेकिन मेरी आत्मा में चैन है। मैं तेरी बुद्धि और कर्मों की प्रशंसा कैसे न करूँ? यदि मैं तुझे जानने के बाद मर भी जाऊँ, तो भी मैं उसके लिए सहर्ष और प्रसन्नता से तैयार रहूँगा। हे सर्वशक्तिमान! क्या तू सचमुच नहीं चाहता है कि मैं तुझे देखूँ? क्या मैं सच में तेरे न्याय को प्राप्त करने के अयोग्य हूँ? कहीं मुझ में ऐसा कुछ तो नहीं जो तू नहीं देखना चाहता?" इस प्रकार के परीक्षणों के मध्य,

भले ही पतरस मेरी इच्छा को सटीकता से समझने में असफल रहता था, लेकिन यह स्पष्ट था कि वह मेरे द्वारा उपयोग किए जाने के कारण खुद को बहुत गर्वान्वित और सम्मानित महसूस करता था (भले ही उसने मेरा न्याय इसलिए पाया ताकि मनुष्य मेरा प्रताप और क्रोध देख सके), और वह इन परीक्षणों के कारण बिल्कुल भी निरुत्साहित नहीं हुआ। मेरे समक्ष उसकी निष्ठा के कारण, और उस पर मेरे आशीषों के कारण, वह हज़ारों सालों के लिए मनुष्यों के लिए एक उदाहरण और आदर्श बना हुआ है। क्या तुम लोगों को उसकी इसी बात का अनुकरण नहीं करना चाहिए? ज़ोर लगा कर बहुत समय तक सोचो कि क्यों मैंने तुम लोगों को पतरस का इतना लम्बा वृत्तांत दिया है; तुम लोगों को इन सिद्धान्तों के अनुसार आचरण के करना चाहिए।

हालाँकि मुझे कम ही लोग जानते हैं, लेकिन मैं मानव पर अपना क्रोध नहीं निकालता, क्योंकि लोगों में बहुत सारी कमियां हैं और उनके लिए वह स्तर प्राप्त करना कठिन है जो मैं उनसे अपेक्षा करता हूँ। इसलिए, हज़ारों सालों से लेकर आज तक मैं मनुष्यों के प्रति सहनशील बना हुआ हूँ। फिर भी, मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग, मेरी सहनशीलता के कारण, खुद के साथ बहुत नरमी से पेश नहीं आओगे। पतरस के द्वारा, तुम्हें मुझे जानना चाहिए और मेरी खोज करनी चाहिए; और पतरस के सभी कार्यों के माध्यम से, तुम्हें अभूतपूर्व तरीके से प्रबुद्ध होना चाहिए और इस प्रकार ऐसे क्षेत्र पाने चाहिए जहाँ मनुष्य पहले कभी नहीं पहुँचा हो। संपूर्ण ब्रह्माण्ड और नभमंडल में, स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीज़ों में, स्वर्ग और पृथ्वी पर की सभी चीज़ें मेरे कार्य के अंतिम भाग के लिए अपने अंतिम प्रयास को लगा देती हैं। निश्चित ही तुम लोग शैतान की शक्तियों के द्वारा आदेश पाते हुए, एक किनारे पर दर्शक बने रहना नहीं चाहते? शैतान हमेशा उपस्थित रहकर उस ज्ञान का भक्षण कर रहा है, जो मेरे बारे में लोगों के हृदयों में है, दाँतों को पीसते और अपने पंजों को खोलते-बंद करते हुए अपनी मृत्यु के अंतिम समय के संघर्ष में लगा हुआ है। क्या तुम लोग इस समय उसकी कपटपूर्ण युक्तियों में फंसना चाहते हो? क्या तुम लोग ऐसे वक्त में अपने जीवन को बर्बाद कर लेना चाहते हो जब मेरा कार्य अंतत: पूरा हो गया है? क्या तुम लोग इंतज़ार कर रहे हो कि मैं एक बार फिर अपनी सहनशीलता दिखाऊँ? मेरे बारे में ज्ञान पाने की कोशिश करना सबसे मुख्य बात है, परन्तु अभ्यास पर ध्यान देना अपरिहार्य है। मेरे वचन सीधे तौर पर तुम लोगों पर उजागर किए जाते हैं, और मैं यह आशा करता हूँ कि तुम लोग मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करोगे, और अपने लिए महत्वकांक्षाओं और योजनाओं को रखना छोड़ दोगे।

27 फरवरी, 1992

अध्याय 7

पश्चिम की सभी शाखाओं को मेरी आवाज़ सुननी चाहिए :

अतीत में, क्या तुम मेरे प्रति वफ़ादार रहे हो? क्या तुमने मेरे परामर्श के उत्कृष्ट वचनों को सुना है? क्या तुम लोगों की आशाएँ वास्तविक हैं, अस्पष्ट और अनिश्चित नहीं? मनुष्य की वफ़ादारी, उसका प्रेम, उसकी निष्ठा—सब-कुछ वो है जो मुझसे आता है, और उसके अलावा कुछ नहीं है जो मेरे द्वारा प्रदान किया जाता है। मेरे लोगो, जब तुम मेरे वचनों को सुनते हो, तो क्या मेरी इच्छा को समझते हो? क्या तुम मेरे हृदय को देखते हो? इस तथ्य के बावजूद कि अतीत में, सेवा के पथ पर चलते हुए तुम लोगों ने उतार-चढ़ावों, प्रगति और असफलताओं का सामना किया था, और ऐसे समय भी आए थे, जब तुम लोगों के नीचे गिर जाने और यहाँ तक कि मुझसे विश्वासघात करने का भी खतरा था; लेकिन क्या तुम लोग जानते थे कि हर घड़ी मैं तुम लोगों को बचा रहा था? कि हर पल मैं तुम लोगों को बुलाने और बचाने के लिए लगातार आवाज़ लगा रहा था? कितनी ही बार तुम लोग शैतान के फंदों में गिरे हो; कितनी ही बार तुम लोग मनुष्य के प्रलोभनों में फँसे हो; कितनी ही बार तुम लोग खुद को त्यागने में असफल हुए हो और एक-दूसरे के साथ अंतहीन विवाद में पड़े हो। कितनी ही बार तुम लोगों के शरीर मेरे घर में रहे हैं, लेकिन तुम लोगों के हृदय जाने कहाँ थे। तथापि, कितनी ही बार मैंने तुम लोगों को अपना हाथ बढ़ाकर सँभाला है; और कितनी ही बार मैंने तुम लोगों के बीच दया के कण बिखेरे हैं। कितनी ही बार तुम लोगों के पीड़ा सहने के बाद के कष्टपूर्ण दृश्य मेरे लिए असह्य रहे हैं; कितनी ही बार...। क्या तुम लोग यह जानते हो?

तथापि, आज तुम लोगों ने मेरी देखरेख में आख़िरकार सभी कठिनाइयों पर विजय पा ली है, और मैं तुम लोगों के साथ आनंद मनाता हूँ; यह मेरी बुद्धिमत्ता का पारदर्शी रूप है। फिर भी, इसे अच्छे से स्मरण रखो! कौन नीचे गिरा, जबकि तुम लोग मज़बूत बने रहे? कौन है, जो किसी क्षण दुर्बल नहीं हुआ, हमेशा दृढ़ बना रहा है? मनुष्यों में कौन है, जिसने किसी ऐसे आशीष का आनंद उठाया हो, जो मैंने प्रदान नहीं किया था? किसने किसी ऐसे दुर्भाग्य का अनुभव किया है, जो मेरा दिया हुआ नहीं था? क्या ऐसा हो सकता है कि वे सभी, जो मुझसे प्रेम करते हैं, केवल आशीष ही प्राप्त करें? क्या ऐसा हो सकता है कि अय्यूब को दुर्भाग्य के दिन इसलिए झेलने पड़े, क्योंकि वह मुझसे प्रेम करने में असफल हुआ, और इसके बजाय

उसने मेरे विरोध का रास्ता चुना? क्या ऐसा हो सकता है कि पौलुस मेरी उपस्थिति में वफ़ादारी के साथ मेरी सेवा इसलिए कर सका, क्योंकि वह वाकई मुझसे प्रेम करने में समर्थ था? भले ही तुम लोग मेरी गवाही में दृढ़ रहो, किंतु क्या तुममें से कोई भी ऐसा है, जिसकी गवाही, शुद्ध सोने की तरह, मिलावट से रहित हो? क्या मनुष्य विशुद्ध वफ़ादारी में सक्षम हैं? तुम लोगों की गवाही मुझे आनंदित करती है, इस बात का तुम लोगों की "वफ़ादारी" से कोई विरोध नहीं है, क्योंकि मैंने कभी किसी से ज़्यादा की माँग नहीं की है। मेरी योजना के मूल इरादे का ख़याल करने पर, तुम सभी लोग "खोटा माल" हो जाओगे—मानक नहीं। क्या यह "दया के कण बिखेरने" के बारे में मैंने तुम लोगों से जो कहा था, उसका एक उदाहरण नहीं है? क्या तुम लोग मेरा उद्धार देख रहे हो?

तुम लोगों को पीछे मुड़कर सोचना और याद करना चाहिए : मेरे घर में वापस आने के बाद, क्या कोई ऐसा है, जिसने अपने नफ़े-नुकसान पर विचार किए बिना मुझे उस तरह से जाना है, जिस तरह पतरस ने जाना था? तुम लोगों ने बाइबल के सतही हिस्सों को तो अच्छी तरह से समझ लिया, किंतु क्या तुमने उसके सार को आत्मसात किया है? इस तरह, तुम वास्तव में स्वयं का त्याग करने से इनकार करते हुए, अभी भी अपनी "पूँजी" को पकड़े हुए हो। जब मैं कोई कथन कहता हूँ, जब मैं तुम लोगों से आमने-सामने बात करता हूँ, तो तुम लोगों में से किसने कभी मेरे द्वारा उद्घाटित जीवन के वचनों को ग्रहण करने के लिए अपना बंद खर्रा नीचे रखा है? तुम लोगों के मन में मेरे वचनों के लिए कोई सम्मान नहीं है, न ही तुम उन्हें सँजोते हो। बल्कि, तुम लोग अपनी स्थिति को बनाए रखने हेतु अपने शत्रुओं पर दागने के लिए मेरे वचनों का उपयोग मशीनगन की तरह करते हो; तुम लोग मुझे जानने के लिए मेरे न्याय को स्वीकारने का लेशमात्र भी प्रयास नहीं करते। तुम लोगों में से हर कोई किसी अन्य पर हथियार तानता है, तुम सभी लोग "निःस्वार्थ" हो और हर स्थिति में "दूसरों की चिंता करते हो"। क्या यह बिलकुल वैसा नहीं है, जैसा तुम कल कर रहे थे? और आज? तुम लोगों की "वफादारी" कुछ बिंदु ऊपर हो गई है, और तुम लोग थोड़ा और अनुभवी, थोड़ा और परिपक्व हो गए हो; इसके कारण, मेरे प्रति तुम्हारा "भय" थोड़ा बढ़ गया है, और कोई भी "हलकेपन से काम नहीं करता"। तुम लोग क्यों सतत निष्क्रियता की इस स्थिति में विद्यमान रहते हो? ऐसा क्यों है कि तुम लोगों में सकारात्मक पहलू कभी, कहीं भी दिखाई नहीं देते? आह, मेरे लोगो! अतीत बहुत पहले जा चुका है; तुम्हें उससे अब और चिपके नहीं रहना चाहिए। कल मजबूती से खड़े रह चुकने के बाद, आज तुम्हें मेरे प्रति सच्ची वफादारी निभानी चाहिए; इसके अलावा, कल तुम्हें मेरे लिए

अच्छी गवाही देनी चाहिए, और तुम भविष्य में मेरे आशीषों के उत्तराधिकारी होगे। तुम लोगों को यह बात समझनी चाहिए।

यद्यपि मैं तुम लोगों के सामने उपस्थित नहीं हूँ, फिर भी मेरा आत्मा निश्चित रूप से तुम लोगों को अनुग्रह प्रदान करेगा। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग मेरे आशीषों को सँजोकर रखोगे, और उन पर भरोसा करते हुए अपने आपको जानने में समर्थ होगे। उन्हें अपनी पूँजी मत मानो; बल्कि, मेरे वचनों का उपयोग अपनी कमियों को दूर करने के लिए करो, और इससे अपने सकारात्मक तत्त्व प्राप्त करो। यही संदेश मैं तुम लोगों को वसीयत में दे रहा हूँ!

28 फरवरी, 1992

अध्याय 8

जब मेरे प्रकाशन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचेंगे, और जब मेरा न्याय अंत के निकट आएगा, तब यह वह समय होगा जब मेरे सभी लोग प्रकट और पूर्ण बना दिए जाएँगे। मैं ब्रह्माण्ड जगत के सभी कोनों की यात्रा करता हूँ, उन लोगों की अनवरत खोज में जो मेरे अभिप्रायों से मेल खाते हों और मेरे उपयोग के लिए सही बैठते हों। कौन है जो खड़ा होकर मुझे सहयोग दे सकता है? मेरे प्रति मनुष्य का प्रेम बहुत कम है, और मुझमें उनकी आस्था दयनीय रूप से थोड़ी है। यदि मैं लोगों की कमज़ोरियों पर अपने वचनों से चोट न करता, तो वे शेखी बघारते और लंबी-चौड़ी हाँकते, सिद्धांतवादी बातें करते और आडंबरपूर्ण सिद्धांत बनाते, मानो वे सांसारिक मामलों के संबंध में सर्वदर्शी और सर्वज्ञ हों। उनमें जो अतीत में मेरे प्रति "निष्ठावान" थे, और उनमें जो आज मेरे समक्ष "डटे रहते" हैं, कौन है जो अब भी डींगें हाँकने की हिम्मत करता है? कौन अपने भविष्य की संभावनाओं को लेकर गुप-चुप हर्षित नहीं है? जब मैंने लोगों को सीधे उजागर नहीं किया, तब उनके पास कहीं छुपने का स्थान नहीं था और वे शर्म से तड़पते थे। यदि मैं भिन्न ढंग से बात करता तो ऐसा और कितना अधिक होता? लोगों में ऋणी होने का और भी अधिक बोध होता, वे मानते कि कोई भी चीज़ उन्हें ठीक नहीं कर सकती, और सभी अपनी निष्क्रियता से कसकर बँधे होते। जब लोग आशा खो देते हैं, तब राज्य की सलामी औपचारिक रूप से गूँजती है, जो, लोगों के कहे अनुसार, "वह समय है जब सात गुना तेज़ पवित्रात्मा कार्य करना आरंभ करता है।" दूसरे शब्दों में, यह वह है जब पृथ्वी पर राज्य का जीवन आधिकारिक रूप से आरंभ होता है; यह वह है जब मेरी दिव्यता प्रत्यक्ष रूप से

(किसी भी मानसिक "प्रसंस्करण" के बिना) कार्य करने के लिए सामने आती ह । सभी लोग तेज़ी से दौड़-भाग में जुट जाते हैं; मानो वे पुनः जीवित हो उठे हों या सपने से जाग गए हों, और जागने पर वे अपने को ऐसी परिस्थितियों में पाकर चौंक जाते हैं। अतीत में, मैंने कलीसिया के निर्माण के बारे में बहुत कुछ कहा था; मैंने कई रहस्य प्रकट किए थे, किंतु वह कार्य जब अपने शिखर पर पहुँचा, तभी यह अचानक समाप्त हो गया। लेकिन राज्य का निर्माण भिन्न है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जब युद्ध अपने अंतिम चरण में पहुँच जाता है, केवल तभी मैं पृथ्वी पर अपना कार्य नए सिरे से आरंभ करता हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि जब सारे मनुष्य पीछे हटने की कगार पर होते हैं तभी मैं अपना नया कार्य औपचारिक रूप से आरंभ करता और आगे बढ़ाता हूँ। राज्य के निर्माण और कलीसिया के निर्माण के बीच अंतर यह है कि, कलीसिया के निर्माण में, मैंने एक ऐसी मानवता के माध्यम से कार्य किया जो दिव्यता से शासित होती थी; मैं मानवों की पुरानी प्रकृति से सीधे निपटा, उनके कुरूप आत्म सीधे प्रकट किए, और उनके सार उजागर किए। परिणामस्वरूप, इस आधार पर वे स्वयं को जानने लगे, और इसलिए मन-वचन से पूर्ण विश्वास करने लगे थे। राज्य के निर्माण में, मैं सीधे अपनी दिव्यता के माध्यम से कार्य करता हूँ, और सभी लोगों को मेरे वचनों के उनके ज्ञान की नींव पर वह जानने देता हूँ जो मेरे पास है और जो मैं हूँ, अंततः उन्हें देहधारी देह के रूप में मेरा ज्ञान प्राप्त करने देता हूँ। इस प्रकार समस्त मानवजाति की अज्ञात परमेश्वर की खोज समाप्त हो जाती है, और इस प्रकार वे अपने हृदयों में स्वर्ग के परमेश्वर के लिए स्थान रखना बंद कर देते हैं; अर्थात, मैं मानवजाति को उन कर्मों के बारे में जानने देता हूँ जो मैं देहधारी शरीर में रहते समय करता हूँ, और इसलिए पृथ्वी पर अपना समय पूरा करूँगा।

राज्य के निर्माण का प्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक क्षेत्र पर लक्षित है। अर्थात, आध्यात्मिक क्षेत्र की लड़ाई की दशा-दिशा मेरे सभी लोगों के बीच प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट कर दी जाती है, और यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि न केवल कलीसिया के भीतर, बल्कि उससे भी अधिक राज्य के युग में भी, प्रत्येक व्यक्ति निरंतर युद्धरत है। उनके भौतिक शरीरों के बावज़ूद, आध्यात्मिक क्षेत्र प्रत्यक्ष रूप से प्रकट किया जाता है, और वे आध्यात्मिक क्षेत्र के जीवन के साथ संपर्क में आ जाते हैं। इस प्रकार, जब तुम लोग निष्ठावान होना आरंभ करते हो, तब तुम्हें मेरे कार्य के अगले भाग के लिए समुचित रूप से तैयार होना ही चाहिए। तुम्हें अपना संपूर्ण हृदय दे देना चाहिए; केवल तभी तुम मेरे हृदय को संतुष्ट कर सकते हो। मुझे ज़रा परवाह नहीं कि पहले कलीसिया में क्या हुआ; आज, यह राज्य में है। मेरी योजना में, शैतान आरंभ से ही, प्रत्येक

कदम का पीछा करता आ रहा है। मेरी बुद्धि की विषमता के रूप में, हमेशा मेरी वास्तविक योजना को बाधित करने के तरीक़े और उपाय खोजने की कोशिश करता रहा है। परंतु क्या मैं उसके कपटपूर्ण कुचक्रों के आगे झुक सकता हूँ? स्वर्ग में और पृथ्वी पर सब कुछ मेरी सेवा करते हैं; शैतान के कपटपूर्ण कुचक्र क्या कुछ अलग हो सकते हैं? ठीक यही वह जगह है जहाँ मेरी बुद्धि बीच में काटती है; ठीक यही वह है जो मेरे कर्मों के बारे में अद्भुत है, और यही मेरी पूरी प्रबंधन योजना के परिचालन का सिद्धांत है। राज्य के निर्माण के युग के दौरान भी, मैं शैतान के कपटपूर्ण कुचक्रों से बचता नहीं हूँ, बल्कि वह कार्य करता रहता हूँ जो मुझे करना ही चाहिए। ब्रह्माण्ड और सभी वस्तुओं के बीच, मैंने अपनी विषमता के रूप में शैतान के कर्मों को चुना है। क्या यह मेरी बुद्धि का आविर्भाव नहीं है? क्या यह ठीक वही नहीं है जो मेरे कार्यों के बारे में अद्भुत है? राज्य के युग में प्रवेश के अवसर पर, स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी चीज़ों का पूर्णतः कायापलट हो जाता है, और वे उत्सव मनाती और आनंदित हो उठती हैं। क्या तुम लोग कुछ अलग हो? किसके हृदय में शहद की मिठास नहीं है? कौन अपने हृदय में आनंद से नहीं भर उठता है? कौन खुशी से नृत्य नहीं करता है? कौन स्तुति के वचन नहीं बोलता है?

क्या तुम उस सबके लक्ष्यों और उत्पत्ति को समझ पाते हो जिस पर मैंने बात और चर्चा की है, या नहीं? यदि मैं यह नहीं पूछता, तो अधिकांश लोग यही मानते कि मैं केवल बक-बक कर रहा था, और मेरे वचनों के स्रोत की थाह पाने में असमर्थ होते। यदि तुम लोग ध्यान से उन पर विचार करोगे, तो तुम लोगों को उनका महत्व पता चलेगा। अच्छा होगा कि तुम उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ो : मेरे कौन-से वचन तुम्हारे लिए लाभप्रद नहीं हैं? किनका उद्देश्य तुम्हारे जीवन को बढ़ने देना नहीं है? कौन आध्यात्मिक क्षेत्र की वास्तविकता की बात नहीं करते हैं? अधिकांश लोगों का मानना है कि मेरे वचनों में कोई तुक अथवा तर्क नहीं है, कि उनमें स्पष्टीकरण और व्याख्या का अभाव है। क्या मेरे वचन वास्तव में इतने अमूर्त और गूढ़ हैं? क्या तुम लोग सच में मेरे वचनों के आगे समर्पण करते हो? क्या तुम सच में मेरे वचनों को स्वीकार करते हो? क्या तुम उनके साथ खिलौनों की तरह बर्ताव नहीं करते हो? क्या तुम अपने कुरूप रूप-रंग को ढकने के लिए कपड़ों के रूप में उनका उपयोग नहीं करते हो? इस विशाल संसार में, कौन मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से जाँचा गया है? किसने मेरे आत्मा के वचन व्यक्तिगत रूप से सुने हैं? बहुत सारे लोग अँधेरे में इधर-उधर टटोलते और खोजबीन करते हैं; बहुत सारे विपत्ति के बीच प्रार्थना करते हैं; बहुत सारे भूखे और ठण्डे, आशा से देखते हैं; और बहुत सारे शैतान द्वारा जकड़े हुए हैं; फिर भी बहुत सारे नहीं

जानते हैं कि कहाँ जाएँ, बहुत सारे अपनी प्रसन्नता के बीच मुझे धोखा देते हैं, बहुत सारे कृतघ्न हैं, और बहुत सारे शैतान के कपटपूर्ण कुचक्रों के प्रति निष्ठावान हैं। तुम लोगों के बीच अय्यूब कौन है? पतरस कौन है? मैंने बार-बार अय्यूब का उल्लेख क्यों किया है? मैंने इतनी अधिक बार पतरस का उल्लेख क्यों किया है? क्या तुम लोगों ने कभी सुनिश्चित किया है कि तुम लोगों के लिए मेरी आशाएँ क्या हैं? तुम लोगों को ऐसी बातों पर विचार करते हुए अधिक समय बिताना चाहिए।

पतरस कई वर्षों तक मेरे प्रति निष्ठावान था, किंतु वह कभी बड़बड़ाया नहीं और न ही उसे कोई शिकायत थी; यहाँ तक कि अय्यूब भी उसके बराबर नहीं था, और, युगों-युगों के दौरान सभी संत, पतरस से बहुत कमतर रहे हैं। उसने न केवल मुझे जानने की खोज की, बल्कि उस समय के दौरान मुझे जान भी पाया जब शैतान अपने कपटपूर्ण कुचक्र पूरे कर रहा था। इसके फलस्वरूप पतरस ने कई वर्षों तक सदैव मेरी इच्छा के अनुरूप रहते हुए मेरी सेवा की, और इसी कारण, वह शैतान द्वारा कभी शोषित नहीं किया गया था। पतरस ने अय्यूब की आस्था से सबक सीखे, साथ ही उसकी कमियों को भी स्पष्ट रूप से जाना। यद्यपि अय्यूब अत्यधिक आस्था से परिपूर्ण था, किंतु उसमें आध्यात्मिक क्षेत्र के विषयों के ज्ञान का अभाव था, इसलिए उसने कई वचन कहे जो वास्तविकता से मेल नहीं खाते थे; यह दर्शाता है कि अय्यूब का ज्ञान उथला था, और पूर्णता के अयोग्य था। इसलिए, पतरस ने हमेशा आत्मा की समझ प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया था, और हमेशा आध्यात्मिक क्षेत्र की गतिकी का अवलोकन करने पर ध्यान दिया था। परिणामस्वरूप, वह न केवल मेरी इच्छाओं के बारे में कुछ बातों को सुनिश्चित कर पाया, बल्कि उसे शैतान के कपटपूर्ण कुचक्रों का भी अल्पज्ञान था। इसके कारण, मेरे बारे में उसका ज्ञान युगों-युगों के दौरान किसी भी अन्य की अपेक्षा अधिकाधिक बढ़ता गया।

पतरस के अनुभव से, यह देख पाना कठिन नहीं है कि यदि मानव मुझे जानना चाहते हैं, तो उन्हें अपनी आत्माओं के भीतर ध्यानपूर्वक सोच-विचार करने पर ध्यान केंद्रित करना ही चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि तुम बाहर से मेरे प्रति एक निश्चित मात्रा में "समर्पित" रहो; यह चिंता का गौण विषय है। यदि तुम मुझे नहीं जानते हो, तो तुम जिस विश्वास, प्रेम और निष्ठा की बात करते हो वह सब केवल भ्रम हैं, वे व्यर्थ बकवाद हैं, और तुम निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति बन जाओगे जो मेरे सामने बड़ी-बड़ी डींगें हाँकता है किंतु स्वयं को भी नहीं जानता है। ऐसे में, तुम एक बार फिर शैतान के द्वारा फँसा लिए जाओगे और अपने आपको छुड़ा नहीं पाओगे; तुम तबाही के पुत्र और विनाश की वस्तु बन जाओगे। परंतु यदि तुम मेरे वचनों

के प्रति उदासीन और बेपरवाह हो, तो तुम निस्संदेह मेरा विरोध करते हो। यह तथ्य है, और अच्छा होगा कि तुम आध्यात्मिक क्षेत्र के द्वार के आर-पार उन बहुत-सी और भिन्न-भिन्न आत्माओं को देखो जिन्हें मेरे द्वारा ताड़ना दी गई है। उनमें से कौन, मेरे वचनों के सम्मुख आने पर, निष्क्रिय, बेपरवाह और अस्वीकृति से भरा नहीं था? उनमें से कौन मेरे वचनों के बारे में दोषदर्शी नहीं था? उनमें से किसने मेरे वचनों में दोष ढूँढने की कोशिश नहीं की? उनमें से किसने मेरे वचनों का स्वयं को "बचाने" के लिए "रक्षात्मक हथियार" के रूप में उपयोग नहीं किया? उन्होंने मेरे वचनों की विषयवस्तु का उपयोग मुझे जानने के तरीक़े के रूप में नहीं, बल्कि खेलने के लिए मात्र खिलौनों की तरह किया। इसमें, क्या वे सीधे मेरा प्रतिरोध नहीं कर रहे थे? मेरे वचन कौन हैं? मेरा आत्मा कौन है? मैंने इतनी अधिक बार ऐसे प्रश्न तुम लोगों से पूछे हैं, फिर भी क्या कभी तुम लोग थोड़े भी उच्चतर और स्पष्ट हुए हो? क्या तुमने सच में कभी उनका अनुभव किया है? मैं तुम्हें एक बार फिर याद दिलाता हूँ: यदि तुम मेरे वचनों को नहीं जानते हो, न ही उन्हें स्वीकार करते हो, न ही उन्हें अभ्यास में लाते हो, तो तुम अपरिहार्य रूप से मेरी ताड़ना के लक्ष्य बनोगे! तुम निश्चित रूप से शैतान के शिकार बनोगे!

29 फरवरी, 1992

अध्याय 9

चूँकि तुम मेरे घराने के लोगों में हो और मेरे राज्य में निष्ठावान हो, इसलिए तुम जो भी करते हो उसमें उन मानकों को पूरा करो जिनकी मैं अपेक्षा करता हूँ। मैं यह नहीं कहता कि तुम केवल एक घुमक्कड़ बादल बनकर रह जाओ, बल्कि चमकती हुई बर्फ़ के समान बनो, उसका सार और उससे भी बढ़कर, उसका मूल्य धारण करो। क्योंकि मैं पवित्र भूमि से हूँ, मैं कमल के समान नहीं, जिसके पास केवल एक नाम है, कोई सार नहीं क्योंकि वह दलदल में होता है, न कि पवित्र भूमि में। जिस समय एक नया स्वर्ग पृथ्वी पर उतरता है और एक नई पृथ्वी आसमान पर फैल जाती है, उसी समय मैं भी औपचारिक रूप से मनुष्यों के बीच कार्य करता हूँ। इंसानों के बीच मुझे कौन जानता है? किसने मेरे आगमन के समय को देखा था? किसने देखा है कि मेरे पास न केवल एक नाम है, बल्कि, मुझमें सार भी है? मैं अपने हाथ से सफ़ेद बादलों को हटाता हूँ और नज़दीक से आसमान का अवलोकन करता हूँ; अंतरिक्ष में ऐसा कुछ भी नहीं जिसे मेरे हाथ ने व्यवस्थित न किया हो, और उसके नीचे ऐसा कोई भी नहीं, जो मेरे पराक्रमी उद्यम

को पूरा करने में अपना थोड़ा-बहुत योगदान नहीं देता हो। मैं पृथ्वी पर लोगों से कष्टसाध्य माँगें नहीं करता, क्योंकि मैं हमेशा से व्यावहारिक परमेश्वर रहा हूँ, और सर्वशक्तिमान हूँ जिसने मनुष्य की रचना की है और जो उन्हें अच्छी तरह जानता है। सभी लोग सर्वशक्तिमान की आँखों के सामने हैं। जो लोग पृथ्वी के दूरस्थ कोनों में रहते हैं, वो मेरी आत्मा द्वारा की गई जाँच से कैसे बच सकते हैं? यद्यपि लोग मेरी आत्मा को "जानते" हैं, फिर भी वो मेरी आत्मा को नाराज़ करते हैं। मेरे वचन लोगों के कुरुप चेहरों के साथ-साथ उनके अंतरतम में छिपे विचारों को भी प्रकट कर पृथ्वी पर सभी को मेरे प्रकाश द्वारा सादा-सरल बना देते हैं और मेरी जाँच के दौरान वो ग़लत साबित हो जाते हैं। हालांकि ग़लत साबित होने के बावजूद, उनके हृदय मुझसे दूर नहीं जा पाते। सृष्टि के प्राणियों में कौन है, जो मेरे कार्यों के फलस्वरूप मुझसे प्रेम करने मेरे पास नहीं आता? कौन है जो मेरे वचनों के फलस्वरूप मेरे लिए नहीं तरसता? मेरे प्रेम के कारण किसके हृदय में अनुराग की भावनाएँ पैदा नहीं होतीं? शैतान की भ्रष्टता के कारण ही मनुष्य उस स्थिति तक नहीं पहुँच पाता जिसकी मैं अपेक्षा रखता हूँ। यहां तक कि मेरे द्वारा अपेक्षित निम्नतम मानकों की वजह से भी लोगों में आशंकाएं पैदा हो जाती हैं, आज का तो क्या कहें—जब इस युग में शैतान हंगामा खड़ा कर देता है और बुरी तरह से निरंकुश हो जाता है—या जब शैतान लोगों को इस क़द्र कुचल देता है कि उनके शरीर पूरी तरह गंदगी में सन जाते हैं। ऐसा कब हुआ है जब इंसान अपनी अनैतिकता की वजह से मेरे हृदय का ध्यान रखने में नाकाम हुआ हो और मुझे दु:ख नहीं पहुँचा हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं शैतान पर तरस दिखाऊँ? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरे प्रेम में मुझे ग़लत समझा गया हो? जब लोग मेरी अवज्ञा करते हैं, तो मेरा हृदय चुपचाप रोता है; जब वो मेरा विरोध करते हैं, तो मैं उन्हें ताड़ना देता हूँ; जब मैं उन्हें बचाता हूँ और मृत्यु के बाद फिर से जीवित करता हूँ, तब मैं उन्हें बेहद सावधानी से पोषित करता हूँ; जब वे मुझे समर्पित होते हैं, तो मेरा दिल हल्का हो जाता है और मैं तुरंत स्वर्ग में और पृथ्वी पर और सभी चीज़ों में बड़े परिवर्तन होते महसूस करता हूँ। जब लोग मेरी स्तुति करते हैं, तो मैं कैसे उसका आनंद न उठाऊं? जब वे मेरी गवाही देते हैं और मेरे द्वारा प्राप्त कर लिए जाते हैं, तो मैं कैसे गौरवान्वित महसूस न करूं? क्या ऐसा हो सकता है कि इंसान जैसे चाहे कार्य और व्यवहार करे और मैं उसे नियंत्रित और पोषित न करूँ? जब मैं दिशा-निर्देश प्रदान नहीं करता, तो लोग निष्क्रिय और निश्चल हो जाते हैं; इसके अलावा, मेरी पीठ पीछे, वे "प्रशंसनीय" गंदे आचरणों में लिप्त हो जाते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि जिस देह को मैंने ओढ़ रखा है, वह तुम्हारे चाल-चलन, तुम्हारे आचरण और तुम्हारे वचनों के बारे में कुछ

नहीं जानती। कई वर्षों तक मैंने हवा और बारिश को सहा है, और मैंने मनुष्य के संसार की कड़वाहट का भी अनुभव किया है; हालांकि गहन चिंतन करने पर, कितना भी कष्ट क्यों न आए, लेकिन वो मेरे प्रति इंसान के अंदर निराशा पैदा नहीं कर सकते, कोई भी मधुरता मनुष्यों को मेरे प्रति उदासीन, हताश या उपेक्षापूर्ण होने का कारण तो बिलकुल नहीं बन सकती। क्या मेरे लिए उनका प्रेम वास्तव में पीड़ा की कमी या फिर मिठास की कमी तक ही सीमित है?

आज देह में रहते हुए, मैंने आधिकारिक रूप से अपना कार्य करना शुरू कर दिया है। यद्यपि मनुष्य मेरी आत्मा की आवाज़ से भयभीत होते हैं, किंतु वो मेरी आत्मा के सार की अवज्ञा करते हैं। मुझे विस्तारपूर्वक बताने की आवश्यकता नहीं है कि मेरे वचनों में इंसान के लिए मुझ देहधारी को जानना कितना कठिन है। जैसा मैंने पहले कहा, मैं अपनी अपेक्षाओं में कठोर नहीं हो रहा हूँ, और तुम लोगों को मेरे बारे में पूरा ज्ञान हो, ये ज़रूरी नहीं है (क्योंकि मनुष्य में कमियाँ हैं: यह एक अंतर्निहित स्थिति है, और कोई उपार्जित स्थिति उसकी भरपाई नहीं कर सकती)। तुम लोगों को केवल मेरे देहधारी रूप द्वारा की गई या कही गई बातों को ही जानने की आवश्यकता है। चूँकि मेरी अपेक्षाएं कठोर नहीं हैं, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को इन सभी कार्यों और वचनों का पता चले और तुम लोग ज्ञान पा सको। तुम लोगों को इस अपवित्र संसार में अपनी अशुद्धियों से छुटकारा पाना चाहिए, तुम लोगों को इस पिछड़े "सम्राटों के परिवार" में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न करना चाहिए, और किसी प्रकार की शिथिलता नहीं दिखानी चाहिए। तुम्हें अपने साथ ज़रा-सी भी नरमी नहीं बरतनी चाहिए। मैं जो बात एक दिन में बोलता हूँ, उसे जानने के लिए तुम्हें अधिक समय देना होगा और ज़्यादा प्रयास करने होंगे, मेरे बोले गए एक वाक्य का अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी तुम्हारा पूरा जीवन लग जाएगा। मेरे वचन अस्पष्ट और अमूर्त नहीं हैं; वे खोखली बातें नहीं हैं। बहुत से लोग मेरे वचनों को प्राप्त करना चाहते हैं, परंतु मैं उन पर कोई ध्यान नहीं देता; बहुत से लोग मेरी समृद्धि को पाने की लालसा रखते हैं, पर मैं उन्हें थोड़ा भी नहीं देता हूँ; बहुत से लोग मेरे दर्शन करना चाहते हैं, मगर मैं हमेशा छिपा रहता हूँ; बहुत से लोग पूरे मनोयोग से मेरी वाणी सुनते हैं, पर उनकी "तड़प" से द्रवित हुए बिना, मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और अपना सिर घुमा लेता हूँ; बहुत से लोग मेरी वाणी से डर जाते हैं, लेकिन मेरे वचन हमेशा आक्रामक होते हैं; बहुत से लोग मेरे चेहरे का दर्शन करने से डरते हैं, लेकिन उन्हें मार गिराने के लिए मैं जानबूझकर प्रकट होता हूँ। लोगों ने मेरा चेहरा कभी नहीं देखा है, और न ही उन्होंने कभी मेरी वाणी सुनी है, क्योंकि वो मुझे नहीं

जानते हैं। हालाँकि वो मेरे द्वारा मारे जा सकते हैं, वो मुझे छोड़कर जा सकते हैं, उन्हें मेरे हाथों द्वारा ताड़ना दी जा सकती है, फिर भी वो नहीं जानते कि वो जो कुछ भी करते हैं, वह मेरे हृदय के अनुसार ही है, और अभी भी इस बात से अनजान हैं कि मैं अपना हृदय आख़िर किसके लिए खोलता हूँ। सृष्टि की रचना से लेकर आज तक, किसी ने भी मुझे न तो सचमुच में जाना है, न ही देखा है, हालाँकि आज मैं देहधारी हो गया हूँ, तो भी तुम लोग मुझे नहीं जानते। क्या यह सच्चाई नहीं? क्या कभी तुमने देह में मेरे कार्यों और स्वभाव का छोटा-सा अंश भी देखा है?

स्वर्ग वह स्थान है जहाँ मैं विश्राम करता हूँ, और स्वर्ग के नीचे वह जगह है, जहाँ मुझे आराम मिलता है। मेरे पास रहने की कहीं तो जगह है, और मेरा एक समय है जब मैं अपनी सामर्थ्य दिखाता हूँ। यदि मैं पृथ्वी पर न होता, यदि मैं ख़ुद को देह के भीतर छिपाकर न रखता, और दीन बनकर गोपनीय रूप से न रहता, तो क्या आकाश और पृथ्वी बहुत पहले ही बदल न गए होते? क्या तुम लोग जो मेरे अपने हो, पहले ही मेरे द्वारा उपयोग न कर लिए गए होते? हालांकि, मेरे कार्यों में बुद्धि है, मैं मनुष्यों के कपट से पूरी तरह परिचित हूँ, मगर मैं उनके उदाहरणों के अनुसार नहीं चलता, बल्कि बदले में उन्हें कुछ देता ही हूँ। आध्यात्मिक क्षेत्र में मेरी बुद्धि अक्षय है, और देह में मेरी बुद्धि अनंत है। क्या यही वो क्षण नहीं है जब मैं अपने कर्मों को स्पष्ट करता हूँ? मैंने राज्य के युग में, आज तक, लोगों को कई बार माफ़ किया है। क्या मैं वास्तव में अपने समय में अब और देरी कर सकता हूँ? हालांकि मैं नाजुक लोगों के प्रति थोड़ा अधिक दयालु रहा हूँ, एक बार जब मेरा कार्य पूरा हो जाए, तो क्या तब भी पुराने कार्य करके मैं खुद पर मुसीबत ला सकता हूँ? क्या मैं जानबूझकर शैतान को मुझ पर आरोप लगाने दे सकता हूँ? मुझे ज़रूरत नहीं कि मनुष्य कुछ करें, बस वो मेरे वचनों की सच्चाई और उनके मूल अर्थ को स्वीकार करें। हालांकि मेरे वचन आसान हैं, किंतु असल में वे जटिल हैं, क्योंकि तुम लोग बहुत छोटे हो, और बेहद सुन्न हो गए हो। जब मैं अपने रहस्यों को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता हूँ और देह में अपनी इच्छा स्पष्ट करता हूँ, तो तुम लोग कोई ध्यान नहीं देते; तुम आवाज़ों को सुनते हो, पर उनके अर्थ को नहीं समझते। मैं दुःख से उबर गया हूँ। हालाँकि मैं देह में हूँ, पर मैं देह की सेवकाई करने में असमर्थ हूँ।

कौन देह में मेरे वचनों और कार्यों से मेरे कर्मों को जान पाया है? जब मैं लिखित रूप में अपने रहस्य प्रकट करता हूँ, या उन्हें ऊँची आवाज़ में बोलता हूँ, तो लोग भौचक्के रह जाते हैं; वो ख़ामोशी से अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। जब मैं बोलता हूँ तो वह मनुष्य की समझ से बाहर क्यों होता है? वचन उनकी समझ

से बाहर क्यों होते हैं? वो मेरे कर्मों के प्रति विवेकशून्य क्यों हो जाते हैं? कौन है जो मुझे देखने के बाद कभी न भूल पाए? उनमें से कौन है जो मेरी वाणी सुनकर भी उसे न गुज़रने दे? कौन है जो मेरी इच्छा को महसूस करके भी मेरे हृदय को प्रसन्न न करे? मैं लोगों के बीच रहता हूँ और चलता-फिरता हूँ; मैं उनके जीवन का अनुभव करने आया हूँ, हालाँकि इंसान के लिए चीज़ें बनाने के बाद मुझे लगा था कि हर चीज़ अच्छी है, लेकिन मुझे लोगों के बीच जीवन से कोई आनंद नहीं मिलता, मुझे उनके बीच कोई खुशी नहीं मिलती। मैं घृणा से उन्हें त्यागता नहीं, न ही मैं उनके प्रति भावुक होता हूँ—क्योंकि लोग मुझे नहीं जानते, वो अंधकार में मेरे चेहरे को देख नहीं पाते; तमाम कोलाहल के बीच उन्हें मेरी वाणी सुनने में कठिनाई होती है, और वो मेरे कहे को समझ नहीं पाते। इस प्रकार, सतही तौर पर, तुम लोग जो कुछ करते हो वह मेरे समर्पण में करते हो, पर दिल ही दिल में तुम लोग अभी भी मेरी अवज्ञा करते हो। यह कहा जा सकता है कि यही समस्त मानवजाति का पुराना स्वभाव है। अपवाद कौन है? मेरी ताड़ना पाने वालों में कौन शामिल नहीं है? तब भी, कौन मेरी सहनशीलता में नहीं जीता? यदि मानवता मेरे कोप से नष्ट हो गई होती, तो मेरे स्वर्ग और पृथ्वी की रचना करने का क्या महत्व रह जाता? मैंने एक बार बहुत से लोगों को चेतावनी दी थी, बहुत से लोगों को नसीहत दी थी, और बहुत से लोगों का खुलेआम न्याय किया था—क्या यह मानवता को सीधे नष्ट करने से कहीं बेहतर नहीं है? मेरा उद्देश्य लोगों को मृत्यु देना नहीं है, बल्कि मेरे न्याय के दौरान मेरे समस्त कर्मों से अवगत कराना है। जब तुम लोग अथाह कुंड से ऊपर चढ़ते हो—यानी जब तुम ख़ुद को मेरे न्याय से स्वतंत्र करोगे—तो तुम्हारे सारे निजी सोच-विचार और योजनाएँ गायब हो जाएंगी, और हर कोई मुझे संतुष्ट करना चाहेगा। इसमें, क्या मैं अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लूँगा?

1 मार्च, 1992

अध्याय 10

राज्य का युग, आख़िरकार, बीते हुए समयों से अलग है। इसका सरोकार इस बात से नहीं है कि मानवता कैसे काम करती है; बल्कि, मैं व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करने के लिए पृथ्वी पर उतरा हूँ, जो कुछ ऐसा कार्य है जिसकी मानव न तो कल्पना कर सकते हैं और न ही जिसे वे संपन्न कर सकते हैं। इतने वर्षों से, संसार की सृष्टि के समय से ही, यह कार्य केवल कलीसिया के निर्माण के बारे में ही रहा है, किंतु राज्य के निर्माण के बारे में कभी कोई कुछ नहीं सुनता है। यद्यपि मैं स्वयं अपने मुँह से इसके बारे में

बात करता हूँ, फिर भी क्या कोई है जो इसका सार जानता है? मैं एक बार मानवों के संसार में उतरा था और मैंने उनके दुःख-दर्द अनुभव किए और देखे थे, किंतु यह मैंने अपने देहधारण का उद्देश्य पूरा किए बिना किया था। एक बार जब राज्य का निर्माण शुरू हो गया, मेरे देहधारी शरीर ने सेवकाई करना विधिवत आरंभ कर दिया था; अर्थात्, राज्य के राजा ने अपनी संप्रभु सामर्थ्य औपचारिक रूप से ग्रहण कर ली थी। इससे यह स्पष्ट है कि मानव जगत में राज्य का अवरोहण—मात्र एक शाब्दिक अभिव्यंजना होने से कहीं दूर—वास्तविक सच्चाइयों में से एक है; यह "अभ्यास की वास्तविकता" के अर्थ का एक पहलू है। मानवों ने मेरे कार्यों में से एक भी कार्य कभी नहीं देखा है, न ही उन्होंने मेरे कथनों में से एक भी कथन कभी सुना है। यदि उन्होंने मेरे कार्य देखे होते, तो उन्हें क्या पता लगा होता? और यदि वे मुझे बोलते हुए सुनते, तो उन्होंने क्या समझा होता? समूचे संसार में, सब कुछ मेरी दया और कृपालु प्रेम के भीतर विद्यमान है, परंतु ऐसे तो समूची मानवता भी मेरे न्याय के अंतर्गत निहित है, और इसी प्रकार मेरे परीक्षणों के अधीन भी है। मैं लोगों के प्रति दयावान और प्रेममयी रहा हूँ, यहाँ तक कि तब भी जब वे सब कुछ सीमा तक भ्रष्ट कर दिए गए थे; मैंने उन्हें ताड़ना प्रदान की है, तब भी जब उन सभी ने मेरे सिंहासन के आगे समर्पण कर दिया था। परंतु क्या कोई मानव प्राणी है जो मेरे द्वारा भेजी गई पीड़ा और शुद्धिकरण के बीच नहीं है? कितने सारे लोग प्रकाश के लिए अंधकार में हाथ-पैर मार रहे हैं, और कितने सारे लोग अपनी परीक्षाओं से बुरी तरह जूझ रहे हैं। अय्यूब में विश्वास था, किंतु क्या वह स्वयं अपने लिए बाहर निकलने का मार्ग नहीं ढूँढ़ रहा था? यद्यपि मेरे लोग परीक्षाओं से सामना होने पर दृढ़ता से टिके रह सकते हैं, किंतु क्या कोई ऐसा है जिसमें, ज़ोर-ज़ोर से इसे जपे बिना, एक गहरी आस्था भी है? बल्कि क्या ऐसा नहीं है कि लोग अपने हृदयों में संदेह पालते हुए भी अपने विश्वासों को स्वर देते रहते हैं? ऐसे कोई मानव प्राणी नहीं हैं जो परीक्षाओं में दृढ़ता से टिके रहे हैं, या जिन्होंने परीक्षाओं से गुज़ारे जाते समय सच्चे अर्थ में समर्पण किया है। यदि मैंने इस संसार की ओर देखने से बचने के लिए अपना चेहरा नहीं ढका होता, तो समूची मानव जाति मेरी सुलगती हुई नज़रों के नीचे धराशायी हो जाती, क्योंकि मैं मानवता से कुछ नहीं माँगता हूँ।

जब राज्य की सलामी गूँजती है—जो तब भी गूँजती है जब सात बार मेघों की गड़गड़ाहट होती है—तब यह ध्वनि स्वर्ग और पृथ्वी को झकझोर देती है, और सर्वोच्च आसमान में हलचल मचा देती है और प्रत्येक मानव के हृदय के तारों को कंपकंपा देती है। बड़े लाल अजगर की भूमि में राज्य का स्तुतिगान धूमधाम से उभरता है, यह सिद्ध करते हुए कि मैंने उस राष्ट्र को नष्ट करके अपना राज्य स्थापित कर लिया

है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह बात है कि पृथ्वी पर मेरा राज्य स्थापित हो गया है। इस क्षण, मैं अपने स्वर्गदूतों को संसार के प्रत्येक राष्ट्र में भेजना प्रारंभ करता हूँ, ताकि वे मेरे पुत्रों, मेरे लोगों की चरवाही कर सकें; यह मेरे कार्य के अगले चरण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी है। तथापि मैं व्यक्तिगत रूप से उस स्थान पर जाता हूँ जहाँ वह बड़ा लाल अजगर कुंडली मारकर बैठा है, और उसके साथ प्रतिस्पर्धा करता हूँ। एक बार जब समूची मानवता मुझे देह में जानने लगेगी, और देह में मेरे कर्मों को देख पाएगी, तब बड़े लाल अजगर की माँद राख में बदल जाएगी और इस तरह विलुप्त हो जाएगी कि उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मेरे राज्य के लोगों के रूप में, चूँकि तुम बड़े लाल अजगर से अत्यंत गहराई से घृणा करते हो, तुम्हें अपने कार्यकलाप से मेरे हृदय को संतुष्ट करना होगा, और इस तरह उस अजगर को शर्मिंदा करना होगा। क्या तुम लोग सचमुच यह बात समझते हो कि वह बड़ा लाल अजगर घृणास्पद है? क्या तुम सच में महसूस करते हो कि वह राज्य के राजा का शत्रु है? क्या तुम लोगों को वास्तव में विश्वास है कि तुम लोग मेरे लिए अद्‌भुत गवाही दे सकते हो? क्या तुम्हें सचमुच पूर्ण विश्वास है कि तुम बड़े लाल अजगर को पराजित कर सकते हो? मैं तुम लोगों से बस यही माँगता हूँ; मैं तुम लोगों से बस इतनी ही अपेक्षा करता हूँ कि तुम लोग इस चरण तक पहुँच सको। क्या तुम लोग यह कर सकोगे? क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम यह प्राप्त कर सकते हो? मानव सचमुच में क्या करने में सक्षम हैं? बल्कि क्यों न मैं स्वयं ही यह करूँ? मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि मैं व्यक्तिगत रूप से उस स्थान पर उतरता हूँ जहाँ युद्ध चल रहा होता है। मैं जो चाहता हूँ वह तुम लोगों का विश्वास है, न कि तुम लोगों के कर्म। सभी मानव प्राणी मेरे वचनों को सीधे-सच्चे ढँग से स्वीकार करने में अक्षम हैं, और इसके बजाय बस कनखियों से उन पर एक नज़र भर डालते हैं। क्या इससे तुम्हें अपने लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिली है? क्या इस ढँग से तुम मुझे जानने लगे हो? ईमानदारी से कहूँ, तो पृथ्वी पर मानवों में, कोई एक भी नहीं है जो सीधे मेरे चेहरे में देख पाने में समर्थ हो, और कोई एक भी नहीं है जो मेरे वचनों का शुद्ध और मिलावटरहित अर्थ ग्रहण कर पाता हो। इसलिए मैंने पृथ्वी पर एक अभूतपूर्व परियोजना शुरू की है, ताकि मैं अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकूँ और लोगों के हृदय में अपनी सच्ची छवि स्थापित कर सकूँ। इस तरह, मैं उस युग का अंत करूँगा जिसमें धारणाएँ लोगों के ऊपर हावी रहती हैं।

आज, मैं न केवल बड़े लाल अजगर के राष्ट्र के ऊपर उतर रहा हूँ, बल्कि मैं अपना चेहरा समूचे ब्रह्माण्ड की ओर भी मोड़ रहा हूँ, जिसने समूचे सर्वोच्च आसमान में कंपकंपाहट उत्पन्न कर दी है। क्या

कहीं कोई एक भी स्थान है जो मेरे न्याय के अधीन नहीं है? क्या कोई एक भी स्थान है जो उन विपत्तियों के अधीन नहीं है जो मैं उस पर बरसाता रहता हूँ। हर उस स्थान पर जहाँ मैं जाता हूँ, मैंने तरह-तरह के "विनाश के बीज" छितरा दिए हैं। यह मेरे कार्य करने के तरीक़ों में से एक है, और यह निस्संदेह मानवता के उद्धार का एक कार्य है, और जो मैं उन्हें देता हूँ वह अब भी एक प्रकार का प्रेम ही है। मैं चाहता हूँ कि और भी अधिक लोग मुझे जान पाएँ, और मुझे देख पाएँ, और इस तरह उस परमेश्वर का आदर करने लगें जिसे वे इतने सारे वर्षों से देख नहीं सके है किंतु जो, ठीक इस समय, वास्तविक है। मैंने संसार की सृष्टि किस कारण से की? मानव प्राणियों के भ्रष्ट हो जाने के बाद भी, मैंने उन्हें समूल नष्ट क्यों नहीं किया? समूची मानव जाति आपदाओं के बीच किस कारण से रहती है? देहधारण करने में मेरा क्या उद्देश्य था? जब मैं अपना कार्य कर रहा होता हूँ, तो मानवता न केवल कड़वे का, बल्कि मीठे का स्वाद भी सीखती है। संसार के सारे लोगों में, कौन है जो मेरे अनुग्रह के भीतर नहीं रहता है? यदि मैंने मानव प्राणियों को भौतिक आशीष प्रदान नहीं किए होते, तो संसार में कौन प्रचुरता का आनंद उठा पाता? क्या ऐसा नहीं है कि तुम लोगों को मेरे लोगों के रूप में अपना स्थान लेने देना भी एक आशीष ही है? यदि तुम मेरे लोग नहीं होते, बल्कि उसके बजाय सेवा करने वाले होते, तो क्या तुम लोग मेरी आशीषों के भीतर नहीं जी रहे होते? तुममें से कोई भी मेरे वचनों के मूल की थाह पाने में समर्थ नहीं है। मानव प्राणी मेरे द्वारा प्रदान की गई पदवियों को सँजोकर रखना तो दूर, उनमें से कई "सेवा करने वाले" की पदवी के कारण अपने हृदयों में द्वेष पालते हैं, और बहुत सारे "मेरे लोग" की पदवी के कारण अपने हृदयों में मेरे प्रति प्रेम पालते हैं। किसी को भी मुझे मूर्ख बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए; मेरी आँखें सब देख रही हैं! तुम लोगों के बीच कौन स्वेच्छा से ग्रहण करता है, तुम लोगों के बीच कौन संपूर्ण आज्ञाकारिता दिखाता है? यदि राज्य की सलामी नहीं गूँजती, तो क्या तुम लोग अंत तक सचमुच समर्पण कर पाते? मानव क्या कर पाने और क्या सोच पाने में समर्थ हैं, और वे कितनी दूर तक जा पाते हैं—ये सब चीज़ें मैंने बहुत पहले ही पूर्वनिर्धारित कर दी थीं।

लोगों की विशाल बहुसंख्या मेरे मुखमण्डल के प्रकाश में मेरा प्रज्वलन स्वीकार करती है। लोगों की विशाल बहुसंख्या, मेरे प्रोत्साहन से प्रेरित होकर, अपनी खोज में तेज़ी से आगे बढ़ने के लिए स्वयं को झकझोरती है। जब शैतान की शक्तियाँ मेरे लोगों पर आक्रमण करती हैं, तब उन्हें रोकने के लिए मैं वहाँ होता हूँ; जब शैतान के षड़यंत्र उनके जीवन में क़हर बरपाते हैं, तब मैं उसे खदेड़कर दूर भगा देता हूँ, एक बार जाए तो फिर कभी वापस न लौटे। पृथ्वी पर, सब प्रकार की दुष्ट आत्माएँ हमेशा लुकछिपकर

किसी विश्राम-स्थल की तलाश में लगी रहती हैं, और निरंतर मानव शवों की खोज करती रहती हैं, ताकि उनका उपभोग किया जा सके। मेरे लोगो! तुम्हें मेरी देखभाल और सुरक्षा के भीतर रहना चाहिए। कभी दुर्व्यसनी न बनो! कभी लापरवाही से व्यवहार न करो! तुम्हें मेरे घर में अपनी निष्ठा अर्पित करनी चाहिए, और केवल निष्ठा से ही तुम शैतान के छल-कपट के विरुद्ध पलटवार कर सकते हो। किन्हीं भी परिस्थितियों में तुम्हें वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसा तुमने अतीत में किया था, मेरे सामने कुछ करना और मेरी पीठ पीछे कुछ और करना; यदि तुम इस तरह करते हो, तो तुम पहले ही छुटकारे से परे हो। क्या मैं इस तरह के वचन बहुत बार नहीं कह चुका हूँ? बिलकुल इसीलिए क्योंकि मनुष्य की पुरानी प्रकृति सुधार से परे है, मुझे लोगों को बार-बार स्मरण दिलाना पड़ा है। ऊब मत जाना! वह सब जो मैं कहता हूँ तुम लोगों की नियति सुनिश्चित करने के लिए ही है! गंदा और मैला-कुचैला स्थान ही वह स्थान होता है जो शैतान को चाहिए होता है; तुम जितने अधिक दयनीय ढँग से सुधार के अयोग्य होते हो, और जितने अधिक दुर्व्यसनी होते हो, और संयम के आगे समर्पण करने से इनकार करते हो, अशुद्ध आत्माएँ तुम्हारे भीतर घुसपैठ करने के किसी भी अवसर का उतना ही अधिक लाभ उठाएँगी। यदि तुम इस अवस्था तक पहुँच चुके हो, तो तुम लोगों की निष्ठा किसी भी प्रकार की सच्चाई से रहित कोरी बकवास के अलावा और कुछ नहीं होगी, और अशुद्ध आत्माएँ तुम लोगों का संकल्प निगल लेंगी और इसे अवज्ञा और शैतानी षड़यंत्रों में बदल देंगी, ताकि इनका उपयोग मेरे कार्य में विघ्न डालने के लिए किया जा सके। वहाँ से, किसी भी समय मेरे द्वारा तुम पर प्रहार किया जा सकता है। कोई भी इस स्थिति की गंभीरता को नहीं समझता है; लोग सब कुछ सुनकर भी बहरे बने रहते हैं, और ज़रा भी चौकन्ने नहीं रहते हैं। मैं वह स्मरण नहीं करता जो अतीत में किया गया था; क्या तुम सच में अब भी एक बार और सब कुछ "भुलाकर" तुम्हारे प्रति मेरे उदार होने की प्रतीक्षा कर रहे हो? यद्यपि मानवों ने मेरा विरोध किया है, फिर भी मैं इसे उनके विरुद्ध स्मरण नहीं रखूँगा, क्योंकि वे बहुत छोटी कद-काठी के हैं, और इसलिए मैंने उनसे अत्यधिक ऊँची माँगें नहीं की हैं। मैं बस यही अपेक्षा करता हूँ कि वे दुर्व्यसनी न हों, और यह कि वे संयम के अधीन रहें। निश्चित रूप से इस एकमात्र पूर्वपिक्षा को पूरा करना तुम लोगों की क्षमता से बाहर नहीं है, है क्या? अधिकांश लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि मैं उनके लिए और अधिक रहस्य प्रकाशित करूँ, जिन्हें देखकर वे अपनी आँखें निहाल कर सकें। फिर भी, यदि तुम स्वर्ग के सारे रहस्य समझ भी जाओ, तो उस ज्ञान के साथ तुम क्या कर सकते हो? क्या यह मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम बढ़ाएगा? क्या यह मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम

जगाएगा? मैं मानवों को कम नहीं आँकता हूँ, न ही मैं बिना सोचे-विचारे उनके बारे में किसी निर्णय पर पहुँचता हूँ। यदि मानवों की वास्तविक परिस्थितियाँ ये नहीं होतीं, तो मैं इतनी आसानी से उन्हें ऐसे तमगों के मुकुट नहीं पहनाता। पीछे मुड़कर अतीत के बारे में सोचो : कितनी बार मैंने तुम लोगों पर लाँछन लगाए हैं? कितनी बार मैंने तुम लोगों को कम आँका है? कितनी बार मैंने तुम लोगों की वास्तविक परिस्थितियों पर ध्यान दिए बिना तुम लोगों को देखा है? कितनी बार मेरे कथन तुम लोगों को पूरे हृदय से जीतने में विफल रहे हैं? कितनी बार मैंने तुम लोगों के भीतर के तारों को गहराई से छेड़े बिना कोई बात की है? तुम लोगों में से किसने मेरे वचन भय और सिहरन के बिना पढ़े हैं, इस बात को लेकर अत्यंत भयभीत महसूस करते हुए कि मैं तुम्हें अथाह कुण्ड में धकेल दूँगा? कौन मेरे वचनों के कारण परीक्षाएँ नहीं सहता है? मेरे कथनों के भीतर अधिकार विध्यमान है, किंतु यह मानवों पर आकस्मिक न्याय पारित करने के लिए नहीं है; बल्कि, उनकी वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, मैं अपने वचनों में अंतर्निहित अर्थ उनके सामने निरंतर प्रदर्शित करता रहता हूँ। तथ्य की बात करें तो क्या कोई है जो मेरे वचनों की सर्वक्षमतावान शक्ति को पहचानने में सक्षम है? क्या कोई है जो वह श़ुद्धतम सोना ग्रहण कर सकता है जिससे मेरे वचन निर्मित हैं? मैंने कुल कितने वचन कहे हैं? क्या किसी ने कभी इन्हें सहेजकर रखा है?

3 मार्च, 1992

राज्य गान

लोग मेरी जय-जयकार करते हैं, लोग मेरी स्तुति करते हैं; सभी अपने मुख से एकमात्र सच्चे ईश्वर का नाम लेते हैं, सभी लोगों की दृष्टि मेरे कर्मों को देखने के लिए उठती है। राज्य लोगों के जगत में अवतरित होता है, मेरा व्यक्तित्व समृद्ध और प्रचुर है। इस पर कौन खुश न होगा? कौन है जो इसके लिए आनंदित हो, नृत्य न करेगा? ओह, सिय्योन! मेरा जश्न मनाने के लिए अपनी विजयी-पताका उठाओ! जीत का अपना विजय-गीत गाओ और मेरा पवित्र नाम फैलाओ! पृथ्वी की समस्त वस्तुओ! मुझे अर्पण होने के लिए स्वयं को शुद्ध करो! आसमान के तारो! अब अपने स्थानों पर लौट जाओ और नभ-मंडल में मेरा प्रबल सामर्थ्य दिखाओ! मैं पृथ्वी के लोगों की उन आवाज़ों को सुन रहा हूं, जो अपने गायन में मेरे लिए असीम प्रेम और श्रद्धा प्रकट कर रही हैं! इस दिन, जबकि हर चीज़ फिर से जीवित होती है, मैं पृथ्वी पर आता हूं। इस पल, फूल खिलते हैं, पक्षी एक सुर में गाते हैं, हर चीज़ पूरे उल्लास से धड़कती है! राज्य के अभिनंदन की ध्वनि

में, शैतान का राज्य ध्वस्त हो गया है, राज्य-गान के प्रतिध्वनित होते समूह-गान में नष्ट हो गया है। और ये अब फिर कभी सिर नहीं उठाएगा!

पृथ्वी पर कौन है जो सिर उठाने और विरोध करने का साहस करे? जब मैं पृथ्वी पर आता हूं तो ज्वलन, क्रोध, और तमाम विपदाएं लाता हूं। पृथ्वी के सारे राज्य अब मेरे राज्य हैं! ऊपर आकाश में बादल गोते लगाते और तरंगित होते हैं; आकाश के नीचे झीलें और नदियाँ हिलोरे मारती हैं और जिससे मधुर संगीत निकलता है। अपनी मांद में विश्राम करते जीव-जंतु बाहर निकलते हैं और जो लोग उनींदी अवस्था में थे, उन्हें भी मैं जगा देता हूं। हर कोई जिसकी प्रतीक्षा में था, वो दिन आखिर आ गया! वे मुझे सर्वाधिक सुंदर गीत भेंट करते हैं!

इस खूबसूरत पल में, इस रोमांचक समय में,

ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर सब स्तुति करते हैं। इसके लिए कौन उल्लसित न होगा?

किसका दिल हल्का न होगा? इस अवसर पर कौन खुशी के आँसू न बहाएगा?

अब यह वही आकाश नहीं है, अब यह राज्य का आकाश है।

अब यह वही पृथ्वी नहीं है, बल्कि अब यह पवित्र धरती है।

घनघोर वर्षा के बाद, मलिन जीर्ण विश्व पूरी तरह से बदल दिया गया है।

पर्वत बदल रहे हैं ... जलस्रोत बदल रहे हैं ...

इन्सान भी बदल रहे हैं ... हर चीज़ बदल रही है...।

शांत पर्वतो! उठो और मेरे लिए नृत्य करो!

स्थिर जलस्रोतो! स्वतंत्र रूप से प्रवाहमान रहो!

सपनों में खोये मनुष्यो! उठो और दौड़ो!

मैं आ गया हूं ... मैं ही राजा हूँ...।

सब लोग अपनी आँखों से मेरा चेहरा देखेंगे, सब लोग अपने कानों से मेरी आवाज़ सुनेंगे,

वे स्वयं राज्य का जीवन जीएंगे...।

इतना मधुर ... इतना सुंदर...।

अविस्मरणीय ... अविस्मरणीय...।

मेरे क्रोध की ज्वाला में, बड़ा लाल अजगर संघर्षरत है;

मेरे प्रतापी न्याय में, शैतान अपना वास्तविक रूप दिखाते हैं;

मेरे कड़े वचनों में, सभी शर्म महसूस करते हैं, छिपने को जगह नहीं पाते हैं।

वे अतीत याद करते हैं, कैसे वे मेरा उपहास करते थे।

हमेशा वे दिखावा करते थे, हमेशा मेरा विरोध करते थे।

आज, कौन नहीं रोता है? कौन मलाल न करता है?

पूरा ब्रह्मांड जगत आँसुओं में डूबा है ...

आनन्द-ध्वनि से भरा है ... हँसी से भरा है...।

अतुलनीय आनन्द ... अतुलनीय आनन्द...।

हल्की बारिश गुनगुनाए ... भारी बर्फ फड़फड़ाए...।

लोगों में गम और खुशी दोनों हैं ... कुछ हँस रहे हैं...।

कुछ सुबक रहे हैं ... और कुछ जश्न मना रहे हैं...।

जैसे कि लोग भूल गए हैं ... कि यह घनघोर बादल और वर्षा वसंत है,

या खिलते हुए फूलों की ग्रीष्म ऋतु, या भरपूर फसल की एक शरद ऋतु,

या बर्फ और तुषार की ठिठुरती सर्दी, नहीं जानता कोई...।

आकाश में बादलों का बहाव, पृथ्वी पर उफनते समुद्र।

पुत्र अपनी बाहें लहराते हैं ... नृत्य में लोगों के पैर थिरकते हैं...।

स्वर्गदूत लगे हैं अपने काम में ... स्वर्गदूत संचालन कर रहे हैं...।

धरती पर लोगों में हलचल है, धरती पर हर चीज़ वृद्धि कर रही है।

अध्याय 11

मानवजाति में हर व्यक्ति को मेरे आत्मा द्वारा अवलोकन किया जाना स्वीकार करना चाहिए, अपने हर वचन और कार्य की बारीकी से जाँच करनी चाहिए और इसके अलावा, मेरे चमत्कारिक कर्मों पर विचार करना चाहिए। पृथ्वी पर राज्य के आगमन के समय तुम लोग कैसा महसूस करते हो? जब मेरे पुत्र एवं लोग मेरे सिंहासन की ओर उमड़ते हैं, तो मैं औपचारिक रूप से महान सफेद सिंहासन के सम्मुख न्याय आरम्भ करता हूँ। इसका अर्थ यह है कि जब मैं पृथ्वी पर व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य आरम्भ करता हूँ, और जब न्याय का युग अपने समापन के समीप होता है, तो मैं अपने वचनों को संपूर्ण ब्रह्मांड की ओर भेजना आरम्भ करता हूँ और अपनी आत्मा की आवाज़ को संपूर्ण ब्रह्मांड में जारी करता हूँ। अपने वचनों के ज़रिए, मैं उन सभी लोगों और वस्तुओं को निर्मल कर दूँगा, जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर हैं, ताकि भूमि अब और अपवित्र और अनैतिक न रहे, बल्कि एक पवित्र राज्य बन जाए। मैं सभी चीज़ों को नया कर दूँगा, ताकि वे मेरे उपयोग के लिए उपलब्ध हों, ताकि उन्हें फिर कभी धरती की साँस न लेनी पड़े, और वे कभी फिर धरती की गंध से दूषित न हों। पृथ्वी पर, मनुष्य ने मेरे वचनों के लक्ष्य और मूल की टोह ली है, और मेरे कर्मों को देखा है, फिर भी कभी किसी ने वास्तव में मेरे वचनों के मूल को नहीं जाना है, और किसी ने भी, कभी भी, वास्तव में मेरे कर्मों की चमत्कारिकता को नहीं देखा है। ऐसा यह केवल आज ही हुआ है कि मैं व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के बीच आया हूँ और अपने वचन कहे हैं, कि मनुष्य को मेरे बारे में ज्ञान कम है, वो अपने विचारों में से "मेरे" स्थान को हटा रहे हैं, और उसके बजाय अपनी चेतना में व्यावहारिक परमेश्वर के लिए स्थान बना रहे हैं। मनुष्य की अपनी धारणाएँ हैं और वह उत्सुकता से भरा है; परमेश्वर को कौन नहीं देखना चाहेगा? कौन परमेश्वर से नहीं मिलना चाहेगा? फिर भी केवल एक चीज़ जो मनुष्य के हृदय में एक निश्चित स्थान रखती है, वह परमेश्वर है जिसके बारे में मनुष्य को लगता है कि वह अस्पष्ट और अमूर्त है। यदि मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से न बताया होता तो कौन इसे जान पाता? कौन सचमुच, यकीन के साथ और लेशमात्र भी शंका के बगैर, विश्वास करता कि वाकई मेरा अस्तित्व भी है? मनुष्य के हृदय में "मैं" और असलियत के "मैं" के बीच बहुत बड़ा अंतर है, और उनके बीच तुलना करने में कोई भी

सक्षम नहीं है। यदि मैं देहधारी न होता, तो मनुष्य ने मुझे कभी भी न जाना होता, और यदि उसने मुझे जान भी लिया होता, तो क्या इस प्रकार का ज्ञान अभी भी एक धारणा न होता? हर दिन मैं लोगों के निर्बाध प्रवाह के बीच चलता हूँ, और हर दिन मैं हर व्यक्ति के भीतर कार्य करता हूँ। जब मनुष्य मुझे वास्तव में देख लेगा, तो वह मुझे मेरे वचनों में जान पाएगा, और वह उन उपायों को समझ पाएगा जिसके माध्यम से मैं बोलता हूँ, साथ ही वह मेरे इरादे भी समझ जाएगा।

जब राज्य औपचारिक तौर पर पृथ्वी पर आता है, तो सभी चीजों में वह कौन-सी चीज़ है, जो शांत नहीं होती? सभी लोगों में वह कौन है, जो भयभीत नहीं होता? मैं संपूर्ण ब्रह्मांड में हर जगह चलता हूँ, और हर चीज़ व्यक्तिगत रूप से मैं ही व्यवस्थित करता हूँ। इस समय, कौन नहीं जानता कि मेरे कार्य अद्भुत हैं? मेरे हाथ सभी चीज़ों को थामते हैं, फिर भी मैं सभी चीज़ों से ऊपर हूँ। क्या आज मेरा देहधारण और मनुष्यों के बीच मेरी व्यक्तिगत उपस्थिति मेरी विनम्रता और गोपनीयता का सही अर्थ नहीं है? बाहरी तौर पर, बहुत-से लोग नेक कहकर मेरी सराहना करते हैं, और सुंदर कहकर मेरी प्रशंसा करते हैं, किन्तु वास्तव में मुझे जानता कौन है? आज, मैं क्यों कहता हूँ कि तुम लोग मुझे जानो? क्या मेरा लक्ष्य बड़े लाल अजगर को शर्मिंदा करना नहीं है? मैं मनुष्य को मेरी प्रशंसा करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहता, बल्कि चाहता हूँ कि वह मुझे जाने, जिसके ज़रिए वह मुझे प्रेम करने लगेगा, और इस तरह मेरी प्रशंसा करेगा। ऐसी प्रशंसा नाम के अनुरूप सार्थक होती है, और निरर्थक बात नहीं होती; केवल इस प्रकार की प्रशंसा ही मेरे सिंहासन तक पहुँच सकती है और आसमान में ऊँची उड़ान भर सकती है। क्योंकि मनुष्य को शैतान द्वारा प्रलोभित और भ्रष्ट किया गया है, क्योंकि उस पर धारणाओं और सोच ने क़ब्ज़ा कर लिया है, इसलिए व्यक्तिगत तौर पर संपूर्ण मानवजाति को जीतने, मनुष्य की सभी धारणाओं को उजागर करने, और मनुष्य की सोच की धज्जियां उड़ाने के उद्देश्य से मैं देहधारी बना हूँ। परिणामस्वरूप, मनुष्य मेरे सामने अब और आडंबर नहीं करता, तथा अपनी धारणाओं के ज़रिए मेरी सेवा नहीं करता, और इस प्रकार मनुष्य की धारणाओं में "मैं" पूरी तरह छितरा जाता है। जब राज्य आता है, तो मैं सबसे पहले इस चरण का कार्य आरम्भ करता हूँ, और मैं ऐसा अपने लोगों के बीच करता हूँ। मेरे लोग जो बड़े लाल अजगर के देश में पैदा हुए हैं, निश्चित रूप से तुम लोगों के भीतर बड़े लाल अजगर के ज़हर का थोड़ा-सा या अंश-मात्र भी नहीं है। इस प्रकार, मेरे कार्य का यह चरण मुख्य रूप से तुम लोगों पर केंद्रित है, और चीन में मेरे देहधारण की महत्ता का यह एक पहलू है। अधिकांश लोग मेरे बोले गए वचनों के एक अंश को भी समझने में असमर्थ

हैं, और जब वे समझते भी हैं, तो उनकी समझ धुँधली और उलझी हुई होती है। यह उस विधि में एक अहम मोड़ है जिसके द्वारा मैं बोलता हूँ। यदि सभी लोग मेरे वचनों को पढ़ने में समर्थ होते और उनके अर्थ को समझ पाते, तो मनुष्यों में से किसे बचाया जा सकता था, और अधोलोक में नहीं डाला जा सकता था? जब मनुष्य मुझे जान लेगा और मेरी आज्ञा का पालन करेगा तभी मैं आराम करूँगा, और वही वह समय होगा जब मनुष्य मेरे वचनों का अर्थ समझने में समर्थ हो पाएगा। आज, तुम लोगों का आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है—यह लगभग दयनीय रूप से छोटा है, यहाँ तक कि यह उन्नत किए जाने योग्य भी नहीं है—मेरे बारे में तुम लोगों के ज्ञान को लेकर तो कहना ही क्या।

हालाँकि मैं कहता हूँ कि मेरे पुत्रों और लोगों की अगुवाई के लिए स्वर्गदूतों को आगे भेजा जाना शुरू कर दिया गया है, फिर भी मेरे वचनों का अर्थ समझने में कोई भी समर्थ नहीं है। जब मैं व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के बीच आता हूँ, तो स्वर्गदूत साथ-साथ चरवाही का कार्य आरम्भ कर देते हैं, और स्वर्गदूतों द्वारा चरवाही के दौरान, सभी पुत्र और लोग न केवल परीक्षाओं से गुज़रते हैं और चरवाही को प्राप्त करते हैं, बल्कि अपनी आँखों से सभी प्रकार के दिव्यदर्शनों की घटनाओं को निहारने में भी सक्षम हो जाते हैं। क्योंकि मैं प्रत्यक्ष रूप से दिव्यता में कार्य करता हूँ, इसलिए सभी चीजें एक नए आरम्भ में प्रवेश करती हैं और क्योंकि यह दिव्यता प्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है, इसलिए यह मानवजाति द्वारा थोड़ी-सी भी बाधित नहीं होती, और मनुष्य को अलौकिक परिस्थितियों के अधीन मुक्त रूप से संचालित होती लगती है। फिर भी, मेरे लिए, यह सबकुछ सामान्य है (मनुष्य को लगता है कि यह अलौकिक है क्योंकि उसका कभी भी प्रत्यक्ष रूप से दिव्यता से साक्षात्कार नहीं हुआ है); यह मनुष्य की किसी भी धारणा के अधीन नहीं है, और मानवीय विचारों से निष्कलंक है। लोग इसे केवल तभी देखेंगे जब वे सभी सही मार्ग पर प्रवेश करेंगे; क्योंकि अभी शुरुआत है, इसलिए जब मनुष्य के प्रवेश की बात आती है तो उसमें कई कमियाँ हैं, और विफलताओं और अपारदर्शिता की मुश्किल से ही अनदेखी हो पाती है। आज, चूंकि मैं तुम लोगों को इस स्थिति तक ले आया हूँ, इसलिए मैंने कई उपयुक्त व्यवस्थाएँ की हैं, और मेरे स्वयं के लक्ष्य हैं। यदि मैं तुम लोगों को आज उनके बारे में बताता, तो क्या तुम लोग उन्हें सच में जानने में समर्थ हो पाते? मैं मनुष्य के मन के विचारों और मनुष्य के हृदय की इच्छाओं से भली-भांति परिचित हूँ: कौन है जिसने ख़ुद के लिए कभी बचने का तरीका नहीं खोजा? कौन है जिसने कभी अपने लिए संभावनाओं के बारे में नहीं सोचा? फिर भी भले ही मनुष्य एक समृद्ध और चकित करने वाली मेधा से संपन्न हो, पर कौन इस भविष्यवाणी में

समर्थ था कि युगों के बाद, वर्तमान जैसा हो गया है वैसा होगा? क्या यह वास्तव में तुम्हारे व्यक्तिनिष्ठ प्रयासों का परिणाम है? क्या यही तुम्हारे अथक परिश्रम का प्रतिदान है? क्या यह तुम्हारे मन में परिकल्पित सुंदर झाँकी है? यदि मैंने संपूर्ण मनुष्यजाति का मार्गदर्शन नहीं किया होता, तो कौन स्वयं को मेरी व्यवस्थाओं से अलग करने और कोई अन्य तरीका ढूँढने में समर्थ हो पाता? क्या मनुष्यों की यही कल्पनाएँ और इच्छाएँ उसे आज यहाँ तक लेकर आई हैं? बहुत से लोगों का संपूर्ण जीवन उनकी इच्छाएं पूरी हुए बिना ही बीत जाता है। क्या यह वास्तव में उनकी सोच में किसी दोष की वजह से होता है? बहुत से लोगों का जीवन अप्रत्याशित खुशी और संतुष्टि से भरा होता है। क्या यह वास्तव में इसलिए है क्योंकि वे बहुत कम अपेक्षा रखते हैं? संपूर्ण मानवजाति में कौन है जिसकी सर्वशक्तिमान की नज़रों में देखभाल नहीं की जाती? कौन सर्वशक्तिमान द्वारा तय प्रारब्ध के बीच नहीं रहता? क्या मनुष्य का जीवन और मृत्यु उसका अपना चुनाव है? क्या मनुष्य अपने भाग्य को खुद नियंत्रित करता है? बहुत से लोग मृत्यु की कामना करते हैं, फिर भी वह उनसे काफी दूर रहती है; बहुत से लोग जीवन में मज़बूत होना चाहते हैं और मृत्यु से डरते हैं, फिर भी उनकी जानकारी के बिना, उनकी मृत्यु का दिन निकट आ जाता है, उन्हें मृत्यु की खाई में डुबा देता है; बहुत से लोग आसमान की ओर देखते हैं और गहरी आह भरते हैं; कई लोग अत्यधिक रोते हैं, दर्दनाक आवाज़ में सिसकते हैं; बहुत से लोग परीक्षाओं के बीच पतित हो जाते हैं; बहुत से प्रलोभन के बंदी बन जाते हैं। यद्यपि मैं मनुष्य को मुझे स्पष्ट रूप से निहारने की अनुमति देने के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रकट नहीं होता, तब भी बहुत से लोग मेरे चेहरे को देखकर भयभीत हो जाते हैं, बेहद डरते हैं कि मैं उन्हें मार गिराऊँगा, या मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा। क्या मनुष्य वास्तव में मुझे जानता भी है या नहीं? कोई भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता। क्या ऐसा नहीं है? तुम लोग मुझसे और मेरी ताड़ना से डरते हो, फिर भी तुम लोग खड़े होकर मेरा खुलकर विरोध करते हो और मेरी आलोचना करते हो। क्या यही बात नहीं है? उस मनुष्य ने मुझे कभी नहीं जाना है क्योंकि उसने कभी भी मेरा चेहरा नहीं देखा या मेरी आवाज़ नहीं सुनी है। इसलिए, भले ही मैं मनुष्य के हृदय के भीतर हूँ, क्या ऐसा कोई है जिसके हृदय में मैं धुँधला और अस्पष्ट नहीं हूँ? क्या ऐसा कोई है जिसके हृदय में मैं पूरी तरह से स्पष्ट हूँ? वो लोग जो मेरे हैं, मैं उनके लिए इच्छा नहीं रखता कि वे भी मुझे अनिश्चितता और अस्पष्टता से देखें, और इसीलिए मैंने इस महान कार्य को शुरू किया है।

मैं चुपचाप मनुष्यों के बीच आता हूँ, और चुपचाप चला जाता हूँ। क्या किसी ने कभी मुझे देखा है?

क्या सूर्य अपनी दहकती हुई लपटों के कारण मुझे देख सकता है? क्या चन्द्रमा अपनी चमकदार स्पष्टता के कारण मुझे देख सकता है? क्या आकाश में अपनी स्थिति के कारण तारामंडल मुझे देख सकते हैं? जब मैं आता हूँ, तो मनुष्य को पता नहीं चलता, और सभी चीजें अनभिज्ञ रहती हैं और जब मैं जाता हूँ, तब भी मनुष्य बेख़बर रहता है। मेरी गवाही कौन दे सकता है? क्या यह पृथ्वी पर लोगों द्वारा स्तुति हो सकती है? क्या यह जंगल में खिलने वाली कुमुदिनियाँ हो सकती हैं? क्या यह आकाश में उड़ने वाले पक्षी हैं? क्या यह पहाड़ों में गर्जना करने वाले शेर हैं? कोई भी मुझे पूरी तरह से नहीं देख सकता! कोई भी उस कार्य को नहीं कर सकता है जो मैं करूँगा! यदि उन्होंने इस कार्य को किया भी, तो उसका क्या प्रभाव होगा? हर दिन मैं बहुत से लोगों के प्रत्येक कार्य की समीक्षा करता हूँ, और हर दिन मैं बहुत से लोगों के हृदय और मन को देखता हूँ; कोई भी कभी भी मेरे न्याय से नहीं बचा है, और न ही कभी किसी ने भी स्वयं को मेरे न्याय की वास्तविकता से वंचित किया है। मैं आसमानों से ऊपर हूँ और दूर से देखता हूँ: असंख्य लोग मेरे द्वारा मार गिराए जा चुके हैं, फिर भी, असंख्य लोग मेरी दया और करुणा के बीच रहते भी हैं। क्या तुम लोग भी इसी प्रकार की परिस्थितियों के बीच नहीं रहते?

5 मार्च, 1992

अध्याय 12

जब पूर्व से बिजली चमकती है, जो कि निश्चित रूप से वो क्षण भी होता है जब मैं बोलना आरम्भ करता हूँ—जब बिजली चमकती है, तो संपूर्ण नभमण्डल रोशन हो उठता है, और सभी तारों का रूपान्तरण हो जाता है। मानो पूरी मानवजाति को निपटा दिया जा चुका हो। पूर्व से आने वाले इस प्रकाश की रोशनी में, समस्त मानवजाति अपने मूल स्वरूप में प्रकट हो जाती है, उनकी आँखें चुँधिया जाती हैं, उन्हें समझ नहीं आता कि क्या करें और यह तो वे और भी नहीं समझ पाते कि अपने कुरूप स्वरूप को कैसे छिपाएँ। वे उन पशुओं की तरह भी हैं जो मेरे प्रकाश से दूर भागते हैं और पहाड़ी गुफाओं में शरण लेते हैं—फिर भी, उनमें से एक को भी मेरे प्रकाश में से मिटाया नहीं जा सकता। सभी मनुष्य भौचक्के हैं, सभी प्रतीक्षा कर रहे हैं, सभी देख रहे हैं; मेरे प्रकाश के आगमन के साथ ही, सभी उस दिन का आनन्द मनाते हैं जब वे पैदा हुए थे, और उसी प्रकार सभी उस दिन को कोसते हैं जब वे पैदा हुए थे। परस्पर-विरोधी भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना असंभव है; आत्म-ताड़ना के आँसुओं की नदियाँ बन जाती

हैं और वे व्यापक जल प्रवाह में बह जाते हैं और फिर पल भर में ही उनका नामो-निशान मिट जाता है। एक बार फिर, मेरा दिन समस्त मानवजाति के नज़दीक आ रहा है, एक बार फिर मानवजाति को जाग्रत कर रहा है और मानवजाति को एक और नई शुरुआत दे रहा है। मेरा हृदय धड़कता है और मेरी धड़कनों की लय का अनुसरण करते हुए, पहाड़ आनन्द से उछलते हैं, समुद्र खुशी से नृत्य करता है और लहरें लय में चट्टानों की दीवारों से टकराती हैं। जो मेरे हृदय में है, उसे व्यक्त करना कठिन है। मैं सभी अशुद्ध चीज़ों को घूरकर भस्म कर देना चाहता हूँ; मैं चाहता हूँ कि सभी अवज्ञाकारी पुत्र मेरी नज़रों के सामने से ओझल हो जाएँ और आगे से उनका कोई अस्तित्व ही न रहे। मैंने न केवल बड़े लाल अजगर के निवास स्थान में एक नई शुरुआत की है, बल्कि विश्व में एक नए कार्य की शुरुआत भी की है। शीघ्र ही पृथ्वी के राज्य मेरा राज्य बन जाएँगे; शीघ्र ही पृथ्वी के राज्य, मेरे राज्य के कारण हमेशा के लिए अस्तित्वहीन हो जाएँगे, क्योंकि मैंने पहले ही विजय प्राप्त कर ली है, क्योंकि मैं विजयी होकर लौटा हूँ। पृथ्वी पर मेरे कार्य को मिटा देने की आशा में, बड़ा लाल अजगर मेरी योजना में रुकावट डालने का हर हथकंडा आज़मा चुका है, लेकिन क्या मैं उसकी छलपूर्ण कार्यनीतियों के कारण निराश हो सकता हूँ? क्या मैं उसकी धमकियों से डरकर आत्मविश्वास खो सकता हूँ? स्वर्ग या पृथ्वी पर कभी एक भी ऐसा प्राणी नहीं हुआ है जिसे मैंने अपनी मुट्ठी में न रखा हो; बड़े लाल अजगर के बारे में यह बात और भी सत्य है, क्या वह मेरे लिए एक विषमता की तरह है? क्या वह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मैं अपने हाथों अपने हिसाब से चलाता हूँ?

मानव जगत में मेरे देहधारण के दौरान मानवजाति मेरे मार्गदर्शन में अनजाने में इस दिन तक आ पहुँची है, और अनजाने में मुझे जान गयी है। लेकिन, जहाँ तक इसकी बात है कि जो मार्ग सामने है उस पर कैसे चला जाए, तो किसी को कोई आभास नहीं है, कोई नहीं जानता है, और किसी के पास इसका कोई सुराग तो और भी नहीं है कि वह मार्ग उन्हें किस दिशा में ले जाएगा? सर्वशक्तिमान की निगरानी में ही कोई भी मार्ग पर अंत तक चल पाएगा; केवल चमकती पूर्वी बिजली के मार्गदर्शन से ही कोई भी मेरे राज्य तक ले जाने वाली दहलीज़ को पार कर पाएगा। इंसानों में कभी ऐसा कोई नहीं हुआ है जिसने मेरा चेहरा देखा हो, जिसने चमकती पूर्वी बिजली को देखा हो; ऐसा कौन हुआ है जिसने मेरे सिंहासन से जारी कथनों को सुना हो? वास्तव में, प्राचीन काल से ही कोई भी मनुष्य सीधे मेरे व्यक्तित्व के सम्पर्क में नहीं आया है; केवल आज जबकि मैं संसार में आ चुका हूँ, तो लोगों के पास मुझे देखने का अवसर है। किन्तु आज भी, लोग मुझे नहीं जानते, ठीक वैसे ही जैसे वे बस मेरे चेहरे को देखते हैं और केवल मेरी आवाज़

सुनते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कि मेरे कहने का क्या अर्थ है। सभी मनुष्य ऐसे ही हैं। मेरे लोगों में से एक होने के नाते, जब तुम लोग मेरा चेहरा देखते हो, तो क्या तुम लोग बहुत ज़्यादा गर्व महसूस नहीं करते? और क्या तुम लोग बेहद शर्मिन्दगी महसूस नहीं करते, क्योंकि तुम लोग मुझे नहीं जानते? मैं इंसानों के बीच चलता-फिरता हूँ, उन्हीं के बीच रहता हूँ, क्योंकि मैं देह बन गया हूँ और मानव जगत में आ गया हूँ। मेरा उद्देश्य मात्र इतना नहीं है कि इंसान मेरे देह को देख पाए; अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इंसान मुझे जान सके। इसके अलावा, मैं अपने देहधारण के माध्यम से मानवजाति को उसके पापों का आरोपी सिद्ध करूँगा; मैं अपने देहधारण के माध्यम से उस बड़े लाल अजगर को परास्त करूँगा और उसके अड्डे को नष्ट कर दूँगा।

यद्यपि पृथ्वी पर बसे इंसान तारों की तरह अनगिनत हैं, फिर भी मैं उन्हें उतनी ही अच्छी तरह से जानता हूँ जितनी अपने हाथ की लकीरों को। हालाँकि मुझसे "प्रेम" करने वाले इंसान भी समुद्र की रेत के कणों की तरह अनगिनत हैं, फिर भी मैं कुछ ही लोगों को चुनता हूँ: केवल उन्हें जो चमकते हुए प्रकाश का अनुसरण करते हैं, और जो उनसे अलग हैं जो मुझसे "प्रेम" करते हैं। न तो मैं इंसान को अधिक आँकता हूँ और न ही उसे कम आँकता हूँ; बल्कि, मैं इंसान के नैसर्गिक गुणों के अनुसार उससे माँग करता हूँ, और इसलिए मैं उस तरह के मनुष्य की माँग करता हूँ जो ईमानदारी से मुझे खोजता है—ताकि मैं मनुष्य को चुनने का अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकूँ। पहाड़ों में असंख्य जंगली जानवर हैं, किन्तु वे सभी मेरे सामने एक भेड़ के समान पालतू हैं; समुद्र की गहराइयों में अथाह रहस्य छिपे हुए हैं, किन्तु वे पृथ्वी की सतह की चीज़ों के समान मेरे सामने अपने आपको स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं; ऊपर नभमण्डल में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ मनुष्य कभी नहीं पहुँच सकता, फिर भी मैं उन अगम्य क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से चलता-फिरता हूँ। मनुष्य ने प्रकाश में मुझे कभी नहीं पहचाना, उसने मुझे सिर्फ अन्धकार के संसार में ही देखा है। क्या आज तुम लोग बिल्कुल वैसी ही स्थिति में नहीं हो? यह बड़े लाल अजगर के हिंसात्मक व्यवहार की चरम सीमा का समय था जब मैंने अपने कार्य को करने के लिए औपचारिक रूप से देह धारण किया। जब बड़े लाल अजगर ने पहली बार अपना असली रूप प्रकट किया तब मैंने अपने नाम की गवाही दी। जब मैं मनुष्यों के मार्गों पर चलता-फिरता था, तब एक भी प्राणी, एक भी व्यक्ति चौंक कर नहीं जागा, इसलिए जब मैंने मानव-जगत में देहधारण किया, तो किसी को भी पता नहीं चला। किन्तु जब मैंने देह में अपना कार्य करना आरम्भ किया, तब मानवजाति जाग उठी और मेरी गरजती हुई वाणी से अपने स्वप्नों से चौंक कर बाहर

आयी, और इसी क्षण से मेरे मार्गदर्शन में उन्होंने अपने जीवन का आरंभ किया। अपने लोगों के बीच, मैंने एक बार फिर से नया कार्य आरम्भ कर दिया है। यह कहना कि मेरा कार्य पृथ्वी पर समाप्त नहीं हुआ, इस बात को दिखाने के लिए पर्याप्त है कि मेरे जिन लोगों के बारे में मैंने बोला था, वे लोग ऐसे लोग नहीं हैं जिन्हें मैं दिल से चाहता हूँ, लेकिन फिर भी, कुछ को मैं अभी भी उन्हीं में से चुनता हूँ। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मैं न केवल अपने लोगों को देहधारी परमेश्वर को जानने में सक्षम बना रहा हूँ, बल्कि उन्हें शुद्ध भी बना रहा हूँ। मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं की कठोरता के कारण, लोगों का एक बहुत बड़ा भाग अभी भी मेरे द्वारा निष्कासित किए जाने के खतरे में है। जब तक तुम लोग स्वयं से निपटने का, अपने शरीर को वश में लाने का हर प्रयास नहीं करते—जब तक तुम लोग ऐसा नहीं करते, तब तक तुम लोग निःसन्देह एक ऐसी वस्तु बनोगे जिससे मैं घृणा करता हूँ और जिसे मैं अस्वीकार करता हूँ, जिसे नरक में फेंक देना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस ने सीधे मेरे हाथों से ताड़ना प्राप्त की थी जिससे बचने का कोई रास्ता नहीं था। क्या तुम लोगों ने मेरे वचनों से कुछ समझा है? पहले के समान ही, मेरी इच्छा है कि मैं कलीसिया को शुद्ध करूँ, उन लोगों का शुद्धिकरण करता रहूँ जिनकी मुझे आवश्यकता है, क्योंकि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ, जो बिल्कुल पवित्र और निष्कलंक है। मैं अपने मन्दिर को न केवल इंद्रधनुष के रंगों से रंग-बिरंगा बनाऊँगा, बल्कि इसकी बाहरी सजावट से मेल खाती भीतरी सजावट के साथ, बेदाग ढंग से स्वच्छ बनाऊँगा। मेरी उपस्थिति में, तुम सब लोगों को इस बात पर फिर से विचार करना चाहिए कि तुम लोगों ने अतीत में क्या किया है, और निर्णय लेना चाहिए कि आज तुम लोग मेरे हृदय में संतुष्टि प्रदान करने का संकल्प ले सकते हो या नहीं।

बात सिर्फ इतनी नहीं है कि मनुष्य मुझे मेरी देह में नहीं जानता; उससे भी ज़्यादा यह कि वह देह में निवास करने वाले निज रूप को भी समझने में असफल रहा है। कई वर्षों से, मनुष्य मेरे साथ एक मेहमान की तरह व्यवहार करते हुए, मुझे धोखा देते आ रहे हैं। कई बार उन्होंने मुझे "अपने घर के दरवाज़े" पर रोक दिया है; कई बार उन्होंने मेरे सामने खड़े रह कर, मुझ पर कोई ध्यान नहीं दिया है; कई बार उन्होंने दूसरे लोगों के बीच मेरा परित्याग किया है; कई बार उन्होंने शैतान के सामने मुझे नकार दिया है; और कई बार उन्होंने अपने झगड़ालू मुँह से मुझ पर शाब्दिक हमला किया है। फिर भी मैं मनुष्य की कमज़ोरियों का हिसाब नहीं रखता और न ही मैं उसकी अवज्ञा के कारण उससे बदला लेता हूँ। मैंने बस उसकी लाइलाज बीमारियों के उपचार हेतु उसकी बीमारियों की दवा की है, जिससे उसका स्वास्थ्य पुनः बहाल हो जाए,

ताकि वह मुझे जान सके। क्या मैंने जो कुछ भी किया है वह मानवजाति को बचाने, मानवजाति को जीवन का एक अवसर देने के लिये नहीं किया है? मैं कई बार मनुष्यों के संसार में आया, किन्तु चूँकि मैं अपने व्यक्तित्व में संसार में आया था, इसलिए मनुष्य ने मुझ पर कोई ध्यान नहीं दिया; जिसको जो सही लगा, उसने वैसा किया, हर कोई अपने लिए मार्ग खोजता रहा। वे नहीं जानते कि स्वर्ग के नीचे हर एक मार्ग मेरे हाथों का रचा ही है! वे नहीं जानते कि स्वर्ग के नीचे हर चीज़ मेरे विधान से चलती है! तुम लोगों में से कौन अपने हृदय में द्वेष को आश्रय देने का दुःसाहस करता है? तुम लोगों में से कौन हल्के में समझौता करने का साहस कर सकता है? मैं मानव जाति के बीच खामोशी से अपना काम कर रहा हूँ, बस इतना ही है। यदि देहधारण की अवधि में, मुझे मनुष्य की कमज़ोरी के प्रति सहानुभूति नहीं होती, तो संपूर्ण मानवजाति एकमात्र मेरे देहधारण के कारण बुरी तरह से भयभीत हो गई होती और परिणामस्वरूप, रसातल में गिर गई होती। केवल मेरे अपने आपको विनम्र बना लेने और छिपा लेने के कारण मानवजाति तबाही से बच गई, मेरी ताड़ना से उद्धार पाकर वह आज की स्थिति में पहुँची है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि यहाँ तक पहुँचना कितना कठिन था, क्या तुम लोगों को आने वाले कल को और भी संजोकर नहीं रखना चाहिये?

8 मार्च, 1992

अध्याय 13

मेरे वचनों और कथनों के भीतर मेरे कई इरादे छुपे होते हैं। परंतु लोग उनमें से कुछ नहीं जानते और समझते; वे बाहर से मेरे वचनों को ग्रहण करते हैं और बाहर से ही उनका अनुसरण करते हैं और वे मेरे मन को नहीं समझ सकते या मेरे शब्दों के भीतर से मेरी इच्छा का सहज ज्ञान नहीं कर सकते। हालाँकि मैं अपने वचनों को स्पष्ट रखता हूँ, तो भी कौन है जो समझता है? सिय्योन से मैं मानवजाति में आया। क्योंकि मैंने अपने आप को साधारण मानवता और मनुष्य की त्वचा से आच्छादित किया हुआ है, इसलिए लोगों को मेरा प्रकटन केवल बाहर से ही पता चलता है-किंतु वे उस जीवन को नहीं जानते हैं जो मेरे भीतर है, न ही वे आत्मा के परमेश्वर को पहचानते हैं और केवल देह वाले मनुष्य को जानते हैं। क्या वास्तविक परमेश्वर स्वयं तुम लोगों के उसे जानने के प्रयास के अयोग्य हो सकता है? क्या वास्तविक परमेश्वर स्वयं तुम लोगों के उसका "विश्लेषण" करने के प्रयास के अयोग्य हो सकता है? मैं संपूर्ण मानवजाति की भ्रष्टता से घृणा

करता हूँ, परंतु मैं उनकी कमज़ोरी पर दया महसूस करता हूँ। मैं भी संपूर्ण मानवजाति की पुरानी प्रकृति के साथ व्यवहार कर रहा हूँ। चीन में मेरे लोगों में से एक के रूप में, क्या तुम लोग भी मानवजाति का एक हिस्सा नहीं हो? मेरे सभी लोगों में से और सभी पुत्रों में से, अर्थात् उन लोगों में से जिन्हें मैंने संपूर्ण मानवजाति में से चुना है, तुम लोग निम्नतम समूह से संबंध रखते हो। इस कारण से, मैंने तुम लोगों पर सबसे अधिक ऊर्जा, सबसे अधिक प्रयास लगाए हैं। क्या तुम लोग आज भी उस धन्य जीवन को मन में नहीं सँजोते हो, जिसका तुम आनंद लेते हो? क्या तुम लोग अभी भी अपने हृदयों को मेरे विरुद्ध विद्रोह करने के लिए दृढ़ बना रहे हो और अपने ही मंसूबे पाले हुए हो? यदि निरंतर मेरी दया और प्रेम न होता, तो संपूर्ण मानवजाति काफी समय पहले शैतान की कैद में चली गई होती और उसके मुँह का "स्वादिष्ट निवाला" बन गई होती। आज, सभी लोगों के बीच, जो मेरे लिए सचमुच में अपने आप को खपाते हैं और सचमुच में मुझसे प्रेम करते हैं, वे अभी भी इतने दुर्लभ हैं कि एक हाथ की अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं। आज, क्या "मेरे लोग" की उपाधि तुम लोगों की निजी संपत्ति बन सकती है? क्या तुम्हारा विवेक बर्फ-के-समान ठंडा हो गया है? क्या तुम सच में परमेश्वर के लोग बनने के योग्य हो, जिनकी मैं अपेक्षा करता हूँ? अतीत के बारे में विचार करो और फिर आज को देखो, तुममें से किसने मेरे हृदय को संतुष्ट किया है? तुम में से किसने मेरे इरादों के लिए असली चिंता दर्शाई है? यदि मैंने तुम लोगों को प्रेरित नहीं किया होता, तो तुम अभी भी जागृत नहीं होते, बल्कि ऐसे रहे होते मानो जमे हुए हो और फिर मानो शीतनिद्रा में हो।

उत्तेजित लहरों के बीच, मनुष्य मेरे कोप को देखता है; काले बादलों के उलटते-पलटते घालमेल में, मनुष्य विस्मयाभिभूत है और डरा हुआ है और नहीं जानता कि कहाँ भागे, मानो भयभीत हो कि गर्जना और बारिश उन्हें बहा ले जाएगी। फिर, घूमते हुए बर्फीले तूफ़ान के गुज़र जाने के बाद उनकी मनोदशा सहज और सरल हो जाती है, जब वे प्रकृति के रमणीय दृश्य का आनंद लेते हैं। किंतु ऐसे क्षणों में उनमें से किसने कभी उस असीम प्रेम का अनुभव किया है, जिसे मैं मानवता के लिए धारण करता हूँ? उनके हृदयों में केवल मेरा स्वरूप है, किंतु मेरे आत्मा का सार नहीं है : क्या मनुष्य खुलेआम मेरी अवहेलना नहीं कर रहा है? जब तूफ़ान थम जाता है, तो सभी मानवजाति ऐसी हो जाती है, मानो नए सिरे से बनाई गई हो, मानो क्लेश के माध्यम से शोधन का पालन करके, उन्होंने प्रकाश और जीवन को पुनः प्राप्त किया हो। क्या तुम लोगों के पास भी, मेरे द्वारा दिए गए आघातों को सहने के बाद, आने के लिए आज सौभाग्य नहीं है? किंतु जब आज चला जाएगा और कल आएगा, तो क्या तुम लोग उस शुद्धता को बनाए रखने में समर्थ

होगे, जो मूसलाधार बारिश के बाद आएगी? क्या तुम लोग उस भक्ति को बनाए रखने में समर्थ होगे, जो तुम लोगों के शोधन के बाद आएगी? क्या तुम आज की आज्ञाकारिता को बनाए रखने में समर्थ होगे? क्या तुम लोगों का समर्पण अडिग और अपरिवर्तनीय रह सकता है? क्या यह ऐसी माँग है, जो मनुष्य के द्वारा पूरी करने की क्षमता से परे हो? मैं प्रतिदिन मनुष्यों के बीच रहता हूँ और मानवजाति के बीच मनुष्यों के साथ-साथ कार्य करता हूँ, फिर भी किसी ने इस बात पर कभी भी गौर नहीं किया है। यदि मेरे आत्मा द्वारा मार्गदर्शन नहीं किया जाता, तो संपूर्ण मानवजाति में कौन वर्तमान युग में अभी भी अस्तित्व में रहा होता? जब मैं यह कहता हूँ कि मैं मनुष्यों के साथ-साथ रहता और कार्य करता हूँ, तो क्या मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ? अतीत में मैंने कहा था, "मैंने मानवजाति को बनाया है और संपूर्ण मानवजाति का मार्गदर्शन किया है और संपूर्ण मानवजाति को आज्ञा दी है"; क्या वास्तव में ऐसा नहीं था? क्या ऐसा संभव है कि इन चीजों का तुम लोगों का अनुभव अपर्याप्त है? मात्र "सेवाकर्मी" वाक्यांश की व्याख्या करने में तुम लोगों को पूरा जीवनकाल लगेगा। वास्तविक अनुभव के बिना, कोई मानव कभी भी मुझे नहीं जान पाएगा, मेरे वचनों के माध्यम से वे मुझे जानने में कभी भी समर्थ नहीं हो सकेंगे। हालाँकि आज मैं व्यक्तिगत रूप से तुम लोगों के बीच आया हूँ-क्या यह तुम लोगों की समझ के लिए अधिक लाभदायक नहीं होगा? क्या मेरा देहधारण भी तुम लोगों के लिए उद्धार नहीं है? यदि मैं अपने व्यक्तित्व में मानवजाति में नहीं उतरा होता, तो संपूर्ण मानवजाति में बहुत समय पूर्व धारणाएँ व्याप्त हो गई होतीं, जिसका अर्थ है कि शैतान की संपत्ति बन गई होती, क्योंकि जो कुछ तुम विश्वास करते हो वह सिर्फ़ शैतान की छवि है और स्वयं परमेश्वर से उसका कुछ लेना-देना नहीं है। क्या यह मेरे द्वारा उद्धार नहीं है?

जब शैतान मेरे सामने आता है, तो मैं इसकी जंगली क्रूरता से पीछे नहीं हटता हूँ, न ही मैं इसकी करालता से भयभीत होता हूँ: मैं सिर्फ़ उसकी उपेक्षा करता हूँ। जब शैतान मुझे प्रलोभित करता है, तो मैं उसकी चालबाजी की वास्तविक प्रकृति का पता लगा लेता हूँ, जिससे वह शर्मिंदा और अपमानित होकर खिसक लेता है। जब शैतान मुझ से लड़ता है और मेरे चुने हुए लोगों को हथियाने का प्रयास करता है, मैं अपनी देह में उसके साथ लड़ाई छेड़ देता हूँ; और अपनी देह में मैं अपने लोगों को बनाए रखता और उनकी चरवाही करता हूँ ताकि वे आसानी से गिर या खो न जाएँ और मार्ग में प्रत्येक कदम पर उनकी अगुवाई करता हूँ। और जब शैतान हारकर निवृत्त हो जाएगा, तो मैं अपने लोगों में महिमा को प्राप्त कर चुका हूँगा और मेरे लोग मेरे लिए सुंदर और मज़बूत गवाही दे चुके होंगे। इसलिए, मैं प्रबंधन की अपनी

योजना में गड़बड़ियों को लेकर उन्हें हमेशा के लिए अथाह कुंड में डाल दूँगा। यही मेरी योजना है; यही मेरा कार्य है। तुम लोगों के जीवन में, ऐसा दिन आ सकता है जब तुम ऐसी किसी परिस्थिति का सामना करोगे : क्या तुम स्वेच्छा से स्वयं को शैतान के बंधन में पड़ने दोगे या तुम मुझे स्वयं को प्राप्त करने दोगे? यह तुम्हारा स्वयं का भाग्य है और तुम्हें इस पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।

राज्य में जीवन लोगों और स्वयं परमेश्वर का जीवन है। संपूर्ण मानव जाति मेरी देखभाल और सुरक्षा के अंदर रहती है और सभी बड़े लाल अजगर के साथ मृत्युपर्यंत युद्ध में संलग्न हैं। इस अंतिम युद्ध को जीतने के लिए, उस बड़े लाल अजगर को समाप्त करने के लिए, सभी लोगों को मेरे राज्य में अपने संपूर्ण अस्तित्व को मुझे समर्पित कर देना चाहिए। यहाँ कहा गया "राज्य" ऐसे जीवन को दर्शाता है, जो दिव्यता के प्रत्यक्ष शासन के अधीन जिया जाता है, जिसमें मैं संपूर्ण मानवजाति का चरवाहा हूँ, जो सीधे मेरा प्रशिक्षण प्राप्त करती है, ताकि उनके जीवन, यद्यपि वह अभी भी पृथ्वी पर हैं, ऐसे हों जैसे वो स्वर्ग में हैं—तीसरे स्वर्ग में जीवन की एक सच्ची अनुभूति। यद्यपि मैं अपनी देह में हूँ, फिर भी मैं शरीर की सीमाओं में बँधा नहीं हूँ। बहुत बार मैं मनुष्यों के बीच उनकी प्रार्थनाओं को सुनने के लिए आया हूँ और बहुत बार मैंने मनुष्यों के बीच चलते-फिरते हुए उनकी प्रशंसाओं का आनंद लिया है; यद्यपि मानवजाति मेरे अस्तित्व से कभी भी अवगत नहीं रही है, मैं तब भी इस तरह से अपने कार्य को करता जाता हूँ। अपने निवास स्थान में, जो कि ऐसा स्थान है जहाँ पर मैं छिपा हुआ हूँ-फिर भी, अपने निवास स्थान में मैंने अपने सभी शत्रुओं को हरा दिया है; अपने निवास स्थान में मैंने पृथ्वी पर रहने का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर लिया है; अपने निवास स्थान में मैं मनुष्य के प्रत्येक वचन और कार्य को देख रहा हूँ और संपूर्ण मानवजाति की हिफ़ाज़त कर रहा हूँ और उसका संचालन कर रहा हूँ। यदि मानवजाति मेरे इरादों के लिए चिंता महसूस कर सके, फलस्वरूप मेरे हृदय को संतुष्ट कर सके और मुझे आनंद दे सके, तो मैं निश्चित रूप से मानवजाति को आशीष दूँगा। क्या यही मानवजाति के लिए मेरा इरादा नहीं है?

चूँकि मानवजाति निष्क्रिय पड़ी है, केवल मेरे गरजने की गड़गड़ाहट उसे उसके स्वप्नों से जगाती है। और जब वे अपनी आँखें खोलते हैं, ठंडी चमक के विस्फोट कई लोगों की आँखों को जख्मी कर देते हैं, यहां तक कि वे अपने दिशा बोध को खो देते हैं और नहीं जानते कि वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं। अधिकांश लोगों पर लेज़र-जैसी किरण से प्रहार होता है और वे आंधी के वेग में ढह जाते हैं, उनके शरीर पीछे कोई निशान छोड़े बिना, मूसलाधार बारिश की बौछार में बह जाते हैं। प्रकाश में बचे हुए लोग

अंततः मेरे स्वरूप को स्पष्ट रूप से देखने में समर्थ होते हैं और केवल तभी वे मेरे बाहरी स्वरूप के बारे में कुछ जान पाते हैं, इस तरह कि वे सीधे मेरे चेहरे को देखने का अब और साहस नहीं करते हैं, बेहद भयभीत रहते हैं कि कहीं ऐसा न हो मैं उनकी देह पर एक बार फिर अपनी ताड़ना और श्राप का दंड दे दूँ। कितने ही लोग बेकाबू होकर फूट-फूटकर रो पड़ते हैं; बहुत से लोग हताशा में डूब जाते हैं; कितने लोग अपने रक्त से नदियाँ बनाते हैं; बहुत से उद्देश्यहीन इधर-उधर बहते शव बन जाते हैं; बहुत से लोग, रोशनी में अपने स्थान पाकर, अचानक मनोव्यथा की टीस महसूस करते हैं और वर्षों के अपने दुःख के लिए आँसू बहाते हैं। बहुत से लोग, रोशनी से बाध्य होकर, अपनी अशुद्धता को स्वीकार करते हैं और अपने आप को सुधारने का संकल्प लेते हैं। बहुत से लोगों ने, अंधे होकर, पहले ही जीने का आनंद खो दिया है और परिणामस्वरूप प्रकाश पर ध्यान देने का मन नहीं रखते और इस प्रकार अपने अंत की प्रतीक्षा करते हुए गतिहीन बने रहते हैं? बहुत से लोग जीवन की पाल को ऊपर उठा रहे हैं और प्रकाश के मार्गदर्शन में उत्सुकता से अपने कल की आशा करते हैं। ... आज, मानवजाति के मध्य कौन इस अवस्था में विद्यमान नहीं है? कौन मेरे प्रकाश के भीतर विद्यमान नहीं है? भले ही तुम मज़बूत हो या हालाँकि तुम कमज़ोर हो सकते हो, तुम मेरे प्रकाश के आने से कैसे बच सकते हो?

10 मार्च, 1992

अध्याय 14

युगों-युगों से, किसी भी मनुष्य ने राज्य में प्रवेश नहीं किया है और इसलिए किसी ने भी राज्य के युग के अनुग्रह का आनंद नहीं लिया है, किसी ने भी राज्य के राजा को नहीं देखा है। यद्यपि मेरे आत्मा की रोशनी में बहुत-से लोगों ने राज्य की सुंदरता की भविष्यवाणी की है, किन्तु वे केवल उसके बाहरी रूप को जानते हैं, उसके भीतरी महत्व को नहीं। आज, जब राज्य पृथ्वी पर औपचारिक रूप में अस्तित्व में आता है, तो अधिकांश मानवजाति अभी भी नहीं जानती कि वास्तव में क्या संपन्न करना है या राज्य के युग के दौरान, किस क्षेत्र में अंततः लोगों को लाया जाना है। मुझे डर है कि इसके बारे में सभी भ्रम की अवस्था में हैं। चूँकि राज्य के पूर्ण रूप से साकार होने का दिन अभी पूरी तरह से नहीं आया है, इसलिए सभी मनुष्य संभ्रमित हैं और, इसे स्पष्ट रूप से समझने में असमर्थ हैं। दिव्यता में मेरा कार्य औपचारिक रूप से राज्य के युग के साथ आरंभ होता है, और राज्य के युग के इस औपचारिक आरंभ के साथ ही मेरा स्वभाव

उत्तरोत्तर मनुष्यों पर प्रकट होना शुरू होता है। इसलिए, यही वह क्षण है जब पवित्र तुरही औपचारिक रूप से बजना और सभी के लिए घोषणा करना शुरू करती है। जब मैं औपचारिक रूप से अपने सामर्थ्य को लेता और राज्य में राजा के रूप में राज करता हूँ, तो मेरे सभी लोग मेरे द्वारा समय के साथ किये जाएँगे। जब विश्व के सभी राष्ट्र नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगे, ठीक उसी वक्त मेरा राज्य स्थापित होकर आकार लेगा और साथ ही मैं भी रूपान्तरित होकर समस्त ब्रह्माण्ड के सम्मुख आने के लिए मुड़ूँगा। उस समय, सभी लोग मेरा महिमामय चेहरा देखेंगे और मेरी सच्ची मुखाकृति देखेंगे। विश्व के सृजन के समय से, शैतान द्वारा लोगों को भ्रष्ट करने से लेकर आज वे जिस हद तक भ्रष्ट हैं वहाँ तक, यह उनकी भ्रष्टता के कारण है कि मैं मनुष्यों से, उनके दृष्टिकोण से, और भी अधिक छिप गया हूँ और अधिक से अधिक अथाह बन गया हूँ। मनुष्य ने कभी भी मेरा वास्तविक चेहरा नहीं देखा है और कभी भी प्रत्यक्ष रूप से मेरे साथ बातचीत नहीं की है। मनुष्य की कल्पना में "मैं" केवल किंवदन्ती और मिथकों में रहा है। इसलिए मैं मनुष्यों के मन के "मैं" को काबू करने के लिए मानवीय कल्पनाओं के अनुरूप, अर्थात्, मानवीय धारणाओं के अनुरूप होता हूँ, ताकि मैं उस "मैं" की अवस्था को बदल सकूँ जिसे उन्होंने बहुत वर्षों से बनाया हुआ है। यह मेरे कार्य का सिद्धान्त है। कोई एक भी व्यक्ति इसे पूरी तरह से जानने में समर्थ नहीं हुआ है। यद्यपि मनुष्यों ने अपने आप को मेरे सामने दंडवत किया है और वे मेरे सम्मुख मेरी आराधना करने आए हैं, फिर भी मैं इस तरह के मानवीय कार्यों का आनंद नहीं लेता, क्योंकि अपने हृदयों में लोग मेरी छवि को नहीं, बल्कि मुझसे इतर दूसरी छवि को धारण करते हैं। इसलिये, उनके मन में मेरे स्वभाव की समझ का अभाव है, वे मेरे वास्तविक चेहरे को बिलकुल भी नहीं पहचानते।नतीजन, जब वे मानते हैं कि उन्होंने मेरा विरोध किया है या मेरी प्रशासनिक आज्ञा का उल्लंघन किया है, मैं तब भी अपनी आँख मूँद लेता हूँ-और इसलिए, उनकी स्मृति में, मैं या तो ऐसा परमेश्वर हूँ जो मनुष्यों को ताड़ना देने की अपेक्षा उन पर दया दिखाता है, या मैं ऐसा स्वयं परमेश्वर हूँ जिसके कहने का आशय वह नहीं होता जो वो कहता है। ये सब मनुष्यों के विचारों में जन्मी कल्पनाएँ हैं, और ये तथ्यों के अनुसार नहीं हैं।

मैं दिन प्रतिदिन ब्रह्माण्ड से ऊपर शान से खड़ा होता हूँ, और मनुष्य के जीवन का अनुभव करते हुए तथा मानवजाति के हर कर्म का नज़दीक से अध्ययन करते हुए, नम्रतापूर्वक अपने निवास स्थान में अपने आप को छुपाता हूँ। किसी ने भी कभी भी अपने आपको वास्तव में मुझे अर्पित नहीं किया है; किसी ने भी कभी भी सत्य की खोज नहीं की है। कोई भी कभी भी मेरे प्रति ईमानदार नहीं रहा है, या किसी ने भी कभी

भी मेरे सम्मुख संकल्प नहीं किए हैं और फिर अपने कर्तव्यों को कायम नहीं रखा है। किसी ने भी कभी भी मुझे अपने भीतर निवास नहीं करने दिया है, किसी ने भी कभी भी मुझे वैसा मान नहीं दिया है जैसा वह अपने स्वयं के जीवन को देगा। किसी ने भी कभी, व्यावहारिक वास्तविकता में, उस समग्र को नहीं देखा है जो मेरी दिव्यता है; कोई भी कभी भी स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर के संपर्क में रहने का इच्छुक नहीं रहा है। जब समुद्र मनुष्यों को पूर्णतः निगल लेता है, तो मैं उसे ठहरे हुए समुद्र से बचाता हूँ और नए सिरे से जीवन जीने का अवसर देता हूँ। जब मनुष्य जीवित रहने का आत्मविश्वास खो देते हैं, तो मैं उन्हें, जीने का साहस देते हुए, मृत्यु के कगार से खींच लाता हूँ, ताकि वे मुझे अपने अस्तित्व की नींव के रूप में इस्तेमाल करें। जब मनुष्य मेरी अवज्ञा करते हैं, मैं उन्हें उनकी अवज्ञा में अपने आप को ज्ञात करवाता हूँ। मानवजाति की पुरानी प्रकृति और मेरी दया के आलोक में, मनुष्यों को मृत्यु प्रदान करने के बजाय, मैं उन्हें पश्चात्ताप करने और नई शुरुआत करने देता हूँ। जब वे अकाल से पीड़ित होते हैं, भले ही उनके शरीर में एक भी साँस बची हो, उन्हें शैतान की प्रवंचना का शिकार बनने से बचाते हुए, मैं उन्हें मृत्यु से छुड़ा लेता हूँ। कितनी ही बार लोगों ने मेरे हाथ को देखा है; कितनी ही बार उन्होंने मेरी दयालु मुखाकृति देखी है, मेरा मुस्कुराता हुआ चेहरा देखा है; और कितनी ही बार उन्होंने मेरा प्रताप और मेरा कोप देखा है। यद्यपि मानवजाति ने मुझे कभी नहीं जाना है, फिर भी मैं जानबूझकर उत्तेजित होने के लिए उनकी कमजोरियों का लाभ नहीं उठाता हूँ। मानवजाति के कष्टों के अनुभव ने मुझे मनुष्यों की कमजोरियों के प्रति सहानुभूति रखने में सक्षम बनाया है। मैं केवल लोगों की अवज्ञा और उनकी कृतघ्नता की प्रतिक्रिया में ही विभिन्न मात्राओं में ताड़ना देता हूँ।

जब लोग व्यस्त होते हैं तो मैं अपने आपको छिपा लेता हूँ और उनके खाली समय में अपने आपको प्रकट करता हूँ। लोग कल्पना करते हैं कि मैं अन्तर्यामी हूँ और मुझे ऐसा परमेश्वर मानती है जो सभी निवेदनों को स्वीकार करता है। इसलिए अधिकतर लोग मेरे सामने केवल परमेश्वर की सहायता माँगने आते हैं, न कि मुझे जानने की इच्छा से। बीमारी की तीव्र वेदना में लोग अविलंब मेरी सहायता के लिए निवेदन करते हैं। विपत्ति के समय में, वे अपनी पीड़ा से बेहतर ढंग से छुटकारा पाने के लिए, अपनी सारी परेशानियाँ अपनी पूरी शक्ति से मुझे बताते हैं। फिर भी एक भी मनुष्य सुख में होने के समय मुझसे प्रेम करने में समर्थ नहीं हुआ है; एक भी व्यक्ति अपने शांति और आनंद के समय में नहीं पहुँचा है ताकि मैं उनकी खुशी में सहभागी हो सकूँ। जब उनके छोटे परिवार खुशहाल और सकुशल होते हैं, तो लोग मुझे

बहुत पहले से दरकिनार कर देते हैं या मेरा प्रवेश निषिद्ध करते हुए मुझपर अपने द्वार बंद कर देते हैं, ताकि वे अपने परिवारों की धन्य खुशी का आनंद ले सकें। मनुष्य का मन अत्यंत संकीर्ण है, यहाँ तक कि मुझ जैसे प्रेमी, दयालु और सुगम परमेश्वर को रखने में भी अत्यंत संकीर्ण है। कितनी बार मनुष्यों के द्वारा उनकी हँसी-खुशी की बेला में मुझे अस्वीकार किया गया है; कितनी बार लड़खड़ाते हुए मनुष्य ने बैसाखी की तरह मेरा सहारा लिया है; कितनी बार बीमारी से पीड़ित मनुष्यों द्वारा मुझे चिकित्सक की भूमिका निभाने के लिए बाध्य किया गया है। मानवजाति कितनी क्रूर है! वे सर्वथा अविवेकी और अनैतिक हैं। यहाँ तक कि उनमें वे भावनाएँ भी महसूस नहीं की जा सकतीं जिनसे मनुष्यों के सुसज्जित होने की अपेक्षा की जाती है। वे मानवता के लेशमात्र से भी पूरी तरह से रहित हैं। अतीत का विचार करो और वर्तमान से उसकी तुलना करो : क्या तुम लोगों के भीतर कोई परिवर्तन हो रहा है क्या तुमने अपने अतीत की कुछ चीजों को छोड़ दिया है? या वह अतीत अभी बदला जाना बाकी है?

मैंने मनुष्यों के संसार की ऊँच-नीच का अनुभव करते हुए, पर्वत-शृंखलायें और नदियों की घाटियाँ लाँघी है। मैं उनके बीच भटका हूँ और मैं उनके बीच कई वर्षों तक रहा हूँ, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि मानवजाति का स्वभाव थोड़ा-सा ही बदला है। और यह ऐसा है मानो मनुष्य की पुरानी प्रकृति ने जड़ पकड़ ली हो और उसमें अंकुर आ गए हों। वे अपने पुराने स्वभाव को बदलने में कभी भी समर्थ नहीं रहे हैं, वे केवल उसकी मूल नींव पर थोड़ा-सा सुधार कर पाए हैं। जैसा कि लोग कहते हैं, सार नहीं बदला है, किन्तु रूप बहुत बदल गया है। लोग मुझे मूर्ख बनाने और चकित करने का प्रयास करते हुए प्रतीत होते हैं, ताकि वे इसका झाँसा देकर मेरी सराहना पा सकें। मैं लोगों की चालों की न तो प्रशंसा करता हूँ, न ही उन पर ध्यान देता हूँ। क्रोधित होने के बजाय, मैं देखने किन्तु ध्यान न देने का रवैया अपनाता हूँ। मैं मानवजाति को एक निश्चित मात्रा तक छूट देने की योजना बनाता हूँ और, तत्पश्चात्, सभी मनुष्यों से एक-साथ व्यवहार करता हूँ। चूँकि सभी मनुष्य, बेकार और अभागे हैं, जो स्वयं से प्रेम नहीं करते हैं, और जो स्वयं को बिलकुल भी संजोकर नहीं रखते हैं, तो फिर नए सिरे से दया और प्रेम प्रदर्शित करने के लिए उन्हें मेरी आवश्यकता भी क्यों होगी? बिना अपवाद के, मनुष्य स्वयं को नहीं जानते हैं, और ना ही अपने महत्व को समझते हैं। उन्हें अपने आप को तराजू में रखकर तौलना चाहिए। मानवजाति मुझ पर कोई ध्यान नहीं देती, इसलिए मैं भी उन्हें गंभीरता से नहीं लेता हूँ। वे मुझ पर कोई ध्यान नहीं देते हैं, इसलिए मुझे भी उन पर ज्यादा परिश्रम से कार्य करने की आवश्यकता नहीं है। क्या यह दोनों के लिए अच्छा नहीं है? क्या यह

तुम लोगों का, मेरे लोगों का वर्णन नहीं करता है? तुममें से किसने मेरे सम्मुख संकल्प लेकर उन्हें बाद में छोड़ा नहीं है? किसने बार-बार चीज़ों पर ध्यान देने के बजाय मेरे सामने दीर्घकालिक संकल्प लिए हैं? हमेशा, मनुष्य अपने सहूलियत के समय में मेरे सम्मुख संकल्प करते हैं और विपत्ति के समय उन्हें छोड़ देते हैं; बाद में वे अपना संकल्प दोबारा उठा लेते हैं और मेरे सम्मुख स्थापित कर देते हैं। क्या मैं इतना अनादरणीय हूँ कि मनुष्य द्वारा कूड़े के ढेर से उठाये गए इस कचरे को यूँ ही स्वीकार कर लूँगा? कुछ मनुष्य अपने संकल्पों पर अडिग रहते हैं, कुछ पवित्र होते हैं और कुछ अपने बलिदान के रूप में मुझे अपनी सबसे बहुमूल्य चीज़ें अर्पित करते हैं। क्या तुम सभी लोग इसी तरह के नहीं हो? यदि, तुम राज्य में मेरे लोगों के एक सदस्य के रूप में, अपने कर्तव्य का पालन करने में असमर्थ हो, तो तुम लोग मेरे द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत कर दिए जाओगे!

12 मार्च, 1992

अध्याय 15

समस्त मनुष्य आत्मज्ञान से रहित प्राणी हैं, और वे स्वयं को जानने में असमर्थ हैं। फिर भी, वे अन्य सभी को बहुत करीब से जानते हैं, मानो दूसरों के द्वारा की और कही गई हर चीज़ का "निरीक्षण" पहले उन्होंने ही ठीक उन्हीं के सामने किया हो और करने से पहले उनका अनुमोदन प्राप्त किया गया हो। परिणामस्वरूप, ऐसा लगता है, मानो उन्होंने अन्य सभी की, उनकी मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं तक, पूरी नाप-तौल कर ली हो। सभी मनुष्य ऐसे ही हैं। भले ही उन्होंने राज्य के युग में प्रवेश कर लिया है, परंतु उनका स्वभाव अपरिवर्तित बना हुआ है। वे मेरे सामने अब भी वैसा ही करते हैं, जैसा मैं करता हूँ, परंतु मेरी पीठ पीछे वे अपने विशिष्ट "व्यापार" में संलग्न होना आरंभ कर देते हैं। लेकिन बाद में जब वे मेरे सम्मुख आते हैं, तो वे पूर्णत: भिन्न व्यक्तियों के समान होते हैं, प्रत्यक्षत: शांत और अविचलित, प्रकृतिस्थ चेहरे और संतुलित धड़कन के साथ। क्या वास्तव में यही चीज़ मनुष्यों को हेय नहीं बनाती? बहुत-से लोग दो पूर्णतः भिन्न चेहरे रखते हैं—एक जब वे मेरे सामने होते हैं, और दूसरा जब वे मेरी पीठ पीछे होते हैं। उनमें से कई लोग मेरे सामने नवजात मेमने के समान आचरण करते हैं, किंतु मेरी पीठ पीछे वे भयानक शेरों में बदल जाते हैं, और बाद में वे पहाड़ी पर आनंद से उड़ती छोटी चिड़ियों के समान व्यवहार करते हैं। बहुत-से लोग मेरे सामने उद्देश्य और संकल्प प्रदर्शित करते हैं। बहुत-से लोग प्यास और लालसा के

साथ मेरे वचनों की तलाश करते हुए मेरे सामने आते हैं, किंतु मेरी पीठ पीछे वे उनसे उकता जाते हैं और उन्हें त्याग देते हैं, मानो मेरे कथन कोई बोझ हों। मैंने कई बार अपने शत्रु द्वारा भ्रष्ट की गई मनुष्यजाति को देखकर उससे आशा रखना छोड़ा है। कई बार मैंने उन्हें रो-रोकर क्षमा माँगते हुए अपने सामने आता देखकर, उनमें आत्मसम्मान के अभाव और उनकी अड़ियल असाध्यता के कारण, क्रोधवश उनके कार्यों के प्रति अपनी आँखें बंद कर ली हैं, यहाँ तक कि उस समय भी, जब उनका हृदय सच्चा और अभिप्राय ईमानदार होता है। कई बार मैंने लोगों को अपने साथ सहयोग करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास से भरा देखा है, जो मेरे सामने, मेरे आगोश में, उसकी गर्माहट का स्वाद लेते प्रतीत होते हैं। कई बार, अपने चुने हुए लोगों का भोलापन, उनकी जीवंतता और मनोहरता देखकर क्यों नहीं मैं अपने हृदय में इन चीज़ों का खूब आनंद ले पाता। मनुष्य मेरे हाथों में अपने पूर्व-नियत आशीषों का आनंद लेना नहीं जानते, क्योंकि वे यह नहीं समझते कि "आशीषों" या "पीड़ाओं", दोनों का ठीक-ठीक क्या तात्पर्य है। इस कारण, मनुष्य मेरी खोज में ईमानदारी से दूर हैं। यदि आने वाला कल नहीं होता, तो मेरे सामने खड़े तुम लोगों में से कौन बहती बर्फ जैसा शुद्ध और हरिताश्म जैसा बेदाग़ होता? क्या ऐसा हो सकता है मेरे प्रति तुम लोगों का प्रेम स्वादिष्ट भोजन या कपड़े के उत्तम दर्ज़े के सूट या उत्तम परिलब्धियों वाले उच्च पद से बदला जा सकता है? क्या उसे उस प्रेम से बदला जा सकता है, जो दूसरे तुम्हारे लिए रखते हैं? क्या वास्तव में परीक्षणों से गुजरना लोगों को मेरे प्रति अपना प्रेम त्यागने के लिए प्रेरित कर देगा? क्या कष्ट और क्लेश उन्हें मेरी व्यवस्थाओं के विरुद्ध शिकायत करने का कारण बनेंगे? किसी ने भी कभी वास्तव में मेरे मुख की तलवार की प्रशंसा नहीं की है : वे इसका वास्तविक तात्पर्य समझे बिना केवल इसका सतही अर्थ जानते हैं। यदि मनुष्य वास्तव में मेरी तलवार की धार देखने में सक्षम होते, तो वे चूहों की तरह तेजी से दौड़कर अपने बिलों में घुस जाते। अपनी संवेदनहीनता के कारण मनुष्य मेरे वचनों का वास्तविक अर्थ नहीं जानते, और इसलिए उन्हें कोई भनक नहीं है कि मेरे कथन कितने विकट हैं या वे मनुष्य की प्रकृति को कितना उजागर करते हैं और उन वचनों द्वारा उनकी भ्रष्टता का कितना न्याय हुआ है। इस कारण, मैं जो कहता हूँ, उसके बारे में उनके अधपके विचारों के परिणामस्वरूप अधिकतर लोगों ने एक उदासीन रवैया अपना लिया है।

राज्य के भीतर न केवल कथन मेरे मुख से निकलते हैं, बल्कि मेरे पाँव भी ज़मीन पर हर जगह शान से चलते हैं। इस तरह मैंने सभी अस्वच्छ और अपवित्र स्थानों पर विजय पा ली है, जिसकी वजह से न

केवल स्वर्ग बदल रहा है, बल्कि पृथ्वी भी बदलने की प्रक्रिया में है और तदनंतर नई हो जाएगी। ब्रह्मांड के भीतर हर चीज़ मेरी महिमा की कांति में नई जैसी चमकती है और हृदयस्पर्शी पहलू प्रस्तुत करती है, जो इंद्रियों को मोहित कर लेता है और लोगों की आत्माओं का उत्थान करता है, जैसे कि यह अब, मनुष्य द्वारा की जाने वाली कल्पना के अनुसार, स्वर्ग से परे किसी स्वर्ग में विद्यमान हो, जिसे शैतान द्वारा बाधित नहीं किया गया है और जो बाहरी शत्रुओं के हमलों से मुक्त है। ब्रह्मांड के सबसे ऊपरी खंडों में असंख्य सितारे मेरी आज्ञा से अपना निर्धारित स्थान लेते हैं और अंधकार की बेला में समस्त नक्षत्र-मंडल में अपने प्रकाश को दीप्तिमान करते हैं। कोई एक भी प्राणी अवज्ञा का विचार तक करने का साहस नहीं करता, और इसलिए, मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं के सार के अनुसार, संपूर्ण ब्रह्मांड अच्छी तरह से नियंत्रित होता है और पूर्ण व्यवस्था में रहता है : कभी कोई गड़बड़ी उत्पन्न नहीं हुई, न ही कभी ब्रह्मांड खंडित हुआ है। मैं तारों के ऊपर से उड़कर छलाँग लगाता हूँ, और जब सूर्य अपनी किरणों की बौछार करता है, तो मैं हंस के पंखों जितने बड़े हिमकणों के झोंकों को अपने हाथों से नीचे बहाते हुए उनकी गर्मी मिटा देता हूँ। हालाँकि जब मैं अपना मन बदलता हूँ, तो सारी बर्फ पिघलकर नदी बन जाती है, और एक ही पल में आकाश के नीचे हर जगह बसंत फूट पड़ता है, और पन्ने जैसी हरियाली पृथ्वी के समस्त भूदृश्य को रूपांतरित कर देती है। मैं नभमंडल के ऊपर भ्रमण करने जाता हूँ, और तुरंत, मेरे रूप के कारण पृथ्वी गहरे-काले अंधकार से ढँक जाती है। बिना चेतावनी के "रात" आ जाती है, और समस्त विश्व में इतना अंधकार हो जाता है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता। रोशनी के विलुप्त होते ही मनुष्य इस पल पर कब्ज़ा करके एक-दूसरे से छीना-झपटी और लूट-खसोट करते हुए आपसी विनाश का उपद्रव प्रारंभ कर देते हैं। पृथ्वी के राष्ट्र तब अराजक विघटन में पड़ जाते हैं और एक गंदी अशांति की स्थिति में प्रवेश कर जाते हैं और तब तक वहाँ रहते हैं, जब तक कि वे समस्त छुटकारे से परे नहीं हो जाते। लोग पीड़ा की कसक में छटपटाते हैं, अपनी व्यथा के बीच विलाप करते और कराहते हैं, अपने संताप से कसमसाते हुए विलाप करते हैं, और लालसा करते हैं कि ज्योति अचानक एक बार फिर मानवीय जगत में आ जाए और इस प्रकार अंधकार के दिनों को समाप्त कर दे और उस प्राण-शक्ति को पुनर्स्थापित कर दे, जो कभी अस्तित्व में हुआ करती थी। किंतु मैंने संसार की गलतियों के कारण मानवजाति को बहुत पहले ही छोड़ दिया है, फिर कभी दया न करने के लिए उसे अपनी आस्तीन से झटक दिया है : बहुत पहले ही मैंने समस्त संसार के लोगों को तिरस्कृत और अस्वीकृत कर दिया है, वहाँ की हालत के प्रति अपनी आँखें मूँद ली हैं, मनुष्य की हर चाल और उसके हर हाव-भाव

से अपना मुँह फेर लिया है और उसकी अपरिपक्कता और भोलेपन का आनंद लेना बंद कर दिया है। मैंने संसार को नए सिरे से बनाने की एक अन्य योजना आरंभ की है, ताकि यह नया संसार यथाशीघ्र पुनर्जीवन पा सके और फिर कभी जलमग्न न हो। मानवजाति के बीच कितने ही विचित्र राज्य खुद को मेरे द्वारा ठीक किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कितनी ही गलतियाँ हैं जिन्हें होने से मुझे व्यक्तिगत रूप से रोकना है, कितनी ही धूल है जो मुझे झाड़नी है, कितने ही रहस्य हैं, जिन पर से मुझे पर्दा उठाना है। सारी मानवजाति मेरी प्रतीक्षा में है और मेरे आगमन की लालसा करती है।

पृथ्वी पर मैं स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर हूँ, जो मनुष्यों के हृदय में रहता है; स्वर्ग में मैं समस्त सृष्टि का स्वामी हूँ। मैंने पर्वत चढ़े हैं और नदियाँ लाँघी हैं, और मैं मानवजाति के बीच से अंदर-बाहर प्रवाहित होता रहा हूँ। कौन स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर का खुलेआम विरोध करने की हिम्मत करता है? कौन सर्वशक्तिमान की संप्रभुता से अलग होने का साहस करता है? कौन यह दृढ़ता से कहने का साहस करता है कि मैं असंदिग्ध रूप से स्वर्ग में हूँ? साथ ही, कौन यह दृढ़ता से कहने का साहस करता है कि मैं निर्विवाद रूप से पृथ्वी पर हूँ? समस्त मनुष्यों में से कोई भी उन स्थानों के बारे में स्पष्ट रूप से हर विवरण के साथ बताने में सक्षम नहीं है, जहाँ मैं रहता हूँ। क्या ऐसा हो सकता है कि जब मैं स्वर्ग में होता हूँ, तो मैं स्वयं अलौकिक परमेश्वर होता हूँ, और जब मैं पृथ्वी पर होता हूँ, तो मैं स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर होता हूँ? मैं वाकई स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर हूँ या नहीं, यह मेरे समस्त सृष्टि का शासक होने से या इस तथ्य से कि मैं मानव-संसार की पीड़ा का अनुभव करता हूँ, निर्धारित नहीं किया जा सकता, है ना? अगर ऐसा होता, तो क्या मनुष्य समस्त आशाओं से परे अज्ञानी न होते? मैं स्वर्ग में हूँ, लेकिन मैं पृथ्वी पर भी हूँ; मैं सृष्टि की असंख्य वस्तुओं के बीच हूँ, और असंख्य लोगों के बीच भी हूँ। मनुष्य मुझे हर दिन छू सकते हैं; इतना ही नहीं, वे मुझे हर दिन देख सकते हैं। जहाँ तक मानवजाति का संबंध है, मैं उसे कभी-कभी छिपा हुआ और कभी-कभी दृश्यमान प्रतीत होता हूँ; कभी लगता है कि वास्तव में मेरा अस्तित्व है, फिर ऐसा भी लगता है कि मेरा अस्तित्व नहीं है। मुझमें मनुष्यजाति के लिए अज्ञेय रहस्य मौजूद हैं। यह ऐसा है, मानो सभी मनुष्य मुझमें और अधिक रहस्य खोजने के लिए मुझे सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देख रहे हों, यह आशा करते हुए कि ऐसा करके वे अपने हृदय से उस असुखद अनुभूति को दूर कर सकेंगे। परंतु यदि वे एक्स-रे का भी उपयोग करें, तब भी मनुष्य कैसे मुझमें छिपे रहस्यों में से किसी का भी खुलासा कर सकेंगे?

जिस क्षण मेरे लोग मेरे कार्यों के परिणामस्वरूप मेरे साथ-साथ महिमामंडित होंगे, उस क्षण विशाल

लाल अजगर की माँद खोद दी जाएगी, सारा कीचड़ और मिट्टी साफ कर दी जाएगी, और असंख्य वर्षों से जमा प्रदूषित जल मेरी दहकती आग में सूख जाएगा और उसका अस्तित्व नहीं रहेगा। इसके बाद विशाल लाल अजगर आग और गंधक की झील में नष्ट हो जाएगा। क्या तुम लोग सच में मेरी प्रेमपूर्ण देखभाल के अधीन रहना चाहते हो, ताकि अजगर द्वारा छीन न लिए जाओ? क्या तुम लोग सचमुच इसके कपटपूर्ण दाँव-पेचों से घृणा करते हो? कौन मेरे लिए मजबूत गवाही देने में सक्षम है? मेरे नाम के वास्ते, मेरे आत्मा के वास्ते, मेरी समस्त प्रबंधन योजना के वास्ते, कौन अपने समस्त सामर्थ्य की बलि दे सकता है? आज, जबकि राज्य मनुष्यों के संसार में है, वह समय है, जब मैं व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के संसार में आया हूँ। यदि ऐसा न होता, तो क्या कोई है जो बिना किसी आशंका के मेरी ओर से युद्ध क्षेत्र में उतर सकता? ताकि राज्य आकार ले सके, ताकि मेरा हृदय संतुष्ट हो सके, और इससे भी बढ़कर, ताकि मेरा दिन आ सके, ताकि वह समय आ सके जब सृष्टि की असंख्य वस्तुएँ पुर्नजन्म लेंगी और प्रचुर मात्रा में विकसित होंगी, ताकि मनुष्यों को पीड़ा के सागर से बचाया जा सके, ताकि आने वाला कल आ सके, और ताकि वह अद्भुत हो सके और फल-फूल सके तथा विकसित हो सके, और इतना ही नहीं, ताकि भविष्य का आंनद साकार हो सके, सभी मनुष्य मेरे लिए अपने आपको बलिदान करने में कोई कसर बाकी न रखते हुए अपनी संपूर्ण शक्ति से प्रयास कर रहे हैं। क्या यह इस बात का संकेत नहीं है कि मुझे पहले ही विजय मिल चुकी है? क्या यह मेरी योजना पूर्ण होने का चिह्न नहीं है?

लोग जितना अधिक अंत के दिनों में रहेंगे, उतना ही अधिक वे संसार का खालीपन महसूस करेंगे और उतना ही उनमें जीवन जीने का साहस कम हो जाएगा। इसी कारण से, असंख्य लोग निराशा से मर गए हैं, असंख्य अन्य लोग अपनी खोज में निराश हो गए हैं, और असंख्य अन्य लोग शैतान के हाथों अपने साथ छेड़छाड़ किए जाने की पीड़ा भोग रहे हैं। मैंने बहुत-से लोगों को बचाया है, बहुतों को राहत दी है, और कितनी ही बार, मनुष्यों के ज्योति खो देने पर मैं उन्हें वापस ज्योति के स्थान पर ले गया हूँ, ताकि ज्योति के भीतर वे मुझे जान सकें और खुशी के बीच मेरा आनंद ले सकें। मेरी ज्योति के आने की वजह से, मेरे राज्य में रहने वाले लोगों के हृदय में श्रद्धा बढ़ती है, क्योंकि मनुष्यों के लिए मैं प्रेम किया जाने वाला परमेश्वर हूँ—ऐसा परमेश्वर, जिससे मनुष्य अनुरक्त आसक्ति के साथ चिपकते हैं—और वे मेरे रूप की स्थायी छाप से भर जाते हैं। फिर भी, अंतत:, कोई भी ऐसा नहीं है, जो समझता हो कि यह पवित्रात्मा का कार्य है, या देह की क्रिया है। इस अकेली चीज़ का विस्तार से अनुभव करने में लोगों को पूरा जीवन लग

जाएगा। मनुष्यों ने अपने हृदय की अंतरतम गहराइयों में मुझे कभी भी तिरस्कृत नहीं किया है; बल्कि वे अपनी आत्मा की गहराई से मुझसे चिपकते हैं। मेरी बुद्धि उनकी सराहना को बढ़ाती है, जो अद्भुत कार्य मैं करता हूँ, वे उनकी आँखों के लिए एक दावत हैं, मेरे वचन उनके मन को हैरान करते हैं, फिर भी वे उन्हें बहुत प्यारे लगते हैं। मेरी वास्तविकता मनुष्य को चकित, भौचक्का और व्यग्र कर देती है, फिर भी वे उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। क्या मनुष्य वास्तव में ऐसा ही नहीं है?

13 मार्च, 1992

अध्याय 16

बहुत कुछ है जो मैं मनुष्य से कहना चाहता हूँ, इतनी सारी चीज़ें जो मुझे उसे बतानी ही चाहिए। परंतु मनुष्य में स्वीकार करने की क्षमता का अत्यधिक अभाव है; मनुष्य मेरे वचनों को मैं उन्हें जैसे प्रदान करता हूँ उसके अनुसार पूरी तरह समझने में अक्षम है, और केवल एक ही पहलू समझता है, जबकि दूसरे से अनभिज्ञ बना रहता है। फिर भी मैं मनुष्य को उसकी शक्तिहीनता के कारण प्राणदण्ड नहीं देता हूँ, न ही मैं उसकी कमज़ोरी से व्यथित हूँ। मैं तो बस अपना कार्य करता हूँ, और बोलता हूँ जैसा मैंने हमेशा किया है, भले ही मनुष्य मेरी इच्छा नहीं समझता है; जब दिन आएगा, लोग अपने हृदय की गहराइयों से मुझे जान जाएँगे और अपने विचारों में मुझे स्मरण करेंगे। जब मैं इस संसार से विदा होऊँगा यह ठीक वही समय होगा जब मैं मनुष्य के हृदय में सिंहासन पर चढ़ूँगा, कहने का तात्पर्य यह है, यह तब होगा जब सभी मनुष्य मुझे जानेंगे। यह तब भी होगा जब मेरे पुत्र और लोग पृथ्वी पर शासन करेंगे। वे जो मुझे जानते हैं निश्चित रूप से मेरे राज्य के स्तंभ बनेंगे, और अन्य कोई नहीं बल्कि वे ही मेरे राज्य में शासन करने और सामर्थ्य का उपयोग करने के योग्य होंगे। वे सब जो मुझे जानते हैं मेरे अस्तित्व से युक्त हैं और सभी मनुष्यों के बीच मुझे जी पाते हैं। मुझे परवाह नहीं कि मनुष्य मुझे किस हद तक जानता है : मेरे कार्य में कोई भी किसी भी प्रकार से अडंगे नहीं डाल सकता है, और मनुष्य मुझे कोई सहायता प्रदान नहीं कर सकता है और मेरे लिए कुछ नहीं कर सकता है। मनुष्य मेरे प्रकाश में मेरे मार्गदर्शन का केवल अनुसरण कर सकता है, और इस प्रकाश में मेरी इच्छा की खोज कर सकता है। आज, लोगों में योग्यताएँ हैं और मानते हैं कि वे मेरे सामने अकड़कर चल सकते हैं, और ज़रा भी निषेध के बिना मेरे साथ हँसी-मज़ाक कर सकते हैं, और मुझे समकक्ष के रूप में संबोधित कर सकते हैं। फिर भी मनुष्य मुझे जानता नहीं है, फिर भी वह मानता है कि

सार में हम लगभग समान ही हैं, कि हम दोनों हाड़-माँस के हैं, और दोनों मानव जगत में वास करते हैं। मेरे प्रति उसका आदर बहुत ही कम है; वह तभी मेरा आदर करता है जब वह मेरे सामने होता है, किंतु पवित्रात्मा के सामने मेरी सेवा करने में अक्षम है। यह ऐसा है मानो मनुष्य के लिए पवित्रात्मा बिलकुल भी विद्यमान ही नहीं है। परिणामस्वरूप, किसी भी मनुष्य ने पवित्रात्मा को कभी जाना ही नहीं है; मेरे देहधारण में, लोग केवल हाड़-माँस का एक शरीर भर देखते हैं, और परमेश्वर के आत्मा का बोध नहीं करते हैं। क्या इस तरह से मेरी इच्छा वास्तव में पूरी की जा सकती है? लोग मुझे धोखा देने में माहिर हैं; लगता है कि मुझे मूर्ख बनाने के लिए उन्हें शैतान द्वारा विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है। तो भी मैं शैतान से अविचलित हूँ। मैं संपूर्ण मानवजाति को जीतने और संपूर्ण मावनजाति को भ्रष्ट करने वाले को हराने के लिए अब भी अपनी बुद्धि का उपयोग करूँगा, ताकि पृथ्वी पर मेरा राज्य स्थापित किया जा सके।

मनुष्यों के बीच ऐसे लोग हैं जिन्होंने तारों का आकार, या अंतरिक्ष का परिमाण ठीक-ठीक पता लगाने का प्रयास किया है। तो भी, उनका अनुसंधान कभी फलदायी सिद्ध नहीं हुआ है, और वे केवल इतना कर सकते हैं कि निराशा से अपने सिर झुका लें और अपनी विफलता स्वीकार कर लें। सभी मनुष्यों के बीच नज़र डालते हुए और मनुष्य की विफलताओं में उसकी गतिकी का अवलोकन करते हुए, मुझे कोई दिखाई नहीं देता जो मुझसे पूरी तरह क़ायल हो, कोई नहीं जो मेरा आज्ञापालन करता हो और मेरे प्रति समर्पित हो। मनुष्य की महत्वाकांक्षाएँ कितनी निराधार हैं! जब महासागर का समूचा चेहरा धुँधला था, तब मनुष्यों के बीच मैंने संसार की कटुता का स्वाद लेना आरंभ किया। मेरा आत्मा संसार भर की यात्रा करता है और सभी लोगों के हृदय ध्यान से देखता है, तो भी, मैं अपनी देहधारी देह में मनुष्यजाति पर विजय भी प्राप्त करता हूँ। मनुष्य मुझे नहीं देखता है, क्योंकि वह अंधा है; मनुष्य मुझे नहीं जानता है, क्योंकि वह सुन्न हो गया है; मनुष्य मेरा विरोध करता है, क्योंकि वह अवज्ञाकारी है; मनुष्य मेरे सामने दण्डवत करने लगता है, क्योंकि वह मेरे द्वारा जीत लिया गया है; मनुष्य मुझे प्रेम करने लगता है, क्योंकि मैं अंतर्निहित रूप से मनुष्य के प्रेम के योग्य हूँ; मनुष्य मुझे जीता और प्रत्यक्ष करता है, क्योंकि मेरी सामर्थ्य और बुद्धि उसे मेरे हृदय के अनुरूप बनाती हैं। मनुष्य के हृदय में मेरा स्थान है, किंतु मैंने कभी उसकी आत्मा में वास करने वाले मनुष्य से मेरे लिए प्रेम प्राप्त नहीं किया है। मनुष्य की आत्मा में सचमुच ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें वह किसी भी अन्य से अधिक प्रेम करता है, किंतु मैं उनमें से एक नहीं हूँ, और इसलिए मनुष्य का प्रेम साबुन के बुलबुले की तरह है : जब हवा बहती है, वह फूटकर ग़ायब हो जाता है, फिर कभी दुबारा दिखाई नहीं देता

है। मैं मनुष्य के प्रति अपनी प्रवृत्ति में सदैव स्थिर और अपरिवर्ती रहा हूँ। क्या मनुष्यजाति के बीच कोई ऐसा कर सका है? मनुष्य की दृष्टि में, मैं वायु के समान अस्पृश्य और अदृश्य हूँ, और इसी कारण से लोगों की बड़ी बहुसंख्या केवल असीम आकाश में या लहरदार समुद्र के ऊपर, या शांत झील के ऊपर, या खोखले पत्रों और सिद्धांतों के बीच खोजती है। एक भी व्यक्ति नहीं है जो मनुष्यजाति का सार जानता हो, ऐसा एक व्यक्ति तो और भी नहीं है जो मेरे भीतर के रहस्य के बारे में कुछ कह सके, और इसलिए मैं यह नहीं कहता हूँ कि मनुष्य वे उच्चतम मानक प्राप्त करे जिनकी वह कल्पना करता है कि मैं उससे अपेक्षा करता हूँ।

मेरे वचनों के बीच, पहाड़ धराशायी हो जाते हैं, पानी उलटी दिशा में प्रवाहित होता है, मनुष्य दब्बू बन जाता है, और झीलें बिना रुके बहना आरंभ कर देती हैं। यद्यपि उफनते हुए समुद्र क्रोधित होकर आकाश की ओर तेज़ी से उमड़ते हैं, किंतु मेरे वचनों के बीच ऐसे समुद्र झील की सतह के समान शांत हो जाते हैं। मेरे हाथ के हल्के से हल्के इशारे से, प्रचंड आँधियाँ तत्काल छितरा जाती हैं और मुझसे दूर चली जाती हैं, और मानव संसार तुरंत ही शांति की ओर लौट जाता है। परंतु जब मैं अपने कोप का बाँध खोलता हूँ, पहाड़ तत्काल टूटकर तितर-बितर हो जाते हैं, धरती तत्काल कंपकंपाने लगती है, पानी तत्काल सूख जाता है, और मनुष्य तत्काल आपदा से घिर जाता है। अपने कोप के कारण, मैं मनुष्य की चीखों पर कोई ध्यान नहीं देता हूँ, उसके क्रंदनों के जवाब में कोई सहायता प्रदान नहीं करता हूँ, क्योंकि मेरा क्रोध बढ़ रहा होता है। जब मैं आसमानों के बीच होता हूँ, तब मेरी उपस्थिति ने कभी तारों में खलबली नहीं मचाई है। इसके बजाय, वे अपने हृदय मेरे लिए अपने कार्य में लगाते हैं, और इसलिए मैं उन्हें और अधिक प्रकाश प्रदान करता हूँ और उन्हें और भी अधिक शानदार ढंग से चमकाता हूँ, ताकि वे मेरे लिए अधिक से अधिक महिमा प्राप्त करें। आसमान जितने अधिक प्रकाशमान होते हैं, नीचे का संसार उतना ही अधिक अंधकारमय होता है; इतने सारे लोगों ने शिकायत की है कि मेरी व्यवस्थाएँ अनुपयुक्त हैं, कई लोगों ने स्वयं अपना राज्य बनाने के लिए मुझे तिलांजलि दे दी है, वही राज्य जिसे वे मेरे साथ विश्वासघात करने, और अंधकार की स्थिति को उलटने के लिए काम में लाते हैं। फिर भी किसने अपने संकल्प से यह प्राप्त किया है? और कौन अपने संकल्प में सफल रहा है? कौन उसे उलट सकता है जिसकी व्यवस्था मेरे हाथों द्वारा की गई है? जब पूरी धरती पर वसंत फैलता है, तब मैं गुप्त रूप से और चुपचाप संसार में प्रकाश भेजता हूँ, ताकि पृथ्वी पर, मनुष्य को वायु में ताज़गी का अचानक बोध हो। फिर भी ठीक उसी क्षण, मैं

मनुष्यों की आँखों को धुँधला कर देता हूँ, ताकि वह केवल धरती को ढक रहे कोहरे को ही देखे, और सभी लोग और चीजें अस्पष्ट हो जाएँ। लोग बस इतना कर सकते हैं कि अकेले में आहें भर सकते हैं, और सोच सकते हैं, "प्रकाश केवल क्षण भर ही क्यों टिका रहा? परमेश्वर मनुष्य को केवल कुहासा और धुँधलका ही क्यों देता है?" लोगों की निराशा के बीच, कोहरा पल भर में ग़ायब हो जाता है, किंतु जब वे अचानक प्रकाश की एक झलक देखते हैं, तब मैं बारिश की प्रचंड बौछार उन पर छोड़ देता हूँ, और जैसे ही वे सोते हैं उनके कान के परदे तूफ़ान की गर्जना से फट जाते हैं। आतंक से जकड़े हुए, उनके पास शरण लेने का भी समय नहीं होता, और वे मूसलाधार बारिश से घिर जाते हैं। एक पल में, आसमानों के नीचे सभी चीजें मेरे कुपित क्रोध के बीच धुलकर स्वच्छ हो जाती हैं। लोग भारी बारिश के हमले के बारे में अब और शिकायत नहीं करते हैं, और उन सबमें आदर जन्म लेता है। बारिश के इस अचानक हमले के कारण लोगों की बड़ी बहुसंख्या आकाश से बरसते पानी में डूब जाती है, पानी में शव बन जाती है। मैं समूची पृथ्वी पर नज़र डालता हूँ और देखता हूँ कि कई लोग जाग रहे हैं, कि कई लोग पछतावा कर रहे हैं, कि कई लोग छोटी-छोटी नावों में पानी के उत्स की खोज कर रहे हैं, कई लोग मुझसे क्षमा माँगने के लिए मेरे आगे शीश झुका रहे हैं, कि कई लोगों ने प्रकाश देख लिया है, कि कई लोगों ने मेरा चेहरा देख लिया है, कि कई लोगों में जीने का साहस आ गया है, और कि संपूर्ण संसार का कायापलट हो गया है। बारिश की इस बड़ी बौछार के बाद, सभी चीजें उसी अवस्था में लौट आई हैं जैसी वे मेरे मन में थीं, तथा अब और अवज्ञाकारी नहीं रह गई हैं। अधिक समय बीतने से पहले ही, पूरी धरती खिलखिलाहट की गूँज से भर जाती है, पृथ्वी पर हर जगह स्तुति का वातावरण है, और कोई भी जगह मेरी महिमा से रहित नहीं है। मेरी बुद्धि पृथ्वी पर हर जगह, और समूचे ब्रह्माण्ड भर में है। सभी चीजों के बीच मेरी बुद्धि के फल हैं, सभी लोगों के बीच मेरी बुद्धि की उत्कृष्ट कृतियाँ समाई हैं; सब कुछ मेरे राज्य की सारी चीज़ों के समान है, और सभी लोग मेरी चारागाहों पर भेड़ों के समान मेरे आसमानों के नीचे विश्राम में रहते हैं। मैं सभी मनुष्यों से ऊपर चलता हूँ और हर कहीं देख रहा हूँ। कुछ भी कभी पुराना दिखाई नहीं देता है, और कोई भी व्यक्ति वैसा नहीं है जैसा वह हुआ करता था। मैं सिंहासन पर विश्राम करता हूँ, मैं संपूर्ण ब्रह्माण्ड के ऊपर आराम से पीठ टिकाता हूँ, और मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ, क्योंकि सभी चीज़ों ने अपनी पवित्रता पुनः प्राप्त कर ली है, और मैं एक बार फिर सिय्योन के भीतर शांतिपूर्वक निवास कर सकता हूँ, और पृथ्वी पर लोग मेरे मार्गदर्शन के अधीन शांत, संतुष्ट जीवन जी सकते हैं। सभी लोग सब कुछ मेरे हाथों में प्रबंधित कर रहे हैं, सभी लोगों ने

अपनी पूर्व बुद्धिमता और मूल प्रकटन पुनः प्राप्त कर लिया है; वे धूल से अब और ढके नहीं हैं, बल्कि, मेरे राज्य में, हरिताश्म के समान पवित्र हैं, प्रत्येक का चेहरा मनुष्य के हृदय के भीतर पवित्र जन के चेहरे के समान है, क्योंकि मनुष्यों के बीच मेरा राज्य स्थापित हो गया है।

14 मार्च, 1992

अध्याय 17

मेरे कथन गरजते बादल की तरह गूँजते हैं, सभी दिशाओं और समूची पृथ्वी पर रोशनी डालते हुए, और गरजते बादल और चमकती बिजली के बीच, मनुष्यजाति धराशायी कर दी जाती है। गरजते बादल और चमकती बिजली के बीच कभी कोई मनुष्य मज़बूती से टिका नहीं रहा है; मेरी रोशनी के आगमन पर अधिकांश मनुष्य बुरी तरह दहल जाते हैं और नहीं जानते कि क्या करें। जब पूरब में रोशनी की हल्की-सी चमक दिखाई देनी शुरू होती है, तब कई लोग, इस हल्की-सी दीप्ति से प्रेरित होकर, तत्क्षण अपनी मोह-माया से जाग जाते हैं। तो भी कभी किसी ने अहसास नहीं किया कि वह दिन आ गया है जब मेरी रोशनी पृथ्वी पर उतरती है। अधिकांश मनुष्य इस रोशनी के अचानक आगमन से भौंचक्के रह जाते हैं, और कुछ लोग, उत्सुक सम्मोहन से टकटकी लगाए, रोशनी की हलचलों और उसके आगमन की दिशा का अवलोकन करते हैं, जबकि कुछ रोशनी की ओर मुँह करके तैयार खड़े रहते हैं, ताकि वे उसके उद्गम को अधिक स्पष्टता से समझ सकें। चाहे जो हो, क्या कभी किसी ने पता लगाया है कि आज की रोशनी कितनी मूल्यवान है? क्या कभी कोई आज की रोशनी के अनूठेपन के प्रति जागृत हुआ है? अधिकांश मनुष्य बस हक्के-बक्के हो जाते हैं; इस रोशनी से वे आँखों में घायल और कीचड़ में गिरा दिए जाते हैं। इस धुँधले प्रकाश तले, कोई कह सकता है कि अव्यवस्था पृथ्वी को ढँक लेती है, असहनीय ढंग से एक दुःखद नज़ारा जो, ध्यान से जाँचने पर, ज़बरदस्त उदासी के साथ धावा बोल देता है। इससे यही समझ आता है कि जब रोशनी सर्वाधिक शक्तिशाली होती है, तब पृथ्वी की अवस्था मनुष्यजाति को मेरे समक्ष खड़े होने की अनुमति देने में कम होगी। मानवजाति रोशनी की चमक में रहती है, यही नहीं, समस्त मानवजाति रोशनी के उद्धार में रहती है, किंतु उससे घायल भी रहती है : क्या कोई है जो रोशनी के मारक प्रहारों के बीच न हो? क्या कोई है जो रोशनी के दहन से बच सकता हो? मैं समूचे ब्रह्माण्ड में पैदल घूमा हूँ, अपने हाथों से अपने आत्मा के बीज बिखेरते हुए, ताकि इसके परिणामस्वरूप पृथ्वी के ऊपर समस्त मानवजाति मेरे द्वारा

प्रेरित हो जाए। स्वर्ग की सर्वोच्च ऊँचाई से, मैं नीचे संपूर्ण पृथ्वी के ऊपर देखता हूँ, पृथ्वी पर जीव-जंतुओं की विचित्र और विलक्षण परिघटना देखता हूँ। समुद्र की सतह भूकंप के झटकों से पीड़ित जान पड़ती है : समुद्री पक्षी, मछली निगलने की तलाश में, यहाँ-वहाँ उड़ते हैं। इस बीच, समुद्र का तल अज्ञानी बना रहता है, और सतह की स्थितियाँ इसे चेतना में उभार पाने में सर्वथा असमर्थ हैं, क्योंकि समुद्र का तल उतना ही शांत है जितना तीसरा स्वर्ग : यहाँ, जीती-जागती चीज़ें, बड़ी हों या छोटी, सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व में हैं, कभी एक बार भी "मुख और जिह्वा के संघर्षों" में लिप्त नहीं होती हैं। अनगिनत अनोखी और मनमौज़ी परिघटनाओं के बीच, मानवजाति के लिए मुझे प्रसन्न करना सर्वाधिक कठिन है। मनुष्य को जो स्थान मैंने दिया है वह अत्यधिक ऊँचा है, और इसलिए उसकी महत्वकाँक्षा भी बहुत बड़ी है, और उसकी नज़रों में, कुछ न कुछ अवज्ञा सदैव होती ही है। मनुष्य के प्रति मेरे अनुशासन में, उसके प्रति मेरे न्याय में, बहुत कुछ है जो कष्टसाध्य है, बहुत कुछ है जो परोपकारी है, किंतु मानवजाति को इन चीज़ों का रत्ती भर भी आभास नहीं है। मैंने कभी किसी मनुष्य के साथ कठोरता से व्यवहार नहीं किया है; मैंने तो बस सुधार के उपयुक्त दण्ड दिए हैं, तब जब मानवजाति अवज्ञाकारी रही थी, और उपयुक्त सहायता का हाथ केवल तब आगे बढ़ाया, जब वह कमज़ोर होता है। परंतु जब मानवजाति मुझसे अलग-थलग बनी रहती है और यही नहीं मेरे विरुद्ध विद्रोह करने के लिए शैतान की कपटपूर्ण चालों उपयोग करती है, तब मैं उसी समय मानवजाति का समूल नाश कर दूँगा, उन्हें मेरे समक्ष अपनी निपुणताओं का भव्य प्रदर्शन करने का एक और अवसर नहीं दूँगा, जिससे वे समूची पृथ्वी पर, दूसरों पर रौब-दाब गाँठते हुए, तड़क-भड़क के साथ अब और अकड़कर नहीं चल पाएँगे।

अपने कार्य को उसकी संपूर्णता में खोलते हुए, मैं पृथ्वी पर अपने अधिकार का प्रयोग करता हूँ। मेरे कार्य में जो कुछ है वह सब समूची पृथ्वी पर प्रतिबिंबित होता है; स्वर्ग में मेरी गतिविधियों को मानवजाति, पृथ्वी पर, कभी समझ नहीं पाई, न ही मेरे आत्मा के कार्यक्षेत्रों और प्रक्षेपपथों पर विस्तृत रूप से चिंतन-मनन कर पाई है। अधिकांश मानव प्राणी उन छोटी-मोटी बातों को ही पकड़ पाते हैं जो आत्मा के बाहर होती हैं, आत्मा की वास्तविक दशा बूझ नहीं पाते हैं। मैं मानवजाति से जो माँगें करता हूँ, वह अज्ञात स्वयं से नहीं करता जो स्वर्ग में है, न ही आँके न जा सकने वाले स्वयं से करता हूँ जो मैं पृथ्वी पर हूँ; मैं पृथ्वी पर मनुष्य की आध्यात्मिक कद-काठी के अनुसार उपयुक्त माँगें करता हूँ। मैंने कभी किसी को कठिनाइयों में नहीं डाला है, न ही मैंने अपने सुख के लिए कभी किसी से "उसका खून निचोड़ने" के लिए कहा है—क्या

मेरी माँगें केवल ऐसी शर्तों तक सीमित हो सकती हैं? पृथ्वी पर अनगिनत प्राणियों में से, कौन-सा प्राणी मेरे मुख के वचनों के स्वभावों के प्रति समर्पित नहीं होता है? इनमें से कौन-सा प्राणी, मेरे समक्ष आते हुए, मेरे वचनों और मेरी प्रज्वलित अग्नि के द्वारा पूर्णतः भस्म नहीं कर दिया जाता है? इनमें से कौन-सा प्राणी मेरे समक्ष गर्वोन्मत्त उल्लास में "अकड़कर चलने" की हिम्मत करता है? इनमें से कौन-सा प्राणी मेरे समक्ष शीश नहीं झुकाता है? क्या मैं वह परमेश्वर हूँ जो सृष्टि पर मात्र ख़ामोशी थोपता है? सृष्टि की असंख्य चीजों में से, मैं उन्हें चुनता हूँ जो मेरे अभिप्रायों को पूरा करती हैं; मानवजाति के असंख्य मनुष्यों में से, मैं उन्हें चुनता हूँ जो मेरे हृदय की परवाह करते हैं। मैं समस्त तारों में से सर्वश्रेष्ठ चुनता हूँ, इस तरह अपने राज्य में प्रकाश की एक मद्धिम-सी किरण और जोड़ लेता हूँ। मैं पृथ्वी पर चलता हूँ, सर्वत्र अपनी सुगंध बिखेरते हुए, और, प्रत्येक स्थल पर, मैं अपना स्वरूप पीछे छोड़ता जाता हूँ। प्रत्येक स्थल मेरी वाणी की ध्वनि से गुँजायमान हो जाता है। लोग सर्वत्र बीते कल के रमणीय दृश्यों पर देर तक ठिठके रहते हैं, क्योंकि समूची मानवजाति अतीत को याद कर रही है ...

समूची मानवजाति मेरा चेहरे देखने को लालायित है, परंतु जब मैं व्यक्तित्व में पृथ्वी पर नीचे आता हूँ, तब वे सब मेरे आगमन से विमुख हो जाते हैं, और वे रोशनी के आगमन को निर्वासित कर देते हैं, मानो मैं स्वर्ग में मनुष्य का शत्रु रहा होऊँ। मनुष्य अपनी आँखों में रक्षात्मक चमक के साथ मेरा अभिवादन करता है, और निरंतर सतर्क बना रहता है, इससे अत्यंत भयभीत कि शायद मेरे पास उसके लिए इतर योजनाएँ हों। क्योंकि मनुष्य मुझे अपरिचित मित्र मानते हैं, इसलिए उन्हें लगता है मानो मैं भेदभाव किए बिना उन्हें मार डालने का मनोरथ पाले बैठा हूँ। मनुष्य की नज़रों में, मैं जानलेवा बैरी हूँ। विपत्ति के बीच मेरी गर्मजोशी का स्वाद चखने के बाद भी मनुष्य मेरे प्रेम से अनभिज्ञ बना हुआ है, और अब भी मुझे दूर रोके रखने और मेरी अवज्ञा करने पर उतारू है। उसके विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए उसकी स्थिति का लाभ उठाना तो दूर, मैं मनुष्य को आलिंगन की गर्माहट में लपेट लेता हूँ, उसके मुँह को मिठास से भर देता हूँ, और उसके पेट में ज़रूरत भर का भोजन डाल देता हूँ। परंतु, जब मेरा प्रचंड कोप से भरा गुस्सा पहाड़ों और नदियों को झकझोरता है, तब, मनुष्य की कायरता के कारण, मैं भिन्न-भिन्न रूपों में यह राहतें अब और उस पर न्योछावर नहीं करूँगा। इस क्षण, प्रचंड क्रोध में मैं अपने आपे से बाहर हो जाऊँगा, समस्त जीवित प्राणियों को पश्चाताप करने का अवसर देने से इनकार करके, और मनुष्य के लिए अपनी समस्त आशा को तिलांजलि देकर, मैं उसे इतना कठोर दण्ड दूँगा जिसका वह पूरी तरह हक़दार है। इस क्षण,

गरजते बादल और चमकती बिजली कौंधते और दहाड़ते हैं, उसी तरह जैसे महासागर की लहरें गुस्से से उफन रही हों, जैसे दसियों हजारों पहाड़ भरभराकर ढह रहे हों। अपने विद्रोहीपन के कारण, मनुष्य गरजते बादल और चमकती बिजली के द्वारा मार गिराया जाता है, और गरजते बादल तथा चमकती बिजली के जबरदस्त झोंकों में अन्य जीव-जंतुओं का भी सफाया हो जाता है, समूचा ब्रह्माण्ड अचानक उथल-पुथल हो जाता है, और सृष्टि जीवन की आदिम साँस पुनः प्राप्त नहीं कर पाती है। मानवजाति के असंख्य समुदाय गरजते बादल की दहाड़ से बचकर निकल नहीं सकते; चमकती बिजली की कौंधों के बीच, झुंड के झुंड मनुष्य, तेज़ बहाव में एक के ऊपर एक तेज़ी से गिरते जाते हैं, पहाड़ों से झरनों में गिरती प्रचंड धाराएँ उन्हें दूर बहा ले जाती हैं। देखते ही देखते अचानक, "मनुष्यों" का संसार मनुष्य की "मंज़िल" से मिलता और उसमें समा जाता है। महासागर की सतह पर शव बहते हैं। समस्त मानवजाति मेरे कोप के कारण मुझसे बहुत दूर चली जाती है, क्योंकि मनुष्य ने मेरे आत्मा के सार के विरुद्ध पाप किया है, उसके विद्रोह ने मुझे नाराज़ कर दिया है। परंतु, जल से रिक्त स्थानों में, अन्य मनुष्य अब भी, हँसी और गाने के बीच, उन प्रतिज्ञाओं का आनंद ले रहे हैं, जो मैंने कृपापूर्वक उन्हें प्रदान की हैं।

जब सारे लोग ख़ामोश हो जाते हैं, मैं उनकी नज़रों के सामने प्रकाश की एक किरण विकिरित करता हूँ। तत्पश्चात, मनुष्यों के मन निर्मल और आँखें उजली हो जाती हैं, वे अब और ख़ामोश रहने के इच्छुक नहीं रह जाते हैं; इस प्रकार, तत्काल उनके हृदयों में आध्यात्मिक भावनाएँ उठती हैं। यह होने के साथ ही, समूची मानवजाति पुनर्जीवित हो जाती है। मेरे द्वारा घोषित वचनों के माध्यम से जीवित रहने का एक और अवसर प्राप्त करके, अपनी अनकही वेदनाओं को एक ओर रखते हुए, सभी मनुष्य मेरे समक्ष आते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सभी मानव पृथ्वी पर जीवित रहना चाहते हैं। तो भी उनके बीच किसने कभी भी मेरी खातिर जीने का मनोरथ किया है? उनमें से किसने कभी भी अपने भीतर वे शानदार चीज़ें अनावृत की हैं जो वह मेरे आनंद के लिए प्रस्तुत करे? उनमें से किसने कभी भी मेरी मोहक सुगंध की खोज की है? समस्त मानव प्राणी अपरिष्कृत और अशुद्ध वस्तुएँ हैं : बाहर की ओर, वे आँखों को चौंधियाते प्रतीत होते हैं, किंतु उनका सार मुझसे सच्चे अर्थ में प्रेम करना नहीं है, क्योंकि मानव हृदय के गहरे अवतलों में कभी मेरा कोई तत्त्व नहीं रहा है। मनुष्य में बहुत कमियाँ हैं : मुझसे उसकी तुलना करना उतनी ही विशाल खाई को प्रकट करना प्रतीत होता है जितनी स्वर्ग और पृथ्वी के बीच है। ऐसा होते हुए भी, मैं मनुष्य के कमज़ोर और सुभेद्य स्थलों पर प्रहार नहीं करता हूँ, न ही मैं उसकी कमियों के कारण उसकी खिल्ली उड़ाता हूँ।

मेरे हाथ हज़ारों सालों से पृथ्वी पर कार्य में जुटे हैं, और इस पूरे समय मेरी आँखों ने संपूर्ण मानवजाति के ऊपर नज़र रखी है। तो भी मैंने कभी एक भी मानव जीवन खेलने के लिए यूँ ही नहीं ले लिया है मानो वो कोई खिलौना हो। मैं देखता हूँ वे पीड़ाएँ जो मनुष्य ने सही हैं और मैं समझता हूँ कि उसने क्या क़ीमत चुकाई है। जब वह मेरे सामने खड़ा होता है, मैं नहीं चाहता कि ताड़ना देने के लिए मनुष्य को चुपके से पकड़ लूँ, न ही मैं अवांछनीय चीजें उस पर न्योछावर करना चाहता हूँ। इसके बजाय, इस पूरे समय, मैंने मनुष्य का भरण-पोषण ही किया है, और उसे दिया ही है। इसलिए, वह सब जिसका मनुष्य आनंद लेता है, मेरा अनुग्रह ही है, यह सब उदारता है जो मेरे हाथों से आता है। चूँकि मैं पृथ्वी पर हूँ, इसलिए मनुष्य को कभी भूख की यंत्रणाएँ नहीं झेलनी पड़ीं। अपितु, मैं मनुष्य को अपने हाथों की वे चीज़ें प्राप्त करने देता हूँ जिनका वह आनंद ले सकता है, और मनुष्यजाति को अपने आशीषों के भीतर जीने देता हूँ, क्या समस्त मानवजाति मेरी ताड़ना के अधीन नहीं जीती है? जिस तरह पहाड़ों की गहराइयों में बाहुल्य है, और समुद्र में आनंददायक चीजों की प्रचुरता है, ठीक उसी तरह क्या आज मेरे वचनों के भीतर जी रहे लोगों के पास सराहना करने और स्वाद लेने के लिए और भी अधिक भोजन नहीं है? मैं पृथ्वी पर हूँ, और पृथ्वी पर मानवजाति मेरे आशीषों का आनंद लेती है। मैं जब पृथ्वी को छोड़कर जाता हूँ, जिस समय मेरा कार्य भी अपनी पूर्णता पर पहुँचता है, उस समय अपनी दुर्बलता के कारण मानवजाति मेरा प्यार-दुलार अब और प्राप्त नहीं करेगी।

16 मार्च, 1992

अध्याय 18

बिजली की एक कौंध में, प्रत्येक जानवर अपने असली स्वरूप में प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार, मेरे प्रकाश से रोशन होकर मनुष्यों ने भी उस पवित्रता को पुनः प्राप्त कर लिया है, जो कभी उसके पास थी। ओह, अतीत का वह भ्रष्ट संसार! अंततः यह गंदे पानी में पलट गया है और सतह के नीचे डूबकर कीचड़ में घुल गया है! ओह, पूरी मानवजाति, मेरी अपनी सृष्टि! अंततः वे इस प्रकाश में फिर से जीवित हो गए हैं, उन्हें अस्तित्व का आधार मिल गया है और कीचड़ में संघर्ष करना बंद कर चुके हैं! ओह, सृष्टि की असंख्य वस्तुएं, जिन्हें मैं अपने हाथों में थामे हूँ! मेरे वचनों के माध्यम से वे पुन: नई कैसे नहीं हो सकतीं? वे इस प्रकाश में, अपने कामों को कैसे पूरी तरह विकसित नहीं कर सकते? पृथ्वी अब मौत सी स्थिर और मूक

नहीं है, स्वर्ग अब उजाड़ और दुःखी नहीं है। स्वर्ग और पृथ्वी अब एक रिक्त स्थान द्वारा अलग नहीं हैं, कभी अलग न होने के लिए एकाकार हो गए हैं। इस उल्लासपूर्ण अवसर पर, इस हर्षोन्माद के क्षण में, मेरी धार्मिकता और मेरी पवित्रता पूरे ब्रह्मांड में फैल गई है और समस्त मानव जाति उनकी निरंतर जयकार कर रही है। स्वर्ग के नगर आनंद से हँस रहे हैं और पृथ्वी का साम्राज्य प्रसन्न होकर नृत्य कर रहा है। इस समय कौन आनंदित नहीं है और इस समय कौन रो नहीं रहा है? पृथ्वी अपनी मूल स्थिति में स्वर्ग से संबद्ध है और स्वर्ग पृथ्वी के साथ जुड़ा है। मनुष्य, स्वर्ग और पृथ्वी को बाँधे रखने वाली डोर है और मनुष्य की निर्मलता के कारण, मनुष्य के नवीनीकरण के कारण, स्वर्ग अब पृथ्वी से छुपा हुआ नहीं है और पृथ्वी अब स्वर्ग की ओर मौन नहीं है। मानवजाति के चेहरे आभार की मुस्कान से सज्जित हैं और उनके हृदय में एक असीमित मिठास छिपी है, जिसकी कोई सीमा नहीं। मनुष्य अन्य मनुष्य से झगड़ा नहीं करता, न मनुष्य एक दूसरे के साथ मारपीट करते हैं। क्या कुछ ऐसे हैं, जो मेरे प्रकाश में दूसरों के साथ शांति से नहीं रहते? क्या कुछ ऐसे हैं, जो मेरे दिवस में मेरा नाम बदनाम करते हैं? सभी मनुष्य मेरी ओर श्रद्धा से देखते हैं और अपने हृदय में वे चुपचाप मेरी दुहाई देते हैं। मैंने मानवजाति के हर कर्म को जांचा है: जिन मनुष्यों की शुद्धि कर दी गई है, उनमें से कोई भी मेरे समक्ष अवज्ञाकारी नहीं है, कोई भी मेरी आलोचना नहीं करता। समस्त मानवजाति मेरे स्वभाव से ओतप्रोत है। सभी मनुष्य मेरे बारे में जान रहे हैं, मेरे निकट आ रहे हैं और अत्यधिक प्रेम कर रहे हैं। मैं मनुष्य की आत्मा में अडिग खड़ा हूँ, उसकी आँखों में उच्चतम शिखर तक पहुँच गया हूँ और उसकी नसों में रक्त के साथ प्रवाहित हूँ। मनुष्यों के हृदय में आनंदमय उल्लास से पृथ्वी का हर स्थान भर जाता है, हवा तीव्र और ताज़ा है, घना कोहरा अब भूमि को नहीं ढकता और सूरज अपनी दीप्ति से प्रकाशित है।

अब मेरे साम्राज्य को देखो, जहाँ मैं सभी का नरेश हूँ और सभी पर शासन करता हूँ। सृष्टि के आरंभ से लेकर आज के दिन तक, मेरे पुत्रों ने, मेरे मार्गदर्शन में, जीवन की इतनी कठिनाइयां सही हैं, मानवीय राज के बहुत सारे अन्याय झेले हैं, इतने उतार-चढ़ाव देखें हैं, लेकिन अब वे मेरे प्रकाश में रहते हैं। अतीत के अन्याय पर कौन नहीं रोता? आज तक पहुँचने के लिए की गई कड़ी मेहनत पर कौन आँसू नहीं बहाता? और फिर, क्या कुछ ऐसे भी हैं, जो इस अवसर पर स्वयं को मुझे अर्पित न करें? क्या कुछ ऐसे भी हैं, जो अपने हृदय में सुलगते आवेश को व्यक्त करने का यह अवसर खो दें? क्या कोई हैं, जो इस समय, जो उन्होंने अनुभव किया है, उसे स्वर न दें? इस समय, सभी मनुष्य अपने आप का सबसे अच्छा भाग मेरी

सेवा में दे रहे हैं। कितने लोग बीते हुए कल की मूर्खताओं पर पश्चाताप से संतप्त हैं, कितने अतीत के धंधों के कारण स्वयं से घृणा करते हैं! सभी मनुष्य स्वयं को जान गए हैं, उन सभी ने शैतान के कर्मों और मेरी उत्कृष्टता को देखा है, और उनके हृदय में मेरे लिये अब एक जगह है। अब मैं मनुष्यों के बीच घृणा या अस्वीकृति नहीं पाँऊगा क्योंकि मेरा बड़ा कार्य पहले ही पूरा हो चुका है और अब यह बाधित नहीं है। आज मेरे राज्य के पुत्रों में क्या कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी चिंताओं पर विचार नहीं किया है? क्या कुछ ऐसे हैं, जिनके पास मेरे कार्य के तरीकों पर अधिक सोच-विचार नहीं हैं? क्या कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने पूरी निष्ठा से स्वयं को मेरी ख़ातिर समर्पित किया है? क्या तुम लोगों के हृदय के अंदर की अशुद्धियां कम हो गईं हैं? या वे बढ़ गईं हैं? अगर तुम लोगों के हृदय में अशुद्ध तत्व न तो कम हुए हैं और न वे बढ़े हैं, तो मैं तुम जैसे लोगों को निश्चित रूप से फेंक दूंगा। मैं जो चाहता हूँ, वे ऐसे पवित्र लोग हैं, जो मेरे हृदय के अनुसार हैं, न कि अशुद्ध दुष्टात्माएं जो मेरे विरुद्ध विद्रोह करते हैं। भले ही मानवजाति से मेरी माँगें अधिक ऊँची नहीं हैं, मगर मनुष्यों के हृदय का आंतरिक संसार इतना जटिल है कि मानवजाति आसानी से मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं हो सकती या तुरंत मेरे इरादों को पूरा नहीं कर सकती। अधिकतर मनुष्य अंत में जीत की माला पाने की आशा में गुप्त रूप से प्रयत्न कर रहे हैं। अधिकतर मनुष्य शैतान द्वारा पुनः बंदी बना लिए जाने के गहन भय से, एक पल के लिये भी सुस्त न होते हुए, अपनी पूरी शक्ति से प्रयत्न कर रहे हैं। वे अब मेरे विरुद्ध शिकायतों को सहन करने का साहस नहीं करते, बल्कि मेरे समक्ष निरंतर अपनी निष्ठा दिखाते हैं। मैंने इतने सारे लोगों द्वारा हृदय से बोले गए शब्दों को सुना है, दुख के दौरान इतने सारे लोगों के दर्दनाक अनुभवों के बारे में सुना है; मैंने बहुतों को देखा है जिन्होंने कठिनतम स्थितियों में भी मेरे प्रति अपनी वफ़ादारी निभाई है और मैंने कइयों को पथरीले रास्ते पर चलते हुए निकलने के लिए मार्ग खोजते देखा है। इन परिस्थितियों में, उन्होंने कभी शिकायत नहीं की है; तब भी, जब प्रकाश नहीं खोज पाने पर वे मायूस थे, उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। मगर मैंने कई लोगों को स्वर्ग को कोसने और धरती को आरोपित करने के लिए अपने हृदय की गहराइयों से शाप देते भी सुना है और मैंने बहुत से लोगों को संकट की घड़ी में स्वयं को निराशा में छोड़ते हुए भी देखा है, जिसमें वे स्वयं को कचरा समझकर, गंदगी और जमी हुई मिट्टी से ढक जाने के लिये कूड़ेदान में फेंक देते हैं। मैंने सुना है कि स्थिति में परिवर्तन के कारण कई लोग एक दूसरे के साथ झगड़ा कर रहे हैं, जिससे उनकी मुखमुद्रा बदल जाती है, इस प्रकार उनका अपने साथी मनुष्यों के साथ संबंध बदल जाता है, इस तरह कि दोस्त, दोस्त न रहकर एक दूसरे पर

अपनी ज़ुबान से हमला करने वाले दुश्मन बन जाते हैं। अधिकांश व्यक्ति मेरे वचनों का उपयोग मशीनगन की गोलियों की तरह करते हैं, अनभिज्ञ व्यक्तियों पर तब तक गोली चलाते हैं, जब तक मनुष्यों का संसार हर जगह ऐसे कोलाहल से नहीं भर जाता, जो शांति भंग कर देता है। सौभाग्य से आज यह दिन आ गया है; अन्यथा कौन जानता है कि मशीनगन की अथक गोलीबारी में न जाने कितने लोग नष्ट हो जाते।

मेरे वचनों को जारी रखते हुए और समस्त मानवजाति की स्थितियों के साथ तालमेल रखते हुए मेरा राज्य धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतरता है। अब मनुष्य चिंताजनक विचार नहीं पालता या अन्य लोगों के लिए ख़ुद को "चिंतामग्न" नहीं रखता या उनकी ओर से "चिंतित" नहीं होता। और इसलिए, पृथ्वी पर विवादास्पद मतभेद नहीं रहे और मेरे वचनों को जारी रखते हुए, आधुनिक युग के विविध "हथियार" भी वापस ले लिए गए हैं। मनुष्य को मनुष्य के साथ फिर से शांति मिलती है, मानव हृदय एक बार फिर सद्भाव की भावना बिखेरता है, अब कोई गुप्त आक्रमण के विरुद्ध रक्षात्मक स्थिति में नहीं है। समस्त मानवजाति अब सामान्य स्थिति में लौट चुकी है और एक नए जीवन को आरंभ कर चुकी है। नए परिवेश में निवास करते हुए, अच्छी संख्या में लोग अपने आसपास देखते हैं, ऐसा महसूस करते हुए मानो वे एक बिल्कुल नए संसार में प्रवेश कर चुके हैं, और इस वजह से, वे तुरंत अपने वर्तमान परिवेश के अनुकूल बनने या एकदम सही मार्ग पर आने में समर्थ नहीं होते हैं। और इसलिए, जहाँ तक मानवजाति का संबंध है, यह "आत्मा इच्छुक है मगर देह अशक्त है" का मामला है। हालांकि मैंने स्वयं मनुष्य की तरह, प्रतिकूलता की कड़वाहट को नहीं चखा है, तब भी मैं मनुष्य की सभी अपर्याप्तताओं के बारे में जानता हूँ। मैं दिलोजान से मनुष्य की आवश्यकताओं से परिचित हूँ, और उसकी कमज़ोरियों के बारे में भी मेरी समझ पूरी है। इसी कारण, मैं उसकी कमियों के लिये मनुष्य का उपहास नहीं करता; मैं मनुष्य की अधार्मिकता पर निर्भर करते हुए, केवल "शिक्षा" का एक उचित उपाय प्रभाव में लाता हूँ, जो हर एक को सही रास्ते पर आने में बेहतर ढंग से सक्षम बनाता है, ताकि मानवजाति अनाथ बच्चों की तरह भटकना बंद करे और इसके बजाय बच्चों की तरह हो जाए जिनके पास कहने को घर हो। तिस पर भी, मेरे कार्यकलाप सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित हैं। यदि मनुष्य उस परम सुख का आनंद लेने के अनिच्छुक हैं जो मुझ में है, तो मैं केवल इतना ही कर सकता हूँ कि उन्हें उनकी अभिलाषाओं के अनुसार अथाह कुंड में भेज दूँ। इस बिंदु पर, अब किसी को भी अपने हृदय में शिकायतें नहीं रखनी चाहिए बल्कि सभी को मेरी व्यवस्थाओं में मेरी धार्मिकता देखने में सक्षम होना चाहिए। मैं मानवजाति को मुझसे प्रेम करने के लिए बाध्य नहीं करता, न ही मुझे प्रेम

करने के लिए मैं किसी मनुष्य को दंड देता हूँ। मुझमें संपूर्ण स्वतंत्रता, संपूर्ण मुक्ति है। यद्यपि मनुष्य का भाग्य मेरे हाथों में है, मैंने मनुष्य को एक स्वतंत्र इच्छा दी है, जो मेरे नियंत्रण के अधीन नहीं है। इस तरह, मनुष्य मेरे प्रशासनिक आदेशों के आधार पर "संकट" में पड़ने के तरीक़ों का आविष्कार नहीं करेगा, बल्कि मेरी उदारता पर भरोसा करते हुए "मुक्ति" प्राप्त करेगा। और इसलिए, बहुत से लोग मेरे लिए संयम रखने के बजाय अपने तरीक़े से अपनी मुक्ति की तलाश करते हैं।

मैंने सदैव मानवजाति के साथ उदारता बरती है, मनुष्य पर कभी ऐसी समस्याएं नहीं लादीं जिनका समाधान न हो, एक भी व्यक्ति को मुश्किल में नहीं डाला. क्या ऐसा नहीं है? हालांकि बहुत से लोग मुझसे प्रेम नहीं करते, फिर भी इस रवैये से अप्रसन्न होने की जगह मैंने उन्हें स्वतंत्रता दी है, उन्हें कड़वाहट और पीड़ा के समुद्र में स्वतंत्र रूप से तैरने देने की सीमा तक छूट लेने की अनुमति दी है। क्योंकि मनुष्य एक अनैतिक पात्र है: हालांकि वह मेरे हाथ में आशीर्वाद को देखता है, उसका आनंद लेने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है, बल्कि वह शैतान के हाथ से विपत्ति मोल ले लेगा, जिससे वह "पोषण" के रूप में शैतान द्वारा उपभोग करवाकर अपनी बर्बादी करा सके। निश्चित रूप से, कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी आँखों से मेरा प्रकाश देखा है और इसलिए वर्तमान के अस्पष्ट कुहासे में रहते हुए भी उन्होंने, इन कुहासों के कारण प्रकाश में अपना विश्वास नहीं खोया है बल्कि कुहासे में टटोलना और खोजना जारी रखते हैं—चाहे उनका मार्ग बाधाओं से भरा हुआ क्यों न हो। जब मनुष्य मेरे विरुद्ध विद्रोह करता है, तो मैं अपने क्रोधपूर्ण प्रकोप को उस पर बरसाता हूँ, ताकि मनुष्य अपनी अवज्ञा के कारण नष्ट हो जाए। जब वह मेरी बात मानता है, तो मैं उससे अदृश्य रहता हूँ, इस तरह से उसके हृदय की गहराई में प्रेम जगाता हूँ, एक ऐसा प्रेम जो मुझे फुसलाने का प्रयास नहीं करता बल्कि मुझे आनंद देना चाहता है। कितनी ही बार मेरे लिए मनुष्य की खोज में, मैंने अपने नेत्र बंद किए हैं और चुप्पी साधी है, ताकि उसकी सच्ची आस्था सामने आ सके। परंतु जब मैं नहीं बोलता, तो मनुष्य की आस्था एक पल में बदल जाती है और जो कुछ मुझे दिखाई देते हैं, वह उसके "नकली सामान" हैं क्योंकि मनुष्य ने मुझसे कभी ईमानदारी से प्रेम किया ही नहीं। केवल तब जब मैं स्वयं को प्रकट करता हूँ, तभी मनुष्य "आस्था" का ज़बर्दस्त प्रदर्शन करते हैं; लेकिन जब मैं अपने गुप्त स्थान में छिपा रहता हूँ, तो वे निर्बल हो जाते हैं और कमज़ोर पड़ जाते हैं, जैसे मेरा अपमान करने से डरते हों; यहाँ तक कि कुछ ऐसे भी हैं, जो मेरा चेहरा देखने में असमर्थ होने पर मुझे एक "गहरी प्रक्रिया" में डाल देते हैं, इस प्रकार मेरे अस्तित्व की सच्चाई को नकारते हैं। बहुत से लोग इस स्थिति में रहते हैं; कई की यह

मानसिकता है। यह सभी मनुष्यों की उनके भीतर की कुरूपता को छिपाने के लिए की गई लाग-लपेट से अधिक नहीं है। इसी कारण वे अपनी अपर्याप्तता पर ध्यान देने के अनिच्छुक हैं और दाँत पीसकर और चेहरे छिपाकर मेरे वचनों की सच्चाई स्वीकारते हैं।

17 मार्च, 1992

अध्याय 19

मेरे वचनों को अपने अस्तित्व के आधार के रूप में लेना—यह मानव-जाति का दायित्व है। लोगों को मेरे वचनों के प्रत्येक भाग में अपना अंश स्थापित करना आवश्यक है; ऐसा न करना स्वयं के विनाश और तिरस्कार को आमंत्रित करना होगा। मनुष्य मुझे नहीं जानता, इसलिए, बजाय अपने जीवन को मेरे हाथों में सौंपने के, वह अपने हाथों में तुच्छ चीज़ें लेकर मेरे सामने आता है और इस तरह मुझे संतुष्ट करने की कोशिश करता है। मगर मैं इन चीज़ों से बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं होता, बल्कि मैं निरंतर लोगों से अपेक्षा करता रहता हूँ। मैं लोगों के योगदान से प्रेम करता हूँ; परन्तु उनकी माँगों से घृणा करता हूँ। सभी लोगों के हृदय में लोभ भरा है; मानो मनुष्य का हृदय शैतान की गुलामी कर रहा है। कोई भी खुद को छुड़ाकर, अपना हृदय मुझे अर्पण करने में सक्षम नहीं है। जब मैं बोलता हूँ, तो लोग मेरी बातों को ध्यानमग्न होकर सुनते हैं; परन्तु जब मैं चुप हो जाता हूँ, तो वे फिर से अपने ही "उद्यम" में लग जाते हैं और मेरे वचनों की तरफ पूरी तरह से लापरवाह हो जाते हैं, मानो मेरे वचन उनके "उद्यमों" के लिए मात्र एक अनुलग्नक हों। मैंने कभी भी मनुष्यों के प्रति लापरवाही नहीं बरती है, फिर भी मैं मनुष्यों के प्रति उदार और धैर्यवान रहा हूँ। इसलिए, मेरी उदारता की वजह से, मनुष्य खुद को अपने बूते से ज़्यादा आंकते हैं तथा आत्म-ज्ञान और आत्म-मंथन में असमर्थ हैं; वे मुझे धोखा देने के लिए मेरे धैर्य का फायदा उठाते हैं। उनमें से किसी ने भी ईमानदारी से मेरी परवाह नहीं की है और किसी ने मुझे अपने हृदय की बहुमूल्य वस्तु की तरह संजोकर नहीं रखा है; जब उनके पास बचा हुआ व्यर्थ समय होता है, तभी वे अपना लापरवाही भरा आदर भाव मुझे देते हैं। मनुष्यों के लिए मैंने जो प्रयास किए हैं, वे पहले से ही अनुमान से परे हैं; मैंने लोगों पर अभूतपूर्व ढंग से कार्य किया है, और इसके अलावा, मैंने उन्हें एक और बोझ दे दिया है, ताकि वे मेरे स्वरूप से, कुछ ज्ञान प्राप्त करके अपने आप में थोड़ा परिवर्तन ला सकें। मैं लोगों से मात्र "उपभोक्ता" बनने की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि अपेक्षा करता हूँ कि वे ऐसे "निर्माता" बनें जो शैतान को हराने में सक्षम हो। हालांकि मैं

मनुष्यों के सामने कुछ करने की माँग नहीं रखता, इसके बावजूद, मेरी माँगों के कुछ मानक हैं, क्योंकि मैं जो कुछ करता हूँ उसका एक उद्देश्य होता है, मेरे कार्यों का आधार होता है: मैं वैसी बेतरतीबी से, अनाड़ियों की तरह कार्य नहीं करता, जैसा लोग सोचते हैं, और न ही मैंने स्वेच्छा से स्वर्ग, पृथ्वी और सृष्टि की असंख्य चीज़ों का निर्माण किया है। मेरे कार्य में मनुष्यों को कुछ देखना चाहिए, और कुछ समझना चाहिए। उन्हें अपनी युवावस्था को यूं ही नहीं गंवा देना चाहिए और न ही उन्हें अपने जीवन के साथ उस वस्त्र की तरह पेश आना चाहिए जिसे लापरवाही से धूल खाने को छोड़ दिया जाता है; बल्कि, उन्हें खुद के साथ सख्ती से पेश आना चाहिए, अपने आनंद के लिए उन्हें मेरे उदार अनुग्रह से तब तक ग्रहण करना चाहिये जब तक कि वे मेरे कारण शैतान की ओर से विमुख न हो जाएँ और मेरे कारण शैतान पर हमला न कर दें। क्या इंसान से मेरी माँगें बहुत सरल नहीं हैं?

जब पूर्व में प्रकाश की एक मंद किरण दिखाई देती है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लोग उसकी ओर थोड़ा और ज़्यादा ध्यान लगाते हैं। मनुष्य जो अब गहरी नींद में सोया हुआ नहीं है, उस चमकती पूर्वी बिजली के स्रोत का अवलोकन करने के लिए आगे बढ़ता है। अपनी सीमित क्षमताओं के कारण, कोई भी अब तक उस स्थान को देख नहीं पाया है जहाँ से वह रोशनी निकलती है। जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के भीतर का सब-कुछ पूरी तरह प्रकाशित हो जायेगा, तब लोग अपनी निद्रा और स्वप्न से बाहर आएंगे, और तभी वे महसूस करेंगे कि धीरे-धीरे मेरा दिन इस संसार में आ गया है। सभी लोग रोशनी के आगमन के कारण उत्सव मनाते हैं, और इस वजह से वे गहरी नींद में सोये हुए नहीं हैं या मूर्छा की स्थिति में नहीं हैं। मेरी रोशनी की चमक में, सभी लोगों का मन और दृष्टि स्पष्ट हो जाती है और वे अचानक जीवन के आनन्द के प्रति सजग हो जाते हैं। ढक लेने वाली धुंध के आवरण में, मैं संसार की ओर देखता हूँ। सभी जानवर आराम कर रहे हैं; प्रकाश की क्षीण आभा के उदित होने से, सृष्टि में मौजूद प्रत्येक चीज़ जान गयी है कि एक नये जीवन का आगमन हो रहा है। इसी कारण से, जानवर भी भोजन की तलाश में अपनी मांद से रेंगते हुए बाहर आ रहे हैं। जाहिर है कि पेड़-पौधे भी इसका अपवाद नहीं हैं और रोशनी की चमक में उनकी पत्तियाँ उज्ज्वल ज्योति से दमकती हैं, इस इंतजार में कि मेरे धरती पर रहने के दौरान मेरे लिए अपनी भूमिका निभा सकें। सभी मनुष्य रोशनी के आगमन के इच्छुक हैं, फिर भी वे उसके आगमन से डरते हैं, चिंतित होते हैं कि अब उनकी कुरूपता कहीं छिप न सकेगी। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मनुष्य पूरी तरह से नग्न है और खुद को ढकने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है। इस तरह बहुत से लोग रोशनी के आगमन के कारण

आतंकित हो गए हैं, रोशनी के प्रकटन के कारण सदमे में हैं। बहुत से लोग रोशनी को देखकर भयंकर पछतावे से भर गए हैं, अपनी ही मलिनता से घृणा कर रहे हैं, परन्तु सच्चाई को बदलने में असमर्थ हैं, वे मेरे दंड सुनाने का इंतज़ार करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। बहुत से लोग अंधकार में कष्ट सहने के कारण शुद्ध हुए हैं, रोशनी देखकर, अचानक इसके गहन अर्थ को समझ गए हैं और उसके बाद से, वे रोशनी को फिर से खोने के गहरे डर से उसे अपने सीने से चिपकाकर रखते हैं। बहुत से लोग रोशनी के अचानक प्रगट होने से अपने पथ से विचलित होने के बजाए, आराम से अपने प्रतिदिन के काम में लगे रहते हैं, क्योंकि वे सालों से अंधे रहे हैं, इसलिए न सिर्फ़ वे रोशनी के आने पर उस पर ध्यान नहीं दे पाते, बल्कि वे इससे कृतार्थ भी नहीं होते। मनुष्य के हृदय में, मैं न तो उच्च हूँ, न ही नीचा हूँ। जहाँ तक उनकी बात है, मेरे होने न होने से उन्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ता; मानो मेरे न होने से लोगों के जीवन में कोई सूनापन नहीं होगा और अगर रहूँ तो भी उनका जीवन अधिक आनंददायक नहीं हो जाएगा। क्योंकि लोग मुझे प्रेम नहीं करते, इसलिए जो आनन्द मैं उन्हें देता हूँ वो बहुत ही थोड़ा होता है। परन्तु जैसे ही लोग मुझे थोड़ा-सा भी आदर देंगे, तो मैं भी उनके प्रति अपने दृष्टिकोण को बदल लूँगा। इसी कारण से, जब मानव इस नियम को समझ लेंगे, तभी वे इतने भाग्यशाली होंगे कि अपने आपको मुझे समर्पित कर सकें और जो कुछ मेरे हाथों में है, उसकी माँग कर सकें। निश्चय ही मेरे प्रति मनुष्य का प्रेम केवल उसके स्वयं के हितों से नहीं बंधा है? निश्चय ही मेरे प्रति इंसान की निष्ठा मात्र उन चीजों से नहीं बंधी है जो मैं उसे देता हूँ? क्या ऐसा हो सकता है कि जब तक वह मेरी रोशनी को न देख ले, तब तक वह अपने विश्वास के सहारे मुझे ईमानदारी से प्रेम करने में असमर्थ है? निश्चय ही मनुष्य की शक्ति और ताकत वाकई आज की स्थितियों तक सीमित नहीं है? क्या ऐसा हो सकता है कि मनुष्य को मुझे प्रेम करने के लिए साहस की आवश्यकता है?

मेरे अस्तित्व के कारण, सृष्टि की असंख्य चीजें अपने निवास स्थान में आज्ञाकारिता से समर्पित होती हैं, और मेरे अनुशासन के अभाव में, अनैतिक कार्यों में लिप्त नहीं होतीं। इसलिए भूमि पर, पहाड़ देशों के मध्य सीमा बन जाते हैं, भूमि के मध्य अलगाव रखने के लिए समुद्र सीमाएं बन जाते हैं, और वायु वह बन जाती है जो पृथ्वी के ऊपर के स्थान पर मनुष्य से मनुष्य के मध्य बहती रहती है। केवल मनुष्य ही सही मायने में मेरी इच्छा की अपेक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ है; इसलिए मैं कहता हूँ, सम्पूर्ण सृष्टि में केवल मनुष्य ही आज्ञा-उल्लंघन की श्रेणी में आता है। मनुष्य ने कभी भी मेरे प्रति वास्तव में समर्पण नहीं किया है और इसी कारण से, मैंने उसे हमेशा बहुत ही सख्त अनुशासन में रखा है। यदि मनुष्यों के मध्य, ऐसा हो

जाता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में मेरी महिमा फैल जाती है, तो मैं अपनी सम्पूर्ण महिमा लेकर उसे मनुष्यों के सामने प्रस्तुत करूँगा। क्योंकि मनुष्य अपनी अशुद्धता के कारण मेरी महिमा को देखने योग्य नहीं है, हज़ारों वर्षों से मैं खुले में नहीं आया, बल्कि छिपा ही रहा हूँ; इसी कारण से, मेरी महिमा मानवजाति के सामने कभी भी व्यक्त नहीं हुई और मनुष्य पाप की गहरी खाई में जा गिरा है। मैंने मनुष्यों को उनकी अधार्मिकता के लिए क्षमा कर दिया है, परन्तु वे नहीं जानते कि स्वयं को कैसे संरक्षित रखा जाए, वे हमेशा अपने आपको पाप के सामने खुला छोड़ देते हैं, जिस कारण वे इससे आहत होते रहते हैं। क्या यह मानव की आत्म-सम्मान और आत्म-प्रेम की कमी को नहीं दिखाता है? मनुष्यों के मध्य, क्या कोई वास्तव में प्रेम कर सकता है? मनुष्य की भक्ति का क्या वज़न हो सकता है? क्या लोगों की तथाकथित प्रमाणिकता में मिलावट नहीं है? क्या उनकी भक्ति पूरी तरह से मिलावटी नहीं है? मैं मनुष्य से अविभाजित प्रेम की अपेक्षा करता हूँ। मनुष्य मुझे नहीं जानता और भले ही वह मुझे खोजने का प्रयत्न करता है, परन्तु वह मुझे अपना सच्चा और ईमानदार हृदय नहीं देता। मैं इंसान से वह बलपूर्वक नहीं लेना चाहता जो वह देना नहीं चाहता। यदि वह मुझे अपनी भक्ति देगा तो मैं उसे बिना विनम्र एतराज़ के ग्रहण कर लूँगा। परन्तु यदि वह मुझ पर विश्वास नहीं करेगा और अपना एक अंश भी मुझे अर्पण करने से मना करेगा, तो उस बारे में अधिक दुखी होने की बजाय, मैं बस उसे किसी दूसरे तरीके से निपटाऊंगा और उसके लिए उपयुक्त मंज़िल की व्यवस्था करूँगा। पूरे आसमान में गूँजती गड़गड़ाहट, मनुष्यों को मार गिरायेगी; ऊंचे-ऊंचे पहाड़ नीचे गिरते ही उन्हें दफना देंगे; जंगली जानवर अपनी भूख मिटाने के लिए उन्हें नोंच कर खा जायेंगे; और उमड़ते महासागर उनके सिर के पास ही हिलोरे मारेंगे। जब मनुष्यजाति भाई-बंधुओं के झगड़ों में उलझेगी, तो लोग अपने ही मध्य से उत्पन्न होने वाली आपदाओं द्वारा अपने विनाश को प्राप्त होने की चेष्टा करेंगे।

राज्य मनुष्यों के मध्य विस्तार पा रहा है, यह मनुष्यों के मध्य बन रहा है और यह मनुष्यों के मध्य खड़ा हो रहा है; ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है जो मेरे राज्य को नष्ट कर सके। आज के राज्य में जो मेरे लोग हैं, उनमें से ऐसा कौन है जो मानवों में मानव नहीं है? तुम लोगों में से कौन मानवीय स्थिति से बाहर है? जब भीड़ के सामने मेरे प्रारम्भ बिन्दु का ऐलान किया जायेगा, तो लोग कैसे प्रतिक्रिया देंगे? तुम सबने अपनी आंखों से मानवजाति की दशा देखी है; निश्चय ही तुम लोग अब भी इस संसार में हमेशा के लिए बने रहने की आशा नहीं कर रहे हो? अब मैं अपने लोगों के मध्य चल रहा हूँ, और उनके मध्य रह रहा हूँ।

आज जो लोग मेरे लिए वास्तविक प्रेम रखते हैं, ऐसे लोग धन्य हैं। धन्य हैं वे लोग जो मुझे समर्पित हैं, वे निश्चय ही मेरे राज्य में रहेंगे। धन्य हैं वे लोग जो मुझे जानते हैं, वे निश्चय ही मेरे राज्य में शक्ति प्राप्त करेंगे। धन्य हैं वे जो मुझे खोजते हैं, वे निश्चय ही शैतान के बंधनों से स्वतंत्र होंगे और मेरे आशीषों का आनन्द लेंगे। धन्य हैं वे लोग जो अपनी दैहिक-इच्छाओं को मेरे लिए त्यागते हैं, वे निश्चय ही मेरे राज्य में प्रवेश करेंगे और मेरे राज्य की प्रचुरता पाएंगे। जो लोग मेरी खातिर दौड़-भाग करते हैं उन्हें मैं याद रखूंगा, जो लोग मेरे लिए व्यय करते हैं, मैं उन्हें आनन्द से गले लगाऊंगा, और जो लोग मुझे भेंट देते हैं, मैं उन्हें आनन्द दूंगा। जो लोग मेरे वचनों में आनन्द प्राप्त करते हैं, उन्हें मैं आशीष दूंगा; वे निश्चय ही ऐसे खम्भे होंगे जो मेरे राज्य में शहतीर को थामेंगे, वे निश्चय ही मेरे घर में अतुलनीय प्रचुरता को प्राप्त करेंगे और उनके साथ कोई तुलना नहीं कर पाएगा। क्या तुम लोगों ने कभी मिलने वाले आशीषों को स्वीकार किया है? क्या कभी तुमने उन वादों को खोजा जो तुम्हारे लिए किए गए थे? तुम लोग निश्चय ही मेरी रोशनी के नेतृत्व में, अंधकार की शक्तियों के गढ़ को तोड़ोगे। तुम अंधकार के मध्य निश्चय ही मार्गदर्शन करने वाली ज्योति को नहीं खोओगे। तुम सब निश्चय ही सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी होगे। तुम लोग निश्चय ही शैतान के सामने विजेता बनोगे। तुम सब निश्चय ही बड़े लाल अजगर के राज्य के पतन के समय, मेरी विजय की गवाही देने के लिए असंख्य लोगों की भीड़ में खड़े होगे। तुम लोग निश्चय ही सिनिम के देश में दृढ़ और अटूट खड़े रहोगे। तुम लोग जो कष्ट सह रहे हो, उनसे तुम मेरे आशीष प्राप्त करोगे और निश्चय ही सकल ब्रह्माण्ड में मेरी महिमा का विस्तार करोगे।

19 मार्च, 1992

अध्याय 20

मेरे घर की धन-संपत्ति गिनती से परे और अथाह है, फिर भी मनुष्य उनका आनंद उठाने के लिए कभी मेरे पास नहीं आया। मनुष्य स्वयं अकेला उनका आनंद उठा पाने में असमर्थ है, न ही वह अपनी कोशिशों से अपनी रक्षा कर पाने में समर्थ है; इसके बजाय, उसने हमेशा दूसरों में भरोसा किया है। मैं जिन्हें देखता हूँ, उन सबमें से किसी ने भी समझते-बूझते और प्रत्यक्ष रूप से कभी मेरी खोज नहीं की है। वे सब दूसरों के आग्रह पर, बहुसंख्या का अनुसरण करते हुए मेरे सामने आते हैं, और वे क़ीमत चुकाने या अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए समय बिताने के अनिच्छुक हैं। इसलिए, मनुष्यों में, कभी किसी ने

वास्तविकता में जीवन नहीं जिया है, और सभी लोग जो जीवन जीते हैं वे अर्थहीन हैं। मनुष्य के लंबे समय से जमे-जमाए तौर-तरीक़ों और रीति-रिवाजों के कारण, सभी लोगों के शरीर पार्थिव मिट्टी की गंध से भर गए हैं। परिणामस्वरूप, मनुष्य संसार की वीरानी के प्रति सुन्न, असंवेदनशील हो गया है, और इसके बजाय वह इस निस्तब्ध संसार में अपने को आनंदमग्न रखने के काम में स्वयं को व्यस्त कर लेता है। मनुष्य के जीवन में थोड़ा भी उत्साह नहीं है, और वह लेशमात्र मानवता या प्रकाश से भी रहित है—फिर भी वह हमेशा भोगासक्त रहा है, मूल्य विहीन जीवनकाल से बँधे रहकर, जिसमें वह कुछ प्राप्त किए बिना ही यहाँ-वहाँ भागता फिरता है। पलक झपकते ही, मृत्यु का दिन नज़दीक आ जाता है, और मनुष्य एक कड़वी मौत मरता है। इस संसार में, उसने कभी कुछ भी संपन्न, या कुछ भी प्राप्त नहीं किया है—वह हड़बड़ी में यहाँ आता है और हड़बड़ी में चला जाता है। मेरी नज़रों में उनमें से कोई भी कभी कुछ लेकर नहीं आया, या न ही कुछ लेकर गया है, और इसलिए मनुष्य को लगता है कि यह संसार अन्यायी है। फिर भी कोई जल्दी जाने का इच्छुक नहीं है। वे बस उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब मेरी प्रतिज्ञा मनुष्य के बीच में अचानक प्रकट होगी, जो उस समय जब वे भटक गए हों, उन्हें एक बार फिर अनंत जीवन का मार्ग देखने देगी। इस प्रकार, मनुष्य मेरे प्रत्येक कर्म और कार्यकलाप पर नज़रें गड़ाए रहता है, यह देखने के लिए कि मैंने उससे अपनी प्रतिज्ञा सचमुच निभाई है या नहीं। जब वह मनोव्यथा के बीच, या अत्यधिक कष्ट में होता है, या परीक्षाओं से घिरा और गिरने ही वाला होता है, तब मनुष्य अपने जन्म के दिन को कोसता है ताकि वह शीघ्रातिशीघ्र अपनी मुसीबतों से पिंड छुड़ा सके और किसी दूसरी आदर्श जगह पर जा सके। परंतु जब परीक्षाएँ बीत जाती हैं, तब मनुष्य आनंद से भर उठता है। वह पृथ्वी पर अपने जन्म के दिन का उत्सव मनाता है और चाहता है कि मैं उसके जन्म के दिन को धन्य कर दूँ; इस समय, मनुष्य अतीत की सौगंधों का अब और उल्लेख नहीं करता है, इस बात से अत्यधिक भयभीत होता है कि मृत्यु उसके ऊपर दूसरी बार टूट पड़ेगी। जब मेरे हाथ संसार को बढ़ाते हैं, लोग आनंद से नाचने लगते हैं, वे अब और शोकमग्न नहीं रह जाते हैं, और वे सब मुझ पर निर्भर करते हैं। जब मैं अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लेता हूँ, और लोगों को ज़मीन में नीचे धँसा देता हूँ, उन्हें तत्काल साँस घुटती महसूस होती है, और वे मुश्किल से ही जीवित रह पाते हैं। वे सभी मुझे पुकारते हैं, घबराते हैं कि मैं उनका विनाश कर दूँगा, क्योंकि वे सब वह दिन देखना चाहते हैं जब मैं महिमामंडित होता हूँ। मनुष्य मेरे दिन को अपने अस्तित्व की पूँजी के रूप में लेता है, और मानवजाति आज तक जीवित बची हुई है तो सिर्फ इसलिए कि लोग वह दिन देखने को

लालायित हैं जब मेरी महिमा का आगमन होगा। मेरे मुख से आज्ञप्त आशीष यह है कि वे जो अंत के दिनों के दौरान जन्मे हैं, इतने पर्याप्त सौभाग्यशाली हैं कि मेरी सारी महिमा का दर्शन कर सकेंगे।

युगों-युगों से, बहुत-से लोग निराश होकर, और अनिच्छा से, इस संसार से चले गए हैं, और बहुत-से लोग आशा और विश्वास के साथ इसमें आए हैं। मैंने बहुतों के आने की व्यवस्था की है, और बहुतों को दूर भेजा है। अनगिनत लोग मेरे हाथों से होकर गुज़रे हैं। बहुत-सी आत्माएँ अधोलोक में डाल दी गई हैं, बहुतों ने देह में जीवन जिया है, और बहुत-सी मर गईं और पृथ्वी पर पुनः जन्मी हैं। परंतु उनमें से किसी को भी आज राज्य के आशीषों का आनंद उठाने का अवसर नहीं मिला। मैंने मनुष्य को इतना अधिक दिया है, फिर भी उसने कम ही कुछ प्राप्त किया है, क्योंकि शैतान की शक्तियों के आक्रमण ने उन्हें मेरी सारी संपदा का आनंद उठा पाने योग्य नहीं छोड़ा है। उसके पास केवल उन्हें देखने का सौभाग्य ही है, किंतु वह उनका पूरा आनंद कभी नहीं उठा पाया। मनुष्य ने स्वर्ग की धन-संपत्ति पाने के लिए अपने शरीर के ख़ज़ाने से भरे घर की खोज कभी नहीं की, और इसलिए उसने वे आशीष गँवा दिए जो मैंने उसे दिए थे। क्या मनुष्य का आत्मा बिल्कुल वही आंतरिक शक्ति नहीं है जो उसे मेरे आत्मा से जोड़ता है? क्यों मनुष्य ने मुझे कभी अपने आत्मा से नहीं जोड़ा है? ऐसा क्यों है कि वह देह में मेरे निकट खिंचा चला आता है, किंतु आत्मा में ऐसा नहीं कर पाता है? क्या मेरा सच्चा चेहरा देह का चेहरा है? मनुष्य मेरा सार क्यों नहीं जानता? क्या मनुष्य की आत्मा में सचमुच कभी मेरा कोई अवशेष नहीं रहा है? क्या मैं मनुष्य की आत्मा से पूरी तरह लुप्त हो चुका हूँ? यदि मनुष्य आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश नहीं करता, तो वह मेरे मनोरथों को कैसे पकड़ सकता है? मनुष्य की दृष्टि में, क्या वहाँ वह है जो सीधे आध्यात्मिक क्षेत्र को बेध सके? कई बार ऐसा हुआ कि मैंने अपने आत्मा से मनुष्य को पुकारा है, फिर भी मनुष्य ऐसे व्यवहार करता है मानो मैंने उसे डँक मार दिया हो, दूर से मेरा आदर करते हुए, अत्यधिक डर से कि मैं उसे किसी और संसार में ले जाऊँगा। कई बार ऐसा हुआ कि मैंने मनुष्य की आत्मा में जाँच-पड़ताल की, फिर भी वह भुलक्कड़ बना रहता है, गहराई से भयभीत कि मैं उसके घर में घुस जाऊँगा और अवसर का लाभ उठाकर उसका सारा सामान छीन लूँगा। इस प्रकार, वह मुझे बाहर रोक देता है, वहाँ छोड़ देता है जहाँ मेरे सामने एक भावहीन, कसकर बंद दरवाज़े के सिवा कुछ नहीं होता। कई बार ऐसा हुआ कि मनुष्य गिर गया है और मैंने उसे बचाया है, फिर भी वह जागने के बाद तुरंत मुझे छोड़ देता है और, मेरे प्रेम से अनछुआ, चौकन्नी नज़र से मुझे देखता है; मानो मनुष्य के हृदय को मैंने कभी गरमाया नहीं है। मनुष्य भावनाहीन है, नृशंस पशु है।

यद्यपि मेरे आलिंगन से उसने गरमाहट ली है, फिर भी वह इससे कभी गहराई से द्रवित नहीं हुआ है। मनुष्य पहाड़ी बनैले के समान है। उसने मानवजाति को मेरी ताड़ना कभी संजोकर नहीं रखी है। वह मेरे पास आने से आनाकानी करता है, और पहाड़ों के बीच रहना पसंद करता है, जहाँ वह जंगली जानवरों का खतरा झेलता है—फिर भी वह मुझमें शरण लेने का अनिच्छुक है। मैं किसी मनुष्य को बाध्य नहीं करता हूँ : मैं बस अपना कार्य करता हूँ। वह दिन आएगा जब मनुष्य शक्तिशाली महासागर के बीच से तैरकर मेरी तरफ आ जाएगा, ताकि वह पृथ्वी पर सकल संपदा का आनंद उठाए और समुद्र के द्वारा निगले जाने का जोखिम पीछे छोड़ दे।

मेरे वचन ज्यों-ज्यों पूर्णता तक पहुँचते हैं, पृथ्वी पर धीरे-धीरे राज्य बनता जाता है और मनुष्य धीरे-धीरे सामान्यता की ओर लौटता है, और इस प्रकार पृथ्वी पर वह राज्य स्थापित हो जाता है जो मेरे हृदय में है। राज्य में, परमेश्वर के सभी लोग सामान्य मनुष्य का जीवन पुनः प्राप्त कर लेते हैं। पाले वाली शीत ऋतु विदा हुई, उसका स्थान वासंती नगरों के संसार ने ले लिया है, जहाँ पूरे साल बहार रहती है। मनुष्य का उदास और अभागा संसार अब लोगों के सामने नहीं रह गया है, और न ही वे मनुष्य के संसार की ठण्डी सिहरन सहते हैं। लोग एक दूसरे से लड़ते नहीं हैं, देश एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध में नहीं उतरते हैं, नरसंहार अब और नहीं हैं और न वह लहू जो नरसंहार से बहता है; सारे भूभागों में प्रसन्नता छाई है, और हर जगह मनुष्यों की आपसी गर्माहट से भरी है। मैं पूरे संसार में घूमता हूँ, मैं ऊपर अपने सिंहासन से आनंदित होता हूँ, और मैं तारों के बीच रहता हूँ। और स्वर्गदूत मेरे लिए नए-नए गीत और नए-नए नृत्य प्रस्तुत करते हैं। उनके चेहरों से उनकी क्षणभंगुरता के कारण अब और आँसू नहीं ढलकते हैं। अब मुझे स्वर्गदूतों के रोने की आवाज़ नहीं सुनाई देती, और अब कोई मुझसे कठिनाइयों की शिकायत नहीं करता। आज, तुम सब लोग मेरे सामने रहते हो; कल तुम सब लोग मेरे राज्य में रहोगे। क्या यह सबसे बड़ा आशीष नहीं है जो मैं मनुष्य को देता हूँ? तुम आज जो क़ीमत चुकाते हो, उसके कारण तुम लोग विरासत में भविष्य के आशीष प्राप्त करोगे और मेरी महिमा के बीच रहोगे। क्या तुम लोग अब भी मेरे आत्मा के सार से जुड़ना नहीं चाहते हो? क्या तुम लोग अब भी अपना वध करना चाहते हो? लोग उन प्रतिज्ञाओं के पीछे भागने को तैयार हैं जिन्हें वे देख सकते हैं, बावजूद इसके वे क्षणभंगुर हैं, परंतु कोई भी आने वाले कल की प्रतिज्ञाओं को स्वीकार करने का इच्छुक नहीं है, बावजूद इसके कि वे अनंत काल तक बनी रहेंगी। मनुष्य को जो चीज़ें दृष्टिगोचर हैं ये वही चीज़ें हैं जिन्हें मैं जड़ से मिटा दूँगा, और जो चीज़ें मनुष्य के लिए दुर्बोध हैं ये वही

चीज़ें हैं जिन्हें मैं संपन्न करूँगा। परमेश्वर और मनुष्य के बीच यही अंतर है।

मनुष्य ने गणना कर ली है कि मेरा दिन कब आएगा, किंतु ठीक-ठीक तिथि कभी किसी को पता नहीं चली, और इस प्रकार मनुष्य केवल मूर्छा के बीच ही जी सकता है। चूँकि मनुष्य की लालसाएँ असीम आसमानों में प्रतिध्वनित होती हैं, और फिर ओझल हो जाती हैं, इसलिए मनुष्य बारंबार अपनी आशा गँवा देता है, इस तरह कि वह वर्तमान परिस्थितियों में आ पड़ा है। मेरे कथनों का उद्देश्य मनुष्य से तिथियों का अनुसरण करवाना नहीं है, न ही उसकी हताशा के परिणामस्वरूप उसे अपने ही विनाश की ओर धकेलना है। मैं मनुष्य से अपनी प्रतिज्ञा स्वीकार करवाना चाहता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि समूचे संसार के लोगों के पास मेरी प्रतिज्ञा का अंश हो। मैं ऐसे जीवित प्राणी चाहता हूँ जो जीवन से भरपूर हों, ऐसे शव नहीं जो मृत्यु में निमग्न हैं। जब मैं राज्य के पटल पर पीठ टिकाता हूँ, तभी मैं पृथ्वी पर सभी लोगों को मेरा निरीक्षण प्राप्त करने की आज्ञा दूँगा। मैं अपने समक्ष कोई अशुद्ध वस्तु उपस्थित नहीं होने देता हूँ। मैं अपने कार्य में किसी मनुष्य का हस्तक्षेप सहन नहीं करता हूँ; वे सब जो मेरे कार्य में हस्तक्षेप करते हैं कालकोठरियों में डाल दिए जाते हैं, और छूटने के बाद भी, पृथ्वी की चिलचिलाती ज्वालाओं में झुलसते हुए, वे महाविपत्ति से घिरे रहते हैं। जब मैं अपने देहधारी शरीर में हूँ, तब जो भी मेरी देह के साथ मेरे कार्य पर तर्क-वितर्क करता है, वह मेरी घृणा का भागी बनेगा। अनेक बार मैंने मनुष्य को स्मरण दिलाया है कि पृथ्वी पर मेरा कोई सगा-संबंधी नहीं है, और जो भी मुझे समकक्ष के रूप में देखता है, और मुझ अपनी ओर खींचता है ताकि मेरे साथ बिताए समयों की स्मृतियाँ ताज़ा कर सके, तो वह विनाश का पात्र बनेगा। यही मेरी आज्ञा हूँ। ऐसे मामलों में मैं मनुष्य के प्रति थोड़ा भी रहमदिल नहीं हूँ। वे सब जो मेरे कार्य में हस्तक्षेप करते हैं और मुझे परामर्श देते हैं मेरे द्वारा ताड़ित किए जाएँगे, और मेरे द्वारा कभी क्षमा नहीं किए जाएँगे। यदि मैं स्पष्ट रूप से न कहूँ, तो मनुष्य कभी अपने होश में नहीं आएगा, और न चाहकर भी मेरी ताड़ना का भागी बनेगा—क्योंकि मनुष्य मुझे मेरी देह में नहीं जानता है।

20 मार्च, 1992

अध्याय 21

मनुष्य मेरी ज्योति के बीच में गिरता है और मेरे उद्धार के कारण डटा रहता है। जब मैं पूरे विश्व के लिए उद्धार लेकर आता हूँ, तो मनुष्य मेरे पुनरुद्धार के प्रवाह में प्रवेश करने के लिए रास्ते तलाशने की

कोशिश करता है; फिर भी बहुत से लोग हैं जो पुनरुद्धार की इस प्रचण्ड धारा में बिना कोई निशान छोड़े बह जाते हैं; ऐसे बहुत से हैं जिन्हें इन प्रचण्ड जलधाराओं द्वारा डुबो दिया जाता है और निगल लिया जाता है; और बहुत से हैं, जो प्रचण्ड धारा के मध्य भी डटे रहते हैं, जिन्होंने अपना दिशा-बोध कभी नहीं खोया है, और जिन्होंने आज तक इस प्रचण्ड धारा का इसी तरह अनुसरण किया है। मैं मनुष्य के साथ कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ता हूँ, फिर भी उसने मुझे कभी नहीं जाना है; वह केवल उन वस्त्रों को जानता है जिन्हें मैं बाहर से पहनता हूँ, लेकिन उस वैभव से अनजान है जो मेरे भीतर छिपा हुआ है। यद्यपि मैं प्रतिदिन मनुष्य का भरण-पोषण करता हूँ और उसे देता हूँ, फिर भी वह सचमुच में स्वीकार करने में असमर्थ है, और मेरे द्वारा दी जानेवाली समस्त समृद्धि को प्राप्त करने में अक्षम है। मनुष्य की कोई भी भ्रष्टता मेरी नज़र से नहीं बचती है; मेरे लिए, उसका आंतरिक संसार जल में चमकते चाँद के जितना स्पष्ट है। मैं मनुष्य के साथ बेपरवाह ढंग से व्यवहार नहीं करता, और न ही मैं उसके साथ बिना रुचि के कुछ करता हूँ; बात बस इतनी है कि मनुष्य स्वयं का उत्तरदायित्व लेने में असमर्थ है, और इसलिए पूरी मानवजाति हमेशा से भ्रष्ट रही है, और यहाँ तक कि आज भी वह अपने आप को ऐसी भ्रष्टता से बाहर निकालने में असमर्थ है। बेचारी अभागी मानवजाति! ऐसा क्यों है कि मानव मुझसे प्रेम करने में सक्षम है किन्तु मेरे आत्मा की इच्छाओं का अनुसरण करने में असमर्थ है? क्या मैंने वास्तव में अपने आप को मानवजाति के सामने प्रकट नहीं किया है? क्या मानवजाति ने वास्तव में मेरा चेहरा कभी नहीं देखा है? क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने मानवजाति के प्रति बहुत कम दया दिखाई है? हे समस्त मानवजाति के विद्रोहियो! वे निश्चित मेरे पैरों तले कुचले जाएँगे, उन्हें मेरी ताड़नाओं के बीच मिट जाना होगा, और जिस दिन मेरा महान उद्यम पूरा होगा, उस दिन उन्हें मानवजाति के बीच से अवश्य बाहर फेंक दिया जाएगा, ताकि पूरी मानवजाति उनके कुरूप चेहरे को जान जाए। मनुष्य शायद ही कभी मेरे चेहरे को देखता या मेरी आवाज़ को सुनता है क्योंकि पूरा संसार बहुत गंदा है, और इसका कोलाहल बहुत ज़्यादा है, और इस तरह मानवजाति इतनी आलसी है कि वह मेरे चेहरे को नहीं ढूंढ़ सकती और मेरे हृदय को समझने की कोशिश नहीं कर सकती। क्या यह मानवजाति की भ्रष्टता का कारण नहीं है? क्या इसी कारण मानवजाति अभाव में नहीं है? संपूर्ण मानवजाति हमेशा से मेरे भरण-पोषण के बीच रही है। यदि ऐसा नहीं होता, यदि मैं दयावान नहीं होता, तो आज तक कौन जीवित बचा रहता? मुझमें जो संपत्ति है वह अतुलनीय है, मगर समस्त आपदा भी मेरे ही हाथों में है—और कौन जब चाहे अपनी इच्छानुसार विपत्ति से बच निकलने में

समर्थ है? क्या मनुष्य की प्रार्थनाएँ, या उसके हृदय के भीतर का रुदन उसे ऐसा करने की अनुमति देता है? मनुष्य ने कभी भी मुझसे सचमुच में प्रार्थना नहीं की है। इसलिए समस्त मानवजाति में किसी ने भी अपना सारा जीवन सत्य के प्रकाश के बीच नहीं बिताया है और लोग केवल प्रकाश की आती-जाती चपल टिमटिमाहट के बीच ही जीवन बिताते हैं। यही है जो आज मानवजाति को अभाव की ओर ले गया है।

हर कोई अधीर हो रहा है, और मुझसे कुछ प्राप्त करने के लिए पूरा प्रयास लगाना चाह रहा है, और इसलिए, मनुष्य की मानसिकता के अनुरूप, मैं उसमें सच्चा प्रेम प्रेरित करने के लिए उससे वादे करता हूँ। क्या यह वास्तव में मनुष्य का सच्चा प्रेम है जो उसे शक्ति देता है? क्या यह मनुष्य की मेरे प्रति वफादारी है जिसने स्वर्ग में मेरे आत्मा को द्रवित कर दिया है? मनुष्य के कार्यों से कभी भी स्वर्ग थोड़ा भी प्रभावित नहीं हुआ है, और यदि मनुष्य के प्रति मेरा व्यवहार उसके हर कार्य के आधार पर होता, तो समस्त मानवजाति मेरी ताड़नाओं के मध्य जीवन बिताती। मैंने कई लोगों को देखा है जिनके आँसू उनके गालों से नीचे लुढ़कते हैं, और मैंने कई लोगों को देखा है जो मेरे वैभव के बदले अपने हृदयों की भेंट चढ़ाते हैं। इस "धर्मपरायणता" के बावजूद, मैंने मनुष्य के अकस्मात् आग्रहों के परिणामस्वरूप उसे अपना सर्वस्व मुफ़्त में कभी नहीं दिया है, क्योंकि मनुष्य कभी भी मेरे सामने स्वयं को प्रसन्नतापूर्वक समर्पित करने को तैयार नहीं हुआ है। मैंने सभी लोगों के मुखौटे खींच उतारे हैं और इन मुखौटों को आग की झील में फेंक दिया है, और परिणामस्वरूप, मनुष्य की कथित वफादारी और विनतियाँ मेरे सामने कभी नहीं टिकी हैं। मनुष्य आकाश में एक बादल के समान है : जब हवा साँय-साँय करते हुए चलती है तो वह उसके बल की ताक़त से डरता है और इसलिए तेजी के साथ उसके पीछे बहता है, बुरी तरह भयभीत कि उसे उसकी अवज्ञा के कारण मार गिरा दिया जाएगा। क्या यह मनुष्य का कुरूप चेहरा नहीं है? क्या यह मनुष्य की तथाकथित आज्ञाकारिता नहीं है? क्या यह मनुष्य की "असली भावना" और झूठी सद्भावना नहीं है? बहुत से लोग मेरे मुख से निकले सभी कथनों द्वारा आश्वस्त होने से इनकार करते हैं, और बहुत से लोग मेरे मूल्यांकन को स्वीकार नहीं करते, और इसलिए उनके वचन और कार्य उनके विद्रोही इरादों को प्रकट करते हैं। क्या मैं जो कहता हूँ वह मनुष्य की पुरानी प्रकृति के विपरीत है। क्या मैंने मनुष्य को "प्रकृति के नियमों" के अनुसार उचित परिभाषा नहीं दी है? मनुष्य वास्तव में मेरा आज्ञापालन नहीं करता है; यदि उसने वास्तव में मेरी खोज की होती, तो मुझे इतना कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य बेकार का कचरा है, और उसे आगे बढ़ने हेतु बाध्य करने के लिए मुझे अपनी ताड़ना का उपयोग करना ही होगा। यदि मैंने

ऐसा नहीं किया होता—भले ही जो प्रतिज्ञाएँ मैं उसे देता हूँ वे उसके आनन्द के लिए पर्याप्त हैं—तो उसके हृदय को कैसे प्रेरित किया जा सकता था? मनुष्य कई वर्षों तक हमेशा दर्दनाक संघर्ष के बीच रहा है; ऐसा कहा जा सकता है कि उसने हमेशा निराशा में जीवन बिताया है। परिणामस्वरूप, वह हताश रह गया है, और शारीरिक और मानसिक रूप से शक्तिहीन हो गया है, और इसलिए वह उस संपत्ति को प्रसन्नता से स्वीकार नहीं करता है जो मैं उसे देता हूँ। आज भी, मुझसे आत्मा की समस्त मिठास को स्वीकार करने में कोई भी समर्थ नहीं है। लोग केवल बेचारे ही बने रह सकते हैं, और अंत के दिन की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

बहुत से लोग मुझसे सच में प्रेम करना चाहते हैं, किन्तु क्योंकि उनके हृदय उनके स्वयं के नहीं हैं, इसलिए उनका स्वयं पर कोई नियंत्रण नहीं है; बहुत से लोग मेरे द्वारा दिए गए परीक्षणों का अनुभव कर सच में मुझसे प्रेम करते हैं, फिर भी वे यह समझने में अक्षम हैं कि मैं वास्तव में विद्यमान हूँ, और मात्र खालीपन में मुझसे प्रेम करते हैं, ना कि मेरे वास्तविक अस्तित्व के कारण; बहुत से लोग अपने हृदय मेरे सामने रखते हैं और फिर उन पर कोई ध्यान नहीं देते, और इस प्रकार शैतान को जब भी अवसर मिलता है उनके हृदय उसके द्वारा छीन लिए जाते हैं, और तब वे मुझे छोड़ देते हैं; जब मैं अपने वचनों को प्रदान करता हूँ तो बहुत से लोग मुझसे सचमुच प्रेम करते हैं, मगर मेरे वचनों को अपनी आत्मा में सँजोते नहीं हैं; उसके बजाए, वे उनका सार्वजनिक संपत्ति के समान यूँ ही उपयोग करते हैं और जब भी वे ऐसा महसूस करते हैं उन्हें वापस वहाँ उछाल देते हैं जहाँ से वे आए थे। मनुष्य दर्द के बीच मुझे खोजता है, और परीक्षणों के बीच मेरी ओर देखता है। शांति के समय के दौरान वह मेरा आनंद उठाता है जब संकट में होता है तो वह मुझे नकारता है, जब वह व्यस्त होता है तो मुझे भूल जाता है, और जब वह खाली होता है तब अन्यमनस्क तरीके से मेरे लिए कुछ करता है—फिर भी किसी ने भी अपने संपूर्ण जीवन भर मुझसे प्रेम नहीं किया है। मैं चाहता हूँ कि मनुष्य मेरे सम्मुख ईमानदार हो : मैं नहीं कहता कि वह मुझे कोई चीज़ दे, किन्तु केवल यही कहता हूँ कि सभी लोग मुझे गंभीरता से लें, कि, मुझे फुसलाने के बजाए, वे मुझे मनुष्य की ईमानदारी को वापस लाने की अनुमति दें। मेरी प्रबुद्धता, मेरी रोशनी और मेरे प्रयासों की कीमत सभी लोगों के बीच व्याप्त हो जाती हैं, लेकिन साथ ही मनुष्य के हर कार्य के वास्तविक तथ्य, मुझे दिए गए उनके धोखे भी, सभी लोगों के बीच व्याप्त हो जाते हैं। यह ऐसा है मानो मनुष्य के धोखे के अवयव उसके गर्भ में आने के समय से ही उसके साथ रहे हैं, मानो उसने चालबाजी के ये विशेष कौशल जन्म से ही धारण किए हुए है। इसके अलावा, उसने कभी भी इरादों को प्रकट नहीं किया है; किसी को भी कभी इन

कपटपूर्ण कौशलों के स्रोत की प्रकृति का पता नहीं लगा है। परिणामस्वरूप, मनुष्य धोखे का एहसास किए बिना इसके बीच रहता है, और यह ऐसा है मानो वह अपने आपको क्षमा कर देता है, मानो यह उसके द्वारा मुझे जानबूझ कर दिए गए धोखे के बजाए परमेश्वर की व्यवस्था है। क्या यह मनुष्य का मुझसे धोखे का वास्तविक स्रोत नहीं है? क्या यह उसकी धूर्त योजना नहीं है? मैं कभी भी मनुष्य की चापलूसियों और झाँसापट्टी से संभ्रमित नहीं हुआ हूँ, क्योंकि मैंने बहुत पहले ही उसके सार को जान लिया था। कौन जानता है कि उसके खून में कितनी अशुद्धता है, और शैतान का कितना ज़हर उसकी मज्जा में है? मनुष्य हर गुज़रते दिन के साथ उसका और अधिक अभ्यस्त होता जाता है, इतना कि वह शैतान द्वारा की गई क्षति को महसूस नहीं करता, और इस प्रकार उसमें "स्वस्थ अस्तित्व की कला" को ढूँढ़ने में कोई रुचि नहीं होती है।

जब मनुष्य मुझसे दूर होता है, और जब वह मेरी परीक्षा लेता है, तब मैं अपने आपको उससे दूर बादलों में छिपा लेता हूँ। परिणामस्वरूप, वह मेरा कोई सुराग़ नहीं ढूँढ़ पाता, और महज दुष्टों की सहायता से जीवन बिताता है, वे जो कहते हैं वह सब करता है। जब मनुष्य मेरे निकट होता है, तो मैं उसके सामने प्रकट होता हूँ और उससे अपना चेहरा नहीं छिपाता, और उस समय, मनुष्य मेरी दयालु मुखाकृति को देखता है। वह अचानक अपने होश में आता है, और यद्यपि उसको इसका एहसास नहीं होता, किन्तु उसके अंदर मेरे लिए प्रेम उत्पन्न हो जाता है। अपने हृदय में वह अचानक अतुलनीय मिठास महसूस करता है, और आश्चर्य करता है कि वह विश्व में मेरे अस्तित्व को कैसे नहीं जान सका था। इस प्रकार मनुष्य को मेरी मनोरमता का, और उससे भी अधिक, मेरी बहुमूल्यता का एक बढ़ा हुआ एहसास होता है। परिणामस्वरूप, वह मुझे फिर कभी नहीं छोड़ना चाहता है, वह मुझे अपने अस्तित्व की एक ज्योति के रूप में देखता है, और, अत्यधिक डरता है कि मैं उसे छोड़ दूँगा; वह मुझे कसकर गले लगा लेता है। मैं मनुष्य के उत्साह से द्रवित नहीं हूँ, बल्कि उसके प्रेम के कारण उसके प्रति दयालु हूँ। इस समय, मनुष्य तत्क्षण मेरे परीक्षणों के मध्य जीवन बिताता है। उसके हृदय में से मेरा चेहरा विलुप्त हो जाता है, और उसे तुरन्त एहसास होता है कि उसका जीवन खोखला है और वह बचकर निकलने की सोचने लगता है। इस क्षण, मनुष्य के हृदय का भेद खुल जाता है। मेरे स्वभाव की वजह से वह मेरा आलिंगन नहीं करता है, परन्तु कहता है कि मैं अपने प्रेम की वजह से उसकी रक्षा करूँ। फिर भी जब मेरा प्रेम मनुष्य पर वापस आता है, तो वह तुरन्त अपना मन बदल लेता है; और दोबारा कभी मेरे दयावान चेहरे को देखने की इच्छा

नहीं करता हुआ, वह मेरे साथ अपने प्रण को तोड़ देता है और मेरे न्याय से बच कर भागता है, और इस प्रकार वह मेरे प्रति अपना दृष्टिकोण बदल लेता है, और कहता है कि मैंने मनुष्य को कभी नहीं बचाया है। क्या सच्चे प्रेम में वास्तव में दया के अलावा अन्य कुछ शामिल नहीं होता है? क्या मनुष्य मुझे केवल तभी प्रेम करता है जब वह मेरे चमकते हुए प्रकाश के नीचे जीवन बिताता है? वह बीते हुए कल के बारे में सोचता है किन्तु आज में जीता है—क्या यह मनुष्य की स्थिति नहीं है? क्या तब भी तुम लोग वास्तव में कल भी ऐसे ही होगे? मैं चाहता हूँ कि मनुष्य के पास एक ऐसा हृदय हो जो पूरी गहराई से मेरी लालसा करता हो, ऐसा नहीं जो सतही बातों से मुझे संतुष्ट करता हो।

21 मार्च, 1992

अध्याय 22

मनुष्य प्रकाश के बीच जीता है, फिर भी वह प्रकाश की बहुमूल्यता से अनभिज्ञ है। वह प्रकाश के सार तथा उसके स्रोत से और इस बात से भी अनजान है कि यह प्रकाश किसका है। जब मैं इंसान को प्रकाश देता हूँ, तो मैं तुरन्त ही लोगों की स्थितियों का निरीक्षण करता हूँ : प्रकाश के कारण सभी लोग बदल रहे हैं, पनप रहे हैं और उन्होंने अन्धकार को छोड़ दिया है। मैं ब्रह्माण्डके हर कोने में नज़र डालकर देखता हूँ और पाता हूँ कि पर्वत कोहरे में समा गए हैं, समुद्र शीत में जम गए हैं, और प्रकाश के आगमन की वजह से लोग पूरब की ओर देखते हैं कि शायद उन्हें कुछ अधिक मूल्यवान मिल जाए—फिर भी मनुष्य कोहरे के बीच एक सही दिशा नहीं पहचान पाता। चूँकि सारा संसार कोहरे से आच्छादित है, इसलिए जब मैं बादलों के बीच से देखता हूँ, तो मुझे कोई ऐसा इंसान नज़र नहीं आता जो मेरे अस्तित्व को खोज निकालता हो। इंसान पृथ्वी पर किसी चीज़की तलाश कर रहा है; वह भोजन की तलाश में घूमता-फिरता हुआ प्रतीत होता है; लगता है उसका इरादा मेरे आने का इन्तज़ार करने का है—फिर भी वह मेरे दिन से अनजान है और वह अक्सर पूर्व में केवल प्रकाश की झिलमिलाहट को ही देख पाता है। सभी लोगों के बीच मैं उनलोगों को खोजता हूँ जो सचमुच मेरे हृदय के अनुकूल हैं। मैं लोगों के बीच घूमता-फिरता हूँ, उनके बीच रहता हूँ, लेकिन इंसान पृथ्वी पर सुरक्षित और स्वस्थ है, इसलिए ऐसा कोई नहीं जो मेरे हृदय के अनुकूल हो। लोग नहीं जानते कि मेरी इच्छा का ध्यान कैसे रखें, वे मेरे कार्यों को नहीं देख पाते, प्रकाश के भीतर चल-फिर नहीं पाते और प्रकाश से दीप्त नहीं हो पाते। हालाँकि इंसान ने हमेशा मेरे वचनों को

सँजोकर रखा है, फिर भी वह शैतान की कपटपूर्ण योजनाओं समझ नहीं पाता; चूँकि इंसान का आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है, वह अपने मन मुताबिक काम नहीं कर पाता। इंसान ने कभी भी मुझसे ईमानदारी से प्रेम नहीं किया। जब मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ, तो वह अपने आपको अयोग्य समझता है, लेकिन इससे वह मुझे संतुष्ट करने की कोशिश नहीं करता। वह मात्र उस "स्थान" को पकड़े रहता है जो मैंने उसके हाथों में सौंपा है और उसकी बारीकी से जाँच करता है; मेरी मनोरमता के प्रति असंवेदनशील बनकर, वह खुद को अपने स्थान से प्राप्त आशीषों से भरने में जुटा रहता है। क्या यह मनुष्य की कमी नहीं है? जब पहाड़ सरकते हैं, तो क्या वे तुम्हारे स्थान की खातिर अपना रास्ता बादल सकते हैं? जब समुद्र बहते हैं, तो क्या वे मनुष्य के स्थान के सामने रुक सकते हैं? क्या मनुष्य का स्थान आकाश और पृथ्वी को पलट सकता है? मैं कभी इंसान के प्रति दयावान हुआ करता था, बार-बार—लेकिन कोई इसे सँजोता नहीं या खज़ाने की तरह संभालकर नहीं रखता, उन्होंने इसे मात्र एक कहानी की तरह सुना या उपन्यास की तरह पढ़ा। क्या मेरे वचन सचमुच इंसान के हृदय को नहीं छूते? क्या मेरे कथनों का वास्तव में कोई प्रभाव नहीं पड़ता? क्या ऐसा हो सकता है कि कोई भी मेरे अस्तित्व में विश्वास ही नहीं करता? इंसान खुद से प्रेम नहीं करता; बल्कि, वह मुझ पर आक्रमण करने के लिए शैतान के साथ मिल जाता है और मेरी सेवा करने के लिए शैतान को एक "परिसम्पत्ति" के रूप में इस्तेमाल करता है। मैं शैतान की सभी कपटपूर्ण योजनाओं को भेद दूँगा और पृथ्वी के लोगों को शैतान के धोखों को स्वीकार करने से रोक दूँगा, ताकि वे उसके अस्तित्व की वजह से मेरा विरोध न करें।

राज्य में, मैं राजा हूँ—किन्तु मेरे साथ अपने राजा के रूप में व्यवहार करने के बजाय, मनुष्य मेरे साथ ऐसे "उद्धारकर्ता के रूप में व्यवहार करता है जो स्वर्ग से उतरा है।" फलस्वरूप, वह लालसा करता है कि मैं उसे भीख दूँ और वह मुझसे जुड़े ज्ञान की तलाश नहीं करता। बहुत से लोगों ने मुझसे भिखारियों की तरह याचना की है; बहुत से लोगों ने मेरे सामने अपने 'थैलों' को खोला है और जीवित रहने के लिए मुझसे भोजन की याचना की है; बहुत से लोगों ने मुझ पर भूखे भेड़ियों की तरह अपनी नज़रें गड़ाए हैं ताकि वे मुझे हड़पकर अपना पेट भर सकें; बहुत से लोगों ने मुझसे क्षमा की प्रार्थना करते हुए या स्वेच्छा से मेरी ताड़ना को स्वीकार करते हुए, अपने अपराधों की वजह से खामोशी से सिर झुकया है और लज्जित महसूस किया है। जब मैं अपने कथनों को जारी करता हूँ, तो मनुष्य की बहुत-सी मूर्खताएँ बेहूदा प्रतीत होती हैं और प्रकाश में उसका असली रूप प्रकट हो जाता है; प्रकाश की जगमगाहट में मनुष्य अपने आपको क्षमा

नहीं कर पाता। इसलिए, वह लपककर मेरे सामने आता है और घुटने टेककर अपने पापों को स्वीकार करता है। मनुष्य की "ईमानदारी" की वजह से, मैं उसे एक बार फिर से उद्धार के रथ पर खींच लेता हूँ, इसलिए वह मेरा आभारी हो जाता है और मुझ पर एक प्यार-भरी नज़र डालता है। लेकिन वह अभी भी सही मायने में मेरी शरण में आने को इच्छुक नहीं है और उसने अभी तक अपना हृदय मुझे नहीं दिया है। वह मेरे बारे में सिर्फ शेखी बघारता है, लेकिन सच में मुझसे प्रेम नहीं करता, क्योंकि उसने अपने मन को मेरी ओर नहीं मोड़ा है; उसका शरीर तो मेरे सामने है, मगर उसका हृदय कहीं और है। चूँकि नियमों के बारे में इंसान की समझ बहुत कम है और वह मेरे सामने नहीं आना चाहता, इसलिए मैं उसे यथोचित सहयोग प्रदान करता हूँ, ताकि वह अपनी जिद्दी अज्ञानता के बीच भी मेरी ओर मुड़ सके। मैं इतनी दया इंसान पर दिखाता हूँ, और इस तरह उसे बचाने का प्रयास करता हूँ।

पूरे ब्रह्माण्ड में लोग मेरे दिन के आगमन का उत्सव मनाते हैं, और स्वर्गदूत मेरे लोगों के बीच घूमते-फिरते हैं। जब शैतान परेशानियाँ पैदा करता है, तो स्वर्गदूत, स्वर्ग में अपनी सेवाओं की वजह से, हमेशा मेरे लोगों की सहायता करते हैं। वे मानवीय कमज़ोरियों के कारण शैतान के हाथों धोखा नहीं खाते, बल्कि अंधकार की शक्तियों के आक्रमण की वजह से कोहरे में लिपटे इंसानी जीवन का कहीं ज़्यादा अनुभव प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। मेरे सभी लोग मेरे नाम को समर्पित होते हैं, और कभी कोई खुलकर मेरा विरोध नहीं करता। स्वर्गदूतों के परिश्रम की वजह से, इंसान मेरे नाम को स्वीकार करता है और सभी मेरे कार्य के प्रवाह में आ जाते हैं। संसार का पतन हो रहा है! बेबीलोन गतिहीनता की स्थिति में है! ओह, धार्मिक संसार! धरती पर मेरे सामर्थ्य से यह कैसे नष्ट न होता? आज भी किसकी हिम्मत है कि मेरी अवज्ञा या मेरा विरोध करे? धर्मशास्त्री? धर्म का हर ठेकेदार? पृथ्वी के शासक और अधिकारी? स्वर्गदूत? कौन मेरे शरीर की पूर्णता और विपुलता का उत्सव नहीं मनाता? कौन है जो अनवरतमेरी स्तुति नहीं करता, कौन है जो शाश्वत रूप से प्रसन्न नहीं है? मैं बड़े लाल अजगर की माँद के देश में रहता हूँ, फिर भी मैं इस वजह से डर कर काँपता या भागता नहीं हूँ, क्योंकि उसके लोगों ने पहले ही उससे घृणा करनी शुरू कर दी है। किसी भी चीज़ ने कभी भी अजगर के सामने उसकी खातिर अपने "कर्तव्य" का निर्वहन नहीं किया है; बल्कि, सभी चीज़ें जैसा उचित समझती हैं, करती हैं, और हर कोई अपने रास्ते चला जाता है। पृथ्वी के राष्ट्रों का विनाश कैसे नहीं होगा? पृथ्वी के राष्ट्रों का पतन कैसे नहीं होगा? मेरे लोग आनंदित कैसे नहीं होंगे? वे खुशी के गीत कैसे न गाएँगे? क्या यह मनुष्य का कार्य है? क्या यह इंसानी हाथों का कृत्य है? मैंने

इंसान को उसके अस्तित्व का मूल दिया है और उसे भौतिक वस्तुएँ प्रदान की हैं, फिर भी वह अपनी वर्तमान परिस्थितियों से असंतुष्ट होकर मेरे राज्य में प्रवेश करना चाहता है। लेकिन वह इतनी आसानी से, बिना कोई कीमत चुकाए, और निःस्वार्थ भक्ति अर्पित करने की इच्छा न रखते हुए मेरे राज्य में प्रवेश कैसे कर सकता है? इंसान से कुछ वसूलने के बजाए, मैं उससे अपेक्षाएँ करता हूँ, ताकि पृथ्वी पर मेरा राज्य महिमा से भर जाए। मैं इंसान को वर्तमान युग में लेकर आया हूँ जिससे वह इस स्थिति में जी रहा है, और मेरे प्रकाश के मार्गदर्शन में रह रहा है। यदि ऐसा न हुआ होता, तो पृथ्वी के लोगों में ऐसा कौन है जो अपने भविष्य के बारे में जान पाता? कौन मेरी इच्छा को समझ पाता? मैं अपने प्रावधान मनुष्य से की गई अपेक्षाओं से जोड़ देता हूँ; क्या यह प्रकृति के नियमों के अनुसार नहीं है?

कल तक तुम लोग आँधी और बारिश में जीवन गुज़ारते थे; और आज तुम लोग मेरे राज्य में प्रवेश करके इसकी प्रजा बन गए हो; कल तुम लोग मेरे आशीषों का आनन्द उठाओगे। क्या इसकी किसी ने कभी कल्पना की थी? क्या तुम लोग जानते हो, तुम जीवन में कितनी विपत्ति और कठिनाइयों का अनुभव करोगे? मैं आँधी और बारिश में आगे बढ़ता हूँ, मैंने लोगों के बीच बरसों बिताए हैं, और समय पर आज तक पहुँचा हूँ। क्या ये मेरी प्रबन्धन योजना के कदम नहीं हैं? क्या किसी ने कभी मेरी योजना में कुछ जोड़ा है? कौन है जो मेरी योजना के चरणों से अलग हो सके? मैं करोड़ों लोगों के हृदयों में रहता हूँ, मैं करोड़ों लोगों का राजा हूँ, और मुझे करोड़ों लोगों ने नकारा और धिक्कारा है। इंसान के दिल में मेरी छवि नहीं बसती। इंसान मेरे वचनों में, केवल मेरी धुँधली-सी महिमामय मुखाकृति देखता है, लेकिन अपने विचारों की दखलंदाज़ी के कारण, वह अपनी अनुभूतियों पर विश्वास नहीं करता; उसके हृदय में सिर्फ मेरी एक अस्पष्ट-सी तस्वीर है, लेकिन वह भी वहाँ ज़्यादा समय तक नहीं बनी रहती। इसलिए मेरे प्रति उसका प्रेम भी ऐसा ही है : मेरे सामने उसका प्रेम अनियमित प्रतीत होता है, मानो हर इंसान अपने मिज़ाज के अनुसार मुझ से प्रेम करता हो, मानो उसका प्रेम चन्द्रमा की धुँधली रोशनी तले आँखमिचौली करता हो। आज मेरे प्रेम के कारण ही इंसान ज़िंदा है और उसने जीवित रहने का सौभाग्य पाया है। यदि ऐसा नहीं होता, तो इंसानों में कौन, अपने दुर्बल शरीर के कारण, खतरनाक लेज़र से काट डाला न गया होता? मनुष्य अभी भी अपने आपको नहीं जानता। वह मेरे सामने दिखावा करता है और मेरी पीठ पीछे शेख़ी बघारता है, फिर भी कोई मेरे सामने मेरा विरोध करने का साहस नहीं करता। लेकिन मैं जिस विरोध की बात करता हूँ इंसान उसका अर्थ नहीं जानता; वह मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश करता रहता है, और अपनी बड़ाई में ही

लगा रहता है—क्या वह खुलकर मेरा विरोध नहीं करता? मैं लोगों की कमज़ोरियों को सहन करता हूँ, लेकिन मैं इंसान के जानबूझकर किए गए विरोध के प्रति जरा-सा भी उदार नहीं हूँ। हालाँकि वह इसका अर्थ जानता है, फिर भी वह इस अर्थ के अनुसार कार्य करने को तैयार नहीं होता और मुझे धोखा देते हुए, मात्र अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार कार्य करता है। मैं हर समय अपने वचनों में अपने स्वभाव को स्पष्ट करता रहता हूँ, फिर भी इंसान अपनी हार स्वीकार नहीं करता—और साथ ही, वह अपना स्वभाव प्रकट करता है। मेरे न्याय से इंसान पूरी तरह आश्वस्त हो जाएगा, मेरी ताड़ना से वह अंततः मेरी छवि को जिएगा और पृथ्वी पर मेरी अभिव्यक्ति बन जाएगा!

22 मार्च, 1992

अध्याय 23

जैसे मेरी वाणी गूँज रही है और मेरी आँखों से ज्वाला निकल रही है, मैं पूरी पृथ्वी की रखवाली कर रहा हूँ, मैं पूरे ब्रह्मांड का अवलोकन कर रहा हूँ। हर इंसान मुझसे प्रार्थना कर रहा है, मुझे टकटकी लगाकर देख रहा है, मुझसे मेरा क्रोध खत्म करने की विनती कर रहा है और शपथ ले रहा है कि अब वह कभी मुझसे विद्रोह नहीं करेगा। लेकिन अब यह कोई अतीत की बात नहीं रही; यह आज की बात है। मेरी इच्छा को कौन पलट सकता है? निश्चित रूप से इसे न तो इंसान की प्रार्थना बदल सकती है और न ही उसके मुँह से निकली बातें? यदि मैं न होता, तो ऐसा व्यक्ति कौन है जो आज तक जीवित बचता? मेरे वचनों के बिना कौन जीवित रहता है? मेरी नज़र किस पर नहीं रहती? मैं जब पूरी धरती पर अपना नया कार्य करता हूँ, तो कौन उससे कभी भी बच पाया है? क्या कभी पर्वत अपनी ऊँचाई की वजह से इससे बचकर निकल सकते हैं? क्या समुद्र अपने लंबे-चौड़े विस्तार के चलते इसे रोक सकतेहैं? अपनी योजना के तहत, मैंने कभी किसी चीज़ को आसानी से जाने नहीं दिया है, इसलिए कोई ऐसा व्यक्ति या चीज़ नहीं रही, जो चकमा देकर मेरे चंगुल से निकल गई हो। आज, सभी लोगों के बीच मेरे पवित्र नाम का गुणगान किया जाता है और साथ ही लोगों के बीच मेरे विरूद्ध विरोध के स्वर भी उठते हैं, और लोगों के बीच मेरे होने की दंतकथाएँप्रचलित हैं। जब लोग मेरी आलोचना करते हैं तो मुझसे सहन नहीं होता, न ही उनका मेरी देह को हिस्सों में बाँटना मुझसे बर्दाश्त होता है, उनके अपशब्दों को तो मैं बिल्कुल भी सहन नहीं करता। चूँकि इंसान ने सही मायनों में मुझे कभी जाना ही नहीं, इसलिए उसने हमेशा ही मेरा विरोध किया

है और मुझे धोखा दिया है। वह मेरी आत्मा को सँजोनेया मेरे वचनों को संरक्षित करने में नाकाम रहा है। उसके हर कर्म, हर कार्य और मेरे प्रति उसकी प्रवृत्ति के लिए, मैं मनुष्य को उसे देय "प्रतिफल" देता हूँ। इसलिए, सभी लोग अपने "प्रतिफल" पर आँख लगाए कार्य करते हैं, और किसी एक ने भी कभी कोई ऐसा काम नहीं किया जिसमें आत्म-बलिदान शामिल हो। मनुष्य निःस्वार्थ समर्पण का इच्छुक नहीं है, बल्कि मुफ्त में मिले प्रतिफल से खुश रहता है। हालाँकि पतरस ने अपने आपको मेरे सामने पवित्र किया था, लेकिन वह आने वाले समय के प्रतिफल के लिए नहीं था, बल्कि आज के ज्ञान के लिए था। मनुष्यों ने मेरे साथ कभी भी ईमानदारी से संगति नहीं की है, बल्कि बार-बार मेरे साथ सतही तौर पर व्यवहार किया है ताकि बिना प्रयास किए ही उसे मेरी स्वीकृति मिल जाए। मैंने मनुष्य के हृदय की गहराई में झाँककर देखा है, अतः मैंने उसके अंतरतम गुप्त स्थान में "अनेक संपत्तियों की खदान" को खोद निकाला है। ये चीज़ें ऐसी हैं जिनके बारे में स्वयं मनुष्य को भी अभी तक पता नहीं है, लेकिन उसे मैंने नए सिरे से खोज लिया है। इसलिए, "ठोस साक्ष्य" देखने पर ही इंसान अपनी दुर्दशा को रोकता है और हथेलियाँ फैलाकर अपनी अशुद्ध अवस्था को स्वीकार करता है। मनुष्यों में, अभी और भी बहुत कुछ नया है जिसे मुझे अभी "निकालना" है ताकि इंसान उसका सुख ले सके। मनुष्य की अक्षमता के कारण अपने कार्य को रोकने के बजाय, मैं अपनी मूल योजना के अनुसार उसकी काट-छाँट करता हूँ। मनुष्य एक फलदार वृक्ष की तरह हैः बिना काट-छाँट किए, वृक्ष फल नहीं दे सकता और अंत में, केवल मुरझाई हुई शाखाएँ और झड़ी हुई पत्तियाँ ही दिखाई देती हैं, और कोई फल ज़मीन पर नहीं गिरता।

जब मैं दिन-प्रतिदिन अपने राज्य के 'भीतरी कक्ष' को सजाता हूँ, तो कोई भी, कभी भी अचानक मेरी 'कार्यशाला' में मेरे कार्य में बाधा डालने नहीं आया है। सभी लोग "बर्खास्त किए जाने" और "अपना पद खो देने" के भय से मेरे साथ अधिकतम सहयोग कर रहे हैं और इस प्रकार अपने जीवन में गतिरोध पर पहुँच रहे हैं जहाँ वे उस "वीराने" में भी गिर सकते हैं जिसे शैतान ने कब्ज़ायाहुआ है। मनुष्य के भय की वजह से ही, मैं हर दिन उसे ढाढ़स देता हूँ, हर दिन उसे प्रेम करने को प्रेरित करता हूँ और उससे भी बढ़कर, उसे दैनिक जीवन में निर्देश देता हूँ, मानो इंसान कोई छोटा बच्चा हो जो अभी-अभी पैदा हुआ है; यदि उसे दूध नहीं दिया गया, तो वह इस धरती से चला जाएगा और फिर लौटकर कभी नहीं आएगा। इंसान के प्रार्थना करनेपर, मैं मनुष्यों के संसार में आता हूँ और फिर तुरन्त ही, मनुष्य प्रकाशमय संसार में रहने लगता है, फिर वो उस "कमरे" में बंद नहीं रहता जहाँ से वह गिड़गिड़ाकर स्वर्ग से प्रार्थना करता है। मुझे देखते ही

मनुष्य आग्रहपूर्वक अपने हृदय में जमा "शिकायतें" करता है, और मुँह खोलकर याचना करता है कि मैं उसके मुँह में आहार डालूँ। परन्तु उसके बाद, उसका भय कम हो जाता है और मानसिक संतुलन बहाल हो जाता है, फिर वह मुझसे कुछ और नहीं माँगता, बल्कि गहरी नींद सो जाता है, या फिर मेरे अस्तित्व को ही नकारकर अपने काम-धंधों में लग जाता है। लोगों की "परित्यक्तता" से यह स्पष्ट है कि किस प्रकार, "भावनाओं" से रहित इंसान, मेरे साथ "निष्पक्ष न्याय" करता है। इसलिए, मैं इंसान के इस अप्रिय पहलू को देखकर, चुपचाप वापस चला जाता हूँ और उसके ईमानदारी से प्रार्थना करनेपर भी आसानी से वापस नहीं आता। उसे पता भी नहीं चलता औरउसकी मुसीबतें दिन-ब-दिन बढ़ती जाती हैं, और अपनी मेहनत-मशक्कत के दौरान, जब उसे अचानक मेरे अस्तित्व का भान होता है, तो वह, "न" नहीं सुनना चाहता और मेरा पल्ला पकड़कर मुझे किसी अतिथि की तरह अपने घर ले जाता है। हालाँकि वह मेरे आनंद के लिए शानदार भोजन की व्यवस्था करता है, लेकिन उसने मुझे कभी अपना नहीं समझा, बल्कि मुझसे मदद पाने के लिए मेरे साथ किसी मेहमान की तरह व्यवहार करता है। और ऐसे में, मेरे सामने बेरुखी से अपनी दुःखद स्थिति रखता है और उम्मीद करता है की मैं उस पर अपनी "मोहर" लगा दूँ, और एक ऐसे व्यक्ति की तरह जिसे अपने व्यवसाय के लिए ऋण की आवश्यकता ह इंसान पूरी ताकत से मुझसे "निपटने" की कोशिश करता है। इंसान के हर हाव-भाव और चेष्टा में, मैं उसके इरादों की क्षणिक झलक देख लेता हूँ उसकी नज़र में तो मैं जानता ही नहीं कि किसी व्यक्ति के चेहरे के हाव-भाव या उसके वचनों में छिपे अर्थ को कैसे पढ़ा जाता है, या किसी व्यक्ति के हृदय की गहराई में कैसे झाँका जाता है। और इस प्रकार अपने जीवन केहर एक अनुभव को बिना चूक मेरे सामने पेश कर देता है, और उसके बाद मेरे सामने अपनी माँगे रखता है। मैं मनुष्य के हर कर्म और कार्य से घृणा करता हूँ और उसका तिरस्कार करता हूँ। मनुष्यों में, ऐसा कोई नहीं हुआ जिसने ऐसा कार्य किया हो जो मैं चाहता हूँ, मानो मनुष्य जानबूझकर मुझसे दुश्मनी कर रहा हो, और उद्देश्यपूर्ण ढंग से मेरे क्रोध को बुलावा दे रहा हो : वे सभी मेरी आँखों के सामने अपने मनचाहे कामों में लिप्त होकर मेरे आगे-पीछे कदमताल करते हैं। मनुष्यों मेंऐसा एक भी नहीं है जो मेरे लिए जीता हो, और परिणामस्वरूप पूरी मानवजाति का न तो कोई मूल्य है और न ही कोई अर्थ, जिसकी वजह से वह खालीपन में जीती है। उसके बावजूद, मनुष्य जागने को तैयार नहीं, बल्कि मिथ्याभिमान में रहकर निरन्तर मेरे खिलाफ विद्रोह करता है।

उन सभी परीक्षणों में जिनसे होकर वे गुज़रे हैं, लोगों ने मुझे एक बार भी प्रसन्न नहीं किया है। अपने

अत्यंत कपटपूर्ण होनेके कारण, इंसान कभी मेरे नाम की गवाही नहीं देता; बल्कि, जीविका के लिए मुझ पर निर्भर रहते हुए "मुझसे कन्नी काटता है।" मनुष्य का हृदय पूरी तरह से मेरी तरफ नहीं मुड़ता, और इसलिए शैतान उसको तब तक बर्बाद करता रहता है जब तक कि वह ज़ख्मों से भर नहीं जाता, और उसका शरीर गन्दगी से ढक नहीं जाता। लेकिन इंसान को तब भी एहसास नहीं होता है कि उसकी मुखाकृति कितनी अरुचिकर है: शुरू से ही वह मेरी पीठ पीछे शैतान की आराधना करता रहा है। इस कारण, क्रोधित होकर मैं मनुष्य को अथाह कुण्ड में इस तरह डाल देता हूँ कि वह फिर कभी उससे बाहर न आ पाए। दयनीय क्रंदन करते हुए भी, वह अपने मन को नहीं सुधारता, दुखद अंत तक भी मेरा विरोध करने का इरादा रखता है, और जानबूझकर मेरे कोप को भड़काने की कोशिश करता है। जो उसने किया है उसके कारण, मैं उसे पापी मानता हूँ जो कि वह है और उसे अपने आलिंगन की गर्माहट देने से इनकार करता हूँ। शुरूसे, स्वर्गदूतों ने बिना रुके और बदले मेरी सेवा की है और मेरा आज्ञापालन किया है, परन्तु मनुष्य ने हमेशा ठीक इसके विपरीत किया है, मानो वह मुझसे जन्म न लेकर, शैतान से जन्मा हो। सभी स्वर्गदूत अपनी-अपनी जगहों पर मेरी अटूट भक्ति करते हैं; शैतान की ताकतों से विचलित हुए बिना अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। स्वर्गदूतों के द्वारा पालन-पोषण पाकर, मेरे सभी बहुसंख्य पुत्र और मेरे लोग मज़बूत और स्वस्थ हो जाते हैं, उनमें से एक भी कमज़ोर या दुर्बल नहीं रहता। यह मेरा कार्य है, मेरा चमत्कार है। जैसे ही एक के बाद एक तोपों की सलामी मेरे राज्य की स्थापना का उद्‌घाटन करती है, स्वर्गदूत, लयबद्ध संगत पर चलते हुए, मेरे निरीक्षण हेतु समर्पित होने के लिए मेरे व्याख्यान-मंच के सामने आ जाते हैं, क्योंकि उनका हृदय अशुद्धता और मूर्तियों से मुक्त है, और वे मेरे निरीक्षण से बचते नहीं हैं।

झंझावात की गर्जना पर, समस्त मानवजाति की साँसें घोंटते हुए, स्वर्ग तुरन्त ही नीचे की ओर आ जाते हैं, ताकि मानवजाति अब मुझे अपनी इच्छानुसार पुकार न सके। अनजाने में ही, हर इंसान का पतन हो चुका है। वृक्ष हवा में आगे-पीछे झूलते हैं, समय-समय पर डालियों के टूटने की आवाज़ सुनाई देती है, और सभी मुरझाई हुई पत्तियाँ उड़ जाती हैं। पृथ्वी अचानक ही बेरंग और उजाड़ महसूस होने लगती है और शरद ऋतु के बाद किसी भी समय उनके शरीर पर प्रहार करने वाली आपदा के लिए तैयारलोग अपने आपको कसकर लिपटा लेते हैं। पहाड़ों पर पक्षी यहाँ-वहाँ उड़ने लगते हैं, मानो किसी के सामने अपना दुखड़ा रो रहे हों; पहाड़ों की गुफाओं में, लोगों में ख़ौफ़ पैदा करते हुए, उनकी मज्जा को जमाते हुए, उन्हें भयभीत करते हुए, शेर दहाड़ते हैं, और जैसे यह मानवजाति के अंत की पूर्वसूचना देने वाला कोई

अपशकुन हो। उनको निपटाने की मेरी प्रसन्नता का इन्तज़ार करने केअनिच्छुक लोग चुपचाप स्वर्ग के "सर्वोच्च प्रभु" से प्रार्थना करते हैं। परन्तु एक छोटे से नाले में बहते हुए पानी के शोर से एक झंझावात को कैसे रोका जा सकता है? मनुष्यों के आह्वान की आवाज़ से इसे अचानक कैसे रोका जा सकता है? मनुष्य की कातरता के वास्ते वज्रपात के केन्द्र में जो प्रकोप है उसे कैसे शांत किया जा सकता है? मनुष्य हवा में आगे-पीछे झूलता है; वह अपनेआप को बारिश से बचाने के लिए यहाँ-वहाँ भागता है; लोग मेरे कोप से थरथराते और काँपते हैं, उन्हें डर होता है कि कहीं मैं उनके शरीर पर अपना हाथ न रख दूँ, मानो कि मैं हर समय इंसानों पर तानकर रखी गई कोई बन्दूक की नाल हूँ, मानो इंसान मेरा शत्रु हो, जबकि वह मेरा मित्र है। इंसान ने कभी भी अपने प्रति मेरे सच्चे इरादों को नहीं खोजा, मेरे सच्चे उद्देश्यों को नहीं समझा, और इसलिए, वह बिना जाने, मेरा अपमान करता है, मेरा विरोध करता है, और तब भी, बिना मतलब के, उसने मेरे प्रेम को देख भी लिया है। मेरे कोप के बीच मेरे चेहरे का दर्शन करना मनुष्य के लिए कठिन है। मैं अपने क्रोध के काले बादलों में छिपा हुआ हूँ, और मैं नीचे मनुष्य की ख़ातिर अपनी दया बरसाने के लिए, वज्रपात के बीच, ब्रह्माण्ड के ऊपर खड़ा हूँ। क्योंकि इंसान मुझे नहीं जानता, इसलिए मेरे इरादे को न समझ पाने के कारण मैं उसको ताड़ना नहीं देता। लोगों की नज़रों में, मैं समय-समय पर अपना क्रोध निकालता रहता हूँ, अपनी मुस्कुराहट दिखाता रहता हूँ, मुझे देख लेने के बावजूद, इंसान ने मेरे सम्पूर्ण स्वभाव को कभी नहीं देखा है, वह अभी भी तुरही की मधुर ध्वनि को नहीं सुन पाता, क्योंकि वह बहुत ज़्यादा बेसुध और संवेदनहीन हो गया है। मानो मनुष्य की यादों में मेरी छवि विद्यमान हो, और मेरी आकृति उसके विचारों में हो। हालाँकि, मानवजाति के विकास के दौरान ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं हुआ है जिसने वास्तव में मुझे देखा हो, क्योंकि मनुष्य का मस्तिष्क अत्यन्त दरिद्र है। जिस सबके लिए मनुष्य ने मेरा "विश्लेषण" किया है, क्योंकि उसका विज्ञान अभी इतना विकसित नहीं हुआ है, उसके वैज्ञानिक अनुसंधान ने अभी तक कोई परिणाम नहीं दिए हैं। इसलिए, "मेरी छवि" का विषय हमेशा से पूर्ण रिक्त रहा है, जिसे भरने वाला कोई नहीं है, विश्व कीर्तिमान को तोड़ने वाला कोई नहीं है, क्योंकि मानवजाति के लिए भयंकर दुर्भाग्य के बीच वर्तमान में अपनी पकड़ बनाए रख पाना ही अपार सांत्वना है।

23 मार्च, 1992

अध्याय 24

मेरी ताड़नाएँ सभी लोगों पर आती हैं, फिर भी यह सभी लोगों से दूर भी रहती हैं। हर व्यक्ति का संपूर्ण जीवन मेरे प्रति प्रेम और नफ़रत से भरा हुआ है, और किसी ने कभी मुझे जाना नहीं—और इस प्रकार मेरे प्रति मनुष्य की प्रवृत्ति कभी हाँ, कभी ना वाली रहती है, और कभी सामान्य नहीं हो पाती। फिर भी मैंने हमेशा से मनुष्य की परवाह और सुरक्षा की है। लेकिन अपनी मूर्खता के कारण वह मेरे सभी कर्मों को देखने और मेरे उत्कट इरादों को समझने में असमर्थ है। मैं सभी देशों में अग्रणी हूँ, और सभी लोगों में सबसे श्रेष्ठ हूँ। बात सिर्फ इतनी-सी है कि मनुष्य मुझे नहीं जानता। बहुत सालों तक मैंने लोगों के बीच जीवन बिताया है और मनुष्य के संसार में जीवन का अनुभव किया है, फिर भी उसने हमेशा मेरी उपेक्षा की है और मुझसे किसी दूसरे अंतरिक्ष के प्राणी की तरह व्यवहार किया है। परिणामस्वरूप, स्वभाव और भाषा में भिन्नता के कारण, लोग रास्ते में मुझसे किसी अजनबी की तरह व्यवहार करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा पहनावा भी अनोखा है, जिसकी वजह से इंसान में मेरे पास आने का का आत्मविश्वास कम हो जाता है। तभी मैं लोगों के बीच जीवन की वीरानी का अनुभव करता हूँ, और मुझे इंसानी संसार का अन्याय समझ में आता है। मैं राहगीरों के बीच चलता हूँ और उनके चेहरों को देखता हूँ। ऐसा लगता है जैसे वे किसी बीमारी से घिरे रहते हैं, ऐसी बीमारी जो उनके चेहरों को उदासी से भर देती है, और ऐसा लगता है जैसे वे ताड़ना में भी रहते हैं, जो उनकी मुक्ति को रोके हुए है। मनुष्य ने अपने आपको जंज़ीरों में बाँध रखा है और विनयशीलता का प्रदर्शन करता है। अधिकांश लोग मेरे सामने अपनी एक झूठी छवि बनाकर रखते हैं ताकि मैं उनकी प्रशंसा करूँ, और अधिकांश लोग जानबूझ कर अपने आपको मेरे सामने दयनीय दिखाते हैं ताकि उन्हें मेरी सहायता प्राप्त हो सके। मेरी पीठ पीछे, सभी लोग मेरी खुशामद करते हैं और मेरी अवज्ञा करते हैं। क्या मैं सही नहीं हूँ? क्या यह मनुष्य के जीवित रहने की रणनीति नहीं है? कब किसने मेरे अनुसार अपनाजीवन जिया है? कब किसने दूसरों के बीच मेरा उत्कर्ष किया है? कौन कभी पवित्रात्मा के सामने बँधा रहा है? कौन शैतान के सामने मेरे लिए अपनी गवाही देने में कभी अडिग रहा है? किसने मेरे प्रति "वफ़ादारी" के साथ कभी सत्यनिष्ठा दिखायी है? कौन कभी मेरे कारण बड़े लाल अजगर द्वारा बहिष्कृत किया गया है? लोगों ने खुद को शैतान से जोड़ रखा है और अब वे उसके साथ कीचड़ का मज़ा लेते हैं; वे मेरी अवज्ञा करने में माहिर हैं, वे मेरे प्रति विरोध के जन्मदाता हैं, और मेरे साथ व्यवहार करते समय लापरवाही बरतने में "शातिर विद्यार्थी" बन चुके हैं। अपनी नियति के लिए, मनुष्य पृथ्वी पर यहाँ-वहाँ खोजता फिरता है, जब मैं उसे संकेत से बुलाता हूँ, तो वह मेरी बहुमूल्यता को महसूस

करने में असमर्थ रहता हैऔर स्वयं पर आत्मनिर्भरता पर "आस्था" बनाए रखता है, और दूसरों पर "बोझ" नहीं बनना चाहता। इंसान की "अभिलाषाएँ" बहुमूल्य हैं, फिर भी किसी की अभिलाषाएँ कभी पूरी नहीं हुई हैं: वे सब मेरे सामने, खामोशी से ढह जाती हैं।

मैं हर दिन बात करता हूँ, और हर दिन नए काम करता हूँ। यदि इंसान अपनी पूरी ताकत न जुटाए तो उसे मेरी आवाज़ सुनने में कठिनाई होगी, और वो मेरा चेहरा नहीं देख पाएगा। प्रियतम अत्यंत अच्छाहो सकता है, और उसकी वाणी अत्यंत कोमल हो सकती है, लेकिन इंसान आसानी से उसके महिमामय चेहरे को नहीं देख पाता और उसकी वाणी नहीं सुन पाता। युगों-युगों से कभी किसी ने आसानी से मेरा चेहरा नहीं देखा है। एक बार मैंने पतरस से बात की थी और पौलुस के सामने "प्रकट हुआ था", लेकिन इस्राएलियों को छोड़कर कभी किसी ने वास्तव में मेरा चेहरा नहीं देखा है। आज, इंसान के साथ रहने के लिए मैं खुद आ गया हूँ। क्या यह तुम लोगों को अत्यंत दुर्लभ और बहुमूल्य प्रतीत नहीं होता? क्या तुम लोग अपने समय का बेहतरीन उपयोग नहीं करना चाहते? क्या तुम लोग इसे ऐसे ही गुज़र जाने देना चाहते हो? क्या लोगों के मन मेंघड़ी की सुइयाँ अचानक रुक सकती हैं? या समय वापस लौट सकता है? या मनुष्य फिर से जवान बन सकता है? क्या आज का धन्य जीवन कभी दोबारा आ सकता है? मैं मनुष्य को उसकी "व्यर्थता" के लिए उचित "पुरस्कार" नहीं देता। मैं हर चीज़ से अनासक्त होकर, मात्र अपने कार्य में लगा रहता हूँ और मनुष्य की व्यस्तता की वजह से या उसके रोने की आवाज़ की वजह से, मैं समय के प्रवाह को नहीं रोकता। हज़ारों साल से, कोई भी मेरी ताकत को विभाजित नहीं कर पाया है, और न ही कोई मेरी मूल योजना को अस्त-व्यस्त कर पाया है। मैं अन्तरिक्ष से आगे बढ़ जाऊँगा, और युगों को पाट दूँगा, और सभी चीज़ों से ऊपर और सभी चीजों में, अपनी सम्पूर्ण योजना के मूल को आरम्भ करूँगा। एक भी व्यक्ति मुझसे विशेष व्यवहार या मेरे हाथों से "पुरस्कार" पाने में सफल नहीं हुआ है, हालाँकि लोग इन चीज़ों के लिए प्रार्थना करते हैं, हाथ पसारते हैं, और अन्य सारी बातें भूलकर मुझसे इन चीज़ों की माँग करते हैं। इनमें से एक भी व्यक्ति ने कभी भी मुझे द्रवितनहीं किया है, उन सभी को मेरी "निर्मम" वाणी ने पीछे धकेल दिया है। अधिकांश लोग अभी भी मानते हैं कि वे अभी "बहुत कम उम्र के हैं", इसलिए प्रतीक्षा करते हैं कि मैं उन पर दया दिखाऊँ, उनके प्रति फिर करुणामय बनूँ, और कहते हैं कि मैं उन्हें पिछले दरवाज़े से आने की अनुमति दे दूँ। मैं यूँ ही अपनी मूल योजना में गड़बड़ी कैसे कर सकता हूँ? क्या मैं मनुष्य के यौवन के लिए पृथ्वी का घूमना रोक दूँ, ताकि वह पृथ्वी पर कुछ और साल जीवित रह सके?

मनुष्य का मस्तिष्क बहुत जटिल है, फिर भी लगता है जैसे कुछ चीजें अभी भी ऐसी हैं जिनका उसमें अभाव है। परिणामस्वरूप, अक्सर मनुष्य के मन में जानबूझकर मेरे कार्य में हस्तक्षेप करने के लिए "अद्भुत तरीके" आते रहते हैं।

हालाँकि कई बार ऐसा हुआ है जब मैंने मनुष्य के पापों को क्षमा कर दिया है और उसकी कमज़ोरी की वजह से उस पर विशेष कृपा की है, कई बार ऐसा भी हुआ है जब मैंने उसकी अज्ञानता की वजह से उसके साथ उचित व्यवहार किया है। लेकिन मनुष्य ने कभी नहीं जाना कि वह मेरी अनुकंपा की सराहना किस प्रकार करे, यही कारण है कि वो अपने वर्तमान हश्र को प्राप्त हुआ है: धूल में सना हुआ, चिथड़ों में लिपटा हुआ, सिर को ढके हुए खरपतवार की तरह उसके बाल, चेहरा कालिख से पुता हुआ, अपने हाथों के बने हुए भौंडे जूते पहने हुए, किसी मरे हुए बाज़ के पंजों की तरह लटकते हुए कमज़ोर हाथ। आँखें खोलकर देखता हूँ, तो लगता है मानो इंसान अभी-अभी अथाह कुण्ड से चढ़कर ऊपर आया हो। मुझे बहुत क्रोध आता है: मैं हमेशा मनुष्य के प्रति सहनशील रहा हूँ, लेकिन मैं शैतान को उसकी इच्छा के अनुसार अपने पवित्र राज्य में आने-जाने की अनुमति कैसे दे सकता हूँ? मैं किसी भिखारी को मुफ्त में अपने घर में खाने की अनुमति कैसे दे सकता हूँ? मैं किसी अशुद्ध दानवको अपने घर में एक मेहमान के रूप में कैसे सहन कर सकता हूँ? इंसान हमेशा "अपने प्रति कठोर" और "दूसरों के प्रति उदार" रहा है, लेकिन वह मेरे प्रति थोड़ा भी शिष्ट नहीं रहा है, क्योंकि मैं स्वर्ग का परमेश्वर हूँ, इसलिए वह मेरे साथ अलग तरह से व्यवहार करता है, मेरे लिए उसके दिल में कभी थोड़ा-सा भी स्नेह नहीं रहा है। लगता है जैसे मनुष्य की आँखें विशेष रूप से चालाक हैं: जैसे ही वह मेरा सामना करता है, उसके चेहरे के हाव-भाव एकदम बदल जाते हैं और वह अपने उदासीन और भाव-शून्य चेहरे में थोड़ी अधिक अभिव्यक्ति जोड़ देता है। मेरे प्रति मनुष्य के रवैयेकी वजह से मैं उस पर उपयुक्त प्रतिबंध नहीं लगाता, बल्कि ब्रह्माण्डों के ऊपर से मात्र आसमानों को देखता हूँ और वहाँ से पृथ्वी पर अपना कार्य करता हूँ। मनुष्य की स्मृति में, मैंने कभी भी किसी इंसान के प्रति दया नहीं दिखाई है, किन्तु मैंने किसी से कभी गलत व्यवहार भी नहीं किया है। क्योंकि मनुष्य अपने हृदय में मेरे लिए कोई "खाली स्थान" नहीं छोड़ता, इसलिए जब मैं चेतावनी देकर उसके अंदर वास करता हूँ, तो वह बड़ी बेरुखी से मुझे जबरदस्ती बाहर निकाल देता है, और फिर बहाने बनाने के लिए चिकनी-चुपड़ी बातें और चापलूसी करता है, और कहता है कि उसमें बहुत सी कमियां हैं और वह मेरे आनन्द के लिए अपने आपको प्रस्तुत नहीं कर सकता। जब वह बात करता है, तो उसका

चेहरा अक्सर "काले बादलों" से ढक जाता है, मानो किसी भी समय इंसान पर विपत्ति आ सकती हो। उसके बावजूद, वह आसन्न ख़तरों के बारे में बिना कोई विचार किए, मुझसे चले जाने के लिए कहता है। हालाँकि मैं मनुष्य को अपने वचन और अपने आलिंगन की गर्मी देता हूँ, तब भी ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह बहरा है, वह मेरी वाणी पर थोड़ा सा भी ध्यान दिए बिना, अपना सिर पकड़कर भाग जाता है। मैं थोड़ा निराश और थोड़ा कुपित होकर इंसान के पास से चला जाता हूँ। इस बीच मनुष्य प्रचण्ड वायु और शक्तिशाली लहरों के घातक आक्रमणों के बीच गायब हो जाता है। इसके बाद वह तुरन्त मुझे पुकारता है, लेकिन वह हवा और लहरों की चाल को कैसे प्रभावित कर सकता है? धीरे-धीरे, इंसान का नामोनिशां मिट जाता है, और उसका कहीं अता-पता नही रहता।

युगों पहले, मैंने ब्रह्माण्डों के ऊपर से सारी भूमि को देखा। मैंने पृथ्वी पर एक बड़ा काम करने की योजना बनाई: एक ऐसी मानवजाति का सृजन करना जो मेरी इच्छा के मुताबिक हो, और पृथ्वी पर स्वर्ग जैसे एक राज्य का निर्माण करना ताकि मेरे सामर्थ्य से पूरा आकाश भर जाए और मेरी बुद्धि पूरी कायनात में फैल जाए। इस तरह आज, मैं हज़ारों साल बाद, अपनी योजना को जारी रखे हुए हूँ, फिर भी कोई पृथ्वी पर मेरी योजना या मेरे प्रबन्धन को नहीं जानता, पृथ्वी पर मेरे राज्य के बारे में तो लोग बिल्कुल ही नहीं जानते। इसलिए, इंसान परछाइयों का पीछा करता हुआ मुझे मूर्ख बनाने का प्रयास करता है, और स्वर्ग में मेरे आशीषों के लिए एक "मूक कीमत" चुकाना चाहता है। परिणामस्वरूप, वह मेरे क्रोध को भड़काकर मेरे न्याय को बुलावा देता है, लेकिन वह तब भी नहीं जागता। मानो जो कुछ भूमि के ऊपर है उससे एकदम अनजान होकर, वह भूमिगत कार्य कर रहा हो, क्योंकि वह अपनी संभावनाओं के अलावा अन्य कुछ नहीं खोजता। मैंने कभी किसी इंसान को मेरे चमकदार प्रकाश में रहते नहीं देखा। लोग अंधकार के संसार में रहते हैं, लगता है जैसे वे उस अंधकार में रहने के अभ्यस्त हो चुके हैं। जब प्रकाश आता है तो वे बहुत दूर खड़े हो जाते हैं, मानो प्रकाश ने उनके कार्यों में विघ्न डाल दिया हो; परिणामस्वरूप, वे थोड़े नाराज़ दिखाई देते हैं, मानो प्रकाश ने उनकी सारी शांति भंग करके उन्हें गहरी नींद से जगा दिया हो। नतीजा ये होता है कि इंसान प्रकाश को दूर भगाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देता है। प्रकाश में भी "जागरूकता" का अभाव दिखाई देता है, इसलिए वो इंसान को नींद से जगा देता है, और जब इंसान जागता है, तो वह अपनी आँखों को बन्द कर लेता है, और क्रोध से भर जाता है। वह मुझ से कुछ-कुछ नाराज़ है, मगर मैं मन में इसका कारण जानता हूँ। मैं धीरे-धीरे प्रकाश की तीव्रता को बढ़ाता हूँ, हर व्यक्ति

इस हद तक मेरे प्रकाश में रहे ताकि वह जल्दी ही प्रकाश का अभ्यस्त हो जाए, और हर कोई उस प्रकाश को सँजो कर रखे। इस समय, मेरा राज्य मनुष्य के बीच आ चुका है, सभी लोग आनन्द के साथ नाचते हैं और उत्सव मनाते हैं, पृथ्वी अचानक हर्षोल्लास से भर जाती है, और प्रकाश के आगमन से हज़ारों वर्षों का सन्नाटा टूट जाता है ...

26 मार्च, 1992

अध्याय 25

समय गुज़रा और पलक झपकते ही आज का दिन आ गया। मेरे आत्मा के मार्गदर्शन में, सभी लोग मेरे प्रकाश में रहते हैं, अब कोई अतीत के बारे में नहीं सोचता या बीते कल पर ध्यान नहीं देता। कौन है जो कभी वर्तमान में नहीं जिया या रहा ह? किसने राज्य में खूबसूरत दिन और महीने नहीं बिताए? कौन सूर्य की रोशनी में नहीं रहा? हालाँकि, राज्य लोगों के बीच अवतरित हो चुका है, फिर भी किसी ने उसके स्नेह को महसूस नहीं किया है; मनुष्य इसके सार को न समझकर इससे केवल बाहरी तौर पर ही परिचित है। जब मेरा राज्य आकार लेता है उस दौरान, कौन उसकी वजह से खुश नहीं होता? क्या पृथ्वी के राष्ट्र वास्तव में बच सकते हैं? क्या बड़ा लाल अजगर अपनी धूर्तता के कारण बच सकता है? मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं का ऐलान पूरे विश्व में किया जाता है, वे सभी लोगों में मेरा अधिकार स्थापित करती हैं, और विश्व भर में प्रभावी होती हैं; फिर भी, मनुष्य ने सच में इसे कभी नहीं जाना। जब मेरी प्रशासनिक आज्ञाएँ विश्व के सामने प्रकट होती हैं तो उसी समय मेरा कार्य भी पृथ्वी पर पूरा होने वाला होता है। जब मैं सभी लोगों के बीच शासन करूँगा, अपने सामर्थ्य का उपयोग करूँगा और जब मैं एकमात्र स्वयं परमेश्वर के रूप में मान्यता पा लूँगा, तो मेरा राज्य पूरी तरह से पृथ्वी पर उतर आएगा। आज सभी लोगों की एक नए पथ पर नई शुरुआत है। उन्होंने एक नए जीवन की शुरुआत की है, फिर भी कभी किसी ने पृथ्वी पर स्वर्ग जैसे जीवन का का अनुभव नहीं किया है। क्या तुम लोग सच में मेरे प्रकाश में रहते हो? क्या तुम लोग सच में मेरे वचनों में रहते हो? कौन है जो अपनी संभावनाओं पर विचार नहीं करता? कौन है जो अपने भाग्य से व्यथित नहीं है? कौन है जो दुःखों के सागर में संघर्ष नहीं करता? कौन है जो मुक्त नहीं होना चाहता? क्या राज्य के आशीष पृथ्वी पर मनुष्य के कड़े परिश्रम के बदले में दिए जाते हैं? क्या मनुष्य जैसा चाहता है उसके अनुसार उसकी सभी इच्छाएँ पूरी की जा सकती हैं? मैंने एक बार मनुष्य के सामने राज्य का एक

सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किया था, लेकिन वह लालचाई नज़रों से उसे घूरता रहा, लेकिन एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो सच में उसमें प्रवेश करना चाहता हो। एक बार मैंने मनुष्य को पृथ्वी की सच्ची स्थिति से "अवगत" कराया था, लेकिन वो बस सुनता रहा, उसने मेरे वचनों को आत्मसात नहीं किया; एक बार मैंने मनुष्य को स्वर्ग की परिस्थितियों के बारे में बताया था, लेकिन वो मेरे वचनों को अद्भुत कहानियाँ समझता रहा, और मेरे मुख से निकले वचनों को उसने स्वीकार नहीं किया। आज, राज्य के दृश्य मनुष्यों के बीच कौंधते हैं, लेकिन क्या कभी किसी ने उसकी खोज में "शिखरों और घाटियों को पार किया है"? मेरी प्रेरणा के बिना, मनुष्य अब तक अपने स्वप्नों से नहीं जागा होता। क्या वह पृथ्वी पर अपने जीवन से इतना अभिभूत है? क्या सच में उसके हृदय में कोई ऊँचे मानक नहीं हैं?

जिन्हें मैंने अपने लोगों के रूप में पहले से ही नियत कर दिया है, वे अपने आपको मेरे प्रति समर्पित करने और वे मेरे साथ समरसता में रहने में समर्थ हैं। वे मेरी दृष्टि में बहुमूल्य हैं, और मेरे राज्य में मेरे लिए प्रेम के साथ चमकते हैं। आज के लोगों में, कौन ऐसी शर्तों को पूरा करता है? कौन मेरी अपेक्षाओं के अनुसार उस दर्जे तक पहुँचने में समर्थ है? क्या मेरी अपेक्षाएँ वास्तव में मनुष्य के लिए कठिनाइयाँ पैदा करती हैं? क्या मैं जानबूझकर उससे गलतियाँ करवाता हूँ? मैं सभी लोगों के प्रति उदार हूँ, और मैं उन्हें प्राथमिकता देता हूँ। हालाँकि, मेरा ऐसा व्यवहार सिर्फ चीन में मेरे लोगों के प्रति है। ऐसा नहीं है कि मैं तुम लोगों को कम आँकता हूँ, न ही मैं तुम लोगों को संदेह की दृष्टि से देखता हूँ, बल्कि मैं तुम्हारे प्रति व्यावहारिक और यथार्थवादी हूँ। लोग अपरिहार्य रूप से अपने जीवन में नाकामयाबी का सामना करते हैं, चाहे परिवार के सम्बन्ध में हो या दुनियादारी के मामले में हो। फिर भी किसकी कठिनाई अपने हाथों से पैदा की हुई है? मनुष्य मुझे जानने में अक्षम है। उसे मेरे बाहरी रूप की थोड़ी-बहुत समझ है, फिर भी वह मेरे सार से अनभिज्ञ है; वह उस भोजन के पदार्थों को नहीं जानता है जिसे वह खाता है। कौन है जो मेरे हृदय को सावधानी से महसूस कर पाता है? कौन है जो मेरे सामने मेरी इच्छा को सचमुच समझने में समर्थ है? मैं जब पृथ्वी पर आता हूँ, तो उस समय यह अंधकार में लिपटी रहती है और इंसान "गहरी नींद में पड़ा रहता है।" मैं सभी जगहों पर घूमता हूँ, और जो कुछ मैं देखता हूँ वह सब कटा-फटा और जीर्ण-शीर्ण होता है और उस पर दृष्टि डालना भी असहनीय होता है। यह ऐसा है मानो मनुष्य केवल आनन्द लेना चाहता है, और वह "बाहरी दुनिया की चीज़ों" पर कोई ध्यान नहीं देना चाहता। मैं सारी पृथ्वी का सर्वेक्षण करता हूँ, और लोगों को पता भी नहीं चलता, फिर भी मुझे ऐसी कोई जगह दिखायी नहीं देती जो जीवन से भरपूर

हो। मैं सीधे तौर पर, अपने प्रकाश की चमक और गर्माहट देता हूँ और तीसरे स्वर्ग से पृथ्वी पर दृष्टि डालता हूँ। हालाँकि प्रकाश भूमि पर पड़कर अपनी गर्माहट को उस पर फैलाता है, मगर केवल प्रकाश और गर्माहट ही आनंद लेते नज़र आते हैं; वे आराम का सुख उठाते इंसान को नहीं जगा पाते। यह देखते ही, मैं तुरन्त मनुष्य के बीच अपनी तैयार की हुई "छड़ी" भेजता हूँ। जैसे ही छड़ी पड़ती है, प्रकाश और गर्माहट धीरे-धीरे बिखर जाते हैं और पृथ्वी तुरंत उजाड़ और अंधेरी हो जाती है—अंधकार के कारण, मनुष्य आनंद लेते रहने के मौके को हाथ से जाने नहीं देता। मनुष्य को मेरी छड़ी के आने की थोड़ी-बहुत जानकारी है, लेकिन वह प्रतिक्रिया नहीं करता, और "पृथ्वी पर आशीषों" का आनन्द लेने में लगा रहता है। उसके बाद, मैं लोगों की ताड़ना की घोषणा करता हूँ, और पूरी दुनिया के लोगों को सलीब पर उल्टा लटका दिया जाता है। जब मेरी ताड़ना आती है, तो मनुष्य लुढ़कते हुए पहाड़ों और धरती के फटने के शोर से काँप जाता है, जिसके बाद वह भौंचक्का हो कर जाग जाता है। डरा-सहमा इंसान, भाग जाना चाहता है, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। जैसे ही मेरी ताड़ना पड़ती है, मेरा राज्य पृथ्वी के ऊपर उतरने लगता है और सभी देश टूटकर बिखर जाते हैं, उनका नामोनिशान नहीं रहता और कुछ शेष नहीं रहता।

मैं हर दिन विश्व के चेहरे को निहारता हूँ, और हर दिन मनुष्य के मध्य अपना नया कार्य करता हूँ। मगर लोग खुद को अपने काम में झोंक कर रखते हैं, कोई मेरे काम की गतिशीलता पर ध्यान नहीं देता या उन चीज़ों की अवस्था पर ध्यान नहीं देता जो उसके वश में नहीं हैं। ऐसा लगता है जैसे लोग अपने बनाए हुए किसी नए स्वर्ग और किसी नई पृथ्वी पर रहते हैं, और नहीं चाहते कि कोई भी और उसमें हस्तक्षेप करे। सभी अपने आपको सुखी करने में व्यस्त हैं, "शारीरिक व्यायाम" करते हैं और अपनी तारीफ में लगे रहते हैं। क्या वास्तव में मनुष्य के हृदय में मेरा कोई स्थान नहीं है? क्या मैं वास्तव में मनुष्य के हृदय का शासक होने योग्य नहीं हूँ? क्या मनुष्य की आत्मा ने वास्तव में मनुष्य को छोड़ दिया है? मेरे मुँह से निकले वचनों पर क्या कभी किसी ने मनन किया है? मेरे हृदय की इच्छा को क्या कभी किसी ने जाना है? क्या किसी और चीज़ ने मनुष्य के हृदय पर कब्जा कर लिया है? कई बार मैंने मनुष्य को पुकारा है, लेकिन क्या कभी किसी को दया आयी? क्या कभी कोई मानवता में रहा है? मनुष्य शरीर में तो रहता है, लेकिन उसमें मानवता नहीं है। क्या वह जानवरों के संसार में पैदा हुआ था? या क्या वह स्वर्ग में पैदा होकर दिव्यता से सम्पन्न है? मैं मनुष्य से अपेक्षाएँ करता हूँ, फिर भी लगता है जैसे वह मेरे वचनों को नहीं समझता, मानो मैं उसकी पहुँच से बाहर कोई दानव हूँ जो किसी दूसरे ग्रह से आया है। कितनी ही बार मनुष्य ने मुझे निराश

किया है, कितनी ही बार मैं उसके ख़राब प्रदर्शन से क्रोधित हुआ हूँ, और कितनी ही बार मैं उसकी कमज़ोरियों से व्यथित हुआ हूँ। मैं मनुष्य के हृदय में आध्यात्मिक भावना क्यों नहीं जगा पाता? मैं मनुष्य के हृदय में प्रेम क्यों नहीं पैदा कर पाता? मनुष्य मुझे अपनी आँख का तारा क्यों नहीं समझता? क्या मनुष्य का हृदय उसका अपना हृदय नहीं है? क्या किसी और चीज़ ने उसकी आत्मा में निवास कर लिया है? मनुष्य निरंतर विलाप क्यों करता रहता है? वह दयनीय क्यों है? जब वह दुःखी होता है, तब मेरे अस्तित्व की उपेक्षा क्यों करता है? क्या इसलिए कि मैंने उसे आहत किया है? क्या इसलिए कि मैंने जानबूझकर उसे त्यागा है?

मेरी नज़र में, मनुष्य सभी चीज़ों का शासक है। मैंने उसे कोई कम अधिकार नहीं दिए हैं, उसे पृथ्वी पर सभी चीज़ों, पहाड़ों की घास, जंगल के जानवरों, और जल की मछलियों का प्रबन्ध करने की अनुमति दी है। लेकिन वह इन चीज़ों से खुश होने के बजाए, चिंता से व्याकुल रहता है। उसका पूरा जीवन दुख और भागने-दौडने में बीतता है और अपने खालीपन में थोड़ी मौज-मस्ती भी करता रहता है; उसके पूरे जीवन में न तो कोई नए आविष्कार हैं और न ही कोई नया सृजन है। कोई भी अपने आप को इस खोखले जीवन से मुक्त नहीं कर पाता, किसी ने भी सार्थक जीवन की खोज नहीं की है, और न ही किसी ने कभी वास्तविक जीवन का अनुभव नहीं किया है। हालाँकि आज सभी लोग मेरे चमकते हुए प्रकाश में रहते हैं, लेकिन वे स्वर्ग के जीवन के बारे में कुछ नहीं जानते। यदि मैं मनुष्य के प्रति दयालु न रहूँ और उसे न बचाऊँ, तो सबका आना निरर्थक हो जाए, पृथ्वी पर उनके जीवन का कोई अर्थ न रहे, वे यूँ ही व्यर्थ में चले जाएँगे, उनके पास गर्व करने को कुछ न होगा। हर धर्म, समाज के हर वर्ग, हर राष्ट्र और हर सम्प्रदाय के लोग पृथ्वी पर जीवन के खालीपन को जानते हैं, वे सब मुझे खोजते हैं और मेरी वापसी का इन्तज़ार करते हैं—लेकिन जब मैं आता हूँ तो कौन मुझे जान पाता है? मैंने सभी चीज़ें बनायी हैं, इंसान को बनाया है, और आज मैं मनुष्य के बीच आया हूँ। लेकिन, मनुष्य पलटकर मुझ पर ही वार करता है, और मुझसे बदला लेता है। क्या जो कार्य मैं मनुष्य पर करता हूँ वह उसके किसी काम का नहीं? क्या मैं वाकई मनुष्य को संतुष्ट करने योग्य नहीं? मनुष्य मुझे अस्वीकार क्यों करता है? वह मेरे प्रति इतना निरूत्साहित और उदासीन क्यों है? पृथ्वी लाशों से क्यों भरी हुई है? क्या जिस संसार को मैंने मनुष्य के लिए बनाया था उसकी स्थिति वास्तव में ऐसी है? ऐसा क्यों हैं कि मैंने मनुष्य को अतुलनीय समृद्धि दी है, फिर भी वह बदले में मुझे अपने दोनों खाली हाथ दिखा देता है? मनुष्य मुझसे सचमुच प्रेम क्यों नहीं करता? वह कभी

भी मेरे सामने क्यों नहीं आता? क्या मेरे सारे वचन वास्तव में व्यर्थ हैं? क्या मेरे वचन पानी की भाप बनकर उड़ गए? क्यों मनुष्य मेरे साथ सहयोग क्यों नहीं करना चाहता? क्या मेरे आगमन का दिन मनुष्य के लिए वास्तव में मृत्यु का दिन है? क्या मैं वास्तव में ऐसे समय में मनुष्य को नष्ट कर सकता हूँ जब मेरा राज्य बन रहा हो? मेरी प्रबन्धन योजना के दौरान, कभी किसी ने मेरे इरादों को क्यों नहीं समझा? मनुष्य मेरे मुँह से निकले वचनों को सँजोने के बजाए, उनसे घृणा क्यों करता है, उन्हें अस्वीकार क्यों करता है? मैं कभी किसी की निंदा नहीं करता, बस लोगों से इतना कहता हूँ कि वे शांत रहकर आत्म-चिंतन करे।

27 मार्च, 1992

ओ लोगो! आनंद मनाओ!

मेरे प्रकाश में, लोग फिर से रोशनी देखते हैं। मेरे वचन में, लोग उन चीज़ों को देखते हैं जिनसे उन्हें आनंद मिलता है। मैं पूरब से आया हूँ, मैं पूरब से हूँ। जब मेरी महिमा चमकती है, तो सभी देश प्रकाशित हो उठते हैं, सभी रोशनी में ले आए जाते हैं, एक भी चीज़ अंधकार में नहीं रहती। राज्य में, परमेश्वर के साथ परमेश्वर के लोग जो जीवन जीते हैं, वह अत्यंत उल्लासमय है। सागर लोगों के आशीषित जीवन पर आनंद से नृत्य करते हैं, पर्वत लोगों के साथ मेरी प्रचुरता का आनंद लेते हैं। सभी लोग प्रयास कर रहे हैं, मेहनत कर रहे हैं, मेरे राज्य में अपनी निष्ठा दिखा रहे हैं। राज्य में, अब न विद्रोह है, न प्रतिरोध है; स्वर्ग और धरती एक-दूसरे पर निर्भर हैं, इंसान और मैं गहरी भावना के साथ निकट आते हैं, जीवन के मधुर सुख-चैन के माध्यम से, एक-दूसरे की ओर झुक रहे हैं...। इस समय, मैं औपचारिक रूप से स्वर्ग में अपना जीवन आरंभ करता हूँ। अब शैतान का व्यवधान नहीं है, और लोग विश्राम में प्रवेश करते हैं। पूरी कायनात में, मेरे चुने हुए लोग मेरी महिमा में जीते हैं, अतुलनीय रूप से आशीषित हैं, लोग ऐसे नहीं रहते जैसे इंसानों के बीच रहते हैं, बल्कि ऐसे रहते हैं जैसे परमेश्वर के साथ रहते हैं। हर इंसान शैतान की भ्रष्टता से गुज़रा है, और उसने पूरी तरह से जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव लिए हैं। अब, मेरी रोशनी में रहते हुए, कोई आनंद कैसे न उठाएगा? कोई इस खूबसूरत पल को यों ही कैसे छोड़ देगा और हाथ से कैसे जाने देगा? तुम लोग! मेरे लिए अपने दिलों के गीत गाओ और खुशी से नाचो! अपने सच्चे दिलों को उन्नत करो और उन्हें मुझे अर्पित करो! ढोल बजाओ और मेरे लिए खुशी से क्रीड़ा करो! मैं पूरी कायनात भर में अपनी प्रसन्नता बिखेरता हूँ! मैं सभी लोगों के सामने अपना महिमामय चेहरा प्रकट करता हूँ! मैं ऊँची आवाज़ में

पुकारूँगा! मैं कायनात की सीमाओं के परे जाँऊगा! मैं पहले ही लोगों के मध्य शासन करता हूँ! लोगों ने मेरा उत्कर्ष किया है! मैं ऊपर नीले आसमान में बहता हूँ और लोग मेरे साथ चलते हैं। मैं लोगों के मध्य चलता हूँ और मेरे लोग मुझे घेर लेते हैं! लोगों के दिल प्रसन्नचित्त हैं, उनके गीत कायनात को हिलाते हैं, आकाश फाड़ देते हैं! अब कायनात धुंध से घिरी हुई नहीं है; अब न कीचड़ है, न मल का जमाव है। कायनात के पवित्र लोगो! मेरी निगरानी में, तुम अपना असली चेहरा दिखाते हो। तुम लोग मल से ढके हुए इंसान नहीं हो, बल्कि हरिताश्म की तरह निर्मल संत हो, तुम सब लोग मेरे प्रिय हो, तुम सब लोग मेरा आनंद हो! हर चीज़ पुन: जीवन को प्राप्त होती है! सभी संत स्वर्ग में मेरी सेवा के लिए लौट आए हैं, मेरे स्नेहपूर्ण आलिंगन में प्रवेश कर रहे हैं, अब वे विलाप नहीं कर रहे, अब वे बेचैन नहीं हैं, वे स्वयं को मुझे अर्पित कर रहे हैं, मेरे घर वापस आ रहे हैं, और वे अपनी जन्मभूमि में बिना रुके मुझसे प्रेम करेंगे! यह अनंतकाल तक अपरिवर्तनीय होगा! कहाँ है दुख! कहाँ हैं आँसू! कहाँ है देह! धरती गुज़र जाती है, मगर स्वर्ग सदा के लिए हैं। मैं सभी लोगों के समक्ष प्रकट होता हूँ, और सभी लोग मेरी स्तुति करते हैं। यह जीवन, यह सुंदरता, चिरकाल से समय के अंत तक, बदलेगी नहीं। यही राज्य का जीवन है।

अध्याय 26

मेरे घर में कौन रहा है? मेरे लिए कौन खड़ा हुआ है? किसने मेरे बदले दु:ख उठाया है? किसने मेरे सामने प्रतिज्ञा ली है? किसने वर्तमान तक मेरा अनुसरण किया है और फिर भी विरक्त नहीं हुआ है? सारे मनुष्य ठण्डे और भावहीन क्यों हैं? मानवजाति ने मेरा परित्याग क्यों कर दिया है? मानवता मुझ से ऊब क्यों गई है? मानव संसार में कोई उत्साह क्यों नहीं है? सिय्योन में रहते हुए, मैंने उसी गर्मजोशी का अनुभव किया है जो स्वर्ग में है, और सिय्योन में रहते हुए, मैंने उसी आशीष का आनन्द लिया है जो स्वर्ग में है। मैं फिर से मानवजाति के बीच भी रहा हूँ, मैंने मानव संसार की कटुता का अनुभव किया है, और मैंने मनुष्यों के बीच विद्यमान सभी अलग-अलग अवस्थाओं को स्वयं अपनी आँखों से देखा है। अनजाने में ही, मनुष्य उसी तरह बदल गया है जैसे मैं "बदल गया" हूँ, और केवल इसी तरह वह आज के दिन तक पहुँच गया है। मैं यह अपेक्षा नहीं करता हूँ कि मनुष्य मेरी खातिर कुछ कर पाए, न ही मैं अपेक्षा करता हूँ कि वह मेरे खाते में कुछ बढ़ोत्तरी करे। मैं उससे बस इतना चाहता हूँ कि वह मेरी योजना के अनुसार काम कर पाए, मेरी अवज्ञा न करे या मेरे लिए लज्जा का कारण न बने, बल्कि मेरे लिए गूँजती हुई गवाही दे। मनुष्यों

के बीच, ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने मेरे लिए अच्छी गवाही दी है और मेरा नाम महिमामंडित किया है, किन्तु मनुष्य के अभ्यास या व्यवहार मेरे हृदय को संभवतः कैसे संतुष्ट कर सकते हैं? वह संभवतः कैसे मेरे हृदय के अनुसार हो सकता है या मेरी इच्छा को संतुष्ट कर सकता है? पृथ्वी के पर्वतों और समुद्रों, और पृथ्वी के फूलों, घासों, और वृक्षों में से सभी मेरे हाथों का कार्य दर्शाते हैं, सभी का अस्तित्व मेरे नाम के लिए है। तो फिर मनुष्य मेरी माँग की कसौटी पर खरा क्यों नहीं उतर सकता? क्या ऐसा उसकी घोर तुच्छता के कारण हो सकता है? क्या यह मेरे द्वारा उसके उत्कर्ष के कारण हो सकता है? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं उसके प्रति अधिक ही क्रूर हूँ? मनुष्य मेरी माँगों से हमेशा भयभीत क्यों रहता है? आज, मेरे राज्य के जनसाधारण के बीच, ऐसा क्यों हैं कि तुम बस मेरी आवाज़ सुनते हो किन्तु मेरा चेहरा देखना नहीं चाहते हो? तुम मेरे वचनों को मेरे आत्मा से मिलाए बगैर, बस देखते भर क्यों हो? तुम मुझे स्वर्ग का और पृथ्वी का, इन दो रूपों में अलग क्यों कर देते हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं जब पृथ्वी पर होता हूँ, तब मैं वैसा नहीं होता जैसा मैं स्वर्ग में होता हूँ? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं जब स्वर्ग में होता हूँ, तब मैं नीचे पृथ्वी पर नहीं आ सकता? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं जब पृथ्वी पर होता हूँ, तब मैं स्वर्ग में उठाए जाने के अयोग्य होता हूँ? यह ऐसा है मानो जब मैं पृथ्वी पर होता हूँ, तब मैं एक दीन-हीन प्राणी हूँ, मानो जब मैं स्वर्ग में होता हूँ, तब मैं एक उत्कृष्ट प्राणी हूँ, मानो यहाँ स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक न भरने वाली खाई है। परन्तु मनुष्यों के संसार में ऐसा प्रतीत होता है कि वे इन चीज़ों की उत्पत्ति के बारे में कुछ भी नहीं जानते, लेकिन सदैव मेरे विरुद्ध रहे हैं, मानो मेरे वचनों में केवल ध्वनि है और कोई अर्थ नहीं है। सभी मनुष्य मेरे वचनों पर बहुत समय और ऊर्जा व्यय करते हैं, वे मेरी बाह्य आकृति की जाँच-पड़ताल करते हैं, किन्तु विफलता ही उन सबके हाथ लगती है, उनके प्रयत्न फलदायी नहीं होते, इसके बजाय वे मेरे वचनों के द्वारा धराशायी कर दिए जाते हैं और फिर उठने की हिम्मत नहीं कर पाते।

जब मैं मानवजाति के विश्वास को परखता हूँ, तो पाता हूँ कि एक भी मनुष्य सच्ची गवाही नहीं देता, कोई भी अपना सर्वस्व अर्पित करने में सक्षम नहीं है; बल्कि, मनुष्य छिपता फिरता है और अपने आपको खुलकर प्रकट करने से इन्कार करता है, मानो मैं उसके हृदय को मोहपाश में जकड़ लूँगा। यहाँ तक कि अय्यूब भी अपनी परीक्षा के दौरान कभी पूरी तरह दृढ़ता से खड़ा नहीं रहा, और न ही पीड़ा के बीच उससे मधुरता निसृत हुई। सभी लोग बसंत ऋतु की गर्माहट में हरियाली की एक धुँधली-सी झलक देते हैं; शरद ऋतु की कड़कड़ाती ठण्ड में कभी हरे नहीं रहते। अपनी दुबली-पतली और कृशकाय कद-काठी के साथ,

मनुष्य मेरे इरादों को पूरा नहीं कर सकता है। समस्त मानवता में, ऐसाएक भी व्यक्ति नहीं है जो दूसरों के लिए एक आदर्श बन सकता है, क्योंकि सभी मनुष्य मूलतः एक समान हैं और उनमें आपस में कोई अंतर नहीं है, ऐसी कुछ ही बातें हैं जो उन्हें एक दूसरे से अलग करती हैं। इसी कारण, मनुष्य आज भी मेरे कार्यों को पूरी तरह जानने में असमर्थ हैं। जब मेरी ताड़ना समस्त मानवजाति के ऊपर उतरती है, क्या केवल तभी मनुष्य, अनजाने में, मेरे कार्यों से अवगत होगा, और मेरे कुछ किए अथवा किसी को बाध्य किए बिना, मनुष्य मुझे जानने लगेगा, और इस प्रकार मेरे कार्यों का साक्षी होगा। यह मेरी योजना है, यह मेरे कार्य का वह पहलू है जो ज़ाहिर किया गया है, और यह वह है जिसे मनुष्य को जानना चाहिए। राज्य में, सृष्टि की असंख्य चीज़ें पुनर्जीवित होना और अपनी जीवन शक्ति फिर से प्राप्त करना आरम्भ करती हैं। पृथ्वी की अवस्था में परिवर्तनों के कारण, एक तथा दूसरी भूमि के बीच सीमाएँ भी खिसकने लगती हैं। मैं भविष्यवाणी कर चुका हूँ कि जब ज़मीन को ज़मीन से अलग किया जाता है, और जब ज़मीन ज़मीन से जुड़ती है, यही वह समय होगा जब मैं सारे राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। इस समय, मैं सारी सृष्टि को फिर नया करूँगा और समस्त ब्रह्माण्ड को पुनर्विभाजित करूँगा, इस प्रकार पूरे ब्रह्माण्ड को व्यवस्थित करूँगा, और पुराने को नए में रूपान्तरित कर दूँगा—यह मेरी योजना है और ये मेरे कार्य हैं। जब संसार के सभी राष्ट्र और लोग मेरे सिंहासन के सामने लौटेंगे, तब मैं स्वर्ग का सारी वदान्यता लेकर इसे मानव संसार को सौंप दूँगा, जिससे, मेरी बदौलत, वह संसार बेजोड़ वदान्यता से लबालब भर जाएगा। किन्तु जब तक पुराने संसार का अस्तित्व बना रहता है, मैं अपना प्रचण्ड रोष इसके राष्ट्रों के ऊपर पूरी ज़ोर से बरसाऊंगा, समूचे ब्रह्माण्ड में खुलेआम अपनी प्रशासनिक आज्ञाएँ लागू करूँगा, और जो कोई उनका उल्लंघन करेगा, उनको ताड़ना दूँगा:

जैसे ही मैं बोलने के लिए ब्रह्माण्ड की तरफ अपना चेहरा घुमाता हूँ, सारी मानवजाति मेरी आवाज़ सुनती है, और उसके उपरांत उन सभी कार्यों को देखती है जिन्हें मैंने समूचे ब्रह्माण्ड में गढ़ा है। वे जो मेरी इच्छा के विरूद्ध खड़े होते हैं, अर्थात् जो मनुष्य के कर्मों से मेरा विरोध करते हैं, वे मेरी ताड़ना के अधीन आएँगे। मैं स्वर्ग के असंख्य तारों को लूँगा और उन्हें फिर से नया कर दूँगा, और, मेरी बदौलत, सूर्य और चन्द्रमा नये हो जाएँगे—आकाश अब और वैसा नहीं रहेगा जैसा वह था और पृथ्वी पर बेशुमार चीज़ों को फिर से नया बना दिया जाएगा। मेरे वचनों के माध्यम से सभी पूर्ण हो जाएँगे। ब्रह्माण्ड के भीतर अनेक राष्ट्रों को नए सिरे से बाँटा जाएगा और उनका स्थान मेरा राज्य लेगा, जिससे पृथ्वी पर विद्यमान राष्ट्र हमेशा के

लिए विलुप्त हो जाएँगे और एक राज्य बन जाएँगे जो मेरी आराधना करता है; पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को नष्ट कर दिया जाएगा और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। ब्रह्माण्ड के भीतर मनुष्यों में से उन सभी का, जो शैतान से संबंध रखते हैं, सर्वनाश कर दिया जाएगा, और वे सभी जो शैतान की आराधना करते हैं उन्हें मेरी जलती हुई आग के द्वारा धराशायी कर दिया जायेगा—अर्थात उनको छोड़कर जो अभी धारा के अन्तर्गत हैं, शेष सभी को राख में बदल दिया जाएगा। जब मैं बहुत-से लोगों को ताड़ना देता हूँ, तो वे जो धार्मिक संसार में हैं, मेरे कार्यों के द्वारा जीते जाने के उपरांत, भिन्न-भिन्न अंशों में, मेरे राज्य में लौट आएँगे, क्योंकि उन्होंने एक श्वेत बादल पर सवार पवित्र जन के आगमन को देख लिया होगा। सभी लोगों को उनकी किस्म के अनुसार अलग-अलग किया जाएगा, और वे अपने-अपने कार्यों के अनुरूप ताड़नाएँ प्राप्त करेंगे। वे सब जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए हैं, नष्ट हो जाएँगे; जहाँ तक उनकी बात है, जिन्होंने पृथ्वी पर अपने कर्मों में मुझे शामिल नहीं किया है, उन्होंने जिस तरह अपने आपको दोषमुक्त किया है, उसके कारण वे पृथ्वी पर मेरे पुत्रों और मेरे लोगों के शासन के अधीन निरन्तर अस्तित्व में बने रहेंगे। मैं अपने आपको असंख्य लोगों और असंख्य राष्ट्रों के सामने प्रकट करूँगा, और अपनी वाणी से, पृथ्वी पर ज़ोर-ज़ोर से और ऊंचे तथा स्पष्ट स्वर में, अपने महा कार्य के पूरे होने की उद्घोषणा करूँगा, ताकि समस्त मानवजाति अपनी आँखों से देखे।

जैसे-जैसे मेरी आवाज़ की तीव्रता गहरी होती जाती है, मैं ब्रह्माण्ड की दशा का भी अवलोकन करता हूँ। मेरे वचनों के माध्यम से, सृष्टि की असंख्य चीज़ें बिल्कुल नई बना दी जाती हैं। स्वर्ग बदलता है, और पृथ्वी भी बदलती है। मानवता अपने मूल रूप में उजागर होती है और, धीरे-धीरे, प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रकार के अनुसार पृथक कर दिया जाता है और वह एकाएक अपने परिवारों के आलिंगन में वापस जाने का अपना रास्ता खोज लेता है। इससे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी। मैं व्यवधान से मुक्त हूँ, और, अलक्षित रूप से, मेरा महा कार्य संपन्न होता है, और सृष्टि की सभी असंख्य चीज़ें रूपान्तरित हो गई हैं। जब मैंने संसार की सृष्टि की थी, मैंने सभी चीज़ों को उनकी किस्म के अनुसार ढाला था, रूपाकृतियों वाली सभी चीज़ों को उनकी किस्म के अनुसार एक साथ रखा था। मेरी प्रबन्धन योजना का अंत ज्यों-ज्यों नज़दीक आएगा, मैं सृष्टि की पूर्व दशा बहाल कर दूँगा, मैं प्रत्येक चीज़ को पूर्णतः बदलते हुए हर चीज़ को उसी प्रकार बहाल कर दूँगा जैसी वह मूलतः थी, जिससे हर चीज़ मेरी योजना के आलिंगन में लौट आएगी। समय आ चुका है! मेरी योजना का अंतिम चरण संपन्न होने वाला है। आह, पुराना अस्वच्छ संसार! तू पक्का

मेरे वचनों के अधीन आएगा! तू पक्का मेरी योजना के द्वारा अस्तित्वहीन हो जाएगा! आह, सृष्टि की अनगिनत चीज़ो! तुम सब मेरे वचनों के भीतर नया जीवन प्राप्त करोगी—तुम्हारे पास तुम्हारा सार्वभौम प्रभु होगा! आह, शुद्ध और निष्कलंक नये संसार! तू पक्का मेरी महिमा के भीतर पुनर्जीवित होगा! आह, सिय्योन पर्वत! अब और मौन मत रह। मैं विजयोल्लास के साथ लौट आया हूँ! सृष्टि के बीच से, मैं समूची पृथ्वी को बारीक़ी से देखता हूँ। पृथ्वी पर मानवजाति ने नए जीवन की शुरुआत की है, और नई आशा जीत ली है। आह, मेरे लोगो! ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम लोग मेरे प्रकाश के भीतर पुनर्जीवित न हो? ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम लोग मेरे मार्गदर्शन के अधीन आनन्द से न उछलो? भूमि उल्लास से चिल्ला रही है, समुद्र उल्लासपूर्ण हंसी से उफन रहे हैं! आह, पुनर्जीवित इस्राएल! मेरे द्वारा पूर्वनियत किए जाने की वजह से तुम कैसे गर्व महसूस नहीं कर सकते हो? कौन रोया है? किसने विलाप किया है? पहले का इस्राएल समाप्त हो गया है, और आज के इस्राएल का उदय हुआ है, जो संसार में सीधा और बहुत ऊँचा खड़ा है, और समस्त मानवता के हृदय में तनकर डटा हुआ है। आज का इस्राएल मेरे लोगों के माध्यम से अस्तित्व का स्रोत निश्चित रूप से प्राप्त करेगा! आह, घृणास्पद मिस्र! निश्चित रूप से तू अब भी मेरे विरुद्ध खड़ा तो नहीं है? तू कैसे मेरी दया का लाभ उठा सकता है और मेरी ताड़ना से बचने की कोशिश कर सकता है? ऐसा कैसे हो सकता है कि तू मेरी ताड़ना के के दायरे में विद्यमान न हो? वे सभी जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, निश्चय ही अनन्त काल तक जीवित रहेंगे, और वे सभी जो मेरे विरुद्ध खड़े हैं, निश्चय ही अनन्त काल तक मेरे द्वारा ताड़ित किए जाएँगे। क्योंकि मैं एक ईर्ष्यालु परमेश्वर हूँ, मनुष्यों ने जो किया है, उस सबके लिए उन्हें हल्के में नहीं छोडूँगा। मैं पूरी पृथ्वी पर निगरानी रखूँगा, और धार्मिकता, प्रताप, कोप और ताड़ना के साथ संसार के पूर्व में प्रकट होते हुए, मानवजाति के असंख्य समुदायों के समक्ष स्वयं को उजागर करूँगा!

29 मार्च, 1992

अध्याय 27

मानव व्यवहार ने कभी मेरे हृदय को स्पर्श नहीं किया है, और न ही वह मुझे कभी बहुमूल्य लगा है। मनुष्य की नज़रों में, मैं उसके प्रति हमेशा कठोर हूँ, और उसके ऊपर हमेशा अधिकार का प्रयोग करता रहता हूँ। मनुष्य के सभी कार्यकलापों में, मुश्किल से ही कुछ ऐसा है जो मेरे लिए किया जाता है, मुश्किल

से ही कुछ ऐसा है जो मेरी नज़रों के सामने दृढ़ता से टिका रहता है। अंततः, मनुष्य का सब कुछ मेरे सामने, फुसफुसाहट तक किए बिना, भरभराकर धराशायी हो जाता है; उसके बाद ही मैं अपने कार्यकलापों को प्रदर्शित करता हूँ, सभी को उनकी अपनी विफलता के माध्यम से मुझे जानने देता हूँ। मानव प्रकृति अपरिवर्तित रहती है। जो कुछ उनके हृदय में है वह मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं है—यह वह नहीं है जिसकी मुझे आवश्यकता है। मैं जिससे सबसे ज़्यादा घृणा करता हूँ वह मनुष्य का ढीठपन और आदतन अपराधी होना है, किंतु वह कौन-सी शक्ति है जो मानवजाति को लगातार मुझे जानने में विफल होते रहने, हमेशा मुझसे दूरी बनाए रखने, और मेरे सामने कभी मेरी इच्छा के अनुरूप कार्य नहीं करने और मेरी पीठ पीछे मेरा विरोध करने के लिए उकसाती है? क्या यही उनकी वफ़ादारी है? क्या यही मेरे प्रति उनका प्रेम है? वे पश्चाताप करके पुनः जन्म क्यों नहीं ले सकते हैं? लोग कीचड़ से मुक्त स्थान के बजाए सदैव दलदल में रहने के इच्छुक क्यों हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने उनके साथ बुरा व्यवहार किया हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने उन्हें ग़लत दिशा दिखाई हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं उन्हें नरक में ले जा रहा हूँ? हर कोई "नरक" में रहने का इच्छुक है? जब प्रकाश आता है, तो उनकी आँखें तत्काल अंधी हो जाती हैं, क्योंकि उनमें सब कुछ नरक से आता है। फिर भी, लोग इससे अनजान हैं, और बस इन "नारकीय आशीषों" का आनंद लेते हैं। यहाँ तक कि वे उन्हें खज़ाने की तरह अपने सीने से जकड़कर रखते हैं, इस बात से आतंकित कि मैं इन खज़ानों को उनसे छीनकर अलग कर दूँगा, और उन्हें "उनके अस्तित्व की जड़" के बिना छोड़ दूँगा। लोग मुझसे डरते हैं, यही कारण है कि जब मैं पृथ्वी पर आता हूँ तब वे मुझसे बहुत दूर रहते हैं, मेरे करीब आने से नफ़रत करते हैं, क्योंकि वे "अपने ऊपर मुसीबत लाने" के अनिच्छुक होते हैं, बल्कि इसके बजाए परिवार के भीतर समरसता बनाए रखना चाहते हैं ताकि वे "पृथ्वी पर प्रसन्नता" का आनंद ले सकें। परंतु मैं मानवजाति को वह नहीं करने दे सकता हूँ जो वे चाहते हैं, क्योंकि मनुष्य के परिवार को नष्ट करना ही वह है जो करने के लिए मैं यहाँ हूँ। मेरे आने के क्षण से ही, उनके घरों से शांति चली जाती है। मेरा इरादा है कि मैं सारे देशों को चकनाचूर कर दूँ, मनुष्य के परिवार की तो बात ही क्या है। मेरी पकड़ से कौन बच सकता है? क्या ऐसा हो सकता है कि जो आशीष प्राप्त करते हैं वे अपनी अनिच्छुकता के बल पर बच सकते हों? क्या कभी ऐसा हो सकता है कि जो ताड़ना झेलते हैं वे अपने भय के बल पर मेरी सहानुभूति प्राप्त कर सकते हों? मेरे समस्त वचनों में, लोगों ने मेरी इच्छा और मेरे कार्यकलाप देखे हैं, किंतु कौन कभी स्वयं अपने विचारों की जकड़न को तोड़कर स्वतंत्र हो

सकता है? कौन कभी मेरे वचनों के भीतर से या बाहर से बच निकलने का मार्ग ढूँढ़ सकता है?

मेरी उपस्थिति में मेरे लिए सब कुछ करते हुए, मनुष्य ने मेरी गर्मजोशी अनुभव की है, मनुष्य ने मन लगाकर मेरी सेवा की है, और मनुष्य ने मन से मेरे समक्ष समर्पण किया है। फिर भी आज के लोगों द्वारा यह अप्राप्य है; वे अपनी आत्मा में रोने के सिवा कुछ नहीं करते मानो उन्हें भूखे भेड़िये ने झपट लिया हो, और वे बिना रुके चीख-चीखकर मुझसे गुहार लगाते हुए, असहाय भाव से मुझे बस ताक सकते हैं। परंतु अंत में, वे अपनी दुर्दशा से बच नहीं पाते हैं। मैं बीती बातों पर सोचता हूँ कि अतीत में किस तरह लोगों ने मेरी उपस्थिति में प्रतिज्ञाएँ की थीं, मेरी उपस्थिति में आकाश और पृथ्वी के नाम पर मेरी दयालुता का बदला अपने स्नेह से चुकाने की कसमें खाई थीं। वे मेरे सामने दुःखी होकर रोते थे, और उनके रोने की चीखें हृदय-विदारक थीं, उन्हें सह पाना कठिन था। उनके संकल्प के कारण, मैं प्रायः लोगों को सहायता प्रदान करता। अनगिनत बार, लोग मेरे प्रति समर्पित होने के लिए मेरे सम्मुख आए हैं, उनका प्यारा-सा अंदाज़ भूल पाना कठिन है। अनगिनत बार, उन्होंने मुझसे प्रेम किया है, वे अपनी निष्ठा में अविचल हैं, उनका दृढ़निश्चय प्रशंसनीय है। अनगिनत बार, उन्होंने अपने जीवन का बलिदान करने की हद तक मुझसे प्रेम किया है, उन्होंने अपने आप से अधिक मुझसे प्रेम किया है और उनकी शुद्ध हृदयता देखकर, मैंने उनका प्रेम स्वीकार किया है। अनगिनत बार, उन्होंने मेरी उपस्थिति में स्वयं को अर्पित किया है, मेरी ख़ातिर मृत्यु के सामने तटस्थ रहे हैं, और मैंने उनके ललाट से चिंता मिटाई है और उनके मुखमंडलों का सावधानी से आंकलन किया है। ऐसा अनगिनत बार हुआ है जब मैंने बहुत दुलारे खज़ाने की तरह उन्हें प्रेम किया है, और ऐसा भी अनगिनत बार हुआ है जब मैंने अपने शत्रु की तरह उनसे नफ़रत की है। फिर भी, मेरे मन में जो है वह मनुष्य की समझ से बाहर है? जब लोग दुःखी होते हैं, मैं उन्हें सांत्वता देता हूँ, और जब वे कमज़ोर होते हैं, उनकी सहायता के लिए मैं उनके साथ हो जाता हूँ। जब वे भटक जाते हैं, मैं उन्हें दिशा दिखाता हूँ। जब वे रोते हैं, मैं उनके आँसू पोंछता हूँ। परंतु जब मैं उदास होता हूँ, तब कौन मुझे अपने हृदय से सांत्वना दे सकता है? जब मैं चिंता से व्यग्र होता हूँ, तब कौन मेरी भावनाओं का ख्याल रखता है? जब मैं उदास होता हूँ, तब कौन मेरे हृदय के घावों को चंगा कर सकता है? जब मुझे किसी की आवश्यकता होती है, तब कौन मेरे साथ सहयोग के लिए स्वेच्छा से स्वयं को अर्पित करता है? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरे प्रति लोगों की पूर्व प्रवृत्ति अब लुप्त हो गई है, और कभी वापस नहीं आएगी? ऐसा क्यों है कि इसका लेशमात्र भी उनकी स्मृतियों में नहीं बचा है? ऐसा कैसे है कि लोग इन सब चीज़ों को भूल गए

हैं? क्या यह सब मनुष्यजाति के शत्रुओं द्वारा उसकी भ्रष्टता के कारण नहीं है?

जब स्वर्गदूत मेरी स्तुति में संगीत बजाते हैं, यह और कुछ नहीं बल्कि मनुष्य के प्रति मेरी सहानुभूति को उकसा देता है। मेरा हृदय तत्काल उदासी से भर जाता है, और मेरे लिए इस कष्टदायक भावना से स्वयं को मुक्त कर पाना असंभव हो जाता है। मनुष्य से पृथक होने और फिर एक होने के आनंद और विषाद में, हम भावनाओं का आदान-प्रदान नहीं कर पाते हैं। ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वी पर अलग-अलग होकर, बिरले ही मैं और मनुष्य मिल सकते हैं। पूर्व की भावनाओं के प्रति ललक से कौन मुक्त हो सकता है? अतीत के बारे में स्मरण करना कौन बंद कर सकता है? अतीत के मनोभावों की निरंतरता की आशा कौन नहीं करेगा? मेरी वापसी के लिए कौन लालायित नहीं होगा? मनुष्य के साथ मेरे पुनर्मिलन की लालसा कौन नहीं करेगा? मेरा हृदय अत्यंत अशांत है, और मनुष्य की आत्मा गहराई तक चिंतामग्न हैं। आत्माओं में एक समान होते हुए भी, हम प्रायः एक साथ नहीं हो सकते हैं, और हम प्रायः एक दूसरे को नहीं देख सकते हैं। इस प्रकार समस्त मानवजाति का जीवन व्यथा से भरा है और प्राणशक्ति से रिक्त है, क्योंकि मनुष्य मेरे लिए हमेशा तड़पा है। यह ऐसा है मानो मानवजाति स्वर्ग से ठोकर मारकर गिराई गई वस्तुएँ हों; वे धरती से मेरी ओर अपनी नज़र उठाते हुए, पृथ्वी से मेरा नाम पुकारते हैं—परंतु वे भूखे और हिंसक भेड़िए के जबड़ों से कैसे बच सकते हैं? वे उसके ख़तरों और प्रलोभनों से स्वयं को कैसे मुक्त कर सकते हैं? मेरी योजना की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता के कारण मनुष्य अपना बलिदान कैसे नहीं दे सकते हैं? जब वे ज़ोर-ज़ोर से गिड़गिड़ाते हैं, मैं उनसे अपना मुँह फेर लेता हूँ, मैं उन्हें देखना अब और सहन नहीं कर सकता हूँ; परंतु मैं उनकी अश्रुपूरित पुकार को कैसे नहीं सुन सकता हूँ? मैं मानव संसार के अन्यायों को ठीक करूँगा। मैं समूचे संसार में स्वयं अपने हाथों से अपना कार्य करूँगा, अपने लोगों को पुनः हानि पहुँचाने से शैतान को रोकूँगा, शत्रुओं को पुनः उनका मनचाहा करने से रोकूँगा। अपने सभी शत्रुओं को धराशायी करते हुए और अपने सामने उनसे उनके अपराध स्वीकार करवाते हुए, मैं पृथ्वी पर राजा बन जाऊँगा और अपना सिंहासन वहाँ ले जाऊँगा। अपनी उदासी में, जिसमें क्रोध मिला हुआ है, मैं समूचे ब्रह्माण्ड को सपाट रौंद दूँगा, किसी को नहीं छोड़ूँगा, और अपने शत्रुओं के हृदय में आतंक बरपा दूँगा। मैं समूची पृथ्वी को खण्डहरों में बदल दूँगा, और अपने शत्रुओं को उन खण्डहरों में पटक दूँगा, ताकि उसके बाद मानवजाति को वे अब और भ्रष्ट नहीं कर सकें। मेरी योजना पहले से ही निश्चित है, और किसी को भी, वे चाहे जो हों, इसे बदलना नहीं चाहिए। जब मैं प्रतापी ठाट-बाट से ब्रह्माण्ड के ऊपर घूमूँगा, तब समस्त

मानवजाति नई बना दी जाएगी, और सब कुछ पुनः जी उठेगा। मनुष्य अब और नहीं रोएगा, सहायता के लिए मुझे अब और नहीं पुकारेगा। तब मेरा हृदय आनंदित होगा, और लोग उत्सव मनाते हुए मेरे पास लौट आएँगे। समूचा ब्रह्माण्ड, ऊपर से नीचे तक, हर्षोल्लास में झूमेगा ...।

आज, संसार के देशों के बीच, मैं वह कार्य कर रहा हूँ जिसे संपन्न करने का मैंने बीड़ा उठाया है। अपनी योजना के अंतर्गत समस्त कार्य करते हुए, मैं मानवजाति के बीच घूम रहा हूँ, और समस्त मानवजाति मेरी इच्छा के अनुसार नानाविध देशों को विभाजित कर रही है। पृथ्वी पर लोगों ने अपना ध्यान स्वयं अपनी मंज़िल पर जमा लिया है, क्योंकि दिन सचमुच नज़दीक आ रहा है और स्वर्गदूत अपनी तुरहियाँ बजा रहे हैं। अब और देरी नहीं होगी, और इसके तत्काल बाद समस्त सृष्टि हर्षविभोर होकर नृत्य करने लगेगी। मेरा दिन अपनी इच्छा से कौन आगे बढ़ा सकता है? क्या कोई पृथ्वीवासी? या आकाश के तारे? या स्वर्गदूत? जब मैं इस्राएल के लोगों का उद्धार आरंभ करने के लिए कथन कहता हूँ, तब मेरा दिन संपूर्ण मानवजाति पर दबाव बनाता जाता है। प्रत्येक मनुष्य इस्राएल की वापसी से भय खाता है। जब इस्राएल वापस आएगा, वह मेरी महिमा का दिन होगा, और इसलिए यह वह दिन भी होगा जब सब कुछ बदल जाता है और नया हो जाता है। धार्मिक न्याय ज्यों-ज्यों आसन्न रूप से संपूर्ण ब्रह्माण्ड के निकट आता है, सारे मनुष्य कातर और भयभीत हो जाते हैं, क्योंकि मानव संसार में धार्मिकता अनसुनी है। जब धार्मिकता का सूर्य प्रकट होगा, पूर्वदिशा रोशन हो जाएगी, और फिर वह समूचे ब्रह्माण्ड को रोशन कर देगी, प्रत्येक के पास पहुँचेगी। यदि मनुष्य वास्तव में मेरी धार्मिकता को क्रियान्वित कर सकता है, तो किस बात का डर होगा? मेरे सारे लोग मेरे दिन के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं, वे सब मेरे दिन के आने की लालसा करते हैं। वे प्रतीक्षा करते हैं कि मैं संपूर्ण मानवजाति के ऊपर प्रतिफल लाऊँगा और धार्मिकता के सूर्य के रूप में अपनी भूमिका में मानवजाति की मंज़िल संजोऊँगा। मेरा राज्य समस्त ब्रह्माण्ड के ऊपर आकार ग्रहण कर रहा है, और मेरा सिंहासन हज़ारों-लाखों लोगों के हृदय में प्रभुत्व संपन्न होता है। स्वर्गदूतों की सहायता से, मेरी महान उपलब्धि शीघ्र ही फलीभूत होगी। मेरे सभी पुत्र और लोग मेरी वापसी की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं, अपने साथ पुनः एक होने, फिर कभी अलग नहीं होने के लिए मेरी लालसा करते हैं। ऐसा कैसे हो सकता है कि मेरे राज्य के असंख्य जनसाधारण, मेरे उनके साथ होने की वजह से, हर्षोल्लास से भरे उत्सव में एक दूसरे की ओर दौड़ न पड़ें? क्या यह ऐसा पुनर्मिलन हो सकता है जिसके लिए कोई क़ीमत चुकाना आवश्यक नहीं हो? मैं सभी मनुष्यों की नज़रों में सम्मानीय हूँ, मैं सभी के

वचनों में उद्घोषित होता हूँ। इतना ही नहीं, जब मैं लौटूँगा, मैं सारी शत्रु शक्तियों को जीत लूँगा। समय आ गया है! मैं अपने कार्य को गति दूँगा, मैं मनुष्यों के बीच राजा के रूप में शासन करूँगा! मैं वापसी की कगार पर हूँ! और मैं प्रस्थान करने ही वाला हूँ! यही है वह जिसकी सब आशा कर रहे हैं, यही है वह जो वे चाहते हैं। मैं संपूर्ण मानवजाति को मेरे दिन का आगमन देखने दूँगा और वे सब आनंदोल्लास से मेरे दिन के आगमन का स्वागत करेंगे।

2 अप्रैल, 1992

अध्याय 28

जब मैं सिय्योन से आया, सभी चीज़ों ने मेरी प्रतीक्षा की और जब मैं वापस सिय्योन गया, सभी मनुष्यों ने मेरा अभिवादन किया। जब मैं आया और गया, मेरे कदमों को उन चीज़ों के द्वारा कभी बाधित नहीं किया गया जो मुझ से शत्रुता रखती थीं, और इसलिए मेरा कार्य सुचारू रूप से आगे बढ़ता गया। आज, जब मैं समस्त जीवधारियों के मध्य आता हूँ, तो समस्त वस्तुएँ शांति से मेरा अभिवादन करती हैं, इस बात से अत्यंत भयभीत कि मैं एक बार फिर से चला जाऊँगा और वे अपना वो सहारा खो देंगे जिस पर वे निर्भर करते हैं। सभी चीज़ें मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करती हैं, और सभी मेरे हाथ द्वारा दिखाई गयी दिशा की ओर देखती हैं। मेरे मुँह से निकले हुए वचनों ने बहुत से जीवधारियों को पूर्ण किया है और बहुत से अनाज्ञाकारिता के पुत्रों को दंड दिया है। इस प्रकार, सभी मनुष्य मेरे वचनों की ओर आशय से देखते हैं, और मेरे मुँह से निकले हुए वचनों को ध्यान से सुनते हैं, और बहुत अधिक डरे हुए हैं कि कहीं इस अच्छे अवसर को खो न दें। इसी कारण मैंने बोलना जारी रखा है, ताकि मेरा कार्य और भी तेजी से किया जा सके, ताकि संतुष्टिदायक परिस्थितियाँ पृथ्वी पर जल्दी से प्रकट हो सकें और पृथ्वी पर वीरानी के दृश्य को ठीक कर सकें। जब मैं आकाश की ओर देखता हूँ तब वह समय होता है जब मैं एक बार फिर से मानवजाति का सामना करने के लिए मुड़ता हूँ; सारी भूमि तत्काल जीवन से भर जाती है, हवा में धूल बनी नहीं रहती, और अब दलदल भूमि को नहीं ढँकती है। मेरी आँखें तुरन्त ही चमक जाती हैं, जिस से सारी धरती के लोग मेरी ओर निहारते हैं और मुझमें शरण लेते हैं। आज संसार के लोगों के मध्य—जिनमें वे भी शामिल हैं जो मेरे घराने में मौजूद हैं—कौन सच में मुझ में शरण लेता है? कौन अपना हृदय उस कीमत के बदले देता है जो मैं ने चुकाई है? कौन कभी मेरे घराने में शांति में रहा है? किसने कभी सचमुच में मेरे

सामने अपने आपको भेंट चढ़ाया है? जब मैं मनुष्य से अपेक्षाएँ करता हूँ, तो वह तुरन्त अपना "छोटा सा भण्डारगृह" बंद कर देता है। जब मैं मनुष्य को देता हूँ तो वह तुरन्त मेरी समृद्धि को गुप्त रूप से लेने के लिए अपना मुँह खोल देता है, और अपने हृदय में अक्सर काँपता है, इस बात से बहुत भयभीत होते हुए कि मैं उस पर पलटकर वार करूँगा। इसलिए मनुष्य का मुँह आधा खुला और आधा बंद है और वह उस समृद्धि का आनंद उठाने में असमर्थ है जो मैं देता हूँ। मैं आसानी से मनुष्य को दोषी नहीं ठहराता फिर भी वह हमेशा मेरे हाथों को खींचता और मुझसे माँगता है कि मैं उस पर दया करूँ, जब मनुष्य मुझ से विनती करता है केवल तभी मैं उस पर एक बार फिर से "दया" करता हूँ, और मैं उसे अपने मुँह के सबसे कठोर वचन देता हूँ, ऐसे वचन कि वह तुरन्त शर्मिन्दगी महसूस करता है, और, मेरी "दया" को सीधे पाने में असमर्थ होते हुए भी, वह अन्य लोगों को उस दया को उसके पास पहुंचाने के लिए मजबूर करता है। जबकि उसने मेरे सभी वचनों को समझ लिया है, तो मनुष्य की आकृति मेरी इच्छाओं के अनुरूप हो जाती है और उसकी दलीलें फलीभूत हो जाती हैं, और वे व्यर्थ या निष्फल नहीं होती हैं। मैं मानवजाति की दलीलों को आशीषित करता हूँ जो निष्कपट हैं, और दिखावटी नहीं हैं।

मैं युगों से बोलता और कार्य करता आया हूँ, फिर भी जैसा मैं आज कहता हूँ वैसा कथन मनुष्य ने कभी नहीं सुना है, और उसने कभी मेरे प्रताप और न्याय का स्वाद नहीं चखा है। यद्यपि अतीत में संसार के कुछ लोगों ने मेरी पौराणिक गाथाओं को सुना है, फिर भी किसी ने सच में मेरी समृद्धि के प्रसार की खोज नहीं की है। यद्यपि आज के लोग मेरे मुँह से निकले हुए वचन को सुनते हैं, फिर भी वे इस बात से अनजान रहते हैं कि मेरे मुँह में रहस्य की कितनी की बातें हैं, और इस प्रकार, वे इसे एक अक्षय-पात्र के रूप में लेते हैं। सभी लोग मेरे मुँह से कुछ न कुछ प्राप्त करना चाहते हैं। भले ही यह राज्य का भेद हो, या स्वर्ग का रहस्य, या आत्मिक संसार की गतिविद्या, या मानवजाति की मंजिल, सभी मनुष्य ऐसी चीज़ों को प्राप्त करना चाहते हैं। इसलिए, यदि मैं लोगों को इकट्ठा करूँ और उन्हें "कहानियाँ" सुनाऊँ तो वे तुरन्त ही मेरे तरीकों को सुनने के लिए अपनी "रोग-शय्या" पर से उठ खड़े होंगे। मनुष्य में अत्यन्त कमी है : उसे सिर्फ "पोषक तत्वों" की ही आवश्यकता नहीं, बल्कि उस से कहीं ज़्यादा "मानसिक सहारे" और "आत्मिक आपूर्ति" की आवश्यकता है। सभी लोगों में इसी की कमी है; यह सभी मनुष्यों की "बीमारी" है। मैं क्रम में मनुष्य की बीमारी का इलाज प्रदान करता हूँ जिस से अच्छे प्रभावों को प्राप्त किया जा सके, सभी फिर से स्वस्थ हो जायें, और मेरे इलाज की बदौलत सामान्य अवस्था में वापस लौट सकें। क्या तुम लोग सच में

विशाल लाल अजगर से घृणा करते हो? क्या तुम सच में, दिल से इससे घृणा करते हो? मैंने तुम लोगों से इतनी बार क्यों पूछा है? मैं तुमसे यह प्रश्न बार-बार क्यों पूछता हूँ? तुम सबके हृदय में उस बड़े लाल अजगर की क्या छवि है? क्या उसे वास्तव में हटा दिया गया है? क्या तुम लोग सचमुच उसे अपना पिता नहीं मानते हो। सभी लोगों को मेरे प्रश्नों में मेरे अभिप्राय को जानना चाहिए। यह लोगों के क्रोध को भड़काने के लिए नहीं है, न ही मनुष्यों के मध्य विद्रोह को उत्तेजित करने के लिए है, न ही इसलिए है कि मनुष्य अपना मार्ग स्वयं ढूँढ़ सके, परन्तु यह इसलिए है कि लोग अपने आपको उस बड़े लाल अजगर के बंधन से छुड़ा लें। फिर भी किसी को चिंता नहीं करनी चाहिए। सब कुछ मेरे वचनों के द्वारा पूरा हो जाएगा; कोई मनुष्य भागी न हो, और कोई मनुष्य वह काम नहीं कर सकता है जिसे मैं करूँगा। मैं सारी भूमि की हवा को स्वच्छ करूँगा और पृथ्वी पर से दुष्टात्माओं का पूर्ण रूप से नाश कर दूँगा। मैं पहले से ही शुरू कर चुका हूँ, और अपने ताड़ना कार्य के पहले कदम को उस बड़े लाल अजगर के निवास स्थान में आरम्भ करूँगा। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि मेरी ताड़ना पूरे ब्रह्माण्ड के ऊपर आ गई है, और बड़ा लाल अजगर और सभी प्रकार की अशुद्ध आत्माएँ मेरी ताड़ना से बच पाने में असमर्थ होंगी क्योंकि मैं समूची भूमि पर निगाह रखता हूँ। जब मेरा कार्य पृथ्वी पर पूरा हो जाएगा अर्थात्, जब न्याय का युग समाप्त होगा, तब मैं औपचारिक रूप से उस बड़े लाल अजगर को ताड़ना दूँगा। मेरे लोग उस बड़े लाल अजगर की धर्मी ताड़ना को अवश्य देखेंगे, मेरी धार्मिकता के कारण स्तुति बरसाएँगे, और मेरी धार्मिकता के कारण सदा सर्वदा मेरे पवित्र नाम की बड़ाई करते रहेंगे। अब से तुम लोग अपने कर्तव्यों को औपचारिक तौर पर निभा पाओगे, और सारी धरती पर औपचारिक तौर पर मेरी स्तुति करोगे, हमेशा-हमेशा के लिए!

जब न्याय का युग अपने शिखर पर पहुँचेगा, तो मैं अपने कार्य को समाप्त करने में जल्दबाजी नहीं करूँगा, बल्कि मैं उसमें ताड़ना के युग के प्रमाण को जोडूँगा और अपने सभी लोगों को इस प्रमाण को देखने दूँगा; और इस से अत्यधिक फल उत्पन्न होंगे। यह प्रमाण वह माध्यम है जिसके द्वारा मैं उस बड़े लाल अजगर को ताड़ना दूँगा, और मैं अपने लोगों को उनकी आँखों से यह सब देखने दूँगा ताकि वे मेरे स्वभाव को और भी अच्छी तरह से जान सकें। जब उस बड़े लाल अजगर को ताड़ना दी जाती है, तब उस समय मेरे लोग मुझ में आनंद करते हैं। उस बड़े लाल अजगर के लोगों को उसके ही विरुद्ध उभारना और विद्रोह करवाना मेरी योजना है, और वह तरीका है जिस से मैं अपने लोगों को पूर्ण करता हूँ, और मेरे सभी लोगों के लिए जीवन में आगे बढ़ने के लिए यह एक बड़ा अवसर है। जब उजला चाँद उगता है, शांत रात

तत्काल ही बिखर जाती है। यद्यपि चन्द्रमा चिथड़ों में है, मनुष्य उमंग में है, और चाँद की रोशनी के नीचे उस सुंदर दृश्य की प्रशंसा करता हुआ शांति से उस चाँदनी में बैठता है, मनुष्य अपनी भावनाओं का बखान नहीं कर सकता है। यह ऐसा है मानो वह अपने विचारों को फिर से पीछे अतीत में फेंक देना चाहता है, मानो आगे भविष्य की ओर देखना चाहता है, मानो वह वर्तमान का आनंद उठा रहा है। एक मुस्कुराहट उसके चेहरे पर उभरती है, और उस आनंददायक हवा में एक अच्छी-सी खुशबू व्याप्त हो जाती है; जैसे ही मंद हवा का झोंका बहना शुरू होता है, मनुष्य को उस मनमोहक खुशबू का पता चल जाता है, और ऐसा लगता है कि वह उस से मदहोश हो गया है, और अपने को जगाने में असमर्थ है। यही वह समय है जब मैं मनुष्य के मध्य में व्यक्तिगत रूप से आया हूँ, और मनुष्य के पास तीव्र सुगन्ध का बढ़ा हुआ एहसास है, और इस प्रकार सभी मनुष्य इस महक के बीच जीवन बिताते हैं। मैं मनुष्य के साथ शान्ति से हूँ, वह मेरे साथ मेल से रहता है, मेरा सम्मान करने में वह विचलित नहीं होता, अब मैं मनुष्य की कमियों को काटता-छांटता नहीं हूँ, अब मनुष्य के चेहरे पर तनाव नहीं दिखता, और न ही अब मृत्यु सम्पूर्ण मानवजाति को धमकाती है। आज, मैं मनुष्य के साथ-साथ चलते हुए ताड़ना के युग में आगे बढ़ता हूँ। मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, यानी कि, मैं मनुष्यों के मध्य अपनी लाठी से प्रहार करता हूँ और मनुष्यों में जो कुछ विद्रोही है, यह उस पर गिरती है। ऐसा लगता है कि मनुष्य की नज़रों में मेरी लाठी में विशेष शक्तियाँ हैं : यह उन सभी पर आ पड़ती है जो मेरे शत्रु हैं और आसानी से उन्हें छोड़ती नहीं; उन सब पर जो मेरा विरोध करते हैं, यह लाठी अपना अंतर्निहित कार्य करती है; वे सभी जो मेरे हाथों में हैं वे मेरे इरादों के अनुसार अपने कर्तव्यों को निभाते हैं, और उन्होंने कभी मेरी इच्छाओं की अवहेलना नहीं की है या अपने मूल तत्व को नहीं बदला है। परिणाम स्वरूप, पानी गरजेंगे, पहाड़ गिर जायेंगे, बड़ी-बड़ी नदियाँ विभाजित हो जायेंगी, मनुष्य सदा सर्वदा बदलता रहेगा, सूर्य धुँधला हो जाएगा, चाँद अंधकारमय हो जाएगा, मनुष्य के पास शांति से जीने के लिए और अधिक दिन नहीं होंगे, भूमि पर शान्ति का और अधिक समय नहीं होगा, स्वर्ग फिर दोबारा कभी शांत और खामोश नहीं रहेगा, और अधिक सहन नहीं करेगा। सभी चीज़ें नई कर दी जाएँगी और अपने मूल रूप को फिर से पा लेंगी। पृथ्वी पर सारे घर-परिवार अलग-अलग बिखेर दिए जाएँगे, और पृथ्वी पर सारे राष्ट्र अलग-अलग कर दिए जाएँगे; पति और पत्नी के बीच पुनर्मिलन के वे दिन चले जाएँगे, माँ और बेटा दोबारा आपस में नहीं मिलेंगे, और न ही पिता और बेटी फिर कभी आपस में मिल पाएँगे। जो कुछ भी पृथ्वी पर पाया जाता है वह मेरे द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा। मैं लोगों को अपनी भावनाओं को प्रकट करने

का अवसर नहीं देता, क्योंकि मैं भावना-रहित हूँ, और चरम कोटि तक लोगों की भावनाओं से घृणा करने लगा हूँ। लोगों के बीच की भावनाओं के कारण ही मुझे एक तरफ कर दिया गया है, और इस रीति से मैं उनकी नज़रों में "अन्य" बन गया हूँ; लोगों के बीच की भावनाओं के कारण ही मैं भुला दिया गया हूँ। यह मनुष्य की भावनाओं के कारण है कि वह अपने विवेक को पाने के लिए मिले अवसर को पकड़ लेता है। यह मनुष्य की भावनाओं के कारण है कि वह हमेशा मेरी ताड़नाओं से थका रहता है। यह मनुष्य की भावनाओं के कारण है कि वह मुझे पक्षपाती और अन्यायी कहता है, और कहता है कि चीज़ों को संभालते वक्त मैं मनुष्य की भावनाओं के प्रति असावधान होता हूँ। क्या पृथ्वी पर मेरे भी सगे-संबंधी हैं? किसने कभी, मेरी तरह, मेरे पूरे प्रबन्धन की योजना के लिए भोजन या नींद के बारे में न सोचते हुए, दिन रात काम किया है? मनुष्य की तुलना परमेश्वर से कैसे हो सकती है? वह कैसे परमेश्वर के सुसंगत हो सकता है? कैसे परमेश्वर, जो सृजन करता है, उस मनुष्य के जैसा हो सकता है, जिसे सृजित किया गया है? मैं कैसे पृथ्वी पर मनुष्य के साथ हमेशा रह सकता हूँ और उसके साथ मिलकर कार्य कर सकता हूँ? कौन मेरे हृदय के लिए चिंता महसूस कर सकता है? क्या ये मनुष्य की प्रार्थनाएँ हैं? मैं कभी मनुष्य के साथ जुड़ने और उसके साथ चलने के लिए सहमत हुआ था—और हाँ, आज के दिन तक मनुष्य ने मेरी देखभाल और सुरक्षा में जीवन बिताया है, परन्तु क्या कभी कोई ऐसा दिन आएगा जब मनुष्य मेरी देखभाल से अपने आपको अलग कर सकेगा? चाहे मनुष्य ने मेरे हृदय की परवाह का भार खुद पर कभी नहीं लादा है, लेकिन कौन बिना प्रकाश के, भूमि पर निरन्तर रह सकता है? यह केवल मेरी आशीषों के कारण है कि मनुष्य आज के दिन तक जीवित रहा है।

4 अप्रैल, 1992

अध्याय 29

जिस दिन सभी चीज़ें पुनर्जीवित हुईं, मैं मनुष्यों के बीच आया, और मैंने उनके साथ अद्भुत दिन और रातें बिताई हैं। केवल इस बिंदु पर ही मनुष्य को मेरी सुलभता का थोड़ा-सा एहसास होता है, और जैसे-जैसे मेरे साथ उसकी अंत:क्रिया बढ़ने लगती है, वह मेरी सत्ता और स्वरूप को थोड़ा-सा देखता है—और परिणामस्वरूप, वह मेरे बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त करता है। सभी लोगों के बीच, मैं अपना सिर उठाता हूँ और देखता हूँ, और वे सभी मुझे देखते हैं। फिर भी जब संसार पर आपदा आती है, तो वे तुरंत व्याकुल हो

जाते हैं, और उनके हृदयों से मेरी छवि ग़ायब हो जाती है; आपदा आने से घबराकर वे मेरे उपदेशों पर कोई ध्यान नहीं देते। मैंने मनुष्यों के बीच बहुत वर्ष बिताए हैं, फिर भी वह हमेशा अनभिज्ञ रहा है, और उसने मुझे कभी नहीं जाना है। आज मैं उसे यह अपने मुँह से बताता हूँ, और सभी लोगों से कहता हूँ कि वे मुझसे कुछ प्राप्त करने के लिए मेरे पास आएँ, पर वे मुझसे अभी भी अपनी दूरी बनाए हुए हैं, और इसलिए वे मुझे नहीं जानते। जब मेरे कदम ब्रह्मांड भर में और पृथ्वी के छोरों तक पड़ेंगे, तब मनुष्य खुद पर चिंतन करना शुरू करेगा, और सभी लोग मेरे पास आएँगे और मेरे सामने दंडवत करेंगे तथा मेरी आराधना करेंगे। यह मेरे महिमा-मंडन का, मेरी वापसी का, और साथ ही मेरे प्रस्थान का भी दिन होगा। अब मैंने पूरी मानवजाति के बीच अपना कार्य आरंभ कर दिया है, और पूरे ब्रह्मांड में अपनी प्रबंधन योजना के अंतिम अंश की औपचारिक शुरुआत कर दी है। इस क्षण से आगे, जो कोई भी सावधान नहीं हैं, वे निर्मम ताड़ना में गोता लगाने के भागी होंगे, और यह किसी भी क्षण हो सकता है। यह इसलिए नहीं है क्योंकि मैं निर्दयी हूँ, बल्कि यह मेरी प्रबंधन योजना का एक चरण है; सभी को मेरी योजना के चरणों के अनुसार आगे बढ़ना होगा, और कोई भी मनुष्य इसे बदल नहीं सकता। जब मैं औपचारिक रूप से अपना कार्य शुरू करता हूँ, तो सभी लोग वैसे ही चलते हैं जैसे मैं चलता हूँ, इस तरह कि समस्त संसार के लोग मेरे साथ कदम मिलाते हुए चलने लगते हैं, संसार भर में "उल्लास" होता है, और मनुष्य को मेरे द्वारा आगे की ओर प्रेरित किया जाता है। परिणामस्वरूप, स्वयं बड़ा लाल अजगर मेरे द्वारा उन्माद और व्याकुलता की स्थिति में डाल दिया जाता है, और वह मेरा कार्य करता है और अनिच्छुक होने के बावजूद अपनी स्वयं की इच्छाओं का अनुसरण करने में समर्थ नहीं होता, और उसके पास मेरे नियंत्रण में समर्पित होने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहता। मेरी सभी योजनाओं में बड़ा लाल अजगर मेरी विषमता, मेरा शत्रु, और साथ ही मेरा सेवक भी है; उस हैसियत से मैंने उससे अपनी "अपेक्षाओं" को कभी भी शिथिल नहीं किया है। इसलिए, मेरे देहधारण के काम का अंतिम चरण उसके घराने में पूरा होता है। इस तरह से बड़ा लाल अजगर मेरी उचित तरीके से सेवा करने में अधिक समर्थ है, जिसके माध्यम से मैं उस पर विजय पाऊँगा और अपनी योजना पूरी करूँगा। जब मैं कार्य करता हूँ, तो सभी स्वर्गदूत निर्णायक युद्ध में मेरे साथ हो लेते हैं और अंतिम चरण में मेरी इच्छाएँ पूरी करने का दृढ़ निश्चय करते हैं, ताकि पृथ्वी के लोग मेरे सामने स्वर्गदूतों के समान समर्पण कर दें, और मेरा विरोध करने की इच्छा न करें, और ऐसा कुछ न करें जो मेरे विरुद्ध विद्रोह करता हो। समस्त संसार में ये मेरे कार्य की गतिशीलताएँ हैं।

मनुष्यों के बीच मेरे आगमन का उद्देश्य और महत्व संपूर्ण मानवजाति को बचाना, संपूर्ण मानवजाति को अपने परिवार में वापस लाना, स्वर्ग और पृथ्वी को फिर से मिलाना, और मनुष्य से स्वर्ग और पृथ्वी के बीच "संकेतों" का संप्रेषण करवाना है, क्योंकि मनुष्य का अंतर्निहित कार्य ऐसा ही है। जब मैंने मानवजाति का सृजन किया था, उस समय मैंने मानवजाति के लिए सभी चीज़ें तैयार की थीं, और बाद में मैंने मानवजाति को अपनी अपेक्षाओं के अनुसार वह संपत्ति प्राप्त करने की अनुमति दी, जो मैंने उसे दी थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह मेरे मार्गदर्शन के अंतर्गत है कि संपूर्ण मानवजाति आज यहाँ तक पहुँची है। और यह सब मेरी योजना है। संपूर्ण मानवजाति के बीच अनगिनत संख्या में लोग मेरे प्रेम की सुरक्षा में विद्यमान हैं, और अनगिनत संख्या में ही लोग मेरी घृणा की ताड़ना के अधीन रहते हैं। यद्यपि सभी लोग मुझसे प्रार्थना करते हैं, फिर भी वे अपनी वर्तमान परिस्थितियों को बदलने में असमर्थ हैं; एक बार जब वे आशा खो देते हैं, तो वे केवल प्रकृति को अपना काम करने दे सकते हैं और मेरी अवज्ञा करने से रुक सकते हैं, क्योंकि बस इतना ही मनुष्य द्वारा किया जा सकता है। जब मनुष्य के जीवन की स्थिति की बात आती है, तो मनुष्य को अभी भी वास्तविक जीवन को ढूँढ़ना शेष है, उसने अभी भी अन्याय, वीरानी और संसार की दयनीय स्थितियों का हल नहीं निकाला है—और इसलिए, अगर यह आपदा के आगमन के लिए न होता, तो अधिकतर लोग अभी भी प्रकृति माँ को गले से लगाते, और अभी भी अपने आपको "जीवन" के स्वाद में तल्लीन कर देते। क्या यह संसार की सच्चाई नहीं है? क्या यह उस उद्धार की आवाज़ नहीं है, जिसे मैं मनुष्य से कहता हूँ? क्यों मानवजाति में से कभी भी किसी ने मुझसे सच में प्रेम नहीं किया है? क्यों मनुष्य केवल ताड़ना और परीक्षणों के बीच ही मुझसे प्रेम करता है, और कोई भी मेरी सुरक्षा के अधीन मुझसे प्रेम नहीं करता? मैंने कई बार मानवजाति को ताड़ना दी है। वे उस पर एक नज़र डालते हैं, लेकिन फिर वे उसे अनदेखा कर देते हैं, और वे उस समय इसका अध्ययन और मनन नहीं करते, और इसलिए मनुष्य के ऊपर जो कुछ भी आकर पड़ता है, वह है निष्ठुर न्याय। यह मेरे कार्य करने के तरीकों में से केवल एक तरीका है, परंतु यह फिर भी मनुष्य को बदलने और उसे मुझसे प्रेम करवाने के लिए है।

मैं राज्य में शासन करता हूँ, और इतना ही नहीं, मैं पूरे ब्रह्मांड में शासन करता हूँ; मैं राज्य का राजा और ब्रह्मांड का मुखिया दोनों हूँ। अब से मैं उन सभी को इकट्ठा करूँगा, जो चुने हुए नहीं हैं और अन्यजातियों के बीच अपना कार्य आरंभ करूँगा, और मैं पूरे ब्रह्मांड के लिए अपनी प्रशासनिक आज्ञाओं की घोषणा करूँगा, ताकि मैं सफलतापूर्वक अपने कार्य के अगले चरण की शुरुआत कर सकूँ।

अन्यजातियों के बीच अपने कार्य को फैलाने के लिए मैं ताड़ना का उपयोग करूँगा, जिसका अर्थ है कि मैं उन सभी के विरूद्ध बल का उपयोग करूँगा, जो अन्यजातियाँ हैं। स्वाभाविक रूप से, यह कार्य उसी समय किया जाएगा, जिस समय मेरा कार्य चुने हुओं के बीच किया जाएगा। जब मेरे लोग पृथ्वी पर शासन करेंगे और सामर्थ्य का उपयोग करेंगे, तो यही वह दिन भी होगा जब पृथ्वी के सभी लोगों को जीत लिया जाएगा, और, इससे भी बढ़कर, यही वह समय होगा जब मैं विश्राम करूँगा—और केवल तभी मैं उन सबके सामने प्रकट होऊँगा, जिन्हें जीता जा चुका है। मैं पवित्र राज्य के लिए प्रकट होता हूँ, और अपने आपको मलिनता की भूमि से छिपा लेता हूँ। वे सभी, जिन्हें जीता जा चुका है और जो मेरे सामने आज्ञाकारी बन गए हैं, अपनी आँखों से मेरे चेहरे को देखने और अपने कानों से मेरी आवाज़ सुनने में समर्थ हैं। यह उन लोगों के लिए आशीष है, जो अंत के दिनों में पैदा हुए हैं, यह मेरे द्वारा पहले से ही नियत किया गया आशीष है, और यह किसी भी मनुष्य के द्वारा अपरिवर्तनीय है। आज मैं भविष्य के कार्य के वास्ते इस तरीके से कार्य करता हूँ। मेरा समस्त कार्य परस्पर-संबंधित है, इस सबमें एक आह्वान और अनुक्रिया है : कभी भी कोई चरण अचानक नहीं रुका है, और कभी भी किसी भी कदम को किसी भी अन्य कदम से स्वतंत्र रूप से नहीं किया गया है। क्या यह ऐसा नहीं है? क्या अतीत का कार्य आज के कार्य की नींव नहीं है? क्या अतीत के वचन आज के वचनों के अग्रदूत नहीं हैं? क्या अतीत के चरण आज के चरणों के उद्गम नहीं हैं? जब मैं औपचारिक रूप से पुस्तक खोलता हूँ, तो ऐसा तब होता है जब संपूर्ण ब्रह्मांड में लोगों को ताड़ना दी जाती है, जब दुनिया भर के लोगों को परीक्षणों के अधीन किया जाता है, और यह मेरे काम की पराकाष्ठा है; सभी लोग एक प्रकाशरहित भूमि में रहते हैं, और सभी लोग अपने वातावरण द्वारा खड़े किए गए ख़तरे के बीच रहते हैं। दूसरे शब्दों में, यही वह जीवन है, जिसे मनुष्य ने सृष्टि की उत्पत्ति के समय से आज के दिन तक कभी अनुभव नहीं किया है, और युगों-युगों से किसी ने भी इस प्रकार के जीवन का "आनंद" नहीं लिया है, और इसलिए मैं कहता हूँ कि मैंने वह कार्य किया है, जो पहले कभी नहीं किया गया है। यह मामलों की वास्तविक स्थिति है, और यही आंतरिक अर्थ है। चूँकि मेरा दिन समस्त मानवजाति के नज़दीक आ रहा है, चूँकि यह दूर प्रतीत नहीं होता, परंतु यह मनुष्य की आँखों के बिल्कुल सामने ही है, तो परिणामस्वरूप कौन भयभीत नहीं हो सकता? और कौन इसमें आनंदित नहीं हो सकता? बेबिलोन का गंदा शहर अंततः अपने अंत पर आ गया है; मनुष्य फिर से एक बिलकुल नए संसार से मिला है, और स्वर्ग और पृथ्वी परिवर्तित और नवीकृत कर दिए गए हैं।

जब मैं सभी राष्ट्रों और सभी लोगों के सामने प्रकट होता हूँ, तो आसमान में सफेद बादल घुमड़ने लगते हैं और मुझे घेर लेते हैं। इसी प्रकार, पृथ्वी पर वातावरण को उभारते पृथ्वी के पक्षी भी मेरे लिए आनंद के साथ गाते और नृत्य करते हैं, और इस प्रकार पृथ्वी की सभी चीज़ों के सजीव होने का कारण बनते हैं, ताकि वे अब और "धीरे-धीरे नीचे की ओर न बहें", बल्कि इसके बजाए जीवन-शक्ति से भरे हुए वातावरण के बीच जिएँ। जब मैं बादलों के मध्य होता हूँ, तो मनुष्य मेरे चेहरे और मेरी आँखों को धुँधले रूप में ही देखता है, और उस समय वह थोड़ा भयभीत अनुभव करता है। अतीत में उसने मुझसे संबंधित ऐतिहासिक अभिलेखों को किंवदंतियों में सुना था, जिसके परिणामस्वरूप वह मेरे प्रति केवल आधा विश्वासी है और बाकी आधा संदिग्ध है। वह नहीं जानता कि मैं कहाँ हूँ, या मेरा चेहरा आखिर कितना बड़ा है—वह समुद्र के समान विशाल है या हरे चरागाहों जितना असीम है? कोई इन चीज़ों को नहीं जानता। जब आज मनुष्य मेरा चेहरा बादलों में देखता है, केवल तभी वह महसूस करता है कि किंवदंती में वर्णित मैं वास्तविक हूँ, और इसलिए वह मेरे प्रति थोड़ा अधिक अनुकूल हो जाता है और यह केवल मेरे कर्मों के कारण है कि मेरे लिए उसकी प्रशंसा थोड़ी बढ़ जाती है। परंतु मनुष्य अभी भी मुझे नहीं जानता और वह बादलों में मेरा केवल एक ही अंश देखता है। उसके बाद मैं अपनी बाँहें फैलाता हूँ और उन्हें मनुष्य को दिखाता हूँ। मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाता है, और मेरे हाथों मार गिराए जाने से अत्यधिक भयभीत होकर अचानक अपने हाथ अपने मुँह पर रख लेता है, और इस प्रकार वह अपनी प्रशंसा में थोड़ा आदर मिला देता है। मनुष्य इस बात से बेहद डरकर मेरी हर हलचल के ऊपर अपनी आँखें टिकाए रहता है, कि ध्यान न देने पर वह मेरे द्वारा मार न गिराया जाए—फिर भी मनुष्य द्वारा देखे जाने से मैं प्रतिबंधित नहीं होता, और मैं अपने हाथों के कार्यों को करना जारी रखता हूँ। यह केवल उन सभी कर्मों के कारण है, जिन्हें मैं करता हूँ, कि मनुष्य मेरे प्रति कुछ अनुकूल है, और इस कारण मुझसे जुड़ने के लिए धीरे-धीरे मेरे सामने आता है। मैं जब अपनी संपूर्णता में मनुष्य के सामने प्रकट होऊँगा, तो मनुष्य मेरा चेहरा देखेगा, और उसके बाद से मैं मनुष्य से अपने आपको और नहीं छिपाऊँगा या अव्यक्त नहीं करूँगा। संपूर्ण ब्रह्मांड में मैं सभी लोगों के सामने सार्वजनिक रूप से प्रकट होऊँगा, और रक्त और माँस से बने सभी प्राणी मेरे सभी कर्मों को देखेंगे। सभी आत्मावान लोग निश्चित ही मेरे परिवार में शांति से रहेंगे, और वे निश्चित रूप से मेरे साथ अद्‌भुत आशीषों का आनंद उठाएँगे। वे सभी, जिनकी मैं परवाह करता हूँ, निश्चित रूप से ताड़ना से बच जाएँगे, और निश्चित रूप से आत्मा की पीड़ा और देह की यंत्रणा से दूर रहेंगे। मैं सभी लोगों के सामने

सार्वजनिक रूप से प्रकट होऊँगा और शासन करूँगा और सामर्थ्य का उपयोग करूँगा, ताकि लाशों की दुर्गंध संपूर्ण ब्रह्मांड में अब और न फैले; इसके बजाय मेरी मोहक सुगंध पूरे संसार में फैल जाएगी, क्योंकि मेरा दिन नज़दीक आ रहा है, मनुष्य जाग रहा है, पृथ्वी पर हर चीज़ व्यवस्थित है, और पृथ्वी के बचे रहने के दिन अब और नहीं रहे हैं, क्योंकि मैं पहुँच गया हूँ!

6 अप्रैल, 1992

अध्याय 30

मनुष्य के बीच मैंने एक बार आदमी की अवज्ञा और कमजोरी को संक्षेप में प्रस्तुत किया और इस प्रकार मैंने मनुष्य की कमजोरी को समझा और उसकी अवज्ञा को जाना। मनुष्य के बीच पहुँचने से पहले, मैं लंबे समय से मनुष्यों के सुखों और दुःखों को समझने लगा था—और इस वजह से मैं वह करने में सक्षम हूँ, जिसे मनुष्य नहीं कर सकता और वह कहने में सक्षम हूँ, जिसे मनुष्य नहीं कह सकता और मैं ऐसा आसानी से करता हूँ। क्या यह मेरे और मनुष्य के बीच अंतर नहीं है? और क्या यह एक स्पष्ट अंतर नहीं है? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरा कार्य मांस और रक्त के लोगों द्वारा प्राप्त करने योग्य है? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं उसी प्रकार का हूँ, जैसा सृजन किए गए प्राणी हैं? लोगों ने मुझे एक समान प्रकार के प्राणी में स्थान दिया है—और क्या यह इस वजह से नहीं कि वे मुझे नहीं जानते हैं? क्यों, मनुष्य के बीच में ऊँचे उठने के बजाय, मुझे स्वयं को विनम्र बनाना चाहिए? क्यों मानवजाति मुझे छोड़े रखती है, क्यों मानवजाति मेरे नाम को घोषित करने में अक्षम है? मेरे हृदय में बहुत दुःख है, लेकिन लोग कैसे जान सकते हैं? वे कैसे देख सकते हैं? जीवन भर मुझसे संबंधित चीज को कभी भी अत्यंत महत्व का न मानने से लोग स्तब्ध और भ्रांत हो गए हैं, मानो उन्होंने अभी-अभी कोई नींद की गोली ली हो; जब मैं उन्हें पुकारता हूँ, वे बस सपने देख रहे होते हैं और इसलिए किसी को भी कभी भी मेरे कर्मों के बारे में पता नहीं चला है। आज, अधिकांश लोग अभी भी घोर निद्रा में हैं। केवल जब राज्य-गान बजता है तभी वे अपनी उनींदी आँखें खोलते हैं और अपने हृदयों में थोड़ा अवसाद महसूस करते हैं। जब मेरी छड़ी मानवजाति के बीच प्रहार करती है, वे तब भी थोड़ा-सा ही ध्यान देते हैं, मानो उनका भाग्य समुद्र की रेत के समान महत्वहीन हो। हालाँकि उनमें से अधिकांश में जागरूकता होती है, तब भी वे यह नहीं जानते हैं कि मेरे कदम कितने दूर निकल चुके हैं—क्योंकि वे मेरे हृदय को समझने की परवाह नहीं करते हैं और इसलिए शैतान के बंधन से

स्वयं को मुक्त कराने में कभी भी समर्थ नहीं हुए हैं। मैं सब चीजों से ऊपर चलता हूँ और सभी चीजों के बीच रहता हूँ और उसके साथ-साथ मैं सभी लोगों के हृदयों में अहम् स्थान धारण करता हूँ। इस कारण लोग मुझे यह मानते हुए कि मैं असाधारण हूँ या फिर मैं अथाह हूँ, भिन्न रूप में देखते हैं—और परिणामस्वरूप, मुझ पर उनका विश्वास हर दिन मज़बूत होता जाता है। मैंने एक बार जगत के सभी लोगों और चीजों पर निगरानी रखते हुए तीसरे स्वर्ग में विश्राम किया। जब मैं सोता हूँ, तो लोग शांत हो जाते हैं और मेरे विश्राम में ख़लल डालने से बेहद डरते हैं। जब मैं जागता हूँ, तो वे तुरंत सजीव हो जाते हैं, मानो वे स्पष्ट रूप से मुझे खुश करने का कार्य कर रहे हों। क्या यह पृथ्वी पर लोगों का मेरे प्रति रवैया नहीं है? आज के लोगों में से कौन मुझे स्वर्ग में और धरती पर एक ही रूप में देखता है? कौन स्वर्ग में मेरा सम्मान नहीं करता है? और कौन पृथ्वी पर मुझे तुच्छ नहीं समझता है? क्यों मनुष्य सदैव मेरी धज्जियाँ उड़ाता रहता है? क्यों मनुष्य मेरे प्रति सदैव दो भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण रखता है? क्या पृथ्वी पर देहधारी परमेश्वर वह परमेश्वर नहीं है, जो स्वर्ग में सब आज्ञाएँ देता है? क्या स्वर्ग का मैं अब पृथ्वी पर नहीं है? क्यों लोग मुझे देखते हैं लेकिन मुझे जानते नहीं हैं? स्वर्ग और पृथ्वी के बीच इतनी बड़ी दूरी क्यों है? क्या ये बातें मनुष्य द्वारा अधिक गहराई से जांच किए जाने योग्य नहीं हैं?

जब मैं अपना कार्य करता हूँ, और उस दौरान जब मैं कथन व्यक्त करता हूँ, तो लोग सदैव इसमें "मसाला" जोड़ना चाहते हैं, मानो उनकी गंध की इंद्रिय मेरी अपेक्षा अधिक तीव्र है, मानो वे तीखा स्वाद पसंद करते हैं और मानो मैं इस बात से अनभिज्ञ हूँ कि मनुष्य को किस चीज की आवश्यकता है और इसलिए अपने कार्य की "पूर्ति" के लिए मनुष्य को "परेशान" करना होगा। मैं जानबूझकर लोगों की सकारात्मकता को कम नहीं करता हूँ, बल्कि मुझे जानने के आधार पर मैं उन्हें अपने आप को स्वच्छ बनाने के लिए कहता हूँ। क्योंकि उनमें बहुत कमी है, इसलिए मैं सुझाव देता हूँ कि मेरे हृदय को संतुष्ट करने हेतु अपनी कमियों को दूर करने के लिए वे अधिक प्रयास करें। लोग किसी समय मुझे अपनी धारणाओं में जानते थे, फिर भी वे इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ थे और इस प्रकार उनकी खुशी रेत को सोना मानने के समान थी। जब मैंने उन्हें याद दिलाया, तो उन्होंने केवल इस के एक हिस्से को ही छोड़ा, किंतु उस हिस्से को जो चला गया था चांदी और सोने की चीजों से बदलने के बजाय, जो चीजें उनके हाथों में अभी भी थीं, उन्होंने उनका आनंद लेना जारी रखा—और इसके परिणामस्वरूप, वे मेरे सामने सदैव विनम्र और धैर्यवान रहते हैं; वे मेरे अनुकूल होने में अक्षम हैं क्योंकि उनमें बहुत अधिक धारणाएँ हैं। इस प्रकार,

जो मनुष्य के पास है और जो मनुष्य है उसे मैंने ज़ब्त करने और इसे दूर फेंकने का मन बनाया, ताकि सभी मेरे साथ रह सकें तथा अब और मुझसे अलग न हों। यह मेरे कार्य के कारण ही है कि मनुष्य मेरी इच्छा को नहीं समझता है। कुछ का मानना है कि मैं अपने कार्य को दूसरी बार में पूरा करूँगा और उन्हें नरक में डालूँगा। कुछ का मानना है कि मैं बोलने का नया तरीका शुरू करूँगा और उनमें से अधिकांश डर से काँप जाएँगे : वे अत्यंत भयभीत हैं कि मैं अपना कार्य समाप्त कर दूँगा और उन्हें कहीं भी जाने लायक नहीं छोड़ूँगा और बेहद भयभीत हैं कि मैं उन्हें एक बार फिर से त्याग दूँगा। लोग मेरे नए कार्य को मापने के लिए सदैव पुरानी धारणाओं का उपयोग करते हैं। मैंने कहा कि लोगों ने उस तरीके को कभी भी नहीं समझा था, जिसके द्वारा मैं कार्य करता हूँ—क्या वे इस बार स्वयं का अच्छा हिसाब दे सकते हैं? क्या लोगों की पुरानी धारणाएँ मेरे कार्य में रुकावट डालने वाले हथियार नहीं हैं? जब मैं लोगों से बात करता हूँ, तो वे मुझसे नज़रें चुराते हैं और बेहद डरे हुए होते हैं कि मेरी आँखें उन पर ठहर जाएँगी। इस प्रकार, वे अपने सिरों को झुका लेते हैं मानो मेरे निरीक्षण को स्वीकार कर रहे हों—और क्या ये उनकी धारणाओं के कारण नहीं है? ऐसा क्यों है कि मैंने आज तक अपने आप को विनम्र बनाया हुआ है, किंतु किसी ने भी कभी ध्यान नहीं दिया है? क्या मनुष्य के लिए मुझे झुकना चाहिए? मैं स्वर्ग से पृथ्वी पर आया, मैंने ऊँचे स्थान पर से एक गुप्त स्थान में अवरोहण किया है और मनुष्य के बीच में आया और जो कुछ मेरे पास है और जो मैं हूँ, वह सब कुछ उसके लिए प्रकट किया। मेरे वचन ईमानदार और सच्चे, धैर्यपूर्ण और दयालु हैं—लेकिन कभी किसी ने देखा है कि मैं क्या हूँ और मेरे पास क्या है? क्या मैं अभी भी मनुष्य के लिए छिपा हुआ हूँ? मनुष्य से मिलना मेरे लिए इतना कठिन क्यों है? क्या ऐसा इसलिए है कि लोग अपने कार्य में बहुत व्यस्त हैं? क्या ऐसा इसलिए है कि मैं अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर रहा हूँ और सभी लोग सफलता की तलाश करने का इरादा रखते हैं?

लोगों के मन में, परमेश्वर परमेश्वर है और उससे आसानी से नहीं जुड़ सकते, जबकि मनुष्य मनुष्य है और उसे आसानी से स्वच्छंद नहीं होना चाहिए—फिर भी लोगों के कर्मों को मेरे सामने नहीं लाया जा सकता। कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी अपेक्षाएँ बहुत अधिक हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि आदमी बहुत कमज़ोर है? क्यों लोग सदैव उन मानकों को देखते हैं, जिनकी मुझे दूर से अपेक्षा है? क्या वे वास्तव में मनुष्य द्वारा अप्राप्य हैं? मेरी अपेक्षाओं की गणना लोगों की "बनावट" के आधार पर की जाती है और इसलिए कभी भी मनुष्य के आध्यात्मिक कद से आगे नहीं होती—किंतु तब भी, लोग उन मानकों को प्राप्त करने में असमर्थ

रहते हैं, जिनकी मैं अपेक्षा करता हूँ। असंख्य बार मुझे मनुष्यों के बीच छोड़ दिया गया है, असंख्य बार लोगों ने मुझे उपहासपूर्ण नज़रों से देखा है, मानो मेरा शरीर काँटों से आच्छादित हो और उनके लिए घृणास्पद हो और इस प्रकार लोग मुझसे घृणा करते हैं और मानते हैं कि मैं महत्वहीन हूँ। इस तरह, मैं मनुष्य द्वारा आगे और पीछे ठेला जाता हूँ। असंख्य बार लोग मुझे कम मूल्य पर घर लाए हैं और असंख्य बार उन्होंने मुझे उच्च मूल्य पर बेचा है और इसी वजह से मैं स्वयं को उस स्थिति में पाता हूँ, जिसमें मैं आज हूँ। ऐसा लगता है जैसे कि लोग अभी भी मेरे बारे में षडयंत्र रच रहे हैं; उनमें से अधिकांश अभी भी सैकड़ों-लाखों डॉलर के लाभ के लिए मुझे बेच देना चाहते हैं क्योंकि मनुष्य ने मुझे कभी भी प्यार नहीं किया है। ऐसा लगता है जैसे कि मैं लोगों के बीच मध्यस्थ या कोई परमाणु हथियार बन गया हूँ, जिसे लेकर वे एक-दूसरे से लड़ते हैं या उनके बीच हस्ताक्षरित कोई समझौता बन गया हूँ—और परिणामस्वरूप कुल मिलाकर मनुष्य के हृदय में मेरा बिल्कुल कोई मूल्य नहीं है, मैं एक अनावश्यक घरेलू सामान हूँ। फिर भी मैं इसकी वजह से मनुष्य की निंदा नहीं करता हूँ; मैं तो बस मनुष्य को बचाने का ही कार्य करता हूँ और मनुष्य के प्रति सदैव करुणामय रहा हूँ।

लोगों का मानना है कि मैं लोगों को नरक में डालकर निश्चिंत महसूस करूँगा, मानो मैं नरक के साथ कोई विशेष सौदा कर रहा हूँ और मानो मैं किसी प्रकार का विभाग हूँ, जिसकी लोगों को बेचने में विशेषज्ञता है, मानो मैं लोगों को ठगने में विशेषज्ञ हूँ और एक बार मेरे हाथों में आ जाने पर मैं उन्हें एक उच्च मूल्य पर बेच दूँगा। लोग मुँह से ऐसा नहीं कहते हैं, किंतु अपने हृदयों में वे यही मानते हैं। यद्यपि वे सभी मुझे प्यार करते हैं, वे ऐसा गुप्त रूप से करते हैं। क्या इतने थोड़े-से प्यार के लिए मैंने इतनी बड़ी कीमत चुकाई है और इतना अधिक खपाया है? लोग धोखेबाज हैं और मैं सदैव धोखा खाए हुए की भूमिका में होता हूँ। यह ऐसा है मानो कि मैं बहुत निश्छल हूँ : एक बार जब वे इस कमजोर बिंदु को देख लेते हैं, तो वे मेरे साथ धोखा करते रहते हैं। मेरे मुँह के वचनों का अर्थ लोगों को मृत्यु देना नहीं है या उन पर यूँ ही ठप्पा लगाना नहीं है—वे मनुष्य की वास्तविकता हैं। शायद मेरे कुछ वचन "बहुत दूर चले जाते" हैं, जिसके लिए मैं केवल लोगों से क्षमा की "प्रार्थना" कर सकता हूँ; क्योंकि मैं मनुष्य की भाषा में "कुशल" नहीं हूँ, मैं जो कुछ कहता हूँ उसमें से बहुत-सा लोगों की माँगों को संतुष्ट करने में अक्षम है। शायद मेरे कुछ वचन लोगों के हृदयों को चुभ जाते हैं, इसलिए मैं केवल "प्रार्थना" कर सकता हूँ कि वे सहनशील रहें; क्योंकि मैं मनुष्य के जीवन जीने के दर्शन में कुशल नहीं हूँ और जिस तरीके से बोलता हूँ उसके बारे में विशिष्ट नहीं

हूँ, मेरे बहुत से वचन लोगों में शर्मिंदगी उत्पन्न कर सकते हैं। शायद मेरे कुछ वचन लोगों की बीमारी के मूल की बात करते हैं और उनकी बीमारी को उजागर करते हैं और इसलिए मैं उन कुछ दवाओं को लेने की सलाह देता हूँ, जो मैंने तुम्हारे लिए लिए तैयार की हैं क्योंकि मेरा तुम्हें चोट पहुँचाने का कोई इरादा नहीं है और इस दवा के कोई दुष्प्रभाव नहीं हैं। शायद मेरे कुछ वचन "वास्तविक" प्रतीत नहीं होते हों, किंतु मैं लोगों से आतंकित न होने की "प्रार्थना" करता हूँ—मैं हाथ और पैर से "दक्ष" नहीं हूँ, इसलिए मेरे वचन अभी भी अभ्यास में लाए जाने हैं। मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे प्रति "सहिष्णु" बनें। क्या ये वचन मनुष्य के लिए सहायक हैं? मुझे आशा है कि लोग इन वचनों में से कुछ प्राप्त कर सकते हैं, ताकि हमेशा मेरे वचन व्यर्थ न हों।

9 अप्रैल, 1992

अध्याय 31

मेरे लिए लोगों के हृदय में कभी भी जगह नहीं रही है। जब मैं वास्तव में लोगों की खोज करता हूँ, तो वे अपनी आँखों को भींच कर बंद कर लेते हैं और मेरे कार्यकलापों की अनदेखी करते हैं, मानो कि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह उन्हें खुश करने का एक प्रयास है, जिसके परिणामस्वरूप वे सदैव मेरे कार्यकलापों से घृणा करते हैं। यह कुछ ऐसा है मानो मुझमें किसी तरह के आत्म-बोध का अभाव हो, मानो मैं सदैव मनुष्य के सामने दिखावा करता हूँ, और इस कारण उन्हें क्रोध दिला देता हूँ जो "ईमानदार और धार्मिक" हैं। फिर भी, इस तरह की प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करते हुए भी मैं अपना कार्य जारी रखता हूँ। इसलिए, मैं कहता हूँ कि मैंने मनुष्य के अनुभव के खट्टे-मीठे, कड़वे और तीखे स्वादों को चखा है, और मैं हवा के साथ आता हूँ और बारिश के साथ चला जाता हूँ; मैं कहता हूँ कि मैंने परिवार के उत्पीड़न का अनुभव किया है, जीवन के उतार-चढ़ाव का अनुभव किया है, और शरीर से अलग होने की पीड़ा का अनुभव किया है। फिर भी, जब मैं पृथ्वी पर आया, तो लोगों के लिए मैंने जो इतनी कठिनाइयों का सामना किया, उस की वजह से मेरा स्वागत करने के बजाय, लोगों ने "नम्रतापूर्वक" मेरे अच्छे इरादों को अस्वीकार कर दिया। मुझे इससे पीड़ा कैसे न होती? मैं कैसे व्यथित न होता? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरा देह बनना मात्र इसलिए है कि सभी चीज़ों का अंत इस प्रकार हो? मनुष्य मुझे प्यार क्यों नहीं करता? लोगों ने मेरे प्रेम के बदले घृणा क्यों दी? कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरा इसी तरह से पीड़ित होना ज़रूरी है?

लोगों ने पृथ्वी पर मेरी कठिनाई की वजह से सहानुभूति के आँसू बहाए हैं, और मेरे दुर्भाग्य के अन्याय की निंदा की है। फिर भी मेरे हृदय को सचमुच में कौन जान पाया है? मेरी भावनाओं को कभी कौन समझ सकता है? किसी समय मनुष्य का मेरे प्रति गहरा स्नेह था, और कभी वह अपने सपनों में प्रायः मेरे लिए तरसता था—किंतु पृथ्वी पर रहने वाले लोग स्वर्ग में मेरी जो इच्छा है, उसे कैसे समझ सकते थे? यद्यपि कभी लोगों ने मेरी दुख की भावनाओं को महसूस किया था, किंतु एक पीड़ित साथी के रूप में किसमें कभी मेरे कष्टों के लिए सहानुभूति रही है? क्या ऐसा हो सकता है कि पृथ्वी पर मौजूद लोगों की अंतरात्मा मेरे दुखी हृदय को द्रवित कर सके और बदल सके? क्या पृथ्वी पर रहने वाले लोग मुझे अपने हृदयों के अकथनीय कष्ट को बताने में असमर्थ हैं? आत्माएँ और पवित्र आत्मा एक-दूसरे पर निर्भर हैं, किंतु देह के अवरोधों के कारण, लोगों के मस्तिषकों ने अपना "नियंत्रण खो दिया है।" मैंने एक बार लोगों को अपने सामने आने की याद दिलाई थी, किंतु मेरी पुकार लोगों से वह न करा सकी जो मैं चाहता था; वे आँसुओं से भरी आँखों से केवल आसमान में देखते थे, मानो कि वे अकथनीय मुसीबत बर्दाश्त कर रहे हों, मानो किसी चीज़ ने उनका रास्ता रोक रखा हो। इसलिए, वे अपने हाथ जोड़कर मुझसे याचना करते हुए स्वर्ग के नीचे झुक गए। क्योंकि मैं दयालु हूँ, इसलिए मैं मनुष्यों के बीच अपने आशीष प्रदान करता हूँ, और पलक झपकते ही, मनुष्यों के बीच मेरे व्यक्तिगत आगमन का क्षण आ जाता है—फिर भी मनुष्य स्वर्ग के प्रति अपनी शपथ को बहुत समय पहले भूल चुका है। क्या यह मनुष्य की अवज्ञा ही नहीं है? मनुष्य सदैव "विस्मरण" से ग्रस्त क्यों रहता है? क्या मैंने उसे छुरा भोंक दिया है? क्या मैंने उसके शरीर को धराशायी कर दिया है? मैं मनुष्य को अपने हृदय के भीतर की भावनाएँ बताता हूँ, पर वह सदैव मुझसे बचता क्यों है? लोगों की स्मृतियों में, ऐसा लगता है मानो उन्होंने कोई चीज़ खो दी है और यह कहीं नहीं मिल रही है, पर यह भी लगता है मानो उनकी स्मृतियाँ गलत हैं। इस प्रकार, लोग अपने जीवन में सदैव भुलक्कड़पन से पीड़ित रहते हैं, और समस्त मानवजाति के जीवन के दिन अव्यवस्था में रहते हैं। फिर भी कोई भी इसे ठीक करने के लिए कुछ नहीं करता है; लोग एक-दूसरे को रौंदने, और एक-दूसरे की हत्या करने के सिवाय और कुछ नहीं करते हैं, जिसके कारण आज की विनाशकारी पराजय की अवस्था आ गयी, और ब्रह्मांड की हर चीज़ गंदले पानी और कीचड़ में जा गिरी है, और उद्धार का कोई अवसर नहीं बचा है।

जब मैं समस्त लोगों के बीच आया, तो वही वह क्षण था जब लोग मेरे प्रति वफादार हुए। उसी समय, बड़े लाल अजगर ने भी लोगों पर अपने हत्यारे हाथ रखने शुरू कर दिए। मैंने "निमंत्रण" स्वीकार कर लिया

और मनुष्यजाति द्वारा मुझे दिए गए "निमंत्रण पत्र" को थामे मनुष्यों के बीच "भोज की मेज पर बैठने" चला आया। जब उन्होंने मुझे देखा, तो लोगों ने मुझ पर कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैंने अपने आप को भव्य वस्त्रों से नहीं सजाया था और मनुष्य के साथ मेज पर बैठने के लिए केवल अपना "पहचान पत्र" लाया था। मेरे चेहरे पर कोई महँगा श्रृंगार नहीं था, मेरे सिर पर कोई मुकुट नहीं था, और मैंने अपने पैरों में घर पर बने साधारण जूतों की जोड़ी पहनी हुई थी। जिस बात ने लोगों को सबसे अधिक निराश किया वह थी मेरे होंठों पर लिपस्टिक का न होना। इसके अलावा, मैं विनम्र वचन नहीं बोलता था, और मेरी जीभ किसी कुशल लेखक की कलम जैसी नहीं थी; इसके बजाय, मेरा प्रत्येक वचन मनुष्यों के अंतरतम हृदय को चीर देता था, जिससे लोगों पर मेरे मुँह का थोड़ा और "अनुकूल" प्रभाव पड़ गया। मेरी वेशभूषा का उपरोक्त विवरण लोगों द्वारा मुझे "विशेष सत्कार" दिए जाने के लिए पर्याप्त था, और इसलिए उन्होंने मेरे साथ देहात से आए किसी साधारण गँवार की तरह व्यवहार किया, जो सांसारिक ज्ञान और बुद्धि से रहित था। और जब हर किसी ने "धन के उपहार" सौंपें, तब भी लोगों ने मुझे सम्माननीय नहीं माना, बल्कि, वे झुँझलाए हुए, अपनी एड़ियों को घसीटते हुए, बिना किसी सम्मान के, मेरे सामने आए। जब मेरा हाथ फैला, तो वे झट-से हैरान हो गए, उन्होंने घुटने टेक दिए, और वे जय-जयकार करने लगे। उन्होंने मेरे सारे "आर्थिक उपहार" एकत्रित कर लिए। क्योंकि धनराशि बहुत बड़ी थी, उन्होंने झट-से मुझे एक करोड़पति समझ लिया और मेरी सहमति के बिना मेरे शरीर के फटे-चिटे कपड़ों को उतारकर मुझे नए कपड़े पहना दिए—फिर भी इससे मुझे खुशी नहीं हुई। क्योंकि मैं इस तरह के आरामदेह जीवन का अभ्यस्त नहीं था, और इस "प्रथम श्रेणी" के व्यवहार को तुच्छ समझता था, क्योंकि मैं पवित्र घर में पैदा हुआ था, और, ऐसा कहा जा सकता है कि, क्योंकि मैं "गरीबी" में पैदा हुआ था, इसलिए मैं विलासिता के जीवन का आदी नहीं था जहाँ लोग हाथ बांधे मेरे आगे-पीछे खड़े रहते हैं। मेरी केवल इतनी ही इच्छा है कि लोग मेरे हृदय की भावनाओं को समझ सकें, कि वे मेरे मुँह से निकले असुविधाजनक सत्यों को स्वीकार करने के लिए थोड़े कष्ट सहन कर सकें। क्योंकि मैं कभी भी सिद्धांत की बात नहीं कर पाया हूँ, न ही लोगों के साथ जुड़ने के लिए मानव जाति के सामाजिक मेलजोल के आचरण के रहस्यों का उपयोग करने में सक्षम रहा हूँ, और क्योंकि मैं लोगों की मुखाकृति या उनकी मनोवृति के अनुसार अपने वचनों को अनुकूल बनाने में अक्षम हूँ, इसलिए लोगों ने सदैव मुझसे घृणा की है, मुझे बातचीत के अयोग्य माना है, और कहा है कि मेरी तीखी जुबान है और लोगों को हमेशा चोट पहुँचाती है। फिर भी मेरे पास कोई विकल्प नहीं है : मैंने एक बार मनुष्य की मनोवृति का

"अध्ययन" किया था, एक बार मनुष्य के जीवन दर्शन का "अनुकरण" किया, और मनुष्य की भाषा सीखने के लिए एक बार "भाषा महाविद्यालय" में गया था, ताकि मैं उन साधनों में निपुण हो जाऊँ जिनके माध्यम से लोग बात करते हैं, और उनकी मुखाकृति के अनुकूल बोल सकूँ—किंतु यद्यपि मैंने बहुत प्रयास किए, और कई "विशेषज्ञों" के पास गया, फिर भी यह सब किसी काम नहीं आया। मुझमें कभी भी मानवता की कोई चीज़ नहीं रही है। इन सभी वर्षों में, मेरे प्रयासों का कभी ज़रा-सा भी परिणाम नहीं मिला है, मनुष्य की भाषा में मैं पूरी तरह अक्षम हूँ। इसलिए, मनुष्य के ये शब्द कि "कठिन परिश्रम का फल मिलता है" मुझसे "टकराकर" दूर चले जाते रहे हैं, और परिणामस्वरूप, ये शब्द पृथ्वी पर समाप्त हो जाते हैं। लोगों के महसूस किए बिना ही, पर्याप्त रूप से यह पुष्टि करते हुए कि ऐसे शब्द असमर्थनीय हैं, इस सूक्ति को स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है। इसलिए मैं मनुष्य से क्षमा माँगता हूँ, लेकिन इसमें करने के लिए कुछ नहीं है—किसने मुझे इतना "बेवकूफ" बनाया? मैं मनुष्य की भाषा सीखने में, जीवन दर्शन में कुशल बनने में, लोगों के साथ सामाजिक होने में अक्षम हूँ। मैं लोगों को केवल धैर्यवान बनने, अपने हृदयों के क्रोध को दबाने, मेरी वजह से अपने आप को चोट न पहुँचाने की सलाह देता हूँ। किसने हमारी आपस में बातचीत करवाई है? किसने हमें इस क्षण मिलवाया है? किसने हमसे समान आदर्शों को आपस में साझा करवाया है?

मेरा स्वभाव मेरे सभी वचनों में सर्वत्र झलकता है, फिर भी लोग इसे मेरे वचनों में समझने में अक्षम हैं। मैं जो कहता हूँ वे केवल उसकी बाल की खाल निकालते हैं—और इसका क्या फायदा है? क्या मेरे बारे में उनकी धारणाएँ उन्हें पूर्ण बनाती हैं? क्या पृथ्वी की चीज़ें मेरी इच्छा को पूरा कर सकती हैं? मैं लोगों को यह सिखाने का प्रयास करता रहा कि मेरे वचनों को कैसे बोला जाए, किंतु यह कुछ ऐसा था मानो मनुष्य की जुबान पर ताला लग गया था, और वह यह सीखने में कभी भी समर्थ नहीं हुआ कि मेरे वचनों को उस प्रकार से कैसे बोला जाए जैसे मैं चाहता हूँ। मैंने उसे मुँह-से-मुँह लगा कर सिखाया, फिर भी वह कभी भी सीखने में समर्थ नहीं हुआ। केवल इसके बाद ही मैंने एक नई खोज की : पृथ्वी पर रहने वाले लोग भला स्वर्ग के वचनों को कैसे बोल सकते थे? क्या इससे प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं होता? किंतु, मेरे प्रति लोगों के उत्साह और जिज्ञासा की वजह से, मैंने मनुष्य पर कार्य के दूसरे हिस्से को आरंभ कर दिया। मैंने मनुष्य को उसकी कमियों की वजह से कभी भी शर्मिंदा नहीं किया है, बल्कि इसके बजाय मनुष्य को उसकी कमियों के अनुसार प्रदान करता हूँ। केवल इस वजह से ही लोगों में मेरे बारे में थोड़ा अनुकूल

प्रभाव है, और मैं लोगों को एक बार फिर से इकट्ठा करने के लिए इस अवसर का उपयोग करता हूँ, ताकि वे मेरी समृद्धियों के अन्य हिस्से का आनंद ले सकें। इस क्षण, लोग एक बार फिर से ख़ुशी में डूबे हुए हैं, आसमान में रंग-बिरंगे बादलों के आसपास खुशी और हँसी मंद-मंद बह रही है। मैं मनुष्य का हृदय खोलता हूँ, और मनुष्य को तुरंत नयी जीवन-शक्ति मिल जाती है, और वह मुझसे अब और छुपने का इच्छुक नहीं है, क्योंकि उसने शहद के मीठे स्वाद को चख लिया है, और इसलिए वह अपने समस्त कबाड़ को बदलने के लिए ले आया है—मानो मैं कोई कचरा संग्रह केंद्र या कचरा प्रबंधन केंद्र बन गया हूँ। इस प्रकार, डाले गए "विज्ञापनों" को देखने के बाद, लोग मेरे सामने आते हैं और उत्सुकता से भाग लेते हैं, क्योंकि शायद वे सोच रहे हैं कि उन्हें कुछ "स्मारिकाएँ" प्राप्त हो सकती हैं, इसलिए वे सभी मुझे "पत्र" भेजते हैं ताकि वे उन कार्यक्रमों में हिस्सा ले सकें जिन्हें मैंने निर्धारित किया है। इस समय वे घाटे को लेकर भयभीत नहीं हैं, क्योंकि इन गतिविधियों से जुड़ी "पूँजी" बड़ी नहीं है, और इसलिए वे भागीदारी का जोखिम उठाने का साहस कर रहे हैं। यदि भाग लेने से कोई स्मारिकाएँ प्राप्त नहीं होतीं, तो लोग मैदान छोड़कर अपने पैसे वापस करने की माँग करेंगे, और मुझ पर बकाया "ब्याज" की गणना भी करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज के जीवन स्तर में वृद्धि हो गई है, यह "समृद्धि के मामूली स्तर" तक पहुँच गया है और इसने "आधुनिकीकरण" को प्राप्त कर लिया है, जिसमें कार्य की व्यवस्था करने के लिए "वरिष्ठ अधिकारी" व्यक्तिगत रूप से "देहात की ओर जा रहा है", इस कारण लोगों का विश्वास झटपट कई गुना बढ़ गया है—और क्योंकि उनका "गठन" बेहतर से बेहतर होता जा रहा है, इसलिए वे मुझे प्रशंसा से देखते हैं, और मेरा विश्वास प्राप्त करने के लिए मेरे साथ संलग्न होने के इच्छुक हैं।

11 अप्रैल, 1992

अध्याय 32

जब लोग मेरे साथ इकट्ठे होते हैं, तो मेरा हृदय आनन्द से भर जाता है। मैं मनुष्यों को तुरंत ही अपने हाथों से आशीर्वाद देता हूँ, कि लोग मेरे साथ मिल सकें, और ऐसे दुश्मन न बनें जो मेरी अवज्ञा करते हैं, बल्कि ऐसे मित्र बनें जो मेरे साथ संगत हों। इस प्रकार, मैं भी मनुष्य के साथ सहृदय तरीके से व्यवहार करता हूँ। मेरे कार्य में, मानव को एक उच्च-स्तरीय संगठन के सदस्य के रूप में देखा जाता है, इसलिए मैं उसकी ओर अधिक ध्यान देता हूँ, क्योंकि वह हमेशा से ही मेरे कार्य का उद्देश्य रहा है। मैंने लोगों के दिलों

में अपनी जगह बना ली है, ताकि वे अपने दिल में मेरे लिए सम्मान रखें—फिर भी वे पूरी तरह से अनजान हैं कि मैं ऐसा क्यों करता हूँ, और इंतजार करने के अलावा वे और कुछ भी नहीं करते। यद्यपि एक जगह है जो मैंने लोगों के दिलों में बनाई है, उनके लिए यह आवश्यक नहीं है कि मैं वहाँ बस जाऊं। इसके बजाय, वे अपने दिलों में "किसी पवित्र" के अचानक आ पहुँचने की प्रतीक्षा करते हैं। चूँकि मेरी पहचान बहुत "तुच्छ" है, मैं लोगों की माँगों से मेल नहीं खाता हूँ और इस प्रकार उनके द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता हूँ। वे "मुझे" उस रूप में चाहते हैं जो उच्च और शक्तिशाली हो, लेकिन जब मैं आया, तो मैं मनुष्य के सामने इस प्रकार प्रकट नहीं हुआ था और इसलिए वे दूर निगाहें टिकाये रहे, उसकी प्रतीक्षा करते रहे जो उनके दिलों में है। जब मैं लोगों के सामने आया, तो उन्होंने आम जनता के सामने मुझे अस्वीकार कर दिया। मैं केवल मनुष्य द्वारा "निपटारा किए जाने" का एक तरफ खड़े रह कर इंतजार कर सकता था, यह देखने के लिए कि लोग मेरे साथ, इस त्रुटिपूर्ण "उत्पाद" के साथ, आखिर क्या करेंगे। मैं लोगों के दागों को नहीं, बल्कि उनके उस हिस्से को देखता हूँ जो बेदाग़ है, और इससे संतुष्टि पाता हूँ। लोगों की आँखों में, मैं आकाश से उतरा हुआ एक "नन्हा सितारा" हूँ, मैं स्वर्ग में केवल सबसे छोटा हूँ, और आज धरती पर मेरा आगमन परमेश्वर ने नियुक्त किया था। परिणामस्वरूप, लोगों ने "मैं" और "परमेश्वर" शब्दों की अधिक व्याख्या दी है, वे परमेश्वर और मुझे एकसमान समझने को लेकर बेहद आशंकित हैं। क्योंकि मेरी छवि में परमेश्वर के प्रकटन का कोई अंश नहीं, इसलिए सभी लोग मानते हैं कि मैं एक सेवक हूँ जो परमेश्वर के परिवार का नहीं है, और वे कहते हैं कि यह परमेश्वर की छवि नहीं है। संभवतः ऐसे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर को देखा है—परन्तु मेरी धरती संबंधी अंतर्दृष्टि की कमी के कारण, परमेश्वर मेरे सामने कभी "प्रकट" नहीं हुआ है। शायद मेरे अंदर बहुत कम "आस्था" है, और इसलिए लोग मुझे तुच्छ समझते हैं। लोग सोचते हैं कि यदि कोई वास्तव में परमेश्वर है, तो वह निश्चित रूप से मनुष्य की भाषा में पारंगत होगा, क्योंकि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। लेकिन तथ्य इसके ठीक विपरीत हैं : न केवल मुझे मनुष्य की भाषा में महारत हासिल नहीं है, बल्कि कई बार ऐसा भी होता है जब मैं उसकी "कमियों" के लिए "प्रावधान" भी नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप, मैं थोड़ा "दोषी" महसूस करता हूँ क्योंकि मैं लोगों की "माँग" के अनुसार कार्य नहीं करता, बल्कि सिर्फ उनमें जो "कमियाँ" हैं, उसके अनुसार सामग्री तैयार करता हूँ और कार्य करता हूँ। जो माँग मैं मनुष्य से करता हूँ, वो किसी भी सूरत में ज्यादा नहीं है, फिर भी लोग ऐसा नहीं मानते हैं। इस प्रकार, उनकी "नम्रता" उनके हर कदम से प्रकट होती है। वे हमेशा मेरे आगे चलने को

प्रवृत्त होते हैं, मेरी अगुआई करते हुए, बहुत डरते हुए कि कहीं मैं खो न जाऊँ, भयातुर होते हैं कि मैं पहाड़ों के भीतर प्राचीन जंगलों में कहीं भटक जाऊँगा। नतीजतन, लोग हमेशा मेरी अगुआई करते रहते हैं, बहुत भयभीत रहते हैं कि मैं कालकोठरी में चला जाऊँगा। मेरे पास लोगों की आस्था की कुछ हद तक "अनुकूल छवि" है, क्योंकि उन्होंने भोजन या नींद के बारे में सोचे बिना मेरे लिए "परिश्रम" किया है, इस हद तक कि मेरे लिए उनके परिश्रम ने उनकी दिन-रात की नींद चुरा ली है और उनके बाल तक पका दिए—जो यह साबित करने के लिए काफी है कि उनकी आस्था ने सारे ब्रह्मांडों को "पार" कर लिया है और वह सभी युगों के प्रेरितों और नबियों से "बढ़कर" है।

मैं लोगों के महान कौशल के कारण ख़ुशी से तालियाँ नहीं पीटता, और न ही मैं उनकी कमियों की वजह से उन्हें निराशा से देखता हूँ। मैं केवल वही करता हूँ जो मेरे हाथों में है। मैं किसी की विशेष आवभगत नहीं करता, बल्कि बस अपनी योजना के अनुसार कार्य करता हूँ। फिर भी लोग मेरी इच्छा से अनजान हैं और मुझ से चीजों के लिए प्रार्थना करते रहते हैं, जैसे कि मेरे द्वारा उनको दिया गया धन उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ हो, जैसे कि माँग आपूर्ति से बढ़कर हो। लेकिन आज के युग में, सभी लोगों को "मुद्रास्फीति" के होने का एहसास है—नतीजतन, उनके हाथ उन चीज़ों से भरे हुए हैं जो मैंने उन्हें भोगने के लिए दी हैं। यही कारण है कि वे मुझसे ऊब जाते हैं, और इसलिए उनका जीवन अराजकता से भरा हुआ है, और वे इस बात से अनजान हैं कि उन्हें क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए। कुछ लोग उन चीजों को भी मुट्ठी में जकड़कर बैठ जाते हैं जो मैंने उन्हें भोगने के लिए दी हैं और बस उन्हें करीब से देखते रहते हैं। चूँकि लोग अकाल से पीड़ित होते थे, और आज के सुखों को पाने की स्थिति तक पहुँचना उनके लिए कोई आसान बात नहीं है, वे सभी "निरंतर आभारी हैं" और मेरे प्रति उनके दृष्टिकोण में कुछ बदलाव आया है। वे मेरे सामने रोते रहते हैं; चूँकि मैंने उन्हें बहुत कुछ दिया है, वे मेरा हाथ थामकर "कृतज्ञता के बोल" कहते रहते हैं। मैं विश्वों के ऊपर विहार करता हूँ, और ज्यों-ज्यों मैं चलता हूँ, मैं पूरे ब्रह्मांड के लोगों को देखता हूँ। धरती पर लोगों की भीड़ में, कभी भी कोई ऐसे नहीं रहे हैं जो मेरे कार्य के लिए उपयुक्त हों या जो मुझे सच्चाई से प्यार करते हों। इस प्रकार, इस समय मैं निराशा में आहें भरता हूँ, और लोग तुरंत बिखर जाते हैं, फिर न इकट्ठे होने के लिए, बुरी तरह से भयभीत होते हैं कि मैं उन्हें "एक ही जाल में पकड़ लूँगा।" मैं मनुष्यों के बीच आने के लिए इस मौके का इस्तेमाल करता हूँ, अपने कार्य को—उस कार्य को जो उचित है—इन बिखरे लोगों के बीच करने के लिए, उन लोगों का चयन

करते हुए जिनमें कार्य करना मेरे लिए अनुकूल है। मैं अपनी ताड़ना के बीच में लोगों को "रोकना" नहीं चाहता हूँ कि वे कभी भाग न जाएँ। मैं बस ऐसा कार्य करता हूँ जो मुझे करना चाहिए। मैं मनुष्य की "मदद" माँगने आया हूँ; चूँकि मेरे प्रबंधन में मनुष्य के कर्मों की कमी है, इसलिए मेरे कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करना संभव नहीं है, यह मेरे कार्य को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने से रोकता है। मैं केवल आशा करता हूँ कि लोगों में मेरे साथ सहयोग करने का संकल्प हो। मैं नहीं चाहता कि वे मुझे उत्तम भोजन बनाकर दें, या मेरा सिर टिकाने के लिए कहीं उपयुक्त जगह की व्यवस्था करें, या मुझे सुन्दर कपड़े बना कर दें—मुझे इन चीज़ों की थोड़ी-सी भी परवाह नहीं है। जब लोग मेरी इच्छा को समझने लगें और मेरे साथ-साथ अग्रसर होने लगें, तब मैं अपने दिल में संतुष्ट हो जाऊँगा।

धरती पर किसने कभी अपने दिल से मुझे स्वीकार किया है? किसने कभी अपने दिल से मुझसे प्रेम किया है? लोगों का प्यार हमेशा मिलावट वाला होता है; मैं भी "नहीं जानता" कि उनका प्यार विशुद्ध और मिलावट रहित क्यों नहीं हो सकता। इस प्रकार, मनुष्य के भीतर कई "रहस्य" भी निहित हैं। सृजित प्राणियों में, मनुष्य को "चमत्कारी" और "अथाह" माना जाता है और इसलिए मेरे सामने उसके पास "योग्यताएँ" है, जैसे कि वह मेरे बराबर के दर्जे का हो—लेकिन उसे अपने इस "दर्जे" के बारे में कुछ अजीब नहीं लगता। इसमें, ऐसा नहीं है कि मैं लोगों को इस स्थिति में खड़े होने और इसका आनंद लेने की इजाजत नहीं देता, बल्कि यह कि मैं चाहता हूँ कि उनमें मर्यादा का भाव हो, वे खुद को बहुत बड़ा न मानें; स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक दूरी है, परमेश्वर और मनुष्य के बीच की दूरी की तो बात ही क्या! क्या परमेश्वर और मनुष्य के बीच और भी अधिक दूरी नहीं है? धरती पर, मनुष्य और मैं "एक ही नाव पर सवार" हैं और हम "एक साथ तूफ़ान का सामना" करते हैं। मेरी पहचान मुझे मानवीय दुनिया की कठिनाई का सामना करने से छूट नहीं देती है, और इसी कारण से आज मैं इस परिस्थिति में आ पहुंचा हूँ। कभी भी मेरे पास पृथ्वी पर शांतिपूर्वक रहने का स्थान नहीं रहा है, इसलिए लोगों का कहना है, "मनुष्य के पुत्र को कभी भी अपना सिर टिकाने का स्थान नहीं मिला है।" परिणामस्वरूप, लोगों ने मेरे लिए करुणा के आँसू भी बहाए हैं और मेरे लिए एक "राहत कोष" में कुछ दर्जन युआन अलग से रखे हैं। केवल इसी वजह से मेरे पास आराम की एक जगह है; अगर लोगों की यह "सहायता" न रही होती, तो कौन जाने मेरा क्या होता!

जब मेरा कार्य समाप्त हो जाएगा, तो मैं मनुष्य से इस "वित्तीय राहत" की और माँग नहीं करूँगा;

बल्कि मैं अपने अंतर्निहित कार्य को करूँगा, और "अपने घर की तमाम चीज़ों" को सभी लोगों के सुख के लिए नीचे ले आऊँगा। आज, मेरे परीक्षणों के बीच हर किसी की परीक्षा ली जा रही है। जब मैं औपचारिक रूप से मनुष्य पर हाथ रखूँगा, तब फिर लोग मुझे प्रशंसा भरी नज़रों से नहीं देखेंगे, बल्कि मुझसे नफरत भरा व्यवहार करेंगे, और इसी समय तुरंत मेरे द्वारा उनके दिलों को एक नमूने के रूप में प्रयोग करने के लिए बाहर निकाल लिया जाएगा। मैं "सूक्ष्मदर्शी" के नीचे मनुष्य के दिल की पड़ताल करता हूँ—वहाँ मेरे लिए सच्चा प्यार नहीं है। सालों से लोग मुझे धोखा दे रहे हैं और मुझे बेवकूफ बना रहे हैं—यह पता चलता है कि उनके बाएँ आलिंद और दाहिने निलय दोनों में मेरे प्रति नफरत का विष है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि उनके प्रति मेरा रवैया ऐसा है। और फिर भी वे इसके बारे में पूरी तरह से अनजान बने रहते हैं, और इसे स्वीकार भी नहीं करते हैं। जब मैं उन्हें अपनी जाँच के परिणाम दिखाता हूँ, तब भी वे जागृत नहीं होते; ऐसा लगता है कि, उनके दिमाग में, ये सभी मामले अतीत के हैं, और उन्हें आज फिर से सामने नहीं लाया जाना चाहिए। इस प्रकार, लोग सिर्फ उदासीनता के साथ "प्रयोगशाला के परिणामों" को देखते हैं। वे दस्तावेज वापस कर चल देते हैं। इसके अलावा, वे ऐसी बातें कहते हैं, "ये महत्वपूर्ण नहीं हैं, मेरे स्वास्थ्य पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" वे अवहेलनापूर्ण ढंग से थोड़ा मुस्कुराते हैं और फिर उनकी आँखों में थोड़ी धमकी नज़र आती है जो मानो कह रही हो कि मुझे इतना सरल नहीं होना चाहिए, मुझे लापरवाह होना चाहिए। ऐसा लगता है कि मेरे उनके आंतरिक रहस्यों को उजागर करने से मनुष्यों के "नियम” टूट गए हैं, और इसलिए वे मेरे प्रति और अधिक घृणा से भर गए हैं। तभी मैं लोगों की घृणा का स्रोत देखता हूँ। इसका कारण यह है कि जब मैं देख रहा होता हूँ, उनका खून बहता रहता है, और उनके शरीर में धमनियों से गुजरने के बाद वह उनके हृदय में प्रवेश करता है, और केवल तब मैं यह नई "खोज" कर पाता हूँ। फिर भी लोग इसे कुछ नहीं समझते हैं। वे पूरी तरह से लापरवाह होते हैं और अपने पाने या खोने के बारे में बिलकुल नहीं सोचते हैं, जो उनकी "निःस्वार्थ" भक्ति भावना दिखाने के लिए पर्याप्त है। वे अपने स्वास्थ्य पर कोई ध्यान नहीं देते हैं, और मेरे लिए "भागते-दौड़ते" हैं। यह उनकी "वफ़ादारी" भी है, और उनके बारे में "सराहनीय" है, इसलिए मैं एक बार फिर उनको एक "प्रशंसा" पत्र भेजता हूँ, ताकि उन्हें इससे खुश किया जा सके। लेकिन जब वे इस "पत्र" को पढ़ते हैं, तो वे तुरंत कुछ चिड़चिड़ाहट महसूस करते हैं, क्योंकि वे जो कुछ भी करते हैं, उसे मेरे मूक पत्र द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है। जैसे-जैसे लोग कार्य करते हैं, मैंने हमेशा उन्हें निर्देशित किया है, फिर भी ऐसा लगता है कि वे मेरे वचनों से घृणा

करते हैं; इस प्रकार, जैसे ही मैं अपना मुँह खोलता हूँ, वे अपनी आँखें कसकर मूँद लेते हैं और कानों पर हाथ रख लेते हैं। मेरे प्रेम की खातिर वे मुझे सम्मान से नहीं देखते, बल्कि उन्होंने हमेशा मुझसे नफरत की है, क्योंकि मैंने उनकी कमियों को इंगित किया, उनके पास रही सभी चीज़ों को उजागर किया है, और इस कारण उन्होंने अपने व्यापार में नुकसान उठाया, और अपनी जीविका खो दी है। अपने आप में, इस कारण मेरे लिए उनकी नफरत बढ़ती जाती है।

14 अप्रैल, 1992

अध्याय 33

मेरे घर में कभी ऐसे लोग थे जो मेरे पवित्र नाम का गुणगान करते थे, जिन्होंने पृथ्वी के नभमंडल को मेरी महिमा से भरने के लिए अथक परिश्रम किया था। इस कारण मैं बहुत आनंदमग्न था और मेरा दिल प्रसन्नता से भरा हुआ था—फिर भी मेरी जगह कौन रात-दिन जागकर काम कर सकता था? मेरे सम्मुख मनुष्य का संकल्प मुझे प्रसन्न करता है, परन्तु उसका विद्रोह मेरे क्रोध को भड़काता है, और इस तरह, चूँकि मनुष्य कभी भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पाता है, उसके लिए मेरा दुख बढ़ता जाता है। लोग मेरे प्रति समर्पित होने में हमेशा असमर्थ क्यों रहते हैं? वे मेरे साथ हमेशा सौदा करने की कोशिश क्यों करते हैं? क्या मैं किसी व्यापार केंद्र का महाप्रबंधक हूँ? ऐसा क्यों है कि लोग मुझसे जो कुछ माँगते हैं मैं उसे पूरे मन से पूरा करता हूँ, फिर भी मैं मनुष्य से जो कुछ चाहता हूँ, वह कभी भी पूरा नहीं होता है? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं व्यापार के मामलों में कुशल नहीं हूँ, लेकिन मनुष्य है? लोग हमेशा अपनी मीठी-मीठी बातों और खुशामद से मुझे धोखा क्यों देते हैं? क्यों लोग हमेशा कोई "भेंट" लेकर आते हैं, और पिछले दरवाज़े से प्रवेश माँगते हैं? क्या मैंने मनुष्य को यही करना सिखाया है? लोग इतनी उतावली और सफाई से ऐसा क्यों करते हैं? लोग हमेशा मुझे धोखा देने की फ़िराक में क्यों रहते हैं? जब मैं मनुष्यों के बीच होता हूँ, तो लोग मुझे सृष्टि के एक प्राणी के रूप में देखते हैं; जब मैं तीसरे स्वर्ग में होता हूँ, तो वे मुझे सर्वशक्तिमान के रूप में देखते हैं जिसकी हर वस्तु पर सत्ता है; जब मैं नभमंडल में होता हूँ, तो वे मुझे एक आत्मा के रूप में देखते हैं जो सर्वव्यापी है। कुल मिलाकर लोगों के दिलों में मेरे लिए कोई उपयुक्त स्थान ही नहीं है। ऐसा लगता है जैसे मैं एक बिन बुलाया मेहमान हूँ, लोग मुझसे घृणा करते हैं, और इस तरह, जब मैं टिकट लेकर अपना स्थान ग्रहण करता हूँ तो वे मुझे बाहर खदेड़ देते हैं, और कहते हैं कि वहाँ मेरे

बैठने के लिए कोई जगह नहीं है, कि मैं एक गलत जगह आ गया हूँ। इसलिए मेरे पास क्रोधित होकर वहाँ से निकल जाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं होता। मैं संकल्प करता हूँ कि मनुष्य के साथ अब और नहीं जुड़ूँगा, क्योंकि लोग बहुत संकीर्ण मानसिकता के हैं, उनमें उदारता बहुत कम है। मैं अब उनके साथ एक ही मेज पर भोजन नहीं करूँगा, अब पृथ्वी पर उनके साथ और समय नहीं बिताऊँगा। लेकिन जब मैं बोलता हूँ तो लोग चकित हो जाते हैं, वे डर जाते हैं कि मैं चला जाऊँगा, और इसलिए वे मुझे रोके रहते हैं। उनका यह पाखंड देखकर मैं दिल ही दिल में कुछ निराशा और सूनापन-सा महसूस करने लगता हूँ। लोगों को डर है कि मैं उन्हें छोड़ दूँगा, और इसलिए जब मैं उन्हें छोड़कर जाने लगता हूँ तो पूरी भूमि विलाप के स्वर से तुरंत भर जाती है और लोगों के चेहरे आँसुओं में डूब जाते हैं। मैं उनके आँसू पोंछता हूँ, उन्हें एक बार फिर हौसला दिलाता हूँ, और वे मुझे निहारने लगते हैं, उनकी याचक आँखें मानो मुझसे न जाने की विनती कर रही होती हैं। उनकी इस "निष्ठा" के कारण ही मैं उनके साथ हूँ। फिर भी मेरे मन के भीतर की पीड़ा को कौन समझ सकता है? कौन मेरी उन बातों का ध्यान रखता है जिनके बारे में बात नहीं की जा सकती? ऐसा लगता है कि लोगों की नजरों में मैं भावना-शून्य हूँ, इसलिए हम हमेशा से दो अलग-अलग परिवारों से संबंधित हैं। वे मेरे मन के भीतर के दुख को कैसे देख सकते हैं? लोग सिर्फ अपने सुखों की लालसा करते हैं, उन्हें मेरी इच्छा का कोई ध्यान नहीं है, क्योंकि उन्हें मेरी प्रबंधन योजना के उद्देश्य का आज तक कोई ज्ञान ही नहीं है। इसलिए आज भी वे मूक याचनाएँ कर रहे हैं—पर इसका क्या लाभ है?

जब मैं मनुष्यों के बीच रहता हूँ, तो मैं लोगों के दिल में एक खास स्थान रखता हूँ; क्योंकि मैं देह में प्रकट हुआ हूँ, और लोग पुरानी देह में रहते हैं, वे मेरे साथ हमेशा देह से ही व्यवहार करते हैं। चूँकि उनके पास केवल देह होती है, और इससे और कुछ जुड़ा हुआ नहीं होता, इसलिए उन्होंने "अपना सब कुछ" मुझे दे दिया है। फिर भी वे कुछ भी नहीं जानते, वे मेरे सम्मुख सिर्फ "अपनी भक्ति प्रस्तुत" करते हैं। मैं जो कुछ पाता हूँ वह व्यर्थ का कचरा है, पर लोग ऐसा नहीं सोचते। जब मैं उनकी दी हुई "भेंटों" की तुलना अपनी चीज़ों के साथ करता हूँ, लोग तुरन्त मेरी बहुमूल्यता पहचान लेते हैं, और सिर्फ तब ही वे मेरी असीमता को देख पाते हैं। मुझे उनकी प्रशंसा से गर्व महसूस नहीं होता, लेकिन मैं मनुष्य के सम्मुख प्रकट होना जारी रखता हूँ, ताकि लोग मुझे पूरी तरह से जान सकें। जब मैं उन्हें अपनी संपूर्णता दिखाता हूँ तो वे आँखें फाड़कर मुझे देखते हैं, और मेरे सामने नमक के एक स्तंभ की तरह स्तब्ध-से खड़े रहते हैं। और जब मैं उनकी इस विचित्र अवस्था को देखता हूँ तो मैं खुद को हँसने से नहीं रोक पाता हूँ। चूँकि वे मुझसे

चीजें माँगने के लिए हाथ पसार रहे होते हैं, मैं उन्हें अपने हाथ में रखी चीज़ें दे देता हूँ, और वे उन्हें अपने सीने से लगा लेते हैं, एक नवजात शिशु की तरह उन्हें प्यार से संभालते हैं, लेकिन ऐसा कुछ समय के लिए ही होता है। जब मैं उस परिवेश को बदल देता हूँ जिसमें वे रहते हैं तो वे तुरंत उस "शिशु" को एक तरफ फेंक देते हैं और अपने हाथों में अपना सिर थामे भाग खड़े होते हैं। लोगों की नज़रों में, मैं एक ऐसी मदद हूँ जो हर समय और हर स्थान पर मौजूद है; ऐसे लगता है जैसे मैं कोई बैरा हूँ जो पुकारते ही आ जाता है। इस तरह, लोग हमेशा "मदद के लिए मेरी तरफ देखते रहे हैं", मानो मेरे पास विपदा से लड़ने की असीम शक्ति हो। इसलिए वे हमेशा से मेरा हाथ पकड़े मुझे पूरी भूमि की यात्रा करवाते रहे हैं, ताकि सभी देख सकें कि उनका एक शासक है, और कोई भी उन्हें धोखा देने की हिम्मत न करे। मैं बहुत पहले ही लोगों की "शेर के भेष में लोमड़ी" वाली चालाकी को भाँप चुका हूँ, क्योंकि वे सब चालबाज़ी से मुनाफा कमाने की उम्मीद में "अपनी दुकान खोले बैठे हैं"। मैंने बहुत लंबे समय पहले ही उनकी छल-कपट और दुर्भावना भरी चाल को भाँप लिया था, और बात सिर्फ इतनी है कि मैं हमारे संबंध खराब करना नहीं चाहता। मैं बेवजह मुसीबत खड़ी नहीं करता—उसका कोई मोल या महत्व नहीं है। मैं लोगों की कमज़ोरियों को ध्यान में रखते हुए सिर्फ वही काम करता हूँ जो मुझे करना ही चाहिए; अगर नहीं करूँगा तो मैं उन्हें राख में बदल दूँगा और उनका कोई अस्तित्व नहीं रहने दूँगा। लेकिन मैं जो काम करता हूँ उसका एक अर्थ है, और इसलिए मैं मनुष्य को हल्के ढंग से ताड़ना नहीं देता। इसी कारण लोगों ने हमेशा से अपनी देह को पूरी आजादी दे रखी है। वे मेरी इच्छा का पालन नहीं करते, बल्कि मेरे न्याय आसन के सम्मुख हमेशा मुझे बहलाते-फुसलाते रहे हैं। लोग बहुत हिम्मत वाले हैं; जब सारे "यातना उपकरण" उन्हें धमकाते हैं, तो वे ज़रा-भी नहीं डगमगाते। तथ्यों के सामने वे कोई भी तथ्य रख पाने में असमर्थ रहते हैं, और हठपूर्वक विरोध करने के अलावा और कुछ भी नहीं करते। जब मैं उनसे कहता हूँ कि वे सारी गंदगी को बाहर लाएँ, तब भी वे मुझे दो खाली हाथ दिखा देते हैं—दूसरे लोग इसका एक "मिसाल" के तौर पर इस्तेमाल क्यों नहीं करेंगे? लोगों की "आस्था" इतनी महान होने के कारण ही वे "प्रशंसा के योग्य" हैं।

मैं विश्व भर में अपने काम में जुट गया हूँ। दुनिया के लोग अचानक जाग उठे हैं, और उस केंद्र के चारों ओर घूमने लगे हैं, जो कि मेरा काम है। जब मैं उनके भीतर "यात्रा करता" हूँ तो वे सब शैतान के चंगुल से बच निकलते हैं और शैतान की यंत्रणा के शिकार नहीं होते। मेरे दिन के आगमन पर लोग ख़ुशी से भर जाते हैं, उनके दिलों के भीतर का दुख लुप्त हो जाता है, आकाश में दुख के बादल हवा में

ऑक्सीजन में बदल जाते हैं और वहाँ तैरने लगते हैं, और इस क्षण में, मैं मनुष्य के सानिध्य का आनंद उठाता हूँ। मनुष्य के कर्म मुझे कुछ ऐसा देते हैं जिसका मैं रस लेता हूँ और इस तरह मैं अब और दुखी नहीं हूँ। और मेरे दिन के आगमन के साथ ही, धरती की वे वस्तुएँ जिनमें प्राण हैं, अपने अस्तित्व के मूल को फिर से प्राप्त कर लेती हैं, धरती पर सब वस्तुएँ फिर से जी उठती हैं, और वे मुझे अपने अस्तित्व का आधार मान लेती हैं, क्योंकि मैं सभी वस्तुओं को जीवन से चमका देता हूँ, और साथ ही, मैं उनके चुपके-से लुप्त हो जाने का कारण भी होता हूँ। इस तरह, सभी वस्तुएँ मेरे मुख से निकलती आज्ञाओं की प्रतीक्षा करती हैं, और मैं जो करता और कहता हूँ उससे वे खुश होती हैं। सभी वस्तुओं में, मैं सर्वोच्च हूँ—फिर भी मैं सभी लोगों के बीच भी रहता हूँ, और मैं मनुष्य के कर्मों का उपयोग स्वर्ग और पृथ्वी की अपनी रचना की अभिव्यक्तियों के रूप में करता हूँ। जब लोग मेरे सम्मुख मेरा गुणगान करते हैं, तो मैं सभी वस्तुओं से ऊपर उठ जाता हूँ, और इस तरह, तपते सूर्य के नीचे पृथ्वी पर खिले फूल और ज़्यादा सुंदर हो जाते हैं, घास और ज़्यादा हरी हो जाती है, और आकाश में बादल और ज़्यादा नीले प्रतीत होने लगते हैं। मेरी आवाज़ के कारण, लोग इधर-उधर भागते हैं; आज मेरे राज्य में लोगों के चेहरे खुशी से भरे हुए हैं, और उनका जीवन फल-फूल रहा है। मैं अपने सभी चुने हुए लोगों के बीच काम करता हूँ, और मैं अपने काम को मानवीय विचारों से दूषित होने नहीं देता, क्योंकि मैं अपना काम स्वयं पूरा करता हूँ। जब मैं काम करता हूँ तो आकाश और पृथ्वी और उनके अंदर की सभी चीज़ें बदल जाती हैं और उनका नवीकरण हो जाता है, और जब मैं अपना काम पूरा कर लेता हूँ, तो मनुष्य पूरी तरह से नवीकृत हो जाता है। मैं उससे जो चाहता हूँ, वह अब उससे परेशान नहीं होता, क्योंकि खुशी के स्वर सारी पृथ्वी पर सुने जा सकते हैं, और मैं इस अवसर का उपयोग मनुष्य को आशीष प्रदान करने के लिए करता हूँ जो मैं उसे देता हूँ। जब मैं राज्य का राजा होता हूँ, तो लोग मुझसे डरते हैं, फिर भी जब मैं मनुष्यों के बीच राजा होता हूँ, और मनुष्यों के बीच रहता हूँ, तो लोगों को मुझमें कोई आनंद नहीं आता, क्योंकि मेरे बारे में उनकी धारणाएँ बहुत पीड़ाजनक हैं, और इतनी गहराई में पैठी हुई हैं कि उन्हें दूर करना मुश्किल है। मनुष्य की अभिव्यक्ति के कारण, मैं अपना काम करता हूँ, जो कि उचित है, और जब मैं आकाश में ऊँचा उठ जाता हूँ और मनुष्य पर अपना क्रोध बरपाता हूँ तो मेरे बारे में लोगों की तमाम धारणाएँ तुरंत राख में बदल जाती हैं। मैं चाहता हूँ कि वे मेरे बारे में अपनी कई और धारणाओं की बातें करें, लेकिन वे विमूढ़-से रह जाते हैं, जैसे कि उनके पास कुछ न हो, और जैसे कि वे बहुत दीन हों। मैं लोगों की धारणाओं में जितना ज़्यादा

रहता हूँ, उतना ही वे मुझसे प्यार करने लगते हैं, और लोगों की धारणाओं से मैं जितना बाहर रहता हूँ, उतना ही वे मुझसे दूर होते जाते हैं, और मेरे बारे में उनके उतने ही ज़्यादा अभिमत होते जाते हैं, क्योंकि जब से मैंने दुनिया बनाई तब से लेकर आज तक, मैं हमेशा लोगों की धारणाओं में जीता रहा हूँ। आज जब मैं मनुष्यों के बीच आता हूँ, तो मैं लोगों की इन सभी धारणाओं को दूर हटा देता हूँ, और इसलिए लोग सीधे-सीधे इनकार कर देते हैं—फिर भी मेरे पास ऐसे उचित तरीके हैं जिनके द्वारा उनकी धारणाओं से निपटा जा सके। लोगों को चिंतित या परेशान नहीं होना चाहिए; मैं समस्त मानव जाति को अपने खुद के तरीकों से बचा लूँगा, ताकि सभी लोग मुझसे प्रेम कर सकें, और उन्हें स्वर्ग में मेरे आशीषों का आनंद मिल सके।

17 अप्रैल, 1992

अध्याय 34

एक बार मैंने मनुष्य को अपने घर में अतिथि के रूप में आमंत्रित किया, फिर भी वह मेरी पुकार सुनकर यहाँ-वहाँ भागता-फिरता रहा—मानो उसे अतिथि के तौर पर आमंत्रित करने के बजाय, मैं उसे फाँसी-स्थल पर ले आया था। इस प्रकार, मेरा घर खाली रह गया, क्योंकि मनुष्य हमेशा मुझसे बचता था और मेरे प्रति चौकन्ना रहता था। इसकी वजह से मेरे पास अपने कार्य के हिस्से को पूरा करने का कोई साधन नहीं बचा, यानी मैंने वह दावत वापस ले ली जो मैंने उसके लिए तैयार की थी, क्योंकि मनुष्य इस दावत का आनंद लेने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए मैंने उसे मजबूर नहीं किया। फिर भी मनुष्य अचानक खुद को भूख से व्याकुल पाता है, अतः वह आकर मेरा दरवाजा खटखटाता है, मुझसे मदद माँगता है—उसे ऐसे मुश्किल हालात में देखकर, मैं कैसे उसे बचाए बिना रह सकता हूँ? इस प्रकार, मैं एक बार फिर मनुष्य के लिए दावत सजाता हूँ, ताकि वह उसका आनंद ले सके, उसके बाद ही वह महसूस करता है कि मैं कितना प्रशंसनीय हूँ, और इस तरह वह मुझ पर निर्भर हो जाता है। धीरे-धीरे उसके प्रति मेरे रवैये के कारण, वह मुझे "नि:संकोच" प्रेम करने लगता है, अब उसे यह संदेह नहीं रहता कि मैं उसे "दाह संस्कार के देश" में भेज दूँगा, क्योंकि यह मेरी इच्छा नहीं है। इस तरह, मेरा दिल देखने के बाद ही मनुष्य वास्तव में मुझ पर निर्भर होता है, जो दर्शाता है कि वह कितना "सतर्क" है। फिर भी मैं मनुष्य के छल के कारण उससे सावधान नहीं हूँ, बल्कि मैं गर्मजोशी से भरे अपने आलिंगन के द्वारा लोगों के दिलों को प्रेरित करता

हूँ। फिलहाल क्या मैं यही नहीं कर रहा हूँ? क्या वर्तमान चरण में लोगों में यही नहीं प्रकट हो रहा है? वे इस तरह की हरकतें कैसे कर सकते हैं? उनके अंदर इस तरह की भावना क्यों है? क्या यह इसलिए है कि वे वाकई मुझे जानते हैं? क्या यह इसलिए है कि उन्हें मुझसे असीम प्रेम है? मैं किसी को भी मुझसे प्रेम करने के लिए मजबूर नहीं करता, बल्कि उन्हें अपनी पसंद तय करने के लिए स्वतंत्र इच्छा प्रदान करता हूँ; इसमें मैं हस्तक्षेप नहीं करता, न ही मैं उनकी नियति के बारे में विकल्प तय करने में उनकी मदद करता हूँ। लोग मेरे सामने अपने संकल्प रखते हैं, वे मेरे सामने उन्हें इसलिए लाए हैं ताकि मैं उनकी जाँच कर सकूँ, और जब मैंने "मनुष्य के संकल्प" का झोला खोला, तो मैंने भीतर पड़ी चीजों को देखा, जो भले ही अस्त-व्यस्त थीं, फिर भी काफी "भरपूर" थीं। लोगों ने मेरी तरफ़ आँखें फाड़कर देखा, उन्हें बहुत भय था कि मैं उनका संकल्प तोड़ दूँगा। लेकिन मनुष्य की कमज़ोरी के कारण, मैंने शुरुआत में ही कोई फैसला नहीं किया, बल्कि मैं झोला बंद करके उसी काम में लग गया जो मुझे करना ही है। लेकिन, मनुष्य मेरे काम के चलते मेरे मार्गदर्शन में प्रवेश नहीं करता, बल्कि इसी चिंता में लगा रहता है कि मैंने उसके संकल्प की प्रशंसा की या नहीं। मैंने इतना अधिक काम किया है, इतने सारे वचन कहे हैं, लेकिन आज तक, मनुष्य मेरी इच्छा को समझने में असमर्थ रहा है, इस प्रकार उसकी हर घबराहट-भरी हरकत से मेरा सिर चकराने लगता है। वह कभी मेरी इच्छा क्यों नहीं समझ पाता और बिना सोचे-समझे मनमाने ढंग से काम क्यों करता है? क्या उसके दिमाग को कोई सदमा पहुंचा है? कहीं ऐसा तो नहीं कि वह मेरे कहे वचनों को नहीं समझता? क्यों वह हमेशा अपनी नज़रें सीधी रखकर काम करता है, लेकिन मेहनत करके भविष्य के लोगों के लिए एक आदर्श स्थापित नहीं कर पाता? क्या पतरस के सामने कोई आदर्श स्थापित करने वाला था? क्या मेरे मार्गदर्शन के कारण ही पतरस नहीं बचा था? आज के लोग ऐसा करने में असमर्थ क्यों हैं? आज के लोग अनुकरणीय आदर्श होने के बावजूद मेरी इच्छा को पूरा क्यों नहीं कर पाते? इससे पता चलता है कि मनुष्य का अब भी मुझ पर कोई भरोसा नहीं है, यही चीज़ आज की दुखद परिस्थितियों का कारण बनी हुई है।

मैं आकाश में उड़ते छोटे पक्षियों को देखकर प्रसन्न होता हूँ। यद्यपि उन्होंने मेरे सामने कोई संकल्प नहीं रखा है और मुझे "प्रदान" करने के लिए उनके पास कोई शब्द नहीं है, वे उस संसार में आनंद लेते हैं जो मैंने उन्हें दिया है। बहरहाल, मनुष्य, इसके लिए असमर्थ है और उसका चेहरा उदासी से भरा हुआ है—कहीं ऐसा तो नहीं कि उसका मुझ पर कोई ऐसा ऋण बाकी है जिसे चुकाया नहीं जा सकता? क्यों

उसका चेहरा हमेशा आँसुओं में डूबा रहता है? मैं पहाड़ियों में खिलती कुमुदिनी की प्रशंसा करता हूँ; ढलानों पर फूलों और घास का तो फैलाव होता है, लेकिन वसंत ऋतु के आने से पहले कुमुदिनी पृथ्वी पर मेरी महिमा को चार चाँद लगा देती है—क्या मनुष्य ऐसी चीज़ें हासिल कर सकता है? क्या वह पृथ्वी पर मेरी वापसी से पहले मेरी गवाही दे सकता है? क्या वह बड़े लाल अजगर के देश में मेरे नाम की खातिर खुद को समर्पित कर सकता है? ऐसा लगता है कि मेरे कथन मनुष्य से मेरी अपेक्षाओं से भरे पड़े हैं—वह इन अपेक्षाओं के परिणामस्वरूप मुझसे घृणा करता है; वह मेरे वचनों से डरता है क्योंकि उसका शरीर अत्यंत कमज़ोर है और मूलत: वह मेरी अपेक्षाओं को पूरा कर पाने में असमर्थ है। जब मैं अपना मुंह खोलता हूँ, तो धरती पर रहने वाले लोगों को हर दिशा में भागते हुए देखता हूँ, जैसे कि वे अकाल से बचने की कोशिश कर रहे हों। जब मैं अपना चेहरा ढक लेता हूँ और अपनी पीठ उनकी ओर कर लेताहूँ, तो लोग तुरंत आतंकित हो जाते हैं। वे नहीं जानते कि उन्हें क्या करना है, क्योंकि वे मेरे चले जाने से डरते हैं; उनकी धारणाओं में, जिस दिन मैं चला जाऊँगा, उसी दिन स्वर्ग से तबाही उतरेगी, उसी दिन उनकी सज़ा शुरू होगी। फिर भी जो मैं करता हूँ वह मनुष्यों की धारणाओं के ठीक विपरीत होता है, मैंने कभी मनुष्य की धारणाओं के अनुसार कार्य नहीं किया है, कभी भी उसकी धारणाओं को अपने अनुरूप नहीं होने दिया है। जब मनुष्य उजागर हो जाता है, उसी समय मैं कार्य करता हूँ। दूसरे शब्दों में, मेरे कार्यों को मानवीय धारणाओं से नहीं मापा जा सकता। सृजन के समय से लेकर आज तक, जो मैं करता हूँ उसमें किसी ने "नए महाद्वीप" की खोज नहीं की है; किसी ने कभी भी उन नियमों को नहीं समझा है जिनके द्वारा मैं कार्य करता हूँ, और किसी ने कभी भी एक नया रास्ता नहीं खोला है। इस प्रकार, आज लोग सही रास्ते पर प्रवेश करने में असमर्थ रहते हैं—उनमें बस यही कमी है, और इसी में उन्हें प्रवेश करना चाहिए। सृष्टि के समय से लेकर आज तक, मैंने इस तरह का उद्यम पहले कभी शुरू नहीं किया। अंत के दिनों के अपने कार्य में मैंने केवल विभिन्न नए अंश जोड़े हैं। परंतु ऐसी स्पष्ट परिस्थितियों में भी, लोग मेरी इच्छा को नहीं समझ पाते—क्या उनमें बस इसी चीज़ की कमी नहीं है?

नए कार्य में अपने प्रवेश के बाद, मुझे मनुष्य से नई अपेक्षाएँ हैं। ऐसा लगता है कि मनुष्य पर अतीत की अपेक्षाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, यही वजह है कि वह उन्हें भूल जाता है। वह नया साधन क्या है जिससे मैं कार्य करता हूँ? मैं मनुष्य से क्या चाहता हूँ? लोग खुद इसका आकलन करने में सक्षम हैं कि अतीत में उन्होंने जो कुछ किया, क्या वह मेरी इच्छा के अनुसार था, क्या उनके कर्म मेरी अपेक्षा की

मर्यादा में थे। मुझे हर चीज़ का निरीक्षण व्यक्तिगत रूप से करने की कोई ज़रूरत नहीं है; उनमें अपने आध्यात्मिक कद की समझ है, और इसलिए अपने दिमाग में वे स्पष्ट हैं कि वे कितने आगे तक कार्य कर सकते हैं, मुझे खुलकर उन्हें बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। जब मैं बोलूँगा, तो शायद कुछ लोग लड़खड़ाएँगे; इस प्रकार, मैं अपने वचनों के इस हिस्से को बोलने से बच रहा हूँ ताकि इसकी वजह से लोग कमज़ोर न हो जाएँ। क्या यह मनुष्य के लक्ष्य के लिए अधिक लाभप्रद नहीं है? क्या यह मनुष्य की प्रगति के लिए अधिक लाभप्रद नहीं है? अपने अतीत को भूल कर कौन आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करना चाहता? मेरी "विचारहीनता" की वजह से, मैं इस बात से अनजान हूँ कि क्या लोग समझते हैं कि जिस माध्यम से मैं बोल रहा हूँ वह पहले से ही एक नए दायरे में प्रवेश कर चुका है। इसके अलावा, क्योंकि मैं अपने कार्य में "व्यस्त" रहता हूँ, मेरे पास यह पूछने का समय नहीं था कि क्या लोग मेरे बोलने के लहजे को समझते हैं। इस प्रकार, मैं केवल इतना चाहता हूँ कि लोग मेरे प्रति अधिक समझदार हों। चूँकि मेरा कार्य मुझे "व्यस्त रखता है," मैं व्यक्तिगत तौर पर लोगों को निर्देशित करने के लिए अपने कार्य के आधार-स्थलों पर जाने में असमर्थ हूँ, इसलिए मुझे उनके बारे में "थोड़ी-बहुत ही समझ" है। संक्षेप में, और चाहे जो भी हो, औपचारिक रूप से एक नई शुरुआत में और एक नई पद्धति में प्रवेश कराने के लिए मैंने अब मनुष्य की अगुआई करना प्रारंभ कर दिया है। लोगों ने यह देखा है कि मेरे कथनों में, परिहास, विनोद और विशेष रूप से उपहास का तीखा लहजा रहता है। इस प्रकार, मेरे और मनुष्य के बीच का तालमेल अनजाने में भंग हो जाता है, जिससे लोगों के चेहरों पर घने बादल छा जाते हैं। बहरहाल, मैं इससे विवश नहीं होता और अपने कार्य में लगा रहता हूँ; क्योंकि जो कुछ मैं कहता और करता हूँ वह मेरी योजना का एक आवश्यक अंग है; जो कुछ मेरे मुँह से कहा जाता है, वह मनुष्य को मदद करता है और मैं जो भी करता हूँ उसमें कुछ भी तुच्छ नहीं होता; मैं जो भी करता हूँ वह सभी लोगों के लिए शिक्षाप्रद होता है। चूँकि मनुष्य में कमी है इसलिए मैं खुलकर बोलता रहता हूँ। शायद कुछ लोग, बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि मैं उनसे नई अपेक्षाएँ करूँ। यदि ऐसा है, तो मैं उनकी ज़रूरतों को पूरा करता हूँ। लेकिन मैं तुम लोगों को एक बात याद दिला दूँ: जब मैं बोलता हूँ, तो मुझे आशा रहती है कि लोगों को और अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी, मुझे उम्मीद रहती है कि वे अधिक विवेकपूर्ण बनेंगे, ताकि वे मेरे वचनों से अधिक लाभ उठाकर मेरी अपेक्षाओं को पूरा कर सकें। पहले, कलीसियाओं में, लोगों का ध्यान निपटारे और तोड़े जाने पर केंद्रित होता था। मेरे वचनों को खाना-पीना उनके उद्देश्य और स्रोत को समझने की नींव पर होता था—लेकिन

आज की बात पहले से अलग है, लोग मेरे कथनों के स्रोत को समझने में बिलकुल असमर्थ हैं, इसलिए उनके पास मेरे द्वारा निपटाए और तोड़े जाने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा मात्र मेरे वचनों को खाने और पीने में खर्च कर दी। लेकिन इन परिस्थितियों में भी, वे मेरी माँगों को संतुष्ट करने में असमर्थ हैं और इसलिए मैं उनसे नई माँगें करता हूँ : मैं चाहता हूँ कि वे मेरे साथ परीक्षण में प्रवेश करें, ताड़ना में प्रवेश करें। फिर भी, तुम्हें एक बात याद दिला दूँ : यह मनुष्य को मृत्यु देना नहीं है, बल्कि यह वो है जो मेरे कार्य के लिए आवश्यक है, क्योंकि, वर्तमान चरण में, मेरे वचन मनुष्य की समझ से बहुत परे हैं और मनुष्य मेरे साथ सहयोग करने में असमर्थ है—कुछ नहीं किया जा सकता! मैं केवल मनुष्य को अपने साथ नई पद्धति में प्रवेश करा सकता हूँ। इसमें और करने को है ही क्या? मनुष्य की कमियों की वजह से, मुझे भी उस धारा में प्रवेश करना होगा जिसमें मनुष्य प्रवेश करता है—मुझे लोगों को संपूर्णता देने का प्रबल एहसास हुआ था, है न? मुझे इस योजना को का प्रबल एहसास हुआ था, है न? यद्यपि दूसरी आवश्यकता मुश्किल नहीं है, लेकिन यह पहली से गौण नहीं है। अंत के दिनों के लोगों के समूह के बीच मेरा कार्य एक अभूतपूर्व उद्यम है, और इस प्रकार, मेरी खातिर सभी लोगों को आखिरी कठिनाई का सामना करना है, ताकि मेरी महिमा सारे ब्रह्मांड को भर सके। क्या तुम लोग मेरी इच्छा को समझते हो? यह आखिरी अपेक्षा है जो मैं मनुष्य से करता हूँ, जिसका अर्थ है, मुझे आशा है कि सभी लोग बड़े लाल अजगर के सामने मेरे लिए सशक्त और शानदार ज़बर्दस्त गवाही दे सकते हैं, कि वे मेरे लिए अंतिम बार स्वयं को समर्पित कर सकते हैं और एक आखिरी बार मेरी अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। क्या तुम लोग वाकई ऐसा कर सकते हो? तुम लोग अतीत में मेरे दिल को संतुष्ट करने में असमर्थ थे—क्या तुम लोग अंतिम बार इस प्रतिमान को तोड़ सकते हो? मैं लोगों को आत्म-चिंतन करने का मौका देता हूँ; मुझे अंतिम जवाब देने से पहले, मैं उन्हें सावधानी से विचार करने का अवसर देता हूँ—क्या ऐसा करना गलत है? मैं मनुष्य की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करता हूँ, मैं उसके "प्रत्युत्तर पत्र" का इंतज़ार करता हूँ—क्या तुम लोगों को मेरी अपेक्षाओं को साकार कर पाने का भरोसा है?

20 अप्रैल, 1992

अध्याय 35

मैंने मनुष्यों के बीच अपना कार्य करना शुरू कर दिया है, उन्हें अपने साथ एक ही धारा में जीने का

अवसर देकर। अपना कार्य पूरा कर लेने के बाद भी मैं उनके बीच में ही रहूँगा, क्योंकि वे ही हैं, जिनका मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना के दौरान प्रबंधन किया जाना है, और मेरी इच्छा है कि वे सभी चीज़ों के स्वामी बन जाएँ। इस कारण से मैं मनुष्यों के बीच चलना जारी रखता हूँ। जैसे-जैसे मनुष्य और मैं वर्तमान युग में प्रवेश करते हैं, मैं काफी निश्चिंत महसूस करता हूँ, क्योंकि मेरे कार्य की गति तेज़ हो गई है। मनुष्य मेरी गति की बराबरी कैसे कर सकते हैं? मैंने जड़ और मंदबुद्धि लोगों पर बहुत काम किया है, लेकिन फिर भी उन्होंने कुछ प्राप्त नहीं किया, क्योंकि वे मुझसे प्रेम नहीं करते। मैं सभी लोगों के बीच में रहा हूँ और ज़मीन के ऊपर और नीचे दोनों ही जगह मैंने उनकी हर चेष्टा देखी है। "मनुष्यों" के रूप में वर्गीकृत सभी लोग मेरा विरोध कर रहे हैं, जैसे "मेरा विरोध करना" ही उनका काम हो, जैसे अगर उन्होंने यह काम नहीं किया, तो वे एक आवारा अनाथ की तरह हो जाएँगे, जिसे किसी ने गोद नहीं लिया। परंतु मैं लोगों को उनके कार्यों और व्यवहार के आधार पर मनमाने ढंग से सज़ा नहीं देता। बल्कि मैं उनके आध्यात्मिक कद के अनुसार उन्हें समर्थन देता हूँ और उनकी आवश्यकताएँ पूरी करता हूँ। चूँकि मनुष्य मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना के मुख्य पात्र हैं, इसलिए मैं उन्हें ज्यादा मार्गदर्शन देता हूँ, जिन्हें "मनुष्य" की भूमिका दी गई है, ताकि वे दिलोजान से और अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार अपनी भूमिका निभा सकें और मेरे द्वारा निर्देशित यह नाटक शानदार ढंग से सफल हो। मानव-जाति से मेरी यही अपील है। अगर मैंने मनुष्यों के लिए प्रार्थना नहीं की, तो क्या वे अपनी भूमिका निभाने में असमर्थ होंगे? क्या तब यह मामला होगा कि मैं तो वह पूरा कर सकता हूँ, जो लोग कहते हैं, पर लोग उसे पूरा नहीं कर सकते, जो मैं उनसे कहता हूँ? ऐसा कहा जा सकता है कि मैं मनुष्यों का दमन करने के लिए अपने बल का इस्तेमाल नहीं करता। इसके बजाय, यह मेरा अंतिम अनुरोध है, जिसकी मैं उनसे पूरी ईमानदारी और गंभीरता के साथ आरजू-मिन्नत कर रहा हूँ। क्या वे वास्तव में वह करने में असमर्थ हैं जो मैं कहता हूँ? मैं कई सालों से लोगों को देता आ रहा हूँ, फिर भी बदले में मुझे कुछ नहीं मिला। किसने कभी मुझे कुछ दिया है? क्या मेरा खून, पसीना और आँसू केवल पहाड़ों में बादलों की तरह हैं? मैंने लोगों को कई बार "टीके" लगाए हैं, और उन्हें बताया है कि उनसे मेरी अपेक्षाएँ सख़्त नहीं हैं। तो फिर लोग क्यों मुझसे लगातार बचते हैं? क्या इसलिए कि मैं उनके साथ मुर्गी के बच्चों की तरह व्यवहार करूँगा, जिन्हें पकड़ते ही मार दिया जाएगा? क्या मैं वास्तव में इतना क्रूर और अमानवीय हूँ? मनुष्य हमेशा मुझे अपनी अवधारणाओं के अनुसार मापते हैं। क्या मैं जैसा उनकी धारणाओं में हूँ, वैसा ही स्वर्ग में हूँ? मैं लोगों की अवधारणाओं को अपने लिए आनंददायक वस्तुएँ नहीं

मानता। इसके बजाय, मैं उनके दिल को सराहनीय चीज़ों के रूप में देखता हूँ। परंतु मैं उनके अंतःकरणों से बहुत चिढ़ता हूँ, क्योंकि उनके अनुसार, स्वयं मेरे पास अंतःकरण नहीं है। इसलिए मेरे पास उनके अंत:करणों के बारे में कई और मत हैं। परंतु मैं सीधे उनके अंतःकरणों की आलोचना करने से इनकार करता हूँ; बल्कि मैं उनका धैर्यपूर्वक और व्यवस्थित तरीके से मार्गदर्शन करना जारी रखता हूँ। आखिरकार, मनुष्य कमज़ोर हैं और किसी भी कार्य को करने में असमर्थ हैं।

आज मैं आधिकारिक तौर पर असीम ताड़ना के क्षेत्र में कदम रखता हूँ, जिसका मैं मानव-जाति के साथ आनंद लेता हूँ। अपने हाथ से मैं आज्ञा भी जारी करता हूँ और मेरी आज्ञा के तहत मानव-जाति अच्छी तरह से व्यवहार करती है; कोई मेरा विरोध करने की हिम्मत नहीं करता। सभी मेरे मार्गदर्शन में हैं, मेरे द्वारा सौंपा गया कार्य कर रहे हैं, क्योंकि यह उनका "काम" है। स्वर्ग में और स्वर्ग के नीचे की सारी चीज़ों में से कौन है, जो मेरी योजनाओं के सामने नहीं झुकता? कौन है, जो मेरी मुट्ठी में नहीं है? कौन है, जो मेरे वचनों और मेरे कार्य की प्रशंसा और गुणगान नहीं करता? मनुष्य मेरे कर्मों और कार्यों की प्रशंसा करते हैं, इसलिए वे मेरे हर छोटे कदम की वजह से स्वयं को मेरे कार्य की धारा में डाल देते हैं। कौन है, जो अपने को छुड़ा सकता है? कौन है, जो मेरे द्वारा व्यवस्थित कार्य से बच सकता है? मेरे प्रशासनिक आदेश के कारण मनुष्य मौजूद रहने के लिए बाध्य हैं; ऐसा न करने पर वे सब "अग्र-पंक्ति" से पीछे हटकर "भगोड़े" बन जाते। कौन है, जो मृत्यु से भयभीत नहीं? क्या लोग सच में जान की बाज़ी लगा सकते हैं? मैं किसी के साथ ज़बरदस्ती नहीं करता, क्योंकि मुझे बहुत समय पहले ही मानव-स्वभाव की गहरी समझ प्राप्त हो गई थी। इसलिए मैं हमेशा ऐसी परियोजनाएँ चलाता रहा हूँ, जो लोगों ने पहले कभी नहीं कीं। चूँकि कोई भी मेरा कार्य नहीं कर सकता था, अत: मैंने शैतान के साथ जीवन और मृत्यु के संघर्ष में शामिल होने के लिए युद्ध के मैदान में स्वयं कदम रखा है। आजकल शैतान परम उद्दंड हो गया है। क्यों न मैं इस अवसर का उपयोग अपने कार्य का फोकस दिखाने और अपना सामर्थ्य प्रकट करने के लिए करूँ? जैसा कि मैंने पहले कहा है, मैं शैतान की चाल का इस्तेमाल अपनी विषमता के रूप में करता हूँ; क्या यह सबसे अच्छा मौका नहीं है? केवल अब मैं एक संतुष्ट मुसकान प्रकट करता हूँ, क्योंकि मैंने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया है। मैं अब इधर-उधर दौड़-भाग नहीं करूँगा और मुनष्य से "सहायता" नहीं माँगूँगा। मैंने हलचल बंद कर दी है, और अब मैं आवारा जीवन नहीं जीता। अब से मैं शांति से रहूँगा। इसी तरह, मनुष्य भी सही-सलामत रहेंगे, क्योंकि मेरा दिन आ चुका है। पृथ्वी पर मैंने आदमी का व्यस्त जीवन जीया है, एक ऐसा

जीवन जिसमें कई अन्याय हुए लगते हैं। मनुष्यों की आँखों में, मैंने उनकी ख़ुशियों और दुखों को साझा किया है, साथ ही उनकी विपत्तियों को भी। मनुष्यों की तरह मैं भी पृथ्वी पर और स्वर्ग के नीचे रहा हूँ। इसलिए उन्होंने हमेशा मुझे एक सृजित प्राणी के रूप में देखा है। चूँकि मनुष्यों ने मुझे उस रूप में नहीं देखा है, जैसा मैं स्वर्ग में हूँ, अत: उन्होंने कभी मेरी ओर से ज्यादा प्रयास नहीं किए। परंतु, आज की स्थिति को देखते हुए, लोगों के पास यह स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है कि मैं उनके भाग्य का स्वामी और बादलों से बोलने वाला वक्ता हूँ। इसलिए मनुष्यों ने आराधना में मेरे सामने ज़मीन पर अपने सिर रख दिए हैं। क्या यह मेरी विजयी वापसी का प्रमाण नहीं है? क्या यह सभी विरोधी शक्तियों पर मेरी जीत का चित्रण नहीं है? सभी लोगों को पूर्वाभास हो गया है कि दुनिया समाप्त हो रही है और मानवता एक बड़े परिमार्जन से गुज़रने वाली है। हालाँकि वे सच में वैसा नहीं कर सकते, जैसा मैं उनसे सचेत रूप में कहता हूँ, इसलिए उनके पास मेरी ताड़ना के अंतर्गत रोने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। क्या किया जा सकता है? किसने कहा था मनुष्यों को अवज्ञाकारी होने के लिए? किसने कहा था उनसे अंतिम युग में प्रवेश करने के लिए? वे क्यों अंत के दिनों की इस मनुष्यों की दुनिया में पैदा हुए? हर एक चीज़ की व्यवस्था और योजना मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से की और बनाई गई है। कौन शिकायत कर सकता है?

जब से दुनिया की सृष्टि हुई है, मैं मनुष्यों के बीच उनके सांसारिक अस्तित्व में उनका साथ देते हुए भटकता रहा हूँ। हालाँकि पिछली पीढ़ियों में मेरे द्वारा कभी भी किसी भी व्यक्ति को नहीं चुना गया; सभी को मेरे मूक पत्र द्वारा झिड़क दिया गया। इसका कारण यह है कि अतीत में लोगों ने अनन्य रूप से मेरी सेवा नहीं की; इसलिए बदले में मैंने भी उन्हें अनन्य रूप से प्रेम नहीं किया। उन्होंने शैतान के "उपहार" ले लिए और फिर पलटकर मुझे प्रस्तुत कर दिए; क्या यह मेरे लिए अपमानजनक बात नहीं थी? और जब उन्होंने अपने ये उपहार दिए, मैंने अपनी घृणा प्रकट नहीं की; बल्कि मैंने उनके इन "उपहारों" को अपने प्रबंधन की सामग्रियों में शामिल करके उनके कुचक्र को अपने इस्तेमाल की चीज़ बना लिया। बाद में, उन्हें मशीन द्वारा संसाधित कर दिए जाने के बाद मैं उनकी तलछट जला देता था। वर्तमान युग में मनुष्यों ने मुझे ज्यादा "उपहार" नहीं दिए हैं, फिर भी मैं इसके लिए उनकी निंदा नहीं करता। ये लोग हमेशा बेसहारा और खाली हाथ रहे हैं; इसलिए, उनकी स्थिति की वास्तविकता को देखते हुए, मैंने मनुष्यों की दुनिया में आने के बाद से उनसे कभी कोई अनुचित माँगें नहीं की हैं। बल्कि, उन्हें "सामग्री" देने के बाद, मैंने बस उस "तैयार उत्पाद" की माँग की है, जो मैं चाहता हूँ, क्योंकि मनुष्य जो हासिल कर सकता है, उसकी यही

सीमा है। कोई उपयुक्त माँग करने से पहले मैंने यह सीखते हुए कई साल कठिनाई में बिताए हैं, कि मनुष्य के रूप में जीने का क्या मतलब है। यदि मैंने मानव-जीवन का अनुभव नहीं किया होता, तो मैं उन मामलों को कैसे समझ सकता था, जिनकी चर्चा करने में लोगों को मुश्किल होती है? फिर भी मनुष्य इसे इस तरह से नहीं देखते; वे कहते हैं कि मैं स्वयं सर्वशक्तिमान, अलौकिक परमेश्वर हूँ। क्या यह बिलकुल वही अवधारणा नहीं है, जो सभी मनुष्यों की पूरे इतिहास के दौरान रही है और आज भी है? मैंने कहा कि पृथ्वी पर कोई ऐसा नहीं है, जो वास्तव में और पूरी तरह से मुझे जान सकता हो। इस टिप्पणी के अपने निहितार्थ हैं; यह कोई खोखली बात नहीं है। मैंने इसे स्वयं देखा और अनुभव किया है, इसलिए मुझे इसके विवरण की समझ है। अगर मैं मनुष्यों की दुनिया में न आया होता, तो किसके पास मुझे जानने का अवसर होता? कौन मेरे वचनों को रूबरू सुन पाता? कौन मेरी आकृति को अपने बीच देख पाता? युगों-युगों से मैं हमेशा बादलों में छिपा रहा हूँ। आरंभ में मैंने एक भविष्यवाणी की थी : "मैं अंत के दिनों में मानव-जाति के बीच एक उदाहरण बनकर नीचे आऊँगा।" यही कारण है कि केवल आज के लोगों को अपने क्षितिज व्यापक करने में सक्षम होने का सौभाग्य मिला है। क्या यह दया नहीं है, जो मैंने उन पर बरसाई है? क्या वे वाकई मेरे अनुग्रह को बिलकुल नहीं समझ सकते? मनुष्य इतने जड़ और मंद-बुद्धि क्यों हैं? वे इतनी दूर आ गए हैं, फिर भी वे अभी तक क्यों नहीं जागे? मैं इस दुनिया में कई सालों से हूँ, लेकिन मुझे कौन जानता है? कोई आश्चर्य नहीं कि मैं लोगों को ताड़ना देता हूँ। ऐसा लगता है कि वही वे वस्तुएँ हैं, जिन पर मुझे अपने अधिकार का प्रयोग करना है; ऐसा लगता है कि वे मेरी बंदूक में गोलियों की तरह हैं, जिन्हें दागे जाने पर सब "बच" निकलेंगे। यह उनकी कल्पना है। मैंने हमेशा मनुष्यों का सम्मान किया है; मैंने कभी भी उनका मनमाने ढंग से उनका गुलामों की तरह शोषण या व्यापार नहीं किया है। इसका कारण यह है कि मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता, न वे ही मुझे छोड़ सकते हैं। इसलिए, हमारे बीच जीवन और मृत्यु का एक संबंध बन गया है। मैंने हमेशा मनुष्यों से प्रेम किया है। हालाँकि मनुष्यों ने कभी मुझसे प्रेम नहीं किया, लेकिन उन्होंने हमेशा मेरी ओर देखा है, और यही कारण है कि मैं उनके लिए प्रयास करना जारी रखता हूँ। मैं लोगों से अपने खज़ाने की तरह प्यार करता हूँ, क्योंकि वे पृथ्वी पर मेरे प्रबंधन की "पूँजी" हैं; इसलिए मैं निश्चित रूप से उन्हें नहीं मिटाऊँगा। मनुष्य के प्रति मेरी सोच कभी नहीं बदलेगी। क्या वे वास्तव में मेरी शपथ पर भरोसा कर सकते हैं? वे मुझे मेरी खातिर कैसे संतुष्ट कर सकते हैं? यह वह कार्य है, जो सारी मानव-जाति के लिए निर्धारित किया गया है; यही वह "गृह-कार्य" है, जो मैंने उन्हें करने के लिए दिया है। मुझे आशा है

कि वे सभी इसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे।

23 अप्रैल, 1992

अध्याय 36

सब-कुछ मेरे हाथ से व्यवस्थित है। कौन है, जो अपनी मनमर्ज़ी करने की हिम्मत करता है? कौन है, जो इसे आसानी से बदल सकता है? लोग हवा में धूल की तरह उड़ते रहते हैं, उनके चेहरे धूल-धूसरित होकर उन्हें सिर से पैर तक घिनौना बना देते हैं। मैं भारी मन से बादलों के बीच से देखता हूँ : मनुष्य, जो कभी जीवन-शक्ति से भरा रहता था, ऐसा क्यों हो गया हैं? और वह इससे अनजान और बेसुध क्यों है? क्यों वह "अपने प्रति लापरवाह हो जाता है" और स्वयं को गंदगी से ढकने देता है? अपने प्रति उसका प्रेम और सम्मान कितना कम है। मनुष्य हमेशा उससे क्यों बचता है, जो मैं उससे पूछता हूँ? क्या मैं वास्तव में उसके प्रति क्रूर और अमानवीय हूँ? क्या मैं वास्तव में असहिष्णु और अविवेकी हूँ? तो फिर लोग क्यों हमेशा मुझे घूरती हुई आँखों से देखते हैं? वे हमेशा मुझसे नफरत क्यों करते हैं? क्या मैं उन्हें रास्ते के अंत तक ले आया हूँ? मनुष्य ने मेरी ताड़ना में कभी कुछ भी नहीं पाया है, क्योंकि वह अपने दोनों हाथों से अपने गले की पट्टी पकड़ने के अलावा कुछ नहीं करता, उसकी दोनों आँखें मुझ पर टिकी रहती हैं, मानो किसी शत्रु पर नज़र रखे हों—और इसी पल मुझे समझ आता है कि वह कितना दुर्बल है। इसी कारणवश मैं यह कहता हूँ कि कोई भी कभी मेरे परीक्षणों के बीच दृढ़ता से खड़ा नहीं रहा है। क्या मनुष्य की कद-काठी ठीक ऐसी ही नहीं है? क्या मुझे उसे उसके "माप" के आँकड़े बताने की आवश्यकता है? मनुष्य का "कद" जमीन पर रेंगते हुए छोटे-से कीड़े से अधिक नहीं है, और उसकी "छाती" बस साँप की छाती जितनी चौड़ी है। यह कहकर मैं मनुष्य को छोटा नहीं कर रहा हूँ—क्या ये उसकी कद-काठी के सही आँकड़े नहीं हैं? क्या मैंने मनुष्य को नीचा दिखाया है? मनुष्य एक उछल-कूद करने वाले बच्चे की तरह है। कई बार तो वह जानवरों के साथ भी खेलता है, फिर भी वह खुश रहता है; और वह एक बिल्ली की तरह है, जो बिना किसी परवाह और चिंता के जीवन जीती है। शायद यह आत्मा की अगुआई या स्वर्ग के परमेश्वर की भूमिका की वजह से है कि मैं पृथ्वी के लोगों की उच्छृंखल जीवन-शैली से अत्यंत थका महसूस करता हूँ। मनुष्य के जीवन के कारण—जो किसी परजीवी के जीवन जैसा है—"मानव-जीवन" शब्दों में मेरी "रुचि" कुछ हद तक बढ़ गई है, और इसलिए मैं मानव-जीवन के प्रति थोड़ा अधिक "श्रद्धावान" बन गया हूँ।

क्योंकि ऐसा लगता है कि केवल मनुष्य ही एक ऐसा जीवन बनाने में सक्षम है, जिसका कोई अर्थ है, जबकि मैं यह करने में असमर्थ हूँ। इसलिए मैं केवल "पहाड़ों" में जाकर रह सकता हूँ, क्योंकि मैं मनुष्य की कठिनाइयों का अनुभव करने और उन्हें देखने में सक्षम नहीं हूँ। फिर भी मनुष्य अत्यावश्यक रूप से मुझे मजबूर करता है—मेरे पास कोई विकल्प नहीं है! मैं केवल मनुष्य के साथ अनुभवों का सारांश निकालते हुए और उसके साथ मानव-जीवन से गुजरते हुए उसकी व्यवस्थाओं का पालन कर सकता हूँ। स्वर्ग में मैंने एक बार पूरे शहर का दौरा किया, और स्वर्ग के नीचे मैंने एक बार सभी देशों का दौरा किया। फिर भी किसी ने मुझे खोजा नहीं; उन्होंने केवल मेरे चलने की आवाज सुनी। लोगों की नजरों में, मैं बिना किसी निशान या छाया के आता-जाता हूँ। ऐसा लगता है, मानो मैं उनके दिलों में एक अदृश्य प्रतिमा बन चुका हूँ, हालाँकि लोग इस पर विश्वास नहीं करते। क्या ऐसा हो सकता है कि यह सब मनुष्य द्वारा अपने मुँह से कबूले हुए तथ्य न हों? इस समय कौन यह स्वीकार नहीं करता कि उसे ताड़ना दी जानी चाहिए? क्या ठोस सबूत के सामने लोग अभी भी अपना सिर ऊँचा रख सकते हैं?

मैं मनुष्य के साथ एक "व्यावसायिक सौदा" कर रहा हूँ, मैं उसकी सारी अशुद्धता और अधार्मिकता मिटा देता हूँ, और इस तरह से उसे "संसाधित" करता हूँ, ताकि वह मेरे हृदय के अनुरूप बन जाए। किंतु कार्य के इस चरण में मनुष्य का सहयोग अनिवार्य है, क्योंकि वह हमेशा उस मछली की तरह उछलता-कूदता रहता है, जिसे अभी-अभी पकड़ा गया है। इसलिए, किसी दुर्घटना से बचने के लिए मैंने पकड़ी गई सभी "मछलियों" को मार दिया, जिसके बाद मछलियाँ आज्ञाकारी हो गईं, और अब थोड़ी-सी भी शिकायत नहीं करतीं। जब मुझे मनुष्य की आवश्यकता होती है, तो वह हमेशा छिपा रहता है। ऐसा लगता है, जैसे उसने कभी भी आश्चर्यजनक दृश्य नहीं देखे, जैसे कि वह ग्रामीण इलाकों में पैदा हुआ हो और शहर के मामलों के बारे में कुछ न जानता हो। मैं मनुष्य के उन हिस्सों में अपनी बुद्धि जोड़ता हूँ जिनमें कमियाँ हैं, और उसे मजबूर करता हूँ कि वह मुझे जाने; चूँकि मनुष्य बहुत गरीब है, इसलिए मैं व्यक्तिगत रूप से उसके पास आता हूँ और उसे अपनी आँखें खोलने के लिए बाध्य करते हुए "धन का मार्ग" देता हूँ। ऐसा करके क्या मैं उसे बचा नहीं रहा हूँ? क्या यह मनुष्य के लिए मेरी करुणा नहीं है? क्या प्रेम बेशर्त देना है? तो घृणा क्या ताड़ना है? मैंने मनुष्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाया है, लेकिन वह इसे केवल वचनों और सिद्धांतों की तरह मानता है। ऐसा लगता है, मानो मेरे कथन खराब माल हो, जिसे बट्टे-खाते डालकर मनुष्य को बेचा जाता हो। इसलिए, जब मैं लोगों को बताता हूँ कि पहाड़ी गाँव को लीलने के लिए एक बड़ा तूफान

आ रहा है, तो कोई इसके बारे में नहीं सोचता, उनमें से कुछ ही शंकित हृदय से अपने घर दूसरी जगह ले जाते हैं। बाकी नहीं हटते, वे ऐसे उदासीन रहते हैं मानो मैं आकाश में उड़ती अबाबील हूँ—वे मेरी कोई बात नहीं समझते। केवल जब पहाड़ गिरते हैं और पृथ्वी तितर-बितर होती है, तभी लोग मेरे वचनों के बारे में सोचते हैं, केवल तभी वे अपने सपनों से जागते हैं, लेकिन तब समय आ चुका होता है, वे एक विशाल बाढ़ द्वारा निगल लिए जाते हैं, उनकी लाशें पानी की सतह पर तैरने लगती हैं। दुनिया की व्यथा देखकर मनुष्य के दुर्भाग्य पर मेरे मुँह से एक आह निकल जाती है। मनुष्य के भाग्य की खातिर मैंने बहुत समय खर्च किया और बहुत बड़ी कीमत चुकाई। अपने मन में लोग समझते है कि मेरे पास आँसू की नलिकाएँ नहीं हैं—लेकिन मैंने, आँसू की नलिकाओं से रहित इस "सनकी" ने, मनुष्य के लिए बहुत आँसू बहाए हैं। किंतु मनुष्य इस बारे में कुछ नहीं जानता, वह पृथ्वी पर केवल अपने हाथों के खिलौनों से खेलता है, मानो मेरा अस्तित्व ही न हो। इस प्रकार, आज की परिस्थितियों में लोग सुन्न और मंदबुद्धि बने हुए हैं, वे अभी भी तहखानों में "जमे हुए" हैं, मानो वे अब भी किसी गुफा में पड़े हों। मनुष्य के कार्यों को देखकर मेरे पास एकमात्र विकल्प चले जाना है ...

लोगों की नजर में, मैंने बहुत-कुछ किया है जो मनुष्य के लिए अच्छा है, और इसलिए वे मुझे वर्तमान युग के लिए एक आदर्श के रूप में देखते हैं। फिर भी उन्होंने मुझे कभी भी मनुष्य के भाग्य का नियंता और सभी चीजों का निर्माता नहीं माना है। ऐसा लगता है, जैसे वे मुझे समझते नहीं हैं। हालाँकि किसी समय लोग "समझ लंबे समय तक जीवित रहे" का नारा लगाते थे, फिर भी किसी ने "समझ" शब्द का विश्लेषण करने में अधिक समय नहीं लगाया, जो दिखाता है कि लोगों में मुझसे प्रेम करने की कोई इच्छा नहीं है। आज के समय में लोगों ने मुझे कभी कीमती नहीं माना है, उनके हृदय में मेरी कोई जगह नहीं है। क्या वे आने वाले पीड़ादायक दिनों में मेरे प्रति सच्चा प्रेम दिखा सकते हैं? मनुष्य की धार्मिकता निराकार बनी हुई है, जिसे देखा या छुआ नहीं सकता। मुझे मनुष्य का हृदय चाहिए, क्योंकि मानव-शरीर में हृदय सबसे अधिक मूल्यवान है। क्या मेरे कर्म इस लायक नहीं कि उनकी कीमत मनुष्य के हृदय से चुकाई जा सके? लोग मुझे अपना हृदय क्यों नहीं देते? क्यों वे हमेशा उसे अपनी छाती से लगाए रखते हैं और जाने नहीं देना चाहते? क्या मनुष्य का हृदय लोगों के पूरे जीवन में शांति और खुशी सुनिश्चित कर सकता है? जब भी मैं लोगों से माँग करता हूँ, तो क्यों वे जमीन से मुट्ठी भर धूल उठाकर मेरी ओर फेंक देते हैं? क्या यह मनुष्य की कुटिल योजना है? ऐसा लगता है, मानो वे किसी राहगीर को बरगलाने की कोशिश कर रहे

हों, जिसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है, और उसे ललचाकर वापस अपने घर ले जाते हों और वहाँ बुरे बनकर उसे मार देते हों। लोगों ने मेरे साथ भी ऐसा ही करना चाहा है। ऐसा लगता है, मानो वे जल्लाद हों जो बिना पलक झपकाए किसी को भी मार देंगे, मानो वे शैतान के राजा हों जिसके लिए लोगों को मारना उसकी प्रकृति का हिस्सा हो। लेकिन अब लोग मेरे सामने आते हैं, जो अभी भी इस तरह के उपायों को आजमाना चाहते हैं—लेकिन उनके पास अपनी योजनाएँ हैं, और मेरे पास अपने प्रत्युपाय हैं। भले ही लोग मुझसे प्रेम न करते हों, फिर भी मैं इस समय अपने प्रत्युपाय मनुष्य के लिए सार्वजनिक क्यों नहीं कर सकता? मेरे पास मनुष्य को सँभालने के लिए असीम, अतुलनीय कौशल है; उसका प्रत्येक भाग मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से सँभाला जाता है, और मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से संसाधित किया जाता है। अंततः मैं मनुष्य को उसकी पसंद की चीजों से अलग होने का दर्द सहन करवाऊँगा, और उसे अपनी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पित करवाऊँगा, और उस समय, लोगों के पास शिकायत करने के लिए क्या होगा? क्या जो कुछ मैं करता हूँ, वह मनुष्य की खातिर नहीं है? गुजरे हुए समय में मैंने मनुष्य को अपने कार्य के कदमों के बारे में कभी नहीं बताया—लेकिन आज, अतीत से भिन्न समय में, चूँकि मेरे कार्य की सामग्री अलग है, इसलिए मैंने लोगों को अपने कार्य के बारे में अग्रिम रूप से बताया है, ताकि उन्हें इसके परिणामस्वरूप गिरने से रोका जा सके। क्या यह मनुष्य के शरीर में मेरे द्वारा लगाया गया टीका नहीं है? जो भी कारण रहा हो, लोगों ने कभी भी मेरे वचनों पर गंभीरता से विचार नहीं किया है; ऐसा लगता है, मानो वे भूखे हों और उन्हें इस बात की परवाह न हो कि वे क्या खा रहे हैं, जिससे उनके पेट खराब हो गए हैं। लेकिन लोग अपनी इस "स्वस्थ बनावट" को पूँजी के रूप में लेते हैं और "चिकित्सक" की चेतावनी पर ध्यान नहीं देते। उनकी ढीठता देखकर मैं स्वयं को मनुष्य के लिए चिंतित पाता हूँ। चूँकि लोग अपरिपक्व हैं और उन्हें अभी तक मानव-जीवन का अनुभव नहीं है, इसलिए उन्हें डर नहीं है; उनके दिलों में, "मानव-जीवन" शब्द मौजूद नहीं हैं, उन्हें उनकी कोई परवाह नहीं है, और वे बस मेरे वचनों से ऊब जाते हैं, मानो मैं बड़बड़ करने वाली बुढ़िया बन गया हूँ। संक्षेप में, जो भी मामला हो, मुझे आशा है कि लोग मेरा हृदय समझ पाएँगे, क्योंकि मनुष्य को मृत्यु की भूमि में भेजने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। मुझे आशा है कि मनुष्य यह समझेगा कि इस समय मेरी मनोदशा क्या है, और वह उस बोझ के प्रति विचारशील होगा, जिसे मैं ठीक इस समय वहन कर रहा हूँ।

26 अप्रैल, 1992

अध्याय 37

विभिन्न युगों में, मेरे द्वारा किए गए सम्पूर्ण कार्य के प्रत्येक चरण में मेरी समुचित कार्य-विधियाँ शामिल रही हैं इसी वज़ह से मेरे प्रिय लोग अधिक से अधिक शुद्ध, और मेरे उपयोग के लिए अधिकाधिक उपयुक्त बना दिए गए हैं। हालाँकि, इसी वजह से, "दुर्भाग्यपूर्ण बात" यह है कि जैसे-जैसे मेरी कार्य की विधियाँ बढ़ती जाती हैं, लोगों की संख्या घटती जाती है, और इसके कारण वे गहन चिंतन में डूब जाते हैं। बेशक, आज का यह कार्य भी कोई अपवाद नहीं है और ज़्यादातर लोग एक बार फिर से चिंतन में पड़ गए हैं, दरअसल, मेरे तरीकों में परिवर्तन की वजह से अभी भी कुछ लोग हैं जिन्हें पीछे हटना पड़ेगा। इसे इस तरह से समझाया जा सकता है : यह मेरे द्वारा पूर्वनियत था, लेकिन मेरे द्वारा किया नहीं गया था। सृजन के समय से लेकर अब तक, मेरी कार्य-विधियों के परिणामस्वरूप बहुत से लोगों का पतन हो चुका है और बहुत सारे लोग रास्ता खो चुके हैं। लेकिन मैं परवाह नहीं करता कि लोग क्या करते हैं—चाहे उन्हें लगता हो कि मैं स्नेही नहीं हूँ या बहुत क्रूर हूँ, चाहे उनकी समझ सही हो या न हो, मैं स्पष्टीकरण नहीं देता हूँ। आओ, सबसे पहले इस चर्चा के मुख्य मुद्दे पर सहभागिता करें ताकि हर कोई पूरी समझ हासिल कर सके और यह बात न समझ पाने से उन्हें रोका जा सके कि वे पीड़ा क्यों सहते हैं। मैं लोगों को गूँगों की तरह चुपचाप दुःख भोगने के लिए बाध्य नहीं करूँगा। इसके बजाय, मैं हर बात का स्पष्ट रूप से वर्णन करूँगा ताकि लोग मेरी शिकायत न करें। एक दिन मैं प्रत्येक से उनकी ताड़ना के बीच भी सच्ची स्तुति करवाऊँगा। क्या तुम्हें यह विधि स्वीकार्य है? क्या यह लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करती है?

ताड़ना के युग के प्रारंभ में, मैं सबसे पहले लोगों को इस "युग" के पीछे का सामान्य अर्थ बताऊँगा ताकि वे मेरा अपमान न करें। जैसे कि मैं अपने कार्य के लिए व्यवस्थाएँ करूँगा, जो किसी के द्वारा बदली नहीं जाएंगी, और मैं उन्हें बदलने वाले किसी भी व्यक्ति को आसानी से बिलकुल नहीं छोडूंगा : मैं उन्हें दंडित करूँगा। क्या यह तुम लोगों को याद रहेगा? यह सब "टीकाकरण" है। नए तरीकों में सभी लोगों को सबसे पहले यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि अपनी वास्तविक परिस्थितियों की समझ पाना पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है जिसे प्राप्त किया जाना है। स्वयं के बारे में कुछ समझ प्राप्त कर लेने से पहले, किसी को भी कलीसिया में लापरवाही से बोलने की अनुमति नहीं दी जाएगी, और मैं निश्चित रूप से इस नियम का उल्लंघन करने वाले को ताड़ना दूँगा। आज से, सभी प्रेरितों को कलीसियाओं में सूचीबद्ध किया जाएगा और अपनी इच्छा से यहाँ-वहाँ घूमते रहने से रोका जाएगा—इससे कुछ फल मिलेगा। वे सभी अपने

कर्तव्यों को पूरा करते हुए प्रतीत होते थे लेकिन वास्तव में वे मुझे धोखा दे रहे थे। जो भी हुआ, उसके बावजूद आज यह सब अतीत की बात हो गई है और इसे फिर से नहीं लाया जाना चाहिए। अब से, "प्रेरित" शब्द को समाप्त कर दिया जाएगा और पुनः कभी भी इसका उपयोग नहीं किया जाएगा, ताकि सभी लोग अपने "पदों" से नीचे आ सकें और स्वयं को जान सकें। निस्संदेह, यह उनके उद्धार के लिए है। एक "पद" कोई मुकुट नहीं है, यह संबोधन का एक शब्द मात्र है। क्या तुम लोग मेरा मतलब समझ रहे हो? कलीसियाओं का नेतृत्व करने वाले लोग अभी भी अपनी कलीसियाओं में कलीसिया का जीवन जिएँगे, हालाँकि निश्चित रूप से यह कोई कठोर नियम नहीं है। आवश्यक होने पर वे अन्य पूर्व प्रेरितों के साथ समन्वय में कलीसियाओं की यात्रा कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कलीसियाओं की संगति तब तक बढ़ाई जानी चाहिए, जब तक कि उनका कोई भी सदस्य वास्तव में कलीसिया का जीवन नहीं जी रहा हो। तब भी, मुझे अवश्य ज़ोर देना चाहिए कि तुम सभी को आत्मज्ञान और बड़े लाल अजगर के खिलाफ विद्रोह में अवश्य एकजुट रहना चाहिए। यह मेरी इच्छा है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि लोग कितना कहते हैं, बल्कि यह सबसे महत्वपूर्ण है कि मेरे सभी लोग एकजुट हो पाएँ, क्योंकि वास्तव में गवाही देने का वही एकमात्र तरीका है। अतीत में, सभी लोग कहते थे कि वे स्वयं को जान जाएँगे, फिर भी मैंने अनगिनत वचन कहे हैं, और तुम लोग स्वयं के बारे में कितना जाने हो? जितना अधिक ऊँचा किसी का पद होता है, उसके लिए स्वयं को निःस्वार्थ रखना उतना ही कठिन होता है, जितनी अधिक किसी की उम्मीदें होंगी, वह ताड़ना के दौरान उतना ही अधिक कष्ट भुगतेगा। यह मानवजाति का मेरा उद्धार है। क्या तुम लोग समझे? इसे सिर्फ बाहरी तौर पर मत आँको। ऐसा करना बहुत सतही होगा और इसका कोई मूल्य नहीं होगा। क्या तुम लोग यहाँ अंतर्निहित अर्थ को समझते हो? यदि कलीसिया के सदस्य वास्तव में स्वयं को समझने में समर्थ हैं, तो यह दर्शाएगा कि उस प्रकार के लोग वास्तव में मुझे प्रेम करते हैं। अर्थात, यदि तुम लोगों के साथ अपना भोजन साझा नहीं करते हो, तो तुम उनकी कठिनाइयों को नहीं समझोगे। तुम लोग इस कहावत को कैसे समझते हो? अंत में, ताड़ना के दौरान मैं सभी लोगों को स्वयं को जानने पर मजबूर करूँगा, और ऐसा होने के दौरान उनसे गाना गवाऊँगा और उन्हें हँसाऊँगा। क्या मुझे संतुष्ट करने लायक विश्वास तुममें होगा? तो तुम लोगों को अपने अभ्यास में क्या करना चाहिए? अब से, प्रत्येक कलीसिया के मामलों को उसी कलीसिया के उचित व्यक्तियों द्वारा सँभाला जाएगा, और प्रेरित केवल कलीसिया का जीवन जिएँगे। यही "जीवन का अनुभव करना" कहलाता है। क्या तुम लोग समझे?

ताड़ना के आधिकारिक रूप से मानवजाति पर आने से पूर्व, मैं लोगों पर "अभिवादन का कार्य" करूँगा ताकि अंत में वे सभी मुझे संतुष्ट कर सकें। यहाँ तक कि वे लोग भी जो पीछे हटने वाले हैं, उन्हें भी जाने से पहले अवश्य कष्ट उठाना होगा और अपनी गवाही को पूरा करना होगा, अन्यथा मैं उन्हें आसानी से जाने नहीं दूँगा। यह लोगों के अपराधों के प्रति मेरे असहिष्णु स्वभाव और साथ ही जो कुछ मैं कहता हूँ उसे पूरा करने वाले मेरे स्वभाव को दर्शाता है। इस प्रकार, मैंने अपना यह वादा पूरा कर दिया है कि "जो मैं कहता हूँ वही मेरा अर्थ होता है, जो मैं कहता हूँ वह किया जाएगा और जो मैं करता हूँ वह हमेशा के लिए बना रहेगा।" जैसे ही वचन मेरे मुँह से निकलते हैं, वैसे ही मेरा आत्मा अपना कार्य शुरू कर देता है। जिन "खिलौनों" को वे अपने हाथों में रखते हैं, उनके साथ जानबूझकर खेलने की हिम्मत कौन करेगा? हर किसी को मेरी ताड़ना को आदरपूर्वक और आज्ञाकारिता के साथ अवश्य स्वीकार करना चाहिए। इससे कौन बच सकता है? क्या मेरे मार्ग के अलावा कोई और मार्ग हो सकता है? आज मैंने तुम्हें धरती पर रहने की इजाज़त दी है, और तुम खुश हो; कल मैं तुम्हें स्वर्ग में आने दूँगा और तुम स्तुति करोगे। उसके बाद के दिन, मैं तुम्हें ज़मीन के नीचे रख दूँगा, जहाँ तुम्हें ताड़ना दी जाएगी। क्या ये सभी मेरे कार्य की अपेक्षाएँ नहीं हैं? मेरी अपेक्षाओं के वास्ते कौन दुर्भाग्य नहीं झेलता है, और उसे आशीष नहीं मिलते हैं? क्या तुम लोग अपवाद हो सकते हो? पृथ्वी पर मेरी प्रजा के रूप में, मेरी अपेक्षाओं और मेरी इच्छा के लिए, तुम लोगों को क्या करना चाहिए? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम लोग अपने हृदय में मुझसे घृणा करते हुए मुँह से मेरे पवित्र नाम की स्तुति करते हो? मेरे लिए कार्य करना और मेरे हृदय को संतुष्ट करना, और साथ ही अपने आप को समझना और बड़े लाल अजगर से विद्रोह करना आसान कार्य नहीं हैं और तुम लोगों को ऐसा करने की कीमत अवश्य चुकानी चाहिए। जब मैं "कीमत" कहता हूँ, तो तुम लोगों को क्या लगता है कि मेरा क्या मतलब है? मैं इस पर अभी चर्चा नहीं करूँगा और मैं लोगों को सीधे जवाब नहीं दूँगा। इसके बजाय, मैं उन्हें स्वयं इस पर चिंतन करने की और बाद में, अपने कार्यों और व्यवहार के माध्यम से मेरे सवालों का व्यावहारिक रूप से उत्तर देने की अनुमति देता हूँ। क्या तुम लोग ऐसा करने में समर्थ हो?

27 अप्रैल, 1992

अध्याय 38

मनुष्य के अनुभव में मेरी उपस्थिति का कोई चिह्न नहीं रहा है, न ही मेरे वचनों का मार्गदर्शन रहा है।

परिणामस्वरूप, मैंने मनुष्य को हमेशा अपने से दूर रखा और बाद में उसे छोड़ कर चला गया। मैं मानव जाति की अवज्ञा से घृणा करता हूँ। मुझे नहीं पता क्यों; ऐसा लगता है कि प्रारंभ से ही मैं मनुष्यों से घृणा करता रहा हूँ, लेकिन फिर भी मैं उनके लिए गहरी सहानुभूति महसूस करता हूँ। इस तरह मेरे प्रति लोगों ने हमेशा दो रवैये रखे हैं—क्योंकि मैं मनुष्य से प्रेम भी करता हूँ, और उससे घृणा भी करता हूँ। मनुष्यों में से कौन मेरे प्रेम को सच में ध्यान में रखता है? और कौन मेरी घृणा को ध्यान में रखता है? मेरी दृष्टि में, मनुष्य एक मृत वस्तु है, जीवन से रहित, जैसे कि सभी चीज़ों के बीच खड़ी मिट्टी की प्रतिमाएँ हों। मनुष्य अपनी अवज्ञा द्वारा समय-समय पर मेरे क्रोध को उकसाता रहता है। जब मैं मनुष्यों के बीच रहता हूँ, तब मेरे अचानक आ जाने पर वे एक फीकी-सी मुस्कराहट देते हैं, क्योंकि वे हमेशा मुझे सचेतन रूप से "खोजते" रहते हैं, मानो मैं उनके साथ पृथ्वी पर खेल रहा हूँ। वे कभी मुझे गंभीरता से नहीं लेते, और इसलिए मेरे प्रति उनके रवैये के कारण, मेरे पास मानव जाति की "कार्य इकाई" से "सेवानिवृत्त" हो जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। फिर भी, मैं यह बता देना चाहता हूँ कि भले ही मैं "सेवानिवृत्त" हो रहा हूँ, लेकिन मेरी "पेंशन" एक पाई भी कम नहीं हो सकती है। इंसानों की "कार्य इकाई" में मेरी "वरिष्ठता" की वजह से, मैं उनसे उस भुगतान की माँग करना जारी रखता हूँ जो अभी भी देय है। यद्यपि मनुष्यों ने मुझे छोड़ दिया है, पर वे मेरी पकड़ से कैसे बच सकते हैं? एक बार मैंने कुछ हद तक उन पर अपनी पकड़ ढीली कर दी थी, उनको अपनी शारीरिक वासनाओं में लिप्त होने की इजाज़त दी थी, और इसलिए उन्होंने बिना किसी नियंत्रण के, निरंकुश ढंग से आचरण करने की हिम्मत की, जिससे यह देखा जा सकता है कि वे वास्तव में मुझे प्यार नहीं करते हैं, क्योंकि वे सभी देह में जीते हैं। क्या यह संभव है कि देह के बदले में सच्चा प्रेम दिया जाता है? क्या यह हो सकता है कि मैं मानव से केवल देह का "प्रेम" चाहता हूँ? यदि वास्तव में ऐसा ही होता, तो मनुष्य का मोल होता? सभी मनुष्य बेकार कचरा हैं! यदि मुझमें सहनशीलता की "विशेष शक्ति" न होती, तो मैं मनुष्य को बहुत पहले छोड़ चुका होता—आखिर क्यों उनके साथ रहकर उनकी "धौंस" झेली जाए? लेकिन फिर भी मैं सहन करता हूँ। मैं मनुष्य के "मामले" की तह तक जाना चाहता हूँ। जब मैं पृथ्वी पर अपना कार्य समाप्त कर लूँगा तो मैं सभी चीज़ों के "मालिक" का न्याय करने के लिए आकाश में ऊपर उठ जाऊँगा; यह मेरा प्राथमिक कार्य है, क्योंकि मनुष्य के प्रति मेरी घृणा पहले ही एक निश्चित हद तक पहुँच चुकी है। कौन अपने दुश्मन से नफरत नहीं करता? कौन अपने दुश्मन का विनाश नहीं करेगा? स्वर्ग में, शैतान मेरा वैरी है; पृथ्वी पर, मनुष्य मेरा शत्रु है। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच

संयोजन की वजह से, मैं उन सभी को उनकी नौ पीढ़ियों तक दोषी मानता हूँ, और किसी एक को भी क्षमा नहीं किया जाएगा। किसने उन्हें मेरा प्रतिरोध करने के लिए कहा था? किसने उन्हें मेरी अवज्ञा करने के लिए कहा था? ऐसा क्यों है कि लोग अपनी पुरानी प्रकृति से अपने लंबित संबंधों को तोड़ने में अक्षम हैं? ऐसा क्यों है कि उनकी देह हमेशा उनके भीतर अपना दबदबा बढ़ाती रहती है? ये सब मनुष्य के बारे में मेरे न्याय के सबूत हैं। तथ्यों के सामने न झुकने की हिम्मत कौन कर सकता है? कौन कह सकता है कि मेरा न्याय भावनाओं के रंग में रंगा हुआ है? मैं मनुष्य से भिन्न हूँ, इसलिए मैं उससे दूर जाता हूँ, क्योंकि मैं तो मनुष्य हूँ ही नहीं।

मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसकी एक बुनियाद, उसका एक आधार होता है; जब मनुष्य अपने मुख से मेरे सामने "सच्चाई" का "खुलासा" करता है, मैं उन्हें "फाँसी के मैदान" में ले जाता हूँ, क्योंकि मानव जाति का अपराध मेरी ताड़ना का पात्र होने के लिए पर्याप्त है। और इसलिए मैं आँखें मूँद कर लोगों को ताड़ना नहीं देता; बल्कि, मेरी ताड़ना उनके अपराधों की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार होती है। अन्यथा मानव जाति विद्रोही होने के कारण कभी नहीं झुकेगी और मेरे सामने अपने अपराध को स्वीकार नहीं करेगी। वर्तमान परिस्थिति के कारण सभी लोग अनिच्छा से अपने सिर तो झुकाते हैं, परंतु उनके दिल अभी भी यकीन नहीं करते हैं। मैं लोगों को "बेरियम" पिलाता हूँ, और इसलिए उनके भीतरी अंग एक "फ़्लोरोस्कोप" में स्पष्ट दिखाई देते हैं; लोगों के पेट के अंदर की गंदगी और अशुद्धता हटाई नहीं गई है; उनकी नसों में विभिन्न प्रकार की गंदगी प्रवाहित होती रहती है, और इसलिए उनके भीतर का विष बढ़ता रहता है। चूँकि लोग इतने लंबे समय से इन्हीं परिस्थितियों में रहते आए हैं, वे इनके आदी हो गए हैं और उन्हें अब यह अजीब नहीं लगता। परिणामस्वरूप, उनके भीतर के कीटाणु परिपक्व हो जाते हैं, वे उनकी प्रकृति बन जाते हैं, और हर कोई उनके वर्चस्व में रहता है। यही कारण है कि लोग जंगली घोड़ों की तरह सभी जगह भागते फिरते हैं। फिर भी वे इसे पूरी तरह से स्वीकार नहीं करते हैं, वे बस अपने सिर हिलाकर अपनी मौन स्वीकृति ज़ाहिर करते हैं। सच तो यह है कि मनुष्य मेरे वचनों को गंभीरता से नहीं लेते हैं। यदि वे मेरे वचनों को अच्छा उपचार मानते, तो वे "चिकित्सक के आदेशों का पालन" करते और उस उपचार को अपने अंदर की बीमारी को ठीक करने देते। बहरहाल, मेरे विचार में, जिस तरह से वे व्यवहार करते हैं, उसे देखते हुए यह इच्छा पूरी नहीं हो सकती, और इसलिए मैं केवल इस "अप्रिय स्थिति का सामना" कर सकता हूँ और उनसे बात करना जारी रख सकता हूँ, चाहे वे सुनें या न सुनें : मैं केवल अपना कर्तव्य

निभा रहा हूँ। मनुष्य मेरे आशीषों का आनंद लेने के इच्छुक नहीं हैं, इसके बजाय वे नरक की यातना से गुज़रना पसंद करेंगे—इसलिए मैं उनके अनुरोध को स्वीकार करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। फिर भी, इसलिए कि मेरा नाम और मेरा आत्मा नरक में शर्मिंदा न हों, मैं पहले उनको अनुशासित करूँगा और फिर उनकी इच्छाओं को "स्वीकार" कर लूँगा, ताकि वे "खुशी से भर जाएँ।" मेरा ध्वज लहरा रहे मनुष्यों को मैं कभी भी या कहीं भी, मुझे ही शर्मिंदा करने की अनुमति देने को तैयार नहीं हूँ, यही कारण है कि मैं उन्हें बार-बार अनुशासित करता हूँ। मेरे कठोर कथनों के अंकुशों के बिना, मनुष्य आज तक मेरे सामने खड़ा कैसे रह सकता था? क्या लोग पाप से सिर्फ इसीलिए नहीं बचते कि उन्हें डर है कि मैं छोड़कर चला जाऊँगा? क्या यह सच नहीं है कि वे केवल इसीलिए शिकायत नहीं करते कि उन्हें ताड़ना से डर लगता है? क्या कोई ऐसा है जिसके संकल्प केवल मेरी योजना की खातिर हैं? लोगों को लगता है कि मेरी प्रकृति दिव्य है जिसमें "बुद्धि के गुण" का अभाव है, लेकिन कौन समझ सकता है कि मैं अपनी मानवता में सभी चीज़ों की असल प्रकृति पहचान सकता हूँ? जैसा कि लोग कहते हैं, "एक कील को लोहार के हथौड़े से क्यों ठोका जाए?" मनुष्य मुझे "प्यार करता है", इसलिए नहीं कि मेरे लिए उसका प्यार जन्मजात है, बल्कि इसलिए कि उसे ताड़ना से डर लगता है। मनुष्यों में ऐसा कौन है जो मुझे जन्म से प्रेम करता है? क्या कोई भी ऐसा है जो मेरे साथ वैसा व्यवहार करता है जैसा वह अपने दिल के साथ करता है? और इसलिए मैं इस बात को मानव जगत के लिए एक कहावत के साथ पूरा करता हूँ : मनुष्यों में, कोई भी ऐसा नहीं जो मुझे प्रेम करता है।

मैंने अपने कार्य की गति को सिर्फ इसलिए इतना तेज़ कर दिया है क्योंकि मैं पृथ्वी पर अपना कार्य समाप्त करना चाहता हूँ, अन्यथा मैं लोगों को बहुत दूर फेंक दूँगा, इतनी दूर कि वे अथाह महासागर में जा गिरेंगे। वे कुछ हद तक इसलिए चौकन्ने हो गए हैं क्योंकि मैंने उन्हें मामले की वास्तविकता पहले से ही बता दी है। यदि ऐसा न होता, तो कौन तूफानी मौसम से ठीक पहले पाल को ऊपर उठा देगा? सभी लोग सतर्कता से काम कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि मैं उनकी आँखों में एक लुटेरा बन गया हूँ। उन्हें डर है कि मैं उनके घरों से उनकी सारी चीजें ले जाऊँगा, और इसलिए वे सभी अपने दरवाजों के पीछे अपनी पूरी ताकत के साथ अड़ जाते हैं, बुरी तरह से डरते हुए कि मैं अचानक अंदर न घुस आऊँ। जब मैं उन्हें डरपोक चूहों की तरह व्यवहार करते हुए देखता हूँ, तो मैं चुपचाप चल देता हूँ। लोगों को लगता है कि दुनिया में कयामत आने वाली है, और इसलिए बुरी तरह डरकर वे इधर-उधर भागते हैं। सिर्फ उसी समय

मैं भूतों को धरती पर हर जगह भटकते देखता हूँ। मैं अपनी हँसी को रोक नहीं पाता हूँ, और मेरी हँसी की आवाज से मनुष्य हैरान और भयभीत हो जाता है। तब मुझे मामले की सच्चाई का एहसास होता है, और इसलिए मैं अपनी मुस्कुराहट रोक लेता हूँ, और मैं पृथ्वी की घटनाओं पर नजर रखने की बजाय फिर से अपनी मूल योजना के अनुसार कार्य करने लगता हूँ। अब मैं मनुष्यों को ऐसे नमूने के रूप में नहीं मानता जो मेरी शोध में प्रतिरूप का काम करते हैं, क्योंकि वे कचरे से ज्यादा कुछ नहीं हैं। एक बार मैं उन्हें त्याग दूँ, तो उनका कोई उपयोग नहीं रहता—वे कचरे के टुकड़े मात्र हैं। इस मुकाम पर, मैं उन्हें मिटा दूँगा और उन्हें आग में डाल दूँगा। मनुष्य के मन में, मेरी दया और प्रेमपूर्ण करुणा, मेरे न्याय, मेरे प्रताप और मेरे कोप में निहित है। लेकिन वे नहीं जानते हैं कि मैंने उनकी कमजोरियों को बहुत पहले ही अनदेखा कर दिया है, और बहुत पहले अपनी दया और प्रेमपूर्ण करुणा को वापस ले लिया है, और यही कारण है कि वे इस वर्तमान स्थिति में हैं। कोई भी मुझे नहीं जान सकता, न ही मेरे वचनों को समझ सकता है या मेरा चेहरा देख सकता है, न ही मेरी इच्छा को समझ सकता है। क्या यह मानव की वर्तमान स्थितियां नहीं हैं? तो कोई कैसे कह सकता है कि मुझमें दया या प्रेमपूर्ण करुणा है? मैं मनुष्य की कमजोरियों की परवाह नहीं करता, और न ही मैं उसकी कमियों पर "ध्यान" देता हूँ। क्या यह फिर भी मेरी दया या प्रेमपूर्ण करुणा हो सकती है? और क्या यह फिर भी, मानवता के लिए मेरा प्यार हो सकता है? सभी लोगों का मानना है कि मैं "खोखली मीठी बातें" करता हूँ, और इसलिए वे मेरे कहे गए वचनों पर विश्वास नहीं करते हैं। लेकिन क्या कोई यह जानता है : "चूँकि यह एक अलग युग है, इसलिए वर्तमान में मेरी दया या प्रेमपूर्ण करुणा मौजूद नहीं हैं; फिर भी मैं हमेशा वह परमेश्वर हूँ जो वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा"? मैं मानव जाति के बीच में हूँ, और लोग अपने मन में मुझे सर्वोच्च रूप में देखते हैं, और यह मानते हैं कि मुझे अपनी बुद्धि के भीतर से बोलना अच्छा लगता है। इस कारण, वे मेरे वचन को पूरी तरह सच नहीं मानते हैं। लेकिन मेरे बोलों के पीछे के नियमों को या मेरे वचनों के मूल को कौन समझ सकता है? मैं वास्तव में क्या पूरा करना चाहता हूँ, इसे कौन समझ सकता है? मेरी प्रबंधन योजना के समापन के विवरण के आर-पार कौन देख सकता है? कौन मेरा विश्वासपात्र हो सकता है? सबसे बढ़कर, मेरे अलावा और कौन समझ सकता है कि मैं वास्तव में क्या कर रहा हूँ? और मेरे अंतिम ध्येय को कौन जान सकता है?

30 अप्रैल, 1992

अध्याय 39

प्रतिदिन मैं अपने हाथों से बनाई सभी चीज़ों का अवलोकन करते हुए ब्रह्मांडों के ऊपर से गुजरता हूँ। स्वर्गों के ऊपर मेरे विश्राम का स्थान है और उनके नीचे वह भूमि है, जहाँ मैं विचरता हूँ। जो कुछ भी है, मैं उस सब पर शासन करता हूँ, मैं सभी चीज़ों में सबको आज्ञा देता हूँ ताकि जो कुछ भी है वह प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करे और प्रकृति की आज्ञा के प्रति समर्पित हो। चूँकि मैं उन लोगों से नफ़रत करता हूँ, जो अवज्ञाकारी हैं और उनसे घृणा करता हूँ जो मेरे विरोधी हैं और अपने ही वर्गीकरण में नहीं आते, मैं हर चीज़ को बिना प्रतिरोध अपनी व्यवस्था में समर्पित कराऊँगा, मैं ब्रह्मांड के ऊपर और भीतर सभी को व्यवस्थित कर दूँगा। कौन अब भी मनमाने ढंग से मेरा विरोध करने का साहस करेगा? कौन मेरे हाथ से की गई व्यवस्था का पालन न करने की हिम्मत करेगा? मेरे ख़िलाफ़ विद्रोह करने में किसी भी व्यक्ति का "हित" कैसे हो सकता है? मैं लोगों को उनके "पूर्वजों" के सामने लाऊँगा, उनके पूर्वजों द्वारा उन्हें उनके परिवारों में वापस भेजूँगा और उन्हें अपने पूर्वजों के ख़िलाफ़ विद्रोह तथा मेरी ओर लौटने की इजाज़त नहीं होगी। ऐसी मेरी योजना है। आज, मेरा आत्मा पृथ्वी पर विचरता है, सभी प्रकार के लोगों के लिए संख्याएं निर्धारित करते हुए, हर तरह के व्यक्ति को अलग-अलग निशानों से चिह्नित करता है, ताकि उनके पूर्वज उन्हें सफलतापूर्वक उनके परिवारों में वापस ले जा सकें और मुझे उनके बारे में निरंतर "चिंता" करने की ज़रूरत न पड़े, जो बहुत थकाने वाला है; इस प्रकार, मैं श्रम को विभाजित करता हूँ और प्रयासों को बाँट देता हूँ। यह मेरी योजना का हिस्सा है और कोई मनुष्य इसमें रुकावट नहीं डाल सकता। जो कुछ है उन सभी चीजों के प्रबंधन के लिए मैं उपयुक्त प्रतिनिधियों का चयन करूँगा, ताकि सभी मेरे सामने व्यवस्थित रूप से समर्पण कर सकें। मैं प्राय: स्वर्गों के ऊपर घूमता रहता हूँ और अक्सर उनके नीचे चलता हूँ। उस विशाल दुनिया का अवलोकन करते हुए, जिसमें लोग आते-जाते हैं, धरती पर सघनता से बसी हुई मानव जाति को और इस ग्रह पर रहने वाले पक्षियों और जानवरों को देखते हुए, मैं अपने दिल में भावुक हुए बिना नहीं रह पाता। क्योंकि सृष्टि के समय मैंने सभी चीज़ें बनाईं और हर चीज़ की संपूर्णता मेरी व्यवस्था के तहत अपनी जगह अपना कर्तव्य निभाती है, मैं ऊँचे स्थान से हँसता हूँ और जब स्वर्गों के नीचे सभी चीज़ें मेरी हँसी की आवाज़ सुनती हैं, तो वो तुरंत प्रेरित हो जाती हैं, क्योंकि इस समय मेरा महान उद्यम पूरा हो जाता है। मैं मनुष्य के भीतर स्वर्ग का ज्ञान जोड़ता हूँ, ताकि वह सभी चीज़ों के बीच मेरा प्रतिनिधित्व करे, क्योंकि मैंने मनुष्य को इसलिए बनाया था कि वह मेरा प्रतिनिधि हो सके, मेरी अवज्ञा न करे, बल्कि अपने

दिल की गहराई से मेरी प्रशंसा करता रहे। और इन सरल वचनों को पाने में कौन सक्षम है? मनुष्य हमेशा अपने लिए ही अपना दिल क्यों रखता है? क्या उसका दिल मेरे लिए नहीं है? ऐसा नहीं है कि मैं बिना शर्त मनुष्य से माँगता हूँ, बल्कि वह हमेशा मेरा अपना रहा है। जो चीज़ें मेरी अपनी हैं, उन्हें मैं लापरवाही से दूसरों को कैसे दे सकता हूँ? मेरे बनाए हुए "वस्त्र" मैं किसी और को पहनने के लिए कैसे दे सकता हूँ? लोगों की नज़रों में, यह ऐसा है मानो मैं पागल हो गया हूँ, मानसिक बीमारी से पीड़ित हूँ और मनुष्यों के तौर-तरीक़ों को बिल्कुल नहीं समझता; ऐसा है जैसे मैं जड़बुद्धि हूँ। और इसीलिए, लोग हमेशा मुझे भोले-भाले के रूप में देखते हैं पर वो कभी भी सचमुच मुझे प्रेम नहीं करते। क्योंकि मनुष्य जानबूझकर मुझे बेवकूफ़ बनाने के लिए जो कुछ करता है, मैं क्रोध के एक दौरे में पूरी मानव जाति को मिटा देता हूँ। जो चीज़ें मैंने बनाई हैं, उन सबमें केवल मानव जाति ही सदा से मेरे साथ चालाकी से पेश आने की कोशिश कर रही है और केवल यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि मनुष्य सभी चीज़ों का "शासक" है।

आज, मैं सभी लोगों को शोधन के लिए, "बड़ी भट्ठी" में डाल देता हूँ। मैं ऊँचाई पर खड़े होकर ध्यानपूर्वक लोगों को आग की लपटों में जलते देखता हूँ और लपटों में घिरे लोग सच्चाई उगल देते हैं। यह उन तरीक़ों में से एक है, जिसके ज़रिए मैं कार्य करता हूँ। यदि यह ऐसा न होता, तो लोग खुद के "दीन" होने का दावा करते और उनमें से कोई भी अपने अनुभवों की बात करने के लिए अपना मुँह खोलने के लिए तैयार नहीं होता, बल्कि सभी एक-दूसरे का मुँह ताकते रहते। ठीक यही मेरी बुद्धि का ठोस रूप है कि मैंने आज के मामलों को युगों पहले ही पूर्व-निर्धारित कर दिया था। इस प्रकार, लोग अनजाने में भट्ठी में प्रवेश करते हैं, जैसे उन्हें रस्सी से खींचा गया हो, जैसे वो सुन्न हो गए हों। कोई भी लपट की मार से बच नहीं सकता, वे एक-दूसरे पर "हमला करते" हैं, वे "आनंद से भागते-फिरते" हैं, फिर भी भट्ठी में अपनी नियति को लेकर झल्लाते हैं, बेहद डरते हैं कि उन्हें जलाकर मार दिया जाएगा। जब मैं आग को भड़काता हूँ, तो वह तुरंत तेज़ होकर आकाश की ओर उठ जाती है और अक्सर लपटें मेरी पोशाक तक आ जाती हैं, मानो उन्हें भट्ठी में खींचने की कोशिश कर रही हों। लोग मुझे फटी आँखों से देखते हैं। तुरंत मैं भट्ठी के भीतर आग पर नज़र डालता हूँ और उसी क्षण लपटें बड़ी हो जाती हैं और लोग दुहाई देने लगते हैं। मैं आग के बीच इधर-उधर फिरता हूँ। आग की लपटें और बढ़ती हैं पर मुझे नुक़सान पहुँचाने का उनका कोई इरादा नहीं होता और मैं एक बार फिर अपने शरीर के वस्त्रों को लपटों को सौंप देता हूँ—फिर भी वो मुझसे दूरी बनाए रखती हैं। केवल तभी लोगों को लपटों की रोशनी में मेरा सच्चा चेहरा दिखाई देता है।

क्योंकि वो भट्ठी की झुलस के मध्य में हैं, वो मेरे चेहरे को देख सभी दिशाओं में भागते हैं और भट्ठी में तुरंत "उबाल" शुरू हो जाता है। वो सभी जो लपटों में घिरे हैं, मनुष्य के पुत्र को देखते हैं, जिसका लपट में शोधन हुआ है। हालांकि उसके शरीर पर साधारण कपड़े हैं, पर वो अत्यंत सुंदर हैं; हालांकि उसके पैरों पर मामूली जूते हैं, पर वो बड़ी ईर्ष्या जगाते हैं; एक तेजस्वी आभा उसके चेहरे पर जगमगाती है, उसकी आँखें चमकती हैं और ऐसा लगता है कि यह उसकी आँखों के प्रकाश की वजह से ही है कि लोग उसके असली चेहरे को स्पष्ट रूप से देख पाते हैं। लोग स्तंभित हो जाते हैं, उन्हें उसके शरीर पर एक सफेद वस्त्र दिखता है और ऊन की तरह सफेद उसके बाल उसके कंधों पर लटकते हैं। ख़ासकर उसके सीने पर एक सोने की पेटी चकाचौंध करने वाले प्रकाश से चमकती है, जबकि उसके पैरों में जूते और अधिक प्रभावशाली हैं। और चूँकि मनुष्य के पुत्र द्वारा पहने हुए जूते आग के बीच बने रहते हैं, लोग उन्हें चमत्कारिक समझते हैं। केवल दर्द की कराह के बीच लोगों को मनुष्य के पुत्र का मुँह दिखाई देता है। यद्यपि वो आग द्वारा शोधन के बीच हैं, वो मनुष्य के पुत्र के मुँह से निकले किसी वचन को नहीं समझते और इस प्रकार, इस समय, वो मनुष्य के पुत्र की मधुर आवाज़ और नहीं सुन पाते, बल्कि उसके मुँह में एक तेज़ तलवार रखी देखते हैं और वह अब और कोई कथन नहीं कहता पर उसकी तलवार मनुष्य को पीड़ा देती है। लपटों में घिरे लोग पीड़ा सहन करते हैं। अपनी जिज्ञासा के कारण वो लगातार मनुष्य के पुत्र का असाधारण रूप देखते रहते हैं और ठीक इसी समय वो जान पाते हैं कि उसके हाथ में मौजूद सात सितारे ग़ायब हो गए हैं। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भट्ठी में है, धरती पर नहीं, उसके हाथ के सात सितारे ले लिए जाते हैं क्योंकि वो मात्र रूपक हैं। इस समय, अब उनका उल्लेख और नहीं किया जाता, लेकिन वो मनुष्य के पुत्र के विभिन्न हिस्सों में बाँट दिए जाते हैं। लोगों की यादों में, सात सितारों का अस्तित्व बेचैनी लेकर आता है। आज, मैं मनुष्य के लिए अब चीज़ें और मुश्किल नहीं बनाता, मैं मनुष्य के पुत्र से सात सितारों को हटा लेता हूँ और मनुष्य के पुत्र के सभी हिस्सों को आपस में एक कर देता हूँ। केवल इसी पल मनुष्य मेरा पूरा प्रकटन देखता है। लोग मेरे आत्मा को अब मेरी देह से अलग नहीं करेंगे क्योंकि मैं पृथ्वी से ऊँचाई पर चढ़ गया हूँ। लोगों ने मेरा सच्चा चेहरा देखा है, अब वे मुझे नहीं तोड़ते और अब मैं मनुष्य की निंदा को सहन नहीं करता। क्योंकि मैं मनुष्य के साथ-साथ बड़ी भट्ठी में जाता हूँ, वह अभी भी मुझ पर भरोसा करता है, वह अपनी चेतना में मेरे अस्तित्व को महसूस करता है। इस प्रकार, जो कुछ भी शुद्ध स्वर्ण है, वह धीरे-धीरे आग के जलने के दौरान मेरे साथ एकत्रित होता जाता है, जो वही क्षण है जब प्रत्येक

को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। मैं हर तरह की "धातु" को श्रेणीबद्ध करता हूँ, जिससे वो सभी अपने परिवारों में लौट जाते हैं और केवल अब सभी चीज़ें पुनर्जीवित होनी शुरू होती हैं ...

मनुष्य चूँकि बहुत दूषित है तो मैं उसे भट्ठी में तपाने के लिए झोंक देता हूँ। फिर भी वह लपटों से मिटता नहीं, बल्कि उसका शोधन हो जाता है ताकि मैं उससे प्रसन्न हो सकूँ—मैं जो चाहता हूँ, वह शुद्ध सोने से बनी हुई अशुद्धियों से रहित चीज़ है, गंदी या दूषित चीज़ें नहीं। लोग मेरा मनोभाव नहीं समझते, इसलिए "ऑपरेशन की मेज़" पर चढ़ने से पहले वो चिंता से घिरे होते हैं, मानो उन पर चीरा लगाने के बाद, मैं वहीं और उसी समय उन्हें मार डालने वाला हूँ, जब वे ऑपरेशन की मेज़ पर लेटे रहते हैं। मैं लोगों का मिज़ाज समझता हूँ और इस प्रकार मैं मानव जाति का ही एक सदस्य प्रतीत होता हूँ। मुझे मनुष्य के "दुर्भाग्य" को लेकर बहुत ही करुणा है और मुझे पता नहीं कि मनुष्य क्यों "बीमार पड़ा है।" अगर वह स्वस्थ होता और बिना किसी अक्षमता के होता, तो यह क़ीमत चुकाने और ऑपरेशन की मेज़ पर समय बिताने की क्या आवश्यकता होती? लेकिन तथ्य झुठलाए नहीं जा सकते—किसने मनुष्य से कहा था कि वह "भोजन की स्वच्छता" पर कोई ध्यान न दे? किसने उसे स्वस्थ होने पर ध्यान न देने के लिए कहा था? आज मेरे पास और क्या तरीक़े बचे हैं? मनुष्य के प्रति अपनी करुणा दिखाने के लिए, मैं उसके साथ "ऑपरेशन के कमरे" में प्रवेश करता हूँ—और किसने मुझे मनुष्य से प्यार करने के लिए कहा था? इस प्रकार, मैं ख़ुद "शल्य चिकित्सक का चाकू" उठाता हूँ और किसी भी रोगोत्तर लक्षण से बचाने के लिए मनुष्य का "ऑपरेशन" शुरू करता हूँ। मनुष्य के प्रति मेरी वफ़ादारी के कारण, लोग मेरे प्रति कृतज्ञता दिखाने के लिए दर्द के बीच आँसू बहाते हैं। लोगों का मानना है कि मैं नेकी को बहुमूल्य मानता हूँ, कि जब भी मेरे "दोस्त" मुश्किलों में होंगे, तो मैं सहायता का हाथ आगे बढ़ाऊँगा, और लोग मेरी दयालुता के लिए और अधिक आभारी हैं और वो कहते हैं कि जब उनकी बीमारी ठीक हो जाएगी, तो वो मुझे "उपहार" भेजेंगे—पर मैं उनकी इन मनोरथ वाली अभिव्यक्तियों पर कोई ध्यान नहीं देता और इसके बजाय मनुष्य की शल्य-चिकित्सा पर ध्यान केंद्रित करता हूँ। मनुष्य की शारीरिक कमजोरी के कारण, चाकू के प्रभाव से वह अपनी आँखें भींचकर बंद कर देता है और ऑपरेशन की मेज़ पर स्तंभित पड़ा रहता है—फिर भी मैं कोई ध्यान नहीं देता और जो काम हाथ में है, उसे जारी रखता हूँ। जब ऑपरेशन पूरा हो जाता है, लोग "बाघ के जबड़ों" से बच निकलते हैं और मैं उन्हें प्रचुर पौष्टिक तत्वों के साथ उनको पोषण देता हूँ और भले ही उन्हें पता नहीं होता, उनके भीतर पोषक तत्व धीरे-धीरे बढ़ते जाते हैं। तब मैं उन पर मुस्कराता हूँ और

वो मेरे सच्चे चेहरे को केवल तभी देखते हैं, जब वो फिर से स्वस्थ हो जाते हैं और इसलिए वो मुझे और ज़्यादा प्यार करते हैं, मुझे अपने पिता के रूप में मानते हैं—और क्या यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच की कड़ी नहीं है?

4 मई, 1992

अध्याय 40

लोग मेरी हर गतिविधि पर आँखें गड़ाए रहते हैं, जैसे कि मैं आसमान गिराने वाला हूँ, और हमेशा मेरे कामों से हक्के-बक्के रहते हैं, जैसे कि मेरे काम उनके लिए पूरी तरह से अथाह हों। इस प्रकार, वे जो कुछ भी करते हैं, उसमें इस बात से बहुत डरते हुए कि वे स्वर्ग को नाराज़ कर देंगे और "नश्वरों की दुनिया" में डाल दिए जाएँगे, वे मुझसे संकेत लेते हैं। मैं ऐसी किसी चीज़ की तलाश करने की कोशिश नहीं करता जिसका प्रयोग मैं लोगों के विरुद्ध, या उनकी कमियों को मेरे कार्य का लक्ष्य बनाने के लिए कर सकूँ। इस समय, वे बहुत खुश हैं, और मुझ पर भरोसा करने लगे हैं। जब मैं मनुष्यों को देता हूँ, तब वे मुझसे वैसे ही प्यार करते हैं जैसे कि वे अपने जीवन से प्यार करते हैं, लेकिन जब मैं उनसे चीज़ों की माँग करता हूँ, तो वे मुझसे दूर होने लगते हैं। ऐसा क्यों है? क्या वे मानव संसार की "निष्पक्षता और तर्कसंगतता" को अभ्यास में नहीं ला सकते हैं? मैं लोगों से ऐसी माँगें बार-बार क्यों करता हूँ? क्या ऐसा वास्तव में इसलिए है कि मेरे पास कुछ भी नहीं है? लोग मुझसे भिखारी जैसा व्यवहार करते हैं। जब मैं उनसे चीज़ें माँगता हूँ, तो वे अपने "बचे-खुचे" को मेरे आगे कर देते हैं कि मैं उसका "आनंद" लूँ और यह भी कहते हैं कि वे मेरा विशेष ध्यान रख रहे हैं। मैं उनके बदसूरत चेहरे और विचित्र स्थिति को देखता हूँ, और मैं एक बार फिर मनुष्य से दूर चल देता हूँ। ऐसी परिस्थितियों में लोग नासमझ बने रहते हैं, और एक बार फिर उन चीजों को वापस ले लेते हैं जिनके लिए मैंने उन्हें मना कर रखा था, मेरी वापसी का इंतज़ार करते हुए। मैंने बहुत समय व्यतीत किया है और मनुष्य की खातिर एक बड़ी कीमत चुकाई है, परन्तु इस समय, किसी अज्ञात कारण से, लोगों के विवेक अपने मूल कार्य को निष्पादित करने में बिलकुल असमर्थ हैं। नतीजतन, मैं भावी पीढ़ियों के "संदर्भ" के लिए, इस "लगातार बने रहने वाले संदेह" को "रहस्यमय वचनों" में सूचीबद्ध करता हूँ, क्योंकि ये लोगों की "कड़ी मेहनत" से जन्मे "वैज्ञानिक अनुसंधान परिणाम" हैं; मैं इन्हें यूँ ही कैसे मिटा सकता हूँ? क्या यह लोगों के अच्छे इरादों को "धोखा देना" नहीं होगा? आखिरकार, मेरे पास भी अन्तःकरण है,

इसलिए मैं मनुष्य के साथ कपट और धोखाधड़ी नहीं करता—क्या मेरे कार्य ऐसे नहीं हैं? क्या यह "निष्पक्षता और तर्कसंगतता" नहीं है जिसकी मनुष्य बात करता है? मैंने आज तक मनुष्यों के बीच अनवरत रूप से कार्य किया है। आज भी लोग मुझे नहीं जानते, वे अब भी मेरे साथ अजनबी जैसा व्यवहार करते हैं, और यहाँ तक कि, चूँकि मैं उन्हें एक "बंद गली" तक ले आया हूँ, वे मेरे प्रति अधिक घृणापूर्ण हो जाते हैं। उनके दिलों का प्रेम नामो-निशान छोड़े बिना बहुत पहले ही गायब हो चुका है। मैं डींगे नहीं हाँक रहा, मैं मनुष्य को तुच्छ तो बिलकुल नहीं बना रहा हूँ। मैं मनुष्य से अनंत काल तक प्रेम कर सकता हूँ, और मैं उससे अनंत काल तक नफरत भी कर सकता हूँ, और यह कभी नहीं बदलेगा, क्योंकि मुझमें दृढ़ता है। पर मनुष्य में ऐसी दृढ़ता नहीं है, वह हमेशा मेरे प्रति कभी जोश तो कभी ठंडापन दिखाता है, जब मैं अपना मुँह खोलता हूँ, तब वह हमेशा ही मेरी ओर बहुत कम ध्यान देता है, और जब मैं अपना मुँह बंद करता हूँ और कुछ भी नहीं कहता हूँ, तो वह जल्द ही इस बड़ी-सी दुनिया की लहरों में खो जाता है। इस प्रकार, मैं इसे एक और सूत्र के रूप में रखता हूँ: लोग दृढ़ता विहीन हैं, और इस तरह वे मेरे दिल को परिपूर्ण करने में असमर्थ हैं।

जब लोग सपने देख रहे होते हैं, तब मैं लोगों के बीच अपने हाथों की "मौत की गंध" फैलाते हुए दुनिया के देशों में विचरता हूँ। सभी लोग तुरंत जीवन शक्ति पीछे छोड़ देते हैं और मानव जीवन के अगले दर्जे में प्रवेश करते हैं। मानव जाति में अब कोई जीवित चीज नहीं देखी जा सकती है, लाशें हर जगह बिखरी पड़ी हैं, जीवनशक्ति से भरी चीजें तुरंत और बिना किसी निशान के गायब हो जाती हैं, और लाशों की दमघोंटू गंध भूमि पर फैलती है। मैं तुरंत अपना चेहरा ढँक लेता हूँ और मनुष्यों से प्रस्थान करता हूँ, क्योंकि मैं कार्य का अगला चरण शुरू कर रहा हूँ, ताकि जो लोग जीवित हो उठे हैं, उनके रहने के लिए एक जगह हो और सभी लोग एक आदर्श भूमि पर रह सकें। यह धन्य भूमि है—एक ऐसी भूमि जहाँ दुःख या आहें नहीं हैं—जिसको मैंने मनुष्य के लिए तैयार किया था। घाटी के झरनों से बह रहा पानी तले तक बिलकुल साफ़ है, यह अनवरत बहता है और कभी सूखता नहीं; लोग परमेश्वर के सामंजस्य में रहते हैं, पक्षी गाते हैं, और मंद पवन तथा सूर्य की गर्माहट के बीच, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों शांत हैं। यहाँ तो, आज, सभी लोगों की लाशें अव्यवस्था में बिखरी पड़ी हैं। लोगों के जाने बिना, मैं मेरे हाथों से महामारी को छोड़ देता हूँ, और मनुष्यों के शरीर का क्षय होने लगता है, सिर से पैर तक मांस का नामोनिशान नहीं रहता, और मैं मनुष्यों से बहुत दूर चला जाता हूँ। फिर कभी मैं मनुष्य के साथ नहीं मिलूँगा, मैं फिर कभी मनुष्य

के बीच नहीं आऊंगा, क्योंकि मेरे पूरे प्रबंधन का अंतिम चरण पूरा हो गया है, और मैं फिर से मानव जाति नहीं बनाऊंगा, फिर से मनुष्य की ओर कोई ध्यान नहीं दूँगा। मेरे मुँह से निकले वचनों को पढ़ने के बाद, सभी लोग आशा खो देते हैं, क्योंकि वे मरना नहीं चाहते—लेकिन "जीवित हो उठने" के लिए कौन "मरता" नहीं है? जब मैं लोगों से कहता हूँ कि उन्हें जीवित करने के लिए मेरे पास कोई जादू नहीं है, तो वे दर्द में रोने-चिल्लाने लगते हैं; वास्तव में, हालांकि मैं सृष्टिकर्ता हूँ, मेरे पास केवल लोगों को मारने की शक्ति है, और उस योग्यता का अभाव है जिससे वे फिर जी उठें। इस बात में, मैं मनुष्य से माफी चाहता हूँ। इस प्रकार, मैंने पहले ही मनुष्य से कहा था कि "मुझ पर उसका एक ऐसा ऋण है जिसको मैं चुका नहीं सकता"—फिर भी उसने सोचा कि मैं नम्रतावश ऐसा कह रहा हूँ। आज, तथ्यों के सामने आने के साथ, मैं अभी भी यह कहता हूँ। बोलते समय मैं तथ्यों के साथ धोखा नहीं करूँगा। लोगों की धारणाओं में, उनका मानना है कि मैं कई तरीकों से बोलता हूँ, और इसलिए कुछ और की उम्मीद करते हुए वे हमेशा उन शब्दों को पकड़ लेते हैं जो मैं उन्हें देता हूँ। क्या ये मनुष्य की गलत प्रेरणाएँ नहीं हैं? इन परिस्थितियों में मैं "साहसपूर्वक" यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि मनुष्य मुझे सचमुच प्यार नहीं करता है। मैं अपने अन्तःकरण को नज़रअंदाज़ करते हुए तथ्यों को तोड़ूँगा-मरोड़ूँगा नहीं, क्योंकि मैं लोगों को उनके आदर्श देश में नहीं ले जाऊंगा; अंत में, जब मेरा कार्य खत्म हो जाएगा तब मैं उन्हें मौत के देश में ले जाऊंगा। तो यही बेहतरीन होगा कि लोग मेरे बारे में शिकायत न करें—क्या ऐसा इसलिए नहीं है कि लोग मुझे "प्यार" करते हैं? क्या ऐसा इसलिए नहीं है कि आशीषों के लिए उनकी इच्छा बहुत प्रबल है? अगर लोग आशीर्वाद प्राप्त करना नहीं चाहते थे, तो यह "दुर्भाग्य" कैसे हो सकता था? मेरे प्रति लोगों की "वफादारी" की वजह से, कड़ी मेहनत के बावजूद कभी कोई योगदान नहीं करते हुए भी चूँकि उन्होंने कई वर्षों से मेरा अनुसरण किया है, मैं उन्हें "गुप्त कक्ष" में क्या हो रहा है, उसमें से कुछ बता देता हूँ: यह देखते हुए कि आज, मेरे कार्य का एक निश्चित बिंदु तक पहुँचना, और लोगों को एक अग्नि कुंड में डाल दिया जाना अभी बाकी है, मैं उन्हें यथाशीघ्र चले जाने की सलाह देता हूँ—वे सभी जो यहाँ बच जाएँगे, उन्हें शायद दुर्भाग्य का सामना करना पड़ेगा और किस्मत का थोड़ा ही साथ रहेगा, फिर भी वे अंत में मृत्यु से तो बच नहीं पाएँगे। मैं उनके लिए "समृद्धि का द्वार" पूरा खोल देता हूँ; जो भी जाना चाहता है, उसे यथाशीघ्र निकल जाना चाहिए—यदि वे ताड़ना के आने का इंतजार करते हैं, तो बहुत देर हो जाएगी। ये वचन उपहास नहीं हैं—ये सच्चे तथ्य हैं। मेरे वचनों को मनुष्यों के सामने बिना ग्लानि के कहा गया है, और यदि तुम लोग अब

नहीं जाते हो, तो कब जाओगे? क्या लोग वास्तव में मेरे वचनों पर विश्वास करने में सक्षम हैं?

मैंने कभी मनुष्य के भाग्य के बारे में ज्यादा नहीं सोचा है; मैं केवल अपनी इच्छा का पालन करता हूँ, लोगों द्वारा अबाधित रहकर। उनके भय की वजह से मैं कैसे अपने हाथ पीछे खींच सकता हूँ? मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना के दौरान, मैंने कभी भी मनुष्य के अनुभवों के लिए कोई अतिरिक्त व्यवस्था नहीं की है। मैं बस मेरी मूल योजना के अनुसार कार्य करता हूँ। अतीत में, लोगों ने मेरे लिए खुद की "पेशकश" की और मैं न तो उनके प्रति गर्मजोश था और न ही उदासीन। आज, उन्होंने मेरे लिए खुद का "बलिदान" किया है, और मैं उनके लिए न तो गर्मजोश और न ही उदासीन रहता हूँ। लोग मेरे लिए आत्म बलिदान करते हैं, इससे मैं संतुष्ट नहीं हो जाता, और न ही मैं खुशी से अभिभूत हो जाता हूँ, बल्कि मेरी योजना के अनुसार मैं उन्हें प्राणदण्ड स्थल पर भेजना जारी रखता हूँ। अपराध स्वीकार करने के दौरान मैं उनके रवैये पर ध्यान नहीं देता—मेरा रूखा, ठंडा दिल मनुष्यों के दिलों द्वारा कैसे द्रवित किया जा सकता है? क्या मैं मानव जाति के भावुक जानवरों में से एक हूँ? कई बार मैंने लोगों को याद दिलाया है कि मैं भावविहीन हूँ, लेकिन वे सिर्फ मुस्कुराते हैं, यह मानते हुए कि मैं केवल विनम्रता दिखा रहा हूँ। मैंने कहा है कि "मैं मानवजाति के जीने के फलसफे से अनभिज्ञ हूँ," लेकिन लोगों ने कभी ऐसा नहीं सोचा और कहा कि जिन तरीकों से मैं बोल रहा हूँ, वे बहुत सारे हैं। मनुष्य की इस धारणा से उत्पन्न बाधाओं के कारण, मैं नहीं जानता कि किस स्वर में, और किस तरीके से लोगों से बात करनी होगी—और इस तरह, किसी अन्य विकल्प के न होते, मैं केवल दो टूक बात कर सकता हूँ। मैं और क्या कर सकता हुँ? लोगों के बोलने के तरीके कई हैं—वे कहते हैं, "हमें भावनाओं पर भरोसा नहीं करना चाहिए बल्कि धार्मिकता का अभ्यास करना चाहिए," जो कि उनका एक ऐसा आदर्श-वाक्य है जिसे वे अनेक वर्षों से कहते चले आ रहे हैं, लेकिन वे अपने शब्दों के अनुसार कार्य करने में असमर्थ हैं, उनके शब्द खोखले हैं—इसलिए मैं कहता हूँ कि लोगों में "अपने शब्दों और उपलब्धियों को साथ-साथ चरितार्थ करने" की क्षमता की कमी होती है। अपने दिलों में, लोग मानते हैं कि इस तरह कार्य करना मेरा अनुकरण करने के समान है—फिर भी मुझे उनके अनुकरण में कोई दिलचस्पी नहीं है, मैं इससे ऊब और थक गया हूँ। क्यों लोग हमेशा उसके खिलाफ हो जाते हैं जो उनका पोषण करता है? क्या मैंने मनुष्य को बहुत कम दिया है? क्यों लोग हमेशा मेरी पीठ पीछे गुप्त रूप से शैतान की आराधना करते हैं? ऐसा लगता है कि वे मेरे लिए काम करते हैं और जो मासिक वेतन मैं उन्हें दे रहा हूँ वह उनके जीवनयापन के लिए अपर्याप्त है, जिसके कारण वे अपनी मजदूरी को दोगुना करने के

लिए काम के घंटों से इतर दूसरी नौकरी की तलाश करते हैं—क्योंकि लोगों का खर्च बहुत अधिक है, और वे नहीं जानते कि कैसे गुजारा करें। अगर वास्तव में ऐसा होता, तो मैं उन्हें "मेरा कारखाना" छोड़ने के लिए कह देता। बहुत पहले मैंने मनुष्य को समझा दिया था कि मेरे लिए काम करने में कोई विशिष्ट व्यवहार शामिल नहीं है: बिना किसी अपवाद के, मैं लोगों के साथ न्यायपूर्ण और उचित व्यवहार करता हूँ, जिसमें इस सिद्धांत का पालन होता है, "कड़ी मेहनत करोगे तो अधिक पाओगे, कम काम करोगे तो कम पाओगे, और कोई काम नहीं करोगे, तो कुछ नहीं पाओगे।" जब मैं बोलता हूँ, मैं कुछ भी रोककर नहीं रखता हूँ; अगर किसी का मानना है कि मेरे "कारखाने के नियम" बहुत सख्त हैं, तो उसे तुरंत बाहर निकल जाना चाहिए, मैं इस जगह से बाहर निकलने के उसके "यात्रा व्यय" का भुगतान करूँगा। ऐसे लोगों के प्रति अपने व्यवहार में मैं "नर्म" हूँ, मैं उन्हें रुकने के लिए मजबूर नहीं करता। इन असंख्य लोगों में से, क्या मैं एक "कार्यकर्ता" ऐसा नहीं पा सकता जो मेरी इच्छा के मुताबिक हो? लोगों को मुझे कम नहीं समझना चाहिए! यदि लोग अभी भी मेरी अवज्ञा करते हैं और अन्यत्र "रोजगार" की तलाश करना चाहते हैं, तो मैं उन्हें बाध्य नहीं करूँगा—मैं इसका स्वागत करूँगा, मेरे पास कोई विकल्प नहीं है! क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि मेरे पास बहुत से "नियम और अधिनियम" हैं?

8 मई, 1992

अध्याय 41

एक बार मैंने मनुष्यों के बीच एक महान उपक्रम आरंभ किया, लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया, और इसलिए मुझे उनके सामने उसे चरण-दर-चरण प्रकट करने के लिए अपने वचन का उपयोग करना पड़ा। फिर भी मनुष्य मेरे वचनों को समझ नहीं पाया, और मेरी योजना के उद्देश्य से अनजान रहा। और इसलिए, मनुष्य ने अपनी कमियों और कमजोरियों की वजह से मेरे प्रबंधन में बाधा डालने के काम किए, और इससे सभी तरह की अशुद्ध आत्माओं को प्रवेश का अवसर मिला और उन्होंने मानवजाति को अपना शिकार बनाया, और ये अशुद्ध आत्माएँ तब तक मनुष्यों को यातनाएं देती रहीं जब तक वे पूरी तरह दूषित नहीं हो गए। यही वह क्षण था, जब मैंने उस मनुष्य के इरादों और उद्देश्यों को देखा। मैंने बादलों के भीतर से आह भरी : मनुष्य को हमेशा अपने हितों के लिए ही काम क्यों करना चाहिए? क्या मेरी ताड़नाएँ उन्हें पूर्ण बनाने के लिए नहीं होतीं? या क्या मैं उनके सकारात्मक रवैये पर जानबूझकर हमला कर रहा हूँ? मनुष्य की

भाषा तो बहुत सुंदर और शालीन है, मगर फिर भी उसके क्रिया-कलाप बेहद अव्यवस्थित हैं। ऐसा क्यों होता है कि मनुष्य से की जाने वाली मेरी अपेक्षाओं में से हमेशा कुछ निकलकर नहीं आता? क्या ऐसा है कि मैं किसी कुत्ते से पेड़ पर चढ़ने के लिए कहता हूँ? या बात का बतंगड़ बना देता हूँ? अपनी संपूर्ण प्रबंधन योजना को पूरा करते-करते, मैंने कई "प्रयोगात्मक भूखंड" बनाए हैं, परंतु खराब भूभाग के कारण, और कई साल तक सूर्य के प्रकाश के अभाव के कारण, भू-भाग लगातार बदल रहा है, जो भूमि के फटने का कारण बन गया, और इसलिए अपनी स्मृति में, मैंने इस प्रकार के अनगिनत भूखंडों को त्याग दिया है। अभी भी, अधिकांश पृथ्वी बदलती जा रही है। अगर किसी दिन पृथ्वी वास्तव में बदलकर किसी अन्य प्रकार की हो जाती है, तो मैं इसे अपने हाथ के एक झटके से अलग कर दूँगा—क्या यह मेरे कार्य का वर्तमान चरण नहीं है? लेकिन मानवजाति को इसका जरा-सा भी बोध नहीं है। वे मेरे "मार्गदर्शन" में केवल "ताड़ना" भोग रहे हैं। इसका क्या लाभ है? क्या मैं एक ऐसा परमेश्वर हूँ जो मनुष्य को सिर्फ ताड़ना देने के लिए ही आया है? स्वर्ग में, मैंने एक बार योजना बनाई थी कि जब मैं मनुष्य के बीच जाऊँगा, तो मैं उनके साथ घुलमिल जाऊंगा, ताकि वे सभी जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, मेरे करीब आ सकें। परंतु, वर्तमान में, आज की स्थिति में पहुँचने के बाद, न केवल मनुष्य मेरे संपर्क में नहीं है, बल्कि, मेरी ताड़ना के कारण मुझे अपने से दूर रखता है। मैं उसकी अवहेलना पर रोता नहीं हूँ। इसके बारे में क्या किया जा सकता है? सभी मनुष्य कलाकार हैं, जो बजाई जाने वाली हर तरह की धुन के साथ गाते हैं। मुझे मनुष्यों को अपनी पकड़ से "निकलने देने" की अपनी क्षमता पर पूरा भरोसा है, और मुझे उन्हें "अन्य हिस्सों" से अपने "कारखाने" में वापस लाने की अपनी क्षमता पर और भी ज्यादा भरोसा है। इस मुकाम पर, मनुष्य की संभवत: क्या शिकायतें हो सकती हैं? और मनुष्य मेरे साथ संभवत: क्या कर सकता है? क्या मनुष्य दीवार पर उगने वाली घास नहीं हैं? और फिर भी, मैं इस गलती के लिए मनुष्यों को नुकसान नहीं पहुंचाता, बल्कि उन्हें अपना पोषण प्रदान करता हूँ। उन्हें किसने इतना दुर्बल और शक्तिहीन बना दिया? किसने उनमें पौष्टिकता की इतनी कमी पैदा कर दी? मैं मनुष्यों के शुष्क दिलों को अपने आत्मीय आलिंगन से बदल देता हूं, दूसरा कौन है जो ऐसा कर सकता है? मैंने मनुष्य के बीच यह कार्य क्यों शुरू किया है? क्या मनुष्य वास्तव में मेरे दिल को समझ सकता है?

जिन तमाम लोगों को मैंने चुना है, उनके साथ मैंने एक "कारोबार" किया है, और इसलिए मेरे घर में लोगों का आना-जाना एक निरंतर प्रवाह में हमेशा जारी रहता है। वे सभी मेरे घर पर विभिन्न

औपचारिकताओं में लगे रहते हैं, जैसेकि वे मेरे साथ कारोबार पर चर्चा कर रहे हों। इससे कई बार मेरा कार्य मुझे इतना व्यस्त रखता है कि मुझे उनके आपसी झगड़ों को निपटाने का अवसर ही नहीं मिलता। मैं मनुष्यों से आग्रह करता हूं कि वे मेरे बोझ को और न बढ़ाएँ; और मुझ पर लगातार निर्भर रहने की बजाय अपनी राह खुद तय करें। वे मेरे घर में हमेशा बच्चों की तरह व्यवहार नहीं कर सकते; इससे क्या लाभ होगा? मैं जो करता हूँ वह एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है; मैं कोई "पड़ोस की नमकीन की दुकान" या कोई और "जरूरी चीजों की दुकान" नहीं चलाता। मनुष्य हमेशा मेरी मनःस्थिति को समझने में विफल रहते हैं, मानो वे जानबूझकर मुझसे हंसी-मजाक कर रहे हों, मानो वे सब शरारती बच्चे हों और गंभीर कार्य पर विचार न करके हमेशा खेलते रहने से उनका जी ही न भरता हो, और इसी कारणवश कई लोग मेरे द्वारा दिए गए "गृहकार्य" को पूरा करने में विफल रहते हैं। ऐसे लोगों की "शिक्षक" को अपना चेहरा दिखाने की हिम्मत कैसे होती है? ऐसा क्यों है कि वे कभी उस काम पर ध्यान नहीं देते जो उन्हें करना चाहिए? मनुष्य का दिल किस तरह की चीज है? मैं आज तक इस बारे में स्पष्ट नहीं हो पाया हूँ। मनुष्य का दिल हमेशा बदलता क्यों रहता है? जून के किसी दिन की तरह : कभी झुलसाने वाली धूप तो कभी काले और घने बादल, और कभी भयंकर तूफानी हवाएं। तो, मनुष्य अपने अनुभवों से सीखने में असमर्थ क्यों हैं? शायद मैंने जो कुछ कहा है वह एक अतिशयोक्ति है। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि बरसात के मौसम में छाता लेकर चलना चाहिए, इसलिए अपनी अज्ञानता के कारण वे अनगिनत बार अचानक बरसने वाली बारिश में भीग जाते हैं, मानो मैं जानबूझकर उन्हें चिढ़ा रहा हूँ और वे हमेशा स्वर्ग से होने वाली बारिश के प्रहार के शिकार हो जाते हैं। या शायद यह बात है कि मैं बहुत "क्रूर" हूं, और मनुष्यों को दीवाना और सिरफिरा बना देता हूँ, और उन्हें पता ही नहीं होता कि उन्हें क्या करना चाहिए। कोई भी मनुष्य कभी भी मेरे कार्य के उद्देश्य या महत्व को समझ नहीं पाया है। इसलिए वे सब स्वयं को बाधित करने और ताड़ना देने का काम करते हैं। क्या मैं जानबूझकर उन्हें ताड़ना देने पर उतारू हूं? क्यों मनुष्य स्वयं के लिए परेशानी उत्पन्न करते हैं? वे हमेशा सीधे जाल में क्यों फंस जाते हैं? वे मेरे साथ मोल-भाव क्यों नहीं करते, बल्कि स्वयं अपने लिए काम करने के तरीके क्यों खोजते हैं? क्या यह हो सकता है कि मैं मनुष्य को जो कुछ दे रहा हूँ वह पर्याप्त नहीं है?

मैंने समूची मानवता के बीच अपना "प्रारंभिक कार्य" प्रकाशित किया, और क्योंकि मेरे प्रकाशन ने मनुष्यों की बहुत प्रशंसा अर्जित की, उन सबने इसका विस्तार से और सावधानी से अध्ययन किया, और

बहुत ध्यानपूर्वक किए गए इस अध्ययन के माध्यम से उन्होंने बहुत कुछ प्राप्त किया है। मेरा लिखित कार्य एक अद्भुत और बहुत सारे घुमावों वाले उपन्यास की तरह प्रतीत होता है, यह एक रूमानी गद्य कविता की तरह प्रतीत होता है, यह एक राजनीतिक कार्यक्रम की चर्चा की तरह प्रतीत होता है, यह एक आर्थिक बुद्धिमत्ता के कोश की तरह प्रतीत होता है। क्योंकि मेरा लिखित कार्य इतना समृद्ध है, इस पर कई भिन्न-भिन्न मत हैं, और कोई भी मेरे कार्य की ऐसी प्रस्तावना नहीं लिख सकता जो मेरे कार्य का सार-संक्षेप प्रस्तुत कर सके। भले ही मनुष्य के पास "उत्कृष्ट" ज्ञान और प्रतिभा हो, परंतु मेरा यह कार्य उन सभी योग्य और प्रतिभासंपन्न लोगों को चकरा देने के लिए पर्याप्त है। भले ही वे यह कहते रहें कि "रक्त बहे या आंसू बहें, पर शीश झुकने न पाए", पर वे पहले ही अचेतन रूप से मेरे कार्य के सम्मुख आत्म-समर्पण अभिव्यक्त करके अपना सिर झुका चुके हैं। मनुष्य ने अपने अनुभवों से सबक लेकर मेरे लिखित कार्य को ऐसे सारांशित कर लिया है मानो वह एक स्वर्गिक पुस्तक है जो आकाश से टपकी है। लेकिन मैं मनुष्य से आग्रह करता हूं कि उसे अति संवेदनशील नहीं होना चाहिए। मेरे विचार में, मैंने जो कुछ कहा है वह बहुत सामान्य है; परंतु, मुझे आशा है कि 'जीवन का विश्वकोश' में मेरे कार्य से लोगों को आजीविका के रास्ते मिलेंगे; और 'मनुष्य का गंतव्य' से उन्हें जीवन का अर्थ मिलेगा; और 'स्वर्ग के रहस्य' से उन्हें मेरी इच्छा का पता चलेगा; और 'मानवजाति की राह' से वे जीवन की कला प्राप्त कर सकेंगे। क्या यह सचमुच बहुत अच्छा नहीं रहेगा? मैं मनुष्य को मजबूर नहीं करता; जो लोग मेरे लिखित कार्य में दिलचस्पी नहीं रखते हैं, मैं उन्हें अपनी पुस्तक पर "पैसे वापस" का प्रस्ताव दूँगा, साथ ही एक "सेवा प्रभार" भी दूंगा। मैं किसी को बाध्य नहीं करता हूँ। इस पुस्तक के लेखक के रूप में, मेरी एकमात्र आशा यह है कि पाठकों को मेरा कार्य पसंद आए, लेकिन लोगों की पसंद हमेशा अलग-अलग होती है। और इसलिए मैं मनुष्य से आग्रह करता हूं कि वे अपना सम्मान बचाने के लिए भविष्य की संभावनाओं से समझौता न करें। अगर वे ऐसा करेंगे, तो मेरे जैसा दयालु कैसे इतना बड़ा अपमान सहन कर सकेगा? अगर तुम मेरे कार्य को पसंद करते हो, तो मुझे आशा है कि तुम मुझे अपने अनमोल सुझाव दोगे, ताकि मैं अपना लेखन सुधार सकूं, और इस प्रकार मनुष्य के दोषों के माध्यम से अपने लेखन की सामग्री को बेहतर बना सकूँ। यह लेखक और पाठक दोनों को लाभ पहुँचाएगा, नहीं क्या? मुझे नहीं मालूम कि मेरा यह कहना सही है या नहीं, और शायद इस तरह से मैं अपनी लेखन क्षमता को बेहतर बना सकता हूं, या शायद हमारे बीच की दोस्ती को मजबूत कर सकता हूं। कुल मिलाकर, मुझे उम्मीद है कि सभी लोग मेरे कार्य में बिना कोई रुकावट डाले अपना

सहयोग करेंगे, ताकि मेरे वचन हर परिवार और घर में फैलाए जा सकें, ताकि पृथ्वी के सभी लोग मेरे वचनों के बीच रह सकें। यह मेरा लक्ष्य है। मैं आशा करता हूं कि मेरे वचनों में 'जीवन पर अध्याय' को पढ़कर सभी को कुछ न कुछ हासिल होगा, चाहे जीवन की सूक्तियाँ हों, या मानव संसार को ग्रस्त करने वाले दोषों का ज्ञान हो, या मनुष्य से मुझे क्या चाहिए उसका ज्ञान, हो, या आज के राज्य के लोगों के "रहस्य" हों। परंतु, मैं मनुष्यों से 'आज के मानव के घोटाले' पर एक नजर डालने के लिए आग्रह करता हूं; जो सभी के लिए फ़ायदेमंद होगा। तुम लोग 'नवीनतम रहस्य' भी पढ़ सकते हो, जो लोगों के जीवन के लिए और भी अधिक फ़ायदेमंद हो सकता है। और फिर 'चर्चित विषय' स्तंभ भी हैं—क्या यह लोगों के जीवन के लिए और भी अधिक लाभदायक नहीं है? मेरी सलाह लेने में कोई हर्ज नहीं है, यह देखने में कि क्या इसका कोई प्रभाव होता है, और पढ़ने के बाद कैसा महसूस होता है, इस बारे में मुझसे संपर्क करने में, ताकि मैं सही दवा दे सकूँ और अंततः मानवजाति की सभी बीमारियों को दूर कर सकूँ। मुझे नहीं मालूम कि मेरे सुझावों के बारे में तुम क्या सोचते हो, परंतु मुझे आशा है कि तुम उन्हें संदर्भ के लिए एक सामग्री के रूप में उपयोग करोगे। यह कैसा रहेगा?

12 मई, 1992

अध्याय 42

जैसे ही नया काम शुरू होता है, सभी लोगों को एक नया प्रवेश मिलता है और वे मेरे साथ हाथों में हाथ डालकर आगे बढ़ते हैं, हम एक साथ राज्य के विशाल पथ पर चलते हैं, मनुष्य और मेरे बीच में बहुत घनिष्ठता है। मनुष्य के प्रति अपनी भावनाएँ दिखाने और अपना दृष्टिकोण प्रदर्शित करने के लिए, मैंने हमेशा मनुष्य से बात की है। इन वचनों का एक हिस्सा लोगों को चोट पहुंचा सकता है, जबकि उनमें से कुछ उनके लिए बहुत सहायक हो सकते हैं, इसलिए मैं लोगों को सलाह देता हूँ कि मेरे मुंह से निकलने वाली बातों को वे अक्सर सुनें। हो सकता है कि मेरे कथन ख़ूबसूरत और परिष्कृत न हों, परंतु वे मेरे दिल की गहराइयों से आने वाले वचन हैं। चूंकि मानवजाति मेरी दोस्त है, मैंने अपने कार्य को मनुष्य के बीच करना जारी रखा है और मनुष्य भी मेरे साथ सहयोग करने का पूरा प्रयास करता है, मेरे कार्य को बाधित करने से बहुत डरता है। इस समय, मेरा दिल बहुत प्रसन्नता से भर गया है, क्योंकि मैंने कुछ लोगों को प्राप्त कर लिया है, और इसलिए मेरा "उद्यम" अब पीछे की ओर नहीं जा रहा, यह अब खोखले वचन नहीं

है और मेरे "विशिष्ट उत्पाद बाज़ार" का प्रदर्शन अब सुस्त नहीं है। आख़िरकार, लोग समझदार हैं, वे सभी मेरे नाम और मेरी महिमा के लिए "स्वयं को समर्पित" करने के लिए तैयार हैं, और इस तरह से मेरी "विशेष वस्तुओं की दुकान" कुछ नया "सामान" प्राप्त करती है और इस प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में कई "ग्राहक" मेरा "सामान" खरीदने के लिए आते हैं। इसी क्षण से मुझे महिमा प्राप्त होने लगती है; तभी मेरे मुंह से कहा गया हर वचन खोखला वचन नहीं रह जाता। मैं विजयी रहा हूं और जीतकर लौटा हूं, सभी लोग मेरा जश्न मनाते हैं। इस समय बड़ा लाल अजगर भी "जश्न मनाने" आता है और मेरी सराहना कता है, वह ऐसा यह दिखाने के लिए करता है कि वह मेरे सामने झुकता है और इस में मैं गौरवान्वित होता हूं। सृष्टि के समय से आज तक, मैंने कई विजयी युद्ध लड़े हैं और कई सराहनीय कार्य किए हैं। किसी समय में, अनेक लोग ने मेरा जश्न मनाया करते थे, मेरा गुणगान करते थे और मेरे लिए नृत्य किया करते थे। हालांकि, ये दिल मोह लेने वाले और अविस्मरणीय दृश्य होते थे, लेकिन मैं कभी नहीं मुस्कुराया, क्योंकि मुझे अभी मनुष्य पर विजय प्राप्त करनी थी, मैं सृष्टि के समान केवल निर्माण के कार्य का कुछ ही हिस्सा कर रहा था। आज का समय पिछले समय से अलग है। मैं सिंहासन पर मुस्कुरा रहा हूं, मैंने मनुष्य को जीत लिया है और लोग मेरे सामने आराधना में झुकते हैं। आज के लोग पहले जैसे नहीं हैं। मेरा काम वर्तमान के लिए कब नहीं था? मेरा कार्य मेरी महिमा के लिए कब नहीं था? एक उज्ज्वल कल के लिए, मैं मनुष्य में अपने कार्य की अनेक बार व्याख्या करूँगा, ताकि मेरे बनाए मनुष्य में मेरी पूर्ण महिमा में "विश्राम" कर सकें। मैं इसे अपने कार्य के सिद्धांत के रूप में लूंगा। जो लोग मेरे साथ सहयोग करने के लिए तैयार हैं, वे उठें और कड़ी मेहनत करें ताकि मेरी महिमा आकाश में फैल सके। यही समय है महान योजनाओं को पूरा करने का। जो लोग मेरे प्रेम की देखभाल और संरक्षण में हैं, उनके पास यहां मेरे स्थान में, अपनी क्षमताओं का उपयोग करने का अवसर है, और मैं सभी चीज़ों को कुशलता से अपने कार्य के लिए "मोड़" दूंगा। आकाश में उड़ते पक्षी आकाश में मेरी महिमा हैं, धरती पर समुद्र मेरे ही कार्य से उत्पन्न हुए हैं, मैं हर चीज़ का स्वामी हूं और सभी चीज़ों में मेरा प्रकटन है, और इस पृथ्वी पर जो कुछ भी है मैं उसका उपयोग अपने प्रबंधन की पूंजी के रूप में करता हूँ, जिससे सभी चीज़ें बढ़ें, पनपें और जीवन से प्रफुल्लित हों।

सृष्टि के समय ही मैंने निर्धारित कर लिया था कि पृथ्वी पर मेरा कार्य अंतिम युग में पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। जब मेरा काम समाप्त हो जाएगा तो मेरे सभी कार्य-कलाप आकाश में प्रकट हो जाएंगे। मैं धरती के लोगों से अपने कार्यों को स्वीकार करवाऊंगा और "न्यायपीठ" के सामने मेरे कर्म साबित होंगे,

ताकि उन्हें पृथ्वी के लोगों के बीच स्वीकार किया जाए, जो सभी मानेंगे। इस तरह, इसके बाद, मैं एक ऐसे कार्य की शुरूआत करूँगा जो पहले कभी नहीं किया गया। आज से, मैं अपने कर्मों को कदम-दर-कदम स्पष्ट करूंगा, ताकि मेरी बुद्धि, मेरी अद्‌भुतता और मेरी अपरिमेयता को समाज के हर क्षेत्र में स्वीकारा और प्रमाणित किया जा सके। विशेष रूप से, पृथ्वी के सभी शासकीय दलों से मेरे कर्मों को स्वीकार कराया जाएगा, ऐसे कि "न्यायाधीशों" द्वारा मेरे कार्य का न्याय किया जाएगा और "वकीलों" द्वारा "बचाव" किया जाएगा, इस प्रकार मेरे कार्य को स्वीकार किया जाएगा, सभी लोग सिर झुकाकर मुझे स्वीकार करेंगे। इस समय से, मेरे कार्यों को समाज के हर क्षेत्र द्वारा मान्यता दी जाएगी और यह वह पल होगा जब मैं पृथ्वी पर पूरी महिमा हासिल कर लूँगा। उस समय, मैं मनुष्य के सामने प्रकट हूँगा और छिपा नहीं रहूँगा। वर्तमान में, मेरे कर्म अभी तक अपने शिखर तक नहीं पहुंच पाए हैं। मेरा काम आगे बढ़ रहा है और जब यह अपने चरम पर पहुंच जाएगा, तब यह ख़त्म हो जाएगा। मैं सभी राष्ट्रों के लोगों को पूरी तरह से जीत लूँगा, मैं भयंकर जानवरों को अपने सामने भेड़ के समान पालतू बना दूंगा और पृथ्वी के लोगों की तरह मैं बड़े लाल अजगर को भी अपने सामने झुकने के लिए मजबूर कर दूँगा। मैं स्वर्ग में अपने सभी शत्रुओं को पराजित करूंगा और पृथ्वी पर अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करूँगा। यही मेरी योजना है और मेरे कर्मों की अद्‌भुतता है। मनुष्य केवल मेरे मार्गदर्शन में प्रकृति के प्रभाव में रह सकता है—वह स्वयं अपने निर्णय नहीं ले सकता! मेरे हाथ से कौन बच सकता है? मैंने पूरी प्रकृति को वर्गीकृत कर दिया है, उसे कानूनों के दायरे में रखा है और इसी कारणवश पृथ्वी पर ऐसे कानून हैं, जैसे वसंत की गर्मी और शरद ऋतु की ठंड। पृथ्वी पर फूल सर्दियों में मुरझा जाते हैं और गर्मियों में खिल जाते हैं, उसका कारण मेरे हाथ की अद्‌भुतता है, कलहंस सर्दियों में दक्षिण की तरफ़ उड़कर चले जाते हैं क्योंकि मैं तापमान को अनुकूल बना देता हूं। समुद्र इसलिए गरजते हैं क्योंकि मैं सतह पर उपस्थित चीज़ों को डूबाना चाहता हूँ। ऐसा क्या है जो मेरे द्वारा व्यवस्थित नहीं है? इस क्षण से, मनुष्य के "प्राकृतिक अर्थशास्त्र" को मेरे वचनों ने पूरी तरह से परास्त कर दिया गया है और अब "प्राकृतिक कानूनों" के अस्तित्व की वजह से लोग मेरी उपस्थिति को समाप्त नहीं करते हैं। ऐसा कौन है जो सभी चीज़ों के शासक के अस्तित्व को फिर कभी अस्वीकार करे? स्वर्ग में, मैं मुखिया हूँ; सभी चीज़ों में मैं प्रभु हूं; और सभी लोगों के बीच मैं सबसे आगे हूँ। ऐसा कौन है जो आसानी से इसे "रंग" से ढक देने की हिम्मत रखता है? क्या सच्चाई के अस्तित्व को झूठ बाधित कर सकता है? इस अनमोल अवसर पर, मैं एक बार फिर से अपने हाथों का कार्य शुरू करता हूं,

अब मनुष्य का हस्तक्षेप परेशान नहीं करेगा और मशीनें चलती रहेंगी।

मैंने अपने वचनों में विभिन्न "मसाले" जोड़ दिए हैं, इससे ऐसा लगेगा जैसे मैं मनुष्य का प्रमुख रसोइया हूं। हालांकि लोगों को नहीं पता कि अपने खाने में मसाला कैसे डालना है, उन्हें इसका स्वाद पसंद है; "थाली" पकड़े हुए, वे सभी उन "व्यंजनों" का आनंद लेते हैं जो मैंने तैयार किए हैं। पता नहीं क्यों लोग हमेशा उन व्यंजनों को अधिक खाना चाहते हैं, जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से तैयार करता हूं। ऐसा लगता है कि जैसे वे मुझे कुछ अधिक सम्मानित मानते हैं, जैसे कि वे मुझे सभी मसालों में सबसे ऊँचे मसाले की तरह देखते हैं और दूसरों के लिए बिल्कुल भी सम्मान नहीं रखते हैं। क्योंकि मुझमें बहुत अधिक आत्मसम्मान है, मैं अपने कारणों से दूसरों की "सुरक्षित रोज़ीरोटी" नहीं छीनना चाहता। इसलिए, मैं "रसोई" से पीछे हटकर दूसरों को यह अवसर देता हूँ कि वे विशिष्टता प्राप्त करें। केवल इस प्रकार ही मेरा दिल दृढ़ रहता है; मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे सम्मान से देखें और दूसरों को नीची नज़र से; यह सही नहीं है। लोगों के दिल में रुतबा होने का क्या मूल्य है? क्या मैं वास्तव में इतना अशिष्ट और अनुचित हूं? क्या मैं सचमुच किसी रुतबे की अपेक्षा रखता हूं? यदि हां, तो मैं इस तरह के विशाल कार्य पर क्यों निकल रहा हूं? मैं दूसरों की होड़ में प्रसिद्धि और भाग्य के लिए संघर्ष नहीं करना चाहता, मुझे सांसारिक प्रसिद्धि और भाग्य से घृणा है; मैं इसके पीछे नहीं जाता। मैं मनुष्य को प्रेरणास्रोत मानता, मैं न लड़ता हूं, न छीनता हूँ, बल्कि अपनी "कला" पर भरोसा करके जीविका प्राप्त करता हूं, निरर्थक कार्य नहीं करता। इसलिए, जब मैं पृथ्वी पर घूमता हूं, तो मैं पहले कार्य करता हूं और बाद में "दस्तकारी के लिए भुगतान" की मांग करता हूं—मनुष्य इसी निष्पक्षता और तर्कसंगतता की बात करता है, इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है, न ही इसे बिल्कुल कम करके दिखाया गया है, मैं तथ्यों के मूल अर्थ के अनुसार बात करता हूँ। मैं लोगों के बीच घूमता हूं, उन लोगों की तलाश करता हूँ जो निष्पक्ष और तर्कसंगत होते हैं, फिर भी इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। चूँकि लोगों को सौदेबाज़ी करना पसंद है, इसलिए मूल्य या तो बहुत अधिक होता है या बहुत कम, मैं अभी भी अपने हाथों का कर्तव्य पूरा कर रहा हूं जो कि "मेरे कंधों पर आ पड़ा" है। आज, मैं अभी भी यह नहीं जानता कि मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन क्यों नहीं करता, वह यह क्यों नहीं जानता कि उसका आध्यात्मिक कद कितना बड़ा है। लोग यह भी नहीं जानते कि इसका वज़न कई ग्राम है या कई लियांग।[क] और इसलिए, वे अभी भी मुझे फुसलाते हैं। ऐसा लगता है जैसे कि मेरा सारा कार्य बेकार रहा है, जैसे कि मेरे वचन ऊँचे पहाड़ों की गूँज भर हैं, और कोई भी कभी भी मेरे वचनों और कथनों के मूल को

नहीं समझ सका है। इसलिए मैं इसका उपयोग तीसरी सूक्ति का सार प्रस्तुत करने के लिए करता हूं : "लोग मुझे नहीं जानते, क्योंकि वे मुझे नहीं देखते।" ऐसा लगता है कि मेरे वचनों को खाने के बाद, लोग पाचन में सहायता के लिए कोई दवा पी लेते हैं और क्योंकि दवा के दुष्प्रभाव इतने तेज़ होते हैं, इसलिए उनकी स्मरण शक्ति को हानि पहुँचती है, इसलिए मेरे वचन भुला दिए जाते हैं, जिस स्थान पर मैं हूँ वह एक ऐसा कोना बन जाता है जिसे भुला दिया जाता है, और इस वजह से मेरी आह निकल जाती है। मैंने इतना काम क्यों किया है, फिर भी लोगों में इसका कोई सबूत नहीं है? क्या मैंने पर्याप्त प्रयास नहीं किए हैं? या ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं यह नहीं समझ पाया कि मनुष्य को क्या चाहिए? मैं इस बारे में अब कुछ नहीं कर सकता, अब मेरे पास एक ही विकल्प है कि मैं सभी लोगों पर विजय प्राप्त करने के लिए अपने प्रशासनिक आदेशों का उपयोग करूँ। मैं अब एक ममतामयी मां की तरह पेश नहीं आऊँगा, बल्कि पूरी मानवजाति के साथ एक कठोर पिता की तरह पेश आऊँगा!

15 मई, 1992

फुटनोट :

क. "लियांग" एक चीनी वज़न माप होता है, एक लियांग 50 ग्राम के बराबर होता है।

अध्याय 43

शायद यह केवल मेरे प्रशासनिक आदेशों के कारण ही है कि लोगों ने मेरे वचनों में "बहुत अधिक रुचि" ली है। यदि वे मेरे प्रशासनिक आदेशों से शासित नहीं होते, तो वे सभी अभी-अभी छेड़े गए बाघों की तरह गरज रहे होते। प्रतिदिन मैं बादलों के बीच टहलता हुआ, पृथ्वी पर फैली उस मानवजाति को भाग-दौड़ करते हुए देखता हूँ जो मेरे प्रशासनिक आदेशों के अधीन है। इस प्रकार मानवजाति को एक व्यवस्थित स्थिति में रखा जाता है, और मैं अपने प्रशासनिक आदेशों को निरन्तर बनाए रखता हूँ। इसके बाद से, पृथ्वी पर रहने वाले लोग मेरे प्रशासनिक आदेशों के तहत सभी तरह की ताड़नाएँ पाते हैं, और जैसे ही ये ताड़नाएँ उन पर पड़ती हैं, सारी मानवजाति जोर से चिल्लाती है और हर दिशा में भागती है। इस समय, पृथ्वी के राष्ट्र तुरंत नष्ट हो जाते हैं, राष्ट्रों के बीच की सीमाएँ मिट जाती हैं, एक जगह दूसरी जगह से पृथक नहीं रह जाती, और मनुष्य को मनुष्य से अलगाने के लिए कुछ भी नहीं रह जाता। मैं मानवजाति के

बीच "वैचारिक कार्य" करना शुरू करता हूँ, ताकि लोग शांति से एक-दूसरे के साथ रह सकें, आपस में झगड़ना बन्द कर दें। जैसे-जैसे मैं मानवजाति के बीच सेतुओं का निर्माण और संपर्कों की स्थापना करता हूँ, लोग संगठित होते जाते हैं। मैं अपने कृत्यों के प्रकटन से आकाश को भर दूँगा, ताकि पृथ्वी का सब कुछ मेरी सत्ता के सामने बिछ जाए, और इस तरह मैं "वैश्विक एकता" की योजना को कार्यान्वित करने की अपनी इस अभिलाषा को फलीभूत करूँगा, ताकि मानवजाति को पृथ्वी पर और अधिक "भटकना" न पड़े, बल्कि वह अविलम्ब एक उपयुक्त मंज़िल पा ले। मैं हर तरह से मानवजाति के हित में सोचता हूँ, इस तरह कि समस्त मानवजाति शीघ्र ही सुख-शांति से परिपूर्ण भूमि में रहने लगे, ताकि उसकी जिंदगी के दिन अब और दुखमय और वीरान न हों, और पृथ्वी पर मेरी योजना व्यर्थ न जाए। चूँकि पृथ्वी पर मनुष्य मौजूद है, इसलिए मैं वहाँ अपने राष्ट्र का निर्माण करूँगा, क्योंकि मेरी महिमा की अभिव्यक्ति का एक हिस्सा पृथ्वी पर है। ऊपर स्वर्ग में, मैं अपने शहर को व्यवस्थित रूप दूँगा और इस तरह, ऊपर और नीचे दोनों जगह सब कुछ नया बना दूँगा। स्वर्ग से ऊपर और नीचे दोनों ओर जो कुछ भी अस्तित्व में है, मैं उन सभी को संगठित कर दूँगा, ताकि जो कुछ स्वर्ग में है उससे पृथ्वी की सारी चीज़ें एकीकृत हो जाएँ। यह मेरी योजना है, यही मैं अंतिम युग में करूँगा—मेरे कार्य के इस हिस्से में कोई भी हस्तक्षेप न करे! अन्य-जाति राष्ट्रों में अपने कार्य का विस्तार करना पृथ्वी पर मेरे कार्य का अंतिम भाग है। जो कार्य मैं करूँगा, उसकी थाह लेने में कोई भी समर्थ नहीं है, और इसलिए लोग पूरी तरह से संभ्रमित हैं। चूँकि मैं पृथ्वी पर अपने काम में बहुत अधिक व्यस्त हूँ, इसलिए लोग इस अवसर का लाभ उठाकर "लापरवाही बरतने लगते हैं।" उन्हें अनियन्त्रित होने से रोकने के लिए, मैंने सबसे पहले उन्हें अपनी ताड़ना के अधीन आग की झील का अनुशासन भुगतने के लिए रखा है। यह मेरे कार्य का एक चरण है, और मैं अपने इस कार्य को पूरा करने के लिए आग की झील की शक्ति का उपयोग करूँगा, अन्यथा मेरे लिए अपने कार्य को पूरा करना असंभव होगा। मैं सारे ब्रह्मांड के मनुष्यों से अपने सिंहासन के समक्ष समर्पण करवाऊँगा, अपने न्याय के अनुसार उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करूँगा, इन श्रेणियों के अनुसार उन्हें वर्गीकृत करूँगा, और फिर उन्हें उनके परिवारों में बाँट दूँगा, जिससे पूरी मानवजाति मेरी अवज्ञा करना बंद कर देगी, बल्कि मेरे द्वारा नामांकित की गई श्रेणियों के अनुसार एक साफ़-सुथरी और अनुशासित व्यवस्था में आ जाएगी—किसी को भी यूँ ही इधर-उधर भटकने नहीं दिया जाएगा! पूरे ब्रह्मांड में, मैंने नया कार्य किया है; पूरे ब्रह्मांड में, संपूर्ण मानवजाति मेरे अचानक प्रकट होने से घबराई हुई और अचंभित है, मेरी स्पष्ट

उपस्थिति के सामने उनकी सीमाएँ इस तरह खंडित हो गई हैं जैसी कि पहले कभी नहीं हुई थीं। क्या आज बिल्कुल ऐसा ही नहीं है?

मैंने सभी राष्ट्रों और सभी जातियों के बीच अपना पहला क़दम रखा है, और अपने कार्य का पहला चरण शुरू किया है। नए सिरे से शुरू करने के लिए, मैं अपनी योजना को बाधित नहीं करूँगा: अन्य-जाति राष्ट्रों का यह कार्य स्वर्ग के मेरे कार्य की प्रक्रियाओं पर आधारित कार्य के क्रम में है। जब सभी मनुष्य मेरे हर इशारे और मेरे प्रत्येक कार्यकलाप को देखने के लिए, अपनी नज़रों को ऊपर उठाते हैं, तो मैं दुनिया पर एक धुंध फैला देता हूँ। मनुष्यों की नज़रें तुरंत धुँधला जाती हैं, और वे उजाड़ रेगिस्तान की भेड़ों की तरह किसी दिशा का पता नहीं लगा पाते, जब भीषण आँधी चलती है, तो उनकी चीखें भीषण आँधी में डूब जाती हैं। तपती हवाओं के बीच, शयाद ही कोई इंसान नज़र आता है, कोई भी मानवीय स्वर सुनाई नहीं देता—यद्यपि लोग पूरी ताक़त लगाकर चिल्ला रहे होते हैं, लेकिन उनका यह प्रयास व्यर्थ चला जाता है। ऐसे में, मानवजाति रोती है और इस उम्मीद में जोर से चीखती है कि कोई उद्धारकर्ता उन्हें उस असीम रेगिस्तान से निकाल कर ले जाने के लिए अचानक आकाश से उतर पड़ेगा। लेकिन, उनका विश्वास चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो, उद्धारकर्ता हिलता तक नहीं है, और मनुष्य की उम्मीदें चूर-चूर हो जाती हैं: विश्वास की जो लौ जलाई गयी थी, वह रेगिस्तान की आँधी में बुझ जाती है, और मनुष्य, फिर किसी प्रज्वलित मशाल को उठा पाने में असमर्थ, एक बंजर और निर्जन स्थान में औंधे मुँह पड़ जाता है, अचेत होकर गिर जाता है...। इस अवसर का लाभ उठा कर, मैं मनुष्य की आँखों के सामने एक मरु-उद्यान प्रकट करता हूँ। हालाँकि इससे मनुष्य का हृदय बेहद प्रसन्न हो सकता है, किन्तु उसका शरीर इतना, दुर्बल, इतना निस्तेज होता है कि वह प्रतिक्रिया नहीं कर पाता; भले ही वह मरु-उद्यान में उगते हुए सुंदर फलों को देखता है, लेकिन उसमें उन्हें तोड़ने की ताकत नहीं होती है, क्योंकि तब तक मनुष्य के सभी "आंतरिक संसाधनों" को पूरी तरह निचोड़ा जा चुका होता है। मैं मनुष्य के समक्ष उसकी ज़रूरत की चीज़ें पेश करता हूँ, किन्तु वह केवल क्षण भर को मुस्करा कर रह जाता है, और उसका चेहरा पूरी तरह से बुझा रहता है: मानवीय शक्ति का एक-एक कण ओझल हो चुका होता है, अपना कोई निशान छोड़े बिना, बहती हवा के साथ गायब हो जाता है। इसी वजह से, मनुष्य का चेहरा पूरी तरह से भावहीन हो जाता है, और केवल स्नेह की एक किरण, अपने बच्चे को निहारती माँ की जैसी सौम्य उदारता के साथ, उसकी रक्त-रंजित आँखों से चमकती है। समय-समय पर, मनुष्य के सूखे, फटे होंठ फड़कते हैं,

जैसे वे कुछ बोलने वाले हों, लेकिन उनमें ऐसा करने की शक्ति नहीं होती। मैं मनुष्य को कुछ पानी देता हूँ, लेकिन वह सिर हिला कर मना कर देता है। इन अस्थिर और अप्रत्याशित हरकतों से, मैं जान लेता हूँ कि मनुष्य ने स्वयं से अपनी सारी आशाएँ पहले ही खो दी हैं, और वह अपनी याचना-भरी नज़रों से केवल मुझे ही देख रहा है, जैसे कुछ पाने के लिए अनुनय कर रहा हो। लेकिन, मानवजाति के रीति-रिवाजों और परिपाटियों से अनभिज्ञ, मैं मनुष्य के चेहरे के भावों और हरकतों से चकित रह जाता हूँ। इसी क्षण मुझे अचानक पता चलता है कि मानवीय अस्तित्व के दिनों का अंत तेजी से निकट आ रहा है, मैं उसकी ओर सहानुभूति की एक नज़र डालता हूँ। और इसी क्षण में मनुष्य के चेहरे पर खुशी की एक मुस्कान दिखायी देती है, वह मेरी ओर सहमति में अपना सिर हिलाता है, मानो उसकी हर इच्छा पूरी हो गयी हो। मनुष्य की उदासी समाप्त हो जाती है; पृथ्वी पर, लोग अब जीवन की शून्यता के बारे में शिकायत नहीं करते, और "जीवन" के सारे लेन-देन छोड़ देते हैं। उसके बाद, पृथ्वी पर आहों का अस्तित्व नहीं रहता, और जितने दिन मानवजाति जीवित रहती है, वे दिन प्रसन्नता से भरपूर होते हैं ...

मैं अपना कार्य करने से पहले मनुष्य के मामलों को ठीक से निपटा दूँगा, ताकि मनुष्य मेरे कार्य में अवांछित हस्तक्षेप न करता रहे। मनुष्य के मामले मेरा मुख्य विषय नहीं है, मानवजाति के मामले अत्यंत तुच्छ हैं। चूँकि मनुष्य आत्मा से इतना छोटा है—ऐसा प्रतीत होता है कि मानवजाति एक चींटी के प्रति भी दया दिखाने को तैयार नहीं है, या कि चींटियाँ मानवजाति की दुश्मन हैं—इसलिए मनुष्यों के बीच हमेशा मतभेद बना रहता है। मनुष्यों के मतभेदों को सुनकर, मैं एक बार फिर से चला जाता हूँ और उनके किस्सों पर ध्यान देना बन्द कर देता हूँ। मानवजाति की नज़रों में, मैं "निवासियों की एक समिति" हूँ, जो "निवासियों" के बीच "पारिवारिक विवादों" के समाधान में विशेषज्ञता रखती है। जब लोग मेरे सामने आते हैं, तो वे निरपवाद रूप से अपने साथ अपने तर्क लेकर आते हैं, और अत्यंत उत्सुकता के साथ अपने "असामान्य अनुभवों" का वर्णन करते हैं, और वर्णन करते हुए अपनी व्याख्या उसमें जोड़ते जाते हैं। मैं मनुष्य के असामान्य आचरण को देखता हूँ: उनके चेहरे धूल से ढके हुए हैं—ऐसी धूल से जो पसीने की "सिंचाई" में अपनी "स्वतंत्रता" खो देती है क्योंकि यह तुरंत पसीने के साथ घुलमिल जाती है, जिससे मनुष्यों के चेहरे और "अलंकृत" हो जाते हैं, समुद्र के किनारे पड़ी रेत की तरह, जिस पर कभी-कभी पैरों के निशान देखे जा सकते हैं। उनके बाल मृतकों के प्रेतों की तरह दिखते हैं, चमक से रहित, एक गोले में फँसी घास-फूस के तिनकों की तरह सीधे खड़े हुए। क्योंकि उसका गुस्सा बहुत तेज है, इस

सीमा तक कि उससे उसके बाल तक खड़े हो जाते हैं, इसलिए उसका चेहरा कभी-कभी "भाप" छोड़ता है, जैसे उसका पसीना "उबल" रहा हो। उसकी बारीकी से जाँच करने पर, मैं देखता हूँ कि मनुष्य का चेहरा धधकते सूरज की तरह "लपटों" से घिरा है, इसीलिए उससे गर्म गैस की भभक उठती है, और मुझे सचमुच चिंता होती है कि कहीं उसका गुस्सा उसके चेहरे को जला न दे, हालाँकि वह स्वयं इस पर कोई ध्यान नहीं देता। इस मुकाम पर, मैं मनुष्य से आग्रह करता हूँ कि वह अपने गुस्से को थोड़ा कम कर ले, क्योंकि इससे उसका क्या भला होना है? खुद को इस तरह यातना क्यों देते हो? नाराज़ होने के कारण, इस "गोले" की सतह के घास-फूस के डंठल वास्तव में सूर्य की आग से जल जाते हैं; इस तरह की परिस्थितियों में तो "चाँद" तक लाल हो जाता है। मैं मनुष्य से आग्रह करता हूँ कि वह अपने गुस्से को संयत करे—यह उसके स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन मनुष्य मेरी सलाह पर ध्यान नहीं देता; इसके बजाय, वह मेरे पास "शिकायतें दर्ज करना" जारी रखता है। इससे क्या होने वाला है? क्या मेरी उदारता मनुष्य के आनंद के लिए अपर्याप्त है? या जो मैं मनुष्य को देता हूँ, क्या वह उसे लेने से इन्कार करता है? अचानक क्रोध के आवेश में, मैं मेज को पलट देता हूँ, मनुष्य अपनी कहानी की किन्हीं और रोमांचक घटनाओं का वर्णन नहीं कर पाता और इस भय से कि कहीं ऐसा न हो कि मैं उसे कुछ दिन प्रतीक्षा में लटकाये रखने के लिए "नज़रबंदी केंद्र" में ले जाऊँ, वह मेरे गुस्से के आवेश के अवसर का फायदा उठाकर भाग निकलता है। अन्यथा, मनुष्य कभी भी इस तरह के मसलों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता, बल्कि अपने मसलों को लेकर बक-बक करना जारी रखता है—मैं इसकी आवाज़ से ही तंग आ गया हूँ। मनुष्य अपनी अंतरात्मा की गहराई में इतना जटिल क्यों है? कहीं ऐसा तो नहीं कि मैंने मनुष्य में बहुत अधिक "अंग" स्थापित कर दिए हैं? वह हमेशा मेरे सामने तमाशा खड़ा क्यों करता रहता है? निश्चय ही, मैं "नागरिक विवादों" को सुलझाने वाला कोई "परामर्शदाता" तो नहीं हूँ? क्या मैंने मनुष्य को मेरे पास आने के लिए कहा था? निश्चय ही, मैं कोई ज़िला मजिस्ट्रेट नहीं हूँ? लोगों के मसले हमेशा मेरे सामने क्यों लाए जाते हैं? मैं उम्मीद करता हूँ कि मनुष्य अपनी जिम्मेदारी स्वयं लेना उचित समझेगा और मुझे तंग नहीं करेगा, क्योंकि मेरे पास करने को बहुत अधिक कार्य हैं।

18 मई, 1992

अध्याय 44

मेरे काम को लोग एक पूरक की तरह लेते हैं, वे इसके वास्ते भोजन या नींद का त्याग नहीं करते हैं, और इसलिए मेरे पास मनुष्यों से ऐसी उचित माँग करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है जो मेरे प्रति उनके दृष्टिकोण के अनुकूल हो। मुझे याद है कि मैंने एक बार मनुष्य को बहुत अनुग्रह और कई आशीष दिए थे, लेकिन इन चीजों को झपट लेने के बाद वह तुरंत चला गया। ऐसा लगता था मानो मैं उन चीज़ों को उसे अनजाने में ही दे रहा था। और इसलिए, मनुष्य ने हमेशा मुझे अपनी अवधारणाओं के माध्यम प्यार किया है। मैं चाहता हूँ कि मनुष्य मुझे सचमुच प्रेम करे; लेकिन मुझे अपना सच्चा प्रेम देने में असमर्थ, लोग आजकल, अभी भी अपने पाँव खींच लेते हैं। अपनी कल्पना में वे मानते हैं कि यदि वे मुझे अपना सच्चा प्रेम दे देते हैं, तो उनके पास कुछ भी नहीं बचेगा। जब मैं आपत्ति करता हूँ, तो उनके पूरे शरीर काँपने लगते हैं—फिर भी वे मुझे अपना सच्चा प्यार देने के लिए तैयार नहीं होते। ऐसा लगता है कि वे किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, और इसलिए वे मुझे कभी नहीं बताते हुए कि वास्तव में क्या चल रहा है, आगे देखते हैं। ऐसा लगता है मानो उनके मुँह को किसी चिप्पी से बंद कर दिया गया हो, जिससे उनकी वाणी लगातार लड़खड़ाती है। ऐसा लगता है, मैं मनुष्य के सामने एक निर्मम पूँजीवादी बन गया हूँ। लोग हमेशा मुझसे भयभीत रहते हैं: मुझे देखते ही, वे कोई नामोनिशान छोड़े बिना, तुरन्त गायब हो जाते हैं, इस बात से भयाकुल कि मैं उनकी परिस्थितियों के बारे में उनसे क्या पूछ लूँगा। मुझे इसका कारण नहीं मालूम है कि क्यों लोग अपने "साथी ग्रामीणों" से तो निष्कपट प्यार करने में समर्थ हैं, परन्तु मुझ जैसे सच्चे नैतिक आत्मा से प्रेम करने में असमर्थ हैं। इस वजह से मैं आहें भरता हूँ: क्यों लोग हमेशा मनुष्य की दुनिया में ही अपने प्यार को अभिव्यक्त करते हैं? मैं मनुष्य के प्रेम का स्वाद क्यों नहीं ले सकता हूँ? क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं मनुष्यों में से एक नहीं हूँ? लोग हमेशा मुझसे ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे मैं पहाड़ों पर रहने वाला एक असभ्य जंगली होऊँ। ऐसा लगता है कि मुझमें उन बातों की कमी है जो एक सामान्य व्यक्ति का निर्माण करती हैं, और इसलिए मेरे सामने लोग हमेशा एक उच्च नैतिक स्वर का दिखावा करते हैं। वे अक्सर मुझे डाँटने के लिए अपने सामने घसीट लाते हैं, मुझे किसी शिशु-विद्यालय के एक बच्चे की तरह झिड़कते हैं; चूँकि लोगों की यादों में, मैं कोई ऐसा हूँ जो तर्कशून्य और अशिक्षित है, इसलिए वे हमेशा मेरे सामने शिक्षक की भूमिका निभाते हैं। मैं लोगों को उनकी असफलताओं के लिए प्रताड़ित नहीं करता हूँ, बल्कि उन्हें उचित सहायता प्रदान करता हूँ, उन्हें नियमित "आर्थिक सहायता" प्राप्त करने देता हूँ। चूँकि मनुष्य हमेशा तबाहियों के बीच रहा है और उसे बच निकलना मुश्किल लगता है, और इस त्रासदी के बीच

उसने हमेशा मुझे पुकारा है, इसलिए मैं नियमित रूप से उसके हाथों में "अनाज की आपूर्ति" सौंपता हूँ, सभी लोगों को नए युग के महान परिवार में रहने, और महान परिवार के सौहार्द्र का अनुभव करने देता हूँ। जब मैं मनुष्यों के बीच काम को देखता हूँ, तो मुझे मनुष्य के कई दोष मिलते हैं, और इसके परिणामस्वरूप मैं मनुष्य को सहायता प्रदान करता हूँ। यहाँ तक कि इस समय भी, मनुष्य के बीच असाधारण गरीबी है, और इसलिए मैंने "दरिद्र इलाकों" को उचित देखभाल प्रदान की है, और उन्हें गरीबी से ऊपर उठाया है। यही वह साधन है जिसके द्वारा मैं सभी लोगों को, जितना अधिक हो सके, अपनी कृपा का आनंद लेने देते हुए, कार्य करता हूँ।

पृथ्वी पर लोग अनजाने में ताड़ना भुगतते हैं, और इसलिए उन्हें पृथ्वी पर अपने अनुग्रह का आनंद लेने का सौभाग्य देते हुए, मैं अपना विशाल हाथ खोल कर उन्हें अपनी ओर खींच लेता हूँ। पृथ्वी पर, ऐसा क्या है जो खोखला और मूल्यहीन नहीं है? मैं मनुष्यों की दुनिया में सभी जगहों पर चलता हूँ, और यद्यपि कई प्रसिद्ध स्मारक और मनुष्य के लिए रमणीय प्राकृतिक दृश्य हैं, फिर भी मैं जहाँ कहीं भी जाता हूँ वहाँ बहुत पहले से जीवन शक्ति से रिक्त हो चुका होता है। केवल तभी मैं पृथ्वी पर उदासी और उजाड़ को महसूस करता हूँ : पृथ्वी पर जीवन बहुत पहले से गायब हो चुका है, केवल मौत की गंध है, और इसलिए मैंने हमेशा मनुष्य को जल्दी करने और यातना से भरे इस देश को छोड़ देने के लिए कहा है। जो कुछ मैं देखता हूँ वह सब खालीपन का द्योतक है। जिन्हें मैंने चुना है उन लोगों की दिशा में मैं अपने हाथ से जीवन उछालने का अवसर लेता हूँ; तत्काल ही, भूमि पर हरियाली का एक खंड बन जाता है। लोग पृथ्वी पर जीवन शक्ति की चीजों का आनंद लेने के लिए तैयार हैं, लेकिन मुझे इसमें कोई खुशी नहीं मिलती है; लोग हमेशा धरती पर चीजों का मज़ा लेते हैं, और कभी भी उनके खोखलेपन को नहीं देखते हैं, इस तरह कि आज इस बिंदु पर पहुँच कर वे अभी भी नहीं समझते हैं कि धरती पर जीवन का कोई अस्तित्व क्यों नहीं है। आज, जैसे-जैसे मैं ब्रह्मांड के बीच चलता हूँ, लोग उस जगह के अनुग्रह का आनंद ले पाते हैं जहाँ मैं होता हूँ, और वे इसे एक संपदा के रूप में लेते हैं, कभी भी जीवन के स्रोत का अनुसरण नहीं करते हैं। मैं उन्हें जो कुछ देता हूँ, उसका वे सब संपदा के रूप में उपयोग करते हैं, फिर भी उनमें से कोई भी जीवन शक्ति के मूल कार्य को करने का प्रयास नहीं करता है। वे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग या विकास करने के बारे में नहीं जानते हैं, और इसलिए वे निर्धन रह जाते हैं। मैं मनुष्य के बीच रहता हूँ, मैं मनुष्य के बीच जीता हूँ, फिर भी आज मनुष्य मुझे नहीं जानता है। यद्यपि लोगों ने मेरे घर से इतनी दूर होने के

फलस्वरूप मेरी बहुत मदद की है, यह ऐसा है मानो मैं अभी तक मनुष्य के साथ सही मित्रता स्थापित नहीं कर पाया हूँ, और इसलिए मुझे अभी भी मनुष्य की दुनिया का अन्याय महसूस होता है; मेरी नज़रों में, मानवजाति, अंततः, खोखली है, और मनुष्यों के बीच कोई भी मूल्यवान निधि नहीं है। मैं नहीं जानता कि लोगों का दृष्टिकोण मानव जीवन के प्रति क्या है, लेकिन संक्षेप में, मेरा स्वयं का दृष्टिकोण "खोखले" शब्द से अभिन्न है। मैं आशा करता हूँ कि लोग इसकी वजह से मेरे बारे में बुरा नहीं सोचेंगे—मैं ठीक ऐसा ही हूँ, मैं स्पष्टवादी हूँ, मैं विनम्र होने की कोशिश नहीं करता हूँ। हालाँकि, मैं लोगों को सलाह दूँगा कि वे मेरे विचारों की ओर अधिक बारीकी से ध्यान दें, क्योंकि मेरे वचन, आखिरकार, उनके लिए लाभदायक हैं। मुझे नहीं मालूम कि लोगों को "खोखलेपन" के बारे में क्या समझ है। मेरी आशा है कि वे इस काम पर थोड़ा सा प्रयास करें। उनके लिए अच्छा होगा कि वे व्यावहारिक रूप में मानव जीवन का अनुभव करें और देखें कि क्या उन्हें इसमें मूल्यवान "अयस्क की गुप्त शिराएँ" मिल सकती हैं। मैं लोगों की सकारात्मकता को निरुत्साहित करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, मैं बस चाहता हूँ कि वे मेरे वचनों से कुछ ज्ञान प्राप्त करें। मैं हमेशा मानवीय मामलों के वास्ते भाग-दौड़ करता हूँ, लेकिन आज, जैसी कि स्थिति है, लोगों ने कभी धन्यवाद का एक शब्द तक नहीं कहा है, मानो वे बहुत व्यस्त हों, और ऐसा करना भूल गए हों। आज भी, मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि मनुष्य की दिन भर की भाग-दौड़ का कितना असर पड़ा है। आज भी लोगों के हृदय में मेरे लिए कोई जगह नहीं है, और इसलिए मैं एक बार फिर से गहरी सोच में पड़ जाता हूँ। मैंने इस पर शोध करने का कार्य शुरू कर दिया है कि "क्यों लोगों के पास ऐसा हृदय नहीं है जो मुझे वास्तव में प्यार करे" : मैं मनुष्य को उठाकर "शल्य-चिकित्सा की मेज" पर रखूँगा, मैं उसके "हृदय" की चीरफाड़ करूँगा, और यह देखूँगा कि उसके हृदय के मार्ग को कौन सी चीज़ अवरुद्ध कर रही है जो उसे मुझसे सच्चा प्यार करने से रोक रही है। "चाकू" के प्रभाव से, लोग अपनी आँखें भींच लेते हैं, मेरे शुरू करने का इंतजार करते हैं, क्योंकि इस समय उन्होंने पूरी तरह से समर्पण कर दिया है; उनके हृदयों में मुझे कई अन्य अपमिश्रण मिलते हैं। इनमें लोगों की अपनी चीज़ें प्रमुख हैं। यद्यपि उनमें केवल कुछ चीजें अपने शरीर के बाहर की हो सकती हैं, किन्तु उनके शरीर के भीतर की तो असंख्य हैं। ऐसा लगता है जैसे मनुष्य का हृदय एक बड़ा संग्रहण डिब्बा हो, जो सम्पत्ति से भरपूर हो, वे सारी चीज़ें हों जिनकी लोगों को कभी भी ज़रूरत होगी। केवल तभी मेरी समझ में आता है कि क्यों लोग मुझे किसी भी तरह का सम्मान नहीं देते हैं: ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास अत्यधिक आत्मनिर्भरता है—उन्हें मेरी मदद की क्या

ज़रूरत है? इसलिए मैं मनुष्य से दूर चला जाता हूँ, क्योंकि लोगों को मेरी मदद की ज़रूरत नहीं है; तो क्यों मुझे "बेशर्मी से काम करना" चाहिए और उनकी नफरत झेलनी चाहिए?

कौन जानता है कि क्यों, लेकिन मैं हमेशा मनुष्यों के बीच बात करने के लिए तैयार रहा हूँ—मानो मैं खुद को रोक नहीं सकता हूँ। और इसलिए, लोग मुझे बेकार समझते हैं, वे हमेशा मेरे साथ ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि मेरा मूल्य ताँबे के पैसे से भी कम हो; वे मुझे सम्माननीय नहीं मानते हैं। वे मुझे पसंद नहीं करते हैं, और वे मुझे जब भी चाहें खींच कर घर ले जाते हैं और फिर मुझे बाहर फेंक देते हैं, जनता के सामने मुझे "बेनकाब" करते हुए। मनुष्य के नीच व्यवहार के लिए मुझे बेहद घृणा है, और इसलिए मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि मनुष्य अंतःकरण से रहित है। लेकिन लोग दुराग्रही हैं; वे अपनी "तलवारें और भाले" ले कर मेरे साथ लड़ाई करते हैं, यह कहते हुए कि मेरे वचन वास्तविकता के साथ मेल नहीं खाते, कि मैं उन्हें बदनाम करता हूँ—लेकिन मैं उनके हिंसक व्यवहार के कारण उनसे प्रतिशोध नहीं लेता। लोगों को जीतने, उन्हें स्वयं के प्रति शर्मिंदा महसूस करवाने के लिए, मैं सिर्फ अपनी सच्चाई का उपयोग करता हूँ, जिसके बाद वे चुपचाप पीछे हट जाते हैं। मैं मनुष्य के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करता, क्योंकि इसका कोई लाभ नहीं। मैं अपने कर्तव्य का पालन करूँगा, और मुझे उम्मीद है कि मनुष्य भी अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है, और मेरे खिलाफ कार्य नहीं करेगा। क्या इस तरह शांतिपूर्ण तरीके से साथ चलना बेहतर नहीं होगा? अपने रिश्ते को क्यों चोट पहुँचाएँ? हमने इतने वर्षों तक साथ निभाया है—दोनों के लिए परेशानी खड़ी करने की क्या आवश्यकता है? क्या हम दोनों की प्रतिष्ठा के लिए यह बिना किसी लाभ का नहीं होगा? हमारी वर्षों की "पुरानी दोस्ती" है, एक "पुरानी पहचान" है—कड़ुवाहट की शर्तों पर अलग होने की क्या ज़रूरत है? क्या ऐसा करना अच्छा होगा? मैं आशा करता हूँ कि लोग असर पर ध्यान दें, वे जानें कि उनके लिए क्या अच्छा है। आज मनुष्य के प्रति मेरा दृष्टिकोण उसके जीवनपर्यंत विमर्श के लिए पर्याप्त है—क्यों लोग हमेशा मेरी दया को पहचानने में असफल रहते हैं? क्या इसलिए कि उनमें अभिव्यक्ति की सामर्थ्य का अभाव है? क्या उनमें पर्याप्त शब्दावली का अभाव है? वे हमेशा हक्का-बक्का क्यों रहते हैं? कौन नहीं जानता है कि मैं स्वयं कैसे आचरण करता हूँ? लोग मेरे कार्यों के बारे में पूरी तरह से अवगत हैं। बात सिर्फ इतनी है कि वे हमेशा दूसरों का फायदा उठाना पसंद करते हैं, इसलिए वे अपने स्वयं के हितों को कभी भी एक ओर करना नहीं चाहते हैं; यदि कोई वाक्यांश उनके अपने हितों को छूता है, तो जब तक वे अपनी स्थिति मज़बूत नहीं कर लेते, तब तक उन्हें आराम से बैठना स्वीकार्य नहीं—और उसका क्या

मतलब है? लोग इस बात की प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते कि वे क्या दे सकते हैं, बल्कि इस बात के लिए संघर्ष करते हैं कि वे क्या प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि उनकी हैसियत में कोई आनंद नहीं है, तब भी वे इसे बहुत पसंद करते हैं, इसे एक अनमोल खजाना तक मानते हुए—और इसलिए वे अपनी हैसियत का आशीष छोड़ने की अपेक्षा मेरी ताड़ना को सहेंगे। लोग खुद को बहुत अधिक ऊँचा मानते हैं, और इसलिए खुद को दरकिनार करने के लिए कभी तैयार नहीं होते हैं। शायद मेरे द्वारा मनुष्य के मूल्यांकन में कुछ छोटी-मोटी त्रुटियाँ हैं, या शायद मैंने उस पर एक लेबल लगा दी है जो न तो बहुत कठोर है न बहुत नर्म—लेकिन कुल मिला कर, मेरी आशा है कि लोग इसे एक चेतावनी के रूप में लें।

21 मई, 1992

अध्याय 45

एक बार मैंने तय किया कि मैं अपने घर में ऊँचे दर्जे का सामान रखूँगा ताकि घर बेमिसाल वैभव से सुशोभित हो। इससे मुझे बहुत सुख मिला। लेकिन मेरे प्रति लोगों का जो रवैया था और जो उनकी अभिप्रेरणा थी, उसके कारण इस काम को दर-किनार करने करने के अलावा मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था। मैं अपना कार्य पूरा करने के लिए लोगों की अभिप्रेरणाओं का उपयोग करूंगा, मैं हर चीज़ को कुशलता से अपनी सेवा में लगाऊँगा, ताकि मेरा घर उदास और सूना न रहे। एक बार मैंने लोगों के बीच देखा : मांस और रक्त से बना हर इंसान जड़ हो चुका है, किसी भी चीज़ को मेरे अस्तित्व के आशीर्वाद का अनुभव नहीं है। दुआओं के बावजूद, उन्हें पता ही नहीं कि वे कितने धन्य हैं। अगर लोगों को मेरा आशीर्वाद न मिला होता, तो कौन आज तक जीवित रह पाता और नष्ट न हुआ होता? यदि मनुष्य जीवित है तो यह मेरा आशीर्वाद है, और इसका मतलब है कि वह मेरी दुआओं के कारण जीवित है, क्योंकि उसके पास मूल रूप से कुछ नहीं था, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रहने के लिए मूलत: उसके पास कोई पूँजी नहीं थी; आज मैं लोगों की सहायता करता रहता हूँ, और केवल इसी वजह से मनुष्य मेरे सामने खड़ा है, वह भाग्यशाली है कि मौत से बच गया। लोगों ने इंसान के अस्तित्व के रहस्यों के बारे में तो बताया है, लेकिन किसी ने कभी यह नहीं सोचा कि यह सब मेरे आशीर्वाद के कारण है। इसी वजह से, लोग दुनिया में हो रहे अन्याय को कोसते हैं, अपने दुःखों का दोषी मुझे मानते हैं। यदि मेरा आशीर्वाद न होता, तो आज का दिन कौन देख पाता? सुख से न रह पाने के कारण लोग मुझे दोष देते हैं। अगर मनुष्य का जीवन जीवंत और

ख़ुशनुमा होता, अगर उष्ण "वसंत का झोंका" मनुष्य के हृदय को शीतल कर रहा होता, जिससे उसके पूरे शरीर में अतुलनीय ख़ुशी छा जाती और उसे थोड़ी-सी भी पीड़ा न होती, तो कौन मरते दम तक शिकायत करता? मनुष्य की पूर्ण निष्ठा प्राप्त करने में मुझे बड़ी कठिनाई होती है, क्योंकि लोग चालाकी से इतनी साज़िशें रचते रहते हैं कि किसी का भी सिर चकरा जाए। लेकिन जब मैं आपत्ति करता हूँ, तो वे मुझे पूरी तरह अनदेखा कर देते हैं और मेरी ओर ध्यान नहीं देते, क्योंकि मेरी आपत्तियों ने उनकी आत्माओं को छुआ है, जिससे वे सन्मार्ग पर चलने लायक नहीं हैं, और मेरे अस्तित्व से घृणा करते हैं, क्योंकि उन्हें "पीड़ा देना" मुझे अच्छा लगता है। मेरे वचनों की वजह से, लोग नाचते-गाते हैं, मेरे वचनों की वजह से वे मौन होकर अपना सिर में झुका लेते हैं, और मेरे वचनों के कारण ही वे फूट-फूट कर रोते हैं। मेरे वचनों से लोग निराश हो जाते हैं; मेरे वचनों में ही उन्हें जीवित रहने के लिए प्रकाश मिलता है। मेरे वचनों की वजह से वे दिन-रात, करवटें बदलते रहते हैं, और मेरे वचनों के कारण, वे जगह-जगह भागते-दौड़ते हैं। मेरे वचन लोगों को नरक कुंड में झोंक देते हैं, फिर वे उन्हें ताड़ना में डुबो देते हैं—लेकिन अनजाने में ही, लोग मेरे आशीर्वाद का आनंद भी उठाते हैं। क्या इंसान इसे हासिल कर सकता है? क्या यह लोगों के अथक प्रयासों का प्रतिफल हो सकता है? मेरे वचनों के आयोजनों से कौन बच सकता है? इस प्रकार, लोगों की असफलताओं की वजह से, मैं उन्हें वचन प्रदान करता हूँ, ताकि मेरे वचनों की वजह से इंसान की कमियाँ दूर हों, मानवजाति के जीवन में अपार वैभव आए।

मैं अक्सर लोगों के शब्दों और कार्यों की पड़ताल करता हूँ। उनके व्यवहार और चेहरे के हाव-भाव में मैंने कई "रहस्यों" की खोज की है। दूसरों के साथ लोगों के आपसी लेनदेन में, "गुप्त नुस्खे" व्यावहारिक रूप से अहम हो जाते हैं—और इस प्रकार, जब मैं इंसान के साथ मिलता-जुलता हूँ, तो जो मुझे "मानवीय लेन-देन के गुप्त नुस्खे" मिलते हैं, वे दर्शाते हैं कि मनुष्य मुझे प्यार नहीं करता। मैं मनुष्य की कमज़ोरियों के कारण अक्सर उसे फटकारता हूँ, फिर भी मैं उसका भरोसा हासिल नहीं कर पाता। मनुष्य नहीं चाहता कि मैं उसका वध करूँ क्योंकि मनुष्य के "मानवीय लेन-देन के गुप्त नुस्खों" में यह कभी पता नहीं चला है कि मनुष्य ने किसी घातक आपदा का सामना किया है—दुर्भाग्य के समय उसने केवल कुछ बाधाओं का ही सामना किया है। मेरे वचनों के कारण लोग गिड़गिडाते हैं, उनकी याचना में हमेशा मेरी बेरहमी के बारे में शिकायतें होती हैं। लगता है जैसे वे लोगों के प्रति मेरे सच्चे "प्यार" को खोज रहे हों—लेकिन मेरे कठोर वचनों में वे मेरा प्यार कैसे पा सकते हैं? परिणामस्वरूप, मेरे वचनों की वजह से वे हमेशा उम्मीद खो

बैठते हैं। ऐसा लगता है मेरे वचन पढ़ते ही उन्हें "मृत्यु" दिखाई देने लगती है और वो डर से काँप उठते हैं। इससे मुझे दु:ख होता है: हमेशा मौत के साये में रहने वाले देहधारी लोग मौत से डरते क्यों हैं? क्या मनुष्य और मृत्यु कट्टर दुश्मन हैं? मृत्यु का भय लोगों को हमेशा सताता क्यों रहता है? अपने जीवन के सारे "असाधारण" अनुभवों के दौरान, क्या वो मौत का केवल थोड़ा-सा ही अनुभव करते हैं? लोग हमेशा मेरे बारे में शिकायत ही क्यों करते हैं? इस प्रकार, मैं मानव-जीवन के लिए चौथी सूक्ति का सार प्रस्तुत करता हूँ: लोग मेरे प्रति केवल थोड़े-से ही आज्ञाकारी होते हैं, इसलिए वे हमेशा मुझसे नफ़रत करते हैं। लोगों की नफरत की वजह से, मैं अक्सर चला जाता हूँ। मैं इस चीज़ का शिकार क्यों बनूँ? लोगों की घृणा को क्यों उकसाऊँ? लोग जब मेरी मौजूदगी को पसंद ही नहीं करते, तो मैं बेशर्मी से उनके घर में क्यों रहूँ? अपना "सामान" लेकर मनुष्य को छोड़ जाने के अलावा मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। लेकिन लोग मेरा चले जाना भी सहन नहीं कर पाते, और मुझे कभी जाने नहीं देना चाहते। लोग रोते-सुबकते हैं, बेहद डर जाते हैं कि मैं चला जाऊंगा, और जिस पर उनका जीवन निर्भर है, वे उसे गँवा देंगे। उनकी गिड़गिड़ाती नज़रें देखकर मेरा दिल पिघल जाता है। दुनिया के तमाम समुद्रों के बीच, कौन मुझसे प्यार करने योग्य है? मनुष्य समुद्र की ताक़त से घिरा, गंदे पानी में समाया हुआ है। मुझे मनुष्य की अवज्ञा से घृणा है, फिर भी मुझे मानवजाति के दुर्भाग्य पर दया आती है—क्योंकि मनुष्य आख़िरकार पीड़ित ही तो है। मैं कमज़ोर और निर्बल इंसान को पानी में कैसे धकेल सकता हूँ? क्या मैं इतना क्रूर हूँ कि जब वह नीचे पड़ा हो, तो मैं उसे ठोकर मारूँ? क्या मेरा हृदय इतना निर्दयी है? यह मानवजाति के प्रति मेरा रवैया ही तो है कि मनुष्य मेरे साथ इस युग में प्रवेश कर रहा है, और इसी वजह से वह मेरे साथ ये असाधारण दिन-रात बिता चुका है। आज, लोग आनंद की पीड़ा में हैं, उन्हें मेरे प्रेम का अच्छी तरह से बोध है, और वे मुझे बड़े जोश से प्यार करते हैं, क्योंकि उनमें जीवनशक्ति है, और अब वे पृथ्वी के छोर तक भटकने वाले फ़िज़ूलख़र्च बेटे नहीं हैं।

मनुष्य के साथ बिताए मेरे दिनों में, लोग मुझ पर भरोसा करते हैं, और क्योंकि मैं सभी चीजों में मनुष्य के बारे में विचारशील हूँ, और उसकी देखभाल को लेकर सतर्क हूँ, इसलिए लोग हमेशा मेरे स्नेहपूर्ण आलिंगन में रहते हैं, उन्हें आँधी-तूफान या तपते सूर्य को सहना नहीं पड़ता; लोग ख़ुशी से रहते हैं, और मुझसे एक प्रेममयी माँ की तरह व्यवहार करते हैं। लोग पौधा-घर के फूलों की तरह हैं, वे "प्राकृतिक आपदाओं" के हमलों से बच नहीं पाते, या कभी अटल नहीं रह पाते। इसलिए मैं उन्हें गरजते समुद्र के

परीक्षणों के बीच रखता हूँ, और वे निरंतर "डगमगाते" रहते हैं। उनमें विरोध करने की शक्ति नहीं है—और चूँकि उनका आध्यात्मिक कद बहुत छोटा और उनका शरीर बहुत कमज़ोर है, इसलिए मुझे ज़िम्मेदारी का एहसास होता है। इस प्रकार, लोग अनजाने में ही मेरे परीक्षणों के अधीन आ जाते हैं, क्योंकि वे बहुत नाजुक हैं, वे भीषण हवाओं और तपती धूप में डटे रहने में असमर्थ होते हैं। क्या यह मेरा आज का काम नहीं है? तो फिर लोग मेरे परीक्षणों क सामना करके हमेशा रो क्यों पड़ते हैं? क्या मैं उनके साथ अन्याय कर रहा हूँ? क्या मैं जानबूझकर उनका वध कर रहा हूँ? क्यों मनुष्य की प्रेममयी अवस्था मर जाती है, और फिर कभी पुनर्जीवित नहीं हो पाती? लोग हमेशा मुझे पकड़ लेते हैं और जाने नहीं देते; क्योंकि वो कभी भी अपने बल पर जी नहीं पाते, इसलिए वे हमेशा मेरे हाथ की अगुआई में रहे हैं, उन्हें हमेशा इस बात का डर रहा है कि कहीं उन्हें कोई और न ले जाए। क्या उनके पूरे जीवन को मैं ही राह नहीं दिखाता? अपने अशांत जीवन में, जब वो चोटी और घाटी पार करते हैं, तो उन्होंने बहुत कोलाहल का सामना किया होता है—क्या यह मेरे हाथ से ही नहीं आया था? लोग कभी मेरे हृदय को समझ क्यों नहीं पाते? वे मेरे नेक इरादों को हमेशा गलत क्यों समझते हैं? पृथ्वी पर मेरा कार्य आसानी से क्यों नहीं चल पाता? इंसान की कमज़ोरी की वजह से, मैंने हमेशा उससे घृणा की है, जिससे मेरा मन दुःख से भर जाता है: मेरे कार्य का अगला चरण मनुष्य में कार्यान्वित क्यों नहीं किया जा सकता? इस प्रकार, सावधानी से उसका मूल्यांकन करते हुए मैं चुप हो जाता हूँ: मैं हमेशा मनुष्य के दोषों के आगे विवश क्यों हो जाता हूँ? मेरे कार्य में हमेशा बाधाएँ क्यों आती हैं? आज, मुझे अभी भी मनुष्य से पूरा जवाब चाहिए, क्योंकि मनुष्य हमेशा बदलता रहता है, वह कभी सामान्य नहीं होता; या तो वह मुझसे घोर नफ़रत करता है या मुझसे बेहद प्रेम करता है। मैं सामान्य स्वयं परमेश्वर, मनुष्य की ओर से इस तरह की यातना सहन नहीं कर सकता। चूँकि लोग हमेशा मानसिक रूप से असामान्य होते हैं, ऐसा लगता है जैसे मैं इंसान से थोड़ा डरता हूँ, और इसलिए उसकी हरकतें देखकर मुझे उसकी असामान्यता का ख्याल आता है। मैंने अनजाने में ही मनुष्य के अंदर के रहस्य खोज लिए हैं: पता चला कि उसके पीछे एक संचालक है; परिणामस्वरूप, लोग हमेशा निडर और आश्वस्त होते हैं, जैसे उन्होंने कुछ उचित किया हो। इस तरह, लोग हमेशा वयस्क होने का दिखावा करते हैं और "छोटे बच्चे" की तरह मीठी-मीठी बातें करते हैं। मनुष्य की पहेली देखकर, मैं क्रोधित हो जाता हूँ : लोग अपने प्रति इतने प्रेमरहित और अशिष्ट क्यों होते हैं? वो स्वयं को जानते क्यों नहीं? क्या मेरे वचन नाकारा हो चुके हैं? क्या मेरे वचन मनुष्य के शत्रु हैं? लोग जब मेरे वचनों को पढ़ते हैं, तो वो क्यों मेरे प्रति नाराज़

हो जाते हैं? लोग हमेशा मेरे वचनों में अपने विचार क्यों जोड़ देते हैं? क्या मैं मनुष्य के प्रति बहुत अनुचित हूँ? सभी लोगों को इस बारे में गहराई से सोचना चाहिए कि मेरे वचनों में क्या निहित है।

24 मई, 1992

अध्याय 46

मुझे नहीं पता कि मेरे वचनों को अपने अस्तित्व का आधार बनाने का काम लोग कितनी अच्छी तरह से कर रहे हैं। मैंने हमेशा मनुष्यों के भाग्य के लिए चिंता की है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है—परिणामस्वरूप, उन्होंने कभी भी मेरे कार्यकलापों पर ध्यान नहीं दिया है, और मनुष्य के प्रति मेरे दृष्टिकोण के कारण मेरे प्रति कभी श्रद्धा विकसित नहीं की है। यह ऐसा है मानो मेरे हृदय को संतुष्ट करने के लिए उन्होंने बहुत पहले भावनाओं का परित्याग कर दिया था। ऐसी परिस्थितियों का सामना करके, मैं एक बार फिर चुप हो जाता हूँ। आगे प्रवेश के मेरे वचन लोगों के विचार के योग्य क्यों नहीं हैं? क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे वचनों में कोई वास्तविकता नहीं है और मैं किसी ऐसी चीज़ की तलाश करने की कोशिश में हूँ जिसका प्रयोग मैं लोगों के खिलाफ़ कर सकूँ? लोग हमेशा मेरे साथ "विशेष व्यवहार" क्यों करते हैं? क्या मैं कोई अपाहिज हूँ जो अपने स्वयं के विशेष वार्ड में है? क्यों, जब चीजें उस स्थिति तक पहुँच जाती हैं जहाँ वे आज हैं, तब भी लोग मुझे भिन्न प्रकार से देखते हैं? क्या मनुष्य के प्रति मेरे दृष्टिकोण में कोई गलती है? आज, मैंने सृष्टियों से ऊपर नया कार्य शुरू किया है। मैंने धरती पर लोगों को एक नई शुरुआत दी है, और उन सभी को मेरे घर से बाहर चले जाने के लिए कहा है। और क्योंकि लोग हमेशा खुद को आसक्त किए रहना पसंद करते हैं, इसलिए मैं उन्हें आत्म-जारूगक होने और सदैव मेरे कार्य को अस्तव्यस्त नहीं करने की सलाह देता हूँ। जिस "अतिथिगृह" को मैंने खोला है उसमें, कोई भी चीज मेरी घृणा को मनुष्य की अपेक्षा अधिक प्रेरित नहीं करती है, क्योंकि लोग हमेशा मेरे लिए परेशानी का कारण बनते हैं और मुझे निराश करते हैं। उनका व्यवहार मेरे लिए शर्मिंदगी लाता है और मैं कभी भी "अपना सिर ऊँचा" नहीं रख पाया हूँ। इसलिए, मैं यह कहते हुए, कि वे यथाशीघ्र मेरे घर को छोड़ दें और मुफ़्त में मेरा भोजन करना बंद कर दें, उनके साथ शांति से बात करता हूँ। यदि वे रहना चाहते हैं, तो उन्हें कष्ट से गुज़रना होगा और मेरी ताड़ना को सहना होगा। उनके मन में, मैं उनके कार्यकलापों से पूर्णतः अनभिज्ञ और अपरिचित हूँ, और इसलिए, वे, गिरने के किसी संकेत के बिना, केवल

संख्या पूर्ति के लिए मानव होने का ढोंग करते हुए, मेरे सामने सदैव आत्मविश्वास से पूर्ण रहे हैं। जब मैं लोगों से माँगें करता हूँ, तो वे चकित हो जाते हैं: उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि परमेश्वर, जो इतने वर्षों तक अच्छे स्वभाव का और दयालु रहा है, ऐसे वचनों को कह सकता है, ऐसे वचन जो निर्मम और अन्यायपूर्ण हैं, और इसलिए वे अवाक् रह जाते हैं। ऐसे समय में, मैं देखता हूँ कि लोगों के हृदय में मेरे लिए नफ़रत एक बार फिर पनप जाती है, क्योंकि उन्होंने फिर से शिकायत करने का कार्य शुरू कर दिया है। वे हमेशा पृथ्वी पर आरोप लगाते हैं और स्वर्ग को कोसते हैं। फिर भी उनके वचनों में, मुझे खुद को कोसने जैसा कुछ नहीं मिलता है क्योंकि उनका स्वयं के लिए प्यार बहुत अधिक है। इस प्रकार मैं मानव जीवन के प्रयोजन का संक्षेप करता हूँ: क्योंकि लोग स्वयं से बहुत अधिक प्यार करते हैं, इसलिए उनके पूरे जीवन दुःखमय और खोखले होते हैं, और मेरे लिए अपनी घृणा की वजह से वे अपने विनाश का कारण खुद ही बनते हैं।

यद्यपि मनुष्य के वचनों में मेरे लिए अनकहा "प्रेम" है, किन्तु जब मैं इन वचनों को परीक्षण के लिए "प्रयोगशाला" में लाता हूँ और उन्हें सूक्ष्मदर्शी के नीचे देखता हूँ, तो उनमें समाविष्ट सब कुछ अत्यंत स्पष्टता के साथ प्रकट हो जाता है। इस पल, उनसे उनके "चिकित्सा अभिलेखों" पर नज़र डलवाने, उन्हें ईमानदारी से आश्वस्त करने के लिए मैं मनुष्यों के बीच एक बार फिर आता हूँ। जब लोग उन्हें देखते हैं, तो उनके चेहरे दुःख से भर जाते हैं, उन्हें हृदय में अफ़सोस महसूस होता है और यहाँ तक कि वे इतने व्यग्र हो जाते हैं कि मुझे खुश करने के लिए उन्हें अपने बुरे तरीकों को तुरंत त्यागने और सही मार्ग पर लौटने के लिए बेचैनी होने लगती है। उनके संकल्प को देखकर, मैं बहुत प्रसन्न होता हूँ; मैं आनन्द से अभिभूत होता हूँ: "पृथ्वी पर, मनुष्य के अतिरिक्त कौन मेरे साथ आनन्द, दुःख और कष्टों को साझा कर सकता है? क्या एक मात्र मनुष्य ही ऐसा नहीं है?" फिर भी जब मैं वहाँ से चला जाता हूँ, तो लोग अपने चिकित्सा अभिलेखों को फाड़ देते हैं और अकड़ कर चलने से पहले उन्हें फर्श पर फेंक देते हैं। उसके बाद के दिनों में, मैंने लोगों के कार्यकलापों में ऐसा बहुत कम देखा है जो कि मेरी इच्छा के मुताबिक हो। फिर भी मेरे सामने किए गए उनके संकल्प काफी मात्रा में संचित हो चुके हैं, और उनके संकल्पों को देखते हुए, मुझे चिढ़ महसूस होती है, क्योंकि उनमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे मेरे आनंद के लिए रखा जा सकता हो; वे बहुत दूषित हैं। अपने संकल्प के प्रति मेरी उपेक्षा को देखकर, लोग ठंडे पड़ जाते हैं। उसके बाद, शायद ही कभी वे "आवेदन" प्रस्तुत करते हैं क्योंकि मनुष्य के हृदय की मेरे सामने कभी भी प्रशंसा नहीं की गई है और यह सदा मेरे

द्वारा अस्वीकृत ही किया गया है—लोगों के जीवन में कोई आध्यात्मिक सहारा अब और नहीं है, और इसलिए उनका उत्साह गायब हो जाता है, तथा मुझे और ऐसा नहीं लगता है कि मौसम "झुलसाने वाला गर्म" है। लोग अपने जीवन भर इस हद तक अत्यधिक पीड़ित होते हैं कि, आज की स्थिति आने के साथ ही, वे मेरे द्वारा इतने "उत्पीड़ित" हो जाते हैं कि वे जीवन और मृत्यु के बीच मँडराते हैं। परिणामस्वरूप, उनके चेहरे का प्रकाश मंद हो जाता है, और वे अपनी "जीवंतता" खो देते हैं, क्योंकि वे सभी "बड़े हो गए हैं।" जब ताड़ना के दौरान लोगों को शुद्ध किया जाता है, तब मैं उनकी दयनीय अवस्था देखना सहन नहीं कर सकता हूँ—फिर भी कौन मनुष्य की अभागी पराजय की क्षति-पूर्ति कर सकता है? कौन मनुष्य को अभागे मानव जीवन से बचा सकता है? क्यों लोग दुःख के सागर के रसातल से स्वयं को कभी नहीं निकाल पाए हैं? क्या मैं जानबूझकर लोगों को फँसाता हूँ? लोगों ने कभी भी मेरी मनोदशा को नहीं समझा है, और इसलिए मैं विश्व के सामने विलाप करता हूँ कि स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी चीजों में से, किसी ने कभी भी मेरे हृदय को नहीं समझा है और कोई भी चीज वास्तव में मुझे प्यार नहीं करती है। यहाँ तक कि आज भी, मैं अभी तक नहीं जानता हूँ कि क्यों लोग मुझे प्यार करने में अक्षम हैं। वे अपना हृदय मुझे दे सकते हैं, वे मेरे लिए अपनी नियति का त्याग करने में समर्थ हैं, किन्तु वे मुझे अपना प्यार क्यों नहीं दे सकते हैं? क्या उनके पास वह नहीं है जो मैं माँगता हूँ? लोग मेरे अलावा हर चीज से प्यार करने में सक्षम हैं—तो वे मुझसे प्यार क्यों नहीं कर सकते हैं? उनका प्रेम हमेशा क्यों छिपा रहता है? क्यों, जैसा कि वे मेरे सामने आज तक खड़े रहे हैं, मैंने कभी भी उनके प्यार को नहीं देखा है? क्या यह कुछ ऐसा है जिसका उनमें अभाव है? क्या मैं जानबूझकर लोगों के लिए चीजें मुश्किल बना रहा हूँ? क्या अभी भी उनके हृदय में शंकाएँ हैं? क्या वे ग़लत व्यक्ति को प्यार करने से, और स्वयं का कष्ट-निवारण करने में असमर्थ होने से डरते हैं? लोगों में असंख्य अथाह रहस्य हैं, और इसलिए मैं मनुष्य के सामने हमेशा "डरपोक और भयभीत" रहता हूँ।

आज, राज्य के द्वार की ओर बढ़ते समय, सभी लोग आगे बढ़ना शुरू कर देते हैं—किन्तु जब वे द्वार के सामने पहुँचते हैं, तो मैं द्वार बंद कर देता हूँ, मैं लोगों को बाहर रोक देता हूँ और माँग करता हूँ कि वे अपने प्रवश पत्र दिखाएँ। इस प्रकार का एक अजीब कदम लोगों की अपेक्षाओं के ठीक विपरीत है, और वे सब चकित हैं। क्यों वह द्वार—जो हमेशा पूरा खुला रहता है—आज अचानक कस कर बंद कर दिया गया है? लोग अपने पैरों को पटकते हैं और धीरे-धीरे इधर-उधर चले जाते हैं। वे सोचते हैं कि वे चालाकी से अपना प्रवेश पा सकते हैं, किन्तु जब वे मुझे अपने झूठे प्रवेश पत्र सौंपते हैं, तो मैं उन्हें तभी के तभी आग

के गड्ढे में डाल देता हूँ—और अपने स्वयं के "परिश्रमी प्रयासों" को जलता हुआ देखकर, वे आशा खो देते हैं। वे अपना सिर पकड़ लेते हैं, रो रहे होते हैं, राज्य के भीतर सुंदर दृश्य देख रहे होते हैं किन्तु प्रवेश करने में असमर्थ होते हैं। फिर भी मैं उनकी दयनीय अवस्था की वजह से उन्हें अंदर नहीं आने देता हूँ—कौन मेरी योजना को अपनी इच्छानुसार गड़बड़ा सकता है? क्या भविष्य के आशीष लोगों के उत्साह के बदले में दिए जाते हैं? क्या मानव अस्तित्व का अर्थ मेरे राज्य में अपनी इच्छानुसार प्रवेश करने में निहित है? क्या मैं इतना अधम हूँ? यदि मेरे कठोर वचन न होते, तो क्या लोग काफी समय पहले ही राज्य में प्रवेश नहीं कर चुके होते? इसलिए, उन सभी परेशानियों की वजह से, जो मेरा अस्तित्व उनके लिए पैदा करता है, लोग सदैव मुझे नफ़रत करते हैं। यदि मैं मौज़ूद नहीं होता, तो वे वर्तमान में राज्य के आशीषों का आनंद लेने में समर्थ होते—इस कष्ट को सहन करने की क्या आवश्यकता होती? और इसलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि उनके लिए छोड़ना बेहतर होगा, कि अपने लिए एक मार्ग खोजने हेतु उन्हें इस बात का लाभ लेना चाहिए कि उनके लिए वर्तमान में चीजें कितनी अच्छी तरह से चल रही हैं; जबकि वे अभी भी जवान हैं तो उन्हें कुछ कौशल सीखने के लिए, वर्तमान का लाभ उठाना चाहिए। यदि वे नहीं उठाते हैं, तो भविष्य में इसके लिए बहुत देर हो जाएगी। मेरे घर में, कभी भी किसी को भी आशीष प्राप्त नहीं हुए हैं। मैं लोगों को शीघ्रता करने और चले जाने के लिए, "गरीबी" से चिपके नहीं रहने के लिए कहता हूँ; भविष्य में इसका पछतावा करने के लिए बहुत देर हो जाएगी। अपने प्रति इतने कठोर मत बनो; अपने लिए चीज़ें क्यों मुश्किल बनाते हो? फिर भी मैं लोगों से यह भी कहता हूँ कि जब वे आशीषों को प्राप्त करने में असफल होते हैं, तो कोई भी मेरे बारे में शिकायत नहीं कर सकता है। मेरे पास अपने वचनों को मनुष्य पर बर्बाद करने का समय नहीं है। मुझे आशा है कि यह बात लोगों के मन में इस तरह रहे कि वे इसे भूले नहीं—ये वचन मेरी ओर से दिया जाने वाला असुविधाजनक सत्य है। मैं लंबे समय से मनुष्य पर विश्वास और लोगों में उम्मीद खो चुका हूँ, क्योंकि उनमें महत्वाकांक्षा का अभाव है, वे मुझे कभी भी ऐसा हृदय नहीं दे पाए हैं जो परमेश्वर से प्यार करता हो, और इसके बजाय वे मुझे सदैव अपनी प्रेरणाएँ देते हैं। मैंने मनुष्य को बहुत कुछ कहा है, और क्योंकि लोग आज भी मेरी सलाह की अनदेखी करते हैं, इसलिए मैं उन्हें भविष्य में मेरे हृदय को गलत समझने से रोकने के लिए अपना दृष्टिकोण बताता हूँ; आने वाले समय में चाहे वे जीवित रहते हैं या मरते हैं यह उनका मामला है, इस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है। मुझे आशा है कि वे जीवित रहने के लिए अपना मार्ग खोज लेंगे, और मैं इसमें सामर्थ्यहीन हूँ। चूँकि मनुष्य मुझे वास्तव में प्यार नहीं

करता है, इसलिए हम बस अपने रास्ते अलग कर लेते हैं; भविष्य में, हमारे बीच कोई अब और वचन नहीं होंगे, हमारे पास बात करने के लिए अब और कोई चीज नहीं होगी, हम एक दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, हममें से प्रत्येक अपने-अपने तरीके से चलेगा, लोगों को मुझे ढूँढने के लिए नहीं आना होगा, और आगे कभी भी मैं मनुष्य से "सहायता" नहीं माँगूँगा। यह कुछ ऐसा है जो हमारे बीच है, और भविष्य में किसी भी समस्या को होने से रोकने के लिए हमने बिना वाक्छल के बोला है। क्या यह चीजों को और आसान नहीं बनाता है? हम में से प्रत्येक अपने तरीके से चलता है और एक-दूसरे से कोई मतलब नहीं है—इसमें क्या गलत है? मुझे आशा है कि लोग इस पर कुछ विचार करेंगे।

28 मई, 1992

अध्याय 47

मनुष्य के जीवन को परिपक्वता के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से, और इसलिए भी कि मानवजाति और मैं समान महत्वाकांक्षा साझा करते हुए परिणाम हासिल कर सकें, मैंने मानवजाति को सदैव क्षमा करके स्वीकार किया है, उन्हें अपने वचन से पालन-पोषण, आहार और अपनी सारी प्रचुर संपदा प्राप्त करने दी है। मैंने मानवजाति को कभी भी लज्जित नहीं होने दिया, फिर भी मनुष्य कभी मेरी भावनाओं का ख़्याल नहीं रखता। क्योंकि मनुष्य भावनाहीन है और मेरे अलावा हर चीज़ से "घृणा" करता है। उसकी कमियों के कारण, मुझे उससे बहुत हमदर्दी है; इसलिए मैंने मनुष्यों के लिए अत्यधिक प्रयास किए हैं, ताकि वे संसार में रहते हुए, पृथ्वी की प्रचुर संपदा का जी भर कर आनंद ले सकें। मैं लोगों के साथ अनुचित व्यवहार नहीं करता और चूँकि वर्षों से वो मेरा अनुसरण कर रहे हैं, यह सोचकर मेरा हृदय उनके लिए नरम हो गया है। यह ऐसा है मानो मैं इन मनुष्यों के ऊपर अपना कार्य करने का बीड़ा नहीं उठा सकता। इस प्रकार, इन कृशकाय लोगों को देखकर, जो मुझे वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे स्वयं को करते हैं, मेरे हृदय में हमेशा पीड़ा की एक अकथनीय अनुभूति होती है। लेकिन इसकी वजह से परिपाटी को कौन तोड़ सकता है? इसकी वजह से कौन स्वयं को परेशान करेगा? फिर भी मैंने अपना सारा इनाम मनुष्य-जाति को प्रदान कर दिया है ताकि वह इसका भरपूर आनंद ले सके, और इस मुद्दे पर मैंने मानवजाति के साथ ग़लत व्यवहार नहीं किया है। यही कारण है कि मानवजाति अब भी मेरे दयालु और उदार चेहरे को देखती है। मैंने हमेशा धैर्य रखा है और इंतजार करता रहा हूँ। जब मनुष्य भरपूर आनंद लेकर उससे ऊब

जाएगा, उस समय मैं उसके अनुरोधों को "संतुष्ट" करना शुरू करूँगा और मनुष्यों को उनके निरर्थक जीवन से छुटकारा दिलाऊँगा, फिर मानवजाति के साथ मेरा कोई और लेना-देना नहीं होगा। पृथ्वी पर, मानवजाति को निगलने के लिए मैं समुद्री जल का उपयोग कर चुका हूँ, मैंने अकाल के द्वारा उन्हें काबू किया है, कीड़ों-मकोड़ों की महामारियों से उन्हें डराया-धमकाया है, उनके "सिंचन" के लिए भारी बारिश का उपयोग किया, फिर भी उन्होंने जीवन की निरर्थकता को कभी महसूस नहीं किया। आज भी लोग पृथ्वी पर जीवन जीने के अर्थ को नहीं समझते। कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी उपस्थिति में जीवन जीना मानव जीवन की सबसे गहरी सार्थकता है? क्या मेरे भीतर होना किसी को आपदा के खतरे से बचा देता है? पृथ्वी पर कितने हाड़-मांस के शरीर आत्म-आनंद की स्वतंत्रता की मनोदशा में रहे हैं? देह में जीवन जीने की निरर्थकता से कौन बचा है? फिर भी कौन यह पहचान सकता है? जब से मैंने मानवजाति की रचना की है, कोई भी पृथ्वी पर सर्वाधिक सार्थकता का जीवन नहीं जी पाया है, और इसलिए मानवजाति ने निपट निरर्थकता का जीवन सदैव आलस्य में व्यर्थ गँवाया है। परन्तु कोई भी इस प्रकार की दुर्दशा से बचने का इच्छुक नहीं है और न ही कोई अपने निरर्थक और उबाऊ जीवन को छोड़ने को तैयार है। मानवजाति के अनुभव में, देह में रहने वालों में से कोई भी मानव-संसार के रीति-रिवाजों से नहीं बचा है, यद्यपि वे मुझसे आनंद-लाभ उठाते हैं। इसके बजाए, उन्होंने हमेशा प्रकृति को ही अपने ढंग से काम करने दिया और स्वयं को धोखा देते रहे हैं।

एक बार जब मैं मानवजाति के अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त कर दूँगा, तब पृथ्वी के "उत्पीड़न" को झेलने के लिए पृथ्वी पर कोई नहीं बचेगा; और केवल तभी यह कह पाना संभव होगा कि मेरा महान कार्य पूरी तरह संपन्न हो चुका है। अंत के दिनों के मेरे देहधारण में, मैं जो कार्य करना चाहता हूँ, वह है लोगों को देह में जीवन जीने की निरर्थकता को समझाना, और मैं इस अवसर का उपयोग देह को मिटाने के लिए करूँगा। उसके बाद से, पृथ्वी पर कोई मनुष्य विद्यमान नहीं होगा, फिर कभी कोई पृथ्वी की निरर्थकता को लेकर नहीं रोयेगा, फिर कभी कोई देह की कठिनाइयों के बारे में बात नहीं करेगा, फिर कभी कोई शिकायत नहीं करेगा कि मैं अन्यायी हूँ, सभी लोग और वस्तुएँ विश्राम में प्रवेश करेंगी। फिर मनुष्य कभी भाग-दौड़ नहीं करेगा, न लगातार व्यस्त रहेगा, न ही वो पृथ्वी पर यहाँ-वहाँ तलाश करता फिरेगा, क्योंकि उसे अपने लिए एक उपयुक्त मंजिल मिल चुकी होगी। उस समय, उसके चेहरे पर मुस्कुराहट दिखाई देगी। तब मैं मानवजाति से और कुछ भी नहीं माँगूँगा, और उसके साथ फिर मेरा कोई विवाद नहीं होगा;

हमारे बीच फिर कोई शांति संधि नहीं होगी। पृथ्वी पर मैं विद्यमान हूँ और मनुष्य पृथ्वी पर जीवन जीते हैं; मैं उनके साथ जीवन जीता हूँ। वे सब मेरी उपस्थिति से आनंदित होते हैं; इसलिए वे अकारण छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, बल्कि, वे चाहेंगे कि मैं कुछ समय और रुकूँ। मैं मदद के लिए एक अँगुली भी उठाए बिना, पृथ्वी के विध्वंस का गवाह होना कैसे सहन कर सकता हूँ? मैं पृथ्वी का नहीं हूँ; अपने धैर्य के कारण ही मैं आज तक यहां रहने के लिए विवश हुआ हूँ। यदि मानवजाति ने अंतहीन अनुनय-विनय न की होती, तो मैं बहुत पहले ही चला गया होता। आजकल लोग अपना ख्याल खुद रख सकते हैं, उन्हें मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे परिपक्व हो गए हैं और उन्हें अपने भरण-पोषण के लिए मेरी आवश्यकता नहीं है। इसलिए मैं मानवजाति के साथ "विजय का उत्सव" मनाने की योजना बना रहा हूँ, जिसके बाद मैं उनसे विदा ले लूँगा, ताकि वे अनभिज्ञ न रहें। निस्संदेह, ख़राब रिश्तों के साथ अलग होना अच्छी बात नहीं होगी, क्योंकि हमारे बीच कोई द्वेष नहीं है। इस प्रकार हमारे बीच मित्रता हमेशा क़ायम रहेगी। मुझे आशा है कि हमारे रास्ते अलग होने के बाद मनुष्य मेरी "विरासत" को आगे बढ़ा पाएँगे, और इस दौरान मैंने जो शिक्षाएँ प्रदान की हैं, वे उन्हें नहीं भूलेंगे। मैं आशा करता हूँ कि वे ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिससे मेरा नाम कलंकित हो, और वे मेरे वचन याद रखेंगे। मैं आशा करता हूँ कि मेरे चले जाने के बाद सभी मनुष्य मेरी इच्छा पूरी करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर सकेंगे; मुझे आशा है कि वे मेरे वचन का उपयोग अपने जीवन की नींव के रूप में करेंगे और मेरी आशाओं पर खरे उतरेंगे, क्योंकि मेरा हृदय हमेशा मनुष्यों के लिए चिंतित रहा है और मैं हमेशा उनसे जुड़ा रहा हूँ। एक बार मानवजाति और मैं एक साथ इकट्ठा हुए थे और हमने पृथ्वी पर उन्हीं आशीषों का आनंद लिया था जो स्वर्ग में हैं। मैं मनुष्यों के साथ रहता था; मनुष्य हमेशा मुझसे प्रेम करते थे, और मैंने भी हमेशा उनसे प्रेम किया है; हमारे मन में एक दूसरे के लिए अपनापन था। जब मैं मनुष्यों के साथ बिताए अपने समय को याद करता हूँ, तो मुझे हमारे हँसी-खुशी और मन-मुटाव के दिन याद आ जाते हैं। फिर भी, इसी आधार पर हमारा प्रेम कायम था, एक-दूसरे के साथ हमारा रिश्ता कभी नहीं टूटा। हमारे कई वर्षों के संपर्क में, मानवजाति ने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, और मैंने भी मनुष्यों के आनंद के लिए बहुत सारी चीज़ें दी हैं, जिसके लिए वे हमेशा दोगुने आभारी रहे हैं। अब, हमारा एकत्र होना पहले के समान कभी नहीं होगा; हमारे वियोग के इस पल से दूर भला कौन भाग सकता है? मनुष्यों के मन में मेरे लिए गहरा लगाव है, और मेरे मन में उनके लिए अंतहीन प्रेम है, लेकिन उसके बारे में क्या किया जा सकता है? स्वर्गिक पिता की अपेक्षाओं का उल्लंघन करने का

साहस कौन करेगा? मैं अपने आवास पर लौट जाऊँगा, जहाँ मैं अपने कार्य का एक और चरण पूरा करूँगा। शायद हमें फिर मिलने का अवसर मिलेगा। मुझे उम्मीद है मनुष्य ज़्यादा दुःखी नहीं होंगे, और वे पृथ्वी पर मुझे संतुष्ट करेंगे; स्वर्ग से मेरा आत्मा उन पर अक्सर अनुग्रह न्योछावर करेगा।

सृजन के समय, मैंने भविष्यवाणी की थी कि अंत के दिनों में मैं उन लोगों का एक समूह बनाऊँगा जो मेरे साथ एकचित्त हैं। मैंने पहले ही कह दिया था कि अंत के दिनों में पृथ्वी पर एक आदर्श स्थापित करने के बाद, मैं अपने घर लौट जाऊँगा। एक बार जब समूची मानवजाति मेरी इच्छा पूरी कर चुकेगी, तब वे वह प्राप्त कर चुके होंगे जिसकी मैंने उनसे अपेक्षा की है, और फिर मैं उनसे अब और कुछ भी करने की अपेक्षा नहीं करूँगा। इसके बजाए, मानवजाति और मैं पुराने दिनों के बारे में कहानियों का आदान-प्रदान करेंगे और उसके बाद हम अलग हो जाएँगे। मैंने यह कार्य करना आरंभ कर दिया है और मनुष्यों को स्वयं को मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार होने और मेरे अभिप्रायों को समझने का अवसर दिया है, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वे मुझे ग़लत समझ लें, या मुझे क्रूर अथवा हृदयहीन न मान लें, जो मेरा मंतव्य नहीं है। क्या मनुष्य मुझसे प्रेम करते हैं और फिर भी मुझे एक उपयुक्त विश्राम स्थल से वंचित रखते हैं? क्या वे मेरी ओर से स्वर्गिक पिता से विनती करने के अनिच्छुक हैं? क्या मनुष्यों ने मेरे साथ सहानुभूति के आँसू नहीं बहाए हैं? क्या उन्होंने हम परमपिता और पुत्र के बीच आरंभिक पुनर्मिलन करवाने में मदद नहीं की है? तो अब वे अनिच्छुक क्यों हैं? पृथ्वी पर मेरी सेवकाई पूरी हो चुकी है और मानवजाति से रास्ते अलग हो जाने के बाद भी, मैं उनकी सहायता करता रहूँगा; क्या यह अच्छा नहीं है? हमें अपने रास्ते अलग कर ही लेने चाहिए ताकि मेरे कार्य के परिणाम बेहतर आएँ, और यह परस्पर लाभदायक सिद्ध हो, यद्यपि यह पीड़ादायक है। हमारे आँसू मौन बहने दो; मैं मानवजाति को अब और बुरा-भला नहीं कहूँगा। अतीत में, मैंने लोगों से बहुत-सी बातें कहीं हैं, जिनसे लोगों का हृदय छलनी हुआ है, और उन्होंने दुःख के आँसू बहाए हैं। इसके लिए मैं मानवजाति से क्षमा याचना करता हूँ। वे मुझसे नफ़रत न करें, क्योंकि यह सब कुछ उनकी भलाई के लिए ही है। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि मनुष्य मेरा मर्म समझेंगे। पहले हमारे विवाद होते थे, लेकिन अगर देखें तो हम दोनों इससे लाभान्वित हुए हैं। इन विवादों के कारण परमेश्वर और मानवजाति ने मित्रता का एक सेतु बना लिया है। क्या यह हमारे मिले-जुले प्रयासों का फल नहीं है? हम सभी को इसका आनंद लेना चाहिए। मैं मनुष्यों से अपनी पिछली "ग़लतियों" की माफी माँगता हूँ। उनके अपराध भी भुला दिए जाएँगे। यदि भविष्य में वे बदले में मुझे प्रेम देते हैं, तो इससे स्वर्ग में मेरे आत्मा को

आराम मिलेगा। मुझे नहीं पता कि इस संबंध में मानवजाति का संकल्प क्या है, लोग मेरा अंतिम अनुरोध मानकर मुझे संतुष्ट करने के लिए तैयार हैं या नहीं। मैं उनसे कुछ और नहीं माँग रहा हूँ, बस इतना ही कि वे मुझसे प्रेम करें। इतना काफी है। क्या यह हो सकता है? आओ अपने बीच घटी सभी अप्रिय बातों को भुला दें; हमारे बीच सदैव प्रेम रहे। मैंने मनुष्यों को इतना अधिक प्रेम दिया है और उन्होंने मुझसे प्रेम करने की इतनी भारी क़ीमत चुकाई है। इस तरह मैं आशा करता हूँ कि मानवजाति हमारे बीच अविरल और शुद्ध प्रेम को सँजोये रखेगी ताकि हमारा प्रेम सम्पूर्ण मानव जगत में फैल जाए और हमेशा के लिए बना रहे। जब हम फिर मिलें, तब भी हम प्रेम की कड़ी से जुड़े हों ताकि हमारा प्रेम अनन्तकाल तक बना रहे, सभी लोग इसकी प्रशंसा करें और इसे प्रचारित करें। यह मुझे संतुष्ट करेगा और मैं मानवजाति को अपना मुस्कुराता हुआ चेहरा दिखाऊँगा। मैं आशा करता हूँ कि मनुष्य मेरे उपदेश याद रखेंगे।

1 जून, 1992

परिशिष्ट: संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचनों के रहस्य की व्याख्या (कुछ अध्यायों की व्याख्या)

अध्याय 1

जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, "कोई भी मेरे वचनों के मूल को नहीं पकड़ सकता है, न ही उन्हें बोलने के पीछे के मेरे उद्देश्य को जान सकता है," यदि परमेश्वर के आत्मा का मार्गदर्शन न होता, यदि उसके कथनों का आगमन न होता, तो सभी लोग उसकी ताड़ना के अधीन मिट जाते। सभी लोगों की परीक्षा लेने में परमेश्वर ने इतना लंबा समय क्यों लिया? और वह भी पाँच महीने जितना लंबा समय? यह हमारी सहभागिता का केंद्रीय बिंदु और साथ ही परमेश्वर की बुद्धि का केंद्र बिंदु भी है। हमारी निम्न अभिधारणा हो सकती है : मनुष्य की परीक्षा लिए जाने की इस अवधि के बिना, और परमेश्वर द्वारा भ्रष्ट मानव जाति पर ज़ोरदार ढंग से प्रहार किए, मार डाले, और उसे धीरे-धीरे कम किए बिना, यदि कलीसिया का निर्माण आज तक चलता रहता, तो परिणाम क्या रहा होता? इसलिए परमेश्वर बिल्कुल पहले ही वाक्य में सीधे मुद्दे पर आ जाता है, इन कई महीनों के कार्य का वांछित प्रभाव सीधे ही बता देता है—वह पहली ही बार में

बिल्कुल सटीक प्रहार करता है! यह कई महीनों की इस अवधि के दौरान परमेश्वर के कर्मों की बुद्धिमता को दर्शाने के लिए पर्याप्त है : उन्होंने हर एक को, परीक्षण के माध्यम से यह सीखने में समर्थ बनाया है कि ईमानदारी से समर्पण कैसे करें और स्वयं को कैसे खपाएँ, और साथ ही पीड़ायुक्त शुद्धिकरण के माध्यम से परमेश्वर को बेहतर ढंग से कैसे जानें। लोग जितनी अधिक निराशा का अनुभव करते हैं, उतना ही अधिक वे स्वयं को जानने लगते हैं। और सच कहें तो जितना अधिक वे उस शुद्धिकरण का सामना करते हैं जो पीड़ा से भरा है, उतना ही अधिक वे अपनी भ्रष्टता को जानने लगते हैं, और समझ जाते हैं कि वे परमेश्वर के लिए सेवाकर्मी बनने तक के अयोग्य हैं, और सेवा प्रदान करना तो परमेश्वर के द्वारा ऊपर उठाया जाना है। और इसलिए यह परिणाम प्राप्त हो जाने के बाद, जब मनुष्य अपना प्रत्येक भाग खपा चुका होता है, परमेश्वर, कुछ भी छिपाए बिना, दया की आवाज़ों को सीधे स्वर देता है। यह सरलता से देखा जा सकता है कि इन कुछ महीनों बाद, कार्य करने का परमेश्वर का तरीक़ा, आज को अपने आरंभ बिंदु के रूप में लेता है; उसने यह हर एक के देखने के लिए स्पष्ट कर दिया है। चूँकि अतीत में, परमेश्वर प्रायः कहता था "परमेश्वर के लोग कहलाने का अधिकार कमाना आसान नहीं है," इसलिए उसने इन वचनों को ऐसे लोगों में सिद्ध किया है जिनका सेवाकर्मियों के रूप में उल्लेख किया जाता है, जो यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि परमेश्वर संदेह की छाया से परे विश्वासयोग्य है। परमेश्वर जो भी कहता है वह अलग-अलग अंशों में, सच निकलेगा, और किसी भी रूप में वह खोखली बात नहीं है।

जब सारे लोग ध्यान भटक जाने की हद तक दुःख और विषाद से भर जाते हैं, तब परमेश्वर से आए इस तरह के वचन हृदयों में उतरते हैं, उन सभी को उनकी आशाहीनता के बीच पुनर्जीवित कर देते हैं। मनुष्यों के मन से हर संदेह समाप्त करने के लिए परमेश्वर ने कहा : "भले ही उन्हें मेरे लोग कहा जाता है, यह उपाधि मेरे 'पुत्र' कहे जाने से किसी भी रूप में कम नहीं है।" यह यथेष्ट रूप से दर्शाता है कि केवल परमेश्वर अपने अधिकार की रक्षा करने में समर्थ है, और एक बार जब लोग इसे पढ़ लेते हैं, तब वे और भी अधिक दृढ़ता से मानने लगेंगे कि यह कार्य करने की एक पद्धति नहीं, यह एक तथ्य है। एक क़दम और आगे बढ़ते हुए, उसकी नई पद्धति में प्रत्येक व्यक्ति की पहचान स्पष्ट कर दी जाती है ताकि लोगों के दर्शन साफ बने रह सकें। यह परमेश्वर की बुद्धि दिखाने के लिए पर्याप्त है और यह लोगों को यह बात बेहतर ढंग से जानने में समर्थ बनाता है कि परमेश्वर मनुष्यों के हृदय के भीतर देख सकता है; मनुष्य अपने विचारों और कार्यकलापों में कठपुतलियों की तरह हैं, जिनकी डोर परमेश्वर खींच रहा है, और यह सुनिश्चित और

शंका से परे है।

शुरुआत की बात करें तो, परमेश्वर ने आरंभ में सीधे-सीधे यह बता दिया था कि "कलीसिया के शुद्धिकरण" के उसके कार्य का पहला चरण पहले ही पूरा हो गया है। "स्थिति अब वह नहीं है, जो कभी थी, और मेरा कार्य एक नए आरंभ-बिंदु में प्रवेश कर चुका है।" इस कथन से देखा जा सकता है कि परमेश्वर का कार्य एक नए आरंभ बिंदु में प्रवेश कर चुका है, जिसके तत्काल बाद, उसने अपने कार्य के अगले चरण की रूपरेखाओं का हमें संकेत दिया—एक बार जब कलीसिया का निर्माण पूरा हो जायेगा, तब फिर राज्य के युग का जीवन प्रारंभ होगा। "अत: यह युग अब कलीसिया-निर्माण का नहीं है, बल्कि यह राज्य के सफल निर्माण का युग है।" इतना ही नहीं, उसने यह भी बताया है कि चूँकि लोग अब भी पृथ्वी पर हैं, इसलिए उनके सम्मेलनों को आगे भी कलीसिया कहा जायेगा, इस तरह एक अवास्तविक "राज्य" के साकार होने से बचा जा सकेगा, जैसा कि सभी ने कल्पना कर ली थी। इसके बाद आती है दर्शनों के मुद्दे पर सहभागिता।

ऐसा क्यों है कि यद्यपि अब राज्य निर्माण का युग है और कलीसिया निर्माण का अंत है; फिर भी सभी सम्मेलनों को अब भी कलीसिया कहा जाता है? अतीत में कहा गया था कि कलीसिया राज्य की पूर्वपीठिका है; और कलीसिया के बिना राज्य की कोई बात नहीं हो सकती। राज्य के युग का आरंभ देह में परमेश्वर की सेवकाई का आरंभ है और राज्य के युग का सूत्रपात देहधारी परमेश्वर द्वारा किया जाता है। वह जो लाता है वह राज्य का युग है, राज्य का आधिकारिक अवतरण नहीं। इसकी कल्पना करना मुश्किल नहीं है; परमेश्वर के लोगों से मेरा आशय राज्य के युग के लोग हैं, न कि स्वयं राज्य के लोग। यही कारण है कि यह कहना उचित होगा कि पृथ्वी पर सम्मेलनों को अब भी कलीसिया ही कहा जाना चाहिए। अतीत में, वह अपनी सामान्य मानवता के भीतर कार्य करता था जबकि उसकी स्वयं परमेश्वर के रूप में गवाही नहीं दी गयी थी, और इसलिए राज्य का युग उस समय मनुष्यों के बीच आरंभ नहीं हुआ था; अर्थात, जैसा कि मैंने कहा है, मेरे आत्मा ने अभी तक मेरी देहधारी देह में आधिकारिक रूप से कार्य करना आरंभ नहीं किया था। अब चूँकि स्वयं परमेश्वर की गवाही दे दी गयी है, इसलिए मनुष्यों के बीच राज्य साकार हुआ है। इसका अभिप्राय यह है कि मैं अपनी दिव्यता के भीतर कार्य करना आरंभ करूँगा, और इसलिए वे मनुष्य जो मेरे द्वारा मेरी दिव्यता में बोले जाने वाले वचनों और किए जाने वाले कर्मों की सराहना कर सकते हैं, राज्य के युग के मेरे लोगों के रूप में जाने जाएँगे। यही वह है जिससे "परमेश्वर के लोग" अस्तित्व में आया।

इस चरण में, प्राथमिक रूप से मेरी दिव्यता कार्य करती और बोलती है। मनुष्य हस्तक्षेप कर ही नहीं सकता, न ही वह मेरी योजना को बाधित कर सकता है। परमेश्वर एक बार जब अपने कथनों में एक निश्चित अवस्था में पहुँच जाता है, तब उसके नाम की गवाही दी जाती है, और उस बिंदु से मानव जाति के उसके परीक्षण आरंभ हो जाएँगे। यह परमेश्वर के कार्य में निहित बुद्धि की पराकाष्ठा है। यह सुदृढ़ नींव डालता है और अगले चरण की शुरुआत के साथ-साथ अंतिम चरण के अंत के लिए जड़ें गाड़ता है। यह कुछ ऐसा है जिसका एक मानव के तौर पर कोई भी पूर्वानुमान नहीं लगा सकता; यह न्याय के युग के पहले और दूसरे भागों का मिलन बिंदु है। उन कुछ महीनों के बिना, जिनमें मैंने मनुष्य को शुद्ध किया, मेरी दिव्यता के पास कार्य करने का कोई मार्ग नहीं होता। शुद्धिकरण के उन अनेक महीनों ने मेरे कार्य के अगले चरण के लिए मार्ग खोल दिया। कार्य के इन कुछ महीनों की समाप्ति संकेत है कि कार्य का अगला चरण और अधिक प्रगाढ़ होना है। अगर कोई परमेश्वर के वचनों को सचमुच समझता है, तो हो सकता है कि वह समझ पाए कि वह इन कई महीनों की अवधि का उपयोग अपने कार्य का अगला चरण आरंभ करने के लिए कर रहा है, इस प्रकार इसे बेहतर परिणाम प्राप्त करने में समर्थ बना रहा है। चूँकि मेरी मानवता के व्यवधान ने मेरे कार्य के अगले चरण में रुकावट उत्पन्न कर दी है, इसलिए पीड़ा के माध्यम से शुद्धिकरण के इन कुछ महीनों के दौरान, दोनों पक्ष शिक्षित होते हैं और दोनों ने ही यथेष्ट लाभ प्राप्त किए हैं। इसके परिणामस्वरूप, केवल अब जाके मनुष्य उसका उल्लेख करने के मेरे तरीक़े को सँजोना प्रारंभ करता है। इसलिए जब परमेश्वर ने अपनी लेखन-तूलिका को हिलाते हुए कहा, कि वह अब मनुष्यों को "सेवाकर्मी" नहीं, बल्कि इसके बजाय "परमेश्वर के लोग" कहकर पुकारेगा, तब वे सब खुशी से अभिभूत हो गए थे। यह मनुष्य की घातक कमज़ोरी थी। सटीक रूप से मनुष्य की इसी घातक कमज़ोरी को पकड़ने के लिए ही परमेश्वर ने वो सब कहा।

सभी लोगों को और राजी कराने और उनका पूर्ण विश्वास प्राप्त करने के लिए, और यह तथ्य बताने के लिए कि कुछ लोगों की निष्ठा में अशुद्धियों की मिलावट है, परमेश्वर ने मानवीय कुरूपता के भिन्न-भिन्न प्रकारों की ओर ध्यान आकर्षित करने का अतिरिक्त कदम उठाया है, और ऐसा करते हुए उसने अपने वचनों को परिपूर्ण किया है : "कितने मुझसे प्रेम करने में सच्चे हैं? कौन अपने भविष्य की चिंता के कारण स्वाँग नहीं कर रहा है? किसने अपने परीक्षणों के दौरान कभी शिकायत नहीं की है?" इस तरह के वचनों से, हर कोई स्वयं अपनी अवज्ञाकारिता, अनिष्ठा, और संतानोचित निष्ठा के अभाव को पहचान पाता है, और

इसके द्वारा यह देखने लगता है कि परमेश्वर की दया और कृपालु प्रेम हर कदम पर उन सबके पीछे-पीछे चलते हैं जो परमेश्वर की खोज करते हैं। यह इन वचनों से देखा जा सकता है : "जब कुछ लोग पीछे हटने की कगार पर होते हैं, जब सभी लोग, मेरे बोलने के ढंग में मेरे द्वारा बदलाव किए जाने की आशा करते हुए, अपनी आशा गँवा बैठते हैं, उस समय मैं उद्धार की आवाज़ों को स्वर देता हूँ, उन सभी को जो मुझसे ईमानदारी से प्रेम करते हैं, अपने राज्य में, अपने सिंहासन के समक्ष, ले आता हूँ।" यहाँ, यह वाक्यांश कि "जो मुझसे ईमानदारी से प्रेम करते हैं" और यह आलंकारिक प्रश्न कि "कितने ईमानदारी से मुझसे प्रेम करते हैं?" परस्पर विरोधी नहीं हैं। यह स्पष्ट करता है कि किस तरह इस परिप्रेक्ष्य में "ईमानदारी" में अशुद्धियाँ हैं। परमेश्वर ईमानदारी जैसे शब्द का उपयोग इसलिए नहीं करता है कि परमेश्वर कुछ नहीं जानता है; बल्कि, इसलिए करता है कि परमेश्वर मनुष्यों के अंतर्तम हृदय को देख सकता है, यह भ्रष्ट मानव जाति को लक्ष्य करके किया गया कटाक्ष है, ताकि सभी परमेश्वर के प्रति अपने ऋणी होने को अधिक गहराई से महसूस करें और स्वयं को अधिक कठोरता से धिक्कारें, साथ ही यह तथ्य पहचानें कि उनके हृदय की परिवेदनाएँ पूरी तरह शैतान से आती हैं। सभी आश्चर्य में पड़ जाते हैं जब वे "निष्ठा" जैसा शब्द देखते हैं, वे मन ही मन सोचते हैं : "मैंने कई बार स्वर्ग और पृथ्वी के विरुद्ध बुरा-भला कहा है, और कई बार मैं छोड़कर चला जाना चाहता था, परंतु चूँकि मैं परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं से डरता था, इसलिए मैं बस मामलों से उबरने के लिए उन्हें जैसे-तैसे खत्म कर भीड़ के साथ चलता रहता था, इंतज़ार करता था कि परमेश्वर मुझसे निपटेगा, यह सोचकर कि अगर चीज़ें सचमुच निराशाजनक हुईं तब भी मेरे पास धीरे-धीरे पीछे हटने का पर्याप्त समय होगा। परंतु अब परमेश्वर हमें अपने निष्ठावान लोग कहकर पुकार रहा है। क्या परमेश्वर वास्तव में वह परमेश्वर हो सकता है जो मनुष्यों के अंतर्तम हृदयों में झाँककर देखता है?" इस प्रकार की ग़लतफ़हमी से बचने के लिए ही परमेश्वर ने बिल्कुल अंत में विभिन्न प्रकार के लोगों की मनोदशाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिससे सभी लोग भीतर से संदेह करने परंतु बाहर से प्रसन्नता व्यक्त करने की अवस्था से बाहर निकलकर उस अवस्था में चले गए जहाँ वे हृदय, वचन, और दृष्टि से आश्वस्त हो गए हैं। इस तरह, मनुष्य के ऊपर परमेश्वर के वचन का प्रभाव अधिक गहरा हो गया है, जिसके स्वाभाविक परिणामस्वरूप मनुष्य कुछ अधिक भयभीत, कुछ अधिक श्रद्धालु हो गया है, और इतना ही नहीं उसने परमेश्वर की बेहतर समझ प्राप्त की है। अंत में, मनुष्य की चिंताओं को कम करने के लिए, परमेश्वर ने कहा : "लेकिन चूँकि अतीत तो अतीत है, और वर्तमान पहले ही आ चुका है, अत: याद से

आतुर होकर बीते समय की चाह रखने या भविष्य के बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है।" बोलने के इस प्रकार से कसे हुए, सामंजस्यपूर्ण, लेकिन सारगर्भित ढंग का और अधिक प्रभाव पड़ता है, जिससे वे सब जो उसके वचन पढ़ते हैं, अतीत की निराशा के बीच से एक बार फिर प्रकाश का दर्शन करते हैं, जब तक कि वे परमेश्वर की बुद्धि और कर्म नहीं देख लेते, "परमेश्वर के लोग" की पदवी प्राप्त नहीं कर लेते, अपने हृदयों से संदेह के बादल नहीं हटा देते, और फिर अपनी मनोदशाओं के बदलते विन्यास से स्वयं को जानने नहीं लगते हैं। ये अवस्थाएँ, दुःख और विषाद, प्रसन्नता और आनंद को जन्म देते हुए, बारी-बारी से घटती और बढ़ती हैं। इस अध्याय में परमेश्वर ने लोगों की एक रूपरेखा चित्रित की है जो प्रत्येक विवरण में इतनी जीती-जागती और सजीव है कि यह पूर्णता के कगार पर आ पहुँची है। यह सचमुच कुछ ऐसा है जिसे मनुष्य अर्जित नहीं कर सकता, कुछ ऐसा जो मानव हृदय के गहनतम खोह के रहस्य सचमुच उजागर कर देता है। क्या यह ऐसा कुछ हो सकता है जिसे करने की क्षमता मनुष्य में है?

इसके तुरंत बाद, और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, नीचे दिया गया यह अंश है, जो परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञा सीधे मनुष्य को प्रकट करता है और यह सबसे महत्वपूर्ण भाग भी है : "मनुष्य होने के नाते जो कोई वास्तविकता के खिलाफ जाता है और मेरे मार्गदर्शन के अनुसार काम नहीं करता, उसका अंत अच्छा नहीं होगा, बल्कि वह अपने लिए परेशानी ही मोल लेगा। संसार में घटित होने वाली समस्त चीज़ों में से ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसमें मेरी बात आखिरी न हो।" क्या यह परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञा नहीं है? यह, यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि इस प्रशासनिक आज्ञा के विरुद्ध जाने वालों के उदाहरण असंख्य हैं। उपरोक्त के आधार पर, परमेश्वर सभी से आग्रह करता है कि वे अपनी नियति पर सोच-विचार न करें। यदि कोई परमेश्वर के आयोजन से छूटकर निकल जाने का दुस्साहस करे, तो परिणाम कल्पना से भी परे दिल दहलाने वाले होंगे। यह उन सभी को परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञा को बेहतर ढंग से समझने में समर्थ बनाता है, जिन्होंने इन वचनों में प्रबुद्धता और रोशनी का अनुभव किया है, और साथ ही यह उन्हें यह समझने में भी समर्थ बनाता है कि उसके प्रताप का अपमान नहीं हो सकता है, और इसके द्वारा वे अधिक अनुभवी और सुस्थिर हो जाते हैं, देवदार के उस वृक्ष की तरह हरे-भरे, जो हवा और पाला सहते हुए, कड़ाके की सर्दी के खतरे के विरुद्ध निडर खड़ा रहता है, प्रकृति की फलती-फूलती हरित जीवनशक्ति को अनवरत बढ़ाता रहता है। इस अंश को सामने पाकर अधिकतर लोग इतना हक्का-बक्का महसूस करते हैं मानो वे भटककर किसी प्रकार की भूलभुलैया में आ पहुँचे हों; ऐसा इसलिए होता है

क्योंकि परमेश्वर के वचनों की विषयवस्तु अपेक्षाकृत तेज़ी से बदल जाती है, और इसलिए दस में से नौ लोग, अपने भ्रष्ट स्वभावों को समझने का प्रयत्न करते हुए एक भूलभुलैया में प्रवेश कर जाते हैं। भविष्य में कार्य अधिक सुचारू ढंग से चलता रह सके, सभी मनुष्यों के हृदय से संदेह हटाए जा सकें, और सभी लोग परमेश्वर की निष्ठा के प्रति अपने विश्वास में एक क़दम और आगे जा सकें, इसके लिए परमेश्वर उस अंश के अंत में ज़ोर देता है : "हर वह आदमी, जो ईमानदारी से मुझसे प्रेम करता है, निश्चित ही मेरे सिंहासन के सामने लौट आएगा।" इस प्रकार, कई महीनों तक उसके कार्य से होकर गुजर चुके लोग, एक पल में, अपनी आशंका के कुछ हिस्सों से मुक्त हो जाते हैं। इतना ही नहीं, उनके हृदय, जो अधर में लटके हुए थे, उसी अवस्था में लौट आते है जिसमें वे कभी होते थे, कुछ इस तरह जैसे भारी पत्थर ज़मीन पर जा गिरा हो। उन्हें अब और अपनी नियति के बारे में सोच-विचार नहीं करना पड़ता है; यही नहीं, वे मानते हैं कि परमेश्वर अब और खोखले वचन नहीं बोलेगा। मनुष्य चूँकि आत्मतुष्ट हैं, इसलिए कोई एक भी ऐसा नहीं है जो यह न मानता हो कि वह परमेश्वर के प्रति सर्वाधिक निष्ठा का प्रदर्शन करता है; यही कारण है कि बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए परमेश्वर जानबूझकर "ईमानदारी" पर बल देता है। यह उसके कार्य के अगले चरण का मार्ग प्रशस्त करने और नींव रखने के लिए है।

अध्याय 3

आज अनुग्रह का युग तो रहा नहीं, न ही करुणा का युग है, बल्कि यह राज्य का युग है जिसमें परमेश्वर के लोग प्रकट किए जाते हैं, वह युग जिसमें परमेश्वर दिव्यता के माध्यम से सीधे कार्य करता है। इस प्रकार, परमेश्वर के वचनों के इस अध्याय में, परमेश्वर उन सभी को आध्यात्मिक क्षेत्र में ले जाता है जो उसके वचन स्वीकार करते हैं। प्रारंभिक परिच्छेद में, वह पहले से ये तैयारियाँ करता है, और अगर कोई परमेश्वर के वचनों के ज्ञान से युक्त है, तो वह तरबूज़ प्राप्त करने के लिए बेल के पीछे चल पड़ेगा, और सीधे-सीधे समझ जाएगा कि परमेश्वर अपने लोगों में क्या प्राप्त करना चाहता है। पहले "सेवाकर्ताओं" की पदवी का प्रयोग करके लोगों का परीक्षण किया जाता था, और आज, उन्हें परीक्षा से गुज़ारने के बाद, उनका प्रशिक्षण औपचारिक रूप से आरंभ हो जाता है। इसके अलावा, अतीत के वचनों की नींव के आधार पर लोगों को परमेश्वर के कार्य का और अधिक ज्ञान होना ही चाहिए, और वचनों और व्यक्तित्व को, पवित्रात्मा और व्यक्तित्व को, एक अविभाज्य संपूर्ण के रूप में—एक मुख, एक हृदय, एक क्रिया,

और एक स्रोत के रूप में—देखना चाहिए। यह अपेक्षा सर्वोपरि अपेक्षा है जो सृष्टि के समय से परमेश्वर द्वारा मनुष्य से की गई है। इससे यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर अपने प्रयासों का एक भाग अपने लोगों पर व्यय करना चाहता है, कि वह उनमें कुछ चिह्न और चमत्कार प्रदर्शित करना चाहता है, और सबसे महत्वपूर्ण यह कि वह सभी लोगों से परमेश्वर के कार्य और वचनों का उनकी संपूर्णता में पालन करवाना चाहता है। एक दृष्टि से, परमेश्वर स्वयं अपनी गवाही पर कायम रहता है, और दूसरी दृष्टि से, उसने अपने लोगों से अपेक्षाएँ की हैं, और जनसाधारण के लिए परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाएँ सीधे निर्गत की हैं : इस प्रकार, चूँकि तुम लोगों को मेरे लोग बुलाया जाता है, चीज़ें वैसी नहीं रहीं जैसी हुआ करती थीं; तुम लोगों को मेरे आत्मा के कथनों पर ध्यान देना और उनका पालन करना चाहिए, और मेरे कार्य का ध्यानपूर्वक अनुसरण करना चाहिए; तुम मेरे आत्मा और मेरे देह को संभवतः अलग न कर सको, क्योंकि हम अंतर्निहित रूप से एक हैं, और प्रकृति से अविभाज्य हैं। इसमें, लोगों को देहधारी परमेश्वर की उपेक्षा करने से रोकने के लिए एक बार फिर "क्योंकि हम अंतर्निहित रूप से एक हैं, और प्रकृति से अविभाज्य हैं" इन वचनों पर बल दिया गया है; क्योंकि ऐसी उपेक्षा मनुष्य की विफलता है, यह परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं में एक बार फिर अंकित की गई है। इसके बाद, परमेश्वर, कुछ भी छिपाए बिना, लोगों को परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं के उल्लंघन के परिणाम के बारे में सूचित करता है, यह कहकर कि "वो नुक़सान उठाएगा, और केवल अपने कड़वे प्याले से ही पी पाएगा।" चूँकि मनुष्य कमज़ोर है, इसलिए इन वचनों को सुनने के बाद वह मन ही मन परमेश्वर से अधिक सावधान होने को बाध्य हो जाता है, क्योंकि "कड़वा प्याला" लोगों को थोड़ी देर के लिए विचारमग्न करने के लिए काफ़ी है। परमेश्वर जिस "कड़वे प्याले" की बात करता है, उसके विषय में लोगों की कई व्याख्याएँ हैं : वचनों के अनुसार न्याय किया जाना या राज्य से निष्कासित कर दिया जाना, या एक समयावधि के लिए अलग-थलग कर दिया जाना, या शरीर का शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया जाना और दुष्ट आत्माओं द्वारा काबू कर लिया जाना, या परमेश्वर के आत्मा द्वारा त्याग दिया जाना, या शरीर को समाप्त करके अधोलोक में भेज दिया जाना। लोगों के सोच-विचार से यही व्याख्याएँ प्राप्त की जा सकती हैं, और इसलिए अपनी कल्पना में लोग इनके आगे जाने में समर्थ नहीं हैं। परंतु परमेश्वर के विचार मनुष्यों के विचारों से भिन्न हैं; कहने का तात्पर्य यह कि "कड़वे प्याले" का अर्थ उपरोक्त चीज़ों में से कोई भी नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है परमेश्वर का व्यवहार प्राप्त करने के बाद परमेश्वर के बारे में लोगों के ज्ञान की सीमा। इसे अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, जब कोई मनमाने ढँग से

परमेश्वर के आत्मा और उसके वचनों को अलग करता है, या वचनों और व्यक्तित्व को अलग करता है, या आत्मा और उस देह को अलग करता है जिसे वह पहनता है, तो यह व्यक्ति न केवल परमेश्वर के वचनों में परमेश्वर को जानने में असमर्थ होता है, बल्कि अगर वे परमेश्वर के प्रति थोड़े शंकालु हो जाते हैं, तो वे हर मोड़ पर विवेकशून्य हो जाएँगे। ऐसा नहीं है कि लोग कल्पना करते हैं कि उन्हें सीधे-सीधे काट दिया गया है; बल्कि, वे धीरे-धीरे परमेश्वर की ताड़ना में पड़ने लग जाते हैं—कहने का तात्पर्य यह है कि वे अधिक महाविपत्तियों में पड़ जाते हैं, और कोई भी उनके अनुरूप नहीं हो सकता, मानो उन्हें दुष्ट आत्माओं ने जकड़ लिया हो, और मानो वे बिना सिर वाली मक्खी हों, जो जहाँ भी जाती हैं चीज़ों से टकराती रहती हैं। इसके बावजूद, वे अब भी छोड़ नहीं पाते। उनके हृदयों में, चीज़ें अवर्णनीय रूप से कठिन होती हैं, मानो उनके हृदयों में अकथनीय पीड़ा हो—फिर भी वे अपना मुँह नहीं खोल सकते, और वे सारा दिन बेहोशी की हालत में बिताते हैं, परमेश्वर को महसूस नहीं कर पाते हैं। इन्हीं परिस्थितियों में परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाएँ उन्हें धमकाती हैं, ताकि वे आनंद न होने के बावजूद कलीसिया छोड़कर जाने की हिम्मत न करें—इसे ही "आंतरिक और बाह्य आक्रमण" कहा जाता है और इसे झेल पाना लोगों के लिए अत्यधिक कठिन होता है। यहाँ जो कहा गया है वह लोगों की धारणाओं से अलग है—और ऐसा इसलिए है क्योंकि, उन परिस्थितियों में, वे अब भी परमेश्वर की तलाश करना जानते हैं, और यह तब होता है जब परमेश्वर उनकी ओर से पीठ फेर लेता है, और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि एक अविश्वासी के समान, वे परमेश्वर को महसूस करने में पूर्णतः असमर्थ होते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों को सीधे नहीं बचाता है; जब उनका कड़वा प्याला खाली हो जाता है, यही वह समय होता है जब उनका अंतिम दिन आ गया होता है। परंतु, इस क्षण, वे अब भी परमेश्वर की इच्छा तलाश करते हैं, इस अभिलाषा से कि थोड़ा-सा आनंद ले लें—किंतु जब तक विशेष परिस्थितियाँ न हों, यह समय अतीत से भिन्न है।

इसके बाद, परमेश्वर सभी को सकारात्मक पहलू स्पष्ट करता है, और इस प्रकार वे एक बार फिर जीवन प्राप्त करते हैं—क्योंकि, अतीत के समय में, परमेश्वर ने कहा कि सेवाकर्ताओं का कोई जीवन नहीं था, किंतु आज परमेश्वर अचानक "भीतर के जीवन" की बात करता है। जीवन की बात करने से ही लोगों को पता चलता है कि उनके भीतर अब भी परमेश्वर का जीवन हो सकता है। इस तरह, परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम अनेक मात्राओं में बढ़ जाता है, और वे परमेश्वर के प्रेम और दया का और अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, इन वचनों को देखने के बाद, सभी लोग अपनी पिछली ग़लतियों पर पछताते हैं, और

गुपचुप पश्चाताप के आँसू बहाते हैं। अधिकांश अपने मन में चुपचाप ठान भी लेते हैं कि उन्हें परमेश्वर को संतुष्ट करना ही चाहिए। कभी-कभी, परमेश्वर के वचन लोगों के अंतर्तम हृदय को बींध देते हैं, जिससे लोगों के लिए उन्हें स्वीकार कर पाना दुष्कर हो जाता है, और उनके लिए शांतचित्त रह पाना कठिन हो जाता है। कभी-कभी, परमेश्वर के वचन खरे और गंभीर होते हैं, और लोगों के दिलों को गर्माहट पहुँचाते हैं, इतनी कि लोगों द्वारा उन वचनों को पढ़ लिए जाने के बाद, यह वैसा ही होता है जब खो जाने के कई वर्षों बाद मेमना अपनी माँ को देखता है। उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं, वे भावनाओं से अभिभूत हो जाते हैं, और, सिसकियों से बेहाल, उस बयां न कर सकने वाले कष्ट से स्वयं को मुक्त करते हुए जो कई वर्षों से उनके हृदयों में रहा है, वे स्वयं को परमेश्वर के आलिंगन में सौंप देने के लिए व्याकुल हो उठते हैं, ताकि परमेश्वर को अपनी वफ़ादारी दिखा सकें। कई महीनों की परीक्षा के कारण, वे थोड़े अतिसंवेदनशील हो गए हैं, मानो, वे सालों से बिस्तर पर पड़े अपाहिज हों जिसे अभी-अभी घबराहट का दौरा पड़ा हो। परमेश्वर के वचनों में उनके विश्वास के प्रति उन्हें अडिग बनाने के लिए परमेश्वर कई बार नीचे लिखे पर ज़ोर देता है : "ताकि मेरे कार्य का अगला चरण सुचारू रूप से और निर्बाध आगे बढ़ सके, मैं अपने घर के सभी लोगों की परीक्षा लेने के लिए वचनों के शुद्धिकरण का प्रयोग करूँगा।" यहाँ, परमेश्वर कहता है, "अपने घर के सभी लोगों की परीक्षा लेने के लिए"; ध्यान से पढ़ने पर हमें पता चलता है कि जब लोग सेवाकर्ताओं के रूप में कार्य करते हैं, तब भी वे परमेश्वर के घर के लोग होते हैं। यही नहीं, ये वचन "परमेश्वर के लोग" उपाधि के प्रति परमेश्वर की सच्चाई पर ज़ोर देते हैं, जिससे लोगों को उनके हृदय में यथेष्ट राहत पहुँचाते हैं। और इसलिए, लोगों द्वारा परमेश्वर के वचन पढ़ लिए जाने के बाद, या जब "परमेश्वर के लोग" उपाधि अभी प्रकट होनी है, तब परमेश्वर बार-बार लोगों में इन अनेक अभिव्यंजनाओं की ओर ध्यान क्यों दिलाता है? क्या केवल यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ही वह परमेश्वर है जो मनुष्य के हृदय में गहराई तक झाँकता है? यह मात्र आंशिक कारण है—और यहाँ, इसका बस द्वितीयक महत्व ही है। परमेश्वर ऐसा सभी लोगों को पूरी तरह विश्वास दिलाने के लिए करता है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के वचनों से अपनी अपर्याप्तताएँ जान सके और जीवन से संबंधित अपनी पिछली कमियाँ जान सके, और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, ताकि कार्य के अगले चरण की नींव रख सके। लोग केवल स्वयं को जानने की नींव के आधार पर ही परमेश्वर को जानने और परमेश्वर के अनुकरण का अनुसरण करने का प्रयास कर सकते हैं। इन वचनों के कारण, लोग नकारात्मक और निष्क्रिय से बदलकर सकारात्मक और सक्रिय हो जाते हैं, और इसी के बल पर परमेश्वर

के कार्य का दूसरा भाग जड़ें जमा पाता है। कहा जा सकता है कि नींव के रूप में कार्य के इस चरण के साथ, परमेश्वर के कार्य का दूसरा भाग आसान-सी बात बन जाता है, जिसके लिए ज़रा-से प्रयास के अलावा कुछ नहीं चाहिए। इसलिए, जब लोग अपने हृदय के भीतर की उदासी को बाहर निकाल फेंकते हैं और सकारात्मक और सक्रिय बन जाते हैं, तब परमेश्वर इस अवसर का उपयोग अपने लोगों से अन्य अपेक्षाएँ करने के लिए करता है : "मेरे वचन किसी भी समय या स्थान पर निर्मुक्त और व्यक्त किए जाते हैं, और इसलिए तुम लोगों को भी हर समय मेरे समक्ष स्वयं को जानना चाहिए। क्योंकि आज का दिन, पहले जो कुछ बीता उससे भिन्न है, और तुम जो भी चाहते हो उसे अब और संपन्न नहीं कर सकते। इसके बजाय, तुम्हें मेरे वचनों के मार्गदर्शन में, अपने शरीर को वश में करने में सक्षम होना ही चाहिए; तुम्हें मेरे वचनों का उपयोग मुख्य सहारे के रूप में करना ही चाहिए, और तुम अंधाधुँध ढँग से कार्य नहीं कर सकते।" इसमें, परमेश्वर प्राथमिक रूप से "मेरे वचनों" पर ज़ोर देता है; अतीत में भी, उसने कई बार "मेरे वचनों" का उल्लेख किया है, और इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति इस पर कुछ ध्यान दिये बिना नहीं रह पाता। परमेश्वर के कार्य के अगले चरण के मर्म का संकेत इस प्रकार मिलता है : सभी लोगों को परमेश्वर के वचनों की ओर अपना ध्यान ले जाना होगा, और उनकी कोई दूसरी चाहत नहीं हो सकेगी। सभी को परमेश्वर के मुख से बोले गए वचनों को सँजोकर रखना ही चाहिए, और उन्हें हल्के-फुल्के ढँग से नहीं लेना चाहिए; कलीसिया की पूर्व परिस्थितियाँ उस समय इस तरह समाप्त हो जाएँगी, जब एक व्यक्ति परमेश्वर के वचन पढ़ेगा और कई लोग आमीन कहकर आज्ञाकारी होंगे। उस समय, लोग परमेश्वर के वचन नहीं जानते थे, किंतु उन्होंने अपना बचाव करने के अस्त्र के रूप में उन्हें लिया। इसे उलटने के लिए, पृथ्वी पर मौजूद परमेश्वर मनुष्य से नई और अधिक बड़ी माँगें करता है। परमेश्वर के ऊँचे मानकों और कठोर आवश्यकताओं को देखने के बाद लोगों को नकारात्मक और निष्क्रिय होने से रोकने के लिए, परमेश्वर लोगों को कई बार यह कहकर प्रोत्साहित करता है : "चूँकि चीज़ें ऐसी स्थिति में पहुँच गई हैं जैसी वे आज हैं, इसलिए तुम लोगों को अतीत के अपने कर्मों और कार्यकलापों के विषय में खिन्नता और पछतावा महसूस करने की आवश्यकता नहीं है। मेरी उदारशीलता समुद्रों और आकाश के समान असीम है—ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं मनुष्य की क्षमताओं और अपने बारे में उसके ज्ञान से उतना ही परिचित न होऊँ जितना अपने हाथ की हथेली से परिचित हूँ?" ये सच्चे और खरे वचन अचानक लोगों का मन खोल देते हैं, और तत्काल उन्हें निराशा से परमेश्वर के प्रति प्रेम की ओर, सकारात्मक और सक्रिय होने की ओर ले जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर लोगों के

हृदयों के भीतर की कमज़ोरी मज़बूती से पकड़कर बोलता है। इससे अवगत हुए बिना, लोग अपने अतीत के कार्यकलापों के कारण परमेश्वर के सामने हमेशा शर्मिंदा महसूस करते हैं, और वे बार-बार पछतावा व्यक्त करते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर इन वचनों को विशेषतः स्वाभाविक और सामान्य रूप से प्रकट करता है, ताकि लोग यह न महसूस करें कि परमेश्वर के वचन कठोर और नीरस हैं, बल्कि यह महसूस करें कि वे निर्मम भी हैं और नर्म भी, तथा सुस्पष्ट और सजीव भी हैं।

सृष्टि से लेकर आज तक, परमेश्वर ने आध्यात्मिक जगत से मनुष्य के लिए चुपचाप सारी व्यवस्थाएँ की हैं, और आध्यात्मिक जगत का सत्य मनुष्य को कभी वर्णित नहीं किया। तो भी, आज, परमेश्वर अचानक इसके भीतर छिड़े संग्राम का संक्षिप्त विवरण दे रहा है, जिससे लोग स्वाभाविक ही अपना सिर खुजाते रह जाते हैं, उनका यह बोध गहरा हो जाता है कि परमेश्वर अगाध और अज्ञेय है, और उनके लिए परमेश्वर के वचनों के स्रोत का पता लगाना और भी कठिन हो जाता है। कहा जा सकता है कि आध्यात्मिक जगत की संग्रामरत स्थिति सभी लोगों को उत्साह से इसमें भाग लेने के लिए प्रवृत्त कर देती है। यह भविष्य के कार्य का पहला अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है, और यही लोगों को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने में समर्थ बनाने का सूत्र है। इससे देखा जा सकता है कि परमेश्वर के कार्य का अगला कदम मुख्य रूप से आत्मा को लक्ष्य करता है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य सभी लोगों को देह के भीतर परमेश्वर के आत्मा के चमत्कारिक कर्मों का और अधिक ज्ञान देना है, इस प्रकार परमेश्वर के प्रति निष्ठावान सभी लोगों को शैतान की मूर्खता का और प्रकृति का और अधिक ज्ञान देना है। यद्यपि वे आध्यात्मिक क्षेत्र में नहीं जन्मे थे, किंतु उन्हें लगता है कि मानो उन्होंने शैतान को देख लिया है, और एक बार जब वे यह महसूस कर लेते हैं, तो परमेश्वर तत्काल बोलने के दूसरे साधन अपना लेता है—और एक बार जब लोगों ने सोचने का यह तरीक़ा प्राप्त कर लिया, तो परमेश्वर पूछता है : "मैं ऐसी तात्कालिकता के साथ तुम लोगों को क्यों सिखला रहा हूँ? मैं तुम लोगों को आध्यात्मिक जगत के तथ्य क्यों बता रहा हूँ? मैं क्यों तुम लोगों को बार-बार याद दिलाता और नसीहत देता हूँ?" इत्यादि—प्रश्नों की एक पूरी श्रृंखला जो लोगों के मन में कई सवाल उत्पन्न करती है : परमेश्वर इस स्वर में बात क्यों करता है? क्यों वह आध्यात्मिक जगत के विषयों की बात करता है, और कलीसिया के निर्माण के दौरान लोगों से की गई अपनी मांगों की बात क्यों नहीं करता है? परमेश्वर रहस्यों को प्रकट करके लोगों की धारणाओं पर प्रहार क्यों नहीं करता? बस थोड़ा और विचारशील होकर लोग परमेश्वर के कार्यों के चरणों का किंचित ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, और इस प्रकार, जब वे भविष्य में प्रलोभनों का सामना करते हैं,

तब उनके भीतर शैतान के प्रति घृणा का वास्तविक बोध पैदा होता है। यहाँ तक कि जब वे भविष्य में परीक्षाओं का सामना करते हैं, तब भी वे परमेश्वर को जान पाते और शैतान से अधिक गहराई से घृणा कर पाते हैं, और इस प्रकार शैतान को शाप दे पाते हैं।

अंत में, परमेश्वर की इच्छा मनुष्य के समक्ष पूरी तरह प्रकट होती है: "... मेरे प्रत्येक वचन को अपनी आत्माओं के भीतर जड़ पकड़ने और फलने-फूलने देने, और सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से और अधिक फल देने में समर्थ होना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं जो माँगता हूँ वे केवल उजले, रंग-बिरंगे फूल ही नहीं, बल्कि भरपूर फल हैं, फल जो हमेशा पके रहते हैं।" अपने लोगों से परमेश्वर की बारम्बार माँगों में, यह उन सब में सर्वाधिक व्यापक है, यह केंद्र बिंदु है, और इसे सीधे-सच्चे ढंग से सामने रखा गया है। मैंने सामान्य मानवता में कार्य करने से पूर्ण दिव्यता में कार्य करने की ओर कदम बढ़ाया है; इस तरह, अतीत में, अपने सादे-सरल वचनों में मुझे आगे कोई और स्पष्टीकरण जोड़ने की आवश्यकता नहीं थी, और अधिकांश लोग मेरे वचनों का अर्थ समझ पाते थे। परिणाम यह था कि उन दिनों, आवश्यकता बस यह थी कि लोग मेरे वचनों को जानें और वास्तविकता के बारे में बोल पाएँ। लेकिन, यह चरण बिल्कुल भिन्न है। मेरी दिव्यता ने पूरी तरह अधिग्रहित कर लिया है, और मानवता के लिए भूमिका निभाने की कोई जगह नहीं छोड़ी है। इस तरह, यदि वे जो मेरे लोगों के बीच हैं मेरे वचनों का सही अर्थ समझना चाहते हैं, तो उन्हें अत्यधिक कठिनाई होती है। केवल मेरे कथनों के माध्यम से ही वे प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त कर सकते हैं, और इस माध्यम से इतर मेरे वचनों के उद्देश्य को समझने का कोई भी विचार निठल्ले दिवास्वपनों के अलावा कुछ नहीं है। मेरे कथनों को स्वीकार करने के बाद जब सभी लोगों को मेरे बारे में अधिक ज्ञान हो जाता है, तब यही वह समय होता है जब मेरे लोग मुझे जीते हैं, यही वह समय होता है जब देह में मेरा कार्य पूरा हो जाता है, और वह समय जब मेरी दिव्यता देह में संपूर्ण रूप से जीवन व्यतीत कर लेती है। इस क्षण, सभी लोग मुझे देह में जानेंगे, और सच्चे अर्थ में कह पाएँगे कि परमेश्वर देह में प्रकट होता है, और यही फल होगा। यह और भी प्रमाण है कि परमेश्वर कलीसिया का निर्माण करते हुए थक चुका है—अर्थात, "पौधा-घर में फूल यद्यपि तारों जितने अनगिनत होते हैं, और प्रशंसकों की सारी भीड़ आकर्षित करते हैं, किंतु एक बार जब वे मुरझा जाते हैं, तब वे शैतान के कपटपूर्ण कुचक्रों की तरह जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं, और कोई भी उनमें रुचि नहीं दिखाता।" यद्यपि कलीसिया के निर्माण के समय परमेश्वर ने स्वयं कार्य भी किया था, फिर भी चूँकि यह वह परमेश्वर है जो हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं

होता, इसलिए वह बीती हुई बातों को याद नहीं करता रहता है। लोगों को पीछे मुड़कर अतीत के बारे में सोचने से रोकने के लिए, उसने ये वचन प्रयुक्त किए "वे शैतान के कपटपूर्ण कुचक्रों की तरह जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं", जो दर्शाते हैं कि परमेश्वर सिद्धांतों से बँधकर नहीं चलता। हो सकता है कुछ लोग परमेश्वर की इच्छा की ग़लत व्याख्या करें और पूछें : जब यह स्वयं परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य है, तो फिर उसने ऐसा क्यों कहा कि, "एक बार जब वे मुरझा जाते हैं, तब कोई भी उनमें कोई रुचि नहीं दिखाता"? ये वचन लोगों को एक प्रकाशन देते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे सभी लोगों को नया, और सही, आरंभ बिंदु लेने देते हैं; केवल तभी वे परमेश्वर की इच्छा संतुष्ट कर पाएँगे। अंततः, परमेश्वर के लोग परमेश्वर को वह स्तुति दे पाएँगे जो सच्ची होगी, बलात नहीं, और जो उनके हृदय से आई होगी। यही वह है जो परमेश्वर की 6,000-वर्षीय प्रबंधन योजना का मर्म है। अर्थात, यह 6,000-वर्षीय प्रबंधन योजना का ठोस रूप है : सभी लोगों को परमेश्वर के देहधारण का महत्व जानने देना—उन्हें देहधारी हुए परमेश्वर को, अर्थात देह में परमेश्वर के कर्मों को, व्यावहारिक रूप से जानने देना—ताकि वे अज्ञात परमेश्वर को नकार दें, और उस परमेश्वर को जानें जो आज और साथ ही बीते कल का भी, और उससे भी अधिक, आने वाले कल का है, जो अनंत काल से अनंत काल तक सच में और वास्तव में विद्यमान है। केवल तभी परमेश्वर विश्राम में प्रवेश करेगा!

अध्याय 4

सभी लोगों को, उनके नकारात्मकता से सकारात्मकता में आने के बाद, उनका ध्यान आकृष्ट होने और उन्हें आवेश में बह जाने से रोकने के लिए, परमेश्वर के कथन के अंतिम अध्याय में, एक बार जब परमेश्वर अपने लोगों को अपनी उच्चतम अपेक्षाएँ बता देता है—जब वह अपनी प्रबंधन योजना के इस चरण में अपनी इच्छा के बारे में लोगों को बता देता है, तो वह उन्हें अपने वचनों पर विचार करने और अंत में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए, उन्हें अपना मन बनाने में उनकी सहायता करने का अवसर प्रदान करता है। जब लोगों की स्थिति सकारात्मक होती है, तो परमेश्वर तुरंत लोगों से इस मुद्दे के दूसरे पक्ष के बारे में प्रश्न पूछना शुरू कर देता है। वह ढेरों प्रश्न पूछता है जिन्हें समझना लोगों के लिए मुश्किल होता है: "क्या मेरे लिए तुम्हारे प्रेम में अशुद्धता थी? क्या मेरे प्रति तुम्हारी निष्ठा शुद्ध और सम्पूर्ण थी? क्या मेरे बारे में तुम लोगों का ज्ञान सच्चा था? तुम लोगों के हृदय में मेरा स्थान कितना था?" आदि। इस परिच्छेद के

पूर्वार्द्ध में, दो फटकारों के अपवाद के अलावा, शेष सभी प्रश्न हैं। विशेष रूप से एक प्रश्न, "क्या मेरे कथनों ने तुम लोगों के मर्मस्थल पर चोट की है?" बहुत ही उपयुक्त प्रश्न है। यह दरसल लोगों के हृदय की गहराई में सबसे गुप्त चीजों पर चोट करता है, जिसके कारण अनजाने में वे स्वयं से पूछते हैं: "क्या मैं सचमुच परमेश्वर के लिए अपने प्रेम में वफादार हूँ?" अपने हृदय में, लोग अनजाने में सेवा के दौरान अपने पिछले अनुभवों को याद करते हैं: वे आत्म-क्षमा, आत्म-तुष्टि, दंभ, आत्म-संतुष्टि, आत्म-संतोष और गर्व से बर्बाद हो गए थे। वे जाल में पकड़ी गई एक बड़ी मछली की तरह थे—और जाल में फँसने के बाद, उनके लिए उससे निकलना आसान नहीं था। इसके अतिरिक्त, वे प्रायः अनियंत्रित हो गए थे, परमेश्वर की सामान्य मानवता को धोखा देते थे, और जो कुछ भी करते थे, उसमें अपने आपको सबसे पहले रखते थे। "सेवाकर्मी" कहलाए जाने से पहले, वे ऊर्जावान नवजात बाघ शावक के समान थे। हालाँकि कुछ हद तक वे जीवन पर ध्यान देते थे, लेकिन कभी-कभी वे लापरवाही से काम किया करते थे; गुलामों की तरह, परमेश्वर के प्रति बेपरवाह हो गए थे। सेवाकर्मियों के रूप में उजागर होने के दौरान, वे नकारात्मक हो गए थे, पिछड़ गए थे, दुःख से भर गए थे, परमेश्वर के बारे में शिकायत करते थे, निराशा में उनके सिर लटक गए थे, आदि। उनकी स्वयं की अद्‌भुत, मर्मस्पर्शी कहानियों का प्रत्येक चरण उनके मन में गूँजता रहता है। उनके लिए सोना भी मुश्किल हो जाता है, वे सारा दिन भाव-शून्यता में बिताते हैं। लगता है, अधोलोक में पतित होने के लिए वे परमेश्वर द्वारा दूसरी बार हटा दिए गए हैं, जहाँ से निकलना संभव नहीं है। यद्यपि परमेश्वर ने पहले परिच्छेद में कुछ कठिन प्रश्न खड़े करने से अधिक कुछ नहीं किया, लेकिन ध्यानपूर्वक पढ़े जाएँ तो, वे दर्शाते हैं कि परमेश्वर का उद्देश्य केवल इन प्रश्नों को पूछने से कहीं अधिक बड़ा है; उनमें बहुत गहरा अर्थ छिपा है, जिसे अधिक विस्तार से समझाया जाना चाहिए।

परमेश्वर ने एक बार ऐसा क्यों कहा कि आज आख़िरकार आज है, और चूँकि कल गुज़र चुका है, इसलिए उसे याद करने का कोई मतलब नहीं है—फिर भी यहाँ वह पहले वाक्य में लोगों से प्रश्न पूछता है, और उन्हें अतीत के बारे में विचार करने के लिए कहता है। इस पर विचार करो: परमेश्वर अतीत को याद करने से मना क्यों करता है, लेकिन यह भी कहता है कि लोग अतीत पर विचार भी करें? कहीं परमेश्वर के वचनों में कोई गलती तो नहीं है? कहीं इन वचनों का स्रोत गलत तो नहीं है? स्वाभाविक रूप से, जो लोग परमेश्वर के वचनों पर ध्यान नहीं देते, वे इस तरह के गहन प्रश्न नहीं पूछेंगे। लेकिन फिलहाल, इस बारे में बात करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सबसे पहले, मैं ऊपर दिए "क्यों" को समझाता हूँ। निस्संदेह, हर

कोई परमेश्वर की कही इस बात से अवगत है कि वह खोखले वचन नहीं बोलता। यदि ये वचन परमेश्वर ने बोले हैं, तो उनका एक उद्देश्य और मायने हैं—यह प्रश्न के मर्म को स्पर्श करता है। लोगों की सबसे बड़ी असफलता अपने दुष्ट तौर-तरीके न बदल पाना और अपनी पुरानी प्रकृति को जकड़े रहना है। लोगों को अपने आप को पूरी तरह से और वास्तविक रूप से जानने देने के लिए, परमेश्वर पहले अतीत पर फिर से विचार करने में उनकी अगुआई करता है, ताकि वे अधिक गहराई से आत्म-मंथन कर सकें, और इस तरह ये जान जाएँ कि परमेश्वर का एक भी वचन खोखला नहीं है, परमेश्वर के सभी वचन भिन्न-भिन्न लोगों में भिन्न-भिन्न स्तरों तक समाए हुए हैं। अतीत में, परमेश्वर जिस तरह से लोगों से निपटता था, उससे उन्हें परमेश्वर के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान प्रदान हो जाता था और परमेश्वर के प्रति उनकी ईमानदारी थोड़ी और मर्मस्पर्शी हो जाती थी। "परमेश्वर" शब्द लोगों और उनके हृदय में केवल 0.1 प्रतिशत तक ही है। इतना ही प्राप्त करना यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने बहुत बड़ी मात्रा में उद्धार कार्यान्वित किया है। यह कहना उचित होगा कि लोगों के इस समूह—एक ऐसा समूह है जिसका बड़े लाल अजगर द्वारा शोषण किया जाता है और जो शैतान के कब्जे में है—में परमेश्वर की इतनी ही उपलब्धि ऐसी है जिससे वे अपना मन चाहा करने का साहस नहीं करते। क्योंकि जो लोग शैतान के कब्जे में चले गए हैं उनके सौ प्रतिशत हृदय को अधिकार में करना परमेश्वर के लिए असंभव है। अगले चरण के दौरान परमेश्वर के बारे में लोगों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए, परमेश्वर अतीत के सेवाकर्मियों की स्थितियों की तुलना आज के परमेश्वर के लोगों के साथ करता है, और इस प्रकार एक स्पष्ट अंतर बनाता है जिससे लोग और भी ज़्यादा शर्मिंदा होते हैं। जैसा परमेश्वर ने कहा, "अपनी लज्जा को छिपाने के लिए कोई स्थान नहीं है।"

तो, मैंने क्यों कहा कि परमेश्वर केवल प्रश्नों के वास्ते ही प्रश्न नहीं पूछ रहा है? आरंभ से अंत तक का ध्यानपूर्वक पठन दर्शाता है कि यद्यपि परमेश्वर द्वारा खड़े किए गए प्रश्नों को पूरी तरह से नहीं समझाया गया है, लेकिन ये सभी प्रश्न लोगों की परमेश्वर के प्रति वफादारी और परमेश्वर के बारे में उनके ज्ञान की सीमा का संकेत करते हैं; दूसरे शब्दों में, वे लोगों की वास्तविक स्थितियों का संकेत करते हैं, जो दयनीय हैं, और जिनके बारे में खुल कर बोलना उनके लिए मुश्किल है। इससे देखा जा सकता है कि लोगों का आध्यात्मिक कद बहुत तुच्छ है, परमेश्वर के बारे में उनका ज्ञान बहुत सतही है, और उसके प्रति उनकी निष्ठा भी बहुत दूषित और अशुद्ध है। जैसा कि परमेश्वर ने कहा, लगभग सभी लोग मुसीबत में हैं और केवल संख्या पूरी करने के लिए ही हैं। जब परमेश्वर कहता है, "क्या तुम्हें सचमुच लगता है कि तुम मेरे जन होने के योग्य

नहीं हो?" इन वचनों का सही अर्थ यह है कि कोई भी परमेश्वर-जन होने के योग्य नहीं है। किन्तु एक अधिक बड़ा प्रभाव प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर प्रश्न पूछने की विधि का उपयोग करता है। यह पद्धति अतीत के उन वचनों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावी है, जिन्होंने लोगों पर उनके दिलों को भेदने की स्थिति तक बेरहमी से हमला किया, उन पर हथियार से प्रहार किया और मार डाला। मान लो परमेश्वर ने प्रत्यक्ष रूप से कुछ अरुचिकर और नीरस कहा होता, जैसे "तुम लोग मेरे प्रति वफादार नहीं हो, और तुम लोगों की निष्ठा दूषित है, मैं तुम लोगों के हृदयों में संपूर्ण स्थान नहीं रखता...। मैं तुम लोगों के छिपने के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ूँगा, क्योंकि तुम लोगों में से कोई भी मेरा जन होने लायक नहीं है।" तुम लोग दोनों की तुलना कर सकते हो, हालाँकि उनकी सामग्री एक जैसी है, किन्तु प्रत्येक का लहजा भिन्न है। प्रश्न का उपयोग करना कहीं अधिक प्रभावी है। इसलिए, बुद्धिमान परमेश्वर पहले वाले लहजे को काम में लाता है, जो उसके बोलने के कला-कौशल को दर्शाता है। इंसान ऐसा नहीं कर सकता, इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने कहा, "लोग तो बस मेरे द्वारा उपयोग किए जाने वाले बर्तन-मात्र हैं। उनके बीच एकमात्र अंतर केवल यह है कि कुछ अधम हैं, और कुछ अनमोल हैं।"

जब लोग पढ़ते रहते हैं तो, परमेश्वर के वचन बहुत अधिक संख्या में और तेजी से आते हैं, लोगों को साँस लेने का मौका भी मुश्किल से ही देते हैं, क्योंकि परमेश्वर किसी भी हाल में मनुष्य पर दया नहीं करता। जब लोग बेहद पछताते हैं, तो परमेश्वर एक बार उन्हें पुनः चेतावनी देता है: "यदि तुम उपरोक्त प्रश्नों के प्रति पूर्णतः अनजान हो, तो यह दिखाता है कि तुम मुसीबत में हो, तुम केवल संख्या बढ़ाने के लिए हो, मेरे द्वारा पूर्वनियत समय पर, तुम्हें निश्चित रूप से हटा दिया जाएगा और दूसरी बार अथाह कुंड में डाल दिया जाएगा। ये मेरे चेतावनी भरे वचन हैं, और जो कोई भी इन्हें हल्के में लेगा, उस पर मेरे न्याय की चोट पड़ेगी, और, नियत समय पर उस पर आपदा टूट पड़ेगी।" ऐसे वचनों को पढ़कर, लोग उस समय के बारे में सोचने पर मजबूर हो जाते हैं जब उन्हें अथाह गड्ढे में डाल दिया गया था: परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं के द्वारा नियंत्रित, तबाही से भयभीत उनका अंत उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, वे लंबे समय से परेशान, उदास, बेचैन, अपने हृदय की उदासी के बारे में किसी को बता नहीं पा रहे थे—इसके बदले, अपनी देह को शुद्ध करवाना उनके लिए बेहतर स्थिति होती...। यह सोचकर, वे बेहद परेशान हो गए। यह सोचकर कि वे पहले कैसे थे, आज कैसे हैं, और कल कैसे होंगे, उनके हृदय का दुःख बढ़ता जाता है, वे अनजाने में थरथराने लगते हैं, और इस प्रकार वे परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं से और भी अधिक

भयभीत हो जाते हैं। जैसे ही उनके दिमाग में आता है कि "परमेश्वर-जन" शब्द भी बोलने का साधन-मात्र हो सकता है, तो उनके दिलों का उत्साह तुरंत परेशानी में बदल जाता है। परमेश्वर उन पर प्रहार करने के लिए उनकी घातक कमजोरी का उपयोग कर रहा है, और इस मुकाम पर, वह अपने कार्य के अगले चरण की शुरुआत कर रहा है, लोगों के जोश को लगातार उत्तेजित कर रहा है, और उनकी समझ को बढ़ा रहा है कि परमेश्वर के कर्म अथाह हैं, परमेश्वर अगम्य है, परमेश्वर पवित्र और शुद्ध है, और वे परमेश्वर-जन होने के योग्य नहीं हैं। परिणामस्वरूप, यह सोचकर कि कहीं वे पिछड़ न जाएँ, वे स्वयं को सुधारने के अपने प्रयासों को दोगुना कर देते हैं।

इसके बाद, लोगों को एक सबक सिखाने के लिए, उन्हें स्वयं का ज्ञान करवाने, परमेश्वर का सम्मान करवाने, और परमेश्वर का भय मनवाने के लिए, परमेश्वर अपनी नई योजना शुरू करता है: "सृष्टि के सृजन से लेकर आज तक, बहुत से लोगों ने मेरे वचनों की अवज्ञा की है और इस तरह उन्हें प्रतिलाभ की मेरी धारा से निकालकर हटा दिया गया है; अंततः उनके शरीर नष्ट हो जाते हैं और उनकी आत्माएँ अधोलोक में डाल दी जाती हैं, आज भी वे भयंकर सज़ा भुगत रहे हैं। बहुत से लोगों ने मेरे वचनों का अनुसरण किया है, परंतु वे मेरी प्रबुद्धता और रोशनी के विरोध में चले गए हैं ... और कुछ...।" ये वास्तविक उदाहरण हैं। इन वचनों में, परमेश्वर न केवल परमेश्वर के सभी लोगों को तमाम युगों में परमेश्वर के कर्मों का ज्ञान करवाने के लिए एक वास्तविक चेतावनी देता है, बल्कि आध्यात्मिक जगत में जो कुछ भी हो रहा है, उसके एक हिस्से का अप्रत्यक्ष चित्रण भी प्रदान करता है। इससे लोग यह जान पाते हैं कि परमेश्वर के प्रति उनकी अवज्ञा से कुछ भी अच्छा हासिल नहीं किया जा सकता। वे शर्म का एक चिरस्थायी दाग़ बन जाएँगे, वे शैतान का मूर्त रूप, और शैतान की एक प्रतिलिपि बन जाएँगे। परमेश्वर के हृदय में, अर्थ का यह पहलू कम महत्त्व का है, क्योंकि इन वचनों से लोग पहले ही काँप रहे हैं और उलझन में हैं कि क्या किया जाए। इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि लोग डर से काँपने के साथ-साथ, आध्यात्मिक जगत का कुछ विवरण भी प्राप्त करते हैं—लेकिन केवल थोड़ा ही प्राप्त करते हैं, इसलिए आवश्यक है कि मैं थोड़ा स्पष्टीकरण दे दूँ। आध्यात्मिक जगत के द्वार से यह देखा जा सकता है कि यहाँ सभी प्रकार की आत्माएँ हैं। लेकिन कुछ अधोलोक में हैं, कुछ नरक में हैं, कुछ आग की झील में हैं, और कुछ अथाह गड्ढे में हैं। इसमें मैं भी कुछ जोड़ दूँ। सतही तौर पर कहें तो, इन आत्माओं को स्थान के अनुसार विभाजित किया जा सकता है; विशिष्ट रूप से कहें तो, कुछ के साथ प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की ताड़ना द्वारा निपटा जाता है, और कुछ शैतान की कैद में हैं,

जिनका उपयोग परमेश्वर द्वारा किया जाता है। अधिक विशिष्ट रूप से, उनकी परिस्थितियों की गंभीरता के अनुसार उनकी ताड़ना भिन्न होती है। यहाँ मैं थोड़ा और समझा दूँ। जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के हाथ से ताड़ना दी जाती है, उनकी पृथ्वी पर कोई आत्मा नहीं होती है, जिसका अर्थ है कि उनके पास पुनर्जन्म लेने का कोई अवसर नहीं होता। जो आत्माएँ शैतान के अधीन हैं—वे दुश्मन जिनके बारे में परमेश्वर कहता है "मेरे शत्रु बन गए हैं"—वे पार्थिव पदार्थों से जुड़ी होती हैं। पृथ्वी पर विभिन्न बुरी आत्माएँ सभी परमेश्वर की शत्रु, शैतान की सेवक हैं, और उनके अस्तित्व का कारण है सेवा देना ताकि वेपरमेश्वर के कर्मों के लिए विषमताएँ हो सकें। इस प्रकार, परमेश्वर कहता है, "ये लोग न केवल शैतान के द्वारा बंदी बना लिए गए हैं, बल्कि अनंतकाल के लिए पापी और मेरे शत्रु भी बन गए हैं, और सीधे तौर पर मेरा विरोध करते हैं।" इसके बाद, परमेश्वर बताता है कि इस प्रकार की आत्मा का अंत क्या होता है: "ऐसे लोग मेरे क्रोध की पराकाष्ठा पर मेरे दण्ड के भागी होते हैं।" परमेश्वर उनकी वर्तमान स्थितियाँ भी स्पष्ट करता है: "वे अभी तक भी अंधे बने हुए हैं, आज भी अँधेरी कालकोठरियों में हैं।"

लोगों को परमेश्वर के वचनों की सच्चाई दिखाने के लिए, परमेश्वर एक साक्ष्य के रूप में एक वास्तविक उदाहरण का उपयोग करता है (पौलुस का मामला जिसके बारे में वह बोलता है) ताकि उसकी चेतावनी लोगों पर एक गहरी छाप छोड़े। पौलुस के बारे में जो कुछ कहा जाता है उसे लोगों को एक कहानी के रूप में मानने से रोकने, और उन्हें स्वयं को तमाशाइयों के रूप में सोचने से रोकने के लिए—और, इसके अलावा, उन चीजों के बारे में शेखी बघारने से रोकने के लिए जो हजारों साल पहले हुई थीं जिसे उन्होंने परमेश्वर से जाना था, परमेश्वर पौलुस के जीवन भर के अनुभवों पर ध्यान केंद्रित नहीं करता। बल्कि, परमेश्वर पौलुस के परिणामों और अंत पर और उन कारणों पर ध्यान देता है कि क्यों पौलुस ने परमेश्वर का विरोध किया, और जैसा पौलुस का अंत हुआ वह कैसे हुआ। परमेश्वर इस बात पर ज़ोर देने के लिए ध्यान देता है कि आखिरकार कैसे उसने पौलुस को उसकी मनचाही उम्मीदों से वंचित रखा, और प्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक क्षेत्र में उसकी स्थिति को सामने लाना: "पौलुस को सीधे परमेश्वर द्वारा ताड़ना दी गयी है।" चूँकि लोग सुन्न हैं और वे परमेश्वर के वचनों के बारे में कुछ भी समझने में अक्षम हैं, इसलिए परमेश्वर एक व्याख्या (कथन का अगला भाग) देता है, और एक अन्य पहलू से संबंधित मुद्दे की बात करना शुरू करता है: "जो कोई भी मेरा विरोध करता है (न केवल मेरे देह रूप का बल्कि उससे भी अधिक अहम, मेरे वचनों और मेरे आत्मा का—कहने का अर्थ है, मेरी दिव्यता का विरोध करता है), वह अपनी

देह में मेरा न्याय प्राप्त करता है।" यद्यपि, सतही तौर पर बोलें तो, ये वचन उपरोक्त वचनों से संबंधित प्रतीत नहीं होते, और दोनों के बीच कोई संबंध नज़र नहीं आता, घबराओ नहीं: परमेश्वर का अपना लक्ष्य है; "उपरोक्त उदाहरण साबित करता है कि" के सरल वचन दो असंबंधित प्रतीत होने वाले मुद्दों को जैविक रूप से जोड़ते हैं—यही परमेश्वर के वचनों की निपुणता है। इस प्रकार, लोग पौलुस के वृत्तांत से प्रबुद्ध किए जाते हैं, और इसलिए, पिछले और आगे के पाठ के बीच संबंध के कारण, पौलुस के सबक के माध्यम से वे परमेश्वर को और भी अधिक जानना चाहते हैं, जो कि वास्तव में वह प्रभाव है जिसे परमेश्वर उन वचनों को बोलकर प्राप्त करना चाहता था। इसके बाद, परमेश्वर कुछ वचन ऐसे बोलता है जो जीवन में लोगों के प्रवेश के लिए सहायता और उन्हें प्रबुद्धता प्रदान करते हैं। मुझे इस बारे में बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है; तुम्हें महसूस होगा कि इन चीज़ों को समझना आसान है। लेकिन मैं एक बात अवश्य समझा दूँ, जब परमेश्वर कहता है, "जब मैंने सामान्य मानवता में कार्य किया, तो अधिकांश लोग मेरे कोप और प्रताप के विरूद्ध अपना आकलन पहले ही कर चुके थे, और मेरी बुद्धि व स्वभाव की थोड़ी समझ रखते थे। आज, मैं सीधे तौर पर दिव्यता में बोलता और कार्य करता हूँ, और अभी भी कुछ लोग हैं जो अपनी आँखों से मेरे कोप और न्याय को देखेंगे; इसके अतिरिक्त, न्याय के युग के दूसरे भाग का मेरा मुख्य कार्य अपने सभी लोगों को सीधे तौर पर देह में मेरे कर्मों का ज्ञान करवाना, और तुम लोगों को मेरे स्वभाव का अवलोकन करवाना है।" ये कुछ वचन सामान्य मानवता में परमेश्वर के कार्य का समापन करते हैं और आधिकारिक रूप से परमेश्वर के न्याय के युग के कार्य के दूसरे भाग को शुरू करते हैं, जो दिव्यता में किया जाता है, और लोगों के एक हिस्से के अंत की भविष्यवाणी करता है। इस बिंदु पर, यह समझाना उचित है कि जब लोग परमेश्वर-जन बन गए तो परमेश्वर ने उन्हें नहीं बताया कि यह न्याय के युग का दूसरा भाग है। इसके बजाय, वह लोगों को परमेश्वर की इच्छा और इस युग के दौरान हासिल किए जाने वाले लक्ष्यों और पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य के अंतिम चरण के बारे में बताने के बाद, केवल इतना बताता है कि यह न्याय के युग का दूसरा भाग है, कहने की आवश्यकता नहीं कि इसमें भी परमेश्वर की बुद्धि है। लोग जब रोगशैया से उठते हैं, तो उन्हें एकमात्र इस बात चिंता होती है कि वे कहीं मर तो नहीं जाएँगे, अथवा उनकी बीमारी ठीक होगी या नहीं। वे इस बात पर ध्यान नहीं देते कि कहीं वे मोटे तो नहीं हो जाएँगे या उन पर कौन से कपड़े सही लगेंगे। इस प्रकार, जब लोग पूरी तरह मानते हैं कि वे परमेश्वर के लोगों में से एक हैं, तो परमेश्वर अपनी अपेक्षाओं के बारे में चरणबद्ध तरीके से बताता है, और बताता है कि आज कौन-

सा युग है। इसका कारण यह है कि लोगों में स्वस्थ होने के कुछ दिनों बाद ही परमेश्वर के प्रबंधन के कदमों पर ध्यान एकाग्र करने की ऊर्जा होती है, और इसलिए उन्हें बताने का यह सबसे उपयुक्त समय होता है। लोग समझ लेने के बाद ही विश्लेषण करना शुरू करते हैं: चूँकि यह न्याय के युग का दूसरा हिस्सा है, इसलिए परमेश्वर की अपेक्षाएँ अधिक कठोर हो गई हैं, और मैं परमेश्वर के लोगों में से एक बन गया हूँ। इंसान इस प्रकार से विश्लेषण कर सकता है, इसलिए परमेश्वर बोलने की इस पद्धति को काम में लाता है।

एक बार जब लोग थोड़ा समझ जाते हैं, तो परमेश्वर बोलने के लिए एक बार और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करता है, और इसलिए वे एक बार पुनः घात में पड़ जाते हैं। प्रश्नों की इस श्रृंखला के दौरान, हर कोई सोच में पड़ जाता है, भ्रमित होता है, नहीं जानता कि परमेश्वर की इच्छा कहाँ निहित है, नहीं जानता कि परमेश्वर के किन प्रश्नों का उत्तर दे, और इसके अलावा, नहीं जानता कि परमेश्वर के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए किस भाषा का प्रयोग करे। समझ में नहीं आता कि हँसे या रोए। लोगों के लिए, ये वचन ऐसे प्रतीत होते हैं मानो उनमें गहन रहस्य समाविष्ट हों—किन्तु तथ्य ठीक विपरीत है। मैं यहाँ तुम्हारे लिए थोड़ा स्पष्टीकरण भी जोड़ देता हूँ। यह तुम्हारे मस्तिष्क को आराम देगा, तुम्हें महसूस होगा कि यह आसान चीज़ है जिसके लिए बहुत विचार की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, यद्यपि कई वचन हैं, लेकिन उनमें परमेश्वर का केवल एक ही उद्देश्य समाविष्ट है: इन प्रश्नों के माध्यम से लोगों की निष्ठा प्राप्त करना। लेकिन इसे प्रत्यक्ष रूप से कहना उचित नहीं है, इसलिए परमेश्वर एक बार पुनः प्रश्नों का उपयोग करता है। हालाँकि, उसका स्वर विशेष रूप से नरम होता है, जो शुरुआत में था उससे बहुत भिन्न। यद्यपि उनसे परमेश्वर के द्वारा प्रश्न किए जा रहे हैं, इस तरह का अंतर लोगों के लिए थोड़ी राहत लाता है। तुम भी प्रत्येक प्रश्न को एक-एक करके पढ़ सकते हो; क्या इन बातों पर पहले प्रायः चर्चा नहीं होती थी? इन कुछ सरल प्रश्नों में, समृद्ध सामग्री है, कुछ में लोगों की मानसिकता का वर्णन है: "क्या तुम लोग पृथ्वी पर मेरे आशीष का आनंद लेने के इच्छुक हो, जो स्वर्ग में जीवन के सदृश है?" कुछ लोगों की "योद्धा की शपथ" है जो वे परमेश्वर के सामने लेते हैं: "क्या तुम लोग सचमुच अपना जीवन-मरण मेरे अधीन करके एक भेड़ के समान मेरी अगुआई में चलने को राज़ी हो?" और उनमें से कुछ मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाएँ हैं: "यदि मैं सीधे तौर पर तुम से न बोलता, तो क्या तुम अपने आसपास की सब चीजों को त्याग कर मुझे अपना उपयोग करने दे सकते थे? क्या मुझे इसी वास्तविकता की अपेक्षा नहीं है? ..." उनमें मनुष्य के लिए परमेश्वर के

उपदेश और आश्वासन भी शामिल हैं: "फिर भी मैं कहता हूँ कि तुम लोग अब गलतफहमी में न पड़ना, तुम लोग अपने प्रवेश में सक्रिय बनो और मेरे वचनों के सार को ग्रहण करो। ऐसा करना तुम लोगों को मेरे वचनों के मिथ्याबोध और मेरे अर्थ के विषय में अस्पष्ट होने से और इस प्रकार मेरे प्रशासनिक आदेशों के उल्लंघन से बचाएगा।" अंत में, परमेश्वर मनुष्य के लिए अपनी उम्मीदों की बात करता है: "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग मेरे वचनों में तुम्हारे लिए मेरे जो इरादे हैं, उन्हें ग्रहण करो। अब केवल अपनी भविष्य की संभावनाओं पर ही विचार न करो, और तुम लोगों ने मेरे सम्मुख सभी चीज़ों में परमेश्वर के आयोजनों के प्रति समर्पित होने का जो संकल्प लिया है, ठीक उसी के अनुरूप कार्य करो।" अंतिम प्रश्न का गहन अर्थ है। यह विचारोत्तेजक है, यह लोगों के हृदय पर अपनी छाप छोड़ता है और इसे भुलाना कठिन है, उनके कानों में लटकी एक घंटी की तरह निरंतर बजता रहता है ...

उपरोक्त स्पष्टीकरण के कुछ वचन हैं जो तुम्हारे संदर्भ के उपयोग के लिए हैं।

अध्याय 5

जब परमेश्वर मनुष्यों के सामने वैसी मांगें रखता है, जिनकी व्याख्या करना उनके लिए कठिन है, और जब उसके वचन सीधे मानव हृदय को स्पर्श करते हैं और लोग अपने ईमानदार हृदय को उसके आनंद के लिए अर्पित करते हैं, तो परमेश्वर लोगों को विचार करने, संकल्प करने, और अभ्यास का मार्ग खोजने का अवसर देता है। इस तरह, उसके सभी लोग एक बार फिर, दृढ़ संकल्प के साथ मुट्ठियां भींचकर अपना पूरा अस्तित्व परमेश्वर को अर्पित कर देंगे। जब वो ख़ुद को कठिन परिश्रम के लिए तैयार करते हैं, तो उनमें से कुछ एक योजना और दैनिक कार्यक्रम बना सकते हैं, क्योंकि वो परमेश्वर की प्रबंधन योजना के लिए अपने हिस्से की क्षमता समर्पित करते हैं ताकि इस योजना को महिमा मिले और वह जल्दी अपने अंजाम तक पहुँचे। और जैसे ही लोगों की ऐसी मानसिक अवस्था बन जाती है, इन बातों को अपने मन में रखकर जब वो अपने दैनिक कार्य-कलाप करते हैं, बातचीत और कार्य करते हैं, तो परमेश्वर पुनः बोलना शुरू करता है: "मेरे आत्मा की आवाज मेरे संपूर्ण स्वभाव की अभिव्यक्ति है। क्या तुम लोग समझते हो?" मनुष्य जितने अधिक दृढ़ संकल्पी होंगे, उतनी ही बेचैनी से वे परमेश्वर की इच्छा समझने की लालसा रखेंगे और उतने ही आग्रहपूर्वक लालसा रखेंगे कि परमेश्वर उनसे अपेक्षा करे। इसी वजह से, लंबे समय से तैयारी में रखे अपने वचनों को उनके अस्तित्व के अंदरूनी कोनों तक पहुँचाने के लिए, इस अवसर का लाभ

उठाकर परमेश्वर लोगों को वह देगा, जो वो चाहते हैं। हालाँकि ये वचन थोड़े कठोर या रूखे लग सकते हैं, पर मानवता के लिए वो बेहद मीठे हैं। अचानक उनके हृदय आनंद से खिल उठते हैं, मानो वो स्वर्ग में हों, या किसी अन्य क्षेत्र में–कल्पना के किसी वास्तविक स्वर्ग में पहुँचा दिए गए हों, जहां बाहरी दुनिया के मामले मानवता को अब और प्रभावित नहीं करेंगे। उस संभावना को दरकिनार करने के लिए, जिसकी पहले लोगों को आदत पड़ी हुई थी कि बाहर से बोलें और बाहर से ही कार्य करें और इसलिए कहीं जमने में असफल रहें, एक बार जब लोगों की दिली इच्छा पूरी हो जाए और वो जोश से काम करने को तैयार हो जाएं, तो परमेश्वर अभी भी अपने बोलने के तरीके को उनकी मानसिकता के अनुकूल बनाता है, और तुरंत व बेहिचक, उनके हृदय में मौजूद समस्त उत्कंठा और धार्मिक अनुष्ठान का खंडन करता है। जैसा कि परमेश्वर ने कहा है: "क्या तुम लोगों ने इसमें निहित महत्व को वास्तव में देखा है?" किसी चीज़ के बारे में अपना संकल्प लेने से पहले या बाद में, लोग परमेश्वर को उसके क्रिया-कलापों या उसके वचनों से जानने को अधिक महत्व नहीं देते, बल्कि इस प्रश्न पर विचारमग्न रहते हैं, "मैं परमेश्वर के लिए क्या कर सकता हूँ? यह मुख्य मुद्दा है!" इसीलिए परमेश्वर कहता है: "और क्या तुम लोगों में मेरे ही सामने अपने आप को मेरे लोग कहने का साहस है—तुम लोगों में ज़रा-सी भी शर्म नहीं है, विवेक होने का तो सवाल ही नहीं!" जैसे ही परमेश्वर ने ये वचन बोले, उसके क्रोध के दूसरी बार भड़कने से बेहद डरे हुए लोगों को तुरंत अपनी स्थिति का बोध होता है, मानो बिजली का झटका लगा हो, और वो तुरंत अपने हाथ खींचकर अपने सीने पर रख लेते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर ने यह भी कहा है: "कभी न कभी, तुम्हारे जैसे लोगों को मेरे घर से निर्वासित कर दिया जाएगा! यह सोचकर कि तुमने मेरी गवाही दी थी, मुझे बहकाने की कोशिश न करो!" इस तरह के वचनों को सुनकर लोग और भी अधिक डर जाते हैं, जैसे उन्होंने कोई शेर देख लिया हो। वो अपने मन में अच्छी तरह जानते हैं। वो शेर का शिकार नहीं बनना चाहते, जबकि दूसरी तरफ़, वो नहीं जानते कि बचकर निकलें कैसे। ठीक इसी क्षण, इंसान के मन की योजना बिना कोई निशान छोड़े, पूरी तरह गायब हो जाती है। परमेश्वर के वचनों से मुझे लगता है मानो मैं मानवता की शर्मिंदगी के हर एक पहलू को देख सकता हूँ: लटका हुआ सिर और लज्जित आचरण, ऐसा अभ्यर्थी जो महाविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में असफल हो गया हो, उसके अभिमानी आदर्श, सुखी परिवार, उज्ज्वल भविष्य आदि इसी तरह दूसरी बातों के साथ वर्ष 2000 तक चार आधुनिकीकरण, सब विज्ञान कथा पर बनी किसी फ़िल्म का काल्पनिक परिदृश्य रचते हुए खोखली बातों में बदल गए हैं। यह सक्रिय तत्वों के लिए निष्क्रिय तत्वों की

अदला-बदली है, लोगों को उनकी निष्क्रियता के बीच उस स्थान में खड़ा करना है, जो परमेश्वर ने उनके लिए तय किया है। बेहद महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मनुष्य इस पदवी को खोने को लेकर बेहद डरते हैं, इसलिए वो अपने जीवन में अपने दिए ओहदों के बिल्लों से चिपके रहते हैं, इस बात से बेहद भयभीत कि कोई उन्हें उनसे छीनने की कोशिश कर सकता है। जब मानवता इस मनोदशा में होती है, तो परमेश्वर चिंता नहीं करता कि लोग निष्क्रिय हो जाएंगे, और इसलिए वह तदनुसार अपने न्याय के वचनों को पूछताछ के वचनों में बदल देता है। न केवल वह लोगों को आराम का अवसर देता है, बल्कि वह उन्हें वैसी ही आकांक्षाएं संजोने का अवसर भी देता है, जैसी वो पहले रखते थे और उन्हें भविष्य के संदर्भ में उन्हें सुलझाने का अवसर देता है: किसी भी अनुपयुक्त चीज़ को सुधारा जा सकता है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने अभी तक कार्य शुरू नहीं किया है—यह भयंकर दुर्भाग्य के बीच सौभाग्य का एक अंश है—और इसके अतिरिक्त, उनकी निंदा नहीं करता। इसलिए, मैं अपनी सारी भक्ति उसे देता रहूँगा!

इसके बाद, तुम्हें अपने डर के कारण, परमेश्वर के वचनों को दरकिनार नहीं करना चाहिए। ज़रा देखो कि क्या परमेश्वर की कोई नई मांगें हैं। निश्चित रूप से, तुम्हें इस प्रकार की मांग दिखेगी: "अब से, सभी चीज़ों में तुम्हें अभ्यास की वास्तविकता में प्रवेश करना होगा; मात्र बकवास करने से, जैसा कि तुम पहले किया करते थे, अब तुम कामयाब नहीं होगे।" इसमें भी परमेश्वर की बुद्धि अभिव्यक्त होती है। परमेश्वर ने हमेशा अपने गवाहों को सुरक्षित रखा है, और जब अतीत के वचनों की वास्तविकता अपने निष्कर्ष पर पहुँच जाती है, तो चाहे कोई भी हो, वह "अभ्यास की वास्तविकता" के ज्ञान की थाह नहीं पा सकता। यह परमेश्वर के इस कथन की सच्चाई को साबित करने के लिए पर्याप्त है: "मैं कार्य करने का बीड़ा स्वयं उठाता हूँ।" यह दिव्यता में कार्य के सच्चे अर्थ से जुड़ा है, और इससे भी कि इंसान आरंभ के नए मुकाम पर पहुँचकर भी परमेश्वर के वचनों के सही अर्थ की थाह पाने में समर्थ क्यों नहीं है। यह इसलिए क्योंकि अतीत में बहुसंख्य लोग परमेश्वर के वचनों की सच्चाई से ही चिपके हुए थे, जबकि आज उन्हें अभ्यास की सच्चाई के बारे में भनक तक नहीं है, वो इन वचनों के सार को नहीं बल्कि इनके सतही पहलुओं को समझते हैं। इससे भी अहम बात, ऐसा इसलिए है क्योंकि आज राज्य के निर्माण में, किसी को भी हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं, केवल यंत्रवत परमेश्वर का आदेश मानने की अनुमति है। इसे अच्छी तरह याद रखो! परमेश्वर जब भी अतीत की बात करता है, तो वह आज की वास्तविक स्थिति के बारे में बात करने लगता है; यह बात करने की एक शैली है, जिसमें पहले क्या आता है और बाद में क्या आता है,

उसमें एक स्पष्ट भेद करता है और इस कारण, उसके बेहतर परिणाम निकलते हैं, लोग अतीत और वर्तमान की तुलना कर पाते हैं, और इस तरह दोनों में कोई गड़बड़ी नहीं होती। यह परमेश्वर की बुद्धि का एक पहलू है और इसका उद्देश्य कार्य के परिणाम प्राप्त करना है। इसके बाद, परमेश्वर एक बार पुनः मानवता की कुरूपता को प्रकट करता है, ताकि लोग हर दिन परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना न भूलें, और इससे भी महत्वपूर्ण, वो स्वयं को जानें और इसे एक सबक लें, जिससे उन्हें हर दिन सीखना चाहिए।

इन वचनों को बोलकर, परमेश्वर ने उस प्रभाव को हासिल कर लिया है, जो उसका मूल उद्देश्य था। और इस बात की चिंता किए बिना कि लोगों ने इस बात को समझा है या नहीं, वह इसका ज़िक्र कुछ वाक्यों में करके आगे बढ़ जाता है, क्योंकि इंसान से शैतान के काम का कोई संबंध नहीं है—और इंसान को इसकी कोई भनक नहीं है। अब, आत्मा की दुनिया को पीछे छोड़कर आगे देखो कि परमेश्वर इंसान से किस तरह की अपेक्षाएं रखता है: "अपने निवास में विश्राम करते हुए, मैं ध्यानपूर्वक देखता हूँ : पृथ्वी पर सभी लोग सिर्फ़ अपनी नियति और अपने भविष्य की खातिर 'दुनियाभर की यात्रा करते हुए' इधर-उधर भागते, दौड़-धूप करते हैं। परन्तु किसी एक के पास भी मेरे राज्य का निर्माण करने के लिए ऊर्जा नहीं बची है, इतनी भी नहीं जितनी कि साँस लेने में लगती है।" लोगों के साथ इन प्रथाओं का आदान-प्रदान करने के बाद भी, परमेश्वर उन पर ध्यान नहीं देता, बल्कि आत्मा के परिप्रेक्ष्य से बोलना जारी रखता है और इन वचनों के माध्यम से, इंसान के जीवन की सामान्य परिस्थितियों को उनकी समग्रता में प्रकट करता है। "दुनियाभर की यात्रा करते हुए" और "इधर-उधर भागते हुए," से स्पष्ट देखा जा सकता है कि मानव जीवन संतुष्टि से पूरी तरह वंचित है। यदि परमेश्वर का सर्वशक्तिशाली उद्धार न होता और विशेषकर उन लोगों के लिए जो चीन के शाही घराने के क्षीण होते बड़े परिवार में जन्मे हैं, तो लोगों का सारा जीवन ही निरर्थक साबित होता, और वो संसार में आने की अपेक्षा अधोलोक और नरक में गिरकर कहीं ज़्यादा बेहतर स्थिति में होते। बड़े लाल अजगर की अधीनता में, उन्होंने अनजाने में ही, परमेश्वर का अपमान कर दिया और इसी वजह से, स्वाभाविक रूप से और अनजाने में वो परमेश्वर की ताड़ना के शिकार हुए। इस कारण परमेश्वर ने "क्लेश से बचाए" हुए लोगों और "कृतघ्नों" को लेकर उन्हें एक-दूसरे के सामने खड़ा कर दिया ताकि परमेश्वर के रक्षा-अनुग्रह के लिए एक विषमता का निर्माण करते हुए इंसान स्वयं को और अधिक स्पष्टता से जान सके। क्या इससे और अधिक प्रभावशाली परिणाम नहीं मिलता? निस्संदेह, मुझे इतना स्पष्ट कहने की ज़रूरत नहीं है कि लोग परमेश्वर के वचनों में निहित आशय से, भर्त्सना के तत्व का, उद्धार और

याचना के तत्व का और दुख के एक हल्के-से बोध का अनुमान लगा सकते हैं। इन वचनों को पढ़कर, लोग अनजाने में व्यथित होने लगते हैं, और आँसू बहाना शुरू कर देते हैं...। लेकिन परमेश्वर कुछेक दुःखद भावनाओं के कारण रुकता नहीं, न ही वह पूरी मानवजाति की भ्रष्टता के कारण, अपने लोगों को अनुशासित करने और उनसे अपेक्षाएं रखने का कार्य छोड़ता है। इस वजह से, उसके विषय सीधे आज की परिस्थितियों से जुड़ते हैं, और इसके अतिरिक्त वह मानवता के लिए अपने प्रशासनिक आदेशों के प्रताप की घोषणा करता है, ताकि उसकी योजना आगे बढ़ती रहे। यही कारण है कि उचित गति से इसका अनुसरण करते और अवसर का लाभ उठाते हुए, परमेश्वर समय के इस महत्वपूर्ण मोड़ पर इस समय के लिए एक संविधान की घोषणा करता है–ऐसा संविधान, जिसका हर अनुच्छेद मनुष्य को सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिए, इससे पहले कि वो परमेश्वर की इच्छा समझ सके। फिलहाल इस संबंध में और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है; लोगों को और ध्यान से पढ़ना चाहिए।

आज, तुम लोग—यहां लोगों का यह समूह—ही एकमात्र हो, जो परमेश्वर के वचनों को सचमुच देख सकते हो। फिर भी परमेश्वर को जानने में, आज के लोग अतीत के युग के किसी भी व्यक्ति से युगों पीछे रह गए हैं। इससे यह स्पष्ट है कि शैतान ने लोगों पर हज़ारों वर्षों तक कितनी कोशिश की है, और उसने मानवजाति को बुरी तरह से भ्रष्ट कर दिया है–इस हद तक कि परमेश्वर के इतने सारे वचनों के बोलने के बावजूद, मानवता अब भी परमेश्वर को न तो समझती है और न जानती है, बल्कि उसके विरुद्ध खड़े होने और उसका सार्वजनिक विरोध करने की धृष्टता करती है। और इसलिए परमेश्वर प्रायः अतीत के युगों के लोगों की आज के लोगों से तुलना करता है, ताकि वह आज के लोगों को, जो इतने बेसुध और सुस्त हैं, संदर्भ के वास्तविक बिंदु दे सके। क्योंकि मनुष्यों को परमेश्वर का कोई ज्ञान नहीं है, उनमें सच्चे विश्वास का अभाव है, इसलिए परमेश्वर ने मानवता में योग्यता और समझ के अभाव का होना घोषित किया है, इसलिए, उसने बार-बार लोगों को सहिष्णुता दिखाई है और उनका उद्धार किया है। आत्मा के क्षेत्र में इन्हीं तरीकों से लड़ाई लड़ी जाती है: मानवता को एक निश्चित अंश तक भ्रष्ट करना, दुनिया को कलुषित और दुष्ट बनाना, और इस तरह मनुष्य को दलदल में खींचकर परमेश्वर की योजना को नष्ट करना, ये शैतान की निरर्थक आशा है। किन्तु परमेश्वर की योजना समस्त मानवता को ऐसे लोगों में बदलना नहीं है जो उसे जानते हों, बल्कि पूरे का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक हिस्से को चुनना है, शेष को अपशिष्ट उत्पाद, खोटे माल के रूप में, कचरे के ढेर पर फेंके जाने के लिए छोड़ देना है। इस तरह, हालांकि शैतान के दृष्टिकोण

से कुछ व्यक्तियों को अपने अधिकार में लेने की बात परमेश्वर की योजना को नष्ट करने का एक बेहतरीन मौक़ा लग सकती है, लेकिन उस जैसा मूढ़मति परमेश्वर की मंशा के बारे में क्या जान सकता है? यही कारण है कि परमेश्वर ने बहुत पहले कहा था, "मैंने इस दुनिया को देखने से बचने के लिए अपना चेहरा ढक लिया है।" हम इस बारे में थोड़ा-सा तो जानते हैं, और परमेश्वर की अपेक्षा यह नहीं है कि मनुष्य कुछ भी करने में सक्षम हो; बल्कि वह चाहता है कि वह जो करता है, उसे इंसान चमत्कारी और अथाह के रूप में पहचाने और परमेश्वर को अपने हृदय में श्रद्धा के साथ धारण करे। यदि, जैसी मनुष्यों की सोच है, परमेश्वर उन्हें परिस्थितियों की परवाह किए बिना ताड़ना देता तो पूरा विश्व बहुत पहले ही नष्ट हो गया होता। क्या इसका अर्थ सीधे शैतान के फंदे में गिरना नहीं होता? और इसलिए परमेश्वर उन परिणामों को प्राप्त करने के लिए जो उसके मन में हैं, केवल अपने वचनों का उपयोग करता है, लेकिन शायद ही कभी तथ्य सामने आते हैं। क्या यह उसके वचनों का एक उदाहरण नहीं है: "यदि मैंने तुम लोगों में योग्यता, तर्क-शक्ति और अंतर्दृष्टि की कमी पर दया नहीं की होती, तो तुम सभी मेरी ताड़ना के बीच ही नष्ट हो जाते, और तुम्हारा अस्तित्व तक मिट जाता। परन्तु जब तक पृथ्वी पर मेरा कार्य पूरा नहीं होता, मैं मानवजाति के प्रति उदार रहूँगा"?

अध्याय 6

लोग जब परमेश्वर के कथन पढ़ते हैं तो वे अवाक रह जाते हैं और सोचते हैं कि परमेश्वर ने आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया है, कुछ ऐसा जिसे करने में मनुष्य असमर्थ है और जो स्वयं परमेश्वर को खुद व्यक्तिगत रूप से करना चाहिए। इसलिए परमेश्वर एक बार फिर मनुष्यजाति के प्रति सहिष्णुता के वचन बोलता है। उनके हृदय में द्वंद्व चलता रहता है : "परमेश्वर दया और करुणामय प्रेम का परमेश्वर नहीं है। वह तो बस इंसान को मार डालने वाला परमेश्वर है। वह हमारे प्रति सहिष्णु क्यों हो रहा है? कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर ने फिर से अपनी रीति बदल ली हो?" जब ये धारणाएँ, ये विचार उनके मन में आते हैं, तो ऐसे विचारों के विरुद्ध वे लड़ने का अधिकतम प्रयास करते हैं। परंतु कुछ समय तक परमेश्वर के कार्य के चलते रहने पर, पवित्र आत्मा कलीसिया में बड़ा कार्य करता है, और सब लोग अपना-अपना कार्य आरंभ कर देते हैं, सभी लोग परमेश्वर की रीति में प्रवेश कर जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर जो कहता और करता है उसमें किसी को ज़रा-सी भी अपूर्णता नज़र नहीं आती। परमेश्वर का अगला कदम

सटीक रूप से क्या होगा, इस बारे में किसी को हल्की-सी भी भनक नहीं होती। जैसा कि परमेश्वर ने कहा है : "स्वर्ग के नीचे ऐसा कौन है जो मेरे हाथों में नहीं है? कौन है जो मेरे मार्गदर्शन के अनुसार कार्य नहीं करता?" फिर भी मैं तुम्हें कुछ परामर्श देता हूँ : जो विषय तुम्हें स्पष्ट नहीं हैं, उनके बारे में तुममें से किसी को कुछ भी कहना या करना नहीं चाहिए। मैं यह तुम्हारा उत्साह कम करने के लिए नहीं कहता, बल्कि तुम्हें अपने कामों में परमेश्वर के मार्गदर्शन का अनुसरण करने देने के लिए कहता हूँ। "अपूर्णताओं" के बारे में कही गयी मेरी बातों के कारण तुम्हें बिल्कुल भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए या शंकालु नहीं होना चाहिए; मेरा उद्देश्य मुख्य रूप से परमेश्वर के वचनों पर तुम्हारा ध्यान दिलाना है। लोग फिर अवाक रह जाते हैं जब वे परमेश्वर के इन वचनों को पढ़ते हैं जो कहते हैं, "आत्मा से संबंधित मामलों में तुझे अनुभव करने में सक्षम होना चाहिए; मेरे वचनों पर तुझे ध्यान लगाना चाहिए। तुझे मेरा आत्मा और मेरे स्वरूप, मेरे वचनों और मेरे स्वरूप को एक अखंड इकाई की तरह समझने में वास्तव में समर्थ होना चाहिए, ताकि सभी लोग मुझे मेरी उपस्थिति में संतुष्ट कर सकें।" कल वे चेतावनी के वचन पढ़ रहे थे, परमेश्वर की सहिष्णुता के बारे में वचन पढ़ रहे थे—किंतु आज, परमेश्वर अचानक आध्यात्मिक विषयों की बात कर रहा है। यह चल क्या रहा है? परमेश्वर अपने बोलने की रीति क्यों बदलता रहता है? इस सबको एक अखंड इकाई क्यों माना जाना चाहिए? कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर के वचन व्यावहारिक न हों? परमेश्वर के वचनों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के बाद, पता यह चलता है कि जब परमेश्वर के देह और उसके आत्मा को अलग-अलग किया जाता है, तब देह दैहिक गुणों से युक्त भौतिक शरीर बन जाता है—जिसे लोग चलती-फिरती लाश कहते हैं। देहधारी देह आत्मा से आता है : वह आत्मा का मूर्त रूप है, वचन देह बन जाता है। दूसरे शब्दों में, स्वयं परमेश्वर देह में रहता है। परमेश्वर के स्वरूप से परमेश्वर के आत्मा के अलग होने की गंभीरता ऐसी है। परिणामस्वरूप, कहने को तो उसे मानव कहा जाता है, किंतु वह मानवजाति का अंग नहीं है। वह मानवीय गुणों से रहित है, वह ऐसा स्वरूप है जिसे स्वयं परमेश्वर वस्त्र पहनाता है, ऐसा स्वरूप जिसे परमेश्वर स्वीकृति देता है। परमेश्वर का वचन परमेश्वर के आत्मा को मूर्त रूप देता है, और परमेश्वर का वचन सीधे देह में प्रकट होता है—जो दर्शाता है कि परमेश्वर देह में रहता है और जो अधिक व्यावहारिक परमेश्वर है, इस प्रकार परमेश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करता है और परमेश्वर के प्रति मनुष्य के विद्रोह के युग का अंत करता है। लोगों को परमेश्वर को जानने का मार्ग बताने के बाद, परमेश्वर एक बार फिर विषय बदल देता है, और विषय के दूसरे पहलू की ओर मुड़ जाता है।

"जो कुछ भी है उस पर मैं अपने कदम रख चुका हूँ, ब्रह्मांड के पूरे विस्तार पर मैं नज़रें डाल चुका हूँ, और मैं सभी लोगों के बीच चला हूँ और मैंने मनुष्य के बीच मीठे और कड़वे स्वादों को चखा है।" सीधे-सादे होते हुए भी, ये वचन मानवजाति को आसानी से समझ में नहीं आते। विषय बदल गया है, किंतु सार में यह वैसा ही है : इससे लोग अब भी देहधारी परमेश्वर को जान सकते हैं। परमेश्वर ऐसा क्यों कहता है कि उसने मनुष्य के बीच मीठे और कड़वे स्वादों को चखा है? वह ऐसा क्यों कहता है कि वह सभी लोगों के बीच चला है? परमेश्वर आत्मा है, और वह देहधारी स्वरूप भी है। आत्मा, जो देहधारी स्वरूप की सीमाओं से बँधा नहीं होता, जो कुछ भी है उस पर अपने कदम रख सकता है, आत्मा ब्रह्मांड के पूरे विस्तार पर नज़रें डाल सकता है, जो दिखाता है कि परमेश्वर का आत्मा संपूर्ण ब्रह्माण्ड में समाया है, वह एक छोर से दूसरे छोर तक पृथ्वी को ढक लेता है, कुछ भी ऐसा नहीं है जो परमेश्वर के हाथों से व्यवस्थित न हुआ हो और कोई जगह ऐसी नहीं है जहाँ परमेश्वर के पदचिह्न न पाए जा सकें। हालाँकि आत्मा देहधारी हो गया है और मानव के रूप में जन्मा है, किंतु आत्मा का अस्तित्व सारी मानवीय आवश्यकताओं को नकारता नहीं है; परमेश्वर का अस्तित्व सामान्य रूप से खाता, वस्त्र पहनता, सोता और निवास करता है, और वही सब करता है जो सामान्य तौर पर लोगों को करना चाहिए। फिर भी चूँकि उसका आंतरिक सार भिन्न है, इसलिए वह सामान्य "मनुष्य" जैसा नहीं है। हालाँकि वह लोगों के बीच रहकर कष्ट सहता है, फिर भी वह इन कष्टों के कारण आत्मा को तजता नहीं है। हालाँकि उसे आशीष प्राप्त है, किंतु इस आशीष के कारण वह आत्मा को विस्मृत नहीं करता। आत्मा और स्वरूप मौन रहकर सद्भाव से कार्य करते हैं। आत्मा और स्वरूप को अलग नहीं किया जा सकता, न ही वे कभी अलग हुए हैं, क्योंकि स्वरूप आत्मा का ही मूर्त रूप है, वह आत्मा से ही उत्पन्न होता है, उस आत्मा से जिसका एक रूप है। इस प्रकार देह में आत्मा के लिए पारलौकिकता असंभव है; अर्थात, आत्मा अलौकिक काम नहीं कर सकता, जिसका तात्पर्य है कि आत्मा भौतिक शरीर से अलग नहीं हो सकता। यदि वह दैहिक शरीर से अलग हो जाए, तो परमेश्वर का देहधारण समूचा अर्थ ही खो बैठेगा। जब आत्मा भौतिक शरीर में पूर्णतः अभिव्यक्त होता है, तभी मनुष्य व्यावहारिक स्वयं परमेश्वर को जान सकता है, और तभी परमेश्वर की इच्छा भी पूरी होगी। दैहिक शरीर और आत्मा को मनुष्य से अलग-अलग मिलवाने के बाद ही परमेश्वर मनुष्य के अँधेपन और अवज्ञाकारिता की ओर ध्यान दिला पाता है : "फिर भी मनुष्य मुझे कभी भी वास्तव में समझ नहीं पाया है, न ही मेरी यात्रा के दौरान उसने मुझ पर कभी कोई ध्यान दिया है।" एक ओर तो, परमेश्वर कह रहा है कि वह दैहिक शरीर

में गुप्त रूप से छिपता है, लोगों को दिखाने के लिए कभी कुछ अलौकिक नहीं करता; दूसरी ओर, शिकायत करता है कि मनुष्य उसे जानता ही नहीं। इसमें कोई अंतर्विरोध नहीं है। वास्तव में, विस्तृत दृष्टिकोण से, यह देख पाना कठिन नहीं है कि परमेश्वर अपना उद्देश्य इन दो पहलुओं से ही पूरा करता है। यदि परमेश्वर अलौकिक चिह्न और चमत्कार करता, तो उसे बड़ा कार्य हाथ में लेने की आवश्यकता ही नहीं होती। वह बस मुख से ही लोगों को मृत्यु का श्राप दे देता, और वे उसी क्षण मर जाते, इस प्रकार सभी लोग क़ायल हो जाते—किंतु इससे परमेश्वर का देहधारी होने का उद्देश्य पूरा नहीं होता। यदि परमेश्वर सच में इस प्रकार कार्य करता, तो लोग उसके अस्तित्व में कभी जानते-बूझते विश्वास नहीं कर पाते। वे सच्चा विश्वास कर पाने में असमर्थ होते, और गलती से शैतान को ही परमेश्वर समझ लेते। ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग कभी परमेश्वर का स्वभाव नहीं जान पाते—क्या यह परमेश्वर के देहधारी होने के अर्थ का ही एक पहलू नहीं है? यदि लोग परमेश्वर को जानने में असमर्थ होते, तो लोगों के बीच हमेशा उस अज्ञात परमेश्वर, उस अलौकिक परमेश्वर का ही बोलबाला होता। और इसमें क्या लोग अपनी ही धारणाओं के वशीभूत नहीं होते? अधिक स्पष्ट रूप से कहें, तो क्या शैतान यानी, दुष्टात्मा का ही दबदबा नहीं हो जाता? "मैं क्यों कहता हूँ कि मैंने सामर्थ्य वापस ले लिया है? मैं क्यों कहता हूँ कि देहधारण के बहुत अधिक मायने है?" जिस क्षण परमेश्वर देहधारी हो जाता है, यही वह क्षण होता है जब वह सामर्थ्य वापस ले लेता है, और यही वह समय भी होता है जब उसकी दिव्यता सीधे कार्य करने के लिए प्रकट होती है। सभी लोग धीरे-धीरे व्यावहारिक परमेश्वर को जानने लगते हैं, और परमेश्वर को अपने हृदय में अधिक गहरा स्थान देते हुए, अपने हृदय से शैतान का स्थान पूरी तरह मिटा देते हैं। अतीत में लोग अपने मन में शैतान की छवि में ही परमेश्वर को देखते थे, ऐसे परमेश्वर के रूप में जो अदृश्य और अमूर्त था; और फिर भी वे मानते थे कि इस परमेश्वर का न केवल अस्तित्व है, बल्कि वह भाँति-भाँति के चिह्न दिखाकर चमत्कार भी कर सकता है, और दुष्टात्माओं द्वारा वश में किए गए लोगों के कुरूप चेहरों की तरह के अनेक रहस्य भी प्रकट कर सकता है। इससे सिद्ध होता है कि लोगों के मन में जो परमेश्वर है, वह परमेश्वर की छवि नहीं है, बल्कि परमेश्वर से भिन्न किसी अन्य चीज़ की छवि है। परमेश्वर ने कहा है कि वह लोगों के हृदय के 0.1 प्रतिशत पर अधिकार पाना चाहता है। यह उच्चतम मानक है जिसकी वह लोगों से अपेक्षा करता है। सतह पर जो कुछ है उससे परे, इन वचनों का एक व्यावहारिक पहलू भी है। यदि इसे इस प्रकार समझाया नहीं जाता, तो लोग सोचते कि उनसे परमेश्वर की अपेक्षाएँ बेहद निम्न हैं, मानो परमेश्वर उनके बारे में बहुत कम

समझता है। क्या मनुष्य की मानसिकता ऐसी ही नहीं है?

ऊपर कही गयी बातों और नीचे दिए गए पतरस के उदाहरण को एक साथ रखने पर पाओगे कि पतरस परमेश्वर को सचमुच किसी भी अन्य की तुलना में बेहतर जानता था, क्योंकि वह अज्ञात परमेश्वर की ओर पीठ फेर कर व्यावहारिक परमेश्वर के ज्ञान का अनुसरण कर सकता था। इस बात का विशेष उल्लेख क्यों किया गया है कि उसके माता-पिता परमेश्वर-विरोधी दुष्टात्मा थे? इससे यह सिद्ध होता है कि पतरस अपने हृदय में परमेश्वर का अनुसरण नहीं कर रहा था। उसके माता-पिता अज्ञात परमेश्वर का प्रतिरूप थे; परमेश्वर द्वारा उनका उल्लेख करने का यही आशय है। अधिकतर लोग इस तथ्य पर अधिक ध्यान नहीं देते। बल्कि वे पतरस की प्रार्थनाओं पर ध्यान देते हैं। कुछ लोगों के होठों और मन में तो हमेशा पतरस की प्रार्थनाएँ ही रहती हैं, फिर भी वे कभी अज्ञात परमेश्वर की तुलना पतरस के ज्ञान से नहीं करते। पतरस अपने माता-पिता के विरुद्ध जा कर परमेश्वर के ज्ञान की खोज क्यों करने लगा? पतरस नाकाम हो चुके लोगों के सबक से क्यों उत्साहित हुआ? उसने उन सब लोगों की आस्था और प्रेम को आत्मसात क्यों किया जो युगों से परमेश्वर से प्रेम करते आ रहे थे? पतरस जान गया कि सभी सकारात्मक बातें परमेश्वर से आती हैं, शैतान द्वारा संसाधित हुए बिना उसी से सीधे तौर पर जारी होती हैं। यह दिखाता है कि वह जिस परमेश्वर को जानता था वह व्यावहारिक परमेश्वर था, अलौकिक परमेश्वर नहीं। ऐसा क्यों कहा गया है कि पतरस ने उन सब लोगों की आस्था और प्रेम को आत्मसात करने पर ध्यान दिया जो युगों से परमेश्वर से प्रेम करते आ रहे थे? इससे देखा जा सकता है कि युगों-युगों से लोगों की विफलता का मुख्य कारण ये था कि उनके अंदर आस्था और विश्वास तो था, किंतु वे व्यावहारिक परमेश्वर को नहीं जानते थे। परिणामस्वरूप, उनकी आस्था अज्ञात ही बनी रही। परमेश्वर इस बात को कहे बिना कि अय्यूब परमेश्वर को जानता था, उसके विश्वास का कई बार उल्लेख क्यों करता है, और परमेश्वर यह क्यों कहता है कि अय्यूब पतरस के बराबर नहीं था? अय्यूब की ये बातें—"मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं"—दर्शाती हैं कि उसमें केवल आस्था थी, उसे कोई ज्ञान नहीं था। ये वचन "उसके माता-पिता की प्रतिकूलता ने उसे मेरे कृपालु प्रेम एवं दया का और भी ज्ञान दिया" अधिकतर लोगों की ओर से बहुत सारे प्रश्न खड़े करते हैं : परमेश्वर को जानने के लिए पतरस को प्रतिकूलता की आवश्यकता क्यों थी? वह परमेश्वर को सीधे क्यों नहीं जान सकता था? ऐसा क्यों था कि वह बस परमेश्वर की दया और कृपालु प्रेम को ही जानता था, और परमेश्वर ने किसी अन्य चीज़ की बात नहीं की? अज्ञात परमेश्वर की

अवास्तविकता को पहचान लेने के बाद ही व्यावहारिक परमेश्वर के ज्ञान की खोज संभव है; इन वचनों का उद्देश्य लोगों से उनके हृदय से अज्ञात परमेश्वर को बाहर निकालना है। सृष्टि के समय से लेकर आज तक, यदि लोगों को हमेशा परमेश्वर का सच्चा चेहरा पता होता, तो वे शैतान के दुष्कर्मों को पहचान नहीं पाते, क्योंकि मनुष्य की यह सामान्य कहावत—"जब तक पहाड़ न चढ़ो धरातल पर ध्यान ही नहीं जाता"—दर्शाती है कि इन वचनों को बोलने में परमेश्वर का क्या आशय है। चूँकि परमेश्वर लोगों को इस उदाहरण के ज़रिए उसकी सच्चाई को और अधिक गहराई से समझाना चाहता है, इसलिए वह जान-बूझकर दया और कृपालु प्रेम पर बल देता है और यह सिद्ध करता है कि पतरस जिस युग में रहता था वह अनुग्रह का युग था। दूसरे दृष्टिकोण से, यह शैतान के और भी बदसूरत चेहरे को उजागर करता है, जो इंसान को भ्रष्ट करने और नुकसान पहुँचाने के अलावा कुछ नहीं करता, और परमेश्वर की दया एवं कृपालु प्रेम को और भी अधिक विरोध में प्रस्तुत करता है।

परमेश्वर पतरस के परीक्षणों के तथ्यों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए, उनकी वास्तविक परिस्थितियों का वर्णन भी करता है, और लोगों को बताता है कि परमेश्वर न केवल दया और कृपालु प्रेम से, बल्कि प्रताप और कोप से भी युक्त है, और जो लोग शांतिपूर्वक रहते हैं, आवश्यक नहीं कि वे परमेश्वर के आशीषों में रहते हों। लोगों को पतरस के परीक्षणों के उपरांत उसके अनुभवों के बारे में बताना अय्यूब के इन वचनों, "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" की सत्यता का और भी बड़ा प्रमाण है। इस प्रकार यह दिखलाता है कि परमेश्वर के बारे में पतरस का ज्ञान सचमुच अभूतपूर्व क्षेत्रों तक पहुँच गया था; उन क्षेत्रों में जो बीते युगों के लोगों द्वारा कभी प्राप्त नहीं किए गए थे, जो युगों से परमेश्वर से प्रेम करते आ रहे लोगों की आस्था और प्रेम को उसके द्वारा आत्मसात करने का और अतीत के युगों में विफल हो चुके लोगों के सबक का उपयोग करके उसके द्वारा स्वयं को प्रोत्साहित करने का फल भी था। इसलिए, जो लोग परमेश्वर के बारे में सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, वे "फल" कहलाते हैं, और उसमें पतरस भी शामिल है। अपने परीक्षणों के दौरान परमेश्वर से पतरस की प्रार्थनाएँ परमेश्वर के बारे में उसका सच्चा ज्ञान दर्शाती हैं। परंतु उत्साह भंग करने वाली बात यह है कि वह परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण रूप से समझने में असमर्थ था। यही कारण था कि अपने बारे में पतरस के ज्ञान के आधार पर परमेश्वर ने केवल "मानव हृदय के 0.1 प्रतिशत पर अधिकार पाने" की बात कही। यहाँ तक कि पतरस भी, जो परमेश्वर को सबसे अच्छी तरह जानता था, परमेश्वर की इच्छा को ठीक-ठीक समझ पाने में असमर्थ था। इससे यह

ज़ाहिर है कि इंसान में परमेश्वर को जानने की क्षमता का अभाव है, क्योंकि उसे शैतान ने बुरी तरह से भ्रष्ट कर दिया है; इस बात से हर व्यक्ति इंसान के सार को जान जाता है। ये दो पूर्वशर्तें—लोगों में परमेश्वर को जानने की क्षमता का अभाव और उनमें शैतान की पूर्ण व्याप्ति—परमेश्वर के महा सामर्थ्य के लिए एक विषमता हैं, क्योंकि परमेश्वर केवल वचनों से कार्य करता है, वह कोई उद्यम हाथ में नहीं लेता, और इस प्रकार वह लोगों के हृदय में एक निश्चित स्थान ग्रहण करता है। किंतु परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने के लिए लोगों को मात्र वह 0.1 प्रतिशत ही क्यों हासिल करना है? इसका उत्तर यह कहकर दिया जा सकता है कि परमेश्वर ने इंसान को यह क्षमता ही नहीं दी। इस क्षमता के बिना, यदि मनुष्य परमेश्वर के 100 प्रतिशत ज्ञान पर पहुँच जाएँ, तो परमेश्वर का प्रत्येक कदम उनके लिए एकदम स्पष्ट होगा—और मनुष्य की अंतर्निहित प्रकृति को देखते हुए, लोग तत्काल परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर देंगे, वे उठ खड़े होंगे और खुले आम उसका विरोध करेंगे, इसी तरह शैतान का पतन हुआ था। इसलिए परमेश्वर लोगों को कभी कम करके नहीं आँकता, यही वजह है कि वह पहले ही उनका पूरी तरह से विश्लेषण कर चुका है, और उनके बारे में सब कुछ अच्छी तरह से जानता है, इतनी अच्छी तरह से कि उसे यह भी पता है कि उनके रक्त में ठीक-ठीक कितना पानी है। तो उसके सामने इंसान की प्रकृति और कितनी अधिक स्पष्ट है? परमेश्वर कभी गलतियाँ नहीं करता, और वह अपने कथनों के वचन अत्यंत सटीकता से चुनता है। इस प्रकार पतरस को परमेश्वर की इच्छा की सटीक समझ न होने और उसे परमेश्वर का सर्वाधिक ज्ञान होने के बीच कोई टकराव नहीं है; दोनों बातों का एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है। परमेश्वर ने उदाहरण के रूप में पतरस का उल्लेख उस पर लोगों का ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से नहीं किया था। अय्यूब जैसा व्यक्ति परमेश्वर को क्यों नहीं जान पाया, जबकि पतरस जान गया? परमेश्वर ऐसा क्यों कहेगा कि इंसान इसे प्राप्त कर सकता है, पर यह भी कहेगा है कि यह उसके महान सामर्थ्य के कारण है? क्या लोग सचमुच स्वाभाविक रूप से अच्छे होते हैं? यह जानना लोगों के लिए आसान नहीं है; यदि मैं इसके बारे में न कहूँ तो किसी को भी इसके आंतरिक अर्थ का बोध नहीं होगा। इन वचनों का उद्देश्य लोगों को एक अंतर्दृष्टि देना है, ताकि उनके अंदर परमेश्वर से सहयोग करने का विश्वास पैदा हो सके। तभी परमेश्वर मनुष्य के सहयोग से कार्य कर सकता है। ऐसी है आध्यात्मिक क्षेत्र की वास्तविक स्थिति, और यह मनुष्य के लिए पूर्णतः अज्ञेय है। लोगों के हृदय में शैतान का स्थान हटाना और वह स्थान परमेश्वर को देना—शैतान के आक्रमण को निष्प्रभावी करने का अर्थ यही है, और तभी कहा जा सकता है कि मसीह पृथ्वी पर उतर

आया है, तभी कहा जा सकता है कि पृथ्वी के राज्य मसीह का राज्य बन गए हैं।

इस मुकाम पर, पतरस के कई हज़ार वर्षों से आदर्श और प्रतिमान होने की बात कहने का अर्थ मात्र यह कहना नहीं है कि वह आदर्श और प्रतिमान था; ये बातें आध्यात्मिक क्षेत्र में छिड़े संग्राम की झलक हैं। शैतान इस पूरे समय मनुष्य का भक्षण करने की झूठी आशा के साथ उसमें कार्य करता रहा है, ताकि इसके फलस्वरूप परमेश्वर को अपना संसार नष्ट करना पड़े और अपनी गवाहियाँ गँवानी पड़ें। उसके बावजूद परमेश्वर ने कहा है, "मैं पहले एक आदर्श की रचना करूँगा ताकि मैं मानव-हृदय में छोटे से छोटा स्थान प्राप्त कर सकूँ। इस चरण में, इंसान न तो मुझे खुश करता है और न ही पूर्णतः जानता है; फिर भी, मेरे महान सामर्थ्य के कारण, लोग मेरे समक्ष पूरी तरह से समर्पण और मेरे विरुद्ध विद्रोह करना छोड़ देंगे, और मैं शैतान को परास्त करने के लिए इस उदाहरण का उपयोग करूँगा। कहने का तात्पर्य यह कि मानव-हृदय के जिस 0.1 प्रतिशत पर मेरा अधिकार है उसका इस्तेमाल मैं उन समस्त शक्तियों को कुचलने के लिए करूँगा जो शैतान द्वारा मानवजाति के ऊपर प्रयुक्त की जाती रही हैं।" इसलिए आज परमेश्वर उदाहरण के रूप में पतरस का उल्लेख करता है ताकि वह समस्त मानवजाति द्वारा अनुकरण और अभ्यास के लिए साँचे का काम कर सके। आरंभिक अंश के साथ, यह आध्यात्मिक क्षेत्र की स्थिति के बारे में परमेश्वर ने जो कहा है उसकी सच्चाई दिखलाता है : "आज का समय अतीत की तरह नहीं है : मैं ऐसी चीज़ें करूँगा जिन्हें सृष्टि की रचना के समय से कभी नहीं देखा गया है, मैं उन वचनों को बोलने वाला हूँ जिन्हें तमाम युगों के दौरान कभी भी नहीं सुना गया है, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सभी लोग मुझे देह में पहचानें।" इससे यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने आज अपने वचनों पर कार्य करना आरंभ कर दिया है। लोग केवल वही देख सकते हैं जो बाहर हो रहा है, वे वह नहीं देख सकते जो वास्तव में आध्यात्मिक क्षेत्र में चल रहा है, और इसलिए परमेश्वर सीधे-सीधे कहता है, "ये मेरे प्रबंधन के चरण हैं, जिनके बारे में मनुष्य को हल्का -सा भी आभास नहीं है। भले ही मैंने स्पष्टता से बोला है लेकिन लोग अभी भी भ्रमित हैं; उन्हें समझाना मुश्किल है। क्या यह मनुष्य की नीचता नहीं है?" इन वचनों के भीतर वचन हैं : वे स्पष्ट करते हैं कि आध्यात्मिक क्षेत्र में सँग्राम छिड़ा है, ठीक वैसे ही जैसे ऊपर वर्णित है।

संक्षेप में पतरस की कहानी बताने के बाद परमेश्वर की इच्छा पूर्णतः पूरी नहीं हुई है, इसलिए परमेश्वर पतरस के मामलों में मनुष्य से निम्न अपेक्षाएँ करता है : "संपूर्ण ब्रह्माण्ड और नभमंडल में, स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीज़ों में, स्वर्ग और पृथ्वी पर की सभी चीज़ें मेरे कार्य के अंतिम भाग के लिए अपने अंतिम प्रयास

को लगा देती हैं। निश्चित ही तुम लोग शैतान की शक्तियों के द्वारा आदेश पाते हुए, एक किनारे पर दर्शक बने रहना नहीं चाहते?" पतरस के ज्ञान के बारे में पढ़ने के बाद लोग पूर्णतया प्रबुद्ध हो जाते हैं, और इससे भी अधिक प्रभावी होने के उद्देश्य से, परमेश्वर लोगों को उनकी लंपटता, असंयम, और परमेश्वर के ज्ञान के अभाव का परिणाम दिखाता है; इतना ही नहीं, वह लोगों को फिर से और अधिक सटीकता से बताता है कि आध्यात्मिक क्षेत्र के सँग्राम में वास्तव में क्या हो रहा है। इसी प्रकार से लोग शैतान के हाथों हड़प लिए जाने के विरुद्ध अधिक चौकन्ने हो जाते हैं। यही नहीं, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि इस बार लोगों का पतन हुआ, तो परमेश्वर उन्हें नहीं बचाएगा जैसे वे इस बार बचाए गए थे। सम्मिलित रूप से, ये चेतावनियाँ लोगों पर परमेश्वर के वचनों की छाप को और गहरा कर देती हैं, इससे लोग परमेश्वर की दया को और भी अधिक सँजोते हैं, और परमेश्वर की चेतावनी के वचनों को संभालकर रखते हैं, ताकि इंसान को बचाने का परमेश्वर का लक्ष्य सच्चे अर्थों में पूरा हो सके।

पतरस के जीवन पर

पतरस मानवता के लिए परमेश्वर का एक अनुकरणीय उदाहरण था, एक दिग्गज, जिसे सब जानते थे। किसलिए उस जैसे साधारण व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा उदाहरण के रूप में उभारा गया, और आने वाली पीढ़ियों द्वारा उसकी प्रशंसा की गई? स्पष्टत: ये परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति और संकल्प से अलग नहीं है। परमेश्वर के लिए प्रेम से भरा पतरस का हृदय किस तरह अभिव्यक्त हुआ, और उसके जीवन के अनुभव वास्तव में कैसे थे, यह जानने के लिए हमें अनुग्रह के युग में लौटकर उस समय के रीति-रिवाजों और उस युग के पतरस को दोबारा देखना होगा।

पतरस का जन्म एक साधारण यहूदी किसान-परिवार में हुआ था। उसके माता-पिता खेती करके पूरे परिवार का भरण-पोषण करते थे, और वह चार भाई-बहनों में सबसे बड़ा था। जाहिर है, यह हमारी कहानी का मुख्य भाग नहीं है; पतरस हमारा केंद्रीय पात्र है। जब वह पाँच वर्ष का था, उसके माता-पिता ने उसे पढ़ना-लिखना सिखाना आरंभ कर दिया। उस समय यहूदी लोग ज्ञानी हुआ करते थे; कृषि, उद्योग और वाणिज्य जैसे क्षेत्रों में तो वे खास तौर से उन्नत थे। अपने सामाजिक वातावरण के परिणामस्वरूप पतरस के माता और पिता, दोनों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। ग्रामीण क्षेत्र से होने के बावजूद वे सुशिक्षित थे और उनकी तुलना आज के औसत विश्वविद्यालयी छात्रों से की जा सकती थी। निस्संदेह पतरस भाग्यशाली

था कि उसका जन्म ऐसी अनुकूल सामाजिक परिस्थितियों में हुआ था। समझ से चतुर और बुद्धिमान होने के कारण वह नए विचारों को आसानी से आत्मसात कर लेता था। अपनी पढ़ाई शुरू करने के बाद वह पाठों के दौरान चीज़ों को बहुत आसानी से समझ लेता था। उसके माता-पिता को ऐसा तीव्रबुद्धि पुत्र पाने पर गर्व था, इसलिए उन्होंने इस आशा के साथ उसे विद्यालय भेजने का हर प्रयास किया कि वह आगे बढ़ सके और समाज में किसी प्रकार का कोई आधिकारिक पद प्राप्त करने योग्य हो जाए। अनजाने में पतरस को परमेश्वर में रुचि हो गई, जिसका नतीजा यह हुआ कि चौदह वर्ष की उम्र में जब वह हाई स्कूल में था, तो जिस प्राचीन यूनानी संस्कृति के पाठ्यक्रम का वह अध्ययन कर रहा था, उससे वह ऊब गया, खासकर प्राचीन यूनानी इतिहास के काल्पनिक लोगों और मनगढ़ंत घटनाओं से। तब से पतरस ने—जिसने अपनी युवावस्था के बसंत में प्रवेश किया ही था—मानव-जीवन और व्यापक दुनिया के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करनी शुरू कर दी। उसके विवेक ने उसे अपने माता-पिता द्वारा उठाई गई तकलीफों का बदला चुकाने के लिए मजबूर नहीं किया, क्योंकि उसने स्पष्ट रूप से देख लिया था कि समस्त लोग आत्म-वंचना की स्थिति में निरर्थक जीवन जी रहे हैं, धन तथा मान्यता के लिए संघर्ष करते हुए अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। उसकी इस अंतर्दृष्टि का मुख्य कारण वह सामाजिक वातावरण था, जिसमें वह रह रहा था। लोगों के पास जितना अधिक ज्ञान होता है, उनके आपसी संबंध उतने ही जटिल होते हैं, उनकी भीतरी दुनिया उतनी ही पेचीदा होती है, इस कारण वे रिक्तता में जीते हैं। इन परिस्थितियों में पतरस ने अपना खाली समय व्यापक मुलाकातों में बिताया, जिनमें से अधिकांश धार्मिक हस्तियों से मिलने के लिए थीं। उसके हृदय में एक अस्पष्ट-सी भावना मौजूद लगती थी कि धर्म मानव-संसार की सभी गूढ़ बातों का समाधान कर सकता है, इसलिए वह अकसर धार्मिक सभाओं में भाग लेने के लिए नजदीकी उपासनागृह में जाता था। उसके माता-पिता इस बात से अनजान थे, और जल्दी ही पतरस, जो हमेशा से अच्छे चरित्र वाला था और बेहतरीन विद्वत्ता युक्त था, विद्यालय जाने से नफरत करने लगा। अपने माता-पिता की देखरेख में उसने बड़ी कठिनाई से हाई स्कूल पास किया। वह ज्ञान के सागर से तैरकर तट पर आ गया, एक गहरी साँस ली, और तब से उसे किसी ने शिक्षा नहीं दी और न ही उसे रोका।

विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसने सभी प्रकार की पुस्तकें पढ़नी आरंभ कर दीं, परंतु सत्रह वर्ष की आयु में उसे अभी भी व्यापक दुनिया का ज्यादा अनुभव नहीं था। विद्यालय छोड़ने के बाद उसने खेती करके अपना भरण-पोषण किया और ज्यादा से ज्यादा समय पुस्तकें पढ़ने तथा धार्मिक सभाओं में

भाग लेने के लिए निकालने लगा। उसके माता-पिता, जिन्हें उससे बहुत उम्मीदें थीं, अपने "विद्रोही पुत्र" के लिए अकसर स्वर्ग को कोसा करते थे, पर यह भी धार्मिकता की खातिर उसकी भूख और प्यास के मार्ग में बाधक नहीं बन सका। पतरस को अपने अनुभवों में कम असफलताओं का सामना नहीं करना पड़ा, लेकिन उसका हृदय कभी तृप्त न होने वाला था, और वह बारिश के बाद घास की तरह बढ़ गया। जल्दी ही उसे धार्मिक दुनिया की कुछ वरिष्ठ हस्तियों से भेंट करने का "सौभाग्य" प्राप्त हुआ, और चूँकि उसकी लालसा बहुत सशक्त थी, इसलिए उसने उनसे बारंबार मिलना शुरू कर दिया, फिर तो वह अपना लगभग सारा समय उन्हीं के बीच गुजारने लगा। संतुष्टिदायक प्रसन्नता में डूबे हुए उसे अचानक एहसास हुआ कि उनमें से अधिकतर लोगों का विश्वास मात्र उनकी बातों तक सीमित था, उनमें से किसी ने अपने विश्वास के प्रति अपना हृदय समर्पित नहीं किया था। ईमानदार और शुद्ध आत्मा वाला पतरस, ऐसा आघात भला कैसे सह सकता था? उसने महसूस किया कि जितने भी लोगों से वह जुड़ा था, उनमें से लगभग सभी आदमी के भेष में जानवर थे—वे मनुष्य की मुखाकृति वाले पशु थे। उस समय पतरस बहुत ही भोला था, अत: अनेक अवसरों पर उसने उनसे हृदय से विनती की। लेकिन वे धूर्त, चालाक धार्मिक शख्सियतें, इस जोशीले युवक की विनती कैसे सुन सकती थीं? यही वह समय था, जब पतरस ने मानव-जीवन के वास्तविक खालीपन को अनुभव किया : जीवन के चरण के पहले कदम पर वह असफल हो गया था...। एक साल के बाद वह उपासनागृह से निकल गया और स्वतंत्र जीवन जीने लगा।

इस असफलता ने 18-वर्षीय पतरस को कहीं अधिक परिपक्व और परिष्कृत बना दिया। अब उसमें युवावस्था के भोलेपन का कोई निशान बाकी नहीं रहा; असफलता ने उसकी युवावस्था की मासूमियत और सादगी का बेदर्दी से गला घोंट दिया, और उसने एक मछुआरे का जीवन जीना आरंभ कर दिया। इसके बाद लोगों को उन उपदेशों को सुनते हुए देखा जा सकता था जो पतरस अपनी नाव पर दिया करता था। मछुआरे की जिंदगी अपनाने के बाद वह जहाँ भी जाता, वहीं अपना संदेश फैलाता। उसके उपदेश श्रोताओं का ध्यान पूरी तरह से अपनी ओर खींच लेते, क्योंकि जो-कुछ भी वह कहता था, उससे आम लोगों के दिलों के तार झनझना उठते, और वे उसकी ईमानदारी से अत्यधिक द्रवित हो उठते थे। वह अकसर लोगों को दूसरों के साथ दिल से व्यवहार करने, स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों के प्रभुत्व का आह्वान करने, और अपने विवेक की अनदेखी कर शर्मनाक काम न करने, और सभी मामलों में उस परमेश्वर को संतुष्ट करने की सीख देता था जिसे वे दिल से प्यार करते थे...। उसके प्रवचन सुनकर लोग अकसर

अत्यधिक द्रवित हो जाते; वे सब उससे प्रेरित अनुभव करते और अकसर उनकी आँखों में आँसू आ जाते। उस दौरान उसके सभी अनुयायी उसकी बहुत प्रशंसा करते। वे सभी दीन-हीन थे, और समाज की तत्कालीन स्थिति को देखते हुए, स्वाभाविक रूप से संख्या में बहुत कम थे। पतरस को भी उस समय समाज के धार्मिक तत्वों द्वारा सताया गया था, जिसके परिणामस्वरूप उसे दो साल तक एक जगह से दूसरी जगह जाते हुए एकाकी जीवन जीना पड़ा। उन दो वर्षों के असाधारण अनुभवों से उसने काफी परिज्ञान प्राप्त कर लिया और ऐसी अनेक बातें सीख लीं, जिन्हें वह पहले नहीं जानता था। परिणामस्वरूप अब वह अपने 14-वर्षीय स्वरूप से बिलकुल भिन्न हो गया; दोनों में अब कोई समानता प्रतीत नहीं होती थी। इन दो वर्षों में उसका सभी प्रकार के लोगों से सामना हुआ और उसने समाज के बारे में सभी प्रकार की सच्चाइयाँ देखीं, जिसके परिणामस्वरूप उसने धीरे-धीरे धार्मिक दुनिया के सभी तरह के कर्मकांडों से खुद को दूर करना शुरू कर दिया। वह उस समय पवित्र आत्मा के कार्य के विकास से गहरा प्रभावित था; उस समय तक यीशु को काम करते हुए कई साल हो गए थे, इसलिए पतरस का काम भी उस समय पवित्र आत्मा के काम से प्रभावित था, हालाँकि अभी तक यीशु से उसकी भेंट नहीं हुई थी। इस कारण से, जब पतरस प्रचार कर रहा था, तब उसे कई ऐसी चीजें प्राप्त हुईं, जो संतों की पिछली पीढ़ियों के पास कभी नहीं प्राप्त हुईं थीं। निस्संदेह तब वह यीशु के विषय में थोड़ा-बहुत जानता था, परंतु उसे अभी तक यीशु से आमने-सामने मिलने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। उसे केवल पवित्र आत्मा से जन्मी उस स्वर्गिक हस्ती से मिलने की आशा और लालसा थी।

एक शाम गोधूलि के समय पतरस अपनी नाव पर सवार होकर मछलियाँ पकड़ रहा था (उस समय गलील के नाम से जाने जानेवाले समुद्र के तट के निकट)। उसके हाथों में मछली पकड़ने की बंसी थी, लेकिन उसके मन में दूसरी ही बातें चल रही थीं। अस्त होते सूरज ने पानी की सतह को रक्त के एक विशाल महासागर की तरह रोशन कर दिया था। रोशनी पतरस के युवा किंतु शांत और स्थिर मुखमंडल पर प्रतिबिंबित हो रही थी; ऐसा लगता था, मानो वह गहरे सोच में हो। उसी क्षण मंद हवा चली, और उसे अचानक अपने जीवन के अकेलेपन का अनुभव हुआ, जिसने उसे तुरंत अवसाद की भावना से भर दिया। जैसे-जैसे समुद्र की लहरें प्रकाश में चमक रही थीं, यह स्पष्ट होता गया कि उसका मछली पकड़ने का मन नहीं है। जब वह विचारों में खोया हुआ था, तभी अचानक उसने अपने पीछे से किसी को कहते हुए सुना : "यहूदी शमौन, योना के पुत्र, तुम्हारे जीवन के दिन एकाकी हैं। क्या तुम मेरा अनुगमन करोगे?" भौंचक्के

पतरस के हाथों से मछली पकड़ने की बंसी एकदम से छूट गई और समुद्र के तल में जा समाई। पतरस ने जल्दी से मुड़कर देखा कि एक व्यक्ति उसकी नाव में खड़ा है। उसने उसे ऊपर से नीचे तक देखा : कंधों पर लटकते हुए उसके बाल सूर्य के प्रकाश में थोड़े सुनहरे पीले रंग के नजर आ रहे थे। मझौले कद के उस व्यक्ति ने स्लेटी रंग के कपड़े पहने थे और सिर से पैर तक उसका पहनावा एक यहूदी व्यक्ति का-सा था। लुप्त होती रोशनी में उसके स्लेटी कपड़े थोड़े काले दिख रहे थे, और उसके चेहरे पर हलकी-सी चमक दिखाई दे रही थी। पतरस ने कई बार यीशु से मिलने की कामना की थी, लेकिन कभी सफल नहीं हुआ था। उस क्षण अपनी आत्मा की गहराई में पतरस को विश्वास हो गया कि वह व्यक्ति निश्चित रूप से वही पवित्र जन है, जो उसके हृदय में मौजूद है, इसलिए उसने अपनी नाव में ही उसे दंडवत् प्रणाम किया और बोला : "क्या तू वही प्रभु है, जो स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने आया है? मैंने तेरे अनुभवों के बारे में सुना है, परंतु मैंने तुझे कभी देखा नहीं था। मैं तेरा अनुगमन करना चाहता था, परंतु मैं तुझे खोज नहीं पाया।" तब तक यीशु उसकी नाव के केबिन में आ गया था और शांति से बैठ गया था। उसने कहा, "उठ और मेरे पास बैठ। मैं यहाँ उन्हें खोजने आया हूँ, जो वास्तव में मुझसे प्रेम करते हैं। मैं विशेष रूप से स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैलाने आया हूँ, और मैं उन्हें खोजने के लिए प्रत्येक स्थान पर जाऊँगा, जो मेरे साथ एक मन के हैं। क्या तू इच्छुक है?" पतरस ने उत्तर दिया, "मुझे अवश्य ही उसका अनुगमन करना है, जिसे स्वर्गिक पिता द्वारा भेजा गया है। मुझे अवश्य ही उसे अंगीकार करना है, जिसे पवित्र आत्मा द्वारा चुना गया है। चूँकि मैं स्वर्गिक पिता से प्रेम करता हूँ, मैं तेरा अनुगमन करने का इच्छुक क्यों नहीं होऊँगा?" यद्यपि पतरस के शब्दों में धार्मिक धारणाएँ बहुत ही सशक्त थीं, फिर भी यीशु मुस्कुराया और उसने संतोषपूर्वक अपना सिर हिलाया। उस क्षण उसके भीतर पतरस के लिए पितासदृश प्रेम की भावना उत्पन्न हो गई।

पतरस ने कई वर्षों तक यीशु का अनुगमन किया और उसमें कई बातें ऐसी देखीं, जो औरों में नहीं थीं। एक वर्ष तक अपना अनुगमन करने के पश्चात् यीशु ने उसे बारह शिष्यों में से एक चुना। (निस्संदेह यीशु ने इसे जोर से नहीं बोला और दूसरे इससे बिलकुल अनजान थे।) जीवन में, पतरस ने यीशु द्वारा की गई हर चीज से खुद को मापा। सबसे बढ़कर, यीशु ने जिन संदेशों का प्रचार किया, वे उसके हृदय में अंकित हो गए। वह यीशु के प्रति अत्यधिक समर्पित और वफादार था, और उसने यीशु के खिलाफ कभी कोई शिकायत नहीं की। परिणामस्वरूप जहाँ कहीं यीशु गया, वह यीशु का विश्वसनीय साथी बन गया।

पतरस ने यीशु की शिक्षाओं, उसके नम्र शब्दों, उसके भोजन, उसके कपड़ों, उसके आश्रय और उसकी यात्राओं पर ग़ौर किया। उसने हर मामले में यीशु का अनुकरण किया। वह कभी पाखंडी नहीं था, लेकिन फिर भी उसने वह सब त्याग दिया, जो पुराना था और कथनी और करनी दोनों से यीशु के उदाहरण का अनुगमन किया। तभी उसे अनुभव हुआ कि आकाश और पृथ्वी और सभी वस्तुएँ सर्वशक्तिमान के हाथों में हैं, और इस कारण उसकी अपनी कोई व्यक्तिगत पसंद नहीं थी। उसने यीशु को पूर्णरूपेण आत्मसात कर लिया और उसे उदाहरण की तरह इस्तेमाल किया। यीशु का जीवन दर्शाता है कि उसने जो कुछ किया, वह पाखंडी नहीं था; अपने बारे में डींगें मारने के बजाय उसने प्रेम से लोगों को प्रभावित किया। विभिन्न चीजों ने दिखाया कि यीशु क्या था, और इस कारण से पतरस ने उसकी हर बात का अनुकरण किया। पतरस के अनुभवों ने उसे यीशु की मनोरमता का अधिकाधिक बोध कराया और उसने इस तरह की बातें कहीं : "मैंने पूरे ब्रह्मांड में सर्वशक्तिमान की खोज की है और आकाश, पृथ्वी और सभी चीजों के आश्चर्यों को देखा है, और इस प्रकार मैंने सर्वशक्तिमान की मनोरमता का गहरा अनुभव प्राप्त किया है। परंतु इस पर भी मेरे हृदय में वास्तविक प्रेम कदापि नहीं था और मैंने अपनी आँखों से सर्वशक्तिमान की मनोरमता को कभी नहीं देखा था। आज सर्वशक्तिमान की दृष्टि में मुझे उसके द्वारा कृपापूर्वक देखा गया है, और मैंने अंतत: परमेश्वर की मनोरमता का अनुभव कर लिया है। मैंने अंतत: जान लिया है कि मानव-जाति सिर्फ इसलिए परमेश्वर से प्रेम नहीं करती, क्योंकि उसने सब चीजें बनाई हैं, बल्कि अपने दैनिक जीवन में मैंने उसकी असीम मनोरमता पाई है। यह भला उस स्थिति तक सीमित कैसे हो सकती है, जो अभी दिखाई पड़ रही है?" जैसे-जैसे समय बीता, पतरस में भी बहुत-सी मनोहर बातें आती गईं। वह यीशु के प्रति बहुत आज्ञाकारी हो गया, और निस्संदेह उसे अनेक विघ्नों का भी सामना करना पड़ा। जब यीशु उसे विभिन्न स्थानों पर प्रचार करने के लिए ले गया, तो उसने सदैव विनम्र होकर यीशु के उपदेशों को सुना। वर्षों से यीशु का अनुगमन करने के कारण वह कभी अहंकारी नहीं हुआ। यीशु द्वारा यह बताए जाने के बाद कि उसके आने का कारण क्रूस पर चढ़ाया जाना है, ताकि वह अपना कार्य पूरा कर सके, पतरस अकसर अपने दिल में पीड़ा अनुभव करता और एकांत में छुपकर रोया करता। फिर भी, आखिरकार वह "दुर्भाग्यपूर्ण" दिन आ ही गया। यीशु के पकड़े जाने के बाद पतरस अपनी मछली पकड़ने की नाव में अकेले रोता रहा और उसके लिए बहुत प्रार्थनाएँ कीं। परंतु अपने हृदय में वह जानता था कि यह पिता परमेश्वर की इच्छा है और इसे कोई नहीं बदल सकता। यीशु के प्रति अपने प्रेम के कारण ही वह दुखी

होकर रोता रहा था। निस्संदेह यह मानवीय दुर्बलता है। अत: जब उसे ज्ञात हुआ कि यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया जाएगा, उसने यीशु से पूछा : "अपने जाने के बाद क्या तू हमारे बीच लौटेगा और हमारी देखभाल करेगा? क्या हम फिर भी तुझे देख पाएँगे?" हालाँकि ये शब्द बहुत सीधे-सादे और मानवीय धारणाओं से भरे थे, पर यीशु पतरस की पीड़ा की कड़वाहट के बारे में जानता था, अत: अपने प्रेम के द्वारा उसने उसकी दुर्बलता को ध्यान में रखा : "पतरस, मैंने तुझसे प्रेम किया है। क्या तू यह जानता है? हालाँकि तू जो कहता है, उसका कोई कारण नहीं है, फिर भी, पिता ने वादा किया है कि अपने पुनरुत्थान के बाद मैं 40 दिनों तक लोगों को दिखाई दूँगा। क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मेरा आत्मा तुम लोगों पर निरंतर अनुग्रह करता रहेगा?" हालाँकि इससे पतरस को कुछ सुकून मिला, फिर भी उसने महसूस किया कि किसी चीज की कमी है, और इसलिए, पुनरुत्थान के बाद, यीशु पहली बार खुले तौर पर उसके सामने आया। किंतु पतरस को अपनी धारणाओं से चिपके रहने से रोकने के लिए यीशु ने उस भव्य भोजन को अस्वीकार कर दिया, जो पतरस ने उसके लिए तैयार किया था, और पलक झपकते ही गायब हो गया। उस क्षण से पतरस को प्रभु यीशु की गहन समझ प्राप्त हुई, और वह उससे और अधिक प्रेम करने लगा। पुनरुत्थान के बाद यीशु अकसर पतरस के सामने आया। चालीस दिन पूरे होने पर स्वर्गारोहण करने के बाद वह पतरस को तीन बार और दिखाई दिया। हर बार जब वह दिखाई दिया, तब पवित्र आत्मा का कार्य पूर्ण होने वाला और नया कार्य आरंभ होने वाला था।

अपने पूरे जीवन में पतरस ने मछलियाँ पकड़कर अपना जीवनयापन किया, परंतु इससे भी अधिक वह सुसमाचार के प्रचार के लिए जीया। अपने बाद के वर्षों में उसने पतरस की पहली और दूसरी पत्री लिखी, साथ ही उसने उस समय के फिलाडेल्फिया की कलीसिया को कई पत्र भी लिखे। उस समय के लोग उससे बहुत प्रभावित थे। लोगों को अपनी खुद की साख का इस्तेमाल करके उपदेश देने के बजाय उसने उन्हें जीवन की उपयुक्त आपूर्ति उपलब्ध करवाई। वह जीते-जी कभी यीशु की शिक्षाओं को नहीं भूला और जीवनभर उनसे प्रेरित रहा। यीशु का अनुगमन करते हुए उसने प्रभु के प्रेम का बदला अपनी मृत्यु से चुकाने और सभी चीजों में उसके उदाहरण का अनुसरण करने का संकल्प लिया था। यीशु ने इसे स्वीकार कर लिया, इसलिए जब पतरस 53 वर्ष का था (यीशु के जाने के 20 से अधिक वर्षों के बाद), तो यीशु उसकी आकांक्षा की पूर्ति में मदद करने के लिए उसके सामने प्रकट हुआ। उसके बाद के सात वर्षों में पतरस ने अपना जीवन स्वयं को जानने में व्यतीत किया। इन सात वर्षों के पश्चात एक दिन उसे उलटा

क्रूस पर चढ़ा दिया गया और इस तरह उसके असाधारण जीवन का अंत हो गया।

अध्याय 8

जब परमेश्वर आत्मा के परिप्रेक्ष्य से बोलता है, तो उसका स्वर समस्त मानवजाति पर निर्देशित होता है। जब परमेश्वर मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से बोलता है, तो उसका स्वर उन सभी पर निर्देशित होता है, जो उसके आत्मा के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हैं। जब परमेश्वर तीसरे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से (जिसे लोग एक पर्यवेक्षक के दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित करते हैं) बोलता है, तो वह लोगों को अपने वचन प्रत्यक्ष रूप से दिखाता है, ताकि लोग उसे एक टीकाकार के रूप में देख सकें, और उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि उसके मुँह से ऐसी अनंत चीजें निकलती हैं, जिनका मनुष्यों को कोई ज्ञान नहीं है और जिनकी वे थाह नहीं पा सकते। क्या ऐसा नहीं है? जब परमेश्वर आत्मा के परिप्रेक्ष्य से बोलता है, तो संपूर्ण मानवजाति चकित हो जाती है। "मेरे प्रति मनुष्य का प्रेम बहुत कम है, और मुझमें उनकी आस्था दयनीय रूप से थोड़ी है। यदि मैं लोगों की कमज़ोरियों पर अपने वचनों से चोट न करता, तो वे शेखी बघारते और लंबी-चौड़ी हाँकते, सिद्धांतवादी बातें करते और आडंबरपूर्ण सिद्धांत बनाते, मानो वे सांसारिक मामलों के संबंध में सर्वदर्शी और सर्वज्ञ हों।" ये वचन न केवल मनुष्यों को उस रूप में प्रकट करते हैं, जैसे वे वास्तव में हैं, और मनुष्यों के हृदयों में जो स्थिति परमेश्वर की है, उसे दर्शाते हैं, बल्कि वे मानवजाति के पूरे जीवन को उजागर भी कर देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति यह विश्वास करता है कि वह असाधारण है, जबकि वह यह भी नहीं जानता कि "परमेश्वर" जैसा कोई शब्द भी है। इसलिए वे आडंबरपूर्ण सिद्धांतों को गढ़ते हैं। हालाँकि, यह "आडंबरपूर्ण सिद्धांतों को गढ़ना" इस अर्थ में "बोलना" नहीं है कि लोग इसे समझते हैं। बल्कि इसका अर्थ है कि मनुष्यों को शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है। वे जो कुछ भी करते हैं, जो भी कदम उठाते हैं, वह परमेश्वर के विपरीत होता है और सीधे उसका विरोध करता है, और उनके कार्यों का सार शैतान से आता है और वह परमेश्वर के विरोध में होता है, और उसका उद्देश्य परमेश्वर की इच्छा के विपरीत स्वतंत्रता प्राप्त करना है। इसीलिए परमेश्वर कहता है कि सभी मनुष्य आडंबरपूर्ण सिद्धांतों को गढ़ते हैं। क्यों परमेश्वर यह कहता है कि उसके वचनों की चोट मनुष्य की कमजोरियों पर निर्देशित है? वह इसलिए, क्योंकि अपने इरादे के अनुसार यदि परमेश्वर लोगों के हृदय में गहरे छिपी चीजों को प्रकट नहीं करता, तो कोई भी समर्पण नहीं करेगा; इस तरह लोग स्वयं को नहीं समझेंगे और परमेश्वर पर श्रद्धा नहीं रखेंगे। दूसरे शब्दों में, यदि लोगों

के इरादों को उजागर नहीं किया जाता, तो वे कुछ भी करने का साहस करेंगे, यहाँ तक कि शायद स्वर्ग को या परमेश्वर को सीधे शाप भी देंगे। ये मनुष्य की कमजोरियाँ हैं। इसलिए परमेश्वर कहता है : "मैं ब्रह्माण्ड जगत के सभी कोनों की यात्रा करता हूँ, उन लोगों की अनवरत खोज में जो मेरे अभिप्रायों से मेल खाते हों और मेरे उपयोग के लिए सही बैठते हों।" यह वक्तव्य, औपचारिक रूप से बजने वाली राज्य की सलामी के बारे में जो बाद में कहा गया है, उसके साथ मिलकर, यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का आत्मा पृथ्वी पर नए कार्य में लगा हुआ है; बस मनुष्य अपनी दैहिक आँखों इसे देख नहीं सकते। चूँकि यह कहा जाता है कि पवित्रात्मा धरती पर नया काम कर रहा है, इसलिए संपूर्ण ब्रह्मांडीय विश्व भी आवश्यक परिवर्तन से गुजरता है : परमेश्वर के पुत्र और परमेश्वर के लोग परमेश्वर के देहधारण की गवाही देना स्वीकार करना शुरू करते हैं, किंतु इससे भी बढ़कर, हर धर्म और हर संप्रदाय, जीवन का हर क्षेत्र और स्थान भी अलग-अलग मात्रा में इसे स्वीकार करते हैं। यह आध्यात्मिक क्षेत्र में ब्रह्मांडीय दुनिया की एक महान हलचल है। यह संपूर्ण धार्मिक दुनिया को उसके मर्म तक हिला देती है, जो कि अंशत: वह है, जिसे पूर्व में उल्लिखित "भूकंप" संदर्भित करता है। इसके बाद, स्वर्गदूत औपचारिक रूप से अपना कार्य शुरू करते हैं और इस्राएल के लोग अपने घर लौट जाते हैं और फिर कभी नहीं भटकते, और शामिल किए गए सभी लोग चरवाही किया जाना स्वीकार करते हैं। इसके विपरीत, मिस्र के लोग मेरे द्वारा उद्धार के दायरे से दूर होना शुरू कर देते हैं, अर्थात्, वे मेरी ताड़ना प्राप्त करते हैं (किंतु वह अभी औपचारिक रूप से शुरू नहीं हुई है)। इसलिए जब दुनिया एक-साथ इन कई बड़े परिवर्तनों से गुजरती है, तो यह वह समय भी होता है, जब राज्य की सलामी औपचारिक रूप से बजती है, जिसके बारे में लोगों ने कहा है कि यह "वह समय है जब सात गुना तेज़ पवित्रात्मा कार्य करना आरंभ करता है"। हर बार जब परमेश्वर बहाली का कार्य करता है, तो इन चरणों में (या इन संक्रमणकालीन अवधियों में) कोई भी पवित्र आत्मा के कार्य को समझने में समर्थ नहीं होता। इसलिए, परमेश्वर के वचन कि "जब मनुष्य आशा खो देता है" सत्य प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त, संक्रमण के इन चरणों में से प्रत्येक चरण में, जब मनुष्य आशा खो देते हैं, या जब वे महसूस करते हैं कि यह धारा गलत है, तो परमेश्वर नए सिरे से शुरू करता है और अपने कार्य का अगला कदम उठाता है। सृष्टि की रचना के समय से लेकर अब तक परमेश्वर ने इसी ढंग से अपने कार्य की बहाली की है और अपने कार्य के तरीके बदले हैं। हालाँकि अधिकतर लोग अलग-अलग मात्रा में इस कार्य के कुछ पहलुओं को समझ सकते हैं, फिर भी अंत में वे पानी की एक धार में बह जाते हैं, क्योंकि उनकी

कद-काठी बहुत छोटी है; वे परमेश्वर के कार्य के कदमों को समझने में असमर्थ हैं, और इसलिए वे मिटा दिए जाते हैं। हालाँकि, इस तरह परमेश्वर लोगों को शुद्ध भी करता है, और यह मानव-जाति की पुरानी धारणाओं के प्रति परमेश्वर का न्याय है। लोगों का आधार जितना अधिक होता है, परमेश्वर के बारे में उनकी उतनी ही बड़ी धार्मिक धारणाएँ होती है, जिन्हें अलग रखना उनके लिए कठिन होता है; वे हमेशा पुरानी चीजों से चिपके रहते हैं, और नए प्रकाश को स्वीकार करना उनके लिए कठिन होता है। दूसरी ओर, यदि व्यक्ति खड़ा है, तो उसके पास खड़ा होने के लिए कोई आधार होना चाहिए, किंतु फिर भी अधिकांश लोगों को अपनी धारणाएँ छोड़ने में परेशानी होती है। यह आज के देहधारी परमेश्वर के संबंध में उनकी धारणाओं के बारे में विशेष रूप से सच है, जो देखने में स्पष्ट है।

आज के वचनों में परमेश्वर दर्शनों के बारे में बहुत बोलता है, और इसके बारे में विस्तार से कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर मुख्य रूप से यह कहता है कि कैसे कलीसिया का निर्माण करना राज्य का निर्माण करने की नींव डालता है। विशेष रूप से, जब कलीसिया का निर्माण किया जा रहा था, तो मुख्य लक्ष्य लोगों को दिल और वचन दोनों में कायल करना था, यद्यपि उन्होंने देहधारी परमेश्वर को अपनी स्वयं की आँखों से नहीं देखा था। भले ही वे अपने हृदय में विश्वास रखते थे, किंतु वे देहधारी परमेश्वर को नहीं जानते थे, क्योंकि उस चरण में वह किसी व्यक्ति से अलग नहीं समझा जा सकता था। राज्य के युग में सभी को अपने हृदयों, अपने भाषण और अपनी आँखों में दृढ़ विश्वास दर्शाना चाहिए। यह ये दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि सभी के द्वारा अपने हृदयों, अपने भाषण और अपनी आँखों में दृढ़ विश्वास दर्शाए जाने के लिए उन्हें अपनी भौतिक आँखों से देह में रहने वाले परमेश्वर को जानने दिया जाना चाहिए, किसी दबाव में या केवल आकस्मिक विश्वास से नहीं, बल्कि ज्ञान से, जो उनके हृदय और मुख में दृढ़ विश्वास से आता है। इसलिए, निर्माण के इस चरण में कोई लड़ाई-झगड़ा या मारामारी नहीं है। इसके बजाय, लोगों को परमेश्वर के वचनों के माध्यम से प्रबुद्धता की ओर ले जाया जाएगा, और इसके माध्यम से वे अनुसरण और खोज कर सकते हैं, ताकि वे अवचेतन रूप से देहधारी परमेश्वर को जान जाएँ। इसलिए, परमेश्वर के लिए कार्य का यह चरण बहुत आसान है, क्योंकि यह प्रकृति को अपना कार्य करने देता है और मानवजाति के प्रतिकूल नहीं चलता। अंत में यह मनुष्यों को स्वाभाविक रूप से परमेश्वर को जानने की ओर ले जाएगा, इसलिए चिंता मत करो या व्याकुल मत हो। जब परमेश्वर ने कहा, "आध्यात्मिक क्षेत्र की लड़ाई की दशा-दिशा मेरे सभी लोगों के बीच प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट कर दी जाती है," तो उसका मतलब था कि जब लोग

सही रास्ते पर आते हैं और परमेश्वर को जानना शुरू करते हैं, तो न केवल प्रत्येक व्यक्ति को शैतान द्वारा भीतर से प्रलोभित किया जाता है, बल्कि उन्हें शैतान द्वारा स्वयं कलीसिया में भी प्रलोभित किया जा सकता है। फिर भी, यह वह रास्ता है, जिस पर हर व्यक्ति को चलना चाहिए, इसलिए किसी को भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। शैतान का प्रलोभन कई रूपों में आ सकता है। कोई व्यक्ति परमेश्वर द्वारा कही गई बातों की उपेक्षा या उनका त्याग कर सकता है, और अन्य लोगों की सकारात्मकता को कम करने के लिए नकारात्मक बातें कह सकता है; ऐसा व्यक्ति आम तौर पर अन्य लोगों को प्रभावित कर अपनी ओर नहीं ले जाएगा। इसे जानना मुश्किल है। इसका मुख्य कारण यह है : ऐसे व्यक्ति अभी भी सभाओं में भाग लेने में अग्रसक्रिय हो सकते हैं, किंतु वे दर्शनों के बारे में अस्पष्ट होते हैं। यदि कलीसिया उनसे सुरक्षा नहीं करती, तो पूरी कलीसिया उनकी नकारात्मकता से प्रभावित होकर परमेश्वर के प्रति बेमन से प्रतिक्रियाशील हो सकती है और इसके परिणामस्वरूप परमेश्वर के वचनों पर ध्यान देना बंद कर सकती है, और इसका अर्थ होगा सीधे शैतान के प्रलोभन में पड़ना। ऐसे व्यक्ति शायद प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह न करें, किंतु चूँकि वे परमेश्वर के वचनों की थाह नहीं पा सकते और परमेश्वर को नहीं जानते, इसलिए वे शिकायत करने या नाराजगी भरा दिल रखने तक जा सकते हैं। वे कह सकते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया है, इसलिए वे प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करने में अक्षम हैं। वे छोड़ना चाह सकते हैं, किंतु वे थोड़ा डरते हैं, और वे कह सकते हैं कि परमेश्वर का कार्य परमेश्वर से नहीं आता, बल्कि वह दुष्ट आत्माओं का कार्य है।

परमेश्वर इतनी बार पतरस का उल्लेख क्यों करता है? और वह क्यों कहता है कि अय्यूब भी उसकी बराबरी के करीब नहीं पहुँचता? ऐसा कहना लोगों को न केवल पतरस के कर्मों पर ध्यान दिलाता है, बल्कि उनसे उन सभी उदाहरणों को भी एक ओर रखवा देता है जो उनके हृदयों में होते हैं, यहाँ तक कि अय्यूब का उदाहरण भी—जिसमें सबसे अधिक विश्वास था—नहीं चलेगा। केवल इसी तरह से एक बेहतर परिणाम प्राप्त किया सकता है, जिसमें लोग पतरस का अनुकरण करने के प्रयास में सब-कुछ एक ओर रखने में सक्षम हो सकते हैं और और ऐसा करके परमेश्वर को जानने की दिशा में एक कदम और बढ़ा सकते हैं। परमेश्वर लोगों को अभ्यास का वह तरीका दर्शाता है, जिस पर परमेश्वर को जानने के लिए पतरस चला था, और ऐसा करने का लक्ष्य लोगों को संदर्भ का एक बिंदु देना है। फिर परमेश्वर यह कहकर उन तरीकों में से एक की भविष्यवाणी करता है, जिससे शैतान मनुष्यों को प्रलोभित करेगा, "परंतु यदि तुम

मेरे वचनों के प्रति उदासीन और बेपरवाह हो, तो तुम निस्संदेह मेरा विरोध करते हो। यह तथ्य है।" इन वचनों में परमेश्वर उन शातिर तरकीबों की भविष्यवाणी करता है, जिनका उपयोग करने का शैतान प्रयास करेगा; ये एक चेतावनी की तरह हैं। यह संभव नहीं है कि हर कोई परमेश्वर के वचनों के प्रति उदासीन हो सकता है, फिर भी कुछ लोग इस प्रलोभन द्वारा वशीभूत कर लिए जाएँगे। इसलिए अंत में परमेश्वर जोर देकर दोहराता है, "यदि तुम मेरे वचनों को नहीं जानते हो, न ही उन्हें स्वीकार करते हो, न ही उन्हें अभ्यास में लाते हो, तो तुम अपरिहार्य रूप से मेरी ताड़ना के लक्ष्य बनोगे! तुम निश्चित रूप से शैतान के शिकार बनोगे!" यह मानवजाति के लिए परमेश्वर का परामर्श है—फिर भी अंत में, जैसा कि परमेश्वर ने भविष्यवाणी की थी, लोगों का एक हिस्सा अनिवार्य रूप से शैतान का शिकार बन जाएगा।

अध्याय 9

लोगों की कल्पना में, परमेश्वर परमेश्वर है, और मनुष्य मनुष्य हैं। परमेश्वर मनुष्य की भाषा नहीं बोलता, न ही मनुष्य परमेश्वर की भाषा बोल सकते हैं। परमेश्वर के लिए, मानवता की मांगें पूरी करना मामूली बात है-एक बार में एक ही चीज़-जबकि मानवता से परमेश्वर की अपेक्षाएं मनुष्य की पहुँच से बाहर और अकल्पनीय हैं। लेकिन, सच्चाई इसके ठीक उलट है: परमेश्वर मनुष्य का केवल "0.1 प्रतिशत" मांगता है। यह लोगों के लिए न केवल विस्मयकारी है, बल्कि इससे लोग बहुत ज़्यादा घबरा जाते हैं, मानो वो सभी पूरी तरह भ्रमित हों। यह केवल परमेश्वर की प्रबुद्धता और अनुग्रह ही है कि लोगों ने परमेश्वर की इच्छा का थोड़ा-बहुत ज्ञान हासिल कर लिया है। हालांकि 1 मार्च को, सभी लोग एक बार फिर हक्के-बक्के और सोच में पड़ गए थे; परमेश्वर ने कहा कि उसके लोग चमचमाती बर्फ़ जैसे हों, न कि घुमक्कड़ बादल की तरह। तो यह "बर्फ़" किसकी ओर इशारा करती है? और "घुमक्कड़ बादल" क्या इंगित करते हैं? इस बिंदु पर, परमेश्वर जानबूझकर इन वचनों के गहरे अर्थ को उजागर नहीं कर रहा है। इससे लोग भ्रमित हो जाते हैं, और इस प्रकार जैसे-जैसे वे ज्ञान की तलाश करते हैं, उनकी आस्था बढ़ती जाती है—क्योंकि यह परमेश्वर के लोगों से एक विशिष्ट अपेक्षा है, और कुछ नहीं; और इसलिए लोगों का अधिक समय अनायास ही इन न समझ पाने योग्य वचनों के बारे में सोचने में व्यतीत होता है। नतीजतन, उनके दिमाग में कई विचार उपजते हैं, बहते हिमकण उनकी आँखों के सामने चमकते हैं, और उनके दिमाग में तुरंत आकाश में घुमक्कड़ बादल घूमने लगते हैं। परमेश्वर क्यों कहता है कि उसके लोग चमकदार बर्फ़ जैसे हों, घुमक्कड़

बादलों के समान नहीं? यहां वास्तविक अर्थ क्या है? ये शब्द विशेष रूप से किस बात की ओर इशारा कर रहे हैं? "बर्फ़" न केवल प्रकृति को सुंदर बनाती है, बल्कि खेत के लिए भी अच्छी है—यह कीटाणुओं को मारने के लिए अच्छी है। भारी बर्फ़बारी के बाद, सभी कीटाणु चमचमाती बर्फ़ से ढक जाते हैं, और पूरा इलाका तुरंत जीवन से भर जाता है। इसी तरह, परमेश्वर के लोगों को न केवल देहधारी परमेश्वर को जानना चाहिए बल्कि स्वयं को परमेश्वर के देहधारण के तथ्य के प्रति अनुशासित भी करना चाहिए; ऐसा करके, वो सामान्य मानवता को जी पाएंगे। इस तरह से बर्फ़ प्रकृति को सुंदर बनाती है; अंततः, परमेश्वर के लोगों की परिपक्वता, पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करते हुए, और परमेश्वर का पवित्र नाम फैलाते और उसकी महिमा को बढ़ाते हुए बड़े लाल अजगर को समाप्त करेगी, ताकि पृथ्वी पर पूरा राज्य परमेश्वर की धार्मिकता से भर जाए, परमेश्वर की कांति से चमके और उसकी महिमा से जगमगाए। हर जगह शांति और संतुष्टि, खुशी और तृप्ति, और सदैव नवीन सुंदरता के दृश्य हों। विभिन्न महामारियां जो अभी विद्यमान हैं—भ्रष्ट शैतानी स्वभाव, जैसे अधार्मिकता, कुटिलता और धोखेबाज़ी, बुरी इच्छाएं आदि—सभी जड़ से मिट जाएंगी और इस प्रकार स्वर्ग और पृथ्वी दोनों का नवीनीकरण हो जाएगा। यही "भारी हिमपात के बाद" का सही अर्थ है। जो लोग घुमक्कड़ बादल की तरह हैं, वो उस तरह के लोग हैं, जो झुंड का अनुसरण करते हैं, जिसका परमेश्वर ज़िक्र करता है; यदि शैतान का प्रलोभन हो या परमेश्वर के परीक्षण हों, तो वो तुरंत दूर चले जाएंगे, रहेंगे नहीं। लंबे समय तक गायब होने से उनका सार भी नहीं बचेगा। यदि लोग घुमक्कड़ बादल की तरह हैं, तो वे न केवल परमेश्वर की छवि को नहीं जी पाते, बल्कि परमेश्वर के नाम को भी शर्मिंदा करते हैं, क्योंकि ऐसे लोगों को किसी भी समय या स्थान पर नष्ट होने का ख़तरा होता है; वो शैतान के उपभोग का भोजन होते हैं—और जब शैतान उन्हें बंदी बना लेगा, तो वो परमेश्वर के साथ विश्वासघात करके शैतान की सेवा करेंगे। यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के नाम पर लांछन है, और इसी से परमेश्वर को सबसे ज़्यादा चिढ़ होती है; ऐसे लोग परमेश्वर के दुश्मन हैं। इस तरह, इनमें न तो सामान्य लोगों की तरह सार होता और न कोई व्यावहारिक मूल्य। इसी वजह से परमेश्वर अपने लोगों से ऐसी अपेक्षाएं रखता है। हालांकि इन वचनों के बारे में थोड़ा समझने के बाद, लोगों को समझ नहीं आता कि वो अब क्या करें, क्योंकि परमेश्वर के वचनों का विषय स्वयं परमेश्वर की ओर पलट चुका होता है, जो उन्हें एक कठिन स्थिति में डाल देता है: "क्योंकि मैं पवित्र भूमि से हूँ, मैं कमल के समान नहीं, जिसके पास केवल एक नाम है और कोई सार नहीं क्योंकि वह दलदल में होता है न कि पवित्र भूमि में।" अपने लोगों से अपनी अपेक्षाएं बताने

के बाद, परमेश्वर अपने जन्म का वर्णन क्यों करता है? क्या ऐसा हो सकता है कि दोनों के बीच कोई संबंध हो? वास्तव में, उनके बीच एक अंतर्निहित संबंध है—यदि नहीं होता, तो परमेश्वर लोगों को यह नहीं बताता। हरी पत्तियों के बीच, मंद हवा में कमल आगे-पीछे झूलता है। यह आँखों के लिए सुखद है और बहुत प्यारा है। उससे लोगों की नज़रें नहीं हटतीं और वो एक फूल चुनने और करीब से देखने हेतु पानी में तैरने को बेचैन रहते हैं। हालांकि परमेश्वर कहता है कि कमल दलदल में होता है, और इसका केवल नाम है, इसमें कोई सार नहीं होता; लगता है परमेश्वर कमल को कोई महत्व नहीं देता, और उसके वचनों से ज़ाहिर है कि उसके प्रति परमेश्वर के मन में कुछ घृणा है। युगों-युगों तक, बहुतों ने कमल की प्रशंसा की है क्योंकि वह बेदाग रहकर गंदगी से निकलता है, यहां तक कि कमल अतुल्य और अनिर्वचनीय रूप से अद्‌भुत होता है। लेकिन परमेश्वर की नज़रों में, कमल मूल्यहीन है—परमेश्वर और मनुष्य में यही अंतर है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच उतना ही अंतर है, जितनी स्वर्ग के शीर्ष और पृथ्वी की तली में दूरी है। चूँकि कमल दलदल में होता है, इसलिए जिन पोषक तत्वों की उसे आवश्यकता होती है, वो सब भी वहीं से आते हैं। अंतर केवल इतना है कि कमल ख़ुद को छिपाने में समर्थ है और इस तरह आँखों को आनंद प्रदान करता है। बहुत से लोग कमल के केवल बाहरी सौंदर्य को देखते हैं, पर कोई यह नहीं देखता कि कमल के भीतर का जीवन कितना गंदा और अपवित्र है। इसलिए, परमेश्वर कहता है कि इसका केवल नाम है, इसमें कोई सार नहीं है—जो कि पूरी तरह से सही और सच है। और क्या यह हूबहू वैसा ही नहीं है, जैसे आज परमेश्वर के लोग हैं? परमेश्वर के लिए उनका समर्पण और विश्वास केवल ऊपरी है। वो लोग परमेश्वर के सामने उसकी चापलूसी करते हैं और दिखावा करते हैं ताकि परमेश्वर उनसे संतुष्ट हो जाए; हालांकि, अंदर से वो भ्रष्ट और शैतानी स्वभाव से भरे होते हैं, उनके पेट अशुद्धियों से भरे होते हैं। इसलिए, परमेश्वर मनुष्य के सामने प्रश्न रखता है, पूछता है कि परमेश्वर के प्रति उनकी वफ़ादारी अशुद्धियों से दूषित है या वह शुद्ध और पूरे हृदय से है। जब लोग सेवाकर्मी थे, तो बहुत से लोगों ने अपने मुँह से परमेश्वर की स्तुति की, किन्तु अपने हृदय में उसे कोसा। उन्होंने शब्दों से परमेश्वर के आगे समर्पण किया, परंतु हृदय से उन्होंने परमेश्वर की अवज्ञा की। उनके मुँह से नकारात्मक शब्द निकले, और उन्होंने परमेश्वर के प्रति विरोध का भाव रखा। ऐसे लोग भी थे, जिनके कार्यकलापों में एक समंवित चाल थी: उनके मुँह से गंदी बातें निकलती थीं और वो अपने हाथों से इशारे करते थे, पूरी तरह स्वच्छंद, बड़े लाल अजगर की असली छवि की एक ज्वलंत और सजीव अभिव्यक्ति देते थे। ऐसे लोग असल में बड़े लाल

अजगर के संपोले कहे जाने योग्य हैं। लेकिन आज ये लोग वफ़ादार सेवाकर्मियों की जगह खड़े हैं और इस तरह कार्य करते हैं मानो वो परमेश्वर के वफ़ादार लोग हों—कितने बेशर्म हैं वो! हालांकि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं; वो दलदल से आते हैं, इसलिए अपना असली रंग दिखाने के सिवा उनके पास और कोई विकल्प नहीं है। क्योंकि परमेश्वर पवित्र और शुद्ध है, तथा असली और वास्तविक है, इसलिए उसका देह पवित्रात्मा से जन्म लेता है। यह निश्चित और अकाट्य है। न केवल स्वयं परमेश्वर के लिए गवाही देने में समर्थ होना, बल्कि स्वयं को परमेश्वर की इच्छा के मुताबिक़ पूरी तरह सौंपने में सक्षम होना: ये परमेश्वर के सार का एक पक्ष है। देह एक छवि के साथ पवित्रात्मा से जन्म लेता है, इसका अर्थ है कि देह जिससे आत्मा स्वयं को ओढ़ता है, वह अनिवार्यत: मनुष्य की देह से भिन्न है, और यह अंतर मुख्य रूप से उनकी आत्मा में निहित है। "एक छवि के साथ आत्मा" का तात्पर्य है कि कैसे, सामान्य मानवता द्वारा आच्छादित रहने के परिणामस्वरूप, दिव्यता सामान्य रूप से भीतर से काम करने में समर्थ है। यह थोड़ा भी अलौकिक नहीं है, और मानवता द्वारा सीमित नहीं है। "आत्मा की छवि" का अर्थ है पूर्ण दिव्यता, और यह मानवता द्वारा सीमित नहीं है। इस तरह, परमेश्वर का अंतर्निहित स्वभाव और सच्ची छवि को पूरी तरह से देहधारी शरीर में जिया जा सकता है, जो न केवल सामान्य और स्थिर है, बल्कि उसमें प्रताप और कोप भी है। पहला देहधारी शरीर केवल ऐसे परमेश्वर को ही प्रस्तुत कर सकता था, लोग जिसका केवल अनुमान ही लगा सकते थे; यानी वह केवल चिह्न दिखाने, चमत्कार और भविष्यवाणियां करने में समर्थ था। इस प्रकार, उसने पूरी तरह से परमेश्वर की वास्तविकता को नहीं जिया था, और इसलिए वह एक छवि के साथ आत्मा का मूर्तरूप नहीं था; वह दिव्यता का प्रत्यक्ष प्रकटन था। साथ ही, क्योंकि वह सामान्य मानवता के पार चला गया था, इसलिए उसे पूर्ण स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर नहीं कहा गया, बल्कि उसमें थोड़ा-सा अंश स्वर्ग के अज्ञात परमेश्वर का था; वह लोगों की धारणाओं का परमेश्वर था। यह दो देहधारी शरीरों के बीच का अनिवार्य अंतर है।

ब्रह्मांड के उच्चतम बिंदु से, परमेश्वर इंसान की हर गतिविधि को, और लोग जो कहते और करते हैं, उस सबको देखता है। वह उनके अंतरतम के तमाम विचारों को पूर्ण स्पष्टता के साथ देखता है, उन्हें कभी अनदेखा नहीं करता; और इसीलिए परमेश्वर के वचन, लोगों के हर विचार पर चोट करते हुए सीधे उनके हृदय को चीर देते हैं, उसके वचन चतुर और त्रुटिरहित होते हैं। "यद्यपि लोग मेरी आत्मा को 'जानते' हैं, फिर भी वो मेरी आत्मा को नाराज़ करते हैं। मेरे वचन लोगों के कुरुप चेहरों के साथ-साथ उनके अंतरतम

में छिपे विचारों को भी प्रकट कर देते हैं और इससे पृथ्वी पर जो भी हैं, मेरी जाँच में गिर पड़ते हैं।" इससे यह देखा जा सकता है कि हालाँकि मानवता से परमेश्वर की बहुत अधिक अपेक्षाएं नहीं हैं, फिर भी लोग परमेश्वर द्वारा आत्मा की पड़ताल को सह नहीं पाते। "हालांकि गिर पड़ने के बावजूद, उनके हृदय मुझसे दूर नहीं जा पाते। सृष्टि के प्राणियों में कौन है, जो मेरे कार्यों के फलस्वरूप मुझसे प्रेम नहीं करने लगता?" यह परमेश्वर की पूर्ण बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता का और भी अधिक सूचक है, और इस प्रकार वह सब कुछ उजागर करता है, जो परमेश्वर के लोगों ने सेवाकर्मियों के रूप में रहते हुए सोचा था: "व्यापार" की विफलता के बाद, उनके दिमाग़ में आए "सैकड़ों हजारों" या "लाखों" विचार निष्फल हो गए। हालांकि परमेश्वर के प्रशासनिक आदेशों की वजह से और परमेश्वर के प्रताप और कोप की वजह से-भले ही उनके सिर दुःख में झुके थे-लेकिन तब भी उन्होंने नकारात्मक सोच के साथ परमेश्वर की सेवा की, और अतीत के उनके सभी अभ्यास केवल खोखली बातें होकर रह गए और पूरी तरह भुला दिए गए। बल्कि अपना मनोरंजन करने, समय बिताने या गँवाने के लिए, उन्होंने स्वेच्छा से हर वो काम किया, जिससे उन्हें और हर किसी को ख़ुशी मिली। ... लोगों के बीच यही सब चल रहा था। इस प्रकार, परमेश्वर मानवता के समक्ष खुलकर कहता है: "कौन है जो मेरे वचनों के फलस्वरूप मेरे लिए नहीं तरसता? मेरे प्रेम के कारण किसके हृदय में अनुराग की भावनाएँ पैदा नहीं होतीं?" सच कहूँ तो, मनुष्य परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं, और उनमें से ऐसा एक भी नहीं है, जो परमेश्वर के वचनों को पढ़ना पसंद न करे; सिर्फ़ इतना ही है कि वो परमेश्वर के वचनों को व्यवहार में नहीं ला पाते क्योंकि वे अपनी प्रकृति से मजबूर हैं। परमेश्वर के वचनों को पढ़कर, बहुत से लोग परमेश्वर के वचनों से अलग होना सहन नहीं कर पाते, परमेश्वर के लिए उनके भीतर प्रेम उमड़ता है। इस प्रकार, परमेश्वर एक बार पुनः शैतान को धिक्कारता है, और एक बार पुनः उसके बदसूरत चेहरे को उजागर करता है। "इस युग में जब शैतान हंगामा खड़ा कर देता है और बुरी तरह से निरंकुश हो जाता है" यह भी वही युग है, जिसमें परमेश्वर धरती पर अपने आधिकारिक, विशाल कार्य का आरंभ करता है। उसके बाद, वह दुनिया के सर्वनाश का कार्य आरंभ करता है। दूसरे शब्दों में, शैतान जितना अधिक पागलपन करेगा, परमेश्वर का दिन उतनी ही जल्दी आएगा। इस प्रकार, परमेश्वर जितना अधिक शैतान के उपद्रव के बारे में बोलेगा, वह दिन करीब आता जाएगा, जब परमेश्वर दुनिया का सर्वनाश करेगा। ऐसी है शैतान के लिए परमेश्वर की घोषणा।

परमेश्वर ने बार-बार ऐसा क्यों कहा "... मेरी पीठ पीछे, वे 'प्रशंसनीय' गंदे आचरणों में लिप्त हो जाते

हैं। क्या तुम्हें लगता है कि जिस देह को मैंने ओढ़ रखा है, वह तुम्हारे चाल-चलन, तुम्हारे आचरण और तुम्हारे वचनों के बारे में कुछ नहीं जानती।" उसने ऐसे वचन सिर्फ़ एक या दो बार नहीं कहे—ऐसा क्यों? एक बार जब लोगों को परमेश्वर से सांत्वना मिल जाती है, और वो मानवता के लिए परमेश्वर के दुःख से अवगत हो जाते हैं, तो जब वो आगे संघर्ष करते हैं तब उनके लिए अतीत को भूलना आसान हो जाता है। फिर भी परमेश्वर मनुष्यों के प्रति थोड़ा भी उदार नहीं है: वह निरंतर लोगों के विचारों को निशाना बनाता रहता है। इस प्रकार, वह लोगों को बारंबार स्वयं को जानने, व्यभिचार रोकने, उन प्रशंसनीय गंदे लेन-देन में लिप्त न होने, फिर कभी देहधारी परमेश्वर के साथ विश्वासघात न करने के लिए कहता है। हालाँकि लोगों की प्रकृति बदलती नहीं है, लेकिन उन्हें कुछेक बार याद दिलाने से लाभ तो होता ही है। इसके बाद, परमेश्वर मनुष्यों के हृदय में मौजूद रहस्यों को प्रकट करने के लिए उनके परिप्रेक्ष्य से बोलता है: "कई वर्षों तक मैंने हवा और बारिश को सहा है, और मैंने मनुष्य के संसार की कड़वाहट का भी अनुभव किया है; हालांकि गहन चिंतन करने पर, कितना भी कष्ट क्यों न आए, लेकिन वो मेरे प्रति इंसान के अंदर निराशा पैदा नहीं कर सकते, कोई भी मधुरता मनुष्यों को मेरे प्रति उदासीन, हताश या उपेक्षापूर्ण होने का कारण तो बिलकुल नहीं बन सकती। क्या मेरे लिए उनका प्रेम वास्तव में पीड़ा की कमी या फिर मिठास की कमी तक ही सीमित है?" "सूर्य के नीचे सबकुछ रिक्त है," इन वचनों का निस्संदेह आंतरिक अर्थ है। इस प्रकार परमेश्वर कह रहा है कि किसी भी चीज़ के कारण इंसान परमेश्वर से उम्मीद नहीं खो सकता या उसकी ओर से कभी उदासीन नहीं हो सकता। यदि लोग परमेश्वर से प्रेम न करें, तो इससे अच्छा है वो मर जाएं; यदि वे परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, तो उनकी पीड़ा व्यर्थ है, और खुशियाँ खोखली हैं, जो उनके पापों में जुड़ जाती हैं। क्योंकि एक भी व्यक्ति परमेश्वर से वास्तव में प्रेम नहीं करता, इसलिए परमेश्वर कहता है, "क्या मेरे लिए उनका प्रेम वास्तव में पीड़ा की कमी या फिर मिठास की कमी तक ही सीमित है?" मानवता की दुनिया में, पीड़ा या मिठास के बिना कोई कैसे जीवित रह सकता है? परमेश्वर बार-बार कहता है, "किसी एक भी इंसान ने कभी मेरा चेहरा नहीं देखा है, मेरी आवाज़ नहीं सुनी है क्योंकि मनुष्य दरअसल मुझे जानता ही नहीं।" परमेश्वर कहता है कि मनुष्य उसे सच में नहीं जानता, लेकिन वह इंसान से उसे जानने के लिए क्यों कहता है? क्या यह विरोधाभास नहीं है? परमेश्वर के हर एक वचन का एक निश्चित उद्देश्य है। चूँकि मनुष्य सुन्न हो गया है, इसलिए परमेश्वर हर मनुष्य के हृदय का अंततः 0.1 प्रतिशत पाने के लिए उसके ज़रिए अपना 100 प्रतिशत कार्य करने का सिद्धांत अपनाता है। परमेश्वर इसी पद्धति से

कार्य करता है, और अपना लक्ष्य पाने के लिए परमेश्वर को इसी प्रकार कार्य करना चाहिए। यही वास्तव में परमेश्वर के वचनों की बुद्धि भी है। क्या तुम लोगों ने इस बात को समझ लिया है?

परमेश्वर कहता है: "जब मैं अपने रहस्यों को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता हूँ और देह में अपनी इच्छा स्पष्ट करता हूँ, तो तुम लोग कोई ध्यान नहीं देते; तुम आवाज़ों को सुनते हो, पर उनके अर्थ को नहीं समझते। मैं दु:ख से उबर गया हूँ। हालाँकि मैं देह में हूँ, पर मैं देह की सेवकाई करने में असमर्थ हूँ।" एक लिहाज़ से, ये वचन लोगों से उनकी संवेदनशून्यता के कारण, परमेश्वर के साथ सहयोग करने की पहल कराते हैं; दूसरे लिहाज़ से, परमेश्वर देह में अपनी दिव्यता का असली चेहरा प्रकट करता है। चूँकि मनुष्यों का आध्यात्मिक कद बहुत छोटा होता है, इसलिए उस अवधि में जब परमेश्वर देह में होता है, तो दिव्यता का प्रकटन केवल उनकी स्वीकृति की योग्यता के अनुसार होता है। कार्य के इस चरण के दौरान, अधिकांश लोग इसे पूरी तरह से स्वीकार नहीं पाते, जिससे पता चलता है कि वो ग्रहणशील नहीं हैं। इस प्रकार, इस कार्य के दौरान दिव्यता पूरी तरह से अपने सभी मूल कर्तव्य नहीं निभाती; वह केवल एक छोटा-सा हिस्सा ही निभाती है। यह दर्शाता है कि भविष्य के कार्य में, दिव्यता मानवता ग्रहण करने की अवस्था के अनुसार ही धीरे-धीरे प्रकट होगी। लेकिन दिव्यता धीरे-धीरे विकसित नहीं होती; बल्कि यह वह है जो देहधारी परमेश्वर के पास सार रूप में है, और जो मनुष्य के आध्यात्मिक कद के समान नहीं है।

मनुष्य के सृजन के पीछे परमेश्वर का एक उद्देश्य और अर्थ था, और इसीलिए परमेश्वर ने कहा था, "यदि मानवता मेरे कोप से नष्ट हो गई होती, तो मेरे स्वर्ग और पृथ्वी की रचना करने का क्या महत्व रह जाता?" जब मनुष्य भ्रष्ट हो गए, तो परमेश्वर ने अपनी ख़ुशी के लिए उनका एक हिस्सा पाने की योजना बनाई; उसकी मंशा यह नहीं थी कि सभी मनुष्यों को नष्ट कर दिया जाएगा, न ही यह मंशा थी कि परमेश्वर के प्रशासनिक आदेशों के मामूली से उल्लंघन पर ही उनका उन्मूलन कर दिया जाएगा। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है; जैसा कि परमेश्वर ने कहा, यह अर्थहीन होगा। असल में इस "निरर्थकता" की वजह से ही परमेश्वर की बुद्धि स्पष्ट की गयी है। क्या सभी लोगों को ताड़ना देने, उनका न्याय करने, उन सब पर प्रहार करने और अंतत: केवल उन्हें चुनने के लिए जो उसे प्रेम करते हैं, परमेश्वर के बोलने और कई तरीक़ों से कार्य करने के ज़्यादा बड़े मायने नहीं हैं? ठीक इसी तरह से परमेश्वर के कर्म प्रकट होते हैं, और इसलिए मनुष्य का सृजन और भी अर्थपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार, कहा जाता है कि परमेश्वर के अधिकांश वचन उनके आगे प्रवाहित होते रहते हैं; यह एक उद्देश्य प्राप्त करने के लिए है, और ठीक यही उसके वचनों के

अंश की वास्तविकता है।

परिशिष्ट : अध्याय 1

मैं तुम लोगों से जो करने के लिए कहता हूँ, वह कोई अस्पष्ट और खोखला सिद्धांत नहीं है जिसकी मैं बात करता हूँ, न ही वह मनुष्य के मस्तिष्क के लिए अकल्पनीय या मनुष्य की देह के लिए अप्राप्य है। मेरे घर के भीतर पूर्ण वफ़ादारी दिखाने में कौन सक्षम है? और मेरे राज्य के भीतर कौन अपना सर्वस्व अर्पित कर सकता है? यदि मेरी इच्छा का प्रकाशन न होता, तो क्या तुम लोग स्वयं से सच में यह माँग करते कि तुम मेरे हृदय को संतुष्ट करो? कभी भी किसी ने मेरे हृदय को नहीं समझा है, और कभी भी किसी ने मेरी इच्छा को नहीं जाना है। किसने कभी भी मेरा चेहरा देखा है या मेरी आवाज़ सुनी है? क्या पतरस ने? या पौलुस ने? या यूहन्ना ने? या याकूब ने? किसे मैंने कपड़े पहनाए हैं, या मेरे द्वारा अधीन किया गया है, या मेरे द्वारा उपयोग किया गया है? यद्यपि पहली बार जब मैं देह बना था तो यह दिव्यता के भीतर हुआ था, जिस देह को मैंने पहना था, वह मनुष्य के दुःखों को नहीं जानती थी, क्योंकि मेरा देहधारण किसी आकार में नहीं हुआ था, और इसलिए यह नहीं कहा जा सकता था कि देह पूरी तरह से मेरी इच्छा के अनुसार चली थी। केवल जब मेरी दिव्यता वह करने और कहने में सक्षम होती है जैसा कि मैं सामान्य मानवता वाले व्यक्तित्व में बिना किसी अवरोध या बाधा के, करता और कहता हूँ, तभी यह कहा जा सकता है कि मेरी इच्छा देह में पूरी की जाती है। क्योंकि मेरी सामान्य मानवता मेरी दिव्यता का कवच बनने में सक्षम है, इसलिए विनम्र और छिपे हुए होने का मेरा लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। देह में कार्य करने के चरण के दौरान, यद्यपि दिव्यता सीधे कार्य करती है, किन्तु ऐसे कार्यों को देखना लोगों के लिए आसान नहीं होता, जो कि केवल सामान्य मानवता के जीवन और कार्यों की वजह से ही है। यह देहधारण, पहले देहधारण की तरह, 40 दिनों का उपवास नहीं कर सकता है, लेकिन वह सामान्य रूप से कार्य करता और बोलता है, और यद्यपि वह रहस्यों को प्रकट करता है, किन्तु वह बहुत ही सामान्य है; लोग जैसी कल्पना करते हैं वैसा नहीं है, उसकी आवाज़ बादलों की गर्जना जैसी नहीं है, उसका चेहरा प्रकाश से जगमगाता नहीं है, और जब वह चलता है तो आसमान भय से काँपता नहीं है। यदि ऐसा होता, तो इसमें मेरी कोई बुद्धि नहीं होती, और शैतान को शर्मिंदा और पराजित करना असंभव होता।

जब मैं सामान्य मानवता के कवच के पीछे से अपनी दिव्यता को प्रदर्शित करता हूँ, तो मैं पूर्ण रूप से

महिमामंडित होता हूँ, मेरा महान कार्य पूरा हो जाता है, और कोई भी चीज़ कठिनाई प्रस्तुत नहीं करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे देहधारण का उद्देश्य मुख्य रूप से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, उन सभी लोगों को देह में मेरी दिव्यता के कर्मों को देखने की और स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर को देखने की अनुमति देना है और इस प्रकार लोगों के हृदयों में से उस स्थान को हटाना है जिसे अदृश्य और अमूर्त परमेश्वर ने घेर रखा है। चूँकि मैं खाता हूँ, कपड़े पहनता हूँ, सोता हूँ, एक सामान्य व्यक्ति की तरह जीता और कार्य करता हूँ, क्योंकि मैं एक सामान्य व्यक्ति की तरह बोलता और हँसता हूँ, और मेरी आवश्यकताएँ भी एक सामान्य व्यक्ति वाली हैं, और इसके साथ ही मैं स्वयं में पूर्ण दिव्यता का सार भी रखता हूँ, इसलिए मुझे "व्यावहारिक परमेश्वर" कहा जाता है। यह अमूर्त नहीं है और इसे समझना आसान है; इसमें देखा जा सकता है कि किस भाग में मेरे कार्य का मूल निहित है, और कार्य के किस चरण पर मेरा ध्यान केंद्रित है। सामान्य मानवता के माध्यम से अपनी दिव्यता को प्रकट करना मेरे देहधारण का मुख्य उद्देश्य है। यह समझना मुश्किल नहीं है कि मेरे कार्य का केंद्र, न्याय के युग के दूसरे भाग में है।

मुझ में, कभी भी मानवीय जीवन या मानवता का कोई निशान नहीं रहा है। मानवीय जीवन की कभी भी मेरे अंदर कोई जगह नहीं रही है, और इसने मेरी दिव्यता के प्रकाशन को कभी नहीं रोका है। इस प्रकार, स्वर्ग में मेरी आवाज़ और मेरी आत्मा की इच्छा को जितना अधिक व्यक्त किया जाता है, उतना ही अधिक शैतान को शर्मिंदा किया जा सकता है, और इस तरह से सामान्य मानवता में मेरी इच्छा पर चलना उतना ही अधिक आसान हो जाता है। सिर्फ़ इससे ही शैतान पराजित हो गया है; शैतान को पहले ही पूरी तरह से शर्मिंदा किया जा चुका है। यद्यपि मैं छिपा हुआ हूँ, पर यह मेरी दिव्यता के कथनों और कर्मों को बाधित नहीं करता है—जो यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि मैं विजयी रहा हूँ और पूरी तरह से महिमामंडित किया गया हूँ। चूँकि देह में मेरा काम अबाधित है, और चूँकि व्यावहारिक परमेश्वर का अब लोगों के हृदय में एक स्थान है और उसने उनके हृदय में जड़ें जमा ली हैं, इसलिए यह पूरी तरह साबित हो गया है कि शैतान मेरे द्वारा पराजित कर दिया गया है। और चूँकि शैतान मनुष्य के बीच कुछ और अधिक करने में असमर्थ है, और मनुष्य की देह में शैतान के गुण को स्थापित करना मुश्किल है, इसलिए मेरी इच्छा अबाधित रूप से आगे बढ़ती है। मेरे कार्य की विषय-वस्तु, मुख्यतः, सभी लोगों को मेरे चमत्कारिक कर्मों को और मेरे सच्चे चेहरे को दिखाना है : मैं पहुँच से परे नहीं हूँ, मैं स्वयं को आकाश में ऊँचा नहीं उठाता हूँ, और मैं निराकार और अनियतरूप नहीं हूँ। मैं हवा की तरह अदृश्य नहीं हूँ, न ही किसी तैरते

हुए बादल की तरह हूँ, जो आसानी से उड़ जाए; इसके बजाय, भले ही मैं मनुष्यों के बीच रहता हूँ, और मनुष्यों के बीच मिठास, खट्टेपन, कड़वाहट और उग्रता का अनुभव करता हूँ, फिर भी मेरी देह मूलतः मनुष्य की देह से अलग है। अधिकांश लोगों को मेरे साथ जुड़ने में कठिनाई होती है, फिर भी अधिकांश लोग मेरे साथ जुड़ने के लिए तड़पते हैं। ऐसा लगता है कि देहधारी परमेश्वर में विशाल, अथाह रहस्य हैं। दिव्यता के प्रत्यक्ष प्रकाशन के कारण, और मानवीय रूप की ढाल के कारण, लोग मुझसे सम्मानजनक दूरी रखते हैं, वे मानते हैं कि मैं दयालु और प्रेमी परमेश्वर हूँ, फिर भी वे मेरे प्रताप और कोप से डरते हैं। इस प्रकार, उनके हृदय में, वे मेरे साथ ईमानदारी से बात करना चाहते हैं, मगर वे जैसा चाहें वैसा नहीं कर सकते हैं—उनके हृदय जो चाहते हैं, उसके लिए उनमें ताक़त का अभाव है। इस परिस्थिति में सभी का हाल ऐसा ही है—और जितना अधिक लोग इस प्रकार के होते हैं, उतना ही अधिक मेरे स्वभाव के विभिन्न पहलुओं के प्रकाशन का प्रमाण होता है, इस प्रकार लोगों के परमेश्वर को जानने का उद्देश्य प्राप्त किया जाता है। लेकिन यह गौण है; मुख्य बात है लोगों को मेरी देह से निष्पादित मेरे अद्भुत कर्मों को ज्ञात करवाना, उन्हें परमेश्वर के सार को ज्ञात करवाना: मैं असामान्य और अलौकिक नहीं हूँ, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं; इसके बजाय, मैं व्यावहारिक परमेश्वर हूँ जो सभी चीज़ों में सामान्य है। लोगों की धारणाओं से मेरा स्थान हटा दिया जाता है, और वे मुझे वास्तविकता में जानने लगते हैं। केवल तभी मैं लोगों के मन में अपना सही स्थान ग्रहण करता हूँ।

सभी लोगों के सामने, मैंने न केवल कभी भी कुछ ऐसा अलौकिक नहीं किया है जिसे लोगों द्वारा सँजोया गया हो, बल्कि मैं बहुत ही साधारण और सामान्य भी हूँ; मैं जानबूझकर लोगों को अपने देहधारण में ऐसा कुछ भी नहीं देखने देता हूँ जिसमें परमेश्वर का कोई संकेत हो। लेकिन मेरे वचनों के कारण, लोग पूरी तरह से जीत लिए जाते हैं, और मेरी गवाही के लिए समर्पित हो जाते हैं। केवल इस तरह से ही लोग बिना किसी ग़लतफ़हमी के, इस पूर्ण विश्वास की नींव पर कि परमेश्वर वास्तव में है, देह में जो मैं हूँ, उसे जान जाते हैं। इस तरह, मेरे बारे में लोगों का ज्ञान अधिक वास्तविक, अधिक स्पष्ट हो जाता है, और यह उनके अच्छे व्यवहार से जरा-सा भी दूषित नहीं होता है; यह सब मेरी दिव्यता के सीधे कार्य करने का परिणाम है, जिससे लोगों को मेरी दिव्यता का अधिक ज्ञान मिलता है, क्योंकि केवल दिव्यता ही परमेश्वर का सच्चा चेहरा और परमेश्वर का अंतर्निहित गुण है। लोगों को इसे देखना चाहिए। मैं जो चाहता हूँ वे हैं दिव्यता में प्रकट वचन, कर्म और कार्य—मैं मानवता में प्रकट वचनों और कार्यों की परवाह नहीं करता हूँ।

मेरा लक्ष्य दिव्यता में जीना और कार्य करना है—मैं मानवता में जड़ें जमा कर अंकुरित नहीं होना चाहता हूँ, मैं मानवता में नहीं रहना चाहता हूँ। मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ क्या तुम लोग उसे समझते हो? भले ही मैं मानवजाति में एक अतिथि हूँ, मुझे यह नहीं चाहिए; मैं पूर्ण दिव्यता में कार्य करता हूँ, और केवल इसी तरह से लोग मेरे सच्चे चेहरे को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

अध्याय 10

कलीसिया के निर्माण-समय के दौरान, परमेश्वर ने शायद ही राज्य के निर्माण का उल्लेख किया। अगर उसने इसका उल्लेख किया भी तो उसने उस समय की भाषा में ऐसा किया। एक बार जब राज्य का युग आ गया, तो परमेश्वर ने कलीसिया के निर्माण के समय की कुछ विधियों और चिंताओं को एक ही झटके में खारिज कर दिया और फिर कभी इसके बारे में एक वचन भी नहीं कहा। यही वास्तव में "स्वयं परमेश्वर" का मूल अर्थ है जो सदैव नया है और कभी भी पुराना नहीं पड़ता है। अतीत में चीज़ें कितने भी अच्छे ढंग से की गयी हों, वे आखिरकार विगत युग का हिस्सा हैं, इसलिए परमेश्वर ऐसी चीज़ों को मसीह के पहले घटित हुई घटनाओं के रूप में वर्गीकृत करता है, जबकि वर्तमान समय मसीह के बाद के समय के रूप में जाना जाता है। इससे देखा जा सकता है कि कलीसिया का निर्माण राज्य के निर्माण के लिए आवश्यक पूर्वशर्त था; इसने परमेश्वर के लिए राज्य में अपनी संप्रभु शक्ति के उपयोग की नींव रखी। कलीसिया के निर्माण का कार्य आज का आशुचित्र है; पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य मुख्य रूप से राज्य के निर्माण पर केंद्रित है। परमेश्वर ने कलीसिया के निर्माण का कार्य पूरा करने से पूर्व ही किए जाने वाले सारे कार्य की तैयारियाँ पूरी कर ली थीं, और जब सही समय आया, तो उसने अपना कार्य औपचारिक रूप से प्रारंभ किया। यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा, "राज्य का युग, आख़िरकार, बीते हुए समयों से अलग है। इसका सरोकार इस बात से नहीं है कि मानवता कैसे काम करती है; बल्कि, मैं व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करने के लिए पृथ्वी पर उतरा हूँ, जो कुछ ऐसा कार्य है जिसकी मानव न तो कल्पना कर सकते हैं और न ही जिसे वे संपन्न कर सकते हैं।" निस्संदेह, यह कार्य अवश्य व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर द्वारा किया जाना चाहिए—कोई भी मनुष्य ऐसा कार्य करने में सक्षम नहीं है; वह इसे करने के लायक ही नहीं है। परमेश्वर के अलावा, कौन है जो मानवजाति के बीच इतना महान कार्य कर सकता हो? और कौन संपूर्ण मानवजाति को "यंत्रणा" दे कर अधमरा करने में सक्षम है? क्या मनुष्य के लिए इस तरह के कार्य की

व्यवस्था करना संभव था? वह ऐसा क्यों कहता है, "मैं व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करने के लिए पृथ्वी पर उतरा हूँ"? क्या संपूर्ण अंतरिक्ष से परमेश्वर का आत्मा सचमुच गायब हो सकता था? "मैं व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करने के लिए पृथ्वी पर उतरा हूँ," इस वाक्य का एक संदर्भ यह है कि परमेश्वर के आत्मा ने कार्य करने के लिए देहधारण किया है, और दूसरा यह कि परमेश्वर का आत्मा स्पष्ट रूप से मानवजाति के माध्यम से कार्य कर रहा है। व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करके, वह बहुत सारे लोगों को अपनी नग्न आँखों से परमेश्वर स्वयं को देखने देता है; उनके लिए अपनी आत्माओं में सावधानीपूर्वक उसकी खोज करना अनावश्यक है। इसके अलावा, वह सभी मनुष्यों को उनकी स्वयं की आँखों से पवित्रात्मा के कार्यकलापों को देखने देता है, उन्हें यह दिखाते हुए कि मनुष्य की देह और परमेश्वर की देह के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। इसके साथ ही, संपूर्ण अंतरिक्ष और ब्रह्मांड की दुनिया में परमेश्वर का आत्मा कार्यशील है। परमेश्वर के वे सभी लोग जो प्रबुद्ध हैं, परमेश्वर के नाम को स्वीकार कर देखते हैं कि परमेश्वर का आत्मा कैसे कार्य करता है और फलस्वरूप, देहधारी परमेश्वर से और भी अधिक परिचित हो जाते हैं। इस तरह, यदि परमेश्वर की दिव्यता प्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है—अर्थात, जब परमेश्वर का आत्मा बिना किसी हस्तक्षेप के कार्य करने में समर्थ है—केवल तभी मानवजाति व्यावहारिक परमेश्वर स्वयं से परिचित हो सकती है। यही राज्य निर्माण का सार है।

परमेश्वर ने कितनी बार देहधारण किया है? क्या ऐसा कई बार हो सकता है? ऐसा क्यों है कि परमेश्वर ने कई बार यह कहा है, "मैं एक बार मानवों के संसार में उतरा था और मैंने उनके दुःख-दर्द अनुभव किए और देखे थे, किंतु यह मैंने अपने देहधारण का उद्देश्य पूरा किए बिना किया था"? क्या ऐसा है कि परमेश्वर कई बार देहधारी बना है, किन्तु कभी एक बार भी मानवजाति को इस बात की जानकारी नहीं हुई? इस कथन का यह अभिप्राय नहीं है। जब पहली बार परमेश्वर ने देहधारण किया था, तो उसका उद्देश्य वास्तव में यह नहीं था कि मनुष्य उसे जाने; इसके बजाय, उसने अपना कार्य किया और फिर किसी के ध्यान में आए बिना या किसी को उसे जानने का अवसर दिए बिना वह गायब हो गया। उसने लोगों को उसे पूरी तरह से जानने की अनुमति नहीं दी, और न ही वह देहधारण की महत्ता से पूरी तरह युक्त था; इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उसने पूरी तरह देहधारण किया था। प्रथम देहधारण में, उसने उस कार्य को करने के लिए केवल पापपूर्ण प्रकृति से मुक्त एक शारीरिक काया का उपयोग किया; कार्य पूरा हो जाने के बाद, आगे किसी उल्लेख की कोई आवश्यकता नहीं थी। जहाँ तक उन मनुष्यों की बात है जिन्हें परमेश्वर ने

युगों से उपयोग किया है, वे तो "देहधारण" कहे जाने के और भी कम योग्य हैं। आज, केवल स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर को ही पूर्णतया एक "देहधारण" कहा जा सकता है, जो कि सामान्य मानवता के आवरण में है और जिसके पास आंतरिक, संपूर्ण देवत्व है, जिसका उद्देश्य मनुष्य को स्वयं को उसे जानने की अनुमति देना है। इस दुनिया में परमेश्वर के प्रथम आगमन का महत्व, उस महत्व का एक पहलू है जो आज देहधारण कहलाता है—लेकिन इस आगमन में उसका संपूर्ण अर्थ बिलकुल शामिल नहीं है जिसे अब देहधारण कहा जाता है। इसीलिए परमेश्वर ने कहा, "अपने देहधारण के महत्त्व को पूरा नहीं किया।" ये शब्द, "मनुष्य के दुःखों का अनुभव और अवलोकन" परमेश्वर के आत्मा और दो देहधारणों को दर्शाता है। इस कारण, परमेश्वर ने कहा, "एक बार जब राज्य का निर्माण शुरू हो गया, मेरे देहधारी शरीर ने सेवकाई करना विधिवत आरंभ कर दिया था; अर्थात्, राज्य के राजा ने अपनी संप्रभु सामर्थ्य औपचारिक रूप से ग्रहण कर ली थी।" यद्यपि कलीसिया का निर्माण परमेश्वर के नाम की गवाही थी, किन्तु कार्य अभी तक औपचारिक रूप से आरंभ नहीं हुआ था; केवल आज इसे राज्य का निर्माण करना कहा जा सकता है। पहले जो कुछ भी किया गया था वह सिर्फ एक पूर्वानुभव था; यह असली चीज़ नहीं थी। भले ही यह कहा गया था कि राज्य की शुरुआत हो चुकी है, किन्तु इसके अंदर कोई कार्य नहीं किया जा रहा था। केवल आज, अब चूँकि परमेश्वर की दिव्यता के भीतर कार्य किया जा रहा है और परमेश्वर ने औपचारिक रूप से अपना कार्य आरंभ कर दिया है, तब जाकर मानवजाति ने अंततः राज्य में प्रवेश कर लिया है। इस प्रकार, "इससे यह स्पष्ट है कि मानव जगत में राज्य का अवरोहण—मात्र एक शाब्दिक अभिव्यंजना होने से कहीं दूर—वास्तविक सच्चाइयों में से एक है; यह 'अभ्यास की वास्तविकता' के अर्थ का एक पहलू है।" यह उद्धरण उपर्युक्त व्याख्या का एक सटीक सारांश है। यह विवरण प्रदान करने के बाद, लोगों को लगातार कार्यरतता की स्थिति में छोड़ते हुए, परमेश्वर मानवजाति की सामान्य स्थिति की विशेषता बताने के लिए आगे बढ़ता है। "समूचे संसार में, सब कुछ मेरी दया और कृपालु प्रेम के भीतर विद्यमान है, परंतु ऐसे तो समूची मानवता भी मेरे न्याय के अंतर्गत निहित है, और इसी प्रकार मेरे परीक्षणों के अधीन भी है।" मनुष्य का जीवन परमेश्वर द्वारा निर्धारित कुछ सिद्धांतों और नियमों के अनुसार संचालित होता है, और वे निम्नानुसार हैं : यहाँ खुशी के और हताशा के क्षण होंगे, और इसके अलावा कष्टों द्वारा शुद्धिकरण के समय होंगे जिसे सहन करना आवश्यक होगा। इस प्रकार, कोई भी व्यक्ति विशुद्ध सुखद या विशुद्ध दुःखद जीवन नहीं जिएगा; हर जीवन के उतार-चढ़ाव होंगे। समस्त मानवजाति में, न केवल परमेश्वर की करुणा

और प्रेमपूर्ण दयालुता स्पष्ट है, बल्कि उसका न्याय और उसका संपूर्ण स्वभाव भी उतना ही स्पष्ट है। कहा जा सकता है कि सभी मनुष्य परमेश्वर के परीक्षण के बीच रहते हैं, है ना? इस विशाल दुनिया में, सभी मनुष्य खुद के लिए बचने का मार्ग तलाशने में व्यस्त हैं। वे आश्वस्त नहीं हैं कि वे क्या भूमिका निभाते हैं और कुछ तो अपने भाग्य के वास्ते अपने जीवन को क्षति तक पहुँचाते हैं या उसे खो बैठते हैं। यहाँ तक कि अय्यूब भी इस नियम का अपवाद नहीं था : भले ही परमेश्वर के परीक्षण को उसने भी झेला, लेकिन उसने भी बचने का मार्ग तलाशा। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के परीक्षणों के समक्ष डटे रहने में कभी भी सक्षम नहीं हुआ है। मानवीय लालच या प्रकृति के कारण, कोई भी व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होता है, और कोई भी व्यक्ति परीक्षणों में डटा नहीं रह पाता है: हर मनुष्य परमेश्वर के न्याय के आगे ध्वस्त हो जाता है। यदि परमेश्वर को मनुष्य के प्रति गंभीर होना होता, यदि उसे अभी भी लोगों से इतनी सख़्त माँग रखनी होती, तो ठीक वैसा ही होता जैसा परमेश्वर ने कहा था: "तो समूची मानव जाति मेरी सुलगती हुई नज़रों के नीचे धराशायी हो जाती।"

इस तथ्य के बावजूद कि राज्य का निर्माण औपचारिक रूप से आरंभ हो गया है, राज्य के लिए औपचारिक रूप से सलामी बजनी अभी शेष है; अभी यह केवल आने वाली चीज़ों की भविष्यवाणी है। जब सभी लोगों को संपूर्ण बना लिया गया होगा और पृथ्वी के सभी राष्ट्र मसीह का राज्य बन गए होंगे, तब वह समय होगा जब सात गर्जनाएँ गूँजेंगी। वर्तमान दिन उस चरण की दिशा में एक लंबा कदम है; आने वाले उस दिन की ओर बढ़ने के लिए धावा बोल दिया गया है। यह परमेश्वर की योजना है, और निकट भविष्य में ये साकार हो जाएगा। हालाँकि, परमेश्वर ने जो कुछ भी कहा है, वह सब पहले ही पूरा कर दिया है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि धरती के देश केवल रेत के किले हैं जो ज्वार आने पर काँप जाते हैं : अंत का दिन सन्निकट है और बड़ा लाल अजगर परमेश्वर के वचन के नीचे गिर जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि परमेश्वर की योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्वन होता है, परमेश्वर को संतुष्ट करने का भरपूर प्रयास करते हुए, स्वर्गदूत पृथ्वी पर उतर आए हैं। स्वयं देहधारी परमेश्वर दुश्मन से लड़ाई करने के लिए युद्ध के मैदान में तैनात हुआ है। जहाँ कहीं भी देहधारण प्रकट होता है, उस जगह से दुश्मन पूर्णतया विनष्ट किया जाता है। सबसे पहले चीन का सर्वनाश होगा; यह परमेश्वर के हाथों बर्बाद कर दिया जाएगा। परमेश्वर वहाँ कोई भी दया बिलकुल नहीं दिखाएगा। बड़े लाल अजगर के उत्तरोत्तर ढहने का सबूत लोगों की निरंतर परिपक्वता में देखा जा सकता है; इसे कोई भी स्पष्ट रूप से देख सकता है। लोगों की परिपक्वता दुश्मन की

मृत्यु का संकेत है। यह "इसके साथ प्रतिस्पर्धा करने" के अर्थ का थोड़ा स्पष्टीकरण है। इस तरह, परमेश्वर ने अनेक अवसरों पर लोगों को स्मरण दिलाया है कि वे उन धारणाओं को, जो बड़े लाल अजगर की कुरूपता के रूप में उनके हृदय में है, नष्ट करने के लिए परमेश्वर की खूबसूरत गवाहियाँ दें। परमेश्वर लोगों के विश्वास में जीवन डालने के लिए इस तरह के अनुस्मारकों का उपयोग करता है और, ऐसा करने में, अपने कार्य में उपलब्धियाँ प्राप्त करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, "मानव सचमुच में क्या करने में सक्षम हैं? बल्कि क्यों न मैं स्वयं ही यह करूँ?" सभी मनुष्य ऐसे ही हैं; न केवल वे अक्षम हैं, बल्कि वे आसानी से निरुत्साहित और निराश हो जाते हैं। इस कारण, वे परमेश्वर को नहीं जान सकते। परमेश्वर न केवल मानवजाति के विश्वास को पुनर्जीवित करता है, बल्कि वह लोगों के भीतर गुप्त रूप से लगातार शक्ति का संचार भी कर रहा है।

इसके बाद, परमेश्वर ने पूरे ब्रह्मांड से बात करना शुरू कर दिया। परमेश्वर ने न केवल चीन में अपना नया कार्य आरंभ किया है, बल्कि उसने पूरे ब्रह्मांड में आज का नया कार्य करना आरंभ कर दिया है। कार्य के इस चरण में, क्योंकि परमेश्वर अपने सभी कर्मों को दुनिया भर में प्रकट करना चाहता है ताकि सभी मनुष्य जिन्होंने उसके साथ विश्वासघात किया है, पुनः उसके सिंहासन के समक्ष समर्पित होने के लिए आ जाएँ, परमेश्वर के न्याय में अभी भी उसकी करुणा और प्रेमपूर्ण दयालुता होगी। परमेश्वर दुनिया भर में वर्तमान घटनाओं का उपयोग ऐसे अवसरों के तौर पर करता है जिससे मनुष्य घबरा जाएँ, उन्हें परमेश्वर की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे उसके समक्ष लौट सकें। इस प्रकार परमेश्वर कहता है, "यह मेरे कार्य करने के तरीक़ों में से एक है, और यह निस्संदेह मानवता के उद्धार का एक कार्य है, और जो मैं उन्हें देता हूँ वह अब भी एक प्रकार का प्रेम ही है।" यहाँ, परमेश्वर मनुष्य जाति की सच्ची प्रकृति को ऐसी सटीकता के साथ उजागर करता है जो गहरी, अद्वितीय और सहज है। इससे लोग, बेहद अपमानित महसूस करते हुए, शर्म से अपना चेहरा छुपा लेते हैं। परमेश्वर जब भी बोलता है, तो वह किसी तरह हमेशा मानवजाति के शर्मनाक प्रदर्शन के किसी पहलू को इंगित करने में सफल रहता है ताकि, निश्चिंतता में, लोग स्वयं को जानना न भूल जाएँ और इसे एक पुराना काम न समझें। यदि परमेश्वर एक पल के लिए भी मनुष्य की गलतियाँ बताना छोड़ देता, तो मानवीय प्रकृति के अनुसार मनुष्य स्वच्छन्द और अभिमानी हो सकता था। यही कारण है कि आज परमेश्वर पुनः कहता है, "मानव प्राणी मेरे द्वारा प्रदान की गई पदवियों को सँजोकर रखना तो दूर, उनमें से कई 'सेवा करने वाले' की पदवी के कारण अपने हृदयों में द्वेष पालते

हैं, और बहुत सारे 'मेरे लोग' की पदवी के कारण अपने हृदयों में मेरे प्रति प्रेम पालते हैं। किसी को भी मुझे मूर्ख बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए; मेरी आँखें सब देख रही हैं!" मनुष्य जैसे ही इस वक्तव्य को पढ़ते हैं, वे तुरंत असहज महसूस करते हैं। उन्हें महसूस होता है कि उनके अतीत के कार्य अत्यधिक बचकाने—सिर्फ एक प्रकार के गंदे-व्यवहार थे, जो परमेश्वर को अपमानित करते हैं। वे हाल ही में परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहते थे, किन्तु जबकि वे अत्यधिक इच्छुक हैं, तब भी उनमें सामर्थ्य का अभाव है और वे नहीं जानते कि उन्हें क्या करना चाहिए। अनजाने में, वे एक नए संकल्प के साथ प्रेरित होते हैं। जब कोई निश्चिंत हो जाता है तो इन वचनों को पढ़ने का यह प्रभाव होता है।

एक ओर, परमेश्वर कहता है कि शैतान चरम सीमा तक पागल है, जबकि दूसरी ओर वह यह बताता है कि अधिकांश मनुष्यों की पुरानी, साझी प्रकृति नहीं बदली है। इससे यह स्पष्ट है कि शैतान के क्रिया-कलाप मानवजाति के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। इसलिए, परमेश्वर प्रायः मनुष्य को स्वच्छन्द नहीं होने की याद दिलाता है, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह शैतान द्वारा निगल लिया जाए। यह केवल इस बात की भविष्यवाणी नहीं करता है कि कुछ मनुष्य विद्रोह करेंगे, बल्कि इससे अधिक, यह खतरे की एक घंटी है जो सभी मनुष्यों को फौरन अतीत को दरकिनार कर, वर्तमान दिन की तलाश करने हेतु चेतावनी देने के लिए बज रही है। कोई भी व्यक्ति असुरों के कब्जे में या दुष्टात्माओं के अधीन रहना नहीं चाहता है, इसलिए परमेश्वर के वचन उनके लिए और भी अधिक चेतावनी और फटकार होते हैं। हालाँकि, जब परमेश्वर के हर वचन को बहुत महत्व देते हुए, अधिकांश लोग बिलकुल विपरीत दिशा में चल देते हैं, तो परमेश्वर बदले में कहता है, "अधिकांश लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि मैं उनके लिए और अधिक रहस्य प्रकाशित करूँ जिन्हें देख कर वे अपनी आँखें निहाल कर सकें। फिर भी यदि तुम स्वर्ग के सारे रहस्य समझ भी जाओ, तो उस ज्ञान के साथ तुम क्या कर सकते हो? क्या यह मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम बढ़ाएगा? क्या यह मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम जगाएगा?" इससे यह स्पष्ट है कि मनुष्य परमेश्वर को जानने और परमेश्वर से प्यार करने के लिए परमेश्वर के वचन का उपयोग नहीं करता है, बल्कि अपने "छोटा सा भण्डारगृह" के भंडार में वृद्धि करने के लिए उपयोग करता है। इसलिए, मनुष्य जाति के अतिवाद का वर्णन करने के लिए परमेश्वर "जिन्हें देख कर वे अपनी आँखें निहाल कर सकें" वाक्यांश का उपयोग करता है, जो यह दर्शाता है कि कैसे परमेश्वर के प्रति मनुष्यों का प्यार अभी भी पूरी तरह से शुद्ध नहीं है। यदि परमेश्वर रहस्यों का अनावरण नहीं करता, तो मनुष्य उसके वचनों को बहुत महत्व नहीं देते, बल्कि उन्हें सिर्फ सरसरी तौर एक

नज़र देखते, मानो घुड़सवारी करते हुए फूलों की सराहना कर रहे हों। वे परमेश्वर के कथनों पर सही मायने में चिंतन करने और उन पर विचार करने का समय नहीं निकालते। अधिकांश लोग परमेश्वर के वचनों को वास्तव में सँजो कर नहीं रखते हैं। वे उसके वचनों को खाने और पीने की बहुत कोशिश नहीं करते हैं, बल्कि बेमन से उन्हें सतही रूप से पढ़ते हैं। परमेश्वर अब अतीत की तुलना में एक भिन्न तरीके से क्यों बोलता है? उसके सारे वचन इतने अथाह क्यों हैं? उदाहरण के लिए, "मैं इतनी आसानी से उन्हें ऐसे तमगों के मुकुट नहीं पहनाता," में "मुकुट," "क्या कोई है जो वह शुद्धतम सोना ग्रहण कर सकता है जिससे मेरे वचन निर्मित हैं," में "शुद्धतम सोना," "शैतान द्वारा किसी संसाधन से गुज़रे बिना" में "संसाधित" का उसका पिछला उल्लेख, और अन्य ऐसे ही वाक्यांश। मनुष्य की समझ में नहीं आता है कि परमेश्वर इस तरह से क्यों बोलता है; उनकी समझ में नहीं आता है कि वह क्यों इस तरह के मजाकिया, विनोदपूर्ण और भड़काऊ अंदाज में बोलता है। वास्तव में यही परमेश्वर के वचनों के उद्देश्य की अभिव्यक्तियाँ हैं। शुरुआत से अब तक, मनुष्य हमेशा परमेश्वर के वचन को समझने में अक्षम रहा है और ऐसा प्रतीत हुआ है मानो उसके कथन वास्तव में काफी गंभीर और कठोर हैं। हास्य का हल्का-सा पुट डाल कर—यहाँ-वहाँ कुछ चुटकियाँ जोड़ कर—वह अपने वचनों के भाव को हल्का करने और मनुष्य को अपनी मांसपेशियाँ थोड़ा-बहुत शिथिल करने देने में समर्थ है। ऐसा करते हुए, वह, हर मनुष्य को परमेश्वर के वचन पर विचार करने के लिए बाध्य करते हुए, एक और भी बड़ा प्रभाव प्राप्त करने में सक्षम है।

अध्याय 11

ऐसा लगता है जैसे इस अवधि में मनुष्य की आँखों के लिए, परमेश्वर के कथनों में कोई बदलाव नहीं हुआ है, ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग उन नियमों को समझने में असमर्थ हैं जिनके माध्यम से परमेश्वर बोलता है, और उसके वचनों के संदर्भ को नहीं समझते हैं। परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के बाद, लोग नहीं मानते कि इन वचनों में कोई नया रहस्य है; इसलिए, वे असाधारण रूप से नया जीवन जीने में असमर्थ हैं, बल्कि गतिहीन और बेजान जीवन जीते हैं। किन्तु परमेश्वर के कथनों में, हम देखते हैं कि गहरे स्तर का अर्थ है, ऐसा जो मनुष्य के लिए अथाह और अगम्य दोनों है। आज, मनुष्य के लिए परमेश्वर के ऐसे वचनों को पढ़ने के लिए खुशकिस्मत होना ही सबसे बड़ा आशीष है। यदि इन वचनों को कोई भी नहीं पढ़ता, तो मनुष्य सदैव अभिमानी, दंभी, स्वयं से अनभिज्ञ, और इस बात से अनजान होता कि वह कितना असफल

है। परमेश्वर के गहन, अथाह वचनों को पढ़ने के बाद, लोग चुपके से उनकी प्रशंसा करते हैं, और उनके हृदय में, सच्चा दृढ़-विश्वास होता है जिसमें झूठ का दाग नहीं होता; उनके हृदय खरी वस्तु बन जाते हैं, न कि नकली माल। वास्तव में लोगों के हृदय में यही होता है। हर एक के हृदय में उसकी अपनी कहानी है। मानो वह स्वयं से कह रहा हो: "सर्वाधिक संभावना इस बात की है कि यह स्वयं परमेश्वर द्वारा बोला गया था—यदि परमेश्वर नहीं, तो और कौन ऐसे वचन बोल सकता था? ऐसे वचन मैं क्यों नहीं बोल सकता? ऐसा कार्य मैं क्यों नहीं कर सकता? ऐसा प्रतीत होता है कि देहधारी परमेश्वर जिसके बारे में परमेश्वर बोलता है सच में वास्तविक है, और वह परमेश्वर स्वयं है! अब मैं संदेह नहीं करूँगा। अन्यथा, निश्चय ही ऐसा हो सकता है कि जब परमेश्वर का हाथ आए, तो पछताने का भी मौका न मिले! ..." अधिकांश लोग अपने हृदय में ऐसा ही सोचते हैं। यह कहना उचित है कि जब से परमेश्वर ने बोलना शुरू किया तब से लेकर आज तक, सभी लोग परमेश्वर के वचनों के सहारे के बिना गिर गए होते। ऐसा क्यों कहा जाता है कि यह सब कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाता है, मनुष्य के द्वारा नहीं? यदि परमेश्वर कलीसिया के जीवन को सहारा देने के लिए वचनों का उपयोग नहीं करता, तो हर कोई एकदम से गायब हो जाता। क्या यह परमेश्वर का सामर्थ्य नहीं है? क्या यह सच में मनुष्य की वाक्पटुता है? क्या यह अकेले मनुष्य की विलक्षण प्रतिभाएँ हैं? बिलकुल नहीं! विश्लेषण के बिना, किसी को नहीं पता होगा कि उसकी नसों में किस प्रकार का रक्त बह रहा है, वे इस बात से अनभिज्ञ होंगे कि उनके कितने हृदय हैं, या कितने मस्तिष्क हैं, और उन सभी को लगेगा कि वे परमेश्वर को जानते हैं। क्या वे नहीं जानते कि उनके ज्ञान में अभी भी विरोध निहित है? परमेश्वर के ये कहने में कोई हैरानी नहीं, "मनुष्यजाति में प्रत्येक व्यक्ति को मेरे आत्मा के अवलोकन को स्वीकार करना चाहिए, अपने हर वचन और कार्य की बारीकी से जाँच करनी चाहिए, और इसके अलावा, मेरे चमत्कारिक कर्मों पर विचार करना चाहिए।" इससे यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर के वचन निरुद्देश्य और आधारहीन नहीं हैं। परमेश्वर ने कभी किसी भी मनुष्य के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया है; यहाँ तक कि अय्यूब को भी, उसके समस्त विश्वास के बावजूद, क्षमा नहीं किया गया था—उसका भी विश्लेषण किया गया था, और शर्म से मुँह छिपाने लायक नहीं छोड़ा था। और आज के लोगों के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं। इस प्रकार, परमेश्वर तत्काल पूछता है: "पृथ्वी पर राज्य के आगमन के समय तुम लोग कैसा महसूस करते हो?" परमेश्वर के इस प्रश्न का कोई खास मतलब नहीं है, किन्तु यह लोगों को व्याकुल कर देता है: "हम क्या महसूस करते हैं? हम अभी भी नहीं जानते कि राज्य कब आएगा,

तो हम भावनाओं की बात कैसे कर सकते हैं? इससे भी अधिक, हमें कोई आभास नहीं है। यदि मुझे कुछ महसूस करना होता, तो मैं 'चकित' होता, और कुछ नहीं।" वास्तव में, यह प्रश्न परमेश्वर के वचनों का उद्देश्य नहीं है। सबसे अधिक, "जब मेरे पुत्र एवं लोग मेरे सिंहासन की ओर उमड़ पड़ते हैं, तो मैं महान सफेद सिंहासन के सम्मुख औपचारिक रूप से न्याय आरम्भ करता हूँ," यह अकेला वाक्य समस्त आध्यात्मिक क्षेत्र के घटनाक्रमों का सार है। कोई भी नहीं जानता कि इस समय के दौरान परमेश्वर आध्यात्मिक क्षेत्र में क्या करना चाहता है, और जब परमेश्वर इन वचनों को कहता है तभी लोगों में थोड़ी जागृति आती है। चूँकि परमेश्वर के कार्य के भिन्न-भिन्न कदम हैं, पूरे विश्व में परमेश्वर के कार्य भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। इस समय के दौरान, परमेश्वर मुख्यतः परमेश्वर के पुत्रों और लोगों को बचाता है, जिसका मतलब है कि स्वर्गदूतों की चरवाही में, परमेश्वर के पुत्र और लोग स्वयं का निपटाया जाना और टूटना स्वीकार करना शुरू करते हैं, वे आधिकारिक रूप से अपने विचारों और अवधारणाओं को दूर करना, और दुनिया के हर निशान को अलविदा कहना शुरू करते हैं; दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वारा बोला गया "महान सफेद सिंहासन के सम्मुख न्याय" आधिकारिक रूप से आरंभ होता है। क्योंकि यह परमेश्वर का न्याय है, इसलिए परमेश्वर को अपनी वाणी में बोलना चाहिए—हालाँकि विषयवस्तु भिन्न होती है, फिर भी उद्देश्य हमेशा एक समान होता है। आज, जिस लहजे में परमेश्वर बोलता है उसे देखने पर, ऐसा लगता है कि उसके वचन लोगों के किसी समूह को निर्देशित हैं। वास्तव में, इन सबके अलावा, ये वचन समस्त मानवजाति की प्रकृति को संबोधित करते हैं। वे सीधे इंसान के दिल पर असर करते हैं, वे मनुष्य की भावनाओं को नहीं बख्शते, और वे उसके पूरे सार को प्रकट करते, कुछ भी नहीं छोड़ते, कुछ भी नहीं जाने देते। आज से आरंभ करके, परमेश्वर आधिकारिक रूप से मनुष्य के असली चेहरे को प्रकट करता है, और इस प्रकार "अपनी आत्मा की आवाज़ को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जारी करता हूँ।" अंततः जो प्रभाव प्राप्त होता है वह है: "अपने वचनों के माध्यम से, मैं उनमें से सभी लोगों और चीज़ों को निर्मल कर दूँगा जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर हैं, ताकि भूमि अब और गंदी और व्यभिचारी न रहे, बल्कि एक पवित्र राज्य बन जाए।" ये वचन राज्य का भविष्य प्रस्तुत करते हैं, जो कि पूरी तरह से मसीह के राज्य का है, जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, "सब अच्छा फल हैं, सभी मेहनती किसान हैं।" स्वाभाविक रूप से, यह पूरे विश्व में घटित होगा, सिर्फ चीन तक सीमित नहीं रहेगा।

जब परमेश्वर बोलना और कार्य करना आरंभ करता है तभी लोगों को अपनी अवधारणाओं में उसके

बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान होता है। आरंभ में, यह ज्ञान केवल उनकी अवधारणाओं में ही मौजूद होता है, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, लोगों के विचार तेजी से निरर्थक और मनुष्य के लिए अनुपयुक्त होते जाते हैं; इस प्रकार, वे उस सब पर विश्वास करने लगते हैं जो परमेश्वर कहता है, इस हद तक कि वे "अपनी चेतना में व्यावहारिक परमेश्वर के लिए स्थान बना रहे हैं।" लोगों की चेतना-मात्र में ही व्यावहारिक परमेश्वर की जगह है। हालाँकि असलियत में, वे परमेश्वर को नहीं जानते, और केवल खोखले वचन बोलते हैं। फिर भी अतीत की तुलना में, उन्होंने बहुत अधिक प्रगति की है—जबकि अभी भी उनमें स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर से बहुत अंतर है। परमेश्वर हमेशा ऐसा क्यों कहता है, "प्रत्येक दिन मैं लोगों के अनवरत प्रवाह के बीच चलता हूँ, और प्रत्येक दिन मैं प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कार्य करता हूँ"? परमेश्वर जितना अधिक ऐसी बातें कहता है, लोग उतना ही अधिक आज के व्यावहारिक स्वयं परमेश्वर के कार्यों से उनकी तुलना कर सकते हैं, और वे वास्तविकता में व्यावहारिक परमेश्वर को बेहतर ढंग से जान सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर के वचनों को देह के परिप्रेक्ष्य से बोला जाता है, और मानवजाति की भाषा का उपयोग किया जाता है, इसलिए लोग परमेश्वर के वचनों को भौतिक चीज़ों के साथ रखकर आंकते हैं और एक बड़ा प्रभाव प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, बार-बार परमेश्वर लोगों के दिलों में "स्वयं" की छवि की और वास्तविक "स्वयं" की बात करता है, जिससे लोग अपने हृदय में परमेश्वर की छवि को शुद्ध करने के लिए और अधिक इच्छुक हो जाते हैं, और इस प्रकार व्यावहारिक स्वयं परमेश्वर को जानने और उसके साथ जुड़ने के इच्छुक हो जाते हैं। यह परमेश्वर के वचनों की बुद्धिमत्ता है। परमेश्वर जितनी अधिक ऐसी बातें कहता है, उतना ही अधिक लोगों के परमेश्वर के ज्ञान को लाभ मिलता है, और इसलिए परमेश्वर कहता है, "यदि मैं देहधारी नहीं होता, तो मनुष्य ने मुझे कभी भी नहीं जाना होता, और यदि उसने मुझे जान भी लिया होता, तो क्या इस प्रकार का ज्ञान अभी भी एक धारणा नहीं होता?" निस्संदेह, यदि लोगों को अपनी अवधारणाओं के अनुसार परमेश्वर को जानना अपेक्षित होता, तो यह उनके लिए आसान होता; वे निश्चिंत और खुश होते, और इस प्रकार लोगों के दिलों में परमेश्वर हमेशा के लिए अज्ञात रहता, व्यावहारिक नहीं, जिससे साबित होता कि शैतान, न कि परमेश्वर, पूरे ब्रह्मांड पर प्रभुत्व रखता है; इस प्रकार, परमेश्वर के ये वचन कि "मैंने अपनी सत्ता वापस ले ली है" हमेशा के लिए खोखले होकर रह जाते।

जब दिव्यता सीधे कार्य करना शुरू करती है तभी वह समय भी होता है जब राज्य आधिकारिक रूप से मनुष्य की दुनिया में उतरता है। लेकिन यहाँ जो कहा गया है वह यह कि राज्य मनुष्य के बीच उतरता

है, न कि राज्य मनुष्य के बीच आकार लेता है—और इस प्रकार आज जो बोला जाता है वह राज्य का निर्माण है, न कि यह कैसे आकार लेता है। परमेश्वर हमेशा क्यों कहता है, "सभी चीज़ें मौन हो जाती हैं"? कहीं ऐसा तो नहीं कि सभी चीजें रुक कर स्थिर हो जाती हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि बड़े-बड़े पहाड़ सचमुच मौन हो जाते हैं? तो लोगों को इस बात की कोई समझ क्यों नहीं है? कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर के वचन गलत हैं? या परमेश्वर बढ़-चढ़ाकर बता रहा है? क्योंकि परमेश्वर सब-कुछ एक निश्चित वातावरण में करता है, इसलिए कोई भी इस बारे में नहीं जानता, या इसे अपनी आँखों से नहीं देख सकता, लोग तो बस इतना ही कर सकते हैं कि वे परमेश्वर को बोलते हुए सुनें। क्योंकि परमेश्वर जिस महिमा के साथ कार्य करता है उसके कारण, जब परमेश्वर आता है, तो ऐसा लगता है मानो स्वर्ग में और पृथ्वी पर भारी परिवर्तन हुआ है; और परमेश्वर को लगता है जैसे सभी इस क्षण को देख रहे हैं। आज, तथ्य अभी तक ज्ञात नहीं हुए हैं। लोगों ने परमेश्वर के वचनों के शाब्दिक अर्थ के केवल छोटे से हिस्से को ही समझा है। सही अर्थ को उस समय की प्रतीक्षा है जब वे अपनी अवधारणाओं को शुद्ध कर लेंगे; तभी वे जान पाएँगे कि देहधारी परमेश्वर आज पृथ्वी पर और स्वर्ग में क्या कर रहा है। चीन में परमेश्वर के लोगों में केवल बड़े लाल अजगर का जहर ही नहीं है, उनमें बड़े लाल अजगर की प्रकृति भी काफी मात्रा में है, और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है। लेकिन परमेश्वर इस बारे में सीधे तौर पर बात नहीं करता, बड़े लाल अजगर के जहर के बारे में बस थोड़ा-सा ज़िक्र करता है। इस तरह, वह सीधे तौर पर इंसान के दाग उजागर नहीं करता, जो इंसान की प्रगति के लिए अधिक लाभकारी है। बड़े लाल अजगर के सपोले दूसरों के सामने बड़े लाल अजगर के वंशज कहलाना पसंद नहीं करते। लगता है जैसे "बड़े लाल अजगर" का संबोधन उन्हें शर्मिंदा करता है; उनमें से कोई भी इन शब्दों के बारे में बात करने को तैयार नहीं है, इसलिए परमेश्वर बस इतना कहता है, "मेरे कार्य का यह चरण मुख्य रूप से तुम लोगों पर केन्द्रित है, और चीन में मेरे देहधारण के महत्व का एक पहलू है।" और संक्षेप में, परमेश्वर मुख्यतः बड़े लाल अजगर के सपोलों के मूल प्रतिनिधियों को जीतने के लिए आता है, जो कि चीन में परमेश्वर के देहधारण का अभिप्राय है।

"जब मैं व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के बीच आता हूँ, तो स्वर्गदूत साथ-साथ चरवाही का कार्य आरम्भ कर देते हैं।" वास्तव में, इसे अक्षरशः नहीं लिया जाता है कि जब स्वर्गदूत सभी लोगों के बीच अपना कार्य शुरू करते हैं तभी परमेश्वर का आत्मा मनुष्य की दुनिया में आता है। बल्कि ये दोनों कार्य—दिव्यता का कार्य और स्वर्गदूतों की चरवाही—साथ-साथ किए जाते हैं। इसके बाद, परमेश्वर स्वर्गदूतों की चरवाही के

बारे में थोड़ी-बहुत बात करता है। जब वह कहता है कि "सभी पुत्र और लोग न केवल परीक्षाओं और चरवाही को प्राप्त करते हैं, बल्कि अपनी आँखों से सभी प्रकार के दर्शनों की घटनाओं का अवलोकन करने में भी समर्थ हो जाते हैं," तो अधिकांश लोग "दर्शन" शब्द के बारे में ढेरों कल्पनाएँ करने लगते हैं। दर्शन का अर्थ लोगों की कल्पनाओं में अलौकिक घटनाओं का घटना है। लेकिन कार्य की विषय-वस्तु व्यावहारिक स्वयं परमेश्वर का ज्ञान ही रहती है। दर्शन वे साधन हैं जिनके द्वारा स्वर्गदूत कार्य करते हैं। वे लोगों को स्वर्गदूतों के अस्तित्व का बोध कराने के लिए, उन्हें एहसास या सपने देते हैं। लेकिन स्वर्गदूत इंसान के लिए अदृश्य ही बने रहते हैं। जिस तरीके से वे परमेश्वर के पुत्रों और लोगों के बीच कार्य करते हैं, वह उन्हें प्रत्यक्ष रूप से प्रबुद्ध और रोशन करने के लिए है, जिसमें उनसे निपटना और उनका टूटना भी शामिल है। वे शायद ही कभी धर्मोपदेश देते हैं। स्वाभाविक रूप से, लोगों के बीच समागम अपवाद है; चीन के बाहर के देशों में यही हो रहा है। परमेश्वर के वचनों में हर इंसान के रहन-सहन की परिस्थितियों का प्रकटन शामिल है—स्वाभाविक रूप से, इसका मुख्य निशाना बड़े लाल अजगर के सपोले हैं। इंसान की तमाम अवस्थाओं में से, परमेश्वर केवल उन्हीं को चुनता है जो आदर्श-रूप होती हैं। इस प्रकार, परमेश्वर के वचन लोगों को नंगा कर देते हैं, उन्हें कोई शर्म भी नहीं आती, या उनके पास तेज़ प्रकाश से छिपने का समय नहीं होता, और वे अपने ही खेल में मात खा जाते हैं। इंसान का तरह-तरह का व्यवहार ऐसी ढेर सारी कलाकृतियाँ हैं, जिन्हें परमेश्वर प्राचीन काल से आज तक बनाता आ रहा है, और जिन्हें वह कल भी बनाना जारी रखेगा। वह केवल इंसान की भद्दी तस्वीर ही बनाता है: कुछ लोग, आँखों की रोशनी चले जाने के कारण दुःखी होकर अंधेरे में रोते हुए नज़र आते हैं, कुछ हँसते हैं, कुछ लोग भयंकर लहरों के थपेड़े खाते हैं, कुछ घुमावदार पहाड़ी रास्तों पर भटक रहे होते हैं, कुछ लोग, धनुष-टंकार से चौंके हुए पक्षी की तरह, पहाड़ों में जंगली जानवरों के शिकार हो जाने के डर से, काँपते हुए, विशाल बीहड़ के बीच रास्ता खोज रहे होते हैं। परमेश्वर के हाथों में, ऐसे बहुत से बदसूरत तौर-तरीके मार्मिक, सजीव-सी झाँकियाँ बन जाते हैं, उनमें से अधिकाँश देखने में बहुत भयानक होते हैं, या लोगों के रोंगटे खड़े कर देने, उन्हें बेचैन और भ्रमित कर देने के लिए काफी होते हैं। परमेश्वर की नज़रों में, मनुष्य में जो कुछ भी अभिव्यक्त होता है वह केवल कुरूपता है, और भले ही यह करुणा उत्पन्न कर दे, फिर भी यह है तो कुरूपता ही। परमेश्वर से मनुष्य के मतभेद का बिंदुपथ यह है कि मनुष्य की कमजोरी दूसरों के प्रति दया दिखाने की उसकी प्रवृत्ति में निहित है। लेकिन, परमेश्वर हमेशा मनुष्य के प्रति एक-सा ही रहा है, जिसका अर्थ है कि

उसका दृष्टिकोण हमेशा एक-सा है। वह हमेशा ऐसा दयावान नहीं होता जैसा कि लोग मानते हैं, उस अनुभवी माँ की तरह जिसके मन में हमेशा उसके बच्चे ही छाए रहते हैं। सच्चाई ये है कि अगर परमेश्वर बड़े लाल अजगर को जीतने के लिए कई तरह के तरीके न आज़माना चाहता, तो ऐसा संभव नहीं था कि वह मनुष्य की सीमाओं को झेलकर, इस तरह के अपमान के आगे आत्मसमर्पण करता। परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार, लोग जो कुछ भी करते और कहते हैं वह सब परमेश्वर के क्रोध को भड़काता है, और उन्हें ताड़ना दी जानी चाहिए। परमेश्वर की नज़रों में, उनमें से एक भी मानक पर खरा नहीं उतरता, और सभी इसी लायक हैं कि परमेश्वर उन्हें मार गिराये। चीन में परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों के कारण, इसके अलावा, बड़े लाल अजगर की प्रकृति के कारण, और इस कारण भी कि चीन बड़े लाल अजगर का देश है, और ऐसी भूमि है जिसमें देहधारी परमेश्वर रहता है, परमेश्वर को अपना क्रोध पी जाना चाहिए और बड़े लाल अजगर के सभी सपोलों को जीत लेना चाहिए; फिर भी वह बड़े लाल अजगर के सपोलों से हमेशा घृणा करता रहेगा, यानी वह बड़े लाल अजगर की हर चीज़ से हमेशा घृणा करेगा—और यह कभी नहीं बदलेगा।

किसी को आज तक परमेश्वर के किसी भी कार्य का ज्ञान नहीं रहा है, न ही उसके कार्यों को कभी किसी चीज़ के द्वारा देखा गया है। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर सिय्योन में वापस आया, तो इस बारे में कौन जानता था? इस प्रकार, "मैं चुपचाप मनुष्यों के बीच आता हूँ, और चुपचाप चला जाता हूँ। क्या किसी ने कभी मुझे देखा है?" जैसे वचन दर्शाते हैं कि इंसान में निस्संदेह आध्यात्मिक क्षेत्र की घटनाओं को स्वीकार करने के गुणों का अभाव है। अतीत में, जब परमेश्वर सिय्योन लौटा तो, उसने कहा था कि "सूर्य तेजस्वी है, चंद्रमा चमकदार है"। क्योंकि लोग अभी भी सिय्योन में परमेश्वर की वापसी के बारे में विचारमग्न हैं—क्योंकि वे अभी तक इसे भूले नहीं हैं—इसलिए, लोगों की अवधारणाओं के अनुरूप होने के लिए, सीधे तौर पर परमेश्वर कहता है "सूर्य तेजस्वी है, चंद्रमा चमकदार है"। परिणामस्वरूप, जब लोगों की अवधारणाओं को परमेश्वर के वचनों से चोट पहुँचती है, तो वे देखते हैं कि परमेश्वर के कार्य बहुत चमत्कारिक हैं, और देखते हैं कि उसके वचन गहरे और अथाह हैं, और सभी के लिए अबूझ हैं; इसलिए, वे इस मामले को पूरी तरह से अलग रख देते हैं, और अपनी आत्माओं में थोड़ी-बहुत स्पष्टता का एहसास करते हैं, मानो परमेश्वर पहले ही सिय्योन में लौट आया हो, इसलिए लोग इस मामले पर अधिक ध्यान नहीं देते। तब से, वे परमेश्वर के वचनों को एक हृदय और एक मन से स्वीकार करते हैं, और इस बात से खीजते

नहीं कि परमेश्वर के सिय्योन लौटने के बाद तबाही आएगी। तभी लोग परमेश्वर के वचनों पर पूरा ध्यान देते हुए, और उन पर और आगे विचार करने की इच्छा न रखते हुए, परमेश्वर के वचनों को आसानी से स्वीकार कर सकते हैं।

परिशिष्ट : अध्याय 2

जब लोग व्यावहारिक परमेश्वर को देखते हैं, जब वो व्यक्तिगत रूप से अपना जीवन उसके साथ जीते हैं, उसके साथ-साथ चलते हैं और स्वयं परमेश्वर के साथ रहते हैं, तो वो इतने सालों से अपने हृदय में मौजूद उत्सुकता को दरकिनार कर देते हैं। परमेश्वर के जिस ज्ञान के बारे में पहले कहा गया था, वह केवल पहला कदम है; हालांकि लोगों को परमेश्वर का ज्ञान है, फिर भी उनके हृदय में लगातार कई संदेह बने रहते हैं: परमेश्वर कहां से आया? परमेश्वर क्या खाता है? क्या परमेश्वर साधारण लोगों से बहुत अलग है? क्या परमेश्वर के लिए सब लोगों से व्यवहार मामूली-सी बात है, महज़ बच्चों का खेल है? क्या परमेश्वर के मुँह से जो कुछ निकलता है, वह स्वर्ग के रहस्य हैं? क्या उसकी कही हर बात सृष्टि के प्राणियों के मुकाबले ज़्यादा ऊँची है? क्या परमेश्वर की आँखों से प्रकाश निकलता है? वगैरह-वगैरह... लोगों की धारणाएं बस यहीं तक पहुँच पाती हैं। सबसे पहले, तुम सब इन्हीं चीज़ों को समझो और उनमें प्रवेश करो। लोगों की धारणाओं के अनुसार, देहधारी परमेश्वर अभी भी एक अज्ञात परमेश्वर है। यदि व्यावहारिक ज्ञान न हो, तो लोग मुझे कभी नहीं समझ पाएंगे, और मेरे कर्मों को कभी अपने अनुभव में नहीं ला पाएंगे। चूँकि मैंने देहधारण किया है, इसीलिए लोग मेरी इच्छा को "समझ नहीं पाते हैं"। यदि मैं देहधारी न हुआ होता, और अभी भी स्वर्ग में होता, आध्यात्मिक क्षेत्र में होता, तो लोग मुझे "जानते"; मेरे सामने झुककर मेरी आराधना करते और अपने अनुभवों के ज़रिए वो मेरे बारे में अपने "ज्ञान" की चर्चा करते—लेकिन ऐसे "ज्ञान" का क्या उपयोग है? एक संदर्भ के रूप में इसका क्या मूल्य है? क्या लोगों की धारणाओं से आया ज्ञान असली हो सकता है? मुझे लोगों के मस्तिष्क का ज्ञान नहीं चाहिए—मुझे व्यावहारिक ज्ञान चाहिए।

मेरी इच्छा हर समय तुम सब में प्रकट है, मेरी रोशनी और प्रबुद्धता भी हर समय प्रकट है। और जब मैं सीधे तौर पर दिव्यता में कार्य करता हूँ तो यह मस्तिष्क से छनकर नहीं आती, इसमें "मसाले" मिलाने की कोई ज़रूरत नहीं होती—यह सीधे दिव्यता का कार्य है। लोग किस लायक हैं? क्या सृष्टि के समय से लेकर आज तक, सब कुछ मैंने निजी तौर पर कार्यान्वित नहीं किया है? अतीत में मैंने सात गुनी तीव्र

आत्मा की बात की थी, पर उसके सार को कोई समझ ही नहीं पाया—यहां तक कि जब उन्हें इसका अहसास था, तब भी वो इसे पूरी तरह समझने में अक्षम थे। जब मैं दिव्यता से शासित मानवता में कार्य करता हूँ, चूँकि यह कार्य उन परिस्थितियों में क्रियान्वित किया जाता है, जिन्हें लोग अलौकिक न समझकर सामान्य समझते हैं, तो इसे पवित्रात्मा के कार्य के रूप में जाना जाता है। जब मैं सीधे दिव्यता में कार्य करता हूं, चूँकि मैं लोगों की धारणाओं से मुक्त हूँ, और चूँकि उनकी धारणाओं में "अलौकिक" की जो सीमाएं हैं उनके अधीन नहीं हूँ, तो इस कार्य का प्रभाव तुरंत होता है; यह मामले की तह तक जाता है और सीधे बिंदु तक पहुँचता है। परिणामत:, कार्य का यह चरण अधिक शुद्ध होता है; इसकी गति दोगुनी होती है, लोगों की समझ बढ़ती है और मेरे वचनों में वृद्धि हो जाती है, तो उन्हें समझने के लिए लोगों को शीघ्रता करनी पड़ती है। चूँकि प्रभाव अलग है, चूँकि मेरे काम के साधन, प्रकृति और विषय-वस्तु एक जैसे नहीं हैं—और इसके अलावा, चूँकि मैंने औपचारिक रूप से देह में कार्य करना शुरू कर दिया है, पिछले दृष्टिकोण से, कार्य का यह चरण "सात गुना तीव्र आत्मा का कार्य" कहा जाता है। यह कोई अमूर्त चीज़ नहीं है। मैं जिन साधनों से तुम लोगों में काम करता हूँ, उनमें विकास होने के बाद, और राज्य के आने के बाद, सात गुना तीव्र आत्मा कार्य करना शुरू करती है, और यह कार्य निरंतर गहरा और तीव्र होता जाता है। जब सारे लोग परमेश्वर का अवलोकन करते हैं और देखते हैं कि परमेश्वर का आत्मा तो लोगों के मध्य है, तो मेरे देहधारण की पूर्ण महत्ता स्पष्ट हो जाती है। इसके सारांश की आवश्यकता नहीं रह जाती–लोग स्वभाविक रूप से समझ जाते हैं।

इन विभिन्न पहलुओं को देखते हुए—मेरे कार्य की पद्धतियां, मेरे कार्य के चरण, मेरे आज के वचनों के स्वर, वगैरह—मेरे मुख से केवल सच्चे अर्थ में "सात आत्माओं के कथन" ही निकलते हैं। हालाँकि मैं पहले कलीसिया निर्माण के चरण के समय भी बोला था। यह किसी उपन्यास के आमुख और विषय-सूची की तरह था—यह बिना सार का था; केवल आज के कथनों को ही उनके सच्चे सार के अर्थ में सात आत्माओं के कथन कहा जा सकता है। "सात आत्माओं के कथन" के मायने सिंहासन की ओर से आने वाले कथन हैं, यानी वो सीधे दिव्यता में कहे जाते हैं। जिस पल मेरे कथन स्वर्ग के रहस्यों को उजागर करने लगे, तो यह वह पल था, जब मैं सीधे दिव्यता में बोला। दूसरे शब्दों में, बिना किसी मानवीय विवशता के, मैंने आध्यात्मिक क्षेत्र के सभी रहस्य और परिस्थितियां सीधे उजागर कर दीं। मैं क्यों कहता हूँ कि पहले मैं मानवता की सीमाओं के अधीन था? इसकी व्याख्या की आवश्यकता है। लोगों की दृष्टि में, कोई भी स्वर्ग

के रहस्यों को उजागर करने में समर्थ नहीं है; यदि स्वयं परमेश्वर न हो, तो अन्य कोई इस धरती पर इन रहस्यों को नहीं जान सकता। इसलिए, मैं लोगों की धारणाओं को संबोधित करता हूँ और कहता हूँ कि मैंने पहले इन रहस्यों को इसलिए उजागर नहीं किया क्योंकि मैं मानवता की सीमाओं के अधीन था। हालांकि विशेष तौर पर, मामला यह नहीं है: मेरा कार्य बदलने के साथ ही मेरे वचनों की विषय-वस्तु भी बदल जाती है, और इस प्रकार, जब मैंने दिव्यता में अपनी सेवकाई का कार्य शुरू किया, तो मैंने रहस्य उजागर किए: पहले मुझे उन हालात में काम करना पड़ा जो लोगों को सामान्य नज़र आते थे, और मैंने जो वचन बोले, वो लोगों की धारणाओं में बैठ जाने की क्षमता रखते थे। जब मैंने रहस्य उजागर करने शुरू किए, तो इनमें से एक को भी लोगों की धारणा ग्रहण नहीं कर पा रही थी—वो इंसानी सोच से अलग थे। इसीलिए मैंने औपचारिक रूप से दिव्यता में बोलना शुरू किया, और ये सच्चे अर्थ में सात आत्माओं के कथन थे। हालांकि पिछले वचन सिंहासन के कथन थे, वो लोगों की ग्राह्यता के आधार पर कहे गए थे, और इसलिए सीधे ही दिव्यता में नहीं बोले गए थे—परिणामस्वरूप, वो सच्चे अर्थ में सात आत्माओं के कथन नहीं थे।

अध्याय 12

जब सभी लोग ध्यान देते हैं, जब सब-कुछ नवीकृत और पुनर्जीवित हो जाता है, जब हर व्यक्ति बिना आशंका के परमेश्वर को समर्पित होकर परमेश्वर के बोझ की भारी ज़िम्मेदारी को अपने कंधे पर उठाने के लिए तैयार हो जाता है—तब पूर्व से बिजली चमकती है, पूर्व से पश्चिम तक सभी को रोशन कर देती है, और इस प्रकाश के आगमन से पृथ्वी के लोगों को भयाक्रांत कर देती है; और इस मोड़ पर, परमेश्वर एक बार फिर नया जीवन आरंभ करता है। तात्पर्य यह कि इस समय परमेश्वर पृथ्वी पर अपना नया कार्य आरंभ करता है, और पूरे विश्व के लोगों के लिए यह घोषणा करता है "जब पूर्व से बिजली चमकती है, जो कि निश्चित रूप से वो क्षण भी होता है जब मैं बोलना आरम्भ करता हूँ—जब बिजली चमकती है, तो संपूर्ण नभमण्डल रोशन हो उठता है, और सभी तारों का रूपान्तरण हो जाता है।" तो, बिजली पूर्व दिशा से कब चमकती है? जब आसमानों पर अंधेरा छाने लगता है और पृथ्वी धुंधली हो जाती है, तब परमेश्वर दुनिया से अपना चेहरा छिपा लेता है, और उसी समय आकाश के नीचे सब-कुछ एक शक्तिशाली तूफान से घिरने वाला होता है। इस समय, लोग भयाक्रांत हो जाते हैं, गड़गड़ाहट से भयभीत हो जाते हैं, बिजली की चमक से डर जाते हैं, और प्रलय के आक्रमण से इतने ज्यादा भयाकुल हो जाते हैं कि ज्यादातर लोग अपनी आँखें

मूँदकर परमेश्वर के क्रोधित होने और उसके हाथों मारे जाने की प्रतीक्षा करते हैं। जैसे ही अलग-अलग स्थितियाँ पैदा होती हैं, चमकती पूर्वी बिजली तत्काल प्रसारित होती है। इसका अर्थ यह है कि दुनिया की पूर्व दिशा में, परमेश्वर स्वयं के प्रति गवाही शुरू होने के समय से लेकर उस समय तक जब वह कार्य करना शुरू करता है, यानी जब दिव्यता पूरी पृथ्वी पर अपनी सार्वभौमिक सत्ता का संचालन करने लगती है—चमकती पूर्वी बिजली की ये दिव्य किरणें पूरे ब्रह्मांड पर हमेशा जगमगाती रही हैं। जब धरती के सारे देश मसीह का राज्य बन जाते हैं, तब पूरा ब्रह्मांड प्रकाशित हो जाता है। अब चमकती पूर्वी बिजली के रोशन होने का समय आ गया है: देहधारी परमेश्वर कार्य करना शुरू कर देता है, साथ ही सीधे दिव्यता में बात करता है। ऐसा कहा जा सकता है कि जब परमेश्वर पृथ्वी पर बात करना शुरू करता है, तभी चमकती पूर्वी बिजली प्रकट होती है। और सटीकता से कहें, तो जब सिंहासन से जीवन का जल बहता है—तब सिंहासन से कथन आरंभ होते हैं—ठीक उसी समय औपचारिक रूप से सात आत्माओं के कथन भी आरंभ होते हैं। इस समय, चमकती पूर्वी बिजली प्रसारित होने लगती है, इसकी अवधि के कारण, रोशनी का स्तर भी बदल जाता है, और इसकी जगमगाहट की भी एक सीमा होती है। फिर भी परमेश्वर के कार्य के संचालन और उसकी योजना में परिवर्तन के कारण—परमेश्वर के पुत्रों और लोगों पर कार्य में विविधता के कारण, बिजली लगातार इस तरह अपना अंतर्निहित कार्य करती है कि पूरा ब्रह्मांड प्रकाशित हो जाता है, और कोई तलछट या अशुद्धता नहीं रहती। यह परमेश्वर की 6,000 साल की प्रबंधन योजना को एक ठोस आकार देना है, और यही वह फल है परमेश्वर जिसका आनंद लेता है। "सितारों" के मायने आकाश के सितारे नहीं, बल्कि परमेश्वर के सभी पुत्र और जन हैं जो परमेश्वर के लिए काम करते हैं। चूँकि वे परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की गवाही देते हैं, परमेश्वर के राज्य में उसका प्रतिनिधित्व करते हैं, और चूँकि वे जीव हैं, इसलिए उन्हें "सितारे" कहा जाता है। "रूपांतरित होना" का अर्थ लोगों की पहचान और उनके रुतबे में हुआ परिवर्तन है: लोग पृथ्वी के लोगों से राज्य के लोगों में बदल जाते हैं, साथ ही, परमेश्वर उनके साथ होता है और उनमें परमेश्वर की महिमा होती है। नतीजतन, वे परमेश्वर की जगह पर सार्वभौमिक शक्ति का संचालन करते हैं, उनके अंदर का विष और अशुद्धियाँ परमेश्वर के कार्य से शुद्ध हो जाती हैं, जिसकी वजह से वो अंततः परमेश्वर द्वारा उपयोग करने योग्य और परमेश्वर के हृदय के अनुकूल बन जाते हैं—जो इन शब्दों के अर्थ का एक पहलू है। जब परमेश्वर की रोशनी की किरणें समस्त भूमि को प्रकाशित करती हैं, तो स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजें अलग-अलग स्तर पर बदल जाएँगी, आकाश के तारे

भी बदल जाएँगे, सूरज और चाँद नए हो जाएँगे, और उसके बाद धरती के लोग भी नए हो जाएँगे—जो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

जब परमेश्वर लोगों को बचाता है—इसमें वो लोग शामिल नहीं होते जिन्हें स्वाभाविक रूप से नहीं चुना जाता—तो ठीक इसी समय परमेश्वर लोगों का शुद्धिकरण और न्याय करता है, और उसके वचनों के कारण सभी लोग फूट-फूट कर रोते हैं, या अपने बिस्तरों पर आहत पड़े रहते हैं, या मृत्यु के नरक में मार गिराए जाते हैं। परमेश्वर के कथनों के कारण वे खुद को जानने लगते हैं। यदि ऐसा न होता, तो उनकी आँखें मेंढक की तरह होतीं—ऊपर की ओर ताकती हुईं, उनमें से कोई भी आश्वस्त नहीं होता, उनमें से कोई भी खुद को नहीं जानता, खुद का वज़न कितना है इससे भी अनजान होता। लोग वास्तव में शैतान द्वारा हद से ज़्यादा भ्रष्ट हो चुके हैं। निश्चित रूप से परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की वजह से ही मनुष्य का कुरूप चेहरा इतनी स्पष्ट बारीकियों के साथ चित्रित हुआ है, जिसके कारण मनुष्य इसे पढ़ने के बाद, अपने वास्तविक चेहरे से इसकी तुलना करता है। लोग जानते हैं, शायद परमेश्वर को यह पता है कि उनके सिर में मस्तिष्क की कितनी कोशिकाएँ हैं, उनके बदसूरत चेहरों या अंदरूनी विचारों के बारे में तो कुछ भी न कहना ही बेहतर होगा। इन शब्दों में "मानो पूरी मानवजाति को निपटा दिया जा चुका हो। पूर्व से आने वाले इस प्रकाश की रोशनी में, समस्त मानवजाति अपने मूल स्वरूप में प्रकट हो जाती है, उनकी आँखें चुँधिया जाती हैं, उन्हें समझ नहीं आता कि क्या करें" यह देखा जा सकता है कि एक दिन जब परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा, तो परमेश्वर समस्त मानवजाति का न्याय करेगा। कोई बच नहीं पाएगा; परमेश्वर मानवजाति के हर व्यक्ति से, बिना किसी को अनदेखा किए, एक-एक कर निपटेगा, उसके बाद ही परमेश्वर का दिल संतुष्ट होगा। और इसलिए, परमेश्वर कहता है, "वे उन पशुओं की तरह भी हैं जो मेरे प्रकाश से दूर भागते हैं और पहाड़ी गुफाओं में शरण लेते हैं—फिर भी, उनमें से एक को भी मेरे प्रकाश में से मिटाया नहीं जा सकता।" लोग अधम और नीच पशु हैं। शैतान के हाथों में रहते हुए वो ऐसे लगते हैं जैसे उन्होंने पहाड़ों के भीतर गहरे प्राचीन वनों में शरण ले ली हो—परन्तु चूँकि कोई भी चीज, शैतान की शक्तियों के "संरक्षण" में रहते हुए भी, परमेश्वर की आग में भस्म होने से बच नहीं सकती, तो परमेश्वर उन्हें कैसे भूल सकता है? जब लोग परमेश्वर के वचनों के आगमन को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की कलम से लोगों की अनेक विलक्षण और विचित्र दशाएँ चित्रित होती हैं; परमेश्वर मनुष्य की ज़रूरतों और मानसिकता के अनुरूप बोलता है। इस प्रकार, लोगों के लिए, परमेश्वर मनोविज्ञान में माहिर नज़र आता

है। ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर कोई मनोवैज्ञानिक हो, और यह भी लगता है जैसे परमेश्वर आंतरिक उपचार का कोई विशेषज्ञ भी हो—कोई आश्चर्य नहीं कि उसे "जटिल" मनुष्य की ऐसी समझ है। जितना अधिक लोग इस बारे में सोचते हैं, परमेश्वर की बहुमूल्यता का उन्हें उतना ही अधिक एहसास होता है और उतना ही अधिक उन्हें लगता है कि परमेश्वर गहन और अथाह है। ऐसा लगता है कि मनुष्य और परमेश्वर के बीच, एक अगम्य स्वर्गिक सीमा-रेखा है, बल्कि यह भी कि मानो चू नदी[क] के दो किनारों से दोनों एक-दूसरे को देख रहे हों, दोनों में से कोई भी एक-दूसरे को देखने के अलावा कुछ करने में सक्षम नहीं है। कहने का अर्थ है, पृथ्वी पर रहने वाले लोग केवल अपनी आँखों से परमेश्वर को देखते हैं; उन्हें कभी भी समीप से उसका अध्ययन करने का मौका नहीं मिला है, और उसके प्रति उनके अंदर मात्र एक लगाव की भावना है। उनके दिल में हमेशा एक भावना होती है कि परमेश्वर सुंदर है, परन्तु चूँकि परमेश्वर इतना "निर्मम और निर्दयी," है कि उन्हें कभी उसके सामने अपने मन की पीड़ा व्यक्त करने का अवसर नहीं मिला है। वे पति के सामने उस खूबसूरत जवान पत्नी की तरह हैं जो अपने पति की सत्यनिष्ठा के कारण कभी भी अपनी सच्ची भावनाओं का खुलासा करने का अवसर नहीं पा सकी है। लोग खुद से घृणा करने वाले अभागे हैं, और इसलिए, उनकी भंगुरता के कारण, उनमें आत्मसम्मान की कमी के कारण, मनुष्य के प्रति मेरी नफरत अनजाने ही कुछ ज्यादा तीव्र हो जाती है, और मेरे दिल का रोष फूट पड़ता है। लगता है जैसे अपने मस्तिष्क में मैंने कोई आघात झेला हो। मैं काफी पहले ही मनुष्य से आशा खो चुका हूँ, लेकिन क्योंकि "एक बार फिर, मेरा दिन समस्त मानवजाति के नज़दीक आ रहा है, एक बार फिर मानवजाति को जाग्रत कर रहा है और मानवजाति को एक और नई शुरुआत दे रहा है।," मैं एक बार फिर से समग्र मानवजाति को जीतने, बड़े लाल अजगर को पकड़ने और हराने के लिए साहस जुटा रहा हूँ। परमेश्वर का मूल इरादा इस प्रकार था: चीन में बड़े लाल अजगर के वंश-विस्तार पर विजय पाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना; इसी को बड़े लाल अजगर की हार, बड़े लाल अजगर की पराजय माना जा सकता था। इसे साबित करने के लिए इतना ही पर्याप्त होगा कि परमेश्वर समूची पृथ्वी पर राजा के रूप में शासन करता है, इतना ही पर्याप्त होगा परमेश्वर के महान अभियान की सफलता को साबित करने के लिए, और यह भी कि पृथ्वी पर परमेश्वर की एक नई शुरुआत हुई है, और वह पृथ्वी पर गौरवान्वित हुआ है। अंतिम सुंदर दृश्य की वजह से, परमेश्वर अपने मनोभाव को व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता: "मेरा हृदय धड़कता है और मेरी धड़कनों की लय का अनुसरण करते हुए, पहाड़ आनन्द से उछलते हैं, समुद्र खुशी से नृत्य करता है

और लहरें लय में चट्टानों की दीवारों से टकराती हैं। जो मेरे हृदय में है, उसे व्यक्त करना कठिन है।" इससे यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने जो योजना बनाई थी, उसे वह पहले ही पूरा कर चुका है; यह परमेश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित था, और यह ठीक वही है जो परमेश्वर लोगों को अनुभव कराता और दिखाता है। राज्य का भविष्य सुंदर है; राज्य का राजा विजेता है, उसके सिर से पैर तक मांस और रक्त का कभी कोई निशान नहीं रहा है, वह पूरी तरह दिव्य तत्वों से बना है। उसका पूरा देह पवित्र महिमा से उज्ज्वल है, मानव विचारों से पूरी तरह अछूता; ऊपर से नीचे तक उसके सारे शरीर से धार्मिकता और स्वर्ग की आभा छलकती है, वह एक मनोरम सुगंध छोड़ता है। श्रेष्ठ गीत में प्राणप्रिय की तरह, वह सभी संतों की तुलना में अधिक सुंदर है, प्राचीन संतों से ऊँचा है; वह सभी लोगों में आदर्श है, और मनुष्य से उसकी तुलना नहीं की जा सकती; लोग उसे सीधे देखने के योग्य भी नहीं हैं। कोई भी परमेश्वर के महिमापूर्ण चेहरे को, उसके स्वरूप या उसकी छवि को प्राप्त नहीं कर सकता; कोई भी उससे प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता, और कोई भी आसानी से अपने मुंह से इन बातों की प्रशंसा नहीं कर सकता।

परमेश्वर के वचनों का कोई अंत नहीं है, एक झरने से फूटते पानी की तरह वे कभी सूखेंगे नहीं, और इस प्रकार कोई भी परमेश्वर की प्रबंधन योजना के रहस्यों की थाह नहीं पा सकता। फिर भी परमेश्वर के लिए, ऐसे रहस्य अनंत हैं। विभिन्न तरीकों और भाषा का प्रयोग करते हुए, परमेश्वर ने कई बार पूरे ब्रह्मांड के अपने नवीकरण और संपूर्ण परिवर्तन के बारे में बात की है, हर बार पिछली बार की तुलना में अधिक गहराई से: "मैं सभी अशुद्ध चीज़ों को घूरकर भस्म कर देना चाहता हूँ; मैं चाहता हूँ कि सभी अवज्ञाकारी पुत्र मेरी नज़रों के सामने से ओझल हो जाएँ और आगे से उनका कोई अस्तित्व ही न रहे।" परमेश्वर बार-बार ऐसी बातें क्यों कहता है? क्या वह भयभीत नहीं कि लोग इनसे थक जाएँगे? परमेश्वर को जानने के लिए लोग उसके वचनों को यूं ही टटोलते रहते हैं, लेकिन खुद को जाँचने की बात कभी याद नहीं रखते। इसलिए, परमेश्वर उन्हें याद दिलाने के लिए इस साधन का उपयोग करता है, ताकि वे खुद को जान सकें, और खुद ही मनुष्य की अवज्ञा के बारे में जान सकें, और इस तरह परमेश्वर के सामने अपनी अवज्ञा को समाप्त कर सकें। यह पढ़कर कि परमेश्वर "सुलझाना" चाहता है, लोग तुरंत बेचैन हो जाते हैं, और उनकी मांसपेशियाँ भी निष्क्रिय हो जाती हैं। वे अपनी आलोचना करने के लिए तुरंत परमेश्वर के सामने लौट आते हैं, और इस तरह परमेश्वर को जान पाते हैं। इसके बाद—उनके निश्चय कर लेने के बाद—परमेश्वर इस अवसर का उपयोग उन्हें बड़े लाल अजगर की वास्तविकता दिखाने के लिए करता है; इस प्रकार, लोग

सीधे आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ते हैं, और उनके संकल्प द्वारा निभाई गई भूमिका के कारण, उनके दिमाग भी एक भूमिका निभाना शुरू कर देते हैं, जिससे मनुष्य और परमेश्वर के बीच भावना में वृद्धि होती है—जो देहधारी परमेश्वर के कार्य के लिए अधिक लाभकारी है। इस तरह, लोग अनजाने में ही गुज़रे समय की ओर पीछे मुड़कर देखना चाहते हैं: पूर्व में, वर्षों तक लोग एक अज्ञात परमेश्वर में विश्वास करते थे; बरसों तक उनके दिल ने मुक्ति का एहसास नहीं किया था, वे बहुत अधिक आनंद नहीं ले पाए थे, हालाँकि वे परमेश्वर में विश्वास करते थे, लेकिन उनके जीवन में कोई व्यवस्था नहीं थी। ऐसा लगता था कि विश्वासी बनकर भी पहले की तुलना में कोई फर्क नहीं पड़ा है, उनके जीवन में अभी भी खालीपन और निराशा थी, ऐसा लगता था कि उस समय उनका विश्वास एक प्रकार की उलझन ही था, अनास्था से बेहतर न था। जब से उन्होंने आज के व्यावहारिक स्वयं परमेश्वर को देखा है, लगता है जैसे स्वर्ग और पृथ्वी का नवीकरण हो गया है; उनके जीवन उज्ज्वल हो गए हैं, वे अब आशाहीन नहीं हैं, और व्यावहारिक परमेश्वर के आगमन के कारण, वे अपने दिलों में दृढ़ और अपनी आत्माओं में शांत हैं। वे अब जो भी करते हैं उसमें हवा का पीछा नहीं करते, छाया को नहीं पकड़ते, अब उनकी खोज लक्ष्यहीन नहीं है और अब वे यूं ही इधर-उधर हाथ-पैर नहीं मारते। आज का जीवन और भी अधिक सुंदर है, लोगों ने अनपेक्षित रूप से राज्य में प्रवेश कर लिया है और वे परमेश्वर की प्रजा में शामिल हो गए हैं, और बाद में... जितना अधिक लोग सोचते हैं, उनके दिलों में उतनी ही अधिक मिठास होती है, वे इस पर जितना सोचते हैं, वे उतना ही अधिक खुश होते हैं; और परमेश्वर से प्रेम करने के लिए उतना ही अधिक प्रेरित होते हैं। इस प्रकार, अनजाने में ही, परमेश्वर और मनुष्य के बीच दोस्ती बढ़ती जाती है। लोग परमेश्वर से अधिक प्रेम करने, और उसे और अधिक जानने लगते हैं, और मनुष्य में परमेश्वर का कार्य अधिक आसान होने लगता है, यह कार्य अब लोगों को मजबूर या विवश नहीं करता, बल्कि प्रकृति के अनुसार चलता है, और मनुष्य अपना अनोखा कार्य करता है—इसी तरह लोग धीरे-धीरे परमेश्वर को जानने पाएँगे। यही परमेश्वर का ज्ञान है—इसमें थोड़ी-सी भी कोशिश नहीं करनी पड़ती, और इसे मनुष्य के स्वभाव के अनुरूप बनाया जाता है। इस प्रकार, इस समय परमेश्वर कहता है, "मानव जगत में मेरे देहधारण के दौरान मानवजाति मेरे मार्गदर्शन में अनजाने में इस दिन तक आ पहुँची है, और अनजाने में मुझे जान गयी है। लेकिन, जहाँ तक इसकी बात है कि जो मार्ग सामने है उस पर कैसे चला जाए, तो किसी को कोई आभास नहीं है, कोई नहीं जानता है, और किसी के पास इसका कोई सुराग तो और भी नहीं है कि वह मार्ग उन्हें किस दिशा में ले जाएगा? सर्वशक्तिमान

की निगरानी में ही कोई भी मार्ग पर अंत तक चल पाएगा; केवल चमकती पूर्वी बिजली के मार्गदर्शन से ही कोई भी मेरे राज्य तक ले जाने वाली दहलीज़ को पार कर पाएगा।" मनुष्य के दिल के बारे में मैंने ऊपर जो वर्णित किया है, क्या यह उसका सारांश नहीं है? इसी में परमेश्वर के वचनों का रहस्य है। मनुष्य दिल में जो सोचता है वो बिल्कुल वही है जो परमेश्वर अपने मुँह से कहता है, और परमेश्वर अपने मुँह से जो कहता है वो बिल्कुल वही है जिसके लिए मनुष्य तरसता है। यहीं पर मनुष्य के दिल को उजागर करने में परमेश्वर सबसे अधिक कुशल है; यदि ऐसा न होता, तो सभी लोग निष्ठापूर्वक कैसे आश्वस्त हो सकते हैं? क्या यही वह परिणाम नहीं है जिसे परमेश्वर बड़े लाल अजगर को जीत कर प्राप्त करना चाहता है?

वास्तव में, बहुत सारे वचन ऐसे हैं जिनके लिए परमेश्वर का इरादा उनके सतही अर्थ को जाहिर करने का नहीं है। अपने कई वचनों में, परमेश्वर जानबूझकर लोगों की धारणाएँ बदलना और उनके ध्यान को दूसरी ओर मोड़ना चाहता है। परमेश्वर इन वचनों को कोई महत्व नहीं देता, और इस प्रकार कई वचन तो स्पष्टीकरण के योग्य भी नहीं हैं। जब परमेश्वर के वचनों द्वारा मनुष्य पर प्राप्त विजय उस बिंदु तक पहुँच जाती है जहाँ यह अभी है, तो लोगों की ताकत एक निश्चित सीमा तक पहुँच चुकी होती है, और इसीलिए परमेश्वर चेतावनी के और अधिक वचनों का इस्तेमाल करता है—उस विधान के रूप में जिसे वह परमेश्वर की प्रजा के सामने पेश करता है: "यद्यपि पृथ्वी पर बसे इंसान तारों की तरह अनगिनत हैं, फिर भी मैं उन्हें उतनी ही अच्छी तरह से जानता हूँ जितनी अपने हाथ की लकीरों को। हालाँकि मुझसे 'प्रेम' करने वाले इंसान भी समुद्र की रेत के कणों की तरह अनगिनत हैं, फिर भी मैं कुछ ही लोगों को चुनता हूँ: केवल उन्हें जो चमकते हुए प्रकाश का अनुसरण करते हैं, और जो उनसे अलग हैं जो मुझसे 'प्रेम' करते हैं।" दरअसल, ऐसे कई लोग हैं जो कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं, लेकिन कुछ ही ऐसे हैं जो उसे दिल से प्रेम करते हैं। ऐसा प्रतीत होगा कि इसे बंद आँखों से भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह उन सभी लोगों की दुनिया की वास्तविक स्थिति है जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं। इसमें, हम देखते हैं कि अब परमेश्वर "लोगों को छाँटने" का कार्य कर रहा है, जो यह दर्शाता है कि परमेश्वर जो चाहता है, और जो परमेश्वर को संतुष्ट करता है, वह आज की कलीसिया नहीं है, बल्कि छाँटने के बाद का राज्य है। इस समय वह सभी "खतरनाक चीज़ों" को एक चेतावनी देता है: जब तक परमेश्वर कार्य न करे, लेकिन जैसे ही परमेश्वर कार्य करना शुरू करेगा, इन लोगों को राज्य से मिटा दिया जाएगा। परमेश्वर कभी कोई कार्य लापरवाही से नहीं करता, वह हमेशा "दूध का दूध और पानी का पानी" के सिद्धांत के अनुसार कार्य करता

है, और यदि ऐसे लोग हैं जिनकी ओर वह नज़र नहीं डालना चाहता, तो वह उन्हें मिटाने के लिए हर संभव कार्य करता है, ताकि उन्हें भविष्य में परेशानी पैदा करने से रोका जा सके। इसे "कचरा निकालना और पूरी तरह से सफाई करना" कहा जाता है। जब परमेश्वर मनुष्यों के लिए प्रशासनिक नियमों की घोषणा करता है तो यही वो क्षण होता है जब परमेश्वर अपने चमत्कारिक कार्यों को, और जो कुछ भी उसके भीतर है उसे, वह प्रस्तुत करता है और फिर वो कहता है: "पहाड़ों में असंख्य जंगली जानवर हैं, किन्तु वे सभी मेरे सामने एक भेड़ के समान पालतू हैं; समुद्र की गहराइयों में अथाह रहस्य छिपे हुए हैं, किन्तु वे पृथ्वी की सतह की चीज़ों के समान मेरे सामने अपने आपको स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं; ऊपर नभमण्डल में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ मनुष्य कभी नहीं पहुँच सकता, फिर भी मैं उन अगम्य क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से चलता-फिरता हूँ।" परमेश्वर का तात्पर्य यह है: हालाँकि मनुष्य का हृदय सभी चीजों से अधिक धोखेबाज़ है, और वह लोगों की धारणाओं के नरक के जितना ही रहस्यमय प्रतीत होता है, परमेश्वर मनुष्य की वास्तविक स्थितियों को बहुत अच्छी तरह जानता है। सभी चीजों में, मनुष्य एक ऐसा पशु है जो कि एक जंगली जानवर से भी अधिक खूँखार और क्रूर है, फिर भी परमेश्वर ने मनुष्य पर इस हद तक विजय प्राप्त कर ली है कि कोई भी उठकर विरोध करने की हिम्मत नहीं करता। वास्तव में, जैसा कि परमेश्वर का तात्पर्य है, लोग दिल में जो सोचते हैं वह तमाम चीजों की तुलना में, अधिक जटिल है; यह अथाह है, फिर भी मनुष्य के दिल के लिए परमेश्वर के अंदर को सम्मान नहीं है, मनुष्य परमेश्वर की नज़र में एक छोटा-सा कीड़ा है; अपने मुँह से निकले एक वचन से ही वह उसे जीत लेता है; वह जब वह चाहे, उसे मार गिराता है; अपने हाथ के हल्के से इशारे से ही, वह उसे ताड़ना दे देता है; जब जैसे चाहे उसकी निंदा करता है।

आज, सभी लोग अंधेरे में रहते हैं, परन्तु परमेश्वर के आगमन के कारण, परमेश्वर को देखने के बाद लोगों को प्रकाश के सार का पता चल जाता है। पूरे विश्व में ऐसा लगता है कि पृथ्वी पर एक विशाल काला मटका उलट दिया गया हो, और कोई भी सांस नहीं ले पा रहा हो; वे सभी लोग स्थिति को उलटना चाहते हैं, फिर भी कभी किसी ने उस मटके को नहीं उठाया। परमेश्वर के देहधारण के बाद ही अचानक लोगों की आँखें खुलीं, और उन्होंने व्यावहारिक परमेश्वर को देखा। इस प्रकार, परमेश्वर उनसे सवालिया लहजे में पूछता है: "मनुष्य ने प्रकाश में मुझे कभी नहीं पहचाना, उसने मुझे सिर्फ अन्धकार के संसार में ही देखा है। क्या आज तुम लोग बिल्कुल वैसी ही स्थिति में नहीं हो? यह बड़े लाल अजगर के हिंसात्मक व्यवहार की चरम सीमा का समय था जब मैंने अपने कार्य को करने के लिए औपचारिक रूप से देह धारण किया।"

परमेश्वर आध्यात्मिक क्षेत्र के हालात नहीं छिपाता, न ही वह मनुष्य के दिल के हालात छिपाता है, और इस प्रकार वह बार-बार लोगों को याद दिलाता है: "मैं न केवल अपने लोगों को देहधारी परमेश्वर को जानने में सक्षम बना रहा हूँ, बल्कि उन्हें शुद्ध भी बना रहा हूँ। मेरी प्रशासनिक आज्ञाओं की कठोरता के कारण, लोगों का एक बहुत बड़ा भाग अभी भी मेरे द्वारा निष्कासित किए जाने के खतरे में है। जब तक तुम लोग स्वयं से निपटने का, अपने शरीर को वश में लाने का हर प्रयास नहीं करते—जब तक तुम लोग ऐसा नहीं करते, तब तक तुम लोग निःसन्देह एक ऐसी वस्तु बनोगे जिससे मैं घृणा करता हूँ और जिसे मैं अस्वीकार करता हूँ, जिसे नरक में फेंक देना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस ने मेरे हाथों से ताड़ना प्राप्त की थी जिससे बचने का कोई रास्ता नहीं था।" परमेश्वर जितना अधिक इस तरह की बातें कहता है, लोग उतना ही अधिक अपने कदमों के बारे में सतर्क रहते हैं, और परमेश्वर के प्रशासनिक आदेशों से भयभीत होते हैं; तभी तो परमेश्वर के अधिकार को प्रयोग में लाया जा सकता है और उसकी महिमा को स्पष्ट किया जा सकता है। यहाँ, पौलुस का एक बार फिर उल्लेख किया गया है ताकि लोग परमेश्वर की इच्छा को समझ सकें: उन्हें ऐसे व्यक्ति नहीं बनना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ताड़ना देता है, बल्कि ऐसे लोग बनना चाहिए जो परमेश्वर की इच्छा के प्रति सचेत रहते हैं। केवल यही लोगों को, उनके भय के बीच, परमेश्वर को पूरी तरह से संतुष्ट करने के लिए उसके सामने किये गए उनके संकल्प की विगत असमर्थता का ध्यान दिला सकता है, जिससे उन्हें और भी अधिक अफसोस होता है, और जो उन्हें व्यावहारिक परमेश्वर का अधिक ज्ञान प्रदान करता है, तभी वे परमेश्वर के वचनों के बारे में संदेहरहित हो सकते हैं।

"बात सिर्फ इतनी नहीं है कि मनुष्य मुझे मेरी देह में नहीं जानता; उससे भी ज़्यादा यह कि वह देह में निवास करने वाले निज रूप को भी समझने में असफल रहा है। कई वर्षों से, मनुष्य मेरे साथ एक मेहमान की तरह व्यवहार करते हुए, मुझे धोखा देते आ रहे हैं। कई बार...।" ये "कई बार" लोगों को ताड़ना के वास्तविक उदाहरण दिखाते हुए, परमेश्वर के प्रति मनुष्य के विरोध की वास्तविकता को सूचीबद्ध करते हैं; यह पाप का सबूत है, फिर कोई भी इसका खंडन नहीं कर सकता। लोग दिनचर्या की किसी वस्तु की तरह परमेश्वर का उपयोग करते हैं, जैसे वह घरेलू आवश्यकता की कोई चीज़ हो जिसका वे इच्छानुसार उपयोग कर सकते हैं। कोई भी परमेश्वर को नहीं संजोता; किसी ने भी परमेश्वर की सुंदरता को या उसके महिमामय चेहरे को जानने की कोशिश नहीं की, परमेश्वर के प्रति समर्पण करने का इरादा रखने वालों की तो बात ही क्या की जाए। न ही कभी किसी ने अपने दिल में परमेश्वर को किसी प्रिय पात्र के रूप में देखा

है; जब उन्हें उसकी ज़रूरत होती है, तब वे उसे बाहर खींच लेते हैं, और जब उसकी ज़रूरत नहीं होती तो वे उसे एक तरफ फेंककर उसकी अवहेलना करते हैं। ऐसा लगता है कि मनुष्य के लिए, परमेश्वर एक कठपुतली है, जिसे मनुष्य इच्छानुसार नचा सकता है, और जैसे चाहे, उससे माँग कर सकता है। लेकिन परमेश्वर कहता है, "यदि देहधारण की अवधि में, मुझे मनुष्य की कमज़ोरी के प्रति सहानुभूति नहीं होती, तो संपूर्ण मानवजाति एकमात्र मेरे देहधारण के कारण बुरी तरह से भयभीत हो गई होती और परिणामस्वरूप, रसातल में गिर गई होती," जो कि दर्शाता है कि परमेश्वर के देहधारण की कितनी महत्ता है: समस्त मानवजाति को आध्यात्मिक क्षेत्र से नष्ट करने के बजाय, वह देहधारण कर मानवजाति पर विजय प्राप्त करने आया है। इस प्रकार, जब वचन देह बना, तो कोई नहीं जान पाया। अगर परमेश्वर मनुष्य की कमजोरी का ख्याल न करता, यदि उसके देह बनने पर स्वर्ग और पृथ्वी उलट दिए जाते, तो सभी लोगों का विनाश हो गया होता। चूँकि नए को पसंद करना और पुराने से घृणा करना लोगों की प्रकृति है, और जब सब-कुछ ठीक चल रहा हो तो वे अक्सर बुरे समय को भूल जाते हैं, उनमें से कोई नहीं जानता कि वे कितने धन्य हैं, तो परमेश्वर बार-बार उन्हें याद दिलाता है कि उन्हें इस बात को याद रखना चाहिए कि आज का दिन कितनी कठिनाई से आया है; आने वाले कल की खातिर, उन्हें आज को और भी अधिक कीमती समझना चाहिए, उन्हें एक जानवर की तरह नहीं होना चाहिए जो ऊँचाई पर चढ़ते हुए अपने स्वामी को ही न पहचाने, उन्हें प्राप्त आशीषों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए। इस प्रकार, लोग अच्छा व्यवहार करने लगते हैं, उनमें दंभ और अभिमान नहीं रहता, और उन्हें पता चल पाता कि बात यह नहीं है कि मनुष्य का स्वभाव अच्छा है, बल्कि सच्चाई ये है कि वे परमेश्वर की दया और प्रेम के पात्र बन गए हैं; वे लोग ताड़ना से डरते हैं, और ज्यादा कुछ करने की हिम्मत नहीं करते।

फुटनोट :

क. "चू नदी" का प्रयोग आलंकारिक रूप में दो प्रतिद्वंद्वी सत्ताओं के बीच सीमा रेखा के रूप में किया गया है।

अध्याय 13

परमेश्वर बड़े लाल अजगर के सभी वंशजों से नफ़रत करता है और वह बड़े लाल अजगर से तो और भी ज़्यादा नफ़रत करता है। यह परमेश्वर के हृदय के भीतर कोप का मूल है। ऐसा लगता है कि परमेश्वर उन सभी चीज़ों को आग और गंधक की झील में डालकर भस्म कर देना चाहता है, जो बड़े लाल अजगर से

संबंधित हैं। ऐसे समय भी आते हैं, जब ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर स्वयं व्यक्तिगत रूप से इसे मिटाने के लिए अपना हाथ बढ़ाना चाहता है—केवल यही उसके हृदय की नफ़रत को मिटा सकता है। बड़े लाल अजगर के घर में हर एक व्यक्ति जंगली जानवर है जिसमें मानवता का अभाव है, यही वजह है कि निम्नलिखित कहने के लिए परमेश्वर ने अपने गुस्से को दृढ़तापूर्वक दबा दिया : "मेरे सभी लोगों में से और सभी पुत्रों में से, अर्थात् उन लोगों में से जिन्हें मैंने संपूर्ण मानवजाति में से चुना है, तुम लोग निम्नतम समूह से संबंध रखते हो। ..." परमेश्वर ने बड़े लाल अजगर के साथ उसके अपने ही देश में एक निर्णायक लड़ाई शुरू कर दी है और जब उसकी योजना सफल होने लगेगी, तो वह उसे नष्ट कर देगा, वह उसे मनुष्य को अब और भ्रष्ट करने या उनकी आत्माओं को नष्ट करने की अनुमति नहीं देगा। प्रत्येक दिन परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए बुलाता है जो झपकी ले रहे हैं, फिर भी वे सभी स्तब्ध अवस्था में हैं, मानो उन्होंने नींद की गोलियाँ ले ली हों। यदि परमेश्वर उन्हें एक पल के लिए नहीं उठाता, तो वे पूरी तरह से बेखबर फिर अपनी नींद की अवस्था में लौट जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके सभी लोग दो तिहाई लकवे से पीड़ित हैं। उन्हें अपनी आवश्यकताओं या अपनी स्वयं की कमियों का पता नहीं है, न ही यहाँ तक पता है कि उन्हें क्या पहनना चाहिए या क्या खाना चाहिए। यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि बड़े लाल अजगर ने लोगों को भ्रष्ट करने के काफी प्रयास किए हैं। इसकी कुरूपता चीन के हर क्षेत्र में फैली हुई है और इसने लोगों को इतना परेशान कर दिया है वे इस पतनोन्मुख, अभद्र देश में अब और नहीं ठहरना चाहते। परमेश्वर जिससे सर्वाधिक नफ़रत करता है वह है बड़े लाल अजगर का सार, यही वजह है कि वह लोगों को हर दिन अपने कोप में याद दिलाता है और वे हर दिन उसके कोप की नज़र के नीचे रहते हैं। फिर भी अधिकांश लोग अभी भी परमेश्वर को तलाशना नहीं जानते हैं, इसके बजाय वे सिर्फ वहाँ बैठे हुए देखते और हाथ से खिलाए जाने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। भले ही वे भूख से मर रहे हों, तब भी वे अपना स्वयं का भोजन खोजने के लिए तैयार नहीं होंगे। लोगों के विवेक को बहुत पहले ही शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया था और हृदयहीन होने के सार रूप में बदल दिया है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने कहा था कि : "यदि मैंने तुम लोगों को प्रेरित नहीं किया होता तो तुम अभी भी जागृत नहीं होते, बल्कि ऐसे रहे होते मानो जमे हुए हो और फिर मानो शीतनिद्रा में हो।" यह ऐसा है मानो कि लोग शीतनिद्रा में पड़े जानवरों की तरह थे जो सर्दियाँ गुज़ार रहे थे, जिन्हें खाने या पीने की जरूरत नहीं थी; यह परमेश्वर के लोगों की ठीक-ठीक वर्तमान स्थिति है, यही वजह है कि परमेश्वर केवल यह अपेक्षा करता है कि लोग प्रकाश में स्वयं

देहधारी परमेश्वर को जानें; वह यह अपेक्षा नहीं करता कि लोग बहुत अधिक बदलें, न ही उसकी मांग है कि उनके जीवन में बहुत अधिक बढ़ोतरी हो। यह गंदे, कुत्सित बड़े लाल अजगर को पराजित करने के फलस्वरूप परमेश्वर की महान सामर्थ्य को और अधिक अभिव्यक्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

जब लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं तो वे केवल शाब्दिक अर्थ समझ सकते हैं, वे उनके आध्यात्मिक महत्व को समझने में असमर्थ हैं। "उत्तेजित लहरों" के इन दो शब्दों ने हर नायक और विजेता को चकित कर दिया है। जब परमेश्वर का कोप प्रदर्शित होता है, तो क्या उसके वचन, क्रियाएँ और स्वभाव उत्तेजित लहरें नहीं हैं? जब परमेश्वर समस्त मानवजाति का न्याय करता है, तो क्या यह उसके कोप का प्रकाशन नहीं है? क्या यह तब नहीं होता है जब उत्तेजित लहरें प्रभावी होती हैं? मनुष्यों में कौन है जो उनकी भ्रष्टता के कारण इन उत्तेजित लहरों के बीच में नहीं रहता? दूसरे शब्दों में, कौन परमेश्वर के कोप के बीच में नहीं रहता है? जब परमेश्वर मानव जाति पर तबाही बाँटना चाहता है, तो क्या यह तब नहीं होता जब लोग "काले बादलों के उलटते-पलटते घालमेल" को देखते हैं? कौन मनुष्य तबाही से नहीं भागता? परमेश्वर का कोप लोगों पर मूसलाधार वर्षा की तरह बरसता है और लोगों को इधर-उधर एक भीषण वायु की तरह उड़ा देता है। सभी लोग परमेश्वर के वचनों के माध्यम से शुद्ध हो जाते हैं मानो उनकी मुलाकात किसी घूमते हुए बर्फ़ीले तूफान से हुई थी। परमेश्वर के वचनों की थाह लेना मानवजाति के लिए सर्वाधिक मुश्किल है। अपने वचनों के माध्यम से उसने दुनिया को बनाया और अपने वचनों के माध्यम से ही वह समस्त मानवजाति की अगुआई करता है और उसे शुद्ध करता है। और अंत में, परमेश्वर अपने वचनों के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड की पवित्रता को बहाल करेगा। यह उसके हर कथन में देखा जा सकता है कि परमेश्वर के आत्मा का अस्तित्व खोखला नहीं है और यह केवल परमेश्वर के वचनों में ही है कि लोग जीवित रहने के तरीके की झलक पा सकते हैं। सभी लोग उसके वचनों को सँजोकर रखते हैं क्योंकि वे जीवन के भरण-पोषण से युक्त हैं। लोग जितना अधिक परमेश्वर के वचनों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, उतने ही अधिक वह उनके सामने प्रश्न प्रस्तुत करेगा-प्रश्न जो उन्हें उलझन में डाल देते हैं और उन्हें उत्तर देने का कोई मौका नहीं देते। परमेश्वर के सिलसिलेवार प्रश्न, अकेले ही लोगों को कुछ समय के लिए विचार करवाने के लिए पर्याप्त हैं, उसके बाकी वचनों की तो बात ही छोड़ दें। परमेश्वर में सब कुछ सच में भरा हुआ है और अतिशय है और इसमें कोई अभाव नहीं है। हालाँकि, लोग इसका अधिक आनंद नहीं ले सकते; वे केवल उसके वचनों के सतही पक्ष को ही जानते हैं जैसे वह जो मुर्गे की त्वचा देखता है लेकिन उसका माँस नहीं

खा सकता। इसका मतलब है कि लोगों के भाग्य में कमी है, जैसे वे परमेश्वर का आनंद नहीं ले सकते। प्रत्येक व्यक्ति अपनी धारणाओं में परमेश्वर की अपनी छवि रखता है, यही वजह है कि कोई नहीं जानता कि अज्ञात परमेश्वर क्या है या शैतान की छवि क्या है। इसलिए जब परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि जो कुछ तुम विश्वास करते हो वह सिर्फ़ शैतान की छवि है और स्वयं परमेश्वर से उसका कुछ लेना-देना नहीं है," तो सभी लोग अवाक् थे : उन्होंने इतने वर्षों तक विश्वास किया था, फिर भी वे नहीं जानते थे कि वे जिस पर विश्वास करते थे वह शैतान था न कि स्वयं परमेश्वर। उन्हें अचानक अपने अंदर खालीपन महसूस हुआ किंतु उन्हें नहीं पता था कि क्या कहना है। तब वे फिर से भ्रमित होना शुरू हो गए। केवल इस तरह से काम करके ही लोग नए प्रकाश को बेहतर ढंग से स्वीकार कर सकते हैं और इस तरह पुरानी चीजों से इनकार कर सकते हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि वे चीजें कितनी अच्छी प्रतीत होती हैं, उनसे काम नहीं चलेगा। लोगों के लिए स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर को समझना ज़्यादा लाभकारी है; यह उन्हें उस हैसियत से छुटकारा दिलाने में समर्थ करता है, जो उनके हृदय में उनकी धारणाएँ रखती हैं और केवल स्वयं परमेश्वर को अधिकार में लेने देता है। केवल इस तरह से ही देहधारण के महत्व को प्राप्त किया जा सकता है जो लोगों को अपनी भौतिक आँखों से स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर को जानने में सक्षम बनाता है।

परमेश्वर ने लोगों को आध्यात्मिक दुनिया की परिस्थिति के बारे में कई बार बताया है : "जब शैतान मेरे सामने आता है, तो मैं इसकी जंगली क्रूरता से पीछे नहीं हटता हूँ, न ही मैं इसकी करालता से भयभीत होता हूँ : मैं सिर्फ़ उसकी उपेक्षा करता हूँ।" लोगों ने इससे जो लिया है वह केवल वास्तविकता की परिस्थिति है; वे आध्यात्मिक दुनिया की सच्चाई को नहीं जानते हैं। क्योंकि परमेश्वर देह बन गया है, इसलिए शैतान ने इस प्रकार परमेश्वर पर हमला करने की उम्मीद में सभी तरह के आरोपों को काम में लिया है। हालाँकि, परमेश्वर पीछे नहीं हटता; वह सिर्फ बोलता है और मानवजाति के बीच कार्य करता है, अपने देहधारी देह के माध्यम लोगों को उसे जानने की अनुमति देता है। शैतान की आँखें इस पर क्रोध से लाल हैं और उसने परमेश्वर के लोगों को नकारात्मक बनाने, पीछे हटने और यहाँ तक कि अपना रास्ता भुला देने के लिए बहुत प्रयास किया है। हालाँकि परमेश्वर के वचनों के प्रभाव की वजह से शैतान पूरी तरह विफल हो गया है, जिससे उसकी क्रूरता बढ़ गई है। इस प्रकार, परमेश्वर हर एक को याद दिलाता है, "तुम लोगों के जीवन में ऐसा दिन आ सकता है, जब तुम लोग ऐसी किसी परिस्थिति का सामना करोगे : क्या तुम स्वेच्छा से स्वयं को शैतान के बंधन में पड़ने दोगे या तुम मुझे स्वयं को प्राप्त करने दोगे?" यद्यपि लोग

उससे अवगत नहीं हैं जो आध्यात्मिक जगत में घटित होता है, जैसे ही वे परमेश्वर से ऐसे वचन सुनते हैं, तो वे सतर्क और भयभीत हो जाते हैं। यह शैतान के हमलों को पीछे खदेड़ देता है, जो परमेश्वर की महिमा दिखाने के लिए पर्याप्त है। बहुत समय पहले कार्य की एक नई पद्धति में प्रवेश के बावजूद लोग राज्य में जीवन के बारे में स्पष्ट नहीं हैं—और भले ही वे इसे समझते हैं, उनमें स्पष्टता का अभाव है। इसलिए लोगों को चेतावनी जारी करने के बाद, परमेश्वर ने उन्हें राज्य में जीवन के सार से परिचित कराया : "राज्य में जीवन लोगों और स्वयं परमेश्वर का जीवन है।" चूँकि परमेश्वर स्वयं देहधारी हुआ है, इसलिए तीसरे स्वर्ग का जीवन पृथ्वी पर प्रत्यक्ष किया गया है। यह केवल परमेश्वर की योजना नहीं है, उसने इसे पारित करने के लिए बनाया है। जैसे-जैसे समय गुज़रता है, लोग स्वयं परमेश्वर को बेहतर ढंग से जानने लगते हैं और इस तरह वे स्वर्ग के जीवन का स्वाद लेने में समर्थ हो जाते हैं, क्योंकि वे वास्तव में महसूस करते हैं कि परमेश्वर पृथ्वी पर है, केवल स्वर्ग में ही एक अज्ञात परमेश्वर नहीं है। इस प्रकार, पृथ्वी पर जीवन स्वर्ग में जीवन के समान है। वास्तविकता यह है कि देहधारी परमेश्वर मानवीय दुनिया की कड़वाहट का स्वाद लेता है और जितना अधिक वह ऐसा करने में समर्थ होता है, उतना अधिक यह साबित करता है कि वह स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर है। यही कारण है कि उसने कहा : "अपने निवास स्थान में जो कि ऐसा स्थान है जहाँ पर मैं छिपा हुआ हूँ-फिर भी, अपने इस निवास स्थान में मैंने अपने सभी शत्रुओं को हरा दिया है; अपने निवास स्थान में मैंने पृथ्वी पर रहने का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर लिया है; अपने निवास स्थान में मैं मनुष्य के प्रत्येक वचन और कार्य को देख रहा हूँ, और संपूर्ण मानवजाति की हिफ़ाज़त कर रहा हूँ और उसका संचालन कर रहा हूँ।" ये वचन इस बात का पर्याप्त प्रमाण हैं कि आज का परमेश्वर व्यावहारिक है। सचमुच देह के भीतर रहना, सचमुच देह के भीतर मानव जीवन का अनुभव करना, सचमुच देह के भीतर समस्त मानवजाति को समझना, सचमुच देह के भीतर मानवजाति को जीतना, सचमुच बड़े लाल अजगर के विरुद्ध देह के भीतर निर्णायक लड़ाई छेड़ना और देह के भीतर परमेश्वर के समस्त कार्य को करना—क्या यह स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर का पूरा-पूरा अस्तित्व नहीं है? मगर बहुत यदा-कदा ही ऐसे लोग होते हैं, जो परमेश्वर के द्वारा बोली गई इन साधारण पंक्तियों में संदेश देखते हैं; वे उन्हें बस सरसरी नज़र से पढ़ते हैं और परमेश्वर के वचनों की बहुमूल्यता या दुर्लभता को महसूस नहीं करते हैं।

परमेश्वर के वचन विशेष रूप से परिवर्तित होते हैं—वाक्यांश "चूँकि मानवजाति निष्क्रिय पड़ी है" स्वयं परमेश्वर के विवरण को लेता है और इसे समस्त मानवजाति की स्थिति के विवरण में परिवर्तित करता है।

यहाँ, "ठंडी चमक के विस्फोट" पूर्व की बिजली को नहीं दर्शाते, बल्कि इनका अर्थ है परमेश्वर के वचन, अर्थात् कार्य करने की उसकी नई पद्धति। इस प्रकार, कोई भी इसमें सभी प्रकार की मानवीय गतिशीलता देख सकता है : नई पद्धति में प्रवेश के बाद, सभी लोग, यह न जानते हुए कि वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं, अपना दिशा-बोध खो देते हैं। "अधिकांश लोगों पर लेज़र-जैसी किरण से प्रहार होता है" उनके बारे में संदर्भित करता है, जो नई विधि के माध्यम से निकाल दिए जाते हैं; जो परीक्षणों का सामना नहीं कर पाते या पीड़ाओं का शोधन सहन नहीं कर सकते हैं और इसलिए एक बार फिर अथाह गड्ढे में फेंक दिए जाते हैं। परमेश्वर के वचन एक हद तक मानवजाति को उजागर करते हैं कि जब वे परमेश्वर के वचनों को देखते हैं तो डरे हुए लगते हैं और वे कुछ भी कहने का साहस नहीं करते मानो उन्होंने किसी बंदूक की नली को सीधे अपने हृदयों पर निशाना लगाए हुए देख लिया हो। हालाँकि, वे यह भी महसूस करते हैं कि परमेश्वर के वचनों में अच्छी बातें हैं। उनके हृदय में द्वंद्व चलता है और वे नहीं जानते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। अपने विश्वास के कारण, हालाँकि वे इस भय के कारण कि परमेश्वर उन्हें त्याग देगा, स्वयं को दृढ़ बनाते हैं और उसके वचनों में गहरे डूब जाते हैं। ठीक जैसे कि परमेश्वर ने कहा था : "मानवजाति के मध्य कौन इस अवस्था में विद्यमान नहीं है? कौन मेरे प्रकाश के भीतर विद्यमान नहीं है? भले ही तुम मज़बूत हो, या तुम कमज़ोर हो सकते हो, तुम मेरे प्रकाश के आने से कैसे बच सकते हो?" यदि परमेश्वर किसी के कमजोर होने के बावजूद उसका उपयोग करता है, तो परमेश्वर अपनी ताड़ना में उन्हें रोशन और प्रबुद्ध करेगा; इसलिए लोग जितना अधिक परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, उतना ही अधिक वे उसे समझते हैं, उतनी ही अधिक उसके लिए उनकी श्रद्धा होती है और उतना ही कम धृष्ट होने का वे साहस करते हैं। लोग यहाँ तक पहुँच पाए हैं जहाँ आज वे हैं, यह पूरी तरह से परमेश्वर की महान सामर्थ्य की वजह से है। यह उसके वचनों के अधिकार की वजह से है-अर्थात् यह उसके वचनों में आत्मा का परिणाम है-कि लोगों को परमेश्वर का भय है। परमेश्वर मानवजाति के वास्तविक चेहरे को जितना अधिक प्रकट करता है, उसके प्रति उतना ही अधिक उनका विस्मय बढ़ जाता है और इस प्रकार उसके अस्तित्व की वास्तविकता के प्रति वे उतना ही अधिक निश्चित हो जाते हैं। यह परमेश्वर को समझने के लिए मानव जाति के मार्ग पर आकाशदीप है; एक पगडंडी, जो उसने उन्हें दी है। इसके बारे में सावधानी से सोचो, क्या ऐसा नहीं है?

जो ऊपर बताया गया है क्या वह मानवजाति के सामने आकाशदीप नहीं है, जो उसके मार्ग को रोशन करता है?

अध्याय 14

मनुष्य ने परमेश्वर के वचनों से कभी कुछ नहीं सीखा। वह परमेश्वर के वचनों को केवल सतही तौर पर सँजोकर रखता है, लेकिन उनके सही अर्थ को नहीं जानता। यह सही है कि अधिकांश लोग परमेश्वर के वचनों से प्रेम करते हैं, फिर भी परमेश्वर का कहना है कि वे वास्तव में उन्हें सँजोकर नहीं रखते। उसकी वजह यह है कि परमेश्वर को लगता है, भले ही लोग उसके वचनों को संजोकर रखें, फिर भी उन्होंने उनकी असली मिठास को नहीं चखा है। इस तरह वे केवल "बेरों की कल्पना-मात्र से ही अपनी प्यास बुझाकर" अपने लालची हृदय को शांत कर सकते हैं। परमेश्वर का आत्मा न केवल सभी लोगों के बीच कार्य में लगा है, बल्कि उन्हें परमेश्वर के वचन की प्रबुद्धता भी प्रदान की गयी है; बात सिर्फ इतनी है कि लोग इतने लापरवाह हैं कि वास्तव में इसके सार को समझ नहीं पाते। फिलहाल तो लोगों के मन में वह युग है जिसमें राज्य साकार हो रहा है, किन्तु वास्तविकता में ऐसा नहीं है। हालाँकि परमेश्वर उसी की भविष्यवाणी करता है जो उसने पूरा किया है, वास्तविक राज्य अभी तक पूरी तरह से पृथ्वी पर नहीं आया है। इसके बजाय, मानवजाति में परिवर्तन के साथ, कार्य में प्रगति के साथ, पूर्व से आती हुई चमकती बिजली के साथ, अर्थात्, परमेश्वर के वचन के गहरे होते जाने के साथ, राज्य धीरे-धीरे पृथ्वी पर अवतरित होगा, धीरे-धीरे किन्तु पूरी तरह से पृथ्वी पर अवतरित होगा। राज्य के अवतरण की प्रक्रिया पृथ्वी पर दिव्य कार्य की प्रक्रिया भी है। इसी के साथ-साथ, परमेश्वर ने समूची पृथ्वी के पुनर्गठन के लिए पूरे ब्रह्मांड में उस कार्य को भी आरंभ कर दिया है जो कि इतिहास के किसी भी युग में नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, इस्राएल में परिवर्तन, संयुक्त राज्य अमेरिका में राज्यविप्लव, मिस्र में परिवर्तन, सोवियत संघ में परिवर्तन, और चीन में तख्तापलट सहित, संपूर्ण ब्रह्मांड में भारी परिवर्तन हो रहे हैं। जब पूरा ब्रह्मांड शांत हो जाएगा और सामान्य स्थिति बहाल हो जाएगी, तो पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य पूरा हो जाएगा; तभी राज्य पृथ्वी पर आएगा। यही "जब विश्व के सभी राष्ट्र नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगे, ठीक उसी वक्त मेरा राज्य स्थापित होकर आकार लेगा और साथ ही मैं भी रूपान्तरित होकर समस्त ब्रह्माण्ड के सम्मुख आने के लिए मुड़ूँगा।" इन वचनों का सही अर्थ है। परमेश्वर मानवजाति से कुछ भी नहीं छुपाता, उसने लगातार अपनी समृद्धि के बारे में लोगों को बताया है, फिर भी वे उसका अर्थ नहीं समझ पाते, और मूर्खों की तरह उसके वचन को स्वीकार कर लेते हैं। कार्य के इस चरण में, लोगों ने समझ लिया है कि परमेश्वर अगम्य है और वे अब इस बात को जान सकते हैं कि उसे समझना कितना मुश्किल है; यही वजह है उन्होंने महसूस किया कि इन दिनों, परमेश्वर पर विश्वास

करना उतना ही कठिन कार्य है जितना एक सुअर को गाना सिखाना। वे चूहेदानी में फँसे किसी चूहे की तरह पूरी तरह से असहाय हैं। निस्संदेह, चाहे किसी के पास कितना भी सामर्थ्य हो, चाहे किसी में कितना भी कौशल हो, या उसमें कितनी भी असीम क्षमताएँ हों, जब परमेश्वर के वचन की बात आती है, तो ये बातें कोई मायने नहीं रखतीं। परमेश्वर की नज़र में मानवजाति का मूल्य किसी जले हुए कागज़ की राख के ढेर के बराबर है, उपयोग की तो बात ही छोड़ो। यही "मैं मनुष्यों से, उनके दृष्टिकोण से, और भी अधिक छिप गया हूँ और अधिक से अधिक अथाह बन गया हूँ।" वचनों के सही अर्थ का सटीक उदाहरण है। इससे यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का कार्य सहज रूप से प्रगति करता है और मानव के बोधात्मक अंग क्या समझ सकते हैं उसके आधार पर किया जाता है। जब मानवजाति का स्वभाव दृढ़ और अटल होता है, तो परमेश्वर के बोले वचन पूरी तरह से उसकी धारणाओं के अनुरूप होते हैं और ये धारणाएँ परमेश्वर के समनुरूप लगती हैं, उनमें ज़रा भी अंतर नहीं होता। यह लोगों को "परमेश्वर की वास्तविकता" के बारे में कुछ-कुछ अवगत कराता है, किन्तु यह परमेश्वर का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है। परमेश्वर धरती पर अपना असली कार्य शुरू करने से पहले लोगों को औपचारिक रूप से बसने की अनुमति देता है। इसलिए, इस शुरुआत के दौरान जो कि लोगों के लिए भ्रामक है, उन्हें महसूस हो जाता है कि उनके पहले के विचार गलत हैं, परमेश्वर और मनुष्य स्वर्ग और पृथ्वी के समान भिन्न हैं, उनमें कोई समानता नहीं है। क्योंकि मनुष्य की धारणाओं के आधार पर अब परमेश्वर के वचनों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, लोगों ने परमेश्वर को तुरंत ही एक नई रोशनी में देखना शुरू कर दिया है; फलस्वरूप, वे विस्मय से परमेश्वर को टकटकी लगा कर देखते हैं, मानो व्यावहारिक परमेश्वर उतना ही अगम्य है जितना कि अदृश्य और अस्पृश्य परमेश्वर है, और मानो देहधारी परमेश्वर का देह केवल एक बाह्य खोल है जो उसके सार से रहित है। हालाँकि वह पवित्रात्मा का देहधारण है, फिर भी वह किसी भी समय पवित्रात्मा के रूप में परिवर्तित होकर दूर जा सकता है; इसलिए लोगों ने कुछ-कुछ सतर्क रहने की मानसिकता बना ली है। परमेश्वर का उल्लेख होते ही, लोग उसे अपनी धारणाओं का जामा पहना देते हैं, और ये दावा करने लगते हैं कि वह बादलों और कोहरे पर सवारी कर सकता है, पानी पर चल सकता है, मनुष्य के बीच अचानक प्रकट हो सकता है और गायब हो सकता है। कुछ तो और भी ज़्यादा विस्तार से बताते हैं। उनकी अज्ञानता और अंतर्दृष्टि के अभाव को देखते हुए, परमेश्वर ने कहा "जब वे मानते हैं कि उन्होंने मेरा विरोध किया है या मेरी प्रशासनिक आज्ञा का उल्लंघन किया है, मैं तब भी अपनी आँख मूँद लेता हूँ।"

परमेश्वर पूरी सटीकता से मानवजाति के बदसूरत चेहरे और उसकी आंतरिक दुनिया को उजागर करता है, और अपनी निशानी छोड़ने में जरा भी नहीं चूकता। यहाँ तक कि वह किसी भी तरह की कोई गलती नहीं करता। इस प्रमाण से लोग पूरी तरह आश्वस्त हो जाते हैं। परमेश्वर के कार्य के सिद्धांत की वजह से, उसके अनेक वचन और कर्म अमिट छाप छोड़ते हैं, और इसलिए लोगों को उसके बारे में और भी गहरी समझ मिलती हुई प्रतीत होती है, मानो उन्होंने उसमें और भी मूल्यवान चीज़ खोज ली हो। "उनकी स्मृति में, मैं या तो ऐसा परमेश्वर हूँ जो मनुष्यों को ताड़ना देने की अपेक्षा उन पर दया दिखाता है, या मैं ऐसा स्वयं परमेश्वर हूँ जिसके कहने का आशय वह नहीं होता जो वो कहता है। ये सब मनुष्यों के विचारों में जन्मी कल्पनाएँ हैं, और ये तथ्यों के अनुसार नहीं हैं।" यद्यपि लोगों ने परमेश्वर के वास्तविक चेहरे को कभी महत्व नहीं दिया है, फिर भी वे "उसके स्वभाव के पार्श्व पक्ष" को बहुत अच्छी प्रकार से जानते हैं; वे हमेशा परमेश्वर के वचनों और कार्यों में दोष निकालते रहते हैं। क्योंकि लोग परमेश्वर के कर्मों को केवल निम्नतर समझते हुए, हमेशा नकारात्मक चीजों पर ध्यान देने और सकारात्मक चीजों की उपेक्षा करने के लिए तैयार रहते हैं। परमेश्वर जितना अधिक कहता है कि वह विनम्रतापूर्वक अपने निवास स्थान में खुद को छुपाता है, लोग उससे उतनी ही ऊँची माँगें करते हैं। वे कहते हैं: "यदि देहधारी परमेश्वर मनुष्य के हर कर्म को देख रहा है और मानव जीवन का अनुभव ले रहा है, तो ऐसा क्यों होता है कि अधिकांश समय परमेश्वर हमारी वास्तविक स्थिति से अनभिज्ञ रहता है। क्या इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर सचमुच छुपा हुआ है?" यद्यपि परमेश्वर मानव हृदय में गहराई से देखता है, तब भी वह अस्पष्ट और अलौकिक ना होते हुए भी, मानवजाति की वास्तविक स्थिति के अनुसार कार्य करता है। मानवजाति को उसके पुराने स्वभाव से मुक्त करने के लिए, परमेश्वर ने विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से बोलने का कोई भी प्रयास नहीं छोड़ा है, वह उनकी वास्तविक प्रकृति को अनावृत कर रहा है, उनकी अवज्ञा पर न्याय का ऐलान कर रहा; एक पल कहता है कि वह सभी लोगों के साथ निपटेगा, और अगले ही पल कहता है कि वह लोगों के एक समूह को बचाएगा; या तो वह मानवजाति से अपेक्षाएँ कर रहा है या उन्हें चेतावनी दे रहा है; बारी-बारी से उनके भीतरी अंगों के कार्यकलापों का विश्लेषण करके, उनका उपचार कर रहा है। इस प्रकार, परमेश्वर के वचन के मार्गदर्शन में, जैसे इंसान ने पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाकर एक भरे-पूरे उद्यान में प्रवेश कर लिया हो, जहाँ हर फूल सबसे सुंदर होने के लिए स्पर्धा कर रहा हो। परमेश्वर जो कुछ भी कहता है इंसान उसके वचन में प्रवेश करेगा, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर कोई चुंबक हो जो लोहे की हर चीज़ को अपनी ओर आकर्षित

करती है। जब वे इन वचनों को पढ़ते हैं, "मानवजाति मुझ पर कोई ध्यान नहीं देती, इसलिए मैं भी उन्हें गंभीरता से नहीं लेता हूँ। वे मुझ पर कोई ध्यान नहीं देते हैं, इसलिए मुझे भी उन पर ज्यादा परिश्रम से कार्य करने की आवश्यकता नहीं है। क्या यह दोनों के लिए अच्छा नहीं है?" तो ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर के सभी जन फिर से अथाह गड्ढे में जा गिरे हों या फिर से उनके मर्मस्थल पर चोट की गयी हो और उन्हें गहरा आघात पहुँचा हो। इस तरह, वे फिर से पद्धति में प्रवेश करते हैं। वे विशेष रूप से इन वचनों को लेकर उलझन में हैं, "यदि, तुम राज्य में मेरे लोगों के एक सदस्य के रूप में, अपने कर्तव्य का पालन करने में असमर्थ हो, तो तुम लोग मेरे द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत कर दिए जाओगे!" अधिकांश लोग तो बहुत दुखी हो जाते हैं, यह सोचकर उनके आँसू आ जाते हैं, "अथाह गड्ढे से बाहर निकलना मेरे लिए बहुत मुश्किल था, यदि मैं इसमें फिर से गिर जाऊँ तो मेरे बाहर निकलने की कोई आशा न होगी। मुझे मानव जीवन से कुछ नहीं मिला, जबकि अपने जीवन में मैं हर तरह की कठिनाइयों और परेशानियों से गुज़रा हूँ। विशेष रूप से, आस्था में आने के बाद, मेरे प्रियजनों ने मुझे त्याग दिया, परिवार से उत्पीड़न मिला और समाज के लोगों ने मुझे लांछित किया, मैंने दुनिया की कोई खुशी नहीं देखी। यदि मैं फिर से अथाह गड्ढे में गिरता हूँ, तो क्या मेरी ज़िन्दगी और भी अधिक व्यर्थ नहीं हो जाएगी?" (मनुष्य जितना अधिक इस बारे में सोचता है, वह उतना ही अधिक दुःखी होता है।) "मैंने अपनी सारी उम्मीदें परमेश्वर के हाथों में सौंप दीं हैं। यदि परमेश्वर मुझे त्याग देता है, तो शायद मैं उसी क्षण मर जाऊँ...। खैर, सभी कुछ परमेश्वर ने पूर्वनियत किया है, तो अब मैं केवल परमेश्वर से प्यार करने की कोशिश कर सकता हूँ; अन्य सब कुछ गौण है। किसने इसे मेरी नियति बनाया?" लोग जितना इस तरह से सोचते हैं, वे परमेश्वर के मानकों और उसके वचनों के उद्देश्य के उतना ही अधिक करीब होते हैं। इस तरह से उसके वचनों का उद्देश्य पूरा हो जाता है। परमेश्वर के वचनों को देख लेने के बाद, लोगों के भीतर एक वैचारिक संघर्ष शुरू हो जाता है। उनका एकमात्र विकल्प नियति के आदेशों के प्रति समर्पण करना होता है, और इस तरह से परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हो जाता है। परमेश्वर के वचन जितने अधिक कठोर होते हैं, परिणामस्वरूप मानवजाति की आंतरिक दुनिया उतनी ही अधिक जटिल हो जाती है। यह किसी घाव को स्पर्श करने जैसा होता है; जितना कस कर इसे दबाया जाता है उतना ही अधिक दर्द होता है, इस हद तक कि लोग जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहते हैं, यहाँ तक कि जीवित रहने का विश्वास भी खो देते हैं। इस तरह, जब इंसान सबसे अधिक पीड़ित होता है और निराशा की गहराइयों में होता है, तभी वह अपना सच्चा हृदय परमेश्वर को सौंप सकता है।

इंसानी प्रकृति ऐसी है कि यदि लेशमात्र भी आशा बची रहती है तो वह सहायता के लिए परमेश्वर के पास नहीं जाएगा, बल्कि अपने दम पर जीने के प्राकृतिक तरीके अपनाएगा। इंसान की प्रकृति दंभी है, और वह हर किसी को तुच्छ समझता है। इसलिए, परमेश्वर ने कहा: "एक भी मनुष्य सुख में होने के समय मुझसे प्रेम करने में समर्थ नहीं हुआ है। एक भी व्यक्ति अपने शांति और आनंद के समय में नहीं पहुँचा है ताकि मैं उनकी खुशी में सहभागी हो सकूँ।" यह दरअसल निराशाजनक है; परमेश्वर ने मानवजाति बनाई, किन्तु जब वह मानव दुनिया में आता है, तो वही लोग उसका विरोध करने की कोशिश करते हैं, उसे अपने इलाके से निकाल देते हैं, मानो कि वह दुनिया में भटकता कोई अनाथ हो, या राष्ट्रविहीन वैश्विक व्यक्ति हो। किसी को भी परमेश्वर से लगाव नहीं है, कोई भी वास्तव में उसे सच्चा प्यार नहीं करता, किसी ने भी उसके आने का स्वागत नहीं किया है। बल्कि जब वे परमेश्वर को आता देखते हैं, तो उनके हर्षित चेहरे पलक झपकते ही उदास हो जाते हैं, मानो अचानक कोई तूफ़ान आ रहा हो, या परमेश्वर उनके परिवार की खुशियाँ छीन लेगा, मानो परमेश्वर ने मानवजाति को कभी भी आशीष नहीं दिया हो, बल्कि मानवजाति को केवल दुख ही दिया हो। इसलिए, लोगों के मन में, परमेश्वर उनके लिए वरदान न होकर, कोई ऐसा है जो हमेशा उन्हें शाप देता रहता है। इसलिए, लोग न तो उस पर ध्यान देते हैं, न ही उसका स्वागत करते हैं, वे उसके प्रति हमेशा उदासीन रहते हैं, हमेशा से ऐसा ही रहा है। क्योंकि मानवजाति के हृदय में ये बातें बैठी हुई हैं, इसलिए परमेश्वर कहता है कि वे अविवेकी और अनैतिक हैं। यहाँ तक कि उनमें वे भावनाएँ भी महसूस नहीं की जा सकतीं जिनसे मनुष्यों के सुसज्जित होने की अपेक्षा की जाती है। इंसान को परमेश्वर की भावनाओं की कोई कद्र नहीं है, बल्कि वह परमेश्वर से निपटने के लिए तथाकथित "धार्मिकता" का उपयोग करता है। मानवजाति कई वर्षों से ऐसी ही है, यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा है कि उसका स्वभाव नहीं बदला है। यह दिखाता है कि उसमें कोई सार नहीं है। ऐसा कहा जा सकता है कि मनुष्य निकम्मा और नाकारा है, क्योंकि उसने स्वयं को सँजोकर नहीं रखा है। यदि वह स्वयं से प्यार करके खुद को ही रौंदता है, तो क्या यह उसके निकम्मेपन को नहीं दिखाता? मानवजाति एक ऐसी अनैतिक स्त्री की तरह है जो स्वयं के साथ खेल खेलती है और दूषित किए जाने के लिए स्वेच्छा से स्वयं को दूसरों को सौंप देती है। किन्तु फिर भी, लोग नहीं जानते हैं कि वे कितने अधम हैं। उन्हें दूसरों के लिए कार्य करने, या दूसरों के साथ बातचीत करने, स्वयं को दूसरों के नियंत्रण में करने में खुशी मिलती है; क्या यह वास्तव में मानवजाति की गंदगी नहीं है? यद्यपि मैंने मानवजाति के बीच जीवन का अनुभव नहीं किया है, और मुझे

वास्तव में मानव जीवन का अनुभव नहीं रहा है, फिर भी मुझे मनुष्य की हर हरकत, उसके हर क्रिया-कलाप, हर वचन और हर कर्म की एकदम स्पष्ट समझ है। मैं मानवजाति को उसे बेहद शर्मिंदा करने की हद तक उजागर कर सकता हूँ, इस सीमा तक कि वे अपनी चालाकियाँ दिखाने का और अपनी वासना को हवा देने की धृष्टता फिर न करे। इंसान घोंघे की तरह, जो अपने खोल में छिपा रहता है, अब कभी अपनी बदसूरत स्थिति को उजागर करने का धृष्टता नहीं करता। चूँकि मानवजाति स्वयं को नहीं जानती, इसलिए उसका सबसे बड़ा दोष अपने आकर्षण का दूसरों के सामने स्वेच्छा से जुलूस निकालनाहै, अपने कुरूप चेहरे का जूलूस निकालना है; परमेश्वर इस चीज़ से सबसे ज्यादा घृणा करता है। क्योंकि लोगों के आपसी संबंध असामान्य हैं, लोगों का आपसी व्यवहार ही सामान्य नहीं है, तो परमेश्वर और इंसान के बीच सामान्य संबंध की तो बात ही दूर है। परमेश्वर ने बहुत कुछ कहा है, और ऐसा करने में उसका मुख्य उद्देश्य इंसान के हृदय में अपनी जगह बनाना है, लोगों को उनके हृदय में बसी सभी मूर्तियों से मुक्त करना है। ताकि परमेश्वर समस्त मानवजाति पर सामर्थ्य का उपयोग कर सके और पृथ्वी पर अपने होने का उद्देश्य पूरा कर सके।

अध्याय 15

परमेश्वर और मनुष्य के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि परमेश्वर के वचन हमेशा किसी मामले के मर्म तक जाते हैं, और कुछ भी छुपाते नहीं है। इस प्रकार, परमेश्वर के स्वभाव के इस पहलू को आज के प्रथम वाक्य में देखा जा सकता है। यह तुरंत मनुष्य के सच्चे रंगों को उजागर करता है, और परमेश्वर के स्वभाव को खुलकर प्रकट करते हैं। यह परमेश्वर के वचनों के विभिन्न पहलुओं परिणामों को प्राप्त करने की क्षमता का स्रोत है। हालाँकि, लोगों को यह समझ नहीं आता है; परमेश्वर का "विश्लेषण" किए बिना, उन्हें परमेश्वर के वचनों में हमेशा बस स्वयं का पता चलता है। ऐसा लगता है मानो कि वे उसका अपमान करने से अत्यधिक डरते हैं, मानो परमेश्वर उन्हें उनकी "सावधानी" के कारण मार डालेगा। वास्तव में, जब अधिकांश लोग परमेश्वर के वचन को खाते और पीते हैं, तो यह वे ऐसा एक नकारात्मक पहलू से करते हैं, सकारात्मक पहलू से नहीं। यह कहा जा सकता है कि लोगों ने उसके वचनों के मार्गदर्शन के अधीन अब "विनम्रता और आज्ञाकारिता पर ध्यान केंद्रित करना" आरंभ कर दिया है। इससे यह देखा जा सकता है कि लोगों ने, उसके वचनों पर बिल्कुल ध्यान न देने से लेकर उसके वचनों की ओर अतिशय ध्यान देने तक—

एक चरम से दूसरे पर जाना शुरू कर दिया है। फिर भी किसी भी व्यक्ति ने सकारात्मक पहलू में प्रवेश नहीं किया है, और कभी भी किसी व्यक्ति ने मनुष्य को परमेश्वर के वचनों पर ध्यान दिलवाने के परमेश्वर के लक्ष्य को सच में नहीं समझा है। परमेश्वर जो कहता है उससे पता चलता है कि उसे कलीसिया में सभी लोगों की वास्तविक स्थितियों को शुद्धता से और बिना त्रुटि के समझने में समर्थ होने के लिए कलीसिया की जिंदगी का व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है। चूँकि लोगों ने एक नई पद्धति में अभी-अभी प्रवेश प्राप्त किया है, उन्हें अभी अपने नकारात्मक तत्वों से पूरी तरह पीछा छुड़ाना बाकी है; लाशों की गंध अभी भी पूरे कलीसिया में फैली हुई है। ऐसा लगता है मानो कि लोगों ने अभी-अभी दवा ली है और अभी भी भ्रम में हैं, और उन्हें अभी तक पूरी तरह से होश नहीं आया है। ऐसा लगता है मानो कि वे अभी भी मौत से डरे हुए हैं, जिसकी वजह से, अभी भी अपने ख़ौफ़ के बीच, वे अपने आप को पार नहीं कर पा रहे हैं। "समस्त मनुष्य आत्मज्ञान से रहित प्राणी हैं" : यह वक्तव्य जिस ढंग से कहा गया है से कहा गया है वह अभी भी कलीसिया के निर्माण पर आधारित है। इस तथ्य के बावजूद कि कलीसिया में हर कोई परमेश्वर के वचनों पर ध्यान देता है, उनके स्वभाव अभी भी गहराई से जड़ जमाए हुए हैं और गुंथे हुए हैं। यही कारण है कि लोगों का न्याय करने के लिए परमेश्वर ने पिछले चरण में इस तरह बात की ताकि वे अपने अहंकार के बीच परमेश्वर के वचनों की मार खाने को स्वीकार कर लें। भले ही लोग अथाह गड्ढे में पाँच महीनों के परिशोधन से गुज़रे, किन्तु उनकी वास्तविक स्थिति अब भी परमेश्वर को नहीं जानने वाले की है। वे अभी भी आत्मा में जंगली हैं; उन्होंने सिर्फ परमेश्वर की ओर अपनी संरक्षितता कुछ-कुछ बढ़ा ली है। यह कदम पहला वास्तविक कदम है जो लोग परमेश्वर के वचनों को जानने के मार्ग में लेते हैं, इसलिए परमेश्वर के वचनों के सार के संबंध में, यह देखना कठिन नहीं है कि कार्य के पिछले चरण ने आज के लिए मार्ग प्रशस्त किया, और केवल अब ही सब कुछ सामान्यीकृत है। लोगों की घातक कमजोरी है, परमेश्वर के आत्मा को उसकी दैहिक अस्मिता से पृथक करने की प्रवृत्ति ताकि वे, हमेशा बंधनों से बच सकें, व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त कर सकें। यही कारण है कि परमेश्वर मनुष्य का "आनंद से उड़ते" पक्षियों के रूप में वर्णन करता है। समस्त मानवजाति की यही वास्तविक स्थिति है। यही वह है जो समस्त मानवजाति को गिराना सबसे आसान बनाता है, इसी जगह उनका खो जाना सबसे मुमकिन है। इससे यह देखा जा सकता है कि मानवजाति के बीच शैतान का कार्य इस कार्य से अधिक कुछ नहीं है। शैतान लोगों में जितना अधिक ऐसा करता है, उतनी ही अधिक सख्त उनसे परमेश्वर की अपेक्षाएँ होती हैं। वह अपेक्षा करता है कि लोग उसके

वचनों पर ध्यान दें और शैतान इसे नष्ट करने के लिए कड़ी कोशिश करता है। हालाँकि, परमेश्वर ने अपने वचनों पर अधिक ध्यान देने की लोगों को हमेशा याद दिलायी है; यह आध्यात्मिक दुनिया के युद्ध का शिखर है। इसे इस तरह से कहा किया जा सकता है : परमेश्वर इंसानों में जो करना चाहता है बिल्कुल उसे ही शैतान नष्ट करना चाहता है, और शैतान जो नष्ट करना चाहता है, वह पूरी तरह खुलकर मनुष्य के माध्यम से व्यक्त होता है। परमेश्वर लोगों में जो करता है उसके स्पष्ट उदाहरण हैं : उनकी स्थिति बेहतर होती जा रही है। मानवजाति में शैतान के विध्वंस के भी स्पष्ट निरूपण हैं : वे अधिकाधिक भ्रष्ट हो रहे हैं तथा उनकी स्थिति लगातार डूबती जा रही है। एक बार जब उनकी स्थिति पर्याप्त रूप से भयानक हो जाएगी, तो उन्हें शैतान के द्वारा कब्जे में लिया जा सकता है। यह कलीसिया की वास्तविक स्थिति है जैसा कि परमेश्वर के वचनों में प्रस्तुत किया गया है, और यह आध्यात्मिक दुनिया की भी वास्तविक स्थिति है। यह आध्यात्मिक दुनिया की गतिकी का एक प्रतिबिंब है। यदि लोगों में परमेश्वर के साथ सहयोग करने का विश्वास नहीं है, तो वे शैतान द्वारा कब्जा किए जाने के खतरे में हैं। यह एक तथ्य है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के रहने के लिए अपने हृदय को पूरी तरह से अर्पित करने में सच में समर्थ है, तो यह ठीक ऐसा है जैसा कि परमेश्वर ने कहा है: "जो मेरे सामने, मेरे आगोश में, उसकी गर्माहट का स्वाद लेते प्रतीत होते हैं।" यह दर्शाता है कि मानवजाति से परमेश्वर की अपेक्षाएँ ऊँची नहीं हैं; उसे सिर्फ इतनी ही आवश्यकता है कि वे उठें और उसके साथ सहयोग करें। क्या यह एक आसान और खुशी की बात नहीं है? क्या यह वो एक चीज़ है जिसने सभी नायकों और महपुरुषों को चकरा दिया है? ऐसा लगता है मानो कि युद्धक्षेत्र से जनरलों को उठाकर कशीदाकारी करने के लिए बैठा दिया गया हो—ये "नायक" कठिनाई के कारण गतिहीन हो गए हैं और उन्हें पता नहीं है कि उन्हें क्या करना चाहिए।

मानवजाति से परमेश्वर की अपेक्षाओं का जो भी पहलु सबसे बड़ा है, वही वो पहलु है जिसमें मानवजाति पर शैतान के हमले सबसे गंभीर होंगे, और इस प्रकार इस रीति से सभी लोगों की स्थितियाँ प्रकट होती हैं। "मेरे सामने खड़े तुम लोगों में से कौन बहती बर्फ जैसा शुद्ध और हरिताश्म जैसा बेदाग़ होता?" सभी लोग अभी भी परमेश्वर को फुसला रहे हैं और उससे बातें छुपा रहे हैं; वे अभी भी अपने विशिष्ट कुचक्रों को क्रियान्वित कर रहे हैं। उन्होंने परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए अपने हृदय को पूरी तरह से उसके हाथों में नहीं सौंपा है, किन्तु वे अपने उत्साह के माध्यम से उससे पारितोषिक प्राप्त करना चाहते हैं। जब लोगों स्वादिष्ट भोजन खाते हैं, तो वे परमेश्वर को एक तरफ खड़ा कर देते हैं, उसे एक ओर

अपने "प्रबंध" का इंतज़ार करने को छोड़ देते हैंहैं। जब लोगों के पास खूबसूरत कपड़े होते हैं, तो वे अपनी स्वयं की सुंदरता का आनंद उठाते हुए दर्पण के सामने खड़े होते हैं और अपने हृदय की गहराई में, वे परमेश्वर को संतुष्ट नहीं करते हैं। जब उनकी प्रतिष्ठा होती है, या उनके पास विलासितापूर्ण आनंद होते हैं, तो वे अपनी हैसियत पर सवार होकर इसका आनंद लेना शुरू कर देते हैं, लेकिन वे परमेश्वर द्वारा उन्नति की वजह से स्वयं को विनम्र नहीं करते हैं। इसके बजाए, वे अपने आडंबरी वचनों का उपयोग करके ऊँचे स्थान पर खड़े हो जाते हैं और परमेश्वर की उपस्थिति पर ध्यान नहीं देते हैं, न ही वे परमेश्वर की बहुमूल्यता को जानने की खोज करते हैं। जब लोगों के हृदय में एक मूर्ति होती है या जब उनके हृदय किसी अन्य के द्वारा अधिकार में ले लिए जाते हैं, तब इसका अर्थ है कि वे पहले से ही परमेश्वर की उपस्थिति से इनकार कर चुके हैं, मानो कि परमेश्वर उनके हृदय में बस एक घुसपैठिया था। वे बहुत डरते हैं कि परमेश्वर उनके लिए अन्य लोगों के प्यार को चुरा लेगा और फिर वे एकाकी महसूस करेंगे। परमेश्वर का मूल इरादा है कि, पृथ्वी पर कुछ भी लोगों से परमेश्वर को अनदेखा न करवाए; भले ही लोगों के बीच प्यार को लेकिन ये "प्यार" भी परमेश्वर को दूर करने में सक्षम न हो। सभी पार्थिव चीजें खोखली हैं, यहाँ तक कि लोगों के बीच की भावनाएँ भी जिन्हें देखा या स्पर्श नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर के अस्तित्व के बिना, सभी प्राणी समाप्त हो जाएँगे। पृथ्वी पर, सभी लोगों की अपनी स्वयं की चीजें हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं, लेकिन एक भी व्यक्ति ने कभी भी परमेश्वर के वचनों को वह चीज़ नहीं माना है जिससे वह प्रेम करता हो। यह परमेश्वर के वचनों के बारे में लोगों की समझ के स्तर को निर्धारित करता है। यद्यपि उसके वचन कठोर हैं, तब भी लोग उनसे घायल नहीं होते हैं क्योंकि वे असल में उसके वचनों पर ध्यान नहीं देते हैं, इसके बजाय वे इसे एक फूल की तरह देखते हैं। वे उसे स्वयं स्वाद लेने के लिए एक फल की तरह नहीं मानते हैं, इसलिए वे परमेश्वर के वचनों के सार को नहीं जानते। "यदि मनुष्य वास्तव में मेरी तलवार की धार देखने में सक्षम होते, तो वे चूहों की तरह तेजी से दौड़कर अपने बिलों में घुस जाते।" एक सामान्य व्यक्ति की स्थिति में, परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के बाद एक व्यक्ति दंग रह जायेगा, शर्म से भर जायेगा, और दूसरों का सामना करने में असमर्थ होगा। किन्तु अभी लोग ठीक विपरीत हैं—वे दूसरों के खिलाफ़ वार करने के लिए एक हथियार के रूप में परमेश्वर के वचनों का उपयोग करते हैं। उनमें वास्तव में कोई शर्म नहीं है!

हमें परमेश्वर के कथनों के साथ इस अस्तित्व में लाया गया है : "राज्य के भीतर न केवल कथन मेरे मुख से निकलते हैं, बल्कि मेरे पाँव भी ज़मीन पर हर जगह शान से चलते हैं।" परमेश्वर और शैतान के बीच

युद्ध में, परमेश्वर मार्ग के हर कदम में जीत रहा है। वह संपूर्ण ब्रह्मांड भर में बड़े पैमाने पर अपने कार्य का विस्तार कर रहा है, और यह कहा जा सकता है कि उसके पदचिन्ह, और उसकी जीत के चिन्ह हर जगह हैं। शैतान अपनी योजनाओं में, देशों को तोड़ कर अलग करने के द्वारा परमेश्वर के प्रबंधन को नष्ट करने की आशा करता है, किन्तु परमेश्वर ने पूरे ब्रह्मांड के पुनर्गठन के लिए इस विप्रयोग का लाभ उठाया है, किन्तु इसे मिटाने के लिए नहीं। परमेश्वर हर दिन कुछ नया करता है किन्तु लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया है। लोग आध्यात्मिक दुनिया की गतिकी पर ध्यान नहीं देते हैं, इसलिए वे परमेश्वर के नये कार्य को देखने में असमर्थ हैं। "ब्रह्मांड के भीतर हर चीज़ मेरी महिमा की कांति में नई जैसी चमकती है और हृदयस्पर्शी पहलू प्रस्तुत करती है, जो इंद्रियों को मोहित कर लेता है और लोगों की आत्माओं का उत्थान करता है, जैसे कि यह अब, मनुष्य द्वारा की जाने वाली कल्पना के अनुसार, स्वर्ग से परे किसी स्वर्ग में विद्यमान हो, जिसे शैतान द्वारा बाधित नहीं किया गया है और जो बाहरी शत्रुओं के हमलों से मुक्त है।" यह पृथ्वी पर मसीह के राज्य के आनंदपूर्ण दृश्य की भविष्यवाणी करता है, और यह मानवजाति को तीसरे स्वर्ग की स्थिति का भी परिचय देता है : शैतान की सेनाओं के किसी भी प्रकार के आक्रमण से रहित, वहाँ केवल परमेश्वर की पवित्र चीजों का अस्तित्व है। लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण बात है वह है लोगों को परमेश्वर स्वयं के पृथ्वी पर कार्य की परिस्थितियों को देखने की अनुमति देना : स्वर्ग एक नया स्वर्ग है, और उसके बाद पृथ्वी को भी उसी पर नया किया जाता है। क्योंकि यह परमेश्वर के स्वयं के मार्गदर्शन के अधीन जीवन है, इसलिए सभी लोग असीमित रूप से खुश हैं। लोगों की जानकारी में, शैतान मानवजाति का "कैदी" है और वे उसके अस्तित्व की वजह से बिल्कुल भी डरपोक या भयभीत नहीं हैं। दिव्य से सीधे निर्देश और मार्गदर्शन की वजह से, शैतान की सभी योजनाएँ धूल में मिल गई हैं, जो यह भी साबित करता है कि शैतान अब और विद्यमान नहीं है, क्योंकि उसे परमेश्वर के कार्य द्वारा मिटा दिया गया है। यही कारण है कि यह कहा जाता है "... स्वर्ग से परे किसी स्वर्ग में विद्यमान हो।" जब परमेश्वर ने कहा : "कभी कोई गड़बड़ी उत्पन्न नहीं हुई, न ही कभी ब्रह्मांड खंडित हुआ है," वह आध्यात्मिक दुनिया की स्थिति के बारे में कह रहा था। यही सबूत है कि परमेश्वर शैतान पर विजय की घोषणा करता है, और यह परमेश्वर की अंतिम जीत का चिन्ह है। कोई भी मनुष्य परमेश्वर का मन नहीं बदल सकता है, और कोई इसे जान नहीं सकता है। यद्यपि लोगों ने परमेश्वर के वचनों को पढ़ा है और उन्होंने इस पर सावधानीपूर्वक गंभीरता से सोच-विचार कर लिया है, फिर भी वे अपना सार व्यक्त करने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने

कहा : "मैं तारों के ऊपर से उड़कर छलाँग लगाता हूँ, और जब सूर्य अपनी किरणों की बौछार करता है, तो मैं हंस के पंखों जितने बड़े हिमकणों के झोंकों को अपने हाथों से नीचे बहाते हुए उनकी गर्मी मिटा देता हूँ। हालाँकि जब मैं अपना मन बदलता हूँ, तो सारी बर्फ पिघलकर नदी बन जाती है, और एक ही पल में आकाश के नीचे हर जगह बसंत फूट पड़ता है, और पन्ने जैसी हरियाली पृथ्वी के समस्त भूदृश्य को रूपांतरित कर देती है।" यद्यपि लोग इन वचनों की अपने मन में कल्पना करने में समर्थ हैं, किन्तु परमेश्वर का इरादा इतना सरल नहीं है। जब स्वर्ग के नीचे हर कोई भ्रम में होता है, तो परमेश्वर, लोगों के हृदय को जागृत करते हुए, उद्धार की वाणी का उच्चारण करता है। किन्तु क्योंकि सभी प्रकार की आपदाएँ उन पर पड़ रही हैं, इसलिए वे दुनिया की उदासीनता को महसूस करते हैं इसलिए वे सभी मौत की तलाश करते हैं और ठंडी, बर्फीली गुफाओं में रहते हैं। वे बड़े बर्फीले तूफ़ान की ठंड से इस हद तक जम गए हैं कि वे जीवित नहीं रह सकते हैं क्योंकि पृथ्वी पर गर्मी नहीं है। यह लोगों की भ्रष्टता की वजह से है कि लोग एक दूसरे को अधिक से अधिक निर्दयता से मार रहे हैं। कलीसिया में, अधिसंख्य लोग बड़े लाल अजगर द्वारा एक ही घूँट में निगल लिए जाएँगे। सभी परीक्षणों के गुज़र जाने के बाद, शैतान का व्यवधान हटा दिया जाएगा। रूपांतरण के बीच में, पूरी दुनिया में, इस प्रकार वसंत व्याप्त हो जाएगा और गर्मजोशी से दुनिया आवृत हो जाएगी। दुनिया ऊर्जा से भरी होगी। ये सभी समस्त प्रबंधन योजना के कदम हैं। जिस "रात" के बारे में परमेश्वर ने कहा था वह उस बात को संदर्भित करता है जब शैतान का पागलपन अपने चरम पर पहुँचता है, जो कि रात के दौरान होगा। क्या अभी वही नहीं हो रहा है? यद्यपि सभी लोग परमेश्वर के प्रकाश के मार्गदर्शन के अधीन जीवित रहते हैं, फिर भी वे रात के अँधेरे के दुःख से गुजर रहे हैं। यदि वे शैतान के बंधन से बच कर नहीं निकल सकते हैं, तो वे अनंतकाल तक अँधेरी रात के बीच रहेंगे। पृथ्वी पर देशों को देखो : परमेश्वर के कार्य के चरणों के कारण, पृथ्वी पर स्थित देश "इधर उधर भाग रहे हैं," और वे सभी "अपने स्वयं की उपयुक्त मंजिल की तलाश कर रहे हैं।" क्योंकि परमेश्वर का दिन अभी तक नहीं आया है, इसलिए पृथ्वी पर सब कुछ अभी भी गंदी अशांति की स्थिति में हैं। जब परमेश्वर स्पष्ट रूप से पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होगा, तो उसकी महिमा से सिय्योन पर्वत भर जाएगा और सभी चीजें उसके हाथों की व्यवस्था किए जाने के कारण व्यवस्थित और स्वच्छ होंगी। परमेश्वर के वचन न केवल आज की बात करते हैं बल्कि कल की भविष्यवाणी भी करते हैं। आज कल की नींव है, इसलिए आज लोग परमेश्वर के वचनों को पूरी तरह से समझ नहीं सकते हैं। केवल उसके वचनों के पूरी तरह से सम्पूर्ण होने के बाद ही वे उन्हें

उनकी समग्रता से समझने में सक्षम होंगे।

परमेश्वर का आत्मा ब्रह्मांड में सभी जगह व्याप्त है किन्तु वह सभी लोगों के भीतर भी कार्य करता है। इस तरह, ऐसा लगता है मानो कि लोगों के हृदय में परमेश्वर की आकृति हर जगह है, और हर स्थान में उसके आत्मा का कार्य समाविष्ट है। निस्संदेह, देह में परमेश्वर के प्रकटन का उद्देश्य, शैतान के इन मिसालों को जीतना और अंत में उनको प्राप्त करना है। लेकिन देह में कार्य करते हुए, इन लोगों को रूपांतरित करने के लिए आत्मा भी देह के साथ सहयोग कर रहा है। यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर के कार्य पूरे विश्व में फैले हुए हैं और उसके आत्मा से पूरा ब्रह्मांड भरा हुआ है, किन्तु उसके कार्य के चरणों के कारण, जो बुरा करते हैं उन्हें दंडित नहीं किया गया है, जबकि जो अच्छा करते हैं उन्हें पुरस्कृत नहीं किया गया है। इसलिए, उसके कर्मों की पृथ्वी पर सभी लोगों के द्वारा स्तुति नहीं की गई है। परमेश्वर सभी चीज़ों से ऊपर भी है और उनके भीतर भी; और उससे भी अधिक, वह सभी लोगों के बीच है। यह परमेश्वर के वास्तविक अस्तित्व को दर्शाने के लिए पर्याप्त है। चूँकि वह स्पष्ट रूप से मानवजाति के सामने प्रकट नहीं हुआ है, इसलिए लोगों ने ऐसे भ्रम विकसित कर लिए हैं जैसे कि, "जहाँ तक मानवजाति का संबंध है, कभी लगता है कि वास्तव में मेरा अस्तित्व है, फिर ऐसा भी लगता है कि मेरा अस्तित्व नहीं है।" अब तक, परमेश्वर पर विश्वास करने वाले सभी लोगों में से, कोई भी शत-प्रतिशत निश्चित नहीं है कि परमेश्वर सच में विद्यमान है। वे सभी तीन हिस्सा संदेह और दो हिस्सा विश्वास करते हैं। यह मानवजाति की वास्तविक स्थिति है। आजकल सभी लोग निम्नलिखित परिस्थितियों में हैं : वे विश्वास करते हैं कि एक परमेश्वर है, किन्तु उन्होंने उसे नहीं देखा है; या, वे यह विश्वास नहीं करते हैं कि एक परमेश्वर है, लेकिन उनकी कई कठिनाइयाँ हैं जिन्हें मानवजाति द्वारा हल नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ हमेशा उन्हें उलझन में डालने वाला कुछ है जिससे वे बच कर नहीं निकल सकते हैं। भले ही वे परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि वे हमेशा थोड़ी सी अस्पष्टता महसूस करते हैं। किन्तु यदि वे विश्वास नहीं करते हैं, तो उन्हें इसे खोने का भय होगा यदि यह वास्तव में सच होगा। यह उनकी दुविधा है।

"मेरे नाम के वास्ते, मेरे आत्मा के वास्ते, मेरी समस्त प्रबंधन योजना के वास्ते, कौन अपने समस्त सामर्थ्य की बलि दे सकता है?" परमेश्वर ने यह भी कहा: "आज, जबकि राज्य मनुष्यों के संसार में है, वह समय है, जब मैं व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के संसार में आया हूँ। तो क्या कोई है जो बिना किसी आशंका के मेरी ओर से युद्ध क्षेत्र में उतर सकता?" परमेश्वर के वचनों का लक्ष्य यह है : यदि देह में परमेश्वर सीधे

अपना दिव्य कार्य नहीं करता, या यदि वह देहधारी नहीं होता, किन्तु वह मंत्रियों के माध्यम से कार्य करता, तो परमेश्वर बड़े लाल अजगर को जीतने में कभी भी समर्थ नहीं होता, और वह मानव जाति के बीच राजा के रूप में शासन करने में सक्षम नहीं होता। मानव जाति वास्तविकता में परमेश्वर स्वयं को जानने में समर्थ नहीं होती, इसलिए अभी भी शैतान का शासन होता। इस प्रकार, कार्य के इस चरण को परमेश्वर के देहधारी देह के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से अवश्य किया जाना चाहिए। यदि देह बदल जाता तो योजना के इस चरण को कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता था क्योंकि भिन्न-भिन्न देहों का महत्व और सार एक सा नहीं होता। लोग इन वचनों के केवल शाब्दिक अर्थ को ही समझ सकते हैं क्योंकि परमेश्वर मूल को पकड़ता है। परमेश्वर ने कहा : "फिर भी, अंततः, कोई भी ऐसा नहीं है, जो समझता हो कि यह पवित्रात्मा का कार्य है, या देह की क्रिया है। इस अकेली चीज़ का विस्तार से अनुभव करने में लोगों को पूरा जीवन लग जाएगा।" लोगों को कई वर्षों तक लगातार शैतान द्वारा भ्रष्ट किया गया है, और उन्होंने आध्यात्मिक मामलों की अपनी चेतना को बहुत पहले ही खो दिया है। इस कारण से परमेश्वर के वचनों का सिर्फ एक वाक्य भी लोगों की आँखों के लिए सुकून कि तरह है। पवित्रात्मा और आत्माओं के बीच की दूरी के कारण, परमेश्वर पर विश्वास करने वाले सभी उसके लिए लालसा की भावना रखते हैं, और वे सभी करीब आने और अपने दिलों को उड़ेलने के इच्छुक हैं। लेकिन वे उसके संपर्क में आने का साहस नहीं करते हैं, बल्कि वे सिर्फ अचरज में रहते हैं। यह पवित्रात्मा के आकर्षण की सामर्थ्य है। क्योंकि परमेश्वर लोगों के प्यार करने के लिए एक परमेश्वर है, और उसमें उनके प्यार करने के लिए अनन्त तत्व हैं, इसलिए सभी लोग उसे प्यार करते हैं और वे सभी उस पर भरोसा करना चाहते हैं। वास्तव में, हर किसी के हृदय में परमेश्वर के लिए प्रेम है, बातकेवल इतनी है कि शैतान के व्यवधान ने सुस्त, मंदबुद्धि, दयनीय लोगों को परमेश्वर को जानने से रोक दिया है। यही कारण है कि परमेश्वर ने परमेश्वर के प्रति मानवजाति की सच्ची भावनाओं को बताया : "मनुष्यों ने अपने हृदय की अंतरतम गहराइयों में मुझे कभी भी तिरस्कृत नहीं किया है; बल्कि वे अपनी आत्मा की गहराई से मुझसे चिपकते हैं। ... मेरी वास्तविकता मनुष्य को चकित, भौचक्का और व्यग्र कर देती है, फिर भी वे उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं।" यह उन लोगों के हृदय की गहरी वास्तविक स्थिति है जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। जब लोग परमेश्वर को वास्तव में जान जाते हैं तो उनका उसके प्रति रवैया स्वाभाविक रूप से बदल जाता है, और अपनी आत्माओं के कार्य के कारण वे अपने हृदय में गहराई से स्तुतियाँ करने में समर्थ हैं। परमेश्वर सभी लोगों की आत्माओं की गहराई में है, किन्तु शैतान की

भ्रष्टता के कारण उन्होंने भ्रमवश शैतान को परमेश्वर मान लिया है। आज परमेश्वर का कार्य इसी समस्या से शुरू होता है, और आध्यात्मिक दुनिया में, यह शुरू से अंत तक युद्ध का केन्द्र बिन्दु रहा है।

अध्याय 16

लोगों के लिए, परमेश्वर बहुत महान, बहुत असीम, बहुत अद्‌भुत और बहुत अथाह है; उनकी नज़र में, परमेश्वर के वचनों का उदय ऊँचाई पर होता है और वे दुनिया की एक महान कृति के रूप में प्रकट होते हैं। लेकिन चूँकि लोगों की असफलताएँ बहुत ज़्यादा हैं, और उनके मन बहुत सरल हैं, इसके अलावा, क्योंकि स्वीकार करने की उनकी क्षमताएँ बहुत कम हैं, फिर चाहे परमेश्वर अपने वचनों को कितना ही स्पष्ट रूप से व्यक्त क्यों न करे, वे बैठे और अचल रह जाते हैं, मानो मानसिक बीमारी से पीड़ित हों। जब वे भूखे होते हैं, तो उनकी समझ में नहीं आता है कि उन्हें खाना चाहिए; जब वे प्यासे होते हैं, तो उनकी समझ में नहीं आता है कि उन्हें पीना चाहिए; वे केवल चीखते-चिल्लाते रहते हैं, मानो उनकी आत्मा की गहराई में अवर्णनीय कठिनाई हो, फिर भी वे इस बारे में बात नहीं कर पाते। जब परमेश्वर ने मानवजाति का सृजन किया, तो उसका अभिप्राय था कि मनुष्य सामान्य मानवता में रहे और अपनी सहज-प्रवृत्ति के अनुसार परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करे। लेकिन क्योंकि, बिल्कुल शुरुआत में ही, मनुष्य शैतान के प्रलोभन में आ गया था, इसलिए आज वह स्वयं को बाहर निकालने में असमर्थ पाता है, और हजारों वर्षों से शैतान द्वारा चलाए जा रहे कपटपूर्ण कुचक्रों को पहचानने में अभी भी समर्थ नहीं है। इसके अलावा, उसमें परमेश्वर के वचनों को पूरी तरह से जानने की योग्यताओं का भी अभाव है—यह सब वर्तमान स्थिति में परिणत हुआ है। आज जिस तरह से चीजें हैं, लोग अभी भी शैतान के प्रलोभन के ख़तरे में रहते हैं, और इसलिए परमेश्वर के वचनों की सही व्याख्या नहीं कर पाते। सामान्य लोगों के स्वभाव में कोई कुटिलता या धोखेबाज़ी नहीं होती, लोगों का एक-दूसरे के साथ एक सामान्य संबंध होता है, वे अकेले नहीं खड़े होते, और उनका जीवन न तो साधारण होता है और न ही पतनोन्मुख। इसलिए भी, परमेश्वर सभी के बीच ऊँचा है, उसके वचन मनुष्यों के बीच व्याप्त हैं, लोग एक-दूसरे के साथ शांति से, परमेश्वर की देखभाल और संरक्षण में रहते हैं, पृथ्वी, शैतान के हस्तक्षेप के बिना, सद्भाव से भरी है, और मनुष्यों के बीच परमेश्वर की महिमा बेहद महत्वपूर्ण है। ऐसे लोग स्वर्गदूतों की तरह हैं: शुद्ध, जोशपूर्ण, परमेश्वर के बारे में कभी भी शिकायत नहीं करने वाले, और पृथ्वी पर पूरी तरह से परमेश्वर की महिमा के लिए अपने सभी प्रयास

समर्पित करने वाले। अब अँधेरी रात का समय है—सभी इधर-उधर टटोल रहे हैं, खोज रहे हैं, घोर अँधेरी रात उनके रोंगटे ख़ड़े कर देती है, और वे काँपने लगते हैं; करीब से सुनने पर, निरंतर प्रचंड झोंके के साथ चीखती-बहती उत्तर-पश्चिमी हवा, मनुष्य की शोकाकुल सिसकियों की संगति में बहती-सी लगती है। लोग अपने भाग्य से दुःखी होते और रोते हैं। वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ते तो हैं लेकिन उन्हें समझ क्यों नहीं पाते? ऐसा लगता है मानो उनकी जिंदगी निराशा की कगार पर खड़ी हो, मानो मृत्यु आने ही वाली हो, मानो उनका अंतिम दिन उनकी आँखों के सामने हो। ऐसी दयनीय परिस्थितियाँ ही वे पल होती हैं जब सुकुमार स्वर्गदूत, एक के बाद एक शोकाकुल क्रंदन के साथ अपनी कठिनाई के बारे में बताते हुए, परमेश्वर को पुकारते हैं। यही कारण है कि परमेश्वर के पुत्रों और लोगों के बीच कार्य करने वाले स्वर्गदूत, फिर कभी मनुष्य के बीच नहीं उतरेंगे; यह उन्हें देह में रहते हुए शैतान द्वारा छलकपट से पकड़े जाने से बचाने के लिए है, क्योंकि वे खुद को बाहर नहीं निकाल पाते, इसलिए वे केवल आध्यात्मिक दुनिया में कार्य करते हैं जो मनुष्य के लिए अदृश्य है। इस प्रकार, जब परमेश्वर कहता है, "जब मैं मनुष्य के हृदय में सिंहासन पर चढ़ूँगा तो उस पल मेरे पुत्र और लोग पृथ्वी पर शासन करेंगे," यहाँ वह उस समय का उल्लेख कर रहा है कि जब पृथ्वी पर स्वर्गदूत स्वर्ग में परमेश्वर की सेवा के आशीष का आनंद लेंगे। क्योंकि मनुष्य स्वर्गदूतों की आत्माओं की अभिव्यक्ति है, परमेश्वर कहता है कि मनुष्य के लिए, पृथ्वी पर होना स्वर्ग में होने जैसा है, उसका पृथ्वी पर परमेश्वर की सेवा करना स्वर्गदूतों का स्वर्ग में सीधे परमेश्वर की सेवा करने जैसा है—और इस प्रकार, पृथ्वी पर अपने दिनों के दौरान, मनुष्य तीसरे स्वर्ग के आशीषों का आनंद लेता है। दरअसल यही इन वचनों में कहा जा रहा है।

परमेश्वर के वचनों में बहुत अधिक अर्थ छुपा हुआ है। "जब दिन आएगा, लोग अपने हृदय की गहराइयों से मुझे जान जाएँगे और अपने विचारों में मुझे स्मरण करेंगे।" ये वचन मनुष्य की आत्मा के लिए हैं। स्वर्गदूतों की निर्बलता के कारण, वे हर चीज़ में परमेश्वर पर ही निर्भर रहते हैं, हमेशा परमेश्वर से जुड़े रहे हैं और उन्होंने परमेश्वर की ही पूजा की है। किन्तु शैतान के उपद्रव की वजह से, वे अपनी सहायता और अपने आपको नियंत्रित नहीं कर पाते; वे परमेश्वर से प्यार करना चाहते हैं किन्तु अपने संपूर्ण हृदय से उसे प्यार करने में अक्षम हैं, और इसलिए वे पीड़ा सहते हैं। जब परमेश्वर का कार्य एक निश्चित मुकाम तक पहुँच जाता है तभी इन बेचारे स्वर्गदूतों की परमेश्वर से प्रेम करने की इच्छा पूरी हो पाती है, यही कारण है कि परमेश्वर ने वे वचन बोले। स्वर्गदूतों की प्रकृति परमेश्वर से प्रेम करना, उसे सँजोना और उसका

आज्ञापालन करना है, फिर भी वे पृथ्वी पर इसे प्राप्त नहीं कर पाते, और उनके पास वर्तमान समय तक संयम रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। तुम लोग शायद आज की दुनिया को देखो: सभी लोगों के हृदय में परमेश्वर है, फिर भी वे यह अंतर नहीं कर पाते कि उनके हृदय में जो परमेश्वर है, वह सच्चा परमेश्वर है या झूठा परमेश्वर, हालाँकि वे अपने इस परमेश्वर को प्यार करते हैं, लेकिन फिर भी वे परमेश्वर से सचमुच प्यार नहीं कर पाते, जिसका अर्थ है कि अपने आप पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया मनुष्य का कुरूप चेहरा आत्मिक क्षेत्र में शैतान का असली चेहरा है। मनुष्य मूल रूप से निर्दोष और पाप से रहित था, इसलिए मनुष्य के सभी भ्रष्ट, कुरूप आचरण आध्यात्मिक क्षेत्र में शैतान के कार्य हैं, और आध्यात्मिक क्षेत्र की घटनाओं के विश्वसनीय अभिलेख हैं। "आज, लोगों में योग्यताएँ हैं और मानते हैं कि वे मेरे सामने अकड़ कर चल सकते हैं, और ज़रा भी निषेध के बिना मेरे साथ हँसी-मज़ाक कर सकते हैं और मुझे समकक्ष के रूप में संबोधित कर सकते हैं। फिर भी मनुष्य मुझे जानता नहीं है, फिर भी वह मानता है कि सार में हम लगभग समान ही हैं, कि हम दोनों हाड़-माँस के हैं, और दोनों मानव जगत में वास करते हैं।" शैतान ने मनुष्यों के हृदय में यही किया है। परमेश्वर का विरोध करने के लिए शैतान मनुष्य की अवधारणाओं और खुली आँखों का उपयोग करता है, फिर भी बिना किसी वाक्छल के परमेश्वर मनुष्य को इन घटनाओं के बारे में बताता है ताकि मनुष्य यहाँ विनाश से बच सके। सभी लोगों की नश्वर दुर्बलता यह है कि वे केवल "हाड़-माँस का एक शरीर भर देखते हैं, और परमेश्वर के आत्मा का बोध नहीं करते हैं।" यह शैतान द्वारा मनुष्य को लालच देने के एक पहलू का आधार है। लोग मानते हैं कि केवल इसी देह में पवित्रात्मा को परमेश्वर कहा जा सकता है। कोई नहीं मानता है कि आज, पवित्रात्मा देह बन गया है और उनकी आँखों के सामने वास्तव में उपस्थित हुआ है; लोग परमेश्वर को दो हिस्सों में देखते हैं—"आवरण और देह"—के रूप में, परमेश्वर को कोई पवित्रात्मा के देहधारण के रूप में नहीं देखता, यह कोई नहीं देखता कि देह का सार परमेश्वर का स्वभाव है। लोगों की कल्पना में, परमेश्वर सामान्य है, लेकिन क्या वे नहीं जानते कि इस सामान्यता में परमेश्वर के गहन अर्थ का एक पहलू छुपा है?

जब परमेश्वर ने सारी दुनिया को आवृत करना आरंभ किया, तो घोर अँधेरा छा गया, और जैसे ही लोग सोए, तो परमेश्वर ने मनुष्य के बीच अवतरित होने के लिए इस अवसर का लाभ उठाया, और आधिकारिक रूप से, पृथ्वी के सभी कोनों में पवित्रात्मा को भेजकर मानवजाति को बचाने का कार्य आरंभ कर दिया। यह कहा जा सकता है कि जब परमेश्वर ने देह की छवि को अपनाना आरंभ किया, तो उसने

पृथ्वी पर निजी तौर पर कार्य किया। फिर पवित्रात्मा का कार्य आरंभ हुआ, और आधिकारिक रूप से पृथ्वी पर सभी कार्य शुरू हुए। दो हज़ार वर्षों तक, परमेश्वर के आत्मा ने पूरे विश्व में कार्य किया है। लोगों को इसके बारे में न तो पता है और न ही कोई समझ है, किन्तु अंत के दिनों के दौरान, ऐसे समय में जब शीघ्र ही इस युग का समापन होना है, तो परमेश्वर पृथ्वी पर स्वयं कार्य करने के लिए आया है। यह उन लोगों के लिए आशीष है जो अंत के दिनों में पैदा हुए, जो देहधारी परमेश्वर की छवि को खुद देख सकते हैं। "जब महासागर का समूचा चेहरा धुँधला था, तब मनुष्यों के बीच मैंने संसार की कटुता का स्वाद लेना आरंभ किया। मेरा आत्मा संसार भर की यात्रा करता है और सभी लोगों के हृदय ध्यान से देखता है, तो भी, मैं अपनी देहधारी देह में मनुष्यजाति पर विजय भी प्राप्त करता हूँ।" स्वर्ग के परमेश्वर और पृथ्वी के परमेश्वर के बीच ऐसा सामंजस्यपूर्ण सहयोग है। अंततः, लोगों को विश्वास होगा कि पृथ्वी का परमेश्वर ही स्वर्ग का परमेश्वर है, स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें मौजूद सभी चीजें पृथ्वी के परमेश्वर ने ही बनायी हैं, मनुष्य पृथ्वी के परमेश्वर द्वारा नियंत्रित होता है, पृथ्वी का परमेश्वर पृथ्वी पर रहकर स्वर्ग का कार्य करता है, और स्वर्ग का परमेश्वर ही देह में प्रकट हुआ है। पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का यह अंतिम उद्देश्य है, इसलिए, यह चरण देह की अवधि में किए गए कार्य का सर्वोच्च स्तर है; यह दिव्यता में किया जाता है और सभी लोगों को पूरी ईमानदारी से आश्वस्त कर देता है। लोग अपनी अवधारणाओं में जितना अधिक परमेश्वर की खोज करते हैं, उन्हें उतना ही अधिक यह लगता है कि पृथ्वी का परमेश्वर वास्तविक नहीं है। इसलिए परमेश्वर कहता है कि लोग खोखले वचनों और सिद्धांतों में परमेश्वर की खोज करते हैं। लोग जितना अधिक परमेश्वर को अपनी अवधारणाओं में जानेंगे, वे इन वचनों और सिद्धांतों को बोलने में उतने ही अधिक निपुण और सराहनीय होंगे; लोग वचनों और सिद्धांतों को जितना अधिक बोलेंगे, वे परमेश्वर से उतना दूर होते जाएँगे, वे मनुष्य के सार को जानने में उतने ही अधिक अक्षम होते जाएँगे, वे उतना ही अधिक परमेश्वर की अवज्ञा करेंगे, और परमेश्वर की अपेक्षाओं से उतने ही दूर चले जाएँगे। मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाएँ उतनी अलौकिक नहीं हैं जितनी लोग सोचते हैं, फिर भी कभी कोई परमेश्वर की इच्छा को समझ नहीं पाया, इसलिए परमेश्वर कहता है, "लोग केवल असीम आकाश में या लहरदार समुद्र के ऊपर, या शान्त झील के ऊपर, या खोखले पत्रों और सिद्धांतों के बीच मुझे खोजते हैं।" परमेश्वर मनुष्य से जितनी अधिक अपेक्षाएँ करता है, लोगों को उतना ही अधिक लगता है कि परमेश्वर अगम्य है, और उन्हें उतना ही अधिक विश्वास होता जाता है कि परमेश्वर महान है। इस प्रकार, उनकी चेतना में, परमेश्वर के मुख से बोले गए सभी वचन

मनुष्य के द्वारा अप्राप्य हैं, जिसकी वजह से परमेश्वर को स्वयं कार्य करना पड़ता है; और परमेश्वर के साथ सहयोग करने के प्रति मनुष्य का झुकाव थोड़ा भी नहीं होता, वह तो बस विनम्र और आज्ञाकारी होने का प्रयास करते हुए, मात्र सिर झुकाए अपने पापों को स्वीकार करने में लगा रहता है। इस तरह, इस बात का एहसास किए बिना, लोग किसी नए धर्म में, धार्मिक समारोह में प्रवेश करते हैं जो धार्मिक कलीसियाओं की अपेक्षा और अधिक कठोर होते हैं। यह आवश्यक है कि लोग अपनी नकारात्मक अवस्था को सकारात्मक अवस्था में रूपांतरित करते हुए ऐसी अवस्था में आएँ जो सामान्य है; यदि इंसान ऐसा नहीं करेगा, तो वह और भी अधिक गहरा फँसता जाएगा।

परमेश्वर अपने इतने सारे कथनों में पहाड़ों और समुद्र का वर्णन क्यों करता है? क्या इन वचनों के प्रतीकात्मक अर्थ हैं? परमेश्वर न केवल अपने देह में इंसान को अपने कर्म दिखाता है, बल्कि इंसान को नभमण्डल में अपने सामर्थ्य को भी समझने देता है। इस तरह, इस विश्वास के साथ कि यह देह में परमेश्वर ही है, लोगों को व्यावहारिक परमेश्वर के कर्मों का भी पता चल जाता है, और इस तरह पृथ्वी के परमेश्वर को स्वर्ग में भेज दिया जाता है, और स्वर्ग के परमेश्वर को नीचे पृथ्वी पर लाया जाता है, उसके बाद ही लोग पूरी तरह परमेश्वर के स्वरूप का और परमेश्वर के सर्वसामर्थ्य का और अधिक ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं। जितना अधिक देह में परमेश्वर मानवजाति को जीतने में समर्थ होता है और पूरे ब्रह्मांड के ऊपर और सर्वत्र यात्रा करने के लिए देह से पार जा सकता है, लोग उतना ही अधिक व्यावहारिक परमेश्वर का अवलोकन करने के आधार पर परमेश्वर के कर्मों को देख पाते हैं, और इस प्रकार पूरे विश्व में परमेश्वर के कार्य की सत्यता को जान जाते हैं कि यह नकली नहीं असली है, और उन्हें पता चल जाता है कि आज का व्यावहारिक परमेश्वर पवित्रात्मा का मूर्तरूप है, न कि मनुष्य के समान शरीर वाला है। परमेश्वर कहता है, "परंतु जब मैं अपने कोप का बाँध खोलता हूँ, पहाड़ तत्काल टूटकर तितर-बितर हो जाते हैं, धरती तत्काल कंपकंपाने लगती है, पानी तत्काल सूख जाता है, और मनुष्य तत्काल आपदा से घिर जाता है।" जब लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, तो वे उन्हें परमेश्वर के देह से जोड़ते हैं, इस प्रकार, आध्यात्मिक क्षेत्र का कार्य और वचन प्रत्यक्ष रूप से देहधारी परमेश्वर की ओर संकेत करते हैं, इससे और भी प्रभावकारी परिणाम प्राप्त होते हैं। जब परमेश्वर बोलता है तो ऐसा प्रायः स्वर्ग से पृथ्वी तक होता है, और फिर एक बार और धरती से स्वर्ग तक होता है, और लोग परमेश्वर के वचनों की प्रेरणा एवं उत्पत्ति को समझ नहीं पाते हैं, "जब मैं आसमानों के बीच होता हूँ, तब मेरी उपस्थिति ने कभी तारों में खलबली नहीं मचाई है। इसके

बजाय, वे अपने हृदय मेरे लिए अपने कार्य में लगाते हैं।" स्वर्ग की ऐसी ही स्थिति है। परमेश्वर तीसरे स्वर्ग में सब कुछ व्यवस्थित तरीके से करता है, जहाँ परमेश्वर की सेवा करने वाले सभी सेवक परमेश्वर के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने कभी परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, इसलिए वे उस भय से आतंकित नहीं होते जिसकी चर्चा परमेश्वर ने की है, बल्कि दिल लगाकर अपना काम करते हैं, वहाँ कभी कोई अव्यवस्था नहीं होती, इस प्रकार सभी स्वर्गदूत परमेश्वर के प्रकाश में रहते हैं। जबकि अवज्ञा करने और परमेश्वर को न जानने के कारण, पृथ्वी के लोग अंधकार में रहते हैं, वे परमेश्वर का जितना अधिक विरोध करते हैं, वे उतने ही अधिक अंधकार में रहते हैं। जब परमेश्वर कहता है, "आसमान जितने अधिक प्रकाशमान होते हैं, नीचे का संसार उतना ही अधिक अंधकारमय होता है" तो उसका अर्थ होता है कि किस प्रकार परमेश्वर का दिन इंसान के करीब आता जा रहा है। इस प्रकार, तीसरे स्वर्ग में परमेश्वर की 6,000 वर्षों की व्यस्तता जल्द ही समाप्त हो जाएगी। पृथ्वी की सभी चीज़ें अंतिम अध्याय में प्रवेश कर चुकी हैं, और जल्दी ही हर चीज़ परमेश्वर के हाथ से अलग हो जाएगी। लोग अंत के दिनों के समय से जितना दूर जाते हैं, वे इंसानी दुनिया की भ्रष्टता का अनुभव उतना ही अधिक कर पाते हैं; और वे अंत के दिनों के समय में जितना दूर जाते हैं, उतना ही अधिक वे अपनी देह के प्रति आसक्त होते जाते हैं; ऐसे अनेक लोग हैं जो दुनिया की दयनीय स्थिति को बदलना चाहते हैं, लेकिन उनकी आहें परमेश्वर के कर्मों की वजह से गुम हो जाती है। इस प्रकार, जब लोगों को वसंत की गर्माहट का एहसास होता है, तो परमेश्वर उनकी आँखों को ढक देता है, और इस तरह वे उठती-गिरती तरंगों पर तैरने लगते हैं, उनमें से एक भी सुदूर में मौजूद जीवन-रक्षक नौका तक नहीं पहुँच पाते। चूँकि लोग जन्मजात निर्बल होते हैं, इसलिए परमेश्वर कहता है कि ऐसा कोई नहीं है जो चीजों की कायापलट कर सके। जब लोग आशा खो देते हैं, तो परमेश्वर पूरी दुनिया से बात करने लगता है। वह पूरी मानवजाति को बचाना शुरू कर देता है, और इसके बाद ही लोग उस नई जिंदगी का आनंद ले पाते हैं जो चीजों की कायापलट होने के बाद ही आती हैं। आज के लोग आत्म-प्रवंचना के चरण में हैं। क्योंकि उनके सामने का मार्ग बहुत उजाड़ और अस्पष्ट है, उनका भविष्य "अपरिमित" और "असीमित" है, इस युग के लोगों में युद्ध करने की ओर कोई झुकाव नहीं है, वे अपना समय हानहाओ पक्षी[क] की तरह ही गुज़ार सकते हैं। ऐसा कोई नहीं हुआ है जिसने अपने जीवन और मानव-जीवन के ज्ञान को कभी गंभीरता से लिया हो; वे तो बस उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब स्वर्ग से उद्धारकर्ता दुनिया की दयनीय स्थिति को बदलने के लिए अचानक आएगा, और तभी वे तत्परता से जीने

का प्रयास करेंगे। हर इंसान की वास्तविक स्थिति और मानसिकता ऐसी ही है।

आज, परमेश्वर मनुष्य की वर्तमान मानसिकता के प्रकाश में उसके भविष्य के नये जीवन की भविष्यवाणी कर रहा है। यह आने वाले उस प्रकाश की चमक है, जिसके बारे में परमेश्वर बोलता है। परमेश्वर जो भविष्यवाणी कर रहा है आखिरकार वह उसे पूरा करेगा, और यह शैतान पर परमेश्वर की विजय का फल है। "मैं सभी मनुष्यों से ऊपर चलता हूँ और हर कहीं देख रहा हूँ। कुछ भी कभी पुराना दिखाई नहीं देता है, और कोई भी व्यक्ति वैसा नहीं है जैसा वह हुआ करता था। मैं सिंहासन पर विश्राम करता हूँ, मैं संपूर्ण ब्रह्माण्ड के ऊपर आराम से पीठ टिकाता हूँ...।" यह परमेश्वर के वर्तमान कार्य का परिणाम है। परमेश्वर के चुने हुए सभी लोग अपने मूल स्वरूप में वापस आ जाते हैं, जिसके कारण वे स्वर्गदूत, जिन्होंने इतने वर्षों तक कष्ट झेला है, मुक्त हो जाते हैं, जैसा कि परमेश्वर कहता है "एक चेहरा जो मनुष्य के हृदय के भीतर एक पवित्र जन जैसा है।" चूँकि स्वर्गदूत पृथ्वी पर कार्य करते हैं और पृथ्वी पर परमेश्वर की सेवा करते हैं, और परमेश्वर की महिमा दुनिया भर में फैलती है, इसलिए स्वर्ग को पृथ्वी पर लाया जाता है, और पृथ्वी को स्वर्ग तक उठाया जाता है। इसलिए, मनुष्य वह कड़ी है जो स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ती है; स्वर्ग और पृथ्वी अब दूर-दूर नहीं हैं, अलग नहीं हैं, बल्कि जुड़कर एक हो गए हैं। दुनिया भर में, केवल परमेश्वर और मनुष्य हैं। कोई गुबार या गंदगी नहीं है, सब कुछ नया हो गया है, जैसे कि आकाश के नीचे हरे-भरे चरागाह में लेटा हुआ भेड़ का कोई छोटा-सा बच्चा, परमेश्वर के सभी अनुग्रहों का आनंद ले रहा हो। हरियाली के आगमन की वजह से जीवन की साँस दमकने लगती है, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के साथ सदा-सर्वदा रहने के लिए दुनिया में आता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे परमेश्वर के मुख से कहा गया था कि "मैं एक बार फिर से सिय्योन के भीतर शांतिपूर्वक निवास कर सकता हूँ।" यह शैतान की हार का प्रतीक है, यह परमेश्वर के विश्राम का दिन है, और सभी लोग इस दिन की प्रशंसा और घोषणा करेंगे और स्मरणोत्सव मनाया जाएगा। जब परमेश्वर सिंहासन पर आराम करता है तभी वह पृथ्वी पर अपना कार्य भी समाप्त कर लेता है, और इसी क्षण इंसान को परमेश्वर के रहस्य भी दिखाए जाते हैं; परमेश्वर और मनुष्य हमेशा सामंजस्य में रहेंगे, कभी अलग नहीं होंगे—ऐसे हैं राज्य के सुंदर दृश्य!

रहस्यों में रहस्य छुपे हुए हैं; परमेश्वर के वचन वास्तव में गहन और अथाह हैं!

फुटनोट :

क. हानहाओ पक्षी की कहानी ईसप की चींटी और टिड्डी की नीति-कथा से काफ़ी मिलती-जुलती है। जब मौसम गर्म होता है, तब हानहाओ पक्षी अपने पड़ोसी नीलकंठ द्वारा बार-बार चेताए जाने के बावजूद घोंसला बनाने के बजाय सोना पसंद करता है। जब सर्दी आती है, तो हानहाओ ठिठुरकर मर जाता है।

अध्याय 17

वे सारे वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलते हैं, वस्तुतः मानवों के लिए अनजान हैं; वे सब ऐसी भाषा हैं जो लोगों ने सुनी नहीं है। ऐसे में, कहा जा सकता है कि परमेश्वर के वचन अपने आप में रहस्य हैं। अधिकतर लोग भूलवश मानते हैं कि रहस्यों में केवल वही चीजें समाहित हैं जिन पर लोग अवधारणात्मक रूप से पहुँच सकते हैं, स्वर्ग के विषय जिन्हें परमेश्वर अब लोगों को जानने देता है, या परमेश्वर जो आध्यात्मिक जगत में करता है उसका सत्य। इससे स्पष्ट है कि लोग परमेश्वर के सभी वचनों को एक बराबर नहीं मानते हैं, न ही वे उन्हें सँजोकर रखते हैं; अपितु वे उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसे वे "रहस्य" मानते हैं। यह साबित करता है कि लोग नहीं जानते कि परमेश्वर के वचन क्या हैं या रहस्य क्या हैं; वे बस अपनी ही धारणाओं के दायरे के भीतर परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं। वास्तविकता यह है कि एक भी व्यक्ति नहीं है जो परमेश्वर के वचनों को सचमुच प्यार करता हो, और ठीक इसी कारण से परमेश्वर कहता है कि "लोग मुझे धोखा देने में माहिर हैं।" ऐसा नहीं है कि परमेश्वर कहता है कि लोग किसी भी योग्यता से रहित हैं, या वे पूरी तरह गड़बड़ हैं; यह मनुष्यजाति की वास्तविक स्थिति का बखान करता है। लोग स्वयं बहुत स्पष्ट नहीं हैं कि वस्तुतः परमेश्वर उनके हृदय में कितना स्थान ग्रहण करता है; यह तो बस परमेश्वर स्वयं ही पूरी तरह जानता है। इसलिए फिलहाल लोग दूध पीते बच्चों की तरह हैं। वे दूध क्यों पीते हैं और उन्हें क्यों जीवित रहना चाहिए, इन बातों से वे पूर्णतः अनभिज्ञ हैं। केवल माँ ही बच्चे की आवश्यकताएँ समझती है; वह उसे भूखा नहीं मरने देगी, न ही वह बच्चे को खा-खाकर अपनी जान देने देगी। परमेश्वर लोगों की आवश्यकताएँ सबसे अच्छी तरह जानता है, इसलिए कभी-कभी उसका प्रेम उसके वचनों में मूर्त होता है, कभी-कभी उसका न्याय उनमें प्रकट होता है, कभी-कभी वे लोगों को उनके हृदय की गहराइयों तक घायल कर देते हैं, और कभी-कभी वे गंभीर और खरे होते हैं। यह लोगों को उसकी दयालुता और सुलभता महसूस करने देता है, और यह भी कि वह कोई कल्पित, प्रभावशाली हस्ती नहीं है जिसे स्पर्श नहीं किया जा सकता है। न ही लोगों के मन में वह "स्वर्ग का पुत्र" है, जिसका चेहरा

सीधे नहीं देखा जा सकता, वह एक जल्लाद तो और भी नहीं है जो निर्दोष का वध करता है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं। परमेश्वर का समूचा स्वभाव उसके कार्य में प्रकट होता है; आज देहधारी परमेश्वर का स्वभाव भी उसके कार्य के माध्यम से मूर्त होता है। इस प्रकार उसकी सेवकाई वचनों की सेवकाई है, उसकी नहीं जो वह करता है या वह जैसा बाहर से प्रकट होता है। अंततः, सभी लोग परमेश्वर के वचनों से आत्मिक उन्नति प्राप्त करेंगे और उनके कारण पूर्ण बनाए जाएँगे। अपने अनुभव में, परमेश्वर के वचनों से मार्गदर्शित होकर, लोग अभ्यास करने के लिए मार्ग प्राप्त करेंगे, और परमेश्वर के मुख के वचनों के माध्यम से लोग उसके समूचे स्वभाव को जानने लगेंगे। उसके वचनों के कारण, परमेश्वर का समस्त कार्य परिपूर्ण होगा, लोग ओजस्वी हो उठेंगे, और सभी दुश्मन परास्त हो जाएँगे। यह प्राथमिक कार्य है, जिसे कोई अनदेखा नहीं कर सकता है। आओ हम उसके वचनों पर दृष्टि डालें : "मेरे कथन गरजते बादल की तरह गूँजते हैं, सभी दिशाओं और समूची पृथ्वी पर रोशनी डालते हुए, और गरजते बादल और चमकती बिजली के बीच, मनुष्यजाति धराशायी कर दी जाती है। गरजते बादल और चमकती बिजली के बीच कभी कोई मनुष्य मज़बूती से टिका नहीं रहा है; मेरी रोशनी के आगमन पर अधिकांश मनुष्य बुरी तरह दहल जाते हैं और नहीं जानते कि क्या करें।" परमेश्वर ज्यों ही अपना मुँह खोलता है, वचन बाहर आते हैं। वह वचनों के माध्यम से सब कुछ संपन्न करता है, और उनके द्वारा सभी चीजें रूपांतरित हो जाती हैं, और उनके माध्यम से हर कोई नया हो जाता है। "गरजते बादल और चमकती बिजली" का क्या अर्थ है? और "रोशनी" का क्या अर्थ है? कोई एक भी चीज़ परमेश्वर के वचनों से बच नहीं सकती है। वह लोगों के मन को उघाड़ने और उनकी कुरूपता को दर्शाने के लिए उनका उपयोग करता है; वह लोगों की पुरानी प्रकृतियों से निपटने और अपने सभी लोगों को पूरा करने के लिए वचनों का उपयोग करता है। क्या यह परमेश्वर के वचनों का ठीक-ठीक महत्व नहीं है? पूरे ब्रह्माण्ड में, परमेश्वर के वचनों के सहारे और किलेबंदी के बिना, संपूर्ण मनुष्यजाति बहुत पहले ही अनस्तित्व की सीमा तक नष्ट हो गई होती। अपनी छह हज़ार वर्षीय प्रबंधन योजना के दौरान परमेश्वर जो करता है, और वह पद्धति है जिससे वह कार्य करता है, उसका यही सिद्धांत है। यह परमेश्वर के वचनों का महत्व दर्शाता है। वे लोगों की आत्माओं की गहराई में सीधे बेधते हैं। उसके वचनों को देखते ही लोग हक्के-बक्के और आतंकित हो जाते हैं, और हड़बड़ी में भाग जाते हैं। वे उसके वचनों की वास्तविकता से बचना चाहते हैं, यही वजह है कि इन "शरणार्थियों" को हर जगह देखा जा सकता है। ज्यों ही परमेश्वर के वचन जारी किए जाते हैं, लोग भाग खड़े होते हैं। यह मनुष्यजाति की

कुरूपता की छवि का एक पहलू है जो परमेश्वर दर्शाता है। फिलहाल, सभी लोग धीरे-धीरे अपनी मूर्छा से जाग रहे हैं; यह ऐसा है मानो पहले उन सभी में मनोभ्रंश की अवस्थाएँ विकसित हो गई थीं—और अब जब वे परमेश्वर के वचनों को देखते हैं, वे इस बीमारी के बचे हुए प्रभावों से पीड़ित, और अपनी पूर्व अवस्थाओं को पुनःप्राप्त करने में असमर्थ प्रतीत होते हैं। सभी लोग वास्तव में ऐसे ही हैं, और यह इन वचनों का सच्चा चित्रण भी है : "तब कई लोग, इस हल्की-सी दीप्ति से प्रेरित होकर, तत्क्षण अपनी मोह-माया से जाग जाते हैं। तो भी कभी किसी ने अहसास नहीं किया कि वह दिन आ गया है जब मेरी रोशनी पृथ्वी पर उतरती है।" यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा : "अधिकांश मनुष्य इस रोशनी के अचानक आगमन से भौंचक्के रह जाते हैं।" इसे इस तरह प्रस्तुत करना पूरी तरह उपयुक्त है। मानवजाति के बारे में परमेश्वर के वर्णन में कोई दरार नहीं है, यहाँ तक कि सुई की नोक बराबर जगह भी नहीं है—और उसने इसे सच में सटीक और त्रुटिरहित ढंग से सूत्रबद्ध किया है, यही कारण है कि सभी लोग सर्वथा विश्वास कर लेते हैं। इतना ही नहीं, इसे जाने बिना, परमेश्वर के लिए उनका प्रेम उनके हृदय के भीतर गहराई से बढ़ने लगता है। वहाँ परमेश्वर का स्थान केवल इसी तरह पहले से कहीं अधिक सच्चा हो जाता है, और यह भी एक तरीक़ा है जिससे परमेश्वर कार्य करता है।

"अधिकांश मनुष्य बस हक्के-बक्के हो जाते हैं; इस रोशनी से उनकी आँखें घायल हो जाती हैं और वे कीचड़ में गिरा दिए जाते हैं।" चूँकि ऐसे लोग परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाते हैं (अर्थात, वे परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं), इसलिए जब परमेश्वर के वचन आते हैं तब अपने विद्रोहीपन की वजह से वे ताड़ना झेलते हैं; यही कारण है कि यह कहा जाता है कि रोशनी से उनकी आँखें घायल हो जाती हैं। ऐसे लोगों को पहले से ही शैतान को सौंप दिया गया है; इसलिए, नए कार्य में प्रवेश करते समय, वे न तो प्रबुद्धता से या न ही रोशनी से युक्त होते हैं। वे सब जिनमें पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है शैतान द्वारा अधिग्रहित कर लिए गए हैं, और उनके हृदय की गहराई में, परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार, यह कहा जाता है कि वे "कीचड़ में गिरा दिए जाते हैं"। वे सब जो इस स्थिति में हैं, अस्तव्यस्त अवस्था में हैं। वे सही राह पर प्रवेश नहीं कर सकते हैं, न ही वे सामान्यता को पुनः प्राप्त कर सकते हैं; उनके सारे विचार विरोधाभासी होते हैं। पृथ्वी पर हर किसी को शैतान द्वारा चरम सीमा तक भ्रष्ट कर दिया गया है। लोगों में प्राणशक्ति नहीं है और उनसे शवों की दुर्गंध आती है। पृथ्वी के सारे लोग जीवाणुओं की उस महामारी के बीच, जिससे कोई बचकर नहीं निकल सकता, जीवित बचे रहते हैं। वे पृथ्वी पर जीवित रहने के इच्छुक नहीं हैं, किंतु

उन्हें हमेशा लगता है कि कुछ न कुछ अधिक बड़ा होगा जिसे लोग स्वयं अपनी आँखों से देखेंगे; ऐसे में, सभी लोग जीते रहने के लिए अपने को बाध्य करते हैं। उनके पास अपने हृदयों में बहुत लंबे समय से कोई शक्ति नहीं रही है; आध्यात्मिक स्तंभ के रूप में वे मात्र अपनी अदृश्य आशाओं का उपयोग करते हैं, और इस प्रकार वे इंसान होने का दिखावा करते हुए टेक लगाकर अपने सिर उठाए रखते हैं और किसी तरह पृथ्वी पर अपने दिन पार लगाते हैं। यह ऐसा है मानो सभी लोग देहधारी शैतान के पुत्र थे। यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा : "अव्यवस्था पृथ्वी को ढँक लेती है, असहनीय ढंग से दुःखद नज़ारा जो, ध्यान से जाँचने पर, ज़बर्दस्त उदासी के साथ धावा बोल देता है।" चूँकि यह स्थिति उत्पन्न हो गई है, इसलिए परमेश्वर ने पूरे ब्रह्माण्ड में सर्वत्र "अपने आत्मा के बीज बिखेरना" शुरू किया, और उसने पूरी पृथ्वी पर उद्धार का अपना कार्य करना आरंभ कर दिया। यह इस कार्य को आगे बढ़ाना ही था जिसके कारण परमेश्वर ने सभी प्रकार की आपदाएँ बरसाना आरंभ किया, इस प्रकार कठोर-हृदय मनुष्यों को बचाया। परमेश्वर के कार्य के चरणों में, उद्धार अब भी विभिन्न आपदाओं का रूप लेता है, और उनसे ऐसा कोई भी नहीं बच सकता जो अभिशप्त है। केवल अंत में ही पृथ्वी पर वह दृश्य प्राप्त कर पाना संभव होगा, जो "उतना ही शांत है जितना तीसरा स्वर्ग : यहाँ, जीती-जागती चीजें, बड़ी हों या छोटी, सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व में हैं, कभी 'मुख और जिह्वा के संघर्ष' में लिप्त नहीं होती हैं।" परमेश्वर के कार्य का एक पहलू समस्त मानवजाति पर विजय प्राप्त करना और अपने वचनों के माध्यम से चुने हुए लोगों को प्राप्त करना है; दूसरा पहलू है विभिन्न आपदाओं के तरीक़े से विद्रोह के सभी पुत्रों को जीतना। यह परमेश्वर के बड़े पैमाने के कार्य का एक भाग है। पृथ्वी पर परमेश्वर जो राज्य चाहता है, वह केवल इसी तरीक़े से पूर्णतः प्राप्त किया जा सकता है, और यह उसके कार्य का वह भाग है जो शुद्ध सोना है।

परमेश्वर निरंतर अपेक्षा करता है कि लोग स्वर्ग की गतिकी को पकड़ें। क्या वे सच में इसे प्राप्त कर सकते हैं? वास्तविकता यह है कि 5,900 से अधिक वर्षों से भ्रष्ट कर दिए जाने की लोगों की वर्तमान, वास्तविक स्थिति के आधार पर, उनकी पतरस से तुलना नहीं की जा सकती है; ऐसे में, वे यह कदापि प्राप्त नहीं कर सकते हैं। यह परमेश्वर के कार्य की पद्धतियों में से एक है। वह लोगों को निष्क्रिय बैठे-बैठे इंतजार नहीं करने देगा; इसके बजाय वह उनसे सक्रिय रूप से तलाश करवाएगा। केवल इसी तरह परमेश्वर को लोगों में कार्य करने का अवसर मिलेगा। तुम्हें थोड़ा अधिक स्पष्टीकरण देना अच्छा होगा; अन्यथा लोगों को मात्र सतही समझ ही होगी। परमेश्वर द्वारा मानवजाति की सृष्टि करने और उन्हें आत्माएँ

प्रदान करने के बाद, उसने उन्हें आदेश दिया कि यदि उन्होंने उसे नहीं पुकारा, तो वे उसके आत्मा से नहीं जुड़ पाएँगे, और इस प्रकार, पृथ्वी पर स्वर्ग से "सैटेलाइट टेलीविजन" का प्रसारण प्राप्त कर पाना असंभव होगा। अब जब परमेश्वर लोगों की आत्माओं में नहीं रह गया है, तब अन्य चीजों के लिए एक खाली आसन रह गया है, और इस प्रकार शैतान घुस आने का अवसर झपट लेता है। जब लोग परमेश्वर से अपने हृदय से संपर्क करते हैं, तब शैतान बुरी तरह घबड़ा जाता है और बचने की उतावली में सरपट भागता है। मानवजाति की पुकारों की बदौलत, परमेश्वर उन्हें वह देता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, किंतु वह आरंभ में उनके भीतर "निवास" नहीं करता है। वह उनकी पुकार की वजह से ही उन्हें अनवरत सहायता देता है, और उसी आंतरिक शक्ति से वे मजबूती प्राप्त करते हैं, जिससे शैतान अपनी इच्छानुसार "खेलने" के लिए घुस आने की हिम्मत नहीं करता। इसलिए, यदि लोग परमेश्वर के आत्मा से लगातार जुड़े रहते हैं, तो शैतान घुसने और विघ्न उत्पन्न करने की हिम्मत नहीं करता है। शैतान के विघ्नों के बिना, सभी लोगों के जीवन सामान्य हो जाते हैं, और तब परमेश्वर के पास उनके भीतर बेरोकटोक कार्य करने का अवसर होता है। इस रूप में, परमेश्वर जो करना चाहता है वह मनुष्यों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इससे यह जाना जा सकता है कि परमेश्वर ने लोगों से हमेशा अपना विश्वास बढ़ाने की अपेक्षा क्यों की है, और कहा भी है : "मैं पृथ्वी पर मनुष्य की आध्यात्मिक कद-काठी के अनुसार उपयुक्त माँगें ही करता हूँ। मैंने कभी किसी को कठिनाइयों में नहीं डाला है, न ही मैंने अपने सुख के लिए कभी किसी से 'उसका खून निचोड़ने' के लिए कहा है।" परमेश्वर की अपेक्षाओं से अधिकतर लोग चक्कर में पड़ जाते हैं। वे अचरज करते हैं कि जब लोगों में वह क्षमता है ही नहीं और वे शैतान द्वारा असाध्य रूप से भ्रष्ट कर दिए गए हैं, तो फिर परमेश्वर उनसे लगातार अपेक्षाएँ क्यों करता रहता है? क्या यह परमेश्वर द्वारा लोगों को मुश्किल स्थिति में डालना नहीं है? लोगों के धीर-गंभीर चेहरे देखकर, और फिर उनकी असहज भाव देखकर, तुम हँसे बिना नहीं रह सकते हो। लोगों की तरह-तरह की भद्दी दिखावटें सबसे अधिक हास्यास्पद होती हैं : कभी-कभी वे उन बच्चों की तरह होते हैं जिन्हें खेलना बहुत अच्छा लगता है, जबकि कभी-कभी वे खेल में "माँ" बनी नन्हीं लड़की की तरह होते हैं। कभी-कभी वे चूहा खाते कुत्ते की तरह होते हैं। समझ नहीं आता कि उनकी इन कुरूप अवस्थाओं पर हँसे या रोएँ, और प्रायः, लोग परमेश्वर की इच्छा को जितना कम पकड़ पाते हैं, उतना ही अधिक उनके मुसीबत में पड़ने की आशंका होती है। इसलिए, परमेश्वर के ये वचन—"क्या मैं वह परमेश्वर हूँ जो सृष्टि पर मात्र ख़ामोशी थोपता है?"—यह दिखाने के लिए पर्याप्त हैं कि लोग कितने निरे

नासमझ हैं, और वे यह भी दर्शाते हैं कि कोई भी मनुष्य परमेश्वर की इच्छा नहीं समझ सकता है। यहाँ तक कि यदि वह अपनी इच्छा बता भी देता है तो भी वे इसके प्रति विचारशील नहीं हो पाते हैं। वे केवल मनुष्य की इच्छानुसार ही परमेश्वर का कार्य करते हैं। ऐसे में, वे उसकी इच्छा कैसे समझ सकते हैं? "मैं पृथ्वी पर चलता हूँ, सर्वत्र अपनी सुगंध बिखेरते हुए, और, प्रत्येक स्थल पर, मैं अपना स्वरूप पीछे छोड़ता जाता हूँ। प्रत्येक स्थल मेरी वाणी की ध्वनि से गुँजायमान हो जाता है। लोग सर्वत्र बीते कल के रमणीय दृश्यों पर देर तक ठिठके रहते हैं, क्योंकि समूची मानवजाति अतीत को याद कर रही है ..." यह स्थिति तब होगी जब राज्य बन जाएगा। परमेश्वर ने, वास्तव में, राज्य के साकार होने की सुंदरता की भविष्यवाणी कई स्थानों पर पहले ही कर दी है, और ये सब मिले-जुले रूप में राज्य की पूरी तस्वीर बनाते हैं। परंतु लोग इस पर ध्यान नहीं देते; वे इसे बस ऐसे देखते हैं जैसे यह कोई कार्टून हो।

सहस्राब्दि तक शैतान की भ्रष्टता के कारण, लोग हमेशा अंधकार में रहे हैं, इसलिए वे इससे परेशान नहीं होते, न ही वे प्रकाश की लालसा करते हैं। इसीलिए इसका नीचे लिखा परिणाम हुआ है, आज जब प्रकाश का आगमन होता है, "वे सब मेरे आगमन से विमुख हो जाते हैं, और वे सभी रोशनी के आगमन को निर्वासित कर देते हैं, मानो मैं स्वर्ग में मनुष्य का शत्रु होऊँ। मनुष्य अपनी आँखों में रक्षात्मक चमक के साथ मेरा अभिवादन करता है।" यद्यपि अधिकतर लोग नेकनीयत से परमेश्वर को प्यार करने का प्रयास करते हैं, किंतु वह तब भी संतुष्ट नहीं होता है, और वह तब भी मानवजाति की निंदा करता है। यह लोगों को हैरत में डाल देता है। चूँकि लोग अंधकार में रहते हैं, इसलिए वे प्रकाश की अनुपस्थिति में भी परमेश्वर की उसी प्रकार सेवा करते हैं जैसे वे करते हैं। अर्थात्, सभी लोग अपनी धारणाओं का उपयोग करते हुए परमेश्वर की सेवा करते हैं, और जब वह आता है, तब भी उनकी स्थिति ऐसी ही होती है, और वे नई रोशनी को स्वीकार करके परमेश्वर की सेवा नहीं कर पाते हैं; बल्कि, वे उसी अनुभव से उसकी सेवा करते हैं जो उन्होंने स्वयं प्राप्त किया है। परमेश्वर मानवजाति के "समर्पण" से आनंद प्राप्त नहीं करता है, इसलिए अंधकार में मानवजाति द्वारा प्रकाश की स्तुति नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि परमेश्वर ने ऊपर लिखे वचन कहे; यह वास्तविकता के विपरीत बिल्कुल नहीं है, न ही यह मानवजाति के साथ परमेश्वर का दुर्व्यवहार है, न ही यह उसका उन्हें हानि पहुँचाना है। संसार की सृष्टि के बाद से ही, एक भी व्यक्ति ने सच में परमेश्वर की गर्माहट का आस्वादन नहीं किया है; सारे लोग परमेश्वर की तरफ़ रक्षात्मक रहे हैं, इस गहरे डर से कि परमेश्वर उन्हें मार डालेगा, और उनका अस्तित्व मिटा देगा। इस प्रकार, इन 6,000 वर्षों के

दौरान, परमेश्वर ने हमेशा लोगों की शुद्ध हृदयता के बदले गर्मजोशी का आदान-प्रदान किया है, और हमेशा हर मोड़ पर धैर्यपूर्वक उनका मार्गदर्शन करता रहा है। इसका कारण यह है कि लोग बहुत निर्बल हैं, और वे परमेश्वर की इच्छा को पूर्णतः जानने या उससे पूरे हृदय से प्यार करने में असमर्थ हैं, क्योंकि उनके पास शैतान की चालाकी के अधीन होने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। तिस पर भी, परमेश्वर सहिष्णु बना हुआ है, और इतना धैर्यवान रहने के बाद, एक दिन, अर्थात्, जब वह संसार को नवीन करेगा, तब वह लोगों की माँ की तरह अब और देखभाल नहीं करेगा। इसके बजाय, वह मनुष्यों को वही प्रतिफल देगा जो उनके लिए उपयुक्त है। यही कारण है कि फिर यह होगा : "महासागर की सतह पर शव बहते हैं," जबकि "जल से रिक्त स्थानों में, अन्य मनुष्य अब भी, हँसी और गाने के बीच, उन प्रतिज्ञाओं का आनंद ले रहे हैं, जो मैंने कृपापूर्वक उन्हें प्रदान की हैं।" यह तुलना उन लोगों की मंजिलों के बीच है जो दण्डित किए जाते हैं और जो पुरस्कृत किए जाते हैं। "महासागर की सतह" का अर्थ मानवजाति की ताड़ना का वह अथाह कुंड है जिसके बारे में परमेश्वर ने बात की है। यह शैतान का गंतव्य है, और यह वह "विश्राम स्थल" है जो परमेश्वर ने अपना प्रतिरोध करने वाले लोगों के लिए तैयार किया है। परमेश्वर ने हमेशा मनुष्यों का सच्चा प्रेम चाहा है, फिर भी लोग यह नहीं जानते और इसके प्रति संवेदनशून्य हैं, और अब भी बस अपना ही कार्य करते हैं। इसके कारण, अपने सभी वचनों में, परमेश्वर हमेशा लोगों से चीज़ों की माँग करता है और उनकी कमियाँ बताता और उनके लिए अभ्यास का मार्ग बताता है, ताकि वे इन वचनों के अनुसार अभ्यास कर सकें। उसने स्वयं अपनी मनोवृत्ति लोगों को दिखाई है : "तो भी मैंने कभी एक भी मानव जीवन खेलने के लिए यूँ ही नहीं ले लिया है मानो वो कोई खिलौना हो। मैं देखता हूँ वे पीड़ाएँ जो मनुष्य ने सही हैं और मैं समझता हूँ कि उसने क्या क़ीमत चुकाई है। जब वह मेरे सामने खड़ा होता है, मैं नहीं चाहता कि ताड़ना देने के लिए मनुष्य को चुपके से पकड़ लूँ, न ही मैं अवांछनीय चीज़ें उस पर न्योछावर करना चाहता हूँ। इसके बजाय, इस पूरे समय, मैंने मनुष्य का भरण-पोषण ही किया है, और उसे दिया ही है।" लोग जब परमेश्वर के ये वचन पढ़ते हैं, वे तत्काल उसकी गर्माहट महसूस करते हैं, और सोचते हैं : सचमुच, अतीत में मैंने परमेश्वर के लिए क़ीमत चुकाई है, किंतु मैंने उसके साथ उथला व्यवहार भी किया है, और कभी-कभी मैंने उससे शिकायत की है। परमेश्वर ने अपने वचनों से हमेशा मेरा मार्गदर्शन किया है और वह मेरे जीवन पर इतना ध्यान देता है, फिर भी मैं कभी-कभी उसके साथ इस तरह खेलता हूँ मानो वह खिलौना हो। मुझे सचमुच यह नहीं करना चाहिए। परमेश्वर मुझे इतना अधिक प्यार करता है, तो मैं

पर्याप्त कठोर प्रयास क्यों नहीं कर सकता हूँ? जब उन्हें ऐसे विचार आते हैं, तब लोग वास्तव में अपने ही चेहरों पर थप्पड़ मारना चाहते हैं, और कुछ लोगों की नाक फड़कती हैं और वे ज़ोर से रो पड़ते हैं। परमेश्वर समझता है कि वे क्या सोच रहे हैं और वह उसी के अनुसार बोलता है, और ये थोड़े से वचन—जो न कठोर हैं और न कोमल—उसके प्रति लोगों का प्यार उत्पन्न करते हैं। अंत में, परमेश्वर ने पृथ्वी पर राज्य का निर्माण होने पर अपने कार्य में परिवर्तन की भविष्यवाणी की : जब परमेश्वर पृथ्वी पर होगा, तब लोग आपदाओं और विपत्तियों से मुक्त हो पाएँगे, और अनुग्रह का आनंद उठा पाएँगे; फिर भी, जब वह महान दिन का न्याय आरंभ करेगा, ऐसा तब होगा जब वह सभी लोगों के बीच प्रकट होगा, और पृथ्वी पर उसका समस्त कार्य पूरा होगा। उस समय, चूँकि वह दिन आ गया होगा, इसलिए ठीक वैसा ही होगा जैसा बाइबल में लिखा गया था : "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो पवित्र है; वह पवित्र बना रहे।" अधार्मिक ताड़ना की ओर आएगा, और पवित्र सिंहासन के सामने आएगा। कोई एक भी व्यक्ति परमेश्वर का प्यार-दुलार प्राप्त नहीं कर पाएगा; यहाँ तक कि राज्य के पुत्र और लोग भी नहीं। यह सब परमेश्वर की धर्मपरायणता है, और यह सब उसके स्वभाव का प्रकाशन है। वह मानवजाति की कमज़ोरियों के लिए दूसरी बार चिंता नहीं दिखाएगा।

अध्याय 18

परमेश्वर के सभी वचनों में उसके स्वभाव का एक हिस्सा समाहित होता है। परमेश्वर के स्वभाव को वचनों में पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता है, जो यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि उसमें कितनी प्रचुरता है। आखिरकार, जिसे लोग देख और स्पर्श कर सकते हैं, वो उतना ही सीमित है जितनी कि लोगों की क्षमता है। यद्यपि परमेश्वर के वचन स्पष्ट हैं, तब भी लोग इसे पूरी तरह से समझने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए इन वचनों को लो: "बिजली की एक कौंध में, प्रत्येक जानवर अपने असली स्वरूप में प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार, मेरे प्रकाश से रोशन होकर मनुष्यों ने भी उस पवित्रता को पुनः प्राप्त कर लिया है, जो कभी उसके पास थी। ओह, अतीत का वह भ्रष्ट संसार! अंततः यह गंदे पानी में पलट गया है और सतह के नीचे डूबकर कीचड़ में घुल गया है!" परमेश्वर के सभी वचनों में उसके अस्तित्व का समावेश है, और भले ही सभी लोग इन वचनों से अवगत हों, फिर भी उन्होंने कभी उनके अर्थ को नहीं जाना है। परमेश्वर की दृष्टि में, वे सभी जो उसका विरोध करते हैं, उसके शत्रु हैं अर्थात् जो लोग दुष्टात्माओं से

संबंधित हैं, वे पशु हैं। इस से कलीसिया की वास्तविक स्थिति को देखा जा सकता है। सभी लोग परमेश्वर के वचनों द्वारा रोशन होते हैं, और इस रोशनी में, वे फटकार, ताड़ना या दूसरों द्वारा सीधी उपेक्षा के बिना, चीज़ों के करने के अन्य मानवीय तरीकों के अधीन हुए बिना, और दूसरों की हिदायत बिना, स्वयं को जाँचते हैं। "सूक्ष्मदर्शी परिप्रेक्ष्य" से, वे बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं कि उनके भीतर वास्तव में कितनी बीमारी है। परमेश्वर के वचनों में, हर प्रकार की आत्मा को वर्गीकृत किया जाता है और उसे उसके मूल रूप में प्रकट किया जाता है। स्वर्गदूतों की आत्माएँ अधिक रोशन और प्रबुद्ध हो जाती हैं, इसलिए परमेश्वर के वचन हैं, कि "मनुष्यों ने भी उस पवित्रता को पुनः प्राप्त कर लिया है जो उनके पास पहले कभी थी।" ये वचन परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए गए अंतिम परिणामों पर आधारित हैं। फिलहाल, निस्संदेह, इस परिणाम को पूरी तरह से हासिल नहीं किया जा सकता है—यह सिर्फ एक पूर्वानुभव है, जिसके माध्यम से परमेश्वर की इच्छा देखी जा सकती है। ये वचन इस बात को दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं कि बहुत से लोग परमेश्वर के वचनों के भीतर चूर-चूर हो जाएंगे और सभी लोगों के पवित्रीकरण की उत्तरोत्तर प्रक्रिया में पराजित हो जाएँगे। यहाँ, "यह कीचड़ में घुल गया है" परमेश्वर का आग से दुनिया को नष्ट करने का विरोध नहीं करता है, और "बिजली" परमेश्वर के कोप की ओर संकेत करती है। जब परमेश्वर अपने महान कोप को बंधन से मुक्त करेगा, तो परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया, ज्वालामुखी के फटने की तरह, सभी प्रकार की आपदाओं का अनुभव करेगी। आकाश में ऊपर खड़े हो कर, यह देखा जा सकता है कि पृथ्वी पर सभी प्रकार की आपदाएँ, दिन प्रति दिन मानवजाति को घेर रही हैं। ऊपर से नीचे देखने पर, पृथ्वी भूकंप से पहले के विभिन्न दृश्यों को प्रदर्शित करती है। तरल अग्नि अनियंत्रित बहती है, लावा बेरोकटोक बहता है, पहाड़ सरकते हैं, और हर जगह उदासीन प्रकाश चमकता है। पूरी दुनिया आग में डूब गई है। यह परमेश्वर के कोप के उत्सर्जन का दृश्य है, और यह उसके न्याय का समय है। वे सभी जो मांस और रक्त वाले हैं भागने में असमर्थ होंगे। इस प्रकार, पूरी दुनिया को नष्ट करने के लिए देशों के बीच युद्ध और लोगों के बीच संघर्ष की आवश्यकता नहीं होगी; इसके बजाय दुनिया परमेश्वर की ताड़ना के पालने में "स्वयं का होशहवास में आनंद" लेगी। कोई भी बच निकलने में सक्षम नहीं होगा; हर एक व्यक्ति को, एक के बाद एक, इस कठिन परीक्षा से गुजरना होगा। इसके बाद संपूर्ण ब्रह्माण्ड एक बार पुनः पवित्र कांति से जगमगाएगा और समस्त मानवजाति एक बार पुनः एक नया जीवन शुरू करेगी। और परमेश्वर ब्रह्मांड के ऊपर आराम करेगा और हर दिन मानवजाति को आशीष देगा। स्वर्ग असहनीय ढंग से उजाड़ नहीं होगा, किन्तु उस जीवन-शक्ति

को पुनःप्राप्त करेगा जो दुनिया की सृष्टि के बाद से उसके पास नहीं है, और "छठे दिन" का आगमन तब होगा जब परमेश्वर एक नया जीवन शुरू करेगा। परमेश्वर और मनुष्यजाति दोनों विश्राम में प्रवेश करेंगे और ब्रह्मांड अब गंदा या मैला नहीं रहेगा, बल्कि नवीनीकरण को प्राप्त करेगा। यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा: "पृथ्वी अब मौत सी स्थिर और मूक नहीं है, स्वर्ग अब उजाड़ और दुःखी नहीं है।" स्वर्ग के राज्य में अधार्मिकता या मानवीय भावनाएँ, या मानवजाति का कोई भी भ्रष्ट स्वभाव कभी नहीं रहा है क्योंकि वहाँ शैतान का उपद्रव मौजूद नहीं है। सभी "लोग" परमेश्वर के वचनों को समझने में सक्षम हैं, और स्वर्ग का जीवन खुशी से भरा जीवन है। स्वर्ग में सभी लोगों के पास परमेश्वर की बुद्धि और गरिमा है। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच भिन्नताओं की वजह से, स्वर्ग के नागरिकों को "लोग" नहीं कहा जाता है, बल्कि परमेश्वर उन्हें "आत्माएँ" कहता है। इन दोनों शब्दों में सार-भूत अंतर हैं—अब जिन्हें "लोग" कहा जाता है वे शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जा चुके हैं, जबकि "आत्माएँ" नहीं हुई हैं। अंत में, परमेश्वर पृथ्वी के लोगों को स्वर्ग की आत्माओं की विशेषताओं वाले प्राणियों में परिवर्तित कर देगा और फिर वे शैतान के उपद्रवों के अधीन अब और नहीं होंगे। इन वचनों, "मेरी पवित्रता पूरे ब्रह्मांड में फैल गई है।" का यही सही अर्थ है। "पृथ्वी अपनी मूल स्थिति में स्वर्ग से संबद्ध है और स्वर्ग पृथ्वी के साथ जुड़ा है। मनुष्य, स्वर्ग और पृथ्वी को बाँधे रखने वाली डोर है और मनुष्य की निर्मलता के कारण, मनुष्य के नवीनीकरण के कारण, स्वर्ग अब पृथ्वी से छुपा हुआ नहीं है और पृथ्वी अब स्वर्ग की ओर मौन नहीं है।" यह उन लोगों के संदर्भ में कहा जाता है, जिनके पास स्वर्गदूतों की आत्माएँ हैं, और उस बिंदु पर, "स्वर्गदूत" एक बार पुनः शांति से मिलजुल कर एक साथ रहने और अपनी मूल अवस्था को पुनः प्राप्त करने में समर्थ होंगे, और देह की वजह से स्वर्ग और पृथ्वी के दो क्षेत्रों के बीच अब और विभाजित नहीं होंगे। धरती पर "स्वर्गदूत", स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ संवाद करने में समर्थ होंगे, पृथ्वी पर लोग स्वर्ग के रहस्यों को जान जाएँगे, और स्वर्ग में स्वर्गदूत मानवीय दुनिया के रहस्यों को जान जाएँगे। स्वर्ग और पृथ्वी एकजुट हो जाएँगे और उनके बीच कोई दूरी नहीं रहेगी। यह राज्य के साकार होने की सुंदरता है। यही वह है जो परमेश्वर पूरा करेगा, और यह कुछ ऐसा है जिसकी सभी मनुष्य और आत्माएँ लालसा करती हैं। किन्तु धार्मिक दुनिया के लोग इसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं। वे सिर्फ़ एक सफेद बादल पर उद्धारकर्ता यीशु के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वे पृथ्वी पर बिखरे पड़े "कचरे" को छोड़ (यहाँ "कचरा" लाशों का संकेत करता है) उनकी आत्माओं को दूर ले जायें। क्या यह ऐसी अवधारणा नहीं है जिसे सभी मनुष्य साझा करते हैं? यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा: "ओह, धार्मिक संसार! धरती

पर मेरे सामर्थ्य से यह कैसे नष्ट न होता?" धरती पर परमेश्वर के लोगों के पूरे होने की वजह से धार्मिक दुनिया उलट जाएगी। उस "अधिकार" का सही अर्थ यही है जिसके बारे में परमेश्वर ने बात की है। परमेश्वर ने कहा था: "क्या कुछ ऐसे हैं, जो मेरे दिवस में मेरा नाम बदनाम करते हैं? सभी मनुष्य मेरी ओर श्रद्धा से देखते हैं और अपने हृदय में वे चुपचाप मेरी दुहाई देते हैं।" यही है वह जो उसने विनाश के परिणामों के बारे में कहा था। उसके वचनों की वजह से धार्मिक दुनिया परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष पूरी तरह से समर्पण करेगी, और सफेद बादल के आने की अब और प्रतीक्षा नहीं करेगी या आकाश को और नहीं देखेगी, बल्कि इसके बजाय परमेश्वर के सिंहासन के सामने जीत ली जाएगी। इस प्रकार यह वचन कि, "अपने हृदय में वे चुपचाप मेरी दुहाई देते हैं।" यह धार्मिक संसार का परिणाम है, जिसे परमेश्वर पूरी तरह से जीत लेगा। यही है वह जिसका परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता—सभी धार्मिक लोगों को, मनुष्य-जाति के सबसे बड़े विद्रोहियों को गिराने के रूप में उल्लेख करता है, ताकि वे फिर कभी अपनी अवधारणाओँ को नहीं पकड़ेंगे, कि वे परमेश्वर को जान सकें।

यद्यपि परमेश्वर के वचनों ने बार-बार राज्य की सुंदरता की भविष्यवाणी की है, इसके विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की है और इसका विभिन्न दृष्टिकोणों से वर्णन किया है, किन्तु वे अभी भी राज्य के युग की हर स्थिति को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकते हैं क्योंकि लोगों में ग्रहण करने की योग्यता का बहुत अभाव है। उसके कथन के सभी वचन बोल दिए गए हैं, किन्तु लोगों ने अपने भीतर फ्लूरोस्कोप के माध्यम से, एक्स-रे के साथ, जैसे भी थे, नहीं देखा है, और इस प्रकार अस्पष्ट हैं और उनकी समझ में नहीं आया है। यह देह का सबसे बड़ा दोष है। यद्यपि अपने हृदयों में, लोग परमेश्वर से प्रेम करना चाहते हैं, वे शैतान के उपद्रव के कारण उसका विरोध करते हैं, इसलिए परमेश्वर ने बार-बार लोगों के सुन्न और मूर्ख हृदयों को स्पर्श किया ताकि वे पुनर्जीवित हो सकें। परमेश्वर जो कुछ भी उजागर करता है वह शैतान की कुरूपता है, इसीलिए उसके वचन जितने अधिक कठोर होते हैं, शैतान उतना ही अधिक शर्मिन्दा होता है, और लोगों के हृदय उतना ही कम विवश होते हैं, और उतना ही अधिक लोगों के प्यार को जगाया जा सकता है। परमेश्वर इसी तरह से कार्य करता है। क्योंकि शैतान को उजागर कर दिया गया है और क्योंकि इसकी सही प्रकृति का पता लगाया जा चुका है, इसलिए यह लोगों के हृदयों पर अब और कब्जा करने का साहस नहीं करता है, और इस प्रकार स्वर्गदूतों को अब परेशान नहीं किया जाता है। इसी तरह से, वे अपने पूरे हृदय और मन से परमेश्वर को प्यार करते हैं। केवल इस समय ही यह देखने में स्पष्ट होता है कि,

अपनी सच्ची अस्मिता में, स्वर्गदूत परमेश्वर से संबंधित हैं और परमेश्वर को प्यार करते हैं। यह केवल इसी मार्ग से है कि परमेश्वर की इच्छा को प्राप्त किया जा सकता है। "मनुष्यों के हृदय में अब मेरे लिये एक जगह है। अब मैं मनुष्यों के बीच घृणा या अस्वीकृति नहीं पाँऊगा क्योंकि मेरा बड़ा कार्य पहले ही पूरा हो चुका है और अब यह बाधित नहीं है।" जो ऊपर वर्णन किया गया था उसका यही अर्थ है। शैतान के उत्पीड़न के कारण, लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने का समय नहीं मिलता है और वे हमेशा दुनिया की चीजों में उलझे रहते हैं, और वे शैतान द्वारा बहकाए जाते हैं जिसके कारण वे भ्रम में क्रिया-कलाप करते हैं। यही कारण है कि परमेश्वर ने कहा है कि मनुष्य ने "जीवन की इतनी कठिनाइयां सही हैं, मानवीय राज के बहुत सारे अन्याय झेले हैं, इतने उतार-चढ़ाव देखें हैं, लेकिन अब वे मेरे प्रकाश में रहते हैं। अतीत के अन्याय पर कौन नहीं रोता?" इन वचनों को सुनने के बाद लोग ऐसा महसूस करते हैं मानो कि परमेश्वर दुःख में उनका सहभागी है, उनके साथ सहानुभूति प्रकट कर रहा है, और उस समय, उनकी परेशानियों को साझा कर रहा है। वे अचानक मानवीय दुनिया की पीड़ा को महसूस करते हैं और सोचते हैं: "क्या यह सच नहीं है—मैंने दुनिया में कभी भी किसी चीज का आनंद नहीं लिया है। अपनी माँ के गर्भ से बाहर आने के बाद से अब तक, मैंने मानव जीवन का अनुभव किया है और मैंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया है, किन्तु मैंने पीड़ा काफी झेली है। यह सब कितना खोखला है! और अब मैं शैतान द्वारा बहुत भ्रष्ट किया गया हूँ! ओह! यदि परमेश्वर द्वारा उद्धार नहीं होता, तो जब मेरी मौत का समय आता, तो क्या मैं पूरी ज़िंदगी व्यर्थ में नहीं जिया होता? क्या मानव जीवन का कोई अर्थ है? कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने कहा कि पृथ्वी पर सब कुछ खोखला है। यदि परमेश्वर ने आज मुझे प्रबुद्ध नहीं किया होता, तो मैं अभी भी अंधकार में होता। यह कितना दयनीय है!" इस बिंदु पर, उनके हृदय में एक संदेह पैदा होता है : "यदि मैं परमेश्वर के वादे को प्राप्त नहीं कर सकता हूँ, तो मैं जीवन का अनुभव कैसे लेता रह सकता हूँ?" इन वचनों को पढ़ने वाला हर कोई प्रार्थना करते हुए रो पड़ेगा। मानवीय मानसिकता ऐसी ही है। यदि कोई मानसिक रूप से असंतुलित न हो तो उसके लिए यह असंभव होगा कि वह इसे पढ़े और कोई प्रतिक्रिया न दे। हर दिन, परमेश्वर हर तरह के लोगों की स्थितियों को उजागर करता है। कभी-कभी, वह उनकी ओर से शिकायतें करता है। कभी-कभी, वह लोगों की एक निश्चित माहौल पर क़ाबू पाने और उससे गुज़रने में सहायता करता है। कभी-कभी, वह लोगों के लिए उनके "रूपांतरणों" को बताता है। अन्यथा, लोग जान जाते कि वे जीवन में कितना पनपे हैं। कभी-कभी, परमेश्वर वास्तविकता में लोगों के अनुभवों को बताता है, और कभी-

कभी, वह उनकी कमियों और दोषों को बताता है। कभी-कभी, वह उनसे नई अपेक्षाएँ करता है, और कभी-कभी, वह अपने बारे में उनकी समझ की हद को बताता है। हालाँकि, परमेश्वर ने यह भी कहा है : "मैंने इतने सारे लोगों द्वारा हृदय से बोले गए शब्दों को सुना है, दुख के दौरान इतने सारे लोगों के दर्दनाक अनुभवों के बारे में सुना है; मैंने बहुतों को देखा है जिन्होंने कठिनतम स्थितियों में भी मेरे प्रति अपनी वफ़ादारी निभाई है और मैंने कइयों को पथरीले रास्ते पर चलते हुए निकलने के लिए मार्ग खोजते देखा है।" यह सकारात्मक पात्रों का वर्णन है। "मानव इतिहास के नाटक" की प्रत्येक कड़ी में न केवल सकारात्मक पात्र रहे हैं बल्कि नकारात्मक पात्र भी रहे हैं। इसलिए परमेश्वर इन नकारात्मक पात्रों की कुरूपता को प्रकट करता जाता है। इस तरह, यह केवल "विश्वासघाती" के साथ उनके अंतर के माध्यम से है कि "ईमानदार मनुष्यों" की अटल वफादारी और निडर साहस प्रकट होते हैं। सभी लोगों के जीवन में नकारात्मक कारक होते हैं और, बिना किसी अपवाद के, सकारात्मक कारक भी होते हैं। परमेश्वर सभी लोगों के बारे में सच्चाई को प्रकट करने के लिए दोनों का उपयोग करता है, जिससे कि विश्वासघाती अपने सिरों को झुका लेंगे और अपने पापों को स्वीकार करेंगें, और ताकि ईमानदार मनुष्य प्रोत्साहन पाकर वफादार बने रहेंगे। परमेश्वर के वचनों का निहितार्थ बहुत गहरा है। कभी-कभी, लोग उन्हें पढ़ने के बाद हँसी से दोहरे हो जाते हैं, जबकि अन्य समयों में, वे मौन होकर अपने सिरों को लटका देते हैं। कभी-कभी वे यादें ताज़ा करते हैं, कभी-कभी वे फूट-फूट कर रोते हैं और अपने पापों को अभिस्वीकृत करते हैं, कभी-कभी वे अँधेरे में टटोलते हैं, और कभी-कभी वे तलाश करते हैं। कुल मिलाकर, उन विभिन्न परिस्थितियों की वजह से जिनमें परमेश्वर बोलता है, लोगों की प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन होते हैं। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचनों को पढ़ता है, तो कभी-कभी तमाशाई भी गलती से विश्वास कर सकते हैं कि वह व्यक्ति मानसिक रोगी है। इन वचनों पर विचार करो: "और इसलिए, पृथ्वी पर विवादास्पद मतभेद नहीं रहे और मेरे वचनों को जारी रखते हुए, आधुनिक युग के विविध 'हथियार' भी वापस ले लिए गए हैं।" "हथियार" शब्द पूरे दिन के लिए एक पर्याप्त हास्य का साधन हो सकता है, और जब कभी भी कोई संयोगवश "हथियार" शब्द को याद करेगा तो वह अपने आप में जोर से हँसेगा। क्या ऐसा नहीं है? तुम इस पर कैसे नहीं हँस सकते?

जब तुम हँसते हो, तो मानवजाति से परमेश्वर की अपेक्षाओं को समझना न भूलो, और कलीसिया की वास्तविक परिस्थिति को देखना न भूलो : "समस्त मानवजाति अब सामान्य स्थिति में लौट चुकी है और एक

नए जीवन को आरंभ कर चुकी है। नए परिवेश में निवास करते हुए, अच्छी संख्या में लोग अपने आसपास देखते हैं, ऐसा महसूस करते हुए मानो वे एक बिल्कुल नए संसार में प्रवेश कर चुके हैं, और इस वजह से, वे तुरंत अपने वर्तमान परिवेश के अनुकूल बनने या एकदम सही मार्ग पर आने में समर्थ नहीं होते हैं।" यह कलीसिया की वर्तमान वास्तविक परिस्थिति है। सभी लोगों को तुरंत सही मार्ग में प्रवेश करवाने के लिए उद्विग्न न हो। एक बार जब पवित्र आत्मा का कार्य एक निश्चित स्तर तक प्रगति कर लेता है, तो सभी लोग इसे महसूस किए बिना इसमें प्रवेश करेंगे। जब तुम परमेश्वर के वचनों के सार को समझोगे, तो तुम जान जाओगे कि उसके आत्मा ने किस चरण तक कार्य कर लिया है। परमेश्वर की इच्छा है: "मैं मनुष्य की अधार्मिकता पर निर्भर करते हुए, केवल 'शिक्षा' का एक उचित उपाय प्रभाव में लाता हूँ, जो हर एक को सही रास्ते पर आने में बेहतर ढंग से सक्षम बनाता है," यह परमेश्वर के बोलने और कार्य करने का तरीका है, और यह मानवजाति के अभ्यास का विशिष्ट मार्ग भी है। इसके बाद, उसने लोगों के लिए मानवजाति की अन्य स्थितियों को बताया: "यदि मनुष्य उस परम सुख का आनंद लेने के अनिच्छुक हैं जो मुझ में है, तो मैं केवल इतना ही कर सकता हूँ कि उन्हें उनकी अभिलाषाओं के अनुसार अथाह कुंड में भेज दूँ।" परमेश्वर ने सुविस्तृत रूप से बोला और लोगों के पास शिकायत करने का जरा सा भी अवसर नहीं छोड़ा। परमेश्वर और मनुष्य के बीच यही सटीक अंतर है। परमेश्वर हमेशा स्पष्ट और मुक्त रूप से मनुष्य से बात करता है। परमेश्वर जो कुछ भी कहता है उसमें, कोई भी उसके ईमानदार हृदय को देख सकता है, जिसके कारण लोग अपने हृदयों की उसके हृदय से तुलना करते हैं और यह उन्हें समर्थ बनाता है कि वे अपने हृदयों को उसके प्रति खोलें, ताकि वह देख सके कि इंद्रधनुष के वर्णक्रम में उनका कौन सा रंग है। परमेश्वर ने कभी भी किसी भी व्यक्ति की आस्था या प्यार की सराहना नहीं की है, किन्तु उसने हमेशा लोगों से अपेक्षाएँ की हैं और उनके कुरूप पक्ष को उजागर किया है। यह दर्शाता है कि लोगों के पास कितनी छोटी "कद-काठी" है और उनके "गठन" में कितना अभाव है। इनकी क्षतिपूर्ति करने के लिए उन्हें अधिक "अभ्यास" करने की आवश्यकता है, यही कारण है कि परमेश्वर लोगों पर लगातार "अपना क्रोध भेजता" है। एक दिन, जब परमेश्वर मानवजाति के बारे में पूरी सच्चाई प्रकट कर देगा, तो लोग पूरे हो जाएँगे, और परमेश्वर निश्चिंत हो जाएगा। लोग अब परमेश्वर को नहीं फुसलायेंगे, और वह उन्हें अब और "शिक्षित" नहीं करेगा। तब से, लोग "अपने दम पर रहने" में समर्थ होंगे, किन्तु यह वो समय नहीं है। अभी भी लोगों में ऐसा बहुत कुछ है जिसे "नक़ली" कहा जा सकता है, और परीक्षा के कई दौरों की, तथा और अधिक "जाँच की

चौकियों" की आवश्यकता है जहाँ उनके "करों" का उचित रूप से भुगतान किया जा सके। यदि अभी भी नकली माल हैं, तो उन्हें जब्त कर लिया जाएगा ताकि उन्हें बेचा नहीं जा सके, और तब तस्करी के सामान की उस खेप को नष्ट कर दिया जाएगा। क्या चीज़ों को करने का यह एक अच्छा तरीका नहीं है?

अध्याय 19

ऐसा लगता है कि लोगों की कल्पना में परमेश्वर बहुत उच्च और अथाह है। मानो परमेश्वर मनुष्यों के बीच नहीं रहता और उन्हें तुच्छ समझता है, क्योंकि वह स्वयं बहुत उच्च है। हालाँकि परमेश्वर मनुष्यों की धारणाओँ को चकनाचूर और सदा के लिए खत्म कर देता है, वह उन्हें "कब्रों" में दफ़न कर देता है, जहाँ वे राख में बदल जाती हैं। मनुष्यों की धारणाओं के प्रति परमेश्वर का रवैया मृतकों के प्रति उसके दृष्टिकोण के समान है, वह उन्हें इच्छानुसार परिभाषित करता है। ऐसा लगता है कि "धारणाओं" की कोई प्रतिक्रियाएँ नहीं होतीं; इसलिए दुनिया के निर्माण से लेकर आज तक परमेश्वर इस कार्य को करता आ रहा है और कभी नहीं रुका। देह की वजह से मनुष्यों को शैतान द्वारा भ्रष्ट किया जाता है, और पृथ्वी पर शैतान के कार्यकलापों की वजह से मनुष्य अपने अनुभवों के दौरान सभी तरह की धारणाओं का निर्माण कर लेते हैं। इसे "प्राकृतिक निर्माण" कहा जाता है। यह पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का अंतिम चरण है, इसलिए उसके कार्य की पद्धति अपने चरम पर पहुँच गई है, और वह मनुष्यों के अपने प्रशिक्षण को तीव्र कर रहा है, ताकि उसके अंतिम कार्य में उन्हें पूर्ण बनाया जा सके और इस प्रकार परमेश्वर की इच्छा अंततः पूरी की जा सके। इससे पहले मनुष्यों के बीच केवल पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी थी, किंतु स्वयं परमेश्वर द्वारा बोले गए कोई वचन नहीं थे। जब परमेश्वर ने अपनी आवाज़ में बात की, तो हर कोई चौंक गया, और आज उसके वचन और भी अधिक उलझन में डालने वाले हैं। उनके अर्थ की थाह लेना और भी कठिन है, और मनुष्य चौंधियाए-से लगते हैं, क्योंकि उसके पचास प्रतिशत वचन उद्धरण-चिह्नों के बीच में आते हैं। "जब मैं बोलता हूँ, तो लोग मेरी बातों को ध्यानमग्न होकर सुनते हैं; परन्तु जब मैं चुप हो जाता हूँ, तो वे फिर से अपने ही 'उद्यम' में लग जाते हैं।" इस अंश में उद्धरण-चिह्नों में एक शब्द है। परमेश्वर जितना अधिक हास-परिहास के साथ बोलता है, जैसा कि वह यहाँ कर रहा है, उतना ही अधिक उसके वचन पढ़ने के लिए लोगों को आकर्षित कर सकते हैं। जब लोग निश्चिंत होते हैं, तो वे अपने साथ निपटा जाना स्वीकार कर पाते हैं। हालाँकि, मुख्य रूप से यह ज़्यादा लोगों को तब हतोत्साहित या निराश होने से रोकने के लिए

है, जब उन्होंने परमेश्वर के वचनों को समझा नहीं होता। यह शैतान के विरुद्ध परमेश्वर के युद्ध में एक रणनीति है। केवल इसी तरह से लोगों की रुचि परमेश्वर के वचनों में बनी रहेगी और वे उन पर तब भी ध्यान देना जारी रखेंगे, जब वे उन वचनों के सूत्र को पकड़ न पा रहे हों। किंतु उद्धरण-चिह्नों से न घिरे उसके समस्त वचनों में भी बहुत आकर्षण है, और इसलिए उन पर अधिक ध्यान जाता है और उनके कारण लोग परमेश्वर के वचनों से और भी अधिक प्रेम करते हैं और अपने हृदयों में उसके वचनों की मिठास महसूस करते हैं। चूँकि परमेश्वर के वचन अनेक रूपों में आते हैं और समृद्ध तथा विविधतापूर्ण होते हैं, और चूँकि परमेश्वर के अनेक वचनों में संज्ञाओं की पुनरावृत्ति नहीं हैं, इसलिए अपनी आम समझ से लोग मान लेते हैं कि परमेश्वर हमेशा नया है और कभी पुराना नहीं होता। उदाहरण के लिए : "मैं लोगों से मात्र 'उपभोक्ता' बनने की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि अपेक्षा करता हूँ कि वे ऐसे 'निर्माता' बनें जो शैतान को हराने में सक्षम हो।" इस वाक्य में "उपभोक्ता" और "निर्माता" शब्दों के अर्थ पहले किसी समय बोले गए कुछ वचनों के ही समान हैं, किंतु परमेश्वर सख़्त नहीं है; बल्कि वह लोगों को अपनी नवीनता से अवगत कराता है, जिसके परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के प्रेम को सँजोते हैं। परमेश्वर की वाणी के हास-परिहास में उसका न्याय और मनुष्य से उसकी माँगें समाविष्ट हैं। चूँकि परमेश्वर के सभी वचनों के उद्देश्य हैं, चूँकि उन सभी के अर्थ हैं, इसलिए उसका हास-परिहास केवल वातावरण को हलका बनाने या मनुष्यों से हँसी का ठहाका लगवाने के लिए नहीं है, न ही वह बस उनकी मांसपेशियों को आराम दिलाने के लिए है। बल्कि, परमेश्वर का हास-परिहास मनुष्य को पाँच हज़ार वर्ष के बंधन से मुक्त करने और फिर कभी उसमें न बँधने देने के उद्देश्य से है, ताकि वे परमेश्वर के वचनों को बेहतर ढंग से स्वीकार करने में सक्षम हो जाएँ। परमेश्वर की विधि दवा को निगलने में सहायता करने के लिए एक चम्मच चीनी का इस्तेमाल करना है; वह कड़वी दवा को मनुष्यों के गले से जबरदस्ती नहीं उतरवाता। यहाँ मिठास के भीतर कड़वापन है और कड़वे के भीतर मिठास भी।

"जब पूर्व में प्रकाश की एक मंद किरण दिखाई देती है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लोग उसकी ओर थोड़ा और ज़्यादा ध्यान लगाते हैं। मनुष्य जो अब गहरी नींद में सोया हुआ नहीं है, उस चमकती पूर्वी बिजली के स्रोत का अवलोकन करने के लिए आगे बढ़ता है। अपनी सीमित क्षमताओं के कारण, कोई भी अब तक उस स्थान को देख नहीं पाया है जहाँ से वह रोशनी निकलती है।" ब्रह्मांड में हर जगह यही हो रहा है, न कि केवल परमेश्वर की संतानों और उसके लोगों के बीच में। धार्मिक क्षेत्रों के लोगों और अविश्वासियों, सबकी

यही प्रतिक्रिया है। जिस क्षण परमेश्वर का प्रकाश चमकता है, उनका हृदय धीरे-धीरे बदलने लगता है, और उन्हें अनजाने में पता लगना शुरू हो जाता है कि उनका जीवन अर्थहीन है, कि मानव-जीवन मूल्यहीन है। मनुष्य भविष्य का लक्ष्य नहीं रखते, आने वाले कल के लिए नहीं सोचते या कल की चिंता नहीं करते, बल्कि इस विचार के साथ जीते हैं कि जब तक वे "युवा" हैं, तब तक उन्हें खूब खाना और पीना चाहिए और अंत का दिन आने पर यह सब सार्थक हो गया होगा। दुनिया पर शासन करने की मनुष्यों की कोई इच्छा नहीं है। दुनिया के लिए मानव-जाति के प्यार का जोश "शैतान" द्वारा पूरी तरह से चुरा लिया गया, किंतु कोई नहीं जानता कि जड़ क्या है। वे एक-दूसरे को सूचित करते हुए, केवल इधर-उधर दौड़ सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर का दिन अभी तक नहीं आया है। एक दिन, हर कोई सभी अथाह रहस्यों के उत्तर देखेगा। परमेश्वर ने इसी अभिप्राय से इन वचनों को कहा था, "लोग अपनी निद्रा और स्वप्न से बाहर आएंगे, और तभी वे महसूस करेंगे कि धीरे-धीरे मेरा दिन इस संसार में आ गया है।" जब वह समय आएगा, तब परमेश्वर से संबंधित सभी लोग "मेरे इस धरती पर रहने के समय मेरे लिए अपनी भूमिका निभाने हेतु" हरी पत्तियों की तरह हो जाएँगे। जब परमेश्वर अपनी वाणी में बोलता है, तो चीन में परमेश्वर के बहुत-से लोग अभी भी पलट जाते हैं, और इसलिए परमेश्वर कहता है, "... परन्तु सच्चाई को बदलने में असमर्थ हैं, वे मेरे दंड सुनाने का इंतज़ार करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते।" उनमें से कुछ लोग अभी भी ऐसे होंगे, जिन्हें मिटाना होगा—सभी अपरिवर्तित नहीं रहेंगे। बल्कि, लोग केवल परीक्षा लिए जाने के बाद ही मानकों पर खरे उतर सकते हैं, जिसके द्वारा उन्हें "गुणवत्ता प्रमाणपत्र" जारी किए जाते हैं; अन्यथा वे कूड़े के ढेर पर पड़ा मलबा बन जाएँगे। परमेश्वर लगातार मनुष्य की सच्ची स्थिति बताता है, इसलिए लोग परमेश्वर की रहस्यमयता को अधिकाधिक महसूस करते हैं। "यदि वह परमेश्वर न होता, तो वह हमारी सच्ची स्थिति को इतनी अच्छी तरह से कैसे जान पाता?" किंतु फिर भी, मनुष्यों की कमज़ोरी की वजह से, "मनुष्य के हृदय में, मैं न तो उच्च हूँ, न ही नीचा हूँ। जहाँ तक उनकी बात है, मेरे होने न होने से उन्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ता।" क्या यह सभी लोगों की बिलकुल वही स्थिति नहीं है, जो वास्तविकता के सबसे अनुरूप है? जहाँ तक मनुष्यों का संबंध है, परमेश्वर तब विद्यमान होता है, जब वे उसे खोजते हैं और तब विद्यमान नहीं होता, जब वे उसे नहीं खोजते। दूसरे शब्दों में, जिस क्षण मनुष्यों को परमेश्वर की मदद की आवश्यकता होती है, परमेश्वर उनके हृदय में विद्यमान होता है, किंतु जब उन्हें उसकी आवश्यकता नहीं रहती, तो वह विद्यमान नहीं रहता। यही है, जो मनुष्यों के हृदयों के भीतर है। वास्तव में, सभी "नास्तिकों" सहित पृथ्वी पर हर कोई

इसी तरह से सोचता है, और परमेश्वर के बारे में उनकी "धारणा" भी अस्पष्ट और अपारदर्शी है।

"इसलिए, भूमि पर, पहाड़ देशों के मध्य सीमा बन जाते हैं, भूमि के मध्य अलगाव रखने के लिए समुद्र सीमाएं बन जाते हैं, और वायु वह बन जाती है जो पृथ्वी के ऊपर के स्थान पर मनुष्य से मनुष्य के मध्य बहती रहती है।" यह वह कार्य था, जिसे परमेश्वर ने दुनिया बनाते समय किया था। इसका यहाँ उल्लेख करना लोगों के लिए उलझन पैदा करने वाला है : क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर एक दूसरी दुनिया बनाना चाहता है? यह कहना उचित है : हर बार जब परमेश्वर बोलता है, तो उसके वचनों में जगत की सृष्टि, प्रबंधन और विनाश समाविष्ट होते हैं; बस, कभी-कभी वे स्पष्ट होते हैं और कभी-कभी अस्पष्ट। परमेश्वर का समस्त प्रबंधन उसके वचनों में समाविष्ट है; बस, मनुष्य उन्हें पहचान नहीं पाते। परमेश्वर द्वारा मनुष्यों को प्रदान किए जाने वाले आशीष उनके विश्वास को सौ गुना बढ़ा देते हैं। बाहर से ऐसा लगता है, मानो परमेश्वर उनसे कोई वादा कर रहा हो, किंतु सार रूप में यह अपने राज्य के लोगों से परमेश्वर की माँगों का एक पैमाना है। जो लोग इस्तेमाल के लायक हैं, वे रहेंगे, और जो नहीं हैं, वे उस आपदा द्वारा निगल लिए जाएँगे, जो स्वर्ग से गिरती है। "पूरे आसमान में गूँजती गड़गड़ाहट, मनुष्यों को मार गिरायेगी; ऊंचे-ऊंचे पहाड़ नीचे गिरते ही उन्हें दफना देंगे; जंगली जानवर अपनी भूख मिटाने के लिए उन्हें नोंच कर खा जायेंगे; और उमड़ते महासागर उनके सिर के पास ही हिलोरे मारेंगे। जब मनुष्यजाति भाई-बंधुओं के झगड़ों में उलझेगी, तो लोग अपने ही मध्य से उत्पन्न होने वाली आपदाओं द्वारा अपने विनाश को प्राप्त होने की चेष्टा करेंगे।" यह "विशेष व्यवहार" है, जो उन लोगों के साथ किया जाएगा, जो मानकों पर खरे नहीं उतरते, और जिन्हें बाद में परमेश्वर के राज्य में उद्धार नहीं दिया जाएगा। जितना अधिक परमेश्वर इस तरह की बातें कहता है, "तुम लोग निश्चय ही, मेरी रोशनी के नेतृत्व में, अंधकार की शक्तियों के गढ़ को तोड़ोगे। तुम अंधकार के मध्य, निश्चय ही मार्गदर्शन करने वाली ज्योति को नहीं खोओगे," उतना ही अधिक मनुष्य अपने सम्मान के बारे में जागरूक हो जाते हैं, इस तरह उनमें नए जीवन की तलाश के लिए अधिक विश्वास होता है। परमेश्वर मनुष्यों को वह प्रदान करता है, जो वे उससे माँगते हैं। एक बार जब परमेश्वर उन्हें कुछ हद तक उजागर कर देता है, तो वह अपने बोलने का तरीका बदल देता है, और सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए आशीष के स्वर का उपयोग करता है। मनुष्य से इस तरह से माँगें करना अधिक व्यावहारिक परिणाम उत्पन्न करता है। क्योंकि सभी मनुष्य अपने समकक्षों के साथ कारोबार की बात करने के लिए तैयार रहते हैं—वे सभी कारोबार में विशेषज्ञ होते हैं—ऐसा कहकर परमेश्वर इसी पर बल दे

रहा है। तो "सिनिम" क्या है? यहाँ परमेश्वर धरती के उस राज्य को संदर्भित नहीं करता, जो शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, बल्कि परमेश्वर से आए सभी स्वर्गदूतों के एकत्र होने को संदर्भित करता है। "दृढ़ और अटूट" वचन यह संकेत करते हैं कि स्वर्गदूत शैतान की समस्त ताकतों को तोड़ देंगे और इस तरह पूरे ब्रह्मांड में सिनिम की स्थापना की जाएगी। तो सिनिम का वास्तविक अर्थ पृथ्वी पर सभी स्वर्गदूतों का एकत्र होना है; यहाँ यह उन्हें संदर्भित करता है, जो पृथ्वी पर हैं। इसलिए पृथ्वी पर बाद में जो राज्य विद्यमान रह जाएगा, वह "सिनिम" कहलाएगा, न कि "राज्य"। पृथ्वी पर "राज्य" का कोई वास्तविक अर्थ नहीं है, और यह सार रूप में सिनिम है। इसलिए सिनिम की परिभाषा के साथ जोड़ने पर ही कोई मनुष्य इन वचनों के वास्तविक अर्थ को जान सकता है, "निश्चय ही सकल ब्रह्माण्ड में मेरी महिमा का विस्तार करोगे।" यह भविष्य में पृथ्वी पर सभी लोगों की श्रेणी को दर्शाता है। सिनिम के सभी लोग वे राजा होंगे, जो पृथ्वी के सभी लोगों पर उनके ताड़ना झेल लेने के बाद शासन करेंगे। सिनिम के लोगों के प्रबंधन के कारण पृथ्वी पर सब-कुछ सामान्य रूप से संचालित होगा। यह स्थिति की एक मोटी रूपरेखा से ज्यादा कुछ नहीं है। सभी मनुष्य परमेश्वर के राज्य में बने रहेंगे, जिसका अर्थ है कि वे सिनिम के भीतर रह जाएँगे। पृथ्वी पर मनुष्य स्वर्गदूतों के साथ संवाद करने में समर्थ होंगे। इस तरह, स्वर्ग और पृथ्वी जुड़ जाएँगे, या दूसरे शब्दों में, पृथ्वी पर सभी लोग परमेश्वर के प्रति समर्पण और उससे प्यार करेंगे, जैसा कि स्वर्ग में स्वर्गदूत करते हैं। उस समय परमेश्वर पृथ्वी पर खुले रूप से सभी लोगों के सामने प्रकट हो जाएगा और उन्हें उनकी खुली आँखों से अपना असली चेहरा देखने देगा, और वह उन पर खुद को किसी भी समय प्रकट कर देगा।

अध्याय 20

परमेश्वर ने समस्त मानवजाति की सृष्टि की और आज तक उसकी अगुआई की है। इसलिए वह इंसान के साथ घटने वाली हर घटना के बारे में जानता है: वह इंसान की कटुता और माधुर्य को जानता और समझता है, इसलिए प्रत्येक दिन वह मनुष्य की जीवन-स्थितियों का वर्णन करता है, इतना ही नहीं, वह इंसान की दुर्बलता और भ्रष्टता से भी निपटता है। परमेश्वर की इच्छा यह नहीं है कि तमाम लोगों को अथाह कुंड में डाल दिया जाए, या समूची मानवजाति को बचा लिया जाए। परमेश्वर के कार्यकलापों का हमेशा एक सिद्धांत होता है, फिर भी वह जो कुछ करता है उस सबकी व्यवस्थाओं को कोई समझ नहीं पाता। जब लोग परमेश्वर के प्रताप और कोप से अवगत हो जाते हैं, तो परमेश्वर तत्काल अपने लहजे को

दया और प्रेम में बदल देता है, लेकिन जब लोग परमेश्वर की दया और प्रेम को भी जानने लगते हैं, तो वह एक बार फिर अपना लहजा बदल लेता है और अपने वचनों को अबूझ बना देता है। परमेश्वर के सभी वचनों में, आरंभ कभी दोहराया नहीं गया है, और न ही कभी उसका कोई वचन बीते कल के कथनों के सिद्धांत के अनुसार बोला गया है; यहाँ तक कि लहजा भी एक-सा नहीं होता, न ही विषयवस्तु में कोई मेल होता है—इस सबसे लोग और भी अधिक भ्रमित हो जाते हैं। यह परमेश्वर की बुद्धिमत्ता और उसके स्वभाव का प्रकटीकरण है। वह अपने लहजे और शैली का उपयोग लोगों की धारणाओं को छिन्न-भिन्न करने के लिए करता है, ताकि शैतान को भ्रमित कर सके, शैतान से परमेश्वर के कर्मों को विषाक्त बनाने का अवसर छीन सके। परमेश्वर के कार्यकलापों की चमत्कारिकता के कारण लोगों का मन परमेश्वर के वचनों से विचलित हो जाता है। वे स्वयं अपना अग्र-द्वार मुश्किल से खोज पाते हैं, और यह भी नहीं जानते कि उन्हें कब भोजन या विश्राम करना है, इस प्रकार वे "परमेश्वर के लिए नींद और भोजन का त्याग करने" की स्थिति में पहुँच जाते हैं। फिर भी, परमेश्वर वर्तमान परिस्थितियों से असंतुष्ट ही रहता है, और हमेशा मनुष्य से नाराज़ रहता है, उसे बाध्य करता है कि वह उसे अपना सच्चा हृदय प्रस्तुत करे यदि परमेश्वर ऐसा न करे, तो परमेश्वर ज्यों ही जरा-सी उदारता दिखाएगा, लोग तुरंत "आज्ञापालन" करेंगे और शिथिल पड़ जाएँगे। यही मनुष्य की नीचता है; उसे बहलाया-फुसलाया नहीं जा सकता, बल्कि गतिमान रखने के लिए उसे पीटा या घसीटा जाना चाहिए। "मैं जिन्हें देखता हूँ, उन सबमें से किसी ने भी समझते-बूझते और प्रत्यक्ष रूप से कभी मेरी खोज नहीं की है। वे सब दूसरों के आग्रह पर, बहुसंख्या का अनुसरण करते हुए मेरे सामने आते हैं, और वे क़ीमत चुकाने या अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए समय बिताने के अनिच्छुक हैं।" पृथ्वी पर सभी के हालात ऐसे ही हैं। इस प्रकार, यदि प्रेरितों या अगुआओं ने कार्य न किया होता, तो, सभी लोग बहुत पहले ही बिखर गए होते, इसलिए, युगयुगांतर से प्रेरितों और नबियों का अभाव नहीं रहा है।

इन कथनों में, परमेश्वर समस्त मानवजाति की जीवन स्थितियों का सार-संक्षेप प्रस्तुत करने पर विशेष ध्यान देता है। सभी वचन इसी प्रकार के हैं, जैसे यह है "मनुष्य के जीवन में थोड़ा भी उत्साह नहीं है, और वह लेशमात्र मानवता या प्रकाश से भी रहित है—फिर भी वह हमेशा भोगासक्त रहा है, मूल्य विहीन जीवनकाल से बँधे रहकर, जिसमें वह कुछ प्राप्त किए बिना ही यहाँ-वहाँ भागता फिरता है। पलक झपकते ही, मृत्यु का दिन नज़दीक आ जाता है, और मनुष्य एक कड़वी मौत मरता है।" परमेश्वर ने आज तक

मानवजाति के अस्तित्व का मार्गदर्शन किया है, फिर भी मनुष्य के जीवन में एक शून्यता क्यों है? वह सभी लोगों के संपूर्ण जीवन को "हड़बड़ी में आने और हड़बड़ी में चले जाने" के रूप में वर्णित क्यों करता है? कहा जा सकता है कि यह सब परमेश्वर की योजना है, यह सब परमेश्वर द्वारा निर्धारित है, दूसरी तरह से देखें तो यह दर्शाता है कि कैसे परमेश्वर दिव्यता-जीवन को छोड़कर बाकी सभी से घृणा करता है। हालाँकि परमेश्वर ही सृष्टि का रचयिता है, फिर भी उसने समस्त मानवजाति के जीवन का सुख कभी नहीं लिया, इसीलिए उसने मानवजाति को शैतान की भ्रष्टता में रहने दिया। मानवजाति के इस प्रक्रिया से गुज़रने के बाद, वह मानवजाति का विनाश करेगा या उसे बचाएगा, और इस प्रकार मनुष्य को पृथ्वी पर ऐसा जीवन प्राप्त होगा जिसमें खालीपन नहीं होगा। यह सब परमेश्वर की योजना का ही एक भाग है। इसलिए, मनुष्य की चेतना में हमेशा एक कामना होती है, जो किसी को भी निश्छल रूप में नहीं मरने देती—लेकिन जो अंत के दिनों के लोग होते हैं, उनकी ये कामना पूरी हो जाती है। आज लोग एक ऐसे खालीपन में जीते हैं जिसे बदला नहीं जा सकता, लेकिन फिर भी वे अदृश्य कामना की प्रतीक्षा करते रहते हैं : "जब मैं अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लेता हूँ, और लोगों को ज़मीन में नीचे धँसा देता हूँ, उन्हें तत्काल साँस घुटती महसूस होती है, और वे मुश्किल से ही जीवित रह पाते हैं। वे सभी मुझे पुकारते हैं, घबराते हैं कि मैं उनका विनाश कर दूँगा, क्योंकि वे सब वह दिन देखना चाहते हैं जब मैं महिमामंडित होता हूँ।" आज सभी लोगों के हालात ऐसे ही हैं कि वे सब बिना "ऑक्सीजन" के एक "शून्य" में रहते हैं, जिसमें साँस लेना और भी मुश्किल हो जाता है। परमेश्वर इंसान की चेतना में व्याप्त कामना का उपयोग इंसान के समस्त जीवन को बनाए रखने के लिए करता है; यदि ऐसा न हो, तो सभी "वैरागी बनने के लिए घर छोड़ देंगे," पूरी मानवजाति का सफाया होकर उसका अंत हो जाएगा। इस प्रकार, परमेश्वर ने मनुष्य से जो प्रतिज्ञा की थी, उसी के कारण मनुष्य आज तक जीवित बचा है। यह सत्य है, किंतु मनुष्य ने यह विधान कभी नहीं खोजा, जिसकी वजह से पता ही नहीं कि वह क्यों "इस बात से अत्यधिक भयभीत होता है कि मृत्यु उसके ऊपर दूसरी बार टूट पड़ेगी।" इंसान होकर भी कोई जीने का साहस नहीं दिखाता, न ही कभी किसी ने मृत्यु को गले लगाने का साहस दिखाया है, इसलिए परमेश्वर कहता है कि लोग "एक पीड़ादायी मौत मरते हैं।" यही इंसान की सच्चाई है। शायद अपनी पूर्वापेक्षाओं में, कुछ लोगों ने विफलताओं का सामना और मृत्यु के बारे में विचार किया हो, किंतु ये विचार कभी फलीभूत न हुए हों; कुछ ने शायद पारिवारिक झगड़ों के कारण मृत्यु का विचार किया हो, किंतु अपने प्रियजनों के प्रति चिंता के कारण अपनी इच्छा पूरी न कर पाए हों;

और कुछ ने शायद अपने विवाह के आघात के कारण मृत्यु का विचार किया हो, लेकिन उनमें इसे अंजाम तक पहुँचाने की इच्छा न रही हो। इस प्रकार, लोग अपने हृदय में शिकायतें या हमेशा के वास्ते पछतावा लिए मर जाते हैं। सभी के हालात यही हैं। दुनिया में देखें तो, इसी प्रकार लोगों का दुनिया में आना-जाना लगा रहता है, हालाँकि उन्हें लगता है कि जीने से कहीं अधिक सुख मरने में होगा, तो भी वे केवल जुबानी बातें करते हैं, कभी किसी ने मरने के बाद वापस आकर और जीवित लोगों को यह बताकर कि मृत्यु-सुख कैसे प्राप्त करें, दूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया है। लोग घृणास्पद होते हैं : उनमें कोई शर्म या आत्मसम्मान नहीं होता, वे हमेशा अपनी बात से मुकर जाते हैं। परमेश्वर ने अपनी योजना में लोगों का एक समूह पूर्वनियत किया है जो उसकी प्रतिज्ञा का आनंद उठाएगा, और इसलिए परमेश्वर कहता है, "बहुतों ने देह में जीवन जिया है, और बहुत-सी मर गईं और पृथ्वी पर पुनः जन्मी हैं। परंतु उनमें से किसी को भी आज राज्य के आशीषों का आनंद उठाने का अवसर नहीं मिला।" आज जो लोग राज्य के आशीषों का आनंद उठा रहे हैं, परमेश्वर ने उन सभी को सृष्टि के निर्माण के समय ही पूर्वनियत कर दिया था। परमेश्वर ने अंत के दिनों में इन आत्माओं के लिए देह में रहने की व्यवस्था की, अंततः, परमेश्वर लोगों के इस समूह को प्राप्त करेगा, और उनके लिए सिनिम में रहने की व्यवस्था करेगा। चूँकि, सार में, इन लोगों की आत्माएँ स्वर्गदूत हैं, इसलिए परमेश्वर कहता है, "क्या मनुष्य की आत्मा में सचमुच कभी मेरा कोई अवशेष नहीं रहा है?" वास्तव में, जब लोग देह में रहते हैं, तब वे आध्यात्मिक मामलों से अनजान रहते हैं। इन सीधे-सादे वचनों से—"मनुष्य चौकन्नी नज़र से मुझे देखता है"—परमेश्वर की मनोदशा देखी जा सकती है। इन सीधे-सरल वचनों से, परमेश्वर की जटिल मनोवृत्ति व्यक्त होती है। सृष्टि के समय से लेकर आज तक, परमेश्वर के हृदय में कोप और न्याय के साथ-साथ हमेशा गहरा दुःख भी रहा है, क्योंकि पृथ्वी पर लोग परमेश्वर की इच्छा का ध्यान नहीं रख पाते, ठीक वैसे ही जैसे कि परमेश्वर कहता है, "मनुष्य पहाड़ी बनैले के समान है।" किंतु परमेश्वर यह भी कहता है, "वह दिन आएगा जब मनुष्य शक्तिशाली महासागर के बीच से तैरकर मेरी तरफ आ जाएगा, ताकि वह पृथ्वी पर सकल संपदा का आनंद उठाए और समुद्र के द्वारा निगले जाने का जोखिम पीछे छोड़ दे।" यह परमेश्वर की इच्छा का संपन्न होना है, और इसे अवश्यंभावी प्रवृत्ति के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है, और यह परमेश्वर के कार्य के संपन्न होने का प्रतीक है।

जब राज्य पृथ्वी पर पूर्ण रूप से उतरेगा, तब सभी लोग अपने मूल स्वरूप में आ जाएँगे। इस प्रकार, परमेश्वर कहता है, "मैं ऊपर अपने सिंहासन से आनंदित होता हूँ, और मैं तारों के बीच रहता हूँ। और

स्वर्गदूत मेरे लिए नए-नए गीत और नए-नए नृत्य प्रस्तुत करते हैं। उनके चेहरों से उनकी क्षणभंगुरता के कारण अब और आँसू नहीं ढलकते हैं। अब मुझे स्वर्गदूतों के रोने की आवाज़ नहीं सुनाई देती, और अब कोई मुझसे कठिनाइयों की शिकायत नहीं करता।" यह दर्शाता है कि जिस दिन परमेश्वर संपूर्ण महिमा प्राप्त करता है, उसी दिन मनुष्य भी विश्राम करता है; शैतान के उपद्रव के कारण लोग अब दौड़-भाग नहीं करते, संसार का आगे बढ़ना रुक जाता है, और लोग शांति से रहते हैं—क्योंकि आसमान में अनगिनत तारे नए हो जाते हैं, सूर्य, चंद्रमा, तारे इत्यादि, स्वर्ग और पृथ्वी पर सारे पहाड़ और नदियाँ, सब बदल जाते हैं। चूँकि मनुष्य बदल गया और परमेश्वर बदल गया, इसलिए सारी चीज़ें भी बदल जाएँगी। यह परमेश्वर की प्रबंधन योजना का अंतिम लक्ष्य है, और अंततः यही प्राप्त किया जाएगा। इन वचनों को कहने का परमेश्वर का मुख्य उद्देश्य यह है कि मनुष्य उसे जाने। लोग परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं को नहीं समझते। परमेश्वर जो करता है वह सब स्वयं परमेश्वर द्वारा आयोजित और व्यवस्थित किया जाता है, और परमेश्वर किसी को हस्तक्षेप नहीं करने देता; बल्कि, वह लोगों को वो सब दिखाता है जो उसने व्यवस्थित किया है और जिसे मनुष्य पा नहीं सकता। मनुष्य भले ही यह देख पाए, या इसकी कल्पना भी न कर पाए, किंतु ये सब अकेले परमेश्वर द्वारा ही नियंत्रित किया जाता है, और परमेश्वर नहीं चाहता कि मानवीय विचार इसे ज़रा-सा भी दूषित करें। इसमें थोड़ा-सा भी भाग लेने वाले को परमेश्वर बिल्कुल क्षमा नहीं करेगा; परमेश्वर वह परमेश्वर है जिसे मनुष्य से ईर्ष्या है, और लगता है विशेष रूप से परमेश्वर का आत्मा इस संबंध में बहुत संवेदनशील है। इसलिए, अगर कोई थोड़ा-सा भी हस्तक्षेप करने का इरादा रखता है, तो वह तत्काल परमेश्वर की जला देने वाली लपटों से घिर जाएगा, जो उसे भस्म कर देंगी। परमेश्वर लोगों को मनचाहे ढंग से अपनी प्रतिभाएँ नहीं दिखाने देता है, क्योंकि जो लोग प्रतिभावान हैं, वे बेजान हैं; ये कथित प्रतिभाएँ केवल परमेश्वर की सेवा करती हैं, और शैतान से उत्पन्न होती हैं, इसलिए परमेश्वर विशेष रूप से इनसे घृणा करता है, और इसमें वह कोई रियायत नहीं देता। फिर भी प्रायः ये बेजान लोग परमेश्वर के कार्य में भाग लेते हैं, इतना ही नहीं, उनकी भागीदारी भी अज्ञात ही बनी रहती है, क्योंकि यह उनकी प्रतिभाओं के छद्मभेष में छिपी होती है। जो प्रतिभावान हैं वे युग-युगांतर से, कभी दृढ़ता से खड़े नहीं रहे, क्योंकि वे बेजान हैं, इसलिए उनमें प्रतिरोध की कोई शक्ति नहीं होती। इस प्रकार, परमेश्वर कहता है, "यदि मैं स्पष्ट रूप से न कहूँ, तो मनुष्य कभी अपने होश में नहीं आएगा, और न चाहकर भी मेरी ताड़ना का भागी बनेगा—क्योंकि मनुष्य मुझे मेरी देह में नहीं जानता है।" हाड़-माँस के सभी लोगों का मार्गदर्शन परमेश्वर ही

करता है, फिर भी वे शैतान की दासता में रहते हैं, इसलिए लोगों का आपसी संबंध कभी सामान्य नहीं रहा, फिर चाहे ये कामवासना के कारण हो, श्रद्धा या उनके परिवेश की व्यवस्थाओं के कारण हो। परमेश्वर ऐसे असामान्य संबंधों से बेहद घृणा करता है, ऐसे संबंधों की वजह से ही परमेश्वर के मुख से ऐसे वचन निकलते हैं, "मैं ऐसे जीवित प्राणी चाहता हूँ जो जीवन से भरपूर हों, ऐसे शव नहीं जो मृत्यु में निमग्न हैं। जब मैं राज्य के पटल पर पीठ टिकाता हूँ, तभी मैं पृथ्वी पर सभी लोगों को मेरा निरीक्षण प्राप्त करने की आज्ञा दूँगा।" जब परमेश्वर समूचे ब्रह्माण्ड के ऊपर होता है, तो वह हर दिन हाड़-माँस के लोगों के हर एक कार्यकलाप पर नज़र रखता है, और उनमें से कभी किसी को अनदेखा नहीं किया है। ये परमेश्वर के कर्म हैं। इसलिए मैं सभी लोगों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने विचारों, भावों और कार्यकलापों की जाँच-पड़ताल करें। मैं यह नहीं कहता कि तुम परमेश्वर के लिए शर्म की निशानी बनो, बल्कि परमेश्वर की महिमा की अभिव्यक्ति बनो, अपने सभी कार्यकलापों, वचनों और जीवन में, तुम शैतान के उपहास के पात्र मत बनो। सभी लोगों से परमेश्वर यही अपेक्षा करता है।

अध्याय 21

परमेश्वर की दृष्टि में, लोग पशु की दुनिया में जानवरों की तरह हैं। वे एक दूसरे के साथ लड़ते हैं, एक-दूसरे का वध करते हैं, और एक-दूसरे के साथ असाधारण व्यवहार करते हैं। परमेश्वर की दृष्टि में, वे वानर जैसे भी हैं, जो उम्र या लिंग की परवाह किए बिना, एक-दूसरे के विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं। इस प्रकार, संपूर्ण मानवजाति जो करती है और अभिव्यक्त करती है, वह कभी परमेश्वर के हृदय के अनुसार नहीं रहा है। जिस समय परमेश्वर अपना चेहरा ढकता है ठीक उसी समय दुनिया भर के लोगों का परीक्षण किया जाता है। सभी लोग दुःख से कराहते हैं, वे सभी तबाही के ख़तरे में रहते हैं, और उनमें से एक भी कभी परमेश्वर के न्याय से बच कर नहीं निकला है। वास्तव में, देह बनने का परमेश्वर का प्राथमिक उद्देश्य मनुष्य का न्याय करना और अपनी देह में उसे दंडित करना है। परमेश्वर के मन में, यह बहुत पहले से तय कर लिया गया है कि किन्हें, उनके सार के अनुसार, बचाया या नष्ट किया जाएगा, और इसे अंतिम चरण के दौरान धीरे-धीरे स्पष्ट किया जाएगा। जैसे-जैसे दिन और महीने गुज़रते हैं, लोग बदलते हैं और उनका मूल रूप प्रकट होता है। अंडे में मुर्गी है या बत्तख, यह तभी दिखाई देता है जब यह टूटता है। जिस समय अंडा टूटेगा उसी समय पृथ्वी पर आपदाओं का अंत हो जाएगा। इससे यह देखा जा सकता है, कि यह जानने के

लिए कि अंदर "मुर्गी" है या "बत्तख", "अंडा" अवश्य टूट कर खुलना चाहिए। परमेश्वर के हृदय में यही योजना है, और यह अवश्य पूरी की जानी चाहिए।

"बेचारी अभागी मानवजाति! ऐसा क्यों है कि मानव मुझसे प्रेम करने में सक्षम है किन्तु मेरे आत्मा की इच्छाओं का अनुसरण करने में असमर्थ है?" मनुष्य की इस स्थिति की वजह से, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि वह निपटे जाने से अवश्य गुज़रे। और मानवजाति के लिए अपनी घृणा की वजह से, परमेश्वर ने कई बार घोषणा की है: "हे समस्त मानवजाति के विद्रोहियो! वे निश्चित मेरे पैरों तले कुचले जाएँगे, उन्हें मेरी ताड़नाओं के बीच मिट जाना होगा, और जिस दिन मेरा महान उद्यम पूरा होगा, उस दिन उन्हें मानवजाति के बीच से अवश्य बाहर फेंक दिया जाएगा, ताकि पूरी मानवजाति उनके कुरूप चेहरे को जान जाए।" परमेश्वर देह में समस्त मानवजाति से बात कर रहा है, और आत्मिक क्षेत्र में, जो पूरे ब्रह्मांड से ऊपर है, शैतान से भी बात कर रहा है। यह परमेश्वर की इच्छा है, और यही है जिसे परमेश्वर की 6,000-वर्षीय योजना द्वारा प्राप्त किया जाना है।

वास्तव में, परमेश्वर विशेष रूप से सामान्य है, और कुछ चीज़ें हैं जो केवल तभी पूरी की जा सकती हैं यदि वह वैयक्तिक रूप से उन्हें करता है और उन्हें अपनी आँखों से देखता है। जैसा लोग कल्पना करते हैं वैसा नहीं है, परमेश्वर वहाँ स्थित नहीं रहता है जबकि सब कुछ उसकी इच्छाओं के अनुसार चलता है; यह लोगों में शैतान के उपद्रव का परिणाम है, जो लोगों को परमेश्वर के सच्चे चेहरे के बारे में अस्पष्ट करता है। वैसे तो, अंत के युग के दौरान, परमेश्वर मनुष्य के लिए अपनी वास्तविकता को, बिना कुछ छुपाए, स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए देह बना है। परमेश्वर के स्वभाव के बारे में कुछ विवरण शुद्ध अतिशयोक्ति हैं, जैसे कि जब यह कहा जाता है कि परमेश्वर एक अकेले वचन से या छोटे से छोटे विचार से दुनिया का सर्वनाश कर सकता है। परिणामस्वरूप, अधिकांश लोग ऐसी बातें कहते हैं जैसे कि, ऐसा क्यों है कि परमेश्वर सर्वसामर्थ्यवान है, किन्तु शैतान को एक ही निवाले में नहीं निगल सकता है? ये शब्द बेतुके हैं, और दर्शाते हैं कि लोग अभी भी परमेश्वर को नहीं जानते हैं। परमेश्वर को अपने शत्रुओं का सर्वनाश करने के लिए एक प्रक्रिया की आवश्यकता होती है, फिर भी यह कहना सही है कि परमेश्वर सर्व-विजयी है : परमेश्वर अंततः अपने शत्रुओं को हरा देगा। ठीक वैसे ही जैसे एक मजबूत देश जब एक कमज़ोर देश को हराता है, तो उसे, कदम-दर-कदम, कभी बल उपयोग करके, कभी रणनीति का उपयोग करके, स्वयं ही विजय प्राप्त करनी होती है। इसमें एक प्रक्रिया है, किन्तु यह नहीं कहा जा सकता है कि, क्योंकि मजबूत

देश के पास नई-पीढ़ी-के परमाणु हथियार हैं और कमज़ोर देश बहुत हीन है, इसलिए कमज़ोर देश लड़ाई के बिना ही समर्पण कर देगा। यह एक बेतुका तर्क है। यह कहना उचित है कि मजबूत देश का जीतना निश्चित है और कमज़ोर देश का हारना, किन्तु मजबूत देश को केवल तभी अधिक ताक़त वाला कहा जा सकता है जब वह व्यक्तिगत रूप से कमज़ोर देश पर आक्रमण करता है। इस प्रकार, परमेश्वर ने हमेशा कहा है कि मनुष्य उसे नहीं जानता है। इसलिए, क्या ऊपर जो कहा गया है इस बात का एक पक्ष है कि क्यों मनुष्य परमेश्वर को नहीं जानता है? क्या ये मनुष्य की धारणाएँ हैं? क्यों परमेश्वर केवल यह कहता है कि मनुष्य उसकी वास्तविकता को जाने, और इस तरह स्वयं देह बन जाता है? इस प्रकार, अधिकांश लोगों ने श्रद्धापूर्वक स्वर्ग की पूजा की, फिर भी "मनुष्य के कार्यों से कभी भी स्वर्ग थोड़ा भी प्रभावित नहीं हुआ है, और यदि मनुष्य के प्रति मेरा व्यवहार उसके हर कार्य के आधार पर होता, तो समस्त मानवजाति मेरी ताड़नाओं के मध्य जीवन बिताती।"

परमेश्वर मनुष्य के सार की सही प्रकृति का पता लगा लेता है। परमेश्वर के कथनों में, परमेश्वर मनुष्य द्वारा इतना "उत्पीड़ित" प्रतीत होता है कि मनुष्य पर और अधिक ध्यान देने की उसकी कोई रुचि नहीं है, न ही मनुष्य में थोड़ी भी आशा है; ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य उद्धार से परे है। "मैंने कई लोगों को देखा है जिनके आँसू उनके गालों से नीचे लुढ़कते हैं, और मैंने कई लोगों को देखा है जो मेरे वैभव के बदले अपने हृदयों की भेंट चढ़ाते हैं। इस 'धर्मपरायणता' के बावजूद, मैंने मनुष्य के अकस्मात् आग्रहों के परिणामस्वरूप उसे अपना सर्वस्व मुफ़्त में कभी नहीं दिया है, क्योंकि मनुष्य कभी भी मेरे सामने स्वयं को प्रसन्नतापूर्वक समर्पित करने को तैयार नहीं हुआ है।" जब परमेश्वर मनुष्य के स्वभाव को प्रकट करता है, तो मनुष्य को स्वयं पर शर्म आती है, किन्तु यह सतही ज्ञान के अलावा कुछ नहीं है, और वह परमेश्वर के वचनों में अपनी प्रकृति को वास्तव में जानने में असमर्थ है; इसलिए, अधिकांश लोग परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते हैं, वे परमेश्वर के वचनों में अपने जीवन के लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते हैं, और इसलिए वे जितना अधिक मंद-बुद्धि होते हैं, उतना ही अधिक निष्ठुरता से परमेश्वर उनका मजाक उड़ाता है। इस प्रकार, वे अनजाने में भयावहता की भूमिका में प्रवेश करते हैं—और परिणामस्वरूप, जब उन्हें "नरम तलवार" घोंपी जाती है तो उन्हें स्वयं का पता चलता है। परमेश्वर के वचन मनुष्य के कर्मों की सराहना, और मनुष्य के कर्मों को प्रोत्साहित करते प्रतीत होते हैं—और तब भी लोग हमेशा महसूस करते हैं कि परमेश्वर उनका उपहास कर रहा है। और इसलिए, जब वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, तो समय-समय पर उनके

चेहरे में मांसपेशियाँ फड़कती हैं, मानो उन्हें दौरे पड़ रहे हों। यह उनके अंतःकरण की अशुद्धता है, और यही वजह है कि वे अनैच्छिक रूप से फड़कती हैं। उनका दर्द ऐसा होता है जिसमें वे हँसना चाहते हैं किन्तु हँस नहीं सकते हैं—रोना चाहते हुए भी रो नहीं सकते हैं, क्योंकि लोगों का बेतुकापन रिमोट कंट्रोल वाले "वीसीआर" से चलाया जाता है, किन्तु वे इसे बंद नहीं कर सकते हैं, बल्कि केवल सहन ही कर सकते हैं। यद्यपि सभी सह-कार्यकर्ता बैठकों के दौरान "परमेश्वर के वचनों पर ध्यान केंद्रित करने" का उपदेश दिया जाता है, फिर भी बड़े लाल अजगर के सपोले की प्रकृति को कौन नहीं जानता है? आमने-सामने, वे मेमने जैसे आज्ञाकारी होते हैं, किन्तु पीठ फेरते ही वे भेड़ियों के जैसे क्रूर होते हैं, जिसे परमेश्वर के वचनों में देखा जा सकता है कि "जब मैं अपने वचनों को प्रदान करता हूँ तो बहुत से लोग मुझसे सचमुच प्रेम करते हैं, मगर मेरे वचनों को अपनी आत्मा में सँजोते नहीं हैं; उसके बजाए, वे उनका सार्वजनिक संपत्ति के समान यूँ ही उपयोग करते हैं और जब भी वे ऐसा महसूस करते हैं उन्हें वापस वहाँ उछाल देते हैं जहाँ से वे आए थे।" परमेश्वर ने हमेशा मनुष्य को क्यों उजागर किया है? यह दर्शाता है कि आदमी की पुरानी प्रकृति कभी एक इंच भी टस से मस नहीं हुई है। ताई पर्वत की तरह, यह करोड़ों लोगों के हृदयों में सिर उठा कर खड़ा है, किन्तु वह दिन आएगा जब यूगोंग उस पर्वत को हिलाएगा; यही परमेश्वर की योजना है। एक क्षण भी ऐसा नहीं है जब परमेश्वर अपने कथनों में मनुष्य से अपेक्षाएँ नहीं करता है, मनुष्य को चेतावनी नहीं देता है, या मनुष्य के स्वभाव को इंगित नहीं करता है जो उसके जीवन में प्रकट होता है: "जब मनुष्य मुझसे दूर होता है, और जब वह मेरी परीक्षा लेता है, तब मैं अपने आपको उससे दूर बादलों में छिपा लेता हूँ। परिणामस्वरूप, वह मेरा कोई सुराग़ नहीं ढूँढ़ पाता, और महज दुष्टों की सहायता से जीवन बिताता है, वे जो कहते हैं वह सब करता है।" वास्तविकता में, लोगों को शायद ही कभी परमेश्वर की उपस्थिति में रहने का मौका मिलता है, क्योंकि तलाश करने की उनकी बहुत कम इच्छा होती है; परिणामस्वरूप, यद्यपि अधिकांश लोग परमेश्वर से प्यार करते हैं, वे दुष्ट के नियंत्रण में रहते हैं, और वे जो कुछ भी करते हैं वह दुष्ट के द्वारा निर्देशित होता है। यदि लोग वास्तव में, हर दिन हर समय परमेश्वर की खोज करते हुए, परमेश्वर के प्रकाश में रहते, तो परमेश्वर को इस तरह से बात करने की कोई आवश्यकता नहीं होती, है ना? जब लोग ग्रंथों को एक तरफ़ रख देते हैं, तो वे किताब के साथ-साथ परमेश्वर को भी तुरंत एक तरफ़ रख देते हैं, और इस तरह वे अपने स्वयं के कारोबार में लग जाते हैं, जिसके बाद परमेश्वर उनके हृदयों से गायब हो जाता है। मगर जब वे किताब को फिर से उठाते हैं, तो अचानक उन्हें ख्याल

आता है कि उन्होंने परमेश्वर को अपने मन में पीछे रखा हुआ था। "स्मृति के बिना" मनुष्य का जीवन ऐसा है। परमेश्वर जितना अधिक बोलता है, उतना ही अधिक ऊँचे उसके वचन होते हैं। जब वे अपने शिखर पर पहुँच जाते हैं, तो समस्त कार्य का समापन हो जाता है, और परिणामस्वरूप, परमेश्वर अपने कथनों को समाप्त कर देता है। जिस सिद्धांत द्वारा परमेश्वर कार्य करता है, वह उसके कार्य के चरम तक पहुँच जाने पर उसे रोकने के लिए है। वह इसके चरम तक पहुँचने पर कार्य करना जारी नहीं रखता है, बल्कि अचानक रोक देता है। वह कभी ऐसा कार्य नहीं करता है जो अनावश्यक हो।

अध्याय 22 और अध्याय 23

आज सभी परमेश्वर की इच्छा को समझने और उसके स्वभाव को जानने के इच्छुक हैं, फिर भी किसी को इसका कारण नहीं पता कि वे जो करना चाहते हैं, उसे कर क्यों नहीं पाते, वे नहीं जानते कि क्यों उनका मन हमेशा उनके साथ विश्वासघात करता है और वे जो चाहते हैं उसे प्राप्त नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, वे फिर से भयंकर हताशा से घिर जाते हैं, इसके बावजूद वे श्रद्धापूर्ण भय से युक्त भी रहते हैं। इन परस्पर विरोधी भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ, वे केवल दुःख में अपना मुँह लटकाकर स्वयं से निरंतर बस यह पूछ सकते हैं : "कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर ने मुझे प्रबुद्ध न किया हो? कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर ने मुझे चुपके से त्याग दिया हो? शायद बाकी सभी ठीक हैं, परमेश्वर ने मुझे छोड़कर सभी को प्रबुद्ध कर दिया है। मैं जब भी परमेश्वर के वचनों को पढ़ता हूँ तो परेशान क्यों हो जाता हूँ, मैं कभी भी कुछ समझ क्यों नहीं पाता?" हालाँकि लोगों के मन में ऐसे विचार होते हैं, लेकिन उन्हें व्यक्त करने का साहस कोई नहीं करता; वे बस अंदर-ही-अंदर संघर्ष करते रहते हैं। वास्तव में, परमेश्वर के अलावा अन्य कोई उसके वचनों को या उसकी सच्ची इच्छा को समझने में समर्थ नहीं है। फिर भी परमेश्वर हमेशा कहता है कि लोग उसकी इच्छा को समझें—क्या यह किसी को उस काम के लिए बाध्य करना नहीं है जो उसकी क्षमता से परे हो? क्या परमेश्वर मनुष्य की असफलताओं से अनजान है? यह परमेश्वर के कार्य का एक ऐसा मोड़ है, जिसे लोग समझ नहीं पाते और इस प्रकार परमेश्वर कहता है, "मनुष्य प्रकाश के बीच जीता है, फिर भी वह प्रकाश की बहुमूल्यता से अनभिज्ञ है। वह प्रकाश के सार तथा उसके स्रोत से और इस बात से भी अनजान है कि यह प्रकाश किसका है।" परमेश्वर के वचन मनुष्य से जो कहते हैं और जो उससे चाहते हैं, उसके अनुसार, कोई भी जीवित नहीं बचेगा, क्योंकि मनुष्य की देह में ऐसा कुछ

भी नहीं है जो कि परमेश्वर के वचनों को स्वीकार कर रहा हो। इसलिए परमेश्वर के वचनों का पालन करने में सक्षम होना, परमेश्वर के वचनों को सँजोकर रखना और उनकी लालसा करना और परमेश्वर के उन वचनों को अपने हालात पर लागू करना जो मनुष्य की स्थिति की ओर इशारा करते हैं, और परिणामस्वरूप स्वयं को जान लेना—यही सर्वोच्च मानक है। अंततः जब राज्य साकार रूप ले लेगा, तो शरीर में रहने वाला इंसान, तब भी परमेश्वर की इच्छा को समझ नहीं पाएगा और तब भी उसे परमेश्वर के व्यक्तिगत मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी—लेकिन लोग शैतान के हस्तक्षेप के बिना रहेंगे और एक सामान्य इंसानी जीवन जिएंगे; यही शैतान को पराजित करने का परमेश्वर का उद्देश्य है, और परमेश्वर यह कार्य मुख्यतः अपने द्वारा सृजित इंसान के मूल सार को बहाल करने के लिए करता है। परमेश्वर के मन में, "देह" के ये अर्थ हैं : परमेश्वर के सार को जानने की असमर्थता, आध्यात्मिक क्षेत्र के मामलों को देखने की असमर्थता; और इसके अलावा, शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जाने लेकिन परमेश्वर के आत्मा द्वारा निर्देशित होने का सामर्थ्य। यह परमेश्वर द्वारा सृजित देह का सार है। स्वाभाविक रूप से, यह उस अराजकता से बचने के लिए भी है जो मानवजाति के जीवन में व्यवस्था के अभाव में पैदा होगी। परमेश्वर जितना अधिक बोलता है और जितने मर्मभेदी तरीके से बोलता है, लोग उतना ही अधिक समझते हैं। लोग अनजाने में बदल जाते हैं और अनजाने में ही प्रकाश में जीते हैं, और इस प्रकार "प्रकाश के कारण वे पनप रहे हैं और उन्होंने अन्धकार को छोड़ दिया है।" यह राज्य का सुंदर दृश्य है, और "प्रकाश में रहना, मृत्यु से विदा लेना" है, जिस बारे में अक्सर बोला गया है। जब पृथ्वी पर सीनियों का देश साकार होगा—जब राज्य साकार होगा—तो पृथ्वी पर और युद्ध नहीं होंगे; फिर कभी सूखा, महामारी और भूकंप नहीं आएँगे, लोग हथियारों का उत्पादन बंद कर देंगे; सभी शांति और स्थिरता में रहेंगे; लोगों के बीच सामान्य व्यवहार होंगे और देशों के बीच भी सामान्य व्यवहार होंगे। फिर भी वर्तमान की इससे कोई तुलना नहीं है। स्वर्ग के नीचे सब कुछ अराजक है और हर देश में धीरे-धीरे तख़्तापलट की शुरुआत हो रही है। परमेश्वर के कथनों की वजह से, लोग धीरे-धीरे बदल रहे हैं और आंतरिक रूप से, हर देश धीरे-धीरे टूट रहा है। रेत के महल की तरह बेबीलोन की स्थिर नींव हिलनी शुरू हो गयी है, और जैसे ही परमेश्वर की इच्छा में बदलाव होता है, दुनिया में अनजाने में भारी बदलाव होने लगते हैं, और किसी भी समय हर तरह के चिह्न प्रकट होने लगते हैं, जो दिखाता है कि दुनिया के अंत का दिन आ गया है! यह परमेश्वर की योजना है; वह इन्हीं कदमों के ज़रिए कार्य करता है, और निश्चित रूप से हर देश टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाएगा, पुराने सदोम का दूसरी

बार सर्वनाश होगा, और इस प्रकार परमेश्वर कहता है, "संसार का पतन हो रहा है! बेबीलोन गतिहीनता की स्थिति में है!" स्वयं परमेश्वर के अलावा और कोई इसे पूरी तरह से समझ नहीं सकता; आख़िरकार, लोगों की जागरूकता की एक सीमा है। उदाहरण के लिए, आंतरिक मामलों के मंत्रियों को पता हो सकता है कि वर्तमान परिस्थितियाँ अस्थिर और अराजक हैं, लेकिन वे उनका समाधान करने में असमर्थ हैं। वे केवल धारा के संग बह सकते हैं, अपने हृदय में उस दिन की आस लगाए हुए, जब वे अपने मस्तक उन्नत रख सकेंगे, जब सूर्य एक बार फिर से पूर्व में उगेगा, देश भर में चमकेगा और इस दुःखद स्थिति को पलट देगा। लेकिन उन्हें पता नहीं कि जब सूर्य दूसरी बार उगता है, तो उसका उदय पुरानी व्यवस्था को बहाल करने के उद्देश्य से नहीं होता, यह एक पुनरुत्थान होता है, एक संपूर्ण परिवर्तन। पूरे ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर की योजना ऐसी ही है। वह एक नई दुनिया को अस्तित्व में लाएगा लेकिन सबसे पहले वह इंसान का नवीनीकरण करेगा। आज लोगों को परमेश्वर के वचनों में लाना ही सबसे महत्वपूर्ण है, ना कि केवल उन्हें हैसियत के आशीषों को प्राप्त करने देना। इसके अलावा, जैसा कि परमेश्वर कहता है, "राज्य में, मैं राजा हूँ—किन्तु मेरे साथ अपने राजा के रूप में व्यवहार करने के बजाय, मनुष्य मेरे साथ ऐसे 'उद्धारकर्ता के रूप में व्यवहार करता है जो स्वर्ग से उतरा है'। फलस्वरूप, वह लालसा करता है कि मैं उसे भीख दूँ और वह मुझसे जुड़े ज्ञान की तलाश नहीं करता।" हर इंसान की असली स्थिति ऐसी ही है। आज जो महत्वपूर्ण है, वह है मनुष्य के तृप्त न होने वाले लालच को पूरी तरह से दूर करना, ताकि बिना कुछ माँगे लोग परमेश्वर को जानें। कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर कहता है, "बहुत से लोगों ने मुझसे भिखारियों की तरह याचना की है; बहुत से लोगों ने मेरे सामने अपने 'थैलों' को खोला है और जीवित रहने के लिए मुझसे भोजन की याचना की है।" इस तरह की स्थितियाँ लोगों का लालच दिखाती हैं, और ये दर्शाती हैं कि लोग परमेश्वर से प्रेम नहीं करते बल्कि उससे माँग करते हैं, या अपनी पसंद की चीज़ें प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। लोगों की प्रकृति किसी भूखे भेड़िये जैसी होती है; वे सब चालाक और लालची होते हैं, और इसलिए परमेश्वर बार-बार उनसे अपेक्षाएँ रखता है, उन्हें लालच छोड़कर ईमानदारी से परमेश्वर से प्रेम करने के लिए बाध्य करता है। दरअसल, आज तक भी लोगों ने परमेश्वर को पूरी तरह से अपना हृदय नहीं सौंपा है; वे दो नावों की सवारी करते हैं, कभी खुद पर निर्भर होते हैं, कभी परमेश्वर पर निर्भर होते हैं, लेकिन परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करते। जब परमेश्वर का कार्य एक निश्चित स्थिति तक पहुँच जाएगा, तो सभी लोग सच्चे प्रेम और विश्वास के साथ जिएँगे और परमेश्वर की इच्छा पूरी हो जाएगी; इस

प्रकार, परमेश्वर की अपेक्षाएँ ऊँची नहीं हैं।

स्वर्गदूत लगातार परमेश्वर के पुत्रों और लोगों के बीच आते-जाते रहते हैं, वे स्वर्ग और पृथ्वी के बीच भाग-दौड़ करते हैं, और हर दिन आध्यात्मिक क्षेत्र में लौटने के बाद इंसानी दुनिया में उतरते हैं। यह उनका कर्तव्य है, और इस प्रकार हर दिन परमेश्वर के पुत्रों और लोगों की चरवाही की जाती है, और धीरे-धीरे उनके जीवन में बदलाव आने लगता है। जिस दिन परमेश्वर अपना रूप बदलेगा, उस दिन पृथ्वी पर स्वर्गदूतों का कार्य आधिकारिक रूप से समाप्त हो जाएगा और वे स्वर्ग के क्षेत्र में लौट जाएँगे। आज, परमेश्वर के सभी पुत्र और लोग एक ही स्थिति में हैं। जैसे-जैसे पल गुज़र रहे हैं, सभी लोग बदल रहे हैं, और परमेश्वर के पुत्र और लोग धीरे-धीरे अधिक परिपक्व हो रहे हैं। इसकी तुलना में, सभी विद्रोही भी बड़े लाल अजगर के सामने बदल रहे हैं: लोग बड़े लाल अजगर के प्रति अब वफ़ादार नहीं हैं, और शैतान अब उसकी व्यवस्था का पालन नहीं करते। इसके बजाय, वे "जैसा उचित समझती हैं वैसा ही करती हैं, और हर कोई अपने रास्ते चला जाता है।" इस प्रकार, जब परमेश्वर कहता है, "पृथ्वी के राष्ट्रों का विनाश कैसे नहीं होगा? पृथ्वी के राष्ट्रों का पतन कैसे नहीं होगा?" तो स्वर्गलोक एक झटके में नीचे आ जाता है...। ऐसा लगता है मानो कोई अमंगलकारी भावना मानवजाति के अंत की पूर्वसूचना दे रही हो। यहाँ भविष्यवाणी में कहे गए विभिन्न अमंगलसूचक संकेत वही हैं जो बड़े लाल अजगर के देश में हो रहे हैं, और पृथ्वी के लोगों में से कोई भी बचकर निकल नहीं सकता। परमेश्वर के वचनों में ऐसी ही भविष्यवाणी की गई है। आज लोगों को पूर्वाभास हो रहा है कि समय कम है, और उन्हें लगता है कि उन पर कोई आपदा आने वाली है—मगर उनके पास बचने का कोई साधन नहीं है, और इसलिए वे सभी निराश हैं। परमेश्वर कहता है, "जब मैं दिन-प्रतिदिन अपने राज्य के 'भीतरी कक्ष' को सजाता हूँ, तो कोई भी, कभी भी अचानक मेरी 'कार्यशाला' में मेरे कार्य में बाधा डालने नहीं आया है।" वास्तव में, परमेश्वर के वचनों का अर्थ केवल इतना नहीं है कि परमेश्वर के वचनों से लोग उसे जानें। वे यह संकेत देते हैं कि परमेश्वर हर दिन अपने कार्य के अगले हिस्से को पूरा करने के लिए ब्रह्माण्ड भर के घटनाक्रमों की व्यवस्था करता है। उसके यह कहने कि "कोई भी, कभी भी अचानक मेरी 'कार्यशाला' में मेरे कार्य में बाधा डालने नहीं आया है" की वजह यह है कि परमेश्वर दिव्यता में कार्य करता है, और लोग उसके कार्य में सम्मिलित होने योग्य नहीं हैं, भले ही वे चाहते हैं कि शामिल हों। अच्छा यह बताओ : क्या तुम समस्त ब्रह्मांड के घटनाक्रमों की व्यवस्था कर सकते हो? क्या तुम पृथ्वी के लोगों से उनके पूर्वजों का विरोध करवा सकते हो? क्या परमेश्वर की इच्छा को

पूरा करने के लिए तुम ब्रह्माण्ड भर के लोगों को निपुणता से संचालित कर सकते हो? क्या तुम शैतान से उपद्रव करवा सकते हो? क्या तुम लोगों को महसूस करवा सकते हो कि दुनिया उजाड़ और खोखली है? लोग ये सब करने में असमर्थ हैं। अतीत में, जब शैतान के "कौशल" अभी पूरी तरह से क्रियान्वित किए जाने थे, तो शैतान हमेशा परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण में हस्तक्षेप किया करता था; इस चरण में, शैतान की चालें चुक गई हैं, और इस प्रकार परमेश्वर शैतान को उसका असली रंग दिखाने देता है ताकि सभी लोग उसे जान सकें। "किसी ने कभी भी मेरे कार्य में बाधा नहीं डाली है" यही इन वचनों की सच्चाई है।

प्रतिदिन, कलीसिया के लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं और हर दिन "ऑपरेशन की मेज़" पर उनका विश्लेषण किया जाता है। उदाहरण के लिए, जैसे "अपना पद खोना," "बर्खास्त किया जाना," "उनका भय हल्का हुआ और मानसिक संतुलन पुनर्स्थापित हो गया," "परित्याग," "भावनारहित" — उपहास के ऐसे वचन लोगों को "यातना देते हैं" और शर्म से उन्हें मूक कर देते हैं। मानो उनके पूरे शरीर का कोई भी अंग—सिर से पैर तक, अंदर से बाहर तक—परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं है। परमेश्वर के वचन लोगों की ज़िंदगी को उघाड़ कर इतना अनावृत क्यों कर देते हैं? क्या परमेश्वर जानबूझकर लोगों के आगे मुश्किलें खड़ी कर रहा है? लगता है जैसे सभी लोगों के चेहरे कीचड़ से सने हैं जिन्हें धोया नहीं जा सकता। हर दिन सिर झुकाकर वे अपने पापों का हिसाब देते हैं मानो वे घोटालेबाज़ हों। लोगों को शैतान ने इस हद तक भ्रष्ट कर दिया है कि उन्हें अपनी सही स्थिति की पूरी जानकारी ही नहीं है। लेकिन परमेश्वर जानता है, शैतान का जहर उनके अंग-अंग में, यहाँ तक कि उनकी अस्थि और मज्जा में भी है; इसलिए, परमेश्वर का प्रकटन जितना गहरा होता है, लोग उतना ही अधिक भयभीत हो जाते हैं, इस तरह सभी लोगों को शैतान का ज्ञान कराया जाता है और वे इंसान में शैतान को देख सकते हैं, क्योंकि वे शैतान को अपनी आँखों से नहीं देख पाते। और चूँकि सारी चीज़ों ने वास्तविकता में प्रवेश कर लिया है, इसलिए परमेश्वर मनुष्य के स्वभाव को उजागर कर देता है—जिसका अर्थ है, वह शैतान की छवि को उजागर करता है—और इस तरह वह इंसान को शैतान का असली और साकार रूप दिखाता है, जिससे इंसान व्यावहारिक परमेश्वर को और भी बेहतर ढंग से जाने। परमेश्वर इंसान को अपने देहरूप का ज्ञान कराता है, और वह शैतान को रूप देता है, इस तरह वह इंसान को हर इंसान के शरीर में मौजूद शैतान के असली और साकार रूप का ज्ञान कराता है। जिन विभिन्न स्थितियों के बारे में बात की गयी है, वे सभी शैतान के कर्मों की अभिव्यक्तियाँ हैं।

और इसलिए, यह कहा जा सकता है कि वे सभी जो देह के हैं, शैतान की छवि के ही मूर्तरूप हैं। परमेश्वर अपने शत्रुओं के साथ असंगत है, उनमें आपस में दुश्मनी है, और वे दो अलग ताकतें हैं; इसलिए दुष्टात्माएँ हमेशा दुष्टात्माएँ ही रहती हैं और परमेश्वर हमेशा परमेश्वर ही रहता है, वे आग और पानी की तरह बेमेल हैं, स्वर्ग और पृथ्वी की तरह सदा के लिए अलग हैं। जब परमेश्वर ने इंसान को बनाया, तो एक प्रकार के लोगों में स्वर्गदूतों की आत्माएँ थीं; जबकि दूसरे प्रकार के लोगों में कोई आत्मा नहीं थी, इसलिए उन पर दुष्टात्माओं का कब्ज़ा हो गया, इसलिए उन्हें दुष्टात्माएँ कहा जाता है। अंततः, स्वर्गदूत स्वर्गदूत हैं, और दुष्टात्माएँ दुष्टात्माएँ हैं—और परमेश्वर परमेश्वर है। प्रत्येक को प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किये जाने का यही अर्थ है, और इसलिए जब स्वर्गदूत पृथ्वी पर राज्य करते हैं और आशीषों का आनंद लेते हैं, तो परमेश्वर अपने निवास स्थान पर लौट जाता है, और बाकी—परमेश्वर के शत्रु—राख में बदल दिए जाते हैं। दरअसल, बाहरी तौर पर सभी लोग परमेश्वर से प्रेम करते दिखते हैं—लेकिन इसका मूल उनके सार में होता है, जिनकी प्रकृति स्वर्गदूतों वाली है, वे परमेश्वर के हाथ से बच कर अथाह गड्ढे में कैसे गिर सकते हैं? और जिनकी प्रकृति दुष्टात्माओं वाली है, वे परमेश्वर को सच में प्रेम कैसे कर सकते हैं? ऐसे लोगों का सार, परमेश्वर से सच्चा प्रेम करने वाला नहीं होता, इसलिए उन्हें राज्य में प्रवेश करने का अवसर कैसे मिल सकता है? परमेश्वर ने दुनिया बनाते समय ही हर चीज़ की व्यवस्था कर दी थी, जैसा कि परमेश्वर कहता है, "मैं आँधी और बारिश में आगे बढ़ता हूँ, मैंने लोगों के बीच बरसों बिताए हैं, और समय पर आज तक पहुँचा हूँ। क्या ये मेरी प्रबन्धन योजना के कदम नहीं हैं? क्या किसी ने कभी मेरी योजना में कुछ जोड़ा है? कौन है जो मेरी योजना के चरणों से अलग हो सके?" देह बनकर, परमेश्वर को मनुष्य जीवन का अनुभव करना चाहिए, क्या यह व्यावहारिक परमेश्वर का व्यावहारिक पक्ष नहीं है? मनुष्य की कमज़ोरी की वजह से परमेश्वर मनुष्य से कभी कुछ नहीं छिपाता; बल्कि, वह मनुष्य के लिए सत्य को प्रकट कर देता है, जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, "मैंने लगातार कई वर्ष मनुष्यों के बीच बिताए हैं।" क्योंकि परमेश्वर देहधारी परमेश्वर है इसीलिए उसने पृथ्वी पर लगातार कई वर्ष बिताए हैं; उसी अनुसार, हर तरह की प्रक्रियाओं से गुज़रने के बाद ही उसे देहधारी परमेश्वर माना जा सकता है, उसके बाद ही वह देह के भीतर दिव्यता में कार्य करने योग्य हो सकता है। फिर, सभी रहस्यों को प्रकट करने के बाद वह अपने रूप को बदलने के लिए स्वतंत्र होगा। यह गैर-अलौकिक होने के स्पष्टीकरण का दूसरा पहलू है, जिसका सीधा संकेत परमेश्वर ने किया है।

यह आवश्यक है कि बिना लापरवाही के, परमेश्वर के हर एक वचन पर पर्याप्त रूप से खरा उतरना

चाहिए—यह परमेश्वर का आदेश है!

अध्याय 24 और अध्याय 25

ध्यानपूर्वक पढ़े बिना, इन दो दिनों के कथन में कुछ भी पता लगा पाना असंभव है; वास्तव में, इन्हें एक ही दिन में बोला जाना चाहिए था, मगर परमेश्वर ने इन्हें दो दिनों में विभाजित कर दिया। यानी, दो दिनों के ये कथन एक पूर्ण इकाई बनाते हैं, लेकिन परमेश्वर ने इन्हें दो दिनों में विभाजित कर दिया ताकि लोग इन्हें आसानी से स्वीकार कर सकें और उन्हें साँस लेने का अवसर मिल सके। परमेश्वर मनुष्य की इतनी परवाह करता है। परमेश्वर के सभी कार्यों में, सभी लोग अपने-अपने स्थान पर अपने कार्य और अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। ऐसा नहीं है कि केवल स्वर्गदूत की आत्मा वाले लोग ही सहयोग करते हों; दुष्ट की आत्मा वाले भी "सहयोग करते हैं", उसी तरह से शैतान की सभी आत्माएँ भी करती हैं। परमेश्वर के कथनों में उसकी इच्छा और मनुष्य से उसकी अपेक्षाएँ दिखाई देती हैं। "मेरी ताड़नाएँ सभी लोगों पर आती हैं, फिर भी यह सभी लोगों से दूर भी रहती हैं। हर व्यक्ति का संपूर्ण जीवन मेरे प्रति प्रेम और नफ़रत से भरा हुआ है" ये वचन दर्शाते हैं कि परमेश्वर सभी लोगों को धमकाने के लिए ताड़ना का उपयोग करता है, जिससे वे उसके बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकें। शैतान के भ्रष्टाचार और स्वर्गदूतों की निर्बलता की वजह से, परमेश्वर लोगों को ताड़ना देने के लिए केवल वचनों का प्रयोग करता है, न कि प्रशासनिक आज्ञाओं का। सृजन के समय से लेकर आज तक, स्वर्गदूतों और सभी लोगों के बारे में परमेश्वर के कार्य का यही सिद्धांत रहा है। चूँकि स्वर्गदूत परमेश्वर के हैं, इसलिए एक दिन निश्चित रूप से वे परमेश्वर के राज्य के लोग बन जाएँगे, और परमेश्वर उनकी देखभाल और सुरक्षा करेगा। इस बीच बाकी लोगों को भी प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। शैतान की सभी अलग-अलग दुष्ट आत्माओं को ताड़ना दी जाएगी और वे सभी जो बिना आत्माओं वाले हैं, उन पर परमेश्वर के पुत्र और लोग शासन करेंगे। परमेश्वर की ऐसी योजना है। इस प्रकार, परमेश्वर ने एक बार कहा था "क्या मेरे दिन का आगमन मनुष्य के लिए वास्तव में मृत्यु का पल है? क्या मैं वास्तव में उस समय मनुष्य को नष्ट कर सकता हूँ जब मेरे राज्य का गठन होता है?" हालाँकि ये दो साधारण-से प्रश्न हैं, लेकिन ये सारी मानवजाति की मंज़िल के लिए परमेश्वर की व्यवस्थाएँ हैं। जब परमेश्वर आता है तो यही वह समय होता है जब "संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लोगों को उल्टा करके सलीब पर चढ़ा दिया जाता है।" परमेश्वर का लोगों के सामने आने का यही उद्देश्य है ताकि ताड़ना

देकर लोगों को परमेश्वर के अस्तित्व का ज्ञान करवाया जाए। चूँकि परमेश्वर के पृथ्वी पर अवतरित होने का समय ही अंतिम युग है, और यही वह समय है जब पृथ्वी के देश सबसे अधिक अशांत होते हैं, इसलिए परमेश्वर कहता है "जब मैं पृथ्वी पर उतरता हूँ, उस समय यह अंधकार से आच्छादित होती है और मनुष्य 'गहरी नींद' में होता है।" इसलिए, आज मुट्ठीभर लोग ही ऐसे हैं जो देहधारी परमेश्वर को जान सकते हैं, लगभग ऐसा कोई नहीं है। चूँकि यही अंतिम युग है, इसलिए किसी ने भी कभी व्यावहारिक परमेश्वर को नहीं जाना है, लोगों को परमेश्वर का केवल सतही ज्ञान है। यही वजह है कि लोग पीड़ादायक शोधन में जी रहे हैं। जब लोग शोधन छोड़ देते हैं तभी उन्हें दंडित किया जाना भी शुरू होता है, इसी समय परमेश्वर भी लोगों के सामने प्रकट होता है ताकि वे उसे व्यक्तिगत रूप से देख सकें। देहधारी परमेश्वर की वजह से, लोग आपदा में पड़ जाते हैं, और उससे स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते—यह बड़े लाल अजगर के लिए परमेश्वर का दण्ड है, और उसकी प्रशासनिक आज्ञा है। जब वसंत की गर्माहट आएगी और फूल खिलेंगे, जब स्वर्ग के नीचे सब कुछ हरियाली से ढक जाएगा और पृथ्वी पर हर चीज़ यथास्थान होगी, तो सभी लोग और चीजें धीरे-धीरे परमेश्वर की ताड़ना में प्रवेश करेंगी, और उस समय पृथ्वी पर परमेश्वर के समस्त कार्य का अंत हो जाएगा। फिर परमेश्वर पृथ्वी पर कार्य नहीं करेगा या नहीं रहेगा, क्योंकि परमेश्वर का महान कार्य पूरा हो गया होगा। क्या लोग इतने से समय के लिए अपनी देह की इच्छाओं को अलग रखने के काबिल नहीं हैं? कौन सी बातें मनुष्य और परमेश्वर के प्रेम में दरार पैदा कर सकती हैं? कौन है जो मनुष्य और परमेश्वर के बीच के प्रेम को अलग कर सकता है? क्या माता-पिता, पति, बहनें, पत्नियाँ या पीड़ादायक शोधन ऐसा कर सकते हैं? क्या अंतःकरण की भावनाएँ मनुष्य के अंदर से परमेश्वर की छवि को मिटा सकती हैं? क्या एक-दूसरे के प्रति लोगों की कृतज्ञता और क्रियाकलाप उनका स्वयं का किया है? क्या इंसान उनका समाधान कर सकता है? कौन अपनी रक्षा कर सकता है? क्या लोग अपना भरण-पोषण कर सकते हैं? जीवन में बलवान लोग कौन हैं? कौन मुझे छोड़कर अपने दम पर जी सकता है? परमेश्वर बार-बार ऐसा क्यों कहता है कि सभी लोग आत्म-चिंतन करें? परमेश्वर क्यों कहता है, "किसके कष्ट खुद उसके हाथों द्वारा रचे गए हैं?"

फिलहाल, सकल ब्रह्मांड में अँधेरी रात है, लोग सुन्न और मंद-बुद्धि हैं, लेकिन घड़ी की सुइयाँ हमेशा आगे बढ़ती रहती हैं, मिनट और सेकंड रुकते नहीं हैं, पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा की परिक्रमा तेज हो जाती है। लोग सोचते हैं कि वह दिन बहुत दूर नहीं है, मानो उनका अंतिम दिन उनकी आँखों के सामने हो। लोग

निरन्तर मृत्यु के अपने समय के लिए सब कुछ तैयार करते हैं, ताकि यह उनकी मृत्यु पर एक उद्देश्य की पूर्ति करे; यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो उनका जीवन व्यर्थ होगा। और क्या यह खेदजनक नहीं होगा? परमेश्वर जब विश्व का सर्वनाश करता है, तो वह देशों के घरेलू मामलों में बदलावों से शुरुआत करता है, जिससे वहाँ तख्तापलट होते हैं; इस प्रकार, परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड से लोगों की सेवा जुटाता है। जिस भूमि पर बड़ा लाल अजगर कुंडली मारे पड़ा है वह एक प्रदर्शन क्षेत्र है। क्योंकि अंदर से, यह टूट चुका है, इसके घरेलू मामलों में ज़बर्दस्त अराजकता आ चुकी है, हर कोई, चन्द्रमा पर भाग जाने की तैयारी करते हुए, आत्मरक्षा में लगा हुआ है—लेकिन वे परमेश्वर के हाथ के प्रभुत्व से कैसे बच सकते हैं? जैसा कि परमेश्वर ने कहा है कि लोग "अपने कड़वे प्याले से ही पिएंगे।" जब परमेश्वर पृथ्वी से प्रस्थान करेगा, ठीक उसी समय घरेलू संघर्ष होंगे; परमेश्वर बड़े लाल अजगर के देश में नहीं रहेगा, और पृथ्वी पर अपने कार्य को तुरंत समाप्त कर देगा। यह कहा जा सकता है कि समय तेज़ी से भाग रहा है और ज़्यादा समय नहीं बचा है। परमेश्वर के वचनों के लहजे से यह जाना जा सकता है कि परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड में सभी की मंज़िलों के बारे में पहले ही बोल चुका है, उसके पास कहने को कुछ और शेष नहीं है। इसी को परमेश्वर मनुष्य के आगे प्रकट करता है। इंसान को बनाने के उद्देश्य के चलते परमेश्वर कहता है, "मेरी नज़रों में, मनुष्य सभी चीज़ों का शासक है। मैंने उसे कम मात्रा में अधिकार नहीं दिया है, उसे पृथ्वी पर सभी चीज़ों—पहाड़ों के ऊपर की घास, जंगलों के बीच जानवरों, और जल की मछलियों—का प्रबन्ध करने की अनुमति दी है।" जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो उसने पूर्वनियत किया कि मनुष्य सभी चीजों का मालिक होगा—फिर भी शैतान ने मनुष्य को भ्रष्ट कर दिया, इसलिए वह अपनी इच्छानुसार नहीं जी सकता। यही वजह है कि आज दुनिया ऐसी है, जिसमें लोग जंगली जानवरों से अलग नहीं हैं, और पर्वत नदियों के साथ घुल-मिल गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप "मनुष्य के पूरे जीवन में बस मनस्ताप, भागा-दौड़ी और खोखलेपन में जोड़ दी गयी मौज-मस्ती है।" चूँकि मनुष्य के जीवन का कोई अर्थ नहीं है, और चूँकि परमेश्वर का मनुष्य को बनाने का यह उद्देश्य नहीं था, इसलिए पूरी दुनिया मलिन हो गई है। जब परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड को व्यवस्थित करेगा, तो सभी लोग आधिकारिक रूप से मानव जीवन का अनुभव करना शुरू कर देंगे, और तभी उनका जीवन सार्थक होना शुरू होगा। लोग परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए अधिकार का उपयोग करना शुरू कर देंगे, वे आधिकारिक रूप से सभी चीजों के सामने उनके स्वामी के रूप में आएँगे; वे पृथ्वी पर परमेश्वर के मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और परमेश्वर की अवज्ञा नहीं करेंगे बल्कि उसका आज्ञापालन करेंगे।

हालाँकि, आज के लोग इससे अभी बहुत दूर हैं। वे हमेशा परमेश्वर के माध्यम से "बेईमानी से पैसा बनाते हैं", इसलिए परमेश्वर लगातार ऐसे सवाल पूछता है, "क्या जो कार्य मैं मनुष्य पर करता हूँ वह उसके किसी लाभ का नहीं है?" यदि परमेश्वर ऐसे प्रश्न नहीं पूछता तो कुछ नहीं होता; लेकिन जब वह ऐसी बातें पूछता है, तो कुछ लोग डटे नहीं रह पाते, क्योंकि उनके अंतःकरण में कृतज्ञता होती है, और वे पूरी तरह से परमेश्वर के लिए न होकर, केवल अपने लिए होते हैं। हर चीज़ में खालीपन है; इस प्रकार, ये लोग और "हर धर्म, समाज के हर वर्ग, हर राष्ट्र और हर सम्प्रदाय के सभी लोग पृथ्वी पर खालीपन को जानते हैं, और वे सभी मुझे खोजते हैं और मेरी वापसी का इन्तज़ार करते हैं।" हर कोई परमेश्वर की वापसी की कामना करता है ताकि वह पुराने खोखले युग का अंत कर सके, मगर उन्हें आपदा में पड़ जाने का भय रहता है। समस्त धार्मिक क्षेत्र को तुरंत उजाड़ स्थिति में छोड़ दिया जाएगा, और सभी लोग उसकी उपेक्षा करेंगे; उनमें वास्तविकता नहीं है, उन्हें एहसास होगा कि परमेश्वर में उनका विश्वास अज्ञात और काल्पनिक है। समाज के हर वर्ग के लोग भी बिखर जाएँगे, हर देश और संप्रदाय में खलबली मचनी शुरू हो जाएगी। संक्षेप में, सभी चीजों की नियमितता की धज्जियाँ उड़ जाएँगी, सभी अपनी सामान्यता गँवा देंगे, और लोगों का असली चेहरा भी सामने आ जाएगा। इस तरह परमेश्वर कहता है, "कई बार ऐसा हुआ है कि मैं मनुष्य पर जोर से चीखा हूँ, फिर भी क्या कभी किसी ने संवेदना महसूस की है? क्या कभी कोई मानवजाति में रहा है? मनुष्य शरीर में रह सकता है, किन्तु वह मानवता के बिना है। क्या वह जानवरों के संसार में पैदा हुआ था?" मनुष्यों के बीच भी परिवर्तन हो रहा है, और इस परिवर्तन की वजह से हर एक को प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। यह अंत के दिनों में परमेश्वर का कार्य है, और अंत के दिनों के कार्य से यही प्रभाव प्राप्त किया जाना है। परमेश्वर मनुष्य के सार के बारे में एकदम स्पष्टता से बोलता है और इससे यह साबित होता है कि उसके कार्य का अंत निकट आ रहा है, और इसके अलावा, परमेश्वर लोगों से छुपा हुआ है, जिससे वे खुद को और अधिक संभ्रमित महसूस करते हैं। लोग परमेश्वर की इच्छा पर जितना कम ध्यान देते हैं, उतना ही कम वे परमेश्वर के अंत के दिनों के कार्य पर ध्यान देते हैं; यह उन्हें व्यवधान पैदा करने से रोकता है, और इस प्रकार जब कोई ध्यान नहीं दे रहा होता है तब परमेश्वर अपना इच्छित कार्य करता है। यह तमाम युगों में परमेश्वर के कार्य का एक सिद्धांत है। वह लोगों की कमजोरियों के बारे में जितना कम विचारशील होता है, उससे पता चलता है कि परमेश्वर की दिव्यता अधिक स्पष्ट है, और इसलिए परमेश्वर का दिन और निकट आ जाता है।

अध्याय 26

परमेश्वर द्वारा बोले गए सभी वचनों से, देखा जा सकता है कि परमेश्वर का दिन हर गुज़रते दिन के साथ निकट आ रहा है। यह ऐसा है मानो यह दिन ठीक लोगों की आँखों के सामने हो, मानो यह कल ही आ जाएगा। इसलिए, परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के बाद, सभी लोग दहशत में आ जाते हैं, और उन्हें संसार की वीरानी की कुछ समझ आ जाती है मानो हल्की फुहारों के साथ बयार में पत्तियाँ झड़ रही हों। लोग कोई निशान छोड़े बग़ैर गायब हो जाते हैं, मानो वे सभी पूरी तरह विलीन हो गए हों। सभी के मन में अनिष्ट की अनुभूति होती है, और यद्यपि सभी परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहते हैं और इसके लिए कठोर जतन करते हैं, और प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की मंशा पूरी करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देता है, ताकि परमेश्वर की इच्छा, सुचारू ढंग से और निर्विघ्न आगे बढ़े, किन्तु ऐसे मनोभाव में हमेशा अपशकुन का बोध मिला होता है। आज के कथनों को ही लो : यदि वे जनसाधारण के लिए प्रसारित और संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए उद्घोषित किए गए होते, तो सभी लोग शीश झुकाते और विलाप करते, क्योंकि इन वचनों में "मैं पूरी पृथ्वी पर निगरानी रखूँगा, और धार्मिकता, प्रताप, कोप और ताड़ना के साथ संसार के पूर्व में प्रकट होते हुए, मानवजाति के असंख्य समुदायों के समक्ष स्वयं को उजागर करूँगा!" आध्यात्मिक विषयों की समझ रखने वाले सभी लोग देखते हैं कि कोई भी परमेश्वर की ताड़ना से बचकर नहीं निकल सकता है, कि सभी ताड़ना की पीड़ा झेलने के बाद अपने प्रकार के अनुसार पृथक किए जाएँगे। सच में, यह परमेश्वर के कार्य का एक चरण है, और कोई भी इसे बदल नहीं सकता है। जब परमेश्वर ने संसार को बनाया, जब उसने मानवजाति की अगुआई की, तब उसने अपनी बुद्धि और अद्भुतता दिखायी, और जब वह इस युग का अंत करता है, केवल तभी लोग उसकी सच्ची धार्मिकता, प्रताप, कोप, और ताड़ना का अवलोकन करते हैं। इतना ही नहीं, केवल ताड़ना के माध्यम से ही वे उसकी धार्मिकता, प्रताप और कोप को देख पाते हैं; यह वह मार्ग है जो अपनाना ही होगा, ठीक वैसे ही जैसे, अंत के दिनों के दौरान, परमेश्वर का देहधारण आवश्यक और अपरिहार्य है। समस्त मानवजाति के अंत की घोषणा करने के पश्चात, परमेश्वर मनुष्य को वह कार्य दिखाता है जिसे वह आज करता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर कहता है, "पहले का इस्राएल समाप्त हो गया है, और आज के इस्राएल का उदय हुआ है, जो संसार में सीधा और बहुत ऊँचा खड़ा है, और समस्त मानवता के हृदय में तनकर डटा हुआ है। आज का इस्राएल मेरे लोगों के माध्यम से अस्तित्व का स्रोत निश्चित रूप से प्राप्त करेगा!" "आह, घृणास्पद मिस्र! ... ऐसा कैसे हो सकता है

कि तू मेरी ताड़ना के दायरे में विद्यमान न हो?" परमेश्वर जानबूझकर दो परस्पर विरोधी देशों को उसके हाथों से प्राप्त होने वाला परिणाम दिखाता है, एक अर्थ में इस्राएल का उल्लेख करके, जो भौतिक है, और दूसरे अर्थ में परमेश्वर के चुने हुए सभी लोगों का उल्लेख करके—अर्थात इस्राएल के बदलने के साथ किस तरह परमेश्वर के चुने हुए लोग बदलते हैं, इसका उल्लेख करके। जब इस्राएल पूरी तरह अपने मूल रूप में लौट आयेगा, उसके बाद सभी चुने हुए लोगों को पूर्ण कर दिया जाएगा—जिसका मतलब है कि इस्राएल उन लोगों का एक अर्थपूर्ण प्रतीक है जिन्हें परमेश्वर प्यार करता है। वहीं, मिस्र, उन लोगों का प्रतिनिधिक संगम है जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। जितना अधिक इसका पतन होता है, उतने ही अधिक वे भ्रष्ट होते जाते हैं जिनसे परमेश्वर घृणा करता है—और बेबीलोन का बाद में पतन हो जाता है। यह स्पष्ट तुलना प्रस्तुत करता है। इस्राएल और मिस्र के अंत की घोषणा करके, परमेश्वर सभी लोगों की मंजिल उजागर करता है; इसीलिए इस्राएल का उल्लेख करते समय परमेश्वर मिस्र की भी बात करता है। इससे यह देखा जा सकता है कि मिस्र के विनाश का दिन विश्व के सर्वनाश का दिन है, वह दिन जब परमेश्वर सभी लोगों को ताड़ना देता है। यह शीघ्र होगा; परमेश्वर इसे पूरा करने ही वाला है, यह कुछ ऐसा है जो मनुष्य की नग्न आँखों से पूरी तरह से अदृश्य है, परन्तु यह अपरिहार्य और अपरिवर्तनीय है। परमेश्वर कहता है, "वे सभी जो मेरे विरुद्ध खड़े हैं, निश्चय ही अनन्त काल तक मेरे द्वारा ताड़ित किए जाएँगे। क्योंकि मैं एक ईर्ष्यालु परमेश्वर हूँ, मनुष्यों ने जो किया है, उस सबके लिए उन्हें हल्के में नहीं छोडूँगा।" परमेश्वर ऐसे चरम शब्दों में क्यों बोलता है? और वह बड़े लाल अजगर के देश में व्यक्तिगत रूप से देह क्यों बन गया है? परमेश्वर के वचनों से उसका उद्देश्य देखा जा सकता है : वह लोगों को बचाने, या उनके प्रति करुणा दिखाने, या उनकी परवाह करने, या उनकी रक्षा करने के लिए नहीं आया है—वह उन सब लोगों को ताड़ना देने के लिए आया है जो उसका विरोध करते हैं। क्योंकि परमेश्वर कहता है, "मेरी ताड़ना से कोई भी बचकर निकल नहीं सकता।" परमेश्वर देह में रहता है, और इतना ही नहीं, वह एक सामान्य व्यक्ति है, फिर भी वह लोगों को उसे व्यक्तिपरक ढंग से नहीं जान पाने की उनकी कमज़ोरी के कारण क्षमा नहीं करता; इसके बजाय, वह एक "सामान्य व्यक्ति" के साधनों से मनुष्यों की उनके पापों के लिए निंदा करता है, वह उन सभी को जो उसकी देह को देखते हैं वह बना देता है जिन्हें ताड़ना दी जाती है, और इस प्रकार वे उन सभी लोगों के लिए, जो बड़े लाल अजगर के देश के लोग नहीं हैं, बलि बन जाते हैं। किन्तु यह परमेश्वर के देहधारण के प्राथमिक लक्ष्यों में से एक नहीं है। परमेश्वर मुख्य रूप से बड़े लाल अजगर के साथ देह में

युद्ध करने के लिए और युद्ध के माध्यम से उसे शर्मिंदा करने के लिए, देह बना। चूंकि बड़े लाल अजगर से आत्मा में युद्ध करने की अपेक्षा देह में युद्ध करने से परमेश्वर की महान सामर्थ्य अधिक सिद्ध होती है, इसलिए परमेश्वर अपने कर्म और सर्वशक्ति दिखाने के लिए देह में लड़ता है। परमेश्वर के देहधारण द्वारा अनगिनत लोगों को "बिना अपराध के" दंडित किया गया है, अनगिनत लोगों को इसके द्वारा नरक में फेंक दिया गया है, और ताड़ना में डाल दिया गया है, और वे देह में पीड़ित होते हैं। यह परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का प्रदर्शन है, और इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर का विरोध करने वाले आज किस प्रकार परिवर्तित हो गए हैं, परमेश्वर का खरा और सच्चा स्वभाव कभी नहीं बदलेगा। एक बार दंडित किए जाने पर लोग हमेशा के लिए दंडित रहते हैं, फिर कभी नहीं उठ पाते। मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर के स्वभाव के समान नहीं हो सकता। जो परमेश्वर का विरोध करते हैं, उनके प्रति लोग कभी बहुत उत्साहित और कभी उदासीन होते हैं, वे दाएँ और बाएँ अभी ऊपर, अभी नीचे हिचकोले खाते हैं; वे पूर्णतः एक-से रहने में अक्षम होते हैं, कभी परमेश्वर का विरोध करने वालों से बहुत गहराई तक घृणा करते हैं, कभी उन्हें अपने नज़दीक थामे रखते हैं। आज की परिस्थितियाँ इसलिए घटित हुई हैं क्योंकि लोग परमेश्वर के कार्य को नहीं जानते हैं। परमेश्वर ऐसे वचन क्यों कहता है, जैसे "स्वर्गदूत, अंततः, स्वर्गदूत हैं; परमेश्वर, अंततः, परमेश्वर है; दुष्टत्माएँ, अंततः दुष्टात्माएँ हैं; अधार्मिक अब भी अधार्मिक हैं; और पवित्र अब भी पवित्र" हैं? क्या तुम इसे नहीं समझ सकते हो? क्या परमेश्वर को ग़लत याद हो सकता है? इसीलिए परमेश्वर कहता है, "प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रकार के अनुसार पृथक कर दिया जाता है और वह एकाएक अपने परिवारों के आलिंगन में वापस जाने का अपना रास्ता खोज लेता है।" इससे यह देखा जा सकता है कि आज, परमेश्वर ने सभी चीजों को पहले से ही उनके परिवारों में वर्गीकृत कर दिया है, ताकि यह अब और "अनंत संसार" न रहे, और लोग अब एक ही बड़े पात्र से न खाएँ, बल्कि अपनी भूमिका निभाते हुए, अपने घर में अपने कर्तव्य का निर्वाह करें। संसार की सृष्टि करते समय परमेश्वर की यह मूल योजना थी; जाति के अनुसार पृथक किए जाने के बाद, लोगों में से "प्रत्येक अपना स्वयं का भोजन खाएगा", अर्थात परमेश्वर न्याय आरम्भ करेगा। परिणामस्वरूप, परमेश्वर के मुख से ये वचन आए: "मैं सृष्टि की पूर्व दशा बहाल कर दूँगा, मैं प्रत्येक चीज़ को पूर्णतः बदलते हुए हर चीज़ को उसी प्रकार बहाल कर दूँगा जैसी वह मूलतः थी, जिससे हर चीज़ मेरी योजना के आलिंगन में लौट आएगी।" ठीक यही परमेश्वर के समस्त कार्य का उद्देश्य है, और इसे समझना मुश्किल नहीं है। परमेश्वर अपना कार्य पूरा करेगा—क्या मनुष्य उसके कार्य के रास्ते में आ

सकता है? और क्या परमेश्वर अपने और मनुष्य के बीच स्थापित वाचा को तोड़ सकता है? परमेश्वर के आत्मा द्वारा किए गए कार्य को कौन पलट सकता है? क्या कोई भी मनुष्य ऐसा कर सकता है?

अतीत में, लोगों ने परमेश्वर के वचनों में एक कानून को समझा : जब परमेश्वर के वचन बोले जाते हैं, शीघ्र ही वे वास्तविक बना दिए जाते हैं। इसमें कोई झूठ नहीं है। चूँकि परमेश्वर ने कहा है कि वह सभी लोगों को ताड़ना देगा, और, इतना ही नहीं, चूँकि उसने प्रशासनिक आज्ञाएँ जारी कर दी हैं, इसलिए देखा जा सकता है कि परमेश्वर का कार्य एक निश्चित चरण तक किया जा चुका है। सभी लोगों के लिए जो संविधान जारी किया गया था, उसने उनके जीवन और परमेश्वर के प्रति उनके रवैये को संबोधित किया। यह जड़ तक नहीं पहुँचा; इसने नहीं कहा कि यह परमेश्वर के पूर्वनियत पर आधारित है या नहीं, बल्कि यह उस समय मनुष्य के व्यवहार पर आधारित था। आज की प्रशासनिक आज्ञाएँ असाधारण हैं, वे इस बारे में बोलती हैं कि कैसे "सभी लोगों को उनकी किस्म के अनुसार अलग-अलग किया जाएगा, और वे अपने-अपने कार्यों के अनुरूप ताड़नाएँ प्राप्त करेंगे।" ध्यानपूर्वक पढ़े बिना इसमें कोई समस्या नहीं खोजी जा सकती है। चूँकि अंतिम युग के दौरान ही परमेश्वर सभी चीजों को उनकी जाति के अनुसार पृथक करता है, इसलिए इसे पढ़ने के बाद अधिकांश लोग उलझन में पड़ जाते हैं और भ्रमित हो जाते हैं; वे अभी भी उत्साहहीन रवैया अपनाते हैं, समय की अत्यावश्यकता को नहीं देखते, और इसलिए वे इसे चेतावनी के रूप में नहीं लेते हैं। क्यों, इस समय, परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाएँ, जो पूरे ब्रह्माण्ड में घोषित की गई हैं, मनुष्य को दिखाई गई हैं? क्या ये लोग समूचे ब्रह्माण्ड के सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं? क्या, बाद में, परमेश्वर इन लोगों पर और अधिक दया कर सकता है? क्या इन लोगों के दो सिर उग आए हैं? जब परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड के लोगों को ताड़ना देता है, जब सभी तरह की विपत्तियां टूटती हैं, तब इन विपत्तियों के परिणामस्वरूप सूर्य और चंद्रमा में बदलाव आएँगे, और जब इन विपत्तियों का अंत होगा, तब तक सूरज और चंद्रमा बदल चुके होंगे—और इसे ही "परिवर्तन" कहा जाता है। इतना कहना पर्याप्त है कि भविष्य की आपदाएँ प्रचण्ड होंगी। हो सकता है रात दिन का स्थान ले ले, वर्ष भर सूर्य ही न निकले, कई महीनों तक झुलसाने वाली गर्मी पड़े, घटता हुआ चन्द्रमा हमेशा मानवजाति के सामने हो, सूर्य और चन्द्रमा के एक साथ उगने की विलक्षण स्थिति दिखाई दे, आदि। कई चक्रीय परिवर्तनों के बाद, समय के गुज़रने के साथ, अंततः वे नए हो जाएँगे। परमेश्वर उन लोगों के लिए अपनी व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान देता है, जो शैतान के हैं। इसीलिए वह सोच-विचार कर कहता है, "ब्रह्माण्ड के भीतर मनुष्यों में से उन सभी का, जो

शैतान से संबंध रखते हैं, सर्वनाश कर दिया जाएगा।" इससे पहले कि ये "लोग" अपने सच्चे रंग दिखाएँ, परमेश्वर हमेशा सेवा प्रदान करने के लिए उनका इस्तेमाल करता है; परिणामस्वरूप, वह उनकी करनी पर कोई ध्यान नहीं देता, जब वे अच्छा करते हैं तब वह उन्हें कोई "पुरस्कार" नहीं देता, न ही वह ख़राब करने पर उनका "पारिश्रमिक" काटता है। इस तरह वह उनकी उपेक्षा करता है और उनके साथ रुखाई से पेश आता है। उनकी "अच्छाई" की वजह से वह अचानक नहीं बदलता है, क्योंकि, समय या स्थान चाहे जो हो, मनुष्य का सार नहीं बदलता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे परमेश्वर और इंसान के बीच स्थापित वाचा, बिल्कुल वैसे ही जैसे मनुष्य कहता है, "कोई बदलाव नहीं आएगा, भले ही समुद्र सूख जाएँ और चट्टानें चूर-चूर हो जाएँ।" इस प्रकार परमेश्वर लोगों को उनकी जाति के अनुसार छाँटता है और आसानी से उन पर ध्यान नहीं देता है। सृष्टि के समय से आज तक, शैतान ने कभी अच्छा आचरण नहीं किया। इसने हमेशा व्यवधान, गड़बड़ियाँ, और मतभेद पैदा किए। जब परमेश्वर कार्य करता या बोलता है, तब यह हमेशा सम्मिलित होने का प्रयास करता है, किन्तु परमेश्वर कोई ध्यान नहीं देता है। शैतान का उल्लेख होने पर परमेश्वर के क्रोध का बांध टूट जाता, अदम्य हो जाता है; क्योंकि वे एक आत्मा के नहीं हैं, इसलिए उनमें कोई संबंध नहीं है, केवल दूरी और पृथकता है। सात मुहरों के प्रकाशन के उपरांत, पृथ्वी की दशा बदतर होती जाती है, सब चीज़ें, रत्ती भर भी पीछे नहीं रहकर "सात मुहरों के साथ कंधे-से-कंधा मिला कर आगे बढ़ती हैं।" परमेश्वर के सारे वचनों में आरम्भ से अंत तक, लोगों को परमेश्वर ने स्तब्ध देखा है, फिर भी वे बिल्कुल जागृत नहीं होते। उच्चतर बिन्दु पर पहुँचने के लिए, सभी लोगों की शक्ति को सामने लाने के लिए, और यही नहीं, परमेश्वर के कार्य को उसके चरम पर समाप्त करने के लिए, परमेश्वर लोगों से कई प्रश्न पूछता है, मानो उनके पेट फुला रहा हो, और इस प्रकार वह सभी लोगों की पूर्ति करता है। चूँकि इन लोगों की वास्तविक कद-काठी नहीं है, इसलिए वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर, जिन्हें फुलाया जाता है, वे अच्छे स्तर के सामान हैं, जबकि जो अच्छे स्तर के नहीं हैं, वे बेकार कचरा हैं। यह मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षा है, और जिस पद्धति से वह बोलता है, उसका लक्ष्य भी है। विशेष रूप से, जब परमेश्वर कहता है, "क्या ऐसा हो सकता है कि मैं जब पृथ्वी पर होता हूँ, तब मैं वैसा नहीं होता जैसा मैं स्वर्ग में होता हूँ? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं जब स्वर्ग में होता हूँ, तब मैं नीचे पृथ्वी पर नहीं आ सकता? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं जब पृथ्वी पर होता हूँ, तब मैं स्वर्ग में उठाए जाने के अयोग्य होता हूँ?" ये प्रश्न उस अधिक स्पष्ट मार्ग का काम करते हैं, जिस पर मनुष्य परमेश्वर को जान सकता है। परमेश्वर के वचनों से, परमेश्वर की

अत्यावश्यक इच्छा दिखाई देती है; लोग इसे प्राप्त करने में असमर्थ हैं, और परमेश्वर बार-बार शर्तें जोड़ता जाता है, इस तरह सभी लोगों को याद दिलाता है कि वे पृथ्वी पर स्वर्गिक परमेश्वर को जानें, और उस परमेश्वर को जानें, जो स्वर्ग में है किन्तु पृथ्वी पर रहता है।

परमेश्वर के वचनों से मनुष्य का हाल-चाल देखा जा सकता है: "सभी मनुष्य मेरे वचनों पर बहुत समय और ऊर्जा व्यय करते हैं, वे मेरी बाह्य आकृति की जाँच-पड़ताल करते हैं, किन्तु विफलता ही उन सबके हाथ लगती है, उनके प्रयत्न फलदायी नहीं होते, इसके बजाय वे मेरे वचनों के द्वारा धराशायी कर दिए जाते हैं और फिर उठने की हिम्मत नहीं कर पाते।" परमेश्वर के दुःख को कौन समझ सकता है? कौन परमेश्वर के हृदय को आराम पहुँचा सकता है? जो माँगा जाता है, उसमें परमेश्वर के हृदय के साथ कौन एकाकार है? जब लोगों के प्रयत्न फलीभूत नहीं होते, तो वे स्वयं अपने को नकार देते हैं और परमेश्वर के आयोजनों के आगे सचमुच समर्पित हो जाते हैं। ज्यों-ज्यों वे अपना सच्चा हृदय दिखाते हैं, प्रत्येक को उनकी जाति के अनुसार पृथक किया जाता है, और इस तरह देखा जाता है कि स्वर्गदूतों का सार परमेश्वर की शुद्ध आज्ञाकारिता है। और इसलिए, परमेश्वर कहता है, "मानवता अपने मूल रूप में उजागर होती है" जब परमेश्वर का कार्य इस सोपान पर पहुँचेगा, परमेश्वर का समस्त कार्य पूरा हो चुका होगा। परमेश्वर अपने पुत्रों और लोगों के लिए एक आदर्श उदाहरण होने के बारे में कुछ भी कहता प्रतीत नहीं होता, इसके बजाय सभी लोगों से उनके मूल रूप प्रदर्शित करवाने पर ध्यान केंद्रित करता है। क्या इन वचनों का सही अर्थ तुम्हारी समझ में आया?

अध्याय 27

आज, परमेश्वर के वचन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गए हैं, जिसका अर्थ है कि, न्याय के युग का दूसरा भाग अपने शिखर पर पहुँच गया है। किंतु यह सर्वोच्च शिखर नहीं है। इस समय, परमेश्वर का स्वर बदल गया है—यह न तो मजाक उड़ाने वाला है और न ही विनोदपूर्ण है, और न तो ताड़ना देने वाला है, न ही डाँटने-फटकारने वाला; परमेश्वर ने अपने वचनों का स्वर हलका किया है। अब, परमेश्वर मनुष्य के साथ "भावनाओं का आदान-प्रदान" करना शुरू करता है। परमेश्वर न्याय के युग के कार्य को जारी रखने के साथ-साथ कार्य के अगले भाग का मार्ग प्रशस्त करने का काम भी कर रहा है, ताकि उसके कार्य के सभी भाग एक-दूसरे के साथ गुँथ जाएँ। एक ओर, वह "मनुष्य का ढीठपन और आदतन अपराधी होना," के बारे

में बोलता है, और दूसरी ओर, वह "मनुष्य से पृथक होने और फिर एक होने के आनंद और विषाद" के बारे में बोलता है—ये सभी लोगों के हृदयों में प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं, यहाँ तक कि ये सबसे सुन्न हृदयों को भी प्रेरित करते हैं। इन वचनों को कहने में परमेश्वर का उद्देश्य मुख्यतः सभी लोगों को बिलकुल अंत में परमेश्वर के सामने नि:शब्द गिराना है, और केवल उसके बाद ही "मैं अपने कार्यकलापों को प्रदर्शित करता हूँ, सभी को उनकी अपनी विफलता के माध्यम से मुझे जानने देता हूँ।" इस अवधि में लोगों का परमेश्वर संबंधी ज्ञान पूरी तरह से सतही रहता है, वह सच्चा ज्ञान नहीं है। यद्यपि वे जितना कठोर प्रयास कर सकते हैं, उतना करते हैं, फिर भी वे परमेश्वर की इच्छा हासिल करने में अक्षम हैं। आज, परमेश्वर के वचन अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गए हैं, किंतु लोग प्रारंभिक अवस्थाओं में रहते हैं, और इसलिए यहाँ के और अभी के कथनों में प्रवेश करने में अक्षम हैं—यह दर्शाता है कि परमेश्वर और मनुष्य उतने ही भिन्न हैं, जितने हो सकते हैं। इस तुलना के आधार पर, जब परमेश्वर के वचन समाप्ति पर पहुँच जाएँगे, तो लोग परमेश्वर के केवल निम्नतम स्तरों को ही प्राप्त करने में सक्षम होंगे। यही वह साधन है, जिसके द्वारा परमेश्वर इन लोगों में कार्य करता है, जिन्हें बड़े लाल अजगर द्वारा सर्वथा भ्रष्ट कर दिया गया है, और इष्टतम प्रभाव प्राप्त करने के लिए परमेश्वर को इसी प्रकार से कार्य करना चाहिए। कलीसिया के लोग परमेश्वर के वचनों पर थोड़ा अधिक ध्यान देते हैं, किंतु परमेश्वर का इरादा है कि वे परमेश्वर को उसके वचनों में जान सकें—क्या इसमें अंतर नहीं है? हालाँकि, जैसे कि हालात हैं, परमेश्वर मनुष्य की कमज़ोरी के बारे में अब और चिंतित नहीं है, और इस बात पर ध्यान दिए बिना कि लोग उसके वचनों को स्वीकार करने में समर्थ हैं या नहीं, बोलता चला जाता है। उसकी इच्छा के अनुसार, जब उसके वचन समाप्त होंगे, तो वह वो समय होगा, जब पृथ्वी पर उसका कार्य पूरा हो जाएगा। किंतु इस समय का यह कार्य अतीत के कार्य जैसा नहीं है। जब परमेश्वर के कथन समाप्त होंगे, तो किसी को पता नहीं चलेगा; जब परमेश्वर का कार्य समाप्ति पर आएगा, तो किसी को पता नहीं चलेगा; और जब परमेश्वर का रूप बदलेगा, तो किसी को पता नहीं चलेगा। ऐसी है परमेश्वर की बुद्धि। शैतान द्वारा लगाए जाने वाले आरोपों और विरोधी ताकतों के हस्तक्षेप से बचने के लिए, परमेश्वर बगैर किसी की जानकारी के कार्य करता है, और इस समय पृथ्वी के लोगों के बीच कोई प्रतिक्रिया नहीं है। यद्यपि परमेश्वर के रूप-परिवर्तन के संकेतों के बारे में एक बार बोला गया था, किंतु कोई भी इसे समझने में समर्थ नहीं है, क्योंकि मनुष्य भूल गया है और इस पर कोई ध्यान नहीं देता। अंदर और बाहर दोनों ओर से आक्रमणों—बाहरी दुनिया की आपदाओं और परमेश्वर के वचनों द्वारा जलाए और

शुद्ध किए जाने—की वजह से लोग परमेश्वर के लिए अब और परिश्रम करने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि वे अपने स्वयं के कार्यों में अत्यधिक व्यस्त हैं। जब सभी लोग अतीत के ज्ञान और अनुसरण से इनकार करने के बिंदु पर पहुँचेंगे, जब सभी लोग स्वयं को स्पष्ट रूप से देख लेंगे, तो वे असफल हो जाएँगे और तब उनके हृदयों में उनकी स्वयं की अस्मिता के लिए जगह नहीं रहेगी। केवल तभी लोग परमेश्वर के वचनों के लिए ईमानदारी से लालायित होंगे, केवल तभी उनके हृदयों में परमेश्वर के वचनों के लिए वास्तव में स्थान होगा, और केवल तभी परमेश्वर के वचन उनके अस्तित्व का स्रोत बन गए होंगे—इस क्षण, परमेश्वर की इच्छा पूरी होगी। किंतु आज के लोग इस बिंदु पर पहुँचने से बहुत दूर हैं। उनमें से कुछ तो मुश्किल से एक इंच चले हैं, और इसलिए परमेश्वर कहता है कि यह "आदतन अपराधी होना" है।

परमेश्वर के सभी वचनों में कई प्रश्नों का समावेश है। परमेश्वर ऐसे प्रश्न क्यों पूछता रहता है? "वे पश्चाताप करके पुनः जन्म क्यों नहीं ले सकते हैं? लोग कीचड़ से मुक्त स्थान के बजाए सदैव दलदल में रहने के इच्छुक क्यों हैं? ..." अतीत में, परमेश्वर ने सीधे चीजों को इंगित करने या प्रत्यक्ष रूप से उजागर करने के माध्यम से कार्य किया। किंतु लोगों के भारी पीड़ा झेलने के बाद, परमेश्वर ने फिर इस प्रकार से सीधे नहीं बोला। इन प्रश्नों में लोग अपनी कमियाँ भी देखते हैं और अभ्यास के मार्ग को भी समझते हैं। क्योंकि सभी लोग वही खाना पसंद करते हैं, जो आसानी से उपलब्ध होता है, इसलिए परमेश्वर उन्हें विचार करने के लिए विषय प्रदान करते हुए उनकी माँगों के अनुरूप बोलता है, ताकि वे उन पर विचार कर सकें। यह परमेश्वर के प्रश्नों के मायने का एक पहलू है। स्वाभाविक रूप से, यह उसके कुछ अन्य प्रश्नों का मायने नहीं है, उदाहरण के लिए : क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने उनके साथ बुरा व्यवहार किया हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने उन्हें ग़लत दिशा दिखाई हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मैं उन्हें नरक में ले जा रहा हूँ? इस तरह के प्रश्न लोगों के हृदयों की गहराई में दर्ज धारणाएँ दर्शाते हैं। यद्यपि वे इन धारणाओं को अपने मुँह से नहीं कहते, फिर भी उनमें से अधिकतर के हृदयों में संदेह होता है, और वे मानते हैं कि परमेश्वर के वचन उन्हें पूर्णतः अयोग्य के रूप में चित्रित करते हैं। स्वाभाविक रूप से, ऐसे लोग अपने आप को नहीं जानते, किंतु अंततः वे परमेश्वर के वचनों से हार स्वीकार करेंगे—यह अपरिहार्य है। इन प्रश्नों के बाद, परमेश्वर यह भी कहता है, "मेरा इरादा है कि मैं सारे देशों को चकनाचूर कर दूँ, मनुष्य के परिवार की तो बात ही क्या है।" जब लोग परमेश्वर के नाम को स्वीकार करेंगे, तो परिणामस्वरूप सभी राष्ट्र डगमगा जाएँगे, लोग धीरे-धीरे अपनी मानसिकता बदल देंगे, और परिवारों में पिता और पुत्र, माँ और बेटी

तथा पति और पत्नी के बीच संबंधों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इतना ही नहीं, परिवारों में लोगों के बीच रिश्ते बहुत अधिक वैमनस्यपूर्ण हो जाएँगे; वे बड़े परिवार में शामिल हो जाएँगे, और लगभग सभी परिवारों के जीवन की नियमित परंपराएँ खंड-खंड हो जाएँगी। इस वजह से, लोगों के हृदयों में "परिवार" की अवधारणा तेजी से धुँधली हो जाएगी।

परमेश्वर के आज के वचनों में, लोगों के साथ "मनोभावों के आदान-प्रदान" पर इतना कुछ क्यों समर्पित किया गया है? स्वाभाविक रूप से, यह भी एक निश्चित प्रभाव प्राप्त करने के लिए है, जिससे यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर का हृदय कैसे चिंता से भरा है। परमेश्वर कहता है, "जब मैं उदास होता हूँ, तब कौन मुझे अपने हृदय से सांत्वना दे सकता है?" परमेश्वर इन वचनों को इसलिए कहता है, क्योंकि उसका हृदय दुःख से अभिभूत है। लोग परमेश्वर की इच्छा का अच्छी तरह से ध्यान रख पाने में अक्षम हैं, और वे हमेशा स्वच्छंद रहते हैं, वे स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकते, और वे जैसा चाहते हैं, वैसा करते हैं; वे बहुत नीच हैं, और वे हमेशा स्वयं को क्षमा कर देते हैं, और परमेश्वर की इच्छा के प्रति सचेत नहीं रहते। पर चूँकि ठीक आज के दिन तक लोगों को शैतान द्वारा भ्रष्ट किया गया है, और वे स्वयं को मुक्त कराने में असमर्थ हैं, इसलिए परमेश्वर कहता है: "वे भूखे और हिंसक भेड़िए के जबड़ों से कैसे बच सकते हैं? वे उसके ख़तरों और प्रलोभनों से स्वयं को कैसे मुक्त कर सकते हैं?" लोग देह में रहते हैं, जो खूँखार भेड़िये के मुँह में रहना है। इस वजह से, और क्योंकि लोगों में कोई आत्म-जागरूकता नहीं है और वे हमेशा लंपटता में लिप्त और उसमें डूबे रहते हैं, इसलिए परमेश्वर चिंतित होने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। परमेश्वर जितना अधिक इस तरह लोगों को याद दिलाता है, उतना ही अधिक बेहतर वे अपने हृदयों में महसूस करते हैं, और उतना ही अधिक वे परमेश्वर के साथ जुड़ने के लिए तैयार होते हैं। केवल तभी मनुष्य और परमेश्वर एक-दूसरे के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से जुड़ेंगे और उनके बीच कोई अलगाव या दूरी नहीं रहेगी। आज, समस्त मानवजाति परमेश्वर के दिन के आगमन की प्रतीक्षा करती है, और इसलिए मानवजाति कभी आगे नहीं बढ़ी है। फिर भी परमेश्वर कहता है : "जब धार्मिकता का सूर्य प्रकट होगा, पूर्वदिशा रोशन हो जाएगी, और फिर वह समूचे ब्रह्माण्ड को रोशन कर देगी, प्रत्येक के पास पहुँचेगी।" दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर अपना रूप बदलेगा, तो पहले पूर्वदिशा प्रकाशित होगी और पूर्व का देश सबसे पहले उखाड़ा जाएगा, जिसके बाद शेष देशों को दक्षिण से उत्तर तक नवीनीकृत किया जाएगा। यह क्रम है, और सब-कुछ परमेश्वर के वचनों के अनुसार होगा। एक बार जब यह चरण समाप्त हो जाएगा, तो

सभी लोग देखेंगे। परमेश्वर इस क्रम के अनुसार ही कार्य करता है। जब लोग इस दिन को देखेंगे, तो उल्लसित हो जाएँगे। परमेश्वर के तात्कालिक इरादे से यह देखा जा सकता है कि वह दिन दूर नहीं है।

आज यहाँ बोले गए वचनों का दूसरा और तीसरा हिस्सा उन सभी लोगों में वेदना के आँसू उत्पन्न करते हैं, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उनके हृदय तुरंत अंधकार से ढक जाते हैं, और तब से सभी लोग परमेश्वर के हृदय की वजह से भारी दुःख से भर जाते हैं। उन्हें तब तक चैन नहीं मिलेगा, जब तक परमेश्वर पृथ्वी पर अपना कार्य पूरा नहीं कर लेता। यह सामान्य प्रवृत्ति है। "क्रोध मेरे हृदय के भीतर उठता है, दुःख की उमड़ती भावना के साथ। जब मेरी आँखें लोगों के कर्मों और उनके हर वचन और कार्य को गंदा देखती हैं, तो मेरा क्रोध भड़क उठता है, और मेरे हृदय में मानव-जगत के अन्यायों का बहुत ज्यादा बोध होता है, जो मुझे और अधिक दुःखी बना देता है; मैं मनुष्य की देह को तुरंत समाप्त कर देने के लिए आतुर हो उठता हूँ। मुझे नहीं पता कि मनुष्य देह में स्वयं को शुद्ध करने में असमर्थ क्यों है, क्यों मनुष्य देह में स्वयं से प्रेम नहीं कर सकता? क्या ऐसा हो सकता है कि देह का 'कार्य' बहुत बड़ा हो?" परमेश्वर ने आज के अपने वचनों में, बिना किसी चीज़ को रोके, अपने हृदय की समस्त चिंता मनुष्य के सामने सार्वजनिक रूप से प्रकट कर दी है। जब तीसरे स्वर्ग के स्वर्गदूत उसके लिए संगीत बजाते हैं, परमेश्वर तब भी धरती के लोगों के लिए लालायित रहता है, और इसी वजह से वह कहता है "जब स्वर्गदूत मेरी स्तुति में संगीत बजाते हैं, यह और कुछ नहीं बल्कि मनुष्य के प्रति मेरी सहानुभूति को उकसा देता है। मेरा हृदय तत्काल उदासी से भर जाता है, और मेरे लिए इस कष्टदायक भावना से स्वयं को मुक्त कर पाना असंभव हो जाता है।" इसी कारण से परमेश्वर ये वचन कहता है : "मैं मानव संसार के अन्यायों को ठीक करूँगा। मैं समूचे संसार में स्वयं अपने हाथों से अपना कार्य करूँगा, अपने लोगों को पुनः हानि पहुँचाने से शैतान को रोकूँगा, शत्रुओं को पुनः उनका मनचाहा करने से रोकूँगा। अपने सभी शत्रुओं को धराशायी करते हुए और अपने सामने उनसे उनके अपराध स्वीकार करवाते हुए, मैं पृथ्वी पर राजा बन जाऊँगा और अपना सिंहासन वहाँ ले जाऊँगा।" परमेश्वर की उदासी शैतानों के प्रति उसकी नफ़रत बढ़ाती है, और इसलिए वह जनसाधारण के सामने अग्रिम रूप से यह प्रकट करता है कि शैतानों का अंत किस तरह होगा। यह परमेश्वर का कार्य है। परमेश्वर ने हमेशा सभी लोगों के साथ फिर से एक होना और पुराने युग को समाप्त करना चाहा है। पूरे ब्रह्मांड में सभी लोग चलना शुरू कर रहे हैं—जिसका अर्थ है, ब्रह्मांड में सभी लोग परमेश्वर के मार्गदर्शन में प्रवेश कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, उनके विचार उनके सम्राटों के विरुद्ध विद्रोह करने लगते हैं। शीघ्र

ही, दुनिया के लोगों में अराजकता फैल जाएगी और सभी देशों के प्रमुख हर दिशा में भागेंगे और अंततः अपने ही लोगों द्वारा फाँसी के तख़्त तक पहुँचाए जाएँगे। यह शैतानों के राजाओं का निर्णायक अंत है; अंततः उनमें से कोई भी बच नहीं पाएगा, और उन सभी को इससे गुजरना होगा। आज, जो "चतुर" हैं, उन्होंने पीछे हटना शुरू कर दिया है। यह देखते हुए कि स्थिति आशाजनक नहीं है, वे इस अवसर का उपयोग पीछे हटने और तबाही की कठिनाइयों से बच निकलने के लिए कर रहे हैं। किंतु मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ, जो कार्य अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर करता है, वह मुख्यतः मनुष्य की ताड़ना है, अत: ये लोग संभवत: कैसे बच सकते हैं? आज पहला कदम है। एक दिन, ब्रह्मांड में सब-कुछ युद्ध के कोलाहल में गिर जाएगा; पृथ्वी के लोगों के पास फिर कभी नेता नहीं होंगे, समस्त संसार भुरभुरी रेत के ढेर की तरह होगा, जो किसी के द्वारा शासित नहीं होगा, और लोग, अन्य किसी से बेपरवाह, केवल अपने स्वयं के जीवन की परवाह करेंगे, क्योंकि हर चीज़ परमेश्वर के हाथ से नियंत्रित होती है—यही वजह है कि परमेश्वर कहता है, "समस्त मानवजाति मेरी इच्छा के अनुसार नानाविध देशों को विभाजित कर रही है।" "स्वर्गदूतों की तुरहियों की आवाज" जिसके बारे में परमेश्वर अब बोलता है, एक संकेत हैं—वे मनुष्य के लिए खतरे की घंटी बजा रहे हैं, और जब तुरहियाँ एक बार फिर बजेंगी, तो दुनिया का अंतिम दिन आ गया होगा। उस समय, परमेश्वर की समस्त ताड़ना अपनी संपूर्णता में धरती पर आ पड़ेगी; यह निष्ठुर न्याय और ताड़ना के युग का आधिकारिक आरंभ होगा। इस्राएलियों के बीच, विभिन्न परिवेशों के माध्यम से उनकी अगुआई करने के लिए अकसर परमेश्वर की आवाज़ होगी, और इसलिए भी उन्हें स्वर्गदूत दिखाई देंगे। इस्राएलियों को कुछ ही महीनों में पूर्ण कर दिया जाएगा, और चूँकि उन्हें बड़े लाल अजगर का ज़हर हटाने के कदम से नहीं गुज़रना पड़ेगा, अत: उनके लिए विभिन्न प्रकारों के मार्गदर्शन के अधीन सही मार्ग पर प्रवेश करना आसान होगा। इस्राएल में होने वाली गतिविधियों से संपूर्ण ब्रह्मांड की अवस्था देखी जा सकती है, और यह दर्शाता है कि परमेश्वर के कार्य के चरण कितने तेज़ हैं। "समय आ गया है! मैं अपने कार्य को गति दूँगा, मैं मनुष्यों के बीच राजा के रूप में शासन करूँगा!" अतीत में, परमेश्वर केवल स्वर्ग में राज्य करता था। आज, वह पृथ्वी पर राज्य करता है; परमेश्वर ने अपने सभी अधिकार वापस ले लिए हैं, और इसलिए यह भविष्यवाणी की जाती है कि समस्त मानवजाति फिर कभी सामान्य मानव-जीवन नहीं जीएगी, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी को पुनर्व्यवस्थित करेगा, और किसी व्यक्ति को इसमें हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं है। इस प्रकार, परमेश्वर प्रायः मनुष्य को याद दिलाता है कि "समय आ गया है।" जब सभी इस्राएली

अपने देश लौट जाएँगे—जिस दिन इस्राएल का देश पूरी तरह से पुनः प्राप्त हो जाएगा—उस दिन परमेश्वर का महान कार्य पूर्ण हो जाएगा। बना किसी के जाने, ब्रह्मांड भर के लोग विद्रोह करेंगे, और पूरे विश्व के देश आकाश से तारों की तरह गिरेंगे; एक पल में वे ढहकर खंडहर हो जाएँगे। उनसे निपटने के बाद परमेश्वर अपने हृदय को प्रिय लगने वाले राज्य का निर्माण करेगा।

अध्याय 28

लोगों की स्थिति ऐसी है कि जितना कम वे परमेश्वर के वचनों को समझते हैं, उतना ही अधिक संशयी वे परमेश्वर के कार्य करने के वर्तमान साधनों के बारे में होते हैं। किन्तु इसका परमेश्वर के कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है; जब उसके वचन एक निश्चित बिंदु पर पहुँचेंगे, तो लोगों के हृदय के विचार स्वाभाविक रूप से बदल जाएँगे। अपने जीवन में, हर कोई परमेश्वर के वचनों पर ध्यान केंद्रित करता है, और वह उसके वचनों के लिए लालायित होना भी शुरू कर देता है—और परमेश्वर द्वारा निरंतर अनावृत होने के कारण, वह स्वयं से घृणा करना शुरू कर देता है। मगर परमेश्वर ने निम्न कई प्रकार के वचनों को भी बोला है: "जबकि उसने मेरे सभी वचनों को समझ लिया है, तो मनुष्य की आकृति मेरी इच्छाओं के अनुरूप हो जाती है और उसकी दलीलें फलीभूत हो जाती हैं, और वे व्यर्थ या निष्फल नहीं होती हैं। मैं मानवजाति की दलीलों को आशीषित करता हूँ जो निष्कपट हैं, और दिखावटी नहीं हैं।" वास्तव में, लोग परमेश्वर के वचनों को पूरी तरह से समझने में अक्षम हैं, वे मात्र ऊपरी अर्थ को ही समझ सकते हैं। परमेश्वर इन वचनों का उपयोग केवल उनके अनुसरण हेतु एक उद्देश्य प्रदान करने के लिए, उन्हें यह महसूस करवाने के लिए करता है कि परमेश्वर चीजों को बिना सोच-विचार के नहीं करता है, बल्कि अपने कार्य के प्रति गंभीर है; केवल तभी उनके पास अनुसरण करने के लिए विश्वास होगा। सभी लोग केवल अपने वास्ते अनुनय करते हैं, परमेश्वर की इच्छा के लिए नहीं, किन्तु परमेश्वर कभी हाँ कभी ना नहीं करता है, उसके वचन हमेशा मनुष्य की प्रकृति की ओर निर्देशित रहे हैं। यद्यपि अधिकांश लोग आज अनुनय करते हैं, किन्तु वे ईमानदार नहीं हैं—यह सिर्फ एक दिखावा है। सभी लोगों की स्थिति यह है कि वे "मेरे मुँह को एक अक्षय-पात्र के रूप में लेते हैं। सभी लोग मेरे मुँह से कुछ न कुछ प्राप्त करना चाहते हैं। भले ही यह राज्य का भेद हो, या स्वर्ग का रहस्य, या आत्मिक संसार की गतिविद्या, या मानवजाति की मंजिल।" अपनी जिज्ञासा की वजह से, सभी लोग इन बातों की खोज करने की इच्छा करते हैं, और परमेश्वर के

वचनों से जीवन के प्रावधान के बारे में कुछ प्राप्त नहीं करना चाहते हैं। इसलिए परमेश्वर कहता है, "मनुष्य में अत्यन्त कमी है : उसे सिर्फ 'पोषक तत्वों' की ही आवश्यकता नहीं, बल्कि उस से कहीं ज़्यादा 'मानसिक सहारे' और 'आत्मिक आपूर्ति' की आवश्यकता है।" यह लोगों की धारणाएँ हैं जिसने आज की नकारात्मकता को जन्म दिया है, और यह उनकी भौतिक दृष्टि के बहुत "सामंती" होने की वजह से है कि वे जो कहते और करते हैं उसमें कोई जोश नहीं होता है, और वे सभी चीजों में बेपरवाह और उतावले होते हैं। क्या लोगों की स्थितियाँ यही नहीं हैं? लोग जैसे हैं वैसे ही चलते रहने के बजाय, क्या उन्हें जल्द इसे सुधारना नहीं चाहिए? भविष्य के बारे में जानने से मनुष्य को क्या लाभ है? परमेश्वर के कुछ वचनों को पढ़ने के बाद लोगों में प्रतिक्रिया क्यों होती है, जबकि उसके शेष वचन का उनपर कोई असर नहीं पड़ता? उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर कहता है, "मैं क्रम में मनुष्य की बीमारी का इलाज प्रदान करता हूँ जिस से अच्छे प्रभावों को प्राप्त किया जा सके, सभी फिर से स्वस्थ हो जायें, और मेरे इलाज की बदौलत सामान्य अवस्था में वापस लौट सकें," तो ऐसा कैसे है कि इन वचनों का लोगों पर कोई असर नहीं पड़ता है? क्या परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला सब कुछ वैसा नहीं है जो मनुष्य द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए? परमेश्वर के पास करने के लिए कार्य है—लोगों के पास चलने के लिए कोई मार्ग क्यों नहीं है? क्या यह परमेश्वर के विपरीत जाना नहीं है? वास्तव में बहुत सारे कार्य हैं जो लोगों को करने चाहिए—उदाहरण के लिए, "क्या तुम लोग सच में विशाल लाल अजगर से घृणा करते हो?" इन वचनों में वे "विशाल लाल अजगर" के बारे में कितना जानते हैं? परमेश्वर के ये वचन "मैं तुमसे यह प्रश्न बार-बार क्यों पूछता हूँ?" दर्शाते हैं कि लोग अभी भी बड़े लाल अजगर की प्रकृति से अनजान हैं, और वे गहराई में जाने में असमर्थ हैं। क्या यही वह कार्य नहीं है जो मनुष्य को करना चाहिए? यह कैसे कहा जा सकता है कि मनुष्य के पास कोई कार्य नहीं है? यदि ऐसा होता, तो परमेश्वर के देहधारण का क्या महत्व होता? क्या परमेश्वर अपने कार्य को जैसे-तैसे करने के लिए बेपरवाह और उतावला हो रहा है? क्या इस तरह से बड़े लाल अजगर को हराया जा सकता है?

परमेश्वर कहता है, "मैं पहले से ही शुरू कर चुका हूँ, और अपने ताड़ना कार्य के पहले कदम को उस बड़े लाल अजगर के निवास स्थान में आरम्भ करूँगा।" ये वचन दिव्यता के कार्य की ओर निर्देशित हैं; आज के लोग पहले से ही ताड़ना में प्रवेश कर चुके हैं, और इसलिए परमेश्वर कहता है कि यह उसके कार्य का पहला कदम है। वह लोगों से आपदाओं की नहीं, बल्कि वचनों की ताड़ना को सहन करवा रहा है।

क्योंकि, जब परमेश्वर के वचनों का स्वर बदलता है, तो लोग पूरी तरह से अज्ञानी हो जाते हैं, उसके बाद वे सभी ताड़ना में प्रवेश करते हैं। और एक बार जब उन्हें ताड़ना दे दी जाती है, तो यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसा परमेश्वर कहता है "अब से तुम लोग अपने कर्तव्यों को औपचारिक तौर पर निभा पाओगे, और सारी धरती पर औपचारिक तौर पर मेरी स्तुति करोगे, हमेशा-हमेशा के लिए!" ये परमेश्वर के कार्य के चरण हैं—ये उसकी योजना हैं। इसके अलावा, परमेश्वर के ये लोग व्यक्तिगत रूप से उन विधियों को देखेंगे जिनके द्वारा बड़े लाल अजगर को ताड़ना दी जाती है, इसलिए तबाही आधिकारिक रूप से उनके बाहर, उनके आसपास के संसार में आरंभ होती है। यह उन साधनों में से एक है जिसके द्वारा परमेश्वर लोगों को बचाता है: आंतरिक रूप से वे ताड़ना पाते हैं, और बाह्य रूप से तबाही मचती है—कहने का अर्थ है कि परमेश्वर के वचन पूर्ण होते हैं। इस प्रकार, लोग तबाही के मुकाबले ताड़ना से गुजरना पसंद करते हैं, और इसी वजह से वे बचे रहते हैं। एक ओर, यही वह बिंदु है जहाँ तक परमेश्वर का कार्य पहुँचा है; दूसरी ओर, ऐसा इसलिए है कि सभी लोग परमेश्वर के स्वभाव को जान जाएँ। इस प्रकार परमेश्वर कहता है, "जब उस बड़े लाल अजगर को ताड़ना दी जाती है, तब उस समय मेरे लोग मुझ में आनंद करते हैं। उस बड़े लाल अजगर के लोगों को उसके ही विरुद्ध उभारना और विद्रोह करवाना मेरी योजना है, और वह तरीका है जिस से मैं अपने लोगों को पूर्ण करता हूँ, और मेरे सभी लोगों के लिए जीवन में आगे बढ़ने के लिए यह एक बड़ा अवसर है।" ऐसा क्यों है कि परमेश्वर इन वचनों को बोलता है मगर फिर भी वे लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं करते?

देशों में बड़ी अराजकता है, क्योंकि परमेश्वर की छड़ी ने पृथ्वी पर अपनी भूमिका निभानी शुरू कर दी है। परमेश्वर का कार्य पृथ्वी की स्थिति में देखा जा सकता है। जब परमेश्वर कहता है "पानी गरजेंगे, पहाड़ गिर जायेंगे, बड़ी-बड़ी नदियाँ विभाजित हो जायेंगी," तो यह पृथ्वी पर छड़ी का आरंभिक कार्य है, जिसके परिणामस्वरूप "पृथ्वी पर सारे घर-परिवार अलग-अलग बिखेर दिए जाएँगे, और पृथ्वी पर सारे राष्ट्र अलग-अलग कर दिए जाएँगे; पति और पत्नी के बीच पुनर्मिलन के वे दिन चले जाएँगे, माँ और बेटा दोबारा आपस में नहीं मिलेंगे, और न ही पिता और बेटी फिर कभी आपस में मिल पाएँगे। जो कुछ भी पृथ्वी पर पाया जाता है वह मेरे द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा।" पृथ्वी पर परिवारों की सामान्य स्थिति ऐसी होगी। स्वाभाविक रूप से, संभवत: सभी लोगों की स्थिति ऐसी नहीं हो सकती है, किन्तु उनमें से अधिकांश की स्थिति ऐसी ही है। दूसरी ओर, यह भविष्य में इस वर्ग के लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली परिस्थितियों

का उल्लेख करता है। यह भविष्यवाणी करता है कि, एक बार जब वे वचनों की ताड़ना से गुज़र चुके होंगे और अविश्वासियों पर तबाही बरपाई जा चुकी होगी, तो पृथ्वी पर लोगों के बीच पारिवारिक संबंध का अस्तित्व नहीं रह जाएगा; वे सब सीनिम के लोग होंगे, और परमेश्वर के राज्य में सभी निष्ठावान होंगे। इस प्रकार, पति और पत्नी के बीच पुनर्मिलन के वे दिन चले जाएँगे, माँ और बेटा दोबारा आपस में नहीं मिलेंगे, और न ही पिता और बेटी फिर कभी आपस में मिल पाएँगे। और इसलिए, धरती के लोगों के परिवारों को अलग-थलग कर दिया जाएगा, टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा, और यह परमेश्वर द्वारा मनुष्य में किया जाने वाला अंतिम कार्य होगा। और क्योंकि परमेश्वर इस कार्य को पूरे विश्व में फैलाएगा, इसलिए वह लोगों के लिए "भावना" शब्द को स्पष्ट करने के लिए इस अवसर का उपयोग करता है, इस प्रकार उन्हें यह देखने देता है कि परमेश्वर की इच्छा सभी लोगों के परिवारों को अलग-थलग करना है, और यह दिखाना है कि परमेश्वर मानवजाति के बीच सभी "पारिवारिक विवादों" को हल करने के लिए ताड़ना का उपयोग करता है। यदि ऐसा न हो, तो पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य के अंतिम हिस्से को पूरा करने का कोई मार्ग नहीं होगा। परमेश्वर के वचनों का अंतिम भाग मानवजाति की सबसे बड़ी कमजोरी को प्रकट करता है—वे सभी भावनाओं में जीते हैं—और इसलिए परमेश्वर उनमें से किसी एक को भी बख़्शता नहीं है, और संपूर्ण मानवजाति के हृदयों में छिपे रहस्यों को उजागर करता है। लोगों के लिए स्वयं को भावनाओं से पृथक करना इतना कठिन क्यों है? क्या ऐसा करना अंतरात्मा के मानकों के परे जाना है? क्या अंतरात्मा परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सकती है? क्या भावना विपत्ति में लोगों की सहायता कर सकती है? परमेश्वर की नज़रों में, भावना उसका शत्रु है—क्या यह परमेश्वर के वचनों में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है?

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसा परमेश्वर कहता है" यह वाक्यांश नहीं है।

अध्याय 29

लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्य में से कुछ परमेश्वर के प्रत्यक्ष निर्देश के साथ किया जाता है, किंतु उसका कुछ हिस्सा ऐसा भी होता है, जिसके लिए परमेश्वर विशिष्ट निर्देश नहीं देता, जो पर्याप्त रूप से यह दर्शाता है कि परमेश्वर द्वारा जो किया जाता है, वह आज भी पूरी तरह से प्रकट किया जाना बाकी है—जिसका तात्पर्य है कि, बहुत-कुछ छिपा हुआ है और अभी सार्वजनिक होना बाकी है। हालाँकि कुछ चीजों

को सार्वजनिक किए जाने की आवश्यकता है, जबकि अन्य चीजें लोगों को चकित और भ्रमित छोड़ने के लिए आवश्यक हैं; यही है, जो परमेश्वर के कार्य से अपेक्षित है। उदाहरण के लिए, स्वर्ग से परमेश्वर का मनुष्यों के बीच आगमन—वह कैसे पहुँचा, वह किस क्षण पहुँचा, या आकाश और पृथ्वी और सभी चीजें परिवर्तन से गुजरीं या नहीं—इन बातों से लोगों का भ्रमित होना अपेक्षित है। यह वास्तविक परिस्थितियों पर भी आधारित है, क्योंकि मानव-देह स्वयं सीधे आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने में असमर्थ है। इसलिए, भले ही परमेश्वर स्पष्ट रूप से कहता है कि कैसे वह स्वर्ग से पृथ्वी तक आया, या जब वह कहता है, "जिस दिन सभी चीज़ें पुनर्जीवित हुईं, मैं मनुष्यों के बीच आया, और मैंने उनके साथ अद्‌भुत दिन और रातें बिताई हैं," तो ये वचन ऐसे हैं मानो कोई किसी पेड़ के तने से बात कर रहा हो—थोड़ी-सी भी प्रतिक्रिया नहीं होती, क्योंकि लोग परमेश्वर के कार्य के कदमों से अनजान हैं। यहाँ तक कि जब वे वास्तव में जानते भी हैं, तब भी वे मानते हैं कि परमेश्वर एक परी की तरह उड़कर स्वर्ग से नीचे पृथ्वी पर आया और मनुष्यों के बीच उसने दोबारा जन्म लिया। मनुष्य के विचारों से यही प्राप्त होता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य का सार ऐसा है कि वह परमेश्वर के सार को समझने में असमर्थ है, और आध्यात्मिक क्षेत्र की वास्तविकता को समझने में भी असमर्थ है। केवल अपने सार से लोग दूसरों के लिए अनुकरणीय आदर्श के रूप में कार्य करने में अक्षम होंगे, क्योंकि लोग अंतर्निहित रूप से समान हैं, और भिन्न नहीं हैं। इस प्रकार, यह कहना कि लोग दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करें या एक अनुकरणीय आदर्श का काम करें, बुलबुला बन जाता है, वह पानी से उठती भाप बन जाता है। जबकि जब परमेश्वर कहता है, "वह मेरी सत्ता और स्वरूप को थोड़ा-सा देखता है," तो इन वचनों को मात्र उस कार्य की अभिव्यक्ति पर संबोधित किया जाता है जिसे परमेश्वर देह में करता है; दूसरे शब्दों में, ये परमेश्वर के वास्तविक चेहरे—दिव्यता—पर निर्देशित होते हैं, जो मुख्य रूप से उसके दिव्य स्वभाव को संदर्भित करता है। कहने का तात्पर्य है कि, लोगों को ऐसी चीजें समझने के लिए कहा जाता है, जैसे कि परमेश्वर इस तरह से कार्य क्यों करता है, परमेश्वर के वचनों द्वारा कौन-सी चीजें पूरी की जानी हैं, परमेश्वर पृथ्वी पर क्या हासिल करना चाहता है, वह मनुष्यों के बीच क्या प्राप्त करना चाहता है, वे विधियाँ जिनके द्वारा परमेश्वर बोलता है, और मनुष्य के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण क्या है। यह कहा जा सकता है कि मनुष्य में घमंड करने योग्य कुछ नहीं है—अर्थात् उसमें ऐसा कुछ नहीं है जो दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण प्रस्तत कर सके।

यह ठीक देहधारी परमेश्वर की सामान्यता की वजह से, और स्वर्ग के परमेश्वर और देहधारी परमेश्वर,

जो स्वर्ग के परमेश्वर से जन्मा प्रतीत नहीं होता, के बीच असमानता की वजह से है, कि परमेश्वर कहता है, "मैंने मनुष्यों के बीच बहुत वर्ष बिताए हैं, फिर भी वह हमेशा अनभिज्ञ रहा है, और उसने मुझे कभी नहीं जाना है।" परमेश्वर यह भी कहता है, "जब मेरे कदम ब्रह्मांड भर में और पृथ्वी के छोरों तक पड़ेंगे, तब मनुष्य खुद पर चिंतन करना शुरू करेगा, और सभी लोग मेरे पास आएँगे और मेरे सामने दंडवत करेंगे तथा मेरी आराधना करेंगे। यह मेरे महिमा-मंडन का, मेरी वापसी का, और साथ ही मेरे प्रस्थान का भी दिन होगा।" केवल यही वह दिन है, जब परमेश्वर का असली चेहरा मनुष्य को दिखाया जाता है। फिर भी परमेश्वर इसके परिणामस्वरूप अपने कार्य में विलंब नहीं करता, और वह बस उस कार्य को करता रहता है, जो किया जाना चाहिए। जब वह न्याय करता है, तो वह देहधारी परमेश्वर के प्रति लोगों के रवैये के अनुसार उन्हें दंड देता है। यह इस अवधि के दौरान परमेश्वर के कथनों के मुख्य सूत्रों में से एक है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर कहता है, "मैंने पूरे ब्रह्मांड में अपनी प्रबंधन योजना के अंतिम अंश की औपचारिक शुरुआत कर दी है। इस क्षण से आगे, जो कोई भी सावधान नहीं हैं, वे निर्मम ताड़ना में गोता लगाने के भागी होंगे, और यह किसी भी क्षण हो सकता है।" यह परमेश्वर की योजना की सामग्री है, और यह न तो विलक्षण है, न ही अजीब है, बल्कि सब उसके कार्य के कदमों का भाग है। इस बीच विदेश में परमेश्वर के लोगों और पुत्रों का परमेश्वर द्वारा उस सबके आधार पर न्याय किया जाएगा, जो वे कलीसियाओं में करते हैं, और इसलिए परमेश्वर कहता है, "जब मैं कार्य करता हूँ, तो सभी स्वर्गदूत निर्णायक युद्ध में मेरे साथ हो लेते हैं और अंतिम चरण में मेरी इच्छाएँ पूरी करने का दृढ़ निश्चय करते हैं, ताकि पृथ्वी के लोग मेरे सामने स्वर्गदूतों के समान समर्पण कर दें, और मेरा विरोध करने की इच्छा न करें, और ऐसा कुछ न करें जो मेरे विरुद्ध विद्रोह करता हो। समस्त संसार में ये मेरे कार्य की गतिशीलताएँ हैं।" परमेश्वर पूरी पृथ्वी पर जो कार्य करता है, उसमें यही अंतर है; वह इस बात के अनुसार विभिन्न उपाय काम में लेता है कि वे किस पर निर्देशित हैं। आज कलीसियाओं के सभी लोगों के पास लालसा से भरा हृदय है और उन्होंने परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना शुरू कर दिया है—जो यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि परमेश्वर का कार्य अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रहा है। आकाश से नीचे की ओर देखना एक बार और कुम्हलाई हुई शाखाओं और झड़ती हुई पत्तियों के उदास दृश्यों को, शरद ऋतु की हवा के साथ उड़कर आने वाली मिट्टी के अंबार को देखने के समान है। ऐसा महसूस होता है, मानो मनुष्यों के बीच एक सर्वनाश होने ही वाला है, जैसे कि सभी कुछ उजाड़ में बदलने वाला हो। हो सकता है कि यह आत्मा की

संवेदनशीलता के कारण हो, हृदय में हमेशा दुःख का एक भाव रहता है, फिर भी जो एक शांतिपूर्ण आराम लिए होता है, हालाँकि उसमें कुछ दु:ख मिला होता है। यह परमेश्वर के वचनों का चित्रण हो सकता है कि "मनुष्य जाग रहा है, पृथ्वी पर हर चीज़ व्यवस्थित है, और पृथ्वी के बचे रहने के दिन अब और नहीं रहे हैं, क्योंकि मैं पहुँच गया हूँ!" इन वचनों को सुनने के बाद लोग कुछ नकारात्मक हो सकते हैं, या वे परमेश्वर के कार्य से थोड़ा निराश हो सकते हैं, या वे अपनी आत्मा की भावना पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। किंतु पृथ्वी पर अपने कार्य के पूरा होने से पहले, परमेश्वर संभवतः इतना मूर्ख नहीं हो सकता था कि लोगों को ऐसा भ्रम दे। यदि तुममें वास्तव में ऐसी भावनाएँ हैं, तो यह दर्शाता है कि तुम अपनी भावनाओं पर बहुत अधिक ध्यान देते हो, कि तुम ऐसे व्यक्ति हो जो वह करता है जो उसे अच्छा लगता है और जो परमेश्वर से प्रेम नहीं करता; यह दर्शाता है कि ऐसे लोग अलौकिक पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, और परमेश्वर पर बिलकुल भी ध्यान नहीं देते। परमेश्वर के हाथ की वजह से, लोग चाहे कैसे भी दूर हटने का प्रयास क्यों न करें, वे इस परिस्थिति से बच निकलने में अक्षम हैं। परमेश्वर के हाथ से कौन बच सकता है? तुम्हारी हैसियत और परिस्थितियों को परमेश्वर द्वारा कब व्यवस्थित नहीं किया गया है? चाहे तुम पीड़ित हो या धन्य, तुम परमेश्वर के हाथ से बचकर कैसे निकल सकते हो? यह कोई मानवीय मामला नहीं है, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर की आवश्यकता से संबंधित है—इसके परिणामस्वरूप कौन आज्ञापालन न करने में सक्षम होगा?

"अन्यजातियों के बीच अपने कार्य को फैलाने के लिए मैं ताड़ना का उपयोग करूँगा, जिसका अर्थ है कि मैं उन सभी के विरूद्ध बल का उपयोग करूँगा, जो अन्यजातियाँ हैं। स्वाभाविक रूप से, यह कार्य उसी समय किया जाएगा, जिस समय मेरा कार्य चुने हुओं के बीच किया जाएगा।" इन वचनों के कथन के साथ परमेश्वर इस कार्य को पूरे विश्व में आरंभ करता है। यह परमेश्वर के कार्य का एक कदम है, जो पहले ही इस बिंदु तक आगे बढ़ चुका है; कोई भी चीजों को पलट नहीं सकता। तबाही मानवजाति के एक हिस्से को सँभाल लेगी, उन्हें दुनिया के साथ नष्ट कर देगी। जब ब्रह्मांड को आधिकारिक रूप से ताड़ना दी जाती है, तो परमेश्वर आधिकारिक रूप से सभी लोगों के सामने प्रकट होता है। और उसके प्रकटन के कारण लोगों को ताड़ना दी जाती है। इसके अलावा, परमेश्वर ने यह भी कहा है, "जब मैं औपचारिक रूप से पुस्तक खोलता हूँ, तो ऐसा तब होता है जब संपूर्ण ब्रह्मांड में लोगों को ताड़ना दी जाती है, जब दुनिया भर के लोगों को परीक्षणों के अधीन किया जाता है।" इससे यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि सात मुहरों

की सामग्री ताड़ना की सामग्री है, जिसका अर्थ है कि, सात मुहरों के भीतर तबाही है। इस प्रकार, आज, सात मुहरें अभी खोली जानी बाकी हैं; यहाँ उल्लिखित "परीक्षण" मनुष्य द्वारा भोगी जाने वाली ताड़ना हैं, और इस ताड़ना के बीच उन लोगों का एक समूह प्राप्त किया जाएगा, जो आधिकारिक रूप से परमेश्वर द्वारा जारी किया गया "प्रमाणपत्र" स्वीकार करते हैं, और इस प्रकार वे परमेश्वर के राज्य के लोग होंगे। ये परमेश्वर के पुत्रों और लोगों के उद्गम हैं, और आज वे अभी तय किए जाने बाकी हैं, और केवल भविष्य के अनुभवों के लिए नींव डाल रहे हैं। अगर किसी का सच्चा जीवन है, तो वे परीक्षण के दौरान अडिग रह सकेंगे, और यदि वे जीवन से रहित हैं, तो यह पर्याप्त रूप से साबित करता है कि परमेश्वर के कार्य का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, कि वे अपने आप को परेशानी में डालते हैं, और परमेश्वर के वचनों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते। चूँकि यह अंत के दिनों का कार्य है, जो कि कार्य करते रहने के बजाय इस युग को समाप्त करने के लिए है, इसलिए परमेश्वर कहता है, "दूसरे शब्दों में, यही वह जीवन है, जिसे मनुष्य ने सृष्टि की उत्पत्ति के समय से आज के दिन तक कभी अनुभव नहीं किया है, और इसलिए मैं कहता हूँ कि मैंने वह कार्य किया है, जो पहले कभी नहीं किया गया है," और वह यह भी कहता है, "चूँकि मेरा दिन समस्त मानवजाति के नज़दीक आ रहा है, चूँकि यह दूर प्रतीत नहीं होता, परंतु यह मनुष्य की आँखों के बिल्कुल सामने ही है।" अतीत के दिनों में परमेश्वर ने कई शहरों को व्यक्तिगत रूप से नष्ट किया था, फिर भी उनमें से किसी को भी उस तरह नहीं ढहाया गया था, जैसा कि अंतिम दृष्टांत में होगा। यद्यपि अतीत में परमेश्वर ने सदोम को नष्ट किया था, किंतु आज के सदोम के साथ उस तरह से व्यवहार नहीं किया जाना है, जैसा कि अतीत में किया गया था—उसे सीधे नष्ट नहीं किया जाना है, बल्कि पहले उसे जीता जाना है और फिर उसका न्याय किया जाना है, और अंततः, अनंत काल तक दंड का भागी बनाया जाना है। ये कार्य के कदम हैं, और अंत में, आज के सदोम को उसी क्रम में नष्ट किया जाएगा, जिस क्रम में दुनिया का पिछला विनाश हुआ था—यह परमेश्वर की योजना है। जिस दिन परमेश्वर प्रकट होता है, वह आज के सदोम को आधिकारिक रूप से दंडित किए जाने का दिन है, और उसके द्वारा अपना प्रकटन उसे बचाने के लिए नहीं है। इसलिए, परमेश्वर कहता है, "मैं पवित्र राज्य के लिए प्रकट होता हूँ, और अपने आपको मलिनता की भूमि से छिपा लेता हूँ।" चूँकि आज का सदोम अशुद्ध है, इसलिए परमेश्वर वास्तव में उसके सामने प्रकट नहीं होता, बल्कि इस साधन का उपयोग उसे ताड़ना देने के लिए करता है—क्या तुमने इसे स्पष्ट रूप से नहीं देखा है? यह कहा जा सकता है कि पृथ्वी पर कोई भी परमेश्वर के सच्चे चेहरे को देखने

में सक्षम नहीं है। परमेश्वर मनुष्य के सामने कभी प्रकट नहीं हुआ है, और कोई नहीं जानता कि परमेश्वर स्वर्ग के किस स्तर पर है? यही है, जिसने आज के लोगों को इस परिस्थिति में रहने दिया है। यदि उन्हें परमेश्वर का चेहरा देखना होता, तो यह निश्चित रूप से वह समय होता जब उनका अंत प्रकट किया जाता, वह समय होता जब प्रत्येक को प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाता। आज दिव्यता के भीतर के वचन लोगों को सीधे दिखाए जाते हैं, जो भविष्यवाणी करता है कि मनुष्यों के अंत के दिन आ चुके हैं और वे अधिक समय तक नहीं रहेंगे। यह उस समय लोगों को परीक्षणों के अधीन किए जाने के चिह्नों में से एक है, जब परमेश्वर सभी लोगों के सामने प्रकट होता है। इस प्रकार, यद्यपि लोग परमेश्वर के वचनों का आनंद उठाते हैं, फिर भी उनमें हमेशा एक अपशकुन की भावना रहती है, मानो कोई बड़ी आपदा उन पर पड़ने ही वाली हो। आज के लोग बर्फ से जमी भूमि में गौरैया की तरह हैं, जिनसे मृत्यु मानो जबरदस्ती कर्ज वसूल रही हो और उनके जीवित रहने के लिए कोई रास्ता न छोड़ती हो। मनुष्य पर बकाया मृत्यु के कर्ज के कारण सभी लोग महसूस करते हैं कि उनके अंत के दिन आ चुके हैं। ब्रह्मांड भर के लोगों के हृदयों में यही हो रहा है, और यद्यपि यह उनके चेहरों पर प्रकट नहीं होता, किंतु उनके हृदयों में जो है, वह मेरी नजरों से छिपने में अक्षम है—यह मनुष्य की वास्तविकता है। शायद, बहुत-से वचनों को पूर्णत: सही ढंग से इस्तेमाल न किया गया हो—किंतु ये वचन ही हैं, जो समस्या को दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं। परमेश्वर के मुँह से बोले गए वचनों में से हर एक को पूरा किया जाएगा, चाहे वे अतीत के हों या वर्तमान के; वे तथ्यों को लोगों के सामने प्रकट करवाएँगे—जो उनकी आँखों के लिए एक भोज होगा, उस समय वे चकरा जाएँगे और भ्रमित हो जाएँगे। क्या तुमने अब तक स्पष्ट रूप से नहीं देखा है कि आज कौन-सा युग है?

अध्याय 30

कुछ लोगों को परमेश्वर के वचनों का थोड़ा-सा परिज्ञान हो सकता है, किंतु इनमें से किसी को भी अपनी भावनाओं पर भरोसा नहीं होता है; वे नकारात्मकता में पड़ने से बहुत डरते हैं। इस प्रकार, उन्होंने सदैव खुशी और दुःख के बीच अदला-बदली की है। यह कहना उचित है कि सभी लोगों के जीवन दुःख से भरे हुए हैं; इसे एक कदम आगे ले जाते हुए, सभी लोगों के दैनिक जीवन में शोधन होता है, फिर भी मैं कह सकता हूँ कि किसी को भी प्रत्येक दिन अपनी आत्मा में मुक्ति नहीं मिलती है और यह ऐसा है मानो तीन बड़े पहाड़ उनके सिरों पर बोझ की तरह रखे हों। उनमें से एक का भी जीवन दिन भर में खुश

और प्रसन्न नहीं होता है—और यहाँ तक कि जब वे थोड़ा सा खुश भी होते हैं, तो वे केवल दिखावा बनाए रखने का प्रयास कर रहे होते हैं। अपने हृदयों में, लोगों में सदैव किसी न किसी चीज की अपूर्णता का भाव रहता है। इस प्रकार, वे अपने हृदय में दृढ़ नहीं हैं; इस तरह जीते हुए, चीजें रिक्त और अनुचित महसूस होती हैं और जब परमेश्वर में विश्वास की बात आती है, तो वे व्यस्त होते हैं और उनके पास समय कम होता है अन्यथा उनके पास परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने का समय नहीं होता है या वे नहीं जानते कि परमेश्वर के वचनों को कैसे सही ढंग से खाएँ और पिएँ। उनमें से एक के भी हृदय में शांति, सुस्पष्टता और दृढ़ता नहीं होती। यह ऐसा है मानो वे सदैव एक घटाटोप आकाश के नीचे रहते हों, मानो वे बिना ऑक्सीजन वाले स्थान में रहते हों, इसके परिणामस्वरूप उनके जीवन में भ्रम पैदा हो गया है। परमेश्वर लोगों की निर्बलताओं के बारे में सीधे बात करता है, वह सदैव उनके कमजोर हिस्से पर प्रहार करता है—क्या तुम लोगों ने उस स्वर को स्पष्ट रूप से महसूस नहीं किया है, जिसे उसने सब जगह बोला है? परमेश्वर ने कभी भी लोगों को पश्चाताप करने का अवसर नहीं दिया है और वह सभी लोगों के लिए "चाँद" पर बिना ऑक्सीजन के जीवित रहने की व्यवस्था करता है। आरंभ से आज तक, बाहर से परमेश्वर के वचनों ने मनुष्य की प्रकृति को उजागर किया है, तब भी कोई इन वचनों के सार को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य के सार को उजागर करके, लोग स्वयं को जान जाते हैं और इस प्रकार परमेश्वर को जान जाते हैं, तब भी यह सार रूप में मार्ग नहीं है। परमेश्वर के वचनों का स्वर और उनकी गहराई परमेश्वर और मनुष्य के बीच स्पष्ट अंतर दर्शाते हैं। अपनी भावनाओं में, लोगों को अनजाने ही विश्वास हो जाता है कि परमेश्वर अगम्य और अलभ्य है; परमेश्वर हर चीज को प्रकट कर देता है और ऐसा लगता है कि कोई भी परमेश्वर और मनुष्य के रिश्ते को वहाँ तक लौटाने में सक्षम नहीं है, जहाँ वह हुआ करता था। यह देखना कठिन नहीं है कि परमेश्वर के सभी कथनों का उद्देश्य वचनों का उपयोग करके सभी लोगों को "गिराना" है, फलस्वरूप अपना कार्य निष्पादित करना है। ये परमेश्वर के कार्य के कदम हैं। फिर भी यह ऐसा नहीं है, जैसा लोग अपने मन में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि परमेश्वर का कार्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रहा है, कि यह बड़े लाल अजगर पर विजय प्राप्त करने के अपने सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव के समीप पहुँच रहा है, कहने का अर्थ है कि कलीसियाओं को पनपा रहा है और किसी को भी देहधारी परमेश्वर के बारे में धारणाएँ नहीं हैं, या सभी लोग परमेश्वर को जान रहे हैं। फिर भी आओ पढ़ें कि परमेश्वर क्या कहता है: "लोगों के मन में, परमेश्वर परमेश्वर है और उससे आसानी से नहीं जुड़ सकते,

जबकि मनुष्य मनुष्य है और उसे आसानी से स्वच्छंद नहीं होना चाहिए ... और इसके परिणामस्वरूप, वे मेरे सामने सदैव विनम्र और धैर्यवान रहते हैं; वे मेरे अनुकूल होने में अक्षम हैं क्योंकि उनमें बहुत अधिक धारणाएँ हैं।" इससे यह देखा जा सकता है कि इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर क्या कहता है या मनुष्य क्या करता है, लोग परमेश्वर को जानने में पूरी तरह से अक्षम हैं; उनके सार द्वारा निभाई गई भूमिका की वजह से, कुछ भी हो, आखिरकार वे परमेश्वर के बारे में जानने में अक्षम हैं। इस प्रकार, परमेश्वर का कार्य तब समाप्त हो जाएगा, जब लोग स्वयं को नरक के पुत्र के रूप में देखेंगे। परमेश्वर को अपने समस्त प्रबंधन का समापन करने के लिए अपने कोप को लोगों पर निकालने या उनकी सीधे निंदा करने या अंततः उन्हें मृत्यु दंड देने की आवश्यकता नहीं है। वह अपनी गति से केवल कम बातें करता है, मानो उसके कार्य की पूर्णता आकस्मिक हो, कोई ऐसी चीज जो उसके खाली समय में जरा सा भी प्रयास किए बिना निष्पादित हो जाती हो। बाहर से, परमेश्वर के कार्य के लिए कुछ अत्यावश्यकता प्रतीत होती है—फिर भी परमेश्वर ने कुछ भी नहीं किया है, वह बोलने के अलावा और कुछ नहीं करता है। कलीसियाओं के बीच कार्य उस बड़े पैमाने का नहीं है, जैसा अतीत में होता था : परमेश्वर लोगों को जोड़ता या निष्कासित करता या उन्हें उघाड़ता नहीं है—ऐसा कार्य बहुत तुच्छ है। ऐसा लगता है कि ऐसा कार्य करने का परमेश्वर का मन नहीं है। उसे जो कहना चाहिए उसमें से वह बस थोड़ा सा कहता है, जिसके बाद वह मुड़ता है और बिना निशान छोड़े गायब हो जाता है—जो कि स्वाभाविक रूप से उसके कथन पूरे होने का दृश्य है। और जब यह क्षण आएगा, तब सभी लोग अपनी नींद से जाग जाएँगे। मानव जाति हजारों वर्षों से सुस्ती भरी नींद में है, वह सर्वत्र असामान्य गहन नींद में है। और कई वर्षों से, लोग अपने सपनों में इधर-उधर दौड़ रहे हैं और अपने हृदय में अन्याय के बारे में बोलने में अक्षम वे यहाँ तक कि अपने सपनों में चिल्लाते भी हैं। इस प्रकार, वे "अपने हृदयों में थोड़ा अवसाद महसूस करते हैं"—किंतु जब वे जागते हैं, तो वे सही तथ्यों को खोज लेंगे और चिल्लाएँगे: "तो यह चल रहा है!" इसलिए ऐसा कहा जाता है कि "आज, अधिकांश लोग अभी भी घोर निद्रा में हैं। केवल जब राज्य-गान बजता है तभी वे अपनी उनींदी आँखें खोलते हैं और अपने हृदयों में थोड़ा अवसाद महसूस करते हैं।"

किसी की भी आत्मा कभी भी मुक्त नहीं हुई है, कभी भी किसी की आत्मा चिंतामुक्त और सुखी नहीं रही है। जब परमेश्वर का कार्य पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, तो लोगों की आत्माएँ मुक्त हो जाएँगी क्योंकि हर एक को प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया गया होगा और इस प्रकार वे सभी अपने-अपने हृदय

में स्थिर रहेंगे। यह ऐसा है मानो लोग दूर-दराज इलाकों की यात्रा पर हों और जब वे घर वापस आते हैं तो उनका हृदय स्थिर हो जाता है। घर पहुँचने पर लोग अब और महसूस नहीं करेंगे कि दुनिया रिक्त और अनुचित है, बल्कि अपने घरों में शांति से रहेंगे। समस्त मानव जाति के बीच इस तरह की परिस्थितियाँ होंगी। इस प्रकार, परमेश्वर कहता है कि लोग "शैतान के बंधन से स्वयं को मुक्त कराने में कभी भी समर्थ नहीं हुए हैं।" देह में रहते हुए कोई भी स्वयं को इस अवस्था से निकालने में समर्थ नहीं है। परमेश्वर मनुष्य की विभिन्न वास्तविक अवस्थाओं के बारे में क्या कहता है, उसे कुछ समय के लिए एक तरफ़ रख देते हैं और उन रहस्यों के बारे में बात करते हैं, जिन्हें परमेश्वर को मनुष्य के लिए अभी प्रकट करना है। "असंख्य बार लोगों ने मुझे उपहासपूर्ण नज़रों से देखा है, मानो मेरा शरीर काँटों से आच्छादित हो और उनके लिए घृणास्पद हो और इस प्रकार लोग मुझसे घृणा करते हैं और मानते हैं कि मैं महत्वहीन हूँ।" इसके विपरीत, सार रूप में, परमेश्वर के वचनों में मनुष्य के असली रंग प्रकट होते हैं : मनुष्य पंखों से ढका है, उसके बारे में कुछ भी सुखदायक नहीं है और इस तरह मनुष्य के लिए परमेश्वर की घृणा बढ़ जाती है क्योंकि मनुष्य काँटों-से-ढकी हुई सेई के सिवाय कुछ नहीं है जिसके बारे में कुछ भी सराहनीय नहीं है। ऊपर-ऊपर से, ये वचन परमेश्वर के प्रति मनुष्य की धारणाओं का वर्णन करते प्रतीत होते हैं—किंतु वास्तविकता में, परमेश्वर मनुष्य की छवि के आधार पर उसकी एक तस्वीर चित्रित कर रहा है। ये वचन परमेश्वर द्वारा मनुष्य का चित्रांकन हैं और यह ऐसा है मानो परमेश्वर ने मनुष्य की छवि पर चिपकाने वाला पदार्थ छिड़क दिया हो; इस प्रकार, पूरे जगत में मनुष्य की छवि बहुत ऊँची हो जाती है और यहाँ तक कि लोगों को विस्मित भी करती है। जब से उसने बोलना शुरू किया, तब से परमेश्वर मनुष्य के साथ एक बड़ी लड़ाई के लिए अपनी सेना को स्थित कर रहा है। वह विश्वविद्यालय में बीजगणित के एक प्रोफेसर की तरह है, जो मनुष्य के लिए तथ्यों का खाका खींचता है और जो तथ्यों द्वारा साबित हो जाता है उसे सूचीबद्ध करता है—सबूत और जवाबी-सबूत—सभी लोगों को पूरी तरह आश्वस्त कर देते हैं। यह परमेश्वर के सभी वचनों का उद्देश्य है और यह इसी कारण है कि परमेश्वर इन रहस्यपूर्ण वचनों को मनुष्य पर अकस्मात उछालता है : "कुल मिलाकर मनुष्य के हृदय में मेरा बिल्कुल कोई मूल्य नहीं है, मैं एक अनावश्यक घरेलू सामान हूँ।" इन वचनों को पढ़ने के बाद, लोग अपने हृदय में प्रार्थना करने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते हैं और वे परमेश्वर के प्रति अपने आभार को जान जाते हैं और इस वजह से वे स्वयं अपनी निंदा करते हैं, उन्हें विश्वास हो जाता है कि मनुष्य को मर जाना चाहिए और उसका रत्ती भर भी मूल्य नहीं है। परमेश्वर कहता

है, "इसी वजह से मैं स्वयं को उस स्थिति में पाता हूँ जिसमें मैं आज हूँ", जो आज की वास्तविक परिस्थितियों से जुड़ने पर, लोगों को स्वयं की निंदा करने का कारण बनते हैं। क्या यह सत्य नहीं है? यदि तुम्हें तुम्हारा ज्ञान करवा दिया गया होता, तो क्या "मुझे सच में मर जाना चाहिए!" जैसे वचन तुम्हारे मुँह से आ सकते थे? मनुष्य की सच्ची परिस्थितियाँ ऐसी ही हैं और यह इस लायक नहीं है कि इसके बारे में बहुत अधिक सोचा जाए—यह केवल एक उपयुक्त उदाहरण है।

एक समझ से, जब परमेश्वर मनुष्य की माफ़ी और सहिष्णुता के लिए प्रार्थना करता है, तो लोग देखते हैं कि परमेश्वर उनका मज़ाक उड़ा रहा है और दूसरी समझ से, वे स्वयं के विद्रोह को भी देखते हैं—वे केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह स्वयं मनुष्य के लिए अत्यधिक परिश्रम करे। इसके अलावा, लोगों की धारणाओं के बारे में बोलते हुए, परमेश्वर कहता है कि वह मनुष्य के जीवन दर्शन या मनुष्य की भाषा में कुशल नहीं हैं। अत: एक प्रकार से, इस कारण लोग इन वचनों की तुलना व्यावहारिक परमेश्वर से करते हैं और दूसरी तरह से वे उसके वचनों में परमेश्वर का अभिप्राय देखते हैं—परमेश्वर उनका मज़ाक उड़ा रहा है क्योंकि वे समझते हैं कि परमेश्वर मनुष्य का असली चेहरा प्रकट कर रहा है और वह लोगों को परमेश्वर की वास्तविक परिस्थितियों के बारे में नहीं बता रहा है। परमेश्वर के वचनों का अंतर्निहित अर्थ ताना, कटाक्ष, मज़ाक और मनुष्य के प्रति घृणा से भरा हुआ है। ऐसा लगता है मानो वह जो कुछ भी करता है उसमें, मनुष्य व्यवस्था को विकृत कर रहा है और रिश्वत ले रहा है; लोग वेश्या हैं और जब परमेश्वर बोलने के लिए अपना मुँह खोलता है, तो वे आतंक से डर जाते हैं, अंदर तक भयभीत हो जाते हैं कि उनके बारे में सच्चाई पूरी तरह से उजागर हो जाएगी और वे किसी का भी सामना करने में शर्मिंदगी महसूस करेंगे। किंतु तथ्य तो तथ्य हैं। परमेश्वर मनुष्य के "पश्चाताप" की वजह से अपने कथनों को नहीं रोकता है; लोग जितना अधिक अकथनीय रूप से शर्मिंदा और लज्जित होते हैं, उतना ही अधिक परमेश्वर उनके चेहरों को जलती हुई नज़र से घूरता है। उसके मुँह के वचन मनुष्य के सभी कुरूप कर्मों को सामने ला देते हैं—यही न्यायिक और निष्पक्ष होना है, केवल इसे किंगतियाँ[क] कहा जाता है, यही जनता के उच्चतम न्यायालय का न्याय है। इस प्रकार, जब लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, तो उन्हें अचानक दिल का दौरा पड़ जाता है, उनका रक्तचाप बढ़ जाता है, ऐसा लगता है मानो वे हृदय धमनी रोग से पीड़ित हैं, जैसे मिर्गी उन्हें उनके पूर्वजों के साथ मुलाकात करने के लिए पश्चिमी स्वर्ग में वापस भेजने ही वाली है—जब वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, तो यही प्रतिक्रिया होती है। मनुष्य वर्षों के कठिन परिश्रम द्वारा निर्बल

बनाया जाता है, वह अंदर और बाहर से बीमार है, हृदय से लेकर उसकी रक्त वाहिकाओं, बड़ी आँत, छोटी आँत, पेट, फेफड़े, गुर्दे आदि तक उसका सर्वस्व बीमार है। उसके संपूर्ण शरीर में कुछ भी स्वस्थ नहीं है। इसलिए, परमेश्वर का कार्य मनुष्य के लिए अप्राप्य स्तर तक नहीं पहुँचता, बल्कि लोगों को स्वयं को जानने का कारण बनता है। क्योंकि मनुष्य का शरीर विषाणुओं से आक्रांत है और क्योंकि वह बूढ़ा हो गया है, इसलिए उसकी मृत्यु का दिन निकट आ गया है और वापसी का कोई रास्ता नहीं है। मगर यह कहानी का केवल एक हिस्सा है; आंतरिक अर्थ अभी प्रकट होना है क्योंकि मनुष्य की बीमारी के स्रोत को ढूँढा जा रहा है। वास्तव में, जिस समय परमेश्वर के कार्य की संपूर्णता पूरी हो जाती है, तो यह वह समय नहीं होता जब पृथ्वी पर उसका कार्य पूरा हो जाता है, क्योंकि एक बार जब कार्य का यह चरण समाप्त हो जाता है, तो देह में भविष्य का कार्य करने का कोई तरीका नहीं होगा, और परमेश्वर के आत्मा को इसे पूरा करने की आवश्यकता होगी। इसलिए परमेश्वर कहता है, "जब मैं औपचारिक रूप से पुस्तक खोलता हूँ तो ऐसा तब होता है, जब संपूर्ण ब्रह्मांड में लोगों को ताड़ना दी जा रही होती है, जिस समय मेरा कार्य पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है, जब दुनिया भर के लोगो परीक्षणों के अधीन होते हैं।" जिस समय देह में कार्य पूरा हो जाता है यह वह समय नहीं है, जब परमेश्वर का कार्य अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचता है—इस समय की पराकाष्ठा केवल इस चरण के दौरान कार्य को संदर्भित करती है और संपूर्ण प्रबंधन योजना की पराकाष्ठा नहीं है। इसलिए, परमेश्वर की मनुष्य से उच्च अपेक्षाएँ नहीं हैं। वह केवल इतना चाहता है कि लोग स्वयं को जानें, इस प्रकार से कार्य के अगले चरण को पूरा करें, जिसमें परमेश्वर की इच्छा प्राप्त कर ली गई होगी। जैसे-जैसे परमेश्वर का कार्य बदलता है, लोगों की "कार्य इकाई" बदलती जाती है। आज पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का चरण है और इस प्रकार उन्हें अवश्य जमीनी स्तर पर ही कार्य करना चाहिए। भविष्य में देश का प्रशासन करने की आवश्यकता होगी और इस प्रकार उन्हें "केंद्रीय समिति" के लिए पुनर्निर्दिष्ट किया जाएगा। यदि वे विदेश यात्रा करते हैं, तो उन्हें विदेश जाने के लिए प्रक्रियाओं से निपटना होगा। ऐसे समय में वे अपनी मातृभूमि से दूर दूसरे देश में होंगे—किंतु यह तब भी परमेश्वर के कार्य की अपेक्षाओं की वजह से होगा। जैसा लोगों ने कहा है, "जब आवश्यक हो, तो हम परमेश्वर के लिए अपना जीवन अर्पित कर देंगे"—क्या यह वह मार्ग नहीं है, जिस पर भविष्य में चला जाएगा? किसने कभी भी ऐसे जीवन का आनंद लिया है? कोई व्यक्ति हर जगह यात्रा कर सकता है, विदेशों में जा सकता है, देहात में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है, स्वयं को आम लोगों के बीच घुला-मिला सकता है और वह उच्चस्तरीय

संगठनों के सदस्यों के साथ राष्ट्र के महत्वपूर्ण मामलों पर भी बात कर सकता है; और जब आवश्यक हो, वह व्यक्तिगत रूप से नरक में जीवन का स्वाद चख सकता है, जिसके बाद वह लौट सकता है और तब भी स्वर्ग के आशीषों का आनंद लेने में समर्थ हो सकता है—क्या ये मनुष्य के आशीष नहीं हैं? किसने कभी भी परमेश्वर के साथ तुलना की है? किसने कभी भी सभी देशों की यात्रा की है? वास्तव में, लोग किन्हीं भी संकेतकों या स्पष्टीकरणों के बिना परमेश्वर के कुछ वचनों को समझने में समर्थ हो सकेंगे—यह केवल इतना ही है कि उन्हें स्वयं पर कोई विश्वास नहीं है, यही वजह है जिसने परमेश्वर के कार्य को आज तक इतना खींच दिया है। क्योंकि लोगों में अत्यधिक अभाव है—जैसा परमेश्वर ने कहा था, "उनके पास कुछ नहीं है"—आज का कार्य उनके लिए ज़बर्दस्त कठिनाइयाँ खड़ी करता है; इससे अधिक और क्या, उनकी कमज़ोरी ने स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के मुँह को विवश कर दिया है—और क्या ये चीजें ठीक वही नहीं हैं, जो परमेश्वर के कार्य में बाधा डाल रही हैं? क्या तुम लोग अभी भी इसे नहीं देख सकते? परमेश्वर जो कुछ कहता है उन सब में छिपा हुआ अर्थ है। जब परमेश्वर बोलता है, तो वह उस मुद्दे का उत्सुकता से लाभ उठाता है जो हाथ में है और एक कहानी की तरह उसके द्वारा बोले गए सभी वचनों में गहन संदेश समाविष्ट होता है। इन सरल वचनों में गहन अर्थ समाविष्ट होते हैं और इस तरह से महत्वपूर्ण मुद्दों को समझाते हैं—क्या इन मामलों में परमेश्वर के वचन सर्वोत्तम नहीं हैं? क्या तुम्हें यह पता है?

फुटनोट :

क. किंगतियाँ: चीन में शाही समय के दौरान धार्मिक न्यायाधीश के लिए इस पद का उपयोग किया जाता था।

अध्याय 31

परमेश्वर का स्वभाव परमेश्वर के सभी कथनों में समाया हुआ है, किंतु उसके वचनों का मुख्य सूत्र समस्त मानवजाति के विद्रोह को प्रकट करना और उसकी अवज्ञा, अनधीनता, अनौचित्य, अधार्मिकता, और परमेश्वर को सचमुच प्रेम करने में असमर्थता जैसी चीज़ों को उजागर करना है, ऐसे कि परमेश्वर के वचन इस बिंदु पर पहुँच गए हैं कि वह कहता है कि लोगों के शरीर के रोम-रोम में परमेश्वर का विरोध समाया है, कि यहाँ तक कि उनकी केशिकाओं में भी परमेश्वर के प्रति अवज्ञा समाई है। यदि लोग इन चीज़ों को जाँचने का प्रयास नहीं करते हैं, तो वे उन्हें जानने में सदैव असमर्थ रहेंगे, और उन्हें कभी भी अलग नहीं कर पाएँगे। कहने का तात्पर्य यह है कि वह विषाणु जो परमेश्वर का विरोध है उनमें फैल जाएगा

और अंततः, यह ऐसा होगा मानो उनकी श्वेत रक्त कोशिकाओं ने लाल रक्त कोशिकाओं को निगल लिया है, उनके पूरे शरीर को लाल रक्त कोशिकाओं से खाली करके छोड़ दिया है; अंत में, वे अधिश्वेत रक्तता (ल्यूकेमिया) से मर जाएँगे। यह मनुष्य की वास्तविक दशा है, और कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता है। उस देश में जन्म लेने के बाद जिसमें बड़ा लाल अजगर कुण्डली मारे पड़ा है, प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कम से कम एक चीज़ है जो बड़े लाल अजगर के विष का प्रतीक और उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस प्रकार, कार्य के इस चरण में, परमेश्वर के समस्त वचनों में मुख्य सूत्र स्वयं को जानना, स्वयं को नकारना, स्वयं को त्यागना, और स्वयं को मार डालना रहा है। कहा जा सकता है कि यह अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर का प्राथमिक कार्य है, और यह कि कार्य का यह चक्र सभी चक्रों में सबसे व्यापक और संपूर्ण है—यह दर्शाता है कि परमेश्वर युग का अंत करने की योजना बना रहा है। किसी ने भी यह अपेक्षा नहीं की थी, किंतु साथ ही साथ, यह कुछ ऐसा है जिसका उन्होंने अपनी संवेदनाओं में पूर्वानुमान कर लिया है। यद्यपि परमेश्वर ने इतने स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहा, किंतु लोगों की संवेदनाएँ अत्यधिक प्रखर हैं—वे सदैव महसूस करते हैं कि समय कम है। मैं कह सकता हूँ कि व्यक्ति जितना अधिक यह महसूस करता है, उसे युग का उतना ही अधिक स्पष्ट ज्ञान होता है। यह संसार को सामान्य के रूप में देखना और इस प्रकार परमेश्वर के वचनों को नकारना नहीं है; बल्कि, यह परमेश्वर के कार्य की विषयवस्तु को उन साधनों के माध्यम से जानना है जिनसे परमेश्वर कार्य करता है। यह परमेश्वर के वचनों के स्वर से निर्धारित होता है। परमेश्वर के कथनों के स्वर का एक रहस्य है, जिसे किसी ने नहीं खोजा है और यही ठीक वह भी है जिसमें प्रवेश करना लोगों के लिए सबसे कठिन है। लोग परमेश्वर के वचन क्यों समझ नहीं सकते हैं इसका मर्म यह है कि वे उस स्वर से अनजान बने रहते हैं जिसमें परमेश्वर बोलता है—यदि वे इस रहस्य में निपुण हो जाते हैं, तो वे परमेश्वर के वचनों के कुछ ज्ञान में समर्थ हो जाएँगे। परमेश्वर के वचनों ने सदैव एक सिद्धांत का अनुसरण किया है : लोगों को यह जानने देना कि परमेश्वर के वचन ही सब कुछ हैं, और मनुष्य की सभी कठिनाइयों का समाधान परमेश्वर के वचनों के माध्यम से करना। पवित्रात्मा के परिप्रेक्ष्य से, परमेश्वर अपने कर्म स्पष्ट करता है; मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से, वह लोगों की धारणाएँ उजागर करता है; पवित्रात्मा के परिप्रेक्ष्य से, वह कहता है कि मनुष्य उसकी इच्छा के प्रति जागरूक नहीं है; और मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से, वह कहता है कि उसने मानव अनुभव के मीठे, खट्टे, कड़वे, और तीखे स्वाद चख लिए हैं, और वह हवा के साथ आता है और बारिश के साथ जाता है, कि उसने परिवार का उत्पीड़न अनुभव कर लिया है, और

जीवन के उतार-चढ़ावों का अनुभव कर लिया है। ये भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्यों से बोले गए वचन हैं। जब वह परमेश्वर के लोगों से बात करता है, तब यह गृहस्थ के सेवकों को डाँटने की तरह, या प्रहसन की रूपरेखा की तरह है; उसके वचनों से लोगों के चेहरे शर्म से लाल पड़ जाते हैं, उन्हें अपनी शर्म से छिपने के लिए जगह नहीं मिलती है, मानो उन्हें विगत शासनकाल के सामंती अधिकारियों द्वारा कठोर यातनाओं के अधीन अपराध स्वीकार करवाने के लिए हिरासत में लिया गया हो। जब वह परमेश्वर के लोगों से बात करता है, तब परमेश्वर विरोध प्रदर्शन कर रहे विश्वविद्यालय के उन छात्रों की तरह असंयमित होता है जो केंद्र सरकार के भीतरी घोटाले उजागर करते हैं। यदि परमेश्वर के सभी वचन उपहासपूर्ण होते, तो लोगों के लिए उन्हें स्वीकार कर पाना और भी कठिन होता; इस प्रकार, परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन सीधे-सरल हैं, वे मनुष्य के लिए गूढ़ लेखों से भरे नहीं हैं, बल्कि सीधे मनुष्य की वास्तविक स्थिति को इंगित करते हैं—यह दर्शाता है कि मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम मात्र वचन नहीं है, बल्कि यह वास्तविक है। यद्यपि लोग वास्तविकता को महत्व देते हैं, किंतु परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम में कुछ भी वास्तविक नहीं है। यही वह है जिसका मनुष्य में अभाव है। यदि परमेश्वर के प्रति लोगों का प्रेम ही वास्तविक नहीं है, तो सब कुछ अपनी संपूर्णता में खोखला और भ्रामक होगा, मानो इसके कारण सब कुछ विलुप्त हो जाएगा। यदि परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम ब्रह्माण्ड से अधिक बढ़-चढ़कर हो जाता है, तो उनकी हैसियत और पहचान वास्तविक होगी, और खोखली नहीं होगी, और यहाँ तक कि ये वचन भी वास्तविक होंगे और खोखले नहीं होंगे—क्या तुम यह देखते हो? क्या तुमने मनुष्य के लिए परमेश्वर की अपेक्षाएँ देखी हैं? मनुष्य को हैसियत के आशीषों का आनंद ही नहीं लेना चाहिए, बल्कि हैसियत की वास्तविकता को जीना भी चाहिए। यही वह है जो परमेश्वर के लोगों और सभी मनुष्यों से परमेश्वर चाहता है, और यह कोई विशाल खोखला सिद्धांत नहीं है।

परमेश्वर इस प्रकार के वचन क्यों कहता है : "... मानो कि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह उन्हें खुश करने का एक प्रयास है, जिसके परिणामस्वरूप वे सदैव मेरे कार्यकलापों से घृणा करते हैं"? क्या तुम परमेश्वर के प्रति मनुष्य की घृणा की वास्तविक अभिव्यंजनाओं के बारे में बात कर पाते हो? लोगों की धारणाओं में, मनुष्य और परमेश्वर "आवेगपूर्ण ढँग से प्रेम में" हैं, और आज, परमेश्वर के वचनों के लिए लोगों की लालसा इस बिंदु पर पहुँच गई है कि वे परमेश्वर को व्यग्रतापूर्वक एक ही घूँट में निगल लेना चाहते हैं—फिर भी परमेश्वर नीचे लिखे प्रकार के वचन कहता है : "मनुष्य मुझसे घृणा करता है। लोगों ने मेरे प्रेम के बदले घृणा क्यों दी?" क्या यह लोगों के भीतर एक खनिज भण्डार नहीं है? क्या यह वह नहीं है

जिसे खोदकर निकाला जाना चाहिए? लोगों की खोज के साथ यही गड़बड़ी है; यह बड़ा मुद्दा है जिसे हल किया ही जाना चाहिए, और यह वह शेर है जो परमेश्वर के बारे में मनुष्य के ज्ञान के मार्ग में खड़ा है और जिसे मनुष्य के लिए भगाया ही जाना चाहिए—क्या यह वह नहीं जो किया ही जाना चाहिए? चूँकि, सुअर की तरह, मनुष्य की भी कोई स्मृति नहीं है और वह सदैव इंद्रिय-सुखों के लिए ललचाता रहता है, इसीलिए परमेश्वर मनुष्य को भूलने के रोग की दवाई देता है—वह अधिक बात करता है, अधिक कहता है, और वह लोगों को कानों से पकड़कर उन्हें निकट से सुनवाता है, और वह उन्हें श्रवण-यंत्र लगा देता है। जहाँ तक उसके कुछ वचनों की बात है, केवल एक बार बोलने से समस्या हल नहीं हो सकती है; उन्हें बार-बार कहा ही जाना चाहिए, क्योंकि "लोग अपने जीवन में सदैव भुलक्कड़पन से पीड़ित रहते हैं, और समस्त मानवजाति के जीवन के दिन अव्यवस्था में रहते हैं।" इस तरह, लोगों को उस स्थिति से बचाया जा सकता है जिसमें "वे तब पढ़ते हैं जब उनके पास समय होता है, तब सुनते हैं जब वे मुक्त होते हैं, और जब उनके पास समय नहीं होता है तब उन्हें अकेला छोड़ देते हैं; यदि वचन आज बोले जाते हैं, तो वे ध्यान देते हैं, किंतु यदि वे आने वाले कल नहीं बोले जाते हैं, तो वे उन्हें अपने मन के पिछले कोनों में डाल देंगे।" जहाँ तक लोगों की प्रकृति का संबंध है, यदि आज परमेश्वर उनकी वास्तविक अवस्था की बात करे और वे इसका आद्योपांत ज्ञान प्राप्त करने लगें, तो वे पश्चाताप से भर जाएँगे—किंतु बाद में, वे अपने पुराने तौर-तरीक़ों पर लौट जाएँगे, परमेश्वर के वचनों को अपने हाल पर छोड़ देंगे और जब याद दिलाया जाएगा केवल तभी ऊपर वर्णित दृश्य पुनः खेलेंगे। इस प्रकार, जब तुम कार्य करते या बोलते हो, तब मनुष्य के इस सार को मत भूलना; कार्य करते समय इस सार को किनारे कर देना भूल होगी। समस्त कार्य करते हुए, यह विशेष रूप से आवश्यक है कि जब तुम बोलो तब लोगों की धारणाओं को संबोधित करो। विशेष रूप से, तुम्हें परमेश्वर के वचनों में स्वयं अपनी अंतर्दृष्टियाँ जोड़नी चाहिए और उनकी संगति करनी चाहिए। यह लोगों का भरण-पोषण करने और उन्हें स्वयं को जानने देने का मार्ग है। परमेश्वर के वचनों की विषयवस्तु के आधार पर लोगों का भरण-पोषण करते हुए, उनकी वास्तविक अवस्था को समझना अवश्यंभावी रूप से संभव हो जाएगा। परमेश्वर के वचनों में, मनुष्य की वास्तविक अवस्था को समझना और इस प्रकार उनका भरण-पोषण करना पर्याप्त है—और ऐसे में, इस बात का इशारा करते हुए कि "परमेश्वर ने पृथ्वी पर एक भोज की मेज़ पर बैठने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है" मैं परमेश्वर के वचनों के बारे में और अधिक नहीं कहूँगा।

अध्याय 32

परमेश्वर के वचनों को सुनकर लोग सिर खुजलाने लगते हैं; मानो जब परमेश्वर बोलता है, तो वह मनुष्य को दूर कर रहा हो और हवा से बातें कर रहा हो, मानो मनुष्य के कर्मों पर अब और ध्यान देने का उसका कोई विचार नहीं हो, और मनुष्य के आध्यात्मिक कद से वह पूरी तरह बेपरवाह हो, मानो जिन वचनों को वह कहता है, वे लोगों की धारणाओं की ओर निर्देशित न हों, बल्कि परमेश्वर की मूल इच्छा के अनुरूप मनुष्य को दूर करते हों। असंख्य कारणों से, परमेश्वर के वचन मनुष्य के लिए अग्राह्य और अभेद्य हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। परमेश्वर के सभी वचनों का मूल उद्देश्य यह नहीं है कि लोग उनसे कार्य करने के तरीके या युक्तियाँ सीखें; इसके बजाय, वे उन साधनों में से एक हैं जिनके द्वारा परमेश्वर शुरू से आज तक कार्य करता आया है। बेशक, परमेश्वर के वचनों से लोग अनेक चीज़ें सीखते हैं : रहस्यों या पतरस, पौलुस और अय्यूब से संबंधित चीज़ें—परन्तु ये ही वे चीज़ें है जिनको उन्हें प्राप्त करना चाहिए, और जिन्हें हासिल करने में वे सक्षम हैं, और जो उनके आध्यात्मिक कद के अनुरूप हैं, इन चीजों को प्राप्त करने में वे जिस हद तक जा सकते हैं, वे पहले ही जा चुके हैं। ऐसा क्यों है कि जो प्रभाव परमेश्वर प्राप्त करने के लिए कहता है वह उच्च नहीं है, फिर भी उसने इतने वचन कहे हैं? इसका सम्बन्ध उस ताड़ना से है जिसका वह ज़िक्र करता है, और स्वाभाविक रूप से, इसे लोगों द्वारा महसूस किए बिना ही हासिल किया जाता है। आज, लोग परमेश्वर के वचनों के हमलों के तहत कहीं अधिक पीड़ा को सहन करते हैं। सतही रूप से, उनमें से किसी के साथ भी निपटा गया नहीं लगता है, अपना काम करने में लोगों को स्वतंत्र करना शुरू कर दिया गया है, और सेवाकर्मियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में पदोन्नत किया गया है—और इसमें, लोगों को लगता है कि उन्होंने मौज-मस्ती में प्रवेश किया है। वास्तव में, सच तो यह है कि उन सभी ने शुद्धिकरण से एक अधिक कठोर ताड़ना में प्रवेश किया है। जैसा कि परमेश्वर कहता है, "मेरे कार्य का हर चरण सूक्ष्म रूप से अगले चरण के साथ जुड़ा हुआ है, प्रत्येक चरण पिछले से कहीं अधिक उच्च है।" परमेश्वर ने सेवाकर्मियों को अथाह कुंड से उठा लिया है और उन्हें आग और गंधक की झील में डाल दिया है, जहां ताड़ना और भी अधिक पीड़ाजनक है। इस प्रकार, वे और भी अधिक कठिनाई भुगतते हैं, जिससे वे बड़ी मुश्किल से बच पाते हैं। क्या ऐसी ताड़ना अधिक पीड़ाजनक नहीं है? ऐसा क्यों है कि एक उच्चतर क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद, लोगों को खुशी की जगह दुःख महसूस होता है? ऐसा क्यों कहा जाता है कि शैतान के हाथों से बचाने के बाद, उन्हें बड़े लाल अजगर को दे दिया जाता है? क्या तुम्हें याद है जब

परमेश्वर ने कहा था, "कार्य का अंतिम चरण बड़े लाल अजगर के घर में पूरा किया जाता है"? क्या तुम्हें याद है जब परमेश्वर ने कहा था, "आखिरी कठिनाई, बड़े लाल अजगर के सामने परमेश्वर के लिए सशक्त, ज़बरदस्त गवाही देना है"? अगर लोग बड़े लाल अजगर को नहीं दिए जाते हैं, तो उसके सामने वे गवाही कैसे दे सकते हैं? किसने कभी खुद को मारने के बाद यह कहा है, "मैंने शैतान को हरा दिया है"? अपने देह को दुश्मन के रूप में देखना और फिर खुद को मार डालना—इस का व्यावहारिक महत्व क्या है? परमेश्वर ने ऐसा क्यों कहा? "मैं लोगों के दागों को नहीं, बल्कि उनके उस हिस्से को देखता हूँ जो बेदाग़ है, और इससे संतुष्टि पाता हूँ।" अगर यह सच होता कि परमेश्वर चाहता है कि वे ही लोग उसकी अभिव्यक्ति बनें जो कि बेदाग़ हैं, तो उसने मनुष्यों के परिप्रेक्ष्य से लोगों की धारणाओं पर प्रहार करते हुए, धैर्यपूर्वक और ईमानदारी से इतने वचन क्यों कहे होते? वह इससे खुद को परेशान क्यों करता? वह ऐसा करने की मुसीबत क्यों मोल लेता? इस प्रकार यह दर्शाता है कि परमेश्वर के देह-धारण का वास्तविक महत्व है, कि वह देह धारण करने और अपने कार्य को पूरा करने के बाद देह को "ख़ारिज" नहीं करेगा। ऐसा क्यों कहा गया है कि "सोना विशुद्ध नहीं हो सकता और मनुष्य परिपूर्ण नहीं हो सकता"? इन वचनों को कैसे समझाया जा सकता है? जब परमेश्वर मनुष्य के सार के बारे में कहता है तो उसके वचनों का अर्थ क्या होता है? लोगों की नग्न आँखों के लिए, देह कुछ भी करने में असमर्थ या फिर बहुत अभावग्रस्त लगता है। परमेश्वर की निगाह में, यह बात बिल्कुल महत्वहीन है—फिर भी लोगों के लिए यह एक बड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा है। ऐसा लगता है कि वे इसे सुलझाने में पूरी तरह असमर्थ हैं, मानो इसे किसी स्वर्गिक निकाय द्वारा व्यक्तिगत रूप से संभाला जाना चाहिए—क्या यह मानवीय धारणा नहीं है? "लोगों की आंखों में, मैं आकाश से उतरा हुआ एक 'नन्हा सितारा' हूँ, स्वर्ग का एक छोटा-सा सितारा, और आज धरती पर मेरा आगमन परमेश्वर ने नियुक्त किया था। परिणामस्वरूप, लोगों ने 'मैं' और 'परमेश्वर' शब्दों की अधिक व्याख्या दी है।" जब मनुष्यों का मोल कुछ भी नहीं है, तो परमेश्वर उनकी धारणाओं को अलग-अलग दृष्टिकोणों से क्यों प्रकट करता है? क्या यह भी परमेश्वर की बुद्धि हो सकती है? क्या ऐसे वचन हास्यास्पद नहीं हैं? जैसा कि परमेश्वर कहता है, "यद्यपि एक जगह है जो मैंने लोगों के दिलों में बनाई है, उनके लिए यह आवश्यक नहीं है कि मैं वहाँ बस जाऊं। इसके बजाय, वे अपने दिलों में 'किसी पवित्र' के अचानक आ पहुँचने की प्रतीक्षा करते हैं। चूँकि मेरी पहचान बहुत 'तुच्छ' है, मैं लोगों की माँगों से मेल नहीं खाता हूँ और इस प्रकार उनके द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता हूँ।" क्योंकि परमेश्वर के बारे में लोगों का अनुमान "बहुत

ऊंचा" है, बहुत-सी चीजें परमेश्वर के लिए "अप्राप्य" हैं, जो बात उसे "कठिनाई में" डाल देती है। लोग यह कम ही जानते हैं कि वे जिन बातों के लिए परमेश्वर से चाहते हैं कि वह सक्षम हो, वे उनकी अपनी धारणाएँ हैं। और क्या यह "एक चालाक व्यक्ति अपनी ही चतुराई का शिकार हो सकता है" का वास्तविक अर्थ नहीं है? यह वास्तव में "नियम से चुस्त (स्मार्ट), लेकिन इस बार मूर्ख" वाली बात ही है! तुम सब अपने उपदेश में लोगों से उनकी धारणाओं के परमेश्वर को त्याग देने के लिए कहते हो, क्या लेकिन तुम्हारी अपनी धारणाओं का परमेश्वर दूर जा चुका है? परमेश्वर के इन वचनों की "जो माँगें मैं मनुष्य से करता हूँ, वो किसी भी सूरत में ज्यादा नहीं हैं" क्या व्याख्या की जा सकती है? ये वचन लोगों को नकारात्मक और स्वच्छंद बनाने के लिए नहीं हैं, बल्कि उन्हें परमेश्वर के वचनों का विशुद्ध ज्ञान देने के लिए हैं—क्या तुम इसे समझते हो? क्या देहधारी परमेश्वर वास्तव में "उच्च और शक्तिशाली 'मैं'" है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं?

यद्यपि ऐसे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर द्वारा कहे गए सभी वचनों को पढ़ा है और जो उनकी एक सामान्य रूपरेखा प्रदान कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर का अंतिम लक्ष्य क्या है, यह बताने में कौन सक्षम है? इस मामले में मानवजाति अभावग्रस्त है। परमेश्वर का दृष्टिकोण बोलते वक्त चाहे जो भी हो, उसका समग्र उद्देश्य यह है कि लोग देहधारी परमेश्वर को पहचान लें। अगर उसमें मानवता का कुछ भी अंश नहीं होता—अगर उसके पास जो कुछ भी है वे स्वर्ग के परमेश्वर के ही गुण होते—तो परमेश्वर को इतना कहने की कोई आवश्यकता नहीं होती। यह कहा जा सकता है कि लोगों में जिन चीज़ों की कमी है, वे ही उस प्राथमिक सामग्री के रूप में कार्य करती हैं जो कि परमेश्वर के वचनों से संबंधित हैं। कहने का तात्पर्य है, मनुष्य में जो कुछ प्रकट है वही परमेश्वर द्वारा उसकी धारणाओं के बारे में कहे गए वचनों की पृष्ठभूमि है, और इस प्रकार, लोग परमेश्वर के कथनों के काम आते हैं। स्वाभाविक रूप से, यह मनुष्य की धारणाओं के बारे में परमेश्वर के वचनों पर आधारित है—केवल इस तरह से इसे सिद्धांत और वास्तविकता का संयोजन कहा जा सकता है; केवल तभी लोगों को खुद को जानने के बारे में प्रभावी ढंग से संजीदा किया जा सकता है। अगर देहधारी परमेश्वर लोगों की धारणाओं के अनुरूप होता और अगर परमेश्वर भी खुद की गवाही देता तो उसका क्या प्रयोजन होता? इसी कारण से परमेश्वर अपनी महान शक्ति को उजागर करने के लिए लोगों की धारणाओं का उपयोग करते हुए नकारात्मक पक्ष से काम करता है। क्या यह परमेश्वर की बुद्धि नहीं है? परमेश्वर सभी के लिए जो कुछ भी करता है वह अच्छा है—तो इस समय प्रशंसा क्यों न की जाए? अगर चीजें एक निश्चित बिंदु पर पहुँच गईं, या वह दिन आ गया, तो क्या तुम, पतरस की तरह, परीक्षाओं

के बीच अपने भीतर की गहराई से प्रार्थना करने में सक्षम होंगे? सिर्फ तभी, जब पतरस की तरह तुम शैतान के हाथों में होते हुए भी परमेश्वर की स्तुति करने में सक्षम होते हो, तो "शैतान के दासत्व से मुक्त होने, शरीर पर काबू पाने, और शैतान पर काबू पाने" का सही अर्थ होगा। क्या यह परमेश्वर के लिए एक अधिक वास्तविक गवाही नहीं है? यही "कार्य करने के लिए देवत्व के सामने आने और सात गुना तेज आत्मा का मनुष्य में काम करने" से हासिल किया गया प्रभाव है, और इसी तरह, यह "देह से बाहर आती आत्मा" द्वारा प्राप्त प्रभाव है। क्या ऐसी क्रियाएँ वास्तविक नहीं हैं? तुम वास्तविकता पर ध्यान दिया करते थे, लेकिन क्या तुम्हें आज वास्तविकता का सच्चा ज्ञान है? "जो माँगें मैं मनुष्य से करता हूँ, वो किसी भी सूरत में ज्यादा नहीं हैं, फिर भी लोग ऐसा नहीं मानते हैं। इस प्रकार, उनकी 'नम्रता' उनके हर कदम से प्रकट होती है। वे हमेशा मेरे आगे चलने को प्रवृत्त होते हैं, मेरी अगुआई करते हुए, बहुत डरते हुए कि कहीं मैं खो न जाऊँ, भयातुर होते हैं कि मैं पहाड़ों के भीतर प्राचीन जंगलों में कहीं भटक जाऊँगा। नतीजतन, लोग हमेशा मेरी अगुआई करते रहते हैं, बहुत भयभीत रहते हैं कि मैं कालकोठरी में चला जाऊँगा।" इन सरल वचनों के बारे में तुम्हें क्या जानकारी है—क्या तुम लोग वास्तव में इनमें निहित परमेश्वर के वचनों के मूल को समझ सकते हो? क्या तुम लोगों ने ध्यान दिया है कि तुम लोगों की किन धारणाओं के बारे में परमेश्वर ने इस तरह के वचन कहे हैं? क्या हर दिन तुम सब इस महत्वपूर्ण बिंदु पर ध्यान देते हो? अगले भाग के, जो तुरंत बाद में आता है, पहले वाक्य में परमेश्वर का कहना है, "फिर भी लोग मेरी इच्छा से अनजान हैं और मुझ से चीजों के लिए प्रार्थना करते रहते हैं, जैसे कि मेरे द्वारा उनको जो दिया गया है, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ हो, जैसे कि माँग आपूर्ति से बढ़कर हो।" इस वाक्य में देखा जा सकता है कि तुम सब के भीतर की धारणाएँ क्या हैं। तुम लोगों ने बीते समय में जो कुछ किया, परमेश्वर उसे याद नहीं रखता या उसकी खोज-बीन नहीं करता, इसलिए अतीत के मामलों के बारे में मत सोचो। इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि क्या तुम लोग भविष्य के रास्ते में "अंतिम युग में पतरस की भावना" को पैदा करने में सक्षम हो या नहीं—क्या तुम सभी के पास इसे प्राप्त करने का विश्वास है? परमेश्वर मनुष्य से जो चाहता है वह पतरस के अनुकरण से ज्यादा कुछ नहीं है, कि लोग शायद अंततः बड़े लाल अजगर को लज्जित करने के लिए कोई मार्ग प्रशस्त करें। इसी कारण से परमेश्वर कहता है, "मैं केवल आशा करता हूँ कि लोगों में मेरे साथ सहयोग करने का संकल्प हो। मैं नहीं चाहता कि वे मुझे उत्तम भोजन बनाकर दें, या मेरा सिर टिकाने के लिए कहीं उपयुक्त जगह की व्यवस्था करें...।" दुनिया में, लोगों

को 1990 के दशक में रही "ली फेंग की भावना" लाने को कहा जाता है, लेकिन परमेश्वर के घर में, परमेश्वर चाहता है कि तुम लोग "पतरस की अद्वितीय शैली" रचो। क्या तुम परमेश्वर की इच्छा को समझते हो? क्या तुम वास्तव में इसके लिए प्रयास कर सकते हो?

"मैं विश्वों के ऊपर विहार करता हूँ, और ज्यों-ज्यों मैं चलता हूँ, मैं पूरे ब्रह्मांड के लोगों को देखता हूँ। धरती पर लोगों की भीड़ में, कभी भी कोई ऐसे नहीं रहे हैं जो मेरे कार्य के लिए उपयुक्त हों या जो मुझे सच्चाई से प्यार करते हों। इस प्रकार, इस समय मैं निराशा में आहें भरता हूँ, और लोग तुरंत बिखर जाते हैं, फिर न इकट्ठे होने के लिए, बुरी तरह से भयभीत होते हैं कि मैं उन्हें 'एक ही जाल में पकड़ लूँगा'।" ज्यादातर लोगों को, शायद, इन वचनों को समझना बहुत मुश्किल लगता है। वे पूछते हैं कि क्यों परमेश्वर मनुष्य से ज्यादा कुछ नहीं चाहता, फिर भी वह निराशा में आहें भरता है कि उसके कार्य के लिए कोई भी योग्य नहीं है। क्या यहाँ एक विरोधाभास है? शाब्दिक अर्थ में कहें तो, हाँ, है—लेकिन वास्तव में, कोई भी विरोधाभास नहीं है। शायद तुम लोग अभी भी याद कर सकते हो कि परमेश्वर ने कहा था, "मेरे सारे वचनों का वह प्रभाव होगा जो मैं चाहता हूँ।" जब परमेश्वर देह में कार्य करता है, तो लोग उसकी प्रत्येक हरकत पर नज़र रखते हैं कि वह ठीक-ठीक क्या करने वाला है। जब परमेश्वर आध्यात्मिक क्षेत्र में शैतान को लक्षित करते हुए अपने नए कार्य को पूरा करता है, तो दूसरे शब्दों में, देहधारी परमेश्वर की वजह से पृथ्वी पर लोगों के बीच सभी तरह की धारणाएँ बनाई जाती हैं। जब परमेश्वर निराशा में आहें भरता है—अर्थात्, जब वह मनुष्यों की सभी धारणाओं के बारे में बोलता है, तो लोग उनसे निपटने के लिए पूरी कोशिश करते हैं, और यहाँ तक कि ऐसे लोग भी होते हैं जो मानते हैं कि उनके लिए कोई उम्मीद नहीं, क्योंकि परमेश्वर कहता है कि वे सब जिनमें उसके बारे में धारणाएँ हैं, वे उसके शत्रु हैं—और इस वजह से लोग कैसे न "बिखरें"? विशेष रूप से आज, जब ताड़ना आ चुकी है, लोग और भी भयभीत हैं कि परमेश्वर उनका नामोनिशान मिटा देगा। वे मानते हैं कि उनको ताड़ना देने के बाद, परमेश्वर "उन्हें एक ही जाल में पकड़ लेगा"। फिर भी तथ्य ये नहीं हैं: जैसा कि परमेश्वर कहता है, "मैं अपनी ताड़ना के बीच में लोगों को 'रोकना' नहीं चाहता हूँ, कि वे कभी भाग न जाएँ। चूँकि मेरे प्रबंधन में मनुष्य के कर्मों की कमी है, इसलिए मेरे कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करना संभव नहीं है, यह मेरे कार्य को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने से रोकता है।" परमेश्वर की इच्छा यह नहीं है कि सभी लोगों की मौत होने के साथ उसका कार्य पूरा हो जाए—उससे क्या बात बनेगी? लोगों में कार्य करने और उन्हें ताड़ना देने के द्वारा, परमेश्वर फिर उनके माध्यम से अपने कार्य

को सरल बना देता है। चूँकि लोगों ने कभी नहीं समझा है कि परमेश्वर के वचनों के लहजे में पहले से ही ताड़ना है, उनकी चेतना में उनका कभी कोई प्रवेश नहीं हुआ है। लोग अपने संकल्प को व्यक्त करने में असमर्थ हैं, और इस प्रकार परमेश्वर शैतान के सामने कुछ भी नहीं कह सकता, जो परमेश्वर के काम को आगे बढ़ने से रोकता है। इस प्रकार परमेश्वर कहता है, "मैंने एक बार मनुष्य को अपने घर में अतिथि के रूप में आमंत्रित किया, फिर भी वह मेरी पुकारों की वजह से यहाँ-वहाँ भागता-फिरता रहा—मानो कि उसे अतिथि के तौर पर आमंत्रित करने की बजाय, मैं उसे फाँसी के मैदान में ले आया था। इस प्रकार, मेरे घर को खाली छोड़ दिया गया था, क्योंकि मनुष्य हमेशा मुझे नकाराता था, और वह हमेशा मेरे खिलाफ चौकन्ना रहता था। इसकी वजह से मेरे पास अपने कार्य के एक हिस्से को पूरा करने का कोई साधन नहीं बचा।" यह अपने काम में मनुष्य की गलतियों के कारण है कि परमेश्वर स्पष्ट रूप से मनुष्य से अपनी अपेक्षाओं को सामने रखता है। और लोग कार्य के इस चरण को पूरा करने में नाकाम रहे हैं इसीलिए परमेश्वर इसमें अधिक कथन जोड़ता है—जो वास्तव में "मनुष्य पर किये गए कार्य का एक और हिस्सा" है जिसका परमेश्वर जिक्र करता है। लेकिन मैं "उन सभी को एक ही जाल में पकड़ने", जिसकी परमेश्वर बात करता है, के बारे में ज़्यादा बात नहीं करूँगा क्योंकि आज के कार्य से इसका ज़्यादा सरोकार नहीं है। स्वाभाविक रूप से, "संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन," में उसके कई वचनों का लेना-देना मनुष्य के साथ है—लेकिन लोगों को परमेश्वर की इच्छा को समझना होगा; चाहे वह जो भी कहता हो, उसके इरादे हमेशा अच्छे होते हैं। यह कहा जा सकता है कि चूँकि जिन साधनों के द्वारा परमेश्वर बोलता है, वे संख्या में इतने अधिक हैं कि लोग परमेश्वर के वचनों के बारे में सौ प्रतिशत निश्चित नहीं हैं, और वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के अधिकांश वचनों को उसके कार्य की ज़रूरतों के कारण ही कहा गया है, और इनमें ऐसा बहुत कम है जो कि यथार्थ हो। यह बात उन्हें अपने ही विचारों से संभ्रमित और चिंताग्रस्त बना देती है, क्योंकि उनकी धारणाओं में परमेश्वर बहुत बुद्धिमान है, और इसलिए वह पूरी तरह से उनकी पहुँच से परे है, ऐसा लगता है जैसे वे कुछ भी नहीं जानते, और उन्हें नहीं पता कि परमेश्वर के वचनों को कैसे खाया जाए। लोग परमेश्वर के वचनों को अमूर्त और जटिल बना देते हैं—जैसा कि परमेश्वर कहता है, "लोग हमेशा मेरी कथनों में कुछ मसाला डालना चाहते हैं।" क्योंकि उनके विचार बहुत जटिल और परमेश्वर द्वारा "मुश्किल से प्राप्य" हैं, परमेश्वर के वचनों का एक हिस्सा मनुष्य द्वारा निरुद्ध है, जिससे कि परमेश्वर के पास बेबाक तरीके से बोलने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रह जाता। चूँकि लोगों की माँगें "बहुत ऊंची" हैं

और चूँकि उनकी कल्पना भी अत्यधिक उर्वर है—जैसे कि वे शैतान के कर्मों को देखने के लिए आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हों—इस बात ने परमेश्वर के वचनों को कम कर दिया है, क्योंकि परमेश्वर जितना अधिक कहता है, लोगों के चेहरे उतने ही अधिक उदास हो जाते हैं। वे अपने अंत की चिंता करने के बजाय, बस आज्ञापालन क्यों नहीं कर सकते हैं? इससे क्या लाभ है?

अध्याय 33

वास्तव में, परमेश्वर ने लोगों में जो किया है, उनको जो दिया है और साथ ही लोगों के पास जो है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि लोगों से उसकी अपेक्षाएँ बहुत अधिक नहीं हैं, वह उनसे ज़्यादा कुछ नहीं चाहता। तो फिर वे परमेश्वर को संतुष्ट करने की कोशिश कैसे नहीं कर सकते? परमेश्वर मनुष्य को सौ प्रतिशत देता है, फिर भी उसे लोगों से केवल एक प्रतिशत का एक अंश-मात्र चाहिए—क्या यह अपेक्षा बहुत ज़्यादा है? क्या परमेश्वर बेवजह मुसीबत पैदा कर रहा है? अक्सर लोग खुद को नहीं जानते; वे खुद को परमेश्वर के सामने जाँचते नहीं हैं, इसलिए ऐसा कई बार होता है कि वे उलझ जाते हैं—इसे परमेश्वर के साथ सहयोग करना कैसे माना जा सकता है? अगर कभी ऐसा कोई समय होता जब परमेश्वर लोगों पर भारी बोझ न डालता, तो वे मिट्टी की तरह ढह जाते और उन्हें क्या करना चाहिए इसका दायित्व वे खुद नहीं उठाते। लोग तो ऐसे ही होते हैं, या तो निष्क्रिय या नकारात्मक, परमेश्वर के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करने में सदा असमर्थ होते हैं, हमेशा खुद से हार जाने के लिए एक नकारात्मक कारण की तलाश में रहते हैं। क्या तुम वास्तव में ऐसे इंसान हो जो सब-कुछ खुद के लिए नहीं करता, बल्कि परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए करता है? क्या तुम वास्तव में ऐसे इंसान हो जो अपनी भावनाओं पर निर्भर नहीं रहता, जिसकी अपनी कोई पसंद नहीं है और जो परमेश्वर के कार्य की आवश्यकताओं को पूरा करता है? "वे मेरे साथ हमेशा सौदा करने की कोशिश क्यों करते हैं? क्या मैं किसी व्यापार केंद्र का महाप्रबंधक हूँ? ऐसा क्यों है कि लोग मुझसे जो कुछ माँगते हैं मैं उसे पूरे मन से पूरा करता हूँ, फिर भी मैं मनुष्य से जो कुछ चाहता हूँ, वह कभी भी पूरा नहीं होता है?" परमेश्वर ऐसी चीज़ों को लगातार बार-बार क्यों पूछता है? वह इस तरह निराश होकर क्यों पुकारता है? परमेश्वर ने लोगों में कुछ भी हासिल नहीं किया है; वह उन कामों को ही देखता है जिन्हें वे अपनी मर्ज़ी से चुनते हैं। परमेश्वर क्यों कहता है, "फिर भी मैं मनुष्य से जो कुछ चाहता हूँ, वह कभी भी पूरा नहीं होता है"? अपने आप से पूछो : शुरू से लेकर अंत

तक, उस काम को कौन कर सकता है जो उनका कर्तव्य है, जिसके संबंध में उनके पास कोई विकल्प नहीं है? अपने दिल की भावनाओं के आधार पर कौन कार्य नहीं करता? लोग अपने व्यक्तित्व को खुली छूट देते हैं, जो वो करते हैं उसमें कभी डटे नहीं रहते, मानो तीन दिन मछलियाँ पकड़ते हैं और फिर दो दिन जाल छोड़कर खाली बैठे रहते हैं। उनका रवैया बारी-बारी बदलता रहता है : जब वे गर्म होते हैं, तो वे पृथ्वी पर सारी चीजों को भस्म करने में समर्थ होते हैं और जब वे ठंडे होते हैं, तो वे पृथ्वी पर सारे पानी को जमा देने में सक्षम होते हैं। यह मनुष्य का काम नहीं है, लेकिन फिर भी मनुष्य की स्थिति के बारे में यह सबसे उपयुक्त उपमा है। क्या यह सच नहीं है? शायद लोगों के बारे में मेरी "धारणाएँ" हैं, शायद मैं उनको बदनाम कर रहा हूँ—परन्तु जो भी हो, "सत्य के साथ तू संपूर्ण संसार में चलेगा; सत्य के बिना, तू कहीं नहीं पहुँचेगा।" हालांकि यह एक मानवीय कहावत है, पर मुझे लगता है यहाँ इसका उपयोग करना सही है। मैं जानबूझकर लोगों के जोश को ठंडा नहीं कर रहा और उनके कर्मों को नकार नहीं रहा हूँ। मैं तुम लोगों से कुछ सवालों पर परामर्श करता हूँ : परमेश्वर के काम को कौन अपने कर्तव्य के रूप में देखता है? कौन कह सकता है, "अगर मैं परमेश्वर को संतुष्ट कर पाऊँ, तो मैं अपना सब कुछ दे दूँगा"? कौन कह सकता है, "दूसरों की परवाह किये बिना, मैं वह सब करूँगा जो परमेश्वर चाहता है, चाहे परमेश्वर के काम की अवधि बड़ी हो या छोटी, मैं अपना कर्तव्य निभाऊँगा; अपने कार्य को समाप्त करना परमेश्वर का दायित्व है, यह सब सोचना मेरा काम नहीं है"? किसके पास ऐसा ज्ञान है? इस बात का महत्व नहीं है कि तुम लोग क्या सोचते हो—शायद तुम उच्च अंतर्दृष्टि वाले हो, उस परिस्थिति में मैं कबूल कर लेता हूँ, मैं हार मान लेता हूँ—फिर भी मैं तुम्हें बता दूँ कि परमेश्वर एक वफादार दिल चाहता है, जो ईमानदार और भावपूर्ण हो, उसे किसी कृतघ्न भेड़िए का दिल नहीं चाहता। तुम लोग इस "सौदेबाज़ी" के बारे में क्या जानते हो? शुरुआत से लेकर अंत तक, तुम सबने "दुनिया की यात्रा कर ली है।" एक पल में, तुम लोग "कुनमिंग" शहर में होते हो, जहाँ चिरकालिक वसंत है और पलक झपकते ही तुम सब बेहद सर्द, बर्फ से ढके "दक्षिण ध्रुव" में जा पहुँचते हो। किसने कभी खुद को धोखा नहीं दिया? परमेश्वर चाहता है, "मौत तक कोई विश्राम नहीं" वाला उत्साह; वह जो चाहता है वह एक जोश है जिसमें लोग "तब तक नहीं पलटते जब तक कोई रुकावट न आ जाए।" स्वाभाविक है कि परमेश्वर का इरादा यह नहीं है कि लोग गलत रास्ता पकड़ लें, बल्कि वह चाहता है कि उनमें ऐसा उत्साह हो। जैसा कि परमेश्वर कहता है, "जब मैं उनकी दी हुई 'भेंटों' की तुलना अपनी चीज़ों के साथ करता हूँ, लोग तुरन्त मेरी बहुमूल्यता पहचान लेते हैं, और सिर्फ तब ही वे

मेरी असीमता को देख पाते हैं।" इन वचनों को कैसे समझाया जा सकता है? संभवतः, उपरोक्त वचनों को पढ़ना तुम्हें कुछ ज्ञान दे, क्योंकि परमेश्वर विश्लेषण के लिए व्यक्ति का पूरा दिल निकाल लेता है और उस समय लोग इन वचनों को जान पाते हैं। लेकिन परमेश्वर के वचनों के गूढ़ आंतरिक अर्थ की वजह से, लोग पुराने देह के बारे में अस्पष्ट रहते हैं, क्योंकि उन्होंने किसी मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई नहीं की होती है, न ही वे पुरातत्वविद होते हैं, इसलिए उन्हें लगता है कि यह नया शब्द समझ से परे है—और तभी वे थोड़ा झुकते हैं। क्योंकि लोग पुराने देह के सामने शक्तिहीन होते हैं; हालांकि वह किसी हिंसक जानवर की तरह नहीं होता, न ही किसी परमाणु बम की तरह मानवजाति को खत्म करने में सक्षम होता है, उन्हें मालूम ही नहीं होता कि उसके साथ क्या करना है, जैसे कि वे शक्तिहीन हों। लेकिन मेरे पास पुराने देह से निपटने के तरीके हैं। मनुष्य द्वारा कभी भी किसी प्रत्युपाय के बारे में सोचने का प्रयास न करने के कारण मेरी आँखों के सामने मनुष्य की विभिन्न विलक्षणताएँ लगातार कौंधती हैं; जैसा कि परमेश्वर ने कहा: "जब मैं उनकी इस विचित्र अवस्था को देखता हूँ तो मैं खुद को हँसने से नहीं रोक पाता हूँ। चूँकि वे मुझसे चीजें माँगने के लिए हाथ पसार रहे होते हैं, मैं उन्हें अपने हाथ में रखी चीज़ें दे देता हूँ, और वे उन्हें अपने सीने से लगा लेते हैं, एक नवजात शिशु की तरह उन्हें प्यार से संभालते हैं, लेकिन ऐसा कुछ समय के लिए ही होता है।" क्या ये क्रियाएँ पुराने देह की नहीं हैं? चूँकि आज लोग समझते हैं, वे इसे त्यागते क्यों नहीं, बल्कि लगे ही रहते हैं? वास्तव में, परमेश्वर की अपेक्षाओं का एक भाग मनुष्य के द्वारा प्राप्य नहीं है, फिर भी लोग उसकी ओर ध्यान नहीं देते, क्योंकि "मैं मनुष्य को हल्के ढंग से ताड़ना नहीं देता। इसी कारण लोगों ने हमेशा से अपनी देह को पूरी आजादी दे रखी है। वे मेरी इच्छा का पालन नहीं करते, बल्कि मेरे न्याय आसन के सम्मुख हमेशा मुझे बहलाते-फुसलाते रहे हैं।" क्या यह मनुष्य का आध्यात्मिक कद नहीं है? ऐसा नहीं है कि परमेश्वर जानबूझकर बाल की खाल निकाल रहा है, बल्कि यह वास्तविकता है—क्या परमेश्वर को इसे समझाना होगा? जैसा कि परमेश्वर कहता है, "लोगों की 'आस्था' इतनी महान होने के कारण ही वे 'प्रशंसा के योग्य' हैं।" इसलिए, मैं परमेश्वर की व्यवस्थाओं का पालन करता हूँ, इसलिए मैं इस पर ज़्यादा कुछ नहीं कहता हूँ; लोगों की "आस्था" की वजह से, मैं इसे पकड़ लेता हूँ और उनके विश्वास का उपयोग कर, उन्हें अपने कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए प्रेरित करता हूँ, मैं उन्हें कर्तव्य निभाने की याद नहीं दिलाता। क्या ऐसा करना गलत है? क्या इसी की परमेश्वर को आवश्यकता नहीं है? शायद, ऐसे वचनों को सुन कर, कुछ लोग तंग आ जाएँ—तो मैं उन्हें थोड़ा विश्राम देने के लिए कुछ और बात करूँगा। जब

सकल ब्रह्मांड में परमेश्वर के सभी चुने हुए लोग ताड़ना से गुजरेंगे और जब मनुष्य के भीतर स्थिति को सुधारा जाएगा, तो लोग मन ही मन आनंद मनाएँगे, जैसे कि वे संकट से बच गए हों। ऐसे में, लोग अब खुद के लिए चुनाव नहीं करेंगे, क्योंकि वास्तव में परमेश्वर के अंतिम कार्य के दौरान ठीक यही परिणाम हासिल किया जाता है। उसके चरणों की आज तक की प्रगति के साथ, परमेश्वर के सभी पुत्रों और लोगों ने ताड़ना में प्रवेश किया है और इस्राएली भी इस चरण से नहीं बच सकते, क्योंकि लोग अपने अंदर की अशुद्धता से कलंकित हैं और इसलिए परमेश्वर सभी लोगों को शुद्धिकरण की खातिर विशाल प्रगलन भट्ठी में ले जाता है जो एक आवश्यक पथ है। यह बीत जाने के बाद, लोगों का मृत्यु से पुनरुत्थान किया जाएगा, जिसकी भविष्यवाणी परमेश्वर ने वास्तव में "सात आत्माओं के कथन" में की थी। मैं इस बारे में अब और नहीं बोलूँगा ताकि लोग विरोधी न बनें। चूँकि परमेश्वर का कार्य चमत्कारिक है, परमेश्वर के मुँह से निकली भविष्यवाणियाँ अंततः अवश्य पूरी होंगी; जब परमेश्वर कहता है कि लोग एक बार फिर अपनी धारणाओं के बारे में बात करें, तो वे हक्के-बक्के रह जाते हैं, इसलिए किसी को भी चिंतित या परेशान नहीं होना चाहिए। जैसे मैंने कहा था, "मेरे सभी कार्यों में, क्या कभी भी मनुष्य के हाथों ने किसी चरण को पूरा किया था?" क्या तुम इन वचनों के सार को समझते हो?

अध्याय 35

वर्तमान में सभी मनुष्य, विभिन्न मात्राओं में, ताड़ना की स्थिति में प्रवेश कर चुके हैं। जैसा कि परमेश्वर ने कहा, "मैं मनुष्य के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलता हूँ।" यह बिलकुल सही है, लेकिन लोग अभी भी इस बात को अच्छी तरह समझने में असमर्थ हैं। नतीजतन, उन्होंने जो काम किया है, उसका कुछ हिस्सा अनावश्यक रहा है। परमेश्वर ने कहा, "मैं उनके आध्यात्मिक कद के अनुसार उन्हें समर्थन देता हूँ और उनकी आवश्यकताएँ पूरी करता हूँ। चूँकि मनुष्य मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना के मुख्य पात्र हैं, इसलिए मैं उन्हें ज्यादा मार्गदर्शन देता हूँ, जिन्हें 'मनुष्य' की भूमिका दी गई है, ताकि वे दिलोजान से और अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार अपनी भूमिका निभा सकें," और यह भी कि, "परंतु मैं सीधे उनके अंतःकरणों की आलोचना करने से इनकार करता हूँ; बल्कि मैं उनका धैर्यपूर्वक और व्यवस्थित तरीके से मार्गदर्शन करना जारी रखता हूँ। आखिरकार, मनुष्य कमज़ोर हैं और किसी भी कार्य को करने में असमर्थ हैं।" परमेश्वर की सोच यह है : भले ही अंत में उसे इन सभी मनुष्यों को पूर्णतः नष्ट करना हो, पृथ्वी पर उसका

कार्य उसकी मूल योजना के अनुसार फिर भी जारी रहेगा। परमेश्वर बेकार कार्य नहीं करता; वह जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है। जैसा कि पतरस ने कहा था, "भले ही परमेश्वर मनुष्यों के साथ इस तरह खेलता हो, जैसे कि वे खिलौने हों, तो भी मनुष्यों को क्या शिकायत होगी? उन्हें क्या अधिकार होगा?" वर्तमान समय में क्या परमेश्वर आज मानव-जाति के साथ यही प्राप्त नहीं कर रहा है? क्या मनुष्य वास्तव में यह विचार रख सकते हैं? कई हज़ार साल पहले का पतरस ऐसी बात कैसे कह सका, जबकि आज के उच्च तकनीक वाले, आधुनिकीकृत युग के "पतरस" यह नहीं कह सकते? मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि इतिहास प्रगति कर रहा है या पीछे जा रहा है, और कोई भी अभी तक यह उत्तर नहीं दे सकता कि विज्ञान आगे जा रहा है या पीछे? मनुष्यों में परमेश्वर ने जो कुछ किया है, वह सब उन्हें सकारात्मक बनाने और उनके जीवन को परिपक्व होने देने के लिए किया है। क्या लोग इसे समझ नहीं सकते? जो कुछ भी तुम्हें नकारात्मक बनाता है, वह तुम्हारी कमज़ोरी है; भेद्यता का एक मार्मिक बिंदु, जिस पर शैतान हमला कर देगा। क्या तुम इसे स्पष्ट रूप से देखते हो? परमेश्वर ने ऐसा क्यों कहा, "मैं उनसे पूरी ईमानदारी और गंभीरता के साथ आरजू-मिन्नत कर रहा हूँ। क्या वे वास्तव में वह करने में असमर्थ हैं जो मैं कहता हूँ?" इन वचनों का क्या अर्थ है? परमेश्वर ने यह प्रश्न क्यों पूछा? इससे पता चलता है कि मानव-जाति के कई नकारात्मक पहलू हैं, और एक भी नकारात्मक कारक मनुष्यों को ठोकर खिलवाने के लिए पर्याप्त है। तुम भी एक नजर देख सकते हो कि नकारात्मक रहने से क्या मिलेगा। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, वह मानव-जाति को पूर्ण बनाने के लिए करता है। क्या इन वचनों के लिए किसी और स्पष्टीकरण की आवश्यकता है? नहीं—जहाँ तक मुझे लगता है, इसकी कोई जरूरत नहीं! यह कहा जा सकता है कि मनुष्यों पर शैतान ने कब्ज़ा कर लिया है, लेकिन यह कहना कहीं ज्यादा बेहतर होगा कि मनुष्यों पर नकारात्मकता ने कब्ज़ा कर लिया है। यह मानव-जाति की एक अभिव्यक्ति है, उनकी देह की एक लटकन। इसलिए सभी लोग अनजाने में नकारात्मकता में गिर जाते हैं, और इसके बाद ताड़ना में। यह परमेश्वर द्वारा मानव-जाति के लिए तैयार किया गया एक जाल है, और यही समय होता है, जब मनुष्य सबसे ज्यादा पीड़ित होते हैं। चूँकि लोग नकारात्मकता में रहते हैं, अत: उनके लिए ताड़ना से बचना मुश्किल होता है। क्या इन दिनों यही हालत नहीं हैं? परंतु मनुष्य परमेश्वर के इन वचनों को अनदेखा कैसे कर सकते हैं, "आजकल शैतान परम उद्दंड हो गया है। क्यों न मैं इस अवसर का उपयोग अपने कार्य का फोकस दिखाने और अपना सामर्थ्य प्रकट करने के लिए करूँ?" मैं याद दिलाने के लिए कुछ वचन कहता

हूँ, और कलीसियों के लोग तुरंत ताड़ना में पड़ जाते हैं। इसका कारण यह है कि परमेश्वर के कार्य के दो महीने बाद भी लोगों में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया है। वे बस परमेश्वर के वचनों का अपने मन से विश्लेषण करते हैं, जबकि उनकी स्थिति बिलकुल नहीं बदली है। वह नकारात्मक बनी हुई है। ऐसा होने के कारण, जब परमेश्वर कहता है कि ताड़ना का समय आ गया है, तो लोग तुरंत परेशान हो जाते हैं और सोचते हैं : "मुझे नहीं पता है कि मैं परमेश्वर द्वारा पूर्वनियत हूँ या नहीं, न ही मुझे यह पता है कि मैं उसकी ताड़ना में दृढ़ता से खड़ा हो पाऊँगा या नहीं। यह जानना और भी कठिन है कि परमेश्वर लोगों को ताड़ना देने के लिए किन तरीकों का इस्तेमाल करेगा।" सब लोग ताड़ना से डरते हैं, फिर भी वे बदल नहीं पाते। वे बस ख़ामोशी से पीड़ा सहते हैं, लेकिन इस बात से डरते भी हैं कि वे दृढ़ नहीं रह पाएँगे। इन परिस्थितियों में, ताड़ना मिले बिना ही और वचनों की यातना पाए बिना ही लोग अनजाने ही ताड़ना में प्रवेश कर चुके हैं। इस प्रकार, वे सभी घबराए हुए और अशांत हैं। इसे कहते हैं "जो बोया है वही काटना", क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के कार्य को बिलकुल भी नहीं समझते। वास्तव में परमेश्वर इन लोगों पर और अधिक वचन बरबाद करने का इच्छुक नहीं है; परमेश्वर ने इनसे निपटने का एक अलग तरीका अपना लिया लगता है, जो वास्तविक ताड़ना नहीं है। यह कुछ ऐसा है, जैसे कोई व्यक्ति किसी मुर्गी के बच्चे को पकड़कर यह देखने के लिए ऊपर उठाए कि यह मुर्गी है या मुर्गा; हो सकता है कि यह कोई बड़ी बात न लगे, लेकिन फिर भी, वह मुर्गी का बच्चा इतना डर जाएगा कि वह अपने को छुड़ाने के लिए संघर्ष करेगा, मानो वह आतंकित हो कि मनुष्य उसे मारकर खाने वाला है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मुर्गी के बच्चे को अपना ज्ञान नहीं है। कोई कैसे किसी ऐसे मुर्गी के बच्चे को मारकर खा जाएगा, जिसका वज़न कुछ ही औंस हो? क्या यह निरर्थक नहीं होगा? यह बिलकुल वैसा ही है, जैसा परमेश्वर ने कहा था : "तो फिर लोग क्यों मुझसे लगातार बचते हैं? क्या इसलिए कि मैं उनके साथ मुर्गी के बच्चों की तरह व्यवहार करूँगा, जिन्हें पकड़ते ही मार दिया जाएगा?" इसलिए, मनुष्य का समस्त दुख "निस्वार्थ" भक्ति है और इसे भुगतान करने के लिए एक बेकार मूल्य कहा जा सकता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे स्वयं नहीं जानते कि उन्हें डर लगता है; नतीजतन, वे अपने जीवन को जोखिम में नहीं डाल सकते। यह मानव-जाति की कमज़ोरी है। क्या परमेश्वर के कहे ये वचन, "अंत में, मनुष्य स्वयं को जानें। यह मेरा अंतिम लक्ष्य है," क्या पुराने पड़ गए हैं? कौन वास्तव में अपने को जानता है? अगर कोई अपने को नहीं जानता, तो उन्हें ताड़ना पाने का अधिकार कैसे मिलता है? उदाहरण के लिए, मेमनों को ले लो। अगर वे भेड़ न बने हों, तो उन्हें कैसे मारा जा सकता है?

जिस पेड़ पर फल नहीं आए, उसका आनंद मनुष्य कैसे ले सकते हैं? हर कोई "टीके" को बहुत ज्यादा महत्व देता है। इस प्रकार, लोग उपवास का कार्य कर रहे हैं, और उन्हें भूख लग रही है। यह जो बोया वही काटने का, खुद को नुकसान पहुंचाने का उदाहरण है, परमेश्वर की क्रूरता या अमानवीयता नहीं है। अगर कभी मनुष्य अचानक स्वयं को जान लें और परमेश्वर के सामने भय से काँपने लगें, तो परमेश्वर उन्हें ताड़ना देना शुरू कर देगा। केवल इस तरह ही मनुष्य स्वेच्छा से कठिनाई को गले लगाएँगे, मन और वचन से आज्ञाकारी होंगे। परंतु, आज का क्या? सब लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध ताड़ना दी जा रही है, जैसे बच्चों से खाना पकवाया जाए। ऐसी स्थिति में लोग असहज महसूस क्यों नहीं करेंगे? हर कोई सोचता है, "अच्छा! जब तक मुझे ताड़ना दी जा रही है, तब तक मैं अपना सिर झुका लेता हूँ और दोष स्वीकार कर लेता हूँ! मैं कर ही क्या सकता हूँ? अगर मैं रो भी रहा हूँ, तो भी मुझे परमेश्वर को संतुष्ट करना है, इसलिए मैं कर ही क्या सकता हूँ? वह कौन था, जिसने मुझे सीधे इस रास्ते पर चलने के लिए कहा था? ओह अच्छा! मैं इसे अपना दुर्भाग्य मान लेता हूँ!" क्या लोग इसी तरह नहीं सोचते?

जैसा कि परमेश्वर ने कहा, "मानव-जाति अच्छी तरह से व्यवहार करती है; कोई मेरा विरोध करने की हिम्मत नहीं करता। सभी मेरे मार्गदर्शन में हैं, मेरे द्वारा सौंपा गया 'काम' कर रहे हैं।" यह वचन यह दर्शाने के लिए काफी है कि एक भी मनुष्य स्वेच्छा से ताड़ना प्राप्त नहीं करता, और इससे भी बढ़कर, यह ताड़ना परमेश्वर से आती है, क्योंकि सभी मनुष्य उथल-पुथल और अराजकता के बजाय आराम से जीना चाहते हैं। परमेश्वर ने कहा, "कौन है, जो मृत्यु से भयभीत नहीं? क्या लोग सच में जान की बाज़ी लगा सकते हैं?" यह बिलकुल सही है; हर कोई मरने से डरता है, बेशक सिवाय उस स्थिति के, जब वह क्रोध या निराशा से ग्रस्त हो। मानव का यही सार है, और इस पर नियंत्रण पाना अत्यधिक कठिन है। आज परमेश्वर ठीक इस कठिन परिस्थिति को हल करने के लिए ही आया है। सभी मनुष्य शक्तिहीन हैं, इसलिए परमेश्वर ने उनके बीच विशेष रूप से एक एक विशेषज्ञ अस्पताल स्थापित किया है, जहाँ वे इस बीमारी से ठीक हो सकते हैं। लोग इस बीमारी के फंदे से स्वयं को नहीं छुड़ा सकते, यही कारण है कि वे इतने चिंतित रहते हैं कि उनके मुँह में सूजन हो जाती है और उनके पेट फूल जाते हैं। समय के साथ उनके पेट में गैस की मात्रा बढ़ जाती है, जिसके परिणामस्वरूप दबाव बढ़ जाता है और अंततः उनका पेट फट जाता है और वे सभी मर जाते हैं। इसलिए परमेश्वर ने तब इस गंभीर इनसानी बीमारी को ठीक किया होगा, क्योंकि हर कोई मर गया होगा। क्या यह मनुष्य की स्थिति का इलाज नहीं है? परमेश्वर जानबूझकर इस कार्य को करने के लिए

आया है। चूँकि लोग मृत्यु से बहुत डरते हैं, इसलिए परमेश्वर स्वयं मनुष्यों के साथ इस कार्य को करने के लिए आया है; चूँकि उनमें बहुत कम साहस है, इसलिए उसने पहले उन्हें देखने के लिए एक प्रदर्शन किया है। लोग केवल परमेश्वर की मिसाल देखने के बाद ही आज्ञा-पालन करने के लिए तैयार होते हैं। इसी कारण से परमेश्वर ने कहा, "चूँकि कोई भी मेरा कार्य नहीं कर सकता था, अत: मैंने शैतान के साथ जीवन और मृत्यु के संघर्ष में शामिल होने के लिए युद्ध के मैदान में स्वयं कदम रखा है।" यह एक निर्णायक युद्ध है, इसलिए या तो मछली मर जाएगी या जाल टूट जाएगा। इतना निश्चित है। चूँकि अंत में आत्मा जीत जाएगा, अत: देह अनिवार्यत: मृत्यु द्वारा ले ली जानी चाहिए। क्या तुम इसका निहितार्थ समझते हो? फिर भी, ज्यादा संवेदनशील मत बनो। शायद उपर्युक्त वाक्य सरल हो, या शायद यह जटिल हो। कुछ भी हो, मनुष्य इसकी थाह नहीं पा सकते—इतना निश्चित है। पीड़ित होने पर मनुष्य परमेश्वर के वचन का शोधन स्वीकार कर सकते हैं; जिसे कोई अपना सौभाग्य कह सकता है और कोई अपना दुर्भाग्य। मैं फिर भी एक अनुस्मारक जारी करूँगा कि आखिरकार परमेश्वर का इरादा सही है—वह मनुष्यों के इरादों जैसा नहीं है, जो हमेशा अपने लिए योजनाएँ बनाने और व्यवस्थाएँ करने के लिए ही होते हैं। यह बिलकुल स्पष्ट हो जाना चाहिए; और अंतहीन चिंतन में मत पड़ो। क्या यह हूबहू मनुष्यों की कमज़ोरी नहीं है? वे सभी ऐसे हैं; परमेश्वर से भारी प्रेम होने के बजाय उनमें खुद से ही भारी प्रेम होता है। वह ऐसा परमेश्वर है, जो मनुष्यों से ईर्ष्या करता है, इसलिए वह हमेशा उनसे माँग करता रहता है। जितना अधिक लोग स्वयं से प्रेम करते हैं, उतना ही अधिक परमेश्वर चाहता है कि वे उससे प्रेम करें, और उनसे उसकी अपेक्षाएँ उतनी ही सख्त होती हैं। ऐसा लगता है, जैसे परमेश्वर इरादतन लोगों को चिढ़ा रहा हो। अगर लोग वास्तव में उससे प्यार करते हैं, तो वह इसे स्वीकार करता प्रतीत नहीं होता। इस वजह से, लोग सिर खुजाने लगते हैं और गहरे सोच में पड़ जाते हैं। यह परमेश्वर के स्वभाव का वर्णन है, केवल एक या दो चीज़ों का संक्षिप्त उल्लेख। यह परमेश्वर की इच्छा है। परमेश्वर चाहता है कि लोग इसे जानें, और यह आवश्यक है। यह एक नया कार्य है और लोगों को बाहर निकलने और नई प्रगति करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। क्या तुम इसे समझते हो? क्या तुम चाहते हो कि इस विषय पर मैं कुछ और कहूँ?

पिछले युगों में परमेश्वर ने कहा, "पिछली पीढ़ियों में मेरे द्वारा कभी भी किसी भी व्यक्ति को नहीं चुना गया; सभी को मेरे मूक पत्र द्वारा झिड़क दिया गया। इसका कारण यह है कि अतीत में लोगों ने अनन्य रूप से मेरी सेवा नहीं की; इसलिए बदले में मैंने भी उन्हें अनन्य रूप से प्रेम नहीं किया। उन्होंने शैतान के

'उपहार' ले लिए और फिर पलटकर मुझे प्रस्तुत कर दिए; क्या यह मेरे लिए अपमानजनक बात नहीं थी?" इन वचनों को कैसे समझाया जा सकता है? जैसा कि परमेश्वर ने कहा : "सभी गुण शैतान से उत्पन्न होते हैं।" प्रेरितों और नबियों की पिछली पीढ़ियाँ अपना कार्य करने के लिए हुए पूरी तरह से गुणों पर निर्भर थीं, और सभी युगों में परमेश्वर ने अपने कार्य का संचालन करने के लिए उनके गुणों का उपयोग किया है। इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि सभी गुणी लोगों की सेवा शैतान से आती है। परंतु, जैसा कि परमेश्वर कहता है, "मैं शैतान की चाल का इस्तेमाल अपनी विषमता के रूप में करता हूँ," और यह उसकी बुद्धिमत्ता के कारण है। इस प्रकार, परमेश्वर ने गुणी लोगों की सेवा को "शैतान के उपहार" कहा है, और चूँकि वे शैतान से संबंधित हैं, बस इसलिए परमेश्वर इस काम को "कलंक" कहता है। यह मनुष्यों के विरुद्ध एक निराधार आरोप नहीं है; यह एक तथ्यों पर आधारित और उपयुक्त व्याख्या है। इसी कारण से उसने कहा, "मैंने अपनी घृणा प्रकट नहीं की; बल्कि मैंने उनके इन 'उपहारों' को अपने प्रबंधन की सामग्रियों में शामिल करके उनके कुचक्र को अपने इस्तेमाल की चीज़ बना लिया। बाद में, उन्हें मशीन द्वारा संसाधित कर दिए जाने के बाद मैं उनकी तलछट जला देता था।" परमेश्वर के कार्य की यही बात अद्‌भुत है। यह बात मनुष्य की धारणाओं से बहुत कम मेल खाती है, क्योंकि कोई भी यह नहीं सोचेगा कि राजा की तरह राज करने वाले लोग गुणी व्यक्ति नहीं होते, या परमेश्वर उन्हें प्रेम करता है जिनके पास गुण नहीं होते। जैसा कि देखा जा सकता है, विटनेस ली और वॉचमैन नी के विचार या उम्मीदें सब राख में बदल गई हैं, और यही आज के गुणी लोगों के बारे में भी सच है। अब परमेश्वर ने यह कार्य शुरू कर दिया है, और वह धीरे-धीरे मनुष्यों में से पवित्र आत्मा के कार्य को वापस ले रहा है, जो कि उसके कार्य के लिए विषमता का काम करते हैं। जब परमेश्वर का कार्य पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, तो ये सभी लोग अपने मूल स्थान पर वापस लौट जाएँगे। परंतु मैं मनुष्यों से आग्रह करता हूँ कि वे मेरे वचनों के कारण लापरवाही से कार्य न करें। तुम्हें परमेश्वर के कार्य के चरणों के अनुसार चीज़ों के प्राकृतिक क्रम का पालन करना चाहिए, ताकि उसमें बाधा न आए। क्या तुम इस बात को समझते हो? क्योंकि परमेश्वर के कार्य के यही चरण हैं और उसका यही तरीका है। जब परमेश्वर इन "उपहारों" को "तैयार उत्पादों" में "संसाधित" करेगा, तो उसके सभी इरादे स्पष्ट हो जाएँगे, और उसे सेवा प्रदान करने वाले उपहार नष्ट कर दिए जाएँगे; परंतु परमेश्वर के पास आनंद लेने के लिए तैयार उत्पाद होंगे। क्या तुम इस बात को समझते हो? परमेश्वर को तैयार उत्पाद चाहिए, न कि मनुष्यों द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रचुर उपहार। जब हर कोई अपना उचित स्थान ले लेगा,

जिसका अर्थ है कि जब परमेश्वर अपनी मूल स्थिति में लौट जाएगा और शैतान भी अपनी सीट पर बैठ जाएगा, साथ ही निरपवाद रूप से फ़रिश्ते भी—केवल तभी परमेश्वर के चेहरे पर एक संतोषजनक मुसकान दिखाई देगी, क्योंकि उसके इरादे पूरे हो चुके होंगे, उसका लक्ष्य हासिल हो गया होगा। परमेश्वर अब "शैतान" से "सहायता" नहीँ लेगा, क्योंकि परमेश्वर के इरादे खुले तौर पर मनुष्यों के सामने प्रकट हो चुके होंगे, और मनुष्यों को उन इरादों को फिर से बताने की आवश्यकता नहीं होगी। इस समय, उनका दैहिक शरीर उनकी आत्माओं के साथ एकाकार हो जाएगा। यही बात है, जो परमेश्वर मनुष्यों के सामने प्रकट करता है; यह आत्मा, रूह और शरीर का अंतिम गंतव्य है। यह "मानवता" के मूल अर्थ का सारांश है। इस पर विस्तार से शोध करने की आवश्यकता नहीं है; इसके बारे में एक या दो बातें जानना काफ़ी है। क्या तुम समझे?

अध्याय 36

ऐसा कहा जाता है कि परमेश्वर ने अब मनुष्य को ताड़ना देना शुरू कर दिया है, लेकिन कोई भी यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता, कोई भी इस बात का स्पष्ट उत्तर नहीं दे सकता कि अपने मूल मंतव्य में यह ताड़ना मनुष्य पर आई है या नहीं। परमेश्वर कहता है, "मनुष्य ने मेरी ताड़ना में कभी कुछ भी नहीं पाया है, क्योंकि वह अपने दोनों हाथों से अपने गले की पट्टी पकड़ने के अलावा कुछ नहीं करता, उसकी दोनों आँखें मुझ पर टिकी रहती हैं, मानो किसी शत्रु पर नज़र रखे हों—और इसी पल मुझे समझ आता है कि वह कितना दुर्बल है। इसी कारणवश मैं यह कहता हूँ कि कोई भी कभी मेरे परीक्षणों के बीच दृढ़ता से खड़ा नहीं रहा है।" परमेश्वर मनुष्य को उस ताड़ना के तथ्यों के बारे में बताता है, जो अभी तक उस पर आई नहीं है, और ऐसा वह कुछ भी छोड़े बिना, बहुत विस्तार से करता है। ऐसा लगता है, जैसे मनुष्य ताड़ना में प्रवेश कर चुके हैं और वास्तव में दृढ़ता से खड़े होने में असमर्थ हैं। परमेश्वर मनुष्य की बदसूरत विशेषताओं का एक स्पष्ट, सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। इसी कारण मनुष्य स्वयं को दबाव में महसूस करते हैं : चूँकि परमेश्वर कहता है कि वे कभी भी परीक्षणों के बीच दृढ़ता से खड़े नहीं रह पाए हैं, तो मैं ही कैसे इस विश्व-रिकॉर्ड को तोड़ सकता हूँ, कैसे मैं परंपरा के विरुद्ध स्वीकार्य हो सकता हूँ? इस समय वे सोचना शुरू करते हैं। वास्तव में, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा परमेश्वर कहता है, "क्या मैं उन्हें रास्ते के अंत तक ले आया हूँ?" सचमुच, परमेश्वर सभी लोगों को रास्ते के अंत तक ले आया है, और इसलिए,

अपनी चेतना में, लोग हमेशा यह मानते हैं कि परमेश्वर क्रूर और अमानवीय है। परमेश्वर ने सभी लोगों को सांसारिक दु:ख के समुद्र से बाहर निकाला है, जिसके बाद "किसी दुर्घटना से बचने के लिए, मैंने पकड़ी गई सभी 'मछलियों' को मार दिया, जिसके बाद मछलियाँ आज्ञाकारी हो गईं, और अब थोड़ी-सी भी शिकायत नहीं करतीं।" क्या यह तथ्य नहीं है? परमेश्वर ने सभी लोगों को मृत्यु के कड़वे समुद्र से निकालकर मृत्यु की एक दूसरी खाई में खींच लिया है, वह उन सभी को खींचकर "जल्लाद के तख्ते" पर ले आया है, उसने उन्हें रास्ते के अंत तक पहुँचने पर मजबूर कर दिया है—वह ऐसा परमेश्वर के दूसरे बेटों और लोगों के साथ क्यों नहीं करता? बड़े लाल अजगर के देश में ऐसा कार्य करने के पीछे उसका क्या इरादा है? परमेश्वर का हाथ इतना "दुर्भावनापूर्ण" क्यों है? कोई आश्चर्य नहीं कि "जब मुझे मनुष्य की आवश्यकता होती है, तो वह हमेशा छिपा रहता है। ऐसा लगता है, जैसे उसने कभी भी आश्चर्यजनक दृश्य नहीं देखे, जैसे कि वह ग्रामीण इलाकों में पैदा हुआ हो और शहर के मामलों के बारे में कुछ न जानता हो।" वास्तव में, अपने भीतर लोग पूछते हैं : "ऐसा करने के पीछे परमेश्वर की क्या योजना है? क्या वह हमें मौत के घाट नहीं उतारता? और इसका मतलब क्या है? उसके कार्य के कदम इतनी तेजी से और बड़ी संख्या में क्यों आते हैं, और वह हमारे प्रति थोड़ा-सा भी उदार क्यों नहीं है?" किंतु लोग यह कहने की हिम्मत नहीं करते, और चूँकि परमेश्वर के वचन उन्हें इस तरह के विचारों को त्यागने के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें आगे सोचने के अवसर से से वंचित कर देते हैं, इसलिए उनके पास इसके अलावा कोई विकल्प नहीं रहता कि वे इस तरह के और विचारों को छोड़ दें। बात बस इतनी है कि परमेश्वर मनुष्य की सभी धारणाएँ प्रकट कर देता है, इसलिए लोग अपनी धारणाएँ पीछे धकेल देते हैं और उन्हें आगे नहीं आने देते। पहले यह कहा गया था कि ये लोग बड़े लाल अजगर की संतानें हैं। वास्तव में, स्पष्ट कहा जाए तो, वे बड़े लाल अजगर के मूर्त रूप हैं। जब परमेश्वर उन्हें रास्ते के अंत तक जाने को मजबूर कर देता है और उन्हें मार डालता है, तब—बिना किसी संदेह के—बड़े लाल अजगर के आत्मा के पास उनमें कार्य करने का कोई अवसर नहीं रहता। इस तरह, जब लोग रास्ते के अंत तक पहुँचते हैं, तब बड़ा लाल अजगर भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। यह कहा जा सकता है कि वह परमेश्वर की "महान दया" का बदला चुकाने के लिए मृत्यु का उपयोग कर रहा है—जो बड़े लाल अजगर के देश में परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य है। जब लोग अपने जीवन का त्याग करने के लिए तैयार होते हैं, तो हर चीज तुच्छ हो जाती है, और कोई उन्हें हरा नहीं सकता। जीवन से अधिक महत्वपूर्ण क्या हो सकता है? इस प्रकार, शैतान लोगों में आगे कुछ करने में असमर्थ हो जाता है,

वह मनुष्य के साथ कुछ भी नहीं कर सकता। हालाँकि, "देह" की परिभाषा में यह कहा जाता है कि देह शैतान द्वारा दूषित है, लेकिन अगर लोग वास्तव में स्वयं को अर्पित कर देते हैं, और शैतान से प्रेरित नहीं रहते, तो कोई भी उन्हें मात नहीं दे सकता—और इस समय देह अपना दूसरा कार्य निष्पादित करेगा, और औपचारिक रूप से परमेश्वर के आत्मा से दिशा प्राप्त करना शुरू कर देगा। यह एक आवश्यक प्रक्रिया है; इसे कदम-दर-कदम होना चाहिए; यदि नहीं, तो परमेश्वर के पास जिद्दी देह में कार्य करने का कोई उपाय नहीं होगा। ऐसी परमेश्वर की बुद्धि है। इस तरह, सभी लोग अनजाने में आज की परिस्थितियों में प्रवेश कर चुके हैं। और क्या यह परमेश्वर नहीं है, जिसने मनुष्य को "रास्ते के अंत" तक पहुँचाया है? क्या यह मनुष्य द्वारा खोला गया कोई नया रास्ता हो सकता है? तुम लोगों के अनुभवों को देखते हुए ऐसा लगता है कि तुम लोगों में परमेश्वर अत्यंत क्रूरता के तरीकों का उपयोग करता है, जिससे परमेश्वर की धार्मिकता देखी जा सकती है। तुम लोग कैसे इसकी प्रशंसा नहीं कर पाते? परमेश्वर जो कुछ तुम लोगों में करता है, वह लोगों को परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव दिखाता है; क्या यह तुम लोगों द्वारा परमेश्वर की प्रशंसा किए जाने योग्य नहीं है? आज, इस चौराहे पर, जबकि पुराना युग अभी भी अस्तित्व में है और नया युग अभी अस्तित्व में नहीं आया है, तुम लोग परमेश्वर की गवाही कैसे देते हो? क्या ऐसा गंभीर मुद्दा गहरे विचार के योग्य नहीं है? क्या तुम लोग अभी भी अन्य, बाहरी मामलों पर विचार करते हो? परमेश्वर क्यों कहता है, "हालाँकि किसी समय लोग 'समझ लंबे समय तक जीवित रहे' का नारा लगाते थे, फिर भी किसी ने 'समझ' शब्द का विश्लेषण करने में अधिक समय नहीं लगाया, जो दिखाता है कि लोगों में मुझसे प्रेम करने की कोई इच्छा नहीं है"? यदि परमेश्वर ने ऐसी बातें नहीं कहीं, तो क्या तुम लोग अपनी इच्छा से परमेश्वर के हृदय को समझने की कोशिश नहीं कर सकते?

हालाँकि, हाल के दिनों में, कुछ लोगों को परमेश्वर के देहधारण के लक्ष्यों और अर्थ का कुछ पता चला होगा, लेकिन मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि यदि परमेश्वर ने मनुष्य से स्पष्ट रूप से बात न की होती, तो कोई भी परमेश्वर के देहधारण के लक्ष्यों और अर्थ का अनुमान न लगा पाता। यह पक्का है। क्या यह अभी भी तुम लोगों को स्पष्ट नहीं है? परमेश्वर जो कुछ भी लोगों में करता है, वह उसकी प्रबंधन-योजना का हिस्सा है—फिर भी वे परमेश्वर की इच्छा को सटीक रूप से समझने में असमर्थ हैं। यह मनुष्य की कमी है, किंतु परमेश्वर यह अपेक्षा नहीं रखता कि लोग कुछ करने में सक्षम हों, वह केवल यह चाहता है कि वे "चिकित्सक की चेतावनी" सुनें। परमेश्वर की यही अपेक्षा है। वह सभी लोगों से सच्चे मानव-जीवन

को जानने के लिए कहता है, क्योंकि "उनके दिलों में, 'मानव जीवन' शब्द मौजूद नहीं हैं, उन्हें उनकी कोई परवाह नहीं है, और वे बस मेरे वचनों से ऊब जाते हैं, मानो मैं बड़बड़ करने वाली बुढ़िया बन गया हूँ।" लोगों की नजरों में परमेश्वर के वचन किसी रोजमर्रा के बरतन की तरह हैं, वे उन्हें बिलकुल भी महत्वपूर्ण नहीं मानते। इसलिए, लोग परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में नहीं ला पाते—वे ऐसे दयनीय अभागे बन गए हैं, जो सत्य से अवगत तो हैं परंतु उसे अभ्यास में नहीं लाते। इसलिए, मनुष्य की एक अकेली यही कमी एक समयावधि के लिए परमेश्वर में घृणा उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है, और इसलिए वह कई बार कहता है कि लोग उसके वचनों पर ध्यान नहीं देते। फिर भी अपनी धारणाओं में लोग यह सोचते हैं : "हर दिन हम परमेश्वर के वचनों का अध्ययन और विश्लेषण करते हैं, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि हम उन पर ध्यान नहीं देते? क्या यह हमारे साथ अन्याय नहीं है?" पर मैं तुम लोगों के लिए थोड़ी व्याख्या कर देता हूँ—लोग शर्म से पानी-पानी हो जाएँगे। जब वे परमेश्वर के वचन पढ़ते हैं, तो वे सहमति में अपना सिर हिलाते हैं, वे झुकते और जमीन खुरचते हैं, जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक के शब्दों पर लोटता है। इस प्रकार, इस समय लोग अपने को अयोग्य महसूस करते हैं, उनके चेहरों पर आँसू बहते हैं, ऐसा लगता है मानो वे पश्चात्ताप करना चाहते हों और नए सिरे से शुरू करना चाहते हों—लेकिन जब यह समय बीत जाता है, तो उनकी यह भेड़ जैसी झेंप तुरंत गायब हो जाती है और उसकी जगह भेड़ियापन ले लेता है; वे परमेश्वर के वचनों को एक तरफ रख देते हैं और हमेशा विश्वास करते हैं कि उनके अपने मामले पहले हैं, परमेश्वर के मामले अंत में आते हैं, और अपनी इन क्रियाओं के कारण वे कभी भी परमेश्वर के वचनों को क्रियान्वित नहीं कर पाते। जब तथ्य सामने आते हैं, वे अपनी कोहनी बाहर की तरफ खींचते हैं[क]—यह अपने ही लोगों को धोखा देना है—कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर कहता है, "बल्कि, जीविका के लिए मुझ पर निर्भर रहते हुए 'मुझसे कन्नी काटता है।'" केवल इसी से यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर के वचनों में थोड़ा-सा भी झूठ नहीं है, वे पूरी तरह से सत्य हैं, और उनमें जरा-सी भी अतिशयोक्ति नहीं, फिर भी वे कुछ महत्व घटाकर कहे गए प्रतीत होते हैं, क्योंकि मनुष्य की कद-काठी बहुत छोटी है, वह उन्हें सहने में असमर्थ है। परमेश्वर के वचनों ने पहले ही मनुष्य की आंतरिक और बाहरी दोनों चीजों का बिलकुल स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत कर दिया है, उन्होंने उन्हें पूरी स्पष्टता से उकेरा है, जो वास्तव में शैतान के मूल चेहरे से एक सुस्पष्ट समानता दर्शाता है। बात बस इतनी है कि वर्तमान चरण में लोगों ने अभी तक सब-कुछ स्पष्ट रूप से नहीं देखा है, और इसलिए यह कहा जाता है कि वे स्वयं को जान नहीं पाए हैं। इसी कारण से मैं कहता हूँ कि

यह सबक जारी रहना चाहिए; यह रुक नहीं सकता। जब लोग स्वयं को जान पाएँगे, तभी परमेश्वर की महिमा होगी। यह समझना आसान है—मुझे विस्तार में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। परंतु एक बात है, जो मैं तुम लोगों को याद दिलाना चाहूँगा, हालाँकि पहले परमेश्वर के इन वचनों को पढ़ना चाहिए : "आज के समय में लोगों ने मुझे कभी कीमती नहीं माना है, उनके हृदय में मेरी कोई जगह नहीं है। क्या वे आने वाले पीड़ादायक दिनों में मेरे प्रति सच्चा प्रेम दिखा सकते हैं?" इन शब्दों का क्या अर्थ है? परमेश्वर कह रहा है कि ताड़ना अभी तक मनुष्य पर आई नहीं है, जो दर्शाता है कि "स्वयं को जानने" के वचनों का एक आंतरिक अर्थ भी है—क्या तुमने इसे देखा? कठिनाई और शुद्धिकरण से गुजरे बिना लोग स्वयं को कैसे जान सकते हैं? क्या ये खाली शब्द नहीं हैं? क्या तुम वास्तव में परमेश्वर द्वारा बोली गई सभी बातों पर विश्वास करते हो? क्या तुम परमेश्वर के वचनों को समझ पाते हो? क्यों परमेश्वर ऐसी बातें बार-बार कहता है, "मनुष्य के कार्यों को देखकर, मेरे पास एकमात्र विकल्प चले जाना है," और यह भी कहता है, "केवल जब पहाड़ गिरते हैं और पृथ्वी तितर-बितर होती है, तभी लोग मेरे वचनों के बारे में सोचते हैं, केवल तब ही वे अपने सपनों से जागते हैं, लेकिन तब समय आ चुका होता है, वे एक विशाल बाढ़ द्वारा निगल लिए जाते हैं, उनकी लाशें पानी की सतह पर तैरने लगती हैं"? परमेश्वर क्यों कहता है कि "लोग सोचते हैं" और यह नहीं कहता कि "लोग मेरे वचनों का पालन करते हैं"? क्या यह सच है कि पहाड़ गिर जाते हैं और पृथ्वी तितर-बितर हो जाती है? लोग ऐसे वचनों पर ध्यान नहीं देते, वे उन्हें फिसलने देते हैं, और इसलिए वे परमेश्वर के वचनों में बहुत "कष्ट" झेलते हैं। इसका कारण यह है कि वे बहुत विचारहीन हैं। मनुष्य की इस कमी के कारण परमेश्वर कहता है, "मैंने, आँसू की नलिकाओं से रहित इस 'सनकी' ने, मनुष्य के लिए बहुत आँसू बहाए हैं। किंतु, मनुष्य इस बारे में कुछ नहीं जानता।" चूँकि लोग परमेश्वर के वचनों पर कोई ध्यान नहीं देते, इसलिए परमेश्वर उन्हें याद दिलाने और उनकी "सहायता" प्राप्त करने के लिए इस साधन का उपयोग करता है।

अभी मैं दुनिया के घटनाक्रम के बारे में भविष्यवाणी नहीं करूँगा, लेकिन मनुष्य के भाग्य के बारे में कुछ बताऊँगा। क्या मैंने यह नहीं कहा कि लोग स्वयं को जानें? इसे कैसे समझाया जा सकता है? लोगों को स्वयं को कैसे जानना चाहिए? जब परमेश्वर लोगों को इतना "तड़पाता" है कि वे जीवन और मृत्यु के बीच झूलने लगते हैं, तो वे मानव-जीवन का कुछ अर्थ समझना शुरू करते हैं, और यह मानते हुए कि व्यक्ति का पूरा जीवन एक सपने से अधिक नहीं है, वे मानव-जीवन से घबरा जाते हैं। वे मानते हैं कि

मनुष्य का जीवन पीड़ा से भरा है, कि वे कभी कुछ हासिल किए बिना ही मर जाएँगे, कि उनका जीवन निरर्थक और मूल्यहीन है। मानव-जीवन एक सपना है, ऐसा सपना, जिसमें दुख और सुख आते-जाते हैं। आज लोग परमेश्वर के लिए जीते हैं, लेकिन चूँकि वे मनुष्यों की दुनिया में जीते हैं, इसलिए उनका दैनिक जीवन खाली और मूल्यहीन रहता है, जिससे सभी लोगों को यह पता चलता है कि परमेश्वर का आनंद एक क्षणिक सुख है—लेकिन यदि वे परमेश्वर का आनंद न लेते हुए भी देह में रहते हैं, भले ही वे परमेश्वर पर विश्वास करते हों, तो इसका क्या अर्थ है? देह में मनुष्य के लिए सब शून्य है। मानव-जीवन के उतार-चढ़ावों का अनुभव करने के बाद, बुढ़ापा आने पर मनुष्य के बाल सफेद हो जाते हैं, उसका चेहरा झुर्रियों से भर जाता है, उसके हाथ घट्टों से ढक जाते हैं। हालाँकि उसने एक बड़ी कीमत चुकाई है, किंतु व्यावहारिक रूप से उसने कुछ प्राप्त नहीं किया है। इसलिए मेरे वचन एक कदम आगे जाते हैं : देह में रहने वालों के लिए सब-कुछ शून्य है। यह संदेह से परे है, और तुम्हें इसकी विस्तार से जाँच करने की आवश्यकता नहीं है। यह मानव-जीवन का मूल चेहरा है, जिसके बारे में परमेश्वर ने बार-बार बात की है। परमेश्वर इन वचनों को मनुष्य की कमजोरी के परिणामस्वरूप नहीं छोड़ता, बल्कि वह बस अपनी मूल योजना के अनुसार कार्य करता है। शायद कुछ वचन लोगों को सहायता और समझ प्रदान करते हैं, और शायद कुछ ठीक इसका उलटा करते हैं और जानबूझकर लोगों के मृत्यु के परिवेश में रहने का कारण बन जाते हैं—और ठीक इसी वजह से वे पीड़ित हैं। इस प्रकार, परमेश्वर शायद लोगों को जानबूझकर भ्रमित करने के लिए "खाली शहर की रणनीति"[ख] तैयार करता है, लेकिन वे इसे बिलकुल भी नहीं देख पाते, वे अँधेरे में बने रहते हैं। और फिर भी, सब-कुछ परमेश्वर के हाथों में है, और भले ही लोगों को यह पता है, फिर भी वे इससे अपनी रक्षा कैसे कर सकते हैं? इस प्रकार, कोई भी ताड़ना के खतरे से बचने में सक्षम नहीं है—वे क्या कर सकते हैं? वे बस परमेश्वर की व्यवस्थाओं के सामने झुक सकते हैं—और क्या यह इसलिए नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें पकड़ लिया है और वह उन्हें जाने नहीं देगा? केवल परमेश्वर की धमकियों के तहत ही सब लोग प्रकृति के मार्ग का पालन कर पाते हैं—क्या ऐसा नहीं है? यदि परमेश्वर की व्यवस्था न होती, तो लोग स्वेच्छा से हार कैसे मान लेते? क्या यह मजाक नहीं होगा? हालाँकि मानव-जीवन खाली है, लेकिन जब लोगों का जीवन आराम से बीत रहा हो, तो कौन तैयार होगा चुपचाप मनुष्य की दुनिया छोड़कर परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयास करने के लिए? लोग बेबसी में मर जाते हैं—कौन कभी प्रचुरता के बीच मरता है, जब उनके पास वह सब होता है, जो वे चाहते हैं? केवल आकाश से उतरा एक

"तारा" ही इसका अपवाद होगा। उसके द्वारा लिए गए तीसरे स्वर्ग के जीवन के आनंद की तुलना में पृथ्वी का जीवन अधोलोक में रहने के समान होगा—केवल ऐसी ही परिस्थितियों में वह मरने को तैयार हो सकता है। फिर भी आज कौन है, जो स्वर्ग का तारा है? मैं भी इस बारे में "अस्पष्ट" हूँ। आओ, चारों ओर खोजें और देखें कि क्या हमें ऐसा कोई मिल सकता है? यदि वह हमें मिल गया, तो मैं चाहूँगा कि लोग उससे यह पूछने में मेरी मदद करें कि क्या वह मेरे उपर्युक्त वचनों के अनुसार कार्य करने के लिए तैयार है? फिर भी मैं तुम लोगों में से प्रत्येक को एक चेतावनी देता हूँ : तुम लोगों में से किसी को भी "नायक" की भूमिका नहीं निभानी चाहिए और मरने के लिए स्वयं को प्रस्तुत नहीं करना चाहिए, क्या तुम समझते हो?

फुटनोट :

क. "अपनी कोहनी बाहर की तरफ खींचना" पूरा जोर लगाने के संदर्भ में एक चीनी मुहावरा है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति अपने करीबी लोगों, उदाहरण के लिए माता-पिता, बच्चों, रिश्तेदारों या भाई-बहनों की कीमत पर दूसरों की मदद कर रहा है।

ख. "खाली शहर की रणनीति" प्राचीन चीन की छत्तीस रणनीतियों में से 32 वीं है। इस रणनीति में भ्रामक रूप से एक दबंग मोर्चा दिखाया जाता है, ताकि अपनी तैयारी की कमी छिपाकर शत्रु को धोखा दिया जा सके।

अध्याय 38

मानव जाति के अंतर्निहित लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अर्थात मानव जाति के असली चेहरे के अनुसार अब तक कार्य करते रहना वास्तव में आसान नहीं रहा है, और केवल इसी के माध्यम से परमेश्वर की महान शक्ति स्पष्ट हुई है। शरीर के सार के साथ-साथ बड़े लाल अजगर के भ्रष्टाचार के कारण मनुष्य अब तक भ्रष्ट हुआ है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, यदि परमेश्वर के आत्मा का मार्गदर्शन न होता, तो मनुष्य कैसे वर्तमान दिन तक खड़ा रहना जारी रख पाता? मनुष्य परमेश्वर के सामने आने के योग्य नहीं है, परन्तु परमेश्वर अपने प्रबंधन और बहुत देर होने से पहले अपने महान कार्य को पूरा करने की खातिर मानव जाति से प्रेम करता है। सच कहें तो, कोई भी व्यक्ति अपने जीवनकाल में मानव जाति के लिए परमेश्वर के प्रेम का ऋण नहीं चुका सकता। शायद कुछ अपने जीवन का बलिदान करके परमेश्वर की अनुग्रह का बदला चुकाना चाहते हैं, लेकिन मैं तुम लोगों से कहता हूँ : मनुष्य परमेश्वर के सामने मरने के योग्य नहीं है, और इसलिए मनुष्य की मृत्यु व्यर्थ होगी। ऐसा इसलिए है कि परमेश्वर के लिए किसी व्यक्ति

की मृत्यु उल्लेखनीय भी नहीं है, इसका मोल एक पैसे का भी नहीं है, यह ज़मीन पर एक चींटी की मौत की तरह है। मैं लोगों को सलाह देता हूँ कि खुद को इतना मूल्यवान न समझो, और यह न सोचो कि परमेश्वर के लिए मर जाना एक बड़े पहाड़ जितना वजन रखता है। वास्तव में, मनुष्य की मौत एक पंख की तरह हलकी-फुलकी बात होती है, यह उल्लेख के योग्य नहीं। लेकिन फिर भी, मनुष्य का देह प्रकृति द्वारा मरने के लिए अभिशप्त है, और अंत में, भौतिक शरीर को धरती पर खत्म होना ही होगा। यह सीधी-सी सच्चाई है, और कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता। यह "प्रकृति का नियम" है जिसका मैंने मानव जीवन के सभी अनुभवों की संपूर्णता से निष्कर्ष निकाला है। और इसलिए अंजाने में ही, परमेश्वर ने मनुष्य का अंत इस तरह से परिभाषित किया है। क्या तुम समझे? कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर कहता है, "मैं मानव जाति की अवज्ञा से घृणा करता हूँ। मुझे नहीं पता क्यों। ऐसा लगता है कि प्रारंभ से ही मैं मनुष्यों से घृणा करता रहा हूँ, और फिर भी मैं उनके लिए गहरी सहानुभूति महसूस करता हूँ। और इस तरह मनुष्य मुझे दो दिलों से देखता है, क्योंकि मैं मनुष्य से प्रेम करता हूँ, और मैं मनुष्य से घृणा भी करता हूँ।"

कौन है जो परमेश्वर की उपस्थिति या उसके प्रकटन के लिए उसकी प्रशंसा नहीं करता है? इस समय, ऐसा लगता है कि मैं पूरी तरह से मनुष्य के भीतर रही अशुद्धता और अधर्म को भूल गया हूँ। मैं, मानव जाति की आत्म-तुष्टि, आत्म-महत्ता, अवज्ञा, चुनौती और उसके समस्त विद्रोह, को भूल जाने के लिए, अपने दिमाग के पीछे धकेल देता हूँ। मानव जाति के ऐसे होने के कारण परमेश्वर विवश नहीं है। चूँकि परमेश्वर और मैं "एक ही तरह के दुःख को साझा करते हैं", मैं भी इस परेशानी से स्वयं को मुक्त करता हूँ अन्यथा मैं मनुष्य के द्वारा और अधिक बाध्य किया जाऊँगा। उसे लेकर क्यों परेशान हुआ जाए? चूँकि मनुष्य मेरे साथ परमेश्वर के परिवार में शामिल होने के लिए तैयार नहीं है, मैं उससे जबरन ऐसा करवाने के लिए अपनी ताकत का उपयोग कैसे कर सकता हूँ? मैं ऐसा कुछ भी नहीं करता जो मनुष्य के लिए दमनकारी हो, और कोई आश्चर्य नहीं कि चूँकि मैं परमेश्वर के परिवार में पैदा हुआ था, इसलिए यकीनन मनुष्य और मैं हमेशा भिन्न हैं। वो भारी शिकस्त जिसमें वह खुद को आज पाता है, इसी के कारण हुई है। लेकिन मैं मनुष्यों की कमजोरियों को व्यापक स्थान देता हूँ; मेरे पास विकल्प ही क्या है? क्या यह इसलिए नहीं है कि मैं निर्बल हूँ? कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर मानव जाति के "प्रतिनिधित्व" से "सेवा-निवृत्त" हो जाने। और "पेंशन" की माँग करता है। जब मैं एक मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से बोलता हूँ, और मनुष्य नहीं सुनता, लेकिन जब मैं परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से बोलता हूँ, क्या वह तब भी अवज्ञा करने से कभी रुका है? शायद

वह दिन आएगा जब परमेश्वर सचमुच अचानक मानव जाति के "प्रतिनिधित्व" से "सेवा-निवृत्त" हो जाएगा, और जब वह समय आएगा, तो परमेश्वर का वचन और भी अधिक प्रचंड हो जाएगा। आज, यह मेरे कारण हो सकता है कि परमेश्वर इस तरह से बोलता है, और अगर वह दिन आता है, तो परमेश्वर मेरी तरह, नम्रता से और धैर्यपूर्वक "नर्सरी के बच्चों को कहानियाँ", नहीं सुनाएगा। शायद मैं जो कहता हूँ, वह बहुत उपयुक्त नहीं है, लेकिन केवल देहधारी परमेश्वर की खातिर परमेश्वर मनुष्य पर अपनी पकड़ कुछ ढीली करने को तैयार है; अन्यथा, इसका परिणाम सोचना में भी बहुत भयानक होगा। जैसे परमेश्वर ने कहा, "मैंने कुछ हद तक उन पर मेरी पकड़ ढीली कर दी, उनको अपनी शारीरिक वासनाओं में लिप्त होने की इजाज़त देते हुए, और इसलिए उन्होंने संयम और हिचकिचाहट के बिना रहने की हिम्मत की और यह देखा जा सकता है कि वे वास्तव में मुझे प्यार नहीं करते थे, क्योंकि वे देह में जीते थे।" परमेश्वर यहाँ क्यों कहता है, "अपनी वासनाओं में लिप्त" और "देह में जीते"? सच कहें तो, मेरी व्याख्या के बगैर मनुष्य इस तरीके के वचनों को स्वाभाविक रूप से समझ जाएगा। शायद कुछ लोग कहें कि वे समझ नहीं पा रहे हैं, लेकिन मैं कहूँगा कि यह जानबूझकर अंजान बनने का ढोंग करने का मामला है। याद दिलाने के लिए कुछ शब्द : परमेश्वर क्यों कहता है, "मैं मनुष्य से केवल मेरे साथ सहयोग करने के लिए कहता हूँ"? परमेश्वर यह भी क्यों कहता है कि मानव प्रकृति को बदलना मुश्किल है? परमेश्वर मनुष्य की प्रकृति से घृणा क्यों करता है? और मनुष्य की प्रकृति की बातें आखिर क्या हैं? मनुष्य की प्रकृति के बाहर कौन-सी चीज़ें हैं? इन सवालों पर क्या कभी किसी ने विचार किया है? शायद यह मनुष्य के लिए एक नया विषय है, पर, मैं मनुष्य से इस पर उचित ध्यान देने के लिए अनुनय करता हूँ, अन्यथा मनुष्य हमेशा परमेश्वर को "मानवीय प्रकृति को बदलना मुश्किल है" जैसे वाक्यांशों द्वारा क्रोधित करेगा। इस तरह उसके खिलाफ काम करने से क्या लाभ है? क्या अंततः यह सिर्फ परेशानी मोल लेना नहीं है? क्या अंत में उसका परिणाम पत्थर पर अंडा मारने जैसा नहीं होगा?

वास्तव में, समस्त परीक्षण और प्रलोभन जो मनुष्य पर आते हैं, वे परमेश्वर द्वारा मनुष्य से अपेक्षित सबक हैं। परमेश्वर के इरादे के मुताबिक, मनुष्य को अपनी कुछ प्रिय वस्तु को त्यागना भी पड़े, फिर भी इन चीज़ों को हासिल किया जा सकता है, लेकिन चूँकि मनुष्य हमेशा खुद को प्यार करता है, इसलिए वह परमेश्वर के साथ सचमुच सहयोग करने में वह विफल रहता है। परमेश्वर मनुष्य से कुछ ज्यादा अपेक्षा नहीं करता है। परमेश्वर मनुष्य से जो चाहता है वह सब कुछ आसानी से और खुशी से प्राप्त किये जाने के

उद्देश्य से है; बात केवल इतनी है कि मनुष्य कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार ही नहीं है। किसी की संतान होने के नाते, एक व्यक्ति अपने माता-पिता का सम्मान करके जीते हुए और उनकी देखभाल के लिए कुछ पैसे बचाकर अपने कर्तव्य को पूरा कर सकता है। फिर भी वे डरते हैं कि वे अच्छी तरह से खा नहीं पाएँगे या उनके अपने कपड़े बहुत सादे होंगे, इसलिए किसी न किसी कारण से, उनके माता-पिता की प्यार भरी देखभाल के कारण उन पर जो कर्ज़ है, उसे वे भूल जाते हैं, मानो कि जब तक संतान बहुत धन न कमा ले तब तक उनकी देखभाल का काम रोका जा सकता है। मैं इससे देख सकता हूँ कि मनुष्यों के हृदय में अपने माता-पिता के प्रति संतोनोचित प्रेम नहीं है—वे सभी कुपुत्र हैं। शायद मेरा कथन बहुत ज्यादती है, लेकिन मैं तथ्यों के विपरीत व्यर्थ बातें नहीं उगल सकता। अपने आप को संतुष्ट करने के लिए परमेश्वर का विरोध करने में मैं "दूसरों का अनुकरण" नहीं कर सकता। धरती पर किसी के पास भी संतानोचित हृदय नहीं होने के कारण ही परमेश्वर ने कहा : "स्वर्ग में, शैतान मेरा वैरी है, पृथ्वी पर, मनुष्य मेरा शत्रु है। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच संयोजन की वजह से, उनकी नौ पीढ़ियों को संगत के कारण दोषी माना जाना चाहिए।" शैतान परमेश्वर का दुश्मन है; परमेश्वर का इस प्रकार कहने का कारण यह है कि वह परमेश्वर के महान अनुग्रह और दया का ऋण नहीं चुकाता बल्कि "धारा के विपरीत पतवार चलाता है" और ऐसा करते हुए वह परमेश्वर के प्रति अपने संतानोचित समर्पण को नहीं दिखाता है। क्या लोग भी इस तरह के ही नहीं हैं? वे अपने "माता-पिता" के प्रति कोई संतानोचित सम्मान नहीं दिखाते और अपने "माता-पिता" की प्यार भरी देखभाल का कर्ज़ नहीं चुकाते हैं। यह इसे दिखाने के लिए पर्याप्त है कि पृथ्वी के लोग स्वर्ग-स्थित शैतान के रिश्तेदार हैं। मनुष्य और शैतान, परमेश्वर का विरोध करने में एक ही दिल और दिमाग के हैं, और इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर नौ पीढ़ियों को दोषी ठहरायेगा और किसी को क्षमा नहीं करेगा। अतीत में, परमेश्वर ने स्वर्ग में अपने प्रणिपात दास को मानव जाति का प्रबंधन सौंपा था, लेकिन उसने बात नहीं मानी और अपने मिज़ाज और विद्रोह में लिप्त रहा। क्या विद्रोही मनुष्य भी इस मार्ग में आगे नहीं बढ़ रहे हैं? चाहे परमेश्वर "लगाम" को कितना भी खींचे, लोग किसी तरह विचलित नहीं किए जा सकते और अपने पथकर्म से पलट नहीं सकते। मेरे विचार में, यदि मनुष्य इस मार्ग पर चलना जारी रखते हैं, तो वे अपनी बर्बादी के स्वयं ही लाएँगे। शायद अब तुम लोग इन वचनों का सही अर्थ समझोगे: "मनुष्य को उसके पुराने स्वभाव से मुक्त नहीं किया जा सकता।" परमेश्वर ने कई अवसरों पर मनुष्य को याद दिलाया है : "मनुष्य की अवज्ञा के कारण मैंने उसे छोड़ दिया है।" परमेश्वर इसे बार-बार क्यों कहता है?

क्या परमेश्वर वास्तव में इतना बेरहम हो सकता है? क्यों परमेश्वर यह भी कहता है, "क्योंकि मैं तो मनुष्य हूँ ही नहीं"? इतने सारे खाली दिनों में, क्या किसी ने भी वास्तव में इन विस्तृत मुद्दों पर ध्यान से विचार किया है? मैं मानवजाति से आग्रह करता हूँ कि वे परमेश्वर के वचनों में अधिक प्रयास डालें, इसके साथ यूँ लापरवाही से व्यवहार न करें क्योंकि इससे तुम्हारा या दूसरों का कोई लाभ नहीं है। जो कहने की जरूरत नहीं है, उसे न कहना ही बेहतर है और जिस पर विचार करने की जरूरत नहीं है, उस बारे में न सोचना ही बेहतर है। क्या वह अधिक सरल नहीं होगा? इस अभ्यास से क्या गलत हो सकता है? इससे पहले कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपने कार्य की समाप्ति घोषित करे, कोई भी "चलना" नहीं रोकेगा; कोई भी अपने कर्तव्य से हाथ नहीं झाड़ लेगा। अभी समय नहीं हुआ है; परमेश्वर के लिए एक रहनुमा या अगुआ बनने का साहस मत करो। मुझे लगता है कि अभी रुकने में, और गति को विराम देने में बहुत समय बाकी है—तुम्हें क्या लगता है?

परमेश्वर मनुष्यों को ताड़ना में ले आता है, और वह उन्हें मौत के माहौल में ले आता है, लेकिन इसके विपरीत, परमेश्वर मनुष्यों से पृथ्वी पर क्या करवाना चाहता है? निश्चय ही मनुष्य का उदीश्य घर पर एक अलमारी की तरह काम करना नहीं है—जिसे खाया या पहना नहीं जा सकता, केवल देखा जा सकता है। यदि ऐसा होता, तो इतनी सारी जटिल प्रक्रियाओं को काम में क्यों लगाएँ, जिससे लोगों को इतनी शारीरिक पीड़ा हो? परमेश्वर कहता है, "मैं उन्हें 'फाँसी के मैदान' में ले जाता हूँ, क्योंकि मानव जाति का अपराध मेरी ताड़ना पाने के लिए पर्याप्त है।" इस समय, क्या परमेश्वर लोगों को फाँसी के मैदान तक खुद चल कर जाने देता है? कोई भी "अपने लिए माफी की याचना" क्यों नहीं करता है? तो मनुष्य को सहयोग कैसे करना चाहिए? क्या मनुष्य वास्तव में भावनाओं से प्रभावित हुए बिना वैसे काम कर सकता है, जैसे परमेश्वर न्याय करते समय करता है? इन वचनों की प्रभावशीलता मुख्य रूप से मनुष्य की हरकतों पर निर्भर करती है। जब एक पिता पैसे कमा कर घर लाता है, तब यदि माता को यह नहीं पता कि उसके साथ सहयोग कैसे करना है, या घर का प्रबंधन कैसे करना है, तो वह घर किस स्थिति में होगा? अब कलीसिया की स्थिति को देखो : नेताओं के तौर पर तुम लोग क्या महसूस करते हो? अपनी व्यक्तिगत राय के बारे में बात करने के लिए तुम लोग एक बैठक आयोजित कर सकते हो। यदि माँ घर में सब कुछ अव्यवस्थित कर दे, तो उस परिवार के बच्चे कैसे दिखेंगे? अनाथ की तरह? भिखारी की तरह? इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने कहा : "लोगों को लगता है कि मैं ऐसा देवत्व हूँ जिसमें कि 'बुद्धि की गुणवत्ता' का अभाव है, लेकिन कौन

समझ सकता है कि मैं मानवता के आर-पार सब-कुछ देख पा रहा हूँ?" ऐसी स्पष्ट स्थिति के लिए, परमेश्वर को अपनी दिव्यता से बात करने की कोई जरूरत नहीं है। जैसा कि परमेश्वर कहता है, "एक कील को किसी घन-हथौड़े से ठोकने की कोई आवश्यकता नहीं है।" इस समय, शायद कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर की इस सूक्ति, "मनुष्यों में, कोई भी ऐसा नहीं जो मुझे प्रेम करता है" का कुछ व्यावहारिक अनुभव है। यहाँ पर, ठीक वैसा ही है जैसा कि परमेश्वर ने कहा था : "वर्तमान परिस्थिति के कारण सभी लोग अनिच्छा से अपने सिर तो झुकाते हैं, परन्तु उनके दिल अभी भी यकीन नहीं करते हैं।" ये वचन एक दूरबीन की तरह हैं। निकट भविष्य में, मनुष्य एक अन्य स्थिति में चला जाएगा। इसे असुधार्य होना कहा जाता है। क्या तुम लोग समझते हो? यह परमेश्वर के इन दो सवालों का जवाब है : "क्या लोग पाप से सिर्फ इसीलिए नहीं बचते कि उन्हें डर है कि मैं छोड़कर चले जाऊंगा? क्या यह सच नहीं है कि वे केवल इसीलिए शिकायत नहीं करते कि उन्हें ताड़ना का डर लगता है?" वास्तव में, वर्तमान चरण में लोग कुछ सुस्त हैं मानो थकान से चूर हों। वे परमेश्वर के कार्य की ओर ध्यान देने की मनस्थिति में बिलकुल नहीं होते हैं, और केवल अपने देह की व्यवस्थाओं और जुगाड़ बनाने के बारे में चिंतित रहते हैं। क्या ऐसा नहीं है?

अध्याय 39

आओ, हम परमेश्वर के वचनों से परे जाकर अपने जीवन से जुड़े मामलों के बारे में थोड़ी बात करें, ताकि हमारे जीवन और अधिक फले-फूलें और हम परमेश्वर की उम्मीदों पर खरे उतरें। विशेष रूप से, आज के आगमन के साथ—जो हर किसी को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करने और ताड़ना का समय है—बड़ी तस्वीर पर ध्यान केंद्रित करने और "सामूहिक हित" पर एकाग्र होने की अधिक आवश्यकता है। यह परमेश्वर की इच्छा है, और यही वह है, जिसे सभी लोगों द्वारा हासिल किया जाना चाहिए। कैसे हम स्वर्ग में मौजूद परमेश्वर की इच्छा के लिए खुद को अर्पित नहीं कर सकते? परमेश्वर "सभी प्रकार के लोगों के लिए संख्याएं निर्धारित करते हुए, हर तरह के व्यक्ति को अलग-अलग निशानों से चिह्नित करता है, ताकि उनके पूर्वज उन्हें उनके परिवारों में वापस ले जा सकें," जिससे पता चलता है कि लोगों को विभिन्न प्रकारों के अनुसार वर्गीकृत किया गया है और इसके परिणामस्वरूप, सभी तरह के लोग अपने-अपने असली रूपों को प्रकट कर रहे हैं। इस तरह, यह कहना उचित है कि लोग अपने पूर्वजों के प्रति वफ़ादार हैं न कि परमेश्वर के प्रति। हालांकि, सभी लोग अपने पूर्वजों के मार्गदर्शन में भी परमेश्वर को

सेवा प्रदान कर रहे हैं, जो परमेश्वर के कार्य की अद्‌भुतता है। सभी चीज़ें परमेश्वर के लिए सेवा कर रही हैं और भले ही शैतान लोगों को परेशान करता है, परमेश्वर इस मौके का उपयोग "स्थानीय संसाधनों" से अपनी सेवा करवाने के लिए करता है। बहरहाल, लोग इसे नहीं समझ पाते। जैसा परमेश्वर कहता है, "इस प्रकार, मैं श्रम को विभाजित करता हूँ और प्रयासों को बाँट देता हूँ। यह मेरी योजना का हिस्सा है और कोई मनुष्य इसमें रुकावट नहीं डाल सकता।" जब तक परमेश्वर ऐसा कर न ले, लोग वह सब नहीं देख सकते, जो परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है और वह सब जिसे परमेश्वर पूरा करना चाहता है। वो उसे केवल तभी देख सकते हैं, जब परमेश्वर का कार्य पूरा हो जाता है; यदि नहीं, तो वो अंधे हैं और कुछ नहीं देख पाते।

आज, कलीसियाओं के बीच परमेश्वर का नया कार्य है। हर किसी से वास्तव में मनुष्य का कार्य करवाने के लिए, वह उनसे प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करवाता है। जैसा परमेश्वर कहता है, "मैं सभी चीज़ों के बीच शासन करता हूँ, मैं सभी चीज़ों में सबको आज्ञा देता हूँ ताकि जो कुछ भी है वह प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करे और प्रकृति की आज्ञा के प्रति समर्पित हो।" मुझे पता नहीं कि "प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करने" में तुम लोगों के पास कौन-सा सयाना अंतर्ज्ञान है, तो आओ इस बारे में बात करें। मैं इसे इस तरह देखता हूँ : चूँकि उनके पूर्वज उन्हें घर ले जाते हैं, सभी प्रकार के लोगों को आगे आकर अपना "प्रदर्शन" करना चाहिए। और क्योंकि वो प्रकृति के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं, जो उनमें अंतर्निहित है उसका उपयोग, उनके मूल कार्य को करने के लिए किया जाता है, जिससे वो इस व्यवस्था के अनुसार पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हैं। पवित्र आत्मा का कार्य प्रत्येक व्यक्ति की अंदरूनी स्थिति के अनुसार किया जाता है; सटीकता से कहें तो इसे कहते हैं कि "परमेश्वर सभी चीज़ों का युक्तिपूर्वक इस्तेमाल करता है, ताकि वो उसकी सेवा करें", यह तब प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करने से जुड़ जाता है। भले ही किसी व्यक्ति के अंदर शैतान के तत्व हों, परमेश्वर इसका उपयोग करेगा, जो उनमें अंतर्निहित है, उसकी नींव में पवित्र आत्मा का कार्य जोड़कर वह उन्हें परमेश्वर की सेवा के लिए पर्याप्त बनाता है। "प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करने" के बारे में मैं बस यही कहूँगा—शायद तुम लोगों के पास कुछ उच्चतर सुझाव हों। मुझे आशा है कि तुम लोग कुछ मूल्यवान योगदान दे सकते हो, यह कैसा रहेगा? क्या तुम सब प्रकृति के मार्ग का अनुसरण करने में सहयोग देने के लिए तैयार हो? क्या तुम लोग परमेश्वर के साथ कार्य बांटने के लिए तैयार हो? क्या तुम सभी ने इस बारे में सोचा है कि इसे कैसे हासिल किया जाए?

मुझे उम्मीद है कि लोग परमेश्वर की इच्छा समझने में सक्षम हैं, और वे साझा आदर्शों की खातिर परमेश्वर को संतुष्ट करने में एक मन हो सकते हैं और राज्य के मार्ग पर एक साथ अग्रसर हो सकते हैं। अनावश्यक धारणाएँ बनाने की क्या आवश्यकता है? आज तक किसका अस्तित्व परमेश्वर की खातिर नहीं रहा है? और यह चूँकि ऐसा है तो दुःख, संताप और आह की क्या आवश्यकता है? यह किसी के लिए लाभप्रद नहीं है। लोगों का पूरा जीवन परमेश्वर के हाथों में हैं और अगर परमेश्वर के सामने लिया गया उनका संकल्प नहीं होता, तो मनुष्यों की इस खोखली दुनिया में व्यर्थ रहने के लिए कौन तैयार होता? कोई क्यों परेशानी उठाता? दुनिया में अंदर और बाहर भागते हुए, अगर वो परमेश्वर के लिए कुछ न करे, तो क्या उसका पूरा जीवन व्यर्थ नहीं चला जाएगा? यहाँ तक कि अगर परमेश्वर तुम्हारे कर्मों को उल्लेखनीय नहीं मानता, तो भी क्या तुम अपनी मौत के क्षण में आभार की एक मुस्कान नहीं दोगे? तुम्हें सकारात्मक प्रगति का पालन करना चाहिए, नकारात्मक अवनति का नहीं—क्या यह बेहतर अभ्यास नहीं है? यदि तुम्हारे कर्म पूरी तरह से परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए हैं, तो तुम नकारात्मक या प्रतिगामी नहीं बनोगे। चूँकि हमेशा लोगों के दिलों में ऐसी चीजें हैं जो अथाह होती हैं, इसलिए इसे महसूस किए बिना ही उनके चेहरे घने बादलों से ढँक जाते हैं, जिससे उनके जाने बिना उनके चेहरे पर कई "खाईयां" प्रकट हो जाती हैं, जो लगता है कि जमीन टूटने से बनी हों। लगता है जैसे ज़मीन हिल रही हो, जिससे लोगों के महसूस किए बिना ही "पहाड़ियां" और "घाटियां" जगह बदल रही हों। यहाँ मैं लोगों का उपहास नहीं कर रहा हूँ, बल्कि "भौगोलिक ज्ञान" की बात कर रहा हूँ।

यद्यपि परमेश्वर सभी लोगों को ताड़ना में लाया है, वह इस बारे में कहता कुछ नहीं। इसके बजाय, वह जानबूझकर इस विषय से दूर रहता है और एक नया विषय प्रारंभ कर देता है, जो एक लिहाज़ से तो परमेश्वर के कार्य के कारण है, और दूसरे लिहाज़ से, कार्य के इस चरण को तुरंत पूरा करने के कारण। चूँकि कार्य का यह चरण पूरा करने में परमेश्वर का यह लक्ष्य काफ़ी समय पहले ही प्राप्त कर लिया गया है, अब और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। आज, मुझे पता नहीं कि तुम लोगों ने परमेश्वर के कार्य के तरीकों को कितना देखा है; मेरी चेतना में, मुझे हमेशा लगता है कि परमेश्वर का कार्य, चरण और समय की अवधि में, उतना स्पष्ट रूप से विभाजित नहीं है, जैसा वह पहले हुआ करता था। इसके बजाय, प्रत्येक दिन कार्य करने के अपने साधन लाता है, लगभग हर तीन से पांच दिन में परिवर्तन होता है और पांच दिनों में, परमेश्वर के कार्य में दो अलग-अलग विषय-वस्तु भी हो सकती हैं। यह परमेश्वर के कार्य की गति

दिखाता है; इससे पहले कि लोगों को प्रतिक्रिया देने और बारीकी से अवलोकन का समय मिले, परमेश्वर बिना किसी सुराग़ के चला जाता है। इस प्रकार, परमेश्वर हमेशा लोगों की समझ के परे है, और इस बात ने पवित्र आत्मा के कार्य को अगोचर बना दिया है। क्यों परमेश्वर हमेशा ऐसे वचन कहता है कि "और इसलिए मैंने मनुष्य को छोड़ दिया"? लोग इन वचनों पर थोड़ा ध्यान तो दे सकते हैं, लेकिन वो उनका अर्थ नहीं समझते। अब बताओ, क्या तुम लोग समझते हो? कोई आश्चर्य नहीं कि लोगों को पवित्र आत्मा की मौजूदगी की कोई समझ नहीं है। परमेश्वर के लिए उनकी खोज हमेशा धुंधली चांदनी के नीचे होती है—यह पूरी तरह से सच है—और यह ऐसा है जैसे कि परमेश्वर जानबूझ कर मनुष्य का मज़ाक उड़ा रहा है, जिससे सभी लोगों के दिमाग़ फूल जाते हैं, और वो चकरा जाते हैं और विमूढ़-से हो जाते हैं। वो मुश्किल से जान पाते हैं कि वो क्या कर रहे हैं; ऐसा लगता है जैसे वो कोई सपना देख रहे हों और जब वो जागते हैं, उन्हें पता नहीं चलता कि क्या हुआ था। लोगों को हैरत में डालने के लिए परमेश्वर के चंद साधारण वचन काफ़ी हैं। तो कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर कहता है, "आज, मैं सभी लोगों को शोधन के लिए, 'बड़ी भट्ठी' में डाल देता हूँ। मैं ऊँचाई पर खड़े होकर ध्यानपूर्वक लोगों को आग की लपटों में जलते देखता हूँ और लपटों में घिरे लोग सच्चाई उगल देते हैं।" परमेश्वर के निरंतर बदलते वचनों के बीच, लोगों को पता नहीं चलता कि क्या करना है; वास्तव में, जैसा कि परमेश्वर कहता है, ताड़ना लंबे समय पहले शुरू हो चुकी है और क्योंकि लोगों को इसका अहसास नहीं हुआ है, वो इसे केवल तभी जानते हैं, जब परमेश्वर स्पष्टता से कहता है, वो केवल तभी ध्यान देते हैं, जब परमेश्वर उन्हें बता देता है। यह कहा जा सकता है कि लोग केवल अब ताड़ना का अध्ययन करना शुरू करते हैं, जब परमेश्वर का कार्य इस बिंदु तक पूरा कर लिया गया है। यह ठीक वैसा ही है जब लोग परमाणु बम के बारे में जागरूक हुए थे—लेकिन चूँकि अभी समय नहीं आया है, लोग ध्यान नहीं देते; जब कोई इसे बनाने लगता है, केवल तब लोग ध्यान देना शुरू करते हैं। केवल जब परमाणु बम सामने आता है, तब लोग उसके बारे में अधिक जान पाते हैं। केवल तब जब परमेश्वर कहता है कि वह मनुष्य को भट्ठी में डाल देगा, तो लोग कुछ जागरूक हो जाते हैं। अगर परमेश्वर ने यह बात न की होती, तो कोई नहीं जान पाता—क्या ऐसा नहीं है? तो, परमेश्वर कहता है, "लोग अनजाने में भट्ठी में प्रवेश करते हैं, जैसे उन्हें रस्सी से खींचा गया हो, जैसे वो सुन्न हो गए हों।" हम क्यों न इसका विश्लेषण करें: लोग सच्चाई कब उजागर करते हैं, क्या तब जब परमेश्वर कहता है कि ताड़ना शुरू हो गई है या परमेश्वर के यह बताने से पहले कि ताड़ना शुरू हो गई है? इससे यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर के ताड़ना की

बात करने से पहले, लोगों ने पाप स्वीकार करना शुरू कर दिया था, जो यह दिखा रहा है कि ताड़ना परमेश्वर के बताने से पहले ही शुरू हो गई थी—क्या यह तथ्य नहीं है?

अध्याय 40

परमेश्वर के लिए, मनुष्य उसके हाथ के खिलौने की तरह है, उसके हाथों में रहे एक हाथ-से-फैलाये-गए नूडल की तरह, जिसे परमेश्वर की इच्छानुसार पतला या मोटा बनाया जा सकता है, ताकि इसके साथ जैसा वह चाहे वैसा कर सके। यह कहना उचित है कि मनुष्य सचमुच परमेश्वर के हाथों में एक खिलौना है, जैसे कि एक फ़ारसी बिल्ली जिसे एक महिला ने बाजार से खरीदा हो। निस्संदेह, वह परमेश्वर के हाथों में एक खिलौना है—और इसलिए पतरस के ज्ञान के बारे में कुछ भी गलत नहीं था। इससे देखा जा सकता है कि परमेश्वर के वचन और मनुष्य में कार्य आसानी से और आनंद के साथ पूरे हो जाते हैं। वह अपने दिमाग को कष्ट नहीं देता है या योजनाएँ नहीं बनाता है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं; वह मनुष्य में जो कार्य करता है, वह बहुत सहज है, जैसे कि मनुष्य से कहे गए उसके वचन होते हैं। जब परमेश्वर बोलता है, तो ऐसा लगता है कि उसकी जीभ उसके विचारों के साथ धाराप्रवाह चलती है, जो कुछ भी उसके दिमाग में आता है वह उसे कह देता है, अबाध रूप से। हालांकि, परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के बाद, लोग पूरी तरह से आश्वस्त हो जाते हैं, वे निःशब्द और हैरानी से आँखें फाड़ते हुए भौंचक्के रह जाते हैं। यहाँ क्या हो रहा है? यह अच्छी तरह से बताता है कि परमेश्वर की बुद्धि कितनी महान है। अगर लोगों की कल्पना के अनुसार, मनुष्य में परमेश्वर का कार्य अचूक और सही हो सके, इसलिए इसकी सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई होती, तो इन कल्पनाओं को एक कदम और आगे बढ़ाएँ तो—परमेश्वर का ज्ञान, चमत्कारिता और अथाहपन मापने योग्य होंगे, जो दर्शाता है कि लोगों द्वारा किया गया परमेश्वर का मूल्यांकन बहुत निम्न है। क्योंकि लोगों के कर्मों में हमेशा मूर्खता होती है, वे परमेश्वर को भी उसी तरह नापते हैं। परमेश्वर अपने कार्यों के लिए योजना नहीं बनाता या व्यवस्था नहीं करता; इसके बजाए, यह कार्य सीधे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किया जाता है—और वे सिद्धांत जिनके द्वारा परमेश्वर का आत्मा कार्य करता है, स्वतंत्र और अबाध हैं। ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर मनुष्य की स्थितियों पर कोई ध्यान नहीं देता और वह जैसे चाहता है, वैसे ही बात करता है—फिर भी मनुष्य अपने आप को परमेश्वर के वचनों से दूर नहीं कर सकता, जो कि परमेश्वर के ज्ञान के कारण है। तथ्य, अंततः, तथ्य ही हैं। चूँकि सभी लोगों में परमेश्वर के आत्मा का कार्य

इतना स्पष्ट है, यह परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों को दिखाने के लिए पर्याप्त है। अगर परमेश्वर को अपने सर्जित प्राणियों में किये गए अपने कार्य के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती, तो क्या यह एक बहुत उम्दा लकड़ी को किसी तुच्छ काम में इस्तेमाल करने जैसी बात न होगी? क्या परमेश्वर को वैयक्तिक रूप से काम करना होगा? क्या ऐसा करना सार्थक होगा? चूँकि परमेश्वर का आत्मा इतने लंबे समय से कार्य कर रहा है, और फिर भी सारे युगों में परमेश्वर के आत्मा ने इस तरह कभी काम नहीं किया है, किसी ने कभी भी उन साधनों और सिद्धांतों को नहीं जाना है जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है, वे कभी भी स्पष्ट नहीं हुए हैं। आज वे स्पष्ट हैं, क्योंकि परमेश्वर के आत्मा ने व्यक्तिगत रूप से उन्हें प्रकट किया है—और यह संदेह से परे है, यह सीधे परमेश्वर के आत्मा द्वारा दिखाया गया है, मनुष्य के द्वारा इसका सार प्रस्तुत नहीं किया गया है। क्यों नहीं हम तीसरे स्वर्ग की यात्रा करें और देखें कि क्या वास्तव में यही हो रहा है, क्या ये सब कार्य करने के बाद, परमेश्वर के श्रम ने उसे थका दिया है, क्या उसकी पीठ और उसके पैर में दर्द है, या फिर, क्या वह खाने या सोने में असमर्थ है और क्या इन सभी वचनों को बोलने के लिए परमेश्वर को बहुत सारी संदर्भ सामग्रियों को पढ़ना पड़ा था, क्या मेज पर परमेश्वर के कथनों के मसविदे फैले हुए हैं, और क्या इतना कुछ कहने के बाद उसका मुंह सूखा हुआ है। तथ्य इसके ठीक विपरीत हैं: इन वचनों की उस स्थान से कोई समानता नहीं है जहाँ पर परमेश्वर रहता है। परमेश्वर कहता है, "मैंने बहुत समय व्यतीत किया है, और मनुष्य की खातिर एक बड़ी कीमत चुकाई है, परन्तु इस समय, किसी अज्ञात कारण से, लोगों के विवेक अपने मूल कार्य को निष्पादित करने में बिलकुल असमर्थ हैं।" भले ही लोगों को परमेश्वर के दुःख का कोई एहसास हो या न हो, अगर वे अपने विवेक के खिलाफ गए बिना परमेश्वर के प्रेम की ओर जा सकते हैं, तो यह तर्कसंगत और उचित माना जाएगा। डर केवल यह है कि वे विवेक के मूल कार्य को प्रयोग में लाने के लिए तैयार नहीं हैं। तुम क्या कहते हो, क्या यह सही है? क्या ये वचन तुम्हारी मदद करते हैं? मेरी आशा है कि तुम लोग ऐसी चीजों से संबंधित रहो जिनमें अंतरात्मा का विवेक हो, न कि बिना विवेक के कचरा हो जाओ। तुम लोग इन वचनों के बारे में क्या सोचते हो? क्या किसी को इसका एहसास है? क्या तुम्हारे दिल में फँसी हुई सुई तुम्हें पीड़ा नहीं देगी? क्या परमेश्वर किसी चेतनाहीन लाश में सुई को चुभाता है? क्या परमेश्वर गलत है, क्या बुढ़ापे ने उसकी दृष्टि को धुंधली कर दिया है? मैं कहता हूँ कि यह असंभव है! जो भी हो, यह मनुष्य की गलती होनी चाहिए। क्यों नहीं अस्पताल में जाकर देखा जाए? निस्संदेह मनुष्य के दिल के साथ कुछ समस्या है; इसमें कुछ नए "हिस्सों" को जोड़ने की ज़रूरत है—तुम्हें

क्या लगता है? क्या तुम ऐसा करोगे?

परमेश्वर कहता है, "मैं उनके बदसूरत चेहरे और विषमता को देखता हूँ, और मैं एक बार फिर मनुष्य से दूर चल देता हूँ। ऐसी परिस्थितियों में लोग नासमझ बने रहते हैं, और एक बार फिर उन चीजों को वापस ले लेते हैं जिनके लिए मैंने उन्हें मना कर रखा था, मेरी वापसी का इंतज़ार करते हुए।" क्यों, इस "नये तकनीकी युग" में, परमेश्वर अब भी एक बैल-गाड़ी के बारे में बात कर रहा है? ऐसा क्यों है? क्या यह इसलिए है कि परमेश्वर को उकसाना पसंद है? क्या परमेश्वर समय बिता रहा है क्योंकि उसके पास कुछ भी बेहतर करने को नहीं है? क्या परमेश्वर मनुष्य की तरह है, और उसकी तरह भोजन ठूँस लेने के बाद सुस्ती में समय काट रहा है? क्या इन वचनों को बार-बार दोहराते रहने से कोई लाभ है? मैंने कहा है कि लोग धूर्त हैं, कि तुम्हें उनसे कुछ भी करवाने के लिए उनको कानों से ही पकड़ना होगा। आज उनको ये वचन कहने के बाद, वे कल तुरंत ही इन्हें भूल जाएँगे—मानो वे भूलने की बीमारी से पीड़ित हों। इस तरह, बात यह नहीं है कि कुछ वचन बोले ही नहीं गए हैं, बल्कि यह है कि लोगों ने उन पर कार्यवाही नहीं की है। अगर कुछ एक या दो बार ही कहा जाता है, तो लोग अनजान बने रहते हैं—इसे तीन बार कहा जाना चाहिए, यह न्यूनतम संख्या है। यहाँ तक कि कुछ ऐसे "बूढ़े लोग" भी हैं, जिनको दस से बीस बार बताया जाना चाहिए। इस तरह, अलग-अलग तरीकों से एक ही बात को बार-बार कहा जाता है, यह देखने के लिए कि लोग बदले हैं या नहीं। क्या तुम लोगों ने वास्तव में इस तरह से काम किया है? मैं लोगों को धमकाना नहीं चाहता, परन्तु वे सभी परमेश्वर के साथ लापरवाही से पेश आ रहे हैं; वे सभी जानते हैं कि उन्हें अधिक पोषक तत्वों के अनुपूरक लेने चाहिए, परन्तु परमेश्वर की वजह से वे चिंता नहीं करते—क्या यह परमेश्वर की सेवा है? क्या यह परमेश्वर को प्रेम करना है? कोई आश्चर्य नहीं कि वे अपना पूरा दिन दुनिया में लापरवाही से बिता देते हैं, निष्क्रिय और सुप्त रहकर। लेकिन फिर भी, कुछ लोग अभी भी संतुष्ट नहीं हैं, और स्वयं अपने लिए दुःख पैदा करते हैं। शायद मैं थोड़ा कठोर हो रहा हूँ, लेकिन इसे खुद को लेकर अति भावुक होना कहा जाता है! क्या यह परमेश्वर है जो तुम्हें दुःखी महसूस कराता है? क्या यह खुद दुःख मोल लेने का मामला नहीं है? क्या परमेश्वर की कृपा में से कुछ भी तुम्हारी खुशी का स्रोत बनने के योग्य नहीं है? पूरे समय, तुम परमेश्वर की इच्छा के प्रति जागरूक नहीं रहे हो, और तुम नकारात्मक, बीमार और परेशान रहे हो—ऐसा क्यों है? क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि तुम देह में जिओ? तुम परमेश्वर की इच्छा से अनजान हो, अपने ही दिल के भीतर असहज हो, तुम कुड़कुड़ाते और शिकायत

करते हो, पूरा दिन उदास रहकर बिता देते हो, और तुम्हारा शरीर दर्द और यातना भुगतता है—यही है जिसके तुम हकदार हो! तुम चाहते हो कि अन्य लोग ताड़ना के बीच परमेश्वर की प्रशंसा करें, कि वे ताड़ना से निकल आएँ, और इससे अबाधित रहें—फिर भी तुम खुद इसमें गिर गए हो और निकल नहीं सकते। दांग कुनरुई-एस्क्यू की इस "आत्म-बलिदान की भावना" का अनुकरण करने में कितने साल लग जाते हैं। जब तुम वचनों और सिद्धांतों का प्रचार करते हो, तो क्या तुम शर्मिंदा महसूस नहीं करते हो? क्या तुम खुद को जानते हो? क्या तुमने खुद को अलग किया है? क्या तुम सचमुच परमेश्वर से प्यार करते हो? क्या तुमने अपनी संभावनाओं और भाग्य को अलग कर दिया है? परमेश्वर के यह कहने में कोई आश्चर्य नहीं है कि ये तो लोग हैं जो चमत्कारिक और अथाह हैं। किसने सोचा होगा कि मनुष्य के भीतर इतने सारे "खजाने" हैं जो अभी तक खोद निकालने बाकी हैं? आज, इसको देखना ही "अपनी आँखें खोलने" के लिए पर्याप्त है—लोग कितने "विलक्षण" हैं! ऐसा लगता है कि मैं एक बच्चा हूँ जो गिनती नहीं कर सकता। आज भी मैं यह पता नहीं लगा पाया हूँ कि कितने लोग परमेश्वर से प्यार करते हैं। मुझे यह संख्या कभी याद नहीं रहती—और इसलिए, मेरी "बेवफ़ाई" के कारण, जब परमेश्वर को हिसाब देने का समय आता है, मैं हमेशा खाली हाथ होता हूँ, जो कुछ मैं चाहता हूँ उसे करने में असमर्थ, मैं हमेशा परमेश्वर के कर्ज में बना रहता हूँ। नतीजतन, जब मैं हिसाब देता हूँ, तो मुझे हमेशा परमेश्वर से "फटकार" मिलती है। मुझे नहीं मालूम है कि लोग इतने क्रूर क्यों हैं, इस वजह से मुझे हमेशा पीड़ा झेलनी पड़ती है। लोग इस अवसर का उपयोग हँसी में लोट-पोट हो जाने के लिए करते हैं, वे वास्तव में मेरे दोस्त नहीं हैं। जब मैं मुसीबत में होता हूँ, तो वे मेरी कोई मदद नहीं करते हैं, बल्कि जानबूझकर मेरा मजाक बनाते हैं—उनका वास्तव में कोई अन्तःकरण नहीं हैं!

अध्याय 41

परमेश्वर मनुष्य पर कैसे काम करता है? क्या तुमने इसे पूरी तरह से समझ लिया है? क्या तुम्हें यह बिलकुल स्पष्ट है? और वह कलीसिया में कैसे काम करता है? तुमने इनके बारे में क्या विचार बनाए हैं? क्या तुमने कभी इन सवालों पर ग़ौर किया है? कलीसिया में अपने कार्य के ज़रिये वह किसे पूर्ण बनाना चाहता है? क्या ये सभी सवाल तुम्हें बिलकुल स्पष्ट हैं? अगर नहीं, तो जो भी तुम करते हो, वह सब व्यर्थ, अकृत और शून्य है! क्या इन वचनों ने तुम्हारे दिल को छुआ है? निष्क्रिय रूप से पीछे हटे बिना महज़

सक्रिय रूप से प्रगति करना—क्या यह परमेश्वर की इच्छा पूरी करेगा? क्या बिना सोचे-समझे सहयोग पर्याप्त है? अगर दृष्टि पारदर्शी ढंग से स्पष्ट न हो, तो क्या किया जाना चाहिए? क्या आगे खोज न करना ठीक होगा? परमेश्वर कहता है, "एक बार मैंने मनुष्यों के बीच एक महान उपक्रम आरंभ किया, लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया, और इसलिए मुझे उनके सामने उसे चरण-दर-चरण प्रकट करने के लिए अपने वचन का उपयोग करना पड़ा। फिर भी मनुष्य मेरे वचनों को समझ नहीं पाया, और मेरी योजना के उद्देश्य से अनजान रहा।" इन वचनों का क्या अर्थ है? क्या तुमने कभी इसके उद्देश्य पर विचार किया है? क्या यह वाकई लापरवाही से और बिना किसी उद्देश्य के बनाया गया था? और अगर ऐसा है, तो इसका मतलब क्या हुआ? अगर उद्देश्य तुम्हें अस्पष्ट और तुम्हारी समझ के बाहर है, तो वास्तविक सहयोग कैसे प्राप्त किया जा सकता है? परमेश्वर कहता है कि समस्त मानव-जाति की खोज असीम समुद्रों के ऊपर, खोखले वचनों से लिखे सिद्धांत के बीच में है। जहाँ तक इस बात का संबंध है कि तुम लोगों की खोज किस श्रेणी के अंतर्गत आती है, तो यह तो तुम भी बताने में असमर्थ हो। परमेश्वर मनुष्य में क्या संपन्न करना चाहता है? तुम्हें इन सभी चीज़ों के बारे में स्पष्ट होना चाहिए। क्या यह केवल बड़े लाल अजगर को नकारात्मक रूप से लज्जित करने के लिए है? क्या ऐसा हो सकता है कि बड़े लाल अजगर को लज्जित करने के बाद, परमेश्वर पहाड़ों में किसी संन्यासी की तरह खाली हाथ जीवनयापन करेगा? तो फिर परमेश्वर चाहता क्या है? क्या वह वाकई मनुष्यों के दिल चाहता है? या वह उनका जीवन चाहता है? या उनकी धन-संपत्ति? ये किस काम के हैं? ये परमेश्वर के किसी काम के नहीं। क्या परमेश्वर ने मनुष्य में इतना कुछ सिर्फ इसलिए किया है कि वह उन्हें शैतान पर विजय के साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल कर सके और अपनी "क्षमताएँ" जाहिर कर सके? क्या परमेश्वर इससे क्षुद्र प्रतीत नहीं होगा? क्या परमेश्वर इस तरह का परमेश्वर है? तब क्या वह उस बच्चे की तरह नहीं होगा, जो दूसरों के साथ झगड़े में वयस्कों को घसीट लेता है? इसके क्या मायने हैं? परमेश्वर को मापने के लिए मनुष्य लगातार अपनी धारणाओं का इस्तेमाल कर रहा है। परमेश्वर ने एक बार कहा था, "वर्ष में चार मौसम होते हैं और प्रत्येक मौसम में तीन महीने होते हैं।" मनुष्य ने उसके ये वचन सुने, उन्हें स्मृति के हवाले किया, और कहना जारी रखा कि एक मौसम में तीन महीने और एक वर्ष में चार मौसम होते हैं। और फिर, जब परमेश्वर ने पूछा, "एक वर्ष में कितने मौसम होते हैं? और एक मौसम में कितने महीने होते हैं?" तो मनुष्य ने एक स्वर में उत्तर दिया, "चार मौसम, तीन महीने।" मनुष्य हमेशा नियमों के समुच्चयों पर आधारित पद्धति के इस्तेमाल द्वारा परमेश्वर को परिभाषित करने का प्रयास करता

है। आजकल "वर्ष में तीन मौसम और एक मौसम में चार महीनों" के युग में आकर भी मनुष्य अनजान है, मानो अंधा हो गया हो, और हर चीज़ में नियम खोज रहा है। और अब मनुष्य अपने चौपट राजा वाले नियम परमेश्वर पर लागू करने का प्रयास कर रहा है! वे सचमुच अंधे हैं! क्या वे नहीं देखते कि अब कोई "सर्दी" नहीं रही, केवल "वसंत, ग्रीष्म और पतझड़" रह गए हैं? मनुष्य सचमुच मूर्ख है! वर्तमान स्थिति में आकर भी वह इस बात से अनजान है कि परमेश्वर को कैसे जाने : ठीक 1920 में रहने वाले आदमी के समान, जो सोचता है कि परिवहन असुविधाजनक है, और सब लोगों को पैदल चलना चाहिए, या छोटे गधे की रहनुमाई करनी चाहिए, या जो सोचता है कि लोगों को तेल के दीयों का इस्तेमाल करना चाहिए, या जो अस्तित्व के अन्य आदिम तरीकों पर विश्वास करता है। क्या लोगों के दिमाग़ में ये सभी धारणाएँ मौजूद नहीं हैं? तो क्यों वे आज भी दया और प्रेम की बात करते हैं? इसका क्या उपयोग होगा? किसी बुढ़िया द्वारा अपने अतीत के बारे में की जाने वाली बकबक की तरह, इन वचनों का क्या उपयोग है? वर्तमान आखिर वर्तमान होता है; क्या यह घड़ी को 20-30 साल पीछे ले जाने की तरह नहीं है? सब लोग रुझान के पीछे चलते हैं; यह स्वीकार करने में वे इतना हिचकते क्यों हैं? ताड़ना के इस युग में दया और प्रेम की बात करने का क्या उपयोग है? मानो परमेश्वर के पास केवल दया और प्रेम ही हो? "आटे और चावल" के इस युग में लोग "जौ-बाजरे की भूसी और जंगली सब्ज़ियाँ" क्यों परोसे चले जाते हैं? जो कुछ परमेश्वर करने को तैयार नहीं है, मनुष्य मनुष्य उसे करने के लिए बाध्य करता है। अगर परमेश्वर विरोध करता है, तो उस पर "प्रतिक्रांतिकारी" होने का ठप्पा लगा दिया जाता है, हालाँकि बार-बार यह कहा गया कि परमेश्वर स्वभाव से दयालु या प्रेम करने वाला नहीं है, पर कौन सुनता है? मनुष्य बहुत बेतुका है। यह ऐसा है, मानो परमेश्वर के वचन का कोई प्रभाव न हो। मनुष्य मेरे वचनों को हमेशा एक अलग दृष्टिकोण से देख रहे हैं। परमेश्वर को मनुष्यों द्वारा हमेशा धौंस दी जाती रही है, मानो निर्दोष लोगों पर निराधार अपराध मढ़ दिए गए हों; इसलिए परमेश्वर के अनुसार कौन कार्य कर पाएगा? तुम लोग हमेशा परमेश्वर की दया और प्रेम में जीने के इच्छुक हो, तो परमेश्वर के पास मनुष्य के अपमानों को सहने के सिवाय और चारा ही क्या है? हालाँकि मुझे आशा है कि तुम लोग परमेश्वर के साथ बहस करने से पहले इस बात की जाँच-पड़ताल करोगे कि पवित्र आत्मा कैसे काम करता है। फिर भी, मैं तुमसे परमेश्वर के वचनों का मूल अर्थ समझने का आग्रह करता हूँ। अपनी ही भलाई के लिए बहुत चालाक बनने की कोशिश मत करो और यह न समझो कि परमेश्वर के वचन में "अशुद्धता" है। यह अनावश्यक होगा! कौन कह सकता है कि परमेश्वर के वचन में कितनी

"अशुद्धता" है? जब तक कि परमेश्वर सीधे तौर पर यह नहीं कहता, या स्पष्ट रूप से यह इंगित नहीं करता। अपने आपको इतना ऊँचा मत समझो। अगर तुम उसके वचनों में से अपने अभ्यास का मार्ग देख पा रहे हो, तो तुम उसकी अपेक्षाएँ पूरी करोगे। तुम लोग और क्या देखना चाहते हो? परमेश्वर ने कहा, "मैं मनुष्य की कमज़ोरी के लिए कोई दया दिखाना बंद कर दूँगा।" अगर तुम इस विशिष्ट और सरल वक्तव्य को पूरी तरह से नहीं समझ सकते, तो आगे शोध और जाँच करने से क्या फायदा? यांत्रिकी का न्यूनतम ज्ञान न होने पर भी क्या तुम्हारे पास रॉकेट बनाने का साधन हो सकता है? क्या ऐसा व्यक्ति बेकार की डींगें नहीं हाँकता? मनुष्य के पास परमेश्वर का कार्य करने का साधन नहीं है; परमेश्वर ही है, जो उनका उत्कर्ष करता है। बिना यह जाने कि उसे किस चीज़ से प्रेम है और किस चीज़ से घृणा, केवल उसकी सेवा करना : क्या यह आपदा को दावत देना नहीं है? मनुष्य स्वयं को नहीं समझते, परंतु अपने को असाधारण समझते हैं। वे अपने आपको क्या समझते हैं! वे क्या समझते हैं कि वे क्या कर रहे हैं? अतीत के बारे में अच्छी तरह से सोचो, और भविष्य को देखो। इसके बारे में क्या ख़याल है? फिर अपने आपको जानो।

परमेश्वर ने मनुष्य के इरादों और उद्देश्यों के बारे में एक बड़ा खुलासा किया है। परमेश्वर ने कहा, "यही वह क्षण था, जब मैंने उस मनुष्य के इरादों और उद्देश्यों को देखा। मैंने बादलों के भीतर से आह भरी : मनुष्य को हमेशा अपने हितों के लिए ही काम क्यों करना चाहिए? क्या मेरी ताड़नाएँ उन्हें पूर्ण बनाने के लिए नहीं होतीं? या क्या मैं उनके सकारात्मक रवैये पर जानबूझकर हमला कर रहा हूँ?" इन वचनों से तुमने अपने बारे में कितना सीखा है? क्या मनुष्य के इरादे और उद्देश्य अब वास्तव में नदारद हैं? क्या तुमने कभी खुद इस पर ध्यान दिया है? परमेश्वर के सामने आना और सीखने की कोशिश करना तुम्हारे लिए पीड़ादायक नहीं होगा : क्या तुम लोगों में परमेश्वर द्वारा किए गए ताड़ना के कार्य ने परिणाम हासिल कर लिया है? क्या तुम किसी निष्कर्ष पर पहुँच गए हो? शायद परिणाम अत्यल्प है, वरना तुम बहुत पहले ही अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से इसे लिख चुके होते। परमेश्वर तुम लोगों से क्या हासिल करने को कहता है? जो वचन तुम लोगों से कहे गए हैं, उनमें से कितने फलित हुए हैं, और कितने व्यर्थ में कहे गए? परमेश्वर की दृष्टि में, उसके कुछ ही वचन फलित हुए हैं; इसका कारण यह है कि मनुष्य उसके मूल अर्थ को समझने में हमेशा असमर्थ रहता है, और जिसे वे स्वीकार करते हैं, वह उलटी तरफ से उछलकर वापस लौटने वाली वचनों की गूँज भर होती है। क्या वे इस तरह परमेश्वर की इच्छा जान सकते हैं? निकट भविष्य में परमेश्वर के पास मनुष्य के करने के लिए और अधिक काम होगा; क्या मनुष्य अपने आज के मामूली आध्यात्मिक

कद के साथ उस कार्य को पूरा कर सकता है? अगर विचलन नहीं तो, लक्ष्य के बाहर निशाना लगाना या इस तरह की अन्य गलती करना—ऐसा होना मनुष्य का स्वभाव लगेगा। मुझे यह समझना मुश्किल लगता है : परमेश्वर ने जो कुछ कहा है, उसे मनुष्य अपने दिल में क्यों नहीं उतार लेता? क्या ऐसा हो सकता है कि अपने वचन बोलकर परमेश्वर आदमी के साथ केवल मज़ाक कर रहा हो और कोई परिणाम न चाहता हो? सब-कुछ मनुष्य को "आनंद, क्रोध, दुख और सुख" का नाटक करते देखने के लिए? मनुष्य को एक पल के लिए ख़ुश करने, और अगले पल में रुलाने, और फिर उसके नेपथ्य में चले जाने पर उसे जैसा वह चाहे, वैसा करने देने के लिए? इसका क्या प्रभाव होगा? "ऐसा क्यों होता है कि मनुष्य से की जाने वाली मेरी अपेक्षाओं में से हमेशा कुछ निकलकर नहीं आता? क्या ऐसा है कि मैं किसी कुत्ते से पेड़ पर चढ़ने के लिए कहता हूँ? या बात का बतंगड़ बना देता हूँ?" परमेश्वर जो वचन बोलता है, वे सभी मनुष्य की वास्तविक स्थिति पर लक्षित हैं। सभी मनुष्यों के भीतर देखने में कोई हानि नहीं है, यह देखने के लिए कि कौन परमेश्वर के वचन के भीतर जी रहा है। "अभी भी, अधिकांश पृथ्वी बदलती जा रही है। अगर किसी दिन पृथ्वी वास्तव में बदलकर किसी अन्य प्रकार की हो जाती है, तो मैं इसे अपने हाथ के एक झटके से अलग कर दूँगा—क्या यह मेरे कार्य का वर्तमान चरण नहीं है?" वास्तव में, परमेश्वर अभी भी इस कार्य को हाथ में लेने की प्रक्रिया में है; परंतु उसका "अपने हाथ के एक झटके से अलग कर देने" की बात कहना भविष्य के बारे में है, क्योंकि हर चीज़ के लिए एक प्रक्रिया आवश्यक होती है। परमेश्वर के वर्तमान कार्य का रुझान यही है—क्या यह तुम्हें स्पष्ट है? मनुष्य के इरादों में खामियों के कारण अशुद्ध आत्माओं को अंदर प्रवेश करने का अवसर मिल गया है। इस समय "पृथ्वी वास्तव में बदलकर किसी अन्य प्रकार की हो जाती है।" इस समय लोग गुणात्मक रूप से बदल जाएँगे, परंतु उनका सार वैसा ही रहेगा। इसका कारण यह है कि सुधार के बाद पृथ्वी पर कुछ और ही चीज़ है। दूसरे शब्दों में, मूल पृथ्वी निम्न कोटि की थी, लेकिन सुधार होने के बाद इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। परंतु एक निश्चित अवधि तक इसका इस्तेमाल कर लिए जाने के बाद, जब आगे इसका इस्तेमाल नहीं किया जाएगा, तो यह धीरे-धीरे अपने मूल रूप में वापस आ जाएगी। यह परमेश्वर के कार्य के अगले कदम का सारांश है। परमेश्वर का भविष्य का कार्य अधिक जटिल होगा, क्योंकि वह हर चीज़ को उसकी अपनी श्रेणी में रखने का समय होगा। मिलने की जगह पर जब सभी चीज़ों का अंत आ जाएगा, तो यह एक अपरिहार्य रूप से अराजकता की स्थिति होगी, और मनुष्य दृढ़-संकल्पों से रहित होगा। जैसा कि परमेश्वर ने कहा था : "सभी मनुष्य कलाकार हैं, जो बजाई जाने वाली हर

तरह की धुन के साथ गाते हैं।" जैसे मनुष्यों में बजाई जाने वाली धुन के साथ गाने की काबिलियत होती है, ठीक वैसे ही परमेश्वर उनके इस दोष का उपयोग अपने कार्य में अगले चरण का निर्माण करने के लिए करता है और इस तरह उन्हें अपने इसे दोष से मुक्त होने में सक्षम बनाता है। चूँकि उनके पास वास्तविक आध्यात्मिक कद नहीं है इस कारण वे दीवार पर उगने वाली घास की तरह हैं। अगर वे आध्यात्मिक कद प्राप्त कर लेते, तो वे गगनचुंबी वृक्ष बन गए होते। परमेश्वर बुरी आत्माओं के कार्य के एक हिस्से का उपयोग मानव-जाति के एक हिस्से को पूर्ण बनाने के लिए करने का इरादा रखता है, ताकि ये लोग हैवानों के अन्यायपूर्ण कार्यों को पूरी तरह देखने में सक्षम हो सकें और वास्तव में अपने "पूर्वजों" को जान सकें। केवल इसी तरह से मनुष्य पूरी तरह से स्वतंत्र हो सकते हैं, न केवल शैतान के वंशजों को, बल्कि शैतान के पूर्वजों को भी त्यागकर। बड़े लाल अजगर को पूरी तरह से हराने में यह परमेश्वर का मूल इरादा है : ताकि सभी मनुष्य बड़े लाल अजगर का असली स्वरूप जानें, उसका मुखौटा पूरी तरह से उतारकर उसका वास्तविक स्वरूप देख सकें। परमेश्वर यही प्राप्त करना चाहता है, और यही पृथ्वी पर उसके द्वारा किए गए समस्त कार्य का अंतिम लक्ष्य है; और यही उसका सभी मनुष्यों में हासिल करने का उद्देश्य है। इसे परमेश्वर के प्रयोजन के लिए सभी चीज़ों को जुटाने के रूप में जाना जाता है।

भविष्य का कार्य कैसे किया जाएगा, क्या तुम लोगों को यह स्पष्ट है? यह सब समझना होगा। उदाहरण के लिए : परमेश्वर ऐसा क्यों कहता है कि मनुष्य कभी अपने कर्तव्यों को नहीं पूरा करते हैं? वह ऐसा क्यों कहता है कि बहुत लोग मेरे द्वारा दिए गए "गृहकार्य" को पूरा करने में विफल रहते हैं? इन चीज़ों को कैसे हासिल किया जा सकता है? क्या तुमने कभी इन सवालों पर विचार किया है? क्या ये तुम्हारे संवाद का विषय बने हैं? कार्य के इस चरण में मनुष्य को परमेश्वर के वर्तमान इरादों को समझना होगा। एक बार यह हासिल हो जाए, तो दूसरी चीज़ों पर चर्चा की जा सकती है, ठीक है न? परमेश्वर मनुष्य में जो कुछ करना चाहता है, उसे स्पष्ट रूप से बताया जाना होगा, अन्यथा सब-कुछ व्यर्थ हो जाएगा, और मनुष्य इसमें प्रवेश नहीं कर पाएगा, इसे हासिल करने की तो बात ही अलग है; और सब खोखली बात होगी। परमेश्वर ने आज जो कहा है, क्या उस पर अमल करने का कोई मार्ग तुमने ढूँढ़ा है? परमेश्वर के कथनों को लोग डर की भावना से देखते हैं। वे इसे पूरी तरह से समझ नहीं सकते, और साथ ही परमेश्वर को नाराज़ करने से डरते भी हैं। खाने-पीने के जितने भी तरीकों के बारे में अभी बताया गया है, उनमें से उन्होंने कितनों की खोज कर ली है? अधिकांश लोग नहीं जानते कि कैसे खाना-पीना है; इसे कैसे हल किया जा

सकता है? क्या तुम्हें आज के कथन में खाने-पीने का कोई तरीक़ा मिला? तुमने इस समय किस तरह से सहयोग करने का प्रयास किया? और एक बार वचनों को खा-पीने लेने के बाद तुम किन तरीकों से अपने प्रभावों पर चर्चा करते हो? क्या मुनष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए? किसी निर्दिष्ट बीमारी के लिए कोई किस तरह सही दवा लिखता है? क्या तुम्हें अभी भी परमेश्वर की प्रत्यक्ष घोषणा की आवश्यकता है? क्या यह जरूरी है? उपर्युक्त समस्याओं को पूरी तरह से कैसे समाप्त किया जा सकता है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम लोग अपने व्यवहारिक क्रियाकलापों में पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करने में सक्षम हो या नहीं। अगर उपयुक्त सहयोग होगा, तो पवित्र आत्मा बड़ा काम करेगा। अगर कोई उपयुक्त सहयोग नहीं होगा और केवल गड़बड़ होगी, तो पवित्र आत्मा अपना सामर्थ्य उजागर करने की स्थिति में नहीं होगा। "अगर तुम अपने को जानते हो और अपने शत्रु को भी जानते हो, तो विजय हमेशा तुम्हारी होगी।" मूल रूप से ये वचन चाहे किसी ने भी कहे हों, ये तुम लोगों पर सबसे उपयुक्त तरीके से लागू हो सकते हैं। संक्षेप में, अपने शत्रुओं को जानने से पहले तुम्हें अपने आपको जानना होगा, और केवल तभी तुम अंततः हर लड़ाई जीतने में सक्षम होगे। इन सभी चीज़ों को करने में तुम लोगों को सक्षम होना चाहिए। परमेश्वर तुमसे चाहे कुछ भी माँगे, तुम्हें उसे अपना सब-कुछ देना आवश्यक है। आशा है कि अंत में तुम परमेश्वर के समक्ष आने और उसे अपनी परम भक्ति प्रदान करने में सक्षम होगे, और जब तक तुम सिंहासन पर बैठे परमेश्वर की संतुष्ट मुसकराहट देख पाते हो, भले ही यह तुम्हारी मृत्यु का नियत समय क्यों न हो, आँखें बंद करते समय भी तुम्हें हँसने और मुसकराने में सक्षम होना चाहिए। पृथ्वी पर अपने समय के दौरान तुम्हें परमेश्वर के प्रति अपना अंतिम कर्तव्य अवश्य निभाना चाहिए। अतीत में, पतरस को परमेश्वर के लिए क्रूस पर उलटा लटका दिया गया था; परंतु तुम्हें अंत में परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहिए, और अपनी सारी ऊर्जा परमेश्वर के लिए खर्च करनी चाहिए। एक सृजित प्राणी परमेश्वर के लिए क्या कर सकता है? इस कारण से तुम्हें जितना जल्दी हो सके, अपने आपको परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए, ताकि वह अपनी इच्छानुसार तुम्हारी व्यवस्था कर सके। जब तक परमेश्वर खुश और प्रसन्न है, तब तक उसे जो चाहे करने दो। मनुष्यों को शिकायत करने का क्या अधिकार है?

अध्याय 42

मुझे नहीं पता कि लोगों ने आज के कथनों में कोई बदलाव देखा है या नहीं। कुछ लोगों ने थोड़ा-सा

देखा होगा, लेकिन वे निश्चित रूप से कहने की हिम्मत नहीं रखते। शायद दूसरों ने कुछ नहीं देखा। माह के बारहवें और पंद्रहवें दिन के बीच परमेश्वर के कथनों में इतना बड़ा बदलाव क्यों आया है? क्या तुमने इस पर विचार किया है? तुम्हारी क्या राय है? क्या तुमने परमेश्वर के सभी वचनों से कुछ भी समझा है? दो अप्रैल से पंद्रह मई के बीच किया गया मुख्य कार्य क्या था? आज लोग बेख़बर और इतने दिग्भ्रमित क्यों हैं, मानो उनके सिर पर किसी ने डंडे से वार कर दिया हो? आज "राज्य के लोगों के घोटाले" जैसे स्तंभ क्यों नहीं हैं? दो और चार अप्रैल को परमेश्वर ने मनुष्य की स्थिति नहीं बताई; इसी तरह, आज के बाद कई दिनों तक उसने लोगों की स्थिति की ओर इशारा नहीं किया—ऐसा क्यों है? यह निश्चित रूप से एक पहेली है—यह 180-डिग्री घुमाव क्यों? चलो सबसे पहले बात करते हैं कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों कहा। आओ, पहले हम इस बारे थोड़ी बात करें कि परमेश्वर इस तरह क्यों बोला? आओ, परमेश्वर के पहले वचनों पर नज़र डालें, जिसमें उसने यह कहने में कोई समय बरबाद नहीं किया, "जैसे ही नया काम शुरू होता है।" यह वाक्य तुम्हें पहला संकेत देता है कि परमेश्वर का कार्य एक नई शुरुआत में प्रवेश कर चुका है, कि उसने एक बार फिर नया काम शुरू किया है। इससे पता चलता है कि ताड़ना समापन की ओर अग्रसर है; यह कहा जा सकता है कि पहले ही ताड़ना की पराकाष्ठा में प्रवेश किया जा चुका है, और इसलिए तुम लोगों को अपने समय का अधिकतम लाभ उठाते हुए ताड़ना के युग के कार्य का उपयुक्त रूप से अनुभव करना चाहिए, ताकि तुम पीछे न रह जाओ और त्यागे न जाओ। यह सारा कार्य मनुष्य का है, और इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य सहयोग करने की पूरी कोशिश करे। जब ताड़ना पूरी तरह से दूर कर दी जाएगी, तो परमेश्वर अपने कार्य का अगला हिस्सा प्रारंभ करेगा, "... मैंने अपने कार्य को मनुष्य के बीच करना जारी रखा है...। इस समय, मेरा दिल बहुत प्रसन्नता से भर गया है, क्योंकि मैंने कुछ लोगों को प्राप्त कर लिया है, और इसलिए मेरा 'उद्यम' अब पीछे की ओर नहीं जा रहा, यह अब खोखले वचन नहीं है।" अतीत में लोगों ने परमेश्वर की अदम्य इच्छा को उसके वचनों में देखा—इसमें कोई झूठ नहीं है—और आज परमेश्वर अपना काम अधिक गति से कर रहा है। मनुष्य के हिसाब से यह पूरी तरह से परमेश्वर की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है—परंतु परमेश्वर के हिसाब से उसका काम पहले ही समाप्त हो चुका है। चूँकि लोगों के विचार बहुत जटिल हैं, इसलिए चीज़ों के प्रति उनका दृष्टिकोण भी अकसर कुछ ज़्यादा ही जटिल होता है। लोगों की लोगों से बहुत ज़्यादा अपेक्षाएँ होती हैं, परंतु परमेश्वर मनुष्य से इतनी ऊँची अपेक्षाएँ नहीं करता, और इसके कारण, यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच कितनी

बड़ी विसंगति है। परमेश्वर जो कुछ करता है, उसमें लोगों की धारणाएँ साफ़-साफ़ दिखती हैं। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर लोगों से बड़ी माँगें करता है और लोग उन्हें पूरी करने में असमर्थ होते हैं, बल्कि लोग परमेश्वर से बड़ी माँगें करते हैं और परमेश्वर उन्हें पूरी करने में असमर्थ होता है। क्योंकि कई हज़ार वर्षों से शैतान द्वारा दूषित मानवजाति में, उपचार के बाद, उसके उत्तर-प्रभाव होते हैं, इसलिए लोगों ने हमेशा परमेश्वर से ऐसी बड़ी माँगें की हैं, और वे बिलकुल भी उदार नहीं होते, और इस बात से बेहद भयभीत रहते हैं कि परमेश्वर प्रसन्न नहीं है। इसलिए, यह तथ्य कि लोग कई चीज़ों में सक्षम नहीं होते, एक तरीका है, जिससे वे खुद को आत्म-ताड़ना के अधीन कर लेते हैं; वे स्वयं के कार्यों के परिणाम भोगते हैं—यह सरासर पीड़ा है। लोगों द्वारा भोगी गई कठिनाइयों में से 99% से अधिक को परमेश्वर तिरस्कृत कर देता है। इसे स्पष्ट रूप से कहा जाए तो, किसी ने भी वास्तव में परमेश्वर के लिए पीड़ा नहीं उठाई है। वे सभी स्वयं के कार्यों के परिणाम भोग रहे हैं—और बेशक, ताड़ना का यह चरण कोई अपवाद नहीं है; यह एक ऐसा कड़वा प्याला है, जिसे मनुष्य स्वयं तैयार करता है और स्वयं उसे पीने के लिए उठाकर मुँह तक ले जाता है। चूँकि परमेश्वर ने अपनी ताड़ना का वास्तविक उद्देश्य प्रकट नहीं किया है, अत: हालाँकि लोगों का एक हिस्सा है जो शापित है, फिर भी यह ताड़ना का प्रतिनिधित्व नहीं करता। लोगों का एक हिस्सा धन्य है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे भविष्य में भी धन्य रहेंगे। लोगों को ऐसा लगता है कि परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है, जो अपने वचन पूरे नहीं करता। चिंता मत करो। शायद ये वचन कुछ ज़्यादा हो गए, लेकिन नकारात्मक न हो। मैं जो कहता हूँ, वह मनुष्य के दुख से कुछ सबंध रखता है, फिर भी मुझे लगता है कि तुम्हें परमेश्वर के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए। तुम्हें उसे अधिक "उपहार" देने चाहिए—यह उसे निश्चित रूप से प्रसन्न कर देगा। मुझे विश्वास है कि परमेश्वर उन्हें प्रेम करता है, जो उसे "उपहार" देते हैं। तुम क्या कहते हो? क्या ये वचन सही हैं?

अब तक तुम लोगों ने अपनी कितनी संभावनाओं को अलग रखा है? परमेश्वर का कार्य जल्दी ही पूरा हो जाएगा, इसलिए शायद तुम लोगों ने लगभग अपनी सभी संभावनाओं को अलग रख दिया होगा, क्यों? तुम लोग स्वयं भी अपनी जाँच कर सकते हो : तुम लोगों को हमेशा ऊँचाई पर खड़े रहना, अपनी बड़ाई करना और दूसरों के सामने दिखावा करना पसंद है—यह क्या है? आज, मुझे अभी तक नहीं पता है कि लोगों की संभावनाएँ क्या हैं। अगर लोग वास्तव में दुख के समुद्र से घिरे हुए जीते हैं, कठिनाइयों के शुद्धिकरण के बीच या फिर यातना के विभिन्न उपकरणों के ख़तरे के अंतर्गत रहते हैं, या सभी लोगों द्वारा

अस्वीकृति के समय में रहते हैं और आकाश की ओर देखते हुए गहरी आहें भरते हैं, तो शायद ऐसे समय अपने विचारों में वे अपनी संभावनाओं को अलग रख देते हैं। इसका कारण यह है कि लोग निराशा के बीच एक अलौकिक आदर्शलोक की खोज करते हैं, और आरामदायक परिस्थितियों में किसी ने भी कभी अपने सुंदर सपनों की अपनी खोज का त्याग नहीं किया। यह अवास्तविक हो सकता है, लेकिन काश, यह लोगों के दिलों में न होता। क्या तुम लोग अभी भी जीवित रहते हुए स्वर्गारोहण करना चाहते हो? क्या तुम अभी भी देह में अपना स्वरूप बदलना चाहते हो? मुझे नहीं पता कि तुम लोगों की राय भी यही है या नहीं, परंतु मैंने हमेशा यह महसूस किया है कि यह अवास्तविक है—ऐसे विचार बहुत अनावश्यक लगते हैं। लोग इस तरह की बातें करते हैं : "अपनी संभावनाओं को अलग रखो, अधिक यथार्थवादी बनो।" तुम कहते हो कि लोग धन्य होने के विचार छोड़ दें—लेकिन तुम्हारा अपने बारे में क्या कहना है? क्या तुम लोगों के धन्य होने के विचारों को नकारते हो और स्वयं आशीष पाने की कामना करते हो? तुम दूसरों को आशीष नहीं पाने देना चाहते, परंतु स्वयं गुप्त रूप से उन्हें पाने के बारे में सोचते रहते हो—यह तुम्हें क्या बनाता है? एक धोखेबाज़! जब तुम इस तरह व्यवहार करते हो, तो क्या तुम्हारा अंतःकरण अभियुक्त नहीं बन जाता? अपने दिल में क्या तुम ऋणी महसूस नहीं करते? क्या तुम धोखेबाज़ नहीं हो? तुम दूसरों के दिलों में वचनों को खोदकर निकालते हो, परंतु स्वयं के दिल में उनके बारे में कुछ नहीं कहते—कैसे कचरे के बेकार टुकड़े हो तुम! मुझे आश्चर्य होता है कि जब तुम लोग यह बोलते हो, तो अपने दिलों में क्या सोचते हो—क्या तुम लोगों को पवित्र आत्मा द्वारा तिरस्कृत नहीं किया जा सकता? क्या यह तुम लोगों की गरिमा भंग नहीं करता? तुम लोग वास्तव में नहीं जानते कि तुम लोगों के लिए क्या अच्छा है! तुम सब हमेशा श्री नांगुओ की तरह ही रहे हो—ढोंगी। कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने "सभी लोग 'स्वयं को समर्पित' करने के लिए तैयार हैं" में "स्वयं को समर्पित" को उद्धरण-चिह्नों के बीच रखा है। परमेश्वर मनुष्य को बहुत अच्छी तरह से जानता है, और मनुष्य की धोखेबाज़ी कितनी भी चतुराई भरी क्यों न हो—भले ही वह कुछ भी प्रकट न करे और उसका चेहरा लाल न हो और न उसका दिल तेज़ी से धड़के—परमेश्वर की आँखें उज्ज्वल हैं, इसलिए मनुष्य को हमेशा परमेश्वर की नज़र से बचने में परेशानी हुई है। ऐसा लगता है, मानो परमेश्वर के पास एक्स-रे दृष्टि है और वह मनुष्य के भीतरी अंग देख सकता है, मानो वह लोगों के आर-पार देख सकता है और बिना किसी जाँच के उनके रक्त का प्रकार तय कर सकता है। ऐसी है परमेश्वर की बुद्धि, और मनुष्य द्वारा इसका अनुकरण नहीं किया जा सकता। जैसा कि परमेश्वर कहता है, "मैंने इतना काम क्यों किया है,

फिर भी लोगों में इसका कोई सबूत नहीं है? क्या मैंने पर्याप्त प्रयास नहीं किए हैं?" परमेश्वर के साथ मनुष्य का सहयोग बहुत कम है, और यह कहा जा सकता है कि मनुष्य के भीतर बहुत-कुछ नकारात्मक है, और शायद ही लोगों में कोई सकारात्मकता हो। केवल कभी-कभार ही उनमें थोड़ी सकारात्मकता होती है, लेकिन वह बहुत दूषित होती है। यह दिखाता है कि लोग परमेश्वर से कितना प्यार करते हैं; ऐसा लगता है मानो उनके दिल में परमेश्वर के लिए प्रेम का करोड़ों में से केवल एक हिस्सा होता है, जिसमें से भी 50% दूषित होता है। यही वजह है कि परमेश्वर कहता है कि उसे मनुष्य में कोई सबूत नहीं दिखता। ठीक मनुष्य की अवज्ञा के कारण ही परमेश्वर के कथनों का स्वर बहुत ही निर्मम और निष्ठुर होता है। हालाँकि, परमेश्वर मनुष्य के साथ बीते हुए समय के बारे में बात नहीं करता, परंतु लोग हमेशा याद दिलाना चाहते हैं, ताकि वे स्वयं को परमेश्वर के सामने दिखा सकें, और वे हमेशा बीते हुए समय की ही बात करना चाहते हैं—फिर भी परमेश्वर ने कभी भी मनुष्य के कल को उसके आज की तरह नहीं लिया है; बल्कि, वह आज के लोगों से आज के संदर्भ में ही संपर्क करता है। यह परमेश्वर का दृष्टिकोण है, और इसमें, परमेश्वर ने इन वचनों को स्पष्ट रूप से कहा है, ताकि लोग भविष्य में यह न कह सकें कि परमेश्वर बहुत अनुचित है। क्योंकि परमेश्वर अविवेकपूर्ण काम नहीं करता, बल्कि लोगों को सच्चे तथ्यों के बारे में बताता है, ताकि ऐसा न हो कि लोग दृढ़ता से खड़े न हो सकें—क्योंकि मनुष्य, आख़िरकार, कमज़ोर है। ये वचन सुनकर, तुम लोगों का इस बारे में क्या विचार है : क्या तुम लोग सुनने और झुकने के लिए, और इस बारे में अब और न सोचने के लिए तैयार हो?

उपर्युक्त बात विषय से अलग है; यह मायने नहीं रखता कि इसके बारे में बात की जाती है या नहीं। मुझे आशा है कि तुम लोग इसकी आलोचना नहीं करोगे, क्योंकि परमेश्वर वचनों का कार्य करने के लिए आता है, और वह संसार के हर विषय के बारे में बात करना पसंद करता है। लेकिन मुझे आशा है कि फिर भी तुम लोग इन्हें पढ़ोगे, और तुम इन वचनों को अनदेखा नहीं करोगे। ठीक है? क्या तुम लोग ऐसा करोगे? अभी-अभी यह कहा गया था कि आज के वचनों में परमेश्वर ने नई जानकारी प्रकट की है : जिस पद्धति से परमेश्वर कार्य करता है, वह बदलने वाली है। बेहतर होगा कि इस सामयिक विषय पर ध्यान केंद्रित किया जाए। यह कहा जा सकता है कि आज के सभी कथन भावी मामलों की भविष्यवाणी करते हैं; ये कथन बताते हैं कि परमेश्वर अपने कार्य के अगले चरण के लिए किस प्रकार व्यवस्थाएँ कर रहा है। परमेश्वर ने कलीसिया के लोगों में अपना काम लगभग पूरा कर लिया है, और बाद में वह सभी लोगों के

सामने क्रोध के साथ प्रकट होगा। जैसा कि परमेश्वर कहता है, "मैं धरती के लोगों से अपने कार्यों को स्वीकार करवाऊंगा और 'न्यायपीठ' के सामने मेरे कर्म साबित होंगे, ताकि उन्हें पृथ्वी के लोगों के बीच स्वीकार किया जाए, जो सभी मानेंगे।" क्या तुम लोगों ने इन वचनों में कुछ देखा? इनमें परमेश्वर के कार्य के अगले हिस्से का सारांश है। पहले, परमेश्वर उन सभी संरक्षक कुत्तों को, जो राजनीतिक शक्ति को संचालित करते हैं, गंभीरता से विश्वास कराएगा और उन्हें बाध्य करेगा कि वे इतिहास के मंच से स्वयं पीछे हट जाएँ, और फिर कभी प्रतिष्ठा के लिए लड़ाई न करें, और फिर कभी कुचक्रों और षड्यंत्रों में संलग्न न हों। यह कार्य परमेश्वर द्वारा पृथ्वी पर विभिन्न आपदाएँ ढाकर किया जाना चाहिए। परंतु यह ऐसा मामला बिलकुल नहीं है कि परमेश्वर प्रकट होगा। क्योंकि, इस समय, बड़े लाल अजगर का राष्ट्र अभी भी मलिनता की भूमि होगा, और इसलिए परमेश्वर प्रकट नहीं होगा, परंतु केवल ताड़ना के रूप में उभरेगा। ऐसा है परमेश्वर का धर्मी स्वभाव, जिससे कोई बच नहीं सकता। इस दौरान, बड़े लाल अजगर के राष्ट्र में बसे सभी व्यक्ति विपत्तियों का सामना करेंगे, जिसमें स्वाभाविक रूप से पृथ्वी पर राज्य (कलीसिया) भी शामिल है। यह वही समय है, जब तथ्य सामने आएँगे, और इसलिए इसका अनुभव सभी लोगों द्वारा किया जाएगा, और कोई बच नहीं पाएगा। यह परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित किया गया है। यह ठीक कार्य के इस चरण के कारण है, जिसके बारे में परमेश्वर कहता है, "यही समय है महान योजनाओं को पूरा करने का।" क्योंकि भविष्य में पृथ्वी पर कोई कलीसिया नहीं होगा, और तबाही के आगमन के कारण लोग केवल उसी के बारे में सोच पाएँगे, जो उनके सामने होगा, और बाकी हर चीज़ को वे नज़रअंदाज़ कर देंगे, और तबाही के बीच परमेश्वर का आनंद लेना उनके लिए मुश्किल होगा। इसलिए, लोगों से कहा जाता है कि इस अद्‌भुत समय के दौरान अपने पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करें, ताकि वे इस अवसर को गँवा न बैठें। जब यह तथ्य गुज़र जाएगा, तो परमेश्वर ने बड़े लाल अजगर को पूरी तरह हरा दिया होगा, और इस प्रकार परमेश्वर के लोगों की गवाही का कार्य समाप्त हो गया होगा; इसके बाद परमेश्वर कार्य के अगले चरण की शुरुआत करेगा, वह बड़े लाल अजगर के देश को तबाह कर देगा, और अंततः ब्रह्मांड के सभी लोगों को सलीब पर उलटा लटका देगा, जिसके बाद वह पूरी मानवजाति को नष्ट कर देगा—ये परमेश्वर के कार्य के भावी चरण हैं। इसलिए, तुम लोगों को इस शांतिपूर्ण वातावरण में परमेश्वर से प्रेम करने का प्रयास करना चाहिए। भविष्य में तुम लोगों के पास परमेश्वर से प्रेम करने के और अधिक अवसर नहीं होंगे, क्योंकि लोगों के पास केवल देह में रहते हुए परमेश्वर से प्रेम करने का अवसर होता है; जब वे किसी दूसरे संसार में रहेंगे, तो

कोई परमेश्वर से प्रेम करने की बात नहीं करेगा। क्या यह एक सृजित प्राणी की ज़िम्मेदारी नहीं है? और इसलिए तुम लोगों को अपने जीवन-काल के दौरान परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए? क्या तुमने कभी इस बारे में सोचा है? क्या तुम परमेश्वर से प्रेम करने के लिए मर जाने के बाद का इंतज़ार कर रहे हो? क्या यह खोखली बात नहीं है? तुम आज ही परमेश्वर से प्रेम करने का प्रयास क्यों नहीं करते? क्या व्यस्त रहते हुए परमेश्वर से प्रेम करना परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम हो सकता है? ऐसा कहने का कारण यह है कि परमेश्वर के कार्य का यह चरण जल्दी ही समाप्त हो जाएगा, क्योंकि परमेश्वर के पास पहले ही शैतान के सामने गवाही है। इसलिए, मनुष्य को कुछ भी करने की कोई आवश्यकता नहीं है; मनुष्य को केवल उन वर्षों में परमेश्वर से प्रेम करने के लिए कहा जा रहा है, जिनमें वह जीवित है—यह कुंजी है। चूँकि परमेश्वर की अपेक्षाएँ बहुत ऊँची नहीं हैं, और इसके अलावा, चूँकि उसके दिल में एक झुलसाने वाली बेचैनी है, इसलिए उसने कार्य के इस चरण के समाप्त होने से पहले ही कार्य के अगले चरण का सारांश प्रकट कर दिया है, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि कितना समय बचा है; यदि परमेश्वर अपने दिल में इतना व्यग्र नहीं होता, तो क्या वह ये वचन इतनी जल्दी कहता? समय कम होने के कारण ही परमेश्वर इस तरह से कार्य करता है। आशा है कि तुम लोग अपने पूरे दिल से, अपने पूरे मस्तिष्क से, और अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर से प्रेम कर पाओगे, ठीक वैसे ही, जैसे तुम लोग अपने जीवन को सँजोते हो। क्या यह परम सार्थक जीवन नहीं है? जीवन का अर्थ तुम्हें और कहाँ मिल सकता है? क्या तुम बहुत अंधे नहीं हो रहे हो? क्या तुम परमेश्वर से प्रेम करने के लिए तैयार हो? क्या परमेश्वर मनुष्य के प्रेम के योग्य है? क्या लोग मनुष्य की आराधना के योग्य हैं? तो तुम्हें क्या करना चाहिए? परमेश्वर से बिना किसी संदेह के निडर होकर प्रेम करो, और देखो कि परमेश्वर तुम्हारे साथ क्या करेगा। देखो कि क्या वह तुम्हें मार डालता है? संक्षेप में, परमेश्वर से प्रेम करने का कार्य परमेश्वर के लिए नकल करने और लिखने के कार्य से अधिक महत्वपूर्ण है। तुम्हें उस चीज़ को पहला स्थान देना चाहिए, जो सबसे महत्वपूर्ण है, ताकि तुम्हारे जीवन का अधिक मूल्य हो और वह ख़ुशियों से भरा हो, और फिर तुम्हें अपने लिए परमेश्वर के "दंडादेश" की प्रतीक्षा करनी चाहिए। मैं सोचता हूँ कि क्या तुम्हारी योजना में परमेश्वर से प्रेम करना शामिल होगा? मैं चाहता हूँ कि हर व्यक्ति की योजनाएँ परमेश्वर द्वारा पूरी की जाएँ और वे सब साकार हो जाएँ।

अध्याय 44 और अध्याय 45

जिस समय से परमेश्वर ने मनुष्य को "परमेश्वर के लिए प्रेम" के बारे में बताया—जो सभी पाठों में सबसे गहन है—उसने "सात आत्माओं के कथन" में इसके बारे में बोलने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि सभी लोग मानवीय जीवन के खोखलेपन को जानने की कोशिश करें, और इस प्रकार अपने भीतर से सच्चे प्रेम को बाहर निकालें। जो लोग वर्तमान चरण में हैं, उनमें से कितनों में परमेश्वर के प्रति प्रेम है? क्या तुम लोग जानते हो? "परमेश्वर प्रेम" के पाठ की कोई सीमाएं नहीं हैं। मानव जीवन के बारे में लोगों की समझ किस प्रकार की है? परमेश्वर से प्रेम को लेकर उनका नज़रिया क्या है? वो इच्छुक हैं या अनिच्छुक? क्या वो बड़ी भीड़ का अनुसरण करते हैं या देह से घृणा करते हैं? ये सभी ऐसी बातें हैं जिनके बारे में तुम लोगों को स्पष्ट होना चाहिए और जिनको तुम्हें समझना चाहिए। क्या वास्तव में लोगों के भीतर कुछ भी नहीं है? "मैं चाहता हूँ कि मनुष्य मुझे सचमुच प्रेम करे; लेकिन मुझे अपना सच्चा प्रेम देने में असमर्थ, लोग आजकल, अभी भी अपने पाँव खींच लेते हैं। अपनी कल्पना में वे मानते हैं कि यदि वे मुझे अपना सच्चा प्रेम दे देते हैं, तो उनके पास कुछ भी नहीं बचेगा।" इन वचनों में, "सच्चा प्रेम" का वास्तव में क्या अर्थ है? इस युग में जब "सभी लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं", तो परमेश्वर अभी भी लोगों से सच्चा प्रेम क्यों चाहता है? इस प्रकार, परमेश्वर की इच्छा है कि एक उत्तर-पुस्तिका पर मनुष्य से सच्चे प्रेम का अर्थ लिखने को कहा जाए, और इस प्रकार यह ऐसा गृह-कार्य है, जो परमेश्वर ने मनुष्य के लिए निर्धारित किया है। जहां तक आज के इस चरण की बात है, भले ही परमेश्वर मनुष्य से बहुत बड़ी अपेक्षाएँ नहीं रखता, तब भी लोगों को उन अपेक्षाओं पर खरा उतरना होता है, जो परमेश्वर ने मूल रूप से मनुष्य से की थीं; दूसरे शब्दों में, उन्हें अभी भी परमेश्वर से प्रेम करने में अपनी समस्त शक्ति लगानी है। इस प्रकार, परमेश्वर अभी भी लोगों से उनकी अनिच्छा के बीच, अपेक्षाएं रखता है, जब तक कि इस कार्य का असर नहीं होता और इस कार्य में उसकी महिमा नहीं होती। वास्तव में, पृथ्वी पर कार्य परमेश्वर के लिए प्रेम से ही पूरा होता है। इस प्रकार, जब परमेश्वर अपना कार्य समाप्त करता है, तभी वह मनुष्य को सबसे महत्वपूर्ण कार्य का संकेत देता है। जब उसका कार्य समाप्त होता है, यदि तब वह मनुष्य को मृत्यु दे दे, तो मनुष्य का क्या होगा, परमेश्वर का क्या होगा, और शैतान का क्या होगा? जब पृथ्वी पर मनुष्य का प्रेम प्राप्त हो जाता है, तभी यह कहा जा सकता है कि "परमेश्वर ने मनुष्य को जीत लिया है।" यदि नहीं, तो लोग कहेंगे कि परमेश्वर मनुष्य को धमकाता है, और इस तरह परमेश्वर शर्मिंदा हो जाएगा। परमेश्वर इतना मूर्ख नहीं कि किसी को कानोंकान खबर किए बिना ही अपना कार्य समाप्त कर ले। इस प्रकार, जब कार्य जल्द ही ख़त्म होने वाला होता है,

तो परमेश्वर के प्रेम के लिए जुनून की लहर पैदा होती है, और परमेश्वर का प्रेम सामयिक मुद्दा बन जाता है। बेशक, परमेश्वर का यह प्रेम मनुष्य द्वारा दूषित नहीं है; यह बिना किसी मिलावट का प्रेम है, जैसे एक वफ़ादार पत्नी का अपने पति के लिए प्रेम या पतरस का प्रेम। परमेश्वर अय्यूब और पौलुस का प्रेम नहीं चाहता, बल्कि वैसा प्रेम चाहता है जैसा कि यीशु का यहोवा के लिए था, जैसा पिता और पुत्र के बीच होता है: "केवल परमपिता के बारे में सोचना, निजी हानि या लाभ का विचार किए बिना, केवल परमपिता को प्रेम करना, किसी और को नहीं, और कुछ भी न चाहना।" क्या मनुष्य यह कर पाने में सक्षम है?

अगर यीशु ने जो किया, हम उससे तुम्हारी तुलना करें, वह जो पूर्ण मानवता का नहीं था, तो हम क्या सोचते हैं? अपनी पूर्ण मानवता में तुम लोग कितनी दूर तक आ गए हो? क्या यीशु ने जो किया, तुम उसका दशमांश भी प्राप्त करने में सक्षम हो? क्या तुम लोग परमेश्वर के लिए क्रूस पर चढ़ने योग्य हो? क्या परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम शैतान को शर्मिंदा कर सकता है? और तुम लोगों ने मनुष्य के लिए अपने प्रेम को किस मात्रा तक कम किया है? क्या उस प्रेम की जगह परमेश्वर के प्रेम ने ले ली है? क्या तुम परमेश्वर के प्रेम के लिए वास्तव में सब कुछ सहन करते हो? एक क्षण के लिए पूर्व में हुए पतरस के बारे में सोचो, और फिर ख़ुद पर नज़र डालो, जो आज हो—सचमुच एक बड़ी विसंगति है, तुम परमेश्वर के सामने खड़े होने योग्य नहीं हो। तुम लोगों के भीतर, परमेश्वर के लिए अधिक प्रेम है, या शैतान के लिए? इसे बारी-बारी से तराजू के बाएँ और दाएँ पलड़े में रखा जाना चाहिए, ताकि पता चले कि कौन-सा ज़्यादा है—तुम लोगों में वास्तव में परमेश्वर के लिए कितना प्रेम है? क्या तुम परमेश्वर के सामने मरने योग्य हो? यीशु अगर क्रूस पर खड़े रह पाए तो इसका कारण यह था कि पृथ्वी पर उनके अनुभव शैतान को लज्जित करने के लिए काफ़ी थे, और केवल इसी कारण परमपिता परमेश्वर ने बेधड़क उन्हें कार्य का वह चरण पूरा करने की अनुमति दी थी; यह उनके द्वारा उठाए गए कष्टों और परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम के कारण था। मगर तुम लोग इतने योग्य नहीं हो। इसलिए, तुम्हें अनुभव करते रहना चाहिए, अपने हृदय में परमेश्वर की प्राप्ति को हासिल करते रहना चाहिए, और कुछ नहीं—क्या तुम लोग इसे पूरा कर सकते हो? इससे यह देखा जा सकता है कि तुम परमेश्वर से कितनी घृणा करते हो, और परमेश्वर से कितना प्रेम करते हो। ऐसा नहीं कि परमेश्वर मनुष्य से बहुत अधिक अपेक्षा करता है, बल्कि बात यह है कि मनुष्य मेहनत नहीं करता। क्या यही वास्तविकता नहीं है? यदि नहीं, तो तुम परमेश्वर में कितना खोज पाओगे जो प्यारा है, और कितना स्वयं में खोज पाओगे जो घृणित है? तुम्हें इन बातों पर बारीकी से विचार करना चाहिए। यह कहना सही है

कि स्वर्ग के नीचे बहुत कम लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं—लेकिन क्या तुम विश्वरिकॉर्ड तोड़ने वाले, और परमेश्वर से प्रेम करने वाले अग्रदूत बन सकते हो? परमेश्वर मनुष्य से कुछ भी नहीं मांगता। क्या मनुष्य इसमें उसका थोड़ा-बहुत सम्मान नहीं कर सकता? क्या तुम इतना भी हासिल नहीं कर सकते? कहने के लिए और बचा ही क्या है?

अध्याय 46

इन सभी वचनों में, आज के वचनों की तुलना में कोई भी अधिक अविस्मरणीय नहीं है। परमेश्वर के वचनों ने पूर्व में मनुष्य की स्थितियों या स्वर्ग के रहस्यों को प्रकट किया था, फिर भी यह वर्तमान कथन अतीत के कथनों से भिन्न है। यह उपहास करने या मजाक उड़ाने वाला नहीं, बल्कि कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से अप्रत्याशित है: यह परमेश्वर द्वारा नीचे बैठकर शांति से लोगों के साथ बातचीत करने के बारे में है। उसकी इच्छा क्या है? जब परमेश्वर यह कहता है तो तुम क्या देखते हो, "आज, मैंने सृष्टियों से ऊपर नया कार्य शुरू किया है। मैंने धरती पर लोगों को एक नई शुरुआत दी है, और उन सभी को मेरे घर से बाहर चले जाने के लिए कहा है। और क्योंकि लोग हमेशा खुद को आसक्त किए रहना पसंद करते हैं, इसलिए मैं उन्हें आत्म-जारूगक होने और सदैव मेरे कार्य को अस्तव्यस्त नहीं करने की सलाह देता हूँ"? और यह "नई शुरुआत" क्या है जिसके बारे में परमेश्वर बात करता है? परमेश्वर ने लोगों को पहले चले जाने की सलाह दी है, किन्तु परमेश्वर का इरादा तब उनके विश्वास का परीक्षण करना था। इसलिए आज, जब वह एक अलग स्वर में बोलता है, तब वह सच्चा होता है या झूठा? पहले, लोगों को उन परीक्षणों का पता नहीं था जिनके बारे में परमेश्वर ने बात की थी। यह केवल सेवाकर्मियों के कार्य के चरणों के माध्यम से था कि उनकी आँखों ने परमेश्वर के परीक्षणों को देखा, और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से उनका अनुभव किया। इस प्रकार, तब से लेकर, पतरस के सैकड़ों परीक्षणों के उदाहरण के कारण, लोगों ने प्रायः यह मानने की ग़लती की कि "यह परमेश्वर का परीक्षण था।" इसके अलावा परमेश्वर के वचनों में तथ्य आए लेकिन बहुत ही कम। इस तरह, लोग परमेश्वर के परीक्षणों के बारे में और अधिक अंधविश्वासों में डूब गए, और इसलिए परमेश्वर द्वारा बोले गए सभी वचनों में, उन्होंने कभी यह विश्वास नहीं किया कि यह परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला तथ्यपरक कार्य है; इसके बजाय, उनका मानना था कि परमेश्वर, और कोई कार्य न होने के कारण, लोगों के परीक्षण के लिए विशेष रूप से वचनों का प्रयोग कर रहा है। यह ऐसे परीक्षणों के बीच था,

जो निराशाजनक थे और फिर भी आशान्वित करते प्रतीत होते थे कि लोगों ने अनुसरण किया, और इसलिए परमेश्वर के ऐसा कहने के बाद कि "जो लोग रहते हैं, उन्हें शायद दुर्भाग्य और बहुत थोड़ी किस्मत का सामना करना पड़ेगा," लोगों ने अभी भी अपना ध्यान अनुसरण करने के प्रति समर्पित किया, और इस प्रकार उनका चले जाने का कोई इरादा नहीं था। लोगों ने इस तरह की भ्रांतियों के बीच अनुसरण किया, और उनमें से किसी एक ने भी यह आश्वस्त होने का साहस नहीं किया कि कोई आशा नहीं थी—यह परमेश्वर की जीत का सबूत है। परमेश्वर का दृष्टिकोण दर्शाता है कि वह हर चीज़ को अपनी सेवा में शामिल करने के लिए सावधानी से मार्गदर्शित करता है। समय या स्थान की परवाह किए बिना, लोगों की भ्रांतियाँ उन्हें परमेश्वर को नहीं छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, और इसलिए इस चरण के दौरान परमेश्वर अपने लिए लोगों से गवाही दिलवाने के लिए उनकी अपूर्ण प्रेरणाओं का उपयोग करता है, जिसका तब गहन महत्व होता है जब परमेश्वर कहता है, "मैंने कुछ लोगों को प्राप्त कर लिया है।" शैतान रुकावटें उत्पन्न करने के लिए मनुष्य की प्रेरणाओं का उपयोग करता है, जबकि परमेश्वर मनुष्य से सेवा करवाने के लिए उसकी प्रेरणाओं का उपयोग करता है—यह परमेश्वर के इन वचनों का सही अर्थ है कि "[लोग] सोचते हैं कि वे चालाकी से अपना प्रवेश पा सकते हैं, किन्तु जब वे मुझे अपने झूठे प्रवेश पत्र सौंपते हैं, तो मैं उन्हें तभी के तभी आग के गड्ढे में डाल देता हूँ—और अपने स्वयं के 'परिश्रमी प्रयासों' को जलता हुआ देखकर, वे आशा खो देते हैं।" परमेश्वर सभी चीजों से सेवा करवाने के लिए उन्हें सावधानी से मार्गदर्शित करता है, और इसलिए वह मनुष्य की विभिन्न रायों को टालता नहीं है, बल्कि निडरतापूर्वक लोगों को चले जाने के लिए कहता है; यह, ईमानदार वचनों और पद्धति को एक में संयोजित करने वाली, परमेश्वर के कार्य की चमत्कारिकता और बुद्धि है, जो लोगों को विमूढ़ और भ्रमित कर देती है। इससे यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर वास्तव में लोगों को अपने घर से बाहर जाने के लिए कह रहा है, यह किसी प्रकार का परीक्षण नहीं है, और परमेश्वर यह कहने के लिए इस अवसर का उपयोग करता है, "फिर भी मैं लोगों से यह भी कहता हूँ कि जब वे आशीषों को प्राप्त करने में असफल होते हैं, तो कोई भी मेरे बारे में शिकायत नहीं कर सकता है।" कोई भी यह नहीं समझ सकता कि परमेश्वर के वचन सच्चे हैं या झूठे, फिर भी परमेश्वर लोगों को स्थिर करने के लिए, चले जाने की उनकी इच्छा से वंचित करने के लिए, इस अवसर का उपयोग करता है। इसलिए, यदि एक दिन वे शापित होते हैं, तो उन्हें परमेश्वर के वचनों से आगाह किया जा चुका होगा, ठीक जैसे कि लोग कहते हैं कि "जो वचन सुनने में अच्छे नहीं लगते, वे भले वचन होते हैं।" आज, परमेश्वर

के लिए लोगों का प्यार सच्चा और ईमानदार है, और इसलिए वचनों में जो वे नहीं बता सकते थे कि वे सच्चे थे या झूठे, वे जीत लिए गए थे और परमेश्वर से प्यार करने के लिए आए थे, यही वजह है कि परमेश्वर ने कहा, "मैंने अपना महान कार्य पहले ही निष्पादित कर लिया है।" जब परमेश्वर कहता है, "मुझे आशा है कि वे जीवित रहने के लिए अपना मार्ग खोज लेंगे, और मैं इसमें सामर्थ्यहीन हूँ," तो यह परमेश्वर के इन सभी कथनों की वास्तविकता है—फिर भी लोग ऐसा नहीं सोचते हैं; इसके बजाए, उन्होंने सदैव परमेश्वर के वचनों पर थोड़ा सा भी ध्यान दिए बिना सिर्फ़ अनुसरण किया है। जैसे कि, जब परमेश्वर कहता है, "भविष्य में, हमारे बीच कोई अब और वचन नहीं होंगे, हमारे पास बात करने के लिए अब और कोई चीज नहीं होगी, हम एक दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, हममें से प्रत्येक अपने-अपने तरीके से चलेगा," तो ये वचन वास्तविकता हैं, और लेश मात्र भी दूषित नहीं हैं। लोग कुछ भी सोचें, परमेश्वर की "तर्कहीनता" ऐसी है। परमेश्वर ने पहले ही शैतान के सामने गवाही दी है, और परमेश्वर ने कहा कि समय या जगह की परवाह किए बिना वह सभी लोगों को अपने पास से जाने नहीं देगा—और इसलिए कार्य का यह चरण पूरा हो गया है, और परमेश्वर मनुष्य की शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं देता है। फिर भी परमेश्वर ने शुरू में ही इसे स्पष्ट कर दिया है, और इसलिए लोग चुपचाप अपने गुस्से को पी जाने के लिए बाध्य और असहाय रह गए हैं। परमेश्वर और शैतान के बीच की लड़ाई पूरी तरह से मनुष्य पर आधारित है। लोगों का अपने आप पर कोई नियंत्रण नहीं है; वे पूरी तरह से कठपुतलियाँ हैं, जबकि परमेश्वर और शैतान नेपथ्य से डोर खींचते हैं। जब परमेश्वर अपने लिए गवाही देने हेतु लोगों का उपयोग करता है, तो अपनी सेवा के लिए लोगों का उपयोग करने हेतु परमेश्वर वह सब करता है जो वह सोच सकता है, हर संभव कार्य करता है, इससे लोग शैतान द्वारा बहकाए और इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा निर्देशित किए जाते हैं। और जब वह गवाही पूरी हो जाती है जो परमेश्वर दिलवाना चाहता है, तो वह लोगों को एक ओर उछाल देता है और उन्हें पीड़ित छोड़ देता है, जबकि परमेश्वर ऐसे व्यवहार करता है जैसे कि उसका उनके साथ कोई संबंध नहीं हो। जब वह पुनः लोगों का उपयोग करना चाहता है, तो वह उन्हें एक बार फिर से चुनता है और उन्हें उपयोग में लाता है और लोगों को इसके बारे में थोड़ी सी भी जानकारी नहीं होती है। वे केवल उस बैल या घोड़े की तरह होते हैं जिसे उसका मालिक अपनी इच्छानुसार उपयोग करता है, उनमें से किसी का भी स्वयं पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। यह थोड़ा दुःखद प्रतीत हो सकता है, किन्तु इस बात की परवाह किए बिना कि लोगों का स्वयं पर कोई नियंत्रण है या नहीं, परमेश्वर की सेवा करना सम्मान की बात है, कुछ ऐसा नहीं है जिसके

बारे में परेशान हुआ जाए। यह ऐसा है मानो कि परमेश्वर को इसी तरह से कार्य करना चाहिए। क्या सर्वशक्तिमान की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम होना कुछ ऐसा नहीं है जिस पर गर्व किया जाए? तो तुम क्या सोचते हो? तुमने कभी परमेश्वर के लिए सेवा प्रस्तुत करने हेतु अपना संकल्प निर्धारित किया है? क्या ऐसा हो सकता है तुम अभी भी अपनी स्वयं की स्वतंत्रता की खोज करने के अधिकार को पकड़े हुए हो?

भले ही, परमेश्वर जो कुछ करता है वह अच्छा और अनुकरणीय है, आख़िरकार, मनुष्य और परमेश्वर, भिन्न-भिन्न हैं। इस आधार पर, इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर तुम्हारे प्रेम पर ध्यान देता है या नहीं, तुम्हें एक मानव हृदय के साथ परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। परमेश्वर के वचन दर्शाते हैं कि परमेश्वर के हृदय में भी बहुत उदासी है। यह केवल परमेश्वर के वचनों के कारण है कि लोग शुद्ध हैं। फिर भी, यह कार्य, आख़िरकार, कल ही हुआ—तो परमेश्वर वास्तव में आगे क्या करेगा? आज तक, यह एक रहस्य बना हुआ है, और इसलिए लोग इसे समझने या इसकी थाह लेने में अक्षम हैं, और केवल परमेश्वर की ताल पर थिरक सकते हैं। बहरहाल, जो कुछ भी परमेश्वर कहता है, वह वास्तविक है, और वह सब सच हो जाता है—इसमें कोई संदेह नहीं!

भाग तीन
कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन
(जून 1992 से अगस्त 2014)

परिचय

परमेश्वर के वचनों के इस भाग में कुल चार खंड हैं जो मसीह द्वारा जून 1992 से लेकर सितंबर 2005 के बीच व्यक्त किए गए थे। इनमें से अधिकतर मसीह के उन प्रवचनों और संवादों की रिकॉर्डिंग पर आधारित हैं, जो उसने कलीसियाओं में अपनी यात्राओं के दौरान व्यक्त किए थे। इन्हें किसी भी रूप में संशोधित नहीं किया गया है, न ही मसीह ने बाद में इनमें कोई बदलाव किया था। शेष खंड स्वयं मसीह ने लिखे थे (जब मसीह लिखता है, तो वह सोचने के लिए रुके बिना या कोई संपादन किए बिना एक ही बार में लिखता है, और उसके वचन पूरी तरह से पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति हैं—इसमें कोई संदेह नहीं है)।

इन दो तरह के कथनों को अलग करने के बजाय, हमने इन्हें एक-साथ उसी क्रम में प्रस्तुत किया है, जिस क्रम में ये मूलत: व्यक्त किए गए थे; इससे हम उसके कथनों की समग्रता से, परमेश्वर के कार्य के चरणों को देख पाते हैं और समझ पाते हैं कि वह प्रत्येक चरण में कैसे कार्य करता है। यह लोगों के लिए परमेश्वर के कार्य के चरणों और परमेश्वर की बुद्धि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लाभदायक है।

"कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (I)"—के पहले आठ अध्याय सम्मिलित रूप से "मार्ग" के रूप में संदर्भित हैं—ये मसीह द्वारा बोले गए वचनों का वह छोटा अंश हैं जो उसने लोगों के साथ बराबरी पर खड़े होकर बोले थे। अपनी स्पष्ट नीरसता के बावजूद, ये वचन इंसान के लिए परमेश्वर के प्रेम और उसके प्रति उसकी चिंता से भरे हुए हैं। इससे पहले, परमेश्वर ने तीसरे स्वर्ग के दृष्टिकोण से बात की थी, जिसने उसके और इंसान के बीच बहुत ज़्यादा दूरी बना दी थी। इंसान परमेश्वर के पास जाने से डरने लगा था, परमेश्वर से अपने जीवन-पोषण की माँग करना तो बहुत दूर की बात है। इसलिए, "मार्ग" में परमेश्वर ने इंसान से बराबरी के स्तर पर बात की, मार्ग की दिशा की ओर इशारा किया और इस तरह परमेश्वर के साथ इंसान के संबंध को उसकी मूल स्थिति में बहाल किया; लोगों को अब इस बात पर संदेह नहीं रहा कि परमेश्वर अभी भी बातचीत का तरीका अपना रहा है, और वे अब मौत के परीक्षण के आतंक से ग्रस्त भी नहीं रहे। परमेश्वर तीसरे स्वर्ग से धरती पर उतरा, लोग आग और गंधक की झील से परमेश्वर के सिंहासन के सामने आए, उन्होंने "सेवा करने वालों" की छाया का त्याग किया, और नवजात बछड़ों की तरह, आधिकारिक रूप से परमेश्वर के वचनों का बप्तिस्मा स्वीकार कर लिया। तब जाकर परमेश्वर उनसे अंतरंग रूप से बातचीत करने और उन्हें जीवन प्रदान करने का अधिक कार्य कर पाया। परमेश्वर का इंसान की तरह दीन बनने का उद्देश्य लोगों के करीब आना, उनके और अपने बीच की दूरी कम करना, लोगों की मान्यता और विश्वास प्राप्त करना और लोगों में जीवन और परमेश्वर का अनुसरण करने के संकल्प को प्रेरित करना था। "मार्ग" के आठ अध्यायों को उन कुंजियों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जिनसे परमेश्वर लोगों के दिलों के द्वार खोलता है, और मिलकर वे ऐसी चीनी-लेपित गोली का रूप ले लेते हैं, जिसे परमेश्वर इंसान को प्रदान करता है। परमेश्वर द्वारा ऐसा किए जाने पर ही लोग परमेश्वर की बार-बार दी गई शिक्षाओं और फटकार पर बारीकी से ध्यान देते हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि इसके बाद ही परमेश्वर ने आधिकारिक रूप से कार्य के वर्तमान चरण में जीवन प्रदान करने और सत्य व्यक्त करने का कार्य शुरू किया, जैसा कि वह बोलता रहा : "विश्वासियों को क्या दृष्टिकोण रखना चाहिए" और

"परमेश्वर के कार्य के चरणों के विषय में"...। क्या यह तरीका परमेश्वर की बुद्धि और उसके गंभीर इरादों को नहीं दर्शाता? यह मसीह की जीवन की आपूर्ति की शुरुआत है, इसलिए इसमें सत्य बाद के खंडों की तुलना में थोड़े उथले हैं। इसके पीछे का सिद्धांत बहुत सरल है : परमेश्वर इंसान की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करता है। वह आँख मूँदकर काम या बातचीत नहीं करता; केवल परमेश्वर ही इंसान की आवश्यकताओं को पूरी तरह से समझता है, अन्य किसी में इंसान के लिए अधिक प्रेम और समझ नहीं है।

"कार्य और प्रवेश" में एक से लेकर दस कथनों तक, परमेश्वर के वचन एक नए चरण में प्रवेश करते हैं। परिणामस्वरूप, ये कथन शुरू में रखे गए हैं। उसके बाद, "कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (II)" अस्तित्व में आए। इस चरण के दौरान, परमेश्वर ने अपने अनुयायियों से और विस्तृत अपेक्षाएँ कीं। इन अपेक्षाओं में लोगों के रहन-सहन, उनकी क्षमताओं से क्या अपेक्षित है आदि की जानकारी शामिल थी। चूँकि ये लोग परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए दृढ़-संकल्प थे और उन्हें परमेश्वर की पहचान और सार को लेकर कोई संदेह नहीं रहा था, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें औपचारिक रूप से अपने परिवार का सदस्य मानना शुरू कर दिया और उनके साथ सृष्टि के समय से लेकर आज तक परमेश्वर के कार्य के अंदरूनी सत्य पर संवाद करने लगा, उनके सामने बाइबल के पीछे का सत्य प्रकट करने लगा, और उन्हें परमेश्वर के देहधारण का वास्तविक अर्थ समझाने लगा। इस खंड में परमेश्वर के कथनों ने लोगों को परमेश्वर के सार की, उसके कार्य के सार की बेहतर समझ दी। इससे वे यह समझ पाए कि उन्होंने परमेश्वर के उद्धार से जो कुछ प्राप्त किया है, वह उससे भी बढ़कर है, जो पिछले तमाम युगों में नबियों और प्रेरितों को हासिल हुआ था। परमेश्वर के वचनों की हर पंक्ति में तुम उसकी बुद्धि का एक-एक कण, साथ ही इंसान के लिए उसका सच्चा प्रेम और चिंता देख सकते हो। इन वचनों को व्यक्त करने के अलावा, परमेश्वर ने सबके सामने एक-एक करके इंसान की पिछली सारी धारणाओं और भ्रांतियों को, और उन चीज़ों को जिनकी पहले लोगों ने कभी कल्पना भी नहीं की थी, साथ ही उस मार्ग को जिस पर लोग भविष्य में चलने वाले थे, उजागर कर दिया। शायद ठीक यही वह संकीर्ण "प्रेम" है इंसान जिसका अनुभव करने में सक्षम है! आखिरकार, परमेश्वर ने बिना कुछ अपने पास रखे या बिना बदले में कुछ माँगे लोगों को वह सब दिया था जिसकी उसे जरूरत थी, वह सब प्रदान किया था जो उसने माँगा था।

इस खंड के कई अध्याय बाइबल का उल्लेख करते हैं। बाइबल हज़ारों साल से इंसानी इतिहास का हिस्सा रही है। इतना ही नहीं, लोग इसे परमेश्वर की तरह मानते हैं। यहाँ तक कि अंत के दिनों में इसने

परमेश्वर की जगह ले ली है, जिससे परमेश्वर अप्रसन्न है। इसलिए, जब समय मिला, परमेश्वर ने बाइबल की अंदरूनी कहानी और उसकी उत्पत्ति को स्पष्ट करना ज़रूरी समझा। अगर वह ऐसा न करता, तो बाइबल लोगों के दिलों में परमेश्वर का स्थान बनाए रखती, और लोग परमेश्वर के कर्मों को मापने और उनका खंडन करने के लिए बाइबल के वचनों का इस्तेमाल करते रहते। बाइबल के सार, उसकी संरचना और उसकी कमियों की व्याख्या करके परमेश्वर किसी भी तरह से न तो बाइबल के अस्तित्व को नकार रहा था, न ही वह उसकी निंदा कर रहा था; बल्कि वह तो एक उपयुक्त और उचित विवरण मुहैया करा रहा था, जिससे बाइबल की मौलिक छवि बहाल हो सके। उसने बाइबल से संबंधित लोगों की गलतफहमियों को दूर किया और उनके सामने बाइबल की सही दृष्टि प्रस्तुत की, ताकि वे अब बाइबल की आराधना करके और भ्रमित न हों; जिसका तात्पर्य है कि, ताकि वे बाइबल में अपने अंधविश्वास को परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर की आराधना मानने की गलती न करें, और उसकी सच्ची पृष्ठभूमि और कमियों का सामना करने मात्र से भयभीत न हों। एक बार लोगों में बाइबल की विशुद्ध समझ पैदा हो जाए, तो वे बिना किसी खेद के इसे दरकिनार कर देंगे और परमेश्वर के नए वचनों को हिम्मत के साथ स्वीकार करेंगे। इन अनेक अध्यायों में परमेश्वर का यही लक्ष्य है। जो सत्य परमेश्वर लोगों को बताना चाहता है, वह यह है कि कोई भी सिद्धांत या तथ्य परमेश्वर के आज के कार्य और वचनों की जगह नहीं ले सकता, और कोई भी चीज़ परमेश्वर का स्थान नहीं ले सकती। अगर लोग बाइबल के फंदे से नहीं निकल सके, तो वे कभी भी परमेश्वर के सामने नहीं आ पाएँगे। अगर वे परमेश्वर के सामने आना चाहते हैं, तो उन्हें अपने दिल से हर वो चीज़ साफ करनी होगी, जो परमेश्वर की जगह ले सकती हो; तभी वे परमेश्वर के लिए संतोषजनक होंगे। हालाँकि यहाँ परमेश्वर केवल बाइबल का उल्लेख करता है, लेकिन यह बात मत भूलो कि बाइबल के अलावा भी ऐसी बहुत-सी गलत चीज़ें हैं जिन्हें लोग दिल से पूजते हैं; बस उन्हीं चीज़ों को लोग नहीं पूजते जो सचमुच परमेश्वर से आती हैं। परमेश्वर बाइबल का इस्तेमाल केवल लोगों को यह याद दिलाने के लिए एक उदाहरण के रूप में करता है कि वे कोई गलत रास्ता न अपनाएँ और परमेश्वर में विश्वास रखते हुए और उसके वचनों को स्वीकारते हुए फिर से चरम सीमाओं पर जाकर उलझन का शिकार न हो जाएँ।

परमेश्वर इंसान को जो वचन प्रदान करता है, वे हलके से गहरे तक जाते हैं। उसके कथनों के विषय इंसान के बाहरी व्यवहार और कामों से लेकर उसके भ्रष्ट स्वभावों तक निरंतर प्रगति करते हैं, जहाँ से परमेश्वर अपनी भाषारूपी बरछी की नोक का लक्ष्य लोगों की आत्माओं के गहनतम हिस्से को बनाता है :

उनकी प्रकृति को। उस अवधि में जब "कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (III)" व्यक्त किए गए थे, परमेश्वर के कथन मनुष्य का सार और उसकी पहचान और एक वास्तविक व्यक्ति होने का क्या अर्थ है—इन गहनतम सत्यों और जीवन में लोगों के प्रवेश के अनिवार्य प्रश्नों पर बल देते हैं। बेशक, " कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (I)," में परमेश्वर द्वारा इंसान को प्रदान किए गए सत्यों पर पुन: विचार करते हुए, "कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (III)" की विषय-वस्तु, तुलनात्मक रूप से, बेहद गहन है। इस खंड के वचन लोगों के भविष्य-पथ को और इस चीज़ को स्पर्श करते हैं कि उन्हें कैसे पूर्ण बनाया जा सकता है; वे इंसान की भविष्य की मंज़िल को भी स्पर्श करते हैं, और इसे भी कि परमेश्वर और मनुष्य किस तरह एक साथ विश्राम में प्रवेश करेंगे। (यह कहा जा सकता है कि, आज तक, ये वे वचन हैं, जिन्हें परमेश्वर ने लोगों के सामने उनकी प्रकृति, लक्ष्य और उनकी मंज़िल के विषय में व्यक्त किया है, जिन्हें समझना एकदम आसान है।) परमेश्वर को उम्मीद है कि इन्हें पढ़ने वाले वे लोग हैं, जो स्वयं को इंसानी धारणाओं और कल्पनाओं से अलग कर चुके हैं, जो अपने हृदय की गहराइयों में परमेश्वर के प्रत्येक वचन को शुद्ध रूप से समझने में सक्षम हैं। इतना ही नहीं, उसे यह भी उम्मीद है कि इन वचनों को पढ़ने वाले लोग उसके वचनों को सत्य, मार्ग और जीवन के रूप में ले सकते हैं, और वे परमेश्वर को हलके में नहीं लेते या उसे फुसलाते नहीं हैं। अगर लोग इन वचनों को परमेश्वर की जाँच-पड़ताल करने या उसकी छानबीन करने के दृष्टिकोण से पढ़ेंगे, तो ये कथन उनके लिए किसी बंद पुस्तक की तरह होंगे। जो लोग सत्य का अनुशीलन करते हैं, दृढ़ता से परमेश्वर का अनुसरण करते हैं और जिनके मन में उसके प्रति ज़रा-सा भी संदेह नहीं है, केवल वही इन वचनों को स्वीकार करने के पात्र हैं।

"कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (IV)" दिव्य कथनों की एक और श्रेणी है, जो "संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के वचन" के बाद आती है। इस खंड में ईसाई सम्प्रदायों के लोगों के लिए परमेश्वर के उपदेश, शिक्षाएँ और प्रकाशन शामिल हैं, जैसे : "जब तक तुम यीशु के आध्यात्मिक शरीर को देखोगे, परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी को नया बना चुका होगा," "वे सभी जो मसीह से असंगत हैं निश्चित ही परमेश्वर के विरोधी हैं।" इसमें इंसान से परमेश्वर की सर्वाधिक विशिष्ट अपेक्षाएँ शामिल हैं, जैसे : "अपनी मंज़िल के लिए पर्याप्त संख्या में अच्छे कर्मों की तैयारी करो," "तीन चेतावनियाँ," "अपराध मनुष्य को नरक में ले जाएँगे।" इसमें बहुत से पहलू शामिल किए गए हैं, जैसे हर तरह के लोगों के लिए

प्रकटीकरण और न्याय तथा वचन कि परमेश्वर को कैसे जानें। यह कहा जा सकता है कि यह खंड परमेश्वर द्वारा इंसान के न्याय का मूल है। परमेश्वर के कथनों के इस खंड का सबसे अविस्मरणीय भाग यह है कि, जब परमेश्वर अपना कार्य बंद करने वाला था, तो उसने उस चीज़ को उजागर किया, जो इंसान की अस्थिमज्जा में समायी हुई है : धोखा। उसका लक्ष्य एकदम अंत में लोगों को निम्न तथ्य ज्ञात कराना और उसे उनके दिल की गहराइयों में बसा देना है : तुम चाहे कितने भी समय से परमेश्वर के अनुयायी रहे हो—तुम्हारी प्रकृति फिर भी परमेश्वर को धोखा देने की ही है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर को धोखा देना इंसान की प्रकृति में है, क्योंकि लोग अपने जीवन में पूर्ण परिपक्वता हासिल कर पाने में अक्षम होते हैं, और उनके स्वभाव में केवल सापेक्ष बदलाव ही आ पाता है। हालाँकि ये दो अध्याय "विश्वासघात (1)" और "विश्वासघात (2)" लोगों को आघात पहुँचाते हैं, लेकिन ये लोगों के लिए सचमुच परमेश्वर की सबसे ईमानदार और परोपकारी चेतावनियाँ हैं। कम से कम, जब लोग आत्म-संतुष्ट और अहंकारी हों, तो इन दो अध्यायों को पढ़कर उनकी अपनी दुष्टता पर तो लगाम लगेगी और वे शांत हो जाएँगे। इन दो अध्यायों के ज़रिए परमेश्वर लोगों को याद दिलाता है कि तुम्हारा जीवन कितना भी परिपक्व क्यों न हो, तुम्हारे अनुभव चाहे कितने भी गहरे क्यों न हों, तुम्हारा आत्म-विश्वास चाहे कितना भी प्रबल क्यों न हो, तुम चाहे कहीं भी क्यों न पैदा हुए हो और कहीं भी क्यों न जा रहे हो, परमेश्वर को धोखा देने की तुम्हारी प्रकृति किसी भी समय और किसी भी स्थान पर उजागर हो सकती है। परमेश्वर हर व्यक्ति को यह बताना चाहता है : परमेश्वर को धोखा देना हर व्यक्ति की जन्मजात प्रकृति है। बेशक, इन दो अध्यायों को व्यक्त करने के पीछे परमेश्वर का इरादा इंसान को मिटा देने या उसकी निंदा करने का बहाना खोजना नहीं है, बल्कि लोगों को इंसान की प्रकृति से और अधिक वाकिफ कराना है, ताकि वे परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने के लिए हर समय सावधानी से उसके सामने रह सकें, जो उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति गँवाने और वापसी-रहित मार्ग पर जाने से रोक देगा। ये दो अध्याय परमेश्वर का अनुसरण करने वाले सभी लोगों के लिए खतरे की घंटी हैं। उम्मीद है कि लोग परमेश्वर के गंभीर इरादों को समझेंगे; आखिरकार, ये वचन निर्विवाद तथ्य हैं—तो इंसान को इस बात पर बखेड़ा खड़ा करने की क्या ज़रूरत है कि परमेश्वर ने ये वचन कब और कहाँ व्यक्त किए थे? अगर परमेश्वर ने ये सारी चीज़ें अपने तक ही सीमित रखी होतीं, और तब तक इंतज़ार किया होता, जब लोगों को लगता कि अब परमेश्वर के लिए इन्हें व्यक्त करने का उपयुक्त समय है, तो क्या बहुत देर नहीं हो चुकी होती? वह उपयुक्त समय कब होता?

परमेश्वर ने इन चार खंडों में बहुत सारे तरीके और दृष्टिकोण अपनाए हैं। मिसाल के तौर पर, कभी वह व्यंग्य का इस्तेमाल करता है, और कभी वह प्रत्यक्ष पोषण और शिक्षा के तरीके का इस्तेमाल करता है; कभी वह उदाहरणों का इस्तेमाल करता है, और कभी वह कड़ी फटकार का इस्तेमाल करता है। कुल मिलाकर, सभी प्रकार के विभिन्न तरीके हैं, जिनका उद्देश्य लोगों की विभिन्न स्थितियों और रुचियों की पूर्ति करना है। जिस परिप्रेक्ष्य से वह बोलता है, वह उसके कथनों के विभिन्न तरीकों और विषय-वस्तु के साथ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, कभी वह "मैं" या "मुझे" कहता है; यानी, वह लोगों से स्वयं परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से बोलता है। कभी वह अन्य पुरुष के रूप में बोलते हुए कहता है, "परमेश्वर" यह या वह है, और कई बार वह इंसानी नज़रिए से बोलता है। वह चाहे किसी भी परिप्रेक्ष्य से क्यों न बोले, उसका सार नहीं बदलता, क्योंकि वह किसी भी तरह क्यों न बोले, वह जो कुछ भी व्यक्त करता है, वह स्वयं परमेश्वर का सार होता है—यह सब सत्य है, और इंसान को इसी की आवश्यकता है।

कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (I) (जून 1992 से अक्टूबर 1992)

मार्ग... (1)

अपने जीवनकाल में कोई भी व्यक्ति नहीं जानता है कि वह किस तरह की बाधाओं का सामना करने जा रहा है, न ही उसे पता होता है कि वह किस प्रकार के शुद्धिकरण के अधीन किया जाएगा। कुछ के लिए यह उनके काम में है, कुछ के लिए यह उनके भविष्य की संभावनाओं में है, कुछ के लिए यह उनके उस परिवार में है जिसमें वे पैदा हुए थे, और कुछ के लिए यह उनके विवाह में है। लेकिन हमारे और उनके बीच जो भिन्नता है वह है कि आज हम, लोगों का यह समूह, परमेश्वर के वचन के बीच पीड़ित हो रहा है। अर्थात्, जैसे कि परमेश्वर की सेवा करने वाले, हमने उसमें विश्वास करने के मार्ग पर बाधा की पीड़ा झेली है, जो कि वही रास्ता है जो सभी विश्वासी लेते हैं, और हम सभी के पैरों के नीचे की राह है। यह इसी बिंदु से आगे है कि हम परमेश्वर पर विश्वास करने के अपने मार्ग को आधिकारिक रूप से आरंभ करते हैं, मनुष्य के जीवन पर से आधिकारिक रूप से पर्दा उठाते हैं, और जीवन के सही मार्ग पर पैर रखते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसा तब होता है जब हम मनुष्य के साथ-साथ जीने वाले परमेश्वर के सही मार्ग पर हम पैर

रखते हैं, जो कि वही मार्ग है जिसे सामान्य लोग लेते हैं। किसी ऐसे के रूप में जो परमेश्वर के सामने खड़ा होता है और उसकी सेवा करता है—कोई जो मंदिर में एक पुजारी की पोशाक पहनता है, दिव्य गरिमा, परमेश्वर की सामर्थ्य और प्रताप धारण करता है—मैं सभी लोगों के लिए निम्नलिखित घोषणा करता हूँ, विशेष रूप से: परमेश्वर की आनंददायक मुखाकृति मेरी महिमा है, उसकी प्रबंधन योजना मेरा मर्म है। मैं आने वाली दुनिया में सौ गुना प्राप्त करने का प्रयास नहीं करता हूँ, बल्कि केवल इस दुनिया में परमेश्वर की इच्छा पर चलने का प्रयास करता हूँ, ताकि मेरे द्वारा देह से किए गए थोड़े से प्रयासों के कारण परमात्मा पृथ्वी पर अपनी महिमा के एक छोटे से अंश का आनंद ले सके। यही मेरी एकमात्र इच्छा है। मेरी राय में, यही मेरा एकमात्र आध्यात्मिक जीवनाधार है। मेरा मानना है कि ये किसी भी ऐसे व्यक्ति के "अंतिम वचन" होने चाहिए जो देह में रहता है और जो भावना से भरा है। मेरे पैरों के नीचे आज यही मार्ग है। मेरा मानना है कि मेरा यह दृष्टिकोण देह में मेरे अंतिम वचन हैं, और मुझे आशा है कि लोग मेरे बारे में अन्य मत या विचार नहीं रखते हैं। यद्यपि मैंने इसे अपना सर्वस्व दे दिया है, किंतु मैं अभी भी स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में असमर्थ रहा हूँ। मैं असीमित रूप से उदास हूँ। यह ही देह का सार क्यों है? इसलिए, यह केवल उन चीज़ों के जो मैंने अतीत में की हैं, और परमेश्वर ने मुझमें जीतने का जो काम किया है उसके परिणामस्वरूप है, कि मैंने मनुष्यजाति के सार की गहरी समझ प्राप्त की है। केवल इसके बाद ही मैंने स्वयं के लिए सबसे बुनियादी मानक निर्धारित किया है: केवल परमेश्वर की इच्छा पर चलने का प्रयास करना, इसे अपना सर्वस्व दे देना, और अपने अन्तःकरण पर कोई वजन नहीं रखना। मैं इस बारे में कोई ध्यान नहीं देता हूँ कि परमेश्वर की सेवा करने वाले अन्य लोगों की अपने लिए क्या अपेक्षाएँ हैं। संक्षेप में, मैंने उसकी इच्छा पर चलने पर अपना हृदय केंद्रित कर लिया है। उसके एक सृजन के रूप में जो उनके सम्मुख सेवा करता है—कोई ऐसा जिसे परमेश्वर द्वारा बचाया और प्रेम किया गया है, और जिसने उनके प्रहार सहे हैं—यह मेरी स्वीकारोक्ति है। यह किसी ऐसे की स्वीकारोक्ति है जिस पर परमेश्वर द्वारा निगरानी रखी गई है, जिसे संरक्षित किया गया है, प्यार किया गया है, और बहुत अधिक उपयोग किया गया है। अब से, मैं इस मार्ग पर चलता रहूँगा जब तक कि मैं परमेश्वर द्वारा मुझे सौंपे गए महत्वपूर्ण कार्य को पूरा नहीं कर लेता हूँ। लेकिन मेरी राय में, मार्ग का अंत आसन्न है, क्योंकि उसका कार्य पूरा हो चुका है, और आज के दिन तक, लोगों ने वह सब किया है जो वे करने में सक्षम हैं।

इस धारा में मुख्य भूमि चीन का प्रवेश स्थानीय कलीसियाओं के पवित्र आत्मा के काम के आसपास

केंद्रित होने का कारण बना है। परमेश्वर ने इन स्थानीय कलीसियाओं में निरंतर काम किया है क्योंकि इस समय उत्पन्न हुई कलीसियाएँ पतित राजसी परिवार में परमेश्वर का मर्म बन गई हैं। स्पष्ट है कि परमेश्वर इस तरह के परिवार में स्थानीय कलीसियाओं को स्थापित करके अति-प्रसन्न था मुख्य भूमि चीन में स्थानीय कलीसिया स्थापित करने और दुनिया भर के अन्य स्थानीय कलीसियाओं में भाइयों और बहनों में इस अच्छे समाचार का प्रसार करने के बाद, परमेश्वर बहुत उत्साहित था—यह उस कार्य का पहला कदम था जिसे वह मुख्य भूमि चीन में करने का इरादा रखता था। यह कहा जा सकता है कि यह पहला कार्य था। और क्या इस तरह के दानव के गढ़ में—ऐसा गढ़ जो किसी भी चीज़ या व्यक्ति द्वारा अभेद्य है—अपने कार्य के पहले चरण आरम्भ करने की परमेश्वर की क्षमता उसकी की महान सामर्थ्य नहीं है? यह स्पष्ट है कि इस काम की पुनःप्राप्ति के लिए, शैतान के कसाई के चाकू के नीचे मारे जाते हुए, असंख्य भाई-बहन शहीद हुए हैं। अब इसका उल्लेख करते हुए बहुत पीड़ा होती है और क्रोध आता है, लेकिन अधिकांश भाग के लिए, पीड़ा के दिन बीत गए हैं। यह कि आज मैं परमेश्वर के लिए काम कर पाया हूँ, और कि आज मैं जहाँ हूँ वहाँ तक सफल रह पाया हूँ, यह सब परमेश्वर की शक्ति की वजह से है। मैं उन लोगों के प्रति बहुत आदर महसूस करता हूँ जिन्हें शहादत के लिए परमेश्वर चुनता है; वे परमेश्वर की इच्छा पर चलने और स्वयं को परमेश्वर के लिए बलिदान करने में सक्षम थे। ईमानदारी से कहें, तो यदि यह परमेश्वर का अनुग्रह और दया नहीं होती, तो मैं बहुत पहले दलदल में गिर गया होता। परमेश्वर का धन्यवाद! मैं समस्त महिमा परमेश्वर को देना चाहता हूँ ताकि वह विश्राम में रह सके। कुछ लोग मुझसे पूछते हैं: "तुम्हारी स्थिति की वजह से तुन्हें मरना नहीं चाहिए। ऐसा क्यों है कि जब परमेश्वर मृत्यु का उल्लेख करता है तो तुम खुश होते हो?" सीधे उत्तर देने के बजाय, मैं सिर्फ जरा सा मुस्कुराता हूँ और कहता हूँ: "यही वह रास्ता है जिसका मुझे अनुसरण अवश्य करना चाहिए, जिसका मुझे पूर्णतः पालन अवश्य करना चाहिए।" लोग मेरे उत्तर से चकरा जाते हैं। वे मुझे केवल आश्चर्य से देख सकते हैं, मेरे बारे में थोड़ा संदिग्ध हो सकते हैं। हालाँकि, मेरा मानना है कि चूँकि यही वह मार्ग है जिसे मैंने चुना है और यही वह दृढ़ संकल्प भी है जो मैंने परमेश्वर के सामने निर्धारित किया है, फिर इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुश्किलें कितनी बड़ी हैं, मैं इसका आगे प्रयास करते रहना जारी रखूँगा। मुझे लगता है कि यह वह वादा है जिसका परमेश्वर की सेवा करने वाले किसी को भी समर्थन करना चाहिए—और उन्हें अपने वचन से थोड़ा भी पीछे अवश्य नहीं हटना चाहिए, जरा सा भी नहीं। यह एक नियम, एक नियमन भी है जिसे बहुत पहले, व्यवस्था के युग में, लाया

गया था, जिसे परमेश्वर पर विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति को समझना चाहिए। मेरे अनुभव में, यद्यपि परमेश्वर का मेरा ज्ञान बहुत अच्छा नहीं है, और मैंने वास्तव में जो अनुभव किया है वह नगण्य है, उल्लेख करने लायक भी नहीं है—ऐसा कि मेरे पास इसके बारे में बोलने के लिए चतुर अंतर्दृष्टि नहीं है—फिर भी परमेश्वर के वचनों का समर्थन अवश्य किया जाना चाहिए, और इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। सच्चाई बताऊँ तो, मेरे अपने व्यावहारिक अनुभव नगण्य हैं, किंतु क्योंकि परमेश्वर मेरी गवाही देता है और लोगों का हमेशा मैं जो व्यक्ति हूँ उस पर अंधा विश्वास रहा है, तो मैं क्या कर सकता हूँ? मगर मुझे अभी भी आशा है कि लोग परमेश्वर को प्यार करने के बारे में अपने दृष्टिकोणों को सुधारेंगे। मैं जो व्यक्ति हूँ उसका कोई मूल्य नहीं है; क्योंकि मैं भी परमेश्वर में विश्वास के मार्ग का अनुसरण कर रहा हूँ, और जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूँ वह परमेश्वर में विश्वास के मार्ग के अलावा अन्य कुछ नहीं है। कोई व्यक्ति अच्छा हो सकता है लेकिन वह पूजा की वस्तु नहीं होना चाहिए—ऐसे व्यक्ति केवल अनुकरण किए जाने के लिए आदर्श के रूप में कार्य कर सकते हैं। दूसरे क्या करते हैं मुझे इसकी परवाह नहीं है, बल्कि मैं लोगों के लिए घोषणा करता हूँ कि मैं भी परमेश्वर को महिमा देता हूँ; मैं आत्मा की महिमा देह को नहीं देता हूँ। मुझे आशा है कि हर कोई इस पर मेरी भावनाओं को समझ सकता है। यह मैं अपने उत्तरदायित्व से जी नहीं चुरा रहा हूँ, बल्कि यह केवल पूरी कहानी है। यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाना चाहिए, अतः इसे पुनः नहीं बोला जाएगा।

आज, मुझे परमेश्वर से प्रबुद्धता प्राप्त हुई थी। पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य उद्धार का कार्य है; यह किसी भी अन्य चीज से निष्कलंकित है। कुछ लोग अन्यथा सोच सकते हैं, लेकिन मुझे हमेशा महसूस हुआ है कि पवित्र आत्मा कार्य का सिर्फ एक चरण—उद्धार का कार्य—कर रहा है और कोई अन्य कार्य नहीं कर रहा है। यह स्पष्ट हो जाना चाहिए। केवल अब वह कार्य जो पवित्र आत्मा मुख्यभूमि चीन में करता है स्पष्ट हुआ है। और क्यों परमेश्वर सभी मार्गों को खोलना और इस जैसी जगह पर काम करना चाहेगा, जहाँ दानवों ने धावा बोल रखा है? यह दर्शाता है कि सबसे ऊपर, परमेश्वर उद्धार का कार्य कर रहा है। अधिक स्पष्ट रूप में कहूँ तो, यह मुख्य रूप से जीतने का कार्य है। यीशु का नाम शुरू से पुकारा गया है। (शायद कुछ ने इसका अनुभव नहीं किया हो, लेकिन मैं कहता हूँ कि यह पवित्र आत्मा के कार्य का एक कदम था।) यह अनुग्रह के युग के यीशु से अलग होने के लिए था, इसलिए लोगों के एक हिस्से को अग्रिम रूप से चुना गया था, और तब बाद में इस चयन को संकुचित किया गया था। उसके बाद, मुख्यभूमि चीन में गवाह

ली का नाम पुकारा गया था—यह मुख्यभूमि चीन में पवित्र आत्मा का पुनःप्राप्ति के कार्य का दूसरा भाग था। यह कार्य का पहला कदम था जिसमें पवित्र आत्मा ने लोगों का चयन करना शुरू किया, जो पहले लोगों को इकट्ठा करना था, चरवाहे की उनकी ओर ध्यान देने के लिए प्रतीक्षा करना था; उस सेवा को करने के लिए "गवाह ली" के नाम का उपयोग किया गया था। "सामर्थ्यवान" नाम की गवाही होने पर परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य किया और उसके पहले, यह एक तैयारी के चरण में था। इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या वह सही था या ग़लत, और परमेश्वर की योजना के अंदर यह मुख्य मुद्दा नहीं है। "सामर्थ्यवान" नाम की गवाही होने के बाद, आधिकारिक तौर पर व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर ने अपना कार्य करना शुरू किया और उसके बाद, देह में परमेश्वर के रूप में उसके कार्यों की आधिकारिक रूप से शुरूआत हुई। "सामर्थ्यवान प्रभु" नाम के माध्यम से, उसने उन सभी लोगों पर नियंत्रण किया जो विद्रोही और अवज्ञाकारी थे। उन लोगों ने मनुष्यों की समानता ग्रहण करनी शुरू कर दी, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति तेईसवें या चौबीसवें वर्ष में प्रवेश करता है, तो वह एक वयस्क की तरह लगना शुरू कर देता है, अर्थात्, लोगों ने अभी-अभी एक सामान्य इंसान का जीवन पाना शुरू किया था। सेवा-करने-वालों के परीक्षण के माध्यम से, परमेश्वर का कार्य स्वाभाविक रूप से दिव्य काम निष्पादित करने के चरण में परिवर्तित हो गया। यह कहा जा सकता है कि कार्य का केवल यह चरण ही उसके बहुत अधिक कार्य के मर्म का गठन करता है और कि यह उसके काम में प्राथमिक कदम है। लोग स्वयं को जानते हैं और स्वयं से नफ़रत करते हैं। वे ऐसी स्थिति पर पहुँच गए हैं जहाँ वे स्वयं को कोसने में सक्षम हैं, वे अपनी स्वयं की जिंदगी को त्याग कर प्रसन्न हैं और उन्हें परमेश्वर की सुंदरता का एक हल्का सा बोध है, जिसकी बुनियाद पर वे मानव अस्तित्व के सही अर्थ को जान जाते हैं—इस प्रकार परमेश्वर की इच्छा को प्राप्त कर लेते हैं। मुख्य भूमि चीन में परमेश्वर का कार्य समापन के करीब आ रहा है। परमेश्वर कई वर्षों से गंदगी के इस देश में अपनी तैयारियाँ करता आ रहा है, मगर लोगों ने इससे पहले कभी भी उस स्थिति को प्राप्त नहीं किया है जिस तक वे अब पहुँच गए हैं जिसका अर्थ है कि यह केवल आज ही है कि परमेश्वर औपचारिक रूप अपना कार्य शुरू करता है। इसमें कोई और विवरण या स्पष्टता प्रस्तुत करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह कहना पूरी तरह से सही है कि यह कार्य सीधे परमेश्वर की दिव्यता के माध्यम से किया जाता है, किंतु इसे मनुष्य के माध्यम से किया जाता है। कोई भी इस से इनकार नहीं कर सकता है। यह निश्चित रूप से पृथ्वी पर परमेश्वर की महान सामर्थ्य की वजह से है कि उसका काम उस सीमा तक

पहुँचा सका है जो वर्तमान में इस व्यभिचार के देश के लोगों की है। लोगों को मनवाने के लिए इस कार्य के परिणाम को कहीं भी ले जाया जा सकता है। कोई भी इस पर हल्के ढंग से निर्णय लेने और इसे अस्वीकार करने की हिम्मत नहीं करेगा।

मार्ग... (2)

शायद हमारे भाइयों और बहनों के पास मुख्य भूमि चीन में परमेश्वर के काम के अनुक्रम, कदमों, और तरीकों की एक रूपरेखा हो, लेकिन मुझे अभी भी लगता है कि इस चीज़ों पर पीछे देखना या तुम लोगों को एक शीघ्र सारांश देना अच्छा है। मेरे दिल में जो है उसमें से थोड़ा सा कहने के लिए मैं सिर्फ़ इस अवसर का उपयोग करूँगा; मैं इस कार्य के बाहर किसी मामले के बारे में नहीं बोलूँगा। मुझे आशा है कि भाई और बहनें मेरी मनोदशा को समझ सकते हैं, और मैं विनम्रता से विनती भी करता हूँ कि जो लोग मेरे वचनों को पढ़ते हैं, वे मेरी छोटी सी आध्यात्मिक कद-काठी को, मेरे जीवन अनुभव की अपर्याप्त को, और परमेश्वर के सामने अपने सिर को ऊँचा रखने की असमर्थता को समझते और क्षमा कर देते हैं। तब भी, मेरी समझ यह है कि ये केवल उद्देश्यपूर्ण कारण हैं। संक्षेप में, कुछ भी हो, कोई भी लोग, घटनाएँ या चीजें परमेश्वर की उपस्थिति में हमें संगति करने से रोक नहीं सकती हैं, और मुझे आशा है कि हमारे भाई और बहनें मेरे साथ परमेश्वर के सामने अधिक कठिन काम करने में मेरे साथ शामिल हो सकते हैं। मैं निम्नलिखित प्रार्थना समर्पित करना चाहूँगा: "हे परमेश्वर! कृपया हम पर दया कर ताकि मैं और मेरे भाई-बहन हमारे सामान्य आदर्शों के प्रभुत्व के अधीन मिलकर संघर्ष कर सकें, मृत्यु तक तेरे प्रति वफादार रह सकें, और कभी भी कोई पश्चाताप न करें!" ये वचन परमेश्वर के सामने मेरा संकल्प है, लेकिन यह भी कहा जा सकता है कि एक ऐसे शरीरधारी व्यक्ति का, जिसे परमेश्वर के द्वारा उपयोग किया जाता है, अपना स्वयं का आदर्श वाक्य है। मैंने इन वचनों को कई बार अपनी तरफ से भाई-बहनों के साथ संगति में साझा किया है, और मैंने इसे अपने आसपास के लोगों को एक संदेश के रूप में दिया है। मुझे नहीं पता कि लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं, लेकिन कुछ भी हो, मुझे विश्वास है कि इन वचनों में न केवल व्यक्तिपरक प्रयास का एक पहलू है, बल्कि उससे भी ज्यादा, उनमें उद्देश्यपूर्ण सिद्धांत का एक पहलू भी समाविष्ट है। इस वजह से, यह संभव है कि कुछ लोगों की कुछ निश्चित राय हों, और इन वचनों को अपने आदर्श वाक्य के रूप में लेना और यह देखना कि परमेश्वर को प्यार करने के लिए तुम्हारा अभियान कितना महान हो

जाता है, तुम्हारे लिए अच्छा होगा। कुछ लोग जब इन वचनों को पढ़ेंगे तो एक निश्चित मत विकसित करेंगे, और सोचेंगे: "कैसे एक रोज़ की कही जाने वाली, सामान्य बात लोगों को मृत्यु पर्यन्त परमेश्वर से प्यार करने का एक महान अभियान दे सकती है? और इसका उस विषय जिसके बारे में हम चर्चा कर रहे हैं, 'मार्ग', से कुछ लेनादेना नहीं है।" मैं स्वीकार करता हूँ कि ये वचन विशेष रूप से आकर्षक नहीं हो सकते हैं, लेकिन मैंने हमेशा सोचा है कि ये लोगों को सही मार्ग पर ले जा सकते हैं, और हिम्मत हारे या पीछे मुड़े बिना परमेश्वर में विश्वास के मार्ग के साथ-साथ सभी प्रकार की परीक्षाओं से गुज़रने दे सकते हैं। यही कारण है कि मैं हमेशा इसे अपने आदर्श वाक्य के रूप में मानता हूँ। मुझे आशा है कि लोग भी इन पर ध्यान से विचार करेंगे। हालाँकि, मेरा अभिप्राय हर किसी को मेरे स्वयं के विचारों को स्वीकार करने के लिए बाध्य करना नहीं है—यह एक सुझाव मात्र है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि अन्य लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं, मुझे लगता है कि परमेश्वर हममें से हर एक के भीतर की गतिकी को समझता है। परमेश्वर हम में से हर एक पर लगातार कार्य कर रहा है, और उसका कार्य अथक है। क्योंकि हम सभी बड़े लाल अजगर के देश में पैदा हुए हैं, इसलिए वह हममें इस तरह से कार्य करता है। जो लोग बड़े लाल अजगर के देश में पैदा हुए, वे पवित्र आत्मा के इस कार्य को प्राप्त करने के लिए भाग्यशाली हैं। उनमें से एक के रूप में, मुझमें परमेश्वर के प्यार, आदर की योग्यता, सुंदरता की बहुत भावना है। इस प्रकार के सामान्य लोगों के पिछड़ा, रूढ़िवादी, सामंतवादी, अंधविश्वासी और पथभ्रष्ट साम्राज्य का परमेश्वर से ऐसे कार्य को प्राप्त कर पाना मात्र यह दर्शाता है कि अंत के युग में इस समूह के लोग, हम, कितने धन्य हैं। मेरा मानना है कि सभी भाई-बहनें, जिनकी आध्यात्मिक दृष्टियाँ इस कार्य को देखने के लिए खुली हुई हैं, वे परिणामस्वरूप खुशी के आँसू रोएँगे। और उस समय, क्या तुम आनन्द के साथ नाचते हुए इसे परमेश्वर को व्यक्त नहीं करोगे? क्या तुम अपने हृदय के गीत को परमेश्वर को अर्पित नहीं करोगे? उस समय, क्या तुम अपना संकल्प परमेश्वर को नहीं दिखाओगे और उसके सम्मुख एक अन्य योजना नहीं बनाओगे? मुझे लगता है कि ये सब वे चीजें हैं जो परमेश्वर में विश्वास करने वाले सामान्य लोगों को करनी चाहिए। मानवजाति के रूप में, मेरा मानना है कि हममें से हर एक में परमेश्वर के सामने किसी प्रकार की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। यही वह है जिसे किसी ऐसे व्यक्ति को जिसमें भावनाएँ हों करना चाहिए। हम में से हर एक की क्षमता और हमारे जन्मस्थान पर एक नज़र, यह दर्शाती है कि हमारे बीच आने के लिए परमेश्वर ने कितना अपमान सहा। हमारे अंदर परमेश्वर का कुछ ज्ञान हो सकता है, लेकिन हम जो जानते

हैं—कि परमेश्वर बहुत महान है, बहुत सर्वोच्च है, और बहुत सम्माननीय है—यह बताने के लिए पर्याप्त है कि मानवता के बीच उसकी पीड़ा तुलनात्मक रूप से कितनी महान रही है। अभी भी मेरे वचन अस्पष्ट हैं, और लोग इसे केवल वचनों और सिद्धांतों के रूप में मान सकते हैं। क्योंकि हमारे बीच में लोग बहुत गूँगे और मंद-बुद्धि के हैं। इसलिए, मेरा एकमात्र विकल्प उन सभी भाइयों और बहनों को इस मुद्दे को समझाने में अधिक प्रयास करना है जो इसे स्वीकार करेंगे, ताकि हमारी आत्माएँ परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित की जा सकें। परमेश्वर हमारी आध्यात्मिक दृष्टि खोले ताकि परमेश्वर ने जो क़ीमत चुकाई है, उसने जो प्रयास किया है, और उसने जो ऊर्जा हमारे लिए व्यय की है, उसे हम देख सकें।

मुख्य भूमि चीन में एक ऐसे के रूप में, जिसने परमेश्वर के आत्मा को स्वीकार कर लिया है, मुझे गहराई से लगता है कि हमारी क्षमता कितनी कम है। (मुझे आशा है कि हमारे भाई-बहन इस वजह से नकारात्मक महसूस नहीं करते हैं—यह स्थिति की वास्तविकता है।) अपने व्यावहारिक जीवन में मैंने स्पष्ट रूप से देखा है कि हमारे पास जो है और हम जो हैं यह सब बहुत पिछड़ा हुआ है। प्रमुख पहलुओं के संबंध में, हम अपने जीवन और परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में, और गौण पहलुओं में कैसे आचरण करते हैं, यही हमारा हर एक मत और विचार होता है। ये सभी वे चीजें हैं जो तटस्थ भाव से विद्यमान हैं और उन्हें वचनों या भ्रामक बातों से छिपाना कठिन है। इसलिए, जब मैं इसे कहता हूँ तो अधिकांश लोग सिरों को हिला कर अपनी सहमति प्रकट करते हैं और इसे अभिस्वीकृत करते हैं, और वे इसके बारे में राजी हो जाते हैं, जब तक कि उनमें सामान्य प्रज्ञा की कमी न हो: इस प्रकार के लोग मेरे इन विचार को स्वीकार करने में असमर्थ है। शायद मैं बहुत अशिष्ट हूँ, इन लोगों को ढिठाई से वास्तविक जंगली जानवरों के रूप में संदर्भित कर रहा हूँ। इसका कारण यह है कि बड़े लाल अजगर के देश में वे अधमों में सबसे अधम हैं सुअरों या कुत्तें की तरह है। कोई भी ऐसा नहीं है जिसमें क्षमता का अधिक अभाव है; वे परमेश्वर के सामने आने के योग्य नहीं हैं। शायद ऐसा है कि मेरे वचन अत्यधिक "धृष्ट" हैं। परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व करने में जो मुझ में कार्य कर रहा है, मैं इस तरह के जंगली-जानवर-जैसे, गंदे प्राणी को श्राप देता है, और मुझे आशा है कि मेरे भाई-बहन इस से कमज़ोर नहीं होते हैं। यह संभव है कि हमारे बीच इस तरह के लोग न हों, लेकिन सच्चाई कुछ भी क्यों न हो, मेरा मानना है कि इस प्रकार के व्यक्ति से इसी तरह से निपटा जाना चाहिए। तुम क्या सोचते हो?

बड़े लाल अजगर का साम्राज्य कई हजार वर्षों तक चला, और इसे सारे में कलुषित किया गया है—

और क्योंकि इसने इस पूरे समय में परमेश्वर का विरोध किया है, इसलिए परमेश्वर का श्राप और कोप मिला है, जिसके बाद परमेश्वर द्वारा ताड़ना आयी है। परमेश्वर द्वारा श्रापित इस देश ने नस्लीय भेदभाव को भुगता है, और यह पिछड़ेपन की स्थिति में रहा है। जिस देश में हम पैदा हुए वह सभी तरह के दानवों से भरा है, और जो परिणामस्वरूप अपने प्रभुत्व की तलाश में बेलगाम हैं—जिसका अर्थ है कि वे उन लोगों की इज्ज्त पर कीचड़ उछालते हैं जो यहाँ पैदा हुए हैं। लोगों की आदतें, रीति-रिवाज, मत और अवधारणाएँ पिछड़े हुए और पुराने-जमाने के हैं, इसलिए वे परमेश्वर के बारे में सभी प्रकार की अवधारणाएँ बनाते हैं, जिनसे वे अब तक पीछा छुड़ाने में असमर्थ हैं। विशेष रूप से, परमेश्वर की सेवा करने के लिए शैतान को प्रतिष्ठापित करने की ग़लती करते हुए, वे परमेश्वर के सामने एक तरीके से कार्य करते हैं और उसकी पीठ के पीछे दूसरी तरह से कार्य करते हैं जो यह दर्शाता है कि वे सर्वाधिक पिछड़े हुए हैं। परमेश्वर ने मुख्य भूमि चीन में बहुत कार्य किया है और अपने बहुत से वचन कहे हैं, लेकिन लोग अभी तक सर्वथा सुन्न और उदासीन हैं। वे अभी भी उसी कार्य को कर रहे हैं जिसे उन्होंने पहले किया था, और उन्हें परमेश्वर के वचनों के बारे में बिल्कुल भी समझ नहीं है। जब परमेश्वर ने घोषणा की कि कोई भविष्य और कोई आशा नहीं है, तो एक कलीसिया जो ग्रीष्मऋतु की ऊष्मा के साथ जीवित था तुरंत एक सर्द शीतऋतु में पड़ गया। दिन के प्रकाश में लोगों की सच्ची अस्मिताएँ उजागर हुई थीं और उनका पिछला आत्मविश्वास, प्रेम, और ताक़त बिना कोई निशान छोड़े सभी गायब हो गए थे। और आज, किसी को भी उनकी जीवन शक्ति पुनःप्राप्त नहीं हुई है। वे अपने वचनों से कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्यार करते हैं, और यद्यपि वे अपने दिल में शिकायत करने की हिम्मत नहीं करते हैं, कुछ भी हो, उनके पास सिर्फ वह प्यार नहीं है। यह किस बारे में है? मुझे लगता है कि हमारे भाई-बहन इस तथ्य को स्वीकार करेंगे। परमेश्वर हमें प्रबुद्ध करे, ताकि हम सभी उसकी सुंदरता को जान सकें, अपने दिल की गहराई से अपने परमेश्वर से प्यार कर सकें, और उस प्रेम को व्यक्त कर सकें जो परमेश्वर के लिए अलग-अलग अवस्थाओं में हम सभी में है; परमेश्वर हमें उसके लिए ईमानदार प्यार के अटल हृदय प्रदान करे—इसी की मैं आशा करता हूँ। यह कह कर, मुझे अपने उन भाइयों और बहनों के लिए भी कुछ सहानुभूति महसूस होती है जो इस गंदगी के देश में पैदा हुए, और इसलिए मेरे अंदर बड़े लाल अजगर के लिए घृणा विकसित हो गई है। यह परमेश्वर के लिए हमारे प्यार को बाधित करता है और हमारे भविष्य की संभावनाओं के लिए हमारे लालच को फुसलाता है। यह हमें नकारात्मक होने, परमेश्वर का विरोध करने के लिए ललचाता है। यह बड़ा लाल अजगर रहा है जिसने हमें धोखा दिया

है, हमें भ्रष्ट किया है, और हमें अब तक तबाह किया है, इस स्थिति तक कि हम अपने हृदयों से परमेश्वर के प्यार को चुकाने में असमर्थ हैं। हमारे दिल में प्रेरणा है लेकिन अपने स्वयं के बावजूद, हम सामर्थ्यहीन हैं। हम सभी इसके शिकार हैं। इस कारण से, मैं इसे अपने हृदय से घृणा करता हूँ और मैं इसे नष्ट करने के लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकता हूँ। हालाँकि, जब मैं पुनः विचार करता हूँ, तो यह किसी लाभ का नहीं होगा और यह परमेश्वर के लिए केवल परेशानी लाएगा, इसलिए मैं इन वचनों पर वापस आ जाता हूँ—मैं उसकी इच्छा—परमेश्वर को प्रेम करना—पर चलने पर अपना हृदय केंद्रित करता हूँ। यही वह मार्ग है जो मैं ले रहा हूँ—यही वह मार्ग है जिस पर उसकी रचनाओं में से एक—मुझ—को चलना चाहिए। इसी तरह से मुझे अपना जीवन बिताना चाहिए। ये मेरे हृदय से निकले हुए वचन हैं, और मुझे आशा है कि इन वचनों को पढ़ने के बाद मेरे भाइयों और बहनों को कुछ प्रोत्साहन मिलेगा ताकि मेरा हृदय कुछ शांति प्राप्त कर सके। क्योंकि मेरा लक्ष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलना और इस तरह से दीप्तिमान और प्रकाशमान सार्थक जीवन जीना है। इसमें, मैं संतुष्टि और आराम से भरे एक हृदय के साथ, बिना किसी पछतावे के मरने में सक्षम हो जाऊँगा। क्या तुम ऐसा करना पसंद करोगे? क्या तुम उस तरह के संकल्प वाले कोई व्यक्ति हो?

परमेश्वर तथाकथित "पूर्वी एशिया के बीमार मनुष्य" में काम कर पाया है यह उसकी महान सामर्थ्य है। यह उसकी विनम्रता और प्रच्छन्नता है। हमारे प्रति उसके कठोर वचनों या ताड़ना की परवाह के बिना, हमें उसकी विनम्रता के लिए अपने दिल की गहराई से उसकी स्तुति करनी चाहिए, और इसके लिए बिल्कुल अंत तक उससे प्रेम करना चाहिए। जिन लोगों को शैतान द्वारा हजारों वर्षों से बाध्य किया गया है, उन्होंने उसके प्रभाव के अधीन रहना जारी रखा हुआ है और उसे ठुकराया नहीं है। उन्होंने कड़ुवाहट के साथ टटोलना और संघर्ष करना जारी रखा है। अतीत में वे धूप जलाया करते थे और शैतान के आगे झुकते और उसे प्रतिष्ठापित किया करते थे, और वे परिवार और दुनियावी उलझनों और साथ ही सामाजिक अंतःक्रियाओं से कस कर बँधे हुए थे। वे उन्हें ठुकराने में असमर्थ थे। इस प्रकार के गला-काट-प्रतियोगिता वाले समाज में, कोई भी एक सार्थक जीवन कहाँ प्राप्त कर सकता है? लोग जिसका वर्णन करते हैं वह पीड़ा का जीवन है, और सौभाग्य से, परमेश्वर ने इन निर्दोष लोगों को बचाया है, हमारे जीवन को अपनी देखभाल और अपने संरक्षण के अधीन रखा है, ताकि हमारी जिंदगियाँ आनंदित रहें और चिंता से अब और भरी न हों। अभी तक हमने उसके अनुग्रह के अधीन रहना जारी रखा है। क्या यह परमेश्वर का आशीष नहीं है? किसी में भी कैसे परमेश्वर से अतिव्ययी माँग करने की धृष्टता हो सकती है? क्या उसने हमें इतना

कम दिया है? क्या तुम लोग अभी भी संतुष्ट नहीं हो? मुझे लगता है कि हमारे लिए परमेश्वर का प्यार चुकाने का समय आ गया है। हम उपहास, अपयश और उत्पीड़न की कोई छोटी मात्रा नहीं भुगत सकते हैं क्योंकि हम परमेश्वर में विश्वास के मार्ग का अनुसरण करते हैं, बल्कि मेरा मानना है कि यह एक सार्थक चीज़ है। यह एक महिमा की बात है, शर्म की नहीं, और कुछ भी हो, बहुत से आशीष हैं जिनका हम आनंद लेते हैं। असंख्यों बार निराश होने पर, परमेश्वर के वचनों ने आराम पहुँचाया है, और इससे पहले कि यह हमें पता चले, दुःख प्रसन्नता में पलट गया है। असंख्यों बार आवश्यकता पड़ने पर, परमेश्वर आशीषों को लाया है और उसके वचनों के माध्यम से हमारा भरण-पोषण किया गया है। असंख्यों बार बीमार पड़ने पर, परमेश्वर के वचनों ने जीवन प्रदान किया है—हमें ख़तरे से मुक्त किया गया है, और खतरे से सुरक्षा में पलट दिया है। तुम महसूस किए बिना पहले से ही इन जैसी बहुत सी चीज़ों का आनंद उठा चुके हो। क्या तुम्हें इसमे से कुछ भी याद नहीं है?

मार्ग... (3)

अपने जीवन में, मैं अपने तन और मन को परमेश्वर को समर्पित करके हमेशा खुश हूँ। केवल तभी, मेरा अंतःकरण तिरस्कार से रहित और थोड़ा शांति में है। जो लोग जीवन की खोज करते हैं, उन्हें सबसे पहले अपना पूरा हृदय परमेश्वर को समर्पित अवश्य करना चाहिए; यह एक पूर्व शर्त है। मैं अपने भाइयों और बहनों से चाहूँगा कि वे मेरे साथ परमेश्वर से प्रार्थना करें: "हे परमेश्वर! स्वर्ग में तेरा पवित्रात्मा धरती पर लोगों को अनुग्रह प्रदान करे, ताकि मेरा हृदय पूरी तरह से तेरी ओर मुड़ सके, ताकि मेरा आत्मा तेरे द्वारा प्रेरित हो सके, और ताकि मैं अपने हृदय और अपनी आत्मा में तेरी मनोरमता को देख सकूँ, और ताकि जो लोग पृथ्वी पर हैं वे तेरी सुंदरता को देख कर धन्य हो सकें। परमेश्वर! तेरा पवित्रात्मा एक बार फिर हमारी आत्माओं को प्रेरित करे, ताकि हमारा प्यार चिरस्थायी और अचल हो!" हम सभी में, परमेश्वर सबसे पहले हमारे हृदय की परीक्षा लेता है—और जब हम अपना हृदय उसमें उँड़ेल देते हैं, तब वह हमारी आत्मा को प्रेरित करने लगता है। यह केवल पवित्रात्मा में ही होता है कि कोई परमेश्वर की मनोरमता, सर्वोच्चता, और महानता को देख सकता है। यह मानवजाति में पवित्र आत्मा का मार्ग है। क्या तुम्हारा जीवन इस तरह का है? क्या तुमने पवित्र आत्मा के जीवन का अनुभव किया है? क्या तुम्हारी आत्मा परमेश्वर द्वारा प्रेरित की गई है? क्या तुमने देखा है कि पवित्र आत्मा लोगों में किस प्रकार कार्य करता है? क्या तुमने अपना हृदय पूरी

तरह से परमेश्वर को समर्पित कर दिया है? जब तुम अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित कर देते हो, तो तुम सीधे पवित्र आत्मा के जीवन का अनुभव करने में सक्षम हो जाते हो, और उसका कार्य निरंतर तुम्हारे लिए प्रकट करवाया जाएगा। उस समय, तुम एक ऐसे व्यक्ति बन जाओगे जिसे पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जाता है। क्या तुम ऐसा व्यक्ति बनने के इच्छुक हो? मुझे याद है कि कैसे, जब मुझे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किया गया था और मैंने पहली बार परमेश्वर को अपना हृदय दिया, तो मैं उसके सामने गिर गया और चिल्लाया था: "हे परमेश्वर! तूने मेरी आँखें खोल दी हैं और मुझे तेरे द्वारा उद्धार को जानने दिया है। मैं अपना हृदय पूरी तरह से तुझे समर्पित करने के लिए तैयार हूँ, और मैं केवल इतना ही कहता हूँ कि तेरी इच्छा पूरी हो, मैं केवल यही चाहता हूँ कि मेरा हृदय तेरी उपस्थिति में तेरा अनुमोदन प्राप्त करे, और मैं केवल तेरी इच्छा पर चलने के लिए कहता हूँ।" मैं यह प्रार्थना कभी नहीं भूलूँगा; मैं गहराई तक प्रेरित हो गया था, और परमेश्वर के सामने वेदना से फूट-फूट कर रोया था। परमेश्वर की उपस्थिति में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वह मेरी पहली सफल प्रार्थना थी जिसे बचाया गया था, और यह मेरे हृदय की पहली आकांक्षा थी। उसके बाद, पवित्र आत्मा द्वारा मुझे अक्सर प्रेरित किया गया था। क्या तुम्हें इस तरह का अनुभव हुआ है? पवित्र आत्मा ने तुम में कैसे कार्य किया है? मुझे लगता है कि, जो लोग परमेश्वर से प्यार करना चाहते हैं, उन सभी को, थोड़ी-बहुत सीमा तक, इस प्रकार का अनुभव हुआ है—बस इतना ही है कि वे भूल जाते हैं। यदि कोई कहता है कि उसे इस तरह का अनुभव नहीं हुआ है, तो यह साबित करता है कि उसे अभी तक बचाया नहीं गया है और वह अभी भी शैतान के अधिकार क्षेत्र में है। पवित्र आत्मा का कार्य जो कि हम सभी के लिए आम है पवित्र आत्मा का मार्ग है, और यही उन लोगों का भी मार्ग है जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और उसकी तलाश करते हैं। पवित्र आत्मा लोगों पर जो कार्य करता है उसका पहला कदम है उनकी आत्माओं को प्रेरित करना, जिसके बाद वे परमेश्वर से प्यार करने और जीवन की खोज करने लगते हैं, और वे सभी जो इस मार्ग पर चलते हैं पवित्र आत्मा की धारा में हैं। ये न केवल मुख्य भूमि चीन में, बल्कि समस्त विश्व में, परमेश्वर के कार्य की गतिशीलताएँ हैं। वह इस तरह हर एक पर कार्य करता है। यदि कोई कभी भी प्रेरित नहीं हुआ है, तो यह साबित करता है कि वह इस अच्छा होने की धारा से बाहर है। अपने हृदय में, मैं अनवरत रूप से परमेश्वर से प्रार्थना करता रहता हूँ, प्रार्थना करता रहता हूँ कि सूर्य के तले सभी लोग उसके द्वारा प्रेरित किए जाएँ, और हर कोई इस मार्ग पर चले। संभवतः यह मेरी ओर से परमेश्वर से एक तुच्छ सा अनुरोध हो सकता है, लेकिन मेरा विश्वास है कि वह इसे

पूरा करेगा। मुझे आशा है कि मेरे सभी भाई-बहन इसके लिए प्रार्थना करेंगे, कि परमेश्वर की इच्छा पूरी हो, और कि उसका कार्य शीघ्र समाप्त हो ताकि स्वर्ग में उसका आत्मा विश्राम कर सके। यह मेरी स्वयं की छोटी सी आशा है।

मेरा मानना है कि चूँकि परमेश्वर अपने कार्य को दुष्टों के एक गढ़ में आरंभ कर पाया है, तो वह निश्चित रूप से ब्रह्मांड भर में अनगिनत दूसरे स्थानों में भी ऐसा कर सकता है। अंतिम युग के हम लोग परमेश्वर की महिमा का दिन निश्चित रूप से देखेंगे, ठीक वैसे ही जैसे यह कहा गया है कि "जो अंत तक अनुसरण करेगा वह बचाया जाएगा।" कोई भी परमेश्वर के कार्य के इस चरण में उसकी जगह नहीं ले सकता है—केवल परमेश्वर स्वयं ही यह कार्य कर सकता है, क्योंकि कार्य का यह चरण असाधारण है; यह विजय के कार्य का एक चरण है, और लोग अन्य लोगों को नहीं जीत सकते हैं। लोग केवल तभी जीते जाते हैं जब परमेश्वर स्वयं अपने मुँह से बोलता है और अपने स्वयं के हाथ से कार्य करता है। सम्पूर्ण विश्व में से, परमेश्वर एक परीक्षण भूमि के रूप में बड़े लाल अजगर के देश का उपयोग करता है, जिसके बाद, वह विश्व भर में इस कार्य को शुरू करेगा। इस प्रकार वह पूरे विश्व भर में और भी बड़ा कार्य करेगा, और विश्व के सभी लोग परमेश्वर के विजय के कार्य को प्राप्त करेंगे। हर धर्म और हर पंथ के लोगों को कार्य के इस चरण को ग्रहण अवश्य करना चाहिए। यह ऐसा मार्ग है जिसे अवश्य अपनाया जाना चाहिए—कोई भी इससे बच नहीं सकता है। क्या तुम इसे स्वीकार करने के लिए तैयार हो जो तुम्हें परमेश्वर द्वारा सौंपा गया है? मुझे हमेशा लगा है कि पवित्र आत्मा के आदेश को स्वीकार करना एक शानदार कार्य है। जिस तरह से मैं इसे देखता हूँ, यह सबसे बड़ा आदेश है जो परमेश्वर मनुष्यजाति को देता है है। मुझे आशा है कि मेरे भाई और बहनें मेरे साथ-साथ कड़ी मेहनत करते हैं और परमेश्वर के इस आदेश को स्वीकार करते हैं, ताकि विश्व भर और ऊपर के राज्य में परमेश्वर की महिमा हो सके, और हमारी ज़िंदगी व्यर्थ नहीं होगी। हमें परमेश्वर के लिए कुछ करना चाहिए, या हमें एक शपथ लेनी चाहिए। यदि लोग परमेश्वर पर विश्वास करते समय किसी लक्ष्य की खोज नहीं करते हैं, तो उसका जीवन शून्य हो आता है, और जब उसकी मृत्यु का समय आएगा, तो उन्हें केवल नीला आकाश और धूल भरी पृथ्वी दिखाई देगी। क्या यह एक सार्थक जीवन है? यदि तुम जीवित रहते हुए परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो, तो क्या यह एक सुंदर बात नहीं है? तुम हमेशा अपने ऊपर मुसीबत क्यों लाते हो, और तुम हमेशा हताश क्यों रहते हो? क्या इस तरह से कार्य करके तुमने परमेश्वर से कुछ भी प्राप्त किया है? और क्या परमेश्वर तुमसे कुछ प्राप्त

कर सकता है? परमेश्वर के प्रति मेरी शपथ में, केवल मेरे हृदय का वचन था; मैं उसे शब्दों से बेवकूफ़ बनाने का प्रयास नहीं कर रहा था। मैं ऐसा कुछ कभी नहीं करूँगा—मैं परमेश्वर को केवल इतनी दिलासा देने की इच्छा रखता हूँ कि मैं हृदय से प्रेम करता हूँ, ताकि स्वर्ग में उसके आत्मा को दिलासा मिल सके। हृदय मूल्यवान हो सकता है, लेकिन प्यार अधिक बहुमूल्य है। मैं परमेश्वर को अपने हृदय का सबसे अनमोल प्रेम दूँगा ताकि वह मेरी सबसे सुंदर चीज़ का आनंद ले सके, और ताकि वह उस प्रेम से भरापूरा हो जो मैं उसे अर्पित करता हूँ। क्या तुम परमेश्वर के आनंद के लिए अपना प्यार उसे समर्पित करने को तैयार हो? क्या तुम अपने अस्तित्व के लिए इसे पूँजी बनाने को तैयार हो? अपने अनुभवों में, मैंने देखा है कि मैं जितना अधिक प्यार परमेश्वर को देता हूँ, उतना ही अधिक आनंद मुझे जीने में मिलता है; इसके अलावा, मुझमें ताक़त की कोई सीमा नहीं होती है, मैं खुशी से अपना पूरा तन और मन अर्पण कर देता हूँ, और मुझे हमेशा महसूस होता कि संभवतः मैं परमेश्वर को पर्याप्त रूप से प्यार नहीं कर सकता हूँ। तो क्या तुम्हारा प्यार एक नगण्य प्यार है, या यह अनंत, अथाह है? यदि तुम वास्तव में परमेश्वर से प्यार करना चाहते हो, तो उसे वापस देने के लिए तुम्हारे पास हमेशा अधिक प्यार होगा—यदि ऐसा है, तो संभवतः कौन सा व्यक्ति और कौन सी चीज़ परमेश्वर के लिए तुम्हारे प्यार के आड़े आ सकती है?

परमेश्वर हर मनुष्य के प्यार को सँजोता है। उन सभी पर तो उसके आशीष और अधिक घनीभूत हो जाते हैं जो उससे प्यार करते हैं, क्योंकि मनुष्य का प्यार पाना बहुत मुश्किल होता है, यह बहुत ही अल्पमात्रा में होता है, लगभग अगोचर होता है। विश्व भर में, परमेश्वर ने लोगों से उसे वापस प्यार करने के लिए कहने का प्रयास किया है, लेकिन अब तक किसी भी युग में, केवल कुछ—मुट्ठी-भर—लोगों ने ही उसे वापस सच्चा प्यार दिया है। जहाँ तक मुझे याद है, केवल पतरस ही ऐसा था, लेकिन उसे भी यीशु ने व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन दिया था और ऐसा केवल उसकी मृत्यु के समय हुआ कि उसने परमेश्वर को अपना पूरा प्यार दे दिया, और फिर अपने जीवन को समाप्त कर दिया। और इसलिए, इन दारुण परिस्थितियों में, परमेश्वर ने विश्व में अपने कार्य के दायरे को संकुचित कर दिया, और, अपनी समस्त ऊर्जा और अपने प्रयासों को एक ही स्थान पर केंद्रित करते हुए, प्रदर्शन क्षेत्र के रूप में बड़े लाल अजगर के देश का उपयोग किया, ताकि उसका कार्य अधिक प्रभावी बने, और उसकी गवाही के लिए अधिक लाभदायक बने। यह इन दो प्रावधानों के अधीन ही था कि परमेश्वर ने सम्पूर्ण विश्व के अपने कार्य को मुख्य भूमि चीन के इन लोगों में स्थानांतरित कर दिया, जिनके पास सबसे सबसे कम क्षमता थी, और विजय का अपना

प्यारा कार्य शुरू किया। और जब वह इन सभी लोगों से परमेश्वर को प्यार करवा लेगा उसके बाद, वह अपने कार्य के अगले चरण को कार्यान्वित करेगा, जो कि परमेश्वर की योजना है। इस प्रकार उसका कार्य सबसे बड़े प्रभाव को प्राप्त करता है। उसके कार्य के दायरे का मर्म और सीमाएँ दोनों हैं। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने हम पर अपना कार्य करते हुए कितना बड़ा मूल्य चुकाया है और कितने प्रयास किए हैं, ताकि हमारा दिन आए। यह हमारे लिए आशीष है। इसलिए, लोगों की अवधारणाओं को जो ग़लत साबित करता है वह है कि अच्छे स्थान पर पैदा होने के कारण पाश्चात्य लोग हमसे ईर्ष्या करते हैं, लेकिन हम सभी अपने आप को दीन-हीन और विनम्र के रूप में देखते हैं। क्या यह परमेश्वर हमारा उत्थान नहीं कर रहा है? बड़े लाल अजगर के वंशज, जिन्हें हमेशा कुचला गया है, पाश्चात्य लोगों द्वारा आदर के साथ देखे जाते हैं—यह सच में हमारा आशीष है। जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मैं परमेश्वर की दया के, और उसकी प्रीति और घनिष्ठता के वशीभूत हो जाता हूँ। इससे यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर जो करता है वह सब मानवीय अवधारणाओं के असंगत है। यद्यपि ये सभी लोग शापित हैं, किन्तु वह कानून की बाध्यताओं के अधीन नहीं है और उसने जानबूझकर पृथ्वी के इस भाग में अपना कार्य स्थानांतरित किया है। यही कारण है कि मैं आनन्दित हूँ, मैं असीम सुख महसूस करता हूँ। किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में जो कार्य में अग्रणी भूमिका निभाता है, इस्राएलियों के बीच मुख्य पादरियों की तरह, मैं सीधे पवित्रात्मा के कार्य को पूरा करने और सीधे परमेश्वर के आत्मा का कार्य करने में सक्षम हूँ; यह मुझ पर आशीष है। इस तरह की बात की कल्पना करने की हिम्मत कौन करेगा? किन्तु आज, यह अप्रत्याशित रूप से हम पर आ गया है। यह वास्तव में एक बहुत बड़ा आनन्द है जो हमारे लिए उत्सव के योग्य है। मुझे आशा है कि परमेश्वर हमें आशीष देना, और हमें ऊपर उठाना जारी रखेगा ताकि हम में से वे लोग जो इस घूरे के ढेर में रह रहे हैं उन्हें परमेश्वर द्वारा महान उपयोग में लाया जा सके, और इस प्रकार उसके प्यार को चुका सकें।

जिस मार्ग पर मैं अब चल रहा हूँ वह परमेश्वर के प्रेम को चुकाने का मार्ग है, मगर मुझे लगातार महसूस होता है कि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है, न ही यह वह मार्ग है जिस पर मुझे चलना चाहिए। परमेश्वर द्वारा महान उपयोग किया जाए—यह परमेश्वर की इच्छा है, और यह पवित्र आत्मा का मार्ग है। शायद मुझसे ग़लती हुई है, लेकिन मुझे लगता है कि यही मेरा रास्ता है, बहुत समय पहले मैंने परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा की थी कि मैं उससे अपने मार्गदर्शन के लिए कामना करूँ, कि वह मेरा मार्गदर्शन करे, कि मैं पूरी शीघ्रता से उस मार्ग पर अपने पैर रखूँ जिस पर मुझे चलना चाहिए, और यथाशीघ्र परमेश्वर की

इच्छा को संतुष्ट करूँ। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि दूसरे लोग क्या सोच सकते हैं, मेरा मानना है कि परमेश्वर की इच्छा पर चलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेरी जिंदगी में कोई भी चीज़ अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, और मुझे इस अधिकार से कोई वंचित नहीं कर सकता है। यह मेरा व्यक्तिगत दृष्टिकोण है, और शायद कुछ ऐसे भी लोग हैं जो इसे समझ न सकते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता है कि मुझे किसी के लिए भी इसे सही ठहराना है। मैं वही मार्ग लूँगा जो मुझे लेना चाहिए—एक बार जब मैं उस मार्ग को पहचान लूँ जिस पर मुझे होना चाहिए तब मैं इसे ले लूँगा और पीछे नहीं हटूँगा। इस लिए मैं इन वचनों पर वापस आता हूँ: मैंने परमेश्वर की इच्छा पर चलने पर अपने हृदय को लगा दिया है। मुझे यकीन है कि मेरे भाई और बहनें मेरी आलोचना नहीं करेंगे! कुल मिलाकर, जैसा कि मैं व्यक्तिगत रूप से देखता हूँ, अन्य लोग जो चाहें कह सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि परमेश्वर की इच्छा पर चलना सबसे महत्वपूर्ण है, और कि मुझे ऐसा करने में कोई चीज़ नहीं रोक सकती है। परमेश्वर की इच्छा पर चलना कभी भी ग़लत नहीं हो सकता है! और यह किसी के अपने स्वयं के हित में कार्य करना नहीं है! मेरा मानना है कि परमेश्वर ने मेरे हृदय के अंदर देख लिया है! तो तुम्हें इसे कैसे समझना चाहिए? क्या तुम स्वयं को परमेश्वर के लिए अर्पित करने के लिए तैयार हो? क्या तुम परमेश्वर के द्वारा उपयोग किए जाने के लिए तैयार हो? क्या तुम परमेश्वर की इच्छा पर चलने की प्रतिज्ञा करते हो? मुझे आशा है कि मेरे वचनों से मेरे भाई-बहनों को कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है। यद्यपि मेरी अंतर्दृष्टियों के बारे में गहन कुछ नहीं, तब भी मैं उनके बारे में कहता हूँ, ताकि हम अपनी अंतरतम भावनाओं को, हमारे बीच बिना किन्हीं भी बाधाओं के, साझा कर सकें, और ताकि परमेश्वर हमेशा के लिए हमारे बीच रहेगा। ये मेरे हृदय के वचन हैं। ठीक है! बस इतना ही आज मुझे अपने हृदय से बोलना है। मुझे आशा है कि मेरे भाई और बहनें कड़ी मेहनत करते रहेंगे, और मुझे आशा है कि परमेश्वर का आत्मा हमेशा हमारी देखभाल करेगा!

मार्ग... (4)

यह बात कि लोग परमेश्वर की सुंदरता की खोजने में, आज के युग में परमेश्वर को प्यार करने का तरीका तलाश करने में सक्षम हैं, और यह कि वे आज के राज्य के प्रशिक्षण को स्वीकार करने के इच्छुक हैं—यह सब परमेश्वर का अनुग्रह है, और इससे भी ज़्यादा, मानव जाति का उसके द्वारा उत्थान है। जब कभी भी मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे दृढ़ता से परमेश्वर की सुंदरता महसूस होती है। परमेश्वर हमें

सचमुच प्यार करता है; यदि वह नहीं करता, तो उसकी सुदरता को खोजने में कौन सक्षम हो पाता? केवल इस प्रकार से ही मैं देखता हूँ कि समस्त कार्य व्यक्तिगत रूप से स्वयं परमेश्वर के द्वारा किया जाता है, और यह कि लोगों को परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शित और निर्देशित किया जाता है। मैं इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद देता हूँ, और मैं चाहूँगा कि मेरे भाई-बहन परमेश्वर की स्तुति करने में मेरे साथ शामिल हों: "समस्त महिमा तुझ, सर्वोच्च परमेश्वर स्वयं की हो! तेरी महिमा में वृद्धि हो और हममें से उन पर प्रकट हो जिन्हें तेरे द्वारा चुन और प्राप्त कर लिया गया है।" परमेश्वर ने मुझे प्रबुद्ध किया है: उसने मुझे दिखाया कि युगों पहले परमेश्वर ने हमें पूर्वनियत कर दिया था, और यह कि अंत के दिनों में वह हमें प्राप्त करना चाहता था, इस लिए ब्रह्मांड और सभी चीज़ों को हमारे माध्यम से परमेश्वर की महिमा को इसकी संपूर्णता में देखने की अनुमति दी। तब, हम परमेश्वर की छह हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना के एक निश्चित और स्पष्ट आकार हैं; हम समस्त ब्रह्मांड में परमेश्वर के कार्य के आदर्श हैं, नमूने हैं। अब जाकर मुझे पता लगा कि परमेश्वर हमसे कितना प्यार करता है, और यह कि वह हममें जो कार्य करता है और जो बातें वह कहता है वह सब बीते युगों की बातों से लाखों गुना अधिक हैं। यहाँ तक कि इस्राएल में और पतरस में भी, परमेश्वर ने कभी भी इतना कार्य नहीं किया और इतने वचन नहीं बोले—जो यह दर्शाता है कि हम, लोगों का यह समूह, वास्तव में अविश्वसनीय रूप से धन्य है, अतीत के संतों की अपेक्षा अतुलनीय रूप से अधिक धन्य हैं। यही कारण है कि परमेश्वर ने हमेशा कहा है कि अंतिम युग के लोग धन्य हैं। इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि अन्य लोग क्या कहते हैं, मुझे विश्वास है कि हम उनमें से हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा सबसे अधिक धन्य किया गया है। हमें परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए आशीषों को स्वीकार करना चाहिए; शायद कुछ ऐसे लोग हो सकते हैं जो परमेश्वर से शिकायत करेंगे, किन्तु मुझे विश्वास है कि यदि आशीष परमेश्वर से आते हैं, तो यह साबित करता है कि हम उनके पात्र हैं। यहाँ तक कि यदि अन्य लोग हमारी शिकायत भी करते हैं या हमारे साथ खुश नहीं हैं, तब भी मुझे विश्वास है कि कोई भी परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए आशीषों को हमसे उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं कर सकता है या दूर नहीं कर सकता है। क्योंकि परमेश्वर का कार्य हम पर किया जाता है और वह हमारे साथ आमने-सामने बात करता है—हमसे, दूसरों से नहीं—इसलिए परमेश्वर जो कुछ भी चाहता है वह करता है। और यदि लोग आश्वस्त नहीं हैं, तो क्या वे अपने लिए सिर्फ परेशानी का कारण नहीं बन रहे हैं? क्या ऐसा करके अपने ऊपर अपमान नहीं लाते हैं? मैं ऐसी बातें क्यों कहता हूँ? क्योंकि मेरे पास इसका गहन अनुभव है। उदाहरण के लिए, उस कार्य को लें जो परमेश्वर मुझ पर

करता है: केवल मैं ही इस कार्य को कर सकता हूँ—क्या कोई अन्य इसे कर सकता है? मैं भाग्यशाली हूँ कि परमेश्वर से मुझे यह कार्यभार प्राप्त हुआ है—क्या कोई अन्य सिर्फ सनक में आकर इसे कर सकता है? हालाँकि, मुझे आशा है कि भाई और बहनें मेरे हृदय को समझेंगे। मैं अपनी साख के बारे में शेखी नहीं बघार रहा हूँ, बल्कि मुद्दे को समझा रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि समस्त महिमा परमेश्वर की हो, और कि परमेश्वर हममें से प्रत्येक के हृदय को ध्यान से देखे, ताकि उसके सामने हमारे हृदय शुद्ध हो जाएँ। अपने हृदय में, मैं परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से प्राप्त किए जाने की, एक शुद्ध कुँवारी बनने की जिसे वेदी पर बलिदान किया जाता है, और इससे भी अधिक, एक मेमने के जैसे आज्ञाकारिता पाने की, और समस्त मानवजाति के बीच में एक पवित्र आध्यात्मिक शरीर के रूप में दिखाई देने की कामना करता हूँ। यह मेरा वादा, वह क़सम है जो मैंने परमेश्वर के सामने निर्धारित की है। मैं इसे पूरा करने और इस के माध्यम से परमेश्वर के प्यार को चुकाने का इच्छुक हूँ। क्या तुम ऐसा करने के इच्छुक हो? मेरा मानना है कि मेरा यह वादा छोटे भाईयों और बहनों को अधिक मज़बूत बनाएगा, और युवा लोगों को अधिक आशा देगा। मुझे लगता है कि परमेश्वर युवा लोगों को विशेष रूप से महत्वपूर्ण समझता है। शायद यह मेरा अपना पूर्वाग्रह हो, लेकिन मुझे हमेशा लगता है कि युवा लोगों में भविष्य और आशा है; ऐसा लगता है कि परमेश्वर युवा लोगों में अतिरिक्त कार्य करता है। उनमें अंतर्दृष्टि और बुद्धि की कमी हो सकती है, और वे सभी नवजात बछड़ों की तरह अत्यधिक उल्लासपूर्ण और चंचल हो सकते हैं, मगर मेरा मानना है कि वे पूरी तरह से अपने गुणों से विहीन नहीं होते हैं। तुम उनमें युवाओं की निर्दोषता देख सकते हो और वे नई चीजों को तुरंत स्वीकार कर लेते हैं। यद्यपि युवा लोगों में अहंकार, प्रचंडता और आवेग की प्रवृत्ति तो होती है, किन्तु इससे नई रोशनी प्राप्त करने की उनकी क्षमता पर प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि युवा लोग आमतौर पर पुरानी, अप्रचलित चीजों को पकड़े नहीं रहते हैं। यही कारण है कि मैं युवा लोगों में, और उनकी जीवन शक्ति में असीम आशा देखता हूँ; इसी कारण से उनके लिए मेरे दिल में एक कोमल अनुभूति है। मेरे वृद्ध भाइयों और बहनों के लिए मेरी नापसंदगी नहीं है, किन्तु मेरी उनमें कोई रुचि भी नहीं है—जिसके लिए मैं उनसे ईमानदारी से माफ़ी माँगता हूँ। शायद मैंने जो कुछ कहा है वह अनुचित हो या अविवेकी हो, किन्तु मुझे आशा है कि तुम सभी लोग मेरे दुस्साहस को माफ़ कर सकते हो, क्योंकि मैं बहुत छोटा हूँ और अपने बोलने की शैली को बहुत ज़्यादा महत्व नहीं दे पाता हूँ। किन्तु, सच कहा जाए तो, आख़िरकार, वृद्ध भाई और बहने एक सेवा कार्य तो करते हैं—वे पूर्णतः व्यर्थ नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास चीज़ों से

निपटने का अनुभव है; वे चीज़ों को जिस तरह से सँभालते हैं उसमें सुस्थिर होते हैं, और वे इतनी गलतियाँ नहीं करते हैं। क्या ये उनकी ताक़तें नहीं हैं? आओ हम सभी परमेश्वर के सामने कहें: "हे परमेश्वर! हम सभी अपनी अलग-अलग स्थितियों में अपने कार्यों को पूरा करें और हम सभी तेरी इच्छा के लिए अपना सबसे सर्वोत्तम करें!" मेरा विश्वास है कि यह अवश्य परमेश्वर की इच्छा होनी चाहिए!

मेरे अनुभव में, कई ऐसे लोग जो इस धारा का खुल कर विरोध करते हैं—जो सीधे परमेश्वर के आत्मा का विरोध करते हैं—अधिक वृद्ध हैं। ऐसे लोगों की बहुत मज़बूत धार्मिक अवधारणाएँ होती हैं; हर मोड़ पर वे परमेश्वर के वचनों की पुराने ज़माने की चीजों के साथ तुलना करते हैं, और उन चीज़ों पर सहमत करवाने का प्रयास करते हैं जो अतीत में परमेश्वर के वचनों के साथ स्वीकार की जाती थीं। क्या वे बेहूदा नहीं हैं? क्या इस तरह के लोग परमेश्वर द्वारा उन्हें सौंपे गए कार्य को कर सकते हैं? क्या परमेश्वर अपने कार्य में इस तरह के लोगों का उपयोग कर सकता है? किसी भी दिए गए दिन के लिए अपना कार्य करने का पवित्र आत्मा का एक तरीका है; यदि लोग पुराने ढंग की चीज़ों से चिपके रहते हैं, तो एक दिन ऐसा आएगा जब उन्हें इतिहास के मंच से धक्का दे दिया जाएगा। अपने कार्य के प्रत्येक चरण के साथ, परमेश्वर नए लोगों का उपयोग करता है। क्या ऐसे लोग जो पुराने ढंग की चीज़ों के साथ दूसरों को व्याख्यान देते हैं, लोगों पर विनाश नहीं लाते हैं? और क्या वे परमेश्वर के कार्य में विलंब नहीं कर रहे हैं? और यदि ऐसा है, तो परमेश्वर का कार्य कब पूरा होगा? हो सकता है कि ऐसे कुछ लोग हों जिनकी इस बारे में कुछ अवधारणाएँ हों जो मैंने अभी-अभी कहा है। हो सकता है कि वे आश्वस्त न हों। लेकिन, मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम चिंतित हो: निकट भविष्य में इस तरह की कई चीजें होंगी, और उन्हें केवल तथ्यों के माध्यम से ही स्पष्ट किया जा सकता है। आओ हम कुछ महत्वपूर्ण लोगों से, कुछ प्रतिष्ठित पादरियों या बाइबल के प्रतिपादकों से मुलाक़ात करें और उन्हें इस धारा का उपदेश दें। शुरू में, वे खुल कर इसका विरोध नहीं करेंगे, यह निश्चित है—किन्तु वे तुम्हें चुनौती देने के लिए बाइबल निकालेंगे। वे तुम्हें यशायाह की पुस्तक और दानीएल की पुस्तक का ब्योरा दिलवाएँगे, और यहाँ तक कि वे तुमसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या भी करवाएँगे। और यदि तुम इस पर बात नहीं कर सकते हो, तो वे तुम्हें अस्वीकार कर देंगे, और तुम्हें एक झूठा मसीह कहेंगे, और कहेंगे कि तुम एक तरह की बेहूदगी फैला रहे हो। एक घंटे के बाद वे तुम्हारे ख़िलाफ़ झूठे आरोप लगाएँगे जो तुम्हें प्राणहीन कर देंगे। क्या यह खुला प्रतिरोध नहीं है? लेकिन यह तो सिर्फ़ शुरुआत है। वे परमेश्वर के कार्य के अगले चरण में बाधा नहीं डाल सकते हैं, और शीघ्र ही, पवित्र

आत्मा उन्हें इसे स्वीकार करने के लिए बाध्य कर देगा। यह एक निष्ठुर प्रवृत्ति है; यह ऐसा कुछ है जिसे मानव नहीं कर सकते हैं और कुछ ऐसा है जिसकी लोग कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर का कार्य पूरे विश्व में निर्विघ्न फैलेगा। यह परमेश्वर की इच्छा है, और इसे कोई नहीं रोक सकता है। परमेश्वर हमें प्रबुद्ध करे और हमें और अधिक नए प्रकाश को स्वीकार करने दे और इस मामले में परमेश्वर के प्रबंधन में बाधा न डालने दे। परमेश्वर हम पर दया करे ताकि हम सब उसकी महिमा के दिन के आगमन को देखने में सक्षम हो जाएँ। जब परमेश्वर की पूरे ब्रह्मांड में महिमा होगी, यही वह समय भी होगा जब हम उसके साथ-साथ महिमा प्राप्त करेंगे। ऐसा लगता है कि यही वह समय भी होगा कि मैं उन लोगों से विदा लूँगा जो मेरे साथ-साथ चलते हैं। मुझे आशा है कि मेरे भाई और मेरी बहनें परमेश्वर से अनुनय करने में मेरे साथ अपनी आवाज़ उठा सकते हैं: परमेश्वर का महान कार्य शीघ्र पूरा हो, ताकि हम अपने जीवन-काल में उसकी महिमा के दिन को देख सकें। मुझे अभी भी अपने जीवनकाल के भीतर परमेश्वर की इच्छा को प्राप्त करने की आशा है, और मुझे आशा है कि परमेश्वर हमारे अंदर अपना कार्य करना जारी रख सकता है, और यह कि इसमें कभी भी कोई बाधाएँ नहीं आएँगी। यह मेरी शाश्वत अभिलाषा है। परमेश्वर हमेशा हमारे बीच रहे, और उसका प्यार हमारे बीच सेतुओं का निर्माण करे ताकि हमारे बीच की दोस्ती अधिक मूल्यवान बन जाए। मुझे आशा है कि प्यार हमारे बीच और अधिक समझ पैदा करता है और यह कि प्यार हमें अधिक घनिष्ठता में ला सकता है, हमारे बीच की किसी भी दूरी को हटा सकता है, और यह कि हमारे बीच का प्यार अधिक गहरा, व्यापक और मधुर हो सकता है। मेरा मानना है कि यह मेरे परमेश्वर की इच्छा होनी है। मुझे आशा है कि मेरे भाई और मेरी बहनें मेरे और करीब हो सकें, और यह कि हम सभी उन थोड़े से दिनों को सँजो कर रख सकते हैं जो हमने साथ मिलकर बिताए, और कि वे हमारे लिए सुंदर यादों के रूप में काम आ सकते हैं।

मुख्य भूमि चीन में परमेश्वर के कार्य के और कदम हो सकते हैं, किन्तु वे जटिल नहीं हैं। इस बारे में सोचने पर, उसके कार्य के हर कदम के लिए समझदारी है; प्रत्येक को परमेश्वर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से पूरा किया गया है, और इस कार्य में प्रत्येक ने एक भूमिका निभाई है। प्रत्येक "दृश्य" सचमुच हास्योत्पादक है, और किसने कल्पना ही होगी कि ये लोग ऐसा नाटक करेंगे, हर परीक्षण के बीच उनके प्रदर्शन इतने सच्चे होंगे, परमेश्वर की कलम से प्रत्येक व्यक्ति का बहुत सजीवतापूर्क और संपूर्ता से चित्रित किया जाएगा, प्रत्येक दिन की रोशनी में उजागर होगा? लेकिन इससे, मेरा यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर अपने कार्य के

माध्यम से लोगों के साथ खेल कर रहा है। उसमें कोई समझदारी नहीं होगी; परमेश्वर के कार्य का एक उद्देश्य होता है, वह ऐसा कुछ भी बिल्कुल नहीं करता है जिसका महत्व या मूल्य न हो। वह जो कुछ भी करता है वह लोगों को सिद्ध बनाने, उन्हें प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इससे मैं सचमुच में देखता हूँ कि परमेश्वर का हृदय पूरी तरह से मनुष्य के भले के लिए है। हो सकता है कि मैंने इसे एक नाटक कहा हो है, किन्तु यह भी कहा जा सकता है कि यह नाटक वास्तविक जीवन से लिया गया है। केवल इतना ही है कि परमेश्वर के लिए—इस नाटक के प्रधान निर्देशक—लोग, इस कार्य को पूरा करने में उसके साथ सहयोग करने के लिए हैं। दूसरे अर्थ में, परमेश्वर लोगों को प्राप्त करने के लिए, लोगों से उसे और अधिक प्यार करवाने के लिए इसका उपयोग करता है। क्या यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है? इसलिए मुझे आशा है कि किसी को भी कोई चिंता नहीं है। क्या तुम परमेश्वर की इच्छा के बारे में पूरी तरह से अनभिज्ञ हो? मैंने बहुत कुछ कहा है—मुझे आशा है कि मेरे भाई और मेरी बहनों सभी ने इसे समझ लिया है और मेरे हृदय का ग़लत अर्थ नहीं लगाया है। मुझे कोई संदेह नहीं है कि तुम सभी लोग परमेश्वर के द्वारा प्राप्त कर लिए जाओगे। हर कोई एक भिन्न मार्ग पर चलता है। तुम्हारे पैरों के नीचे का मार्ग परमेश्वर द्वारा खोल दिया जाए, और तुम सभी लोग उससे प्रार्थना करो और कहो: "हे परमेश्वर! मैं तुझसे प्राथना करता हूँ कि तू मुझे प्राप्त कर ले ताकि मेरा आत्मा तेरी ओर लौट जाए।" क्या तुम अपनी आत्मा की गहराई में परमेश्वर के मार्गदर्शन की तलाश करने के इच्छुक हो?

मार्ग... (5)

अतीत में, कोई भी पवित्र आत्मा को नहीं जानता था; उस मार्ग के बारे में तो वे बहुत ही कम जानते थे, जिस पर पवित्र आत्मा चला था। यही कारण है कि लोगों ने हमेशा परमेश्वर के सामने बेवकूफ़ी भरा व्यवहार किया है। यह कहना उचित है कि लगभग हर कोई जो परमेश्वर में विश्वास करता है, वह आत्मा को नहीं जानता, और यह कि उनका विश्वास अव्यवस्थित और भ्रमित है। स्पष्ट रूप से, लोग परमेश्वर को नहीं समझते; और वे अपने मुँह से भले ही कहें कि वे उस पर विश्वास करते हैं, पर वास्तव में, अपने व्यवहार के आधार पर, वे खुद पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर पर नहीं। अपने खुद के वास्तविक अनुभवों में, मैंने देखा है कि परमेश्वर देहधारी परमेश्वर की गवाही देता है, और बाहर से ऐसा प्रतीत होता है कि लोग परमेश्वर की गवाही स्वीकार करने के लिए मजबूर किए गए हैं, यह मुश्किल से ही कहा जा सकता है कि वे

मानते हैं कि परमेश्वर का आत्मा पूरी तरह से त्रुटिरहित है। लेकिन मैं कहता हूँ, लोग इस व्यक्ति में विश्वास नहीं करते, परमेश्वर के आत्मा में तो बिलकुल भी नहीं; इसके बजाय वे अपनी भावनाओं में विश्वास करते हैं। क्या वे ऐसा करके खुद पर ही विश्वास नहीं कर रहे हैं? मैं जो कहता हूँ, वह सच है। मैं लोगों पर लेबल नहीं लगा रहा, लेकिन एक बात मुझे स्पष्ट करनी है : जिस स्थिति में लोग आज पहुँचाए गए हैं, चाहे वे स्पष्ट हों या भ्रमित, यह सब पवित्र आत्मा के कारण है। यह ऐसी चीज़ नहीं है, जिस पर मनुष्यों का कोई नियंत्रण हो। पवित्र आत्मा द्वारा लोगों को विश्वास करने के लिए मजबूर करने के बारे में मैंने पहले जो कहा यह उसका एक उदाहरण है; यह पवित्र आत्मा के काम करने का तरीका है, और यह पवित्र आत्मा द्वारा अपनाया गया मार्ग है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वास्तव में लोग किस पर विश्वास करते हैं, पवित्र आत्मा लोगों को बलपूर्वक एक प्रकार की भावना देता है, जिससे वे अपने दिल में परमेश्वर पर विश्वास करने लगते हैं। क्या तुम इसी तरह से विश्वास नहीं करते? क्या तुम्हें नहीं लगता कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास एक अजीब चीज़ है? क्या तुम्हें यह अजीब नहीं लगता कि तुम इस धारा से बच निकलने में असमर्थ हो? क्या तुमने इस बारे में सोचने का कोई प्रयास नहीं किया? क्या यह सभी संकेतों और चमत्कारों में सबसे बड़ा नहीं है? यहाँ तक कि अगर तुम्हें कई बार बचकर भागने की तीव्र इच्छा भी हुई हो, तो एक शक्तिशाली जीवन-शक्ति हमेशा तुम्हें आकर्षित कर लेती है और तुम्हें भागने के प्रति अनिच्छुक बना देती है। और हर बार जब भी तुम खुद को ऐसी परिस्थितियों में पाते हो, तो तुम हमेशा रोना-सिसकना शुरू कर देते हो, और समझ नहीं पाते कि आगे क्या करना है। तुममें से कुछ लोग चले जाने की कोशिश भी करते हैं, लेकिन जब तुम जाने की कोशिश करते हो, तो यह तुम्हारे दिल पर चाकू के वार की तरह महसूस होता है, ऐसा लगता है जैसे किसी सांसारिक भूत ने तुम्हारे भीतर से तुम्हारी आत्मा निकाल ली हो, और तुम्हारे दिल को बेचैन और अशांत बना दिया हो। उसके बाद तुम खुद को सँभालकर परमेश्वर के पास लौट आने के लिए मजबूर हो जाते हो। ... क्या तुम्हें इसका अनुभव नहीं हुआ? मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि युवा भाई-बहन, जो अपने दिल खोलने में सक्षम हैं, कहेंगे : "हाँ! मैंने इसे बहुत बार अनुभव किया है, इसके बारे में सोचने पर मुझे शर्म आती है!" अपने दैनिक जीवन में मैं हमेशा अपने युवा भाइयों और बहनों को अपना अंतरंग मानकर खुश होता हूँ, क्योंकि उनमें बहुत मासूमियत है—वे बहुत पवित्र और प्यारे हैं। वे मेरे अपने साथियों की तरह हैं। यही कारण है कि मैं हमेशा अपने आदर्शों और योजनाओं के बारे में बात करने के लिए अपने सभी अंतरंगों को साथ लाने का अवसर तलाशता रहता हूँ। परमेश्वर की इच्छा हम में पूरी हो,

ताकि हम सभी अपने बीच बिना किसी बाधा या दूरी के, एक परिवार की तरह हो जाएँ। हम सभी परमेश्वर से प्रार्थना करें : "हे परमेश्वर! यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो हम तुमसे सही परिवेश की भीख माँगते हैं, ताकि हम अपने दिल में मौजूद इच्छाएँ पूरी कर सकें। तुम हम पर, जो कि युवा हैं और जिनमें विवेक की कमी है, दया करो और हमें अपने दिलों के भीतर की शक्ति को काम में लाने की अनुमति दो!" मुझे विश्वास है कि यह परमेश्वर की इच्छा है, क्योंकि बहुत समय पहले मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की थी और कहा था : "पिता! धरती पर हम निरंतर तुम्हें पुकारते हुए यह कामना किया करते हैं कि पृथ्वी पर तुम्हारी इच्छा शीघ्र पूरी हो जाए। मैं तुम्हारी इच्छा खोजना चाहूगा। तुम जो करना चाहते हो, वह करो, और मुझमें अपना आदेश पूरी शीघ्रता के साथ पूरा करो। यहाँ तक कि मैं हमारे बीच तुम्हारे द्वारा एक नया रास्ता खोले जाने के लिए भी तैयार हूँ, अगर इससे तुम्हारी इच्छा शीघ्र पूरी होती हो! मैं केवल यह चाहता हूँ कि तुम्हारा काम शीघ्र पूरा हो जाए, और मुझे विश्वास है कि कोई नियम इसे रोक नहीं सकता!" ऐसा है आज परमेश्वर का काम; क्या तुम उस मार्ग को नहीं देखते, जिस पर पवित्र आत्मा चलता है? जब भी मैं बड़े भाइयों और बहनों से मिलता हूँ, मुझे उत्पीड़न का अवर्णनीय बोध होता है। जब मैं उनसे मिलता हूँ, तो पाता हूँ कि उनसे समाज की दुर्गंध आती है; उनकी धार्मिक धारणाएँ, चीज़ों को सँभालने का उनका अनुभव, उनके बोलने का तरीका, उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द, आदि-आदि—सभी नागवार हैं। वे कथित रूप से "ज्ञान" से भरे हुए हैं। मैं हमेशा उनसे जितना हो सके, दूर रहता हूँ, क्योंकि व्यक्तिगत रूप से मैं दुनिया में रहने के लिए आवश्यक दर्शनों से लैस नहीं हूँ। हर बार जब भी मैं इन लोगों से मिलता हूँ, वे मुझे थका देते हैं, मेरा सिर पसीने से नहा उठता है; कभी-कभी मैं इतना उत्पीड़ित महसूस करता हूँ कि मुश्किल से साँस ले पाता हूँ। तो इस खतरनाक पल में, परमेश्वर मुझे इससे बचने का एक शानदार तरीका देता है। शायद यह सिर्फ मेरी गलतफहमी है। मुझे केवल इस बात की परवाह है कि परमेश्वर को किससे लाभ होता है; परमेश्वर की इच्छा पर चलना सबसे महत्वपूर्ण है। मैं इन लोगों से बहुत दूर रहता हूँ, लेकिन फिर भी अगर परमेश्वर अपेक्षा करता है कि मैं उनसे मिलूँ, तो मैं उसका पालन करता हूँ। ऐसा नहीं है कि वे घृणित हैं, लेकिन उनका "ज्ञान," धारणाएँ, और दुनिया में रहने के दर्शन बहुत घिनौने हैं। मैं यहाँ परमेश्वर की आज्ञा पूरी करने के लिए हूँ, यह जानने के लिए नहीं कि वे लोग चीज़ों को किस तरह करते हैं। मुझे याद है कि परमेश्वर ने एक बार मुझसे कहा था, "पृथ्वी पर केवल अपने पिता की इच्छा के अनुसार कार्य कर और उसकी आज्ञा को पूरा कर। अन्य कुछ भी तेरी चिंता का विषय नहीं है।" यह सोचकर मुझे थोड़ी

शांति मिलती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य के कार्यकलाप हमेशा मुझे बहुत जटिल लगते हैं; मैं उन्हें समझ नहीं पाता, और मुझे कभी पता नहीं चल पाता कि क्या करना है। इसलिए अनगिनत बार मैं इससे परेशान हुआ हूँ और मैंने मानव-जाति से घृणा की है; लोगों को इतना जटिल होने की क्या ज़रूरत है? वे सरल क्यों नहीं हो सकते? इतने चालाक बनने की कोशिश क्यों करते हैं? जब मैं लोगों से मिलता हूँ, तो अधिकांशत: यह मेरे लिए परमेश्वर की आज्ञा पर आधारित होता है। कुछ बार हो सकता है, ऐसा न रहा हो, लेकिन कौन जानता है कि मेरे दिल की गहराइयों में क्या छिपा है?

कई बार मैंने अपने साथ के भाइयों और बहनों को सलाह दी है कि उन्हें अपने दिल से परमेश्वर में विश्वास करना चाहिए, अपने हितों का ध्यान नहीं रखना चाहिए, बल्कि परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखना चाहिए। मैं कई बार परमेश्वर के सामने पीड़ा से रोया हूँ : लोग परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में क्यों नहीं रखते हैं? निश्चित रूप से परमेश्वर का कार्य बिना किसी कारण के, बिना कोई निशान छोड़े यूँ ही तो गायब नहीं हो सकता? और न ही मुझे पता है कि क्यों—यह मेरे मस्तिष्क में लगभग एक पहेली बन गई है—क्यों लोग उस मार्ग को कभी नहीं पहचानते, जिस पर पवित्र आत्मा चला था, और क्यों अभी तक दूसरों के साथ अपने असामान्य रिश्ते बनाए हुए हैं? लोगों को इस तरह देखकर मुझे घिन आती है। पवित्र आत्मा के मार्ग को देखने के बजाय वे मनुष्य के कर्मों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। क्या परमेश्वर इससे संतुष्ट हो सकता है? मैं अकसर इससे दुखी होता हूँ। यह मेरा लगभग बोझ बन गया है—और यह पवित्र आत्मा को भी व्यग्र कर देता है। क्या तुम्हें अपने दिल में कोई ग्लानि महसूस नहीं होती? परमेश्वर हमारी आत्माओं की आँखें खोल दे। कई बार मैंने, जो कि लोगों को परमेश्वर के कार्य में प्रवेश करने के लिए मार्गदर्शन करता हूँ, परमेश्वर के सामने प्रार्थना की : "हे पिता! मैं चाहूँगा कि तुम्हारी इच्छा मुख्य हो, मैं तुम्हारी इच्छा की खोज करूँगा, मैं चाहूँगा कि मैं तुम्हारी आज्ञा के प्रति वफादार रहूँ, ताकि तुम लोगों के इस समूह को प्राप्त करो। तुम हमें स्वतंत्रता की भूमि पर ले चलो, ताकि हम तुम्हें अपनी आत्माओं से स्पर्श कर सकें। तुम हमारे दिलों के भीतर आध्यात्मिक भावनाएँ जागृत करो!" मैं चाहूँगा कि परमेश्वर की इच्छा पूरी हो, इसलिए मैं बिना रुके उसके आत्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें प्रबुद्ध करता रहे, ताकि हम पवित्र आत्मा के नेतृत्व वाले मार्ग पर चल सकें—क्योंकि जिस मार्ग पर मैं चलता हूँ, वह पवित्र आत्मा का मार्ग है। मेरी जगह और कौन इस मार्ग पर चल सकता है? यही बात मेरे बोझ को और भी भारी कर देती है। मुझे लगता है जैसे मैं गिरने वाला हूँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि परमेश्वर कभी अपने काम में देरी नहीं करेगा। शायद हम

उसकी आज्ञा पूरी होने के बाद ही अलग होंगे। तो शायद यह परमेश्वर के आत्मा के प्रभाव के कारण है कि मैंने हमेशा अलग महसूस किया है। यह ऐसा है मानो कोई काम है जो परमेश्वर करना चाहता है, लेकिन मैं अभी भी समझ नहीं पा रहा हूँ कि वह क्या है। फिर भी मुझे विश्वास है कि पृथ्वी पर कोई भी मेरे अंतरंगों से बेहतर नहीं है, और मुझे विश्वास है कि वे मेरे लिए परमेश्वर के सामने प्रार्थना करेंगे, जिसके लिए मैं अत्यंत आभारी हूँ। मैं चाहता हूँ कि भाई-बहनें मेरे साथ कहें : "हे परमेश्वर! तुम्हारी इच्छा हममें, अंतिम युग के लोगों में पूरी तरह से प्रकट हो, जिससे हम आत्मा के जीवन के साथ धन्य हो जाएँ, और परमेश्वर के आत्मा के कर्मों को निहार सकें, और उसके सच्चे चेहरे को देख पाएँ!" एक बार इस कदम पर पहुँच जाने के बाद हम वास्तव में आत्मा के मार्गदर्शन में रह रहे होंगे, और केवल तभी हम परमेश्वर के सच्चे चेहरे को देख पाएँगे। इसका तात्पर्य है कि लोग, सभी सत्यों के सही अर्थ समझने में सक्षम होंगे, मनुष्य की धारणाओं के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर के आत्मा की इच्छा के प्रबोधन के अनुसार समझे-बूझेंगे। यह पूरी तरह से स्वयं परमेश्वर का काम है, इसमें मनुष्य के विचारों का कुछ भी अंश नहीं है; यह उन कर्मों के लिए उसकी कार्य-योजना है, जिन्हें वह पृथ्वी पर जाहिर करने का इच्छुक है, और यह पृथ्वी पर उसके कार्य का अंतिम भाग है। क्या तुम इस काम में शामिल होना चाहते हो? क्या तुम इसका हिस्सा बनना चाहते हो? क्या तुम पवित्र आत्मा द्वारा पूर्ण किए जाने और आत्मा के जीवन में हिस्सेदारी करने के आकांक्षी हो?

आज जो महत्वपूर्ण है, वह है अपनी मूल नींव से ज्यादा गहराई तक जाना। हमें सत्य, दर्शन और जीवन में ज्यादा गहराई तक जाना चाहिए—लेकिन पहले मुझे भाइयों और बहनों को यह याद दिलाना आवश्यक है कि काम के इस चरण में प्रवेश करने के लिए तुम्हें अपनी पिछली धारणाओं को त्यागना होगा। अर्थात्, तुम्हें अपने जीने का ढंग बदलना होगा, नई योजनाएँ बनानी होंगी, एक नई शुरुआत करनी होगी। अगर तुम अभी भी उस चीज़ से चिपके रहते हो, जो अतीत में तुम्हारे लिए अनमोल थी, तो पवित्र आत्मा तुम्हारे भीतर काम करने में सक्षम नहीं होगा, और वह मुश्किल से तुम्हारे जीवन को बनाए रख पाएगा। जो लोग अनुसरण नहीं करते, या प्रवेश नहीं करते, या योजना नहीं बनाते, वे पवित्र आत्मा द्वारा पूरी तरह से छोड़ दिए जाएँगे—और इसलिए उनके बारे में कहा जाता है कि उन्हें युग द्वारा त्याग दिया गया है। मुझे उम्मीद है कि सभी भाई-बहन मेरे दिल की बात समझने में सक्षम हैं, और मुझे उम्मीद है कि और अधिक "नए नियुक्त" परमेश्वर के साथ सहयोग करने और इस काम को एक-साथ पूरा करने के लिए उठ खड़े होंगे। मुझे भरोसा है कि परमेश्वर हमें आशीष देगा। साथ ही, मुझे यह भी भरोसा है कि परमेश्वर मुझे

और भी अनेक अंतरंग देगा, ताकि मैं पृथ्वी के हर कोने में जा सकूँ, और हमारे बीच और अधिक प्रेम हो सके। इसके अलावा, मुझे विश्वास है कि परमेश्वर हमारे प्रयासों के कारण अपने राज्य का विस्तार करेगा; मैं चाहूँगा कि हमारे ये प्रयास अभूतपूर्व स्तरों पर पहुँचें, जिससे परमेश्वर अधिक युवा लोगों को प्राप्त कर सके। मैं चाहता हूँ कि हम इसके लिए प्रार्थना करने में अधिक समय व्यतीत करें, मैं चाहता हूँ कि हम बिना रुके प्रार्थना करें, ताकि हम अपना पूरा जीवन परमेश्वर के समक्ष बिताएँ, और परमेश्वर के जितना संभव हो, निकट हो सकें। हमारे बीच फिर कभी कोई चीज़ न आए, और हम सब परमेश्वर के सामने यह शपथ लें : एक-साथ कड़ी मेहनत करेंगे! एकदम अंत तक वफादार रहेंगे! कभी अलग नहीं होंगे, और हमेशा एक-साथ रहेंगे! मुझे आशा है कि सभी भाई और बहन परमेश्वर के सामने यह वादा करेंगे, जिससे हमारा दिल कभी न बदलेगा, और हमारा निश्चय कभी न डगमगाएगा! परमेश्वर की इच्छा के लिए, मैं फिर कहता हूँ : आओ, हम कड़ी मेहनत करें! आओ, हम अपनी पूरी ताकत से प्रयास करें! परमेश्वर निश्चित रूप से हमें आशीष देगा!

मार्ग... (6)

यह परमेश्वर का कार्य ही है, जिसकी वजह से हम वर्तमान समय में लाए गए हैं, और इस तरह हम परमेश्वर की प्रबंधन-योजना में जीवित बचे लोग हैं। यह परमेश्वर द्वारा किया गया हमारा महान उत्कर्ष है कि हम आज बचे हुए हैं, क्योंकि परमेश्वर की योजना के अनुसार, विशालकाय लाल अजगर वाले देश का विनाश हो जाना चाहिए। लेकिन मैं समझता हूँ कि शायद उसने एक और योजना तैयार की है, या वह अपने कार्य के एक और हिस्से को अंजाम देना चाहता है, इसलिए मैं आज भी इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझा सकता—यह एक ऐसी पहेली की तरह है, जिसे सुलझाया नहीं जा सकता। लेकिन कुल मिलाकर, हमारे इस समूह को परमेश्वर ने पहले से नियत कर रखा है, और इस बात में मेरा विश्वास बना हुआ है कि हमारे भीतर परमेश्वर किसी अन्य कार्य में संलग्न है। हम सब स्वर्ग से यह याचना करें : "तेरी इच्छा पूरी हो, और एक बार फिर तू हमारे सामने प्रकट हो और स्वयं को छिपाए नहीं, ताकि हम तेरी महिमा और चेहरे को और स्पष्टता से देख सकें।" मुझे लगातार यह महसूस होता रहता है कि परमेश्वर हमें राह दिखाता हुआ जिस मार्ग पर ले जाता है, वह कोई सीधा मार्ग नहीं है, बल्कि वह गड्ढों से भरी टेढ़ी-मेढ़ी सड़क है; इसके अतिरिक्त, परमेश्वर कहता है कि मार्ग

जितना ही ज़्यादा पथरीला होगा, उतना ही ज़्यादा वह हमारे स्नेहिल हृदयों को प्रकट कर सकता है। लेकिन हममें से कोई भी ऐसा मार्ग उपलब्ध नहीं करा सकता। अपने अनुभव में, मैं बहुत-से पथरीले, जोखिम-भरे मार्गों पर चला हूँ और मैंने भीषण दुख झेले हैं; कभी-कभी मैं इतना शोकग्रस्त रहा हूँ कि मेरा मन रोने को करता था, लेकिन मैं इस मार्ग पर आज तक चलता आया हूँ। मेरा विश्वास है कि यही वह मार्ग है जो परमेश्वर ने दिखाया है, इसलिए मैं सारे कष्टों के संताप सहता हुआ आगे बढ़ता जाता हूँ। चूँकि यह परमेश्वर का विधान है, इसलिए इससे कौन बच सकता है? मैं किसी आशीष के लिए याचना नहीं करता; मैं तो सिर्फ़ इतनी याचना करता हूँ कि मैं उस मार्ग पर चलता रह सकूँ, जिस पर मुझे परमेश्वर की इच्छा के मुताबिक चलना अनिवार्य है। मैं दूसरों की नकल करते हुए उस मार्ग पर नहीं चलना चाहता, जिस पर वे चलते हैं; मैं तो सिर्फ़ इतना चाहता हूँ कि मैं आखिरी क्षण तक अपने निर्दिष्ट मार्ग पर चलने की अपनी निष्ठा का निर्वाह कर सकूँ। मैं दूसरों की सहायता की याचना नहीं करता; ईमानदारी से कहूँ तो मैं खुद भी दूसरों की सहायता नहीं कर सकता। ऐसा लगता है कि मैं इस मामले में बेहद संवेदनशील हूँ। मुझे नहीं मालूम कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मेरा हमेशा से यह विश्वास रहा है कि किसी व्यक्ति को जितना भी दुख भोगना है और अपने मार्ग पर जितनी दूर तक चलना है, वह सब परमेश्वर ने पहले से ही तय किया होता है, और इसमें सचमुच कोई किसी की मदद नहीं कर सकता। हमारे कुछ ईर्ष्यालु भाई और बहनें कह सकते हैं कि मुझमें प्रेम का अभाव है, लेकिन मेरा तो यही विश्वास है। लोग परमेश्वर के मार्गदर्शन पर भरोसा करते हुए अपने मार्गों पर चलते हैं, और मुझे पक्का विश्वास है कि मेरे भाई और बहनें मेरी भावना को समझेंगे। मुझे यह भी उम्मीद है कि परमेश्वर हमें इस मामले में कहीं अधिक प्रबुद्धता प्रदान करता है, ताकि हमारा प्रेम और अधिक निर्मल और हमारी मैत्री और अधिक मूल्यवान बन सके। हम इस विषय में भ्रमित नहीं हों, बल्कि इसे और भी स्पष्टता से समझें, ताकि हमारे आपसी संबंध परमेश्वर की अगुआई की बुनियाद पर खड़े हो सकें।

परमेश्वर ने चीन के मुख्य भूभाग में कई वर्षों तक कार्य किया है, और हम आज जहाँ हैं, हमें वहाँ लाने की ख़ातिर उसने हम सबके लिए बहुत बड़ी क़ीमत चुकाई है। मैं समझता हूँ कि हर किसी को सच्चे मार्ग पर ले जाने के लिए इस कार्य की शुरुआत उस बिंदु से होनी चाहिए, जहाँ हर व्यक्ति सबसे ज़्यादा कमज़ोर होता है; केवल तभी वे पहले अवरोध तोड़कर बाहर आ सकते हैं और आगे की

यात्रा जारी रख सकते हैं। क्या यही बेहतर नहीं है? हज़ारों वर्षों से भ्रष्ट होता रहा चीनी राष्ट्र आज तक जीवित बचा रहा है, जिसमें हर तरह के "विषाणु" निर्बाध गति से बढ़ते रहे और महामारी की तरह हर तरफ़ फैलते रहे; यह जानने के लिए कि लोगों के भीतर कितने "रोगाणु" छिपे हुए हैं, उनके आपसी रिश्तों पर नज़र डालना भर पर्याप्त है। परमेश्वर के लिए इस तरह के अत्यंत अवरुद्ध और विषाणुओं से दूषित क्षेत्र में अपने कार्य को आगे बढ़ाना बेहद मुश्किल है। लोगों के व्यक्तित्व, आदतें, उनका काम करने का ढंग, अपने जीवन में उनकी हर अभिव्यक्ति और उनके पारस्परिक संबंध—वे सब जगह-जगह से इस क़दर कटे-फटे हैं कि मानवीय ज्ञान और संस्कृतियाँ परमेश्वर के हाथों मरने को अभिशप्त हैं। वे अनुभव इसके अतिरिक्त हैं, जो उन्होंने अपने परिवारों तथा समाज से हासिल किए होते हैं—ये सब परमेश्वर की नज़रों में दोषी साबित हो चुके हैं। इसकी वजह यह है कि इस मुल्क में रहने वाले लोगों ने बहुत सारे विषाणु खाए हैं। यह उनके लिए सामान्य-सी बात है, वे इसके बारे में जरा भी नहीं सोचते। इसलिए, जितने ज़्यादा भ्रष्ट लोग किसी जगह होते हैं, उनके आपसी रिश्ते उतने ही ज़्यादा विकृत होते हैं। लोगों के रिश्ते षड्यंत्रों से ओतप्रोत हैं, वे एक-दूसरे के खिलाफ़ कुचक्र रचते रहते हैं और एक-दूसरे की इस तरह हत्या करते रहते हैं, मानो वे नरभक्षियों के किसी दुर्ग में रहने वाले दैत्य हों। आतंक से भरी ऐसी जगह में, जहाँ प्रेत बेलगाम दौड़ते हों, परमेश्वर के कार्य को अंजाम देना बेहद मुश्किल है। मुझे जब लोगों से मिलना होता है, तो मैं परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना करता हूँ, क्योंकि मैं उनसे मिलते हुए बहुत घबराता हूँ, और इस बात से बहुत डरता रहता हूँ कि मैं कहीं अपने स्वभाव से उनकी "गरिमा" को ठेस न पहुँचा दूँ। मेरे हृदय में हमेशा यह भय बना रहता है कि ये अपवित्र आत्माएँ लापरवाही से काम करेंगी, इसलिए मैं हमेशा परमेश्वर से प्रार्थना करता रहता हूँ कि वह मेरी रक्षा करे। हमारे बीच हर तरह का असामान्य संबंध साफ़ दिखाई देता है, और यह सब देखते हुए मेरा हृदय नफ़रत से भर उठता है, क्योंकि उनके बीच लोग हमेशा मनुष्य के "धंधे" में लगे रहते हैं और परमेश्वर के बारे में सोचने की उनके पास कभी फुरसत नहीं होती। मुझे उनके आचरण से गहरी नफ़रत होती है। चीन के मुख्य भूभाग के लोगों में भ्रष्ट शैतानी स्वभावों के अलावा और कुछ दिखाई नहीं देता, इसलिए इन लोगों के बीच परमेश्वर का कार्य करते हुए इनमें कुछ भी सार्थक खोजना लगभग असंभव है; सारा कार्य पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है, और केवल पवित्र आत्मा ही है जो लोगों को अधिक प्रेरित करता है, और उन पर कार्य करता है। उन लोगों का

उपयोग करना लगभग असंभव है; यानी, लोगों को प्रेरित करने का पवित्र आत्मा का कार्य इन लोगों के सहयोग से नहीं किया जा सकता। बस पवित्र आत्मा इन लोगों को प्रेरित करने के लिए कड़ा परिश्रम करता रहता है, लेकिन तब भी, लोग सुन्न और संवेदनशून्य बने रहते हैं, और परमेश्वर क्या कर रहा है, उन्हें कुछ पता नहीं चलता। इसलिए, चीन के मुख्य भूभाग में परमेश्वर का कार्य उसके पृथ्वी और स्वर्ग रचने के कार्य जैसा है। वह सारे लोगों को फिर से जन्म देता है, और उनके अंदर का सब-कुछ बदल देता है, क्योंकि उनके भीतर कुछ भी सार्थक नहीं होता। यह बहुत हृदय-विदारक है। मैं अकसर पीड़ा से भरकर इन लोगों के लिए प्रार्थना करता हूँ : "परमेश्वर, तेरी महान शक्ति इन लोगों के समक्ष प्रकट हो, ताकि तेरा आत्मा इनको अधिक-से-अधिक प्रेरित कर सके, और ये सुन्न और मंदबुद्धि दुखी लोग जाग सकें, अब सुस्ती से और सोए न रहें, और तेरी महिमा का दिन देख सकें।" हम सब परमेश्वर से प्रार्थना करें और कहें : हे परमेश्वर! एक बार फिर हम पर तेरी कृपा हो और हमें तेरा वात्सल्य प्राप्त हो, ताकि हमारे हृदय पूरी तरह से तेरी ओर रुख कर सकें, और हम इस घृणित मुल्क से बचकर निकल सकें, खड़े हो सकें, और तूने जो कार्य हमें सौंपा है, उसे पूरा कर सकें। मुझे उम्मीद है कि परमेश्वर एक बार फिर हमें उत्प्रेरित करेगा ताकि हम उसकी प्रबुद्धता हासिल कर सकें, और मुझे उम्मीद है कि वह हम पर कृपा करेगा, ताकि हमारे हृदय धीरे-धीरे उसकी ओर मुड़ सकें और वह हमें हासिल कर सके। यही हम सबकी साझी इच्छा है।

हम जिस मार्ग पर चलते हैं, वह पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा नियत है। संक्षेप में, मेरा मानना है कि मैं निश्चित रूप से इस मार्ग पर अंत तक चलता रहूँगा, क्योंकि परमेश्वर हमेशा मुझ पर अपनी मुसकराहट बिखेरता है, और लगता है, जैसे वह हमेशा अपने हाथ से मुझे राह दिखाता है। इस तरह मेरा हृदय किसी भी अन्य चीज़ से बेदाग़ बना रहता है, और इस तरह मैं हमेशा परमेश्वर के कार्य के प्रति सजग बना रहता हूँ। मैं परमेश्वर द्वारा सौंपे गए सारे कर्तव्य अपने पूरे सामर्थ्य और निष्ठा के साथ पूरे करता हूँ, और ऐसे किसी भी काम में दख़लंदाज़ी नहीं करता जो मुझे नहीं सौंपा गया है, न ही मैं खुद को उन दूसरे लोगों में उलझाता हूँ, जो उस काम को करते हैं—क्योंकि मेरा मानना है कि हर व्यक्ति को अपने खुद के मार्ग पर चलना चाहिए, और दूसरों के मार्ग में घुसपैठ नहीं करनी चाहिए। मैं इसे इसी तरह देखता हूँ। ऐसा शायद मेरे अपने व्यक्तित्व की वजह से है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरे भाई और बहनें मुझे समझेंगे और क्षमा करेंगे, क्योंकि मैं अपने पिता के आदेशों के ख़िलाफ़

जाने का दुस्साहस कभी नहीं करता। मैं परमेश्वर की इच्छा की अवहेलना करने का दुस्साहस नहीं करता। क्या तुम भूल गए हो कि "परमेश्वर की इच्छा की अवहेलना नहीं की जा सकती"? कुछ लोग मुझे आत्मकेंद्रित समझ सकते हैं, लेकिन मेरा मानना है कि मैं खास तौर से परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य का एक हिस्सा पूरा करने के लिए आया हूँ। मैं व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों में उलझने के लिए नहीं आया हूँ; मैं दूसरों के साथ दोस्ताना रिश्ता बनाना कभी नहीं सीखूँगा। लेकिन परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्य में मुझे परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त है, और मुझमें यह आस्था और दृढ़ निश्चय है कि मैं इस कार्य को पूरा करके ही रहूँगा। शायद मैं बहुत ज़्यादा "आत्मकेंद्रित " हो रहा हूँ, लेकिन मुझे उम्मीद है कि हर कोई खुद ही परमेश्वर के न्यायपूर्ण और निःस्वार्थ प्रेम को महसूस कर सकता है और परमेश्वर के साथ सहयोग करने की कोशिश कर सकता है। परमेश्वर की महिमा के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा मत करो; यह किसी के लिए भी ठीक नहीं है। मैं हमेशा सोचता हूँ कि हमें इस चीज़ पर विचार करना चाहिए : "हमें वह हर संभव काम करना चाहिए, जो परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए अनिवार्य है। परमेश्वर ने हममें से हरेक को अलग-अलग कार्य सौंपा है; हम इसे किस तरह पूरा करें?" तुम्हें यह समझना ज़रूरी है कि जिस मार्ग पर तुम चल रहे हो, वह क्या है—तुम्हारे मन में यह बात स्पष्ट होनी अनिवार्य है। चूँकि तुम सब परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहते हो, इसलिए क्यों नहीं तुम स्वयं को उसके प्रति समर्पित कर देते? जब मैंने पहली बार परमेश्वर से प्रार्थना की थी, तो मैंने अपना समूचा हृदय उसे सौंप दिया था। मेरे आसपास के लोग—माता-पिता, बहनें, भाई और सहकर्मी—सब-के-सब मेरे संकल्प द्वारा मेरे मन के पीछे धकेल दिए गए थे, यह कुछ ऐसा था, जैसे मेरे लिए उनका अस्तित्व ही नहीं था। क्योंकि मेरा मन तो हमेशा परमेश्वर , या परमेश्वर के वचनों, या उसकी बुद्धिमत्ता में ही लगा रहता था; ये चीज़ें हमेशा मेरे हृदय में होती थीं, और उन्होंने मेरे हृदय में सबसे कीमती जगह ली हुई थी। इस तरह, जो लोग जीवन के फ़लसफ़ों से लबालब भरे होते हैं, उनके लिए मैं एक नितांत निर्मम और भाव-शून्य व्यक्ति हूँ। मेरे व्यवहार करने के ढंग से, मेरे काम करने के ढंग से, मेरी हर गतिविधि से उनके दिल दुखते हैं। वे मुझे विचित्र निगाहों से देखते हैं, जैसे मैं जो व्यक्ति हूँ वो कोई अबूझ पहेली है। वे अपने मन में, गुपचुप मैं जो व्यक्ति हूँ उसे आँकने की कोशिश करते हैं, उन्हें समझ में नहीं आता कि मेरा अगला कदम क्या होगा। उनका कोई भी कृत्य मेरे आड़े कैसे आ सकता है? हो सकता है कि वे ईर्ष्यालु

हों, या घृणा करते हों, या हँसी उड़ाते हों; मुझे इसकी परवाह नहीं, मैं तो मानो ज़बरदस्त भूख और प्यास से भरकर हर वक्त परमेश्वर के सामने प्रार्थना करता रहता हूँ, मानो केवल मैं और वह ही इस दुनिया में रहते हों, कोई दूसरा नहीं। बाहरी दुनिया की ताक़तें हमेशा मेरे इर्द-गिर्द भीड़ लगाए रहती हैं—लेकिन उसी तरह, परमेश्वर से उत्प्रेरित होने की भावना भी मेरे भीतर उमड़ती रहती है। इस दुविधा में फँसने पर मैं परमेश्वर के सामने नतमस्तक हो गया : "हे परमेश्वर ! मैं तेरी इच्छा के विरुद्ध कैसे हो सकता था? तू मुझे सम्मानजनक निगाहों से, गढ़े गए सोने की तरह देखता है, तब भी मैं अंधकार की शक्तियों से बच निकलने में अक्षम हूँ। तेरी ख़ातिर मैं आजीवन दुख झेलूँगा, तेरे कार्य को मैं अपनी आजीविका बना लूँगा, और मैं तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे विश्राम की कोई ऐसी उपयुक्त जगह उपलब्ध करा, जहाँ मैं स्वयं को तेरे प्रति समर्पित कर सकूँ। हे परमेश्वर! मैं खुद को तुझे प्रस्तुत करना चाहता हूँ। तू मनुष्य की कमज़ोरियों को अच्छी तरह से जानता है, तब तू स्वयं को मुझसे क्यों छिपाता है?" ठीक उसी वक्त, मानो मैं किसी पहाड़ी कुमुदनी जैसा हो गया, जिसकी खुशबू मंद समीर बहा ले चला, जिसका पता किसी को नहीं चला। लेकिन स्वर्ग रोया, और मेरा हृदय आर्तनाद करता रहा; ऐसा लगा, जैसे मेरा हृदय और भी अधिक पीड़ा से भर उठा हो। मनुष्य की सारी शक्तियाँ और घेराबंदियाँ—वे बादलों से रहित साफ़ दिन में बिजली की गर्जना की तरह थीं। कौन समझ सकता था मेरे हृदय को? और इसलिए मैं एक बार फिर से परमेश्वर के समक्ष आया, और बोला, "हे परमेश्वर ! क्या गंदगी से भरे इस मुल्क में तेरे कार्य को पूरा करने का कोई उपाय नहीं है? ऐसा क्यों है कि दूसरे लोग उत्पीड़न से मुक्त एक सुखद, सहयोगपूर्ण वातावरण में तेरे हृदय के प्रति सजग नहीं हो पाते? मैं अपने पंख फैलाना चाहता हूँ, लेकिन उड़ पाना इतना मुश्किल क्यों है? क्या तू सहमत नहीं है?" मैं कई दिनों तक इसे लेकर रोता रहा, लेकिन मुझे हमेशा इस बात का भरोसा बना रहा कि परमेश्वर मेरे दुखी हृदय को सांत्वना पहुँचाएगा। मेरी बेचैनी को कभी किसी ने नहीं समझा। यह शायद सीधा परमेश्वर से प्राप्त बोध है—मेरे भीतर उसके कार्य को लेकर हमेशा एक प्रबल उत्साह रहा है, और मुझे साँस लेने का वक्त भी शायद ही कभी मिला हो। मैं आज के दिन तक प्रार्थना करता हूँ और कहता हूँ, "हे परमेश्वर ! अगर यह तेरी इच्छा है, तो तू मुझे अपना और भी बड़ा कार्य करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर, ताकि यह कार्य सारे विश्व में फैल जाए, और यह हर राष्ट्र तथा संप्रदाय को उपलब्ध हो जाए, ताकि मेरे हृदय को थोड़ी-सी शांति मिले, और इस तरह मैं तेरे लिए एक विश्रांति-

स्थल में रह सकूँ, और बिना किसी दख़लंदाज़ी के तेरे लिए कार्य कर सकूँ, और शांत चित्त से आजीवन तेरी सेवा कर सकूँ।" यह मेरी हार्दिक आकांक्षा है। हो सकता है, भाई और बहन कहें कि मैं अहंकारी और दंभी हूँ; मैं भी इसे स्वीकार करता हूँ, क्योंकि यह तथ्य है—अभिमानी नहीं तो युवा कुछ भी नहीं हैं। इसीलिए मैं तथ्यों की अवहेलना किए बिना इस बात को उसी तरह कहता हूँ, जैसी वह वास्तव में है। तुम मुझमें वे सारे लक्षण देख सकते हो, जो एक नौजवान के व्यक्तित्व में होते हैं, लेकिन तुम यह भी देख सकते हो कि मैं अन्य नौजवानों से कहाँ पर अलग हूँ : अपने धैर्यवान और शांत-चित्त होने में। मैं बात का बतंगड़ नहीं बना रहा हूँ; मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझे मुझसे भी बेहतर जानता है। ये मेरे हृदय के उद्गार हैं, और मुझे उम्मीद है कि भाई और बहनें इससे नाराज़ नहीं होंगे। हम वही शब्द बोलें जो हमारे हृदय में हैं, उस चीज़ पर ध्यान दें जिसकी हममें से हर किसी को तलाश है, अपने हृदयों में परमेश्वर के प्रति प्रेम की तुलना करें, उन शब्दों को सुनें जो हम परमेश्वर के समक्ष फुसफुसाते हैं, अपने हृदय में सुंदरतम गीत गाएँ, और अपने हृदय के स्वाभिमान को स्वर दें, ताकि हमारे जीवन और अधिक सुंदर बन सकें। अतीत को भूल जाओ और भविष्य की ओर देखो। परमेश्वर हमारे लिए मार्ग प्रशस्त करेगा!

मार्ग... (7)

हम अपने व्यवहारिक अनुभव में देखते हैं कि बहुत बार परमेश्वर ने निजी तौर पर हमारे लिए एक मार्ग खोला है, ताकि हमारे पैरों के नीचे मार्ग अधिक दृढ़ और अधिक वास्तविक हो। क्योंकि यह वह मार्ग है जो परमेश्वर ने हमारे लिए अनंतकाल से खोलकर रखा है, और जिसे हज़ारों वर्षों के बाद हमारी पीढ़ी को सौंपा गया है। इस तरह हमने अपने पूर्वजों के मार्ग को अपनाया है, जो इस पर अंत तक नहीं चले। परमेश्वर ने हमें इसके अंतिम चरण तक चलने के लिए चुना है। और इसलिए, परमेश्वर ने विशेष रूप से हमारे लिए इस मार्ग को तैयार किया था, हम चाहे आशीषित हों या हम पर कोई विपत्ति आए, अन्य कोई इस मार्ग पर नहीं चल सकता। मैं इसमें अपनी अंतर्दृष्टि भी जोड़ दूँ : कहीं और भागने का या कोई दूसरा मार्ग तलाशने का प्रयास न करना, और ओहदे का लालच मत करना, या अपना राज्य स्थापित करने का प्रयास न करना—ये कोरी कल्पनाएँ हैं । हो सकता है कि मेरे वचनों के बारे में तुम्हारे कोई पूर्वनिर्धारित विचार हों, अगर ऐसा है तो मेरा सुझाव है कि तुम इतना भ्रमित होना बंद कर दो। इस पर और अधिक

विचार करना तुम्हारे लिए बेहतर है; चालाक बनने की कोशिश न करो, अच्छाई और बुराई को लेकर उलझन में मत फँसो। परमेश्वर की योजना पूरी हो जाने के बाद तुम पछताओगे। मेरा कहना यह है कि जब परमेश्वर का राज्य आएगा, तो धरती के सभी राष्ट्र टुकड़े- टुकड़े होकर बिखर जाएँगे। उस समय तुम देखोगे कि तुम्हारी अपनी योजनाएँ भी नष्ट हो गयी हैं, और जिन्हें ताड़ना दी गयी है, वे भी नष्ट हो जाएँगे, और इसमें परमेश्वर अपने स्वभाव को पूरी तरह से अभिव्यक्त करेगा। मेरा ख्याल है, चूँकि ये बातें मेरे सामने एकदम स्पष्ट हैं, इसलिए मुझे ये बातें तुम्हें बता देनी चाहिए, ताकि बाद में तुम मुझे दोष न दो। हमारा आज तक इस मार्ग पर चल पाना परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया था, इसलिए अपने आपको न तो कोई विशेष व्यक्ति समझो, न ही बदकिस्मत इंसान—परमेश्वर के वर्तमान कार्य के बारे में कोई भी निश्चयात्मक कथन नहीं कह सकता है, कहीं ऐसा न हो कि तुम मिटा दिए जाओ। मैं परमेश्वर के कार्य से प्रबुद्ध हुआ हूँ : चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर लोगों के इस समूह को पूरा करेगा, उसका कार्य फिर कभी नहीं बदलेगा, और वह लोगों के इस समूह को मार्ग के अंत तक ले जाएगा, और धरती पर अपने कार्य को समाप्त करेगा। हम सबको इस बात को समझना चाहिए। अधिकतर लोग "आगे देखना" पसंद करते हैं, और उनकी भूख का कोई अंत नहीं होता। उनमें से कोई भी परमेश्वर की आज की अत्यावश्यक इच्छा को नहीं समझता, इसलिए वे बच निकलने की सोचते हैं। वे बेलगाम घोड़ों की तरह होते हैं जो केवल उजाड़ जंगल में घूमते रहना चाहते हैं; कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो कनान की नेक धरती पर इंसानी जीवन की राह की खोज करने के लिए बसना चाहते ते हैं। अगर दूध और शहद की बहती धरती पर आकर भी लोग खुश न हों, तो उन्हें और क्या चाहिए? सच कहा जाए तो, कनान की नेक धरती के परे केवल उजाड़ जंगल है। विश्राम के स्थान में प्रवेश करके भी, लोग अपना कर्तव्य नहीं निभा पाते; क्या वे लोग वेश्या नहीं हैं? अगर तुम यहाँ परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के अवसर को गँवा दोगे, तो तुम अपने बाकी बचे दिनों में पछताते रह जाओगे, तुम्हारा पश्चाताप अनंतकाल तक रहेगा। तुम मूसा की तरह होगे, जो कनान की धरती को देखता तो रहा, लेकिन उसका आनंद न ले सका, उसकी मुट्ठियाँ भिंची हुई, उसकी मौत पछतावे से भरी हुई—क्या यह तुम्हें निंदनीय नहीं लगता? क्या तुम इसे शर्मनाक नहीं मानते, जिसका कि लोग उपहास करें? क्या तुम लोगों द्वारा अपमानित होने के लिए तैयार हो? क्या तुम अपने लिए अच्छा नहीं करना चाहते? क्या तुम ऐसे सम्माननीय और सच्चे इंसान नहीं बनना चाहते जिसे परमेश्वर द्वारा पूर्ण किया जाए? क्या वाकई तुम्हारी कोई अभिलाषा नहीं है? तुम अन्य मार्ग नहीं अपनाना चाहते; क्या तुम वह मार्ग

भी नहीं अपनाना चाहते जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे लिए नियत किया है? क्या तुम स्वर्ग की इच्छा के विरुद्ध जाने का साहस कर रहे हो? तुम्हारा "कौशल" कितना भी बड़ा हो, क्या तुम सचमुच स्वर्ग का अपमान कर सकते हो? मेरा मानना है कि हमें अपने आपको बेहतर ढंग से जानने का प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर की ओर से एक वचन स्वर्ग और धरती को बदल सकता है, तो परमेश्वर की नज़र में एक कमज़ोर तुच्छ इंसान की औकात ही क्या है?

अपने अनुभव में मैंने देखा है कि तुम परमेश्वर का जितना ज़्यादा विरोध करोगे, परमेश्वर उतना ही ज़्यादा अपना प्रतापी स्वभाव दिखाएगा, और वह ताड़ना उतनी ही अधिक कठोर होगी जो वह तुम्हें "देता" है; तुम जितना अधिक उसका आज्ञापालन करोगे, वह तुम्हें उतना ही अधिक प्रेम करेगा और तुम्हारी सुरक्षा करेगा। परमेश्वर का स्वभाव किसी दंड के उपकरण की तरह है : अगर तुम आज्ञापालन करोगे तो तुम सही-सलामत रहोगे; जब तुम आज्ञापालन नहीं करते हो—जब तुम हमेशा दिखावा करने का प्रयास करते हो, चालें चलते हो—तो परमेश्वर का स्वभाव तुरंत बदल जाता है। वह बादलों से घिरे दिन में सूर्य की तरह है, वह तुमसे छुप जाएगा और तुम्हें अपना कोप दिखाएगा। वैसा ही उसका स्वभाव भी है, जून महीने के मौसम की तरह है, जब मीलों तक आसमान साफ होता है और लहरें भी पानी की सतह पर तब तक तरंगित होती हैं, जब तक कि जल-प्रवाह अचानक तेज़ गति से बहकर तूफान का रूप नहीं ले लेता। क्या परमेश्वर के ऐसे स्वभाव के आगे लापरवाह होने की तुम्हारी हिम्मत है? तुम में से अधिकतर भाई-बहनों ने अपने अनुभवों में देखा है कि जब पवित्र आत्मा दिन के उजाले में कार्य करता है, तो तुम्हारे अंदर पूरी आस्था होती है—लेकिन फिर अचानक परमेश्वर का आत्मा तुम्हारा त्याग कर देता है और तुम इतने पीड़ित हो जाते हो कि तुम्हारी रातों की निंद उड़ जाती है, तुम उस दिशा को खोजते हो जिस ओर पवित्र आत्मा गायब हुआ है। तुम कुछ भी कर लो, लेकिन तुम नहीं ढूँढ़ नहीं सकते कि पवित्र आत्मा कहाँ गया—लेकिन अचानक वह तुम्हारे सामने फिर से प्रकट हो जाता है, तुम उसी तरह भावविभोर हो जाते हो, जिस तरह पतरस अचानक एक बार फिर प्रभु यीशु के दर्शन करके हो गया था, तुम इतने भावविभोर हो जाते हो कि रोने लगते हो। क्या तुम इतनी बार अनुभव करके भी यह बात वास्तव में भूल गए हो? प्रभु यीशु, जिसने देहधारण किया, जिसे सूली पर चढ़ाया गया, और फिर उसका पुनरुत्थान हुआ और वह स्वर्ग में चला गया, वह हमेशा थोड़े समय के लिए तुमसे छुपा रहता है, और थोड़े समय के लिए वह फिर तुम्हारे सामने प्रकट हो जाता है। वह तुम्हारी धार्मिकता के कारण तुम्हारे सामने स्वयं को प्रकट करता है और तुम्हारे पापों के

कारण वह तुमसे नाराज़ होकर चला जाता है, तो तुम उससे और अधिक प्रार्थना क्यों नहीं करते? क्या तुम्हें पता नहीं था कि पिंतेकुस्त के बाद, प्रभु यीशु का धरती पर एक और कार्यभार था? तुम्हें केवल इतना तथ्य पता है कि प्रभु यीशु मसीह ने देहधारण किया, वह धरती पर आया और उसे सूली पर चढ़ाया गया। तुम्हें कभी इस बात का एहसास ही नहीं हुआ कि जिस यीशु में तुम्हारा पहले विश्वास था, उसने बहुत पहले ही अपना कार्य किसी और को सौंप दिया है और वह कार्य बहुत पहले ही पूरा हो चुका है, इसलिए प्रभु यीशु फिर से धरती पर देहधारण कर अपने कार्य के अन्य भाग को करने के लिए आया है। मैं यहाँ कुछ जोड़ना चाहूँगा—इस तथ्य के बावजूद कि तुम लोग फिलहाल इस धारा में हो, मैं इस बात को कहने का साहस कर रहा हूँ कि तुम लोगों में से कुछ ही लोग इस व्यक्ति को प्रभु यीशु मसीह द्वारा तुम लोगों के लिए भेजा गया व्यक्ति मानते हैं। तुम लोग केवल उसका आनंद लेना जानते हो; तुम लोग इस बात को स्वीकार नहीं करते कि परमेश्वर का आत्मा एक बार फिर धरती पर आया है, और तुम लोग इस बात को भी नहीं मानते कि आज का परमेश्वर हज़ारों साल पहले का प्रभु यीशु ही है। इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम सभी लोग आँखें बंद करके चल रहे हो—तुम बस वही स्वीकर कर लेते हो जहाँ-कहीं पहुँचते हो—तुम इस बारे में ज़रा भी गंभीर नहीं हो। इस तरह तुम लोग प्रभु यीशु के वचनों में तो विश्वास रखते हो, लेकिन जिसकी आज परमेश्वर गवाही देता है, उसे साफ-साफ नकार देते हो। क्या तुम बेवकूफ़ नहीं हो? आज का परमेश्वर तुम्हारी गलतियों की परवाह नहीं करता, वह तुम्हारी निंदा नहीं करता। तुम कहते हो कि तुम यीशु में विश्वास रखते हो, तो क्या तुम्हारा प्रभु यीशु मसीह तुम्हें छोड़ सकता है? क्या तुम्हें लगता है कि परमेश्वर कोई ऐसा स्थान है जहाँ तुम अपनी भड़ास निकाल सकते हो और झूठ बोल सकते और धोखा दे सकते हो? जब तुम्हारा प्रभु यीशु मसीह एक बार फिर से स्वयं को तुम्हारे सामने प्रकट करेगा, तो वह तुम्हारे अब के व्यवहार के आधार पर यह निर्धारित करेगा कि क्या तुम धार्मिक हो या क्या तुम दुष्ट हो। अधिकतर लोग उनके बारे में धारणाएँ बना लेते हैं जिनका मैं "मेरे भाई-बहन" के रूप में ज़िक्र करता हूँ, और मानते हैं कि परमेश्वर के कार्य करने के साधन बदलेंगे। क्या ऐसे लोग मौत को बुलावा नहीं दे रहे हैं? क्या परमेश्वर स्वयं शैतान की परमेश्वर के रूप में गवाही दे सकता है? इसमें, क्या तुम परमेश्वर की निंदा नहीं कर रहे हो? क्या तुम ऐसा मानते हो कि कोई भी स्वयं परमेश्वर बन सकता है? अगर तुम सचमुच इस बात को जानते, तो तुम कोई धारणाएँ नहीं बनाते। बाइबल में यह अंश है : सारी चीज़ें उसी के लिए हैं और और सारी चीज़ें उसी से हैं। वह बहुत-से पुत्रों को महिमा में लाएगा और वह हमारा कप्तान है.... इस तरह हमें भाई कहने

में उसे कोई शर्म नहीं है। तुम इन वचनों को आसानी से रटकर बोल सकते हो, लेकिन तुम्हें उनके वास्तविक मायने पता नहीं हैं। क्या तुम आँखें बंद करके परमेश्वर में विश्वास नहीं रख रहे हो?

मैं मानता हूँ कि हमारी पीढ़ी पिछली पीढ़ियों के अधूरे मार्ग पर चल पाने और कई हज़ार साल पहले के परमेश्वर के पुनर्प्रकटन को देख पाने के लिए धन्य है—एक ऐसे परमेश्वर को जो हमारे बीच है और हर चीज़ में परिपूर्ण है। तुम कभी सोच भी नहीं सकते थे कि तुम इस मार्ग पर चलोगे—क्या तुम इसके काबिल हो? इस राह का मार्गदर्शन सीधे पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है, इसका मार्गदर्शन प्रभु यीशु मसीह के सात गुना तीव्र आत्मा द्वारा किया जाता है, और यह वह मार्ग है जिसे आज के परमेश्वर ने तुम्हारे लिए खोला है। तुम कभी सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि हज़ारों साल पहले का यीशु एक बार फिर तुम्हारे सामने प्रकट होगा। क्या तुम्हें संतोष महसूस नहीं होता? परमेश्वर के रूबरू आने के योग्य कौन है? मैं अक्सर प्रार्थना करता हूँ कि हमारे समूह को परमेश्वर से अधिक आशीषें मिलें, हम परमेश्वर की स्वीकृति पाएँ और उसे प्राप्त हों, लेकिन ऐसे भी अनगिनत अवसर आए हैं जब मैंने हमारे लिए बहुत आँसू बहाए हैं, प्रार्थना की है कि परमेश्वर हमें प्रबुद्ध करे, ताकि हम अधिक प्रकाशन देख पाएँ। जब मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो परमेश्वर को लगातार बेवकूफ बनाने का प्रयास करते हैं और कभी किसी चीज़ की आकांक्षा नहीं रखते, या फिर जो देह के प्रति सजग रहते हैं, या जो स्वयं को महत्वपूर्ण बनाने के लिए अपने हितों या प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करते हैं, तो मैं अपने दिल में भयंकर पीड़ा कैसे न महसूस करूँ? लोग इतने संवेदनहीन कैसे हो सकते हैं? क्या मेरे कार्य का सचमुच कोई प्रभाव नहीं हुआ? अगर तुम्हारे बच्चे विद्रोही हों या तुम्हारे प्रति संतानोचित न हों, अगर उनमें विवेक का अभाव हो, अगर वे केवल अपनी परवाह करें और तुम्हारी भावनाओं के बारे में कभी भी विचारशील न हों, और बड़े होकर तुम्हें घर से निकाल दें, तो उस समय तुम्हें कैसा महसूस होगा? उन्हें बड़ा करने में तुमने जो खून-पसीना बहाया, त्याग किया, क्या उन लम्हों को याद करके तुम्हारी आँखों में आँसू नहीं आ जाएँगे? इस तरह मैंने अनेक बार परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा है, "प्यारे परमेश्वर! केवल तू ही जानता है कि मैं तेरे काम के लिए भार वहन करता हूँ या नहीं। जहाँ-कहीं मेरे काम तेरी इच्छा के अनुरूप नहीं होते, वहाँ तू मुझे अनुशासित करता है, पूर्ण करता है और मुझे जागरुक करता है। मेरी तुझसे बस एक ही प्रार्थना है कि तू इन लोगों को और अधिक प्रेरित कर ताकि तू जल्दी ही महिमान्वित हो और वे लोग तुझे प्राप्त हों, ताकि तेरा कार्य तेरी इच्छा को पूरा करे, और तेरी योजना शीघ्र ही पूरी हो।" परमेश्वर ताड़ना के ज़रिए लोगों पर विजय प्राप्त नहीं करना चाहता, वह हमेशा लोगों की नाक

में नकेल डालकर उनका मार्गदर्शन नहीं करना चाहता। वह चाहता है कि लोग उसके वचनों का पालन करें और अनुशासित तरीके से काम करें, और इसके ज़रिए उसकी इच्छा को संतुष्ट करें। लेकिन लोगों में कोई शर्म नहीं है और वे लगातार उसके विरुद्ध विद्रोह करते रहते हैं। मेरा मानना है कि हमारे लिए सबसे अच्छा यही है कि हम उसे संतुष्ट करने के लिए सबसे आसान तरीका ढूँढें, यानी उसकी सारी व्यवस्थाओं का पालन करें। अगर तुम वाकई इसे प्राप्त कर सको, तो तुम्हें पूर्ण बनाया जाएगा। क्या यह आसान और आनंददायक बात नहीं है? उस मार्ग पर चलो जिस पर तुम्हें चलना चाहिए; दूसरों की बातों पर ध्यान मत दो, और बहुत अधिक मत सोचो। क्या तुम्हारा भविष्य और तुम्हारी नियति तुम्हारे अपने हाथों में है? तुम हमेशा बच निकलने का प्रयास करते हो, सांसारिक मार्ग अपनाना चाहते हो—लेकिन तुम निकल क्यों नहीं पाते? तुम बरसों से चौराहे पर आकर डगमगा क्यों जाते हो और एक बार फिर उसी मार्ग को चुन लेते हो? बरसों तक भटकने के बाद, न चाहते हुए भी तुम इसी घर में क्यों लौट आए? क्या यह तुम पर निर्भर है? जो इस प्रवाह में हैं उनके लिए, अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास न हो, तो यह सुनो: अगर तुम छोड़ने की योजना बना रहे हो, तो देखो क्या परमेश्वर तुम्हें छोड़ने देता है, देखो कि पवित्र आत्मा तुम्हें किस तरह प्रेरित करता है—इसे तुम स्वयं अनुभव करो। साफ कहूँ तो, अगर तुम पर कोई विपत्ति भी आए, तो भी तुम्हें उसे इसी प्रवाह में झेल लेना चाहिए, और अगर कोई कष्ट है, तो तुम्हें उसे आज यहीं सह लेना चाहिए; तुम कहीं और नहीं जा सकते। क्या यह बात तुम्हें स्पष्ट हो गयी? तुम कहाँ जाओगे? यह परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञा है। क्या तुम्हें लगता है कि परमेश्वर द्वारा इस समूह के लोगों का चयन कोई मायने नहीं रखता? परमेश्वर आज अपने काम में, आसानी से नाराज़ नहीं होता, लेकिन अगर लोग उसके काम में व्यवधान डालने की कोशिश करें, तो उसका चेहरा तुरंत बदल जाता है, चमकदार से अंधकारमय हो जाता है। तो तुम्हें मेरी सलाह है कि तुम शांत होकर परमेश्वर के इरादों के प्रति समर्पित हो जाओ और उसे तुम्हें पूर्ण करने दो। ऐसा करने वाले लोग ही कुशाग्र होते हैं।

मार्ग... (8)

जब से परमेश्वर मानवजाति से बातचीत करने और लोगों के साथ रहने के लिए आया है, तब से केवल एक या दो दिनों ही नहीं हुए हैं। शायद इस समय के दौरान, लोग परमेश्वर का अच्छा ज्ञान प्राप्त करते हों, और शायद वे परमेश्वर की सेवा करने के बारे में कुछ अंतर्ज्ञान से अधिक प्राप्त करते हों, और वे परमेश्वर

पर अपने विश्वास में पक्के हो चुके हों। स्थिति चाहे जो भी हो, लोग कमोबेश परमेश्वर के स्वभाव को समझते हैं, और वे अपने स्वभाव को असंख्य तरीकों से व्यक्त भी करते हैं। जिस तरीके से मैं देखता हूँ, परमेश्वर द्वारा उदाहरण के रूप में उपयोग करने के लिए लोगों की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ पर्याप्त हैं, और संदर्भ के रूप में उपयोग करने के लिए उनकी मानसिक क्रियाएँ पर्याप्त हैं। यह मानवजाति और परमेश्वर के बीच सहयोग का एक पहलू हो सकता है, जिससे मनुष्य बेख़बर है, जिससे परमेश्वर द्वारा निर्देशित यह प्रदर्शन बेहद स्पष्ट और जीवंत बन जाता है। इस नाटक के सामान्य निर्देशक के रूप में मैं ये बातें अपने भाई-बहनों से कह रहा हूँ—इसका अभिनय करने के बाद हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों और अपनी भावनाओं के साथ बात कर सकता है, और इस पर चर्चा कर सकता है कि इस नाटक में हम में से प्रत्येक अपने जीवन को कैसे अनुभव करता है। अपने दिल को खोलकर अपनी प्रदर्शन कला के बारे में बात करने के लिए, और यह देखने के लिए कि परमेश्वर कैसे प्रत्येक व्यक्ति का मार्गदर्शन करता है, हमें भी एक बिल्कुल नए प्रकार की संगोष्ठी मिल सकती है, ताकि अपने अगले प्रस्तुतिकरण में हम अपनी कला के एक उच्च स्तर को अभिव्यक्त कर सकें और प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका को अधिकतम संभव हद तक निभा सके, और परमेश्वर को निराश न करे। मुझे उम्मीद है कि मेरे भाई-बहन इसे गंभीरता से लेंगे। किसी को भी इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि किसी भी भूमिका को एक या दो दिनों में अच्छी तरह से नहीं निभाया जा सकता; इसके लिए आवश्यक है कि हम जीवन का अनुभव करें और लंबे समय तक अपने वास्तविक जीवन की गहराई तक जाएँ, और विभिन्न प्रकार के जीवन का व्यावहारिक अनुभव करें। केवल तब ही हम मंच पर जा सकते हैं। मैं अपने भाई-बहनों के लिए आशा से भरा हुआ हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम लोग निराश या हतोत्साहित नहीं होगे, परमेश्वर चाहे कुछ भी क्यों न करे, तुम लोग आग के एक मटके की तरह होगे: तुम लोगों की गर्मी कभी कम नहीं होगी और तुम लोग अंत तक डटे रहोगे, जब तक कि परमेश्वर का कार्य पूरी तरह प्रकट न हो जाए, जब तक कि उस नाटक का जिसका निर्देशन परमेश्वर करता है, अंतिम निष्कर्ष न निकल आए। मैं तुम लोगों से कोई दूसरी अपेक्षा नहीं करता हूँ। मैं केवल यही आशा करता हूँ कि तुम लोग दृढ़ रहोगे, कि तुम लोग परिणामों के लिए अधीन नहीं होगे, कि तुम मेरे साथ सहयोग करो ताकि जो काम मुझे करना चाहिए वह अच्छी तरह से किया जाए, और कोई भी इसमें रुकावटें या गड़बड़ियाँ पैदा न करे। जब काम का यह भाग पूरा हो जाएगा, तो परमेश्वर तुम लोगों के समक्ष सब कुछ प्रकट कर देगा। मेरा कार्य पूरा हो जाने के बाद, मैं परमेश्वर को ब्यौरा देने के लिए उसके समक्ष

तुम लोगों की साख प्रस्तुत करूँगा। क्या यह बेहतर नहीं है? अपने लक्ष्यों को हासिल करने में एक दूसरे की सहायता करना—क्या यह हर एक के लिए परिपूर्ण समाधान नहीं है? अब कठिन समय है ऐसा समय जिसके लिए तुम लोगों को क़ीमत चुकाने की आवश्यकता है। क्योंकि अब मैं निर्देशक हूँ, इसलिए मुझे आशा है कि तुम लोगों में से कोई भी खीजा हुआ नहीं है। मैं जिस कार्य को कर रहा हूँ वह ऐसा ही है। शायद, एक दिन, मैं एक अधिक उपयुक्त "कार्य इकाई" में चला जाऊँगा और तुम लोगों के लिए चीज़ों को और मुश्किल नहीं बनाऊँगा। मैं तुम लोगों को वह दिखाऊँगा जिसे तुम देखना चाहते हो और वह प्रदान करूँगा जिसे तुम लोग सुनना चाहते हो। लेकिन अभी नहीं। आज के लिए यही कार्य है, और मैं तुम लोगों को खुली छूट नहीं दे सकता और तुम लोगों को मनमानी करने की अनुमति नहीं दे सकता हूँ। यह मेरे कार्य को कठिन बना देगा; ईमानदारी से कहूँ, तो इससे कोई फल प्राप्त नहीं होगा और यह तुम लोगों के लिए लाभकारी नहीं होगा। इसलिए आज, तुम लोगों को "अन्याय" सहना चाहिए। जब वह दिन आएगा, और मेरे कार्य का यह चरण पूरा हो जाएगा, तो मैं मुक्त हो जाऊँगा, मैं ऐसे भारी बोझ को वहन नहीं करूँगा, और तुम लोग जो कुछ भी मुझसे माँगोगे मैं उसे स्वीकार करूँगा; जब तक यह तुम लोगों के जीवन के लिए लाभकारी रहेगा, तब तक तुम जो कुछ माँगोगे मैं उसे पूरा करूँगा। आज, मैंने अब एक भारी ज़िम्मेदारी उठा ली है। मैं परमपिता परमेश्वर के आदेशों के विरूद्ध नहीं जा सकता, और मैं अपने कार्य की योजनाओं में बाधा नहीं डाल सकता। मैं अपने कारोबारी मामलों के माध्यम से अपने व्यक्तिगत मामलों को प्रबंधित नहीं कर सकता—और मुझे आशा है कि तुम सभी लोग समझ सकते हो और मुझे क्षमा कर सकते हो, क्योंकि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह परमपिता परमेश्वर की इच्छाओं के अनुसार होता है; मैं वही करता हूँ जो वह मुझसे करवाता है, चाहे वह जो कुछ भी क्यों न चाहता हो, और मैं उसके क्रोध या कोप को नहीं उकसाऊँगा। मैं केवल वही करता हूँ जो मुझे करना चाहिए। इसलिए, परमपिता परमेश्वर की ओर से, मैं तुम लोगों को सलाह देता हूँ कि कुछ दिन और सहन कर लो। किसी को भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। जब मैं वह पूरा कर लूँगा जो मुझे करना चाहिए, उसके बाद तुम लोग जो चाहे कर सकते हो और जो भी चाहे देख सकते हो—लेकिन मुझे उस कार्य को पूरा करना होगा जिसे मुझे पूरा करने की ज़रूरत है।

कार्य के इस चरण में हमसे परम आस्था और प्रेम की अपेक्षा की जाती है। थोड़ी-सी लापरवाही से हम लड़खड़ा सकते हैं, क्योंकि कार्य का यह चरण पिछले सभी चरणों से अलग है : परमेश्वर मानवजाति

की आस्था को पूर्ण कर रहा है—जो कि अदृश्य और अमूर्त दोनों है। इस चरण में परमेश्वर वचनों को आस्था में, प्रेम में और जीवन में परिवर्तित करता है। लोगों को उस बिंदु तक पहुँचने की आवश्यकता है जहाँ वे सैकड़ों बार शुद्धिकरणों का सामना कर चुके हैं और अय्यूब से भी ज़्यादा आस्था रखते हैं। किसी भी समय परमेश्वर से दूर जाए बिना उन्हें अविश्वसनीय पीड़ा और सभी प्रकार की यातनाओं को सहना आवश्यक है। जब वे मृत्यु तक आज्ञाकारी रहते हैं, और परमेश्वर में अत्यंत विश्वास रखते हैं, तो परमेश्वर के कार्य का यह चरण पूरा हो जाता है। यही वह कार्य है जिसकी ज़िम्मेदारी मैंने उठाई है, इसलिए मुझे आशा है कि मेरे भाई-बहन मेरी कठिनाइयों को समझेंगे, और मुझसे किसी और चीज़ की याचना नहीं करेंगे। यह परमपिता परमेश्वर की मुझसे अपेक्षा है और मैं इस वास्तविकता से भाग नहीं सकता हूँ; मुझे वह काम करना ही होगा जो मुझे करना चाहिए। मुझे बस यही आशा है कि तुम लोग जबरदस्ती की बहस और विकृत तर्क नहीं करोगे, तुम अधिक अंतर्दृष्टि वाले होगे, और मुद्दों को बहुत सरल के रूप में नहीं देखोगे। तुम लोगों की सोच बहुत बचकाना है, बहुत अनुभवहीन है। परमेश्वर का कार्य उतना सरल नहीं है जितना तुम लोग कल्पना करते हो, वह मनमर्ज़ी से कुछ भी यूँ ही नहीं करता; अगर वह ऐसा करता, तो उसकी योजना तहस-नहस हो जाती। क्या तुम लोग ऐसा नहीं कहते हो? मैं परमेश्वर का कार्य कर रहा हूँ। मैं सिर्फ़ लोगों के लिए असंगत काम नहीं कर रहा हूँ, जो चाहा वह कर दिया और व्यक्तिगत तौर पर निर्णय ले लिया कि मैं कुछ करूँ या न करूँ। आज चीज़ें इतनी आसान नहीं है। मुझे निर्देशक के रूप में कार्य करने के लिए परमपिता द्वारा भेजा गया है—क्या तुम लोगों को लगता है कि मैंने स्वयं इसकी व्यवस्था की और इसे चुना है? लोगों की सोच का झुकाव प्रायः परमेश्वर के कार्य में बाधा डालने की ओर होता है, यही वजह है कि, मेरे कुछ अवधि तक कार्य करने के बाद, लोग मुझसे कई अनुरोध करते हैं जिन्हें मैं पूरा नहीं कर सकता, और लोग मेरे बारे में अपना मन बदल लेते हैं। तुम सभी को अपने इन मतों के बारे में स्पष्ट हो जाना चाहिए; मैं उनमें से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से उठाने नहीं जा रहा हूँ, मैं केवल उस कार्य को ही समझा सकता हूँ जो मैं करता हूँ। इससे मेरी भावनाओं को बिल्कुल भी चोट नहीं पहुँचती है। एक बार तुम लोग इस बात को समझ लो, तो तुम लोग इसे जैसे चाहे देख सकते हो। मैं कोई भी आपत्ति नहीं करूँगा, क्योंकि परमेश्वर इसी तरह कार्य करता है; मैं यह सब समझाने के लिए बाध्य नहीं हूँ। मैं सिर्फ़ वचनों के कार्य को करने के लिए आया हूँ, वचनों के निर्देशन के माध्यम से कार्य करने और इस नाटक को खेलने देने के लिए आया हूँ। मुझे अन्य कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, ना ही मैं और कुछ कर सकता हूँ।

मुझे जो कुछ भी कहना था वह सब कुछ मैं समझा चुका हूँ, तुम लोग क्या सोचते हो इसकी मुझे परवाह नहीं है, और इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता है। लेकिन मैं तब भी तुम लोगों को याद दिलाना चाहूँगा कि परमेश्वर का कार्य उतना सरल नहीं है जितना तुम लोग कल्पना करते हो। लोगों की अवधारणाओं के साथ जितना कम यह मेल खाता है इसके मायने उतने ही गहरे होते हैं; और लोगों की अवधारणाओं के साथ जितना अधिक यह मेल खाता है, जितना ही कम मूल्यवान होता है, इसके वास्तविक मायने उतने ही कम होते हैं। इन वचनों पर ध्यान से विचार करो—मैं इसके बारे में केवल इतना ही कहूँगा। बाकी का विश्लेषण तुम लोग स्वयं कर सकते हो। मैं इसे नहीं समझाऊँगा।

लोग सोचते हैं कि परमेश्वर चीज़ों को एक निश्चित तरीके से करता है, लेकिन पिछले साल के दौरान, परमेश्वर के कार्य के बारे में जो हमने देखा है और जो अनुभव किया है क्या वह वास्तव में मानवीय धारणों के अनुरूप रहा है? दुनिया के सृजन से लेकर अब तक, एक भी व्यक्ति परमेश्वर के कार्यों के चरणों या उसके नियमों को समझ नहीं पाया है। यदि वे समझ सकते, तो ऐसा क्यों है कि धार्मिक नेता यह नहीं समझते हैं कि परमेश्वर आज इसी तरह से कार्य करता है? ऐसा क्यों है कि बहुत थोड़े से लोग आज की वास्तविकता को समझते हैं? इससे हम देख सकते हैं कि कोई भी परमेश्वर के कार्य को नहीं समझता है। लोगों को केवल उसके आत्मा के मार्गदर्शन के अनुसार ही कार्य करना चाहिए; उन्हें उसके कार्य पर नियमों को सख्ती से लागू नहीं करना चाहिए। यदि तुम यीशु की छवि और कार्य को लो और परमेश्वर के वर्तमान कार्य के साथ इसकी तुलना करो, तो यह ठीक ऐसा ही होगा जैसे कि यहूदी लोग यीशु की तुलना यहोवा से करने की कोशिश कर रहे हों। क्या ऐसा करके तुम नष्ट नहीं होते हो? यहाँ तक कि यीशु को भी नहीं पता था कि अंत के दिनों में परमेश्वर का कार्य क्या होगा; वह केवल इतना ही जानता था कि उसे सलीब पर चढ़ने के कार्य को पूरा करना है। तो तो दूसरों को कैसे पता चल सकता था? उन्हें कैसे पता हो सकता था कि भविष्य में परमेश्वर क्या करने जा रहा है? परमेश्वर मनुष्यों के सामने अपनी योजना का खुलासा कैसे कर सकता था, जिन पर शैतान ने कब्ज़ा किया हुआ है? क्या यह मूर्खतापूर्ण नहीं है? परमेश्वर अपेक्षा करता है कि तुम उसकी इच्छा को जानो और समझो। वह यह अपेक्षा नहीं करता है कि तुम उसके भविष्य के कार्य पर विचार करो। हमें बस परमेश्वर में आस्था रखने की, उसके मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करने की, वास्तविक कठिनाइयों को सँभालने में व्यवहारिक होने की, और परमेश्वर के लिए चीज़ों को मुश्किल नहीं बनाने या उसके लिए परेशानी पैदा नहीं करने के बारे में चिंतित होने की ज़रूरत

है। हमें वही करना चाहिए जो हमें करना है; अगर हम परमेश्वर के वर्तमान कार्य के भीतर उपस्थित रह सकते हैं, तो इतना पर्याप्त है! यही वह राह है जिस पर मैं तुम लोगों का मार्गदर्शन करता हूँ। यदि हम केवल आगे बढ़ना जारी रखने पर एकाग्र रहते हैं, तो परमेश्वर हम में से किसी के साथ भी बुरा बर्ताव नहीं करेगा। अपने पिछले वर्ष के असाधारण अनुभवों के दौरान, तुमने बहुत-सी चीज़ें प्राप्त की हैं; मुझे यकीन है कि तुम लोगों को यह इतनी कठिन नहीं लगेगी। मैं तुम लोगों को अपने कार्य और ध्येय के मार्ग पर ले जा रहा हूँ, और इसे परमेश्वर द्वारा बहुत पहले ही इस तरह से नियत कर दिया गया था कि हमारा आज के दिन तक इतनी दूर तक आना पूर्वनियत था। हम ऐसा करने में सक्षम रहे हैं यह हम पर महान आशीष है, यद्यपि यह एक निर्बाध राह नहीं रही है, किन्तु हमारी मित्रता शाश्वत है, और यह युग-युगांतर तक चलेगी। चाहे जयकार और हँसी रही हो या उदासी और आँसू रहे हों, इस सब को एक सुंदर याद बनने दो! तुम लोगों को शायद पता होगा कि मेरा कार्य समाप्त होने वाला है। मेरे पास कई कार्य परियोजनाएँ हैं, और मैं अक्सर तुम लोगों का साथ नहीं दे सकता। मुझे आशा है कि तुम लोग मुझे समझ सकते हो—क्योंकि हमारी मूल दोस्ती बदली नहीं है। हो सकता है कि एक दिन मैं तुम लोगों के सामने एक बार फिर से प्रकट हो जाऊँ, और मुझे आशा है कि तुम लोग मेरे लिए चीज़ों को मुश्किल नहीं बनाओगे। आखिरकार, मैं तुम लोगों से भिन्न हूँ। मैं अपने कार्य के लिए चारों तरफ़ यात्रा करता हूँ, और मैं अपना जीवन होटलों में समय व्यर्थ करके नहीं बिताता हूँ। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम लोग कैसे हो, मैं सिर्फ़ वही करता हूँ जो मुझे करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि अतीत में हमने जिन चीज़ों को साझा किया था वे हमारी दोस्ती का पुष्प बनेंगी।

ऐसा कहा जा सकता है कि यह राह मेरे द्वारा खोली गई थी, और चाहे यह कड़वी रही हो या मीठी, मैंने राह दिखाई है। अगर आज हम यहाँ तक पहुँच पाए हैं, तो यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह के कारण है। कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो मुझे धन्यवाद दें, और कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो मेरे बारे में शिकायत करें—लेकिन इनमें से कुछ भी मायने नहीं रखता है। मैं बस यह देखना चाहता हूँ कि लोगों के इस समूह में जो हासिल किया जाना चाहिए उसे हासिल कर लिया गया है। इसी का उत्सव मनाया जाना चाहिए। इसलिए, जो मेरे खिलाफ़ शिकायत करते हैं, उनसे मुझे कोई द्वेष नहीं है; मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि जितनी जल्दी हो सके मैं अपना कार्य पूरा करूँ ताकि परमेश्वर का दिल यथाशीघ्र विश्राम कर सके। उस समय मैं किसी भारी बोझ का वहन नहीं करूँगा, और परमेश्वर के दिल में कोई भी चिंता नहीं होगी। क्या

तुम लोग अपना सहयोग बेहतर बनाने को तैयार हो? क्या परमेश्वर के कार्य को अच्छी तरह से करने का लक्ष्य रखना बेहतर नहीं है? इस अवधि में, यह कहना उचित है कि हमने असंख्य कठिनाइयों को सहा है और हर तरह के सुखों और दुःखों का अनुभव किया है। कुल मिलाकर, तुम लोगों में से प्रत्येक के प्रदर्शन ने मूलत: दर्जा बना लिया है। शायद, भविष्य में तुम लोगों से बेहतर कार्य की अपेक्षा की जाएगी, परन्तु मेरे ही विचारों पर न ठहर जाना; बस वही करना जो तुम लोगों को करना चाहिए। मुझे जो करना है मैं लगभग वहाँ पहुँच चुका हूँ; मुझे आशा है कि तुम लोग हमेशा वफ़ादार रहोगे, और तुम लोग मेरे कार्य को याद करके उदासीन नहीं होगे। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि मैं कार्य का केवल एक चरण पूरा करने के लिए आया हूँ, और निश्चित रूप से परमेश्वर का समस्त कार्य करने के लिए नहीं। तुम लोगों को इस बारे में स्पष्ट हो जाना चाहिए, और इसके बारे में कोई अन्य मत नहीं रखना चाहिए। परमेश्वर के कार्य को पूरा करने के लिए और भी साधन आवश्यक हैं; तुम लोग हमेशा मुझ पर निर्भर नहीं रह सकते। हो सकता है कि तुम लोगों ने बहुत पहले ही यह एहसास कर लिया हो कि मैं कार्य के केवल एक हिस्से को पूरा करने के लिए आया हूँ; वह जो यहोवा या यीशु का प्रतिनिधित्व नहीं करता; परमेश्वर का कार्य कई चरणों में विभाजित है, इसलिए तुम लोगों को ज़्यादा कठोर नहीं होना चाहिए। जब मैं कार्य कर रहा हूँ तो तुम लोगों को मेरी बात सुननी चाहिए। प्रत्येक युग में, परमेश्वर का कार्य बदलता रहता है; यह एक समान नहीं रहता, और हर बार यह वही पुराना गीत नहीं होता। और प्रत्येक चरण में उसका कार्य युग के उपयुक्त होता है, और इसलिए बदल जाता है क्योंकि युग वही नहीं रहता है। और इसलिए, चूँकि तुम इस युग में पैदा हुए हो, तुम्हें परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना चाहिए, और इन वचनों को पढ़ना चाहिए। एक दिन ऐसा आ सकता है जब मेरा कार्य बदल सकता है, ऐसे मामले में तुम लोगों को उसके अनुसार आगे जारी रखना चाहिए जो तुम लोगों को करना चाहिए; परमेश्वर का कार्य ग़लत नहीं हो सकता है। इस बात पर कोई ध्यान मत दो कि बाहरी दुनिया कैसे बदलती है; परमेश्वर ग़लत नहीं हो सकता और उसका कार्य ग़लत नहीं हो सकता। बात बस इतनी ही है कि कभी-कभी परमेश्वर का पुराना कार्य गायब हो जाता है और उसका नया कार्य शुरू हो जाता है। हालाँकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि क्योंकि नया कार्य आ गया है, इसलिए पुराना कार्य ग़लत है। यह एक भ्रम है! परमेश्वर के कार्य को सही या ग़लत नहीं कहा जा सकता, इसे बस पहले का या बाद का ही कहा जा सकता है। परमेश्वर में लोगों के विश्वास के लिए यही मार्गदर्शन है और इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए।

विश्वासियों को क्या दृष्टिकोण रखना चाहिए

परमेश्वर में विश्वास करना शुरू करने के बाद से मनुष्य ने क्या पाया है? तुमने परमेश्वर के बारे में क्या जाना है? परमेश्वर में अपने विश्वास के कारण तुममें कितना बदलाव आया है? अब तुम सभी यह जानते हो कि परमेश्वर में मनुष्य का विश्वास सिर्फ़ आत्मा की मुक्ति और देह के कल्याण के लिए ही नहीं है, और न ही यह उसके जीवन को परमेश्वर को प्रेम करने के माध्यम से समृद्ध बनाने इत्यादि के लिए है। अपनी वर्तमान स्थिति में जैसा तुम्हारा प्रेम है, यदि तुम परमेश्वर को देह के कल्याण के लिए या क्षणिक आनंद के लिए प्रेम करते हो, तो भले ही, अंत में, परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम अपने शिखर पर पहुँच जाए और तुम इससे ज़्यादा और कुछ भी ना माँगो, तुम्हारे द्वारा खोजा जाने वाला यह प्रेम अशुद्ध प्रेम ही है, और यह परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला प्रेम नहीं है। वे लोग जो परमेश्वर के प्रति प्रेम का उपयोग अपने नीरस जीवन को समृद्ध बनाने और अपने हृदय के खालीपन को भरने के लिए करते हैं, ये वे हैं जिन्हें अपना जीवन आसानी से जीने का लालच है, ना कि वे जो सच में परमेश्वर को प्रेम करना चाहते हैं। इस प्रकार का प्रेम जबरन होता है, यह मानसिक संतुष्टि की खोज में किया जाता है, और परमेश्वर को इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। तो फिर, तुम्हारा प्रेम कैसा है? तुम परमेश्वर को किस लिए प्रेम करते हो? इस समय तुम्हारे भीतर परमेश्वर के लिए कितना सच्चा प्रेम है? तुम लोगों में से अधिकांश का प्रेम वैसा ही है जिसका पहले ज़िक्र किया गया था। इस प्रकार का प्रेम सिर्फ़ यथास्थिति को बरकरार रख सकता है; अनन्त स्थिरता को प्राप्त नहीं कर सकता, न ही मनुष्य में जड़ें जमा सकता है। इस प्रकार का प्रेम सिर्फ़ एक ऐसे फूल की तरह है जो खिलता है पर फल दिए बिना ही मुरझा जाता है। दूसरे शब्दों में, एक बार जब तुमने परमेश्वर को इस तरीके से प्रेम कर लिया और यदि तुम्हें इस मार्ग पर आगे ले जाने वाला कोई नहीं है, तो तुम्हारा पतन हो जाएगा। यदि तुम परमेश्वर को सिर्फ़ परमेश्वर को प्रेम करने के समय ही प्रेम कर सकते हो लेकिन उसके बाद तुम्हारे जीवन की प्रकृति में कोई बदलाव नहीं आता, तो फिर तुम अंधकार के प्रभाव से बचकर नहीं निकल पाओगे, और शैतान के बंधन और चालबाज़ी से खुद को मुक्त नहीं कर पाओगे। ऐसा कोई भी मनुष्य परमेश्वर को पूरी तरह से प्राप्त नहीं हो सकता; आखिरकार, उसकी आत्मा, प्राण, और शरीर शैतान के ही रहेंगे। यह असंदिग्ध है। वे सभी जो पूरी तरह से परमेश्वर को प्राप्त नहीं हो पाएँगे, अपने मूल स्थान अर्थात वापस शैतान के पास लौट जाएँगे, और वे परमेश्वर के दंड के अगले चरण को स्वीकार करने के लिये, उस झील में जायेंगे जो आग और गंधकाश्म से जलती रहती है। परमेश्वर को वे प्राप्त होते हैं, जो

शैतान को त्याग देते हैं और उसके अधिकार क्षेत्र से बच निकलते हैं। उन्हें राज्य के लोगों में आधिकारिक रूप से गिना जाता है। इस तरह से राज्य के लोग अस्तित्व में आते हैं। क्या तुम इस प्रकार के व्यक्ति बनना चाहते हो? क्या तुम परमेश्वर को प्राप्त होना चाहते हो? क्या तुम शैतान के अधिकार क्षेत्र से बचना और वापस परमेश्वर के पास जाना चाहते हो? क्या तुम अब शैतान के हो या तुम राज्य के लोगों में गिने जाते हो? ये चीज़ें पहले से स्पष्ट होनी चाहिए और आगे किसी भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए।

अतीत में, अनेक लोगों ने घोर महत्वाकांक्षा और धारणाओं के साथ परमेश्वर की तलाश की, उनकी तलाश उनकी अपनी आशाओं के अनुरूप थी। इस समय ऐसे मुद्दों को एक तरफ़ रख देते हैं। इस समय सबसे महत्वपूर्ण है, अभ्यास का ऐसा तरीका खोजना जो तुम लोगों में से प्रत्येक को परमेश्वर के सम्मुख सामान्य स्थिति बनाये रखने और धीरे-धीरे शैतान के प्रभाव की बेड़ियों को तोड़ डालने में सक्षम करे, ताकि तुम लोग परमेश्वर को प्राप्त हो सको और पृथ्वी पर वैसे जियो जैसे परमेश्वर तुमसे चाहता है। केवल इसी तरीके से तुम परमेश्वर के प्रयोजनों को पूरा कर सकते हो। परमेश्वर में विश्वास तो बहुत से लोग करते हैं, फिर भी वे न तो यह जानते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है और न ही यह कि शैतान क्या चाहता है। वे बस दूसरों का अंधानुकरण करते हुए मूर्खतापूर्ण और उलझन भरे तरीके से विश्वास करते हैं, और इसलिए वे कभी एक सामान्य ईसाई जीवन नहीं जी सके हैं; इससे अधिक क्या कहा जाए कि उनके व्यक्तिगत संबंध तक कभी सामान्य नहीं रहे होते, जोकि परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध होने से कहीं छोटी बात है। इससे यह देखा जा सकता है कि मनुष्य की समस्याएँ और कमियाँ, और ऐसे दूसरे कारण जो परमेश्वर की इच्छा के आड़े आते हैं, अनेक हैं। यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि मनुष्य अभी तक परमेश्वर में विश्वास करने के सही रास्ते पर नहीं आया है, न ही उसने मानव जीवन के वास्तविक अनुभव में प्रवेश किया है। तो परमेश्वर में विश्वास करने के सही रास्ते पर आने का क्या अर्थ है? सही रास्ते पर आने का अर्थ है कि तुम हर वक़्त परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत रख सकते हो और परमेश्वर के साथ सामान्य रूप से संवाद कर सकते हो, इससे तुम्हें धीरे-धीरे यह पता लगने लगेगा कि मनुष्य में क्या कमी है और परमेश्वर के विषय में गहन ज्ञान होने लगेगा। इसके द्वारा तुम्हारी आत्मा को प्रतिदिन नई अंतर्दृष्टि और प्रबुद्धता प्राप्त होती है; तुम्हारी लालसा बढ़ती है और तुम सत्य में प्रवेश करने की कोशिश करने लगते हो और हर दिन नया प्रकाश और नई समझ लेकर आता है। इस रास्ते के द्वारा, धीरे-धीरे तुम शैतान के प्रभाव से मुक्त होते जाते हो, और अपने जीवन में विकास करने लगते हो। ऐसे लोग सही रास्ते पर आ चुके हैं। अपने

वास्तविक अनुभवों का मूल्यांकन करो और तुमने परमेश्वर के विश्वास का जो रास्ता चुना है उसे जाँचो। स्वयं से यह सब पूछो: क्या तुम सही रास्ते पर हो? तुम किन मामलों में शैतान की बेड़ियों और शैतान के प्रभाव से मुक्त हो चुके हो? यदि अभी तुम्हारा सही रास्ते पर आना बाकी है तो शैतान के साथ तुम्हारे संबंध टूटे नहीं हैं। इस तरह, क्या परमेश्वर के प्रेम की इस तलाश का निष्कर्ष एक ऐसे प्रेम के रूप में होगा जो प्रमाणिक, समर्पित, और शुद्ध हो? यदि मामला यह है तो क्या परमेश्वर को प्रेम करने की तुम्हारी तलाश तुम्हें ऐसे प्रेम तक ले जाएगी जो प्रामाणिक, समर्पित और विशुद्ध हो? तुम कहते हो कि परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम दृढ़ और हार्दिक है, फिर भी तुम शैतान की बेड़ियों से अपने आपको मुक्त नहीं कर पाये हो। क्या तुम परमेश्वर को मूर्ख बनाने की कोशिश नहीं कर रहे हो? यदि तुम ऐसी स्थिति प्राप्त करना चाहते हो जहाँ परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम विशुद्ध हो और पूरी तरह परमेश्वर को प्राप्त हो जाना चाहते हो और चाहते हो कि तुम राज्य के लोगों में गिने जाओ, तो तुम्हें पहले खुद को परमेश्वर में विश्वास करने के सही रास्ते पर लेकर आना होगा।

परमेश्वर के कार्य के चरणों के विषय में

बाहर से देखने पर ऐसा लगता है, जैसे कि परमेश्वर के वर्तमान कार्य के चरण पहले ही समाप्त हो चुके हैं और इंसान ने परमेश्वर के वचनों का न्याय, ताड़ना, प्रहार और शुद्धिकरण का अनुभव पहले ही कर लिया है, और वह इन चरणों से सेवाकर्ता के रूप में गुज़र चुका है, ताड़ना के समय के शुद्धिकरण को, मौत के परीक्षण को, विषमताओं के परीक्षणों को, और परमेश्वर को प्रेम करने की अवधि का अनुभव कर चुका है। प्रत्येक चरण के दौरान भयंकर मुश्किलों को जो झेलकर भी, लोग परमेश्वर की इच्छा के प्रति अनजान बने रहते हैं। मिसाल के तौर पर, सेवाकर्ता के परीक्षण पर विचार कीजिये : वे अभी भी इस बात पर स्पष्ट नहीं हैं कि उन्होंने क्या पाया, क्या जाना, और परमेश्वर कौन-सा प्रभाव प्राप्त करना चाहता था। परमेश्वर के कार्य की गति को देखते हुए, इंसान आज की गति के अनुसार चल पाने में पूरी तरह से अक्षम दिखायी देता है। यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर इंसान के सामने पहले अपने कार्य के इन चरणों को प्रकट करता है, और किसी भी चरण के स्तर को, जो कि इंसान के लिए कल्पनीय है, अनिवार्यत: हासिल करने के बजाय, वह एक समस्या पर प्रकाश डाल रहा है। परमेश्वर के लिए किसी इंसान को पूर्ण करने के वास्ते, ताकि उसे सचमुच परमेश्वर के द्वारा प्राप्त किया जा सके, परमेश्वर को ऊपर के सभी चरणों को पूरा

करना चाहिए। इस कार्य को करने का लक्ष्य यह दिखाना है कि लोगों के एक समूह को पूर्ण करने के लिए परमेश्वर को किन चरणों को पूरा करना है। इस प्रकार, बाहर से देखने पर, परमेश्वर के कार्य के चरण पूरे हो चुके हैं—लेकिन मूलतः, उसने आधिकारिक रूप से इंसान को पूर्ण बनाना अभी शुरू ही किया है। लोगों को इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए : ये उसके कार्य के चरण हैं जो पूरे हुए हैं, लेकिन कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है। फिर भी लोगों की धारणा यह है कि परमेश्वर के कार्य के सारे चरण इंसान के सामने प्रकट किए जा चुके हैं, और इसलिए इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता कि परमेश्वर का कार्य समाप्त हो चुका है। चीज़ों को इस तरह से देखना पूरी तरह से गलत है। परमेश्वर का कार्य इंसान की धारणाओं के विपरीत चलता है और ऐसी धारणाओं पर हर तरह से पलटकर प्रहार करता है; परमेश्वर के कार्य के चरण, विशेष रूप से, इंसान की धारणाओं के प्रतिकूल होते हैं। ये सब परमेश्वर की बुद्धि को दर्शाते हैं। यह समझा जा सकता है कि इंसान की धारणाएँ हर मोड़ पर व्यवधान पैदा करती हैं, और इंसान जो कुछ कल्पना करता है, परमेश्वर उस पर पलटकर प्रहार करता है, जो वास्तविक अनुभवों के दौरान स्पष्ट हो जाता है। हर व्यक्ति यही सोचता है कि परमेश्वर बहुत तेज़ी से कार्य करता है, और इससे पहले कि कोई इसे जान पाए, इसकी समझ प्राप्त कर पाए, जब वह अभी उलझन की स्थिति में ही होता है तभी परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाता है। उसके कार्य के हर चरण में यही होता है। अधिकतर लोगों का मानना है कि परमेश्वर लोगों के साथ खिलवाड़ कर रहा है—लेकिन उसके कार्य की नीयत यह नहीं है। उसके कार्य का तरीका चिंतन-मनन वाला है : पहले जैसे चीज़ों पर एक सरसरी नज़र डालना, फिर उनके विस्तार में जाना, और उसके बाद उस विस्तार का परिष्करण करना—इससे लोग चकित रह जाते हैं। लोग परमेश्वर को यह सोचकर बेवकूफ बनाने का प्रयास करते हैं कि अगर वे किसी तरह एक निश्चित मुकाम पर पहुँच सकें, तो परमेश्वर संतुष्ट हो जाएगा। हकीकत में, परमेश्वर इंसान के बस किसी तरह कार्य करने के प्रयास से संभवत: संतुष्ट कैसे हो सकता है? इष्टतम प्रभाव हासिल करने के लिए, परमेश्वर लोगों को चकित करके, जब वे बेखबर हों तब उन पर प्रहार करके कार्य करता है; इससे उन्हें परमेश्वर की बुद्धि के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त होता है, और उसकी धार्मिकता, प्रताप और अपमान न किए जा सकने योग्य स्वभाव की अधिक समझ प्राप्त होती है।

आज, परमेश्वर ने आधिकारिक रूप से इंसान को पूर्ण करने का कार्य आरंभ कर दिया है। पूर्ण बनाए जाने के लिए, लोगों को उसके वचनों के प्रकाशन, न्याय और ताड़ना से गुज़रना होगा, उन्हें उसके वचनों

के परीक्षणों और शुद्धिकरण का अनुभव करना होगा (जैसे सेवाकर्ताओं के परीक्षण), और उन्हें मृत्यु के परीक्षणों को सहन करने योग्य बनना होगा। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के न्याय, ताड़ना और परीक्षणों के मध्य, जो लोग सचमुच परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हैं, वही अपने दिल की गहराइयों से परमेश्वर की स्तुति कर पाते हैं, पूरी तरह से परमेश्वर का आज्ञापालन कर पाते हैं और स्वयं का त्याग कर पाते हैं, इस तरह वे लोग परमेश्वर को सच्चे, पूरे और शुद्ध हृदय से प्रेम करते हैं; ऐसा व्यक्ति पूर्ण होता है, और ठीक यही काम परमेश्वर करना चाहता है, और इसी काम को वह करेगा। लोगों को उस तरीके के विषय में तुरंत निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए जिस तरीके से परमेश्वर कार्य करता है। उन्हें केवल जीवन में प्रवेश का अनुशीलन करना चाहिए। यही मूलभूत है। परमेश्वर के कार्य के तरीके की निरंतर जाँच न करो; इससे तुम्हारे ही भविष्य की संभावनाओं में बाधा पहुँचेगी। तुमने परमेश्वर के कार्य करने के तरीके को कितना देखा है? तुम कितने आज्ञाकारी रहे हो? तुमने उसके कार्य के हर तरीके से कितना प्राप्त किया है? क्या तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के इच्छुक हो? क्या तुम पूर्ण बनना चाहते हो? तुम लोगों को इन सारी बातों को साफ तौर पर समझना और उनमें प्रवेश करना चाहिए।

भ्रष्ट मनुष्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में अक्षम है

मनुष्य सदा अंधकार के प्रभाव में रहा है, शैतान के प्रभाव की क़ैद में रखा गया है, बचकर निकल भी नहीं पाता, और शैतान के द्वारा संसाधित किए जाने के पश्चात्, उसका स्वभाव उत्तरोत्तर भ्रष्ट होता जाता है। कहा जा सकता है कि मनुष्य सदा ही अपने भ्रष्ट शैतानी स्वभाव के बीच रहा है और परमेश्वर से सच्चे अर्थ में प्रेम करने में असमर्थ है। ऐसे में, यदि मनुष्य परमेश्वर से प्रेम करना चाहता है, तो उसे आत्मदंभ, आत्म-महत्व, अहंकार, मिथ्याभिमान इत्यादि, वह सब कुछ जो शैतान के स्वभाव का है, उतार फेंकना चाहिए। यदि नहीं, तो उसका प्रेम अशुद्ध प्रेम, शैतानी प्रेम, और ऐसा प्रेम है जो कदापि परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त नहीं कर सकता है। पवित्र आत्मा द्वारा प्रत्यक्षतः पूर्ण बनाए, निपटे, तोड़े, काटे-छाँटे, अनुशासित, ताड़ित और शुद्ध किए बिना कोई परमेश्वर से सच्चे अर्थ में प्रेम करने में समर्थ नहीं है। यदि तुम कहो कि तुम्हारे स्वभाव का एक हिस्सा परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है और इसलिए तुम परमेश्वर से सचमुच प्रेम करने में समर्थ हो, तो तुम्हारे शब्द अहंकारी हैं, और तुम हास्यास्पद हो। ऐसे लोग ही महादूत हैं! मनुष्य की जन्मजात प्रकृति परमेश्वर का सीधे प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ है; उसे परमेश्वर की पूर्णता के माध्यम से

अपनी अंतर्जात प्रकृति को त्यागना ही होगा और केवल तभी—परमेश्वर की इच्छा की परवाह करके, परमेश्वर के अभिप्रायों को पूरा करके, और इससे भी आगे पवित्र आत्मा के कार्य से गुज़रकर—वह जो जीता है उसे परमेश्वर द्वारा अनुमोदित किया जा सकता है। देह में रहने वाला कोई भी व्यक्ति सीधे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, जब तक कि वह पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया मनुष्य न हो। हालाँकि, इस तरह के व्यक्ति के लिए भी, यह नहीं कहा जा सकता कि उसका स्वभाव और वह जो जीता है वह पूर्णतः परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है; केवल इतना कहा जा सकता है कि वह जो जीता है वह पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित है। ऐसे मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है।

यद्यपि मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर द्वारा नियत किया जाता है—यह निर्विवाद है और इसे सकारात्मक चीज़ माना जा सकता है—इसे शैतान द्वारा संसाधित किया गया है, और इसलिए मनुष्य का संपूर्ण स्वभाव शैतान का स्वभाव है। कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर का स्वभाव चीज़ों को करने में निष्कपट होना है, और यह उनमें भी स्पष्ट दिखाई देता है, कि उनका चरित्र भी इसी तरह का है, और इसलिए वे कहते हैं कि उनका स्वभाव परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। ये किस प्रकार के लोग हैं? क्या भ्रष्ट शैतानी स्वभाव परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ है? जो कोई भी यह घोषणा करता है कि उनका स्वभाव परमेश्वर का द्योतक है, वह परमेश्वर की ईशनिंदा करता है और पवित्र आत्मा को अपमानित करता है! पवित्र आत्मा जिस पद्धति से कार्य करता है, वह दर्शाता है कि पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य केवल और केवल विजय का कार्य है। इस रूप में, मनुष्य के बहुत-से शैतानी स्वभाव अभी शुद्ध किए जाने हैं, और वह जो जीता है वह अब भी शैतान की छवि है, जिसे मनुष्य अच्छा मानता है, और यह मनुष्य की देह के कर्मों का प्रतिनिधित्व करता है; अधिक सटीक रूप से, यह शैतान का प्रतिनिधित्व करता है, और परमेश्वर का प्रतिनिधित्व बिल्कुल नहीं कर सकता है। यहाँ तक कि यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को पहले ही इस हद तक प्यार करता हो कि वह पृथ्वी पर स्वर्ग के जीवन का आनंद ले पाता हो, ऐसे वक्तव्य दे पाता हो जैसे : "हे परमेश्वर! मैं तुझे जितना भी प्रेम करूँ वह कम है," और उच्चतम क्षेत्र तक पहुँच गया हो, तब भी यह नहीं कहा जा सकता कि वह परमेश्वर को जीता है या परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि मनुष्य का सार परमेश्वर के सार से भिन्न है, और मनुष्य कभी परमेश्वर को जी नहीं सकता, परमेश्वर बन पाना तो दूर की बात है। पवित्र आत्मा ने मनुष्य को जो जीने के लिए निर्देशित किया है, वह मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षा के अनुसार ही है।

शैतान के समस्त कार्य और कर्म मनुष्य में दिखाई देते हैं। आज मनुष्य के समस्त कार्य और कर्म शैतान की अभिव्यक्ति हैं और इसलिए परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं। मनुष्य शैतान का मूर्त रूप है, और मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर के स्वभाव का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ है। कुछ लोग अच्छे चरित्र के होते हैं; परमेश्वर ऐसे लोगों के चरित्र के माध्यम कुछ कार्य कर सकता है, और वे जो कार्य करते हैं, वह पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होता है। फिर भी उनका स्वभाव परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ है। परमेश्वर उनके ऊपर जो कार्य करता है, वह पहले से ही भीतर विद्यमान चीज़ों के साथ कार्य करने और उन्हें बढ़ाने से अधिक कुछ नहीं है। बीते युगों के भविष्यवक्ता हों या परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त लोग हों, कोई भी उसका सीधे प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। लोग केवल परिस्थितियों के दबाव में परमेश्वर से प्रेम करने लगते हैं, और कोई एक भी स्वयं अपनी इच्छा से सहयोग करने को तत्पर नहीं होता है। सकारात्मक चीज़ें क्या हैं? वह सब जो सीधे परमेश्वर से आता है सकारात्मक है; तथापि, मनुष्य का स्वभाव शैतान द्वारा संसाधित किया गया है और परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। केवल देहधारी परमेश्वर का प्रेम, कष्ट झेलने की इच्छाशक्ति, धार्मिकता, अधीनता, विनम्रता और अदृश्यता सीधे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वह आया, वह पापमय प्रकृति से रहित आया और, शैतान द्वारा संसाधित हुए बिना, सीधे परमेश्वर से आया। यीशु केवल पापमय देह की सदृशता में है और पाप का प्रतिनिधित्व नहीं करता है; इसलिए, सलीब पर चढ़ने के द्वारा उसके कार्य निष्पादन से पहले के समय तक (उसके सलीब पर चढ़ने के क्षण सहित) उसके कार्य, कर्म और वचन, सभी परमेश्वर के प्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधि हैं। यीशु का यह उदाहरण इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि पापमय प्रकृति वाला कोई भी व्यक्ति परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है, और मनुष्य का पाप शैतान का प्रतिनिधित्व करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पाप परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं करता और परमेश्वर निष्पाप है। यहाँ तक कि पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्य में किया गया कार्य भी पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित किया गया ही माना जा सकता है, और परमेश्वर की ओर से मनुष्य द्वारा किया गया नहीं कहा जा सकता। किंतु, जहाँ तक मनुष्य का संबंध है, परमेश्वर का प्रतिनिधित्व न उसका पाप करता है और न उसका स्वभाव। अतीत से लेकर आज तक पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्य पर किए गए समस्त कार्य पर दृष्टि डालने पर, हम देखते हैं कि मनुष्य के पास वह सब जो वह जीता है, इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा ने उस पर कार्य किया है। बहुत ही कम हैं जो पवित्र आत्मा द्वारा निपटे और अनुशासित किए जाने के बाद सत्य को जी पाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि मात्र पवित्र आत्मा का कार्य ही उपस्थित है; मनुष्य की ओर से सहयोग अनुपस्थित है। क्या अब तुम इसे स्पष्ट रूप से देख रहे हो? तो फिर, जब पवित्र आत्मा कार्य करता है तब उसके साथ सहयोग करने और अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए तुम अपना अधिकतम कैसे करोगे?

धार्मिक सेवाओं का शुद्धिकरण अवश्य होना चाहिए

संपूर्ण जगत में अपने कार्य की शुरुआत से ही, परमेश्वर ने अनेक लोगों को अपनी सेवा के लिए पूर्वनिर्धारित किया है, जिसमें हर सामाजिक वर्ग के लोग शामिल हैं। उसका प्रयोजन स्वयं की इच्छा को पूरा करना और पृथ्वी पर अपने कार्य को सुचारु रूप से पूरा करना है। परमेश्वर का लोगों को अपनी सेवा के लिए चुनने का यही प्रयोजन है। परमेश्वर की सेवा करने वाले हर व्यक्ति को परमेश्वर की इच्छा को अवश्य समझना चाहिए। उसका यह कार्य परमेश्वर की बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता को तथा पृथ्वी पर उसके कार्य के सिद्धांतों को लोगों के समक्ष बेहतर ढंग से ज़ाहिर करता है। वास्तव में परमेश्वर अपना काम करने और लोगों के संपर्क में आने के लिए पृथ्वी पर आया है, ताकि वे उसके कर्मों को अधिक स्पष्ट रूप से जान सकें। आज तुम लोग, लोगों का यह समूह, भाग्यशाली है कि तुम व्यावहारिक परमेश्वर की सेवा कर रहे हो। यह तुम लोगों के लिए एक अनंत आशीष है। वास्तव में, परमेश्वर ने तुम लोगों का स्तर बढ़ा दिया है। अपनी सेवा के लिए किसी व्यक्ति को चुनने में, परमेश्वर के सदैव अपने स्वयं के सिद्धांत होते हैं। परमेश्वर की सेवा करना मात्र एक उत्साह की बात नहीं है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं। आज तुम लोग देखते हो कि वे सभी जो परमेश्वर के समक्ष उसकी सेवा करते हैं, ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनके पास परमेश्वर का मार्गदर्शन और पवित्र आत्मा का कार्य है; और इसलिए क्योंकि वे सत्य का अनुसरण करने वाले लोग हैं। ये परमेश्वर की सेवा करने वाले सभी लोगों के लिए न्यूनतम शर्तें हैं।

परमेश्वर की सेवा करना कोई सरल कार्य नहीं है। जिनका भ्रष्ट स्वभाव अपरिवर्तित रहता है, वे परमेश्वर की सेवा कभी नहीं कर सकते हैं। यदि परमेश्वर के वचनों के द्वारा तुम्हारे स्वभाव का न्याय नहीं हुआ है और उसे ताड़ित नहीं किया गया है, तो तुम्हारा स्वभाव अभी भी शैतान का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रमाणित करता है कि तुम परमेश्वर की सेवा अपनी भलाई के लिए करते हो, तुम्हारी सेवा तुम्हारी शैतानी प्रकृति पर आधारित है। तुम परमेश्वर की सेवा अपने स्वाभाविक चरित्र से और अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुसार करते हो। इसके अलावा, तुम हमेशा सोचते हो कि जो कुछ भी तुम करना

चाहते हो, वो परमेश्वर को पसंद है, और जो कुछ भी तुम नहीं करना चाहते हो, उनसे परमेश्वर घृणा करता है, और तुम पूर्णतः अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार कार्य करते हो। क्या इसे परमेश्वर की सेवा करना कह सकते हैं? अंततः तुम्हारे जीवन स्वभाव में रत्ती भर भी परिवर्तन नहीं आएगा; बल्कि तुम्हारी सेवा तुम्हें और भी अधिक ज़िद्दी बना देगी और इससे तुम्हारा भ्रष्ट स्वभाव गहराई तक जड़ें जमा लेगा। इस तरह, तुम्हारे मन में परमेश्वर की सेवा के बारे में ऐसे नियम बन जाएँगे जो मुख्यतः तुम्हारे स्वयं के चरित्र पर और तुम्हारे अपने स्वभाव के अनुसार तुम्हारी सेवा से प्राप्त अनुभवों पर आधारित होंगे। ये मनुष्य के अनुभव और सबक हैं। यह दुनिया में जीने का मनुष्य का जीवन-दर्शन है। इस तरह के लोगों को फरीसियों और धार्मिक अधिकारियों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यदि वे कभी भी जागते और पश्चाताप नहीं करते हैं, तो वे निश्चित रूप से झूठे मसीह और मसीह विरोधी बन जाएँगे जो अंत के दिनों में लोगों को धोखा देते हैं। झूठे मसीह और मसीह विरोधी, जिनके बारे में कहा गया था, इसी प्रकार के लोगों में से उठ खड़े होंगे। जो परमेश्वर की सेवा करते हैं, यदि वे अपने चरित्र का अनुसरण करते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं, तब वे किसी भी समय बहिष्कृत कर दिए जाने के ख़तरे में होते हैं। जो दूसरों के दिलों को जीतने, उन्हें व्याख्यान देने और नियंत्रित करने तथा ऊंचाई पर खड़े होने के लिए परमेश्वर की सेवा के कई वर्षों के अपने अनुभव का प्रयोग करते हैं—और जो कभी पछतावा नहीं करते हैं, कभी भी अपने पापों को स्वीकार नहीं करते हैं, पद के लाभों को कभी नहीं त्यागते हैं—उनका परमेश्वर के सामने पतन हो जाएगा। ये अपनी वरिष्ठता का घमंड दिखाते और अपनी योग्यताओं पर इतराते पौलुस की ही तरह के लोग हैं। परमेश्वर इस तरह के लोगों को पूर्णता प्रदान नहीं करेगा। इस प्रकार की सेवा परमेश्वर के कार्य में विघ्न डालती है। लोग हमेशा पुराने से चिपके रहते हैं। वे अतीत की धारणाओं और अतीत की हर चीज़ से चिपके रहते हैं। यह उनकी सेवा में एक बड़ी बाधा है। यदि तुम उन्हें छोड़ नहीं सकते हो, तो ये चीज़ें तुम्हारे पूरे जीवन को विफल कर देंगी। परमेश्वर तुम्हारी प्रशंसा नहीं करेगा, थोड़ी-सी भी नहीं, भले ही तुम दौड़-भाग करके अपनी टाँगों को तोड़ लो या मेहनत करके अपनी कमर तोड़ लो, भले ही तुम परमेश्वर की "सेवा" में शहीद हो जाओ। इसके विपरीत वह कहेगा कि तुम एक कुकर्मी हो।

आज से, परमेश्वर विधिवत् रूप से उन्हें पूर्ण बनाएगा जिनकी कोई धार्मिक धारणाएँ नहीं हैं, जो अपनी पुरानी अस्मिताओं को एक ओर रखने के लिए तैयार हैं, और जो एक सरल-हृदय से परमेश्वर का आज्ञापालन करते हैं। वह उन्हें पूर्ण बनाएगा जो परमेश्वर के वचन की लालसा करते हैं। ऐसे लोगों को तैयार

हो जाना चाहिए और परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए। परमेश्वर में अनंत विपुलता और असीम बुद्धि है। उसके अद्भुत कार्य और बहुमूल्य वचन अधिक से अधिक लोगों द्वारा उनका आनंद लिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अपनी वर्तमान स्थिति में, जो धार्मिक धारणाओं वाले लोग हैं, जो वरिष्ठता ओढ़ लेते हैं, और जो स्वयं को एक ओर नहीं रख सकते हैं, उन्हें इन नयी चीज़ों को स्वीकार करना मुश्किल लगता है। पवित्र आत्मा के पास ऐसे लोगों को पूर्ण बनाने का कोई अवसर नहीं है। यदि कोई व्यक्ति आज्ञापालन करने के लिए कृतसंकल्प नहीं है, और वह परमेश्वर के वचनों का प्यासा नहीं है, तो वह इन नयी बातों को ग्रहण करने में असमर्थ रहेगा; वह बस और भी ज़्यादा विद्रोही, और भी ज़्यादा चालाक बनता जाएगा, और इस प्रकार गलत मार्ग पर पहुँच जाएगा। अब अपना कार्य करने में, परमेश्वर और अधिक लोगों को ऊँचा उठाएगा जो उससे सच्चा प्यार करते हैं और नये प्रकाश को स्वीकार कर सकते हैं। वह उन धार्मिक अधिकारियों को पूरी तरह से छोटा बना देगा जो अपनी वरिष्ठता का घमंड करते हैं। जो ज़िद के साथ परिवर्तन का विरोध करते हैं, वह उनमें से एक को भी नहीं चाहता है। क्या तुम इन लोगों में से एक बनना चाहते हो? क्या तुम अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार अपनी सेवा देते हो, या तुम वह करते हो जिसकी परमेश्वर अपेक्षा करता है? यह कुछ ऐसा है जिसे तुम्हें स्वयं के लिए अवश्य जानना चाहिए। क्या तुम एक धार्मिक अधिकारी हो, अथवा क्या तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए गए एक नवजात शिशु हो? तुम्हारी कितनी सेवा की पवित्र आत्मा के द्वारा प्रशंसा की जाती है? इसमें से कितनी बातें परमेश्वर याद रखने की परवाह भी नहीं करेगा? कई वर्षों की सेवा के बाद, तुम्हारा जीवन कितना परिवर्तित हुआ है? क्या तुम इन सबके बारे में स्पष्ट हो? यदि तुम्हारे पास सच्चा विश्वास है, तो तुम अपनी पहले की पुरानी धार्मिक धारणाओं को छोड़ दोगे, और परमेश्वर की नए सिरे से बेहतर ढंग से सेवा करोगे। उठ खड़े होने के लिए अभी बहुत देरी नहीं हुई है। पुरानी धार्मिक धारणाएँ व्यक्ति के पूरे जीवन को जकड़ सकती हैं। व्यक्ति द्वारा प्राप्त किया गया अनुभव उसे परमेश्वर से भटका सकता है और चीज़ों को अपने तरीके से करवा सकता है। यदि तुम इन चीज़ों को एक तरफ़ नहीं रखते हो, तो ये तुम्हारे जीवन की उन्नति में बाधा बन जाएँगी। परमेश्वर सदैव उन्हें पूर्ण बनाता है जो उसकी सेवा करते हैं और उन्हें आसानी से बहिष्कृत नहीं करता है। यदि तुम परमेश्वर के वचन के न्याय और ताड़ना को सच में स्वीकार करते हो, यदि तुम अपने पुराने धार्मिक तौर-तरीकों और नियमों को एक ओर रख सकते हो, और पुरानी धार्मिक धारणाओं को आज परमेश्वर के वचन के मापदंड के रूप में उपयोग करना बंद कर सकते हो, केवल तभी तुम्हारे लिए एक अच्छा भविष्य होगा।

किन्तु यदि तुम पुरानी चीज़ों से चिपके रहते हो, यदि तुम उन्हें अभी भी संजो कर रखते हो, तो तुम्हें किसी भी तरह बचाया नहीं जा सकता। परमेश्वर इस तरह के लोगों पर कोई ध्यान नहीं देता है। यदि तुम वास्तव में पूर्ण बनाए जाना चाहते हो, तब तुम्हें पहले की हर चीज़ को पूरी तरह से त्यागने के लिए कृतसंकल्प अवश्य होना चाहिए। भले ही पहले जो किया गया था वह सही था, भले ही वह परमेश्वर का कार्य था, तब भी तुम्हें इसे एक ओर करने और इससे चिपके रहना बंद करने में समर्थ अवश्य होना चाहिए। भले ही यह स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा का कार्य था, प्रत्यक्ष रूप से पवित्र आत्मा द्वारा किया गया था, तब भी आज तुम्हें इसे अवश्य एक ओर कर देना चाहिए। तुम्हें इसे पकड़े नहीं रहना चाहिए। परमेश्वर यही अपेक्षा करता है। हर चीज़ का नवीकरण किया जाना चाहिए। परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के कार्य में, वह उन पुरानी बातों का कोई संदर्भ नहीं देता है जो पहले हुईं थीं, और वह पुराने इतिहास को नहीं खोदता है। परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो सदैव नया है और कभी भी पुराना नहीं पड़ता है। वह अतीत के अपने स्वयं के वचनों से भी नहीं चिपकता है, जिससे स्पष्ट होता है कि परमेश्वर किन्हीं नियमों का पालन नहीं करता है। इसलिए, एक मनुष्य के रूप में, यदि तुम सदैव अतीत की बातों से चिपके रहते हो, उन्हें जाने नहीं देते हो, और उन्हें नियमबद्ध तरीके से कठोरता से लागू करते हो, जबकि परमेश्वर उस तरीके से अब और कार्य नहीं कर रहा है जिससे उसने पहले किया था, तो क्या तुम्हारे वचन और कार्य विध्वंसकारी नहीं हैं? क्या तुम परमेश्वर के शत्रु नहीं बन गए हो? क्या तुम इन पुरानी बातों में अपने पूरे जीवन को विध्वंस और नष्ट होने देना चाहते हो? ये पुरानी बातें तुम्हें ऐसा व्यक्ति बना देती हैं जो परमेश्वर के कार्य में बाधा डालता है। क्या तुम इस प्रकार का व्यक्ति बनना चाहते हो? यदि तुम सच में ऐसा नहीं चाहते हो, तो जो तुम कर रहे हो उसे तुरंत रोक दो और मुड़ जाओ; सब कुछ पुन: आरंभ करो। परमेश्वर तुम्हारी अतीत की सेवाओं को याद नहीं रखेगा।

परमेश्वर में अपने विश्वास में तुम्हें परमेश्वर का आज्ञापालन करना चाहिए

तुम परमेश्वर में विश्वास क्यों करते हो? अधिकांश लोग इस प्रश्न से हैरान हैं। उनके पास व्यावहारिक परमेश्वर और स्वर्ग के परमेश्वर के बारे में हमेशा से दो बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण रहे हैं, जो दिखाता है कि वे आज्ञापालन के लिए नहीं, बल्कि कुछ निश्चित लाभ प्राप्त करने या आपदा के साथ आने वाली तकलीफ़ से

बचने के लिए परमेश्वर में विश्वास करते हैं; केवल तभी वे थोड़े-बहुत आज्ञाकारी होते हैं। उनकी आज्ञाकारिता सशर्त है, यह उनकी व्यक्तिगत संभावनाओं की गरज़ से है, और उन पर जबरदस्ती थोपी गई है। तो, तुम परमेश्वर में विश्वास आखिर क्यों करते हो? यदि यह केवल तुम्हारी संभावनाओं, और तुम्हारे प्रारब्ध के लिए है, तो बेहतर यही होता कि तुम विश्वास ही न करते। इस प्रकार का विश्वास आत्म-वंचना, आत्म-आश्वासन और आत्म-प्रशंसा है। यदि तुम्हारा विश्वास परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की नींव पर आधारित नहीं है, तो तुम्हें उसका विरोध करने के लिए अंततः दण्डित किया जाएगा। वे सभी जो अपने विश्वास में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की खोज नहीं करते, उसका विरोध करते हैं। परमेश्वर कहता है कि लोग सत्य की खोज करें, वे उसके वचनों के प्यासे बनें, उसके वचनों को खाएँ-पिएँ और उन्हें अभ्यास में लाएँ, ताकि वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बन सकें। यदि ये तुम्हारी सच्ची मंशाएँ हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हें उन्नत करेगा और तुम्हारे प्रति अनुग्रही होगा। कोई भी न तो इस पर संदेह कर सकता है और न ही इसे बदल सकता है। यदि तुम्हारी मंशा परमेश्वर के आज्ञापालन की नहीं है और तुम्हारे उद्देश्य दूसरे हैं, तो जो कुछ भी तुम कहते और करते हो—परमेश्वर के सामने तुम्हारी प्रार्थनाएँ, यहाँ तक कि तुम्हारा प्रत्येक कार्यकलाप भी परमेश्वर के विरोध में होगा। तुम भले ही मृदुभाषी और सौम्य हो, तुम्हारा हर कार्यकलाप और अभिव्यक्ति उचित दिखायी दे, और तुम भले ही आज्ञाकारी प्रतीत होते हो, किन्तु जब परमेश्वर में विश्वास के बारे में तुम्हारी मंशाओं और विचारों की बात आती है, तो जो भी तुम करते हो वह परमेश्वर के विरोध में होता है, वह बुरा होता है। जो लोग भेड़ों के समान आज्ञाकारी प्रतीत होते हैं, परन्तु जिनके हृदय बुरे इरादों को आश्रय देते हैं, वे भेड़ की खाल में भेड़िए हैं। वे सीधे-सीधे परमेश्वर का अपमान करते हैं, और परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं छोड़ेगा। पवित्र आत्मा उन में से एक-एक को प्रकट करेगा और सबको दिखाएगा कि पवित्र आत्मा उन सभी से, जो पाखण्डी हैं, निश्चित रूप से घृणा करेगा और उन्हें ठुकरा देगा। चिंता नहीं : परमेश्वर बारी-बारी से उनमें से एक-एक से निपटेगा और उनका हिसाब करेगा।

यदि तुम परमेश्वर से आने वाले नए प्रकाश को स्वीकार करने में असमर्थ हो, और परमेश्वर आज जो कुछ करता है, वह सब नहीं समझ सकते, और तुम उसकी खोज नहीं करते, या तुम उस पर सन्देह करते हो, उसकी आलोचना करते हो, या उसकी जाँच-पड़ताल एवं विश्लेषण करते हो, तो तुम्हारा मन परमेश्वर की आज्ञा मानने को तैयार नहीं है। यदि, जब वर्तमान समय का प्रकाश दिखाई देता है, तब भी तुम बीते

हुए कल का प्रकाश सँजोकर रखते हो और परमेश्वर के नए कार्य का विरोध करते हो, तो तुम एक बेतुके इंसान से बढ़कर और कुछ नहीं हो—तुम उनमें से हो जो जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करते हैं। परमेश्वर की आज्ञापालन की कुंजी नए प्रकाश की सराहना करने, उसे स्वीकार करने और उसे अभ्यास में लाने में है। यही सच्ची आज्ञाकारिता है। जिनमें परमेश्वर के लिए तड़पने की इच्छाशक्ति का अभाव है, जो उसके समक्ष स्वेच्छा से समर्पित नहीं हो पाते और केवल यथास्थिति से संतुष्ट होकर परमेश्वर का विरोध ही कर सकते हैं, ऐसा इंसान परमेश्वर का आज्ञापालन इसलिए नहीं कर सकता क्योंकि वह अभी भी पहले के प्रभाव में है। जो चीज़ें पहले आईं, उन्होंने लोगों को परमेश्वर के बारे में तमाम तरह की धारणाएँ और कल्पनाएँ दीं, और ये उनके दिमाग़ में परमेश्वर की छवि बन गई हैं। इस प्रकार, वे जिसमें विश्वास करते हैं, वह उनकी स्वयं की धारणाएँ और उनकी अपनी कल्पनाओं के मापदण्ड हैं। यदि तुम अपनी कल्पनाओं के परमेश्वर के सामने उस परमेश्वर को मापते हो जो आज वास्तविक कार्य करता है, तो तुम्हारा विश्वास शैतान से आता है, और तुम्हारी अपनी पसंद की वस्तु से दाग़दार है—परमेश्वर इस तरह का विश्वास नहीं चाहता। इस बात की परवाह किए बिना कि उनकी साख कितनी ऊंची है, और उनके समर्पण की परवाह किए बिना—भले ही उन्होंने उसके कार्य के लिए जीवनभर प्रयास किए हों, और अपनी जान कुर्बान कर दी हो—परमेश्वर इस तरह के विश्वास वाले किसी भी व्यक्ति को स्वीकृति नहीं देता। वह उनके ऊपर मात्र थोड़ा-सा अनुग्रह करता है और थोड़े समय के लिए उन्हें उसका आनन्द उठाने देता है। इस तरह के लोग सत्य का अभ्यास करने में असमर्थ होते हैं, पवित्र आत्मा उनके भीतर काम नहीं करता, परमेश्वर बारी-बारी से उन में प्रत्येक को हटा देगा। चाहे कोई युवा हो या बुजुर्ग, ऐसे सभी लोग जो अपने विश्वास में परमेश्वर का आज्ञापालन नहीं करते और जिनकी मंशाएँ ग़लत हैं, जो परमेश्वर के कार्य का विरोध करते और उसमें बाधा डालते हैं, ऐसे लोगों को परमेश्वर यकीनन हटा देगा। वे लोग जिनमें परमेश्वर के प्रति थोड़ी-सी भी आज्ञाकारिता नहीं है, जो केवल उसका नाम स्वीकारते हैं, जिन्हें परमेश्वर की दयालुता और मनोरमता की थोड़ी-सी भी समझ है, फिर भी वे पवित्र आत्मा के कदमों के साथ तालमेल बनाकर नहीं चलते, और पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य एवं वचनों का पालन नहीं करते—ऐसे लोग परमेश्वर के अनुग्रह में रहते हैं, लेकिन उसके द्वारा प्राप्त नहीं किए या पूर्ण नहीं बनाए जाएँगे। परमेश्वर लोगों को उनकी आज्ञाकारिता, परमेश्वर के वचनों को उनके खाने-पीने, उनका आनन्द उठाने और उनके जीवन में कष्ट एवं शुद्धिकरण के माध्यम से पूर्ण बनाता है। ऐसे विश्वास से ही लोगों का स्वभाव परिवर्तित हो सकता है और तभी उन्हें परमेश्वर का

सच्चा ज्ञान हो सकता है। परमेश्वर के अनुग्रह के बीच रहकर सन्तुष्ट न होना, सत्य के लिए सक्रियता से लालायित होना और उसे खोजना और परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने का प्रयास करना—यही जागृत रहकर परमेश्वर की आज्ञा मानने का अर्थ है; और परमेश्वर ऐसा ही विश्वास चाहता है। जो लोग परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द उठाने के अलावा कुछ नहीं करते, वे पूर्ण नहीं बनाए जा सकते, या परिवर्तित नहीं किए जा सकते, और उनकी आज्ञाकारिता, धर्मनिष्ठता, प्रेम तथा धैर्य सभी सतही होते हैं। जो लोग केवल परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द लेते हैं, वे परमेश्वर को सच्चे अर्थ में नहीं जान सकते, यहाँ तक कि जब वे परमेश्वर को जान भी जाते हैं, तब भी उनका ज्ञान उथला ही होता है, और वे "परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है", या "परमेश्वर मनुष्य के प्रति करुणामय है" जैसी बातें करते हैं। यह मनुष्य के जीवन का द्योतक नहीं है, न ही इससे यह सिद्ध होता है कि लोग सचमुच परमेश्वर को जानते हैं। यदि, जब परमेश्वर के वचन उन्हें शुद्ध करते हैं, या जब उन्हें अचानक परमेश्वर की परीक्षाएँ देनी पड़ती हैं, तब लोग परमेश्वर का आज्ञापालन नहीं कर पाते—बल्कि यदि वे संदिग्ध और ग़लत साबित हो जाते हैं—तब वे रत्ती भर भी आज्ञाकारी नहीं रहते हैं। परमेश्वर में विश्वास को लेकर उनके भीतर कई नियम और प्रतिबंध हैं, पुराने अनुभव हैं जो कई वर्षों के विश्वास का परिणाम हैं, या बाइबल पर आधारित विभिन्न सिद्धांत हैं। क्या इस प्रकार के लोग परमेश्वर का आज्ञापालन कर सकते हैं? ये लोग मानवीय चीज़ों से भरे हुए हैं—वे परमेश्वर का आज्ञापालन कैसे कर सकते हैं? उनकी "आज्ञाकारिता" व्यक्तिगत पसंद के अनुसार होती है—क्या परमेश्वर ऐसी आज्ञाकारिता चाहेगा? यह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता नहीं है, बल्कि सिद्धांतों से चिपके रहना है; यह आत्मसंतोष और आत्म-तुष्टिकरण है। यदि तुम कहते हो कि यह परमेश्वर का आज्ञापालन है, तो क्या तुम ईशनिंदा नहीं कर रहे हो? तुम एक मिस्री फिरौन हो, तुम बुरे काम करते हो। तुम जान-बूझकर परमेश्वर का विरोध करने के काम में लिप्त होते हो—क्या परमेश्वर तुमसे इस तरह की सेवा चाहता है? तुम्हारे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि जल्दी से जल्दी पश्चाताप करो और कुछ आत्म-जागरूकता पाने का प्रयत्न करो। ऐसा नहीं करने पर, चले जाने में तुम्हारी भलाई होगी: परमेश्वर के प्रति तुम्हारी कथित "सेवा" से तो यही तुम्हारे लिए अधिक अच्छा होगा। तुम न हस्तक्षेप करोगे और न विघ्न डालोगे; तुम्हें अपनी जगह पता होगी और सकुशल रहोगे—क्या यह बेहतर नहीं होगा? और परमेश्वर का विरोध करने के लिए तुम्हें दण्डित नहीं किया जाएगा!

परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है

लोग अपने हृदय से परमेश्वर की आत्मा को स्पर्श करके परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, उससे प्रेम करते हैं और उसे संतुष्ट करते हैं, और इस प्रकार वे परमेश्वर की संतुष्टि प्राप्त करते हैं; परमेश्वर के वचनों से जुड़ने के लिए वे अपने हृदय का उपयोग करते हैं और इस प्रकार वे परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाते हैं। यदि तुम एक उचित आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करना चाहते हो और परमेश्वर के साथ उचित संबंध स्थापित करना चाहते हो, तो तुम्हें पहले उसे अपना हृदय अर्पित करना चाहिए। अपने हृदय को उसके सामने शांत करने और अपने पूरे हृदय को उस पर उँड़ेलने के बाद ही तुम धीरे-धीरे एक उचित आध्यात्मिक जीवन विकसित करने में सक्षम होगे। यदि परमेश्वर पर अपने विश्वास में लोग परमेश्वर को अपना हृदय अर्पित नहीं करते और यदि उनका हृदय उसमें नहीं है और वे उसके दायित्व को अपना दायित्व नहीं मानते, तो जो कुछ भी वे करते हैं, वह परमेश्वर को धोखा देने का कार्य है, जो धार्मिक व्यक्तियों का ठेठ व्यवहार है, और वे परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकते। परमेश्वर इस तरह के व्यक्ति से कुछ हासिल नहीं कर सकता; इस तरह का व्यक्ति परमेश्वर के काम में केवल एक विषमता का कार्य कर सकता है, परमेश्वर के घर में सजावट की तरह, फालतू और बेकार। परमेश्वर इस तरह के व्यक्ति का कोई उपयोग नहीं करता। ऐसे व्यक्ति में न केवल पवित्र आत्मा के काम के लिए कोई अवसर नहीं है, बल्कि उसे पूर्ण किए जाने का भी कोई मूल्य नहीं है। इस प्रकार का व्यक्ति, सच में, एक चलती-फिरती लाश की तरह है। ऐसे व्यक्तियों में ऐसा कुछ नहीं है, जिसका पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जा सके, बल्कि इसके विपरीत, उन सभी को शैतान द्वारा हड़पा और गहरा भ्रष्ट किया जा चुका है। परमेश्वर इन लोगों को हटा देगा। वर्तमान में, लोगों का इस्तेमाल करते हुए पवित्र आत्मा न सिर्फ़ उनके उन हिस्सों का उपयोग करता है, जो काम करने के लिए वांछित हैं, बल्कि वह उनके अवांछित हिस्सों को भी पूर्ण करता और बदलता है। यदि तुम्हारा हृदय परमेश्वर में उँड़ेला जा सकता है और उसके सामने शांत रह सकता है, तो तुम्हारे पास पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए जाने, और पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करने का अवसर और योग्यता होगी, और इससे भी बढ़कर, तुम्हारे पास पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हारी कमियाँ दूर किए जाने का अवसर होगा। जब तुम अपना हृदय परमेश्वर को अर्पित करते हो, तो सकारात्मक पहलू में, तुम अधिक गहन प्रवेश प्राप्त कर सकोगे और अंतर्दृष्टि का एक उच्च तल हासिल कर सकोगे; और नकारात्मक पहलू में, तुम अपनी गलतियों और कमियों की अधिक समझ प्राप्त कर सकोगे, तुम परमेश्वर

की इच्छा की पूर्ति करने के लिए ज़्यादा उत्सुक होगे, और तुम निष्क्रिय नहीं रहोगे, बल्कि सक्रिय रूप से प्रवेश करोगे। इस प्रकार, तुम एक सही व्यक्ति बन जाओगे। यह मानते हुए कि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के सामने शांत रहने में सक्षम है, इस बात की कुंजी कि तुम पवित्र आत्मा की प्रशंसा प्राप्त करते हो या नहीं, और तुम परमेश्वर को ख़ुश कर पाते हो या नहीं, यह है कि तुम सक्रिय रूप से प्रवेश कर सकते हो या नहीं। जब पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति को प्रबुद्ध करता है और उसका उपयोग करता है, तो वह उसे कभी भी नकारात्मक नहीं बनाता, बल्कि हमेशा उसके सक्रिय रूप से प्रगति करने की व्यवस्था करता है। भले ही इस व्यक्ति में कमज़ोरियाँ हों, वह अपना जीवन जीने का तरीका उन कमजोरियों पर आधारित करने से बच सकता है। वह अपने जीवन में विकास में देरी करने से से बच सकता है, और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की अपनी कोशिश जारी रख पाता है। यह एक मानक है। अगर तुम इसे प्राप्त कर सकते हो, तो यह पर्याप्त सबूत है कि तुमने पवित्र आत्मा की उपस्थिति प्राप्त कर ली है। यदि कोई व्यक्ति हमेशा नकारात्मक रहता है, और प्रबुद्धता हासिल करने तथा खुद को जानने के बाद भी नकारात्मक और निष्क्रिय बना रहता है और परमेश्वर के साथ खड़े होने तथा उसके साथ मिलकर कार्य करने में अक्षम रहता है, तो इस किस्म का व्यक्ति केवल परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करता है, लेकिन पवित्र आत्मा उसके साथ नहीं होता। जब कोई व्यक्ति नकारात्मक होता है, तो इसका मतलब है कि उसका हृदय परमेश्वर की तरफ़ नहीं मुड़ पाया है और उसकी आत्मा परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित नहीं की गई है। इसे सभी को समझना चाहिए।

अनुभव से यह देखा जा सकता है कि सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक, परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत करना है। यह एक ऐसा मुद्दा है, जो लोगों के आध्यात्मिक जीवन से, और उनके जीवन में उनके विकास से संबंधित है। जब तुम्हारा हृदय परमेश्वर के सामने शांत रहेगा, केवल तभी सत्य की तुम्हारी खोज और तुम्हारे स्वभाव में आए परिवर्तन सफल होंगे। चूँकि तुम परमेश्वर के सामने बोझ से दबे हुए आते हो, और चूँकि तुम हमेशा महसूस करते हो कि तुममें कई तरह की कमियाँ हैं, कि ऐसे कई सत्य हैं जिन्हें जानना तुम्हारे लिए जरूरी है, तुम्हें बहुत सारी वास्तविकता का अनुभव करने की आवश्यकता है, और कि तुम्हें परमेश्वर की इच्छा का पूरा ध्यान रखना चाहिए—ये बातें हमेशा तुम्हारे दिमाग़ में रहती हैं। ऐसा लगता है, मानो वे तुम पर इतना ज़ोर से दबाव डाल रही हों कि तुम्हारे लिए साँस लेना मुश्किल हो गया हो, और इस प्रकार तुम्हारा हृदय भारी-भारी महसूस करता हो (हालाँकि तुम नकारात्मक स्थिति में नहीं होते)। केवल ऐसे लोग ही परमेश्वर के वचनों की प्रबुद्धता स्वीकार करने और परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किए

जाने के योग्य हैं। यह उनके बोझ के कारण है, क्योंकि उनका हृदय भारी-भारी महसूस करता है, और, यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर के सामने जो कीमत वे अदा कर चुके हैं और जो पीड़ा उन्होंने झेली है, उसके कारण वे उसकी प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करते हैं, क्योंकि परमेश्वर किसी के साथ विशेष व्यवहार नहीं करता। लोगों के प्रति अपने व्यवहार में वह हमेशा निष्पक्ष रहता है, लेकिन वह लोगों को मनमाने ढंग से और बिना किसी शर्त के भी नहीं देता। यह उसके धर्मी स्वभाव का एक पहलू है। वास्तविक जीवन में, अधिकांश लोगों को अभी इस क्षेत्र को हासिल करना बाक़ी है। कम से कम, उनका हृदय अभी भी पूरी तरह से परमेश्वर की ओर मुड़ना बाक़ी है, और इसलिए उनके जीवन-स्वभाव में अभी भी कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आया है। इसका कारण यह है कि वे केवल परमेश्वर के अनुग्रह में रहते हैं और उन्हें अभी भी पवित्र आत्मा का कार्य हासिल करना शेष है। परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने के लिए लोगों को जो मानदंड पूरे करने चाहिए, वे इस प्रकार हैं : उनका हृदय परमेश्वर की ओर मुड़ जाता है, वे परमेश्वर के वचनों का दायित्व उठाते हैं, उनके पास तड़पता हुआ हृदय और सत्य को तलाशने का संकल्प होता है। केवल ऐसे लोग ही पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त कर सकते हैं और वे अकसर प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करते हैं। जिन लोगों का परमेश्वर इस्तेमाल करता है, वे बाहर से तर्कहीन प्रतीत होते हैं और दूसरों के साथ उनके उचित संबंध नहीं होते, हालाँकि वे औचित्य के साथ बोलते हैं, लापरवाही से नहीं बोलते, और परमेश्वर के सामने हमेशा शांत हृदय रख पाते हैं। यह ठीक उसी तरह का व्यक्ति है, जो पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए जाने के लिए पर्याप्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे "तर्कहीन" व्यक्तियों के, जिनके बारे में परमेश्वर बात करता है, दूसरों के साथ उचित संबंध नहीं होते, और वे बाहरी प्रेम या व्यवहारों को उचित सम्मान नहीं देते, लेकिन जब वे आध्यात्मिक चीज़ों पर संवाद करते हैं, तो वे अपना हृदय पूरी तरह खोल पाने में सक्षम होते हैं और निस्स्वार्थ भाव से दूसरों को वह रोशनी और प्रबुद्धता प्रदान करते हैं, जो उन्होंने परमेश्वर के सामने अपने वास्तविक अनुभव से हासिल की होती है। इसी प्रकार से वे परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करते हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं। जब दूसरे सभी लोग उनकी निंदा और उपहास कर रहे होते हैं, तो वे बाहर के लोगों, घटनाओं या चीज़ों द्वारा नियंत्रित होने से बचने में सक्षम होते हैं, और फिर भी परमेश्वर के सामने शांत रह पाते हैं। ऐसे व्यक्तियों के पास अपनी स्वयं की अनूठी अंतर्दृष्टियाँ होती हैं। दूसरे लोग चाहे कुछ भी करें, उनका हृदय कभी भी परमेश्वर से दूर नहीं जाता। जब दूसरे लोग प्रसन्नतापूर्वक और मज़ाकिया ढंग से बातें कर रहे होते हैं, उनका हृदय तब भी परमेश्वर के समक्ष रहता है,

और वे परमेश्वर के वचनों पर विचार करते रहते हैं या उसकी मंशा जानने की कोशिश करते हुए अपने हृदय में परमेश्वर से चुपचाप प्रार्थना करते रहते है। वे दूसरों के साथ उचित संबंध बनाए रखने को महत्व नहीं देते। लगता है, ऐसे व्यक्ति का जीने के लिए कोई दर्शन नहीं होता। बाहर से ऐसा व्यक्ति जीवंत, प्रिय और मासूम होता है, लेकिन उसमें शांति की भावना भी रहती है। परमेश्वर इसी प्रकार के व्यक्ति का उपयोग करता है। जीवन-दर्शन या "सामान्य तर्क" जैसी चीज़ें इस प्रकार के व्यक्ति में काम ही नहीं करतीं; इस प्रकार के व्यक्ति ने अपना पूरा हृदय परमेश्वर के वचनों को समर्पित कर दिया होता है, और लगता है, उसके हृदय में सिर्फ़ परमेश्वर होता है। यह उस प्रकार का व्यक्ति है, जिसे परमेश्वर "तर्कहीन" व्यक्ति के रूप में देखता है, और ठीक इसी प्रकार के व्यक्ति का परमेश्वर द्वारा उपयोग किया जाता है। परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने वाले व्यक्ति की पहचान इस प्रकार है : चाहे कोई भी समय या जगह हो, उसका हृदय हमेशा परमेश्वर के समक्ष रहता है, और दूसरे चाहे जितने भी अनैतिक हों, जितने भी वे वासना और देह में लिप्त हों, इस व्यक्ति का हृदय कभी भी परमेश्वर को नहीं छोड़ता, और वह भीड़ के पीछे नहीं जाता। केवल इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर द्वारा उपयोग के लिए अनुकूल है, और केवल इसी प्रकार का व्यक्ति पवित्र आत्मा द्वारा पूर्ण किया जाता है। यदि तुम ये चीज़ें प्राप्त करने में असमर्थ हो, तो तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने और पवित्र आत्मा द्वारा पूर्ण किए जाने के योग्य नहीं हो।

यदि तुम परमेश्वर के साथ उचित संबंध बनाना चाहते हो, तो तुम्हारा हृदय उसकी तरफ़ मुड़ना चाहिए। इस बुनियाद पर, तुम दूसरे लोगों के साथ भी उचित संबंध रखोगे। यदि परमेश्वर के साथ तुम्हारा उचित संबंध नहीं है, तो चाहे तुम दूसरों के साथ संबंध बनाए रखने के लिए कुछ भी कर लो, चाहे तुम जितनी भी मेहनत कर लो या जितनी भी ऊर्जा लगा दो, वह मानव के जीवनदर्शन से संबंधित ही होगा। तुम दूसरे लोगों के बीच एक मानव-दृष्टिकोण और मानव-दर्शन के माध्यम से अपनी स्थिति बनाकर रख रहे हो, ताकि वे तुम्हारी प्रशंसा करे, लेकिन तुम लोगों के साथ उचित संबंध स्थापित करने के लिए परमेश्वर के वचनों का अनुसरण नहीं कर रहे। अगर तुम लोगों के साथ अपने संबंधों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, लेकिन परमेश्वर के साथ एक उचित संबंध बनाए रखते हो, अगर तुम अपना हृदय परमेश्वर को देने और उसकी आज्ञा का पालने करने के लिए तैयार हो, तो स्वाभाविक रूप से सभी लोगों के साथ तुम्हारे संबंध सही हो जाएँगे। इस तरह से, ये संबंध शरीर के स्तर पर स्थापित नहीं होते, बल्कि परमेश्वर के प्रेम की बुनियाद पर स्थापित होते हैं। इनमें शरीर के स्तर पर लगभग कोई अंत:क्रिया नहीं होती, लेकिन आत्मा में

संगति, आपसी प्रेम, आपसी सुविधा और एक-दूसरे के लिए प्रावधान की भावना रहती है। यह सब ऐसे हृदय की बुनियाद पर होता है, जो परमेश्वर को संतुष्ट करता हो। ये संबंध मानव जीवन-दर्शन के आधार पर नहीं बनाए रखे जाते, बल्कि परमेश्वर के लिए दायित्व वहन करने के माध्यम से बहुत ही स्वाभाविक रूप से बनते हैं। इसके लिए मानव-निर्मित प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। तुम्हें बस परमेश्वर के वचन के सिद्धांतों के अनुसार अभ्यास करने की आवश्यकता है। क्या तुम परमेश्वर की इच्छा के प्रति विचारशील होने के लिए तैयार हो? क्या तुम परमेश्वर के समक्ष "तर्कहीन" व्यक्ति बनने के लिए तैयार हो? क्या तुम अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर को देने और लोगों के बीच अपनी स्थिति की परवाह न करने के लिए तैयार हो? उन सभी लोगों में से, जिनके साथ तुम्हारा संबध है, किनके साथ तुम्हारे सबसे अच्छे संबंध हैं? किनके साथ तुम्हारे सबसे खराब संबंध हैं? क्या लोगों के साथ तुम्हारे संबंध उचित हैं? क्या तुम सभी लोगों से समान व्यवहार करते हो? क्या दूसरों के साथ तुम्हारे संबंध तुम्हारे जीवन-दर्शन पर आधारित हैं, या वे परमेश्वर के प्रेम की बुनियाद पर बने हैं? जब कोई व्यक्ति परमेश्वर को अपना हृदय नहीं देता, तो उसकी आत्मा सुस्त, सुन्न और अचेत हो जाती है। इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर के वचनों को कभी नहीं समझेगा और परमेश्वर के साथ उसके संबंध कभी उचित नहीं होंगे; इस तरह के व्यक्ति का स्वभाव कभी नहीं बदलेगा। अपने स्वभाव को बदलना अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर को अर्पित करने और परमेश्वर के वचनों से प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करने की प्रक्रिया है। परमेश्वर का कार्य व्यक्ति को सक्रियता से प्रवेश करा सकता है, और साथ ही उसे अपने नकारात्मक पहलुओं के बारे में जानने के बाद उनका परिमार्जन करने में सक्षम भी बना सकता है। जब तुम अपना हृदय परमेश्वर को अर्पित करने के बिंदु पर पहुँचोगे, तो तुम अपनी आत्मा के भीतर हर सूक्ष्म हलचल को महसूस कर पाओगे, और तुम परमेश्वर से प्राप्त हर प्रबुद्धता और रोशनी को जान जाओगे। इस सूत्र को पकड़कर रखोगे, तो तुम धीरे-धीरे पवित्र आत्मा द्वारा पूर्ण बनाए जाने के मार्ग में प्रवेश करोगे। तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष जितना शांत रह पाएगा, तुम्हारी आत्मा उतनी अधिक संवेदनशील और नाजुक रहेगी, और उतनी ही अधिक तुम्हारी आत्मा यह महसूस कर पाएगी कि पवित्र आत्मा किस तरह उसे प्रेरित करती है, और तब परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध और भी अधिक उचित हो जाएगा। लोगों के बीच उचित संबंध परमेश्वर को अपना हृदय सौंपने की नींव पर स्थापित होता है; मनुष्य के प्रयासों से नहीं। अपने दिलों में परमेश्वर को रखे बिना लोगों के अंत:संबंध केवल शरीर के संबंध होते हैं। वे उचित नहीं होते, बल्कि वासना से युक्त होते हैं। वे ऐसे संबंध होते हैं, जिनसे

परमेश्वर घृणा करता है, जिन्हें वह नापसंद करता है। यदि तुम कहते हो कि तुम्हारी आत्मा प्रेरित हुई है, लेकिन तुम हमेशा उन लोगों के साथ साहचर्य चाहते हो, जिन्हें तुम पसंद करते हो, जिन्हें तुम उत्कृष्ट समझते हो, और यदि कोई दूसरा खोज कर रहा है लेकिन तुम उसे पसंद नहीं करते, यहाँ तक कि तुम उसके प्रति पूर्वाग्रह रखते हो और उसके साथ मेलजोल नहीं रखते, तो यह इस बात का अधिक प्रमाण है कि तुम भावनाओं के अधीन हो और परमेश्वर के साथ तुम्हारे संबंध बिलकुल भी उचित नहीं हैं। तुम परमेश्वर को धोखा देने और अपनी कुरूपता छिपाने का प्रयास कर रहे हो। यहाँ तक कि अगर तुम कुछ समझ साझा कर भी पाते हो, तो भी तुम गलत इरादे रखते हो, तब तुम जो कुछ भी करते हो, वह केवल मानव-मानकों से ही अच्छा होता है। परमेश्वर तुम्हारी प्रशंसा नहीं करेगा—तुम शरीर के अनुसार काम कर रहे हो, परमेश्वर के दायित्व के अनुसार नहीं। यदि तुम परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत करने में सक्षम हो और उन सभी लोगों के साथ तुम्हारे उचित संबंध हैं, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो केवल तभी तुम परमेश्वर के उपयोग के लिए उपयुक्त होते हो। इस तरह, तुम दूसरों के साथ चाहे जैसे भी जुड़े हो, यह किसी जीवन-दर्शन के अनुसार नहीं होगा, बल्कि यह परमेश्वर के सामने उस तरह से जीना होगा, जो उसके दायित्व के प्रति विचारशील हो। तुम्हारे बीच ऐसे कितने लोग हैं? क्या दूसरों के साथ तुम्हारे संबंध वास्तव में उचित हैं? वे किस बुनियाद पर बने हैं? तुम्हारे भीतर कितने जीवन-दर्शन हैं? क्या तुमने उन्हें त्याग दिया है? यदि तुम्हारा हृदय पूरी तरह से परमेश्वर की तरफ़ नहीं मुड़ पाता, तो तुम परमेश्वर के नहीं हो—तुम शैतान से आते हो, और अंत में शैतान के पास ही लौट जाओगे। तुम परमेश्वर के लोगों में से एक होने के योग्य नहीं हो। इन सभी बातों पर तुम्हें ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन लोगों को सही मार्ग पर ले जाता है

तुम लोग परमेश्वर के विश्वासी होने के मार्ग पर बहुत ही कम चले हो, और तुम लोगों का सही मार्ग पर प्रवेश करना अभी बाकी है, अतः तुम लोग परमेश्वर के मानक को प्राप्त करने से अभी भी दूर हो। इस समय, तुम लोगों का आध्यात्मिक कद उसकी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। तुम लोगों की योग्यता और भ्रष्ट प्रकृति के कारण, तुम लोग हमेशा परमेश्वर के कार्य के साथ लापरवाही से पेश आते हो और इसे गंभीरता से नहीं लेते। यह तुम लोगों की सबसे बड़ी खामी है। तुम लोगों में से निश्चय ही ऐसा कोई भी नहीं है जो वह मार्ग सुनिश्चित कर सके जिस पर पवित्र आत्मा चलता है; तुममें से अधिकांश इसे

नहीं समझते और इसे स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते। इतना ही नहीं, तुम लोगों में से अधिकांश इस विषय पर कोई ध्यान भी नहीं देते, इसे गंभीरता से लेने की बात तो दूर रही। यदि तुम लोग इसी तरह से व्यवहार करते रहोगे और पवित्र आत्मा के कार्य से अनजान रह कर जीते रहोगे, तो परमेश्वर के विश्वासी के रूप में जो मार्ग तुम लोग चुनते हो वह निरर्थक होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम लोग परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के प्रयास में जितना हो सके वो सब कुछ नहीं करते हो, और इसलिए भी क्योंकि तुम लोग परमेश्वर के साथ अच्छी तरह से सहयोग नहीं करते। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने तुम पर कार्य नहीं किया है, या कि पवित्र आत्मा ने तुम्हें प्रेरित नहीं किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम इतने लापरवाह हो कि तुम पवित्र आत्मा के कार्य को गंभीरता से नहीं लेते। अब तुम्हें इसी समय चीजों को बदलना होगा और पवित्र आत्मा जिस मार्ग पर लोगों की अगुआई करता है उस मार्ग पर चलना होगा। आज का मुख्य विषय यही है। "पवित्र आत्मा की अगुआई वाला मार्ग"—इसका अर्थ है आत्मा में प्रबुद्धता को प्राप्त करना, परमेश्वर के वचनों का ज्ञान प्राप्त करना, आगे के मार्ग के विषय में स्पष्टता प्राप्त करना कदम-दर-कदम सत्य में प्रवेश करना और परमेश्वर का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना। पवित्र आत्मा की अगुआई वाला मार्ग मुख्यतः वो मार्ग है जो परमेश्वर के वचनों की स्पष्ट समझ देता हो, जो भटकाव और गलत धारणाओं से मुक्त हो, और जो लोग उस मार्ग पर चलते हैं वे सीधे चलते जाते हैं। इसे प्राप्त करने के लिए तुम लोगों को परमेश्वर के साथ तालमेल बनाकर कार्य करने, अभ्यास का सही मार्ग को ढूँढने और पवित्र आत्मा की अगुवाई वाले मार्ग पर चलने की आवश्यकता होगी। इसमें मनुष्य की ओर से सहयोग शामिल है, अर्थात् : परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तुम्हें क्या करना है और परमेश्वर में विश्वास के सही मार्ग में प्रवेश करने के लिए तुम लोगों को कैसा आचरण करना है।

पवित्र आत्मा की अगुवाई वाले मार्ग पर चलना काफी जटिल प्रतीत हो सकता है, परंतु इस मार्ग के बारे में बिलकुल स्पष्ट होने पर तुम पाओगे कि यह प्रक्रिया बहुत सरल है। तथ्य यह है कि लोग वह सब कुछ करने में सक्षम हैं जिनकी अपेक्षा परमेश्वर उनसे करता है—यह ऐसा नहीं है कि वह सूअर को उड़ना सिखाने की कोशिश कर रहा है। सभी परिस्थितियों में, परमेश्वर लोगों की समस्याओं का निदान करने और उनकी चिंताओं को दूर करने का प्रयास करता है। तुम सबको यह समझना आवश्यक है; परमेश्वर को गलत न समझो। पवित्र आत्मा जिस मार्ग पर चलता है उस पर परमेश्वर के वचन के अनुसार लोगों की अगुआई होती है। जैसा कि पहले बताया गया है, तुम लोगों को अपना हृदय परमेश्वर को देना आवश्यक

है। यह पवित्र आत्मा की अगुआई वाले मार्ग पर चलने के लिए पहली आवश्यकता है। सही मार्ग पर प्रवेश करने के लिए तुम्हें यह करना ही होगा। किस प्रकार कोई इंसान समझ-बूझकर अपना हृदय परमेश्वर को देता है? अपने दैनिक जीवन में, जब तुम लोग परमेश्वर के कार्य का अनुभव करते हो और उससे प्रार्थना करते हो, तो तुम लोग इसे बड़ी लापरवाही से करते हो—तुम लोग काम करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करते हो। क्या इसे परमेश्वर को अपना हृदय देना कहा जा सकता है? तुम लोग परिवार के मामलों के बारे में या देह-सुख की सोच में डूबे रहते हो; तुम लोग हमेशा दुविधा में रहते हो। क्या इसे परमेश्वर की उपस्थिति में अपने हृदय को शांत करना समझा जा सकता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि तुम्हारा हृदय हमेशा बाहरी विषयों से ग्रस्त रहता है, और यह परमेश्वर की ओर लौट नहीं पाता है। यदि तुम सचमुच अपने हृदय को परमेश्वर के समक्ष शांत करना चाहते हो, तो तुम्हें समझदारी के साथ सहयोग का कार्य करना होगा। कहने का अर्थ यह है कि तुममें से प्रत्येक को अपने धार्मिक कार्यों के लिए समय निकालना होगा, ऐसा समय जब तुम लोगों, घटनाओं, और वस्तुओं को खुद किनारे कर देते हो, जब तुम अपने हृदय को शांत कर परमेश्वर के समक्ष स्वयं को मौन करते हो। हर किसी को अपने व्यक्तिगत धार्मिक कार्यों के नोट्स लिखने चाहिए, परमेश्वर के वचनों के अपने ज्ञान को लिखना चाहिए और यह भी कि किस प्रकार उसकी आत्मा प्रेरित हुई है, इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए कि वे बातें गंभीर हैं या सतही। सभी को समझ-बूझके साथ परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत करना चाहिए। यदि तुम दिन के दौरान एक या दो घंटे एक सच्चे आध्यात्मिक जीवन के प्रति समर्पित कर सकते हो, तो उस दिन तुम्हारा जीवन समृद्ध अनुभव करेगा और तुम्हारा हृदय रोशन और स्पष्ट होगा। यदि तुम प्रतिदिन इस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन जीते हो, तब तुम्हारा हृदय परमेश्वर के पास लौटने में सक्षम होगा, तुम्हारी आत्मा अधिक से अधिक सामर्थी हो जाएगी, तुम्हारी स्थिति निरंतर बेहतर होती चली जाएगी, तुम पवित्र आत्मा की अगुआई वाले मार्ग पर चलने के और अधिक योग्य हो सकोगे, और परमेश्वर तुम्हें और अधिक आशीषें देगा। तुम लोगों के आध्यात्मिक जीवन का उद्देश्य समझ-बूझ के साथ पवित्र आत्मा की उपस्थिति को प्राप्त करना है। यह नियमों को मानना या धार्मिक परंपराओं को निभाना नहीं है, बल्कि सच्चाई के साथ परमेश्वर के सांमजस्य में कार्य करना और अपनी देह को अनुशासित करना है। मनुष्य को यही करना चाहिए, इसलिए तुम लोगों को ऐसा करने का भरसक प्रयास करना चाहिए। जितना बेहतर तुम्हारा सहयोग होगा और जितना अधिक तुम प्रयास करोगे, उतना ही अधिक तुम्हारा हृदय परमेश्वर की ओर लौट पाएगा, और उतना ही अधिक तुम अपने हृदय को

परमेश्वर के सामने शांत कर पाओगे। एक निश्चित बिन्दु पर परमेश्वर तुम्हारे हृदय को पूरी तरह से प्राप्त कर लेगा। कोई भी तुम्हारे हृदय को हिला या जकड़ नहीं पाएगा। और तुम पूरी तरह से परमेश्वर के हो जाओगे। यदि तुम इस मार्ग पर चलते हो, तो परमेश्वर का वचन हर समय अपने आपको तुम पर प्रकट करेगा, और उन सभी चीज़ों के बारे में तुम्हें प्रबुद्ध करेगा जो तुम नहीं समझते—यह सब तुम्हारे सहयोग के द्वारा प्राप्त हो सकता है। इसीलिए परमेश्वर सदैव कहता है, "वे सब लोग जो मेरे साथ सांमजस्य में होकर कार्य करते हैं, मैं उन्हें दुगुना प्रतिफल दूंगा।" तुम लोगों को यह मार्ग स्पष्टता के साथ देखना चाहिए। यदि तुम सही मार्ग पर चलना चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए वह सब करना होगा जो तुम कर सकते हो। तुम्हें आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ करना होगा जो तुम कर सकते हो। आरंभ में, तुम शायद इस कोशिश में ज्यादा अच्छे परिणाम प्राप्त न कर पाओ, परंतु तुम्हें अपने आपको नकारात्मकता में पीछे हटने या लड़खड़ाने नहीं देना है—तुम्हें कठिन परिश्रम करते रहना है! जितना अधिक आध्यात्मिक जीवन तुम जीओगे, उतना ही अधिक तुम्हारा हृदय परमेश्वर के वचनों से भरा रहेगा, इन बातों के प्रति हमेशा चिंतनशील रहेगा और हमेशा इस बोझ को उठाएगा। उसके बाद, तुम अपने आध्यात्मिक जीवन के द्वारा अपने अंतरतम के सत्यों को परमेश्वर के सामने प्रकट करो, उसे बताओ कि तुम क्या करना चाहते हो, तुम किस विषय में सोच रहे हो, परमेश्वर के वचनों के बारे में अपनी समझ और उनके बारे में अपने दृष्टिकोण बताओ। कुछ भी न छुपाओ, थोडा-सा भी नहीं! अपने मन में परमेश्वर से वचनों को कहने का प्रयास करो, अपनी सच्ची भावनाएँ परमेश्वर के सामने व्यक्त करो; अगर कोई बात तुम्हारे मन में है तो वह बोलने से बिलकुल न हिचको। जितना अधिक तुम इस तरह बोलते हो, उतना अधिक तुम परमेश्वर की मनोहरता का अनुभव करोगे, और तुम्हारा हृदय भी परमेश्वर की ओर उतना ही अधिक आकर्षित होगा। जब ऐसा होता है, तो तुम अनुभव करोगे कि किसी और की अपेक्षा परमेश्वर तुम्हें अधिक प्रिय है। फिर चाहे कुछ भी हो जाए, तुम कभी भी परमेश्वर का साथ नहीं छोड़ोगे। यदि प्रतिदिन तुम इस प्रकार का आध्यात्मिक भक्तिमय समय बिताओ और इसे अपने मन से ओझल न होने दो, बल्कि इसे अपने जीवन की बड़ी महत्ता की वस्तु मानो, तो परमेश्वर का वचन तुम्हारे हृदय को भर देगा। पवित्र आत्मा के द्वारा स्पर्श किए जाने का अर्थ यही है। यह ऐसा होगा मानो कि तुम्हारा हृदय हमेशा से परमेश्वर के पास हो, जैसे कि तुम जिससे प्रेम करते हो वह सदैव तुम्हारे हृदय में हो। कोई भी तुमसे उसे छीन नहीं सकता। जब ऐसा होता है, तो परमेश्वर सचमुच तुम्हारे भीतर वास करेगा और तुम्हारे हृदय में उसका एक स्थान

होगा।

प्रतिज्ञाएँ उनके लिए जो पूर्ण बनाए जा चुके हैं

वह कौन-सा मार्ग है, जिसके द्वारा परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है? कौन-कौन से पहलू उसमें शामिल हैं? क्या तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना चाहते हो? क्या तुम परमेश्वर का न्याय और उसकी ताड़ना स्वीकार करना चाहते हो? तुम इन प्रश्नों से क्या समझते हो? यदि तुम ऐसे ज्ञान के बारे में बात नहीं कर सकते, तो यह इस बात का प्रमाण है कि तुम अभी तक परमेश्वर के कार्य को नहीं जान पाए हो और तुम पवित्र आत्मा द्वारा बिलकुल भी प्रबुद्ध नहीं बनाए गए हो। ऐसे व्यक्ति को पूर्ण बनाया जाना असंभव है। उन्हें केवल थोड़ी मात्रा में ही अनुग्रह का आनंद दिया जाता है, और यह लंबे समय तक नहीं रहेगा। यदि लोग केवल परमेश्वर के अनुग्रह का ही आनंद उठाते हैं, तो उन्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। कुछ लोग संतुष्ट हो जाते हैं, जब उन्हें शारीरिक शांति और आनंद मिलता है, जब उनका जीवन आसानी से चलता है और उसमें कोई विपत्ति या दुर्भाग्य नहीं होता, जब उनका पूरा परिवार मेल-मिलाप से रहता है और उसमें कोई कलह या विवाद नहीं होता—और वे यह भी विश्वास कर सकते हैं कि यही परमेश्वर का आशीष है। पर सच्चाई यह है कि यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह है। तुम लोगों को सिर्फ परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद उठाने से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। ऐसी सोच कितनी भद्दी है। भले ही तुम प्रतिदिन परमेश्वर के वचन पढ़ो, प्रतिदिन प्रार्थना करो, और तुम्हारी आत्मा अत्यधिक आनंद और खास तौर से शांति का अनुभव करो, लेकिन यदि अंतत: तुम्हारे पास परमेश्वर और उसके कार्य के अपने ज्ञान के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं है, और तुमने कुछ अनुभव नहीं किया है, और चाहे तुमने परमेश्वर का वचन कितना भी क्यों न खाया और पीया हो, यदि तुम केवल आध्यात्मिक शांति और आनंद का अनुभव करते हो और यह भी कि परमेश्वर के वचन अतुलित रूप से मीठे हैं, मानो तुम उसका पर्याप्त आनंद नहीं उठा सकते, पर तुम्हें परमेश्वर के वचन का कोई वास्तविक अनुभव नहीं हुआ है और तुम उसके वचनों की वास्तविकता से पूर्णत: वंचित हो, तो परमेश्वर में ऐसे विश्वास से तुम क्या हासिल कर सकते हो? यदि तुम परमेश्वर के वचनों के सार को जीवन में उतार नहीं सकते, तो इन वचनों को खाना-पीना और तुम्हारी प्रार्थनाएँ धार्मिक विश्वास के सिवा कुछ नहीं हैं। ऐसे लोग परमेश्वर द्वारा पूर्ण और प्राप्त नहीं किए जा सकते। परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लोग वे होते हैं, जो सत्य का अनुसरण करते हैं। परमेश्वर

मनुष्य की देह प्राप्त नहीं करता, न उससे संबंधित चीजें ही प्राप्त करता है, बल्कि उसके भीतर का वह भाग प्राप्त करता है, जो परमेश्वर का है। इसलिए, जब परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है, तो वह उनकी देह को नहीं, बल्कि उनके हृदय को पूर्ण बनाता है, और उनके हृदय को परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने का अवसर देता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वारा मनुष्य को पूर्ण बनाया जाना सार रूप में परमेश्वर द्वारा मनुष्य के हृदय को पूर्ण बनाया जाना है, ताकि वह हृदय परमेश्वर की ओर मुड़ जाए और उससे प्रेम करने लगे।

मनुष्य की देह रक्त-मांस से बनी है। मनुष्य की देह प्राप्त करने से परमेश्वर का कोई प्रयोजन पूरा नहीं होता, क्योंकि वह ऐसी चीज है, जो अनिवार्य रूप से नष्ट हो जाती है और उसकी विरासत या आशीष प्राप्त नहीं कर सकती। यदि मनुष्य की देह प्राप्त की जाती, और यदि केवल मनुष्य की देह ही इस धारा में होती, तो मनुष्य हालाँकि इस धारा में नाममात्र के लिए होगा, पर उसका हृदय शैतान का होगा। ऐसा होने पर न केवल लोग परमेश्वर की अभिव्यक्ति बनने में असमर्थ होंगे, बल्कि वे उसके लिए बोझ बन जाएँगे, और इसलिए परमेश्वर का मनुष्य को चुनना निरर्थक होगा। जिन लोगों को परमेश्वर पूर्ण बनाने का इरादा रखता है, वे सब उसके आशीष और उसकी विरासत प्राप्त करेंगे। अर्थात्, वे वही ग्रहण करते हैं जो परमेश्वर के पास है और वह जो है, ताकि यह वह बन जाए जो उनके भीतर है; उनमें परमेश्वर के सारे वचन गढ़े हुए हैं; परमेश्वर जो है, तुम लोग उसे ठीक जैसा है वैसा लेने और इस प्रकार सत्य को जीवन में उतारने में सक्षम हो। ऐसे ही व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया और प्राप्त किया जाता है। केवल इसी प्रकार का मनुष्य परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले आशीष पाने योग्य है :

1. परमेश्वर के संपूर्ण प्रेम को पाना।

2. सभी बातों में परमेश्वर की इच्छानुसार चलना।

3. परमेश्वर के मार्गदर्शन को पाना, परमेश्वर के प्रकाश में जीवन व्यतीत करना और परमेश्वर का प्रबोधन प्राप्त करना।

4. पृथ्वी पर परमेश्वर को प्रिय लगने वाली छवि जीना; परमेश्वर से सच्चा प्रेम करना जैसा कि पतरस ने किया, जिसे परमेश्वर के लिए सलीब पर चढ़ा दिया गया और जो परमेश्वर के प्रेम के प्रतिदान में मरने के लिए तैयार हो गया; पतरस के समान महिमा प्राप्त करना।

5. पृथ्वी पर सभी का प्रिय, सम्मानित और प्रशंसित बनना।

6. मृत्यु और पाताल के सारे बंधनों पर काबू पाना, शैतान को कार्य करने का कोई अवसर न देना, परमेश्वर के अधीन रहना, एक ताज़ा और जीवंत आत्मा के भीतर रहना, और हारा-थका नहीं रहना।

7. जीवन भर हर समय उत्साह और उमंग की एक अवर्णनीय भावना रखना, मानो परमेश्वर की महिमा के दिन का आगमन देख लिया हो।

8. परमेश्वर के साथ महिमा को जीतना और परमेश्वर के प्रिय संतों जैसा चेहरा रखना।

9. वह बनना जो पृथ्वी पर परमेश्वर को प्रिय है, अर्थात्, परमेश्वर का प्रिय पुत्र।

10. स्वरूप बदलना और परमेश्वर के साथ तीसरे स्वर्ग में आरोहण करना तथा देह के पार जाना।

केवल परमेश्वर के आशीषों को विरासत में प्राप्त कर सकने वाले लोग ही परमेश्वर द्वारा पूर्ण और प्राप्त किए जाते हैं। क्या तुमने वर्तमान में कुछ प्राप्त किया है? किस सीमा तक परमेश्वर ने तुम्हें पूर्ण बनाया है? परमेश्वर मनुष्य को संयोग से पूर्ण नहीं बनाता; उसका मनुष्य को पूर्ण बनाना सशर्त है, और उसके स्पष्ट, गोचर परिणाम हैं। ऐसा नहीं है, जैसा कि मनुष्य कल्पना करता है, कि जब तक परमेश्वर में उसका विश्वास है, उसे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया और प्राप्त किया जा सकता है, और वह पृथ्वी पर परमेश्वर के आशीष और विरासत प्राप्त कर सकता है। ऐसी बातें बहुत ही कठिन हैं—लोगों के स्वरूप बदलने के बारे में तो कहना ही क्या! वर्तमान में, तुम लोगों को जो मुख्य रूप से कोशिश करनी चाहिए, वह है सब बातों में परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना, और उन सब लोगों, मामलों और चीजों के माध्यम से परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना, जिनसे तुम लोगों का सामना होता है, ताकि परमेश्वर जो है, वह और अधिक तुम्हारे अंदर गढ़ा जाए। तुम्हें पहले पृथ्वी पर परमेश्वर की विरासत को पाना है; केवल तभी तुम और अधिक विरासत पाने के पात्र बनोगे। ये सब ही वे चीज़ें हैं, जिन्हें तुम लोगों को खोजना चाहिए और अन्य सब चीजों से पहले समझना चाहिए। जितना अधिक तुम परमेश्वर द्वारा हर चीज़ में पूर्ण किए जाने की कोशिश करोगे, उतना अधिक तुम सभी चीज़ों में परमेश्वर का हाथ देख पाओगे, जिसके परिणामस्वरूप तुम, विभिन्न परिप्रेक्ष्यों और विभिन्न मामलों के माध्यम से, परमेश्वर के वचन की सत्ता और उसके वचन की वास्तविकता में प्रवेश करने की सक्रियता से कोशिश करोगे। तुम ऐसी निष्क्रिय स्थितियों से संतुष्ट नहीं हो सकते, जैसे कि मात्र पाप नहीं करना, या जीने के लिए कोई धारणा, कोई दर्शन नहीं रखना, या कोई मानवीय इच्छा नहीं होना। परमेश्वर मनुष्य को कई तरीकों से पूर्ण बनाता है; सभी मामलों में पूर्ण बनाए जाने की संभावना है, और वह

तुम्हें न केवल सकारात्मक रूप में पूर्ण बना सकता है, बल्कि नकारात्मक रूप में भी बना सकता है, ताकि जो तुम प्राप्त करो, वह प्रचुर मात्रा में हो। हर एक दिन परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के अवसर और प्राप्त किए जाने के मौके होते हैं। कुछ समय तक ऐसा अनुभव करने के बाद तुम बहुत बदल जाओगे और स्वाभाविक रूप से ऐसी कई चीज़ें समझ जाओगे, जिनसे तुम पहले अनभिज्ञ थे। तुम्हें दूसरों से निर्देश पाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी; तुम्हारे जाने बिना परमेश्वर तुम्हें प्रबुद्ध बनाएगा, ताकि तुम सभी चीज़ों में प्रबोधन प्राप्त कर सको और अपने सभी अनुभवों में विस्तार से प्रवेश कर सको। परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा, ताकि तुम दाएँ-बाएँ न भटक जाओ, और इस तरह तुम उसके द्वारा पूर्ण बनाए जाने के मार्ग पर पैर रख दोगे।

परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के द्वारा पूर्णता तक सीमित नहीं किया सकता। इस प्रकार का अनुभव बहुत एकतरफा होगा, इसमें बहुत कम चीज़ शामिल होगी और यह लोगों को केवल बहुत छोटे दायरे में सीमित कर देगा। ऐसा होने से लोगों को उस आध्यात्मिक पोषण की बहुत कमी होगी, जिसकी उन्हें आवश्यकता है। यदि तुम लोग परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना चाहते हो, तो तुम्हें यह सीखना कि सभी मामलों में कैसे अनुभव किया जाए, और अपने साथ घटित होने वाली हर चीज़ में प्रबोधन प्राप्त करने योग्य बनना आवश्यक है। वह चीज़ अच्छी हो या बुरी, तुम्हें वह लाभ ही पहुँचाए और तुम्हें नकारात्मक न बनाए। इस बात पर ध्यान दिए बिना, तुम्हें चीज़ों पर परमेश्वर के पक्ष में खड़े होकर विचार करने में सक्षम होना चाहिए और मानवीय दृष्टिकोण से उनका विश्लेषण या अध्ययन नहीं करना चाहिए (यह तुम्हारे अनुभव में भटकना होगा)। यदि तुम ऐसा अनुभव करते हो, तो तुम्हारा हृदय तुम्हारे जीवन के बोझ से भर जाएगा; तुम निरंतर परमेश्वर के मुखमंडल की रोशनी में जियोगे, और अपने अभ्यास में आसानी से विचलित नहीं होओगे। ऐसे लोगों का भविष्य उज्ज्वल होता है। परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के बहुत सारे अवसर हैं। यह सब इस बात पर निर्भर करता है क्या तुम लोग सच में परमेश्वर से प्यार करते हो और क्या तुम लोगों में परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने, परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने, और उसके आशीष और विरासत प्राप्त करने का संकल्प है। केवल संकल्प ही काफी नहीं है। तुम लोगों के पास बहुत ज्ञान होना चाहिए, अन्यथा तुम लोग अपने अभ्यास में हमेशा भटकते रहोगे। परमेश्वर तुम लोगों में से प्रत्येक को पूर्ण बनाने का इच्छुक है। वर्तमान में, लंबे समय से अधिकांश लोगों ने पहले ही परमेश्वर के कार्य को स्वीकार कर लिया है, लेकिन उन्होंने अपने आपको मात्र परमेश्वर के अनुग्रह में

आनंद लेने तक सीमित कर लिया है, और वे केवल उससे देह के कुछ सुख पाने के लिए लालायित हैं, उससे अधिक और उच्चतर खुलासे प्राप्त करने के इच्छुक नहीं है। इससे पता चलता है कि मनुष्य का हृदय अभी भी हमेशा बाहरी बातों में लगा रहता है। भले ही मनुष्य के कार्य, उसकी सेवा और परमेश्वर के लिए उसके प्रेमी हृदय में कुछ अशुद्धताएँ कम हों, पर जहाँ तक उसके भीतरी सार और उसकी पिछड़ी सोच का संबंध है, मनुष्य अभी भी निरंतर देह की शांति और आनंद की खोज में लगा है और परमेश्वर द्वारा मनुष्य को पूर्ण बनाए जाने की शर्तों और प्रयोजनों की जरा भी परवाह नहीं करता। और इसलिए, ज्यादातर लोगों का जीवन अभी भी असभ्य और पतनशील है। उनका जीवन जरा भी नहीं बदला है; वे स्पष्टत: परमेश्वर में विश्वास को कोई महत्वपूर्ण मामला नहीं मानते, बल्कि ऐसा लगता है जैसे वे बस दूसरों की खातिर परमेश्वर में विश्वास करते हैं, प्रेरणाओं से संचालित हैं, और निष्प्रयोजन अस्तित्व में भटकते हुए लापरवाही से जी रहे हैं। कुछ ही हैं, जो सब चीज़ों में परमेश्वर के वचन में प्रवेश करने की कोशिश कर पाते हैं, अधिक और कीमती वस्तुएँ पाते हैं, परमेश्वर के घर में आज बड़े धनी बन गए हैं, और परमेश्वर के अधिक आशीष पा रहे हैं। यदि तुम सब चीज़ों में परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना चाहते हो, और पृथ्वी पर परमेश्वर ने जो देने का वादा किया है, उसे प्राप्त करने में समर्थ हो; यदि तुम सब चीज़ों में परमेश्वर द्वारा प्रबुद्ध होना चाहते हो और वर्षों को बेकार गुज़रने नहीं देते, तो सक्रियता से प्रवेश करने का यह आदर्श मार्ग है। केवल इसी तरह से तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के योग्य और पात्र बनोगे। क्या तुम सचमुच परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की कोशिश करने वाले व्यक्ति हो? क्या तुम सचमुच सभी चीज़ों में ईमानदार रहने वाले व्यक्ति हो है? क्या तुममें परमेश्वर के लिए प्रेम की वही भावना है, जो पतरस में थी? क्या तुममें परमेश्वर से प्रेम करने की वैसी ही इच्छा है, जैसी यीशु में थी? तुमने अनेक वर्षों से यीशु पर विश्वास रखा है; क्या तुमने देखा है कि यीशु परमेश्वर को कैसे प्यार करता था? क्या तुम सच में यीशु में ही विश्वास रखते हो? तुम आज के व्यावहारिक परमेश्वर में विश्वास करते हो; क्या तुमने देखा है कि देहधारी व्यावहारिक परमेश्वर स्वर्ग के परमेश्वर से किस तरह प्यार करता है? तुम्हें प्रभु यीशु मसीह में विश्वास है; और वह इसलिए क्योंकि मनुष्य को छुड़ाने के लिए यीशु का सलीब पर चढ़ाया जाना और उसके द्वारा किए गए चमत्कार सामान्यतः स्वीकृत सत्य है। फिर भी मनुष्य का विश्वास यीशु मसीह के ज्ञान और सच्ची समझ से नहीं आता। तुम केवल यीशु मसीह के नाम में विश्वास करते हो, उसके आत्मा में विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम इस बात पर ध्यान नहीं देते कि यीशु ने परमेश्वर से किस तरह प्यार किया था। परमेश्वर में तुम्हारा

विश्वास कहीं अधिक भोला है। यीशु पर कई वर्षों तक विश्वास करने के बावजूद तुम नहीं जानते कि परमेश्वर को कैसे प्यार करना है। क्या यह तुम्हें संसार का सबसे बड़ा मूर्ख नहीं बनाता? यह इस बात का प्रमाण है कि वर्षों से तुम प्रभु यीशु मसीह का भोजन बेकार में ही खाते आ रहे हो। न सिर्फ मैं ऐसे लोगों को नापसंद करता हूँ, बल्कि यह भी मानता हूँ कि प्रभु यीशु मसीह—जिसकी तुम आराधना करते हो—भी उन्हें नापसंद करेगा। ऐसे लोगों को पूर्ण कैसे बनाया जा सकता है? क्या तुम शर्मिंदगी से लाल नहीं होते? क्या क्या तुहें लज्जा नहीं आती? क्या तुममें अभी भी अपने प्रभु यीशु मसीह का सामना करने की धृष्टता है? क्या तुम लोग उसका मतलब समझते हो, जो मैंने कहा?

दुष्टों को निश्चित ही दंड दिया जाएगा

इस बात का निरीक्षण करना कि तुम जो कुछ भी करते हो, क्या उसमें धार्मिकता का अभ्यास करते हो, और क्या तुम्हारी समस्त क्रियाओं की परमेश्वर द्वारा निगरानी की जाती है : यह वह सिद्धांत है, जिसके द्वारा परमेश्वर में विश्वास करने वाले लोग अपने कार्य करते हैं। तुम लोग धर्मी कहलाओगे, क्योंकि तुम लोग परमेश्वर को संतुष्ट करने में सक्षम हो, और क्योंकि तुम परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा स्वीकार करते हो। परमेश्वर की नज़र में जो लोग परमेश्वर की देखभाल, सुरक्षा और पूर्णता स्वीकार करते हैं, और जो उसके द्वारा प्राप्त कर लिए जाते हैं, वे धर्मी हैं और परमेश्वर उन्हें मूल्यवान समझता है। जितना अधिक तुम परमेश्वर के वर्तमान वचन स्वीकार करते हो, उतना ही अधिक तुम परमेश्वर की इच्छा प्राप्त करने और समझने में सक्षम हो जाते हो, और उतना ही अधिक तुम परमेश्वर के वचनों को जी सकते हो और उसकी अपेक्षाएँ पूरी कर सकते हो। यह तुम लोगों के लिए परमेश्वर का आदेश है, जिसे प्राप्त करने में तुम लोगों को सक्षम होना चाहिए। यदि तुम परमेश्वर के मापन और परिसीमन के लिए अपनी धारणाओं का उपयोग करते हो, मानो परमेश्वर कोई मिट्टी की अचल मूर्ति हो, और अगर तुम लोग परमेश्वर को बाइबल के मापदंडों के भीतर सीमांकित करते हो और उसे कार्य के एक सीमित दायरे में समाविष्ट करते हो, तो इससे यह प्रमाणित होता है कि तुम लोगों ने परमेश्वर की निंदा की है। चूँकि पुराने विधान के युग के यहूदियों ने परमेश्वर को एक अचल प्रतिमा के रूप में लिया था, जिसे वे अपने हृदयों में रखते थे, मानो परमेश्वर को मात्र मसीह ही कहा जा सकता था, और मात्र वही, जिसे मसीह कहा जाता था, परमेश्वर हो सकता हो, और चूँकि मानवजाति परमेश्वर की सेवा और आराधना इस तरह से करती थी, मानो वह मिट्टी की एक (निर्जीव)

मूर्ति हो, इसलिए उन्होंने उस समय के यीशु को मौत की सजा देते हुए सलीब पर चढ़ा दिया—निर्दोष यीशु को इस तरह मौत की सजा दे दी गई। परमेश्वर ने कोई अपराध नहीं किया था, फिर भी मनुष्य ने उसे छोड़ने से इनकार कर दिया, और उसे मृत्युदंड देने पर जोर दिया, और इसलिए यीशु को सलीब पर चढ़ा दिया गया। मनुष्य सदैव विश्वास करता है कि परमेश्वर स्थिर है, और वह उसे एक अकेली पुस्तक बाइबल के आधार पर परिभाषित करता है, मानो मनुष्य को परमेश्वर के प्रबंधन की पूर्ण समझ हो, मानो मनुष्य वह सब अपनी हथेली पर रखता हो, जो परमेश्वर करता है। लोग बेहद बेतुके, बेहद अहंकारी और स्वभाव से बड़बोले हैं। परमेश्वर के बारे में तुम्हारा ज्ञान कितना भी महान क्यों न हो, मैं फिर भी यही कहता हूँ कि तुम परमेश्वर को नहीं जानते, कि तुम वह व्यक्ति हो जो परमेश्वर का सबसे अधिक विरोध करता है, और कि तुमने परमेश्वर की निंदा की है, कि तुम परमेश्वर के कार्य का पालन करने और परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के मार्ग पर चलने में सर्वथा अक्षम हो। क्यों परमेश्वर मनुष्य के कार्यकलापों से कभी संतुष्ट नहीं होता? क्योंकि मनुष्य परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि उसकी अनेक धारणाएँ है, क्योंकि उसका परमेश्वर का ज्ञान वास्तविकता से किसी भी तरह मेल नहीं खाता, इसके बजाय वह नीरस ढंग से एक ही विषय को बिना बदलाव के दोहराता रहता है और हर स्थिति के लिए एक ही दृष्टिकोण इस्तेमाल करता है। और इसलिए, आज पृथ्वी पर आने पर, परमेश्वर को एक बार फिर मनुष्य द्वारा सलीब पर चढ़ा दिया गया है। क्रूर मानवजाति! साँठ-गाँठ और साज़िश, एक-दूसरे से छीनना और हथियाना, प्रसिद्धि और संपत्ति के लिए हाथापाई, आपसी कत्लेआम—यह सब कब समाप्त होगा? परमेश्वर द्वारा बोले गए लाखों वचनों के बावजूद किसी को भी होश नहीं आया है। लोग अपने परिवार और बेटे-बेटियों के वास्ते, आजीविका, भावी संभावनाओं, हैसियत, महत्वाकांक्षा और पैसों के लिए, भोजन, कपड़ों और देह-सुख के वास्ते कार्य करते हैं। पर क्या कोई ऐसा है, जिसके कार्य वास्तव में परमेश्वर के वास्ते हैं? यहाँ तक कि जो परमेश्वर के लिए कार्य करते हैं, उनमें से भी बहुत थोड़े ही हैं, जो परमेश्वर को जानते हैं। कितने लोग अपने स्वयं के हितों के लिए काम नहीं करते? कितने लोग अपनी हैसियत बचाए रखने के लिए दूसरों पर अत्याचार या उनका बहिष्कार नहीं करते? और इसलिए, परमेश्वर को असंख्य बार बलात् मृत्युदंड दिया गया है, और अनगिनत बर्बर न्यायाधीशों ने परमेश्वर की निंदा की है और एक बार फिर उसे सलीब पर चढ़ाया है। कितने लोगों को इसलिए धर्मी कहा जा सकता है, क्योंकि वे वास्तव में परमेश्वर के लिए कार्य करते हैं?

क्या परमेश्वर के सामने एक संत या धर्मी व्यक्ति के रूप में पूर्ण बनाया जाना इतना आसान है? यह

एक सच्चा वक्तव्य है कि "इस पृथ्वी पर कोई भी धर्मी नहीं है, जो धर्मी हैं वे इस संसार में नहीं हैं।" जब तुम लोग परमेश्वर के सम्मुख आते हो, तो विचार करो कि तुम लोग क्या पहने हुए हो, अपने हर शब्द और क्रिया, अपने हर विचार और धारणा, और यहाँ तक कि उन सपनों पर भी विचार करो, जिन्हें तुम लोग हर दिन देखते हो—वे सब तुम्हारे अपने वास्ते हैं। क्या यह सही स्थिति नहीं है? "धार्मिकता" का अर्थ भिक्षा देना नहीं है, इसका अर्थ अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना नहीं है, और इसका अर्थ लड़ाई-झगड़ों और विवादों, लूट या चोरी से अलग रहना नहीं है। धार्मिकता का अर्थ परमेश्वर के आदेश को अपने कर्तव्य के रूप में लेना और, समय और स्थान की परवाह किए बिना परमेश्वर के आयोजनों और व्यवस्थाओं का अपनी स्वर्ग से भेजी गई वृत्ति के रूप में पालन करना है, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु यीशु द्वारा किया गया था। यही वह धार्मिकता है, जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था। लूत को धर्मी इसलिए कहा जा सका था, क्योंकि उसने अपने लाभ-हानि का विचार किए बिना परमेश्वर द्वारा भेजे गए दो फ़रिश्तों को बचाया था; केवल यही कहा जा सकता है कि उसने उस समय जो किया, उसे धर्मी कहा जा सकता है, परंतु उसे धर्मी पुरुष नहीं कहा जा सकता। चूँकि लूत ने परमेश्वर को देखा था, केवल इसलिए उसने उन फ़रिश्तों के बदले अपनी दो बेटियाँ दे दीं, किंतु अतीत का उसका समस्त आचरण धार्मिकता का प्रतिनिधित्व नहीं करता था। और इसलिए मैं कहता हूँ कि "इस पृथ्वी पर कोई धर्मी नहीं है।" यहाँ तक कि जो लोग सही हालत में आने की धारा में हैं, उनमें से भी किसी को धर्मी नहीं कहा जा सकता। तुम्हारे कार्य कितने भी अच्छे क्यों न हों, तुम परमेश्वर के नाम का महिमामंडन करते हुए कैसे दिखाई देते हो, दूसरों को मारते या श्राप नहीं देते, न ही दूसरों की चोरी करते और उन्हें लूटते हो, तब भी तुम्हें धर्मी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह बात तो किसी सामान्य व्यक्ति में भी हो सकती है। अभी जो महत्वपूर्ण है, वह यह है कि तुम परमेश्वर को नहीं जानते। केवल यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में तुममें थोड़ी-सी सामान्य मानवीयता है, लेकिन परमेश्वर द्वारा कही गई धार्मिकता का कोई तत्त्व नहीं है, और इसलिए जो कुछ भी तुम करते हो, उसमें से कुछ भी यह साबित करने में सक्षम नहीं है कि तुम परमेश्वर को जानते हो।

पहले, जब परमेश्वर स्वर्ग में था, तब मनुष्य ने इस तरह कार्य किया, जो परमेश्वर के प्रति धोखा था। आज परमेश्वर मनुष्य के बीच में है—कोई नहीं जानता कि कितने वर्ष हो गए हैं—फिर भी कार्य करते हुए मनुष्य प्रवृत्तियों से गुज़र रहा है और परमेश्वर को मूर्ख बनाने की कोशिश कर रहा है। क्या मनुष्य अपनी सोच में अत्यंत पिछड़ा हुआ नहीं है? ऐसा ही यहूदा के साथ था : यीशु के आने से पहले यहूदा अपने भाई-

बहनों से झूठ बोला करता था, यहाँ तक कि यीशु के आने के बाद भी वह नहीं बदला; वह यीशु के बारे में जरा भी नहीं जानता था, और अंत में उसने यीशु के साथ विश्वासघात किया। क्या इसका कारण यह नहीं था कि वह परमेश्वर को नहीं जानता था? यदि आज तुम लोग अभी भी परमेश्वर को नहीं जानते, तो संभव है कि तुम लोग दूसरे यहूदा बन जाओ और इसके परिणामस्वरूप दो हजार वर्ष पहले अनुग्रह के युग में यीशु को सलीब पर चढ़ाए जाने की त्रासदी पुनः खेली जाए। क्या तुम लोगों को इस बात पर विश्वास नहीं है? यह सच है! वर्तमान में ज़्यादातर लोग ऐसी ही स्थिति में हैं—हो सकता है, मैं यह बात थोड़ा ज्यादा जल्दी कह रहा हूँ—और ऐसे लोग यहूदा की भूमिका निभा रहे हैं। मैं अनर्गल नहीं कह रहा, बल्कि तथ्य के आधार पर कह रहा हूँ—और तुम विश्वास किए बिना नहीं रह सकते। यद्यपि अनेक लोग विनम्रता का दिखावा करते हैं, किंतु उनके हृदयों में बंद पानी के एक कुंड, बदबूदार पानी के एक नाले के अलावा कुछ नहीं है। अभी कलीसिया में इस तरह के बहुत लोग हैं, और तुम लोग सोचते हो, मुझे कुछ पता नहीं है। आज मेरा पवित्रात्मा मेरे लिए निर्णय लेता है और मेरे लिए गवाही देता है। क्या तुम्हें लगता है कि मैं कुछ नहीं जानता? क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम लोगों के दिलों के अंदर के कपटपूर्ण विचारों, या जो चीज़ें तुम अपने दिलों के भीतर रखते हो, उनके बारे में कुछ नहीं समझता? क्या परमेश्वर को धोखा देना इतना आसान है? क्या तुम्हें लगता है कि तुम परमेश्वर के साथ जैसा चाहो, वैसा व्यवहार कर सकते हो? अतीत में मैं चिंतित था कि शायद तुम लोग लाचार हो, इसलिए मैं तुम लोगों को स्वतंत्रता देता गया, किंतु मनुष्यता यह बताने में असमर्थ थी कि मैं उनके साथ भलाई कर रहा था, और इसलिए जब मैंने उन्हें उँगली पकड़ाई, तो उन्होंने पहुँचा पकड़ लिया। अपने बीच एक-दूसरे से पूछो : मैं लगभग किसी से भी कभी नहीं निपटा, और मैंने किसी को भी कभी हलके-से भी नहीं फटकारा—फिर भी मैं मनुष्य की अभिप्रेरणाओं और धारणाओं के बारे में बहुत स्पष्ट हूँ। क्या तुम्हें लगता है कि स्वयं परमेश्वर, जिसकी गवाही परमेश्वर देता है, मूर्ख है? यदि ऐसा है, तो मैं कहता हूँ कि तुम बहुत अंधे हो। मैं तुम्हें बेनकाब नहीं करूँगा, पर आओ देखें कि तुम कितने भ्रष्ट हो सकते हो। आओ देखें कि क्या तुम्हारी चालाकियाँ तुम्हें बचा सकती हैं, या परमेश्वर से प्रेम करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास करना तुम्हें बचा सकता है? आज मैं तुम्हारी निंदा नहीं करूँगा; आओ यह देखने के लिए परमेश्वर के समय का इंतजार करें, कि वह तुमसे कैसे प्रतिशोध लेता है। अब मेरे पास तुम्हारे साथ निरर्थक बातचीत के लिए समय नहीं है, और मैं केवल तुम्हारे वास्ते अपने बड़े काम में विलंब नहीं करना चाहता। तुम जैसे किसी भुनगे के साथ व्यवहार करने में परमेश्वर को जो समय लगेगा, तुम उसके योग्य

नहीं हो—इसलिए आओ देखें, तुम कितने लंपट हो सकते हो। ऐसे लोग परमेश्वर के थोड़े-से भी ज्ञान की खोज नहीं करते, न ही उनमें परमेश्वर के लिए थोड़ा-सा भी प्रेम होता है, और फिर भी वे परमेश्वर द्वारा धर्मी कहलाए जाने की इच्छा रखते हैं—क्या यह एक मज़ाक नहीं है? चूँकि वास्तव में ईमानदार लोगों की संख्या बहुत थोड़ी है, इसलिए मैं अपने आपको मनुष्य को केवल जीवन देने पर ही ध्यान केंद्रित करूँगा। मैं केवल वही करूँगा, जो मुझे आज करना चाहिए, किंतु भविष्य में मैं हर व्यक्ति को उसके कार्यों के अनुसार प्रतिफल दूँगा। जो कहने की बात है, वह मैंने कह दी है, क्योंकि ठीक यही वह कार्य है, जो मैं करता हूँ। मैं केवल वही करता हूँ जो मुझे करना चाहिए, और वह नहीं करता जो मुझे नहीं करना चाहिए। फिर भी, मुझे आशा है कि तुम लोग इस बारे में सोचने पर अधिक समय व्यतीत करोगे : वास्तव में परमेश्वर के बारे में तुम्हारा ज्ञान कितना सच्चा है? क्या तुम वैसे व्यक्ति हो, जिसने परमेश्वर को एक बार और सलीब पर चढ़ाया है? मेरे अंतिम शब्द ये हैं : धिक्कार है उन लोगों को, जो परमेश्वर को सलीब पर चढ़ाते हैं।

एक सामान्य अवस्था में प्रवेश कैसे करें

लोग परमेश्वर के वचनों को जितना अधिक स्वीकार करते हैं, वे उतने ही अधिक प्रबुद्ध होते हैं, परमेश्वर को जानने की उनकी भूख और प्यास उतनी ही बढ़ती है। परमेश्वर के वचनों को स्वीकारने वाले ही अधिक समृद्ध और गहन अनुभव कर पाने के काबिल होते हैं, केवल उन्हीं लोगों का जीवन तिल के फूलों की तरह खिलता चला जाता है। जीवन का अनुसरण करने वाले सभी लोगों को इसे ही अपना पूर्णकालिक काम समझना चाहिए; उन्हें लगना चाहिए कि "परमेश्वर के बिना मैं जी नहीं सकता; परमेश्वर के बिना मैं कुछ भी नहीं कर सकता; परमेश्वर के बिना हर चीज़ खोखली है।" उसी तरह, उनमें यह संकल्प होना चाहिए कि "पवित्र आत्मा की उपस्थिति के बिना मैं कुछ भी नहीं करूँगा, और अगर परमेश्वर के वचनों को पढ़कर कोई प्रभाव नहीं होता, तो मैं कुछ भी करने से उदासीन हूँ।" स्वयं को लिप्त मत करो। जीवन-अनुभव परमेश्वर के प्रबोधन और मार्गदर्शन से आते हैं, और वे तुम लोगों के व्यक्तिपरक प्रयासों का क्रिस्टलीकरण हैं। तुम लोगों को अपने आपसे यह माँग करनी चाहिए : "जब जीवन-अनुभव की बात आती है, तो मैं स्वयं को छूट नहीं दे सकता।"

कभी-कभी, जब तुम असामान्य परिस्थितियों में होते हो, तो परमेश्वर की उपस्थिति को गँवा देते हो और जब प्रार्थना करते हो तो परमेश्वर को महसूस नहीं कर पाते। ऐसे वक्त डर लगना सामान्य बात है।

तुम्हें तुरंत खोज शुरू कर देनी चाहिए। अगर तुम नहीं करोगे, तो परमेश्वर तुमसे अलग हो जाएगा और तुम पवित्र आत्मा की उपस्थिति से वंचित हो जाओगे—इतना ही नहीं, एक-दो दिन, यहाँ तक कि एक-दो महीनों के लिए पवित्र आत्मा के कार्य की उपस्थिति से वंचित रहोगे। इन हालात में, तुम बेहद सुन्न हो जाते हो और एक बार फिर से इस हद तक शैतान के बंदी बन जाते हो कि तुम हर तरह के कुकर्म करने लगते हो। तुम धन का लालच करते हो, अपने भाई-बहनों को धोखा देते हो, फिल्में और वीडियो देखते हो, जुआ खेलते हो, यहाँ तक कि बिना किसी अनुशासन के सिगरेट और शराब पीते हो। तुम्हारा दिल परमेश्वर से बहुत दूर चला जाता है, तुम गुप्त रूप से अपने रास्ते पर चल देते हो और मनमर्ज़ी से परमेश्वर के कार्य पर अपना फैसला सुना देते हो। कुछ मामलों में लोग इस हद तक गिर जाते हैं कि यौन प्रकृति के पाप करते समय न तो उन्हें कोई शर्म आती है और न ही उन्हें घबराहट महसूस होती है। पवित्र आत्मा ने इस प्रकार के व्यक्ति का त्याग कर दिया है; दरअसल, काफी समय से ऐसे व्यक्ति में पवित्र आत्मा का कार्य नदारद रहा है। ऐसे व्यक्ति को लगातार भ्रष्टता में और अधिक डूबते हुए देखा जा सकता है, क्योंकि बुराई के हाथ निरंतर फैलते जाते हैं। अंत में, वह इस मार्ग के अस्तित्व को नकार देता है और जब वो पाप करता है तो शैतान द्वारा उसे बंदी बना लिया जाता है। अगर तुम्हें पता चले कि तुम्हारे अंदर केवल पवित्र आत्मा की उपस्थिति है, किंतु पवित्र आत्मा के कार्य का अभाव है, तो ऐसी स्थिति में होना पहले ही खतरनाक होता है। जब तुम पवित्र आत्मा की उपस्थिति को महसूस भी न कर सको, तब तुम मौत के कगार पर हो। अगर तुम प्रायश्चित न करो, तब तुम पूरी तरह से शैतान के पास लौट चुके होगे, और तुम उन व्यक्तियों में होगे, जिन्हें मिटा दिया गया है। इसलिए, जब तुम्हें पता चलता है कि तुम ऐसी स्थिति में हो, जहाँ केवल पवित्र आत्मा की उपस्थिति है (तुम पाप नहीं करते, तुम अपने आपको रोक लेते हो और तुम परमेश्वर के घोर प्रतिरोध में कुछ नहीं करते), लेकिन तुममें पवित्र आत्मा के कार्य का अभाव है (तुम प्रार्थना करते हुए प्रेरित महसूस नहीं करते, जब तुम परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते हो, तो तुम्हें स्पष्टत: न तो प्रबोधन हासिल होता है, न ही प्रकाशन, तुम परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के बारे में उदासीन होते हो, तुम्हारे जीवन में कभी कोई विकास नहीं होता और तुम लंबे समय से महान प्रकाशन से वंचित रहे हो)—ऐसे समय तुम्हें अधिक सतर्क रहना चाहिए। तुम्हें स्वयं को लिप्त नहीं रखना चाहिए, तुम्हें अपने चरित्र की लगाम को और अधिक ढीला नहीं छोड़ना चाहिए। पवित्र आत्मा की उपस्थिति किसी भी समय गायब हो सकती है। इसीलिए ऐसी स्थिति बहुत ही खतरनाक होती है। अगर तुम अपने को इस तरह की स्थिति में पाओ, तो यथाशीघ्र तुम्हें चीज़ों को

पलटने का प्रयास करना चाहिए। पहले, तुम्हें प्रायश्चित की प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर से कहना चाहिए कि वह एक बार और तुम पर करुणा करे। अधिक गंभीरता से प्रार्थना करो, और परमेश्वर के और अधिक वचनों को खाने-पीने के लिए अपने दिल को शांत करो। इस आधार के साथ, तुम्हें प्रार्थना में और अधिक समय लगाना चाहिए; गाने, प्रार्थना करने, परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने और अपना कर्तव्य निभाने के लिए अपने प्रयासों को दुगुना कर दो। जब तुम सबसे कमज़ोर होते हो, तो उस समय शैतान तुम्हारे दिल पर बड़ी आसानी से कब्ज़ा कर लेता है। जब ऐसा होता है, तो तुम्हारा दिल परमेश्वर से लेकर शैतान को लौटा दिया जाता है, जिसके बाद तुम पवित्र आत्मा की उपस्थिति से वंचित हो जाते हो। ऐसे समय, पवित्र आत्मा के कार्य को पुन: प्राप्त करना और भी मुश्किल होता है। बेहतर है कि जब तक पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ है, तभी पवित्र आत्मा के कार्य की खोज कर ली जाए, जिससे परमेश्वर तुम्हें अपना प्रबोधन और अधिक प्रदान करेगा है और तुम्हारा त्याग नहीं करेगा। प्रार्थना करना, भजन गाना, सेवा-कार्य करना और परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना—ये सब इसलिए किया जाता है ताकि शैतान को अपना काम करने का अवसर न मिले, और पवित्र आत्मा तुममें अपना कार्य कर सके। अगर तुम इस तरह से पवित्र आत्मा के कार्य को पुन: प्राप्त नहीं करते, अगर तुम बस प्रतीक्षा करते रहते हो, तो पवित्र आत्मा की उपस्थिति को गँवा देने के बाद पवित्र आत्मा के कार्य को पुन: प्राप्त करना आसान नहीं होगा, जब तक कि पवित्र आत्मा ने तुम्हें विशेष रूप से प्रेरित न किया हो, या खास तौर से तुम्हें प्रबुद्ध और प्रकाशित न किया हो। तब भी, तुम्हारी स्थिति महज़ एक-दो दिनों में बहाल नहीं हो जाती; कभी-कभी तो बिना बहाली के छ्ह-छह महीने निकल जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि लोग अपने साथ काफी नरमी बरतते हैं, सामान्य तरीके से चीज़ों का अनुभव लेने में सक्षम नहीं होते और इस तरह उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा त्याग दिया जाता है। अगर तुम पवित्र आत्मा के कार्य को पुन: प्राप्त कर भी लो, तो भी परमेश्वर का वर्तमान कार्य शायद तुम्हें ज्यादा स्पष्ट न हो, क्योंकि तुम अपने जीवन-अनुभव में बहुत पीछे छूट चुके हो, मानो तुम दस हज़ार मील पीछे रह गए हो। क्या यह भयानक बात नहीं है? लेकिन मैं ऐसे लोगों से कहता हूँ कि प्रायश्चित करने में अभी भी देर नहीं हुई है, लेकिन एक शर्त है : तुम्हें अधिक मेहनत करनी होगी और आलस्य से बचना होगा। अगर दूसरे लोग दिन में पाँच बार प्रार्थना करते हैं, तो तुम्हें दस बार प्रार्थना करनी होगी; अगर अन्य लोग परमेश्वर के वचनों को दिन में दो घंटे खाते और पीते हैं, तो तुम्हें ऐसा चार या छह घंटे करना होगा; और अगर अन्य लोग दो घंटे भजन सुनते हैं, तो तुम्हें कम से कम आधा दिन भजन सुनने होंगे। जब

तक कि तुम प्रेरित न हो जाओ और तुम्हारा दिल परमेश्वर के पास लौट न आए, तब तक तुम परमेश्वर के सामने शांत रहो और परमेश्वर के प्रेम का विचार करो और परमेश्वर से दूर रहने का साहस न करो—तभी तुम्हारा अभ्यास फलीभूत होगा; तभी तुम अपनी पिछली, सामान्य स्थिति को बहाल कर पाओगे।

कुछ लोग अपनी खोज में बहुत जोश भर देते हैं और फिर भी सही मार्ग में प्रवेश नहीं कर पाते। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि वे बेहद लापरवाह होते हैं और आध्यात्मिक चीज़ों पर कोई ध्यान नहीं देते। उन्हें इस बात का कोई पता नहीं होता कि परमेश्वर के वचनों का अनुभव कैसे करना है, और उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि पवित्र आत्मा का कार्य और उसकी उपस्थिति क्या होती है। ऐसे लोग उत्साही तो होते हैं, लेकिन मूर्ख भी होते हैं; वे जीवन का अनुसरण नहीं करते। क्योंकि तुम्हें आत्मा का ज्ञान ज़रा-सा भी नहीं है, तुम्हें पवित्र आत्मा के निरंतर चल रहे कार्य के विकास की कोई जानकारी नहीं है, और तुम स्वयं अपनी आत्मा की स्थिति के बारे में अनजान हो। क्या इस तरह के लोगों की आस्था मूर्खतापूर्ण किस्म की आस्था नहीं है? ऐसे लोगों की खोज अंततः कुछ हासिल नहीं करती। परमेश्वर में अपनी आस्था में विकास प्राप्त करने की मुख्य कुँजी है यह जानना कि परमेश्वर तुम्हारे अनुभव में क्या कार्य करता है, परमेश्वर की मनोहरता का अवलोकन करना और परमेश्वर की इच्छा को समझना, इस हद तक कि तुम परमेश्वर की सारी व्यवस्थाओं को मान लो, परमेश्वर के वचनों को अपने अंदर गढ़ लो ताकि वे तुम्हारा जीवन बन जाएँ और फलस्वरूप परमेश्वर को संतुष्ट करें। अगर तुम्हारी आस्था मूर्खतापूर्ण आस्था है, अगर तुम आध्यात्मिक बातों और अपने जीवन-स्वभाव में आए बदलावों पर कोई ध्यान नहीं देते, अगर तुम सत्य के लिए कोई प्रयास नहीं करते, तो क्या तुम परमेश्वर की इच्छा को समझ पाओगे? अगर तुम यह नहीं समझते कि परमेश्वर क्या चाहता है, तो तुम अनुभव करने के नाकाबिल होगे, और इस तरह तुम्हारे पास अभ्यास का कोई मार्ग नहीं होगा। जब तुम परमेश्वर के वचनों का अनुभव करो, तो तुम्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर क्या प्रभाव पैदा कर रहे हैं, ताकि तुम परमेश्वर को उसके वचनों से जान सको। अगर तुम मात्र परमेश्वर के वचनों को पढ़ना जानते हो, लेकिन यह नहीं जानते कि उनका अनुभव कैसे करना है, तो क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि तुम आध्यात्मिक मामलों से अनजान हो? इस समय, अधिकतर लोग परमेश्वर के वचनों का अनुभव कर पाने में असमर्थ हैं और इस तरह वे परमेश्वर के कार्य को नहीं जानते। क्या यह उनका अपने अभ्यास में विफल होना नहीं है? अगर वे ऐसे ही करते रहे, तो वे किस मुकाम पर जाकर चीज़ों को उनकी पूर्णता में अनुभव कर पाने में सक्षम होंगे और अपने जीवन में विकास

प्राप्त कर पाएँगे। क्या यह महज़ खोखली बातें करना नहीं है? तुम लोगों में से बहुत लोग ऐसे हैं जो सिद्धांत पर ध्यान देते हैं, जिन्हें आध्यात्मिक मामलों का कोई ज्ञान नहीं है, और फिर भी वे चाहते हैं कि परमेश्वर उनका कोई बड़ा इस्तेमाल करे और उन्हें आशीष दे। यह एकदम अवास्तविक बात है! इस तरह, तुम लोगों को इस नाकामी का अंत करना चाहिए, ताकि तुम सब अपने आध्यात्मिक जीवन के सही मार्ग में प्रवेश कर सको, वास्तविक अनुभव ले सको और सचमुच परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश कर सको।

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सेवा कैसे करें

जब कोई परमेश्वर में विश्वास करता है, तो उसे वास्तव में, कैसे उसकी सेवा करनी चाहिए? किन शर्तों को पूरा किया जाना चाहिए और परमेश्वर की सेवा करने वाले उन लोगों द्वारा किन सच्चाइयों को समझना चाहिए? और कहाँ पर तुम लोग अपनी सेवा में विचलित हो सकते हो? तुम लोगों को इन सभी बातों का उत्तर जानना चाहिए। ये मुद्दे इस बात को छूते हैं कि तुम लोग परमेश्वर पर किस प्रकार विश्वास करते हो, और तुम पवित्र आत्मा की अगुआई वाले मार्ग पर किस प्रकार चलते हो और हर चीज़ में परमेश्वर के आयोजनों के प्रति किस प्रकार समर्पित होते हो, और इस प्रकार ये मुद्दे तुम्हें अपने में परमेश्वर के कार्य के हर कदम को समझने का अवसर देते हैं। जब तुम लोग उस बिंदु पर पहुँचोगे, तब तुम समझोगे कि परमेश्वर में विश्वास करना क्या होता है, परमेश्वर पर उचित तरीके से विश्वास किस प्रकार किया जाए, और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप कार्य करने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। यह तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य के प्रति पूर्णतः और सर्वथा आज्ञाकारी बना देगा, और तुम्हारे पास कोई शिकायतें नहीं होंगी और तुम परमेश्वर के कार्य की आलोचना या विश्लेषण नहीं करोगे, और अनुसंधान तो बिलकुल नहीं करोगे। इस प्रकार, तुम सभी लोग मृत्यु तक परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने में सक्षम होगे, और परमेश्वर को इस बात का अवसर दोगे कि वह तुम लोगों को एक भेड़ की तरह रास्ते पर ले आए और तुम्हारा अंत कर दे, ताकि तुम सब 1990 के पतरस बन सको, और जरा-सी भी शिकायत किए बिना सलीब तक पर परमेश्वर से अधिकतम प्रेम कर सको। केवल तभी तुम लोग 1990 के पतरस के समान जीने में समर्थ हो सकते हो।

प्रत्येक व्यक्ति, जिसने संकल्प लिया है, परमेश्वर की सेवा कर सकता है—परंतु यह अवश्य है कि जो परमेश्वर की इच्छा का पूरा ध्यान रखते हैं और परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं, केवल वे ही परमेश्वर की

सेवा करने के योग्य और पात्र हैं। मैंने तुम लोगों में यह पाया है : बहुत-से लोगों का मानना है कि जब तक वे परमेश्वर के लिए सुसमाचार का उत्साहपूर्वक प्रसार करते हैं, परमेश्वर के लिए सड़क पर जाते हैं, परमेश्वर के लिए स्वयं को खपाते एवं चीज़ों का त्याग करते हैं, इत्यादि, तो यह परमेश्वर की सेवा करना है। यहाँ तक कि अधिक धार्मिक लोग मानते हैं कि परमेश्वर की सेवा करने का अर्थ बाइबल हाथ में लेकर यहाँ-वहाँ भागना, स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का प्रसार करना और पश्चात्ताप तथा पाप स्वीकार करवाकर लोगों को बचाना है। बहुत-से धार्मिक अधिकारी हैं, जो सोचते हैं कि सेमिनरी में उन्नत अध्ययन करने और प्रशिक्षण लेने के बाद चैपलों में उपदेश देना और बाइबल के धर्मग्रंथ को पढ़कर लोगों को शिक्षा देना परमेश्वर की सेवा करना है। इतना ही नहीं, गरीब इलाकों में ऐसे भी लोग हैं, जो मानते हैं कि परमेश्वर की सेवा करने का अर्थ बीमार लोगों की चंगाई करना और अपने भाई-बहनों में से दुष्टात्माओं को निकालना है, या उनके लिए प्रार्थना करना या उनकी सेवा करना है। तुम लोगों के बीच ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो मानते हैं कि परमेश्वर की सेवा करने का अर्थ परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना, प्रतिदिन परमेश्वर से प्रार्थना करना, और साथ ही हर जगह कलीसियाओं में जाकर कार्य करना है। कुछ ऐसे भाई-बहन भी हैं, जो मानते हैं कि परमेश्वर की सेवा करने का अर्थ कभी भी विवाह न करना और परिवार न बनाना, और अपने संपूर्ण अस्तित्व को परमेश्वर के प्रति समर्पित कर देना है। बहुत कम लोग जानते हैं कि परमेश्वर की सेवा करने का वास्तविक अर्थ क्या है। यद्यपि परमेश्वर की सेवा करने वाले इतने लोग हैं, जितने कि आकाश में तारे, किंतु ऐसे लोगों की संख्या नगण्य है—दयनीय रूप से कम है, जो प्रत्यक्षतः परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं, और जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करने में समर्थ हैं। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ, क्योंकि तुम लोग "परमेश्वर की सेवा" वाक्यांश के सार को नहीं समझते, और यह बात तो बहुत ही कम समझते हो कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा कैसे की जाए। लोगों को यह समझने की तत्काल आवश्यकता है कि वास्तव में परमेश्वर की किस प्रकार की सेवा उसकी इच्छा के सामंजस्य में हो सकती है।

यदि तुम लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करना चाहते हो, तो तुम लोगों को पहले यह समझना होगा कि किस प्रकार के लोग परमेश्वर को प्रिय होते हैं, किस प्रकार के लोगों से परमेश्वर घृणा करता है, किस प्रकार के लोग परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाते हैं, और किस प्रकार के लोग परमेश्वर की सेवा करने की योग्यता रखते हैं। तुम लोगों को कम से कम इस ज्ञान से लैस अवश्य होना चाहिए। इसके

अतिरिक्त, तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य के लक्ष्य जानने चाहिए, और उस कार्य को भी जानना चाहिए, जिसे परमेश्वर यहाँ और अभी करेगा। इसे समझने के पश्चात्, और परमेश्वर के वचनों के मार्गदर्शन के माध्यम से, तुम लोगों को पहले प्रवेश पाना चाहिए और पहले परमेश्वर की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिए। जब तुम लोग परमेश्वर के वचनों का वास्तविक अनुभव कर लोगे, और जब तुम वास्तव में परमेश्वर के कार्य को जान लोगे, तो तुम लोग परमेश्वर की सेवा करने योग्य हो जाओगे। और जब तुम लोग परमेश्वर की सेवा करते हो, तब वह तुम लोगों की आध्यात्मिक आँखें खोलता है, और तुम्हें अपने कार्य की अधिक समझ प्राप्त करने और उसे अधिक स्पष्टता से देखने की अनुमति देता है। जब तुम इस वास्तविकता में प्रवेश करोगे, तो तुम्हारे अनुभव अधिक गंभीर और वास्तविक हो जाएँगे, और तुम लोगों में से वे सभी, जिन्हें इस प्रकार के अनुभव हुए हैं, कलीसियाओं के बीच आने-जाने और अपने भाई-बहनों को आपूर्ति प्रदान करने में सक्षम हो जाएँगे, ताकि तुम लोग अपनी कमियाँ दूर करने के लिए एक-दूसरे की खूबियों का इस्तेमाल कर सको, और अपनी आत्माओं में अधिक समृद्ध ज्ञान प्राप्त कर सको। केवल यह परिणाम प्राप्त करने के बाद ही तुम लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करने योग्य बन पाओगे और अपनी सेवा के दौरान परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाओगे।

जो परमेश्वर की सेवा करते हैं, वे परमेश्वर के अंतरंग होने चाहिए, वे परमेश्वर को प्रिय होने चाहिए, और उन्हें परमेश्वर के प्रति परम निष्ठा रखने में सक्षम होना चाहिए। चाहे तुम निजी कार्य करो या सार्वजनिक, तुम परमेश्वर के सामने परमेश्वर का आनंद प्राप्त करने में समर्थ हो, तुम परमेश्वर के सामने अडिग रहने में समर्थ हो, और चाहे अन्य लोग तुम्हारे साथ कैसा भी व्यवहार क्यों न करें, तुम हमेशा उसी मार्ग पर चलते हो जिस पर तुम्हें चलना चाहिए, और तुम परमेश्वर की ज़िम्मेदारी का पूरा ध्यान रखते हो। केवल इसी तरह के लोग परमेश्वर के अंतरंग होते हैं। परमेश्वर के अंतरंग सीधे उसकी सेवा करने में इसलिए समर्थ हैं, क्योंकि उन्हें परमेश्वर का महान आदेश और परमेश्वर की ज़िम्मेदारी दी गई है, वे परमेश्वर के हृदय को अपना हृदय बनाने और परमेश्वर की ज़िम्मेदारी को अपनी जिम्मेदारी की तरह लेने में समर्थ हैं, और वे अपने भविष्य की संभावना पर कोई विचार नहीं करते : यहाँ तक कि जब उनके पास कोई संभावना नहीं होती, और उन्हें कुछ भी मिलने वाला नहीं होता, तब भी वे हमेशा एक प्रेमपूर्ण हृदय से परमेश्वर में विश्वास करते हैं। और इसलिए, इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर का अंतरंग होता है। परमेश्वर के अंतरंग उसके विश्वासपात्र भी हैं; केवल परमेश्वर के विश्वासपात्र ही उसकी बेचैनी और उसके विचार साझा

कर सकते हैं, और यद्यपि उनकी देह पीड़ायुक्त और कमज़ोर होती, फिर भी वे परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए दर्द सहन कर सकते हैं और उसे छोड़ सकते हैं, जिससे वे प्रेम करते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों को और अधिक ज़िम्मेदारी देता है, और जो कुछ परमेश्वर करना चाहता है, वह ऐसे लोगों की गवाही से प्रकट होता है। इस प्रकार, ये लोग परमेश्वर को प्रिय हैं, ये परमेश्वर के सेवक हैं जो उसके हृदय के अनुरूप हैं, और केवल ऐसे लोग ही परमेश्वर के साथ मिलकर शासन कर सकते हैं। जब तुम वास्तव में परमेश्वर के अंतरंग बन जाते हो, तो निश्चित रूप से तुम परमेश्वर के साथ मिलकर शासन करते हो।

यीशु परमेश्वर का आदेश—समस्त मानवजाति के छुटकारे का कार्य—पूरा करने में समर्थ था, क्योंकि उसने अपने लिए कोई योजना या व्यवस्था किए बिना परमेश्वर की इच्छा का पूरा ध्यान रखा। इसलिए वह परमेश्वर का अंतरंग—स्वयं परमेश्वर भी था, एक ऐसी बात, जिसे तुम सभी लोग अच्छी तरह से समझते हो। (वास्तव में, वह स्वयं परमेश्वर था, जिसकी गवाही परमेश्वर के द्वारा दी गई थी। मैंने इसका उल्लेख मुद्दे को उदहारण के साथ समझाने हेतु यीशु के तथ्य का उपयोग करने के लिए किया है।) वह परमेश्वर की प्रबंधन योजना को बिलकुल केंद्र में रखने में समर्थ था, और हमेशा स्वर्गिक पिता से प्रार्थना करता था और स्वर्गिक पिता की इच्छा जानने का प्रयास करता था। उसने प्रार्थना की और कहा : "परमपिता परमेश्वर! जो तेरी इच्छा हो, उसे पूरा कर, और मेरी इच्छाओं के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी योजना के अनुसार कार्य कर। मनुष्य कमज़ोर हो सकता है, किंतु तुझे उसकी चिंता क्यों करनी चाहिए? मनुष्य, जो कि तेरे हाथों में एक चींटी के समान है, तेरी चिंता के योग्य कैसे हो सकता है? मैं अपने हृदय में केवल तेरी इच्छा पूरी करना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि तू वह कर सके, जो तू अपनी इच्छाओं के अनुसार मुझमें करना चाहता है।" यरूशलम जाने के मार्ग पर यीशु बहुत संतप्त था, मानो उसके हृदय में कोई चाकू भोंक दिया गया हो, फिर भी उसमें अपने वचन से पीछे हटने की जरा-सी भी इच्छा नहीं थी; एक सामर्थ्यवान ताक़त उसे लगातार उस ओर बढ़ने के लिए बाध्य कर रही थी, जहाँ उसे सलीब पर चढ़ाया जाना था। अंततः उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया और वह मानवजाति के छुटकारे का कार्य पूरा करते हुए पापमय देह के सदृश बन गया। वह मृत्यु एवं अधोलोक की बेड़ियों से मुक्त हो गया। उसके सामने नैतिकता, नरक एवं अधोलोक ने अपना सामर्थ्य खो दिया और उससे परास्त हो गए। वह तेंतीस वर्षों तक जीवित रहा, और इस पूरे समय उसने परमेश्वर के उस वक्त के कार्य के अनुसार परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए, कभी अपने व्यक्तिगत लाभ या नुकसान के बारे में विचार किए बिना और हमेशा परमपिता परमेश्वर की इच्छा के

बारे में सोचते हुए, हमेशा अपना अधिकतम प्रयास किया। अत:, उसका बपतिस्मा हो जाने के बाद, परमेश्वर ने कहा : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" परमेश्वर के सामने उसकी सेवा के कारण, जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप थी, परमेश्वर ने उसके कंधों पर समस्त मानवजाति के छुटकारे की भारी ज़िम्मेदारी डाल दी और उसे पूरा करने के लिए उसे आगे बढ़ा दिया, और वह इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के योग्य और उसका पात्र बन गया। जीवन भर उसने परमेश्वर के लिए अपरिमित कष्ट सहा, उसे शैतान द्वारा अनगिनत बार प्रलोभन दिया गया, किंतु वह कभी भी निरुत्साहित नहीं हुआ। परमेश्वर ने उसे इतना बड़ा कार्य इसलिए दिया, क्योंकि वह उस पर भरोसा करता था और उससे प्रेम करता था, और इसलिए परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से कहा : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" उस समय, केवल यीशु ही इस आदेश को पूरा कर सकता था, और यह अनुग्रह के युग में परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए गए समस्त लोगों के छुटकारे के उसके कार्य का एक भाग था।

यदि, यीशु के समान, तुम लोग परमेश्वर की ज़िम्मेदारी पर पूरा ध्यान देने में समर्थ हो, और अपनी देह की इच्छाओं से मुँह मोड़ सकते हो, तो परमेश्वर अपने महत्वपूर्ण कार्य तुम लोगों को सौंप देगा, ताकि तुम लोग परमेश्वर की सेवा करने की शर्तें पूरी कर सको। केवल ऐसी परिस्थितियों में ही तुम लोग यह कहने की हिम्मत कर सकोगे कि तुम परमेश्वर की इच्छा और आदेश पूरे कर रहे हो, और केवल तभी तुम लोग यह कहने की हिम्मत कर सकोगे कि तुम सचमुच परमेश्वर की सेवा कर रहे हो। यीशु के उदाहरण की तुलना में, क्या तुममें यह कहने की हिम्मत है कि तुम परमेश्वर के अंतरंग हो? क्या तुममें यह कहने की हिम्मत है कि तुम परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हो? क्या तुममें यह कहने की हिम्मत है कि तुम सचमुच परमेश्वर की सेवा कर रहे हो? आज, जबकि तुम यह तक नहीं समझते कि परमेश्वर की सेवा कैसे की जाए, क्या तुममें यह कहने की हिम्मत है कि तुम परमेश्वर के अंतरंग हो? यदि तुम कहते हो कि तुम परमेश्वर की सेवा करते हो, तो क्या तुम उसका तिरस्कार नहीं करते? इस बारे में विचार करो : तुम परमेश्वर की सेवा कर रहे हो या अपनी? तुम शैतान की सेवा करते हो, फिर भी तुम ढिठाई से कहते हो कि तुम परमेश्वर की सेवा कर रहे हो—इससे क्या तुम परमेश्वर का तिरस्कार नहीं करते? मेरी पीठ पीछे बहुत-से लोग हैसियत के आशीष की अभिलाषा करते हैं, वे ठूँस-ठूँसकर खाना खाते हैं, सोना पसंद करते हैं तथा देह की इच्छाओं पर पूरा ध्यान देते हैं, हमेशा भयभीत रहते हैं कि देह से बाहर कोई मार्ग नहीं है। वे कलीसिया में अपना उपयुक्त कार्य नहीं करते, पर मुफ़्त में कलीसिया से खाते हैं, या फिर मेरे वचनों से अपने भाई-बहनों की

भर्त्सना करते हैं, और अधिकार के पदों से दूसरों के ऊपर आधिपत्य जताते हैं। ये लोग निरंतर कहते रहते हैं कि वे परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं और हमेशा कहते हैं कि वे परमेश्वर के अंतरंग हैं—क्या यह बेतुका नहीं है? यदि तुम्हारे इरादे सही हैं, पर तुम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करने में असमर्थ हो, तो तुम मूर्ख हो; किंतु यदि तुम्हारे इरादे सही नहीं हैं, और फिर भी तुम कहते हो कि तुम परमेश्वर की सेवा करते हो, तो तुम एक ऐसे व्यक्ति हो, जो परमेश्वर का विरोध करता है, और तुम्हें परमेश्वर द्वारा दंडित किया जाना चाहिए! ऐसे लोगों से मुझे कोई सहानुभूति नहीं है! परमेश्वर के घर में वे मुफ़्तखोरी करते हैं, हमेशा देह के आराम का लोभ करते हैं, और परमेश्वर की इच्छाओं का कोई विचार नहीं करते; वे हमेशा उसकी खोज करते हैं जो उनके लिए अच्छा है, और परमेश्वर की इच्छा पर कोई ध्यान नहीं देते। वे जो कुछ भी करते हैं, उसमें परमेश्वर के आत्मा की जाँच-पड़ताल स्वीकार नहीं करते। वे अपने भाई-बहनों के साथ हमेशा छल करते हैं और उन्हें धोखा देते रहते हैं, और दो-मुँहे होकर वे, अंगूर के बाग़ में घुसी लोमड़ी के समान, हमेशा अंगूर चुराते हैं और अंगूर के बाग़ को रौंदते हैं। क्या ऐसे लोग परमेश्वर के अंतरंग हो सकते हैं? क्या तुम परमेश्वर के आशीष प्राप्त करने लायक़ हो? तुम अपने जीवन एवं कलीसिया के लिए कोई उत्तरदायित्व नहीं लेते, क्या तुम परमेश्वर का आदेश लेने के लायक़ हो? तुम जैसे व्यक्ति पर कौन भरोसा करने की हिम्मत करेगा? जब तुम इस प्रकार से सेवा करते हो, तो क्या परमेश्वर तुम्हें कोई बड़ा काम सौंपने की जुर्रत कर सकता है? क्या इससे कार्य में विलंब नहीं होगा?

मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ, ताकि तुम लोग जान सको कि परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सेवा करने के लिए कौन-सी शर्तें पूरी करनी आवश्यक हैं। यदि तुम लोग अपना हृदय परमेश्वर को नहीं देते, यदि तुम लोग यीशु की तरह परमेश्वर की इच्छा पर पूरा ध्यान नहीं देते, तो तुम लोगों पर परमेश्वर द्वारा भरोसा नहीं किया जा सकता, और अंततः परमेश्वर द्वारा तुम्हारा न्याय किया जाएगा। शायद आज, परमेश्वर के प्रति अपनी सेवा में, तुम हमेशा परमेश्वर को धोखा देने का इरादा रखते हो और उसके साथ हमेशा लापरवाही से व्यवहार करते हो। संक्षेप में, किसी भी अन्य चीज़ की परवाह किए बिना, यदि तुम परमेश्वर को धोखा देते हो, तो तुम्हारा निर्मम न्याय किया जाएगा। तुम लोगों को, परमेश्वर की सेवा के सही मार्ग पर अभी-अभी प्रवेश करने का लाभ उठाते हुए, पहले बिना विभाजित वफादारी के अपना हृदय परमेश्वर को देना चाहिए। इस बात पर ध्यान दिए बिना कि तुम परमेश्वर के सामने हो या लोगों के सामने, तुम्हारा हृदय हमेशा परमेश्वर की ओर उन्मुख होना चाहिए, और तुम्हें यीशु के समान परमेश्वर से प्रेम करने का संकल्प लेना

चाहिए। इस तरह से, परमेश्वर तुम्हें पूर्ण बनाएगा, ताकि तुम परमेश्वर के ऐसे सेवक बन जाओ, जो उसके हृदय के अनुकूल हो। यदि तुम वाकई परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना चाहते हो, और अपनी सेवा को उसकी इच्छा के अनुरूप बनाना चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के प्रति विश्वास के बारे में अपना पूर्व दृष्टिकोण बदलना चाहिए, और परमेश्वर की सेवा के अपने पुराने ढंग में बदलाव लाना चाहिए, ताकि परमेश्वर द्वारा तुम्हें अधिक से अधिक पूर्ण बनाया जा सके। इस तरह से, परमेश्वर तुम्हें त्यागेगा नहीं, और पतरस के समान, तुम उन लोगों के साथ अगली पंक्ति में होगे, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। यदि तुम पश्चात्ताप नहीं करते, तो तुम्हारा अंत यहूदा के समान होगा। इसे उन सभी लोगों को समझ लेना चाहिए, जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं।

वास्तविकता को कैसे जानें

परमेश्वर व्यावहारिक परमेश्वर है : उसका समस्त कार्य व्यावहारिक है, उसके द्वारा कहे जाने वाले सभी वचन व्यावहारिक हैं, और उसके द्वारा व्यक्त किए जाने वाले सभी सत्य व्यावहारिक हैं। हर वह चीज़, जो उसका वचन नहीं है, खोखली, अस्तित्वहीन और अनुचित है। आज पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचनों में लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए उपलब्ध है। यदि लोगों को वास्तविकता में प्रवेश करना है, तो उन्हें वास्तविकता को खोजना चाहिए, और वास्तविकता को जानना चाहिए, जिसके बाद उन्हें वास्तविकता का अनुभव करना चाहिए और वास्तविकता को जीना चाहिए। लोग वास्तविकता को जितना अधिक जानते हैं, उतना ही अधिक वे यह पहचानने में समर्थ होते हैं कि दूसरों के शब्द वास्तविक हैं या नहीं; लोग वास्तविकता को जितना अधिक जानते हैं, उनमें धारणाएँ उतनी ही कम होती हैं; लोग वास्तविकता का जितना अधिक अनुभव करते हैं, उतना ही अधिक वे वास्तविकता के परमेश्वर के कर्मों को जानते हैं, और उनके लिए अपने भ्रष्ट, शैतानी स्वभावों के बंधन से मुक्त होना उतना ही अधिक आसान होता है; लोगों के पास जितनी अधिक वास्तविकता होती है, वे उतना ही अधिक परमेश्वर को जानते हैं, और उतना ही अधिक देह से घृणा और सत्य से प्रेम करते हैं; और लोगों के पास जितनी अधिक वास्तविकता होती है, वे परमेश्वर की अपेक्षाओं के मानकों के उतना ही अधिक निकट होते हैं। जो लोग परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, वे वो लोग होते हैं जिनमें वास्तविकता होती है, जो वास्तविकता को जानते हैं और जो वास्तविकता का अनुभव करके परमेश्वर के वास्तविक कर्मों को जान गए हैं। तुम परमेश्वर के साथ व्यावहारिक ढंग से

जितना अधिक सहयोग करोगे और अपने शरीर को जितना अधिक अनुशासित करोगे, उतना ही अधिक तुम पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करोगे, उतना ही अधिक तुम वास्तविकता को प्राप्त करोगे, और उतना ही अधिक तुम परमेश्वर द्वारा प्रबुद्ध किए जाओगे, और इस तरह तुम्हें परमेश्वर के वास्तविक कर्मों का उतना ही अधिक ज्ञान होगा। यदि तुम पवित्र आत्मा के वर्तमान प्रकाश में रह पाओ, तो तुम्हें अभ्यास का वर्तमान मार्ग अधिक स्पष्ट हो जाएगा, और तुम अतीत की धार्मिक धारणाओं एवं पुराने अभ्यासों से अपने आपको अलग करने में अधिक सक्षम हो जाओगे। आज केंद्रबिंदु वास्तविकता है : लोगों में जितनी अधिक वास्तविकता होगी, सत्य का उनका ज्ञान उतना ही अधिक स्पष्ट होगा, और परमेश्वर की इच्छा की उनकी समझ अधिक बड़ी होगी। वास्तविकता सभी शब्दों और वादों पर विजय पा सकती है, यह समस्त सिद्धांतों और विशेषज्ञताओं पर विजय पा सकती है, और लोग जितना अधिक वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे उतना ही अधिक परमेश्वर से सच्चा प्रेम करते हैं, और उसके वचनों के लिए भूखे एवं प्यासे होते हैं। यदि तुम हमेशा वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करते हो, तो तुम्हारा जीवन-दर्शन, धार्मिक धारणाएँ एवं प्राकृतिक चरित्र परमेश्वर के कार्य का अनुसरण करने से स्वाभाविक रूप से मिट जाएगा। जो वास्तविकता की खोज नहीं करते, और जिन्हें वास्तविकता का कोई ज्ञान नहीं है, उनके द्वारा अलौकिक चीज़ों की खोज किए जाने की संभावना है, और वे आसानी से छले जाएँगे। पवित्र आत्मा के पास ऐसे लोगों में कार्य करने का कोई उपाय नहीं है, और इसलिए वे खालीपन महसूस करते हैं, और उनके जीवन का कोई अर्थ नहीं होता।

पवित्र आत्मा तुममें तभी कार्य कर सकता है, जब तुम वास्तव में सीखते हो, वास्तव में खोजते हो, वास्तव में प्रार्थना करते हो, और सत्य की खोज के वास्ते दुःख उठाने को तैयार होते हो। जो सत्य की खोज नहीं करते, उनके पास शब्दों और वादों, और खोखले सिद्धांतों के अलावा कुछ नहीं होता, और जो सत्य से रहित होते हैं, उनमें परमेश्वर के बारे में स्वाभाविक रूप से अनेक धारणाएँ होती हैं। ऐसे लोग परमेश्वर से केवल यही लालसा करते हैं कि वह उनकी भौतिक देह को आध्यात्मिक देह में बदल दे, ताकि वे तीसरे स्वर्ग में आरोहित हो सकें। ये लोग कितने मूर्ख हैं! ऐसी बातें कहने वाले सभी लोगों को परमेश्वर का या वास्तविकता का कोई ज्ञान नहीं होता; ऐसे लोग संभवतः परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं कर सकते, और केवल निष्क्रिय रहकर प्रतीक्षा कर सकते हैं। यदि लोगों को सत्य को समझना है, और सत्य को स्पष्ट रूप से देखना है, और इससे भी बढ़कर, यदि उन्हें सत्य में प्रवेश करना है, और उसे अभ्यास में लाना है, तो

उन्हें वास्तव में सीखना चाहिए, वास्तव में खोजना चाहिए, और वास्तव में भूखा एवं प्यासा होना चाहिए। जब तुम भूखे और प्यासे होते हो, जब तुम वास्तव में परमेश्वर के साथ सहयोग करते हो, तो परमेश्वर का आत्मा निश्चित रूप से तुम्हें स्पर्श करेगा और तुम्हारे भीतर कार्य करेगा, वह तुममें और अधिक प्रबुद्धता लाएगा, और तुम्हें वास्तविकता का और अधिक ज्ञान देगा, और तुम्हारे जीवन के लिए और अधिक सहायक होगा।

यदि लोगों को परमेश्वर को जानना है, तो सबसे पहले उन्हें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर व्यावहारिक परमेश्वर है, और उन्हें परमेश्वर के वचनों को, देह में परमेश्वर के व्यावहारिक प्रकटन को और परमेश्वर के व्यावहारिक कार्य को अवश्य जानना चाहिए। यह जानने के बाद ही कि परमेश्वर का समस्त कार्य व्यावहारिक है, तुम वास्तव में परमेश्वर के साथ सहयोग करने में समर्थ हो सकोगे, और केवल इसी मार्ग से तुम अपने जीवन में वृद्धि हासिल कर सकोगे। जिन्हें वास्तविकता का कोई ज्ञान नहीं है, उन सभी के पास परमेश्वर के वचनों को अनुभव करने का कोई उपाय नहीं है, वे अपनी धारणाओं में उलझे हुए हैं, अपनी कल्पनाओं में जीते हैं, और इस प्रकार उन्हें परमेश्वर के वचनों का कोई ज्ञान नहीं है। वास्तविकता का तुम्हारा ज्ञान जितना अधिक होता है, तुम परमेश्वर के उतने ही निकट होते हो, और तुम उसके उतने ही अधिक अंतरंग होते हो; और तुम जितना अधिक अस्पष्टता, अमूर्तता तथा वाद की खोज करते हो, तुम परमेश्वर से उतने ही दूर भटक जाओगे, और इसलिए तुम उतना ही अधिक महसूस करोगे कि परमेश्वर के वचनों को अनुभव करना श्रमसाध्य एवं कठिन है, और तुम प्रवेश करने में अक्षम हो। यदि तुम परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में, और अपने आध्यात्मिक जीवन के सही पथ पर प्रवेश करना चाहते हो, तो तुम्हें सबसे पहले वास्तविकता को जानना और अपने आपको अस्पष्ट एवं अलौकिक चीज़ों से पृथक करना चाहिए, जिसका अर्थ है कि सबसे पहले तुम्हें समझना चाहिए कि पवित्र आत्मा वास्तव में किस प्रकार तुम्हें प्रबुद्ध करता है और भीतर से किस प्रकार तुम्हारा मार्गदर्शन करता है। इस तरह, यदि तुम सचमुच मनुष्य के भीतर पवित्र आत्मा के वास्तविक कार्य को समझ सकते हो, तो तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के सही पथ पर प्रवेश कर चुके होगे।

आज, हर चीज़ वास्तविकता से शुरू होती है। परमेश्वर का कार्य सर्वाधिक वास्तविक है, और लोगों द्वारा स्पर्श किया जा सकता है; लोग उसे अनुभव कर सकते हैं, और प्राप्त कर सकते हैं। लोगों में बहुत-कुछ अज्ञात और अलौकिक है, जो उन्हें परमेश्वर के वर्तमान कार्य को जानने से रोकता है। इस प्रकार, वे

अपने अनुभवों में हमेशा भटक जाते हैं, और हमेशा महसूस करते हैं कि चीज़ें कठिन हैं, और यह सब उनकी धारणाओं के कारण होता है। लोग पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांतों को समझने में असमर्थ हैं, वे वास्तविकता को नहीं जानते, इसलिए वे प्रवेश के अपने मार्ग में हमेशा नकारात्मक होते हैं। वे परमेश्वर की अपेक्षाओं को दूर से देखते हैं, उन्हें हासिल करने में असमर्थ होते हैं; वे मात्र यह देखते हैं कि परमेश्वर के वचन वास्तव में अच्छे हैं, किंतु प्रवेश का मार्ग नहीं खोज पाते। पवित्र आत्मा इस सिद्धांत के द्वारा काम करता है : लोगों के सहयोग से, उनके द्वारा सक्रियतापूर्वक परमेश्वर की प्रार्थना करने, उसे खोजने और उसके अधिक निकट आने से परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं, और पवित्र आत्मा द्वारा उन्हें प्रबुद्ध और रोशन किया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि पवित्र आत्मा एकतरफ़ा कार्य करता है, या मनुष्य एकतरफ़ा कार्य करता है। दोनों ही अपरिहार्य हैं, और लोग जितना अधिक सहयोग करते हैं, और वे जितना अधिक परमेश्वर की अपेक्षाओं के मानकों को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, पवित्र आत्मा का कार्य उतना ही अधिक बड़ा होता है। पवित्र आत्मा के कार्य के साथ जुड़कर लोगों का वास्तविक सहयोग ही परमेश्वर के वचनों का वास्तविक अनुभव और सारभूत ज्ञान उत्पन्न कर सकता है। इस तरह अनुभव करके, धीरे-धीरे, अंततः एक पूर्ण व्यक्ति बनता है। परमेश्वर अलौकिक काम नहीं करता; लोगों की धारणाओं के अनुसार, परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, और सब-कुछ परमेश्वर के द्वारा किया जाता है—परिणामस्वरूप लोग निष्क्रिय रहकर प्रतीक्षा करते हैं, वे न तो परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, और न ही प्रार्थना करते हैं, और पवित्र आत्मा के स्पर्श की प्रतीक्षा मात्र करते रहते हैं। हालाँकि, जिनकी समझ सही है, वे यह मानते हैं : परमेश्वर के कार्यकलाप उतनी ही दूर तक जा सकते हैं, जहाँ तक मेरा सहयोग होता है, और मुझमें परमेश्वर के कार्य का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि मैं किस प्रकार सहयोग करता हूँ। जब परमेश्वर बोलता है, तो परमेश्वर के वचनों को खोजने और उनकी ओर बढ़ने का प्रयत्न करने के लिए मुझे वह सब करना चाहिए, जो मैं कर सकता हूँ; यही है वह, जो मुझे प्राप्त करना चाहिए।

पतरस और पौलुस के उदाहरणों में तुम लोग स्पष्ट रूप से देख सकते हो कि वह पतरस ही था, जिसने वास्तविकता पर सर्वाधिक ध्यान दिया। पतरस जिन हालात से गुज़रा, उनसे यह देखा जा सकता है कि उसके अनुभव अतीत में विफल हुए लोगों के सबकों का सारांश हैं, और उसने अतीत के संतों की शक्तियों को आत्मसात कर लिया था। इससे यह देखा जा सकता है कि पतरस के अनुभव कितने वास्तविक थे, कि लोग उन अनुभवों तक पहुँच सकते हैं, उनका स्पर्श कर सकते हैं, और उन्हें प्राप्त कर

सकते हैं। किंतु पौलुस भिन्न था : उसने जो कुछ बोला, वह सब अस्पष्ट और अदृश्य था, जैसे तीसरे स्वर्ग में जाना, सिंहासन पर आरूढ़ होना, और धार्मिकता का मुकुट जैसी चीज़ें। उसने बाह्य चीजों पर ध्यान केंद्रित किया : कद-काठी और लोगों को भाषण देने पर, अपनी वरिष्ठता का दिखावा करने पर, पवित्र आत्मा द्वारा स्पर्श किए जाने पर, इत्यादि। उसने जिस चीज़ का भी अनुसरण किया, वह वास्तविक नहीं थी, और उसमें बहुत-कुछ कोरी कल्पना थी, और इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि वह सब जो अलौकिक है, जैसे पवित्र आत्मा लोगों को कितना स्पर्श करता है, लोगों को प्राप्त महान आनंद, तीसरे स्वर्ग में जाना, या वे किस सीमा तक नियमित प्रशिक्षण का आनंद लेते हैं, वे किस सीमा तक परमेश्वर के वचनों को पढ़ने का आनंद उठाते हैं—इनमें से कुछ भी वास्तविक नहीं है। पवित्र आत्मा के समस्त कार्य सामान्य और वास्तविक हैं। जब तुम परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हो और प्रार्थना करते हो, तो भीतर से तुम प्रकाशमान और दृढ़ होते हो, बाहरी संसार तुम्हारा ध्यान भंग नहीं कर सकता; अंदर से तुम परमेश्वर से प्रेम करने के इच्छुक होते हो, सकारात्मक चीज़ों से जुड़ने के इच्छुक होते हो, और तुम इस बुरे संसार से घृणा करते हो। यह परमेश्वर के भीतर रहना है। यह परम आनंद का अनुभव लेना नहीं है, जैसा कि लोग कहते हैं—ऐसी बात व्यावहारिक नहीं है। आज, हर चीज़ वास्तविकता से आरंभ होनी चाहिए। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, वह सब वास्तविक है, और अपने अनुभवों में तुम्हें परमेश्वर को वास्तव में जानने, और परमेश्वर के कार्य के पदचिह्नों और उस उपाय को खोजने पर ध्यान देना चाहिए, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा लोगों को स्पर्श और प्रबुद्ध करता है। यदि तुम परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते हो, और प्रार्थना करते हो, और अधिक वास्तविक तरीक़े से सहयोग करते हो, बीते हुए समय में जो कुछ अच्छा था उसे आत्मसात करते हो, और जो कुछ खराब था उसे पतरस की तरह अस्वीकार करते हुए, यदि तुम अपने कानों से सुनते हो और अपनी आँखों से देखते हो, और अपने मन में अकसर प्रार्थना और चिंतन करते हो, और परमेश्वर के कार्य में सहयोग करने के लिए वह सब-कुछ करते हो जो तुम कर सकते हो, तो परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा।

एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन के विषय में

परमेश्वर में विश्वास रखने के लिए एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन का होना आवश्यक है, जो कि परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने और वास्तविकता में प्रवेश करने का आधार है। क्या तुम सबकी

प्रार्थनाओं परमेश्वर के समीप आने, भजन-गायन, स्तुति, ध्यान और परमेश्वर के वचनों पर मनन-चिंतन का समस्त अभ्यास "सामान्य आध्यात्मिक जीवन" के बराबर है? ऐसा नहीं लगता कि तुम लोगों में से कोई भी इसका उत्तर जानता है। एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन प्रार्थना करने, भजन गाने, कलीसियाई जीवन में भाग लेने और परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने जैसे अभ्यासों तक सीमित नहीं है। बल्कि, इसमें एक नया और जीवंत आध्यात्मिक जीवन जीना शामिल है। जो बात मायने रखती है वो यह नहीं है कि तुम अभ्यास कैसे करते हो, बल्कि यह है कि तुम्हारे अभ्यास का परिणाम क्या होता है। अधिकांश लोगों का मानना है कि एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन में आवश्यक रूप से प्रार्थना करना, भजन गाना, परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना या उसके वचनों पर मनन-चिंतन करना शामिल है, भले ही ऐसे अभ्यासों का वास्तव में कोई प्रभाव हो या न हो, चाहे वे सच्ची समझ तक ले जाएँ या न ले जाएँ। ये लोग सतही प्रक्रियाओं के परिणामों के बारे में सोचे बिना उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं; वे ऐसे लोग हैं जो धार्मिक अनुष्ठानों में जीते हैं, वे ऐसे लोग नहीं हैं जो कलीसिया के भीतर रहते हैं, वे राज्य के लोग तो बिलकुल नहीं हैं। उनकी प्रार्थनाएँ, भजन-गायन और परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना, सभी सिर्फ नियम-पालन हैं, जो प्रचलन में है उसके साथ बने रहने के लिए मजबूरी में किए जाने वाले काम हैं। ये अपनी इच्छा से या हृदय से नहीं किए जाते हैं। ये लोग कितनी भी प्रार्थना करें या गाएँ, उनके प्रयास निष्फल होंगे, क्योंकि वे जिनका अभ्यास करते हैं, वे केवल धर्म के नियम और अनुष्ठान हैं; वे वास्तव में परमेश्वर के वचनों का अभ्यास नहीं कर रहे हैं। वे अभ्यास किस तरह करते हैं, इस बात का बतंगड़ बनाने में ही उनका ध्यान लगा होता है और वे परमेश्वर के वचनों के साथ उन नियमों जैसा व्यवहार करते हैं जिनका पालन किया ही जाना चाहिए। ऐसे लोग परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में नहीं ला रहे हैं; वे सिर्फ देह को तृप्त कर रहे हैं और दूसरे लोगों को दिखाने के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं। धर्म के ये नियम और अनुष्ठान सभी मूल रूप से मानवीय हैं; वे परमेश्वर से नहीं आते हैं। परमेश्वर नियमों का पालन नहीं करता है, न ही वह किसी व्यवस्था के अधीन है। बल्कि, वह हर दिन नई चीज़ें करता है, व्यवहारिक काम पूरा करता है। थ्री-सेल्फ कलीसिया के लोग, हर दिन सुबह की प्रार्थना सभा में शामिल होने, शाम की प्रार्थना और भोजन से पहले आभार की प्रार्थना अर्पित करने, सभी चीज़ों में धन्यवाद देने जैसे अभ्यासों तक सीमित रहते हैं—वे इस तरह जितना भी कार्य करें और चाहे जितने लंबे समय तक ऐसा करें, उनके पास पवित्र आत्मा का कार्य नहीं होगा। जब लोग नियमों के बीच रहते हैं और अपने हृदय अभ्यास के तरीकों में ही उलझाए रखते हैं, तो पवित्र आत्मा काम नहीं

कर सकता, क्योंकि उनके हृदयों पर नियमों और मानवीय धारणाओं का कब्जा है। इस प्रकार, परमेश्वर हस्तक्षेप करने और उन पर काम करने में असमर्थ है, और वे केवल व्यवस्थाओं के नियंत्रण में जीते रह सकते हैं। ऐसे लोग परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त करने में सदा के लिए असमर्थ होते हैं।

एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन परमेश्वर के सामने जिया जाने वाला जीवन है। प्रार्थना करते समय, एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने अपना हृदय शांत कर सकता है, और प्रार्थना के माध्यम से वह पवित्र आत्मा के प्रबोधन की तलाश कर सकता है, परमेश्वर के वचनों को जान सकता है और परमेश्वर की इच्छा को समझ सकता है। परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने से लोग उसके मौजूदा कार्य के बारे में अधिक स्पष्ट और अधिक गहन समझ प्राप्त कर सकते हैं। वे अभ्यास का एक नया मार्ग भी प्राप्त कर सकते हैं, और वे पुराने मार्ग से चिपके नहीं रहेंगे; जिसका वे अभ्यास करते हैं, वह सब जीवन में विकास हासिल करने के लिए होगा। जहाँ तक प्रार्थना की बात है, वह कुछ अच्छे लगने वाले शब्द बोलना या यह बताने के लिए तुम परमेश्वर के कितने ऋणी हो, उसके सामने फूट-फूटकर रोना नहीं है; बल्कि इसके बजाय इसका उद्देश्य, आत्मा के उपयोग में अपने आपको प्रशिक्षित करना है, परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत होने देना है, सभी मामलों में परमेश्वर के वचनों से मार्गदर्शन लेने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करना है, ताकि व्यक्ति का हृदय प्रतिदिन नई रोशनी की ओर आकर्षित हो सके, और वह निष्क्रिय या आलसी न हो और परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाने के सही मार्ग पर कदम रखे। आजकल अधिकांश लोग अभ्यास के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन वे यह सब सत्य का अनुसरण करने और जीवन के विकास को प्राप्त करने के लिए नहीं करते हैं। यहीं पर वे भटक जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो नई रोशनी प्राप्त करने में सक्षम हैं, लेकिन उनके अभ्यास के तरीके नहीं बदलते हैं। वे परमेश्वर के आज के वचनों को प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए अपनी पुरानी धर्म-संबंधी धारणाओं को अपने साथ लाते हैं, इसलिए वे जो प्राप्त करते हैं वह अभी भी धर्म-संबंधी धारणाओं से रंगे सिद्धांत हैं; वे आज का प्रकाश प्राप्त कर ही नहीं रहे हैं। नतीजतन, उनके अभ्यास दागदार हैं; नए खोल में लिपटे वही पुराने अभ्यास हैं। वे कितने भी अच्छे ढंग से अभ्यास करें, वे फिर भी ढोंगी ही हैं। परमेश्वर हर दिन नई चीजें करने में लोगों की अगुवाआई करता है, माँग करता है कि प्रत्येक दिन वे नई अंतर्दृष्टि और समझ हासिल करें, और अपेक्षा करता है कि वे पुराने ढंग के और दोहराव करने वाले न हों। अगर तुमने कई वर्षों से परमेश्वर में विश्वास किया है, लेकिन फिर भी तुम्हारे अभ्यास के तरीके बिलकुल नहीं बदले हैं, अगर तुम अभी भी ईर्ष्यालु हो और बाहरी मामलों में ही उलझे

हुए हो, अभी भी तुम्हारे पास परमेश्वर के वचनों का आनंद लेने के वास्ते उसके सामने लाने के लिए एक शांत हृदय नहीं है तो तुम कुछ भी नहीं प्राप्त करोगे। जब परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार करने की बात आती है, तब यदि तुम अलग ढंग से योजना नहीं बनाते, अपने अभ्यास के लिए नए तरीके नहीं अपनाते और किसी नई समझ को पाने की कोशिश नहीं करते, बल्कि अभ्यास के अपने तरीके को बदले बिना, पुराने से चिपके रहते हो और केवल सीमित मात्रा में नया प्रकाश प्राप्त करते हो, तो तुम्हारे जैसे लोग केवल नाम के लिए इस धारा में हैं; वास्तविकता में, वे मज़हबी फरीसी हैं जो पवित्र आत्मा की धारा के बाहर हैं।

सामान्य आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए एक व्यक्ति को प्रतिदिन नई रोशनी प्राप्त करने और परमेश्वर के वचनों की समझ का अनुसरण करने में सक्षम होना चाहिए। एक व्यक्ति को सत्य स्पष्ट रूप से देखना चाहिए, सभी मामलों में अभ्यास का मार्ग तलाशना चाहिए, प्रतिदिन परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के माध्यम से नए प्रश्नों की खोज करनी चाहिए, और अपनी कमियों का एहसास करना चाहिए, ताकि उसके पास लालसा और प्रयास करने वाला हृदय हो सके जो उसके पूरे अस्तित्व को प्रेरित करे, वह हर समय परमेश्वर के सामने शांत रह सके और पीछे छूट जाने से बहुत भयभीत हो। इस तरह के लालायित और खोजी हृदय वाला व्यक्ति, जो लगातार प्रवेश पाने का इच्छुक है, वह आध्यात्मिक जीवन के सही मार्ग पर है। जो लोग पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाते हैं, जो बेहतर करने की इच्छा रखते हैं, जो परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के लिए प्रयास करने को तैयार हैं, जो परमेश्वर के वचनों की गहरी समझ के लिए लालायित हैं, जो अलौकिक का अनुसरण नहीं करते, बल्कि वास्तविक कीमत का भुगतान करते हैं, वास्तव में परमेश्वर की इच्छा की परवाह करते हैं, वास्तव में प्रवेश प्राप्त करते हैं ताकि उनके अनुभव अधिक विशुद्ध और वास्तविक हों, जो खोखले वचनों और सिद्धांतों का अनुसरण नहीं करते या अलौकिकता को महसूस करने का प्रयास नही करते हैं, जो किसी महान व्यक्तित्व की आराधना नहीं करते हैं—ये वे लोग हैं जिन्होंने एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश कर लिया है। वे जो कुछ भी करते हैं, उसका उद्देश्य जीवन में और अधिक विकास प्राप्त करना और स्वयं को आत्मा में ताज़ा और जीवंत बनाना है और वे हमेशा सक्रिय रूप से प्रवेश प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। बिना एहसास किए ही वे सत्य को समझने लगते हैं और वास्तविकता में प्रवेश करते हैं। सामान्य आध्यात्मिक जीवन वाले लोग प्रतिदिन आत्मा की मुक्ति और स्वतंत्रता पाते हैं और वे परमेश्वर की संतुष्टि के अनुसार उसके वचनों का स्वतंत्र रूप से अभ्यास कर सकते हैं। इन लोगों के लिए, प्रार्थना कोई औपचारिकता या प्रक्रिया नहीं है; वे प्रतिदिन नई रोशनी के साथ

तालमेल रखने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए, लोग परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत करने के लिए खुद को प्रशिक्षित करते हैं और उनका हृदय परमेश्वर के सामने वास्तव में शांत हो सकता है और उन्हें कोई परेशान नहीं कर सकता है। कोई भी व्यक्ति, घटना या वस्तु उनके सामान्य आध्यात्मिक जीवन को बाधित नहीं कर सकती है। इस तरह के प्रशिक्षण का उद्देश्य परिणाम प्राप्त करना है; इसका उद्देश्य लोगों से नियमों का पालन करवाना नहीं है। यह अभ्यास नियम-पालन के बारे में नहीं है, बल्कि लोगों के जीवन में विकास को बढ़ाने के बारे में है। यदि तुम इस अभ्यास को केवल नियमों के पालन के रूप में देखते हो, तो तुम्हारा जीवन कभी नहीं बदलेगा। हो सकता है कि तुम उसी अभ्यास में लगे हुए हो जिसमें दूसरे लगे हुए हैं, लेकिन ऐसा करते हुए तुम तो पवित्र आत्मा की धारा से निकाल दिये जाते हो जबकि अन्य लोग अंततः पवित्र आत्मा के कार्य के साथ तालमेल रखने में सक्षम हो जाते हैं। क्या तुम खुद को धोखा नहीं दे रहे हो? इन वचनों का उद्देश्य लोगों को परमेश्वर के आगे उनके हृदयों को शांत करने देना है, उनके हृदयों को परमेश्वर की ओर मोड़ने देना है, ताकि उनमें परमेश्वर का काम बिना बाधा के हो और फलीभूत हो सके। केवल तभी लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो सकते हैं।

कलीसियाई जीवन और वास्तविक जीवन पर विचार-विमर्श

लोग सोचते हैं कि वे केवल कलीसियाई जीवन में ही परिवर्तित हो सकते हैं। यदि वे कलीसियाई जीवन के अंतर्गत नहीं हैं, तो उन्हें लगता है परिवर्तन संभव नहीं है, मानो कि वास्तविक जीवन में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। क्या तुम लोगों को इसमें समस्या नज़र आती है? मैं परमेश्वर को वास्तविक जीवन में लाने के विषय में पहले ही चर्चा कर चुका हूँ; जो लोग परमेश्वर में आस्था रखते हैं, उनके लिए यह परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करने का मार्ग है। वास्तव में, कलीसियाई जीवन लोगों को पूर्ण बनाने का बस एक सीमित तरीका है। लोगों को पूर्ण बनाने का प्राथमिक परिवेश अभी भी वास्तविक जीवन ही है। यही वह वास्तविक अभ्यास और वास्तविक प्रशिक्षण है जिसके विषय में मैंने बात की थी, जो लोगों को सामान्य मनुष्यत्व के जीवन को प्राप्त करने और दैनिक जीवन में एक सच्चे व्यक्ति के समान जीने देता है। एक तरफ तो, व्यक्ति को अपने शैक्षणिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए अध्ययन करना चाहिए, परमेश्वर के वचनों को समझना चाहिए और ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। दूसरी तरफ, सामान्य मनुष्यत्व की अंतर्दृष्टि और विवेक को प्राप्त करने के लिए एक मनुष्य के रूप में जीवन जीने हेतु अपेक्षित

आधारभूत ज्ञान से लैस होना चाहिए, क्योंकि लोगों में इन बातों का लगभग पूरी तरह से अभाव होता है। इसके साथ-साथ, एक व्यक्ति को कलीसियाई जीवन के द्वारा परमेश्वर के वचनों का आनंद लेना चाहिए, और धीरे-धीरे उसे सत्य की स्पष्ट समझ प्राप्त हो जानी चाहिए।

ऐसा क्यों कहा जाता है कि परमेश्वर में विश्वास रखने के लिए परमेश्वर को वास्तविक जीवन में लाना आवश्यक है? केवल कलीसियाई जीवन ही मनुष्य को परिवर्तित नहीं करता; बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि लोग असली जीवन की वास्तविकता में प्रवेश करें। तुम लोग हमेशा अपनी आत्मिक दशा और आत्मिक विषयों के बारे में बात किया करते थे जबकि वास्तविक जीवन में अनेक बातों के अभ्यास की उपेक्षा करते थे और उनमें अपने प्रवेश की उपेक्षा करते थे। तुम हर दिन लिखते थे, हर दिन सुनते थे और हर दिन पढ़ते थे। तुम खाना बनाते-बनाते भी प्रार्थना करते थे : "हे परमेश्वर! तू मेरे भीतर मेरा जीवन बन जा। मेरा आज का दिन जैसा भी गुज़रे, तू कृपया मुझे आशीष दे, प्रबुद्ध कर। जो भी तू आज मुझ पर प्रकशित करता है, मुझे इस क्षण उसे समझने दे, ताकि तेरे वचन मेरे जीवन के रूप में कार्य करें।" तुमने भोजन करते समय भी प्रार्थना की : "हे परमेश्वर! तूने यह भोजन हमें दिया है। तू हमें आशीष दे। आमीन! हम तेरे अनुसार जिएं। तू हमारे साथ रह। आमीन!" भोजन समाप्त करने के बाद जब तुम बर्तन धो रहे थे, तो तुम बोलने लगे, "हे परमेश्वर, मैं यह कटोरा हूँ। हमें शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, हम इन्हीं कटोरों के समान हैं जिनका उपयोग किया गया है और अब इन्हें जल से धोना आवश्यक है। तू जल है, तेरे वचन जीवन का जल हैं जो मेरे जीवन की जरूरतों को पूरा करते हैं।" तुम्हें पता भी नहीं चलता औए सोने का समय हो जाता है, और तुम फिर से बोलना आरंभ कर देते हो : "हे परमेश्वर! तूने मुझे दिनभर आशीष दिया है और मेरा मार्गदर्शन किया है। मैं सचमुच तेरा आभारी हूँ। ..." इस रीति से तुम अपना दिन व्यतीत करते और फिर सोने जाते हो। अधिकांश लोग हर दिन ऐसे ही जीते हैं, और अब भी वे वास्तविक प्रवेश पर ध्यान नहीं देते। उनकी प्रार्थना केवल शाब्दिक होती है। यह उनका पिछला जीवन है—पुराना जीवन है और अधिकांश लोग ऐसे ही हैं; उनमें वास्तविक प्रशिक्षण की कमी है, और उनमें बहुत ही कम वास्तविक परिवर्तन होते हैं। वे अपनी प्रार्थनाओं में केवल शब्द बोलते हैं, केवल अपने शब्दों के द्वारा परमेश्वर के समक्ष जाते हैं परंतु उनकी समझ में गहराई की कमी होती है। एक साधारण-सा उदाहरण लेते हैं—अपने घर को साफ़ करना। तुम देखते हो कि तुम्हारा घर बहुत गंदा है, तो तुम वहां बैठकर प्रार्थना करते हो : "हे परमेश्वर! इस भ्रष्टता की ओर देख जो शैतान ने मुझमें गढ़ दी है। मैं इस घर जितना ही गंदा हूँ। हे परमेश्वर!

मैं सचमुच तेरी स्तुति करता हूँ और तुझे धन्यवाद देता हूँ। तेरे उद्धार और प्रबुद्धता के बिना मैं इस वास्तविकता को समझ भी नहीं पाता।" तुम केवल बैठकर बड़बड़ाते रहते हो, लंबे समय तक प्रार्थना करते हो, और उसके बाद तुम ऐसे कार्य करते हो जैसे कि कुछ भी नहीं हुआ, और बड़बड़ाने वाली एक वृद्धा के समान व्यवहार करते हो। तुम इस तरह वास्तविकता में बिना किसी सच्चे प्रवेश के, अत्यधिक सतही अभ्यासों के साथ अपना आत्मिक जीवन जीते हो! वास्तविक प्रशिक्षण में प्रवेश करने में लोगों के वास्तविक जीवन, और उनकी व्यवहारिक कठिनाइयाँ शामिल होती हैं—वे केवल इसी तरीके से परिवर्तित हो सकते हैं। वास्तविक जीवन के बिना लोग परिवर्तित नहीं हो सकते। अपनी प्रार्थना में केवल मुँह से शब्द बोलने का क्या मतलब है? मनुष्यों की प्रकृति को समझे बिना, सबकुछ समय की बर्बादी है, और अभ्यास के मार्ग के बिना सारे प्रयास निरर्थक हैं! सामान्य प्रार्थना लोगों में सामान्य दशा को बनाए रखने में मदद कर सकती है, परंतु वे इसके द्वारा पूरी तरह से परिवर्तित नहीं हो सकते। मानवीय दंभ, घमंड, अहंकार, अभिमान और इंसान के भ्रष्ट स्वभाव को जानना—इन बातों का ज्ञान प्रार्थना से नहीं आता, उनकी समझ परमेश्वर के वचनों का अनुभव लेने से आती है, और उन्हें वास्तविक जीवन में पवित्र आत्मा के प्रकाशन के द्वारा जाना जाता है। आजकल लोग बहुत अच्छी तरह से बोल सकते हैं, और उन्होंने बड़े से बड़े उपदेश सुने हैं जो युगयुगांतर के किसी भी उपदेश से बड़े हैं, फिर भी उन्होंने अपने वास्तविक जीवन में उनमें से बहुत कम को अपनाया है। कहने का अर्थ है, उनके वास्तविक जीवन में परमेश्वर है ही नहीं; परिवर्तन के बाद उन्हें नए इंसान का जीवन प्राप्त नहीं होता। वे वास्तविक जीवन में सत्य को नहीं जीते, न ही वास्तविक जीवन में वे परमेश्वर को लाते हैं। वे जीवन को नरक की संतान की तरह जीते हैं। क्या यह स्पष्ट भटकाव नहीं है?

एक सामान्य व्यक्ति की समानता को पुनर्स्थापित करने के लिए, अर्थात् सामान्य मनुष्यत्व को प्राप्त करने के लिए लोग केवल अपने शब्दों से परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। ऐसा करके वे स्वयं को ही नुकसान पहुंचा रहे हैं, और इससे उनके प्रवेश या परिवर्तन को कोई लाभ नहीं पहुँचता। अतः परिवर्तन लाने के लिए लोगों को थोड़ा-थोड़ा करके अभ्यास करना चाहिए। उन्हें धीरे-धीरे प्रवेश करना चाहिए, थोड़ा-थोड़ा करके खोजना और जांचना चाहिए, सकारात्मकता से प्रवेश करना चाहिए, और सत्य का व्यवहारिक जीवन जीना चाहिए; अर्थात एक संत का जीवन जीना चाहिए। उसके बाद, वास्तविक विषय, वास्तविक घटनाएँ और वास्तविक वातावरण से लोगों को व्यवहारिक प्रशिक्षण मिलता है। लोगों से झूठे दिखावे की अपेक्षा नहीं की जाती; उन्हें वास्तविक वातावरण में प्रशिक्षण पाना है। पहले लोगों को यह पता चलता है

कि उनमें क्षमता की कमी है, और फिर वे सामान्य रूप से परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हैं, प्रवेश करते हैं और सामान्य रूप से अभ्यास भी करते हैं; केवल इसी तरीके से वे वास्तविकता को प्राप्त कर सकते हैं, और इसी प्रकार से प्रवेश और भी अधिक तेजी से हो सकता है। लोगों को परिवर्तित करने के लिए, कुछ व्यवहारिकता होनी ही चाहिए; उन्हें वास्तविक विषयों के साथ, वास्तविक घटनाओं के साथ और वास्तविक वातावरण में अभ्यास करना चाहिए। क्या कोई केवल कलीसियाई जीवन पर निर्भर रहकर सच्चा प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है? क्या लोग इस तरह वास्तविकता में प्रवेश कर सकते हैं? नहीं! यदि लोग वास्तविक जीवन में प्रवेश करने में असमर्थ हैं, तो वह कार्य करने और जीवन जीने के पुराने तरीकों को बदलने में भी असमर्थ हैं। यह पूरी तरह से लोगों के आलस्य या उनकी अत्यधिक निर्भरता के कारण ही नहीं होता, बल्कि इसलिए होता है क्योंकि मनुष्य में जीवन जीने की क्षमता नहीं है, और इससे भी बढ़कर, उनमें परमेश्वर के सामान्य मनुष्य की समानता के स्तर की समझ नहीं है। अतीत में, लोग हमेशा बात करते थे, बोलते थे, संवाद करते थे, यहाँ तक की वे "वक्ता" भी बन गए थे; लेकिन फिर भी उनमें से किसी ने भी जीवन स्वभाव में परिवर्तन लाने की कोशिश नहीं की; इसके बजाय, वे आँख मूंदकर गहन सिद्धांतों को खोजते रहे। अतः, आज के लोगों को अपने जीवन में परमेश्वर में विश्वास रखने के इस धार्मिक तरीके को बदलना चाहिए। उन्हें एक घटना, एक चीज़, एक व्यक्ति पर ध्यान देते हुए अभ्यास करना चाहिए। उन्हें यह काम पूरे ध्यान से करना चाहिए—तभी वे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। लोगों में बदलाव उनके सार में बदलाव से आरंभ होता है। कार्य का लक्ष्य लोगों का सार, उनका जीवन, उनका आलस्य, निर्भरता, और दासत्व होना चाहिए, केवल इस तरीके से वे परिवर्तित हो सकते हैं।

यद्यपि कलीसियाई जीवन कुछ क्षेत्रों में परिणाम ला सकता है, परंतु कुंजी अभी भी यही है कि वास्तविक जीवन लोगों को परिवर्तित कर सकता है। इंसान की पुरानी प्रकृति वास्तविक जीवन के बिना परिवर्तित नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए, अनुग्रह के युग में यीशु के कार्य को लो। जब यीशु ने पुराने नियमों को हटाकर नए युग की आज्ञाएँ स्थापित कीं, तो उसने वास्तविक जीवन के असल उदाहरणों का इस्तेमाल किया। जब यीशु अपने चेलों को सब्त के दिन गेहूँ के खेत से होते हुए ले जा रहा था, तो उसके चेलों ने भूख लगने पर गेहूं की बालें तोड़कर खाईं। फरीसियों ने यह देखा तो वे बोले कि उन्होंने सब्त का पालन नहीं किया। उन्होंने यह भी कहा कि लोगों को सब्त के दिन गड्ढे में गिरे बछड़ों को बचाने की अनुमति भी नहीं है, उनका कहना था कि सब्त के दिन कोई कार्य नहीं किया जाना चाहिए। यीशु ने नए

युग की आज्ञाओं को धीरे-धीरे लागू करने के लिए इन घटनाओं का प्रयोग किया। उस समय, लोगों को समझाने और परिवर्तित करने के लिए उसने बहुत से व्यवहारिक विषयों का प्रयोग किया। पवित्र आत्मा इसी सिद्धांत से कार्य करता है, और केवल यही तरीका है जो लोगों को बदल सकता है। व्यवहारिक विषयों के ज्ञान के बिना, लोग केवल सैद्धांतिक और बौद्धिक समझ ही प्राप्त कर सकते हैं—यह परिवर्तन का प्रभावी तरीका नहीं है। तो इंसान प्रशिक्षण से बुद्धि और अंतर्दृष्टि कैसे प्राप्त कर सकता है? क्या लोग केवल सुनकर, पढ़कर और अपने ज्ञान को बढ़ाकर बुद्धि और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं? ऐसा कैसे हो सकता है? लोगों को वास्तविक जीवन में समझना और अनुभव करना चाहिए! अतः इंसान को प्रशिक्षण लेना चाहिए और उसे वास्तविक जीवन से हटना नहीं चाहिए। लोगों को विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए और भिन्न पहलुओं में प्रवेश करना चाहिए : शैक्षणिक स्तर, अभिव्यक्ति, चीजों को देखने की योग्यता, विवेक, परमेश्वर के वचनों को समझने की योग्यता, व्यवहारिक ज्ञान, मनुष्यजाति के नियम, और मनुष्यजाति से संबंधित अन्य बातें वो चीज़ें हैं जिनसे लोगों को परिपूर्ण होना चाहिए। समझ प्राप्त करने के बाद लोगों को प्रवेश पर ध्यान देना चाहिए, तभी परिवर्तन किया जा सकता है। यदि किसी ने समझ प्राप्त कर ली है परंतु फिर भी वह अभ्यास की उपेक्षा करता है, तो परिवर्तन कैसे हो सकता है? लोग बहुत कुछ समझते हैं, परंतु वह वास्तविकता को नहीं जीते; इसलिए उनके पास परमेश्वर के वचनों की केवल थोड़ी-सी मूलभूत समझ होती है। तुम केवल आंशिक रूप से प्रबुद्ध हुए हो; तुमने पवित्र आत्मा से केवल थोड़ा-सा प्रकाशन पाया है, फिर भी वास्तविक जीवन में तुम्हारा प्रवेश नहीं हुआ है, या शायद तुम प्रवेश की परवाह भी नहीं करते इस प्रकार, तुम्हारा परिवर्तन कम हो गया है। इतने लंबे समय के बाद, लोग बहुत कुछ समझते हैं। वे सिद्धांतों के अपने ज्ञान के बारे में बहुत कुछ बोल सकते हैं, परंतु उनका बाहरी स्वभाव वैसा ही रहता है, और उनकी मूल क्षमता पहले जैसी ही बनी रहती है, थोड़ी सी भी आगे नहीं बढ़ती। यदि ऐसा है तो तुम अंततः कब प्रवेश करोगे?

कलीसियाई जीवन केवल इस प्रकार का जीवन है जहाँ लोग परमेश्वर के वचनों का स्वाद लेने के लिए एकत्र होते हैं, और यह किसी व्यक्ति के जीवन का एक छोटा-सा भाग ही होता है। यदि लोगों का वास्तविक जीवन भी कलीसियाई जीवन जैसा हो पाता, जिसमें सामान्य आत्मिक जीवन भी शामिल हो, जहाँ परमेश्वर के वचनों का सामान्य तरीके से स्वाद लिया जाए, सामान्य तरीके से प्रार्थना की जाए और परमेश्वर के निकट रहा जाए, एक ऐसा वास्तविक जीवन जिया जाए जहाँ सबकुछ परमेश्वर की इच्छा के

अनुसार हो, एक ऐसा वास्तविक जीवन जिया जाए जहाँ सब कुछ सत्य के अनुसार हो, प्रार्थना करने का और परमेश्वर के समक्ष शांत रहने, भक्तिगीत गाने और नृत्य का अभ्यास करने का वास्तविक जीवन जिया जाए, तो ऐसा जीवन ही लोगों को परमेश्वर के वचनों के जीवन में लेकर आएगा। अधिकाँश लोग केवल अपने कलीसियाई जीवन के कुछ घंटों पर ही ध्यान देते हैं, और वे उन घंटों से बाहर अपने जीवन की "सुधि" नहीं रखते, मानो उससे उनको कोई लेना-देना न हो। ऐसे भी कई लोग हैं जो केवल परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते समय, भजन गाते या प्रार्थना करते समय ही संतों के जीवन में प्रवेश करते हैं, उसके बाद वे उस समय से बाहर अपने पुराने व्यक्तित्व में लौट जाते हैं। इस तरह का जीवन लोगों को बदल नहीं सकता उन्हें परमेश्वर को जानने तो बिलकुल नहीं दे सकता। परमेश्वर पर विश्वास करने में, यदि लोग अपने स्वभाव में परिवर्तन की चाहत रखते हैं, तो उन्हें अपने आपको वास्तविक जीवन से अलग नहीं करना चाहिए। नियमित परिवर्तन को प्राप्त करने से पहले तुम्हें वास्तविक जीवन में स्वयं को जानने की, स्वयं को त्यागने की, सत्य का अभ्यास करने की, और साथ ही सब बातों में सिद्धांतों, व्यवहारिक ज्ञान और हर बात में अपने आचरण के नियमों को समझने की आवश्यकता है। यदि तुम केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर ही ध्यान देते हो, और वास्तविकता की गहराई में प्रवेश किए बिना, वास्तविक जीवन में प्रवेश किये बिना धार्मिक अनुष्ठानों के बीच ही जीते हो, तो तुम कभी भी वास्तविकता में प्रवेश नहीं कर पाओगे, तुम कभी स्वयं को, सत्य को या परमेश्वर को नहीं जान पाओगे, और तुम सदैव अंधे और अज्ञानी ही बने रहोगे। लोगों को बचाने का परमेश्वर का कार्य उन्हें छोटी अवधि के बाद सामान्य मानवीय जीवन जीने देने के लिए नहीं है, न ही यह उनकी त्रुटिपूर्ण धारणाओं और सिद्धांतों को परिवर्तित करने के लिए है। बल्कि, परमेश्वर का उद्देश्य लोगों के पुराने स्वभावों को बदलना है, उनके जीवन के पुराने तरीकों की समग्रता को बदलना है, और उनकी सारी पुरानी विचारधाराओं और उनके मानसिक दृष्टिकोण को बदलना है। केवल कलीसियाई जीवन पर ध्यान देने से मनुष्य के जीवन की पुरानी आदतें या लंबे समय तक वे जिस तरीके से जिए हैं, वे नहीं बदलेंगे। कुछ भी हो, लोगों को वास्तविक जीवन से अलग नहीं होना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि लोग वास्तविक जीवन में सामान्य मनुष्यत्व को जिएँ, न कि केवल कलीसियाई जीवन जिएँ; वे वास्तविक जीवन में सत्य को जिएँ, न कि केवल कलीसियाई जीवन में; वे वास्तविक जीवन में अपने कार्य को पूरा करें, न कि केवल कलीसियाई जीवन में। वास्तविकता में प्रवेश करने के लिए इंसान को सबकुछ वास्तविक जीवन की ओर मोड़ देना चाहिए। यदि परमेश्वर में विश्वास रखने में, लोग वास्तविक जीवन में प्रवेश करके

खुद को न जान पाएँ, और वे वास्तविक जीवन में सामान्य इंसानियत को न जी पाएँ, तो वे विफल हो जाएँगे। जो लोग परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते, वे सब ऐसे लोग हैं जो वास्तविक जीवन में प्रवेश नहीं कर सकते। वे सब ऐसे लोग हैं जो मनुष्यत्व के बारे में बात करते हैं, परंतु दुष्टात्माओं की प्रकृति को जीते हैं। वे सब ऐसे लोग हैं जो सत्य के बारे में बात करते हैं परंतु सिद्धांतों को जीते हैं। जो लोग वास्तविक जीवन में सत्य के साथ नहीं जी सकते, वे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं परंतु वे उसके द्वारा घृणित और अस्वीकृत माने जाते हैं। तुम्हें वास्तविक जीवन में प्रवेश करने का अभ्यास करना है, अपनी कमियों, अवज्ञाकारिता, और अज्ञानता को जानना है, और अपने असामान्य मनुष्यत्व और अपनी कमियों को जानना है। इस तरह से, तुम्हारा ज्ञान तुम्हारी वास्तविक स्थिति और कठिनाइयों के साथ एकीकृत हो जाएगा। केवल इस प्रकार का ज्ञान वास्तविक होता है और इससे ही तुम अपनी दशा को सचमुच समझ सकते हो और स्वभाव-संबंधी परिवर्तनों को प्राप्त कर सकते हो।

अब जबकि लोगों को पूर्ण बनाने की प्रक्रिया औपचारिक रूप से आरंभ हो चुकी है, इसलिए तुम्हें वास्तविक जीवन में प्रवेश करना चाहिए। अतः परिवर्तन पाने के लिए तुम्हें वास्तविक जीवन में प्रवेश से आरंभ करना चाहिए और थोड़ा-थोड़ा करके परिवर्तित होना चाहिए। यदि तुम सामान्य मानवीय जीवन को नजरअंदाज करते हो और केवल आत्मिक विषयों के बारे में बात करते हो, तो चीज़ें शुष्क और सपाट हो जाती हैं; वे बनावटी हो जाती हैं, तो फिर लोग कैसे परिवर्तित हो सकते हैं? अब तुम्हें अभ्यास करने के लिए वास्तविक जीवन में प्रवेश करने को कहा जाता है, ताकि तुम सच्चे अनुभव में प्रवेश करने की नींव को स्थापित करो। लोगों को जो करना चाहिए यह उसका एक पहलू है। पवित्र आत्मा का कार्य मुख्य रूप से मार्गदर्शन करना है, जबकि बाकी कार्य लोगों के अभ्यास और प्रवेश पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति इस रीति से विभिन्न मार्गों से वास्तविक जीवन में प्रवेश कर सकता है, जिससे कि वह परमेश्वर को वास्तविक जीवन में ला सके और वास्तविक सामान्य मनुष्यत्व को जी सके। केवल यही अर्थपूर्ण जीवन है!

सभी के द्वारा अपना कार्य करने के बारे में

वर्तमान धारा में उन सभी के पास, जो सच में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उसके द्वारा पूर्ण किए जाने का अवसर है। चाहे वे युवा हों या वृद्ध, जब तक वे अपने हृदय में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और श्रद्धा रखते हैं, वे उसके द्वारा पूर्ण किए जा सकते हैं। परमेश्वर लोगों को उनके भिन्न-भिन्न कार्यों के अनुसार पूर्ण

करता है। जब तक तुम अपनी पूरी शक्ति लगाते हो और परमेश्वर के कार्य के लिए प्रस्तुत रहते हो, तुम उसके द्वारा पूर्ण किए जा सकते हो। वर्तमान में तुम लोगों में से कोई भी पूर्ण नहीं है। कभी तुम एक प्रकार का कार्य करने में सक्षम होते हो, और कभी तुम दो कार्य कर सकते हो। जब तक तुम अपने आपको परमेश्वर के लिए खपाने की पूरी कोशिश करते हो, तब तक तुम अंततः परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाओगे।

युवा लोगों के पास कम जीवन-दर्शन हैं, और उनमें बुद्धि और अंतर्दृष्टि की कमी है। परमेश्वर मनुष्य की बुद्धि और अंतर्दृष्टि को पूर्ण करने के लिए आता है। उसका वचन उनकी कमियाँ पूरी करता है। फिर भी, युवा लोगों का स्वभाव चंचल होता है, और उसे परमेश्वर द्वारा रूपांतरित किया जाना आवश्यक है। युवा लोगों में धार्मिक विचार और जीवन-दर्शन कम होते हैं; वे हर चीज़ के बारे में सरल ढंग से सोचते हैं, और उनके विचार जटिल नहीं होते। यह उनकी मनुष्यता का अंग है, जिसने अभी तक आकार नहीं लिया है, और यह एक सराहनीय अंग है; किंतु युवा लोग अबोध हैं और उनमें विवेक की कमी है। यह एक ऐसी चीज़ है, जिसे परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने की आवश्यकता है। परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने से तुम लोग विवेक विकसित करने में सक्षम होगे। तुम अनेक आध्यात्मिक चीज़ें स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम होगे, और धीरे-धीरे ऐसे व्यक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाओगे, जो परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने के लिए उपयुक्त हो। वृद्ध भाई-बहनों के पास भी करने के लिए अपने काम हैं, और परमेश्वर ने उन्हें त्यागा नहीं है। वृद्ध भाई-बहनों में भी वांछनीय और अवांछनीय दोनों पहलू हैं। उनके पास अधिक जीवन-दर्शन और अधिक धार्मिक विचार होते हैं। अपने कार्यों में वे कई कठोर परंपराओं का पालन करते हैं, वे नियमों के शौकीन होते हैं जिन्हें वे यंत्रवत् और लचीलेपन के बिना लागू करते हैं। यह एक अवांछनीय पहलू है। किंतु ये वृद्ध भाई और बहन हर परिस्थिति में शांत और दृढ़ बने रहते हैं; उनके स्वभाव स्थिर होते हैं, और वे अप्रत्याशित और अस्थिर मनोदशाओं वाले नहीं होते। वे चीज़ों को स्वीकार करने में धीमे हो सकते हैं, पर यह कोई बड़ा दोष नहीं है। जब तक तुम लोग समर्पित हो सकते हो; जब तक तुम परमेश्वर के वर्तमान वचनों को स्वीकार कर सकते हो और उनकी छानबीन नहीं करते; जब तक तुम केवल समर्पण और अनुसरण से ताल्लुक रखते हो, और परमेश्वर के वचनों पर कभी कोई निर्णय नहीं देते या उनके बारे में कोई अन्य बुरे विचार नहीं रखते; जब तक तुम उसके वचनों को स्वीकार करते हो और उन्हें अभ्यास में लाते हो—तब तक, ये शर्तें पूरी करने पर तुम पूर्ण किए जा सकते हो।

तुम युवा भाई-बहन हो या वृद्ध, तुम जानते हो कि तुम्हें क्या कार्य करना है। जो अपनी युवावस्था में हैं,

वे अभिमानी नहीं हैं; जो वृद्ध हैं, वे निष्क्रिय नहीं हैं और न ही वे पीछे हटते हैं। इतना ही नहीं, वे अपनी कमियाँ दूर करने के लिए एक-दूसरे के सामर्थ्य का उपयोग करने में सक्षम हैं, और वे बिना किसी पूर्वाग्रह के एक-दूसरे की सेवा कर सकते हैं। युवा और वृद्ध भाई-बहनों के बीच मित्रता का एक पुल बन गया है, और परमेश्वर के प्रेम के कारण तुम लोग एक-दूसरे को बेहतर समझने में सक्षम हो। युवा भाई-बहन वृद्ध भाई-बहनों को हेय दृष्टि से नहीं देखते, और वृद्ध भाई-बहन दंभी नहीं हैं : क्या यह एक सामंजस्यपूर्ण साझेदारी नहीं है? यदि तुम सभी का यही संकल्प हो, तो तुम लोगों की पीढ़ी में परमेश्वर की इच्छा निश्चित रूप से पूरी होगी।

तुम्हें भविष्य में आशीष दिया जाएगा या शाप, इसका निर्णय तुम्हारे आज के कार्य और व्यवहार के आधार पर किया जाएगा। यदि तुम्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण किया जाना है, तो यह बिलकुल अभी होना चाहिए, इसी युग में; भविष्य में दूसरा कोई अवसर नहीं होगा। परमेश्वर तुम लोगों को सच में अभी पूर्ण करना चाहता है, और यह बस कहने की बात नहीं है। भविष्य में चाहे कोई भी परीक्षण तुम पर आकर पड़े, चाहे कैसी भी घटनाएँ घटें, या तुम्हें कैसी भी आपदाओं का सामना करना पड़े, परमेश्वर तुम लोगों को पूर्ण करना चाहता है; यह एक निश्चित और निर्विवाद तथ्य है। इसे कहाँ देखा जा सकता है? इसे इस तथ्य में देखा जा सकता है कि युगों और पीढ़ियों से परमेश्वर के वचन ने ऐसी महान ऊँचाई कभी प्राप्त नहीं की, जैसी आज प्राप्त की है। यह उच्चतम क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुका है, और पूरी मानवजाति पर पवित्र आत्मा का कार्य आज बेमिसाल है। पिछली पीढ़ियों में से शायद ही किसी ने ऐसा अनुभव किया होगा; यहाँ तक कि यीशु के युग में भी आज के प्रकाशन विद्यमान नहीं थे। तुम लोगों से बोले गए वचन, तुम्हारी समझ और तुम्हारे अनुभव, सब एक नए शिखर पर पहुँच गए हैं। तुम लोग परीक्षणों और ताड़नाओं के मध्य से हटते नहीं हो, और यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि परमेश्वर के कार्य ने एक अभूतपूर्व वैभव प्राप्त कर लिया है। यह कोई ऐसी बात नहीं है जिसे मनुष्य कर सकता है, न ही यह कोई ऐसी बात है जिसे मनुष्य बनाए रखता है; बल्कि यह स्वयं परमेश्वर का कार्य है। इसलिए, परमेश्वर के कार्य की अनेक वास्तविकताओं से यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण करना चाहता है, और वह निश्चित रूप से तुम लोगों को पूर्ण करने में सक्षम है। यदि तुम लोगों में यह अंतर्दृष्टि है और तुम यह नई खोज करते हो, तो तुम यीशु के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा नहीं करोगे, बल्कि तुम सब परमेश्वर को इसी युग में स्वयं को पूर्ण करने दोगे। इसलिए, तुम लोगों में से प्रत्येक को अपना अधिकतम प्रयास करना चाहिए, कोई प्रयास

नहीं छोड़ना चाहिए, ताकि तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जा सको।

अब तुम्हें नकारात्मक चीज़ों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। पहले, हर उस चीज़ को अलग रख दो और उसकी उपेक्षा करो, जो तुम्हें नकारात्मक महसूस कराए। जब तुम कामकाज सँभाल रहे होते हो, तो ऐसे दिल से सँभालो, जो खोज करता हो और सावधानी से आगे बढ़ता हो, ऐसा दिल जो परमेश्वर के प्रति समर्पित होता हो। जब कभी तुम लोगों को अपने भीतर किसी कमजोरी का पता चले, पर तुम उसे खुद पर काबू न पाने दो, और उसके बावजूद तुम वे कार्य करो, जो तुम्हें करने चाहिए, तो तुमने एक सकारात्मक कदम आगे बढ़ा लिया। उदाहरण के लिए, तुम वृद्ध भाई-बहनों की धार्मिक धारणाएँ हैं, फिर भी तुम प्रार्थना कर सकते हो, समर्पण कर सकते हो, परमेश्वर के वचन खा-पी सकते हो, और भजन गा सकते हो...। दूसरे शब्दों में, तुम जो कुछ भी करने में सक्षम हो, जो कोई भी कार्य तुम कर सकते हो, तुम्हें अपनी पूरी शक्ति के साथ उसके प्रति समर्पित हो जाना चाहिए। निष्क्रियता से प्रतीक्षा न करो। अपने कर्तव्य के निर्वहन में परमेश्वर को संतुष्ट करने में सक्षम होना पहला कदम है। फिर, एक बार जब तुम सत्य को समझने में सक्षम हो जाओगे और परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश हासिल कर लोगे, तब तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जा चुके होगे।

परमेश्वर द्वारा मनुष्य को इस्तेमाल करने के विषय में

ऐसे लोगों के अतिरिक्त जिन्हें पवित्र आत्मा का विशेष निर्देश और अगुवाई प्राप्त है, कोई भी स्वतंत्र रूप से जीवन जीने में सक्षम नहीं है, क्योंकि उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त लोगों की सेवकाई और उनके मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, परमेश्वर हर युग में अलग-अलग लोगों को तैयार करता है, जो उसके कार्य के लिए कलीसिया का मार्गदर्शन करने में व्यस्त और कार्यरत रहते हैं। कहने का अर्थ यह है कि परमेश्वर का कार्य उन लोगों द्वारा होना चाहिए जिन पर वह अनुग्रह करता है और जिनको वह अनुमोदित करता है; पवित्र आत्मा को कार्य करने के लिए उनके भीतर के उस भाग का इस्तेमाल करना चाहिए जो उपयोग के योग्य है, पवित्र आत्मा उन्हें पूर्ण करके परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाने के उपयुक्त बनाती है। चूँकि मनुष्य की समझने की क्षमता बेहद कम है, इसलिए मनुष्य का मार्गदर्शन परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त लोगों को करना चाहिए; परमेश्वर द्वारा मूसा के इस्तेमाल में भी ऐसा ही था, जिसमें उसने उस समय इस्तेमाल के लिए बहुत कुछ उपयुक्त पाया, और जो उसने उस चरण में परमेश्वर का कार्य करने के लिए

इस्तेमाल किया। इस चरण में, परमेश्वर मनुष्य का इस्तेमाल करता है, साथ ही उस भाग का लाभ भी उठाता है जो कि पवित्र आत्मा द्वारा कार्य करने के लिए उपयोग किया जा सकता है और पवित्र आत्मा उसे निर्देश भी देता है और साथ ही बचे हुए अंश को जिसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, पूर्ण बनाता है।

जिस कार्य को परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त व्यक्ति करता है, वह मसीह या पवित्र आत्मा के कार्य से सहयोग करने के लिए है। परमेश्वर इस मनुष्य को लोगों के बीच से ही तैयार करता है, उसका काम परमेश्वर के चुने हुए लोगों का नेतृत्व करना है। परमेश्वर उसे मानवीय सहयोग का कार्य करने के लिए भी तैयार करता है। इस तरह का व्यक्ति जो मानवीय सहयोग का कार्य करने में सक्षम है, उसके माध्यम से, मनुष्य से परमेश्वर की अनेक अपेक्षाओं को और उस कार्य को जो पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्यों के बीच किया जाना चाहिए, पूरा किया जा सकता है। इसे दूसरे शब्दों में यूँ कहा जा सकता है : ऐसे मनुष्य का इस्तेमाल करने का परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि जो लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, वे परमेश्वर की इच्छा को अच्छी तरह से समझ सकें, और परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा कर सकें। चूँकि लोग परमेश्वर के वचन को या परमेश्वर की इच्छा को सीधे तौर पर समझने में असमर्थ हैं, इसलिए परमेश्वर ने किसी ऐसे व्यक्ति को तैयार किया है जो इस तरह का कार्य करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त ऐसे व्यक्ति को माध्यम भी कहा जा सकता है जिसके ज़रिए परमेश्वर लोगों का मार्गदर्शन करता है, एक "दुभाषिया" जो परमेश्वर और लोगों के बीच में संप्रेषण बनाए रखता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के घर में काम करने वालों लोगों से या प्रेरित से अलग होता है। उन्हीं की तरह उसे परमेश्वर का सेवाकर्मी कहा जा सकता है, लेकिन उसके बावजूद, उसके कार्य के सार और परमेश्वर द्वारा उसके उपयोग की पृष्ठभूमि में, वह दूसरे कर्मियों और प्रेरितों से बिलकुल अलग होता है। परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त व्यक्ति अपने कार्य के सार और अपने उपयोग की पृष्ठभूमि के संबंध में, परमेश्वर द्वारा तैयार किया जाता है, उसे परमेश्वर के कार्य के लिए परमेश्वर ही तैयार करता है, और वह स्वयं परमेश्वर के कार्य में सहयोग करता है। कोई भी व्यक्ति उसकी जगह उसका कार्य नहीं कर सकता—दिव्य कार्य के साथ मनुष्य का सहयोग अपरिहार्य होता है। इस दौरान, दूसरे कर्मियों या प्रेरितों द्वारा किया गया कार्य हर अवधि में कलीसियाओं के लिए व्यवस्थाओं के कई पहलुओं का वहन और कार्यान्वयन है, या फिर कलीसियाई जीवन को बनाए रखने के लिए जीवन के सरल प्रावधान का कार्य करना है। इन कर्मियों और प्रेरितों को परमेश्वर नियुक्त नहीं करता, न ही यह कहा जा सकता है कि वे पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं। वे कलीसिया में से ही चुने जाते हैं और कुछ समय तक प्रशिक्षण

एवं तौर-तरीके सिखाने के बाद, जो उपयुक्त होते हैं उन्हें रख लिया जाता है, और जो उपयुक्त नहीं होते, उन्हें वहीं वापस भेज दिया जाता है जहाँ से वे आए थे। चूँकि ये लोग कलीसियाओं में से ही चुने जाते हैं, कुछ लोग अगुवा बनने के बाद अपना असली रंग दिखाते हैं, और कुछ लोग बुरे काम करने पर निकाल दिए जाते हैं। दूसरी ओर, परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त लोग परमेश्वर द्वारा तैयार किए जाते हैं, उनमें एक विशिष्ट योग्यता और मानवता होती है। ऐसे व्यक्ति को पहले ही पवित्र आत्मा द्वारा तैयार और पूर्ण कर दिया जाता है और पूर्णरूप से पवित्र आत्मा द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता है, विशेषकर जब उसके कार्य की बात आती है, तो उसे पवित्र आत्मा द्वारा निर्देश और आदेश दिए जाते हैं—परिणामस्वरुप परमेश्वर के चुने हुए लोगों की अगुवाई के मार्ग में कोई भटकाव नही आता, क्योंकि परमेश्वर निश्चित रूप से अपने कार्य का उत्तरदायित्व लेता है और हर समय कार्य करता है।

सत्य को समझने के बाद, तुम्हें उस पर अमल करना चाहिए

परमेश्वर का कार्य और वचन तुम्हारे स्वभाव में बदलाव लाने के लिए हैं; उसका लक्ष्य मात्र अपने कार्य और वचन को तुम लोगों को समझाना या ज्ञात कराना नहीं है। इतना पर्याप्त नहीं है। तुम्हारे अंदर सोचने-समझने की योग्यता है, इसलिए तुम्हें परमेश्वर के वचनों को समझने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर के अधिकतर वचन इंसानी भाषा में लिखे हैं, और वह बड़ी स्पष्टता से बोलता है। मिसाल के तौर पर, तुम इस बात को पूरी तरह से जानने में सक्षम हो कि परमेश्वर तुम्हें क्या बात समझाना और किस पर अमल करवाना चाहता है; यह ऐसी बात है जिसे सूझ-बूझ रखने वाला एक सामान्य व्यक्ति कर सकता है। विशेषकर, वर्तमान चरण में परमेश्वर जो वचन कह रहा है, वे खासतौर पर स्पष्ट और पारदर्शी हैं, और परमेश्वर ऐसी अनेक बातों की ओर इशारा कर रहा है जिन पर लोगों ने विचार नहीं किया है इसके साथ-साथ हर तरह की इंसानी स्थितियों की ओर इशारा कर रहा है। उसके वचन व्यापक हैं और पूरी तरह से स्पष्ट हैं। इसलिए अब, लोग बहुत-से मुद्दों को समझते हैं, लेकिन एक चीज़ अभी भी छूट रही है—लोगों का उसके वचनों को अमल में लाना। लोगों को सत्य के हर पहलू का विस्तार से अनुभव करना चाहिए, उसकी छान-बीन और खोज ज़्यादा विस्तार से करनी चाहिए, बजाय इसके कि जो कुछ भी उन्हें उपलब्ध कराया जाए, महज़ उसे आत्मसात करने का इंतज़ार करें; वरना वे परजीवी से ज़्यादा कुछ नहीं हैं। वे परमेश्वर के वचनों को जानते तो हैं, फिर भी उस पर अमल नहीं करते। इस तरह का व्यक्ति सत्य से प्रेम

नहीं करता और अंतत: उसे हटा दिया जाएगा। 1990 के पतरस जैसा बनने के लिए तुम लोगों में से हर एक को परमेश्वर के वचनों का अभ्यास करना चाहिए, अपने अनुभव में सच्चा प्रवेश करना चाहिए और परमेश्वर के साथ अपने सहयोग में ज़्यादा और कहीं अधिक विशाल प्रबोधन प्राप्त करना चाहिए, जो तुम्हारे अपने जीवन के लिए सदा अधिक सहायक होगा। अगर तुम लोगों ने परमेश्वर के बहुत सारे वचन पढ़े हैं, लेकिन केवल पाठ के अर्थ को समझा है और तुममें अपने व्यवहारिक अनुभव से परमेश्वर के वचनों का प्रत्यक्ष ज्ञान का अभाव है, तो तुम परमेश्वर के वचनों को नहीं समझोगे। तुम्हारे विचार से, परमेश्वर के वचन जीवन नहीं हैं, बल्कि महज़ बेजान शब्द हैं। और अगर तुम केवल बेजान शब्दों का पालन करते रहोगे, तब न तो तुम परमेश्वर के वचनों के सार को ग्रहण कर पाओगे, न ही उसकी इच्छा को समझ पाओगे। जब तुम अपने वास्तविक अनुभव में उसके वचनों का अनुभव कर लोगे, तभी परमेश्वर के वचनों का आध्यात्मिक अर्थ तुम्हारे सामने स्वयं को प्रकट करेगा, और अनुभव से ही तुम बहुत-से सत्यों के आध्यात्मिक अर्थ को ग्रहण कर पाओगे और परमेश्वर के वचनों के रहस्यों को खोल पाओगे। अगर तुम इन्हें अमल में न लाओ, तो उसके वचन कितने भी स्पष्ट क्यों न हों, तुमने बस उन खोखले शब्दों और सिद्धांतों को ही ग्रहण किया है, जो तुम्हारे लिए धर्म संबंधी नियम बन चुके हैं। क्या यही फरीसियों ने नहीं किया था? अगर तुम लोग परमेश्वर के वचनों को अमल में लाओ और उनका अनुभव करो, तो ये तुम लोगों के लिए व्यवहारिक बन जाएंगे; अगर तुम इनका अभ्यास करने का प्रयास न करो, तो तुम्हारे लिए परमेश्वर के वचन तीसरे स्वर्ग की किंवदंती से ज़्यादा कुछ नहीं है। दरअसल, तुम लोगों द्वारा परमेश्वर में विश्वास रखने की प्रक्रिया ही उसके वचनों का अनुभव करने और उसके द्वारा प्राप्त किए जाने की प्रक्रिया है, या इसे और अधिक साफ तौर कहें तो, परमेश्वर में विश्वास रखना उसके वचनों को जानना, समझना, उनका अनुभव करना और उन्हें जीना है; परमेश्वर में तुम लोगों की आस्था की सच्चाई ऐसी ही है। अगर तुम लोग परमेश्वर में विश्वास रखते हो और अनंत जीवन पाने की आशा करते हो लेकिन परमेश्वर के वचनों को इस प्रकार अमल में लाने का प्रयास नहीं करते मानो कि वह ऐसी कोई चीज़ है जो तुम्हारे भीतर है, तो तुम मूर्ख हो। यह बिल्कुल ऐसा ही होगा जैसे किसी दावत में जा कर केवल भोज्य-पदार्थों को देखा और उनमें से किसी भी चीज़ का स्वाद चखे बिना स्वादिष्ट चीज़ों को रट लिया। क्या ऐसा व्यक्ति मूर्ख नहीं होगा?

इंसान के लिए आवश्यक सत्य परमेश्वर के वचनों में निहित है, और सत्य ही इंसान के लिए अत्यंत लाभदायक और सहायक होता है। तुम लोगों के शरीर को इस टॉनिक और पोषण की आवश्यकता है,

इससे इंसान को अपनी सामान्य मानवीयता को फिर से प्राप्त करने में सहायता मिलती है। यह ऐसा सत्य है जो इंसान के अंदर होना चाहिए। तुम लोग परमेश्वर के वचनों का जितना अधिक अभ्यास करोगे, उतनी ही तेज़ी से तुम लोगों का जीवन विकसित होगा, और सत्य उतना ही अधिक स्पष्ट होता जाएगा। जैसे-जैसे तुम लोगों का आध्यात्मिक कद बढ़ेगा, तुम आध्यात्मिक जगत की चीज़ों को उतनी ही स्पष्टता से देखोगे, और शैतान पर विजय पाने के लिए तुम्हारे अंदर उतनी ही ज़्यादा शक्ति होगी। जब तुम लोग परमेश्वर के वचनों पर अमल करोगे, तो तुम लोग ऐसा बहुत-सा सत्य समझ जाओगे जो तुम लोग समझते नहीं हो। अधिकतर लोग अमल में अपने अनुभव को गहरा करने के बजाय महज़ परमेश्वर के वचनों के पाठ को समझकर और सिद्धांतों से लैस होकर ध्यान केंद्रित करके ही संतुष्ट हो जाते हैं, लेकिन क्या यह फरीसियों का तरीका नहीं है? तो उनके लिए यह कहावत "परमेश्वर के वचन जीवन हैं" वास्तविक कैसे हो सकती है? किसी इंसान का जीवन मात्र परमेश्वर के वचनों को पढ़कर विकसित नहीं हो सकता, बल्कि परमेश्वर के वचनों को अमल में लाने से ही होता है। अगर तुम्हारी सोच यह है कि जीवन और आध्यात्मिक कद पाने के लिए परमेश्वर के वचनों को समझना ही पर्याप्त है, तो तुम्हारी समझ विकृत है। परमेश्वर के वचनों की सच्ची समझ तब पैदा होती है जब तुम सत्य का अभ्यास करते हो, और तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि "इसे हमेशा सत्य पर अमल करके ही समझा जा सकता है।" आज, परमेश्वर के वचनों को पढ़कर, तुम केवल यह कह सकते हो कि तुम परमेश्वर के वचनों को जानते हो, लेकिन यह नहीं कह सकते कि तुम इन्हें समझते हो। कुछ लोगों का कहना है कि सत्य पर अमल करने का एकमात्र तरीका यह है कि पहले इसे समझा जाए, लेकिन यह बात आंशिक रूप से ही सही है, निश्चय ही यह पूरे तौर पर सही तो नहीं है। सत्य का ज्ञान प्राप्त करने से पहले, तुमने उस सत्य का अनुभव नहीं किया है। किसी उपदेश में कोई बात सुनकर यह मान लेना कि तुम समझ गए हो, सच्ची समझ नहीं होती—इसे महज़ सत्य को शाब्दिक रूप में समझना कहते हैं, यह उसमें छिपे सच्चे अर्थ को समझने के समान नहीं है। सत्य का सतही ज्ञान होने का अर्थ यह नहीं है कि तुम वास्तव में इसे समझते हो या तुम्हें इसका ज्ञान है; सत्य का सच्चा अर्थ इसका अनुभव करके आता है। इसलिए, जब तुम सत्य का अनुभव कर लेते हो, तो तुम इसे समझ सकते हो, और तभी तुम इसके छिपे हुए हिस्सों को समझ सकते हो। संकेतार्थों को और सत्य के सार को समझने के लिए तुम्हारा अपने अनुभव को गहरा करना की एकमात्र तरीका है। इसलिए, तुम सत्य के साथ हर जगह जा सकते हो, लेकिन अगर तुम्हारे अंदर कोई सत्य नहीं है, तो फिर धार्मिक लोगों की तो छोड़ो, तुम अपने

परिवारजनों तक को आश्वस्त करने का भी प्रयास करने की मत सोचना। सत्य के बिना तुम हवा में तैरते हिमकणों की तरह हो, लेकिन सत्य के साथ तुम प्रसन्न और मुक्त रह सकते हो, और कोई तुम पर आक्रमण नहीं कर सकता। कोई सिद्धांत कितना ही सशक्त क्यों न हो, लेकिन वह सत्य को परास्त नहीं कर सकता। सत्य के साथ, दुनिया को झुकाया जा सकता है और पर्वतों-समुद्रों को हिलाया जा सकता है, जबकि सत्य के अभाव में कीड़े-मकौड़े भी शहर की मज़बूत दीवारों को मिट्टी में मिला सकते हैं। यह एक स्पष्ट तथ्य है।

वर्तमान चरण में, पहले सत्य को जानना बेहद महत्वपूर्ण है, फिर उसे अमल में लाना और उसके बाद सत्य के सच्चे अर्थ से स्वयं को समर्थ बनाना। तुम लोगों को इसे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों से मात्र अपनी बातों का अनुसरण करवाने का प्रयास करने के बजाय, तुम्हें उनसे अपने अभ्यास का अनुसरण करवाना चाहिए। केवल इसी प्रकार से तुम कुछ सार्थक हासिल कर सकते हो। तुम पर चाहे कोई भी मुसीबत आए, चाहे तुम्हें किसी का भी सामना करना पड़े, अगर तुम्हारे अंदर सत्य है, तो तुम डटे रह पाओगे। परमेश्वर के वचन इंसान को जीवन देते हैं, मृत्यु नहीं। अगर परमेश्वर के वचन पढ़कर भी तुम जीवित नहीं होते बल्कि मुर्दे ही रहते हो, तो तुम्हारे साथ कुछ गड़गबड़ है। अगर कुछ समय के बाद तुम परमेश्वर के काफी वचनों को पढ़ लेते हो और व्यवहारिक उपदेशों को सुन लेते हो, लेकिन तब भी तुम मृत्यु की स्थिति में रहते हो, तो यह इस बात का प्रमाण है कि तुम सत्य की कद्र करने वाले इंसान नहीं हो, न ही तुम सत्य के लिए प्रयास करने वाले इंसान हो। अगर तुम लोग सचमुच परमेश्वर को पाने का प्रयास करते, तो तुम लोग सिद्धांतों से लैस होने और लोगों को सिखाने के लिए ऊँचे-ऊँचे सिद्धांतों का इस्तेमाल करने में अपना ध्यान केंद्रित न करते, बल्कि परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने और सत्य को अमल में लाने पर ध्यान केंद्रित करते। क्या अब तुम लोगों को इसमें प्रवेश करने का प्रयास नहीं करना चाहिए?

परमेश्वर के पास इंसान में कार्य करने का सीमित समय है, इसलिए अगर तुम उसके साथ सहयोग न करो तो उसका परिणाम क्या हो सकता है? परमेश्वर हमेशा क्यों चाहता है कि एक बार समझ लेने पर तुम लोग उसके वचनों पर अमल करो? वो ऐसा इसलिए चाहता है क्योंकि परमेश्वर ने तुम लोगों के सामने अपने वचनों को प्रकट कर दिया है और तुम लोगों का अगला कदम है उन पर वास्तव में अमल करना। जब तुम उन वचनों पर अमल करोगे, तो परमेश्वर प्रबोधन और मार्गदर्शन का कार्य पूरा करेगा। यह कार्य इसी तरह से किया जाना है। परमेश्वर के वचनों से इंसान का जीवन फलता-फूलता है, उसमें ऐसा कोई

तत्व नहीं होता जो इंसान को भटकाए या उसे निष्क्रिय बनाए। तुम कहते हो कि तुमने परमेश्वर के वचनों को पढ़ा है और उस पर अमल किया है, लेकिन तुमने अभी भी पवित्र आत्मा से कोई कार्य प्राप्त नहीं किया है। तुम्हारे शब्द सिर्फ किसी बच्चे को बेवकूफ बना सकते हैं। अन्य लोगों को शायद न पता लगे कि तुम्हारे इरादे सही हैं या नहीं, लेकिन क्या तुम्हें लगता है कि परमेश्वर को पता नहीं चलेगा? ऐसा कैसे है कि लोग परमेश्वर के वचनों पर अमल करते हैं और उन्हें पवित्र आत्मा का प्रबोधन प्राप्त हो जाता है, लेकिन तुम उसके वचनों पर अमल करके भी पवित्र आत्मा का प्रबोधन प्राप्त नहीं करते? क्या परमेश्वर के अंदर भावनाएँ हैं? अगर तुम्हारे इरादे सचमुच सही हैं और तुम सहयोग करते हो, तो परमेश्वर का आत्मा तुम्हारे साथ होगा। कुछ लोग हमेशा अपना ही झंडा बुलंद रखना चाहते हैं, किन्तु क्यों परमेश्वर उन्हें ऊपर उठकर कलीसिया की अगुवाई नहीं करने देता? कुछ लोग मात्र अपना काम करते हैं और अपने कर्तव्यों को करते हैं, और इससे पहले कि वे इसे जाने, वे परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा कैसे हो सकता है? परमेश्वर इंसान के अंतरतम हृदय की जाँच करता है और जो लोग सत्य का पालन करते हैं उन्हें ऐसा सही इरादों के साथ करना चाहिए। जिन लोगों के इरादे सही नहीं होते, वे दृढ़ नहीं रह पाते। मूलतः, तुम लोगों का लक्ष्य परमेश्वर के वचनों को अपने अंदर प्रभाव ग्रहण करने देना है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के वचनों के अपने अभ्यास में वचनों की सच्ची समझ हासिल करना है। शायद परमेश्वर के वचनों को समझने की तुम्हारी क्षमता थोड़ी कच्ची है, लेकिन जब तुम लोग परमेश्वर के वचनों का अभ्यास करते हो, तो वह इस दोष को दूर कर सकता है, तो तुम लोगों को न केवल बहुत-से सत्यों को जानना चाहिए, बल्कि तुम्हें उनका अभ्यास भी करना चाहिए। यह सबसे महत्वपूर्ण केंद्र-बिंदु है जिसे नजरंदाज नहीं किया जा सकता। यीशु भी ने अपने साढ़े तैंतीस वर्षों में बहुत से अपमान सहे और बहुत कष्ट उठाए। उसने इतने अधिक कष्ट केवल इसलिए उठाए क्योंकि उसने, सत्य पर अमल किया, सभी चीज़ों में वह परमेश्वर की इच्छा पर चला, और केवल परमेश्वर की इच्छा की ही परवाह की। अगर उसने सत्य पर अमल किए बिना उसे जान लिया होता तो वह ये कष्ट न उठाता। अगर यीशु ने यहूदियों की शिक्षाओं का पालन किया होता और फरीसियों का अनुसरण किया होता, तो उसने कष्ट न उठाए होते। तुम यीशु के कर्मों से सीख सकते हो कि इंसान पर परमेश्वर के कार्य की प्रभावशीलता इंसान के सहयोग से ही आती है, यह बात तुम लोगों को समझ लेनी चाहिए। अगर यीशु ने सत्य पर अमल न किया होता, तो क्या उसने वो दुख उठाए होते जो सूली पर उठाए? अगर उसने परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप कार्य न किया होता तो क्या वह ऐसी दर्दभरी प्रार्थना

कर पाता? इसलिए, तुम लोगों को सत्य के अभ्यास की खातिर कष्ट उठाने चाहिए; इंसान को इस तरह के कष्ट उठाने चाहिए।

वह व्यक्ति उद्धार प्राप्त करता है जो सत्य का अभ्यास करने को तैयार है

उपदेशों में एक उचित कलीसिया-जीवन होने की आवश्यकता का प्रायः उल्लेख किया जाता है। तो ऐसा क्यों है कि कलीसिया के जीवन में अभी तक सुधार नहीं हुआ है, और उसमें अभी भी वही पुरानी बात है? उसमें जीवन का एक बिलकुल नया और अलग तरीका क्यों नहीं है? क्या नब्बे के दशक के किसी व्यक्ति का एक बीते युग के सम्राट की तरह जीना सामान्य होगा? यद्यपि अब लोग जो खाते और पीते हैं, वे ऐसे पकवान हैं, जो पिछले युगों में शायद ही कभी चखे गए हों, किंतु कलीसिया के जीवन में कोई बड़ा उलटफेर नहीं हुआ है। यह पुरानी शराब को नई बोतलों में डालने जैसा रहा है। तो फिर परमेश्वर के इतना कहने का क्या लाभ है? अधिकांश जगहों पर कलीसिया बिलकुल भी नहीं बदले हैं। मैंने इसे अपनी आँखों से देखा है और यह मेरे हृदय में स्पष्ट है; यद्यपि मैंने स्वयं के लिए कलीसिया के जीवन का अनुभव नहीं किया है, फिर भी मैं कलीसिया की सभाओं की स्थितियों को बहुत अच्छे से जानता हूँ। उन्होंने बहुत प्रगति नहीं की है। यह उस पुरानी कहावत की याद दिलाती है—यह पुरानी शराब नई बोतलों में डालने की तरह है। कुछ भी नहीं बदला! जब कोई उनकी चरवाही करता है, तो वे आग की तरह जलते हैं, लेकिन जब कोई उन्हें सहारा देने के लिए नहीं होता, तो वे बर्फ के एक खंड की तरह होते हैं। ज्यादा लोग व्यावहारिक चीज़ों की बात नहीं कर सकते, और शायद ही कोई पतवार थाम सकता है। यद्यपि उपदेश बुलंद हैं, किंतु शायद ही कभी किसी को प्रवेश मिला है। कुछ ही लोग परमेश्वर के वचन को मानते हैं। जब वे परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं, तो वे दुखी हो जाते हैं, और जब उसे एक तरफ रख देते हैं, तो खुश हो जाते हैं; और जब उससे अलग होते हैं, तो निष्प्राण और निस्तेज हो जाते हैं। स्पष्ट रूप से बोलूँ तो, तुम लोग परमेश्वर के वचन को सँजोते नहीं, और उसके अपने मुँह से निकले हुए वचन को आज खज़ाने के रूप में नहीं देखते। तुम बस परमेश्वर के वचन को पढ़ते समय उत्सुक होते हो और उसे स्मरण करते हुए उत्साही अनुभव करते हो, पर जब उसके वचन पर अमल करने की बात आती है, तो वह कुएँ से रस्सी के बजाय घोड़े की पूँछ के बाल से पानी खींचने की कोशिश करने जैसा होता है—तुम कितना भी कठिन प्रयास क्यों

न कर लो, तुम पर्याप्त ऊर्जा लगा ही नहीं पाओगे। परमेश्वर के वचन को पढ़ते समय तुम हमेशा ऊर्जा से भरे होते हो, लेकिन उसका अभ्यास करते समय लापरवाह हो जाते हो। वास्तव में, ये वचन इतनी शिद्दत से बोले जाने और इतने धैर्य से दोहराए जाने की ज़रूरत नहीं है; लेकिन यह तथ्य कि लोग परमेश्वर के वचनों को सिर्फ सुनते हैं, उन्हें अभ्यास में नहीं लाते, परमेश्वर के कार्य में बाधा बन गया है। मैं इसका जिक्र नहीं कर सकता, मैं इसके बारे में बात नहीं कर सकता। मैं ऐसा करने के लिए विवश हूँ; ऐसा नहीं है कि मुझे दूसरों की कमज़ोरियाँ उजागर करने में मज़ा आता है। तुम लोगों को लगता है कि तुम्हारा अभ्यास कमोबेश पर्याप्त है—कि जब प्रकाशन शिखर पर होते हैं, तो तुम्हारा प्रवेश भी शिखर पर होता है? क्या यह इतना आसान है? तुम लोग कभी उस नींव की जाँच नहीं करते, जिस पर अंततः तुम्हारे अनुभव निर्मित होते हैं! फ़िलहाल तुम लोगों की सभाओं को बिलकुल भी उचित कलीसिया-जीवन नहीं कहा जा सकता, न ही वे बिलकुल भी सही आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करते हैं। यह बस लोगों के एक समूह का जमावड़ा है, जिन्हें गपशप करने और गाने में मज़ा आता है। सच कहूँ तो, इसमें ज्यादा वास्तविकता नहीं है। थोड़ा और स्पष्ट करूँ तो, यदि तुम सत्य का अभ्यास नहीं करते, तो वास्तविकता कहाँ है? क्या यह कहना शेखी बघारना नहीं है कि तुम्हारे पास वास्तविकता है? जो लोग हमेशा कार्य करते हैं, वे अभिमानी और दंभी होते हैं, जबकि जो लोग हमेशा आज्ञापालन करते हैं, वे प्रशिक्षण का कोई अवसर पाए बिना शांत रहते हैं और अपना सिर नीचे रखते हैं। जो लोग कार्य करते हैं, वे सिवाय बातों के कुछ नहीं करते, अपने आडंबरपूर्ण भाषण जारी रखते हैं, और अनुयायी केवल सुनते हैं। कोई रूपांतरण नहीं है, जिसके बारे में बोला जा सके; ये सब बस अतीत के तरीके हैं! आज, तुम्हारा झुकने में समर्थ बिना जाना और हस्तक्षेप करने या मनमाना व्यवहार करने की हिम्मत न करना परमेश्वर के प्रशासनिक आदेशों के आगमन के कारण है; यह परिवर्तन तुम्हारे अनुभवों से गुज़रने के माध्यम से नहीं आया है। यह तथ्य कि तुम कुछ चीज़ों को करने का साहस अब और नहीं करोगे जो आज प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन करती हैं, इस कारण से है, क्योंकि परमेश्वर के वचनों के कार्य का एक स्पष्ट प्रभाव है और इसने लोगों को जीत लिया है। मुझे किसी से पूछने दो; आज की तुम्हारी कितनी उपलब्धियाँ तुम्हारी अपनी कड़ी मेहनत के पसीने से अर्जित हुई थीं? इनमें से कितना परमेश्वर द्वारा तुम्हें सीधे बताया गया था? तुम क्या जवाब दोगे? क्या तुम भौचक और अवाक् रह जाओगे? ऐसा क्यों है कि दूसरे लोग तुम्हें पोषण प्रदान करने के लिए अपने जीवन के कई वास्तविक अनुभवों के बारे में बात करने में सक्षम हैं, जबकि तुम सिर्फ दूसरों द्वारा पकाया गया खाना खाने में आनंद

लेते हो? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम लोग तुलनात्मक रूप से अच्छे लोगों की जाँच करते हुए एक तथ्यान्वेषण-परीक्षा कर सकते हो : तुम कितना सत्य समझते हो? अंततः उसमें से कितने पर अमल करते हो? तुम किससे ज़्यादा प्यार करते हो, परमेश्वर से या खुद से? तुम अधिकतर देते हो, या अधिकतर लेते हो? ऐसे कितने अवसरों पर, जब तुम्हारी मंशा गलत थी, तुमने अपने पुराने स्वभाव को त्यागा और परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट किया? सिर्फ ये कुछ प्रश्न ही कई लोगों को चकरा देंगे। क्योंकि ज़्यादातर लोग यह पता चल जाने के बाद भी कि उनकी मंशा गलत है, जानबूझकर गलत काम करते हैं, और अपने शरीर को त्यागने के बारे में सोचते तक नहीं। अधिकतर लोग पाप को अपने भीतर बेलगाम दौड़ने देते हैं और उसे अपनी हर कार्रवाई का निर्देशन करने देते हैं। वे अपने पापों पर काबू पाने में असमर्थ हैं और पाप में जीते रहते हैं। इस वर्तमान चरण पर आकर, कौन नहीं जानता कि उसने कितने दुष्कर्म किए हैं? यदि तुम कहते हो कि तुम नहीं जानते, तो तुम पूरी तरह से झूठ बोल रहे हो। स्पष्ट कहूँ तो, यह सब तुम्हारी अपने पुराने स्वभाव को त्यागने की अनिच्छा है। "हृदय से" इतने सारे पश्चात्ताप भरे "वचन" कहने का क्या लाभ है, जिनका कोई मूल्य नहीं है? क्या यह तुम्हें अपने जीवन में आगे बढ़ने में मदद करेगा? यह कहा जा सकता है कि अपने आपको जानना एक पूर्णकालिक कार्य है। मैं लोगों को उनके समर्पण और परमेश्वर के वचनों के उनके अभ्यास के माध्यम से पूर्ण करता हूँ। अगर तुम परमेश्वर के वचनों को उसी तरह पहनते हो, जैसे तुम अपने कपड़े पहनते हो, केवल अत्याधुनिक और आकर्षक दिखने के लिए, तो क्या तुम स्वयं को और दूसरों को भी धोखा नहीं दे रहे? अगर तुम्हारे पास सिर्फ बातें हैं और तुम उनका कभी अभ्यास नहीं करते, तो तुम क्या हासिल करोगे?

बहुत लोग अभ्यास के बारे में थोड़ी बात कर सकते हैं और वे अपने व्यक्तिगत विचारों के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन इसमें से अधिकांश दूसरों के वचनों से प्राप्त होने वाला प्रकाश होता है। इसमें उनके अपने व्यक्तिगत अभ्यासों से कुछ भी शामिल नहीं होता, न ही इसमें ऐसा कुछ शामिल होता है, जिसे उन्होंने अपने अनुभवों से देखा हो। मैं पहले इस मुद्दे की चीर-फाड़ कर चुका हूँ; यह मत सोचो कि मुझे कुछ पता नहीं है। तुम केवल कागज़ी शेर हो, और बात तुम शैतान पर विजय पाने, विजय के साक्ष्य वहन करने और परमेश्वर की छवि को जीने की करते हो? यह सब बकवास है! क्या तुम्हें लगता है कि आज परमेश्वर द्वारा बोले गए सभी वचन तुम्हारी सराहना पाने के लिए हैं? मुँह से तुम अपने पुराने स्वभाव को त्यागने और सत्य का अभ्यास करने की बात करते हो, और तुम्हारे हाथ दूसरे कर्म कर रहे हैं और तुम्हारा

हृदय दूसरी योजनाओं की साजिश कर रहा है—तुम किस तरह के व्यक्ति हो? तुम्हारा हृदय और तुम्हारे हाथ एक क्यों नहीं हैं? इतने सारे उपदेश खोखले शब्द हो गए हैं; क्या यह हृदय तोड़ने वाली बात नहीं है? यदि तुम परमेश्वर के वचन का अभ्यास करने में असमर्थ हो, तो इससे यह साबित होता है कि तुमने अभी तक पवित्र आत्मा के कार्य के तरीके में प्रवेश नहीं किया है, तुम्हारे अंदर अभी तक पवित्र आत्मा का कार्य नहीं हुआ है, और तुम्हें अभी तक उसका मार्गदर्शन नहीं मिला है। यदि तुम कहते हो कि तुम केवल परमेश्वर के वचन को समझने में समर्थ हो, लेकिन उसका अभ्यास करने में समर्थ नहीं हो, तो तुम एक ऐसे व्यक्ति हो, जो सत्य से प्रेम नहीं करता। परमेश्वर इस तरह के व्यक्ति को बचाने के लिए नहीं आता। यीशु को जब पापियों, गरीबों और सभी विनम्र लोगों को बचाने के लिए सलीब पर चढ़ाया गया था, तो उसे बहुत पीड़ा हुई थी। उसके सलीब पर चढ़ने की प्रक्रिया ने पापबलि का काम किया था। यदि तुम परमेश्वर के वचन का अभ्यास नहीं कर सकते, तो तुम्हें जितनी जल्दी हो सके, चले जाना चाहिए; एक मुफ्तखोर के रूप में परमेश्वर के घर में पड़े मत रहो। बहुत-से लोग तो स्वयं को ऐसी चीज़ें करने से रोकने में भी कठिनाई महसूस करते हैं, जो स्पष्टत: परमेश्वर का विरोध करती हैं। क्या वे मृत्यु नहीं माँग रहे हैं? वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की बात कैसे कर सकते हैं? क्या उनमें परमेश्वर का चेहरा देखने की धृष्टता होगी? वह भोजन करना, जो परमेश्वर तुम्हें प्रदान करता है; कुटिल चीज़ें करना, जो परमेश्वर का विरोध करती हैं; दुर्भावनापूर्ण, कपटी और षड्यंत्रकारी बनना, तब भी जबकि परमेश्वर तुम्हें अपने द्वारा दिए गए आशीषों का आनंद लेने देता है—क्या तुम उन्हें प्राप्त करते हुए अपने हाथों को जलता हुआ महसूस नहीं करते? क्या तुम अपने चेहरे को शर्म से लाल होता महसूस नहीं करते? परमेश्वर के विरोध में कुछ करने के बाद, "दुष्ट बनने" के लिए षड्यंत्र रचने के बाद, क्या तुम्हें डर नहीं लगता? यदि तुम्हें कुछ महसूस नहीं होता, तो तुम किसी भविष्य के बारे में बात कैसे कर सकते हो? तुम्हारे लिए पहले से ही कोई भविष्य नहीं था, तो अभी भी तुम्हारी और बड़ी अपेक्षाएँ क्या हो सकती हैं? यदि तुम कोई बेशर्मी की बात करते हो और कोई धिक्कार महसूस नहीं करते, और तुम्हारे हृदय में कोई जागरूकता नहीं है, तो क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम परमेश्वर द्वारा पहले ही त्यागे जा चुके हो? मज़ा लेते हुए और अनर्गल ढंग से बोलना और कार्य करना तुम्हारी प्रकृति बन गया है; तुम इस तरह कैसे कभी परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जा सकते हो? क्या तुम दुनिया भर में चल पाने में सक्षम होगे? तुम पर कौन विश्वास करेगा? जो लोग तुम्हारी सच्ची प्रकृति को जानते हैं, वे तुमसे दूरी बनाए रखेंगे। क्या यह परमेश्वर का दंड नहीं है? कुल मिलाकर, अगर केवल

बात होती है और कोई अभ्यास नहीं होता, तो कोई विकास नहीं होता। यद्यपि तुम्हारे बोलते समय पवित्र आत्मा तुम पर कार्य कर रहा हो सकता है, किंतु यदि तुम अभ्यास नहीं करते, तो पवित्र आत्मा कार्य करना बंद कर देगा। यदि तुम इसी तरह से करते रहे, तो भविष्य के बारे में या अपना पूरा अस्तित्व परमेश्वर के कार्य को सौंपने के बारे में कोई बात कैसे हो सकती है? तुम केवल अपना पूरा अस्तित्व सौंपने की बात कर सकते हो, लेकिन तुमने अपना सच्चा प्यार परमेश्वर को नहीं दिया है। उसे तुमसे केवल मौखिक भक्ति मिलती है, उसे तुम्हारा सत्य का अभ्यास करने का इरादा नहीं मिलता। क्या यह तुम्हारा असली आध्यात्मिक कद हो सकता है? यदि तुम ऐसा ही करते रहे, तो तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण कब बनाए जाओगे? क्या तुम अपने अंधकारमय और विषादपूर्ण भविष्य के बारे में चिंता महसूस नहीं करते? क्या तुम्हें नहीं लगता कि परमेश्वर ने तुममें आशा खो दी है? क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर अधिक और नए लोगों को पूर्ण बनाना चाहता है? क्या पुरानी चीज़ें कायम रह सकती हैं? तुम आज परमेश्वर के वचनों पर ध्यान नहीं दे रहे हो : क्या तुम कल की प्रतीक्षा कर रहे हो?

एक योग्य चरवाहे को किन चीज़ों से लैस होना चाहिए

तुम्हें उन अनेक स्थितियों की समझ होनी चाहिए, जिनमें लोग तब होते हैं, जब पवित्र आत्मा उन पर काम करता है। विशेषकर, जो लोग ईश्वर की सेवा में समन्वय करते हैं, उन्हें उन अनेक स्थितियों की और भी गहरी समझ होनी चाहिए, जो पवित्र आत्मा द्वारा लोगों पर किए जाने वाले कार्य से पैदा होती हैं। यदि तुम बहुत सारे अनुभवों या प्रवेश पाने के कई तरीकों के बारे में केवल बात ही करते हो, तो यह दिखाता है कि तुम्हारा अनुभव बहुत ज़्यादा एकतरफा है। अपनी वास्तविक अवस्था को जाने बिना और सत्य के सिद्धांतों को समझे बिना स्वभाव में परिवर्तन हासिल करना संभव नहीं है। पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांतों को जाने बिना या उसके फल को समझे बिना तुम्हारे लिए बुरी आत्माओं के कार्य को पहचानना मुश्किल होगा। तुम्हें बुरी आत्माओं के कार्य के साथ-साथ लोगों की धारणाओं को बेनकाब कर सीधे मुद्दे के केंद्र में पैठना चाहिए; तुम्हें लोगों के अभ्यास में आने वाले अनेक भटकावों या लोगों को परमेश्वर में विश्वास रखने में होने वाली समस्याओं को भी इंगित करना चाहिए, ताकि वे उन्हें पहचान सकें। कम से कम, तुम्हें उन्हें नकारात्मक या निष्क्रिय महसूस नहीं कराना चाहिए। हालाँकि, तुम्हें उन कठिनाइयों को समझना चाहिए, जो अधिकांश लोगों के लिए समान रूप से मौजूद हैं, तुम्हें विवेकहीन नहीं होना चाहिए या "भैंस के

आगे बीन बजाने" की कोशिश नहीं करनी चाहिए; यह मूर्खतापूर्ण व्यवहार है। लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयाँ हल करने के लिए तुम्हें पवित्र आत्मा के काम की गतिशीलता को समझना चाहिए; तुम्हें समझना चाहिए कि पवित्र आत्मा विभिन्न लोगों पर कैसे काम करता है, तुम्हें लोगों के सामने आने वाली कठिनाइयों और उनकी कमियों को समझना चाहिए, और तुम्हें समस्या के महत्वपूर्ण मुद्दों को समझना चाहिए और बिना विचलित हुए या बिना कोई त्रुटि किए, समस्या के स्रोत पर पहुँचना चाहिए। केवल इस तरह का व्यक्ति ही परमेश्वर की सेवा में समन्वय करने योग्य है।

तुम प्रमुख मुद्दों को समझने और बहुत-सी चीजों को स्पष्ट रूप से देखने में सक्षम हो पाते हो या नहीं, यह तुम्हारे व्यक्तिगत अनुभवों पर निर्भर करता है। जिस तरीके से तुम अनुभव करते हो, उसी तरीके से तुम अन्य लोगों की अगुआई भी करते हो। यदि तुम शब्द और सिद्धांत ही समझते हो, तो तुम दूसरों को भी शब्द और सिद्धांत समझने के लिए ही प्रेरित करोगे। तुम जिस तरीके से परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता का अनुभव करते हो, उसी तरीके से तुम दूसरों को परमेश्वर के कथनों की वास्तविकता में प्रवेश कराने के लिए उनकी अगुआई करोगे। यदि तुम बहुत-से सत्यों को समझते हो और परमेश्वर के वचनों से कई चीज़ों में स्पष्ट रूप से अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेते हो, तो तुम दूसरों को भी बहुत-से सत्य समझाने के लिए उनका नेतृत्व कर पाने में सक्षम हो, और जिन लोगों का तुम नेतृत्व कर रहे हो, उन्हें दर्शनों की स्पष्ट समझ होगी। यदि तुम अलौकिक भावनाओं को समझने पर ध्यान केंद्रित करते हो, तो तुम जिन लोगों का नेतृत्व करते हो, वे भी वैसा ही करेंगे। यदि तुम अभ्यास की उपेक्षा करते हो और उसके बजाय चर्चा पर ज़ोर देते हो, तो जिन लोगों का तुम नेतृत्व करते हो, वे भी बिना कोई अभ्यास किए, या बिना अपने स्वभाव में कोई परिवर्तन लाए, चर्चा पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे; वे बिना किसी सत्य का अभ्यास किए, केवल सतही तौर पर उत्साहित होंगे। सभी लोग दूसरों को वही देते हैं, जो उनके पास होता है। व्यक्ति जिस प्रकार का होता है, उसी से वह मार्ग निर्धारित होता है, जिस पर वह दूसरों का मार्गदर्शन करता है, और साथ ही उन लोगों का प्रकार भी, जिनका वह नेतृत्व करता है। परमेश्वर के उपयोग हेतु वास्तव में उपयुक्त होने के लिए, तुम्हारे भीतर न केवल आकांक्षा होनी चाहिए, बल्कि तुम्हें बड़ी मात्रा में परमेश्वर की प्रबुद्धता, परमेश्वर के वचनों से मार्गदर्शन, परमेश्वर द्वारा निपटाए जाने का अनुभव, और उसके वचनों के शुद्धिकरण की भी आवश्यकता है। एक नींव के रूप में इसके साथ, साधारण समय में, तुम लोगों को अपने अवलोकनों, विचारों, चिंतनों और निष्कर्षों पर ध्यान देना चाहिए, और तदनुसार आत्मसात या उन्मूलन करने में संलग्न होना चाहिए। ये

सभी तुम लोगों के वास्तविकता में प्रवेश करने के रास्ते हैं, और इनमें से प्रत्येक अनिवार्य है। परमेश्वर इसी तरह काम करता है। यदि तुम परमेश्वर के कार्य करने की पद्धति में प्रवेश करते हो, तो तुम्हारे पास हर दिन उसके द्वारा पूर्ण किए जाने के अवसर हो सकते हैं। और किसी भी समय, चाहे तुम्हारा वातावरण कठोर हो या अनुकूल, चाहे तुम्हारी परीक्षा ली जा रही हो या तुम्हें प्रलोभन दिया जा रहा हो, चाहे तुम काम कर रहे हो या नहीं कर रहे हो, चाहे तुम एक व्यक्ति के रूप में जी रहे हो या किसी समूह के अंग के रूप में, तुम्हें हमेशा परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के अवसर मिलेंगे और तुम उनमें से किसी एक को भी कभी नहीं चूकोगे। तुम उन सभी को खोज पाने में सक्षम होगे—और इस तरह तुम परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने का रहस्य पा लोगे।

अनुभव पर

पतरस ने अपने अनुभवों के दौरान सैकड़ों परीक्षणों का सामना किया। हालाँकि आज के लोग "परीक्षण" शब्द के बारे में जानते हैं, लेकिन वे उसके सच्चे अर्थ और परिस्थितियों के संबंध में भ्रमित हैं। परमेश्वर मनुष्य के संकल्प को दृढ़ बनाता है, उसके आत्मविश्वास को परिष्कृत करता है और उसके हर हिस्से को पूर्ण बनाता है, और यह मुख्यत: परीक्षणों के माध्यम से हासिल किया जाता है, जो पवित्र आत्मा के छिपे कार्य भी हैं। ऐसा लगता है कि हालाँकि परमेश्वर ने लोगों को त्याग दिया है, और इसलिए अगर वे सावधान नहीं रहे, तो वे इन परीक्षणों को शैतान का प्रलोभन समझेंगे। वास्तव में, कई परीक्षणों को प्रलोभन माना जा सकता है, और यह परमेश्वर के काम करने का सिद्धांत और नियम है। अगर लोग वास्तव में परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं, तो वे उन्हें परमेश्वर के परीक्षण समझेंगे और उन्हें हाथ से जाने नहीं देंगे। अगर कोई कहता है कि चूँकि परमेश्वर उसके साथ है, इसलिए शैतान निश्चित रूप से उसके पास नहीं आएगा, तो यह पूरी तरह से सही नहीं है। अगर ऐसा होता, इसे कैसे समझाया जा सकता है कि यीशु ने चालीस दिनों तक जंगल में उपवास करने के बाद परीक्षणों का सामना किया था? इसलिए अगर लोग सच में परमेश्वर पर विश्वास करने के बारे में अपने विचार सुधारते हैं, तो वे कई चीज़ों को अधिक स्पष्टता से देखेंगे और उनकी समझ टेढ़ी और भ्रामक नहीं होगी। अगर कोई व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने का संकल्प लेता है, तो उसे उन सभी मामलों को, जो उसके सामने विभिन्न कोणों से आते हैं, न तो बाईं ओर झुकते हुए देखना होगा, और न ही दाईं ओर। अगर तुम्हें परमेश्वर के काम का ज्ञान नहीं है, तो

तुम्हें यह नहीं पता होगा कि परमेश्वर के साथ सहयोग कैसे करना है। अगर तुम परमेश्वर के काम के सिद्धांतों को नहीं जानते और इस बात से अनजान हो कि शैतान मनुष्य पर कैसे काम करता है, तो तुम्हारे पास अभ्यास का कोई मार्ग नहीं होगा। मात्र उत्साह भरा अनुसरण तुम्हें वे परिणाम नहीं पाने देगा, जिनकी माँग परमेश्वर करता है। अनुभव करने का यह तरीका लॉरेंस के तरीके के समान है : किसी तरह का कोई फर्क न करना और केवल अनुभव पर ध्यान केंद्रित करना, इन बातों से पूरी तरह से अनजान रहना कि शैतान का क्या काम है, पवित्र आत्मा का क्या काम है, परमेश्वर की उपस्थिति के बिना मनुष्य किस स्थिति में होता है, और किस तरह के लोगों को परमेश्वर पूर्ण बनाना चाहता है। विभिन्न प्रकार के लोगों से व्यवहार करते हुए किन सिद्धांतों को अपनाना चाहिए, वर्तमान में परमेश्वर की इच्छा को कैसे समझें, परमेश्वर के स्वभाव को कैसे जानें, और परमेश्वर की दया, उसकी महिमा और धार्मिकता किन लोगों, परिस्थितियों और युग पर निर्देशित की जाती हैं—वह इनमें से किसी में अंतर नहीं करता। अगर लोगों के पास अपने अनुभवों के लिए नींव के रूप में अनेक दर्शन नहीं हैं, तो जीवन नामुमकिन है, और अनुभव उससे भी ज्यादा नामुमकिन; वे मूर्खतापूर्ण ढंग से किसी के भी प्रति समर्पित होते रहते हैं और सब-कुछ सहते रहते हैं। ऐसे लोगों को पूर्ण बनाया जाना बहुत मुश्किल है। यह कहा जा सकता है कि अगर तुम्हारे पास उपर्युक्त में से कोई दर्शन नहीं है, तो यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि तुम महामूर्ख हो, नमक के खंभे के समान, जो हमेशा इजराइल में खड़ा रहता है। ऐसे लोग बेकार और निकम्मे हैं! कुछ लोग केवल आँख मूँदकर समर्पण कर देते हैं, वे हमेशा अपने आपको जानते हैं और नए मामलों से निपटने के लिए हमेशा आचार-व्यवहार के अपने ही तरीकों का इस्तेमाल करते हैं, या उल्लेख के भी योग्य न होने वाले तुच्छ मामलों से निपटने के लिए "बुद्धि" का उपयोग करते हैं। ऐसे लोग विवेकहीन होते हैं, मानो उनका स्वभाव ही चुने जाने से इनकार कर देने वाला हो, और वे हमेशा एक जैसे रहते हैं, कभी नहीं बदलते। ऐसे लोग मूर्ख होते हैं, जिनके पास थोड़ा भी विवेक नहीं होता। वे कभी भी परिस्थितियों या विभिन्न लोगों के लिए उपयुक्त उपाय करने की कोशिश नहीं करते। ऐसे लोगों के पास अनुभव नहीं है। मैंने कुछ ऐसे लोगों को देखा है, जो स्वयं के ज्ञान से इतने बँधे हुए हैं कि जब उनका बुरी आत्माओं के काम से जुड़े लोगों से सामना होता है, तो वे अपना सिर झुका लेते हैं और पाप स्वीकार कर लेते हैं, खड़े होकर उनकी निंदा करने का साहस नहीं करते। और जब उनका ज़ाहिर तौर पर पवित्र आत्मा के कार्य से सामना होता है, तो वे उसका पालन करने की हिम्मत नहीं करते। वे यह विश्वास करते हैं कि बुरी आत्माएँ भी परमेश्वर के हाथों में हैं, और उनमें खड़े

होकर उनका विरोध करने का ज़रा-सा भी साहस नहीं होता। ऐसे लोग परमेश्वर पर अपमान लाते हैं, और वे उसके लिए भारी बोझ सहन कर पाने में बिलकुल असमर्थ हैं। ऐसे मूर्ख किसी प्रकार का भेद नहीं करते। अनुभव करने के इस तरह के तरीके को इसलिए त्याग दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह परमेश्वर की दृष्टि में असमर्थनीय है।

परमेश्वर वास्तव में लोगों पर बहुत काम करता है; वह कभी उनकी परीक्षा लेता है, कभी उन्हें दृढ़ बनाने के लिए वातावरण बनाता है, और कभी उनका मार्गदर्शन करने और उनकी कमियाँ सुधारने के लिए वचन बोलता है। कभी-कभी पवित्र आत्मा लोगों को परमेश्वर द्वारा उनके लिए तैयार किए गए वातावरण में ले जाता है, ताकि वे अनजाने ही ऐसी कई चीजों की खोज कर सकें, जिनकी उनमें कमी होती है। अनजाने में लोग जो कहते और करते हैं, जिस तरह से वे दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं और चीजों से निपटते हैं, उसके द्वारा पवित्र आत्मा उन्हें कई ऐसी चीजों की जानकारी देता है, जिन्हें वे पहले नहीं समझते थे, और उन्हें अनेक चीजों और लोगों को और अधिक अच्छी तरह से समझने देता है, उन्हें ऐसी अनेक चीजों के भीतर देखने देता है, जिनसे वे पहले अनजान थे। जब तुम दुनिया से जुड़ते हो, तो तुम धीरे-धीरे दुनिया की चीजों को पहचानने लगते हो, और जब तुम मौत के करीब पहुँच जाते हो, तो तुम यह निष्कर्ष निकाल सकते हो : "आदमी होना वास्तव में कठिन है।" अगर तुम कुछ समय परमेश्वर के समक्ष अनुभव करने में बिताते हो, और परमेश्वर के काम और उसके स्वभाव को समझने लगते हो, तो तुम अनजाने में ही अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लोगे, और तुम्हारा आध्यात्मिक कद धीरे-धीरे बढ़ जाएगा। तुम कई आध्यात्मिक चीजों को बेहतर तरीके से समझोगे, और विशेष रूप से परमेश्वर के काम के बारे में अधिक स्पष्ट होगे। तुम परमेश्वर के शब्द, परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर की हर क्रिया, परमेश्वर के स्वभाव और परमेश्वर के स्वरूप और उसकी सत्ता को अपनी जिंदगी के समान स्वीकार कर लोगे। अगर तुम बस दुनिया में भटकने का ही काम करोगे, तो तुम्हारे पंख हमेशा कड़े होते जाएँगे, और परमेश्वर के प्रति तुम्हारा विरोध बहुत ज्यादा बढ़ जाएगा; तब परमेश्वर तुम्हारा उपयोग कैसे कर सकता है? चूँकि तुम्हारे अंदर "मेरी राय में" की भावना बहुत ज्यादा है, इसलिए परमेश्वर तुम्हारा उपयोग नहीं करता है। जितना अधिक तुम परमेश्वर की उपस्थिति में होगे, उतने ही अधिक अनुभव तुम्हें होंगे। अगर तुम अभी भी दुनिया में एक जानवर की तरह जीते हो—तुम्हारा मुँह तो परमेश्वर पर विश्वास की घोषणा करता है, लेकिन तुम्हारा दिल कहीं और होता है—और अगर तुम अभी भी जीने के सांसारिक फलसफों का अध्ययन करते हो, तो क्या तुम्हारी पिछली सारी

मेहनत बेकार नहीं हो जाएगी? इसलिए, लोग जितना अधिक परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे, उनका परमेश्वर के द्वारा पूर्ण किया जाना उतना ही ज्यादा आसान होगा। यह वह मार्ग है, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा अपना कार्य करता है। अगर तुम इसे नहीं समझते, तो तुम्हारे लिए सही रास्ते पर प्रवेश करना असंभव होगा, और परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। तुम एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन जीने में असमर्थ होगे; यह ऐसा होगा, मानो तुम विकलांग हो, और तुम्हारे पास केवल अपनी कड़ी मेहनत होगी, परमेश्वर का कोई कार्य तुम्हारे पास नहीं होगा। क्या यह तुम्हारे अनुभव में गलती नहीं है? ज़रूरी नहीं कि परमेश्वर की मौजूदगी में रहने के लिए तुम्हें प्रार्थना करनी पड़े; कभी-कभी परमेश्वर का चिंतन करने से या उसके काम पर विचार करने से, कभी-कभी कुछ मामलों से निपटने में और कभी-कभी किसी घटना में तुम्हारे अस्तित्व के प्रकट होने से भी तुम परमेश्वर की उपस्थिति में आते हो। अधिकतर लोग कहते हैं, "चूँकि मैं अकसर प्रार्थना करता हूँ, तो क्या मैं परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं हूँ?" बहुत लोग "परमेश्वर की उपस्थिति में" अंतहीन प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना हमेशा उनके होंठ पर हो सकती है, लेकिन वे वास्तव में परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रहते। यह एकमात्र तरीका है, जिसके द्वारा ऐसे लोग परमेश्वर की उपस्थिति में होने की अपनी स्थिति बनाए रख सकते हैं; वे हर समय परमेश्वर से जुड़े रहने के लिए अपने दिल का इस्तेमाल करने में पूरी तरह से असमर्थ होते हैं, न ही वे अनुभव के साधनों का प्रयोग करते हुए, चाहे अपने मन में सोच-विचार करके, शांत चिंतन करके या परमेश्वर के बोझ पर विचार करने के द्वारा अपने दिलों के भीतर परमेश्वर से जुड़ने के लिए अपने मन का इस्तेमाल करके परमेश्वर के समक्ष आने में समर्थ होते हैं। वे केवल अपने मुँह से स्वर्ग के परमेश्वर को प्रार्थना अर्पित करते हैं। अधिकांश लोगों के दिल में परमेश्वर नहीं है, और परमेश्वर केवल तभी उनके पास होता है, जब वे परमेश्वर के निकट जाते हैं; लेकिन ज्यादातर समय परमेश्वर उनके पास बिलकुल नहीं होता। क्या यह दिल में परमेश्वर के न होने की अभिव्यक्ति नहीं है? अगर उनके दिलों में वास्तव में परमेश्वर होता, तो क्या वे ऐसी चीजें कर सकते थे, जो लुटेरे या जानवर करते हैं? अगर कोई व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर का सम्मान करता है, तो वह अपने सच्चे दिल को परमेश्वर के संपर्क में लाएगा, और उसके विचार और ख़याल हमेशा परमेश्वर के वचनों से भरे होंगे। वे वाणी या क्रिया में ग़लतियाँ नहीं करेंगे, और कोई ऐसी चीज़ नहीं करेंगे, जो जाहिर तौर पर परमेश्वर का विरोध करे। विश्वासी होने का केवल यही एक मानक है।

नये युग की आज्ञाएँ

परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने में तुम लोगों को परमेश्वर के वचनों को सावधानीपूर्वक पढ़ना और अपने आपको सत्य से लैस करना चाहिए। किंतु तुम लोग क्या करना चाहते हो या इसे कैसे करना चाहते हो, इस बारे में तुम लोगों की मार्मिक प्रार्थनाओं या अनुनय-विनय की कोई आवश्यकता नहीं है, और वास्तव में ये बेकार की चीजें हैं। मगर वर्तमान में तुम लोगों के सामने जो समस्याएँ आ रही हैं वे ये हैं कि तुम नहीं जानते कि परमेश्वर के कार्य को कैसे अनुभव करें, और यह कि तुममें अत्यधिक निष्क्रियता है। तुम लोग बहुत से धर्म सिद्धांतों को जानते हो, किंतु तुम्हारे पास अधिक वास्तविकता नहीं है। क्या यह एक गलती का संकेत नहीं है? तुम लोगों के इस समूह में बहुत-सी गलतियाँ दिखाई देती हैं। आज "सेवाकर्मियों" के रूप में तुम लोग इस तरह के परीक्षणों को हासिल करने में अक्षम हो, और तुम परमेश्वर के वचनों से संबंधित अन्य परीक्षणों या शुद्धिकरणों की कल्पना करने या उन्हें हासिल करने में भी असमर्थ हो। तुम लोगों को उन बहुत-सी चीजों का पालन करना होगा, जिनका तुम्हें अभ्यास करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, लोगों को उन अनेक कर्तव्यों का पालन करना होगा, जो उन्हें अवश्य संपन्न करने चाहिए। यही वह चीज है, जिसका लोगों द्वारा दृढ़ता से पालन किया जाना चाहिए, और यही वह चीज है, जिसे उन्हें अवश्य संपन्न करना चाहिए। पवित्र आत्मा को वह करने दो, जो पवित्र आत्मा द्वारा किया जाना चाहिए; मनुष्य इसमें कोई भूमिका नहीं निभा सकता। मनुष्य को वह करना चाहिए, जो उसके द्वारा किया जाना आवश्यक है, जिसका पवित्र आत्मा से कोई संबंध नहीं है। यह उसके अतिरिक्त कुछ नहीं है, जो मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए, और जिसका आज्ञा के रूप में पालन किया जाना चाहिए, ठीक उसी तरह, जैसे पुराने विधान की व्यवस्था का पालन किया जाता है। यद्यपि अब व्यवस्था का युग नहीं है, फिर भी ऐसे कई वचन हैं, जो व्यवस्था के युग में बोले गए वचनों जैसे हैं, और जिनका पालन किया जाना चाहिए। इन वचनों का पालन केवल पवित्र आत्मा के स्पर्श पर भरोसा करके नहीं किया जाता, बल्कि वे ऐसी चीज हैं, जिनका मनुष्य द्वारा निर्वाह किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए : तुम व्यवहारिक परमेश्वर के कार्य पर निर्णय पारित नहीं करोगे। तुम उस मनुष्य का विरोध नहीं करोगे, जिसकी परमेश्वर द्वारा गवाही दी गई है। परमेश्वर के सामने तुम लोग अपने स्थान पर रहोगे और स्वच्छंद नहीं होगे। तुम्हें वाणी में संयत होना चाहिए, और तुम्हारे शब्द और काम उस व्यक्ति की व्यवस्थाओं के अनुसार होने चाहिए, जिसकी परमेश्वर द्वारा गवाही दी गई है। तुम्हें परमेश्वर की गवाही का आदर करना चाहिए। तुम परमेश्वर के कार्य और उसके मुँह से

निकले वचनों की उपेक्षा नहीं करोगे। तुम परमेश्वर के कथनों के लहजे और लक्ष्यों की नकल नहीं करोगे। बाहरी तौर से तुम लोग ऐसा कुछ नहीं करोगे, जो परमेश्वर द्वारा गवाही दिए गए व्यक्ति का प्रत्यक्ष रूप से विरोध करता हो। इत्यादि-इत्यादि। ये वे चीजें हैं, जिनका प्रत्येक व्यक्ति को पालन करना चाहिए। प्रत्येक युग में परमेश्वर कई नियम निर्दिष्ट करता है, जो व्यवस्थाओं के समान होते हैं और जिनका मनुष्य द्वारा पालन किया जाना होता है। इसके माध्यम से वह मनुष्य के स्वभाव पर अंकुश लगाता है और उसकी ईमानदारी का पता लगाता है। उदाहरण के लिए, पुराने विधान के युग के इन वचनों पर विचार करो, "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना"। ये वचन आज लागू नहीं होते; उस समय ये मनुष्य के मात्र कुछ बाहरी स्वभाव पर अंकुश लगाते थे, और इनका उपयोग परमेश्वर में मनुष्य के विश्वास की ईमानदारी को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता था। ये परमेश्वर पर विश्वास करने वालों का पहचान चिन्ह भी थे। यद्यपि अब राज्य का युग है, फिर भी, अब भी बहुत-से ऐसे नियम हैं, जिनका मनुष्य द्वारा पालन किया जाना आवश्यक है। अब अतीत के नियम लागू नहीं होते, और आज मनुष्य के करने के लिए और भी बहुत-से उपयुक्त अभ्यास हैं, जो आवश्यक हैं। इनमें पवित्र आत्मा का कार्य शामिल नहीं है और ये मनुष्य द्वारा ही किए जाने चाहिए।

अनुग्रह के युग में व्यवस्था के युग के बहुत-से अभ्यास हटा दिए गए थे, क्योंकि ये व्यवस्थाएँ उस समय के कार्य के लिए कोई खास कारगर नहीं थीं। उन्हें हटा दिए जाने के बाद कई ऐसे अभ्यास निर्धारित किए गए, जो उस युग के लिए उपयुक्त थे, और जो आज के बहुत-से नियम बन चुके हैं। जब आज का परमेश्वर आया, तो इन नियमों को हटा दिया गया और इनके अनुपालन की अब और आवश्यकता नहीं रही, और आज के कार्य के उपयुक्त कई अभ्यास निर्धारित किए गए। आज ये अभ्यास नियम नहीं हैं, बल्कि इनका उद्देश्य परिणाम प्राप्त करना है; ये आज के लिए अनुकूल हैं—और कल शायद ये नियम बन जाएँगे। कुल मिलाकर, तुम्हें उसका पालन करना चाहिए, जो आज के कार्य के लिए लाभदायक है। आने वाले कल पर ध्यान न दो : जो आज किया जाता है, वह आज के लिए होता है। हो सकता है, जब कल आए तो बेहतर अभ्यास हों, जिन्हें करने की तुम्हें आवश्यकता होगी—किंतु उस पर अधिक ध्यान मत दो। इसकी बजाय, उसका पालन करो, जिसका आज पालन किया जाना चाहिए, ताकि परमेश्वर का विरोध करने से बचा जाए। आज मनुष्य के लिए निम्नलिखित बातों का पालन करने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है : तुम्हें उस परमेश्वर को फुसलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, जो तुम्हारी आँखों के सामने खड़ा

है, न ही तुम्हें उससे कुछ छिपाना चाहिए। तुम अपने सामने खड़े परमेश्वर के सम्मुख कोई गंदी या अहंकार से भरी बात नहीं कहोगे। तुम परमेश्वर के भरोसे को जीतने के लिए अपनी मीठी और साफ़-सुथरी बातों से अपनी आँखों के सामने खड़े परमेश्वर को धोखा नहीं दोगे। तुम परमेश्वर के सामने अनादर से व्यवहार नहीं करोगे। तुम परमेश्वर के मुख से बोले जाने वाले समस्त वचनों का पालन करोगे, और उनका प्रतिरोध, विरोध या प्रतिवाद नहीं करोगे। तुम परमेश्वर के मुख से बोले गए वचनों की अपने हिसाब से व्याख्या नहीं करोगे। तुम्हें अपनी जीभ को काबू में रखना चाहिए, ताकि इसके कारण तुम दुष्टों की कपटपूर्ण योजनाओं के शिकार न हो जाओ। तुम्हें अपने क़दमों के प्रति सचेत रहना चाहिए, ताकि तुम परमेश्वर द्वारा तुम्हारे लिए निर्दिष्ट की गई सीमा का अतिक्रमण करने से बच सको। अगर तुम अतिक्रमण करते हो, तो यह तुम्हारे द्वारा परमेश्वर की स्थिति में खड़े होने और अहंकार भरे और आडंबरपूर्ण शब्द कहने का कारण बनेगा, जिसके लिए परमेश्वर तुमसे घृणा करने लगेगा। तुम परमेश्वर के मुँह से निकले वचनों को लापरवाही से प्रसारित नहीं करोगे, ताकि कहीं ऐसा न हो कि दूसरे तुम्हारी हँसी उड़ाएँ और हैवान तुम्हें मूर्ख बनाएँ। तुम आज के परमेश्वर के समस्त कार्य का पालन करोगे। भले ही तुम उसे समझ न पाओ, तो भी तुम उस पर निर्णय पारित नहीं करोगे; तुम केवल खोज और संगति कर सकते हो। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के मूल स्थान का अतिक्रमण नहीं करेगा। तुम एक मनुष्य की हैसियत से आज के परमेश्वर की सेवा करने से अधिक कुछ नहीं कर सकते। तुम एक मनुष्य की हैसियत से आज के परमेश्वर को सिखा नहीं सकते—ऐसा करना मार्ग से भटकना है। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर द्वारा गवाही दिए गए व्यक्ति के स्थान पर खड़ा नहीं हो सकता; अपने शब्दों, कार्यों, और अंतर्तम विचारों में तुम मनुष्य की हैसियत में खड़े हो। इसका पालन किया जाना आवश्यक है, यह मनुष्य का उत्तरदायित्व है, और इसे कोई बदल नहीं सकता; ऐसा करना प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन होगा। यह सभी को स्मरण रखना चाहिए।

लंबे समय से कहे जा रहे परमेश्वर के वचनों और कथनों के कारण परमेश्वर के वचनों को पढ़ना और उन्हें याद करना मनुष्य का प्राथमिक कार्य बन गया है। कोई भी अभ्यास पर ध्यान नहीं देता, यहाँ तक कि जिन बातों का तुम्हें अवश्य पालन करना चाहिए, उनका भी तुम पालन नहीं करते। इससे तुम लोगों की सेवा में बहुत-सी कठिनाइयाँ और समस्याएँ आ गई हैं। यदि परमेश्वर के वचनों का अभ्यास करने से पहले तुमने उन बातों का पालन नहीं किया, जिनका पालन तुम्हें करना चाहिए, तो तुम उन लोगों में से हो, जिनसे परमेश्वर घृणा करता है और जिन्हें वह अस्वीकार कर देता है। इन अभ्यासों का पालन करने में तुम्हें गंभीर

और ईमानदार होना चाहिए। तुम्हें उन्हें बेड़ियाँ नहीं समझना चाहिए, बल्कि आज्ञाओं की तरह उनका पालन करना चाहिए। आज तुम्हें स्वयं इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि कौन से परिणाम प्राप्त किए जाने हैं; संक्षेप में कहें तो, पवित्र आत्मा इसी प्रकार कार्य करता है, और जो कोई भी अपराध करता है, उसे दंड दिया जाता है। पवित्र आत्मा भावनाशून्य और तुम्हारी वर्तमान समझ से बेध्यान है। यदि तुम आज परमेश्वर का अपमान करते हो, तो वह तुम्हें दंड देगा। यदि तुम उसे उसके अधिकार-क्षेत्र के दायरे के भीतर अपमानित करते हो, तो वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। वह इस बात की परवाह नहीं करता कि यीशु के वचनों के अनुपालन में तुम कितने गंभीर हो। यदि तुम परमेश्वर की आज की आज्ञाओं का उल्लंघन करोगे, तो वह तुम्हें दंडित करेगा और तुम्हें मृत्युदंड देगा। तुम्हारे लिए उनका पालन न करना स्वीकार्य कैसे हो सकता है? तुम्हें उनका पालन करना ही चाहिए—भले ही इसका अर्थ कुछ तकलीफ सहना हो! चाहे कोई भी धर्म, क्षेत्र, राष्ट्र या संप्रदाय क्यों न हो, भविष्य में उन सभी को इन अभ्यासों का पालन करना होगा। किसी को भी छूट नहीं दी गई है, और किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा! क्योंकि ये वही कार्य हैं, जो आज पवित्र आत्मा करेगा, और कोई भी उनका उल्लंघन नहीं कर सकता। यद्यपि ये बड़ी बातें नहीं हैं, फिर भी ये हर मनुष्य द्वारा अवश्य की जानी चाहिए, और ये मनुष्य के लिए यीशु द्वारा नियत की गई आज्ञाएँ हैं, जो पुनर्जीवित हुआ था और जिसने स्वर्ग में आरोहण किया था। क्या "मार्ग... (7)" नहीं कहता कि यीशु की यह परिभाषा कि तुम धार्मिक हो या पापी, आज परमेश्वर के प्रति तुम्हारे दृष्टिकोण के अनुसार है? कोई भी इस बिंदु को नजरअंदाज नहीं कर सकता। व्यवस्था के युग में, पीढ़ी-दर-पीढ़ी फरीसियों ने परमेश्वर पर विश्वास किया, परंतु अनुग्रह के युग के आगमन पर वे यीशु को नहीं जानते थे, और उन्होंने उसका विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने जो कुछ भी किया था, वह सब शून्य और व्यर्थ हो गया, और परमेश्वर ने उनके कर्मों को स्वीकार नहीं किया। यदि तुम इसे अच्छी तरह से समझ सको, तो तुम आसानी से पाप नहीं करोगे। बहुत-से लोगों ने शायद स्वयं को परमेश्वर के विरुद्ध आँका है। परमेश्वर का विरोध करने में किस तरह का रस है? यह कड़वा है या मीठा? तुम्हें यह समझना चाहिए; यह ढोंग मत करो कि तुम नहीं जानते हो। अपने हृदयों में कुछ लोग शायद आश्वस्त नहीं होते। फिर भी मैं सलाह देता हूँ कि तुम इसे आजमाकर देखो—देखो कि इसमें कैसा रस है। यह कई लोगों को इस बारे में हमेशा शंकालु रहने से रोकेगा। बहुत-से लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, फिर भी अपने हृदयों में गुप्त रूप से उसका विरोध करते हैं। परमेश्वर का इस प्रकार विरोध करने के बाद क्या तुम्हें ऐसा महसूस नहीं होता, जैसे तुम्हारे दिल में कोई छुरा घोंप

दिया गया हो? यदि यह पारिवारिक कलह नहीं है, तो यह शारीरिक कष्ट है, या फिर पुत्रों और पुत्रियों का संताप। यद्यपि तुम्हारी देह को मृत्यु से बख्श दिया जाता है, किंतु परमेश्वर का हाथ तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा। क्या तुम्हें लगता है कि यह इतना आसान है? विशेष रूप से उन बहुत-से लोगों के लिए इस पर ध्यान केंद्रित करना और भी आवश्यक है, जो परमेश्वर के निकट हैं। समय बीतने के साथ-साथ तुम इसे भूल जाओगे और अनजाने में ही प्रलोभन में पड़ जाओगे और हर चीज के बारे में बेपरवाह हो जाओगे, और यह तुम्हारे पाप करने की शुरुआत होगी। क्या यह बात तुम्हें नगण्य लगती है? यदि तुम इसे अच्छी तरह से कर सकते हो, तो तुम्हारे पास पूर्ण बनाए जाने—परमेश्वर के सामने आने और स्वयं परमेश्वर के मुँह से उसका मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर है। यदि तुम लापरवाह हो, तो तुम्हारे लिए परेशानी होगी—तुम परमेश्वर के आज्ञाकारी नहीं होगे, तुम्हारे शब्द और कृत्य स्वच्छंद होंगे, और देर-सवेर तुम भयंकर आँधियों और तूफ़ानी लहरों में बह जाओगे। तुममें से प्रत्येक को इन आज्ञाओं पर ध्यान देना चाहिए। अगर तुम इनका उल्लंघन करते हो, तो भले ही वह मनुष्य, जिसकी परमेश्वर द्वारा गवाही दी गई है, तुम्हारी निंदा न करे, किंतु तुम्हारे बारे में परमेश्वर के आत्मा का काम बाकी रहेगा, और वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। क्या तुम अपने अपराध के परिणाम सहन कर सकते हो? इसलिए, परमेश्वर भले ही कुछ भी कहे, तुम्हें उसके वचनों का अभ्यास अवश्य करना चाहिए, और जिस तरह भी संभव हो, तुम्हें उनका पालन अवश्य करना चाहिए। यह कोई आसान काम नहीं है!

सहस्राब्दि राज्य आ चुका है

क्या तुम लोगों ने देखा है कि इस समूह के लोगों में परमेश्वर कौन-सा कार्य पूरा करेगा? परमेश्वर ने एक बार कहा था कि सहस्राब्दि राज्य में भी लोगों को उसके कथनों का पालन करना चाहिए, और भविष्य में परमेश्वर के कथन मनुष्य के जीवन का कनान के उत्तम देश में सीधे तौर पर मार्गदर्शन करेंगे। जब मूसा निर्जन प्रदेश में था, तो परमेश्वर ने सीधे तौर पर उसे निर्देश दिया और उससे बात की। स्वर्ग से परमेश्वर ने लोगों के आनंद के लिए भोजन, पानी और मन्ना भेजा था, और आज भी ऐसा ही है : परमेश्वर ने लोगों के आनंद के लिए व्यक्तिगत रूप से खाने और पीने की चीजें भिजवाई हैं, और उसने लोगों को ताड़ना देने के लिए व्यक्तिगत तौर पर शाप भेजे हैं। और इसलिए, अपने कार्य का प्रत्येक कदम व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर द्वारा ही उठाया जाता है। आज लोग तथ्यों के घटित होने की लालसा करते हैं, वे चिह्न और

चमत्कार देखने की कोशिश करते हैं, और यह संभव है कि ऐसे सभी लोग अलग कर दिए जाएँगे, क्योंकि परमेश्वर का कार्य तेजी से व्यावहारिक होता जा रहा है। कोई नहीं जानता कि परमेश्वर स्वर्ग से अवरोहण कर चुका है, वे इस बात से भी अनभिज्ञ हैं कि परमेश्वर ने स्वर्ग से भोजन और शक्तिवर्धक पेय भेजे हैं—किंतु परमेश्वर वास्तव में विद्यमान है, और सहस्राब्दि राज्य के रोमांचक दृश्य, जिनकी लोग कल्पना करते हैं, भी परमेश्वर के व्यक्तिगत कथन हैं। यह तथ्य है, और केवल इसे ही पृथ्वी पर परमेश्वर के साथ राज करना कहा जाता है। पृथ्वी पर परमेश्वर के साथ राज करना देह को संदर्भित करता है। जो देह का नहीं है, वह पृथ्वी पर विद्यमान नहीं है, और इसलिए वे सभी, जो तीसरे स्वर्ग में जाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे ऐसा व्यर्थ में करते है। एक दिन, जब संपूर्ण विश्व परमेश्वर के पास वापस लौट जाएगा, तो संपूर्ण ब्रह्मांड में उसके कार्य का केंद्र उसके कथनों का अनुसरण करेगा; अन्यत्र कुछ लोग टेलीफोन का उपयोग करेंगे, कुछ लोग विमान लेंगे, कुछ लोग समुद्र के पार एक नाव लेंगे, और कुछ लोग परमेश्वर के कथनों को प्राप्त करने के लिए लेज़र का उपयोग करेंगे। हर कोई प्रेममय और लालायित होगा, वे सभी परमेश्वर के निकट आएँगे और परमेश्वर की ओर एकत्र हो जाएँगे, और सभी परमेश्वर की आराधना करेंगे—और यह सब परमेश्वर के कर्म होंगे। इसे स्मरण रखो! परमेश्वर निश्चित रूप से कभी अन्यत्र कहीं फिर से आरंभ नहीं करेगा। परमेश्वर इस तथ्य को पूर्ण करेगा : वह संपूर्ण ब्रह्मांड के लोगों को अपने सामने आने के लिए बाध्य करेगा, और पृथ्वी पर परमेश्वर की आराधना करवाएगा, और अन्य स्थानों पर उसका कार्य समाप्त हो जाएगा, और लोगों को सच्चा मार्ग तलाशने के लिए मजबूर किया जाएगा। यह यूसुफ की तरह होगा : हर कोई भोजन के लिए उसके पास आया, और उसके सामने झुका, क्योंकि उसके पास खाने की चीज़ें थीं। अकाल से बचने के लिए लोग सच्चा मार्ग तलाशने के लिए बाध्य होंगे। संपूर्ण धार्मिक समुदाय गंभीर अकाल से ग्रस्त होगा, और केवल आज का परमेश्वर ही मनुष्य के आनंद के लिए हमेशा बहने वाले स्रोत से युक्त, जीवन के जल का स्रोत है, और लोग आकर उस पर निर्भर हो जाएँगे। यह वह समय होगा, जब परमेश्वर के कर्म प्रकट होंगे, और परमेश्वर महिमामंडित होगा; ब्रह्मांड भर के सभी लोग इस साधारण "मनुष्य" की आराधना करेंगे। क्या वह परमेश्वर की महिमा का दिन नहीं होगा? एक दिन, पुराने पादरी जीवन के जल के स्रोत से पानी की माँग करते हुए टेलीग्राम भेजेंगे। वे बुज़ुर्ग होंगे, फिर भी वे इस व्यक्ति की आराधना करने आएँगे, जिसे उन्होंने तिरस्कृत किया था। वे अपने मुँह से उसे स्वीकार करेंगे और अपने हृदय से उस पर भरोसा करेंगे—क्या यही चिह्न और चमत्कार नहीं है? जिस दिन संपूर्ण राज्य आनंद

करेगा, वही दिन परमेश्वर की महिमा का होगा, और जो कोई तुम लोगों के पास आएगा और परमेश्वर के शुभ समाचार को स्वीकार करेगा, वह परमेश्वर द्वारा धन्य किया जाएगा, और जो देश तथा लोग ऐसा करेंगे, वे परमेश्वर द्वारा धन्य किए जाएँगे और उनकी देखभाल की जाएगी। भविष्य की दिशा इस प्रकार होगी : जो लोग परमेश्वर के मुख से कथनों को प्राप्त करेंगे, उनके पास पृथ्वी पर चलने के लिए मार्ग होगा, और चाहे वे व्यवसायी हों या वैज्ञानिक, या शिक्षक हों या उद्योगपति, जो लोग परमेश्वर के वचनों से रहित हैं, उनके लिए एक कदम चलना भी दूभर होगा, और उन्हें सच्चे मार्ग पर चलने के लिए बाध्य किया जाएगा। "सत्य के साथ तू संपूर्ण संसार में चलेगा; सत्य के बिना तू कहीं नहीं पहुँचेगा" से यही आशय है। तथ्य इस प्रकार हैं : संपूर्ण ब्रह्मांड को आदेश देने और मानवजाति को शासित करने और जीतने के लिए परमेश्वर मार्ग का उपयोग करेगा (जिसका अर्थ है उसके समस्त वचन)। लोग हमेशा उन साधनों में एक बड़े बदलाव की आशा करते हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है। स्पष्ट तौर पर कहें तो, वचनों के माध्यम से ही परमेश्वर लोगों को नियंत्रित करता है, और तुम्हें वह जो कहता है, उसे पूरा करना चाहिए, चाहे तुम्हारी वैसा करने की इच्छा हो या न हो; यह एक वस्तुनिष्ठ सत्य है, जिसका सभी के द्वारा पालन किया जाना चाहिए, और इसलिए भी, कि यह कठोर है, और सभी को ज्ञात है।

पवित्रात्मा लोगों को एक अनुभूति देता है। परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के बाद, अपने हृदयों में वे स्थिर और शांत हो जाते हैं, जबकि जो लोग परमेश्वर के वचनों को प्राप्त नहीं करते, वे खालीपन महसूस करते हैं। परमेश्वर के वचनों का ऐसा सामर्थ्य है। लोगों को उन्हें पढ़ना होगा, और उन्हें पढ़ने के बाद उनका पोषण किया जाता है, और वे उनके बिना नहीं रह सकते। यह लोगों द्वारा अफीम लेने जैसा है : वह उन्हें ताकत देती है और उसके बिना वे उसका सशक्त आकर्षण महसूस करते हैं, और उनके पास ताकत नहीं रहती। आज लोगों में इसी प्रकार की प्रवृत्ति है। परमेश्वर के वचनों को पढ़ना उन्हें ताकत देता है। यदि वे उन्हें नहीं पढ़ते, तो वे उदासीन महसूस करते हैं, परंतु उन्हें पढ़ने के बाद, वे तुरंत अपनी "रोग-शय्या" से उठ खड़े होते हैं। यह है परमेश्वर के वचन द्वारा धरती पर सामर्थ्य का उपयोग करना और परमेश्वर द्वारा धरती पर शासन करना। कुछ लोग परमेश्वर के कार्य को छोड़ना चाहते हैं, या उससे थक गए हैं। इसके बावजूद, वे परमेश्वर के वचन से अलग नहीं हो सकते; चाहे वे कितने भी कमज़ोर हों, फिर भी उन्हें परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीना चाहिए, और चाहे वे कितने भी विद्रोही हों, फिर भी वे परमेश्वर के वचनों को छोड़ने का साहस नहीं करते। जब परमेश्वर के वचन वास्तव में अपनी शक्ति दिखाते हैं, तो ऐसा

तब होता है जब परमेश्वर शासन करता और सामर्थ्य का उपयोग करता है, और परमेश्वर इसी प्रकार कार्य करता है। आख़िरकार, यही वह साधन है, जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है, और कोई इसे छोड़ नहीं सकता। परमेश्वर के वचन असंख्य घरों में फैलेंगे, वे सबको ज्ञात हो जाएँगे और केवल तभी उसका कार्य संपूर्ण ब्रह्मांड में फैलेगा। कहने का अर्थ है कि परमेश्वर का कार्य संपूर्ण ब्रह्मांड में फैलने के लिए उसके वचनों का फैलना आवश्यक है। परमेश्वर की महिमा के दिन, परमेश्वर के वचन अपना सामर्थ्य और अधिकार प्रदर्शित करेंगे। अनादि काल से लेकर आज तक का उसका हर एक वचन पूरा और घटित होगा। इस प्रकार से, पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा होगी—कहने का अर्थ है, कि उसके वचन पृथ्वी पर शासन करेंगे। सभी दुष्ट लोगों को परमेश्वर के मुँह से बोले गए वचनों से ताड़ित किया जाएगा, और सभी धार्मिक लोग उसके मुँह से बोले गए वचनों से धन्य होंगे, और उसके मुँह से बोले गए वचनों द्वारा स्थापित और पूर्ण किए जाएँगे। वह कोई चिह्न या चमत्कार नहीं दिखाएगा; सब-कुछ उसके वचनों के द्वारा पूर्ण होगा, और उसके वचन तथ्यों को उत्पन्न करेंगे। पृथ्वी पर हर कोई परमेश्वर के वचनों का उत्सव मनाएगा, चाहे वे वयस्क हों या बच्चे, पुरुष, स्त्री, वृद्ध या युवा हों, सभी लोग परमेश्वर के वचनों के नीचे झुक जाएँगे। परमेश्वर के वचन देह में प्रकट होते हैं, और स्वयं को पृथ्वी पर मनुष्यों को ज्वलंत और सजीव रूप में देखने देते हैं। वचन के देहधारी होने का यही अर्थ है। परमेश्वर पृथ्वी पर मुख्य रूप से "वचन देहधारी हुआ" के तथ्य को पूर्ण करने आया है, जिसका अर्थ है कि वह इसलिए आया है, ताकि उसके वचन देह से निर्गत हों (पुराने नियम में मूसा के समय की तरह नहीं, जब परमेश्वर की वाणी सीधे स्वर्ग से निर्गत होती थी)। इसके बाद, उसके समस्त वचन सहस्राब्दि राज्य के युग के दौरान पूर्ण होंगे, वे मनुष्यों की आँखों के सामने दिखाई देने वाले तथ्य बन जाएँगे, और लोग उन्हें अपनी आँखों से बिना किसी विषमता के देखेंगे। यही परमेश्वर के देहधारण का सर्वोच्च अर्थ है। कहने का अर्थ है कि पवित्रात्मा का कार्य देह के माध्यम से, और वचनों के माध्यम से पूर्ण होता है। यही "वचन देहधारी हुआ" और "वचन का देह में प्रकट होना" का सही अर्थ है। केवल परमेश्वर ही पवित्रात्मा की इच्छा को कह सकता है, और देह में परमेश्वर ही पवित्रात्मा की ओर से बात कर सकता है; परमेश्वर के वचन देहधारी परमेश्वर में स्पष्ट किए जाते हैं और अन्य सभी उनके द्वारा मार्गदर्शित होते हैं। कोई भी इससे छूटा नहीं है, सभी इसके दायरे के भीतर मौजूद हैं। केवल इन कथनों से ही लोग जागरूक हो सकते हैं; जो लोग इस तरह से लाभ नहीं उठाते, वे दिवास्वप्न देखते हैं, यदि वे सोचते हैं कि वे कथनों को स्वर्ग से प्राप्त कर सकते हैं। देहधारी परमेश्वर की देह में इस तरह का

अधिकार प्रदर्शित होता है, जिससे सभी लोग उस पर पूरी आस्था के साथ विश्वास करते हैं। यहाँ तक कि सर्वाधिक सम्मानित विशेषज्ञ और धार्मिक पादरी भी इन वचनों को नहीं बोल सकते। उन सबको इनके नीचे झुकना चाहिए, और अन्य कोई भी दूसरी शुरुआत करने में सक्षम नहीं होगा। परमेश्वर ब्रह्मांड को जीतने के लिए वचनों का उपयोग करेगा। वह ऐसा अपने देहधारी शरीर के द्वारा नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के सभी लोगों को जीतने के लिए देहधारी हुए परमेश्वर के मुँह से कथनों के उपयोग द्वारा करेगा; केवल यही है वचन का देह बनना, और केवल यही है वचन का देह में प्रकट होना। शायद लोगों को ऐसा प्रतीत होता है, मानो परमेश्वर ने अधिक कार्य नहीं किया है—किंतु परमेश्वर को बस अपने वचन कहने हैं, और लोग पूरी तरह से आश्वस्त और स्तब्ध हो जाएँगे। बिना तथ्यों के, लोग चीखते और चिल्लाते हैं; परमेश्वर के वचनों से वे शांत हो जाते हैं। परमेश्वर इस तथ्य को निश्चित रूप से पूरा करेगा, क्योंकि यह परमेश्वर की लंबे समय से स्थापित योजना है : पृथ्वी पर वचन के आगमन के तथ्य का पूर्ण होना। वास्तव में, मुझे समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है—पृथ्वी पर सहस्राब्दि राज्य का आगमन ही पृथ्वी पर परमेश्वर के वचनों का आगमन है। स्वर्ग से नए यरूशलेम का अवरोहण मनुष्य के बीच रहने, मनुष्य के प्रत्येक कार्य और उसके समस्त अंतरतम विचारों में साथ देने के लिए परमेश्वर के वचन का आगमन है। यह भी एक तथ्य है, जिसे परमेश्वर पूरा करेगा; यह सहस्राब्दि राज्य का सौंदर्य है। यह परमेश्वर द्वारा निर्धारित योजना है : उसके वचन एक हज़ार वर्षों तक पृथ्वी पर प्रकट होंगे, और वे उसके सभी कर्मों को व्यक्त करेंगे, और पृथ्वी पर उसके समस्त कार्य को पूरा करेंगे, जिसके बाद मानवजाति के इस चरण का अंत हो जाएगा।

परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध कैसा है?

परमेश्वर में विश्वास करने में, तुम्हें कम से कम परमेश्वर के साथ एक सामान्य संबंध रखने के मुद्दे का समाधान करना आवश्यक है। यदि परमेश्वर के साथ तुम्हारा सामान्य संबंध नहीं है, तो परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास का अर्थ खो जाता है। परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध स्थापित करना परमेश्वर की उपस्थिति में शांत रहने वाले हृदय के साथ पूर्णतया संभव है। परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध रखने का अर्थ है परमेश्वर के किसी भी कार्य पर संदेह न करने या उससे इनकार न करने और उसके कार्य के प्रति समर्पित रहने में सक्षम होना। इसका अर्थ है परमेश्वर की उपस्थिति में सही इरादे रखना, स्वयं के बारे में योजनाएँ न बनाना, और सभी चीजों में पहले परमेश्वर के परिवार के हितों का ध्यान रखना; इसका अर्थ है परमेश्वर की जाँच को

स्वीकार करना और उसकी व्यवस्थाओं का पालन करना। तुम जो कुछ भी करते हो, उसमें तुम्हें परमेश्वर की उपस्थिति में अपने हृदय को शांत करने में सक्षम होना चाहिए। यदि तुम परमेश्वर की इच्छा को नहीं भी समझते, तो भी तुम्हें अपनी सर्वोत्तम योग्यता के साथ अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहिए। एक बार परमेश्वर की इच्छा तुम पर प्रकट हो जाती है, तो फिर इस पर अमल करो, यह बहुत विलंब नहीं होगा। जब परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य हो जाता है, तब लोगों के साथ भी तुम्हारा संबंध सामान्य होगा। सब-कुछ परमेश्वर के वचनों की नींव पर निर्मित होता है। परमेश्वर के वचनों को खाओ-पियो, फिर परमेश्वर की आवश्यकताओं को अभ्यास में लाओ, अपने विचार सही करो, और परमेश्वर का प्रतिरोध करने वाला या कलीसिया में विघ्न डालने वाला कोई काम मत करो। ऐसा कोई काम मत करो, जो तुम्हारे भाई-बहनों के जीवन को लाभ न पहुँचाए; ऐसी कोई बात मत कहो, जो दूसरों के लिए सहायक न हो, और कोई निंदनीय कार्य न करो। अपने हर कार्य में न्यायसंगत और सम्माननीय रहो और सुनिश्चित करो कि तुम्हारा हर कार्य परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करने योग्य हो। यद्यपि कभी-कभी देह कमज़ोर हो सकती है, फिर भी तुम्हें अपने व्यक्तिगत लाभ का लालच न करते हुए परमेश्वर के परिवार के हित पहले रखने और न्यायपूर्वक कार्य करने में सक्षम होना चाहिए। यदि तुम इस तरह से कार्य कर सकते हो, तो परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य होगा।

अपने हर कार्य में तुम्हें यह जाँचना चाहिए कि क्या तुम्हारे इरादे सही हैं। यदि तुम परमेश्वर की माँगों के अनुसार कार्य कर सकते हो, तो परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है। यह न्यूनतम मापदंड है। अपने इरादों पर ग़ौर करो, और अगर तुम यह पाओ कि गलत इरादे पैदा हो गए हैं, तो उनसे मुँह मोड़ लो और परमेश्वर के वचनों के अनुसार कार्य करो; इस तरह तुम एक ऐसे व्यक्ति बन जाओगे जो परमेश्वर के समक्ष सही है, जो बदले में दर्शाएगा कि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है, और तुम जो कुछ करते हो वह परमेश्वर के लिए है, न कि तुम्हारे अपने लिए। तुम जो कुछ भी करते या कहते हो, उसमें अपने हृदय को सही रखने और अपने कार्यों में नेक होने में सक्षम बनो, और अपनी भावनाओं से संचालित मत होओ, न अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करो। ये वे सिद्धांत हैं, जिनके अनुसार परमेश्वर के विश्वासियों को आचरण करना चाहिए। छोटी-छोटी बातें व्यक्ति के इरादे और आध्यात्मिक कद प्रकट कर सकती हैं, और इसलिए, परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के मार्ग में प्रवेश करने के लिए लोगों को पहले अपने इरादे और परमेश्वर के साथ अपना संबंध सुधारना चाहिए। जब परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य होता है, केवल

तभी तुम परमेश्वर के द्वारा पूर्ण किए जा सकते हो; केवल तभी तुममें परमेश्वर का व्यवहार, काट-छाँट, अनुशासन और शोधन अपना वांछित प्रभाव हासिल कर पाएगा। कहने का अर्थ यह है कि यदि मनुष्य अपने हृदय में परमेश्वर को रखने में सक्षम हैं और वे व्यक्तिगत लाभ नहीं खोजते या अपनी संभावनाओं पर विचार नहीं करते (देह-सुख के अर्थ में), बल्कि जीवन में प्रवेश करने का बोझ उठाने के बजाय सत्य का अनुसरण करने की पूरी कोशिश करते हैं और परमेश्वर के कार्य के प्रति समर्पित होते हैं—अगर तुम ऐसा कर सकते हो, तो जिन लक्ष्यों का तुम अनुसरण करते हो, वे सही होंगे, और परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य हो जाएगा। परमेश्वर के साथ अपना संबंध सही करना व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा में प्रवेश करने का पहला कदम कहा जा सकता है। यद्यपि मनुष्य का भाग्य परमेश्वर के हाथों में है और वह परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित है, और मनुष्य द्वारा उसे बदला नहीं जा सकता, फिर भी तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जा सकते हो या नहीं अथवा तुम परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जा सकते हो या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है या नहीं। तुम्हारे कुछ हिस्से ऐसे हो सकते हैं, जो कमज़ोर या अवज्ञाकारी हों—परंतु जब तक तुम्हारे विचार और तुम्हारे इरादे सही हैं, और जब तक परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सही और सामान्य है, तब तक तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के योग्य हो। यदि तुम्हारा परमेश्वर के साथ सही संबंध नहीं है, और तुम देह के लिए या अपने परिवार के लिए कार्य करते हो, तो चाहे तुम जितनी भी मेहनत करो, यह व्यर्थ ही होगा। यदि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है, तो बाकी सब चीजें भी ठीक हो जाएँगी। परमेश्वर कुछ और नहीं देखता, केवल यह देखता है कि क्या परमेश्वर में विश्वास के तुम्हारे विचार सही हैं : तुम किस पर विश्वास करते हो, किसके लिए विश्वास करते हो, और क्यों विश्वास करते हो। यदि तुम इन बातों को स्पष्ट रूप से देख सकते हो, और अच्छी तरह से अपने विचारों के साथ अभ्यास करते हो, तो तुम अपने जीवन में उन्नति करोगे, और तुम्हें सही मार्ग पर प्रवेश की गारंटी भी दी जाएगी। यदि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य नहीं है, और परमेश्वर में विश्वास के तुम्हारे विचार विकृत हैं, तो बाकी सब-कुछ बेकार है; तुम कितना भी दृढ़ विश्वास क्यों न करो, तुम कुछ प्राप्त नहीं कर पाओगे। परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य होने के बाद ही तुम परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त करोगे, जब तुम देह-सुख का त्याग कर दोगे, प्रार्थना करोगे, दुःख उठाओगे, सहन करोगे, समर्पण करोगे, अपने भाई-बहनों की सहायता करोगे, परमेश्वर के लिए खुद को अधिक खपाओगे, इत्यादि। तुम्हारे कुछ करने की कोई कीमत या महत्त्व है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या

तुम्हारे इरादे ठीक और विचार सही हैं? आजकल बहुत-से लोग परमेश्वर पर विश्वास इस तरह करते हैं, जैसे घड़ी देखने के लिए सिर उठा रहे हों—उनके दृष्टिकोण विकृत होते हैं और उन्हें सफलतापूर्वक सुधारा जाना चाहिए। अगर यह समस्या हल हो गई, तो सब-कुछ सही हो जाएगा; और अगर नहीं हुई, तो सब-कुछ नष्ट हो जाएगा। कुछ लोग मेरी उपस्थिति में अच्छा व्यवहार करते हैं, परंतु मेरी पीठ पीछे वे केवल मेरा विरोध ही करते हैं। यह छल-कपट और धोखे का प्रदर्शन है, और इस तरह के व्यक्ति शैतान के सेवक हैं; वे परमेश्वर के परीक्षण के लिए आए शैतान के विशिष्ट रूप हैं। तुम केवल तभी एक सही व्यक्ति हो, जब तुम मेरे कार्य और मेरे वचनों के प्रति समर्पित रह सको। जब तक तुम परमेश्वर के वचनों को खा-पी सकते हो; जब तक तुम जो करते हो वह परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करने योग्य है और अपने समस्त कार्यों में तुम न्यायसंगत और सम्मानजनक व्यवहार करते हो; जब तुम निंदनीय अथवा दूसरों के जीवन को नुकसान पहुँचाने वाले कार्य नहीं करते; और जब तुम प्रकाश में रहते हो और शैतान को अपना शोषण नहीं करने देते, तब परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध उचित होता है।

परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए तुम्हारे इरादों और विचारों का सही होना आवश्यक है; तुम्हें परमेश्वर के वचनों, परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर द्वारा व्यवस्थित समस्त वातावरण, वह व्यक्ति जिसके लिए परमेश्वर गवाही देता है, और व्यावहारिक परमेश्वर की सही समझ और उनके प्रति व्यवहार का सही तरीका होना आवश्यक है। तुम्हें अपने विचारों के अनुसार अभ्यास नहीं करना चाहिए, और न ही अपनी क्षुद्र योजनाएँ बनानी चाहिए। तुम जो कुछ भी करो, तुम्हें सत्य को खोजने, और एक सृजित प्राणी के रूप में अपनी स्थिति में परमेश्वर के सब कार्यों के प्रति समर्पित रहने में सक्षम होना चाहिए। यदि तुम परमेश्वर के द्वारा पूर्ण किए जाने का अनुसरण करना और जीवन के सही मार्ग में प्रवेश करना चाहते हो, तो तुम्हारा हृदय सदैव परमेश्वर की उपस्थिति में रहना आवश्यक है। हठी मत बनो, शैतान का अनुसरण मत करो, शैतान को अपना काम करने का कोई अवसर मत दो, और शैतान को अपना इस्तेमाल मत करने दो। तुम्हें स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप देना चाहिए और परमेश्वर को अपने ऊपर शासन करने देना चाहिए।

क्या तुम शैतान के सेवक बनना चाहते हो? क्या तुम शैतान द्वारा अपना शोषण करवाना चाहते हो? क्या तुम परमेश्वर पर विश्वास और उसका अनुसरण इसलिए करते हो ताकि तुम उसके द्वारा पूर्ण किए जा सको, या इसलिए कि तुम उसके कार्य की विषमता बन सको? तुम एक अर्थपूर्ण जीवन जीना पसंद करोगे,

जिसमें तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा सको, या एक निरर्थक और खाली जीवन? तुम परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया जाना पसंद करोगे, या शैतान द्वारा अपना शोषण करवाना? तुम परमेश्वर के वचनों और सत्य से भरे जाना पसंद करोगे, या फिर पाप या शैतान से भरे जाना? इन बातों पर ध्यान से विचार करो। अपने दैनिक जीवन में तुम्हें यह समझना आवश्यक है कि तुम्हारे द्वारा कहे जाने वाले कौन-से शब्द और तुम्हारे द्वारा किए जाने वाले कौन-से कार्य परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य नहीं रहने देंगे, और फिर सही तरीका अपनाने के लिए स्वयं को सुधारो। हर वक्त अपने शब्दों, अपने कार्यों, अपने हर कदम और अपने समस्त विचारों और भावों की जाँच करो। अपनी वास्तविक स्थिति की सही समझ हासिल करो और पवित्र आत्मा के कार्य के तरीके में प्रवेश करो। परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध रखने का यही एकमात्र तरीका है। इसका आकलन करके कि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है या नहीं, तुम अपने इरादों को सुधार पाओगे, मनुष्य की प्रकृति और सार को समझ पाओगे, और स्वयं को वास्तव में समझ पाओगे, और ऐसा करने पर तुम वास्तविक अनुभवों में प्रवेश कर पाओगे, स्वयं को सही रूप में त्याग पाओगे, और इरादे के साथ समर्पण कर पाओगे। जब तुम इस बात से संबंधित इन मामलों के तथ्य का अनुभव करते हो कि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है या नहीं, तो तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के अवसर प्राप्त करोगे और पवित्र आत्मा के कार्य की कई स्थितियों को समझने में सक्षम होगे। तुम शैतान की कई चालों को भी देख पाओगे और उसके षड्यंत्रों को समझ पाओगे। केवल यही मार्ग परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने की ओर ले जाता है। परमेश्वर के साथ अपना संबंध सही करके तुम अपने आपको परमेश्वर के सभी प्रबंधनों के प्रति उनकी पूर्णता में समर्पित कर सकते हो, और वास्तविक अनुभवों में और भी गहराई से प्रवेश कर सकते हो और पवित्र आत्मा का कार्य और अधिक प्राप्त कर सकते हो। जब तुम परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध रखने का अभ्यास करते हो, तो अधिकांश मामलों में सफलता देह-सुख का त्याग करने और परमेश्वर के साथ वास्तविक सहयोग करने से मिलेगी। तुम्हें यह समझना चाहिए कि "सहयोगी हृदय के बिना परमेश्वर के कार्य को प्राप्त करना कठिन है; यदि देह पीड़ा का अनुभव नहीं करती, तो परमेश्वर से आशीषें प्राप्त नहीं होंगी; यदि आत्मा संघर्ष नहीं करती, तो शैतान को शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा।" यदि तुम इन सिद्धांतों का अभ्यास करो और इन्हें अच्छी तरह से समझ लो, तो परमेश्वर में विश्वास करने के तुम्हारे विचार सही हो जाएँगे। अपने वर्तमान अभ्यास में तुम लोगों को "भूख शांत करने के लिए रोटी खोजने" की मानसिकता को छोड़ना आवश्यक है; तुम्हें इस मानसिकता को छोड़ना भी आवश्यक है कि "सब-कुछ

पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है और लोग उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते।" जो भी लोग ऐसा कहते हैं, वे सब यह सोचते हैं, "लोग वह सब कर सकते हैं जो वे करना चाहते हैं, और जब समय आएगा तो पवित्र आत्मा अपना कार्य करेगा। लोगों को देह का प्रतिरोध या सहयोग करने की आवश्यकता नहीं है; महत्त्वपूर्ण यह है कि पवित्र आत्मा द्वारा उन्हें प्रेरित किया जाए।" ये मत बेतुके हैं। इन परिस्थितियों में पवित्र आत्मा कार्य करने में असमर्थ है। इस प्रकार का दृष्टिकोण पवित्र आत्मा के कार्य के लिए एक बड़ी रुकावट बन जाता है। अकसर पवित्र आत्मा का कार्य लोगों के सहयोग से प्राप्त किया जाता है। जो लोग सहयोग नहीं करते और कृतसंकल्प नहीं होते हैं और फिर भी अपने स्वभाव में बदलाव और पवित्र आत्मा का कार्य तथा परमेश्वर से प्रबोधन और प्रकाश प्राप्त करना चाहते हैं, वे सचमुच उच्छृंखल विचार रखते हैं। इसे "अपने आपको लिप्त करना और शैतान को क्षमा करना" कहा जाता है। ऐसे लोगों का परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध नहीं होता। तुम्हें अपने भीतर शैतानी स्वभाव के कई खुलासे और अभिव्यक्तियाँ ढूँढ़नी चाहिए और अपने द्वारा किए गए ऐसे कार्य तलाशने चाहिए, जो अब परमेश्वर की आवश्यकताओं के खिलाफ जाते हैं। क्या तुम अब शैतान को त्याग सकोगे? तुम्हें परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध स्थापित करना चाहिए, परमेश्वर के इरादों के अनुसार कार्य करना चाहिए, और नए जीवन के साथ एक नया व्यक्ति बनना चाहिए। अपने पिछले अपराधों पर ध्यान मत दो; अनुचित रूप से पश्चातापी न बनो; दृढ़ रहकर परमेश्वर के साथ सहयोग करो, और अपने कर्तव्य पूरे करो। इस प्रकार परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य हो जाएगा।

यदि इसे पढ़ने के बाद तुम केवल शब्दों को स्वीकार करने का दावा करते हो, और अभी भी तुम्हारा हृदय द्रवित नहीं होता, और तुम परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध रखने का प्रयास नहीं करते, तो यह प्रमाणित हो जाता है कि तुम परमेश्वर के साथ अपने संबंध को महत्त्व नहीं देते, तुम्हारे विचार अभी तक सही नहीं हुए हैं, तुम्हारे इरादे परमेश्वर द्वारा तुम्हें प्राप्त किए जाने और उसके लिए महिमा लाने की ओर निर्दिष्ट नहीं किए गए हैं, बल्कि शैतान के षड्यंत्र जारी रहने और तुम्हारे व्यक्तिगत उद्देश्य पूरे करने के लिए निर्दिष्ट किए गए हैं। ऐसे व्यक्ति अनुचित इरादे और गलत विचार रखते हैं। इस बात पर ध्यान दिए बिना कि परमेश्वर ने क्या कहा है और कैसे कहा है, ऐसे लोग बिलकुल उदासीन रहते हैं और उनमें जरा-सा भी परिवर्तन दिखाई नहीं देता। उनके हृदय में कोई भय अनुभव नहीं होता और वे बेशर्म रहते हैं। इस प्रकार का व्यक्ति आत्माविहीन मूर्ख होता है। परमेश्वर के हर कथन को पढ़ो और जैसे ही तुम उन्हें समझ जाओ, उन पर अमल करना शुरू कर दो। शायद कुछ अवसरों पर तुम्हारी देह कमज़ोर थी, या तुम

विद्रोही थे, या तुमने प्रतिरोध किया; इस बात की परवाह न करो कि अतीत में तुमने किस तरह का व्यवहार किया था, यह कोई बड़ी बात नहीं है, और यह आज तुम्हारे जीवन को परिपक्व होने से नहीं रोक सकती। अगर आज तुम परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध रख सकते हो, तो आशा की किरण बाकी है। यदि हर बार परमेश्वर के वचन पढ़ने पर तुममें परिवर्तन होता है, और दूसरे लोग बता सकते हैं कि तुम्हारा जीवन बदलकर बेहतर हो गया है, तो यह दिखाता है कि अब तुम्हारा परमेश्वर के साथ संबंध सामान्य है और उसे सही रखा गया है। परमेश्वर लोगों से उनके अपराधों के अनुसार व्यवहार नहीं करता। एक बार जब तुम समझ जाते हो और जागरूक हो जाते हो, जब तुम विद्रोही नहीं रहते और प्रतिरोध करना छोड़ देते हो, तो परमेश्वर फिर भी तुम पर दया करता है। जब तुम्हारे पास परमेश्वर द्वारा तुम्हें पूर्ण किए जाने की समझ और संकल्प होता है, तो परमेश्वर की उपस्थिति में तुम्हारी अवस्था सामान्य हो जाएगी। तुम चाहे कुछ भी करो, उसे करते हुए बस इस बात पर ध्यान दो : यदि मैं यह कार्य करूँगा, तो परमेश्वर क्या सोचेगा? क्या इससे मेरे भाई-बहनों को लाभ पहुँचेगा? क्या यह परमेश्वर के घर के कार्य के लिए लाभकारी होगा? अपनी प्रार्थना, संगति, बोलचाल, कार्य और लोगों के साथ संपर्क में अपने इरादों की जाँच करो, और देखो कि क्या परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है? यदि तुम अपने इरादों और विचारों को नहीं समझ सकते, तो इसका अर्थ है कि तुममें विवेक की कमी है, जिससे प्रमाणित होता है कि तुम सत्य को बहुत कम समझते हो। अगर तुम, जो कुछ भी परमेश्वर करता है, उसे स्पष्ट रूप से समझने और परमेश्वर के पक्ष में खड़े होकर घटनाओं को उसके वचनों के लेंस के माध्यम से देखने में समर्थ हुए, तो तुम्हारे दृष्टिकोण सही हो गए होंगे। अतः परमेश्वर के साथ अच्छे संबंध बनाना हर उस व्यक्ति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है, जो परमेश्वर में विश्वास रखता है; सभी को इसे सर्वोपरि महत्त्व का कार्य और अपने जीवन की सबसे बड़ी घटना मानना चाहिए। जो कुछ भी तुम करते हो, उसे इस बात से मापा जाता है कि क्या परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है? यदि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है और तुम्हारे इरादे सही हैं, तो कार्य करो। परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध बनाए रखने के लिए तुम्हें अपने व्यक्तिगत हितों का नुकसान उठाने से डरने की आवश्यकता नहीं है; तुम शैतान को जीतने नहीं दे सकते, तुम शैतान को अपने ऊपर पकड़ बनाने नहीं दे सकते, और तुम शैतान को तुम्हें हँसी का पात्र बनाने नहीं दे सकते। ऐसे इरादे होना इस बात का संकेत है कि परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है—यह देह के लिए नहीं है, बल्कि आत्मा की शांति के लिए है, पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करने के लिए है और परमेश्वर की इच्छा पूरी

करने के लिए है। सही स्थिति में प्रवेश करने के लिए तुम्हें परमेश्वर के साथ अच्छा संबंध बनाना और उस पर विश्वास करने के विचारों को सही रखना आवश्यक है। ऐसा इसलिए, ताकि परमेश्वर तुम्हें प्राप्त कर सके, ताकि वह अपने वचन के फल तुममें प्रकट कर सके, और तुम्हें और अधिक प्रबुद्ध और प्रकाशित कर सके। इस प्रकार से तुम सही तरीके में प्रवेश करोगे। परमेश्वर के आज के वचनों को लगातार खाते-पीते रहो, पवित्र आत्मा के कार्य के वर्तमान तरीके में प्रवेश करो, परमेश्वर की आज की माँगों के अनुसार कार्य करो, अभ्यास के पुराने तरीकों का पालन मत करो, कार्य करने के पुराने तरीकों से मत चिपके रहो, और जितना जल्दी हो सके, कार्य करने के आज के तरीके में प्रवेश करो। इस तरह परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध पूरी तरह से सामान्य हो जाएगा और तुम परमेश्वर में विश्वास रखने के सही मार्ग पर चल पड़ोगे।

वास्तविकता पर अधिक ध्यान केंद्रित करो

हर व्यक्ति में परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने की संभावना है, इसलिए सभी को समझना चाहिए कि परमेश्वर के लिए किस प्रकार की सेवा उसके प्रयोजनों के अनुरूप सर्वश्रेष्ठ है। अधिकांश लोगों को नहीं पता कि परमेश्वर में विश्वास करने का क्या अर्थ है, न ही वे यह समझते हैं कि उन्हें परमेश्वर में विश्वास क्यों करना चाहिए—कहने का तात्पर्य यह कि अधिकांश को परमेश्वर के कार्य की या परमेश्वर की प्रबंधन योजना के उद्देश्य की कोई समझ नहीं है। आज, बहुसंख्य लोग अब भी यही सोचते हैं कि परमेश्वर में विश्वास करना स्वर्ग जाने और अपनी आत्मा को बचा लेने के बारे में है। उन्हें परमेश्वर में विश्वास करने के सटीक महत्व का कुछ पता ही नहीं है। इतना ही नहीं, उन्हें परमेश्वर की प्रबंधन योजना के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य की कोई समझ नहीं है। अपने भिन्न-भिन्न कारणों से, लोग परमेश्वर के कार्य में कोई रुचि नहीं लेते, न ही वे परमेश्वर के प्रयोजनों पर या परमेश्वर की प्रबंधन योजना पर थोड़ा भी विचार करते हैं। इस धारा का व्यक्ति होने के नाते, प्रत्येक व्यक्ति को जानना चाहिए कि परमेश्वर की संपूर्ण प्रबंधन योजना का उद्देश्य क्या है, वे क्या तथ्य हैं जो उसने बहुत पहले सिद्ध कर लिए हैं, उसने लोगों के इस समूह को क्यों चुना है, उसके उन्हें चुनने का उद्देश्य और अर्थ क्या है, और इस समूह में परमेश्वर क्या प्राप्त करना चाहता है। परमेश्वर के लिए बड़े लाल अजगर के देश में साधारण लोगों का ऐसा एक समूह तैयार करना, और अब तक निरंतर कार्य करते रहना, हर प्रकार के तरीक़ों से उनकी परीक्षा लेना और उन्हें पूर्ण करना,

अनगिनत वचन बोलना, अत्यधिक कार्य करना, और इतनी सारी सेवा की वस्तुएँ भेजना—अकेले परमेश्वर के लिए इतना बड़ा कार्य संपन्न करना दिखाता है कि परमेश्वर का कार्य कितना महत्त्वपूर्ण है। फिलहाल तुम लोग इसे पूरी तरह समझने में अक्षम हो। परमेश्वर ने जो कार्य तुम लोगों में किया है, उसे तुम्हें अपने आप में तुच्छ नहीं मानना चाहिए; यह कोई छोटी बात नहीं है। यहाँ तक कि परमेश्वर ने आज तुम लोगों के लिए जो प्रकट किया है, वह भी तुम लोगों के गहराई से समझने और जानने का प्रयास करने के लिए पर्याप्त है। यदि तुम इसे सचमुच और पूर्णतः समझते हो, तभी तुम लोगों के अनुभव अधिक गहरे हो सकते हैं और तुम्हारा जीवन फल-फूल सकता है। आज, लोग बहुत कम समझते और करते हैं; वे परमेश्वर के प्रयोजनों को पूर्णतः पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। यह मनुष्य की कमी और अपना कर्तव्य पूरा करने में उसकी विफलता है, और इस प्रकार वे इच्छित परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं। पवित्र आत्मा के पास बहुत-से लोगों में कार्य करने के साधन नहीं हैं क्योंकि लोगों में परमेश्वर के कार्य की उथली समझ है, और जब वे परमेश्वर के घर का कार्य करते हैं तब इसे किंचित अनमोल मानने के इच्छुक नहीं होते हैं। वे हमेशा किसी तरह बच निकलने के लिए बेमन से चेष्टा-भर करते हैं, या फिर बहुसंख्यक लोगों का अनुकरण करते हैं, या बस दिखावे के लिए काम करते हैं। आज, इस धारा के प्रत्येक व्यक्ति को याद करना चाहिए कि अपने कार्यकलापों और कर्मों में, उन्होंने वह सब किया है या नहीं जो वे कर सकते थे, और उन्होंने अपना पूरा ज़ोर लगाया है या नहीं। लोग अपना कर्तव्य निभाने में पूरी तरह से नाकाम हो गए हैं, इसलिए नहीं कि पवित्र आत्मा अपना कार्य नहीं करता है, बल्कि इसलिए कि लोग अपना कार्य नहीं करते, जिससे पवित्र आत्मा के लिए अपना कार्य करना असंभव हो जाता है। परमेश्वर के पास कहने के लिए और वचन नहीं हैं, परंतु लोग साथ-साथ बिल्कुल नहीं चल पाए, वे बहुत पीछे छूट गए हैं, वे हर कदम पर साथ रहने में असमर्थ हैं, और मेमने के पदचिह्नों का निकट से अनुसरण करने में असमर्थ हैं। उन्हें जिसका पालन करना चाहिए, उन्होंने पालन नहीं किया; उन्हें जिसका अभ्यास करना चाहिए था, उसका अभ्यास नहीं किया; उन्हें जिसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए थी, उन्होंने उसके लिए प्रार्थना नहीं की; उन्हें जिसे दर-किनार कर देना चाहिए था, उन्होंने उसे दर-किनार नहीं किया। उन्होंने इनमें से कुछ भी नहीं किया। इसलिए, भोज में शामिल होने की यह बात खोखली है; इसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं है, यह लोगों की कल्पना भर है। आज की दृष्टि से कहा जा सकता है कि लोगों ने अपना कर्तव्य बिल्कुल नहीं निभाया है। सब कुछ परमेश्वर के कहने और करने पर निर्भर हो गया है। इंसान का कार्यकलाप बहुत ही तुच्छ रहा है; लोग बेकार और

निकम्मे हैं जो परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं कर पाते हैं। परमेश्वर ने सैकड़ों-हज़ारों वचन कहे हैं, तो भी लोग उनमें से किसी को भी अभ्यास में नहीं लाए—चाहे देह-सुख त्यागना हो, अवधारणाओं को निकाल फेंकना हो, विवेक विकसित और अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हुए सब बातों में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने की बात हो, अपने हृदय में लोगों को स्थान नहीं देना हो, अपने हृदयों में प्रतिमाओं को मिटाना हो, अपने गलत व्यक्तिगत इरादों के खिलाफ विद्रोह करना हो, भावना के वशीभूत कार्य नहीं करना हो, बिना पक्षपात के कार्य करना हो, परमेश्वर के हितों और बोलते समय दूसरों पर उनके प्रभाव पर अधिक ध्यान देना हो, परमेश्वर के कार्य को लाभ पहुँचाने वाले काम अधिक करना हो, अपने सभी कार्यों में परमेश्वर के घर को लाभ पहुँचाने की बात को ध्यान में रखना हो, अपनी भावनाओं को अपने व्यवहार पर शासन नहीं करने देना हो, अपनी देह को जो सुख दे, उसे निकाल फेंकना हो, स्वार्थपूर्ण पुरानी धारणाओं को मिटाना हो, इत्यादि। वे परमेश्वर द्वारा मनुष्य से की जाने वाली इन सारी अपेक्षाओं में से कुछ को वास्तव में समझते हैं, किंतु वे बस उन्हें अभ्यास में नहीं लाना चाहते। परमेश्वर भला और क्या कर सकता है, और वह उन्हें और कैसे प्रेरित कर सकता है? परमेश्वर की दृष्टि में विद्रोह के पुत्र परमेश्वर के वचनों को लेकर उनका गुणगान करने की धृष्टता कैसे कर सकते हैं? वे परमेश्वर का भोजन खाने की धृष्टता कैसे करते हैं? लोगों की अंतरात्मा कहाँ है? उन्हें जो कर्तव्य पूरे करने थे, उनमें से उन्होंने न्यूनतम भी पूरे नहीं किए हैं, उनके अधिक से अधिक करने की तो बात ही क्या कहें। क्या वे झूठी आशा में नहीं जी रहे हैं? अभ्यास के बिना वास्तविकता की कोई बात नहीं हो सकती है। यह बिलकुल स्पष्ट तथ्य है!

तुम लोगों को वे सबक सीखने चाहिए जो अधिक यथार्थवादी हैं। उन ऊँची-ऊँची, खोखली बातों की कोई आवश्यकता नहीं है जिनकी लोग प्रशंसा करते हैं। जब ज्ञान के बारे में चर्चा करने की बात आती है, तब हर व्यक्ति पिछले से बढ़कर है, लेकिन तब भी उनके पास अभ्यास करने का मार्ग नहीं है। कितने लोगों ने अभ्यास के सिद्धांतों को समझ लिया है? कितनों ने वास्तविक सबक सीख लिए हैं? वास्तविकता के बारे में कौन सहभागिता कर सकता है? परमेश्वर के वचनों के ज्ञान की बात कर पाने का यह अर्थ यह नहीं कि तू वास्तविक आध्यात्मिक कद से युक्त है; यह बस इतना ही दिखाता है कि तू जन्म से चतुर था, और तू प्रतिभाशाली है। अगर तू मार्ग नहीं दिखा सकता तो परिणाम कुछ नहीं निकलेगा, और तू निकम्मा इंसान होगा! यदि तू अभ्यास करने के लिए वास्तविक मार्ग के बारे में कुछ नहीं कह सकता तो क्या तू ढोंग नहीं कर रहा है? यदि तू अपने वास्तविक अनुभव दूसरों को नहीं दे सकता है, जिनसे उन्हें सीखने के लिए

सबक या अनुसरण के लिए मार्ग मिल सके, तो क्या तू धोखा नहीं दे रहा है? क्या तू पाखंडी नहीं है? तेरा क्या मूल्य है? ऐसा व्यक्ति केवल "समाजवाद के सिद्धांत के आविष्कारक" की भूमिका अदा कर सकता है, "समाजवाद लाने वाले योगदाता" की नहीं। वास्तविकता से रहित होना सत्य से युक्त नहीं होना है। वास्तविकता से रहित होना निकम्मा होना है। वास्तविकता से रहित होना चलती-फिरती लाश होना है। वास्तविकता से रहित होना "मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारक" होना है जिसका कोई संदर्भ मूल्य नहीं होता। मैं तुममें से प्रत्येक से आग्रह करता हूँ कि सिद्धांत के बारे में मुँह बंद करो और कुछ वास्तविक, कुछ सच्ची और ठोस चीज़ के बारे में बात करो; कुछ "आधुनिक कला" का अध्ययन करो, कुछ यथार्थवादी कहो, कुछ वास्तविक योगदान करो, और कुछ समर्पण की भावना रखो। जब तुम बोलो, वास्तविकता का सामना करो; लोगों को प्रसन्न महसूस करवाने या चौंकाकर अपने पर उनका ध्यान दिलाने के लिए अवास्तविक और अतिरंजित वार्ता में लिप्त मत होओ। उसमें मोल कहाँ है? अपने प्रति लोगों से उत्साहपूर्ण बर्ताव करवाने का क्या औचित्य है? अपनी बातचीत में थोड़ा "कलात्मक" बनो, अपने आचरण में थोड़ा और निष्पक्ष बनो, चीज़ों को संभालने के अपने तरीक़े में थोड़ा और तर्कसंगत बनो, तुम जो कहते हो उसमें थोड़ा और व्यवहारिक बनो, अपने हर कार्य से परमेश्वर के घर को लाभ पहुँचाने की सोचो, भावुक होने पर अपनी अंतरात्मा की सुनो, दयालुता का मूल्य घृणा से न चुकाओ या दयालुता के प्रति कृतघ्न न बनो, और पाखंडी मत बनो, कहीं ऐसा न हो कि तुम बुरा प्रभाव बन जाओ। जब तुम परमेश्वर के वचन खाओ और पिओ, तो उन्हें वास्तविकता के साथ अधिक घनिष्ठता से जोड़ो, और जब तुम संगति करो, तब यथार्थवादी चीज़ों के बारे में अधिक बोलो। दूसरों को नीचा न दिखाओ; यह परमेश्वर को संतुष्ट नहीं करेगा। दूसरों के साथ अपनी बातचीत में थोड़ा अधिक सहिष्णु, थोड़ा अधिक लचीला, थोड़ा अधिक उदार बनो, और "खुले विचारों वाले और उदार-हृदय व्यक्ति"[क] से सीखो। जब तुम्हारे मन में बुरे विचार आएँ, तब देहसुख त्यागने का अधिक अभ्यास करो। जब तुम कार्य कर रहे होते हो, तब यथार्थवादी मार्गों के बारे में अधिक बोलो, और बहुत ऊँचाई पर न चले जाओ, नहीं तो तुम्हारी बातें लोगों के सिर के ऊपर से निकल जाएँगी। आनंद कम, योगदान अधिक—अपनी निःस्वार्थ समर्पण की भावना दिखाओ। परमेश्वर के प्रयोजनों के प्रति अधिक विचारशील बनो, अपनी अंतरात्मा की अधिक सुनो, अधिक सचेत बनो और यह न भूलो कि परमेश्वर हर दिन तुम लोगों से कितने धैर्य और गंभीरता से कैसे बात करता है। "पुराने पंचांग" को बार-बार पढ़ो। बार-बार अधिक प्रार्थना और अधिक संगति करो। इतने संभ्रमित होना बंद करो; कुछ अधिक समझ दिखाओ

और कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त करो। ज्यों ही तुम्हारा पापी हाथ बढ़े, वापस पीछे खींच लो; इसे इतना आगे जाने ही न दो। किसी काम का नहीं, और परमेश्वर से तुम्हें शापों के अलावा कुछ नहीं मिलेगा, इसलिए होशियार रहो। अपने हृदय को दूसरों पर तरस खाने दो, और हमेशा हाथ में अस्त्र लेकर टूट मत पड़ो। दूसरों की मदद करने की भावना बनाए रखते हुए, सत्य के ज्ञान के बारे में अधिक संगति और जीवन के बारे में अधिक बात करो। अधिक करो और कम बोलो। अभ्यास में अधिक और अनुसंधान तथा विश्लेषण पर कम ध्यान दो। पवित्र आत्मा द्वारा अपने को अधिक प्रेरित होने दो, और परमेश्वर को तुम्हें पूर्ण करने के अधिक अवसर दो। मानवीय तत्त्वों को अधिक मिटाओ; तुम अब भी चीज़ों को करने के बहुत सारे मानवीय तरीक़ों से युक्त हो, और चीजों को करने का तुम्हारा उथला तरीक़ा और व्यवहार अब भी दूसरों के लिए घृणास्पद है : इनमें से और अधिक मिटा दो। तुम्हारी मनःस्थिति अब भी बहुत घृणास्पद है। इसे सुधारने में अधिक समय लगाओ। तुम लोगों को अब भी बहुत प्रतिष्ठा देते हो; परमेश्वर को अधिक प्रतिष्ठा दो, और इतने अविवेकी न बनो। "मंदिर" हमेशा से परमेश्वर का है, और लोगों को उस पर कब्ज़ा नहीं करना चाहिए। संक्षेप में, धार्मिकता पर अधिक और भावनाओं पर कम ध्यान केंद्रित करो। देहसुख को मिटा देना ही सर्वश्रेष्ठ है; वास्तविकता के बारे में अधिक और ज्ञान के बारे में कम बात करो; मुँह बंद रखना और कुछ न कहना ही सर्वश्रेष्ठ है। अभ्यास के मार्ग की अधिक बात करो, और बेकार की डींगें कम हाँको। सर्वश्रेष्ठ तो यही है कि इसी समय अभ्यास करना आरंभ कर दो।

लोगों से परमेश्वर की अपेक्षाएँ उतनी बहुत ऊँची भी नहीं हैं। यदि वे थोड़ा भी प्रयास करें, तो "उत्तीर्ण श्रेणी" प्राप्त कर लेंगे। वास्तव में, सत्य को समझना, जानना, और बूझना सत्य का अभ्यास करने से अधिक जटिल है। सत्य को जानना और बूझना सत्य का अभ्यास करने के बाद आता है; यह वही सोपान और तरीका है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा कार्य करता है। तुम पालन कैसे नहीं कर सकते? क्या तुम अपने तरीके से चीजें करके पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त कर सकते हो? पवित्र आत्मा तुम्हारी इच्छा से कार्य करता है या परमेश्वर के वचनों के अनुसार तुम्हारी कमियों के आधार पर कार्य करता है? यदि तुम इसे स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते, तो बेकार है। ऐसा क्यों है कि अधिकांश लोगों ने परमेश्वर के वचनों को पढ़ने में काफी मेहनत की है, लेकिन इसके पश्चात उनके पास मात्र ज्ञान है और वास्तविक मार्ग के बारे में कुछ नहीं कह पाते? क्या तुझे लगता है कि ज्ञान से युक्त होना सत्य से युक्त होने के बराबर है? क्या यह भ्रांत दृष्टिकोण नहीं है? तू उतना अधिक ज्ञान बोल पाता है जितनी समुद्र तट पर रेत है, फिर भी इसमें से कुछ

भी वास्तविक मार्ग नहीं है। यह करके क्या तू लोगों को मूर्ख बनाने का प्रयत्न नहीं कर रहा है? क्या तू खोखला प्रदर्शन नहीं कर रहा है, जिसके समर्थन के लिए कुछ भी ठोस नहीं है? ऐसा समूचा व्यवहार लोगों के लिए हानिकारक है! जितना अधिक ऊँचा सिद्धांत और उतना ही अधिक यह वास्तविकता से रहित, उतना ही अधिक यह लोगों को वास्तविकता में ले जाने में अक्षम; जितना अधिक ऊँचा सिद्धांत, उतना ही अधिक यह तुझसे परमेश्वर की अवज्ञा और विरोध करवाता है। ऊँचे से ऊँचे सिद्धांतों को अनमोल खजाने की तरह मत बरत; वे दुखदाई हैं और किसी काम के नहीं हैं! शायद कुछ लोग ऊँचे से ऊँचे सिद्धांतों की बात कर पाते हैं—लेकिन इनमें वास्तविकता का लेशमात्र भी नहीं होता, क्योंकि इन लोगों ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से अनुभव नहीं किया है, और इसलिए उनके पास अभ्यास करने का कोई मार्ग नहीं है। ऐसे लोग दूसरों को सही राह पर ले जाने में अक्षम होते हैं और उन्हें केवल गुमराह ही करेंगे। क्या यह लोगों के लिए हानिकारक नहीं है? कम से कम, तुझे लोगों के वर्तमान कष्टों का निवारण तो करना ही चाहिए, उन्हें प्रवेश करने देना चाहिए; केवल यही समर्पण माना जाता है, और तभी तू परमेश्वर के लिए कार्य करने योग्य होगा। हमेशा आडंबरपूर्ण, काल्पनिक शब्द मत बोला कर, और दूसरों को अपने आज्ञापालन में बाँधने के लिए अनुपयुक्त अभ्यासों का उपयोग मत कर। ऐसा करने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और यह केवल उनके भ्रम को ही बढ़ा सकता है। इस तरह करते रहने से बहुत वाद उत्पन्न होगा, जो लोगों को तुझसे घृणा करवाएगा। ऐसी है मनुष्य की कमी, और यह सचमुच अत्यंत लज्जाजनक है। इसलिए वास्तविक रूप में विद्यमान समस्याओं की अधिक बात कर। अन्य लोगों के अनुभवों को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति की तरह मत बरत और उन्हें ऊँचा थामकर रख ताकि दूसरे प्रशंसा कर पाएँ; तुझे अपना विशिष्ट मुक्ति का मार्ग खोजना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को इसी चीज़ का अभ्यास करना चाहिए।

यदि तुम जो संगति करते हो वह लोगों को चलने के लिए मार्ग दे सकती है, तो यह तुम्हारे वास्तविकता से युक्त होने के बराबर है। तुम चाहे जो कहो, तुम्हें लोगों को अभ्यास में लाना और उन सभी को एक मार्ग देना चाहिए जिसका वे अनुसरण कर सकें। उन्हें केवल ज्ञान ही मत पाने दो; अधिक महत्वपूर्ण चलने के लिए मार्ग का होना है। लोग परमेश्वर में विश्वास करें, इसके लिए उन्हें परमेश्वर द्वारा अपने कार्य में दिखाए गए मार्ग पर चलना चाहिए। अर्थात, परमेश्वर में विश्वास करने की प्रक्रिया पवित्र आत्मा द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की प्रक्रिया है। तदनुसार, तुम्हारे पास एक ऐसा मार्ग होना चाहिए जिस पर तुम चल सको, फिर चाहे जो हो, और तुम्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के मार्ग पर चलना

चाहिए। बहुत अधिक पीछे मत छूट जाओ, और बहुत सारी चीज़ों की चिंता में मत पड़ो। यदि तुम बाधाएँ उत्पन्न किए बिना परमेश्वर द्वारा दिखाए मार्ग पर चलते हो, तभी तुम पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त कर सकते हो और प्रवेश का मार्ग पा सकते हो। यही परमेश्वर के प्रयोजनों के अनुरूप होना और मानवता का कर्तव्य पूरा करना माना जाता है। इस धारा का व्यक्ति होने के नाते, प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्तव्य अच्छी तरह पूरा करना चाहिए, वह और अधिक करना चाहिए जो लोगों को करना चाहिए, और मनमाने ढंग से काम नहीं करना चाहिए। कार्य कर रहे लोगों को अपने शब्द स्पष्ट करने चाहिए, अनुसरण कर रहे लोगों को कठिनाइयों का सामना करने और आज्ञापालन करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए, सभी को अपनी भूमिका तक सीमित रहना चाहिए और सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्पष्ट होना चाहिए कि उसे कैसे अभ्यास करना है और क्या कार्य पूरा करना है। पवित्र आत्मा द्वारा दिखाया गया मार्ग लो; भटक मत जाना या ग़लती मत करना। तुम्हें आज का कार्य स्पष्ट रूप से देखना चाहिए। तुम लोगों को कार्य करने के आज के साधनों में प्रवेश करने का अभ्यास करना चाहिए। सबसे पहले तुम्हें इसी में प्रवेश करना चाहिए। दूसरी चीज़ों पर और अधिक शब्द बर्बाद मत करो। आज परमेश्वर के घर का कार्य करना तुम लोगों की ज़िम्मेदारी है, आज की कार्य-पद्धति में प्रवेश करना तुम लोगों का कर्तव्य है, और आज के सत्य का अभ्यास करना तुम लोगों का भार है।

फुटनोट :

क. प्रधानमंत्री की भावना : प्राचीन चीनी कहावत जिसका प्रयोग खुले विचारों वाले और उदार-हृदय व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

आज्ञाओं का पालन करना और सत्य का अभ्यास करना

व्यवहार में, आज्ञाओं के पालन को सत्य को अभ्यास में डालने से जोड़ा जाना चाहिए। आज्ञाओं का पालन करते हुए, एक व्यक्ति को सत्य का अभ्यास करना ही चाहिए। सत्य का अभ्यास करते समय, व्यक्ति को आज्ञाओं के सिद्धान्तों का उल्लंघन बिलकुल नहीं करना चाहिए न ही आज्ञाओं के विपरीत जाना चाहिए; परमेश्वर तुमसे जो भी अपेक्षा करे, तुम्हें वो सब करना ही चाहिए। आज्ञाओं का पालन और सत्य का अभ्यास करना परस्पर संबद्ध हैं, विरोधी नहीं। तुम जितना अधिक सत्य का अभ्यास करते हो, उतना ही अधिक तुम आज्ञाओं के सार को बनाए रखने में सक्षम हो जाते हो। तुम जितना अधिक सत्य का अभ्यास

करोगे, उतना ही अधिक तुम परमेश्वर के वचनों को समझोगे जैसा कि आज्ञाओं में अभिव्यक्त है। सत्य का अभ्यास करना और आज्ञाओं का पालन करना, परस्पर विरोधी कार्य नहीं हैं, वे परस्पर संबद्ध हैं। आरंभ में, आज्ञाओं का पालन करने के बाद ही इंसान सत्य का अभ्यास कर सकता था और पवित्र आत्मा से ज्ञान प्राप्त कर सकता था, किन्तु यह परमेश्वर का मूल इरादा नहीं है। परमेश्वर बस अच्छा व्यवहार ही नहीं चाहता, वो अपेक्षा करता है कि तुम अपना हृदय परमेश्वर की आराधना करने में लगा दो। तुम्हें कम से कम सतही तौर पर ही सही, आज्ञाओं का पालन अवश्य करना चाहिए। धीरे-धीरे, अनुभव से, परमेश्वर की स्पष्ट समझ प्राप्त करने के बाद, लोग उसके विरुद्ध विद्रोह करना और उसका प्रतिरोध करना बंद कर देंगे, और फिर उसके कार्य के विषय में अपने मन में संदेह रखना बंद कर देंगे। यही एक तरीका है जिससे लोग आज्ञाओं के सार का पालन कर सकते हैं। इसलिए, सत्य के अभ्यास के बिना, मात्र आज्ञाओं का पालन करना प्रभावहीन है और इसे परमेश्वर की सच्ची आराधना नहीं कहा जा सकता, क्योंकि तुमने अभी तक वास्तविक आध्यात्मिक कद प्राप्त नहीं किया है। सत्य के बिना आज्ञाओं का पालन करना केवल सख्ती से नियमों से चिपके रहने के बराबर है। ऐसा करने से, आज्ञाएँ तुम्हारी व्यवस्था बन जाएँगी, जो तुम्हें जीवन में आगे बढ़ने में मदद नहीं करेगा। बल्कि, वे तुम्हारा बोझ बन जाएँगी, और तुम्हें पुराने नियमों की व्यवस्थाओं की तरह मजबूती से बाँध लेंगी, जिससे तुम पवित्र आत्मा की उपस्थिति गँवा दोगे। इसलिए, सत्य का अभ्यास करके ही तुम प्रभावशाली तरीके से आज्ञाओं का पालन कर सकते हो और तुम आज्ञाओं का पालन इसलिए करते हो कि सत्य का अभ्यास कर सको। आज्ञाओं का पालन करने की प्रक्रिया में तुम और भी अधिक सत्य को अभ्यास में लाओगे, और सत्य का अभ्यास करते समय, तुम आज्ञाओं के वास्तविक अर्थ की गहरी समझ हासिल करोगे। मनुष्य आज्ञाओं का पालन करे, परमेश्वर की इस माँग के पीछे का उद्देश्य और अर्थ उससे बस नियमों का पालन करवाना नहीं है, जैसा कि इंसान सोचता है; बल्कि इसका सरोकार उसके जीवन प्रवेश से है। जीवन में तुम्हारे विकास की सीमा से तय होता है कि तुम किस स्तर तक आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम हो। यद्यपि आज्ञाएँ मनुष्य द्वारा पालन किए जाने के लिए होती हैं, फिर भी आज्ञाओं का सार सिर्फ मनुष्य के जीवन के अनुभव से ही प्रकट होता है। अधिकांश लोग मान लेते हैं कि आज्ञाओं का अच्छी तरह से पालन करने का अर्थ है कि वे "पूरी तरह तैयार हैं, बस अब उठाया जाना बाकी है।" यह निरंकुश विचार है और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं है। ऐसी बातें कहने वाले लोग आगे नहीं बढ़ना चाहते, वे देह की लालसा रखते हैं। यह बकवास है! इसका वास्तविकता के साथ तालमेल

नहीं है! वास्तव में आज्ञाओं का पालन किये बिना मात्र सत्य का अभ्यास करना, परमेश्वर की इच्छा नहीं है। ऐसा करने वाले अपाहिज होते हैं; वे किसी लंगड़े व्यक्ति के समान होते हैं। नियमों का पालन करने की तरह बस आज्ञाओं का पालन करना, फिर भी सत्य का न होना—यह भी परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने में सक्षम नहीं है; उन लोगों के समान ऐसा करने वाले भी एक प्रकार की अपंगता के शिकार हैं उसी तरह जैसे वे लोग जिनकी एक आँख नहीं है। यह कहा जा सकता है कि यदि तुम आज्ञाओं का अच्छी तरह से पालन करते हो और व्यवहारिक परमेश्वर की स्पष्ट समझ प्राप्त कर लेते हो, तो तुम्हारे पास सत्य होगा; तुलनात्मक रूप से, तुमने वास्तविक आध्यात्मिक कद प्राप्त कर लिया होगा। यदि तुम उस सत्य का अभ्यास करते हो, जिसका तुम्हें अभ्यास करना चाहिए, तो तुम आज्ञाओं का पालन भी करोगे, ये दोनों बातें एक-दूसरे की विरोधी नहीं हैं। सत्य का अभ्यास करना और आज्ञाओं का पालन करना दो पद्धतियाँ हैं, दोनों ही व्यक्ति के जीवन के अनुभव का अभिन्न अंग हैं। व्यक्ति के अनुभव में आज्ञाओं का पालन और सत्य के अभ्यास का एकीकरण सम्मिलित होना चाहिए, विभाजन नहीं। हालाँकि इन दोनों चीज़ों के बीच में विभिन्नताएँ और संबंध दोनों हैं।

नए युग में आज्ञाओं की घोषणा उस तथ्य की एक गवाही है कि इस धारा के सभी लोग, वे सभी जो आज परमेश्वर की वाणी को सुनते हैं, एक नए युग में प्रवेश कर चुके हैं। यह परमेश्वर के कार्य के लिए एक नई शुरुआत है, साथ ही यह परमेश्वर की छः हज़ार वर्षों की प्रबंधकीय योजना के कार्य के अंतिम भाग का आरम्भ भी है। नए युग की आज्ञाएँ इस बात की प्रतीक हैं कि परमेश्वर और मनुष्य नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं, और जैसे यहोवा ने इस्राएलियों के बीच कार्य किया था और यीशु ने यहूदियों के बीच कार्य किया था, वैसे ही परमेश्वर पृथ्वी पर और अधिक व्यवहारिक कार्य तथा और अधिक बड़े काम करेगा। ये इस बात की भी प्रतीक हैं कि लोगों का यह समूह परमेश्वर से और अधिक एवं और बड़े आदेश प्राप्त करेगा, तथा परमेश्वर से व्यवहारिक तरीके से आपूर्ति, पोषण, सहारा, देखरेख और सुरक्षा प्राप्त करेगा, उसे परमेश्वर के द्वारा और अधिक व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा, परमेश्वर के वचन द्वारा उससे निपटा जाएगा, तोड़ा जाएगा और परिशुद्ध किया जाएगा। नए युग की आज्ञाओं का अर्थ बहुत गहरा है। उनसे संकेत मिलता है कि परमेश्वर वास्तव में पृथ्वी पर प्रकट होगा, जहाँ से वह देह में अपनी सम्पूर्ण महिमा को प्रकट करते हुए समूचे विश्व को जीत लेगा। वे यह भी संकेत करती हैं कि व्यवहारिक परमेश्वर अपने चुने हुए सभी लोगों को पूर्ण बनाने के लिए, पृथ्वी पर और भी अधिक व्यवहारिक कार्य करने जा रहा

है। इसके अलावा, परमेश्वर पृथ्वी पर वचनों से सब कुछ निष्पादित करेगा और उस आज्ञप्ति को प्रकट करेगा कि "देहधारी परमेश्वर सबसे ऊँचा उठकर आवर्धित होगा, और सभी लोग एवं सभी देश परमेश्वर—जो महान है—उसकी आराधना करने के लिए घुटनों के बल बैठेंगे।" हालाँकि नए युग की आज्ञाएँ मनुष्य द्वारा पालन करने के लिए हैं, भले ही ऐसा करना मनुष्य का कर्तव्य और उसका दायित्व है, लेकिन वे जिस अर्थ का प्रतिनिधित्व करती हैं, वो इतना अगाध है कि उसे एक या दो शब्दों में पूरी तरह से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। यहोवा और यीशु के द्वारा घोषित की गईं पुराने नियमों की व्यवस्थाओं और नए नियमों के अध्यादेशों का स्थान नए युग की आज्ञाओं ने ले लिया। यह एक गहरी शिक्षा है, यह उतना सरल विषय नहीं है जितना लोग सोचते हैं। नए युग की आज्ञाओं में व्यवहारिक अर्थ का एक पहलू है : वे अनुग्रह के युग और राज्य के युग के बीच एक अंतराफलक की भूमिका निभाते हैं। नए युग की आज्ञाएँ पुराने युग की प्रथाओं और अध्यादेशों को समाप्त करती हैं, साथ ही यीशु के युग की और उससे पहले की सभी प्रथाओं को भी समाप्त करती हैं। वे मनुष्य को अधिक व्यवहारिक परमेश्वर की उपस्थिति में लाती हैं, मनुष्य को परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से पूर्णता प्राप्त करना शुरू करने देती हैं; वे पूर्ण बनाए जाने के मार्ग का आरम्भ हैं। इसलिए, नए युग की आज्ञाओं के प्रति तुम लोगों का रवैया सही होना चाहिए, और उनका अनुसरण लापरवाही से नहीं करना चाहिए, न ही उनका तिरस्कार करना चाहिए। नए युग की आज्ञाएँ एक बिंदु विशेष पर जोर देती हैं : वो यह कि मनुष्य आज के व्यवहारिक स्वयं परमेश्वर की आराधना करेगा, जिसमें आत्मा के सार के प्रति और अधिक व्यवहारिक रूप से समर्पित होना शामिल है। आज्ञाएँ उस सिद्धान्त पर भी जोर देती हैं जिसके द्वारा धार्मिकता के सूर्य के रूप में प्रकट होने के बाद परमेश्वर, मनुष्य का न्याय करेगा कि वे दोषी हैं या धार्मिक। आज्ञाएँ अभ्यास में लाने की अपेक्षा समझने में अधिक आसान हैं। इससे यह देखा जा सकता है कि यदि परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाना चाहता है, तो उसे ऐसा अपने वचनों और मार्गदर्शन से करना होगा, मनुष्य केवल अपनी स्वाभाविक बुद्धिमत्ता से पूर्णता हासिल नहीं कर सकता। मनुष्य नए युग की आज्ञाओं का पालन कर सकता है या नहीं, इस बात का संबंध इंसान के व्यवहारिक परमेश्वर के ज्ञान से है। इसलिए, तुम आज्ञाओं का पालन कर सकते हो या नहीं, यह ऐसा प्रश्न नहीं है जिसका समाधान कुछ ही दिनों में कर लिया जायेगा। यह सीखने के लिए एक गहरा सबक है।

सत्य का अभ्यास ऐसा मार्ग है जिससे मनुष्य जीवन में उन्नति कर सकता है। यदि तुम लोग सत्य का अभ्यास नहीं करते हो, तो तुम्हारे पास केवल सिद्धान्त रह जायेगा और तुम लोगों के पास कोई वास्तविक

जीवन नहीं होगा। सत्य मनुष्य के आध्यात्मिक कद का प्रतीक है। तुम सत्य का अभ्यास करते हो या नहीं, इसका संबंध इस बात से है कि तुम्हारा वास्तविक आध्यात्मिक कद है या नहीं। यदि तुम सत्य का अभ्यास नहीं करते, तो धार्मिक होने का अभिनय मत करो, या यदि तुम देह की भावनाओं और उसकी देखभाल में लिप्त होते हो, तो तुम आज्ञाओं के पालन करने से बहुत दूर हो। यह गहनतम सबक है। प्रत्येक युग में, लोगों के प्रवेश करने के लिए और समझने के लिए बहुत से सत्य होते हैं, किन्तु प्रत्येक युग में अलग-अलग आज्ञाएँ भी होती हैं जो उस सत्य के साथ होती हैं। लोग जिस सत्य का अभ्यास करते हैं और आज्ञाओं का पालन करते हैं वह एक युग विशेष से संबंधित होता है। प्रत्येक युग के अपने सत्य होते हैं जिनका अभ्यास किया जाना चाहिए और ऐसी आज्ञाएँ होती हैं जिनका पालन किया जाना चाहिए। हालाँकि, परमेश्वर द्वारा घोषित विभिन्न आज्ञाओं के आधार पर, अर्थात्, विभिन्न युगों के आधार पर, मनुष्य के द्वारा सत्य के अभ्यास का लक्ष्य और प्रभाव आनुपातिक रूप में भिन्न होता है। ऐसा कहा जा सकता है कि आज्ञाएँ सत्य की सहायता के लिए हैं और सत्य आज्ञाओं को बनाए रखने के लिए विद्यमान रहता है। यदि केवल सत्य हो, तो कहने को परमेश्वर के कार्य में कोई परिवर्तन नहीं होगा। लेकिन, आज्ञाओं का हवाला देकर, मनुष्य पवित्र आत्मा के कार्य में रुझान की सीमाओं को पहचान सकता है और मनुष्य उस युग को जान सकता है जिसमें परमेश्वर कार्य करता है। धर्म में, बहुत से लोग हैं जो उसी सत्य का अभ्यास कर सकते हैं जिसका अभ्यास व्यवस्था के युग के मनुष्य के द्वारा किया गया था। लेकिन, उसके पास नये युग की आज्ञाएँ नहीं हैं, न ही वह नये युग की आज्ञाओं का पालन कर सकता है। वह अभी भी पुरानी रीति का पालन करता है और आदिम मानव बना हुआ है। उसके पास कार्य करने की नयी पद्धतियां नहीं हैं और वह नए युग की आज्ञाओं को नहीं देख सकता। इस तरह, उसमें परमेश्वर का कार्य नहीं होता। यह ऐसा है मानो उनके पास बस अंडे का खाली खोल है; यदि उसके अंदर कोई चूज़ा नहीं है तो उसमें कोई आत्मा नहीं है। अधिक सटीकता से कहा जाये तो, उसमें कोई जीवन नहीं है। ऐसे लोगों ने अभी नए युग में प्रवेश नहीं किया है और वे कई कदम पीछे रह गए हैं। इसलिए, पुराने युगों के सत्यों का होना लेकिन नए युग की आज्ञाओं का न होना बेकार है। तुम लोगों में से अनेक लोग आज के सत्य का अभ्यास करते हैं किन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते। तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा, और जिस सत्य का तुम अभ्यास करते हो वह बेकार और निरर्थक होगा और परमेश्वर तुम्हारी प्रशंसा नहीं करेगा। सत्य का अभ्यास, पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य की पद्धतियों के मानदंडों के अंतर्गत किया जाना चाहिए; इसे आज के व्यवहारिक परमेश्वर की वाणी की

प्रतिक्रिया में किया जाना चाहिए। इसके बिना हर चीज़ बेकार है, जैसे बाँस की टोकरी से पानी निकालने की कोशिश करना। यह नए युग की आज्ञाओं की घोषणा का व्यवहारिक अर्थ भी है। अगर लोगों को आज्ञाओं के अनुसार चलना है, तो बिना किसी असमंजस के उन्हें कम से कम उस व्यवहारिक परमेश्वर के बारे में तो जानना ही चाहिए जो देह में प्रकट होता है। दूसरे शब्दों में, लोगों को आज्ञाओं का पालन करने के सिद्धांत समझने चाहिए। आज्ञाओं के अनुसार चलने का अर्थ, अव्यवस्थित या मनमाने ढंग से उनका पालन करना नहीं है, बल्कि एक आधार, एक उद्देश्य और सिद्धांतों के साथ उनका पालन करना है। जो पहली चीज़ तुम्हें हासिल करनी चाहिए वह यह है कि तुम्हारी दृष्टि स्पष्ट हो। यदि तुम्हारे पास वर्तमान समय में पवित्र आत्मा के कार्य की पूरी समझ है और यदि तुम आज के कार्य की रीति में प्रवेश करते हो, तो तुम स्वाभाविक रूप से आज्ञाओं का पालन करने के सार की स्पष्ट समझ पा लोगे। यदि वह दिन आता है जब तुम नये युग की आज्ञाओं के सार को जान जाते हो और तुम आज्ञाओं का पालन कर सकते हो, तो उस समय तुम पूर्ण किए जा चुके होगे। सत्य का अभ्यास करने और आज्ञाओं के पालन करने का यही व्यवहारिक महत्व है। तुम आज्ञाओं का पालन कर सकते हो या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम किस प्रकार नए युग की आज्ञाओं के सार को समझते हो। पवित्र आत्मा का कार्य मनुष्य के सामने निरन्तर प्रकट होगा और परमेश्वर मनुष्य से अधिकाधिक अपेक्षा करेगा। इसलिए, वे सत्य जिनका मनुष्य वास्तव में अभ्यास करता है उनकी संख्या और बढ़ जाएगी तथा वे बड़े हो जाएँगे एवं आज्ञाओं का पालन करने के प्रभाव और अधिक गहरे हो जाएँगे। इसलिए, तुम लोगों को उसी समय सत्य का अभ्यास करना चाहिए और आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। किसी को भी इस मामले को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए; इस नए युग में नए सत्य और नई आज्ञाओं को एक ही समय में आरम्भ होने देना चाहिए।

तुम्हें पता होना चाहिए कि व्यावहारिक परमेश्वर ही स्वयं परमेश्वर है

तुम्हें व्यावहारिक परमेश्वर के बारे में क्या पता होना चाहिए? पवित्रात्मा, व्यक्ति और वचन स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर को बनाते हैं; और यही स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर का वास्तविक अर्थ है। यदि तुम सिर्फ़ व्यक्ति को जानते हो—यदि तुम उसकी आदतों और उसके व्यक्तित्व को जानते हो—लेकिन पवित्रात्मा के कार्य को नहीं जानते, या यह नहीं जानते कि पवित्रात्मा देह में क्या करता है, और यदि तुम सिर्फ़ पवित्रात्मा और वचन पर ध्यान देते हो, और केवल पवित्रात्मा के सामने प्रार्थना करते हो, लेकिन

व्यावहारिक परमेश्वर में परमेश्वर के पवित्रात्मा के कार्य को नहीं जानते, तो यह साबित करता है कि तुम व्यावहारिक परमेश्वर को नहीं जानते। व्यावहारिक परमेश्वर संबंधी ज्ञान में उसके वचनों को जानना और अनुभव करना, पवित्रात्मा के कार्य के नियमों और सिद्धांतों को समझना, और परमेश्वर के पवित्रात्मा द्वारा देह में कार्य करने के तरीके को समझना शामिल है। इसमें यह जानना भी शामिल है कि देह में परमेश्वर का हर कार्य पवित्रात्मा द्वारा नियंत्रित होता है, और उसके द्वारा बोले जाने वाले वचन पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं। इस प्रकार, व्यावहारिक परमेश्वर को जानने के लिए यह जानना सर्वोपरि है कि परमेश्वर मानवता और दिव्यता में कैसे कार्य करता है; जिसके परिणामस्वरूप यह पवित्रात्मा की अभिव्यक्ति से संबंध रखता है, जिससे सभी लोग जुड़ते हैं।

पवित्रात्मा की अभिव्यक्तियों के कौन-से पहलू हैं? परमेश्वर कभी मानवता में कार्य करता है और कभी दिव्यता में—लेकिन दोनों मामलों में नियंत्रक पवित्रात्मा होता है। लोगों के भीतर जैसी आत्मा होती है, वैसी ही उनकी बाहरी अभिव्यक्ति होती है। पवित्रात्मा सामान्य रूप से कार्य करता है, लेकिन पवित्रात्मा द्वारा उसके निर्देशन के दो भाग हैं : एक भाग उसका मानवता में किया जाने वाला कार्य है, और दूसरा उसका दिव्यता के माध्यम से किया जाने वाला कार्य है। यह तुम्हें अच्छी तरह से जान लेना चाहिए। पवित्रात्मा का कार्य परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग होता है : जब उसके मानवीय कार्य की आवश्यकता होती है, तो पवित्रात्मा इस मानवीय कार्य को निर्देशित करता है; और जब उसके दिव्य कार्य की आवश्यकता होती है, तो उसे करने के लिए सीधे दिव्यता प्रकट होती है। चूँकि परमेश्वर देह में कार्य करता है और देह में प्रकट होता है, इसलिए वह मानवता और दिव्यता दोनों में कार्य करता है। मानवता में उसका कार्य पवित्रात्मा द्वारा निर्देशित होता है और मनुष्यों की दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, परमेश्वर के साथ उनका जुड़ना आसान बनाने के लिए, उन्हें परमेश्वर की वास्तविकता और सामान्यता देखने देने के लिए, और उन्हें यह देखने देने के लिए किया जाता है कि परमेश्वर के पवित्रात्मा ने देह धारण किया है और वह मनुष्यों के बीच है, मनुष्य के साथ रहता है और मनुष्य के साथ जुड़ता है। दिव्यता में उसका कार्य लोगों के जीवन के लिए पोषण प्रदान करने और हर चीज़ में लोगों की सकारात्मक रूप से अगुआई करने, लोगों के स्वभाव को बदलने और उन्हें वास्तव में पवित्रात्मा के देह में प्रकटन को देखने देने के लिए किया जाता है। मुख्य रूप से, मनुष्य के जीवन में वृद्धि सीधे दिव्यता में किए गए परमेश्वर के कार्य और वचनों के माध्यम से प्राप्त की जाती है। केवल दिव्यता में परमेश्वर के कार्य को स्वीकार करके ही लोग अपने स्वभाव में

बदलाव हासिल कर सकते हैं और केवल तभी वे अपनी आत्मा में संतुष्ट हो सकते हैं; केवल इसमें मानवता में किया जाने वाला कार्य—मानवता में परमेश्वर की चरवाही, सहायता और पोषण—जोड़े जाने पर ही परमेश्वर के कार्य के परिणाम पूरी तरह से हासिल किए जा सकते हैं। आज जिस व्यावहारिक परमेश्वर की बात की जाती है, वह मानवता और दिव्यता दोनों में कार्य करता है। व्यावहारिक परमेश्वर के प्रकट होने के माध्यम से उसका सामान्य मानवीय कार्य और जीवन और उसका पूर्णत: दिव्य कार्य हासिल किए जाते हैं। उसकी मानवता और दिव्यता संयुक्त रूप से एक हैं, और दोनों का कार्य वचनों के द्वारा पूरा किया जाता है; मानवता में हो या दिव्यता में, वह वचन बोलता है। जब परमेश्वर मानवता में काम करता है, तो वह मानव की भाषा बोलता है, ताकि लोग उससे जुड़ सकें और उसके वचनों को समझ सकें। उसके वचन स्पष्ट रूप से बोले जाते हैं और समझने में आसान होते हैं, ऐसे कि वे सभी लोगों को प्रदान किए जा सकें; लोग सुशिक्षित हों या अल्पशिक्षित, वे सब परमेश्वर के वचनों को प्राप्त कर सकते हैं। दिव्यता में परमेश्वर का कार्य भी वचनों के द्वारा ही किया जाता है, लेकिन वह पोषण से भरा होता है, जीवन से भरा होता है, मनुष्य की धारणाओं से दूषित नहीं होता, उसमें मनुष्य की प्राथमिकताएँ शामिल नहीं होतीं, और वह मनुष्य की सीमाओं से रहित होता है, वह किसी सामान्य मानवता के बंधनों से बाहर होता है; वह देह में किया जाता है, लेकिन पवित्रात्मा की सीधी अभिव्यक्ति होता है। यदि लोग केवल परमेश्वर द्वारा मानवता में किए गए कार्य को ही स्वीकार करते हैं, तो वे अपने आपको एक दायरे में सीमित कर लेंगे, और एक छोटे-से बदलाव के लिए भी उन्हें कई वर्षों के व्यवहार, काट-छाँट और अनुशासन की आवश्यकता होगी। हालाँकि पवित्र आत्मा के कार्य या उसकी उपस्थिति के बिना वे हमेशा अपने पुराने रास्ते पर लौट जाएँगे; केवल दिव्यता के काम के माध्यम से ही इस तरह की बीमारियाँ और कमियाँ दूर की जा सकती हैं, और केवल तभी लोगों को पूर्ण बनाया जा सकता है। सतत व्यवहार और काट-छाँट के बजाय, जो चीज़ ज़रूरी है वह है सकारात्मक पोषण, सभी कमियों को पूरा करने के लिए वचनों का उपयोग करना, लोगों की हर अवस्था प्रकट करने के लिए वचनों का उपयोग करना, उनके जीवन, उनके प्रत्येक कथन, उनके हर कार्य को निर्देशित करने और उनके इरादों और प्रेरणाओं को खोलकर रख देने के लिए वचनों का उपयोग करना। यही है व्यावहारिक परमेश्वर का वास्तविक कार्य। इसलिए, व्यावहारिक परमेश्वर के प्रति अपने रवैये में तुम्हें उसे पहचानते और स्वीकार करते हुए उसकी मानवता के सामने तत्काल समर्पण करना चाहिए, और साथ ही तुम्हें उसके दिव्य कार्य और वचनों को भी स्वीकार करना और उनका पालन करना

चाहिए। परमेश्वर के देह में प्रकट होने का अर्थ है कि परमेश्वर के पवित्रात्मा के सब कार्य और वचन उसकी सामान्य मानवता, और उसके द्वारा धारित देह के माध्यम किए जाते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का पवित्रात्मा उसके मानवीय कार्य को तत्काल निर्देशित करता है और दिव्यता के कार्य को देह में पूरा करता है, और देहधारी परमेश्वर में तुम परमेश्वर के मानवता में किए गए कार्य और पूर्णत: दिव्य कार्य, दोनों देख सकते हो। व्यावहारिक परमेश्वर के देह में प्रकट होने का यह वास्तविक अर्थ है। यदि तुम इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हो, तो तुम परमेश्वर के सभी विभिन्न भागों से जुड़ पाओगे; तुम उसके दिव्यता में किए गए कार्य को बहुत ज़्यादा महत्व देना, और उसके मानवता में किए गए कार्य को अनुचित रूप से नकारना बंद कर दोगे, और तुम चरम सीमाओं पर नहीं जाओगे, न ही कोई गलत रास्ता पकड़ोगे। कुल मिलाकर, व्यावहारिक परमेश्वर का अर्थ यह है कि उसका मानवता और दिव्यता का कार्य, पवित्रात्मा के निर्देशानुसार, उसके देह के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है, ताकि लोग देख सकें कि वह जीवंत और सजीव, वास्तविक और सत्य है।

परमेश्वर के पवित्रात्मा के मानवता में किए जाने वाले कार्य के परिवर्ती चरण हैं। मनुष्य को पूर्ण करके वह अपनी मानवता को पवित्रात्मा का निर्देश प्राप्त करने में समर्थ बनाता है, जिसके बाद उसकी मानवता कलीसियाओं को पोषण प्रदान करने और उनकी अगुआई करने में सक्षम होती है। यह परमेश्वर के सामान्य कार्य की एक अभिव्यक्ति है। इसलिए, यदि तुम परमेश्वर के मानवता में किए जाने वाले कार्य के सिद्धांतों को अच्छी तरह देख पाते हो, तो तुम्हारे द्वारा परमेश्वर के मानवता में किए जाने वाले कार्य के बारे में धारणाएँ बनाए जाने की संभावना नहीं होगी। चाहे कुछ भी हो, परमेश्वर का पवित्रात्मा गलत नहीं हो सकता। वह सही और त्रुटिरहित है; वह कुछ भी गलत नहीं करता। दिव्य कार्य परमेश्वर की इच्छा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है, उसमें मानवता का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। वह पूर्णता से होकर नहीं गुज़रता, बल्कि सीधे पवित्रात्मा से आता है। फिर भी, यह तथ्य कि वह दिव्यता में कार्य कर सकता है, उसकी सामान्य मानवता के कारण है; यह ज़रा भी अलौकिक नहीं है और किसी सामान्य मनुष्य द्वारा किया जाता प्रतीत होता है। परमेश्वर स्वर्ग से पृथ्वी पर मुख्यत: परमेश्वर के वचनों को देह के माध्यम से व्यक्त करने के लिए, परमेश्वर के पवित्रात्मा का कार्य देह के माध्यम से पूरा करने के लिए आया है।

आज, व्यावहारिक परमेश्वर के बारे में लोगों का ज्ञान बहुत एकतरफा है, और देहधारण के अर्थ के बारे में उनकी समझ अभी भी बहुत कम है। परमेश्वर के देह के साथ, लोग उसके कार्य और वचनों के

माध्यम से देखते हैं कि परमेश्वर के पवित्रात्मा में इतना कुछ शामिल है, कि वह इतना समृद्ध है। लेकिन कुछ भी हो, परमेश्वर की गवाही अंततः परमेश्वर के पवित्रात्मा से आती है : परमेश्वर देह में क्या करता है, वह किन सिद्धांतों के द्वारा कार्य करता है, वह मानवता में क्या करता है, और वह दिव्यता में क्या करता है। लोगों को इसका ज्ञान होना चाहिए। आज, तुम इस व्यक्ति की आराधना करने में सक्षम हो, जबकि वास्तव में तुम पवित्रात्मा की आराधना कर रहे हो, और लोगों को देहधारी परमेश्वर संबंधी अपने ज्ञान में कम से कम यह तो हासिल करना ही चाहिए : देह के माध्यम से पवित्रात्मा के सार को जानना, देह में पवित्रात्मा के दिव्य कार्य और देह में उसके मानवीय कार्य को जानना, पवित्रात्मा द्वारा देह के माध्यम से बोले गए सभी वचनों और कथनों को स्वीकार करना, और यह देखना कि परमेश्वर का पवित्रात्मा कैसे देह को निर्देशित करता है और देह में अपना सामर्थ्य दर्शाता है। अर्थात्, देह के माध्यम से मनुष्य स्वर्ग के पवित्रात्मा को जान जाता है, मनुष्यों के बीच स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर के प्रकटन ने लोगों की धारणाओं से अज्ञात परमेश्वर को गायब कर दिया है। लोगों द्वारा स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर की आराधना ने परमेश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता बढ़ा दी है, और देह में परमेश्वर के पवित्रात्मा के दिव्य कार्य और देह में उसके मानवीय कार्य के माध्यम से मनुष्य प्रकाशन पाता है और उसकी चरवाही की जाती है, और मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन हासिल किए जाते हैं। पवित्रात्मा के देह में आगमन का यह वास्तविक अर्थ है, जिसका मुख्य प्रयोजन यह है कि लोग परमेश्वर से जुड़ सकें, परमेश्वर पर भरोसा कर सकें, और परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

मुख्य रूप से लोगों का व्यावहारिक परमेश्वर के प्रति क्या रवैया होना चाहिए? तुम देहधारण, वचन के देह में प्रकट होने, परमेश्वर के देह में प्रकट होने और व्यावहारिक परमेश्वर के कर्मों के बारे में क्या जानते हो? आज चर्चा के मुख्य मुद्दे क्या हैं? देहधारण, वचन का देह में आना और परमेश्वर का देह में प्रकट होना, ये सब वे मुद्दे हैं, जिन्हें समझा जाना चाहिए। अपनी आध्यात्मिक कद-काठी और युग के आधार पर तुम लोगों को ये मुद्दे धीरे-धीरे समझने चाहिए और अपने जीवन-अनुभव में तुम्हें इनका स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। लोगों द्वारा परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने की प्रक्रिया वही है, जिसके द्वारा वे परमेश्वर के वचनों के देह में प्रकट होने के बारे में जानते हैं। लोग जितना अधिक परमेश्वर के वचनों को अनुभव करते हैं, उतना ही अधिक वे परमेश्वर के पवित्रात्मा को जानते हैं; परमेश्वर के वचनों को समझकर लोग पवित्रात्मा के कार्य के सिद्धांतों को समझते हैं और स्वयं व्यावहारिक परमेश्वर के बारे में जानते हैं। वस्तुतः, जब

परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है और उन्हें प्राप्त करता है, तो वह उन्हें व्यावहारिक परमेश्वर के कर्मों के बारे में जानने दे रहा होता है; वह व्यावहारिक परमेश्वर के कार्य का उपयोग लोगों को देहधारण का वास्तविक अर्थ दिखाने और यह बताने के लिए कर रहा होता है कि परमेश्वर का पवित्रात्मा मनुष्य के सामने वास्तव में प्रकट हुआ है। जब लोग परमेश्वर के द्वारा प्राप्त किए और पूर्ण बनाए जाते हैं, तो व्यावहारिक परमेश्वर की अभिव्यक्तियाँ उन्हें जीत लेती हैं, व्यावहारिक परमेश्वर के वचन उन्हें बदल देते हैं, और उनके भीतर उसका अपना जीवन कार्य करता है, वह उन्हें अपने स्वरूप से भर देता है (चाहे उसका स्वरूप मानवता में हो या दिव्यता में), वह उन्हें अपने वचनों के सार से भर देता है, और उन्हें अपने वचनों को जीने के लिए बाध्य कर देता है। जब परमेश्वर लोगों को प्राप्त करता है, तो ऐसा वह मुख्य रूप से व्यावहारिक परमेश्वर के वचनों और कथनों का उपयोग करके करता है, ताकि लोगों की कमियाँ दूर कर सके, और उनके विद्रोही स्वभाव का न्याय कर सके और उसे उजागर कर सके, जिससे वे वो चीजें प्राप्त कर सकें जिनकी उन्हें ज़रूरत है, और उन्हें दिखा सके कि परमेश्वर उनके बीच आया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यावहारिक परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य प्रत्येक मनुष्य को शैतान के प्रभाव से बचाना, उन्हें मलिन भूमि से दूर ले जाना, और उनके भ्रष्ट स्वभाव को दूर करना है। व्यावहारिक परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने का सबसे गहरा अर्थ एक आदर्श और प्रतिमान के रूप में व्यावहारिक परमेश्वर के साथ सामान्य मानवता को जीने योग्य बनना, और जिस भी रूप में वह कहे, उसी रूप में उसका अभ्यास करते हुए, बिना किसी विचलन या विपथन के, व्यावहारिक परमेश्वर के वचनों और अपेक्षाओं के अनुसार अभ्यास करने और जो वह कहे, उसे प्राप्त करने योग्य बनना है। इस तरह से तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा चुके होगे। जब तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिए जाते हो, तो तुम्हारे पास न केवल पवित्र आत्मा का कार्य होता है; बल्कि मुख्य रूप से तुम व्यावहारिक परमेश्वर की अपेक्षाओं को जी पाते हो। केवल पवित्र आत्मा के कार्य को पा लेने का यह अर्थ नहीं है कि तुम्हारे पास जीवन है। महत्वपूर्ण यह है कि तुम व्यावहारिक परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करने में सक्षम हो या नहीं, जिसका संबंध इस बात से है कि तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा सकते हो या नहीं। देह में व्यावहारिक परमेश्वर के कार्य के ये महानतम अर्थ हैं। कहने का अर्थ यह है कि, परमेश्वर सचमुच और वाकई देह में प्रकट होकर, तथा जीवंत और सजीव होकर, लोगों द्वारा देखा जाकर, देह में पवित्रात्मा का काम वास्तव में करके, और देह में लोगों के लिए एक आदर्श के रूप में काम करके, लोगों के एक समूह को प्राप्त करता है। परमेश्वर का देह में आगमन

मुख्यतः मनुष्य को परमेश्वर के असली कार्यों को देखने में सक्षम बनाने, निराकार पवित्रात्मा को देह में साकार रूप प्रदान करने, और लोगों को स्वयं को देखने देने और स्पर्श करने देने के लिए है। इस तरह से, जिन्हें वह पूर्ण बनाता है, वे उसे जी पाएँगे, उसके द्वारा प्राप्त किए जाएँगे, और वे उसके मनोनुकूल हो जाएँगे। यदि परमेश्वर केवल स्वर्ग में ही बोलता, और वास्तव में पृथ्वी पर न आया होता, तो लोग अब भी परमेश्वर को जानने में असमर्थ होते; वे केवल खोखले सिद्धांत का उपयोग करते हुए परमेश्वर के कर्मों का उपदेश ही दे पाते, और उनके पास परमेश्वर के वचन वास्तविकता के रूप में नहीं होते। परमेश्वर पृथ्वी पर मुख्यतः उन लोगों के लिए एक प्रतिमान और आदर्श का कार्य करने के लिए आया है, जिन्हें उसे प्राप्त करना है; केवल इसी प्रकार लोग वास्तव में परमेश्वर को जान सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं और देख सकते हैं, और केवल तभी वे सच में परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं।

केवल सत्य का अभ्यास करना ही इंसान में वास्तविकता का होना है

परमेश्वर के वचनों को मानते हुए स्थिरता के साथ उनकी व्याख्या करने के योग्य होने का अर्थ यह नहीं है कि तुम्हारे पास वास्तविकता है; बातें इतनी भी सरल नहीं हैं जितनी तुम सोचते हो। तुम्हारे पास वास्तविकता है या नहीं, यह इस बात पर आधारित नहीं है कि तुम क्या कहते हो; अपितु यह इस पर आधारित है कि तुम किसे जीते हो। जब परमेश्वर के वचन तुम्हारा जीवन और तुम्हारी स्वाभाविक अभिव्यक्ति बन जाते हैं, तभी कहा जा सकता है कि तुममें वास्तविकता है और तभी कहा जा सकता है कि तुमने वास्तविक समझ और असल आध्यात्मिक कद हासिल कर लिया है। तुम्हारे अंदर लम्बे समय तक परीक्षा को सहने की क्षमता होनी चाहिए, और तुम्हें उस समानता को जीने के योग्य होना अनिवार्य है, जिसकी अपेक्षा परमेश्वर तुम से करता है; यह मात्र दिखावा नहीं होना चाहिए; बल्कि यह तुम में स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होना चाहिए। तभी तुम में वस्तुतः वास्तविकता होगी और तुम जीवन प्राप्त करोगे। मैं सेवाकर्मियों के परीक्षण का उदाहरण देना चाहता हूँ, जिससे सभी अच्छी तरह से अवगत हैं: सेवाकर्मियों के विषय में कोई भी बड़े-बड़े सिद्धांत बता सकता है। इस विषय के बारे में सभी को अच्छा ज्ञान है; वे लोग इस विषय पर बोलते हैं और हर भाषण पिछले से बेहतर होता है, जैसे कि यह कोई प्रतियोगिता हो। परन्तु, यदि मनुष्य किसी बड़े परीक्षण से न गुजरा हो, तो यह कहना कठिन होगा कि उसके पास देने के लिए अच्छी गवाही है। संक्षेप में, मनुष्य के जीवन जीने में अभी भी बहुत कमी है, यह पूरी तरह से उसकी समझ

के विपरीत है। इसलिए इसका, मनुष्य का वास्तविक आध्यात्मिक कद बनना अभी शेष है, और यह अभी मनुष्य का जीवन नहीं है। क्योंकि मनुष्य के ज्ञान को वास्तविकता में नहीं लाया गया है, उसका आध्यात्मिक कद रेत पर निर्मित एक किले के समान है जो हिल रहा है और ढह जाने की कगार पर है। मनुष्य में बहुत कम वास्तविकता है। मनुष्य में कोई भी वास्तविकता पाना लगभग असम्भव है। मनुष्य से स्वाभाविक रूप से बहुत ही अल्प वास्तविकता प्रवाहित हो रही है और उसके जीवन में समस्त वास्तविकता ज़बरदस्ती लाई गई है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मनुष्य में कोई वास्तविकता नहीं है। हालाँकि लोग ये दावा करते हैं कि परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम कभी परिवर्तित नहीं होता, लेकिन वे ऐसा परीक्षणों का सामना होने से पहले कहते हैं। एक दिन अचानक परीक्षणों से सामना हो जाने पर जो बातें वे कहते हैं, वे फिर से वास्तविकता से मेल नहीं खाएँगी और यह फिर से प्रमाणित करेगा कि मनुष्य में वास्तविकता नहीं है। यह कहा जा सकता है कि जब कभी तुम्हारा सामना उन बातों से होता है, जो तुम्हारी धारणाओं से मेल नहीं खातीं और यह माँग करती हैं कि तुम स्वयं को दरकिनार कर लो, ये ही तुम्हारी परीक्षाएँ होती हैं। परमेश्वर की इच्छा को प्रकट किए जाने से पहले, प्रत्येक मनुष्य एक कठोर परीक्षण, एक बहुत बड़े परीक्षण से गुज़रता है। क्या तुम इस विषय को सुस्पष्टता से समझ सकते हो? जब परमेश्वर मनुष्य की परीक्षा लेना चाहता है, तो वह हमेशा सत्य के तथ्यों को प्रकट करने से पहले मनुष्य को चुनाव करने देता है। कहने का अर्थ यह है कि परमेश्वर जब मनुष्य का परीक्षण ले रहा होता है, तो वह कभी भी तुम्हें सत्य नहीं बताएगा; और इसी प्रकार मनुष्य को उजागर किया जाता है। यह एक विधि है, जिससे परमेश्वर यह जानने के लिए अपना कार्य करता है कि क्या तुम आज के परमेश्वर को जानते हो और साथ ही तुम में कोई वास्तविकता है या नहीं। क्या तुम परमेश्वर के कार्यों को लेकर सन्देहों से सचमुच मुक्त हो? जब तुम पर कोई बड़ा परीक्षण आयेगा तो क्या तुम दृढ़ रह सकोगे? कौन यह कहने की हिम्मत कर सकता है "मैं गारंटी देता हूँ कि कोई समस्या नहीं आएगी?" कौन दृढ़तापूर्वक कहने की हिम्मत कर सकता है, "हो सकता है दूसरों को सन्देह हो, परन्तु मैं कभी भी सन्देह नहीं करूँगा?" यह ठीक वैसे ही है जैसे जब पतरस का परीक्षण हुआ : वह हमेशा सत्य के प्रकट किए जाने से पहले बड़ी-बड़ी बातें करता था। यह पतरस की ही एक अनोखी कमी नहीं थी; यह सबसे बड़ी कठिनाई है, जिसका सामना प्रत्येक मनुष्य वर्तमान में कर रहा है। यदि परमेश्वर के आज के कार्य के तुम्हारे ज्ञान को देखने के लिए मैं कुछ स्थानों पर जाऊँ, या कुछ भाइयों और बहनों से भेंट करूँ, तो तुम सब निश्चित रूप से अपने ज्ञान के विषय में बहुत कुछ कह पाओगे, और ऐसा प्रतीत होगा कि तुम्हारे अंदर

कोई सन्देह नहीं है। यदि मैं तुम से पूछूँ: "क्या तुम वास्तव में तय कर सकते हो कि आज का कार्य स्वयं परमेश्वर के द्वारा किया जा रहा है? बिना किसी सन्देह के?" तुम निश्चित रूप से उत्तर दोगे : "बिना किसी सन्देह के, यह कार्य परमेश्वर के आत्मा के द्वारा ही किया जा रहा है।" एक बार जब तुम इस प्रकार से उत्तर दे दोगे, तो तुम में थोड़ा-सा भी सन्देह नहीं होगा बल्कि तुम बहुत आनन्द का अनुभव कर रहे होगे, यह सोचकर कि तुम ने थोड़ी-सी वास्तविकता प्राप्त कर ली है। जो लोग बातों को इस रीति से समझते हैं, वे ऐसे लोग होते हैं जिनमें बहुत कम वास्तविकता होती है; जो व्यक्ति जितना अधिक सोचता है कि उसने इसे प्राप्त कर लिया है, वह परीक्षणों में उतना ही कम स्थिर रह पाता है। धिक्कार है उन पर जो अहंकारी और दंभी होते हैं, और धिक्कार है उन्हें जिन्हें स्वयं का कोई ज्ञान नहीं है; ऐसे लोग बातें करने में कुशल होते हैं, परन्तु अपनी बातों पर अमल करने में ऐसे लोग बहुत ही खराब होते हैं। छोटी-सी भी समस्या नज़र आते ही ये लोग सन्देह करना आरम्भ कर देते हैं और त्याग देने का विचार उनके मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है। उनमें कोई वास्तविकता नहीं होती; उनके पास मात्र सिद्धान्त हैं, जो धर्म से ऊपर हैं और ये उन समस्त वास्तविकताओं से रहित हैं जिनकी परमेश्वर अभी अपेक्षा करता है। मुझे उनसे अधिक घृणा होती है जो मात्र सिद्धान्तों की बात करते हैं और जिनमें कोई वास्तविकता नहीं होती। जब वे कोई कार्य करते हैं तो जोर-जोर से चिल्लाते हैं, परन्तु जैसे ही उनका सामना वास्तविकता से होता है, वे बिखर जाते हैं। क्या यह ये नहीं दर्शाता कि इन लोगों के पास कोई वास्तविकता नहीं है? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हवा और लहरें कितनी भयंकर हैं, यदि तुम अपने मन में थोड़-सा भी सन्देह किए बिना खड़े रह सकते हो और तुम स्थिर रह सकते हो और उस समय भी इन्कार करने की स्थिति में नहीं रहते हो जब तुम ही अकेले बचते हो, तब यह माना जाएगा कि तुम्हारे पास सच्ची समझ है और वस्तुतः तुम्हारे पास वास्तविकता है। अगर जिधर हवा बहती है यदि तुम भी उधर ही बह जाते हो, तुम भीड़ के पीछे जाते हो और वही कहते हो जो अन्य लोग कह रहे हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कितनी उत्तम रीति से बातें करते हो, यह इस बात का प्रमाण नहीं होगा कि तुम में वास्तविकता है। इसलिए मैं तुम्हें परामर्श देता हूँ कि निरर्थक शब्द बोलने में जल्दबाज़ी न करो। क्या तुम जानते हो परमेश्वर क्या करने वाला है? दूसरे पतरस जैसा व्यवहार मत करो, नहीं तो स्वयं को लज्जित करोगे और तुम अपनी प्रतिष्ठा को बनाए नहीं रख पाओगे—यह किसी का कुछ भला नहीं करता है। अधिकतर व्यक्तियों का कोई असल आध्यात्मिक कद नहीं होता। हालाँकि परमेश्वर ने बहुत-से कार्य किये हैं, परन्तु उसने लोगों पर वास्तविकता प्रकट नहीं की है; यदि सही-

सही कहें तो, परमेश्वर ने कभी किसी को व्यक्तिगत रूप से ताड़ना नहीं दी है। कुछ लोगों को ऐसे परीक्षणों के ज़रिए उजागर किया गया है, उनके पापी हाथ यह सोचकर दूर-दूर तक पहुँच रहे थे कि परमेश्वर का फायदा उठाना आसान है, वे जो चाहे कर सकते हैं। चूँकि वे इस प्रकार के परीक्षण का भी सामना करने के योग्य नहीं हैं, अधिक चुनौतीपूर्ण परीक्षणों का तो सवाल ही नहीं उठता है, वास्तविकता के होने का भी सवाल नहीं उठता। क्या यह परमेश्वर को मूर्ख बनाने का प्रयास नहीं है? वास्तविकता रखना ऐसा कुछ नहीं है जिसमें जालसाजी की जा सके, और न ही यह ऐसा कुछ है, जिसे तुम जान कर प्राप्त कर सकते हो। यह तुम्हारे वास्तविक आध्यात्मिक कद पर निर्भर है, और यह इस बात पर भी निर्भर है कि तुम समस्त परीक्षणों का सामना करने के योग्य हो या नहीं। क्या तुम समझते हो?

मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षा मात्र वास्तविकता के विषय में बात करने के योग्य होना ही नहीं है; अगर ऐसा हो तो क्या यह अति सरल नहीं होगा? तब परमेश्वर जीवन में प्रवेश के विषय में बात क्यों करता है? वह रूपांतरण के विषय में बात क्यों करता है? यदि लोग केवल वास्तविकता की खोखली बातें ही कर पायेंगे, तो क्या वे अपने स्वभाव में रूपांतरण ला सकते हैं? राज्य के अच्छे सैनिक उन लोगों के समूह के रूप में प्रशिक्षित नहीं होते जो मात्र वास्तविकता की बातें करते हैं या डींगें मारते हैं; बल्कि वे हर समय परमेश्वर के वचनों को जीने के लिए प्रशिक्षित होते हैं, ताकि किसी भी असफलता को सामने पाकर वे झुके बिना लगातार परमेश्वर के वचनों के अनुसार जी सकें और वे फिर से संसार में न जाएँ। इसी वास्तविकता के विषय में परमेश्वर बात करता है; और मनुष्य से परमेश्वर की यही अपेक्षा है। इसलिए परमेश्वर द्वारा कही गई वास्तविकता को इतना सरल न समझो। मात्र पवित्र आत्मा के द्वारा प्रबुद्ध होना वास्तविकता रखने के समान नहीं है। मनुष्य का आध्यात्मिक कद ऐसा नहीं है, अपितु यह परमेश्वर का अनुग्रह है और इसमें मनुष्य का कोई योगदान नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को पतरस की पीड़ाएँ सहनी होंगी और इसके अलावा उसमें पतरस का गौरव होना चाहिए जिसे वे परमेश्वर के कार्य प्राप्त कर लेने के बाद जीते हैं। मात्र इसे ही वास्तविकता कहा जा सकता है। यह मत सोचो चूँकि तुम वास्तविकता के विषय में बात कर सकते हो इसलिए तुम्हारे पास वास्तविकता है। यह एक भ्रम है। यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं है और इसके कोई वास्तविक मायने नहीं हैं। भविष्य में ऐसी बातें मत करना—ऐसी बातों को समाप्त कर दो! वे सभी जो परमेश्वर के वचनों की गलत समझ रखते हैं, वे सभी अविश्वासी हैं। उनमें कोई भी वास्तविक ज्ञान नहीं है, उनमें वास्तविक आध्यात्मिक कद होने का तो सवाल ही नहीं है; वे वास्तविकता रहित अज्ञानी लोग

हैं। कहने का अर्थ यह है कि वे सभी जो परमेश्वर के वचनों के सार से बाहर जीवन जीते हैं, वे सभी अविश्वासी हैं। जिन्हें मनुष्यों के द्वारा अविश्वासी समझ लिया गया है, वे परमेश्वर की दृष्टि में जानवर हैं और जिन्हें परमेश्वर के द्वारा अविश्वासी समझा गया है, वे ऐसे लोग हैं जिनके पास जीवन के रूप में परमेश्वर के वचन नहीं हैं। अतः, वे लोग जिनमें परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता नहीं है और वे जो परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन जीने में असफल हो जाते हैं, वे अविश्वासी हैं। परमेश्वर की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा बनाना है जिससे वह परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवनयापन करे। न कि उसे ऐसा व्यक्ति बनाना कि वह केवल वास्तविकता के विषय में बात करे, बल्कि इस योग्य बनाना है कि हर कोई उसके वचनों की वास्तविकता को जी सके। वह वास्तविकता जिसे मनुष्य समझता है, बहुत ही छिछली है, इसका कोई मूल्य नहीं है, यह परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण नहीं कर सकती। यह अत्यधिक तुच्छ है और उल्लेख किए जाने के योग्य तक नहीं है। इसमें बहुत कमी है और यह परमेश्वर की अपेक्षाओं के मानकों से बहुत ही दूर है। तुममें से प्रत्येक व्यक्ति की यह देखने के लिए एक बड़ी जाँच होगी कि तुम में से कौन मात्र अपनी समझ के विषय में बात करना जानता है परन्तु मार्ग नहीं दिखा पाता, और यह देखने के लिए कि तुम में से कौन अनुपयोगी कूड़ा-करकट है। इसे भविष्य में स्मरण रखना। खोखले ज्ञान के विषय में बात मत करना; मात्र अभ्यास के मार्ग, और वास्तविकता के विषय में बात करना। वास्तविक ज्ञान से वास्तविक अभ्यास में पारगमन और फिर अभ्यास करने से वास्तविकता के जीवनयापन में पारगमन। दूसरों को उपदेश मत दो और वास्तविक ज्ञान के विषय में बात मत करो। यदि तुम्हारी समझ कोई मार्ग है, तो इसके अनुसार जो कहना है मुक्त रूप से कहो; यदि यह मार्ग नहीं है, तब कृपा करके चुपचाप बैठ जाओ और बात करना बन्द कर दो! जो कुछ तुम कहते हो वह बेकार है। तुम परमेश्वर को मूर्ख बनाने और दूसरों को जलाने के लिए समझदारी की बातें करते हो। क्या यही तुम्हारी अभिलाषा नहीं है? क्या यह जानबूझकर दूसरों के साथ खिलवाड़ करना नहीं है? क्या इसका कोई मूल्य है? अगर अनुभव करने के बाद तुम समझदारी की बातें करोगे तो तुम्हें डींगें मारने वाला नहीं कहा जायेगा, अन्यथा तुम मात्र एक ऐसे व्यक्ति होगे जो घमण्ड की बातें करता रहता है। तुम्हारे वास्तविक अनुभव में ऐसी अनेक बातें हैं जिन पर तुम काबू नहीं पा सकते और तुम अपनी देह से विद्रोह नहीं कर सकते; तुम हमेशा वही करते हो जो तुम करना चाहते हो, कभी परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट नहीं करते, परन्तु फिर भी तुम में सैद्धान्तिक ज्ञान की बात करने की हिम्मत है। तुम बेशर्म हो! तुम परमेश्वर के वचनों की अपनी समझ की बात करने की हिमाकत करते हो—तुम

कितने ढीठ हो! उपदेश देना और डींगें मारना तुम्हारी प्रवृति बन चुकी है, और तुम ऐसा करने के अभ्यस्त हो चुके हो। जब कभी भी तुम बात करना चाहते हो तो तुम सरलता से ऐसा कर लेते हो और जब अभ्यास करने की बात आती है तब तुम साज-सज्जा में डूब जाते हो। क्या यह दूसरों को मूर्ख बनाना नहीं है? तुम मनुष्यों को मूर्ख बना सकते हो, परन्तु परमेश्वर को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। मनुष्यों को पता नहीं होता और न ही उनमें पहचानने की योग्यता होती है, परन्तु परमेश्वर ऐसे मसलों के विषय में गम्भीर है, और वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। हो सकता है तुम्हारे भाई और बहनें तुम्हारा समर्थन करें, तुम्हारे ज्ञान की प्रशंसा करें, तुम्हारी सराहना करें, परन्तु यदि तुम में वास्तविकता नहीं है, तो पवित्र आत्मा तुम्हें नहीं छोड़ेगा। सम्भवतः व्यवहारिक परमेश्वर तुम्हारी गलतियों को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का आत्मा तुम्हारी ओर ध्यान नहीं देगा, और तुम इसे सह नहीं पाओगे। क्या तुम इस पर विश्वास करते हो? अभ्यास की वास्तविकता के विषय में अधिक बात करो; क्या तुम वह पहले ही भूल चुके हो? "उथले सिद्धान्तों की बात और निस्सार वार्तालाप कम करो; अभी से अभ्यास आरम्भ करना सर्वोत्तम है।" क्या तुम ये वचन भूल चुके हो? क्या तुम इसे बिल्कुल नहीं समझते? क्या तुम्हारे अंदर परमेश्वर की इच्छा की कोई समझ नहीं है?

आज परमेश्वर के कार्य को जानना

इन दिनों परमेश्वर के कार्य को जानना, अधिकांशतः यह जानना है कि अंत के दिनों के देहधारी परमेश्वर की मुख्य सेवकाई क्या है और पृथ्वी पर वह क्या करने के लिए आया है। मैंने पहले अपने वचनों में उल्लेख किया है कि परमेश्वर पृथ्वी पर (अंत के दिनों के दौरान) प्रस्थान से पहले हमारे सामने एक प्रतिमान स्थापित करने के लिए आया है। परमेश्वर यह प्रतिमान कैसे स्थापित करता है? ऐसा वह वचन बोलकर, और धरती पर सर्वत्र कार्य करके और बोलकर करता है। अंत के दिनों में यही परमेश्वर का कार्य है; वह पृथ्वी को वचनों का संसार बनाने के लिए केवल बोलता है, ताकि उसके वचन प्रत्येक व्यक्ति को पोषण दें और प्रबुद्ध करें, और ताकि मनुष्य की आत्मा जाग्रत हो और दर्शनों के बारे में स्पष्टता प्राप्त करे। अंत के दिनों के दौरान देहधारी परमेश्वर पृथ्वी पर मुख्य रूप से वचन बोलने के लिए ही आया है। जब यीशु आया, तो उसने स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैलाया, और उसने सलीब पर चढ़कर छुटकारा दिलाने का कार्य संपन्न किया। उसने व्यवस्था के युग का अंत किया और उस सबको मिटा दिया, जो पुराना था। यीशु के आगमन से व्यवस्था के युग का अंत हो गया और अनुग्रह का युग आरंभ हुआ; अंत के दिनों के देहधारी

परमेश्वर का आगमन अनुग्रह के युग का अंत करने आया है। वह मुख्य रूप से अपने वचन बोलने, मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए वचनों का उपयोग करने, मनुष्य को रोशन और प्रबुद्ध करने, और मनुष्य के हृदय के भीतर से अज्ञात परमेश्वर का स्थान हटाने के लिए आया है। यह कार्य का वह चरण नहीं है, जो यीशु ने तब किया था, जब वह आया था। जब यीशु आया, तब उसने कई चमत्कार किए, उसने बीमारों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, और सलीब पर चढ़कर छुटकारा दिलाने का कार्य किया। परिणामस्वरूप, लोग अपनी धारणाओं के अनुसार यह मानते हैं कि परमेश्वर को ऐसा ही होना चाहिए। क्योंकि जब यीशु आया, उसने मनुष्य के हृदय से अज्ञात परमेश्वर की छवि हटाने का कार्य नहीं किया; जब वह आया, उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया, उसने बीमारों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, और उसने स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैलाया। एक दृष्टि से, अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर का देहधारण मनुष्य की धारणाओं में अज्ञात परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए गए स्थान को हटाता है, ताकि मनुष्य के हृदय में अज्ञात परमेश्वर की छवि अब और न रहे। अपने वास्तविक कार्य और वास्तविक वचनों, समस्त देशों में अपने आवागमन, और मनुष्यों के बीच वह जो असाधारण रूप से वास्तविक और सामान्य कार्य करता है, उस सबके माध्यम से वह मनुष्य के लिए परमेश्वर की वास्तविकता जानने का निमित्त बनता है, और मनुष्य के हृदय से अज्ञात परमेश्वर का स्थान हटाता है। दूसरी दृष्टि से, परमेश्वर अपने देह द्वारा कहे गए वचनों का उपयोग मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए, और समस्त कामों को पूरा करने के लिए करता है। अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर यही कार्य संपन्न करेगा।

तुम लोगों को क्या पता होना चाहिए :

1. परमेश्वर का कार्य अलौकिक नहीं है, और तुम्हें इसके बारे में धारणाएँ नहीं पालनी चाहिए।

2. तुम लोगों को वह मुख्य कार्य समझना चाहिए, जिसे देहधारी परमेश्वर इस बार करने के लिए आया है।

वह बीमारों को चंगा करने, या दुष्टात्माओं को बाहर निकालने, या चमत्कार दिखाने नहीं आया है, और वह पश्चात्ताप का सुसमाचार फैलाने, या मनुष्य को छुटकारा दिलाने के लिए नहीं आया है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यीशु यह कार्य पहले ही कर चुका है, और परमेश्वर उसी कार्य को दोहराता नहीं। आज, परमेश्वर अनुग्रह के युग का अंत करने और अनुग्रह के युग की सभी प्रथाओं को बहिष्कृत करने आया है।

व्यावहारिक परमेश्वर मुख्य रूप से यह दिखाने के लिए आया है कि वह वास्तविक है। जब यीशु आया, तो उसने कुछ वचन कहे; उसने मुख्य रूप से अचंभे दिखाए, चिह्न और चमत्कार प्रदर्शित किए, और बीमारों को चंगा किया तथा दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, या फिर उसने लोगों को विश्वास दिलाने और उन्हें यह दिखाने के लिए कि वह वास्तव में परमेश्वर है, और यह कि वह निष्पक्ष परमेश्वर है, भविष्यवाणियाँ कीं। अंततः उसने सलीब पर चढ़ने का कार्य पूरा किया। आज का परमेश्वर चिह्न और चमत्कार प्रदर्शित नहीं करता, न ही वह बीमारों को चंगा करता और दुष्टात्माओं को बाहर निकालता है। जब यीशु आया, तो उसने जो कार्य किया, वह परमेश्वर के एक भाग का प्रतिनिधित्व करता था, परंतु इस बार परमेश्वर कार्य के उस चरण को करने आया है जो शेष है, क्योंकि परमेश्वर वही कार्य दोहराता नहीं है; वह ऐसा परमेश्वर है जो सदैव नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता, और इसलिए तुम आज जो भी देखते हो, वह व्यावहारिक परमेश्वर के वचन और कार्य हैं।

अंत के दिनों का देहधारी परमेश्वर मुख्य रूप से अपने वचनों को कहने, वह सब समझाने जो मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक है, वह बताने जिसमें मनुष्य को प्रवेश करना चाहिए, मनुष्य को परमेश्वर के कर्मों को दिखाने, और मनुष्य को परमेश्वर की बुद्धि, सर्वशक्तिमत्ता और चमत्कारिकता दिखाने के लिए आया है। परमेश्वर जिन कई तरीक़ों से बातचीत करता है, उनके माध्यम से मनुष्य परमेश्वर की सर्वोच्चता, परमेश्वर की महत्ता, और इतना ही नहीं, परमेश्वर की विनम्रता और अदृश्यता को निहारता है। मनुष्य देखता है कि परमेश्वर सर्वोच्च है, परंतु वह विनम्र और छिपा हुआ है, और सबसे छोटा हो सकता है। उसके कुछ वचन सीधे पवित्रात्मा के दृष्टिकोण से कहे गए हैं, कुछ सीधे मनुष्य के दृष्टिकोण से, और कुछ तीसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से। इसमें यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर के कार्य करने का ढंग बहुत भिन्न-भिन्न है, और वह इसे वचनों के माध्यम से ही मनुष्य को देखने देता है। अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर का कार्य सामान्य और वास्तविक दोनों है, और इस प्रकार अंत के दिनों में लोगों के समूह को समस्त परीक्षणों में से सबसे बड़े परीक्षण से गुज़ारा जाता है। परमेश्वर की सामान्यता और वास्तविकता के कारण, सभी लोग ऐसे परीक्षणों में प्रविष्ट हुए हैं; अगर मनुष्य परमेश्वर के परीक्षणों में उतरा है, तो उसका कारण परमेश्वर की सामान्यता और वास्तविकता ही है। यीशु के युग के दौरान कोई धारणाएँ या परीक्षण नहीं थे। चूँकि यीशु द्वारा किया गया अधिकांश कार्य मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप था, इसलिए लोगों ने उसका अनुसरण किया, और उसके बारे में उनकी कोई धारणाएँ नहीं थीं। आज के परीक्षण मनुष्य द्वारा अब तक झेले गए

परीक्षणों में सबसे बड़े हैं, और जब यह कहा जाता है कि ये लोग दारुण दुःख से निकल आए हैं, तो उसका अर्थ यही दारुण दुःख है। आज परमेश्वर इन लोगों में विश्वास, प्रेम, पीड़ा की स्वीकृति और आज्ञाकारिता उत्पन्न करने के लिए बोलता है। अंत के दिनों के देहधारी परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन मनुष्य की प्रकृति के सार, मनुष्य के व्यवहार, और आज जिसमें मनुष्य को प्रवेश करना चाहिए, उसके अनुरूप हैं। उसके वचन वास्तविक और सामान्य दोनों हैं : वह आने वाले कल की बात नहीं करता है, न ही वह पीछे मुड़कर बीते हुए कल को देखता है; वह केवल उसी की बात करता है जिसमें आज प्रवेश करना चाहिए, जिसे आज अभ्यास में लाना चाहिए और जिसे आज समझना चाहिए। यदि वर्तमान समय में ऐसा कोई व्यक्ति उभरे, जो चिह्न और चमत्कार प्रदर्शित करने, दुष्टात्माओं को निकालने, बीमारों को चंगा करने और कई चमत्कार दिखाने में समर्थ हो, और यदि वह व्यक्ति दावा करे कि वह यीशु है जो आ गया है, तो यह बुरी आत्माओं द्वारा उत्पन्न नकली व्यक्ति होगा, जो यीशु की नकल उतार रहा होगा। यह याद रखो! परमेश्वर वही कार्य नहीं दोहराता। कार्य का यीशु का चरण पहले ही पूरा हो चुका है, और परमेश्वर कार्य के उस चरण को पुनः कभी हाथ में नहीं लेगा। परमेश्वर का कार्य मनुष्य की धारणाओं के साथ मेल नहीं खाता; उदाहरण के लिए, पुराने नियम ने मसीहा के आगमन की भविष्यवाणी की, और इस भविष्यवाणी का परिणाम यीशु का आगमन था। चूँकि यह पहले ही घटित हो चुका है, इसलिए एक और मसीहा का पुनः आना ग़लत होगा। यीशु एक बार पहले ही आ चुका है, और यदि यीशु को इस समय फिर आना पड़ा, तो यह गलत होगा। प्रत्येक युग के लिए एक नाम है, और प्रत्येक नाम में उस युग का चरित्र-चित्रण होता है। मनुष्य की धारणाओं के अनुसार, परमेश्वर को सदैव चिह्न और चमत्कार दिखाने चाहिए, सदैव बीमारों को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना चाहिए, और सदैव ठीक यीशु के समान होना चाहिए। परंतु इस बार परमेश्वर इसके समान बिल्कुल नहीं है। यदि अंत के दिनों के दौरान, परमेश्वर अब भी चिह्नों और चमत्कारों को प्रदर्शित करे, और अब भी दुष्टात्माओं को निकाले और बीमारों को चंगा करे—यदि वह बिल्कुल यीशु की तरह करे—तो परमेश्वर वही कार्य दोहरा रहा होगा, और यीशु के कार्य का कोई महत्व या मूल्य नहीं रह जाएगा। इसलिए परमेश्वर प्रत्येक युग में कार्य का एक चरण पूरा करता है। ज्यों ही उसके कार्य का प्रत्येक चरण पूरा होता है, बुरी आत्माएँ शीघ्र ही उसकी नकल करने लगती हैं, और जब शैतान परमेश्वर के बिल्कुल पीछे-पीछे चलने लगता है, तब परमेश्वर तरीक़ा बदलकर भिन्न तरीक़ा अपना लेता है। ज्यों ही परमेश्वर ने अपने कार्य का एक चरण पूरा किया, बुरी आत्माएँ उसकी नकल कर लेती हैं। तुम लोगों को

इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए। आज परमेश्वर का कार्य यीशु के कार्य से भिन्न क्यों है? आज परमेश्वर चिह्नों और चमत्कारों का प्रदर्शन, पिशाचों का बहिष्करण और बीमारों को चंगा क्यों नहीं करता? यदि यीशु का कार्य व्यवस्था के युग के दौरान किए गए कार्य के समान ही होता, तो क्या वह अनुग्रह के युग के परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर पाता? क्या वह सलीब पर चढ़ने का कार्य पूरा कर पाता? यदि व्यवस्था के युग की तरह यीशु मंदिर में गया होता और उसने सब्त को माना होता, तो उसे कोई नहीं सताता और सब उसे गले लगाते। यदि ऐसा होता, तो क्या उसे सलीब पर चढ़ाया जा सकता था? क्या वह छुटकारे का कार्य पूरा कर सकता था? यदि अंत के दिनों का देहधारी परमेश्वर यीशु के समान चिह्न और चमत्कार दिखाता, तो इसमें भला कौन-सी खास बात होती? यदि परमेश्वर अंत के दिनों के दौरान अपने कार्य का दूसरा भाग करता है, जो उसकी प्रबंधन योजना के भाग का प्रतिनिधित्व करता है, तो केवल तभी मनुष्य परमेश्वर का अधिक गहरा ज्ञान प्राप्त कर सकता है, और केवल तभी परमेश्वर की प्रबंधन योजना पूर्ण हो सकती है।

अंत के दिनों के दौरान, परमेश्वर मुख्य रूप से अपने वचन बोलने के लिए आया है। वह पवित्रात्मा के दृष्टिकोण से, मनुष्य के दृष्टिकोण से, और तीसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से बोलता है; वह एक समयावधि के लिए एक तरीक़े का प्रयोग करते हुए, भिन्न-भिन्न तरीकों से बोलता है, और वह बोलने की पद्धति का उपयोग मनुष्य की धारणाओं को बदलने और मनुष्य के हृदय से अज्ञात परमेश्वर की छवि हटाने के लिए करता है। यही परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला मुख्य कार्य है। चूँकि मनुष्य मानता है कि परमेश्वर बीमारों को चंगा करने, दुष्टात्माओं को निकालने, चमत्कार दिखाने और मनुष्य पर भौतिक आशीष न्योछावर करने के लिए आया है, इसलिए परमेश्वर कार्य का—ताड़ना और न्याय के कार्य का—यह चरण पूरा करता है, ताकि मनुष्य की धारणाओं में से ऐसी बातों को निकाल सके, ताकि मनुष्य परमेश्वर की वास्तविकता और सामान्यता को जान सके, और ताकि उसके हृदय से यीशु की छवि हटाकर उसके स्थान पर परमेश्वर की एक नई छवि स्थापित कर सके। मनुष्यों के हृदयों में परमेश्वर की छवि ज्यों ही पुरानी पड़ती है, त्यों ही वह मूर्ति बन जाती है। जब यीशु आया और उसने कार्य का वह चरण पूरा किया, तब वह परमेश्वर की संपूर्णता का प्रतिनिधित्व नहीं करता था। उसने कुछ चिह्न और चमत्कार प्रदर्शित किए, कुछ वचन बोले, और अंततः सलीब पर चढ़ा दिया गया। उसने परमेश्वर के एक भाग का प्रतिनिधित्व किया। वह परमेश्वर के समग्र रूप का प्रतिनिधित्व नहीं कर सका, बल्कि उसने परमेश्वर के कार्य के एक भाग को करने में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया। ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर बहुत महान, बहुत अद्भुत और अथाह है, और वह

प्रत्येक युग में अपने कार्य का बस एक भाग ही करता है। इस युग के दौरान परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य मुख्य रूप से मनुष्य के जीवन के लिए वचनों का पोषण देना; मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव और उसकी प्रकृति के सार को उजागर करना; और धर्म संबंधी धारणाओं, सामंती सोच, पुरानी पड़ चुकी सोच, और मनुष्य के ज्ञान और संस्कृति को समाप्त करना है। इन सभी चीजों को परमेश्वर के वचनों द्वारा उजागर करने के माध्यम से शुद्ध किया जाना है। अंत के दिनों में, मनुष्य को पूर्ण करने के लिए परमेश्वर चिह्नों और चमत्कारों का नहीं, वचनों का उपयोग करता है। वह मनुष्य को उजागर करने, उसका न्याय करने, उसे ताड़ना देने और उसे पूर्ण बनाने के लिए वचनों का उपयोग करता है, ताकि परमेश्वर के वचनों में मनुष्य परमेश्वर की बुद्धि और मनोरमता देखने लगे, और परमेश्वर के स्वभाव को समझने लगे, और ताकि परमेश्वर के वचनों के माध्यम से मनुष्य परमेश्वर के कर्मों को निहारे। व्यवस्था के युग के दौरान यहोवा अपने वचनों से मूसा को मिस्र से बाहर ले गया, और उसने इस्राएलियों को कुछ वचन बोले; उस समय, परमेश्वर के कर्मों का अंश प्रकट कर दिया गया था, परंतु चूँकि मनुष्य की क्षमता सीमित थी और कोई भी चीज उसके ज्ञान को पूर्ण नहीं बना सकती थी, इसलिए परमेश्वर बोलता और कार्य करता रहा। अनुग्रह के युग में मनुष्य ने एक बार फिर परमेश्वर के कर्मों का अंश देखा। यीशु चिह्न और चमत्कार दिखा पाया, बीमारों को चंगा कर पाया और दुष्टात्माओं को निकाल पाया, और सलीब पर चढ़ पाया, जिसके तीन दिन बाद वह पुनर्जीवित हुआ और देह में मनुष्य के सामने प्रकट हुआ। परमेश्वर के बारे में मनुष्य इससे अधिक कुछ नहीं जानता। मनुष्य उतना ही जानता है, जितना परमेश्वर उसे दिखाता है, और यदि परमेश्वर मनुष्य को और अधिक न दिखाए, तो यह परमेश्वर के बारे में मनुष्य के परिसीमन की सीमा होगी। इसलिए परमेश्वर कार्य करता रहता है, ताकि उसके बारे में मनुष्य का ज्ञान अधिक गहरा हो सके और वह धीरे-धीरे परमेश्वर के सार को जान जाए। अंत के दिनों में, परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए अपने वचनों का उपयोग करता है। परमेश्वर के वचनों द्वारा तुम्हारा भ्रष्ट स्वभाव प्रकट किया जाता है, और तुम्हारी धर्म संबंधी धारणाओं को परमेश्वर की वास्तविकता से बदल दिया जाता है। अंत के दिनों का देहधारी परमेश्वर मुख्य रूप से अपने इन वचनों को पूरा करने आया है, "वचन देह बन जाता है, वचन देह में आता है, और वचन देह में प्रकट होता है", और यदि तुम्हें इसका पूरा ज्ञान नहीं है, तो तुम दृढ़ता से खड़े नहीं रह पाओगे। अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर की मंशा मुख्य रूप से कार्य के उस चरण को पूरा करने की है, जिसमें वचन देह में प्रकट होता है, और यह परमेश्वर की प्रबंधन योजना का एक भाग है। इसलिए तुम लोगों का ज्ञान

स्पष्ट होना चाहिए; परमेश्वर चाहे जैसे कार्य करे, किंतु वह मनुष्य को अपनी सीमा निर्धारित नहीं करने देता। यदि परमेश्वर अंत के दिनों के दौरान यह कार्य न करता, तो उसके बारे में मनुष्य का ज्ञान इससे आगे न जा पाता। तुम्हें बस इतना पता होगा कि परमेश्वर को सलीब पर चढ़ाया जा सकता है और वह सदोम को नष्ट कर सकता है, और यीशु मरकर भी उठ सकता और पतरस के सामने प्रकट हो सकता है...। परंतु तुम यह कभी नहीं कहोगे कि परमेश्वर के वचन सब-कुछ संपन्न कर सकते हैं और मनुष्य को जीत सकते हैं। केवल परमेश्वर के वचनों का अनुभव करके ही तुम ऐसी ज्ञान की बातें बोल सकते हो, और जितना अधिक तुम परमेश्वर के कार्य का अनुभव करोगे, उसके बारे में तुम्हारा ज्ञान उतना ही अधिक विस्तृत हो जाएगा। केवल तभी तुम परमेश्वर को अपनी धारणाओं की सीमाओं में बाँधना बंद करोगे। मनुष्य परमेश्वर के कार्य का अनुभव करके ही उसे जानता है; परमेश्वर को जानने का कोई और सही मार्ग नहीं है। आज कई लोग हैं, जो चिह्न और चमत्कार तथा महा आपदाओं का समय देखने की प्रतीक्षा करने के अलावा और कुछ नहीं करते। तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, या तुम महा आपदाओं में विश्वास करते हो? जब महा आपदाएँ आएँगी, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी, और यदि परमेश्वर महा आपदाएँ नहीं भेजता, तो क्या तब वह परमेश्वर नहीं है? तुम चिह्नों और चमत्कारों में विश्वास करते हो, या तुम स्वयं परमेश्वर में विश्वास करते हो? जब दूसरों ने यीशु का मज़ाक उड़ाया, तो उसने चिह्न और चमत्कार नहीं दिखाए; किंतु क्या वह परमेश्वर नहीं था? तुम चिह्नों और चमत्कारों में विश्वास करते हो, या तुम परमेश्वर के सार में विश्वास करते हो? परमेश्वर में विश्वास के बारे में मनुष्य के विचार ग़लत हैं! यहोवा ने व्यवस्था के युग के दौरान बहुत-से वचन कहे, किंतु उनमें से कुछ आज भी पूरे होने बाकी हैं। क्या तुम कह सकते हो कि यहोवा परमेश्वर नहीं था?

आज, तुम सभी लोगों को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि अंत के दिनों में परमेश्वर द्वारा मुख्य रूप से "वचन देहधारी होता है" का तथ्य साकार किया जाता है। पृथ्वी पर अपने वास्तविक कार्य के माध्यम से वह इस बात का निमित्त बनता है कि मनुष्य उसे जाने, उसके साथ जुड़े और उसके वास्तविक कर्मों को देखे। वह मनुष्य के लिए यह स्पष्ट रूप से देखने का निमित्त बनता है कि वह चिह्न और चमत्कार दिखाने में सक्षम है और ऐसा समय भी आता है, जब वह ऐसा करने में अक्षम होता है; यह युग पर निर्भर करता है। इससे तुम देख सकते हो कि परमेश्वर चिह्न और चमत्कार दिखाने में अक्षम नहीं है, बल्कि इसके बजाय वह अपने कार्य का ढंग, किए जाने वाले कार्य और युग के अनुसार बदल देता है। कार्य के वर्तमान चरण में वह

चिह्न और चमत्कार नहीं दिखाता; यीशु के युग में उसने कुछ चिह्न और चमत्कार दिखाए थे, तो वह इसलिए, क्योंकि उस युग में उसका कार्य भिन्न था। परमेश्वर आज वह कार्य नहीं करता, और कुछ लोग मानते हैं कि वह चिह्न और चमत्कार दिखाने में अक्षम है, या फिर वे सोचते हैं कि यदि वह चिह्न और चमत्कार नहीं दिखाता, तो वह परमेश्वर नहीं है। क्या यह एक भ्रांति नहीं है? परमेश्वर चिह्न और चमत्कार दिखाने में सक्षम है, परंतु वह एक भिन्न युग में कार्य कर रहा है, और इसलिए वह ऐसे कार्य नहीं करता। चूँकि यह एक भिन्न युग है, और चूँकि यह परमेश्वर के कार्य का एक भिन्न चरण है, इसलिए परमेश्वर द्वारा प्रकट किए जाने वाले कर्म भी भिन्न हैं। परमेश्वर में मनुष्य का विश्वास चिह्नों और चमत्कारों में विश्वास करना नहीं है, न ही अजूबों पर विश्वास करना है, बल्कि नए युग के दौरान उसके वास्तविक कार्य में विश्वास करना है। मनुष्य परमेश्वर को उसके कार्य करने के ढंग के माध्यम से जानता है, और यही ज्ञान मनुष्य के भीतर परमेश्वर में विश्वास, अर्थात परमेश्वर के कार्य और कर्मों में विश्वास, उत्पन्न करता है। कार्य के इस चरण में परमेश्वर मुख्य रूप से बोलता है। चिह्न और चमत्कार देखने की प्रतीक्षा मत करो, तुम कोई चिह्न और चमत्कार नहीं देखोगे! ऐसा इसलिए है, क्योंकि तुम अनुग्रह के युग में पैदा नहीं हुए थे। यदि हुए होते, तो तुम चिह्न और चमत्कार देख पाते, परंतु तुम अंत के दिनों के दौरान पैदा हुए हो, और इसलिए तुम केवल परमेश्वर की वास्तविकता और सामान्यता देख सकते हो। अंत के दिनों के दौरान अलौकिक यीशु को देखने की अपेक्षा मत करो। तुम केवल व्यावहारिक देहधारी परमेश्वर को ही देखने में सक्षम हो, जो किसी भी सामान्य मनुष्य से भिन्न नहीं है। प्रत्येक युग में परमेश्वर विभिन्न कर्म प्रकट करता है। प्रत्येक युग में वह परमेश्वर के कर्मों का अंश प्रकट करता है, और प्रत्येक युग का कार्य परमेश्वर के स्वभाव के एक भाग का और परमेश्वर के कर्मों के एक भाग का प्रतिनिधित्व करता है। वह जो कर्म प्रकट करता है, वे हर उस युग के साथ बदलते जाते हैं जिसमें वह कार्य करता है, परंतु वे सब मनुष्य को परमेश्वर का अधिक गहरा ज्ञान, परमेश्वर में अधिक सच्चा और अधिक यथार्थपरक विश्वास प्रदान करते हैं। मनुष्य परमेश्वर में उसके समस्त कर्मों के कारण विश्वास करता है, क्योंकि वह इतना चमत्कारी, इतना महान है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान और अथाह है। यदि तुम परमेश्वर में इसलिए विश्वास करते हो, क्योंकि वह चिह्न और चमत्कार प्रदर्शित करने में सक्षम है और बीमारों को चंगा कर सकता और पिशाचों को बाहर निकाल सकता है, तो तुम्हारा विचार ग़लत है, और कुछ लोग तुमसे कहेंगे, "क्या दुष्टात्माएँ भी इस तरह की चीजें करने में सक्षम नहीं हैं?" क्या यह परमेश्वर की छवि को शैतान की छवि के साथ गड्डमड्ड नहीं कर देता? आज, परमेश्वर में

मनुष्य का विश्वास परमेश्वर के कई कर्मों और उसके द्वारा किए जा रहे कार्य की विशाल मात्रा और उसके बोलने के अनेक तरीक़ों के कारण है। परमेश्वर अपने कथनों का उपयोग मनुष्य को जीतने और उसे पूर्ण बनाने के लिए करता है। मनुष्य परमेश्वर में उसके कई कर्मों के कारण विश्वास करता है, इसलिए नहीं कि वह चिह्न और चमत्कार दिखाने में सक्षम है; लोग परमेश्वर को केवल उसके कर्मों को देखकर ही जानते हैं। परमेश्वर के वास्तविक कर्मों को जानकर ही—वह कैसे कार्य करता है, कौन-सी बुद्धिमत्तापूर्ण पद्धतियों का उपयोग करता है, कैसे बोलता है और मनुष्य को कैसे पूर्ण बनाता है—केवल इन पहलुओं को जानकर ही तुम परमेश्वर की वास्तविकता को बूझ सकते हो और उसके स्वभाव को समझ सकते हो, यह जानकर कि वह क्या पसंद करता है, किससे घृणा करता है और मनुष्य के ऊपर कैसे कार्य करता है। परमेश्वर की पसंद और नापसंद समझकर तुम सकारात्मक और नकारात्मक के बीच भेद कर सकते हो, और परमेश्वर के बारे में तुम्हारे ज्ञान के माध्यम से तुम्हारे जीवन में प्रगति होती है। संक्षेप में, तुम्हें परमेश्वर के कार्य का ज्ञान प्राप्त करना ही चाहिए, और तुम्हें परमेश्वर में विश्वास करने के बारे में अपने विचारों को दुरुस्त अवश्य कर लेना चाहिए।

क्या परमेश्वर का कार्य उतना सरल है जितना मनुष्य कल्पना करता है?

परमेश्वर के विश्वासी होने के नाते, तुममें से प्रत्येक को सराहना करनी चाहिए कि अंत के दिनों के परमेश्वर का कार्य ग्रहण करके और उसकी योजना का वह कार्य ग्रहण करके जो आज वह तुममें करता है, तुमने किस तरह अधिकतम उत्कर्ष और उद्धार सचमुच प्राप्त कर लिया है। परमेश्वर ने लोगों के इस समूह को समस्त ब्रह्माण्ड भर में अपने कार्य का एकमात्र केंद्रबिंदु बनाया है। उसने तुम लोगों के लिए अपने हृदय का रक्त तक निचोड़कर दे दिया है; उसने ब्रह्माण्ड भर में पवित्रात्मा का समस्त कार्य पुनः प्राप्त करके तुम लोगों को दे दिया है। इसी कारण से मैं कहता हूँ कि तुम लोग सौभाग्यशाली हो। इतना ही नहीं, वह अपनी महिमा इस्राएल, उसके चुने हुए लोगों से हटाकर तुम लोगों के ऊपर ले आया है, और वह इस समूह के माध्यम से अपनी योजना का उद्देश्य पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष करेगा। इसलिए तुम लोग ही वह हो जो परमेश्वर की विरासत प्राप्त करोगे, और इससे भी अधिक, तुम परमेश्वर की महिमा के वारिस हो। तुम सब लोगों को शायद ये वचन स्मरण हों : "क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही

महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।" तुम सब लोगों ने पहले भी ये वचन सुने हैं, किंतु तुममें से कोई भी इनका सच्चा अर्थ नहीं समझा। आज, तुम उनकी सच्ची महत्ता से गहराई से अवगत हो। ये वचन परमेश्वर द्वारा अंत के दिनों के दौरान पूरे किए जाएँगे, और वे उन लोगों में पूरे किए जाएँगे जिन्हें बड़े लाल अजगर द्वारा निर्दयतापूर्वक उत्पीड़ित किया गया है, उस देश में जहाँ वह कुण्डली मारकर बैठा है। बड़ा लाल अजगर परमेश्वर को सताता है और परमेश्वर का शत्रु है, और इसीलिए, इस देश में, परमेश्वर में विश्वास करने वाले लोगों को इस प्रकार अपमान और अत्याचार का शिकार बनाया जाता है, और परिणामस्वरूप, ये वचन तुम लोगों में, लोगों के इस समूह में, पूरे किए जाते हैं। चूँकि परमेश्वर का कार्य उस देश में आरंभ किया जाता है जो परमेश्वर का विरोध करता है, इसलिए परमेश्वर के कार्य को भयंकर बाधाओं का सामना करना पड़ता है, और उसके बहुत-से वचनों को संपन्न करने में समय लगता है; इस प्रकार, परमेश्वर के वचनों के परिणामस्वरूप लोग शुद्ध किए जाते हैं, जो कष्ट झेलने का भाग भी है। परमेश्वर के लिए बड़े लाल अजगर के देश में अपना कार्य करना अत्यंत कठिन है—परंतु इसी कठिनाई के माध्यम से परमेश्वर अपने कार्य का एक चरण पूरा करता है, अपनी बुद्धि और अपने अद्‌भुत कर्म प्रत्यक्ष करता है, और लोगों के इस समूह को पूर्ण बनाने के लिए इस अवसर का उपयोग करता है। लोगों की पीड़ा के माध्यम से, उनकी क्षमता के माध्यम से, और इस कुत्सित देश के लोगों के समस्त शैतानी स्वभावों के माध्यम से परमेश्वर अपना शुद्धिकरण और विजय का कार्य करता है, ताकि इससे वह महिमा प्राप्त सके, और ताकि उन्हें प्राप्त कर सके जो उसके कर्मों की गवाही देंगे। इस समूह के लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा किए गए सारे त्यागों का संपूर्ण महत्व ऐसा ही है। अर्थात, परमेश्वर विजय का कार्य उन्हीं लोगों के माध्यम से करता है जो उसका विरोध करते हैं, और केवल इसी प्रकार परमेश्वर की महान सामर्थ्य प्रत्यक्ष की जा सकती है। दूसरे शब्दों में, केवल अशुद्ध देश के लोग ही परमेश्वर की महिमा का उत्तराधिकार पाने के योग्य हैं, और केवल यही परमेश्वर की महान सामर्थ्य को उभारकर सामने ला सकता है। इसी कारण मैं कहता हूँ कि अशुद्ध देश से ही, और अशुद्ध देश में रहने वालों से ही परमेश्वर की महिमा प्राप्त की जाती है। ऐसी ही परमेश्वर की इच्छा है। यीशु के कार्य का चरण भी ऐसा ही था : उसे केवल उन्हीं फरीसियों के बीच महिमामंडित किया जा सका था जिन्होंने उसे सताया था; यदि फरीसियों द्वारा किया गया उत्पीड़न और यहूदा द्वारा दिया गया धोखा नहीं होता, तो यीशु का उपहास नहीं उड़ाया जाता या उसे लांछित नहीं किया जाता, सलीब पर तो और भी नहीं चढ़ाया जाता, और इस प्रकार उसे कभी महिमा प्राप्त

नहीं हो सकती थी। जहाँ परमेश्वर प्रत्येक युग में कार्य करता है, और जहाँ वह देह में काम करता है, वहीं वह महिमा प्राप्त करता है और वहीं वह उन्हें प्राप्त करता है जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता है। यही परमेश्वर के कार्य की योजना है, और यही उसका प्रबंधन है।

कई हज़ार वर्षों की परमेश्वर की योजना में, कार्य के दो भाग देह में किए गए हैं : पहला है सलीब पर चढ़ाए जाने का कार्य, जिसके लिए उसे महिमामंडित किया जाता है; दूसरा है अंत के दिनों में विजय और पूर्णता का कार्य, जिसके लिए उसे महिमामंडित किया जाता है। यही परमेश्वर का प्रबंधन है। इसलिए परमेश्वर के कार्य, या तुम लोगों को दिए गए परमेश्वर के आदेश को सीधी-सादी बात मत समझो। तुम सभी लोग परमेश्वर की कहीं अधिक असाधारण और अनंत महत्व की महिमा के वारिस हो, और यह परमेश्वर द्वारा विशेष रूप से निश्चित किया गया था। उसकी महिमा के दो भागों में से एक तुम लोगों में प्रत्यक्ष होता है; परमेश्वर की महिमा का एक समूचा भाग तुम लोगों को प्रदान किया गया है, जो तुम लोगों की विरासत हो सकता है। यही परमेश्वर द्वारा तुम्हारा उत्कर्ष है, और यह वह योजना भी है जो उसने बहुत पहले पूर्वनिर्धारित कर दी थी। जहाँ बड़ा लाल अजगर रहता है उस देश में परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य की महानता को देखते हुए, यदि यह कार्य कहीं और ले जाया जाता, तो यह बहुत पहले अत्यंत फलदायी हो गया होता और मनुष्य द्वारा तत्परता से स्वीकार कर लिया जाता। यही नहीं, परमेश्वर में विश्वास करने वाले पश्चिम के पादरियों के लिए इस कार्य को स्वीकार कर पाना कहीं अधिक आसान होता, क्योंकि यीशु द्वारा किए गए कार्य का चरण एक पूर्ववर्ती मिसाल का काम करता है। यही कारण है कि परमेश्वर महिमामंडन के कार्य का यह चरण कहीं और पूरा कर पाने में असमर्थ है; लोगों द्वारा समर्थित और देशों द्वारा मान्यता प्राप्त होने से, यह प्रभावी नहीं हो सकता है। इस देश में कार्य के इस चरण का यही असाधारण महत्व है। तुम लोगों के बीच एक भी व्यक्ति नहीं है जो व्यवस्था द्वारा सुरक्षित है—इसके बजाय, तुम व्यवस्था द्वारा दण्डित हो। इससे भी अधिक समस्यात्मक यह है कि लोग, तुम लोगों को समझते नहीं हैं : चाहे वे तुम्हारे रिश्तेदार हों, तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे मित्र, या तुम्हारे सहकर्मी हों, उनमें से कोई भी तुम लोगों को समझता नहीं है। जब परमेश्वर द्वारा तुम लोगों को "त्याग दिया जाता" है, तब तुम लोगों के लिए पृथ्वी पर और रह पाना असंभव हो जाता है, किंतु फिर भी, लोग परमेश्वर से दूर होना सहन नहीं कर सकते हैं, जो परमेश्वर द्वारा लोगों पर विजय प्राप्त करने का महत्व है, और यही परमेश्वर की महिमा है। तुम लोगों ने आज के दिन जो विरासत पाई है वह युगों-युगों तक परमेश्वर के प्रेरितों और नबियों की विरासत से भी

बढ़कर है और यहाँ तक कि मूसा और पतरस की विरासत से भी अधिक है। आशीष एक या दो दिन में प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं; वे बड़े त्याग के माध्यम से ही कमाए जाने चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है, तुम लोगों को उस प्रेम से युक्त होना ही चाहिए जो शुद्धिकरण से गुज़र चुका है, तुममें अत्यधिक आस्था होनी ही चाहिए, और तुम्हारे पास कई सत्य होने ही चाहिए जो परमेश्वर अपेक्षा करता है कि तुम प्राप्त करो; इससे भी बढ़कर, भयभीत हुए या टाल-मटोल किए बिना, तुम्हें न्याय की ओर जाना चाहिए, और परमेश्वर के प्रति निरंतर और अटूट प्रेम रखना चाहिए। तुममें संकल्प होना ही चाहिए, तुम लोगों के जीवन स्वभाव में बदलाव आने ही चाहिए; तुम लोगों की भ्रष्टता का निदान होना ही चाहिए, तुम्हें परमेश्वर के सारे आयोजन बिना शिकायत स्वीकार करने ही चाहिए, और तुम्हें मृत्युपर्यंत आज्ञाकारी होना ही चाहिए। यह वह है जो तुम्हें प्राप्त करना ही है, यह परमेश्वर के कार्य का अंतिम लक्ष्य है, और यह वह है जो परमेश्वर लोगों के इस समूह से चाहता है। चूँकि वह तुम लोगों को देता है, इसलिए वह बदले में तुम लोगों से निश्चिय ही माँगेगा भी, और तुम लोगों से निश्चिय ही उपयुक्त माँगें ही करेगा। इसलिए, परमेश्वर जो भी कार्य करता है उस सबका कारण होता है, जो दिखलाता है कि परमेश्वर बार-बार ऐसा कार्य क्यों करता है जो इतना कठोर और श्रमसाध्य होता है। यही कारण है कि परमेश्वर के प्रति विश्वास तुममें समाया होना चाहिए। संक्षेप में, परमेश्वर का समूचा कार्य तुम लोगों के लिए किया जाता है, ताकि तुम लोग उसकी विरासत पाने के योग्य बन सको। यह सब परमेश्वर की अपनी महिमा के वास्ते उतना नहीं है बल्कि तुम लोगों के उद्धार के लिए और इस देश में अत्यधिक सताए गए लोगों के इस समूह को पूर्ण बनाने के लिए है। तुम लोगों को परमेश्वर की इच्छा समझनी चाहिए। और इसलिए, मैं बहुत-से अज्ञानी लोगों को, जो किसी भी अंतर्दृष्टि या समझ से रहित हैं, उपदेश देता हूँ : परमेश्वर की परीक्षा मत लो, तथा अब और प्रतिरोध मत करो। परमेश्वर पहले ही उस पीड़ा से गुज़र चुका है जो कभी किसी मनुष्य ने नहीं सही, और यहाँ तक कि बहुत पहले मनुष्य के स्थान पर इससे भी अधिक अपमान सह चुका है। ऐसा और क्या है जो तुम लोग नहीं छोड़ सकते? परमेश्वर की इच्छा से अधिक महत्वपूर्ण और क्या हो सकता है? परमेश्वर के प्रेम से बढ़कर और क्या हो सकता है? परमेश्वर के लिए इस अशुद्ध देश में कार्य करना वैसे ही काफी कठिन है; उस पर यदि मनुष्य जानबूझकर और मनमाने ढंग से उल्लंघन करता है, तो परमेश्वर का कार्य और लंबा खींचना पड़ेगा। संक्षेप में, यह किसी के हित में नहीं है, और इसमें किसी का लाभ नहीं है। परमेश्वर समय से बंधा नहीं है; उसका कार्य और उसकी महिमा सबसे पहले आते हैं। इसलिए, वह अपने कार्य के लिए कोई भी क़ीमत चुकाएगा, चाहे

इसमें जितना भी समय लगे। यह परमेश्वर का स्वभाव है : वह तब तक विश्राम नहीं करेगा जब तक उसका कार्य पूरा नहीं हो जाता है। उसका कार्य तभी समाप्त होगा जब वह अपनी महिमा का दूसरा भाग प्राप्त कर लेता है। समस्त ब्रह्माण्ड में यदि परमेश्वर अपने महिमामंडन का दूसरा भाग प्राप्त नहीं कर पाता है, तो उसका दिन कभी नहीं आएगा, उसका हाथ अपने चुने हुए लोगों पर से कभी नहीं हटेगा, उसकी महिमा इस्राएल पर कभी नहीं उतरेगी, और उसकी योजना कभी समाप्त नहीं होगी। तुम लोगों को परमेश्वर की इच्छा देख पाना चाहिए, और तुम्हें देखना चाहिए कि परमेश्वर का कार्य आकाश और पृथ्वी और अन्य सब वस्तुओं के सृजन जितना सीधा-सरल नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज का कार्य उन लोगों का कायापलट करना है जो भ्रष्ट किए जा चुके हैं, जो बेहद सुन्न हैं, यह उन्हें शुद्ध करने के लिए है जो सृजित तो किए गए थे किंतु शैतान द्वारा वशीभूत कर लिए गए। यह आदम और हव्वा का सृजन नहीं है, यह प्रकाश का सृजन, या प्रत्येक पौधे और पशु का सृजन तो और भी नहीं है। परमेश्वर शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दी गई चीज़ों को शुद्ध करता है और फिर उन्हें नए सिरे से प्राप्त करता है; वे ऐसी चीज़ें बन जाती हैं जो उसकी होती हैं, और वे उसकी महिमा बन जाती हैं। यह वैसा नहीं है जैसा मनुष्य कल्पना करता है, यह आकाश और पृथ्वी और उनमें निहित सभी वस्तुओं के सृजन जितना, या शैतान को अथाह कुण्ड में जाने का श्राप देने के कार्य जितना सीधा-सरल नहीं है; बल्कि, यह मनुष्य का कायापलट करने का कार्य है, उन चीज़ों को जो नकारात्मक हैं, और उसकी नहीं हैं, ऐसी चीजों में बदलने का कार्य है जो सकारात्मक हैं और उसकी हैं। परमेश्वर के कार्य के इस चरण के पीछे का यही सत्य है। तुम लोगों को यह समझना ही चाहिए, और विषयों को अत्यधिक सरलीकृत करने से बचना चाहिए। परमेश्वर का कार्य किसी भी साधारण कार्य के समान नहीं है। इसकी उत्कृष्टता और बुद्धिमता मनुष्य की सोच से परे है। परमेश्वर कार्य के इस चरण के दौरान सभी चीज़ों का सृजन नहीं करता है, किंतु वह उन्हें नष्ट भी नहीं करता है। इसके बजाय, वह अपनी सृजित की गई सभी चीज़ों का कायापलट करता है, और शैतान द्वारा दूषित कर दी गई सभी चीजों को शुद्ध करता है। और इस प्रकार, परमेश्वर एक महान उद्यम आरंभ करता है, जो परमेश्वर के कार्य का संपूर्ण महत्व है। इन वचनों में परमेश्वर का जो कार्य तुम देखते हो, क्या वह सचमुच इतना सीधा-सरल है?

तुम्हें सत्य के लिए जीना चाहिए क्योंकि तुम्हें परमेश्वर में विश्वास है

सभी मनुष्यों के साथ एक आम समस्या यह है कि वे सत्य को समझते तो हैं लेकिन उसे अभ्यास में

नहीं ला पाते। ऐसा इसलिए है कि एक तरफ वे इसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार नहीं हैं, तो दूसरी तरफ, उनकी सूझ-बूझ बहुत अपर्याप्त है; वे दैनिक जीवन की बहुत सारी कठिनाइयों के असली स्वरूप को देख नहीं पाते और नहीं जानते कि समुचित अभ्यास कैसे करें। चूँकि लोगों के अनुभव बहुत सतही हैं, उनकी क्षमता बेहद कमज़ोर है, सत्य की उनकी समझ सीमित है और वे दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों को हल करने में असमर्थ हैं। वे सिर्फ़ दिखावटी आस्था रखते हैं, और परमेश्वर को अपने रोज़मर्रा के जीवन में अंगीकार करने में असमर्थ हैं। तात्पर्य यह कि परमेश्वर परमेश्वर है, जीवन जीवन है, और मानो उनके जीवन के साथ परमेश्वर का कोई संबंध ही नहीं। ऐसा ही सभी सोचते हैं। इस तरह, यथार्थ में परमेश्वर में केवल विश्वास करने से ही वे परमेश्वर की पहुंच में नहीं आ जाते, और न ही उन्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाता है। वास्तव में, ऐसा नहीं है कि परमेश्वर के वचन को पूरी अभिव्यक्ति नहीं मिली है, बल्कि उसके वचन को ग्रहण करने की लोगों की क्षमता ही बेहद सीमित है। कहा जा सकता है कि प्रायः कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के मूल इरादों के अनुरूप नहीं चलता, बल्कि परमेश्वर में उनका विश्वास उनके अपने इरादों, पूर्व से चली आ रही उनकी अपनी धार्मिक अवधारणाओं, और कार्य करने के उनके अपने तरीकों पर आधारित होता है। कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो परमेश्वर के वचन को स्वीकार कर स्वयं में बदलाव लाते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करना शुरू करते हैं। बल्कि, वे अपनी ग़लत धारणाओं के साथ डटे रहते हैं। जब लोग परमेश्वर में विश्वास करना शुरू करते हैं, तो वे धर्म के पारंपरिक नियमों के आधार पर ऐसा करते हैं, और उनका जीवन तथा दूसरों के साथ उनका व्यवहार पूरी तरह उनके अपने जीवन-दर्शन से संचालित होता है। कहा जा सकता है कि दस लोगों में से नौ के साथ ऐसा ही है। ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो परमेश्वर में विश्वास रखना शुरू करने के बाद कोई अलग योजना बनाते हैं और एक नई शुरुआत करते हैं। मानवजाति परमेश्वर के वचन को सत्य मानने में असफल रही है, या उसे सत्य के रूप में स्वीकार कर अभ्यास में नहीं ला सकी है।

उदाहरण के लिए, यीशु में विश्वास को ही लें। चाहे किसी ने अभी-अभी विश्वास करना शुरू किया हो या एक लम्बे समय से विश्वास करता आ रहा हो, इन सभी ने बस अपने भीतर मौजूद गुणों का उपयोग और प्राप्त क्षमताओं का प्रदर्शन किया। लोगों ने ये तीन शब्द "परमेश्वर में विश्वास" बस अपने जीवन में जोड़ लिए, लेकिन अपने स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं किया, और परमेश्वर में उनका विश्वास थोड़ा भी नहीं बढ़ा। उनकी तलाश न उत्साह से परिपूर्ण थी और न उदासीन। लोगों ने यह नहीं कहा कि वे अपने विश्वास

को छोड़ देंगे, मगर उन्होंने अपना सब कुछ परमेश्वर को समर्पित भी नहीं किया। उन्होंने कभी परमेश्वर से सचुमच प्रेम किया ही नहीं, न ही कभी उसकी आज्ञा का पालन किया। परमेश्वर में उनका विश्वास असली और नकली का सम्मिश्रण था। अपने विश्वास के प्रति उनकी एक आंख खुली रही तो दूसरी बंद। वे अपने विश्वास को अभ्यास में लाने के प्रति गंभीर नहीं रहे। वे असमंजस की ऐसी ही स्थिति में बने रहे, और अंत में उन्हें एक संभ्रमित मौत का सामना करना पड़ा। इन सबके क्या मायने हैं? आज, व्यावहारिक परमेश्वर में विश्वास करने के लिए तुम्हें सही रास्ते पर कदम रखना होगा। अगर तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो तो तुम्हें सिर्फ़ परमेश्वर के आशीष की ही कामना नहीं करनी चाहिए, बल्कि परमेश्वर से प्रेम करने और परमेश्वर को जानने की कोशिश भी करनी चाहिए। परमेश्वर द्वारा प्रबुद्धता प्राप्त कर और अपनी व्यक्तिगत खोज के माध्यम से, तुम उसके वचनों को खा और पी सकते हो, परमेश्वर के बारे में सच्ची समझ विकसित कर सकते हो, और तुम परमेश्वर के प्रति एक सच्चा प्रेम अपने हृदयतल से आता महसूस कर सकते हो। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम बेहद सच्चा हो, और इसे कोई नष्ट नहीं कर सके या उसके लिए तुम्हारे प्रेम के मार्ग में कोई खड़ा नहीं हो सके, तब तुम परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में सही रास्ते पर हो। यह साबित करता है कि तुम परमेश्वर के हो, क्योंकि तुम्हारे हृदय पर परमेश्वर द्वारा कब्जा कर लिया गया है और अब कोई भी दूसरी चीज तुम पर कब्जा नहीं कर सकती है। तुम अपने अनुभव, चुकाए गए मूल्य, और परमेश्वर के कार्य के माध्यम से, परमेश्वर के लिए एक स्वेच्छापूर्ण प्रेम विकसित करने में समर्थ हो जाते हो। फिर तुम शैतान के प्रभाव से मुक्त हो जाते हो और परमेश्वर के वचन के प्रकाश में जीने लग जाते हो। तुम अंधकार के प्रभाव को तोड़ कर जब मुक्त हो जाते हो, केवल तभी यह माना जा सकता है कि तुमने परमेश्वर को प्राप्त कर लिया है। परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में, तुम्हें इस लक्ष्य की खोज की कोशिश करनी चाहिए। यह हर एक व्यक्ति का कर्तव्य है। किसी को भी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। तुम परमेश्वर के कार्य के प्रति दुविधा में नहीं रह सकते, और न ही इसे हल्के में ले सकते हो। तुम्हें हर तरह से और हर समय परमेश्वर के बारे में विचार करना चाहिए, और उसके लिए सब कुछ करना चाहिए। जब तुम कुछ बोलते या करते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के घर के हितों को सबसे पहले रखना चाहिए। ऐसा करने से ही तुम परमेश्वर के हृदय को पा सकते हो।

परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में लोगों का सबसे बड़ा दोष यह है कि उनका विश्वास केवल शाब्दिक होता है, और परमेश्वर उनके रोजमर्रा के जीवन से पूरी तरह अनुपस्थित होता है। दरअसल सभी लोग

परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास तो करते हैं, लेकिन परमेश्वर उनके दैनिक जीवन का हिस्सा नहीं होता। परमेश्वर से बहुत सारी प्रार्थनाएँ लोग अपने मुख से तो करते हैं, किन्तु उनके हृदय में परमेश्वर के लिए जगह बहुत थोड़ी होती है, और इसलिए परमेश्वर बार-बार मनुष्य की परीक्षा लेता है। चूँकि मनुष्य अशुद्ध है, इसलिए परमेश्वर के पास मनुष्य की परीक्षा लेने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है, ताकि वह शर्मिंदगी महसूस करे और इन परीक्षाओं से गुजरते हुए स्वयं को पहचान ले। अन्यथा, मानवजाति प्रधान दूत की वंशज बन जाएगी, और निरंतर और भ्रष्ट होती जाएगी। परमेश्वर में अपने विश्वास की प्रक्रिया में, हर व्यक्ति अपने बहुत सारे व्यक्तिगत इरादे और उद्देश्य छोड़ता चलता है, जैसे-जैसे वह परमेश्वर के निरंतर शुद्धिकरण से गुजरता है। अन्यथा, परमेश्वर के पास किसी भी व्यक्ति को उपयोग में लाने का कोई रास्ता नहीं होगा, और न ही वह लोगों के लिए अपेक्षित कार्य ही कर पाएगा। परमेश्वर सबसे पहले मनुष्य को शुद्ध करता है। इस प्रक्रिया में, मनुष्य स्वयं को जान सकता है, और परमेश्वर मनुष्य को बदल सकता है। इसके बाद ही परमेश्वर मनुष्य को उसके जीवन में अपनी उपस्थिति का बोध कराता है, और सिर्फ़ इसी ढंग से मनुष्य के हृदय को पूरी तरह से परमेश्वर की ओर मोड़ा जा सकता है। इसलिए, मैं कहता हूं कि परमेश्वर में विश्वास करना इतना आसान नहीं है जितना कि लोग कहते हैं। परमेश्वर की दृष्टि में, यदि तुम्हारे पास सिर्फ़ ज्ञान है किन्तु जीवन के रूप में उसका वचन नहीं है; यदि तुम केवल स्वयं के ज्ञान तक ही सीमित हो, और सत्य का अभ्यास नहीं कर सकते या परमेश्वर के वचन को जी नहीं सकते, तो यह भी एक प्रमाण है कि तुम्हारे पास परमेश्वर से प्रेम करने वाला हृदय नहीं है, और यह दर्शाता है कि तुम्हारा हृदय परमेश्वर का नहीं है। परमेश्वर में विश्वास करके ही उसे जाना जा सकता है : यह अंतिम लक्ष्य है, मनुष्य की तलाश का अंतिम लक्ष्य। तुम्हें परमेश्वर के वचन को जीने का प्रयास करना चाहिए ताकि अपने अभ्यास में तुम्हें उनकी अनुभूति हो सके। यदि तुम्हारे पास सिर्फ़ सैद्धांतिक ज्ञान है, तो परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास बेकार हो जाएगा। यदि तुम इसे अभ्यास में लाते हो और उसके वचन को जीते हो तभी तुम्हारा विश्वास पूर्ण और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप माना जाएगा। इस क्षेत्र में, बहुत सारे लोग ज्ञान के बारे में बहुत सारी बातें कर सकते हैं, लेकिन मृत्यु के समय, उनकी आँखें आँसूओं से भर जाती हैं और अपना संपूर्ण जीवन नष्ट कर देने और बुढ़ापे तक अपने जीवन की निरर्थकता के कारण वे स्वयं से घृणा करने लग जाते हैं। वे केवल सिद्धांत समझते हैं, लेकिन सत्य को अभ्यास में नहीं ला पाते, न परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं, इसके बजाय वे बस यहाँ-वहाँ, मधुमक्खी की तरह दौड़ते-भागते रहते हैं; मौत के कगार पर पहुँचने के बाद ही वे

अंततः देख पाते हैं कि वे परमेश्वर के सच्चे गवाह नहीं हैं, वे परमेश्वर को बिल्कुल नहीं जानते। क्या तब बहुत देर नहीं हो गई होती है? फिर तुम वर्तमान समय का लाभ क्यों नहीं उठाते और उस सत्य की खोज क्यों नहीं करते जिसे तुम प्रेम करते हो? कल तक का इंतज़ार क्यों? यदि जीवन में तुम सत्य के लिए कष्ट नहीं उठाते हो, या इसे प्राप्त करने की कोशिश नहीं करते हो, तो क्या तुम मरने के समय पछताना चाहते हो? यदि ऐसा है, तो फिर परमेश्वर में विश्वास क्यों करते हो? वास्तव में, व्यक्ति अगर थोड़ा भी प्रयास करे तो बहुत सारी ऐसी चीजें हैं जिनमें वह सत्य को अभ्यास में ला सकता है और इस तरह परमेश्वर को संतुष्ट कर सकता है। मनुष्य का हृदय निरंतर राक्षसों के कब्ज़े में रहता है और इसलिए वह परमेश्वर के वास्ते कार्य नहीं कर पाता। बल्कि, वह देह के लिए निरंतर इधर-उधर भटकता रहता है और अंत में उसे कुछ भी हासिल नहीं होता। यही कारण है कि मनुष्य निरंतर समस्याओं और कठिनाइयों से घिरा रहता है। क्या ये शैतान की यातनाएँ नहीं हैं? क्या यह देह का भ्रष्ट हो जाना नहीं है? केवल दिखावटी प्रेम करके तुम्हें परमेश्वर को मूर्ख बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। बल्कि, तुम्हें ठोस कदम उठाना चाहिए। खुद को धोखा मत दो—ऐसा करने से क्या फायदा? अपनी देह की इच्छाओं के वास्ते जी कर और लाभ तथा प्रसिद्धि के लिए संघर्ष कर तुम क्या प्राप्त कर लोगे?

सात गर्जनाएँ गूँजती हैं—भविष्यवाणी करती हैं कि राज्य के सुसमाचार पूरे ब्रह्मांड में फैल जाएँगे

मैं अपने कार्य को अन्य जाति देशों में फैला रहा हूँ। मेरी महिमा पूरे ब्रह्मांड में जगमगा रही है; मेरी इच्छा सितारे-सितारे-बिंदु-बिंदु लोगों में सन्निहित है, सबकी कमान मेरे हाथों में है और सब मेरे द्वारा सौंपे गए कार्य को करने में लगे हुए हैं। इस समय से, मैं सभी मनुष्यों को दूसरी दुनिया में लाते हुए एक नए युग में प्रवेश कर गया हूँ। जब मैं अपने "गृह-देश" में वापस लौटा, तो मैंने अपनी मूल योजना के कार्य का एक अन्य भाग भी शुरू कर दिया, ताकि मनुष्य मुझे और गहराई से जान सके। मैं ब्रह्मांड को उसके संपूर्ण रूप में देखता हूँ और पाता हूँ कि[क] यह मेरे कार्य के लिए एक उचित अवसर है, इसलिए मैं मनुष्य पर अपना नया कार्य करते हुए जल्दी से इधर से उधर आ-जा रहा हूँ। आखिरकार, यह एक नया युग है, और मैं और ज़्यादा नए लोगों को नए युग में लेकर जाने के लिए और जिन्हें मैं हटाऊँगा, उनमें से और ज़्यादा लोगों को एक तरफ करने के लिए, नए कार्य को लेकर आया हूँ। बड़े लाल अजगर के देश में मैंने कार्य का

एक ऐसा चरण पूरा कर लिया है, जिसकी थाह मनुष्य नहीं पा सकते, इसके कारण वे हवा में डोलने लगते हैं, जिसके बाद कई लोग हवा के वेग में चुपचाप बह जाते हैं। सचमुच, यह एक ऐसी "खलिहान" है जिसे मैं साफ़ करने वाला हूँ, यही मेरी लालसा है और यही मेरी योजना है। क्योंकि जब मैं कार्य कर रहा होता हूँ, तो कई दुष्ट लोग चोरी-छिपे आ घुसे हैं, लेकिन मुझे इन्हें खदेड़ कर निकालने की कोई जल्दी नहीं है। इसके बजाय, सही समय आने पर मैं उन्हें छिन्न-भिन्न कर दूँगा। केवल इसके बाद ही मैं जीवन का सोता बनूँगा, और उन लोगों को जो मुझे सच में प्रेम करते हैं, मुझसे अंजीर के पेड़ का फल और कुमुदिनी की सुगंध प्राप्त करने दूँगा। उस देश में जहाँ शैतान का डेरा है, जो गर्दो-गुबार का देश है, वहाँ अब शुद्ध सोना नहीं रहा, सिर्फ रेत ही रेत है, और इसलिए इन हालत को देखते हुए, मैं कार्य का ऐसा चरण पूरा करता हूँ। तुम्हें यह पता होना चाहिए कि मैं जो प्राप्त करता हूँ वह रेत नहीं बल्कि शुद्ध, परिष्कृत सोना है। दुष्ट लोग मेरे घर में कैसे रह सकते हैं? मैं लोमड़ियों को अपने स्वर्ग में परजीवी कैसे बनने दे सकता हूँ। मैं इन चीज़ों को खदेड़ने के लिए हर संभव तरीका अपनाता हूँ। मेरी इच्छा प्रकट होने से पहले कोई भी यह नहीं जानता कि मैं क्या करने वाला हूँ। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, मैं उन दुष्टों को दूर खदेड़ देता हूँ, और वे मेरी उपस्थिति को छोड़कर जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। मैं दुष्टों के साथ यही करता हूँ, लेकिन फिर भी उनके लिए एक ऐसा दिन होगा जब वे मेरे लिए सेवा कर पाएंगे। मनुष्यों की आशीष पाने की इच्छा अत्यंत प्रबल है; इसलिए मैं उनकी ओर घूम जाता हूँ और अन्यजातियों को अपना महिमामयी मुखमंडल दिखाता हूँ, ताकि सभी मनुष्य अपनी दुनिया में जी सकें और अपने आपको आंक सकें, इस दौरान मैं वे वचन कहता रहता हूँ जो मुझे कहने चाहिए, और मनुष्यों को वह सब कुछ देता रहता हूँ जिसकी उन्हें आवश्यकता है। जब तक मनुष्यों को होश आएगा, उससे बहुत पहले ही मैं अपने कार्य को फैला चुका हूँगा। उसके बाद मैं मनुष्यों के सामने अपनी इच्छा व्यक्त करूँगा और मनुष्यों पर अपने कार्य का दूसरा भाग शुरू करूँगा, मैं सभी लोगों को करीब से अपना अनुसरण करने दूँगा ताकि वे मेरे कार्य के साथ तालमेल बिठा सकें। मैं मनुष्यों को उनकी क्षमता के अनुसार वो सब कुछ करने दूँगा, जिससे वे मेरे साथ मिलकर उस कार्य को कर सकें जो मुझे अवश्य करना है।

किसी को भी यह विश्वास नहीं है कि वह मेरी महिमा को देख पाएगा, और मैं उन्हें मजबूर नहीं करता, बल्कि मैं मानवजाति के बीच से अपनी महिमा को हटा लूँगा और इसे दूसरी दुनिया में ले जाऊँगा। जब मनुष्य एक बार फिर पश्चाताप करेगा, तब मैं अपनी महिमा को ज़्यादा से ज़्यादा आस्थावान लोगों को

दिखाऊंगा। यही वह सिद्धांत है जिसके अनुसार मैं कार्य करता हूँ। क्योंकि एक समय ऐसा आएगा जब मेरी महिमा कनान को छोड़ देगी, और ऐसा समय भी आएगा जब मेरी महिमा चुने हुए लोगों को भी छोड़ देगी। और फिर, एक समय ऐसा आएगा जब मेरी महिमा पूरी पृथ्वी को छोड़ देगी, जिससे यह धुंधली पड़कर अंधकार में डूब जाएगी। कनान की धरती भी सूरज की रोशनी नहीं देखेगी; सभी लोग अपनी आस्था खो देंगे, लेकिन कोई भी कनान की धरती की सुगंध को छोडना सहन नहीं कर पाएगा। जब मैं नये स्वर्ग और पृथ्वी में प्रवेश करूँगा, सिर्फ तभी मैं अपनी महिमा का दूसरा भाग लेकर इसे सबसे पहले कनान की धरती पर प्रकट करूँगा, जिससे रात के गहरे अंधकार में डूबी पूरी पृथ्वी पर रोशनी की चमक फ़ैल जाएगी और पूरी पृथ्वी प्रकाशमान हो जाएगी। इस प्रकाश की ऊर्जा से पूरी पृथ्वी के मनुष्यों को शक्ति प्राप्त करने दो, जिससे मेरी महिमा बढ़ सके और हर देश में नई होकर प्रकट हो सके। पूरी मानवता को यह एहसास होने दो कि मैं बहुत पहले मानव की दुनिया में आ चुका हूँ और बहुत पहले अपनी महिमा को इस्राएल से पूरब को ला चुका हूँ; क्योंकि मेरी महिमा पूरब से चमकती है, जहाँ अनुग्रह के युग से इसे आज के दिन में लाया गया है। लेकिन यह इस्राएल ही था जहाँ से मैं गया था और वहीं से मैं पूरब में पहुँचा था। जब पूरब का प्रकाश धीरे-धीरे सफ़ेद रोशनी में तब्दील होगा, तभी पूरी धरती का अंधकार प्रकाश में बदलना शुरू हो जाएगा, और तभी मनुष्य को यह पता चलेगा कि मैं बहुत पहले इस्राएल से जा चुका हूँ और नए सिरे से पूरब में उभर रहा हूँ। एक बार इस्राएल में अवतरित होने और फिर यहाँ से चले जाने के बाद, मैं दुबारा इस्राएल में पैदा नहीं हो सकता, क्योंकि मेरा कार्य पूरे ब्रह्मांड की अगुवाई करता है। यही नहीं, रोशनी सीधे पूरब से पश्चिम की ओर चमकती है। यही कारण है कि मैं पूरब में अवतरित हुआ हूँ और कनान को पूरब के लोगों तक लाया हूँ। मैं पूरी पृथ्वी के लोगों को कनान की धरती पर लाना चाहता हूँ, और इसलिए मैं कनान की धरती से लगातार अपने कथनों को प्रकट कर रहा हूँ, ताकि पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित कर सकूं। इस समय, कनान के अलावा पूरी पृथ्वी पर अंधकार छाया है, सभी लोग भूख और ठंड के कारण संकट में हैं। मैंने अपनी महिमा इस्राएल को दी और फिर उसे हटा लिया, इसके बाद मैं इस्राएलियों को, और पूरी मानवता को पूरब में ले आया। मैं उन सभी को प्रकाश में ले आया हूँ ताकि वे इसके साथ फिर से मिल जाएं और इससे जुड़े रह सकें, और उन्हें इसकी खोज न करनी पड़े। जो प्रकाश की खोज कर रहे हैं, उन्हें मैं फिर से प्रकाश देखने दूँगा और उस महिमा को देखने दूँगा जो मेरे पास इस्राएल में थी; मैं उन्हें यह देखने दूँगा कि मैं बहुत पहले एक सफ़ेद बादल पर सवार होकर

मनुष्यों के बीच आ चुका हूँ, मैं उन्हें असंख्य सफ़ेद बादलों और प्रचुर मात्रा में फलों के गुच्छों को देखने दूँगा। यही नहीं, मैं उन्हें इस्राएल के यहोवा परमेश्वर को भी देखने दूँगा। मैं उन्हें यहूदियों के गुरु, बहुप्रतीक्षित मसीहा को देखने दूँगा, और अपने पूर्ण प्रकटन को देखने दूँगा, जिन्हें हर युग के राजाओं द्वारा सताया गया है। मैं संपूर्ण ब्रह्मांड पर कार्य करूँगा और मैं महान कार्य करूँगा, जो अंत के दिनों में लोगों के सामने मेरी पूरी महिमा और मेरे सभी कर्मों को प्रकट कर देगा। मैं अपना महिमामयी मुखमंडल अपने संपूर्ण रूप में उन लोगों को दिखाऊँगा, जिन्होंने कई वर्षों से मेरी प्रतीक्षा की है, जो मुझे सफ़ेद बादल पर सवार होकर आते हुए देखने के लिए लालायित रहे हैं। मैं अपना यह रूप इस्राएल को दिखाऊँगा जिसने मेरे एक बार फिर प्रकट होने की लालसा की है। मैं उस पूरी मनष्यजाति को अपना यह रूप दिखाऊँगा जो मुझे कष्ट पहुँचाते हैं, ताकि सभी लोग यह जान सकें कि मैंने बहुत पहले ही अपनी महिमा को हटा लिया है और इसे पूरब में ले आया हूँ, जिस कारण यह अब यहूदिया में नहीं रही। क्योंकि अंत के दिन पहले ही आ चुके हैं!

मैं पूरे ब्रह्मांड में अपना कार्य कर रहा हूँ, और पूरब से असंख्य गर्जनाएं निरंतर गूँज रही हैं, जो सभी राष्ट्रों और संप्रदायों को झकझोर रही हैं। यह मेरी वाणी है जो सभी मनुष्यों को वर्तमान में लाई है। मैं अपनी वाणी से सभी मनुष्यों को जीत लूँगा, उन्हें इस धारा में बहाऊँगा और अपने सामने समर्पण करवाऊँगा, क्योंकि मैंने बहुत पहले पूरी पृथ्वी से अपनी महिमा को वापस लेकर इसे नये सिरे से पूरब में जारी किया है। भला कौन मेरी महिमा को देखने के लिए लालायित नहीं है? कौन बेसब्री से मेरे लौटने का इंतज़ार नहीं कर रहा है? किसे मेरे पुनः प्रकटन की प्यास नहीं है? कौन मेरी सुंदरता को देखने के लिए तरस नहीं रहा है? कौन प्रकाश में नहीं आना चाहता? कौन कनान की समृद्धि को नहीं देखना चाहता? किसे उद्धारकर्ता के लौटने की लालसा नहीं है? कौन महान सर्वशक्तिमान की आराधना नहीं करता है? मेरी वाणी पूरी पृथ्वी पर फैल जाएगी; मैं चाहता हूँ कि अपने चुने हुए लोगों के समक्ष मैं और अधिक वचन बोलूँ। मैं पूरे ब्रह्मांड के लिए और पूरी मानवजाति के लिए अपने वचन बोलता हूँ, उन शक्तिशाली गर्जनाओं की तरह जो पर्वतों और नदियों को हिला देती हैं। इस प्रकार, मेरे मुँह से निकले वचन मनुष्य का खज़ाना बन गए हैं, और सभी मनुष्य मेरे वचनों को सँजोते हैं। बिजली पूरब से चमकते हुए दूर पश्चिम तक जाती है। मेरे वचन ऐसे हैं कि मनुष्य उन्हें छोड़ना बिलकुल पसंद नहीं करता, पर साथ ही उनकी थाह भी नहीं ले पाता, लेकिन फिर भी उनमें और अधिक आनंदित होता है। सभी मनुष्य खुशी और आनंद से भरे होते हैं और मेरे आने की खुशी

मनाते हैं, मानो किसी शिशु का जन्म हुआ हो। अपनी वाणी के माध्यम से मैं सभी मनुष्यों को अपने समक्ष ले आऊँगा। उसके बाद, मैं औपचारिक तौर पर मनुष्य जाति में प्रवेश करूँगा ताकि वे मेरी आराधना करने लगें। मुझमें से झलकती महिमा और मेरे मुँह से निकले वचनों से, मैं ऐसा करूँगा कि सभी मनुष्य मेरे समक्ष आएंगे और देखेंगे कि बिजली पूरब से चमकती है और मैं भी पूरब में "जैतून के पर्वत" पर अवतरित हो चुका हूँ। वे देखेंगे कि मैं बहुत पहले से पृथ्वी पर मौजूद हूँ, यहूदियों के पुत्र के रूप में नहीं, बल्कि पूरब की बिजली के रूप में। क्योंकि बहुत पहले मेरा पुनरुत्थान हो चुका है, और मैं मनुष्यों के बीच से जा चुका हूँ, और फिर अपनी महिमा के साथ लोगों के बीच पुनः प्रकट हुआ हूँ। मैं वही हूँ जिसकी आराधना असंख्य युगों पहले की गई थी, और मैं वह शिशु भी हूँ जिसे असंख्य युगों पहले इस्राएलियों ने त्याग दिया था। इसके अलावा, मैं वर्तमान युग का संपूर्ण-महिमामय सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ! सभी लोग मेरे सिंहासन के सामने आएँ और मेरे महिमामयी मुखमंडल को देखें, मेरी वाणी सुनें और मेरे कर्मों को देखें। यही मेरी संपूर्ण इच्छा है; यही मेरी योजना का अंत और उसका चरमोत्कर्ष है, यही मेरे प्रबंधन का उद्देश्य भी है। सभी राष्ट्र मेरी आराधना करें, हर ज़बान मुझे स्वीकार करे, हर मनुष्य मुझमें आस्था रखे और सभी लोग मेरी अधीनता स्वीकार करें!

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "पाता हूँ कि" यह वाक्यांश नहीं है।

देहधारी परमेश्वर और परमेश्वर द्वारा उपयोग किए गए लोगों के बीच अनिवार्य अंतर

कितने ही वर्ष हैं जिनके दौरान परमेश्वर का आत्मा खोजता रहा है, जब वह पृथ्वी पर अपना कार्य करता रहा है, और ऐसे बहुत-से लोग हैं जिनका युगों-युगों के दौरान अपना कार्य करने के लिए परमेश्वर ने उपयोग किया है। तो भी, इस सारे समय में, परमेश्वर का आत्मा किसी उपयुक्त विश्राम स्थान स्थल के बिना रहा है, यही कारण है कि परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए भिन्न-भिन्न लोगों के बीच स्थान बदलता है। कुल मिलाकर, लोगों के माध्यम से ही उसका कार्य किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है, इन सभी वर्षों के दौरान, परमेश्वर का कार्य कभी रुका नहीं है, बल्कि यह आज तक लोगों के मध्य लगातार किया जाता रहा है। यद्यपि परमेश्वर ने इतने सारे वचन बोले हैं और इतना सारा कार्य किया है, मनुष्य फिर भी परमेश्वर

को अब तक नहीं जानता है, केवल इसलिए कि परमेश्वर मनुष्य के सामने कभी प्रकट नहीं हुआ है और इसलिए भी कि उसका कोई इंद्रियगोचर रूप नहीं है। और इसलिए परमेश्वर को यह कार्य—सभी मनुष्यों को व्यावहारिक परमेश्वर के व्यावहारिक महत्व को समझाने के लिए—पूर्णता तक लाना होगा। इस मनोरथ को प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर को अपना आत्मा को मानवता के समक्ष इंद्रियगोचर रूप से प्रकट करना होगा और उनके बीच अपना कार्य करना होगा। अर्थात्, केवल तभी जब परमेश्वर का आत्मा भौतिक रूप ग्रहण करता है, देह और अस्थियाँ पहनता है, और प्रत्यक्ष रूप से लोगों के बीच चलता है, उनके जीवन में उनके साथ रहता है, कभी स्वयं को दिखाते और कभी छिपाते हुए, केवल तभी लोग उसकी अधिक गहरी समझ तक पहुँच पाते हैं। यदि परमेश्वर केवल देह में ही बना रहता, तो वह अपना कार्य उसकी समग्रता में पूरा नहीं कर पाता। और एक समयावधि के लिए देह में कार्य करने के उपरांत, उस सेवकाई को पूरा करने के उपरांत जिसे देह में रहकर करना आवश्यक है, परमेश्वर देह से चला जाएगा और देह की छवि में आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य करेगा, बिलकुल वैसे ही जैसे यीशु ने एक समयवाधि के लिए सामान्य मानवता में कार्य करने के उपरांत किया था, और जब वह उस कार्य को पूरा कर चुका था जिसे पूरा करने की आवश्यकता थी। तुम लोगों को "मार्ग... (5)" का यह अंश संभवतः याद हो : "मुझे मेरे पिता का मुझसे यह कहना याद है कि, 'पृथ्वी पर केवल अपने पिता की इच्छा के अनुसार कार्य कर और उसकी आज्ञा को पूरा कर। अन्य कुछ भी तेरी चिंता का विषय नहीं है।'" इस अंश में तुम लोग क्या देखते हो? जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो वह केवल दिव्यता के भीतर अपना कार्य करता है, जो वही कार्य है जो स्वर्गिक पवित्रात्मा ने देहधारी परमेश्वर को सौंपा है। जब वह आता हैतब वह, भिन्न-भिन्न साधनों से और भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्यों से अपने कथनों को वाणी देने के लिए, समूची धरती पर बोलता है। वह मुख्य रूप से मनुष्य की आपूर्ति करने और मनुष्य को सिखाने को अपने लक्ष्यों और कार्यकारी सिद्धांत के रूप में देखता है, और वह लोगों के अंतर्वैयक्तिक संबंधों या उनके जीवन के विवरणों जैसी चीज़ों की चिंता नहीं करता है। उसकी मुख्य सेवकाई पवित्रात्मा के लिए बोलना है। अर्थात, जब परमेश्वर का आत्मा इंद्रियगोचर रूप से देह में प्रकट होता है, तब वह केवल मनुष्य के जीवन का पोषण करता है और सत्य विमोचित करता है। वह मनुष्य के कार्य में स्वयं को नहीं उलझाता है, जिसका तात्पर्य यह है कि वह मनुष्य के कार्य में भाग नहीं लेता है। मानव दिव्य कार्य नहीं कर सकते हैं, और परमेश्वर मानव कार्य में भाग नहीं लेता है। इन सारे वर्षों में जबसे परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए इस धरती पर आया है, उसने सदैव लोगों के माध्यम से कार्य किया है।

परंतु इन लोगों को देहधारी परमेश्वर नहीं माना जा सकता है—उन्हें केवल ऐसे मनुष्य माना जा सकता है जिन्हें परमेश्वर द्वारा उपयोग किया जाता है। इस बीच, आज का परमेश्वर, पवित्रात्मा की वाणी को आगे भेजते हुए और पवित्रात्मा की ओर से कार्य करते हुए, दिव्यता के परिप्रेक्ष्य से सीधे बात कर सकता है। इसी प्रकार, वे सब जिनका परमेश्वर ने युगों-युगों के दौरान उपयोग किया है, दैहिक शरीर के भीतर कार्यरत परमेश्वर के आत्मा के दृष्टांत हैं—तो उन्हें परमेश्वर क्यों नहीं कहा जा सकता है? परंतु आज का परमेश्वर देह में सीधे कार्यरत परमेश्वर का आत्मा भी है, और यीशु भी देह में कार्यरत परमेश्वर का आत्मा था; उन दोनों को परमेश्वर कहा जाता है। तो अंतर क्या है? वे सब लोग जिनका परमेश्वर ने युगों-युगों के दौरान उपयोग किया है, सामान्य विचार और तर्क में समर्थ हैं। उन सभी ने मानव आचरण के सिद्धांतों को समझ लिया है। उनके सामान्य मानवीय विचार हैं और वे उन सभी चीज़ों से युक्त रहे हैं जिनसे सामान्य लोगों को युक्त होना चाहिए। उनमें से अधिकांश के पास असाधारण प्रतिभा और जन्मजात बुद्धिमानी है। इन लोगों पर कार्य करते हुए, परमेश्वर का आत्मा उनकी प्रतिभाओं को सान पर चढ़ाता है, जो उनकी परमेश्वर-प्रदत्त प्रतिभाएँ हैं। परमेश्वर का आत्मा उनकी प्रतिभाओं को अमल में लाता है, परमेश्वर की सेवा में उनकी शक्तियों का उपयोग करता है। फिर भी परमेश्वर का सार सूझ या विचारों से रहित है और मानव अभिप्रायों की मिलावट से विहीन है, यहाँ तक कि उससे भी विहीन है जिससे सामान्य मानव युक्त हैं। कहने का तात्पर्य है कि वह मानव आचरण के सिद्धांतों से परिचित तक नहीं है। ऐसा ही होता है जब आज का परमेश्वर पृथ्वी पर आता है। उसका कार्य और उसके वचन मानव अभिप्रायों या मानव विचार से मिलावटरहित होते हैं, किंतु वे पवित्रात्मा के अभिप्रायों की सीधी अभिव्यक्ति हैं, और वह सीधे परमेश्वर की ओर से कार्य करता है। इसका अर्थ है कि पवित्रात्मा सीधे बात करता है, अर्थात, दिव्यता सीधे कार्य करती है, मनुष्य के अभिप्रायों का रत्ती भर भी मिश्रण किए बिना। दूसरे शब्दों में, देहधारी परमेश्वर सीधे दिव्यता का मूर्त रूप है, मानवीय सोच या विचार से रहित है, और मानव आचरण के सिद्धांतों की उसे कोई समझ ही नहीं है। यदि केवल दिव्यता ही कार्यरत होती (अर्थात् यदि केवल परमेश्वर स्वयं कार्यरत होता), तो पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य करने का कोई रास्ता नहीं होता। इसलिए जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, उसके पास लोगों की एक छोटी-सी संख्या होनी ही चाहिए जिनका उपयोग वह मानवता के भीतर कार्य करने के लिए करता है, उस कार्य के साथ-साथ जो वह दिव्यता में करता है। दूसरे शब्दों में, वह अपने दिव्य कार्य की पुष्टि के लिए मानव कार्य का उपयोग करता है। यदि वह ऐसा न करे, तो दिव्य कार्य से सीधे जुड़ने का

कोई रास्ता मनुष्य के पास नहीं होगा। ऐसा ही यीशु और उसके अनुयायियों के साथ था। संसार में अपने समय के दौरान, यीशु ने पुरानी व्यवस्था को समूल समाप्त किया और नयी आज्ञाएँ स्थापित कीं। उसने बहुत-से वचन भी कहे। यह सारा कार्य दिव्यता में किया गया था। पतरस, पौलुस और युहन्ना जैसे अन्य सभी ने अपने बाद के कार्य यीशु के वचनों की नींव पर स्थापित किए। कहने का तात्पर्य है कि उस युग में परमेश्वर ने अपना कार्य आरंभ किया, और अनुग्रह के युग के आरंभ का सूत्रपात किया; अर्थात्, उसने पुराने युग को समाप्त करके, नया युग आरंभ किया, और साथ ही "परमेश्वर ही आरंभ और अंत है" वचनों को भी साकार किया। दूसरे शब्दों में, मनुष्य को दिव्य कार्य की नींव पर ही मानव कार्य करना चाहिए। एक बार जब यीशु ने वह सब कुछ कह दिया जो उसे कहने की आवश्यकता थी और पृथ्वी पर अपना कार्य समाप्त कर लिया, तो वह मनुष्य को छोड़कर चला गया। इसके बाद, सभी लोगों ने, कार्य करते हुए, उसके वचनों में व्यक्त सिद्धांतों के अनुसार ऐसा ही किया, और उसके द्वारा बोले गए सत्यों के अनुसार अभ्यास किया। इन सभी लोगों ने यीशु के लिए कार्य किया। यदि यीशु अकेले ही कार्य कर रहा होता, तो उसने चाहे जितने वचन बोले होते, तब भी लोगों के पास उसके वचनों के साथ जुड़ने के कोई साधन नहीं होते, क्योंकि वह दिव्यता में कार्य कर रहा था और केवल दिव्यता के वचन ही बोल सकता था, और वह चीज़ों को उस बिंदु तक नहीं समझा सकता था जहाँ सामान्य लोग उसके वचन समझ सकते थे। और इसलिए उसे प्रेरित और नबी रखने पड़े जो उसके कार्य की अनुपूर्ति करने के लिए उसके बाद आए। यही वह सिद्धांत है जिससे देहधारी परमेश्वर अपना कार्य करता है—बोलने के लिए और कार्य करने के लिए देहधारी शरीर का उपयोग, ताकि दिव्यता का कार्य पूरा किया जा सके, और फिर अपने कार्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर के अपने हृदय के अनुरूप कुछ, या शायद अधिक, लोगों का उपयोग करना। अर्थात्, परमेश्वर मानवता में चरवाही करने और सिंचाई करने के लिए अपने हृदय के अनुरूप लोगों का उपयोग करता है ताकि परमेश्वर के चुने हुए लोग सत्य की वास्तविकता में प्रवेश कर सकें।

जब परमेश्वर देहधारी हुआ तब यदि वह केवल दिव्यता का कार्य करता, और उसके साथ सामंजस्य बनाकर कार्य करने के लिए उसके हृदय के अनुरूप लोग नहीं होते, तो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा समझने या परमेश्वर के साथ जुड़ने में असमर्थ होता। परमेश्वर को अपना कार्य पूरा करने, कलीसियाओं की देख-रेख और उनकी चरवाही करने के लिए ऐसे सामान्य लोगों का उपयोग करना ही होता है जो उसके हृदय के अनुरूप हों, ताकि मनुष्य की संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ और उसका मस्तिष्क कल्पना करने का जो स्तर

प्राप्त करने में सक्षम हैं उसे प्राप्त किया जा सके। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर दिव्यता के भीतर जो कार्य करता है उसका "रूपांतर" करने के लिए अपने हृदय के अनुरूप लोगों की छोटी-सी संख्या का उपयोग करता है, ताकि इसे खोला जा सके—और दिव्य भाषा को मानव भाषा में बदला जा सके, ताकि सभी लोग इसे बूझ और समझ सकें। यदि परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया होता, तो कोई भी परमेश्वर की दिव्य भाषा नहीं समझ पाता, क्योंकि परमेश्वर के हृदय के अनुरूप लोग अंततः छोटी-सी अल्पसंख्या में ही हैं, और मनुष्य की बूझने की क्षमता कमज़ोर है। यही कारण है कि परमेश्वर केवल देहधारी शरीर में कार्य करते समय यह तरीक़ा चुनता है। यदि केवल दिव्य कार्य ही होता, तो मनुष्य के पास परमेश्वर को जानने और उसके साथ जुड़ने का कोई तरीक़ा नहीं होता, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर की भाषा नहीं समझता है। मनुष्य यह भाषा केवल परमेश्वर के हृदय के अनुरूप लोगों की मध्यस्थता के माध्यम से ही समझ सकने में समर्थ है, जो उसके वचनों को स्पष्ट करते हैं। तथापि, यदि मानवता के भीतर केवल ऐसे ही लोग कार्यरत होते, तो वह भी केवल मनुष्य का सामान्य जीवन बनाए रख सकता था; यह मनुष्य का स्वभाव नहीं बदल सकता था। परमेश्वर का कार्य एक नया आरंभ बिंदु नहीं हो सकता था; केवल वही पुराने गीत होते, वही पुरानी तुच्छताएँ होतीं। केवल देहधारी परमेश्वर की मध्यस्थता के माध्यम से ही, जो अपने देहधारण की अवधि के दौरान वह सब कहता है जिसे कहने की आवश्यकता है और वह सब करता है जिसे करने की आवश्यकता है, लोग उसके वचनों के अनुसार कार्य और अनुभव करते हैं, केवल इसी प्रकार उनका जीवन स्वभाव बदल पाएगा, और इसी प्रकार वे समय के साथ चल पाएँगे। वह जो दिव्यता के भीतर कार्य करता है परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि वे जो मानवता के भीतर कार्य करते हैं परमेश्वर द्वारा उपयोग किए गए लोग हैं। कहने का तात्पर्य है कि देहधारी परमेश्वर सारभूत रूप से परमेश्वर द्वारा उपयोग किए गए लोगों से भिन्न है। देहधारी परमेश्वर दिव्यता का कार्य करने में समर्थ है, जबकि परमेश्वर द्वारा उपयोग किए गए लोग इसमें समर्थ नहीं हैं। प्रत्येक युग के आरंभ में, परमेश्वर का आत्मा मनुष्य को एक नए आरंभ में ले जाने के लिए व्यक्तिगत रूप से बोलता है और एक नए युग का सूत्रपात करता है। जब परमेश्वर बोलना समाप्त कर देता है, तो इसका अर्थ होता है कि दिव्यता के भीतर उसका कार्य पूरा हो गया है। तत्पश्चात, सभी लोग अपने जीवन अनुभव में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर द्वारा उपयोग किए गए लोगों की अगुआई का अनुसरण करते हैं। उसी तरीक़े से, यह वह चरण भी होता है जिसमें परमेश्वर मनुष्य को नए युग में पहुँचाता है और लोगों को एक नया आरंभ बिंदु देता है—इसी समय देह में परमेश्वर का कार्य

समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर अपनी सामान्य मानवता को पूर्ण करने के लिए पृथ्वी पर नहीं आता है, न ही वह सामान्य मानवता का कार्य करने के लिए आता है। वह केवल सामान्य मानवता में दिव्यता का कार्य करने के लिए आता है। परमेश्वर सामान्य मानवता के बारे में जो कहता है, वह वैसा नहीं जैसा लोग कल्पना करते हैं। मनुष्य "सामान्य मानवता" को पत्नी, या पति, और बेटे और बेटियों के होने के रूप में परिभाषित करता हैं, जो प्रमाण हैं कि कोई व्यक्ति सामान्य व्यक्ति है; परंतु परमेश्वर इसे इस तरह नहीं देखता है। वह सामान्य मानवता को सामान्य मानव विचारों और सामान्य मानव जीवन, और सामान्य लोगों से जन्मे होने के रूप में देखता है। किंतु उसकी सामान्यता में पत्नी या पति, और बच्चे उस तरह शामिल नहीं हैं जिस तरह मनुष्य सामान्यता की बात करता है। अर्थात्, मनुष्य के लिए, परमेश्वर जिस सामान्य मानवता की बात करता है वह वही है जिसे मनुष्य मानवता की अनुपस्थिति मानेगा, जिसमें भावनाओं का लगभग अभाव है और जो दैहिक आवश्यकताओं से कदाचित रहित है, ठीक यीशु की तरह, जिसका केवल बाह्य रूप सामान्य व्यक्ति का था और जिसने सामान्य व्यक्ति का रूप-रंग धारण किया था, किंतु सार रूप में उस सबसे परिपूर्ण नहीं था जिससे सामान्य व्यक्ति को युक्त होना चाहिए। इससे यह देखा जा सकता है कि देहधारी परमेश्वर का सार सामान्य मानवता की संपूर्णता को समाहित नहीं करता, बल्कि उन चीजों के केवल एक भाग को ही समाहित करता है जिनसे लोगों को युक्त होना चाहिए, ताकि वे सामान्य मानव जीवन के नित्यकर्मों को जारी रख सकें और सामान्य मानव तर्क-शक्तियों का उपयोग कर सकें। परंतु इन चीजों का उस सबसे कोई लेना-देना नहीं है जिसे मनुष्य सामान्य मानवता मानता है। वे वही हैं जिनसे देहधारी परमेश्वर को युक्त होना चाहिए। तथापि, ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि देहधारी परमेश्वर को सामान्य मानवता से युक्त केवल तभी कहा जा सकता है जब उसकी पत्नी, बेटे और बेटियाँ, परिवार हो; वे कहते हैं कि इन चीज़ों के बिना वह सामान्य व्यक्ति नहीं है। तब मैं तुमसे पूछता हूँ, कि "क्या परमेश्वर की कोई पत्नी है? क्या यह संभव है कि परमेश्वर का एक पति हो? क्या परमेश्वर के बच्चे हो सकते हैं?" क्या ये भ्रांतियाँ नहीं हैं? तिस पर भी देहधारी परमेश्वर चट्टानों के बीच दरार से प्रस्फूटित नहीं हो सकता है या आसमान से नीचे नहीं टपक सकता है। वह केवल सामान्य मानव परिवार में ही जन्म ले सकता है। यही कारण है कि उसके माता-पिता और बहनें हैं। यही वे चीज़ें हैं जो देहधारी परमेश्वर की सामान्य मानवता में होनी चाहिए। यीशु का मामला भी ऐसा ही था; यीशु के पिता और माता, बहनें और भाई थे, और यह सब सामान्य था।

परंतु यदि उसकी पत्नी और बेटे और बेटियाँ होतीं, तो उसकी मानवता वह सामान्य मानवता नहीं होती जिससे देहधारी परमेश्वर के युक्त होने का परमेश्वर ने मनोरथ किया था। यदि ऐसी स्थिति होती, तो वह दिव्यता की ओर से कार्य नहीं कर पाता। ठीक इसीलिए कि उसकी पत्नी या बच्चे नहीं थे, और फिर भी वह एक सामान्य परिवार में सामान्य लोगों से जन्मा था, वह दिव्यता का कार्य कर पाने में समर्थ था। इसे और स्पष्ट करने के लिए, परमेश्वर उसे ही सामान्य व्यक्ति मानता है जो सामान्य परिवार में जन्मा व्यक्ति है। केवल ऐसा ही व्यक्ति दिव्यता का कार्य करने की योग्यता से संपन्न है। दूसरी ओर, यदि व्यक्ति की पत्नी, बच्चे, या पति हैं, तो वह व्यक्ति दिव्यता का कार्य नहीं कर पाएगा, क्योंकि वे केवल उस सामान्य मानवता ये युक्त होंगे जो मनुष्य को चाहिए, किंतु उस सामान्य मानवता से युक्त नहीं होंगे जो परमेश्वर को चाहिए। परमेश्वर द्वारा जो माना जाता है और लोग जो समझते हैं, उसमें प्रायः अत्यधिक भिन्नता होती है, एक-दूसरे से बिलकुल अलग। परमेश्वर के कार्य के इस चरण में बहुत कुछ ऐसा होता है जो लोगों की धारणाओं के विपरीत होता है और उनसे बहुत अधिक भिन्न होता है। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर के कार्य का यह चरण पूर्ण रूप से स्वयं दिव्यता द्वारा अपने हाथों से रचित होता है, जिसमें मानवता सहायक की भूमिका निभाती है। चूँकि परमेश्वर, मनुष्य को इसमें शामिल होने देने के बजाय, अपना कार्य स्वयं करने के लिए पृथ्वी पर आता है, इसलिए वह अपना कार्य करने के लिए देह में (एक अपूर्ण, सामान्य व्यक्ति में) अवतरित होता है। वह मनुष्यजाति को एक नया युग भेंट करने, मानवजाति को अपने कार्य के अगले चरण के बारे में बताने, और लोगों से उसके वचनों में वर्णित मार्ग के अनुसार अभ्यास करवाने के लिए इस देहधारण का उपयोग करता है। इस प्रकार, देह में परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाता है; वह मनुष्यजाति को छोड़कर जाने वाला होता है, सामान्य मानवता की देह में अब और निवास नहीं करता है, बल्कि मनुष्य से दूर जाते हुए अपने कार्य के दूसरे भाग की ओर बढ़ जाता है। फिर, अपने हृदय के अनुरूप लोगों का उपयोग करते हुए, वह पृथ्वी पर लोगों के इस समूह के बीच, किंतु उनकी मानवता के भीतर, अपना कार्य जारी रखता है।

देहधारी परमेश्वर हमेशा के लिए मनुष्य के साथ नहीं रह सकता है क्योंकि परमेश्वर के पास करने के लिए और भी बहुत से कार्य हैं। उसे देह में बाँधा नहीं जा सकता है; उसे वह कार्य करने के लिए जो उसे करना ही चाहिए देह छोड़नी पड़ती है, भले ही वह कार्य वह देह की छवि में करता है। जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो वह उस समय तक प्रतीक्षा नहीं करता जब तक उसने वह रूप न प्राप्त कर लिया हो जो

सामान्य व्यक्ति को मरने या मनुष्यजाति को छोड़कर जाने से पहले प्राप्त करना होता है। उसकी देह की चाहे कुछ भी उम्र हो, जब उसका कार्य समाप्त हो जाता है, तो वह मनुष्य को छोड़कर चला जाता है। उसके लिए आयु जैसी कोई चीज़ नहीं होती है। वह मानव जीवनकाल के अनुसार अपने दिनों की गिनती नहीं करता है; इसके बजाय, वह अपने कार्य के चरणों के अनुसार देह में अपना जीवन समाप्त करता है। ऐसे लोग हो सकते हैं जो महसूस करते हों कि देह में आने पर, परमेश्वर की एक निश्चित सीमा तक उम्र बढ़नी ही चाहिए, उसे वयस्क होना ही चाहिए, वृद्धावस्था तक पहुँचना ही चाहिए, और केवल तभी छोड़कर जाना चाहिए जब उसका शरीर जवाब देने लगे। यह मनुष्य की कल्पना है; परमेश्वर इस प्रकार कार्य नहीं करता है। वह देह में केवल वह कार्य करने के लिए आता है जो उसे करना ही होता है, और वह सामान्य मनुष्य का जीवन जीने के लिए नहीं आता है, जिसमें वह माता-पिता से जन्म ले, बड़ा हो, परिवार बनाए और जीविका आरंभ करे, बच्चे प्राप्त करे और उन्हें पाले-पोसे, या जीवन के उतार-चढ़ावों का अनुभव करे—वह सब जो एक सामान्य मनुष्य की गतिविधियाँ होती हैं। जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है तो वह एक देह धारण किए हुए परमेश्वर का आत्मा होता है, जो देह में आता है, किंतु परमेश्वर सामान्य मानव का जीवन नहीं जीता है। वह केवल अपनी प्रबंधन योजना का एक भाग संपन्न करने के लिए आता है। उसके पश्चात वह मनुष्यजाति को छोड़कर चला जाता है। जब वह देह में आता हैतो परमेश्वर का आत्मा देह की सामान्य मानवता को पूर्ण नहीं करता है। बल्कि, परमेश्वर के पूर्वनिर्धारित समय पर, दिव्यता सीधे अपना कार्य करती है। फिर, वह सब करने के बाद जो उसे करने की आवश्यकता होती है और अपनी सेवकाई पूरी तरह पूर्ण करने के पश्चात, परमेश्वर की आत्मा का इस चरण का कार्य संपन्न हो जाता है, इसी बिंदु पर देहधारी परमेश्वर का जीवन भी समाप्त हो जाता है, फिर चाहे उसके दैहिक शरीर ने अपने आयुकाल की अवधि जी हो या नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि दैहिक शरीर जीवन की चाहे जिस अवस्था तक पहुँचे, पृथ्वी पर यह चाहे जितने लंबे समय रहे, सब कुछ पवित्रात्मा के कार्य द्वारा निर्णीत किया जाता है। इसका उससे कोई लेना-देना नहीं है जिसे मनुष्य सामान्य मानवता मानता है। यीशु का ही उदाहरण लो। वह देह में साढ़े तैंतीस साल रहा। मानव शरीर के जीवनकाल के अनुसार, उसे उस आयु में मरना नहीं चाहिए था, और उसे छोड़कर जाना नहीं चाहिए था। परंतु यह परमेश्वर की आत्मा के लिए कोई चिंता का विषय नहीं था। उसका कार्य समाप्त हो गया, तो शरीर ले लिया गया, जो पवित्रात्मा के साथ विलुप्त हो गया। यही वह सिद्धांत है जिससे परमेश्वर देह में कार्य करता है। और इसलिए, यदि सही-सही

कहें, तो प्राथमिक महत्व देहधारी परमेश्वर की मानवता का नहीं है। इसे फिर से कहा जाए तो वह पृथ्वी पर सामान्य मानव प्राणी का जीवन जीने के लिए नहीं आता है। वह ऐसा नहीं करता कि पहले सामान्य मानव जीवन स्थापित करे और फिर कार्य करना आरंभ करे। बल्कि, जब तक उसने एक सामान्य मानव परिवार में जन्म ले रखा है, वह दिव्य कार्य कर पाने में सक्षम होता है, ऐसा कार्य जो मनुष्य के मंतव्यों से निष्कलंकित होता है; जो दैहिक नहीं होता है, और जो निश्चित रूप से समाज के तौर-तरीक़े नहीं अपनाता है या मनुष्य के विचारों या धारणाओं में नहीं फँसता है; और, इतना ही नहीं, वह अपना जीवन जीने के लिए मनुष्य के फ़लसफ़ों को नहीं अपनाता है। यही वह कार्य है जो देहधारी परमेश्वर करना चाहता है, और यही उसके देहधारण का व्यावहारिक महत्व है। परमेश्वर देह में आता है तो अन्य तुच्छ प्रक्रियाओं से गुज़रे बिना, प्राथमिक रूप से कार्य का वह चरण करने के लिए आता है जो देह में ही करने की आवश्यकता होती है; और, जहाँ तक सामान्य मनुष्य के अनुभवों की बात है, तो वे उसे नहीं होते हैं। देहधारी परमेश्वर की देह को जो कार्य करने की आवश्यकता होती है उसमें सामान्य मानवीय अनुभव शामिल नहीं होते हैं। इसलिए परमेश्वर देह में आता है तो वह कार्य संपन्न करने के वास्ते आता है जो उसे देह में रहकर ही संपन्न करने की आवश्यकता होती है। बाक़ी चीजों का उससे कोई लेना-देना नहीं होता है; वह अन्य सभी तुच्छ प्रक्रियाओं से नहीं गुज़रता है। एक बार जब उसका कार्य पूरा हो जाता है, तब उसके देहधारण का महत्व भी समाप्त हो जाता है। यह चरण समाप्त करने का अर्थ है कि वह कार्य जो उसे देह में करने की आवश्यकता है समाप्त हो गया है, और उसकी देह की सेवकाई पूरी हो गई है। परंतु वह देह में अनिश्चित काल तक कार्य करता नहीं रह सकता है। उसे कार्य करने के लिए अन्य स्थान पर, देह के बाहर एक स्थान पर, जाना होता है। केवल इसी प्रकार उसका कार्य पूरी तरह किया जा सकता है, और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है। परमेश्वर अपनी मूल योजना के अनुसार कार्य करता है। उसे कौनसा कार्य करने की आवश्यकता है और वह कौनसा कार्य पूरा कर चुका है, यह वह अपने हाथ की हथेली की तरह स्पष्ट रूप से जानता है। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उस मार्ग पर चलने के लिए ले जाता है जो उसने पहले ही पूर्वनिर्धारित कर दिया है। कोई भी इससे बच नहीं सकता है। केवल वे ही जो परमेश्वर के आत्मा के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हैं, विश्राम में प्रवेश कर पाएँगे। हो सकता है कि, बाद के कार्य में, मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए देह में बोल रहा यह परमेश्वर नहीं हो, बल्कि मनुष्य के जीवन का मार्गदर्शन कर रहा इंद्रियगोचर रूप में पवित्रात्मा हो। केवल तभी मनुष्य ठोस ढँग से परमेश्वर को स्पर्श कर पाएगा,

परमेश्वर को देख पाएगा, और उस वास्तविकता में बेहतर प्रवेश कर पाएगा जिसकी परमेश्वर को अपेक्षा है, ताकि उसे व्यावहारिक परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जा सके। यही वह कार्य है जिसे परमेश्वर संपन्न करना चाहता है, और जिसकी उसने बहुत पहले योजना बनाई थी। इससे, तुम सब लोगों को वह मार्ग देख पाना चाहिए जिसे तुम लोगों को अपनाना चाहिए!

अंधकार के प्रभाव से बच निकलो और तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाओगे

अंधकार का प्रभाव क्या है? यह तथाकथित "अंधकार का प्रभाव", शैतान के लोगों को धोखा देने, भ्रष्ट करने, बांधने और नियंत्रित करने का प्रभाव है; शैतान का प्रभाव एक ऐसा प्रभाव है जिसमें मृत्यु का साया है। शैतान के कब्ज़े में रहने वाले सभी लोग नष्ट हो जाने के लिए अभिशप्त हैं।

परमेश्वर में आस्था पाने के बाद, तुम अंधकार के प्रभाव से कैसे बच सकते हो? एक बार जब तुम ईमानदारी से परमेश्वर से प्रार्थना कर लेते हो तो, तुम अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर की ओर मोड़ देते हो, और उस समय परमेश्वर का आत्मा तुम्हारे हृदय को प्रेरित करता है। तुम पूरी तरह से उसे समर्पित होने को तैयार हो जाते हो, और उस समय, तुम अंधकार के प्रभाव से निकल चुके होगे। यदि इंसान के सारे काम परमेश्वर को प्रसन्न करें और उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप हुआ करें, तो वह परमेश्वर के वचनों में और उसकी निगरानी एवं सुरक्षा में रहने वाला बन जाता है। यदि लोग परमेश्वर के वचनों का अभ्यास न कर पाते, अगर वे हमेशा परमेश्वर को मूर्ख बनाने की कोशिश करते हैं, उसके प्रति लापरवाह तरीके से काम करते हैं और उसके अस्तित्व में विश्वास नहीं करते, तो ऐसे सभी लोग अंधकार के प्रभाव में रहते हैं। जिन लोगों ने परमेश्वर द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं किया है, वे सभी शैतान के अधिकार-क्षेत्र में जी रहे हैं; अर्थात्, वे सभी अंधकार के प्रभाव में रहते हैं। जो लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते, वे शैतान के अधिकार-क्षेत्र में रह रहे हैं। यहाँ तक कि जो लोग परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं, जरूरी नहीं कि वे परमेश्वर के प्रकाश में रह रहे हों, क्योंकि जो लोग परमेश्वर में विश्वास रखते हैं, जरूरी नहीं कि परमेश्वर के वचनों में जी रहे हों, और यह भी जरूरी नहीं कि वे परमेश्वर के प्रति समर्पित करने में समर्थ हों। मनुष्य केवल परमेश्वर में विश्वास रखने तक सीमित है, और चूँकि उसे परमेश्वर का ज्ञान नहीं है, इसलिए वह अभी भी पुराने नियमों और निर्जीव वचनों के बीच जीवनयापन कर रहा है, वो एक ऐसा जीवन जी रहा है जो अंधकारमय

और अनिश्चित है, जिसे न तो परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से शुद्ध किया गया है, न ही पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा प्राप्त किया गया है। इसलिए, कहने की आवश्यकता नहीं कि जो लोग परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते, वे अंधकार के प्रभाव में जी रहे हैं, जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, वे भी शायद अभी तक अंधकार के प्रभाव में ही हैं, क्योंकि उनमें पवित्र आत्मा का काम नहीं है। जिन लोगों ने परमेश्वर का अनुग्रह या दया नहीं प्राप्त की है, जो पवित्र आत्मा द्वारा किए गये कार्य को नहीं देख सकते, वे सभी अंधकार के प्रभाव में जी रहे हैं; और अधिकांशतः, ऐसे ही लोग होते हैं जो महज़ परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेते हैं फिर भी परमेश्वर को नहीं जानते हैं। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर पर विश्वास करता है मगर अपना अधिकांश जीवन अंधकार के प्रभाव में जीते हुए बिताता है, तो उस व्यक्ति का अस्तित्व अपना अर्थ खो चुका होता है, उन लोगों का उल्लेख करने की क्या आवश्यकता है जो परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास ही नहीं रखते?

जो लोग परमेश्वर के काम को स्वीकार नहीं कर सकते हैं या जो परमेश्वर के कार्य को स्वीकार तो करते हैं लेकिन परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते, वे लोग अंधकार के प्रभाव में रह रहे हैं। जो लोग सत्य का अनुसरण करते हैं और परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हैं, वे ही परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे, और वही लोग अंधकार के प्रभाव से बच पाएँगे। जो लोग मुक्त नहीं किए गए हैं, जो हमेशा किसी वस्तु-विशेष के द्वारा नियंत्रित होते हैं, और जो अपना हृदय परमेश्वर को नहीं दे पाते, वे लोग शैतान के बंधन में हैं और वे मौत के साये में जी रहे हैं। जो लोग अपने कर्तव्यों के प्रति वफादार नहीं हैं, जो परमेश्वर के आदेश के प्रति वफादार नहीं हैं, जो कलीसिया में अपना कार्य नहीं कर रहे हैं, वे ऐसे लोग हैं जो अंधकार के प्रभाव में रह रहे हैं। जो जानबूझकर कलीसिया के जीवन में बाधा डालते हैं, जो जानबूझकर अपने भाई-बहनों के बीच झगड़े के बीज बो रहे हैं, या अपने गुट बना रहे हैं, वे अभी भी गहरे अंधकार के प्रभाव में रहते हैं, शैतान के बंधन में रहते हैं। जिनका परमेश्वर के साथ एक असामान्य रिश्ता है, जिनकी हमेशा अनावश्यक अभिलाषाएं होती हैं, जो हमेशा लाभ लेना चाहते हैं, जो कभी अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं लाना चाहते, वे ऐसे लोग होते हैं जो अंधकार के प्रभाव में रहते हैं। जो लोग हमेशा लापरवाह होते हैं, सत्य के अपने अभ्यास में गंभीर नहीं होते, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के इच्छुक नहीं होते, जो केवल अपने ही शरीर को संतुष्ट करने में लगे रहते हैं, ऐसे लोग भी अंधकार के प्रभाव में जी रहे हैं, और मृत्यु से घिरे हुए हैं। जो लोग परमेश्वर के लिए काम करते समय चालबाजी और धोखा करते हैं, परमेश्वर के साथ लापरवाही से व्यवहार करते हैं, जो परमेश्वर को धोखा देते हैं, हमेशा स्वयं के लिए सोचते

रहते हैं, ऐसे लोग अंधकार के प्रभाव में रह रहे हैं। जो लोग ईमानदारी से परमेश्वर से प्यार नहीं कर सकते हैं, जो सत्य का अनुसरण नहीं करते, और जो अपने स्वभाव को बदलने पर ध्यान नहीं देते, वे लोग अंधकार के प्रभाव में रह रहे हैं।

यदि तुम परमेश्वर की प्रशंसा पाना चाहते हो, तो सबसे पहले तुम्हें शैतान के अंधकारमय प्रभाव से निकलना चाहिए, अपना हृदय परमेश्वर के लिए खोलना चाहिए, और इसे पूरी तरह से परमेश्वर की ओर मोड़ देना चाहिए। क्या जिन कामों को तुम अब कर रहे हो उनकी परमेश्वर द्वारा प्रशंसा की जाएगी? क्या तुमने अपना हृदय परमेश्वर की ओर मोड़ दिया है? तुमने जो काम किये हैं, क्या वे वही हैं जिनकी परमेश्वर तुमसे अपेक्षा करता है? क्या वे सत्य के अनुरूप हैं? तुम्हें हमेशा अपनी जाँच करनी चाहिए, परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने पर ध्यान देना चाहिए; अपना हृदय परमेश्वर के सामने रख देना चाहिए, ईमानदारी से परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, और निष्ठा के साथ परमेश्वर के लिए खुद को खपाना चाहिए। ऐसे लोगों को निश्चित रूप से परमेश्वर की प्रशंसा मिलेगी।

जो लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं लेकिन फिर भी सत्य का अनुसरण नहीं करते, वे शैतान के प्रभाव से किसी भी तरह नहीं बच सकते। जो लोग ईमानदारी से अपना जीवन नहीं जीते, जो लोगों के सामने एक तरह से और उनकी पीठ पीछे दूसरी तरह से व्यवहार करते हैं, जो नम्रता, धैर्य और प्रेम का दिखावा करते हैं, जबकि मूलत: उनका सार कपटी और धूर्त होता है और परमेश्वर के प्रति उनकी कोई निष्ठा नहीं होती, ऐसे लोग अंधकार के प्रभाव में रहने वाले लोगों के विशिष्ट नमूने हैं; वे सर्प के किस्म के लोग हैं। जो लोग हमेशा अपने ही लाभ के लिए परमेश्वर में विश्वास रखते हैं, जो अभिमानी और घमंडी हैं, जो दिखावा करते हैं, और जो हमेशा अपनी हैसियत की रक्षा करते हैं, वे ऐसे लोग होते हैं जो शैतान से प्यार करते हैं और सत्य का विरोध करते हैं। वे लोग परमेश्वर का विरोध करते हैं और पूरी तरह से शैतान के होते हैं। जो लोग परमेश्वर के बोझ के प्रति सजग नहीं हैं, जो पूरे दिल से परमेश्वर की सेवा नहीं करते, जो हमेशा अपने और अपने परिवार के हितों के लिए चिंतित रहते हैं, जो खुद को परमेश्वर की खातिर खपाने के लिए हर चीज़ का परित्याग करने में सक्षम नहीं हैं, और जो परमेश्वर के वचनों के अनुसार अपनी ज़िंदगी नहीं जीते, वे परमेश्वर के वचनों के बाहर जी रहे हैं। ऐसे लोगों को परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त नहीं हो सकती।

जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो उसका उद्देश्य था कि मनुष्य परमेश्वर की समृद्धि का आनंद ले

और मनुष्य वास्तव में उससे प्यार करे; इस तरह, मनुष्य उसके प्रकाश में रहेगा। आज, जो लोग परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, वे परमेश्वर के भार के प्रति सजग नहीं हैं, वे पूरी तरह से अपना हृदय परमेश्वर को नहीं दे पाते, परमेश्वर के हृदय को अपने हृदय की तरह नहीं मान पाते, परमेश्वर के बोझ को अपना मानकर उसे अपने ऊपर नहीं ले पाते, ऐसे लोगों पर परमेश्वर का प्रकाश नहीं चमकता, इसलिए ऐसे सभी लोग अंधकार के प्रभाव में जी रहे हैं। इस प्रकार के लोग ऐसे रास्ते पर हैं जो ठीक परमेश्वर की इच्छा के विपरीत जाता है, उनके किसी भी काम में लेशमात्र भी सत्य नहीं होता। वे शैतान के साथ दलदल में लोट रहे हैं और अंधकार के प्रभाव में जी रहे हैं। यदि तुम अक्सर परमेश्वर के वचनों को खा और पी सको, साथ ही परमेश्वर की इच्छाओं के प्रति सजग रह सको और परमेश्वर के वचनों का अभ्यास कर सको, तो तुम परमेश्वर के हो, तुम ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर के वचनों में जी रहा है। क्या तुम शैतान के कब्ज़े से निकलने और परमेश्वर के प्रकाश में रहने के लिए तैयार हो? यदि तुम परमेश्वर के वचनों में रहते हो, तो पवित्र आत्मा को अपना काम करने का अवसर मिलेगा; यदि तुम शैतान के प्रभाव में रहते हो, तो तुम पवित्र आत्मा को काम करने का ऐसा कोई अवसर नहीं दोगे। पवित्र आत्मा मनुष्यों पर जो काम करता है, वह जो प्रकाश उन पर डालता है, और वह जो विश्वास उन्हें देता है, वह केवल एक ही पल तक रहता है; यदि लोग सावधान न रहें और ध्यान न दें, तो पवित्र आत्मा द्वारा किया गया कार्य उन्हें छुए बिना ही निकल जाएगा। यदि मनुष्य परमेश्वर के वचनों में रहता है, तो पवित्र आत्मा उनके साथ रहेगा और उन पर काम करेगा; अगर मनुष्य परमेश्वर के वचनों में नहीं रहता, तो वह शैतान के बंधन में रहता है। यदि इंसान भ्रष्ट स्वभाव के साथ जीता है, तो उसमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति या पवित्र आत्मा का काम नहीं होता। यदि तुम परमेश्वर के वचनों की सीमाओं में रह रहे हो, यदि तुम परमेश्वर द्वारा अपेक्षित परिस्थिति में जी रहे हो, तो तुम परमेश्वर के हो, और उसका काम तुम पर किया जाएगा; अगर तुम परमेश्वर की अपेक्षाओं के दायरे में नहीं जी रहे, बल्कि शैतान के अधीन रह रहे हो, तो निश्चित रूप से तुम शैतान के भ्रष्टाचार के अधीन जी रहे हो। केवल परमेश्वर के वचनों में रहकर अपना हृदय परमेश्वर को समर्पित करके, तुम परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हो; तुम्हें वैसा ही करना चाहिए जैसा परमेश्वर कहता है, तुम्हें परमेश्वर के वचनों को अपने अस्तित्व की बुनियाद और अपने जीवन की वास्तविकता बनाना चाहिए; तभी तुम परमेश्वर के होगे। यदि तुम सचमुच परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ईमानदारी से अभ्यास करते हो, तो परमेश्वर तुम में काम करेगा, और फिर तुम उसके आशीष में रहोगे, उसके मुखमंडल की रोशनी में रहोगे; तुम पवित्र

आत्मा द्वारा किए जाने वाले कार्य को समझोगे, और तुम परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद महसूस करोगे।

अंधकार के प्रभाव से बचने के लिए, पहले तुम्हें परमेश्वर के प्रति वफादार होना चाहिए और तुम्हारे अंदर सत्य का अनुसरण करने की उत्सुकता होनी चाहिए, तभी तुम्हारी अवस्था सही हो सकती है। अंधकार के प्रभाव से बचने के लिए सही अवस्था में रहना पहली जरूरत है। सही अवस्था के न होने का मतलब है कि तुम परमेश्वर के प्रति वफादार नहीं हो और तुममें सत्य की खोज करने की उत्सुकता नहीं है; और अंधकार के प्रभाव से बचने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। मेरे वचन इंसान के अंधकार के प्रभावों से बचने का आधार हैं, और जो लोग मेरे वचनों के अनुसार अभ्यास नहीं कर सकते, वे अंधकार के प्रभाव के बंधन से बच नहीं सकते। सही अवस्था में जीने का अर्थ है परमेश्वर के वचनों के मार्गदर्शन में जीना, परमेश्वर के प्रति वफादार होने की अवस्था में जीना, सत्य खोजने की अवस्था में जीना, ईमानदारी से परमेश्वर के लिए खुद को खपाने की वास्तविकता में जीना, और वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करने की अवस्था में जीना। जो लोग इन अवस्थाओं में और इस वास्तविकता में जीते हैं, वे जैसे-जैसे सत्य में अधिक गहराई से प्रवेश करेंगे, वैसे-वैसे वे रूपांतरित होते जाएँगे, और जैसे-जैसे काम गहन होता जाएगा, वे रूपांतरित हो जाएँगे; और अंत में, वे ऐसे इंसान बन जाएँगे जो यकीनन परमेश्वर को प्राप्त हो जाएँगे और उससे प्रेम करेंगे। जो लोग अंधकार के प्रभाव से बच निकले हैं, वे धीरे-धीरे परमेश्वर की इच्छा को सुनिश्चित कर सकते हैं, इसे समझ सकते हैं, और अंततः परमेश्वर के विश्वासपात्र बन जाते हैं। उनके अंदर न केवल परमेश्वर के बारे में कोई धारणा नहीं होती, वे लोग परमेश्वर के खिलाफ कोई विद्रोह भी नहीं करते, बल्कि वे लोग उन धारणाओं और विद्रोह से और भी अधिक घृणा करने लगते हैं जो उनमें पहले थे, और उनके हृदय में परमेश्वर के लिए सच्चा प्यार पैदा हो जाता है। जो लोग अंधकार के प्रभाव से बच निकलने में असमर्थ हैं, वे अपनी देह में लिप्त रहते हैं, और विद्रोह से भरे होते हैं; जीवनयापन के लिए उनका हृदय मानव धारणाओं और जीवन-दर्शन से, और साथ ही अपने इरादों और विचार-विमर्शों से भरा रहता है। परमेश्वर मनुष्य से एकनिष्ठ प्रेम की अपेक्षा करता है; परमेश्वर अपेक्षा करता है कि मनुष्य उसके वचनों से भरा रहे और उसके लिए प्यार से भरे हृदय से परिपूर्ण रहे। परमेश्वर के वचनों में रहना, उसके वचनों में ढूँढना जो उन्हें खोजना चाहिए, परमेश्वर को उसके वचनों के लिए प्यार करना, उसके वचनों के लिए भागना, उसके वचनों के लिए जीना—ये ऐसे लक्ष्य हैं जिन्हें पाने के लिए इंसान को प्रयास करने चाहिए। सबकुछ परमेश्वर के वचनों पर निर्मित किया जाना चाहिए; इंसान तभी परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा

करने में सक्षम हो पाएगा। यदि मनुष्य में परमेश्वर के वचन नहीं होंगे, तो इंसान शैतान के चंगुल में फँसे भुनगे से ज़्यादा कुछ नहीं है! इसका आकलन करो : परमेश्वर के कितने वचनों ने तुम्हारे अंदर जड़ें जमाई हैं? किन चीज़ों में तुम परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन जीते रहे हो? किन चीज़ों में तुम परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन नहीं जीते रहे हो? यदि तुम पूरी तरह से परमेश्वर के वचनों के प्रभाव में नहीं हो, तो तुम्हारे दिल पर किसने कब्ज़ा कर रखा है? अपने रोजमर्रा के जीवन में, क्या तुम शैतान द्वारा नियंत्रित किए जा रहे हो, या परमेश्वर के वचनों ने तुम पर अधिकार कर रखा है? क्या तुम्हारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के वचनों की बुनियाद पर आधारित हैं? क्या तुम परमेश्वर के वचनों के प्रबोधन से अपनी नकारात्मक अवस्था से बाहर आ गए हो? परमेश्वर के वचनों को अपने अस्तित्व की नींव की तरह लेना—यही वो है जिसमें सबको प्रवेश करना चाहिए। यदि तुम्हारे जीवन में परमेश्वर के वचन विद्यमान नहीं हैं, तो तुम अंधकार के प्रभाव में जी रहे हो, तुम परमेश्वर से विद्रोह कर रहे हो, तुम उसका विरोध कर रहे हो, और तुम परमेश्वर के नाम का अपमान कर रहे हो। इस तरह के मनुष्यों का परमेश्वर में विश्वास पूरी तरह से बदमाशी है, एक विघ्न है। तुम्हारा कितना जीवन परमेश्वर के वचनों के अनुसार रहा है? तुम्हारा कितना जीवन परमेश्वर के वचनों के अनुसार नहीं रहा है? परमेश्वर के वचनों को तुमसे जो अपेक्षाएँ थीं, उनमें से तुमने कितनी पूरी की हैं? कितनी तुममें खो गई हैं? क्या तुमने ऐसी चीज़ों को बारीकी से देखा है?

अंधकार के प्रभाव से निकलने के लिए, पवित्र आत्मा का कार्य और इंसान का समर्पित सहयोग, दोनों की आवश्यकता होती है। मैं क्यों कहता हूँ कि इंसान सही रास्ते पर नहीं है? जो लोग सही रास्ते पर हैं, वे सबसे पहले, अपना हृदय ईश्वर को समर्पित कर सकते हैं। इस कार्य में प्रवेश करने में लंबा समय लगता है, क्योंकि मानवजाति हमेशा से अंधकार के प्रभाव में रहती आई है, हजारों सालों से शैतान की दासता में रह रही है, इसलिए यह प्रवेश एक या दो दिन में प्राप्त नहीं किया जा सकता। आज मैंने यह मुद्दा इसलिए उठाया है ताकि इंसान अपनी स्थिति को समझ सकें; एक बार जब इंसान इस बात को समझ जाएगा कि अंधकार का प्रभाव क्या होता है और प्रकाश में रहना क्या होता है, तो प्रवेश आसान हो जाता है। क्योंकि इससे पहले कि तुम शैतान के प्रभाव से निकलो, तुम्हें पता होना चाहिए कि ये क्या होता है; तभी तुम्हें इससे छुटकारा पाने का मार्ग मिल सकता है। जहाँ तक यह बात है कि उसके बाद क्या करना है, यह तो इंसान का खुद का मामला है। हर चीज़ में एक सकारात्मक पहलू से प्रवेश करो, और कभी निष्क्रिय होकर इंतजार मत करो। मात्र यही तरीका है जिससे तुम्हें परमेश्वर द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

इंसान को अपनी आस्था में, वास्तविकता पर ध्यान देना चाहिए, धार्मिक रीति-रिवाजों में लिप्त रहना आस्था नहीं है

तुम कितनी धार्मिक परम्पराओं का पालन करते हो? कितनी बार तुमने परमेश्वर के वचन के खिलाफ विद्रोह किया है और अपने तरीके से चले हो? कितनी बार तुम परमेश्वर के वचनों को इसलिए अभ्यास में लाए हो क्योंकि तुम उसके भार के बारे में सच में विचारशील हो और उसकी इच्छा पूरी करना चाहते हो? परमेश्वर के वचन को समझो और उसे अभ्यास में लाओ। अपने सारे कामकाज में सिद्धांतवादी बनो, इसका अर्थ नियम में बंधना या बेमन से बस दिखावे के लिए ऐसा करना नहीं है; बल्कि, इसका अर्थ सत्य का अभ्यास और परमेश्वर के वचन में जीवन व्यतीत करना है। केवल इस प्रकार का अभ्यास ही परमेश्वर को संतुष्ट करता है। जो काम परमेश्वर को प्रसन्न करता हो वह कोई नियम नहीं बल्कि सत्य का अभ्यास होता है। कुछ लोगों में अपनी ओर ध्यान खींचने की प्रवृत्ति होती है। अपने भाई-बहनों की उपस्थिति में वे भले ही कहें कि वे परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ हैं, परंतु उनकी पीठ पीछे वे सत्य का अभ्यास नहीं करते और पूरी तरह अलग ही व्यवहार करते हैं। क्या वे धार्मिक फरीसी नहीं हैं? एक ऐसा व्यक्ति जो सच में परमेश्वर से प्यार करता है और जिसमें सत्य है वह परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होता है, परंतु वह बाहर से इसका दिखावा नहीं करता। अगर कभी इस तरह के हालात पैदा हों, तो वह सत्य का अभ्यास करने को तैयार रहता है और अपने विवेक के विरुद्ध जाकर नहीं बोलता है या कार्य नहीं करता। चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, जब कोई बात होती है तो वह अपनी बुद्धि से कार्य करता है और अपने सिद्धांतों पर टिका रहता है। इस तरह का व्यक्ति ही सच्ची सेवा कर सकता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए ज़बानी जमा खर्च करते हैं; दिनभर चिंता में भौंहें चढ़ाए अपना समय गँवाते रहते हैं, अच्छा व्यक्ति होने का नाटक करते हैं, और दया के पात्र होने का दिखावा करते हैं। कितनी घिनौनी हरकत है! यदि तुम उनसे पूछो कि "क्या तुम बता सकते हो कि तुम परमेश्वर के ऋणी कैसे हो?" तो वे निरुत्तर हो जाते। यदि तुम परमेश्वर के प्रति निष्ठावान हो, तो इस बारे में सार्वजनिक रूप से चर्चा मत करो; बल्कि परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम वास्तविक अभ्यास से दर्शाओ और सच्चे हृदय से उससे प्रार्थना करो। जो लोग परमेश्वर से केवल मौखिक रूप से और बेमन से व्यवहार करते हैं वे सभी पाखंडी हैं, कुछ लोग जब भी प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करते और पवित्र आत्मा द्वारा द्रवित किए बिना ही रोना आरंभ कर देते हैं। इस तरह के लोग धार्मिक रिवाजों और धारणाओं से ग्रस्त होते हैं; वे लोग

हमेशा इन धार्मिक रिवाजों और धारणाओं के साथ जीते हैं, और मानते हैं कि इन कामों से परमेश्वर प्रसन्न होता है और सतही धार्मिकता या दुःखभरे आँसुओं को पसंद करता है। ऐसे बेतुके लोगों से कौन-सी भलाई हो सकती है? कुछ लोग अपनी विनम्रता का प्रदर्शन करने के लिए, दूसरों के सामने बोलते समय अपनी अनुग्रहशीलता का दिखावा करते हैं। कुछ लोग दूसरों के सामने जानबूझकर किसी नितान्त शक्तिहीन मेमने की तरह चापलूसी करते हैं। क्या यह तौर–तरीका राज्य के लोगों के लिए उचित है? राज्य के व्यक्ति को जीवंत और स्वतंत्र, भोला-भाला और स्पष्ट, ईमानदार और प्यारा होना चाहिए, और एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो स्वतंत्रता की स्थिति में जिये। उसमें सत्यनिष्ठा और गरिमा होनी चाहिए, और वो जहाँ भी जाए, वहीँ गवाही दे; ऐसे लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों को प्रिय होते हैं। जो लोग विश्वास में नौसिखिये होते हैं, वो बहुत सारे अभ्यास दिखावे के लिए करते हैं; उन्हें सबसे पहले निपटारे और कष्टों से गुज़रना चाहिए। जिन लोगों के हृदय में परमेश्वर का विश्वास है, वे ऊपरी तौर पर दूसरों से अलग नहीं दिखते, किन्तु उनके कामकाज प्रशंसनीय होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को ही परमेश्वर के वचनों को जीने वाला इंसान समझा जा सकता है। यदि तुम विभिन्न लोगों को उद्धार में लाने के लिए प्रतिदिन सुसमाचार का उपदेश देते हो, लेकिन अंततः, तुम नियमों और सिद्धांतों में ही जीते रहते हो, तो तुम परमेश्वर को गौरवान्वित नहीं कर सकते। ऐसे लोग धार्मिक पाखंडी होते हैं।

जब कभी भी ऐसे धार्मिक लोग जमा होते हैं, तो वे पूछते हैं, "बहन, आजकल कैसा चल रहा है?" तो संभव है कि वह ये उत्तर दे, "मैं परमेश्वर की कृतज्ञ हूँ, लेकिन मैं उसकी इच्छा पूरी नहीं कर पाती हूँ।" दूसरी संभव है कि कहे, "मैं भी परमेश्वर की कृतज्ञ हूँ और उसे संतुष्ट नहीं कर पाती।" ये कुछ वाक्य और शब्द ही उनके हृदय की गहराई में मौजूद अधम चीजों को व्यक्त कर देते हैं; ऐसी बातें अत्यधिक घृणित और अत्यंत अरुचिकर होती हैं। ऐसे लोगों की प्रकृति परमेश्वर से उलट होती है। जो लोग वास्तविकता पर ध्यान देते हैं वे वही बोलते हैं जो उनके दिल में होता है, और संगति में अपना दिल खोल देते हैं। ऐसे लोग न तो किसी झूठी कवायद में शामिल नहीं होते हैं, न झूठा शिष्टाचार दिखाते हैं, न खोखली हँसी-खुशी का प्रदर्शन करते हैं। वे हमेशा स्पष्ट होते हैं और किसी सांसारिक नियम का पालन नहीं करते हैं। कुछ लोगों में, समझ के निपट अभाव की हद तक, दिखावे की आदत होती है। जब कोई गाता है, तो वह नाचने लगते हैं, वो समझ ही नहीं पाते कि उनका खेल पहले ही खत्म हो चुका है। ऐसे लोग धर्मपरायण या सम्माननीय नहीं होते, बहुत ही तुच्छ होते हैं। ये सब वास्तविकता के अभाव की अभिव्यक्तियाँ हैं। जब कुछ लोग

आध्यात्मिक जीवन के बारे में संगति करते हैं, तो यद्यपि वे परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ होने की बात नहीं करते, फिर भी वे अपने हृदय में उसके प्रति सच्चा प्रेम रखते हैं। परमेश्वर के प्रति तुम्हारी कृतज्ञता का दूसरे लोगों से कोई लेना-देना नहीं है; तुम परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ हो, न कि किसी मनुष्य के प्रति। इस बारे में लगातार दूसरों को बताने का क्या फायदा है? तुम्हें वास्तविकता में प्रवेश करने को महत्व देना चाहिए, न कि बाहरी उत्साह या प्रदर्शन को।

इंसान के दिखावटी काम क्या दर्शाते हैं? वे देह की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, यहाँ तक कि दिखावे के सर्वोत्तम अभ्यास भी जीवन का प्रतिनिधित्व नहीं करते, वे केवल तुम्हारी अपनी व्यक्तिगत मनोदशा को दर्शा सकते हैं। मनुष्य के बाहरी अभ्यास परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं कर सकते। तुम निरतंर परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता की बातें करते रहते हो, लेकिन तुम दूसरों में जीवन की आपूर्ति नहीं कर सकते या परमेश्वर से प्रेम करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते। क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारे ऐसे कार्य परमेश्वर को संतुष्ट करेंगे? तुम्हें लगता है कि तुम्हारे कार्य परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हैं, और वे आत्मिक हैं, किन्तु सच में वे सब बेतुके हैं! तुम मानते हो कि जो तुम्हें अच्छा लगता है और जो तुम करना चाहते हो, वे ठीक वही चीजें हैं जिनसे परमेश्वर आनंदित होता है। क्या तुम्हारी पसंद परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकती है? क्या मनुष्य का चरित्र परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकता है? जो चीज़ तुम्हें अच्छी लगती है, परमेश्वर उसी से घृणा करता है, और तुम्हारी आदतें ऐसी हैं जिन्हें परमेश्वर नापसंद और अस्वीकार करता है। यदि तुम खुद को कृतज्ञ महसूस करते हो, तो परमेश्वर के सामने जाओ और प्रार्थना करो; इस बारे में दूसरों से बात करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि तुम परमेश्वर के सामने प्रार्थना करने के बजाय दूसरों की उपस्थिति में निरंतर अपनी ओर ध्यान आकर्षित करवाते हो, तो क्या इससे परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया जा सकता है? यदि तुम्हारे काम सदैव दिखावे के लिए ही हैं, तो इसका अर्थ है कि तुम एकदम नाकारा हो। ऐसे लोग किस तरह के होते हैं जो दिखावे के लिए तो अच्छे काम करते हैं लेकिन वास्तविकता से रहित होते हैं? ऐसे लोग सिर्फ पाखंडी फरीसी और धार्मिक लोग होते हैं। यदि तुम लोग अपने बाहरी अभ्यासों को नहीं छोड़ते और परिवर्तन नहीं कर सकते, तो तुम लोग और भी ज़्यादा पाखंडी बन जाओगे। जितने ज़्यादा पाखंडी बनोगे, उतने ही ज़्यादा परमेश्वर का विरोध करोगे। और अंत में, इस तरह के लोग निश्चित रूप से हटा दिए जाएँगे।

जो परमेश्वर के आज के कार्य को जानते हैं केवल वे ही परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं

परमेश्वर की गवाही देने के लिए और विशाल लाल अजगर को शर्मिंदा करने के लिए व्यक्ति के पास एक सिद्धांत का होना जरूरी है, और जरूरी है एक शर्त को पूरा करना : उसे परमेश्वर को दिल से प्रेम करना चाहिए और परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करना चाहिए। यदि तुम लोग परमेश्वर के वचनों में प्रवेश नहीं करते तो तुम्हारे पास शैतान को शर्मिंदा करने का कोई तरीका नहीं होगा। अपने जीवन के विकास द्वारा, तुम विशाल लाल अजगर को त्यागते हो और उसका घोर तिरस्कार करते हो; केवल इसी तरह विशाल लाल अजगर को सही में शर्मिंदा किया जा सकता है। जितना अधिक तुम परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाने के इच्छुक होगे, उतना ही अधिक यह परमेश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम और उस विशाल लाल अजगर के प्रति तुम्हारी घृणा का सबूत होगा; जितना अधिक तुम परमेश्वर के वचनों का पालन करोगे, उतना ही अधिक यह सत्य के लिए तुम्हारी लालसा का सबूत होगा। जो लोग परमेश्वर के वचन की लालसा नहीं करते हैं वे बिना जीवन के होते हैं। ऐसे लोग वे लोग होते हैं जो परमेश्वर के वचनों से बाहर ही रहते हैं और जो सिर्फ धर्म से जुड़े होते हैं। जो लोग सचमुच परमेश्वर पर विश्वास करते हैं उनकी परमेश्वर के वचनों की समझ ज्यादा गहरी होती है, क्योंकि वे परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हैं। यदि तुम परमेश्वर के वचनों के लिए लालायित नहीं हो तो तुम उसके वचनों को सचमुच खा और पी नहीं सकते हो, और यदि तुम्हें परमेश्वर के वचनों का ज्ञान नहीं है, तो तुम्हारे पास परमेश्वर की गवाही देने या उसे संतुष्ट करने का कोई साधन नहीं है।

परमेश्वर पर विश्वास करने में, परमेश्वर को कैसे जानना चाहिए? परमेश्वर को, बिना किसी भटकाव या भ्रांति के, उसके आज के वचनों और कार्य के आधार पर जानना चाहिए, और अन्य सभी चीजों से पहले परमेश्वर के कार्य को जानना चाहिए। यही परमेश्वर को जानने का आधार है। वे तमाम प्रकार की भ्रांतियां जिनमें परमेश्वर के वचनों की शुद्ध स्वीकृति नहीं है, धार्मिक धारणाएं हैं, वे पथभ्रष्ट और गलत समझ हैं। धार्मिक अगुवाओं का सबसे बड़ा कौशल यह है कि वे अतीत में समझे गए परमेश्वर के वचनों के आधार पर उसके आज के वचनों की जांच करते हैं। यदि आज के परमेश्वर की सेवा करते हुए, तुम पवित्र आत्मा द्वारा अतीत में प्रकाशित प्रबुद्ध बातों को पकड़े रहते हो, तो तुम्हारी सेवा रुकावट उत्पन्न करेगी, तुम्हारा अभ्यास पुराना पड़ जाएगा और वह धार्मिक अनुष्ठान से अधिक कुछ नहीं होगा। यदि तुम यह विश्वास करते हो कि

जो परमेश्वर की सेवा करते हैं उनमें बाह्य रूप से, अन्य गुणों के साथ-साथ, विनम्रता और धैर्य का होना आवश्यक है, और यदि तुम आज इस प्रकार की जानकारी को अभ्यास में लाते हो तो ऐसा ज्ञान एक धार्मिक धारणा है; इस प्रकार का अभ्यास एक पाखंडपूर्ण प्रदर्शन बन गया है। "धार्मिक धारणाएं" उन बातों को दर्शाती हैं जो अप्रचलित और पुरानी हो चुकी हैं (इनमें परमेश्वर द्वारा पहले कहे गए वचनों और पवित्र आत्मा द्वारा सीधे प्रकट किए गए प्रकाश की समझ भी शामिल है), और यदि वे आज अभ्यास में लाए जाते हैं, तो वे परमेश्वर के कार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं, और मनुष्य को कोई लाभ नहीं पहुंचाते। यदि मनुष्य स्वयं को उन चीजों से मुक्त नहीं कर पाता है जो धार्मिक धारणाओं से आती हैं, तो ये चीजें मनुष्य द्वारा परमेश्वर की सेवा में बहुत बड़ी बाधा बन जाएँगी। धार्मिक धारणाओं वाले लोगों के पास पवित्र आत्मा के कार्यों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का कोई उपाय नहीं है, वे एक कदम, फिर दो कदम पीछे हो जाएंगे—क्योंकि ये धार्मिक अवधारणाएं मनुष्य को बेहद आत्मतुष्ट और घमंडी बना देती हैं। परमेश्वर अतीत में कही गई अपनी बातों और अपने द्वारा किए गए कार्यों के प्रति कोई मोह महसूस नहीं करता, यदि कुछ अप्रचलित हो गया है, तो वह उसे हटा देता है। क्या तुम सचमुच अपनी धारणाओं को त्यागने में असमर्थ हो? यदि तुम परमेश्वर के पूर्व में कहे गए वचनों से चिपके रहते हो, तो क्या इससे यह सिद्ध होता है कि तुम परमेश्वर के कार्य को जानते हो? यदि तुम पवित्र आत्मा के प्रकाश को आज स्वीकार करने में असमर्थ हो, और इसकी बजाय अतीत के प्रकाश से चिपके रहते हो, तो क्या इससे यह सिद्ध हो सकता है कि तुम परमेश्वर के नक्शेकदम पर चलते हो? क्या तुम अभी भी धार्मिक धारणाओं को छोड़ पाने में असमर्थ हो? यदि ऐसा है, तो तुम परमेश्वर का विरोध करने वाले बन जाओगे।

यदि लोग धार्मिक धारणाओं को छोड़ सकें, तो वे आज परमेश्वर के वचनों और उसके कार्य को मापने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं करेंगे, और इसकी बजाय सीधे उनका पालन करेंगे। भले ही परमेश्वर का आज का कार्य साफ़ तौर पर अतीत के कार्य से अलग है, तुम फिर भी अतीत के विचारों का त्याग कर पाने और आज सीधे तौर पर परमेश्वर के वचनों का पालन करने में सक्षम हो। यदि अतीत में परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य को नजरअंदाज करते हुए, तुम यह समझने में सक्षम हो कि तुम्हारे लिए परमेश्वर के आज के कार्य को सबसे प्रमुख स्थान देना जरूरी है, तो तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जो अपनी धारणाओं को छोड़ चुका है, जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है, और जो परमेश्वर के कार्य और वचनों का पालन करने और उसके पदचिह्नों पर चलने में सक्षम है। इस तरह, तुम एक ऐसे व्यक्ति होगे जो

सचमुच परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है। तुम परमेश्वर के कार्य का विश्लेषण या जांच नहीं करते हो; यह ऐसा है मानो परमेश्वर अपने अतीत के कार्य को भूल चुका है और तुम भी उसे भूल चुके हो। वर्तमान ही वर्तमान है, और अतीत बीता हुआ कल हो चुका है, और चूँकि आज परमेश्वर ने अतीत में किए गए अपने कार्य को अलग कर दिया है, तुम्हें भी उस पर टिके नहीं रहना चाहिए। केवल ऐसा ही व्यक्ति वह व्यक्ति है जो परमेश्वर का पूरी तरह से आज्ञापालन करता है और जिसने अपनी धार्मिक धारणाओं को पूरी तरह से त्याग दिया है।

क्योंकि परमेश्वर के कार्य में हमेशा नई प्रगति होती रहती है, कुछ ऐसा कार्य है जो नए कार्य के सामने आने पर अप्रचलित और पुराना हो जाता है। ये विभिन्न प्रकार के नए और पुराने कार्य परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं; हर अगला कदम पिछले कदम का अनुसरण करता है। क्योंकि नया कार्य हो रहा है, इसलिए पुरानी चीजें निस्संदेह समाप्त कर देनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लंबे समय से चली आ रही कुछ प्रथाओं और पारंपरिक कहावतों ने, मनुष्य के कई सालों के अनुभवों और शिक्षाओं के साथ मिलकर, मनुष्य के दिमाग में अनेक तरह और रूपों की धारणाएं बना दी हैं। मनुष्य द्वारा इस प्रकार की धारणाएं बनाए जाने में और भी अधिक सकारात्मक भूमिका इस बात की रही है कि प्राचीन समय के पारंपरिक सिद्धांतों का वर्षों से विस्तार हुआ है, जबकि परमेश्वर ने अभी तक अपना वास्तविक चेहरा और निहित स्वभाव मनुष्य के सामने पूरी तरह से प्रकट नहीं किया है। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर में मनुष्य के विश्वास में, विभिन्न धारणाओं का प्रभाव रहा है जिसके कारण लोगों में परमेश्वर के बारे में सभी प्रकार की धारणात्मक समझ निरंतर उत्पन्न और विकसित होती रही है, जिससे कई ऐसे धार्मिक लोग जो परमेश्वर की सेवा करते हैं, उसके शत्रु बन गए हैं। इसलिए, लोगों की धार्मिक धारणाएं जितनी अधिक मजबूत होती हैं, वे परमेश्वर का विरोध उतना ही अधिक करते हैं, और वे परमेश्वर के उतने ही अधिक दुश्मन बन जाते हैं। परमेश्वर का कार्य हमेशा नया होता है और कभी भी पुराना नहीं होता है, और वह कभी भी सिद्धांत नहीं बनता है, बल्कि निरंतर बदलता रहता है और उसका कम या ज्यादा नवीकरण होता रहता है। इस तरह कार्य करना स्वयं परमेश्वर के निहित स्वभाव की अभिव्यक्ति है। यह परमेश्वर के कार्य का निहित नियम भी है, और उन उपायों में से एक है जिनके माध्यम से परमेश्वर अपना प्रबंधन निष्पादित करता है। यदि परमेश्वर इस प्रकार से कार्य न करे, तो मनुष्य बदल नहीं पाएगा या परमेश्वर को जान नहीं पाएगा, और शैतान पराजित नहीं होगा। इसलिए, उसके कार्य में निरंतर परिवर्तन होता रहता है जो

अनिश्चित दिखाई देता है, परंतु वास्तव में ये निश्चित अवधियों में होने वाले परिवर्तन हैं। हालाँकि, मनुष्य जिस प्रकार से परमेश्वर में विश्वास करता है, वह बिल्कुल भिन्न है। वह पुराने, परिचित धर्म सिद्धांतों और पद्धतियों से चिपका रहता है, और वे जितने पुराने होते हैं, उसे उतने ही प्रिय लगते हैं। मनुष्य का मूर्ख दिमाग, जो पत्थर के समान अपरिवर्तनशील है, परमेश्वर के इतने सारे अकल्पनीय नए कार्यों और वचनों को कैसे स्वीकार कर सकता है? हमेशा नया बने रहने वाले और कभी पुराना न पड़ने वाले परमेश्वर से मनुष्य घृणा करता है; वह हमेशा ही केवल उस पुराने परमेश्वर को पसंद करता है जिसके दाँत लंबे और बाल सफेद हैं, और जो अपनी जगह से चिपका रहता है। इस प्रकार, क्योंकि परमेश्वर और मनुष्य, दोनों की अपनी-अपनी पसंद है, मनुष्य परमेश्वर का बैरी बन गया है। इनमें से बहुत से विरोधाभास आज भी मौजूद हैं, एक ऐसे समय में जब परमेश्वर लगभग छह हजार सालों से नया कार्य करता आ रहा है। तो वे किसी भी इलाज से परे हैं। हो सकता है कि यह मनुष्य के हठ के कारण या किसी भी मनुष्य द्वारा परमेश्वर के प्रशासकीय आदेशों की अनुल्लंघनीयता के कारण हो—परंतु वे पुरुष और महिला पादरी अभी भी फटी-पुरानी किताबों और दस्तावेजों से चिपके रहते हैं, जबकि परमेश्वर अपने प्रबंधन के अपूर्ण कार्य को पूरा करने में इस तरह लगा रहता है मानो उसके साथ कोई हो ही नहीं। भले ही ये विरोधाभास परमेश्वर और मनुष्य को शत्रु बनाते हैं, और इनका कोई समाधान भी नहीं है, परमेश्वर उन पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता है, मानो वे होकर भी नहीं हैं। हालांकि मनुष्य तब भी अपनी आस्थाओं और धारणाओं से चिपका रहता है, और उन्हें कभी छोड़ता नहीं है। फिर भी, एक बात स्वतःस्पष्ट है : भले ही मनुष्य अपने रुख से विचलित नहीं होता है, परमेश्वर के कदम हमेशा आगे बढ़ते रहते हैं और वह अपना रुख परिवेश के अनुसार हमेशा बदलता रहता है। अंत में, यह मनुष्य ही होगा जो बिना लड़ाई लड़े हार जाएगा। परमेश्वर, इस समय, अपने पराजित दुश्मनों का सबसे बड़ा शत्रु है, और वह पूरी मानवजाति का हिमायती भी है, समान रूप से पराजित और अपराजित दोनों का। परमेश्वर के साथ कौन प्रतिस्पर्धा कर सकता है और विजयी हो सकता है? मनुष्य की धारणाएं परमेश्वर से आती हुई प्रतीत होती हैं, क्योंकि उनमें से कई परमेश्वर के कार्य के दौरान ही उत्पन्न हुई हैं। जो भी हो, परमेश्वर इस कारण से मनुष्य को क्षमा नहीं कर देता, इसके साथ ही, वह अपने कार्य के बाहर के कार्य के खेप-दर-खेप "परमेश्वर के लिए" जैसे उत्पाद उत्पन्न करने के लिए मनुष्य की प्रशंसा भी नहीं करता है। इसके बजाय, वह मनुष्य की धारणाओं और पुरानी, धार्मिक आस्थाओं से बेहद नाराज है, और उसका इरादा उस तिथि को स्वीकार तक करने का नहीं

है जब ये धारणाएं सबसे पहले सामने आई थीं। वह इस बात को बिल्कुल स्वीकार नहीं करता है कि ये धारणाएं उसके कार्य के कारण पैदा हुई हैं, क्योंकि मनुष्य की धारणाएं मनुष्यों द्वारा ही फैलाई जाती हैं; उनका स्रोत मनुष्य की सोच और दिमाग है—परमेश्वर नहीं, बल्कि शैतान है। परमेश्वर का इरादा हमेशा यही रहा है कि उसके कार्य नए और जीवित रहें, पुराने या मृत नहीं, और जिन बातों को वह मनुष्य को दृढ़ता से थामे रखने के लिए कहता है वे युगों और कालों में विभाजित हैं, न कि अनंत और स्थिर हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह परमेश्वर ही है जो मनुष्य को जीवित और नया बनने के योग्य बनाता है, न कि शैतान जो मनुष्य को मृत और पुराना बने रहने देना चाहता है। क्या तुम लोग अभी भी यह नहीं समझते हो? तुममें परमेश्वर के बारे में धारणाएं हैं और तुम उन्हें छोड़ पाने में सक्षम नही हो, क्योंकि तुम संकीर्ण दिमाग के हो। ऐसा इसलिए नहीं है कि परमेश्वर के कार्य के भीतर अत्यंत कम समझने योग्य है, और न ही इसलिए कि परमेश्वर का कार्य मानवीय इच्छाओं के अनुरूप नहीं है; ऐसा इसलिए भी नहीं है कि परमेश्वर अपने कर्तव्यों के प्रति हमेशा बेपरवाह रहता है। तुम अपनी धारणाओं को इसलिए नहीं छोड़ पाते हो क्योंकि तुम्हारे अंदर आज्ञाकारिता की अत्यधिक कमी है, और क्योंकि तुममें परमेश्वर द्वारा सृजित प्राणी की थोड़ी सी भी समानता नहीं है; ऐसा इसलिए नहीं है कि परमेश्वर तुम्हारे लिए चीजों को कठिन बना रहा है। यह सब कुछ तुम्हारे ही कारण हुआ है और इसका परमेश्वर के साथ कोई संबंध नहीं है; सारे कष्ट और दुर्भाग्य मनुष्य ने ही पैदा किए हैं। परमेश्वर की सोच हमेशा अच्छी होती है : वह तुम्हें धारणाएँ बनाने देना नहीं चाहता, बल्कि वह चाहता है कि युगों के बदलने के साथ-साथ तुम भी बदल जाओ और नए होते जाओ। फिर भी तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है, और तुम हमेशा परख या विश्लेषण कर रहे होते हो। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर तुम्हारे लिए चीजें मुश्किल बना रहा है, बल्कि तुममें परमेश्वर के लिए आदर नहीं है, और तुम्हारी अवज्ञा बहुत ज्यादा है। एक अदना-सा सृजित प्राणी पूर्व में परमेश्वर द्वारा प्रदत्त किसी चीज के एक महत्त्वहीन-से हिस्से को लेकर और पलटकर उसी से परमेश्वर पर प्रहार करने का साहस करता है—क्या यह मनुष्य द्वारा अवज्ञा नहीं है? यह कहना उचित होगा कि परमेश्वर के सामने अपने विचारों को व्यक्त करने में मनुष्य पूरी तरह से अयोग्य है, और वह अपनी व्यर्थ की, बदबूदार, सड़ी-गली, अलंकृत भाषा के साथ, अपनी इच्छानुसार प्रदर्शन करने में तो और भी अयोग्य है—उन घिसी-पिटी धारणाओं का तो कहना ही क्या। क्या वे और भी बेकार नहीं हैं?

परमेश्वर की सचमुच सेवा करने वाला व्यक्ति वह है जो परमेश्वर के हृदय के करीब है और परमेश्वर

के द्वारा उपयोग किए जाने के योग्य है, और जो अपनी धार्मिक धारणाओं को छोड़ पाने में सक्षम है। यदि तुम चाहते हो कि परमेश्वर के वचन को खाने और पीने का कोई असर हो, तो तुम्हें अपनी धार्मिक धारणाओं का त्याग करना होगा। यदि तुम परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा रखते हो, तो यह तुम्हारे लिए और भी आवश्यक होगा कि तुम सबसे पहले अपनी धार्मिक धारणाओं का त्याग करो और हर काम में परमेश्वर के वचनों का पालन करो। परमेश्वर की सेवा करने के लिए व्यक्ति में यह सब होना चाहिए। यदि तुममें इस ज्ञान की कमी है, तो जैसे ही तुम परमेश्वर की सेवा करोगे, तुम उसमें रुकावटें और बाधाएँ उत्पन्न करोगे, और यदि तुम अपनी धारणाओं को पकड़े रहोगे, तो तुम निश्चित तौर पर परमेश्वर द्वारा इस तरह चित कर दिए जाओगे कि फिर कभी उठ नहीं पाओगे। उदाहरण के लिए, वर्तमान को देखो : आज के बहुत सारे कथन और कार्य बाइबल के अनुरूप नहीं हैं; और परमेश्वर के द्वारा पूर्व में किए गए कार्य के अनुरूप भी नहीं हैं, और यदि तुममें आज्ञापालन करने की इच्छा नहीं है, तो किसी भी समय तुम्हारा पतन हो सकता है। यदि तुम परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप कार्य करना चाहते हो, तो तुम्हें सबसे पहले अपनी धार्मिक धारणाओं का त्याग करना होगा और अपने विचारों में सुधार करना होगा। बहुत सारी ऐसी बातें कही जाएंगी जो अतीत में कही गई बातों से असंगत होंगी, और यदि अब तुममें आज्ञापालन की इच्छा की कमी है, तो तुम अपने सामने आने वाले मार्ग पर चल नहीं पाओगे। यदि परमेश्वर के कार्य करने का कोई एक तरीका तुम्हारे भीतर जड़ जमा लेता है और तुम उसे कभी छोड़ते नहीं हो, तो यह तरीका तुम्हारी धार्मिक धारणा बन जाएगा। यदि परमेश्वर क्या है, इस सवाल ने तुम्हारे भीतर जड़ जमा ली है तो तुमने सत्य को प्राप्त कर लिया है, और यदि परमेश्वर के वचन और सत्य तुम्हारा जीवन बनने में समर्थ हैं, तो तुम्हारे भीतर परमेश्वर के बारे में कोई धारणाएं नहीं रह जाएंगी। जो व्यक्ति परमेश्वर के बारे में सही ज्ञान रखते हैं उनमें कोई धारणाएँ नहीं होंगी, और वे धर्म सिद्धांत के अनुसार नहीं चलेंगे।

स्वयं को जागरूक रखने के लिए ये प्रश्न पूछो :

1. क्या तुम्हारे भीतर का ज्ञान परमेश्वर की सेवा में विघ्न डालता है?

2. तुम्हारे दैनिक जीवन में कितनी धार्मिक प्रथाएँ हैं? यदि तुम मात्र भक्ति का रूप दिखाते हो, तो क्या इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा जीवन विकसित और परिपक्व हो चुका है?

3. जब तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हो, तो क्या तुम अपनी धार्मिक धारणाओं का त्याग

कर पाते हो?

4. जब तुम प्रार्थना करते हो, तो क्या धार्मिक रस्मों से मुक्त हो पाते हो?

5. क्या तुम परमेश्वर द्वारा उपयोग में लाए जाने के योग्य हो?

6. परमेश्वर के बारे में तुम्हारे ज्ञान में धार्मिक धारणाओं की कितनी मात्रा है?

परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम स्वाभाविक है

सभी लोगों को परमेश्वर के वचनों के कारण शुद्धिकरण के अधीन किया गया है। यदि परमेश्वर देहधारी न हुआ होता, तो मानव-जाति को इस शुद्धिकरण द्वारा कष्ट भोगने का आशीष न मिलता। दूसरे ढंग से कहें तो, जो लोग परमेश्वर के वचनों के परीक्षणों को स्वीकार करने में सक्षम हैं, वे धन्य हैं। लोग अपनी अंतर्निहित क्षमता, अपने व्यवहार और परमेश्वर के प्रति अपने रवैये के आधार पर इस प्रकार का शुद्धिकरण प्राप्त करने के योग्य नहीं हैं। चूँकि परमेश्वर द्वारा उनका उत्थान किया गया है, इसलिए उन्होंने इस आशीष का आनंद लिया है। लोग कहा करते थे कि वे परमेश्वर के चेहरे को देखने या उसके वचनों को सुनने के योग्य नहीं हैं। आज यह पूरी तरह से परमेश्वर के उत्थान और उसकी दया के कारण है कि लोगों ने उसके वचनों का शुद्धिकरण प्राप्त किया है। यह हर उस व्यक्ति का आशीष है, जो अंत के दिनों में जन्मा है—क्या तुम लोगों ने इसका व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है? किन पहलुओं में लोगों को पीड़ा और असफलताओं का अनुभव करना चाहिए, यह परमेश्वर द्वारा पूर्वनियत किया गया है—यह लोगों की अपनी आवश्यकताओं पर आधारित नहीं है। यह सुस्पष्ट सत्य है। हर विश्वासी में परमेश्वर के वचनों के परीक्षणों से गुजरने और उसके वचनों के भीतर पीड़ा सहने की क्षमता होनी चाहिए। क्या तुम लोगों को यह स्पष्ट है? तो, तुमने स्वयं द्वारा सहन की गई पीड़ाओं के बदले आज के आशीष पाए हैं; अगर तुम परमेश्वर के लिए पीड़ा नहीं सहते, तो तुम उसकी प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकते। हो सकता है, तुमने अतीत में शिकायत की हो, परंतु तुमने चाहे कितनी भी शिकायत की हो, परमेश्वर को तुम्हारे बारे में वह याद नहीं है। आज आ गया है और कल के मामलों पर गौर करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करने की कोशिश करते हैं, लेकिन नहीं कर पाते। फिर जब वे सुनते हैं कि परमेश्वर जाने वाला है, तो उन्हें अचानक उसके लिए अपना प्रेम मिल जाता है। कुछ लोग

आम तौर पर सत्य को अभ्यास में नहीं लाते, और जब वे यह सुनते हैं कि परमेश्वर क्रोध में प्रस्थान करने वाला है, तो वे उसके सामने आते हैं और प्रार्थना करते हैं : "हे परमेश्वर! कृपया मत जाओ। मुझे एक मौका दो! परमेश्वर! मैंने तुम्हें अतीत में संतुष्ट नहीं किया है; मैं तुम्हारा ऋणी रहा हूँ और मैंने तुम्हारा विरोध किया है। आज मैं पूरी तरह से अपना शरीर और हृदय अर्पण करने के लिए तैयार हूँ, ताकि मैं अंततः तुम्हें संतुष्ट कर सकूँ और तुमसे प्रेम कर सकूँ। मुझे फिर ऐसा अवसर नहीं मिलेगा।" क्या तुमने इस तरह की प्रार्थना की है? जब कोई इस तरह से प्रार्थना करता है, तो ऐसा इसलिए होता है कि उसकी अंतरात्मा परमेश्वर के वचनों से जाग गई होती है। सभी मनुष्य सुन्न और मंदबुद्धि हैं। वे ताड़ना और शुद्धिकरण के अधीन हैं, फिर भी वे नहीं जानते कि परमेश्वर इसके माध्यम से क्या करना चाहता है। यदि परमेश्वर ऐसे कार्य न करता, तो लोग अभी भी भ्रमित होते; कोई भी मनुष्य लोगों के हृदय में आध्यात्मिक भावनाओं को प्रेरित नहीं कर सकता। केवल परमेश्वर के वचन ही हैं, जो लोगों का न्याय करते हैं और उन्हें उजागर करते हैं, जिससे यह फल प्राप्त हो सकता है। इसलिए सभी चीजें परमेश्वर के वचनों के कारण प्राप्त और पूरी होती हैं, और यह केवल उसके वचनों के कारण ही है कि मानव-जाति का परमेश्वर के प्रति प्रेम जाग्रत हुआ है। परमेश्वर के प्रति केवल मनुष्य के विवेक पर आधारित प्रेम यह परिणाम हासिल नहीं करेगा। क्या अतीत में लोगों ने परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को अपने विवेक पर आधारित नहीं किया था? क्या कोई एक भी व्यक्ति ऐसा था, जिसने परमेश्वर से अपनी पहल पर प्रेम किया था? लोगों ने परमेश्वर से प्रेम केवल परमेश्वर के वचनों के प्रोत्साहन के माध्यम से ही किया है। कुछ लोग कहते हैं : "मैंने इतने सालों से परमेश्वर का अनुसरण किया है और उसके इतने अनुग्रह का, इतने आशीषों का आनंद उठाया है। मैं उसके वचनों से शुद्धिकरण और न्याय के अधीन रहा हूँ। इसलिए मैं बहुत-कुछ समझ गया हूँ और मैंने परमेश्वर के प्रेम को देखा है। मुझे उसका धन्यवाद करना चाहिए, मुझे उसका अनुग्रह चुकाना चाहिए। मैं मृत्यु से परमेश्वर को संतुष्ट करूँगा, और मैं उसके प्रति अपना प्रेम अपने विवेक पर आधारित करूँगा।" लोग अगर केवल अपने विवेक की भावनाओं की सुनें, तो वे परमेश्वर की मनोहरता महसूस नहीं कर सकते। अगर वे सिर्फ अपने विवेक पर भरोसा करें, तो परमेश्वर के लिए उनका प्रेम कमजोर होगा। यदि तुम केवल परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम का कर्ज़ चुकाने की बात करते हो, तो तुम्हारे पास उसके प्रति अपने प्रेम में कोई जोश नहीं होगा; अपने विवेक की भावनाओं के आधार पर उससे प्रेम करना एक निष्क्रिय दृष्टिकोण है। मैं क्यों कहता हूँ कि यह एक निष्क्रिय दृष्टिकोण है? यह एक व्यावहारिक मुद्दा है। परमेश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम किस तरह का प्रेम

है? क्या वह परमेश्वर को मूर्ख बनाना और उसके लिए बेमन से काम करना नहीं है? अधिकांश लोगों का मानना है कि चूँकि परमेश्वर से प्रेम करने के लिए कोई पुरस्कार नहीं है, और उससे प्रेम न करने के लिए ताड़ना दी जाएगी, तो कुल मिलाकर पाप न करना ही काफी है। इसलिए अपने विवेक की भावनाओं के आधार पर परमेश्वर से प्रेम करना और उसके प्रेम को चुकाना एक निष्क्रिय दृष्टिकोण है, और वह परमेश्वर के लिए किसी के हृदय से निकला स्वाभाविक प्रेम नहीं है। परमेश्वर के लिए प्रेम व्यक्ति के हृदय की गहराई से निकला एक वास्तविक मनोभाव होना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं : "मैं खुद परमेश्वर के पीछे जाने और उसका अनुसरण करने के लिए तत्पर हूँ। अब भले ही परमेश्वर मुझे त्याग देना चाहे, मैं फिर भी उसका अनुसरण करूँगा। वह मुझे चाहे या न चाहे, मैं फिर भी उससे प्रेम करता रहूँगा, और अंत में मुझे उसे प्राप्त करना होगा। मैं अपना हृदय परमेश्वर को अर्पण करता हूँ, और चाहे वह कुछ भी करे, मैं अपने पूरे जीवन उसका अनुसरण करूँगा। चाहे कुछ भी हो, मुझे परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए और उसे प्राप्त करना चाहिए; मैं तब तक आराम नहीं करूँगा, जब तक मैं उसे प्राप्त नहीं कर लेता।" क्या तुम इस तरह का संकल्प रखते हो?

परमेश्वर पर विश्वास करने का मार्ग उससे प्रेम करने का मार्ग ही है। यदि तुम उस पर विश्वास करते हो, तो तुम्हें उससे प्रेम करना ही चाहिए; हालाँकि उससे प्रेम करने का तात्पर्य केवल उसके प्रेम का प्रतिदान करना या उससे अपने विवेक की भावनाओं के आधार पर प्रेम करना नहीं है—यह परमेश्वर के लिए शुद्ध प्रेम है। कभी-कभी लोग सिर्फ अपने विवेक के आधार पर परमेश्वर के प्रेम को महसूस करने में सक्षम नहीं होते। मैंने हमेशा क्यों कहा : "परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्माओं को प्रेरित करे"? मैंने परमेश्वर से प्रेम करने के लिए लोगों के विवेक को प्रेरित करने की बात क्यों नहीं की? इसका कारण यह है कि लोगों का विवेक परमेश्वर की मनोहरता को महसूस नहीं कर सकता। यदि तुम इन वचनों से आश्वस्त नहीं हो, तो उसके प्रेम को महसूस करने के लिए अपने विवेक का उपयोग करो। उस पल तुम्हारे पास कुछ प्रेरणा हो सकती है, लेकिन वह जल्दी ही गायब हो जाएगी। यदि तुम परमेश्वर की मनोहरता को महसूस करने के लिए केवल अपने विवेक का उपयोग करते हो, तो प्रार्थना करते समय तो तुम प्रेरणा प्राप्त करोगे, लेकिन उसके बाद जल्दी ही वह चली जाएगी और गायब हो जाएगी। ऐसा क्यों होता है? यदि तुम केवल अपने विवेक का उपयोग करते हो, तो तुम परमेश्वर के लिए अपना प्रेम जगाने में असमर्थ होगे; जब तुम वास्तव में अपने हृदय में उसकी मनोहरता महसूस करते हो, तो तुम्हारी आत्मा उसके द्वारा प्रेरित

होगी, और केवल उसी समय तुम्हारा विवेक अपनी मूल भूमिका निभाने में सक्षम होगा। अर्थात जब परमेश्वर मनुष्य की आत्मा को प्रेरित करता है और जब मनुष्य के पास ज्ञान होता है और वह हृदय में प्रोत्साहित होता है, अर्थात जब वह अनुभव प्राप्त कर लेता है, केवल तभी वह अपने विवेक से परमेश्वर को प्रभावी रूप से प्रेम करने में सक्षम होगा। अपने विवेक से परमेश्वर से प्रेम करना गलत नहीं है—यह परमेश्वर को प्रेम करने का सबसे निम्न स्तर है। "परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति बस इंसाफ करते हुए" प्रेम करना मनुष्य को सक्रिय ढंग से प्रवेश करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकता। जब लोग पवित्र आत्मा का कुछ कार्य प्राप्त करते हैं, यानी जब वे अपने व्यावहारिक अनुभव में परमेश्वर का प्रेम देखते और अनुभव करते हैं, जब उन्हें परमेश्वर का कुछ ज्ञान होता है और वे वास्तव में देखते हैं कि परमेश्वर मानव-जाति के प्रेम के कितना योग्य है और वह कितना प्यारा है, केवल तभी वे परमेश्वर को सच में प्रेम करने में सक्षम होते हैं।

जब लोग अपने हृदय से परमेश्वर से संपर्क करते हैं, जब उनके हृदय पूरी तरह से उसकी ओर मुड़ने में सक्षम होते हैं, तो यह परमेश्वर के प्रति मानव के प्रेम का पहला कदम होता है। यदि तुम परमेश्वर से प्रेम करना चाहते हो, तो तुम्हें सबसे पहले उसकी ओर अपना हृदय मोड़ने में सक्षम होना होगा। परमेश्वर की ओर अपना हृदय मोड़ना क्या है? ऐसा तब होता है, जब तुम्हारे हृदय के हर प्रयास परमेश्वर से प्रेम करने और उसे प्राप्त करने के लिए होते हैं। इससे पता चलता है कि तुमने पूरी तरह से अपना हृदय परमेश्वर की ओर मोड़ लिया है। परमेश्वर और उसके वचनों के अलावा तुम्हारे हृदय में लगभग कुछ नहीं होता (परिवार, धन, पति, पत्नी, बच्चे आदि)। अगर होता भी है, तो ऐसी चीज़ें तुम्हारे हृदय पर अधिकार नहीं कर सकतीं, और तुम अपने भविष्य की संभावनाओं के बारे में नहीं सोचते, केवल परमेश्वर से प्रेम का अनुसरण करने की ही सोचते हो। उस समय तुमने पूरी तरह से अपना हृदय परमेश्वर की ओर मोड़ दिया होगा। मान लो, तुम अब भी अपने हृदय में अपने लिए योजना बना रहे हो और हमेशा अपने निजी लाभ के लिए प्रयास करते रहते हो, और हमेशा सोचते हो कि : "मैं कब परमेश्वर से एक छोटा-सा अनुरोध कर सकता हूँ? कब मेरा परिवार धनी बनेगा? मैं कैसे कुछ अच्छे कपड़े प्राप्त कर सकता हूँ? ..." यदि तुम उस स्थिति में रह रहे हो, तो यह दर्शाता है कि तुम्हारा हृदय पूरी तरह से परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ा है। यदि तुम्हारे हृदय में केवल परमेश्वर के वचन हैं और तुम हर समय परमेश्वर से प्रार्थना कर पाते हो और उसके करीब हो सकते हो—मानो वह तुम्हारे बहुत करीब हो, मानो परमेश्वर तुम्हारे भीतर हो और तुम उसके भीतर हो—यदि तुम

उस तरह की अवस्था में हो, तो इसका मतलब है कि तुम्हारा हृदय परमेश्वर की उपस्थिति में है। यदि तुम हर रोज़ परमेश्वर से प्रार्थना करते हो और उसके वचनों को खाते और पीते हो, हमेशा कलीसिया के कार्य के बारे में सोचा करते हो, यदि तुम परमेश्वर की इच्छा के प्रति विचारशीलता दिखाते हो, अपने हृदय का उपयोग उससे सच्चा प्रेम करने और उसके हृदय को संतुष्ट करने के लिए करते हो, तो तुम्हारा हृदय परमेश्वर का होगा। यदि तुम्हारा हृदय अन्य कई चीजों में लिप्त है, तो उस पर अभी भी शैतान का कब्ज़ा है और वह पूरी तरह से परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ा है। जब किसी का हृदय वास्तव में परमेश्वर की ओर मुड़ जाता है, तो उसमें परमेश्वर के लिए सच्चा, स्वाभाविक प्रेम होगा और वह परमेश्वर के कार्य पर विचार करने में सक्षम होगा। यद्यपि वे अभी भी किसी पल मूर्खता और विवेकहीनता दिखा सकते हैं, फिर भी वे परमेश्वर के घर के हितों, उसके कार्य, और अपने स्वभाव में बदलाव के संबंध में विचार करने में सक्षम होंगे और उनका हृदय सही ठिकाने पर होगा। कुछ लोग हमेशा यह दावा करते हैं कि वे जो कुछ भी करते हैं, वह कलीसिया के लिए होता है; लेकिन वास्तव में वे अपने फायदे के लिए कार्य कर रहे हैं। ऐसे लोगों के इरादे गलत होते हैं। वे कुटिल और धोखेबाज हैं और वे जो अधिकांश चीज़ें करते हैं, वे उनके निजी लाभ के लिए होती हैं। इस तरह के व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम करने का प्रयास नहीं करते; उनका हृदय अब भी शैतान का है और वह परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ सकता। इसलिए, परमेश्वर के पास इस तरह के व्यक्ति को प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है।

यदि तुम वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करना और उसके द्वारा प्राप्त किया जाना चाहते हो, तो उसका पहला चरण है, अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर की तरफ मोड़ना। हर एक चीज़ में, जो तुम करते हो, आत्म-निरीक्षण करो और पूछो : "क्या मैं यह परमेश्वर के प्रति प्रेम से भरे हृदय के आधार पर कर रहा हूँ? क्या इसके पीछे मेरे कोई निजी इरादे हैं? इसे करने में मेरा वास्तविक लक्ष्य क्या है?" यदि तुम अपना हृदय परमेश्वर को सौंपना चाहते हो, तो तुम्हें पहले अपने हृदय को वश में करना होगा, अपने सभी इरादे छोड़ देने होंगे, और पूरी तरह से परमेश्वर के लिए समर्पित होने की अवस्था हासिल करनी होगी। यह अपना हृदय परमेश्वर को देने के अभ्यास का मार्ग है। अपने हृदय को वश में करने का क्या अभिप्राय है? यह अपनी देह की अनावश्यक इच्छाओं को छोड़ देना है, रुतबे की सुविधाओं और आशीषों का लालच न करना है। यह सब-कुछ परमेश्वर की संतुष्टि के लिए करना है, और अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर के लिए बनाना है, स्वयं के लिए नहीं। इतना काफी है।

परमेश्वर के लिए वास्तविक प्रेम हृदय की गहराई से आता है; यह ऐसा प्रेम है, जिसका अस्तित्व केवल मानव के परमेश्वर के ज्ञान पर आधारित होता है। जब किसी का हृदय पूरी तरह से परमेश्वर की ओर मुड़ जाता है, तब उसमें परमेश्वर के लिए प्रेम होता है, लेकिन वह प्रेम आवश्यक रूप से शुद्ध और आवश्यक रूप से पूरा नहीं होता। ऐसा इसलिए है, क्योंकि व्यक्ति के हृदय के परमेश्वर की तरफ पूरी तरह से मुड़ जाने और उस व्यक्ति में परमेश्वर की वास्तविक समझ और उसके लिए वास्तविक श्रद्धा होने के बीच अब भी कुछ दूरी होती है। जिस तरीके से मनुष्य परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम प्राप्त करता है और परमेश्वर के स्वभाव को जान पाता है, वह तरीका अपने हृदय को परमेश्वर की ओर मोड़ना है। जब मनुष्य अपना सच्चा हृदय परमेश्वर को देता है, तब वह जीवन के अनुभव में प्रवेश करना शुरू कर देता है। इस तरह से उसका स्वभाव बदलना शुरू हो जाता है, परमेश्वर के लिए उसका प्रेम धीरे-धीरे बढ़ने लगता है, और परमेश्वर के बारे में उसका ज्ञान भी धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। इसलिए जीवन-अनुभव के सही मार्ग पर आने के लिए अपना हृदय परमेश्वर की तरफ मोड़ना ही एकमात्र पूर्व-शर्त है। जब लोग अपना हृदय परमेश्वर के सामने रख देते हैं, तो उनके पास केवल उसके लिए लालायित हृदय ही होता है, परंतु उससे प्रेम करने वाला हृदय नहीं होता, क्योंकि उनके पास उसकी समझ नहीं होती। हालाँकि इस परिस्थिति में उनके पास उसके लिए कुछ प्रेम होता है, लेकिन वह स्वाभाविक और सच्चा नहीं होता। इसका कारण यह है कि मनुष्य की देह से उत्पन्न होने वाली हर चीज़ भावना की पैदाइश होती है और वास्तविक समझ से नहीं आती। यह सिर्फ एक क्षणिक आवेग होता है और वह लंबे समय तक चलने वाली श्रद्धा नहीं बन सकता। जब लोगों में परमेश्वर की समझ नहीं होती, तो वे उससे केवल अपनी पसंद और व्यक्तिगत धारणाओं के आधार पर प्रेम कर सकते हैं; इस प्रकार के प्रेम को स्वाभाविक प्रेम नहीं कहा जा सकता, न ही इसे वास्तविक प्रेम कहा जा सकता है। व्यक्ति का हृदय वास्तविक रूप में परमेश्वर की ओर मुड़ सकता है, और वह हर चीज़ में परमेश्वर के हितों के बारे में सोचने में सक्षम हो सकता है, लेकिन अगर उसे परमेश्वर की कोई समझ नहीं है, तो वह वास्तविक रूप में स्वाभाविक प्रेम करने में सक्षम नहीं होगा। वह बस कलीसिया के लिए कुछ कार्य पूरे करने और अपने कर्तव्य का थोड़ा पालन करने में सक्षम होता है, लेकिन वह यह बिना आधार के करेगा। इस तरह के व्यक्ति का स्वभाव बदलना मुश्किल है; ऐसे लोग या तो सत्य का अनुसरण नहीं करते, या उसे समझते नहीं। यहाँ तक कि अगर कोई व्यक्ति अपने हृदय को पूरी तरह से परमेश्वर की तरफ मोड़ भी लेता है, तो भी इसका यह मतलब यह नहीं कि उसका परमेश्वर से प्रेम करने वाला हृदय पूरी तरह से

शुद्ध है, क्योंकि जिन लोगों के हृदय में परमेश्वर है, उनके हृदय में परमेश्वर के लिए प्रेम होना आवश्यक नहीं है। इसका संबंध परमेश्वर की समझ प्राप्त करने के लिए प्रयास करने वालों और प्रयास न करने वालों के बीच के अंतर से है। एक बार जब व्यक्ति को उसके बारे में समझ हो जाती है, तो यह दर्शाता है कि उसका हृदय पूरी तरह से परमेश्वर की तरफ मुड़ गया है, इससे पता चलता है कि उसके हृदय में परमेश्वर के लिए उसका विशुद्ध प्रेम स्वाभाविक प्रेम है। केवल इस तरह के लोगों के हृदय में ही परमेश्वर होता है। परमेश्वर की ओर अपना हृदय मोड़ना सही मार्ग पर जाने, परमेश्वर को समझने और परमेश्वर के प्रति प्रेम प्राप्त करने की एक पूर्व-शर्त है। यह परमेश्वर से प्रेम करने का अपना कर्तव्य पूरा करने का चिह्नक (मार्कर) नहीं है, न ही यह उसके लिए वास्तविक प्रेम रखने का चिह्नक (मार्कर) है। व्यक्ति के लिए परमेश्वर के प्रति विशुद्ध प्रेम प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है अपना हृदय उसकी तरफ मोड़ना, जो कि वह पहली चीज़ भी है, जो व्यक्ति को उसकी रचना होने के नाते करनी चाहिए। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे सभी वे लोग हैं जो जीवन की खोज करते हैं, अर्थात् वे लोग, जो सत्य का अनुसरण करते हैं और वास्तव में परमेश्वर को चाहते हैं; उन सभी में पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता होती है और वे उसके द्वारा प्रेरित किए गए होते हैं। वे सब परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने में सक्षम होते हैं।

जब कोई यह महसूस करने में सक्षम होता है कि वह परमेश्वर का ऋणी है, तो ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि वह पवित्रात्मा द्वारा प्रेरित हुआ होता है; जो लोग ऐसा महसूस करते हैं, उनके पास लालायित हृदय होगा और वे जीवन में प्रवेश करने का प्रयास करने में सक्षम होंगे। लेकिन यदि तुम एक निश्चित कदम पर रुक जाते हो, तो तुम गहराई तक नहीं जा पाओगे; अभी भी शैतान के जाल में फँसने का जोखिम है, और एक निश्चित बिंदु पर शैतान तुम्हें बंदी बना लेगा। परमेश्वर की रोशनी लोगों को स्वयं को जानने का अवसर देती है और तत्पश्चात उन्हें परमेश्वर के प्रति ऋणी महसूस कराती है; वे उसके साथ सहयोग करने और उन चीजों को त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं, जो उसे पसंद नहीं हैं। यह परमेश्वर के कार्य का सिद्धांत है। तुम सभी लोग अपने जीवन में विकसित होने और परमेश्वर से प्रेम करने का प्रयास करने को तैयार हो, तो क्या तुमने अपने सतही तरीकों से छुटकारा पा लिया है? यदि तुम केवल सतही तरीकों से छुटकारा पा लेते हो और विघटनकारी तथा बड़बोलेपन के व्यवहार से दूर रहते हो, तो क्या यह वास्तव में अपने जीवन में विकसित होने का प्रयास करना है? यदि तुम सतही तरीकों से छुटकारा पा लेते हो, लेकिन परमेश्वर के वचनों में प्रवेश नहीं करते, तो इसका मतलब है कि तुम सक्रिय रूप से प्रगति नहीं कर रहे। सतही

व्यवहार का मूल कारण क्या है? क्या तुम्हारे क्रिया-कलाप अपने जीवन में विकसित होने के लिए हैं? क्या तुम परमेश्वर के लोगों की तरह जीने की कोशिश कर रहे हो? जिस चीज़ पर भी तुम ध्यान केंद्रित करोगे, तुम उसी को जिओगे; यदि तुम सतही तरीकों पर ध्यान केंद्रित करोगे, तो तुम्हारा हृदय अकसर बाहर फेंक दिया जाएगा और तुम्हारे पास अपने जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास करने का कोई उपाय नहीं होगा। परमेश्वर स्वभाव में बदलाव की अपेक्षा रखता है, लेकिन तुम हमेशा बाहरी चीजों का अनुसरण करते हो; इस प्रकार का व्यक्ति अपने स्वभाव को बदलने में असमर्थ होता है! जीवन में परिपक्व होने की प्रक्रिया में सभी को एक मार्ग पर चलना चाहिए : उन्हें परमेश्वर के वचनों का न्याय, ताड़ना और पूर्ण किया जाना स्वीकार करना चाहिए। यदि तुम्हारे पास परमेश्वर के वचन नहीं हैं, बल्कि तुम केवल अपने आत्मविश्वास और इच्छा पर भरोसा करते हो, तो तुम जो कुछ भी करते हो, वह सिर्फ उत्साह पर आधारित होता है। अर्थात् यदि तुम अपने जीवन में विकास चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के वचनों को और अधिक खाना-पीना और समझना चाहिए। जो लोग उसके वचनों द्वारा पूर्ण बनाए जाते हैं, वे उन्हें जीने में सक्षम होते हैं; जो लोग उसके वचनों के शुद्धिकरण से नहीं गुज़रते, जो लोग उसके वचनों के न्याय से नहीं गुज़रते, वे उसके उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते। तो तुम लोग किस स्तर तक उसके वचनों को जीते हो? यदि तुम लोग परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हो और अपनी स्थिति के साथ उनकी तुलना करने में सक्षम हो, और मेरे द्वारा उठाए गए मुद्दों के प्रकाश में अभ्यास का मार्ग पाते हो, केवल तभी तुम्हारा अभ्यास सही और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होगा। केवल इस प्रकार के अभ्यास वाले व्यक्ति में ही परमेश्वर से प्रेम करने की इच्छा होती है।

प्रार्थना के अभ्यास के बारे में

तुम लोग अपने दैनिक जीवन में प्रार्थना को कोई महत्व नहीं देते। मनुष्य प्रार्थना की उपेक्षा करता है। मनुष्य बेमन से परमेश्वर के सामने लापरवाही से प्रार्थना किया करता था। किसी भी व्यक्ति ने कभी भी पूरे हृदय से व समर्पण भाव से परमेश्वर के सामने स्वयं को प्रस्तुत नहीं किया और परमेश्वर की सच्चे मन से प्रार्थना नहीं की। मुसीबत आने पर ही मनुष्य ने परमेश्वर से प्रार्थना की। इस पूरे समय में, क्या तुमने कभी परमेश्वर से सच में प्रार्थना की है? क्या कभी ऐसा समय आया है, जब तुम परमेश्वर के सामने इसलिए रोए, क्योंकि तुम दुखी थे? क्या कोई ऐसा समय आया है, जब तुमने उसके सामने खुद को जाना हो? क्या तुमने

कभी परमेश्वर से दिल से प्रार्थना की है? प्रार्थना अभ्यास के माध्यम से आती है : यदि तुम आमतौर पर घर पर प्रार्थना नहीं करते, तो तुम कलीसिया में तुम प्रार्थना कर पाओ, यह संभव ही नहीं है, और यदि तुम छोटी सभाओं में भी जाकर सामान्यतः प्रार्थना नहीं करते, तो तुम बड़ी सभाओं में प्रार्थना करने में असमर्थ होगे। यदि तुम नियमित रूप से परमेश्वर के निकट नहीं आते या परमेश्वर के वचनों पर चिंतन नहीं करते, तो प्रार्थना के समय तुम्हारे पास कहने के लिए कुछ नहीं होगा, और अगर तुम प्रार्थना करते भी हो, तो तुम्हारे केवल होंठ बुदबुदाएंगे; वह सच्ची प्रार्थना नहीं होगी।

सच्ची प्रार्थना क्या है? प्रार्थना परमेश्वर को यह बताना है कि तुम्हारे हृदय में क्या है, परमेश्वर की इच्छा को समझकर उससे बात करना है, परमेश्वर के वचनों के माध्यम से उसके साथ संवाद करना है, स्वयं को विशेष रूप से परमेश्वर के निकट महसूस करना है, यह महसूस करना है कि वह तुम्हारे सामने है, और यह विश्वास करना है कि तुम्हें उससे कुछ कहना है। तुम्हें लगेगा कि तुम्हारा हृदय प्रकाश से भर गया है और तुम्हें महसूस होगा कि परमेश्वर कितना प्यारा है। तुम विशेष रूप से प्रेरित महसूस करते हो, और तुम्हारी बातें सुनकर तुम्हारे भाइयों और बहनों को संतुष्टि मिलती है। उन्हें लगेगा कि जो शब्द तुम बोल रहे हो, वे उनके मन की बात है, उन्हें लगेगा कि जो वे कहना चाहते हैं, उसी बात को तुम अपने शब्दों के माध्यम से कह रहे हो। यही सच्ची प्रार्थना है। एक बार जब तुम सच्चे मन से प्रार्थना करने लगोगे, तुम्हारा दिल शांत हो जाएगा और संतुष्टि का एहसास होगा। परमेश्वर से प्रेम करने की शक्ति बढ़ सकती है, और तुम महसूस करोगे कि जीवन में परमेश्वर से प्रेम करने से अधिक मूल्यवान या अर्थपूर्ण और कुछ नहीं है। इससे साबित होता है कि तुम्हारी प्रार्थना प्रभावी रही है। क्या तुमने कभी इस तरह से प्रार्थना की है?

और प्रार्थना की विषयवस्तु के बारे में क्या खयाल है? तुम्हारी प्रार्थना तुम्हारे हृदय की सच्ची अवस्था और पवित्र आत्मा के कार्य के अनुरूप धीरे-धीरे बढ़नी चाहिए; तुम परमेश्वर से उसकी इच्छा और मनुष्य से क्या अपेक्षा रखता है, इसके अनुसार उसके साथ संवाद करते हो। जब तुम प्रार्थना का अभ्यास शुरू करो, तो सबसे पहले अपना हृदय परमेश्वर को दे दो। परमेश्वर की इच्छा को समझने का प्रयास न करो—केवल अपने हृदय में ही परमेश्वर से बात करने की कोशिश करो। जब तुम परमेश्वर के समक्ष आते हो, तो इस तरह बोलो : "हे परमेश्वर, आज ही मुझे एहसास हुआ कि मैं तुम्हारी अवज्ञा करता था। मैं वास्तव में भ्रष्ट और नीच हूँ। मैं केवल अपना जीवन बर्बाद करता रहा हूँ। आज से मैं तुम्हारे लिए जीऊँगा। मैं एक अर्थपूर्ण जीवन जीऊँगा और तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। तुम्हारा आत्मा मुझे लगातार रोशन और प्रबुद्ध करता हुआ

हमेशा मेरे अंदर काम करे। मुझे अपने सामने मज़बूत और ज़बर्दस्त गवाही देने दो। शैतान को हमारे भीतर प्रकाशित तुम्हारी महिमा, तुम्हारी गवाही और तुम्हारी विजय का प्रमाण देखने दो।" जब तुम इस तरह से प्रार्थना करते हो, तो तुम्हारा हृदय पूरी तरह से मुक्त हो जाएगा। इस तरह से प्रार्थना करने के बाद तुम्हारा हृदय परमेश्वर के ज्यादा करीब हो जाएगा, और यदि तुम अकसर इस तरह से प्रार्थना कर सको, तो पवित्र आत्मा तुममें अनिवार्य रूप से काम करेगा। यदि तुम हमेशा इस तरह से परमेश्वर को पुकारोगे, और उसके सामने अपना संकल्प करोगे, तो एक दिन आएगा परमेश्वर के सामने जब तुम्हारा संकल्प स्वीकृत हो जाएगा, जब तुम्हारा हृदय और तुम्हारा पूरा अस्तित्व परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिया जायेगा, और तुम अंततः उसके द्वारा पूर्ण कर दिए जाओगे। तुम लोगों के लिए प्रार्थना का अत्यधिक महत्व है। जब तुम प्रार्थना करते हो और पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करते हो, तो तुम्हारा हृदय परमेश्वर द्वारा प्रेरित होगा, और तुम्हें तब परमेश्वर से प्रेम करने की ताकत मिलेगी। यदि तुम हृदय से प्रार्थना नहीं करते, यदि तुम पूरे खुले हृदय से परमेश्वर से संवाद नहीं करते, तो परमेश्वर के पास तुममें कार्य करने का कोई तरीका नहीं होगा। यदि प्रार्थना करने और अपने हृदय की बात कहने के बाद, परमेश्वर के आत्मा ने अपना काम शुरू नहीं किया है, और तुम्हें कोई प्रेरणा नहीं मिली है, तो यह दर्शाता है कि तुम्हारे हृदय में ईमानदारी की कमी है, तुम्हारे शब्द असत्य और अभी भी अशुद्ध हैं। यदि प्रार्थना करने के बाद तुम्हें संतुष्टि का एहसास हो, तो तुम्हारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर को स्वीकार्य हैं और परमेश्वर का आत्मा तुममें काम कर रहा है। परमेश्वर के सामने सेवा करने वाले के तौर पर तुम प्रार्थना से रहित नहीं हो सकते। यदि तुम वास्तव में परमेश्वर के साथ संवाद को ऐसी चीज़ के रूप में देखते हो, जो सार्थक और मूल्यवान है, तो क्या तुम प्रार्थना को त्याग सकते हो? कोई भी परमेश्वर के साथ संवाद किए बिना नहीं रह सकता। प्रार्थना के बिना तुम देह में जीते हो, शैतान के बंधन में रहते हो; सच्ची प्रार्थना के बिना तुम अँधेरे के प्रभाव में रहते हो। मुझे आशा है कि तुम सब भाई-बहन हर दिन सच्ची प्रार्थना करने में सक्षम हो। यह नियमों का पालन करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक निश्चित परिणाम प्राप्त करने के बारे में है। क्या तुम सुबह की प्रार्थनाएँ करने और परमेश्वर के वचनों का आनंद लेने के लिए, अपनी थोड़ी-सी नींद का त्याग करने को तैयार हो? यदि तुम शुद्ध हृदय से प्रार्थना करते हो और इस तरह परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हो, तो तुम उसे अधिक स्वीकार्य होगे। यदि हर सुबह तुम ऐसा करते हो, यदि हर दिन तुम परमेश्वर को अपना हृदय देने का अभ्यास करते हो, उससे संवाद और उससे जुडने की कोशिश करते हो, तो निश्चित रूप से परमेश्वर के बारे में तुम्हारा

ज्ञान बढ़ेगा, और तुम परमेश्वर की इच्छा को समझने में अधिक सक्षम हो पाओगे। तुम कहते हो : "हे परमेश्वर! मैं अपना कर्तव्य पूरा करने को तैयार हूँ। केवल तुम्हें ही मैं अपने पूरा अस्तित्व समर्पित करता हूँ, ताकि तुम हममें महिमामंडित हो सको, ताकि तुम हमारे इस समूह द्वारादी गई गवाही का आनंद ले सको। मैं तुमसे हममें कार्य करने की विनती करता हूँ, ताकि मैं तुमसे सच्चा प्यार करने और तुम्हें संतुष्ट करने और तुम्हारा अपने लक्ष्य के रूप में अनुसरण करने में सक्षम हो सकूँ।" जैसे ही तुम यह दायित्व उठाते हो, परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हें पूर्ण बनाएगा। तुम्हें केवल अपने फायदे के लिए ही प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, बल्कि परमेश्वर की इच्छा का पालन करने और उससे प्यार करने के लिए भी तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए। यह सबसे सच्ची तरह की प्रार्थना है। क्या तुम कोई ऐसे व्यक्ति हो, जो परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के लिए प्रार्थना करता है?

अतीत में, तुम्हें नहीं पता था कि प्रार्थना कैसे करनी चाहिए, और तुमने प्रार्थना के मामले की उपेक्षा की। अब तुम्हें प्रार्थना करने के लिए खुद को प्रशिक्षित करने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। यदि तुम परमेश्वर से प्रेम करने के लिए अपने भीतर की ताकत का आह्वान करने में असमर्थ हो, तो तुम प्रार्थना कैसे करते हो? तुम कहते हो: "हे परमेश्वर, मेरा हृदय तुमसे सच्चा प्रेम करने में असमर्थ है। मैं तुमसे प्रेम करना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पास ताकत की कमी है। मैं क्या करूँ? तुम मेरी आध्यात्मिक आँखें खोल दो, तुम्हारा आत्मा मेरे हृदय को प्रेरित करे। इसे ऐसा बना दो कि जब मैं तुम्हारे सामने आऊँ, तो वह सबकुछ फेंक दूँ, जो नकारात्मक है, किसी भी व्यक्ति, विषय या चीज़ से विवश होना छोड़ दूँ, और अपना हृदय तुम्हारे सामने पूरी तरह से खोलकर रख दूँ, और ऐसा कर दो कि मैं अपना संपूर्ण अस्तित्व तुम्हारे सामने अर्पण कर सकूँ। तुम जैसे भी मेरी परीक्षा लो, मैं तैयार हूँ। अब मैं अपनी भविष्य की संभावनाओं पर कोई ध्यान नहीं देता, और न ही मैं मृत्यु के जुए से बँधा हूँ। ऐसे हृदय के साथ जो तुमसे प्रेम करता है, मैं जीवन के मार्ग की तलाश करना चाहता हूँ। हर बात, हर चीज़—सब तुम्हारे हाथों में है; मेरा भाग्य तुम्हारे हाथों में है और तुमने मेरा पूरा जीवन अपने हाथों में थामा हुआ है। अब मैं तुमसे प्रेम करना चाहता हूँ, और चाहे तुम मुझे अपने से प्रेम करने दो या न करने दो, चाहे शैतान कितना भी हस्तक्षेप करे, मैं तुमसे प्रेम करने के लिए कृतसंकल्प हूँ।" जब तुम्हारे सामने इस तरह की समस्या आए, तो इस तरह से प्रार्थना करना। यदि तुम हर दिन इस तरह प्रार्थना करोगे, तो धीरे-धीरे परमेश्वर से प्रेम करने की तुम्हारी ताकत बढ़ती जाएगी।

सच्ची प्रार्थना में कोई कैसे प्रवेश करता है?

प्रार्थना करते समय तुम्हारे पास ऐसा हृदय होना चाहिए, जो परमेश्वर के सामने शांत रहे, और तुम्हारे पास एक ईमानदार हृदय होना चाहिए। तुम सही अर्थों में परमेश्वर के साथ संवाद और प्रार्थना कर रहे हो—तुम्हें प्रीतिकर वचनों से परमेश्वर को फुसलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। प्रार्थना उस पर केंद्रित होनी चाहिए, जिसे परमेश्वर अभी संपन्न करना चाहता हो। प्रार्थना करते समय परमेश्वर से तुम्हें अधिक प्रबुद्ध बनाने और रोशन करने के लिए कहो और अपनी वास्तविक अवस्थाओं और अपनी परेशानियाँ उसके सामने रखो, और साथ ही वह संकल्प भी, जो तुमने परमेश्वर के सामने लिया था। प्रार्थना का अर्थ प्रक्रिया का पालन करना नहीं है; उसका अर्थ है सच्चे हृदय से परमेश्वर को खोजना। मांगो कि परमेश्वर तुम्हारे हृदय की रक्षा करे, ताकि तुम्हारा हृदय अकसर उसके सामने शांत हो सके; कि जिस परिवेश में उसने तुम्हें रखा है, उसमें तुम खुद को जान पाओ, खुद से घृणा करो, और खुद को त्याग सको, और इस प्रकार तुम परमेश्वर के साथ एक सामान्य रिश्ता बना पाओ और वास्तव में ऐसे व्यक्ति बन पाओ, जो परमेश्वर से प्रेम करता है।

प्रार्थना का क्या महत्व है?

प्रार्थना उन तरीकों में से एक है, जिनमें मनुष्य परमेश्वर से सहयोग करता है, यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर को पुकारता है, और यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य को परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किया जाता है। यह कहा जा सकता है कि जो लोग प्रार्थना नहीं करते, वे मृत लोग हैं जो आत्मा से रहित हैं, जिससे साबित होता है कि उनके पास परमेश्वर द्वारा प्रेरित किए जाने की योग्यता की कमी है। प्रार्थना के बिना सामान्य आध्यात्मिक जीवन जीना असंभव होगा, पवित्र आत्मा के कार्य के साथ बने रहने की बात तो छोड़ ही दो। प्रार्थना से रहित होना परमेश्वर के साथ अपना संबंध तोड़ना है, और उसके बिना परमेश्वर की प्रशंसा पाना असंभव होगा। परमेश्वर के विश्वासी के तौर पर, व्यक्ति जितना अधिक प्रार्थना करता है, अर्थात् व्यक्ति परमेश्वर द्वारा जितना अधिक प्रेरित किया जाता है, उतना ही अधिक वह संकल्प से भर जाएगा और परमेश्वर से नई प्रबुद्धता प्राप्त करने में अधिक सक्षम होगा। नतीजतन, इस तरह के व्यक्ति को पवित्र आत्मा द्वारा बहुत जल्दी पूर्ण बनाया जा सकता है।

प्रार्थना का उद्देश्य क्या प्रभाव हासिल करना है?

लोग प्रार्थना का अभ्यास करने और प्रार्थना के महत्व को समझने में सक्षम हो सकते हैं, लेकिन प्रार्थना

का प्रभावी होना कोई सरल बात नहीं है। प्रार्थना केवल यन्त्रवत् ढंग से करना, प्रक्रिया का पालन करना, या परमेश्वर के वचनों का पाठ करना नहीं है। दूसरे शब्दों में, प्रार्थना कुछ वचनों को रटना नहीं है और यह दूसरों की नकल करना नहीं है। प्रार्थना में व्यक्ति को उस स्थिति तक पहुँचना चाहिए, जहाँ अपना हृदय परमेश्वर को दिया जा सके, जहाँ वह अपना हृदय खोलकर रख सके, ताकि वह परमेश्वर द्वारा प्रेरित हो सके। यदि प्रार्थना को प्रभावी होना है, तो उसे परमेश्वर के वचन पढ़ने पर आधारित होना चाहिए। केवल परमेश्वर के वचनों के भीतर से प्रार्थना करने से ही व्यक्ति अधिक प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त कर सकता है। सच्ची प्रार्थना की अभिव्यक्तियाँ हैं : एक ऐसा हृदय होना, जो उस सबके लिए तरसता है जो परमेश्वर चाहता है, और यही नहीं, जो वह माँगता है उसे पूरा करने की इच्छा रखता है; उससे घृणा करना जिससे परमेश्वर घृणा करता है, और फिर इस आधार पर इसकी कुछ समझ प्राप्त करना, और परमेश्वर द्वारा प्रतिपादित सत्यों के बारे में कुछ ज्ञान और स्पष्टता हासिल करना। प्रार्थना के बाद यदि संकल्प, विश्वास, ज्ञान और अभ्यास का मार्ग हो, केवल तभी उसे सच्ची प्रार्थना कहा जा सकता है, और केवल इस प्रकार की प्रार्थना ही प्रभावी हो सकती है। फिर भी प्रार्थना को परमेश्वर के वचनों के आनंद पर निर्मित किया जाना चाहिए, उसे परमेश्वर के साथ उसके वचनों में, संवाद करने की नींव पर स्थापित होना चाहिए, और हृदय को परमेश्वर की खोज करने और उसके समक्ष शांत होने में सक्षम होना चाहिए। इस तरह की प्रार्थना पहले ही परमेश्वर के साथ सच्चे संवाद के चरण में प्रवेश कर चुकी है।

प्रार्थना के बारे में सबसे बुनियादी ज्ञान:

1. जो भी मन में आए, उसे बिना सोचे-समझे न कहो। तुम्हारे हृदय पर एक दायित्व होना चाहिए, यानी प्रार्थना करते समय तुम्हारे पास एक उद्देश्य होना चाहिए।

2. प्रार्थना में परमेश्वर के वचन शामिल होने चाहिए; उसे परमेश्वर के वचनों पर आधारित होना चाहिए।

3. प्रार्थना करते समय तुम्हें पुरानी या बीती बातों को उसमें नहीं मिलाना चाहिए। तुम्हारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के वर्तमान वचनों से संबंधित होनी चाहिए, और जब तुम प्रार्थना करो, तो परमेश्वर को अपने अंतरतम विचार बताओ।

4. समूह-प्रार्थना एक केंद्र के इर्दगिर्द घूमनी चाहिए, जो आवश्यक रूप से, पवित्र आत्मा का वर्तमान

कार्य है।

5. सभी लोगों को मध्यस्थतापरक प्रार्थना सीखनी है। यह परमेश्वर की इच्छा के प्रति विचारशीलता दिखाने का एक तरीका भी है।

व्यक्ति का प्रार्थना का जीवन, प्रार्थना के महत्व की समझ और प्रार्थना के मूलभूत ज्ञान पर आधारित है। दैनिक जीवन में, बार-बार अपनी कमियों के लिए प्रार्थना करो, जीवन में अपने स्वभाव में बदलाव लाने के लिए प्रार्थना करो, और परमेश्वर के वचनों के अपने ज्ञान के आधार पर प्रार्थना करो। प्रत्येक व्यक्ति को प्रार्थना का अपना जीवन स्थापित करना चाहिए, उन्हें परमेश्वर के वचनों को जानने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और उन्हें परमेश्वर के कार्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर के सामने अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियाँ खोलकर रख दो और तुम जिस ढंग से प्रार्थना करते हो, उसकी चिंता किए बिना अपने वास्तविक स्वरूप में रहो, और सच्ची समझ और परमेश्वर के वचनों का वास्तविक अनुभव प्राप्त करना ही मुख्य बात है। आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश का अनुसरण करने वाले व्यक्ति को कई अलग-अलग तरीकों से प्रार्थना करने में सक्षम होना चाहिए। मौन प्रार्थना, परमेश्वर के वचनों पर चिंतन करना, परमेश्वर के कार्य को जानना—ये सभी सामान्य आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक संगति के उद्देश्यपूर्ण कार्य के उदाहरण हैं, जो हमेशा परमेश्वर के सामने व्यक्ति की अवस्थाओं में सुधार करते हैं और व्यक्ति को जीवन में और अधिक प्रगति करने के लिए प्रेरित करते हैं। संक्षेप में, तुम जो कुछ भी करते हो, चाहे वह परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना हो, या चुपचाप प्रार्थना करना हो, या जोर-जोर से घोषणा करना हो, वह तुम्हें परमेश्वर के वचनों, उसके कार्य और जो कुछ वह तुममें हासिल करना चाहता है, उसे स्पष्ट रूप से देखने में सक्षम बनाने के लिए है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम जो कुछ भी करते हो, वह परमेश्वर द्वारा अपेक्षित मानकों तक पहुँचने और अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए किया जाता है। परमेश्वर की मनुष्य से न्यूनतम अपेक्षा यह है कि मनुष्य अपना हृदय उसके प्रति खोल सके। यदि मनुष्य अपना सच्चा हृदय परमेश्वर को देता है और उसे अपने हृदय की सच्ची बात बताता है, तो परमेश्वर उसमें कार्य करने को तैयार होता है। परमेश्वर मनुष्य के कलुषित हृदय की नहीं, बल्कि शुद्ध और ईमानदार हृदय की चाह रखता है। यदि मनुष्य परमेश्वर से अपने हृदय को खोलकर बात नहीं करता है, तो परमेश्वर उसके हृदय को प्रेरित नहीं करेगा या उसमें कार्य नहीं करेगा। इसलिए, प्रार्थना का मर्म है, अपने हृदय से परमेश्वर से बात करना, अपने आपको उसके सामने

पूरी तरह से खोलकर, उसे अपनी कमियों या विद्रोही स्वभाव के बारे में बताना; केवल तभी परमेश्वर को तुम्हारी प्रार्थनाओं में रुचि होगी, अन्यथा वह तुमसे मुँह मोड़ लेगा। प्रार्थना का न्यूनतम मानदंड यह है कि तुम्हें परमेश्वर के सामने अपना हृदय शांत रखने में सक्षम होना चाहिए, और उसे परमेश्वर से अलग नहीं हटना चाहिए। यह हो सकता है कि इस चरण के दौरान तुम्हें एक नई या उच्च अंतर्दृष्टि प्राप्त न हो, लेकिन फिर तुम्हें यथास्थिति बनाए रखने के लिए प्रार्थना का उपयोग करना चाहिए—तुम्हें पीछे नहीं हटना चाहिए। कम से कम इसे तो तुम्हें प्राप्त करना ही चाहिए। यदि तुम यह भी नहीं कर सकते, तो इससे साबित होता है कि तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन सही रास्ते पर नहीं है। परिणामस्वरूप, तुम्हारे पास पहले जो दृष्टि थी, उसे बनाए रखने में तुम असमर्थ होगे, तुम परमेश्वर में विश्वास खो दोगे, और तुम्हारा संकल्प इसके बाद नष्ट हो जाएगा। तुमने आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश किया है या नहीं, इसका एक चिह्न यह देखना है कि क्या तुम्हारी प्रार्थना सही रास्ते पर है। सभी लोगों को इस वास्तविकता में प्रवेश करना चाहिए; उन सभी को प्रार्थना में स्वयं को लगातार सजगता से प्रशिक्षित करने का काम करना चाहिए, निष्क्रिय रूप से प्रतीक्षा करने के बजाय, सचेत रूप से पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाने का प्रयास करना चाहिए। तभी वे वास्तव में परमेश्वर की तलाश करने वाले लोग होंगे।

जब तुम प्रार्थना करना शुरू करो, तो अत्यधिक महत्वाकाँक्षी बनने की कोशिश मत करो और एक ही झटके में सबकुछ हासिल करने की उम्मीद मत करो। तुम इस बात की उम्मीद रखते हुए अतिशय माँगें नहीं कर सकते कि जैसे ही तुम माँगोगे, तुम्हें पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित कर दिया जाएगा, या कि तुम्हें प्रबुद्धता और रोशनी मिल जाएगी, या कि परमेश्वर तुम पर अनुग्रह बरसा देगा। ऐसा नहीं होगा; परमेश्वर अलौकिक चीजें नहीं करता। परमेश्वर अपने अनुसार लोगों की प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है, और कभी-कभी वह यह देखने के लिए कि तुम उसके प्रति वफ़ादार हो या नहीं, तुम्हारे विश्वास को परखता है। जब तुम प्रार्थना करते हो, तो तुममें विश्वास, दृढ़ता और संकल्प होना चाहिए। अधिकांश लोग प्रशिक्षित होना शुरू करते ही हिम्मत हार जाते हैं, क्योंकि वे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होने में विफल रहते हैं। इससे काम नहीं चलेगा! तुम्हें दृढ़ रहना चाहिए; तुम्हें पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाने का एहसास करने और तलाश और खोज करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कभी-कभी तुम्हारे अभ्यास का मार्ग सही नहीं होता, और कभी-कभी तुम्हारे व्यक्तिगत उद्देश्य और धारणाएँ परमेश्वर के सामने टिक नहीं पातीं, और इसलिए परमेश्वर का आत्मा तुम्हें प्रेरित करने में विफल रहता है। अन्य समय में, परमेश्वर यह देखता है कि तुम

वफ़ादार हो या नहीं। संक्षेप में, प्रशिक्षण में तुम्हें ऊँची कीमत चुकानी चाहिए। यदि तुम्हें पता चलता है कि तुम अपने अभ्यास के मार्ग से हट रहे हो, तो तुम अपना प्रार्थना करने का तरीका बदल सकते हो। जब तक तुम सच्चे हृदय से खोज करते हो और प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हो, पवित्र आत्मा तुम्हें निश्चित रूप से इस वास्तविकता में ले जाएगा। कभी-कभी तुम सच्चे हृदय से प्रार्थना करते हो, लेकिन ऐसा महसूस नहीं करते कि तुम विशेष रूप से प्रेरित किए गए हो। ऐसे समय में तुम्हें आस्था पर भरोसा रखना चाहिए, इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर तुम्हारी प्रार्थनाओं को देख रहा है; तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में दृढ़ रहना चाहिए।

ईमानदार व्यक्ति बनो; अपने हृदय में व्याप्त धोखे से छुटकारा दिलाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो। हर समय प्रार्थना के माध्यम से अपने आपको शुद्ध करो, प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाओ, और तुम्हारा स्वभाव धीरे-धीरे बदल जाएगा। सच्चा आध्यात्मिक जीवन प्रार्थना का जीवन है—यह एक ऐसा जीवन है, जिसे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किया जाता है। पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाने की प्रक्रिया मनुष्य के स्वभाव को बदलने की प्रक्रिया है। पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित न किया जाने वाला जीवन आध्यात्मिक जीवन नहीं, बल्कि केवल धार्मिक अनुष्ठान का जीवन है। केवल उन्हीं लोगों ने, जो पवित्र आत्मा द्वारा अकसर प्रेरित किए जाते हैं, और पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध और रोशन किए जाते हैं, आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश किया है। मनुष्य जब प्रार्थना करता है, तो उसका स्वभाव लगातार बदलता जाता है। परमेश्वर का आत्मा जितना अधिक उसे प्रेरित करता है, वह उतना ही अग्रसक्रिय और आज्ञाकारी बन जाता है। इसलिए, उसका हृदय भी धीरे-धीरे शुद्ध होगा, और उसका स्वभाव धीरे-धीरे बदल जाएगा। ऐसा है सच्ची प्रार्थना का प्रभाव।

परमेश्वर के सबसे नए कार्य को जानो और उसके पदचिह्नों का अनुसरण करो

अब तुम लोगों को परमेश्वर के जन बनने की कोशिश करनी है, और तुम सब इस पूरे प्रवेश को सही रास्ते पर शुरू करोगे। परमेश्वर के जन होने का अर्थ है, राज्य के युग में प्रवेश करना। आज तुम आधिकारिक तौर पर राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश शुरू कर रहे हो और तुम लोगों के भावी जीवन अब पहले की तरह सुस्त और लापरवाह नहीं रहेंगे; इस तरह जीते हुए परमेश्वर द्वारा अपेक्षित मानक हासिल करना

असंभव है। यदि तुम्हें यह तत्काल करने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती, तो यह दिखाता है कि तुम खुद को सुधारने की कोई आकांक्षा नहीं रखते, तुम्हारा अनुसरण अव्यवस्थित और भ्रमित है और तुम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में असमर्थ हो। राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश करने का अर्थ है, परमेश्वर के लोगों के जीवन की शुरुआत—क्या तुम इस तरह का प्रशिक्षण स्वीकार करने के लिए तैयार हो? क्या तुम तात्कालिकता महसूस करने के लिए तैयार हो? क्या तुम परमेश्वर के अनुशासन में जीने के लिए तैयार हो? क्या तुम परमेश्वर की ताड़ना के तहत जीने के लिए तैयार हो? जब परमेश्वर के वचन तुम पर आएँगेऔर तुम्हारी परीक्षा लेंगे, तब तुम क्या करोगे? और जब सभी तरह के तथ्यों से तुम्हारा सामना होगा, तो तुम क्या करोगे? अतीत में तुम्हारा ध्यान जीवन पर केंद्रित नहीं था; आज तुम्हें जीवन की वास्तविकता में अवश्य प्रवेश करना चाहिए और अपने जीवन स्वभाव में बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए। यही है जो राज्य के लोगों द्वारा हासिल किया जाना चाहिए। वो सभी जो परमेश्वर के लोग हैं, उनके पास जीवन होना चाहिए, उन्हें राज्य के प्रशिक्षण को स्वीकार करना चाहिए और अपने जीवन स्वभाव में परिवर्तन लाने की कोशिश करनीचाहिए। परमेश्वर राज्य के लोगों से यही अपेक्षा रखता है।

राज्य के लोगों से परमेश्वर की अपेक्षाएँ अपेक्षाएं इस प्रकार हैं:

1. उन्हें परमेश्वर के आदेशों को अवश्य स्वीकार करना होगा। इसका अर्थ है, उन्हें आखिरी दिनों के परमेश्वर के कार्य के दौरान कहे गए सभी वचन स्वीकार करने होंगे।

2. उन्हें राज्य के प्रशिक्षण में अवश्य प्रवेश करना होगा।

3. उन्हें प्रयास करना होगा कि परमेश्वर उनके दिलों को स्पर्श करे। जब तुम्हारा दिल पूरी तरह से परमेश्वर उन्मुख होजाता है और तुम्हारा जीवन सामान्य रूप से आध्यात्मिक होता है, तो तुम स्वतंत्रता के क्षेत्र में रहोगे, जिसका अर्थ है कि तुम परमेश्वर के प्रेम की देख-रेख और उसकी सुरक्षा में जिओगे। जब तुम परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा में रहते हो, तभी तुम परमेश्वर के होते हो।

4. उन्हें परमेश्वर द्वारा प्राप्त होना होगा।

5. उन्हें पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा की अभिव्यक्ति बनना होगा।

ये पाँचबातें तुम सबके लिए मेरे आदेश हैं। मेरे वचन परमेश्वर के लोगों से कहे जाते हैं और यदि तुम इन आदेशों को स्वीकार करने के इच्छुकनहीं हो, तो मैं तुम्हें मजबूर नहींकरूँगा—लेकिन अगर तुम

सचमुच उन्हें स्वीकार करते हो, तो तुम परमेश्वर की इच्छा पर चलने में सक्षम होंगे होगे। आज तुम सभी परमेश्वर के आदेश स्वीकार करना शुरू करो और राज्य के लोग बनने की कोशिश करो और राज्य के लोगों के लिए आवश्यक मानक हासिल करने का प्रयास करो। यह प्रवेश का पहला चरण है। यदि तुम पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा पर चलना चाहते हो, तो तुम्हें इन पाँचआदेशों को स्वीकार करना होगा और यदि तुम ऐसाकर पाने में सक्षम रहे, तो तुम परमेश्वर की इच्छा के मुताबिक होंगे और परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हारा महान उपयोग करेगा। आज जो अत्यंत महत्वपूर्ण है, वह हैराज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश। राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश में आध्यात्मिक जीवन शामिल है। इससे पहले आध्यात्मिक जीवन की कोई बात नहीं होती थी लेकिन आज, जैसे ही तुम राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश करना शुरू करते हो, तुम आधिकारिक तौर पर आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करते हो।

आध्यात्मिक जीवन किस तरह का जीवन है? आध्यात्मिक जीवन वह है, जिसमें तुम्हारा मन पूरी तरह से परमेश्वर उन्मुख हो चुका होता है और परमेश्वर के प्रेम के प्रति सचेत रहने में सक्षम हो जाता है। यह वह है, जिसमें तुम परमेश्वर के वचनों में रहते हो और तुम्हारे मन में और कुछ भी नहीं होता और तुम आज परमेश्वर की इच्छा समझ सकते हो और अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा के प्रकाश से मार्गदर्शन प्राप्त करते हो। मनुष्य और परमेश्वर के बीच ऐसा जीवन आध्यात्मिक जीवन है। यदि तुम आज के प्रकाश का अनुसरण करने में असमर्थ हो, तो परमेश्वर के साथ तुम्हारे संबंध में एक दूरी शुरू हो गई है-हो सकता है कि यह संबंध शायद टूट भी चुका हो—और तुम एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन से रहित हो गए हो। परमेश्वर के साथ एक सामान्य संबंध आज परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करने की नींव पर बनता है। क्या तुम्हारा जीवन सामान्य आध्यात्मिक जीवन है? क्या परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य है? क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो पवित्र आत्मा के कार्य का अनुसरण करता है? यदि तुम आज पवित्र आत्मा के प्रकाश का अनुसरण कर सकते हो और परमेश्वर की इच्छा को उसके वचनों के भीतर समझ सकते हो और इन वचनों में प्रवेश कर सकते हो, तो तुम वह व्यक्ति हो, जो पवित्र आत्मा के प्रवाह का अनुसरण करता है। यदि तुम पवित्र आत्मा के प्रवाह का अनुसरण नहीं करते, तो तुम निस्संदेह सच्चाई का अनुसरण नहीं करते। जो खुद को सुधारने की इच्छा नहीं रखते, पवित्र आत्मा के उनके भीतर काम करने की कोई संभावना नहीं है, और नतीजतन ऐसे लोग कभी अपनी ताकत को नहीं जगा पाते और हमेशा निष्क्रिय रहते हैं। क्या तुम आज पवित्र आत्मा के प्रवाह का अनुसरण करते हो? क्या तुम पवित्र आत्मा के प्रवाह में हो?

क्या तुम निष्क्रिय स्थिति से बाहर निकल आए हो? वो सभी जो परमेश्वर के वचनों में विश्वास करते हैं, जो परमेश्वर के कार्य को आधार के रूप में लेते हैं और आज पवित्र आत्मा के प्रकाश का अनुसरण करते हैं—वे सभी पवित्र आत्मा के प्रवाह में हैं। यदि तुम मानते हो कि परमेश्वर के वचन निस्संदेह सच्चे और सही हैं, और यदि तुम्हारा परमेश्वर के वचनों में विश्वास है, चाहे वह जो भी कहे, तो तुम वह व्यक्ति हो, जो परमेश्वर के कार्य में प्रवेश की पूरी कोशिश करता है और इस तरह तुम परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हो।

पवित्र आत्मा के प्रवाह में प्रवेशके लिए तुम्हारा परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध होना आवश्यक है और तुम्हें सबसे पहले अपनी निष्क्रिय स्थिति से छुटकारा पाना होगा। कुछ लोग हमेशा भीड़ के पीछे चलते हैं और उनके दिल परमेश्वर से बहुत दूर भटकजाता है; ऐसे लोगों को खुद को सुधारने की कोई इच्छा नहीं होती और जिन मानकों का वे अनुसरण करते है, वे काफ़ी निम्न होतेहैं। केवल परमेश्वर से प्रेम करने की कोशिश और परमेश्वर द्वारा प्राप्त किया जाना ही परमेश्वर की इच्छा है। कुछ लोग ऐसे हैं, जो परमेश्वर के प्रेम का बदला चुकाने के लिए केवल अपने अंत:करण का उपयोग करते हैं, लेकिन इससे परमेश्वर की इच्छा पूरी नहीं होती; जितने तुम्हारे मानक ऊँचेहोंगे, उतने ही वो परमेश्वर की इच्छा के साथ सामंजस्य में होंगे। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो सामान्य है और जो परमेश्वर के प्रति प्रेम का अनुसरण करता है, परमेश्वर के जन बनने के लिए राज्य में प्रवेश करना ही तुम सबका असली भविष्य है और यह ऐसा जीवन है, जो अत्यंत मूल्यवान और महत्वपूर्ण है; कोई भी तुम लोगों से अधिक धन्य नहीं है। मैं यह क्यों कहता हूँ? क्योंकि जो लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, वो देह के लिए जीते हैं और वो शैतान के लिए जीते हैं, लेकिन आज तुम लोग परमेश्वर के लिए जीते हो और परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिए जीवित हो। यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि तुम्हारे जीवन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। केवल इसी समूह के लोग, जिन्हें परमेश्वर द्वारा चुना गया है, अत्यंत महत्वपूर्ण जीवन जीने में सक्षम हैं: पृथ्वी पर और कोई इतना मूल्यवान और सार्थकजीवन नहीं जी सकता। क्योंकि तुम परमेश्वर द्वारा चुने और पाले-पोसे गए हो और इसके अलावा, तुम सबके लिए परमेश्वर के प्रेम के कारण तुम लोगों ने सच्चे जीवन को समझ लिया है और यह जानते हो कि ऐसा जीवन कैसे जीना है, जो अत्यंत मूल्यवान हो। ऐसा इसलिए नहीं कि तुम सबका अनुसरण उत्तम है, बल्कि यह परमेश्वर के अनुग्रह के कारण है; यह परमेश्वर ही था, जिसने तम्हारी आत्माओं की आँखें खोलीं, और यह परमेश्वर की आत्मा ही थी, जिसने तुम्हारे दिलों को छू लिया और इस प्रकार तुम सभी को परमेश्वर के सामने आने का सौभाग्य प्रदान किया। यदि परमेश्वर की आत्मा ने तुम्हें प्रबुद्ध न किया होता, तो

परमेश्वर के बारे में क्या सुंदर है, यह देखने में तुम असमर्थ होते, न ही तुम्हारे लिए परमेश्वर से प्रेम करना संभव होता। यह पूरी तरह से परमेश्वर की आत्मा द्वारा लोगों के दिलों को छू लेने के कारण ही है कि उनके दिल परमेश्वर उन्मुख हो चुके हैं। कभी-कभी, जब तुम परमेश्वर के वचनों का आनंद ले रहे होते हो, तुम्हारी आत्मा द्रवित हो जाती है और तुम्हें लगता है कि तुम परमेश्वर से प्रेम किए बिना नहीं रह सकते, कि तुम्हारे भीतर काफ़ी ताकत है और ऐसा कुछ नहीं जिसे तुम छोड़ नहीं सकते। यदि तुम ऐसा महसूस करते हो, तो परमेश्वर की आत्मा ने तुम्हें स्पर्श कर लिया है, और तुम्हारा दिल पूरी तरह से परमेश्वर उन्मुख हो चुका है और तुम परमेश्वर से प्रार्थना करोगे और कहोगे: "हे परमेश्वर! हम वास्तव में तुम्हारे द्वारा पूर्वनिर्धारित और चुने गए हैं। तुम्हारी महिमा में मुझे गौरव मिलता है, और तुम्हारे लोगों में से एक होना मुझे महिमामयलगता है। तुम्हारी इच्छा पर चलने के लिए मैं कुछ भी व्यय कर दूंगा और कुछ भी दे दूंगा और अपने सभी वर्ष और पूरे जीवन के प्रयासों को तुम्हें समर्पित कर दूंगा।" जब तुम इस तरह प्रार्थना करते हो, तो तुम्हारे दिल में परमेश्वर के प्रति अनंत प्रेम और सच्ची आज्ञाकारिता होगी। क्या तुम्हें कभी ऐसा अनुभव हुआ है? यदि लोगों को अक्सर परमेश्वर की आत्मा द्वारा छुआ जाता है, तो वो अपनी प्रार्थनाओं में खुद को परमेश्वर के प्रति विशेष रूप से समर्पित करने के इच्छुकहोते हैं: "हे परमेश्वर! मैं तुम्हारी महिमा का दिन देखना चाहता हूँ, और तुम्हारे लिए जीना चाहता हूँ—तुम्हारे लिए जीने के मुकाबले कुछ भी ज्यादा योग्य या सार्थक नहीं है और मेरी शैतान और देह के लिए जीने की ज़रा भी इच्छा नहीं है। तुम आज मुझे तुम्हारे लिए जीने हेतु सक्षम बनाकर मुझे ऊपर उठाओबड़ा करो।" जब तुमने इस तरह प्रार्थना की है, तो तुम्हें महसूस होगा कि तुम परमेश्वर को अपना दिल दिए बिना नहीं रह सकते, कि तुम्हें परमेश्वर को पाना चाहिए और तुम जब तक जीवित हो, परमेश्वर को पाए बिना मर जाने से नफ़रत करोगे। ऐसी प्रार्थना करने के बाद, तुम्हारे भीतर एक अक्षय ताकत आएगी और तुम नहीं जान पाओगे कि यह कहां से आती है; तुम्हारे हृदय के अंदर असीम शक्ति होगी और तुम्हें आभास होगा कि परमेश्वर बहुत सुंदर है, और वह प्रेम करने के योग्य है। यह तब होगा जब तुम परमेश्वर द्वारा छू लिए जा चुके होंगे। जिन सभी लोगों को इस तरह का अनुभव हुआ है, वो सभी परमेश्वर द्वारा छू लिए गए हैं। जिन लोगों को परमेश्वर अक्सर स्पर्श करता है, उनके जीवन में परिवर्तन होते हैं, वो अपने संकल्प को बनाने में सक्षम होते हैं और परमेश्वर को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए तैयार होते हैं, उनके दिल में परमेश्वर के लिए प्रेम अधिक मज़बूत होता है, उनके दिल पूरी तरह से परमेश्वर उन्मुख होचुके होते हैं, उन्हें परिवार, दुनिया, उलझनों या अपने भविष्य की कोई परवाह नहीं होती

और वो परमेश्वर के लिए जीवन भर के प्रयासों को समर्पित करने के लिए तैयार होते हैं। वे सभी जिन्हें परमेश्वर कीआत्मा ने छुआ है, वो ऐसे लोग होते हैं, जो सत्य का अनुसरण करते हैं और जो परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की आशा रखते हैं।

क्या तुमने अपने दिल को परमेश्वर उन्मुख कियाहै? क्या तुम्हारे दिल को परमेश्वर की आत्मा ने स्पर्श किया है? यदि तुमने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया है और अगर तुमने कभी इस तरह प्रार्थना नहीं की है, तो यह दर्शाता है कि परमेश्वर का तुम्हारे दिल में कोई स्थाननहीं है। वो सभी जो परमेश्वर कीआत्मा के द्वारा निर्देशित होते हैं और जिन्हें परमेश्वर की आत्मा ने छुआ है, वो परमेश्वर के कार्य के अधीन हैं, जो यह दर्शाता है कि परमेश्वर के वचनों और परमेश्वर के प्रेम ने उनके भीतर जड़ें जमा ली हैं। कुछ लोग कहते हैं: "मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारे जितना गंभीर नहीं हूँ, न ही मुझे परमेश्वर ने इतना स्पर्श किया है; कभी-कभी —जब मैं ध्यान और प्रार्थना करता हूँ—मुझे लगता है कि परमेश्वर सुंदर है और मेरे दिल को परमेश्वर ने छू लिया है।" मनुष्य के दिल से अधिक और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। जब तुम्हारा दिल परमेश्वर उन्मुख हो जगया हो, तो तुम्हारा पूरा अस्तित्व परमेश्वर उन्मुख हो चुका होगा और उस समय तुम्हारे दिल को परमेश्वर कीआत्मा ने छू लिया होगा। तुम लोगों में से अधिकांश को ऐसाअनुभवहुआ है—बात सिर्फ इतनी है कि तुम सभी के अनुभवों की गहराइयाँ समान नहीं हैं। कुछ लोग कहते हैं: "मैं प्रार्थना में बहुत से शब्द नहीं कहता, मैं सिर्फ दूसरों के समागम को सुनता हूँ और मेरे भीतर शक्ति उभर आती है।" इससे पता चलता है कि तुम्हें परमेश्वर ने अंदर से स्पर्श कर लिया है। जो लोग अंदर से परमेश्वर के द्वारा छू लिए गए हैं, वो जब अन्य लोगों का समागम सुनते हैं, तो प्रेरित हो जाते हैं; अगर किसी व्यक्ति का दिल प्रेरणादायक शब्दों को सुनकर भी पूरी तरह से अप्रभावित रह जाता है, तो यह साबित करता है कि उनके भीतर पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है। उनके अंदर कोई तड़प नहीं है, जो साबित करता है कि उनमें कोई संकल्प नहीं है और इस प्रकार वो पवित्र आत्मा के कार्य से वंचित हैं। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा छुआ गया है, तो जब भी वह परमेश्वर के वचनों को सुनता है, तो उसकी एक प्रतिक्रिया होगी; यदि उन्हें परमेश्वर ने स्पर्श नहीं किया है, तो वो परमेश्वर के वचनों से नहीं जुड़े हैं, उनका उससे कोई संबंध नहीं है और वह प्रबुद्ध होने में असमर्थ हैं। जिन लोगों ने परमेश्वर के वचनों को सुना है और जिनकी कोई प्रतिक्रिया नहीं रही थी, वो लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने स्पर्श नहीं किया है—ये वो लोग हैं जो पवित्र आत्मा के कार्य से रहित हैं। वो सभी जो नए प्रकाश को स्वीकार करने में सक्षम होते हैं, स्पर्श किए जाते हैं और वो पवित्र आत्मा के कार्य के अधीन

हैं।

स्वयं का आकलन करो:

1. क्या तुम पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य के बीच में हो?

2. क्या तुम्हारा दिल परमेश्वर उन्मुख हो चुकाहै? क्या तुम परमेश्वर द्वारा स्पर्श किए जा चुके हो?

3. क्या परमेश्वर के वचनों ने तुम्हारे भीतर जड़ें जमाई हैं?

4. क्या तुम्हारा अभ्यास परमेश्वर की अपेक्षाओं की नींव पर खड़ा है?

5. क्या तुम पवित्र आत्मा के वर्तमान प्रकाश के मार्गदर्शन मेंरहते हो?

6. क्या तुम्हारा दिल पुरानी धारणाओं से नियंत्रित है, या यह आज परमेश्वर के वचनों से शासित है?

इन वचनों को सुनकर, तुम लोगों के भीतर क्या प्रतिक्रिया होती है? इतने सालों तक विश्वास करने के बाद, क्या परमेश्वर के वचन ही तुम्हारा जीवन हैं? क्या तुम्हारे पिछले भ्रष्ट स्वभाव में बदलाव आया है? क्या तुम यह जानते हो कि आज परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन के होने और जीवन के न होने का क्या अर्थ है? क्या यह तुम सभी को स्पष्ट है? परमेश्वर का अनुसरण करने में प्रमुख महत्व इस बात का है कि हर चीज़ आज परमेश्वर के वचनों के अनुसार होनी चाहिए: चाहे तुम जीवन प्रवेश का अनुसरण कर रहे हो या परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति, सब कुछ आज परमेश्वर के वचनों के आसपास ही केंद्रित होना चाहिए। यदि जो तुम संवाद और अनुसरण करते हो, वह आज परमेश्वर के वचनों के आसपास केंद्रित नहीं है, तो तुम परमेश्वर के वचनों के लिए एक अजनबी हो और पवित्र आत्मा के कार्य से पूरी तरह से परे हो। परमेश्वर ऐसे लोग चाहता है जो उसके पदचिह्नों का अनुसरण करें। भले ही जो तुमने पहले समझा था वह कितना ही अद्भुत और शुद्ध क्यों न हो, परमेश्वर उसे नहीं चाहता और यदि तुम ऐसी चीजों को दूर नहीं कर सकते, तो वो भविष्य में तुम्हारे प्रवेश के लिए एक भयंकर बाधा होंगी। वो सभी धन्य हैं, जो पवित्र आत्मा के वर्तमान प्रकाश का अनुसरण करने में सक्षम हैं। पिछले युगों के लोग भी परमेश्वर के पदचिह्नों पर चलते थे, फिर भी वो आज तक इसका अनुसरण नहीं कर सके; यह आखिरी दिनों के लोगों के लिए आशीर्वाद है। जो लोग पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य का अनुसरण कर सकते हैं और जो परमेश्वर के पदचिह्नों पर चलने में सक्षम हैं, इस तरह कि चाहे परमेश्वर उन्हें जहाँभी ले जाए वो उसका अनुसरण करते हैं—ये वो लोग हैं, जिन्हें परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त है। जो लोग पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य का अनुसरण नहीं करते हैं,

उन्होंने परमेश्वर के वचनों के कार्य में प्रवेश नहीं किया है और चाहे वो कितना भी काम करें या उनकी पीड़ा जितनी भी ज़्यादा हो या वो कितनी ही भागदौड़ करें, परमेश्वर के लिए इनमें से किसी बात का कोई महत्व नहीं और वह उनकी सराहना नहीं करेगा। आज वो सभी जो परमेश्वर के वर्तमान वचनों का पालन करते हैं, वो पवित्र आत्मा के प्रवाह में हैं; जो लोग आज परमेश्वर के वचनों से अनभिज्ञ हैं, वो पवित्र आत्मा के प्रवाह से बाहर हैं और ऐसे लोगों की परमेश्वर द्वारा सराहना नहीं की जाती। वह सेवा जो पवित्र आत्मा के वर्तमान कथनों से जुदा हो, वह देह और धारणाओं की सेवा है और इसका परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होना असंभव है। यदि लोग धार्मिक धारणाओंमें रहते हैं, तो वो ऐसा कुछ भी करने में असमर्थ होते हैं, जो परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल हो और भले ही वो परमेश्वर की सेवा करें, वो अपनी कल्पनाओं और धारणाओं के घेरे में ही सेवा करते हैं और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करने में पूरी तरह असमर्थ होते हैं। जो लोग पवित्र आत्मा के कार्य का अनुसरण करने में असमर्थ हैं, वो परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते और जो परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते, वो परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकते। परमेश्वर ऐसी सेवा चाहता है जो इच्छाके मुताबिक हो; वह ऐसी सेवा नहीं चाहता, जो धारणाओं और देह की हो। यदि लोग पवित्र आत्मा के कार्य के चरणों का पालन करने में असमर्थ हैं, तो वो धारणाओं के बीच रहते हैं। ऐसे लोगों की सेवा बाधा डालती है और परेशान करती है और ऐसी सेवा परमेश्वर के विरुद्ध चलती है। इस प्रकार, जो लोग परमेश्वर के पदचिह्नों पर चलने में असमर्थ हैं, वो परमेश्वर की सेवा करने में असमर्थ हैं; जो लोग परमेश्वर के पदचिह्नों पर चलने में असमर्थ हैं, वो निश्चित रूप से परमेश्वर का विरोध करते हैं और वो परमेश्वर के साथ सुसंगत होने में असमर्थ हैं। "पवित्र आत्मा के कार्य का अनुसरण" करने का मतलब है आज परमेश्वर की इच्छा को समझना, परमेश्वर की वर्तमान अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करने में सक्षम होना, आज के परमेश्वर का अनुसरण और आज्ञापालन करने में सक्षम होना और परमेश्वर के नवीनतम कथनों के अनुसार प्रवेश करना। केवल यही ऐसा है, जो पवित्र आत्मा के कार्य का अनुसरण करता है और पवित्र आत्मा के प्रवाहमें है। ऐसे लोग न केवल परमेश्वर की सराहना प्राप्त करने और परमेश्वर को देखने में सक्षम हैं बल्कि परमेश्वर के नवीनतम कार्य से परमेश्वर के स्वभाव को भी जान सकते हैं और परमेश्वर के नवीनतम कार्य से मनुष्य की अवधारणाओं और अवज्ञा को, मनुष्य की प्रकृति और सार को जान सकते हैं; इसके अलावा, वो अपनी सेवा के दौरान धीरे-धीरे अपने स्वभाव में परिवर्तन हासिल करने में सक्षम होते हैं। केवल ऐसे लोग ही हैं, जो परमेश्वर को प्राप्त करने में सक्षम हैं और जो सचमुच में सच्चा मार्ग पा चुके हैं।

जिन लोगों को पवित्र आत्मा के कार्य से हटा दिया गया है, वो लोग हैं, जो परमेश्वर के नवीनतम कार्य का अनुसरण करने में असमर्थ हैं और जो परमेश्वर के नवीनतम कार्य के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। ऐसे लोग खुलेआम परमेश्वर का विरोध इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने नया कार्य किया है और क्योंकि परमेश्वर की छवि उनकी धारणाओं के अनुरूप नहीं है—जिसके परिणामस्वरूप वो परमेश्वर का खुलेआम विरोध करते हैं और परमेश्वर पर निर्णय देते हैं, जिसके नतीजे में परमेश्वर उनसे घृणा करता है और उन्हें अस्वीकार कर देता है। परमेश्वर के नवीनतम कार्य का ज्ञान रखना कोई आसान बात नहीं है, लेकिन अगर लोगों में परमेश्वर के कार्य का अनुसरण करने और परमेश्वर के कार्य की तलाश करने का ज्ञान है, तो उन्हें परमेश्वर को देखने का मौका मिलेगा, और उन्हें पवित्र आत्मा का नवीनतम मार्गदर्शन प्राप्त करने का मौका मिलेगा। जो जानबूझकर परमेश्वर के कार्य का विरोध करते हैं, वो पवित्र आत्मा के प्रबोधन या परमेश्वर के मार्गदर्शन को प्राप्त नहीं कर सकते; इस प्रकार, लोग परमेश्वर का नवीनतम कार्य प्राप्त कर पाते हैं या नहीं, यह परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर करता है, यह उनके अनुसरण पर निर्भर करता है और यह उनके इरादोंपर निर्भर करता है।

वो सभी धन्य हैं जो पवित्र आत्मा के वर्तमान कथनों का पालन करने में सक्षम हैं। इस बात से कोई फ़र्कनहीं पड़ता कि वो कैसे हुआ करते थे या उनके भीतर पवित्र आत्मा कैसे कार्य कियाकरती थी—जिन्होंने परमेश्वर का नवीनतम कार्य प्राप्त किया है, वो सबसे अधिक धन्य हैं और जो लोग आज नवीनतम कार्य का अनुसरण नहीं कर पाते, हटा दिए जाते हैं। परमेश्वर उन्हें चाहता है जो नई रोशनी स्वीकार करने में सक्षम हैं और वह उन्हें चाहता है जो उसके नवीनतम कार्य को स्वीकार करते और जान लेते हैं। ऐसा क्यों कहा गया है कि तुम लोगों को पवित्र कुँवारी होना चाहिए? एक पवित्र कुँवारी पवित्र आत्मा के कार्य की तलाश करने में और नई चीज़ों को समझने में सक्षम होती है, और इसके अलावा, पुरानी धारणाओं को भुलाकर परमेश्वर के आज के कार्य का अनुसरण करने में सक्षम होती है। इस समूह के लोग, जो आज के नवीनतम कार्य को स्वीकार करते हैं, परमेश्वर द्वारा युगों पहले ही पूर्वनिर्धारित किए जा चुके थे और वो सभी लोगों में सबसे अधिक धन्य हैं। तुम लोग सीधे परमेश्वर की आवाज़ सुनते हो और परमेश्वर की उपस्थिति का दर्शन करते हो और इस तरह समस्त स्वर्ग और पृथ्वी परऔर सारे युगों में, कोई भी तुम लोगों, लोगों के इस समूह से अधिक धन्य नहीं रहा है। यह सब परमेश्वर के कार्य के कारण है, परमेश्वर के पूर्व-निर्धारण और चयन के कारण और परमेश्वर के अनुग्रह के कारण है; अगर परमेश्वर ने बात न की होती

और अपने वचन नहीं कहे होते, तो क्या तुम लोगों की परिस्थितियाँ वैसी होतीं जैसी आज हैं? इस प्रकार, सभी महिमा और प्रशंसा परमेश्वर की हो क्योंकि यह सब इसलिए है क्योंकि परमेश्वर तुम्हेंऊपर उठाता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए क्या तुम अभी भी निष्क्रिय रह पाओगे? क्या तुम्हारी शक्ति अभी भी ऊपर उठने लायक नहीं होगी?

तुम्हारा परमेश्वर केन्याय, ताड़ना, प्रहार और शब्द-शोधन को स्वीकार करने में सक्षम होना और इसके अलावा, परमेश्वर के आदेशों को स्वीकार कर पाना, युगों से पहले ही परमेश्वर ने पूर्वनिर्धारित कर दिया था और इस प्रकार जब तुम्हें ताड़ना दी जाए तो तुम्हें बहुत व्यथित नहीं होना चाहिए। तुम लोगों में जो कार्य किया गया है और तुम्हें जो आशीर्वाद दिए गए हैं, उन्हें कोई नहीं ले सकता और जो तुम लोगों को दिया गया है, वह कोई भी नहीं ले जा सकता। धार्मिकलोग तुम लोगों के साथ तुलना में नहीं ठहर सकते। तुम लोगों के पास बाइबल में महान विशेषज्ञता नहीं है और तुम धार्मिक सिद्धांतों से सुसज्जित नहीं हो, पर चूँकि परमेश्वर ने तुम्हारे भीतर कार्य किया है, तुमने सारे युगों में अन्य किसी से ज़्यादा प्राप्त किया है—और इसलिए यह तुम्हारा सबसे बड़ा आशीर्वाद है। इस कारण तुम सभी को परमेश्वर के प्रति और अधिक समर्पित और अधिक निष्ठावान होना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर तुम्हें ऊपर उठाता है, तुम्हें अपने प्रयासों को बढ़ाना चाहिए, और परमेश्वर के आदेश स्वीकार करने के लिए अपने आध्यात्मिक कद को तैयार रखना चाहिए। तुम्हें परमेश्वर द्वारा दी गई जगह परदृढ़ खड़ा होना चाहिए, परमेश्वर के लोगों में से एक बनने की कोशिश करना, राज्य के प्रशिक्षण को स्वीकार करना, परमेश्वर द्वारा प्राप्त होना और अंततः परमेश्वर की एक गौरवपूर्ण गवाही बनना चाहिए। क्या ये संकल्प तुम्हारे पास हैं? यदि तुम्हारे पास ऐसे संकल्प हैं, तो अंततः तुम निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाओगे, और परमेश्वर के लिए एक शानदार गवाही बन जाओगे। तुम्हें यह समझना चाहिए कि प्रमुख आदेश परमेश्वर द्वारा प्राप्त किया जाना है और परमेश्वर के लिए एक शानदार गवाही बन जाना है। यही परमेश्वर की इच्छा है।

पवित्र आत्मा के वचन आज पवित्र आत्मा के कार्य का गतिविज्ञान हैं और इस दौरान पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्य का निरंतर प्रबोधन, पवित्र आत्मा के कार्य की प्रवृत्ति है। और आज पवित्र आत्मा के कार्य की प्रवृत्ति क्या है? यह आज परमेश्वर के कार्य और एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन में लोगों का नेतृत्व करना है। सामान्य आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने के कई चरण हैं:

1. सबसे पहले, तुम्हें अपने मन को परमेश्वर के वचनों में लगाना चाहिए। तुम्हें परमेश्वर के अतीत के

वचनों का अनुसरण नहीं करना चाहिए और न तो उनका अध्ययन करना चाहिए और न आज के वचनों से उनकी तुलना करनी चाहिए। इसके बजाय, तुम्हें पूरी तरह से परमेश्वर के वर्तमान वचनों में अपना मन लगाना चाहिए। अगर ऐसे लोग हैं, जो अभी भी अतीत काल में परमेश्वर के वचन, आध्यात्मिक किताबें या दूसरे प्रवचनों के विवरण पढ़ना चाहते हैं, जो आज पवित्र आत्मा के वचनों का पालन नहीं करते, तो वो सभी लोगों में सबसे अधिक मूर्ख हैं; परमेश्वर ऐसे लोगों से घृणा करता है। यदि तुम आज पवित्र आत्मा का प्रकाश स्वीकार करना चाहतेहो, तो फिर अपने मन को आज परमेश्वर के कथनों में लगाओ। यह पहली चीज़ है, जो तुम्हें हासिल करनी है।

2. तुम्हें आज परमेश्वर के बोले गए शब्दों के आधार पर प्रार्थना करनी चाहिए, परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करना और परमेश्वर से संवाद करना चाहिए और परमेश्वर के समक्ष अपने संकल्प करने चाहिए, इसकी स्थापना करते हुए कि तुम किन मानकों को पूरा करने की कोशिश करना चाहते हो।

3. पवित्र आत्मा के आज के कार्य की नींव पर तुम्हें सच्चाई में गहरे प्रवेश का अनुसरण करना चाहिए। अतीत के पुराने कथनों और सिद्धांतों को मत थामे रहो।

4. तुम्हें पवित्र आत्मा द्वारा स्पर्श किए जाने की और परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करने की कोशिशकरनी चाहिए।

5. जिस पथ पर आज पवित्र आत्मा चलती है, तुम्हें उसी पथ पर प्रवेश का अनुसरण करना चाहिए।

और तुम पवित्र आत्मा द्वारा स्पर्श किए जाने की कोशिश कैसे करते हो? अत्यंत महत्वपूर्ण है परमेश्वर के वर्तमान वचनों में जीना और परमेश्वर की अपेक्षाओं की नींव पर प्रार्थना करना। इस तरह प्रार्थना कर चुकने के बाद, पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हें स्पर्श करना निश्चित है। यदि तुम आज परमेश्वर द्वारा कहे गए वचनों की नींव के आधार पर कोशिशनहीं करते, तो यह व्यर्थ है। तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए और कहना चाहिए: "हे परमेश्वर! मैं तुम्हारा विरोध करता हूँ और मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ; मैं बहुत ही अवज्ञाकारी हूँ और तुम्हें कभी भी संतुष्ट नहीं कर सकता। हे परमेश्वर, मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बचा लो, मैं अंत तक तुम्हारी सेवा करना चाहता हूँ, मैं तुम्हारे लिए मर जाना चाहता हूँ। तुम मुझे न्याय और ताड़ना देते हो और मुझे कोई शिकायत नहीं है; मैं तुम्हारा विरोध करता हूँ और मैं मर जाने लायक हूँ ताकि मेरी मृत्यु में सभी लोग तुम्हारा धार्मिक स्वभाव देख सकें।" जब तुम इस तरह अपने दिल से प्रार्थना करते हो, तो परमेश्वर तुम्हारी

सुनेगा और तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा; यदि तुम आज पवित्र आत्मा के वचनों के आधारपर प्रार्थना नहीं करते, तो पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हें छूने की कोई संभावना नहीं है। यदि तुम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार और आज परमेश्वर जो करना चाहते हैं, उसके अनुसार प्रार्थना करते हो, तो तुम कहोगे "हे परमेश्वर! मैं तुम्हारे आदेशों को स्वीकार करना चाहता हूँ और तुम्हारे आदेशों के प्रति निष्ठा रखना चाहता हूँ, और मैं अपना पूरा जीवन तुम्हारी महिमा को समर्पित करने के लिए तैयार हूँ ताकि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह परमेश्वर के लोगों के मानकों तक पहुँच सके। काश मेरा दिल तुम्हारे स्पर्श को पा ले। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी आत्मा सदैव मेरा प्रबोधन करे ताकि मैं जो कुछ भी करूँ वह शैतान को शर्मिंदा करे ताकि मैं अंततः तुम्हारे द्वारा प्राप्त किया जाऊँ।" यदि तुम इस तरह प्रार्थना करते हो, परमेश्वर की इच्छा के आसपास केंद्रित रहकर, तो पवित्र आत्मा अपरिहार्य रूप से तुम में कार्य करेगी। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं में कितने शब्द हैं—कुंजी यह है कि तुम परमेश्वर की इच्छा समझते हो या नहीं। तुम सभी के पास निम्नलिखित अनुभव हो सकता है: कभी-कभी किसीसभा में प्रार्थना करते समय, पवित्र आत्मा के कार्य का गति-सिद्धांत अपने चरम बिंदु तक पहुँच जाता है, जिससे सभी की ताकत बढ़ती है। परमेश्वर के सामने पश्चाताप से अभिभूत होकर कुछ लोग फूट-फूटकर रोते हैं और प्रार्थना करते हुए आँसू बहाते हैं, तो कुछ लोग अपना संकल्प दिखाते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं। पवित्र आत्मा के कार्य से प्राप्त होने वाला प्रभाव ऐसा है। आज यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सभी लोग परमेश्वर के वचनों में पूरी तरह अपना मन लगाएँ। उन शब्दों पर ध्यान न दो, जो पहले बोले गए थे; यदि तुम अभी भी उसे थामे रहोगे जो पहले आया था, तो पवित्र आत्मा तुम्हारे भीतर कार्य नहीं करेगी। क्या तुम देखते हो कि यह कितना महत्वपूर्ण है?

क्या तुम सब उस मार्ग को जानते हो, जिस पर पवित्र आत्मा आज चलतीहै? ऊपर दी गई विभिन्न बातें वो हैं, जो पवित्र आत्मा द्वारा आज और भविष्य में पूरी की जानी हैं; यही वो मार्ग हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने अपनाया है और यही वह प्रवेश है जिसका मनुष्य को अनुसरण करना चाहिए। जीवन में तुम्हारे प्रवेश में, कम से कम तुम्हें अपने दिल को परमेश्वर के वचनों में लगाना चाहिए और परमेश्वर के वचनों के न्याय और ताड़ना को स्वीकार करने में सक्षम होना चाहिए; तुम्हारा दिल परमेश्वर के लिए तड़पनाचाहिए, तुम्हें सच्चाई में और परमेश्वर द्वारा अपेक्षित उद्देश्यों में गहरे प्रवेश का अनुसरण करना चाहिए। जब तुम्हारे पास यह शक्ति होती है, तो इससे पता चलता है कि परमेश्वर तुम्हारा स्पर्श कर चुका है और तुम्हारा दिल परमेश्वर उन्मुख होना शुरू हो चुका है।

जीवन में प्रवेश का पहला कदम पूरी तरह से परमेश्वर के वचनों में अपना मन लगाना है और दूसरा कदम पवित्र आत्मा द्वारा स्पर्श किए जाने को स्वीकार करना है। वह क्या प्रभाव है, जो पवित्र आत्मा द्वारा स्पर्श किए जाने को स्वीकार करने से मिलना है? यह है एक गहरे सत्य के लिए तड़प, खोज और अन्वेषण करना और सकारात्मक तरीके से परमेश्वर के साथ सहयोग के लिए सक्षमहोना। आज तुम परमेश्वर के साथ सहयोग करते हो, जिसका अर्थ है कि तुम्हारी खोज, तुम्हारी प्रार्थनाओं और परमेश्वर के वचनों से तुम्हारे समागम का एक उद्देश्य है और तुम परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार अपना कर्तव्य करते हो—केवल यही है परमेश्वर के साथ सहयोग करना। यदि तुम केवल परमेश्वर को कार्य करने देने की बात करते हो, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं करते, न प्रार्थना करते हो और न ही खोज, तो क्या इसे सहयोग कहा जा सकता है? यदि तुम्हारे भीतर सहयोग का अंश तक नहीं और प्रवेश के लिए एक ऐसे प्रशिक्षण का अभाव है जिसका एक उद्देश्य हो, तो तुम सहयोग नहीं कर रहे हो। कुछ लोग कहते हैं: "सब कुछ परमेश्वर के पूर्वनिर्धारण पर निर्भर करता है, यह सब स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाता है; अगर परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया तो मनुष्य कैसे कर सकता था?" परमेश्वर का कार्य सामान्य है और ज़रा भी अलौकिक नहीं है और यह केवल तुम्हारी सक्रिय खोज के माध्यम से ही पवित्र आत्मा कार्य करती है क्योंकि परमेश्वर मनुष्य को मजबूर नहीं करता—तुम्हें परमेश्वर को कार्य करने का अवसर देना चाहिए और यदि तुम अनुसरण या प्रवेश नहीं करते और अगर तुम्हारे दिल में थोड़ी-सी भी उत्कंठा नहीं है, तो परमेश्वर के लिए कार्य करने की कोई संभावना नहीं है। तुम किस मार्ग द्वारा परमेश्वर का स्पर्श हासिल करने की तलाश कर सकते हो? प्रार्थना के माध्यम से और परमेश्वर के करीब आकर। मगर याद रखो, सबसे महत्वपूर्ण बात है, यह परमेश्वर द्वारा कहे गए वचनों की नींव पर खड़ा होना चाहिए। जब तुम परमेश्वर द्वारा अक्सर छू लिए जाते हो, तो तुम शरीर के गुलाम नहीं बनते: पति, पत्नी, बच्चे और धन—ये सब तुम्हें बेड़ियों में बांधने में असमर्थ रहते हैं और तुम केवल सत्य का अनुसरण करना और परमेश्वर के समक्ष जीना चाहते हो। इस समय, तुम एक ऐसे व्यक्ति होगे, जो स्वतंत्रता के क्षेत्र में रहता है।

जिनके स्वभाव परिवर्तित हो चुके हैं, वे वही लोग हैं जो परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश कर चुके हैं

मनुष्य में पवित्र आत्मा के मार्ग का पहला चरण है, सबसे पहले, मनुष्य के हृदय को सभी व्यक्तियों,

घटनाओं और चीज़ों से अलग करते हुए परमेश्वर के वचनों में खींच लाना, जिससे मनुष्य का हृदय यह विश्वास करने लगे कि परमेश्वर के वचन संदेह से परे हैं और पूर्णतया सत्य हैं। अगर तू परमेश्वर पर विश्वास करता है, तो तुझे उसके वचनों पर विश्वास करना चाहिए; यदि, बरसों तक परमेश्वर पर विश्वास करने के बाद, तू पवित्र आत्मा द्वारा अपनाए गए मार्ग से अवगत नहीं है, तो क्या तू सच में एक विश्वासी है? एक सामान्य इंसानी जीवन—एक सामान्य इंसानी जीवन जिसका परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध है—पाने हेतु तुझे पहले उसके वचनों पर विश्वास करना होगा। अगर तूने, लोगों में पवित्र आत्मा के कार्य के पहले चरण को हासिल नहीं किया है तो तुम्हारे पास कोई आधार नहीं है। अगर सबसे बुनियादी सिद्धांत भी तेरी पहुँच से परे है तो तू आगे का सफर कैसे तय करेगा? परमेश्वर द्वारा मनुष्य को पूर्ण किए जाने के सही मार्ग में कदम रखने का अर्थ है पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य के सही मार्ग में प्रवेश करना; इसका अर्थ है पवित्र आत्मा द्वारा अपनाए गए मार्ग पर कदम रखना। इस वक्त पवित्र आत्मा जिस मार्ग को अपनाता है वह परमेश्वर के मौजूदा वचन हैं। अतः अगर लोग पवित्र आत्मा के मार्ग पर चलने के इच्छुक हैं, तो उन्हें देहधारी परमेश्वर के मौजूदा वचनों का पालन करना चाहिए, और उन्हें खाना तथा पीना चाहिए। जो कार्य वह करता है वो वचनों का कार्य है, सब कुछ उसके वचनों से शुरू होता है, और सब कुछ उसके वचनों, उसके मौजूदा वचनों, पर स्थापित होता है। चाहे बात परमेश्वर के देहधारण के बारे में निश्चित होने की हो या उसे जानने की, हरेक के लिए उसके वचनों पर अधिक समय देने की आवश्यकता है। अन्यथा लोग कुछ प्राप्त नहीं कर पाएंगे और उनके पास कुछ शेष नहीं रहेगा। सिर्फ परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के परिणामस्वरूप उसे जानने और संतुष्ट करने के आधार पर ही लोग धीरे-धीरे उसके साथ उचित संबंध स्थापित कर सकते हैं। मनुष्य के लिए, परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना तथा उन्हें अभ्यास में लाना ही परमेश्वर के साथ श्रेष्ठ सहयोग है। ऐसे अभ्यास के द्वारा वे परमेश्वर के जन होने की अपनी गवाही में मजबूत खड़े रह पाएंगे। जब लोग परमेश्वर के मौजूदा वचनों को समझते हैं और उसके सार का पालन करने में सक्षम होते हैं, तो वे पवित्र आत्मा द्वारा मार्गदर्शन किए जाने के पथ पर जीते हैं और वह परमेश्वर द्वारा मनुष्य को सिद्ध करने के सही मार्ग में प्रवेश कर चुके हैं। पहले लोग बस परमेश्वर के अनुग्रह की खोज करने या शांति और आनंद की खोज करने से परमेश्वर के कार्य को प्राप्त कर सकते थे, लेकिन अब बात अलग है। देहधारी परमेश्वर के वचनों के बगैर, उसके वचनों की वास्तविकता के बगैर, लोग परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त नहीं कर सकते हैं और वे सभी परमेश्वर द्वारा खत्म कर दिए जाएँगे। एक सामान्य

आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करने के लिए, लोगों को पहले परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना और उनका अभ्यास करना चाहिए; और फिर इस आधार पर परमेश्वर के साथ एक सामान्य संबंध स्थापित करना चाहिए। तू कैसे सहयोग कर सकता है? तू परमेश्वर के जन की गवाही में मजबूती से कैसे खड़ा रह सकता है? तू परमेश्वर के साथ एक सामान्य संबंध कैसे स्थापित कर सकता है?

रोजमर्रा की जिंदगी में परमेश्वर के साथ तुम्हारे सामान्य संबंध हैं या नहीं, इसे कैसे जानें :

1. क्या तू परमेश्वर की स्वयं की गवाही पर विश्वास करता है?

2. क्या तू अपने मन में विश्वास करता है कि परमेश्वर के वचन पूरी तरह सत्य और अचूक हैं?

3. क्या तू उसके वचनों पर अमल करता है?

4. क्या तू उसके आदेशों के प्रति निष्ठावान है? उसके आदेशों के प्रति निष्ठावान होने के लिए तू क्या करता है?

5. क्या तू अपना हर कार्य परमेश्वर के प्रति वफादार रहने और उसे संतुष्ट करने के लिए करता है?

ऊपर सूचीबद्ध की गयी बातों से तू जाँच सकता है कि वर्तमान चरण में परमेश्वर के साथ तेरा संबंध सामान्य है या नहीं।

अगर तू परमेश्वर के आदेशों को स्वीकारने में उसके वादे को स्वीकारने में सक्षम है, और पवित्र आत्मा के मार्ग का अनुसरण कर पाता है, तो तू परमेश्वर की इच्छा का पालन कर रहा है। क्या तू भीतर से पवित्र आत्मा के मार्ग के बारे में स्पष्ट है? इस वक्त, क्या तू पवित्र आत्मा के मार्ग के अनुरूप आचरण करता है? क्या तेरा हृदय परमेश्वर के समीप जा रहा है? क्या तू पवित्र आत्मा के नवीनतम प्रकाश के साथ तालमेल बनाकर चलना चाहता है? क्या तू परमेश्वर द्वारा प्राप्त किया जाना चाहता है? क्या तू पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा की अभिव्यक्ति बनना चाहता है? क्या तुझमें परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करने का संकल्प है? जब परमेश्वर के वचन बोले जाते हैं तब यदि तू सहयोग करने का संकल्प रखता है, और तू उसे संतुष्ट करने का संकल्प रखता है—यदि यही तेरी मानसिकता है—तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर के वचन ने तेरे हृदय में फल उत्पन्न किया है। यदि तुझमें ऐसा संकल्प नहीं है और तू किन्हीं भी लक्ष्यों को पाने की कोशिश नहीं करता, तो इसका यह अर्थ है कि तेरा हृदय अभी तक परमेश्वर द्वारा द्रवित नहीं हुआ है।

जब लोग आधिकारिक रूप से परमेश्वर के राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश कर लेते हैं, तब परमेश्वर की उनसे जो माँगें हैं उनका स्तर उच्चतर हो जाता है। इन उच्चतर माँगों को किस परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है? पहले, कहा गया था कि लोगों के पास जीवन नहीं है। आज वे जीवन की तलाश करते हैं, वे परमेश्वर के जन बनने, परमेश्वर द्वारा प्राप्त और पूर्ण किए जाने का प्रयास करते हैं। क्या यह उच्चतर स्तर नहीं है? वास्तव में, परमेश्वर की मनुष्य से माँगें पहले की अपेक्षा सरल हो गयी हैं। लोगों से सेवाकर्ता बनने या मरने की अपेक्षा नहीं की जाती है—उनसे सिर्फ यह अपेक्षा है कि वे परमेश्वर के जन बनें। क्या यह अधिक सरल नहीं है? तुझे बस अपना हृदय परमेश्वर को अर्पित करके, उसके मार्गदर्शन के अधीन होना है, और सब-कुछ सफलतापूर्वक हो जाएगा। तुझे ऐसा क्यों लगता है कि यह बहुत कठिन है? जीवन में प्रवेश करने के बारे में जो आज बात की जाती है, वह पहले से ज़्यादा स्पष्ट है; पहले, लोग भ्रमित थे और नहीं जानते थे कि सत्य की वास्तविकता क्या है। वास्तव में, वे सभी जो परमेश्वर के वचनों को सुनकर प्रतिक्रिया देते हैं, जो पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध और प्रकाशित किये गए हैं, और जो परमेश्वर के सामने, पूर्णता पाते हैं और जिनके स्वभाव बदल गये हैं—ऐसे सभी लोगों के पास जीवन है। परमेश्वर जीवित प्राणियों को चाहता है, निष्प्राण चीज़ों को नहीं; यदि तू निष्प्राण है तो तुझमें जीवन नहीं है और परमेश्वर तुझसे बात नहीं करेगा, और तुझे अपने लोगों में से एक के तौर पर तो कतई नहीं उठाएगा। क्योंकि परमेश्वर के द्वारा तुम लोगों का उत्थान हुआ है, और तुमने उससे ऐसा महान आशीष पाया है, यह दिखाता है कि तुम लोग जीवन से युक्त हो और जीवन युक्त लोग परमेश्वर से आते हैं।

अपने जीवन स्वभाव में परिवर्तन का प्रयास करने में, अभ्यास का मार्ग सरल है। यदि, अपने व्यावहारिक अनुभव में, तू पवित्र आत्मा के मौजूदा वचनों का पालन और परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर सकता है, तो तेरा स्वभाव परिवर्तित हो सकता है। यदि तू पवित्र आत्मा की हर बात का पालन करता है, पवित्र आत्मा की कही हर बात की खोज करता है, तो तू उसकी आज्ञा का पालन करने वाला व्यक्ति है, और तेरे स्वभाव में परिवर्तन होगा। पवित्र आत्मा के मौजूदा वचनों से लोगों का स्वभाव परिवर्तित होता है; यदि तू हमेशा अपने पुराने अनुभवों और नियमों से चिपका रहता है, तो तेरे स्वभाव में परिवर्तन नहीं हो सकता। यदि पवित्र आत्मा के आज के वचन सभी लोगों को एक सामान्य मानवता की जिंदगी में प्रवेश करने को कहें, लेकिन तेरा ध्यान बाहरी चीज़ों पर ही अटका रहता है और तू वास्तविकता के बारे में अनिश्चित है और इसे गंभीरता से नहीं लेता है, तो तू पवित्रात्मा के कार्य के साथ कदम से कदम मिलाने में

असफल हो गया है, तू कोई ऐसा है जिसने पवित्र आत्मा की रहनुमाई के मार्ग में प्रवेश नहीं किया है। तेरे स्वभाव में परिवर्तन होगा या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तू पवित्र आत्मा के मौजूदा वचनों के साथ चलता है या नहीं और सच्ची समझ तुझमें है या नहीं। यह तुम लोगों की पूर्व की समझ से अलग है। स्वभाव परिवर्तन के विषय में पहले जो तेरी समझ थी वह ये थी कि तू, जो आलोचना करने को इतना तत्पर है, परमेश्वर द्वारा अनुशासित किये जाने के कारण अब लापरवाही से नहीं बोलता है। पर यह परिवर्तन का सिर्फ एक पहलू है। अभी सबसे महत्वपूर्ण बात है पवित्र आत्मा के दिशा निर्देश में रहना : परमेश्वर की हर बात का अनुसरण करना और हर आज्ञा का पालन करना। लोग अपना स्वभाव स्वयं परिवर्तित नहीं कर सकते; उन्हें परमेश्वर के वचनों के न्याय, ताड़ना, पीड़ा और शोधन से गुजरना होगा, या उसके वचनों द्वारा निपटाया, अनुशासित किया जाना और काँटा-छाँटा जाना होगा। इन सब के बाद ही वे परमेश्वर के प्रति विश्वसनीयता और आज्ञाकारिता प्राप्त कर सकते हैं और उसके प्रति बेपरवाह होना बंद कर सकते हैं। परमेश्वर के वचनों के शोधन के द्वारा ही मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन आ सकता है। केवल उसके वचनों के संपर्क में आने से, उनके न्याय, अनुशासन और निपटारे से, वे कभी लापरवाह नहीं होंगे, बल्कि शांत और संयमित बनेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे परमेश्वर के मौजूदा वचनों और उसके कार्यों का पालन करने में सक्षम होते हैं, भले ही यह मनुष्य की धारणाओं से परे हो, वे इन धारणाओं को नज़रअंदाज करके अपनी इच्छा से पालन कर सकते हैं। पहले स्वभाव में बदलाव की बात मुख्यतः खुद को त्यागने, शरीर को कष्ट सहने देने, अपने शरीर को अनुशासित करने, और अपने आप को शारीरिक प्राथमिकताओं से दूर करने के बारे में होती थी—जो एक तरह का स्वभाव परिवर्तन है। आज, सभी जानते हैं कि स्वभाव में बदलाव की वास्तविक अभिव्यक्ति परमेश्वर के मौजूदा वचन को मानने में है, और साथ ही साथ उसके नए कार्य को सच में समझने में है। इस प्रकार, परमेश्वर के बारे में लोगों का पूर्व ज्ञान जो उनकी धारणा से रंगी थी, वह मिटाई जा सकती है और वे परमेश्वर का सच्चा ज्ञान और आज्ञाकारिता प्राप्त कर सकते हैं—केवल यही है स्वभाव में बदलाव की वास्तविक अभिव्यक्ति।

लोगों की जीवन में प्रवेश की चेष्टा परमेश्वर के वचनों पर आधारित है। पहले, यह कहा गया था कि सब कुछ उसके वचनों के कारण ही पूरा होता है, मगर किसी ने भी इस तथ्य को नहीं देखा। अगर तू वर्तमान चरण को अनुभव करने में प्रवेश करेगा, तो तुझे सारी बातें स्पष्ट हो जाएंगी और तू भविष्य की परीक्षाओं के लिए एक अच्छी नींव खड़ी करेगा। परमेश्वर चाहे जो कहे, तुझे केवल उसके वचनों में प्रवेश

करने पर ध्यान देना है। जब परमेश्वर कहता है कि वह लोगों को ताड़ना देना शुरू करेगा, तो उसकी ताड़ना को स्वीकार कर। जब परमेश्वर लोगों से प्राण त्यागने को कहे, तो यह परीक्षा स्वीकार कर। यदि तू सदा उसके नए कथनों के भीतर जीवन बिताता है, तो अंत में परमेश्वर के वचन तुझे पूर्ण कर देंगे। जितना अधिक तू परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करेगा, उतनी ही शीघ्रता से तुझे पूर्ण किया जाएगा। क्यों मैं हर संगति में तुम सबसे परमेश्वर के वचनों को जानने और उनमें प्रवेश करने को कहता हूँ? केवल जब तू परमेश्वर के वचनों में अनुसरण करता है और उसका अनुभव करता है, और उसके वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करता है, तभी पवित्र आत्मा को तेरे अंदर कार्य करने का अवसर मिलेगा। इसलिए परमेश्वर के कार्य की हर पद्धति में तुम सब प्रतिभागी हो, और इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम्हारी पीड़ा कितनी अधिक है, अंत में तुम सबको "स्मारिका" मिलेगी। अपनी अंतिम पूर्णता प्राप्त करने के लिए, तुम्हें परमेश्वर के सारे वचनों में प्रवेश करना होगा। पवित्र आत्मा द्वारा लोगों की पूर्णता एकतरफा नहीं है; वह लोगों का सहयोग चाहता है। वह चाहता है कि हर कोई पूरी मर्ज़ी से उसके साथ सहयोग करे। परमेश्वर चाहे जो भी कहे, तुझे केवल उसके वचनों में प्रवेश करने पर ध्यान देना है, यह तुम्हारे जीवन के लिए अधिक लाभकारी होगा। सारी बातें तुम्हारे स्वभाव में परिवर्तन हासिल करने के लिए ही हैं। जब तू परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करेगा, तब तेरा हृदय परमेश्वर द्वारा द्रवित किया जाएगा और तू वह सारी बातें समझ पायेगा जो परमेश्वर अपने कार्य के इस चरण में प्राप्त करना चाहता है और तुझमें उसे प्राप्त करने का संकल्प होगा। ताड़ना के समय के दौरान, कुछ लोग थे जिनका मानना था कि यह कार्य करने का एक तरीका है और उन्होंने परमेश्वर के वचनों पर विश्वास नहीं किया। इसके फलस्वरूप, वे शुद्धिकरण से नहीं गुज़रे और बिना कुछ पाये या समझे वे ताड़ना की अवधि से बाहर आ गए। कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने बिना किसी संदेह के इन वचनों में प्रवेश किया; जिन्होंने कहा कि परमेश्वर का वचन अचूक सत्य है और मनुष्यों को ताड़ना मिलनी चाहिए। कुछ समय के लिए उन्होंने अपने भविष्य और गंतव्य को छोड़ने में संघर्ष किया, और जब वे इससे बाहर निकले, तो उनका स्वभाव थोड़ा-बहुत बदल गया था और उन्होंने परमेश्वर की गहरी समझ पा ली थी। जो लोग ताड़ना से निकल आये, उन सब ने परमेश्वर की मनोहरता का अनुभव किया, और वे जानते थे कि परमेश्वर के कार्य का यह चरण उनमें परमेश्वर के महान प्रेम के अवतरित होने को मूर्त रूप देता है, यह चरण परमेश्वर के प्रेम का विजय और उद्धार है। उन्होंने यह भी कहा कि परमेश्वर के विचार सदैव अच्छे होते हैं, और जो कुछ परमेश्वर मनुष्य में करता है, वह प्रेम से उपजा है, द्वेष से नहीं। जिन लोगों ने परमेश्वर

के वचनों पर विश्वास नहीं किया, जिन्होंने उन वचनों का सम्मान नहीं किया, जो ताड़ना के समय शुद्धिकरण से नहीं गुज़रे, परिणामस्वरूप उनके साथ पवित्र आत्मा नहीं था, और उन्होंने कुछ भी नहीं पाया। जिन लोगों ने ताड़ना के समय में प्रवेश किया, वे भले ही शुद्धिकरण से होकर गुज़रे, लेकिन पवित्र आत्मा उनके अंदर गुप्त तरीके से कार्य कर रहा था और उसके फलस्वरूप उनके स्वभाव में बदलाव हुआ। कुछ लोग बाहर से हर तरह से, बहुत सकारात्मक दिखते थे, वे सदा आनंदित रहते थे, लेकिन उन्होंने परमेश्वर के वचनों के द्वारा शुद्धिकरण की अवस्था में प्रवेश नहीं किया और इसलिए वे बिल्कुल नहीं बदले, जो कि परमेश्वर के वचनों में विश्वास नहीं करने का परिणाम था। यदि तू परमेश्वर के वचनों में विश्वास नहीं रखता है तो पवित्र आत्मा तेरे अंदर कार्य नहीं करेगा। परमेश्वर उन सबके सामने प्रकट होता है जो उसके वचनों पर विश्वास करते हैं। जो लोग उसके वचनों पर विश्वास रखते हैं और उन्हें स्वीकारते हैं, वे उसका प्रेम प्राप्त कर सकेंगे!

परमेश्वर के वचनों की सच्चाई में प्रवेश करने के लिए, तुझे अभ्यास के मार्ग को ढूँढ़ना चाहिए और ज्ञात होना चाहिए कि कैसे परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाएँ। केवल इस प्रकार से ही तेरे जीवन स्वभाव में परिवर्तन होगा। केवल इसी पथ से तू परमेश्वर के द्वारा पूर्ण किया जा सकता है और केवल वे जो परमेश्वर द्वारा इस तरह से पूर्ण किए गए हैं वे ही उसकी इच्छा के अनुसार हो सकते हैं। नयी ज्योति पाने के लिए, तुझे उसके वचनों में जीना होगा। केवल एक बार पवित्र आत्मा के द्वारा द्रवित किया जाना काफी नहीं है, तुझे और गहराई में जाना होगा। जो केवल एक बार पवित्र आत्मा द्वारा द्रवित किए गए हैं, उनमें उत्साह जाग जाता है और वे तलाश करने के इच्छुक बन जाते हैं, परंतु ये लंबे समय तक टिक नहीं सकता; उन्हें लगातार पवित्र आत्मा द्वारा द्रवित किया जाना चाहिए। पहले कई बार मैंने अपनी आशा को व्यक्त किया कि पवित्र आत्मा लोगों की आत्माओं को द्रवित करे, ताकि वे अपने जीवन स्वभाव में बदलाव लाने का प्रयास करें, और परमेश्वर द्वारा द्रवित किए जाने का प्रयास करते हुए वे अपनी कमियों को समझ पाएँ, और उसके वचनों को अनुभव करने की प्रक्रिया में, वे अपने अंदर की अशुद्धताओं को निकाल फेंकें (अहंकार, घमंड, धारणाएँ इत्यादि)। यह न मान बैठ कि बस नई ज्योति को प्राप्त करने में सक्रिय होने से काम चल जाएगा—तुझे सभी नकारात्मक बातों को भी उतार फेंकना होगा। एक ओर, तुम लोगों को सकारात्मक पहलु से प्रवेश करने की जरूरत है, और दूसरी ओर, तुम लोगों को नकारात्मक पहलु से सभी अपवित्र चीज़ों से भी छुटकारा पाने की जरूरत है। तुझे लगातार स्वयं कि जाँच यह देखने के लिए करनी चाहिए कि

अभी भी तेरे भीतर कौन-सी अपवित्र चीज़ें मौजूद हैं। इंसानों की धार्मिक धारणाएँ, इरादे, आशाएं, अहंकार, और घमंड आदि सारी अशुद्ध बातें हैं। अपने भीतर झाँक, परमेश्वर के प्रकाशन के वचनों से खुद की तुलना कर और देख कि तुझमें कौन-सी धार्मिक धारणाएँ हैं। उन्हें सही तरह से पहचान पाने के बाद ही तू उन्हें निकाल फेंक सकता है। कुछ लोग कहते हैं: "अब बस पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य की ज्योति का अनुसरण करना पर्याप्त है। और किसी भी दूसरी चीज़ पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।" लेकिन जब, तेरी धार्मिक धारणाएं जागेंगी, तो तू उनसे कैसे छुटकारा पायेगा? क्या तू सोचता है कि आज परमेश्वर के वचनों का पालन करना एक सरल बात है? अगर तुम धर्म के कोई व्यक्ति हो तो धर्म से जुड़ी तुम्हारी धारणाओं और दिल में बसे पारंपरिक धार्मिक ज्ञान संबंधी सिद्धांतों से बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं, ये बातें तुम्हारे द्वारा नई चीज़ों की स्वीकृति में हस्तक्षेप करती हैं। यह सब समस्याएं वास्तविक हैं। यदि तू केवल पवित्र आत्मा के मौजूदा वचनों का ही अनुसरण करता है, तो तू परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट नहीं कर सकता। जब तू पवित्र आत्मा की वर्तमान ज्योति का अनुसरण करता है, तो इसके साथ ही तुझे यह पहचानना चाहिए कि तेरे भीतर कौन सी धारणाएँ और इरादे हैं, तुझमें कौन-से मानवीय अहंकार हैं, और कौन से व्यवहार परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी हैं। और इन सारी चीज़ों को पहचान लेने के बाद, तुझे उन्हें निकाल फेंकना चाहिए। तुझसे तेरे पुराने क्रियाकलापों और व्यवहारों को त्याग करवाना, सब तुझे पवित्र आत्मा के आज बोले गए वचनों का अनुसरण करने देने के लिए है। स्वभाव में बदलाव, एक ओर परमेश्वर के वचनों द्वारा हासिल होता है और दूसरी ओर इसके लिए इंसान के सहयोग की आवश्यकता है। एक तो परमेश्वर का कार्य है और दूसरा लोगों का अभ्यास, दोनों ही अपरिहार्य हैं।

अपनी सेवा के भविष्य के पथ में, तू परमेश्वर की इच्छा को कैसे पूरा कर सकता है? एक महत्वपूर्ण बिंदु है, जीवन में प्रवेश करने का प्रयास करना, अपने स्वभाव में बदलाव का प्रयत्न करना, और सत्य में अधिक गहराई से प्रवेश करने का यत्न करना—यह परमेश्वर के द्वारा पूर्ण और प्राप्त किए जाने का मार्ग है। तुम सब परमेश्वर के आदेश के प्राप्तकर्ता हो लेकिन आदेश क्या है? यह कार्य के अगले क़दम से जुड़ा है; अगले चरण का कार्य एक अधिक बड़ा कार्य होगा जो पूरी कायनात भर में किया जाता है, इसलिए आज, तुम लोगों को अपने जीवन स्वभाव में बदलाव लाने की चेष्टा करनी चाहिए ताकि भविष्य में तुम सब परमेश्वर के अपने कार्य के माध्यम से महिमा पाने का एक प्रमाण बन जाओ, और उसके भविष्य के कार्यों के लिए एक नमूना बन जाओ। आज के प्रयास भविष्य के कार्य के लिए एक नींव है, ताकि तू परमेश्वर द्वारा

उपयोग किया जा सके और उसकी गवाही देने में सक्षम बन सके। अगर तू इसे अपने प्रयासों का लक्ष्य बना ले, तो तू पवित्र आत्मा की उपस्थिति को प्राप्त कर पायेगा। तू अपने लक्ष्य को जितना ऊंचा रखेगा, उतना ही अधिक तू पूर्ण किया जा सकेगा। जितना अधिक तू सत्य के लिए प्रयास करेगा, उतना ही अधिक पवित्र आत्मा कार्य करेगा। अपने प्रयासों में तू जितनी ऊर्जा लगाएगा, उतना अधिक तू प्राप्त करेगा। पवित्र आत्मा लोगों को उनकी आंतरिक अवस्था के आधार पर पूर्ण करता है। कुछ लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर द्वारा उपयोग होने या उसके द्वारा पूर्ण किए जाने के इच्छुक नहीं हैं, वे बस चाहते हैं कि उनकी देह सुरक्षित रहे और उन्हें कोई दुर्भाग्य न झेलना पड़े। कुछ लोग राज्य में प्रवेश करना नहीं चाहते लेकिन अथाह कुंड में उतरना चाहते हैं। अगर ऐसा है तो परमेश्वर भी तेरी इच्छा को पूरा करेगा। तू जो भी प्रयास करेगा परमेश्वर उसे पूरा करेगा। तो इस समय तेरा प्रयास क्या है? क्या यह पूर्ण किया जाना है? क्या तेरे वर्तमान कार्यकलाप और व्यवहार परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने की खातिर हैं, उसके द्वारा प्राप्त किए जाने के लिए हैं? तुझे अपने रोजमर्रा के जीवन में इस तरह से स्वयं का आंकलन निरंतर करना चाहिए। यदि तू पूरे दिल से एक लक्ष्य का पीछा करने में लग जाता है, तो निस्संदेह परमेश्वर तुझे पूर्ण करेगा। यह पवित्र आत्मा का मार्ग है। जिस मार्ग पर पवित्र आत्मा लोगों को ले जाता है, वह प्रयास से प्राप्त होता है। जितनी अधिक तेरे भीतर परमेश्वर के द्वारा पूर्ण और प्राप्त किए जाने की प्यास होगी, पवित्र आत्मा तेरे अंदर उतना ही अधिक काम करेगा। जितना अधिक तू तलाश करने में असफल होता है, जितना अधिक तू नकारात्मक और पीछे हटनेवाला होता है, उतना ही तू पवित्र आत्मा से कार्य करने के अवसर छीन लेता है; जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा पवित्र आत्मा तुझे त्याग देगा। क्या तू परमेश्वर के द्वारा पूर्ण किया जाना चाहता है? क्या तू परमेश्वर के द्वारा प्राप्त किया जाना चाहता है? क्या तू परमेश्वर के द्वारा उपयोग किया जाना चाहता है? तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने, प्राप्त किए जाने, और उपयोग किए जाने के उद्देश्य से हर संभव कार्य करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे ब्रह्मांड की सभी चीज़ें तुम्हारे भीतर परमेश्वर के प्रदर्शित हुए कार्य को देख सकें। तुम सभी चीज़ों के बीच स्वामी हो, और जो सभी चीज़ें हैं उन सबके बीच, तुम परमेश्वर को तुम्हारे माध्यम से गवाही और महिमा का आनंद लेने दोगे—यह प्रमाण है कि तुम सभी पीढ़ियों में सबसे सौभाग्यशाली हो!

परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत रखने के बारे में

परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत रखने से अधिक महत्वपूर्ण कदम कोई नहीं है। यह वह सबक है, जिसमें वर्तमान में सभी लोगों को प्रवेश करने की तत्काल आवश्यकता है। परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत रखने में प्रवेश करने के निम्नलिखित मार्ग हैं :

1. अपने हृदय को बाहरी मामलों से हटा लो, परमेश्वर के समक्ष शांत रहो और अपना एकचित्त ध्यान परमेश्वर से प्रार्थना करने में लगाओ।

2. परमेश्वर के समक्ष शांत हृदय के साथ परमेश्वर के वचनों को खाओ, पीओ और उनका आनंद लो।

3. अपने हृदय में परमेश्वर के प्रेम पर ध्यान लगाओ और उस पर चिंतन करो और परमेश्वर के कार्य पर मनन करो।

सर्वप्रथम प्रार्थना के पहलू से आरंभ करो। एकचित्त होकर तथा नियत समय पर प्रार्थना करो। तुम्हारे पास समय की चाहे कितनी भी कमी हो, तुम कार्य में कितने भी व्यस्त हो, या तुम पर कुछ भी क्यों ना बीते, हर दिन सामान्य रूप से प्रार्थना करो, सामान्य रूप से परमेश्वर के वचनों को खाओ और पीओ। जब तक तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते रहोगे, तब तक चाहे तुम्हारा परिवेश कैसा भी क्यों ना हो, तुम्हें बहुत आत्मिक आनंद मिलेगा, और तुम लोगों, घटनाओं या अपने आसपास की चीज़ों से प्रभावित नहीं होगे। जब तुम अपने हृदय में साधारण रूप से परमेश्वर का मनन करते हो, तो बाहर जो कुछ भी होता है, वह तुम्हें परेशान नहीं कर सकता। आध्यात्मिक कद काठी प्राप्त करने का यही अर्थ है। प्रार्थना से आरंभ करो : परमेश्वर के सामने शांति के साथ प्रार्थना करना बहुत फलदायक है। इसके पश्चात्, परमेश्वर के वचनों को खाओ और पीओ, उसके वचनों पर मनन करके उनसे प्रकाश पाने का प्रयास करो, अभ्यास करने का मार्ग ढूँढ़ो, परमेश्वर के वचनों को कहने में उसके उद्देश्य को जानो, और उन्हें बिना भटके समझो। साधारणतया, बाहरी चीज़ों से विक्षुब्ध हुए बिना तुम्हारे लिए अपने हृदय में परमेश्वर के निकट आने, परमेश्वर के प्रेम पर मनन करने और उसके वचनों पर चिंतन करने में समर्थ होना सामान्य होना चाहिए। जब तुम्हारा हृदय एक हद तक शांत हो जाएगा, तो चाहे जैसा भी तुम्हारा परिवेश हो, तुम चुपचाप ध्यान लगाने और अपने भीतर परमेश्वर के प्रेम पर मनन करने और वास्तव में परमेश्वर के निकट आने में सक्षम हो जाओगे, जब तक कि अंतत: तुम ऐसी स्थिति में नहीं पहुँच जाओगे जहाँ तुम्हारे हृदय में परमेश्वर के लिए प्रशंसा उमड़ने लगे, और यह प्रार्थना करने से भी बेहतर है। तब तुम एक निश्चित आध्यात्मिक कद

काठी के हो जाओगे। यदि तुम ऊपर वर्णित अवस्थाओं में होने की स्थिति प्राप्त कर पाते हो, तो यह इस बात का प्रमाण होगा कि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष सच में शांत है। यह पहला बुनियादी सबक है। जब लोग परमेश्वर के सामने शांत होने में सक्षम होते हैं, केवल तभी वे पवित्र आत्मा के द्वारा स्पर्श, प्रबुद्ध और रोशन किए जा सकते हैं, और केवल तभी वे परमेश्वर के साथ सच्ची सहभागिता कर पाते हैं और साथ ही परमेश्वर की इच्छा और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन को समझ पाते हैं। तब वे अपने आध्यात्मिक जीवन में सही राह पर प्रवेश कर चुके होंगे। परमेश्वर के सामने रहने का उनका प्रशिक्षण जब एक निश्चित गहराई तक पहुँच जाता है, और वे अपने आपको त्यागने, अपना तिरस्कार करने और परमेश्वर के वचनों में जीने में समर्थ हो जाते हैं, तब उनके हृदय वास्तव में परमेश्वर के समक्ष शांत होते हैं। स्वयं का तिरस्कार करने, स्वयं को कोसने और स्वयं का त्याग करने में समर्थ होना, वह प्रभाव है जो परमेश्वर के कार्य द्वारा प्राप्त होता है, और लोगों के द्वारा अपने दम पर नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, अपने हृदय को परमेश्वर के समक्ष शांत करने का अभ्यास वह सबक है, जिसमें लोगों को तत्काल प्रवेश करना चाहिए। कुछ लोगों के लिए, न केवल वे साधारण तौर पर परमेश्वर के समक्ष शांत होने में असमर्थ होते हैं, बल्कि वे प्रार्थना करते समय भी अपने हृदय को शांत नहीं रख सकते। यह परमेश्वर के मानकों से बहुत कम है! यदि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष शांत नहीं हो सकता, तो क्या तुम पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जा सकते हो? यदि तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो परमेश्वर के समक्ष शांत नहीं रह सकता, तो किसी के आने से या दूसरों के बात करने पर तुम्हारा ध्यान भंग हो सकता है, और जब दूसरे लोग कार्य करते हैं तो तुम्हारा हृदय दूर खिंच सकता है, ऐसे मामले में तुम परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं जीते हो। यदि तुम्हारा हृदय वास्तव में परमेश्वर के समक्ष शांत रहता है, तो बाहरी दुनिया में होने वाली किसी भी बात से तुम अशांत नहीं होगे, या तुम पर किसी भी व्यक्ति, घटना या वस्तु द्वारा कब्ज़ा नहीं किया जा सकेगा। यदि तुम्हारा इसमें प्रवेश है, तो वे नकारात्मक अवस्थाएँ और समस्त नकारात्मक चीज़ें—मानवीय धारणाएँ, जीवन-दर्शन, लोगों के बीच असामान्य संबंध तथा मत और विचार, इत्यादि—स्वाभाविक रूप से गायब हो जाएँगी। चूँकि तुम सदा परमेश्वर के वचनों पर चिंतन कर रहे हो, और तुम्हारा हृदय हमेशा परमेश्वर के निकट आ रहा है और हमेशा परमेश्वर के वर्तमान वचनों से घिरा रहता है, इसलिए वे नकारात्मक चीज़ें अनजाने ही तुमसे दूर हो जाएँगी। जब नई और सकारात्मक चीज़ें तुम पर कब्ज़ा करेंगी, तब पुरानी नकारात्मक चीज़ों के लिए कोई जगह नहीं रहेगी, इसलिए उन नकारात्मक चीज़ों पर ध्यान न दो। तुम्हें उन्हें नियंत्रित करने के लिए कोई

प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें परमेश्वर के समक्ष शांत रहने, परमेश्वर के वचनों को अधिक से अधिक खाने, पीने और उनका आनंद लेने, परमेश्वर की स्तुति में अधिकाधिक भजन गाने, और परमेश्वर को अपने ऊपर कार्य करने का अवसर देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर इस समय मानव-जाति को व्यक्तिगत रूप से सिद्ध बनाना चाहता है, और वह तुम्हारे हृदय को हासिल करना चाहता है; उसका आत्मा तुम्हारे हृदय को प्रेरित करता है, और यदि पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का अनुसरण करके तुम परमेश्वर की उपस्थिति में आ जाते हो, तो तुम परमेश्वर को संतुष्ट करोगे। यदि तुम परमेश्वर के वचनों में जीने पर ध्यान देते हो, और पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करने के लिए सत्य के बारे में संगति करने में अधिक संलग्न होते हो, तो वे धार्मिक धारणाएँ और तुम्हारा दंभ और अहम्मन्यता, सब गायब हो जाएँगे, और तुम जान जाओगे कि किस प्रकार अपने आपको परमेश्वर के लिए व्यय करना है, किस प्रकार परमेश्वर से प्रेम करना है, और किस प्रकार उसे संतुष्ट करना है। और बिना तुम्हारे जाने परमेश्वर के लिए असंगत चीज़ें तुम्हारी चेतना में से गायब हो जाएँगी।

परमेश्वर के वर्तमान वचनों को खाते और पीते हुए उसके वचनों पर चिंतन और प्रार्थना करना परमेश्वर के समक्ष शांत होने की ओर पहला कदम है। यदि तुम सच में परमेश्वर के समक्ष शांत रह सकते हो, तो पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी तुम्हारे साथ होगी। समस्त आध्यात्मिक जीवन परमेश्वर की उपस्थिति में शांत रहने से प्राप्त किया जाता है। प्रार्थना करने में तुम्हें परमेश्वर के समक्ष शांत अवश्य होना चाहिए, केवल तभी तुम पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जा सकते हो। परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते हुए जब तुम परमेश्वर के समक्ष शांत होते हो, तो तुम्हें प्रबुद्ध और रोशन किया जा सकता है, और तुम परमेश्वर के वचनों की सच्ची समझ प्राप्त कर सकते हो। ध्यान और संगति की अपनी सामान्य गतिविधियों में और अपने हृदय में परमेश्वर के निकट होने में जब तुम परमेश्वर की उपस्थिति में शांत हो जाओगे, तो तुम परमेश्वर के साथ वास्तविक निकटता का आनंद ले पाओगे, परमेश्वर के प्रेम और उसके कार्य की वास्तविक समझ रख पाओगे, और परमेश्वर के इरादों के संबंध में सच्चा चिंतन और देखभाल दर्शा पाओगे। जितना अधिक तुम साधारणतः परमेश्वर के सामने शांत रहने में सक्षम होगे, उतना ही अधिक तुम रोशन होगे और उतना ही अधिक तुम अपने स्वयं के भ्रष्ट स्वभाव को समझ पाओगे, और समझ पाओगे कि तुममें किस चीज़ की कमी है, तुम्हें किसमें प्रवेश करना है, कौन-से कार्य में तुम्हें सेवा करनी चाहिए, और किसमें तुम्हारे दोष निहित हैं। यह सब परमेश्वर की उपस्थिति में शांत रहने से प्राप्त होता है। यदि तुम परमेश्वर के समक्ष

अपनी शांति में सच में गहराई प्राप्त कर लेते हो, तो तुम आत्मा के कुछ रहस्यों को स्पर्श कर पाओगे, यह समझ पाओगे कि वर्तमान में परमेश्वर तुममें क्या कार्य करना चाहता है, परमेश्वर के वचनों को अधिक गहराई से समझ पाओगे, परमेश्वर के वचनों के तत्व, सार और अस्तित्व को समझ पाओगे, और तुम अभ्यास के मार्ग को अधिक स्पष्टता और परिशुद्धता से देख पाओगे। यदि तुम अपनी आत्मा में शांत रहने में पर्याप्त गहराई प्राप्त करने में असफल रहते हो, तो तुम पवित्र आत्मा द्वारा केवल थोड़ा-सा ही प्रेरित किए जाओगे; तुम अंदर से मज़बूत महसूस करोगे और एक निश्चित मात्रा में आनंद और शांति अनुभव करोगे, लेकिन तुम कुछ भी गहराई से नहीं समझोगे। मैंने पहले कहा है : यदि लोग अपना पूरा सामर्थ्य नहीं लगाते हैं, तो उनके लिए मेरी वाणी को सुनना या मेरा चेहरा देखना कठिन होगा। यह परमेश्वर के समक्ष शांति में गहराई प्राप्त करने का इशारा करता है, न कि सतही प्रयास करने का। जो व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर के समक्ष सच में शांत रह सकता है, वह खुद को समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त कर पाता है, और परमेश्वर द्वारा कब्जा किए जाने में समर्थ होता है। वे सभी, जो परमेश्वर के समक्ष शांत होने में असमर्थ हैं, निश्चित रूप से लंपट और स्वछंद हैं। वे सभी, जो परमेश्वर के समक्ष शांत रहने में समर्थ हैं, वे लोग हैं जो परमेश्वर के समक्ष पवित्र हैं, और जो परमेश्वर के लिए लालायित रहते हैं। केवल परमेश्वर के आगे शांत रहने वाले लोग ही जीवन को महत्व देते हैं, आत्मा में संगति को महत्व देते हैं, परमेश्वर के वचनों के प्यासे होते हैं और सत्य का अनुसरण करते हैं। जो कोई भी परमेश्वर के आगे शांत रहने को महत्व नहीं देता है और परमेश्वर के समक्ष शांत रहने का अभ्यास नहीं करता वह अहंकारी और अल्पज्ञ है, संसार से जुड़ा है और जीवन-रहित है; भले ही वे कहें कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वे केवल दिखावटी बात करते हैं। जिन्हें परमेश्वर अंततः सिद्ध बनाता है और पूर्णता देता है, वे लोग हैं जो परमेश्वर की उपस्थिति में शांत रह सकते हैं। इसलिए जो लोग परमेश्वर के समक्ष शांत होते हैं, वे बड़े आशीषों का अनुग्रह प्राप्त करते हैं। जो लोग दिन भर में परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के लिए शायद ही समय निकालते हैं, जो पूरी तरह से बाहरी मामलों में लीन रहते हैं और जीवन में प्रवेश को थोड़ा ही महत्व देते हैं—वे सब ढोंगी हैं, जिनके भविष्य में विकास के कोई आसार नहीं हैं। जो लोग परमेश्वर के समक्ष शांत रह सकते हैं और जो वास्तव में परमेश्वर से संगति कर सकते हैं, वे ही परमेश्वर के लोग होते हैं।

परमेश्वर के वचनों को अपने जीवन के रूप में स्वीकार करने हेतु उसके समक्ष आने के लिए तुम्हें पहले उसके समक्ष शांत होना होगा। जब तुम परमेश्वर के समक्ष शांत होगे, केवल तभी वह तुम्हें प्रबुद्ध

करेगा और तुम्हें ज्ञान देगा। लोग परमेश्वर के समक्ष जितना अधिक शांत होते हैं, उतना अधिक वे प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त कर पाते हैं। इस सबके लिए आवश्यक है कि लोगों में भक्ति और विश्वास हो; केवल इसी प्रकार वे सिद्ध बनाए जा सकते हैं। आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने का बुनियादी सबक परमेश्वर की उपस्थिति में शांत रहना है। यदि तुम परमेश्वर की उपस्थिति में शांत होगे, तो केवल तभी तुम्हारा समस्त आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रभावी होगा। यदि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष शांत रहने में असमर्थ है, तो तुम पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त नहीं कर पाओगे। यदि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष शांत है, तो चाहे तुम जो कुछ भी करो, तब तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो परमेश्वर की उपस्थिति में जीता है। यदि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष शांत है और उसके समीप जाता है, तो चाहे तुम कुछ भी करो, इससे साबित होता है कि तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो परमेश्वर के समक्ष शांत रहता है। यदि तुम लोगों से वार्तालाप करते समय, चलते-फिरते समय यह कह पाते हो, "मेरा हृदय परमेश्वर के समीप जा रहा है और बाहरी चीज़ों पर केंद्रित नहीं है, और मैं परमेश्वर के समक्ष शांत रह सकता हूँ," तो तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो परमेश्वर के समक्ष शांत रहता है। ऐसी किसी चीज़ में, जो तुम्हारे हृदय को बाहरी मामलों की तरफ खींचती हो, या ऐसे लोगों के साथ, जो तुम्हारे हृदय को परमेश्वर से अलग करते हों, संलग्न मत हो। जो कुछ भी तुम्हारे हृदय को परमेश्वर के निकट आने से विचलित करता हो, उसे अलग रख दो, या उससे दूर रहो। यह तुम्हारे जीवन के लिए कहीं अधिक लाभदायक है। अभी निश्चित रूप से पवित्र आत्मा के महान कार्य का समय है, वह समय, जब परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से लोगों को सिद्ध बना रहा है। यदि, इस क्षण, तुम परमेश्वर के समक्ष शांत नहीं रह सकते हो, तो तुम ऐसे व्यक्ति नहीं हो, जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने लौटेगा। यदि तुम परमेश्वर के अलावा अन्य चीजों का अनुसरण करते हो, तो तुम्हें परमेश्वर द्वारा सिद्ध बनाए जाने का कोई मार्ग नहीं होगा। जो लोग परमेश्वर से ऐसे कथनों को सुन सकते हैं और फिर भी आज उसके समक्ष शांत रहने में असफल रहते हैं, वे ऐसे लोग हैं, जो सत्य और परमेश्वर से प्रेम नहीं करते। यदि इस क्षण तुम अपने आपको समर्पित नहीं करोगे, तो तुम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो? अपने आपको समर्पित करना परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत करना है। यही एक वास्तविक बलि होगी। जो कोई भी अब सचमुच अपना हृदय परमेश्वर को समर्पित करता है, वह परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए आश्वस्त किया जाता है। कोई भी चीज़, चाहे वह कुछ भी क्यों न हो, तुम्हें विक्षुब्ध नहीं कर सकती है; चाहे वह तुम्हारी काट-छाँट करना हो या तुमसे निपटना हो, या चाहे तुम्हें कुंठा या असफलता का सामना करना पड़े, तुम्हारा हृदय

परमेश्वर के समक्ष हमेशा शांत होना चाहिए। चाहे लोग तुम्हारे साथ कैसा भी व्यवहार करें, तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष शांत होना चाहिए। चाहे तुम्हें कैसी भी परिस्थिति का सामना करना पड़े—चाहे तुम विपत्ति, पीड़ा, उत्पीड़न या विभिन्न परीक्षणों से घिर जाओ—तुम्हारा हृदय परमेश्वर के समक्ष हमेशा शांत होना चाहिए; सिद्ध किए जाने के ऐसे ही मार्ग हैं। जब तुम परमेश्वर के समक्ष शांत होते हो, केवल तभी परमेश्वर के वर्तमान वचन तुम्हें स्पष्ट होंगे। तब तुम अधिक सही तरीके से और बिना विचलन के पवित्र आत्मा की रोशनी और प्रबुद्धता का अभ्यास कर सकते हो, परमेश्वर के इरादों को और अधिक स्पष्टता से समझ सकते हो, जो तुम्हारी सेवा को एक स्पष्ट दिशा प्रदान करेंगे, और तुम अधिक परिशुद्धता से पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और प्रेरणा को समझ सकते हो, और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अधीन रहने के बारे में आश्वस्त हो सकते हो। परमेश्वर के समक्ष सचमुच शांत रहने के ऐसे ही परिणाम प्राप्त होते हैं। जब लोग परमेश्वर के वचनों के बारे में स्पष्ट नहीं होते, उनके पास अभ्यास करने का कोई मार्ग नहीं होता, वे परमेश्वर के इरादों को समझने में असफल रहते हैं, या उनमें अभ्यास के सिद्धांतों का अभाव होता है, तो ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि परमेश्वर के समक्ष उनका हृदय शांत नहीं होता। परमेश्वर के समक्ष शांत रहने का उद्देश्य ईमानदार और व्यावहारिक होना, परमेश्वर के वचनों में यथार्थता और पारदर्शिता ढूँढ़ना, और अंततः सत्य को समझने और परमेश्वर को जानने की स्थिति में पहुँचना है।

यदि तुम्हारा हृदय प्रायः परमेश्वर के समक्ष शांत नहीं रहता, तो परमेश्वर के पास तुम्हें सिद्ध करने का कोई साधन नहीं है। संकल्पहीन होना हृदयहीन होने के बराबर है, और हृदयहीन व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष शांत नहीं हो सकता; ऐसा व्यक्ति नहीं जानता कि परमेश्वर कितना कार्य करता है, या वह कितना कुछ बोलता है, न ही वह यह जानता है कि अभ्यास कैसे किया जाए। क्या यह व्यक्ति हृदयहीन नहीं है? क्या हृदयहीन व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष शांत रह सकता है? हृदयहीन लोगों को सिद्ध बनाने का परमेश्वर के पास कोई साधन नहीं है—और वे बोझ ढोने वाले जानवरों से भिन्न नहीं हैं। परमेश्वर इतने स्पष्ट और पारदर्शी तरीके से बोला है, फिर भी तुम्हारा हृदय प्रेरित नहीं होता और तुम परमेश्वर के समक्ष शांत रहने में असमर्थ रहते हो। क्या तुम एक गूँगे जानवर नहीं हो? कुछ लोग परमेश्वर की उपस्थिति में शांत रहने के अभ्यास में भटक जाते हैं। जब भोजन पकाने का समय होता है, तो वे भोजन नहीं पकाते, जब दैनिक काम-काज का समय होता है, तो वे उन्हें नहीं करते, बल्कि केवल प्रार्थना और ध्यान ही करते रहते हैं। परमेश्वर के समक्ष शांत रहने का अर्थ यह नहीं है कि भोजन मत पकाओ या दैनिक काम-काज मत करो,

या अपना जीवन मत जीओ; बल्कि, यह सभी सामान्य अवस्थाओं में परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत करने में सक्षम होना, और अपने हृदय में परमेश्वर के लिए एक स्थान रखना है। जब तुम प्रार्थना करते हो, तो प्रार्थना करने के लिए तुम्हें परमेश्वर के आगे ठीक तरह से घुटने टेककर झुकना चाहिए; जब तुम दैनिक काम-काज करते हो या भोजन पकाते हो, तो परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत करो, परमेश्वर के वचनों पर चिंतन करो, या भजन गाओ। तुम चाहे अपने आपको किसी भी परिस्थिति में पाओ, तुम्हारे पास अभ्यास करने का अपना तरीका होना चाहिए, परमेश्वर के निकट आने के लिए तुम जो कुछ कर सकते हो, तुम्हें करना चाहिए, और परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत रखने के लिए तुम्हें अपनी पूरी ताक़त से कोशिश करनी चाहिए। जब परिस्थितियाँ अनुमति दें, तो एकचित्त होकर प्रार्थना करो; और जब परिस्थितियाँ अनुमति न दें, तो अपने हाथों के काम को करते हुए अपने हृदय में परमेश्वर के निकट जाओ। जब तुम परमेश्वर के वचनों को खा और पी सकते हो, तो उसके वचनों को खाओ और पीओ; जब तुम प्रार्थना कर सकते हो, तो प्रार्थना करो; जब तुम परमेश्वर का मनन कर सकते हो, तब उसका मनन करो। दूसरे शब्दों में, अपने परिवेश के अनुसार प्रवेश के लिए अपने आपको प्रशिक्षित करने हेतु अपनी पूरी कोशिश करो। कुछ लोग परमेश्वर के समक्ष तभी शांत हो पाते हैं, जब कोई समस्या नहीं होती, लेकिन जैसे ही कुछ होता है, उनके मन भटक जाते हैं। यह परमेश्वर के समक्ष शांत होना नहीं है। इसे अनुभव करने का सही तरीका है : किसी भी परिस्थिति में हमारा हृदय परमेश्वर से दूर न जाए, या बाहरी लोगों, घटनाओं या चीज़ों से विक्षुब्ध महसूस न करे, और केवल तभी कोई व्यक्ति ऐसा होता है, जो परमेश्वर के समक्ष सचमुच शांत होता है। कुछ लोग कहते हैं कि जब वे सभाओं में प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर के सामने उनका हृदय शांत रह सकता है, किंतु दूसरों के साथ संगति में वे परमेश्वर के समक्ष शांत रहने में असमर्थ रहते हैं, उनके विचार भटक जाते हैं। यह परमेश्वर के समक्ष शांत रहना नहीं है। आज अधिकांश लोग इसी अवस्था में हैं, उनके हृदय परमेश्वर के समक्ष हमेशा शांत रहने में असमर्थ हैं। इसलिए, तुम लोगों को इस क्षेत्र में अपने परिश्रम में अधिक प्रयास अवश्य लगाने चाहिए, जीवन-अनुभव के सही पथ पर कदम-दर-कदम प्रवेश करना चाहिए, और परमेश्वर के द्वारा सिद्ध बनाए जाने के मार्ग पर चलने की शुरुआत करनी चाहिए।

पूर्णता प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखो

परमेश्वर की इच्छा को तुम जितना अधिक ध्यान में रखोगे, तुम्हारा बोझ उतना अधिक होगा और तुम जितना ज्यादा बोझ वहन करोगे, तुम्हारा अनुभव भी उतना ही ज्यादा समृद्ध होगा। जब तुम परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखोगे, तो परमेश्वर तुम पर एक दायित्व डाल देगा, और उसने तुम्हें जो काम सौंपे हैं, उनके बारे में वह तुम्हें प्रबुद्ध करेगा। जब परमेश्वर द्वारा तुम्हें यह बोझ दिया जाएगा, तो तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते समय सभी संबंधित सत्य पर ध्यान दोगे। यदि तुम्हारे ऊपर भाई-बहनों की स्थिति से जुड़ा बोझ है तो यह बोझ परमेश्वर ने तुम्हें सौंपा है, और तुम प्रतिदिन की प्रार्थना में इस बोझ को हमेशा अपने साथ रखोगे। परमेश्वर जो करता है वही तुम्हें सौंपा गया है, और तुम वो करने के लिए तैयार हो जिसे परमेश्वर करना चाहता है; परमेश्वर के बोझ को अपना बोझ समझने का यही अर्थ है। इस बिंदु पर, परमेश्वर के वचन को खाते और पीते समय, तुम इस तरह के मामलों पर ध्यान केन्द्रित करोगे, और तुम सोचोगे कि मैं इन समस्याओं को कैसे सुलझा पाऊँगा? मैं अपने भाइयों और बहनों को मुक्ति और आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करने के योग्य कैसे बना सकता हूँ? तुम संगति करते और परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते समय भी इन मुद्दों को हल करने पर ध्यान दोगे, तुम इन मुद्दों से संबंधित वचनों को खाने-पीने पर भी ध्यान दोगे। तुम उसके वचनों को खाते-पीते समय भी बोझ उठाओगे। एक बार जब तुम परमेश्वर की अपेक्षाओं को समझ लोगे, तो तुम्हारे मन में तुम स्पष्ट हो जाओगे कि तुम्हें किस मार्ग पर चलना है। यह पवित्र आत्मा की वह प्रबुद्धता और रोशनी है जो तुम्हारे बोझ का परिणाम है, और यह परमेश्वर का मार्गदर्शन भी है जो तुम्हें प्रदान किया गया है। मैं ऐसा क्यों कहता हूं? यदि तुम्हारे ऊपर कोई बोझ नहीं है, तब तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते समय इस पर ध्यान नहीं दोगे; बोझ उठाने के दौरान जब तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हो, तो तुम परमेश्वर के वचनों का सार समझ सकते हो, अपना मार्ग खोज सकते हो, और परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रख सकते हो। इसलिए, परमेश्वर से प्रार्थना करते समय तुम्हें अधिक बोझ माँगना चाहिए, और अधिक बड़े काम सौंपे जाने की कामना करनी चाहिए, ताकि तुम्हारे आगे अभ्यास करने के लिए और अधिक मार्ग हों, ताकि तुम्हारे परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने का और ज्यादा प्रभाव हो; ताकि तुम उसके वचनों के सार को प्राप्त करने में सक्षम हो जाओ; और तुम पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाने के लिए और भी सक्षम हो जाओ।

परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना, प्रार्थना का अभ्यास करना, परमेश्वर के बोझ को स्वीकार करना, और उसे स्वीकार करना जो उसने तुम्हें सौंपा है—ये सब मार्ग को प्राप्त करने के उद्देश्य से हैं।

परमेश्वर द्वारा सौंपा गया जितना अधिक बोझ तुम्हारे ऊपर होगा, तुम्हारे लिए उसके द्वारा पूर्ण बनाया जाना उतना ही आसान होगा। कुछ लोग परमेश्वर की सेवा में दूसरों के साथ समन्वय करने के इच्छुक नहीं होते, तब भी नहीं जबकि वे बुलाए जाते हैं; ये आलसी लोग केवल आराम का सुख उठाने के इच्छुक होते हैं। तुमसे जितना अधिक दूसरों के साथ समन्वय करने का आग्रह किया जाएगा, तुम उतना ही अधिक अनुभव प्राप्त करोगे। तुम्हारे पास अधिक बोझ होने के कारण, तुम अधिक अनुभव करोगे, तुम्हारे पास पूर्ण बनाए जाने का अधिक मौका होगा। इसलिए, यदि तुम सच्चे मन से परमेश्वर की सेवा कर सको, तो तुम परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील रहोगे; और इस तरह तुम्हारे पास परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाये जाने का अधिक अवसर होगा। ऐसे ही मनुष्यों के एक समूह को इस समय पूर्ण बनाया जा रहा है। पवित्र आत्मा जितना अधिक तुम्हें स्पर्श करेगा, तुम उतने ही अधिक परमेश्वर के बोझ के लिए विचारशील रहने के प्रति समर्पित होओगे, तुम्हें परमेश्वर द्वारा उतना अधिक पूर्ण बनाया जाएगा, तुम्हें उसके द्वारा उतना अधिक प्राप्त किया जाएगा, और अंत में, तुम ऐसे व्यक्ति बन जाओगे जिसे परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। वर्तमान में, कुछ ऐसे लोग हैं जो कलीसिया के लिए कोई बोझ नहीं उठाते। ये लोग सुस्त और ढीले-ढाले हैं, और वे केवल अपने शरीर की चिंता करते हैं। ऐसे लोग बहुत स्वार्थी होते हैं और अंधे भी होते हैं। यदि तुम इस मामले को स्पष्ट रूप से देखने में सक्षम नहीं होते हो, तो तुम कोई बोझ नहीं उठा पाओगे। तुम जितना अधिक परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखोगे, तुम्हें परमेश्वर उतना ही अधिक बोझ सौंपेगा। स्वार्थी लोग ऐसी चीज़ें सहना नहीं चाहते; वे कीमत नहीं चुकाना चाहते, परिणामस्वरूप, वे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के अवसर से चूक जाते हैं। क्या वे अपना नुकसान नहीं कर रहे हैं? यदि तुम ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखता है, तो तुम कलीसिया के लिए वास्तविक बोझ विकसित करोगे। वास्तव में, इसे कलीसिया के लिए बोझ उठाना कहने की बजाय, यह कहना चाहिए कि तुम खुद अपने जीवन के लिए बोझ उठा रहे हो, क्योंकि कलीसिया के प्रति बोझ तुम इसलिए पैदा करते हो, ताकि तुम ऐसे अनुभवों का इस्तेमाल परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए कर सको। इसलिए, जो भी कलीसिया के लिए सबसे भारी बोझ उठाता है, जो भी जीवन में प्रवेश के लिए बोझ उठाता है, उसे ही परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाता है। क्या तुमने इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लिया है? जिस कलीसिया के साथ तुम हो, यदि वह रेत की तरह बिखरी हुई है, लेकिन तुम न तो चिंतित हो और न ही व्याकुल, यहाँ तक कि जब तुम्हारे भाई-बहन परमेश्वर के वचनों को सामान्य ढंग से खाते-पीते नहीं हैं, तब भी तुम आँख मूंद लेते हो,

तो इसका अर्थ है कि तुम कोई जिम्मेदारी वहन नहीं कर रहे। ऐसे मनुष्य से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। परमेश्वर जिनसे प्रसन्न होता है वे लोग धार्मिकता के भूखे और प्यासे होते हैं और वे परमेश्वर की इच्छा के प्रति विचारशील होते हैं। इसलिए, तुम्हें परमेश्वर के बोझ के लिए अभी तुरंत विचारशील हो जाना चाहिए; परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील होने से पहले तुम्हें इंतजार नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर सभी लोगों के सामने अपना धार्मिक स्वभाव प्रकट करे। क्या तब तक बहुत देर नहीं हो जाएगी? परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए अभी अच्छा अवसर है। यदि तुम अपने हाथ से इस अवसर को निकल जाने दोगे, तो तुम जीवन भर पछताओगे, जैसे मूसा कनान की अच्छी भूमि में प्रवेश नहीं कर पाया और जीवन भर पछताता रहा, पछतावे के साथ ही मरा। एक बार जब परमेश्वर अपना धार्मिक स्वभाव सभी लोगों पर प्रकट कर देगा, तो तुम पछतावे से भर जाओगे। यदि परमेश्वर तुम्हें ताड़ना नहीं भी देता है, तो भी तुम स्वयं ही अपने आपको अपने पछतावे के कारण ताड़ना दोगे। कुछ लोग इस बात से आश्वस्त नहीं हैं, यदि तुम्हें इस पर विश्वास नहीं है, तो इन्तजार करो और देखो। कुछ लोगों का उद्देश्य एकमात्र इन वचनों को साकार करना है। क्या तुम इन वचनों के लिए खुद को बलिदान करने को तैयार हो?

यदि तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के अवसर को नहीं ढूँढते हो, और यदि तुम पूर्णता की अपनी खोज में बाकियों से आगे रहने का प्रयास नहीं करोगे, तो तुम अंततः पछताओगे। यह समय ही पूर्ण बनाए जाने का श्रेष्ठ अवसर है; यह बहुत ही अच्छा समय है। यदि तुम गंभीरतापूर्वक परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की कोशिश नहीं करोगे, तो उसका काम पूरा हो जाने पर, बहुत देर हो जाएगी—तुम अवसर से चूक जाओगे। तुम्हारी अभिलाषा कितनी भी बड़ी हो, यदि परमेश्वर ने काम करना बंद कर दिया है तो फिर तुम चाहे कितने भी प्रयास कर लो, तुम कभी भी पूर्णता हासिल नहीं कर पाओगे। जब पवित्र आत्मा अपना महान कार्य कर रहा हो तो तुम्हें इस अवसर को हथिया लेना चाहिए और सहयोग करना चाहिए। यदि तुम इस अवसर को गँवा दोगे, तो फिर चाहे कितने भी प्रयास कर लो, तुम्हें दूसरा अवसर नहीं दिया जाएगा। तुम में से कुछ लोग चिल्लाते हैं, "परमेश्वर, मैं तुम्हारे बोझ के प्रति विचारशील होने का इच्छुक हूँ, और मैं तुम्हारी इच्छा को संतुष्ट करने का इच्छुक हूँ!" लेकिन तुम्हारे पास अभ्यास का कोई मार्ग नहीं है, इसलिए तुम्हारा बोझ अंत तक टिकेगा नहीं। यदि तुम्हारे सामने एक मार्ग है, तो तुम धीरे-धीरे अनुभव प्राप्त करोगे और तुम्हारा अनुभव संरचित और संयोजित होगा। एक बोझ पूरा हो जाने के बाद, तुम्हें दूसरा दिया जाएगा। जैसे-जैसे तुम्हारा जीवन अनुभव गहरा होगा, तुम्हारा बोझ भी गहन होता जाएगा। कुछ लोग तभी

बोझ उठाते हैं जब वे पवित्र आत्मा के द्वारा स्पर्श किए जाते हैं; कुछ समय के बाद, जब उनके पास अभ्यास के लिए कोई मार्ग नहीं होता, तो वे कोई भी बोझ उठाना बंद कर देते हैं। मात्र परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने से तुम बोझ का विकास नहीं कर सकते। बहुत सारे सत्य को समझ कर, तुम विवेक हासिल कर पाओगे और तुम सत्य के उपयोग से समस्याओं को हल करने में सक्षम बन जाओगे, और तुम्हारे पास परमेश्वर के वचन और इच्छा की और भी सटीक समझ होगी। इन बातों के साथ, तुम बोझ विकसित करोगे, और तुम तभी सही ढंग से काम कर पाओगे। यदि तुम्हारे पास बोझ है, लेकिन तुम्हारे पास सत्य की स्पष्ट समझ नहीं है, तो यह भी काम नहीं करेगा; तुम्हें व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के वचनों का अनुभव करना चाहिए, और तुम्हें यह पता होना चाहिए कि उनका अभ्यास कैसे करना है। जब तुम वास्तविकता में प्रवेश कर लोगे, तभी तुम दूसरों को पोषण दे सकोगे, उनकी अगुवाई कर सकोगे, और परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जा सकोगे।

"मार्ग... (4)" में लिखा है कि तुम सब लोग राज्य के जन हो, जिन्हें युगों पहले परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित कर दिया गया था, और उन्हें वहाँ से कोई नहीं निकाल सकता। इसमें यह भी लिखा है कि परमेश्वर की इच्छा है कि हर कोई परमेश्वर द्वारा उपयोग किया जाए, परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाये, और वह उनसे अपेक्षा करता है कि वे उसके जन के रूप में खड़े हों, और परमेश्वर के जन बन कर ही वे उसकी इच्छा पूरी करें। उस समय तुम सबने इस मामले पर संगति की थी और परमेश्वर-जनों के लिए निर्धारित मानदंड पर आधारित प्रवेश का मार्ग बताया था। इसलिए, उस समय पवित्र आत्मा के द्वारा जो काम किया गया, वह लोगों को उनकी नकारात्मक दशा से सकारात्मक दशा में ले जाना था। उस दौरान, पवित्र आत्मा के कार्य की प्रवृत्ति सभी लोगों को परमेश्वर-जनों के रूप में, परमेश्वर के वचनों का आनंद उठाने देने में समर्थ बनाने की थी, ताकि तुम सबमें से प्रत्येक स्पष्ट रूप से समझ ले कि तुम सब परमेश्वर-जन हो, जैसा कि युगों से पहले पूर्वनियत किया गया था, और शैतान तुम्हें नहीं ले जा सकता। इसलिए, तुम सबने प्रार्थना की, "परमेश्वर मैं तुम्हारे लोगों में से एक होने को तैयार हूँ, क्योंकि हम तुम्हारे द्वारा युगों पहले पूर्वनिर्धारित किए गए थे, और यह हैसियत हमें तुमने दी है। हम इस पद से तुम्हें संतुष्ट करना चाहते हैं।" जब भी तुम लोगों ने इस प्रकार से प्रार्थना की, तुम्हें पवित्र आत्मा ने स्पर्श किया; इसी तरह से पवित्र आत्मा ने कार्य किया। इस समय तुम्हें परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत रखने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि तुम जीवन पाने के लिए संघर्ष और राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश पाने में कामयाब हो सको। यह पहला

कदम है। इस समय, परमेश्वर का काम हर व्यक्ति को सही पथ पर प्रवेश कराने का है, ताकि हर एक को सामान्य आध्यात्मिक जीवन प्राप्त हो, और वो सच्चा अनुभव प्राप्त कर सके, पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित हो जाए, और इस नींव के आधार पर, परमेश्वर की आज्ञा को स्वीकार करे। राज्य के प्रशिक्षण में प्रवेश करने का उद्देश्य अपने प्रत्येक शब्द, प्रत्येक कार्य, प्रत्येक गतिविधि, सोच-विचार को परमेश्वर के वचनों में प्रवेश करने देना है; परमेश्वर द्वारा स्पर्श किया जाना है और इस तरह परमेश्वर के लिए प्रेम भरा दिल विकसित करना है; और परमेश्वर की इच्छा का अधिक बोझ उठाना है, ताकि हर व्यक्ति परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के पथ पर हो, ताकि हर मनुष्य सही मार्ग पर हो। एक बार जब तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के पथ पर होते हो, तब तुम सही मार्ग पर होते हो। एक बार तुम्हारी सोच और विचार, साथ ही तुम्हारे गलत इरादे, जब सही किए जा सकते हैं, और जब तुम शरीर के लिए सचेत होने से हटकर परमेश्वर की इच्छा के लिए सचेत होने में सक्षम होते हो और, जब कभी गलत इरादे उत्पन्न होते हैं तो उन्हें मन से हटा लेते हो, और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करते हो—यदि तुम इस प्रकार के बदलाव को प्राप्त करने में सक्षम होते हो, तब तुम जीवन के अनुभव के सही मार्ग पर होते हो। जब तुम्हारी प्रार्थना के अभ्यास सही मार्ग पर होते हैं, तो तुम प्रार्थना में पवित्र आत्मा के द्वारा स्पर्श किए जाओगे। जब भी तुम प्रार्थना करोगे, तो तुम पवित्र आत्मा द्वारा स्पर्श किए जाओगे; जब भी तुम प्रार्थना करोगे तो तुम परमेश्वर के सामने अपने हृदय को शांत रखने में सक्षम हो जाओगे। जब भी तुम परमेश्वर के वचन के अंश को खाते और पीते हो, यदि तुम उसके द्वारा अभी किये जा रहे कार्य को समझ पाओ और यह जान जाओ कि प्रार्थना कैसे करें, कैसे सहयोग करें और कैसे प्रवेश करें, तभी तुम्हारा परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना परिणाम दे सकता है। जब तुम परमेश्वर के वचन से प्रवेश के पथ को प्राप्त कर लोगे, और परमेश्वर के कार्य के वर्तमान गतिविज्ञान और पवित्र आत्मा के कार्य की दिशा को समझ जाओगे, तो तुम सही पथ में प्रवेश कर लोगे। यदि तुमने परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते समय मुख्य बिन्दुओं को नहीं समझा, और उस मार्ग को नहीं ढूँढ पाए जिस पर अभ्यास करना है, तो यह दिखाएगा कि तुम अभी तक नहीं जानते कि परमेश्वर के वचनों को सही ढंग से कैसे खाना और पीना है, और यह दिखाता है कि तुम अभी भी नहीं जानते कि उसके वचनों को कैसे खाया और पीया जाता है और तुम ऐसा करने का तरीका और सिद्धांत नहीं खोज पाये हो। यदि तुमने परमेश्वर के वर्तमान के काम को नहीं समझा है, तो तुम उस काम को स्वीकार नहीं कर पाओगे जो परमेश्वर तुम्हें सौंपेगा। परमेश्वर द्वारा वर्तमान में किया जाने वाला काम ऐसा है सटीक रूप

से वही है जिसमें मनुष्य को प्रवेश करना चाहिए, और वर्तमान में समझना चाहिए। क्या तुम सब इन बातों को समझते हो?

यदि तुम प्रभावी ढंग से परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हो, तो तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन सामान्य हो जाता है, तो भले ही तुम कैसी भी परीक्षाओं का और परिस्थितियों का सामना करो, कैसे भी शारीरिक रोग झेलो, या भाइयों और बहनों से कैसा भी मनमुटाव हो, या पारिवारिक कठिनाइयों का अनुभव करो, तुम परमेश्वर के वचनों को सामान्य ढंग से खाने-पीने योग्य हो जाते हो, सामान्य ढंग से प्रार्थना कर पाते हो, सामान्य ढंग से कलीसियाई जीवन जी पाते हो; यदि तुम यह सब हासिल कर सको, तो इससे साबित होगा कि तुम सही मार्ग पर हो। कुछ लोग बहुत नाजुक होते हैं और उनमें दृढ़ता की कमी होती है। छोटी-सी बाधा का सामना करने पर वे बच्चों की तरह रोने लगते हैं और नकारात्मक हो जाते हैं। सत्य का अनुसरण दृढ़ता और दृढ़ संकल्प की माँग करता है। यदि इस बार तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में नाकाम हुए, तो तुम्हें अपने आप से घृणा हो जानी चाहिए, चुपचाप अपने दिल में दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए कि अगली बार तुम परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करोगे। यदि इस बार तुम परमेश्वर के बोझ के प्रति विचारशील नहीं रहे, तो तुम्हें भविष्य में समान बाधा का सामना करने पर शरीर के खिलाफ विद्रोह के लिए संकल्पित, और तुम्हें परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करना चाहिए। इस प्रकार तुम प्रशंसा को पाने योग्य बनोगे। कुछ लोग तो यह भी नहीं जानते कि उनकी सोच और विचार सही हैं या नहीं; ऐसे लोग मूर्ख होते हैं! यदि तुम अपने दिल को वश में करना और शरीर के खिलाफ विद्रोह करना चाहते हो, तो पहले तुम्हें यह जानना होगा कि क्या तुम्हारे इरादे अच्छे हैं; तभी तुम अपने दिल को वश में कर सकते हो। यदि तुम्हें यही नहीं पता कि तुम्हारे इरादे सही हैं या नहीं, तो क्या तुम अपने दिल को वश में और शरीर से विद्रोह कर सकते हो? यदि तुम विद्रोह कर भी दो, तो भी तुम ऐसा भ्रमित स्थिति में करोगे। तुम्हें पता होना चाहिए कि अपने पथभ्रष्ट इरादों से विद्रोह कैसे करें; इसी को देह से विद्रोह करना कहते हैं। एक बार जब तुम जान लेते हो कि तुम्हारे इरादे, सोच और ख्याल गलत हैं, तो तुम्हें तत्काल मुड़ जाना चाहिए और सही पथ पर चलना चाहिए। सबसे पहले इस मुद्दे का समाधान करो, और इस संबंध में प्रवेश पाने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करो, क्योंकि तुम ही बेहतर जानते हो कि तुम्हारे इरादे सही हैं या नहीं। एक बार जब तुम्हारे गलत इरादे सही हो जाएँगे, और परमेश्वर के लिए होंगे, तब तुम अपने दिल को वश में करने के लक्ष्य को प्राप्त कर चुके होगे।

अब तुम्हारे लिए सबसे महत्वपूर्ण काम यह है कि तुम परमेश्वर और उसके कार्य का ज्ञान प्राप्त करो। तुम्हारे लिए यह जानना भी ज़रूरी है कि पवित्र आत्मा मनुष्य में कैसे काम करता है; सही पथ में प्रवेश करने के लिए ये काम आवश्यक है। एक बार यदि तुमने महत्वपूर्ण बिंदु को समझ लिया तो तुम्हारे लिए ऐसा करना आसान होगा। तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो और परमेश्वर को जानते हो, जो दिखाता है कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास खरा है। यदि तुम अनुभव प्राप्त करना जारी रखो, फिर भी अंत में परमेश्वर को न जान पाओ, तो तुम सचमुच ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर का विरोध करता है। जो लोग केवल प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं लेकिन आज के देहधारी परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, तो वे सभी तिरस्कृत किए जाएंगे। वे सभी बाद के दिनों के फरीसी हैं, क्योंकि वे आज के परमेश्वर को स्वीकार नहीं करते; और वे सब परमेश्वर के विरोधी हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितने समर्पण भाव से यीशु की आराधना करते हैं, यह सब व्यर्थ हो जाएगा; वे परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त नहीं करेंगे। जो लोग तख्ती लगाकर घूमते हैं कि वे परमेश्वर में विश्वास रखते हैं, फिर भी उनके हृदय में परमेश्वर का सच्चा ज्ञान नहीं है, वे सब पाखंडी हैं!

परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की कोशिश करने के लिए, व्यक्ति को पहले यह समझना होगा कि परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने का अर्थ क्या होता है, साथ ही, परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए किन शर्तों को पूरा करना होता है। एक बार जब इंसान ऐसे मामलों को समझ लेता है, तब उसे अभ्यास के पथ को खोजना चाहिए। परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए व्यक्ति को एक विशेष गुणवत्ता वाला होना चाहिए। बहुत से लोग स्वाभाविक रूप से उच्च गुणवत्ता वाले नहीं होते, ऐसी स्थिति में तुम्हें कीमत चुकानी चाहिए और अपने स्तर पर मेहनत करनी चाहिए। तुम्हारी गुणवत्ता जितनी कम होगी, तुम्हें उतना ही अधिक प्रयास करना पड़ेगा। परमेश्वर के वचनों की तुम्हारी समझ जितनी अधिक होगी और जितना अधिक तुम उन्हें अभ्यास में लाओगे, उतनी ही जल्दी तुम पूर्ण बनाए जाने के पथ में प्रवेश कर सकते हो। प्रार्थना करने से, तुम प्रार्थना के क्षेत्र में पूर्ण बनाए जा सकते हो; परमेश्वर के वचनों को खाने एवं पीने से, उनके सार को समझने और उनकी वास्तविकता को जीने से भी तुम्हें पूर्ण बनाया जा सकता है। दैनिक आधार पर परमेश्वर के वचनों का अनुभव करके, तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि तुममें किस बात की कमी है, इसके अतिरिक्त, तुम्हें अपने घातक दोष एवं कमज़ोरियों को पहचान लेना चाहिए और परमेश्वर से प्रार्थना और विनती करनी चाहिए। ऐसा करके, तुम्हें धीरे-धीरे पूर्ण बनाया जाएगा। पूर्ण बनाए जाने का रास्ता है : प्रार्थना करना, परमेश्वर के वचनों को खाना एवं पीना, परमेश्वर के वचनों के सार को समझना;

परमेश्वर के वचनों के अनुभव में प्रवेश करना; तुममें जिस बात की कमी है उसे जानना; परमेश्वर के कार्य के प्रति समर्पित होना; परमेश्वर के बोझ को ध्यान में रखना एवं परमेश्वर के लिए अपने प्रेम के द्वारा देह की इच्छाओं का त्याग करना; और अपने भाई-बहनों के साथ निरन्तर सहभागिता में शामिल होना, जो तुम्हारे अनुभवों को समृद्ध करता है। चाहे तुम्हारा सामुदायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, और चाहे बड़ी सभाएँ हों या छोटी हों, तुम सभी से अनुभव एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हो, ताकि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के सामने शांत रहे और परमेश्वर के पास वापस आ जाए। यह सब कुछ पूर्ण बनाए जाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। जैसा कि पहले कहा गया है, परमेश्वर के बोले गए वचनों का अनुभव करने का अर्थ वास्तव में उनका स्वाद ले पाना है और तुम्हें उनके अनुसार जीने देना है ताकि तुम परमेश्वर के प्रति कहीं अधिक बड़ा विश्वास एवं प्रेम पा सकोगे। इस तरीके से, तुम धीरे-धीरे अपना भ्रष्ट, शैतानी स्वभाव त्याग दोगे; तुम स्वयं को अनुचित इरादों से मुक्त कर लोगे; और एक सामान्य मनुष्य के समान जीवन जियोगे। तुम्हारे भीतर परमेश्वर का प्रेम जितना ज़्यादा होता है—अर्थात, परमेश्वर के द्वारा तुम्हें जितना अधिक पूर्ण बनाया गया है—तुम शैतान के द्वारा उतने ही कम भ्रष्ट किए जाओगे। अपने व्यवहारिक अनुभवों के द्वारा, तुम धीरे धीरे पूर्ण बनाए जाने के पथ में प्रवेश करोगे। इसलिए, यदि तुम पूर्ण बनाए जाना चाहते हो, तो परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखना एवं उसके वचनों का अनुभव करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर उन्हें पूर्ण बनाता है, जो उसके हृदय के अनुसार हैं

परमेश्वर अब एक विशेष लोगों के समूह को प्राप्त करना चाहता है, ऐसा समूह जिसमें वे लोग शामिल हैं जो उसके साथ सहयोग करने का प्रयास करते हैं, जो उसके कार्य का पालन कर सकते हैं, जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर द्वारा बोले हुए वचन सत्य हैं, जो परमेश्वर की अपेक्षाओं को अपने अभ्यास में ला सकते हैं; ये वे लोग हैं जिनके हृदयों में सच्ची समझ है, ये वे लोग हैं, जिन्हें पूर्ण बनाया जा सकता है, और वे निःसंदेह पूर्णता के पथ पर चलने में समर्थ होंगे। जिन्हें पूर्ण नहीं बनाया जा सकता है, ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के कार्य की स्पष्ट समझ के बिना हैं, जो परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते नहीं हैं, जो उसके वचनों पर कोई ध्यान नहीं देते, और जिनके हृदय में परमेश्वर के लिए कोई प्रेम नहीं है। जो देहधारी परमेश्वर पर संदेह करते हैं, उसके बारे में हमेशा अनिश्चित रहते हैं, उसके वचनों को कभी भी गंभीरता से नहीं लेते हैं, और हमेशा उसे धोखा देते हैं, वे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं और शैतान के

संबंधी हैं; ऐसे लोगों को परिपूर्ण बनाने का कोई तरीका नहीं है।

यदि तू पूर्ण बनाया जाना चाहता है, तो पहले तुझ पर परमेश्वर द्वारा कृपा की जानी चाहिए, क्योंकि वह उन्हें पूर्ण बनाता है, जिन पर वह कृपा करता है, जो उसके हृदय के अनुसार होते हैं। यदि तू परमेश्वर के हृदय के अनुसार होना चाहता है, तो तेरे पास ऐसा हृदय अवश्य होना चाहिए जो उसके कार्यों का पालन करता हो, तुझे सत्य का अनुसरण करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए, और तुझे सभी बातों में परमेश्वर की छानबीन को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। क्या तू जो कुछ भी करता है, वो परमेश्वर की छानबीन से गुजरता है? क्या तेरा इरादा सही है? यदि तेरा इरादा सही है, तो परमेश्वर तेरी प्रशंसा करेगा; यदि तेरा इरादा ग़लत है, तो यह दिखाता है, कि जिसे तेरा दिल प्यार करता है वह परमेश्वर नहीं है, बल्कि यह देह और शैतान है। इसलिए तुझे सभी बातों में परमेश्वर की छानबीन को स्वीकार करने के लिए प्रार्थना को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। जब तू प्रार्थना करता है, तब भले ही मैं व्यक्तिगत रूप से तेरे सामने खड़ा नहीं होता हूँ, लेकिन पवित्र आत्मा तेरे साथ होता है, और यह स्वयं मुझसे और पवित्र आत्मा से तू प्रार्थना कर रहा होता है। तू इस देह पर क्यों भरोसा करता है? तू इसलिए भरोसा करता है क्योंकि उसमें परमेश्वर का आत्मा है। यदि वह व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा के बिना होता तो क्या तू उस पर भरोसा करता? जब तू इस व्यक्ति पर भरोसा करता है, तो तू परमेश्वर के आत्मा पर भरोसा करता है। जब तू इस व्यक्ति से डरता है, तो तू परमेश्वर के आत्मा से डरता है। परमेश्वर के आत्मा पर भरोसा इस व्यक्ति पर भरोसा करना है, और इस व्यक्ति पर भरोसा करना, परमेश्वर के आत्मा पर भरोसा करना भी है। जब तू प्रार्थना करता है, तो तू महसूस करता है कि परमेश्वर का आत्मा तेरे साथ है, और परमेश्वर तेरे सामने है; इसलिए तू उसके आत्मा से प्रार्थना करता है। आज, अधिकांश लोग अपने कृत्यों को परमेश्वर के सम्मुख लाने से बहुत डरते हैं; जबकि तू परमेश्वर की देह को धोखा दे सकता है, परन्तु उसके आत्मा को धोखा नहीं दे सकता है। कोई भी बात, जो परमेश्वर की छानबीन का सामना नहीं कर सकती, वह सत्य के अनुरूप नहीं है, और उसे अलग कर देना चाहिए; ऐसा न करना परमेश्वर के विरूद्ध पाप करना है। इसलिए, तुझे हर समय, जब तू प्रार्थना करता है, जब तू अपने भाई-बहनों के साथ बातचीत और संगति करता है, और जब तू अपना कर्तव्य करता है और अपने काम में लगा रहता है, तो तुझे अपना हृदय परमेश्वर के सम्मुख अवश्य रखना चाहिए। जब तू अपना कार्य पूरा करता है, तो परमेश्वर तेरे साथ होता है, और जब तक तेरा इरादा सही है और परमेश्वर के घर के कार्य के लिए है, तब तक जो कुछ भी तू करेगा, परमेश्वर उसे स्वीकार करेगा;

इसलिए तुझे अपने कार्य को पूरा करने के लिए अपने आपको ईमानदारी से समर्पित कर देना चाहिए। जब तू प्रार्थना करता है, यदि तेरे हृदय में परमेश्वर के लिए प्रेम है, और यदि तू परमेश्वर की देखभाल, संरक्षण और छानबीन की तलाश करता है, यदि ये चीज़ें तेरे इरादे हैं, तो तेरी प्रार्थनाएँ प्रभावशाली होंगी। उदाहरण के लिए, जब तू सभाओं में प्रार्थना करता है, यदि तू अपना हृदय खोल कर परमेश्वर से प्रार्थना करता है, और बिना झूठ बोले परमेश्वर से बोल देता है कि तेरे हृदय में क्या है, तब तेरी प्रार्थनाएँ निश्चित रूप से प्रभावशाली होंगी। यदि तू ईमानदारी से अपने दिल में परमेश्वर से प्रेम करता है, तो परमेश्वर से एक प्रतिज्ञा कर : "परमेश्वर, जो कि स्वर्ग में और पृथ्वी पर और सब वस्तुओं में है, मैं तुझसे प्रतिज्ञा करता हूँ : तेरा आत्मा, जो कुछ मैं करता हूँ, उसे जाँचे और मेरी सुरक्षा करे और हर समय मेरी देखभाल करे, इसे संभव बनाए कि मेरे सभी कृत्य तेरी उपस्थिति में खड़े रह सकें। यदि कभी भी मेरा हृदय तुझसे प्यार करना बंद कर दे, या यह कभी भी तुझसे विश्वासघात करे, तो तू मुझे कठोरता से ताड़ना और श्राप दे। मुझे ना तो इस जगत में और न आगे क्षमा कर!" क्या तू ऐसी शपथ खाने की हिम्मत करता है? यदि तू नहीं करता है, तो यह दर्शाता है कि तू कायर है, और तू अभी भी खुद से ही प्यार करता है। क्या तुम लोगों के पास यह संकल्प है? यदि वास्तव में यही तेरा संकल्प है, तो तुझे प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। यदि तेरे पास ऐसी प्रतिज्ञा लेने का संकल्प है, तो परमेश्वर तेरे संकल्प को पूरा करेगा। जब तू परमेश्वर से प्रतिज्ञा करता है, तो वह सुनता है। परमेश्वर तेरी प्रार्थना और तेरे अभ्यास से निर्धारित करता है कि तू पापी है या धार्मिक। यह अब तुम लोगों को पूर्ण बनाने की प्रक्रिया है, और यदि पूर्ण बनाए जाने पर वास्तव में तुझे विश्वास है, तो तू जो कुछ भी करता है, वह सब परमेश्वर के सम्मुख लाएगा और उसकी छानबीन को स्वीकार करेगा; और यदि तू कुछ ऐसा करता है जो उग्र रूप से विद्रोहशील है या यदि तू परमेश्वर के साथ विश्वासघात करता है, तो परमेश्वर तेरी प्रतिज्ञा को साकार करेगा, और तब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तेरे साथ क्या होता है, चाहे वह विनाश हो या ताड़ना, यह तेरे स्वयं का कार्य है। तूने प्रतिज्ञा ली थी, इसलिए तुझे ही इसका पालन करना चाहिए। यदि तूने कोई प्रतिज्ञा की, लेकिन उसका पालन नहीं किया, तो तुझे विनाश भुगतना होगा। चूँकि प्रतिज्ञा तेरी थी, परमेश्वर तेरी प्रतिज्ञा को साकार करेगा। कुछ लोग प्रार्थना के बाद डरते हैं, और विलाप करते हैं, "सब ख़त्म हो गया! व्यभिचार का मेरा मौका चला गया; दुष्ट चीजें करने का मेरा मौका चला गया; सांसारिक लालचों में लिप्त होने का मेरा मौका चला गया!" ऐसे लोग अभी भी सांसारिकता और पाप को ही प्यार करते हैं, और उन्हें निश्चित ही विनाश को भुगतना पड़ेगा।

परमेश्वर में विश्वासी होने का अर्थ है कि तेरे सारे कृत्य उसके सम्मुख लाये जाने चाहिए और उन्हें उसकी छानबीन के अधीन किया जाना चाहिए। यदि तू जो कुछ भी करता है उसे परमेश्वर के आत्मा के सम्मुख ला सकते हैं लेकिन परमेश्वर की देह के सम्मुख नहीं ला सकते, तो यह दर्शाता है कि तूने अपने आपको उसके आत्मा की छानबीन के अधीन नहीं किया है। परमेश्वर का आत्मा कौन है? कौन है वो व्यक्ति जिसकी परमेश्वर द्वारा गवाही दी जाती है? क्या वे एक समान नहीं है? अधिकांश उसे दो अलग अस्तित्व के रूप में देखते हैं, ऐसा विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का आत्मा तो परमेश्वर का आत्मा है, और परमेश्वर जिसकी गवाही देता है वह व्यक्ति मात्र एक मानव है। लेकिन क्या तू गलत नहीं है? किसकी ओर से यह व्यक्ति काम करता है? जो लोग देहधारी परमेश्वर को नहीं जानते, उनके पास आध्यात्मिक समझ नहीं होती है। परमेश्वर का आत्मा और उसका देहधारी देह एक ही हैं, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा देह रूप में प्रकट हुआ है। यदि यह व्यक्ति तेरे प्रति निर्दयी है, तो क्या परमेश्वर का आत्मा दयालु होगा? क्या तू भ्रमित नही है? आज, जो कोई भी परमेश्वर की छानबीन को स्वीकार नहीं कर सकता है, वह परमेश्वर की स्वीकृति नहीं पा सकता है, और जो देहधारी परमेश्वर को न जानता हो, उसे पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। अपने सभी कामों को देख और समझ कि जो कुछ तू करता है वह परमेश्वर के सम्मुख लाया जा सकता है कि नहीं। यदि तू जो कुछ भी करता है, उसे तू परमेश्वर के सम्मुख नहीं ला सकता, तो यह दर्शाता है कि तू एक दुष्ट कर्म करने वाला है। क्या दुष्कर्मी को पूर्ण बनाया जा सकता है? तू जो कुछ भी करता है, हर कार्य, हर इरादा, और हर प्रतिक्रिया, अवश्य ही परमेश्वर के सम्मुख लाई जानी चाहिए। यहाँ तक कि, तेरे रोजाना का आध्यात्मिक जीवन भी—तेरी प्रार्थनाएँ, परमेश्वर के साथ तेरा सामीप्य, परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने का तेरा ढंग, भाई-बहनों के साथ तेरी सहभागिता, और कलीसिया के भीतर तेरा जीवन—और साझेदारी में तेरी सेवा परमेश्वर के सम्मुख उसके द्वारा छानबीन के लिए लाई जा सकती है। यह ऐसा अभ्यास है, जो तुझे जीवन में विकास हासिल करने में मदद करेगा। परमेश्वर की छानबीन को स्वीकार करने की प्रक्रिया शुद्धिकरण की प्रक्रिया है। जितना तू परमेश्वर की छानबीन को स्वीकार करता है, उतना ही तू शुद्ध होता जाता है और उतना ही तू परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता है, जिससे तू व्यभिचार की ओर आकर्षित नहीं होगा और तेरा हृदय उसकी उपस्थिति में रहेगा; जितना तू उसकी छानबीन को ग्रहण करता है, शैतान उतना ही लज्जित होता है और उतना अधिक तू देहसुख को त्यागने में सक्षम होता है। इसलिए, परमेश्वर की छानबीन को ग्रहण करना अभ्यास का वो मार्ग है जिसका सभी को अनुसरण करना

चाहिए। चाहे तू जो भी करे, यहाँ तक कि अपने भाई-बहनों के साथ सहभागिता करते हुए भी, यदि तू अपने कर्मों को परमेश्वर के सम्मुख ला सकता है और उसकी छानबीन को चाहता है और तेरा इरादा स्वयं परमेश्वर की आज्ञाकारिता का है, इस तरह जिसका तू अभ्यास करता है वह और भी सही हो जाएगा। केवल जब तू जो कुछ भी करता है, वो सब कुछ परमेश्वर के सम्मुख लाता है और परमेश्वर की छानबीन को स्वीकार करता है, तो वास्तव में तू ऐसा कोई हो सकता है जो परमेश्वर की उपस्थिति में रहता है।

जिनके पास परमेश्वर की समझ नहीं होती वे कभी भी पूरी तरह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी नहीं हो सकते। ऐसे लोग अनाज्ञाकारिता के पुत्र हैं। वे बहुत महत्वाकांक्षी हैं, और उनमें बहुत अधिक विद्रोह है, इसलिए वे खुद को परमेश्वर से दूर कर लेते हैं और उसकी छानबीन को स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं। ऐसे लोग आसानी से पूर्ण नहीं बनाए जा सकते हैं। कुछ लोग परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने के अपने ढंग के मामले में, और उनके प्रति अपनी स्वीकृति में चयनशील होते हैं। वे परमेश्वर के वचन के उन भागों को ग्रहण करते हैं जो उनकी धारणा के अनुसार होते हैं जबकि उन्हें अस्वीकार कर देते हैं जो उनकी धारणा के अनुसार नहीं हैं। क्या यह परमेश्वर के खिलाफ सबसे स्पष्ट विद्रोह और प्रतिरोध नहीं है? यदि कोई परमेश्वर के बारे में थोड़ी-सी भी समझ हासिल किए बगैर वर्षों से उस पर विश्वास कर रहा हो, तो वह एक अविश्वासी है। जो लोग परमेश्वर की छानबीन को ग्रहण करने के इच्छुक हैं वे परमेश्वर की समझ पाने की कोशिश करते हैं, वे उसके वचनों को ग्रहण करना चाहते हैं। ये वे हैं, जो परमेश्वर का उत्तराधिकार और आशीषें प्राप्त करेंगे, और वे सबसे धन्य हैं। परमेश्वर उन्हें श्राप देता है जिनके दिलों में उसके लिए कोई स्थान नहीं है। वह ऐसे लोगों को ताड़ना देता है और उन्हें त्याग देता है। यदि तू परमेश्वर से प्यार नहीं करता, तो वो तुझे त्याग देगा और यदि मैं जो कहता हूँ तू उसे नहीं सुनता है, तो मैं वादा करता हूँ कि परमेश्वर का आत्मा तुझे त्याग देगा। यदि तुझे भरोसा नहीं है, तो कोशिश करके देख ले! आज, मैं तुझे अभ्यास के लिए एक रास्ता स्पष्ट रूप से बताता हूँ, लेकिन तू इसे अभ्यास में लाता है या नहीं यह तेरे ऊपर है। यदि तू इसमें विश्वास नहीं करता है, यदि तू इसे अभ्यास में नहीं लाता है, तो तू स्वयं देखेगा कि पवित्र आत्मा तुझमें कार्य करता है या नहीं! यदि तू परमेश्वर के बारे में समझ पाने की कोशिश नहीं करता है, तो पवित्र आत्मा तुझमें कार्य नहीं करेगा। परमेश्वर उसमें कार्य करता है जो परमेश्वर के वचनों को संजोते और उसका अनुसरण करते हैं। जितना तू परमेश्वर के वचनों को संजोयेगा, उतना ही उसका आत्मा तुझमें कार्य करेगा। कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन को जितना ज्यादा संजोता है, उसका परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए

जाने का मौका उतना ही ज्यादा होता है। परमेश्वर उसे पूर्ण बनाता है, जो वास्तव में उससे प्यार करता है। वह उसको पूर्ण बनाता है, जिसका हृदय उसके सम्मुख शांत रहता है। परमेश्वर के सभी कार्य को संजोना, उसकी प्रबुद्धता को संजोना, परमेश्वर की उपस्थिति को संजोना, परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा को संजोना, इस बात को संजोना कि कैसे परमेश्वर के वचन तेरे जीवन की वास्तविकता बन जाते हैं और तेरे जीवन की आपूर्ति करते हैं—यह सब परमेश्वर के दिल के सबसे अनुरूप है। यदि तू परमेश्वर के कार्य को संजोता है, अर्थात यदि उसने तुझ पर जो सारे कार्य किए हैं, तू उसे संजोता है, तो वह तुझे आशीष देगा और जो कुछ तेरा है उसे बहुगुणित करेगा। यदि तू परमेश्वर के वचनों को नहीं संजोता है, तो परमेश्वर तुझ पर कार्य नहीं करेगा, बल्कि वह केवल तेरे विश्वास के लिए ज़रा-सा अनुग्रह देगा, या तुझे कुछ धन की आशीष या तेरे परिवार के लिए थोड़ी सुरक्षा देगा। परमेश्वर के वचनों को अपनी वास्तविकता बनाने, उसे संतुष्ट करने और उसके दिल के अनुसार होने के लिए तुझे कडा प्रयास करना चाहिए; तुझे केवल परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने का ही प्रयास नहीं करना चाहिए। विश्वासियों के लिए परमेश्वर के कार्य को प्राप्त करने, पूर्णता पाने, और परमेश्वर की इच्छा पर चलनेवालों में से एक बनने की अपेक्षा कुछ भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। यह वो लक्ष्य है जिसे पूरा करने का तुझे प्रयास करना चाहिए।

अनुग्रह के युग में जिसका मनुष्य ने अनुसरण किया, वह अब अप्रचलित हो गया है क्योंकि वर्तमान में अनुसरण का एक उच्चतर मानक है, जिसका अनुसरण किया जाता है वह अधिक उत्कृष्ट भी है और अधिक व्यावहारिक भी, जिसका अनुसरण किया जाता है वो मनुष्य की भीतरी आवश्यकता को बेहतर ढंग से संतुष्ट कर सकता है। पिछले युगों में, परमेश्वर लोगों पर उस तरह कार्य नहीं करता था जैसे आज करता है, वह लोगों से उतनी बातें नहीं करता था जितनी आज करता है, न ही उसे उनसे उतनी अपेक्षा थी जितनी की आज के लोगों से है। आज जो परमेश्वर इन बातों को तुम लोगों को बताता है, वह दिखाता है कि परमेश्वर का अंतिम इरादा तुम लोगों पर, यानि इस समूह पर ध्यान केन्द्रित करना है। यदि तू वास्तव में परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाया जाना चाहता है, तो सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में इसका अनुसरण कर। कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या तू भाग-दौड़ करता है, खुद को खपाता है, किसी काम में आता है, या तूने परमेश्वर द्वारा आदेश पाया है या नहीं, पूर्ण बनाया जाना और परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करना, इन लक्ष्यों को पाना ही हमेशा उद्देश्य होता है। यदि कोई कहता है, कि वह परमेश्वर द्वारा पूर्णता या जीवन में प्रवेश का अनुसरण नहीं करता है, बल्कि केवल शारीरिक शांति और आनंद का पीछा करता है, तो वह सभी

लोगों से अधिक अंधा है। जो लोग जीवन की वास्तविकता का अनुसरण नहीं करते बल्कि केवल आने वाली दुनिया में अनन्त जीवन और इस दुनिया में सुरक्षा के लिए प्रयास करते हैं, वे सभी लोगों से अधिक अंधे हैं। इसलिए सब कुछ जो तू करता है, वह परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाने और उसके द्वारा प्राप्त किए जाने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए।

परमेश्वर लोगों पर जो कार्य करता है, वह उनकी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं के आधार पर उनकी आपूर्ति करने के लिए है। जितनी बड़ी एक आदमी की जिन्दगी होती है, उसकी आवश्यकताएं उतनी ही ज्यादा होती हैं, और उतना ही ज्यादा वह अनुसरण करता है। यदि इस चरण में तेरे पास कोई लक्ष्य नहीं हैं, यह साबित करता है कि पवित्र आत्मा ने तुझे छोड़ दिया है। सभी जो जीवन की तलाश करते हैं, वे कभी भी पवित्र आत्मा के द्वारा नहीं त्यागे जाएंगे; ऐसे लोग हमेशा तलाश करते हैं, उनके दिल में हमेशा लालसा होती है। इस प्रकार के लोग चीज़ों की वर्तमान स्थिति से कभी भी संतुष्ट नहीं होते। पवित्र आत्मा के कार्यों के प्रत्येक चरण का उदेश्य तुम में एक प्रभाव प्राप्त करना है, लेकिन यदि तुम आत्मसंतुष्टि विकसित कर लेते हो, यदि तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है, यदि तुम पवित्र आत्मा के कार्य को स्वीकार नहीं करते हो, तो वह तुम्हें छोड़ देगा। लोगों को हर दिन परमेश्वर की छानबीन की आवश्यकता होती है; उन्हें परमेश्वर से हर दिन भरपूर मात्रा में प्रावधान की आवश्यकता होती है। क्या लोग प्रतिदिन परमेश्वर के वचनों को खाए और पीए बिना रह सकते हैं? यदि कोई ऐसा हमेशा महसूस करता है कि वह परमेश्वर के वचनों को जितना भी खा-पी ले, यह कम ही रहेगा, यदि वह इसे हमेशा खोजता है, और हमेशा इसके लिए भूखा और प्यासा होता है, तो पवित्र आत्मा हमेशा उसमें कार्य करेगा। जितना ज्यादा कोई लालसा करता है, उतना ही ज्यादा व्यवहारिक चीजें सहभागिता से मिल सकती हैं। जितनी गहनता से कोई सत्य को खोजता है, उतनी ही तेजी से उसका जीवन बढ़ता है, जिससे वो अनुभव से भरपूर हो जाता है और परमेश्वर के भवन का समृद्ध बाशिंदा हो जाता है।

जो सच्चे हृदय से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं वे निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा हासिल किए जाएँगे

पवित्र आत्मा का कार्य दिन-ब-दिन बदलता रहता है। वह हर एक कदम के साथ ऊँचा उठता जाता है, आने वाले कल का प्रकाशन आज से कहीं ज़्यादा ऊँचा होता है। कदम-दर-कदम ऊपर चढ़ता जाता

है। ऐसे ही कार्य के द्वारा परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण करता है। यदि मनुष्य कदम से कदम न मिला पाए, तो उसे किसी भी समय बाहर किया जा सकता है। यदि उसका हृदय आज्ञाकारी न हो, तो वह बिलकल अंत तक अनुसरण नहीं कर सकेगा। पहले का युग गुज़र चुका है; यह एक नया युग है। और नए युग में, नया कार्य करना चाहिए। विशेषकर अंतिम युग में, जिसमें लोगों को पूर्ण बनाया जाता है, परमेश्वर ज़्यादा तेजी से नया कार्य करेगा, इसलिए, हृदय में आज्ञाकारिता के भाव के बिना, मनुष्य के लिए परमेश्वर के पदचिह्नों का अनुसरण करना कठिन होगा। परमेश्वर किसी भी नियम का पालन नहीं करता, न ही वह अपने कार्य के किसी चरण को अपरिवर्तनीय मानता है। वह जो भी कार्य करता है, वह हमेशा नया और ऊँचा होता है। हर चरण के साथ उसका कार्य और भी व्यावहारिक होता जाता है, और मनुष्य की वास्तविक ज़रूरतों के अनुरूप होता जाता है। इस प्रकार के कार्य का अनुभव करने पर ही मनुष्य अपने स्वभाव का अंतिम रूपांतरण कर पाता है। जीवन के बारे में मनुष्य का ज्ञान उच्च स्तरों तक पहुँचता जाता है, और उसी तरह परमेश्वर का कार्य भी सर्वाधिक उच्च स्तरों तक पहुँचता जाता है। इसी तरह से मनुष्य को पूर्ण बनाया जा सकता है और वह परमेश्वर के उपयोग के योग्य हो सकता है। परमेश्वर एक ओर, मनुष्य की अवधारणाओं का मुकाबला करने तथा उन्हें पलटने के लिए इस तरह से कार्य करता है, और दूसरी ओर, मनुष्य की उच्चतर तथा और अधिक वास्तविक स्थिति में, परमेश्वर में आस्था के उच्चतम आयाम में अगुवाई करने के लिए इस तरह कार्य करता है, ताकि अंत में, परमेश्वर की इच्छा पूरी हो सके। जो लोग अवज्ञाकारी प्रकृति के होते हैं और जानबूझ कर विरोध करते हैं, उन्हें परमेश्वर के द्रुतगामी और मजबूती से आगे बढ़ते हुए कार्य के इस चरण द्वारा बाहर कर दिया जाएगा; जो लोग स्वेच्छा से आज्ञापालन करते हैं और अपने आप को प्रसन्नतापूर्वक दीन बनाते हैं, केवल वही मार्ग के अंत तक प्रगति कर सकते हैं। इस प्रकार के कार्य में, तुम सभी लोगों को सीखना चाहिए कि समर्पण कैसे करें और अपनी धारणाओं को कैसे अलग रखें। तुम लोगों को हर कदम पर सतर्क रहना चाहिए। यदि तुम लोग लापरवाह बनोगे, तो तुम्हें निश्चित रूप से पवित्र आत्मा द्वारा ठुकरा दिया जाएगा, और तुम परमेश्वर के कार्य में रुकावट डालोगे। कार्य के इस चरण से गुज़रने से पहले, मनुष्य के पुराने नियम-कानून इतने ज़्यादा थे कि वह भटक गया, परिणामस्वरूप, वह अहंकारी होकर स्वयं को भूल गया। ये सारी ऐसी बाधाएँ हैं जो मनुष्य को परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार करने से रोकती हैं; ये मनुष्य के परमेश्वर-ज्ञान की शत्रु हैं। मनुष्य के हृदय में आज्ञाकारिता और सत्य के लिए लालसा न होना खतरनाक है। यदि तुम केवल सरल कार्यों और वचनों के प्रति ही समर्पित होते हो,

और गहन कार्यों या वचनों को स्वीकार नहीं कर पाते हो, तो तुम पुराने मार्गों से चिपके रहने वाले व्यक्ति हो और पवित्र आत्मा के कार्य के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकते। परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य अलग-अलग अवधियों में अलग-अलग होता है। यदि तुम परमेश्वर के कार्य के एक चरण में पूरी आज्ञाकारिता दिखाते हो, मगर अगले ही चरण में तुम्हारी आज्ञाकारिता कम हो जाती है या तुम कोई आज्ञाकारिता दिखा ही नहीं पाते, तो परमेश्वर तुम्हें त्याग देगा। जब परमेश्वर यह कदम उठाता है तब यदि तुम परमेश्वर के साथ समान गति से चलते हो, तो जब वह अगला कदम उठाए तब भी तुम्हें उसके कदम से कदम मिलाना चाहिए; तभी तुम पवित्र आत्मा के प्रति आज्ञाकारी बनोगे। चूँकि तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो, इसलिए तुम्हें अपनी आज्ञाकारिता में अटल रहना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि तुम जब चाहे आज्ञाकारी बन जाओ, जब चाहे उसकी अवज्ञा कर दो। परमेश्वर इस प्रकार की आज्ञाकारिता पसंद नहीं करता। मैं जिस नए कार्य पर संगति कर रहा हूँ, यदि तुम उसके साथ तालमेल नहीं बनाए रख सकते, और पुरानी बातों से ही चिपके रहते हो, तो तुम्हारे जीवन में प्रगति कैसे हो सकती है? परमेश्वर का कार्य, अपने वचनों से तुम्हें पोषण देना है। यदि तुम उसके वचनों का पालन करोगे, उन्हें स्वीकारोगे, तो पवित्र आत्मा निश्चित रूप से तुम में कार्य करेगा। पवित्र आत्मा बिलकुल उसी तरह कार्य करता है जिस तरह से मैं बता रहा हूँ; जैसा मैंने कहा है वैसा ही करो और पवित्र आत्मा शीघ्रता से तुम में कार्य करेगा। मैं तुम लोगों के अवलोकन के लिए नया प्रकाश देता हूँ और तुम लोगों को आज के प्रकाश में लाता हूँ, और जब तुम इस प्रकाश में चलोगे, तो पवित्र आत्मा तुरन्त ही तुममें कार्य करेगा। कुछ लोग हैं जो अड़ियल हो सकते हैं, वे कहेंगे, "तुम जैसा कहते हो मैं वैसा बिलकुल नहीं करूँगा।" ऐसी स्थिति में, मैं कहूँगा कि तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है; तुम पूरी तरह से सूख गए हो, और तुममें जीवन नहीं बचा है। इसलिए, अपने स्वभाव के रूपांतरण का अनुभव करने के लिए, आज के प्रकाश के साथ तालमेल बिठाए रखना बहुत आवश्यक है। पवित्र आत्मा न केवल उन खास लोगों में कार्य करता है जो परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त किए जाते हैं, बल्कि कलीसिया में भी कार्य करता है। वह किसी में भी कार्य कर रहा हो सकता है। शायद वह वर्तमान समय में, तुममें कार्य करे, और तुम इस कार्य का अनुभव करोगे। किसी अन्य समय शायद वह किसी और में कार्य करे, और ऐसी स्थिति में तुम्हें शीघ्र अनुसरण करना चाहिए; तुम वर्तमान प्रकाश का अनुसरण जितना करीब से करोगे, तुम्हारा जीवन उतना ही अधिक विकसित होकर उन्नति कर सकता है। कोई व्यक्ति कैसा भी क्यों न हो, यदि पवित्र आत्मा उसमें कार्य करता है, तो तुम्हें अनुसरण करना चाहिए। उसी प्रकार

अनुभव करो जैसा उसने किया है, तो तुम्हें उच्चतर चीजें प्राप्त होंगी। ऐसा करने से तुम तेजी से प्रगति करोगे। यह मनुष्य के लिए पूर्णता का ऐसा मार्ग है जिससे जीवन विकसित होता है। पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति तुम्हारी आज्ञाकारिता से पूर्ण बनाए जाने के मार्ग तक पहुँचा जाता है। तुम्हें पता नहीं होता कि तुम्हें पूर्ण बनाने के लिए परमेश्वर किस प्रकार के व्यक्ति के जरिए कार्य करेगा, न ही यह पता होता है कि किस व्यक्ति, घटना, चीज़ के जरिए वह तुम्हें पाने या देखने देगा। यदि तुम सही पथ पर चल पाओ, तो इससे सिद्ध होता है कि परमेश्वर द्वारा तुम्हें पूर्ण बनाए जाने की काफी आशा है। यदि तुम ऐसा नहीं कर पाते हो, तो इससे ज़ाहिर होता है कि तुम्हारा भविष्य धुँधला और प्रकाशहीन है। एक बार जब तुम सही पथ पर आ जाओगे, तो तुम्हें सभी चीज़ों में प्रकाशन प्राप्त होगा। पवित्र आत्मा दूसरों पर कुछ भी प्रकट करे, यदि तुम उनके ज्ञान के आधार पर अपने दम पर चीज़ों का अनुभव करते हो, तो यह अनुभव तुम्हारे जीवन का हिस्सा बन जाएगा, और इस अनुभव से तुम दूसरों को भी पोषण दे पाओगे। तोते की तरह वचनों को रटकर दूसरों को पोषण देने वाले लोगों के पास अपना कोई अनुभव नहीं होता; तुम्हें अपने वास्तविक अनुभव और ज्ञान के बारे में बोलना शुरू करने से पहले, दूसरों की प्रबुद्धता और रोशनी के माध्यम से, अभ्यास करने का तरीका ढूँढ़ना सीखना होगा। यह तुम्हारे अपने जीवन के लिए अधिक लाभकारी होगा। जो कुछ भी परमेश्वर से आता है उसका पालन करते हुए, तुम्हें इस तरह से अनुभव करना चाहिए। सभी चीज़ों में तुम्हें परमेश्वर की इच्छा को खोजना चाहिए और हर चीज़ से सीखना चाहिए, ताकि तुम्हारा जीवन विकसित हो सके। ऐसे अभ्यास से सबसे जल्दी प्रगति होती है।

पवित्र आत्मा तुम्हारे व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से तुम्हें प्रबुद्ध करता है और तुम्हारे विश्वास के ज़रिए तुम्हें पूर्ण बनाता है। क्या तुम सचमुच पूर्ण बनना चाहते हो? यदि तुम सचमुच परमेश्वर द्वारा पूर्ण होना चाहते हो, तो तुम्हारे अंदर देह की इच्छाओं का त्याग करने का साहस होगा, तुम परमेश्वर के वचनों को कार्यांवित कर पाओगे और निष्क्रिय एवं कमज़ोर नहीं होगे। तुम परमेश्वर की हर बात का पालन कर पाओगे, तुम्हारे सभी सार्वजनिक और व्यक्तिगत कार्यकलाप, परमेश्वर के सामने लाने लायक होंगे। यदि तुम ईमानदार इंसान हो और सभी चीज़ों में सत्य का अभ्यास करते हो, तो तुम पूर्ण बनाए जाओगे। ऐसे धोखेबाज़ लोग जो दूसरों के सामने एक तरह से व्यवहार करते हैं और उनकी पीठ पीछे दूसरी तरह से कार्य करते हैं तो वे पूर्ण बनने के इच्छुक नहीं होते। वे सब बरबादी और विनाश के पुत्र होते हैं; वे परमेश्वर के नहीं, शैतान के होते हैं। ऐसे लोगों को परमेश्वर नहीं चुनता! यदि तुम्हारे कार्य और व्यवहार को परमेश्वर

के सामने प्रस्तुत नहीं किया जा सके या परमेश्वर के आत्मा द्वारा न देखा जा सके, तो यह इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ है। यदि तुम परमेश्वर के न्याय और ताड़ना को स्वीकार करो, और अपने स्वभाव के रूपांतरण पर ध्यान दो, तभी तुम पूर्ण बनाए जाने के पथ पर आ पाओगे। यदि तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने और परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहते हो, तो तुम्हें, बिना किसी शिकायत के, बिना परमेश्वर के कार्य का मूल्यांकन या आलोचना करने का ख़्याल किए, परमेश्वर के सभी कार्यों का पालन करना चाहिए। परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की ये सबसे कम आवश्यकताएँ हैं। जो लोग परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाना चाहते हैं उनके लिए अनिवार्य आवश्यकताएँ ये हैं : हर काम परमेश्वर से प्रेम करने वाले हृदय से करो। हर काम परमेश्वर से प्रेम करने वाले हृदय से करने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि तुम्हारे सारे काम और आचरण को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। चूँकि तुम्हारे इरादे सच्चे हैं, इसलिए चाहे तुम्हारे काम सही हों या गलत, तुम उन्हें परमेश्वर या भाई-बहनों को दिखाने से नहीं डरोगे; तुम परमेश्वर के सामने शपथ लेने का साहस रखोगे। तुम्हें अपना हर इरादा और सोच-विचार परमेश्वर के सामने जाँच के लिए प्रस्तुत करना चाहिए; यदि तुम इस प्रकार से अभ्यास और प्रवेश करोगे, तो जीवन में तुम्हारी प्रगति शीघ्र होगी।

चूँकि तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो, इसलिए तुम्हें परमेश्वर के सभी वचनों और कार्यों में विश्वास रखना चाहिए। अर्थात्, चूँकि तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो, इसलिए तुम्हें उसका आज्ञापालन करना चाहिए। यदि तुम ऐसा नहीं कर पाते हो, तो यह मायने नहीं रखता कि तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो या नहीं। यदि तुमने वर्षों परमेश्वर में विश्वास रखा है, फिर भी न तो कभी उसका आज्ञापालन किया है, न ही उसके वचनों की समग्रता को स्वीकार किया है, बल्कि तुमने परमेश्वर को अपने आगे समर्पण करने और तुम्हारी धारणाओं के अनुसार कार्य करने को कहा है, तो तुम सबसे अधिक विद्रोही व्यक्ति हो, और गैर-विश्वासी हो। एक ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के कार्य और वचनों का पालन कैसे कर सकता है जो मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं है? सबसे अधिक विद्रोही वे लोग होते हैं जो जानबूझकर परमेश्वर की अवहेलना और उसका विरोध करते हैं। ऐसे लोग परमेश्वर के शत्रु और मसीह विरोधी हैं। ऐसे लोग परमेश्वर के नए कार्य के प्रति निरंतर शत्रुतापूर्ण रवैया रखते हैं, ऐसे व्यक्ति में कभी भी समर्पण का कोई भाव नहीं होता, न ही उसने कभी खुशी से समर्पण किया होता है या दीनता का भाव दिखाया है। ऐसे लोग दूसरों के सामने अपने आपको ऊँचा उठाते हैं और कभी किसी के आगे नहीं झुकते। परमेश्वर के सामने, ये लोग वचनों का

उपदेश देने में स्वयं को सबसे ज़्यादा निपुण समझते हैं और दूसरों पर कार्य करने में अपने आपको सबसे अधिक कुशल समझते हैं। इनके कब्ज़े में जो "खज़ाना" होता है, ये लोग उसे कभी नहीं छोड़ते, दूसरों को इसके बारे में उपदेश देने के लिए, अपने परिवार की पूजे जाने योग्य विरासत समझते हैं, और उन मूर्खों को उपदेश देने के लिए इनका उपयोग करते हैं जो उनकी पूजा करते हैं। कलीसिया में वास्तव में इस तरह के कुछ ऐसे लोग हैं। ये कहा जा सकता है कि वे "अदम्य नायक" हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परमेश्वर के घर में डेरा डाले हुए हैं। वे वचन (सिद्धांत) का उपदेश देना अपना सर्वोत्तम कर्तव्य समझते हैं। साल-दर-साल और पीढ़ी-दर-पीढ़ी वे अपने "पवित्र और अलंघनीय" कर्तव्य को पूरी प्रबलता से लागू करते रहते हैं। कोई उन्हें छूने का साहस नहीं करता; एक भी व्यक्ति खुलकर उनकी निंदा करने की हिम्मत नहीं दिखाता। वे परमेश्वर के घर में "राजा" बनकर युगों-युगों तक बेकाबू होकर दूसरों पर अत्याचार करते चले आ रहे हैं। दुष्टात्माओं का यह झुंड संगठित होकर काम करने और मेरे कार्य का विध्वंस करने की कोशिश करता है; मैं इन जीती-जागती दुष्ट आत्माओं को अपनी आँखों के सामने कैसे अस्तित्व में बने रहने दे सकता हूँ? यहाँ तक कि आधा-अधूरा आज्ञापालन करने वाले लोग भी अंत तक नहीं चल सकते, फिर इन आततायियों की तो बात ही क्या है जिनके हृदय में थोड़ी-सी भी आज्ञाकारिता नहीं है! इंसान परमेश्वर के कार्य को आसानी से ग्रहण नहीं कर सकता। इंसान अपनी सारी ताक़त लगाकर भी थोड़ा-बहुत ही पा सकता है जिससे वो आखिरकार पूर्ण बनाया जा सके। फिर प्रधानदूत की संतानों का क्या, जो परमेश्वर के कार्य को नष्ट करने की कोशिश में लगी रहती हैं? क्या परमेश्वर द्वारा उन्हें ग्रहण करने की आशा और भी कम नहीं है? विजय-कार्य करने का मेरा उद्देश्य केवल विजय के वास्ते विजय प्राप्त करना नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य धार्मिकता और अधार्मिकता को प्रकट करना, मनुष्य के दण्ड के लिए प्रमाण प्राप्त करना, दुष्ट को दंडित करना, और उन लोगों को पूर्ण बनाना है जो स्वेच्छा से आज्ञापालन करते हैं। अंत में, सभी को उनके प्रकार के अनुसार पृथक किया जाएगा, और जिन लोगों के सोच-विचार से भरे होते आज्ञाकारिता हैं, अंततः उन्हें ही पूर्ण बनाया जाएगा। यही काम अंततः संपन्न किया जाएगा। इस दौरान, जिन लोगों का हर काम विद्रोह से भरा है उन्हें दण्डित किया जाएगा, और आग में जलने के लिए भेज दिया जाएगा जहाँ वे अनंतकाल तक शाप के भागी होंगे। जब वह समय आएगा, तो बीते युगों के वे "महान और अदम्य नायक" सबसे नीच और परित्यक्त "कमज़ोर और नपुंसक कायर" बन जाएँगे। केवल यही परमेश्वर की धार्मिकता के हर पहलू और उसके उस स्वभाव को प्रकट कर सकता है जिसका मनुष्य द्वारा अपमान नहीं किया जा

सकता, मात्र यही मेरे हृदय की नफ़रत को शांत कर सकता है। क्या तुम लोगों को यह पूरी तरह तर्कपूर्ण नहीं लगता?

न तो पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव करने वाले तमाम लोग जीवन पा सकते हैं, और न ही इस धारा में रहने वाले जीवन पा सकते हैं। जीवन कोई सार्वजनिक संपत्ति नहीं है जिसे सभी इंसान साझा करें, और स्वभाव में बदलाव कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे सभी आसानी से प्राप्त कर लें। परमेश्वर के कार्य के प्रति समर्पण असली और सही अर्थों में वास्तविक होना चाहिए। सतही तौर पर समर्पण करके परमेश्वर की प्रशंसा नहीं पायी जा सकती, अपने स्वभाव में बदलाव का प्रयास किए बिना परमेश्वर के वचन के मात्र सतही पहलू का पालन करके परमेश्वर के हृदय को प्रसन्न नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और परमेश्वर के कार्य के प्रति समर्पण एक ही बात है। जो लोग केवल परमेश्वर के प्रति समर्पित होते हैं लेकिन उसके कार्य के प्रति समर्पित नहीं होते, उन्हें आज्ञाकारी नहीं माना जा सकता, और उन्हें तो बिल्कुल नहीं माना जा सकता जो सचमुच समर्पण न करके, सतही तौर पर चापलूस होते हैं। जो लोग सचमुच परमेश्वर के प्रति समर्पण करते हैं वे सभी कार्य से लाभ प्राप्त करने और परमेश्वर के स्वभाव और कार्य की समझ प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। ऐसे ही लोग वास्तव में परमेश्वर के प्रति समर्पण करते हैं। ऐसे लोग नए कार्य से नया ज्ञान प्राप्त करते हैं और नए कार्य से उनमें बदलाव आता है। ऐसे लोग ही परमेश्वर की प्रशंसा पाते हैं, पूर्ण बनते हैं, और उनके स्वभाव का रूपांतरण होता है। जो लोग खुशी से परमेश्वर के प्रति, उसके वचन और कार्य के प्रति समर्पित होते हैं, वही परमेश्वर की प्रशंसा पाते हैं। ऐसे लोग ही सही मार्ग पर हैं; ऐसे लोग ही ईमानदारी से परमेश्वर की कामना करते हैं और ईमानदारी से परमेश्वर की खोज करते हैं। जहाँ तक ऐसे लोगों का सवाल है जो परमेश्वर में आस्था की केवल बात करते हैं, पर वास्तव में उसे कोसते हैं, ऐसे लोग मुखौटा लगाकर रखते हैं, ऐसे लोगों के अंदर साँप का ज़हर होता है; ऐसे लोग सबसे ज़्यादा विश्वासघाती होते हैं। कभी न कभी, ऐसे दुर्जन लोगों का मुखौटा अवश्य उतरेगा। क्या आज यही काम नहीं किया जा रहा है? दुष्ट इंसान हमेशा दुष्ट ही बना रहेगा, वह कभी दण्ड के दिन से बच नहीं सकता। अच्छे लोग हमेशा अच्छे बने रहेंगे और उन्हें तब प्रकट किया जाएगा जब परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा। किसी भी दुष्ट को धार्मिक नहीं समझा जाएगा, न ही किसी धार्मिक को दुष्ट समझा जाएगा। क्या मैं किसी इंसान पर गलत दोषारोपण होने दूँगा?

जैसे-जैसे तुम्हारा जीवन प्रगति करेगा, तुम्हारे अंदर नया प्रवेश और नयी उच्चतर अंतर्दृष्टि होनी होनी

चाहिए, जो हर कदम के साथ और गहरा होता जाता है। इसी में हर इंसान को प्रवेश करना चाहिए। संवाद करने, उपदेश सुनने, परमेश्वर का वचन पढ़ने, या किसी मसले को सँभालकर तुम्हें नयी अंतर्दृष्टि और नई प्रबुद्धता प्राप्त होगी, और तुम पुराने नियमों और पुराने समय में नहीं जियोगे; तुम हमेशा नई ज्योति में जियोगे, और परमेश्वर के वचन से भटकोगे नहीं। इसी को सही पथ पर आना कहते हैं। सतही तौर पर कीमत चुकाने से काम नहीं चलेगा; परमेश्वर का वचन दिन-प्रतिदिन एक उच्चतर क्षेत्र में प्रवेश करता है, और हर दिन नई चीज़ें दिखाई देती हैं, इंसान को भी हर दिन नया प्रवेश करना चाहिए। जब परमेश्वर बोलता है, तो वह उस सबको साकार करता है जो उसने बोला है, और यदि तुम ताल मिलाकर नहीं चलोगे, तो पीछे रह जाओगे। अपनी प्रार्थनाओं में और गहराई लाओ; रुक-रुक कर परमेश्वर के वचनों को खाया-पिया नहीं जा सकता। प्राप्त होने वाली प्रबुद्धता एवं प्रकाशन को और गहरा करो, इससे तुम्हारी धारणाएं और कल्पनाएं धीरे-धीरे कम होती जाएँगी। अपने आकलन को और मज़बूत करो, और जो भी समस्याएँ आएँ, उनके बारे में तुम्हारे अपने विचार और अपना दृष्टिकोण होना चाहिए। अपनी आत्मा में कुछ चीज़ों को समझ कर, तुम्हें बाहरी चीज़ों में परिज्ञान प्राप्त करना और समस्या के मूल को समझने में सक्षम होना चाहिए। यदि तुममें ये चीज़ें न हों, तो तुम कलीसिया की अगुवाई कैसे कर पाओगे? यदि तुम किसी वास्तविकता और अभ्यास के मार्ग के बिना, केवल शब्दों और सिद्धांतों की बात करोगे, तो तुम केवल थोड़े समय के लिए ही काम चला पाओगे। नए विश्वासी इसे थोड़ा-बहुत ही स्वीकार कर पाएँगे, लेकिन कुछ समय बाद, जब नए विश्वासी कुछ वास्तविक अनुभव प्राप्त कर लेंगे, तो तुम उन्हें पोषण नहीं दे पाओगे। फिर तुम परमेश्वर के इस्तेमाल के लिए उपयुक्त कैसे हुए? नई प्रबुद्धता के बिना तुम कार्य नहीं कर सकते। जो लोग नई प्रबुद्धता से रहित हैं, वे नहीं जानते कि अनुभव कैसे करना है, और ऐसे लोग कभी भी नया ज्ञान या नया अनुभव प्राप्त नहीं कर पाते। जीवन आपूर्ति करने के मामले में, वे न तो कभी अपना कार्य कर सकते हैं, न ही परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल के लिए उपयुक्त हो सकते हैं। ऐसा व्यक्ति एकदम बेकार होता है, बस रद्दी माल होता है। दरअसल, ऐसे लोग अपने काम में पूरी तरह से अयोग्य होते हैं, और एकदम अनुपयोगी होते हैं। वे लोग अपना काम तो करते ही नहीं, ऊपर से कलीसिया पर अनावश्यक दबाव भी डालते हैं। मैं इन "आदरणीय वृद्ध जनों" को जल्दी से जल्दी कलीसिया छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ ताकि फिर लोग तुम्हें न देखें। ऐसे लोगों को नए कार्य की कोई समझ नहीं होती, उनके अंदर अनंत धारणाए भरी होती हैं। वे लोग कलीसिया में कोई काम नहीं करते; बल्कि, कलीसिया में शरारत

करते फिरते हैं और हर जगह नकारात्मकता फैलाते हैं, कलीसिया के अंदर हद दर्जे के दुराचरण और उत्पात में लिप्त रहते हैं और जो लोग उन्हें पहचान नहीं पाते, उनके अंदर भ्रम और उलझन पैदा करते हैं। इन जीते-जागते हैवानों को, इन दुष्ट आत्माओं को, जितना जल्दी हो सके कलीसिया छोड़ देनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कारण कलीसिया को नुकसान पहुँचे। हो सकता है तुम आज के कार्य से भयभीत न हो, किन्तु क्या तुम आने वाले कल के धार्मिक दण्ड से भी भयभीत नहीं हो? कलीसिया में बहुत से लोग मुफ़्तखोर हैं, और और ढेरों भेड़िए हैं जो परमेश्वर के सामान्य कार्य को अस्तव्यस्त करने की कोशिश करते हैं। ये सब दुष्ट आत्माएँ हैं जिन्हें शैतानों के सरदार ने भेजा है, दुष्ट भेड़िए हैं जो नादान मेमनों को हड़पने की ताक में रहते हैं। अगर इन तथाकथित लोगों को निकाला नहीं गया, तो ये कलीसिया में परजीवी और चढ़ावों को हड़पने वाले कीड़े-मकौड़े बन जाएँगे। देर-सवेर इन कुत्सित, अज्ञानी, नीच, और अरुचिकर कीड़ों को दण्डित किया जाएगा!

राज्य का युग वचन का युग है

राज्य के युग में, परमेश्वर नए युग की शुरुआत करने, अपने कार्य के साधन बदलने और संपूर्ण युग के लिए काम करने के लिए अपने वचन का उपयोग करता है। वचन के युग में यही वह सिद्धांत है जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है। वह देहधारी हुआ ताकि विभिन्न दृष्टिकोण से बोल सके, मनुष्य वास्तव में परमेश्वर को देख सके, जो देह में प्रकट होने वाला वचन है, उसकी बुद्धि और चमत्कार को जान सके। इस तरह का कार्य मनुष्य को जीतने, उन्हें पूर्ण बनाने और ख़त्म करने के लक्ष्यों को बेहतर ढंग से हासिल करने के लिए किया जाता है। वचन के युग में वचन के उपयोग का यही वास्तविक अर्थ है। वचन के द्वारा परमेश्वर के कार्यों को, परमेश्वर के स्वभाव को मनुष्य के सार और इस राज्य में प्रवेश करने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए, यह जाना जा सकता है। वचन के युग में परमेश्वर जिन सभी कार्यों को करना चाहता है, वे वचन के द्वारा संपन्न होते हैं। वचन के द्वारा ही मनुष्य की असलियत का पता चलता है, उसे नष्ट किया जाता है और परखा जाता है। मनुष्य ने वचन देखा है, सुना है और वचन के अस्तित्व को जाना है। इसके परिणामस्वरूप वह परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करता है, मनुष्य परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने और उसकी बुद्धि पर, साथ ही साथ मनुष्य के लिए परमेश्वर के हृदय के प्रेम और मनुष्य को बचाने की उसकी इच्छा पर विश्वास करता है। यद्यपि "वचन" शब्द सरल और साधारण है, देहधारी परमेश्वर के मुख से

निकला वचन संपूर्ण ब्रह्माण्ड को झकझोरता है; और उसका वचन मनुष्य के हृदय को रूपांतरित करता है, मनुष्य के सभी विचारों और पुराने स्वभाव और समस्त संसार के पुराने स्वरूप में परिवर्तन लाता है। युगों-युगों से केवल आज के दिन का परमेश्वर ही इस प्रकार से कार्य करता है और केवल वही इस प्रकार से बोलता और मनुष्य का उद्धार करता है। इसके बाद मनुष्य वचन के मार्गदर्शन में, उसकी चरवाही में और उससे प्राप्त आपूर्ति में जीवन जीता है। वह वचन के संसार में जीता है, परमेश्वर के वचन के कोप और आशीषों के बीच जीता है, तथा और भी अधिक लोग अब परमेश्वर के वचन के न्याय और ताड़ना के अधीन जीने लगे हैं। ये वचन और यह कार्य सब कुछ मनुष्य के उद्धार, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने और पुरानी सृष्टि के संसार के मूल स्वरूप को बदलने के लिए है। परमेश्वर ने संसार की सृष्टि वचन से की, वह समस्त ब्रह्माण्ड में मनुष्य की अगुवाई वचन के द्वारा करता है, उन्हें वचन के द्वारा जीतता और उनका उद्धार करता है। अंत में, वह इसी वचन के द्वारा समस्त प्राचीन जगत का अंत कर देगा। तभी उसके प्रबंधन की योजना पूरी होगी। राज्य के युग के शुरू से अंत तक, परमेश्वर अपना कार्य करने और अपने कार्यों का परिणाम प्राप्त करने के लिए वचन का उपयोग करता है। वह अद्‌भुत कार्य या चमत्कार नहीं करता, वह अपने कार्य को केवल वचन के द्वारा संपन्न करता है। वचन के कारण मनुष्य संपोषण और आपूर्ति पाता है। वचन के कारण मनुष्य ज्ञान और वास्तविक अनुभव प्राप्त करता है। वचन के युग में मनुष्य ने वास्तव में अति विशेष आशीषें पाई हैं। मनुष्य को शरीर में कोई कष्ट नहीं होता और वह परमेश्वर के वचन की भरपूर आपूर्ति का आनंद उठाता है; उन्हें अंधवत तलाश करने या अंधवत यात्रा करने की आवश्यकता नहीं और अपनी निश्चिंतता के बीच वे परमेश्वर के मुख को निहारते हैं, उसे उसके मुख से बातें करते हुए सुनते हैं, वह प्राप्त करते हैं जो परमेश्वर आपूर्ति करता है, और उसे व्यक्तिगत रूप में अपना काम करते हुए देखते हैं। बीते दिनों में मनुष्य को इन सब बातों का आनंद प्राप्त नहीं था और वे इन आशीषों को कभी प्राप्त नहीं कर सकते थे।

परमेश्वर ने मनुष्य को पूर्णता प्रदान करने का निश्चय कर लिया है। वह चाहे जिस दृष्टिकोण से भी बोलता हो, सारी बातें लोगों को संपूर्ण बनाने के लिए हैं। आत्मा के दृष्टिकोण से बोले गये वचन समझने में लोगों को कठिनाई होती है और उन्हें उनपर अमल करने का मार्ग नहीं मिलता, क्योंकि मनुष्य की ग्राह्यता सीमित है। परमेश्वर के कार्य के विभिन्न प्रभाव होते हैं और उसके कार्य के प्रत्येक चरण का एक उद्देश्य है। साथ ही उसे अनिवार्यतः अलग-अलग दृष्टिकोण से बात करनी होगी, क्योंकि ऐसा करने पर ही वह मनुष्य

को पूर्ण बना सकता है। यदि वह केवल पवित्रात्मा के दृष्टिकोण से अपनी बात बोले, तो परमेश्वर के इस चरण के कार्य का पूरा होना संभव नहीं होगा। उसके बात करने के ढंग से तुम जान सकते हो कि वह लोगों के इस समूह को पूर्ण करने के लिये दृढ़-संकल्पित है। यदि तुम परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाने की इच्छा रखते हो, तो तुम्हें पहला कदम क्या उठाना चाहिए? सबसे पहले तुम्हें परमेश्वर के काम के बारे में जानना चाहिए। अब परमेश्वर के कार्यों में नए-नए साधनों का उपयोग किया जा रहा है, युग रूपांतरित हो गया है, परमेश्वर के काम करने का तरीका भी बदल गया है, और उसके बोलने का ढंग अलग है। वर्तमान में न केवल परमेश्वर के कार्य के साधन बदले हैं, बल्कि युग भी बदल गया है। अभी राज्य का युग है और यह परमेश्वर से प्रेम करने का युग भी है। यह सहस्राब्दिक राज्य के युग—जो कि वचन का युग भी है—का पूर्वदर्शन है, अर्थात वह युग जिसमें परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए बहुत सारे तरीकों से बोलता है और मनुष्य को आपूरित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोण से बोलता है। जैसे-जैसे समय सहस्राब्दिक राज्य के युग में बदलेगा, परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिये वचन का उपयोग करना आरंभ करेगा, मनुष्य को जीवन की वास्तविकता में प्रवेश के योग्य बनाएगा और उन्हें सही मार्ग पर लाएगा। मनुष्य ने परमेश्वर के कार्य के बहुत से चरणों का अनुभव किया है और यह देखा है कि परमेश्वर का कार्य बिना बदले नहीं रहता। बल्कि यह कार्य लगातार विकसित और गहरा होता जाता है। लोगों द्वारा इतने लंबे समय तक अनुभव करने के बाद, परमेश्वर के कार्य ने निरंतर परिक्रमा की है और उसमें बार-बार बदलाव आया है। हालाँकि परिवर्तन चाहे जितना भी हो, वह मानवजाति तक उद्धार लाने के परमेश्वर के उद्देश्य से कभी नहीं भटकता है। दस हजार परिवर्तनों से गुजरने के बाद भी वह अपने मूल उद्देश्य से कभी नहीं भटकता है। परमेश्वर के कार्य करने का तरीका चाहे जैसे भी बदले, यह काम कभी सत्य या जीवन से अलग नहीं होता। कार्य करने की विधि में परिवर्तन में केवल कार्य के प्रारूप और परमेश्वर के बोलने के दृष्टिकोण में परिवर्तन शामिल हैं, उसके कार्य के केन्द्रीय उद्देश्य में परिवर्तन नहीं आया है। बोलने के स्वर और कार्य के माध्यम या साधनों में परिवर्तन का उद्देश्य कार्य में प्रभावशीलता लाना है। आवाज़ के स्तर पर परिवर्तन का अर्थ कार्य के उद्देश्य या सिद्धांत में परिवर्तन नहीं है। परमेश्वर में विश्वास रखने में मनुष्य का मूल उद्देश्य जीवन की तलाश है। यदि तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो परंतु जीवन या सत्य या परमेश्वर के ज्ञान की खोज नहीं करते, तब परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास नहीं है! और क्या यह उचित है कि तुम अभी भी राज्य में राजा बनने के लिये प्रवेश करना चाहते हो? जीवन की खोज द्वारा परमेश्वर के लिए सच्चे प्रेम को प्राप्त करना ही

वास्तविकता है; सत्य की तलाश और सत्य का अभ्यास—यह सब वास्तविकता है। परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हुए और इन वचनों का अनुभव करते हुए, तुम वास्तविक अनुभव के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान को प्राप्त करोगे। यही सच्चे अर्थ में अनुसरण करना है।

अभी राज्य का युग है। तुमने इस नए युग में प्रवेश किया है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुमने वास्तव में परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश किया है या नहीं और उसके वचन तुम्हारे जीवन की वास्तविकता बन चुके हैं या नहीं। परमेश्वर का वचन सभी को बताया गया है ताकि सभी लोग अंत में, वचन के संसार में जिएँ और परमेश्वर का वचन प्रत्येक व्यक्ति को भीतर से प्रबुद्ध और रोशन कर देगा। यदि इस दौरान, तुम परमेश्वर के वचन को पढ़ने में लापरवाह हो और उसके वचन में तुम्हारी रुचि नहीं है तो यह दर्शाता है कि तुम्हारी स्थिति में गड़बड़ी है। यदि तुम वचन के युग में प्रवेश करने में असमर्थ हो तो पवित्र आत्मा तुम में कार्य नहीं करता है; यदि तुम इस युग में प्रवेश कर चुके हो तो वह तुम में अपना काम करेगा। पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करने के लिए तुम वचन के युग की शुरुआत में क्या कर सकते हो? इस युग में, और तुम लोगों के बीच परमेश्वर इन तथ्यों को पूरा करेगा : कि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के वचन को जिएगा, सत्य को अभ्यास में लाएगा और ईमानदारीपूर्वक परमेश्वर से प्रेम करेगा; कि सभी लोग परमेश्वर के वचन को नींव के रूप में और अपनी वास्तविकता के रूप में ग्रहण करेंगे, उनके हृदय में परमेश्वर के प्रति आदर होगा; और परमेश्वर के वचन का अभ्यास करके लोग परमेश्वर के साथ मिलकर राजसी शक्तियों का उपयोग करेंगे। यही कार्य परमेश्वर को संपन्न करना है। क्या तुम परमेश्वर के वचन को पढ़े बिना रह सकते हो? ऐसे बहुत से लोग हैं जो महसूस करते हैं कि वे एक-दो दिन भी परमेश्वर के वचन को बिना पढ़े नहीं रह सकते। उन्हें परमेश्वर का वचन प्रतिदिन पढ़ना आवश्यक है, और यदि समय न मिले तो वचन को सुनना काफी है। यही अहसास पवित्र आत्मा मनुष्य को प्रदान करता है, और इसी प्रकार वह मनुष्य को प्रेरित करना शुरू करता है। अर्थात पवित्र आत्मा वचन के द्वारा मनुष्य को नियंत्रित करता है ताकि वे परमेश्वर के वचन की वास्तविकता में प्रवेश कर सकें। यदि परमेश्वर के वचन को केवल एक दिन भी बिना खाए-पिए तुम्हें अंधकार और प्यास का अनुभव हो, तुम्हें यह असह्य लगता हो, तब ये बातें दर्शाती हैं कि पवित्र आत्मा तुम्हें प्रेरित कर रहा है और वह तुमसे विमुख नहीं हुआ है। तब तुम इस धारा में हो। किंतु यदि परमेश्वर के वचन को खाए-पिए बिना एक या दो दिन के बाद, तुम्हें कोई अंतर महसूस न हो या तुम्हें प्यास महसूस न हो, तुम थोड़ा भी विचलित महसूस न करो तो यह दर्शाता है कि

पवित्र आत्मा तुमसे विमुख हो चुका है। इसका अर्थ है कि तुम्हारी भीतरी दशा सही नहीं है; तुमने वचन के युग में प्रवेश नहीं किया है और तुम उन लोगों में से हो जो पीछे छूट गए हैं। परमेश्वर मनुष्यों को नियंत्रित करने के लिए वचन का उपयोग करता है; तुम जब वचन को खाते-पीते हो तो तुम्हें अच्छा महसूस होता है, यदि अच्छा महसूस नहीं होता है, तब तुम्हारे पास कोई मार्ग नहीं है। परमेश्वर का वचन मनुष्यों का भोजन और उन्हें संचालित करने वाली शक्ति बन जाता है। बाइबल में लिखा है, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" यही वह कार्य है जो परमेश्वर आज संपन्न करेगा। वह तुम लोगों को इस सत्य का अनुभव कराएगा। ऐसा कैसे होता था कि प्राचीन समय में लोग परमेश्वर का वचन बिना पढ़े बहुत दिन रहते थे, पर खाते-पीते और काम करते थे? अब ऐसा क्यों नहीं होता? इस युग में परमेश्वर सब मनुष्यों को नियंत्रित करने के लिए मुख्य रूप से वचन का उपयोग करता है। परमेश्वर के वचन के द्वारा मनुष्य का न्याय किया जाता है, उन्हें पूर्ण बनाया जाता है और तब अंत में राज्य में ले जाया जाता है। केवल परमेश्वर का वचन मनुष्य को जीवन दे सकता है, केवल परमेश्वर का वचन ही मनुष्य को ज्योति और अभ्यास का मार्ग दे सकता है, विशेषकर राज्य के युग में। यदि तुम परमेश्वर के वचन को खाते-पीते हो और परमेश्वर के वचन की वास्तविकता को नहीं छोड़ते तो परमेश्वर तुम्हें पूर्ण बनाने का कार्य कर पाएगा।

जीवन की खोज कोई जल्दबाजी की चीज़ नहीं है; जीवन में विकास एक या दो दिन में नहीं आता। परमेश्वर का कार्य सामान्य और व्यावहारिक है और इसे एक आवश्यक प्रक्रिया से गुजरना होता है। देहधारी यीशु को क्रूस पर अपने कार्य को समाप्त करने में तेंतीस वर्ष और छः माह लगे, तो मनुष्य को शुद्ध करने और उसका जीवन रूपांतरित करने की बात करना कितना सटीक होगा, जो कि अतिशय मुश्किल कार्य है? एक सामान्य व्यक्ति बनाना, जो परमेश्वर को अभिव्यक्त करता हो, आसान काम नहीं है। यह विशेष रूप से बड़े लाल अजगर के देश में जन्मे लोगों के लिए और भी कठिन है, जिनकी क्षमता कम है, जिन्हें लंबे समय से परमेश्वर के वचन और कार्य की आवश्यकता है। इसलिए परिणाम पाने के लिए जल्दबाजी न करो। परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के लिये तुम्हें पहले से ही सक्रिय होना होगा और परमेश्वर के वचनों पर अधिक से अधिक परिश्रम करना होगा। उसके वचनों को पढ़ने के बाद, तुम्हें इस योग्य हो जाना चाहिए कि तुम वास्तव में उन पर अमल करो, परमेश्वर के वचनों में ज्ञान, अंर्तदृष्टि, परख और बुद्धि को विकसित करते हुए। और इसके द्वारा तुम बदल जाओगे और तुम्हें महसूस भी नहीं होगा।

यदि तुम परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना और पढ़ने का सिद्धांत बना लो, उसे जानने लगो, अनुभव करने लगो, अमल में लाने लगो तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा और तुम परिपक्वता हासिल कर लोगे। कुछ लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर का वचन पढ़ने के बाद भी उस पर अमल नहीं कर पाते! तुम किस जल्दबाजी में हो? जब तुम एक निश्चित स्थिति तक पहुंच जाओगे तो तुम परमेश्वर के वचन पर अमल करने योग्य बन जाओगे। क्या चार या पांच वर्ष का बालक कहेगा कि वह अपने माता-पिता का सहयोग या आदर करने में असमर्थ है? तुम्हें जान लेना चाहिए कि तुम्हारी वर्तमान स्थिति क्या है, तुम जिनपर अमल कर सकते हो, अमल करो और परमेश्वर के प्रबंधन को बिगाड़ने वाले मत बनो। केवल परमेश्वर के वचनों को खाओ-पीओ और आगे बढ़ते हुए उन्हें अपना सिद्धांत बना लो। इस समय इस बारे में चिन्ता मत करो कि परमेश्वर तुम्हें पूर्ण कर सकता है या नहीं। अभी इस विषय में सोच-विचार मत करो। परमेश्वर के वचन जब तुम्हारे सामने आएँ तो केवल उन्हें खाओ-पीओ, परमेश्वर निश्चित ही तुम्हें पूरा करेगा। हालाँकि, परमेश्वर के वचन को खाने-पीने का एक नियम है। आँखें मूंद करके यह न करो, बल्कि एक ओर उन शब्दों को खोजो जिन्हें तुम्हें जानना चाहिए, अर्थात उन्हें जिनका संबंध दर्शन से है, और दूसरी ओर उसे खोजो जिस पर वास्तव में तुम्हें अमल करना चाहिए, अर्थात, जिसमें तुम्हें प्रवेश करना चाहिए। एक पहलू ज्ञान का है और दूसरा उसमें प्रवेश करने का। जब तुम इन दोनों को पा लेते हो, अर्थात जब तुम उसे समझ लेते हो जिसे तुम्हें जानना चाहिए और जिस पर अमल करना चाहिए, तब तुम सीख लोगे कि परमेश्वर के वचन को कैसे खाया और पिया जाता है।

आगे बढ़ने पर, परमेश्वर के वचन के बारे में बात करना तुम्हारी बातचीत का सिद्धांत होना चाहिए। आमतौर पर, जब तुम लोग आपस में मिलते हो, तुम लोगों को परमेश्वर के वचन के बारे में बातचीत करनी चाहिए, उसके वचन को बातचीत का विषय बनाना चाहिए; बात करना चाहिए कि परमेश्वर के वचन के बारे में तुम लोग क्या जानते हो, उसके वचन को अभ्यास में कैसे लाते हो और पवित्र आत्मा कैसे काम करता है। जबतक तुम परमेश्वर के वचन के बारे में सहभागिता करोगे, पवित्र आत्मा तुम्हें प्रकाशित करेगा। परमेश्वर के वचन के संसार को प्राप्त करने के लिए मनुष्य के सहयोग की आवश्यकता है। यदि तुम इसमें प्रवेश नहीं करते हो तो परमेश्वर अपना काम नहीं कर पाएगा। यदि तुम अपना मुँह बंद रखोगे और परमेश्वर के वचन के बारे में बातचीत नहीं करोगे तो वह तुम्हें रोशन नहीं कर पाएगा। जब भी तुम कोई दूसरा काम नहीं कर रहे, परमेश्वर के वचन के बारे में बात करो। व्यर्थ की बातें मत करो! अपने जीवन को

परमेश्वर के वचन से भर जाने दो; तभी तुम एक समर्पित विश्वासी होते हो। कोई बात नहीं यदि तुम्हारी सहभागिता सतही है। सतह के बिना कोई गहराई नहीं हो सकती। एक प्रक्रिया का होना ज़रूरी है। अपने प्रशिक्षण द्वारा तुम पवित्र आत्मा से प्राप्त रोशनी को समझ लोगे और यह भी जान लोगे कि परमेश्वर के वचन को प्रभावी तरीके से कैसे खाएँ-पिएँ। इस प्रकार खोजबीन में कुछ समय देने के बाद तुम परमेश्वर के वचन की वास्तविकता में प्रवेश कर जाओगे। केवल जब तुम सहयोग करने का संकल्प करोगे तभी पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करने में तुम समर्थ होगे।

परमेश्वर के वचन को खाने-पीने के सिद्धांत के दो पहलू हैं : एक का संबंध ज्ञान से है और दूसरे का संबंध प्रवेश करने से है। तुम्हें कौन से वचन जानने चाहिए? तुम्हें दर्शन से जुड़े वचन जानने चाहिए (जैसे कि परमेश्वर का कार्य अब किस युग में प्रवेश कर चुका है, अब परमेश्वर क्या प्राप्त करना चाहता है, देहधारण क्या है और ऐसी अन्य बातें, ये सभी बातें दर्शन से संबंधित हैं)। उस मार्ग के क्या मायने हैं जिसमें मनुष्य को प्रवेश करना चाहिए? यह परमेश्वर के उन वचनों का उल्लेख करता है जिन पर मनुष्य को अमल करना और चलना चाहिए। परमेश्वर के वचन को खाने और पीने के ये दो पहलू हैं। अब से, तुम परमेश्वर के वचन को इसी तरह खाओ-पियो। यदि तुम्हें दर्शन के बारे में वचनों की स्पष्ट समझ है तो सब समय पढ़ते रहने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य बात है प्रवेश करने से संबंधित वचनों को अधिक खाना और पीना, जैसे कि किस प्रकार परमेश्वर की ओर अपने हृदय को मोड़ना है, किस प्रकार परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को शांत करना है, कैसे देह का परित्याग करना है। यही सब है जिस पर तुम्हें अमल करना है। परमेश्वर के वचन को कैसे खाए-पिएँ यह जाने बिना असली सहभागिता संभव नहीं है। जब एक बार तुम जान लेते हो कि परमेश्वर के वचन को कैसे खाए-पिएँ और समझ लेते हो कि कुंजी क्या है तो सहभागिता तुम्हारे लिए आसान होगी। जो भी मामले उठेंगे, तुम उनके बारे में सहभागिता कर पाओगे और वास्तविकता को समझ लोगे। बिना वास्तविकता के परमेश्वर के वचन से सहभागिता करने का अर्थ है, तुम यह समझ पाने में असमर्थ हो कि कुंजी क्या है, यह बात दर्शाती है कि तुम परमेश्वर के वचन को खाना-पीना नहीं जानते। कुछ लोग परमेश्वर का वचन पढ़ते समय थकान का अनुभव करते हैं। यह दशा सामान्य नहीं है। वास्तव में सामान्य बात यह है कि परमेश्वर का वचन पढ़ते हुए तुम कभी थकते नहीं, सदैव उसकी भूख-प्यास बनी रहती है, तुम सदैव सोचते हो कि परमेश्वर का वचन भला है। और वह व्यक्ति जो सचमुच प्रवेश कर चुका है वह परमेश्वर के वचन को ऐसे ही खाता-पीता है। जब तुम अनुभव करते हो कि परमेश्वर

का वचन सचमुच व्यावहारिक है और मनुष्य को इसमें प्रवेश करना ही चाहिए; जब तुम महसूस करते हो कि परमेश्वर का वचन मनुष्य के लिए बेहद सहायक और लाभदायक है, यह मनुष्य के जीवन के लिए रसद है, यह पवित्र आत्मा है जो तुम्हें ऐसी भावना देता है, और तुम्हें प्रेरित करता है। यह बात साबित करती है कि पवित्र आत्मा तुम्हारे भीतर कार्य कर रहा है और परमेश्वर तुमसे विमुख नहीं हुआ है। यह जानकर कि परमेश्वर सदैव बातचीत करता है, कुछ लोग उसके वचनों से थक जाते हैं, वे सोचते हैं कि परमेश्वर के वचन को पढ़ने या न पढ़ने का कोई परिणाम नहीं होता। यह सामान्य दशा नहीं है। उनका हृदय वास्तविकता में प्रवेश करने की इच्छा नहीं करता, ऐसे लोगों में पूर्णता के लिए भूख-प्यास नहीं होती और न ही वे इसे महत्वपूर्ण मानते हैं। जब भी तुम्हें लगता है कि तुममें परमेश्वर के वचन की प्यास नहीं है तो यह संकेत है कि तुम्हारी दशा सामान्य नहीं है। अतीत में, परमेश्वर तुमसे कहीं विमुख तो नहीं हो गया, इसका पता इस बात से चलता था कि तुम्हारे भीतर शांति है या नहीं और तुम आनंद का अनुभव कर रहे या नहीं। अब, यह इस बात से पता चलता है कि तुममें वचन की प्यास है या नहीं। क्या उसके वचन तुम्हारी वास्तविकता हैं, क्या तुम निष्ठावान हो और क्या तुम वह करने योग्य हो जो तुम परमेश्वर के लिये कर सकते हो। दूसरे शब्दों में, मनुष्य को परमेश्वर के वचन की वास्तविकता के द्वारा जाँचा-परखा जाता है। परमेश्वर अपने वचनों को सभी मनुष्यों की ओर भेजता है। यदि तुम उसे पढ़ने के लिए तैयार हो तो वह तुम्हें प्रबुद्ध करेगा, यदि नहीं तो वह तुम्हें प्रबुद्ध नहीं करेगा। परमेश्वर उन्हें प्रबुद्ध करता है जो धार्मिकता के भूखे-प्यासे हैं और परमेश्वर को खोजते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर ने वचन पढ़ने के बाद भी उन्हें प्रबुद्ध नहीं किया। परमेश्वर के वचनों को तुमने कैसे पढ़ा था? यदि तुमने उसके वचनों को इस ढंग से पढ़ा जैसे किसी घुड़सवार ने घोड़े पर बैठे-बैठे फूलों को देखा और वास्तविकता को कोई महत्व नहीं दिया, तो परमेश्वर कैसे तुम्हें प्रबुद्ध कर सकता है? कैसे वह व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन को संजो कर नहीं रखता परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाया जा सकता है? यदि तुम परमेश्वर के वचन को सँजो कर नहीं रखते, तब तुम्हारे पास न तो सत्य होगा और न ही वास्तविकता होगी। यदि तुम उसके वचन को सँजो कर रखते हो, तब तुम सत्य का अभ्यास कर पाओगे; और तब ही तुम वास्तविकता को पाओगे। इसलिए स्थिति चाहे जो भी हो, तुम्हें परमेश्वर के वचन को खाना और पीना चाहिए, तुम चाहे व्यस्त हो या न हो, परिस्थितियां विपरीत हों या न हों, चाहे तुम परखे जा रहे हो या नहीं परखे जा रहे हो। कुल मिलाकर परमेश्वर का वचन मनुष्य के अस्तित्व का आधार है। कोई भी उसके वचन से विमुख नहीं हो सकता, उसके वचन को ऐसे खाना होगा जैसे वे दिन में तीन बार

भोजन करते हैं। क्या परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाया जाना और प्राप्त किया जाना इतना आसान हो सकता है? अभी तुम इसे समझो या न समझो, तुम्हारे भीतर परमेश्वर के कार्य को समझने की अंतर्दृष्टि हो या न हो, तुम्हें परमेश्वर के वचन को अधिक से अधिक खाना और पीना चाहिए। यह तत्परता और क्रियाशीलता के साथ प्रवेश करना है। परमेश्वर के वचन को पढ़ने के बाद, जिसमें प्रवेश कर सको उस पर अमल करने की तत्परता दिखाओ, तुम जो नहीं कर सकते, उसे कुछ समय के लिए दरकिनार कर दो। आरंभ में हो सकता है, परमेश्वर के बहुत से वचन तुम समझ न पाओ, पर दो या तीन माह बाद या फिर एक वर्ष के बाद तुम समझने लगोगे। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर एक या दो दिन में मनुष्य को पूर्ण नहीं कर सकता। अधिकतर समय, जब तुम परमेश्वर का वचन पढ़ते हो, तुम उस समय उसे नहीं समझ पाओगे। उस समय वह तुम्हें लिखित पाठ से अधिक प्रतीत नहीं होगा; केवल कुछ समय के अनुभव के बाद ही तुम उसे समझने योग्य बन जाओगे। परमेश्वर ने बहुत कुछ कहा है इसलिए उसके वचन को खाने-पीने के लिए तुम्हें अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए। तुम्हें पता भी नहीं चलेगा और तुम समझने लगोगे, पवित्र आत्मा तुम्हें प्रबुद्ध करेगा। जब पवित्र आत्मा मनुष्य को प्रबुद्ध करता है, तब अक्सर मुनुष्य को उसका ज्ञान नहीं होता। वह तुम्हें प्रबुद्ध करता है और मार्गदर्शन देता है जब तुम उसके प्यासे होते हो, उसे खोजते हो। पवित्र आत्मा जिस सिद्धांत पर कार्य करता है वह परमेश्वर के वचन पर केंद्रित होता है जिसे तुम खाते और पीते हो। वे सब जो परमेश्वर के वचन को महत्व नहीं देते और उसके प्रति सदैव एक अलग तरह का दृष्टिकोण रखते हैं—अपनी संभ्रमित सोच में यह विश्वास करते हुए कि वे वचन को पढ़ें या न पढ़ें कुछ फर्क नहीं पड़ता—ऐसे लोग हैं जो वास्तविकता नहीं जानते। ऐसे व्यक्ति में न तो पवित्र आत्मा का कार्य और न ही उसके द्वारा दी गई प्रबुद्धता दिखाई देती है। ऐसे व्यक्ति बस साथ-साथ चलते हैं, वे बिना उचित योग्यताओं के मात्र दिखावा करने वाले लोग हैं, जैसे कि एक नीतिकथा में[क] नैनगुओ थे।

परमेश्वर के वचन को अपने जीवन की वास्तविकता बनाए बिना तुम्हारा कोई वास्तविक आध्यात्मिक कद नहीं होता। जब परीक्षा का समय आएगा, तुम निश्चय ही असफल होगे और तब तुम्हारा वास्तविक आध्यात्मिक कद प्रकट हो जाएगा। परंतु जो लोग नियमित रूप से वास्तविकता में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे होते हैं, वे परीक्षाओं का सामना करते हुए परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को समझ लेंगे। जिनके पास अंतःकरण है और जो परमेश्वर के लिए प्यास रखते हैं, उन्हें परमेश्वर के प्रेम का प्रतिदान करने के लिए व्यावहारिक रूप में प्रयत्न करना चाहिए। जिनमें वास्तविकता नहीं है, वे छोटी-छोटी बातों का भी सामना

नहीं कर सकते। वास्तविक आध्यात्मिक कद वाले और बिना वास्तविक आध्यात्मिक कद वाले लोगों के बीच यही अंतर है। क्यों दोनों ही परमेश्वर के वचन को खाते-पीते हैं, परंतु उनमें से कुछ परीक्षाओं के समय दृढ़ रहते हैं जबकि दूसरे उससे भाग जाते हैं? स्वाभाविक है कि जो भागते हैं, उनका वास्तव में कोई आध्यात्मिक कद नहीं है; परमेश्वर का वचन उनकी वास्तविकता नहीं है; और परमेश्वर के वचन ने उनमें जड़ें नहीं जमाई हैं। जैसे ही उनकी परीक्षा होती है, उनके पास कोई मार्ग नहीं रहता। क्यों, तब कुछ लोग परीक्षणों के बीच दृढ़ बने रह पाते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे सत्य को समझते हैं और उनका एक दर्शन है, और वे परमेश्वर की इच्छा और उसकी अपेक्षाओं को समझते हैं, और इस प्रकार वे परीक्षाओं के बीच दृढ़ बने रह पाते हैं। यही वास्तविक आध्यात्मिक कद है और जीवन भी यही है। कुछ लोग परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं परंतु उस पर कभी अमल नहीं करते, उन्हें गंभीरता से नहीं लेते; जो लोग उन्हें गंभीरता से नहीं लेते वे अभ्याय को महत्व नहीं देते। जो परमेश्वर के वचन को अपनी वास्तविकता नहीं बनाते उनका वास्तविक आध्यात्मिक कद नहीं होता, और ऐसे लोग परीक्षाओं के बीच दृढ़ नहीं रह सकते।

जब परमेश्वर बोलता है तब तुम्हें तुरंत उसके वचनों को ग्रहण करना और उन्हें खाना-पीना चहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कितना समझते हो, अपना दृष्टिकोण यह रखो कि तुम वचन को खाने और पीने, उसे जानने और उसका अभ्यास करने पर अपना ध्यान केंद्रित करोगे। तुम्हें यही करना चाहिए। इस बात की चिंता न करो कि तुम्हारा आध्यात्मिक कद कितना बड़ा हो जाएगा; केवल परमेश्वर के वचन को खाने और पीने पर ध्यान केंद्रित करो। इसी तरह से मनुष्य को परमेश्वर का सहयोग करना चाहिए। तुम्हारा आत्मिक जीवन मुख्यतः उस वास्तविकता में प्रवेश करना है, जहां तुम परमेश्वर के वचनों को खाओ-पिओ और उनका अभ्यास करो। तुम्हें अन्य किसी बात पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। कलीसिया के अगुवाओं को इस बारे में सभी भाई-बहनों की अगुवाई करने में सक्षम होना चाहिए कि वे परमेश्वर के वचन को कैसे खाएँ-पिएँ। यह सभी कलीसिया के अगुवाओं की जिम्मेवारी है। वे चाहे युवा हों या वृद्ध, सभी को परमेश्वर के वचन को खाने-पीने को महत्व देना चाहिए और उन वचनों को अपने हृदय में रखना चाहिए। यदि तुम इस वास्तविकता में प्रवेश कर लेते हो तो तुम राज्य के युग में प्रवेश कर लोगे। आजकल बहुत से लोग हैं जो महसूस करते हैं कि वे परमेश्वर के वचन को खाए-पिए बिना नहीं रह सकते, और महसूस करते हैं कि समय के निरपेक्ष परमेश्वर का वचन नया है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य सही मार्ग पर चलना आरंभ कर रहा है। परमेश्वर मनुष्यों में काम करने और उनकी आपूर्ति करने के लिए वचन

का उपयोग करता है। जब सभी लोग परमेश्वर के वचन की लालसा और प्यास रखते हैं तो मानवजाति परमेश्वर के वचन के संसार में प्रवेश करती है।

परमेश्वर बहुत सारी बातें कह चुका है। तुम कितना जान पाए हो? तुम उनमें कितना प्रवेश कर पाए हो? यदि कलीसिया के अगुवाओं ने भाइयों और बहनों को परमेश्वर के वचन की वास्तविकता में अगुवाई नहीं की है तो वे अपने कर्तव्य-पालन में चूक गए हैं और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में असफल हुए हैं! चाहे तुम्हारी समझ गहन हो या सतही, तुम्हारी समझ के स्तर की परवाह किए बिना, तुम्हें अवश्य ज्ञात होना चाहिए कि उसके वचनों को कैसे खाया और पिया जाए, तुम्हें उसके वचनों की ओर बहुत ध्यान अवश्य देना चाहिए और उन्हें खाने-पीने के महत्व और उसकी आवश्यकता को समझना चाहिए। परमेश्वर ने बहुत कुछ कह दिया है। यदि तुम उसके वचन को नहीं खाते-पीते, उसे खोजते नहीं या उस पर अमल नहीं करते तो यह नहीं माना जा सकता कि तुम परमेश्वर में विश्वास रखते हो। क्योंकि यदि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, तो तुम्हें उसके वचन को खाना-पीना चाहिए, उसका अनुभव करना चाहिए और उसे जीना चाहिए। केवल यही परमेश्वर पर विश्वास करना है! यदि तुम कहते हो कि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, परंतु उसके किसी वचन पर अमल नहीं कर सकते या वास्तविकता उत्पन्न नहीं कर सकते तो यह नहीं माना जा सकता कि तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो। ऐसा करना "भूख शांत करने के लिए रोटी की खोज" करने जैसा है। बिना किसी वास्तविकता के केवल छोटी-छोटी बातों की गवाही, अनुपयोगी और सतही मामलों पर बातें करना, परमेश्वर पर विश्वास करना नहीं है, और तुमने बस परमेश्वर पर विश्वास करने के सही तरीके को नहीं समझा है। तुम्हें परमेश्वर के वचनों को क्यों अधिक से अधिक खाना-पीना चाहिए? यदि तुम परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते नहीं और केवल स्वर्ग की ऊँचाई चढ़ना चाहते हो तो क्या यह विश्वास माना जाएगा? परमेश्वर में विश्वास रखने वाले का पहला कदम क्या होता है? परमेश्वर किस मार्ग से मनुष्य को पूर्ण बनाता है? क्या परमेश्वर के वचन को बिना खाए-पिए तुम पूर्ण बनाए जा सकते हो? क्या परमेश्वर के वचन को बिना अपनी वास्तविकता बनाए, तुम परमेश्वर के राज्य के व्यक्ति माने जा सकते हो? परमेश्वर में विश्वास रखना वास्तव में क्या है? परमेश्वर में विश्वास रखने वालों का कम-से-कम बाहरी तौर पर आचरण अच्छा होना चाहिए; और सबसे महत्वपूर्ण बात है परमेश्वर के वचन के अधीन रहना। किसी भी परिस्थिति में तुम उसके वचन से विमुख नहीं होगे। परमेश्वर को जानना और उसकी इच्छा को पूरा करना, सब उसके वचन के द्वारा हासिल किया जाता है। सभी देश, संप्रदाय, धर्म और प्रदेश भी भविष्य में वचन

के द्वारा जीते जाएँगे। परमेश्वर सीधे बात करेगा, सभी लोग अपने हाथों में परमेश्वर का वचन थामकर रखेंगे; इसके द्वारा लोग पूर्ण बनाए जाएँगे। परमेश्वर का वचन सब तरफ फैलता जाएगा : इंसान परमेश्वर के वचन बोलेगा, परमेश्वर के वचन के अनुसार आचरण करेगा, और अपने हृदय में परमेश्वर का वचन रखेगा, भीतर और बाहर पूरी तरह परमेश्वर के वचन में डूबा रहेगा। इस प्रकार मानवजाति को पूर्ण बनाया जाएगा। परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने वाले और उसकी गवाही देने में सक्षम लोग वे हैं जिन्होंने परमेश्वर के वचन को वास्तविकता के रूप में अपनाया है।

वचन के युग अर्थात सहस्राब्दिक राज्य के युग में प्रवेश करना वह कार्य है जो अभी पूरा किया जा रहा है। अब से परमेश्वर के वचन के बारे में सहभागिता करने का अभ्यास करो। केवल परमेश्वर के वचन को खाने-पीने और अनुभव करने से ही तुम परमेश्वर के वचन को जीने में समर्थ होगे। दूसरे लोगों को आश्वस्त करने के लिए तुम्हें कुछ व्यावहारिक अनुभव पेश करने होंगे। यदि तुम परमेश्वर के वचन की वास्तविकता को नहीं जी सकते तो किसी को भी यकीन नहीं दिलाया जा सकता! परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने वाले सभी लोग वे हैं जो परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता को जी सकते हैं। यदि तुम परमेश्वर की गवाही देने के लिए इस वास्तविकता को पेश नहीं कर सकते तो यह दर्शाता है कि पवित्र आत्मा ने तुममें काम नहीं किया है और तुम पूर्ण नहीं बनाए गए हो। यह परमेश्वर के वचन का महत्व है। क्या तुम्हारे पास ऐसा हृदय है जो परमेश्वर के वचन की प्यास रखता हो? जो परमेश्वर के वचन के प्यासे हैं, उनमें सत्य की प्यास है और केवल ऐसे ही लोगों को परमेश्वर का अशीष प्राप्त है। भविष्य में, परमेश्वर सभी पंथों और संप्रदायों से बहुत सारी अन्य बातें भी कहेगा। वह सबसे पहले तुम लोगों के बीच बोलता और अपनी वाणी सुनाता है और तुम्हें पूरा करता है और उसके बाद वह नास्तिकों के बीच अपनी बात रखता है और उन्हें जीतता है। वचन के द्वारा सभी लोग ईमानदारी से और पूरी तरह से कायल किए जाएँगे। परमेश्वर के वचन के द्वारा और उसके प्रकाशनों के द्वारा मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव में कमी आती है, उसमें इंसानियत का प्रकटन होता है और मनुष्य के विद्रोही स्वभाव में कमी आती है। वचन मनुष्य में अधिकार के साथ काम करता है और परमेश्वर की ज्योति के भीतर मनुष्य को जीतता है। परमेश्वर वर्तमान युग में जो कार्य करता है, साथ ही उसके कार्य के निर्णायक मोड़, ये सब कुछ परमेश्वर के वचन के भीतर मिल सकते हैं। यदि तुम उसके वचन को नहीं पढ़ते तो तुम कुछ नहीं समझोगे। उसके वचन को खाने-पीने से, भाइयों और बहनों के साथ सहभागिता करके और अपने वास्तविक अनुभव से परमेश्वर के वचन का तुम्हारा ज्ञान व्यापक हो

जाएगा। केवल इसी प्रकार से तुम सचमुच वास्तविक जीवन में उसे जी सकते हो।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "नीतिकथा में" यह वाक्यांश नहीं है।

परमेश्वर के वचन के द्वारा सब-कुछ प्राप्त हो जाता है

परमेश्वर भिन्न-भिन्न युगों के अनुसार अपने वचन कहता है और अपना कार्य करता है, तथा भिन्न-भिन्न युगों में वह भिन्न-भिन्न वचन कहता है। परमेश्वर नियमों से नहीं बँधता, और एक ही कार्य को दोहराता नहीं है, और न अतीत की बातों को याद करके खिन्न होता है; वह ऐसा परमेश्वर है जो सदैव नया है और कभी पुराना नहीं होता, और वह हर दिन नए वचन बोलता है। तुम्हें उसका पालन करना चाहिए, जिसका आज पालन किया जाना चाहिए; यही मनुष्य की जिम्मेदारी और कर्तव्य है। यह महत्वपूर्ण है कि वर्तमान समय में अभ्यास परमेश्वर की रोशनी और वचनों के आस-पास केंद्रित हो। परमेश्वर नियमों का पालन नहीं करता, और अपनी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता प्रकट करने के लिए विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से बोलने में सक्षम है। यह मायने नहीं रखता कि वह आत्मा के परिप्रेक्ष्य से बोलता है, या मनुष्य के, या तृतीय पुरुष के परिप्रेक्ष्य से—परमेश्वर सदैव परमेश्वर है, और तुम उसके मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से बोलने की वजह से यह नहीं कह सकते कि वह परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से बोलने के परिणामस्वरूप कुछ लोगों में धारणाएँ उभर आई हैं। ऐसे लोगों में परमेश्वर का कोई ज्ञान नहीं है, और उसके कार्य का कोई ज्ञान नहीं है। यदि परमेश्वर सदैव किसी एक ही परिप्रेक्ष्य से बोलता, तो क्या मनुष्य परमेश्वर के बारे में नियम निर्धारित न कर देता? क्या परमेश्वर मनुष्य को इस तरह से कार्य करने दे सकता था? परमेश्वर चाहे किसी भी परिप्रेक्ष्य से बोले, उसके पास वैसा करने का प्रयोजन है। यदि परमेश्वर सदैव आत्मा के परिप्रेक्ष्य से बोलता, तो क्या तुम उसके साथ जुड़ने में सक्षम होते? इसलिए, तुम्हें अपने वचन प्रदान करने और वास्तविकता में तुम्हारा मार्गदर्शन करने के लिए कभी-कभी वह तृतीय पुरुष में बोलता है। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, उपयुक्त होता है। संक्षेप में, यह सब परमेश्वर द्वारा किया जाता है और तुम्हें इस पर संदेह नहीं करना चाहिए। वह परमेश्वर है, और इसलिए वह चाहे किसी भी परिप्रेक्ष्य से बोले, वह हमेशा परमेश्वर ही रहेगा। यह एक अडिग सत्य है। वह जैसे भी कार्य करे, वह फिर भी परमेश्वर है, और उसका सार नहीं बदलेगा! पतरस परमेश्वर से बहुत प्रेम करता था और वह परमेश्वर का हमख़याल व्यक्ति था, किंतु परमेश्वर ने उसके प्रभु या

मसीह होने की गवाही नहीं दी, क्योंकि किसी प्राणी का सार वही होता है, जो वह है, और वह कभी नहीं बदल सकता। अपने कार्य में परमेश्वर नियमों का पालन नहीं करता, किंतु वह अपने कार्य को प्रभावी बनाने और अपने बारे में मनुष्य के ज्ञान को गहरा करने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके उपयोग में लाता है। उसका कार्य करने का प्रत्येक तरीका मनुष्य की उसे जानने में सहायता करता है, और वह मनुष्य को पूर्ण करने के लिए है। चाहे वह कार्य करने का कोई भी तरीका उपयोग में लाए, प्रत्येक तरीका मनुष्य को बनाने और उसे पूर्ण करने के लिए है। भले ही उसके तरीकों में से कोई एक तरीका बहुत लंबे समय तक चला हो, यह परमेश्वर में मनुष्य के विश्वास को दृढ़ बनाने के लिए है। इसलिए तुम्हारे हृदय में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। ये सभी परमेश्वर के कार्य के चरण हैं, और तुम्हें इनका पालन करना चाहिए।

आज जो कहा जाता है, वह वास्तविकता में प्रवेश है—स्वर्ग में आरोहण या राजाओं के समान शासन करना नहीं है; जो कुछ भी कहा जाता है, वह वास्तविकता में प्रवेश की खोज है। इससे अधिक व्यावहारिक कोई खोज नहीं है, और राजाओं के समान शासन करने की बात करना व्यावहारिक नहीं है। मनुष्य में बड़ी जिज्ञासा है, और वह आज भी परमेश्वर के कार्य को अपनी धार्मिक धारणाओं से मापता है। परमेश्वर के कार्य करने के इतने अधिक तरीकों का अनुभव प्राप्त करने के बाद, मनुष्य अभी भी परमेश्वर के कार्य को नहीं जानता, अभी भी संकेत और चमत्कार खोजता है, और अभी भी यह देखता रहता है कि क्या परमेश्वर के वचन पूरे हो गए हैं? क्या यह आश्चर्यजनक अज्ञानता नहीं है? परमेश्वर के वचन पूरे हुए बिना, क्या तुम अभी भी विश्वास करोगे कि वह परमेश्वर है? आज कलीसिया में ऐसे बहुत-से लोग संकेत और चमत्कार देखने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे कहते हैं कि यदि परमेश्वर के वचन पूरे हो जाते हैं, तो वह परमेश्वर है; यदि परमेश्वर के वचन पूरे नहीं होते, तो वह परमेश्वर नहीं है। तो क्या तुम परमेश्वर पर इसलिए विश्वास करते हो कि उसके द्वारा कहे गए वचन पूरे होते हैं, या फिर इसलिए कि वह स्वयं परमेश्वर है? परमेश्वर पर विश्वास करने के मनुष्य के दृष्टिकोण को सही किया जाना चाहिए! जब तुम देखते हो कि परमेश्वर के वचन पूरे नहीं हुए हैं, तो तुम रफ़ूचक्कर हो जाते हो—क्या यही परमेश्वर में विश्वास है? जब तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, तो तुम्हें सब-कुछ परमेश्वर की दया पर छोड़ देना चाहिए और परमेश्वर के समस्त कार्य का पालन करना चाहिए। परमेश्वर ने पुराने विधान में बहुत-से वचन कहे—उनमें से कितने वचनों को तुमने अपनी आँखों से पूरा होते देखा है? क्या तुम कह सकते हो कि यहोवा सच्चा परमेश्वर नहीं है, क्योंकि तुमने वह नहीं देखा? भले ही कई वचन पूरे हो गए हों, मनुष्य उसे स्पष्ट रूप से देखने में अक्षम है, क्योंकि मनुष्य के

पास सत्य नहीं है और वह कुछ नहीं समझता। कुछ लोग भाग जाना चाहते हैं, जब उन्हें महसूस होता है कि परमेश्वर के वचन पूरे नहीं हुए हैं। कोशिश करो। देखो कि क्या तुम भाग सकते हो? भाग जाने के बाद भी तुम वापस आ जाओगे। परमेश्वर तुम्हें अपने वचन से नियंत्रित करता है, और यदि तुम कलीसिया और परमेश्वर के वचन को छोड़ देते हो, तो तुम्हारे पास जीने का कोई तरीका नहीं होगा। यदि तुम्हें इस बात पर विश्वास न हो, तो कोशिश करके देखो—क्या तुम्हें लगता है कि तुम यूँ ही छोड़कर जा सकते हो? परमेश्वर का आत्मा तुम्हें नियंत्रित करता है। तुम छोड़कर नहीं जा सकते। यह परमेश्वर का प्रशासनिक आदेश है! यदि कुछ लोग कोशिश करना चाहते हैं, तो वे कर सकते हैं! तुम कहते हो कि यह व्यक्ति परमेश्वर नहीं है, तो उसके विरुद्ध कोई पाप करो और देखो कि वह क्या करता है। यह संभव है कि तुम्हारी देह न मरे और तुम अभी भी स्वयं को भोजन कराने और वस्त्र पहनाने में समर्थ रहो, किंतु मानसिक रूप में यह असहनीय होगा; तुम तनावग्रस्त और संतप्त अनुभव करोगे; इससे अधिक दर्दनाक कुछ नहीं होगा। मनुष्य मानसिक संताप और विनाश बरदाश्त नहीं कर सकता—शायद तुम देह की तकलीफ़ों को सहन करने में सक्षम हो, किंतु मानसिक तनाव और लंबे समय तक चलने वाली पीड़ा सहने में तुम पूरी तरह से अक्षम हो। आज कुछ लोग इसलिए नकारात्मक हो जाते हैं, क्योंकि वे कोई संकेत और चमत्कार नहीं देखते, फिर भी कोई भागने की हिम्मत नहीं करता, चाहे वह कितना भी नकारात्मक हो जाए, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य को अपने वचन से नियंत्रित करता है। तथ्यों का आगमन नहीं होने का बावजूद कोई भाग नहीं सकता। क्या ये सब परमेश्वर की क्रियाएँ नहीं हैं? आज परमेश्वर मनुष्य को जीवन देने के लिए पृथ्वी पर आया है। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच शांतिपूर्ण संबंध सुनिश्चित करने के लिए संकेत और चमत्कार दिखाकर तुम्हें फुसलाता नहीं है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं। वे सब, जिनका ध्यान जीवन पर नहीं है, और इसके बजाय जो परमेश्वर द्वारा संकेत और चमत्कार दिखाए जाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे फरीसी हैं! और वे फरीसी ही थे, जिन्होंने यीशु को सलीब पर चढ़ाया था। यदि तुम परमेश्वर को उस पर अपने विश्वास के अनुसार मापते हो, और यदि उसके वचन पूरे होते हैं तो उस पर विश्वास करते हो, और यदि वचन पूरे नहीं होते तो उस पर संदेह करते हो, यहाँ तक कि ईशनिंदा भी करते हो, तो क्या तुम उसे सलीब पर नहीं चढ़ाते हो? ऐसे लोग अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाह हैं, और लालच के साथ आराम की ज़िंदगी जीते हैं!

एक ओर, मनुष्य के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह परमेश्वर के कार्य को नहीं जानता। यद्यपि मनुष्य की प्रवृत्ति इनकार करने की नहीं है, किंतु संदेह करने की है। मनुष्य इनकार नहीं करता, किंतु

पूर्णतः स्वीकार भी नहीं करता। यदि लोगों को परमेश्वर के कार्य का संपूर्ण ज्ञान हो जाए, तो वे भागेंगे नहीं। दूसरी समस्या यह है कि मनुष्य को वास्तविकता का ज्ञान नहीं है। आज परमेश्वर के वचन के साथ प्रत्येक व्यक्ति जुड़ा है; वास्तव में, भविष्य में तुम्हें संकेत और चमत्कार देखने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। मैं तुमसे साफ-साफ कहता हूँ : वर्तमान चरण के दौरान तुम परमेश्वर के वचन देखने में सक्षम हो, और यद्यपि यहाँ कोई तथ्य नहीं हैं, फिर भी परमेश्वर का जीवन मनुष्यों में गढ़ा जा सकता है। यही वह कार्य है, जो सहस्राब्दी राज्य का मुख्य कार्य है, और यदि तुम इस कार्य का बोध नहीं कर सकते, तो तुम निर्बल हो जाओगे और गिर जाओगे, और तुम परीक्षणों में उतर जाओगे, और इससे भी अधिक कष्टदायक ढंग से तुम शैतान द्वारा बंदी बना लिए जाओगे। परमेश्वर पृथ्वी पर मुख्य रूप से अपने वचन कहने के लिए आया है; तुम जिससे जुड़ते हो वह परमेश्वर का वचन है, तुम जो देखते हो वह परमेश्वर का वचन है, तुम जिसे सुनते हो वह परमेश्वर का वचन है, तुम जिसका पालन करते हो वह परमेश्वर का वचन है, तुम जिसे अनुभव करते हो वह परमेश्वर का वचन है, और परमेश्वर का यह देह-धारण मनुष्य को पूर्ण करने के लिए मुख्य रूप से वचन का उपयोग करता है। वह संकेत और चमत्कार नहीं दिखाता, और विशेष रूप से वे कार्य नहीं करता, जिन्हें यीशु ने अतीत में किया था। यद्यपि वे परमेश्वर हैं, और दोनों देह हैं, किंतु उनकी सेवकाइयाँ एक-सी नहीं हैं। जब यीशु आया, तो उसने भी परमेश्वर के कार्य का एक भाग पूरा किया और कुछ वचन बोले—किंतु वह कौन-सा प्रमुख कार्य था, जो उसने संपन्न किया? उसने मुख्य रूप से सलीब पर चढ़ने का कार्य संपन्न किया। सलीब पर चढ़ने का कार्य पूरा करने और समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाने के लिए वह पापमय देह की समानता बन गया, और यह समस्त मानवजाति के पापों के वास्ते था कि वह पापबलि बन गया। यही वह मुख्य कार्य है, जो उसने संपन्न किया। अंततः, जो बाद में आए, उनका मार्गदर्शन करने के लिए उसने सलीब का मार्ग उपलब्ध कराया। जब यीशु आया, तब वह मुख्य रूप से छुटकारे का कार्य पूरा करने के लिए था। उसने समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाया, और स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार मनुष्य तक पहुँचाया, और, इसके अलावा, वह स्वर्ग के राज्य का मार्ग लाया। परिणामस्वरूप, जो लोग बाद में आए, उन सभी ने कहा, "हमें सलीब के मार्ग पर चलना चाहिए, और स्वयं को सलीब के लिए बलिदान कर देना चाहिए।" निस्संदेह, आरंभ में यीशु ने भी मनुष्य से पश्चात्ताप करवाने और पाप स्वीकार करवाने के लिए कुछ अन्य कार्य भी किए और कुछ वचन भी कहे। किंतु फिर भी उसकी सेवकाई सलीब पर चढ़ने की ही थी, और उसने साढ़े तीन वर्ष जो मार्ग का उपदेश देने में खर्च

किए, वे बाद में सलीब पर चढ़ने की तैयारी के लिए ही थे। यीशु ने जो कई बार प्रार्थनाएँ कीं, वे भी सूली पर चढ़ने के वास्ते ही थीं। उसने जो पृथ्वी पर सामान्य मनुष्य का जीवन बिताया और साढ़े तेंतीस वर्ष जो वह जीया, वह मुख्य रूप से सलीब पर चढ़ने का कार्य पूरा करने के लिए था; वह इस कार्य को करने हेतु उसे शक्ति प्रदान करने के लिए था, जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर ने उसे सलीब पर चढ़ने का कार्य सौंपा। आज देहधारी परमेश्वर कौन-सा कार्य संपन्न करेगा? आज परमेश्वर मुख्य रूप से "वचन के देह में प्रकट होने" का कार्य पूरा करने, मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए वचन का उपयोग करने, और मनुष्य से वचन के व्यवहार और शुद्धिकरण को स्वीकार करवाने के लिए देह बना है। अपने वचनों से वह तुम्हें पोषण और जीवन प्राप्त करवाने का कारण बनता है; उसके वचनों में तुम उसके कार्य और कर्मों को देखते हो। परमेश्वर तुम्हें ताड़ना देने और शुद्ध करने के लिए वचन का उपयोग करता है, और इस प्रकार यदि तुम्हें कठिनाई सहनी पड़ती है, तो वह भी परमेश्वर के वचन के कारण है। आज परमेश्वर तथ्यों के साथ नहीं, बल्कि वचनों के साथ कार्य करता है। केवल जब उसके वचन तुम पर आ जाएँ, तभी पवित्र आत्मा तुम्हारे भीतर कार्य कर सकता है, और तुम्हें पीड़ा भुगतने या मिठास का अनुभव करने का कारण बन सकता है। केवल परमेश्वर का वचन ही तुम्हें वास्तविकता में ला सकता है, और केवल परमेश्वर का वचन ही तुम्हें पूर्ण बनाने में सक्षम है। और इसलिए, तुम्हें कम से कम यह समझना चाहिए : अंत के दिनों में परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य मुख्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण बनाने और मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए अपने वचन का उपयोग करना है। जो कुछ भी कार्य वह करता है, वह सब वचन के द्वारा किया जाता है; तुम्हें ताड़ना देने के लिए वह तथ्यों का उपयोग नहीं करता। ऐसे अवसर आते हैं, जब कुछ लोग परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं। परमेश्वर भारी असुविधा उत्पन्न नहीं करता, तुम्हारी देह को ताड़ना नहीं दी जाती, न ही तुम कठिनाइयाँ सहते हो—किंतु जैसे ही उसका वचन तुम पर आता है और तुम्हें शुद्ध करता है, तो यह तुम्हारे लिए असहनीय होता है। क्या ऐसा नहीं है? सेवाकर्मियों के समय के दौरान परमेश्वर ने मनुष्य को अतल गड्ढे में डालने के लिए कहा था। क्या मनुष्य वास्तव में अतल गड्ढे में पहुँच गया? मनुष्य को शुद्ध करने हेतु वचनों के उपयोग के माध्यम से ही मनुष्य ने अतल गड्ढे में प्रवेश कर लिया। और इसलिए, अंत के दिनों में जब परमेश्वर देहधारी होता है, तो सब-कुछ संपन्न और स्पष्ट करने के लिए वह मुख्य रूप से वचन का उपयोग करता है। केवल उसके वचनों में ही तुम देख सकते हो कि वह क्या है; केवल उसके वचनों में ही तुम देख सकते हो कि वह स्वयं परमेश्वर है। जब देहधारी परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो वह

वचन बोलने के अलावा कोई अन्य कार्य नहीं करता—इसलिए तथ्यों की कोई आवश्यकता नहीं है; वचन पर्याप्त हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह मुख्य रूप से इसी कार्य को करने के लिए आया है, ताकि मनुष्य को अपने वचनों का सामर्थ्य और सर्वोच्चता देखने दे, ताकि मनुष्य को यह देखने दे कि वह कैसे विनम्रतापूर्वक अपने आपको अपने वचनों में छिपाता है, और ताकि मनुष्य को अपने वचनों से अपनी समग्रता जानने दे। उसका समस्त स्वरूप उसके वचनों में है, उसकी बुद्धि और चमत्कारिकता उसके वचनों में है। इसमें तुम्हें वे कई तरीके दिखाए जाते हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर अपने वचन बोलता है। इस संपूर्ण समय के दौरान परमेश्वर का अधिकांश कार्य मनुष्य को पोषण देना, प्रकाशन देना और व्यवहार करना रहा है। वह मनुष्य को बिना विचारे शाप नहीं देता, और जब वह शाप देता भी है, तो वचन के द्वारा उन्हें शाप देता है। और इसलिए, परमेश्वर के देहधारी होने के इस युग में, परमेश्वर को पुनः बीमारों की चंगाई करते और दुष्टात्माओं को निकालते हुए देखने का प्रयास न करो, और लगातार संकेतों को देखने का प्रयास बंद कर दो—इसका कोई मतलब नहीं है! वे संकेत मनुष्य को पूर्ण नहीं बना सकते! स्पष्ट रूप से कहूँ तो : आज देह वाला वास्तविक स्वयं परमेश्वर कुछ करता नहीं, केवल बोलता है। यही सत्य है! वह तुम्हें पूर्ण बनाने के लिए वचनों का उपयोग करता है, और तुम्हें भोजन और पानी देने के लिए वचनों का उपयोग करता है। वह कार्य करने के लिए भी वचनों का उपयोग करता है, और वह तुम्हें अपनी वास्तविकता का ज्ञान कराने के लिए तथ्यों के स्थान पर अपने वचनों का उपयोग करता है। यदि तुम परमेश्वर के कार्य के इस तरीके को समझने में सक्षम हो, तो नकारात्मक बने रहना कठिन है। नकारात्मक बातों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय तुम्हें केवल उन बातों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो सकारात्मक हैं—अर्थात्, इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर के वचन पूरे होते हैं या नहीं, या तथ्यों का आगमन होता है या नहीं, परमेश्वर अपने वचनों से मनुष्य को जीवन प्राप्त करवाता है, और यह सभी संकेतों में से महानतम संकेत है; और इतना ही नहीं, यह एक अविवादित तथ्य है। यह सर्वोत्तम प्रमाण है, जिसके माध्यम से परमेश्वर को जानना है, और यह संकेतों से भी बड़ा संकेत है। केवल ये वचन ही मनुष्य को पूर्ण बना सकते हैं।

जैसे ही राज्य का युग आरंभ हुआ, परमेश्वर ने अपने वचन जारी करने आरंभ कर दिए। भविष्य में ये वचन उत्तरोत्तर पूरे होते जाएँगे, और उस समय, मनुष्य जीवन में बढ़ेगा। मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव को प्रकट करने के लिए परमेश्वर द्वारा वचन का उपयोग अधिक वास्तविक और अधिक आवश्यक है, और मनुष्य के

विश्वास को पूर्ण बनाने के उद्देश्य से वह अपना कार्य करने के लिए वचन के अलावा किसी चीज का उपयोग नहीं करता, क्योंकि आज वचन का युग है, और इसे मनुष्य के विश्वास, संकल्प और सहयोग की आवश्यकता है। अंत के दिनों के देहधारी परमेश्वर का कार्य मनुष्य की सेवा और भरण-पोषण करने के लिए अपने वचन का उपयोग करना है। केवल जब देहधारी परमेश्वर अपने वचनों को बोलने का कार्य समाप्त कर लेगा, तभी वे पूरे होने शुरू होंगे। उसके बोलने के दौरान उसके वचन पूरे नहीं होंगे, क्योंकि जब वह देह के चरण में है, तो उसके वचन पूरे नहीं हो सकते। ऐसा इसलिए है, ताकि मनुष्य देख सके कि परमेश्वर देह है, और पवित्रात्मा नहीं, ताकि मनुष्य अपनी आँखों से परमेश्वर की वास्तविकता देख सके। जिस दिन उसका कार्य पूरा हो जाएगा, जब उसके द्वारा पृथ्वी पर जो शब्द कहे जाने चाहिए, वे कह दिए जाएँगे, तब उसके वचन पूरे होने आरंभ हो जाएँगे। अभी परमेश्वर के वचनों के पूरा होने का युग नहीं है, क्योंकि उसने अभी अपने वचन बोलना समाप्त नहीं किया है। इसलिए, जब तुम देखते हो कि परमेश्वर पृथ्वी पर अभी भी अपने वचन बोल रहा है, तो उसके वचनों के पूरे होने की प्रतीक्षा मत करो; जब परमेश्वर अपने वचन बोलना बंद कर देगा, और जब पृथ्वी पर उसका कार्य पूरा हो जाएगा, तभी उसके वचन पूरे होने शुरू होंगे। पृथ्वी पर वह जो वचन बोलता है, उनमें एक लिहाज से जीवन का पोषण है, और दूसरे लिहाज से भविष्यवाणी—उन चीजों की भविष्यवाणी, जो अभी आनी हैं, उन चीजों की भविष्यवाणी, जो की जाएँगी, और उन चीजों की भविष्यवाणी, जिन्हें अभी संपन्न किया जाना है। यीशु के वचनों में भी भविष्यवाणी थी। एक लिहाज से उसने जीवन का भरण-पोषण किया, और दूसरे लिहाज से उसने भविष्यवाणी कीं। आज वचनों और तथ्यों को साथ-साथ पूरा करने की बात नहीं है, क्योंकि जो मनुष्य द्वारा अपनी आँखों से देखा जा सकता है और जो परमेश्वर के द्वारा किया जाता है, उसके बीच बहुत बड़ा अंतर है। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि एक बार जब परमेश्वर का कार्य पूरा हो जाएगा, तो उसके वचन पूरे जाएँगे, और तथ्य वचनों के बाद आएँगे। अंत के दिनों के दौरान देहधारी परमेश्वर पृथ्वी पर वचन की सेवकाई करता है, और वचन की सेवकाई करने में वह केवल वचन बोलता है और अन्य बातों की परवाह नहीं करता। एक बार जब परमेश्वर का कार्य बदल जाएगा, तो उसके वचन पूरे होने शुरू हो जाएँगे। आज वचन पहले तुम्हें पूर्ण बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं; जब वह समस्त ब्रह्मांड में महिमा प्राप्त कर लेगा, उसका कार्य पूरा हो जाएगा, वे सभी वचन जो बोले जाने चाहिए, बोले जा चुके होंगे, और सभी वचन तथ्य बन चुके होंगे। अंत के दिनों में परमेश्वर पृथ्वी पर वचन की सेवकाई करने के लिए आया है, ताकि

मानवजाति उसे जान सके, और ताकि मानवजाति देख सके कि परमेश्वर क्या है, और उसके वचनों से उसकी बुद्धि और उसके सभी अद्भुत कर्म देख सके। राज्य के युग के दौरान परमेश्वर समस्त मानवजाति को जीतने के लिए मुख्य रूप से वचन का उपयोग करता है। भविष्य में उसके वचन हर धर्म, क्षेत्र, देश और संप्रदाय पर भी आएँगे; परमेश्वर वचनों का उपयोग जीतने के लिए और सभी मनुष्यों को यह दिखाने के लिए करता है कि उसके वचन अधिकार और शक्ति वहन करते हैं—और इसलिए आज तुम केवल परमेश्वर के वचन का सामना करते हो।

परमेश्वर द्वारा इस युग में बोले गए वचन, व्यवस्था के युग के दौरान बोले गए वचनों से भिन्न हैं, और इसलिए, वे अनुग्रह के युग के दौरान बोले गए वचनों से भी भिन्न हैं। अनुग्रह के युग में परमेश्वर ने वचन का कार्य नहीं किया, बल्कि केवल यह वर्णन किया कि समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाने के लिए वह सलीब पर चढ़ाया जाएगा। बाइबल में केवल यह वर्णन किया गया है कि यीशु को सलीब पर क्यों चढ़ाया जाना था, और सलीब पर उसने कौन-कौन सी तकलीफें सहीं, और कैसे मनुष्य को परमेश्वर के लिए सलीब पर चढ़ना चाहिए। उस युग के दौरान परमेश्वर द्वारा किया गया समस्त कार्य सलीब पर चढ़ने के आसपास केंद्रित था। राज्य के युग के दौरान देहधारी परमेश्वर उन सभी लोगों को जीतने के लिए वचन बोलता है, जो उस पर विश्वास करते हैं। यह "वचन का देह में प्रकट होना" है; परमेश्वर अंत के दिनों में इस कार्य को करने के लिए आया है, अर्थात् वह वचन के देह में प्रकट होने के वास्तविक अर्थ को संपन्न करने के लिए आया है। वह केवल वचन बोलता है, और तथ्यों का आगमन शायद ही कभी होता है। वचन के देह में प्रकट होने का यही मूल सार है, और जब देहधारी परमेश्वर अपने वचन बोलता है, तो यही वचन का देह में प्रकट होना और वचन का देह में आना है। "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था, और वचन देह बन गया।" यह (वचन के देह में प्रकट होने का कार्य) वह कार्य है, जिसे परमेश्वर अंत के दिनों में संपन्न करेगा, और यह उसकी संपूर्ण प्रबंधन योजना का अंतिम अध्याय है, और इसलिए परमेश्वर को पृथ्वी पर आना है और अपने वचनों को देह में प्रकट करना है। वह जो आज किया जाता है, वह जिसे भविष्य में किया जाएगा, वह जिसे परमेश्वर द्वारा संपन्न किया जाएगा, मनुष्य का अंतिम गंतव्य, वे जिन्हें बचाया जाएगा, वे जिन्हें नष्ट किया जाएगा, आदि-आदि—यह समस्त कार्य, जिसे अंत में हासिल किया जाना चाहिए, सब स्पष्ट रूप से कहा गया है, और यह सब वचन के देह में प्रकट होने के वास्तविक अर्थ को संपन्न करने के लिए है। प्रशासनिक आदेश और संविधान, जिन्हें पहले जारी किया गया

था, वे जिन्हें नष्ट किया जाएगा, वे जो विश्राम में प्रवेश करेंगे—ये सभी वचन पूरे होने चाहिए। यही वह कार्य है, जिसे देहधारी परमेश्वर द्वारा अंत के दिनों में मुख्य रूप से संपन्न किया जाता है। वह लोगों को समझवाता है कि परमेश्वर द्वारा पूर्व-नियत लोग कहाँ के हैं और जो परमेश्वर द्वारा पूर्व-नियत नहीं हैं वे कहाँ के हैं, उसके लोगों और पुत्रों का वर्गीकरण कैसे किया जाएगा, इस्राएल का क्या होगा, मिस्र का क्या होगा—भविष्य में, इन वचनों में से प्रत्येक वचन संपन्न होगा। परमेश्वर के कार्य की गति तेज हो रही है। परमेश्वर मनुष्यों पर यह प्रकट करने के लिए वचनों को साधन के रूप में उपयोग करता है कि हर युग में क्या किया जाना है, अंत के दिनों में देहधारी परमेश्वर द्वारा क्या किया जाना है, और उसकी सेवकाई, जो की जानी है, और ये सब वचन, वचन के देह में प्रकट होने के वास्तविक अर्थ को संपन्न करने के उद्देश्य से हैं।

मैंने पहले कहा है कि "वे सब, जो संकेत और चमत्कार देखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, त्याग दिए जाएँगे; ये वे लोग नहीं हैं, जो पूर्ण बनाए जाएँगे।" मैंने बहुत-से वचन कहे हैं, फिर भी मनुष्य को इस कार्य का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है, और इस बिंदु तक आकर, लोग अभी भी संकेतों और चमत्कारों के बारे में पूछते हैं। क्या परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास संकेतों और चमत्कारों की खोज से अधिक कुछ नहीं, या यह जीवन प्राप्त करने के उद्देश्य से है? यीशु ने भी बहुत-से वचन कहे थे और उनमें से कुछ अभी भी पूरे होने शेष हैं। क्या तुम कह सकते हो कि यीशु परमेश्वर नहीं है? परमेश्वर ने गवाही दी कि वह मसीहा और परमेश्वर का प्यारा पुत्र है। क्या तुम इस बात से इनकार कर सकते हो? आज परमेश्वर केवल वचन कहता है, और यदि तुम इसे पूरी तरह से नहीं जानते, तो तुम अडिग नहीं रह सकते। तुम उसमें इसलिए विश्वास करते हो क्योंकि वह परमेश्वर है, या फिर तुम उसमें इस आधार पर विश्वास करते हो कि उसके वचन पूरे होते हैं या नहीं? क्या तुम संकेतों और चमत्कारों पर विश्वास करते हो, या तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो? आज वह संकेत और चमत्कार नहीं दिखाता—क्या वह वास्तव में परमेश्वर है? यदि उसके द्वारा कहे गए वचन पूरे नहीं होते, तो क्या वह वास्तव में परमेश्वर है? क्या परमेश्वर का सार इस बात से निश्चित होता है कि उसके द्वारा कहे गए वचन पूरे होते हैं या नहीं? ऐसा क्यों है कि कुछ लोग परमेश्वर में विश्वास करने से पहले सदैव उसके द्वारा कहे गए वचनों के पूरे होने की प्रतीक्षा करते हैं? क्या इसका अर्थ यह नहीं कि वे परमेश्वर को नहीं जानते? ऐसी धारणाएँ रखने वाले लोग परमेश्वर को नकारते हैं। वे परमेश्वर को मापने के लिए धारणाओं का उपयोग करते हैं; यदि परमेश्वर के वचन पूरे हो जाते हैं तो वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, और यदि वचन पूरे नहीं होते तो वे उसमें विश्वास नहीं करते; और वे सदैव संकेतों और चमत्कारों की

खोज करते रहते हैं। क्या ये लोग आधुनिक युग के फरीसी नहीं हैं? तुम अडिग रहने में समर्थ हो या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम वास्तविक परमेश्वर को जानते हो या नहीं—यह महत्वपूर्ण है! परमेश्वर के वचनों की जितनी अधिक वास्तविकता तुममें होगी, परमेश्वर की वास्तविकता का तुम्हारा ज्ञान उतना ही अधिक होगा, और परीक्षणों के दौरान उतना ही अधिक अडिग रहने में तुम समर्थ होगे। जितना अधिक तुम संकेत और चमत्कार देखने पर ध्यान दोगे, उतना ही कम तुम अडिग रहने में समर्थ होगे और परीक्षणों के बीच गिर जाओगे। संकेत और चमत्कार बुनियाद नहीं हैं; केवल परमेश्वर की वास्तविकता ही जीवन है। कुछ लोग उन प्रभावों को नहीं जानते, जो परमेश्वर के कार्य के द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। वे परमेश्वर के कार्य के ज्ञान की खोज न करते हुए भ्रांति में अपने दिन व्यतीत करते हैं। उनकी खोज का उद्देश्य सदैव परमेश्वर से केवल अपनी इच्छाएँ पूरी करवाना होता है, और केवल तभी वे अपने विश्वास में गंभीर होते हैं। वे कहते हैं कि यदि परमेश्वर के वचन पूरे होंगे, तो वे जीवन की खोज करेंगे, किंतु यदि उसके वचन पूरे नहीं होते, तब उनके द्वारा जीवन की खोज किए जाने की कोई संभावना नहीं है। मनुष्य सोचता है कि परमेश्वर पर विश्वास करने का अर्थ संकेत और चमत्कार देखने और स्वर्ग तथा तीसरे स्वर्ग तक आरोहण करने की कोशिश करना है। उनमें से कोई यह नहीं कहता कि परमेश्वर पर उसका विश्वास वास्तविकता में प्रवेश करने की खोज करना, जीवन की खोज करना, और परमेश्वर द्वारा जीते जाने की खोज करना है। ऐसी खोज का क्या मूल्य है? वे लोग, जो परमेश्वर के ज्ञान और उसकी संतुष्टि की खोज नहीं करते, वे लोग हैं जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते, और जो ईशनिंदा करते हैं!

क्या अब तुम लोग समझते हो कि परमेश्वर पर विश्वास करना क्या होता है? क्या संकेत और चमत्कार देखना परमेश्वर पर विश्वास करना है? क्या इसका अर्थ स्वर्ग पर आरोहण करना है? परमेश्वर पर विश्वास ज़रा भी आसान नहीं है। उन धार्मिक अभ्यासों को निकाल दिया जाना चाहिए; रोगियों की चंगाई और दुष्टात्माओं को निकालने का अनुसरण करना, प्रतीकों और चमत्कारों पर ध्यान केंद्रित करना और परमेश्वर के अनुग्रह, शांति और आनंद का अधिक लालच करना, देह के लिए संभावनाओं और आराम की तलाश करना—ये धार्मिक अभ्यास हैं, और ऐसे धार्मिक अभ्यास एक अस्पष्ट प्रकार का विश्वास हैं। आज परमेश्वर में वास्तविक विश्वास क्या है? यह परमेश्वर के वचन को अपने जीवन की वास्तविकता के रूप में स्वीकार करना, और परमेश्वर का सच्चा प्यार प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के वचन से परमेश्वर को जानना है। स्पष्ट कहूँ तो : परमेश्वर में विश्वास इसलिए है, ताकि तुम परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सको, उससे प्रेम कर

सको, और वह कर्तव्य निभा सको, जिसे परमेश्वर के एक प्राणी द्वारा निभाया जाना चाहिए। यही परमेश्वर पर विश्वास करने का लक्ष्य है। तुम्हें परमेश्वर की मनोहरता का और इस बात का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि परमेश्वर कितने आदर के योग्य है, कैसे अपने द्वारा सृजित प्राणियों में परमेश्वर उद्धार का कार्य करता है और उन्हें पूर्ण बनाता है—ये परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास की एकदम अनिवार्य चीज़ें हैं। परमेश्वर पर विश्वास मुख्यतः देह-उन्मुख जीवन से परमेश्वर से प्रेम करने वाले जीवन में बदलना है; भ्रष्टता के भीतर जीने से परमेश्वर के वचनों के जीवन के भीतर जीना है; यह शैतान के अधिकार-क्षेत्र से बाहर आना और परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा में जीना है; यह देह की आज्ञाकारिता को नहीं, बल्कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता को प्राप्त करने में समर्थ होना है; यह परमेश्वर को तुम्हारा संपूर्ण हृदय प्राप्त करने और तुम्हें पूर्ण बनाने देना है, और तुम्हें भ्रष्ट शैतानी स्वभाव से मुक्त करने देना है। परमेश्वर में विश्वास मुख्यतः इसलिए है, ताकि परमेश्वर का सामर्थ्य और महिमा तुममें प्रकट हो सके, ताकि तुम परमेश्वर की इच्छा पर चल सको, और परमेश्वर की योजना संपन्न कर सको, और शैतान के सामने परमेश्वर की गवाही दे सको। परमेश्वर पर विश्वास संकेत और चमत्कार देखने की इच्छा के इर्द-गिर्द नहीं घूमना चाहिए, न ही यह तुम्हारी व्यक्तिगत देह के वास्ते होना चाहिए। यह परमेश्वर को जानने की कोशिश के लिए, और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने, और पतरस के समान मृत्यु तक परमेश्वर का आज्ञापालन करने में सक्षम होने के लिए, होना चाहिए। यही परमेश्वर में विश्वास करने के मुख्य उद्देश्य हैं। व्यक्ति परमेश्वर के वचन को परमेश्वर को जानने और उसे संतुष्ट करने के उद्देश्य से खाता और पीता है। परमेश्वर के वचन को खाना और पीना तुम्हें परमेश्वर का और अधिक ज्ञान देता है, जिसके बाद ही तुम उसका आज्ञा-पालन कर सकते हो। केवल परमेश्वर के ज्ञान के साथ ही तुम उससे प्रेम कर सकते हो, और यह वह लक्ष्य है, जिसे मनुष्य को परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में रखना चाहिए। यदि परमेश्वर पर अपने विश्वास में तुम सदैव संकेत और चमत्कार देखने का प्रयास कर रहे हो, तो परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास का यह दृष्टिकोण गलत है। परमेश्वर पर विश्वास मुख्य रूप से परमेश्वर के वचन को जीवन की वास्तविकता के रूप में स्वीकार करना है। परमेश्वर का उद्देश्य उसके मुख से निकले वचनों को अभ्यास में लाने और उन्हें अपने भीतर पूरा करने से हासिल किया जाता है। परमेश्वर पर विश्वास करने में मनुष्य को परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने, परमेश्वर के प्रति समर्पण करने में समर्थ होने, और परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के लिए प्रयास करना चाहिए। यदि तुम बिना शिकायत किए परमेश्वर का आज्ञापालन कर सकते हो, परमेश्वर की इच्छाओं के प्रति विचारशील हो सकते हो,

पतरस का आध्यात्मिक कद प्राप्त कर सकते हो, और परमेश्वर द्वारा कही गई पतरस की शैली ग्रहण कर सकते हो, तो यह तब होगा जब तुम परमेश्वर पर विश्वास में सफलता प्राप्त कर चुके होगे, और यह इस बात का द्योतक होगा कि तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिए गए हो।

परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड में अपना कार्य करता है। वे सब, जो उस पर विश्वास करते हैं, उन्हें उसके वचनों को स्वीकार करना, और उसके वचनों को खाना और पीना चाहिए; परमेश्वर द्वारा दिखाए गए संकेतों और चमत्कारों को देखकर कोई भी व्यक्ति परमेश्वर द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। युगों-युगों में परमेश्वर ने मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए सदैव वचन का उपयोग किया है। इसलिए तुम लोगों को अपना समस्त ध्यान संकेतों और चमत्कारों पर नहीं लगाना चाहिए, बल्कि परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए प्रयास करना चाहिए। पुराने विधान के व्यवस्था के युग में परमेश्वर ने कुछ वचन कहे, और अनुग्रह के युग में यीशु ने भी बहुत-से वचन कहे। यीशु द्वारा बहुत-से वचन कहे जाने के बाद, बाद के प्रेरितों और शिष्यों ने लोगों को यीशु द्वारा जारी की गई आज्ञाओं के अनुसार अभ्यास करने में अगुआई की, और यीशु द्वारा कहे गए वचनों और सिद्धांतों के अनुसार अनुभव किया। अंत के दिनों में परमेश्वर वचन का उपयोग मुख्यत: मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए करता है। वह मनुष्य का दमन करने या उन्हें कायल करने के लिए संकेतों और चमत्कारों का उपयोग नहीं करता; यह परमेश्वर के सामर्थ्य को स्पष्ट नहीं कर सकता। यदि परमेश्वर केवल संकेत और चमत्कार दिखाता, तो परमेश्वर की वास्तविकता स्पष्ट करना असंभव होता, और इस तरह मनुष्य को पूर्ण बनाना भी असंभव होता। परमेश्वर संकेतों और चमत्कारों से मनुष्य को पूर्ण नहीं बनाता, अपितु उसे सींचने और उसकी चरवाही करने के लिए वचन का उपयोग करता है, जिसके बाद मनुष्य की पूर्ण आज्ञाकारिता हासिल होती है और मनुष्य को परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है। यही उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य और बोले जाने वाले वचनों का उद्देश्य है। परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए संकेत एवं चमत्कार दिखाने की विधि का उपयोग नहीं करता—वह मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए वचनों और कार्य की कई भिन्न विधियों का उपयोग करता है। चाहे वह शुद्धिकरण, व्यवहार, काँट-छाँट या वचनों का पोषण हो, मनुष्य को पूर्ण बनाने और उसे परमेश्वर के कार्य, उसकी बुद्धि और चमत्कारिकता का और अधिक ज्ञान देने के लिए परमेश्वर कई भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्यों से बोलता है। अंत के दिनों में परमेश्वर द्वारा युग का समापन करने के समय जब मनुष्य को पूर्ण बना दिया जाएगा, तब वह संकेत और चमत्कार देखने योग्य हो जाएगा। जब तुम परमेश्वर को जान लेते हो और इस बात की परवाह किए बिना कि वह क्या करता है,

उसका आज्ञापालन करने में सक्षम हो जाते हो, तब संकेत और चमत्कार देखकर तुम परमेश्वर के बारे में कोई धारणा नहीं बनाते। इस समय तुम भ्रष्ट हो और परमेश्वर की पूर्ण आज्ञाकारिता में अक्षम हो—तुम क्या अपने को संकेत और चमत्कार देखने योग्य समझते हो? जब परमेश्वर संकेत और चमत्कार दिखाता है, तो यह तब होता है, जब वह मनुष्य को दंड देता है, और तब भी, जब युग बदलता है, और इसके अलावा, जब युग का समापन होता है। जब परमेश्वर का कार्य सामान्य रूप से किया जा रहा हो, तो वह संकेत और चमत्कार नहीं दिखाता। संकेत और चमत्कार दिखाना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल है, किंतु वह परमेश्वर के कार्य का सिद्धांत नहीं है, न ही वह परमेश्वर के मनुष्यों के प्रबंधन का लक्ष्य है। यदि मनुष्य संकेत और चमत्कार देखता, और यदि परमेश्वर की आत्मिक देह को मनुष्य पर प्रकट होना होता, तो क्या सभी लोग परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते? मैं पहले कह चुका हूँ कि पूर्व से विजेताओं का एक समूह प्राप्त किया जा रहा है, ऐसे विजेताओं का, जो भारी क्लेश के बीच से आते हैं। इन वचनों का क्या अर्थ है? इनका अर्थ है कि केवल इन प्राप्त किए गए लोगों ने ही न्याय और ताड़ना, और व्यवहार और काँट-छाँट, और सभी प्रकार के शुद्धिकरण से गुजरने के बाद वास्तव में आज्ञापालन किया। इन लोगों का विश्वास अस्पष्ट और अमूर्त नहीं, बल्कि वास्तविक है। उन्होंने कोई संकेत और चमत्कार, या अचंभे नहीं देखे हैं; वे गूढ़ शाब्दिक अर्थों और सिद्धांतों या गहन अंर्तदृष्टियों की बात नहीं करते; इसके बजाय उनके पास वास्तविकता और परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की वास्तविकता का सच्चा ज्ञान है। क्या ऐसा समूह परमेश्वर के सामर्थ्य को स्पष्ट करने में अधिक सक्षम नहीं है? अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर का कार्य वास्तविक कार्य है। यीशु के युग के दौरान, वह मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए नहीं, बल्कि छुटकारा दिलाने के लिए आया, और इसलिए उसने लोगों से अपना अनुसरण करवाने के लिए कुछ चमत्कार प्रदर्शित किए। क्योंकि वह मुख्य रूप से सलीब पर चढ़ने का कार्य पूरा करने आया था, और संकेत दिखाना उसकी सेवकाई का हिस्सा नहीं था। इस प्रकार के संकेत और चमत्कार ऐसे कार्य थे, जो उसके कार्य को कारगर बनाने के लिए किए गए थे; वे अतिरिक्त कार्य थे, और संपूर्ण युग के कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। पुराने विधान के व्यवस्था के युग के दौरान भी परमेश्वर ने कुछ संकेत और चमत्कार दिखाए—किंतु आज परमेश्वर जो कार्य करता है, वह वास्तविक कार्य है, और वह अब निश्चित रूप से संकेत और चमत्कार नहीं दिखाएगा। यदि उसने संकेत और चमत्कार दिखाए, तो उसका वास्तविक कार्य अस्तव्यस्त हो जाएगा, और वह कोई और कार्य करने में असमर्थ होगा। यदि परमेश्वर ने मनुष्य को पूर्ण करने हेतु वचन का उपयोग करने के लिए कहा, किंतु

संकेत और चमत्कार भी दिखाए, तब क्या यह स्पष्ट किया जा सकता है कि मनुष्य वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करता है या नहीं? इसलिए परमेश्वर इस तरह की चीजें नहीं करता। मनुष्य के भीतर धर्म की अतिशय बातें हैं; अंत के दिनों में परमेश्वर मनुष्य के भीतर से सभी धार्मिक धारणाओं और अलौकिक बातों को बाहर निकालने और मनुष्य को परमेश्वर की वास्तविकता का ज्ञान कराने के लिए आया है। वह एक ऐसे परमेश्वर की छवि दूर करने आया है, जो अमूर्त और काल्पनिक है—दूसरे शब्दों में, एक ऐसे परमेश्वर की छवि, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। और इसलिए, अब तुम्हारे लिए जो एकमात्र बहुमूल्य चीज़ है, वह है वास्तविकता का ज्ञान होना! सत्य सभी चीज़ों पर प्रबल है। आज तुम्हारे पास कितना सत्य है? क्या वे सब, जो संकेत और चमत्कार दिखाते हैं, परमेश्वर हैं? दुष्टात्माएँ भी संकेत और चमत्कार दिखा सकते हैं; तो क्या वे सब परमेश्वर हैं? परमेश्वर पर अपने विश्वास में मनुष्य जिस चीज की खोज करता है, वह सत्य है, और वह जिसका अनुसरण करता है, वह संकेतों और चमत्कारों के बजाय, जीवन है। जो लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, उन सबका यही लक्ष्य होना चाहिए।

जो परमेश्वर से सचमुच प्यार करते हैं, वे वो लोग हैं जो परमेश्वर की व्यावहारिकता के प्रति पूर्णतः समर्पित हो सकते हैं

व्यावहारिकता का ज्ञान प्राप्त होना और परमेश्वर के कार्य को स्पष्ट रूप से देखने में सक्षम हो जाना—ये दोनो सब उसके वचनों में दिखाई देते हैं, और केवल परमेश्वर के कथनों के माध्यम से ही तुम प्रबुद्धता को प्राप्त कर सकते हो। इसलिए तुम्हें परमेश्वर के वचनों से लैस होने के लिए और अधिक प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर के वचनों की अपनी समझ को संगति में प्रचारित करें, और इस तरह, तुम दूसरों को प्रबुद्ध कर सकते हो और उनको कोई उपाय बता सकते हो—यह एक व्यावहारिक मार्ग है। इससे पहले कि परमेश्वर तुम्हारे लिए एक परिवेश बनाये, तुम लोगों में से हर एक को पहले उसके वचनों से लैस हो जाना चाहिये। यह एक ऐसी चीज़ है जो हर किसी को करनी चाहिए; यह एक अत्यावश्यक प्राथमिकता है। पहले एक ऐसे बिंदु पर पहुँचो जहाँ तुम्हे पता हो कि परमेश्वर के वचनों को कैसे खाया और पिया जाए। जिस चीज़ को करने में तुम असमर्थ हो उसके लिए उसके वचनों से अभ्यास का मार्ग तलाशो, और उसके वचनों में अपनी समझ में न आने वाले मुद्दों या अपनी कठिनाइयों का हल खोजो। परमेश्वर के वचनों को अपनी आपूर्ति बनाओ, और उन्हें अपनी व्यावहारिक कठिनाइयों और समस्याओं को सुलझाने में अपनी

सहायता करने दो, साथ ही उसके वचनों को जीवन में अपना सहायक बनने दो। इन चीज़ों के लिए तुम्हारी तरफ से प्रयास की आवश्यकता होगी। परमेश्वर के वचन को खाने और पीने से तुम्हें परिणाम प्राप्त होने चाहिए; तुम्हें उसके सामने अपने दिल को शांत करने में समर्थ होना चाहिए, और जब कभी भी तुम किन्हीं समस्याओं का सामना करो तब परमेश्वर के कथनों के अनुसार अभ्यास करना चाहिए। जब कोई समस्या तुम्हारे सामने न आए, तो तुम्हें बस उसके वचन को खाने और पीने की चिंता करनी चाहिए। कभी-कभी तुम प्रार्थना कर सकते हो और परमेश्वर के प्यार के बारे में चिंतन कर सकते हो, उसके वचनों की अपनी समझ को संगति में साझा कर सकते हो, और उस प्रबुद्धता और रोशनी को जिसे तुम अपने अंदर अनुभव करते हो और उन प्रतिक्रियाओं को, जो तुम्हारे भीतर उन कथनों को पढ़ते समय होती है, संप्रेषित कर सकते हो। इसके अलावा, तुम लोगों को एकउपाय बता सकते हो। केवल यही व्यावहारिक है। ऐसा करने का लक्ष्य परमेश्वर के वचनों को तुम्हारी व्यावहारिक आपूर्ति बनने देना है।

एक दिन के दौरान, तुम परमेश्वर के सामने कितने घंटे बिताते हो जिसमें तुम वास्तव में उसके सामने होते हो? तुम्हारे दिन का कितना हिस्सा परमेश्वर को दिया जाता है? कितना देह को दिया जाता है? अपना हृदय हमेशा परमेश्वर की ओर मोड़े रखना परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने की ओर सही रास्ते पर पहला कदम है। अगर तुम अपना हृदय, शरीर और अपना समस्त वास्तविक प्यार परमेश्वर को समर्पित कर सकते हो, उसके प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी हो सकते हो, और उसकी इच्छा के प्रति पूर्णतः विचारशील हो सकते हो-देह के लिए नहीं, परिवार के लिए नहीं, और अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के परिवार के हित के लिए, परमेश्वर के वचन को हर चीज में सिद्धांत और नींव के रूप में ले सकते हो-तो ऐसा करने से तुम्हारे इरादे और दृष्टिकोण सब युक्तिसंगत होंगे, और तब तुम परमेश्वर के सामने ऐसे व्यक्ति होगे, जो उसकी प्रशंसा प्राप्त करता है। जिन लोगों को परमेश्वर पसंद करता है वे वो लोग हैं जो पूर्णतः उसकी ओर उन्मुख हैं; वे वो लोग हैं जो केवल उसके प्रति समर्पित हो सकते हैं। जिनसे परमेश्वर घृणा करता है वे वो लोग हैं जो आधे-अधूरे मन से उसकी ओर उन्मुख हैं, और जो उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं। वह उन लोगों से घृणा करता है जो उस पर विश्वास तो करते हैं और हमेशा उसका आनंद लेना चाहते हैं, लेकिन उसके लिए स्वयं को पूरी तरह से खपा नहीं सकते। वह उन से घृणा करता है जो कहते हैं कि वे उससे प्यार करते हैं, लेकिन अपने हृदय में उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं; वह उनसे घृणा करता है जो धोखा देने के लिए मनोहर और लच्छेदार वचनों का उपयोग करते हैं। जिन लोगों का परमेश्वर

के प्रति वास्तविक समर्पण या उसके प्रति सच्ची आज्ञाकारिता नहीं है, वे विश्वासघाती लोग हैं और वे प्रकृति से अत्यधिक अभिमानी हैं। जो लोग सामान्य, व्यावहारिक परमेश्वर के सामने वास्तव में आज्ञाकारी नहीं हो सकते, वे तो और भी अधिक अभिमानी हैं, और वे विशेष रूप से महादूत के कर्त्तव्यनिष्ठ वंशज हैं। जो लोग वास्तव में खुद को परमेश्वर के लिए खपाते हैं वे उसके सामने अपना पूरा अस्तित्व रख देते हैं; वे वास्तव में उसके सभी कथनों का पालन करते हैं, और उसके वचनों को अभ्यास में लाने में सक्षम होते हैं। वे परमेश्वर के वचनों को अपने अस्तित्व की नींव बनाते हैं, और परमेश्वर के वचनों में अभ्यास करने के हिस्सों को गंभीरता तलाश करने में सक्षम होते हैं। ऐसे लोग वास्तव में परमेश्वर के सामने रहते हैं। यदि तुम जो करते हो वह तुम्हारे जीवन के लिए लाभदायक है, और उसके वचनों को खाने और पीने के द्वारा, तुम अपनी आंतरिक आवश्यकताओं और कमियों को पूरा कर सकते हो ताकि तुम्हारा जीवन स्वभाव रूपान्तरित हो जाए, तो यह परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करेगा। यदि तुम परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करते हो, यदि तुम देह को संतुष्ट नहीं करते हो, बल्कि उसकी इच्छा को संतुष्ट करते हो, तो यह उसके वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करना है। जब तुम परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में अधिक यथार्थता से प्रवेश करने के बारे में बात करते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हो और परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हो। केवल इस प्रकार के व्यावहारिक कार्यों को ही उसके वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करना कहा जा सकता है। यदि तुम इस वास्तविकता में प्रवेश करने में सक्षम हो, तो तुममें सत्य होगा। यह वास्तविकता में प्रवेश करने की शुरुआत है; तुम्हें पहले यह प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए और केवल उसके बाद ही तुम गहरी वास्तविकताओं में प्रवेश कर पाओगे। विचार करो कि कैसे आज्ञाओं का पालन करें और परमेश्वर के सामने निष्ठावान बनें; हमेशा यह न सोचो कि कब तुम राज्य में प्रवेश कर पाओगे। यदि तुम्हारा स्वभाव नहीं बदलता है तो तुम जो भी सोचोगे वह बेकार होगा! परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करने के लिए पहले वह स्थिति प्राप्त करनी चाहिये, अपने सभी मत और विचार परमेश्वर के लिए हों—यह न्यूनतम आवश्यकता है।

कई लोग हैं, जो वर्तमान में परीक्षणों के बीच में हैं और वे परमेश्वर के कार्य को नहीं समझते, लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ : यदि तुम इसे नहीं समझते, तो बेहतर है कि तुम इसके बारे में आलोचनाएँ मत करो। संभवतः एक दिन आएगा, जब सत्य अपनी सम्पूर्णता में प्रकाश में आ जाएगा और तब तुम इसे समझ लोगे। आलोचनाएँ न करना तुम्हारे लिए लाभदायक होगा, लेकिन तुम मात्र निष्क्रिय रूप से प्रतीक्षा नहीं

कर सकते। तुम्हें सक्रिय रूप से प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए; केवल तभी तुम ऐसे व्यक्ति बन पाओगे जो वास्तव में प्रवेश करता है। अपनी विद्रोहशीलता के कारण, लोग हमेशा व्यावहारिक परमेश्वर के बारे में धारणाएँ विकसित कर रहे हैं। इसलिए सभी लोगों को यह सीखना आवश्यक हो जाता है कि आज्ञाकारी कैसे बनें, क्योंकि व्यावहारिक परमेश्वर मानवजाति के लिए एक बहुत बड़ा परिक्षण है। यदि तुम अडिग नहीं रह सकते, तो सब-कुछ खत्म हो जाता है; यदि तुम्हें व्यावहारिक परमेश्वर की व्यावहारिकता की समझ नहीं है, तो तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने में सक्षम नहीं होगे। लोगों को पूर्ण बनाया जा सकता है या नहीं, इसमें एक महत्वपूर्ण कदम है परमेश्वर की व्यावहारिकता को समझना। देहधारी परमेश्वर की व्यावहारिकता का पृथ्वी पर आना प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक परिक्षण है; यदि तुम इस पहलू में अडिग रहने में सक्षम हो तो तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर को जानता है, और तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जो उसे सच में प्यार करता है। यदि तुम इस पहलू में अडिग नहीं रह सकते, यदि तुम केवल पवित्रात्मा में विश्वास करते हो और तुम परमेश्वर की व्यावहारिकता पर विश्वास नहीं कर सकते, तो इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता है कि परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास कितना अधिक है, वह बेकार होगा। यदि तुम दृश्यमान परमेश्वर में विश्वास नहीं कर सकते, तो क्या तुम परमेश्वर के पवित्रात्मा में विश्वास कर सकते हो? क्या तुम परमेश्वर को बेवकूफ़ बनाने की कोशिश नहीं कर रहे? अगर तुम दृश्यमान और मूर्त परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी नहीं हो, तो क्या तुम पवित्रात्मा की आज्ञा का पालन करने में सक्षम हो? आत्मा अदृश्य और अमूर्त है, इसलिए जब तुम कहते हो कि तुम परमेश्वर के पवित्रात्मा की आज्ञा का पालन करते हो, तो क्या तुम सिर्फ निरर्थक बात नहीं कर रहे हो? आज्ञाओं का पालन करने की कुंजी व्यावहारिक परमेश्वर की समझ को पाना है। एक बार तुम्हें व्यावहारिक परमेश्वर की समझ प्राप्त हो जाए, तो तुम आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम हो जाओगे। उनका पालन करने के दो घटक हैं: एक है उसके पवित्रात्मा के सार को थामे रखना और पवित्रात्मा के सामने पवित्रात्मा की परीक्षा को स्वीकार करने में सक्षम होना; दूसरा है परमेश्वर द्वारा धारित देह की वास्तविक समझ प्राप्त करने में सक्षम होना और वास्तविक समर्पण प्राप्त करना। चाहे शरीर के सामने हो या पवित्रात्मा के सामने, परमेश्वर के प्रति हमेशा आज्ञाकारिता और श्रद्धा रखनी चाहिए। केवल इस तरह का व्यक्ति ही पूर्ण बनाए जाने के योग्य है। यदि तुम्हें व्यावहारिक परमेश्वर की व्यावहारिकता की समझ है, अर्थात् यदि तुम इस परीक्षा में अडिग रहे हो, तब तुम्हारे लिए कुछ भी बहुत अधिक नहीं होगा।

कुछ लोग कहते हैं, "आज्ञाओं का पालन करना आसान है; तुम्हें सिर्फ परमेश्वर के सामने स्पष्ट रूप से और श्रद्धापूर्वक बिना नाटकबाजी किए बोलने की आवश्यकता है, और यही आज्ञाओं का पालन करना है।" क्या यह सही है? तो अगर तुम परमेश्वर की पीठ पीछे कुछ काम करते हो, जो परमेश्वर का विरोध करती हैं—क्या उसे आज्ञाओं का पालनकरना माना जाता है? तुम लोगों को इस बात की पूरी समझ अवश्य होनी चाहिए कि आज्ञाओं का पालन करने में क्या शामिल है। यह इस बात के साथ संबंधित है कि क्या तुम्हें परमेश्वर की व्यावहारिकता की एक वास्तविक समझ है या नहीं; यदि तुम्हें व्यावहारिकता की समझ है, और इस परीक्षा के दौरान लड़खड़ाते और गिरते नहीं हो, तो तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में माना जा सकता है जिसके पास मज़बूत गवाही है। परमेश्वर के लिए एक ज़बर्दस्त गवाही देना मुख्य रूप से इस बात से संबंधित है कि तुम्हें व्यावहारिक परमेश्वर की समझ है या नहीं, और तुम इस व्यक्ति के सामने आज्ञापालन करने में सक्षम हो या नहीं जो कि न केवल साधारण है, बल्कि सामान्य है, और मृत्युपर्यंत भी उसका आज्ञापालन कर पाते हो या नहीं। यदि तुम इस आज्ञाकारिता के माध्यम से परमेश्वर के लिए वास्तव में गवाही देते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा चुके हो। अगर तुम मृत्यु तक समर्पण कर सकते हो, और उसके सामने शिकायतें नहीं करते, आलोचनाएँ नहीं करते, बदनामी नहीं करते, धारणाएँ नहीं रखते, और कोई गुप्त मंशा नहीं रखते, तो इस तरह परमेश्वर को महिमा मिलेगी। किसी नियमित व्यक्ति जिसे मनुष्य द्वारा तुच्छ समझा जाता है, के सम्मुख समर्पण और किसी भी धारणा के बिना मृत्यु तक समर्पण करने में सक्षम होना—यह सच्ची गवाही है। परमेश्वर जिस वास्तविकता में प्रवेश की लोगों से अपेक्षा करता है वह यह है कि तुम उसके वचनों का पालन करने में सक्षम हो जाओ, उसके वचनों को अभ्यास में लाने में सक्षम हो जाओ, व्यावहारिक परमेश्वर के सामने झुकने और अपने स्वयं के भ्रष्टाचार को जानने में सक्षम हो जाओ, उसके सामने अपना हृदय खोलने में सक्षम हो जाओ, और अंत में उसके इन वचनों के माध्यम से उसके द्वारा प्राप्त कर लिए जाओ। जब ये वचन तुम्हें जीत लेते हैं और तुम्हें पूरी तरह उसके प्रति आज्ञाकारी बना देते हैं तो परमेश्वर को महिमा प्राप्त होती है; इसके माध्यम से वह शैतान को लज्जित करता है और अपने कार्य को पूरा करता है। जब तुम्हारी देहधारी परमेश्वर की व्यावहारिकता के बारे में कोई धारणा नहीं होती है—अर्थात्, जब तुम इस परीक्षा में अडिग रहते हो, तो तुम एक अच्छी गवाही देते हो। यदि ऐसा दिन आता है जब तुम्हें व्यावहारिक परमेश्वर की पूरी समझ हो जाती है और तुम पतरस की तरह मृत्युपर्यंत आज्ञापालन कर सकते हो, तो तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिए जाओगे, और

उसके द्वारा पूर्ण बना दिए जाओगे। परमेश्वर वह जो कुछ भी करता है जो तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप नहीं होता है, वह तुम्हारे लिए एक परीक्षा होती है। यदि यह तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप होता, तो इसके लिए तुम्हें कष्ट भुगतने या शुद्ध किए जाने की आवश्यकता नहीं होती। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका कार्य इतना व्यावहारिक है और तुम्हारी धारणाओं से इतना अलग है कि यह तुम्हारे लिए अपनी धारणाओं को छोड़ देना आवश्यक बनाता है। यही कारण है कि यह तुम्हारे लिए एक परीक्षा है। यह परमेश्वर की व्यावहारिकता के कारण है कि सभी लोग परीक्षाओं के बीच में हैं; उसका कार्य व्यावहारिक है, अलौकिक नहीं। किसी भी धारणा को रखे बिना उसके व्यावहारिक वचनों और उसके व्यावहारिक कथनों को पूरी तरह से समझकर, और जैसे-जैसे उसका कार्य बढ़ता है, वैसे-वैसे उसे वास्तव में प्यार करने में सक्षम हो कर, तुम उसके द्वारा प्राप्त किए जाओगे। उन लोगों का समूह जिन्हें परमेश्वर प्राप्त करेगा वे लोग हैं जो परमेश्वर को जानते हैं, अर्थात्, जो उसकी व्यावहारिकता को जानते हैं, और उससे भी ज्यादा ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के व्यावहारिक कार्य का पालन करने में सक्षम हैं।

परमेश्वर के देह में होने के दौरान, जिस आज्ञाकारिता की वह लोगों से अपेक्षा करता है, उसमें आलोचना से बचना या विरोध न करना शामिल नहीं है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं—इसके बजाय, वह अपेक्षा करता है कि लोग उसके वचनों को अपने जीवन का सिद्धांत और अपने जीवन की नींव बना लें, कि वे उसके वचनों के सार को पूरी तरह से अभ्यास में ले आएँ, और कि वे पूरी तरह से उसकी इच्छा को संतुष्ट करें। देहधारी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने की लोगों से अपेक्षा करने का एक पहलू उसके वचनों को अभ्यास में लाने को संदर्भित करता है, और दूसरा पहलू उसकी सादगी और व्यावहारिकता का पालन करने में सक्षम होने को संदर्भित करता है। ये दोनों पूर्ण होने चाहिए। जो लोग इन दोनों पहलुओं को प्राप्त कर सकते हैं, वे ही हैं, जिनके हृदय में परमेश्वर के लिए वास्तविक प्रेम है। ये सभी वे लोग हैं जो परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा चुके हैं, और वे सभी परमेश्वर से उतना ही प्यार करते हैं जितना वे अपने जीवन से करते हैं। देहधारी परमेश्वर अपने कार्य में सामान्य और व्यावहारिक मानवता दिखाता है। इस तरह, उसकी सामान्य और व्यावहारिक मानवता, दोनों का बाह्य आवरण लोगों के लिए एक बड़ा परीक्षण बन जाता है; यह उनकी सबसे बड़ी कठिनाई बन जाता है। हालाँकि, परमेश्वर की सामान्यता और व्यावहारिकता से बचा नहीं जा सकता है। उसने समाधान खोजने के लिए हर प्रयास किया, लेकिन अंत में वह स्वयं को अपनी सामान्य मानवता के बाहरी आवरण से छुटकारा नहीं दिला सका। यह इसलिए था,

क्योंकि अंततः, वह परमेश्वर है जो देह बन गया है, न कि स्वर्ग में आत्मा का परमेश्वर। वह ऐसा परमेश्वर नहीं है, जिसे लोग देख न सकें, बल्कि ऐसा परमेश्वर है, जिसने सृष्टि के एक सदस्य का आवरण पहना है। इस प्रकार, उसे अपने आप को अपनी सामान्य मानवता के आवरण से छुड़ाना किसी भी तरह से आसान नहीं होगा। इसलिए कुछ भी हो जाए, वह अभी भी उस कार्य को करता है जो वह देह के परिप्रेक्ष्य से करना चाहता है। यह कार्य सामान्य और व्यावहारिक परमेश्वर की अभिव्यक्ति है, तो लोगों का इसका पालन न करना कैसे ठीक हो सकता है? परमेश्वर के कार्यों के बारे में लोग आख़िर क्या कर सकते हैं? वह जो भी करना चाहता है, वह करता है; जिससे वह खुश होता है, वह वैसा ही है जैसा वह चाहता है। यदि लोग आज्ञापालन नहीं करते हैं, तो उनके पास और कौनसी ठोस योजनाएँ हो सकती हैं? अभी तक, यह सिर्फ आज्ञाकारिता ही है जो लोगों को बचा सकी है; किसी के पास कोई अन्य बुद्धिमत्तापूर्ण विचार नहीं हैं। यदि परमेश्वर लोगों की परीक्षा लेना चाहता है, तो वे इसके बारे में क्या कर सकते हैं? लेकिन यह सब स्वर्ग के परमेश्वर द्वारा नहीं सोचा गया है; यह देहधारी परमेश्वर द्वारा सोचा गया है। वह ऐसा करना चाहता है, तो कोई भी व्यक्ति इसे बदल नहीं सकता है। देहधारी परमेश्वर जो कुछ करता है, उसमें स्वर्ग का परमेश्वर हस्तक्षेप नहीं करता है, तो क्या यह लोगों को उसकी आज्ञा का और अधिक पालन करने का कारण नहीं होना चाहिए? यद्यपि वह व्यावहारिक और सामान्य दोनों है, किंतु वह पूरी तरह से देहधारण किया परमेश्वर है। उसके अपने स्वयं के विचारों के आधार पर, वह जो चाहता है वही करता है। स्वर्ग के परमेश्वर ने उसे सभी कार्य सौंप दिए हैं; वह जो भी करता है तुम्हें उसका पालन करना चाहिए। यद्यपि उसमें मानवता है और वह बहुत सामान्य है, उसने यह सब जान-बूझकर व्यवस्थित किया है, तो लोग उसे कैसे अस्वीकृति के साथ पूरी आँखें खोल कर देख सकते हैं? वह सामान्य होना चाहता है, तो वह सामान्य है। वह मानवता के भीतर रहना चाहता है, तो वह मानवता के भीतर रहता है। वह दिव्यता के भीतर रहना चाहता है, तो वह दिव्यता में रहता है। लोग इसे जैसा चाहें वैसा देख सकते हैं, परमेश्वर हमेशा परमेश्वर रहेगा और मनुष्य हमेशा मनुष्य रहेंगे। कुछ मामूली गौण बातों की वजह से उसके सार को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, न ही उसे एक छोटी सी चीज़ के कारण परमेश्वर के "व्यक्ति" के बाहर धकेला जा सकता है। लोगों के पास मानवजाति की आज़ादी है, और परमेश्वर के पास परमेश्वर की गरिमा है; ये एक दूसरे के साथ हस्तक्षेप नहीं करते हैं। क्या लोग परमेश्वर को थोड़ी सी भी स्वतंत्रता नहीं दे सकते हैं? क्या वे परमेश्वर का थोड़ा अधिक लापरवाह होना सहन नहीं कर सकते हैं? परमेश्वर के साथ इतना कठोर मत बनो! हर किसी

में एक-दूसरे के लिए सहिष्णुता होनी चाहिए; तब क्या हर चीज़ का समाधान नहीं हो जाएगा? क्या तब भी कोई मनमुटाव रह जायेगा? यदि कोई इतनी छोटी सी बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता है, तो वह एक उदारचरित या एक सच्चा आदमी होने के बारे में कैसे सोच सकता है? यह परमेश्वर नहीं है जो मानवजाति के लिए कठिनाइयों का कारण है, बल्कि मानवजाति ही परमेश्वर को कठिनाई देती है। वे हमेशा राई का पहाड़ बनाकर चीजों को नियंत्रित करते हैं—वे वास्तव में शून्य में से कुछ न कुछ चीजें बना लेते हैं, और यह बहुत अनावश्यक है! जब परमेश्वर सामान्य और व्यावहारिक मानवता के भीतर कार्य करता है, तो वह जो करता है वह मानवजाति का कार्य नहीं होता है, बल्कि परमेश्वर का कार्य होता है। तथापि, लोगों को उसके कार्य का सार दिखाई नहीं देता है—वे हमेशा उसके मानवता के बाहरी आवरण को देखते हैं। उन्होंने इतना बड़ा कार्य नहीं देखा है, और फिर भी वे परमेश्वर की साधारण और सामान्य मानवता को देखने पर जोर देते हैं और वे इसे छोड़ेंगे नहीं। इसे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना कैसे कहा जा सकता है? स्वर्ग का परमेश्वर अब पृथ्वी के "परमेश्वर" में बदल गया है, और पृथ्वी का परमेश्वर अब स्वर्ग में परमेश्वर है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि उनके बाह्य रूप-रंग एक से हैं या वे ठीक किस तरह से काम करते है। अंत में, वह जो परमेश्वर का कार्य करता है, वह स्वयं परमेश्वर है। तुम्हें आज्ञापालन अवश्य करना चाहिए, चाहे तुम करना चाहो या नहीं—यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें तुम्हारे पास कोई विकल्प हो! लोगों द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का पालन अवश्य किया जाना चाहिए, और लोगों को जरा सा भी ढोंग किए बिना परमेश्वर की आज्ञा का पूर्णतः पालन अवश्य करना चाहिए।

लोगों का समूह जिन्हें देहधारी परमेश्वर आज प्राप्त करना चाहता है वे लोग हैं जो उसकी इच्छा के अनुरूप हैं। लोगों को केवल उसके कार्य का पालन करने की, न कि हमेशा स्वर्ग के परमेश्वर के विचारों से स्वयं को चिंतित करने, अस्पष्टता में रहने, या देहधारी परमेश्वर के लिए चीजें मुश्किल बनाने की आवश्यकता है। जो लोग उसकी आज्ञा का पालन करने में सक्षम हैं, वे ऐसे लोग हैं जो पूर्णतः उसके वचनों को सुनते हैं और उसकी व्यवस्थाओं का पालन करते हैं। ये लोग इस बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते हैं कि स्वर्ग का परमेश्वर वास्तव में किस तरह का है या स्वर्ग का परमेश्वर वर्तमान में मानवजाति के बीच किस प्रकार का कार्य कर रहा है; लेकिन वे पृथ्वी के परमेश्वर को पूर्णतः अपना हृदय दे देते हैं और वे उसके सामने अपना समस्त अस्तित्व रख देते हैं। वे अपनी स्वयं की सुरक्षा का कभी विचार नहीं करते, और वे देहधारी परमेश्वर की सामान्यता और व्यावहारिकता पर कभी भी उपद्रव नहीं करते हैं। जो लोग देहधारी

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं वे उसके द्वारा पूर्ण बनाए जा सकते हैं। जो लोग स्वर्ग के परमेश्वर पर विश्वास करते हैं वे कुछ भी प्राप्त नहीं करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह स्वर्ग का परमेश्वर नहीं, बल्कि पृथ्वी का परमेश्वर है जो लोगों को वादे और आशीष प्रदान करता है। लोगों को स्वर्ग के परमेश्वर की ही हमेशा प्रशंसा नहीं करनी चाहिए और पृथ्वी के परमेश्वर को एक औसत व्यक्ति के रूप में नहीं देखना चाहिए; यह अनुचित है। स्वर्ग का परमेश्वर आश्चर्यजनक बुद्धि के साथ महान और अद्‌भुत है, किंतु इसका कोई अस्तित्व ही नहीं है; पृथ्वी का परमेश्वर बहुत ही औसत और नगण्य है; वह अति सामान्य भी है। उसके पास कोई असाधारण मन नहीं है और न ही वह धरती हिला देने वाले कार्य करता है। वह सिर्फ एक बहुत ही सामान्य और व्यावहारिक तरीके से बोलता और कार्य करता है। यद्यपि वह गड़गड़ाहट के माध्यम से बात नहीं करता है और न ही इसके लिए हवा और बारिश को बुलाता है, तब भी वह वास्तव में स्वर्ग के परमेश्वर का देहधारण है, और वह वास्तव में मनुष्यों के बीच रहने वाला परमेश्वर है। लोगों को उसे देखकर, जिसे वे स्वीकार नहीं कर सकते और अधम के रूप में तो बिलकुल भी कल्पना नहीं कर सकते, उसे बढ़ा-काढ़कर नहीं देखना चाहिए, जिसे वे समझने में सक्षम हैं और जो परमेश्वर के रूप में उनकी अपनी कल्पनाओं से मेल खाता है। यह सब लोगों की विद्रोहशीलता से आता है; यह परमेश्वर के प्रति मानवजाति के विरोध का स्रोत है।

जिन्हें पूर्ण बनाया जाना है उन्हें शुद्धिकरण से अवश्य गुज़रना चाहिए

यदि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो तो तुम्हें अवश्य परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए, सत्य को अभ्यास में लाना चाहिए और अपने सभी कर्तव्यों को पूरा करना चाहिए। इसके अलावा, तुम्हें उन बातों को अवश्य समझना चाहिए जिनका तुम्हें अनुभव करना चाहिए। यदि तुम केवल व्यवहार किए जाने, अनुशासित किए जाने और न्याय का ही अनुभव करते हो, यदि तुम केवल परमेश्वर का आनन्द लेने में ही समर्थ हो, परन्तु जब परमेश्वर तुम्हें अनुशासित कर रहा हो या तुम्हारे साथ निपट रहा हो तब तुम उसका अनुभव करने में असमर्थ हो, तो यह स्वीकार्य नहीं है। शायद शुद्धिकरण के इस उदाहरण में तुम अपनी स्थिति बनाए रखने में समर्थ हो, तब भी यह पर्याप्त नहीं है, तुम्हें अवश्य आगे बढ़ते रहना चाहिए। परमेश्वर से प्रेम करने का पाठ कभी रुकता नहीं है, और इसका कोई अंत नहीं है। लोग परमेश्वर पर विश्वास करने की बात को बहुत ही साधारण समझते हैं, परन्तु एक बार जब उन्हें कुछ व्यवहारिक अनुभव प्राप्त हो जाता

है, तो उन्हें एहसास होता है कि परमेश्वर पर विश्वास करना, उतना आसान नहीं है जितना लोग कल्पना करते हैं। जब परमेश्वर मनुष्य को शुद्ध करने के लिए कार्य करता है, तो मनुष्य को कष्ट होता है। जितना अधिक मनुष्य का शुद्धिकरण होगा, परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम उतना अधिक विशाल होगा, और परमेश्वर की शक्ति उसमें उतनी ही अधिक प्रकट होगी। इसके विपरीत, मनुष्य का शुद्धिकरण जितना कम होता है, उतना ही कम परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम होता है, और परमेश्वर की उतनी ही कम शक्ति उस में प्रकट होगी। एक व्यक्ति का शुद्धिकरण एवं दर्द जितना ज़्यादा होता है तथा जितनी अधिक यातना वो सहता है, परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम उतना ही गहरा होगा एवं परमेश्वर में उसका विश्वास उतना ही अधिक सच्चा होगा, और परमेश्वर के विषय में उसका ज्ञान भी उतना ही अधिक गहन होगा। तुम अपने अनुभवों में देखोगे कि जो शुद्धि पाते हुए अत्यधिक दर्द सहते हैं, जिनके साथ काफी निपटारा तथा अनुशासन का व्यवहार किया जाता है, और तुम देखोगे कि यही लोग हैं जिनके पास परमेश्वर के प्रति गहरा प्रेम होता है, और उनके पास परमेश्वर का अधिक गहन एवं तीक्ष्ण ज्ञान होता है। ऐसे लोग जिन्होंने निपटारा किए जाने का अनुभव नहीं किया है, जिनके पास केवल सतही ज्ञान होता है, और जो केवल यह कह सकते हैं: "परमेश्वर बहुत अच्छा है, वह लोगों को अनुग्रह प्रदान करता है ताकि वे परमेश्वर में आनन्दित हो सकें।" यदि लोगों ने निपटारा किए जाने का अनुभव किया है और अनुशासित किए गए हैं, तो वे परमेश्वर के विषय में सच्चे ज्ञान के बारे में बोलने में समर्थ हैं। अतः मनुष्य में परमेश्वर का कार्य जितना ज़्यादा अद्‌भुत होता है, उतना ही ज़्यादा यह मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण होता है। यह तुम्हारे लिए जितना अधिक अभेद्य होता है और यह तुम्हारी धारणाओं के साथ जितना अधिक असंगत होता है, परमेश्वर का कार्य उतना ही अधिक तुम्हें जीतने और तुम्हें प्राप्त करने में समर्थ होता है, और तुम्हें परिपूर्ण बना पाता है। परमेश्वर के कार्य का महत्व बहुत अधिक है! यदि उसने मनुष्य को इस तरीके से शुद्ध नहीं किया, यदि उसने इस पद्धति के अनुसार कार्य नहीं किया, तो उसका कार्य अप्रभावी और महत्वहीन होगा। पहले यह कहा गया था कि परमेश्वर इस समूह को चुनेगा और प्राप्त करेगा, वह उन्हें अंत के दिनों में पूर्ण बनाएगा; इसमें असाधारण महत्व है। वह तुम लोगों के भीतर जितना बड़ा काम करता है, उतना ही ज़्यादा तुम लोगों का प्रेम गहरा एवं शुद्ध होता है। परमेश्वर का काम जितना अधिक विशाल होता है, उतना ही अधिक उसकी बुद्धि के बारे में समझने में तुम लोग समर्थ होते हो और उसके बारे में मनुष्य का ज्ञान उतना ही अधिक गहरा होता है। अंत के दिनों के दौरान, परमेश्वर की 6,000 साल की प्रबंधन योजना का अंत हो

जाएगा। क्या यह इतनी आसानी से समाप्त हो सकती है? एक बार जब वह मानवजाति पर विजय प्राप्त कर लेगा, तो क्या उसका कार्य पूरा हो जाएगा? क्या यह इतना आसान हो सकता है? लोग वास्तव में कल्पना करते हैं कि यह इतना ही सरल है, परन्तु परमेश्वर जो करता है वह इतना आसान नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि तुम परमेश्वर के कार्य के कौन-से भागका उल्लेख करते हो, मनुष्य के लिए सब कुछ अथाह है। यदि तुम इसे मापने के योग्य होते, तो परमेश्वर के कार्य का कोई महत्व या मूल्य नहीं रह जाता। परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य अथाह है; यह तुम्हारी धारणाओं से पूरी तरह विपरीत है, और यह तुम्हारी धारणाओं से जितना ज़्यादा असंगत होता है, उतना ही ज़्यादा यह दर्शाता है कि परमेश्वर का कार्य अर्थपूर्ण है; यदि यह तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप होता, तो यह अर्थहीन होता। आज, तुम महसूस करते हो कि परमेश्वर का कार्य अत्यंत अद्भुत है, और तुम्हें यह जितना अधिक अद्भुत महसूस होता है, उतना ही अधिक तुम महसूस करते हो कि परमेश्वर अथाह है, और तुम देखते हो कि परमेश्वर के कर्म कितने महान हैं। यदि उसने मनुष्य को जीतने के लिए केवल सतही और बेपरवाही से कार्य किए होते, और उसके बाद कुछ नहीं किया होता, तो मनुष्य परमेश्वर के कार्य के महत्व को देखने में असमर्थ होता। यद्यपि आज तुम थोड़ा-सा शुद्धिकरण प्राप्त कर रहे हो, किन्तु यह तुम्हारे जीवन की प्रगति के लिए बहुत लाभदायक है; और इसलिए ऐसी कठिनाईयों से गुज़रना तुम लोगों के लिए सर्वथा आवश्यक है। आज, तुम थोड़ा-सा शुद्धिकरण प्राप्त कर रहे हो, किन्तु बाद में तुम सचमुच में परमेश्वर के कार्यों को देखने में सक्षम होगे, और अंततः तुम कहोगे : "परमेश्वर के कर्म बहुत ही अद्भुत हैं!" तुम्हारे हृदय में ये वचन होंगे। कुछ समय के लिए परमेश्वर द्वारा शुद्धिकरण का अनुभव करने के बाद (सेवा करने वालों की परीक्षा और ताड़ना का समय), अंततः कुछ लोगों ने कहा : "परमेश्वर में विश्वास करना वास्तव में कठिन है!" यह तथ्य कि वे "वास्तव में कठिन" इन शब्दों का प्रयोग करते हैं दर्शाता है कि परमेश्वर के कर्म अथाह हैं, परमेश्वर का कार्य अत्यधिक महत्व और मूल्य से सम्पन्न है, और मनुष्य के द्वारा संजोकर रखे जाने के बहुत ही योग्य है। यदि, मेरे इतना अधिक काम करने के बाद, तुम्हें थोड़ा-सा भी ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, तो क्या तब भी मेरे कार्य का कोई मूल्य हो सकता है? इस कारण तुम कहोगे : "परमेश्वर की सेवा करना वास्तव में कठिन है, परमेश्वर के कर्म बहुत अद्भुत हैं, परमेश्वर सचमुच में विवेकी है! वह बहुत प्यारा है!" यदि, अनुभव की एक अवधि से गुज़रने के बाद, तुम ऐसे शब्दों को कहने में समर्थ हो, तो इससे साबित होता है कि तुमने स्वयं में परमेश्वर के कार्य को प्राप्त कर लिया है। एक दिन, जब तुम सुसमाचार का प्रचार करने के लिए विदेश में

होते हो और कोई तुमसे पूछता है : "परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास कैसा चल रहा है?" तो तुम यह कहने में सक्षम होगे : "परमेश्वर के कार्य बहुत ही अद्‌भुत हैं!" वे महसूस करेंगे कि तुम्हारे वचन वास्तविक अनुभवों के बारे में बोलते हैं। यही वास्तव में गवाही देना है। तुम कहोगे कि परमेश्वर का कार्य बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण है, और तुममें उसके कार्य ने वास्तव में तुम्हें आश्वस्त कर दिया है और तुम्हारे हृदय को जीत लिया है। तुम हमेशा उससे प्रेम करोगे क्योंकि वह मानवजाति के प्रेम के लिए कहीं अधिक योग्य है! यदि तुम इन चीज़ों से बातचीत कर सकते हो, तो तुम मनुष्यों के हृदयों को द्रवित कर सकते हो। यह सब कुछ गवाही देना है। यदि तुम एक ज़बरदस्त गवाही देने में सक्षम हो, लोगों को द्रवित कर उनकी आँखों में आँसू लाने में सक्षम हो, तो यह दर्शाता है कि तुम वास्तव में ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर से प्रेम करता है क्योंकि तुम परमेश्वर को प्रेम करने की गवाही देने में सक्षम हो और तुम्हारे माध्यम से, परमेश्वर के कार्यों की गवाही दी जा सकती है। तुम्हारी गवाही के कारण, अन्य लोग परमेश्वर के कार्यों की खोज करते हैं, परमेश्वर के कार्य का अनुभव करते हैं, और वे जिस भी माहौल का अनुभव करें, उसमें वे दृढ़ रहने में समर्थ होंगे। केवल इस प्रकार से गवाही देना ही वास्तविक रूप से गवाही देना है, और बिलकुल यही अभी तुम से अपेक्षित है। तुम्हें देखना चाहिए कि परमेश्वर का कार्य बहुत ही अधिक मूल्यवान है और लोगों के द्वारा सँजो कर रखे जाने योग्य है, कि परमेश्वर बहुत ही बहुमूल्य है और अत्यधिक भरपूर है; वह न केवल बात कर सकता है, बल्कि वह लोगों का न्याय भी कर सकता है, उनके हृदयों को शुद्ध कर सकता है, उन तक आनंद ला सकता है और उन्हें प्राप्त कर सकता है, उन्हें जीत सकता है, और उन्हें पूर्ण बना सकता है। अपने अनुभव के द्वारा तुम देखोगे कि परमेश्वर बहुत ही प्यार करने लायक है। तो अब तुम परमेश्वर को कितना प्रेम करते हो? क्या तुम अपने हृदय से इन बातों को वास्तव में कह सकते हो? जब तुम अपने हृदय की गहराइयों से इन वचनों को व्यक्त करने में सक्षम होगे तो तुम गवाही देने में सक्षम हो जाओगे। एक बार तुम्हारा अनुभव इस स्तर तक पहुँच जाए, तो तुम ईश्वर के लिए गवाह होने में समर्थ हो जाओगे, और काबिल हो जाओगे। यदि तुम अपने अनुभव में इस स्तर तक नहीं पहुँचते हो, तो तुम तब भी बहुत दूर होगे। शुद्धिकरण में लोगों द्वारा कमजोरियों का प्रदर्शन सामान्य बात है, परन्तु शुद्धिकरण के पश्चात् तुम्हें यह कहने में समर्थ होना चाहिए : "परमेश्वर अपने कार्य में बहुत बुद्धिमान है!" यदि तुम वास्तव में एक व्यवहारिक पहचान प्राप्त करने में सक्षम हो, तो यह कुछ ऐसा बन जाएगा जिसे तुम सँजोते हो, और तुम्हारे अनुभव का मूल्य होगा।

अब तुम्हें किसका अनुसरण करना चाहिए? क्या तुम परमेश्वर के कार्य के लिए गवाही देने में समर्थ

हो, क्या तुम परमेश्वर की गवाही और एक अभिव्यंजना बन सकते हो, और क्या तुम उसके द्वारा उपयोग किए जाने के योग्य हो—ये वो बातें हैं जिन्हें तुम्हें खोजना चाहिए। परमेश्वर ने तुम में वास्तव में कितना काम किया है? तुमने कितना देखा है, तुमने कितना स्पर्श किया है? तुमने कितना अनुभव किया है और चखा है? चाहे परमेश्वर ने तुम्हारी परीक्षा ली हो, तुम्हारे साथ व्यवहार किया हो, या तुम्हें अनुशासित किया हो, उसके व्यवहार और उसके कार्य तुम में किए गए हैं। परन्तु परमेश्वर के एक विश्वासी के रूप में और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो परमेश्वर के द्वारा परिपूर्ण बनाए जाने के लिए प्रयास करने का उत्सुक है, क्या तुम अपने व्यावहारिक अनुभव के आधार पर परमेश्वर के कार्य की गवाही देने में समर्थ हो? क्या तुम अपने व्यवहारिक अनुभव के माध्यम से परमेश्वर के वचन को जी सकते हो? क्या तुम अपने स्वयं के व्यवहारिक अनुभव के माध्यम से दूसरों का भरण पोषण करने, और परमेश्वर के कार्य की गवाही देने के वास्ते अपना पूरा जीवन खपाने में सक्षम हो? परमेश्वर के कार्यों के लिए गवाही देने हेतु तुम्हें अपने अनुभव, ज्ञान और तुम्हारे द्वारा चुकाई गयी कीमत पर निर्भर होना होगा। केवल इसी तरह तुम उसकी इच्छा को संतुष्ट कर सकते हो। क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर के कार्यों की गवाही देता है? क्या तुम्हारी यह अभिलाषा है? यदि तुम उसके नाम, और इससे भी अधिक, उसके कार्यों की गवाही देने में समर्थ हो, और साथ ही उस छवि को जीने में सक्षम हो जिसकी वह अपने लोगों से अपेक्षा करता है, तो तुम परमेश्वर के लिए गवाह हो। तुम वास्तव में, परमेश्वर के लिए किस प्रकार गवाही देते हो? परमेश्वर के वचनों को जीने के लिए प्रयास और लालसा करते हुए तुम ऐसा करते हो, अपने शब्दों के माध्यम से गवाही देने, लोगों को परमेश्वर के कार्य को जानने और देखने देने और उसके क्रियाकलापों को देखने देने के द्वारा ऐसा करते हो—यदि तुम वास्तव में यह सब कुछ खोजोगे, तो परमेश्वर तुम्हें पूर्ण बना देगा। यदि तुम बस परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाना और अंत में धन्य किए जाना चाहते हो, तो परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास का परिप्रेक्ष्य शुद्ध नहीं है। तुम्हें खोज करनी चाहिए कि वास्तविक जीवन में परमेश्वर के कर्मों को कैसे देखें, उसे कैसे संतुष्ट करें जब वह अपनी इच्छा को तुम्हारे सामने प्रकट करता है, और तलाश करनी चाहिए कि उसकी अद्‌भुतता और बुद्धि की गवाही तुम्हें कैसे देनी चाहिए, और वह कैसे तुम्हें अनुशासित करता और तुमसे निपटता है, इसके लिए कैसे गवाही देनी है। अब तुम्हें इन सभी बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए। यदि परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्यार सिर्फ इसलिए है कि तुम परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाने के बाद उसकी महिमा को साझा कर सको, तो यह फिर भी अपर्याप्त है और परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकता है। तुम्हें

परमेश्वर के कार्यों की गवाही देने में समर्थ होने, उसकी माँगों को संतुष्ट करने और एक व्यावहारिक तरीके से उसके द्वारा लोगों पर किए गए कार्य का अनुभव करने की आवश्यकता है। चाहे वो कष्ट सहना हो या रोना और दुखित होना, तुम्हें अपने अभ्यास में इन सभी चीज़ों को अनुभव अवश्य करना चाहिए। ये तुम्हें परमेश्वर के गवाह के रूप में पूर्ण करने के लिए हैं। वास्तव में अभी वह क्या है जो तुम्हें कष्ट सहने और पूर्णता तलाशने के लिए मजबूर करता है? क्या तुम्हारा वर्तमान कष्ट सच में परमेश्वर को प्रेम करने और उसके लिए गवाही देने के वास्ते है? या यह देह के आशीषों के लिए, भविष्य की तुम्हारी संभावनाओं और नियति के लिए है? खोज करने के तुम्हारे सभी इरादे, प्रेरणाएँ और तुम्हारे द्वारा अनुगमन किए जाने वाले लक्ष्य अवश्य सही किए जाने चाहिए और यह तुम्हारी स्वयं की इच्छा से मार्गदर्शित नहीं किए जा सकते। यदि एक व्यक्ति आशीषें प्राप्त करने और सामर्थ्य में शासन करने के लिए पूर्णता की तलाश करता है, जबकि दूसरा परमेश्वर को संतुष्ट करने, परमेश्वर के कार्य की व्यवहारिक गवाही देने के लिए पूर्ण बनाए जाने की खातिर प्रयास करता है, प्रयास के इन दोनों माध्यमों में से तुम किसे चुनोगे? यदि तुम पहले वाले को चुनते हो, तो तुम अभी भी परमेश्वर के मानकों से बहुत दूर होगे। मैंने पहले कहा है कि मेरे कार्य ब्रह्माण्ड भर में मुक्त रूप से जाने जाएंगे और मैं ब्रह्माण्ड पर एक सम्राट के रूप में शासन करूँगा। दूसरी ओर, जो तुम लोगों को सौंपा गया है वह है परमेश्वर के कार्यों के लिए गवाह बनना, न कि राजा बनना और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दिखाई देना। परमेश्वर के कर्मों को समस्त ब्रह्माण्ड को और आकाश को भर देने दो। हर एक को उन्हें देखने दो और उन्हें स्वीकार करने दो। ये वचन परमेश्वर स्वयं के सम्बन्ध में कहे जाते हैं और मानवजाति को जो करना चाहिए वह है परमेश्वर के लिए गवाही देना। अब तुम परमेश्वर के बारे में कितना जानते हो? तुम परमेश्वर के बारे में कितनी गवाही दे सकते हो? परमेश्वर का मनुष्यों को पूर्ण बनाने का उद्देश्य क्या है? एक बार जब तुम परमेश्वर की इच्छा को समझ जाते हो, तो तुम्हें उसकी इच्छा के प्रति किस प्रकार से विचारशीलता दिखानी चाहिए? यदि तुम पूर्ण बनाए जाने की इच्छा रखते हो और जो तुम जीते हो उसके माध्यम से परमेश्वर के कार्य के लिए गवाह बनने को तैयार हो, यदि तुम्हारे पास यह प्रेरक शक्ति है, तो कुछ भी बहुत कठिन नहीं है। लोगों को अब सिर्फ आस्था की आवश्यकता है। यदि तुम्हारे पास यह प्रेरक शक्ति है, तो किसी भी नकारात्मकता, निष्क्रियता, आलस्य और देह की धारणाओं, जीने के दर्शनों, विद्रोही स्वभाव, भावनाओं इत्यादि को त्याग देना आसान है।

परीक्षणों से गुज़रते हुए, लोगों का कमज़ोर होना, या उनके भीतर नकारात्मकता आना, या परमेश्वर

की इच्छा पर या अभ्यास के लिए उनके मार्ग पर स्पष्टता का अभाव होना स्वाभाविक है। परन्तु हर हालत में, अय्यूब की ही तरह, तुम्हें परमेश्वर के कार्य पर भरोसा अवश्य होना चाहिए, और परमेश्वर को नकारना नहीं चाहिए। यद्यपि अय्यूब कमज़ोर था और अपने जन्म के दिन को धिक्कारता था, उसने इस बात से इनकार नहीं किया कि मनुष्य के जीवन में सभी चीजें यहोवा द्वारा प्रदान की गई थी, और यहोवा ही उन्हें वापस ले सकता है। चाहे उसकी कैसे भी परीक्षा ली गई, उसने अपना विश्वास बनाए रखा। अपने अनुभव में, तुम परमेश्वर के वचनों के द्वारा चाहे जिस भी प्रकार के शुद्धिकरण से गुज़रो, संक्षेप में, परमेश्वर को मानवजाति से जिसकी अपेक्षा है वह है, परमेश्वर में उनका विश्वास और प्रेम। इस तरह से, जिसे वो पूर्ण बनाता है वह है लोगों का विश्वास, प्रेम और अभिलाषाएँ। परमेश्वर लोगों पर पूर्णता का कार्य करता है, जिसे वे देख नहीं सकते, महसूस नहीं कर सकते; इन परिस्थितियों में तुम्हारे विश्वास की आवश्यकता होती है। लोगों के विश्वास की आवश्यकता तब होती है जब किसी चीज को नग्न आँखों से नहीं देखा जा सकता है, और तुम्हारे विश्वास की तब आवश्यकता होती है जब तुम अपनी स्वयं की धारणाओं को नहीं छोड़ पाते हो। जब तुम परमेश्वर के कार्यों के बारे में स्पष्ट नहीं होते हो, तो आवश्यकता होती है कि तुम विश्वास बनाए रखो और तुम दृढ़ रवैया रखो और गवाह बनो। जब अय्यूब इस स्थिति तक पहुँचा, तो परमेश्वर उसे दिखाई दिया और उससे बोला। अर्थात्, यह केवल तुम्हारे विश्वास के भीतर से ही है कि तुम परमेश्वर को देखने में समर्थ होगे, और जब तुम्हारे पास विश्वास है तो परमेश्वर तुम्हें पूर्ण बनायेगा। विश्वास के बिना, वह ऐसा नहीं कर सकता है। परमेश्वर तुम्हें वह सब प्रदान करेगा जिसको प्राप्त करने की तुम आशा करते हो। यदि तुम्हारे पास विश्वास नहीं है, तो तुम्हें पूर्ण नहीं बनाया जा सकता है और तुम परमेश्वर के कार्यों को देखने में असमर्थ होगे, उसकी सर्वसामर्थ्य को तो बिल्कुल भी नहीं देख पाओगे। जब तुम्हारे पास यह विश्वास होता है कि तुम अपने व्यवहारिक अनुभव में उसके कार्यों को देख सकते हो, तो परमेश्वर तुम्हारे सामने प्रकट होगा और भीतर से वह तुम्हें प्रबुद्ध करेगा और तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा। उस विश्वास के बिना, परमेश्वर ऐसा करने में असमर्थ होगा। यदि तुम परमेश्वर पर विश्वास खो चुके हो, तो तुम कैसे उसके कार्य का अनुभव कर पाओगे? इसलिए, केवल जब तुम्हारे पास विश्वास है और तुम परमेश्वर पर संदेह नहीं करते हो, चाहे वो जो भी करे, अगर तुम उस पर सच्चा विश्वास करो, केवल तभी वह तुम्हारे अनुभवों में तुम्हें प्रबुद्ध और रोशन कर देता है, और केवल तभी तुम उसके कार्यों को देख पाओगे। ये सभी चीजें विश्वास के माध्यम से ही प्राप्त की जाती हैं। विश्वास केवल शुद्धिकरण के माध्यम से ही आता है, और शुद्धिकरण की

अनुपस्थिति में विश्वास विकसित नहीं हो सकता है। "विश्वास" यह शब्द किस चीज को संदर्भित करता है? विश्वास सच्चा भरोसा है और ईमानदार हृदय है जो मनुष्यों के पास होना चाहिए जब वे किसी चीज़ को देख या छू नहीं सकते हों, जब परमेश्वर का कार्य मनुष्यों के विचारों के अनुरूप नहीं होता हो, जब यह मनुष्यों की पहुँच से बाहर हो। इसी विश्वास के बारे में मैं बातें करता हूँ। मनुष्यों को कठिनाई और शुद्धिकरण के समय में विश्वास की आवश्यकता होती है, और विश्वास के साथ-साथ शुद्धिकरण आता है; विश्वास और शुद्धिकरण को अलग नहीं किया जा सकता। चाहे परमेश्वर कैसे भी कार्य करे या तुम्हारा परिवेश जैसा भी हो, तुम जीवन का अनुसरण करने में समर्थ होगे और सत्य की खोज करने और परमेश्वर के कार्यों के ज्ञान को तलाशने में समर्थ होगे, और तुममें उसके क्रियाकलापों की समझ होगी और तुम सत्य के अनुसार कार्य करने में समर्थ होगे। ऐसा करना ही सच्चा विश्वास रखना है, ऐसा करना यह दिखाता है कि तुमने परमेश्वर में अपना विश्वास नहीं खोया है। जब तुम शुद्धिकरण द्वारा सत्य का अनुसरण करने में समर्थ हो, तुम सच में परमेश्वर से प्रेम करने में समर्थ हो और उसके बारे में संदेहों को पैदा नहीं करते हो, चाहे वो जो भी करे, तुम फिर भी उसे संतुष्ट करने के लिए सत्य का अभ्यास करते हो, और तुम गहराई में उसकी इच्छा की खोज करने में समर्थ होते हो और उसकी इच्छा के बारे में विचारशील होते हो, केवल तभी इसका अर्थ है कि तुम्हें परमेश्वर में सच्चा विश्वास है। इससे पहले, जब परमेश्वर ने कहा कि तुम एक सम्राट के रूप में शासन करोगे, तो तुमने उससे प्रेम किया, और जब उसने स्वयं को खुलेआम तुम्हें दिखाया, तो तुमने उसका अनुसरण किया। परन्तु अब परमेश्वर छिपा हुआ है, तुम उसे देख नहीं सकते हो, और परेशानियाँ तुम पर आ गई हैं। तो इस समय, क्या तुम परमेश्वर पर आशा छोड़ देते हो? इसलिए हर समय तुम्हें जीवन की खोज अवश्य करनी चाहिए और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। यही सच्चा विश्वास कहलाता है, और यही सबसे सच्चा और सबसे सुंदर प्रकार का प्रेम है।

पहले ऐसा होता था कि लोग परमेश्वर के सामने अपने सारे संकल्प करते और कहते : "अगर कोई अन्य परमेश्वर से प्रेम नहीं भी करता है, तो भी मुझे अवश्य परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए।" परन्तु अब, शुद्धिकरण तुम पर पड़ता है। यह तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप नहीं है, इसलिए तुम परमेश्वर में विश्वास को खो देते हो। क्या यह सच्चा प्रेम है? तुमने अय्यूब के कर्मों के बारे में कई बार पढ़ा है—क्या तुम उनके बारे में भूल गए हो? सच्चा प्रेम केवल विश्वास के भीतर ही आकार ले सकता है। तुम अपने शुद्धिकरण के माध्यम से परमेश्वर के लिए वास्तविक प्रेम विकसित करते हो, अपने वास्तविक अनुभवों में तुम अपने

विश्वास के माध्यम से ही परमेश्वर की इच्छा के बारे में विचारशील हो पाते हो, और विश्वास के माध्यम से तुम अपने देह-सुख को त्याग देते हो और जीवन का अनुसरण करते हो; लोगों को यही करना चाहिए। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम परमेश्वर के कार्यों को देखने में समर्थ हो सकोगे, परन्तु यदि तुम में विश्वास का अभाव है तो तुम देखने में समर्थ नहीं होगे और तुम उसके कार्यों का अनुभव करने में समर्थ नहीं होगे। यदि तुम परमेश्वर के द्वारा उपयोग और पूर्ण किए जाना चाहते हो, तो तुम में हर चीज मौजूद अवश्य होनी चाहिए : पीड़ा सहने की इच्छाशक्ति, विश्वास, सहनशीलता, तथा आज्ञाकारिता और साथ ही परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने, परमेश्वर की इच्छा की समझ और उसके दुःख के बारे में विचारशीलता प्राप्त करने की योग्यता, इत्यादि। किसी व्यक्ति को पूर्ण बनाना आसान नहीं है, और तुम्हारे द्वारा अनुभव किए गए प्रत्येक शुद्धिकरण में तुम्हारे विश्वास और प्यार की आवश्यकता होती है। यदि तुम परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाना चाहते हो, तो केवल मार्ग पर दौड़ कर आगे चले जाना पर्याप्त नहीं है, न ही केवल स्वयं को परमेश्वर के लिए खपाना ही पर्याप्त है। तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए, जिसे परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाया जाता है, बहुत सी चीज़ों से सम्पन्न अवश्य होना चाहिए। जब तुम कष्टों का सामना करते हो तो तुम्हें देह पर विचार नहीं करने और परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत नहीं करने में समर्थ अवश्य होना चाहिए। जब परमेश्वर अपने आप को तुमसे छिपाता है, तो तुम्हें उसका अनुसरण करने के लिए, अपने पिछले प्यार को लड़खड़ाने या मिटने न देते हुए उसे बनाए रखने के लिए, तुम्हें विश्वास रखने में समर्थ अवश्य होना चाहिए। इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर क्या करता है, तुम्हें उसके मंसूबे के प्रति समर्पण अवश्य करना चाहिए, और उसके विरूद्ध शिकायत करने की अपेक्षा अपनी स्वयं की देह को धिक्कारने के लिए तैयार रहना चाहिए। जब तुम्हारा परीक्षणों से सामना होता है तो तुम्हें अपनी किसी प्यारी चीज़ से अलग होने की अनिच्छा, या बुरी तरह रोने के बावजूद तुम्हें अवश्य परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहिए। केवल इसी को सच्चा प्यार और विश्वास कहा जा सकता है। तुम्हारी वास्तविक कद-काठी चाहे जो भी हो, तुममें सबसे पहले कठिनाई को भुगतने की इच्छा और सच्चा विश्वास, दोनों ही अवश्य होना चाहिए और तुममें देह-सुख को त्याग देने की इच्छा अवश्य होनी चाहिए। तुम्हें परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने के उद्देश्य से व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करने और अपने व्यक्तिगत हितों का नुकसान उठाने के लिए तैयार होना चाहिए। तुम्हें अपने हृदय में अपने बारे में पछतावा महसूस करने में भी अवश्य समर्थ होना चाहिए : अतीत में तुम परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर पाते थे, और अब तुम स्वयं पर पछतावा कर सकते हो। इनमें से

किसी भी एक का अभाव तुममें बिलकुल नहीं होना चाहिए—परमेश्वर इन चीज़ों के द्वारा तुम्हें पूर्ण बनाएगा। यदि तुम इन कसौटियों पर खरे नहीं उतरते हो, तो तुम्हें पूर्ण नहीं बनाया जा सकता है।

जो कोई परमेश्वर की सेवा करता है, उसे न केवल यह पता होना चाहिए कि परमेश्वर के वास्ते कैसे कष्ट सहना है, बल्कि उससे भी ज्यादा, उसे यह समझना चाहिए कि परमेश्वर पर विश्वास करने का प्रयोजन परमेश्वर को प्यार करने का प्रयास करना है। परमेश्वर द्वारा तुम्हारा उपयोग, सिर्फ तुम्हें शुद्ध करने या तुम्हें पीड़ित करने के लिए नहीं है, बल्कि वह तुम्हारा उपयोग इसलिए करता है ताकि तुम उसके कार्यों को जानो, मानव जीवन के सच्चे महत्व को जानो, और विशेष रूप से तुम यह जानो कि परमेश्वर की सेवा करना कोई आसान काम नहीं है। परमेश्वर के कार्य का अनुभव करना, अनुग्रह का आनन्द लेने के बारे में नहीं है बल्कि उसके प्रति तुम्हारे प्रेम के कारण कष्ट सहने के बारे में है। चूँकि तुम परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द लेते हो, इसलिए तुम्हें परमेश्वर की ताड़ना का भी आनन्द अवश्य लेना चाहिए; तुम्हें इन सभी चीज़ों का अनुभव अवश्य करना चाहिए। तुम परमेश्वर द्वारा प्रबुद्धता को अपने अंदर अनुभव कर सकते हो, और तुम यह अनुभव भी कर सकते हो कि कैसे परमेश्वर तुम्हारे साथ व्यवहार करता तथा न्याय करता है। इस प्रकार, तुम्हारा अनुभव व्यापक होता है। परमेश्वर ने तुम पर न्याय और ताड़ना का काम किया है। परमेश्वर के वचन ने तुम्हारे साथ व्यवहार किया है, लेकिन इतना ही नहीं; इसने तुम्हें प्रबुद्ध और रोशन भी किया है। जब तुम नकारात्मक और कमज़ोर होते हो, तो परमेश्वर तुम्हारे लिए चिंता करता है। यह सब तुम्हें यह ज्ञात कराने के लिए है कि मनुष्य के बारे में सब कुछ परमेश्वर के आयोजन के अंतर्गत है। तुम सोच सकते हो कि परमेश्वर पर विश्वास करना कष्ट सहने के बारे में है, या उसके लिए कई चीजें करना है; शायद तुम सोचो कि परमेश्वर में विश्वास का प्रयोजन तुम्हारी देह की शान्ति के लिए है, या इसलिए है कि तुम्हारी ज़िन्दगी में सब कुछ ठीक रहे, या इसलिए कि तुम आराम से रहो, सब कुछ में सहज रहो। परन्तु इनमें से कोई भी ऐसा उद्देश्य नहीं है जिसे लोगों को परमेश्वर पर अपने विश्वास के साथ जोड़ना चाहिए। यदि तुम इन प्रयोजनों के लिए विश्वास करते हो, तो तुम्हारा दृष्टिकोण गलत है और तुम्हें पूर्ण बनाया ही नहीं जा सकता है। परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव, उसकी बुद्धि, उसके वचन, और उसकी अद्‌भुतता और अगाधता, इन सभी बातों को मनुष्यों को अवश्य समझना चाहिए। इस समझ को पा लेने के बाद तुम्हें इसका उपयोग अपने हृदय के व्यक्तिगत अनुरोधों, आशाओँ और धारणाओं से छुटकारा पाने के लिए करना चाहिए। केवल इन्हें दूर करके ही तुम परमेश्वर के द्वारा माँग की गई शर्तों को पूरा कर सकते

हो। केवल ऐसा करने के माध्यम से ही तुम जीवन प्राप्त कर सकते हो और परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हो। परमेश्वर पर विश्वास करना उसे संतुष्ट करने के वास्ते और उस स्वभाव को जीने के लिए है जो वह अपेक्षा करता है, ताकि इन अयोग्य लोगों के समूह के माध्यम से परमेश्वर के कार्यकलाप और उसकी महिमा प्रदर्शित हो सके। परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए यही सही दृष्टिकोण है और यह वो लक्ष्य भी है जिसे तुम्हें खोजना चाहिए। परमेश्वर पर विश्वास करने के बारे में तुम्हारा सही दृष्टिकोण होना चाहिए और तुम्हें परमेश्वर के वचनों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। तुम्हें परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने की आवश्यकता है, और तुम्हें सत्य को जीने, और विशेष रूप से उसके व्यवहारिक कर्मों को देखने, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में उसके अद्भुत कर्मों को देखने, और साथ ही देह में उसके द्वारा किए जाने वाले व्यवहारिक कार्य को देखने में सक्षम होना चाहिए। अपने वास्तविक अनुभवों के द्वारा, लोग इस बात की सराहना कर सकते हैं कि कैसे परमेश्वर उन पर अपना कार्य करता है, उनके प्रति उसकी क्या इच्छा है। यह सब लोगों के भ्रष्ट शैतानी स्वभाव को दूर करने के लिए है। अपने भीतर की सारी अशुद्धता और अधार्मिकता बाहर निकाल देने, अपने गलत इरादों को निकाल फेंकने, और परमेश्वर में सच्चा विश्वास उत्पन्न करने के बाद—केवल सच्चे विश्वास के साथ ही तुम परमेश्वर को सच्चा प्रेम कर सकते हो। तुम केवल अपने विश्वास की बुनियाद पर ही परमेश्वर से सच्चा प्रेम कर सकते हो। क्या तुम परमेश्वर पर विश्वास किए बिना उसके प्रति प्रेम को प्राप्त कर सकते हो? चूँकि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, इसलिए तुम इसके बारे में नासमझ नहीं हो सकते हो। कुछ लोगों में जोश भर जाता है जैसे ही वे देखते हैं कि परमेश्वर पर विश्वास करना उनके लिए आशीषें लाएगा, परन्तु सम्पूर्ण ऊर्जा को खो देते हैं जैसे ही वे देखते हैं कि उन्हें शुद्धिकरणों को सहना पड़ेगा। क्या यह परमेश्वर पर विश्वास करना है? अंततः, अपने विश्वास में परमेश्वर के सामने तुम्हें पूर्ण और अतिशय आज्ञाकारिता हासिल करनी होगी। तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो परन्तु फिर भी उससे माँगें करते हो, तुम्हारी कई धार्मिक अवधारणाएँ हैं जिन्हें तुम छोड़ नहीं सकते हो, तुम्हारे व्यक्तिगत हित हैं जिन्हें तुम त्याग नहीं सकते हो, और तब भी देह की आशीषों को खोजते हो और चाहते हो कि परमेश्वर तुम्हारी देह को बचाए, तुम्हारी आत्मा की रक्षा करे—ये सब गलत दृष्टिकोण वाले लोगों के व्यवहार हैं। यद्यपि धार्मिक विश्वास वाले लोगों का परमेश्वर पर विश्वास होता है, तब भी वे अपने स्वभाव को बदलने का प्रयास नहीं करते हैं, परमेश्वर के बारे में ज्ञान की खोज नहीं करते हैं, और केवल अपने देह के हितों की ही तलाश करते हैं। तुम में से कई लोगों के विश्वास ऐसे हैं जो धार्मिक

आस्थाओं की श्रेणी से सम्बन्धित हैं। यह परमेश्वर पर सच्चा विश्वास नहीं है। परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए लोगों के पास उसके लिए पीड़ा सहने वाला हृदय और स्वयं को त्याग देने की इच्छा होनी चाहिए। जब तक वे इन दो शर्तों को पूरा नहीं करते हैं तब तक परमेश्वर पर उनका विश्वास मान्य नहीं है, और वे स्वभाव में परिवर्तनों को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होंगे। केवल वे लोग जो वास्तव में सत्य का अनुसरण करते हैं, परमेश्वर के बारे में ज्ञान की तलाश करते हैं, और जीवन की खोज करते हैं ऐसे लोग हैं जो वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।

जब तुम पर परीक्षण पड़ते हैं, तो तुम उनसे निपटने के लिए परमेश्वर के काम को कैसे लागू करोगे? क्या तुम नकारात्मक हो जाओगे या क्या तुम परमेश्वर द्वारा मानव के परीक्षण और शुद्धिकरण को एक सकारात्मक पहलू से समझोगे? तुम परमेश्वर के परीक्षणों और शुद्धिकरणों के माध्यम से क्या प्राप्त करोगे? क्या परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्यार बढ़ जाएगा? जब तुम शुद्धिकरण के अधीन होते हो, तो क्या तुम परमेश्वर जो काम तुममें करता है उसके साथ गंभीरता से जुड़ने और अय्यूब की परीक्षणों को लागू करने में समर्थ होगे? क्या तुम यह देखने में समर्थ होगे कि कैसे परमेश्वर अय्यूब के परीक्षणों के माध्यम से इंसानों की परीक्षा लेता है? अय्यूब के परीक्षण तुम्हें किस तरह की प्रेरणा दे सकते हैं? क्या तुम अपने शुद्धिकरण के बीच परमेश्वर के लिए गवाह बनने के लिए तैयार हो, या तुम एक आरामदायक वातावरण में देह को संतुष्ट करना चाहोगे? परमेश्वर पर विश्वास के बारे में वास्तव में तुम्हारा दृष्टिकोण क्या है? क्या यह वास्तव में उसके लिए है, न कि देह के लिए? क्या अपनी तलाश में तुम्हारे पास वास्तव में कोई लक्ष्य है? क्या तुम परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए शुद्धिकरण से गुजरने के लिए तैयार हो, या क्या इसके बजाय तुम परमेश्वर द्वारा ताड़ित और श्रापित किए जाना चाहोगे? परमेश्वर के लिए गवाही देने के मामले को तुम वास्तव में कैसे देखते हो? कुछ निश्चित परिवेशों में, परमेश्वर के लिए वास्तव में एक गवाही देने के लिए लोगों को क्या करना चाहिए? चूँकि व्यावहारिक परमेश्वर ने तुम में बहुत सा वास्तविक कार्य दर्शाया है, तो फिर तुममें हमेशा छोड़ने का विचार क्यों रहता है? क्या परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास परमेश्वर के लिए है? तुम लोगों में से ज्यादातर के लिए, तुम्हारा विश्वास उस गणना का हिस्सा है जो तुम अपनी ओर से अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए करते हो। बहुत कम लोग परमेश्वर के लिए परमेश्वर में विश्वास करते हैं; क्या यह विद्रोहशीलता नहीं है?

शुद्धिकरण का काम का उद्देश्य मुख्य रूप से लोगों के विश्वास को पूर्ण बनाना है। अंत में यह हासिल

होता है कि तुम छोड़ना तो चाहते हो लेकिन, साथ ही तुम ऐसा कर नहीं पाते हो; कुछ लोग लेश-मात्र आशा से भी वंचित होकर भी अपना विश्वास रखने में समर्थ होते हैं; और लोगों को अपने भविष्य के संबंध में अब और कोई भी आशा नहीं होती। केवल इस समय ही परमेश्वर द्वारा शुद्धिकरण का समापन होगा। इंसान अभी भी जीवन और मृत्यु के बीच मँडराने के चरण तक नहीं पहुँचे हैं, उन्होंने मृत्यु को नहीं चखा है, इसलिए शुद्धिकरण की प्रक्रिया ख़त्म नहीं हुई है। यहाँ तक कि जो सेवा करनेवालों के चरण पर थे, उनका भी अतिशय शुद्धिकरण नहीं हुआ। अय्यूब चरम शुद्धिकरण से गुज़रा था और उसके पास भरोसा रहने के लिए कुछ नहीं था। लोगों को भी उस स्थिति तक शुद्धिकरण से अवश्य गुज़रना चाहिए जहाँ उनके पास कोई उम्मीद नहीं रह जाती है और भरोसा करने के लिए कुछ नहीं होता—केवल यही सच्चा शुद्धिकरण है। सेवा करने वालों के समय के दौरान, अगर तुम्हारा दिल हमेशा परमेश्वर के सामने शांत रहा, इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर ने क्या किया और बात की परवाह किए बिना कि तुम्हारे लिए उसकी इच्छा क्या थी, तुमने हमेशा उसकी व्यवस्थाओं का पालन किया, तब मार्ग के अंत में, तुम परमेश्वर ने जो कुछ किया है वो सब कुछ समझ जाओगे। तुम अय्यूब के परीक्षणों से गुजरते हो और इसी समय तुम पतरस के परीक्षणों से भी गुज़रते हो। जब अय्यूब की परीक्षा ली गई, तो उसने गवाही दी, और अंत में उसके सामने यहोवा प्रकट हुआ था। उसके गवाही देने के बाद ही वह परमेश्वर का चेहरा देखने के योग्य हुआ था। यह क्यों कहा जाता है : "मैं गंद की भूमि से छिपता हूँ, लेकिन खुद को पवित्र राज्य को दिखाता हूँ?" इसका मतलब यह है कि जब तुम पवित्र होते हो और गवाही देते हो केवल तभी तुम परमेश्वर का चेहरा देखने का गौरव प्राप्त कर सकते हो। यदि तुम उसके लिए गवाह नहीं बन सकते हो, तो तुम्हारे पास उसके चेहरे को देखने का गौरव नहीं है। यदि तुम शुद्धिकरण का सामना करने में पीछे हट जाते हो या परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करते हो, इस प्रकार परमेश्वर के लिए गवाह बनने में विफल हो जाते हो और शैतान की हँसी का पात्र बन जाते हो, तो तुम्हें परमेश्वर का प्रकटन प्राप्त नहीं होगा। यदि तुम अय्यूब की तरह हो, जिसने परीक्षणों के बीच अपनी स्वयं की देह को धिक्कारा था और परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत नहीं की थी, और अपने शब्दों के माध्यम से, शिकायत या पाप किए बिना अपनी स्वयं की देह का तिरस्कार करने में समर्थ था, तो यह गवाह बनना है। जब तुम किसी निश्चित अंश तक शुद्धिकरणों से गुज़रते हो और फिर भी अय्यूब की तरह हो सकते हो, परमेश्वर के सामने सर्वथा आज्ञाकारी और उससे किसी अन्य अपेक्षा या तुम्हारी धारणाओं के बिना, तब परमेश्वर तुम्हें दिखाई देगा। अभी परमेश्वर तुम्हें दिखाई नहीं देता है क्योंकि तुम्हारी

अपनी बहुत-सी धारणाएँ हैं, व्यक्तिगत पूर्वाग्रह, स्वार्थी विचार, व्यक्तिगत अपेक्षाएँ और दैहिक हित हैं, और तुम उसका चेहरा देखने के योग्य नहीं हो। यदि तुम परमेश्वर को देखते, तो तुम उसे अपनी स्वयं की धारणाओं से मापते, ऐसा करते हुए उसे सलीब पर चढ़ा दिया जाता। यदि तुम पर कई चीजें आ पड़ती हैं जो तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप नहीं हैं, परन्तु फिर भी तुम उन्हें एक ओर करने और इन चीज़ों से परमेश्वर के कार्यों का ज्ञान पाने में समर्थ हो, और शुद्धिकरण के बीच तुम परमेश्वर के प्रति प्यार से भरा अपना हृदय प्रकट करते हो, तो यह गवाह होना है। यदि तुम्हारा घर शांतिपूर्ण है, तुम देह के आराम का आनंद लेते हो, कोई भी तुम्हारा उत्पीड़न नहीं करता है, और कलीसिया में तुम्हारे भाई-बहन तुम्हारा आज्ञापालन करते हैं, तो क्या तुम परमेश्वर के लिए प्यार से भरा अपना हृदय प्रदर्शित कर सकते हो? क्या यह परिस्थिति तुम्हारा शुद्धिकरण कर सकती है? यह केवल शुद्धिकरण के माध्यम से है कि परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्यार दर्शाया जा सकता है, और केवल तुम्हारी धारणाओं के विपरीत घटित होने वाली चीज़ों के माध्यम से ही तुम पूर्ण बनाए जा सकते हो। कई नकारात्मक और विपरीत चीज़ों की सेवा और शैतान के तमाम प्रकटीकरणों—उसके कामों, आरोपों और उसकी बाधाओं और धोखों के माध्यम से परमेश्वर तुम्हें शैतान का भयानक चेहरा साफ़-साफ़ दिखाता है और इस प्रकार शैतान को पहचानने की तुम्हारी क्षमता को पूर्ण बनाता है, ताकि तुम शैतान से नफ़रत करो और उसे त्याग दो।

असफलता के, कमजोरी के और नकारात्मकता के समयों के तुम्हारे अनुभव परमेश्वर द्वारा तुम्हारे परीक्षण कहे जा सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि सब कुछ परमेश्वर से आता है, सभी चीजें और घटनाएँ उसके हाथों में हैं। तुम असफल होते हो या तुम कमजोर हो और ठोकर खा जाते हो, ये सब परमेश्वर पर निर्भर करता है और उसकी मुट्ठी में है। परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से, यह तुम्हारा परीक्षण है, और यदि तुम इसे नहीं पहचान सकते हो, तो यह प्रलोभन बन जाएगा। दो प्रकार की अवस्थाएँ हैं, जिन्हें लोगों को पहचानना चाहिए : एक पवित्र आत्मा से आती है, और दूसरी संभवतः शैतान से आती है। एक अवस्था में, पवित्र आत्मा तुम्हें रोशन करता है और तुम्हें स्वयं को जानने, स्वयं का तिरस्कार करने और ख़ुद पर पछतावा करने और परमेश्वर के लिए सच्चा प्यार रखने में समर्थ होने, उसे संतुष्ट करने पर अपना दिल लगाने देता है। दूसरी अवस्था ऐसी है जिसमें तुम स्वयं को जानते हो, लेकिन तुम नकारात्मक और कमजोर हो। यह कहा जा सकता है कि यह परमेश्वर द्वारा शुद्धिकरण है, और यह भी कहा जा सकता है कि यह शैतान का प्रलोभन है। यदि तुम यह जानते हो कि यह परमेश्वर द्वारा तुम्हारा उद्धार है और अनुभव करते हो कि अब

तुम गहराई से उसके ऋणी हो, और यदि अब से तुम उसका कर्ज़ चुकाने का प्रयास करते हो और इस तरह के पतन में अब और नहीं पड़ते हो, यदि तुम उसके वचनों को खाने और पीने में अपना प्रयास लगाते हो, और यदि तुम स्वयं को हमेशा अभावग्रस्त महसूस करते हो, और लालसा का हृदय रखते हो, तो यह परमेश्वर द्वारा परीक्षण है। दुःख समाप्त हो जाने के बाद और तुम एक बार फिर से आगे बढ़ने लगते हो, परमेश्वर तब भी तुम्हारी अगुआई करेगा, तुम्हें रोशन करेगा और तुम्हारा पोषण करेगा। लेकिन यदि तुम इसे नहीं पहचानते हो और तुम नकारात्मक हो, स्वयं को निराशा में छोड़ देते हो, यदि तुम इस तरह से सोचते हो, तो तुम्हारे ऊपर शैतान का प्रलोभन आ चुका होगा। जब अय्यूब परीक्षणों से गुजरा, तो परमेश्वर और शैतान एक-दूसरे के साथ शर्त लगा रहे थे, और परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को पीड़ित करने दिया। यद्यपि यह परमेश्वर था जो अय्यूब का परीक्षण ले रहा था, लेकिन वह वास्तव में शैतान था जो उससे टकराया था। शैतान के लिए, यह अय्यूब को प्रलोभित करना था, लेकिन अय्यूब परमेश्वर की तरफ़ था। यदि ऐसा नहीं होता, तो वह प्रलोभन में पड़ गया होता। जैसे ही लोग प्रलोभन में पड़ते हैं, वे खतरे में पड़ जाते हैं। शुद्धिकरण से गुज़रना परमेश्वर की ओर से एक परीक्षण कहा जा सकता है, लेकिन अगर तुम एक अच्छी अवस्था में नहीं हो, तो इसे शैतान से प्रलोभन कहा जा सकता है। अगर तुम दर्शन के बारे में स्पष्ट नहीं हो, तो दर्शन के पहलू में शैतान तुम पर दोष लगाएगा और तुम्हारी दृष्टि को बाधित करेगा। इससे पहले कि तुम जान पाओ, तुम प्रलोभन में पड़ जाओगे।

यदि तुम परमेश्वर के काम का अनुभव नहीं करते हो, तो तुम कभी पूर्ण नहीं बनाए जा सकोगे। तुम्हारे अनुभव में, तुम्हें विवरण में भी अवश्य जाना चाहिए। उदाहरण के लिए कौन सी चीज़ें तुम्हारे अंदर धारणाओं और इतने सारे प्रयोजनों को उपजाती हैं और तुम्हारे पास इन समस्याओं को संबोधित करने के लिए किस तरह के उपयुक्त अभ्यास हैं? यदि तुम परमेश्वर के काम का अनुभव कर सकते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम्हारे पास कद-काठी है। यदि ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे पास केवल जोश है, तो यह सही कद-काठी नहीं है और तुम बिलकुल भी दृढ़ नहीं रह पाओगे। केवल जब तुम लोग किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, परमेश्वर के काम का अनुभव और उस पर विचार करने में सक्षम हो जाते हो, जब तुम लोग चरवाहों को छोड़ने में, परमेश्वर पर भरोसा करके स्वतंत्र रूप से जीने में समर्थ हो जाते हो, और परमेश्वर के वास्तविक कार्यों को देखने में सक्षम हो जाते हो, केवल तभी परमेश्वर की इच्छा प्राप्त होगी। अभी, ज्यादातर लोग नहीं जानते हैं कि कैसे अनुभव करें। जब वे किसी समस्या का सामना करते हैं तो उन्हें पता

नहीं होता है कि उसे कैसे सँभालें; वे परमेश्वर के काम का अनुभव नहीं कर सकते हैं, और वे एक आध्यात्मिक जीवन नहीं बिता सकते हैं। तुम्हें परमेश्वर के वचनों और काम को अपने व्यावहारिक जीवन में अवश्य अपनाना चाहिए।

कभी-कभी परमेश्वर तुम्हें एक निश्चित प्रकार की अनुभूति देता है, एक एहसास जिसके कारण तुम अपना आंतरिक आनंद खो देते हो और परमेश्वर की उपस्थिति को खो देते हो, कुछ इस तरह कि तुम अंधकार में डूब जाते हो। यह एक प्रकार का शुद्धिकरण है। जब कभी भी तुम कुछ करते हो तो गड़बड़ हो जाती है या तुम्हारे सामने कोई अवरोध आ जाता है। यह परमेश्वर का अनुशासन है। कभी, अगर तुम कुछ ऐसा करो जो अनाज्ञाकारी और परमेश्वर के प्रति विद्रोही हो, तो हो सकता है कि दूसरों को इसके बारे में पता न चले, लेकिन परमेश्वर जानता है। वह तुम्हें बचकर जाने नहीं देगा, और वह तुम्हें अनुशासित करेगा। पवित्र आत्मा का काम बहुत ही विस्तृत है। वह लोगों के हर वचन और कार्य को, उनकी हर क्रिया और हरकत को, और उनकी हर सोच और विचार को ध्यानपूर्वक देखता है, ताकि लोग इन चीज़ों के बारे में आंतरिक जागरूकता पा सकें। तुम एक बार कुछ करते हो और वह गड़बड़ हो जाता है, तुम फिर से कुछ करते हो और यह तब भी गड़बड़ हो जाता है, और धीरे-धीरे तुम पवित्र आत्मा के काम को समझ जाओगे। कई बार अनुशासित किए जाने के द्वारा, तुम्हें पता चल जाएगा कि परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होने के लिए क्या किया जाए और उसकी इच्छा के अनुरूप क्या नहीं है। अंत में, तुम्हारे भीतर से पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का सटीक उत्तर प्राप्त हो जाएगा। कभी-कभी तुम विद्रोही हो जाओगे और तुम्हें भीतर से परमेश्वर द्वारा डाँटा जाएगा। यह सब परमेश्वर के अनुशासन से आता है। यदि तुम परमेश्वर के वचन को सँजो कर नहीं रखते हो, यदि तुम उनके काम को महत्वहीन समझते हो, तो वह तुम पर कोई ध्यान नहीं देगा। तुम परमेश्वर के वचनों को जितनी अधिक गंभीरता से लेते हो, उतना ही अधिक वह तुम्हें रोशन करेगा। अभी, कलीसिया में कुछ लोग हैं जिनका विश्वास अव्यवस्थित और भ्रमित है, और वे बहुत सी अनुचित चीजें करते हैं और अनुशासन के बिना कार्य करते हैं, और इसलिए पवित्र आत्मा का काम उनमें स्पष्ट रूप से नहीं देखा जा सकता है। कुछ लोग पैसे कमाने के लिए अपने कर्तव्यों को पीछे छोड़ देते हैं, और अनुशासित हुए बिना व्यवसाय का संचालन करने चल पड़ते हैं; इस तरह का व्यक्ति और भी अधिक खतरे में है। वर्तमान में न केवल ऐसे लोगों में पवित्र आत्मा का काम नहीं है, बल्कि भविष्य में उन्हें पूर्ण बनाना भी मुश्किल होगा। ऐसे कई लोग हैं जिन पर पवित्र आत्मा का काम नहीं देखा जा सकता है, जिसमें

परमेश्वर के अनुशासन को नहीं देखा जा सकता है। ये वे लोग हैं जो परमेश्वर की इच्छा के बारे में स्पष्ट नहीं है और जो उसके कार्य को नहीं जानते हैं। जो लोग शुद्धिकरण के बीच स्थिर रह सकते हैं, जो परमेश्वर का पालन करते हैं इस बात की परवाह किए बिना कि वह क्या करता है, कम से कम छोड़ने में तो समर्थ नहीं होते हैं या पतरस ने जो प्राप्त किया उसका 0.1% प्राप्त करते हैं, वे ठीक जा रहे हैं, लेकिन परमेश्वर द्वारा उनके उपयोग के संबंध में उनका कोई मूल्य नहीं है। बहुत से लोग चीज़ों को जल्दी से समझ जाते हैं, उनका परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम होता है वे पतरस के स्तर से पार जा सकते हैं और परमेश्वर उन पर पूर्णता का काम करता है। अनुशासन और प्रबुद्धता ऐसे लोगों को प्राप्त होती है और यदि उनमें कुछ ऐसा होता है जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं है, तो वे उसे तुरंत त्याग सकते हैं। इस तरह के लोग सोना-चाँदी हैं, मूल्यवान पत्थर हैं—उनका मूल्य बहुत अधिक है! यदि परमेश्वर ने कई तरह के काम किए हैं, लेकिन तुम तब भी रेत की तरह हो, एक पत्थर की तरह हो, तो तुम मूल्यहीन हो!

बड़े लाल अजगर के देश में परमेश्वर का काम शानदार और अथाह है। वह एक समूह के लोगों को पूर्ण बनाएगा और कुछ अन्य को हटा देगा, क्योंकि कलीसिया में सभी प्रकार के लोग हैं—ऐसे लोग हैं जो सत्य से प्रेम करते हैं और ऐसे लोग हैं जो नहीं करते; ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के काम अनुभव करते हैं और कुछ ऐसे हैं जो नहीं करते; कुछ ऐसे हैं जो कर्तव्य करते हैं और कुछ जो नहीं करते; ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के लिए गवाही देते हैं और कुछ नहीं देते—और उनमें से एक हिस्सा अविश्वासियों और दुष्ट इंसानों का है जो निश्चित ही हटा दिये जाएंगे। यदि तुम स्पष्ट रूप से परमेश्वर के काम को नहीं जानते हो तो तुम नकारात्मक होगे; ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का काम केवल अल्पसंख्या के लोगों में ही देखा जा सकता है। उस समय यह स्पष्ट हो जाएगा कि कौन सचमुच परमेश्वर से प्यार करता है और कौन नहीं। जो लोग सचमुच परमेश्वर से प्यार करते हैं, उनके पास पवित्र आत्मा का काम है, जो सचमुच उससे प्यार नहीं करते हैं, वे उसके काम के प्रत्येक चरण के माध्यम से प्रकट किए जाएँगे। वे निष्कासन की वस्तुएँ बन जाएँगे। ये लोग जीतने के कार्य के दौरान प्रकट किए जाएँगे, उनमें पूर्ण बनाए जाने के लिए कोई मूल्य नहीं है। जो पूर्ण बनाए गए हैं, वे पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिए गए हैं, और पतरस की तरह परमेश्वर को प्रेम करने में सक्षम हैं। जिन लोगों को जीत लिया गया है उनके पास सहज प्रेम नहीं है, बल्कि केवल निष्क्रिय प्रेम है, और वे परमेश्वर से प्रेम करके लिए बाध्य हैं। सहज प्रेम व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से प्राप्त समझ के माध्यम से विकसित होता है। यह प्रेम एक व्यक्ति के दिल में भरा होता है और वह उन्हें

स्वैच्छिक रूप से परमेश्वर के प्रति समर्पित करवाता है; परमेश्वर के वचन उनकी नींव बन जाते हैं और वे परमेश्वर के लिए कष्ट सहने में समर्थ हो जाते हैं। निस्सन्देह, ये ऐसी चीज़ें हैं जो उसके पास होती हैं जिसे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जा चुका है। यदि तुम केवल जीते जाने के लिए प्रयास करते हो, तो तुम परमेश्वर के लिए गवाही नहीं दे सकते हो; यदि परमेश्वर केवल लोगों को जीतने के माध्यम से ही उद्धार का लक्ष्य प्राप्त करता है, तो सेवा करने वालों का चरण काम ख़त्म कर देगा। लेकिन, लोगों को जीतना परमेश्वर का अंतिम लक्ष्य नहीं है, उसका अंतिम लक्ष्य लोगों को पूर्ण बनाना है। इसलिए बजाय यह कहने के कि यह चरण जीतने का कार्य है, यह कहो कि यह पूर्ण बनाने और निष्कासन करने का कार्य है। कुछ लोगों को पूरी तरह से नहीं जीता जा गया है, और उन्हें जीतने के दौरान, लोगों के एक समूह को पूर्ण बनाया जाएगा। कार्य के इन दोनों खंडों को एक साथ किया जाता है। काम की इतनी लंबी अवधि में भी लोग मार्ग से विचलित नहीं हुए हैं और यह दर्शाता है कि जीतने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है—यह जीत लिए जाने का एक तथ्य है। शुद्धिकरण जीते जाने के वास्ते नहीं हैं, बल्कि वे पूर्ण बनाए जाने के वास्ते हैं। शुद्धिकरणों के बिना, लोगों को पूर्ण नहीं बनाया जा सकता है। इसलिए शुद्धिकरण बहुत मूल्यवान हैं! आज लोगों के एक समूह को पूर्ण बनाया जा रहा और प्राप्त किया जा रहा है। पहले उल्लेख किए गए सभी दस आशीषों का लक्ष्य वे लोग थे जिन्हें पूर्ण बनाया जा चुका है। धरती पर उनकी छवि बदलने के बारे में हर चीज उन पर लक्षित है जिन्हें पूर्ण बनाया जा चुका है। जिन लोगों को पूर्ण नहीं बनाया गया है वे परमेश्वर के वादों को पाने के योग्य नहीं हैं।

पीड़ादायक परीक्षणों के अनुभव से ही तुम परमेश्वर की मनोहरता को जान सकते हो

आज तुम परमेश्वर से कितना प्रेम करते हो? और जो कुछ भी परमेश्वर ने तुम्हारे भीतर किया है, उस सबके बारे में तुम कितना जानते हो? ये वे बातें हैं जो तुम्हें सीखनी चाहिए। जब परमेश्वर पृथ्वी पर आया, तो जो कुछ उसने मनुष्य में किया और जो कुछ उसने मनुष्य को देखने की अनुमति दी, वह इसलिए था कि मनुष्य उससे प्रेम करे और सही मायने में उसे जाने। मनुष्य यदि परमेश्वर के लिए कष्ट सहने योग्य है और यहाँ तक आ पाया है, तो यह एक ओर परमेश्वर के प्रेम के कारण है, दूसरी ओर परमेश्वर के उद्धार के कारण; इससे बढ़कर, यह न्याय और ताड़ना के कार्य के कारण है जो परमेश्वर ने मनुष्य में कार्यान्वित किए

हैं। यदि तुम लोग परमेश्वर के न्याय, ताड़ना और परीक्षण से रहित हो, और यदि परमेश्वर ने तुम्हें कष्ट नहीं दिया है, तो सच यह है कि तुम लोग परमेश्वर से सच में प्रेम नहीं करते। मनुष्य में परमेश्वर का काम जितना बड़ा होता है, और जितने अधिक मनुष्य के कष्ट होते हैं, उतना ही अधिक यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर का कार्य कितना अर्थपूर्ण है और उतना ही अधिक उस मनुष्य का हृदय परमेश्वर से सच्चा प्रेम कर पाता है। तुम परमेश्वर से प्रेम करना कैसे सीखते हो? यातना और शोधन के बिना, पीड़ादायक परीक्षणों के बिना—और इसके अलावा यदि परमेश्वर ने मनुष्य को अनुग्रह, प्रेम और दया ही प्रदान की होती—तो क्या तुम परमेश्वर को सच्चा प्रेम कर पाते? एक ओर, परमेश्वर की ओर से आने वाली परीक्षाओं के दौरान मनुष्य अपनी कमियों को जान पाता है और देख पाता है कि वह महत्वहीन, घृणित, और निकृष्ट है, और उसके पास कुछ नहीं है, और वह कुछ नहीं है; दूसरी ओर, उसके परीक्षणों के दौरान परमेश्वर मनुष्य के लिए भिन्न वातावरणों की रचना करता है जो मनुष्य को परमेश्वर की मनोहरता का अनुभव करने के अधिक योग्य बनाता है। यद्यपि पीड़ा अधिक होती है और कभी-कभी तो असहनीय हो जाती है—मिटा कर रख देने वाले कष्ट तक भी पहुँच जाती है—परंतु इसका अनुभव करने के बाद मनुष्य देखता है कि उसमें परमेश्वर का कार्य कितना मनोहर है, और केवल इसी नींव पर मनुष्य में परमेश्वर के प्रति सच्चे प्रेम का जन्म होता है। आज मनुष्य देखता है कि परमेश्वर के अनुग्रह, प्रेम और उसकी दया मात्र से वह स्वयं को सही मायने में जान सकने में असमर्थ है, और वह मनुष्य के सार को तो जान ही नहीं सकता है। केवल परमेश्वर के शोधन और न्याय के द्वारा, और शोधन की प्रक्रिया के दौरान ही व्यक्ति अपनी कमियों को और इस बात को जान सकता है कि उसके पास कुछ भी नहीं है। इस प्रकार, मनुष्य का परमेश्वर के प्रति प्रेम परमेश्वर की ओर से आने वाले शोधन और न्याय की नींव पर आधारित होता है। शांतिमय पारिवारिक जीवन या भौतिक आशीषों के साथ, यदि तुम केवल परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेते हो, तो तुमने परमेश्वर को प्राप्त नहीं किया है, और परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास को सफल नहीं माना जा सकता। परमेश्वर ने अनुग्रह के कार्य के एक चरण को देह में पहले ही पूरा कर लिया है, और मनुष्य को भौतिक आशीषें पहले ही प्रदान कर दी हैं—परंतु मनुष्य को केवल अनुग्रह, प्रेम और दया के साथ पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। मनुष्य अपने अनुभवों में परमेश्वर के कुछ प्रेम का अनुभव करता है, और परमेश्वर के प्रेम और उसकी दया को देखता है, फिर भी कुछ समय तक इसका अनुभव करने के बाद वह देखता है कि परमेश्वर का अनुग्रह, उसका प्रेम और उसकी दया मनुष्य को पूर्ण बनाने में असमर्थ हैं, और मनुष्य के

भीतर के भ्रष्ट तत्वों को प्रकट करने में भी असमर्थ हैं, और न ही वे मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव से उसे आज़ाद कर सकते हैं, न उसके प्रेम और विश्वास को पूर्ण बना सकते हैं। परमेश्वर का अनुग्रह का कार्य एक अवधि का कार्य था, और मनुष्य परमेश्वर को जानने के लिए उसके अनुग्रह का आनंद उठाने पर निर्भर नहीं रह सकता।

परमेश्वर द्वारा मनुष्य की पूर्णता किन साधनों से संपन्न होती है? यह उसके धार्मिक स्वभाव द्वारा पूरी होती है। परमेश्वर के स्वभाव में मुख्यतः धार्मिकता, क्रोध, भव्यता, न्याय और शाप शामिल हैं, और वह मनुष्य को प्राथमिक रूप से न्याय द्वारा पूर्ण बनाता है। कुछ लोग नहीं समझते और पूछते हैं कि क्यों परमेश्वर केवल न्याय और शाप के द्वारा ही मनुष्य को पूर्ण बना सकता है। वे कहते हैं, "यदि परमेश्वर मनुष्य को शाप दे, तो क्या वह मर नहीं जाएगा? यदि परमेश्वर मनुष्य का न्याय करे, तो क्या वह दोषी नहीं ठहरेगा? तब वह कैसे पूर्ण बनाया जा सकता है?" ऐसे शब्द उन लोगों के होते हैं जो परमेश्वर के कार्य को नहीं जानते। परमेश्वर मनुष्य की अवज्ञा को शापित करता है और वह मनुष्य के पापों का न्याय करता है। यद्यपि वह बिना किसी संवेदना के कठोरता से बोलता है, फिर भी वह उन सबको प्रकट करता है जो मनुष्य के भीतर होता है, और इन कठोर वचनों के द्वारा वह उन सब बातों को प्रकट करता है जो मूलभूत रूप से मनुष्य के भीतर होती हैं, फिर भी ऐसे न्याय द्वारा वह मनुष्य को देह के सार का गहन ज्ञान प्रदान करता है, और इस प्रकार मनुष्य परमेश्वर के समक्ष समर्पण कर देता है। मनुष्य की देह पापमय और शैतान की है, यह अवज्ञाकारी है, और परमेश्वर की ताड़ना की पात्र है। इसलिए, मनुष्य को स्वयं का ज्ञान प्रदान करने के लिए परमेश्वर के न्याय के वचनों से उसका सामना और हर प्रकार का शोधन परम आवश्यक है; केवल तभी परमेश्वर का कार्य प्रभावी हो सकता है।

परमेश्वर द्वारा कहे गए वचनों से यह देखा जा सकता है कि उसने मनुष्य की देह को पहले ही दोषी ठहरा दिया है। क्या ये वचन फिर शाप के वचन नहीं हैं? परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन मनुष्य के असली रंग को प्रकट करते हैं, और ऐसे प्रकाशनों द्वारा उसका न्याय किया जाता है, और जब वह देखता है कि वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में असमर्थ है, तो वह अपने भीतर शोक और ग्लानि अनुभव करता है, वह महसूस करता है कि वह परमेश्वर का बहुत ऋणी है, और परमेश्वर की इच्छा के लिए अपर्याप्त है। ऐसा समय भी होता है जब पवित्र आत्मा तुम्हें भीतर से अनुशासित करता है, और यह अनुशासन परमेश्वर के न्याय से आता है; ऐसा समय भी होता है जब परमेश्वर तुम्हारा तिरस्कार करता है और अपना चेहरा तुमसे

छुपा लेता है, जब वह कोई ध्यान नहीं देता, और तुम्हारे भीतर कार्य नहीं करता, और तुम्हें शुद्ध करने के लिए बिना आवाज के तुम्हें ताड़ना देता है। मनुष्य में परमेश्वर का कार्य प्राथमिक रूप से अपने धार्मिक स्वभाव को स्पष्ट करने के लिए होता है। मनुष्य अंततः कैसी गवाही परमेश्वर के बारे में देता है? वह गवाही देता है कि परमेश्वर धार्मिक परमेश्वर है, उसके स्वभाव में धार्मिकता, क्रोध, ताड़ना और न्याय शामिल हैं; मनुष्य परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की गवाही देता है। परमेश्वर अपने न्याय का प्रयोग मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए करता है, वह मनुष्य से प्रेम करता रहा है और उसे बचाता रहा है—परंतु उसके प्रेम में कितना कुछ शामिल है? उसमें न्याय, भव्यता, क्रोध, और शाप है। यद्यपि आतीत में परमेश्वर ने मनुष्य को शाप दिया था, परंतु उसने मनुष्य को अथाह कुण्ड में नहीं फेंका था, बल्कि उसने उस माध्यम का प्रयोग मनुष्य के विश्वास को शुद्ध करने के लिए किया था; उसने मनुष्य को मार नहीं डाला था, बल्कि उसने मनुष्य को पूर्ण बनाने का कार्य किया था। देह का सार वह है जो शैतान का है—परमेश्वर ने इसे बिलकुल सही कहा है—परंतु परमेश्वर द्वारा कार्यान्वित वास्तविकताएँ उसके वचनों के अनुसार पूरी नहीं हुई हैं। वह तुम्हें शाप देता है ताकि तुम उससे प्रेम कर सको, ताकि तुम देह के सार को जान सको; वह तुम्हें इसलिए ताड़ना देता है कि तुम जागृत हो जाओ, तुम अपने भीतर की कमियों को जान सको और मनुष्य की संपूर्ण अयोग्यता को जान लो। इस प्रकार, परमेश्वर के शाप, उसका न्याय, और उसकी भव्यता और क्रोध—ये सब मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए हैं। वह सब जो परमेश्वर आज करता है, और अपना धार्मिक स्वभाव जिसे वह तुम लोगों के भीतर स्पष्ट करता है—यह सब मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए है। परमेश्वर का प्रेम ऐसा ही है।

अपनी पारंपरिक धारणाओं में, मनुष्य विश्वास करता है कि परमेश्वर का प्रेम मनुष्य की निर्बलता के लिए उसका अनुग्रह, दया और सहानुभूति है। यद्यपि ये बातें भी परमेश्वर का प्रेम हैं, परंतु वे अत्यधिक एक-तरफ़ा हैं, और वे प्राथमिक माध्यम नहीं हैं जिनके द्वारा परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाता है। कुछ लोग बीमारी के कारण परमेश्वर में विश्वास करना आरंभ करते हैं और यह बीमारी तुम्हारे लिए परमेश्वर का अनुग्रह है; इसके बिना तुम परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, और यदि तुम परमेश्वर में विश्वास नहीं करते तो तुम यहाँ तक नहीं पहुँच पाते—और इस प्रकार यह अनुग्रह भी परमेश्वर का प्रेम है। यीशु में विश्वास करने के समय लोगों ने ऐसा बहुत कुछ किया जो परमेश्वर को नापसंद था क्योंकि उन्होंने सत्य को नहीं समझा, फिर भी परमेश्वर में दया और प्रेम है, और वह मनुष्य को यहाँ तक ले आया है, और यद्यपि मनुष्य कुछ

नहीं समझता, फिर भी परमेश्वर मनुष्य को अनुमति देता है कि वह उसका अनुसरण करे, और इससे बढ़कर वह मनुष्य को वर्तमान समय तक ले आया है। क्या यह परमेश्वर का प्रेम नहीं है? जो परमेश्वर के स्वभाव में प्रकट है वह परमेश्वर का प्रेम है—यह बिलकुल सही है! जब कलीसिया का निर्माण अपने चरम पर पहुँच गया तो परमेश्वर ने सेवाकर्ताओं के कार्य का चरण किया और मनुष्य को अथाह कुण्ड में डाल दिया। सेवाकर्ताओं के समय के सभी वचन शाप थे: तुम्हारी देह के शाप, तुम्हारे भ्रष्ट शैतानी स्वभाव के शाप, और तुमसे जुड़ी उन चीजों के शाप जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करतीं। उस कदम पर परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य भव्य रूप में प्रकट हुआ, जिसके ठीक बाद परमेश्वर ने ताड़ना के कार्य का कदम उठाया, और उसके बाद मृत्यु का परीक्षण आया। ऐसे कार्य में, मनुष्य ने परमेश्वर के क्रोध, भव्यता, न्याय, और ताड़ना को देखा, परंतु साथ ही उसने परमेश्वर के अनुग्रह, उसके प्रेम और दया को भी देखा; जो कुछ भी परमेश्वर ने किया, और वह सब जो उसके स्वभाव के रूप में प्रकट हुआ, वह मनुष्य के प्रति उसका प्रेम था, और जो कुछ परमेश्वर ने किया वह मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त था। उसने ऐसा मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए किया, और उसने मनुष्य के आध्यात्मिक कद के अनुसार उसकी जरूरतें पूरी कीं। यदि परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया होता तो मनुष्य परमेश्वर के समक्ष आने में असमर्थ होता, और परमेश्वर के सच्चेचेहरे को देखने का उसके पास कोई तरीका नहीं होता। जब से मनुष्य ने पहली बार परमेश्वर पर विश्वास करना आरंभ किया, तब से आज तक परमेश्वर ने मनुष्य के आध्यात्मिक कद के अनुसार धीरे-धीरे उसकी जरूरतें पूरी की हैं, जिससे मनुष्य आंतरिक रूप से धीरे-धीरे उसको जान गया है। वर्तमान समय तक पहुँचने पर ही मनुष्य अनुभव करता है कि परमेश्वर का न्याय कितना अद्भुत है। सृष्टि के समय से लेकर आज तक, सेवाकर्ताओं के कार्य का कदम, शाप के कार्य की पहली घटना थी। मनुष्य को अथाह कुण्ड में भेजकर शापित किया गया था। यदि परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया होता, तो आज मनुष्य के पास परमेश्वर का सच्चा ज्ञान नहीं होता; यह केवल शाप के द्वारा ही था कि मनुष्य आधिकारिक रूप से परमेश्वर के स्वभाव को देख पाया। सेवाकर्ताओं के परीक्षण के माध्यम से मनुष्य को उजागर किया गया। उसने देखा कि उसकी वफ़ादारी स्वीकार्य नहीं थी, उसका आध्यात्मिक कद बहुत छोटा था, वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में असमर्थ था, और हर समय परमेश्वर को संतुष्ट करने के उसके दावे शब्दों से बढ़कर कुछ नहीं थे। यद्यपि सेवाकर्ताओं के कार्य के कदम में परमेश्वर ने मनुष्य को शापित किया, फिर भी अब पीछे मुड़कर देखें तो परमेश्वर के कार्य का वह कदम अद्भुत था:

यह मनुष्य के लिए एक बड़ा निर्णायक मोड़ और उसके जीवन स्वभाव में बड़ा बदलाव लेकर आया। सेवाकर्ताओं के समय से पहले मनुष्य जीवन के अनुसरण, परमेश्वर में विश्वास करने के अर्थ, या परमेश्वर के कार्य की बुद्धि के बारे में कुछ नहीं समझता था, और न ही उसने यह समझा कि परमेश्वर का कार्य मनुष्य को परख सकता है। सेवाकर्ताओं के समय से लेकर आज तक, मनुष्य देखता है कि परमेश्वर का कार्य कितना अद्भुत है—यह मनुष्य के लिए अथाह है। अपने दिमाग में वह यह कल्पना करने में असमर्थ है कि परमेश्वर कैसे कार्य करता है, और वह यह भी देखता है कि उसका आध्यात्मिक कद कितना छोटा है और वह बहुत हद तक अवज्ञाकारी है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को शापित किया, तो वह एक प्रभाव को प्राप्त करने के लिए था, और उसने मनुष्य को मार नहीं डाला। यद्यपि उसने मनुष्य को शापित किया, उसने ऐसा वचनों के द्वारा किया, और उसके शाप वास्तव में मनुष्य पर नहीं पड़े, क्योंकि जिसे परमेश्वर ने शापित किया वह मनुष्य की अवज्ञा थी, इसलिए उसके शापों के वचन भी मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए थे। चाहे परमेश्वर मनुष्य का न्याय करे या उसे शाप दे, ये दोनों ही मनुष्य को पूर्ण बनाते हैं : दोनों का उपयोग मनुष्य के भीतर की विकृतियों के परिष्कार के लिए किया जाता है। इस माध्यम से मनुष्य का शोधन किया जाता है, और मनुष्य में जिस चीज़ की कमी होती है उसे परमेश्वर के वचनों और कार्य के द्वारा पूर्ण किया जाता है। परमेश्वर के कार्य का प्रत्येक कदम—चाहे यह कठोर शब्द हों, न्याय हो या ताड़ना हो—मनुष्य को पूर्ण बनाता है और बिलकुल उचित होता है। युगों-युगों में कभी परमेश्वर ने ऐसा कार्य नहीं किया है; आज वह तुम लोगों के भीतर कार्य करता है ताकि तुम उसकी बुद्धि को सराहो। यद्यपि तुम लोगों ने अपने भीतर कुछ कष्ट सहा है, फिर भी तुम्हारे हृदय स्थिर और शांत महसूस करते हैं; यह तुम्हारे लिए आशीष है कि तुम परमेश्वर के कार्य के इस चरण का आनंद ले सकते हो। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम भविष्य में क्या प्राप्त कर सकते हो, आज अपने भीतर परमेश्वर के जिस कार्य को तुम देखते हो, वह प्रेम है। यदि मनुष्य परमेश्वर के न्याय और उसके शोधन का अनुभव नहीं करता, तो उसके कार्यकलाप और उसका उत्साह सदैव सतही रहेंगे, और उसका स्वभाव सदैव अपरिवर्तित रहेगा। क्या इसे परमेश्वर द्वारा प्राप्त किया गया माना जा सकता है? यद्यपि आज भी मनुष्य के भीतर बहुत कुछ है जो काफी अहंकारी और दंभी है, फिर भी मनुष्य का स्वभाव पहले की तुलना में बहुत ज्यादा स्थिर है। तुम्हारे प्रति परमेश्वर का व्यवहार तुम्हें बचाने के लिए है, और हो सकता है कि यद्यपि तुम इस समय कुछ पीड़ा महसूस करो, फिर भी एक ऐसा दिन आएगा जब तुम्हारे स्वभाव में बदलाव आएगा। उस समय, तुम पीछे मुड़कर देखने पर

पाओगे कि परमेश्वर का कार्य कितना बुद्धिमत्तापूर्ण है और उस समय तुम परमेश्वर की इच्छा को सही मायने में समझ पाओगे। आज कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि वे परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं, परंतु यह वास्तविकता नहीं है, वास्तव में वे झूठ बोल रहे हैं, क्योंकि वर्तमान में उन्हें अभी यह समझना शेष है कि क्या परमेश्वर की इच्छा मनुष्य को बचाने की है या मनुष्य को शाप देने की है। शायद तुम इसे अभी स्पष्ट नहीं देख सकते, परंतु एक दिन आएगा जब तुम देखोगे कि परमेश्वर की महिमा का दिन आ गया है, और परमेश्वर से प्रेम करना कितना अर्थपूर्ण है, जिससे तुम मानवीय जीवन को जान सकोगे, और तुम्हारी देह परमेश्वर-प्रेम की दुनिया में रहेगी, तुम्हारी आत्मा स्वतंत्र कर दी जाएगी, तुम्हारा जीवन आनंदमय हो जाएगा, और तुम सदैव परमेश्वर के समीप रहोगे और उस पर भरोसा करोगे। उस समय, तुम सही मायने में जान जाओगे कि परमेश्वर का कार्य आज कितना मूल्यवान है।

आज अधिकांश लोगों के पास यह ज्ञान नहीं है। वे मानते हैं कि दुःख उठाने का कोई महत्व नहीं है, वे संसार के द्वारा त्यागे जाते हैं, उनके पारिवारिक जीवन में परेशानी होती है, वे परमेश्वर के प्रिय भी नहीं होते, और उनकी संभावनाएं बहुत धूमिल होती हैं। कुछ लोगों के कष्ट चरम तक पहुँच जाते हैं, और उनके विचार मृत्यु की ओर मुड़ जाते हैं। यह परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम नहीं है; ऐसे लोग कायर होते हैं, उनमें धीरज नहीं होता, वे कमजोर और शक्तिहीन होते हैं! परमेश्वर उत्सुक है कि मनुष्य उससे प्रेम करे, परंतु मनुष्य जितना अधिक उससे प्रेम करता है, उसके कष्ट उतने अधिक बढ़ते हैं, और जितना अधिक मनुष्य उससे प्रेम करता है, उसके परीक्षण उतने अधिक बढ़ते हैं। यदि तुम उससे प्रेम करते हो, तो हर प्रकार के कष्ट से तुम्हारा सामना होगा—और यदि तुम उससे प्रेम नहीं करते, तब शायद सब कुछ तुम्हारे लिए अच्छा चलता रहेगा और तुम्हारे चारों ओर सब कुछ शांतिमय होगा। जब तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो, तो तुम महसूस करोगे कि तुम्हारे चारों ओर सब कुछ दुर्गम है, और क्योंकि तुम्हारा आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है, तुम्हारा शोधन किया जाएगा, इसके अलावा तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में असमर्थ रहोगे और हमेशा महसूस करोगे कि परमेश्वर की इच्छा बहुत बड़ी है, यह मनुष्य की पहुँच से बाहर है। इन सारी वजहों से तुम्हें परिशुद्ध किया जाएगा—क्योंकि तुममें बहुत निर्बलता है, और ऐसा बहुत कुछ है जो परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने में असमर्थ है, इसलिए तुम्हें भीतर से परिशुद्ध किया जाएगा। फिर भी तुम लोगों को यह स्पष्ट देखना आवश्यक है कि केवल शोधन के द्वारा ही शुद्धीकरण प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार, इन अंतिम दिनों में, तुम्हें अवश्य ही परमेश्वर के प्रति गवाही देनी है। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम्हारे

कष्ट कितने बड़े हैं, तुम्हें अपने अंत की ओर बढ़ना है, अपनी अंतिम सांस तक भी तुम्हें अवश्य ही परमेश्वर के प्रति निष्ठावान और उसकी कृपा पर बने रहना चाहिए; केवल यही वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करना है और केवल यही सशक्त और जोरदार गवाही है। जब शैतान तुम्हें लुभाता है तो तुम्हें यह कहना चाहिए: "मेरा हृदय परमेश्वर का है, और परमेश्वर ने मुझे पहले ही प्राप्त कर लिया है। मैं तुझे संतुष्ट नहीं कर सकता—मुझे अपना सर्वस्व परमेश्वर को संतुष्ट करने में लगाना है।" जितना अधिक तुम परमेश्वर को संतुष्ट करते हो, उतना ही अधिक परमेश्वर तुम्हें आशीष देता है, और परमेश्वर के लिए तुम्हारे प्रेम की ताकत भी उतनी ही अधिक होगी; और इसके साथ-साथ तुममें विश्वास और दृढ़-निश्चय होगा, और तुम महसूस करोगे कि परमेश्वर को प्रेम करने में बिताए गए जीवन से बढ़कर कीमती और महत्वपूर्ण और कुछ नहीं है। यह कहा जा सकता है कि अगर मनुष्य परमेश्वर से प्रेम करता है तो वह शोक से रहित होगा। यद्यपि ऐसा समय भी होता है जब तुम्हारी देह निर्बल पड़ जाती है, और कई वास्तविक परेशानियाँ तुम्हें घेर लेती हैं, ऐसे समय में तुम सचमुच परमेश्वर पर निर्भर रहोगे, और अपनी आत्मा के भीतर तुम राहत महसूस करोगे, और एक निश्चितता का अनुभव करोगे, महसूस करोगे कि तुम्हारे पास कुछ है जिस पर तुम भरोसा कर सकते हो। इस तरह, तुम कई वातावरणों पर विजय प्राप्त कर पाओगे, और इसलिए तुम अपनी यंत्रणा के कारण परमेश्वर के बारे में शिकायत नहीं करोगे; बल्कि तुम गीत गाना, नाचना, और प्रार्थना करना चाहोगे, तुम एकत्रित होना, संगति करना, परमेश्वर के बारे में विचार करना चाहोगे, और तुम महसूस करोगे कि तुम्हारे चारों ओर सारे लोग, सारी वस्तुएँ और चीजें जो परमेश्वर के द्वारा व्यवस्थित की गई हैं वे सब उपयुक्त हैं। यदि तुम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते हो, तो जिन चीजों पर भी तुम दृष्टि डालते हो वे सब तुम्हारे लिए दुःखद होंगी, कुछ भी तुम्हारी दृष्टि में सुखद नहीं होगा; अपनी आत्मा में तुम स्वाधीन नहीं बल्कि पतित होगे, तुम्हारा हृदय सदैव परमेश्वर के बारे में शिकायत करेगा, और तुम सदैव महसूस करोगे कि तुम बहुत अधिक यातना सहते हो, और कि यह बहुत ही अन्यायपूर्ण है। यदि तुम प्रसन्नता के लिए प्रयास नहीं करते, बल्कि परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए और शैतान के द्वारा दोषी न ठहराए जाने के लिए प्रयास करते हो, तो ऐसे प्रयास तुम्हें परमेश्वर से प्रेम करने का बहुत सामर्थ्य देंगे। परमेश्वर द्वारा कही गई सारी बातें मनुष्य पूरी कर सकता है, और वह जो कुछ भी करता है वह परमेश्वर को संतुष्ट करने में सक्षम है—वास्तविकता से सम्पन्न होने का अर्थ यही है। परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयास, उसके वचनों को अभ्यास में लाने के लिए परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम का प्रयोग करना है; समय की परवाह किए बिना—तब भी जब दूसरे लोग

सामर्थ्यहीन हैं—तुम्हारे भीतर अभी भी एक ऐसा हृदय है जो परमेश्वर से प्रेम करता है, जो बड़ी गहराई से परमेश्वर की लालसा करता है, और परमेश्वर को याद करता है। यह वास्तविक आध्यात्मिक कद है। तुम्हारा आध्यात्मिक कद कितना बड़ा है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि परमेश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम कितना बड़ा है, इस पर कि क्या तुम परीक्षण किए जाने पर अडिग खड़े रह सकते हो, क्या तुम किसी खास परिस्थिति में होने पर कमजोर पड़ जाते हो, और क्या तुम स्थिर रह सकते हो जब तुम्हारे भाई और बहन तुम्हें ठुकरा देते हैं; इन बातों का परिणाम तुम्हें दिखाएगा कि परमेश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम कैसा है। परमेश्वर के अधिकांश कार्यों से यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर सचमुच मनुष्य से प्रेम करता है, बस मनुष्य की आत्मा की आँखों का पूरी तरह से खुलना अभी बाक़ी है, और वह परमेश्वर के अधिकांश कार्य को, और परमेश्वर की इच्छा को, और उन बहुत से कार्यों को देखने में असमर्थ है जो परमेश्वर के प्रेम से जुड़े हैं; मनुष्य में परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम बहुत कम है। तुमने इस पूरे समय के दौरान परमेश्वर पर विश्वास किया है, और आज परमेश्वर ने बच निकलने के सारे मार्ग बंद कर दिए हैं। वास्तव में कहें तो, तुम्हारे पास सही मार्ग अपनाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है, उस सही मार्ग को जिस पर तुम्हें परमेश्वर द्वारा अपने कठोर न्याय और सर्वोच्च उद्धार के माध्यम लाया गया है। मुश्किलों और शोधन का अनुभव करने के बाद ही मनुष्य जान पाता है कि परमेश्वर प्रेमयुक्त है। आज तक इसका अनुभव करने के बाद कहा जा सकता है कि मनुष्य परमेश्वर की मनोहरता के एक भाग को जान गया है—परंतु यह अभी भी अपर्याप्त है, क्योंकि मनुष्य में बहुत सारी कमियाँ हैं। उसे परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों का और परमेश्वर द्वारा व्यवस्थित कष्टों के शोधन का और अधिक अनुभव करना आवश्यक है। केवल तभी मनुष्य का जीवन स्वभाव बदल सकता है।

केवल परमेश्वर से प्रेम करना ही वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करना है

आज, जब तुम लोग परमेश्वर को जानने और उससे प्रेम करने की कोशिश करते हो, तो एक ओर तुम लोगों को कठिनाई और शोधन सहन करना चाहिए और दूसरी ओर, तुम लोगों को एक क़ीमत चुकानी चाहिए। परमेश्वर से प्रेम करने के सबक से ज्यादा गहरा कोई सबक नहीं है, और यह कहा जा सकता है कि जीवन भर के विश्वास से लोग जो सबक सीखते हैं, वह यह है कि परमेश्वर से प्रेम कैसे करें। कहने का

अर्थ यह है कि यदि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, तो तुम्हें उससे प्रेम अवश्य करना चाहिए। यदि तुम परमेश्वर पर केवल विश्वास करते हो परंतु उससे प्रेम नहीं करते, और तुमने परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, और कभी भी अपने हृदय के भीतर से आने वाले सच्चे भाव से परमेश्वर से प्रेम नहीं किया है, तो परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ है; यदि परमेश्वर पर अपने विश्वास में तुम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, तो तुम व्यर्थ ही जी रहे हो, और तुम्हारा संपूर्ण जीवन सभी जीवों में सबसे अधम है। यदि अपने संपूर्ण जीवन में तुमने कभी परमेश्वर से प्रेम नहीं किया या उसे संतुष्ट नहीं किया, तो तुम्हारे जीने का क्या अर्थ है? और परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास का क्या अर्थ है? क्या यह प्रयासों की बरबादी नहीं है? कहने का अर्थ है कि, यदि लोगों को परमेश्वर पर विश्वास और उससे प्रेम करना है, तो उन्हें एक क़ीमत अवश्य चुकानी चाहिए। बाहरी तौर पर एक खास तरीके से कार्य करने की कोशिश करने के बजाय, उन्हें अपने हृदय की गहराइयों में असली अंतर्दृष्टि की खोज करनी चाहिए। यदि तुम गाने और नाचने के बारे में उत्साही हो, परंतु सत्य को व्यवहार में लाने में अक्षम हो, तो क्या तुम्हारे बारे में यह कहा जा सकता है कि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो? परमेश्वर से प्रेम करने के लिए आवश्यक है सभी चीज़ों में उसकी इच्छा को खोजना, और जब तुम्हारे साथ कुछ घटित हो जाए, तो तुम अपने भीतर गहराई में खोज करो, परमेश्वर की इच्छा को समझने की कोशिश करो, और यह देखने की कोशिश करो कि इस मामले में परमेश्वर की इच्छा क्या है, वह तुमसे क्या हासिल करने के लिए कहता है, और कैसे तुम्हें उसकी इच्छा के प्रति सचेत रहना चाहिए। उदाहरण के लिए : जब ऐसा कुछ होता है, जिसमें तुम्हें कठिनाई झेलने की आवश्यकता होती है, तो उस समय तुम्हें समझना चाहिए कि परमेश्वर की इच्छा क्या है, और कैसे तुम्हें उसकी इच्छा के प्रति सचेत रहना चाहिए। तुम्हें स्वयं को संतुष्ट नहीं करना चाहिए : पहले अपने आप को एक तरफ़ रख दो। देह से अधिक अधम कोई और चीज़ नहीं है। तुम्हें परमेश्वर को संतुष्ट करने की कोशिश करनी चाहिए, और अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। ऐसे विचारों के साथ, परमेश्वर इस मामले में तुम पर अपनी विशेष प्रबुद्धता लाएगा, और तुम्हारे हृदय को भी आराम मिलेगा। जब तुम्हारे साथ कुछ घटित होता है, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, तो सबसे पहले तुम्हें अपने आपको एक तरफ़ रखना और देह को सभी चीज़ों में सबसे अधम समझना चाहिए। जितना अधिक तुम देह को संतुष्ट करोगे, यह उतनी ही अधिक स्वतंत्रता लेता है; यदि तुम इस समय इसे संतुष्ट करते हो, तो अगली बार यह तुमसे और अधिक की माँग करेगा। जब यह जारी रहता है, लोग देह को और अधिक प्रेम करने लग जाते हैं। देह की हमेशा असंयमित इच्छाएँ होती हैं;

यह हमेशा चाहता है कि तुम इसे संतुष्ट और भीतर से प्रसन्न करो, चाहे यह उन चीज़ों में हो जिन्हें तुम खाते हो, जो तुम पहनते हो, या जिनमें आपा खो देते हो, या स्वयं की कमज़ोरी और आलस को बढ़ावा देते हो...। जितना अधिक तुम देह को संतुष्ट करते हो, उसकी कामनाएँ उतनी ही बड़ी हो जाती हैं, और उतना ही अधिक वह ऐयाश बन जाता है, जब तक कि वह उस स्थिति तक नहीं पहुँच जाता, जहाँ लोगों का देह और अधिक गहरी धारणाओं को आश्रय देता है, और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता है और स्वयं को महिमामंडित करता है, और परमेश्वर के कार्य के बारे में संशयात्मक हो जाता है। जितना अधिक तुम देह को संतुष्ट करते हो, उतनी ही बड़ी देह की कमज़ोरियाँ होती हैं; तुम हमेशा महसूस करोगे कि कोई भी तुम्हारी कमज़ोरियों के साथ सहानुभूति नहीं रखता, तुम हमेशा विश्वास करोगे कि परमेश्वर बहुत दूर चला गया है, और तुम कहोगे : "परमेश्वर इतना निष्ठुर कैसे हो सकता है? वह लोगों का पीछा क्यों नहीं छोड़ देता?" जब लोग देह को संतुष्ट करते हैं, और उससे बहुत अधिक प्यार करते हैं, तो वे अपने आपको बरबाद कर बैठते हैं। यदि तुम परमेश्वर से सचमुच प्रेम करते हो, और देह को संतुष्ट नहीं करते, तो तुम देखोगे कि परमेश्वर जो कुछ करता है, वह बहुत सही और बहुत अच्छा होता है, और यह कि तुम्हारे विद्रोह के लिए उसका शाप और तुम्हारी अधार्मिकता के बारे में उसका न्याय तर्कसंगत है। कई बार ऐसा होगा, जब परमेश्वर तुम्हें अपने सामने आने के लिए बाध्य करते हुए ताड़ना देगा और अनुशासित करेगा, और तुम्हें तैयार करने के लिए माहौल बनाएगा—और तुम हमेशा यह महसूस करोगे कि जो कुछ परमेश्वर कर रहा है, वह अद्भुत है। इस प्रकार तुम ऐसा महसूस करोगे, मानो कोई ज्यादा पीड़ा नहीं है, और यह कि परमेश्वर बहुत प्यारा है। यदि तुम देह की कमज़ोरियों को बढ़ावा देते हो, और कहते हो कि परमेश्वर अति कर देता है, तो तुम हमेशा पीड़ा का अनुभव करोगे और हमेशा उदास रहोगे, और तुम परमेश्वर के समस्त कार्य के बारे में अस्पष्ट रहोगे, और ऐसा प्रतीत होगा मानो परमेश्वर मनुष्यों की कमज़ोरियों के प्रति बिल्कुल भी सहानुभूति नहीं रखता, और वह मनुष्यों की कठिनाइयों से अनजान है। और इस प्रकार से तुम हमेशा दुःखी और अकेला महसूस करोगे, मानो तुमने बड़ा अन्याय सहा है, और उस समय तुम शिकायत करना आरंभ कर दोगे। जितना अधिक तुम इस प्रकार से देह की कमज़ोरियों को बढ़ावा दोगे, उतना ही अधिक तुम महसूस करोगे कि परमेश्वर बहुत अति कर देता है, जब तक कि यह इतना बुरा नहीं हो जाता कि तुम परमेश्वर के कार्य को नकार देते हो, और परमेश्वर का विरोध करने लगते हो, और अवज्ञा से भर जाते हो। इसलिए तुम्हें देह से विद्रोह करना चाहिए और उसे बढ़ावा नहीं देना चाहिए : "मेरा पति (मेरी पत्नी), बच्चे,

सम्भावनाएँ, विवाह, परिवार—इनमें से कुछ भी मायने नहीं रखता! मेरे हृदय में केवल परमेश्वर है, और मुझे परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए और देह को संतुष्ट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।" तुममें ऐसा संकल्प होना चाहिए। यदि तुममें हमेशा इस प्रकार का संकल्प रहेगा, तो जब तुम सत्य को अभ्यास में लाओगे, और अपने आप को एक ओर करोगे, तो तुम ऐसा बहुत ही कम प्रयास के द्वारा कर पाओगे। ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक किसान ने एक साँप देखा, जो सड़क पर बर्फ में जम कर कड़ा हो गया था। किसान ने उसे उठाया और अपने सीने से लगा लिया, और साँप ने जीवित होने के पश्चात् उसे डस लिया, जिससे उस किसान की मृत्यु हो गई। मनुष्य की देह साँप के समान है : इसका सार उसके जीवन को हानि पहुँचाना है—और जब पूरी तरह से उसकी मनमानी चलने लगती है, तो तुम जीवन पर से अपना अधिकार खो बैठते हो। देह शैतान से संबंधित है। इसके भीतर असंयमित इच्छाएँ हैं, यह केवल अपने बारे में सोचता है, यह आरामतलब है और फुरसत में रंगरलियाँ मनाता है, सुस्ती और आलस्य में धँसा रहता है, और इसे एक निश्चित बिंदु तक संतुष्ट करने के बाद तुम अंततः इसके द्वारा खा लिए जाओगे। कहने का अर्थ है कि, यदि तुम इसे इस बार संतुष्ट करोगे, तो अगली बार यह और अधिक की माँग करने आ जाएगा। इसकी हमेशा असंयमित इच्छाएँ और नई माँगें रहती हैं, और अपने आपको और अधिक पोषित करवाने और उसके सुख के बीच रहने के लिए तुम्हारे द्वारा अपने को दिए गए बढ़ावे का फायदा उठाता है—और यदि तुम इस पर विजय नहीं पाओगे, तो तुम अंततः स्वयं को बरबाद कर लोगे। तुम परमेश्वर के सामने जीवन प्राप्त कर सकते हो या नहीं, और तुम्हारा परम अंत क्या होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम देह के प्रति अपना विद्रोह कैसे कार्यान्वित करते हो। परमेश्वर ने तुम्हें बचाया है, और तुम्हें चुना और पूर्वनिर्धारित किया है, फिर भी यदि आज तुम उसे संतुष्ट करने के लिए तैयार नहीं हो, तुम सत्य को अभ्यास में लाने के लिए तैयार नहीं हो, तुम अपनी देह के विरुद्ध एक ऐसे हृदय के साथ विद्रोह करने के लिए तैयार नहीं हो, जो सचमुच परमेश्वर से प्रेम करता हो, तो अंततः तुम अपने आप को बरबाद कर लोगे, और इस प्रकार चरम पीड़ा सहोगे। यदि तुम हमेशा अपनी देह को खुश करते हो, तो शैतान तुम्हें धीरे-धीरे निगल लेगा, और तुम्हें जीवन या पवित्रात्मा के स्पर्श से रहित छोड़ देगा, जब तक कि वह दिन नहीं आ जाता, जब तुम भीतर से पूरी तरह अंधकारमय नहीं हो जाते। जब तुम अंधकार में रहोगे, तो तुम्हें शैतान के द्वारा बंदी बना लिया जाएगा, तुम्हारे हृदय में अब परमेश्वर नहीं होगा, और उस समय तुम परमेश्वर के अस्तित्व को नकार दोगे और उसे छोड़ दोगे। इसलिए, यदि लोग परमेश्वर से प्रेम

करना चाहते हैं, तो उन्हें पीड़ा की क़ीमत चुकानी चाहिए और कठिनाई सहनी चाहिए। बाहरी जोश और कठिनाई, अधिक पढ़ने तथा अधिक भाग-दौड़ करने की कोई आवश्यकता नहीं है; इसके बजाय, उन्हें अपने भीतर की चीज़ों को एक तरफ रख देना चाहिए : असंयमित विचार, व्यक्तिगत हित, और उनके स्वयं के विचार, धारणाएँ और प्रेरणाएँ। परमेश्वर की यही इच्छा है।

परमेश्वर द्वारा लोगों के बाहरी स्वभाव से निपटना भी उसके कार्य का एक भाग है; उदाहरण के लिए, लोगों की बाहरी, असामान्य मानवता से, या उनकी जीवनशैली और आदतों, उनके तौर-तरीकों और रीति-रिवाजों, और साथ ही उनके बाहरी अभ्यासों और उनके जोश से निपटना। किंतु जब वह कहता है कि लोग सत्य को अभ्यास में लाएँ और अपने स्वभावों को बदलें, तो प्राथमिक रूप से जिन चीज़ों के साथ निपटा जा रहा है, वे हैं उनके भीतर के इरादे और प्रेरणाएँ। केवल तुम्हारे बाहरी स्वभाव से निपटना कठिन नहीं है; यह तुम्हें उन चीज़ों को खाने से मना करने के समान है जो तुम्हें पसंद हैं, जो कि आसान है। लेकिन जो तुम्हारे भीतर की धारणाओं को छूता है, उसे छोड़ना आसान नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि लोग देह के खिलाफ़ विद्रोह करें, और एक क़ीमत चुकाएँ, और परमेश्वर के सामने कष्ट सहें। ऐसा विशेष रूप से लोगों के इरादों के साथ है। जबसे लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास करना शुरू किया है, उन्होंने कई ग़लत इरादों को प्रश्रय दिया है। जब तुम सत्य को अभ्यास में नहीं ला रहे होते हो, तो तुम ऐसा महसूस करते हो कि तुम्हारे सभी इरादे सही हैं, किंतु जब तुम्हारे साथ कुछ घटित होता है, तो तुम देखोगे कि तुम्हारे भीतर बहुत-से गलत इरादे हैं। इसलिए, जब परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है, तो वह उन्हें महसूस करवाता है कि उनके भीतर कई ऐसी धारणाएँ हैं, जो परमेश्वर के बारे में उनके ज्ञान को अवरुद्ध कर रही हैं। जब तुम पहचान लेते हो कि तुम्हारे इरादे ग़लत हैं, तब यदि तुम अपनी धारणाओं और इरादों के अनुसार अभ्यास करना छोड़ पाते हो, और परमेश्वर के लिए गवाही दे पाते हो और अपने साथ घटित होने वाली हर बात में अपनी स्थिति पर डटे रहते हो, तो यह साबित करता है कि तुमने देह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। जब तुम देह के विरुद्ध विद्रोह करते हो, तो तुम्हारे भीतर अपरिहार्य रूप से एक संघर्ष होगा। शैतान लोगों से अपना अनुसरण करवाने की कोशिश करेगा, उनसे देह की धारणाओं का अनुसरण करवाने की कोशिश करेगा और देह के हितों को बनाए रखेगा—किंतु परमेश्वर के वचन भीतर से लोगों को प्रबुद्ध करेंगे और उन्हें रोशनी प्रदान करेंगे, और उस समय यह तुम पर निर्भर करेगा कि तुम परमेश्वर का अनुसरण करते हो या शैतान का। परमेश्वर लोगों से मुख्य रूप से उनके भीतर की चीज़ों से, उनके उन विचारों और धारणाओं

से, जो परमेश्वर के मनोनुकूल नहीं हैं, निपटने के लिए सत्य को अभ्यास में लाने के लिए कहता है। पवित्र आत्मा लोगों के हृदय में स्पर्श करता है और उन्हें प्रबुद्ध और रोशन करता है। इसलिए जो कुछ होता है, उस सब के पीछे एक संघर्ष होता है : हर बार जब लोग सत्य को अभ्यास में लाते हैं या परमेश्वर के लिए प्रेम को अभ्यास में लाते हैं, तो एक बड़ा संघर्ष होता है, और यद्यपि अपने देह से सभी अच्छे दिखाई दे सकते हैं, किंतु वास्तव में, उनके हृदय की गहराई में जीवन और मृत्यु का संघर्ष चल रहा होता है—और केवल इस घमासान संघर्ष के बाद ही, अत्यधिक चिंतन के बाद ही, जीत या हार तय की जा सकती है। कोई यह नहीं जानता कि रोया जाए या हँसा जाए। क्योंकि मनुष्यों के भीतर के अनेक इरादे ग़लत हैं, या फिर चूँकि परमेश्वर का अधिकांश कार्य उनकी धारणाओं के विपरीत होता है, इसलिए जब लोग सत्य को अभ्यास में लाते हैं, तो पर्दे के पीछे एक बड़ा संघर्ष छिड़ जाता है। इस सत्य को अभ्यास में लाकर, पर्दे के पीछे लोग अंततः परमेश्वर को संतुष्ट करने का मन बनाने से पहले उदासी के असंख्य आँसू बहा चुके होंगे। यह इसी संघर्ष के कारण है कि लोग दुःख और शोधन सहते हैं; यही असली कष्ट सहना है। जब संघर्ष तुम्हारे ऊपर पड़ता है, तब यदि तुम सचमुच परमेश्वर की ओर खड़े रहने में समर्थ होते हो, तो तुम परमेश्वर को संतुष्ट कर पाओगे। सत्य का अभ्यास करते हुए व्यक्ति का अपने अंदर पीड़ा सहना अपरिहार्य है; यदि, जब वे सत्य को अभ्यास में लाते हैं, उस समय उनके भीतर सब-कुछ ठीक होता, तो उन्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की आवश्यकता न होती, और कोई संघर्ष न होता और वे पीड़ित न होते। ऐसा इसलिए है, क्योंकि लोगों के भीतर कई ऐसी चीज़ें हैं, जो परमेश्वर के द्वारा उपयोग में लाए जाने योग्य नहीं हैं, और चूँकि देह का बहुत विद्रोही स्वभाव है, इसलिए लोगों को देह के विरुद्ध विद्रोह करने के सबक को अधिक गहराई से सीखने की आवश्यकता है। इसी को परमेश्वर पीड़ा कहता है, जिसमें से उसने मनुष्य को अपने साथ गुज़रने के लिए कहा है। जब कठिनाइयों से तुम्हारा सामना हो, तो जल्दी करो और परमेश्वर से प्रार्थना करो : "हे परमेश्वर! मैं तुझे संतुष्ट करना चाहता हूँ, मैं तेरे हृदय को संतुष्ट करने के लिए अंतिम कठिनाई सहना चाहता हूँ, और चाहे मैं कितनी भी बड़ी असफलताओं का सामना करूँ, मुझे तब भी तुझे संतुष्ट करना चाहिए। यहाँ तक कि यदि मुझे अपना संपूर्ण जीवन भी त्यागना पड़े, मुझे तब भी तुझे संतुष्ट करना चाहिए!" इस संकल्प के साथ, जब तुम इस प्रकार प्रार्थना करोगे, तो तुम अपनी गवाही में अडिग रह पाओगे। हर बार जब लोग सत्य को अभ्यास में लाते हैं, हर बार जब वे शोधन से गुज़रते हैं, हर बार जब उन्हें आजमाया जाता है, और हर बार जब परमेश्वर का कार्य उन पर आता है, तो उन्हें चरम पीड़ा सहनी

होगी। यह सब लोगों के लिए एक परीक्षा है, और इसलिए इन सबके भीतर एक संघर्ष होता है। यही वह वास्तविक मूल्य है, जो वे चुकाते हैं। परमेश्वर के वचनों को और अधिक पढ़ना तथा अधिक दौड़-भाग उस क़ीमत का एक भाग है। यही है, जो लोगों को करना चाहिए, यही उनका कर्तव्य और उनकी ज़िम्मेदारी है, जो उन्हें पूरी करनी चाहिए, किंतु लोगों को अपने भीतर की उन बातों को एक ओर रखना चाहिए, जिन्हें एक ओर रखे जाने की आवश्यकता है। यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो चाहे तुम्हारी बाह्य पीड़ा कितनी भी बड़ी क्यों न हों, और चाहे तुम कितनी भी भाग-दौड़ क्यों न कर लो, सब व्यर्थ रहेगा! कहने का अर्थ है कि, केवल तुम्हारे भीतर के बदलाव ही निर्धारित कर सकते हैं कि तुम्हारी बाहरी कठिनाई का कोई मूल्य है या नहीं। जब तुम्हारा आंतरिक स्वभाव बदल जाता है और तुम सत्य को अभ्यास में ले आते हो, तब तुम्हारी समस्त बाहरी पीड़ाओं को परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त हो जाएगा; यदि तुम्हारे आंतरिक स्वभाव में कोई बदलाव नहीं हुआ है, तो चाहे तुम कितनी भी पीड़ा क्यों न सह लो या तुम बाहर कितनी भी दौड़-भाग क्यों न कर लो, परमेश्वर की ओर से कोई अनुमोदन नहीं होगा—और ऐसी कठिनाई व्यर्थ है जो परमेश्वर द्वारा अनुमोदित नहीं है। इसलिए, तुम्हारे द्वारा जो क़ीमत चुकाई गई है, वह परमेश्वर द्वारा अनुमोदित की जाती है या नहीं, यह इस बात से निर्धारित होता है कि तुम्हारे भीतर कोई बदलाव आया है या नहीं, और कि परमेश्वर की इच्छा की संतुष्टि, परमेश्वर का ज्ञान और परमेश्वर के प्रति वफादारी प्राप्त करने के लिए तुम सत्य को अभ्यास में लाते हो या नहीं, और अपने इरादों और धारणाओं के विरुद्ध विद्रोह करते हो या नहीं। चाहे तुम कितनी भी भाग-दौड़ क्यों न करो, यदि तुमने कभी अपने इरादों के विरुद्ध विद्रोह करना नहीं जाना, बल्कि केवल बाहरी कार्यकलापों और जोश की खोज करना ही जानते हो, और कभी अपने जीवन पर ध्यान नहीं देते, तो तुम्हारी कठिनाई व्यर्थ रही होगी। यदि, किसी निश्चित परिवेश में, तुम्हारे पास कुछ है जो तुम कहना चाहते हो, किंतु अंदर से तुम महसूस करते हो कि यह कहना सही नहीं है, कि इसे कहने से तुम्हारे भाइयों और बहनों को लाभ नहीं होगा, और यह उन्हें ठेस पहुँचा सकता है, तो तुम इसे नहीं कहोगे, भीतर ही भीतर कष्ट सहना पसंद करोगे, क्योंकि ये वचन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में अक्षम हैं। उस समय तुम्हारे भीतर एक संघर्ष होगा, किंतु तुम पीड़ा सहने और उस चीज़ को छोड़ने की इच्छा करोगे जिससे तुम प्रेम करते हो, तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए इस कठिनाई को सहने की इच्छा करोगे, और यद्यपि तुम भीतर कष्ट सहोगे, लेकिन तुम देह को बढ़ावा नहीं दोगे, और इससे परमेश्वर का हृदय संतुष्ट हो जाएगा, और इसलिए तुम्हें भी अंदर सांत्वना मिलेगी। यही वास्तव में क़ीमत चुकाना है, और

परमेश्वर द्वारा वांछित क़ीमत है। यदि तुम इस तरीके से अभ्यास करोगे, तो परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हें आशीष देगा; यदि तुम इसे प्राप्त नहीं कर सकते, तो चाहे तुम कितना ही अधिक क्यों न समझते हो, या तुम कितना अच्छा क्यों न बोल सकते हो, यह सब कुछ व्यर्थ होगा! यदि परमेश्वर से प्रेम करने के मार्ग पर तुम उस समय परमेश्वर की ओर खड़े होने में समर्थ हो, जब वह शैतान के साथ संघर्ष करता है, और तुम शैतान की ओर वापस नहीं जाते, तब तुमने परमेश्वर के लिए प्रेम प्राप्त कर लिया होगा, और तुम अपनी गवाही में दृढ़ खड़े रहे होगे।

परमेश्वर द्वारा मनुष्य के भीतर किए जाने वाले कार्य के प्रत्येक चरण में, बाहर से यह लोगों के मध्य अंतःक्रिया प्रतीत होता है, मानो यह मानव-व्यवस्थाओं द्वारा या मानवीय हस्तक्षेप से उत्पन्न हुआ हो। किंतु पर्दे के पीछे, कार्य का प्रत्येक चरण, और घटित होने वाली हर चीज़, शैतान द्वारा परमेश्वर के सामने चली गई बाज़ी है, और लोगों से अपेक्षित है कि वे परमेश्वर के लिए अपनी गवाही में अडिग बने रहें। उदाहरण के लिए, जब अय्यूब को आजमाया गया था : पर्दे के पीछे शैतान परमेश्वर के साथ दाँव लगा रहा था, और अय्यूब के साथ जो हुआ वह मनुष्यों के कर्म थे, और मनुष्यों का हस्तक्षेप था। परमेश्वर द्वारा तुम लोगों में किए गए कार्य के हर कदम के पीछे शैतान की परमेश्वर के साथ बाज़ी होती है—इस सब के पीछे एक संघर्ष होता है। उदाहरण के लिए, यदि तुम अपने भाइयों और बहनों के प्रति पूर्वाग्रह रखते हो, तो तुम्हारे पास ऐसे वचन होंगे जो तुम कहना चाहते हो—ऐसे वचन, जो तुम्हें परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाले लगते हैं—किंतु अगर तुम उन्हें न कहो तो तुम्हें भीतर से बेचैनी महसूस होगी, और उस क्षण तुम्हारे भीतर एक संघर्ष शुरू हो जाएगा : "मैं बोलूँ या नहीं?" यही संघर्ष है। इस प्रकार, हर उस चीज़ में, जिसका तुम सामना करते हो, एक संघर्ष है, और जब तुम्हारे भीतर एक संघर्ष चलता है, तो तुम्हारे वास्तविक सहयोग और पीड़ा के कारण, परमेश्वर तुम्हारे भीतर कार्य करता है। अंततः, अपने भीतर तुम मामले को एक ओर रखने में सक्षम होते हो और क्रोध स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाता है। परमेश्वर के साथ तुम्हारे सहयोग का ऐसा ही प्रभाव होता है। हर चीज़ जो लोग करते हैं, उसमें उन्हें अपने प्रयासों के लिए एक निश्चित क़ीमत चुकाने की आवश्यकता होती है। बिना वास्तविक कठिनाई के वे परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर सकते; वे परमेश्वर को संतुष्ट करने के करीब तक भी नहीं पहुँचते और केवल खोखले नारे लगा रहे होते हैं! क्या ये खोखले नारे परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हैं? जब परमेश्वर और शैतान आध्यात्मिक क्षेत्र में संघर्ष करते हैं, तो तुम्हें परमेश्वर को कैसे संतुष्ट करना चाहिए, और किस प्रकार उसकी गवाही में अडिग रहना चाहिए?

तुम्हें यह पता होना चाहिए कि जो कुछ भी तुम्हारे साथ होता है, वह एक महान परीक्षण है और ऐसा समय है, जब परमेश्वर चाहता है कि तुम उसके लिए गवाही दो। हालाँकि ये बाहर से महत्त्वहीन लग सकती हैं, किंतु जब ये चीज़ें होती हैं तो ये दर्शाती हैं कि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो या नहीं। यदि तुम करते हो, तो तुम उसके लिए गवाही देने में अडिग रह पाओगे, और यदि तुम उसके प्रेम को अभ्यास में नहीं लाए हो, तो यह दर्शाता है कि तुम वह व्यक्ति नहीं हो जो सत्य को अभ्यास में लाता है, यह कि तुम सत्य से रहित हो, और जीवन से रहित हो, यह कि तुम भूसा हो! लोगों के साथ जो कुछ भी होता है, वह तब होता है जब परमेश्वर को आवश्यकता होती है कि लोग उसके लिए अपनी गवाही में अडिग रहें। भले ही इस क्षण में तुम्हारे साथ कुछ बड़ा घटित न हो रहा हो, और तुम बड़ी गवाही नहीं देते, किंतु तुम्हारे जीवन का प्रत्येक विवरण परमेश्वर के लिए गवाही का मामला है। यदि तुम अपने भाइयों और बहनों, अपने परिवार के सदस्यों और अपने आसपास के सभी लोगों की प्रशंसा प्राप्त कर सकते हो; यदि किसी दिन अविश्वासी आएँ और जो कुछ तुम करते हो उसकी तारीफ़ करें, और देखें कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह अद्‌भुत है, तो तुमने गवाही दे दी होगी। यद्यपि तुम्हारे पास कोई अंतर्दृष्टि नहीं है और तुम्हारी क्षमता कमज़ोर है, फिर भी परमेश्वर द्वारा तुम्हारी पूर्णता के माध्यम से तुम उसे संतुष्ट करने और उसकी इच्छा के प्रति सचेत होने में समर्थ हो जाते हो और दूसरों को दर्शाते हो कि सबसे कमज़ोर क्षमता के लोगों में उसने कितना महान कार्य किया है। जब लोग परमेश्वर को जान जाते हैं और शैतान के सामने विजेता और परमेश्वर के प्रति अत्यधिक वफादार बन जाते हैं, तब किसी में इस समूह के लोगों से अधिक आधार नहीं होता, और यही सबसे बड़ी गवाही है। यद्यपि तुम महान कार्य करने में अक्षम हो, लेकिन तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में सक्षम हो। अन्य लोग अपनी धारणाओं को एक ओर नहीं रख सकते, लेकिन तुम रख सकते हो; अन्य लोग अपने वास्तविक अनुभवों के दौरान परमेश्वर की गवाही नहीं दे सकते, लेकिन तुम परमेश्वर के प्रेम को चुकाने और उसके लिए ज़बर्दस्त गवाही देने के लिए अपनी वास्तविक कद-काठी और कार्यकलापों का उपयोग कर सकते हो। केवल इसी को परमेश्वर से वास्तव में प्रेम करना माना जाता है। यदि तुम इसमें अक्षम हो, तो तुम अपने परिवार के सदस्यों के बीच, अपने भाइयों और बहनों के बीच, या संसार के अन्य लोगों के सामने गवाही नहीं देते। यदि तुम शैतान के सामने गवाही नहीं दे सकते, तो शैतान तुम पर हँसेगा, वह तुम्हें एक मजाक के रूप, एक खिलौने के रूप में लेगा, वह बार-बार तुम्हें मूर्ख बनाएगा, और तुम्हें विक्षिप्त कर देगा। भविष्य में, महान परीक्षण तुम्हारे ऊपर पड़ेंगे—किंतु आज यदि तुम परमेश्वर को सच्चे

हृदय से प्रेम करते हो, और चाहे आगे कितनी भी बड़ी परीक्षाएँ हों, चाहे तुम्हारे साथ कुछ भी होता जाए, तुम अपनी गवाही में अडिग रहते हो, और परमेश्वर को संतुष्ट कर पाते हो, तब तुम्हारे हृदय को सांत्वना मिलेगी, और भविष्य में चाहे कितने भी बड़े परीक्षण क्यों न आएँ, तुम निर्भय रहोगे। तुम लोग नहीं देख सकते कि भविष्य में क्या होगा; तुम लोग केवल आज की परिस्थितियों में ही परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हो। तुम लोग कोई भी महान कार्य करने में अक्षम हो, और तुम लोगों को वास्तविक जीवन में परमेश्वर के वचनों को अनुभव करने के माध्यम से उसे संतुष्ट करने, और एक मज़बूत और ज़बर्दस्त गवाही देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो शैतान के लिए शर्मिंदगी लाती है। यद्यपि तुम्हारी देह असंतुष्ट रहेगी और उसने पीड़ा भुगती होगी, लेकिन तुमने परमेश्वर को संतुष्ट कर दिया होगा और तुम शैतान के लिए शर्मिंदगी लाए होगे। यदि तुम हमेशा इस तरह से अभ्यास करते हो, तो परमेश्वर तुम्हारे सामने एक मार्ग खोल देगा। किसी दिन जब कोई बड़ा परीक्षण आएगा, तो अन्य लोग गिर जाएँगे, लेकिन तुम तब भी अडिग रहने में समर्थ होगे : तुमने जो क़ीमत चुकाई है, उसकी वजह से परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा, ताकि तुम अडिग रह सको और गिरो नहीं। यदि, साधारणतया, तुम सत्य को अभ्यास में लाने और परमेश्वर से सचमुच प्रेम करने वाले हृदय से परमेश्वर को संतुष्ट करने में समर्थ हो, तो परमेश्वर भविष्य के परीक्षणों के दौरान निश्चित रूप से तुम्हारी सुरक्षा करेगा। यद्यपि तुम मूर्ख और छोटी कद-काठी और कमज़ोर क्षमता वाले हो, तब भी परमेश्वर तुम्हारे खिलाफ भेदभाव नहीं करेगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम्हारे इरादे सही हैं या नहीं। आज, तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में समर्थ हो, जिसमें तुम छोटी से छोटी बात का ध्यान रखते हो, तुम सभी चीज़ों में परमेश्वर को संतुष्ट करते हो, तुम्हारे पास परमेश्वर से वास्तव में प्रेम करने वाला हृदय है, तुम अपना सच्चा हृदय परमेश्वर को देते हो और यद्यपि कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें तुम नहीं समझ सकते, लेकिन तुम अपने इरादों को सुधारने और परमेश्वर की इच्छा को खोजने के लिए परमेश्वर के सामने आ सकते हो, और तुम वह सब-कुछ करते हो, जो परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए आवश्यक है। हो सकता है कि तुम्हारे भाई और बहन तुम्हारा परित्याग कर दें, किंतु तुम्हारा हृदय परमेश्वर को संतुष्ट कर रहा होगा, और तुम देह के सुख का लालच नहीं करोगे। यदि तुम हमेशा इस तरह से अभ्यास करते हो, तो जब तुम्हारे ऊपर बड़े परीक्षण आएँगे, तुम्हें बचा लिया जाएगा।

लोगों की कौन-सी आंतरिक स्थिति परीक्षणों का लक्ष्य है? उनका लक्ष्य लोगों का विद्रोही स्वभाव है, जो परमेश्वर को संतुष्ट करने में अक्षम है। लोगों के भीतर बहुत-कुछ अशुद्ध है, और बहुत-कुछ पाखंडपूर्ण

है, और इसलिए परमेश्वर लोगों को शुद्ध बनाने के लिए उन्हें परीक्षणों का भागी बनता है। किंतु यदि आज तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में समर्थ हो, तो भविष्य के परीक्षण तुम्हारे लिए पूर्णता होंगे। यदि तुम आज परमेश्वर को संतुष्ट करने में असमर्थ हो, तो भविष्य के परीक्षण तुम्हें लुभाएँगे, और तुम अनजाने में नीचे गिर जाओगे, और उस समय तुम अपनी सहायता करने में असमर्थ होगे, क्योंकि तुम परमेश्वर के कार्य का पालन नहीं कर सकते और तुममें वास्तविक कद-काठी नहीं है। और इसलिए, यदि तुम भविष्य में अडिग रहने में समर्थ होना चाहते हो, तो बेहतर है कि परमेश्वर को संतुष्ट करो, और अंत तक उसका अनुसरण करो। आज तुम्हें एक मजबूत बुनियाद का निर्माण करना चाहिए। तुम्हें सभी चीज़ों में सत्य को अभ्यास में लाकर और उसकी इच्छा के प्रति सावधान रहकर परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहिए। यदि तुम हमेशा इस तरह से अभ्यास करते हो, तो तुम्हारे भीतर एक बुनियाद बनेगी, और परमेश्वर तुम्हारे भीतर ऐसे हृदय को प्रेरित करेगा जो परमेश्वर से प्रेम करेगा, और वह तुम्हें विश्वास देगा। किसी दिन जब कोई परीक्षण वास्तव में तुम्हारे ऊपर आ पड़ेगा, तो तुम्हें कुछ पीड़ा का अनुभव अवश्य हो सकता है, और तुम एक निश्चित बिंदु तक व्यथित महसूस कर सकते हो और तीव्र व्यथा से पीड़ित हो सकते हो, मानो तुम मर जाओगे—किंतु परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम नहीं बदलेगा, बल्कि और अधिक गहरा हो जाएगा। परमेश्वर के आशीष ऐसे ही होते हैं। आज परमेश्वर जो कुछ भी कहता और करता है, यदि तुम उसे आज्ञाकारी हृदय से स्वीकारने में समर्थ हो, तो तुम्हें निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा आशीष दिया जाएगा, और इसलिए तुम ऐसे व्यक्ति बन जाओगे, जिसे परमेश्वर द्वारा आशीष दिया जाता है और जिसे उसका वादा प्राप्त होता है। यदि आज तुम अभ्यास नहीं करते, तो जब किसी दिन तुम्हारे ऊपर परीक्षण पड़ेंगे, तो तुम विश्वास या प्रेममय हृदय से रहित होगे, और उस समय परीक्षण प्रलोभन बन जाएँगे; तुम शैतान के प्रलोभनों के बीच डूब जाओगे और तुम्हारे पास बच निकलने का कोई उपाय नहीं होगा। आज जब तुम पर कोई छोटा-सा परीक्षण पड़ता है, तो हो सकता है कि तुम अडिग रहने में समर्थ हो, किंतु किसी दिन जब कोई बड़ा परीक्षण तुम्हारे ऊपर आएगा, तो ज़रूरी नहीं कि तुम अडिग रहने में समर्थ रहोगे। कुछ लोग दंभी होते हैं, और सोचते हैं कि वे पहले से ही लगभग पूर्ण हैं। यदि तुम ऐसे समय में गहराई से नहीं सोचोगे और आत्मसंतुष्ट बने रहोगे, तो तुम खतरे में पड़ जाओगे। आज परमेश्वर बड़े परीक्षणों के कार्य नहीं करता, और सब-कुछ ठीक दिखाई देता है, किंतु जब परमेश्वर तुम्हारा परीक्षण करेगा, तो तुम पाओगे कि तुममें बहुत कमियाँ हैं, क्योंकि तुम्हारी कद-काठी बहुत छोटी है, और तुम बड़े परीक्षणों को सहने में अक्षम हो। यदि तुम वैसे ही बने रहते

हो, जैसे तुम हो, और निष्क्रियता की अवस्था में रहते हो, तो जब परीक्षण आएँगे, तुम गिर जाओगे। तुम लोगों को अक्सर देखना चाहिए कि तुम लोगों की कद-काठी कितनी छोटी है; केवल इसी तरह से तुम लोग प्रगति करोगे। यदि ऐसा केवल परीक्षण के दौरान होता है कि तुम देखते हो कि तुम्हारी कद-काठी बहुत छोटी है, कि तुम्हारी इच्छाशक्ति बहुत कमज़ोर है, कि तुम्हारे भीतर वास्तविक चीज़ बहुत कम है, और कि तुम परमेश्वर की इच्छा के लिए अपर्याप्त हो—और यदि तुम केवल तभी इन बातों को महसूस करते हो, तो बहुत देर हो जाएगी।

यदि तुम परमेश्वर के स्वभाव को नहीं जानते, तो तुम परीक्षणों के दौरान निश्चित रूप से गिर जाओगे, क्योंकि तुम इस बात से अनजान हो कि परमेश्वर लोगों को पूर्ण कैसे बनाता है, और किन उपायों से वह उन्हें पूर्ण बनाता है, और जब परमेश्वर के परीक्षण तुम्हारे ऊपर आएँगे और वे तुम्हारी धारणाओं से मेल नहीं खाएँगे, तो तुम अडिग रहने में असमर्थ होगे। परमेश्वर का सच्चा प्रेम उसका संपूर्ण स्वभाव है, और जब परमेश्वर का संपूर्ण स्वभाव लोगों को दिखाया जाता है, तो यह उनकी देह पर क्या लाता है? जब परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव लोगों को दिखाया जाता है, तो उनकी देह अपरिहार्य रूप से अत्यधिक पीड़ा भुगतेगी। यदि तुम इस पीड़ा को नहीं भुगतते, तो तुम्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, न ही तुम परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम अर्पित कर पाओगे। यदि परमेश्वर तुम्हें पूर्ण बनाता है, तो वह तुम्हें निश्चित रूप से अपना संपूर्ण स्वभाव दिखाएगा। सृष्टि की रचना के बाद से आज तक, परमेश्वर ने अपना संपूर्ण स्वभाव मनुष्य को कभी नहीं दिखाया है—किंतु अंत के दिनों के दौरान वह इसे लोगों के इस समूह के लिए प्रकट करता है, जिसे उसने पूर्वनियत किया और चुना है, और लोगों को पूर्ण बनाने के द्वारा वह अपने स्वभाव को प्रकट करता है, जिसके माध्यम से वह लोगों के एक समूह को पूर्ण बनाता है। लोगों के लिए परमेश्वर का यही सच्चा प्रेम है। परमेश्वर के सच्चे प्रेम को अनुभव करने के लिए लोगों को अत्यधिक पीड़ा सहना और एक ऊँची क़ीमत चुकाना आवश्यक है। केवल इसके बाद ही वे परमेश्वर के द्वारा प्राप्त किए जाएँगे और परमेश्वर को अपना सच्चा प्रेम वापस दे पाएँगे और केवल तभी परमेश्वर का हृदय संतुष्ट होगा। यदि लोग परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाने की इच्छा रखते हैं और यदि वे उसकी इच्छा पर चलना चाहते हैं, और अपना सच्चा प्रेम पूरी तरह से परमेश्वर को देते हैं, तो उन्हें मृत्यु से भी बदतर कष्ट सहने के लिए अत्यधिक पीड़ा और अपनी परिस्थितियों से कई यंत्रणाओं का अनुभव करना होगा। अंततः उन्हें परमेश्वर को अपना सच्चा हृदय वापस देने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। कोई व्यक्ति परमेश्वर से सचमुच प्रेम करता है या नहीं,

यह कठिनाई और शोधन के दौरान प्रकट होता है। परमेश्वर लोगों के प्रेम को शुद्ध करता है, और यह भी केवल कठिनाई और शोधन के बीच ही प्राप्त किया जाता है।

"सहस्राब्दि राज्य आ चुका है" के बारे में एक संक्षिप्त वार्ता

तुम लोग सहस्राब्दि राज्य के बारे में क्या सोचते हो? कुछ लोग इसके बारे में बहुत ज़्यादा सोचते हैं, और कहते हैं : "सहस्राब्दि राज्य पृथ्वी पर एक हज़ार साल तक रहेगा, अतः यदि कलीसिया के पुराने सदस्य अविवाहित हैं, तो क्या उन्हें विवाह करना है? मेरे परिवार के पास धन नहीं है, तो क्या मैं धन कमाना शुरू कर दूँ? ..." सहस्राब्दि राज्य क्या है? क्या तुम लोग जानते हो? लोग मंद-दृष्टि हैं और अग्निपरीक्षा से पीड़ित हैं। वास्तव में, सहस्राब्दि राज्य अभी आधिकारिक रूप से आना बाकी है। लोगों को पूर्ण बनाने के चरण के दौरान, सहस्राब्दि राज्य तो मात्र, उड़ने की कोशिश कर रहे चिड़िया के छोटे बच्चे जैसा है; परमेश्वर द्वारा बताए गए सहस्राब्दि राज्य के समय तक मनुष्य को पूर्ण बनाया जा चुका होगा। पूर्व में, ऐसा कहा जाता था कि लोग संतों जैसे होंगे और सिनिम की भूमि पर अडिग रहेंगे। केवल जब लोगों को पूर्ण बना दिया जाएगा—जब वे संत बन जाएँगे, जिनके बारे में परमेश्वर ने बोला है—तब सहस्राब्दि राज्य का आगमन हो चुका होगा। जब परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है, तो वह उन्हें शुद्ध करता है, और जितने अधिक वे शुद्ध होते हैं, उतने ही अधिक वे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाते हैं। जब तुम्हारे भीतर से अशुद्धता, विद्रोहशीलता, विरोध और देह की इच्छाओं को बाहर निकाल दिया जाएगा, जब तुम्हें शुद्ध कर दिया जाएगा, तब परमेश्वर तुमसे प्रेम करेगा (दूसरे शब्दों में, तुम एक संत होगे); जब तुम्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण बना दिया जाएगा और तुम एक संत बन जाओगे, तब तुम सहस्राब्दि राज्य में होगे। अभी यह राज्य का युग है। सहस्राब्दि राज्य के युग में लोग जीवित रहने के लिए परमेश्वर के वचनों पर निर्भर होंगे, और सभी देश परमेश्वर के नाम के अधीन आ जाएँगे, और सभी परमेश्वर के वचनों को पढ़ने के लिए आएँगे। उस समय कुछ लोग टेलीफोन करेंगे, कुछ लोग फैक्स करेंगे...वे परमेश्वर के वचनों तक पहुँचने के लिए हर साधन का उपयोग करेंगे, और तुम लोग भी परमेश्वर के वचनों के अधीन आ जाओगे। लोगों को पूर्ण बना दिए जाने के बाद यह सब होगा। आज लोगों को वचनों के माध्यम से पूर्ण, शुद्ध और प्रबुद्ध बनाया जाता है और उनका मार्गदर्शन किया जाता है; यह राज्य का युग है, यह लोगों को पूर्ण बनाए जाने का चरण है, और इसका सहस्राब्दि राज्य से कोई संबंध नहीं है। सहस्राब्दि राज्य के युग के दौरान, लोग पहले ही पूर्ण बनाए

जा चुके होंगे और उनके भीतर का भ्रष्ट स्वभाव शुद्ध किया जा चुका होगा। उस समय परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन क़दम-दर-क़दम लोगों का मार्गदर्शन करेंगे, और सृजन के समय से लेकर आज तक परमेश्वर के कार्य के सभी रहस्य प्रकाशित करेंगे, और उसके वचन परमेश्वर द्वारा प्रत्येक युग में और प्रत्येक दिन किए गए कार्यों के बारे में लोगों को बताएँगे, समझाएँगे कि कैसे वह भीतर उनका मार्गदर्शन करता है, उस कार्य के बारे में बताएँगे जो वह आध्यात्मिक क्षेत्र में करता है, और उन्हें आध्यात्मिक क्षेत्र की गतिशीलता के बारे में बताएँगे। केवल तभी यह सच में वचन का युग होगा; अभी यह केवल उड़ने की कोशिश कर रहे चिड़िया के छोटे बच्चे की-सी स्थिति में है। यदि लोगों को पूर्ण नहीं किया जाता और शुद्ध नहीं बनाया जाता, तो उनके पास पृथ्वी पर हज़ार सालों तक रहने का कोई उपाय नहीं होगा, और उनकी देह अनिवार्य रूप से सड़ जाएगी; यदि लोगों को भीतर से शुद्ध किया जाता है, और वे अब और शैतान के और देह के नहीं रहते, तो वे पृथ्वी पर जीवित बचे रहेंगे। इस चरण में तुम अभी भी मंद-दृष्टि हो, और वह सब जो तुम लोग अनुभव करते हो, वह परमेश्वर से प्रेम करना और पृथ्वी पर अपने जीवन के हर दिन उसके लिए गवाही देना है।

"सहस्राब्दि राज्य आ चुका है" एक भविष्यवाणी है, यह किसी नबी के पूर्वकथन जैसी है, ऐसा पूर्वकथन, जिसमें परमेश्वर भविष्यवाणी करता है कि भविष्य में क्या होगा। जो वचन परमेश्वर भविष्य में कहता है और वे वचन जो वह आज कहता है, समान नहीं हैं : भविष्य के वचन युग का मार्गदर्शन करेंगे, जबकि जो वचन वह आज कहता है, वे लोगों को पूर्ण बनाते हैं, उन्हें शुद्ध करते हैं, और उनसे निपटते हैं। भविष्य का वचन का युग आज के वचन के युग से भिन्न है। आज परमेश्वर द्वारा कहे गए सभी वचन—चाहे वह किसी भी तरीके से कहे—लोगों को पूर्ण बनाने, उनके भीतर की गंदी चीज़ों को शुद्ध करने, उन्हें पवित्र बनाने और परमेश्वर के सामने उन्हें धार्मिक बनाने के लिए हैं। आज कहे जाने वाले वचन और भविष्य में कहे जाने वाले वचन दो अलग बातें हैं। राज्य के युग में कहे गए वचन लोगों को समस्त प्रशिक्षण में प्रवेश करवाने के लिए, उन्हें हर बात में सही रास्ते पर लाने के लिए, और उनके भीतर की समस्त अशुद्ध चीज़ें दूर करने के लिए हैं। परमेश्वर इस युग में ऐसा ही करता है। वह प्रत्येक व्यक्ति में अपने वचनों की नींव डालता है, वह अपने वचनों को प्रत्येक व्यक्ति का जीवन बनाता है और वह अपने वचनों का उपयोग उन्हें भीतर से लगातार प्रबुद्ध करने तथा उनका मार्गदर्शन करने के लिए करता है। और जब वे परमेश्वर के वचनों के प्रति सचेत नहीं होते, तो उन्हें धिक्कारने और अनुशासित करने के लिए परमेश्वर के वचन उनके

भीतर होंगे। आज के वचन मनुष्य का जीवन बनने के लिए हैं; वे सीधे तौर पर वह सब-कुछ प्रदान करते हैं जिनकी मनुष्य को आवश्यकता है, उस सबकी परमेश्वर के वचनों द्वारा आपूर्ति की जाती है जिसकी तुम्हारे भीतर कमी है, और उन सबको परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने के द्वारा प्रबुद्ध किया जाता है, जो उसके वचनों को स्वीकार करते हैं। परमेश्वर द्वारा भविष्य में बोले गए वचन संपूर्ण विश्व के लोगों का मार्गदर्शन करते हैं; आज ये वचन केवल चीन में ही कहे जाते हैं, और वे उनका प्रतिनिधित्व नहीं करते, जो पूरे विश्व में बोले जाते हैं। परमेश्वर संपूर्ण विश्व से केवल तभी बात करेगा, जब सहस्राब्दि राज्य का आगमन होगा। जान लो कि परमेश्वर द्वारा आज कहे गए सभी वचन लोगों को पूर्ण बनाने के लिए हैं; इस चरण के दौरान परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हैं, वे तुम लोगों को परमेश्वर के रहस्य जानने और उसके चमत्कार देखने देने के लिए नहीं हैं। वह लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कई उपायों के माध्यम से बात करता है। सहस्राब्दि राज्य का युग अभी आना बाकी है—जिस सहस्राब्दि राज्य के युग के बारे में बात की जाती है, वह परमेश्वर की महिमा का दिन है। यहूदिया में यीशु का कार्य समाप्त हो जाने के बाद परमेश्वर ने अपना कार्य चीन की मुख्य भूमि में स्थानांतरित कर दिया और एक अन्य योजना बनाई। वह अपने कार्य का अन्य भाग तुम लोगों में करता है, वह अपने वचनों से लोगों को पूर्ण बनाने का काम करता है, और लोगों को अधिक कष्ट भुगतवाने के साथ ही परमेश्वर का अधिक अनुग्रह प्राप्त करवाने के लिए अपने वचनों का उपयोग करता है। कार्य का यह चरण विजेताओं के एक समूह का सृजन करेगा, और जब वह विजेताओं का यह समूह बना लेगा, तो उसके बाद वे उसके कर्मों की गवाही देने में समर्थ होंगे, वे वास्तविकता को जीने में समर्थ होंगे, और वे वास्तव में उसे संतुष्ट करेंगे और मृत्यु तक उसके प्रति वफादार रहेंगे, और इस तरह से परमेश्वर की महिमा होगी। जब परमेश्वर की महिमा होगी, अर्थात् जब वह लोगों के इस समूह को पूर्ण बना देगा, तो वह सहस्राब्दि राज्य का युग होगा।

यीशु पृथ्वी पर साढ़े तेंतीस साल तक रहा था, वह सलीब पर चढ़ने का कार्य करने के लिए आया था, और सलीब पर चढ़ने के माध्यम से परमेश्वर ने अपनी महिमा का एक भाग प्राप्त किया। जब परमेश्वर देह में आया, तो वह विनम्र और छिपा रहने में समर्थ था और ज़बरदस्त पीड़ा सहन कर सकता था। यद्यपि वह स्वयं परमेश्वर था, फिर भी उसने हर अपमान और हर दुर्वचन सहन किया और छुटकारे का कार्य पूरा करने के लिए सलीब पर चढ़ाए जाने का भयानक दर्द सहा। कार्य के इस चरण का समापन हो जाने के

बाद, यद्यपि लोगों ने देखा कि परमेश्वर ने महान महिमा प्राप्त कर ली है, फिर भी यह उसकी महिमा की संपूर्णता नहीं थी; यह उसकी महिमा का केवल एक भाग था, जिसे उसने यीशु से प्राप्त किया था। यद्यपि यीशु हर कठिनाई सहने, विनम्र और छिपे रहने, परमेश्वर के लिए सलीब पर चढ़ाए जाने में समर्थ था, फिर भी परमेश्वर ने अपनी महिमा का केवल एक भाग ही प्राप्त किया, और उसकी महिमा इस्राएल में प्राप्त हुई थी। परमेश्वर के पास अभी भी महिमा का एक अन्य भाग है : पृथ्वी पर व्यावहारिक रूप से कार्य करने के लिए आना और लोगों के एक समूह को पूर्ण बनाना। यीशु के कार्य के चरण के दौरान, उसने कुछ अलौकिक चीज़ें की, लेकिन कार्य का वह चरण किसी भी तरह से सिर्फ चिह्न और चमत्कार दिखाने के लिए नहीं था। यह मुख्य रूप से यह दिखाने के लिए था कि यीशु पीड़ा सहन कर सकता था और परमेश्वर के लिए सलीब पर चढ़ाया जा सकता था, कि यीशु भयानक पीड़ा सहन करने में समर्थ था, क्योंकि वह परमेश्वर से प्रेम करता था, और कि यद्यपि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया था, लेकिन फिर भी वह परमेश्वर की इच्छा के लिए अपना जीवन बलिदान करने का इच्छुक था। जब परमेश्वर ने इस्राएल में अपना कार्य समाप्त कर लिया और यीशु को सलीब पर चढ़ा दिया गया, तो उसके बाद परमेश्वर की महिमा हुई और परमेश्वर ने शैतान के सामने गवाही दी। तुम लोग न तो जानते हो और न ही तुम लोगों ने देखा है कि परमेश्वर चीन में कैसे देहधारी बन गया, तो फिर तुम लोग यह कैसे देख सकते हो कि परमेश्वर की महिमा हुई है? जब परमेश्वर तुम लोगों में विजय का बहुत-सा कार्य करता है और तुम लोग अडिग रहते हो, तब इस चरण का परमेश्वर का कार्य सफल होता है और यह परमेश्वर की महिमा का एक भाग है। तुम लोग केवल इसे ही देखते हो और तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना अभी बाक़ी है, और तुम्हें अभी अपना हृदय पूर्णतः परमेश्वर को देना है। तुम लोगों को अभी इस महिमा की संपूर्णता को देखना शेष है; तुम लोग सिर्फ यह देखते हो कि परमेश्वर ने पहले ही तुम लोगों के हृदय को जीत लिया है, और तुम लोग उसे कभी नहीं छोड़ सकते और तुम बिल्कुल अंत तक परमेश्वर का अनुसरण करोगे और तुम लोगों का हृदय नहीं बदलेगा, और कि यही परमेश्वर की महिमा है। तुम लोग किस चीज में परमेश्वर की महिमा देखते हो? लोगों में उसके कार्य के प्रभावों में। लोग देखते हैं कि परमेश्वर बहुत प्यारा है, परमेश्वर उनके हृदय में है और वे उसे छोड़ने को तैयार नहीं हैं, और यह परमेश्वर की महिमा है। जब कलीसिया में भाई-बहनों की संख्या बढ़ती है, और वे अपने हृदय से परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं, परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य की सर्वोच्च शक्ति और उसके वचनों के अतुलनीय पराक्रम को देख सकते हैं, जब वे देखते हैं कि उसके वचनों में

अधिकार है और कि वह चीन की मुख्य भूमि के भुतहा नगर में अपने कार्य की शुरुआत कर सकता है, जब लोगों के कमज़ोर होने के बावजूद उनके हृदय परमेश्वर के सामने झुक जाते हैं और वे परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करने को तैयार होते हैं, और जब कमज़ोर और अयोग्य होने के बावजूद वे इस बात को देखने में समर्थ होते हैं कि परमेश्वर के वचन बहुत प्यारे हैं और इसलिए उनके द्वारा सँजोए जाने योग्य हैं, तो यह परमेश्वर की महिमा है। जब वह दिन आता है, जब लोग परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाते हैं, और वे उसके सामने आत्मसमर्पण करने में समर्थ होते हैं, और वे पूरी तरह से परमेश्वर का आज्ञापालन कर सकते हैं, और अपने भविष्य की संभावनाओं और भाग्य को परमेश्वर के हाथों में छोड़ सकते हैं, तब परमेश्वर की महिमा का दूसरा भाग पूरी तरह से प्राप्त कर लिया गया होगा। कहने का अर्थ है कि जब व्यावहारिक परमेश्वर के कार्य को सर्वथा पूरा कर लिया जाएगा, तो चीन की मुख्य भूमि में उसका कार्य समाप्त हो जाएगा। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर द्वारा पूर्व-नियत किए और चुने गए लोग पूर्ण बना दिए जाएँगे, तो परमेश्वर की महिमा होगी। परमेश्वर ने कहा कि वह अपनी महिमा के दूसरे भाग को पूर्व दिशा में ले आया है, किंतु यह आँखों के लिए अदृश्य है। परमेश्वर अपने कार्य को पूर्व दिशा में ले आया है : वह पहले ही पूर्व दिशा में आ चुका है और यह परमेश्वर की महिमा है। आज यद्यपि उसका कार्य अभी पूरा किया जाना बाकी है, लेकिन चूँकि परमेश्वर ने कार्य करने का निर्णय लिया है, इसलिए वह निश्चित रूप से पूरा होगा। परमेश्वर ने निर्णय लिया है कि वह इस कार्य को चीन में पूरा करेगा, और उसने तुम लोगों को पूर्ण करने का संकल्प किया है। इस प्रकार वह तुम लोगों को कोई बचाव का रास्ता नहीं देता—उसने पहले ही तुम्हारे हृदय जीत लिए हैं और भले ही तुम चाहो या न चाहो, तुम्हें आगे बढ़ना है, और जब तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिए जाते हो, तो परमेश्वर की महिमा होती है। आज परमेश्वर की संपूर्ण महिमा होनी अभी बाकी है, क्योंकि तुम लोगों को अभी पूर्ण बनाया जाना बाकी है। यद्यपि तुम लोगों के हृदय परमेश्वर की ओर लौट चुके हैं, फिर भी तुम्हारी देह में अभी भी कई कमजोरियाँ हैं, तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में अक्षम हो, तुम परमेश्वर की इच्छा के प्रति सचेत रहने में असमर्थ हो, और तुम्हारे भीतर अभी भी बहुत-सी नकारात्मक चीज़ें हैं, जिनसे तुम लोगों को छुटकारा पाना होगा और तुम्हें अभी भी कई परीक्षणों और शुद्धिकरणों से गुज़रना होगा। केवल इसी तरह से तुम्हारे जीवन-स्वभाव परिवर्तित हो सकते हैं और तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा सकते हो।

केवल परमेश्वर को जानने वाले ही परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं

परमेश्वर में विश्वास करना और परमेश्वर को जानना स्वर्ग की व्यवस्था और पृथ्वी का सिद्धांत है और आज—ऐसे युग के दौरान जब देहधारी परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य कर रहा है—ख़ासतौर पर परमेश्वर को जानने का अच्छा समय है। परमेश्वर को संतुष्ट करना कुछ ऐसा है, जो परमेश्वर की इच्छा की समझ की नींव पर बनाया जाता है और परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए परमेश्वर का कुछ ज्ञान रखना आवश्यक है। परमेश्वर का यह ज्ञान वह दर्शन है, जो परमेश्वर में विश्वास रखने वाले के पास अवश्य होना चाहिए; यह परमेश्वर में मनुष्य के विश्वास का आधार है। इस ज्ञान के अभाव में, परमेश्वर में मनुष्य का विश्वास खोखले सिद्धांत के बीच, एक अज्ञात स्थिति में मौजूद होगा। भले ही यह परमेश्वर का अनुसरण करने का लोगों का इस तरह का संकल्प हो, तब भी उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा। वो सभी जो इस धारा में कुछ भी प्राप्त नहीं करते, वो हैं जिन्हें हटा दिया जाएगा—वो सभी मुफ़्तख़ोर हैं। तुम्हें परमेश्वर के कार्य के जिस भी चरण का अनुभव है, तुम्हारे साथ एक शक्तिशाली दर्शन होना चाहिए। अन्यथा, तुम्हारे लिए नए कार्य के हर चरण को स्वीकार करना कठिन होगा क्योंकि परमेश्वर का नया कार्य मनुष्य की कल्पना करने की क्षमता से परे है और उसकी धारणा की सीमाओं से बाहर है। इसलिए मनुष्य की रखवाली के लिए एक चरवाहे के बिना, दर्शनों को संगति में लगाने के लिए एक चरवाहे के बिना, मनुष्य इस नए कार्य को स्वीकार करने में असमर्थ है। यदि मनुष्य दर्शन प्राप्त नहीं कर सकता, तो वह परमेश्वर के नए कार्य को भी प्राप्त नहीं कर सकता और यदि मनुष्य परमेश्वर के नए कार्य का पालन नहीं कर सकता, तो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को समझने में असमर्थ होगा और इसलिए उसे परमेश्वर का कुछ ज्ञान नहीं होगा। इससे पहले कि मनुष्य परमेश्वर के वचन को कार्यान्वित करे, उसे परमेश्वर के वचन को अवश्य जानना चाहिए; यानी उसे परमेश्वर की इच्छा अवश्य समझनी चाहिए। केवल इसी तरह से परमेश्वर के वचन को सही-सही और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्यान्वित किया जा सकता है। यह कुछ ऐसा है कि सच्चाई की तलाश करने वाले हर व्यक्ति के पास अवश्य होना चाहिए और यही वह प्रक्रिया भी है, जिससे परमेश्वर को जानने की कोशिश करने वाले हर व्यक्ति को अवश्य गुज़रना चाहिए। परमेश्वर के वचन जानने की प्रक्रिया ही परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया है और परमेश्वर के कार्य को जानने की प्रक्रिया है। और इसलिए, दर्शनों को जानना न केवल देहधारी परमेश्वर की मानवता को जानने का संकेत है बल्कि इसमें परमेश्वर के वचन और कार्य को जानना भी शामिल है। परमेश्वर के वचन से लोग परमेश्वर की इच्छा जान लेते हैं और परमेश्वर के

कार्य से वो जान लेते हैं कि परमेश्वर का स्वभाव और परमेश्वर क्या है। परमेश्वर में विश्वास परमेश्वर को जानने का पहला कदम है। परमेश्वर में इस आरंभिक विश्वास से उसमें अत्यधिक गहन विश्वास की ओर जाने की प्रक्रिया ही परमेश्वर को जान लेने की प्रक्रिया है, परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने की प्रक्रिया है। यदि तुम केवल परमेश्वर में विश्वास रखने के वास्ते परमेश्वर में विश्वास रखते हो, न कि उसे जानने के वास्ते, तो तुम्हारे विश्वास की कोई वास्तविकता नहीं है और तुम्हारा विश्वास शुद्ध नहीं हो सकता—इस बारे में कोई संदेह नहीं है। यदि उस प्रक्रिया के दौरान जिसके ज़रिए मनुष्य परमेश्वर के कार्य का अनुभव करता है, धीरे-धीरे परमेश्वर को जान लेता है, तो उसका स्वभाव धीरे-धीरे बदल जाएगा और उसका विश्वास उत्तरोत्तर सत्य होता जाएगा। इस तरह, जब मनुष्य परमेश्वर में अपने विश्वास में सफलता पा लेता है, तो उसने पूरी तरह परमेश्वर को पा लिया होगा। परमेश्वर दूसरी बार व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करने के लिए देह बनने की इतनी हद तक क्यों गया, उसका कारण था कि मनुष्य उसे जानने और देखने में समर्थ हो जाए। परमेश्वर को जानना[क] परमेश्वर के कार्य के समापन पर प्राप्त किया जाने वाला अंतिम प्रभाव है; यह वह अंतिम अपेक्षा है, जो परमेश्वर मनुष्यजाति से करता है। उसके ऐसा करने का कारण अपनी अंतिम गवाही के वास्ते है; परमेश्वर यह कार्य इसलिए करता है ताकि मनुष्य अंततः और पूरी तरह उसकी ओर फिरे। मनुष्य केवल परमेश्वर को जानकर ही परमेश्वर से प्रेम कर सकता है और परमेश्वर से प्रेम करने के लिए उसे परमेश्वर को जानना चाहिए। इस बात से फ़र्क नहीं पड़ता कि वह कैसे तलाश करता है या वह क्या प्राप्त करने के लिए तलाश करता है, उसे परमेश्वर के ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ अवश्य होना चाहिए। केवल इसी तरह से मनुष्य परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट कर सकता है। केवल परमेश्वर को जानकर ही मनुष्य परमेश्वर पर सच्चा विश्वास रख सकता है और केवल परमेश्वर को जानकर ही वह वास्तव में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा रख सकता है और आज्ञापालन कर सकता है। जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते, वो कभी भी परमेश्वर के प्रति सच्ची आज्ञाकारिता और श्रद्धा नहीं रख सकते। परमेश्वर को जानने में उसके स्वभाव को जानना, उसकी इच्छा को समझना और यह जानना शामिल है कि वह क्या है। फिर भी इंसान किसी भी पहलू को क्यों न जाने, उसे प्रत्येक के लिए क़ीमत चुकाने की आवश्यकता होती है और आज्ञापालन करने की इच्छा की आवश्यकता होती है, जिसके बिना कोई भी अंत तक अनुसरण करते रहने में समर्थ नहीं होगा। मनुष्य की धारणाओं के साथ परमेश्वर का कार्य भी अनुरूपता में नहीं है। परमेश्वर का स्वभाव और परमेश्वर क्या है, यह जानना भी मनुष्य के लिए बहुत मुश्किल है और वह सब कुछ भी जो

परमेश्वर कहता और करता है, मनुष्य की समझ से परे है: यदि मनुष्य परमेश्वर का अनुसरण करना चाहता है और फिर भी उसकी आज्ञा का पालन करने का अनिच्छुक है, तो मनुष्य को कुछ प्राप्त नहीं होगा। संसार के सृजन से लेकर आज तक परमेश्वर ने बहुत सा कार्य किया है, जो मनुष्य की समझ से परे है, जिसे मनुष्य के लिये स्वीकार करना कठिन रहा है और परमेश्वर ने बहुत कुछ कहा है, जिससे मनुष्य की धारणाओं को ठीक करना मुश्किल हो जाता है। मगर मनुष्य की तमाम कठिनाइयों के कारण उसने अपना कार्य कभी बंद नहीं किया है; बल्कि, उसने कार्य करना और बोलना जारी रखा है और हालांकि बड़ी संख्या में "योद्धाओं" ने हार मान ली है, वह तब भी अपना कार्य कर रहा है और बिना रुकावट वह एक के बाद एक लोगों के ऐसे समूह चुनना जारी रखता है, जो उसके नए कार्य के प्रति समर्पण के इच्छुक हैं। उसमें उन पतित "नायकों" के लिए कोई दया नहीं, बल्कि वह उन लोगों को संजोकर रखता है, जो उसके नए कार्य और वचनों को स्वीकार करते हैं। मगर वह किस हद तक इस तरह क़दम-दर-क़दम कार्य करता है? क्यों वह हमेशा कुछ लोगों को हटा रहा है और दूसरों को चुन रहा है? ऐसा क्यों है कि वह हमेशा ऐसी विधि का उपयोग करता है? उसके कार्य का उद्देश्य मनुष्य को उसे जानने की अनुमति देना और इस प्रकार उसे प्राप्त करना है। उसके कार्य का सिद्धांत है उन लोगों पर कार्य करना, जो आज उसके द्वारा किए जा रहे कार्य के प्रति समर्पण करने में समर्थ हैं, न कि उन लोगों पर कार्य करना, जो उसके द्वारा अतीत में किए गए कार्य के प्रति समर्पण करते हैं और आज उसके द्वारा किए जा रहे कार्य का विरोध करते हैं। इसमें वह कारण निहित है कि क्यों वह इतने सारे लोगों को निकालता आ रहा है।

परमेश्वर को जानते रहने के लिए पाठ के प्रभावों को एक या दो दिन में प्राप्त नहीं किया जा सकता: मनुष्य को अनुभव संचित करना, पीड़ा से गुज़रना और सच्चा समर्पण प्राप्त करना चाहिए। सबसे पहले परमेश्वर के कार्य और वचनों से शुरू करें। यह आवश्यक है कि तुम समझो कि परमेश्वर के ज्ञान में क्या शामिल है, इस ज्ञान को कैसे प्राप्त किया जाए और अपने अनुभवों में परमेश्वर को कैसे देखा जाए। यह हर किसी को तब करना चाहिए जब उन्हें परमेश्वर को जानना बाक़ी हो। कोई भी परमेश्वर के कार्य और वचनों को एक ही बार में नहीं समझ सकता और कोई भी अल्प समय के भीतर परमेश्वर की समग्रता का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। अनुभव की एक आवश्यक प्रक्रिया है, जिसके बिना कोई भी परमेश्वर को जानने या ईमानदारी से उसका अनुसरण करने में समर्थ नहीं होगा। परमेश्वर जितना अधिक कार्य करता है, उतना ही अधिक मनुष्य उसे जानता है। परमेश्वर का कार्य जितना अधिक मनुष्य की धारणाओं से अलग होता है,

उतना ही अधिक मनुष्य का ज्ञान नवीकृत और गहरा होता है। यदि परमेश्वर का कार्य हमेशा स्थिर और अपरिवर्तित रहता, तो उसके बारे में मनुष्य को उसके ज्ञान के बारे में अधिक कुछ नहीं पता होता। सृजन और वर्तमान समय के बीच, परमेश्वर ने व्यवस्था के युग के दौरान क्या किया, उसने अनुग्रह के युग के दौरान क्या किया और राज्य के युग के दौरान वह क्या करता है—तुमको इन दर्शनों के बारे में पूर्णतया स्पष्ट होना चाहिए। तुमको परमेश्वर के कार्य को अवश्य जानना चाहिए। केवल यीशु का अनुसरण करने के बाद ही पतरस को धीरे-धीरे उस कार्य के बारे में अधिक पता चला जो पवित्रात्मा ने यीशु में किया था। उसने कहा, "मनुष्य के अनुभवों पर भरोसा करना पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है; परमेश्वर के कार्य से कई नई चीज़ें होनी चाहिए, जिससे हमें उसे जानने में मदद मिले।" आरंभ में, पतरस मानता था कि यीशु ही वह है, जिसे परमेश्वर द्वारा भेजा गया है, एक प्रेरित की तरह और उसने यीशु को मसीह के रूप में नहीं देखा। इस समय जब उसने यीशु का अनुसरण करना आरंभ किया, तो यीशु ने उससे पूछा, "शमौन योना के पुत्र, क्या तू मेरा अनुसरण करेगा?" पतरस ने कहा, "मुझे उसका अनुसरण करना चाहिए, जिसे स्वर्गिक पिता द्वारा भेजा जाता है। मुझे उसे स्वीकार करना चाहिए, जिसे पवित्र आत्मा द्वारा चुना जाता है। मैं तेरा अनुसरण करूँगा।" उसके वचनों से, यह देखा जा सकता है कि पतरस को यीशु की कोई जानकारी नहीं थी; उसने परमेश्वर के वचनों का अनुभव किया था, अपने आप से चर्चा की थी और परमेश्वर के लिए कठिनाई झेली थी, किंतु उसे परमेश्वर के कार्य का ज्ञान नहीं था। कुछ समय के अनुभव के बाद, पतरस ने यीशु में परमेश्वर के कई कर्मों को देखा, उसने परमेश्वर की मनोहरता को देखा और उसने यीशु में परमेश्वर का काफ़ी कुछ अस्तित्व देखा। इस तरह उसने यह भी देखा कि जो वचन यीशु ने बोले वो मनुष्य द्वारा नहीं बोले जा सकते थे और यह कि जो कार्य यीशु ने किया, वह मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता था। यीशु के वचनों और कार्यकलापों में, इसके अलावा पतरस ने परमेश्वर की बुद्धि का बहुत कुछ और एक दिव्य प्रकृति का बहुत सा कार्य देखा। अपने अनुभवों के दौरान, उसने न केवल स्वयं को जाना बल्कि यीशु के हर कार्यकलाप पर बारीक़ी से ध्यान दिया, जिससे उसने कई नई चीज़ों की खोज की जैसे, परमेश्वर ने यीशु के माध्यम से जो कार्य किया, उसमें व्यावहारिक परमेश्वर की कई अभिव्यक्तियां थीं और यह कि यीशु ने जो वचन बोले और जो कार्य किए और साथ ही जिस तरह उसने कलीसियाओं की चरवाही की और जो कार्य कार्यान्वित किया, उनमें वह एक सामान्य व्यक्ति से भिन्न था। और इस तरह पतरस ने यीशु से कई सबक सीखे जो वह सीखने वाला था और जब तक यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाने

वाला था, तब तक उसने यीशु के बारे में एक निश्चित मात्रा में ज्ञान प्राप्त कर लिया था—ऐसा ज्ञान जो यीशु के प्रति उसकी आजीवन वफ़ादारी और यीशु के वास्ते क्रूस पर उसे उल्टा चढ़ाए जाने का आधार बना। हालांकि आरंभ में वह कुछ धारणाओं के अधीन था और उसे यीशु के बारे में स्पष्ट ज्ञान नहीं था, ऐसी चीज़ें अनिवार्य रूप से भ्रष्ट मनुष्य का हिस्सा होती हैं। जब यीशु प्रस्थान करने वाला था, तो उसने पतरस से कहा कि वह क्रूस पर चढ़ने का कार्य करने के लिए ही आया है: यह आवश्यक था कि युग के द्वारा उसका त्याग कर दिया जाए और कि यह अपवित्र और पुराना युग उसे क्रूस पर चढ़ा दे; वह छुटकारे का कार्य पूरा करने के लिए आया था और इस कार्य को पूरा करने के बाद, उसकी सेवकाई समाप्त हो जाएगी। यह सुनकर पतरस दुःख से घिर गया और उसे यीशु से और अधिक लगाव हो गया। जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, तो पतरस एकांत में फूट-फूट कर रोया था। इससे पहले, उसने यीशु से पूछा था, "मेरे प्रभु! तू कहता है कि तू सूली पर चढ़ाया जाने वाला है। तेरे जाने के बाद, हम तुझे फिर कब देखेंगे?" जो वचन उसने बोले, क्या उनमें मिलावट का कोई तत्व नहीं था? क्या उनमें कोई धारणाएं मिश्रित नहीं थीं? अपने हृदय में वह जानता था कि यीशु परमेश्वर के कार्य का एक हिस्सा पूरा करने आया है और यीशु के जाने के बाद आत्मा उसके साथ होगा; भले ही उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए और वह स्वर्ग जाए, तब भी परमेश्वर का आत्मा उसके साथ रहेगा। उस समय, पतरस को यीशु का कुछ ज्ञान हो गया था: वह जानता था कि यीशु को परमेश्वर के आत्मा द्वारा भेजा गया है, यह कि परमेश्वर का आत्मा उसके भीतर है और यह कि यीशु स्वयं परमेश्वर है, यह कि वह मसीह है। फिर भी यीशु के प्रति अपने प्रेम और मानवीय कमज़ोरी के कारण पतरस ने ऐसे वचन बोले। यदि परमेश्वर के कार्य के हर चरण में, कोई अवलोकन और श्रमसाध्य अनुभव कर सकता है, तो वह धीरे-धीरे परमेश्वर की मनोहरता की खोज कर पाएगा। और पौलुस ने अपने दर्शन के लिए क्या लिया? जब यीशु उसके सामने प्रकट हुआ, पौलुस ने कहा, "हे प्रभु, तू कौन है?" यीशु ने कहा, "मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।" यह पौलुस का दर्शन था। पतरस ने अपनी यात्रा के अंत तक, यीशु के पुनरुत्थान, 40 दिनों तक उसके प्रकटन और यीशु के जीवनकाल की शिक्षाओं को अपने दर्शन के रूप में लिया।

मनुष्य परमेश्वर के कार्य का अनुभव करता है, स्वयं को जान लेता है, अपने भ्रष्ट स्वभाव को शुद्ध करता है और जीवन में विकास की तलाश करता है, यह सब परमेश्वर को जानने के वास्ते करता है। यदि तुम केवल अपने आप को जानने और अपने भ्रष्ट स्वभाव से निपटने का प्रयास करते हो, मगर तुम्हें इसका

कोई ज्ञान नहीं है कि परमेश्वर मनुष्य पर क्या कार्य करता है, उसका उद्धार कितना महान है या इसका कोई ज्ञान नहीं है कि तुम परमेश्वर के कार्य का अनुभव कैसे करते हो और उसके कर्मों की गवाही कैसे देते हो, तो तुम्हारा यह अनुभव अनर्गल है। यदि तुम सोचते हो कि किसी के जीवन में केवल इसलिए परिपक्वता आई है क्योंकि वह सत्य को व्यवहार में लाने और सहन करने में समर्थ है, तो इसका मतलब है कि तुमने अभी भी जीवन का सच्चा अर्थ या मनुष्य को पूर्ण करने का परमेश्वर का उद्देश्य नहीं समझा है। एक दिन, जब तुम पश्चाताप कलीसिया (रिपेंटेंस चर्च) या जीवन कलीसिया (लाइफ़ चर्च) के सदस्यों के बीच, धार्मिक कलीसियाओं में होगे, तो तुम कई धर्मपरायण लोगों से मिलोगे, जिनकी प्रार्थनाएं "दर्शनों" से युक्त होती हैं और जो जीवन की अपनी खोज में, स्पर्श किए गए और वचनों द्वारा मार्गदर्शित महसूस करते हैं। इसके अलावा, वो कई मामलों में सहने और स्वयं का त्याग करने और देह द्वारा अगुआई न किए जाने में समर्थ हैं। उस समय, तुम अंतर बताने में समर्थ नहीं होगे: तुम विश्वास करोगे कि वो जो कुछ करते हैं, सही है, जीवन की प्राकृतिक अभिव्यक्ति है और यह कितनी दयनीय बात है कि जिस नाम में वो विश्वास रखते हैं, वही ग़लत है। क्या ऐसे विचार मूर्खतापूर्ण नहीं हैं? ऐसा क्यों कहा जाता है कि कई लोगों का कोई जीवन नहीं है? क्योंकि वो परमेश्वर को नहीं जानते और इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि उनके हृदय में कोई परमेश्वर नहीं है और उनका कोई जीवन नहीं है। यदि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास एक स्थिति तक पहुँच गया है, जहां तुम परमेश्वर के कर्मों, परमेश्वर की वास्तविकता और परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण को पूरी तरह जानने में सक्षम हो, तो तुम सत्य के अधीन हो। यदि तुम परमेश्वर के कार्य और स्वभाव को नहीं जानते, तो तुम्हारे अनुभव में अभी भी कुछ दोष है। यीशु ने कैसे अपने कार्य के उस चरण को कार्यान्वित किया, कैसे इस चरण को कार्यान्वित किया जा रहा है, कैसे अनुग्रह के युग में परमेश्वर ने अपना कार्य किया और क्या कार्य किया, कौन सा कार्य इस चरण में किया जा रहा है—यदि तुम्हें इन बातों का पूरी तरह ज्ञान नहीं है, तो तुम कभी भी आश्वस्त महसूस नहीं करोगे और तुम हमेशा असुरक्षित रहोगे। यदि एक अवधि के अनुभव के बाद, तुम परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य और उसके हर चरण को जानने में समर्थ हो और यदि तुमने परमेश्वर के वचनों के बोलने में उसके लक्ष्यों का और इस बात का पूरी तरह ज्ञान प्राप्त कर लिया है और क्यों उसके द्वारा बोले गए इतने सारे वचन पूरे नहीं हुए हैं, तो तुम साहस के साथ और बिना हिचकिचाए, चिंता और शोधन से मुक्त होकर, आगे के मार्ग पर चल सकते हो। तुम लोगों को देखना चाहिए कि परमेश्वर किन तरीक़ों से अपना इतना अधिक कार्य कर पाता है। वह भिन्न-भिन्न प्रकार के बहुत

से वचनों के ज़रिए मनुष्य का शोधन करते और उसकी धारणाओं को रूपांतरित करते हुए अपने बोले गए वचनों का उपयोग करता है। समस्त पीड़ा जो तुम लोगों ने सहन की हैं, सभी शोधन जिनसे तुम लोग गुज़रे हो, जिस व्यवहार को तुम लोगों ने अपने भीतर स्वीकारा है, प्रबुद्धता जो तुम लोगों ने अनुभव की है—ये सभी उन वचनों के ज़रिए प्राप्त किए गए हैं, जो परमेश्वर ने बोले हैं। मनुष्य किस कारण परमेश्वर का अनुसरण करता है? वह परमेश्वर के वचनों की वजह से अनुसरण करता है! परमेश्वर के वचन गहन रूप से रहस्यमय हैं और इसके अलावा वो मनुष्य के हृदय को प्रेरित कर सकते हैं, उसके भीतर दबी चीज़ों को प्रकट कर सकते हैं, उसे अतीत में हुई चीजें ज्ञात करवा सकते हैं और उसे भविष्य में प्रवेश करने दे सकते हैं। इसलिए मनुष्य परमेश्वर के वचनों की वजह से पीड़ाएं सहता है और उसे परमेश्वर के वचनों की वजह से ही पूर्ण भी बनाया जाता है: केवल इसी समय मनुष्य परमेश्वर का अनुसरण करता है। इस चरण में मनुष्य को जो करना चाहिए, वह है परमेश्वर के वचनों को स्वीकार करना और इसकी परवाह किए बिना कि उसे पूर्ण बनाया जाता है या शोधन किया जाता है, जो महत्वपूर्ण है, वह है परमेश्वर के वचन। यह परमेश्वर का कार्य है और यही वह दर्शन भी है, जो आज मनुष्य के जानने योग्य है।

कैसे परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण बनाता है? परमेश्वर का स्वभाव क्या है? उसके स्वभाव में क्या निहित है? इन सभी चीज़ों को स्पष्ट करने के लिए: कोई इसे परमेश्वर का नाम फैलाना कहता है, कोई इसे परमेश्वर की गवाही देना कहता है और कोई इसे परमेश्वर की सराहना कहता है। मनुष्य, परमेश्वर को जानने की बुनियाद के आधार पर, अंततः अपने जीवन स्वभाव में रूपांतरित हो जाएगा। जितना अधिक मनुष्य से व्यवहार किया जा रहा है और शोधन किया जा रहा है, उतना ही वह मज़बूत होता है; जितने अधिक परमेश्वर के कार्य के चरण होते हैं, उतना अधिक मनुष्य को पूर्ण बनाया जाता है। आज मनुष्य के अनुभव में, परमेश्वर के कार्य का हर एक चरण उसकी धारणाओं पर चोट करता है और सभी मनुष्य की मेधा से परे और उसकी अपेक्षाओं से बाहर रहता है। परमेश्वर वह सब कुछ प्रदान करता है, जिसकी मनुष्य को आवश्यकता होती है और हर दृष्टि से यह उसकी धारणाओं से असंगत है। परमेश्वर तुम्हारी कमज़ोरी के समय में अपने वचन कहता है; केवल इसी तरह वह तुम्हारे जीवन की आपूर्ति कर सकता है। तुम्हारी धारणाओं पर हमला करके वह तुमसे परमेश्वर का व्यवहार स्वीकार करवाता है; केवल इस तरह से ही तुम ख़ुद को अपनी भ्रष्टता से मुक्त कर सकते हो। आज देहधारी परमेश्वर एक तरह से दिव्यता की स्थिति में कार्य करता है, पर दूसरी तरह से वह सामान्य मानवता की स्थिति में कार्य करता है। जब तुम

परमेश्वर के किसी भी कार्य को नकारने में सक्षम होना बंद कर देते हो, जब तुम इसकी परवाह किए बिना कि परमेश्वर सामान्य मानवता की स्थिति में क्या कहता या करता है, समर्पण कर पाते हो, जब तुम इसकी परवाह किए बिना कि वह किस प्रकार की सामान्यता को प्रकट करता है समर्पण करने और समझने में समर्थ हो जाते हो और जब तुम वास्तविक अनुभव प्राप्त कर लेते हो, केवल तभी तुम आश्वस्त हो सकते हो कि वह परमेश्वर है, केवल तभी तुम धारणाएं बनाना बंद करोगे और केवल तभी तुम उसका अंत तक अनुसरण कर पाओगे। परमेश्वर के कार्य में बुद्धि है और वह जानता है कि कैसे मनुष्य उसकी गवाही में डटा रह सकता है। वह जानता है कि मनुष्य की बड़ी कमजोरी कहां है और जिन वचनों को वह बोलता है, वो तुम्हारी बड़ी कमज़ोरी पर प्रहार कर सकते हैं, किंतु वह अपने लिए गवाही में तुम्हें अडिग रखने के लिए अपने प्रतापी और बुद्धिमान वचनों का भी उपयोग करता है। परमेश्वर के चमत्कारी कर्म ऐसे ही हैं। जो कार्य परमेश्वर करता है, वह मानवीय बुद्धि के लिए अकल्पनीय है। देह वाला यह मनुष्य किस प्रकार की भ्रष्टता से ग्रस्त है और मनुष्य का सार किन चीज़ों से बना है, ये सभी चीज़ें परमेश्वर के न्याय के ज़रिए प्रकट होती हैं, जो मनुष्य को अपनी शर्मिंदगी से छिपने के लिए कहीं का नहीं छोड़तीं।

परमेश्वर न्याय और ताड़ना का कार्य करता है ताकि मनुष्य परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त कर सके और उसकी गवाही दे सके। मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव का परमेश्वर द्वारा न्याय के बिना, संभवतः मनुष्य अपने धार्मिक स्वभाव को नहीं जान सकता था, जो कोई अपराध नहीं करता और न वह परमेश्वर के अपने पुराने ज्ञान को एक नए रूप में बदल पाता। अपनी गवाही और अपने प्रबंधन के वास्ते, परमेश्वर अपनी संपूर्णता को सार्वजनिक करता है, इस प्रकार, अपने सार्वजनिक प्रकटन के ज़रिए, मनुष्य को परमेश्वर के ज्ञान तक पहुँचने, उसको स्वभाव में रूपांतरित होने और परमेश्वर की ज़बर्दस्त गवाही देने लायक बनाता है। मनुष्य के स्वभाव का रूपांतरण परमेश्वर के कई विभिन्न प्रकार के कार्यों के ज़रिए प्राप्त किया जाता है; अपने स्वभाव में ऐसे बदलावों के बिना, मनुष्य परमेश्वर की गवाही देने और उसके पास जाने लायक नहीं हो पाएगा। मनुष्य के स्वभाव में रूपांतरण दर्शाता है कि मनुष्य ने स्वयं को शैतान के बंधन और अंधकार के प्रभाव से मुक्त कर लिया है और वह वास्तव में परमेश्वर के कार्य का एक आदर्श, एक नमूना, परमेश्वर का गवाह और ऐसा व्यक्ति बन गया है, जो परमेश्वर के दिल के क़रीब है। आज देहधारी परमेश्वर पृथ्वी पर अपना कार्य करने के लिए आया है और वह अपेक्षा रखता है कि मनुष्य उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उसके प्रति आज्ञाकारी हो, उसके लिए उसकी गवाही दे—उसके व्यावहारिक और सामान्य कार्य को जाने,

उसके उन सभी वचनों और कार्य का पालन करे, जो मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं हैं और उस समस्त कार्य की गवाही दे, जो वह मनुष्य को बचाने के लिए करता है और साथ ही सभी कर्मों की जिन्हें वह मनुष्य को जीतने के लिए कार्यान्वित करता है। जो परमेश्वर की गवाही देते हैं, उन्हें परमेश्वर का ज्ञान अवश्य होना चाहिए; केवल इस तरह की गवाही ही अचूक और वास्तविक होती है और केवल इस तरह की गवाही ही शैतान को शर्मिंदा कर सकती है। परमेश्वर अपनी गवाही के लिए उन लोगों का उपयोग करता है, जिन्होंने उसके न्याय और उसकी ताड़ना, व्यवहार और काट-छाँट से गुज़रकर उसे जान लिया है। वह अपनी गवाही के लिए उन लोगों का उपयोग करता है, जिन्हें शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है और इसी तरह वह अपनी गवाही देने के लिए उन लोगों का भी उपयोग करता है, जिनका स्वभाव बदल गया है और जिन्होंने इस प्रकार उसके आशीर्वाद प्राप्त कर लिए हैं। उसे मनुष्य की आवश्यकता नहीं, जो अपने मुँह से उसकी स्तुति करे, न ही उसे शैतान की किस्म के लोगों की स्तुति और गवाही की आवश्यकता है, जिन्हें उसने नहीं बचाया है। केवल वो जो परमेश्वर को जानते हैं, उसकी गवाही देने योग्य हैं और केवल वो जिनके स्वभाव को रूपांतरित कर दिया गया है, उसकी गवाही देने योग्य हैं। परमेश्वर जानबूझकर मनुष्य को अपने नाम को शर्मिंदा नहीं करने देगा।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में "परमेश्वर को जानने का कार्य" लिखा है।

पतरस ने यीशु को कैसे जाना

यीशु के साथ बिताए समय के दौरान पतरस ने यीशु में अनेक प्यारे लक्षण, अनेक अनुकरणीय पहलू, और अनेक ऐसे पहलू देखे, जिन्होंने उसे आपूर्ति की। यद्यपि पतरस ने कई तरीकों से यीशु में परमेश्वर के अस्तित्व को देखा, और कई प्यारे गुण देखे, किंतु पहले वह यीशु को नहीं जानता था। पतरस ने यीशु का अनुसरण करना तब आरंभ किया, जब वह 20 वर्ष का था, और वह छह वर्ष तक उसका अनुसरण करता रहा। उस दौरान उसे यीशु के बारे में कभी पता नहीं चला; पतरस विशुद्ध रूप से यीशु के प्रति प्रशंसा के भाव के कारण उसका अनुसरण करने को तैयार रहता था। जब यीशु ने पहली बार उसे गलील सागर के तट पर बुलाया, तो उसने पूछा : "शमौन, योना के पुत्र, क्या तू मेरा अनुसरण करेगा?" पतरस ने कहा : "मुझे उसका अनुसरण अवश्य करना चाहिए, जिसे स्वर्गिक पिता द्वारा भेजा जाता है। मुझे उसे अवश्य

अभिस्वीकृत करना चाहिए, जिसे पवित्र आत्मा द्वारा चुना जाता है। मैं तेरा अनुसरण करूँगा।" उस समय पतरस पहले ही यीशु नामक व्यक्ति—महानतम नबी और परमेश्वर के प्रिय पुत्र—के बारे में सुन चुका था और उसे खोजने की निरंतर आशा कर रहा था, उसे देखने के अवसर की आशा कर रहा था (क्योंकि इसी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा उसकी अगुआई की जा रही थी)। यद्यपि पतरस ने उसे कभी नहीं देखा था और केवल उसके बारे में अफ़वाहें ही सुनी थीं, किंतु धीरे-धीरे उसके हृदय में यीशु के लिए लालसा और श्रद्धा पनप गई, और वह किसी दिन यीशु को देख पाने के लिए अकसर लालायित रहने लगा। और यीशु ने पतरस को कैसे बुलाया? उसने भी पतरस नामक के व्यक्ति के बारे में सुना था, किंतु उसे पवित्र आत्मा ने निर्देशित नहीं किया था : "गलील सागर पर जाओ, जहाँ शमौन नाम का योना का पुत्र है।" यीशु ने किसी को यह कहते सुना था कि कोई शमौन नाम का योना का पुत्र है, कि लोगों ने उसका धर्मोपदेश सुना है, कि उसने भी स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार सुनाया है, और कि जिन लोगों ने भी उसे सुना, वे सभी खुशी से रो पड़े। यह सुनने के बाद यीशु गलील सागर तक उस व्यक्ति के पीछे गया; जब पतरस ने यीशु के बुलावे को स्वीकार किया, तब उसने उसका अनुसरण किया।

यीशु का अनुसरण करने के दौरान पतरस ने उसके बारे में कई मत बनाए और हमेशा अपने दृष्टिकोण से उसका आकलन किया। यद्यपि पतरस को पवित्रात्मा की एक निश्चित मात्रा में समझ थी, किंतु उसकी समझ कुछ हद तक अस्पष्ट थी, इसीलिए उसने कहा : "मुझे उसका अनुसरण अवश्य करना चाहिए, जिसे स्वर्गिक पिता द्वारा भेजा जाता है। मुझे उसे अवश्य अभिस्वीकृत करना चाहिए, जो पवित्र आत्मा द्वारा चुना जाता है।" उसने यीशु द्वारा की गई चीज़ों को नहीं समझा और उसमें उनके बारे में स्पष्टता का अभाव था। कुछ समय तक उसका अनुसरण करने के बाद उसकी उसके द्वारा किए गए कामों और उसके द्वारा कही गई बातों में और स्वयं यीशु में रुचि बढ़ी। उसने महसूस किया कि यीशु ने स्नेह और सम्मान दोनों प्रेरित किए; उसे उसके साथ जुड़ना और रहना अच्छा लगा, और यीशु के वचन सुनने से उसे आपूर्ति और सहायता मिली। यीशु का अनुसरण करने के दौरान, पतरस ने उसके जीवन के बारे में हर चीज़ का अवलोकन किया और उन्हें हृदय से लगाया : उसके क्रियाकलाप, वचन, गतिविधियाँ, और अभिव्यक्तियाँ। उसने एक गहरी समझ प्राप्त की कि यीशु साधारण मनुष्य जैसा नहीं है। यद्यपि उसका मानवीय रंग-रूप अत्यधिक सामान्य था, वह मनुष्यों के लिए प्रेम, अनुकंपा और सहिष्णुता से भरा हुआ था। उसने जो कुछ भी किया या कहा, वह दूसरों के लिए बहुत मददगार था, और पतरस ने यीशु में वे चीज़ें

देखीं और उससे वे चीज़ें पाईं, जो उसने पहले कभी नहीं देखी या पाई थीं। उसने देखा कि यद्यपि यीशु की न तो कोई भव्य कद-काठी है और न ही कोई असाधारण मानवता है, किंतु उसका हाव-भाव सच में असाधारण और असामान्य था। यद्यपि पतरस इसे पूरी तरह से नहीं बता सका, लेकिन वह देख सकता था कि यीशु बाकी सबसे भिन्न तरीके से कार्य करता है, क्योंकि जो चीज़ें उसने कीं, वे सामान्य मनुष्य द्वारा की जाने वाली चीज़ों से बहुत भिन्न थीं। यीशु के साथ संपर्क होने के समय से पतरस ने यह भी देखा कि उसका चरित्र साधारण मनुष्य से भिन्न है। उसने हमेशा स्थिरता से कार्य किया और कभी भी जल्दबाजी नहीं की, किसी भी विषय को न तो बढ़ा-चढ़ाकर बताया, न ही उसे कम करके आँका, और अपने जीवन को इस तरह से संचालित किया, जिससे ऐसा चरित्र उजागर हुआ जो सामान्य और सराहनीय दोनों था। बातचीत में यीशु स्पष्ट रूप से और शिष्टता के साथ बोलता था, हमेशा प्रफुल्लित किंतु शांतिपूर्ण ढंग से संवाद करता था, और अपना कार्य करते हुए कभी अपनी गरिमा नहीं खोता था। पतरस ने देखा कि यीशु कभी बहुत कम बोलता था, तो कभी लगातार बोलता रहता था। कभी वह इतना प्रसन्न होता था कि नाचते-उछलते कबूतर की तरह दिखता था, तो कभी इतना दुःखी होता था कि बिलकुल भी बात नहीं करता था, मानो दुख के बोझ से लदी और बेहद थकी कोई माँ हो। कई बार वह क्रोध से भरा होता था, जैसे कि कोई बहादुर सैनिक शत्रु को मारने के लिए हमलावर हो, और कई बार वह किसी गरजते सिंह जैसा दिखाई देता था। कभी वह हँसता था; तो कभी प्रार्थना करता और रोता था। यीशु ने चाहे कैसे भी काम किया, पतरस का उसके प्रति प्रेम और आदर असीमित रूप से बढ़ता गया। यीशु की हँसी उसे खुशी से भर देती थी, उसका दुःख उसे दुःख में डुबा देता था, उसका क्रोध उसे डरा देता था, और लोगों से की गई उसकी सख्त अपेक्षाओं ने उसे यीशु से सच्चा प्यार करवाया और उसके लिए एक सच्ची श्रद्धा और लालसा विकसित की। निस्संदेह, पतरस को इस सबका एहसास धीरे-धीरे तब तक नहीं हुआ, जब तक वह कई वर्ष यीशु के साथ नहीं रह लिया।

पतरस विशेष रूप से एक समझदार व्यक्ति था, जो प्राकृतिक समझ के साथ पैदा हुआ था, फिर भी यीशु का अनुसरण करते समय उसने कई प्रकार की मूर्खतापूर्ण चीज़ें कीं। आरंभ में, यीशु के बारे में उसकी कुछ धारणाएँ थी। उसने पूछा : "लोग कहते हैं कि तू एक नबी है, तो जब तू आठ साल का था और चीज़ों को समझने लगा था, तब क्या तुझे पता था कि तू परमेश्वर है? क्या तुझे पता था कि तुझे पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में धारण किया गया था?" यीशु ने उत्तर दिया : "नहीं, मैं नहीं जानता था। क्या मैं तुझे एक सामान्य

व्यक्ति जैसा नहीं लगता? मैं अन्य लोगों जैसा ही हूँ। जिस व्यक्ति को परमपिता भेजता है, वह एक सामान्य व्यक्ति होता है, न कि कोई असाधारण व्यक्ति। और यद्यपि जो काम मैं करता हूँ, वह मेरे स्वर्गिक पिता का प्रतिनिधित्व करता है, किंतु मेरी छवि, मैं जो व्यक्ति हूँ, और यह दैहिक शरीर मेरे स्वर्गिक पिता का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते, केवल उसके एक भाग का ही प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। यद्यपि मैं पवित्रात्मा से आया, किंतु फिर भी मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ, और मेरे परमपिता ने मुझे एक सामान्य व्यक्ति के रूप में इस धरती पर भेजा है, न कि एक असाधारण व्यक्ति के रूप में।" जब पतरस ने यह सुना, केवल तभी उसे यीशु के बारे में थोड़ी समझ प्राप्त हुई। और यीशु के अनगिनत घंटों के कार्य, उसकी शिक्षा, उसकी चरवाही और उसके पोषण को देखने के बाद ही उसे अधिक गहरी समझ प्राप्त हुई। जब यीशु अपने 30 वें साल में था, तब उसने पतरस को अपने शीघ्र सलीब पर चढ़ने के बारे में बताया, और यह भी कि वह समस्त मानवजाति के छुटकारे के लिए कार्य के एक चरण को—सलीब पर चढने के काम को—अंजाम देने आया है। यीशु ने उसे यह भी बताया कि सलीब पर चढ़ाए जाने के तीन दिन बाद मनुष्य का पुत्र फिर से जी उठेगा, और जी उठने पर वह 40 दिनों तक लोगों को दिखाई देगा। इन वचनों को सुनकर पतरस दुःखी हो गया और उसने इन वचनों को हृदय से लगा लिया; तब से वह यीशु के और भी करीब हो गया। कुछ समय तक अनुभव करने के बाद, पतरस को एहसास हुआ कि यीशु ने जो कुछ किया, वह सब परमेश्वर का किया हुआ था, और उसे लगा कि यीशु असाधारण रूप से प्यारा है। जब उसमें यह समझ आ गई, केवल तभी पवित्र आत्मा ने उसे अंदर से प्रबुद्ध किया। तब यीशु अपने शिष्यों और अन्य अनुयायियों की ओर मुड़ा और पूछा : "यूहन्ना, तू बता मैं कौन हूँ?" यूहन्ना ने उत्तर दिया : "तू मूसा है।" फिर वह लूका की ओर मुड़ा : "और, लूका, तू क्या कहता है कि मैं कौन हूँ?" लूका ने उत्तर दिया : "तू नबियों में सबसे महान है।" फिर उसने एक बहन से पूछा और उस बहन ने उत्तर दिया : "तू नबियों में सबसे महान है, जो अनंत से अनंत तक अनेक वचन कहता है। तेरी भविष्यवाणियों से बढ़कर किसी की भविष्यवाणियाँ नहीं हैं, न ही किसी का ज्ञान तुझसे ज़्यादा है; तू एक नबी है।" फिर यीशु पतरस की ओर मुड़ा और पूछा : "पतरस, तू बता मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर दिया : "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र, मसीह है। तू स्वर्ग से आया है, तू पृथ्वी का नहीं है, तू परमेश्वर द्वारा सृजित प्राणियों के समान नहीं है। हम पृथ्वी पर हैं और तू हमारे साथ यहाँ है, किंतु तू स्वर्ग का है, और इस संसार का नहीं है, और तू इस पृथ्वी का नहीं है।" यह उसके अनुभव के माध्यम से था कि पवित्र आत्मा ने उसे प्रबुद्ध किया, जिसने उसे इस समझ को प्राप्त

करने में समर्थ बनाया। इस प्रबुद्धता के बाद उसने यीशु द्वारा किए गए सभी कार्यों की और भी अधिक सराहना की, उसे और भी अधिक प्यारा समझा, और यीशु हमेशा उसके दिल में रहा और उसने कभी भी यीशु से अलग नहीं होना चाहा। इसलिए, सलीब पर चढ़ाए जाने और पुनर्जीवित होने के बाद जब यीशु ने अपने आप को सबसे पहले पतरस पर प्रकट किया, तो पतरस असाधारण प्रसन्नता से चिल्ला उठा : "प्रभु, तू जी उठा!" फिर रोते हुए उसने एक बहुत बड़ी मछली पकड़ी और उसे पकाया और यीशु के सामने परोसा। यीशु मुस्कुराया, किंतु कुछ नहीं बोला। यद्यपि पतरस जानता था कि यीशु पुनर्जीवित हो गया है, किंतु इसका रहस्य उसकी समझ में नहीं आया। जब उसने यीशु को मछली खाने के लिए दी, तो यीशु ने उसे मना नहीं किया, मगर उसने बात नहीं की, न ही वह खाने के लिए बैठा। इसके बजाय, वह अचानक ग़ायब हो गया। यह पतरस के लिए बहुत बड़ा झटका था, और केवल तभी उसकी समझ में आया कि पुनर्जीवित यीशु पहले वाले यीशु से भिन्न है। यह जान लेने के बाद पतरस दुःखी हो गया, किंतु उसे यह जानकर सांत्वना भी मिली कि प्रभु ने अपना कार्य पूरा कर लिया है। वह जानता था कि यीशु ने अपना कार्य पूरा कर लिया है, कि उसका मनुष्यों के साथ रहने का समय समाप्त हो गया है, और कि अब से मनुष्य को स्वयं ही अपने मार्ग पर चलना होगा। यीशु ने एक बार उससे कहा था : "तुझे भी उस कड़वे प्याले से अवश्य पीना चाहिए, जिससे मैंने पीया है (उसने पुनर्जीवित होने के बाद यही कहा था)। तुझे भी उस मार्ग पर चलना चाहिए, जिस पर मैं चला हूँ, तुझे मेरे लिए अपने जीवन का त्याग करना चाहिए।" अब के विपरीत, उस समय कार्य ने रूबरू वार्तालाप का रूप नहीं लिया था। अनुग्रह के युग के दौरान पवित्र आत्मा का कार्य विशेष रूप से छिपा हुआ था, और पतरस ने बहुत मुश्किलें सहीं। कभी-कभी तो पतरस चिल्ला उठता : "परमेश्वर! मेरे पास इस जीवन के अलावा कुछ नहीं है। यद्यपि तेरे लिए इसका अधिक महत्व नहीं है, फिर भी मैं इसे तुझे समर्पित करना चाहता हूँ। यद्यपि मनुष्य तुझे प्रेम करने के योग्य नहीं हैं, और उनका प्रेम और हृदय बेकार हैं, फिर भी मुझे विश्वास है कि तू मनुष्यों के हृदय की इच्छा जानता है। भले ही मनुष्य के शरीर तेरी स्वीकृति प्राप्त नहीं करते, फिर भी मैं चाहता हूँ कि तू मेरे हृदय को स्वीकार कर ले।" इस तरह की प्रार्थनाएँ करने से उसे प्रोत्साहन मिलता, खास तौर पर जब वह यह प्रार्थना करता था : "मैं अपना हृदय पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित करने को तैयार हूँ। भले ही मैं परमेश्वर के लिए कुछ करने में असमर्थ हूँ, फिर भी मैं परमेश्वर को ईमानदारी से संतुष्ट करने और अपने आप को पूरे हृदय से उसके प्रति समर्पित करने के लिए तैयार हूँ। मुझे विश्वास है कि परमेश्वर मेरे हृदय को देखता है।" उसने

कहा : "मैं अपने जीवन में सिवाय इसके कुछ नहीं माँगता कि परमेश्वर के प्रति प्रेम के लिए मेरे विचार और मेरे हृदय की अभिलाषा परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर ली जाए। मैं इतने लंबे समय तक प्रभु यीशु के साथ था, फिर भी मैंने उसे कभी प्रेम नहीं किया; यह मेरा सबसे बड़ा कर्ज़ है। यद्यपि मैं उसके साथ रहा, फिर भी मैंने उसे नहीं जाना, यहाँ तक कि उसकी पीठ पीछे मैंने कुछ अनुचित बातें भी कहीं। ये बातें सोचकर मैं प्रभु यीशु के प्रति अपने आप को और भी अधिक ऋणी समझता हूँ।" उसने हमेशा इसी तरह से प्रार्थना की। उसने कहा : "मैं धूल से भी कम हूँ। मैं अपने निष्ठावान हृदय को परमेश्वर को समर्पित करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता।"

पतरस के अनुभवों में पराकाष्ठा तब आई, जब उसका शरीर लगभग पूरी तरह से टूट गया, किंतु यीशु ने फिर भी उसे भीतर से प्रोत्साहन दिया। और एक बार, यीशु पतरस के सामने प्रकट हुआ। जब पतरस अत्यधिक पीड़ा में था और महसूस करता था कि उसका हृदय टूट गया है, तो यीशु ने उसे निर्देश दिया : "तू पृथ्वी पर मेरे साथ था, और मैं यहाँ तेरे साथ था। यद्यपि पहले हम स्वर्ग में एक-साथ थे, पर यह अंततः आध्यात्मिक संसार के बारे में है। अब मैं आध्यात्मिक संसार में लौट आया हूँ, और तू पृथ्वी पर है, क्योंकि मैं पृथ्वी का नहीं हूँ, और यद्यपि तू भी पृथ्वी का नहीं है, किंतु तुझे पृथ्वी पर अपना कार्य पूरा करना है। चूँकि तू एक सेवक है, इसलिए तुझे अपना कर्तव्य निभाना होगा।" पतरस को यह सुनकर सांत्वना मिली कि वह परमेश्वर की ओर लौट पाएगा। उस समय पतरस ऐसी पीड़ा में था कि वह लगभग बिस्तर पर पड़ा था; उसे इतना पछतावा हुआ कि वह कह उठा : "मैं इतना भ्रष्ट हूँ कि मैं परमेश्वर को संतुष्ट करने में असमर्थ हूँ।" यीशु उसके सामने प्रकट हुआ और बोला : "पतरस, कहीं ऐसा तो नहीं कि तू उस संकल्प को भूल गया है, जो तूने एक बार मेरे सामने लिया था? क्या तू वास्तव में वह सब-कुछ भूल गया है, जो मैंने कहा था? क्या तू उस संकल्प को भूल गया है, जो तूने मुझसे किया था?" यह देखकर कि यह यीशु है, पतरस अपने बिस्तर से उठ गया, और यीशु ने उसे इस प्रकार सांत्वना दी : "मैं पृथ्वी का नहीं हूँ, मैं तुझे पहले ही कह चुका हूँ—यह तुझे समझ जाना चाहिए, किंतु क्या तू कोई और बात भी भूल गया है, जो मैंने तुझसे कही थी? 'तू भी पृथ्वी का नहीं है, संसार का नहीं है।' अभी कुछ कार्य है, जो तुझे करना है, तू इस तरह से दुःखी नहीं हो सकता। तू इस तरह से पीड़ित नहीं हो सकता। हालाँकि मनुष्य और परमेश्वर एक ही संसार में एक-साथ नहीं रह सकते, मेरे पास मेरा कार्य है और तेरे पास तेरा कार्य है, और एक दिन जब तेरा कार्य समाप्त हो जाएगा, तो हम दोनों एक क्षेत्र में एक-साथ रहेंगे, और मैं हमेशा के लिए अपने साथ रहने में तेरी अगुआई

करूँगा।" इन वचनों को सुनने के बाद पतरस को सांत्वना मिली और वह आश्वस्त हुआ। वह जानता था कि यह पीड़ा उसे सहन और अनुभव करनी ही है, और तब से वह प्रेरित हो गया। यीशु हर महत्वपूर्ण क्षण में उसके सामने प्रकट हुआ, उसे विशेष प्रबुद्धता और मार्गदर्शन दिया, और उसने उस पर बहुत कार्य किया। और पतरस को सबसे अधिक किस बात का पछतावा हुआ? पतरस के यह कहने के शीघ्र बाद कि "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र है", यीशु ने पतरस से एक और प्रश्न पूछा (यद्यपि यह बाइबल में इस प्रकार से दर्ज नहीं है)। यीशु ने उससे पूछा : "पतरस! क्या तूने कभी मुझसे प्रेम किया है?" पतरस उसका अभिप्राय समझ गया और बोला : "प्रभु! मैंने एक बार स्वर्गिक पिता से प्रेम किया था, किंतु मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने तुझसे कभी प्रेम नहीं किया।" तब यीशु ने कहा, "यदि लोग स्वर्गिक परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, तो वे पृथ्वी पर पुत्र से कैसे प्रेम कर सकते हैं? और यदि लोग परमपिता परमेश्वर द्वारा भेजे गए पुत्र से प्रेम नहीं करते, तो वे स्वर्गिक पिता से कैसे प्रेम कर सकते हैं? यदि लोग वास्तव में पृथ्वी पर पुत्र से प्रेम करते हैं, तो वे स्वर्गिक पिता से भी वास्तव में प्रेम करते हैं।" जब पतरस ने इन वचनों को सुना, तो उसने महसूस किया कि उसमें क्या कमी है। उसे अपने इन शब्दों पर कि "मैंने एक बार स्वर्गिक पिता से प्रेम किया था, किंतु मैंने तुझसे कभी प्रेम नहीं किया," हमेशा इतना पछतावा महसूस होता था कि उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। यीशु के पुनर्जीवित होने और स्वर्गारोहण करने के बाद उसे अपने इन शब्दों पर और भी अधिक पछतावा और दुःख महसूस हुआ। अपने अतीत के कार्यों और अपनी वर्तमान कद-काठी को याद कर, वह प्राय: प्रार्थना करने के लिए यीशु के सामने आता, परमेश्वर की इच्छा पूरी न कर पाने और परमेश्वर के मानकों पर खरा न उतर पाने के कारण हमेशा पछतावा और ऋण महसूस करता। ये मामले उसका सबसे बड़ा बोझ बन गए। उसने कहा : "एक दिन मैं तुझे वह सब अर्पित कर दूँगा, जो मेरे पास है और जो मैं हूँ, मैं तुझे वह दूँगा जो सबसे अधिक मूल्यवान है।" उसने कहा : "परमेश्वर! मेरे पास केवल एक ही विश्वास और केवल एक ही प्रेम है। मेरे जीवन का कुछ भी मूल्य नहीं है, और मेरे शरीर का कुछ भी मूल्य नहीं है। मेरे पास केवल एक ही विश्वास और केवल एक ही प्रेम है। मेरे मन में तेरे लिए विश्वास है और हृदय में तेरे लिए प्रेम है; ये ही दो चीज़ें मेरे पास तुझे देने के लिए हैं, और कुछ नहीं।" पतरस यीशु के वचनों से बहुत प्रोत्साहित हुआ, क्योंकि यीशु को सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले उसने पतरस से कहा था : "मैं इस संसार का नहीं हूँ, और तू भी इस संसार का नहीं है।" बाद में, जब पतरस एक अत्यधिक पीड़ादायक स्थिति में पहुँचा, तो यीशु ने उसे स्मरण दिलाया : "पतरस, क्या तू भूल गया है? मैं इस संसार का नहीं हूँ, और मैं

सिर्फ अपने कार्य के लिए ही पहले चला गया। तू भी इस संसार का नहीं है, क्या तू सचमुच भूल गया है? मैंने तुझे दो बार बताया है, क्या तुझे याद नहीं है?" यह सुनकर पतरस ने कहा : "मैं नहीं भूला हूँ!" तब यीशु ने कहा : "तूने एक बार मेरे साथ स्वर्ग में एक खुशहाल समय और मेरी बगल में एक समयावधि बिताई थी। तू मुझे याद करता है और मैं तुझे याद करता हूँ। यद्यपि सृजित प्राणी मेरी दृष्टि में उल्लेखनीय नहीं हैं, फिर भी मैं किसी निर्दोष और प्यार करने योग्य प्राणी को कैसे प्रेम न करूँ? क्या तू मेरी प्रतिज्ञा भूल गया है? तुझे धरती पर मेरा आदेश स्वीकार करना चाहिए; तुझे वह कार्य पूरा करना चाहिए, जो मैंने तुझे सौंपा है। एक दिन मैं तुझे अपनी ओर आने के लिए निश्चित रूप से तेरी अगुआई करूँगा।" यह सुनने के बाद पतरस और भी अधिक उत्साहित हो गया तथा उसे और भी अधिक प्रेरणा मिली, इतनी कि जब वह सलीब पर था, तो यह कहने में समर्थ था : "परमेश्वर! मैं तुझे पर्याप्त प्यार नहीं कर सकता! यहाँ तक कि यदि तू मुझे मरने के लिए कहे, तब भी मैं तुझे पर्याप्त प्यार नहीं कर सकता! तू जहाँ कहीं भी मेरी आत्मा को भेजे, चाहे तू अपनी पिछली प्रतिज्ञाएँ पूरी करे या न करे, इसके बाद तू चाहे जो कुछ भी करे, मैं तुझे प्यार करता हूँ और तुझ पर विश्वास करता हूँ।" उसके पास जो था, वह था उसका विश्वास और सच्चा प्रेम।

एक शाम पतरस सहित कई चेले मछली पकड़ने वाली एक नाव में यीशु के साथ थे, और पतरस ने यीशु से एक बहुत ही निष्कपट प्रश्न पूछा : "प्रभु! मैं तुझसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ, जो काफी समय से मेरे मन में है।" यीशु ने उत्तर दिया : "तो पूछ!" तब पतरस ने पूछा : "क्या व्यवस्था के युग में किया गया कार्य तेरा कार्य था?" यीशु मुस्कुराया, मानो कह रहा हो : "यह बच्चा कितना भोला है!" फिर वह प्रयोजनपूर्वक बोला : "वह मेरा कार्य नहीं था। वह यहोवा और मूसा का कार्य था।" पतरस ने यह सुना और चिल्लाया : "ओह! तो यह तेरा कार्य नहीं था।" जब पतरस यह कह चुका, तो यीशु और कुछ नहीं बोला। पतरस ने मन में सोचा : "यह तू नहीं था जिसने यह किया, तो कोई आश्चर्य नहीं कि तू व्यवस्था को नष्ट करने आया है, क्योंकि यह तेरा कार्य नहीं था।" उसका हृदय भी हलका हो गया था। बाद में, यीशु ने महसूस किया कि पतरस बहुत भोला है, किंतु चूँकि उस समय उसके पास कोई समझ नहीं थी, इसलिए यीशु ने और कुछ नहीं कहा या सीधे उसका खंडन नहीं किया। एक बार यीशु ने एक आराधनास्थल में धर्मोपदेश दिया, जहाँ पतरस सहित कई लोग उपस्थित थे। अपने धर्मोपदेश में यीशु ने कहा : "वह जो अनंत से अनंत तक आएगा, वही अनुग्रह के युग में समस्त मानवजाति को पाप से छुटकारा दिलाने का कार्य करेगा, किंतु मनुष्य को पाप से बाहर लाने में वह किसी नियम से बँधा नहीं होगा। वह व्यवस्था से बाहर चलेगा और

अनुग्रह के युग में प्रवेश करेगा। वह संपूर्ण मानवजाति को छुटकारा दिलाएगा। वह व्यवस्था के युग से अनुग्रह के युग में आगे बढ़ेगा, फिर भी कोई उसे नहीं जानेगा, उसे जो यहोवा से आता है। जो कार्य मूसा ने किया, वह यहोवा द्वारा प्रदान किया गया; यहोवा ने जो कार्य किया था, उसके कारण मूसा ने व्यवस्था का प्रारूप बनाया।" यह कह चुकने के बाद, उसने कहना जारी रखा : "जो लोग अनुग्रह के युग के दौरान अनुग्रह के युग के आदेशों को समाप्त करेंगे, वे आपदा से ग्रस्त होंगे। उन्हें मंदिर में खड़े होकर परमेश्वर से विनाश प्राप्त करना होगा, और उन पर आग गिरेगी।" इन वचनों को सुनने का पतरस पर कुछ प्रभाव पड़ा, और उसके अनुभव की पूरी अवधि में यीशु ने पतरस की चरवाही की और उसे सँभाला, उसके साथ आत्मीयता से बातचीत की, जिससे पतरस को यीशु के बारे में थोड़ी बेहतर समझ प्राप्त हुई। जब पतरस ने यीशु के उस दिन के उपदेश, और मछली पकड़ने वाली नाव में स्वयं द्वारा पूछे गए प्रश्न और यीशु द्वारा दिए गए उसके उत्तर, और साथ ही उसके मुस्कुराने के ढंग पर विचार किया, तो अंतत: यह सब उसकी समझ में आया। बाद में पवित्र आत्मा ने पतरस को प्रबुद्ध किया, और केवल तभी उसकी समझ में आया कि यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र है। पतरस की समझ पवित्र आत्मा द्वारा दी गई प्रबुद्धता से विकसित हुई, किंतु उसकी समझ की एक प्रक्रिया थी। यह प्रश्न पूछने, यीशु के उपदेश सुनने, फिर यीशु की विशेष सहभागिता और उसकी विशेष चरवाही प्राप्त करने से विकसित हुई थी, जिससे पतरस समझ पाया कि यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र है। यह रातों-रात विकसित नहीं हुई थी; यह एक प्रक्रिया थी, और यह उसके बाद के अनुभवों में उसके लिए सहायक हुई। यीशु ने क्यों अन्य लोगों के जीवन में पूर्णता का कार्य नहीं किया, बल्कि केवल पतरस में ही किया? क्योंकि केवल पतरस ने ही समझा था कि यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र है, अन्य कोई यह नहीं जानता था। यद्यपि कई शिष्य उसका अनुसरण करने के दौरान काफी कुछ जानते थे, किंतु उनका ज्ञान सतही था। यही कारण था कि पूर्ण बनाए जाने के एक नमूने के रूप में यीशु द्वारा पतरस को ही चुना गया था। तब यीशु ने पतरस से जो कहा, वही आज वह उन लोगों से कहता है, जिनका ज्ञान और जीवन-प्रवेश पतरस के स्तर तक पहुँचता है। इसी अपेक्षा और मार्ग के अनुसार परमेश्वर हर एक को पूर्ण बनाएगा। आज लोगों से क्यों वास्तविक विश्वास और सच्चे प्रेम की अपेक्षा की जाती है? तुम लोगों को भी वह अनुभव करना चाहिए, जो पतरस ने अनुभव किया था; पतरस द्वारा अपने अनुभवों से प्राप्त किए गए फल तुम लोगों में भी अभिव्यक्त होने चाहिए; और तुम लोगों को भी वह पीड़ा अनुभव करनी चाहिए, जो पतरस ने अनुभव की। जिस मार्ग पर तुम लोग चलते हो, वह वही है, जिस पर पतरस

चला था। जो पीड़ा तुम लोग सहते हो, वह वही है, जो पतरस ने सही थी। जब तुम लोग महिमा प्राप्त करते हो और वास्तविक जीवन जीते हो, तब तुम लोग पतरस की छवि को जीते हो। मार्ग वही है, और इसी पर चलने से व्यक्ति को पूर्ण बनाया जाता है। हालाँकि, तुम लोगों की क्षमता पतरस की तुलना में कुछ कम है, क्योंकि समय बदल गया है और मनुष्यों की भ्रष्टता की सीमा भी, और क्योंकि यहूदिया एक प्राचीन सभ्यता वाला पुराना राज्य था। इसलिए तुम लोगों को अपनी क्षमता बढ़ाने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

पतरस एक बहुत ही समझदार और हर काम दक्षता से करने वाला व्यक्ति था और वह अत्यधिक ईमानदार भी था। उसे कई आघात लगे। वह 14 वर्ष की उम्र में समाज के संपर्क में आया, जब वह विद्यालय और साथ ही आराधनास्थल भी गया। उसमें अत्यधिक उत्साह था और वह सभाओं में उपस्थित होने के लिए हमेशा इच्छुक रहता था। उस समय तक यीशु ने अपना कार्य आधिकारिक रूप से आरंभ नहीं किया था; यह अनुग्रह के युग का मात्र आरंभ ही था। जब पतरस 14 वर्ष का था, तो वह धार्मिक लोगों के संपर्क में आने लगा था; जब वह 18 वर्ष का हुआ, तो वह धार्मिक कुलीन लोगों के संपर्क में आ गया, किंतु जब उसने धर्म के पर्दे के पीछे की अराजकता देखी, तो वह उससे पीछे हट गया। यह देखकर कि ये लोग कितने चालाक, धूर्त और षड्यंत्रकारी हैं, वह अत्यंत निराश हो गया (उसे पूर्ण बनाने के लिए उस समय पवित्र आत्मा ने इसी तरह से कार्य किया था। उसने उसे विशेष रूप से द्रवित किया और उस पर कुछ विशेष कार्य किया), और इसलिए वह 18 वर्ष की उम्र में आराधनास्थल से हट गया। उसके माता-पिता उसे सताते थे और उसे विश्वास करने से रोकते थे (वे शैतान और अविश्वासी थे)। अंततः, पतरस ने घर छोड़ दिया और हर जगह की यात्रा की, दो साल तक मछली पकड़ी और उपदेश दिया, जिस दौरान उसने काफी लोगों की अगुआई की। अब तुम्हें उस मार्ग को स्पष्ट रूप से देखने में समर्थ हो जाना चाहिए, जिस पर पतरस चला था। यदि तुम पतरस के मार्ग को स्पस्ट रूप देख सको, तो तुम उस कार्य के बारे में निश्चित होगे जो आज किया जा रहा है, इसलिए तुम शिकायत नहीं करोगे या निष्क्रिय नहीं होगे, या किसी भी चीज़ की लालसा नहीं करोगे। तुम्हें पतरस की उस समय की मनोदशा का अनुभव करना चाहिए : वह दुख से त्रस्त था; उसने फिर कोई भविष्य या आशीष नहीं माँगा। उसने सांसारिक लाभ, प्रसन्नता, प्रसिद्धि या धन-दौलत की कामना नहीं की; उसने केवल सर्वाधिक अर्थपूर्ण जीवन जीना चाहा, जो कि परमेश्वर के प्रेम को चुकाने और परमेश्वर को अपनी सबसे अधिक बहुमूल्य वस्तु समर्पित करने के लिए था। तब वह अपने हृदय में संतुष्ट होता। उसने प्रायः इन शब्दों में यीशु से प्रार्थना की : "प्रभु यीशु मसीह, मैंने एक बार तुझे प्रेम

किया था, किंतु मैंने तुझे वास्तव में प्रेम नहीं किया था। यद्यपि मैंने कहा था कि मुझे तुझ पर विश्वास है, किंतु मैंने तुझे कभी सच्चे हृदय से प्रेम नहीं किया। मैंने केवल तुझे देखा, तुझे सराहा, और तुझे याद किया, किंतु मैंने कभी तुझे प्रेम नहीं किया, न ही तुझ पर वास्तव में विश्वास किया।" अपना संकल्प करने के लिए उसने लगातार प्रार्थना की, और वह यीशु के वचनों से हमेशा प्रोत्साहित होता और उनसे प्रेरणा प्राप्त करता। बाद में, एक अवधि तक अनुभव करने के बाद, यीशु ने अपने लिए उसमें और अधिक तड़प पैदा करते हुए उसकी परीक्षा ली। उसने कहा : "प्रभु यीशु मसीह! मैं तुझे कितना याद करता हूँ, और तुझे देखने के लिए कितना लालायित रहता हूँ। मुझमें बहुत कमी है, और मैं तेरे प्रेम का बदला नहीं चुका सकता। मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे शीघ्र ले जा। तुझे मेरी कब आवश्यकता होगी? तू मुझे कब ले जाएगा? मैं कब एक बार फिर तेरा चेहरा देखूँगा? मैं भ्रष्ट होते रहने के लिए इस शरीर में अब और नहीं जीना चाहता, न ही अब और विद्रोह करना चाहता हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब मैं यथाशीघ्र तुझे समर्पित करने के लिए तैयार हूँ, और अब मैं तुझे और दुखी नहीं करना चाहता।" उसने इसी तरह से प्रार्थना की, किंतु उस समय वह नहीं जानता था कि यीशु उसमें क्या पूर्ण करेगा। उसकी परीक्षा की पीड़ा के दौरान, यीशु पुनः उसके सामने प्रकट हुआ और बोला : "पतरस, मैं तुझे पूर्ण बनाना चाहता हूँ, इस तरह कि तू फल का एक टुकड़ा बन जाए, जो मेरे द्वारा तेरी पूर्णता का ठोस रूप हो, और जिसका मैं आनंद लूँगा। क्या तू वास्तव में मेरे लिए गवाही दे सकता है? क्या तूने वह किया, जो मैं तुझे करने के लिए कहता हूँ? क्या तूने मेरे कहे वचनों को जिया है? तूने एक बार मुझे प्रेम किया, किंतु यद्यपि तूने मुझे प्रेम किया, पर क्या तूने मुझे जिया है? तूने मेरे लिए क्या किया है? तू महसूस करता है कि तू मेरे प्रेम के अयोग्य है, पर तूने मेरे लिए क्या किया है?" पतरस ने देखा कि उसने यीशु के लिए कुछ नहीं किया था, और परमेश्वर को अपना जीवन देने की पिछली शपथ स्मरण की। और इसलिए, उसने अब और शिकायत नहीं की, और तब से उसकी प्रार्थनाएँ और अधिक बेहतर हो गईं। उसने यह कहते हुए प्रार्थना की : "प्रभु यीशु मसीह! एक बार मैंने तुझे छोड़ा था, और एक बार तूने भी मुझे छोड़ा था। हमने अलग होकर, और साहचर्य में एक-साथ, समय बिताया है। फिर भी तू मुझे अन्य सभी की अपेक्षा सबसे ज्यादा प्रेम करता है। मैंने बार-बार तेरे विरुद्ध विद्रोह किया है और तुझे बार-बार दुःखी किया है। ऐसी बातों को मैं कैसे भूल सकता हूँ? जो कार्य तूने मुझ पर किया है और जो कुछ तूने मुझे सौंपा है, मैं उसे हमेशा मन में रखता हूँ, और कभी नहीं भूलता। जो कार्य तूने मुझ पर किया है, उसके लिए मैंने वह सब किया है, जो मैं कर सकता हूँ। तू जानता है कि मैं क्या कर सकता

हूँ, और तू यह भी जानता है कि मैं क्या भूमिका निभा सकता हूँ। मैं तेरे आयोजनों को समर्पित होना चाहता हूँ और मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब मैं तुझे समर्पित कर दूँगा। केवल तू ही जानता है कि मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ। यद्यपि शैतान ने मुझे बहुत मूर्ख बनाया और मैंने तेरे विरुद्ध विद्रोह किया, किंतु मुझे विश्वास है कि तू मुझे उन अपराधों के लिए स्मरण नहीं करता, और कि तू मेरे साथ उनके आधार पर व्यवहार नहीं करता। मैं अपना संपूर्ण जीवन तुझे समर्पित करना चाहता हूँ। मैं कुछ नहीं माँगता, और न ही मेरी अन्य आशाएँ या योजनाएँ हैं; मैं केवल तेरे इरादे के अनुसार कार्य करना चाहता हूँ और तेरी इच्छा पूरी करना चाहता हूँ। मैं तेरे कड़वे कटोरे में से पीऊँगा और मैं तेरे आदेश के लिए हूँ।"

तुम लोगों को उस मार्ग के बारे में स्पष्ट होना चाहिए, जिस पर तुम लोग चलते हो; तुम लोगों को उस मार्ग के बारे में स्पष्ट होना चाहिए, जिस पर तुम भविष्य में चलोगे, और इस बारे में भी कि वह क्या है जिसे परमेश्वर पूर्ण बनाएगा, और तुम लोगों को क्या सौंपा गया है। किसी दिन शायद तुम लोगों की परीक्षा ली जाएगी, और जब वह समय आएगा, तब यदि तुम लोग पतरस के अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त करने में समर्थ होगे, तो यह इस बात को दर्शाएगा कि तुम लोग वास्तव में पतरस के मार्ग पर चल रहे हो। अपने विश्वास और प्रेम के लिए, तथा परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा के लिए पतरस की परमेश्वर द्वारा प्रशंसा की गई थी। और यह उसके हृदय में परमेश्वर के लिए ईमानदारी और ललक ही थी कि परमेश्वर ने उसे पूर्ण बनाया। यदि तुम लोगों में वास्तव में पतरस जैसा प्रेम और विश्वास है, तो यीशु तुम्हें निश्चित रूप से पूर्ण बनाएगा।

केवल शुद्धिकरण का अनुभव करके ही मनुष्य सच्चे प्रेम से युक्त हो सकता है

तुम सभी परीक्षण और शुद्धिकरण के बीच हो। शुद्धिकरण के दौरान तुम्हें परमेश्वर से प्रेम कैसे करना चाहिए? शुद्धिकरण का अनुभव करने के बाद लोग परमेश्वर को सच्ची स्तुति अर्पित कर पाते हैं, और शुद्धिकरण के दौरान वे यह देख सकते हैं कि उनमें बहुत कमी है। जितना बड़ा तुम्हारा शुद्धिकरण होता है, उतना ही अधिक तुम देह-सुख त्याग सकते हो; जितना बड़ा लोगों का शुद्धिकरण होता है, उतना ही अधिक परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम होता है। तुम लोगों को यह बात समझनी चाहिए। लोगों का शुद्धिकरण क्यों किया जाना चाहिए? इसका लक्ष्य क्या परिणाम प्राप्त करना है? मनुष्य में परमेश्वर के शुद्धिकरण के कार्य का क्या अर्थ है? यदि तुम सच में परमेश्वर को खोजते हो, तो एक ख़ास बिंदु तक उसके शुद्धिकरण

का अनुभव कर लेने पर तुम महसूस करोगे कि यह बहुत अच्छा और अत्यंत आवश्यक है। शुद्धिकरण के दौरान मनुष्य को परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए? उसके शुद्धिकरण को स्वीकार करने के लिए उससे प्रेम करने के संकल्प का प्रयोग करके : शुद्धिकरण के दौरान तुम्हें भीतर से यातना दी जाती है, जैसे कोई चाकू तुम्हारे हृदय में घुमाया जा रहा हो, फिर भी तुम अपने उस हृदय का प्रयोग करके परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए तैयार हो, जो उससे प्रेम करता है, और तुम देह की चिंता करने को तैयार नहीं हो। परमेश्वर से प्रेम का अभ्यास करने का यही अर्थ है। तुम भीतर से आहत हो, और तुम्हारी पीड़ा एक ख़ास बिंदु तक पहुँच गई है, फिर भी तुम यह कहते हुए परमेश्वर के समक्ष आने और प्रार्थना करने को तैयार हो : "हे परमेश्वर! मैं तुझे नहीं छोड़ सकता। यद्यपि मेरे भीतर अंधकार है, फिर भी मैं तुझे संतुष्ट करना चाहता हूँ; तू मेरे हृदय को जानता है, और मैं चाहता हूँ कि तू अपना और अधिक प्रेम मेरे भीतर निवेश कर।" यह शुद्धिकरण के समय का अभ्यास है। यदि तुम परमेश्वर से प्रेम का नींव के रूप में प्रयोग करो, तो शुद्धिकरण तुम्हें परमेश्वर के और निकट ला सकता है और तुम्हें परमेश्वर के साथ और अधिक घनिष्ठ बना सकता है। चूँकि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, इसलिए तुम्हें अपने हृदय को परमेश्वर के समक्ष सौंप देना चाहिए। यदि तुम अपने हृदय को परमेश्वर पर चढ़ा दो और उसे उसके सामने रख दो, तो शुद्धिकरण के दौरान तुम्हारे लिए परमेश्वर को नकारना या त्यागना असंभव होगा। इस तरह से परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध पहले से अधिक घनिष्ठ और पहले से अधिक सामान्य हो जाएगा, और परमेश्वर के साथ तुम्हारा समागम पहले से अधिक नियमित हो जाएगा। यदि तुम सदैव ऐसे ही अभ्यास करोगे, तो तुम परमेश्वर के प्रकाश में और अधिक समय बिताओगे, और उसके वचनों के मार्गदर्शन में और अधिक समय व्यतीत करोगे, तुम्हारे स्वभाव में भी अधिक से अधिक बदलाव आएँगे, और तुम्हारा ज्ञान दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाएगा। जब वह दिन आएगा, जब परमेश्वर के परीक्षण अचानक तुम पर आ पड़ेंगे, तो तुम न केवल परमेश्वर की ओर खड़े रह पाओगे, बल्कि परमेश्वर की गवाही भी दे पाओगे। उस समय तुम अय्यूब और पतरस के समान होगे। परमेश्वर की गवाही देकर तुम सच में उससे प्रेम करोगे, और ख़ुशी-ख़ुशी उसके लिए अपना जीवन बलिदान कर दोगे; तुम परमेश्वर के गवाह होगे, और परमेश्वर के प्रिय व्यक्ति होगे। वह प्रेम, जिसने शुद्धिकरण का अनुभव किया हो, मज़बूत होता है, कमज़ोर नहीं। इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर कब और कैसे तुम्हें अपने परीक्षणों का भागी बनाता है, तुम इस बात की चिंता नहीं करोगे कि तुम जीओगे या मरोगे, तुम ख़ुशी-ख़ुशी परमेश्वर के लिए सब-कुछ त्याग दोगे, और परमेश्वर के

लिए कोई भी बात ख़ुशी-ख़ुशी सहन कर लोगे—इस प्रकार तुम्हारा प्रेम शुद्ध होगा, और तुम्हारा विश्वास वास्तविक होगा। केवल तभी तुम ऐसे व्यक्ति बनोगे, जिसे सचमुच परमेश्वर द्वारा प्रेम किया जाता है, और जिसे सचमुच परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया गया है।

यदि लोग शैतान के प्रभाव में आ जाते हैं, तो उनके भीतर परमेश्वर के लिए कोई प्रेम नहीं रहता, और उनके पिछले दर्शन, प्रेम और संकल्प लुप्त हो जाते हैं। लोग महसूस किया करते थे कि उनसे परमेश्वर के लिए दुःख उठाना अपेक्षित है, परंतु आज वे ऐसा करना निंदनीय समझते हैं, और उनके पास शिकायतों की कोई कमी नहीं होती। यह शैतान का कार्य है; इस बात का संकेत कि मनुष्य शैतान के अधिकार-क्षेत्र में गिर चुका है। यदि तुम्हारे सामने यह स्थिति आ जाए, तो तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए और जितनी जल्दी हो सके, उसे उलट देना चाहिए—यह तुम्हें शैतान के हमलों से बचाएगा। कड़वे शुद्धिकरण के दौरान मनुष्य बड़ी आसानी से शैतान के प्रभाव में आ सकता है, इसलिए ऐसे शुद्धिकरण के दौरान तुम्हें परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए? तुम्हें अपना हृदय परमेश्वर के समक्ष रखते हुए और अपना अंतिम समय परमेश्वर को समर्पित करते हुए अपनी इच्छा जगानी चाहिए। परमेश्वर चाहे कैसे भी तुम्हारा शुद्धिकरण करे, तुम्हें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए सत्य को अभ्यास में लाने योग्य बनना चाहिए, और परमेश्वर को खोजने और उसके साथ समागम की कोशिश करने की जिम्मेदारी खुद उठानी चाहिए। ऐसे समय में जितने अधिक निष्क्रिय तुम होओगे, उतने ही अधिक नकारात्मक तुम बन जाओगे और तुम्हारे लिए पीछे हटना उतना ही अधिक आसान हो जाएगा। जब तुम्हारे लिए अपना कार्य करना आवश्यक होता है, चाहे तुम उसे अच्छी तरह से पूरा न करो, पर तुम वह सब करते हो जो तुम कर सकते हो, और तुम उसे पूरा करने में परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम से अधिक किसी चीज़ का प्रयोग नहीं करते; भले ही दूसरे कुछ भी कहें—चाहे वे यह कहें कि तुमने अच्छा किया है, या यह कि तुमने ख़राब किया है—तुम्हारे इरादे सही हैं, और तुम दंभी नहीं हो, क्योंकि तुम परमेश्वर की ओर से कार्य कर रहे हो। जब दूसरे तुम्हें गलत समझते हैं, तो तुम परमेश्वर से प्रार्थना करने और यह कहने में सक्षम होते हो : "हे परमेश्वर! मैं यह नहीं माँगता कि दूसरे मुझे सहन करें या मुझसे अच्छा व्यवहार करें, न ही यह कि वे मुझे समझें और स्वीकार करें। मैं केवल यह माँगता हूँ कि मैं अपने हृदय से तुझसे प्रेम कर सकूँ, कि मैं अपने हृदय में शांत हो सकूँ, और कि मेरा अंत:करण शुद्ध हो। मैं यह नहीं माँगता कि दूसरे मेरी प्रशंसा करें, या मेरा बहुत आदर करें; मैं केवल तुझे अपने हृदय से संतुष्ट करना चाहता हूँ, मैं वह सब करके, जो मैं कर सकता हूँ, अपनी भूमिका

निभाता हूँ, और यद्यपि मैं मूढ़ और मूर्ख हूँ, और मुझमें क्षमता की कमी है और मैं अंधा हूँ, फिर भी मैं जानता हूँ कि तू मनोहर है, और मैं वह सब-कुछ तुझे अर्पित करने के लिए तैयार हूँ जो मेरे पास है।" जैसे ही तुम इस तरह से प्रार्थना करते हो, परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम उमड़ पड़ता है, और तुम अपने हृदय में बहुत अधिक राहत महसूस करते हो। परमेश्वर से प्रेम का अभ्यास करने का यही अर्थ है। जब तुम इसका अनुभव करोगे, तो तुम दो बार असफल होगे और एक बार सफल होगे, या पाँच बार असफल होगे और दो बार सफल होगे, और जब तुम इस तरह अनुभव करोगे, तो केवल असफलता के बीच ही तुम परमेश्वर की मनोहरता को देख पाओगे और खोज पाओगे कि तुममें क्या कमी है। जब तुम अगली बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हो, तो तुम्हें अपने आपको सावधान करना चाहिए, अपने क़दमों को संतुलित करना चाहिए, और अधिक बार प्रार्थना करनी चाहिए। धीरे-धीरे तुम ऐसी परिस्थितियों में विजय प्राप्त करने की योग्यता विकसित कर लोगे। जब ऐसा होता है, तो तुम्हारी प्रार्थनाएँ सफल होती हैं। जब तुम देखते हो कि तुम इस बार सफल रहे हो, तो तुम भीतर से आभारी रहोगे, और जब तुम प्रार्थना करोगे, तो तुम परमेश्वर को महसूस कर पाओगे, और यह भी कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति ने तुम्हें छोड़ा नहीं है—केवल तभी तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हारे भीतर कैसे कार्य करता है। इस प्रकार से किया जाने वाला अभ्यास तुम्हें अनुभव करने का मार्ग प्रदान करेगा। यदि तुम सत्य को अभ्यास में नहीं लाओगे, तो तुम अपने भीतर पवित्र आत्मा की उपस्थिति से वंचित रहोगे। परंतु यदि तुम चीज़ों का, जैसी वे हैं, उसी रूप में सामना करते हुए सत्य को अभ्यास में लाते हो, तो भले ही तुम भीतर से आहत हो, फिर भी पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ रहेगा, उसके बाद जब तुम प्रार्थना करोगे तो परमेश्वर की उपस्थिति महसूस कर पाओगे, तुममें परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाने का सामर्थ्य होगा, और अपने भाइयों और बहनों के साथ समागम के दौरान तुम्हारे अंत:करण पर कोई बोझ नहीं होगा, और तुम शांति महसूस करोगे, और इस तरह से तुम वह प्रकाश में ला पाओगे, जो तुमने किया है। दूसरे चाहे कुछ भी कहें, तुम परमेश्वर के साथ एक सामान्य संबंध रख पाओगे, तुम दूसरों द्वारा विवश नहीं किए जाओगे, तुम सब चीज़ों से ऊपर उठ जाओगे—और इसमें तुम दर्शा पाओगे कि तुम्हारे द्वारा परमेश्वर के वचनों का अभ्यास कारगर रहा है।

परमेश्वर द्वारा शुद्धिकरण जितना बड़ा होता है, लोगों के हृदय उतने ही अधिक परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम हो जाते हैं। उनके हृदय की यातना उनके जीवन के लिए लाभदायक होती है, वे परमेश्वर के समक्ष अधिक शांत रह सकते हैं, परमेश्वर के साथ उनका संबंध और अधिक निकटता का हो जाता है,

और वे परमेश्वर के सर्वोच्च प्रेम और उसके सर्वोच्च उद्धार को और अच्छी तरह से देख पाते हैं। पतरस ने सैकड़ों बार शुद्धिकरण का अनुभव किया, और अय्यूब कई परीक्षणों से गुजरा। यदि तुम लोग परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाना चाहते हो, तो तुम लोगों को भी सैकड़ों बार शुद्धिकरण से होकर गुजरना होगा; केवल इस प्रक्रिया से गुजरने और इस कदम पर निर्भर रहने के माध्यम से ही तुम लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी कर पाओगे और परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाओगे। शुद्धिकरण वह सर्वोत्तम साधन है, जिसके द्वारा परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है, केवल शुद्धिकरण और कड़वे परीक्षण ही लोगों के हृदय में परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम उत्पन्न कर सकते हैं। कठिनाई के बिना लोगों में परमेश्वर के लिए सच्चे प्रेम की कमी रहती है; यदि भीतर से उनको परखा नहीं जाता, और यदि वे सच में शुद्धिकरण के भागी नहीं बनाए जाते, तो उनके हृदय बाहर ही भटकते रहेंगे। एक निश्चित बिंदु तक शुद्धिकरण किए जाने के बाद तुम अपनी स्वयं की निर्बलताएँ और कठिनाइयाँ देखोगे, तुम देखोगे कि तुममें कितनी कमी है और कि तुम उन अनेक समस्याओं पर काबू पाने में असमर्थ हो, जिनका तुम सामना करते हो, और तुम देखोगे कि तुम्हारी अवज्ञा कितनी बड़ी है। केवल परीक्षणों के दौरान ही लोग अपनी सच्ची अवस्थाओं को सचमुच जान पाते हैं; और परीक्षण लोगों को पूर्ण किए जाने के लिए अधिक योग्य बनाते हैं।

अपने जीवनकाल में पतरस ने सैकड़ों बार शुद्धिकरण का अनुभव किया और वह कई दर्दनाक अग्निपरीक्षाओं से होकर गुजरा। यह शुद्धिकरण परमेश्वर के लिए उसके सर्वोच्च प्रेम की नींव और उसके संपूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अनुभव बन गया। वह परमेश्वर के प्रति सर्वोच्च प्रेम एक तरह से परमेश्वर से प्रेम करने के अपने संकल्प के कारण रख पाया; परंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप में, यह उस शुद्धिकरण और पीड़ा के कारण था, जिसमें से वह होकर गुजरा। यह पीड़ा परमेश्वर से प्रेम करने के मार्ग पर उसकी मार्गदर्शक और ऐसी चीज़ बन गई, जो उसके लिए सबसे अधिक यादगार थी। यदि लोग परमेश्वर से प्रेम करते हुए शुद्धिकरण की पीड़ा से नहीं गुजरते, तो उनका प्रेम अशुद्धियों और अपनी स्वयं की प्राथमिकताओं से भरा होता है; ऐसा प्रेम शैतान के विचारों से भरा होता है, और मूलत: परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में असमर्थ होता है। परमेश्वर से प्रेम करने का संकल्प रखना परमेश्वर से सच में प्रेम करने के समान नहीं है। यद्यपि अपने हृदय में जो कुछ वे सोचते हैं, वह परमेश्वर से प्रेम करने और परमेश्वर को संतुष्ट करने की खातिर ही होता है, और भले ही उनके विचार पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित और मानवीय विचारों से रहित प्रतीत होते हैं, परंतु जब उनके विचार परमेश्वर के सामने लाए जाते हैं, तो वह ऐसे

विचारों को प्रशंसा या आशीष नहीं देता। यहाँ तक कि जब लोग समस्त सत्यों को पूरी तरह से समझ लेते हैं—जब वे उन सबको जान जाते हैं—तो इसे भी परमेश्वर से प्रेम करने का संकेत नहीं माना जा सकता, यह नहीं कहा जा सकता कि ये लोग वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते हैं। शुद्धिकरण से गुजरे बिना अनेक सत्यों को समझ लेने के बावजूद लोग इन सत्यों को अभ्यास में लाने में असमर्थ होते हैं; केवल शुद्धिकरण के दौरान ही लोग इन सत्यों का वास्तविक अर्थ समझ सकते हैं, केवल तभी लोग वास्तव में उनके आंतरिक अर्थ जान सकते हैं। उस समय, जब वे पुनः प्रयास करते हैं, तब वे उपयुक्त रूप से और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सत्यों को अभ्यास में ला सकते हैं; उस समय उनके मानवीय विचार कम हो जाते हैं, उनकी मानवीय भ्रष्टता घट जाती है, और उनकी मानवीय संवेदनाएँ कम हो जाती हैं; केवल उसी समय उनका अभ्यास परमेश्वर के प्रति प्रेम की सच्ची अभिव्यक्ति होता है। परमेश्वर के प्रति प्रेम के सत्य का प्रभाव मौखिक ज्ञान या मानसिक तैयारी से हासिल नहीं किया जा सकता, और न ही इसे केवल सत्य को समझने से हासिल किया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि लोग एक मूल्य चुकाएँ, और कि वे शुद्धिकरण के दौरान अधिक कड़वाहट से होकर गुजरें, केवल तभी उनका प्रेम शुद्ध और परमेश्वर के हृदय के अनुसार होगा। अपनी इस अपेक्षा में कि मनुष्य उससे प्रेम करे, परमेश्वर यह माँग नहीं करता कि मनुष्य अपने जोश या मरज़ी का प्रयोग करके उससे प्रेम करे; केवल वफ़ादारी और उसकी सेवा के लिए सत्य के प्रयोग के माध्यम से ही मनुष्य उससे सच में प्रेम कर सकता है। परंतु मनुष्य भ्रष्टता के बीच रहता है, और इसलिए वह परमेश्वर की सेवा करने में सत्य और वफ़ादारी का प्रयोग करने में असमर्थ है। वह या तो परमेश्वर के संबंध में बहुत अधिक जोशीला है या फिर बहुत ठंडा और बेपरवाह; वह या तो परमेश्वर से अत्यधिक प्रेम करता है या अत्यधिक घृणा। जो भ्रष्टता के बीच जीते हैं, वे सदैव इन दोनों अतियों के बीच जीते हैं, वे सदैव अपनी मरज़ी के मुताबिक जीते हैं, फिर भी वे यह मानते हैं कि वे सही हैं। यद्यपि मैंने बार-बार इसका उल्लेख किया है, फिर भी लोग इसे गंभीरता से लेने में असमर्थ हैं, वे इसके महत्व को गहराई से समझने में अक्षम हैं, और इसलिए वे आत्म-वंचना के विश्वास के बीच, परमेश्वर के प्रति प्रेम के भ्रम में जीते हैं, जो उनकी मनमानी पर आश्रित है। पूरे इतिहास में, जैसे-जैसे मनुष्यजाति का विकास हुआ है और युग बीते हैं, मनुष्य से परमेश्वर की माँगें पहले से अधिक ऊँची होती गई हैं, और उसने लगातार यह माँग की है कि मनुष्य पूरी तरह से उसकी ओर फिर जाए। परंतु मनुष्य का ज्ञान अधिकाधिक धुँधला और अस्पष्ट होता गया है, और साथ ही साथ परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम अधिकाधिक अशुद्ध होता गया है।

मनुष्य की दशा और जो कुछ भी वह करता है, वह लगातार परमेश्वर की इच्छा के अधिकाधिक विरुद्ध होता गया है, क्योंकि मनुष्य शैतान द्वारा पहले से अधिक गहराई तक भ्रष्ट कर दिया गया है। इसमें यह आवश्यक हो जाता है कि परमेश्वर उद्धार का और अधिक तथा बड़ा कार्य करे। मनुष्य परमेश्वर से अपनी अपेक्षाएँ अधिकाधिक बढ़ाता जा रहा है, और परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम निरंतर कम होता जा रहा है। लोग अवज्ञा में, सत्य के बिना रहते हैं, वे ऐसा जीवन जीते हैं जो मानवता से रहित हैं; न केवल उनमें परमेश्वर के प्रति थोड़ा-सा भी प्रेम नहीं है, बल्कि वे अवज्ञा और विरोध से भरे हुए हैं। यद्यपि वे सोचते हैं कि उनमें परमेश्वर के प्रति पहले से ही बहुत अधिक प्रेम है, और वे उसके प्रति इससे अधिक अनुकूल नहीं हो सकते, परंतु परमेश्वर ऐसा नहीं मानता। उसे यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि उसके प्रति मनुष्य का प्रेम कितना भ्रष्ट है, और मनुष्य की चापलूसी के कारण उसने कभी मनुष्य के प्रति अपना मत नहीं बदला है, और न कभी मनुष्य की भक्ति के परिणामस्वरूप उसके सद्भाव का भुगतान किया है। मनुष्य के विपरीत, परमेश्वर अंतर करने में सक्षम है : वह जानता है कि कौन उससे वास्तव में प्रेम करता है और कौन नहीं, और मनुष्य के क्षणिक संवेगों के कारण जोश में आने और आपा खो देने के बजाय वह मनुष्य के सार और व्यवहार के अनुसार बरताव करता है। परमेश्वर आखिरकार परमेश्वर है, और उसकी अपनी गरिमा है, अपनी अंतर्दृष्टि है; मनुष्य आखिरकार मनुष्य है, और परमेश्वर के प्रति मनुष्य का प्रेम अगर सत्य से विमुख होगा, तो उसके कारण परमेश्वर उसकी ओर उन्मुख नहीं होगा। इसके विपरीत, वह मनुष्य के समस्त कार्यों के प्रति उपयुक्त रूप से व्यवहार करता है।

मनुष्य की दशा और अपने प्रति मनुष्य का व्यवहार देखकर परमेश्वर ने नया कार्य किया है, जिससे मनुष्य उसके विषय में ज्ञान और उसके प्रति आज्ञाकारिता दोनों से युक्त हो सकता है, और प्रेम और गवाही दोनों रख सकता है। इसलिए मनुष्य को परमेश्वर के शुद्धिकरण, और साथ ही उसके न्याय, व्यवहार और काट-छाँट का अनुभव अवश्य करना चाहिए, जिसके बिना मनुष्य कभी परमेश्वर को नहीं जानेगा, और कभी वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी गवाही देने में समर्थ नहीं होगा। परमेश्वर द्वारा मनुष्य का शुद्धिकरण केवल एकतरफा प्रभाव के लिए नहीं होता, बल्कि बहुआयामी प्रभाव के लिए होता है। केवल इसी तरह से परमेश्वर उन लोगों में शुद्धिकरण का कार्य करता है, जो सत्य को खोजने के लिए तैयार रहते हैं, ताकि उनका संकल्प और प्रेम परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाए। जो लोग सत्य को खोजने के लिए तैयार रहते हैं और जो परमेश्वर को पाने की लालसा करते हैं, उनके लिए ऐसे शुद्धिकरण से अधिक अर्थपूर्ण या

अधिक सहायक कुछ नहीं है। परमेश्वर का स्वभाव मनुष्य द्वारा सरलता से जाना या समझा नहीं जाता, क्योंकि परमेश्वर आखिरकार परमेश्वर है। अंततः, परमेश्वर के लिए मनुष्य के समान स्वभाव रखना असंभव है, और इसलिए मनुष्य के लिए परमेश्वर के स्वभाव को जानना सरल नहीं है। सत्य मनुष्य द्वारा अंतर्निहित रूप में धारण नहीं किया जाता, और वह उनके द्वारा सरलता से नहीं समझा जाता, जो शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए हैं; मनुष्य सत्य से और सत्य को अभ्यास में लाने के संकल्प से रहित है, और यदि वह पीड़ित नहीं होता और उसका शुद्धिकरण या न्याय नहीं किया जाता, तो उसका संकल्प कभी पूर्ण नहीं किया जाएगा। सभी लोगों के लिए शुद्धिकरण कष्टदायी होता है, और उसे स्वीकार करना बहुत कठिन होता है—परंतु शुद्धिकरण के दौरान ही परमेश्वर मनुष्य के समक्ष अपना धर्मी स्वभाव स्पष्ट करता है और मनुष्य से अपनी अपेक्षाएँ सार्वजनिक करता है, और अधिक प्रबुद्धता, अधिक वास्तविक काट-छाँट और व्यवहार प्रदान करता है; तथ्यों और सत्य के बीच की तुलना के माध्यम से वह मनुष्य को अपने और सत्य के बारे में बृहत्तर ज्ञान देता है, और उसे परमेश्वर की इच्छा की और अधिक समझ प्रदान करता है, और इस प्रकार उसे परमेश्वर के प्रति सच्चा और शुद्ध प्रेम प्राप्त करने देता है। शुद्धिकरण का कार्य करने में परमेश्वर के ये लक्ष्य हैं। उस समस्त कार्य के, जो परमेश्वर मनुष्य में करता है, अपने लक्ष्य और अपना अर्थ होता है; परमेश्वर निरर्थक कार्य नहीं करता, और न ही वह ऐसा कार्य करता है, जो मनुष्य के लिए लाभदायक न हो। शुद्धिकरण का अर्थ लोगों को परमेश्वर के सामने से हटा देना नहीं है, और न ही इसका अर्थ उन्हें नरक में नष्ट कर देना है। बल्कि इसका अर्थ है शुद्धिकरण के दौरान मनुष्य के स्वभाव को बदलना, उसके इरादों को बदलना, उसके पुराने विचारों को बदलना, परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम को बदलना, और उसके पूरे जीवन को बदलना। शुद्धिकरण मनुष्य की वास्तविक परीक्षा और वास्तविक प्रशिक्षण का एक रूप है, और केवल शुद्धिकरण के दौरान ही उसका प्रेम अपने अंतर्निहित कार्य को पूरा कर सकता है।

परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोग सदैव उसके प्रकाश के भीतर रहेंगे

परमेश्वर में अधिकांश लोगों के विश्वास का सार धर्म से जुड़ा दृढ़ विश्वास है : वे परमेश्वर से प्रेम करने में असमर्थ हैं, और केवल एक रोबोट की तरह परमेश्वर का अनुसरण कर सकते हैं, उनमें परमेश्वर के लिए सच्ची तड़प नहीं होती, और न ही वे उसे बहुत ज्यादा चाहते हैं। वे बस उसका मूक अनुसरण करते हैं। बहुत-से लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, परंतु बहुत कम लोग हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं; वे केवल

परमेश्वर का "आदर" करते हैं क्योंकि वे विनाश से डरते हैं, या फिर वे परमेश्वर की इसलिए "प्रशंसा" करते हैं क्योंकि वह ऊँचा और शक्तिमान है—परंतु उनके आदर और प्रशंसा में प्रेम या सच्ची तड़प नहीं होती। अपने अनुभवों में वे सत्य की अनावश्यक बारीकियाँ या फिर कुछ महत्वहीन रहस्य खोजते हैं। अधिकतर लोग सिर्फ अनुसरण करते हैं, वे आशीष प्राप्त करने के लिए अनाड़ियों की तरह अशांत सागर में मछली का शिकार करते हैं; वे सत्य की खोज नहीं करते, न ही वे परमेश्वर के आशीष प्राप्त करने के लिए सच्चे अर्थ में परमेश्वर का आज्ञापालन करते हैं। परमेश्वर में सभी लोगों के विश्वास का जीवन अर्थहीन है, वह मूल्यविहीन है, और इसमें उनके व्यक्तिगत सोच-विचार और लक्ष्य शामिल रहते हैं; वे परमेश्वर में विश्वास परमेश्वर से प्रेम करने के उद्देश्य से नहीं, अपितु धन्य होने के लिए करते हैं। कई लोग वही करते हैं जो उन्हें अच्छा लगता है; वे जो चाहते हैं वही करते हैं और कभी परमेश्वर के हितों का या इस बात का ध्यान नहीं रखते कि वे जो करते हैं वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है या नहीं। ऐसे लोग सच्चा विश्वास तक प्राप्त नहीं कर सकते, परमेश्वर के प्रति प्रेम तो दूर की बात है। परमेश्वर का सार मनुष्य के विश्वास मात्र के लिए नहीं है; इससे भी बढ़कर यह मनुष्य के प्रेम के लिए है। परंतु परमेश्वर में विश्वास करने वालों में से बहुत-से लोग यह "रहस्य" खोज पाने में अक्षम हैं। लोग परमेश्वर से प्रेम करने का साहस नहीं करते, न ही वे उसे प्रेम करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने कभी खोजा ही नहीं कि परमेश्वर के विषय में प्रेम करने लायक कितना कुछ है; उन्होंने कभी जाना ही नहीं कि परमेश्वर वह परमेश्वर है जो मनुष्य से प्रेम करता है, और परमेश्वर वह परमेश्वर है जो मनुष्य द्वारा प्रेम किए जाने के लिए है। परमेश्वर की सुंदरता उसके कार्य में अभिव्यक्त होती है : लोग उसकी सुंदरता को तभी खोज सकते हैं जब वे उसके कार्य का अनुभव करते हैं; केवल अपने वास्तविक अनुभवों में ही वे परमेश्वर की सुंदरता को महसूस कर सकते हैं; और वास्तविक जीवन में इसका अवलोकन किए बिना कोई परमेश्वर की सुंदरता को नहीं खोज सकता। परमेश्वर के बारे में प्रेम करने के लिए इतना कुछ है, परंतु लोग उसके साथ वास्तव में जुड़े बिना इसे खोज पाने में अक्षम हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि परमेश्वर देहधारी नहीं हुआ होता, तो लोग वास्तव में उसके साथ जुडने में असमर्थ होते, और यदि वे उसके साथ वास्तव में नहीं जुड़ पाते, तो वे उसके कार्य को अनुभव भी नहीं कर पाते—और इसलिए परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम अत्यधिक झूठ और कल्पना से दूषित होता। स्वर्ग के परमेश्वर के प्रति प्रेम उतना वास्तविक नहीं है जितना पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रति प्रेम है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर के विषय में लोगों का ज्ञान उनकी कल्पनाओं पर आधारित है, बजाय उस पर आधारित होने के,

जो उन्होंने अपनी आँखों से देखा है और जो उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है। जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तब लोग उसके वास्तविक कर्मों और उसकी सुंदरता को देख पाते हैं, और वे उसके व्यवहारिक और सामान्य स्वभाव का सब कुछ देख सकते हैं, जो पूरा का पूरा स्वर्ग के परमेश्वर के ज्ञान की अपेक्षा हजारों गुना अधिक वास्तविक है। स्वर्ग के परमेश्वर से लोग चाहे जितना भी प्रेम करते हों, इस प्रेम के विषय में कुछ भी वास्तविक नहीं है, और यह पूरी तरह मानवीय विचारों से भरा हुआ है। पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम चाहे जितना भी कम क्यों न हो, यह प्रेम वास्तविक है; अगर यह बहुत थोड़ा-सा भी है, तो भी यह वास्तविक है। परमेश्वर वास्तविक कार्य के माध्यम से उसे जानने के लिए लोगों को उत्प्रेरित करता है, और इस ज्ञान के माध्यम से वह उनका प्रेम प्राप्त करता है। यह पतरस के समान है : यदि वह यीशु के साथ नहीं रहा होता, तो उसके लिए यीशु को इतना चाह पाना असंभव होता। इसी तरह, यीशु के प्रति उसकी वफादारी भी यीशु से उसके जुड़ाव पर ही आधारित थी। मनुष्य परमेश्वर से प्रेम करे, इसीलिए परमेश्वर मनुष्यों के बीच आया है और मनुष्य के साथ रहता है, और वह मनुष्य को जो भी दिखाता और अनुभव कराता है, वही परमेश्वर की वास्तविकता है।

परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाने के लिए वास्तविकता और तथ्यों के उद्भव का उपयोग करता है; परमेश्वर के वचन उसके द्वारा लोगों को पूर्ण बनाए जाने के एक हिस्से को पूरा करते हैं, और यह मार्गदर्शन तथा राह खोलने का कार्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के वचनों में तुम्हें अभ्यास का मार्ग और दर्शनों का ज्ञान ढूँढ़ना चाहिए। इन बातों को समझने से मनुष्य के पास अपने वास्तविक अभ्यास में एक मार्ग होगा, और दर्शन होंगे, और वह परमेश्वर के वचनों के माध्यम से प्रबुद्धता प्राप्त कर पाएगा; वह समझ पाएगा कि ये चीजें परमेश्वर से आई हैं और वह बहुत कुछ पहचान पाएगा। यह समझ लेने के बाद मनुष्य को तुरंत इस वास्तविकता में प्रवेश करना चाहिए, और अपने वास्तविक जीवन में परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए उसके वचनों का उपयोग करना चाहिए। परमेश्वर सारी बातों में तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा, और तुम्हें अभ्यास का मार्ग देगा, और तुम्हें महसूस करवाएगा कि वह विशेष रूप से सुंदर है, और तुम्हें यह देखने देगा कि तुममें परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण का अभीष्ट तुम्हें पूर्ण बनाना है। यदि तुम परमेश्वर का प्रेम देखना चाहते हो, यदि तुम उसका प्रेम सच में अनुभव करना चाहते हो, तो तुम्हें वास्तविकता की गहराई में जाना चाहिए, तुम्हें वास्तविक जीवन की गहराई में जाना चाहिए और देखना चाहिए कि परमेश्वर जो भी करता है वह सब प्रेम और उद्धार है, कि वह सब कुछ इसलिए करता है ताकि जो भी अशुद्ध है

लोग उसे पीछे छोड़ पाएँ, और मनुष्य के भीतर परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं कर पाने वाली चीजों को शुद्ध कर पाएँ। परमेश्वर मनुष्य को पोषण प्रदान करने के लिए वचनों का उपयोग करता है; वह लोगों के अनुभव के लिए वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ सँजोता है, और यदि लोग परमेश्वर के अनेक वचनों को खाते और पीते हैं, और फिर जब वे उन्हें वास्तव में अभ्यास में लाते हैं, तब वे परमेश्वर के अनेक वचनों का उपयोग करके अपने जीवन की सभी कठिनाइयाँ हल कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वास्तविकता की गहराई में जाने के लिए तुम्हारे पास परमेश्वर के वचन होने चाहिए; यदि तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते नहीं हो और परमेश्वर के कार्य से वंचित हो, तो वास्तविक जीवन में तुम्हारे पास कोई मार्ग नहीं होगा। यदि तुम परमेश्वर के वचनों को कभी भी खाओगे और पीओगे नहीं, तो जब तुम्हारे साथ कुछ घटित होगा तब तुम भौंचक्के रह जाओगे। तुम बस इतना जानते हो कि तुम्हें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, लेकिन तुम भेद कर पाने में असमर्थ हो, और तुम्हारे पास अभ्यास का मार्ग नहीं है; तुम मंदबुद्धि और भ्रमित हो, और कभी-कभी तुम यह तक मान लेते हो कि देह को संतुष्ट करके तुम परमेश्वर को संतुष्ट कर रहे हो—यह सब परमेश्वर के वचनों को न खाने और पीने का ही परिणाम है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि तुम परमेश्वर के वचनों की मदद के बिना हो, और वास्तविकता के भीतर बस टटोलते भर हो, तो तुम अभ्यास का मार्ग खोजने में मूलतः असमर्थ हो। ऐसे लोग समझते ही नहीं कि परमेश्वर में विश्वास करने का क्या अर्थ है, परमेश्वर से प्रेम करने का अर्थ तो वे और भी नहीं समझते। यदि परमेश्वर के वचनों की प्रबुद्धता और मार्गदर्शन का उपयोग करके तुम प्रायः प्रार्थना, खोजबीन और तलाश करते हो, और इसके माध्यम से तुम उसका पता लगाते हो जिसे तुम्हें अभ्यास में लाना है, यदि तुम पवित्र आत्मा के कार्य के लिए अवसरों को ढूँढ़ पाते हो, परमेश्वर के साथ सचमुच सहयोग करते हो, और मंदबुद्धि तथा भ्रमित नहीं हो, तो वास्तविक जीवन में तुम्हारे पास एक मार्ग होगा और तुम परमेश्वर को सच में संतुष्ट कर पाओगे। जब तुमने परमेश्वर को संतुष्ट कर लिया होगा, तब तुम्हारे भीतर परमेश्वर का मार्गदर्शन होगा और तुम परमेश्वर द्वारा विशेष रूप से धन्य किए जाओगे, जो तुम्हें आनंद की अनुभूति देगा : तुम विशेष रूप से सम्मानित महसूस करोगे कि तुमने परमेश्वर को संतुष्ट किया है, तुम अपने भीतर विशेष रूप से प्रसन्नचित्त महसूस करोगे, और तुम्हारा हृदय शुद्ध और शांत होगा। तुम्हारी अंतरात्मा को सुकून मिलेगा और वह दोषारोपणों से मुक्त होगी, और जब तुम अपने भाइयों और बहनों को देखोगे तो मन में प्रसन्नता महसूस करोगे। परमेश्वर के प्रेम का आनंद लेने का यही अर्थ है, और केवल यही परमेश्वर का सचमुच

आनंद लेना है। लोगों द्वारा परमेश्वर के प्रेम का आनंद अनुभव के माध्यम से प्राप्त किया जाता है : कष्ट का अनुभव करके, और सत्य को अभ्यास में लाने का अनुभव करके, वे परमेश्वर के आशीष प्राप्त करते हैं। यदि तुम केवल कहते हो कि परमेश्वर तुमसे वास्तव में प्रेम करता है, कि परमेश्वर ने लोगों की ख़ातिर सचमुच भारी मूल्य चुकाया है, कि उसने धैर्यपूर्वक और कृपापूर्वक इतने सारे वचन कहे हैं और वह हमेशा लोगों को बचाता है, तो तुम्हारे द्वारा इन शब्दों को कहा जाना परमेश्वर के आनंद का बस एक पक्ष है। तथापि इससे भी अधिक बड़ा आनंद—वास्तविक आनंद—तब है जब लोग अपने वास्तविक जीवन में सत्य को अभ्यास में लाते हैं, जिसके बाद वे अपने हृदय में शांत और शुद्ध महसूस करते हैं। वे अपने भीतर बहुत ही द्रवित महसूस करते हैं, और यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर सर्वाधिक प्रेम करने योग्य है। तुम महसूस करोगे कि जो कीमत तुमने चुकाई है, वह सर्वथा उपयुक्त है। अपने प्रयासों में भारी कीमत चुकाने के बाद तुम अपने भीतर विशेष रूप से प्रसन्नचित्त महसूस करोगे : तुम महसूस करोगे कि तुम परमेश्वर के प्रेम का सचमुच आनंद ले रहे हो और तुम यह समझ जाओगे कि परमेश्वर ने लोगों में उद्धार का कार्य किया है, कि उसके द्वारा लोगों के शुद्धिकरण का अभीष्ट उन्हें शुद्ध करना है, और परमेश्वर यह परखने के लिए कि लोग उसे सचमुच प्रेम करते हैं या नहीं, उनकी परीक्षा लेता है। यदि तुम हमेशा सत्य को इस तरह अभ्यास में लाते हो, तो तुम धीरे-धीरे परमेश्वर के बहुत-से कार्य का स्पष्ट ज्ञान विकसित कर लोगे, और उस समय तुम महसूस करोगे कि परमेश्वर के वचन तुम्हारे सामने शीशे की तरह साफ हैं। यदि तुम कई सत्य स्पष्ट रूप से समझ सकते हो, तो तुम महसूस करोगे कि सभी विषयों को अभ्यास में लाना आसान है, कि तुम किसी भी विषय पर विजय पा सकते हो और किसी भी प्रलोभन पर विजय पा सकते हो, और तुम देखोगे कि तुम्हारे लिए कुछ भी कठिन नहीं है, जो तुम्हें अत्यधिक मुक्त कर देगा और स्वतंत्र कर देगा। इस क्षण तुम परमेश्वर के प्रेम का आनंद ले रहे होगे और परमेश्वर का सच्चा प्रेम तुम तक पहुँच गया होगा। परमेश्वर उन्हें धन्य करता है जिनके पास दर्शन होते हैं, जिनके पास सत्य होता है, जिनके पास ज्ञान होता है, और जो उससे सचमुच प्रेम करते हैं। यदि लोग परमेश्वर का प्रेम देखना चाहते हैं, तो उन्हें वास्तविक जीवन में सत्य को अभ्यास में लाना होगा, उन्हें पीड़ा सहने और जिससे वे प्यार करते हैं उसे परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए त्याग देने के लिए तैयार रहना होगा, और आँखों में आँसू होने के बावजूद उन्हें परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट करने में सक्षम होना होगा। इस तरह, परमेश्वर तुम्हें निश्चित रूप से धन्य करेगा, और यदि तुम ऐसे कष्ट सहोगे, तो इसके बाद पवित्र आत्मा का कार्य शुरू होगा। वास्तविक जीवन के माध्यम से,

और परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने के माध्यम से लोग परमेश्वर की सुंदरता को देख पाने में सक्षम होते हैं, और यदि उन्होंने परमेश्वर के प्रेम का स्वाद चखा है, तभी वे सचमुच उससे प्रेम कर सकते हैं।

तुम सत्य को जितना अधिक अभ्यास में लाते हो, उतना ही अधिक सत्य तुम्हारे पास होता है; तुम सत्य को जितना अधिक अभ्यास में लाते हो, उतना ही अधिक परमेश्वर का प्रेम तुम्हारे पास होता है; और तुम जितना अधिक सत्य को अभ्यास में लाते हो, उतना ही अधिक तुम परमेश्वर द्वारा धन्य किए जाते हो। यदि तुम हमेशा इसी तरह अभ्यास करते हो, तो तुम्हारे प्रति परमेश्वर का प्रेम तुम्हें उत्तरोत्तर देखने में सक्षम बनाएगा, ठीक वैसे ही जैसे पतरस परमेश्वर को जानने लगा था : पतरस ने कहा कि परमेश्वर के पास न केवल स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों का सृजन करने की बुद्धि है, बल्कि इससे भी बढ़कर, उसके पास लोगों में वास्तविक कार्य करने की बुद्धि है। पतरस ने कहा कि परमेश्वर लोगों का प्रेम पाने के योग्य है तो केवल इसलिए नहीं कि उसने स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजें बनाई हैं, बल्कि, इससे भी बढ़कर इसलिए कि वह मनुष्य को सृजित करने, मनुष्य को बचाने, मनुष्य को पूर्ण बनाने और मनुष्य को उत्तराधिकार में अपना प्रेम देने में सक्षम है। इसलिए, पतरस ने यह भी कहा कि परमेश्वर में बहुत कुछ है जो मनुष्य के प्रेम के योग्य है। पतरस ने यीशु से कहा : "क्या स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों का सृजन करना ही एकमात्र कारण है कि तुम लोगों के प्रेम के अधिकारी हो? तुममें और भी बहुत कुछ है, जो प्रेम करने के योग्य है। तुम वास्तविक जीवन में कार्य करते और चलते-फिरते हो, तुम्हारा आत्मा मुझे भीतर तक स्पर्श करता है, तुम मुझे अनुशासित करते हो, तुम मुझे डाँट-फटकार लगाते हो—ये चीजें तो लोगों का प्रेम पाने के और भी अधिक योग्य हैं।" यदि तुम परमेश्वर के प्रेम को देखना और अनुभव करना चाहते हो, तो तुम्हें उसे वास्तविक जीवन में खोजना और ढूँढ़ना चाहिए और अपनी देह को एक तरफ रखने के लिए तैयार होना चाहिए। तुम्हें यह संकल्प अवश्य लेना चाहिए। तुम्हें एक ऐसा संकल्पबद्ध व्यक्ति होना चाहिए जो आलसी हुए बिना या देह के आनंदों की अभिलाषा किए बिना सभी चीजों में परमेश्वर को संतुष्ट कर पाए, जो देह के लिए न जिए बल्कि परमेश्वर के लिए जिए। ऐसे भी अवसर हो सकते हैं जब तुम परमेश्वर को संतुष्ट न कर पाओ। वह इसलिए क्योंकि तुम परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते हो; अगली बार, भले ही तुम्हें अधिक प्रयास करना पड़े, तुम्हें उसे अवश्य संतुष्ट करना चाहिए, न कि तुम्हें देह को संतुष्ट करना चाहिए। जब तुम इस तरह अनुभव करोगे, तब तुम परमेश्वर को जानने लगे होगे। तुम देखोगे कि परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों की सृष्टि कर सकता है, कि वह देहधारी हुआ ही इसलिए है कि लोग वास्तव में उसे देख

सकें और वास्तव में उसके साथ जुड़ सकें; तुम देखोगे कि वह मनुष्यों के बीच चलने में सक्षम है, और उसका पवित्र आत्मा लोगों को वास्तविक जीवन में पूर्ण बना सकता है, और उन्हें अपनी सुंदरता देखने और अपना अनुशासन, अपनी ताड़ना और अपने आशीष अनुभव करने दे सकता है। यदि तुम हमेशा इसी तरह अनुभव करते रहते हो, तो तुम वास्तविक जीवन में परमेश्वर से अविभाज्य रहोगे, और यदि किसी दिन परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य नहीं रह जाता है, तो तुम डाँट-फटकार झेल पाओगे और पश्चात्ताप महसूस कर पाओगे। जब परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध सामान्य होगा, तो तुम परमेश्वर को कभी छोड़ना नहीं चाहोगे, और यदि किसी दिन परमेश्वर कहे कि वह तुम्हें छोड़ देगा, तो तुम भयभीत हो जाओगे, और कहोगे कि परमेश्वर द्वारा छोड़े जाने के बजाय तुम मर जाना पसंद करोगे। जैसे ही तुम्हारे मन में ये भावनाएँ आएंगी, तुम महसूस करोगे कि तुम परमेश्वर को छोड़ पाने में असमर्थ हो, और इस तरह तुम्हारे पास एक नींव होगी, और तुम परमेश्वर के प्रेम का सचमुच आनंद लोगे।

लोग प्रायः परमेश्वर को ही अपना जीवन समझने की बात करते हैं, परंतु उनका अनुभव अभी उस बिंदु तक नहीं पहुंचा है। तुम बस कह भर रहे हो कि परमेश्वर तुम्हारा जीवन है, कि वह प्रतिदिन तुम्हारा मार्गदर्शन करता है, कि तुम प्रतिदिन उसके वचन खाते और पीते हो, और तुम प्रतिदिन उससे प्रार्थना करते हो, इसलिए वह तुम्हारा जीवन बन गया है। जो ऐसा कहते हैं, उनका ज्ञान बहुत उथला है। कई लोगों में कोई नींव ही नहीं होती; परमेश्वर के वचन उनमें बोए तो गए हैं, किंतु उन्हें अभी अंकुरित होना है, उन पर फल लगना तो और भी दूर की बात है। आज, तुमने किस सीमा तक अनुभव किया है? परमेश्वर द्वारा तुम्हें यहाँ तक आने के लिए बाध्य करने के बाद ही, अब तुम्हें लगता है कि तुम परमेश्वर को नहीं छोड़ सकते। एक दिन, जब तुम्हारा अनुभव एक निश्चित बिंदु तक पहुँच गया होगा, तब यदि परमेश्वर तुम्हें छोड़कर जाने के लिए कहे, तो तुम नहीं जा पाओगे। तुम हमेशा महसूस करोगे कि तुम अपने भीतर परमेश्वर के बिना हो ही नहीं सकते; तुम पति, पत्नी या बच्चों के बिना, परिवार के बिना, माता या पिता के बिना, देह के आनंदों के बिना हो सकते हो, परंतु तुम परमेश्वर के बिना नहीं हो सकते। परमेश्वर के बिना होना अपना जीवन खो देने जैसा होगा; तुम परमेश्वर के बिना नहीं जी पाओगे। जब तुम इस बिंदु तक अनुभव कर लोगे, तो तुमने परमेश्वर में अपने विश्वास का लक्ष्य पा लिया होगा, और इस प्रकार परमेश्वर तुम्हारा जीवन बन गया होगा, वह तुम्हारे अस्तित्व का आधार बन गया होगा। तुम फिर कभी भी परमेश्वर को नहीं छोड़ पाओगे। जब तुम इस सीमा तक अनुभव कर लोगे, तब तुमने परमेश्वर के प्रेम का सचमुच

आनंद ले लिया होगा, और जब परमेश्वर के साथ तुम्हारा पर्याप्त निकट संबंध होगा, तब वह तुम्हारा जीवन, तुम्हारा प्रेम होगा, और उस समय तुम परमेश्वर से प्रार्थना करोगे और कहोगे : "हे परमेश्वर! मैं तुझे नहीं छोड़ सकता, तू मेरा जीवन है, मैं अन्य हर चीज के बिना रह सकता हूँ—पर तेरे बिना मैं नहीं जी सकता।" यही लोगों की सच्ची कद-काठी है; यही वास्तविक जीवन है। कुछ लोग आज जितनी दूर आए हैं, वहाँ तक आने के लिए उन्हें बाध्य किया गया है : वे चाहें या न चाहें उन्हें चलते जाना है, और उन्हें हमेशा लगता है कि वे दो पाटों के बीच फँस गए हैं। तुम्हें ऐसा अनुभव करना चाहिए कि परमेश्वर तुम्हारा जीवन है, कि यदि परमेश्वर को तुम्हारे हृदय से दूर ले जाया जाए, तो यह जीवन खो देने जैसा होगा; परमेश्वर अवश्य ही तुम्हारा जीवन होना चाहिए, और तुम्हें उसे छोड़ने में अवश्य ही असमर्थ होना चाहिए। इस तरह, तुमने वास्तव में परमेश्वर का अनुभव कर लिया होगा, और इस समय, जब तुम परमेश्वर से प्रेम करोगे, तब तुम परमेश्वर से सचमुच प्रेम करोगे, और यह एक विलक्षण, विशुद्ध प्रेम होगा। एक दिन, जब तुम्हारे अनुभव ऐसे होंगे कि तुम्हारा जीवन एक निश्चित बिंदु पर पहुँच चुका होगा, जब तुम परमेश्वर से प्रार्थना करोगे, और परमेश्वर के वचनों को खाओगे और पीओगे, तब तुम अंदर से परमेश्वर को नहीं छोड़ पाओगे, न ही तुम उसे चाहकर भी भूल पाओगे। परमेश्वर तुम्हारा जीवन बन चुका होगा; तुम संसार को भूल सकते हो, तुम अपनी पत्नी, पति या बच्चों को भूल सकते हो, किंतु परमेश्वर को भूलने में तुम्हें कष्ट होगा—ऐसा करना असंभव होगा, यही तुम्हारा सच्चा जीवन और परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम है। जब परमेश्वर के प्रति लोगों का प्रेम एक निश्चित बिंदु पर पहुँच जाता है, तब किसी भी दूसरे के प्रति उनका प्रेम परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम के बराबर नहीं होता; परमेश्वर से उनका प्रेम सबसे पहले आता है। इस तरह तुम अन्य सब कुछ छोड़ पाते हो, और परमेश्वर से सारे व्यवहार और काट-छाँट स्वीकार करने के इच्छुक होते हो। जब तुमने परमेश्वर के प्रति ऐसा प्रेम प्राप्त कर लिया जो अन्य सबसे बढ़कर हो, तब तुम वास्तविकता में और परमेश्वर के प्रेम में जिओगे।

ज्यों ही परमेश्वर लोगों के भीतर जीवन बन जाता है, लोग परमेश्वर को छोड़ने में असमर्थ हो जाते हैं। क्या यह परमेश्वर का कर्म नहीं है? इससे बड़ी कोई गवाही नहीं है! परमेश्वर ने एक निश्चित बिंदु तक कार्य किया है; उसने लोगों के लिए कहा है कि सेवा करें, ताड़ित हों या मर जाएँ, और लोग पीछे नहीं हटे हैं, जो यह दिखाता है कि वे परमेश्वर द्वारा जीत लिए गए हैं। जिन लोगों के पास सत्य है, वे वही हैं जो अपने वास्तविक अनुभवों में, कभी पीछे हटे बिना, अपनी गवाही पर दृढ़ता से डटे रह सकते हैं, अपने दृष्टिकोण

पर दृढ़ता से डटे रह सकते हैं, परमेश्वर के पक्ष में खड़े हो सकते हैं, और जो परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोगों के साथ सामान्य संबंध रख सकते हैं, जो अपने ऊपर कुछ बीतने पर पूर्णतः परमेश्वर का आज्ञापालन कर पाते हैं, और मृत्युपर्यंत परमेश्वर का आज्ञापालन कर सकते हैं। वास्तविक जीवन में तुम्हारा अभ्यास और तुम्हारे प्रकाशन परमेश्वर की गवाही हैं, वे मनुष्य का जीवनयापन करना और परमेश्वर की गवाही हैं, और यही वास्तव में परमेश्वर के प्रेम का आनंद लेना है; जब तुमने इस बिंदु तक अनुभव कर लिया होगा, तब तुम्हें यथोचित प्रभाव की प्राप्ति हो चुकी होगी। तुम्हारे पास वास्तविक जीवनयापन होता है और तुम्हारा प्रत्येक कार्यकलाप अन्य लोगों द्वारा प्रशंसा से देखा जाता है। तुम्हारे कपड़े और तुम्हारा बाह्य रूप साधारण है, किंतु तुम अत्यंत धर्मनिष्ठता का जीवन जीते हो, और जब तुम परमेश्वर के वचन संप्रेषित करते हो, तब तुम उसके द्वारा मार्गदर्शित और प्रबुद्ध किए जाते हो। तुम अपने शब्दों के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा कह पाते हो, वास्तविकता संप्रेषित कर पाते हो, और तुम आत्मा से सेवा करने के बारे में बहुत-कुछ समझते हो। तुम अपनी वाणी में खरे हो, तुम शालीन और ईमानदार हो, झगड़ालू नहीं हो और मर्यादित हो, परमेश्वर की व्यवस्थाओं का पालन कर पाते हो और जब तुम पर कुछ बीतती है तब तुम अपनी गवाही पर दृढता से डटे रहते हो, और तुम चाहे जिससे निपट रहे हो, हमेशा शांत और संयमित रहते हो। इस तरह के व्यक्ति ने सच में परमेश्वर का प्रेम देखा है। कुछ लोग अब भी युवा हैं, परंतु वे मध्यम आयु के व्यक्ति के समान व्यवहार करते हैं; वे परिपक्व, सत्य से युक्त होते हैं, और दूसरों से प्रशंसित होते हैं—और ये वे लोग हैं जिनके पास गवाही है और वे परमेश्वर की अभिव्यक्ति हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जब उन्होंने एक निश्चित बिंदु तक अनुभव कर लिया होगा, तो उनमें परमेश्वर के प्रति एक अंतर्दृष्टि होगी, और उनका बाहरी स्वभाव भी स्थिर हो जाएगा। बहुत-से लोग सत्य को व्यवहार में नहीं लाते और अपनी गवाही पर डटे नहीं रहते। ऐसे लोगों में परमेश्वर का प्रेम, या परमेश्वर की गवाही नहीं होती, और यही वे लोग हैं जिनसे परमेश्वर सर्वाधिक घृणा करता है। वे सभाओं में परमेश्वर के वचन पढ़ते हैं, परंतु वे जिसे जीते हैं वह शैतान है, और यह परमेश्वर का अनादर करना, परमेश्वर की झूठी निंदा करना, और परमेश्वर की ईशनिंदा करना है। ऐसे लोगों में परमेश्वर के प्रेम का कोई चिन्ह नहीं होता, और उनमें पवित्र आत्मा का बिलकुल भी कोई कार्य नहीं होता। ऐसे लोगों के शब्द और कृत्य शैतान का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि परमेश्वर के सामने तुम्हारा हृदय सदैव शांत रहता है, और तुम हमेशा अपने आसपास के लोगों और चीजों और अपने चारों ओर जो चल रहा है उस पर ध्यान देते हो, और यदि तुम परमेश्वर के दायित्व के प्रति सचेत हो, और तुम्हारा हृदय

हमेशा परमेश्वर का आदर करता है, तो परमेश्वर अक्सर तुम्हें भीतर से प्रबुद्ध करेगा। कलीसिया में ऐसे लोग हैं जो "पर्यवेक्षक" हैं : वे दूसरों की विफलताओं पर नजर रखते हैं, और फिर उनकी नकल और उनका अनुकरण करते हैं। वे भेद कर पाने में अक्षम होते हैं, वे पाप से घृणा नहीं करते और शैतान की चीजों के प्रति घृणा या जुगुप्सा महसूस नहीं करते। ऐसे लोग शैतान की चीजों से भरे होते हैं, और वे अंततः परमेश्वर द्वारा पूरी तरह त्याग दिए जाएँगे। तुम्हारा हृदय परमेश्वर के सामने सदा श्रद्धावान होना चाहिए, तुम्हें अपने शब्दों और कार्यों में संयत होना चाहिए और कभी परमेश्वर का विरोध करने या उसे परेशान करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। तुम्हें कभी भी अपने भीतर परमेश्वर के कार्य को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए, या तुमने जो कष्ट झेले हैं और जो कुछ अपने अभ्यास में खपाया है, उस सबको व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। तुम्हें आगे के मार्ग पर अधिक परिश्रम करने और परमेश्वर से अधिक प्रेम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ये वे लोग हैं जिनके पास अपनी नींव के रूप में एक दर्शन है। ये वे लोग हैं जो प्रगति की कामना करते हैं।

यदि लोग परमेश्वर का आदर करने वाले हृदय के साथ परमेश्वर में विश्वास करते हैं और उसके वचनों को अनुभव करते हैं, तो ऐसे लोगों में परमेश्वर का उद्धार और परमेश्वर का प्रेम देखा जा सकता है। ये लोग परमेश्वर की गवाही दे पाते हैं; वे सत्य को जीते हैं, और जिसकी वे गवाही देते हैं, वह भी सत्य, परमेश्वर का स्वरूप और परमेश्वर का स्वभाव ही होता है। वे परमेश्वर के प्रेम के मध्य में रहते हैं और वे परमेश्वर का प्रेम देख चुके हैं। यदि लोग परमेश्वर से प्रेम करना चाहते हैं, तो उन्हें परमेश्वर की सुंदरता का स्वाद चखना चाहिए और परमेश्वर की सुंदरता को देखना चाहिए; केवल तभी उनमें परमेश्वर से प्रेम करने वाला हृदय जागृत हो सकता है, एक ऐसा हृदय जो लोगों को अपना सर्वस्व निष्ठापूर्वक परमेश्वर के लिए देने को प्रेरित करता है। परमेश्वर लोगों को वचनों और अभिव्यक्तियों के माध्यम से, या उनकी कल्पना के माध्यम से अपने से प्रेम नहीं कराता, और न ही वह अपने से प्रेम करने के लिए उन्हें बाध्य करता है। इसकी बजाय वह उन्हें उनकी इच्छा से अपने से प्रेम करने देता है, और वह अपने कार्य और कथनों में उन्हें अपनी सुंदरता को देखने देता है, जिसके बाद उनमें परमेश्वर के प्रति प्रेम जन्म लेता है। केवल इसी तरह लोग सच्चे अर्थों में परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं। लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो इसलिए नहीं कि दूसरों ने उनसे ऐसा करने का आग्रह किया है, न ही यह कोई क्षणिक भावनात्मक आवेग होता है। वे परमेश्वर से इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि उन्होंने उसकी सुंदरता देखी है, उन्होंने देखा है कि उसमें कितना कुछ है जो

लोगों के प्रेम के योग्य है, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का उद्धार, बुद्धि और आश्चर्यजनक कर्म देखे हैं—और परिणामस्वरूप, वे सचमुच परमेश्वर का गुणगान करते हैं, और सचमुच उसके लिए तड़पते हैं, और उनमें ऐसा जुनून उत्पन्न हो जाता है कि वे परमेश्वर को प्राप्त किए बिना जीवित नहीं रह सकते। जो सच्चे अर्थों में परमेश्वर की गवाही देते हैं, वे उसकी शानदार गवाही इसलिए दे पाते हैं क्योंकि उनकी गवाही परमेश्वर के सच्चे ज्ञान और उसके लिए सच्ची तड़प की नींव पर टिकी होती है। ऐसी गवाही किसी भावनात्मक आवेग के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर और उसके स्वभाव के उनके ज्ञान के अनुसार दी जाती है। चूँकि वे परमेश्वर को जानने लगे हैं, इसलिए उन्हें लगता है कि उन्हें परमेश्वर की गवाही निश्चित रूप से देनी चाहिए, और उन सबको जो परमेश्वर के लिए तड़पते हैं, परमेश्वर को जानने, और परमेश्वर की सुंदरता एवं उसकी वास्तविकता से अवगत होने का अवसर मिलना चाहिए। परमेश्वर के प्रति लोगों के प्रेम की तरह उनकी गवाही भी स्वतः स्फूर्त होती है, वह वास्तविक होती है और उसका महत्व एवं मूल्य वास्तविक होता है। वह निष्क्रिय या खोखली और अर्थहीन नहीं होती। जो परमेश्वर से सचमुच प्रेम करते हैं केवल उन्हीं के जीवन में सर्वाधिक मूल्य और अर्थ होता है, और केवल वही लोग क्यों परमेश्वर में सचमुच विश्वास करते हैं, इसका कारण यह है कि ये लोग परमेश्वर के प्रकाश में रह पाते हैं और परमेश्वर के कार्य और प्रबंधन के लिए जी पाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अंधकार में नहीं जीते, बल्कि प्रकाश में जीते हैं; वे अर्थहीन जीवन नहीं जीते, बल्कि परमेश्वर द्वारा धन्य किया गया जीवन जीते हैं। केवल वे जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, परमेश्वर की गवाही दे पाते हैं, केवल वे ही परमेश्वर के गवाह हैं, केवल वे ही परमेश्वर द्वारा धन्य किए जाते हैं, और केवल वे ही परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ प्राप्त कर पाते हैं। वे जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, परमेश्वर के अंतरंग हैं; वे परमेश्वर के प्रिय लोग हैं, और वे परमेश्वर के साथ आशीषों का आनंद ले सकते हैं। केवल ऐसे लोग ही अनंत काल तक जीवित रहेंगे, और केवल वे ही हमेशा के लिए परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा में रहेंगे। परमेश्वर लोगों द्वारा प्रेम किए जाने के लिए है, और वह सभी लोगों द्वारा प्रेम किए जाने योग्य है, परंतु सभी लोग परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम नहीं हैं, और न ही सभी लोग परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं और परमेश्वर के सामर्थ्य में सहभागी हो सकते हैं। चूँकि परमेश्वर से सचमुच प्रेम करने वाले लोग ही परमेश्वर की गवाही दे पाते हैं और परमेश्वर के कार्य के लिए अपने सभी प्रयास समर्पित कर पाते हैं, इसलिए वे स्वर्ग के नीचे कहीं भी घूम सकते हैं और कोई उनका विरोध करने की हिम्मत नहीं कर सकता, और वे पृथ्वी पर शक्ति का प्रयोग और परमेश्वर के सभी लोगों पर शासन कर सकते हैं। ये लोग दुनिया भर से एक-साथ

आए हैं। वे अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं और उनकी त्वचा के रंग भिन्न-भिन्न हैं, परंतु उनके अस्तित्व का समान अर्थ है; उन सबके पास परमेश्वर से प्रेम करने वाला हृदय है, वे सब एक ही गवाही देते हैं, और उनका एक ही संकल्प और एक ही इच्छा है। जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे समूचे संसार में कहीं भी स्वतंत्रता से घूम सकते हैं; और जो परमेश्वर की गवाही देते हैं, वे संपूर्ण ब्रह्मांड में यात्रा कर सकते हैं। वे लोग परमेश्वर के प्रिय लोग हैं, वे परमेश्वर द्वारा धन्य किए गए लोग हैं, और वे सदैव उसके प्रकाश के भीतर रहेंगे।

केवल उन्हें ही पूर्ण बनाया जा सकता है जो अभ्यास पर ध्यान देते हैं

अंत के दिनों में परमेश्वर ने वह कार्य करने के लिए, जो उसे करना चाहिए, और अपने वचनों की सेवकाई करने के लिए देहधारण किया। वह अपने हृदय के अनुरूप लोगों को पूर्ण बनाने के लक्ष्य के साथ व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के मध्य कार्य करने के लिए आया। सृष्टि के समय से लेकर आज तक केवल अंत के दिनों में ही उसने इस तरह का कार्य किया है। केवल अंत के दिनों के दौरान ही परमेश्वर ने इतने बड़े पैमाने का कार्य करने के लिए देहधारण किया है। यद्यपि वह ऐसी कठिनाइयाँ सहता है, जिन्हें सहना लोगों को मुश्किल लगेगा, और यद्यपि एक महान परमेश्वर होते हुए भी उसमें एक साधारण मनुष्य बनने की विनम्रता है, फिर भी उसके कार्य का कोई भी पहलू विलंबित नहीं किया गया है और उसकी योजना किसी भी तरह से अव्यवस्था की शिकार नहीं हुई है। वह अपनी वास्तविक योजना के अनुसार ही कार्य कर रहा है। इस देहधारण के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य लोगों को जीतना है और दूसरा उद्देश्य उन लोगों को पूर्ण बनाना है, जिनसे वह प्रेम करता है। वह अपनी आँखों से उन लोगों को देखने की इच्छा रखता है, जिन्हें वह पूर्ण बनाता है, और वह खुद यह देखना चाहता है कि जिन लोगों को वह पूर्ण बनाता है, वे उसके लिए किस तरह गवाही देते हैं। वे केवल एक या दो व्यक्ति नहीं हैं, जिन्हें पूर्ण बनाया जाता है। बल्कि, यह एक समूह है, जिसमें कुछ ही लोग शामिल हैं। इस समूह के लोग संसार के विभिन्न देशों और संसार की विभिन्न राष्ट्रीयताओं से आते हैं। इतना अधिक कार्य करने का उद्देश्य इस समूह के लोगों को प्राप्त करना है, उस गवाही को प्राप्त करना है जो इस समूह के लोग उसके लिए देते हैं, और उस महिमा को प्राप्त करना है जो वह लोगों के इस समूह से हासिल कर सकता है। वह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करता, जिसका कोई महत्व नहीं होता, और न ही वह ऐसा कोई कार्य करता है, जिसका कोई मूल्य नहीं है। यह कहा जा सकता है कि

इतना अधिक कार्य करने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य उन सभी लोगों को पूर्ण बनाना है, जिन्हें वह पूर्ण बनाना चाहता है। इससे बाहर जो उसके पास खाली समय है, उसमें वह उन लोगों को बाहर निकाल देगा, जो दुष्ट हैं। यह जान लो कि वह यह महान कार्य उन लोगों के कारण नहीं करता, जो दुष्ट हैं; इसके विपरीत, वह अपना सब-कुछ छोटी-सी संख्या वाले उन लोगों के कारण देता है, जिन्हें उसके द्वारा पूर्ण बनाया जाना है। जो कार्य वह करता है, जो वचन वह बोलता है, जो रहस्य वह प्रकट करता है, और उसका न्याय और उसकी ताड़ना सब-कुछ उस छोटी-सी संख्या वाले लोगों के लिए ही है। वह उन लोगों के कारण देह नहीं बना, जो दुष्ट हैं, और उनके लिए तो बिलकुल भी नहीं, जो उसके भीतर अत्यधिक क्रोध भड़काते हैं। वह उन लोगों के कारण सत्य बोलता और प्रवेश की बात करता है, जिन्हें पूर्ण किया जाना है; वह उनके कारण ही देह बना, और उनके कारण ही वह अपनी प्रतिज्ञाएँ और आशीष उड़ेलता है। मानवता में सत्य, प्रवेश और जीवन, जिनकी वह बात करता है, उन लोगों के लिए कार्यान्वित नहीं किए जाते, जो दुष्ट हैं। वह उन लोगों से बात करने से बचना चाहता है, जो दुष्ट हैं, और उन लोगों पर समस्त सत्य उड़ेल देना चाहता है, जिन्हें पूर्ण बनाया जाना है। फिर भी उसके कार्य के लिए फिलहाल यह आवश्यक है कि दुष्टों को भी उसकी कुछ मूल्यवान चीज़ों का आनंद उठाने दिया जाए। जो लोग सत्य का क्रियान्वन नहीं करते, जो परमेश्वर को संतुष्ट नहीं करते, और जो उसके कार्य में बाधा डालते हैं, वे सभी दुष्ट हैं। उन्हें पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, और परमेश्वर उनसे घृणा करता है और उन्हें अस्वीकार करता है। इसके विपरीत, जो लोग जो सत्य का अभ्यास करते हैं और परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हैं और जो परमेश्वर के कार्य के लिए अपना सर्वस्व खपा देते हैं, वे वो लोग हैं, जिन्हें परमेश्वर द्वारा पूर्ण किया जाना है। परमेश्वर जिन लोगों को पूर्ण करने की इच्छा रखता है, वे कोई और नहीं बल्कि इस समूह के लोग ही हैं, और जो कार्य परमेश्वर करता है, वह इन्हीं लोगों के लिए है। जिस सत्य की वह बात करता है, वह उन लोगों की ओर ही निर्देशित किया जाता है, जो उसे अभ्यास में लाने की इच्छा रखते हैं। वह उन लोगों से बात नहीं करता, जो सत्य को अभ्यास में नहीं लाते। अंतर्दृष्टि की जिस वृद्धि और विवेक के जिस विकास की वह बात करता है, वे उन लोगों की ओर लक्ष्यित हैं, जो सत्य को क्रियान्वित कर सकते हैं। जब वह उन लोगों की बात करता है, जिन्हें पूर्ण किया जाना है, तब वह इन्हीं लोगों की बात कर रहा होता है। पवित्र आत्मा का कार्य उन लोगों की ओर निर्देशित होता है, जो सत्य का अभ्यास करने के इच्छुक हैं। बुद्धि और मानवता रखने जैसी बातें उन लोगों की ओर निर्देशित होती हैं, जो सत्य को अभ्यास में लाने के इच्छुक होते हैं। जो लोग सत्य को

क्रियान्वित नहीं करते, वे सत्य के अनेक वचन सुन सकते हैं, परंतु चूँकि वे प्रकृति से बहुत दुष्ट हैं, और सत्य में रुचि नहीं रखते, इसलिए वे केवल सिद्धांत, शब्द और खोखली परिकल्पनाएँ ही समझते हैं, जिनका जीवन में उनके प्रवेश के लिए ज़रा-सा भी महत्व नहीं है। उनमें से कोई भी परमेश्वर के प्रति निष्ठावान नहीं है; वे सभी वे लोग हैं, जो परमेश्वर को देखते तो हैं, किंतु उसे प्राप्त नहीं कर सकते; वे सभी परमेश्वर द्वारा दंडित किए जाते हैं।

पवित्र आत्मा के पास प्रत्येक व्यक्ति में चलने के लिए एक मार्ग है, और वह प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण होने का अवसर प्रदान करता है। तुम्हारी नकारात्मकता के माध्यम से तुम्हें तुम्हारी भ्रष्टता ज्ञात करवाई जाती है, और फिर नकारात्मकता को फेंककर तुम्हें अभ्यास करने का मार्ग मिल जाएगा; इन्हीं सब तरीकों से तुम पूर्ण किए जाते हो। इसके अतिरिक्त, निरंतर मार्गदर्शन और अपने भीतर कुछ सकारात्मक चीज़ों की रोशनी के द्वारा तुम अपना कार्य अग्रसक्रियता से पूरा करोगे, तुम्हारी अंतर्दृष्टि विकसित होगी और तुम विवेक प्राप्त करोगे। जब तुम्हारी स्थितियाँ अच्छी होती हैं, तुम परमेश्वर के वचन पढ़ने के विशेष रूप से इच्छुक होते हो, और परमेश्वर से प्रार्थना करने के भी विशेष रूप से इच्छुक होते हो, और जो उपदेश तुम सुनते हो, उसे अपनी अवस्था के साथ जोड़ सकते हो। ऐसे समय परमेश्वर तुम्हें भीतर से प्रबुद्ध और रोशन करता है, और तुम्हें सकारात्मक पहलू वाली कुछ चीज़ों का एहसास कराता है। इसी तरह से तुम सकारात्मक पहलू में पूर्ण किए जाते हो। नकारात्मक स्थितियों में तुम दुर्बल और निष्क्रिय होते हो; तुम्हें महसूस होता है कि तुम्हारे दिल में परमेश्वर नहीं है, फिर भी परमेश्वर तुम्हें रोशन करता है और अभ्यास करने के लिए मार्ग खोजने में तुम्हारी सहायता करता है। इससे बाहर आना नकारात्मक पहलू में पूर्णता प्राप्त करना है। परमेश्वर मनुष्य को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं में पूर्ण बना सकता है। यह इस पर निर्भर करता है कि तुम अनुभव करने में सक्षम हो या नहीं, और तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के लिए कोशिश करते हो या नहीं। यदि तुम सचमुच परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के लिए कोशिश करते हो, तो नकारात्मक पहलू तुम्हारी हानि नहीं कर सकता, बल्कि तुम्हारे लिए अधिक वास्तविक चीज़ें ला सकता है, और तुम्हें यह जानने में और अधिक सक्षम सकता है कि तुम्हारे भीतर क्या कमी है, अपनी वास्तविक स्थिति को समझने में अधिक सक्षम बना सकता है, और यह देखने में भी कि मनुष्य के पास कुछ नहीं है, और मनुष्य कुछ नहीं है; यदि तुम परीक्षण अनुभव नहीं करते, तो तुम नहीं जानते, और तुम हमेशा यह महसूस करोगे कि तुम दूसरों से ऊपर हो और प्रत्येक व्यक्ति से बेहतर हो। इस सबके द्वारा

तुम देखोगे कि जो कुछ पहले आया था, वह सब परमेश्वर द्वारा किया गया था और सुरक्षित रखा गया था। परीक्षणों में प्रवेश तुम्हें प्रेम या विश्वास से रहित बना देता है, तुममें प्रार्थना की कमी होती है और तुम भजन गाने में असमर्थ होते हो और इसे जाने बिना ही तुम इसके मध्य स्वयं को जान लेते हो। परमेश्वर के पास मनुष्य को पूर्ण बनाने के अनेक साधन हैं। मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव से निपटने के लिए वह समस्त प्रकार के परिवेशों का उपयोग करता है, और मनुष्य को अनावृत करने के लिए विभिन्न चीजों का प्रयोग करता है; एक ओर वह मनुष्य के साथ निपटता है, दूसरी ओर मनुष्य को अनावृत करता है, और तीसरी ओर वह मनुष्य को उजागर करता है, उसके हृदय की गहराइयों में स्थित "रहस्यों" को खोदकर और उजागर करते हुए, और मनुष्य की अनेक अवस्थाएँ प्रकट करके वह उसे उसकी प्रकृति दिखाता है। परमेश्वर मनुष्य को अनेक विधियों से पूर्ण बनाता है—प्रकाशन द्वारा, मनुष्य के साथ व्यवहार करके, मनुष्य के शुद्धिकरण द्वारा, और ताड़ना द्वारा—जिससे मनुष्य जान सके कि परमेश्वर व्यावहारिक है।

तुम लोग अभी किस चीज़ के लिए प्रयास कर रहे हो? परमेश्वर द्वारा पूर्ण किया जाना, परमेश्वर को जानना, परमेश्वर को प्राप्त करना—या शायद तुम स्वयं को नब्बे के दशक के पतरस की तरह पेश आना चाहते हो, या अय्यूब से भी अधिक विश्वास रखना चाहते हो, या शायद तुम परमेश्वर द्वारा धार्मिक कहलाए जाने और परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष आने की कोशिश कर रहे हो, या पृथ्वी पर परमेश्वर को अभिव्यक्त करने योग्य बनने या परमेश्वर के लिए सशक्त और ज़बरदस्त गवाही देने में सक्षम होने की कोशिश कर रहे हो। तुम लोग जिस भी बात के लिए प्रयास क्यों न करो, कुल मिलाकर, तुम्हारा प्रयास परमेश्वर द्वारा बचाए जाने के लिए ही है। भले ही तुम धार्मिक बनने की कोशिश करते हो, यदि तुम पतरस का तरीका अपनाने या अय्यूब का-सा विश्वास रखने की कोशिश करते हो, या परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने की कोशिश करते हो, यह सब वह कार्य है जो परमेश्वर मनुष्य पर करता है। दूसरे शब्दों में, चाहे जिसके लिए भी तुम कोशिश करो, वह सब परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के लिए है, परमेश्वर के वचन को अनुभव करने के लिए है, परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट करने के लिए है; तुम चाहे जिस चीज़ के लिए भी कोशिश करो, वह सब परमेश्वर की मनोरमता की खोज करने के लिए है, अपने विद्रोही स्वभाव को उतार फेंकने, अपने भीतर एक सामान्य स्थिति प्राप्त करने, पूर्ण रूप से परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हो सकने, एक सही व्यक्ति बनने और अपने हर कार्य में सही प्रेरणा रखने के उद्देश्य के साथ वास्तविक अनुभव में अभ्यास का पथ खोजने के लिए है। तुम्हारे द्वारा इन सब चीज़ों को अनुभव करने का कारण परमेश्वर को

जानना और जीवन के विकास को प्राप्त करना है। यद्यपि जो तुम अनुभव करते हो, वह परमेश्वर का वचन और वास्तविक घटनाएँ, और साथ ही लोग, मामले और आसपास की वस्तुएँ हैं, लेकिन अंतत: तुम परमेश्वर को जानने और परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के योग्य हो जाते हो। धार्मिक व्यक्ति के मार्ग पर चलने या परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाने की कोशिश करना : ये दौड़ने के मार्ग हैं, जबकि परमेश्वर को जानना और परमेश्वर द्वारा पूर्ण किया जाना मंज़िल है। चाहे अभी तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने की कोशिश करो या परमेश्वर के लिए गवाही देने की, यह सब अंतत: परमेश्वर को जानने के लिए है; यह इसलिए है कि जो कार्य वह तुम्हारे भीतर करता है, वह व्यर्थ न जाए, जिससे अंतत: तुम परमेश्वर की वास्तविकता, उसकी महानता, और इससे भी अधिक, परमेश्वर की विनम्रता और प्रच्छन्नता जान जाओ, और उस कार्य को जान जाओ, जिसे वह तुम्हारे भीतर बड़ी मात्रा में करता है। परमेश्वर ने स्वयं को इस स्तर तक विनम्र किया है कि वह अपना कार्य इन अशुद्ध और भ्रष्ट लोगों में करता है, और लोगों के इस समूह को पूर्ण बनाता है। परमेश्वर न केवल लोगों के बीच जीने और खाने-पीने, लोगों की चरवाही करने, और लोग जो चाहते हैं, उन्हें वह प्रदान करने के लिए देह में आया है, बल्कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह उद्धार और विजय का अपना प्रबल कार्य इन असहनीय रूप से भ्रष्ट लोगों पर करता है। वह इन सबसे अधिक भ्रष्ट लोगों को बचाने के लिए बड़े लाल अजगर के केंद्र में आया, जिससे सभी लोग परिवर्तित हो सकें और नए बनाए जा सकें। वह अत्यधिक कष्ट, जो परमेश्वर सहन करता है, मात्र वह कष्ट नहीं है जो देहधारी परमेश्वर सहन करता है, अपितु सबसे बढ़कर वह परम निरादर है, जो परमेश्वर का आत्मा सहन करता है—वह स्वयं को इतना अधिक विनम्र बनाता है और इतना अधिक छिपाए रखता है कि वह एक साधारण व्यक्ति बन जाता है। परमेश्वर ने इसलिए देहधारण किया और देह का रूप लिया, ताकि लोग देखें कि उसका जीवन एक सामान्य मानव का जीवन है, और उसकी आवश्यकताएँ एक सामान्य मानव की आवश्यकताएँ हैं। यह इस बात को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि परमेश्वर ने स्वयं को बेहद विनम्र बनाया है। परमेश्वर का आत्मा देह में साकार होता है। उसका आत्मा बहुत उच्च और महान है, फिर भी वह अपने आत्मा का कार्य करने के लिए एक सामान्य मानव, एक तुच्छ मनुष्य का रूप ले लेता है। तुम लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता, अंतर्दृष्टि, समझ, मानवता और जीवन दर्शाते हैं कि तुम सब वास्तव में परमेश्वर के इस प्रकार के कार्य को स्वीकार करने के अयोग्य हो। तुम लोग वास्तव में इस योग्य नहीं हो कि परमेश्वर तुम्हारे लिए यह कष्ट सहन करे। परमेश्वर अत्यधिक महान है। वह इतना

सर्वोच्च है और लोग इतने निम्न हैं, फिर भी वह उन पर कार्य करता है। उसने लोगों का भरण-पोषण करने, उनसे बात करने के लिए न केवल देहधारण किया, अपितु वह उनके साथ रहता भी है। परमेश्वर इतना विनम्र, इतना प्यारा है। यदि परमेश्वर के प्रेम का उल्लेख किए जाते ही, उसके अनुग्रह का उल्लेख किए जाते ही तुम उसकी अत्यधिक प्रशंसा करते हुए आँसू बहाने लगते हो, यदि तुम इस स्थिति तक पहुँच जाते हो, तो तुम्हें परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान है।

आजकल लोगों की कोशिशों में एक भटकाव है; वे मात्र परमेश्वर से प्रेम करने और परमेश्वर को संतुष्ट करने की कोशिश करते हैं, परंतु उन्हें परमेश्वर का कोई ज्ञान नहीं है, और उन्होंने अपने भीतर पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी की उपेक्षा कर दी है। उनके पास परमेश्वर के सच्चे ज्ञान की नींव नहीं है। इस तरह से वे, जैसे-जैसे उनका अनुभव बढ़ता है, अपना उत्साह खोते जाते हैं। वे सभी लोग, जो परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान पाना चाहते हैं, भले ही वे अतीत में अच्छी स्थितियों में न रहे हों, और उनका झुकाव नकारात्मकता और दुर्बलता की ओर रहा करता हो, और वे प्रायः आँसू बहाते हों, हतोत्साहित और हताश हो जाते हों—अब वे जैसे-जैसे अधिक अनुभव प्राप्त करते हैं, उनकी स्थितियाँ सुधरती जाती हैं। निपटे जाने और टूट जाने के अनुभव के बाद, और शुद्धिकरण और परीक्षण के एक दौर से गुज़रने के बाद उन्होंने बहुत अधिक उन्नति की है। उनकी नकारात्मक स्थितियाँ कम हो गई हैं, और उनके जीवन-स्वभाव में कुछ परिवर्तन हुआ है। जैसे-जैसे वे अधिक परीक्षणों से गुज़रते हैं, उनका हृदय परमेश्वर से प्रेम करने लगता है। परमेश्वर द्वारा लोगों को पूर्ण किए जाने का एक नियम है, जो यह है कि वह तुम्हारी आत्मा को मुक्ति पाने और तुम्हें इस योग्य बनाने में मदद करते हुए, कि तुम उसे प्रेम करने में अधिक सक्षम हो सको, तुम्हारे किसी वांछनीय भाग का प्रयोग करके तुम्हें प्रबुद्ध करता है, जिससे तुम्हारे पास अभ्यास करने के लिए एक मार्ग हो और तुम समस्त नकारात्मक अवस्थाओं से खुद को अलग कर सको। इस तरह से तुम शैतान के भ्रष्ट स्वभाव को उतार फेंकने में सक्षम हो जाते हो। तुम सरल और उदार हो, और स्वयं को जानने और सत्य का अभ्यास करने के इच्छुक हो। परमेश्वर निश्चित रूप से तुम्हें आशीष देगा, अतः जब तुम दुर्बल और नकारात्मक होते हो, तो वह तुम्हें दोगुना प्रबुद्ध करता है, स्वयं को और अधिक जानने में तुम्हारी सहायता करता है, स्वयं के लिए पश्चात्ताप करने के और अधिक इच्छुक होने और उन चीज़ों का अभ्यास करने के योग्य बनाता है, जिनका तुम्हें अभ्यास करना चाहिए। केवल इसी तरह से तुम्हारा हृदय शांत और सहज हो सकता है। जो व्यक्ति साधारणतः परमेश्वर को जानने पर ध्यान देता है, स्वयं को जानने पर ध्यान देता है,

अपने अभ्यास पर ध्यान देता है, वह निरंतर परमेश्वर का कार्य, और साथ ही परमेश्वर का मार्गदर्शन और प्रबुद्धता प्राप्त करने के भी योग्य होगा। एक नकारात्मक अवस्था में होने पर भी ऐसा व्यक्ति चीज़ों को उलट देने में सक्षम हो जाता है, चाहे वह ऐसा अंत:करण की कार्रवाई के कारण करे या परमेश्वर के वचन से प्राप्त प्रबुद्धता के कारण। व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन हमेशा तभी प्राप्त होता है, जब वह अपनी वास्तविक अवस्था और परमेश्वर के स्वभाव और कार्य को जानता है। जो व्यक्ति स्वयं को जानने और खोलने का इच्छुक होता है, वही सत्य का निर्वाह करने में सक्षम होगा। इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होता है, और जो व्यक्ति परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होता है, उसमें परमेश्वर के बारे में समझ होती है, भले ही वह समझ गहरी हो या उथली, अल्प हो या प्रचुर। यह परमेश्वर की धार्मिकता है, और इसे ही लोग प्राप्त करते हैं; यह उनका अपना लाभ है। जिस व्यक्ति के पास परमेश्वर का ज्ञान है, वह ऐसा व्यक्ति है जिसके पास एक आधार है, जिसके पास दर्शन है। इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर के देह के बारे में निश्चित होता है, और परमेश्वर के वचन और उसके कार्य के बारे में भी निश्चित होता है। परमेश्वर चाहे कैसे भी कार्य करे या बोले, या अन्य लोग कैसे भी बाधा उत्पन्न करें, वह अपनी बात पर अडिग रह सकता है, और परमेश्वर के लिए गवाह बन सकता है। व्यक्ति जितना अधिक इस प्रकार का होता है, वह उस सत्य का उतना ही अधिक निर्वाह कर सकता है, जिसे वह समझता है। चूँकि वह हमेशा परमेश्वर के वचन का अभ्यास करता है, इसलिए वह परमेश्वर के बारे में और अधिक समझ प्राप्त कर लेता है और परमेश्वर के लिए हमेशा गवाह बने रहने का दृढ़ निश्चय रखता है।

विवेक होने, समर्पण होने और आत्मा में प्रखर होने के लिए चीज़ों को समझने की योग्यता रखने का अर्थ है कि जैसे ही तुम्हारा सामना किसी चीज़ से होता है, तुम्हारे पास परमेश्वर के वचन होते हैं जो तुम्हें भीतर से रोशन और प्रबुद्ध करते हैं। यही आत्मा में प्रखर होना है। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, वह लोगों की आत्मा को पुनर्जीवित करने में उनकी सहायता करने के लिए होता है। परमेश्वर हमेशा क्यों कहता रहता है कि लोग सुन्न और मंदबुद्धि हैं? ऐसा इसलिए है, क्योंकि लोगों की आत्मा मर चुकी है, और वे इतने सुन्न हो चुके हैं कि वे आत्मा की चीज़ों के संबंध में पूर्णत: अचेत हो गए हैं। परमेश्वर का कार्य लोगों के जीवन को उन्नत करना और लोगों की आत्मा को जीवित करने में सहायता करना है, जिससे वे आत्मा की चीज़ों को समझ सकें और हमेशा अपने हृदय में परमेश्वर से प्रेम करने और उसे संतुष्ट करने में सक्षम हों। इस चरण पर पहुँचना यह दर्शाता है कि उस व्यक्ति की आत्मा पुनर्जीवित कर दी गई है, और अगली बार

जब वह किसी चीज़ का सामना करता है, तो वह तुरंत प्रतिक्रिया कर सकता है। वह उपदेशों के प्रति प्रतिक्रियाशील होता है और परिस्थितियों के प्रति तेजी से प्रतिक्रिया करता है। यही आत्मा की प्रखरता हासिल करना है। ऐसे अनेक लोग हैं, जो किसी बाहरी घटना के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया देते हैं, परंतु जैसे ही वास्तविकता में प्रवेश या आत्मा की विस्तृत चीज़ों का उल्लेख किया जाता है, वे सुन्न और मंदबुद्धि बन जाते हैं। वे तभी कुछ समझते हैं, जब वह उनके बिलकुल सामने हो। ये सभी आत्मिक रूप से सुन्न और मंदबुद्धि होने, आत्मा की चीज़ों का कम अनुभव रखने के चिह्न हैं। कुछ लोग आत्मा में प्रखर होते हैं और विवेक रखते हैं। जैसे ही वे ऐसे वचन सुनते हैं जो उनकी अवस्थाओं की ओर इंगित करते हैं, वे उन्हें लिखने में कोई समय नहीं गँवाते। जब वे अभ्यास के सिद्धांतों के बारे में सुन लेते हैं, तो वे उन्हें स्वीकार करने और अपने अनुवर्ती अनुभव में लागू करने में सक्षम होते हैं और उसके द्वारा स्वयं को परिवर्तित करते हैं। यह एक ऐसा व्यक्ति है, जो आत्मा में प्रखर है। ऐसे लोग इतनी तेजी से प्रतिक्रिया करने में सक्षम क्यों होते हैं? क्योंकि वे दैनिक जीवन में इन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जब वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, तो वे उनकी तुलना में अपनी अवस्थाओं की जाँच करने में और आत्ममंथन करने में सक्षम होते हैं। जब वे संगति, उपदेश और ऐसे वचन सुनते हैं, जो उन्हें प्रबुद्ध और रोशन करते हैं, वे उन्हें तुरंत ग्रहण करने में सक्षम होते हैं। यह किसी भूखे व्यक्ति को भोजन प्रदान करने के समान है, जो उसे तुरंत खाने में सक्षम होता है। यदि तुम किसी ऐसे व्यक्ति को भोजन दो, जो भूखा नहीं है, तो वह इतनी तेजी से प्रतिक्रिया नहीं करेगा। तुम प्रायः परमेश्वर से प्रार्थना करते हो, और फिर जब तुम्हारा सामना किसी चीज़ से होता है, तब तुम तुरंत प्रतिक्रिया करने में सक्षम होते हो : परमेश्वर इस मामले में क्या चाहता है, और तुम्हें कैसे कार्य करना चाहिए। परमेश्वर ने पिछली बार इस मामले में तुम्हारा मार्गदर्शन किया था; जब आज तुम उसी तरह की चीज़ का सामना करते हो, तो स्वाभाविक रूप से तुम जान जाओगे कि परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट करने के लिए तुम्हें किस तरह से अभ्यास करना है। यदि तुम हमेशा इसी तरह से अभ्यास करते हो और इसी तरह से अनुभव करते हो, तो किसी बिंदु पर यह तुम्हारे लिए आसान हो जाएगा। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हुए तुम जानते हो परमेश्वर किस प्रकार के व्यक्ति को संदर्भित कर रहा है, तुम जानते हो कि वह आत्मा की किस प्रकार की परिस्थितियों की बात कर रहा है, और तुम मुख्य बात समझ लेने और उसे अभ्यास में लाने में सक्षम होते हो; तो यह दिखाता है कि तुम अनुभव करने में सक्षम हो। कुछ लोगों में इस संबंध में कमी क्यों होती है? ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे अभ्यास करने के पहलू पर अधिक श्रम नहीं

करते। यद्यपि वे सत्य का अभ्यास करने के इच्छुक होते हैं, किंतु उनमें सेवा के विवरण की, अपने जीवन में सत्य के विवरण की सच्ची अंतर्दृष्टि नहीं होती। जब कुछ घटित हो जाता है, तो वे भ्रमित हो जाते हैं। इस तरह, जब कोई झूठा नबी या कोई झूठा प्रेरित सामने आता है, तो तुम्हें भटकाया जा सकता है। तुम्हें परमेश्वर के वचनों और कार्य पर अकसर संगति करनी चाहिए—केवल इसी तरह से तुम सत्य को समझने और विवेक विकसित करने में सक्षम होगे। यदि तुम सत्य को नहीं समझते, तो तुममें कोई विवेक नहीं होगा। उदाहरण के लिए, परमेश्वर क्या बोलता है, परमेश्वर कैसे कार्य करता है, लोगों से उसकी क्या अपेक्षाएँ हैं, तुम्हें किस प्रकार के लोगों के संपर्क में आना चाहिए और किस प्रकार के लोगों को अस्वीकार करना चाहिए—तुम्हें अकसर इन चीज़ों पर संगति करनी चाहिए। यदि तुम हमेशा परमेश्वर के वचनों का इसी तरह अनुभव करो, तो तुम सत्य को समझोगे और अनेक चीज़ों को पूरी तरह से समझ जाओगे, और तुममें विवेक भी आ जाएगा। पवित्र आत्मा का अनुशासन क्या है, मनुष्य की इच्छा से जन्मा दोष क्या है, पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन क्या है, किसी परिवेश की व्यवस्था क्या है, परमेश्वर के वचनों का भीतर से प्रबुद्ध करना क्या है? यदि तुम इन चीज़ों के बारे में स्पष्ट नहीं हो, तो तुम्हारे पास कोई विवेक नहीं होगा। तुम्हें जानना चाहिए कि पवित्र आत्मा से क्या आता है, विद्रोही स्वभाव क्या है, परमेश्वर के वचन का पालन कैसे करें, और अपनी विद्रोहशीलता को कैसे उतार फेंकें; यदि तुम्हारे पास इन चीज़ों की अनुभवजन्य समझ होगी, तो तुम्हारे पास एक नींव होगी; जब कुछ घटित होगा, तो तुम्हारे पास एक उपयुक्त सत्य होगा जिससे तुलना कर तुम उसे माप सकते हो, और नींव के रूप में तुम्हारे पास उपयुक्त दर्शन होंगे। तुम्हारे हर कार्य में सिद्धांत होंगे और तुम सत्य के अनुसार कार्य करने में सक्षम होगे। तब तुम्हारा जीवन परमेश्वर की प्रबुद्धता से परिपूर्ण होगा, परमेश्वर के आशीषों से परिपूर्ण होगा। परमेश्वर ऐसे किसी भी व्यक्ति से अनुचित व्यवहार नहीं करेगा, जो निष्ठा से उसे खोजता है, या जो उसे जीता और उसकी गवाही देता है, और वह ऐसे किसी भी व्यक्ति को शाप नहीं देगा जो ईमानदारी से सत्य का प्यासा होने में सक्षम है। यदि परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते समय तुम अपनी वास्तविक स्थिति जानने पर ध्यान दे सकते हो, अपने अभ्यास पर ध्यान दे सकते हो, और अपनी समझ पर ध्यान दे सकते हो, तब किसी समस्या से सामना होने पर तुम्हें प्रबुद्धता और व्यावहारिक समझ प्राप्त होगी। तब सभी चीज़ों में तुम्हारे पास अभ्यास और विवेक का मार्ग होगा। जिस व्यक्ति के पास सत्य है, उसे धोखा दिए जाने की संभावना नहीं है, उसके द्वारा अशांतिमूलक व्यवहार किए जाने या अतिवादी तरीके से कार्य किए जाने की संभावना नहीं है। सत्य के

कारण वह सुरक्षित है, और साथ ही, सत्य के कारण वह अधिक समझ प्राप्त करता है। सत्य के कारण उसके पास अभ्यास के लिए अधिक मार्ग होते हैं, उसे पवित्र आत्मा द्वारा अपने भीतर कार्य करने के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, और पूर्ण किए जाने के भी अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।

पवित्र आत्मा का कार्य और शैतान का कार्य

आत्मा के विवरण को कैसे समझा जा सकता है? पवित्र आत्मा मनुष्य में कैसे कार्य करता है? शैतान मनुष्य में कैसे कार्य करता है? दुष्ट आत्माएं मनुष्य में कैसे कार्य करती हैं? इसके प्रकटीकरण क्या हैं? जब तुम्हारे साथ कुछ घटित होता है, क्या यह पवित्र आत्मा की ओर से आता है और तुम्हें उसे मानना चाहिए या ठुकरा देना चाहिए? लोगों के वास्तविक अभ्यास में मनुष्य की इच्छा से बहुत कुछ उत्पन्न होता है फिर भी लोगों को हमेशा लगता है कि यह आत्मा की ओर से आता है। कुछ चीज़ें दुष्ट आत्माओं की ओर से आती हैं, परंतु फिर भी लोग सोचते हैं कि यह पवित्र आत्मा से आई हैं और कभी-कभी पवित्र आत्मा भीतर से लोगों का मार्गदर्शन करता है, फिर भी लोग डर जाते हैं कि ऐसा मार्गदर्शन शैतान की ओर से आता है और इसलिए आज्ञा मानने का साहस नहीं करते, जबकि वास्तविकता में वह मार्गदर्शन पवित्र आत्मा का प्रबोधन होता है। इस प्रकार, इनमें भेद किये बिना, व्यावहारिक अनुभव में इसका अनुभव करने का कोई तरीक़ा नहीं है; भेद किए बिना जीवन प्राप्त करने का कोई तरीक़ा नहीं है। पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है? दुष्ट आत्माएं कैसे कार्य करती हैं? मनुष्य की इच्छा से क्या आता है? और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और उसके प्रबोधन से क्या पैदा होता है? यदि तुम मनुष्य के भीतर पवित्र आत्मा के कार्य के स्वरूपों को समझ लेते हो, तब तुम अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन और अपने व्यावहारिक अनुभवों में अपना ज्ञान बढ़ा पाओगे और अंतर कर पाओगे; तुम परमेश्वर को जान पाओगे, तुम शैतान को समझ और पहचान पाने में समर्थ होगे; तुम अपनी आज्ञाकारिता या अनुसरण को लेकर उलझन में नहीं रहोगे, और तुम ऐसे व्यक्ति बनोगे जिसके विचार स्पष्ट हैं और जो पवित्र आत्मा के कार्य का पालन करता है।

पवित्र आत्मा का कार्य सक्रिय मार्गदर्शन और सकारात्मक प्रबोधन है। यह लोगों को निष्क्रिय नहीं बनने देता। यह उनको सांत्वना देता है, उन्हें विश्वास और संकल्प देता है और परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने का अनुसरण करने योग्य बनाता है। जब पवित्र आत्मा कार्य करता है, तो लोग सक्रिय रूप से प्रवेश कर पाते हैं; वो निष्क्रिय या बाध्य नहीं होते, बल्कि अपनी पहल पर काम करते हैं। जब पवित्र आत्मा कार्य

करता है, तो लोग प्रसन्न और सहर्ष प्रस्तुत होते हैं, आज्ञा मानने को तैयार होते हैं और स्वयं को विनम्र रखने में प्रसन्न होते हैं। यद्यपि वे भीतर से दुखी और दुर्बल होते हैं, उनमें सहयोग करने का संकल्प होता है; वे ख़ुशी-ख़ुशी दुःख सह लेते हैं, वे आज्ञा मानने में सक्षम होते हैं और मानवीय इच्छा से कलंकित नहीं होते हैं, मनुष्य की सोच से कलंकित नहीं होते हैं और निश्चित रूप से वे मनुष्य की आकांक्षाओं और प्रेरणाओं से कलंकित नहीं होते हैं। जब लोग पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव करते हैं, तो भीतर से वे विशेष रूप से पवित्र हो जाते हैं। जो पवित्र आत्मा के कार्य के अधीन हैं, वे परमेश्वर के प्रेम और अपने भाइयों और बहनों के प्रेम को जीते हैं; वे ऐसी चीज़ों से आनंदित होते हैं, जो परमेश्वर को आनंदित करती हैं और उन चीज़ों से घृणा करते हैं, जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। ऐसे लोग जो पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा स्पर्श किए जाते हैं, उनमें सामान्य मानवता होती है और वे निरंतर सत्य का अनुसरण करते हैं और मानवता के अधीन होते हैं। जब पवित्र आत्मा लोगों के भीतर कार्य करता है, उनकी स्थिति और भी बेहतर हो जाती है और उनकी मानवता और अधिक सामान्य हो जाती है और यद्यपि उनका कुछ सहयोग मूर्खतापूर्ण हो सकता है, परंतु फिर भी उनकी प्रेरणाएं सही होती हैं, उनका प्रवेश सकारात्मक होता है, वे रुकावट बनने का प्रयास नहीं करते और उनमें दुर्भाव नहीं होता। पवित्र आत्मा का कार्य सामान्य और वास्तविक होता है, पवित्र आत्मा मनुष्य के भीतर मनुष्य के सामान्य जीवन के नियमों के अनुसार कार्य करता है और वह सामान्य लोगों के वास्तविक अनुसरण के अनुसार लोगों में प्रबोधन और मार्गदर्शन को कार्यान्वित करता है। जब पवित्र आत्मा लोगों में कार्य करता है, तो वह सामान्य लोगों की आवश्यकता के अनुसार उनका मार्गदर्शन करता और उन्हें प्रबुद्ध करता है। वह उनकी आवश्यकताओं के अनुसार उनकी ज़रूरतें पूरी करता है और वह सकारात्मक रूप से उनकी कमियों और अभावों के आधार पर उनका मार्गदर्शन करता है और उन्हें प्रबुद्ध करता है। पवित्र आत्मा का कार्य वास्तविक जीवन में लोगों को प्रबुद्ध करने और उनका मार्गदर्शन करने का है; अगर वे अपने वास्तविक जीवन में परमेश्वर के वचनों का अनुभव करते हैं, तभी वे पवित्र आत्मा का कार्य देख सकते हैं। यदि अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में लोग सकारात्मक अवस्था में हों और उनका जीवन सामान्य आध्यात्मिक हो, तो वे पवित्र आत्मा के कार्य के अधीन होते हैं। ऐसी स्थिति में, जब वे परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हैं, तो उनमें विश्वास आता है; जब वे प्रार्थना करते हैं, तो वे प्रेरित होते हैं, जब उनके साथ कुछ घटितहोता है, तो वे निष्क्रिय नहीं होते; और घटित होती हुई चीज़ों से सबक़ लेने में समर्थ होते हैं, जो परमेश्वर चाहता है कि वो सीखें। वे निष्क्रिय या कमज़ोर नहीं होते और यद्यपि उनके

जीवन में वास्तविक कठिनाइयाँ होती हैं, वे परमेश्वर के सभी प्रबंधनों की आज्ञा मानने के लिए तैयार रहते हैं।

पवित्र आत्मा के कार्य से क्या प्रभाव प्राप्त होते हैं? तुम मूर्ख हो सकते हो और तुम विवेकहीन हो सकते हो, परंतु पवित्र आत्मा को बस तुम्हारे भीतर कार्य करना है और तुम्हारे भीतर विश्वास उत्पन्न हो जाएगा और तुम हमेशा महसूस करोगे कि तुम परमेश्वर से जितना भी प्रेम करो कम ही होगा। चाहे सामने कितनी ही मुश्किलें हों, तुम सहयोग के लिए तैयार होगे। तुम्हारे साथ घटनाएँ होंगी और यह स्पष्ट नहीं होगा कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या शैतान की ओर से, परंतु तुम प्रतीक्षा कर पाओगे और न तो निष्क्रिय होगे और न ही बेपरवाह। यह पवित्र आत्मा का सामान्य कार्य है। जब पवित्र आत्मा तुम्हारे अंदर कार्य करता है, तब भी तुम वास्तविक कठिनाइयों का सामना करते हो : कभी-कभी तुम्हारे आँसू निकल आएंगे और कभी-कभी ऐसी बातें होंगी, जिन पर तुम काबू नहीं पा सकते, परंतु यह सब पवित्र आत्मा के साधारण कार्य का एक चरण है। हालाँकि तुमने उन कठिनाइयों पर काबू नहीं पाया और उस समय तुम कमज़ोर थे और शिकायतों से भरे थे, फिर भी बाद में तुम पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर से प्रेम कर पाये। तुम्हारी निष्क्रियता तुम्हें सामान्य अनुभव प्राप्त करने से नहीं रोक सकती और इसकी परवाह किए बिना कि लोग क्या कहते हैं और कैसे हमला करते हैं, तुम परमेश्वर से प्रेम कर पाते हो। प्रार्थना के दौरान तुम हमेशा महसूस करते हो कि अतीत में तुम परमेश्वर के बहुत ऋणी थे और जब भी तुम इस तरह की चीज़ों का फिर सामना करते हो, तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने और देह-सुख का त्याग करने का संकल्प लेते हो। यह सामर्थ्य दिखाता है कि तुम्हारे भीतर पवित्र आत्मा का कार्य है। यह पवित्र आत्मा के कार्य की सामान्य अवस्था है।

शैतान की ओर से कौन-सा कार्य आता है? शैतान से आने वाले काम में, लोगों के भीतर के दृश्य अस्पष्ट होते हैं; लोगों में सामान्य मानवता नहीं होती है, उनके कार्यों के पीछे की प्रेरणाएं गलत होती हैं, और यद्यपि वे परमेश्वर से प्रेम करना चाहते हैं, फिर भी उनके भीतर सदैव आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते हैं और ये दोषारोपण और विचार उनमें निरंतर व्यवधान का कारण बनते हैं, उनके जीवन के विकास को सीमित कर देते हैं और सामान्य स्थिति में परमेश्वर के समक्ष आने से रोक देते हैं। कहने का अर्थ है कि जैसे ही लोगों में शैतान का कार्य आरंभ होता है, तो उनके हृदय परमेश्वर के समक्ष शांत नहीं रह सकते। ऐसे लोगों को पता नहीं होता कि वे स्वयं के साथ क्या करें—जब वे लोगों को इकट्ठा होते देखते हैं, वे भाग जाना

चाहते हैं और जब दूसरे प्रार्थना करते हैं तो वे अपनी आँखें बंद नहीं रख पाते। दुष्ट आत्माओं का कार्य मनुष्य और परमेश्वर के बीच का सामान्य संबंध बर्बाद कर देता है और लोगों के पिछले दर्शनों या उनके जीवन प्रवेश के पिछले मार्ग को उलट देता है; अपने हृदयों में वे कभी परमेश्वर के क़रीब नहीं आ सकते, ऐसी बातें हमेशा होती रहती हैं, जो उनमें बाधा पैदा करती हैं और उन्हें बंधन में बांध देती हैं। उनके हृदय शांति प्राप्त नहीं कर पाते और उनमें परमेश्वर से प्रेम करने की शक्ति नहीं बचती, और उनकी आत्माएं पतन की ओर जाने लगती हैं। शैतान के कार्य के प्रकटीकरण ऐसे हैं। शैतान के कार्य के प्रकटीकरण हैं : अपने स्थान पर डटे रह पाने और गवाही दे पाने में असमर्थ होना, यह तुम्हें ऐसा व्यक्ति बना देता है जो परमेश्वर के समक्ष दोषी है और जो परमेश्वर के प्रति निष्ठा नहीं रखता। जब शैतान हस्तक्षेप करता है, तुम अपने भीतर परमेश्वर के प्रति प्रेम और वफ़ादारी खो देते हो, तुम्हारा परमेश्वर के साथ सामान्य संबंध खत्म हो जाता है, तुम सत्य या स्वयं के सुधार का अनुसरण नहीं करते, तुम पीछे हटने लगते हो और निष्क्रिय बन जाते हो, तुम स्वयं को आसक्त कर लेते हो, तुम पाप के फैलाव को खुली छूट दे देते हो और पाप से घृणा नहीं करते; इससे बढ़कर, शैतान का हस्तक्षेप तुम्हें स्वच्छंद बना देता है, इसकी वजह से तुम्हारे भीतर से परमेश्वर का स्पर्श हट जाता है और तुम्हें परमेश्वर के बारे में शिकायत करने और उसका विरोध करने को प्रेरित करता है, जिससे तुम परमेश्वर पर सवाल उठाते हो; तुम्हारे द्वारा परमेश्वर को त्याग देने का खतरा भी होता है। यह सब शैतान की ओर से आता है।

जब तुम्हारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में तुम्हारे साथ कुछ घटित होता है, तुम यह फ़र्क कैसे कर पाते हो कि यह पवित्र आत्मा के कार्य से आता है या शैतान के कार्य से? जब लोगों की परिस्थितियां सामान्य होती हैं, तो उनके आध्यात्मिक जीवन और दैहिक जीवन भी सामान्य होते हैं, उनका विवेक सामान्य और व्यवस्थित होता है। जब वो इस दशा में होते हैं, जो वे अपने भीतर अनुभव करते या जान पाते हैं, उसके विषय में कहा जा सकता है कि वह पवित्र आत्मा के स्पर्श से आया है (जब वे परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हैं, तो अंतर्दृष्टि रखना या कुछ सरल ज्ञान रखना, या कुछ चीज़ों में विश्वासयोग्य बने रहना, या कुछ चीज़ों में परमेश्वर से प्रेम करने की सामर्थ्य रखना—यह सब पवित्र आत्मा से आता है)। मनुष्य में पवित्र आत्मा का कार्य विशेष रूप से सामान्य है; मनुष्य इसको महसूस करने के असमर्थ है और यह स्वयं मनुष्य द्वारा ही आता प्रतीत होता है—परंतु वास्तव में यह पवित्र आत्मा का कार्य होता है। दिन-प्रतिदिन के जीवन में पवित्र आत्मा प्रत्येक में बड़े और छोटे रूप में कार्य करता है और यह इस कार्य की सीमा है, जो बदलती

रहती है। कुछ लोगों की काबिलियत अच्छी होती है और वे बातों को जल्दी समझ लेते हैं और उनमें पवित्र आत्मा का प्रबोधन विशेष रूप से अधिक होता है। इस बीच, कुछ लोगों की काबिलियतकम होती है और उन्हें बातों को समझने में अधिक समय लगता है, परंतु पवित्र आत्मा उन्हें भीतर से स्पर्श करता है और वे भी परमेश्वर के प्रति निष्ठा को प्राप्त कर पाते हैं—पवित्र आत्मा उन सबमें कार्य करता है, जो परमेश्वर का अनुसरण करते हैं। जब दिन-प्रतिदिन के जीवन में लोग परमेश्वर का विरोध नहीं करते या परमेश्वर के ख़िलाफ़ विद्रोह नहीं करते, ऐसे कार्य नहीं करते, जो परमेश्वर के प्रबंधन में बाधा डालें और परमेश्वर के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते, तो उनमें से प्रत्येक में परमेश्वर का आत्मा अधिक या कम सीमा तक काम करता है; वह उन्हें स्पर्श करता है, प्रबुद्ध करता है, उन्हें विश्वास प्रदान करता है, सामर्थ्य देता है और सक्रिय रूप से प्रवेश करने के लिए बढ़ाता है, आलसी नहीं बनने देता या देह के आनंद लेने का लालच नहीं करने देता, सत्य के अभ्यास को तैयार करता है और परमेश्वर के वचनों की चाहत रखने वाला बनाता है। यह सब ऐसा कार्य है, जो पवित्र आत्मा की ओर से आता है।

जब लोगों की अवस्था सामान्य नहीं होती, तो वे पवित्र आत्मा द्वारा त्याग दिए जाते हैं, इसकी अधिक आशंका होती है कि वे अपने मन में शिकायत करें, उनकी प्रेरणाएं ग़लत होती हैं, वे आलसी होते हैं, वे देह में आसक्त रहते हैं और उनके हृदय सत्य के ख़िलाफ़ विद्रोह करते हैं। यह सब कुछ शैतान की ओर से आता है। जब लोगों की परिस्थितियां सामान्य नहीं होतीं, जब वे भीतर से अंधकारमय होते हैं और अपना सामान्य विवेक खो देते हैं, पवित्र आत्मा द्वारा त्याग दिए गए होते हैं और अपने भीतर परमेश्वर को महसूस करने के योग्य नहीं होते, यही वह समय होता है जब शैतान उनके भीतर कार्य करता है। यदि लोगों के भीतर सदैव सामर्थ्य रहे और सदैव परमेश्वर से प्रेम करें, तो सामान्यतः जब उनके साथ चीज़ें घटित होती हैं, तो वे चीज़ें पवित्र आत्मा की ओर से आती हैं और वे जिससे मिलते हैं, वह मुलाकात परमेश्वर के प्रबंधनों का नतीजा होता है। कहने का अर्थ है कि जब तुम्हारी परिस्थितियाँ सामान्य होती हैं, जब तुम पवित्र आत्मा के महान कार्य में होते हो, तो शैतान के लिए तुम्हें डगमगाना असंभव हो जाता है। इस बुनियाद पर यह कहा जा सकता है कि सब कुछ पवित्र आत्मा की ओर से आता है और यद्यपि तुम्हारे मन में ग़लत विचार हो सकते हैं, तुम उनको त्यागने में सक्षम होते हो और उनका अनुसरण नहीं करते। यह सब पवित्र आत्मा के कार्य से आता है। किन परिस्थितियों में शैतान हस्तक्षेप करता है? जब तुम्हारी परिस्थितियां सामान्य न हों, जब तुम्हें परमेश्वर का स्पर्श न मिला हो और तुम परमेश्वर के कार्य से रहित हो, जब तुम भीतर से सूखे और

बंजर हो, जब परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए तुम्हें कुछ समझ न आए और जब तुम परमेश्वर के वचनों को खाओ और पियो पर प्रबुद्ध या रौशन न हो तो ऐसे समय पर शैतान के लिए तुम्हारे भीतर कार्य करना आसान हो जाता है। दूसरे शब्दों में, जब तुम पवित्र आत्मा द्वारा त्याग दिए गए हो और तुम परमेश्वर को महसूस नहीं कर पाते, तो तुम्हारे साथ बहुत सी चीज़ें घटित होती हैं, जो शैतान के लालच से आती हैं। जब पवित्र आत्मा कार्य करता है, शैतान भी उसी दौरान कार्य कर रहा होता है। पवित्र आत्मा मनुष्य के अंतर्मन को स्पर्श करता है, जबकि उसी समय शैतान मनुष्य में हस्तक्षेप करता है। हालाँकि ऐसी स्थिति में पवित्र आत्मा का कार्य अग्रणी स्थान ले लेता है, और जिन लोगों की स्थितियां सामान्य होती हैं, वे विजय प्राप्त करते हैं; यह शैतान के कार्य के ऊपर पवित्र आत्मा के कार्य की विजय है। जबकि पवित्र आत्मा कार्य करता है, तब भी लोगों में एक भ्रष्ट स्वभाव मौजूद रहता है; हालाँकि पवित्र आत्मा के कार्य के दौरान, लोगों के लिए अपने विद्रोह, प्रेरणाओं और मिलावटों की खोज करना और पहचानना आसान हो जाता है। केवल तभी लोगों को पछतावा महसूस होता है और वे प्रायश्चित करने को तैयार होते हैं। इस तरह, उनके विद्रोही और भ्रष्ट स्वभाव धीरे-धीरे परमेश्वर के कार्य के भीतर त्याग दिए जाते हैं। पवित्र आत्मा का कार्य विशेष रूप से सामान्य होता है; जब वह लोगों में कार्य करता है, तब भी उन्हें कठिनाइयां होती हैं, वे तब भी रोते हैं, तब भी दुःख उठाते हैं, तब भी वे कमज़ोर होते हैं और तब भी बहुत-सी ऐसी बातें होती हैं जो उनके लिए अस्पष्ट हों, फिर भी ऐसी स्थिति में वे स्वयं को पीछे हटने से रोक सकते हैं और परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं और यद्यपि वे रोते हैं और व्याकुल रहते हैं, फिर भी उनमें परमेश्वर की प्रशंसा करने का सामर्थ्य होता है; पवित्र आत्मा का कार्य विशेष रूप से सामान्य होता है और उसमें थोड़ा-सा भी अलौकिक नहीं होता। अधिकांश लोग सोचते हैं कि जैसे ही पवित्र आत्मा कार्य करना आरंभ करता है, वैसे ही लोगों की दशा बदल जाती है और जो चीज़ें उनके लिए ज़रूरी होती हैं, वे हटा ली जाती हैं। ऐसे विश्वास भ्रामक होते हैं। जब पवित्र आत्मा मनुष्य के भीतर कार्य करता है, तो मनुष्य की निष्क्रिय बातें उसमें बनी रहती हैं और उसका आध्यात्मिक कद वही रहता है, लेकिन वह पवित्र आत्मा की रोशनी और प्रबोधन प्राप्त कर लेता है और इसलिए उसकी दशा और अधिक सक्रिय हो जाती है, उसके भीतर की स्थितियां सामान्य हो जाती हैं और वह शीघ्रता से बदल जाता है। लोगों के वास्तविक अनुभवों में प्राथमिक रूप से या तो वे पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव करते हैं या शैतान के कार्य का और यदि वे इन अवस्थाओं को समझने में सक्षम नहीं होते और इनमें भेद नहीं कर पाते, तो वास्तविक अनुभवों में प्रवेश का तो सवाल ही नहीं उठता, स्वभाव में

बदलाव की तो बात ही दूर है। इस प्रकार, परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने की कुँजी ऐसी चीज़ों को समझना ही है; इस रूप में, उनके लिए यह अनुभव करना सहज होगा।

पवित्र आत्मा का कार्य सकारात्मक उन्नति है, जबकि शैतान का कार्य है पीछे हटना, नकारात्मकता, विद्रोह, परमेश्वर के के प्रति प्रतिरोध, परमेश्वर में विश्वास की कमी, भजनों को गाने तक की अनिच्छा और अपना कर्तव्य निभाने में बहुत कमज़ोर होना। वह सब कुछ जो पवित्र आत्मा के प्रबोधन से उपजता है, वह काफ़ी स्वाभाविक होता है; यह तुम पर थोपा नहीं जाता। यदि तुम इसका अनुसरण करते हो, तो तुम्हें शांति मिलेगी; और यदि तुम ऐसा नहीं करते, फिर बाद में तुम्हें फटकारा जाएगा। पवित्र आत्मा के प्रबोधन के बाद तुम जो भी करते हो, उसमें कोई हस्तक्षेप या रोक नहीं होगी; तुम स्वतंत्र होगे, तुम्हारे कार्यों में अभ्यास का एक मार्ग होगा और तुम किन्हीं अंकुशों के अधीन नहीं होगे बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने के योग्य होगे। शैतान का कार्य तुमसे बहुत-सी बातों में व्यवधान पैदा कराता है; यह तुम्हें प्रार्थना करने से विमुख करता है, परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने में बहुत आलसी बनाता है, कलीसिया का जीवन जीने से विमुख करता है, और यह आध्यात्मिक जीवन से दूर कर देता है। पवित्र आत्मा का कार्य तुम्हारे दैनिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता और तुम्हारे सामान्य आध्यात्मिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता। तुम बहुत-सी चीज़ों को उसी क्षण पहचानने में असमर्थ रहते हो, जब वे घटित होती हैं; फिर भी कुछ दिन बाद, तुम्हारा हृदय अधिक उज्ज्वल तथा मन अधिक स्पष्ट हो जाता है। तुम्हें आत्मा की चीज़ों के बारे में कुछ समझ आने लगती है और धीरे-धीरे तुम पहचान सकते हो कि कोई विचार परमेश्वर से आया है या शैतान की ओर से। कुछ बातें तुमसे परमेश्वर का विरोध करवाती हैं और परमेश्वर के ख़िलाफ़ विद्रोह करवाती हैं, या परमेश्वर के वचनों को कार्य में लाने से तुम्हें रोकती हैं; ये सभी बातें शैतान की ओर से आती हैं। कुछ बातें स्पष्ट नहीं होतीं और उस समय तुम नहीं बता सकते कि वे क्या हैं; बाद में, तुम उनके प्रकटीकरणों को देख पाते हो, तत्पश्चात विवेक का इस्तेमाल कर पाते हो। अगर तुम स्पष्ट रूप से बता सकते हो कि कौन-सी बातें शैतान की ओर से आती हैं और कौन-सी पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होती हैं, तो तुम अपने अनुभवों में आसानी से नहीं भटकोगे। कभी-कभी जब तुम्हारी स्थिति अच्छी नहीं होती, तो तुम्हें ऐसे विचार आते हैं, जो तुम्हें तुम्हारी निष्क्रिय अवस्था से बाहर निकालते हैं। यह दिखाता है कि जब तुम्हारी स्थिति प्रतिकूल होती है, तब भी तुम्हारे कुछ विचार पवित्र आत्मा से आ सकते हैं। ऐसा नहीं है कि जब तुम निष्क्रिय होते हो, तो तुम्हारे सारे विचार शैतान के भेजे हुए हों; यदि यह सच होता, तो तुम

सकारात्मक अवस्था की ओर कब मुड़ पाते? कुछ समय तक निष्क्रिय रहने के बाद, पवित्र आत्मा तुम्हें पूर्ण बनाए जाने का अवसर देता है; वह तुम्हें स्पर्श करता है और तुम्हें तुम्हारी निष्क्रिय अवस्था से बाहर लाता है।

यह जानना कि पवित्र आत्मा का कार्य क्या है और शैतान का कार्य क्या है, तुम इनकी तुलना अपने अनुभवों के दौरान अपनी स्वयं की दशा से और अपने अनुभवों के साथ कर सकते हो और इस तरह तुम्हारे अनुभवों में सिद्धांत से संबंधित और अधिक सत्य होंगे। सिद्धांत के बारे में इन बातों को समझकर, तुम अपनी वास्तविक दशा नियंत्रित कर पाओगे, तुम लोगों एवं घटनाओं में अंतर कर पाओगे और तुम्हें पवित्र आत्मा का कार्य पाने के लिए बहुत अधिक प्रयास नहीं करने होंगे। निःसंदेह, यह तुम्हारी प्रेरणाओं के सही होने और तुम्हारी खोजने और अभ्यास करने की तत्परता पर निर्भर है। इस प्रकार की भाषा—वह भाषा जो सिद्धांतों से संबंधित है—तुम्हारे अनुभवों में दिखनी चाहिए। इसके बिना तुम्हारे अनुभव शैतान के व्यवधानों और मूर्खतापूर्ण ज्ञान से भरपूर होंगे। यदि तुम यह नहीं समझते कि पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है, तो तुम यह भी नहीं समझ सकते कि कैसे प्रवेश करें और यदि तुम यह नहीं समझते कि शैतान कैसे कार्य करता है, तो तुम यह भी नहीं समझते कि तुम्हें अपने हर क़दम पर कैसे सावधान रहना है। लोगों को समझना चाहिए कि कैसे पवित्र आत्मा कार्य करता है और कैसे शैतान कार्य करता है; यह लोगों के अनुभवों के अपरिहार्य अंग है।

जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं उनके लिए एक चेतावनी

भाइयों और बहनों के बीच जो लोग हमेशा अपनी नकारात्मकता का गुबार निकालते रहते हैं, वे शैतान के अनुचर हैं और वे कलीसिया को परेशान करते हैं। ऐसे लोगों को अवश्य ही एक दिन निकाल और हटा दिया जाना चाहिए। परमेश्वर में अपने विश्वास में, अगर लोगों के अंदर परमेश्वर के प्रति श्रद्धा-भाव से भरा दिल नहीं है, अगर ऐसा दिल नहीं है जो परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी हो, तो ऐसे लोग न सिर्फ परमेश्वर के लिये कोई कार्य कर पाने में असमर्थ होंगे, बल्कि वे परमेश्वर के कार्य में बाधा उपस्थित करने वाले और उसकी उपेक्षा करने वाले लोग बन जाएंगे। परमेश्वर में विश्वास करना किन्तु उसकी आज्ञा का पालन नहीं करना या उसका आदर नहीं करना और उसका प्रतिरोध करना, किसी भी विश्वासी के लिए सबसे बड़ा कलंक है। यदि विश्वासी वाणी और आचरण में हमेशा ठीक उसी तरह लापरवाह और

असंयमित हों जैसे अविश्वासी होते हैं, तो ऐसे लोग अविश्वासी से भी अधिक दुष्ट होते हैं; ये मूल रूप से राक्षस हैं। जो लोग कलीसिया के भीतर विषैली, दुर्भावनापूर्ण बातों का गुबार निकालते हैं, भाइयों और बहनों के बीच अफवाहें व अशांति फैलाते हैं और गुटबाजी करते हैं, तो ऐसे सभी लोगों को कलीसिया से निकाल दिया जाना चाहिए था। अब चूँकि यह परमेश्वर के कार्य का एक भिन्न युग है, इसलिए ऐसे लोग नियंत्रित हैं, क्योंकि उन पर बाहर निकाले जाने का खतरा मंडरा रहा है। शैतान द्वारा भ्रष्ट ऐसे सभी लोगों के स्वभाव भ्रष्ट हैं। कुछ के स्वभाव पूरी तरह से भ्रष्ट हैं, जबकि अन्य लोग इनसे भिन्न हैं : न केवल उनके स्वभाव शैतानी हैं, बल्कि उनकी प्रकृति भी बेहद विद्वेषपूर्ण है। उनके शब्द और कृत्य न केवल उनके भ्रष्ट, शैतानी स्वभाव को प्रकट करते हैं, बल्कि ये लोग असली पैशाचिक शैतान हैं। उनके आचरण से परमेश्वर के कार्य में बाधा पहुंचती है; उनके सभी कृत्य भाई-बहनों को अपने जीवन में प्रवेश करने में व्यवधान उपस्थित करते हैं और कलीसिया के सामान्य कार्यकलापों को क्षति पहुंचाते हैं। आज नहीं तो कल, भेड़ की खाल में छिपे इन भेड़ियों का सफाया किया जाना चाहिए, और शैतान के इन अनुचरों के प्रति एक सख्त और अस्वीकृति का रवैया अपनाया जाना चाहिए। केवल ऐसा करना ही परमेश्वर के पक्ष में खड़ा होना है; और जो ऐसा करने में विफल हैं वे शैतान के साथ कीचड़ में लोट रहे हैं। जो लोग सच्चे मन से परमेश्वर में विश्वास करते हैं, परमेश्वर उनके हृदय में बसता है और उनके भीतर हमेशा परमेश्वर का आदर करने वाला और उसे प्रेम करने वाला हृदय होता है। जो लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, उन्हें सावधानी और समझदारी से कार्य करना चाहिए, और वे जो कुछ भी करें वह परमेश्वर की अपेक्षा के अनुरूप होना चाहिये, उसके हृदय को संतुष्ट करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें मनमाने ढंग से कुछ भी करते हुए दुराग्रही नहीं होना चाहिए; ऐसा करना संतों की शिष्टता के अनुकूल नहीं होता। छल-प्रपंच में लिप्त चारों तरफ अपनी अकड़ में चलते हुए, सभी जगह परमेश्वर का ध्वज लहराते हुए लोग उन्मत्त होकर हिंसा पर उतारू न हों; यह बहुत ही विद्रोही प्रकार का आचरण है। परिवारों के अपने नियम होते हैं और राष्ट्रों के अपने कानून; क्या परमेश्वर के परिवार में यह बात और भी अधिक लागू नहीं होती? क्या यहां मानक और भी अधिक सख़्त नहीं हैं? क्या यहां प्रशासनिक आदेश और भी ज्यादा नहीं हैं? लोग जो चाहें वह करने के लिए स्वतंत्र हैं, परन्तु परमेश्वर के प्रशासनिक आदेशों को इच्छानुसार नहीं बदला जा सकता। परमेश्वर आखिर परमेश्वर है जो मानव के अपराध को सहन नहीं करता; वह परमेश्वर है जो लोगों को मौत की सजा देता है। क्या लोग यह सब पहले से ही नहीं जानते?

हर कलीसिया में ऐसे लोग होते हैं जो कलीसिया के लिए मुसीबत पैदा करते हैं या परमेश्वर के कार्य में व्यवधान डालते हैं। ये सभी लोग शैतान के छद्म वेष में परमेश्वर के परिवार में घुस आए हैं। ऐसे लोग अभिनय कला में निपुण होते हैं : मेरे समक्ष विनीत भाव से आकर, नमन करते हुए, नत-मस्तक होते हैं, खुजली वाले कुत्ते की तरह व्यवहार करते हैं, अपने मकसद को पूरा करने के लिये अपना "सर्वस्व" न्योछावर करते हैं, लेकिन भाई-बहनों के सामने उनका बदसूरत चेहरा प्रकट हो जाता है। जब वे सत्य पर चलने वाले लोगों को देखते हैं तो उन पर आक्रमण कर देते हैं और उन्हें दर-किनार कर देते हैं; और जब वे ऐसे लोगों को देखते हैं जो उनसे भी अधिक भयंकर हैं, तो फिर वे उनकी चाटुकारिता करने लगते हैं, उनके आगे गिड़गिड़ाने लगते हैं। कलीसिया के भीतर वे आततायियों की तरह व्यवहार करते हैं। कह सकते हैं कि ऐसे "स्थानीय गुण्डे" और ऐसे "पालतू कुत्ते" ज़्यादातर कलीसियाओं में मौजूद हैं। ऐसे लोग मिलकर आस-पास मुखबिरी करते हैं, आँखे झपका कर, गुप्त संकेतों और इशारों से आपस में बात करते हैं, और इनमें से कोई भी सत्य का अभ्यास नहीं करता। जो सबसे ज़्यादा ज़हरीला होता है, वही "प्रधान राक्षस" होता है, और जो सबसे अधिक प्रतिष्ठित होता है, वह इनकी अगुवाई करता है और इनका परचम बुलंद रखता है। ऐसे लोग कलीसिया में उपद्रव मचाते हैं, नकारात्मकता फैलाते हुए मौत का तांडव करते हैं, मनमर्जी करते हैं, जो चाहे बकते हैं; किसी में इन्हें रोकने की हिम्मत नहीं होती है, ये शैतानी स्वभाव से भरे होते हैं। जैसे ही ये लोग व्यवधान पैदा करते हैं, कलीसिया में मुर्दनी छा जाती है। कलीसिया के भीतर सत्य का अभ्यास करने वाले लोगों को अलग हटा दिया जाता है और वे अपना सर्वस्व अर्पित करने में असमर्थ हो जाते हैं, जबकि कलीसिया में परेशानियाँ खड़ी करने वाले, मौत का वातावरण निर्मित करने वाले लोग यहां उपद्रव मचाते फिरते हैं, और इतना ही नहीं, अधिकतर लोग उनका अनुसरण करते हैं। साफ बात है, ऐसी कलीसियाएँ शैतान के कब्ज़े में होती है; हैवान इनका सरदार होता है। यदि समागम के सदस्य विद्रोह नहीं करेंगे और उन प्रधान राक्षसों को खारिज नहीं करेंगे, तो देर-सवेर वे भी बर्बाद हो जाएँगे। अब ऐसी कलीसियाओं के ख़िलाफ़ कदम उठाए जाने चाहिए। जो लोग थोड़ा भी सत्य का अभ्यास करने में सक्षम हैं यदि वे खोज नहीं करते हैं, तो उस कलीसिया को मिटा दिया जाएगा। यदि कलीसिया में ऐसा कोई भी नहीं है जो सत्य का अभ्यास करने का इच्छुक हो, और परमेश्वर की गवाही दे सकता हो, तो उस कलीसिया को पूरी तरह से अलग-थलग कर दिया जाना चाहिए और अन्य कलीसियाओं के साथ उसके संबंध समाप्त कर दिये जाने चाहिए। इसे "मृत्यु दफ़न करना" कहते हैं; इसी का अर्थ है शैतान को

बहिष्कृत करना। यदि किसी कलीसिया में कई स्थानीय गुण्डे हैं, और कुछ छोटी-मोटी "मक्खियों" द्वारा उनका अनुसरण किया जाता है जिनमें विवेक का पूर्णतः अभाव है, और यदि समागम के सदस्य, सच्चाई जान लेने के बाद भी, इन गुण्डों की जकड़न और तिकड़म को नकार नहीं पाते, तो उन सभी मूर्खों का अंत में सफाया कर दिया जायेगा। भले ही इन छोटी-छोटी मक्खियों ने कुछ खौफ़नाक न किया हो, लेकिन ये और भी धूर्त, ज़्यादा मक्कार और कपटी होती हैं, इस तरह के सभी लोगों को हटा दिया जाएगा। एक भी नहीं बचेगा! जो शैतान से जुड़े हैं, उन्हें शैतान के पास भेज दिया जाएगा, जबकि जो परमेश्वर से संबंधित हैं, वे निश्चित रूप से सत्य की खोज में चले जाएँगे; यह उनकी प्रकृति के अनुसार तय होता है। उन सभी को नष्ट हो जाने दो जो शैतान का अनुसरण करते हैं! इन लोगों के प्रति कोई दया-भाव नहीं दिखाया जायेगा। जो सत्य के खोजी हैं उनका भरण-पोषण होने दो और वे अपने हृदय के तृप्त होने तक परमेश्वर के वचनों में आनंद प्राप्त करें। परमेश्वर धार्मिक है; वह किसी से पक्षपात नहीं करता। यदि तुम शैतान हो, तो तुम सत्य का अभ्यास नहीं कर सकते; और यदि तुम सत्य की खोज करने वाले हो, तो यह निश्चित है कि तुम शैतान के बंदी नहीं बनोगे—इसमें कोई संदेह नहीं है।

जो प्रगति के लिए प्रयास नहीं करते हैं, वे हमेशा चाहते हैं कि दूसरे भी उन्हीं की तरह नकारात्मक और अकर्मण्य बनें। जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं, वे सत्य का अभ्यास करने वालों के प्रति ईर्ष्या-भाव रखते हैं, और हमेशा ऐसे लोगों के साथ विश्वासघात करना चाहते हैं जो नासमझ हैं और जिनमें विवेक की कमी है। जिन बातों को ये उगलते हैं, वे तेरे पतन का, गर्त में गिरने का, तुझमें असामान्य परिस्थिति पैदा होने का और तुझमें अंधकार भरने का कारण बनती हैं; वे तुझे परमेश्वर से दूर रहने, देह में आनंद लेने और तेरा अपने आप में आसक्त होने का कारण बनती हैं। जो सत्य से प्रेम नहीं करते हैं, जो परमेश्वर के प्रति सदैव लापरवाह रवैया अपनाते हैं, उनमें आत्म-जागरूकता नहीं होती; ऐसे लोगों का स्वभाव लोगों को पाप करने और परमेश्वर की अवहेलना के लिये बहकाता है। वे सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं और न ही दूसरों को इसका अभ्यास करने देते हैं। उन्हें पाप अच्छे लगते हैं और उनमें स्वयं के प्रति कोई नफ़रत नहीं होती है। वे स्वयं को नहीं जानते हैं, और दूसरों को भी स्वयं को जानने से रोकते हैं; वे दूसरों को सत्य की लालसा करने से रोकते हैं। जिनके साथ वे विश्वासघात करते हैं वे प्रकाश को नहीं देख सकते। वे अंधेरे में पड़ जाते हैं, स्वयं को नहीं जानते, और सत्य के बारे में अस्पष्ट रहते हैं, तथा परमेश्वर से उनकी दूरी बढ़ती चली जाती है। वे सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं और दूसरों को भी सत्य का अभ्यास करने नहीं देते हैं, और उन सभी

मूर्खों को अपने सामने लाते हैं। बजाय यह कहने के कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि वे अपने पूर्वजों में विश्वास करते हैं, या कि वे जिसमें विश्वास करते हैं वे उनके दिल में बसी प्रतिमाएँ हैं। उन लोगों के लिए, जो परमेश्वर का अनुसरण करने का दावा करते हैं, अपनी आँखें खोलना और इस बात को ध्यान से देखना सर्वोत्तम रहेगा कि दरअसल वे किसमें विश्वास करते हैं: क्या यह वास्तव में परमेश्वर है जिस पर तू विश्वास करता है, या शैतान है? यदि तू जानता कि जिस पर तू विश्वास करता है वह परमेश्वर नहीं है, बल्कि तेरी स्वयं की प्रतिमाएँ हैं, तो फिर यही सबसे अच्छा होता यदि तू विश्वासी होने का दावा नहीं करता। यदि तुझे वास्तव में नहीं पता कि तू किसमें विश्वास करता है, तो, फिर से, यही सबसे अच्छा होता यदि तू विश्वासी होने का दावा नहीं करता। वैसा कहना कि तू विश्वासी था ईश-निंदा होगी! तुझसे कोई ज़बर्दस्ती नहीं कर रहा कि तू परमेश्वर में विश्वास कर। मत कहो कि तुम लोग मुझमें विश्वास करते हो, मैं ऐसी बहुत सी बातें बहुत पहले खूब सुन चुका हूँ और उन्हें दुबारा सुनने की इच्छा नहीं है, क्योंकि तुम जिनमें विश्वास करते हो वे तुम लोगों के मन की प्रतिमाएँ और तुम लोगों के बीच के स्थानीय गुण्डे हैं। जो लोग सत्य को सुनकर अपनी गर्दन ना में हिलाते हैं, जो मौत की बातें सुनकर अत्यधिक मुस्कराते हैं, वे शैतान की संतान हैं; और नष्ट कर दी जाने वाली वस्तुएँ हैं। ऐसे कई लोग कलीसिया में मौजूद हैं, जिनमें कोई विवेक नहीं है। और जब कुछ कपटपूर्ण घटित होता है, तो वे अप्रत्याशित रूप से शैतान के पक्ष में जा खड़े होते हैं। जब उन्हें शैतान का अनुचर कहा जाता है तो उन्हें लगता है कि उनके साथ अन्याय हुआ है। यद्यपि लोग कह सकते हैं कि उनमें विवेक नहीं है, वे हमेशा उस पक्ष में खड़े होते हैं जहाँ सत्य नहीं होता है, वे संकटपूर्ण समय में कभी भी सत्य के पक्ष में खड़े नहीं होते हैं, वे कभी भी सत्य के पक्ष में खड़े होकर दलील पेश नहीं करते हैं। क्या उनमें सच में विवेक का अभाव है? वे अनपेक्षित ढंग से शैतान का पक्ष क्यों लेते हैं? वे कभी भी एक भी शब्द ऐसा क्यों नहीं बोलते हैं जो निष्पक्ष हो या सत्य के समर्थन में तार्किक हो? क्या ऐसी स्थिति वाकई उनके क्षणिक भ्रम के परिणामस्वरूप पैदा हुई है? लोगों में विवेक की जितनी कमी होगी, वे सत्य के पक्ष में उतना ही कम खड़ा हो पाएँगे। इससे क्या ज़ाहिर होता है? क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि विवेकशून्य लोग बुराई से प्रेम करते हैं? क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि वे शैतान की निष्ठावान संतान हैं? ऐसा क्यों है कि वे हमेशा शैतान के पक्ष में खड़े होकर उसी की भाषा बोलते हैं? उनका हर शब्द और कर्म, और उनके चेहरे के हाव-भाव, यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि वे सत्य के किसी भी प्रकार के प्रेमी नहीं हैं; बल्कि, वे ऐसे लोग हैं जो सत्य से घृणा

करते हैं। शैतान के साथ उनका खड़ा होना यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि शैतान इन तुच्छ इब्लीसों को वाकई में प्रेम करता है जो शैतान की खातिर लड़ते हुए अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं। क्या ये सभी तथ्य पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं? यदि तू वाकई ऐसा व्यक्ति है जो सत्य से प्रेम करता है, तो फिर तेरे मन में ऐसे लोगों के लिए सम्मान क्यों नहीं हो सकता है जो सत्य का अभ्यास करते हैं, तो फिर तू तुरंत उनके मात्र एक इशारे पर ऐसे लोगों का अनुसरण क्यों करता है जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं? यह किस प्रकार की समस्या है? मुझे परवाह नहीं कि तुझमें विवेक है या नहीं। मुझे परवाह नहीं कि तूने कितनी बड़ी कीमत चुकाई है। मुझे परवाह नहीं कि तेरी शक्तियाँ कितनी बड़ी हैं और न ही मुझे इस बात की परवाह है कि तू एक स्थानीय गुण्डा है या कोई ध्वज-धारी अगुआ। यदि तेरी शक्तियाँ अधिक हैं, तो वह शैतान की ताक़त की मदद से है। यदि तेरी प्रतिष्ठा अधिक है, तो वह केवल इसलिए है क्योंकि तेरे आस-पास बहुत से ऐसे लोग हैं जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं; यदि तू निष्कासित नहीं किया गया है, तो इसलिए कि अभी निष्कासन-कार्य का समय नहीं है; बल्कि यह समय अलग किए जाने का है। तुझे निष्कासित करने की अभी कोई जल्दी नहीं है। मैं तो बस उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब हटा दिए जाने के बाद, मैं तुझे दंडित करूंगा। जो कोई भी सत्य का अभ्यास नहीं करता है, उसे हटा दिया जायेगा!

जो लोग सचमुच में परमेश्वर में विश्वास करते हैं, ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाने को तैयार रहते हैं, और सत्य को अभ्यास में लाने को तैयार हैं। जो लोग सचमुच में परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं ये वे लोग हैं जो उसके वचनों को अभ्यास में लाने को तैयार हैं, और जो सचमुच सत्य के पक्ष में खड़े हो सकते हैं। जो लोग चालबाज़ियों और अन्याय का सहारा लेते हैं, उनमें सत्य का अभाव होता है, वे सभी परमेश्वर को लज्जित करते हैं। जो लोग कलीसिया में कलह में संलग्न रहते हैं, वे शैतान के अनुचर हैं, और शैतान के मूर्तरूप हैं। इस प्रकार का व्यक्ति बहुत द्वेषपूर्ण होता है। जिन लोगों में विवेक नहीं होता और सत्य के पक्ष में खड़े होने का सामर्थ्य नहीं होता वे सभी दुष्ट इरादों को आश्रय देते हैं और सत्य को मलिन करते हैं। ये लोग शैतान के सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि हैं; ये छुटकारे से परे हैं, और वास्तव में, हटा दिए जाने वाली वस्तुएँ हैं। परमेश्वर का परिवार उन लोगों को बने रहने की अनुमति नहीं देता है जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं, और न ही यह उन लोगों को बने रहने की अनुमति देता है जो जानबूझकर कलीसियाओं को ध्वस्त करते हैं। हालाँकि, अभी निष्कासन के कार्य को करने का समय नहीं है; ऐसे लोगों को सिर्फ उजागर किया जाएगा और अंत में हटा दिया जाएगा। इन लोगों पर व्यर्थ का कार्य और नहीं

किया जाना है; जिनका सम्बंध शैतान से है, वे सत्य के पक्ष में खड़े नहीं रह सकते हैं, जबकि जो सत्य की खोज करते हैं, वे सत्य के पक्ष में खड़े रह सकते हैं। जो लोग सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं, वे सत्य के वचन को सुनने के अयोग्य हैं और सत्य के लिये गवाही देने के अयोग्य हैं। सत्य बस उनके कानों के लिए नहीं है; बल्कि, यह उन पर निर्देशित है जो इसका अभ्यास करते हैं। इससे पहले कि हर व्यक्ति का अंत प्रकट किया जाए, जो लोग कलीसिया को परेशान करते हैं और परमेश्वर के कार्य में व्यवधान ड़ालते हैं, अभी के लिए उन्हें सबसे पहले एक ओर छोड़ दिया जाएगा, और उनसे बाद में निपटा जाएगा। एक बार जब कार्य पूरा हो जाएगा, तो इन लोगों को एक के बाद एक करके उजागर किया जाएगा, और फिर हटा दिया जाएगा। फिलहाल, जबकि सत्य प्रदान किया जा रहा है, तो उनकी उपेक्षा की जाएगी। जब मनुष्य जाति के सामने पूर्ण सत्य प्रकट कर दिया जाता है, तो उन लोगों को हटा दिया जाना चाहिए; यही वह समय होगा जब लोगों को उनके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। जो लोग विवेकशून्य हैं, वे अपनी तुच्छ चालाकी के कारण दुष्ट लोगों के हाथों विनाश को प्राप्त होंगे, और ऐसे लोग दुष्ट लोगों के द्वारा पथभ्रष्ट कर दिये जायेंगे तथा लौटकर आने में असमर्थ होंगे। इन लोगों के साथ इसी प्रकार पेश आना चाहिए, क्योंकि इन्हें सत्य से प्रेम नहीं है, क्योंकि ये सत्य के पक्ष में खड़े होने में अक्षम हैं, क्योंकि ये दुष्ट लोगों का अनुसरण करते हैं, ये दुष्ट लोगों के पक्ष में खड़े होते हैं, क्योंकि ये दुष्ट लोगों के साथ साँठ-गाँठ करते हैं और परमेश्वर की अवमानना करते हैं। वे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं कि वे दुष्ट लोग दुष्टता विकीर्ण करते हैं, मगर वे अपना हृदय कड़ा कर लेते हैं और उनका अनुसरण करने के लिए सत्य के विपरीत चलते हैं। क्या ये लोग जो सत्य का अनुसरण नहीं करते हैं लेकिन जो विनाशकारी और घृणास्पद कार्यों को करते हैं, दुष्टता नहीं कर रहे हैं? यद्यपि उनमें से कुछ ऐसे हैं जो अपने आप को सम्राटों की तरह पेश करते हैं और कुछ ऐसे हैं जो उनका अनुसरण करते हैं, किन्तु क्या परमेश्वर की अवहेलना करने की उनकी प्रकृति एक-सी नहीं है? उनके पास इस बात का दावा करने का क्या बहाना हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें नहीं बचाता है? उनके पास इस बात का दावा करने का क्या बहाना हो सकता है कि परमेश्वर धार्मिक नहीं है? क्या यह उनकी अपनी दुष्टता नहीं है जो उनका विनाश कर रही है? क्या यह उनकी खुद की विद्रोहशीलता नहीं है जो उन्हें नरक में नहीं धकेल रही है? जो लोग सत्य का अभ्यास करते हैं, अंत में, उन्हें सत्य की वजह से बचा लिया जाएगा और सिद्ध बना दिया जाएगा। जो सत्य का अभ्यास नहीं करते हैं, अंत में, वे सत्य की वजह से विनाश को आमंत्रण देंगे। ये वे अंत हैं जो उन लोगों की प्रतीक्षा

में हैं जो सत्य का अभ्यास करते हैं और जो नहीं करते हैं। जो सत्य का अभ्यास करने की कोई योजना नहीं बना रहे, ऐसे लोगों को मेरी सलाह है कि वे यथाशीघ्र कलीसिया को छोड़ दें ताकि और अधिक पापों को करने से बचें। जब समय आएगा तो पश्चाताप के लिए भी बहुत देर हो चुकी होगी। विशेष रूप से, जो गुटबंदी करते हैं और पाखंड पैदा करते हैं, और वे स्थानीय गुण्डे तो और भी जल्दी अवश्य छोड़ कर चले जाएँ। जिनकी प्रवृत्ति दुष्ट भेड़ियों की है ऐसे लोग बदलने में असमर्थ हैं। बेहतर होगा वे कलीसिया से तुरंत चले जायें और फिर कभी भाई-बहनों के सामान्य जीवन को परेशान न करें और परिणास्वरूप परमेश्वर के दंड से बचें। तुम लोगों में से जो लोग उनके साथ चले गये हैं, वे आत्म-मंथन के लिए इस अवसर का उपयोग करें। क्या तुम लोग ऐसे दुष्टों के साथ कलीसिया से बाहर जाओगे, या यहीं रहकर आज्ञाकारिता के साथ अनुसरण करोगे? तुम लोगों को इस बात पर सावधानी से विचार अवश्य करना चाहिए। मैं चुनने के लिए तुम लोगों को एक और अवसर देता हूँ; मुझे तुम लोगों के उत्तर की प्रतीक्षा है।

तुम्हें परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति बनाए रखनी चाहिए

पवित्र आत्मा वर्तमान समय में कलीसिया के भीतर किस प्रकार से कार्य कर रहा है? क्या तुम्हें इस प्रश्न की कोई ठोस समझ है? तुम्हारे भाइयों और बहनों की सबसे बड़ी कठिनाइयाँ क्या हैं? उनमें सबसे अधिक किस चीज की कमी है? वर्तमान में, कुछ लोग परीक्षणों से गुज़रने पर नकारात्मक हो जाते हैं, और उनमें से कुछ तो शिकायत भी करते हैं। अन्य लोग अब आगे नहीं बढ़ रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर ने बोलना समाप्त कर दिया है। लोगों ने परमेश्वर में विश्वास के सही मार्ग में प्रवेश नहीं किया है। वे स्वतंत्र रूप से नहीं जी सकते, और वे अपना आध्यात्मिक जीवन नहीं बनाए रख सकते। कुछ लोग साथ-साथ अनुसरण करते हैं और ऊर्जा के साथ खोज करते हैं, और जब परमेश्वर बोलता है तब अभ्यास करने के लिए तैयार रहते हैं, लेकिन जब परमेश्वर नहीं बोलता, तो वे और आगे नहीं बढ़ते। लोगों ने अभी भी परमेश्वर की इच्छा को अपने दिल में नहीं समझा है और उनमें परमेश्वर के लिए स्वत:स्फूर्त प्रेम नहीं है; अतीत में उन्होंने परमेश्वर का अनुसरण इसलिए किया था, क्योंकि वे मजबूर थे। अब कुछ लोग हैं, जो परमेश्वर के कार्य से थक गए हैं। क्या ऐसे लोग खतरे में नहीं हैं? बहुत सारे लोग सिर्फ निभाने की स्थिति में रहते हैं। यद्यपि वे परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं, पर वे ऐसा आधे-अधूरे मन से करते हैं, और उनमें अब वह सहज प्रवृत्ति नहीं है जो उनमें कभी थी। अधिकतर लोग शुद्धिकरण और पूर्ण बनाने के परमेश्वर

के कार्य में रुचि नहीं रखते, और वास्तव में यह ऐसा है, मानो वे लगातार किसी अंत:प्रेरणा से रहित हों। जब वे पापों के वशीभूत हो जाते हैं, तो वे परमेश्वर के प्रति ऋणी महसूस नहीं करते, न ही उनमें पश्चात्ताप अनुभव करने की जागरूकता होती है। वे सत्य की खोज नहीं करते और न ही कलीसिया को छोड़ते हैं, इसके बजाय वे केवल अस्थायी सुख ढूँढ़ते हैं। ये लोग मूर्ख हैं, एकदम मूढ़! समय आने पर वे बहिष्कृत कर दिए जाएँगे, और किसी एक को भी नहीं बचाया जाएगा! क्या तुम्हें लगता है कि यदि किसी को एक बार बचाया गया है, तो उसे हमेशा बचाया जाएगा? यह विश्वास शुद्ध धोखा है! जो लोग जीवन में प्रवेश करने का प्रयास नहीं करते, उन सभी को ताड़ना दी जाएगी। अधिकतर लोगों की जीवन में प्रवेश करने में, दर्शनों में, या सत्य का अभ्यास करने में बिलकुल भी रुचि नहीं है। वे प्रवेश करने का प्रयास नहीं करते, और वे अधिक गहराई से प्रवेश करने का प्रयास तो निश्चित रूप से नहीं करते। क्या वे स्वयं को बरबाद नहीं कर रहे? अभी कुछ लोग हैं, जिनकी स्थितियाँ लगातार बेहतर हो रही हैं। पवित्र आत्मा जितना अधिक कार्य करता है, उतना ही अधिक आत्मविश्वास उनमें आता है, और जितना अधिक वे अनुभव करते हैं, उतना ही अधिक वे परमेश्वर के कार्य के गहन रहस्य का अनुभव करते हैं। जितना गहरे वे प्रवेश करते हैं, उतना ही अधिक वे समझते हैं। वे अनुभव करते हैं कि परमेश्वर का प्रेम बहुत महान है, और वे अपने भीतर स्थिर और प्रबुद्ध महसूस करते हैं। उन्हें परमेश्वर के कार्य की समझ है। ये ही वे लोग हैं, जिनमें पवित्र आत्मा कार्य कर रहा है। कुछ लोग कहते हैं : "यद्यपि परमेश्वर की ओर से कोई नए वचन नहीं हैं, फिर भी मुझे सत्य में और गहरे जाने का प्रयास करना चाहिए, मुझे अपने वास्तविक अनुभव में हर चीज के बारे में ईमानदार होना चाहिए और परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करना चाहिए।" इस तरह के व्यक्ति में पवित्र आत्मा का कार्य होता है। यद्यपि परमेश्वर अपना चेहरा नहीं दिखाता और हर एक व्यक्ति से छिपा रहता है, और यद्यपि वह एक भी वचन नहीं बोलता और कई बार लोग कुछ आंतरिक शुद्धिकरण का अनुभव करते हैं, फिर भी परमेश्वर ने लोगों को पूरी तरह से नहीं छोड़ा है। यदि कोई व्यक्ति उस सत्य को बरकरार नहीं रख सकता, जिसका उसे पालन करना चाहिए, तो उसके पास पवित्र आत्मा का कार्य नहीं होगा। शुद्धिकरण की अवधि के दौरान, परमेश्वर के स्वयं को नहीं दिखाने के दौरान, यदि तुम्हारे भीतर आत्मविश्वास नहीं होता और तुम डरकर दुबक जाते हो, यदि तुम उसके वचनों का अनुभव करने पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, तो तुम परमेश्वर के कार्य से भाग रहे होते हो। बाद में, तुम उन लोगों में से एक होगे, जिनका बहिष्कार किया जाता है। जो लोग परमेश्वर के वचन में प्रवेश करने का प्रयास नहीं करते, वे

संभवतः उसके गवाह के रूप में खड़े नहीं हो सकते। जो लोग परमेश्वर के लिए गवाही देने और उसकी इच्छा पूरी करने में सक्षम हैं, वे सभी पूरी तरह से परमेश्वर के वचनों का अनुसरण करने की अपनी अंत:प्रेरणा पर निर्भर हैं। परमेश्वर द्वारा लोगों में किया जाने वाला कार्य मुख्य रूप से उन्हें सत्य प्राप्त करवाने के लिए है, तुमसे जीवन का अनुसरण करवाना तुम्हें पूर्ण बनाने के लिए है, और यह सब तुम्हें परमेश्वर के उपयोग हेतु उपयुक्त बनाने के लिए है। अभी तुम सभी जो कुछ अनुसरण कर रहे हो, वह है रहस्यों को सुनना, परमेश्वर के वचनों को सुनना, अपनी आँखों को आनंदित करना और आसपास यह देखना कि कोई नई चीज़ या रुझान है या नहीं, और उससे अपनी जिज्ञासा संतुष्ट करना। यदि यही इरादा तुम्हारे दिल में है, तो तुम्हारे पास परमेश्वर की आवश्यकताएँ पूरी करने का कोई रास्ता नहीं है। जो लोग सत्य का अनुसरण नहीं करते, वे अंत तक अनुसरण नहीं कर सकते। अभी, ऐसा नहीं है कि परमेश्वर कुछ नहीं कर रहा है, बल्कि लोग उसके साथ सहयोग नहीं कर रहे, क्योंकि वे उनके कार्य से थक गए हैं। वे केवल उन वचनों को सुनना चाहते हैं, जो वह आशीष देने के लिए बोलता है, और वे उसके न्याय और ताड़ना के वचनों को सुनने के अनिच्छुक हैं। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि लोगों की आशीष प्राप्त करने की इच्छा पूरी नहीं हुई है और इसलिए वे नकारात्मक और कमजोर हो गए हैं। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर जानबूझकर लोगों को अपना अनुसरण नहीं करने देता, और न ऐसा है कि वह जानबूझकर मानवजाति पर आघात कर रहा है। लोग नकारात्मक और कमजोर केवल इसलिए हैं, क्योंकि उनके इरादे गलत हैं। परमेश्वर तो परमेश्वर है, जो मनुष्य को जीवन देता है, और वह मनुष्य को मृत्यु में नहीं ला सकता। लोगों की नकारात्मकता, कमजोरी, और पीछे हटना सब उनकी अपनी करनी के नतीजे हैं।

परमेश्वर का वर्तमान कार्य लोगों में कुछ शुद्धिकरण लाता है, और जो लोग इस शुद्धिकरण के दौरान मजबूती से खड़े रह सकते हैं, केवल वे ही परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त करेंगे। भले ही वह स्वयं को कैसे भी छिपाए, न बोलकर या कार्य न करके, तुम फिर भी उत्साह के साथ अनुसरण कर सकते हो। यहाँ तक कि यदि परमेश्वर ने कहा कि वह तुम्हें अस्वीकार कर देगा, तुम फिर भी उसका अनुसरण करोगे। यह परमेश्वर की गवाही में खड़े होना है। यदि परमेश्वर स्वयं को तुमसे छिपाता है और तुम उसका अनुसरण करना बंद कर देते हो, तो क्या यह परमेश्वर की गवाही में खड़े होना है? यदि लोग वास्तव में प्रवेश नहीं करते, तो उनके पास वास्तविक कद-काठी नहीं है, और जब वे वास्तव में किसी महान परीक्षण का सामना

करते हैं, तो वे लड़खड़ा जाते हैं। जब परमेश्वर नहीं बोलता, या कुछ ऐसा करता है जो तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप नहीं होता, तो तुम टूट जाते हो। यदि परमेश्वर वर्तमान में तुम्हारी धारणाओं के अनुसार कार्य कर रहा होता, यदि वह तुम्हारी इच्छा पूरी कर रहा होता और तुम खड़े होने और ऊर्जा के साथ अनुसरण करने में सक्षम होते, तो वह आधार क्या होता, जिस पर तुम जी रहे होते? मैं कहता हूँ कि बहुत लोग उस ढंग से जी रहे हैं, जो पूरी तरह से मानव-जिज्ञासा पर आधारित है! वे सच्चे दिल से खोज बिलकुल नहीं करते। जो लोग सत्य में प्रवेश का प्रयास नहीं करते, बल्कि जीवन में अपनी जिज्ञासा पर भरोसा करते हैं, वे सभी अधम लोग हैं, और खतरे में हैं! परमेश्वर के विभिन्न प्रकार के सभी कार्य मानवजाति को पूर्ण बनाने के लिए हैं। हालाँकि, लोग हमेशा उत्सुक होते हैं, वे सुनी हुई बात के बारे में पूछताछ करना चाहते हैं, वे विदेशों के वर्तमान मामलों के बारे में चिंतित होते हैं—उदाहरण के लिए, वे इस बारे में उत्सुक होते हैं कि इस्राएल में क्या हो रहा है, या मिस्र में कोई भूकंप तो नहीं आया—अपनी स्वार्थी इच्छाएँ पूरी करने के लिए वे हमेशा कुछ नई, अनूठी चीजों की तलाश करते रहते हैं। वे जीवन का अनुसरण नहीं करते, न ही वे पूर्ण बनाए जाने का प्रयास करते हैं। वे केवल परमेश्वर के दिन के शीघ्र आगमन की चाह रखते हैं, ताकि उनका सुंदर सपना पूरा हो जाए और उनकी असाधारण इच्छाएँ पूरी हो सकें। इस प्रकार का व्यक्ति व्यावहारिक नहीं होता—वह एक अनुचित परिप्रेक्ष्य वाला व्यक्ति होता है। केवल सत्य की तलाश ही परमेश्वर में मानवजाति के विश्वास की नींव है, और यदि लोग जीवन में प्रवेश करने का प्रयास नहीं करते, यदि वे परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयास नहीं करते, तो वे दंड के भागी होंगे। जिन्हें दंडित किया जाना है, वे ऐसे लोग हैं, जिन पर परमेश्वर के कार्य के समय के दौरान पवित्र आत्मा का कार्य नहीं हुआ था।

परमेश्वर के कार्य के इस चरण के दौरान लोगों को उसके साथ कैसे सहयोग करना चाहिए? परमेश्वर वर्तमान में लोगों की परीक्षा ले रहा है। वह एक वचन भी नहीं बोल रहा; बल्कि स्वयं को छिपा रहा है और लोगों से सीधे संपर्क नहीं कर रहा है। बाहर से ऐसा लगता है, मानो वह कोई कार्य नहीं कर रहा, लेकिन सच्चाई यह है कि वह अभी भी मनुष्य के भीतर कार्य कर रहा है। जीवन में प्रवेश पाने की कोशिश करने वाले हर किसी के पास अपने जीवन की खोज के लिए एक दर्शन होता है, और उसे संदेह नहीं होता, भले ही वह परमेश्वर के कार्य को पूरी तरह से न समझता हो। परीक्षणों से गुजरते हुए, यहाँ तक कि जब तुम नहीं जानते कि परमेश्वर क्या करना चाहता है और वह क्या कार्य निष्पादित करना चाहता है, तब भी तुम्हें पता होना चाहिए कि मानवजाति के लिए परमेश्वर के इरादे हमेशा अच्छे होते हैं। यदि तुम सच्चे दिल से

उसका अनुसरण करते हो, तो वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा, और अंत में वह निश्चित रूप से तुम्हें पूर्ण बनाएगा, और लोगों को एक उचित मंजिल तक ले जाएगा। भले ही परमेश्वर वर्तमान में लोगों का किसी भी प्रकार से परीक्षण कर रहा हो, एक दिन ऐसा आएगा जब वह लोगों को उचित परिणाम प्रदान करेगा और उनके द्वारा किए गए कार्य के आधार पर उन्हें उचित प्रतिफल देगा। परमेश्वर लोगों को एक निश्चित बिंदु तक ले जाकर एक तरफ फेंक नहीं देगा और उन्हें अनदेखा नहीं करेगा। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह एक विश्वसनीय परमेश्वर है। इस चरण में पवित्र आत्मा शुद्धिकरण का कार्य कर रहा है। वह हर एक व्यक्ति को शुद्ध कर रहा है। मृत्यु और ताड़ना के परीक्षणों से युक्त कार्य के चरणों में शुद्धिकरण वचनों के माध्यम से किया गया था। लोगों को परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने के लिए सबसे पहले उसके वर्तमान कार्य को समझना चाहिए और यह भी कि मानवजाति को कैसे सहयोग करना चाहिए। वास्तव में, यह कुछ ऐसा है, जिसे हर किसी को समझना चाहिए। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि परमेश्वर क्या करता है, चाहे वह शुद्धिकरण हो या भले ही वह बोल नहीं रहा हो, परमेश्वर के कार्य का एक भी चरण मानवजाति की अवधारणाओं के अनुरूप नहीं होता। उसके कार्य का प्रत्येक चरण लोगों की अवधारणाओं को खंड-खंड कर देता है। यह उसका कार्य है। लेकिन तुम्हें विश्वास करना चाहिए कि चूँकि परमेश्वर का कार्य एक निश्चित चरण में पहुँच गया है, इसलिए चाहे जो हो जाए, वह मानवजाति को मौत के घाट नहीं उतारेगा। वह मानवजाति को वादे और आशीष दोनों देता है, और वे सभी जो उसका अनुसरण करते हैं, उसके आशीष प्राप्त करने में सक्षम होंगे, लेकिन जो अनुसरण नहीं करते, वे परमेश्वर द्वारा बहिष्कृत कर दिए जाएँगे। यह तुम्हारे अनुसरण पर निर्भर करता है। चाहे कुछ भी हो, तुम्हें विश्वास करना चाहिए कि जब परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा, तो हर एक व्यक्ति की उचित मंजिल होगी। परमेश्वर ने मनुष्यों को सुंदर आकांक्षाएँ प्रदान की हैं, लेकिन यदि वे अनुसरण नहीं करते, तो वे अप्राप्य हैं। तुम्हें अब इसे देखने में सक्षम होना चाहिए—परमेश्वर द्वारा लोगों का शुद्धिकरण और ताड़ना उसका कार्य है, लेकिन लोगों को अपनी तरफ से हर समय अपने स्वभाव में परिवर्तन लाने की कोशिश करनी चाहिए। अपने व्यावहारिक अनुभव में तुम्हें पहले जानना चाहिए कि परमेश्वर के वचनों को कैसे खाएँ और पीएँ; तुम्हें उसके वचनों में यह ढूँढ़ना चाहिए कि तुम्हें किस चीज़ में प्रवेश करना चाहिए और तुम्हारी कमियाँ क्या हैं, तुम्हें अपने व्यावहारिक अनुभव में प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए, और परमेश्वर के वचनों के उस भाग को लेना चाहिए, जिसे अभ्यास में लाया जाना चाहिए, और वैसा करने का प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर के वचनों

को खाना और पीना एक पहलू है। उसके अतिरिक्त, कलीसिया का जीवन बनाए रखा जाना चाहिए, तुम्हें एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन जीना चाहिए, और तुम्हें अपनी सभी वर्तमान अवस्थाओं को परमेश्वर को सौंपने में सक्षम होना चाहिए। इस बात की परवाह किए बिना कि उसका कार्य कैसे बदलता है, तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन सामान्य रहना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन तुम्हारे सामान्य प्रवेश को बनाए रख सकता है। परमेश्वर चाहे कुछ भी करे, तुम्हें अपना आध्यात्मिक जीवन निर्बाध जारी रखना और अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। यही काम है, जो लोगों को करना चाहिए। यह सब पवित्र आत्मा का कार्य है, लेकिन सामान्य स्थिति वाले लोगों के लिए यह पूर्ण बनाया जाना है, जबकि एक असामान्य स्थिति वाले लोगों के लिए यह एक परीक्षण है। पवित्र आत्मा के शुद्धिकरण के कार्य के वर्तमान चरण में, कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर का कार्य बहुत महान है और कि लोगों को पूरी तरह से शुद्धिकरण की आवश्यकता है, अन्यथा उनकी अध्यात्मिक कद-काठी बहुत छोटी हो जाएगी और उनके पास परमेश्वर की इच्छा प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं होगा। हालाँकि, जिन लोगों की स्थिति अच्छी नहीं है, उनके लिए यह परमेश्वर का अनुसरण न करने और सभाओं में भाग न लेने या परमेश्वर के वचन को न खाने-पीने का एक कारण बन जाता है। परमेश्वर के कार्य में, चाहे वह कुछ भी करे या कोई भी बदलाव लाए, लोगों को एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन की एक आधार-रेखा अवश्य बनाए रखनी चाहिए। शायद तुम अपने आध्यात्मिक जीवन के इस वर्तमान चरण में शिथिल नहीं हुए हो, लेकिन तुमने अभी भी बहुत-कुछ प्राप्त नहीं किया है, और बहुत अच्छी फसल नहीं काटी है। इस तरह की परिस्थितियों में तुम्हें अभी भी नियमों का पालन करना चाहिए; तुम्हें इन नियमों के अनुसार चलना चाहिए, ताकि तुम अपने जीवन में नुकसान न झेलो और ताकि तुम परमेश्वर की इच्छा पूरी करो। यदि तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन असामान्य है, तो तुम परमेश्वर के वर्तमान कार्य को नहीं समझ सकते; बल्कि हमेशा महसूस करते हो कि यह तुम्हारी धारणाओं के अनुरूप नहीं है, और यद्यपि तुम उसका अनुसरण करने के लिए तैयार होते हो, लेकिन तुममें अंत:प्रेरणा का अभाव रहता है। तो भले ही परमेश्वर वर्तमान में कुछ भी कर रहा हो, लोगों को सहयोग अवश्य करना चाहिए। यदि लोग सहयोग नहीं करते, तो पवित्र आत्मा अपना कार्य नहीं कर सकता, और यदि लोगों के पास सहयोग करने वाला दिल नहीं है, तो वे शायद ही पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त कर सकते हैं। यदि तुम अपने अंदर पवित्र आत्मा का कार्य चाहते हो, और यदि तुम परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के सम्मुख अपनी मूल भक्ति बनाए रखनी चाहिए। अब, तुम्हारे पास गहन समझ, उच्च सिद्धांत,

या ऐसी अन्य चीजों का होना आवश्यक नहीं है—बस इतना ही आवश्यक है कि तुम परमेश्वर के वचन को मूल आधार पर बनाए रखो। यदि लोग परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं करते और गहरे प्रवेश की कोशिश नहीं करते, तो परमेश्वर उन चीजों को छीन लेगा, जो मूलत: उसकी थीं। अंदर से लोग हमेशा सुविधा के लोभी होते हैं और उसका आनंद लेते हैं, जो पहले से ही उपलब्ध होता है। वे बिना कोई भी कीमत चुकाए परमेश्वर के वादे प्राप्त करना चाहते हैं। ये अनावश्यक विचार हैं, जो मनुष्य रखता है। बिना कोई कीमत चुकाए स्वयं जीवन प्राप्त करना—पर क्या कभी कुछ भी इतना आसान रहा है? जब कोई व्यक्ति परमेश्वर में विश्वास करता है और जीवन में प्रवेश करने का प्रयास करता है और अपने स्वभाव में बदलाव चाहता है, तो उसे उसकी कीमत अवश्य चुकानी चाहिए और वह अवस्था प्राप्त करनी चाहिए, जहाँ वह हमेशा परमेश्वर का अनुसरण करेगा, चाहे परमेश्वर कुछ भी करे। यह ऐसा काम है, जिसे लोगों को अवश्य करना चाहिए। यहाँ तक कि यदि तुम इस सबका एक नियम के रूप में पालन करते हो, तो भी तुम्हें हमेशा इस पर टिके रहना चाहिए, और चाहे परीक्षण कितने भी बड़े हों, तुम परमेश्वर के साथ अपने सामान्य संबंध को जाने नहीं दे सकते। तुम्हें प्रार्थना करने, अपने कलीसिया-जीवन को बनाए रखने, और अपने भाइयों और बहनों को कभी न छोड़ने में सक्षम होना चाहिए। जब परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा ले, तब भी तुम्हें सत्य की तलाश करनी चाहिए। आध्यात्मिक जीवन के लिए यह न्यूनतम अपेक्षा है। हमेशा खोज करने की इच्छा रखना, सहयोग करने का भरसक प्रयास करना, अपनी समस्त ऊर्जा लगा देना—क्या यह किया जा सकता है? यदि लोग इसे आधार के रूप में लें, तो वे विवेक हासिल करने और वास्तविकता में प्रवेश करने में सक्षम होंगे। तुम्हारी स्वयं की अवस्था सामान्य होने पर परमेश्वर का वचन स्वीकार करना आसान है, इन परिस्थितियों में सत्य का अभ्यास करना मुश्किल नहीं लगता, और तुम्हें लगता है कि परमेश्वर का कार्य महान है। लेकिन यदि तुम्हारी हालत खराब है, तो परमेश्वर का कार्य कितना भी महान क्यों न हो, और चाहे कोई कितनी भी खूबसूरती से क्यों न बोलता हो, तुम उस पर कोई ध्यान नहीं दोगे। जब व्यक्ति की हालत सामान्य नहीं होती, तो परमेश्वर उसमें कार्य नहीं कर सकता, और वे अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं ला सकते।

यदि लोगों में आत्मविश्वास नहीं है, तो उनके लिए इस मार्ग पर चलते रहना आसान नहीं है। अब हर कोई देख सकता है कि परमेश्वर का कार्य लोगों की अवधारणाओं के अनुरूप जरा सा भी नहीं है। परमेश्वर ने इतना अधिक कार्य किया है और इतने सारे वचनों को कहा है, जो इंसानी अवधारणाओं से पूर्णत: भिन्न

हैं। इसलिए लोगों में उस चीज के साथ खड़े होने का आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति होनी चाहिए, जिसे वे पहले ही देख चुके हैं और अपने अनुभवों से प्राप्त कर चुके हैं। भले ही परमेश्वर लोगों में कुछ भी कार्य करे, उन्हें वह बनाए रखना चाहिए जो उनके पास है, उन्हें परमेश्वर के सामने ईमानदार होना चाहिए, और उसके प्रति बिलकुल अंत तक समर्पित रहना चाहिए। यह मनुष्य का कर्तव्य है। लोगों को जो करना चाहिए, उसे उन्हें बनाए रखना चाहिए। परमेश्वर पर विश्वास के लिए उसका आज्ञापालन करना और उसके कार्य का अनुभव करना आवश्यक है। परमेश्वर ने बहुत कार्य किया है—यह कहा जा सकता है कि लोगों के लिए यह सब पूर्ण बनाना, शुद्धिकरण, और इससे भी बढ़कर, ताड़ना है। परमेश्वर के कार्य का एक भी चरण ऐसा नहीं रहा है, जो मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप रहा हो; लोगों ने जिस चीज का आनंद लिया है, वह है परमेश्वर के कठोर वचन। जब परमेश्वर आता है, तो लोगों को उसके प्रताप और उसके कोप का आनंद लेना चाहिए। हालाँकि उसके वचन चाहे कितने ही कठोर क्यों न हों, वह मानवजाति को बचाने और पूर्ण करने के लिए आता है। प्राणियों के रूप में लोगों को वे कर्तव्य पूरे करने चाहिए, जो उनसे अपेक्षित हैं, और शुद्धिकरण के बीच परमेश्वर के लिए गवाह बनना चाहिए। हर परीक्षण में उन्हें उस गवाही पर कायम रहना चाहिए, जो कि उन्हें देनी चाहिए, और परमेश्वर के लिए उन्हें ऐसा ज़बरदस्त तरीके से करना चाहिए। ऐसा करने वाला व्यक्ति विजेता होता है। परमेश्वर चाहे कैसे भी तुम्हें शुद्ध करे, तुम आत्मविश्वास से भरे रहते हो और परमेश्वर पर से कभी विश्वास नहीं खोते। तुम वह करते हो, जो मनुष्य को करना चाहिए। परमेश्वर मनुष्य से इसी की अपेक्षा करता है, और मनुष्य का दिल पूरी तरह से उसकी ओर लौटने तथा हर पल उसकी ओर मुड़ने में सक्षम होना चाहिए। ऐसा होता है विजेता। जिन लोगों का उल्लेख परमेश्वर "विजेताओं" के रूप में करता है, वे लोग वे होते हैं, जो तब भी गवाह बनने और परमेश्वर के प्रति अपना विश्वास और भक्ति बनाए रखने में सक्षम होते हैं, जब वे शैतान के प्रभाव और उसकी घेरेबंदी में होते हैं, अर्थात् जब वे स्वयं को अंधकार की शक्तियों के बीच पाते हैं। यदि तुम, चाहे कुछ भी हो जाए, फिर भी परमेश्वर के समक्ष पवित्र दिल और उसके लिए अपना वास्तविक प्यार बनाए रखने में सक्षम रहते हो, तो तुम परमेश्वर के सामने गवाह बनते हो, और इसी को परमेश्वर "विजेता" होने के रूप में संदर्भित करता है। यदि परमेश्वर द्वारा तुम्हें आशीष दिए जाने पर तुम्हारा अनुसरण उत्कृष्ट होता है, लेकिन उसके आशीष न मिलने पर तुम पीछे हट जाते हो, तो क्या यह पवित्रता है? चूँकि तुम निश्चित हो कि यह रास्ता सही है, इसलिए तुम्हें अंत तक इसका अनुसरण करना चाहिए; तुम्हें परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखनी

चाहिए। चूँकि तुमने देख लिया है कि स्वयं परमेश्वर तुम्हें पूर्ण बनाने के लिए पृथ्वी पर आया है, इसलिए तुम्हें पूरी तरह से अपना दिल उसे समर्पित कर देना चाहिए। भले ही वह कुछ भी करे, यहाँ तक कि बिलकुल अंत में तुम्हारे लिए एक प्रतिकूल परिणाम ही क्यों न निर्धारित कर दे, अगर तुम फिर भी उसका अनुसरण कर सकते हो, तो यह परमेश्वर के सामने अपनी पवित्रता बनाए रखना है। परमेश्वर को एक पवित्र आध्यात्मिक देह और एक शुद्ध कुँवारापन अर्पित करने का अर्थ है परमेश्वर के सामने ईमानदार दिल बनाए रखना। मनुष्य के लिए ईमानदारी ही पवित्रता है, और परमेश्वर के प्रति ईमानदार होने में सक्षम होना ही पवित्रता बनाए रखना है। यही वह चीज़ है, जिसे तुम्हें अभ्यास में लाना चाहिए। जब तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए, तब तुम प्रार्थना करो; जब तुम्हें संगति में एक-साथ इकट्ठे होना चाहिए, तो तुम इकट्ठे हो जाओ; जब तुम्हें भजन गाने चाहिए, तो तुम भजन गाओ; और जब तुम्हें शरीर को त्यागना चाहिए, तो तुम शरीर को त्याग दो। जब तुम अपना कर्तव्य करते हो, तो तुम उसमें गड़बड़ नहीं करते; जब तुम्हें परीक्षणों का सामना करना पड़ता है, तो तुम मजबूती से खड़े रहते हो। यह परमेश्वर के प्रति भक्ति है। लोगों को जो करना चाहिए, यदि तुम वह बनाए नहीं रखते, तो तुम्हारी पिछली सभी पीड़ाएँ और संकल्प व्यर्थ रहे हैं।

परमेश्वर के कार्य के हर चरण के लिए एक तरीका है, जिसमें लोगों को सहयोग करना चाहिए। परमेश्वर लोगों को शुद्ध करता है, ताकि शुद्धिकरणों से गुज़रने पर उनमें आत्मविश्वास रहे। परमेश्वर लोगों को पूर्ण बनाता है, ताकि उनमें परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने का आत्मविश्वास हो और वे उसके शुद्धिकरणों को स्वीकार करने और उसके द्वारा निपटान और काँट-छाँट किए जाने के लिए तैयार हो जाएँ। परमेश्वर का आत्मा लोगों में प्रबुद्धता और रोशनी लाने और उनसे परमेश्वर के साथ सहयोग करवाने और अभ्यास करवाने के लिए उनके भीतर कार्य करता है। शुद्धिकरण के दौरान परमेश्वर बात नहीं करता। वह अपनी वाणी नहीं बोलता, फिर भी, ऐसा कार्य है जिसे लोगों को करना चाहिए। तुम्हें वह बनाए रखना चाहिए जो तुम्हारे पास पहले से है, तुम्हें फिर भी परमेश्वर से प्रार्थना करने, परमेश्वर के निकट होने, और परमेश्वर के सामने गवाही देने में सक्षम होना चाहिए; इस तरह तुम अपना कर्तव्य पूरा करोगे। तुम सबको परमेश्वर के कार्य से स्पष्ट रूप से देखना चाहिए कि लोगों के आत्मविश्वास और प्यार के उसके परीक्षण यह अपेक्षा करते हैं कि वे परमेश्वर से अधिक प्रार्थना करें, और कि वे परमेश्वर के सामने उसके वचनों का अधिक बार स्वाद लें। यदि परमेश्वर तुम्हें प्रबुद्ध करता है और तुम्हें अपनी इच्छा समझाता है, लेकिन फिर भी तुम उसे अभ्यास में बिलकुल नहीं लाते, तो तुम कुछ भी प्राप्त नहीं करोगे। जब तुम परमेश्वर के वचनों

को अभ्यास में लाते हो, तब भी तुम्हें उससे प्रार्थना करने में सक्षम होना चाहिए, और जब तुम उसके वचनों का स्वाद लेते हो, तो तुम्हें उसके सामने आना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए तथा हताशा या उदासीनता अनुभव करने के किसी भी चिह्न के बिना उसके प्रति विश्वास से भरे होना चाहिए। जो लोग परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में नहीं लाते, वे सभाओं के दौरान तो ऊर्जा से भरे होते हैं, लेकिन घर लौटकर अंधकार में गिर जाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो एक साथ इकट्ठे भी नहीं होना चाहते। इसलिए तुम्हें स्पष्ट रूप से देखना चाहिए कि वह कौन-सा कर्तव्य है, जिसे लोगों को पूरा करना चाहिए। हो सकता है कि तुम न जानते हो कि परमेश्वर की इच्छा वास्तव में क्या है, लेकिन तुम अपना कर्तव्य कर सकते हो, जब तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए तब तुम प्रार्थना कर सकते हो, जब तुम्हें सत्य को अभ्यास में लाना चाहिए तब तुम उसे अभ्यास में ला सकते हो, और तुम वह कर सकते हो जो लोगों को करना चाहिए। तुम अपनी मूल दृष्टि बनाए रख सकते हो। इस तरह, तुम परमेश्वर के कार्य के अगले चरण को स्वीकार करने में अधिक सक्षम होगे। जब परमेश्वर छिपे तरीके से कार्य करता है, तब यदि तुम तलाश नहीं करते, तो यह एक समस्या है। जब वह सभाओं के दौरान बोलता और उपदेश देता है, तो तुम उत्साह से सुनते हो, लेकिन जब वह नहीं बोलता, तो तुममें ऊर्जा की कमी हो जाती है और तुम पीछे हट जाते हो। ऐसा किस तरह का व्यक्ति करता है? वह ऐसा व्यक्ति होता है, जो सिर्फ झुंड के पीछे चलता है। उसके पास कोई उद्देश्य नहीं होता, कोई गवाही नहीं होती, और कोई दर्शन नहीं होता! ज्यादातर लोग ऐसे ही होते हैं। यदि तुम इस तरह से जारी रखते हो, तो एक दिन जब तुम पर कोई महान परीक्षण आएगा, तो तुम्हें सजा भोगनी पड़ जाएगी। परमेश्वर द्वारा लोगों को पूर्ण बनाने की प्रक्रिया में एक दृष्टिकोण का होना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि तुम परमेश्वर के कार्य के एक कदम पर भी शक नहीं करते, यदि तुम मनुष्य का कर्तव्य पूरा करते हो, तुम ईमानदारी के साथ उसे बनाए रखते हो जिसका परमेश्वर ने तुमसे अभ्यास करवाया है, अर्थात् तुम्हें परमेश्वर के उपदेश याद हैं, और इस बात की परवाह किए बिना कि वह वर्तमान में क्या करता है, तुम उसके उपदेशों को भूलते नहीं हो, यदि उसके कार्य के बारे में तुम्हें कोई संदेह नहीं है, तुम अपना दृष्टिकोण कायम रखते हो, अपनी गवाही बनाए रखते हो, और मार्ग के हर चरण में विजय प्राप्त करते हो, तो अंत में तुम परमेश्वर द्वारा पूर्ण कर दिए जाओगे और एक विजेता बना दिए जाओगे। यदि तुम परमेश्वर के परीक्षणों के हर चरण में दृढ़तापूर्वक खड़े रहने में सक्षम हो, और तुम अभी भी बिलकुल अंत तक दृढ़तापूर्वक खड़े रह सकते हो, तो तुम एक विजेता हो, तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जिसे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया गया है। यदि तुम अपने

वर्तमान परीक्षणों में दृढ़तापूर्वक खड़े नहीं रह सकते, तो भविष्य में यह और भी अधिक मुश्किल हो जाएगा। यदि तुम केवल मामूली पीड़ा से ही गुजरते हो और सत्य का अनुसरण नहीं करते, तो अंततः तुम्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। तुम खाली हाथ रह जाओगे। कुछ लोग जब यह देखते हैं कि परमेश्वर बोल नहीं रहा, तो अपना प्रयास छोड़ देते हैं, और उनका दिल टूट जाता है। क्या ऐसा व्यक्ति मूर्ख नहीं है? इस तरह के लोगों में कोई वास्तविकता नहीं होती। जब परमेश्वर बोल रहा होता है, तो वे हमेशा बाहर से व्यस्त और उत्साही दिखते हुए, भाग-दौड़ करते रहते हैं, लेकिन अब जबकि वह बोल नहीं रहा, तो वे तलाश करना बंद कर देते हैं। इस तरह के व्यक्ति का कोई भविष्य नहीं है। शुद्धिकरण के दौरान, तुम्हें सकारात्मक दृष्टिकोण से प्रवेश करना चाहिए और जो सबक सीखने चाहिए, उन्हें सीखना चाहिए; जब तुम परमेश्वर से प्रार्थना करते हो और उसके वचन पढ़ते हो, तो तुम्हें अपनी स्वयं की स्थिति की इससे तुलना करनी चाहिए, अपनी कमियों का पता लगाना चाहिए और जानना चाहिए कि तुम्हारे पास सीखने के लिए अभी भी बहुत-से सबक हैं। शुद्धिकरण से गुज़रने पर जितना अधिक ईमानदारी से तुम तलाश करोगे, उतना ही अधिक तुम स्वयं को अपर्याप्त पाओगे। जब तुम शुद्धिकरण का सामना कर रहे होते हो, तो कई मुद्दे तुम्हारे सामने आते हैं; तुम उन्हें स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते, तुम शिकायत करते हो, तुम अपने देह-सुख को प्रकट करते हो—केवल इसी तरह से तुम पता लगा सकते हो कि तुम्हारे भीतर बहुत अधिक भ्रष्ट स्वभाव हैं।

लोगों में क्षमता का अभाव है और वे परमेश्वर के मानकों से बहुत छोटे पड़ते हैं, उन्हें भविष्य में इस रास्ते पर चलने के लिए आत्मविश्वास की और अधिक आवश्यकता हो सकती है। अंत के दिनों में परमेश्वर के कार्य के लिए असाधारण आत्मविश्वास की आवश्यकता है, अय्यूब से भी अधिक आत्मविश्वास की। आत्मविश्वास के बिना लोग अनुभव प्राप्त करते रहने में सक्षम नहीं होंगे और न ही वे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने में सक्षम होंगे। जब बड़े परीक्षणों का दिन आएगा, तो कई लोग कलीसियाओं को छोड़ देंगे—कुछ यहाँ, कुछ वहाँ। कुछ ऐसे लोग होंगे, जो पिछले दिनों में अपनी खोज में काफी अच्छा कर रहे थे और यह स्पष्ट नहीं होगा कि वे अब विश्वास क्यों नहीं करते। बहुत-सी चीजें होंगी, जिन्हें तुम नहीं समझ पाओगे, और परमेश्वर कोई चिह्न या चमत्कार प्रकट नहीं करेगा, न कुछ अलौकिक ही करेगा। यह इस बात को देखने के लिए है कि क्या तुम दृढ़ खड़े रह सकते हो—परमेश्वर लोगों को शुद्ध करने के लिए तथ्यों का उपयोग करता है। तुमने अभी तक बहुत ज्यादा कष्ट नहीं भोगे हैं। भविष्य में जब बड़े परीक्षण आएँगे, तो कुछ जगहों पर कलीसिया में से हर एक व्यक्ति चला जाएगा, और जिन लोगों के साथ तुम्हारा अच्छा संबंध

रहा था, वे छोड़ जाएँगे और अपना विश्वास त्याग देंगे। क्या तुम तब मजबूती से खड़े रह पाओगे? अभी तक तुमने जिन परीक्षणों का सामना किया है, वे मामूली परीक्षण रहे हैं, और तुम शायद उनका मुश्किल से सामना कर पाए हो। इस चरण में केवल वचनों के माध्यम से शुद्धिकरण और पूर्ण बनाया जाना शामिल है। अगले चरण में, तुम्हें शुद्ध करने के लिए तुम पर तथ्य आएँगे, और तब तुम संकट के बीच में होगे। एक बार जब यह वास्तव में गंभीर हो जाएगा, तो परमेश्वर तुम्हें जल्दी करने और छोड़ने की सलाह देगा, और धार्मिक लोग तुम्हें अपने साथ चलने के लिए ललचाने का प्रयास करेंगे। यह, यह देखने के लिए है कि क्या तुम मार्ग पर चलते रह सकते हो, और ये सब चीज़ें परीक्षण हैं। वर्तमान परीक्षण मामूली हैं, लेकिन एक दिन आएगा, जब कुछ घर ऐसे होंगे, जहाँ माता-पिता अब और विश्वास नहीं करेंगे और कुछ घर ऐसे होंगे, जहाँ बच्चे अब और विश्वास नहीं करेंगे। क्या तुम जारी रख पाओगे? जितना आगे तुम जाओगे, तुम्हारे परीक्षण उतने बड़े होते जाएँगे। परमेश्वर लोगों की आवश्यकताओं और उनकी कद-काठी के अनुसार उन्हें शुद्ध करने का अपना कार्य करता है। परमेश्वर द्वारा मनुष्य को पूर्ण बनाने के चरण के दौरान यह असंभव है कि लोगों की संख्या बढ़ती रहेगी—वह केवल कम होगी। केवल इन्हीं शुद्धिकरणों के माध्यम से लोगों को पूर्ण बनाया जा सकता है। निपटा जाना, अनुशासित किया जाना, परीक्षण किया जाना, ताड़ना दिया जाना, श्राप दिया जाना—क्या तुम यह सब सहन कर सकते हो? जब तुम किसी ऐसी कलीसिया को देखते हो, जो विशेष रूप से अच्छी स्थिति में है, जिसमें बहनें और भाई सभी महान ऊर्जा के साथ खोज करते हैं, तो तुम स्वयं को उत्साहित महसूस करते हो। जब वह दिन आता है कि वे सब चले गए होते हैं, उनमें से कुछ अब और विश्वास नहीं करते, कुछ व्यवसाय करने या विवाह करने के लिए चले गए होते हैं और कुछ धर्म में शामिल हो गए होते हैं, तब भी क्या तुम मजबूती से खड़े रह पाओगे? क्या तुम अंदर से अप्रभावित रह पाओगे? परमेश्वर द्वारा मनुष्य को पूर्ण बनाना इतनी आसान बात नहीं है! वह लोगों को शुद्ध करने के लिए कई चीजों का उपयोग करता है। लोग इन्हें तरीकों के रूप में देखते हैं, लेकिन परमेश्वर के मूल इरादे में ये तरीके बिलकुल भी नहीं हैं, बल्कि तथ्य हैं। अंत में, जब वह लोगों को एक निश्चित बिंदु तक शुद्ध कर लेगा और उनमें कोई शिकायतें नहीं रहेंगी, तो उसके कार्य का यह चरण पूरा हो जाएगा। पवित्र आत्मा का महान कार्य तुम्हें पूर्ण बनाना है, और जब वह कार्य नहीं करता और स्वयं को छिपाता है, तो यह और भी ज्यादा तुम्हें पूर्ण बनाने के उद्देश्य से होता है, और विशेष रूप से इस तरह यह देखा जा सकता है कि क्या लोगों में परमेश्वर के लिए प्यार है, क्या उनका परमेश्वर में सच्चा विश्वास है। जब परमेश्वर स्पष्ट रूप से

बोलता है, तो तुम्हें खोज करने की कोई आवश्यकता नहीं होती; केवल जब वह छिपा होता है, तभी तुम्हें खोजने और अपना रास्ता महसूस करने की आवश्यकता होती है। तुम्हें एक सृजित प्राणी का कर्तव्य पूरा करने में सक्षम होना चाहिए, और चाहे तुम्हारा भावी परिणाम और तुम्हारी मंजिल कुछ भी हो, तुम्हें अपने आजीवन ज्ञान और परमेश्वर के प्रति प्रेम का अनुसरण कर पाने में सक्षम होना चाहिए, और चाहे परमेश्वर तुम्हारे साथ कैसा भी व्यवहार करे, तुम्हें शिकायत करने से बचने में सक्षम होना चाहिए। लोगों के भीतर पवित्र आत्मा के कार्य करने की एक शर्त है। उनमें प्यास होनी चाहिए और उन्हें खोज करनी चाहिए तथा उन्हें परमेश्वर के कार्यकलापों के बारे में आधे-अधूरे मन वाले या संशययुक्त नहीं होना चाहिए, और उन्हें हर समय अपना कर्तव्य निभाने में सक्षम होना चाहिए; केवल इसी तरह से वे पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण में मानवजाति से जो अपेक्षित है, वह है आसाधारण आत्मविश्वास और खोजने के लिए परमेश्वर के सामने आना—केवल अनुभव के माध्यम से ही लोग यह पता कर सकते हैं कि परमेश्वर कितना प्यारा है और पवित्र आत्मा लोगों में कैसे कार्य करता है। यदि तुम अनुभव नहीं करते, यदि तुम उसके माध्यम से अपना रास्ता महसूस नहीं करते, यदि तुम तलाश नहीं करते, तो तुम्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा। तुम्हें अपने अनुभवों के माध्यम से अपना रास्ता महसूस करना चाहिए, और केवल अपने अनुभवों के माध्यम से ही तुम परमेश्वर के कार्यों को देख सकते हो और यह पहचान सकते हो कि वह कितना चमत्कारी और अथाह है।

क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो जीवित हो उठा है?

जब तुम अपने भ्रष्ट स्वभाव को छोड़कर सामान्य मनुष्यत्व का जीवन जीना प्राप्त कर लोगे, तभी तुम परिपूर्ण किए जाओगे। हालाँकि तुम कोई भविष्यवाणी या कोई रहस्य नहीं बता पाओगे, लेकिन तुम एक मनुष्य के रूप में जीवन जी कर, मानवीय छवि प्रकट करोगे। परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की, लेकिन शैतान ने मनुष्य को इस हद तक भ्रष्ट कर दिया कि मनुष्य को "मृत मनुष्य" बना दिया। लेकिन बदलने के बाद, तुम इन "मृत मनुष्यों" जैसे नहीं रह जाओगे। परमेश्वर के वचन लोगों की आत्मा में नई जान डाल देते हैं और उनका पुनर्जन्म हो जाता है, जब लोगों की आत्मा नया जन्म ले लेगी तो वे जीवित हो उठेंगे। जब मैं "मृत मनुष्य" की बात करता हूँ तो मैं उन शवों की बात करता हूँ जिनमें आत्मा नहीं होती, उन लोगों की बात करता हूँ जिनकी आत्मा मर चुकी है। जब लोगों की आत्मा फिर से जागती है, तो वे पुनर्जीवित हो

उठते हैं। जिन संतों की बात पहले की गई है, ये वे लोग हैं जो जीवित हो उठे हैं, जो शैतान के अधिकार में थे परंतु उन्होंने शैतान को हरा दिया है। चीन के चुने हुए लोगों ने बड़े लाल अजगर के ऐसे क्रूर तथा अमानवीय अत्याचार व धोखेबाजी झेली है, जिसने उन्हें मानसिक रूप से तोड़ कर रख दिया, उनमें जीने का थोड़ा भी साहस नहीं छोड़ा। अतः आत्मा की जागरूकता का आरंभ उनके सार से होना चाहिए: उनकी आत्मा को, उनके सार में, थोड़ा-थोड़ा करके जगाया जाना चाहिए। जिस दिन वे जीवित हो उठेंगे, तब कोई रूकावट न रहेगी और सब-कुछ सहजता से आगे बढ़ेगा। फिलहाल यह संभव नहीं है। अधिकतर लोगों का जीवन जीने का ढंग, बहुत-सी प्राणघाती भावनाएँ उत्पन्न करता है; वे मृत्यु के प्रभामंडल में लिपटे होते हैं, और उनमें बहुत-सी कमियां होती हैं। कुछ लोगों के शब्दों में मृत्यु समायी होती है, उनके कार्यों में मृत्यु समायी होती है, और उनके पूरे रहन-सहन में मृत्यु समायी होती है। अगर आज लोग सार्वजनिक रूप से परमेश्वर की गवाही दें तो वे इस कार्य में असफल हो जाएंगे क्योंकि उनका अभी भी पूर्णतः जीवित हो उठना शेष है और तुम लोगों के मध्य बहुत से मृतक हैं। आज कुछ लोग पूछते हैं कि परमेश्वर कुछ संकेत और चमत्कार क्यों नहीं दिखाता ताकि वह अन्यजाति राष्ट्रों में अपना कार्य शीघ्र फैला सके। मृतक परमेश्वर की गवाही नहीं दे सकते; केवल जीवित ही दे सकते हैं; परंतु अधिकांश लोग आज "मृत मनुष्य" हैं, बहुत से लोग मृत्यु के आवरण में जी रहे हैं, वे शैतान के प्रभाव में रहते हैं, और विजय पाने में असमर्थ हैं। जब बात ऐसी है तो फिर वे परमेश्वर के लिए गवाही कैसे दे सकते हैं? वे सुसमाचार के कार्य को कैसे फैला सकते हैं?

अंधकार के प्रभाव में रहने वाले लोग मृत्यु के साए में रहते हैं, वे शैतान के कब्ज़े में होते हैं। परमेश्वर द्वारा बचाए जाने और उसके द्वारा न्याय व ताड़ना पाए बगैर लोग मृत्यु के प्रभाव से नहीं बच सकते; वे जीवित नहीं बन सकते। ये "मृत मनुष्य" परमेश्वर के लिए गवाही नहीं दे सकते, ना ही वे परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जा सकते हैं, वे परमेश्वर के राज्य में तो प्रवेश कर ही नहीं सकते। परमेश्वर को जीवित लोगों की गवाही चाहिए, मृतकों की नहीं, वो जीवितों से अपने लिए कार्य करने को कहता है, न कि मृतकों से। "मृतक" वे हैं जो परमेश्वर का विरोध और उससे विद्रोह करते हैं, ये वे लोग हैं जिनकी आत्मा संवेदन-शून्य हो चुकी है और जो परमेश्वर के वचन नहीं समझते; ये वे लोग हैं जो सत्य का अभ्यास नहीं करते और परमेश्वर के प्रति ज़रा भी निष्ठा नहीं रखते, ये वे लोग हैं जो शैतान के अधिकार-क्षेत्र में रहते हैं और शैतान द्वारा शोषित हैं। मृतक सत्य के विरुद्ध खड़े होकर, परमेश्वर का विरोध और नीचता करते हैं, घिनौना,

दुर्भावनापूर्ण, पाशविक, धोखेबाजी और कपट का व्यवहार कर स्वयं को प्रदर्शित करते हैं। अगर ऐसे लोग परमेश्वर का वचन खाते और पीते भी हैं, तो भी वे परमेश्वर के वचनों को जीने में समर्थ नहीं होते; वे जीवित तो हैं, परंतु वे चलती-फिरती, सांस लेने वाली लाशें भर हैं। मृतक परमेश्वर को संतुष्ट करने में पूर्णतः असमर्थ होते हैं, पूर्ण रूप से उसके प्रति आज्ञाकारी होने की तो बात ही दूर है। वे केवल उसे धोखा दे सकते हैं, उसकी निंदा कर सकते हैं, उससे कपट कर सकते हैं और जैसा जीवन वे जीते हैं उससे उनकी शैतानी प्रकृति प्रकट होती है। अगर लोग जीवित प्राणी बनना चाहते हैं, परमेश्वर के गवाह बनना चाहते हैं, परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करना चाहते हैं, तो उन्हें परमेश्वर का उद्धार स्वीकार करना चाहिए; उन्हें आनंदपूर्वक उसके न्याय व ताड़ना के प्रति समर्पित होना चाहिए, आनंदपूर्वक परमेश्वर की काट-छाँट और निपटारे को स्वीकार करना चाहिए। तभी वे परमेश्वर द्वारा अपेक्षित तमाम सत्य को अपने आचरण में ला सकेंगे, तभी वे परमेश्वर के उद्धार को पा सकेंगे और सचमुच जीवित प्राणी बन सकेंगे। जो जीवित हैं वे परमेश्वर द्वारा बचाए जाते हैं; वे परमेश्वर द्वारा न्याय व ताड़ना का सामना कर चुके होते हैं, वे स्वयं को समर्पित करने और आनंदपूर्वक अपने प्राण परमेश्वर के लिए न्योछावर करने को तत्पर रहते हैं और वे प्रसन्नता से अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर को अर्पित कर देते हैं। जब जीवित जन परमेश्वर की गवाही देते हैं, तभी शैतान शर्मिन्दा हो सकता है। केवल जीवित ही परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार कर सकते हैं, केवल जीवित ही परमेश्वर के हृदय के अनुसार होते हैं और केवल जीवित ही वास्तविक जन हैं। पहले परमेश्वर द्वारा बनाया गया मनुष्य जीवित था, परंतु शैतान की भ्रष्टता के कारण मनुष्य मृत्यु के साए में रहता है, शैतान के प्रभाव में रहता है और इसलिए जो लोग आत्मा मृत हो चुके हैं जिनमें आत्मा नहीं है, वे ऐसे शत्रु बन गए हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं, वे शैतान के हथियार बन गए हैं और वे शैतान के कैदी बन गए हैं। परमेश्वर ने जिन जीवित मनुष्यों की रचना की थी, वे मृत लोग बन गए हैं, इसलिए परमेश्वर ने अपने गवाह खो दिये हैं और जिस मानवजाति को उसने बनाया था, एकमात्र चीज़ जिसमें उसकी सांसे थीं, उसने उसे खो दिया है। अगर परमेश्वर को अपनी गवाही और उन्हें जिसे उसने अपने हाथों से बनाया, जो अब शैतान द्वारा कैद कर लिए गए हैं, वापस लेना है तो उसे उन्हें पुनर्जीवित करना होगा जिससे वे जीवित प्राणी बन जाएँ, उसे उन्हें वापस लाना होगा ताकि वे उसके प्रकाश में जी सकें। मृत वे लोग हैं जिनमें आत्मा नहीं होती, जो चरम सीमा तक सुन्न होकर परमेश्वर-विरोधी हो गए हैं। मुख्यतः, सबसे आगे वही लोग होते हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते। इन लोगों का परमेश्वर की आज्ञा मानने का ज़रा-भी इरादा नहीं होता, वे केवल

उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं, इन में थोड़ी भी निष्ठा नहीं होती। जीवित वे लोग हैं जिनकी आत्मा ने नया जन्म पाया है, जो परमेश्वर की आज्ञा मानना जानते हैं और जो परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होते हैं। इनमें सत्य और गवाही होती है, और यही लोग परमेश्वर को अपने घर में अच्छे लगते हैं। परमेश्वर उन्हें बचाता है जो जीवित हो सकते हैं, जो परमेश्वर का उद्धार देख सकते हैं, जो परमेश्वर के प्रति निष्ठावान हो सकते हैं और जो परमेश्वर को खोजने के इच्छुक हैं। परमेश्वर उन्हें बचाता है जो परमेश्वर के देहधारण में और उसके प्रकटन में विश्वास करते हैं। कुछ लोग जीवित हो पाते हैं, कुछ नहीं; यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनका स्वभाव बचाया जा सकता है या नहीं। बहुत से लोगों ने परमेश्वर के अनेक वचन सुने हैं परंतु वे उसकी इच्छा को नहीं समझते, वे अब भी उन्हें अपने आचरण में ला पाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे लोग सत्य को जीने में असमर्थ होते हैं और जानबूझकर परमेश्वर के कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं। वे परमेश्वर के लिए कोई भी कार्य नहीं कर सकते, वे उसे कुछ भी अर्पण नहीं कर सकते, वे लोग गुप्त रूप से कलीसिया के पैसे भी खर्च करते और मुफ्त में परमेश्वर के घर में खाते हैं। ये लोग मरे हुए लोग हैं और बचाए नहीं जाएंगे। परमेश्वर उन लोगों को बचाता है जो उसके लिए कार्यरत हैं, परंतु उनमें से कुछ लोग परमेश्वर का उद्धार ग्रहण नहीं कर सकते; कुछ ही लोग उसका उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि ज़्यादातर लोगों को बहुत गहराई तक भ्रष्ट कर दिया गया है और वे मृत हो चुके हैं, उनका उद्धार नहीं हो सकता; वे पूर्णतः शैतान द्वारा शोषित हो चुके हैं और स्वभाव से बहुत दुर्भावनापूर्ण हैं। ये अल्पसंख्यक लोग भी पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते। ये वो लोग नहीं हैं जो आरंभ से ही परमेश्वर के प्रति पूर्णतः निष्ठावान रहे हैं, या जिनमें आरंभ से ही परमेश्वर के प्रति परम प्रेम रहा है; बल्कि ये लोग परमेश्वर के प्रति उसके विजय कार्यों के कारण आज्ञाकारी बने हैं, ये लोग परमेश्वर को उसके उत्कृष्ट प्रेम के कारण देखते हैं, उनके स्वभाव में परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के कारण परिवर्तन होते हैं, और वे परमेश्वर को उसके कार्यों के कारण जानते हैं जो वास्तविक भी है और सामान्य भी। परमेश्वर के इस कार्य के बिना, चाहे ये लोग कितने ही अच्छे क्यों न हों, ये शैतान के ही रहेंगे, ये मृत्यु के ही होंगे, ये मृतक ही रहेंगे। आज यदि ये लोग परमेश्वर का उद्धार प्राप्त कर सकते हैं तो केवल इसलिये कि ये परमेश्वर से सहयोग करने की इच्छा रखते हैं।

परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा के कारण, जीवित लोग परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाएंगे और उसके वादों में रहेंगे। परमेश्वर के प्रति उनके विरोध के कारण, मृतकों से परमेश्वर घृणा करेगा, उन्हें तिरस्कृत करेगा, वे उसके दंड और शाप के भागी बनेंगे। ऐसा है परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव जिसे कोई भी मनुष्य

बदल नहीं सकता। अपनी खोज के कारण लोग परमेश्वर की स्वीकृति पाकर प्रकाश में जीते हैं; लोगों को उनकी कुटिल योजनाओं के कारण परमेश्वर शाप देता है और वे सज़ा भोगते हैं; अपने दुष्कर्मों के कारण लोग परमेश्वर से सज़ा पाते हैं, अपनी लालसा और निष्ठा के कारण लोग परमेश्वर का आशीष पाते हैं। परमेश्वर धार्मिक है : वह जीवितों को आशीष और मृतकों को शाप देता है ताकि वे हमेशा मृत्यु में रहें और कभी भी परमेश्वर के प्रकाश में न रहें। परमेश्वर सदा के लिए जीवितों को अपने राज्य में और अपने आशीष में ले लेगा। लेकिन मृतकों पर वो प्रहार करेगा और उन्हें अनंत मृत्यु में ढकेल देगा। वे उसके विनाश की वस्तु हैं और वे हमेशा शैतान के रहेंगे। परमेश्वर किसी के साथ अन्याय नहीं करता। जो सच्चाई से परमेश्वर की खोज करेगा, वो परमेश्वर के घर में रहेगा, जो परमेश्वर की अवज्ञा करेगा और उससे संगत नहीं होगा, वह निश्चित रूप से उसके दंड का भागी होगा। संभवतः तुम देह में परमेश्वर के कार्यों से अनभिज्ञ हो, लेकिन एक दिन परमेश्वर का देह सीधे तौर पर इंसान के अंत की व्यवस्था नहीं करेगा; बल्कि उसका आत्मा मनुष्य का गंतव्य निश्चित करेगा। उस समय लोग यह जानेंगे कि परमेश्वर का देह और आत्मा एक ही हैं, उसका देह गलती नहीं कर सकता और उसका आत्मा तो बिल्कुल ही गलती नहीं कर सकता। अंततः वह निश्चित ही अपने राज्य में उन लोगों को ले लेगा जो जीवित हो उठे हैं; न एक अधिक, न एक कम। जो मृत हैं, जो जीवित नहीं हुए हैं, उन्हें शैतान की माँद में फेंक दिया जाएगा।

एक अपरिवर्तित स्वभाव का होना परमेश्वर के साथ शत्रुता में होना है

भ्रष्टाचार के हजारों सालों बाद, मनुष्य संवेदनहीन और मूर्ख बन गया है; वह एक दुष्ट आत्मा बन गया है जो परमेश्वर का विरोध करती है, इस हद तक कि परमेश्वर के प्रति मनुष्य की विद्रोहशीलता इतिहास की पुस्तकों में दर्ज की गई है, यहाँ तक कि मनुष्य खुद भी अपने विद्रोही आचरण का पूरा लेखा-जोखा देने में असमर्थ है—क्योंकि मनुष्य शैतान के द्वारा पूरी तरह से भ्रष्ट किया जा चुका है, और शैतान के द्वारा रास्ते से भटका दिया गया है इसलिए वह नहीं जानता कि कहाँ जाना है। आज भी, मनुष्य परमेश्वर को धोखा देता है : जब मनुष्य परमेश्वर को देखता है, तो वह उसे धोखा देता है, और जब वह परमेश्वर को नहीं देख पाता, तब भी वह उसे धोखा देता है। कुछ ऐसे भी हैं, जो परमेश्वर के श्रापों और परमेश्वर के कोप का अनुभव करने के बाद भी उसे धोखा देते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि मनुष्य की समझ ने अपने मूल प्रकार्य को खो दिया है, और मनुष्य की अंतरात्मा ने भी, अपने मूल प्रकार्य को खो दिया है। मनुष्य जिसे मैं देखता हूँ, वह

मानव रूप में एक जानवर है, वह एक जहरीला साँप है, मेरी आँखों के सामने वह कितना भी दयनीय बनने की कोशिश करे, मैं उसके प्रति कभी भी दयावान नहीं बनूँगा, क्योंकि मनुष्य को काले और सफेद के बीच, सत्य और असत्य के बीच अन्तर की समझ नहीं है, मनुष्य की समझ बहुत ही सुन्न हो गई है, फिर भी वह आशीषें पाने की कामना करता है; उसकी मानवता बहुत नीच है फिर भी वह एक राजा के प्रभुत्व को पाने की कामना करता है। ऐसी समझ के साथ, वह किसका राजा बन सकता है? ऐसी मानवता के साथ, कैसे वह सिंहासन पर बैठ सकता है? सचमुच में मनुष्य को कोई शर्म नहीं है! वह नीच ढोंगी है! तुम सब जो आशीषें पाने की कामना करते हो, मैं सुझाव देता हूँ कि पहले शीशे में अपना बदसूरत प्रतिबिंब देखो—क्या तू एक राजा बनने लायक है? क्या तेरे पास एक ऐसा चेहरा है जो आशीषें पा सकता है? तेरे स्वभाव में ज़रा-सा भी बदलाव नहीं आया है और तूने किसी भी सत्य का अभ्यास नहीं किया, फिर भी तू एक बेहतरीन कल की कामना करता है। तू अपने आप को भुलावे में रख रहा है! ऐसी गन्दी जगह में जन्म लेकर, मनुष्य समाज के द्वारा बुरी तरह संक्रमित किया गया है, वह सामंती नैतिकता से प्रभावित किया गया है, और उसे "उच्च शिक्षा के संस्थानों" में सिखाया गया है। पिछड़ी सोच, भ्रष्ट नैतिकता, जीवन पर मतलबी दृष्टिकोण, जीने के लिए तिरस्कार-योग्य दर्शन, बिल्कुल बेकार अस्तित्व, पतित जीवन शैली और रिवाज—इन सभी चीज़ों ने मनुष्य के हृदय में गंभीर रूप से घुसपैठ कर ली है, और उसकी अंतरात्मा को बुरी तरह खोखला कर दिया है और उस पर गंभीर प्रहार किया है। फलस्वरूप, मनुष्य परमेश्वर से और अधिक दूर हो गया है, और परमेश्वर का और अधिक विरोधी हो गया है। दिन-प्रतिदिन मनुष्य का स्वभाव और अधिक शातिर बन रहा है, और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो स्वेच्छा से परमेश्वर के लिए कुछ भी त्याग करे, एक भी व्यक्ति नहीं जो स्वेच्छा से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे, इसके अलावा, न ही एक भी व्यक्ति ऐसा है जो स्वेच्छा से परमेश्वर के प्रकटन की खोज करे। इसकी बजाय, इंसान शैतान की प्रभुता में रहकर, कीचड़ की धरती पर बस सुख-सुविधा में लगा रहता है और खुद को देह के भ्रष्टाचार को सौंप देता है। सत्य को सुनने के बाद भी, जो लोग अन्धकार में जीते हैं, इसे अभ्यास में लाने का कोई विचार नहीं करते, यदि वे परमेश्वर के प्रकटन को देख लेते हैं तो इसके बावजूद उसे खोजने की ओर उन्मुख नहीं होते हैं। इतनी पथभ्रष्ट मानवजाति को उद्धार का मौका कैसे मिल सकता है? इतनी पतित मानवजाति प्रकाश में कैसे जी सकती है?

मनुष्य के स्वभाव में बदलाव उसके सार के ज्ञान से शुरू होता है और यह उसकी सोच, प्रकृति, और

मानसिक दृष्टिकोण तक जाना चाहिये—मौलिक परिवर्तन होना चाहिये। केवल इसी ढंग से मनुष्य के स्वभाव में सच्चे बदलाव आ सकेंगे। मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव शैतान के द्वारा उसे जहर दिये जाने और रौंदे जाने के कारण उपजा है, उस प्रबल नुकसान से उपजा है जिसे शैतान ने उसकी सोच, नैतिकता, अंतर्दृष्टि, और समझ को पहुँचाया है। क्योंकि मनुष्य की मौलिक चीजें शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दी गईं हैं, और पूरी तरह से उसके विपरीत हैं जैसा परमेश्वर ने मूल रूप से इंसान को बनाया था, इसी कारण ही मनुष्य परमेश्वर का विरोध करता है और सत्य को नहीं समझता। इस प्रकार, मनुष्य के स्वभाव में बदलाव उसकी सोच, अंतर्दृष्टि और समझ में बदलाव के साथ शुरू होना चाहिए जो परमेश्वर और सत्य के बारे में उसके ज्ञान को बदलेगा। जो लोग अधिकतम गहराई से भ्रष्ट स्थानों में जन्मे हैं वे इस बारे में और अधिक अज्ञानी हैं कि परमेश्वर क्या है, या परमेश्वर में विश्वास करने का क्या अर्थ है। लोग जितने अधिक भ्रष्ट होते हैं, वे उतना ही कम परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में जानते हैं, और उनकी समझ और अंतर्दृष्टि उतनी ही खराब होती है। परमेश्वर के विरुद्ध मनुष्य के विरोध और उसकी विद्रोहशीलता का स्रोत शैतान के द्वारा उसकी भ्रष्टता है। क्योंकि वह शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, इसलिये मनुष्य की अंतरात्मा सुन्न हो गई है, वह अनैतिक हो गया है, उसके विचार पतित हो गए हैं, और उसका मानसिक दृष्टिकोण पिछड़ा हुआ है। शैतान के द्वारा भ्रष्ट होने से पहले, मनुष्य स्वाभाविक रूप से परमेश्वर का अनुसरण करता था और उसके वचनों को सुनने के बाद उनका पालन करता था। उसमें स्वाभाविक रूप से सही समझ और विवेक था, और उचित मानवता थी। शैतान के द्वारा भ्रष्ट होने के बाद, उसकी मूल समझ, विवेक, और मानवता मंद पड़ गई और शैतान के द्वारा दूषित हो गई। इस प्रकार, उसने परमेश्वर के प्रति अपनी आज्ञाकारिता और प्रेम को खो दिया है। मनुष्य की समझ पथ से हट गई है, उसका स्वभाव एक जानवर के समान हो गया है, और परमेश्वर के प्रति उसकी विद्रोहशीलता और भी अधिक बढ़ गई है और गंभीर हो गई है। लेकिन फिर भी, मनुष्य इसे न तो जानता है और न ही पहचानता है, और केवल आँख बंद करके विरोध और विद्रोह करता है। मनुष्य के स्वभाव का प्रकाशन उसकी समझ, अंतर्दृष्टि, और अंत:करण का प्रकटीकरण है; और क्योंकि उसकी समझ और अंतर्दृष्टि सही नहीं हैं, और उसका अंत:करण अत्यंत मंद पड़ गया है, इसलिए उसका स्वभाव परमेश्वर के प्रति विद्रोही है। यदि मनुष्य की समझ और अंतर्दृष्टि बदल नहीं सकती, तो फिर उसके स्वभाव में ऐसा बदलाव होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता, जो परमेश्वर के हृदय के अनुकूल हो। यदि मनुष्य की समझ सही नहीं है, तो वह परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकता और परमेश्वर के द्वारा उपयोग के

लिए अयोग्य है। "उचित समझ" के मायने हैं परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और उसके प्रति निष्ठावान बने रहना, परमेश्वर के लिए तड़पना, परमेश्वर के प्रति पूर्णतया शुद्ध होना, और परमेश्वर के प्रति अंत:करण रखना, यह परमेश्वर के साथ एक हृदय और मन होने को दर्शाता है, जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करने को नहीं। पथभ्रष्ट समझ का होना ऐसा नहीं है। चूँकि मनुष्य शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया था इसलिये, उसने परमेश्वर के बारे में धारणाएँ बना लीं, और परमेश्वर के लिए उसके अंदर निष्ठा या तड़प नहीं रही है, परमेश्वर के प्रति अंतरात्मा की तो बात ही क्या। मनुष्य जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करता और उस पर दोष लगाता है, और इसके अलावा, उसकी पीठ पीछे उस पर अपशब्दों का प्रहार करता है। मनुष्य स्पष्ट रूप से जानता है कि वह परमेश्वर है, फिर भी उसकी पीठ पीछे उस पर दोष लगाता है, परमेश्वर की आज्ञापालन का उसका कोई भी इरादा नहीं होता, वह सिर्फ परमेश्वर से अंधाधुंध माँग और निवेदन करता रहता है। ऐसे लोग—जिनकी समझ पथभ्रष्ट होती है—वे अपने घृणित स्वभाव को जानने या अपनी विद्रोहशीलता पर पछतावा करने के अयोग्य होते हैं। यदि लोग अपने आप को जानने के योग्य हों, तो फिर वे अपनी समझ को थोड़ा-सा पुनः प्राप्त कर चुके हैं; परमेश्वर के प्रति अधिक विद्रोही लोग, जो अपने आप को अब तक नहीं जान पाये, उनमें समझ उतनी ही कम होती है।

मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव के प्रकटीकरण का स्रोत उसका मंद अंत:करण, उसकी दुर्भावनापूर्ण प्रकृति और उसकी विकृत समझ से बढ़कर और किसी में भी नहीं है; यदि मनुष्य का अंत:करण और समझ फिर से उचित होने के योग्य हो पाएँ, तो फिर वह परमेश्वर के सामने उपयोग करने के योग्य बन जायेगा। सिर्फ इसलिए क्योंकि मनुष्य का अंत:करण हमेशा सुन्न रहा है, मनुष्य की समझ जो कभी भी सही नहीं रही, लगातार मंद होती जा रही है, इस कारण ही मनुष्य लगातार परमेश्वर के प्रति विद्रोही बना हुआ है, इस हद तक कि उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया और अंतिम दिनों के देहधारी परमेश्वर को अपने घर में प्रवेश देने से इंकार कर रहा है, और परमेश्वर के देह पर दोष लगाता है, और परमेश्वर के देह को तुच्छ जानता है। यदि मनुष्य में थोड़ी-सी भी मानवता होती, तो वह परमेश्वर के देहधारी शरीर के साथ इतना निर्दयी व्यवहार न करता; यदि उसे थोड़ी-सी भी समझ होती, तो वह देहधारी परमेश्वर के शरीर के साथ अपने व्यवहार में इतना शातिर न होता; यदि उसमें थोड़ा-सा भी विवेक होता, तो वह देहधारी परमेश्वर को इस ढंग से "धन्यवाद" न देता। मनुष्य देहधारी परमेश्वर के युग में जीता है, फिर भी वह इतना अच्छा अवसर दिये जाने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने की बजाय परमेश्वर के आगमन को कोसता है, या परमेश्वर के

देहधारण के तथ्य को पूरी तरह से अनदेखा कर देता है, और प्रकट रूप से इसके विरोध में होता है और इससे ऊबा हुआ है। मनुष्य परमेश्वर के आगमन के प्रति चाहे जैसा भी व्यवहार करे, संक्षेप में, परमेश्वर ने हमेशा धैर्यपूर्वक अपने कार्य को जारी रखा है—भले ही मनुष्य ने परमेश्वर के प्रति थोड़ा-सा भी स्वागत करने वाला रुख़ नहीं रखा है, और अंधाधुंध उससे निवेदन करता रहता है। मनुष्य का स्वभाव अत्यंत शातिर बन गया है, उसकी समझ अत्यंत मंद हो गई है, और उसका अंत:करण दुष्ट के द्वारा पूरी तरह से रौंद दिया गया है और मनुष्य के मौलिक अंत:करण का अस्तित्व बहुत पहले ही समाप्त हो गया था। मनुष्य, मानवजाति को बहुत अधिक जीवन और अनुग्रह प्रदान करने के लिए देहधारी परमेश्वर का न केवल एहसानमंद नहीं है, बल्कि परमेश्वर के द्वारा उसे सत्य दिए जाने पर वह आक्रोश में भी है; ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य को सत्य में थोड़ी-सी भी रूचि नहीं है, इसलिए वह परमेश्वर के प्रति आक्रोश में आ गया है। मनुष्य न सिर्फ देहधारी परमेश्वर के लिए अपनी जान देने के नाकाबिल है, बल्कि वह उससे उपकार हासिल करने की कोशिश भी करता रहता है, और परमेश्वर से ऐसे सूद की माँग करता है जो उससे दर्जनों गुना बड़ी हैं जो मनुष्य ने परमेश्वर को दिया है। ऐसे विवेक और समझ के लोग इसे कोई बड़ी बात नहीं मानते हैं, वे अब भी ऐसा मानते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के लिए स्वयं को बहुत अधिक खर्च किया है, और परमेश्वर ने उन्हें बहुत थोड़ा दिया है। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने मुझे सिर्फ एक कटोरा पानी ही दिया है फिर भी अपने हाथ पसार कर माँग करते हैं कि मैं उन्हें दो कटोरे दूध की कीमत चुकाऊँ या मुझे एक रात के लिए कमरा दिया है परन्तु मुझ से कई रातों के किराए की माँग करते हैं। ऐसी मानवता, और ऐसे विवेक के साथ, कैसे तू अब भी जीवन पाने की कामना कर सकता है? तू कितना घृणित अभागा है! इंसान की इसी प्रकार की मानवता और विवेक के कारण ही देहधारी परमेश्वर पूरी धरती पर भटकता फिरता है, वह किसी भी स्थान पर आश्रय नहीं पाता। जो सचमुच विवेक और मानवता को धारण किये हुए हैं उन्हें देहधारी परमेश्वर की आराधना और सच्चे दिल से सेवा इसलिए नहीं करनी चाहिए कि उसने बहुत कार्य किया है, बल्कि तब भी करनी चाहिए अगर उसने कुछ भी कार्य न किया होता। जो लोग सही समझ के हैं उन्हें यह करना चाहिये और यह मनुष्य का कर्तव्य है। अधिकतर लोग परमेश्वर की सेवा करने के लिए शर्तों की बात भी करते हैं : वे परवाह नहीं करते कि वह परमेश्वर है या मनुष्य है, वे सिर्फ अपनी शर्तों की ही बात करते हैं, और सिर्फ अपनी ही इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं। जब तुम लोग मेरे लिए खाना पकाते हो, तो तुम सेवा शुल्क की माँग करते हो, जब तुम लोग मेरे लिए दौड़ते हो, तो तुम लोग

मुझसे दौड़ने का शुल्क माँगते हो, जब तुम लोग मेरे लिए काम करते हो तो काम करने का शुल्क माँगते हो, जब तुम लोग मेरे कपड़े धोते हो तो कपड़े धोने का शुल्क माँगते हो, जब तुम कलीसिया के लिए कुछ करते हो तो स्वास्थ्यलाभ की लागत माँगते हो, जब तुम लोग बोलते हो तो तुम वक्ता का शुल्क माँगते हो, जब तुम लोग पुस्तकें बाँटते हो तो तुम लोग वितरण शुल्क माँगते हो, और जब लिखते हो तो लिखने का शुल्क माँगते हो। जिनके साथ मैं निपट चुका हूँ वे मुझ से मुआवजा तक माँगते हैं, जबकि वे जो घर भेजे जा चुके हैं अपने नाम के नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति की माँग करते हैं; वे जो अविवाहित हैं दहेज की माँग करते हैं, या अपनी खोई हुई जवानी के लिए मुआवजे की माँग करते हैं, वे जो मुर्गे को काटते हैं वे कसाई के शुल्क की माँग करते हैं, वे जो खाने को तलते हैं, तलने का शुल्क माँगते हैं, और वे जो सूप बनाते हैं उसके लिए भी भुगतान माँगते हैं...। यह तुम लोगों की ऊँची और शक्तिशाली मानवता है और ये तुम सबके स्नेही विवेक के द्वारा निर्धारित कार्य हैं। तुम लोगों की समझ कहाँ है? तुम लोगों की मानवता कहाँ है? मैं तुम लोगों को बता दूँ! यदि तुम लोग ऐसे ही करते रहोगे, तो मैं तुम सबके मध्य में कार्य करना बंद कर दूँगा। मैं मनुष्य के रूप में जंगली जानवरों के झुंड में कार्य नहीं करूँगा, मैं ऐसे समूह के लोगों के लिए दुःख नहीं सहूँगा जिनका उजला चेहरा जंगली हृदय को छुपाये हुए है, मैं ऐसे जानवरों के झुंड के लिए कष्ट नहीं झेलूँगा जिनके उद्धार की थोड़ी-सी भी संभावना नहीं है। जिस दिन मैं तुम सबकी ओर पीठ कर लूँगा उसी दिन तुम सब मर जाओगे, उस दिन अंधकार तुम सब पर आ जायेगा, और उस दिन तुम सब प्रकाश के द्वारा त्याग दिए जाओगे। मैं तुम लोगों को बता दूँ! मैं कभी भी तुम लोगों जैसे समूह पर दयालु नहीं बनूँगा, एक ऐसा झुंड जो जानवरों से भी बदतर है! मेरे वचनों और कार्यकलापों की कुछ सीमायें हैं, और तुम सबकी मानवता और विवेक जैसे हैं उसके चलते, मैं और कार्य नहीं करूँगा, क्योंकि तुम सबमें विवेक की बहुत कमी है, तुम लोगों ने मुझे बहुत अधिक पीड़ा दी है, और तुम लोगों का घृणित व्यवहार मुझे बहुत अधिक घिन दिलाता है! तुम जैसे लोग जिनमें मानवता और विवेक की इतनी कमी है उन्हें उद्धार का अवसर कभी नहीं मिलेगा; मैं ऐसे बेरहम और एहसान-फरामोश लोगों को कभी भी नहीं बचाऊँगा। जब मेरा दिन आएगा, मैं अनंत काल के लिए अनाज्ञाकारिता की संतानों पर अपनी झुलसाने वाली आग की लपटों को बरसाऊँगा जिन्होंने एक बार मेरे प्रचण्ड कोप को उकसाया था, मैं ऐसे जानवरों पर अपने अनंत दंड को थोप दूंगा जिन्होंने कभी मुझे अपशब्द कहे थे और मुझे त्याग दिया था, मैं अनाज्ञाकारिता के पुत्रों को अपने क्रोध की आग में हमेशा के लिए जलाऊँगा जिन्होंने कभी मेरे साथ खाया था और जो मेरे साथ रहे

थे, परन्तु मुझ में विश्वास नहीं रखा, और मेरा अपमान किया और मुझे धोखा दिया था। मैं उन सब को सज़ा दूँगा जिन्होंने मेरे क्रोध को भड़काया, मैं उन सभी जानवरों पर अपने कोप की सम्पूर्णता को बरसाऊँगा जिन्होंने कभी बराबरी में मेरे बगल में खड़े होने की कामना की थी, फिर भी मेरी आराधना या मेरा आज्ञापालन नहीं किया, मेरी छड़ी जिससे मैं मनुष्य को मारता हूँ, वह उन जानवरों पर टूट पड़ेगी जिन्होंने कभी मेरी देखभाल और जो रहस्य मैंने बोले उनका आनंद लिया था, और जिन्होंने कभी मुझसे भौतिक आनंद लेने की कोशिश की थी। मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति को क्षमा नहीं करूँगा जो मेरा स्थान लेने की कोशिश करते हैं; मैं उन में से किसी को भी नहीं छोड़ूँगा जो मुझ से खाना और कपड़े हथियाने की कोशिश करते हैं। फिलहाल तो, तुम सब नुकसान से बचे हुए हो और मुझसे माँगने में हद से आगे बढ़ जाने के कारण असफल हो जाते हो। जब कोप का दिन आ जायेगा तो तुम मुझ से और अधिक नहीं माँगोगे; उस समय, मैं तुम लोगों को जी भरकर चीजों का "आनंद" लेने दूँगा, मैं तुम सबके चेहरों को मिट्टी में घुसा दूँगा, और तुम सब फिर दोबारा कभी भी उठ नहीं पाओगे! देर-सवेर, मैं तुम सबका यह कर्ज "चुका" दूँगा—और मैं आशा करता हूँ कि तुम सब धीरज से इस दिन के आने की प्रतीक्षा करोगे।

यदि ये घिनौने जीव सचमुच में अपनी असंयमी इच्छाओं को एक तरफ रख सकें और परमेश्वर की ओर वापस जा सकें, तो अभी भी उनके पास उद्धार का अवसर है; यदि मनुष्य के पास ऐसा हृदय है जिसमें सचमुच में परमेश्वर के लिये तड़प है, तो उसे परमेश्वर के द्वारा त्यागा नहीं जायेगा। मनुष्य परमेश्वर को पाने में इसलिए असफल नहीं होता कि परमेश्वर के पास भावना है, या इसलिए कि परमेश्वर मनुष्य के द्वारा प्राप्त होना नहीं चाहता, बल्कि इसलिए कि मनुष्य परमेश्वर को पाना ही नहीं चाहता, और इसलिए क्योंकि मनुष्य परमेश्वर को आवश्यकता की भावना के साथ खोजता ही नहीं। जो सचमुच परमेश्वर को खोजता है वह परमेश्वर के द्वारा श्रापित कैसे किया जा सकता है? जो सही समझ और संवेदनशील विवेक का हो वह परमेश्वर के द्वारा कैसे श्रापित किया जा सकता है? जो सचमुच परमेश्वर की आराधना और सेवा करता है उसे परमेश्वर के कोप की आग से नष्ट कैसे किया जा सकता है? जिसे परमेश्वर की आज्ञा मानने में ख़ुशी मिलती है, उसे परमेश्वर के घर से बाहर कैसे निकाला जा सकता है? जो परमेश्वर को अधिक से अधिक प्रेम करना चाहता है, वह परमेश्वर की सज़ा में कैसे रह सकता है? जो परमेश्वर के लिए सबकुछ त्यागने के लिए तैयार है उसका सब कुछ ले लिया जाए, ये कैसे हो सकता है? मनुष्य परमेश्वर का अनुसरण करने का इच्छुक नहीं है, अपनी सम्पत्ति को परमेश्वर के लिए खर्च करने का इच्छुक नहीं है, और परमेश्वर

के लिए जीवन-भर के प्रयास समर्पित करने के लिए तैयार नहीं है; इसके बजाय कहता है कि परमेश्वर बहुत दूर चला गया है, परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ मनुष्य की धारणाओं के साथ मेल नहीं खाता। ऐसी मानवता के साथ, यद्यपि तुम सब अपने प्रयासों में उदार भी होते तो भी तुम लोग परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त नहीं कर पाओगे, इस तथ्य के बारे में तो क्या कहा जाए कि तुम परमेश्वर को नहीं खोजते हो। क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम सब मानवजाति के दोषपूर्ण उत्पाद हो? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों की मानवता से ज़्यादा नीच और कोई मानवता नहीं है? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों का आदर करने क लिए दूसरे तुम्हें क्या कहकर बुलाते हैं? जो लोग सच में परमेश्वर को प्रेम करते हैं वे तुम लोगों को भेड़िये का पिता, भेड़िये की माता, भेड़िये का पुत्र, और भेड़िये का पोता कह कर बुलाते हैं; तुम सब भेड़िये के वंशज हो, भेड़िये के लोग हो, और तुम लोगों को अपनी पहचान जाननी चाहिए और उसे कभी नहीं भूलना चाहिए। यह न सोचो कि तुम लोग कोई श्रेष्ठ हस्ती हो : तुम सब मानवजाति के मध्य गैर-मनुष्यों का सबसे अधिक क्रूर झुंड हो। क्या तुम्हें इसमें से कुछ नहीं पता? क्या तुम लोगों को पता है कि तुम सबके मध्य में कार्य करने के द्वारा मैंने कितना जोखिम उठाया है? यदि तुम सबकी समझ वापस उचित नहीं हो सकती, और तुम सबका विवेक सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकता, तो फिर तुम सब कभी भी "भेड़िये" की पदवी से मुक्त नहीं हो पाओगे, तुम सब कभी भी श्राप के दिन से बच नहीं पाओगे, अपनी सज़ा के दिन से कभी बच नहीं पाओगे। तुम सब हीन जन्मे थे, एक मूल्यरहित वस्तु। तुम सब प्रकृति से भूखे भेड़ियों का झुंड, मलबे और कचरे का एक ढेर हो, और, तुम सबकी तरह, मैं तुम लोगों के ऊपर एहसान पाने के लिए कार्य नहीं करता, बल्कि इसलिए करता हूँ क्योंकि कार्य की आवश्यकता है। यदि तुम सब इसी ढंग से विद्रोही बने रहोगे, तो मैं अपना कार्य रोक दूँगा, और फिर दोबारा तुम लोगों पर कभी कार्य नहीं करूँगा; बल्कि मैं अपना कार्य दूसरे झुंड पर स्थानांतरित कर दूँगा जो मुझे प्रसन्न करता है, और इस तरह से मैं तुम सबको हमेशा के लिए छोड़ दूँगा, क्योंकि मैं उन पर नजर डालने के लिए तैयार नहीं हूँ जो मेरे साथ शत्रुता रखते हैं। तो फिर, क्या तुम सब मेरे अनुरूप बनने की कामना करते हो, या मेरे विरुद्ध शत्रुता रखने की?

परमेश्वर को न जानने वाले सभी लोग परमेश्वर का विरोध करते हैं

परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य, मनुष्यों में उसका कार्य जो प्रभाव प्राप्त करता है, और मनुष्य के प्रति

परमेश्वर की जो इच्छा है : इन्हीं बातों को हर उस व्यक्ति को समझना चाहिए जो परमेश्वर का अनुसरण करता है। आजकल सभी इंसानों में परमेश्वर के कार्य के ज्ञान का अभाव है। परमेश्वर ने इंसान पर कौन-से कर्म किए हैं, परमेश्वर के समस्त कार्य और सृष्टि की रचना से लेकर वर्तमान समय तक, इंसान के लिए परमेश्वर की क्या इच्छा रही है—इन बातों को इंसान न तो जानता है न ही समझता है। यह अपर्याप्तता न केवल समस्त धार्मिक जगत में देखी जाती है, बल्कि परमेश्वर के सभी विश्वासियों में भी देखी जाती है। जब वह दिन आता है कि तुम वास्तव में परमेश्वर को देखते हो, उसकी बुद्धि को समझते हो; जब तुम परमेश्वर के किए सभी कर्मों को देखते हो और परमेश्वर के स्वरूप को पहचान जाते हो; जब तुम उसकी विपुलता, बुद्धि, चमत्कार और उन तमाम कार्यों को देखते हो जो उसने लोगों पर किए हैं, उस दिन तुम परमेश्वर में अपने विश्वास में सफलता पा लेते हो। जब परमेश्वर को सर्वव्यापी और अत्यधिक विपुल कहा जाता है, तब वह किन मायनों में सर्वव्यापी होता है? और वह किन मायनों में अत्यधिक विपुल होता है? यदि तुम इस बात को नहीं समझते हो, तो तुम परमेश्वर के विश्वासी नहीं माने जा सकते। मैं क्यों कहता हूँ कि धार्मिक जगत के लोग परमेश्वर के विश्वासी नहीं होते, बल्कि कुकर्मी होते हैं, शैतान की ही किस्म के होते हैं? जब मैं कहता हूँ कि वे कुकर्मी होते हैं, तो ऐसा इसलिये कहता हूँ क्योंकि वे परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते, उसकी बुद्धि को नही देख पाते। परमेश्वर कभी भी अपना कार्य उन पर प्रकट नहीं करता। वे अंधे होते हैं; वे परमेश्वर के कर्मों को नहीं देख पाते, परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया है और उन्हें परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा बिल्कुल भी प्राप्त नहीं है, पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त करने की तो बात ही दूर है। जो लोग परमेश्वर के कार्य से वंचित हैं, वे कुकर्मी और परमेश्वर के विरोधी हैं। मैं परमेश्वर के जिस विरोध की बात कहता हूँ, वो उन लोगों के संदर्भ में है जो परमेश्वर को नहीं जानते, जो ज़बान से तो परमेश्वर को स्वीकारते हैं, मगर परमेश्वर को जानते नहीं, जो परमेश्वर का अनुसरण तो करते हैं मगर उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते, और जो परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद तो उठाते हैं मगर उसकी गवाही नहीं दे पाते। परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को या मनुष्य में उसके कार्य को समझे बिना, मनुष्य परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं हो सकता, न ही वह परमेश्वर की गवाही दे सकता है। मनुष्य द्वारा परमेश्वर के विरोध का कारण, एक ओर तो मनुष्य का स्वभाव भ्रष्ट है, दूसरी ओर, परमेश्वर के प्रति अज्ञानता, उन सिद्धांतों की जिनसे परमेश्वर कार्य करता है और मनुष्य के लिए उसकी इच्छा की समझ की कमी है। ये दोनों पहलू मिलकर परमेश्वर के प्रति मनुष्य के प्रतिरोध के इतिहास को बनाते हैं। नौसिखिए विश्वासी परमेश्वर का विरोध करते हैं क्योंकि ऐसा विरोध

उनकी प्रकृति में बसा होता है, जबकि कई वर्षों से विश्वास रखने वाले लोगों में परमेश्वर का विरोध, उनके भ्रष्ट स्वभाव के अलावा, परमेश्वर के प्रति उनकी अज्ञानता का परिणाम है। परमेश्वर के देहधारी बनने से पहले के समय में, क्या किसी मनुष्य ने परमेश्वर का विरोध किया है, यह इस बात से तय होता था कि क्या उसने स्वर्ग में परमेश्वर द्वारा निर्धारित आदेशों का पालन किया है। उदाहरण के लिये, व्यवस्था के युग में, जो कोई यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं करता था, वह परमेश्वर का विरोध माना जाता था; जो कोई यहोवा के प्रसाद की चोरी करता था या यहोवा के कृपापात्रों के विरुद्ध खड़ा होता था, उसे परमेश्वर-विरोधी मानकर पत्थरों से मार डाला जाता था; जो कोई अपने माता-पिता का आदर नहीं करता था, दूसरों को चोट पहुँचाता था या धिक्कारता था, तो उसे व्यवस्था का पालन न करने वाला माना जाता था। और जो लोग यहोवा की व्यवस्था को नहीं मानते थे, उन्हें यहोवा विरोधी माना जाता था। लेकिन अनुग्रह के युग में ऐसा नहीं था, तब जो कोई भी यीशु के विरुद्ध खड़ा होता था, उसे विरोधी माना जाता था, और जो यीशु द्वारा बोले गये वचनों का पालन नहीं करता था, उसे परमेश्वर विरोधी माना जाता था। इस समय, जिस ढंग से परमेश्वर के विरोध को परिभाषित किया गया, वह ज़्यादा सही भी था और ज़्यादा व्यवाहारिक भी। जिस दौरान, परमेश्वर ने देहधारण नहीं किया था, तब कोई इंसान परमेश्वर विरोधी है या नहीं, यह इस बात से तय होता था कि क्या इंसान स्वर्ग के अदृश्य परमेश्वर की आराधना और उसका आदर करता था या नहीं। उस समय परमेश्वर के प्रति विरोध को जिस ढंग से परिभाषित किया गया, वह उतना भी व्यवाहारिक नहीं था क्योंकि तब इंसान परमेश्वर को देख नहीं पाता था, न ही उसे यह पता था कि परमेश्वर की छवि कैसी है, वह कैसे कार्य करता है और कैसे बोलता है। परमेश्वर के बारे में इंसान की कोई धारणा नहीं थी, परमेश्वर के बारे में उसकी एक अस्पष्ट आस्था थी, क्योंकि परमेश्वर अभी तक इंसानों के सामने प्रकट नहीं हुआ था। इसलिए, इंसान ने अपनी कल्पनाओं में कैसे भी परमेश्वर में विश्वास क्यों न किया हो, परमेश्वर ने न तो इंसान की निंदा की, न ही इंसान से अधिक अपेक्षा की, क्योंकि इंसान परमेश्वर को देख नहीं पाता था। परमेश्वर जब देहधारण कर इंसानों के बीच काम करने आता है, तो सभी उसे देखते और उसके वचनों को सुनते हैं, और सभी लोग उन कर्मों को देखते हैं जो परमेश्वर देह रूप में करता है। उस क्षण, इंसान की तमाम धारणाएँ साबुन के झाग बन जाती हैं। जहाँ तक उन लोगों की बात है जिन्होंने परमेश्वर को देहधारण करते हुए देखा है, यदि वे अपनी इच्छा से उसका आज्ञापालन करेंगे, तो उनका तिरस्कार नहीं किया जाएगा, जबकि जो लोग जानबूझकर परमेश्वर के विरुद्ध खड़े होते हैं, वे परमेश्वर का विरोध करने वाले माने जाएँगे।

ऐसे लोग मसीह-विरोधी और शत्रु हैं जो जानबूझकर परमेश्वर के विरोध में खड़े होते हैं। ऐसे लोग जो परमेश्वर के बारे में धारणाएँ रखते हैं, मगर खुशी से उसकी आज्ञा मानते हैं, वे निंदित नहीं किए जाएँगे। परमेश्वर मनुष्य की नीयत और क्रियाकलापों के आधार पर उसे दंडित करता है, उसके विचारों और मत के आधार पर कभी नहीं। यदि वह विचारों और मत के आधार इंसान को दंडित करता, तो कोई भी परमेश्वर के रोषपूर्ण हाथों से बच कर भाग नहीं पाता। जो लोग जानबूझकर देहधारी परमेश्वर के विरोध में खड़े होते हैं, वे उसकी अवज्ञा करने के कारण दण्ड पाएँगे। जो लोग जानबूझकर परमेश्वर के विरोध में खड़े होते हैं, उनका विरोध परमेश्वर के प्रति उनकी धारणाओं से उत्पन्न होता है, जिसके परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के कार्य में व्यवधान पैदा करते हैं। ये लोग जानते-बूझते परमेश्वर के कार्य का विरोध करते हैं और उसे नष्ट करते हैं। परमेश्वर के बारे में न केवल उनकी धारणाएँ होती हैं, बल्कि वे उन कामों में भी लिप्त रहते हैं जो परमेश्वर के कार्य में व्यवधान डालते हैं, और यही कारण है कि इस तरह के लोगों की निंदा की जाएगी। जो लोग जानबूझकर परमेश्वर के कार्य में व्यवधान डालने में लिप्त नहीं होते, उनकी पापियों के समान निंदा नहीं की जाएगी, क्योंकि वे अपनी इच्छा से आज्ञापालन कर पाते हैं और विघ्न एवं व्यवधान उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में लिप्त नहीं होते। ऐसे व्यक्तियों की निंदा नहीं की जाएगी। लेकिन, जब कोई कई वर्षों तक परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लेने के बाद भी परमेश्वर के बारे में कई धारणाएँ मन में रखता है और देहधारी परमेश्वर के कार्य को समझने में असमर्थ रहता है, और अनेक वर्षों के अनुभव के बावजूद, वह परमेश्वर के बारे में धारणाओं से भरा रहता है और उसे जान नहीं पाता, और अगर कितने भी सालों तक उसके कार्य का अनुभव करने के बाद भी वह परमेश्वर के बारे में धारणाओं से भरा रहता है और फिर भो उसे जान नहीं पाता तब वह भले ही व्यवधान उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में लिप्त न हो, लेकिन उसका हृदय परमेश्वर के बारे में धारणाओं से भरा रहता है, और अगर ये धारणाएँ स्पष्ट न भी हों तो, ऐसे लोग किसी भी प्रकार से परमेश्वर के कार्य के उपयोग लायक नहीं होते। वे सुसमाचार का उपदेश देने या परमेश्वर की गवाही देने में असमर्थ होते हैं। ऐसे लोग किसी काम के नहीं होते और मंदबुद्धि होते हैं। क्योंकि वे परमेश्वर को नहीं जानते और परमेश्वर के बारे में अपनी धारणाओं का परित्याग करने में एकदम अक्षम होते हैं, इसलिए वे निंदित किए जाते हैं। ऐसा कहा जा सकता है : नौसिखिए विश्वासियों के लिये परमेश्वर के बारे में धारणाएँ रखना या परमेश्वर के बारे में कुछ नहीं जानना सामान्य बात है, परंतु जिसने वर्षों परमेश्वर में विश्वास किया है और परमेश्वर के कार्य का बहुत अनुभव किया है, उसका ऐसी

धारणाएँ रखे रहना, सामान्य बात नहीं है, और उसे परमेश्वर का ज्ञान न होना तो बिल्कुल भी सामान्य नहीं है। ऐसे लोगों की निंदा करना सामान्य स्थिति नहीं है। ऐसे असामान्य लोग एकदम कचरा हैं; ये ऐसे लोग होते हैं जो परमेश्वर का सबसे अधिक विरोध करते हैं और जिन्होंने व्यर्थ में ही परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद उठाया होता है। ऐसे सभी लोग अंत में मिटा दिए जाएँगे।

जो लोग परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को नहीं समझते, वे परमेश्वर के विरुद्ध खड़े होते हैं, और जो लोग परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य से अवगत होते हैं फिर भी परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयास नहीं करते, वे तो परमेश्वर के और भी बड़े विरोधी होते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो बड़ी-बड़ी कलीसियाओं में दिन-भर बाइबल पढ़ते रहते हैं, फिर भी उनमें से एक भी ऐसा नहीं होता जो परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को समझता हो। उनमें से एक भी ऐसा नहीं होता जो परमेश्वर को जान पाता हो; उनमें से परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप तो एक भी नहीं होता। वे सबके सब निकम्मे और अधम लोग हैं, जिनमें से प्रत्येक परमेश्वर को सिखाने के लिए ऊँचे पायदान पर खड़ा रहता है। वे लोग परमेश्वर के नाम का झंडा उठाकर, जानबूझकर उसका विरोध करते हैं। वे परमेश्वर में विश्वास रखने का दावा करते हैं, फिर भी मनुष्यों का माँस खाते और रक्त पीते हैं। ऐसे सभी मनुष्य शैतान हैं जो मनुष्यों की आत्माओं को निगल जाते हैं, ऐसे मुख्य राक्षस हैं जो जानबूझकर उन्हें विचलित करते हैं जो सही मार्ग पर कदम बढ़ाने का प्रयास करते हैं और ऐसी बाधाएँ हैं जो परमेश्वर को खोजने वालों के मार्ग में रुकावट पैदा करते हैं। वे "मज़बूत देह" वाले दिख सकते हैं, किंतु उसके अनुयायियों को कैसे पता चलेगा कि वे मसीह-विरोधी हैं जो लोगों से परमेश्वर का विरोध करवाते हैं? अनुयायी कैसे जानेंगे कि वे जीवित शैतान हैं जो इंसानी आत्माओं को निगलने को तैयार बैठे हैं? जो लोग परमेश्वर के सामने अपने आपको बड़ा मूल्य देते हैं, वे सबसे अधिक अधम लोग हैं, जबकि जो स्वयं को दीन और विनम्र बनाए रखते हैं, वे सबसे अधिक आदरणीय हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि वे परमेश्वर के कार्य को जानते हैं, और दूसरों के आगे परमेश्वर के कार्य की धूमधाम से उदघोषणा करते हैं, जबकि वे सीधे परमेश्वर को देखते हैं—ऐसे लोग बेहद अज्ञानी होते हैं। ऐसे लोगों में परमेश्वर की गवाही नहीं होती, वे अभिमानी और अत्यंत दंभी होते हैं। परमेश्वर का वास्तविक अनुभव और व्यवहारिक ज्ञान होने के बावजूद, जो लोग ये मानते हैं कि उन्हें परमेश्वर का बहुत थोड़ा-सा ज्ञान है, वे परमेश्वर के सबसे प्रिय लोग होते हैं। ऐसे लोग ही सच में गवाह होते हैं और परमेश्वर के द्वारा पूर्ण बनाए जाने के योग्य होते हैं। जो परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते वे परमेश्वर के विरोधी हैं, जो परमेश्वर की इच्छा को समझते तो हैं मगर सत्य का

अभ्यास नहीं करते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी हैं; जो परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते हैं, फिर भी परमेश्वर के वचनों के सार के विरुद्ध जाते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी हैं; जिनमें देहधारी परमेश्वर के प्रति धारणाएँ हैं और जिनका दिमाग विद्रोह लिप्त रहता है, वे परमेश्वर के विरोधी हैं; जो लोग परमेश्वर की आलोचना करते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी हैं; और जो कोई भी परमेश्वर को जानने या उसकी गवाही देने में असमर्थ है, वो परमेश्वर का विरोधी है। इसलिये मेरा तुम लोगों से आग्रह है : यदि तुम लोगों को सचमुच विश्वास है कि तुम इस मार्ग पर चल सकते हो, तो इस मार्ग पर चलते रहो। लेकिन अगर तुम लोग परमेश्वर के विरोध से परहेज नहीं कर सकते, तो इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, बेहतर है कि तुम लोग यह मार्ग छोड़कर चले जाओ। अन्यथा इस बात की संभावना बहुत ज़्यादा है कि तुम्हारे साथ बुरा हो जाए, क्योंकि तुम लोगों की प्रकृति बहुत ही भ्रष्ट है। तुम लोगों में लेशमात्र भी निष्ठा, आज्ञाकारिता, या ऐसा हृदय नहीं है जिसमें धार्मिकता और सत्य की प्यास हो या परमेश्वर के लिए प्रेम हो। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर के सामने तुम्हारी दशा बेहद खराब है। तुम लोगों को जिन बातों का पालन करना चाहिए उनका पालन नहीं कर पाते, और जो बोलना चाहिए वो तुम बोल नहीं पाते। तुम्हें जिन चीज़ों का अभ्यास करना चाहिए उनका अभ्यास तुम लोग कर नहीं पाए। तुम लोगों को जो कार्य करना चाहिए था, वो तुमने किया नहीं। तुम लोगों में जो निष्ठा, विवेक, आज्ञाकारिता और संकल्पशक्ति होनी चाहिए, वो तुम लोगों में है नहीं। तुम लोगों ने उस तकलीफ़ को नहीं झेला है, जो तुम्हें झेलनी चाहिए, तुम लोगों में वह विश्वास नहीं है, जो होना चाहिए। सीधी-सी बात है, तुम लोग सभी गुणों से रहित हो : क्या तुम लोग इस तरह जीते रहने से शर्मिंदा नहीं हो? मैं तुम लोगों को विश्वास दिलाना चाहूँगा, तुम लोगों के लिए अनंत विश्राम में आँखें बंद कर लेना बेहतर होगा और इस तरह तुम परमेश्वर को तुम लोगों की चिंता करने और कष्ट झेलने से मुक्त कर दोगे। तुम लोग परमेश्वर में विश्वास तो करते हो मगर उसकी इच्छा को नहीं जानते; तुम परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते तो हो, मगर इंसान से परमेश्वर की जो अपेक्षाएँ हैं, उसे पूरा करने में असमर्थ हो। तुम लोग परमेश्वर पर विश्वास तो करते हो मगर परमेश्वर को जानते नहीं, तुम लक्ष्यहीन जीवन जीते हो, न कोई मूल्य है और न ही कोई सार्थकता है। तुम लोग इंसान की तरह जीते तो हो मगर तुम लोगों में विवेक, सत्यनिष्ठा या विश्वसनीयता लेशमात्र भी नहीं है—क्या तुम लोग खुद को अब भी इंसान कह सकते हो? तुम लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हो फिर भी उसे धोखा देते हो; और तो और, तुम लोग परमेश्वर का धन हड़प जाते हो और उसके चढ़ावों को खा जाते हो, फिर भी, परमेश्वर की भावनाओं के प्रति न तो तुम्हारे अंदर कोई

आदर-भाव है, न ही परमेश्वर के प्रति तुम्हारा ज़मीर जागता है। तुम लोग परमेश्वर की अत्यंत मामूली अपेक्षाओं को भी पूरा नहीं कर पाते। क्या फिर भी तुम खुद को इंसान कह सकते हो? तुम परमेश्वर का दिया आहार ग्रहण करते हो, उसकी दी हुई ऑक्सीजन में साँस लेते हो, तुम उसके अनुग्रह का आनंद लेते हो, मगर अंत में, तुम लोगों को परमेश्वर का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं होता है। उल्टे, तुम लोग ऐसे निकम्मे बन गए हो जो परमेश्वर का विरोध करते हैं। क्या तुम लोग एक कुत्ते से भी बदतर जंगली जानवर नहीं हो? क्या जानवरों में कोई ऐसा है जो तुम लोगों से भी अधिक द्वेषपूर्ण हो?

जो पादरी और एल्डर्स ऊँचे-ऊँचे उपदेश-मंचों पर खड़े होकर लोगों को उपदेश देते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी और शैतान के साथी हैं; तुम लोगों में से वे लोग जो उपदेश-मंचों पर खड़े होकर लोगों को उपदेश नहीं देते, परमेश्वर के और भी अधिक विरोधी नहीं हैं? क्या शैतान के साथ तुम लोगों की मिली-भगत और भी ज़्यादा मज़बूत नहीं है? जो लोग परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को नहीं समझते, वे नहीं जानते हैं कि परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप कैसे बनें। निश्चित रूप से, ऐसा तो नहीं हो सकता जो परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को समझते हैं, वे न जानते हों कि परमेश्वर के अनुरूप कैसे बनें। परमेश्वर के कार्य में कभी भी त्रुटि नहीं होती; बल्कि, त्रुटि इंसान के अनुसरण में होती है। क्या वे पतित लोग जो जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करते हैं, पादरियों और एल्डरों से भी अधिक कुटिल और दुष्ट नहीं हैं? बहुत से लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं और उन लोगों में, ऐसे भी हैं जो बहुत से दूसरे तरीकों से परमेश्वर का विरोध करते हैं। जैसे सभी प्रकार के विश्वासी होते हैं, वैसे ही परमेश्वर का विरोध करने वाले भी सभी प्रकार के होते हैं, सब एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। जो लोग परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से नहीं समझते, उनमें से एक को भी नहीं बचाया जा सकता। अतीत में इंसान ने परमेश्वर का कितना भी विरोध किया हो, लेकिन जब इंसान को परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य समझ में आ जाता है, और वो परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयास करता है, तो परमेश्वर उसके पिछले सारे पाप धो देता है। अगर इंसान सत्य की खोज और सत्य का अभ्यास करे, तो परमेश्वर उसके कृत्यों को अपने मन में नहीं रखता। इसके अलावा, इंसान द्वारा सत्य के अभ्यास के आधार पर परमेश्वर उसे सही ठहराता है। यही परमेश्वर की धार्मिकता है। इंसान के परमेश्वर को देखने या उसके कार्य का अनुभव करने से पहले, परमेश्वर के प्रति इंसान का चाहे जो रवैया रहा हो, परमेश्वर उसे अपने मन में नहीं रखता। लेकिन, एक बार जब इंसान परमेश्वर को जान लेता है और उसके कार्य का अनुभव कर लेता है, तो इंसान के सभी कर्म और क्रियाकलाप परमेश्वर द्वारा "ऐतिहासिक

अभिलेख" में लिख लिए जाते हैं, क्योंकि इंसान ने परमेश्वर को देख लिया है और उसके कार्य में जीवन जी लिया है।

जब इंसान वास्तव में परमेश्वर का स्वरूप देख लेता है, वह उसकी सर्वश्रेष्ठता को देख लेता है, और परमेश्वर के कार्य को वास्तव में जान लेता है, और इसके अलावा, जब इंसान का पुराना स्वभाव बदल जाता है, तब इंसान परमेश्वर का विरोध करने वाले अपने विद्रोही स्वभाव को पूरी तरह से दूर कर लेता है। ऐसा कहा जा सकता है कि हर इंसान ने कभी न कभी परमेश्वर का विरोध किया होगा और हर इंसान ने कभी न कभी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया होगा। लेकिन, यदि तुम अपनी खुशी से देहधारी परमेश्वर की आज्ञा मानते हो, और उसके बाद से परमेश्वर के हृदय को अपनी सत्यनिष्ठा द्वारा संतुष्ट करते हो, अपेक्षित सत्य का अभ्यास करते हो, अपेक्षित कर्तव्य का निर्वहन करते हो, और अपेक्षित नियमों को मानते हो, तो तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए अपने विद्रोह को दूर करना चाहते हो, और ऐसे व्यक्ति हो जिसे परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जा सकता है। यदि तुम अपनी गलतियाँ मानने से ढिठाई से इनकार करते हो, और तुम्हारी नीयत पश्चाताप करने की नहीं है, यदि तुम अपने विद्रोही आचरण पर अड़े रहते हो, और परमेश्वर के साथ ज़रा-सा भी सहयोग करने और उसे संतुष्ट करने का भाव नहीं रखते, तब तुम्हारे जैसे दुराग्रही और न सुधरने वाले व्यक्ति को निश्चित रूप से दण्ड दिया जाएगा, और परमेश्वर तुम्हें कभी पूर्ण नहीं बनाएगा। यदि ऐसा है, तो तुम आज परमेश्वर के शत्रु हो और कल भी परमेश्वर के शत्रु रहोगे और उसके बाद के दिनों में भी तुम परमेश्वर के शत्रु बने रहोगे; तुम सदैव परमेश्वर के विरोधी और परमेश्वर के शत्रु रहोगे। ऐसी स्थिति में, परमेश्वर तुम्हें कैसे क्षमा कर सकता है? परमेश्वर का विरोध करना इंसान की प्रकृति है, लेकिन इंसान को महज़ इसलिए जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करने के "रहस्य" को पाने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि अपनी प्रकृति बदलना दुर्गम कार्य है। यदि ऐसी बात है, तो बेहतर होगा, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए तुम चले जाओ, ऐसा न हो कि भविष्य में तुम्हारी ताड़ना अधिक कठोर हो जाए, और तुम्हारी क्रूर प्रकृति उभर आए और उच्छृंखल हो जाए, जब तक कि अंत में परमेश्वर द्वारा तुम्हारे भौतिक शरीर को समाप्त न कर दिया जाए। तुम आशीष पाने के लिए परमेश्वर पर विश्वास करते हो; लेकिन अगर अंत में, तुम पर दुर्भाग्य आ पड़े, तो क्या यह शर्मिंदगी की बात नहीं होगी। मैं तुम लोगों से आग्रह करता हूँ कि बेहतर होगा कि तुम कोई अन्य योजना बनाओ। तुम जो भी करो, वो परमेश्वर में आस्था रखने से बेहतर होगा : यकीनन ऐसा तो नहीं हो सकता कि यही एक मार्ग है। अगर तुमने सत्य की खोज नहीं की तो क्या

तुम जीवित नहीं रहोगे? तुम क्यों इस प्रकार से परमेश्वर के साथ असहमत हो?

कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (II) (नवम्बर 1992 से जून 1993)

कार्य और प्रवेश (1)

जब से लोगों ने परमेश्वर में विश्वास करने के सही मार्ग पर चलना शुरू किया, तब से ऐसी कई चीजें रही हैं, जिनके बारे में वे अस्पष्ट हैं। वे परमेश्वर के कार्य के बारे में, तथा उन्हें कितना कार्य करना चाहिए, इस बारे में पूरे भ्रम में हैं। एक ओर, यह उनके अनुभव में विचलन और प्राप्त करने की उनकी क्षमता की सीमाओं के कारण है; दूसरी ओर, यह इसलिए है कि परमेश्वर का कार्य लोगों को अभी तक इस चरण में नहीं लाया है। इसलिए, हर कोई अधिकांश आध्यात्मिक मामलों में अस्पष्ट है। तुम लोग न केवल इस बारे में अस्पष्ट हो कि तुम्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए; बल्कि तुम परमेश्वर के कार्य के बारे में और भी अधिक अनजान हो। यह सिर्फ़ तुम्हारे भीतर मौजूद कमियों की बात नहीं है : यह धार्मिक जगत के सभी लोगों में आम तौर पर मौजूद एक बड़ा दोष है। इस दोष में ही इसकी कुंजी मौजूद है कि क्यों लोग परमेश्वर को नहीं जानते, और इसलिए यह दोष उन सभी की एक आम कमी है, जो परमेश्वर को खोजते हैं। किसी ने भी परमेश्वर को कभी नहीं जाना, न ही उसका सच्चा चेहरा कभी देखा है। यही कारण है कि परमेश्वर का कार्य इतना कठिन बन जाता है, जितना किसी पहाड़ को हटाना या समुद्र को सुखाना। परमेश्वर के कार्य के लिए बहुत लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान किया है; उसके कार्य के कारण बहुत लोगों को निष्कासित कर दिया गया है; उसके कार्य के कारण बहुत लोगों को मौत के घाट उतरा गया है; बहुत लोग अपनी आँखों में परमेश्वर के लिए प्रेम के आँसू लेकर अन्यायसहते हुए मर गए हैं; बहुतों ने क्रूर और अमानवीय उत्पीड़न भोगा है...। क्या ये त्रासदियाँ लोगों में परमेश्वर के बारे में ज्ञान की कमी के कारण नहीं हुईं? कैसे कोई ब्यक्ति, जो परमेश्वर को नहीं जानता, उसके सम्मुख आने का साहस कर सकता है? कैसे कोई व्यक्ति, जो परमेश्वर पर विश्वास करता है और फिर भी उसे सताता है, उसके सम्मुख आने का साहस कैसे कर सकता है? ये केवल धार्मिक जगत के लोगों की ही कमियाँ नहीं हैं, बल्कि ये तुम लोगों और उन लोगों में आम हैं। लोग परमेश्वर को जाने बिना उस पर विश्वास करते हैं; केवल इसी कारण से वे अपने हृदयों में परमेश्वर को

आदर नहीं देते, और अपने हृदयों में उससे डरते नहीं। यहाँ तक कि ऐसे लोग भी हैं, जो खुल्लमखुल्ला और ढिठाई के साथ वह कार्य करते हैं, जिसकी वे इस धारा में खुद ही कल्पना कर लेते हैं, और परमेश्वर द्वारा आदेशित कार्य को अपनी ही माँगों और असंयमित इच्छाओं के अनुसार करते हैं। बहुत लोग परमेश्वर को बिना आदर दिए अपनी ही इच्छा के अनुसार निरंकुश रूप से कार्य करते हैं। क्या ये उदाहरण लोगों के स्वार्थी हृदयों की सटीक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं? क्या ये उदाहरण लोगों के भीतर प्रचुर मात्रा में मौजूद धोखे को प्रकट नहीं करते? लोग निःसंदेह बहुत बुद्धिमान हो सकते हैं, परंतु कैसे उनके वरदान परमेश्वर के कार्य का स्थान ले सकते हैं? लोग परमेश्वर के दायित्व की परवाह बेशक कर सकते हैं, परंतु वे अत्यधिक स्वार्थपूर्ण ढंग से व्यवहार नहीं कर सकते। क्या लोगों के कार्य वास्तव में ईश्वर-तुल्य हैं? क्या कोई शत-प्रतिशत आश्वस्त हो सकता है? परमेश्वर की गवाही देने के लिए, उसकी महिमा विरासत में पाने के लिए—यह परमेश्वर एक अपवाद प्रस्तुत कर रहा है और लोगों को उन्नत कर रहा है; लोग कैसे योग्य हो सकते हैं? परमेश्वर का कार्य अभी बस शुरू हुआ है, और उसके वचन अभी बोले जाने शुरू ही हुए हैं। इस बिंदु पर, लोग अपने बारे में अच्छा महसूस करते हैं, पर क्या यह केवल अपमान को आमंत्रित करना नहीं है? वे बहुत कम समझते हैं। यहाँ तक कि सर्वाधिक मेधावी सिद्धांतकार, सर्वाधिक वाक्पटु वक्ता भी परमेश्वर की समस्त प्रचुरता का वर्णन नहीं कर सकते, तुम लोगों का तो कहना ही क्या? तुम लोगों को अपना मूल्य स्वर्ग से अधिक निर्धारित नहीं करना चाहिए, बल्कि स्वयं को उन विवेकी लोगों में से किसी से भी कम समझना चाहिए, जो परमेश्वर से प्रेम करने का प्रयास करते हैं। यही मार्ग है, जिसके द्वारा तुम लोग प्रवेश करोगे : स्वयं को अन्य सबसे बहुत छोटा समझना। स्वयं को इतना ऊँचा क्यों समझते हो? स्वयं को इतने ऊँचे स्थान पर क्यों रखते हो? जीवन की लंबी यात्रा में तुम लोगों ने केवल कुछ पहले कदम उठाए हैं। तुम लोग परमेश्वर का सिर्फ हाथ देखते हो, न कि पूरे परमेश्वर को। तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य को और अधिक देखना चाहिए, जिसमें तुम्हें प्रवेश करना है, उसकी और अधिक खोज करनी चाहिए, क्योंकि तुम लोग बहुत कम बदले हो।

जब परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण करता है और उसके स्वभाव को रूपांतरित करता है, तब उसका कार्य कभी नहीं रुकता, क्योंकि मनुष्य में कई तरह की कमियाँ हैं और वह परमेश्वर द्वारा स्थापित मापदंडों पर खरा नहीं उतर पाता। और इसलिए यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर की दृष्टि में तुम लोग हमेशा नवजात शिशु ही रहोगे, जिनमें परमेश्वर को खुश करने वाले तत्त्व बहुत कम हैं, क्योंकि तुम लोग परमेश्वर

के हाथों में सृजित प्राणियों से अधिक कुछ नहीं हो। यदि कोई व्यक्ति आत्मसंतोष में पड़ जाता है, तो क्या परमेश्वर उससे घृणा नहीं करेगा। यह कहना कि तुम लोग आज परमेश्वर को संतुष्ट करने में सक्षम हो, तुम्हारे दैहिक शरीर के सीमित दृष्टिकोण से बोलना है; अगर तुम्हें वास्तव में परमेश्वर से मुकाबला करना होता, तो तुम लोग अखाड़े में हमेशा के लिए हार जाते। मनुष्य की देह ने विजय कभी नहीं जानी। केवल पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा ही मनुष्य के लिए यह संभव है कि उसके पास छुटकारे की विशेषताएँ हों। सच तो यह है कि परमेश्वर द्वारा सृजित असंख्य चीज़ों में से मनुष्य सबसे निम्न है। यद्यपि वह सभी चीज़ों का स्वामी है, फिर भी उनमें से केवल मनुष्य ही है, जो शैतान की धोखेबाजी का शिकार होता है, एकमात्र प्राणी जो उसकी भ्रष्टता के अनगिनत तरीकों का शिकार हो जाता है। मनुष्य की स्वयं पर कभी भी प्रभुता नहीं रही। अधिकतर लोग शैतान के घृणित स्थान में रहते हैं और उसका उपहास सहते हैं; वह उन्हें अनेक प्रकार से तब तक कष्ट देता है जब तक वे केवल आधे ही जीवित बचते हैं, मानव-संसार का हर अन्याय, हर कष्ट सहते हैं। उनके साथ खेलने के बाद शैतान उनकी नियति ख़त्म कर देता है। और इसलिए लोग अपना पूरा जीवन उलझन में गुज़ार देते हैं, कभी भी उन अच्छी चीजों का आनंद नहीं ले पाते, जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार की हैं, बल्कि इसके बजाय शैतान द्वारा क्षति पहुँचाये जाते हुए फटेहाल छोड़ दिए जाते हैं। आज वे इतने निस्तेज और निरुत्साहित हो गए हैं कि उनमें परमेश्वर के कार्य पर ध्यान देने में कोई रुचि ही नहीं है। यदि लोगों में परमेश्वर के कार्य पर ध्यान देने में कोई रुचि नहीं है, तो उनका अनुभव हमेशा खंडित और अधूरा रहने के लिए अभिशप्त होगा, और उनका प्रवेश हमेशा के लिए एक खाली स्थान रहेगा। परमेश्वर के जगत में आने के बाद हजारों वर्षों में ऊँचे आदर्शों वाले कितने ही लोग परमेश्वर द्वारा कितने ही वर्षों तक अपने कार्य के लिए इस्तेमाल किए गए हैं; परंतु उसके कार्य को जानने वाले लोग इतने कम हैं कि लगभग नहीं के बराबर हैं। इस कारण से, अनगिनत लोग उसी समय परमेश्वर का विरोध करने की भूमिका अपना लेते हैं, जब वे उसका कार्य कर रहे होते हैं, क्योंकि, वे उसका कार्य करने की अपेक्षा वास्तव में परमेश्वर द्वारा प्रदत्त स्थिति में मनुष्य का कार्य करते हैं। क्या इसे कार्य कहा जा सकता है? वे अंदर प्रवेश कैसे कर सकते हैं? मनुष्यजाति ने परमेश्वर का अनुग्रह लेकर दफ़न कर दिया है। इस कारण, विगत पीढ़ियों से जो लोग उसका कार्य करते हैं, उनका प्रवेश कम होता है। वे परमेश्वर के कार्य को जानने के बारे में बात ही नहीं करते, क्योंकि वे परमेश्वर की बुद्धि के विषय में बहुत ही कम समझते हैं। यह कहा जा सकता है कि, यद्यपि बहुत लोग हैं जो परमेश्वर की सेवा करते है, फिर भी वे यह देखने में असमर्थ रहे

हैं कि वह कितना महान है, और इसलिए सबने दूसरों से अपनी आराधना करवाने के लिए स्वयं को परमेश्वर बना लिया है।

बहुत वर्षों तक परमेश्वर सृष्टि में छिपा रहा है; उसने धुंध के आवरण के पीछे से कई वसंत और पतझड़ ऋतुओं के माध्यम से देखा है; उसने कई दिनों और रातों तक तीसरे स्वर्ग से नीचे देखा है; वह कई महीनों और वर्षों तक मनुष्यों के बीच में चला है। वह कई ठंडी शीत ऋतुओं तक चुपचाप प्रतीक्षा करता हुआ मनुष्यों के ऊपर बैठा रहा है। एक बार भी कभी उसने अपने आपको किसी के समक्ष प्रकट नहीं किया, न ही कोई आवाज़ की, और वह बिना कोई चिह्न छोड़े चला जाता है और वैसे ही चुपचाप लौट आता है। कौन उसका असली चेहरा जान सकता है? उसने एक बार भी मनुष्य से बात नहीं की, कभी उसे दिखाई नहीं दिया। लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा आदेशित कार्य करना कितना आसान है? उन्हें एहसास ही नहीं है कि उसे जानना सब चीज़ों से ज़्यादा कठिन है। आज परमेश्वर ने मनुष्य से बात की है, परंतु मनुष्य ने उसे कभी नहीं जाना है, क्योंकि जीवन में मनुष्य का प्रवेश बहुत ही सीमित और सतही है। यदि परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो लोग उसके सामने उपस्थित होने के पूर्णतः अयोग्य हैं। उनमें परमेश्वर की बहुत ही कम समझ है और वे उससे बहुत दूर भटक गए हैं। यही नहीं, उनके हृदय, जिनसे वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, बहुत जटिल हैं, और वे अपने हृदयों की गहराई में परमेश्वर की छवि नहीं रखते। परिणामस्वरूप, परमेश्वर का श्रमसाध्य प्रयास और उसका कार्य रेत में दबे सोने के टुकड़ों के समान रोशनी की चमक विकीर्ण नहीं कर सकते। परमेश्वर के लिए इन लोगों की क्षमता, उद्देश्य और दृष्टिकोण परम घृणास्पद हैं। प्राप्त करने की क्षमता में निर्बल, असंवेदनशीलता की हद तक भावनारहित, भ्रष्ट और पतित, अत्यंत चाटुकार, कमज़ोर और इच्छाशक्ति से रहित इन लोगों की अगुआई मवेशियों या घोड़ों की अगुआई की तरह की जानी चाहिए। आत्मा में अपने प्रवेश या परमेश्वर के कार्य में अपने प्रवेश पर वे बिलकुल भी ध्यान नहीं देते, और उनमें सत्य के लिए कष्ट सहने का थोड़ा-सा भी संकल्प नहीं है। इस प्रकार के व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा पूर्ण किया जाना आसान नहीं होगा। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि तुम लोग अपना प्रवेश इस दृष्टिकोण से निर्धारित करो—कि तुम लोग अपने कार्य और अपने प्रवेश के द्वारा परमेश्वर के कार्य को जानने लगो।

कार्य और प्रवेश (2)

तुम लोगों का कार्य और प्रवेश काफ़ी ख़राब है; मनुष्य इसे महत्व नहीं देता कि कार्य कैसे करना है, और जीवन-प्रवेश के बारे में तो और भी अव्यवस्थित है। मनुष्य इन्हें वैसे सबक नहीं मानता, जिनमें उसे प्रवेश करना चाहिए; इसलिए, अपने अनुभव में, वस्तुतः मनुष्य केवल खोखली मृगतृष्णा देखता है। जहाँ तक कार्य का संबंध है, तुम लोगों से बहुत ज्यादा की माँग नहीं की जाती, किंतु, परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाए जाने वाले एक व्यक्ति के रूप में, तुम्हें परमेश्वर के लिए कार्य करने के अपने सबक सीखने चाहिए, ताकि तुम लोग शीघ्र ही परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हो सको। युगों-युगों से, जिन्होंने कार्य किया उन्हें कार्यकर्ता या प्रेरित कहा गया है, जो परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने वाले लोगों की एक छोटी-सी संख्या को दर्शानेवाले शब्द हैं। हालाँकि, जिस कार्य के बारे में मैं आज बोलता हूँ, वह केवल उन कार्यकर्ताओं या प्रेरितों को संदर्भित नहीं करता, बल्कि यह परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने वाले सभी लोगों की ओर निर्देशित है। शायद ऐसे कई लोग हों, जो इसमें बहुत कम रुचि रखते हों, किंतु, प्रवेश के वास्ते, इस मामले से संबंधित सत्य पर चर्चा करना सबसे अच्छा रहेगा।

कार्य के संबंध में, मनुष्य का विश्वास है कि परमेश्वर के लिए इधर-उधर दौड़ना, सभी जगहों पर प्रचार करना और परमेश्वर के लिए स्वयं को खपाना ही कार्य है। यद्यपि यह विश्वास सही है, किंतु यह अत्यधिक एकतरफा है; परमेश्वर इंसान से जो माँगता है, वह परमेश्वर के लिए केवल इधर-उधर दौड़ना ही नहीं है; यह आत्मा के भीतर सेवकाई और पोषण से जुड़ा है। कई भाइयों और बहनों ने इतने वर्षों के अनुभव के बाद भी परमेश्वर के लिए कार्य करने के बारे में कभी नहीं सोचा है, क्योंकि मनुष्य द्वारा कल्पित कार्य परमेश्वर द्वारा की गई माँग के साथ असंगत है। इसलिए, मनुष्य को कार्य के मामले में किसी भी तरह की कोई दिलचस्पी नहीं है, और ठीक इसी कारण से मनुष्य का प्रवेश भी काफ़ी एकतरफा है। तुम सभी लोगों को परमेश्वर के लिए कार्य करने से अपने प्रवेश की शुरुआत करनी चाहिए, ताकि तुम लोग अनुभव के हर पहलू से बेहतर ढंग से गुज़र सको। यही है वह, जिसमें तुम लोगों को प्रवेश करना चाहिए। कार्य परमेश्वर के लिए इधर-उधर दौड़ने को संदर्भित नहीं करता, बल्कि इस बात को संदर्भित करता है कि मनुष्य का जीवन और जिसे वह जीता है, वे परमेश्वर को आनंद देने में सक्षम हैं या नहीं। कार्य परमेश्वर के प्रति गवाही देने और साथ ही मनुष्य के प्रति सेवकाई के लिए मनुष्य द्वारा परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा और परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान के उपयोग को संदर्भित करता है। यह मनुष्य का उत्तरदायित्व है और इसे सभी लोगों को समझना चाहिए। कहा जा सकता है कि तुम लोगों का प्रवेश ही तुम लोगों का कार्य है, और तुम लोग

परमेश्वर के लिए कार्य करने के दौरान प्रवेश करने का प्रयास कर रहे हो। परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने का अर्थ मात्र यह नहीं है कि तुम जानते हो कि उसके वचन को कैसे खाएँ और पीएँ; बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि तुम लोगों को यह जानना चाहिए कि परमेश्वर की गवाही कैसे दें और परमेश्वर की सेवा करने तथा मनुष्य की सेवकाई और आपूर्ति करने में सक्षम कैसे हों। यही कार्य है, और यही तुम लोगों का प्रवेश भी है; इसे ही हर व्यक्ति को संपन्न करना चाहिए। कई लोग हैं, जो केवल परमेश्वर के लिए इधर-उधर दौड़ने, और हर जगह उपदेश देने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, किंतु अपने व्यक्तिगत अनुभव को अनदेखा करते हैं और आध्यात्मिक जीवन में अपने प्रवेश की उपेक्षा करते हैं। यही कारण है कि परमेश्वर की सेवा करने वाले लोग परमेश्वर का विरोध करने वाले बन जाते हैं। कई वर्षों से परमेश्वर की सेवा और मनुष्य की सेवकाई करने वालों ने कार्य करने और उपदेश देने को ही प्रवेश मान लिया है, और किसी ने भी अपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव को महत्वपूर्ण प्रवेश के रूप में नहीं लिया है। इसके बजाय, उन्होंने पवित्र आत्मा के कार्य से प्राप्त प्रबुद्धता को दूसरों को सिखाने के लिए पूँजी के रूप में लिया है। उपदेश देते समय उन पर बहुत ज़िम्मेदारी होती है और वे पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त करते हैं, और इसके माध्यम से वे पवित्र आत्मा की वाणी को प्रकाशित कर रहे हैं। इस समय, जो लोग कार्य करते हैं, वे आत्मसंतोष से भर जाते हैं, मानो पवित्र आत्मा का कार्य उनका व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव बन गया हो; उन्हें लगता है कि उनके द्वारा बोले गए सभी वचन उनके स्वयं के हैं, लेकिन फिर मानो उनका स्वयं का अनुभव उतना स्पष्ट नहीं होता, जितना उन्होंने वर्णन किया होता है। और तो और, बोलने से पहले उन्हें पता भी नहीं होता कि क्या बोलना है, किंतु जब पवित्र आत्मा उनमें कार्य करता है, तो उनके वचन अनवरत रूप से धाराप्रवाह बह निकलते हैं। एक बार जब तुम इस तरह उपदेश दे लेते हो, तो तुम्हें लगता है कि तुम्हारा वास्तविक आध्यात्मिक कद उतना छोटा नहीं है, जितना तुम मानते थे, और उस स्थिति में, जब पवित्र आत्मा तुम्हारे भीतर कई बार कार्य कर लेता है, तो तुम यह निश्चित कर लेते हो कि तुम्हारे पास पहले से ही आध्यात्मिक कद है और ग़लत ढंग से यह मान लेते हो कि पवित्र आत्मा का कार्य तुम्हारा स्वयं का प्रवेश और तुम्हारा स्वयं का अस्तित्व है। जब तुम लगातार इस तरह अनुभव करते हो, तो तुम अपने स्वयं के प्रवेश के बारे में सुस्त हो जाते हो, अनजाने ही आलस्य में फिसल जाते हो, और अपने स्वयं के प्रवेश को महत्व देना बंद कर देते हो। इसलिए, दूसरों की सेवकाई करते समय तुम्हें अपने आध्यात्मिक कद और पवित्र आत्मा के कार्य के बीच स्पष्ट रूप से अंतर करना चाहिए। यह तुम्हारे प्रवेश को बेहतर

तरीके से सुगम बना सकता है और तुम्हारे अनुभव को लाभ पहुँचा सकता है। जब मनुष्य पवित्र आत्मा के कार्य को अपना व्यक्तिगत अनुभव मान लेता है, तो यह भ्रष्टता का स्रोत बन जाता है। इसीलिए मैं कहता हूँ, तुम लोग जो भी कर्तव्य करो, तुम लोगों को अपने प्रवेश को एक महत्वपूर्ण सबक समझना चाहिए।

व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा पूरी करने, परमेश्वर के हृदय के अनुरूप लोगों को उसके सामने लेकर आने, मनुष्य को परमेश्वर के समक्ष लाने, और मनुष्य को पवित्र आत्मा के कार्य और परमेश्वर के मार्गदर्शन से परिचित कराने के लिए कार्य करता है, और इस प्रकार वह परमेश्वर के कार्य के परिणामों को पूरा करता है। इसलिए, यह अनिवार्य है कि तुम लोग कार्य के सार पर पूरी तरह से स्पष्ट रहो। ऐसे व्यक्ति के रूप में, जिसका परमेश्वर द्वारा उपयोग किया जाता है, हर मनुष्य परमेश्वर के लिए कार्य करने के योग्य है, अर्थात्, हर एक के पास पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किए जाने का अवसर है। किंतु एक बात का तुम लोगों को अवश्य एहसास होना चाहिए : जब मनुष्य परमेश्वर द्वारा आदेशित कार्य करता है, तो मनुष्य को परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने का अवसर दिया गया होता है, किंतु मनुष्य द्वारा जो कहा और जाना जाता है, वह पूर्णतः मनुष्य का आध्यात्मिक कद नहीं होता। तुम लोग बस यही कर सकते हो, कि अपने कार्य के दौरान बेहतर ढंग से अपनी कमियों के बारे में जानो, और पवित्र आत्मा से अधिक प्रबुद्धता प्राप्त करो। इस प्रकार, तुम लोग अपने कार्य के दौरान बेहतर प्रवेश प्राप्त करने में सक्षम होगे। यदि मनुष्य परमेश्वर से प्राप्त मार्गदर्शन को अपना स्वयं का प्रवेश और अपने में अंतर्निहित चीज़ समझता है, तो मनुष्य के आध्यात्मिक कद के विकसित होने की कोई संभावना नहीं है। पवित्र आत्मा मनुष्य में जो प्रबुद्धता गढ़ता है, वह तब घटित होता है जब मनुष्य एक सामान्य स्थिति में होता है; ऐसे समय पर, मनुष्य प्रायः स्वयं को प्राप्त होने वाली प्रबुद्धता को अपना वास्तविक अध्यात्मिक कद समझने की ग़लती कर बैठता है, क्योंकि जिस रूप में पवित्र आत्मा प्रबुद्ध करता है, वह अत्यंत सामान्य होता है, और वह मनुष्य के भीतर जो अंतर्निहित है, उसका उपयोग करता है। जब लोग कार्य करते और बोलते हैं, या जब वे प्रार्थना या अपनी आध्यात्मिक भक्ति कर रहे होते हैं, तो एक सत्य अचानक उन पर स्पष्ट हो जाएगा। लेकिन वास्तव में, मनुष्य जो देखता है, वह केवल पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रबुद्धता होती है (स्वाभाविक रूप से यह प्रबुद्धता मनुष्य के सहयोग से जुड़ी है) और वह मनुष्य का सच्चा आध्यात्मिक कद प्रस्तुत नहीं करती। अनुभव की एक अवधि के बाद, जिसमें मनुष्य कुछ कठिनाइयों और परीक्षणों का सामना करता है, ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य का वास्तविक आध्यात्मिक कद प्रत्यक्ष हो जाता है। केवल तभी मनुष्य को पता चलता है कि

मनुष्य का आध्यात्मिक कद बहुत बड़ा नहीं है, और मनुष्य का स्वार्थ, व्यक्तिगत हित और लालच सब उभर आते हैं। केवल इस तरह के अनुभवों के कई चक्रों के बाद ही कई ऐसे लोग, जो अपनी आत्माओं के भीतर जाग गए होते हैं, महसूस करते हैं कि अतीत में जो उन्होंने अनुभव किया था, वह उनकी अपनी वास्तविकता नहीं थी, बल्कि पवित्र आत्मा से प्राप्त एक क्षणिक रोशनी थी, और मनुष्य को केवल यह रोशनी प्राप्त हुई थी। जब पवित्र आत्मा मनुष्य को सत्य को समझने के लिए प्रबुद्ध करता है, तो ऐसा प्रायः स्पष्ट और विशिष्ट तरीके से होता है, यह समझाए बिना कि चीज़ें किस तरह घटित हुई हैं या किस ओर जा रही हैं। अर्थात्, इस प्रकाशन में मनुष्य की कठिनाइयों को शामिल करने के बजाय वह सत्य को सीधे प्रकट करता है। जब मनुष्य प्रवेश की प्रक्रिया में कठिनाइयों का सामना करता है, और फिर पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता को शामिल करता है, तो यह मनुष्य का वास्तविक अनुभव बन जाता है। उदाहरण के लिए, एक अविवाहित बहन ने संगति के दौरान इस प्रकार कहा : "हम महिमा और समृद्धि की चाह नहीं रखते या पति-पत्नी के बीच के प्रेम की खुशी के लिए नहीं ललचाते; हम केवल एक पवित्र और एकनिष्ठ हृदय परमेश्वर को समर्पित करने की अभिलाषा रखते हैं।" उसने आगे कहा : "जब लोग शादी कर लेते हैं, तो बहुत-कुछ है जो उन्हें घेर लेता है, और परमेश्वर के प्रति उनके हृदय का प्यार वास्तविक नहीं रहता। उनका हृदय हमेशा अपने परिवार और अपने जीवन-साथी में ही उलझा रहता है, और इसलिए उनका आंतरिक जगत और अधिक जटिल हो जाता है...।" जब वह बोल रही थी, तो ऐसा लगता था मानो उसके मुख से वही निकल रहा है, जो वह अपने हृदय में सोच रही है; उसके वचन प्रबल और सशक्त थे, मानो उसने जो कुछ कहा, वह उसके हृदय की गहराई से आया हो, और मानो स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित करना उसकी उत्कट इच्छा थी और उसे आशा थी कि उसके जैसे भाई-बहन भी यही संकल्प साझा करेंगे। कहा जा सकता है कि इस क्षण संकल्प और प्रेरित होने की तुम्हारी भावना पूरी तरह से पवित्र आत्मा के कार्य से आते हैं। जब परमेश्वर के कार्य की पद्धति बदलती है, तो तुम्हारी आयु भी कुछ वर्ष बढ़ चुकी होती है; तुम देखती हो कि तुम्हारी सभी सहपाठिनों और हमउम्र सखियों के पति हैं, या तुम सुनती हो कि विवाह करने के बाद अमुक-अमुक को उसका पति शहर में ले गया और उसे वहाँ नौकरी मिल गई। जब तुम उसे देखती हो, तो यह देखकर ईर्ष्या महसूस करने लगती हो कि किस तरह वह सिर से पाँव तक आकर्षण और शान से भरी है; और जब वह तुमसे बात करती है, तो उसमें एक शहरी अदा होती है और देहाती गँवारूपन का कोई संकेत नहीं मिलता। यह देखकर तुम्हारी भावनाओं में हलचल मच जाती है।

हमेशा खुद को परमेश्वर के लिए खपाने के कारण तुम्हारे पास कोई परिवार या आजीविका नहीं है, और तुमने बहुत निपटान सहा है; कुछ समय पहले तुमने मध्य आयु में प्रवेश कर लिया, और तुम्हारी युवावस्था बहुत पहले चुपचाप फिसल गई, मानो तुम किसी सपने में रही थी। अब आज की स्थिति में आकर तुम नहीं जानती हो कि कहाँ बसना है। इस क्षण तुम विचारों के बवंडर में फँस जाती हो, मानो तुमने अपने होशो-हवास खो दिए हों। बिलकुल अकेले और सो पाने में असमर्थ, लंबी रात जागकर काटते हुए, अनजाने ही तुम अपने संकल्प और परमेश्वर के प्रति अपनी गंभीर प्रतिज्ञाओं के बारे में सोचना शुरू कर देती हो, कि क्यों फिर भी तुम ऐसी दुःखद स्थिति में पड़ गई हो? अनजाने ही तुम्हारे मूक आँसू बहने लगते हैं और तुम्हें हृदयविदारक पीड़ा महसूस होती है। प्रार्थना करने के लिए परमेश्वर के सामने आते हुए तुम्हें याद आता है, जिन दिनों तुम परमेश्वर के साथ थी, तो कितनी अंतरंग और अविभाज्य रूप से उसके निकट थी। तुम्हारी आँखों के सामने एक के बाद एक दृश्य तैरता है, और उस दिन जो शपथ तुमने ली थी, वह एक बार फिर तुम्हारे कानों में बजने लगती है, "क्या परमेश्वर मेरा एकमात्र अंतरंग नहीं है?" इस समय तक तुम पहले ही सुबकियों में डूब चुकी होगी : "परमेश्वर! प्यारे परमेश्वर! मैं पहले ही तुझे अपना हृदय पूरी तरह से दे चुकी हूँ। मैं हमेशा के लिए तेरा होने का वादा करना चाहती हूँ, और मैं बिना डिगे आजीवन तुझे प्यार करती रहूँगी...।" जब तुम उस चरम पीड़ा में संघर्ष करती हो, केवल तभी तुम वास्तव में समझती हो कि परमेश्वर कितना प्यारा है, और केवल तभी तुम्हें स्पष्ट रूप से पता चलता है : मैंने बहुत पहले ही अपना सब-कुछ परमेश्वर को दे दिया था। इस तरह के झटके को झेलने के बाद, तुम ऐसे मामलों में और अधिक परिपक्व हो जाती हो और देखती हो कि उस समय पवित्र आत्मा के कार्य जैसी कोई चीज़ मनुष्य के पास नहीं थी। इस बिंदु के बाद अपने अनुभवों में तुम प्रवेश के इस पहलू में अब और विवश नहीं होओगी; यह ऐसा है, मानो तुम्हारे घावों ने तुम्हारे प्रवेश को बहुत लाभान्वित किया हो। जब भी तुम ऐसी परिस्थितियों का सामना करोगी, तुम्हें तुरंत उस दिन बहाए अपने आँसू याद आ जाएँगे, मानो अलगाव के बाद परमेश्वर के साथ तुम्हारा पुनर्मिलन हो रहा हो, और तुम्हें लगातार डर लगा होता है कि कहीं परमेश्वर के साथ तुम्हारा संबंध फिर से न टूट जाए और तुम्हारे और परमेश्वर के बीच भावनात्मक लगाव (सामान्य संबंध) खराब न हो जाए। यह तुम्हारा कार्य और तुम्हारा प्रवेश है। इसलिए, जब तुम लोगों को पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त हो, तो उसी समय तुम्हें, यह देखते हुए कि वास्तव में पवित्र आत्मा का कार्य क्या है और तुम लोगों का प्रवेश क्या है, और साथ ही अपने प्रवेश में पवित्र आत्मा के कार्य को शामिल करते हुए, तुम लोगों को अपने

प्रवेश पर और अधिक ध्यान देना चाहिए, ताकि तुम लोग पवित्र आत्मा द्वारा अन्य अनेक तरीकों से पूर्ण बनाए जा सको और पवित्र आत्मा के कार्य का सार तुम लोगों में गढ़ा जा सके। पवित्र आत्मा के कार्य के अपने अनुभव के दौरान तुम लोग पवित्र आत्मा को और साथ ही स्वयं को भी जान जाओगे, और इतना ही नहीं, क्या पता गहन कष्टों के कितने दौरों के बीच तुम लोग परमेश्वर के साथ एक सामान्य संबंध विकसित कर लोगे, और तुम्हारे और परमेश्वर के बीच का संबंध दिन-ब-दिन घनिष्ठ होता जाएगा। काट-छाँट और शुद्धिकरण की असंख्य घटनाओं के बाद तुम लोगों में परमेश्वर के प्रति एक सच्चा प्यार विकसित हो जाएगा। यही कारण है कि तुम लोगों को यह महसूस करना चाहिए कि कष्ट, दंड और क्लेशों से डरना नहीं है; डरने की बात तो केवल पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त करना किंतु प्रवेश न करना है। जब परमेश्वर का कार्य पूरा होने का दिन आएगा, तो तुम लोगों का परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा; भले ही तुमने परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लिया होगा, किंतु तुम लोग पवित्र आत्मा को नहीं जान पाए होगे या तुम लोगों ने स्वयं प्रवेश नहीं किया होगा। पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्य में गढ़ी गयी प्रबुद्धता मनुष्य के जुनून को बनाए रखने के लिए नहीं है, बल्कि मनुष्य के प्रवेश के लिए एक मार्ग खोलने के लिए है, और साथ ही मनुष्य को पवित्र आत्मा को जानने देने और इस बिंदु से परमेश्वर के लिए श्रद्धा और भक्ति की भावनाएँ विकसित करने के लिए है।

कार्य और प्रवेश (3)

परमेश्वर ने मनुष्यों को बहुत-कुछ सौंपा है और अनगिनत प्रकार से उनके प्रवेश के बारे में भी संबोधित किया है। परंतु चूँकि लोगों की क्षमता बहुत ख़राब है, इसलिए परमेश्वर के बहुत सारे वचन जड़ पकड़ने में असफल रहे हैं। इस ख़राब क्षमता के विभिन्न कारण हैं, जैसे कि मनुष्य के विचार और नैतिकता का भ्रष्ट होना, और उचित पालन-पोषण की कमी; सामंती अंधविश्वास, जिन्होंने मनुष्य के हृदय को बुरी तरह से जकड़ लिया है; दूषित और पतनशील जीवन-शैलियाँ, जिन्होंने मनुष्य के हृदय के गहनतम कोनों में कई बुराइयाँ स्थापित कर दी हैं; सांस्कृतिक ज्ञान की सतही समझ, लगभग अठानवे प्रतिशत लोगों में सांस्कृतिक ज्ञान की शिक्षा की कमी है और इतना ही नहीं, बहुत कम लोग उच्च स्तर की सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसलिए, मूल रूप से लोगों को पता नहीं है कि परमेश्वर या पवित्रात्मा का क्या अर्थ है, उनके पास परमेश्वर की सामंती अंधविश्वासों से प्राप्त केवल एक धुँधली और अस्पष्ट तसवीर है। वे घातक प्रभाव, जो हज़ारों वर्षों की "राष्ट्रवाद की बुलंद भावना" ने मनुष्य के हृदय में गहरे छोड़े हैं, और साथ ही

सामंती सोच, जिसके द्वारा लोग बिना किसी स्वतंत्रता के, बिना महत्वाकांक्षा या आगे बढ़ने की इच्छा के, बिना प्रगति की अभिलाषा के, बल्कि निष्क्रिय और प्रतिगामी रहने और गुलाम मानसिकता से घिरे होने के कारण बँधे और जकड़े हुए हैं, इत्यादि—इन वस्तुगत कारकों ने मनुष्यजाति के वैचारिक दृष्टिकोण, आदर्शों, नैतिकता और स्वभाव पर अमिट रूप से गंदा और भद्दा प्रभाव छोड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे मनुष्य आतंक की अँधेरी दुनिया में जी रहे हैं, और उनमें से कोई भी इस दुनिया के पार नहीं जाना चाहता, और उनमें से कोई भी किसी आदर्श दुनिया में जाने के बारे में नहीं सोचता; बल्कि, वे अपने जीवन की सामान्य स्थिति से संतुष्ट हैं, बच्चे पैदा करने और पालने-पोसने, उद्यम करने, पसीना बहाने, अपना रोजमर्रा का काम करने; एक आरामदायक और खुशहाल परिवार के सपने देखने, और दांपत्य प्रेम, नाती-पोतों, अपने अंतिम समय में आनंद के सपने देखने में दिन बिताते हैं और शांति से जीवन जीते हैं...। सैकड़ों-हजारों साल से अब तक लोग इसी तरह से अपना समय व्यर्थ गँवा रहे हैं, कोई पूर्ण जीवन का सृजन नहीं करता, सभी इस अँधेरी दुनिया में केवल एक-दूसरे की हत्या करने के लिए तत्पर हैं, प्रतिष्ठा और संपत्ति की दौड़ में और एक-दूसरे के प्रति षड्यंत्र करने में संलग्न हैं। किसने कब परमेश्वर की इच्छा जानने की कोशिश की है? क्या किसी ने कभी परमेश्वर के कार्य पर ध्यान दिया है? एक लंबे अरसे से मानवता के सभी अंगों पर अंधकार के प्रभाव ने कब्ज़ा जमा लिया है और वही मानव-प्रकृति बन गए हैं, और इसलिए परमेश्वर के कार्य को करना काफी कठिन हो गया है, यहाँ तक कि जो परमेश्वर ने लोगों को आज सौंपा है, उस पर वे ध्यान भी देना नहीं चाहते। कुछ भी हो, मैं विश्वास करता हूँ कि मेरे द्वारा ये वचन बोलने का लोग बुरा नहीं मानेंगे, क्योंकि मैं हज़ारों वर्षों के इतिहास के बारे में बात कर रहा हूँ। इतिहास के बारे में बात करने का अर्थ है तथ्य, और इससे भी अधिक, घोटाले, जो सबके सामने प्रत्यक्ष हैं, इसलिए तथ्य के विपरीत बात कहने का क्या अर्थ है? परंतु मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि इन शब्दों को देख-सुनकर समझदार लोग जागृत होंगे और प्रगति करने का प्रयास करेंगे। परमेश्वर आशा करता है कि मनुष्य शांति और संतोष के साथ जीने और कार्य करने तथा परमेश्वर से प्रेम करने का कार्य एक-साथ कर सकते हैं। यह परमेश्वर की इच्छा है कि सारी मनुष्यजाति विश्राम में प्रवेश करे; इससे भी अधिक, परमेश्वर की इच्छा यह है कि संपूर्ण भूमि परमेश्वर की महिमा से भर जाए। यह शर्म की बात है कि मनुष्य विस्मरण की स्थिति में डूबे और प्रसुप्त रहते हैं, उन्हें शैतान द्वारा इतनी बुरी तरह से भ्रष्ट किया गया है कि अब वे मनुष्य जैसे रहे ही नहीं। इसलिए मनुष्य के विचार, नैतिकता और शिक्षा एक महत्वपूर्ण कड़ी बनाते हैं, और सांस्कृतिक ज्ञान

के प्रशिक्षण से दूसरी कड़ी बनती है, जो मनुष्यों की सांस्कृतिक क्षमता बढ़ाने और उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोण बदलने के लिए बेहतर है।

वास्तव में, मनुष्यजाति से परमेश्वर की अपेक्षाएँ उतनी बड़ी नहीं हैं, परंतु चूँकि लोगों की योग्यता और परमेश्वर द्वारा अपेक्षित स्तर के बीच बहुत बड़ा अंतर है, इसलिए अधिकांश लोग बस अपने सिर उठाकर परमेश्वर की अपेक्षाओं की दिशा में देखते हैं, परंतु उनमें उन्हें पूर्ण करने की योग्यता की कमी होती है। लोगों की जन्मजात वृत्ति और जन्म के बाद उन्हें जो कुछ मिलता है वह, परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी करने के लिये पर्याप्त नहीं हैं। परंतु मात्र इस बात को पहचान लेना ही अचूक समाधान नहीं है। दूर मौजूद पानी तत्काल लगी प्यास नहीं मिटा सकता। भले ही लोगों को यह ज्ञात हो कि वे धूल से भी अधिक हीन हैं, पर यदि उनके पास परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट करने का संकल्प नहीं है, और वे परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी करने के लिए उन्नत तरीकों का भी प्रयोग नहीं करते, तो उस प्रकार के ज्ञान का क्या मूल्य है? क्या यह छलनी से पानी निकालने के समान—पूरी तरह से व्यर्थ नहीं है? मैं जो कह रहा हूँ, उसका मूल बिंदु प्रवेश है; यही मुख्य विषय है।

मनुष्य के प्रवेश करने के समय के दौरान जीवन सदा उबाऊ होता है, आध्यात्मिक जीवन के नीरस तत्त्वों से भरा, जैसे कि प्रार्थना करना, परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना या सभाएँ आयोजित करना, इसलिए लोगों को हमेशा यह लगता है कि परमेश्वर पर विश्वास करने में कोई आनंद नहीं आता। ऐसी आध्यात्मिक क्रियाएँ हमेशा मनुष्यजाति के मूल स्वभाव के आधार पर की जाती हैं, जिसे शैतान द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका है। यद्यपि कभी-कभी लोगों को पवित्र आत्मा का प्रबोधन प्राप्त हो सकता है, परंतु उनकी मूल सोच, स्वभाव, जीवन-शैली और आदतें अभी भी उनके भीतर जड़ पकड़े हुए हैं, और इसलिए उनका स्वभाव अपरिवर्तित रहता है। जिन अंधविश्वासी गतिविधियों में लोग संलग्न रहते हैं, परमेश्वर उनसे सबसे ज्यादा घृणा करता है, परंतु बहुत-से लोग अभी भी यह सोचकर उन्हें त्यागने में असमर्थ हैं कि अंधविश्वास की इन गतिविधियों की आज्ञा परमेश्वर द्वारा दी गई है, और आज भी उन्हें पूरी तरह से त्यागा जाना बाकी है। ऐसी चीज़ें, जैसे कि युवा लोगों द्वारा विवाह के भोज और दुल्हन के साज-सामान का प्रबंध; नकद उपहार, प्रीतिभोज, और ऐसे ही अन्य तरीके, जिनसे आनंद के अवसर मनाए जाते हैं; प्राचीन फार्मूले, जो पूर्वजों से मिले हैं; अंधविश्वास की वे सारी गतिविधियाँ, जो मृतकों तथा उनके अंतिम संस्कार के लिए की जाती हैं : ये परमेश्वर के लिए और भी ज्यादा घृणास्पद हैं। यहाँ तक कि आराधना का दिन (धार्मिक जगत

द्वारा मनाए जाने वाले सब्त समेत) भी उसके लिए घृणास्पद है; और मनुष्यों के बीच के सामाजिक संबंध और सांसारिक अंत:क्रियाएँ, सब परमेश्वर द्वारा तुच्छ समझे जाते और अस्वीकार किए जाते हैं। यहाँ तक कि वसंतोत्सव और क्रिसमस भी, जिनके बारे में सब जानते हैं, परमेश्वर की आज्ञा से नहीं मनाए जाते, इन त्योहारों की छुट्टियों के लिए खिलौनों और सजावट, जैसे कि गीत, पटाखे, लालटेनें, पवित्र समागम, क्रिसमस के उपहार और क्रिसमस के उत्सव, और परम समागम की तो बात ही छोड़ो—क्या वे मनुष्यों के मन की मूर्तियाँ नहीं हैं? सब्त के दिन रोटी तोड़ना, शराब और बढ़िया लिनन और भी अधिक प्रभावी मूर्तियाँ हैं। चीन में लोकप्रिय सभी पारंपरिक पर्व-दिवस, जैसे ड्रैगन के सिर उठाने का दिन, ड्रैगन नौका महोत्सव, मध्य-शरद महोत्सव, लाबा महोत्सव और नव वर्ष उत्सव, और धार्मिक जगत के त्योहार जैसे ईस्टर, बपतिस्मा दिवस और क्रिसमस, ये सभी अनुचित त्योहार प्राचीन काल से बहुत लोगों द्वारा मनाए जा रहे हैं और आगे सौंपे जाते रहे हैं। यह मनुष्यजाति की समृद्ध कल्पना और प्रवीण धारणा ही है, जिसने उन्हें तब से लेकर आज तक आगे बढ़ाया है। ये निर्दोष प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तव में ये शैतान द्वारा मनुष्यजाति के साथ खेली जाने वाली चालें हैं। जो स्थान शैतानों से जितना ज्यादा भरा होगा, और जितना वह पुराने ढंग का और पिछड़ा हुआ होगा, उतनी ही गहराई से वह सामंती रीति-रिवाजों से घिरा होगा। ये चीज़ें लोगों को कसकर बाँध देती हैं और उनके हिलने-डुलने की भी गुंजाइश नहीं छोड़तीं। धार्मिक जगत के कई त्योहार बड़ी मौलिकता प्रदर्शित करते हैं और परमेश्वर के कार्य के लिए एक सेतु का निर्माण करते प्रतीत होते हैं; किंतु वास्तव में वे शैतान के अदृश्य बंधन हैं, जिनसे वह लोगों को बाँध देता है और परमेश्वर को जानने से रोक देता है—वे सब शैतान की धूर्त चालें हैं। वास्तव में, जब परमेश्वर के कार्य का एक चरण समाप्त हो जाता है, तो वह उस समय के साधन और शैली नष्ट कर चुका होता है और उनका कोई निशान नहीं छोड़ता। परंतु "सच्चे विश्वासी" उन मूर्त भौतिक वस्तुओं की आराधना करना जारी रखते हैं; इस बीच वे परमेश्वर की सत्ता को अपने मस्तिष्क के पिछले हिस्से में खिसका देते हैं और उसके बारे में आगे कोई अध्ययन नहीं करते, और यह समझते हैं कि वे परमेश्वर के प्रति प्रेम से भरे हुए हैं, जबकि वास्तव में वे उसे बहुत पहले ही घर के बाहर धकेल चुके होते हैं और शैतान को आराधना के लिए मेज पर रख चुके होते हैं। यीशु, क्रूस, मरियम, यीशु का बपतिस्मा, अंतिम भोज के चित्र—लोग इन्हें स्वर्ग के प्रभु के रूप में आदर देते हैं, जबकि पूरे समय बार-बार "प्रभु, स्वर्गिक पिता" पुकारते हैं। क्या यह सब मज़ाक नहीं है? आज तक पूर्वजों द्वारा मनुष्यजाति को सौंपी गई ऐसी कई बातों और प्रथाओं से परमेश्वर को घृणा है; वे गंभीरता से

परमेश्वर के लिए आगे के मार्ग में बाधा डालती हैं और, इतना ही नहीं, वे मनुष्यजाति के प्रवेश में भारी अड़चन पैदा करती हैं। यह बात तो रही एक तरफ कि शैतान ने मनुष्यजाति को किस सीमा तक भ्रष्ट किया है, लोगों के अंतर्मन विटनेस ली के नियम, लॉरेंस के अनुभवों, वॉचमैन नी के सर्वेक्षणों और पौलुस के कार्य जैसी चीज़ों से पूर्णतः भरे हुए हैं। परमेश्वर के पास मनुष्यों पर कार्य करने के लिए कोई मार्ग ही नहीं है, क्योंकि उनके भीतर व्यक्तिवाद, विधियाँ, नियम, विनियम, प्रणालियाँ और ऐसी ही अनेक चीज़ें बहुत ज्यादा भरी पड़ी हैं; लोगों के सामंती अंधविश्वास की प्रवृत्तियों के अतिरिक्त इन चीज़ों ने मनुष्यजाति को बंदी बनाकर उसे निगल लिया है। यह ऐसा है, मानो लोगों के विचार एक रोचक चलचित्र हों, जो बादलों की सवारी करने वाले विलक्षण प्राणियों के साथ पूरे रंग में एक परि-कथा का वर्णन कर रहा है, जो इतना कल्पनाशील है कि लोगों को विस्मित कर देता है और उन्हें चकित और अवाक छोड़ देता है। सच कहा जाए, तो आज परमेश्वर जो काम करने के लिए आया है, वह मुख्यतः मनुष्यों के अंधविश्वासी लक्षणों से निपटना और उन्हें दूर करना तथा उनके मानसिक दृष्टिकोण पूर्ण रूप से रूपांतरित करना है। परमेश्वर का कार्य उस विरासत के कारण आज तक पूरा नहीं हुआ है, जो मनुष्यजाति द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे सौंपा गया है; यह वह कार्य है, जो किसी महान आध्यात्मिक व्यक्ति की धरोहर को आगे बढ़ाने, या परमेश्वर द्वारा किसी अन्य युग में किए गए किसी प्रतिनिधि प्रकृति के कार्य को विरासत में प्राप्त करने की आवश्यकता के बिना उसके द्वारा व्यक्तिगत रूप से आरंभ और पूर्ण किया गया है। मनुष्यों को इनमें से किसी चीज़ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। आज परमेश्वर के बोलने और कार्य करने की भिन्न शैली है, फिर मनुष्यों को कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है? यदि मनुष्य अपने "पूर्वजों" की विरासत को जारी रखते हुए वर्तमान धारा के अंतर्गत आज के मार्ग पर चलते हैं, तो वे अपने गंतव्य तक नहीं पहुँच पाएँगे। परमेश्वर मानव-व्यवहार के इस विशेष ढंग से बहुत घृणा करता है, वैसे ही जैसे वह मानव-जगत के वर्षों, महीनों और दिनों से घृणा करता है।

मनुष्य के स्वभाव को बदलने का सबसे अच्छा तरीका लोगों के अंतर्मन के उन हिस्सों को ठीक करना है, जिन्हें गहराई से विषैला कर दिया गया है, ताकि लोग अपनी सोच और नैतिकता को बदल सकें। सबसे पहले, लोगों को स्पष्ट रूप से यह देखने की ज़रूरत है कि परमेश्वर के लिए धार्मिक संस्कार, धार्मिक गतिविधियाँ, वर्ष और महीने, और त्योहार घृणास्पद हैं। उन्हें सामंती विचारधारा के इन बंधनों से मुक्त होना चाहिए और अंधविश्वास की गहरी जमी बैठी प्रवृत्ति के हर निशान को जड़ से उखाड़ देना चाहिए। ये सब

मनुष्यजाति के प्रवेश में सम्मिलित हैं। तुम लोगों को यह समझना चाहिए कि क्यों परमेश्वर मनुष्यजाति को सांसारिक जगत से बाहर ले जाता है, और फिर क्यों वह मनुष्यजाति को नियमों और विनियमों से दूर ले जाता है। यही वह द्वार है, जिससे तुम लोग प्रवेश करोगे, और यद्यपि इन चीज़ों का तुम्हारे आध्यात्मिक अनुभव के साथ कोई संबंध नहीं है, फिर भी ये तुम लोगों का प्रवेश और परमेश्वर को जानने का मार्ग अवरुद्ध करने वाली सबसे बड़ी अड़चनें हैं। वे एक जाल बुनती हैं, जो लोगों को फँसा लेता है। कई लोग बाइबल को बहुत अधिक पढ़ते हैं, यहाँ तक कि अपनी स्मृति से बाइबिल के अनेक अंश सुना भी सकते हैं। आज अपने प्रवेश में लोग परमेश्वर के कार्य को मापने के लिए अनजाने में बाइबल का प्रयोग करते हैं, मानो परमेश्वर के कार्य में इस चरण का आधार बाइबल हो और उसका स्रोत भी बाइबल हो। जब परमेश्वर का कार्य बाइबल के अनुरूप होता है, तब लोग परमेश्वर के कार्य का दृढ़ता से समर्थन करते हैं और नई श्रद्धा के साथ उसका आदर करते हैं; जब परमेश्वर का कार्य बाइबल के अनुरूप नहीं होता, तब लोग इतने व्याकुल हो जाते हैं कि बाइबल में परमेश्वर के कार्य का आधार खोजते-खोजते उनके पसीने छूटने लगते हैं; यदि बाइबल में परमेश्वर के कार्य का कोई उल्लेख न मिले, तो लोग परमेश्वर को अनदेखा कर देंगे। यह कहा जा सकता है कि जहाँ तक परमेश्वर के आज के कार्य का संबंध है, ज्यादातर लोग उसे बहुत सतर्कतापूर्वक स्वीकार करते हैं, उसका चयनात्मक रूप से पालन करते हैं, और उसे जानने के बारे में उदासीन अनुभव करते हैं; जहाँ तक अतीत की बातों का प्रश्न है, वे उनके आधे भाग को पकड़े रहते हैं और बाकी आधे को त्याग देते हैं। क्या इसे प्रवेश कहा जा सकता है? दूसरों की पुस्तकें किसी खज़ाने की तरह थामकर और उन्हें स्वर्ग के द्वार की सुनहरी कुंजी समझकर लोग साफ़-साफ़ उस चीज़ में रुचि नहीं दर्शाते, जो परमेश्वर आज उनसे चाहता है। इतना ही नहीं, बहुत सारे "बुद्धिमान विशेषज्ञ" परमेश्वर के वचन अपने बाएँ हाथ में और दूसरों की "उत्कृष्ट कृतियाँ" अपने दाएँ हाथ में रखते हैं, मानो वे परमेश्वर के आज के वचनों का आधार इन उत्कृष्ट कृतियों में खोजना चाहते हों, ताकि पूर्ण रूप से यह सिद्ध कर सकें कि परमेश्वर के वचन सही हैं, यहाँ तक कि वे दूसरों के सामने परमेश्वर के वचनों की व्याख्या उत्कृष्ट कृतियों के साथ जोड़कर करते हैं, मानो बड़ा भारी काम कर रहे हों। सच कहा जाए, तो मनुष्यजाति में ऐसे बहुत सारे "वैज्ञानिक शोधकर्ता" हैं, जिन्होंने आज की वैज्ञानिक उपलब्धियों को कभी अधिक महत्व नहीं दिया, ऐसी वैज्ञानिक उपलब्धियों को, जिनकी कोई मिसाल नहीं है (अर्थात् परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर के वचन, और जीवन में प्रवेश का मार्ग), इसलिए लोग पूरी तरह से "आत्मनिर्भर" हैं, अपनी वाक्पटुता के बल पर बड़े

और व्यापक "उपदेश" देते हैं और "परमेश्वर के अच्छे नाम" पर अकड़ते हैं। इस बीच, उनका स्वयं का प्रवेश संकट में होता है और वे परमेश्वर की अपेक्षाओं से उतनी ही दूर दिखते हैं, जितनी दूर इस क्षण सृष्टि दिखती है। कितना सरल है परमेश्वर का कार्य करना? ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों ने पहले ही स्वयं को आधा बीते हुए कल में छोड़ देने और आधा आज में लाने, आधा शैतान को सौंपने और आधा परमेश्वर को प्रस्तुत करने का मन बना लिया है, मानो यही अपने अंत:करण को शांत करने तथा कुछ सुख की भावना अनुभव करने का मार्ग हो। लोगों की भीतरी दुनिया इतनी कपट से भरी है कि वे न सिर्फ आने वाले कल को, बल्कि बीते हुए कल को भी खोने से डरते हैं, वे आज शैतान और परमेश्वर, जो लगता है कि है भी और नहीं भी, दोनों को अप्रसन्न करने से गहराई से डरते हैं। चूँकि लोग अपनी सोच और नैतिकता को सही तरीके से विकसित करने में विफल रहे हैं, इसलिए उनमें विवेक की विशेष कमी है, और वे यह बता ही नहीं सकते कि आज का कार्य परमेश्वर का कार्य है या नहीं है। शायद ऐसा इसलिए है, क्योंकि लोगों की सामंती और अंधविश्वासी सोच इतनी गहरी है कि उन्होंने बहुत पहले ही अंधविश्वास और सत्य, परमेश्वर और मूर्तियों में अंतर की परवाह न करते हुए उन्हें एक ही श्रेणी में रख दिया है और अपने दिमाग़ पर जोर देने के बावजूद वे उनमें स्पष्ट रूप से अंतर करने में असमर्थ प्रतीत होते हैं। इसलिए मनुष्य अपने मार्ग पर ठहर गए हैं और अब और आगे नहीं बढ़ते। यह सब समस्याएँ लोगों में सही वैचारिक शिक्षा की कमी के कारण उत्पन्न होती है, जो उनके प्रवेश में बहुत कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है। परिणामस्वरूप, लोग सच्चे परमेश्वर के कार्य में कोई रुचि महसूस नहीं करते, बल्कि मनुष्य के (जैसे कि उनके, जिन्हें वे महापुरुष समझते हैं) कार्य से दृढ़ता से चिपके[1] रहते हैं, जैसे कि उन पर उसकी मुहर लग गई हो। क्या ये नवीनतम विषय नहीं हैं, जिनमें मनुष्यजाति को प्रवेश करना चाहिए?

फुटनोट:

1. "दृढ़ता से चिपके" का प्रयोग उपहास के रूप में किया गया है। यह वाक्यांश दर्शाता है कि लोग जिद्दी और अड़ियल हैं, जो पुरानी बातों को पकड़े रहते हैं और उन्हें त्यागने के लिए तैयार नहीं होते।

कार्य और प्रवेश (4)

यदि मनुष्य वास्तव में पवित्र आत्मा के कार्य के अनुसार प्रवेश कर सके, तो उसका जीवन वसंत ऋतु की वर्षा के बाद बाँस की कली की तरह शीघ्र अंकुरित हो जाएगा। अधिकांश लोगों की मौजूदा कद-काठी

को देखते हुए, लोग जीवन को कोई महत्व नहीं देते, और इसके बजाय वे कुछ निरर्थक मामलों को महत्व देते हैं। या वे यह न जानते हुए कि किस दिशा में जाना है और यह तो बिलकुल भी न जानते हुए कि किसके लिए जाना है, इधर-उधर भाग रहे हैं और ध्यान केंद्रित किए बिना, उद्देश्यहीन और मनमाने तरीके से कार्य कर रहे हैं। वे केवल "विनम्रतापूर्वक स्वयं को छिपा रहे हैं।" सच्चाई यह है कि तुम लोगों में से कुछ ही लोग अंत के दिनों के लिए परमेश्वर के इरादों को जानते हैं। तुम लोगों में से शायद ही कोई परमेश्वर के पदचिह्न को जानता है, लेकिन उससे भी बुरा यह है कि कोई नहीं जानता, कि परमेश्वर का अंतिम निष्पादन क्या होगा। फिर भी, हर कोई, विशुद्ध साहस और सहनशीलता के द्वारा, दूसरों के अनुशासन और व्यवहार से गुज़र रहा है, मानो जीत की घड़ी की प्रत्याशा में मांसपेशियों की कसरत कर लड़ाई के लिए तैयार हो रहा हो।[1] मनुष्यों के बीच चल रहे इन "अजीब तमाशों" पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करूँगा, लेकिन एक बात है, जो तुम सभी को समझनी चाहिए। अभी ज्यादातर लोग असामान्यता[2] की दिशा में प्रगति कर रहे हैं, और प्रवेश में अपने कदमों से वे एक अंधी गली[3] की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे कई लोग हो सकते हैं, जो मानते हों कि वह मानव-जगत के बाहर एक आदर्श-लोक है, जिसे स्वतंत्रता-क्षेत्र मानते हुए, मनुष्य उसकी लालसा करता है। किंतु वास्तव में, वह नहीं है। या शायद कोई कह सकता है कि लोग पहले ही भटक चुके हैं। लेकिन लोग चाहे कुछ भी कर रहे हों, मैं अभी भी इस बारे में बात करना चाहता हूँ कि वह क्या है, जिसमें मनुष्य को प्रवेश करना चाहिए। बहुसंख्यकों की खूबियाँ और खामियाँ इस प्रवचन का मुख्य विषय नहीं हैं। मुझे आशा है कि तुम सभी भाई-बहन मेरे वचनों को सही रूप में ग्रहण करने में सक्षम होगे और मेरे इरादे को ग़लत नहीं समझोगे।

परमेश्वर ने चीन की मुख्य भूमि में देहधारण किया है, जिसे हांगकांग और ताइवान के हमवतन लोग "आंतरिक भाग" कहते हैं। जब परमेश्वर ऊपर से पृथ्वी पर आया, तो स्वर्ग में और पृथ्वी पर कोई इसके बारे में नहीं जानता था, क्योंकि यही परमेश्वर का एक गुप्त हालत में लौटने का वास्तविक अर्थ है। वह लंबे समय से देह में रहकर कार्य कर रहा है, फिर भी इसके बारे में कोई नहीं जानता। यहाँ तक कि आज भी इसे कोई नहीं पहचानता। शायद यह एक शाश्वत पहेली बनी रहेगी। इस बार परमेश्वर का देह में आना ऐसा नहीं है, जिसके बारे कोई मनुष्य नहीं जान सकता। पवित्रात्मा का कार्य चाहे कितने भी बड़े पैमाने का और कितना भी शक्तिशाली हो, परमेश्वर हमेशा भावहीन बना रहता है, अपने बारे में कभी कुछ नहीं बताता। कोई कह सकता है कि उसके कार्य का यह चरण ऐसा है, मानो स्वर्ग के क्षेत्र में हो रहा हो। यद्यपि यह हर

उस व्यक्ति को बिल्कुल स्पष्ट है, जिसके पास देखने के लिए आँखें हैं, किंतु कोई इसे नहीं पहचानता। जब परमेश्वर अपने कार्य के इस चरण को समाप्त कर लेगा, तो हर मनुष्य अपना सामान्य रवैया छोड़ देगा[4] और अपने लंबे सपने से जाग जाएगा। मुझे याद है, परमेश्वर ने एक बार कहा था, "इस बार देह में आना शेर की माँद में गिरने जैसा है।" इसका अर्थ यह है कि, चूँकि परमेश्वर के कार्य के इस चक्र में परमेश्वर देह में आता है और इतना ही नहीं, बड़े लाल अजगर के निवास-स्थान में पैदा होता है, इसलिए इस बार धरती पर आकर वह पहले से भी अधिक बड़े ख़तरे का सामना करता है। वह चाकुओं, बंदूकों, लाठियों और डंडों का सामना करता है; वह प्रलोभन का सामना करता है; वह हत्या के इरादे से भरे चेहरों वाली भीड़ का सामना करता है। वह किसी भी समय मारे जाने का जोख़िम उठाता है। परमेश्वर अपने साथ कोप लेकर आया। किंतु वह पूर्णता का कार्य करने के लिए आया, जिसका अर्थ है कि वह कार्य का दूसरा भाग करने के लिए आया, जो छुटकारे के कार्य के बाद जारी रहता है। अपने कार्य के इस चरण के वास्ते, परमेश्वर ने अत्यधिक विचार किया है और इस पर अत्यधिक ध्यान दिया है, और स्वयं को विनम्रतापूर्वक छिपाते हुए और अपनी पहचान का कभी घमंड न करते हुए, प्रलोभन के हमलों से बचने के लिए हर कल्पनीय साधन का उपयोग कर रहा है। सलीब से मनुष्य को बचाने में यीशु केवल छुटकारे का कार्य पूरा कर रहा था; वह पूर्णता का कार्य नहीं कर रहा था। इस प्रकार परमेश्वर का केवल आधा कार्य ही किया जा रहा था, छुटकारे का कार्य पूरा करना उसकी संपूर्ण योजना का केवल आधा भाग ही था। चूँकि नया युग शुरू और पुराना युग समाप्त होने वाला था, इसलिए परमपिता परमेश्वर ने अपने कार्य के दूसरे हिस्से पर विचार करना शुरू किया और उसके लिए तैयारी करनी शुरू कर दी। अंत के दिनों में इस देहधारण की भविष्यवाणी अतीत में स्पष्ट रूप से नहीं की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप इस बार परमेश्वर के देह में आने को लेकर अधिक गोपनीयता की नींव रखी गई। भोर के समय, अधिकांश लोगों की जानकारी में आए बिना, परमेश्वर पृथ्वी पर आया और देह में अपना जीवन शुरू कर दिया। लोग इस क्षण के आगमन से अनभिज्ञ थे। कदाचित वे सब घोर निद्रा में थे, कदाचित बहुत-से लोग जो सतर्कतापूर्वक जागे हुए थे, प्रतीक्षा कर रहे थे, और कदाचित कई लोग स्वर्ग के परमेश्वर से चुपचाप प्रार्थना कर रहे थे। किंतु इन सभी अनेक लोगों के बीच, एक भी व्यक्ति नहीं जानता था कि परमेश्वर पहले ही पृथ्वी पर आ चुका है। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया, ताकि वह अपना कार्य अधिक सुचारु रूप से कर सके और बेहतर परिणाम प्राप्त कर सके, और साथ ही, पहले से अधिक प्रलोभनों की पहले से रोकथाम कर सके। जब मनुष्य की वसंत की

नींद टूटेगी, तो परमेश्वर का कार्य बहुत पहले ही समाप्त हो गया होगा और वह पृथ्वी पर भ्रमण और अस्थायी निवास का अपना जीवन पूरा करके चला जाएगा। चूँकि परमेश्वर के कार्य के लिए परमेश्वर का व्यक्तिगत रूप से कार्य करना और बोलना आवश्यक है, और चूँकि उसमें मनुष्य के हस्तक्षेप करने का कोई उपाय नहीं है, इसलिए परमेश्वर ने स्वयं कार्य करने हेतु पृथ्वी पर आने के लिए अत्यधिक पीड़ा सही है। मनुष्य परमेश्वर के कार्य के लिए उसका स्थान लेने में असमर्थ है। इसलिए परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपना स्वयं का कार्य करने, अपनी समस्त सोच और देखरेख दरिद्र लोगों के इस समूह को, गोबर के ढेर में पड़े लोगों के इस समूह को छुटकारा दिलाने हेतु, उस स्थान पर आने के लिए जहाँ बड़ा लाल अजगर निवास करता है, अनुग्रह के युग के ख़तरों की अपेक्षा कई हजार गुना बड़े ख़तरे उठाने का जोखिम लिया है। यद्यपि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में नहीं जानता, फिर भी परमेश्वर परेशान नहीं है, क्योंकि इससे परमेश्वर के कार्य में बहुत लाभ मिलता है। चूँकि हर कोई परम नृशंस और दुष्ट है, इसलिए वे परमेश्वर के अस्तित्व को कैसे बरदाश्त कर सकते हैं? यही कारण है कि पृथ्वी पर परमेश्वर हमेशा चुपचाप आता है। हालाँकि मनुष्य क्रूरता की निकृष्टतम अतियों में डूब चूका है, फिर भी परमेश्वर उनमें से किसी को भी गंभीरता से नहीं लेता, बल्कि उस कार्य को करता रहता है जिसे करने की उसे आवश्यकता है, ताकि उस बड़े कार्यभार को पूरा कर सके, जो स्वर्गिक पिता ने उसे सौंपा है। तुम लोगों में से किसने परमेश्वर की मनोरमता को पहचाना है? कौन परमपिता परमेश्वर के भार के प्रति उसके पुत्र से अधिक विचारशीलता दर्शाता है? कौन परमपिता परमेश्वर की इच्छा को समझने में सक्षम है? स्वर्ग में परमपिता परमेश्वर का आत्मा अक्सर परेशान रहता है, और पृथ्वी पर उसका पुत्र परमपिता परमेश्वर की इच्छा की खातिर बारंबार प्रार्थना करता है, जिससे उसका हृदय चिंता से टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। क्या कोई है, जो परमपिता परमेश्वर के अपने बेटे के लिए प्यार को जानता हो? क्या कोई है, जो जानता हो कि कैसे प्यारा पुत्र परमपिता परमेश्वर को याद करता है? स्वर्ग और पृथ्वी के बीच विदीर्ण हुए, दोनों दूर से एक-दूसरे की ओर, पवित्रात्मा में एक-दूसरे का अनुसरण करते हुए, लगातार निहार रहे हैं। हे मानवजाति! तू परमेश्वर के हृदय के प्रति कब विचारशील होगी? तू कब परमेश्वर के अभिप्राय को समझेगी? पिता और पुत्र हमेशा एक-दूसरे पर निर्भर रहे हैं। फिर क्यों उन्हें पृथक किया जाना चाहिए, एक ऊपर स्वर्ग में और एक नीचे पृथ्वी पर? पिता अपने पुत्र से उतना ही प्यार करता है, जितना पुत्र अपने पिता से प्यार करता है। फिर क्यों पिता को इतनी गहरी और दर्दनाक उत्कंठा के साथ पुत्र की प्रतीक्षा करनी चाहिए? भले ही वे लंबे समय से पृथक न

हुए हों, फिर भी किसे पता है कि कितने दिनों और रातों से पिता दर्दभरे उद्वेग से तड़प रहा है, और कितने लंबे समय से वह अपने प्रिय पुत्र की त्वरित वापसी के लिए प्रतीक्षा कर रहा है? वह देखता रहता है, मौन होकर बैठा रहता है और प्रतीक्षा करता रहता है; ऐसा कुछ नहीं है, जो वह अपने प्रिय पुत्र की त्वरित वापसी के लिए न करता हो। उसका पुत्र पृथ्वी के छोरों तक भटक चुका है : वे कब फिर एक-दूसरे से मिलेंगे? भले ही पुन: मिलने के बाद वे अनंत काल तक साथ रहेंगे, किंतु वह हजारों दिनों और रातों के अलगाव को कैसे सहन कर सकता है, एक ऊपर स्वर्ग में और दूसरा नीचे पृथ्वी पर? पृथ्वी के दशक स्वर्ग में शताब्दियों जैसे लगते हैं। कैसे परमपिता परमेश्वर चिंता न करे? जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो वह मानव-जगत के अनगिनत उतार-चढ़ावों का वैसे ही अनुभव करता है, जैसे मनुष्य करता है। परमेश्वर निर्दोष है, फिर क्यों उसे वही दर्द सहना पड़े, जो आदमी सहता है? कोई आश्चर्य नहीं कि परमपिता परमेश्वर अपने पुत्र के लिए इतना अधिक लालायित रहता है; परमेश्वर के हृदय को कौन समझ सकता है? परमेश्वर मनुष्य को बहुत अधिक देता है; कैसे मनुष्य परमेश्वर के हृदय को पर्याप्त रूप से चुका सकता है? फिर भी मनुष्य परमेश्वर को बहुत कम देता है; इसलिए परमेश्वर चिंता क्यों नहीं कर सकता?

मनुष्यों में से में शायद ही कोई परमेश्वर की मन:स्थिति की अत्यावश्यकता को समझता है, क्योंकि मनुष्यों की क्षमता बहुत निम्न और उनकी आत्मा काफी सुस्त है, और इसलिए वे सब न तो परवाह करते हैं और न ही ध्यान देते हैं कि परमेश्वर क्या कर रहा है। इसलिए परमेश्वर मनुष्य के बारे में लगातार व्यग्र रहता है, मानो मनुष्य की पाशविक प्रकृति किसी भी क्षण बाहर आ सकती हो। इससे मनुष्य और भी ज्यादा स्पष्टता से देख सकता है कि परमेश्वर का पृथ्वी पर आना अत्यधिक बड़े प्रलोभनों से जुड़ा है। किंतु लोगों के एक समूह को पूर्ण करने के वास्ते, महिमा से पूरी तरह भरे हुए परमेश्वर ने मनुष्य को, उससे कुछ भी न छिपाते हुए, अपने हर इरादे के बारे में बता दिया। उसने लोगों के इस समूह को पूर्ण करने के लिए दृढ़ता से संकल्प किया है, और इसलिए, चाहे जो कठिनाई या प्रलोभन आ जाए, वह नज़र फेर लेता है और इस सबको अनदेखा करता है। वह केवल चुपचाप अपना कार्य करता है, और दृढ़ता से यह विश्वास करता है कि एक दिन जब परमेश्वर महिमा प्राप्त कर लेगा, तो मनुष्य उसे जान लेगा, और वह यह भी विश्वास करता है कि जब मनुष्य परमेश्वर द्वारा पूर्ण कर दिया जाएगा, तो वह परमेश्वर के हृदय को पूरी तरह से समझ जाएगा। अभी ऐसे लोग हो सकते हैं, जो परमेश्वर को प्रलोभित कर सकते हैं या उसे गलत समझ सकते हैं या उसे दोष दे सकते हैं; परमेश्वर इनमें से किसी को भी गंभीरता से नहीं लेता। जब परमेश्वर महिमा में

उतरेगा, तो सभी लोग समझ जाएँगे कि परमेश्वर जो कुछ भी करता है, मानव-जाति की खुशी के लिए करता है, और वे सब समझ जाएँगे कि परमेश्वर जो कुछ भी करता है, इसलिए करता है ताकि मानव-जाति बेहतर ढंग से जीवित रह सके। परमेश्वर प्रलोभन लेकर आता है, और वह प्रताप और कोप लेकर भी आता है। जब परमेश्वर मनुष्य को छोड़कर जाएगा, तो उसने बहुत पहले ही महिमा प्राप्त कर ली होगी, और वह पूरी तरह से महिमा से भरा हुआ और वापसी की खुशी के साथ चला जाएगा। लोग चाहे परमेश्वर को कैसे भी नकारें, पृथ्वी पर कार्य करने वाला परमेश्वर ऐसी बातों को गंभीरता से नहीं लेता। वह केवल अपना कार्य करता रहता है। परमेश्वर द्वारा विश्व का सृजन हजारों वर्ष पहले का है। वह पृथ्वी पर एक असीमित मात्रा में कार्य करने के लिए आया है, और उसने मानव-जगत की अस्वीकृति और बदनामी का पूरी तरह से अनुभव किया है। परमेश्वर के आगमन का कोई स्वागत नहीं करता; उसका बेरुखी से अभिवादन किया जाता है। इन हजारों वर्षों की कठिनाइयों के दौरान, मनुष्य के आचरण ने बहुत पहले ही परमेश्वर को बहुत गहरा घाव दिया है। वह अब लोगों के विद्रोह पर ध्यान नहीं देता, बल्कि इसके बजाय उसने मनुष्य को रूपांतरित और शुद्ध करने के लिए एक अलग योजना बनाई है। उपहास, निंदा, उत्पीड़न, क्लेश, सलीब पर चढ़ने की पीड़ा, मनुष्य द्वारा बहिष्कार आदि वे चीज़ें हैं, जिनका परमेश्वर ने देह में आने के बाद से सामना किया है : परमेश्वर ने इन चीज़ों का खूब स्वाद चखा है, और जहाँ तक मानव-जगत की कठिनाइयों का संबंध है, देह में आए परमेश्वर ने इन्हें पूरी तरह से भुगता है। स्वर्ग के परमपिता परमेश्वर के आत्मा ने बहुत समय पहले ही ऐसे दृश्यों की असहनीयता जान ली थी, और अपना सिर पीछे करके और आँखें मूँदकर वह अपने प्यारे पुत्र की वापसी का इंतजार करता है। वह केवल इतना ही चाहता है कि सभी लोग सुनें और आज्ञापालन करें, और उसके देह के सामने अत्यधिक शर्मिंदगी महसूस करके उसके ख़िलाफ विद्रोह करना बंद करें। वह केवल इतना ही चाहता है कि मनुष्य परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने में सक्षम हो। उसने बहुत समय पहले ही मनुष्य से अधिक माँगें करनी बंद कर दी हैं, क्योंकि परमेश्वर ने बहुत बड़ी कीमत चुकाई है, फिर भी मनुष्य निश्चिंत है[5] और परमेश्वर के कार्य को ज़रा भी गंभीरता से नहीं लेता।

यद्यपि आज मैं परमेश्वर के कार्य के बारे में जो बातें कह रहा हूँ, वे बहुत "निराधार विसंगति"[6] से भरी हो सकती हैं, फिर भी मनुष्य के प्रवेश के संबंध में उनकी बहुत अधिक प्रासंगिकता है। मैं मात्र कार्य के बारे में कुछ बात कर रहा हूँ और फिर प्रवेश के बारे में कुछ बात कर रहा हूँ, लेकिन दोनों पहलू समान रूप से अपरिहार्य हैं, और जब वे संयुक्त होते हैं, तो मनुष्य के जीवन के लिए और भी अधिक लाभकारी हो

जाते हैं। ये दोनों पहलू एक-दूसरे के पूरक[7] और बहुत लाभदायक हैं, जो लोगों को परमेश्वर की इच्छा को बेहतर ढंग से समझने देते हैं और लोगों और परमेश्वर के बीच संप्रेषण संभव बनाते हैं। कार्य पर आज की बातचीत के माध्यम से परमेश्वर के साथ मनुष्य का संबंध और सुधरा है, आपसी समझ गहरी हुई है, और मनुष्य परमेश्वर के भार के प्रति और अधिक विचारशीलता और परवाह करने में समर्थ हुआ है; मनुष्य को वह महसूस करवा दिया गया है जो परमेश्वर महसूस करता है, वह परमेश्वर द्वारा परिवर्तित किए जाने के बारे में अधिक आश्वस्त है, और परमेश्वर के पुन: प्रकट होने की प्रतीक्षा करता है। यह आज मनुष्य से परमेश्वर की एकमात्र माँग है—एक ऐसे व्यक्ति की छवि जीना, जो परमेश्वर से प्यार करता है, ताकि परमेश्वर की बुद्धि के क्रिस्टलीकरण का प्रकाश अंधकार के युग में चमके और मनुष्य का जीवन दुनिया के ध्यानाकर्षण और सभी की प्रशंसा का अधिकारी होकर, सदैव के लिए विश्व के पूर्व में चमकते हुए, परमेश्वर के कार्य में एक उज्ज्वल पृष्ठ पीछे छोड़े। वर्तमान युग में जो लोग परमेश्वर से प्यार करते हैं, उनके लिए यह सबसे निश्चित रूप से, और भी अधिक बेहतर प्रवेश है।

फुटनोट :

1. "मांसपेशियों की कसरत कर लड़ाई के लिए तैयार हो रहा हो" का उपयोग उपहासपूर्वक किया गया है।

2. "असामान्यता" का अर्थ है कि लोगों की प्रविष्टि विचलन-भरी है और उनके अनुभव एकतरफ़ा हैं।

3. "एक अंधी गली" का अर्थ है कि लोग जिस मार्ग पर चल रहे हैं, वह परमेश्वर की इच्छा के विपरीत है।

4. "अपना सामान्य रवैया छोड़ देगा" इस बात को संदर्भित करता है कि एक बार परमेश्वर को जान लेने पर उसके बारे में लोगों की धारणाएँ और विचार किस तरह बदल जाते हैं।

5. "निश्चिंत है" का अर्थ है कि लोग परमेश्वर के कार्य के बारे में बेपरवाह हैं और उसे उतना महत्वपूर्ण नहीं समझते।

6. "निराधार विसंगति" का अर्थ है कि लोग परमेश्वर द्वारा बोले जाने वाले वचनों का आधार समझने में बुनियादी रूप से अक्षम हैं और वे नहीं जानते कि वह किस बारे में बात कर रहा है। यह वाक्यांश व्यंग्यात्मक रूप में इस्तेमाल किया गया है।

7. "एक-दूसरे के पूरक" का अर्थ है कि संगति में "कार्य" और "प्रवेश" को संयुक्त करना परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान के लिए और भी अधिक लाभदायक होगा।

कार्य और प्रवेश (5)

आज तुम सब जानते हो कि परमेश्वर लोगों की अगुआई जीवन के सही मार्ग पर कर रहा है, कि वह दूसरे युग में प्रवेश करने का अगला कदम उठाने में मनुष्य की अगुआई कर रहा है, कि वह इस अंधकारमय पुराने युग से, शरीर से बाहर, अंधकारमय शक्तियों के उत्पीड़न और शैतान के प्रभाव से दूर जाने में मनुष्य की अगुआई कर रहा है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता के संसार में जी सके। एक सुंदर कल के लिए, और इसलिए कि लोग अपने कल के कदमों में और अधिक साहसी हो जाएँ, परमेश्वर का आत्मा मनुष्य के लिए हर चीज़ की योजना बनाता है, और इसलिए कि मनुष्य और अधिक आनंद प्राप्त करे, परमेश्वर देह में मनुष्य के आगे के मार्ग को तैयार करने के लिए सभी प्रयास करता है, और उस दिन के आगमन में जल्दी कर रहा है, जिसकी मनुष्य इच्छा करता है। क्या तुम लोग इस सुंदर पल को सँजो पाओगे; परमेश्वर के साथ आना कोई सरल उपलब्धि नहीं है। यद्यपि तुम लोगों ने उसे कभी नहीं जाना है, फिर भी तुम बहुत लंबे समय से उसके साथ रहे हो। काश, हर आदमी इन सुंदर किंतु अस्थायी दिनों को हमेशा के लिए याद रख सकता, और पृथ्वी पर उन्हें अपनी बहुमूल्य संपत्ति बना सकता। परमेश्वर का कार्य बहुत पहले से मनुष्य पर प्रकट किया गया है—पर चूँकि लोगों के हृदय बहुत जटिल हैं, और चूँकि उनकी कभी इसमें रुचि नहीं रही है, इसलिए परमेश्वर का कार्य अपनी आरंभिक बुनियाद पर ही रुक गया है। ऐसा लगता है कि उनके विचार, धारणाएँ और मानसिक दृष्टिकोण पुराने हो गए हैं, इतने पुराने कि उनमें से बहुत लोगों का मानसिक दृष्टिकोण पुराने समय के आदिम लोगों जैसा है, और उसमें थोड़ा-सा भी परिवर्तन नहीं हुआ है। परिणामस्वरूप, लोग अभी भी परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य के प्रति बेसुध और अस्पष्ट हैं। वे इस बारे में और भी अधिक अस्पष्ट हैं कि वे स्वयं क्या करते हैं और उन्हें किस चीज़ में प्रवेश करना चाहिए। ये चीज़ें परमेश्वर के कार्य में बहुत मुश्किलें पेश करती हैं और लोगों के जीवन को आगे बढ़ने से रोकती हैं। मनुष्य के सार और वर्तमान में उसकी कमज़ोर क्षमता के मूल कारण से वे मूलभूत रूप से परमेश्वर के कार्य को समझने में असमर्थ हैं, और इस चीज़ों को कभी भी महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं। यदि तुम लोग अपने जीवन में उन्नति चाहते हो, तो तुम्हें अपने अस्तित्व के हर विवरण को समझते हुए उस पर ध्यान देना आवश्यक है, ताकि तुम जीवन में अपने प्रवेश को नियंत्रित कर सको, अपने हृदय को अच्छी तरह से रूपांतरित कर सको, और अपने हृदय के खालीपन और एक घिसे-पिटे तथा नीरस अस्तित्व की समस्याओं का समाधान कर सको जो तुम्हें परेशान करता है, ताकि तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर से नया हो जाए और ऐसे जीवन का वास्तव में आनंद उठाए, जो कि उन्नत, उत्तम और स्वतंत्र है। इसका उद्देश्य यह है

कि तुममें से प्रत्येक जीवित हो सके, अपनी आत्मा में पुनर्जीवित हो सके, और एक जीवित प्राणी के समान हो सके। जितने भी भाइयों और बहनों के संपर्क में तुम लोग आते हो, उनमें से शायद ही कोई जीवंत और ताजगी से भरा होता है। वे सब प्राचीन कपि-मानव के समान हैं, सीधे-सादे और बुद्धिहीन, स्पष्टतः विकास की बिना किसी संभावना के। इससे भी बुरी बात यह है कि जिन भाइयों और बहनों के संपर्क में मैं आया हूँ, वे जंगली लोगों के समान अशिष्ट और असभ्य रहे हैं। वे शिष्टाचार के बारे में शायद ही कुछ जानते हों, व्यवहार करने की मूलभूत बातों का तो फिर कहना ही क्या। ऐसी कई युवा बहनें हैं, जो हालाँकि बुद्धिमान और सुंदर दिखती हैं, और फूलों के समान सुंदर हो गई हैं, लेकिन फिर भी अपने आपको "वैकल्पिक" फैशन में फँसा लेती हैं। एक बहन[क] के बाल उसके पूरे चेहरे को ढक लेते हैं और उसकी आँखों के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता। हालाँकि उसका चेहरा साफ़ और शालीन है, परंतु उसका केश-विन्यास घृणास्पद है, जो देखने वाले में एक अजीब-सी भावना पैदा करता है, मानो वह बाल-सुधार-गृह की सबसे बड़ी अपराधी हो। पानी में पन्ने जैसी उसकी निर्मल और चमकदार आँखें उसकी वेशभूषा और केश-विन्यास के कारण छिप जाती हैं, जिससे कि वे काली अँधेरी रात में अचानक एक जोड़ी लालटेन के समान दिखाई देती हैं, जो रुक-रुककर चकाचौंध कर देने वाली रोशनी के समान चमकती हैं और लोगों के हृदय में भय उत्पन्न करती हैं, और साथ ही ऐसा भी प्रतीत होता है कि जैसे वह जानबूझकर किसी से छिप रही हो। जब मैं उससे मिलता हूँ तो वह हमेशा "दृश्य" से हट जाने की युक्ति सोचती रहती है, उस हत्यारे के समान जिसने अभी-अभी किसी की हत्या की हो और जो पता लगने के गहरे डर से लगातार चकमा दे रहा हो; साथ ही वह अश्वेत अफ़्रीकी[1] लोगों के समान भी लगती है, जो सदियों से गुलाम रहे हैं और दूसरों के समक्ष कभी अपना सिर नहीं उठा सकते। कपड़े पहनने और खुद को तैयार करने तक में उनके व्यवहार का यह ढंग सुधरने में महीनों लग जाएँगे।

हजारों वर्षों से चीनी लोगों ने गुलामों का जीवन जीया है, और इसने उनके विचारों, धारणाओं, जीवन, भाषा, व्यवहार और कार्यों को इतना जकड़ दिया है कि उनके पास थोड़ी-सी भी स्वतंत्रता नहीं रही है। हजारों वर्षों के इतिहास ने महत्वपूर्ण लोगों को एक आत्मा के वश में कर दिया है और उन्हें आत्मा-विहीन शवों के समान जीर्ण-शीर्ण कर डाला है। कई लोग ऐसे हैं जो शैतान रूपी कसाई की छुरी के नीचे अपना जीवन जीते हैं, कई लोग ऐसे हैं जो जंगली जानवरों की माँद सरीखे घरों में रहते हैं, कई लोग ऐसे हैं जो बैलों और घोड़ों जैसा भोजन करते हैं और कई लोग ऐसे हैं जो बेसुध और अव्यवस्थित ढंग से "मृतकों के

संसार" में पड़े रहते हैं। बाहरी तौर पर लोग आदिम मनुष्य से अलग नहीं है, उनका रहने का स्थान नरक के समान है, और जहाँ तक उनके साथियों का सवाल है, वे हर तरह के गंदे पिशाचों और बुरी आत्माओं से घिरे रहते हैं। बाहर से मनुष्य उच्चतर "जानवरों" के समान प्रतीत होते हैं; वास्तव में, वे गंदे पिशाचों के साथ रहते और निवास करते हैं। बिना किसी की चौकसी के लोग शैतान की घात के भीतर रहते हैं, उसके चंगुल में फँसने के बाद उनके निकलने का कोई मार्ग नहीं होता। यह कहने के बजाय कि वे अपने प्रियजनों के साथ आरामदायक घरों में रहते हैं, सुखद और संतोषप्रद जीवन जीते हैं, यह कहना चाहिए कि मनुष्य नरक में रहते हैं, पिशाचों के साथ व्यवहार करते हैं और शैतान के साथ जुड़े हैं। वास्तव में, लोग अभी भी शैतान द्वारा जकड़े हुए हैं, वे वहाँ रहते हैं जहाँ पिशाच एकत्र होते हैं और उन पिशाचों द्वारा उनका गलत इस्तेमाल किया जाता है, मानो उनके बिस्तर उनके शवों के सोने का स्थान हों, मानो वे उनके आरामदायक घोंसले हों। उनके घरों में प्रवेश करने पर उनका आँगन ठंडा और एकाकी होता है और सर्द हवा सूखी पत्तियों से गूँजती हुई बहती है। "बैठक" का दरवाजा खोलो, तो कमरा तारकोल के समान काला होता है—तुम अपना हाथ बढ़ा सकते हो, पर अपनी उँगलियाँ नहीं देख सकते। थोड़ी-सी रोशनी दरवाजे की दरार में से झाँकती है, जो कमरे को और अधिक धुँधला और भयानक बना देती है। समय-समय पर चूहे अजीब सी चीं-चीं की आवाज करते हैं, जैसे कि मौज मना रहे हों। कमरे में सब-कुछ घृणास्पद और डरावना है, उस घर के समान, जिसमें कभी वह इनसान रहा करता था, जिसे अभी-अभी ताबूत में रखा गया है। कमरे में रखे बिस्तर, रजाइयों और मामूली-सी छोटी अलमारी पर धूल जमी हुई है, जमीन पर कई छोटे-छोटे स्टूल अपने नुकीले दाँत दिखा रहे हैं और अपने पंजे लहरा रहे हैं, और मकड़ी के जाले दीवारों पर लटके हुए हैं। मेज पर एक दर्पण रखा हुआ है, और उसके साथ ही लकड़ी की एक कंघी रखी है। दर्पण की ओर बढ़ते हुए तुम एक मोमबत्ती उठाकर जला देते हो। तुम देखते हो कि दर्पण धूल से ढका हुआ है और लोगों के प्रतिबिंबों[ख] पर एक "आवरण" सा चढ़ा रहा है, जिससे ऐसा लगता है कि वे अभी-अभी कब्र से निकले हैं। कंघी बालों से भरी हुई है। ये सब चीजें पुरानी और भोंड़ी हैं, और ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनका इस्तेमाल किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है, जिसकी अभी-अभी मृत्यु हुई है। कंघी को देखते हुए ऐसा महसूस होता है, जैसे कोने में कोई शव पड़ा हो। कंघी के बालों में लहू न होने के कारण उनमें से किसी मृतक की-सी गंध आती है। दरवाजे की दरार से सर्द हवा प्रवेश करती है, जैसे कि कमरे में रहने के लिए लौटकर कोई भूत दरार में से घुस रहा हो। कमरे में एक चुभती हुई-सी ठंडक है और

अचानक सड़ी हुई लाश जैसी दुर्गंध आती है, और इस क्षण यह देखा जा सकता है कि बहुत-सी अस्त-व्यस्त चीजें दीवारों पर लटकी हैं, पलंग पर अस्त-व्यस्त पड़ा बिस्तर गंदा और बदबूदार है, कोने में अनाज पड़ा है, अलमारी पर धूल जमी है, फर्श दरारों से उगती टहनियों और गंदगी से अत पड़ा है, आदि-आदि—मानो इन सब चीज़ों का इस्तेमाल किसी लड़खड़ाकर आगे बढ़ते, दाँत पीसते और हवा में पंजे मारते हुए मृत व्यक्ति द्वारा किया गया हो। तुम्हारी कँपकँपी छुड़ाने के लिए इतना काफी है। कमरे में कहीं जीवन का कोई चिह्न नहीं है, सब कुछ अंधकारमय और सीलनभरा है, परमेश्वर द्वारा बताए गए अधोलोक और नरक जैसा। यह मनुष्य की कब्र के समान है, जिसमें विलाप के कपड़े पहने तथा मृतक को मौन श्रद्धांजलि देते हुए बिना रँगी अलमारी, स्टूल, खिडकियों की चौखटें और दरवाजे हैं। मनुष्य मृतकों के इस संसार में सुबह जल्दी बाहर जाते और देर से लौटते हुए दशकों से या सदियों से, बल्कि सहस्राब्दियों से रह रहा है। प्रकाश की पहली किरण में, जब मुर्गे बाँग दे रहे होते हैं, वे अपनी "कब्र" से बाहर निकलते हैं, और आकाश की ओर देखकर और फिर जमीन पर नज़र डालकर अपने दिन के कार्यकलाप आरंभ करते हैं। जब सूरज पहाड़ों के पीछे छिप जाता है, तो वे अपने थके शरीरों को वापस "कब्र" में घसीट लाते हैं; जब तक वे अपने पेट भरते हैं, तब तक शाम हो जाती है। फिर, अगले दिन "कब्र" से निकलने की तैयारियाँ पूरी करने के बाद वे रोशनी बुझा देते हैं, जो धीमा प्रकाश देने वाली लपटों की चमक बिखेरती प्रतीत होती है। इस समय चाँद की रोशनी के तले जो कुछ दिखाई देता है, वे कब्र पर लगे मिट्टी के ढेरों के समान हैं, जो हर कोने में छोटे-छोटे टीलों के समान फैले पड़े हैं। "कब्रों" के भीतर से कभी-कभी खर्राटों की आवाज उठती-गिरती सुनाई देती है। सब लोग गहरी नींद में सो जाते हैं, और सब गंदे भूत-पिशाच भी शांति से विश्राम करते प्रतीत होते हैं। समय-समय पर दूर कहीं से कौवों की काँव-काँव सुनाई देती है—एक शांत और निर्जन रात में ऐसी उजाड़ चीख-पुकारों की आवाज तुम्हारी कँपकँपी छुड़ाने और रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी है...। कौन जाने मनुष्य ने ऐसे हालात में मरते और फिर से जन्म लेते हुए कितने बरस बिता दिए हैं; कौन जाने वे कितने समय से ऐसे मानव-जगत में रहे हैं, जहाँ लोग और भूत-प्रेत घुलमिलकर रहते हैं, और तो और, कौन जाने कितनी बार उन्होंने संसार को अलविदा कहा है! पृथ्वी पर इस नरक में मनुष्य प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीते हैं, मानो उन्हें किसी बात की कोई शिकायत न हो, क्योंकि वे बहुत पहले से नरक के जीवन के आदी हो चुके हैं। और इसलिए, लोग इस स्थान पर मोहित हो गए हैं, जहाँ गंदे पिशाच रहते हैं, जैसे कि गंदे पिशाच उनके मित्र और साथी हों, जैसे कि संसार गुंडों का समूह[2] हो—क्योंकि मनुष्य

का मूल तत्त्व बहुत पहले ही बिना कोई आवाज किए गायब हो गया है, बिना कोई सुराग छोड़े अदृश्य हो गया है। लोगों का रंग-रूप कुछ हद तक गंदे पिशाचों जैसा दिखाई देता है; इससे भी बढ़कर, उनके कार्यों का गंदे पिशाचों द्वारा गलत इस्तेमाल किया जाता है। आज वे गंदे पिशाचों से अलग नहीं दिखते, मानो वे इन गंदे पिशाचों से ही जन्मे हों। यही नहीं, लोग अपने इन पूर्वजों के प्रति बहुत प्रेमपूर्ण और उनके समर्थक हैं। कोई नहीं जानता कि मनुष्य बहुत पहले से शैतान द्वारा इतना कुचला गया है कि वह पहाड़ी गोरिल्लों जैसा बन गया है। उनकी रक्तवर्ण आँखों में गिड़गिड़ाहट-सी दिखाई देती है, और कम रोशनी में जो चमक उनमें से निकलती है, वह गंदे पिशाचों के घातक विद्वेष का हलका निशान है। उनके चेहरे झुर्रियों से भरे हुए हैं, देवदार के वृक्ष की फटी हुई छाल जैसे उनके मुँह बाहर की ओर निकले रहते हैं, जैसे कि उन्हें शैतान ने बनाया हो, उनके कान अंदर और बाहर से मैल से सने हुए हैं, उनकी कमर झुकी हुई हैं, उनकी टाँगें उनके शरीरों को सँभालने में संघर्ष करती हैं, और उनकी पतली-दुबली भुजाएँ लयबद्ध ढंग से आगे-पीछे झूलती रहती हैं। ऐसा लगता है, मानो वे सिर्फ खाल और हड्डी हों, पर फिर भी वे जंगली भालू के समान मोटे हैं। अंदर और बाहर से वे प्राचीन काल के वानरों के समान वस्त्रों में सजे-धजे हैं—मानो आज भी उन वानरों का आधुनिक मनुष्य के रूप में पूर्णतः विकसित होना[3] शेष हो, कितने पिछड़े हैं वे!

मनुष्य जानवरों के साथ-साथ रहता है, और वे बिना झगड़े या मौखिक असहमतियों के, तालमेल के साथ आपस में निभा रहे हैं। मनुष्य जानवरों की देखभाल और चिंता करने में कुछ तुनकमिजाज है, जबकि जानवर मनुष्य के अस्तित्व के लिए, स्पष्ट रूप से उसके फायदे के लिए, बिना अपने किसी लाभ के, और मनुष्य के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता दिखाते हुए जीते हैं। सभी रूपों में मनुष्य और पशु के बीच एक घनिष्ठ[4] और सामंजस्यपूर्ण[5] संबंध है—और ऐसा प्रतीत होता है कि गंदे पिशाच मनुष्य और पशु का एक आदर्श संयोजन हैं। इस प्रकार, पृथ्वी पर मनुष्य और गंदे पिशाच और भी अधिक अंतरंग और अविभाज्य हैं : यद्यपि गंदे पिशाचों के अतिरिक्त, मनुष्य जानवरों से जुड़ा रहता है; इस बीच गंदे पिशाच मनुष्य से कुछ भी छिपाकर नहीं रखते, और सब-कुछ जो उनके पास होता है, वह उन्हें "समर्पित" कर देते हैं। लोग रोजाना "नरक के राजा के महल" में उछलते-कूदते हैं, "नरक के राजा" (अपने पूर्वज) की संगति में मस्ती करते हैं और उसके द्वारा गलत रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं, जिससे आज लोग मल में जम गए हैं, और मृतक आत्माओं के संसार में इतना अधिक समय बिताने के बाद उन्होंने "जीवित लोगों के संसार" में लौटने की इच्छा रखना भी बहुत समय पहले छोड़ दिया है। अतः, जैसे ही वे रोशनी देखते हैं, और परमेश्वर की

अपेक्षाओं, परमेश्वर के चरित्र और उसके कार्य का अवलोकन करते हैं, वे अपने आपको परेशान और व्याकुल महसूस करते हैं, और अब भी मृतात्माओं के संसार की ओर लौटने और भूत-प्रेतों के साथ रहने की लालसा करते हैं। बहुत समय पहले वे परमेश्वर को भूल चुके हैं और इसलिए हमेशा कब्रिस्तान में ही भटकते रहे हैं। जब मैं किसी स्त्री से मिलता हूँ, तो मैं उससे बात करने का प्रयास करता हूँ, और केवल तभी मुझे पता लगता है कि जो मेरे सामने खड़ी है, वह बिलकुल भी मनुष्य नहीं है। उसके बाल मैले-कुचैले हैं, उसका चेहरा गंदा है, और उसकी दाँतदार मुसकान भी भेड़िये की-सी है। साथ ही उसमें एक भूत जैसा भद्दापन दिखता है, जिसने अभी-अभी कब्र से निकलकर जीवित संसार के मनुष्य को देखा है। यह स्त्री हमेशा अपने होठों को मुसकान का रूप देने का प्रयास करती है; ऐसा प्रतीत होता है कि वह धूर्त और कपटी दोनों है। जब वह मेरी ओर देखकर मुसकराती है, तो ऐसा लगता है कि वह कुछ कहना चाहती है, पर शब्द नहीं ढूँढ पा रही, और वह केवल इतना ही कर पाती है कि भावशून्य और मूर्ख व्यक्ति के समान एक तरफ खड़ी रह जाती है। पीछे से देखने पर वह "चीन के परिश्रमी लोगों का सशक्त स्वरूप" प्रस्तुत करती प्रतीत होती है; इन पलों में वह और भी अधिक घिनौनी लगती है, और प्राचीन समय के पौराणिक यान हूआंग/यान वैंग[ग] के वंशजों की याद दिलाती है, जिनके बारे में लोग बातें किया करते हैं। जब मैं उससे प्रश्न करता हूँ, तो वह चुपचाप अपना सिर नीचे कर लेती है। जवाब देने में उसे बहुत समय लगता है, और जब वह जवाब देती है तो बहुत हिचकती है। वह अपने हाथों को सीधा नहीं रख सकती, और अपनी दो उँगलियाँ बिल्ली के समान चूसती रहती है। केवल अभी मै महसूस करता हूँ कि मनुष्य के हाथ ऐसे दिखते हैं, जैसे अभी-अभी कूड़े में से कुछ बीन रहे हों, उनके खुरदरे नाखून इतने बेरंगे हैं कि कोई कभी जान भी नहीं पाएगा कि उन्हें सफ़ेद होना चाहिए, उनके "सुडौल" नाखून पूरी तरह मैल से भरे हुए हैं। इससे भी अधिक घृणास्पद बात यह है कि उनके हाथों का पिछला हिस्सा मुर्गे की अभी-अभी खींचकर निकाली गई चमड़ी जैसा दिखता है। उनके हाथों की लगभग सारी रेखाएँ मनुष्य के परिश्रम के खून और पसीने के मूल्य से लबालब हैं, उनमें से प्रत्येक के बीच में मैल जैसी कोई चीज है, जो "मिट्टी की गंध" फैलाती प्रतीत होती है, जो मनुष्य की दुःख सहने की भावना की बहुमूल्यता और प्रशंसनीयता का बेहतर प्रतिनिधित्व करती है —इतना कि दुःख सहने वाला यह जज़्बा मनुष्य के हाथों की इन सब रेखाओं में भी गहरे से सन्निहित हो गया है। सिर से लेकर पैर तक, मनुष्य की कोई भी पोशाक जानवर की खाल जैसी दिखाई नहीं देती, परंतु वे यह नहीं जानते कि चाहे वे कितने भी "सम्माननीय" हों, उनकी कीमत वास्तव में लोमड़ी के रोएँ से भी

कम है—यहाँ तक कि मोर के एक पंख से भी कम, क्योंकि उनके वस्त्रों ने लंबे समय से उन्हें इतना भद्दा बना दिया है कि वे एक सूअर और कुत्ते से भी बुरे दिखाई देते हैं। उस स्त्री के छोटे-से ऊपरी वस्त्र उसकी आधी कमर तक लटके रहते हैं, और मुर्गे की आँतों जैसी उसकी टाँगें चमकदार धूप में उसकी बदसूरती उजागर करती हैं। वे छोटी और पतली हैं, मानो यह दिखाने के लिए हों कि उसके पाँव बहुत समय से बिना बँधे रहे हैं: वे बड़े पाँव अब प्राचीन समाज के "तीन इंच लंबे सुनहरे कमल" नहीं रहे हैं। इस स्त्री की वेशभूषा बहुत पाश्चात्य है, पर बहुत ओछी भी। जब मैं उससे मिलता हूँ, वह हमेशा संकोची दिखती है, उसका चेहरा गहरा लाल हो जाता है, और वह अपना सिर उठाने में भी बिलकुल असमर्थ होती है, मानो वह गंदे पिशाचों द्वारा बहुत कुचली गई है, और अब लोगों से नजरें नहीं मिला सकती। मनुष्य के चेहरे पर धूल जमी हुई है। यह धूल, जो असमान से गिरी है, मनुष्य के चेहरे पर अनुचित रूप से गिरती हुई प्रतीत होती है, और उसे चिड़िया के पंख जैसा बना देती है। मनुष्य की आँखें भी चिड़िया की आँखों जैसी हैं : छोटी और सूखी, बिना किसी चमक के। जब लोग बात करते हैं, तो उनके बोल आदतन लड़खड़ाहट से भरे और अस्पष्ट, और दूसरों के लिए वीभत्स और घिनौने होते हैं। फिर भी बहुत-से लोग ऐसे लोगों की "राष्ट्र के प्रतिनिधियों" के रूप में प्रशंसा करते हैं। क्या यह मजाक नहीं है? परमेश्वर लोगों को बदलना चाहता है, उन्हें बचाना चाहता है, उन्हें मृत्यु की कब्र से छुड़ाना चाहता है, ताकि वे उस जीवन से बच जाएँ, जो वे अधोलोक और नरक में बिताते हैं।

फुटनोट :

1. "अश्वेत अफ़्रीकी" उन अश्वेत लोगों को संदर्भित करता है, जो परमेश्वर द्वारा शापित थे, और जो पीढ़ियों से गुलाम रहे हैं।

2. "गुंडों का समूह" मनुष्य-जाति की भ्रष्टता को सदर्भित करता है, और इसे भी कि कैसे मनुष्य-जाति में एक भी पवित्र मनुष्य नहीं है।

3. "विकसित होना" कपि-मानव के आज के लोगों के रूप में "क्रमिक विकास" को संदर्भित करता है। आशय व्यंग्यात्मक है : वास्तव में, प्राचीन वानरों के सीधे खड़े होकर चलने वाले मनुष्यों में विकसित होने के सिद्धांत जैसी कोई चीज़ नहीं है।

4. "घनिष्ठ" का इस्तेमाल उपहासपूर्ण ढंग से किया गया है।

5. "सामंजस्यपूर्ण" का इस्तेमाल उपहासपूर्ण ढंग से किया गया है।

क. मूल पाठ में "उस स्त्री का" लिखा है।

ख. मूल पाठ में "लोगों के चेहरे" लिखा है।

ग. "यान" और "हूआंग" दो पौराणिक सम्राटों के नाम हैं, जो चीन के पहले संस्कृति-दाताओं में से थे। "यान वैंग" ऐसा चीनी नाम है, जो "नरक के राजा" के लिए प्रयुक्त किया जाता है। "यान हूआंग" और "यान वैंग" का उच्चारण जब मेंडरिन भाषा में किया जाता है, तो ये लगभग एक जैसे प्रतीत होते हैं।

कार्य और प्रवेश (6)

कार्य और प्रवेश अंतर्निहित रूप से व्यावहारिक हैं; वे परमेश्वर के कार्य और मनुष्य के प्रवेश को संदर्भित करते हैं। परमेश्वर के वास्तविक चेहरे और उसके कार्य को समझने में मनुष्य की पूर्ण अक्षमता ने उसके प्रवेश में अत्यधिक कठिनाई लाई है। आज तक, बहुत-से लोग अब भी नहीं जानते कि अंत के दिनों में परमेश्वर कौन-सा कार्य संपन्न करेगा या परमेश्वर ने मनुष्य के साथ उसके सुख-दुःख में खड़े होने के लिए देह में आने हेतु चरम अपमान क्यों सहा? मनुष्य, परमेश्वर के कार्य के लक्ष्य से लेकर अंत के दिनों के लिए परमेश्वर की योजना के प्रयोजन तक सभी चीज़ों के बारे में पूरी तरह से अँधेरे में है। विभिन्न कारणों से, लोग सदैव उस प्रवेश के प्रति निरुत्साहित और अनिश्चित[1] रहते हैं, जिसकी परमेश्वर उनसे माँग करता है, जिसने देह में परमेश्वर के कार्य में अत्यधिक कठिनाई ला दी है। ऐसा प्रतीत होता है कि सभी लोग बाधाएँ बन गए हैं, और आज तक, वे सब अस्पष्ट ही हैं। इसलिए, मैं समझता हूँ कि हमें परमेश्वर द्वारा मनुष्य पर किए जाने वाले कार्य और परमेश्वर के अत्यावश्यक इरादे के बारे में बात करनी चाहिए, ताकि तुम सभी लोग परमेश्वर के वफ़ादार सेवक बन जाओ, जो अय्यूब की तरह परमेश्वर को अस्वीकार करने के बजाय हर अपमान सहते हुए मर जाएँगे; और जो पतरस की तरह अपना समस्त अस्तित्व परमेश्वर को अर्पित कर देंगे और अंत के दिनों में परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए गए उसके अंतरंग बन जाएँगे। काश, सभी भाई-बहन परमेश्वर की स्वर्गिक इच्छा के लिए अपना सर्वस्व प्रदान कर दें और उसे अपना समस्त अस्तित्व अर्पित कर दें, परमेश्वर के घर में पवित्र सेवक बन जाएँ, और परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए अनंतता के वादे का आनंद लें, ताकि परमपिता परमेश्वर का हृदय शीघ्र ही शांतिपूर्ण आराम का आनंद ले सके। "परमपिता परमेश्वर की इच्छा पूरी करो" उन सभी का आदर्श वाक्य होना चाहिए, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। इन वचनों को प्रवेश के लिए मनुष्य की मार्गदर्शिका और उसके कार्यों का निर्देशन करने वाले कम्पास का काम करना चाहिए। मनुष्य में यही संकल्प होना चाहिए। पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य को पूरी तरह से संपन्न करना और देह में परमेश्वर के कार्य में सहयोग करना—यही मनुष्य का कर्तव्य है, उस दिन तक, जब परमेश्वर का

कार्य हो जाएगा और मनुष्य उसे स्वर्ग में परमपिता के पास शीघ्र लौटने पर विदाई देगा। क्या मनुष्य को यह दायित्व पूरा नहीं करना चाहिए?

जब, अनुग्रह के युग में, परमेश्वर तीसरे स्वर्ग में लौटा, तो समस्त मानव-जाति के छुटकारे का परमेश्वर का कार्य वास्तव में पहले ही अपने अंतिम भाग में पहुँच गया था। धरती पर जो कुछ शेष रह गया था, वह था सलीब जिसे यीशु ने अपनी पीठ पर ढोया था, बारीक सन का कपड़ा जिसमें यीशु को लपेटा गया था, और काँटों का मुकुट और लाल रंग का लबादा जो यीशु ने पहना था (ये वे वस्तुएँ थीं, जिनसे यहूदियों ने उसका मज़ाक उड़ाया था)। अर्थात्, यीशु के सलीब पर चढ़ने के कार्य से अत्यधिक सनसनी उत्पन्न होने के बाद, चीज़ें फिर से शांत हो गईं। तब से यीशु के शिष्यों ने हर जगह कलीसियाओं में चरवाही और सिंचन करते हुए उसके कार्य को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया। उनके कार्य की विषयवस्तु यह थी : उन्होंने सभी लोगों से पश्चात्ताप करने, अपने पाप स्वीकार करने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा; और सभी प्रेरित यीशु के सलीब पर चढ़ने की अंदर की कहानी, असली वृत्तांत फैलाने के लिए आगे बढ़ गए, और इसलिए हर कोई अपने पाप स्वीकार करने के लिए स्वयं को यीशु के सामने दंडवत होने से नहीं रोक पाया; और इसके अलावा प्रेरित हर जगह जाकर यीशु द्वारा बोले गए वचन सुनाने लगे। उस क्षण से अनुग्रह के युग में कलीसियाओं का निर्माण होना शुरू हुआ। उस युग में यीशु ने मनुष्य के जीवन और स्वर्गिक पिता की इच्छा के बारे में भी बात की, लेकिन चूँकि वह एक अलग युग था, इसलिए उनमें से कई उक्तियाँ और अभ्यास आज की उक्तियों और अभ्यासों से बहुत भिन्न थीं। किंतु दोनों का सार एक ही है : दोनों हूबहू और यथार्थत: देह में परमेश्वर के आत्मा के कार्य हैं। इस प्रकार का कार्य और कथन आज के दिन तक जारी है, और यही कारण है कि आज के धार्मिक संस्थानों में अभी भी इसी प्रकार की चीज़ों को साझा किया जाता है, और यह सर्वथा अपरिवर्तित है। जब यीशु का कार्य संपन्न हो गया और कलीसियाएँ पहले ही यीशु मसीह के सही मार्ग पर आ चुकी थीं, तब भी परमेश्वर ने अपने कार्य के एक अन्य चरण के लिए अपनी योजना शुरू कर दी, जो कि अंत के दिनों में उसका देह में आने का मामला था। जैसा कि मनुष्य इसे देखता है, परमेश्वर के सलीब पर चढ़ने ने परमेश्वर के देहधारण के कार्य को पहले ही संपन्न कर दिया था, समस्त मानव-जाति को छुटकारा दिला दिया था, और परमेश्वर को अधोलोक की चाबी लेने दी थी। हर कोई सोचता है कि परमेश्वर का कार्य पूरी तरह से निष्पादित हो चुका है। वस्तुतः, परमेश्वर के दृष्टिकोण से, उसके कार्य का केवल एक छोटा-सा हिस्सा ही निष्पादित हुआ है। उसने मानवजाति को केवल छुटकारा

दिलाया था; उसने मानवजाति को जीता नहीं था, मनुष्य के शैतानी चेहरे को बदलने की बात तो छोड़ ही दो। इसीलिए परमेश्वर कहता है, "यद्यपि मेरे द्वारा धारित देह मृत्यु की पीड़ा से गुज़री, किंतु वह मेरे देहधारण का संपूर्ण लक्ष्य नहीं था। यीशु मेरा प्यारा पुत्र है और उसे मेरे लिए सलीब पर चढ़ा दिया गया, किंतु उसने मेरे कार्य का पूरी तरह से समापन नहीं किया। उसने केवल उसका एक अंश पूरा किया।" इस प्रकार परमेश्वर ने देहधारण के कार्य को जारी रखने के लिए योजनाओं के दूसरे चक्र की शुरुआत की। परमेश्वर का अंतिम इरादा शैतान के पंजों से बचाए गए हर व्यक्ति को पूर्ण बनाना और प्राप्त करना था, यही वजह है कि परमेश्वर एक बार फिर देह में आने का खतरा उठाने के लिए तैयार हो गया। "देहधारण" से तात्पर्य उससे है, जो महिमा नहीं लाता (क्योंकि परमेश्वर का कार्य अभी तक समाप्त नहीं हुआ है), बल्कि जो प्यारे पुत्र की पहचान में प्रकट होता है, और मसीह है, जिससे परमेश्वर बहुत प्रसन्न है। यही कारण है कि इसे "खतरा उठाना" कहा जाता है। धारित देह कमज़ोर सामर्थ्य वाला है और उसे अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए,[2] और उसका सामर्थ्य स्वर्गिक पिता के अधिकार से एकदम अलग है; वह अन्य कार्य में शामिल हुए बिना परमपिता परमेश्वर का कार्य और आज्ञा पूरी करता हुआ, केवल देह की सेवकाई पूरी करता है, और वह केवल कार्य के एक हिस्से को पूरा करता है। यही कारण है कि परमेश्वर के पृथ्वी पर आते ही उसे "मसीह" नाम दिया गया—यह इस नाम का सन्निहित अर्थ है। यह कहे जाने का कि आगमन के संग प्रलोभन भी होते हैं, यह कारण है कि कार्य का केवल एक हिस्सा पूरा किया जा रहा है। इसके अलावा, परमपिता परमेश्वर द्वारा उसे केवल "मसीह" और "प्यारा पुत्र" कहने, लेकिन उसे महिमा न देने का ठीक-ठीक कारण यह है कि देहधारी केवल कार्य का एक हिस्सा करने के लिए आता है, स्वर्ग के परमपिता का प्रतिनिधित्व करने के लिए नहीं, बल्कि प्यारे पुत्र की सेवकाई पूरी करने के लिए। जब प्यारा पुत्र अपने कंधे पर उठाए गए समस्त कार्यभार को पूरा कर लेता है, तो परमपिता उसे परमपिता की पहचान के साथ-साथ पूर्ण महिमा भी देता है। कहा जा सकता है कि यह "स्वर्ग की संहिता" है। चूँकि वह, जो देह में आया है, और स्वर्ग का परमपिता, दो अलग-अलग लोकों में हैं, दोनों आत्मा में एक-दूसरे को केवल निहारते हैं, परमपिता प्रिय पुत्र पर नज़र रखता है, किंतु पुत्र दूर से परमपिता को देखने में असमर्थ है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि देह जो कार्य करने में सक्षम है, वे बहुत छोटे हैं और उसे किसी भी क्षण मार दिए जाने की संभावना है, और कहा जा सकता है कि यह आगमन सबसे बड़े ख़तरे से भरा है। यह परमेश्वर द्वारा अपने प्रिय पुत्र को एक बार फिर शेर के मुँह में, जहाँ उसका जीवन ख़तरे में है, छोड़ने जैसा

है, उसे ऐसी जगह छोड़ने के बराबर है जहाँ शैतान सबसे अधिक केंद्रित है। इन विकट स्थितियों में भी परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र को एक गंदगी और व्यभिचार से भरे स्थान के लोगों को उसे "वयस्कता की अवस्था में लाने" के लिए सौंप दिया। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यही एक तरीका है जिससे परमेश्वर का कार्य उपयुक्त और स्वाभाविक प्रतीत हो सकता है, और यही एक तरीका है जिससे परमपिता परमेश्वर की सभी इच्छाएँ पूरी की जा सकती हैं और मानवजाति के बीच उसके कार्य के अंतिम हिस्से को पूरा किया जा सकता है। यीशु ने परमपिता परमेश्वर के कार्य का एक चरण निष्पादित करने से अधिक कुछ नहीं किया। धारित देह द्वारा लगाए गए अवरोध और पूरा किए जाने वाले कार्य में भिन्नताओं की वजह से यीशु स्वयं नहीं जानता था कि देह में एक दूसरा आगमन भी होगा। इसलिए बाइबल के किसी प्रतिपादक या नबी ने स्पष्ट रूप से यह भविष्यवाणी करने का साहस नहीं किया कि परमेश्वर अंत के दिनों में पुन: देहधारी होगा, अर्थात वह देह में अपने कार्य के दूसरे हिस्से को करने के लिए फिर से देह में आएगा। इसलिए, किसी को पता नहीं चला कि परमेश्वर पहले ही लंबे समय से स्वयं को देह में छिपाए हुए था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि यीशु ने पुनर्जीवित होने और स्वर्गारोहण करने के बाद ही इस कार्यभार को स्वीकार किया था, इसलिए परमेश्वर के दूसरे देहधारण के बारे में कोई स्पष्ट भविष्यवाणी नहीं है, और मानव-मस्तिष्क के लिए इस पर विचार कर पाना संभव नहीं। बाइबल की भविष्यवाणी की अनेक किताबों में ऐसा कोई भी वचन नहीं है, जो इसका स्पष्टता से उल्लेख करता हो। किंतु जब यीशु काम करने आया था, तो एक स्पष्ट भविष्यवाणी पहले से मौजूद थी, जिसमें कहा गया था कि एक कुँआरी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, अर्थात वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था। इसके बावजूद, परमेश्वर ने तब भी कहा कि यह मृत्यु के जोख़िम पर हुआ, तो आज यह मामला कितना अधिक जोखिम भरा होगा? इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर कहता है कि इस देहधारण में खतरों का जोखिम अनुग्रह के युग के खतरों से हजारों गुना अधिक है। कई जगहों पर परमेश्वर ने सीनियों के देश में विजेताओं के एक समूह को प्राप्त करने की भविष्यवाणी की है। चूँकि विजेताओं को दुनिया के पूर्व में प्राप्त किया जाना है, इसलिए परमेश्वर अपने दूसरे देहधारण में जहाँ कदम रखता है, वह बिना किसी संदेह के सीनियों का देश है, ठीक वह स्थान, जहाँ बड़ा लाल अजगर कुंडली मारे पड़ा है। वहाँ परमेश्वर बड़े लाल अजगर के वंशजों को प्राप्त करेगा, ताकि वह पूर्णतः पराजित और शर्मिंदा हो जाए। परमेश्वर पीड़ा के बोझ से अत्यधिक दबे इन लोगों को जगाने जा रहा है, जब तक कि वे पूरी तरह से जाग नहीं जाते, वह उन्हें कोहरे से बाहर निकालेगा, और उनसे उस बड़े लाल अजगर को

अस्वीकार करवाएगा। वे अपने सपने से जागेंगे, बड़े लाल अजगर के सार को जानेंगे, परमेश्वर को अपना संपूर्ण हृदय देने में सक्षम होंगे, अँधेरे की ताक़तों के दमन से बाहर निकलेंगे, दुनिया के पूर्व में खड़े होंगे, और परमेश्वर की जीत का सबूत बनेंगे। केवल इसी तरीके से परमेश्वर महिमा प्राप्त करेगा। केवल इसी कारण से परमेश्वर इस्राएल में समाप्त हुए कार्य को उस देश में लाया, जहाँ बड़ा लाल अजगर कुंडली मारे पड़ा है, और प्रस्थान करने के लगभग दो हजार वर्ष बाद वह अनुग्रह के कार्य को जारी रखने के लिए पुनः देह में आया है। मनुष्य की आँखों को लग रहा है कि, परमेश्वर देह में नए कार्य का शुभारंभ कर रहा है। किंतु परमेश्वर की दृष्टि से, वह अनुग्रह के युग के कार्य को जारी रख रहा है, पर केवल कुछ हजार वर्षों के अंतराल के बाद, और अपने कार्य के स्थान तथा कार्यक्रम में बदलाव के साथ। यद्यपि आज के कार्य में धारित देह की छवि यीशु से सर्वथा भिन्न है, फिर भी वे एक ही सार और मूल से उत्पन्न हुए हैं, और वे एक ही स्रोत से आते हैं। हो सकता है, बाहर उनमें कई अंतर हों, किंतु उनके कार्य के आंतरिक सत्य पूरी तरह से समान हैं। आख़िरकार उनके युगों में रात और दिन का अंतर है। तो फिर परमेश्वर के कार्य का स्वरूप अपरिवर्तित कैसे रह सकता है? या उसके कार्य के विभिन्न चरण एक-दूसरे के आड़े कैसे आ सकते हैं?

यीशु ने एक यहूदी का रूप धारण किया, यहूदियों जैसी पोशाक पहनी, और यहूदी भोजन खाते हुए बड़ा हुआ। यह उसका सामान्य मानवीय पहलू है। किंतु आज देहधारी परमेश्वर एशिया के एक नागरिक का रूप धारण करता है और बड़े लाल अजगर के देश में बढ़ता है। ये किसी भी तरह से परमेश्वर के देहधारण के लक्ष्य के साथ टकराव नहीं करते। बल्कि, वे परमेश्वर के देहधारण के वास्तविक अर्थ को अधिक पूर्णता से प्रकट करते हुए एक-दूसरे के पूरक हैं। क्योंकि देहधारी परमेश्वर का उल्लेख "मनुष्य का पुत्र" या "मसीह" के रूप में किया जाता है, इसलिए आज के मसीह के बाह्य स्वरूप के बारे में उसी रूप में नहीं बोला जा सकता, जिस रूप में यीशु मसीह के बारे में बोला जाता है। आख़िरकार, इस देहधारी को "मनुष्य का पुत्र" कहा जाता है और यह देह की छवि में है। परमेश्वर के कार्य का हर चरण काफी गहरा अर्थ रखता है। यीशु के पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आने का कारण यह है कि चूँकि उसे पापियों को छुटकारा दिलाना था, इसलिए उसे पापरहित होना था। किंतु केवल अंत में, जब उसे पापी देह जैसा बनने के लिए बाध्य किया गया और उसने पापियों के पाप धारण किए, तभी उसने उन्हें शापित सलीब से बचाया, सलीब जिससे परमेश्वर ने लोगों को ताड़ित किया। (सलीब लोगों को शाप देने और ताड़ित करने के लिए परमेश्वर का औजार है, जब भी शाप और ताड़ना देने का उल्लेख किया जाता है, तो वह पापियों के विशेष

संदर्भ में होता है।) इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि सभी पापी पश्चात्ताप करें और सलीब पर चढ़ने के माध्यम से उनसे उनके पाप स्वीकार करवाए जाएँ। अर्थात्, समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाने के वास्ते परमेश्वर ने देहधारण किया, जो पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था और जिसने समस्त मानवजाति के पाप धारण कर लिए। इसका रोज़मर्रा की भाषा में वर्णन किया जाए तो, उसने समस्त पापियों के बदले में अपना पवित्र शरीर अर्पित कर दिया, जो शैतान के सामने "पापमोचन बलि" के रूप में रखे गए यीशु के समतुल्य है जिससे शैतान से “विनती” की जा सके कि वह अपने द्वारा कुचली गई समस्त निर्दोष मानवजाति को परमेश्वर को वापस दे दे। यही कारण है कि इस तरह छुटकारे के कार्य के इस चरण को निष्पादित करने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आना आवश्यक था। परमपिता परमेश्वर और शैतान के बीच लड़ाई में यह एक आवश्यक शर्त, एक "शांति-संधि" थी। यही कारण है कि यीशु को शैतान को सौंपे जाने के बाद ही कार्य के इस चरण का समापन हुआ। हालाँकि, परमेश्वर द्वारा छुटकारे का कार्य आज पहले की तुलना में भव्यता का अभूतपूर्व स्तर हासिल कर चुका है, और शैतान के पास और माँगें करने का कोई बहाना नहीं है, इसलिए परमेश्वर के देहधारण के लिए पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आने की अब आवश्यकता नहीं है। चूँकि परमेश्वर स्वाभाविक रूप से पवित्र और निर्दोष है, इसलिए इस देहधारण में परमेश्वर अब अनुग्रह के युग का यीशु नहीं है। किंतु वह अभी भी परमपिता परमेश्वर की इच्छा के वास्ते और उसकी इच्छाएँ पूरी करने के वास्ते देह धारण करता है। निश्चित रूप से यह चीज़ों को समझाने का अनुचित तरीका नहीं है? क्या परमेश्वर के देहधारण को नियमों के एक निश्चित ढाँचे का पालन करना आवश्यक है?

बहुत-से लोग परमेश्वर के देहधारण की कोई भविष्यवाणी पाने की आशा में साक्ष्य के लिए बाइबल में देखते हैं। मनुष्य अपने भ्रमित और अव्यवस्थित विचारों के साथ कैसे जान सकता है कि परमेश्वर ने बहुत पहले ही बाइबल में "कार्य करना" बंद कर दिया है और उसने जोश और चाव के साथ उस कार्य को करने के लिए उससे बाहर "छलाँग लगा दी" है, जिसकी उसने लंबे समय से योजना बनाई थी किंतु जिसके बारे में उसने मनुष्य को कभी नहीं बताया था? लोगों में समझ का अत्यंत अभाव है। परमेश्वर के स्वभाव का महज़ अनुभव लेने के बाद वे एक ऊँचे मंच पर चढ़ते हैं, और परमेश्वर के कार्य का निरीक्षण करने के लिए पूरी उदासीनता के साथ एक उच्च श्रेणी की "व्हीलचेयर" में बैठ जाते हैं, यहाँ तक कि दुनिया-जहान की हर चीज़ के बारे में आडंबरपूर्ण, असंगत बातें करते हुए परमेश्वर को सिखाना शुरू कर देते हैं। कई "वृद्ध

व्यक्ति" पढ़ने का चश्मा लगाए हुए और अपनी दाढ़ी सहलाते हुए "पुरानी जंतरी" (बाइबल) के पीले पड़ चुके पन्ने खोलते हैं, जिसे वे जिंदगीभर पढ़ते रहे हैं। बुदबुदाए वचनों और आत्मा के साथ चमकती प्रतीत होने वाली आँखों के साथ वह वृद्ध अब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की ओर मुड़ता है, और अब दानिय्येल की पुस्तक की ओर, और अब यशायाह की पुस्तक की ओर, जिससे सब अच्छी तरह से परिचित हैं। छोटे-छोटे अक्षरों से गहनता से भरे एक के बाद एक पृष्ठ को घूरते हुए वह मौन में पढ़ता है, उसका मस्तिष्क निरंतर चल रहा है। अचानक दाढ़ी सहलाने वाला हाथ रुक जाता है और दाढ़ी खींचना शुरू कर देता है। यदा-कदा लोगों को दाढ़ी के बाल नोंचने की आवाज़ सुनाई देती है। ऐसा असामान्य व्यवहार उन्हें हक्का-बक्का कर देता है। "इतनी ताक़त लगाने की क्या ज़रूरत है? वह किस चीज़ के लिए इतना पागल हो रहा है?" वृद्ध व्यक्ति की ओर एक बार फिर देखने पर हम पाते हैं कि अब उसकी भौहें खड़ी हो गई हैं। सफ़ेद भौहें नीचे झुक आयीं हैं, बतख़ के पंखों की तरह उस वृद्ध व्यक्ति की पलकों से ठीक दो सेंटीमीटर ऊपर, मानो संयोगवश लेकिन बख़ूबी, उस वृद्ध व्यक्ति के अपनी आँखें पृष्ठों पर गड़ाए रखने पर वे ऐसी दिखाई देती हैं मानो उनमें फफूँद लगी हो। उन्हीं-उन्हीं पन्नों को कई-कई बार पढ़ने के बाद वह खुद खड़ा होने से नहीं रोक पाता और इस तरह बड़बड़ाना शुरू कर देता है, मानो किसी के साथ गपशप[3] कर रहा हो, यद्यपि उसकी आँखों की चमक ने जंतरी को नहीं छोड़ा है। अचानक वह वर्तमान पृष्ठ को ढक देता है और "दूसरी दुनिया" की ओर मुड़ जाता है। उसकी हरकतें इतनी जल्दबाज़ी भरी[4] और भयभीत कर देने वाली हैं कि लोगों को लगभग अप्रत्याशित ढंग से चौंका देती हैं। इस समय, वह चूहा जो अपने बिल से बाहर आ गया था और उसके मौन रहने के दौरान मुक्त रूप से घूमने के लिए तनावमुक्त महसूस कर ही रहा था, उसकी अप्रत्याशित हरकतों से इतना शंकित हो जाता है कि तेजी से दौड़कर अपने बिल में वापस चला जाता है और धुएँ के गुबार की तरह उसमें पुन: दिखाई न देने के लिए गायब हो जाता है। और अब वृद्ध व्यक्ति का अस्थायी रूप से निस्पंद हुआ बायाँ हाथ फिर से दाढ़ी को ऊपर-नीचे सहलाना शुरू कर देता है। फिर वह पुस्तक को मेज पर छोड़कर अपनी कुर्सी से उठकर चला जाता है। दरवाजे की दरार और खुली हुई खिड़की से हवा आती है और निर्दयतापूर्वक पुस्तक को बंद करके फिर खोल देती है। दृश्य में एक अकथनीय निराशा व्याप्त है, और पुस्तक के हवा से सरसराते हुए पन्नों की आवाज़ को छोड़कर, सारी सृष्टि मौन हो गई प्रतीत होती है। अपनी पीठ के पीछे हाथ बाँधे हुए वह कमरे में आगे-पीछे चलता है, कभी रुकता है, कभी फिर चलने लगता है, बीच-बीच में अपना सिर हिलाता रहता है, और अपने मुँह में ये शब्द

दोहराता प्रतीत होता है, “ओह! परमेश्वर! क्या तू वास्तव में ऐसा करेगा?" बीच-बीच में वह सहमति में सिर हिलाता हुआ यह भी कहता है, "हे परमेश्वर! कौन तेरे कार्य की थाह पा सकता है? क्या तेरे पदचिह्नों को खोजना कठिन नहीं है? मुझे विश्वास है कि तू अकारण समस्या पैदा करने वाली चीज़ें नहीं करता।" इस समय वृद्ध व्यक्ति परेशानी का भाव और एक अत्यंत दर्दभरा भावदर्शाते हुए अपनी भौंहें कसकर सिकोड़ लेता है, आँखें भींच लेता है, मानो वह कोई धीमी और सुचिंतित गणना करने वाला हो। बेचारा बूढ़ा आदमी! अपना पूरा जीवन जी लेने के बाद "दुर्भाग्यवश" इतनी देर से यह मामला आ पड़ा है। इस बारे में क्या किया जा सकता है? मैं भी उलझन में हूँ और कुछ कर पाने में असमर्थ हूँ। किसने उसकी पुरानी जंतरी को समय के साथ पीला कर दिया? किसने उसकी समस्त दाढ़ी और भौहों को उसके चेहरे पर अलग-अलग जगहों में सफेद बर्फ की तरह निर्दयी ढंग से ढक दिया? मानो उसकी दाढ़ी के बाल उसकी वरिष्ठता दर्शाते हों। फिर भी, कौन जानता था कि मनुष्य इस हद तक मूर्ख हो सकता है कि परमेश्वर की उपस्थिति को पुरानी जंतरी में खोजेगा? पुरानी जंतरी में कागज के कितने पन्ने हो सकते हैं? क्या यह वाकई परमेश्वर के सभी कर्मों को पूरी सटीकता के साथ दर्ज कर सकती है? इसकी गारंटी देने का साहस कौन करता है? फिर भी मनुष्य वास्तव में वचनों का अत्यधिक पदभंजन करके और बाल की खाल निकालकर[5] परमेश्वर के प्रकटन की तलाश करने और उसकी इच्छा पूरी करने और इस तरह जीवन में प्रवेश करने की सोचता है। क्या इस तरह से जीवन में प्रवेश करने का प्रयास करना उतना आसान है, जितना यह प्रतीत होता है? क्या यह सबसे बेतुके और बेहूदे ढंग का ग़लत तर्क नहीं है? क्या तुम्हें यह हास्यास्पद नहीं लगता?

फ़ुटनोट :

1. "अनिश्चित" संकेत करता है कि लोगों में परमेश्वर के कार्य के संबंध में स्पष्ट अंतर्दृष्टि नहीं है।

2. "कमज़ोर सामर्थ्य वाला है और उसे अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए" संकेत करता है कि देह की कठिनाइयाँ बहुत अधिक हैं और किया गया कार्य बहुत सीमित।

3. "गपशप" लोगों के उस वक्त बनने वाले बदसूरत चेहरे का रूपक है, जब वे परमेश्वर के कार्य में शोध करते हैं।

4. "जल्दबाज़ी भरी" बाइबल पढ़ते समय "वृद्ध व्यक्ति" की उत्सुक, हड़बड़ीयुक्त गतिविधियों की ओर संकेत करता है।

5. "वचनों का अत्यधिक पदभंजन करके और बाल की खाल निकालकर" का उपयोग भ्रांतियों में पड़े विशेषज्ञों का उपहास उड़ाने के लिए किया गया है, जो वचनों की बाल की खाल निकालते हैं, किंतु सत्य की तलाश नहीं करते या पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं जानते।

कार्य और प्रवेश (7)

मानव को आज तक का समय लग गया है यह समझ पाने में कि उसमें केवल आध्यात्मिक जीवन की आपूर्ति और परमेश्वर को जानने के अनुभव का ही अभाव नहीं है, बल्कि—इससे भी अधिक महत्वपूर्ण—उसके स्वभाव में परिवर्तन का अभाव है। अपनी ही जाति के इतिहास और प्राचीन संस्कृति के बारे में मनुष्य की पूर्ण अज्ञानता का यह परिणाम हुआ है कि वह परमेश्वर के कार्य के बारे में बिलकुल भी नहीं जानता। सभी लोगों को उम्मीद है कि मनुष्य अपने दिल के भीतर गहराई में परमेश्वर से जुड़ा हो सकता है, लेकिन चूँकि मनुष्य की देह अत्यधिक भ्रष्ट है, और जड़ तथा कुंठित दोनों है, इस कारण उसे परमेश्वर का कुछ भी ज्ञान नहीं है। आज मनुष्यों के बीच आने का परमेश्वर का प्रयोजन और कुछ नहीं, बल्कि उनके विचारों और आत्माओं, और साथ ही उनके दिलों में लाखों वर्षों से मौजूद परमेश्वर की छवि को भी बदलना है। वह इस अवसर का इस्तेमाल मनुष्य को पूर्ण बनाने के लिए करेगा। अर्थात, वह मनुष्यों के ज्ञान के माध्यम से परमेश्वर को जानने के उनके तरीके और अपने प्रति उनका दृष्टिकोण बदल देगा, ताकि उन्हें परमेश्वर को जानने के लिए एक विजयी नई शुरुआत करने में सक्षम बना सके, और इस प्रकार मनुष्य की आत्मा का नवीकरण और रूपांतरण हासिल कर सके। निपटारा और अनुशासन साधन हैं, जबकि विजय और नवीकरण लक्ष्य हैं। मनुष्य ने एक अस्पष्ट परमेश्वर के बारे में जो अंधविश्वासी विचार बना रखे हैं, उन्हें दूर करना हमेशा से परमेश्वर का इरादा रहा है, और हाल ही में यह उसके लिए एक तात्कालिक आवश्यकता का मुद्दा भी बन गया है। काश, सभी लोग इस स्थिति पर विस्तार से विचार करें। जिस तरीके से प्रत्येक व्यक्ति अनुभव करता है, उसे बदलो, ताकि परमेश्वर का यह अत्यावश्यक इरादा जल्दी फलित हो सके और पृथ्वी पर परमेश्वर के काम का अंतिम चरण उत्तमता से संपन्न हो सके। परमेश्वर को वह वफ़ादारी दो, जिसे देना तुम लोगों का कर्तव्य है, और अंतिम बार परमेश्वर के दिल को सुकून दो। काश, भाइयों और बहनों में से कोई इस जिम्मेदारी से जी न चुराए या बेमन से काम न करे। परमेश्वर ने इस बार निमंत्रण के उत्तर में, और मनुष्य की स्थिति की स्पष्ट प्रतिक्रिया के तौर पर, देहधारण किया है। अर्थात, वह मनुष्य को वह चीज़ प्रदान करने आया है, जिसकी उसे ज़रूरत है। संक्षेप में, वह हर व्यक्ति को, चाहे उसकी क्षमता या लालन-पालन कैसा भी हो, परमेश्वर के वचन को देखने, और उसके माध्यम से परमेश्वर के अस्तित्व और उसकी अभिव्यक्ति को देखने तथा परमेश्वर द्वारा उसे पूर्ण बनाए जाने को स्वीकार करने में सक्षम बना देगा, और ऐसा करके वह मनुष्य के विचारों और धारणाओं को बदल देगा, जिससे कि

परमेश्वर का मूल चेहरा मनुष्य के दिल की गहराई में दृढ़ता से बस जाएगा। यह पृथ्वी पर परमेश्वर की एकमात्र इच्छा है। मनुष्य की जन्मजात प्रकृति चाहे कितनी ही महान हो, या मनुष्य का सार चाहे कितना भी तुच्छ हो, या अतीत में मनुष्य का व्यवहार चाहे वास्तव में कैसा भी रहा हो, परमेश्वर इन बातों पर कोई ध्यान नहीं देता। परमेश्वर केवल यह उम्मीद करता है कि मनुष्य अपने अंतर्तम में मौजूद परमेश्वर की छवि को पूरी तरह से नया बना सके और मानवजाति के सार को जान सके, जिससे मनुष्य का वैचारिक दृष्टिकोण रूपांतरित हो सके और वह परमेश्वर के लिए गहराई से लालायित हो सके तथा उसके प्रति एक शाश्वत ललक जगा सके : यही एक माँग है, जो परमेश्वर मनुष्य से करता है।

कई हजार वर्षों की प्राचीन संस्कृति और इतिहास के ज्ञान ने मनुष्य की सोच और धारणाओं तथा उसके मानसिक दृष्टिकोण को इतना कसकर बंद कर दिया है कि वे अभेद्य और प्राकृतिक रूप से नष्ट न होने वाले[1] बन गए हैं। लोग नरक के अठारहवें घेरे में रहते हैं, मानो उन्हें परमेश्वर द्वारा काल-कोठरियों में निर्वासित कर दिया गया हो, जहाँ प्रकाश कभी दिखाई नहीं दे सकता। सामंती सोच ने लोगों का इस तरह उत्पीड़न किया है कि वे मुश्किल से साँस ले पाते हैं और उनका दम घुट रहा है। उनमें प्रतिरोध करने की थोड़ी-सी भी ताकत नहीं है; वे बस सहते हैं और चुपचाप सहते हैं...। कभी किसी ने धार्मिकता और न्याय के लिए संघर्ष करने या खड़े होने का साहस नहीं किया; लोग बस दिन-ब-दिन और साल-दर-साल सामंती नीति-शास्त्र के प्रहारों और दुर्व्यवहारों तले जानवर से भी बदतर जीवन जीते हैं। उन्होंने कभी मानव-जगत में खुशी पाने के लिए परमेश्वर की तलाश करने के बारे में नहीं सोचा। ऐसा लगता है, मानो लोगों को पीट-पीटकर इस हद तक तोड़ डाला गया है कि वे पतझड़ में गिरे पत्तों की तरह हो गए हैं, मुरझाए हुए, सूखे और पीले-भूरे रंग के। लोग लंबे समय से अपनी याददाश्त खो चुके हैं; वे असहाय-से उस नरक में रहते हैं, जिसका नाम है मानव-जगत, अंत के दिन आने का इंतज़ार करते हुए, ताकि वे इस नरक के साथ ही नष्ट हो जाएँ, मानो वह अंत का दिन, जिसके लिए वे लालायित रहते हैं, वह दिन हो, जब मनुष्य आरामदायक शांति का आनंद लेगा। सामंती नैतिकता ने मनुष्य का जीवन "अधोलोक" में पहुँचा दिया है, जिससे उसकी प्रतिरोध करने की शक्ति और भी कम हो गई है। सभी प्रकार के उत्पीड़न मनुष्य को धीरे-धीरे अधोलोक में धकेल रहे हैं, जिससे वह अधोलोक की और अधिक गहराई में पहुँच रहा है और परमेश्वर से अधिकाधिक दूर होता गया है, आज तो परमेश्वर उसके लिए पूर्णत: अजनबी बन गया है, और जब वे मिलते हैं, तो वह उससे बचने के लिए जल्दी से निकल जाता है। मनुष्य उस पर ध्यान नहीं देता और उसे एक तरफ अकेला

खड़ा छोड़ देता है, जैसे कि उसने उसे कभी जाना ही न हो या उसने उसे पहले कभी देखा ही न हो। फिर भी परमेश्वर अपना अदम्य रोष उस पर प्रकट न करते हुए मानव-जीवन की लंबी यात्रा के दौरान लगातार मनुष्य की प्रतीक्षा करता रहा है और इस दौरान बिना एक भी शब्द बोले, केवल मनुष्य के पश्चात्ताप करने और नए सिरे से शुरुआत करने की मौन प्रतीक्षा करता रहा है। मनुष्य के साथ मानव-जगत की पीड़ाएँ साझा करने के लिए परमेश्वर बहुत पहले मानव-जगत में आया था। मनुष्य के साथ गुज़ारे इन तमाम वर्षों में कोई भी उसके अस्तित्व को खोज नहीं पाया है। परमेश्वर स्वयं द्वारा लाया गया कार्य पूरा करते हुए मानव-जगत की दुर्दशा का कष्ट चुपचाप सहन करता रहता है। ऐसे कष्टों से गुजरते हुए, जिनका अनुभव मनुष्य ने पहले कभी नहीं किया, वह पिता परमेश्वर की इच्छा और मानवजाति की ज़रूरतों की खातिर कष्ट सहना जारी रखता है। पिता परमेश्वर की इच्छा की खातिर, और मानवजाति की ज़रूरतों की खातिर भी, मनुष्य की उपस्थिति में वह चुपचाप उसकी सेवा में खड़ा रहा है, और मनुष्य की उपस्थिति में उसने खुद को नम्र किया है। प्राचीन संस्कृति के ज्ञान ने मनुष्य को चुपके से परमेश्वर की उपस्थिति से चुरा लिया है और मनुष्य को शैतानों के राजा और उसकी संतानों को सौंप दिया है। चार पुस्तकों और पाँच क्लासिक्स[क] ने मनुष्य की सोच और धारणाओं को विद्रोह के एक अलग युग में पहुँचा दिया है, जिससे वह उन पुस्तकों और क्लासिक्स के संकलनकर्ताओं की पहले से भी ज्यादा खुशामदी करने लगा है, और परिणामस्वरूप परमेश्वर के बारे में उसकी धारणाएँ और ज्यादा ख़राब हो गई हैं। शैतानों के राजा ने बिना मनुष्य के जाने ही उसके हृदय से निर्दयतापूर्वक परमेश्वर को बाहर निकाल दिया और फिर विजयी उल्लास के साथ खुद उस पर कब्ज़ा जमा लिया। तब से मनुष्य एक कुरूप और दुष्ट आत्मा तथा शैतानों के राजा के चेहरे के अधीन हो गया। उसके सीने में परमेश्वर के प्रति घृणा भर गई, और शैतानों के राजा की द्रोहपूर्ण दुर्भावना दिन-ब-दिन तब तक मनुष्य के भीतर फैलती गई, जब तक कि वह पूरी तरह से बरबाद नहीं हो गया। उसके पास ज़रा-भी स्वतंत्रता नहीं रह गयी और उसके पास शैतानों के राजा के चंगुल से छूटने का कोई उपाय नहीं था। उसके पास वहीं के वहीं उसकी उपस्थिति में बंदी बनने, आत्मसमर्पण करने और उसकी अधीनता में घुटने टेक देने के सिवा कोई चारा नहीं था। बहुत पहले जब मनुष्य का हृदय और आत्मा अभी शैशवावस्था में ही थे, शैतानों के राजा ने उनमें नास्तिकता के फोड़े का बीज बो दिया था, और उसे इस तरह की भ्रांतियाँ सिखा दीं, जैसे कि "विज्ञान और प्रौद्योगिकी को पढ़ो; चार आधुनिकीकरणों को समझो; और दुनिया में परमेश्वर जैसी कोई चीज़ नहीं है।" यही नहीं, वह हर अवसर पर चिल्लाता है, "आओ, हम

एक सुंदर मातृभूमि का निर्माण करने के लिए अपने कठोर श्रम पर भरोसा करें," और बचपन से ही हर व्यक्ति को अपने देश की सेवा करने के लिए तैयार रहने के लिए कहता है। बेख़बर मनुष्य, इसके सामने लाया गया, और इसने बेझिझक सारा श्रेय (अर्थात् समस्त मनुष्यों को अपने हाथों में रखने का परमेश्वर का श्रेय) हथिया लिया। कभी भी इसे शर्म का बोध नहीं हुआ। इतना ही नहीं, इसने निर्लज्जतापूर्वक परमेश्वर के लोगों को पकड़ लिया और उन्हें अपने घर में खींच लिया, जहाँ वह मेज पर एक चूहे की तरह उछलकर चढ़ गया और मनुष्यों से परमेश्वर के रूप में अपनी आराधना करवाई। कैसा आततायी है! वह चीख-चीखकर ऐसी शर्मनाक और घिनौनी बातें कहता है : "दुनिया में परमेश्वर जैसी कोई चीज़ नहीं है। हवा प्राकृतिक नियमों के कारण होने वाले रूपांतरणों से चलती है; बारिश तब होती है, जब पानी भाप बनकर ठंडे तापमानों से मिलता है और बूँदों के रूप में संघनित होकर पृथ्वी पर गिरता है; भूकंप भूगर्भीय परिवर्तनों के कारण पृथ्वी की सतह का हिलना है; सूखा सूरज की सतह पर नाभिक विक्षोभ के कारण हवा के शुष्क हो जाने से पड़ता है। ये प्राकृतिक घटनाएँ हैं। इस सबमें परमेश्वर का किया कौन-सा काम है?" ऐसे लोग भी हैं, जो कुछ ऐसे बयान भी देते हैं, जिन्हें स्वर नहीं दिया जाना चाहिए, जैसे कि : "मनुष्य प्राचीन काल में वानरों से विकसित हुआ था, और आज की दुनिया लगभग एक युग पहले शुरू हुए आदिम समाजों के अनुक्रमण से विकसित हुई है। किसी देश का उत्थान या पतन पूरी तरह से उसके लोगों के हाथों में है।" पृष्ठभूमि में, शैतान लोगों को उसे दीवार पर लटकाकर या मेज पर रखकर श्रद्धांजलि अर्पित करने और भेंट चढ़ाने के लिए बाध्य करता है। जब वह चिल्लाता है कि "कोई परमेश्वर नहीं है," उसी समय वह खुद को परमेश्वर के रूप में स्थापित भी करता है और परमेश्वर के स्थान पर खड़ा होकर तथा शैतानों के राजा की भूमिका ग्रहण कर अशिष्टता के साथ परमेश्वर को धरती की सीमाओं से बाहर धकेल देता है। कितनी बेहूदा बात है! यह आदमी को उससे गहरी घृणा करने के लिए बाध्य कर देता है। ऐसा लगता है कि परमेश्वर और वह कट्टर दुश्मन हैं, और दोनों सह-अस्तित्व में नहीं रह सकते। वह व्यवस्था की पहुँच से बाहर आज़ाद घूमता है[2] और परमेश्वर को दूर भगाने की योजना बनाता है। ऐसा है यह शैतानों का राजा! इसके अस्तित्व को कैसे बरदाश्त किया जा सकता है? यह तब तक चैन से नहीं बैठेगा, जब तक परमेश्वर के काम को ख़राब नहीं कर देता और उसे पूरा खंडहर[3] नहीं बना देता, मानो वह अंत तक परमेश्वर का विरोध करना चाहता हो, जब तक कि या तो मछली न मर जाए या जाल न टूट जाए। वह जानबूझकर खुद को परमेश्वर के ख़िलाफ़ खड़ा कर लेता है और उसके करीब आता जाता है। इसका घिनौना चेहरा बहुत

पहले से पूरी तरह से बेनक़ाब हो गया है, जो अब आहत और क्षत-विक्षत[4] है और एक खेदजनक स्थिति में है, फिर भी वह परमेश्वर से नफ़रत करने से बाज़ नहीं आएगा, मानो परमेश्वर को एक कौर में निगलकर ही वह अपने दिल में बसी घृणा से मुक्ति पा सकेगा। परमेश्वर के इस शत्रु को हम कैसे बरदाश्त कर सकते हैं! केवल इसके उन्मूलन और पूर्ण विनाश से ही हमारे जीवन की इच्छा फलित होगी। इसे उच्छृंखल रूप से कैसे दौड़ते फिरने दिया जा सकता है? यह मनुष्य को इस हद तक भ्रष्ट कर चुका है कि मनुष्य स्वर्ग सूर्य को नहीं जानता, और वह अचेत और भावनाशून्य हो गया है। मनुष्य ने सामान्य मानवीय विवेक खो दिया है। शैतान को नष्ट और भस्म करने के लिए क्यों नहीं हम अपनी पूरी हस्ती का बलिदान कर दें, ताकि भविष्य की सारी चिंताएँ दूर कर सकें और परमेश्वर के कार्य को जल्दी से अभूतपूर्व भव्यता तक पहुँचने दें? बदमाशों का यह गिरोह मनुष्यों की दुनिया में आ गया है और यहाँ उथल-पुथल मचा दी है। वे सभी मनुष्यों को एक खड़ी चट्टान की कगार पर ले आए हैं और गुप्त रूप से उन्हें वहाँ से धकेलकर टुकड़े-टुकड़े करने की योजना बना रहे हैं, ताकि फिर वे उनके शवों को निगल सकें। वे व्यर्थ ही परमेश्वर की योजना को खंडित करने और उसके साथ जुआ खेलकर पासे की एक ही चाल में सब-कुछ दाँव पर लगाने[5] की आशा करते हैं। यह किसी भी तरह से आसान नहीं है! अंतत: शैतानों के राजा के लिए सलीब तैयार कर दिया गया है, जो सबसे घृणित अपराधों का दोषी है। परमेश्वर सलीब का नहीं है। वह पहले ही शैतान के लिए उसे किनारे रख चुका है। परमेश्वर अब से बहुत पहले ही विजयी होकर उभर चुका है और अब मानवजाति के पापों पर दुख महसूस नहीं करता, लेकिन वह समस्त मानवजाति के लिए उद्धार लाएगा।

ऊपर से नीचे तक और शुरू से अंत तक शैतान परमेश्वर के कार्य को बाधित करता रहा है और उसके विरोध में काम करता रहा है। "प्राचीन सांस्कृतिक विरासत", मूल्यवान "प्राचीन संस्कृति के ज्ञान", "ताओवाद और कन्फ्यूशीवाद की शिक्षाओं" और "कन्फ्यूशियन क्लासिक्स और सामंती संस्कारों" की इस सारी चर्चा ने मनुष्य को नरक में पहुँचा दिया है। उन्नत आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ अत्यधिक विकसित उद्योग, कृषि और व्यवसाय कहीं नज़र नहीं आते। इसके बजाय, यह सिर्फ़ प्राचीन काल के "वानरों" द्वारा प्रचारित सामंती संस्कारों पर जोर देता है, ताकि परमेश्वर के कार्य को जानबूझकर बाधित कर सके, उसका विरोध कर सके और उसे नष्ट कर सके। न केवल इसने आज तक मनुष्य को सताना जारी रखा है, बल्कि वह उसे पूरे का पूरा निगल[6] भी जाना चाहता है। सामंतवाद की नैतिक और आचार-विचार विषयक शिक्षाओं के प्रसारण और प्राचीन संस्कृति के ज्ञान की विरासत ने लंबे समय से

मनुष्य को संक्रमित किया है और उन्हें छोटे-बड़े शैतानों में बदल दिया है। कुछ ही लोग हैं, जो ख़ुशी से परमेश्वर को स्वीकार करते हैं, और कुछ ही लोग हैं, जो उसके आगमन का उल्लासपूर्वक स्वागत करते हैं। समस्त मानवजाति का चेहरा हत्या के इरादे से भर गया है, और हर जगह हत्यारी साँस हवा में व्याप्त है। वे परमेश्वर को इस भूमि से निष्कासित करना चाहते हैं; हाथों में चाकू और तलवारें लिए वे परमेश्वर का "विनाश" करने के लिए खुद को युद्ध के विन्यास में व्यवस्थित करते हैं। शैतान की इस सारी भूमि पर, जहाँ मनुष्य को लगातार सिखाया जाता है कि कहीं कोई परमेश्वर नहीं है, मूर्तियाँ फैली हुई हैं, और ऊपर हवा जलते हुए कागज और धूप की वमनकारी गंध से तर है, इतनी घनी कि दम घुटता है। यह उस कीचड़ की बदबू की तरह है, जो जहरीले सर्प के कुलबुलाते समय ऊपर उठती है, जिससे व्यक्ति उलटी किए बिना नहीं रह सकता। इसके अलावा, वहाँ अस्पष्ट रूप से दुष्ट दानवों के मंत्रोच्चार की ध्वनि सुनी जा सकती है, जो दूर नरक से आती हुई प्रतीत होती है, जिसे सुनकर आदमी काँपे बिना नहीं रह सकता। इस देश में हर जगह इंद्रधनुष के सभी रंगों वाली मूर्तियाँ रखी हैं, जिन्होंने इस देश को कामुक आनंद की दुनिया में बदल दिया है, और शैतानों का राजा दुष्टतापूर्वक हँसता रहता है, मानो उसका नीचतापूर्ण षड्यंत्र सफल हो गया हो। इस बीच, मनुष्य पूरी तरह से बेखबर रहता है, और उसे यह भी पता नहीं कि शैतान ने उसे पहले ही इस हद तक भ्रष्ट कर दिया है कि वह बेसुध हो गया है और उसने हार में अपना सिर लटका दिया है। शैतान चाहता है कि एक ही झपट्टे में परमेश्वर से संबंधित सब-कुछ साफ़ कर दे, और एक बार फिर उसे अपवित्र कर उसका हनन कर दे; वह उसके कार्य को टुकड़े-टुकड़े करने और उसे बाधित करने का इरादा रखता है। वह कैसे परमेश्वर को समान दर्जा दे सकता है? कैसे वह पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच अपने काम में परमेश्वर का "हस्तक्षेप" बरदाश्त कर सकता है? कैसे वह परमेश्वर को उसके घिनौने चेहरे को उजागर करने दे सकता है? शैतान कैसे परमेश्वर को अपने काम को अव्यवस्थित करने की अनुमति दे सकता है? क्रोध के साथ भभकता यह शैतान कैसे परमेश्वर को पृथ्वी पर अपने शाही दरबार पर नियंत्रण करने दे सकता है? कैसे वह स्वेच्छा से परमेश्वर के श्रेष्ठतर सामर्थ्य के आगे झुक सकता है? इसके कुत्सित चेहरे की असलियत उजागर की जा चुकी है, इसलिए किसी को पता नहीं है कि वह हँसे या रोए, और यह बताना वास्तव में कठिन है। क्या यही इसका सार नहीं है? अपनी कुरूप आत्मा के बावजूद वह यह मानता है कि वह अविश्वसनीय रूप से सुंदर है। यह सहअपराधियों का गिरोह![7] वे भोग में लिप्त होने के लिए मनुष्यों के देश में उतरते हैं और हंगामा करते हैं, और चीज़ों में इतनी हलचल पैदा कर देते हैं कि दुनिया

एक चंचल और अस्थिर जगह बन जाती है और मनुष्य का दिल घबराहट और बेचैनी से भर जाता है, और उन्होंने मनुष्य के साथ इतना खिलवाड़ किया है कि उसका रूप उस क्षेत्र के एक अमानवीय जानवर जैसा अत्यंत कुरूप हो गया है, जिससे मूल पवित्र मनुष्य का आखिरी निशान भी खो गया है। इतना ही नहीं, वे धरती पर संप्रभु सत्ता ग्रहण करना चाहते हैं। वे परमेश्वर के कार्य को इतना बाधित करते हैं कि वह मुश्किल से बहुत धीरे आगे बढ़ पाता है, और वे मनुष्य को इतना कसकर बंद कर देते हैं, जैसे कि तांबे और इस्पात की दीवारें हों। इतने सारे गंभीर पाप करने और इतनी आपदाओं का कारण बनने के बाद भी क्या वे ताड़ना के अलावा किसी अन्य चीज़ की उम्मीद कर रहे हैं? राक्षस और बुरी आत्माएँ काफी समय से पृथ्वी पर अंधाधुंध विचरण कर रही हैं, और उन्होंने परमेश्वर की इच्छा और कष्टसाध्य प्रयास दोनों को इतना कसकर बंद कर दिया है कि वे अभेद्य बन गए हैं। सचमुच, यह एक घातक पाप है! ऐसा कैसे हो सकता है कि परमेश्वर चिंतित महसूस न करे? परमेश्वर कैसे क्रोधित महसूस न करे? उन्होंने परमेश्वर के कार्य में गंभीर बाधा पहुँचाई है और उसका घोर विरोध किया है : कितने विद्रोही हैं वे! यहाँ तक कि वे छोटे-बड़े राक्षस भी शेर के पीछे चलते गीदड़ों जैसा व्यवहार करते हैं और बुराई की धारा में बहते हैं, और चलते हुए गड़बड़ी पैदा करते हैं। सत्य को जानने के बावजूद उसका जानबूझकर विरोध करते हैं, ये विद्रोह के बेटे! यह ऐसा है, मानो अब जबकि नरक का राजा राजसी सिंहासन पर चढ़ गया है, तो वे दंभी और बेपरवाह हो गए हैं और अन्य सभी की अवमानना करने लगे हैं। उनमें से कितने सत्य की खोज करते हैं और धार्मिकता का पालन करते हैं? वे सभी जानवर हैं, जो सूअरों और कुत्तों से बेहतर नहीं हैं, वे गोबर के एक ढेर के बीच में बदबूदार मक्खियों के एक समूह के ऊपर दंभपूर्ण आत्म-बधाई में अपने सिर हिलाते हैं और हर तरह का उपद्रव भड़काते[8] हैं। उनका मानना है कि नरक का उनका राजा सबसे बड़ा राजा है, और इतना भी नहीं जानते कि वे खुद बदबूदार मक्खियों से ज्यादा कुछ नहीं हैं। और फिर भी, वे अपने माता-पिता रूपी सूअरों और कुत्तों की ताकत का लाभ उठाकर परमेश्वर के अस्तित्व को बदनाम करते हैं। वे तुच्छ मक्खियाँ मानती हैं कि उनके माता-पिता बड़े-बड़े दाँतों वाली व्हेल[9] की तरह विशाल हैं। वे इतना भी नहीं जानते कि वे खुद बहुत छोटे हैं, और उनके माता-पिता उनसे लाखों गुना बड़े गंदे सूअर और कुत्ते हैं। अपनी नीचता से अनजान वे अंधाधुंध दौड़ने के लिए उन सूअरों और कुत्तों द्वारा छोड़ी गई सड़न की बदबू पर भरोसा करते हैं और शर्मिंदगी से बेखबर वे व्यर्थ ही भविष्य की पीढ़ियों को पैदा करने के बारे में सोचते हैं! अपनी पीठ पर हरे पंख लगाए (जो उनके परमेश्वर पर विश्वास करने के दावे का सूचक है), वे

आत्मतुष्ट हैं और हर जगह अपनी सुंदरता और आकर्षण की डींग हाँकते हैं, जबकि वे चुपके से अपने शरीर की मलिनताओं को मनुष्य पर फेंक देते हैं। इतना ही नहीं, वे स्वयं से अत्यधिक प्रसन्न होते हैं, मानो वे इंद्रधनुष के रंगों वाले एक जोड़ी पंखों का इस्तेमाल कर अपनी मलिनताएँ छिपा सकते हों, और इस तरह वे सच्चे परमेश्वर के अस्तित्व पर अपना कहर बरपाते हैं (यह धार्मिक दुनिया में परदे के पीछे चलने वाली हकीकत बताता है)। मनुष्य को कैसे पता चलेगा कि मक्खी के पंख कितने भी खूबसूरत और आकर्षक हों, मक्खी एक अत्यंत छोटे प्राणी से बढ़कर कुछ नहीं है, जिसका पेट गंदगी से भरा हुआ और शरीर रोगाणुओं से ढका हुआ है? अपने माता-पिता रूपी सूअर और कुत्तों के बल पर वे देश-भर में हैवानियत में निरंकुश होकर अंधाधुंध दौड़ते हैं (यह उस तरीके को संदर्भित करता है, जिससे परमेश्वर को सताने वाले धार्मिक अधिकारी सच्चे परमेश्वर और सत्य से विद्रोह करने के लिए राष्ट्र की सरकार से मिले मजबूत समर्थन पर भरोसा करते हैं)। ऐसा लगता है, मानो यहूदी फरीसियों के भूत परमेश्वर के साथ बड़े लाल अजगर के देश में, अपने पुराने घोंसले में लौट आए हों। उन्होंने हजारों साल पहले का अपना काम फिर करते हुए उत्पीड़न का दूसरा दौर शुरू कर दिया है। पतितों के इस समूह का अंततः पृथ्वी पर नष्ट हो जाना निश्चित है! ऐसा प्रतीत होता है कि कई सहस्राब्दियों के बाद अशुद्ध आत्माएँ और भी चालाक और धूर्त हो गई हैं। वे गुप्त रूप से लगातार परमेश्वर के काम को क्षीण करने के तरीकों के बारे में सोच रही हैं। प्रचुर छल-कपट के साथ वे अपनी मातृभूमि में कई हजार साल पहले की त्रासदी की पुनरावृत्ति करना चाहती हैं और परमेश्वर को लगभग पुकार उठने की कगार तक ले आती हैं। परमेश्वर उन्हें नष्ट करने के लिए तीसरे स्वर्ग में लौट जाने से खुद को मुश्किल से रोक पाता है। परमेश्वर से प्रेम करने के लिए मनुष्य को उसकी इच्छा, उसकी खुशी और उसके दुःख को जानना चाहिए, और यह समझना चाहिए कि वह किस चीज़ से घृणा करता है। ऐसा करने से मनुष्य के प्रवेश में और तेज़ी आएगी। मनुष्य का प्रवेश जितना तेज़ होगा, उतनी ही शीघ्र परमेश्वर की इच्छा पूर्ण होगी; और उतनी ही स्पष्टता से मनुष्य शैतानों के राजा को जान पाएगा और उतना ही वह परमेश्वर के नज़दीक आएगा, ताकि उसकी इच्छा फलित हो सके।

फुटनोट :

1. "प्राकृतिक रूप से नष्ट न होने वाले" का प्रयोग यहाँ व्यंग्य के रूप में किया गया है, जिसका अर्थ है कि लोग अपने ज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिक दृष्टिकोण में कठोर हैं।

2. "व्यवस्था की पहुँच से बाहर आज़ाद घूमता है" इंगित करता है कि शैतान उन्मत्त होकर आपे से बाहर हो जाता है।

3. "पूरा खंडहर" बताता है कि कैसे उस शैतान का हिंसक व्यवहार देखने में असहनीय है।

4. "आहत और क्षत-विक्षत" शैतानों के राजा के बदसूरत चेहरे के बारे में बताता है।

5. "पासे की एक ही चाल में सब-कुछ दाँव पर लगाने" का अर्थ है अंत में जीतने की उम्मीद में अपना सारा धन एक ही दाँव पर लगा देना। यह शैतान की भयावह और कुटिल योजनाओं के लिए एक रूपक है। इस अभिव्यक्ति का प्रयोग उपहास में किया जाता है।

6. "निगल" जाना शैतानों के राजा के शातिर व्यवहार के बारे में बताता है, जो लोगों को पूरी तरह से मोह लेता है।

7. "सहअपराधियों का गिरोह" का वही अर्थ है, जो "गुंडों के गिरोह" का है।

8. "हर तरह का उपद्रव भड़काते" का मतलब है कि कैसे वे लोग, जो राक्षसी किस्म के होते हैं, दंगा फैलाते हैं और परमेश्वर के कार्य को बाधित करते हैं तथा उसका विरोध करते हैं।

9. "दाँतों वाली व्हेल" का इस्तेमाल उपहास के रूप में किया गया है। यह एक रूपक है, जो बताता है कि कैसे मक्खियाँ इतनी छोटी होती हैं कि सूअर और कुत्ते भी उन्हें व्हेल की तरह विशाल नज़र आते हैं।

क. चार पुस्तकें और पाँच क्लासिक्स चीन में कन्फ्यूशीवाद की प्रामाणिक किताबें हैं।

कार्य और प्रवेश (8)

मैंने कई बार कहा है कि परमेश्वर का अंत के दिनों का कार्य प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा को परिवर्तित करने, उसकी रूह को बदलने के लिए इस प्रकार किया जाता है कि बहुत बड़ा आघात सह चुके उसके दिल को बेहतर बनाया जा सके और इस प्रकार उसकी उस आत्मा को बचाया जा सके जिसे बुराई द्वारा अत्यंत गंभीर रूप से हानि पहुंचाई गई है; इसका उद्देश्य लोगों की आत्मा को जगाना है, उनके उदासीन दिलों को पिघलाना है और उनका कायाकल्प होने देना है। यही परमेश्वर की सबसे बड़ी इच्छा है। मनुष्य का जीवन और उसके अनुभव कितने ऊँचे या गहरे हैं, इसकी बात करना छोड़ दो; जब लोगों के हृदय जाग्रत कर दिए जाएँगे, जब उन्हें उनके सपनों से जगा दिया जाएगा और वे बड़े लाल अजगर द्वारा पहुँचाई गई हानि से पूरी तरह से अवगत हो जाएँगे, तो परमेश्वर की सेवकाई का काम पूरा हो जाएगा। परमेश्वर का कार्य पूरा होने का दिन वह दिन भी है जब मनुष्य आधिकारिक तौर पर परमेश्वर पर विश्वास की सही राह पर चलना शुरू करेगा। इस समय, परमेश्वर की सेवकाई समाप्त हो चुकी होगी: देहधारी परमेश्वर का कार्य

पूरी तरह समाप्त हो चुका होगा, और मनुष्य आधिकारिक तौर पर उस कर्तव्य को निभाना शुरू कर देगा, जो उसे निभाना चाहिए—वह अपनी सेवकाई का कार्य करेगा। ये परमेश्वर के कार्य के कदम हैं। इस प्रकार, तुम लोगों को इन बातों की जानकारी की नींव पर अपने प्रवेश का मार्ग खोजना चाहिए। यह सब तुम लोगों को समझना चाहिए। मनुष्य के प्रवेश में तभी सुधार आएगा, जब परिवर्तन उसके दिल की गहराई में होंगे, क्योंकि परमेश्वर का कार्य राक्षसों के एकत्र होने के इस स्थान से मनुष्य का पूर्ण उद्धार करना है—जिसे छुड़ा लिया गया है, जो अभी भी अंधकार की शक्तियों के अधीन रहता है, और जो कभी जागा नहीं है; ऐसा इसलिए ताकि मनुष्य हज़ारों साल के पापों से मुक्त होकर परमेश्वर का चहेता बन सके, बड़े लाल अजगर को मारकर परमेश्वर का राज्य स्थापित करे और जल्दी ही परमेश्वर के दिल को आराम पहुँचाए; ऐसा इसलिये है ताकि तुम अपने सीने में भरी घृणा को बिना अड़चन के निकाल सको, उन फफूंदग्रस्त रोगाणुओं का उन्मूलन कर सको, तुम लोग इस जीवन को छोड़ सको जो एक बैल या घोड़े के जीवन से कुछ अलग नहीं है, अब दास बनकर न रहो, बड़े लाल अजगर द्वारा आसानी से कुचले न जाओ या उसके द्वारा तुम्हें आज्ञा न दी जाए; तुम लोग अब इस असफल राष्ट्र का हिस्सा नहीं रहोगे, तुम अब घृणित बड़े लाल अजगर के नहीं रहोगे, और तुम अब उसके दास नहीं रहोगे। परमेश्वर द्वारा निश्चित रूप से राक्षसों के घरौंदों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे, तुम लोग परमेश्वर के साथ खड़े होंगे—तुम लोग परमेश्वर के हो, दासों के इस साम्राज्य के नहीं हो। परमेश्वर लंबे समय से इस अंधेरे समाज से अत्यधिक घृणा करता आया है। वह इस दुष्ट, घिनौने बूढ़े सर्प पर अपने पैर रखने के लिए अपने दांत पीसता है, ताकि वह फिर से कभी उठ न पाए और फिर कभी मनुष्य के साथ दुर्व्यवहार न कर पाए; वह उसके अतीत के दुष्कर्मों को क्षमा नहीं करेगा, वह उसके द्वारा मनुष्य को दिए गए धोखे को बर्दाश्त नहीं करेगा और वह विभिन्न युगों में उसके द्वारा किए गए हर पाप का हिसाब चुकता करेगा। परमेश्वर समस्त बुराइयों के सरगना[1] को जरा भी नहीं छोड़ेगा, वह इसे पूरी तरह से इसे नष्ट कर देगा।

हज़ारों सालों से यह भूमि मलिन रही है। यह गंदी और दुःखों से भरी हुई है, चालें चलते और धोखा देते हुए, निराधार आरोप लगाते हुए,[2] क्रूर और दुष्ट बनकर इस भुतहा शहर को कुचलते हुए और लाशों से पाटते हुए प्रेत यहाँ हर जगह बेकाबू दौड़ते हैं; सड़ांध ज़मीन पर छाकर हवा में व्याप्त हो गई है, और इस पर ज़बर्दस्त पहरेदारी[3] है। आसमान से परे की दुनिया कौन देख सकता है? शैतान मनुष्य के पूरे शरीर को कसकर बांध देता है, उसकी दोनों आंखें बाहर निकालकर उसके होंठ मज़बूती से बंद कर देता है।

शैतानों के राजा ने हज़ारों वर्षों तक उपद्रव किया है, और आज भी वह उपद्रव कर रहा है और इस भुतहा शहर पर बारीक नज़र रखे हुए है, मानो यह राक्षसों का एक अभेद्य महल हो; इस बीच रक्षक कुत्ते चमकती हुई आंखों से घूरते हैं, वे इस बात से अत्यंत भयभीत रहते हैं कि कहीं परमेश्वर अचानक उन्हें पकड़कर समाप्त न कर दे, उन्हें सुख-शांति के स्थान से वंचित न कर दे। ऐसे भुतहा शहर के लोग परमेश्वर को कैसे देख सके होंगे? क्या उन्होंने कभी परमेश्वर की प्रियता और मनोहरता का आनंद लिया है? उन्हें मानव-जगत के मामलों की क्या कद्र है? उनमें से कौन परमेश्वर की उत्कट इच्छा को समझ सकता है? फिर, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि देहधारी परमेश्वर पूरी तरह से छिपा रहता है : इस तरह के अंधकारपूर्ण समाज में, जहां राक्षस बेरहम और अमानवीय हैं, पलक झपकते ही लोगों को मार डालने वाला शैतानों का सरदार, ऐसे मनोहर, दयालु और पवित्र परमेश्वर के अस्तित्व को कैसे सहन कर सकता है? वह परमेश्वर के आगमन की सराहना और जयजयकार कैसे कर सकता है? ये अनुचर! ये दया के बदले घृणा देते हैं, ये लंबे समय से परमेश्वर का तिरस्कार करते रहे हैं, ये परमेश्वर को अपशब्द बोलते हैं, ये बेहद बर्बर हैं, इनमें परमेश्वर के प्रति थोड़ा-सा भी सम्मान नहीं है, ये लूटते और डाका डालते हैं, इनका विवेक मर चुका है, ये विवेक के विरुद्ध कार्य करते हैं, और ये लालच देकर निर्दोषों को अचेत देते हैं। प्राचीन पूर्वज? प्रिय अगुवा? वे सभी परमेश्वर का विरोध करते हैं! उनके हस्तक्षेप ने स्वर्ग के नीचे की हर चीज़को अंधेरे और अराजकता की स्थिति में छोड़ दिया है! धार्मिक स्वतंत्रता? नागरिकों के वैध अधिकार और हित? ये सब पाप को छिपाने की चालें हैं! किसने परमेश्वर के कार्य को स्वीकार कियाहै? किसने परमेश्वर के कार्य के लिए अपना जीवन अर्पित किया है या रक्त बहाया है? पीढ़ी-दर-पीढ़ी, माता-पिता से लेकर बच्चों तक, गुलाम बनाए गए मनुष्य ने परमेश्वर को बड़ी बेरुखी से गुलाम बना लिया है—ऐसा कैसे हो सकता है कि यह रोष न भड़काए? दिल में हज़ारों वर्ष की घृणा भरी हुई है, हज़ारों साल का पाप दिल पर अंकित है—इससे कैसे न घृणा पैदा होगी? परमेश्वर का बदला लो, उसके शत्रु को पूरी तरह से समाप्त कर दो, उसे अब और बेकाबू न दौड़ने दो, और अब उसे मनचाहे तरीके से परेशानी मत बढ़ाने दो! यही समय है : मनुष्य अपनी सभी शक्तियाँ लंबे समय से इकट्ठा करता आ रहा है, उसने इसके लिए सभी प्रयास किए हैं, हर कीमत चुकाई है, ताकि वह इस दानव के घृणित चेहरे से नकाब उतार सके और जो लोग अंधे हो गए हैं, जिन्होंने हर प्रकार की पीड़ा और कठिनाई सही है, उन्हें अपने दर्द से उबरने और इस दुष्ट प्राचीन शैतान से मुँह मोड़ने दे। परमेश्वर के कार्य में ऐसी अभेद्य बाधा क्यों खड़ी की जाए? परमेश्वर के लोगों को

धोखा देने के लिए विभिन्न चालें क्यों चली जाएँ? वास्तविक स्वतंत्रता और वैध अधिकार एवं हित कहां हैं? निष्पक्षता कहां है? आराम कहां है? गर्मजोशी कहां है? परमेश्वर के लोगों को छलने के लिए धोखेभरी योजनाओं का उपयोग क्यों किया जाए? परमेश्वर के आगमन को दबाने के लिए बल का उपयोग क्यों किया जाए? क्यों नहीं परमेश्वर को उस धरती पर स्वतंत्रता से घूमने दिया जाए, जिसे उसने बनाया? क्यों परमेश्वर को इस हद तक खदेड़ा जाए कि उसके पास आराम से सिर रखने के लिए जगह भी न रहे? मनुष्यों की गर्मजोशी कहां है? लोगों की स्वागत की भावना कहां है? परमेश्वर में ऐसी तड़प क्यों पैदा की जाए? परमेवर को बार-बार पुकारने पर मजबूर क्यों किया जाए? परमेश्वर को अपने प्रिय पुत्र के लिए चिंता करने पर मजबूर क्यों किया जाए? इस अंधकारपूर्ण समाज में इसके घटिया रक्षक कुत्ते परमेश्वर को उसकी बनायी दुनिया में स्वतंत्रता से आने-जाने क्यों नहीं देते? दुख-दर्द में रहने वाला इंसान यह सब क्यों नहीं समझता? तुम लोगों के लिए परमेश्वर ने बहुत यातना सही है, और अत्यंत पीड़ा के साथ अपना प्यारा पुत्र, अपना देह और रक्त तुम लोगों को सौंपा है—तो फिर तुम लोग अभी भी उससे नज़रें क्यों फेर लेते हो? हर किसी के सामने तुम लोग परमेश्वर के आगमन को अस्वीकार कर देते हो, और परमेश्वर की दोस्ती को नकार देते हो। तुम लोग इतने निर्लज्ज क्यों हो? क्या तुम लोग ऐसे अंधकारपूर्ण समाज में अन्याय सहन करना चाहते हो? तुम अपने आपको हज़ारों साल की शत्रुता से भरने के बजाय शैतानों के सरदार के "मल" से भर लेते हो?

परमेश्वर के कार्य की बाधाएं कितनी बड़ी हैं? क्या कभी किसी ने जाना है? गहरे जमे अंधविश्वासों द्वारा बंदी बनाए लोगों में से कौन परमेश्वर के सच्चे चेहरे को जानने में सक्षम है? इतने उथले और बेतुके पिछड़े सांस्कृतिक ज्ञान के साथ वे कैसे परमेश्वर द्वारा बोले गए वचनों को पूरी तरह से समझ सकते हैं? यहां तक कि आमने-सामने बोलने और अच्छी तरह से बोलकर समझाने पर भी वे कैसे समझ सकते हैं? कभी-कभी ऐसा लगता है, मानो परमेश्वर के वचन बहरे कानों में पड़े हों : लोगों की थोड़ी-सी भी प्रतिक्रिया नहीं होती, वे बस अपना सिर हिलाते हैं और समझते कुछ नहीं। यह चिंताजनक कैसे न हो? इस "दूरस्थ,[4] प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास और सांस्कृतिक ज्ञान" ने लोगों के ऐसे नाकाबिल समूह को पोषित किया है। यह प्राचीन संस्कृति—बहुमूल्य विरासत—कबाड़ का ढेर है! यह बहुत पहले ही एक चिरस्थायी शर्मिंदगी बन गई, और उल्लेख करने लायक भी नहीं है! इसने लोगों को परमेश्वर का विरोध करने की चालें और तकनीकें सिखा दी हैं, और राष्ट्रीय शिक्षा के "सुव्यवस्थित, सौम्य मार्गदर्शन"[5] ने लोगों को परमेश्वर के प्रति

और भी अधिक अवज्ञाकारी बना दिया है। परमेश्वर के कार्य का हर हिस्सा अत्यंत कठिन है, और पृथ्वी पर अपने कार्य का हर कदम परमेश्वर के लिए परेशान करने वाला रहा है। पृथ्वी पर उसका कार्य कितना कठिन है! पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य के कदम बहुत कष्टसाध्य हैं: मनुष्य की कमजोरियों, कमियों, बचपने, अज्ञानता और मनुष्य की हर चीज़ के लिए परमेश्वर सूक्ष्म योजनाएँ बनाता है और ध्यानपूर्वक विचार करता है। मनुष्य एक कागज़ी बाघ की तरह है, जिसे कोई छेड़ने या भड़काने की हिम्मत नहीं करता; हल्के-से स्पर्श से ही वह पलटकर काट लेता है, या फिर नीचे गिर जाता है और अपना रास्ता भूल जाता है, और ऐसा लगता है, मानो एकाग्रता की थोड़ी-सी कमी होने पर वह पुनः वापस चला जाता है, या फिर परमेश्वर की उपेक्षा करता है, या अपने शरीर की अशुद्ध चीज़ों में लिप्त होने के लिए अपने सूअरों और कुत्तों जैसे माता-पिताओं की ओर भागता है। यह कितनी बड़ी बाधा है! व्यावहारिक रूप से परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक कदम पर उसे प्रलोभन दिया जाता है, और लगभग हर कदम पर परमेश्वर को बड़े खतरे का जोखिम होता है। उसके वचन निष्कपट, ईमानदार और द्वेषरहित हैं, फिर भी कौन उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार है? कौन पूरी तरह से समर्पित होने के लिए तैयार है? इससे परमेश्वर का दिल टूट जाता है। वह मनुष्य के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करता है, वह मनुष्य के जीवन के लिए चिंता से घिरा रहता है, और वह मनुष्य की कमज़ोरी के साथ सहानुभूति रखता है। उसने अपने द्वारा बोले गए सभी वचनों के लिए अपने कार्य के प्रत्येक चरण में कई उतार-चढ़ावों का सामना किया है; वह हमेशा आगे कुआं और पीछे खाई वाली परिस्थिति में फंसा रहता है, और दिन-रात बार-बार मनुष्य की कमज़ोरी, अवज्ञा, बचपने और भेद्यता ... के बारे में सोचता है। इसे किसने कभी भी जाना है? वह किस पर विश्वास कर सकता है? कौन समझ पाएगा? वह हमेशा मनुष्य के पापों, हिम्मत की कमी और दुर्बलता से घृणा करता है, और वह हमेशा मनुष्य की भेद्यता के बारे में चिंता करता है, और वह मनुष्य के आगे के मार्ग के बारे में विचार करता है। हमेशा, जब वह मनुष्य के वचनों और कर्मों को देखता है, तो वह दया और क्रोध से भर जाता है, और हमेशा इन चीज़ों को देखने से उसके दिल में दर्द पैदा होता है। निर्दोष, आखिरकार, सुन्न हो चुके हैं; परमेश्वर क्यों हमेशा उनके लिए चीज़ों को मुश्किल करे? कमज़ोर मनुष्य में दृढ़ता की बहुत कमी होती है; परमेश्वर क्यों हमेशा उसके लिए अदम्य क्रोध रखे? कमज़ोर और निर्बल मनुष्य में थोड़ा-सा भी जीवट नहीं है; परमेश्वर क्यों हमेशा उसकी अवज्ञा के लिए उसे झिड़के? स्वर्ग में परमेश्वर की धमकियों का कौन सामना कर सकता है? आखिरकार, मनुष्य नाज़ुक है, और हताशा की स्थितियों में है, परमेश्वर ने अपना

क्रोध अपने दिल की गहराई में धकेल दिया है, ताकि मनुष्य धीरे-धीरे आत्म-चिंतन कर सके। फिर भी मनुष्य, जो गंभीर संकट में है, परमेश्वर की इच्छा की थोड़ी-सी भी कद्र नहीं करता; मनुष्य को शैतानों के बूढ़े सम्राट द्वारा अपने पैरों तले कुचल दिया गया है, फिर भी वह पूरी तरह से अनजान है, वह हमेशा स्वयं को परमेश्वर के विरुद्ध रखता है, या फिर वह न तो उसके प्रति उत्साहित है, न उदासीन। परमेश्वर ने कई वचन कहे हैं, फिर भी किसने उन्हें कभी भी गंभीरता से लिया है? मनुष्य परमेश्वर के वचनों को नहीं समझता, फिर भी वह बेफ़िक्र और उत्कंठा-रहित रहता है, और उसने वास्तव में कभी भी बूढ़े शैतान का सार नहीं जाना है। लोग अधोलोक में, नरक में रहते हैं, लेकिन मानते हैं कि वे समुद्र-तल के महल में रहते हैं; उन्हें बड़े लाल अजगर द्वारा सताया जाता है, पर वे स्वयं को देश के "कृपापात्र"[6] समझते हैं; शैतान द्वारा उनका उपहास किया जाता है, पर उन्हें लगता है कि वे देह के उत्कृष्ट कला-कौशल का आनंद ले रहे हैं। कैसा मलिन, नीच अभागों का समूह है यह! मनुष्य का दुर्भाग्य से पाला पड़ चुका है, लेकिन उसे इसका पता नहीं है, और इस अंधेरे समाज में वह एक के बाद एक दुर्घटनाओं का सामना करता है,[7] फिर भी वह इसके प्रति जागृत नहीं हुआ है। कब वह आत्म-दया और दासता के स्वभाव से छुटकारा पाएगा? क्यों वह परमेश्वर के दिल के प्रति इतना लापरवाह है? क्या वह चुपचाप इस दमन और कठिनाई को माफ़ कर देता है? क्या वह उस दिन की कामना नहीं करता, जब वह अंधेरे को प्रकाश में बदल सके? क्या वह एक बार फिर धार्मिकता और सत्य के विरुद्ध हो रहे अन्याय को दूर नहीं करना चाहता? क्या वह लोगों द्वारा सत्य का त्याग किए जाने और तथ्यों को तोड़े-मरोड़े जाने को देखते रहने और कुछ न करने का इच्छुक है? क्या वह इस दुर्व्यवहार को सहते रहने में खुश है? क्या वह गुलाम होने के लिए तैयार है? क्या वह इस असफल राज्य के गुलामों के साथ परमेश्वर के हाथों नष्ट होने को तैयार है? कहां है तुम्हारा संकल्प? कहां है तुम्हारी महत्वाकांक्षा? कहां है तुम्हारी गरिमा? कहां है तुम्हारी सत्यनिष्ठा? कहां है तुम्हारी स्वतंत्रता? क्या तुम शैतानों के सम्राट, बड़े लाल अजगर को अपना पूरा जीवन अर्पित करना[8] चाहते हो? क्या तुम ख़ुश हो कि वह तुम्हें यातना देते-देते मौत के घाट उतार दे? गहराई का चेहरा अराजक और काला है, जबकि सामान्य लोग ऐसे दुखों का सामना करते हुए स्वर्ग की ओर देखकर रोते हैं और पृथ्वी से शिकायत करते हैं। मनुष्य कब अपने सिर को ऊँचा रख पाएगा? मनुष्य दुर्बल और क्षीण है, वह इस क्रूर और अत्याचारी शैतान से कैसे मुकाबला कर सकता है? वह क्यों नहीं जितनी जल्दी हो सके, परमेश्वर को अपना जीवन सौंप देता? वह क्यों अभी भी डगमगाता है? वह कब परमेश्वर का कार्य समाप्त कर सकता है? इस प्रकार निरुद्देश्य

ढंग से तंग और प्रताड़ित किए जाते हुए उसका पूरा जीवन अंततः व्यर्थ ही व्यतीत हो जाएगा; उसे आने और विदा होने की इतनी जल्दी क्यों है? वह परमेश्वर को देने के लिए कोई अनमोल चीज़ क्यों नहीं रखता? क्या वह घृणा की सहस्राब्दियों को भूल गया है?

शायद, बहुत-से लोग परमेश्वर के कुछ वचनों से घृणा करते हैं, या शायद वे न तो उनसे घृणा करते हैं और न ही उनमें कोई रुचि रखते हैं। चाहे कुछ भी हो, तथ्य बेतुके तर्क नहीं बन सकते; कोई ऐसे वचन नहीं बोल सकता, जो तथ्यों का उल्लंघन करते हों। इस बार परमेश्वर इस तरह का कार्य करने के लिए देहधारी बना है, उस कार्य को पूरा करने के लिए जो उसने अभी पूरा नहीं किया है, इस युग को समाप्ति की ओर ले जाने के लिए, इस युग का न्याय करने के लिए, अत्यंत पापियों को दुख के सागर की दुनिया से बचाने और उन्हें पूरी तरह से बदलने के लिए। यहूदियों ने परमेश्वर को क्रूस पर चढ़ा दिया, और इस प्रकार यहूदिया में परमेश्वर की यात्रा समाप्त कर दी। उसके कुछ ही समय बाद, परमेश्वर एक बार फिर व्यक्तिगत रूप से मनुष्य के बीच आया, चुपचाप बड़े लाल अजगर के देश में। वास्तव में, यहूदी राज्य के धार्मिक समुदाय ने लंबे समय से अपनी दीवारों पर यीशु की छवि लटका रखी थी, और अपने मुंह से लोग चिल्लाए "प्रभु यीशु मसीह।" उन्हें नहीं पता था कि यीशु ने मनुष्य के बीच वापस आकर अपने कार्य के दूसरे चरण को, जो कि अभी तक पूरा नहीं हुआ था, पूरा करने के अपने पिता के आदेश को बहुत समय पहले ही स्वीकार कर लिया था। परिणामस्वरूप, जब लोगों ने उसे देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए: वह एक ऐसी दुनिया में पैदा हुआ था जिसमें कई युग गुज़र चुके थे, और वह मनुष्य के सामने एक बहुत ही साधारण व्यक्ति का रूप धारण करके प्रकट हुआ। वास्तव में, युगों के गुज़रने के साथ उसके कपड़े और पूरा रूप बदल गया है, मानो उसका पुनर्जन्म हुआ हो। लोग कैसे जान सकते थे कि यह वही प्रभु यीशु मसीह है, जो क्रूस से नीचे आया और पुनर्जीवित हुआ था? उस पर चोट का मामूली-सा भी निशान नहीं है, बिल्कुल वैसे ही जैसे यीशु यहोवा के समान नहीं दिखता था। आज के यीशु पर लंबे समय से गुज़रे हुए समय का कोई असर नहीं है। लोग उसे कैसे जान सकते थे? कपटी "थॉमस" हमेशा संदेह करता है कि वह पुनर्जीवित यीशु है, और हमेशा अपने मस्तिष्क को आराम देने से पहले यीशु के हाथों पर कीलों के निशान देखना चाहता है; बिना उन्हें देखे वह हमेशा संदेह के बादल पर सवार रहता है, और अपने पैर ठोस ज़मीन पर रखने और यीशु का अनुसरण करने में असमर्थ रहता है। बेचारा "थॉमस"—वह कैसे जान सकता है कि यीशु पिता परमेश्वर द्वारा अधिकृत कार्य करने के लिए आया है? यीशु को क्रूस पर चढ़ाए

जाने के निशान रखने की ज़रूरत क्यों है? क्या क्रूस पर चढ़ाए जाने के निशान यीशु के निशान हैं? वह अपने पिता की इच्छा के लिए कार्य करने आया है; वह हज़ारों साल पहले के यहूदी के पहनावे और रूप में क्यों आएगा? क्या देह में परमेश्वर द्वारा ग्रहण किया गया रूप उसके कार्य में बाधा डाल सकता है? यह किसका सिद्धांत है? जब परमेश्वर कार्य करता है, तो वह मनुष्य की कल्पना के अनुसार क्यों होना चाहिए? परमेश्वर अपने कार्य में केवल इस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करता है कि उसका प्रभाव होना चाहिए। वह व्यवस्था का पालन नहीं करता, और उसके कार्य के कोई नियम नहीं हैं—तो मनुष्य कैसे उसे समझ सकता है? मनुष्य कैसे अपनी धारणाओं और कल्पनाओं पर भरोसा करके परमेश्वर के कार्य में पूरी तरह से प्रवेश कर सकता है? इसलिए बेहतर होगा कि तुम लोग ठीक से समझ जाओ : छोटी-छोटी बातों पर हंगामा मत करो, और उन बातों का बतंगड़ मत बनाओ जो तुम्हारे लिए नई हैं—यह तुम्हें अपना मज़ाक बनवाने और लोगों को तुम लोगों पर हँसने से रोकेगा। तुमने इतने वर्षों से परमेश्वर पर विश्वास किया है और फिर भी तुम परमेश्वर को नहीं जानते। आखिरकार, तुम ताड़ना में डूब जाते हो, तुम्हें, जो कि "श्रेणी में सबसे ऊपर"[७] रखे गए हो, ताड़ना पाने वालों की श्रेणियों में पहुँचा दिया जाता है। बेहतर होता कि तुम अपनी छोटी-छोटी चालें दिखाने के लिए चालाक साधनों का उपयोग नहीं करते; क्या तुम्हारी अदूरदृष्टि वास्तव में परमेश्वर का अनुभव कर सकती है, जो अनंत काल से अनंत काल तक देखता है? क्या तुम्हारे सतही अनुभव तुम्हें परमेश्वर की इच्छा समझने दे सकते हैं? अहंकारी न बनो। आखिरकार, परमेश्वर इस दुनिया का नहीं है—तो उसका कार्य तुम्हारी अपेक्षाओं के अनुसार कैसे हो सकता है?

फ़ुटनोट :

1. "समस्त बुराइयों के सरगना" बूढ़े शैतान को संदर्भित करता है। यह वाक्यांश चरम नापसंदगी व्यक्त करता है।

2. "निराधार आरोप लगाते हुए" उन तरीकों को संदर्भित करता है, जिनके द्वारा शैतान लोगों को नुकसान पहुँचाता है।

3. "ज़बर्दस्त पहरेदारी" दर्शाता है कि वे तरीके, जिनके द्वारा शैतान लोगों को यातना पहुँचाता है, बहुत ही शातिर होते हैं, और लोगों को इतना नियंत्रित करते हैं कि उन्हें हिलने-डुलने की भी जगह नहीं मिलती।

4. "दूरस्थ" का प्रयोग उपहास में किया गया है।

5. "सुव्यवस्थित, सौम्य मार्गदर्शन" का प्रयोग उपहास में किया गया है।

6. "कृपापात्र" शब्द का प्रयोग उन लोगों का उपहास करने के लिए किया गया है, जो काठ जैसे होते हैं और जिन्हें स्वयं के बारे में कोई

जानकारी नहीं होती।

7. "एक के बाद एक दुर्घटनाओं का सामना करता है" इस ओर इशारा करता है कि लोग बड़े लाल अजगर के देश में पैदा हुए थे, और वे अपना सिर ऊँचा रखने में असमर्थ हैं।

8. "पूरा जीवन अर्पित करना" अपमानजनक अर्थ में कहा गया है।

9. "श्रेणी में सबसे ऊपर" का प्रयोग उन लोगों का उपहास करने के लिए किया गया है, जो जोर-शोर से परमेश्वर की खोज करते हैं।

कार्य और प्रवेश (9)

गहरी नस्लीय परंपराओं और मानसिक दृष्टिकोण ने लंबे समय से मनुष्य के शुद्ध और बाल-सुलभ उत्साह पर ग्रहण लगा रखा है, और मनुष्य की आत्मा पर उन्होंने बिना थोड़ी-सी भी मानवता दिखाए हमला किया है, जैसे कि उनमें कोई भावना या आत्म-बोध ही न हो। इन राक्षसों के तरीके बेहद क्रूर हैं, ऐसा लगता है कि "शिक्षा" और "परवरिश" ऐसे पारंपरिक तरीके बन गए हैं, जिनसे दुष्टों का राजा मनुष्य की हत्या करता है। मनुष्य का भरोसा जीतने के लिए भेड़ का वेश धारण करके वह भेड़िया अपनी "गहन शिक्षा" का उपयोग कर अपनी बदसूरत आत्मा को पूरी तरह से छिपा लेता है, और फिर जब मनुष्य आलस में ऊँघ रहा होता है, तो वह उसे पूरी तरह से निगल जाने के लिए उस अवसर का लाभ उठाता है। बेचारे मानव—वे यह कैसे जान पाते कि जिस भूमि पर उन्हें पाला-पोसा गया है वह शैतान का देश है, जिसने उन्हें पाला-पोसा, वह वास्तव में दुश्मन है जो उन्हें दुख देता है। फिर भी मनुष्य नहीं जागता; अपनी भूख-प्यास बुझाकर वह अपने "माता-पिता" द्वारा "नेक" परवरिश का मोल चुकाने के लिए तैयार होता है। मनुष्य ऐसा ही है। वह आज भी नहीं जानता कि जिस राजा ने उसे बड़ा किया है, वह उसका दुश्मन है। धरती पर मृतकों की हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं, शैतान बिना रुके पागलों की तरह जश्न मनाता है और "अधोलोक" में मनुष्यों का मांस निगलता जाता है; मानव-कंकालों के साथ कब्र साझा करते हुए वह मनुष्यों की क्षत-विक्षत देह के बचे-खुचे अवशेषों का उपभोग करने का निरर्थक प्रयास करता है। फिर भी मनुष्य सदा अनजान रहता है, उसने शैतान को कभी अपना दुश्मन नहीं माना, बल्कि पूरे दिल से उसकी सेवा करता है। इस तरह के भ्रष्ट लोग परमेश्वर को जानने में बिलकुल असमर्थ होते हैं। क्या परमेश्वर के लिए देह धारण कर उनके बीच आना और उद्धार के अपने सारे कार्य को पूरा करना आसान है? पहले से ही अधोलोक में पड़ा

मनुष्य परमेश्वर की अपेक्षाओं को कैसे पूरा कर सकता है? मानवजाति के कार्य के लिए परमेश्वर ने कई रातें बिना सोए गुज़ारी हैं। गहन ऊँचाई से लेकर अनंत गहराई तक, जीते-जागते नरक में जहाँ मनुष्य रहता है, वह मनुष्य के साथ अपने दिन गुज़ारने के लिए उतर आया है, फिर भी उसने कभी मनुष्य के बीच अपनी फटेहाली की शिकायत नहीं की है, अपनी अवज्ञा के लिए कभी भी मनुष्य को तिरस्कृत नहीं किया है, बल्कि वह व्यक्तिगत रूप से अपने कार्य को करते हुए सबसे बड़ा अपमान सहन करता है। परमेश्वर नरक का अंग कैसे हो सकता है? वह नरक में अपना जीवन कैसे बिता सकता है? लेकिन समस्त मानवजाति के लिए, ताकि पूरी मानवजाति को जल्द ही आराम मिल सके, उसने अपमान सहा है और पृथ्वी पर आने का अन्याय झेला है, मनुष्य को बचाने की खातिर व्यक्तिगत रूप से "नरक" और "अधोलोक" में, शेर की माँद में, प्रवेश किया है। मनुष्य परमेश्वर का विरोध करने योग्य कैसे हो सकता है? परमेश्वर से शिकायत करने का उसके पास क्या कारण है? वह परमेश्वर की ओर नज़र उठाकर देखने की हिम्मत कैसे कर सकता है? स्वर्ग का परमेश्वर बुराई की इस सबसे गंदी भूमि में आया है, और कभी भी उसने अपने कष्टों की शिकायत नहीं की है, बल्कि वह चुपचाप मनुष्य द्वारा किए गए विनाश[1] और अत्याचार को स्वीकार करता है। उसने कभी मनुष्य की अनुचित माँगों का प्रतिकार नहीं किया है, कभी भी उसने मनुष्य से अत्यधिक माँगें नहीं की हैं, और कभी भी उसने मनुष्य से गैरवाजिब तकाजे नहीं किए हैं; वह केवल बिना किसी शिकायत के मनुष्य द्वारा अपेक्षित सभी कार्य करता है : शिक्षा देना, प्रबुद्ध करना, डाँटना-फटकारना, शब्दों का परिष्कार करना, याद दिलाना, प्रोत्साहन देना, सांत्वना देना, न्याय करना और उजागर करना। उसका कौन-सा कदम मनुष्य के जीवन की खातिर नहीं है? यद्यपि उसने मनुष्यों की संभावनाओं और नियति को हटा दिया है, फिर भी परमेश्वर द्वारा उठाया गया कौन-सा कदम मनुष्य के भाग्य के लिए नहीं रहा है? उनमें से कौन-सा कदम मनुष्य के अस्तित्व के लिए नहीं रहा है? उनमें से कौन-सा कदम मनुष्य को इस दुःख और अँधेरी ताकतों के अत्याचार से मुक्त कराने के लिए नहीं रहा है, जो इतनी काली हैं जितनी कि रात? उनमें से कौन-सा कदम मनुष्य की खातिर नहीं है? परमेश्वर के हृदय को, जो ममतामयी माँ के हृदय जैसा है, कौन समझ सकता है? परमेश्वर के उत्सुक हृदय को कौन समझ सकता है? परमेश्वर के भावुक हृदय और उसकी उत्कट आशाओं का प्रतिफल ठंडे दिलों से, कठोर और उदासीन आँखों से, मनुष्य द्वारा बार-बार की फटकार और अपमान से दिया गया है; उनका प्रतिफल तीखी टिप्पणियों, कटाक्ष और हिकारत से दिया गया है; उनका प्रतिफल मनुष्य द्वारा उपहास करके, कुचलकर

और नकारकर, अपनी गलतफ़हमियों, विलाप, मनो-मालिन्य और टालमटोल से दिया गया है, धोखे, हमले और कड़वाहट से दिया गया है। गर्मजोशी से भरे शब्दों को तनी हुई भौंहों और इनकार में हिलती हजारों उँगलियों की ठंडी अवज्ञा मिली है। किंतु परमेश्वर सिर झुकाए, एक नत-मस्तक बैल[2] की तरह लोगों की सेवा करना सहन कर सकता है। कितनी बार सूर्य और चंद्रमा आए और गए, कितनी ही बार उसने सितारों का सामना किया है, कितनी ही बार वह भोर में निकला और गोधूलि में लौटा है, कितनी ही बार उसने अपने पिता के वियोग की तुलना में हजार गुना ज्यादा पीड़ा सहते हुए, मनुष्य के हमले और तोड़-फोड़ बर्दाश्त करते हुए, और मनुष्य के साथ व्यवहार और उसकी काट-छाँट करते हुए बेचैनी से करवटें बदलीं हैं। मनुष्य ने परमेश्वर की विनम्रता और अदृश्यता का प्रतिफल अपने पूर्वाग्रह[3] से, अनुचित विचारों और अनुचित व्यवहार से चुकाया है, और परमेश्वर के गुमनामी में कार्य करने के निश्शब्द तरीके, उसके संयम और सहनशीलता की चुकौती मनुष्य की लालचभरी निगाह से की गई है; मनुष्य परमेश्वर को बिना किसी मलाल के घसीटकर मार डालने की कोशिश करता है और परमेश्वर को जमीन पर कुचल देने का प्रयास करता है। परमेश्वर के प्रति अपने व्यवहार में मनुष्य का रवैया "अजीब चतुराई" का है, और परमेश्वर को, जिसे मनुष्य द्वारा तंग और तिरस्कृत किया गया है, हजारों लोगों के पैरों तले कुचल दिया जाता है, जबकि मनुष्य स्वयं ऊँचा खड़ा होता है, जैसे कि वह पहाडी का राजा बनना चाहता हो, जैसे कि वह पूरी सत्ता हथियाना,[4] परदे के पीछे से अपना दरबार चलाना, परदे के पीछे परमेश्वर को एक कर्तव्यनिष्ठ और नियम-निष्ठ निर्देशक बनाना चाहता हो, जिसे पलटकर लड़ने या मुश्किलें पैदा करने की अनुमति नहीं है। परमेश्वर को अंतिम सम्राट की भूमिका अदा करनी चाहिए, उसे हर तरह की स्वतंत्रता से रहित एक कठपुतली[5] होना चाहिए। मनुष्य के कर्म अकथनीय हैं, तो वह परमेश्वर से कुछ भी माँगने योग्य कैसे हुआ? वह परमेश्वर को सुझाव देने योग्य कैसे हुआ? वह यह माँग करने योग्य कैसे हुआ कि परमेश्वर उसकी कमजोरियों के प्रति सहानुभूति रखे? वह परमेश्वर की दया पाने योग्य कैसे हुआ? वह बार-बार परमेश्वर की उदारता प्राप्त करने योग्य कैसे हुआ? वह बार-बार परमेश्वर की क्षमा पाने योग्य कैसे हुआ? उसकी अंतरात्मा कहाँ गयी? उसने बहुत पहले ही परमेश्वर का दिल तोड़ दिया था, उसने बहुत पहले ही परमेश्वर का दिल टुकड़े-टुकड़े करके छोड़ दिया था। परमेश्वर ऊर्जा और उत्साह से भरा हुआ मनुष्यों के बीच इस आशा से आया था कि मनुष्य उसके प्रति दयालु होगा, भले ही उसमें गर्मजोशी की कमी हो। फिर भी, परमेश्वर के दिल को मनुष्य ने कम सुकून पहुँचाया है, जो कुछ उसने प्राप्त किया है, वह केवल तेजी से

बढ़ते[6] हमले और यातनाएँ हैं। मनुष्य का दिल बहुत लालची है, उसकी इच्छा बहुत बड़ी है, वह कभी भी संतुष्ट नहीं होता, वह हमेशा शातिर और उजड्ड रहता है, वह परमेश्वर को कभी बोलने की आज़ादी या अधिकार नहीं देता, और अपमान के सामने सिर झुकाने, और मनुष्य द्वारा अपने साथ मनचाहे तरीके से की जाने वाली जोड़तोड़ स्वीकार करने के अलावा परमेश्वर के लिए कोई विकल्प नहीं छोड़ता।

सृष्टि से लेकर अब तक परमेश्वर ने बहुत ज्यादा पीड़ा सहन की है और बहुत सारे हमलों का सामना किया है। पर आज भी मनुष्य परमेश्वर से अपनी माँगें कम नहीं करता, वह आज भी परमेश्वर की जाँच-पड़ताल करता है, आज भी उसमें उसके प्रति कोई सहनशीलता नहीं है, उसे सलाह देने, उसकी आलोचना करने और उसे अनुशासित करने के अलावा मनुष्य और कुछ भी नहीं करता, जैसे कि उसे गहरा भय हो कि परमेश्वर गलत रास्ते पर चला जाएगा, कि पृथ्वी पर परमेश्वर पाशविक और अनुचित है, दंगा कर रहा है, या वह किसी काम का नहीं रह जाएगा। परमेश्वर के प्रति मनुष्य का रवैया हमेशा ऐसा ही रहा है। इससे परमेश्वर दुखी क्यों न होगा? देह धारण करने में परमेश्वर ने जबरदस्त दर्द और अपमान सहन किया है; मनुष्य की शिक्षाओं को स्वीकार करने में परमेश्वर की और कितनी दुर्गति होगी? मनुष्य के बीच उसके आगमन ने उसकी सारी स्वतंत्रता छीन ली है, जैसे कि उसे अधोलोक में बंदी बना लिया गया हो, और उसने मनुष्य द्वारा अपनी आलोचना बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकार कर ली हो। क्या यह शर्मनाक नहीं है? एक सामान्य व्यक्ति के परिवार के बीच आने में "यीशु" ने सबसे बड़ा अन्याय सहन किया है। इससे भी अधिक अपमानजनक यह है कि वह इस धूल भरी दुनिया में आ गया है, उसने खुद को बहुत ही दीन बना लिया है और परम साधारण देह ग्रहण कर ली है। एक मामूली व्यक्ति बनने में क्या सर्वोच्च परमेश्वर को मुश्किलें नहीं झेलनी पड़तीं? और क्या ऐसा वह मानवजाति के लिए नहीं करता? क्या ऐसा भी कोई समय रहा है, जब वह अपने बारे में सोच रहा हो? यहूदियों द्वारा खारिज कर दिए जाने, मार दिए जाने और लोगों द्वारा अपना उपहास और तिरस्कार किए जाने के बाद उसने न तो कभी स्वर्ग में शिकायत की, न ही धरती पर विरोध किया। आज यह सहस्राब्दियों पुरानी त्रासदी इन यहूदी जैसे लोगों के बीच फिर से पैदा हुई है। क्या ये उसी पाप को नहीं दोहरा रहे? वह कौन-सी चीज़ है जो मनुष्य को परमेश्वर के वादे पाने योग्य बनाती है? क्या वह परमेश्वर का विरोध करने के बाद, उसके आशीष स्वीकार नहीं करता? मनुष्य कभी न्याय का सामना क्यों नहीं करता, या सत्य की तलाश क्यों नहीं करता? उसे परमेश्वर के कार्य में कोई रुचि क्यों नहीं है? उसकी धार्मिकता कहाँ है? उसकी निष्पक्षता कहाँ है? क्या वह परमेश्वर

का प्रतिनिधित्व करने का दम रखता है? न्याय की उसकी समझ कहाँ है? मनुष्य को जो प्रिय है, उसमें से कितना परमेश्वर को प्रिय है? मनुष्य खड़िया और पनीर का भेद नहीं बता सकता,[7] वह हमेशा काले को सफ़ेद समझ लेता है,[8] वह न्याय और सच्चाई का दमन करता है और हमेशा अन्याय और अधर्म का झंडा बुलंद रखता है। वह प्रकाश को दूर भगाता है, और अँधेरों में कूदता-फाँदता है। सत्य और न्याय की तलाश करने वाले वैसा करने के बजाय प्रकाश को दूर भगाते हैं, परमेश्वर की तलाश करने वाले उसे अपने पैरों तले रौंदते हैं और अपना बखान करते हैं। मनुष्य किसी डाकू[9] से भिन्न नहीं है। उसका विवेक कहाँ है? कौन सही-गलत का भेद बता सकता है? कौन न्याय कर सकता है? कौन सत्य के लिए दुःख सहने को तैयार है? लोग शातिर और शैतान हैं! परमेश्वर को सूली पर चढ़ाकर वे ताली बजाते और खुश होते हैं, उनकी असभ्य चीखों का कोई अंत नहीं है। वे मुर्गों और कुत्तों की तरह हैं, आपस में साँठगाठ करते हैं और एक-दूसरे को बढ़ावा देते हैं, उन्होंने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया है, उनकी दखलंदाज़ी ने कोई जगह अछूती नहीं छोड़ी है, वे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं और पागलपन से गुर्राते फिरते हैं, सब एक-साथ घुस आए हैं, और गंदगी का माहौल व्याप्त है, हलचल से भरा और जीवंत, और जो आँख मूँदकर खुद को दूसरों से जोड़े रहते हैं, वे सिर उठाते रहते हैं, सभी अपने पूर्वजों के "शानदार" नामों को पकड़े रहते हैं। इन कुत्तों और मुर्गों ने बहुत पहले ही परमेश्वर को अपने अपने मन से निकाल दिया, और परमेश्वर के दिल की स्थिति पर कभी ध्यान नहीं दिया। परमेश्वर का यह कहना आश्चर्य की बात नहीं कि मनुष्य किसी कुत्ते या मुर्गे की तरह है, एक भौंकने वाला कुत्ता जो सौ और कुत्तों को चीखने के लिए उकसाता है; इस तरह, बहुत शोरगुल के साथ वह परमेश्वर के कार्य को आज के दिन तक ले आया है, इस बात से बेखबर कि परमेश्वर का कार्य क्या है, क्या कहीं न्याय है, क्या परमेश्वर के पास कोई जगह है जहाँ वह पैर रख सके, कल का दिन कैसा होगा, या फिर वह अपनी नीचता और गंदगी से अनभिज्ञ है। मनुष्य ने चीज़ों के बारे में कभी कुछ ख़ास नहीं सोचा है, उसने कल के बारे में कभी चिंता नहीं की है, और जो कुछ फायदेमंद और अनमोल है उसे अपना लिया है, और रद्दी तथा बचे-खुचे माल[10] के सिवाय परमेश्वर के लिए कुछ नहीं छोड़ा है। मनुष्य कितना क्रूर है! उसमें परमेश्वर के लिए कोई भावना नहीं बची है, और परमेश्वर का सब-कुछ गुपचुप तरीके से हड़प लेने के बाद, उसके अस्तित्व पर ध्यान न देते हुए, वह उसे बहुत पीछे उछाल फेंकता है। वह परमेश्वर का आनंद तो लेता है, परंतु परमेश्वर का विरोध भी करता है और उसे पैरों तले कुचलता है, जबकि मुँह से वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है और उसका गुणगान करता है; वह

परमेश्वर से प्रार्थना करता है और परमेश्वर पर निर्भर रहता है, साथ ही परमेश्वर को धोखा भी देता है; वह परमेश्वर के नाम का "गुणगान" करता है और परमेश्वर के मुख को देखता है, पर वह ढिठाई और बेशर्मी से परमेश्वर के सिंहासन पर भी बैठ जाता है और परमेश्वर की "अधार्मिकता" का न्याय भी करता है; उसके मुँह से तो ये शब्द निकलते हैं कि वह परमेश्वर का ऋणी है, वह परमेश्वर के वचनों को देखता है, परंतु दिल ही दिल में वह परमेश्वर को गालियाँ देता है; वह परमेश्वर के प्रति "सहनशील" है, फिर भी वह परमेश्वर पर अत्याचार करता है, और मुँह से कहता है कि यह परमेश्वर की ही खातिर है; अपने हाथों में वह परमेश्वर की चीजों को रखता है और अपने मुँह से परमेश्वर के दिए भोजन को चबाता है, किंतु वह परमेश्वर पर ठंडी और भावनारहित नज़र टिकाए रखता है, मानो वह उसे पूरी तरह से गड़प कर जाना चाहता हो; वह सत्य को देखता है, लेकिन कहता है कि यह शैतान की चाल है; वह न्याय को देखता है, लेकिन उसे आत्म-त्याग बन जाने के लिए मजबूर करता है; वह मनुष्यों के कर्मों को देखता है, और इस बात पर जोर देता है कि वे ही परमेश्वर हैं; वह मनुष्यों की सहज प्रतिभाओं को देखता है और आग्रह करता है कि वे ही सत्य हैं; वह परमेश्वर के कर्मों को देखता है और इस पर जोर देता है कि वे अहंकार और अभिमान, शेखी और दंभ हैं; जब मनुष्य परमेश्वर की ओर देखता है, तो वह उस पर मनुष्य की छाप लगाए जाने पर ज़ोर देता है, उसे एक सृजित प्राणी के आसन पर रखने की कोशिश करता है जिसकी शैतान के साथ मिलीभगत है; वह पूरी तरह से जानता है कि वे परमेश्वर के कथन हैं, फिर भी वह उन्हें किसी व्यक्ति के लेखन के अलावा कुछ नहीं कहेगा; वह अच्छी तरह से जानता है कि आत्मा देह में साकार होता है, परमेश्वर देह बना है, लेकिन कहता यही है कि यह देह शैतान का वंशज है; वह अच्छी तरह से जानता है कि परमेश्वर दीन और छिपा हुआ है, फिर भी कहता यही है कि शैतान लज्जित हुआ है और परमेश्वर जीत गया है। कैसे निकम्मे लोग हैं! मनुष्य तो रखवाले कुत्तों के रूप में भी सेवा करने योग्य नहीं है! वह काले और सफ़ेद में भेद नहीं करता, यहाँ तक कि वह जानबूझकर काले को तोड़-मरोड़कर सफेद बना देता है। क्या इंसानी ताकतें और उसकी घेरेबंदी परमेश्वर की मुक्ति के दिन को बरदाश्त कर सकेंगी? जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करने के बाद मनुष्य लापरवाह हो गया, यहाँ तक कि वह उसे मार डालने की हद तक भी चला जाता है और इस बात का मौका नहीं छोड़ता कि परमेश्वर खुद को दिखा सके। कहाँ है धार्मिकता? कहाँ है प्रेम? वह परमेश्वर के पास बैठता है, और परमेश्वर को धकेलता है कि वह घुटनों पर गिरकर माफ़ी माँगे, उसकी सारी व्यवस्थाओं का पालन करे, उसकी सभी पैतरेबाज़ियों को चुपचाप स्वीकार करे, वह परमेश्वर को

मजबूर करता है कि वह अपने समस्त कार्यों में उसकी सलाह ले, वरना वह भड़क जाता है[11] और आगबबूला हो उठता है। अँधेरे के ऐसे प्रभाव में, जो काले को सफ़ेद में बदल देता है, परमेश्वर कैसे दुखी न होता? वह कैसे चिंता न करता? ऐसा क्यों कहा जाता है कि जब परमेश्वर ने अपना नवीनतम कार्य शुरू किया, तो यह स्वर्ग और पृथ्वी का सृजन करने के कार्य के समान था? मनुष्य के कर्म इतने "समृद्ध" हैं, "जीवित जल के सदा बहने वाले स्रोत", जो मनुष्य के दिल के क्षेत्र को निरंतर "फिर से भरते हैं", जबकि मनुष्य का "जीवित जल का स्रोत" परमेश्वर के साथ बेझिझक प्रतिस्पर्धा[12] करता है; ये दोनों परस्पर विरोधी हैं, और यह परमेश्वर के स्थान पर लोगों को दंड से मुक्ति प्रदान करता है, जबकि मनुष्य इसमें शामिल खतरों पर विचार किए बिना इसके साथ सहयोग करता है। और परिणाम क्या होता है? वह रुखाई से परमेश्वर को दर-किनार कर देता है और बहुत दूर रख देता है, जहाँ लोग उसकी ओर ध्यान न दें, इस बात से बुरी तरह भयभीत कि वह उनका ध्यान आकर्षित कर लेगा, और परमेश्वर के जीवित जल के स्रोत मनुष्य को लुभा लेंगे और उसे प्राप्त कर लेंगे। इस प्रकार, कई वर्षों की सांसारिक चिंताओं का अनुभव करने के बाद, वह परमेश्वर के खिलाफ कपट और षड्यंत्र करता है, यहाँ तक कि परमेश्वर को अपनी फटकार का लक्ष्य भी बना लेता है। ऐसा लगता है कि परमेश्वर उसकी आँखों में एक कुंदा-सा बन गया है, और वह परमेश्वर को पकड़ने और उसे निर्मल तथा शुद्ध करने के लिए अग्नि में डालने को बेताब है। परमेश्वर की बेचैनी को देखकर मनुष्य अपनी ताकत दिखाता है और हँसता है, खुशी के मारे नाचता है, और कहता है कि परमेश्वर को भी शुद्धिकरण में डुबो दिया गया है, कहता है कि वह परमेश्वर की मलिन अशुद्धताओं को जलाकर शुद्ध कर देगा, जैसे कि केवल यही तर्कसंगत और विवेकपूर्ण हो, जैसे कि यही स्वर्ग के निष्पक्ष और उचित तरीके हों। मनुष्य का यह हिंसक व्यवहार जानबूझकर और अनजाने में, बे दोनों ही स्थितियों में किया गया लगता है। मनुष्य अपना बदसूरत चेहरा और अपनी घृणित, गंदी आत्मा दोनों को ही प्रकट करता है, साथ ही भिखारी के दयनीय रूप को भी उजागर करता है; दूर-दूर तक उपद्रव करने के बाद वह दयनीय सूरत बना लेता है और स्वर्ग से क्षमा की भीख माँगता है, और एक अत्यंत दयनीय पिल्ले जैसा दिखता है। मनुष्य हमेशा अप्रत्याशित तरीकों से काम करता है, वह हमेशा "दूसरों को डराने के लिए शेर की पीठ पर सवारी करता है",[क] वह हमेशा कोई भूमिका निभा रहा होता है, परमेश्वर के दिल के बारे में वह जरा भी विचार नहीं करता, न ही वह अपनी स्थिति से कोई तुलना करता है। वह तो चुपचाप केवल परमेश्वर का विरोध करता है, जैसे कि परमेश्वर ने उसके साथ कोई अन्याय किया

हो और उसका उसके साथ इस तरह से व्यवहार करना गलत हो, और जैसे कि स्वर्ग की आँखें न हों और वह जानबूझकर चीजों को उसके लिए कठिन बनाता हो। इस प्रकार मनुष्य हमेशा चुपके-चुपके साज़िशें रचता है और वह परमेश्वर से अपनी माँगें थोड़ी-सी भी कम नहीं करता, हिंसक आँखों से देखता है, परमेश्वर के हर कदम को उग्रता से घूरता है, कभी यह नहीं सोचता कि वह परमेश्वर का दुश्मन है, और यह उम्मीद करता है कि वह दिन आएगा जब परमेश्वर कुहासे को काट देगा, चीज़ों को स्पष्ट करेगा, उसे "बाघ के मुँह" से बचाएगा और उसकी ओर से प्रतिशोध ले लेगा। आज भी, लोग यह नहीं सोचते कि वे परमेश्वर का विरोध करने की भूमिका निभा रहे हैं, जो युगों से बहुत लोगों ने निभाई है; वे कैसे जान सकते हैं कि जो कुछ भी वे करते हैं, उसमें वे काफी पहले ही भटक चुके हैं, और उनकी सारी समझ को समुद्रों ने कब का निगल लिया है।

किसने कब सत्य को स्वीकार किया है? किसने कब खुली बाँहों से परमेश्वर का स्वागत किया है? किसने कब परमेश्वर के प्रकटन की खुशी से कामना की है? मनुष्य के व्यवहार का क्षय काफी पहले ही हो चुका है, और उसकी मलिनता ने काफी पहले ही परमेश्वर के मंदिर को छोड़ दिया है जिसे पहचाना नहीं जा सकता। इस बीच मनुष्य परमेश्वर को अपने से तुच्छ समझते हुए अभी भी अपना काम जारी रखता है। ऐसा लगता है, जैसे परमेश्वर के खिलाफ उसका विरोध पत्थर की लकीर बन गया है, जो अपरिवर्तनीय है, और नतीजतन, वह अपने शब्दों और कार्यों के और अधिक दुर्व्यवहार से पीड़ित होने के बजाय शापित होगा। इस तरह के लोग परमेश्वर को कैसे जान सकते हैं? वे परमेश्वर के साथ आराम कैसे पा सकते हैं? और वे परमेश्वर के सामने आने के योग्य कैसे हो सकते हैं? निस्संदेह, परमेश्वर की प्रबंधन योजना के प्रति स्वयं को समर्पित करने में कुछ भी गलत नहीं है—लेकिन लोग अपना रक्त और आँसू निस्वार्थ बहाते हुए हमेशा परमेश्वर के कार्य और परमेश्वर की संपूर्णता को अपने मन से क्यों निकाल देते हैं? निस्संदेह, लोगों की निस्वार्थ भक्ति की भावना अनमोल है—लेकिन वे यह कैसे जान सकते हैं कि जो "रेशम" वे बुन रहे हैं, वह परमेश्वर के स्वरूप को दर्शाने में बिलकुल असमर्थ है? निस्संदेह, लोगों के अच्छे इरादे, अनमोल और दुर्लभ हैं—लेकिन वे "अनमोल खजाने"[13] को कैसे निगल सकते हैं? तुम लोगों को अपने अतीत के बारे में सोचना चाहिए : तुम लोग कभी भी बेरहम ताड़ना और शापों से दूर क्यों नहीं रहे हो? लोग हमेशा प्रभावशाली वचनों और धार्मिक निर्णय के साथ "अंतरंग संबंध" क्यों रखते हैं? क्या परमेश्वर वास्तव में उनकी परीक्षा ले रहा है? क्या परमेश्वर जानबूझकर उनका शुद्धिकरण कर रहा है? और शुद्धिकरण में

लोग कैसे प्रवेश करते हैं? क्या वे वास्तव में परमेश्वर के कार्य को जानते हैं? परमेश्वर के कार्य से और अपनी प्रविष्टि से लोगों ने क्या सबक सीखे हैं? लोग परमेश्वर के प्रबोधन को न भूलें, और वे परमेश्वर के कार्य में अंतर्दृष्टि रखें, उसे स्पष्ट रूप से पहचानें, और अपनी प्रविष्टि का ठीक से प्रबंधन करें।

फ़ुटनोट :

1. "विनाश" का इस्तेमाल मानवजाति की अवज्ञा उजागर करने के लिए किया गया है।

2. "उग्र भौंहों और इनकार में हिलतीं उँगलियों की ठंडी अवज्ञा मिली है, सिर झुकाए, एक राज़ी बैल की तरह लोगों की सेवा करते हुए" मूलतः एक वाक्य है, लेकिन यहाँ चीजों को साफ करने के लिए इसे दो भागों में विभाजित किया गया है। पहला वाक्य मनुष्य के कार्यों को दर्शाता है, जबकि दूसरा वाक्य परमेश्वर द्वारा सहन की गई पीड़ा और इस बात को इंगित करता है कि परमेश्वर दीन और छिपा हुआ है।

3. "पूर्वाग्रह" लोगों के अवज्ञाकारी व्यवहार को दर्शाता है।

4. "पूरी सत्ता हथियाना" लोगों के अवज्ञाकारी व्यवहार को संदर्भित करता है। वे खुद को ऊँचा उठाकर रखते हैं, दूसरों को बेड़ियों से बाँधते हैं, उनसे अपना अनुकरण करवाते हैं और अपने लिए कष्ट उठाने को कहते हैं। ये वे ताकतें हैं, जो कि परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं।

5. "कठपुतली" का इस्तेमाल उन लोगों का उपहास करने के लिए किया गया है, जो परमेश्वर को नहीं जानते।

6. "तेजी से बढ़ते" का इस्तेमाल लोगों के नीच व्यवहार को रेखांकित करने के लिए किया गया है।

7. "खड़िया और पनीर का भेद नहीं बता सकता" उस स्थिति को इंगित करता है, जब लोग परमेश्वर की इच्छा को किसी शैतानी चीज़ में मोड़ देते हैं, मोटे तौर पर यह उस व्यवहार को इंगित करता है जिसमें लोग परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं।

8. "काले को सफ़ेद समझ लेता है" सत्य को भ्रम के साथ, धार्मिकता को बुराई के साथ मिला देने को इंगित करता है।

9. "डाकू" का इस्तेमाल यह संकेत करने के लिए किया गया है कि लोग संवेदनहीन हैं और उनमें अंतर्दृष्टि की कमी है।

10. "रद्दी तथा बचे-खुचे माल" का प्रयोग उस व्यवहार को इंगित करने के लिए किया गया है, जिसमें लोग परमेश्वर पर अत्याचार करते हैं।

11. "भड़क जाता है" मनुष्य के बदसूरत चेहरे को दर्शाता है, जो क्रुद्ध और उत्तेजित रहता है।

12. "बेझिझक प्रतिस्पर्धा" उस स्थिति को संदर्भित करती है, जब लोग लापरवाह होते हैं, और परमेश्वर के प्रति थोड़ी-सी भी श्रद्धा नहीं रखते।

13. "अनमोल खजाना" परमेश्वर की संपूर्णता को दर्शाता है।

क. इसका अनुवाद स्रोत-पाठ "hú jiǎ hǔ wēi" के आधार पर किया गया है, जो एक चीनी मुहावरा है। यह उस कहानी को संदर्भित करता है, जिसमें बाघ के साथ चलती हुई लोमड़ी अन्य जानवरों को डराती है, और इस प्रकार उस डर और प्रतिष्ठा को "उधार" लेती है, जिस पर बाघ का अधिकार है। यह एक रूपक है, जिसका प्रयोग यहाँ उन लोगों को संदर्भित करने के लिए किया गया है, जो दूसरों को डराने या सताने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा "उधार लेते" हैं।

कार्य और प्रवेश (10)

मानवता का इतनी दूरी तक प्रगति कर लेना एक ऐसी स्थिति है जिसका कोई पूर्व उदाहरण नहीं है। परमेश्वर का कार्य और मनुष्य का प्रवेश कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ते हैं, और इस प्रकार परमेश्वर का कार्य भी एक शानदार घटना है जो बेमिसाल है। मनुष्य का आज तक का प्रवेश एक ऐसा आश्चर्य है जिसकी मनुष्य ने पहले कभी कल्पना नहीं की थी। परमेश्वर का कार्य अपने शिखर पर पहुँच गया है—और, इसके बाद, मनुष्य का "प्रवेश"[1] भी अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। परमेश्वर ने अपने-आपको इतना नीचे उतारा है जितना कि वह संभवतः उतार सकता था, और कभी भी उसने मानवजाति या ब्रह्मांड और समस्त चीजों के सामने विरोध नहीं किया है। इस बीच, मनुष्य परमेश्वर के सिर पर खड़ा है, और उसके द्वारा परमेश्वर का दमन अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है; सब कुछ अपनी चोटी पर पहुँच गया है, और धार्मिकता के प्रकट होने के दिन का समय आ गया है। क्यों उदासी को धरती पर छाने देते रहें, और अंधेरे को सभी लोगों को अपने आवरण में लेने देते रहें? परमेश्वर हजारों वर्षों तक—बल्कि दस हजारों वर्षों तक--देखता रहा हैऔर उसकी सहिष्णुता बहुत समय पहले अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी है। वह मानवजाति की प्रत्येक हरकत को देखता रहा है, वह यह देखता रहा है कि मनुष्य की अधार्मिकता कितनी देर तक आतंक मचाएगी, और फिर भी मनुष्य, जो लंबे समय से सुन्न हो चुका है, कुछ भी महसूस नहीं करता। और किसने कभी परमेश्वर के कर्मों को देखा है? किसने कभी अपनी नजरों को उठाया है और दूर तक देखा है? किसने कभी ध्यान से सुना है? कौन कभी सर्वशक्तिमान के हाथों में रहा है? सभी लोग काल्पनिक भय से ग्रस्त[2] हैं। घास-फूस के एक ढेर का क्या उपयोग है? केवल एक ही चीज़ है जो वे कर सकते हैं, वह है देहधारी परमेश्वर को मृत्यु पर्यंत यातना देना। यद्यपि वे घास और फूस के ढेर हैं, फिर भी एक काम है जो वे "सबसे अच्छा"[3] करते हैं : परमेश्वर को मृत्यु तक यातना देना और फिर यह चिल्लाना

कि "यह लोगों के दिल को खुश करता है"। झींगा-सैनिकों और केकड़ा-सेनाध्यक्षों का यह कैसा झुंड है! उल्लेखनीय रूप से, लोगों के एक उमड़ते रेले के बीच, वे परमेश्वर पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, एक अभेद्य नाकाबंदी के साथ उसे घेरते हुए। उनका जोश अधिकाधिक तीव्रता से दग्ध[4] होता जाता है, वे परमेश्वर को जत्थों में घेरे हुए हैं, ताकि वह एक इंच भी हिल न सके। उनके हाथों में सभी प्रकार के हथियार हैं, और वे परमेश्वर की तरफ क्रोध भरी आँखों से देखते हैं जैसे किसी दुश्मन की ओर देख रहे हों; वे "परमेश्वर के टुकड़े-टुकड़े" कर देने को बेताब हैं। कैसी हतप्रभ करने वाली बात है! मनुष्य और परमेश्वर इतने कट्टर दुश्मन क्यों बन गए हैं? क्या यह हो सकता है कि अत्यंत प्यारे परमेश्वर और मनुष्य के बीच वैमनस्य हो? क्या यह हो सकता है कि परमेश्वर के कार्यों का मनुष्य के लिए कोई लाभ न हो? क्या वे मनुष्य को नुकसान पहुँचाते हैं? मनुष्य परमेश्वर पर एक अविचल ताक जमाये हुए है, बेहद डरते हुए कि वह मनुष्यों की नाकाबंदी को तोड़ डालेगा, तीसरे स्वर्ग में वापस लौट जाएगा, और एक बार फिर मनुष्यों को कालकोठरी में डाल देगा। मनुष्य परमेश्वर से खबरदार है, वह बहुत घबराया हुआ है, और दूर जमीन पर छटपटाता है, लोगों के बीच मौजूद परमेश्वर पर "मशीन गन" तानते हुए। ऐसा लगता है कि, परमेश्वर की थोड़ी-सी भी हलचल होते ही, मनुष्य उसका सब कुछ—उसका पूरा शरीर और वह जो कुछ भी पहने हुए है—मिटा देगा, कुछ भी बाकी नहीं छोड़ेगा। परमेश्वर और मनुष्य के बीच का यह संबंध सुधार से परे है। परमेश्वर मनुष्य की समझ से परे है; मनुष्य, इस बीच, जानबूझकर अपनी आँखें बंद कर लेता है और मस्ती में समय गंवाता है, मेरे अस्तित्व को देखने के लिए पूरी तरह से अनिच्छुक, और मेरे न्याय के प्रति निर्मम। अतः, जब मनुष्य को इसकी उम्मीद नहीं होती, मैं चुपचाप निकल जाता हूँ, और अब मैं और तुलना नहीं करूँगा कि मनुष्य के मुक़ाबले कौन ऊँचा या नीचा है। मानव सबसे निम्न स्तर का "जानवर" है एवं मैं अब उसकी ओर ध्यान देना नहीं चाहता। बहुत समय पहले मैं अपने अनुग्रह की समग्रता को पूरी तरह से उस स्थान पर वापस ले जा चुका हूँ जहाँ मैं शांतिपूर्वक रहता हूँ; चूँकि मनुष्य इतना अवज्ञाकारी है, उसके पास क्या वजह है कि वह मेरी अनमोल कृपा का और आनंद ले? मैं उन ताकतों पर अपनी कृपा को व्यर्थ करने के लिए तैयार नहीं हूँ जो मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण हैं। मैं कनान के उन किसानों को अपने अनमोल फल प्रदान करूँगा जो उत्साही हैं, और सच्चे मन से मेरी वापसी का स्वागत करते हैं। मैं केवल इतना चाहता हूँ कि स्वर्ग अनंत काल तक रहे, और इससे भी अधिक, मनुष्य कभी बूढ़ा न हो, स्वर्ग और मनुष्य सदैव चैन से रहें, और वे सदाबहार "देवदार और साइप्रस" हमेशा परमेश्वर के साथ रहें, और आदर्श युग में एक साथ

प्रवेश करने के लिए हमेशा स्वर्ग के साथ रहें।

मैंने मनुष्य के साथ कई दिन-रात बिताए हैं, मैं दुनिया में मनुष्य के साथ रह चुका हूँ, और मैंने कभी भी मनुष्य से कोई और अपेक्षाएँ नहीं की हैं; मैं केवल मनुष्य का निरंतर आगे बढ़ने में मार्गदर्शन करता हूँ, मैं मनुष्य का मार्गदर्शन करने के अलावा और कुछ भी नहीं करता हूँ, और मानवजाति की नियति की खातिर, मैं निरंतर प्रबंधन का कार्य करता हूँ। स्वर्ग के पिता की इच्छा को कभी किसने समझा है? किसने स्वर्ग और पृथ्वी के बीच यात्रा की है? मैं अब मनुष्य के "बुढ़ापे" के साथ और समय बिताना नहीं चाहता, क्योंकि मनुष्य बहुत पुराने ढंग का है, वह कुछ भी नहीं समझता है, एक ही चीज़ जो वह जानता है, वह है उस दावत को छक कर खाना जो मैंने सजा रखी है, अन्य सभी चीजों से विरक्त—किसी भी अन्य मामले पर ध्यान न देते हुए। मानव जाति बहुत कृपण है, मनुष्यों के बीच शोरगुल, हताशा और खतरा बहुत अधिक है, और इसलिए मैं अंत के दिनों के दौरान हासिल की गई जीत के बहुमूल्य फलों को साझा करना नहीं चाहता हूँ। मनुष्य को उन प्रचुर आशीर्वादों का आनंद उठाने दो जो उसने खुद निर्मित किए हैं, क्योंकि मनुष्य मेरा स्वागत नहीं करता है—मैं मनुष्य को मुस्कुराहट का स्वांग करने के लिए क्यों मजबूर करूँ? दुनिया के हर कोने में गर्मजोशी का अभाव है, पूरे विश्व के परिदृश्य में वसंत का कोई नामो-निशान नहीं है, क्योंकि जल में निवास करते एक जीव की तरह, उसमें थोड़ी-सी भी गर्माहट नहीं है, वह एक लाश की तरह है, और यहाँ तक कि वह रक्त भी जो उसकी नसों में दौड़ता है, एक जमी हुए बर्फ की तरह है जो दिल को ठिठुरा देती है। गर्माहट कहाँ है? बिना किसी कारण के मनुष्य ने परमेश्वर को सूली पर जड़ दिया, और बाद में उसने थोड़ी-सी भी शंका महसूस नहीं की। किसी को भी कभी अफसोस नहीं हुआ है, और ये क्रूर आततायी अब भी मनुष्य के पुत्र को एक बार फिर "जीवित पकड़ना"[5] चाहते हैं और एक गोली चलाने वाले दस्ते के सामने उसे ले आने की योजना बना रहे हैं, ताकि वे अपने दिल की नफरत को खत्म कर सकें। इस खतरनाक भूमि में और रहने का मुझे क्या लाभ है? यदि मैं रह जाता हूँ, तो केवल एक ही चीज जो मैं मनुष्य के लिए लाऊंगा, वह संघर्ष और हिंसा है, और संकट का कोई अंत न होगा, क्योंकि मैं कभी भी मनुष्य के लिए शांति नहीं, केवल युद्ध लाया हूँ। मानव जाति के आखिरी दिन युद्ध से भरे होने चाहिए, और हिंसा और संघर्ष के बीच मनुष्य के गंतव्य को ध्वस्त हो जाना चाहिए। मैं युद्ध की "प्रसन्नता" में "हिस्सा" लेने के लिए तैयार नहीं हूँ, मैं मनुष्य के रक्तपात और बलिदान का साथ नहीं दूँगा, क्योंकि मनुष्य की अस्वीकृति मुझे "निराशा" की ओर ले गई है और मुझमें मनुष्य के युद्धों को देखने का दिल नहीं है—

मनुष्य को जी भरकर लड़ने दो, मैं आराम करना चाहता हूँ, मैं सोना चाहता हूँ, मानवजाति के अंतिम दिनों के दौरान राक्षसों को उनके साथी बनने दो! मेरी इच्छा को कौन जानता है? चूँकि मनुष्य ने मेरा स्वागत नहीं किया गया है, और उसने कभी मेरी प्रतीक्षा नहीं की है, मैं केवल उसे विदाई दे सकता हूँ, और मैं मानवता के गंतव्य को उसे सौंपता हूँ, मैं अपनी सारी धन-संपत्ति मनुष्य के लिए छोड़ता हूँ, अपने जीवन को मनुष्यों के बीच बोता हूँ, अपने जीवन के बीज को मनुष्य के हृदय के खेत में बोता हूँ, उसके लिए अमर स्मृतियाँ छोड़ता हूँ, मानव जाति के लिए अपना सारा प्रेम छोडता हूँ, और मुझमें जो कुछ भी मनुष्य को प्रिय है वह सब उसे देता हूँ, उस प्रेम के उपहार के रूप में जिसके साथ हम एक-दूसरे को चाहते हैं। मेरी हसरत है कि हम हमेशा के लिए एक दूसरे से प्यार करते रहें, कि हमारा बीता हुआ कल एक अच्छी चीज हो जो हम एक दूसरे को दें, क्योंकि मैंने मानवजाति को पहले से ही अपनी समग्रता दे दी है—मनुष्य को क्या शिकायतें हो सकती हैं? मैंने पूरी तरह से अपने जीवन की समग्रता को मनुष्य के लिए छोड़ दिया है, और बिना एक भी शब्द कहे, मानवजाति के लिए प्रेम की सुंदर भूमि पर हल जोतने की कड़ी मेहनत की है; मैंने कभी मनुष्यों से न्यायसंगत मांगें भी नहीं की हैं, और सिर्फ मनुष्य की व्यवस्था के प्रति समर्पण करने और मानवता के लिए एक अधिक सुंदर आने वाला कल बनाने के अलावा और कुछ भी नहीं किया है।

यद्यपि परमेश्वर का कार्य समृद्ध और प्रचुर है, मनुष्य के प्रवेश में बहुत ज्यादा कमियाँ हैं। मनुष्य और परमेश्वर के बीच संयुक्त "उद्यम" का लगभग समूचा हिस्सा ही परमेश्वर का कार्य है; जहाँ तक मनुष्य के प्रवेश का प्रश्न है, उसके पास इसे दिखाने के लिए लगभग कुछ भी नहीं है। मनुष्य, जो इतना शक्तिहीन और अँधा है, आज के परमेश्वर के सामने अपनी ताकत को अपने हाथों के "प्राचीन हथियारों" से मापता है। ये "आदिम वानर" मुश्किल से सीधे चल पाते हैं, और अपने "नग्न" शरीरों पर उन्हें कोई शर्म नहीं आती। परमेश्वर के कार्य का मूल्यांकन करने की उनकी पात्रता क्या है? इन चार हाथ-पैरों वाले वानरों में से कई की आँखें क्रोध से भर आती हैं, और अपने हाथों में पत्थर के प्राचीन हथियारों के साथ वे परमेश्वर का मुकाबला करते हैं, वन-मानुषों की एक ऐसी प्रतियोगिता शुरू करने की कोशिश करते हुए जिसकी मिसाल दुनिया ने पहले कभी नहीं देखी थी, वन-मानुषों और परमेश्वर के बीच अंत के दिनों की एक ऐसी प्रतियोगिता जो पूरी धरती पर प्रसिद्ध हो जाएगी। इसके अलावा, इन आधे सीधे प्राचीन वन-मानुषों में से कई आत्म-संतुष्टि से छलक रहे हैं। उनके चेहरे को ढँकते बाल परस्पर उलझे हुए हैं, जानलेवा इरादे से भरे हुए वे अपने आगे के पैर उठाते हैं। वे अभी भी आधुनिक मानव के रूप में पूरी तरह से विकसित नहीं हुए

हैं, इसलिए कभी तो वे सीधे खड़े होते हैं, और कभी वे रेंगते हैं, ओस की एकत्रित बूंदों के तरह पसीने के मनके उनके माथे को ढंके हुए हैं, उनकी तत्परता स्वयं प्रकट होती है। विशुद्ध, प्राचीन वन-मानुष को निहारते हुए, उनके साथी, चार अंगों पर खड़े हुए, उनके चार हाथ-पैर भारी और मंद, मुश्किल से खुद पर होते प्रहार को रोकने में सक्षम और पलटकर लड़ने की शक्ति के बगैर, वे कठिनाई से खुद को संभाल पाते हैं। पलक झपकते ही—इससे पहले कि क्या हुआ यह देखने का समय मिले—अखाड़े का "नायक" जमीन पर उल्टा लुढ़क जाता है, हाथ-पैरों को हवा में ऊपर उठाए हुए। वे अंग जो गलत मुद्रा में इतने वर्षों से जमीन पर रखे हुए थे, अचानक उलट-पुलट हो गए हैं, और वन-मानुष में अब विरोध करने की कोई इच्छा नहीं बची है। तब से, प्राचीन वन-मानुष का पृथ्वी से सफाया हो गया है—यह वास्तव में "गंभीर" बात है। इस प्राचीन वन-मानुष का ऐसा आकस्मिक अंत हुआ। उसे मनुष्य की इस अद्भुत दुनिया से इतनी जल्दी कूच क्यों करना पड़ा? इसने अपने साथियों के साथ रणनीति के अगले चरण पर चर्चा क्यों नहीं की? परमेश्वर के खिलाफ अपनी ताकत को मापने के रहस्य को बताए बिना उसने दुनिया से विदा ले ली, यह कैसी दयनीय बात है! इस तरह के बूढ़े वन-मानुष का यूं एक फुसफुसाहट के बिना ही मर जाना कितना विचारशून्य था, अपने वंशजों के लिए इस "प्राचीन संस्कृति और कला" को विरासत में छोड़े बिना ही। उसके पास इतना समय ही नहीं था कि अपने निकटतम साथियों को अपने पास बुलाकर उन्हें अपने प्रेम के बारे में बता सके, उसने किसी शिला-लेख पर कोई संदेश नहीं छोड़ा, उसने स्वर्ग के सूर्य को नहीं पहचाना, और अपनी अकथनीय कठिनाइयों के बारे में कुछ भी नहीं कहा। अपनी आखिरी सांस लेते समय, अपनी आँखें बंद होने के पहले, अपने चार अकड़े-से हाथ-पैर हमेशा के लिए वृक्ष की शाखाओं की तरह आकाश की ओर उठाकर रखते हुए, उसने अपने वंशजों को अपने मरणासन्न शरीर के पास नहीं बुलाया, उन्हें यह बताने के लिए कि "परमेश्वर को चुनौती देने के लिए अखाड़े में नहीं उतरना"। ऐसा प्रतीत होगा कि उसकी पीड़ाजनक मृत्यु हुई...। अचानक, अखाड़े के नीचे से एक गरजती हँसी उभरती है; एक आधा सीधा वन-मानुष अपने आपे से बाहर है; हिरण या अन्य जंगली प्राणियों का शिकार करने में इस्तेमाल होने वाली एक "पत्थर की लाठी" पकड़े हुए जो आदिम वन-मानुष के मुकाबले अधिक उन्नत है, वह अखाड़े में कूद पड़ता है, क्रोध से आग-बबूला होते हुए, और अपने मन में एक सुनिश्चित योजना लेकर। [6] ऐसा लगता है मानो उसने कुछ सराहनीय काम किया है। अपनी पत्थर की लाठी की "ताकत" के सहारे वह "तीन मिनट" के लिए सीधे खड़े हो पाता है। इस तीसरे "पैर" की "शक्ति" कितनी प्रबल है! इसने तीन

मिनट तक उस बड़े, अनाड़ी, बेवकूफ आधे सीधे वन-मानुष को खड़ा करके रखा—कोई आश्चर्य नहीं कि यह आदरणीय[7] वृद्ध वन-मानुष इतना दबंग है। यकीनन, यह प्राचीन पत्थर का औजार "अपनी प्रतिष्ठा पर खरा उतरता है": चाकू की एक मूठ है, धार है, और नोक है, एकमात्र दोष यह है कि धार पर चमक की कमी है—यह कितना शोकास्पद है। प्राचीन काल के इस "लघु नायक" को फिर से देखो, अखाड़े में खड़े होकर नीचे खड़े लोगों पर एक तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डालते हुए, जैसेकि वे नपुंसक व हीन हों, और वह स्वयं वीर नायक हो। वह अपने दिल में, जो मंच के सामने हैं उनसे छिपे तौर पर घृणा करता है। "देश कठिनाई में है और हममें से प्रत्येक जिम्मेदार है, तुम लोग पीछे क्यों हट रहे हो? क्या यह हो सकता है कि तुम सब देश को आपदा का सामना करते देखो, लेकिन खूनी लड़ाई में शामिल न होना चाहो? देश तबाही की कगार पर है—तुम लोग सबसे पहले चिंतित होने वाले और सबसे अंत में सुख भोगने वाले क्यों नहीं हो? तुम सभी देश को नाकामयाब होते और इसकी जनता को बर्बाद होते कैसे देख सकते हो? क्या तुम लोग राष्ट्रीय पराधीनता की शर्म को सहन करने के लिए तैयार हो? निकम्मों का यह कैसा झुंड है?" जैसे ही वह इस तरह सोचता है, मंच के सामने लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं और उसकी आँखें और भी अधिक कुपित हो जाती हैं, जैसेकि बस अभी उनसे ज्वालाएँ बरसने[8] वाली हों। वह लड़ाई से पहले ही परमेश्वर को विफल कर देने के लिए उतावला है, लोगों को खुश करने की खातिर परमेश्वर को मौत के घाट उतारने के लिए बेताब। उसे नहीं पता कि, भले ही उसका पत्थर का औजार ख्याति का योग्य पात्र हो, यह परमेश्वर से कभी भी वैर नहीं कर सकता। इससे पहले कि उसे खुद के बचाव का समय मिले, इससे पहले कि उसे लेट जाने और अपने पैरों पर उठ खड़े होने का समय मिले, वह आगे-पीछे झूलने लगता है, दोनों आँखों की दृष्टि खोकर। वह अपने पुराने पूर्वज के पास नीचे लुढ़क पड़ता है और फिर नहीं उठता; बूढ़े वन-मानुष को कसकर पकड़े हुए वह अब और नहीं चीखता, और अपनी हीनता को स्वीकार कर लेता है, विरोध करने की और इच्छा के बगैर। वे बेचारे दो वन-मानुष अखाड़े के सामने प्राण त्याग देते हैं। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि मानव जाति के ये पूर्वज, जो आज तक बचे हुए हैं, उस दिन अज्ञान में मारे गए, जो धार्मिकता के सूर्य के प्रकट होने का दिन था! कितना मूर्खतापूर्ण है यह कि उन्होंने इतने महान आशीर्वाद को यूँ ही हाथ से निकल जाने दिया—कि अपने आशीर्वाद के दिन, हजारों सालों से इंतजार करने वाले ये वन-मानुष दुष्टों के राजा के साथ "आनंद" भोगने के लिए इन आशीषों को अधोलोक में ले गए हैं! क्यों न इन आशीषों को वे जीवितों की दुनिया में अपने बेटों और बेटियों के साथ आनंद लेने के लिए रखें? वे सिर्फ

मुसीबतों को न्यौता दे रहे हैं! यह कैसी बर्बादी है कि थोड़ी-सी हैसियत, थोड़ी-सी प्रतिष्ठा और दंभ के लिए, उन्हें मारे जाने के दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है, नरक के द्वार सबसे पहले खोलने और वहीं के पुत्र बन जाने के लिए हाथ-पाँव मारते हुए। ऐसी कीमत चुकाना कितना अनावश्यक है। यह कितना दयनीय है कि ऐसे पुराने पूर्वज, जो "राष्ट्रीय भावना से इतने परिपूर्ण" थे, "स्वयं पर इतने सख्त लेकिन दूसरों के प्रति इतने सहिष्णु" हो सकते थे, खुद को नरक में बंद कर उन नपुंसक और हीन जीवों को बाहर रखते हुए। ऐसे "जनता के प्रतिनिधि" कहाँ मिल सकते हैं? "अपनी संतानों के कल्याण" और "भविष्य की पीढ़ियों के शांतिपूर्ण जीवन" के लिए, वे परमेश्वर को भी हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देते हैं, और इसलिए वे अपने जीवन की कोई परवाह नहीं करते हैं। बिना कोई संयम बरते, वे खुद को "राष्ट्रीय हित" के लिए समर्पित कर देते हैं, बिना किसी शब्द के अधोलोक में प्रवेश करते हुए। ऐसा राष्ट्रवाद कहाँ मिल सकता है? परमेश्वर के साथ लड़ाई करते हुए, उन्हें मौत का डर नहीं, न ही खून बहाने का, और कल के बारे में तो वे न के बराबर चिंता करते हैं। वे बस सीधे युद्ध के मैदान में चले जाते हैं। यह कितनी दयनीय बात है कि अपनी "भक्ति की भावना" के लिए वे जो प्राप्त करते हैं, वह सिर्फ अनंत अफ़सोस और नरक की सदा सुलगती आग की लपटों में भस्म हो जाने के अलावा और कुछ नहीं होता!

यह कितनाविचित्र है! क्यों परमेश्वर का देहधारण लोगों द्वारा हमेशा अस्वीकृत और तिरस्कृत होता रहा है? लोगों को परमेश्वर के देहधारण के बारे में कभी भी कोई समझ क्यों नहीं रही है? कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर गलत समय पर आ गया है? क्या यह हो सकता है कि परमेश्वर गलत जगह पर आ गया हो? क्या यह संभव है कि ऐसा इसलिए होता है कि परमेश्वर ने अकेले ही यह काम किया है, मनुष्य की "स्वीकृति के हस्ताक्षर" लिए बिना? कहीं ऐसा इसलिए तो नहीं कि परमेश्वर ने मनुष्य की अनुमति के बिना ही फैसला कर लिया? तथ्य यह है कि परमेश्वर ने पूर्व सूचना दी थी। परमेश्वर ने देहधारण करके कोई भूल नहीं की—क्या इसके लिए मनुष्य की सहमति लेनी ज़रूरी है? और फिर, परमेश्वर ने मनुष्य को बहुत पहले याद दिलाया था, शायद लोग भूल गए हैं। मनुष्य दोष का पात्र नहीं हैं, क्योंकि वह लंबे समय से शैतान द्वारा इतना भ्रष्ट कर दिया गया है कि वह स्वर्ग के नीचे जो कुछ भी होता है उसे समझ नहीं पाता है, आध्यात्मिक जगत की घटनाओं के बारे में तो क्या कहें! यह बहुत शर्म की बात है कि मनुष्य के पूर्वज, उन वन-मानुषों की, अखाड़े में मृत्यु हो गई, लेकिन यह आश्चर्य की बात नहीं है: स्वर्ग और पृथ्वी आपस में कभी भी संगत नहीं थे, और कैसे ये वन-मानुष, जिनके दिमाग पत्थरों के बने हुए हैं, कल्पना भी कर सकते हैं कि

परमेश्वर फिर से देहधारण करेगा? यह कितने अफ़सोस की बात है कि इस तरह का एक बूढ़ा आदमी जो "अपने साठवें वर्ष" में है, परमेश्वर के प्रकट होने के दिन मर गया। क्या यह एक आश्चर्य नहीं है कि यह इस तरह के एक महान आशीष के आगमन पर आशीषित हुए बिना ही दुनिया को छोड़ कर चला गया? परमेश्वर के देह-धारण ने सभी धर्मों और दायरों को चकित कर दिया है, इसने धार्मिक दायरों की मूल व्यवस्था को "उलट-पुलट कर दिया" है, और इसने उन सभी लोगों के दिलों को झकझोर दिया है जो परमेश्वर की उपस्थिति की कामना करते हैं। कौन है जो उसे चाहता नहीं है? कौन परमेश्वर को देखने का अभिलाषी नहीं है? परमेश्वर कई सालों से मनुष्यों के बीच व्यक्तिगत रूप से रहा है, फिर भी मनुष्य ने कभी इसका अनुभव नहीं किया है। आज, परमेश्वर खुद प्रकट हुआ है, और उसने जनता के सामने अपनी पहचान प्रकट की है—यह कैसे मनुष्य के दिल को प्रसन्न नहीं कर सकता था? परमेश्वर ने एक बार मनुष्य के साथ सुख और दुख साझा किए थे, और आज वह मानवजाति के साथ फिर से जुड़ गया है, और वह उसके साथ बीते समय के किस्से साझा करता है। उसके यहूदिया से बाहर चले जाने के बाद, लोगों को उसका कुछ भी पता नहीं लग पाया। वे एक बार फिर परमेश्वर से मिलना चाहते हैं, यह न जानते हुए कि वे आज फिर से उसे मिल चुके हैं, और उसके साथ फिर से एक हो गए हैं। यह बात बीते कल के ख्यालों को कैसे नहीं जगाएगी? दो हजार साल पहले इस दिन, यहूदियों के वंशज शमोन बरयोना ने उद्धारकर्ता यीशु को देखा, उसके साथ एक ही मेज पर भोजन किया, और कई वर्षों तक उसका अनुसरण करने के बाद उसके लिए एक गहरा लगाव महसूस किया: उसने तहेदिल से उससे प्रेम किया, उसने प्रभु यीशु से गहराई से प्यार किया। यहूदी लोगों को कुछ भी अंदाजा नहीं था कि यह सुनहरे बालों वाला बच्चा, जो एक सर्द नांद में पैदा हुआ था, परमेश्वर के देहधारण की पहली छवि था। उन सभी ने यही सोचा था कि यीशु उनके जैसा ही था, किसी ने भी उसे अपने से अलग नहीं समझा था—लोग इस आम और साधारण यीशु को कैसे पहचान सकते थे? यहूदी लोगों ने उसे उस समय के एक यहूदी पुत्र के रूप में ही जाना। किसी ने भी उसे एक सुंदर परमेश्वर के रूप में नहीं देखा, और आंख मूंदकर उससे ये मांगें करने के अलावा कि वह उन्हें प्रचुर और भरपूर आशीषें, शांति और सुख प्रदान करे, लोगों ने और कुछ भी नहीं किया। उन्हें सिर्फ यह पता था कि, एक करोड़पति की तरह, उसके पास वह सब कुछ था जिसकी कोई कभी भी इच्छा कर सकता था। फिर भी लोग कभी भी उसके साथ ऐसे पेश नहीं आए कि वह उनको प्रिय था; उस समय के लोगों ने उससे प्रेम नहीं किया, और केवल उसका विरोध किया, और उससे अनुचित मांगें की, पर उसने

कभी प्रतिरोध नहीं किया, वह लगातार मनुष्य को आशीषें देते रहा, भले ही मनुष्य उसे जान नहीं पाए थे। मनुष्यों को चुपचाप आत्मीयता, प्रेम और दया प्रदान करने, और इससे भी ज्यादा, मनुष्यों को व्यवहार के ऐसे नए तरीके देने के अलावा जिससे वे नियमों के बंधन से बाहर निकल सकें, उसने और कुछ भी नहीं किया। मनुष्य ने उसे प्यार नहीं किया, केवल उससे ईर्ष्या की और उसकी असाधारण प्रतिभा को पहचाना। अंधी मानवजाति कैसे जान सकती थी कि जब प्रिय उद्धारक यीशु उनके बीच आया, तो उसे कितना बड़ा अपमान सहन करना पड़ा था? किसी ने भी उसके दुख को नहीं समझा, किसी ने भी पिता परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम के बारे में नहीं जाना, और न ही किसी ने उसके अकेलेपन के बारे में जाना; भले ही मेरी उसकी जन्मदात्री थी, फिर भी वह दयालु प्रभु यीशु के दिल में रहे विचारों को कैसे जान सकती थी? मनुष्य के पुत्र द्वारा सही गई अकथनीय पीड़ा को किसने जाना? उससे मांगें करने के बाद, उस समय के लोगों ने रुखाई से उसे अपने दिमाग के पीछे धकेल दिया, और उसे बाहर निकाल फेंका। इसलिए, वह सड़कों पर घूमता रहा, दिन-ब-दिन, साल-दर-साल, कई सालों तक यूँ ही घूमता रहा, जब तक उसने तैंतीस कठोर सालों का जीवन नहीं जी लिया, वे साल जो लंबे और संक्षिप्त दोनों ही थे। जब लोगों को उसकी जरूरत होती थी, तो वे उसे अपने घरों में मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ आमंत्रित करते थे, उससे मांगें करने की कोशिश करते हुए—और जैसे ही उसने उन्हें अपना योगदान दिया, वे तुरंत उसे दरवाजे से बाहर कर देते थे। जो कुछ उसने अपने मुंह से मुहैया कराया, लोगों ने उसे खाया, उन्होंने उसका रक्त पीया, उन्होंने उन कृपाओं का आनंद लिया जो उसने उन पर कीं, फिर भी उन्होंने उसका विरोध भी किया, क्योंकि उन्हें पता ही नहीं था कि उनके जीवन उन्हें किसने दिए थे। आखिरकार, उन्होंने उसे क्रूस पर जड़ दिया, फिर भी उसने कोई आवाज नहीं की। आज भी, वह चुप रहता है। लोग उसके शरीर को खाते हैं, वे उसका रक्त पीते हैं, वे वह खाना खाते हैं जो वह उनके लिए बनाता है, और वे उस रास्ते पर चलते हैं जो उसने उनके लिए खोला है, फिर भी वे उसे अस्वीकार करने का इरादा रखते हैं; वास्तव में जिस परमेश्वर ने उन्हें जीवन दिया है उसके साथ वे शत्रु जैसा व्यवहार करते हैं, और इसके बदले उन दासों को जो उनके जैसे हैं, स्वर्ग के पिता की तरह मानते हैं। ऐसा करते हुए, क्या वे जानबूझकर उसका विरोध नहीं कर रहे? यीशु सलीब पर चढ़कर क्यों मरा? क्या तुम लोग जानते हो? क्या यहूदा ने जो उसके सबसे निकट था और जिसने उसे खाया था, उसे पीया था और उसका आनंद लिया था, उसके साथ विश्वासघात नहीं किया? क्या यहूदा ने यीशु के साथ इसलिए विश्वासघात नहीं किया था क्योंकि यीशु उसके लिए एक महत्वहीन सामान्य शिक्षक से ज्यादा कुछ

नहीं था? यदि लोगों ने सचमुच यह देखा होता कि यीशु असाधारण था, और एक ऐसा मनुष्य था जो स्वर्ग से आया था, तो वे कैसे उसे चौबीस घंटे तक क्रूस पर जीवित जड़ सकते थे, जब तक कि उसके शरीर में कोई सांस नहीं बची? परमेश्वर को कौन जान सकता है? लोग अतृप्य लालच के साथ परमेश्वर का आनंद लेने के अलावा और कुछ नहीं करते हैं, परंतु उन्होंने उसे कभी जाना नहीं है। उन्हें एक इंच दिया गया था और उन्होंने एक मील ले लिया है, और वे "यीशु" को अपनी आज्ञाओं और अपने आदेशों का पूरी तरह से आज्ञाकारी बना लेते हैं। किसने कभी मनुष्य के इस पुत्र के लिए दया जैसी कोई चीज दिखाई है, जिसके पास सिर धरने की भी जगह नहीं है? किसने कभी पिता परमेश्वर के आदेश को पूरा करने के लिए उसका साथ देने का विचार किया है? किसने कभी उसके लिए थोड़ा-भी विचार किया है? किसने कभी उसकी कठिनाइयों के बारे में सोचा है? थोड़े-से भी प्यार के बिना, मनुष्य उसे आगे-पीछे घुमाता है; मनुष्य को पता नहीं है कि उसका प्रकाश और जीवन कहाँ से आया था, और वह दो हजार साल पहले के "यीशु" को, जिसने मनुष्य के बीच दर्द का अनुभव किया है, एक बार फिर क्रूस पर चढ़ाने की गुपचुप योजना बनाने के अलावा वह और कुछ नहीं करता है। क्या "यीशु" सचमुच ऐसी नफरत को जगाता है? क्या वह सब कुछ जो उसने किया, लंबे समय से भुला दिया गया है? वह नफरत जो हजारों सालों से इकट्ठी हो रही थी, अंततः बाहर फूट पड़ेगी। यहूदियों की श्रेणी के तुम लोग! "यीशु" ने कब तुम लोगों से शत्रुता की है जो तुम उससे इतनी घृणा करो? उसने बहुत कुछ किया है, और बहुत कुछ कहा है—क्या यह तुम सभी के हित में नहीं है? उसने तुम सबको अपना जीवन दे दिया है, बदले में कुछ भी माँगे बिना, उसने तुम्हें अपना सर्वस्व दे दिया है—क्या तुम लोग सचमुच अब भी उसे जिंदा खा जाना चाहते हो? उसने कुछ भी बचाकर रखे बिना अपना सब कुछ तुम लोगों को दे दिया है, बिना कभी सांसारिक महिमा का आनंद उठाए, बिना मनुष्य के बीच आत्मीयता, मनुष्य के बीच प्रेम, या मनुष्य के बीच आशीषों का सुख उठाए। लोग उसके प्रति अत्यंत नीच हैं, उसने धरती पर कभी भोग-वैभव का सुख नहीं लिया, उसने अपने नेक, भावुक दिल की संपूर्णता मनुष्य को समर्पित कर दी है, उसने अपना समग्र मानव जाति को समर्पित किया है—और किसने कभी उसे सौहार्द दिया है? किसने कभी उसे सुख दिया है? मनुष्य ने उस पर सारा दबाव लाद रखा है, सारा दुर्भाग्य उसे सौंप दिया है, मनुष्य के सबसे दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव उस पर थोप रखे हैं, वह सभी अन्यायों के लिए उसे ही दोषी ठहराता है, और उसने इसे चुपचाप स्वीकार कर लिया है। क्या उसने कभी किसी से विरोध किया है? क्या उसने कभी किसी से थोडा भी हर्जाना माँगा है? किसी ने कभी उसके प्रति कोई

सहानुभूति दिखाई है? सामान्य लोगों के रूप में, तुम लोगों में से किसका एक रूमानी बचपन नहीं था? किसका यौवन रंगीन नहीं रहा? प्रियजनों का अपनत्व किसे नहीं मिला है? कौन रिश्तेदारों और दोस्तों के प्यार से वंचित है? किसे दूसरों का सम्मान नहीं मिला है? एक स्नेही परिवार के बिना कौन है? अपने विश्वासपात्रों के स्नेह के बिना कौन है? और क्या उसने कभी इनमें से किसी का भी सुख पाया है? किसने उसे कभी थोड़ी-सी भी आत्मीयता दी है? किसने उसे कभी लेशमात्र भी ढांढस दिया है? किसने उसके प्रति कभी थोड़ी-सी भी मानवीय नैतिकता दिखाई है? कौन उसके प्रति कभी भी सहिष्णु रहा है? कठिनाई के दौर में कौन उसके साथ रहा है? किसने कभी उसके साथ एक कठिन जीवन बिताया है? मनुष्य ने अपनी अपेक्षाओं को कभी भी कम नहीं किया; वह बिना किसी हिचकिचाहट के केवल उससे माँगें करता है, मानो कि मनुष्य की दुनिया में आकर, उसे मनुष्य का बैल या घोड़ा, उसका कैदी बनना पड़ेगा, और उसे अपना सर्वस्व मनुष्यों को दे देना होगा; नहीं तो मनुष्य कभी उसे माफ नहीं करेगा, कभी उसके साथ सुगम नहीं होगा, उसे कभी परमेश्वर नहीं कहेगा, और कभी भी उसे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखेगा। मनुष्य परमेश्वर के प्रति अपने व्यवहार में बहुत सख्त है, जैसेकि वह परमेश्वर को मृत्यु पर्यंत सताने पर उतारू हो, जिसके बाद ही वह परमेश्वर से अपनी अपेक्षाओं को कम करेगा; अन्यथा मनुष्य कभी भी परमेश्वर से अपनी अपेक्षाओं के मानकों को कम नहीं करेगा। तो कैसे इस तरह के मनुष्य से परमेश्वर घृणा नहीं करेगा? क्या यह आज की त्रासदी नहीं है? मनुष्य की चेतना कहीं भी दिखाई नहीं देती। वह कहता रहता है कि वह परमेश्वर के प्रेम का ऋण चुकाएगा, परंतु वह परमेश्वर का विश्लेषण करता है और मृत्यु तक उसे यातना देता है। क्या यह परमेश्वर में विश्वास करने का एक "गुप्त नुस्खा" नहीं है जो उसे अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त हुआ है? ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ "यहूदी" न हों; और आज भी वे वही करते हैं, वे अब भी परमेश्वर के विरोध का ही काम करते हैं, और फिर भी विश्वास करते हैं कि वे परमेश्वर को उच्च स्थान पर रखते हैं। कैसे मनुष्य की अपनी आँखें परमेश्वर को जान सकती हैं? कैसे मनुष्य जो देह में जीता है, आत्मा से आए देहधारी परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में मान सकता है? मनुष्य के बीच कौन उसे जान सकता है? मनुष्य के बीच सच्चाई कहाँ है? सच्ची धार्मिकता कहाँ है? कौन परमेश्वर के स्वभाव को जानने में सक्षम है? कौन स्वर्ग के परमेश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है? कोई आश्चर्य नहीं है कि जब वह मनुष्य के बीच आया है, तो कोई भी परमेश्वर को जान नहीं पाया है, और उसे अस्वीकार कर दिया गया है। मनुष्य कैसे परमेश्वर के अस्तित्व को सहन कर सकता है? कैसे वह प्रकाश को संसार के अंधेरे को बाहर

निकालने की अनुमति दे सकता है? क्या यही सब मनुष्य की सम्माननीय भक्ति नहीं है? क्या यही मनुष्य का ईमानदार प्रवेश नहीं है? और क्या परमेश्वर का कार्य मनुष्य के प्रवेश के आसपास केंद्रित नहीं है? मेरी इच्छा है कि तुम लोग मनुष्य के प्रवेश के साथ परमेश्वर के कार्य को मिलाओ, और मनुष्य और परमेश्वर के बीच एक अच्छा संबंध स्थापित करो, और अपनी क्षमता की चरम सीमा तक उस कर्तव्य का पालन करो जो मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए। इस तरह, इसके बाद परमेश्वर का कार्य उसके महिमामंडन के साथ समाप्त हो जाएगा!

फुटनोट :

1. "मनुष्य का 'प्रवेश'" यहाँ मनुष्य के अवज्ञाकारी व्यवहार को इंगित करता है। जीवन में लोगों के प्रवेश की बात करने के बजाय—जो सकारात्मक है—यह उनके नकारात्मक व्यवहार और कार्यों को दर्शाता है। यह मोटे तौर पर मनुष्य के उन सभी कर्मों के संदर्भ में है जो परमेश्वर के विरोध में हैं।

2. "काल्पनिक भय से ग्रस्त" का प्रयोग मनुष्यों के गुमराह जीवन का उपहास करने के लिए किया गया है। यह मानव जाति के जीवन की कुरूप स्थिति को संदर्भित करता है, जिसमें लोग राक्षसों के साथ रहते हैं।

3. "सबसे अच्छा" उपहास उड़ाने के अर्थ से कहा गया है।

4. "जोश अधिकाधिक तीव्रता से दग्ध" उपहास में कहा गया है, और यह मनुष्य की बदसूरत हालत को संदर्भित करता है।

5. "जीवित पकड़ना" मनुष्य के हिंसक और घृणित व्यवहार को दर्शाता है। मनुष्य क्रूर है और वह परमेश्वर की ओर थोड़ा-सा भी क्षमाशील नहीं है, और उससे बेतुकी माँगें करता है।

6. "मन में एक सुनिश्चित योजना लेकर" का प्रयोग उपहास में किया गया है, और यह दर्शाता है कि कैसे लोग खुद को ही नहीं जानते और अपने वास्तविक कद से अनजान हैं। यह अपमान करने के अर्थ से है।

7. "आदरणीय" उपहास में कहा गया है।

8. "ज्वालाएँ बरसने" लोगों की उस बदसूरत स्थिति को इंगित करता है, जो तब क्रोध से जल-भुन जाते हैं जब वे परमेश्वर द्वारा पराजित हो जाते हैं। यह परमेश्वर के प्रति उनके विरोध की हद के बारे में बताता है।

परमेश्वर के कार्य का दर्शन (1)

यूहन्ना ने यीशु के लिए सात साल तक काम किया, और उसने यीशु के आने से पहले ही मार्ग तैयार कर दिया था। इसके पहले, यूहन्ना द्वारा प्रचारित स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार पूरी धरती पर सुना गया, इस प्रकार यह पूरे यहूदिया में फैल गया, और सभी ने उसे नबी कह कर पुकारा। उस समय राजा हेरोदेस, यूहन्ना को मारने की इच्छा रखता था, फिर भी उसने हिम्मत नहीं की क्योंकि लोग यूहन्ना को बहुत सम्मान देते थे, और हेरोदेस को डर था कि अगर वह यूहन्ना को मार देगा तो वे उसके खिलाफ विद्रोह कर देंगे। यूहन्ना द्वारा किया गया काम आम लोगों के बीच जड़ें जमा चुका था, और उसने यहूदियों को विश्वासी बना दिया था। सात सालों तक उसने यीशु के लिए मार्ग तैयार किया, ठीक उस समय तक जब यीशु ने अपनी सेवकाई करनी शुरू की। इसी वजह से यूहन्ना सभी नबियों में सबसे महान था। यूहन्ना के कारावास के बाद ही यीशु ने अपना आधिकारिक काम शुरू किया। यूहन्ना से पहले कभी भी कोई ऐसा नबी नहीं हुआ जिसने परमेश्वर के लिए मार्ग प्रशस्त किया हो, क्योंकि यीशु से पूर्व, परमेश्वर ने पहले कभी देहधारण नहीं किया था। इसलिए, यूहन्ना तक हुए सभी नबियों में से, केवल यूहन्ना ने ही परमेश्वर के देहधारण का मार्ग प्रशस्त किया, और इस तरह से यूहन्ना, पुराने और नए विधान का महानतम नबी बन गया। यूहन्ना ने, यीशु के बपतिस्मा के सात वर्ष पहले से स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैलाना शुरू कर दिया था। लोगों को उसका किया गया काम, यीशु द्वारा बाद में किये गए काम से बढ़कर लगता था, फिर भी, वह था तो केवल एक नबी ही। उसने मंदिर में नहीं बल्कि उसके बाहर के कस्बों और गांवों में काम किया और बातें कहीं। यह उसने निश्चित रूप से यहूदी राष्ट्र के लोगों के बीच किया, विशेष रूप से उन के बीच जो गरीब थे। शायद ही कभी यूहन्ना, समाज के ऊपरी तबकों के लोगों के संपर्क में आया हो, वह केवल यहूदिया के आम लोगों के बीच सुसमाचार फैलाता रहा। यह उसने इसलिए किया ताकि प्रभु यीशु के लिए उचित लोगों को तैयार कर सके, और उसके लिए काम करने की उपयुक्त जगहें तैयार कर सके। मार्ग प्रशस्त करने के लिए यूहन्ना जैसे एक नबी के होने से, प्रभु यीशु आने के साथ ही सीधे अपने क्रूस के रास्ते पर चलने में सक्षम हुआ। जब परमेश्वर ने अपना काम करने के लिए देहधारण किया, तो उसे लोगों को चुनने का काम करने की ज़रूरत नहीं थी, और ना ही व्यक्तिगत रूप से लोगों को या काम करने की जगह तलाशने की आवश्यकता थी। जब वह आया तो उसने ऐसा काम नहीं किया; उसके आने के पहले ही सही व्यक्ति ने ऐसी चीज़े तैयार कर दी थीं। यूहन्ना ने, यीशु के अपना काम शुरू करने के पहले ही यह काम पूरा कर लिया था, इसलिए जब देहधारी परमेश्वर अपने काम करने के लिए पहुँचा तो वह सीधे उन पर काम करने

लगा जो लंबे समय से उसका इंतजार कर रहे थे। यीशु मनुष्य को सुधारने का काम करने नहीं आया था। वह केवल सेवकाई करने आया था जिसे करना उसका काम था; और बाकी सब से उसका कोई लेना-देना नहीं था। जब यूहन्ना आया, तो उसने मंदिर से और यहूदियों के बीच से स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार स्वीकारने वाले लोगों के एक समूह को बाहर लाने के अलावा और कुछ नहीं किया, ताकि वे प्रभु यीशु के काम का लक्ष्य बन सकें। यूहन्ना ने सात सालों तक काम किया, अर्थात उसने सात सालों तक सुसमाचार फैलाया। अपने काम के दौरान, यूहन्ना ने बहुत चमत्कार नहीं किये, क्योंकि उसका काम मार्ग प्रशस्त करना था, उसका काम तैयारी करने का काम था। अन्य सभी काम, वह काम जिसे यीशु करने वाला था, उनसे उसका कोई संबंध नहीं था; उसने केवल मनुष्य को अपने पापों को स्वीकारने और पश्चात्ताप करने के लिए कहा, और लोगों को बपतिस्मा दिया ताकि वे बचाए जा सकें। यद्यपि उसने नया काम किया, और एक ऐसा मार्ग खोला जिस पर मनुष्य पहले कभी नहीं चला था, फिर भी उसने केवल यीशु के लिए ही मार्ग प्रशस्त किया। वह केवल एक नबी ही था जिसने तैयारी का काम किया, और वह यीशु का काम करने में असमर्थ था। यद्यपि यीशु स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देने वाला पहला व्यक्ति नहीं था, और यद्यपि वह उस रास्ते पर चलता रहा जिस पर यूहन्ना चला था, फिर भी ऐसा कोई और नहीं था जो यीशु का काम कर सके, और यह यूहन्ना के काम से बढ़कर था। यीशु अपना खुद का रास्ता तैयार नहीं कर सकता था; उसका काम सीधे परमेश्वर की ओर से किया गया था। और इसलिए, इससे फर्क नहीं पड़ता कि यूहन्ना ने कितने साल काम किया, वो फिर भी एक नबी था, और वह व्यक्ति था जिसने मार्ग प्रशस्त किया। यीशु द्वारा किया गया तीन साल का काम यूहन्ना के सात साल के काम से बढ़कर था, क्योंकि उसके काम का सार समान नहीं था। जब यीशु ने अपनी सेवकाई शुरू की, जो कि यूहन्ना का काम समाप्त होने का भी समय था, तब तक यूहन्ना ने प्रभु यीशु द्वारा उपयोग हेतु पर्याप्त लोगों और जगहों को तैयार कर दिया था, और वे प्रभु यीशु के लिए तीन साल के काम को शुरू करने के लिए पर्याप्त थे। और इसलिए, जैसे ही यूहन्ना का काम समाप्त हुआ, प्रभु यीशु ने आधिकारिक तौर पर अपना काम शुरू कर दिया, और यूहन्ना द्वारा कहे गए शब्दों को किनारे कर दिया गया। इसका कारण यह है कि यूहन्ना द्वारा किया गया काम केवल परिवर्तन की खातिर था, और उसके शब्द जीवन के वचन नहीं थे जो मनुष्य को नई संवृद्धि की ओर ले जाते; अंततः, उसके शब्द केवल क्षणिक उपयोग के लिए थे।

जो काम यीशु ने किया वह अलौकिक नहीं था; उसमें एक प्रक्रिया थी, और यह सब कुछ, चीजों की

सामान्य व्यवस्था के अनुसार बढ़ा। अपने जीवन के अंतिम छह महीने तक, यीशु निश्चित रूप से जान गया था कि वह यह काम करने के लिए आया है, और वह जानता था कि वह क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए आया था। क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, यीशु ने लगातार पिता परमेश्वर से प्रार्थना की, वैसे ही जैसे उसने गतसमनी के बाग में तीन बार प्रार्थना की थी। बपतिस्मा लेने के बाद, यीशु ने साढ़े तीन साल तक अपना सेवकाई का काम किया, और उसका आधिकारिक काम ढाई साल तक चला। पहले वर्ष के दौरान, शैतान ने उस पर दोषारोपण किया, मनुष्य द्वारा परेशान किया गया, और उसे इंसानी प्रलोभन दिए गए। उसने अपने कार्य को पूरा करने के दौरान कई प्रलोभनों पर काबू पाया। आखिरी छह महीनों में, जब यीशु को जल्द ही क्रूस पर चढ़ाया जाना था, तब पतरस के मुँह से ये शब्द निकले कि यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र था, कि वह मसीह था। उसके बाद ही उसका काम सभी को ज्ञात हुआ, केवल तब ही उसकी पहचान सार्वजनिक रूप से प्रकट हुई। उसके बाद, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि उसे मनुष्य की खातिर क्रूस पर चढ़ाया जाना था, और तीन दिन बाद वह फिर से जी उठेगा; कि वह छुटकारे का काम करने के लिए आया था, और वह उद्धारक था। केवल आखिरी छह महीनों में ही उसने अपनी पहचान और उस काम को प्रकट किया, जिसे करने का उसका इरादा था। यह परमेश्वर का समय भी था, और काम को इसी प्रकार ही किया जाना था। उस समय, यीशु के काम का कुछ हिस्सा पुराने विधान के अनुसार था और साथ ही मूसा की व्यवस्थाओं और व्यवस्था के युग में यहोवा के वचनों के अनुसार भी था। इन सब चीज़ों का यीशु ने अपने काम के एक हिस्से को करने में उपयोग किया। उसने लोगों को उपदेश दिया और उन्हें यहूदियों के मंदिरों में पढ़ाया, और उसने नबियों द्वारा पुराने विधान में की गई भविष्यवाणियों का इस्तेमाल कर उन फरीसियों को फटकार लगाई जो उससे बैर रखते थे, और उनकी अवज्ञा को प्रकट करने के लिए पवित्र शास्त्रों के वचनों का इस्तेमाल किया और इस तरह उनकी निंदा की। क्योंकि वे यीशु ने जो किया उसे तुच्छ मानते थे; विशेष रूप से, यीशु के बहुत से काम पवित्र शास्त्रों के नियमों के अनुसार नहीं किए गए थे, और इसके अलावा, जो उसने सिखाया वह उनके अपने शब्दों से बढ़कर था, और पवित्र शास्त्रों में नबियों की भविष्यवाणी से भी कहीं अधिक बढ़कर था। यीशु का काम केवल मनुष्य के छुटकारे और सूली पर चढ़ाये जाने के लिए था, और इस प्रकार, किसी भी व्यक्ति को जीतने के लिए उसे अधिक वचन कहने की कोई जरूरत नहीं थी। उसने मनुष्य को जो कुछ भी सिखाया उसमें से काफी कुछ पवित्र शास्त्रों के वचनों से लिया गया था, और भले ही उसका काम पवित्र शास्त्रों से आगे नहीं बढ़ा, फिर भी वह सूली पर चढ़ाये जाने

के काम को पूरा कर पाया। उसका काम सिर्फ वचन का कार्य नहीं था, न ही मानव-जाति पर विजय पाने की खातिर किया गया काम था, बल्कि मानव जाति के छुटकारे के लिए किया गया काम था। उसने मानव-जाति के लिए बस पापबलि का काम किया, और मानव-जाति के लिए वचन के स्रोत का काम नहीं किया। उसने अन्यजातियों का काम नहीं किया, जो कि मनुष्य को जीतने का काम था, बल्कि सूली पर चढ़ने का काम था, वह काम जो उन लोगों के बीच किया गया था जो एक परमेश्वर के होने में विश्वास करते थे। यद्यपि उसका काम पवित्र शास्त्रों की बुनियाद पर किया गया था, और उसने पुराने नबियों की भविष्यवाणी का इस्तेमाल फरीसियों की निंदा करने के लिए किया, फिर भी यह सूली पर चढ़ाये जाने के काम को पूरा करने के लिए पर्याप्त था। यदि आज का काम भी, पवित्र शास्त्रों में पुराने नबियों की भविष्यवाणियों की बुनियाद पर किया जाता, तो तुम लोगों को जीतना नामुमकिन होता, क्योंकि पुराने विधान में तुम चीनियों की कोई अवज्ञा और पाप दर्ज नहीं है, और वहां तुम लोगों के पापों का कोई इतिहास नहीं है। इसलिए, अगर यह काम बाइबल में अब भी होता, तो तुम कभी राजी नहीं होते। बाइबल में इस्राएलियों का एक सीमित इतिहास दर्ज है, जो कि यह स्थापित करने में असमर्थ है कि तुम लोग बुरे हो या अच्छे, या यह तुम लोगों का न्याय करने में असमर्थ है। कल्पना करो कि मुझे तुम लोगों का न्याय इस्राएलियों के इतिहास के अनुसार करना होता—तो क्या तुम लोग मेरा वैसे ही अनुसरण करते जैसा कि आज करते हो? क्या तुम लोग जानते हो कि तुम लोग कितने जिद्दी हो? अगर इस चरण के दौरान कोई वचन न बोले जाते, तो विजय का काम पूरा करना असंभव होता। क्योंकि मैं क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए नहीं आया हूँ, मुझे उन वचनों को बोलना ही होगा जो बाइबल से अलग हैं, ताकि तुम लोगों पर विजय प्राप्त हो सके। यीशु द्वारा किया गया कार्य पुराने विधान से महज एक चरण आगे था; यह एक युग शुरू करने के लिए और उस युग की अगुआई करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। उसने क्यों कहा था, "यह न समझो कि मैं व्यवस्था को नष्ट करने के लिए आया हूँ, मैं उनका उन्मूलन करने नहीं बल्कि मैं व्यवस्था पूरी करने आया हूँ"? फिर भी उसके काम में बहुत कुछ ऐसा था जो पुराने विधान के इस्राएलियों द्वारा पालन किये जाने वाली व्यवस्थाओं और आज्ञाओं से अलग था, क्योंकि वह व्यवस्था का पालन करने नहीं आया था, बल्कि इसे पूरा करने के लिए आया था। इसे पूरा करने की प्रक्रिया में कई व्यावहारिक चीजें शामिल थीं: उसका कार्य अधिक व्यावहारिक और वास्तविक था, और इसके अलावा, वह अधिक जीवंत था, और नियमों का अंधा पालन नहीं था। क्या इस्राएली सब्त का पालन नहीं करते थे? जब यीशु आया, तो क्या उसने सब्त का पालन नहीं

किया, क्योंकि उसने कहा था कि मनुष्य का पुत्र सब्त का प्रभु है, और जब सब्त का प्रभु आ पहुंचेगा, तो वह जैसा चाहेगा वैसा करेगा। वह पुराने विधान की व्यवस्थाओं को पूरा करने और उन्हें बदलने के लिए आया था। आज जो कुछ किया जाता है वह वर्तमान पर आधारित है, फिर भी यह अब भी व्यवस्था के युग में किये गए यहोवा के कार्य की नींव पर टिका है, और इस दायरे का उल्लंघन नहीं करता। उदाहरण के लिए, अपनी ज़बान सम्भालना, व्यभिचार न करना, क्या ये पुराने विधान की व्यवस्थाएं नहीं हैं? आज, तुम लोगों से जो अपेक्षित है वह केवल दस आज्ञाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ऐसी आज्ञायें और व्यवस्थाएं शामिल हैं जो पहले आई आज्ञाओं और व्यवस्थाओं के मुकाबले अधिक उच्च क्रम की हैं। फिर भी, इसका यह मतलब नहीं है कि जो कुछ पहले आया उसे खत्म कर दिया गया है, क्योंकि परमेश्वर के काम का प्रत्येक चरण, पिछले चरण की नींव पर किया जाता है। जहाँ तक उन चीज़ों का सम्बन्ध है, जिनसे यहोवा ने इस्राएल को परिचित कराया, जैसे कि लोगों से अपेक्षा करना कि वे बलिदान दें, माँ-बाप का आदर करें, मूर्तियों की पूजा न करें, दूसरों पर वार न करें या अपशब्द न बोलें, व्यभिचार न करें, धूम्रपान या मदिरापान ना करें, मरी हुई चीज़ों को न खाएं, और रक्तपान न करें—क्या यह सब आज भी तुम लोगों के अभ्यास की नींव नहीं है? अतीत की नींव पर ही आज तक काम पूरा होता आया है। हालांकि, अतीत की व्यवस्थाओं का अब और उल्लेख नहीं किया जाता और तुमसे कई नई मांगें अपेक्षित हैं, फिर भी इन व्यवस्थाओं के समाप्त होने की बात तो दूर है, इसके बजाय, वे और ऊँचे स्थान पर उठा दी गई हैं। यह कहना कि उन्हें समाप्त कर दिया गया है, मतलब है कि पिछला युग पुराना हो गया है, जबकि कुछ ऐसी आज्ञाएं हैं जिनका तुम्हें अनंतकाल तक सम्मान करना चाहिए। अतीत की आज्ञाएं पहले से ही अभ्यास में लाई जा चुकी हैं, वे पहले से ही मनुष्य का अस्तित्व बन चुकी हैं, और धूम्रपान न करना, मदिरापान न करना, आदि पर विशेष जोर देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसी नींव पर, आज तुम लोगों की जरूरत के अनुसार, आध्यात्मिक-कद के अनुसार और आज के काम के अनुसार, नई आज्ञाएं निर्धारित की गई हैं। नए युग के लिए आज्ञाओं का निर्धारण करने का मतलब अतीत की आज्ञाओं को खत्म करना नहीं, बल्कि उन्हें इसी आधार पर और ऊँचा उठाकर, मनुष्य के क्रियाकलापों को और अधिक पूर्ण और वास्तविकता के अनुरूप बनाना है। यदि आज, तुम लोगों को सिर्फ आज्ञाओं का पालन करना होता और इस्राएलियों की तरह, पुराने विधान की व्यवस्थाओं का पालन करना होता, और यदि, तुम लोगों को यहोवा द्वारा निर्धारित व्यवस्थाओं को याद रखना होता, तो भी तुम लोगों के बदल सकने की कोई संभावना नहीं होती। यदि तुम

लोगों को केवल उन कुछ सीमित आज्ञाओं का पालन करना होता या असंख्य व्यवस्थाओं को याद करना होता, तो तुम्हारी पुरानी प्रकृति गहराई में गड़ी रहती और इसे उखाड़ फेंकने का कोई रास्ता नहीं होता। इस प्रकार तुम लोग और अधिक भ्रष्ट हो जाते, और तुम लोगों में से कोई एक भी आज्ञाकारी नहीं बनता। कहने का अर्थ यह है कि कुछ सरल आज्ञाएं या अनगिनत व्यवस्थाएं तुम्हें यहोवा के कामों को जानने में मदद करने में असमर्थ हैं। तुम लोग इस्राएलियों के समान नहीं हो: व्यवस्थाओं का पालन और आज्ञाओं को याद करने से वे यहोवा के कार्यों को देख पाए, और सिर्फ उसकी ही भक्ति कर सके। लेकिन तुम लोग इसे प्राप्त करने में असमर्थ हो, और पुराने विधान के युग की कुछ आज्ञाएं न केवल तुम्हें अपना हृदय देने में मदद करने में, या तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ हैं, बल्कि ये तुम लोगों को शिथिल बना देंगी, और तुम्हें अधोलोक में पहुंचा देंगी। क्योंकि मेरा काम विजय का काम है, और तुम लोगों की अवज्ञा और पुरानी प्रकृति की ओर केंद्रित है, आज, यहोवा और यीशु के दया भरे वचन, न्याय के गंभीर वचनों के सामने काफी नहीं पड़ते हैं। ऐसे कड़े शब्दों के बिना, तुम "विशेषज्ञों" पर विजय प्राप्त करना असंभव हो जायेगा, जो हजारों सालों से अवज्ञाकारी रहे हैं। पुराने विधान की व्यवस्थाओं ने बहुत पहले तुम लोगों पर से अपनी शक्ति खो दी थी, और आज का न्याय पुरानी व्यवस्थाओं की तुलना में कहीं ज्यादा दुर्जेय है। तुम लोगों के लिए न्याय सबसे उपयुक्त है, व्यवस्थाओं के तुच्छ प्रतिबंध नहीं, क्योंकि तुम लोग बिल्कुल प्रारम्भ वाली मानव-जाति नहीं हो, बल्कि वह मानव-जाति हो जिसे हजारों वर्षों से भ्रष्ट किया गया है। आज मनुष्य को जो हासिल करना है, वह मनुष्य की आज की वास्तविक दशा के अनुसार है, वर्तमान-दिन के मनुष्य की क्षमता और वास्तविक आध्यात्मिक कद के अनुसार है, और इसके लिए जरूरी नहीं है कि तुम नियमों का पालन करो। ऐसा इसलिए है कि तुम्हारी पुरानी प्रकृति में परिवर्तन हासिल किया जा सके, और ताकि तुम अपनी धारणाओं को त्याग सको। क्या तुम्हें लगता है कि आज्ञाएं नियम हैं? यह कहा जा सकता है कि, वे इंसान की आम आवश्यकताएं हैं। वे नियम नहीं हैं जिनका तुम्हें पालन करना चाहिए। उदाहरण के लिए-धूम्रपान पर रोक लगाने को लो-क्या यह नियम है? यह नियम नहीं है! यह सामान्य मानव-जाति से अपेक्षित है; यह नियम नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो पूरी मानव-जाति के लिए निर्धारित किया गया है। आज, निर्धारित की गई लगभग दर्जन या उससे कुछ अधिक आज्ञाएं भी नियम नहीं हैं, बल्कि वे वही हैं जो सामान्य मानवता को हासिल करने के लिए आवश्यक है। अतीत में लोगों के पास ऐसी चीजें नहीं थीं या उन्हें इसके बारे में पता नहीं था, और इसलिए लोगों से यह अपेक्षित है कि वे उन्हें आज प्राप्त करें, और ऐसी चीज़ों की गिनती

नियमों में नहीं की जाती। व्यवस्थाएँ और नियम एकसमान नहीं हैं। जिस नियम के बारे में मैं बोलता हूँ वे, औपचारिकताओं या मनुष्यों के त्रुटिपूर्ण और विकृत व्यवहारों के संदर्भ में है; ये वे नियम और विनियम हैं जो मनुष्यों के किसी काम के नहीं हैं, उन्हें इससे कोई लाभ नहीं है, और वे ऐसी क्रियाविधि बनाते हैं जिसका कोई अर्थ नहीं होता। यह नियमों का निचोड़ है, और इस तरह के नियमों को त्याग देना चाहिए, क्योंकि ये मनुष्य को कोई लाभ नहीं पहुँचाते। जो मनुष्य के लिए लाभकारी है उसे व्यवहार में लाया जाना चाहिए।

परमेश्वर के कार्य का दर्शन (2)

अनुग्रह के युग में पश्चात्ताप के सुसमाचार का उपदेश दिया गया और कहा गया कि यदि मनुष्य विश्वास करेगा, तो उसे बचाया जाएगा। आज, उद्धार की जगह सिर्फ विजय और पूर्णता की ही बात होती है। ऐसा नहीं कहा जाता कि अगर कोई व्यक्ति विश्वास करता है, तो उसका पूरा परिवार धन्य होगा, जिसे एक बार बचाया गया है, उसे हमेशा के लिए बचा लिया गया है। आज कोई ये बातें नहीं बोलता, ये चीजें पुरानी हो चुकी हैं। उस समय यीशु का कार्य समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाना था। उन सभी के पापों को क्षमा कर दिया गया था जो उसमें विश्वास करते थे; अगर तुम उस पर विश्वास करते हो, तो वह तुम्हें छुटकारा दिलाएगा; यदि तुम उस पर विश्वास करते, तो तुम पापी नहीं रह जाते, तुम अपने पापों से मुक्त हो जाते हो। यही बचाए जाने और विश्वास द्वारा उचित ठहराए जाने का अर्थ है। फिर विश्वासियों के अंदर परमेश्वर के प्रति विद्रोह और विरोध का भाव था, और जिसे अभी भी धीरे-धीरे हटाया जाना था। उद्धार का अर्थ यह नहीं था कि मनुष्य पूरी तरह से यीशु द्वारा प्राप्त कर लिया गया है, बल्कि यह था कि मनुष्य अब पापी नहीं रह गया है, उसे उसके पापों से मुक्त कर दिया गया है। अगर तुम विश्वास करते हो, तो तुम फिर कभी भी पापी नहीं रहोगे। उस समय, यीशु ने बहुत से ऐसे कार्य किये जो उसके शिष्यों की समझ से बाहर थे, और ऐसी बहुत-सी बातें कहीं जो लोगों की समझ में नहीं आयीं। इसका कारण यह है कि उस समय उसने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। इस प्रकार, यीशु के जाने के कई वर्ष बाद, मत्ती ने उसकी एक वंशावली बनायी और अन्य लोगों ने भी बहुत से ऐसे कार्य किये जो मनुष्य की इच्छा के अनुसार थे। यीशु मनुष्य को पूर्ण करने और प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि कार्य का एक चरण संपन्न करने के लिए आया था: जो कि स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार को आगे बढ़ाने और सूली पर चढ़ने का कार्य

था। इसलिए, एक बार जब यीशु को सूली पर चढ़ा दिया गया, तो उसके कार्य का पूरी तरह से अंत हो गया। किन्तु वर्तमान चरण में जो कि विजय का कार्य है, अधिक वचन बोले जाने चाहिए, अधिक कार्य किया जाना चाहिए और कई प्रक्रियाएँ होनी चाहिए। उसी तरह, यीशु और यहोवा के कार्यों के रहस्य भी प्रकट होने चाहिए, ताकि लोगों को अपने विश्वास में समझ और स्पष्टता मिल जाए, क्योंकि यह अंत के दिनों का कार्य है, और अंत के दिन परमेश्वर के कार्य की समाप्ति के दिन हैं, इस कार्य के समापन का समय है। कार्य का यह चरण तुम्हारे लिए यहोवा की व्यवस्था और यीशु द्वारा छुटकारे को स्पष्ट करेगा। यह मुख्य रूप से इसलिए है ताकि तुम परमेश्वर की छह हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना के पूरे कार्य को समझ सको, इस छह हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना की महत्ता और सार का मूल्यांकन कर सको, और यीशु द्वारा किए गए सभी कार्यों और उसके द्वारा बोले गए वचनों के प्रयोजन और बाइबल में अपने अंधविश्वास और श्रद्धा को समझ सको। यह सब तुम्हें पूरी तरह से समझने में मदद करेगा। तुम यीशु द्वारा किए गए कार्य और परमेश्वर के आज के कार्य, दोनों को समझ जाओगे; तुम समस्त सत्य, जीवन और मार्ग को समझ लोगे और देख लोगे। यीशु द्वारा किए गए कार्य के चरण में, यीशु समापन कार्य किए बिना क्यों चला गया? क्योंकि यीशु के कार्य का चरण समापन का कार्य नहीं था। जब उसे सूली पर चढ़ाया गया, तब उसके वचनों का भी अंत हो गया था; उसके सूली पर चढ़ने के बाद, उसका कार्य पूरी तरह समाप्त हो गया। वर्तमान चरण भिन्न है : वचनों के अंत तक बोले जाने और परमेश्वर के समस्त कार्य का उपसंहार हो जाने के बाद ही उसका कार्य समाप्त हुआ होगा। यीशु के कार्य के चरण के दौरान, ऐसे बहुत-से वचन थे जो अनकहे रह गए थे, या जो स्पष्ट रूप से नहीं बोले गए थे। फिर भी यीशु ने इस बात की परवाह नहीं की कि उसने क्या कहा और क्या नहीं कहा, क्योंकि उसकी सेवकाई कोई वचनों की सेवकाई नहीं थी, इसलिए सूली पर चढ़ाये जाने के बाद वह चला गया। कार्य का वह चरण मुख्यतः सूली पर चढ़ने के वास्ते था और वह वर्तमान चरण से भिन्न है। कार्य का यह चरण मुख्य रूप से पूरा करने, शुद्ध करने और समस्त कार्य का समापन करने के लिए है। यदि अंत तक वचन नहीं बोले गए, तो इस कार्य का समापन करना असंभव होगा, क्योंकि कार्य के इस चरण में समस्त कार्य का समापन और उसे पूरा करने का काम वचनों के उपयोग से किया जाता है और यह किया जाना है। उस समय यीशु ने ऐसा बहुत-सा कार्य किया, जो मनुष्य की समझ से बाहर था। वह चुपचाप चला गया और आज भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो उसके वचनों को नहीं समझते, जिनकी समझ त्रुटिपूर्ण है, मगर फिर भी जो उसे सही मानते हैं, जो नहीं जानते कि वे गलत हैं। अंत में, यह वर्तमान चरण

पूरी तरह से परमेश्वर के कार्य का अंत और इसका उपसंहार करेगा। सभी लोग परमेश्वर की प्रबंधन योजना को समझ और जान लेंगे। मनुष्य की अवधारणाएँ, उसके इरादे, उसकी त्रुटिपूर्ण समझ, यहोवा और यीशु के कार्यों के प्रति उसकी अवधारणाएँ, अन्यजातियों के बारे में उसके विचार और उसके अन्य विचलन और सभी त्रुटियाँ ठीक कर दी जाएँगी। जीवन के सभी सही मार्ग, परमेश्वर द्वारा किया गया समस्त कार्य और संपूर्ण सत्य मनुष्य की समझ में आ जाएँगे। जब ऐसा होगा, तो कार्य का यह चरण समाप्त हो जाएगा। यहोवा का कार्य दुनिया का सृजन था, वह आरंभ था; कार्य का यह चरण कार्य का अंत है, और यह समापन है। आरंभ में, परमेश्वर का कार्य इस्राएल के चुने हुए लोगों के बीच किया गया था और यह सभी जगहों में से सबसे पवित्र जगह पर एक नए युग का उद्भव था। कार्य का अंतिम चरण दुनिया का न्याय करने और युग को समाप्त करने के लिए सभी देशों में से सबसे अशुद्ध देश में किया जा रहा है। पहले चरण में, परमेश्वर का कार्य सबसे प्रकाशमान स्थान पर किया गया था और अंतिम चरण सबसे अंधकारमय स्थान पर किया जा रहा है, और इस अंधकार को बाहर निकालकर प्रकाश को प्रकट किया जाएगा और सभी लोगों पर विजय प्राप्त की जाएगी। जब इस सबसे अशुद्ध और सबसे अंधकारमय स्थान के लोगों पर विजय प्राप्त कर ली जाएगी और समस्त आबादी स्वीकार कर लेगी कि परमेश्वर है, जो कि सच्चा परमेश्वर है और हर व्यक्ति को पूरी तरह से विश्वास हो जाएगा, तब समस्त ब्रह्मांड में विजय का कार्य करने के लिए इस तथ्य का उपयोग किया जाएगा। कार्य का यह चरण प्रतीकात्मक है : एक बार इस युग का कार्य समाप्त हो गया, तो प्रबंधन का छह हजार वर्षों का कार्य पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा। एक बार सबसे अंधकारमय स्थान के लोगों को जीत लिया गया, तो कहने की आवश्यकता नहीं कि अन्य जगह पर भी ऐसा ही होगा। इस तरह, केवल चीन में ही विजय का कार्य सार्थक प्रतीकात्मकता रखता है। चीन अंधकार की सभी शक्तियों का मूर्त रूप है और चीन के लोग उन सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो देह के हैं, शैतान के हैं, मांस और रक्त के हैं। चीनी लोग ही बड़े लाल अजगर द्वारा सबसे ज़्यादा भ्रष्ट किए गए हैं, वही परमेश्वर के सबसे कट्टर विरोधी हैं, उन्हीं की मानवता सर्वाधिक अधम और अशुद्ध है, इसलिए वे समस्त भ्रष्ट मानवता के मूल आदर्श हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि अन्य देशों में कोई समस्या नहीं है; मनुष्य की अवधारणाएँ समान हैं, यद्यपि इन देशों के लोग अच्छी क्षमता वाले हो सकते हैं, किन्तु यदि वे परमेश्वर को नहीं जानते, तो वे अवश्य ही उसके विरोधी होंगे। यहूदियों ने भी परमेश्वर का विरोध और उसकी अवहेलना क्यों की? फ़रीसियों ने भी उसका विरोध क्यों किया? यहूदा ने यीशु के साथ विश्वासघात

क्यों किया? उस समय, बहुत-से अनुयायी यीशु को नहीं जानते थे। यीशु को सूली पर चढ़ाये जाने और उसके फिर से जी उठने के बाद भी, लोगों ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया? क्या मनुष्य की अवज्ञा पूरी तरह से समान नहीं है? बात बस इतनी है कि चीन के लोग इसके एक उदाहरण के रूप में पेश किए जाते हैं, जब उन पर विजय प्राप्त कर ली जाएगी तो वे एक आदर्श और नमूना बन जाएँगे और दूसरों के लिए संदर्भ का काम करेंगे। मैंने हमेशा क्यों कहा है कि तुम लोग मेरी प्रबंधन योजना के सहायक हो? चीन के लोगों में भ्रष्टता, अशुद्धता, अधार्मिकता, विरोध और विद्रोहशीलता पूरी तरह से व्यक्त और विविध रूपों में प्रकट होते हैं। एक ओर, वे खराब क्षमता के हैं और दूसरी ओर, उनका जीवन और उनकी मानसिकता पिछडी हुई है, उनकी आदतें, सामाजिक वातावरण, जिस परिवार में वे जन्में हैं—सभी गरीब और सबसे पिछड़े हुए हैं। उनकी हैसियत भी निम्न है। इस स्थान में कार्य प्रतीकात्मक है, एक बार जब यह परीक्षा-कार्य पूरी तरह से संपन्न हो जाएगा, तो परमेश्वर का बाद का कार्य बहुत बेहतर तरीके से आगे बढ़ेगा। यदि कार्य के इस चरण को पूरा किया जा सका, तो इसके बाद का कार्य अच्छी तरह से आगे बढ़ेगा। एक बार जब कार्य का यह चरण सम्पन्न हो जायेगा, तो बड़ी सफलता प्राप्त हो जाएगी और समस्त ब्रह्माण्ड में विजय का कार्य पूरी तरह समाप्त हो जायेगा। वास्तव में, एक बार तुम लोगों के बीच कार्य सफल होने पर, यह समस्त ब्रह्माण्ड में सफलता प्राप्त करने के बराबर होगा। यही इस बात की महत्ता है कि क्यों मैं तुम लोगों को एक आदर्श और नमूने के रूप में कार्य करने को कहता हूँ। विद्रोहशीलता, विरोध, अशुद्धता, अधार्मिकता—ये सभी इन लोगों में पाए जाते हैं और ये मानवजाति की समस्त विद्रोहशीलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे वास्तव में कुछ हैं। इस प्रकार, उन्हें विजय के प्रतीक के रूप में लिया जाता है, एक बार जब वे जीत लिए गए तो वे स्वाभाविक रूप से दूसरों के लिए एक आदर्श और नमूने बन जाएँगे। इस्राएल में किए जा रहे पहले चरण की तुलना में कुछ भी अधिक प्रतीकात्मक नहीं था: इस्राएली सभी लोगों में सबसे पवित्र और सबसे कम भ्रष्ट थे, और इसलिए इस धरती में नए युग का आरंभ सर्वाधिक मायने रखता था। ऐसा कहा जा सकता है कि मानवजाति के पूर्वज इस्राएल से आये थे, इस्राएल परमेश्वर के कार्य का जन्मस्थान था। आरंभ में, ये लोग सर्वाधिक पवित्र थे और वे सभी यहोवा की उपासना करते थे, उनमें परमेश्वर का कार्य सबसे बड़ा परिणाम देने में सक्षम था। पूरी बाइबल में दो युगों का कार्य दर्ज है : एक व्यवस्था के युग का कार्य था और एक अनुग्रह के युग का कार्य था। पुराने नियम में इस्राएलियों के लिए यहोवा के वचनों को और इस्राएल में उसके कार्यों को दर्ज किया गया है; नये नियम में यहूदिया में यीशु के

कार्य को दर्ज किया गया है। किन्तु बाइबल में कोई चीनी नाम क्यों नहीं है? क्योंकि परमेश्वर के कार्य के पहले दो भाग इस्राएल में संपन्न हुए थे, क्योंकि इस्राएल के लोग चुने हुए लोग थे—जिसका अर्थ है कि वे यहोवा के कार्य को स्वीकार करने वाले सबसे पहले लोग थे। वे समस्त मानवजाति में सबसे कम भ्रष्ट थे और आरंभ में वे परमेश्वर की खोज करने और उसका आदर करने का मन रखने वाले लोग थे। वे यहोवा के वचनों का पालन करते थे और हमेशा मंदिर में सेवा करते थे और याजकीय लबादे या मुकुट पहनते थे। वे परमेश्वर की पूजा करने वाले सबसे आरंभिक लोग थे, और उसके कार्य का आरंभिक लक्ष्य थे। ये लोग संपूर्ण मानवजाति के लिए नमूने और आदर्श थे। वे पवित्रता और धार्मिकता के नमूने और आदर्श थे। अय्यूब, अब्राहम, लूत या पतरस और तीमुथियुस जैसे लोग—ये सभी इस्राएली थे, और सर्वाधिक पवित्र नमूने और आदर्श थे। इस्राएल मानव-जाति में से परमेश्वर की पूजा करने वाला सबसे आरंभिक देश था और किसी भी अन्य स्थान की तुलना में अधिक धार्मिक लोग यहीं के थे। परमेश्वर ने उन पर कार्य किया ताकि भविष्य में वह पूरी भूमि पर मानवजाति को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकें। उनकी उपलब्धियाँ और यहोवा की उनकी आराधना की धार्मिकता दर्ज की गई ताकि वे अनुग्रह के युग के दौरान इस्राएल से बाहर के लोगों के लिए नमूने और आदर्श बन सकें; उनके क्रियाकलापों ने आज के दिन तक कई हजार वर्षों के कार्य को कायम रखा है।

दुनिया की नींव के निर्माण के बाद, परमेश्वर के कार्य का पहला चरण इस्राएल में पूरा किया गया था और इस प्रकार इस्राएल पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का जन्मस्थान और पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का आधार था। यीशु के कार्य ने पूरे यहूदिया को अपने में समेट लिया था। उसके कार्य के दौरान, यहूदिया के बाहर बहुत कम लोग इसके बारे में जानते थे, क्योंकि उसने यहूदिया से बाहर कोई कार्य नहीं किया। आज परमेश्वर का कार्य चीन में लाया गया है और यह पूरी तरह इस क्षेत्र के भीतर किया जा रहा है। इस चरण के दौरान, चीन के बाहर कोई कार्य शुरू नहीं किया गया है; इसे चीन के बाहर फैलाने का कार्य बाद में किया जाएगा। कार्य का यह चरण यीशु के कार्य के चरण के क्रम में है। यीशु ने छुटकारे का कार्य किया और यह चरण वह कार्य है जो उस कार्य के बाद आता है; छुटकारे का कार्य पूरा हो चुका है और इस चरण में पवित्र आत्मा द्वारा संकल्पना की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि कार्य का यह चरण पिछले चरण से भिन्न है, इसके अलावा, क्योंकि चीन इस्राएल से भिन्न है। यीशु द्वारा किए गए कार्य का चरण छुटकारे का कार्य था। मनुष्य ने यीशु को देखा और शीघ्र ही उसका कार्य अन्य-जातियों में फैल गया। आज ऐसे अनेक लोग हैं जो

अमेरिका, ब्रिटेन और रूस में परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, तो चीन में विश्वासी लोग कम क्यों हैं? क्योंकि चीन ऐसा राष्ट्र है जो अपने आपको छिपा कर रखता है। इस प्रकार, चीन परमेश्वर के मार्ग को स्वीकार करने वाला अंतिम राष्ट्र था, यहाँ तक कि अभी भी स्वीकार किए हुए इसे सौ वर्ष से भी कम हुए हैं—अमेरिका और ब्रिटेन की तुलना में बहुत बाद में। परमेश्वर के कार्य का अंतिम चरण चीन की भूमि में किया जा रहा है ताकि वह अपने कार्य का अंत कर सके और उसका समस्त कार्य सम्पन्न हो सके। इस्राएल के लोग यहोवा को अपना प्रभु कहते थे। उस समय वे उसे अपने परिवार का मुखिया मानते थे। पूरा इस्राएल एक बड़ा परिवार बन गया था, जिसमें हर कोई अपने प्रभु यहोवा की उपासना करता था। यहोवा का आत्मा प्रायः उनके सामने प्रकट होता था, वह उनसे बातचीत करता था, अपनी वाणी उच्चारित करता था और उनका मार्गदर्शन करने के लिए बादल और ध्वनि के स्तंभ का उपयोग करता था। उस समय, पवित्रात्मा ने अपनी वाणी से इस्राएल में लोगों का सीधे ही मार्गदर्शन किया, वे लोग बादलों को देखते और मेघ की गड़गड़ाहट सुनते थे। इस तरह उसने कई हजार वर्षों तक उनका मार्गदर्शन किया। इस प्रकार, केवल इस्राएलियों ने ही हमेशा यहोवा की आराधना की है। वे मानते हैं कि यहोवा मात्र उन्हीं का परमेश्वर है, वह अन्यजातियों का परमेश्वर नहीं। यह आश्चर्य की बात नहीं है : आखिरकार, यहोवा ने उनके बीच करीब चार हज़ार वर्षों तक कार्य किया था। चीन की भूमि पर, हजारों वर्षों तक नींद की खुमारी में रहने के बाद, अब जाकर अधम लोगों को पता चला है कि स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजें प्राकृतिक रूप से नहीं बनी है, बल्कि स्रष्टा द्वारा बनाई गईं हैं। क्योंकि यह सुसमाचार विदेश से आया है, इसलिए वे सामंतवादी, प्रतिक्रियावादी दिमाग के लोग मानते हैं कि वे सभी लोग जो इस सुसमाचार को स्वीकार करते हैं वे विश्वासघाती हैं, वे ऐसे दोगले लोग हैं जिन्होंने अपने पूर्वज, बुद्ध के साथ विश्वासघात किया है। इसके अलावा, ये सामंतवादी दिमाग वाले बहुत-से लोग पूछते हैं कि चीनी लोग विदेशियों के परमेश्वर पर कैसे विश्वास कर सकते हैं? क्या वे अपने पूर्वजों के साथ विश्वासघात नहीं कर रहे हैं? क्या वे दुष्टता नहीं कर रहे हैं? आज लोग बहुत समय से भूले हुए हैं कि यहोवा उनका परमेश्वर है। उन्होंने बहुत समय से स्रष्टा को अपने मन से निकाल दिया है। वे क्रमिक विकास में विश्वास करते हैं, जिसका अर्थ है कि मनुष्य का क्रमिक विकास वानर से हुआ है और यह कि प्राकृतिक दुनिया सहज रूप से अस्तित्व में आयी। मानवजाति जिस अच्छे भोजन का आनंद लेती है वह उसे प्रकृति द्वारा प्रदान किया जाता है, मनुष्य के जीवन और मृत्यु का एक क्रम है और कोई परमेश्वर नहीं है जो इन सब पर शासन करता हो। इसके अलावा, ऐसे भी अनेक

नास्तिक हैं जो मानते हैं कि सभी चीजों पर परमेश्वर का प्रभुत्व एक अंधविश्वास है, इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। लेकिन क्या विज्ञान परमेश्वर के कार्य की जगह ले सकता है? क्या विज्ञान मानवजाति पर शासन कर सकता है? ऐसे देश में जहाँ नास्तिकता का शासन है, वहाँ सुसमाचार का प्रचार करना कोई आसान कार्य नहीं है, इसमें बड़ी बाधाएँ आती हैं। क्या आज ऐसे अनेक लोग नहीं हैं जो इस तरह से परमेश्वर का विरोध करते हैं?

जब यीशु अपना कार्य करने आया, तब बहुत से लोगों ने यहोवा के कार्य से उसके कार्य की तुलना की और दोनों कार्यों को असमान पाकर, उन्होंने यीशु को सूली पर चढ़ा दिया। उन्हें उनके कार्यों में समानता क्यों नहीं मिली? आंशिक रूप से ऐसा इसलिए था क्योंकि यीशु ने नया कार्य किया था और इसलिए भी क्योंकि यीशु के अपना कार्य शुरू करने से पहले किसी ने भी उसकी वंशावली नहीं लिखी थी। यदि किसी ने लिखी होती तो चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं होती और तब कौन यीशु को सूली पर चढ़ाता? यदि मत्ती ने कई दशकों पहले यीशु की वंशावली लिखी होती तो यीशु ने इतना उत्पीड़न न सहा होता। क्या ऐसा नहीं है? जैसे ही लोगों ने यीशु की वंशावली पढ़ी कि वह अब्राहम का पुत्र है और दाऊद के मूल का है—तो वे उसका उत्पीड़न करना बंद कर देते। क्या यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है कि उसकी वंशावली बहुत देर से लिखी गयी? और यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि बाइबल में केवल परमेश्वर के कार्य के दो चरण ही दर्ज हैं : एक चरण जो व्यवस्था के युग का कार्य था और एक वो जो अनुग्रह के युग का कार्य था; एक चरण जो कि यहोवा का कार्य था और एक जो यीशु का कार्य था। कितना अच्छा होता यदि किसी महान नबी ने आज के कार्य के बारे में भविष्यवाणी कर दी होती। बाइबल में "अंत के दिनों का कार्य" शीर्षक का एक अतिरिक्त खंड होता—क्या यह बेहतर नहीं होता? आज मनुष्य को इतनी कठिनाई में क्यों डाला जाना चाहिए? तुम लोगों ने कितना मुश्किल समय देखा है! यदि कोई घृणा किए जाने के योग्य है, तो वह यशायाह और दानिय्येल हैं जिन्होंने अंत के दिनों की भविष्यवाणी नहीं की और यदि किसी को दोषी ठहराया जाना है तो वह नए नियम के प्रेरित हैं जिन्होंने परमेश्वर के दूसरे देहधारण की वंशावली को पहले सूचीबद्ध नहीं किया। यह कितने शर्म की बात है! तुम लोगों को हर जगह साक्ष्य खोजने पड़ रहे हैं। छोटे-छोटे वचनों के अंश खोजने के बाद भी तुम लोग यह नहीं कह पाते कि वे वास्तव में साक्ष्य हैं भी या नहीं। कितना शर्मनाक है! परमेश्वर अपने कार्य में इतना रहस्यमय क्यों है? आज बहुत से लोगों को अभी तक निर्णायक साक्ष्य नहीं मिले हैं, लेकिन वे इसे नकार भी नहीं सकते। तो उन्हें क्या करना चाहिए? वे दृढ़ता से परमेश्वर का

अनुसरण नहीं कर पाते, न ही संदेह के कारण आगे बढ़ पाते हैं। इसलिए कई "चतुर और प्रतिभाशाली विद्वान" परमेश्वर का अनुसरण करते हुए "आज़माने और देखने" वाला रवैया अपना लेते हैं। यह बहुत बड़ी मुसीबत है! यदि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना भविष्य के बारे में पहले से बताने में सक्षम होते, तो क्या चीजें बहुत आसान नहीं हो गई होतीं? बेहतर होता यदि यूहन्ना ने राज्य में जीवन का आंतरिक सत्य देख लिया होता—कितने दुर्भाग्य की बात है कि उसने केवल दिव्य-दर्शन किए, पृथ्वी पर वास्तविक, भौतिक कार्य नहीं देखा। यह कितने शर्म की बात है! परमेश्वर की क्या समस्या है? इस्राएल में उसका कार्य अच्छी तरह से चला था, फिर चीन में आकर उसे देहधारण क्यों करना पड़ा और क्यों लोगों के बीच व्यक्तिगत रूप से आकर कार्य करना और रहना पड़ा? परमेश्वर मनुष्य के प्रति अत्यधिक विचारशून्य है! उसने न केवल लोगों को पहले से नहीं बताया, बल्कि अचानक ताड़ना और न्याय ले आया। इसका वास्तव में कोई अर्थ नहीं है! जब पहली बार परमेश्वर ने देह धारण किया तो उसने मनुष्य को समस्त आंतरिक सत्य के बारे में पहले से नहीं बताया, जिसके कारण उसने अत्यंत कठिनाई झेली। यकीनन ऐसा तो हुआ नहीं होगा कि वह भूल गया? तो फिर उसने इस बार भी मनुष्य को क्यों नहीं बताया? आज यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि बाइबल में केवल छियासठ पुस्तकें हैं। इसमें अंत के दिनों के कार्य की भविष्यवाणी करने वाली सिर्फ एक पुस्तक और होनी चाहिए! क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता? यहाँ तक कि यहोवा, यशायाह और दाऊद ने भी आज के कार्य का कोई उल्लेख नहीं किया। चार हज़ार वर्षों से अधिक समय का अलगाव होने से, वे वर्तमान से और भी ज़्यादा कट गए। यीशु ने भी आज के कार्य की पूरी तरह से कोई भविष्यवाणी नहीं की, इसके बारे में सिर्फ थोड़ा-सा ही बोला, अभी भी इंसान को पूरे प्रमाण नहीं मिले हैं। यदि तुम आज के कार्य की तुलना पहले के कार्य से करोगे तो दोनों का आपस में मिलान कैसे हो सकता है? यहोवा के कार्य के चरण का लक्ष्य इस्राएल था, इसलिए यदि तुम आज के कार्य की तुलना इससे करोगे तो और भी ज़्यादा असंगति होगी; इन दोनों की तुलना की ही नहीं जा सकती। न तो तुम इस्राएल से हो, न ही यहूदी हो; तुम्हारी क्षमता और तुम्हारी हर चीज में कमी है—तुम उनसे अपनी तुलना कैसे कर सकते हो? क्या यह संभव है? जान लो कि आज राज्य का युग है और यह व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग से भिन्न है। किसी भी हालत में, किसी सूत्र का इस्तेमाल करने का प्रयास न करो और उसे लागू न करो; परमेश्वर ऐसे सूत्रों से नहीं मिलता।

यीशु अपने जन्म के बाद 29 वर्षों तक कैसे जिया? बाइबल में उसके बचपन और उसकी युवावस्था

के बारे में कुछ भी दर्ज नहीं है; क्या तुम जानते हो कि उसका बचपन और युवावस्था किस तरह की था? क्या ऐसा हो सकता है कि उसका कोई बचपन या युवावस्था न रही हो, जब वह पैदा हुआ तो वह पहले से ही 30 वर्ष का रहा हो? तुम बहुत कम जानते हो, इसलिए अपने विचार व्यक्त करने में इतने लापरवाह मत बनो। इससे तुम्हारा कोई भला नहीं होगा! बाइबल में केवल यह दर्ज है कि यीशु के 30 वें जन्मदिन से पहले, उसका बपतिस्मा किया गया था और शैतान के प्रलोभन से गुज़रने के लिए बीहड़ में पवित्र आत्मा द्वारा उसकी अगुआई की गई थी। चार सुसमाचारों में उसके साढ़े तीन साल का कार्य दर्ज है। उसके बचपन और युवावस्था का कोई अभिलेख नहीं है, लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि उसका कोई बचपन और युवावस्था नहीं थी; बात सिर्फ इतनी है कि आरंभ में उसने कोई कार्य नहीं किया, वह एक सामान्य व्यक्ति था। तब क्या तुम कह सकते हो कि यीशु युवावस्था या बाल्यावस्था के बिना ही 33 वर्ष तक जिया? क्या वह अचानक ही साढ़े 33 वर्ष का हो गया? मनुष्य उसके बारे में यह सब जो सोचता है, वह अलौकिक और अवास्तविक है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि देहधारी परमेश्वर साधारण और सामान्य मानवता से सम्पन्न होता है, किन्तु जब वह अपना कार्य करता है, तो वह सीधे अपनी अपूर्ण मानवता और पूर्ण दिव्यता के साथ कार्य करता है। इसी वजह से लोग आज के कार्य और यीशु के कार्य के बारे में भी संदेह करते हैं। यद्यपि परमेश्वर का कार्य उसके दो बार देहधारण के दौरान भिन्न रहा है, किन्तु उसका सार भिन्न नहीं रहा। निस्संदेह, यदि तुम चार सुसमाचारों के अभिलेखों को पढ़ो, तो अंतर बहुत बड़ा है। तुम यीशु के बचपन और युवावस्था के जीवन में कैसे लौट सकते हो? तुम यीशु की सामान्य मानवता को कैसे समझ सकते हो? हो सकता है कि आज तुम्हें परमेश्वर की मानवता की एक अच्छी समझ हो, फिर भी तुम्हें यीशु की मानवता की कोई समझ नहीं है, इसे समझना तो बहुत दूर की बात है। यदि इसे मत्ती द्वारा दर्ज नहीं किया गया होता, तो तुम्हें यीशु की मानवता का कोई आभास न होता। हो सकता है जब मैं तुम्हें यीशु की जिंदगी की कहानी सुनाऊँ और तुम्हें यीशु के बचपन और युवावस्था के आंतरिक सत्य बताऊँगा, तो तुम नकारते हुए कहो, नहीं! वह ऐसा नहीं हो सकता। उसमें कोई कमजोरी नहीं हो सकती, उसमें मानवता तो हो ही नहीं सकती! यहाँ तक कि तुम चिल्लाओगे और चीखोगे। क्योंकि तुम यीशु को नहीं समझते, तुम्हारे अंदर मेरे बारे में अवधारणाएँ हैं। तुम यीशु को अत्यधिक दिव्य मानते हो, तुम मानते हो कि उसमें दैहिक कुछ भी नहीं था। किन्तु तथ्य तथ्य होते हैं। कोई भी तथ्यों की सत्यता के विरुद्ध बोलना नहीं चाहता, क्योंकि जब मैं बोलता हूँ तो यह सत्य के संबंध में होता है; ये अटकलें नहीं हैं, न ही यह भविष्यवाणी है।

जान लो कि परमेश्वर उच्चतम शिखर तक उठ सकता है, वह निम्नतम गहराइयों में छिप सकता है। वह तुम्हारी बुद्धि की कल्पना से परे है, वह समस्त प्राणियों का परमेश्वर है और किसी व्यक्ति-विशेष द्वारा कल्पित कोई व्यक्तिगत परमेश्वर नहीं है।

परमेश्वर के कार्य का दर्शन (3)

पहली बार जब परमेश्वर देह बना, तो यह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भधारण के माध्यम से था, और यह उस कार्य के लिए प्रासंगिक था, जिसे करने का वह इरादा रखता था। अनुग्रह का युग यीशु के नाम से शुरू हुआ। जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरंभ की, तो पवित्र आत्मा ने यीशु के नाम की गवाही देनी आरंभ कर दी, और यहोवा का नाम बोला जाना अब बंद हो गया; इसके बजाय, पवित्र आत्मा ने मुख्य रूप से यीशु के नाम से नया कार्य आरंभ किया। जो यीशु में विश्वास करते थे, उन लोगों की गवाही यीशु मसीह के लिए दी गई थी, और उन्होंने जो कार्य किया, वह भी यीशु मसीह के लिए था। पुराने विधान के व्यवस्था के युग के समापन का यह अर्थ था कि मुख्य रूप से यहोवा के नाम पर किया गया कार्य समाप्त हो गया है। तब से परमेश्वर का नाम यहोवा नहीं रहा; इसके बजाय उसे यीशु कहा गया, और यहाँ से पवित्र आत्मा ने मुख्य रूप से यीशु के नाम से कार्य करना आरंभ किया। इसलिए जो लोग आज भी यहोवा के वचनों को खाते और पीते हैं, और अभी भी व्यवस्था के युग के कार्य के अनुसार सब-कुछ करते हैं—क्या तुम नियमों का अंधानुकरण नहीं कर रहे हो? क्या तुम अतीत में नहीं अटक गए हो? अब तुम लोग जानते हो कि अंत के दिन आ चुके हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि जब यीशु आए, तो वह अभी भी यीशु कहलाए? यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था कि एक मसीहा आएगा, लेकिन जब वह आया, तो उसे मसीहा नहीं बल्कि यीशु कहा गया। यीशु ने कहा कि वह पुनः आएगा, और वह वैसे ही आएगा जैसे वह गया था। ये यीशु के वचन थे, किंतु क्या तुमने यीशु के जाने के तरीके को देखा था? यीशु एक सफेद बादल पर चढ़कर गया था, किंतु क्या ऐसा हो सकता है कि वह व्यक्तिगत रूप से एक सफेद बादल पर मनुष्यों के बीच वापस आएगा? यदि ऐसा होता, तो क्या वह अभी भी यीशु नहीं कहलाता? जब यीशु पुनः आएगा, तब तक युग पहले ही बदल चुका होगा, तो क्या उसे अभी भी यीशु कहा जा सकता है? क्या परमेश्वर को केवल यीशु के नाम से ही जाना जा सकता है? क्या नए युग में उसे नए नाम से नहीं बुलाया जा सकता? क्या एक व्यक्ति की छवि और एक विशेष नाम परमेश्वर का उसकी संपूर्णता में प्रतिनिधित्व कर सकते हैं? प्रत्येक युग में परमेश्वर

नया कार्य करता है और उसे एक नए नाम से बुलाया जाता है; वह भिन्न-भिन्न युगों में एक ही कार्य कैसे कर सकता है? वह पुराने से कैसे चिपका रह सकता है? यीशु का नाम छुटकारे के कार्य के वास्ते लिया गया था, तो क्या जब वह अंत के दिनों में लौटेगा, तब भी उसे उसी नाम से बुलाया जाएगा? क्या वह अभी भी छुटकारे का कार्य करेगा? ऐसा क्यों है कि यहोवा और यीशु एक ही हैं, फिर भी उन्हें भिन्न-भिन्न युगों में भिन्न-भिन्न नामों से बुलाया जाता है? क्या यह इसलिए नहीं है, क्योंकि उनके कार्य के युग भिन्न-भिन्न हैं? क्या केवल एक नाम परमेश्वर का उसकी संपूर्णता में प्रतिनिधित्व कर सकता है? ऐसा होने पर, परमेश्वर को भिन्न युग में भिन्न नाम से ही बुलाया जाना चाहिए, और उसे युग को परिवर्तित करने और युग का प्रतिनिधित्व करने के लिए उस नाम का उपयोग करना चाहिए। क्योंकि कोई भी एक नाम पूरी तरह से स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, और प्रत्येक नाम केवल एक दिए गए युग में परमेश्वर के स्वभाव के उस समय से संबंधित पहलू का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है; उसे केवल उसके कार्य का प्रतिनिधित्व ही करना है। इसलिए, समस्त युग का प्रतिनिधित्व करने के लिए परमेश्वर ऐसे किसी भी नाम को चुन सकता है, जो उसके स्वभाव के अनुकूल हो। चाहे वह यहोवा का युग हो, या यीशु का, प्रत्येक युग का प्रतिनिधित्व एक नाम के द्वारा किया जाता है। अनुग्रह के युग के अंत में, अंतिम युग आ गया है, और यीशु पहले ही आ चुका है। उसे अभी भी यीशु कैसे कहा जा सकता है? वह अभी भी मनुष्यों के बीच यीशु का रूप कैसे धर सकता है? क्या तुम भूल गए हो कि यीशु केवल नाज़री की छवि से अधिक नहीं था? क्या तुम भूल गए हो कि यीशु केवल मानवजाति को छुटकारा दिलाने वाला था? वह अंत के दिनों में मनुष्य को जीतने और पूर्ण करने का कार्य हाथ में कैसे ले सकता था? यीशु एक सफेद बादल पर सवार होकर चला गया—यह तथ्य है—किंतु वह मनुष्यों के बीच एक सफेद बादल पर सवार होकर कैसे वापस आ सकता है और अभी भी उसे यीशु कैसे कहा जा सकता है? यदि वह वास्तव में बादल पर आया होता, तो मनुष्य उसे पहचानने में कैसे विफल होता? क्या दुनिया भर के लोग उसे नहीं पहचानते? उस स्थिति में, क्या यीशु एकमात्र परमेश्वर नहीं होता? उस स्थिति में, परमेश्वर की छवि एक यहूदी की छवि होती, और इतना ही नहीं, वह हमेशा ऐसी ही रहती। यीशु ने कहा था कि वह उसी तरह से आएगा जैसे वह गया था, किंतु क्या तुम उसके वचनों का सही अर्थ जानते हो? क्या ऐसा हो सकता है कि ऐसा उसने तुम लोगों के इस समूह से कहा हो? तुम केवल इतना ही जानते हो कि वह उसी तरह से आएगा जैसे वह गया था, एक बादल पर सवार होकर, किंतु क्या तुम जानते हो कि स्वयं परमेश्वर वास्तव में अपना कार्य कैसे करता है? यदि तुम

सच में देखने में समर्थ होते, तब यीशु के द्वारा बोले गए वचनों को कैसे समझाया जाता? उसने कहा था : जब अंत के दिनों में मनुष्य का पुत्र आएगा, तो उसे स्वयं ज्ञात नहीं होगा, फ़रिश्तों को ज्ञात नहीं होगा, स्वर्ग के दूतों को ज्ञात नहीं होगा, और समस्त मनुष्यों को ज्ञात नहीं होगा। केवल परमपिता को ज्ञात होगा, अर्थात् केवल पवित्रात्मा को ज्ञात होगा। जिसे स्वयं मनुष्य का पुत्र नहीं जानता, तुम उसे देखने और जानने में सक्षम हो? यदि तुम जानने और अपनी आँखों से देखने में समर्थ होते, तो क्या ये वचन व्यर्थ में बोले गए नहीं होते? और उस समय यीशु ने क्या कहा था? "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ... इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।" जब वह दिन आएगा, तो स्वयं मनुष्य के पुत्र को उसका पता नहीं चलेगा। मनुष्य का पुत्र देहधारी परमेश्वर के देह को संदर्भित करता है, जो एक सामान्य और साधारण व्यक्ति है। जब स्वयं मनुष्य का पुत्र भी नहीं जानता, तो तुम कैसे जान सकते हो? यीशु ने कहा था कि वह वैसे ही आएगा, जैसे वह गया था। जब वह आता है, तो वह स्वयं भी नहीं जानता, तो क्या वह तुम्हें अग्रिम रूप में सूचित कर सकता है? क्या तुम उसका आगमन देखने में सक्षम हो? क्या यह एक मज़ाक नहीं है? हर बार जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो वह अपना नाम, अपना लिंग, अपनी छवि और अपना कार्य बदल देता है; वह अपने कार्य को दोहराता नहीं है। वह ऐसा परमेश्वर है, जो हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता। जब वह पहले आया, तो उसे यीशु कहा गया; जब वह इस बार फिर से आता है, तो क्या उसे अभी भी यीशु कहा जा सकता है? जब वह पहले आया, तो वह पुरुष था; क्या वह इस बार फिर से पुरुष हो सकता है? जब वह अनुग्रह के युग के दौरान आया था, तो उसका कार्य सलीब पर चढ़ाया जाना था; जब वह फिर से आता है, तो क्या तब भी वह मानवजाति को पाप से छुटकारा दिला सकता है? क्या उसे फिर से सलीब पर चढ़ाया जा सकता है? क्या वह उसके कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होगी? क्या तुम्हें नहीं पता था कि परमेश्वर हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता? ऐसे लोग हैं, जो कहते हैं कि परमेश्वर अपरिवर्तशील है। यह सही है, किंतु यह परमेश्वर के स्वभाव और सार की अपरिवर्तनशीलता को संदर्भित करता है। उसके नाम और कार्य में परिवर्तन से यह साबित नहीं होता कि उसका सार बदल गया है; दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमेशा परमेश्वर रहेगा, और यह तथ्य कभी नहीं बदलेगा। यदि तुम कहते हो कि परमेश्वर का कार्य अपरिवर्तनशील है, तो क्या वह अपनी छह-हजार-वर्षीय प्रबंधन योजना पूरी करने में सक्षम होगा? तुम

केवल यह जानते हो कि परमेश्वर हमेशा अपरिवर्तशील है, किंतु क्या तुम यह जानते हो कि परमेश्वर हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता? यदि परमेश्वर का कार्य अपरिवर्तनशील है, तो क्या वह मानवजाति की आज के दिन तक अगुआई कर सकता था? यदि परमेश्वर अपरिवर्तशील है, तो ऐसा क्यों है कि उसने पहले ही दो युगों का कार्य कर लिया है? उसका कार्य कभी आगे बढ़ने से नहीं रुकता, जिसका अर्थ है कि उसका स्वभाव मनुष्य के सामने धीरे-धीरे प्रकट होता है, और जो कुछ प्रकट होता है, वह उसका अंतर्निहित स्वभाव है। आरंभ में, परमेश्वर का स्वभाव मनुष्य से छिपा हुआ था, उसने कभी भी खुलकर मनुष्य के सामने अपना स्वभाव प्रकट नहीं किया था, और मनुष्य को बस उसका कोई ज्ञान नहीं था। इस वजह से, वह धीरे-धीरे मनुष्य के सामने अपने स्वभाव को प्रकट करने हेतु अपने कार्य का उपयोग करता है, किंतु इस तरह कार्य करने का यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर का स्वभाव हर युग में बदलता है। यह ऐसा मामला नहीं है कि परमेश्वर का स्वभाव लगातार बदल रहा है, क्योंकि उसकी इच्छा हमेशा बदल रही है। बल्कि, यह ऐसा है कि, चूँकि उसके कार्य के युग भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए परमेश्वर अपने अंतर्निहित स्वभाव को उसकी समग्रता में लेता है और क्रमश: उसे मनुष्य के सामने प्रकट करता है, ताकि मनुष्य उसे जानने में समर्थ हो जाए। किंतु यह किसी भी भाँति इस बात का साक्ष्य नहीं है कि परमेश्वर का मूलतः कोई विशेष स्वभाव नहीं है या युगों के गुज़रने के साथ उसका स्वभाव धीरे-धीरे बदल गया है—इस प्रकार की समझ ग़लत होगी। युगों के गुज़रने के अनुसार परमेश्वर मनुष्य को अपना अंतर्निहित और विशेष स्वभाव—अपना स्वरूप—प्रकट करता है; किसी एक युग का कार्य परमेश्वर के समग्र स्वभाव को व्यक्त नहीं कर सकता। और इसलिए, "परमेश्वर हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता" वचन उसके कार्य को संदर्भित करते हैं, और "परमेश्वर अपरिवर्तशील है" उसे संदर्भित करते हैं, जो परमेश्वर का अंतर्निहित स्वरूप है। इसके बावज़ूद, तुम छह-हज़ार-वर्ष के कार्य को एक बिंदु पर आधारित नहीं कर सकते, या उसे केवल मृत शब्दों के साथ सीमित नहीं कर सकते। मनुष्य की मूर्खता ऐसी ही है। परमेश्वर इतना सरल नहीं है, जितना मनुष्य कल्पना करता है, और उसका कार्य किसी एक युग में रुका नहीं रह सकता। उदाहरण के लिए, यहोवा हमेशा परमेश्वर का नाम नहीं हो सकता; परमेश्वर यीशु के नाम से भी अपना कार्य कर सकता है। यह इस बात का संकेत है कि परमेश्वर का कार्य हमेशा आगे की ओर प्रगति कर रहा है।

परमेश्वर हमेशा परमेश्वर है, और वह कभी शैतान नहीं बनेगा; शैतान हमेशा शैतान है, और वह कभी परमेश्वर नहीं बनेगा। परमेश्वर की बुद्धि, परमेश्वर की चमत्कारिकता, परमेश्वर की धार्मिकता और परमेश्वर

का प्रताप कभी नहीं बदलेंगे। उसका सार और उसका स्वरूप कभी नहीं बदलेगा। किंतु जहाँ तक उसके कार्य की बात है, वह हमेशा आगे बढ़ रहा है, हमेशा गहरा होता जा रहा है, क्योंकि वह हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता। हर युग में परमेश्वर एक नया नाम अपनाता है, हर युग में वह नया कार्य करता है, और हर युग में वह अपने सृजनों को अपनी नई इच्छा और नया स्वभाव देखने देता है। यदि नए युग में लोग परमेश्वर के नए स्वभाव की अभिव्यक्ति देखने में असफल रहेंगे, तो क्या वे उसे हमेशा के लिए सलीब पर नहीं टाँग देंगे? और ऐसा करके, क्या वे परमेश्वर को परिभाषित नहीं करेंगे? यदि परमेश्वर केवल एक पुरुष के रूप में देह में आए, तो लोग उसे पुरुष के रूप में, पुरुषों के परमेश्वर के रूप में परिभाषित करेंगे, और कभी विश्वास नहीं करेंगे कि वह महिलाओं का परमेश्वर है। तब पुरुष यह मानेंगे कि परमेश्वर पुरुषों के समान लिंग का है, कि परमेश्वर पुरुषों का प्रमुख है—लेकिन फिर महिलाओं का क्या? यह अनुचित है; क्या यह पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं है? यदि यही मामला होता, तो वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने बचाया, उसके समान पुरुष होते, और एक भी महिला नहीं बचाई गई होती। जब परमेश्वर ने मानवजाति का सृजन किया, तो उसने आदम को बनाया और उसने हव्वा को बनाया। उसने न केवल आदम को बनाया, बल्कि पुरुष और महिला दोनों को अपनी छवि में बनाया। परमेश्वर केवल पुरुषों का ही परमेश्वर नहीं है—वह महिलाओं का भी परमेश्वर है। परमेश्वर अंत के दिनों में कार्य के एक नए चरण में प्रवेश करता है। वह अपने स्वभाव को और अधिक प्रकट करेगा, और वह यीशु के समय की करुणा और प्रेम नहीं होगा। चूँकि उसके हाथ में नया कार्य है, इसलिए इस नए कार्य के साथ एक नया स्वभाव होगा। इसलिए, यदि यह कार्य पवित्रात्मा द्वारा किया जाता—यदि परमेश्वर देह नहीं बनता, और इसके बजाय पवित्रात्मा ने गड़गड़ाहट के माध्यम से सीधे बात की होती, जिससे मनुष्य के पास उससे संपर्क करने का कोई रास्ता नहीं होता, तो क्या मनुष्य उसके स्वभाव को जान पाता? यदि केवल पवित्रात्मा ने कार्य किया होता, तो मनुष्य के पास परमेश्वर के स्वभाव को जान सकने का कोई तरीका न होता। लोग परमेश्वर के स्वभाव को अपनी आँखों से केवल तभी देख सकते हैं, जब वह देह बनता है, जब वचन देह में प्रकट होता है, और वह अपना संपूर्ण स्वभाव देह के माध्यम से व्यक्त करता है। परमेश्वर वास्तव में और सच में मनुष्यों के बीच रहता है। वह मूर्त है; मनुष्य वास्तव में उसके स्वभाव के साथ जुड़ सकता है, उसके स्वरूप के साथ जुड़ सकता है; केवल इसी तरह से मनुष्य वास्तव में उसे जान सकता है। इसके साथ-साथ, परमेश्वर ने वह कार्य भी पूरा कर लिया है, जिसमें "परमेश्वर पुरुषों का परमेश्वर है और महिलाओं का परमेश्वर है," और उसने

देह में अपने कार्य की समग्रता को संपन्न कर लिया है। वह किसी भी युग में अपने कार्य को दोहराता नहीं है। चूँकि अंत के दिन आ गए हैं, इसलिए वह उस कार्य को करेगा, जो वह अंत के दिनों में करता है, और अंत के दिनों के अपने संपूर्ण स्वभाव को प्रकट करेगा। अंत के दिनों के बारे में बात करना एक पृथक् युग को संदर्भित करता है, वह युग जिसमें यीशु ने कहा था कि तुम लोग अवश्य ही आपदा का सामना करोगे, और भूकंपों, अकालों और महामारियों का सामना करोगे, जो यह दर्शाएँगे कि यह एक नया युग है, और अब अनुग्रह का युग नहीं है। मान लो अगर, जैसा कि लोग कहते हैं, परमेश्वर हमेशा अपरिवर्तनशील हो, उसका स्वभाव हमेशा करुणामय और प्रेममय हो, वह मनुष्य से ऐसे ही प्यार करे जैसे वह स्वयं से करता है, और वह हर मनुष्य को उद्धार प्रदान करे और कभी भी मनुष्य से नफ़रत न करे, तो क्या उसका कार्य कभी समाप्त हो पाएगा? जब यीशु आया और उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया, तो सभी पापियों के लिए स्वयं को बलिदान करके और स्वयं को वेदी पर चढ़ाकर उसने छुटकारे का कार्य पहले ही पूरा कर लिया था और अनुग्रह के युग को समाप्त कर दिया था। तो उस युग के कार्य को अंत के दिनों में दोहराने का क्या मतलब होता? क्या वही कार्य करना यीशु के कार्य को नकारना नहीं होगा? यदि परमेश्वर ने इस चरण में आकर सलीब पर चढ़ने का कार्य न किया होता, बल्कि वह प्रेममय और करुणामय ही बना रहता, तो क्या वह युग का अंत करने में समर्थ होता? क्या एक प्रेममय और करुणामय परमेश्वर युग का समापन करने में समर्थ होता? युग का समापन करने के अपने अंतिम कार्य में, परमेश्वर का स्वभाव ताड़ना और न्याय का है, जिसमें वह वो सब प्रकट करता है जो अधार्मिक है, ताकि वह सार्वजनिक रूप से सभी लोगों का न्याय कर सके और उन लोगों को पूर्ण बना सके, जो सच्चे दिल से उसे प्यार करते हैं। केवल इस तरह का स्वभाव ही युग का समापन कर सकता है। अंत के दिन पहले ही आ चुके हैं। सृष्टि की सभी चीज़ें उनके प्रकार के अनुसार अलग की जाएँगी और उनकी प्रकृति के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित की जाएँगी। यही वह क्षण है, जब परमेश्वर लोगों के परिणाम और उनकी मंज़िल प्रकट करता है। यदि लोग ताड़ना और न्याय से नहीं गुज़रते, तो उनकी अवज्ञा और अधार्मिकता को उजागर करने का कोई तरीका नहीं होगा। केवल ताड़ना और न्याय के माध्यम से ही सभी सृजित प्राणियों का परिणाम प्रकट किया जा सकता है। मनुष्य केवल तभी अपने वास्तविक रंग दिखाता है, जब उसे ताड़ना दी जाती है और उसका न्याय किया जाता है। बुरे को बुरे के साथ रखा जाएगा, भले को भले के साथ, और समस्त मनुष्यों को उनके प्रकार के अनुसार अलग किया जाएगा। ताड़ना और न्याय के माध्यम से सभी सृजित प्राणियों का परिणाम प्रकट

किया जाएगा, ताकि बुरे को दंडित किया जा सके और अच्छे को पुरस्कृत किया जा सके, और सभी लोग परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन हो जाएँ। यह समस्त कार्य धार्मिक ताड़ना और न्याय के माध्यम से पूरा करना होगा। चूँकि मनुष्य की भ्रष्टता अपने चरम पर पहुँच गई है और उसकी अवज्ञा अत्यंत गंभीर हो गई है, इसलिए केवल परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव ही, जो मुख्यत: ताड़ना और न्याय से संयुक्त है और अंत के दिनों में प्रकट होता है, मनुष्य को रूपांतरित कर सकता है और उसे पूर्ण बना सकता है। केवल यह स्वभाव ही बुराई को उजागर कर सकता है और इस तरह सभी अधार्मिकों को गंभीर रूप से दंडित कर सकता है। इसलिए, इसी तरह का स्वभाव युग के महत्व के साथ व्याप्त होता है, और प्रत्येक नए युग के कार्य की खातिर उसके स्वभाव का प्रकटन और प्रदर्शन अभिव्यक्त किया जाता है। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर अपने स्वभाव को मनमाने और निरर्थक ढंग से प्रकट करता है। मान लो अगर, अंत के दिनों के दौरान मनुष्य का परिणाम प्रकट करने में परमेश्वर अभी भी मनुष्य पर असीम करुणा बरसाता रहता और उससे प्रेम करता रहता, उसे धार्मिक न्याय के अधीन करने के बजाय उसके प्रति सहिष्णुता, धैर्य और क्षमा दर्शाता रहता, और उसे माफ़ करता रहता, चाहे उसके पाप कितने भी गंभीर क्यों न हों, उसे रत्ती भर भी धार्मिक न्याय के अधीन न करता : तो फिर परमेश्वर के समस्त प्रबंधन का समापन कब होता? कब इस तरह का कोई स्वभाव सही मंज़िल की ओर मानवजाति की अगुआई करने में सक्षम होगा? उदाहरण के लिए, एक ऐसे न्यायाधीश को लो, जो हमेशा प्रेममय है, एक उदार चेहरे और सौम्य हृदय वाला न्यायाधीश। वह लोगों को उनके द्वारा किए गए अपराधों के बावजूद प्यार करता है, और वह उनके प्रति प्रेममय और सहिष्णु रहता है, चाहे वे कोई भी हों। ऐसी स्थिति में, वह कब न्यायोचित निर्णय पर पहुँचने में सक्षम होगा? अंत के दिनों के दौरान, केवल धार्मिक न्याय ही मनुष्यों को उनके प्रकार के अनुसार पृथक् कर सकता है और उन्हें एक नए राज्य में ला सकता है। इस तरह, परमेश्वर के न्याय और ताड़ना के धार्मिक स्वभाव के माध्यम से समस्त युग का अंत किया जाता है।

अपने समस्त प्रबंधन में परमेश्वर का कार्य पूर्णतः स्पष्ट है : अनुग्रह का युग अनुग्रह का युग है, और अंत के दिन अंत के दिन हैं। प्रत्येक युग के बीच सुस्पष्ट भिन्नताएँ हैं, क्योंकि प्रत्येक युग में परमेश्वर उस कार्य को करता है, जो उस युग का प्रतिनिधि होता है। अंत के दिनों का कार्य किए जाने के लिए, युग का अंत करने के लिए ज्वलन, न्याय, ताड़ना, कोप और विनाश होने आवश्यक हैं। अंत के दिन अंतिम युग को संदर्भित करते हैं। अंतिम युग के दौरान क्या परमेश्वर युग का अंत नहीं करेगा? युग समाप्त करने के लिए

परमेश्वर को अपने साथ ताड़ना और न्याय लाने आवश्यक हैं। केवल इसी तरह से वह युग को समाप्त कर सकता है। यीशु का प्रयोजन यह था कि मनुष्य का अस्तित्व बचा रह सके, वह जीवित रह सके और एक बेहतर तरीके से विद्यमान रह सके। उसने मनुष्य को पाप से बचाया, ताकि उसका अनैतिकता में डूबना रुक सके और वह अब और अधोलोक व नरक में न रहे, और मनुष्य को अधोलोक व नरक से बचाकर यीशु ने मनुष्य को जीते रहने दिया। अब अंत के दिन आ गए हैं। परमेश्वर मनुष्य का विनाश कर देगा और मानवजाति को पूरी तरह से नष्ट कर देगा, अर्थात्, वह मानवजाति की विद्रोहशीलता को रूपांतरित कर देगा। इस कारण से, अतीत के करुणामय और प्रेममय स्वभाव के साथ परमेश्वर के लिए युग को समाप्त करना या प्रबंधन की अपनी छह-हजार-वर्षीय योजना को सफल बनाना असंभव होगा। हर युग में परमेश्वर के स्वभाव का एक विशिष्ट प्रतिनिधित्व होता है, और हर युग में ऐसा कार्य होता है, जिसे परमेश्वर द्वारा किया जाना चाहिए। इसलिए, प्रत्येक युग में स्वयं परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य में उसके सच्चे स्वभाव की अभिव्यक्ति शामिल रहती है, और उसका नाम और उसका कार्य दोनों युग के साथ बदल जाते हैं—वे सब नए होते हैं। व्यवस्था के युग के दौरान यहोवा के नाम से मानवजाति का मार्गदर्शन करने का कार्य किया गया था, और पृथ्वी पर कार्य का पहला चरण आरंभ किया गया था। इस चरण के कार्य में मंदिर और वेदी का निर्माण करना, और इस्राएल के लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए व्यवस्था का उपयोग करना और उनके बीच कार्य करना शामिल था। इस्राएल के लोगों का मार्गदर्शन करके उसने पृथ्वी पर अपने कार्य के लिए एक आधार स्थापित किया। इस आधार से उसने अपने कार्य का विस्तार इस्राएल से बाहर किया, जिसका अर्थ है कि इस्राएल से शुरू करके उसने अपने कार्य का बाहर विस्तार किया, जिससे बाद की पीढ़ियों को धीरे-धीरे पता चला कि यहोवा परमेश्वर था, और कि वह यहोवा ही था, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों का निर्माण किया, और कि वह यहोवा ही था, जिसने सभी प्राणियों को सिरजा था। उसने इस्राएल के लोगों के माध्यम से अपने कार्य को उनसे परे फैलाया। इस्राएल की भूमि पृथ्वी पर यहोवा के कार्य का पहला पवित्र स्थान थी, और इस्राएल की भूमि पर ही परमेश्वर पृथ्वी पर सबसे पहले कार्य करने गया। वह व्यवस्था के युग का कार्य था। अनुग्रह के युग के दौरान, यीशु परमेश्वर था, जिसने मनुष्य को बचाया। उसका स्वरूप अनुग्रह, प्रेम, करुणा, संयम, धैर्य, विनम्रता, देखभाल और सहिष्णुता का था, और उसने जो इतना अधिक कार्य किया, वह मनुष्य के छुटकारे की खातिर किया। उसका स्वभाव करुणा और प्रेम का था, और चूँकि वह करुणामय और प्रेममय था, इसलिए उसे मनुष्य के लिए सलीब पर चढ़ना पड़ा,

यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर मनुष्य से उसी प्रकार प्रेम करता है, जैसे वह स्वयं से करता है, यहाँ तक कि उसने स्वयं को अपनी संपूर्णता में बलिदान कर दिया। अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर का नाम यीशु था, अर्थात्, परमेश्वर ऐसा परमेश्वर था जिसने मनुष्य को बचाया, और वह एक करुणामय और प्रेममय परमेश्वर था। परमेश्वर मनुष्य के साथ था। उसका प्रेम, उसकी करुणा और उसका उद्धार प्रत्येक व्यक्ति के साथ था। केवल यीशु के नाम और उसकी उपस्थिति को स्वीकार करके ही मनुष्य शांति और आनंद प्राप्त करने, उसका आशीष, उसके व्यापक और विपुल अनुग्रह तथा उसका उद्धार प्राप्त करने में समर्थ था। यीशु को सलीब पर चढ़ाने के माध्यम से, उसका अनुसरण करने वाले सभी लोगों को उद्धार प्राप्त हो गया और उनके पाप क्षमा कर दिए गए। अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर का नाम यीशु था। दूसरे शब्दों में, अनुग्रह के युग का कार्य मुख्यतः यीशु के नाम से किया गया था। अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर को यीशु कहा गया। उसने पुराने विधान से परे नए कार्य का एक चरण शुरू किया, और उसका कार्य सलीब पर चढ़ाए जाने के साथ समाप्त हो गया। यह उसके कार्य की संपूर्णता थी। इसलिए, व्यवस्था के युग के दौरान परमेश्वर का नाम यहोवा था, और अनुग्रह के युग में यीशु के नाम ने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया। अंत के दिनों के दौरान उसका नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर—सर्वशक्तिमान है, जो अपने सामर्थ्य का उपयोग मनुष्य का मार्गदर्शन करने, मनुष्य को जीतने, मनुष्य को प्राप्त करने, और अंत में, युग का समापन करने के लिए करता है। हर युग में, कार्य के उसके हर चरण में, परमेश्वर का स्वभाव प्रकट होता है।

आरंभ में, व्यवस्था के पुराने विधान के युग के दौरान मनुष्य का मार्गदर्शन करना एक बच्चे के जीवन का मार्गदर्शन करने जैसा था। आरंभिक मानवजाति यहोवा की नवजात थी; वे इस्राएली थे। उन्हें इस बात की समझ नहीं थी कि परमेश्वर का सम्मान कैसे करें या पृथ्वी पर कैसे रहें। दूसरे शब्दों में, यहोवा ने मानवजाति का सृजन किया, अर्थात् उसने आदम और हव्वा का सृजन किया, किंतु उसने उन्हें यह समझने की क्षमताएँ नहीं दीं कि यहोवा का सम्मान कैसे करें या पृथ्वी पर यहोवा की व्यवस्था का अनुसरण कैसे करें। यहोवा के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के बिना कोई इसे सीधे नहीं जान सकता था, क्योंकि आरंभ में मनुष्य के पास ऐसी क्षमताएँ नहीं थीं। मनुष्य केवल इतना ही जानता था कि यहोवा परमेश्वर है, किंतु जहाँ तक इस बात का संबंध है कि उसका सम्मान कैसे करना है, किस प्रकार का आचरण उसका सम्मान करना कहा जा सकता है, किस प्रकार के मन के साथ व्यक्ति को उसका सम्मान करना है, या उसके सम्मान में क्या

चढ़ाना है, मनुष्य को इसका बिलकुल भी पता नहीं था। मनुष्य केवल इतना ही जानता था कि उस चीज का आनंद कैसे लिया जाए, जिसका यहोवा द्वारा सृजित सभी चीजों के बीच आनंद लिया जा सकता है, किंतु पृथ्वी पर किस तरह का जीवन परमेश्वर के प्राणी के योग्य है, मनुष्य को इसका कोई आभास नहीं था। किसी के द्वारा निर्देशित किए बिना, किसी के द्वारा अपना व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन किए बिना, यह मानवजाति अपने लिए उपयुक्त जीवन उचित प्रकार से कभी न जी पाती, बल्कि केवल शैतान द्वारा गुप्त रूप से बंदी बना ली गई होती। यहोवा ने मानवजाति का सृजन किया, अर्थात्, उसने मानवजाति के पूर्वजों, हव्वा और आदम, का सृजन किया, किंतु उसने उन्हें और कोई बुद्धि या ज्ञान प्रदान नहीं किया। यद्यपि वे पहले से ही पृथ्वी पर रह रहे थे, किंतु वे समझते लगभग कुछ नहीं थे। और इसलिए, मानवजाति का सृजन करने का यहोवा का कार्य केवल आधा ही समाप्त हुआ था, पूरा नहीं। उसने केवल मिट्टी से मनुष्य का एक नमूना बनाया था और उसे अपनी साँस दे दी थी, किंतु परमेश्वर का सम्मान करने की पर्याप्त इच्छा प्रदान किए बिना। आरंभ में मनुष्य का मन परमेश्वर का सम्मान करने या उससे डरने का नहीं था। मनुष्य केवल इतना ही जानता था कि उसके वचनों को कैसे सुनना है, किंतु पृथ्वी पर जीवन के बुनियादी ज्ञान और मानव-जीवन के सामान्य नियमों से वह अनभिज्ञ था। और इसलिए, यद्यपि यहोवा ने पुरुष और स्त्री का सृजन किया और सात दिन की परियोजना पूरी कर दी, किंतु उसने किसी भी प्रकार से मनुष्य के सृजन को पूरा नहीं किया, क्योंकि मनुष्य केवल एक भूसा था, और उसमें मनुष्य होने की वास्तविकता का अभाव था। मनुष्य केवल इतना ही जानता था कि यह यहोवा है, जिसने मानवजाति का सृजन किया है, किंतु उसे इस बात का कोई आभास नहीं था कि यहोवा के वचनों और व्यवस्थाओं का पालन कैसे किया जाए। और इसलिए, मानवजाति के सृजन के बाद, यहोवा का कार्य अभी पूरी तरह से ख़त्म नहीं हुआ था। उसे अभी भी मनुष्यों को अपने सामने लाने के लिए उनका पूरी तरह से मार्गदर्शन करना था, ताकि वे धरती पर एक-साथ रहने और उसका सम्मान करने में समर्थ हो जाएँ, और ताकि वे उसके मार्गदर्शन से धरती पर एक सामान्य मानव-जीवन के सही रास्ते पर प्रवेश करने में समर्थ हो जाएँ। केवल इसी रूप में मुख्यतः यहोवा के नाम से संचालित कार्य पूरी तरह से संपन्न हुआ था; अर्थात्, केवल इसी रूप में दुनिया का सृजन करने का यहोवा का कार्य पूरी तरह से समाप्त हुआ था। और इसलिए, मानवजाति का सृजन करने के बाद उसे पृथ्वी पर हजारों वर्षों तक मानवजाति के जीवन का मार्गदर्शन करना पड़ा, ताकि मानवजाति उसके आदेशों और व्यवस्थाओं का पालन करने और पृथ्वी पर एक सामान्य मानव-जीवन की सभी गतिविधियों में

भाग ले पाने में समर्थ हो जाए। केवल तभी यहोवा का कार्य पूर्णतः पूरा हुआ था। उसने यह कार्य मानवजाति के सृजन के बाद आरंभ किया और याकूब के समय तक जारी रखा, जब उसने याकूब के बारह पुत्रों को इस्राएल के बारह कबीले बना दिया। उस समय से इस्राएल के सभी लोग ऐसी मानवजाति बन गए, जिसकी उसके द्वारा पृथ्वी पर आधिकारिक रूप से अगुआई की गई थी, और इस्राएल पृथ्वी पर ऐसा विशेष स्थान बन गया, जहाँ उसने अपना कार्य किया। यहोवा ने इन लोगों को ऐसे लोगों का पहला समूह बनाया, जिन पर उसने पृथ्वी पर आधिकारिक रूप से अपना कार्य किया, और जिनका उसने और भी बड़े कार्य की शुरुआत के रूप में उपयोग करते हुए इस्राएल की संपूर्ण भूमि को अपने कार्य का उद्गम-स्थल बनाया, ताकि पृथ्वी पर उससे उत्पन्न सभी लोग जान जाएँ कि उसका सम्मान कैसे करें और पृथ्वी पर कैसे जीएँ। और इसलिए, इस्राएलियों के कर्म अन्य जातियों के देशों द्वारा अनुसरण किए जाने के लिए एक उदाहरण बन गए, और इस्राएल के लोगों के बीच जो कहा गया था, वह अन्य जातियों के देशों के लोगों द्वारा सुने जाने वाले वचन बन गए। क्योंकि ये ही यहोवा की व्यवस्थाएँ और आदेश प्राप्त करने वाले प्रथम लोग थे, और इसलिए भी वे इस बात को जानने वाले प्रथम लोग थे कि कैसे यहोवा के मार्गों का सम्मान करें। वे मानवजाति के ऐसे पूर्वज थे, जो यहोवा के मार्गों को जानते थे, और साथ ही मानवजाति के यहोवा द्वारा चयनित प्रतिनिधि थे। जब अनुग्रह का युग आया, तो यहोवा ने आगे इस तरह से मनुष्य का मार्गदर्शन नहीं किया। मनुष्य ने पाप किया था और पाप करने के लिए स्वयं को उन्मुक्त कर दिया था, और इसलिए उसने मनुष्य को पाप से बचाना शुरू किया। इस तरह से उसने मनुष्य को तब तक धिक्कारा, जब तक कि मनुष्य को पाप से पूरी तरह से मुक्त नहीं कर दिया गया। अंत के दिनों में, मनुष्य इस हद तक चरित्रहीनता में डूब गया है कि इस चरण का कार्य केवल न्याय और ताड़ना के माध्यम से ही किया जा सकता है। केवल इसी तरह से कार्य संपन्न किया जा सकता है। यह कई युगों का कार्य रहा है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर युग को युग से विभाजित करने और उनके बीच संक्रमण करने के लिए अपने नाम, अपने कार्य और परमेश्वर की विभिन्न छवियों का उपयोग करता है; परमेश्वर का नाम और उसका कार्य उसके युग का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रत्येक युग में उसके कार्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान लो, प्रत्येक युग में परमेश्वर का कार्य हमेशा एक जैसा होता, और उसे हमेशा उसी नाम से बुलाया जाता, तो मनुष्य उसे कैसे जान पाता? परमेश्वर को यहोवा कहा जाना चाहिए, और यहोवा कहे जाने वाले परमेश्वर के अलावा, किसी अन्य नाम से पुकारा जाने वाला कोई अन्य व्यक्ति परमेश्वर नहीं है। या फिर परमेश्वर केवल यीशु हो सकता है, और यीशु

के नाम के अलावा उसे किसी अन्य नाम से नहीं बुलाया जा सकता; यीशु के अलावा, यहोवा परमेश्वर नहीं है, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी परमेश्वर नहीं है। मनुष्य मानता है कि यह सत्य है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, किंतु परमेश्वर तो परमेश्वर है जो मनुष्य के साथ है, और उसे यीशु कहा जाना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के साथ है। ऐसा करना सिद्धांत के अनुरूप होना है, और परमेश्वर को एक दायरे में सीमित करना है। इसलिए, हर युग में परमेश्वर जो कार्य करता है, उसे जिस नाम से बुलाया जाता है, और जिस छवि को वह अपनाता है—और हर चरण में आज तक जो भी कार्य वह करता है—वे किसी एक विनियम का पालन नहीं करते, और किसी भी तरह की बाध्यता के अधीन नहीं हैं। वह यहोवा है, किंतु वह यीशु भी है, और साथ ही मसीहा भी, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी। उसके नाम में अनुरूपी परिवर्तनों के साथ उसका कार्य क्रमिक रूपांतरण से गुज़र सकता है। कोई अकेला नाम पूरी तरह से उसका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, किंतु वे सभी नाम जिनसे उसे बुलाया जाता है, उसका प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हैं, और जो कार्य वह हर युग में करता है, वह उसके स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है। मान लो, अंत के दिन आने पर जिस परमेश्वर को तुम देखो, वह अभी भी यीशु हो, और इतना ही नहीं, वह एक सफेद बादल पर सवारी कर रहा हो, और अभी भी उसका रूप-रंग यीशु का हो, और जो वचन वह बोले, वे अभी भी यीशु के वचन हों : "तुम लोगों को अपने पड़ोसी से उसी तरह प्यार करना चाहिए जिस तरह तुम स्वयं से करते हो, तुम्हें उपवास और प्रार्थना करनी चाहिए, अपने दुश्मनों से उसी तरह से प्यार करो जैसे तुम अपनी स्वयं की जिंदगी से प्यार करते हो, दूसरों के साथ सहनशीलता बरतो, और धैर्यवान और विनम्र बनो। मेरे शिष्य बन सकने से पहले तुम लोगों को ये सब चीज़ें करनी चाहिए। और ये सब चीज़ें करके तुम लोग मेरे राज्य में प्रवेश कर सकते हो।" क्या यह अनुग्रह के युग के कार्य से संबंधित नहीं होगा? क्या जो वह कहता है, वह अनुग्रह के युग का तरीका नहीं होगा? यदि तुम लोग ये वचन सुनते, तो तुम्हें कैसा लगता? क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि यह अभी भी यीशु का कार्य है? क्या यह उसका दोहराव न होता? क्या मनुष्य को इसमें आनंद मिल सकता है? तुम लोगों को लगेगा कि परमेश्वर का कार्य केवल वैसा ही रह सकता है जैसा वह अब है, और वह आगे नहीं बढ़ सकता। उसके पास केवल इतना ही सामर्थ्य है, और अब करने के लिए कोई नया कार्य नहीं है, और वह अपने सामर्थ्य को उसकी सीमाओं तक ले गया है। आज से दो हज़ार वर्ष पहले अनुग्रह का युग था, और दो हजार वर्ष बाद वह अभी भी अनुग्रह के युग के मार्ग का उपदेश दे रहा है, और अभी भी लोगों से पश्चात्ताप करवा रहा है। लोग कहेंगे, "परमेश्वर, तेरे पास

केवल इतना ही सामर्थ्य है। मैं तुझे बहुत बुद्धिमान मानता था, लेकिन तू केवल सहनशीलता जानता है और केवल धैर्य से ही संबंध रखता है। तू केवल यह जानता है कि अपने दुश्मन से कैसे प्यार करें, और इससे अधिक कुछ नहीं जानता।" मनुष्य के मन में परमेश्वर हमेशा वैसा ही होगा, जैसा कि वह अनुग्रह के युग में था, और मनुष्य हमेशा विश्वास करेगा कि परमेश्वर प्रेममय और करुणामय है। क्या तुम्हें लगता है कि परमेश्वर का कार्य हमेशा उसी पुरानी ज़मीन पर चलेगा? और इसलिए, उसके कार्य के इस चरण में उसे सलीब पर नहीं चढ़ाया जाएगा, और वह हर चीज़ जो तुम लोग देखते और छूते हो, उस किसी चीज के समान नहीं होगी, जिसके बारे में तुमने कल्पना की है या किसी को कहते सुना है। आज परमेश्वर फ़रीसियों के साथ नहीं जुड़ता, न ही वह दुनिया को जानने देता है, और जो उसे जानते हैं वे केवल तुम लोग हो, जो उसका अनुसरण करते हैं, क्योंकि उसे फिर से सलीब पर नहीं चढ़ाया जाएगा। अनुग्रह के युग के दौरान, यीशु ने अपने सुसमाचार के कार्य के वास्ते पूरे देश में खुले तौर पर उपदेश दिया। वह सलीब पर चढ़ने के कार्य के वास्ते फरीसियों से जुड़ा; यदि वह फरीसियों से नहीं जुड़ा होता और सत्ताधारियों ने उसे कभी न जाना होता, तो कैसे उसकी निंदा की जा सकती थी, और फिर कैसे उसके साथ विश्वासघात किया जा सकता था और उसे सलीब पर चढ़ाया जा सकता था? और इसलिए, वह सलीब पर चढ़ने के वास्ते फरीसियों से जुड़ा। आज प्रलोभन से बचने के लिए वह गुप्त रूप से अपना कार्य करता है। परमेश्वर के दो देहधारणों में, कार्य और अर्थ भिन्न हैं, और समायोजन भी भिन्न है, इसलिए जो कार्य वह करता है, वह पूरी तरह से एक जैसा कैसे हो सकता है?

क्या यीशु का नाम—"परमेश्वर हमारे साथ"—परमेश्वर के स्वभाव को उसकी समग्रता से व्यक्त करता है? क्या यह पूरी तरह से परमेश्वर को स्पष्ट कर सकता है? यदि मनुष्य कहता है कि परमेश्वर को केवल यीशु कहा जा सकता है, और उसका कोई अन्य नाम नहीं हो सकता क्योंकि परमेश्वर अपना स्वभाव नहीं बदल सकता, तो ऐसे वचन वास्तव में ईशनिंदा हैं! क्या तुम मानते हो कि यीशु, हमारे साथ परमेश्वर, का नाम अकेले परमेश्वर का उसकी समग्रता में प्रतिनिधित्व कर सकता है? परमेश्वर को कई नामों से बुलाया जा सकता है, किंतु इन नामों में से एक भी ऐसा नहीं है, जो परमेश्वर का सब-कुछ समाहित कर सकता हो, एक भी ऐसा नहीं है जो परमेश्वर का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकता हो। और इसलिए, परमेश्वर के कई नाम हैं, किंतु ये कई नाम परमेश्वर के स्वभाव को पूरी तरह से स्पष्ट नहीं कर सकते, क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव इतना समृद्ध है कि वह बस मनुष्य के जानने की सीमा से बढ़कर है। मनुष्य की भाषा का

उपयोग करके परमेश्वर को पूरी तरह से समाहित करने का मनुष्य के पास कोई तरीका नहीं है। मनुष्य परमेश्वर के स्वभाव के बारे में जो कुछ जानता है, उस सबको समाहित करने के लिए उसके पास सीमित शब्दावली है : महान, आदरणीय, अद्भुत, अथाह, सर्वोच्च, पवित्र, धार्मिक, बुद्धिमान इत्यादि। इतने-से शब्द! इतनी सीमित शब्दावली उस थोड़े-से का भी वर्णन करने में असमर्थ है, जो मनुष्य ने परमेश्वर के स्वभाव के बारे में देखा है। समय के साथ कई अन्य लोगों ने ऐसे शब्दों को जोड़ा, जिनके बारे में उन्हें लगता था कि वे उनके हृदय के उत्साह का बेहतर ढंग से वर्णन करने में समर्थ हैं : परमेश्वर इतना महान है! परमेश्वर इतना पवित्र है! परमेश्वर इतना प्यारा है! आज, मनुष्य की ऐसी उक्तियाँ अपने चरम पर पहुँच गई हैं, फिर भी मनुष्य अभी भी स्वयं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में असमर्थ है। और इसलिए, मनुष्य के लिए परमेश्वर के कई नाम हैं, मगर उसका कोई एक नाम नहीं है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का अस्तित्व इतना प्रचुर है, और मनुष्य की भाषा इतनी दरिद्र है। किसी एक विशेष शब्द या नाम में परमेश्वर का उसकी समग्रता में प्रतिनिधित्व करने की क्षमता नहीं है, तो क्या तुमको लगता है कि उसका नाम नियत किया जा सकता है? परमेश्वर इतना महान और इतना पवित्र है, फिर भी तुम उसे हर नए युग में अपना नाम नहीं बदलने दोगे? इसलिए, हर युग में, जिसमें परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करता है, वह उस कार्य को समाहित करने के लिए, जिसे करने का वह इरादा रखता है, एक ऐसे नाम का उपयोग करता है, जो उस युग के अनुकूल होता है। वह अस्थायी महत्व वाले इस विशेष नाम का उपयोग उस युग के अपने स्वभाव का प्रतिनिधित्व करने के लिए करता है। यह परमेश्वर अपने स्वभाव को व्यक्त करने के लिए मनुष्य की भाषा का उपयोग करता है। फिर भी बहुत-से लोग, जिन्हें आध्यात्मिक अनुभव हो चुके हैं और जिन्होंने परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से देखा है, अभी भी महसूस करते हैं कि यह एक विशेष नाम परमेश्वर का उसकी समग्रता में प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ है—आह, इसमें कुछ नहीं किया जा सकता—इसलिए मनुष्य अब परमेश्वर को किसी नाम से नहीं बुलाता, बल्कि उसे केवल "परमेश्वर" कहता है। यह ऐसा है, मानो मनुष्य का हृदय प्रेम से भरा हो, लेकिन वह विरोधाभासों से भी घिरा हो, क्योंकि मनुष्य नहीं जानता कि परमेश्वर की व्याख्या कैसे की जाए। परमेश्वर जो है, वह इतना प्रचुर है कि उसके वर्णन का कोई तरीका है ही नहीं। ऐसा कोई अकेला नाम नहीं है, जो परमेश्वर के स्वभाव का ख़ुलासा कर सकता हो, और ऐसा कोई अकेला नाम नहीं है, जो परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन कर सकता हो। यदि कोई मुझसे पूछे, "तुम ठीक-ठीक किस नाम का उपयोग करते हो?" तो मैं उनसे कहूँगा, "परमेश्वर तो परमेश्वर है!" क्या

यह परमेश्वर के लिए सर्वोत्तम नाम नहीं है? क्या यह परमेश्वर के स्वभाव का सर्वोत्तम संपुटीकरण नहीं है? ऐसा होने पर, क्यों तुम लोग परमेश्वर के नाम की तलाश में इतना प्रयास लगाते हो? क्यों तुम्हें बिना खाए और सोए, सिर्फ एक नाम के वास्ते अपना दिमाग़ चलाना चाहिए? एक दिन आएगा, जब परमेश्वर यहोवा, यीशु या मसीहा नहीं कहलाएगा—वह केवल सृष्टिकर्ता होगा। उस समय वे सभी नाम, जो उसने पृथ्वी पर धारण किए हैं, समाप्त हो जाएँगे, क्योंकि पृथ्वी पर उसका कार्य समाप्त हो गया होगा, जिसके बाद उसका कोई नाम नहीं होगा। जब सभी चीजें सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व के अधीन आती हैं, तो उसे किसी अत्यधिक उपयुक्त फिर भी अपूर्ण नाम की क्या आवश्यकता है? क्या तुम अभी भी परमेश्वर के नाम की तलाश कर रहे हो? क्या तुम अभी भी कहने का साहस करते हो कि परमेश्वर को केवल यहोवा ही कहा जा सकता है? क्या तुम अभी भी कहने का साहस करते हो कि परमेश्वर को केवल यीशु कहा जा सकता है? क्या तुम परमेश्वर के विरुद्ध ईशनिंदा का पाप सहन करने में समर्थ हो? तुम्हें पता होना चाहिए कि मूल रूप से परमेश्वर का कोई नाम नहीं था। उसने केवल एक या दो या कई नाम धारण किए, क्योंकि उसके पास करने के लिए कार्य था और उसे मानवजाति का प्रबंधन करना था। चाहे उसे किसी भी नाम से बुलाया जाए—क्या उसने स्वयं उसे स्वतंत्र रूप से नहीं चुना? क्या इसे तय करने के लिए उसे तुम्हारी—एक प्राणी की—आवश्यकता होगी? जिस नाम से परमेश्वर को बुलाया जाता है, वह ऐसा नाम होता है, जिसके अनुसार मनुष्य मानवजाति की भाषा के साथ उसे समझने में समर्थ होता है, किंतु यह नाम कुछ ऐसा नहीं है, जिसे मनुष्य समेट सकता हो। तुम केवल इतना ही कह सकते हो कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है, कि वह परमेश्वर कहलाता है, कि वह महान सामर्थ्य वाला स्वयं परमेश्वर है, जो इतना बुद्धिमान, इतना उच्च, इतना अद्भुत, इतना रहस्यमय, इतना सर्वशक्तिमान है, और फिर तुम इससे अधिक कुछ नहीं कह सकते; तुम बस इतना जरा-सा ही जान सकते हो। ऐसा होने पर, क्या मात्र यीशु का नाम ही स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकता है? जब अंत के दिन आते हैं, भले ही यह अभी भी परमेश्वर ही है जो अपना कार्य करता है, फिर भी उसके नाम को बदलना ही है, क्योंकि यह एक भिन्न युग है।

परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड और ऊपर के राज्य में महानतम है, तो क्या वह देह की छवि का उपयोग करके स्वयं को पूरी तरह से समझा सकता है? परमेश्वर अपने कार्य के एक चरण को करने के लिए देह के वस्त्र पहनता है। देह की इस छवि का कोई विशेष अर्थ नहीं है, यह युगों के गुज़रने से कोई संबंध नहीं रखती, और न ही इसका परमेश्वर के स्वभाव से कुछ लेना-देना है। यीशु ने अपनी छवि को क्यों नहीं बना रहने

दिया? क्यों उसने मनुष्य को अपनी छवि चित्रित नहीं करने दी, ताकि उसे बाद की पीढ़ियों को सौंपा जा सकता? क्यों उसने लोगों को यह स्वीकार नहीं करने दिया कि उसकी छवि परमेश्वर की छवि है? यद्यपि मनुष्य की छवि परमेश्वर की छवि में बनाई गई थी, किंतु फिर भी क्या मनुष्य की छवि के लिए परमेश्वर की उत्कृष्ट छवि का प्रतिनिधित्व करना संभव रहा होता? जब परमेश्वर देहधारी होता है, तो वह स्वर्ग से मात्र एक विशेष देह में अवरोहण करता है। यह उसका आत्मा है, जो देह में अवरोहण करता है, जिसके माध्यम से वह पवित्रात्मा का कार्य करता है। यह पवित्रात्मा ही है जो देह में व्यक्त होता है, और यह पवित्रात्मा ही है जो देह में अपना कार्य करता है। देह में किया गया कार्य पूरी तरह से पवित्रात्मा का प्रतिनिधित्व करता है, और देह कार्य के वास्ते होता है, किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि देह की छवि स्वयं परमेश्वर की वास्तविक छवि का स्थानापन्न होती है; परमेश्वर के देह बनने का उद्देश्य और अर्थ यह नहीं है। वह केवल इसलिए देहधारी बनता है, ताकि पवित्रात्मा को रहने के लिए ऐसी जगह मिल सके, जो उसकी कार्य-प्रणाली के लिए उपयुक्त हो, जिससे देह में उसका कार्य बेहतर ढंग से हो सके, ताकि लोग उसके कर्म देख सकें, उसका स्वभाव समझ सकें, उसके वचन सुन सकें, और उसके कार्य का चमत्कार जान सकें। उसका नाम उसके स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है, उसका कार्य उसकी पहचान का प्रतिनिधित्व करता है, किंतु उसने कभी नहीं कहा है कि देह में उसका प्रकटन उसकी छवि का प्रतिनिधित्व करता है; यह केवल मनुष्य की एक धारणा है। और इसलिए, परमेश्वर के देहधारण के मुख्य पहलू उसका नाम, उसका कार्य, उसका स्वभाव और उसका लिंग हैं। इस युग में उसके प्रबंधन का प्रतिनिधित्व करने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। केवल उस समय के उसके कार्य के वास्ते होने से, देह में उसके प्रकटन का उसके प्रबंधन से कोई संबंध नहीं है। फिर भी, देहधारी परमेश्वर के लिए कोई विशेष छवि नहीं रखना असंभव है, और इसलिए वह अपनी छवि निश्चित करने के लिए उपयुक्त परिवार चुनता है। यदि परमेश्वर के प्रकटन का प्रातिनिधिक अर्थ होता, तो उसके चेहरे जैसी विशेषताओं से संपन्न सभी व्यक्ति भी परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते। क्या यह एक गंभीर त्रुटि नहीं होती? यीशु का चित्र मनुष्य द्वारा चित्रित किया गया था, ताकि मनुष्य उसकी आराधना कर सके। उस समय पवित्रात्मा ने कोई विशेष निर्देश नहीं दिए, और इसलिए मनुष्य ने आज तक उस कल्पित चित्र को आगे बढ़ाया। वास्तव में, परमेश्वर के मूल इरादे के अनुसार, मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह केवल मनुष्य का उत्साह है, जिसके कारण आज तक यीशु का चित्र बचा रहा है। परमेश्वर पवित्रात्मा है, और अंतिम विश्लेषण में उसकी छवि कैसी है, इसे रेखांकित करने में मनुष्य कभी

सक्षम नहीं होगा। उसकी छवि का केवल उसके स्वभाव द्वारा ही प्रतिनिधित्व किया जा सकता है। जहाँ तक उसकी नाक, उसके मुँह, उसकी आँखों और उसके बालों के रूप-रंग की बात है, इन्हें रेखांकित करना तुम्हारी क्षमता से परे है। जब यूहन्ना पर प्रकाशन आया, तो उसने मनुष्य के पुत्र की छवि देखी : उसके मुँह से एक तेज दो-धारी तलवार निकल रही थी, उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं, उसका सिर और बाल श्वेत ऊन के समान उज्ज्वल थे, उसके पाँव चमकाए गए काँसे के समान थे, और उसकी छाती के चारों ओर सोने का पटुका बँधा हुआ था। यद्यपि उसके वचन बहुत जीवंत थे, किंतु उसने परमेश्वर की जिस छवि का वर्णन किया, वह किसी सृजित प्राणी की छवि नहीं थी। उसने जो देखा, वह मात्र एक झलक थी, भौतिक जगत में से किसी व्यक्ति की छवि नहीं थी। यूहन्ना ने एक झलक देखी थी, किंतु उसने परमेश्वर की वास्तविक छवि नहीं देखी थी। देहधारी परमेश्वर के देह की छवि एक सृजित प्राणी की छवि होने से परमेश्वर के स्वभाव का समग्रता से प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ है। जब यहोवा ने मानवजाति का सृजन किया, तो उसने कहा कि उसने ऐसा अपनी छवि में किया और नर और मादा का सृजन किया। उस समय, उसने कहा कि उसने नर और मादा को परमेश्वर की छवि में बनाया। यद्यपि मनुष्य की छवि परमेश्वर की छवि से मिलती-जुलती है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता कि मनुष्य की छवि परमेश्वर की छवि है। न ही तुम परमेश्वर की छवि को पूरी तरह से साकार करने के लिए मनुष्य की भाषा का उपयोग कर सकते हो, क्योंकि परमेश्वर इतना उत्कृष्ट, इतना महान, इतना अद्‌भुत और अथाह है!

जब यीशु अपना कार्य करने के लिए आया, तो यह पवित्र आत्मा के निर्देशन के तहत था; उसने उस तरह किया, जिस तरह पवित्र आत्मा चाहता था, न कि पुराने विधान के व्यवस्था के युग के अनुसार या यहोवा के कार्य के अनुसार। यद्यपि यीशु जिस कार्य को करने के लिए आया था, वह यहोवा की व्यवस्थाओं या यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना नहीं था, फिर भी उनका स्रोत एक ही था। जो कार्य यीशु ने किया, उसने यीशु के नाम का प्रतिनिधित्व किया, और उसने अनुग्रह के युग का प्रतिनिधित्व किया; जहाँ तक यहोवा द्वारा किए गए कार्य की बात है, उसने यहोवा का प्रतिनिधित्व किया, और उसने व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व किया। उनका कार्य दो भिन्न-भिन्न युगों में एक ही पवित्रात्मा का कार्य था। जो कार्य यीशु ने किया, वह केवल अनुग्रह के युग का प्रतिनिधित्व कर सकता था, और जो कार्य यहोवा ने किया, वह केवल पुराने विधान के व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व कर सकता था। यहोवा ने केवल इस्राएल और मिस्र के लोगों का, और इस्राएल से परे सभी राष्ट्रों का मार्गदर्शन किया। नए विधान के अनुग्रह के युग में यीशु का

कार्य यीशु के नाम से परमेश्वर का कार्य था, क्योंकि उसने युग का मार्गदर्शन किया था। यदि तुम कहो कि यीशु का कार्य यहोवा के कार्य पर आधारित था, कि उसने कोई नया कार्य आरंभ नहीं किया, और कि उसने जो कुछ भी किया, वह यहोवा के वचनों के अनुसार, यहोवा के कार्य और यशायाह की भविष्यवाणियों के अनुसार था, तो यीशु देहधारी बना परमेश्वर नहीं होता। यदि उसने अपना कार्य इस तरह से किया होता, तो वह व्यवस्था के युग का एक प्रेरित या कार्यकर्ता रहा होता। यदि ऐसा ही होता, जैसा तुम कहते हो, तो यीशु एक युग का सूत्रपात नहीं कर सकता था, न ही वह कोई अन्य कार्य कर सकता था। इसी तरह से, पवित्र आत्मा को मुख्य रूप से अपना कार्य यहोवा के माध्यम से करना चाहिए, और यहोवा के माध्यम के अलावा, पवित्र आत्मा कोई नया कार्य नहीं कर सकता था। मनुष्य का यीशु के कार्य को इस तरह से समझना ग़लत है। यदि मनुष्य मानता है कि यीशु द्वारा किया गया कार्य यहोवा के वचनों और यशायाह की भविष्यवाणियों के अनुसार था, तो क्या यीशु देहधारी परमेश्वर था, या वह नबियों में से कोई एक था? इस दृष्टिकोण के अनुसार, कोई अनुग्रह का युग न होता, और यीशु देहधारी परमेश्वर न होता, क्योंकि उसने जो कार्य किया, वह अनुग्रह के युग का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था और केवल पुराने विधान के व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व कर सकता था। केवल एक नया युग ही हो सकता था, जब यीशु नया कार्य करने, नए युग का सूत्रपात करने, इस्राएल में पहले किए गए कार्य को भंग करने, और अपना कार्य यहोवा द्वारा इस्राएल में किए गए कार्य के अनुसार या उसके पुराने नियमों के अनुसार या किन्हीं विनियमों के अनुरूप संचालित करने के लिए नहीं, बल्कि उस नए कार्य को करने के लिए आया था, जो उसे करना चाहिए था। स्वयं परमेश्वर युग का सूत्रपात करने के लिए आता है, और स्वयं परमेश्वर युग का अंत करने के लिए आता है। युग का आरंभ और युग का समापन करने का कार्य करने में मनुष्य असमर्थ है। यदि आने के बाद यीशु यहोवा का कार्य समाप्त नहीं करता, तो यह इस बात का सबूत होता कि वह मात्र एक मनुष्य है और परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ है। ठीक इसलिए, क्योंकि यीशु आया और उसने यहोवा के कार्य का समापन किया, यहोवा के कार्य को जारी रखा और, इसके अलावा, उसने अपना स्वयं का कार्य, एक नया कार्य किया, इससे साबित होता है कि यह एक नया युग था, और कि यीशु स्वयं परमेश्वर था। उन्होंने कार्य के स्पष्ट रूप से भिन्न दो चरण पूरे किए। एक चरण मंदिर में कार्यान्वित किया गया, और दूसरा मंदिर के बाहर संचालित किया गया। एक चरण व्यवस्था के अनुसार मनुष्य के जीवन की अगुआई करना था, और दूसरा, पापबलि चढ़ना था। कार्य के ये दो चरण स्पष्ट रूप से भिन्न थे;

यह नए युग को पुराने से विभाजित करता है, और यह कहना पूर्णतः सही है कि ये दो भिन्न युग हैं! उनके कार्य का स्थान भिन्न था, उनके कार्य की विषय-वस्तु भिन्न थी, और उनके कार्य का उद्देश्य भिन्न था। इस तरह उन्हें दो युगों में विभाजित किया जा सकता है : नए और पुराने विधानों में, अर्थात् नए और पुराने युगों में। जब यीशु आया, तो वह मंदिर में नहीं गया, जिससे साबित होता है कि यहोवा का युग समाप्त हो गया था। उसने मंदिर में प्रवेश नहीं किया, क्योंकि मंदिर में यहोवा का कार्य पूरा हो गया था, और उसे फिर से करने की आवश्यकता नहीं थी, और उसे पुनः करना उसे दोहराना होता। केवल मंदिर को छोड़ने, एक नया कार्य शुरू करने और मंदिर के बाहर एक नए मार्ग का सूत्रपात करके ही वह परमेश्वर के कार्य को उसके शिखर पर पहुँचा सकता था। यदि वह अपना कार्य करने के लिए मंदिर से बाहर नहीं गया होता, तो परमेश्वर का कार्य मंदिर की बुनियाद पर रुक गया होता, और फिर कभी कोई नए परिवर्तन नहीं होते। और इसलिए, जब यीशु आया तो उसने मंदिर में प्रवेश नहीं किया, और अपना कार्य मंदिर में नहीं किया। उसने अपना कार्य मंदिर से बाहर किया, और शिष्यों की अगुआई करते हुए स्वतंत्र रूप से अपना कार्य किया। अपना कार्य करने के लिए मंदिर से परमेश्वर के प्रस्थान का अर्थ था कि परमेश्वर की एक नई योजना है। उसका कार्य मंदिर के बाहर कार्यान्वित किया जाना था, और इसे नया कार्य होना था, जो अपने कार्यान्वयन के तरीके में अप्रतिबंधित था। जैसे ही यीशु आया, उसने पुराने विधान के युग के दौरान यहोवा के कार्य को समाप्त किया। यद्यपि उन्हें दो भिन्न-भिन्न नामों से बुलाया गया, फिर भी यह एक ही पवित्रात्मा था, जिसने कार्य के दोनों चरण संपन्न किए, और जो कार्य किया जाना था, वह सतत था। चूँकि नाम भिन्न था, और कार्य की विषय-वस्तु भिन्न थी, इसलिए युग भिन्न था। जब यहोवा आया, तो वह यहोवा का युग था, और जब यीशु आया, तो वह यीशु का युग था। और इसलिए, हर आगमन के साथ परमेश्वर को एक नाम से बुलाया जाता है, वह एक युग का प्रतिनिधित्व करता है, और वह एक नए मार्ग का सूत्रपात करता है; और हर नए मार्ग पर वह एक नया नाम अपनाता है, जो दर्शाता है कि परमेश्वर हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता, और कि उसका कार्य आगे की दिशा में प्रगति करने से कभी नहीं रुकता। इतिहास हमेशा आगे बढ़ रहा है, और परमेश्वर का कार्य हमेशा आगे बढ़ रहा है। उसकी छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना को अंत तक पहुँचने के लिए उसे आगे की दिशा में प्रगति करते रहना चाहिए। हर दिन उसे नया कार्य करना चाहिए, हर वर्ष उसे नया कार्य करना चाहिए; उसे नए मार्गों का सूत्रपात करना चाहिए, नए युगों का सूत्रपात करना चाहिए, नया और अधिक बड़ा कार्य आरंभ करना चाहिए, और इनके साथ, नए

नाम और नया कार्य लाना चाहिए। क्षण-प्रतिक्षण परमेश्वर का आत्मा नया कार्य कर रहा है, कभी भी पुराने तरीकों या नियमों से चिपका नहीं रहता। न ही उसका कार्य कभी रुका है, बल्कि हर गुज़रते पल के साथ घटित होता रहता है। यदि तुम कहते हो कि पवित्र आत्मा का कार्य अपरिवर्तनशील है, तो फिर क्यों यहोवा ने तो याजकों को मंदिर में अपनी सेवा करने के लिए कहा, जबकि यीशु ने मंदिर में प्रवेश नहीं किया—बावजूद इस तथ्य के, कि जब वह आया, तो लोगों ने यह भी कहा कि वह महायाजक है, और कि वह दाऊद के घर का है और महायाजक और महान राजा भी है? और उसने बलियाँ क्यों नहीं चढ़ाईं? मंदिर में प्रवेश करना या नहीं करना—क्या यह सब स्वयं परमेश्वर का कार्य नहीं है? यदि, जैसा कि मनुष्य कल्पना करता है, यीशु पुनः आएगा और अंत के दिनों में तब भी यीशु कहलाएगा, और तब भी एक सफेद बादल पर यीशु की छवि में मनुष्यों के बीच अवरोहण करेगा : तो क्या यह उसके कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होगी? क्या पवित्र आत्मा पुराने से चिपके रहने में ही सक्षम है? मनुष्य जो कुछ भी मानता है, वे धारणाएँ हैं, और जो कुछ भी मनुष्य समझता है, वह शाब्दिक अर्थ के अनुसार है, और साथ ही उसकी कल्पना के अनुसार है; वे पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांतों के प्रतिकूल हैं, और परमेश्वर के इरादों के अनुरूप नहीं हैं। परमेश्वर उस तरह से कार्य नहीं करेगा; परमेश्वर इतना नासमझ और मूर्ख नहीं है, और उसका कार्य इतना सरल नहीं है जितना कि तुम कल्पना करते हो। मनुष्य जो भी कल्पना करता है, उसके आधार पर, यीशु एक बादल पर सवार होकर आएगा और तुम लोगों के बीच उतरेगा। तुम लोग उसे देखोगे, जो एक बादल पर सवारी करते हुए तुम लोगों को बताएगा कि वह यीशु है। तुम लोग उसके हाथों में कीलों के निशान भी देखोगे, और उसे यीशु के रूप में जानोगे। और वह तुम लोगों को फिर से बचाएगा, और तुम लोगों का शक्तिशाली परमेश्वर होगा। वह तुम लोगों को बचाएगा, तुम लोगों को एक नया नाम प्रदान करेगा, और तुम लोगों में से प्रत्येक को एक सफ़ेद पत्थर देगा, जिसके बाद तुम लोगों को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने दिया जाएगा और स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत किया जाएगा। क्या इस तरह के विश्वास मनुष्य की धारणाएँ नहीं हैं? क्या परमेश्वर मनुष्य की धारणाओं के अनुसार कार्य करता है, या क्या वह मनुष्य की धारणाओं के विपरीत कार्य करता है? क्या मनुष्य की सभी धारणाएँ शैतान से नहीं आतीं? क्या मनुष्य का सब-कुछ शैतान द्वारा भ्रष्ट नहीं किया गया है? यदि परमेश्वर मनुष्य की धारणाओं के अनुसार अपना कार्य करता, तो क्या वह शैतान नहीं बन गया होता? क्या वह उसी प्रकार का नहीं होता, जैसे उसके सृजन हैं? चूँकि उसके सृजन अब शैतान द्वारा इतने भ्रष्ट कर दिए गए हैं कि मनुष्य शैतान का मूर्त रूप बन गया है,

इसलिए यदि परमेश्वर शैतान की चीज़ों के अनुसार कार्य करता, तो क्या वह शैतान के साथ मिला हुआ नहीं होता? मनुष्य परमेश्वर के कार्य की थाह कैसे पा सकता है? इसलिए, परमेश्वर कभी मनुष्य की धारणाओं के अनुसार कार्य नहीं करेगा, और कभी उस तरह से कार्य नहीं करेगा, जैसी तुम कल्पना करते हो। ऐसे लोग भी हैं, जो कहते हैं कि स्वयं परमेश्वर ने कहा था कि वह एक बादल पर आएगा। यह सच है कि परमेश्वर ने स्वयं ऐसा कहा था, पर क्या तुम नहीं जानते कि कोई मनुष्य परमेश्वर के रहस्यों की थाह नहीं पा सकता? क्या तुम नहीं जानते कि कोई मनुष्य परमेश्वर के वचनों की व्याख्या नहीं कर सकता? क्या तुम, बिना लेशमात्र संदेह के, निश्चित हो कि तुम्हें पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध और रोशन कर दिया गया था? निश्चित रूप से ऐसा नहीं था कि पवित्र आत्मा ने तुम्हें इतने प्रत्यक्ष तरीके से दिखाया था। क्या वह पवित्र आत्मा था, जिसने तुम्हें निर्देश दिए थे, या तुम्हारी स्वयं की धारणाओं ने तुम्हें ऐसा सोचने के लिए प्रेरित किया? तुमने कहा, "यह स्वयं परमेश्वर द्वारा कहा गया था।" किंतु हम परमेश्वर के वचनों को मापने के लिए अपनी धारणाओं और मन का उपयोग नहीं कर सकते। जहाँ तक यशायाह के वचनों की बात है, क्या तुम पूरी निश्चितता के साथ उसके वचनों की व्याख्या कर सकते हो? क्या तुम उसके वचनों की व्याख्या करने का साहस करते हो? चूँकि तुम यशायाह के वचनों की व्याख्या करने का साहस नहीं करते, तो तुम यीशु के वचनों की व्याख्या करने का साहस क्यों करते हो? कौन अधिक उत्कृष्ट है, यीशु अथवा यशायाह? चूँकि उत्तर यीशु है, तो तुम यीशु द्वारा बोले गए वचनों की व्याख्या क्यों करते हो? क्या परमेश्वर अपने कार्य के बारे में तुम्हें अग्रिम रूप से बताएगा? कोई एक प्राणी भी नहीं जान सकता, यहाँ तक कि स्वर्ग के दूत भी नहीं, और न ही मनुष्य का पुत्र जान सकता है, तो तुम कैसे जान सकते हो? मनुष्य में बहुत कमी है। अभी तुम लोगों के लिए जो महत्वपूर्ण है, वह है कार्य के तीन चरणों को जानना। यहोवा के कार्य से लेकर यीशु के कार्य तक, और यीशु के कार्य से लेकर इस वर्तमान चरण तक, ये तीन चरण परमेश्वर के प्रबंधन के पूर्ण विस्तार को एक सतत सूत्र में पिरोते हैं, और वे सब एक ही पवित्रात्मा का कार्य हैं। दुनिया के सृजन से परमेश्वर हमेशा मानवजाति का प्रबंधन करता आ रहा है। वही आरंभ और अंत है, वही प्रथम और अंतिम है, और वही एक है जो युग का आरंभ करता है और वही एक है जो युग का अंत करता है। विभिन्न युगों और विभिन्न स्थानों में कार्य के तीन चरण अचूक रूप में एक ही पवित्रात्मा का कार्य हैं। इन तीन चरणों को पृथक करने वाले सभी लोग परमेश्वर के विरोध में खड़े हैं। अब तुम्हारे लिए यह समझना उचित है कि प्रथम चरण से लेकर आज तक का समस्त कार्य एक ही परमेश्वर का कार्य है, एक ही पवित्रात्मा का कार्य है। इस

बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता।

बाइबल के विषय में (1)

परमेश्वर में विश्वास करते हुए बाइबल को कैसे समझना चाहिए? यह एक सैद्धांतिक प्रश्न है। हम इस प्रश्न पर संवाद क्यों कर रहे हैं? क्योंकि भविष्य में तुम सुसमाचार को फैलाओगे और राज्य के युग के कार्य का विस्तार करोगे, और आज मात्र परमेश्वर के कार्य के बारे में बात करने में सक्षम होना ही काफी नहीं है। उसके कार्य का विस्तार करने के लिए, यह अधिक महत्वपूर्ण है कि तुम, लोगों की पुरानी धार्मिक धारणाओं और विश्वास के पुराने साधनों का समाधान करने में सक्षम बनो, और उन्हें पूरी तरह से आश्वस्त करके छोड़ो—और उस स्थिति में आने के लिए बाइबल से वास्ता पड़ता है। बहुत सालों से, लोगों के विश्वास (दुनिया के तीन मुख्य धर्मों में से एक, मसीहियत) का परंपरागत साधन बाइबल पढ़ना ही रहा है; बाइबल से दूर जाना प्रभु में विश्वास करना नहीं है, बाइबल से दूर जाना एक पाखंड और विधर्म है, और यहाँ तक कि जब लोग अन्य पुस्तकें पढ़ते हैं, तो उन पुस्तकों की बुनियाद भी बाइबल की व्याख्या ही होनी चाहिए। कहने का अर्थ है कि, यदि तुम प्रभु में विश्वास करते हो तो तुम्हें बाइबल अवश्य पढ़नी चाहिए, और बाइबल के अलावा तुम्हें ऐसी किसी अन्य पुस्तक की आराधना नहीं करनी चाहिए, जिस में बाइबल शामिल न हो। यदि तुम करते हो, तो तुम परमेश्वर के साथ विश्वासघात कर रहे हो। बाइबल के समय से प्रभु में लोगों का विश्वास, बाइबल में विश्वास रहा है। यह कहने के बजाय कि लोग प्रभु में विश्वास करते हैं, यह कहना बेहतर है कि वे बाइबल में विश्वास करते हैं; यह कहने के बजाय कि उन्होंने बाइबल पढ़नी आरंभ कर दी है, यह कहना बेहतर है कि उन्होंने बाइबल पर विश्वास करना आरंभ कर दिया है; और यह कहने के बजाय कि वे प्रभु के सामने लौट आए हैं, यह कहना बेहतर होगा कि वे बाइबल के सामने लौट आए हैं। इस तरह से, लोग बाइबल की आराधना ऐसे करते हैं मानो वह परमेश्वर हो, मानो वह उनका जीवन-रक्त हो और उसे खोना अपने जीवन को खोने के समान हो। लोग बाइबल को परमेश्वर जितना ही ऊँचा समझते हैं, और यहाँ तक कि कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो उसे परमेश्वर से भी ऊँचा समझते हैं। यदि लोगों के पास पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है, यदि वे परमेश्वर को महसूस नहीं कर सकते, तो वे जीते रह सकते हैं—परंतु जैसे ही वे बाइबल को खो देते हैं, या बाइबल के प्रसिद्ध अध्याय और उक्तियाँ खो देते हैं, तो यह ऐसा होता है, मानो उन्होंने अपना जीवन खो दिया हो। और इसलिए, जैसे ही लोग प्रभु में विश्वास करते हैं, वैसे ही वे

बाइबल पढ़ना और उसे याद करना आरंभ कर देते हैं, और जितना ज़्यादा वे बाइबल को याद कर पाते हैं, उतना ही ज़्यादा यह साबित होता है कि वे प्रभु से प्रेम करते हैं और बड़े विश्वासी हैं। जिन्होंने बाइबल पढ़ी है और जो उसके बारे में दूसरों से चर्चा कर सकते हैं, वे सभी अच्छे भाई और बहन हैं। इन सारे वर्षों में, प्रभु के प्रति लोगों का विश्वास और वफादारी बाइबल की उनकी समझ की सीमा के अनुसार मापी गई है। अधिकतर लोग साधारणत: यह नहीं समझते कि उन्हें परमेश्वर पर विश्वास क्यों करना चाहिए, और न ही वे यह समझते हैं कि परमेश्वर पर विश्वास कैसे किया जाए, और वे बाइबल के अध्यायों का गूढ़ार्थ निकालने के लिए आँख बंद करके सुराग ढूँढ़ने के अलावा कुछ नहीं करते। लोगों ने कभी भी पवित्र आत्मा के कार्य की दिशा का अनुसरण नहीं किया है; शुरुआत से ही उन्होंने हताशापूर्वक बाइबल का अध्ययन और अन्वेषण करने के अलावा और कुछ नहीं किया है, और किसी ने कभी बाइबल के बाहर पवित्र आत्मा का नवीनतम कार्य नहीं पाया है। कोई कभी बाइबल से दूर नहीं गया है, न ही उसने कभी ऐसा करने की हिम्मत की है। लोगों ने इन सभी वर्षों में बाइबल का अध्ययन किया है, वे बहुत-सी व्याख्याओं के साथ सामने आए हैं, और उन्होंने बहुत-सा काम किया है; उनमें भी बाइबल के बारे में कई मतभेद हैं, जिस पर वे अंतहीन बहस करते हैं, इतनी कि आज दो हज़ार से ज़्यादा अलग-अलग संप्रदाय बन गए हैं। वे सभी कुछ विशेष व्याख्याओं, या बाइबल के अधिक गंभीर रहस्यों का पता लगाना चाहते हैं, और वे उसकी छानबीन करना चाहते हैं, और उसमें इस्राएल में यहोवा के कार्य की पृष्ठभूमि का या यहूदिया में यीशु के कार्य की पृष्ठभूमि का या और अधिक रहस्यों का पता लगाना चाहते हैं, जिनके बारे में कोई नहीं जानता। बाइबल के प्रति लोगों का दृष्टिकोण जूनून और विश्वास का है, और उनमें से कोई भी बाइबल की अंदर की कहानी या सार के बारे में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो सकता। इसलिए आज भी जब बाइबल की बात आती है, तो लोगों को अभी भी आश्चर्य का एक अवर्णनीय एहसास होता है, और वे उससे और भी अधिक अभिभूत हैं, और उस पर और भी अधिक विश्वास करते हैं। आज, हर कोई बाइबल में अंत के दिनों के कार्य की भविष्यवाणियाँ ढूँढ़ना चाहता है, वह यह खोजना चाहता है कि अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर क्या कार्य करता है, और अंत के दिनों के क्या लक्षण हैं। इस तरह से, बाइबल की उनकी आराधना और अधिक उत्कट हो जाती है, और जितनी ज़्यादा वह अंत के दिनों के नज़दीक आती है, उतना ही ज़्यादा अंधविश्वास वे बाइबल की भविष्यवाणियों पर करने लगते हैं, विशेषकर उन पर, जो अंत के दिनों के बारे में हैं। बाइबल पर ऐसे अंधे विश्वास के साथ, बाइबल पर ऐसे भरोसे के साथ, उनमें पवित्र आत्मा के कार्य को खोजने की कोई इच्छा

नहीं होती। अपनी धारणाओं के अनुसार, लोग सोचते हैं कि केवल बाइबल ही पवित्र आत्मा के कार्य को ला सकती है; केवल बाइबल में ही वे परमेश्वर के पदचिह्न खोज सकते हैं; केवल बाइबल में ही परमेश्वर के कार्य के रहस्य छिपे हुए हैं; केवल बाइबल—न कि अन्य पुस्तकें या लोग—परमेश्वर की हर चीज़ और उसके कार्य की संपूर्णता को स्पष्ट कर सकती है; बाइबल स्वर्ग के कार्य को पृथ्वी पर ला सकती है; और बाइबल युगों का आरंभ और अंत दोनों कर सकती है। इन धारणाओं के कारण लोगों का पवित्र आत्मा के कार्य को खोजने की ओर कोई झुकाव नहीं होता। अतः अतीत में बाइबल लोगों के लिए चाहे जितनी मददगार रही हो, वह परमेश्वर के नवीनतम कार्य के लिए एक बाधा बन गई है। बाइबल के बिना ही लोग अन्यत्र परमेश्वर के पदचिह्न खोज सकते हैं, किंतु आज उसके कदम बाइबल द्वारा रोक लिए गए हैं, और उसके नवीनतम कार्य को बढ़ाना दोगुना कठिन और एक दु:साध्य संघर्ष बन गया है। यह सब बाइबल के प्रसिद्ध अध्यायों एवं उक्तियों, और साथ ही बाइबल की विभिन्न भविष्यवाणियों की वजह से है। बाइबल लोगों के मन में एक आदर्श बन चुकी है, वह उनके मस्तिष्क में एक पहेली बन चुकी है, और वे यह विश्वास करने में सर्वथा असमर्थ हैं कि परमेश्वर बाइबल के बाहर भी काम कर सकता है, वे यह विश्वास करने में असमर्थ हैं कि लोग बाइबल के बाहर भी परमेश्वर को पा सकते हैं, और यह विश्वास करने में तो वे बिलकुल ही असमर्थ हैं कि परमेश्वर अंतिम कार्य के दौरान बाइबल से प्रस्थान कर सकता है और नए सिरे से शुरुआत कर सकता है। यह लोगों के लिए अचिंत्य है; वे इस पर विश्वास नहीं कर सकते, और न ही वे इसकी कल्पना कर सकते हैं। लोगों द्वारा परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार करने में बाइबल एक बहुत बड़ी बाधा बन गई है, और उसने परमेश्वर के लिए इस नए कार्य का विस्तार करना कठिन बना दिया है। अत: यदि तुम लोग बाइबल की अंदर की कहानी नहीं समझते, तो तुम सुसमाचार को सफलतापूर्वक फैलाने में सक्षम नहीं होगे, और न ही तुम नए कार्य के गवाह बन पाओगे। यद्यपि आज तुम लोग बाइबल नहीं पढ़ते, फिर भी तुम लोग उसके प्रति अभी भी अत्यधिक स्नेह से भरे हुए हो, जिसका अर्थ है कि, बाइबल भले ही तुम लोगों के हाथ में न हो, पर तुम लोगों की बहुत-सी धारणाएँ उसी से आती हैं। तुम लोग बाइबल के उद्गम या परमेश्वर के कार्य के पिछले दो चरणों के बारे में अंदर की कहानी नहीं समझते। यद्यपि तुम लोग अकसर बाइबल नहीं पढ़ते, फिर भी तुम लोगों को बाइबल को समझना चाहिए, तुम्हें बाइबल का सही ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, केवल इसी तरह से तुम लोग जान सकते हो कि परमेश्वर की छह हजार वर्षीय प्रबंधन योजना क्या है। तुम लोग इन चीज़ों का उपयोग लोगों को जीतने के लिए, लोगों से

यह स्वीकार कराने के लिए कि यह धारा ही सच्चा मार्ग है, और उनसे यह स्वीकार कराने के लिए करोगे कि जिस पथ पर आज तुम लोग चल रहे हो, वही सत्य का मार्ग है, कि इसका मार्गदर्शन पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है, और कि इसका सूत्रपात किसी मनुष्य द्वारा नहीं किया गया है।

परमेश्वर द्वारा व्यवस्था के युग का कार्य कर लेने के बाद पुराना विधान बनाया गया और तब से लोगों ने बाइबल पढ़ना शुरू किया। यीशु ने आने के बाद अनुग्रह के युग का कार्य किया, और उसके प्रेरितों ने नया विधान लिखा। इस प्रकार बाइबल के पुराने और नए विधान की रचना हुई, और आज तक वे सभी लोग, जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, बाइबल पढ़ते रहे हैं। बाइबल इतिहास की पुस्तक है। निस्संदेह, उसमें नबियों की कुछ भविष्यवाणियाँ भी शामिल हैं, और वे भविष्यवाणियाँ किसी भी मायने में इतिहास नहीं हैं। बाइबल में अनेक भाग शामिल हैं—उसमें केवल भविष्यवाणियाँ ही नहीं हैं, या केवल यहोवा का कार्य ही नहीं है, और न ही उसमें मात्र पौलुस के धर्मपत्र हैं। तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि बाइबल में कितने भाग शामिल हैं; पुराने विधान में उत्पत्ति, निर्गमन...शामिल हैं, और उसमें नबियों द्वारा लिखी गई भविष्यवाणियों की पुस्तकें भी हैं। अंत में, पुराना विधान मलाकी की पुस्तक के साथ समाप्त होता है। इसमें व्यवस्था के युग के कार्य को दर्ज किया गया है, जिसकी अगुआई यहोवा द्वारा की गई थी; उत्पत्ति से लेकर मलाकी की पुस्तक तक, यह व्यवस्था के युग के समस्त कार्य का विस्तृत अभिलेख है। अर्थात्, पुराने विधान में वह सब-कुछ दर्ज है, जिसे उन लोगों द्वारा अनुभव किया गया था, जिनका व्यवस्था के युग में यहोवा द्वारा मार्गदर्शन किया गया था। पुराने विधान के व्यवस्था के युग के दौरान यहोवा द्वारा बड़ी संख्या में खड़े किए गए नबियों ने उसके लिए भविष्यवाणी की, उन्होंने विभिन्न कबीलों एवं राष्ट्रों को निर्देश दिए, और यहोवा द्वारा किए जाने वाले कार्य की भविष्यवाणी की। इन सभी खड़े किए गए लोगों को यहोवा द्वारा भविष्यवाणी की आत्मा दी गई थी: वे यहोवा से उसके दर्शन प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने में सक्षम थे, और इस प्रकार वे उसके द्वारा प्रेरित थे और उन्होंने भविष्यवाणियाँ लिखीं। उन्होंने जो कार्य किया, वह यहोवा की आवाज़ की अभिव्यक्ति था, यहोवा की भविष्यवाणी की अभिव्यक्ति था, और उस समय यहोवा का कार्य केवल पवित्रात्मा का उपयोग करके लोगों का मार्गदर्शन करना था; वह देहधारी नहीं हुआ, और लोगों ने उसका चेहरा नहीं देखा। इस प्रकार, उसने अपना कार्य करने के लिए बहुत-से नबियों को खड़ा किया और उन्हें आकाशवाणियाँ दीं, जिन्हें उन्होंने इस्राएल के प्रत्येक कबीले और कुटुंब को सौंप दिया। उनका कार्य भविष्यवाणी करना था, और उनमें से कुछ ने अन्य लोगों को दिखाने के लिए उन्हें

यहोवा के निर्देश लिखकर दिए। यहोवा ने इन लोगों को भविष्यवाणी करने, भविष्य के कार्य या उस कार्य के बारे में पूर्वकथन कहने के लिए खड़ा किया था जो उस युग के दौरान अभी किया जाना था, ताकि लोग यहोवा की चमत्कारिकता एवं बुद्धि को देख सकें। भविष्यवाणी की ये पुस्तकें बाइबल की अन्य पुस्तकों से काफी अलग थीं; वे उन लोगों द्वारा बोले या लिखे गए वचन थे, जिन्हें भविष्यवाणी की आत्मा दी गई थी—उनके द्वारा, जिन्होंने यहोवा के दर्शनों या आवाज़ को प्राप्त किया था। भविष्यवाणी की पुस्तकों के अलावा, पुराने विधान में हर चीज़ उन अभिलेखों से बनी है, जिन्हें लोगों द्वारा तब तैयार किया गया था, जब यहोवा ने अपना काम समाप्त कर लिया था। ये पुस्तकें यहोवा द्वारा खड़े किए गए नबियों द्वारा की गई भविष्यवाणियों का स्थान नहीं ले सकतीं, बिलकुल वैसे ही जैसे उत्पत्ति और निर्गमन की तुलना यशायाह की पुस्तक और दानिय्येल की पुस्तक से नहीं की जा सकती। भविष्यवाणियाँ कार्य पूरा होने से पहले की गई थीं; जबकि अन्य पुस्तकें कार्य पूरा होने के बाद लिखी गई थीं, जिसे करने में वे लोग समर्थ थे। उस समय के नबी यहोवा द्वारा प्रेरित थे और उन्होंने कुछ भविष्यवाणियाँ कीं, उन्होंने कई वचन बोले, और अनुग्रह के युग की चीजों, और साथ ही अंत के दिनों में संसार के विनाश—वह कार्य, जिसे करने की यहोवा की योजना थी—के बारे में भविष्यवाणी की। बाकी सभी पुस्तकों में यहोवा के द्वारा इस्राएल में किए गए कार्य को दर्ज किया गया है। इस प्रकार, जब तुम बाइबल पढ़ते हो, तो तुम मुख्य रूप से यहोवा द्वारा इस्राएल में किए गए कार्यों के बारे में पढ़ रहे होते हो; बाइबल के पुराने विधान में मुख्यतः इस्राएल का मार्गदर्शन करने का यहोवा का कार्य और मिस्र से बाहर इस्राएलियों का मार्गदर्शन करने के लिए उसके द्वारा मूसा का उपयोग दर्ज किया गया है, जिसने उन्हें फिरौन के बंधनों से छुटकारा दिलाया और उन्हें बाहर सुनसान जंगल में ले गया, जिसके बाद उन्होंने कनान में प्रवेश किया और इसके बाद कनान का जीवन ही उनके लिए सब-कुछ था। इसके अलावा सब पूरे इस्राएल में यहोवा के कार्य के अभिलेख से निर्मित है। पुराने विधान में दर्ज सब-कुछ इस्राएल में यहोवा का कार्य है, यह वह कार्य है जिसे यहोवा ने उस भूमि पर किया, जिसमें उसने आदम और हव्वा को बनाया था। जबसे परमेश्वर ने नूह के बाद आधिकारिक रूप से पृथ्वी पर लोगों की अगुआई करनी आरंभ की, तब से पुराने विधान में दर्ज सब-कुछ इस्राएल का कार्य है। और उसमें इस्राएल के बाहर का कोई भी कार्य दर्ज क्यों नहीं किया गया है? क्योंकि इस्राएल की भूमि मानवजाति का पालना है। शुरुआत में, इस्राएल के अलावा कोई अन्य देश नहीं थे, और यहोवा ने अन्य किसी स्थान पर कार्य नहीं किया। इस तरह, बाइबल के पुराने विधान में जो कुछ भी दर्ज है, वह केवल उस

समय इस्राएल में किया गया परमेश्वर का कार्य है। नबियों द्वारा, यशायाह, दानिय्येल, यिर्मयाह और यहेज़केल द्वारा बोले गए वचन ... उनके वचन पृथ्वी पर उसके अन्य कार्य के बारे में पूर्वकथन करते हैं, वे यहोवा स्वयं परमेश्वर के कार्य का पूर्वकथन करते हैं। यह सब-कुछ परमेश्वर से आया, यह पवित्र आत्मा का कार्य था, और नबियों की इन पुस्तकों के अलावा, बाकी हर चीज़ उस समय यहोवा के कार्य के बारे में लोगों के अनुभवों का अभिलेख है।

सृष्टि की रचना का कार्य मानवजाति के आने से पहले हुआ, किंतु उत्पत्ति की पुस्तक मानवजाति के आने के बाद ही आई; यह व्यवस्था के युग के दौरान मूसा द्वारा लिखी गई पुस्तक थी। यह आज तुम लोगों के बीच होने वाली चीज़ों के समान है : तुम उन्हें उनके होने के बाद भविष्य में लोगों को दिखाने के लिए, और भविष्य के लोगों के लिए, लिख लेते हो; जो कुछ भी तुम लोगों ने दर्ज किया, वे ऐसी चीज़ें हैं जो अतीत में घटित हुई थीं—वे इतिहास से बढ़कर और कुछ नहीं हैं। पुराने विधान में दर्ज की गई चीजें इस्राएल में यहोवा के कार्य हैं, और जो कुछ नए विधान में दर्ज है, वह अनुग्रह के युग के दौरान यीशु के कार्य हैं; वे परमेश्वर द्वारा दो भिन्न-भिन्न युगों में किए गए कार्य के दस्तावेज हैं। पुराना विधान व्यवस्था के युग के दौरान परमेश्वर के कार्य का दस्तावेजीकरण करता है, और इस प्रकार पुराना विधान एक ऐतिहासिक पुस्तक है, जबकि नया विधान अनुग्रह के युग के कार्य का उत्पाद है। जब नया कार्य आरंभ हुआ, तो नया विधान भी पुराना पड़ गया—और इस प्रकार, नया विधान भी एक ऐतिहासिक पुस्तक है। निस्संदेह, नया विधान पुराने विधान के समान सुव्यवस्थित नहीं है, न ही उसमें उतनी बातें दर्ज हैं। यहोवा द्वारा बोले गए अनेक वचनों में से सभी बाइबल के पुराने विधान में दर्ज किए गए हैं, जबकि सुसमाचार की चार पुस्तकों में यीशु के कुछ ही वचन दर्ज किए गए हैं। निस्संदेह, यीशु ने भी बहुत काम किया, किंतु उसे विस्तार से दर्ज नहीं किया गया। नए विधान में कम दर्ज किया गया है, क्योंकि यीशु ने कितना काम किया; पृथ्वी पर साढ़े तीन वर्षों के दौरान किए गए उसके कार्य और प्रेरितों के कार्य की मात्रा यहोवा के कार्य से बहुत ही कम थी। और इसलिए, पुराने विधान की तुलना में नए विधान में कम पुस्तकें हैं।

बाइबल किस प्रकार की पुस्तक है? पुराना विधान व्यवस्था के युग के दौरान किया गया परमेश्वर का कार्य है। बाइबल के पुराने विधान में व्यवस्था के युग के दौरान किया गया यहोवा का समस्त कार्य और उसका सृष्टि के निर्माण का कार्य दर्ज है। इसमें यहोवा द्वारा किया गया समस्त कार्य दर्ज है, और वह अंततः मलाकी की पुस्तक के साथ यहोवा के कार्य का वृत्तांत समाप्त करता है। पुराने विधान में परमेश्वर

द्वारा किए गए दो तरह के कार्य दर्ज हैं : एक सृष्टि की रचना का कार्य, और दूसरा व्यवस्था की आज्ञा देना। दोनों ही यहोवा द्वारा किए गए कार्य थे। व्यवस्था का युग यहोवा परमेश्वर के नाम से किए गए कार्य का प्रतिनिधित्व करता है; यह मुख्यतः यहोवा के नाम से किए गए कार्य की समग्रता है। इस प्रकार, पुराने विधान में यहोवा का कार्य दर्ज है, और नए विधान में यीशु का कार्य, वह कार्य जिसे मुख्यतः यीशु के नाम से किया गया था। यीशु के नाम का महत्व और उसके द्वारा किया गया कार्य अधिकांशत: नए विधान में दर्ज हैं। पुराने विधान के व्यवस्था के युग के दौरान यहोवा ने इस्राएल में मंदिर और वेदी का निर्माण किया, उसने यह साबित करते हुए पृथ्वी पर इस्राएलियों के जीवन का मार्गदर्शन किया कि वे उसके चुने हुए लोग हैं, उसके द्वारा पृथ्वी पर चुने गए उसके मनोनुकूल लोगों का पहला समूह हैं, वह पहला समूह, जिसकी उसने व्यक्तिगत रूप से अगुआई की थी। इस्राएल के बारह कबीले यहोवा के चुने हुए पहले लोग थे, और इसलिए उसने, व्यवस्था के युग के यहोवा के कार्य का समापन हो जाने तक, हमेशा उनमें कार्य किया। कार्य का दूसरा चरण नए विधान के अनुग्रह के युग का कार्य था, और उसे यहूदी लोगों के बीच, इस्राएल के बारह कबीलों में से एक के बीच किया गया था। उस कार्य का दायरा छोटा था, क्योंकि यीशु देहधारी हुआ परमेश्वर था। यीशु ने केवल यहूदिया की पूरी धरती पर काम किया, और सिर्फ साढ़े तीन वर्षों का काम किया; इस प्रकार, जो कुछ नए विधान में दर्ज है, वह पुराने विधान में दर्ज कार्य की मात्रा से आगे निकलने में सक्षम नहीं है। अनुग्रह के युग के यीशु का कार्य मुख्यतः सुसमाचार की चार पुस्तकों में दर्ज है। जिस मार्ग पर अनुग्रह के युग के लोग चले, वह उनके जीवन-स्वभाव में सबसे सतही परिवर्तनों का मार्ग था, जिनमें से अधिकांश धर्मपत्रों में दर्ज हैं। ये धर्मपत्र दर्शाते हैं कि उस समय पवित्र आत्मा ने किस प्रकार कार्य किया। (निस्संदेह, भले ही पौलुस को ताड़ित किया गया या वह दुर्भाग्य के घेरे में आया, उसने जो कार्य किया, उसमें उसे पवित्र आत्मा द्वारा निर्देश दिया गया था, वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसका उस समय पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया था; पतरस का भी पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया था, किंतु उसने उतना अधिक कार्य नहीं किया, जितना पौलुस ने किया। हालाँकि पौलुस के काम में मनुष्य की अशुद्धताएँ शामिल थीं, लेकिन उसके द्वारा लिखे गए धर्मपत्रों से यह देखा जा सकता है कि उस समय पवित्र आत्मा ने किस प्रकार काम किया। पौलुस द्वारा अपनाया गया मार्ग सच्चा मार्ग था, वह सही था और वह पवित्र आत्मा का मार्ग था।)

यदि तुम व्यवस्था के युग के कार्य को देखना चाहते हो, और यह देखना चाहते हो कि इस्राएली किस

प्रकार यहोवा के मार्ग का अनुसरण करते थे, तो तुम्हें पुराना विधान पढ़ना चाहिए; यदि तुम अनुग्रह के युग के कार्य को समझना चाहते हो, तो तुम्हें नया विधान पढ़ना चाहिए। पर तुम अंतिम दिनों के कार्य को किस प्रकार देखते हो? तुम्हें आज के परमेश्वर की अगुआई स्वीकार करनी चाहिए, और आज के कार्य में प्रवेश करना चाहिए, क्योंकि यह नया कार्य है, और किसी ने पूर्व में इसे बाइबल में दर्ज नहीं किया है। आज परमेश्वर देहधारी हो चुका है और उसने चीन में अन्य चयनित लोगों को छाँट लिया है। परमेश्वर इन लोगों में कार्य करता है, वह पृथ्वी पर अपना काम जारी रख रहा है, और अनुग्रह के युग के कार्य से आगे जारी रख रहा है। आज का कार्य वह मार्ग है जिस पर मनुष्य कभी नहीं चला, और ऐसा तरीका है जिसे किसी ने कभी नहीं देखा। यह वह कार्य है, जिसे पहले कभी नहीं किया गया—यह पृथ्वी पर परमेश्वर का नवीनतम कार्य है। इस प्रकार, जो कार्य पहले कभी नहीं किया गया, वह इतिहास नहीं है, क्योंकि अभी तो अभी है, और वह अभी अतीत नहीं बना है। लोग नहीं जानते कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर और इस्राएल के बाहर पहले से बड़ा और नया काम किया है, जो पहले ही इस्राएल के दायरे के बाहर और नबियों के पूर्वकथनों के पार जा चुका है, वह भविष्यवाणियों के बाहर नया और अद्‌भुत, और इस्राएल के परे नवीनतर कार्य है, और ऐसा कार्य, जिसे लोग न तो समझ सकते हैं और न ही उसकी कल्पना कर सकते हैं। बाइबल ऐसे कार्य के सुस्पष्ट अभिलेखों को कैसे समाविष्ट कर सकती है? कौन आज के कार्य के प्रत्येक अंश को, बिना किसी चूक के, अग्रिम रूप से दर्ज कर सकता है? कौन इस अति पराक्रमी, अति बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य को, जो परंपरा के विरुद्ध जाता है, इस पुरानी घिसी-पिटी पुस्तक में दर्ज कर सकता है? आज का कार्य इतिहास नहीं है, और इसलिए, यदि तुम आज के नए पथ पर चलना चाहते हो, तो तुम्हें बाइबल से विदा लेनी चाहिए, तुम्हें बाइबल की भविष्यवाणियों या इतिहास की पुस्तकों के परे जाना चाहिए। केवल तभी तुम नए मार्ग पर उचित तरीके से चल पाओगे, और केवल तभी तुम एक नए राज्य और नए कार्य में प्रवेश कर पाओगे। तुम्हें यह समझना चाहिए कि आज तुमसे बाइबल न पढ़ने के लिए क्यों कहा जा रहा है, क्यों एक अन्य कार्य है जो बाइबल से अलग है, क्यों परमेश्वर बाइबल में कोई अधिक नवीन और अधिक विस्तृत अभ्यास नहीं देखता, इसके बजाय बाइबल के बाहर अधिक पराक्रमी कार्य क्यों है। यही सब है, जो तुम लोगों को समझना चाहिए। तुम्हें पुराने और नए कार्य के बीच का अंतर जानना चाहिए, और भले ही तुम बाइबल को न पढ़ते हो, फिर भी तुम्हें उसकी आलोचना करने में सक्षम होना चाहिए; यदि नहीं, तो तुम अभी भी बाइबल की आराधना करोगे, और तुम्हारे लिए नए कार्य में प्रवेश करना और नए परिवर्तनों से

गुज़रना कठिन होगा। जब एक उच्चतर मार्ग मौजूद है, तो फिर निम्न, पुराने मार्ग का अध्ययन क्यों करते हो? जब यहाँ अधिक नवीन कथन और अधिक नया कार्य उपलब्ध है, तो पुराने ऐतिहासिक अभिलेखों के मध्य क्यों जीते हो? नए कथन तुम्हारा भरण-पोषण कर सकते हैं, जिससे साबित होता है कि यह नया कार्य है; पुराने अभिलेख तुम्हें तृप्त नहीं कर सकते, या तुम्हारी वर्तमान आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर सकते, जिससे साबित होता है कि वे इतिहास हैं, और यहाँ का और अभी का कार्य नहीं हैं। उच्चतम मार्ग ही नवीनतम कार्य है, और नए कार्य के साथ, भले ही अतीत का मार्ग कितना भी ऊँचा हो, वह अभी भी लोगों के चिंतनों का इतिहास है, और भले ही संदर्भ के रूप में उसका कितना भी महत्व हो, वह फिर भी एक पुराना मार्ग है। भले ही वह "पवित्र पुस्तक" में दर्ज किया गया हो, फिर भी पुराना मार्ग इतिहास है; भले ही "पवित्र पुस्तक" में नए मार्ग का कोई अभिलेख न हो, फिर भी नया मार्ग यहाँ का और अभी का है। यह मार्ग तुम्हें बचा सकता है, और यह मार्ग तुम्हें बदल सकता है, क्योंकि यह पवित्र आत्मा का कार्य है।

तुम लोगों को बाइबल को समझना चाहिए—यह कार्य परम आवश्यक है! आज तुम्हें बाइबल को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसमें कुछ भी नया नहीं है; सब-कुछ पुराना है। बाइबल एक ऐतिहासिक पुस्तक है, और यदि तुमने अनुग्रह के युग के दौरान पुराने विधान को खाया और पीया होता—यदि तुम अनुग्रह के युग के दौरान पुराने विधान के समय में जो अपेक्षित था, उसे व्यवहार में लाए होते—तो यीशु ने तुम्हें अस्वीकार कर दिया होता, और तुम्हारी निंदा की होती; यदि तुमने पुराने विधान को यीशु के कार्य में लागू किया होता, तो तुम एक फरीसी होते। यदि आज तुम पुराने और नए विधान को खाने और पीने के लिए एक-साथ रखोगे और अभ्यास करोगे, तो आज का परमेश्वर तुम्हारी निंदा करेगा; तुम पवित्र आत्मा के आज के कार्य में पिछड़ गए होगे! यदि तुम पुराने विधान और नए विधान को खाते और पीते हो, तो तुम पवित्र आत्मा की धारा के बाहर हो! यीशु के समय में, यीशु ने अपने भीतर पवित्र आत्मा के कार्य के अनुसार यहूदियों की और उन सबकी अगुआई की थी, जिन्होंने उस समय उसका अनुसरण किया था। उसने जो कुछ किया, उसमें उसने बाइबल को आधार नहीं बनाया, बल्कि वह अपने कार्य के अनुसार बोला; उसने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया कि बाइबल क्या कहती है, और न ही उसने अपने अनुयायियों की अगुआई करने के लिए बाइबल में कोई मार्ग ढूँढ़ा। ठीक अपना कार्य आरंभ करने के समय से ही उसने पश्चात्ताप के मार्ग को फैलाया—एक ऐसा मार्ग, जिसका पुराने विधान की भविष्यवाणियों में बिलकुल भी उल्लेख नहीं किया गया था। उसने न केवल बाइबल के अनुसार कार्य नहीं किया, बल्कि एक नए मार्ग

की अगुआई भी की, और नया कार्य किया। उपदेश देते समय उसने कभी बाइबल का उल्लेख नहीं किया। व्यवस्था के युग के दौरान, बीमारों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने के उसके चमत्कार करने में कभी कोई सक्षम नहीं हो पाया था। इसी तरह उसका कार्य, उसकी शिक्षाएँ, उसका अधिकार और उसके वचनों का सामर्थ्य भी व्यवस्था के युग में किसी भी मनुष्य से परे था। यीशु ने मात्र अपना नया काम किया, और भले ही बहुत-से लोगों ने बाइबल का उपयोग करते हुए उसकी निंदा की—और यहाँ तक कि उसे सलीब पर चढ़ाने के लिए पुराने विधान का उपयोग किया—फिर भी उसका कार्य पुराने विधान से आगे निकल गया; यदि ऐसा न होता, तो लोग उसे सलीब पर क्यों चढ़ाते? क्या यह इसलिए नहीं था, क्योंकि पुराने विधान में उसकी शिक्षाओं, और बीमारों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने की उसकी योग्यता के बारे में कुछ नहीं कहा गया था? उसका कार्य एक नए मार्ग की अगुआई करने के लिए था, वह जानबूझकर बाइबल के विरुद्ध लड़ाई करने या जानबूझकर पुराने विधान को अनावश्यक बना देने के लिए नहीं था। वह केवल अपनी सेवकाई करने और उन लोगों के लिए नया कार्य लाने के लिए आया था, जो उसके लिए लालायित थे और उसे खोजते थे। वह पुराने विधान की व्याख्या करने या उसके कार्य का समर्थन करने के लिए नहीं आया था। उसका कार्य व्यवस्था के युग को विकसित होने देने के लिए नहीं था, क्योंकि उसके कार्य ने इस बात पर कोई विचार नहीं किया कि बाइबल उसका आधार थी या नहीं; यीशु केवल वह कार्य करने के लिए आया था, जो उसके लिए करना आवश्यक था। इसलिए, उसने पुराने विधान की भविष्यवाणियों की व्याख्या नहीं की, न ही उसने पुराने विधान के व्यवस्था के युग के वचनों के अनुसार कार्य किया। उसने इस बात को नज़रअंदाज़ किया कि पुराने विधान में क्या कहा गया है, उसने इस बात की परवाह नहीं की कि पुराना विधान उसके कार्य से सहमत है या नहीं, और उसने इस बात की परवाह नहीं की कि लोग उसके कार्य के बारे में क्या जानते हैं या कैसे उसकी निंदा करते हैं। वह बस वह कार्य करता रहा जो उसे करना चाहिए था, भले ही बहुत-से लोगों ने उसकी निंदा करने के लिए पुराने विधान के नबियों के पूर्वकथनों का उपयोग किया। लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उसके कार्य का कोई आधार नहीं था, और उसमें बहुत-कुछ ऐसा था, जो पुराने विधान के अभिलेखों से मेल नहीं खाता था। क्या यह मनुष्य की ग़लती नहीं थी? क्या परमेश्वर के कार्य पर सिद्धांत लागू किए जाने आवश्यक हैं? और क्या परमेश्वर के कार्य का नबियों के पूर्वकथनों के अनुसार होना आवश्यक है? आख़िरकार, कौन बड़ा है : परमेश्वर या बाइबल? परमेश्वर का कार्य बाइबल के अनुसार क्यों होना चहिए? क्या ऐसा हो सकता है कि

परमेश्वर को बाइबल से आगे निकलने का कोई अधिकार न हो? क्या परमेश्वर बाइबल से दूर नहीं जा सकता और अन्य काम नहीं कर सकता? यीशु और उनके शिष्यों ने सब्त का पालन क्यों नहीं किया? यदि उसे सब्त का पालन करना होता और पुराने विधान की आज्ञाओं के अनुसार अभ्यास करना होता, तो आने के बाद यीशु ने सब्त का पालन क्यों नहीं किया, बल्कि इसके बजाय क्यों उसने पाँव धोए, सिर ढका, रोटी तोड़ी और दाखरस पीया? क्या यह सब पुराने विधान की आज्ञाओं में अनुपस्थित नहीं है? यदि यीशु पुराने विधान का सम्मान करता, तो उसने इन सिद्धांतों को क्यों तोड़ा? तुम्हें पता होना चाहिए कि पहले कौन आया, परमेश्वर या बाइबल! सब्त का प्रभु होते हुए, क्या वह बाइबल का भी प्रभु नहीं हो सकता?

नए विधान के दौरान यीशु द्वारा किए गए कार्य ने नए कार्य की शुरुआत की : उसने पुराने विधान के कार्य के अनुसार कार्य नहीं किया, न ही उसने पुराने विधान के यहोवा द्वारा बोले गए वचनों को लागू किया। उसने अपना कार्य किया, और उसने बिलकुल नया और ऐसा कार्य किया जो व्यवस्था से ऊँचा था। इसलिए, उसने कहा : "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ।" इसलिए, जो कुछ उसने संपन्न किया, उससे बहुत-से सिद्धांत टूट गए। सब्त के दिन जब वह अपने शिष्यों को अनाज के खेतों में ले गया, तो उन्होंने अनाज की बालियों को तोड़ा और खाया; उसने सब्त का पालन नहीं किया, और कहा "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।" उस समय, इस्राएलियों के नियमों के अनुसार, जो कोई सब्त का पालन नहीं करता था, उसे पत्थरों से मार डाला जाता था। फिर भी यीशु ने न तो मंदिर में प्रवेश किया और न ही सब्त का पालन किया, और उसका कार्य पुराने विधान के समय के दौरान यहोवा द्वारा नहीं किया गया था। इस प्रकार, यीशु द्वारा किया गया कार्य पुराने विधान की व्यवस्था से आगे निकल गया, यह उससे ऊँचा था, और यह उसके अनुसार नहीं था। अनुग्रह के युग के दौरान यीशु ने पुराने विधान की व्यवस्था के अनुसार कार्य नहीं किया, और उसने उन सिद्धांतों को पहले ही तोड़ दिया था। लेकिन इस्राएली कसकर बाइबल से चिपके रहे और उन्होंने यीशु की निंदा की—क्या यह यीशु के कार्य को नकारना नहीं था? आज धार्मिक जगत भी बाइबल से कसकर चिपका हुआ है, और कुछ लोग कहते हैं, "बाइबल एक पवित्र पुस्तक है, और इसे अवश्य पढ़ा जाना चाहिए।" कुछ लोग कहते हैं, "परमेश्वर के कार्य को सदैव कायम रखा जाना चाहिए, पुराना विधान इस्राएलियों के साथ परमेश्वर की वाचा है, और उसे छोड़ा नहीं जा सकता, और सब्त का हमेशा पालन करना चाहिए!" क्या वे हास्यास्पद नहीं हैं? यीशु ने सब्त का पालन क्यों नहीं किया? क्या वह

पाप कर रहा था? कौन ऐसी चीज़ों को अच्छी तरह से समझ सकता है? चाहे लोग बाइबल को कैसे भी पढ़ते हों, उनके लिए अपनी समझने की शक्तियों का उपयोग करके परमेश्वर के कार्य को जानना असंभव होगा। न केवल वे परमेश्वर का शुद्ध ज्ञान प्राप्त नहीं करेंगे, बल्कि उनकी धारणाएँ पहले से कहीं अधिक ख़राब हो जाएँगी, इतनी ख़राब कि वे परमेश्वर का विरोध करना आरंभ कर देंगे। यदि आज परमेश्वर का देहधारण न होता, तो लोग अपनी धारणाओं के कारण बरबाद हो जाते, और वे परमेश्वर की ताड़ना के बीच मर जाते।

बाइबल के विषय में (2)

बाइबल को पुराना नियम और नया नियम भी कहते हैं। क्या तुम लोग जानते हो कि "नियम" से क्या तात्पर्य है? "पुराने नियम" में "नियम" इस्राएल के लोगों के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा से आता है, जब उसने मिस्रियों को मार डाला था और इस्राएलियों को फिरौन से बचाया था। बेशक, इस वाचा का प्रमाण दरवाज़ों की चौखट के ऊपर पोता गया मेमने का लहू था, जिसके द्वारा परमेश्वर ने मनुष्य के साथ एक वाचा बांधी थी, जिसमें कहा गया था कि वे सभी लोग, जिनके दरवाज़ों के ऊपर और अगल-बगल मेमने का लहू लगा हुआ है, इस्राएली हैं, वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, और उन सभी को यहोवा द्वारा बख्श दिया जाएगा (क्योंकि यहोवा तब मिस्र के सभी ज्येष्ठ पुत्रों और ज्येष्ठ भेड़ों और मवेशियों को मारने ही वाला था)। इस वाचा के अर्थ के दो स्तर हैं। मिस्र के लोगों और मवेशियों में से किसी को भी यहोवा द्वारा छोड़ा नहीं जाएगा; वह उनके सभी ज्येष्ठ पुत्रों और ज्येष्ठ भेड़ों और मवेशियों को मार डालेगा। इस प्रकार, भविष्यवाणी की अनेक पुस्तकों में यह भविष्यवाणी की गई थी कि यहोवा की वाचा के परिणामस्वरूप मिस्रियों को बहुत अधिक ताड़ना मिलेगी। यह वाचा के अर्थ का प्रथम स्तर है। यहोवा ने मिस्र के ज्येष्ठ पुत्रों और उसके सभी ज्येष्ठ मवेशियों को मार डाला, और उसने सभी इस्राएलियों को छोड़ दिया, जिसका अर्थ था कि वे सभी, जो इस्राएल की भूमि के थे, वे यहोवा द्वारा पोषित थे, और उन सभी को छोड़ दिया गया; वह उनमें दीर्घकालीन कार्य करना चाहता था, और उसने मेमने के लहू का उपयोग करके उनके साथ वाचा स्थापित की। तब से यहोवा ने इस्राएलियों को नहीं मारा, और कहा कि वे सदा के लिए उसके चुने हुए लोग होंगे। इस्राएल के बारह कबीलों के बीच वह समूचे व्यवस्था के युग के लिए अपने कार्य में लग गया, उसने इस्राएलियों पर अपनी सारी व्यवस्थाएँ प्रकट कीं, और उनके बीच से नबी और न्यायी चुने, और वे

उसके कार्य के केंद्र में रहे। यहोवा ने उनके साथ एक वाचा बांधी थी : जब तक युग परिवर्तित नहीं होता, वह सिर्फ चुने हुए लोगों के बीच में ही कार्य करेगा। यहोवा की वाचा अपरिवर्तनीय थी, क्योंकि वह लहू से बनी थी, और वह उसके चुने हुए लोगों के साथ स्थापित की गई थी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने समूचे युग के दौरान अपना कार्य करने के लिए एक उचित क्षेत्र और लक्ष्य चुना था, और इसलिए लोगों ने इस वाचा को विशेष रूप से महत्वपूर्ण समझा था। यह वाचा के अर्थ का दूसरा स्तर है। उत्पत्ति को छोड़कर, जो वाचा की स्थापना के पहले की थी, पुराने नियम में अन्य सभी पुस्तकें वाचा की स्थापना के बाद इस्राएलियों के बीच किए गए परमेश्वर के कार्य को दर्ज करती हैं। बेशक, उनमें यदा-कदा अन्यजातियों का लेखा-जोखा भी है, किंतु कुल मिलाकर, पुराना नियम इस्राएल में किए गए परमेश्वर के कार्य का दस्तावेज़ है। इस्राएलियों के साथ यहोवा की वाचा के कारण व्यवस्था के युग के दौरान लिखी गई पुस्तकें "पुराना नियम" कहलाती हैं। उनका नाम इस्राएलियों के साथ बांधी गई यहोवा की वाचा के आधार पर रखा गया है।

नए नियम का नाम यीशु द्वारा क्रूस पर बहाए गए लहू और उन सभी के साथ उसकी वाचा के आधार पर रखा गया है, जो यीशु पर विश्वास करते हैं। यीशु की वाचा यह थी : लोगों को उसके द्वारा बहाए गए लहू के कारण अपने पाप क्षमा करवाने के लिए उस पर विश्वास करना ही था, और इस प्रकार वे बचा लिए जाते, और उसके ज़रिये नया जन्म प्राप्त करते, और अब पापी न रहते; उसका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए लोगों को उस पर विश्वास करना ही था, और मरने के बाद उन्हें नरक में कष्ट न भोगना पड़ता। अनुग्रह के युग के दौरान लिखी गई सभी पुस्तकें इस वाचा के बाद आईं, और वे सभी उसमें शामिल कार्य और कथनों की दस्तावेज हैं। वे प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने या उस वाचा से प्राप्त उद्धार से आगे नहीं जातीं; वे सभी ऐसी पुस्तकें हैं, जो प्रभु के उन भाइयों द्वारा लिखी गई थीं, जिनके पास अनुभव थे। इस प्रकार, इन पुस्तकों का नाम भी एक वाचा के आधार पर रखा गया है : उन्हें नया नियम कहा जाता है। इन दोनों नियमों में सिर्फ व्यवस्था का युग और अनुग्रह का युग शामिल हैं, और इनका अंतिम युग के साथ कोई संबंध नहीं है। इस प्रकार, अंत के दिनों के आज के लोगों के लिए बाइबल का कोई बड़ा उपयोग नहीं है। अधिक से अधिक, यह एक अनंतिम संदर्भ के रूप में कार्य करता है, किंतु मूलत: इसका उपयोग-मूल्य बहुत कम है। फिर भी धार्मिक लोग इसे अभी भी बहुत अधिक संजोकर रखते हैं। वे बाइबल को नहीं जानते; वे सिर्फ बाइबल की व्याख्या करना जानते हैं, और वे बुनियादी रूप से उसके उद्भव से अनभिज्ञ हैं।

बाइबल के प्रति उनकी मनोवृत्ति ऐसी है : बाइबल की हर चीज़ सही है, उसमें कोई अशुद्धि या त्रुटि नहीं है। चूँकि उन्होंने पहले ही निर्धारित कर लिया है कि बाइबल सही और त्रुटिहीन है, इसलिए वे बड़ी रुचि के साथ उसका अध्ययन और जाँच करते हैं। बाइबल में आज के कार्य के चरण के बारे में पहले से नहीं बताया गया। सबसे अंधकारमय स्थान में विजय के कार्य का कभी कोई जिक्र नहीं किया गया, क्योंकि यह नवीनतम कार्य है। चूँकि कार्य का युग अलग है, इसलिए स्वयं यीशु भी अनभिज्ञ था कि कार्य का यह चरण अंत के दिनों के दौरान किया जाएगा—इसलिए अंत के दिनों के लोग बाइबल की जाँच करके उसमें कार्य के इस चरण का पता कैसे लगा सकते हैं?

बाइबल की व्याख्या करने वालों में से अधिकतर लोग तार्किक अनुमान लगाते हैं, उनकी कोई वास्तविक पृष्ठभूमि नहीं होती। वे अनेक चीज़ों का अनुमान लगाने के लिए मात्र तर्क का उपयोग करते हैं। साल-दर-साल, किसी ने भी बाइबल की समालोचना करने या बाइबल को "नहीं" कहने की हिम्मत नहीं की है, क्योंकि यह पुस्तक "पवित्र पुस्तक" है, और लोग इसे ईश्वर के रूप में पूजते हैं। यह कई हज़ार सालों से हो रहा है। परमेश्वर ने कोई ध्यान नहीं दिया, और न ही किसी ने बाइबल के अंदर की कहानी का पता लगाया। हम कहते हैं कि बाइबल को संजोकर रखना मूर्ति-पूजा है, लेकिन उन धर्मपरायण भक्तों में से कोई इसे इस तरह से देखने की हिम्मत तक नहीं करता, और वे तुमसे कहेंगे : "भाई! ऐसा मत कहो, यह बहुत बुरी बात है! तुम परमेश्वर की निंदा कैसे कर सकते हो?" फिर वे बड़े दर्द भरे अंदाज में कहते हैं : "हे दयावान यीशु, उद्धार के प्रभु, मैं तुझसे इसके पाप क्षमा करने की विनती करता हूँ, क्योंकि तू वह प्रभु है जो मनुष्य से प्रेम करता है, और हम सभी ने पाप किए हैं, कृपया हम पर बड़ी करुणा दिखा, आमीन।" ऐसे "धर्मपरायण" हैं वे; उनके लिए सत्य को स्वीकार करना आसान कैसे हो सकता है? तुम्हारा यह कहना उन्हें डरा देगा। कोई यह सोचने की हिम्मत नहीं करता कि बाइबल मनुष्य के विचारों और अवधारणाओं से दूषित हो सकती है, और कोई इस त्रुटि को नहीं देख पाता। बाइबल में जो कुछ है, उसमें से कुछ तो लोगों के अनुभव और उनका ज्ञान है, कुछ पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता है, और उसमें मानव बुद्धि और विचार का अपमिश्रण भी है। परमेश्वर ने कभी इन चीज़ों में हस्तक्षेप नहीं किया है, किंतु इसकी भी एक सीमा है : ये चीज़ें सामान्य लोगों की सोच से आगे नहीं बढ़ सकतीं, और यदि बढ़ती हैं, तो वे परमेश्वर के काम में हस्तक्षेप करती हैं और उसमें बाधा डालती हैं। जो सामान्य लोगों की सोच से आगे बढ़ जाता है, वह शैतान का काम है, क्योंकि वह लोगों को उनके कर्तव्य से विहीन कर देता है, यह शैतान का कार्य है, जिसे शैतान

द्वारा निर्देशित किया जाता है, और इस क्षण पवित्र आत्मा तुम्हें इस तरह से काम करने की अनुमति नहीं देगा। कभी-कभी कुछ भाई-बहन पूछते हैं : "क्या मेरे लिए इस-इस प्रकार से काम करना ठीक है?" मैं उनके आध्यात्मिक कद को देखकर कहता हूँ : "ठीक है!" कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो कहते हैं : "यदि मैं इस-इस प्रकार से काम करता हूँ, तो क्या मेरी स्थिति सामान्य है?" और मैं कहता हूँ : "हाँ! यह सामान्य है, विशेष रूप से सामान्य है!" अन्य लोग कहते हैं : "क्या मेरा इस तरह से काम करना ठीक है?" और मैं कहता हूँ : "नहीं!" वे कहते हैं : "यह उसके लिए ठीक क्यों है और मेरे लिए ठीक क्यों नहीं है?" और मैं कहता हूँ : "क्योंकि जो तुम कर रहे हो, वह शैतान से आता है, यह एक गड़बड़ी है, और तुम्हारी प्रेरणा का स्रोत गलत हो जाता है।" कभी-कभार ऐसा भी होता है कि जब कार्य काफी आगे नहीं बढ़ पाता, और भाई-बहनें इससे अनभिज्ञ रहते हैं। कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या एक खास तरह से काम करना ठीक है, और जब मैं देखता हूँ कि उनका काम भविष्य के कार्य में बाधा नहीं डालेगा, तो मैं कहता हूँ कि यह ठीक है। पवित्र आत्मा का कार्य लोगों को एक गुंजाइश देता है; लोगों को पवित्र आत्मा की इच्छाओं का अक्षरश: अनुसरण नहीं करना है, क्योंकि लोगों के अंदर सामान्य विचार और कमज़ोरी होती है, और उनकी कुछ दैहिक जरूरतें होती हैं, उनकी समस्याएँ वास्तविक होती हैं, और उनके पास मूलत: अपने मस्तिष्क में चलने वाले विचारों को नियंत्रित करने का कोई साधन नहीं होता। मैं लोगों से जो कुछ भी मांगता हूं, उसकी एक सीमा है। कुछ लोग मेरे वचनों को अस्पष्ट मानते हैं, कि मैं लोगों को किसी भी तरीके से कार्य करने को कह रहा हूं—यह इसलिए है, क्योंकि तुम नहीं समझते कि मेरी अपेक्षाओं की एक उपयुक्त गुंजाइश है। यदि यह वैसा होता, जैसा तुम कल्पना करते हो—यदि मैं बिना किसी अपवाद के सभी लोगों से एक जैसी मांगें करता, और सभी से एक जैसा आध्यात्मिक कद हासिल करने की अपेक्षा करता—तो यह काम नहीं करेगा। यह असंभव की मांग करना है, और यह मनुष्य के कार्य का सिद्धांत है, परमेश्वर के कार्य का सिद्धांत नहीं है। परमेश्वर का कार्य लोगों की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार किया जाता है, और वह उनकी सहज क्षमता पर आधारित होता है। यही सुसमाचार को फैलाने का सिद्धांत भी है : तुम्हें धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए, प्रकृति को अपने ढंग से कार्य करने देना चाहिए; जब तुम किसी से स्पष्ट रूप से सच कहोगे, तभी वे समझेंगे, और तभी वे बाइबल को दर-किनार कर पाएँगे। यदि परमेश्वर ने कार्य के इस चरण को न किया होता, तो कौन परंपराओं को तोड़ पाता? कौन नया कार्य कर पाता? कौन बाइबल के बाहर एक नया मार्ग ढूंढ़ पाता? क्योंकि लोगों की पारंपरिक अवधारणाएं और सामंती नैतिक मूल्य इतने

प्रबल हैं कि उनमें इन चीज़ों को अपने आप अलग करने की कोई क्षमता नहीं है, और न ही उनमें ऐसा करने का साहस है। यह इसके बारे में कुछ नहीं कहता कि किस प्रकार आज बाइबल के कुछ बेजान वचनों ने लोगों को जकड़ लिया है, ऐसे वचन जिन्होंने उनके हृदय पर कब्जा कर लिया है। वे बाइबल को छोड़ने के लिए कैसे तैयार हो सकते हैं? वे कैसे इतनी आसानी से बाइबल के बाहर के किसी मार्ग को स्वीकार कर सकते हैं? यह तब तक नहीं हो सकता, जब तक तुम बाइबल के अंदर की कहानियों और पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांतों के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं बता पाते, ताकि सभी लोग पूरी तरह से आश्वस्त हो जाएँ—जिसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। यह इसलिए है, क्योंकि धर्म के अंतर्गत सभी लोग बाइबल का सम्मान करते हैं, और उसे परमेश्वर के रूप में पूजते हैं, वे परमेश्वर को बाइबल के भीतर कैद करने की कोशिश भी करते हैं, यहाँ तक कि वे अपना लक्ष्य भी तभी हासिल करते हैं, जब वे एक बार फिर से परमेश्वर को क्रूस पर चढ़ा देते हैं।

बाइबल के विषय में (3)

बाइबल में हर चीज़ परमेश्वर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से बोले गए वचनों का अभिलेख नहीं है। बाइबल बस परमेश्वर के कार्य के पिछले दो चरण दर्ज करती है, जिनमें से एक भाग नबियों की भविष्यवाणियों का अभिलेख है, और दूसरा भाग युगों-युगों में परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए लोगों द्वारा लिखे गए अनुभवों और ज्ञान का अभिलेख है। मनुष्य के अनुभव उसके मतों और ज्ञान से दूषित होते हैं, और यह एक अपरिहार्य चीज़ है। बाइबल की कई पुस्तकों में मनुष्य की धारणाएँ, पूर्वाग्रह और बेतुकी समझ शामिल हैं। बेशक, अधिकतर वचन पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी का परिणाम हैं और वे सही समझ हैं—फिर भी अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वे पूरी तरह से सत्य की सटीक अभिव्यक्ति हैं। कुछ चीज़ों पर उनके विचार व्यक्तिगत अनुभव से प्राप्त ज्ञान या पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता से बढ़कर कुछ नहीं हैं। नबियों के पूर्वकथन परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से निर्देशित किए गए थे : यशायाह, दानिय्येल, एज्रा, यिर्मयाह और यहेजकेल जैसों की भविष्यवाणियाँ पवित्र आत्मा के सीधे निर्देशन से आई थीं; ये लोग द्रष्टा थे, उन्होंने भविष्यवाणी के आत्मा को प्राप्त किया था, और वे सभी पुराने नियम के नबी थे। व्यवस्था के युग के दौरान यहोवा की अभिप्रेरणाओं को प्राप्त करने वाले लोगों ने अनेक भविष्यवाणियाँ की थीं, जिन्हें सीधे यहोवा के द्वारा निर्देशित किया गया था। और यहोवा ने उनमें कार्य क्यों किया था? क्योंकि इस्राएल के

लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे, और नबियों का कार्य उनके बीच में किया जाना था; इसी कारण से नबी ऐसे प्रकाशन प्राप्त करने में समर्थ थे। वास्तव में, वे स्वयं भी परमेश्वर से प्राप्त प्रकाशनों को समझ नहीं पाए थे। पवित्र आत्मा ने उनके मुँह के जरिये वे वचन कहे थे, ताकि भविष्य के लोग उन चीज़ों को समझ पाएँ, और देख सकें कि वे वास्तव में परमेश्वर के आत्मा, अर्थात् पवित्र आत्मा के कार्य थे, और मनुष्य की ओर से नहीं आए थे, और उन्हें पवित्र आत्मा के कार्य की पुष्टि प्रदान की जा सके। अनुग्रह के युग के दौरान, यीशु ने उनके बदले स्वयं यह सब कार्य किया, इसलिए लोगों ने आगे भविष्यवाणी नहीं की। तो क्या यीशु एक नबी था? निस्संदेह यीशु एक नबी था, लेकिन वह प्रेरितों का काम करने में भी सक्षम था—वह भविष्यवाणी करने और पूरे देश के लोगों के बीच प्रचार करने और सिखाने दोनों का काम कर सकता था। फिर भी उसने जो कार्य किया और जिस पहचान का उसने प्रतिनिधित्व किया, वे एकसमान नहीं थे। वह सारी मानवजाति को छुड़ाने, मनुष्य को उसके पापों से छुड़ाने के लिए आया था; वह एक नबी और प्रेरित था, किंतु इस सबसे बढ़कर वह मसीह था। एक नबी भविष्यवाणी कर सकता है, परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि वह मसीह है। उस समय यीशु ने अनेक भविष्यवाणियाँ कीं और इसलिए यह कहा जा सकता है कि वह एक नबी था, किंतु यह नहीं कहा जा सकता कि वह नबी था और इसलिए वह मसीह नहीं था। ऐसा इसलिए है, क्योंकि कार्य का एक चरण पूरा करने में उसने स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया, और उसकी पहचान यशायाह की पहचान से अलग थी : वह छुटकारे का कार्य पूरा करने आया था, और उसने मनुष्य के जीवन के लिए पोषण भी प्रदान किया, और परमेश्वर का आत्मा सीधे उसके ऊपर आया था। जो कार्य उसने किया था, उसमें परमेश्वर के आत्मा की कोई अभिप्रेरणा या यहोवा का कोई निर्देश नहीं था। इसके बजाय, आत्मा ने सीधे तौर पर काम किया—जो यह साबित करने के लिए काफी है कि यीशु नबी के समान नहीं था। जो कार्य उसने किया, वह छुटकारे का कार्य था, भविष्यवाणी करना दूसरे स्थान पर आता था। वह एक नबी और प्रेरित था, पर उससे भी बढ़कर वह एक उद्धारक था। जबकि भविष्यवक्ता केवल भविष्यवाणी कर सकते थे, और कोई अन्य काम करने में वे परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ थे। चूँकि यीशु ने ऐसा बहुत-सा काम किया, जो मनुष्य द्वारा कभी नहीं किया गया था, और उसने मनुष्य को छुटकारा दिलाने का काम किया, अत: वह यशायाह जैसों से भिन्न था। कुछ लोग आज की धारा को स्वीकार नहीं करते, तो उसका कारण यह है कि इसने उनके लिए एक बाधा उत्पन्न कर दी है। वे कहते हैं : "पुराने नियम में अनेक नबियों ने भी बहुत सारे वचन कहे हैं—तो वे देहधारी परमेश्वर क्यों नहीं थे?

आज का परमेश्वर वचनों को बोलता है—तो क्या यह इस बात को साबित करने के लिए काफी है कि वह देहधारी परमेश्वर है? तुम बाइबल का सम्मान नहीं करते, न ही तुम उसे पढ़ते हो—तो तुम्हारे पास यह कहने का क्या आधार है कि यह परमेश्वर का देहधारण है? तुम कहते हो कि उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित किया जाता है, और तुम यह मानते हो कि कार्य का यह चरण वह कार्य है, जिसे परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जा रहा है—किंतु तुम्हारे पास इसका क्या आधार है? तुम आज परमेश्वर के वचनों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हो, और ऐसा लगता है कि तुमने बाइबल को नकार दिया है और उसे एक ओर रख दिया है।" और इसलिए वे कहते हैं कि तुम पाखंड और विधर्म पर विश्वास करते हो।

यदि तुम अंतिम दिनों के दौरान परमेश्वर के कार्य की गवाही देना चाहते हो, तो तुम्हें बाइबल की अँदरूनी कहानी, बाइबल के ढाँचे और बाइबल के सार को समझना होगा। आज लोग यह विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर है और परमेश्वर बाइबल है। इसलिए वे यह भी विश्वास करते हैं कि बाइबल के सारे वचन ही वे वचन हैं, जिन्हें परमेश्वर ने बोला था, और कि वे सब परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन थे। जो लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वे यह भी मानते हैं कि यद्यपि पुराने और नए नियम की सभी छियासठ पुस्तकें लोगों द्वारा लिखी गई थीं, फिर भी वे सभी परमेश्वर की अभिप्रेरणा द्वारा दी गई थीं, और वे पवित्र आत्मा के कथनों के अभिलेख हैं। यह मनुष्य की गलत समझ है, और यह तथ्यों से पूरी तरह मेल नहीं खाती। वास्तव में, भविष्यवाणियों की पुस्तकों को छोड़कर, पुराने नियम का अधिकांश भाग ऐतिहासिक अभिलेख है। नए नियम के कुछ धर्मपत्र लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों से आए हैं, और कुछ पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता से आए हैं; उदाहरण के लिए, पौलुस के धर्मपत्र एक मनुष्य के कार्य से उत्पन्न हुए थे, वे सभी पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता के परिणाम थे, और वे कलीसियाओं के लिए लिखे गए थे, और वे कलीसियाओं के भाइयों एवं बहनों के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन के वचन थे। वे पवित्र आत्मा द्वारा बोले गए वचन नहीं थे—पौलुस पवित्र आत्मा की ओर से नहीं बोल सकता था, और न ही वह कोई नबी था, और उसने उन दर्शनों को तो बिलकुल नहीं देखा था जिन्हें यूहन्ना ने देखा था। उसके धर्मपत्र इफिसुस, फिलेदिलफिया और गलातिया की कलीसियाओं, और अन्य कलीसियाओं के लिए लिखे गए थे। और इस प्रकार, नए नियम में पौलुस के धर्मपत्र वे धर्मपत्र हैं, जिन्हें पौलुस ने कलीसियाओं के लिए लिखा था, और वे पवित्र आत्मा की अभिप्रेरणाएँ नहीं हैं, न ही वे पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कथन हैं। वे महज प्रेरणा, सुविधा और प्रोत्साहन के वचन हैं, जिन्हें उसने अपने कार्य के दौरान कलीसियाओं के लिए लिखा था। इस प्रकार वे पौलुस के उस समय के

अधिकांश कार्य के अभिलेख भी हैं। वे प्रभु में विश्वास करने वाले सभी भाई-बहनों के लिए लिखे गए थे, ताकि उस समय कलीसियाओं के भाई-बहन उसकी सलाह मानें और प्रभु यीशु द्वारा बताए गए पश्चात्ताप के मार्ग पर बने रहें। किसी भी तरह से पौलुस ने यह नहीं कहा कि, चाहे वे उस समय की कलीसियाएँ हों या भविष्य की, सभी को उसके द्वारा लिखी गई चीज़ों को खाना और पीना चाहिए, न ही उसने कहा कि उसके सभी वचन परमेश्वर से आए हैं। उस समय की कलीसियाओं की परिस्थितियों के अनुसार, उसने बस भाइयों एवं बहनों से संवाद किया था और उन्हें प्रोत्साहित किया था, और उन्हें उनके विश्वास में प्रेरित किया था, और उसने बस लोगों में प्रचार किया था या उन्हें स्मरण दिलाया था और उन्हें प्रोत्साहित किया था। उसके वचन उसके स्वयं के दायित्व पर आधारित थे, और उसने इन वचनों के जरिये लोगों को सहारा दिया था। उसने उस समय की कलीसियाओं के प्रेरित का कार्य किया था, वह एक कार्यकर्ता था जिसे प्रभु यीशु द्वारा इस्तेमाल किया गया था, और इस प्रकार कलीसियाओं की ज़िम्मेदारी लेने और कलीसियाओं का कार्य करने के लिए उसे भाइयों एवं बहनों की स्थितियों के बारे में जानना था—और इसी कारण उसने प्रभु में विश्वास करने वाले सभी भाइयों एवं बहनों के लिए धर्मपत्र लिखे थे। यह सही है कि जो कुछ भी उसने कहा, वह लोगों के लिए शिक्षाप्रद और सकारात्मक था, किंतु वह पवित्र आत्मा के कथनों का प्रतिनिधित्व नहीं करता था, और वह परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था। यह एक बेहद गलत समझ और एक ज़बरदस्त ईश-निंदा है कि लोग एक मनुष्य के अनुभवों के अभिलेखों और धर्मपत्रों को पवित्र आत्मा द्वारा कलीसियाओं को बोले गए वचनों के रूप में लें! यह पौलुस द्वारा कलीसियाओं के लिए लिखे गए धर्मपत्रों के संबंध में विशेष रूप से सत्य है, क्योंकि उसके धर्मपत्र उस समय प्रत्येक कलीसिया की परिस्थितियों और उनकी स्थिति के आधार पर भाइयों एवं बहनों के लिए लिखे गए थे, और वे प्रभु में विश्वास करने वाले भाइयों एवं बहनों को प्रेरित करने के लिए थे, ताकि वे प्रभु यीशु का अनुग्रह प्राप्त कर सकें। उसके धर्मपत्र उस समय के भाइयों एवं बहनों को जाग्रत करने के लिए थे। ऐसा कहा जा सकता है कि यह उसका स्वयं का दायित्व था, और यह वह दायित्व भी था, जो उसे पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया था; आखिरकार, वह एक प्रेरित था जिसने उस समय की कलीसियाओं की अगुआई की थी, जिसने कलीसियाओं के लिए धर्मपत्र लिखे थे और उन्हें प्रोत्साहित किया था—यह उसकी जिम्मेदारी थी। उसकी पहचान मात्र काम करने वाले एक प्रेरित की थी, और वह मात्र एक प्रेरित था जिसे परमेश्वर द्वारा भेजा गया था; वह नबी नहीं था, और न ही भविष्यवक्ता था। उसके लिए उसका कार्य और भाइयों एवं बहनों का जीवन अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

इस प्रकार, वह पवित्र आत्मा की ओर से नहीं बोल सकता था। उसके वचन पवित्र आत्मा के वचन नहीं थे, और उन्हें परमेश्वर के वचन तो बिलकुल भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पौलुस परमेश्वर के एक प्राणी से बढ़कर कुछ नहीं था, और वह परमेश्वर का देहधारण तो निश्चित रूप से नहीं था। उसकी पहचान यीशु के समान नहीं थी। यीशु के वचन पवित्र आत्मा के वचन थे, वे परमेश्वर के वचन थे, क्योंकि उसकी पहचान मसीह—परमेश्वर के पुत्र की थी। पौलुस उसके बराबर कैसे हो सकता है? यदि लोग पौलुस जैसों के धर्मपत्रों या शब्दों को पवित्र आत्मा के कथनों के रूप में देखते हैं, और उनकी परमेश्वर के रूप में आराधना करते हैं, तो सिर्फ यह कहा जा सकता है कि वे बहुत ही अधिक अविवेकी हैं। और अधिक कड़े शब्दों में कहा जाए तो, क्या यह स्पष्ट रूप से ईश-निंदा नहीं है? कोई मनुष्य परमेश्वर की ओर से कैसे बात कर सकता है? और लोग उसके धर्मपत्रों के अभिलेखों और उसके द्वारा बोले गए वचनों के सामने इस तरह कैसे झुक सकते हैं, मानो वे कोई पवित्र पुस्तक या स्वर्गिक पुस्तक हों। क्या परमेश्वर के वचन किसी मनुष्य के द्वारा बस यों ही बोले जा सकते हैं? कोई मनुष्य परमेश्वर की ओर से कैसे बोल सकता है? तो, तुम क्या कहते हो—क्या वे धर्मपत्र, जिन्हें उसने कलीसियाओं के लिए लिखा था, उसके स्वयं के विचारों से दूषित नहीं हो सकते? वे मानवीय विचारों द्वारा दूषित कैसे नहीं हो सकते? उसने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और अपने ज्ञान के आधार पर कलीसियाओं के लिए धर्मपत्र लिखे थे। उदाहरण के लिए, पौलुस ने गलातियाई कलीसियाओं को एक धर्मपत्र लिखा, जिसमें एक निश्चित राय थी, और पतरस ने दूसरा धर्मपत्र लिखा, जिसमें दूसरा विचार था। उनमें से कौन-सा पवित्र आत्मा से आया था? कोई निश्चित तौर पर नहीं कह सकता। इस प्रकार, सिर्फ इतना कहा जा सकता है कि उन दोनों ने कलीसियाओं के लिए दायित्व वहन किया था, फिर भी उनके पत्र उनके आध्यात्मिक कद का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे भाइयों एवं बहनों के लिए उनके पोषण एवं समर्थन का, और कलीसियाओं के प्रति उनके दायित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, और वे केवल मनुष्य के कार्य का प्रतिनिधित्व करते हैं; वे पूरी तरह से पवित्र आत्मा के नहीं थे। यदि तुम कहते हो कि उसके धर्मपत्र पवित्र आत्मा के वचन हैं, तो तुम बेतुके हो, और तुम ईश-निंदा कर रहे हो! पौलुस के धर्मपत्र और नए नियम के अन्य धर्मपत्र बहुत हाल की आध्यात्मिक हस्तियों के संस्मरणों के बराबर हैं : वे वाचमैन नी की पुस्तकों या लॉरेंस आदि के अनुभवों के समतुल्य हैं। सीधी-सी बात है कि हाल ही की आध्यात्मिक हस्तियों की पुस्तकों को नए नियम में संकलित नहीं किया गया है, फिर भी इन लोगों का सार एकसमान था : वे पवित्र आत्मा द्वारा एक निश्चित अवधि के दौरान इस्तेमाल किए गए लोग थे, और

वे सीधे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते थे।

नए नियम में मत्ती का सुसमाचार यीशु की वंशावली दर्ज करता है। प्रारंभ में वह कहता है कि यीशु दाऊद और अब्राहम का वंशज और यूसुफ का पुत्र था; आगे वह कहता है कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया था, और कुँआरी से जन्मा था—जिसका अर्थ है कि वह यूसुफ का पुत्र या अब्राहम और दाऊद का वंशज नहीं था। यद्यपि वंशावली यीशु का संबंध यूसुफ से जोड़ने पर ज़ोर देती है। आगे वंशावली उस प्रक्रिया को दर्ज करना प्रारंभ करती है, जिसके तहत यीशु का जन्म हुआ था। वह कहती है कि यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया था, उसका जन्म कुँआरी से हुआ था, और वह यूसुफ का पुत्र नहीं था। फिर भी वंशावली में यह साफ-साफ लिखा हुआ है कि यीशु यूसुफ का पुत्र था, और चूँकि वंशावली यीशु के लिए लिखी गई है, अत: वह उसकी बयालीस पीढ़ियों को दर्ज करती है। जब वह यूसुफ की पीढ़ी पर जाती है, तो वह जल्दी से कह देती है कि यूसुफ मरियम का पति था, ये वचन यह साबित करने के लिए दिए गए हैं कि यीशु अब्राहम का वंशज था। क्या यह विरोधाभास नहीं है? वंशावली साफ-साफ यूसुफ की वंश-परंपरा को दर्ज करती है, वह स्पष्ट रूप से यूसुफ की वंशावली है, किंतु मत्ती दृढ़ता से कहता है कि यह यीशु की वंशावली है। क्या यह यीशु के पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आने के तथ्य को नहीं नकारता? इस प्रकार, क्या मत्ती द्वारा दी गई वंशावली मानवीय विचार नहीं है? यह हास्यास्पद है! इस तरह से तुम जान सकते हो कि यह पुस्तक पूरी तरह से पवित्र आत्मा से नहीं आई थी। शायद, ऐसे कुछ लोग हैं, जो यह सोचते हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर की वंशावली अवश्य होनी चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप वे यीशु को अब्राहम की बयालीसवीं पीढ़ी आवंटित करते हैं। यह वास्तव में हास्यास्पद है! पृथ्वी पर आने के बाद परमेश्वर की वंशावली कैसे हो सकती है? यदि तुम कहते हो कि परमेश्वर की वंशावली है, तो क्या तुम उसे परमेश्वर के प्राणियों में ही श्रेणीबद्ध नहीं कर देते? क्योंकि परमेश्वर पृथ्वी का नहीं है, वह सृष्टि का प्रभु है, और यद्यपि वह देह में आ गया है, फिर भी उसका सार मनुष्य के सार जैसा नहीं है। तुम परमेश्वर को उसके प्राणियों के समान ही श्रेणीबद्ध कैसे कर सकते हो? अब्राहम परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता; वह उस समय यहोवा के कार्य का पात्र था, वह परमेश्वर द्वारा अनुमोदित एक विश्वासयोग्य सेवक मात्र था, और वह इस्राएल के लोगों में से एक था। वह यीशु का पूर्वज कैसे हो सकता है?

यीशु की वंशावली को किसने लिखा था? क्या यीशु ने स्वयं उसे लिखा था? क्या यीशु ने व्यक्तिगत रूप से उनसे कहा था, "मेरी वंशावली लिखो"? यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने के बाद इसे मत्ती द्वारा दर्ज

किया गया था। उस समय यीशु ने बहुत सारा ऐसा काम किया था, जो उसके शिष्यों की समझ से परे था, और उसने कोई व्याख्या प्रस्तुत नहीं की थी। उसके जाने के बाद शिष्यों ने हर जगह प्रचार करना और काम करना प्रारंभ किया, और कार्य के उस चरण के लिए उन्होंने धर्मपत्र और सुसमाचार की पुस्तकें लिखनी प्रारंभ कीं। नए नियम की सुसमाचार की पुस्तकें यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने के बीस से तीस साल बाद लिखी गई थीं। उससे पहले इस्राएल के लोग केवल पुराना नियम ही पढ़ते थे। दूसरे शब्दों में, अनुग्रह के युग की शुरुआत में लोग पुराना नियम ही पढ़ते थे। नया नियम केवल अनुग्रह के युग के दौरान ही प्रकट हुआ। यीशु के काम करने के समय नया नियम मौजूद नहीं था; लोगों ने उसके कार्य को उसके पुनर्जीवित होने और स्वर्गारोहण करने के बाद दर्ज किया। केवल तभी चार सुसमाचार और पौलुस व पतरस के धर्मपत्र और साथ ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सामने आई। प्रभु यीशु के स्वर्ग जाने के तीन सौ साल से अधिक समय के बाद आगामी पीढ़ियों ने चुनिंदा रूप से इन दस्तावेजों को उचित क्रम में एकत्र और संयोजित किया, तब जाकर बाइबल का नया नियम अस्तित्व में आया। केवल इस कार्य के पूरा जाने के बाद ही नया नियम अस्तित्व में आया था; यह पहले मौजूद नहीं था। परमेश्वर ने वह सब कार्य किया था, और पौलुस और अन्य प्रेरितों ने विभिन्न स्थानों पर स्थित कलीसियाओं को बहुत-से धर्मपत्र लिखे थे। उनके बाद के लोगों ने उनके धर्मपत्रों को संयुक्त किया और पतमुस के टापू में यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए सबसे बड़े दर्शन को संलग्न किया, जिसमें अंतिम दिनों के परमेश्वर के कार्य के बारे में भविष्यवाणी की गई थी। लोगों ने यह क्रम बनाया था, जो आज के कथनों से अलग है। आज जो दर्ज किया जा रहा है, वह परमेश्वर के कार्य के चरणों के अनुसार है; आज लोग जिसमें शामिल हैं, वह परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाने वाला कार्य और उसके द्वारा व्यक्तिगत रूप से बोले गए वचन हैं। तुम्हें यानी कि मनुष्यजाति को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है; आत्मा से सीधे आने वाले वचनों को कदम-दर-कदम व्यवस्थित किया गया है, और वे मनुष्य के अभिलेखों की व्यवस्था से अलग हैं। कहा जा सकता है कि जो कुछ उन्होंने दर्ज किया है, वह उनकी शिक्षा और उनकी मानवीय क्षमता के स्तर के अनुसार था। उन्होंने जो कुछ दर्ज किया, वे मनुष्यों के अनुभव थे, और प्रत्येक के पास दर्ज करने और जानने का अपना साधन था, और प्रत्येक अभिलेख अलग था। इसलिए, यदि तुम बाइबल की परमेश्वर के रूप में आराधना करते हो, तो तुम बहुत ही ज़्यादा नासमझ और मूर्ख हो! तुम आज के परमेश्वर के कार्य को क्यों नहीं खोजते हो? केवल परमेश्वर का कार्य ही मनुष्य को बचा सकता है। बाइबल मनुष्य को नहीं बचा सकती, लोग हज़ारों सालों

तक इसे पढ़ते रह सकते हैं और फिर भी उनमें ज़रा-सा भी परिवर्तन नहीं होगा, और यदि तुम बाइबल की आराधना करते हो, तो तुम्हें पवित्र आत्मा का कार्य कभी प्राप्त नहीं होगा। इस्राएल में परमेश्वर के कार्य के दोनों चरण बाइबल में दर्ज किए गए हैं, और इसलिए इन अभिलेखों में सभी नाम इस्राएल के हैं, और सभी घटनाएँ इस्राएल की हैं; यहाँ तक कि "यीशु" नाम भी एक इस्राएली नाम है। यदि आज तुम बाइबल पढ़ना जारी रखते हो, तो क्या तुम परंपराओं का पालन नहीं कर रहे हो? जो कुछ बाइबल के नए नियम में दर्ज है, वे यहूदिया के मामले हैं। मूल पाठ यूनानी और इब्रानी दोनों में था, और जिस नाम से उसे पुकारा जाता था, वह और यीशु के उस समय के सभी वचन मनुष्य की भाषा के हैं। जब उसे सूली पर चढ़ाया गया था, तो यीशु ने कहा था : "एली, एली, लमा शबक्तनी?" क्या यह इब्रानी नहीं है? यह महज़ इसलिए है, क्योंकि यीशु ने यहूदिया में देहधारण किया था, किंतु इससे यह साबित नहीं होता कि परमेश्वर यहूदी है। आज, परमेश्वर चीन में देहधारी हुआ है, और इसलिए जो कुछ भी वह कहता है, वह निःसंदेह चीनी भाषा में है। फिर भी इसकी तुलना बाइबल के चीनी अनुवाद से नहीं की जा सकती, क्योंकि इन वचनों का स्रोत अलग है : एक इब्रानी भाषा से आता है जिसे मनुष्य द्वारा दर्ज किया गया था, और दूसरा सीधे आत्मा के कथनों से आता है। ऐसा कैसे हो सकता है कि उनमें बिलकुल भी अंतर न हो?

बाइबल के विषय में (4)

बहुत से लोग मानते हैं कि बाइबल को समझना और उसकी व्याख्या कर पाना सच्चे मार्ग की खोज करने के समान है—परन्तु वास्तव में, क्या बात इतनी सरल है? बाइबल की इस वास्तविकता को कोई नहीं जानता कि यह परमेश्वर के कार्य के ऐतिहासिक अभिलेख और उसके कार्य के पिछले दो चरणों की गवाही से बढ़कर और कुछ नहीं है, और इससे तुम्हें परमेश्वर के कार्य के लक्ष्यों की कोई समझ हासिल नहीं होती। बाइबल पढ़ने वाला हर व्यक्ति जानता है कि यह व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर के कार्य के दो चरणों को लिखित रूप में प्रस्तुत करता है। पुराने नियम सृष्टि के समय से लेकर व्यवस्था के युग के अंत तक इस्राएल के इतिहास और यहोवा के कार्य को लिपिबद्ध करता है। पृथ्वी पर यीशु के कार्य को, जो चार सुसमाचारों में है, और पौलुस के कार्य नए नियम में दर्ज किए गए हैं; क्या ये ऐतिहासिक अभिलेख नहीं हैं? अतीत की चीज़ों को आज सामने लाना उन्हें इतिहास बना देता है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितनी सच्ची और यथार्थ हैं, वे हैं तो इतिहास ही—और इतिहास वर्तमान को संबोधित

नहीं कर सकता, क्योंकि परमेश्वर पीछे मुड़कर इतिहास नहीं देखता! तो यदि तुम केवल बाइबल को समझते हो और परमेश्वर आज जो कार्य करना चाहता है, उसके बारे में कुछ नहीं समझते और यदि तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, किन्तु पवित्र आत्मा के कार्य की खोज नहीं करते, तो तुम्हें पता ही नहीं कि परमेश्वर को खोजने का क्या अर्थ है। यदि तुम इस्राएल के इतिहास का अध्ययन करने के लिए, परमेश्वर द्वारा समस्त लोकों और पृथ्वी की सृष्टि के इतिहास की खोज करने के लिए बाइबल पढ़ते हो, तो तुम परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते। किन्तु आज, चूँकि तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो और जीवन का अनुसरण करते हो, चूँकि तुम परमेश्वर के ज्ञान का अनुसरण करते हो और मृत पत्रों और सिद्धांतों या इतिहास की समझ का अनुसरण नहीं करते हो, इसलिए तुम्हें परमेश्वर की आज की इच्छा को खोजना चाहिए और पवित्र आत्मा के कार्य की दिशा की तलाश करनी चाहिए। यदि तुम पुरातत्ववेत्ता होते तो तुम बाइबल पढ़ सकते थे—लेकिन तुम नहीं हो, तुम उनमें से एक हो जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं। अच्छा होगा तुम परमेश्वर की आज की इच्छा की खोज करो। बाइबल को पढ़कर तुम अधिक से अधिक इस्राएल के इतिहास को थोड़ा-बहुत समझ जाओगे, तुम इब्राहिम, दाऊद और मूसा के जीवन के बारे में जानोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि वे किस प्रकार यहोवा का आदर करते थे, यहोवा किस प्रकार अपने विरोधियों को जला देता था और वह उस युग के लोगों से किस प्रकार बात करता था। तुम केवल अतीत में किए गए परमेश्वर के कार्य के बारे में जानोगे। बाइबल के अभिलेखों का सम्बन्ध इस बात से है कि इस्राएल के आदिम लोग किस प्रकार यहोवा का आदर करते थे और यहोवा के मार्गदर्शन में रहते थे। चूंकि इस्राएली परमेश्वर के चुने हुए लोग थे, इसलिए पुराने नियम में तुम यहोवा के प्रति इस्राएल के सभी लोगों की वफादारी देख सकते हो, कैसे लोग यहोवा की आज्ञा मानते थे, यहोवा किस प्रकार उन सबकी परवाह करता था और उन्हें आशीष देता था; तुम जान सकते हो कि जब परमेश्वर ने इस्राएल में कार्य किया तो वह दया और प्रेम से भरपूर था और भस्मकारी ज्वालाएँ उसके वश में थीं, दीन-हीन से लेकर शक्तिशाली तक, सभी इस्राएली यहोवा का आदर करते थे, और इस तरह सारे देश को परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त था। ऐसा है इस्राएल का इतिहास, जो पुराने नियम में दर्ज है।

बाइबल इस्राएल में परमेश्वर के कार्य का ऐतिहासिक अभिलेख है, और प्राचीन नबियों की अनेक भविष्यवाणियों के साथ उस समय यहोवा के कार्य के बारे में उसके कुछ कथनों को लिपिबद्ध करती है। इस प्रकार, सभी लोग इस पुस्तक को पवित्र (क्योंकि परमेश्वर पवित्र और महान है) मानते हैं। निस्संदेह,

यह सब यहोवा के लिए उनके आदर और परमेश्वर के लिए उनकी श्रद्धा का परिणाम है। लोग इस तरह से इस पुस्तक का उल्लेख केवल इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर की रचनाएँ अपने रचयिता के प्रति इतनी श्रृद्धालु और प्रेममयी हैं, और ऐसे लोग भी हैं जो इस पुस्तक को एक दिव्य पुस्तक कहते हैं। वास्तव में, यह मात्र एक मानवीय अभिलेख है। यहोवा ने व्यक्तिगत रूप से इसका नाम नहीं रखा था, और न ही यहोवा ने व्यक्तिगत रूप से इसकी रचना का मार्गदर्शन किया था। दूसरे शब्दों में, इस पुस्तक का लेखक परमेश्वर नहीं था, बल्कि मनुष्य था। पवित्र बाइबल केवल सम्मानजनक शीर्षक है जो इसे मनुष्य ने दिया है। इस शीर्षक का निर्णय यहोवा और यीशु के द्वारा आपस में विचार-विमर्श करने के बाद नहीं लिया गया था; यह मानव विचार से अधिक कुछ नहीं है। क्योंकि यह पुस्तक यहोवा ने नहीं लिखी, यीशु ने तो कदापि नहीं। इसके बजाय, यह अनेक प्राचीन नबियों, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं द्वारा दिया गया लेखा-जोखा है, जिसे बाद की पीढ़ियों ने प्राचीन लेखों की ऐसी पुस्तक के रूप में संकलित किया जो लोगों को विशेष रूप से पवित्र प्रतीत होती है, ऐसी पुस्तक जिसमें वे मानते हैं कि अनेक अथाह और गहन रहस्य हैं जो भावी पीढ़ियों द्वारा बाहर लाए जाने का इन्तज़ार कर रहे हैं। इस रूप में, लोग यह मानने को और भी अधिक तत्पर हैं कि यह एक दिव्य पुस्तक है। चार सुसमाचारों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को जोड़ लें, तो इसके प्रति लोगों का मनोभाव किसी भी अन्य पुस्तक के प्रति उनके मनोभाव से विशेष रूप से भिन्न है, और इस प्रकार कोई भी इस "दिव्य पुस्तक" का विश्लेषण करने का साहस नहीं करता है—क्योंकि यह "परमपावन" है।

बाइबल पढ़ते ही लोग इसमें अभ्यास करने का उचित मार्ग कैसे प्राप्त कर लेते हैं? वे इतना कुछ, जो उनकी समझ से बाहर था, प्राप्त क्यों कर पाते हैं? आज, मैं इस तरह से बाइबल का विश्लेषण कर रहा हूँ लेकिन इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि मैं इससे नफ़रत करता हूँ या सन्दर्भ के लिए इसके महत्व को नकारता हूँ। तुम्हें अंधकार में रखे जाने से रोकने के लिए मैं तुम्हें बाइबल के अंतर्निहित मूल्य और इसकी उत्पत्ति समझा रहा हूँ और स्पष्ट कर रहा हूँ। क्योंकि बाइबल के बारे में लोगों के इतने अधिक विचार हैं, और उनमें से अधिकांश ग़लत हैं; इस तरह बाइबल पढ़ना न केवल उन्हें वह प्राप्त करने से रोकता है जो उन्हें प्राप्त करना ही चाहिए, बल्कि, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह कि यह उस कार्य में भी बाधा डालता है जिसे मैं करना चाहता हूँ। यह भविष्य के कार्य में अत्यधिक हस्तक्षेप करता है और इसमें दोष ही दोष हैं, लाभ तो कोई है ही नहीं। इस प्रकार, मैं तुम्हें बाइबल का सार और उसकी अंतर्कथा बता रहा हूँ। मैं यह

नहीं कह रहा हूँ कि तुम बाइबल मत पढ़ो या तुम चारों तरफ यह ढिंढोरा पीटते फिरो कि यह मूल्यविहीन है, मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम्हें बाइबल का सही ज्ञान और तुम्हारे पास सही दृष्टि हो। तुम्हारी दृष्टि एकतरफा न हो! यद्यपि बाइबल इतिहास की पुस्तक है जो मनुष्यों के द्वारा लिखी गई थी, लेकिन इसमें कई ऐसे सिद्धांत भी लिपिबद्ध हैं जिनके अनुसार प्राचीन संत और नबी परमेश्वर की सेवा करते थे, और साथ ही इसमें परमेश्वर की सेवा-टहल करने के आजकल के प्रेरितों के अनुभव भी अंकित हैं—यह सब इन लोगों ने सचमुच देखा और जाना था, जो सच्चे मार्ग का अनुसरण करने में इस युग के लोगों के लिए सन्दर्भ का काम कर सकता है। इस प्रकार, बाइबल को पढ़ने से लोग जीवन के अनेक मार्ग भी प्राप्त कर सकते हैं जो अन्य पुस्तकों में नहीं मिल सकते। ये मार्ग पवित्र आत्मा के कार्य के जीवन के मार्ग हैं जिनका अनुभव नबियों और प्रेरितों ने बीते युगों में किया था, बहुत से वचन अनमोल हैं, जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। इस प्रकार, सभी लोग बाइबल पढ़ना पसंद करते हैं। क्योंकि बाइबल में इतना कुछ छिपा है, इसके प्रति लोगों के विचार महान आध्यात्मिक हस्तियों के लेखन के प्रति उनके विचारों से भिन्न हैं। बाइबल पुराने और नए युग में यहोवा और यीशु की सेवा-टहल करने वाले लोगों के अनुभवों और ज्ञान का अभिलेख एवं संकलन है, और इसलिए बाद की पीढ़ियाँ इससे अत्यधिक प्रबुद्धता, रोशनी और अभ्यास करने के मार्ग प्राप्त कर रही हैं। बाइबल किसी भी महान आध्यात्मिक हस्ती के लेखन से उच्चतर है, तो उसका कारण यह है कि उनका समस्त लेखन बाइबल से ही लिया गया है, उनके समस्त अनुभव बाइबल से ही आए हैं, और वे सभी बाइबल ही समझाते हैं। इसलिए, यद्यपि लोग किसी भी महान आध्यात्मिक हस्ती की पुस्तकों से पोषण प्राप्त कर सकते हैं, फिर भी वे बाइबल की ही आराधना करते हैं, क्योंकि यह उन्हें ऊँची और गहन प्रतीत होती है! यद्यपि बाइबल जीवन के वचनों की कुछ पुस्तकों, जैसे पौलुस के धर्मपत्र और पतरस के धर्मपत्र, को एक साथ लाती है। यद्यपि ये पुस्तकें लोगों को पोषण और सहायता प्रदान कर सकती हैं, किन्तु फिर भी ये पुस्तकें अप्रचलित हैं और पुराने युग की हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितनी अच्छी हैं, वे केवल एक कालखंड के लिए ही उपयुक्त हैं, चिरस्थायी नहीं हैं। क्योंकि परमेश्वर का कार्य निरन्तर विकसित हो रहा है, यह केवल पौलुस और पतरस के समय पर ही नहीं रुक सकता या हमेशा अनुग्रह के युग में ही बना नहीं रह सकता जिसमें यीशु को सलीब पर चढ़ा दिया गया था। अत:, ये पुस्तकें केवल अनुग्रह के युग के लिए उपयुक्त हैं, अंत के दिनों के राज्य के युग के लिए नहीं। ये केवल अनुग्रह के युग के विश्वासियों को पोषण प्रदान कर सकती हैं, राज्य के युग के संतों को नहीं, और

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितनी अच्छी हैं, वे अब भी अप्रचलित ही हैं। यहोवा के सृष्टि के कार्य या इस्राएल के उसके कार्य के साथ भी ऐसा ही हैः इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि यह कार्य कितना बड़ा था, यह अब भी अप्रचलित हो जाएगा, और वह समय अब भी आएगा जब यह व्यतीत हो जाएगा। परमेश्वर का कार्य भी ऐसा ही हैः यह महान है, किन्तु एक समय आएगा जब यह समाप्त हो जाएगा; यह न तो सृष्टि के कार्य के बीच और न ही सलीब पर चढ़ाने के कार्य के बीच हमेशा बना रह सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि सलीब पर चढ़ाने का कार्य कितना विश्वास दिलाने वाला था या शैतान को पराजित करने में यह कितना कारगर था, कार्य आख़िर कार्य ही है, और युग आख़िर युग ही हैं; कार्य हमेशा उसी नींव पर टिका नहीं रह सकता, न ही ऐसा हो सकता है कि समय कभी न बदले, क्योंकि सृष्टि थी और अंत के दिन भी अवश्य होंगे। यह अवश्यम्भावी है! इस प्रकार, आज नया नियम—प्रेरितों के धर्मपत्र और चार सुसमाचार—में जीवन के वचन ऐतिहासिक पुस्तकें बन गए हैं, वे पुराने पंचांग बन गए हैं, और पुराने पंचांग लोगों को नए युग में कैसे ले जा सकते हैं? चाहे ये पंचांग लोगों को जीवन प्रदान करने में कितने भी समर्थ हों, वे सलीब तक लोगों की अगुवाई करने में कितने भी सक्षम हों, क्या वे पुराने नहीं हो गए हैं? क्या वे मूल्य से वंचित नहीं हैं? इसलिए, मैं कहता हूँ कि तुम्हें आँख बंद करके इन पंचांगों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। ये अत्यधिक पुराने हैं, ये तुम्हें नए कार्य में नहीं पहुँचा सकते, ये केवल तुम्हारे ऊपर बोझ लाद सकते हैं। केवल यही नहीं कि ये तुम्हें नए कार्य में और नए प्रवेश में नहीं ले जा सकते, बल्कि ये तुम्हें पुरानी धार्मिक कलीसियाओं में ले जाते हैं—और यदि ऐसा हो, तो क्या तुम परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में पीछे नहीं लौट रहे हो?

बाइबल में, इस्राएल में परमेश्वर के कार्य को लिपिबद्ध किया गया है जिसमें कुछ वे कार्य भी सम्मिलित हैं जो इस्राएल के चुने हुए लोगों ने किए थे। इस तथ्य के बावजूद कि इसमें कुछ भागों के चयन को जोड़ा या छोड़ा जाना था, हालाँकि पवित्र आत्मा ने इसे स्वीकृति नहीं दी, फिर भी उसने कोई दोषारोपण भी नहीं किया। बाइबल पूरी तरह से इस्राएल का इतिहास है, जो परमेश्वर के कार्य का इतिहास भी है। इसमें जिन लोगों, विषयों, और वस्तुओं को दर्ज किया गया है, वे सभी यथार्थ थे, और उनमें से किसी का भी प्रतीकात्मक अर्थ नहीं था—निस्सन्देह, यशायाह, दानिय्येल और अन्य नबियों की भविष्यवाणियों या यूहन्ना की दर्शन की पुस्तकों को छोड़कर। इस्राएल के आरंभिक लोग ज्ञानी और सुसंस्कृत थे, उनका प्राचीन ज्ञान और उनकी संस्कृति काफी हद तक उन्नत थी, इसलिए उन्होंने जो लिखा, वह आज के लोगों

के लेखन से ऊँचे स्तर का था। परिणामस्वरूप, इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे ये पुस्तकें लिख सके, क्योंकि यहोवा ने उनके बीच बहुत कार्य किया था और उन्होंने काफी कुछ देखा था। दाऊद ने यहोवा के कर्म अपनी आँखों से देखे थे, उसने व्यक्तिगत रूप से उनका अनुभव किया था, कई संकेत और चमत्कार देखे थे, इसीलिए उसने यहोवा के कर्मों के गुणगान में वे सारे भजन लिखे। वे कुछ निश्चित परिस्थितियों में ये पुस्तकें लिख पाए तो इसलिए नहीं कि उनमें असाधारण प्रतिभा थी। बल्कि उन्होंने यहोवा का गुणगान इसलिए किया क्योंकि उन्होंने उसे देखा था। यदि तुम लोगों ने यहोवा को ज़रा भी नहीं देखा और उसके अस्तित्व से अनजान हो, तो तुम लोग उसका गुणगान कैसे कर सकते हो? यदि तुम लोगों ने यहोवा के दर्शन नहीं किए हैं, तो तुम लोगों को पता ही नहीं होगा कि उसका गुणगान कैसे करना है, न ही उसकी आराधना करना जानोगे, उसका गुणगान करने वाले गीत तो तुम लिख ही नहीं पाओगे, यहाँ तक कि यदि तुम लोगों को यहोवा के कुछ कर्मों की मनगढ़ंत कल्पना करने को कहा जाए, तब भी तुम लोग ऐसा नहीं कर पाओगे। आज तुम लोग परमेश्वर का गुणगान और परमेश्वर से प्रेम कर पाते हो, तो सिर्फ इसलिए क्योंकि तुम लोगों ने उसे देखा है, और उसके कार्य का अनुभव भी किया है—यदि तुम लोगों की क्षमता में निखार आता है, तो क्या तुम लोग भी दाऊद के समान परमेश्वर की स्तुति में कविताएँ नहीं लिख सकोगे?

बाइबल को समझना, इतिहास को समझना, परन्तु उसे न समझना जो पवित्र आत्मा आज कर रहा है—यह ग़लत है! इतिहास का अध्ययन करके तुमने अच्छा किया, बल्कि तुमने ज़बर्दस्त काम किया है, परन्तु तुम उस कार्य के बारे में कुछ नहीं समझते जो आज पवित्र आत्मा कर रहा है। क्या यह मूर्खता नहीं है? लोग तुमसे पूछते हैं: "परमेश्वर आज क्या कर रहा है? आज तुम्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए? तुम्हारी जीवन की खोज कैसी चल रही है? क्या तुम परमेश्वर की इच्छा को समझते हो?" तुम्हारे पास उनके सवालों का कोई उत्तर नहीं होगा—तो तुम जानते क्या हो? तुम कहोगेः "मुझे बस इतना पता है कि मुझे देह की ओर से पीठ फेर लेनी चाहिए और स्वयं को जानना चाहिए।" और फिर यदि वे पूछें, "तुम्हें और क्या पता है?" तुम कहोगे कि तुम परमेश्वर की सभी व्यवस्थाओं का पालन करना भी जानते हो और तुम थोड़ा-बहुत बाइबल का इतिहास समझते हो, बस। तुमने इतने बरस परमेश्वर में विश्वास करके बस यही प्राप्त किया है? यदि तुम्हारी समझ बस इतनी ही है, तो तुम्हारे अंदर बहुत कमी है। इस प्रकार, तुम लोगों का वर्तमान आध्यात्मिक कद मेरी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर सकता, और जिन सत्यों को तुम लोग समझते हो, वे

अत्यंत तुच्छ हैं, साथ ही अंतर देख पाने की तुम लोगों की सामर्थ्य भी—कहने का मतलब, तुम लोगों का विश्वास बहुत उथला और सतही है! तुम्हें और अधिक सत्यों से युक्त होना ही चाहिए, तुम्हें और अधिक ज्ञान की आवश्यकता है, तुम्हें और अधिक देखना चाहिए, तभी तुम सुसमाचार फैला सकोगे, क्योंकि यही तुम लोगों को हासिल करना है!

अभ्यास (1)

पहले, लोग जिस तरीके से अनुभव करते थे, उसमें बहुत सारे भटकाव और बेतुकापन था। उन्हें परमेश्वर की अपेक्षाओं के मानकों की समझ थी ही नहीं, इसलिए ऐसे बहुत से क्षेत्र थे जिनमें लोगों के अनुभव उलट-पलट हो जाते थे। परमेश्वर इंसान से यह अपेक्षा करता है कि वह सामान्य मानवीयता को जिए। मिसाल के तौर पर, लोगों का खाने-कपड़ों के मामलों में आधुनिक रीति-रिवाजों को अपनाना, सूट या टाई पहनना, आधुनिक कला के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी हासिल कर लेना और खाली समय में कला, संस्कृति और मनोरंजन का आनंद लेना, ठीक है। वे कुछ यादगार तस्वीरें खींच सकते हैं, पढ़कर कुछ उपयोगी ज्ञान हासिल कर सकते हैं और अपेक्षाकृत अच्छे परिवेश में रह सकते हैं। ये सारी ऐसी बातें हैं जो सामान्य मानवीयता के अनुकूल हैं, फिर भी लोग इन्हें परमेश्वर द्वारा घृणा की जाने वाली चीज़ों के रूप में देखते हैं और वे इन कामों को करने से स्वयं को दूर रखते हैं। उनके अभ्यास में मात्र नियमों का पालन करना शामिल होता है, जिसके कारण उनका जीवन निहायत ही नीरस और एकदम निरर्थक हो जाता है। दरअसल, परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा कि लोग इस तरह से कार्य करें। लोग स्वयं ही अपने स्वभावों को कम करना चाहते हैं, परमेश्वर के अधिक निकट आने के लिए निरंतर अपनी आत्माओं में प्रार्थना करते रहते हैं, उनके मन में लगातार उधेड़-बुन चलती रहती है कि परमेश्वर क्या चाहता है, उनकी आँखें सतत किसी न किसी बात पर टिकी रहती हैं, इस भयानक डर में कि किसी कारण से परमेश्वर से उनका संबंध-विच्छेद हो जाएगा। ये तमाम निष्कर्ष लोगों ने अपने आप ही निकाल लिए हैं; लोगों ने स्वयं ही ये नियम अपने लिए तय कर लिए हैं। अगर तुम खुद ही अपनी प्रकृति और सार के बारे में नहीं जानते और इस बात को नहीं समझते कि तुम्हारे अभ्यास का स्तर कहाँ तक पहुँच सकता है, तो तुम्हारे पास इस बात के लिए निश्चित होने का कोई रास्ता नहीं होगा कि परमेश्वर को इंसान से किन मानकों की अपेक्षा है और न ही तुम्हारे पास अभ्यास का कोई सटीक मार्ग होगा। चूँकि तुम्हें इस बात की समझ ही नहीं है कि वास्तव में

परमेश्वर को इंसान से क्या अपेक्षा है, तो तुम्हारा मन हमेशा मंथन करता रहता है, तुम परमेश्वर के इरादों का विश्लेषण करने में अपना दिमाग खपाते रहते हो और अनाड़ीपन से पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित और प्रबुद्ध किए जाने की राह ढूँढते हो। नतीजतन, तुम अभ्यास के कुछ ऐसे मार्ग विकसित कर लेते हो जिन्हें तुम उपयुक्त मानते हो। तुम्हें इस बात का पता ही नहीं कि परमेश्वर को इंसान से वास्तव में क्या अपेक्षाएँ हैं; तुम प्रसन्नतापूर्वक बस अपने तय किए हुए अभ्यासों को ही करते रहते हो, परिणाम की परवाह नहीं करते और इस बात की तो बिल्कुल भी चिंता नहीं करते कि तुम्हारे अभ्यास में कोई भटकाव या त्रुटियाँ तो नहीं हैं। इस तरह, तुम्हारे अभ्यास में स्वाभाविक तौर पर सटीकता की कमी होती है और वह सिद्धांतहीन होता है। विशेष रूप से उसमें उचित मानवीय विवेक और अंतरात्मा का अभाव होता है, साथ ही उसमें परमेश्वर की सराहना और पवित्र आत्मा की परिपुष्टि की कमी होती है। अपने ही बनाए रास्ते पर चलने में बहुत ज़्यादा आसानी होती है। इस तरह का अभ्यास महज़ नियमों का अनुसरण करना है या स्वयं को प्रतिबंधित और नियंत्रित करने के लिए जानबूझकर अधिक भार उठाना है। फिर भी तुम्हें लगता है कि तुम्हारा अभ्यास एकदम सही और सटीक है, इस बात से अनजान कि तुम्हारे अभ्यास का अधिकतर हिस्सा अनावश्यक प्रक्रियाओं और अनुपालनों से बना है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो मूलत: अपने स्वभावों में बिना कोई बदलाव लाए, बिना किसी नयी समझ के, बिना नए प्रवेश के, बरसों तक इसी तरह से अभ्यास करते हैं। वे अनजाने में वही गलती बार-बार करके अपनी पाशविक प्रकृतियों को खुली छूट देते हैं, ऐसा इस हद तक करते हैं जहाँ बहुत बार वे अविवेकी, अमानवीय कृत्य कर बैठते हैं और इस प्रकार व्यवहार करते हैं कि लोग अपना सिर खुजलाते और हक्के-बक्के रह जाते हैं। क्या ऐसे लोगों के बारे कहा जा सकता है कि उन्होंने स्वभावगत बदलाव का अनुभव कर लिया है?

अब, परमेश्वर में आस्था ने परमेश्वर के वचन के युग में प्रवेश कर लिया है। तुलनात्मक रूप से कहा जाए तो, लोग आज उतनी प्रार्थना नहीं करते जितनी पहले कभी किया करते थे; परमेश्वर के वचनों ने स्पष्ट रूप से सत्य के हर पहलू और अभ्यास के हर तरीके को साफ तौर पर बता दिया है, इसलिए अब लोगों को खोजने या अंधेरे में भटकने की आवश्यकता नहीं है। राज्य के युग के जीवन में, परमेश्वर के वचन लोगों को आगे का मार्ग दिखाते हैं। यह एक ऐसा जीवन है जिसमें लोगों को समझने के लिए हर बात को स्पष्ट कर दिया गया है—क्योंकि परमेश्वर ने हर बात का साफ तौर पर प्रदर्शित कर दिया है, और इंसान को टटोलते हुए जीवन में बढ़ने के लिए छोड़ नहीं दिया है। फिर चाहे विवाह, सांसारिक मामले, जीवन, आहार,

कपड़े, आश्रय, पारस्परिक संबंध, हों या फिर यह कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए किस प्रकार से सेवा की जाए, देह-सुख का त्याग कैसे किया जाए वगैरह। ऐसी कौन-सी बात है जिसे परमेश्वर ने तुम लोगों के सामने स्पष्ट न किया हो? क्या अभी भी प्रार्थना और खोज करने की आवश्यकता है? वाकई कोई आवश्यकता नहीं है! लेकिन अगर तुम अभी भी ये काम करते हो, तो तुम निरर्थक कार्य कर रहे हो। यह अज्ञानता और मूर्खता है और एकदम अनावश्यक है! वही लोग लगातार बेवकूफी की प्रार्थनाएँ करते हैं जिनमें क्षमता की कमी है और जो परमेश्वर के वचनों को समझने के योग्य नहीं हैं। सत्य का अभ्यास करने के लिए मुख्य बात यह है कि तुममें निश्चय है या नहीं। कुछ लोग यह जानने के बावजूद कि यह सत्य के अनुरूप नहीं है, अपने क्रिया-कलापों में देह-सुख की प्राथमिकताओं का ही अनुसरण करते हैं। इससे जीवन में उनकी प्रगति रुक जाती है, प्रार्थना और खोज करने पर भी वे देह-सुख के आगे ही झुके रहना चाहते हैं। ऐसा करके, क्या वे जान-बूझकर पाप नहीं कर रहे हैं? उन लोगों की तरह जो देख-सुख के आनंद की अभिलाषा करते हैं, धन चाहते हैं और फिर परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं : "हे परमेश्वर! क्या तू मुझे देह-सुख के आनंद और धन-दौलत की अभिलाषा करने देगा? क्या यह मेरे लिए तेरी इच्छा है कि मैं इस तरीके से पैसा कमाऊँ?" क्या यह प्रार्थना करने का सही तरीका है? ऐसा करने वाले लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि परमेश्वर को इन सब चीज़ों में कोई खुशी नहीं मिलती, उन्हें यह सब छोड़ देना चाहिए, लेकिन जिन चीज़ों को वे अपने दिलों में पकड़े बैठे हैं, वे पहले ही तय की जा चुकी हैं। जब वे प्रार्थना और खोज करते हैं तो वे परमेश्वर को इस बात के लिए विवश करने का प्रयास करते हैं कि वह उन्हें इस तरह से बर्ताव करने की अनुमति दे, अपने दिल में, वे यह भी माँग करते हैं कि परमेश्वर इसकी परिपुष्टि के लिए कुछ कहे—इसी को विद्रोहशीलता कहते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो कलीसिया के भाई-बहनों को अपने पक्ष में करके अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेते हैं। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि इस तरह की कारगुज़ारियाँ परमेश्वर के विरुद्ध हैं, लेकिन अगर एक बार तुम इस तरह का कुछ करने का निश्चय कर लेते हो, तो तुम शांत होकर, विचलित हुए बिना, परमेश्वर से प्रार्थना और खोज करने में लगे रहते हो। तुम कितने बेशर्म और निर्लज्ज हो! जहाँ तक सांसारिक चीज़ों के त्याग की बात है, उसके बारे में बहुत पहले ही बोल दिया गया है। कुछ लोग ऐसे हैं जो जानते हैं कि परमेश्वर को सांसारिक चीज़ों से घृणा है, लेकिन वे फिर भी प्रार्थना करके कहते हैं : "हे परमेश्वर! मैं जानता हूँ कि तू नहीं चाहता कि मैं सांसारिक चीज़ों के पीछे भागूँ, लेकिन मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ ताकि तेरा नाम कलंकित न हो; मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ

ताकि सांसारिक लोग तेरी महिमा मुझमें देख सकें।" यह किस तरह की प्रार्थना है? क्या तुम लोग बता सकते हो? यह परमेश्वर को मजबूर करने और उस पर दबाव डालने की नियत से की गयी प्रार्थना है। क्या इस तरह से प्रार्थना करने पर तुम्हें शर्म नहीं आती? इस तरह की प्रार्थना करने वाले लोग जानबूझकर परमेश्वर का विरोध करते हैं। इस तरह की प्रार्थना पूरी तरह से संदेहास्पद मंशा का मामला है। यह वाकई शैतानी स्वभाव का प्रकटन है। परमेश्वर के वचन शीशे की तरह साफ हैं, विशेषकर वे वचन जो उसकी इच्छा, उसके स्वभाव और इस बारे में व्यक्त किए गए हैं कि वह अलग-अलग प्रकार के लोगों के साथ किस तरह व्यवहार करता है। अगर तुम सत्य नहीं समझते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के और अधिक वचन पढ़ने चाहिए—ऐसा करने के परिणाम आँखें मूँदकर प्रार्थना और खोज करने से कहीं बेहतर होते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ प्रार्थना और खोज करने के स्थान पर परमेश्वर के वचनों को और अधिक पढ़ा जाना चाहिए और सत्य पर संवाद किया जाना चाहिए। अपनी नियमित प्रार्थना में, तुम्हें परमेश्वर के वचनों पर चिंतन और उनमें अपने आपको जानने का प्रयास करना चाहिए। यह जीवन में तुम्हारी प्रगति के लिए अधिक लाभदायक है। अब, अगर तुम अभी भी स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर खोजते हो, तो क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि तुम अभी भी अज्ञात परमेश्वर में विश्वास रखते हो? पहले, तुमने अपनी प्रार्थना और खोज करने के परिणाम देख लिए और पवित्र आत्मा ने तुम्हारी आत्मा को थोड़ा-बहुत प्रेरित किया क्योंकि वह अनुग्रह के युग का समय था। तुम परमेश्वर को नहीं देख पाए, इसलिए तुम्हारे पास अपने रास्ते को महसूस करके आगे बढ़ने और इस तरह खोजने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अब परमेश्वर लोगों के बीच आ चुका है, वचन देह में प्रकट हो चुका है और तुम परमेश्वर को देख चुके हो; इस तरह पवित्र आत्मा पहले की तरह कार्य नहीं करता। युग बदल चुका है और पवित्र आत्मा का कार्य करने का तरीका भी बदल चुका है। हालाँकि लोग शायद अब पहले जितनी प्रार्थना न करें, क्योंकि परमेश्वर धरती पर है, इंसान के पास परमेश्वर से प्रेम करने का अवसर है। इंसान परमेश्वर से प्रेम करने के युग में प्रवेश कर चुका है और वह सही ढंग से स्वयं में परमेश्वर से निकटता प्राप्त कर सकता है : "हे परमेश्वर! तू सचमुच बहुत अच्छा है और मैं तुझसे प्रेम करना चाहता हूँ! " बस केवल कुछ स्पष्ट और सरल शब्द लोगों के दिलों में परमेश्वर के लिए प्रेम को वाणी देते हैं; यह प्रार्थना इंसान और परमेश्वर के बीच प्रेम को और अधिक गहरा करने के लिए की जाती है। हो सकता है कई बार तुम स्वयं को कुछ विद्रोहशीलता का इज़हार करते हुए देखो और कहो : "हे परमेश्वर! मैं इतना भ्रष्ट क्यों हूँ?" कई बार तुम्हारी प्रबल इच्छा होती है कि तुम

स्वयं को मारो और तुम्हारी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। ऐसे समय में, तुम्हें दिल में पछतावा और बेचैनी महसूस होती है, लेकिन इन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए तुम्हारे पास कोई तरीका नहीं होता। यह पवित्र आत्मा का वर्तमान कार्य है, लेकिन जीवन का अनुसरण करने वाले ही इसे प्राप्त कर सकते हैं। तुम्हें महसूस होता है कि परमेश्वर को तुमसे बहुत अधिक प्रेम है और तुम्हारे अंदर एक विशेष प्रकार की भावना होती है। भले ही तुम्हारे पास स्पष्ट तौर पर प्रार्थना करने के लिए शब्द नहीं होते, लेकिन तुम्हें हमेशा लगता है कि परमेश्वर का प्रेम महासागर जितना गहरा है। इस अवस्था में होने की अनुभूति को व्यक्त करने के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं हैं, और यह एक ऐसी अवस्था है जो आत्मा के अंदर अक्सर पैदा होती है। इस प्रकार की प्रार्थना और सहभागिता जिसका लक्ष्य इंसान को उसके दिल में परमेश्वर के करीब लाना है, सामान्य और सही है।

भले ही जब लोगों को टटोलकर ढूँढना पड़ता था, वो अब बीते ज़माने की बात हो चुकी है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें अब और प्रार्थना करने और खोजने की ज़रूरत नहीं है, न ही बात यह है कि लोगों को कार्य करने से पूर्व परमेश्वर की इच्छा के प्रकट होने का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है; ये सिर्फ इंसान की भ्रांत धारणाएँ हैं। परमेश्वर इंसानों के बीच रहने, उनकी रोशनी, उनका जीवन और उनका मार्ग बनने के लिए आया है : यह एक तथ्य है। बेशक, परमेश्वर धरती पर अपने आगमन में, यकीनन इंसान के लिए व्यवहारिक मार्ग और जीवन लाया है जो इंसान के आनंद की खातिर उसके आध्यात्मिक कद के उपयुक्त है—वह इंसान के अभ्यास के सारे मार्गों को तोड़ने के लिए नहीं आया है। इंसान अब भटकते और खोजते हुए नहीं जीता क्योंकि इन चीज़ों का स्थान कार्य करने और अपने वचन बोलने के लिए धरती पर परमेश्वर के आगमन ने ले लिया है। वह इंसान को उस अंधेरे और गुमनामी के जीवन से मुक्त कराने के लिए आया है जो वह जी रहा है ताकि इंसान रोशनी से भरा जीवन जी पाए। वर्तमान कार्य चीज़ों की ओर स्पष्ट संकेत करने, साफ तौर पर बोलने, प्रत्यक्ष रूप से जानकारी देने और चीज़ों को स्पष्टत: परिभाषित करने के लिए है ताकि लोग इन बातों को अमल में ला सकें, जैसे यहोवा परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को यह कहते हुए राह दिखायी थी कि किस प्रकार बलि अर्पित करें और मंदिर का निर्माण करें। इसलिए, तुम लोगों को ईमानदारी से खोज करने का ऐसा जीवन जीने की आवश्यकता नहीं है जैसा प्रभु यीशु के जाने के बाद तुमने जिया था। क्या तुम्हें भविष्य में सुसमाचार के प्रचार-प्रसार के कार्य के दौरान अपने मार्ग को ढूँढ़ना चाहिए? क्या तुम लोगों को जीने की खातिर अनाड़ीपन से उपयुक्त मार्ग की तलाश का प्रयास करना

चाहिए? क्या तुम लोगों को अपना कर्तव्य निभाने की समझ हासिल करने के लिए अनिवार्यत: अंधेरे में भटकना चाहिए? यह जानने के लिए कि गवाही कैसे दी जाए, क्या यह आवश्यक है कि तुम लोग दंडवत करो, खोजो? यह जानने के लिए कि तुम लोगों को कपड़े कैसे पहनने चाहिए या कैसे जीना चाहिए, क्या यह आवश्यक है कि तुम लोग उपवास और प्रार्थना करो? यह जानने के लिए कि तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा जीते जाने को कैसे स्वीकार करना चाहिए, क्या यह आवश्यक है कि तुम लोगों को स्वर्ग के परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना करनी चाहिए? यह जानने के लिए कि तुम लोगों को परमेश्वर का आज्ञापालन कैसे करना चाहिए, क्या यह आवश्यक है कि तुम लोग लगातार दिन-रात प्रार्थना करो? तुम लोगों में से ऐसे बहुत से लोग हैं जो यह कहते हैं कि वे अभ्यास नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें समझ नहीं है। लोग आज के समय में परमेश्वर के कार्य पर ध्यान नहीं दे रहे! मैं पहले बहुत सारे वचन बोल चुका हूँ, लेकिन तुम लोगों ने उन्हें पढ़ने पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि तुम लोगों को पता ही नहीं कि अभ्यास कैसे करना है। बेशक, आज के युग में पवित्र आत्मा अभी लोगों को प्रेरित करता है कि वे आनंदित महसूस करें और वह इंसान के साथ रहता है। तुम्हारे जीवन में अक्सर होने वाली उन[क] विशेष, आनंददायक भावनाओं का स्रोत यही है। कभी-कभार कोई दिन आता है जब तुम्हें महसूस होता है कि परमेश्वर बहुत ही मनोहर है और तुम अपने आपको उसकी प्रार्थना करने से रोक नहीं पाते : "हे परमेश्वर! तेरा प्रेम बहुत ही सुंदर और तेरी छवि बहुत ही महान है। मैं चाहता हूँ कि मैं तुझे और गहराई से प्रेम करूँ। मैं अपने समग्र जीवन को खपा देने के लिए स्वयं को पूर्णत: अर्पित कर देना चाहता हूँ। अगर यह तेरे लिए है, अगर मैं तुझे प्रेम कर पाऊँ, तो मैं अपना सर्वस्व तुझे समर्पित कर दूँगा...." यह सुख की एक भावना है जो तुम्हें पवित्र आत्मा ने दी है। यह न तो प्रबोधन है, न ही प्रकाशन है; यह प्रेरित होने का अनुभव है। कभी न कभी इस तरह के अनुभव होते रहेंगे : कभी-कभी जब तुम काम पर जा रहे होते हो, तो तुम परमेश्वर से प्रार्थना करते हो और उसके करीब आ जाते हो, और तुम इस हद तक प्रेरित हो जाते हो कि तुम्हारी आँखों में आँसू आ जाते हैं, अपने आप पर तुम्हारा नियंत्रण नहीं रहता और तुम एक ऐसे उपयुक्त स्थान की तलाश के लिए बेचैन हो जाते हो जहाँ तुम अपने दिल की तीव्र भावनाओं को व्यक्त कर सको....कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि तुम किसी सार्वजनिक स्थान पर हो और महसूस करो कि तुम्हें परमेश्वर का प्रेम बहुत अधिक मिलता है, तुम्हें लगे कि तुम्हारी स्थिति मामूली नहीं है, यहाँ तक कि तुम दूसरों से अधिक सार्थक जीवन जी रहे हो। तुम्हें गहराई से महसूस होगा कि परमेश्वर ने तुम्हारा उत्कर्ष

किया है और यह तुम्हारे लिए परमेश्वर का महान प्रेम है। अपने दिल के किसी गहनतम कोने में तुम्हें महसूस होगा कि परमेश्वर के अंदर इस प्रकार का प्रेम है जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता और जिसकी थाह नहीं पायी जा सकती, मानो तुम जानते तो हो मगर तुम उसका वर्णन नहीं कर सकते, यह तुम्हें सोचने के लिए हमेशा एक विराम देता है लेकिन तुम बिल्कुल भी व्यक्त नहीं कर पाते हो। कभी-कभी ऐसे समय में, तुम यह भी भूल जाओगे कि तुम कहाँ हो और पुकार उठोगे : "हे परमेश्वर! तू कितना अथाह और मनोहर है!" इससे लोग उलझन में पड़ जाएंगे, लेकिन ये तमाम चीज़ें अक्सर होती हैं। तुमने ऐसी बातों का अनुभव किया है। आज पवित्र आत्मा ने तुम्हें यह जीवन प्रदान किया है और अब तुम्हें यही जीवन जीना चाहिए। यह तुम्हें जीवन जीने से रोकने के लिए नहीं है, बल्कि जिस तरह का जीवन तुमने जिया है उसे बदलने के लिए है। इस तरह की भावना का न तो वर्णन किया जा सकता है, न ही उसे व्यक्त किया जा सकता है। यह इंसान की सच्ची भावना भी है, यहाँ तक कि यह पवित्र आत्मा का कार्य है। तुम इस बात को अपने दिल में तो समझ सकते हो लेकिन किसी दूसरे के सामने इसे साफ तौर पर व्यक्त करने का तुम्हारे पास कोई भी तरीका नहीं है। इसकी वजह यह नहीं है कि तुम धीमा बोलते हो या तुम हकलाते हो, बल्कि यह है कि इस तरह की भावना को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। आज तुम इन चीज़ों का आनंद ले सकते हो और तुम्हें इसी तरह का जीवन जीना चाहिए। बेशक, तुम्हारे जीवन के अन्य पहलू भी खाली नहीं हैं; बात केवल इतनी-सी है कि प्रेरित होने का यह अनुभव तुम्हारे जीवन में एक प्रकार का आनंद बन जाता है जो हमेशा तुम्हारे अंदर इच्छा पैदा करता है कि तुम पवित्र आत्मा के इन अनुभवों का आनंद लो। लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि इस तरह से प्रेरित होना इसलिए नहीं है कि तुम देह से परे तीसरे स्वर्ग में चले जाओ या पूरी दुनिया में भ्रमण करो। बल्कि इसलिए है कि तुम परमेश्वर के उस प्रेम को महसूस और अनुभव कर सकोजिसका आज तुम आनंद ले रहे हो, परमेश्वर के आज के कार्य के महत्व का अनुभव कर सको, और परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा से स्वयं को फिर से परिचित करा सको। ये सारी चीज़ें इसलिए हैं ताकि परमेश्वर आज जो कार्य कर रहा है, तुम उसका और अधिक ज्ञान अर्जित कर सको—इस कार्य को करने का परमेश्वर का यही लक्ष्य है।

परमेश्वर के देहधारण से पहले खोजना और टटोलना ही जीवन का तरीका था। उस समय लोग परमेश्वर को देख नहीं पाते थे और इसलिए उनके पास खोजने और टटोलने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। आज तुमने परमेश्वर को देख लिया है और वह सीधे तुमसे कहता है कि किस तरह तुम्हें अभ्यास

करना चाहिए; इसलिए तुम्हें टटोलने और खोजने की आवश्यकता नहीं है। वह इंसान को जिस मार्ग पर ले जाता है वह सत्य का मार्ग है, वह इंसान को जो बातें बताता है और इंसान जिन बातों को ग्रहण करता है वह जीवन और सत्य है। तुम्हारे पास मार्ग, जीवन और सत्य है, तो हर जगह पर खोजने की क्या आवश्यकता है? पवित्र आत्मा दो चरणों का कार्य एक-साथ नहीं करेगा। मेरे वचन बोलना बंद कर देने के बाद, अगर लोग परमेश्वर के वचनों को ध्यान से खाते-पीते नहीं हैं और सही ढंग से सत्य का पालन नहीं करते हैं, वे अभी भी अनुग्रह के युग की तरह ही काम करते हैं, अंधों की तरह टटोलते हैं, निरंतर प्रार्थना करते और खोजते हैं, तो क्या इसका अर्थ यह नहीं होगा कि इस चरण का मेरा कार्य—वचनों का कार्य—व्यर्थ में किया जा रहा है? हालाँकि मेरा बोलना समाप्त हो चुका है, लेकिन लोग अभी भी पूरी तरह समझे नहीं हैं, क्योंकि उनमें क्षमता की कमी है। इस समस्या का समाधान कलीसियाई जीवन जीने और एक-दूसरे से संवाद करके किया जा सकता है। पहले, अनुग्रह के युग में, हालाँकि परमेश्वर ने देहधारण किया था, लेकिन उसने वचनों का कार्य नहीं किया था, इसलिए उस समय पवित्र आत्मा ने कार्य को बनाए रखने के लिए उस तरह से काम किया था। उस समय मुख्यत: पवित्र आत्मा ने कार्य किया था, लेकिन अब देहधारी परमेश्वर स्वयं इसे कर रहा है, उसने पवित्र आत्मा के कार्य का स्थान ले लिया है। पहले, जब तक लोग प्रार्थना करते रहते थे, वे शांति और आनंद का अनुभव करते थे; उस समय फटकार और अनुशासन था। यह सब पवित्र आत्मा का कार्य था। अब ये स्थितियाँ कभी-कभार ही उत्पन्न होती हैं। पवित्र आत्मा किसी भी युग में एक ही प्रकार का कार्य कर सकता है। अगर वह एक-साथ दो प्रकार के कार्य करता, लोगों में देह एक प्रकार का कार्य करता और पवित्र आत्मा दूसरे प्रकार का, और अगर जो देह करता उसका महत्व न होता और केवल जो आत्मा करता उसी का महत्व होता, तो मसीह के पास कोई अर्थपूर्ण सत्य, मार्ग या जीवन न होता। यह अंतर्विरोध होता। क्या पवित्र आत्मा ऐसे कार्य कर सकता है? परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सबसे बुद्धिमान, पवित्र और धर्मी है, और वह बिलकुल भी गलतियाँ नहीं करता।

लोगों के पहले के अनुभवों में बहुत सारे भटकाव और गलतियाँ थीं। कुछ चीज़ें ऐसी थीं जो सामान्य मानवता वाले लोगों में होनी चाहिए थीं या उन्हें करनी चाहिए थीं, या ऐसी त्रुटियाँ थीं जिनसे इंसानी जीवन में बचना मुश्किल था, और जब उन चीज़ों को गलत ढंग से संभाला गया, तो लोगों ने उसकी ज़िम्मेदारी परमेश्वर पर डाल दी। एक बहन थी जिसके घर पर कुछ मेहमान आए। उसकी रोटियाँ ढंग से सिंकी नहीं थी, तो उसने सोचा : "शायद यह परमेश्वर का अनुशासन है। परमेश्वर फिर से मेरे दंभी दिल से निपट रहा

है; मेरा अभिमान सचमुच बहुत मजबूत है।" दरअसल, जहाँ तक इंसान के सामान्य ढंग से सोचने का सवाल है, जब मेहमान आते हैं, तो तुम उत्तेजित हो जाते हो और हड़बड़ी करते हो, हर काम बेतरतीबी से करते हो, तो यह स्वभाविक बात है कि या तो खाना जल जाता है या उसमें नमक ज़्यादा हो जाता है। यह ज़्यादा उत्तेजित होने से होता है, लेकिन लोग इसे "परमेश्वर के अनुशासन" के सिर मढ़ देते हैं। दरअसल, ये वो सारी गलतियाँ हैं जो इंसानी जीवन में होती हैं। अगर तुम परमेश्वर में आस्था न रख रहे होते, तो क्या यह समस्या तब न आती? समस्याएँ अक्सर इंसान की गलतियों का नतीजा होती हैं—ये गलतियाँ कोई पवित्र आत्मा की करनी का मामला नहीं हैं। इन गलतियों का परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। जैसे अगर खाना खाते समय तुम्हारी जीभ कट जाए तो क्या यह परमेश्वर का अनुशासन है? परमेश्वर के अनुशासन के सिद्धांत हैं और वे आमतौर पर तब देखने में आते हैं जब तुम जानबूझकर कोई अपराध करते हो। जब तुम परमेश्वर के नाम को शामिल करके या उसकी गवाही या कार्य से संबंधित कोई काम करते हो तभी वह तुम्हें अनुशासित करेगा। जो काम लोग करते हैं उसकी अंदरूनी जागरुकता हासिल करने के लिए उनमें अब सत्य की पर्याप्त समझ है। उदाहरण के रूप में : अगर तुमने कलीसिया के धन का गबन कर लिया या उस धन को तुमने बेतहाशा खर्च कर दिया, तो क्या यह संभव है कि तुम्हें कुछ महसूस न हो? ऐसा करते समय तुम्हें कुछ महसूस होगा। यह संभव नहीं है कि ऐसा काम करने के बाद ही तुम्हें कुछ महसूस हो। तुम अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध जो काम करते हो उनके बारे में तुम अपने दिल में स्पष्ट होते हो। क्योंकि लोगों की अपनी पसंद और प्राथमिकताएँ होती हैं, वे बस लिप्त हो जाते हैं जबकि वे जानते हैं कि सत्य को कैसे अमल में लाना है। वैसे, कुछ करने के बाद, उन्हें कोई स्पष्ट शर्मिंदगी महसूस नहीं होती या वे किसी स्पष्ट अनुशासन से नहीं गुज़रते। क्योंकि उन्होंने यह अपराध जानबूझकर किया होता है, इसलिए परमेश्वर उन्हें अनुशासित नहीं करता; जब धार्मिक न्याय का समय आयेगा, तो हर एक पर उसके कर्मों के अनुसार परमेश्वर का प्रतिफल आयेगा। इस समय कलीसिया में कुछ ऐसे लोग हैं जो पैसों का गबन करते हैं, कुछ ऐसे हैं जो स्त्री-पुरुषों में एक स्पष्ट सीमारेखा कायम नहीं रखते, कुछ आलोचना, अवहेलना करते हैं और गुप्त रूप से परमेश्वर के कार्य को ध्वस्त करने का प्रयास करते हैं। फिर भी उनके साथ सब-कुछ सही कैसे है? जब वे लोग ऐसे काम करते हैं, तो उन्हें इसका भान होता है और उन्हें अपने दिल में शर्मिंदगी भी होती है और इसी वजह से वे लोग कभी-कभी ताड़ना और शुद्धिकरण का कष्ट उठाते हैं, लेकिन वे लोग बहुत निर्लज्ज होते हैं! जैसे जब लोग स्वच्छंद संभोग में लिप्त होते हैं, तो उन्हें उस समय पता होता है कि वे क्या

कर रहे हैं, लेकिन उनकी कामुकता बहुत अधिक होती है और वे अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख पाते। भले ही पवित्र आत्मा उन्हें अनुशासित कर दे, लेकिन उसका कोई फायदा नहीं होगा, इसलिए पवित्र आत्मा अनुशासन को प्रभाव में नहीं लाएगा। अगर पवित्र आत्मा उन्हें तब अनुशासित न करे, उन्हें कोई शर्मिंदगी महसूस न हो और उनके देह को कुछ न हो, तो क्या बाद में उन्हें फटकारा जा सकता है? कृत्य को चुका है, अब क्या अनुशासन हो सकता है? इससे यही साबित होता है कि वे बहुत ही निर्लज्ज लोग हैं और उनमें मानवीयता का अभाव है, ये लोग अभिशाप और दंड के हकदार हैं! पवित्र आत्मा अनावश्यक रुप से काम नहीं करता। अगर तुम भलीभाँति सत्य जानते हो लेकिन उस पर अमल नहीं करते, अगर तुम कोई भी बुराई करने के काबिल हो, तो तुम सिर्फ यही कर सकते हो कि उस दिन का इंतज़ार करो जब दुष्ट के साथ तुम्हें भी दंडित किया जाएगा। यही तुम्हारे लिए सर्वोत्तम अंत है! मैंने बारंबार तुम्हें अंतरात्मा के बारे में प्रवचन दे दिया है, जो कि न्यूनतम पात्रता है। अगर लोगों में अंतरात्मा का अभाव है, तो वे पवित्र आत्मा का अनुशासन खो चुके हैं; वे जो चाहें कर सकते हैं और परमेश्वर उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। जिनमें सचमुच अंतरात्मा और विवेक है, वे जब कोई गलत कार्य करेंगे तो वे उसके प्रति सजग होंगे। जब उनकी अंतरात्मा उन्हें धिक्कारेगी तो वे थोड़ा असहज महसूस करेंगे; उनमें अंतर्द्वंद्व चलेगा और अंतत: वे देह-सुख का त्याग कर देंगे। वे उस मुकाम तक नहीं जाएँगे जहाँ वे ऐसा कोई काम करें जो गंभीर रूप से परमेश्वर-विरोधी हो। पवित्र आत्मा उन्हें चाहे अनुशासित करे या न करे, ताड़ना दे या न दे, लोग जब कुछ गलत करेंगे, तो उन्हें कुछ महसूस होगा। इसलिए, लोग अब हर तरह के सत्यों को समझते हैं और अगर वे उनका अभ्यास नहीं करते, तो यह एक मानवीय मसला है। मैं ऐसे लोगों के बारे में बिल्कुल भी प्रतिक्रिया नहीं देता, न ही उनके लिए कोई उम्मीद करता हूँ। तुम जैसा चाहो कर सकते हो!

जब कुछ लोग एकत्रित होते हैं, तो वे परमेश्वर के वचनों को दर-किनार करके हमेशा इस बारे में बात करते हैं कि अमुक व्यक्ति कैसा है। बेशक, थोड़ी समझ होना अच्छी बात है, ताकि तुम कहीं भी जाओ, तुम्हें कोई आसानी से धोखा न दे सके, न ही आसानी कोई बुद्धू या मूर्ख बना सके—यह भी एक पहलू है जो लोगों में होना चाहिए। लेकिन तुम्हें मात्र इसी एक पहलू पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। इसका संबंध चीज़ों के नकारात्मक पक्ष से है और तुम हमेशा लोगों पर नज़र गड़ाए नहीं रह सकते। पवित्र आत्मा किस प्रकार कार्य करता है, इस बारे में तुम्हें अभी बहुत थोड़ा ज्ञान है, परमेश्वर में तुम्हारी आस्था बहुत सतही है, और तुम्हारे अंदर सकारात्मक चीज़ें बहुत ही कम हैं। जिसमें तुम्हारी आस्था है वह परमेश्वर है,

जिसे तुम्हें समझना है वह परमेश्वर है, शैतान नहीं। अगर तुम केवल इतना ही समझते हो कि शैतान कैसे काम करता है, उन सारे तरीकों को जानते हो जिनके ज़रिए दुष्ट आत्माएँ काम करती हैं, लेकिन अगर तुम्हें परमेश्वर का किसी भी प्रकार का कोई ज्ञान नहीं है, तो उसका क्या अर्थ होगा? आज जिसमें तुम्हारी आस्था है, क्या वह परमेश्वर नहीं है? तुम्हारे ज्ञान में ये सकारात्मक बातें शामिल क्यों नहीं हैं? तुम प्रवेश के सकारात्मक पहलू पर ध्यान ही नहीं देते, न ही इस पर तुम्हारी पकड़ है, तो आखिर वो क्या चीज़ है जिसे तुम अपनी आस्था में प्राप्त करना चाहते हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम्हें कैसे अनुसरण करना चाहिए? तुम नकारात्मक पहलू के बारे में बहुत कुछ जानते हो, लेकिन प्रवेश के सकारात्मक पहलू पर तुम नाकाम हो जाते हो, तो आखिर तुम्हारा आध्यात्मिक कद बढ़ेगा कैसे? तुम जैसा व्यक्ति जो शैतान के साथ युद्ध के अलावा कोई बात ही नहीं करता, उसके विकास के लिए भविष्य की संभावनाएँ क्या होंगी? क्या तुम्हारा प्रवेश बहुत पुराना नहीं होगा? ऐसा करके तुम वर्तमान कार्य से क्या हासिल कर पाओगे? तुम्हारे लिए इस समय यह समझना मुख्य है कि परमेश्वर अब क्या करना चाहता है, इंसान को कैसे सहयोग करना चाहिए, उसे परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए, उसे पवित्र आत्मा के कार्य को कैसे समझना चाहिए, परमेश्वर आज जो वचन कह रहा, उसे उन सबमें कैसे प्रवेश करना चाहिए, उन्हें कैसे खाना-पीना चाहिए, अनुभव करना और समझना चाहिए, उसे परमेश्वर की इच्छा को कैसे पूरा करना चाहिए, कैसे परमेश्वर द्वारा जीता जाना चाहिए और परमेश्वर के सामने कैसे समर्पित होना चाहिए... तुम्हें इन बातों पर ध्यान देना चाहिए और अब इनमें प्रवेश करना चाहिए। क्या तुम समझते हो? मात्र दूसरे लोगों की पहचान करने पर ध्यान देने से क्या फायदा? तुम यहाँ-वहाँ शैतान और दुष्ट आत्माओं की पहचान कर सकते हो—तुम दुष्ट आत्माओं की पूरी समझ हासिल कर सकते हो, लेकिन अगर तुम परमेश्वर के कार्य के बारे में कुछ भी न कह पाओ, तो क्या ऐसी पहचान परमेश्वर की समझ का विकल्प हो सकती है? मैं पहले दुष्ट आत्माओं के कार्य की अभिव्यक्तियों के बारे में संवाद कर चुका हूँ, लेकिन इसकी मात्रा अधिक नहीं रही है। बेशक, लोगों में थोड़ी-बहुत पहचानने की शक्ति होनी चाहिए और जो लोग परमेश्वर की सेवा करते हैं उनमें यह पहलू होना चाहिए ताकि वे बेवकूफी के काम करने और परमेश्वर के कार्य को बाधित करने से बचें। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है परमेश्वर के कार्य का ज्ञान और परमेश्वर की इच्छा की समझ का होना। तुम्हारे अंदर परमेश्वर के कार्य के इस चरण का क्या ज्ञान है? क्या तुम बता सकते हो कि परमेश्वर क्या कार्य करता है, परमेश्वर की इच्छा क्या है, तुम्हारी अपनी कमियाँ क्या हैं और तुम्हें स्वयं को किन चीज़ों से लैस करना

चाहिए? क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारा नवीनतम प्रवेश क्या है? तुम्हें परिश्रम का फल मिलना चाहिए और नए प्रवेश की समझ हासिल करनी चाहिए। तुम्हें भ्रमित होने का ढोंग नहीं करना चाहिए; तुम्हें अपने अनुभव और ज्ञान को और गहरा करने के लिए नए प्रवेश में और अधिक प्रयास करना चाहिए, यहाँ तक कि तुम्हें वर्तमान नवीनतम प्रवेशों और अनुभव करने के सबसे सही तरीके पर पकड़ बनानी चाहिए। इसके अलावा, नए कार्य और नए प्रवेश के ज़रिए, तुम्हारे अंदर पिछ्ले पुराने और पथभ्रष्ट अभ्यासों की समझ होनी चाहिए, और तुम्हें यह खोजना चाहिए कि नए अनुभवों में प्रवेश करने के लिए उन्हें कैसे हटाया जाए। ये वे बातें हैं जिन्हें तुम्हें अब तुरंत समझकर उनमें प्रवेश करना चाहिए। तुम्हें पुराने और नए प्रवेशों में अंतर और उनके संबंधों को समझना चाहिए। अगर इन बातों पर तुम्हारी पकड़ नहीं होगी, तो तुम्हारे पास विकास का कोई मार्ग न होगा, क्योंकि तुम पवित्र आत्मा के कार्य के साथ अपनी गति नहीं बनाए रख पाओगे। तुम्हें परमेश्वर के वचनों को सही ढंग से खाना-पीना चाहिए, सही ढंग से संवाद करना और अभ्यास के अपने पिछले पुराने तरीकों और पुरानी पारंपरिक धारणाओं को बदलना चाहिए ताकि तुम नए अभ्यास में प्रवेश कर सको और परमेश्वर के नए कार्य में प्रवेश कर सको। तुम्हें इन चीज़ों को हासिल करना चाहिए। मैं तुम्हें बस यह पता लगाने के लिए नहीं कह रहा हूँ कि तुम सही ढंग से कैसे इसके लिए पात्र बनो; यह लक्ष्य नहीं है। बल्कि मैं तुमसे यह कह रहा हूँ कि तुम्हें अपने सत्य के अभ्यास को और अपने जीवन-प्रवेश को गंभीरता से लेना चाहिए। स्वयं को जानने की तुम्हारी योग्यता तुम्हारे सच्चे आध्यात्मिक कद का निरूपण नहीं है। अगर तुम परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर सको, परमेश्वर के वचनों में सत्यों का अनुभव कर सको और उनकी समझ हासिल कर सको, और अपनी पिछली निजी धारणओं और त्रुटियों को पहचान सको, तो यह तुम्हारा सच्चा आध्यात्मिक कद है और जिसे तुम सबको हासिल करना चाहिए।

ऐसी अनेक स्थितियाँ होती हैं जिनमें तुम्हें पता नहीं चलता कि अभ्यास कैसे करें, पवित्र आत्मा के कार्य की तो तुम्हें और भी कम जानकारी होती है। कभी-कभी तुम कुछ ऐसा कर देते हो जो साफ तौर पर पवित्र आत्मा की अवज्ञा होती है। परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के ज़रिए, पहले ही इस मामले में सिद्धांत पर तुम्हारी पकड़ है, इसलिए तुम्हारे अंदर शर्मिंदगी और बेचैनी की अंदरूनी भावना है; बेशक, इस तरह की भावना थोड़ा-बहुत सत्य जानने के आधार के अंतर्गत ही आएगी। अगर लोग परमेश्वर के आज के वचन से सहयोग न करें या उनके अनुरूप अभ्यास न करें, तो फिर वे पवित्र आत्मा के कार्य को बाधित

कर रहे हैं और वे यकीनन अपने अंदर बेचनी महसूस करेंगे। मान लो कि तुम किसी पहलू विशेष के सिद्धांत को समझते हो लेकिन तुम उसके अनुरूप अभ्यास नहीं करते, तो फिर तुम्हारे अंदर शर्मिंदगी की भावना आएगी। अगर तुम सिद्धांत को नहीं समझते और सत्य के इस पहलू को बिल्कुल भी नहीं जानते, तो फिर ज़रूरी नहीं कि तुम इस मामले में शर्मिंदगी महसूस करो। पवित्र आत्मा की फटकार हमेशा प्रसंग के अनुसार होती है। तुम्हें लगता है कि चूँकि तुमने प्रार्थना नहीं की और पवित्र आत्मा के कार्य में सहयोग नहीं किया, इसलिए तुम्हारे कारण कार्य में देरी हो गयी। जबकि सच्चाई यह है कि इसमें देरी नहीं की जा सकती। पवित्र आत्मा किसी और को प्रेरित कर देगा; पवित्र आत्मा के कार्य में कोई रुकावट नहीं डाल सकता। तुम्हें लगता है कि तुमने परमेश्वर को निराश कर दिया, यह भावना तुम्हारी अंतरात्मा में आनी चाहिए। तुम सत्य हासिल कर पाते हो या नहीं, यह तुम्हारा अपना मामला है और इसका परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं। कभी-कभी तुम्हारी अपनी अंतरात्मा ही अपराधी महसूस करती है, लेकिन यह पवित्र आत्मा का प्रबोधन या प्रकाशन नहीं है, न ही यह पवित्र आत्मा की फटकार है। बल्कि यह इंसानी ज़मीर के अंदर की भावना है। अगर तुम ऐसे मामलों में जहाँ परमेश्वर का नाम, परमेश्वर की गवाही या परमेश्वर का कार्य जुड़ा हुआ है, स्वच्छंदता से पेश आते हो, तो परमेश्वर तुम्हें छोड़ेगा नहीं। लेकिन इसकी एक सीमा है—परमेश्वर सामान्य और छोटे मामलों में तुम्हें लेकर परेशान नहीं होगा। वो तुम्हें नजरंदाज कर देगा। अगर तुम सिद्धांतों का उल्लंघन करोगे और परमेश्वर के काम में बाधा डालोगे और परेशानी पैदा करोगे, तो फिर तुम पर उसका क्रोध फूटेगा और वह तुम्हें बिल्कुल नहीं बख्शेगा। मानवीय जीवन के दौरान तुम जो कुछ गलतियाँ करते हो, उन्हें टाला नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए, तुम अपनी रोटी सही ढंग से नहीं सेंकते और कहते हो कि यह तुम्हारे लिए परमेश्वर का अनुशासन है—ऐसा कहना पूरी तरह से विवेकहीन बात है। परमेश्वर में आस्था रखने से पहले, क्या तुम्हारे साथ ऐसा अक्सर नहीं होता था? तुम्हें यह पवित्र आत्मा का अनुशासन लगता है, जबकि सच्चाई यह है कि ऐसा नहीं है (कुछ असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर), क्योंकि यह कार्य पूरी तरह से पवित्र आत्मा से नहीं आता, बल्कि इंसानी भावनाओं से आता है। हालाँकि, आस्था रखने वालों के लिए इस तरह से सोचना एक सामान्य बात है। जब तुम परमेश्वर में आस्था न रखते थे तो इस तरह से नहीं सोचते। एक बार तुम परमेश्वर में आस्था रखने लगे, तो तुम इन बातों पर ज़्यादा विचार करने लगे और इसलिए स्वाभाविक रूप से तुम इस तरह से सोचने लगे। यह सामान्य लोगों की सोच से पैदा होती है और इसका संबंध उनकी मानसिकता से है। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता दूँ, ऐसी सोच

पवित्र आत्मा के कार्य के दायरे में नहीं आती। यह पवित्र आत्म का लोगों को उनकी सोच के ज़रिए सामान्य प्रतिक्रिया देने का उदाहरण है; लेकिन तुम्हें यह समझना चाहिए कि यह प्रतिक्रिया पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है। इस तरह का "ज्ञान" रखने से यह साबित नहीं होता कि तुम्हारे अंदर पवित्र आत्मा का कार्य है। तुम्हारा ज्ञान पवित्र आत्मा के प्रबोधन से नहीं आता, यह पवित्र आत्मा का कार्य तो बिल्कुल भी नहीं है। यह मात्र सामान्य इंसानी सोच का नतीजा है और इसका संबंध पवित्र आत्मा के प्रबोधन या प्रकाशन से बिल्कुल भी नहीं है—ये साफ तौर पर विशिष्ट घटनाएँ हैं। ऐसी सामान्य इंसानी सोच पवित्र आत्मा से बिल्कुल उत्पन्न नहीं होती।जब पवित्र आत्मा लोगों को प्रबुद्ध करने के लिए कार्य करता है, तो वह आम तौर पर उन्हें परमेश्वर के कार्य का, और उनकी सच्ची प्रविष्टि और सच्ची अवस्था का ज्ञान देता है। वह उन्हें परमेश्वर के अत्यावश्यक इरादों और उसकी मनुष्य से वर्तमान अपेक्षाओं के बारे में समझने देता है, ताकि उनके पास परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए सब कुछ बलि कर देने का संकल्प हो, ताकि वे परमेश्वर से अवश्य प्रेम करें भले ही वे उत्पीड़न और प्रतिकूल परिस्थितियों को भुगतें, ताकि वे परमेश्वर की गवाही दें भले ही इसका अर्थ अपना खून बहाना और अपना जीवन अर्पित करना हो; उन्हें कोई अफ़सोस नहीं होगा। यदि तेरा इस तरह का संकल्प है तो इसका अर्थ है कि तुझमें पवित्र आत्मा की हरकतें है, और पवित्र आत्मा का कार्य है—लेकिन जान ले कि तू हर गुजरते पल में इस तरह की हरकतों से संपन्न नहीं है। कभी-कभी बैठकों में जब तू प्रार्थना करता है और परमेश्वर के वचनों को खाता और पीता है, तो तू बेहद द्रवित और प्रेरित महसूस कर सकता है। जब अन्य लोग परमेश्वर के वचनों के अपने अनुभव और समझ पर कुछ संगति साझा करते हैं तो यह बहुत नया और ताजा महसूस होता है, और तेरा हृदय पूरी तरह से स्पष्ट और उज्ज्वल हो जाता है। यह सब पवित्र आत्मा का कार्य है। यदि तू कोई अगुवा है और पवित्र आत्मा तुझे असाधारण प्रबुद्धता और रोशनी देता है, तो जब तू काम करने के लिए कलीसिया में जाता है, वह उन समस्याओं को देखने देता है जो कलीसिया के भीतर मौज़ूद हैं, और जानने देता है कि उनका समाधान करने के लिए सत्य पर संगति को कैसे साझा करें, तुझे अविश्वसनीय रूप से नेक, जिम्मेदार और अपने कार्य में गंभीर बनाता है, तो यह सब पवित्र आत्मा का कार्य है।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में "ये कुछ हैं" लिखा है।

अभ्यास (2)

बीते समय में, लोग परमेश्वर के साथ रहने और प्रत्येक क्षण आत्मा के भीतर जीने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करते थे। आज के अभ्यास की तुलना में, यह एक साधारण आध्यात्मिक प्रशिक्षण है; इससे पहले कि लोग जीवन के सही रास्ते पर प्रवेश करें यह अभ्यास का सबसे सतही और सबसे साधारण तरीका है, और यह लोगों के विश्वास में अभ्यास का बिलकुल पहला चरण गठित करता है। यदि लोग अपने जीवन में सर्वदा इस तरह के अभ्यास पर निर्भर करें, तो उनकी बहुत सी भावनाएँ होंगी और उनकी ग़लतियाँ करने की संभावना होगी तथा वे जीवन के असल अनुभवों में प्रवेश करने में असमर्थ होगें; वे मात्र अपनी आत्माओं को प्रशिक्षित करने और अपने हृदयों में सामान्य तरीके से परमेश्वर के निकट आने में सक्षम होंगे और परमेश्वर के उनके संग होने में सर्वदा अत्यधिक आनन्द पाएंगे। वे परमेश्वर के साथ अपनी निकटता के छोटे से दायरे में खुद को सीमित कर लेंगे और इससे अधिक गहरी किसी भी चीज़ को समझने में अयोग्य होंगे। वे लोग जो इन सीमाओं में रहते हैं, वे अधिक विकास करने के अयोग्य होते हैं। वे किसी भी समय चिल्ला सकते हैं "आह! प्रभु यीशु। आमीन!" वे लगभग प्रतिदिन ऐसे ही होते हैं—बीते समय का यही अभ्यास है, प्रत्येक क्षण आत्मा में जीने का अभ्यास। क्या यह अशिष्ट नहीं है? आज, जब परमेश्वर के वचनों पर मनन करने का समय है, बस परमेश्वर के वचनों पर मनन करने पर ध्यान दो; जब सत्य का अभ्यास करने का समय है, तो बस अपना कर्तव्य पूरा करो। इस प्रकार का अभ्यास वास्तव में आज़ादी देने वाला है, यह तुम्हें मुक्त कर देता है। यह वैसा नहीं है जैसे एक धार्मिक वृद्ध व्यक्ति प्रार्थना और विनती करता है। निस्संदेह, पहले विश्वास करने वालों का ऐसा अभ्यास होता था, परन्तु अब इस रीति से अभ्यास करना अत्यधिक पिछड़ा हुआ है। परमेश्वर का काम अब ऊँचे स्तर पर है; आज जो "परमेश्वर को वास्तविक जीवन में लाने" की बात की जाती है, वह अभ्यास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। यह वह उचित मानवता है जो लोगों के पास उनके वास्तविक जीवन में होना अपेक्षित है, लोगों की उचित मानवता में जो होना चाहिए वह है आज परमेश्वर द्वारा बोले गए सारे वचन। परमेश्वर के इन वचनों को वास्तविक जीवन में लाना ही "परमेश्वर को वास्तविक जीवन में लाने" का व्यवहारिक अर्थ है। आज, लोगों को स्वयं को मुख्यतः निम्नलिखित बातों से सुसज्जित करना चाहिए : एक लिहाज से, उन्हें अपनी क्षमता में वृद्धि करनी चाहिए, शिक्षित होना चाहिए, और अपने पठन और बोध कौशल में वृद्धि करनी चाहिए; और दूसरे लिहाज से, उन्हें उचित व्यक्ति का जीवन जीना चाहिए। तुम अभी-अभी संसार से परमेश्वर के सम्मुख आए हो; तुम्हें

सर्वप्रथम अपने हृदय को परमेश्वर के सम्मुख शांत रहने के लिए प्रशिक्षित करना होगा। यह अभ्यास का मूल आरंभ है, और अपने जीवन स्वभाव में बदलाव हासिल करने में पहला कदम भी है। कुछ लोग अपने अभ्यास में तुलनात्मक रूप से अनुकूलनशील होते हैं; वे कार्य करते हुए सत्य पर मनन करते हैं, उन सत्यों और अभ्यास के सिद्धांतों को समझते हैं जो वास्तविकता में उन्हें समझने चाहिए। एक पहलू है कि तुम्हारे पास एक उचित मानव-जीवन होना चाहिए, और दूसरा पहलू है कि सत्य में प्रवेश अवश्य होना चाहिए। वास्तविक जीवन के लिए ये सभी बातें सर्वोत्तम अभ्यास हैं।

परमेश्वर को लोगों के वास्तविक जीवन में लाने के लिए मुख्यतः जिसकी आवश्यकता होती वह है कि लोग परमेश्वर की आराधना करें, परमेश्वर के बारे में ज्ञान पाने का प्रयत्न करें, और उचित मानवता के भीतर परमेश्वर के जीव के कर्तव्य को पूरा करें। ऐसा नहीं है कि, जैसे ही वे कुछ करना आरम्भ करें, उन्हें उसी क्षण प्रार्थना करनी ही होगी और यदि वे प्रार्थना नहीं करते हैं तो यह ठीक नहीं है और उन्हें इसके कारण परमेश्वर के प्रति ऋणी महसूस करना चाहिए। आज का अभ्यास ऐसा नहीं है; यह तनावमुक्त और सरल है! इसमें लोगों को सिद्धांतों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि, प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत कद-काठी के अनुसार कार्य करना चाहिए : यदि तुम्हारे परिवार के सदस्य परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, तो उनसे अविश्वासियों के समान व्यवहार करो, और यदि वे विश्वास करते हैं, तो उनसे विश्वासियों के समान व्यवहार करो। प्रेम और धैर्य का नहीं, अपितु बुद्धि का अभ्यास करो। कुछ लोग सब्जियाँ खरीदने बाहर जाते हैं, चलते हुए वे बड़बड़ाते हैं : "हे परमेश्वर! तू आज मुझसे कौन-सी सब्ज़ियाँ खरीदवाना चाहता है? मैं तेरी सहायता के लिए विनती करता हूँ। परमेश्वर चाहता है कि हम सब बातों में उसके नाम की महिमा करें, हम सभी साक्ष्य दें, इसलिए अगर दुकानदार मुझे कुछ सड़ा सामान दे देता है, तो मैं फिर भी परमेश्वर का धन्यवाद करूँगा—मैं झेल लूँगा! हम जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वे सब्ज़ियों में से चुन नहीं सकते।" उन्हें लगता है कि यह करना परमेश्वर का साक्ष्य देना है, और इसका नतीजा यह है कि वे कुछ सड़ी सब्जियाँ खरीदने के लिए पैसे खर्च करते हैं और फिर भी प्रार्थना करते और कहते हैं : "हे परमेश्वर! जब तक तुझे स्वीकार्य है तब तक मैं ये सड़ी हुई सब्जियाँ भी खा लूँगा।" क्या ऐसा व्यवहार बेतुका नहीं है? क्या यह सिद्धांत का अनुसरण करना नहीं है? बीते समय में, लोग प्रत्येक क्षण आत्मा में जीने के लिए प्रशिक्षण लेते थे—यह अनुग्रह के युग में पहले किए गए कार्य से संबंधित है। धर्मपरायणता, नम्रता, प्रेम, धैर्य, सभी बातों के लिए धन्यवाद देना—यही वे अपेक्षाएँ थीं, जो अनुग्रह के युग में प्रत्येक विश्वासी से

की गयी थीं। उस समय में, लोग समस्त बातों में परमेश्वर से प्रार्थना करते थे; जब वे कपड़े खरीदते थे, वे प्रार्थना करते थे, जब उन्हें किसी सभा की सूचना दी जाती थी, वे तब भी प्रार्थना करते और कहते : "हे परमेश्वर! क्या तू मुझे वहाँ जाने देना चाहता है? यदि तू मुझे जाने देना चाहता है तो मेरे लिए एक सरल मार्ग तैयार कर। यदि तू मुझे नहीं जाने देना चाहता तो मुझे लड़खड़ा कर नीचे गिर जाने दे।" प्रार्थना करते हुए वे परमेश्वर से विनती करते थे और प्रार्थना करने के पश्चात वे बेचैनी का अनुभव करते और सभा में नहीं जाते। कुछ बहनें इस बात से डर कर कि लौटने पर उन्हें उनके अविश्वासी पतियों द्वारा मार पड़ सकती है, प्रार्थना करते समय बेचैन हो जाती थीं और इसलिए वे सभा में नहीं जाती थीं। वे लोग विश्वास करते थे कि यह परमेश्वर की इच्छा थी, जबकि वास्तव में यदि वे चले गए होते, तो कुछ नहीं होता। परिणाम यह था कि वे एक सभा से चूक गए थे। यह सब लोगों की अपनी अज्ञानता के कारण हुआ था। जो लोग इस रीति से अभ्यास करते हैं, वे सभी अपनी ही भावनाओं से जीवनयापन करते हैं। इस रीति से अभ्यास करना बहुत गलत और बेतुका है और अस्पष्टता से पूरी तरह कलंकित है। उनकी अपनी व्यक्तिगत भावनाएँ और विचार बहुत अधिक होते हैं। यदि तुम्हें एक सभा के विषय में बताया गया है, तो जाओ; इस बारे में परमेश्वर से और प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। क्या यह सरल नहीं है? यदि, आज तुम्हें, कोई कपड़ा खरीदना है, तो बाहर जाओ और खरीद लो। परमेश्वर से यह कहते हुए प्रार्थना मत करो : "हे परमेश्वर! तू मुझे आज जाने देना चाहता है या नहीं? यदि मेरे न रहने पर कोई भाई-बहन अचानक आ जाएँ तो क्या होगा?" तुम्हें डर है कि शायद कोई भाई या बहन आ जाएंगे, परन्तु परिणाम यह होता है कि सन्ध्या हो जाती है और कोई नहीं आता। यहाँ तक कि अनुग्रह के युग में भी, इस प्रकार का अभ्यास गलत और पथभ्रष्ट था। इस प्रकार यदि लोग बीते समय के अनुसार अभ्यास करेंगे, तो उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वे मात्र अज्ञानतापूर्वक जो मिले वो ले लेंगे, वे विवेक पर कोई ध्यान नहीं देंगे, और वे अंधाधुंध पालन करने औए सहने के अलावा कुछ नहीं करेंगे। उस समय लोग परमेश्वर को महिमान्वित करने पर केन्द्रित थे—परन्तु परमेश्वर को उनसे कोई महिमा प्राप्त नहीं हुई, क्योंकि उन्होंने कुछ व्यवहारिक नहीं जिया था। उन्होंने मात्र स्वयं को नियंत्रित रखा और व्यक्तिगत अवधारणाओं के द्वारा सीमित रखा, और अनेक वर्षों का अभ्यास भी उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं लाया। वे मात्र झेलना, नम्र रहना, प्रेम करना, और क्षमा करना ही जानते थे किन्तु उनमें पवित्र आत्मा द्वारा ज़रा-सा भी प्रबुद्धता का अभाव था। लोग परमेश्वर को उस तरह कैसे जान सकते थे? और उनका परमेश्वर को महिमन्वित करना कैसे संभव

था?

लोग परमेश्वर में विश्वास के सही मार्ग पर मात्र तभी प्रवेश कर सकते हैं, जब वे परमेश्वर को अपने वास्तविक जीवन और अपने सामान्य मानवीय जीवन में ले आएँगे। आज, परमेश्वर के वचन तुम लोगों का मार्गदर्शन करते हैं; और बीते समय के समान खोजने और टटोलते रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब तुम परमेश्वर के वचनों के अनुसार अभ्यास कर सकते हो और उन मानवीय अवस्थाओं से अपनी जाँच और आकलन कर सकते हो, जिन्हें मैंने उजागर किया है, तब तुम परिवर्तन हासिल करने के योग्य हो जाओगे। यह सिद्धांत नहीं है, परन्तु वह है जिसकी परमेश्वर मनुष्य से अपेक्षा करता है। आज मैं तुम्हें बताता हूँ कि चीज़ें किस प्रकार हैं : मात्र मेरे वचनों के अनुसार व्यवहार करने पर अपना ध्यान लगाओ। तुम से मेरी अपेक्षाएँ उचित व्यक्ति की ज़रूरतों के अनुसार हैं। मैंने अपने वचनों को तुम्हें पहले ही बता दिया है; जब तक तुम इस रीति से अभ्यास करने पर केन्द्रित रहते हो, तुम परमेश्वर के इरादों के अनुरूप होगे। परमेश्वर के वचनों में जीवनयापन करने का समय अभी है : परमेश्वर के वचनों ने सबकुछ समझा दिया है, सबकुछ स्पष्ट कर दिया गया है और जब तक तुम परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन जीते हो, तुम एक ऐसा जीवन जियोगे जो पूर्णत: स्वतन्त्र और मुक्त होगा। पहले, जब लोग परमेश्वर को अपने वास्तविक जीवन में ले कर आए, तो उन्होंने अत्यधिक सिद्धांतों और संस्कारों का अभ्यास और अनुभव किया; अप्रधान मामलों में भी, वे प्रार्थना करते और तलाशते थे, परमेश्वर के सुस्पष्ट वचनों को एक ओर रख देते थे, उन्हें पढ़ने की अनदेखी करते थे। बल्कि अपने समस्त प्रयास खोज में अर्पित कर देते थे—जिसका परिणाम यह हुआ कि उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उदाहरण के लिए, खाने और पहनने के मामले को लो : तुम प्रार्थना करते हो और बात परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हो कि परमेश्वर तुम्हारे लिए सब कुछ का समाधान कर दे। जब परमेश्वर इन शब्दों को सुनेगा, वो कहेगा : "क्या मुझे इन छोटी-छोटी बातों की चिन्ता करने कि आवश्यकता है? वह सामान्य मानवता और विवेक, जो मैंने तुम्हारे लिए बनायी थी, कहाँ जा चुकी है?" कभी-कभी, कोई व्यक्ति अपने कार्यों में गलती कर देता है; फिर वो मानने लगता है कि उसने परमेश्वर को अप्रसन्न कर दिया है, और वो संकोची हो जाता है। कुछ लोगों की अवस्था अत्यधिक अच्छी होती है, परन्तु जब वे कोई छोटा-सा कार्य गलत कर देते हैं, वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन्हें ताड़ना दे रहा है। वास्तव में यह परमेश्वर का किया नहीं है, परन्तु लोगों के अपने विचारों का प्रभाव है। कई बार तुम जो अनुभव कर रहे हो, उसमें कुछ गलत नहीं होता, परन्तु अन्य लोग कहते हैं कि तुम सही से अनुभव

नहीं कर रहे हो, और इस प्रकार तुम फन्दे में फंस जाते हो—तुम नकारात्मक हो जाते हो और भीतर ही भीतर अन्धकारमय बन जाते हो। प्राय: जब लोग इस रीति से नकारात्मक हो जाते हैं, वे विश्वास करते हैं कि उन्हें परमेश्वर के द्वारा ताड़ना दी जा रही है, परन्तु परमेश्वर कहता है : "मैंने तुम्हें ताड़ना देने का कार्य नहीं किया है; तुम मुझ पर इस प्रकार दोष कैसे लगा सकते हो?" लोग बहुत आसानी से अत्यधिक नकारात्मक हो जाते हैं। वे अक्सर अति संवेदनशील भी होते हैं और प्राय: परमेश्वर के विषय में शिकायत करते रहते हैं। परमेश्वर तुम से उस प्रकार दुखी होने की अपेक्षा नहीं करता, फिर भी तुम स्वयं को उस अवस्था में पड़ने देते हो। इस प्रकार से दुःख उठाने का कोई मूल्य नहीं है। लोग परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य को नहीं जानते, और वे अनेक बातों में अज्ञानी और स्पष्ट रीति से देखने में असमर्थ होते हैं, इसलिए वे अपनी ही धारणाओं और कल्पनाओं में फंस जाते हैं, पहले से कहीं अधिक उलझ जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि सभी बातें और मसले परमेश्वर के हाथों में होते हैं—तो क्या जब लोग नकारात्मक होते हैं, तब परमेश्वर नहीं जान पाता? निस्संदेह परमेश्वर जानता है। जब तुम मानवीय धारणाओं के फन्दे में फंसे होते हो, तो पवित्र आत्मा का तुम में कार्य करने का कोई मार्ग नहीं होता। कई बार, कुछ लोग नकारात्मक अवस्था में फंस जाते हैं, परन्तु मैं फिर भी अपना कार्य करता रहता हूँ। उस समय, चाहे तुम नकारात्मक हो या सकारात्मक, मैं तुम्हारे द्वारा बाधित नहीं होता हूँ, परन्तु तुम्हें पता होना चाहिए कि जो अनेक वचन मैं बोलता हूँ, और बड़ी मात्रा में जो कार्य मैं करता हूँ, वह सब, लोगों की अवस्था के अनुसार, एक दूसरे से नज़दीक से जुड़ा है। जब तुम नकारात्मक होते हो, यह पवित्र आत्मा के कार्य को बाधित नहीं करता है। ताड़ना और मृत्यु के परीक्षण के समय के दौरान, सभी लोग नकारात्मक अवस्था के फन्दों में फंसे हुए थे; परन्तु उसने मेरे कार्य को बाधित नहीं किया। जब तुम नकारात्मक थे, तो पवित्र आत्मा ने अन्य लोगों में वह करना जारी रखा, जो किए जाने की आवश्यकता थी। तुम एक महीने तक अनुसरण करना बंद कर सकते हो, परन्तु मैं निरन्तर कार्य करता रहता हूँ—तुम चाहे भविष्य या वर्तमान में कुछ भी करो, यह पवित्र आत्मा के कार्य को रोक नहीं सकता। कुछ नकारात्मक अवस्थाएँ मानवीय दुर्बलता से आती हैं; जब लोग विश्वास करते हैं कि वे परमेश्वर कि अपेक्षाओं को पूरा करने या उन्हें समझने में पूर्णत: अयोग्य हैं, तो वे नकारात्मक बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, ताड़ना दिए जाने के समय के दौरान, परमेश्वर के वचनों ने ताड़ना के बीच एक विशेष बिन्दु तक परमेश्वर से प्रेम करने के बारे में बोला था—परन्तु लोगों ने खुद को असमर्थ माना। इस अवस्था के दौरान उन्होंने विशेषत: दुखी और शोकित अनुभव किया, अनुभव किया कि शैतान ने

उनकी देह को अत्यधिक भ्रष्ट कर दिया था और उनकी क्षमता अत्यधिक कम थी। उन्होंने अनुभव किया कि इस वातावरण में उनका जन्म होना बहुत दयनीय था। और कुछ लोगों ने अनुभव किया कि उनके लिए परमेश्वर में विश्वास करने में बहुत देरी हो गयी है और वे पूर्ण किए जाने के योग्य ही नहीं हैं। ये सभी सामान्य मानवीय अवस्थाएँ हैं।

मनुष्य की देह शैतान की है, यह विद्रोही स्वभावों से भरी हुई है, यह खेदजनक रूप से गंदी है, और यह एक अशुद्ध चीज़ है। लोग देह के आनन्द की अत्यधिक लालसा करते हैं और देह की अनेक अभिव्यक्तियाँ हैं; इसलिए एक निश्चित हद तक परमेश्वर मनुष्य की देह से घृणा करता है। जब लोग शैतान की गंदी, भ्रष्ट बातों को त्याग देते हैं, तो वे परमेश्वर द्वारा उद्धार को प्राप्त करते हैं। परन्तु यदि वे अब भी स्वयं को अशुद्धता और भ्रष्टता से वंचित नहीं करते हैं, तो वे अभी भी शैतान के अधिकार-क्षेत्र के अधीन रह रहे हैं। लोगों की धूर्तता, धोखेबाज़ी, और कुटिलता, ये सभी शैतान की बातें हैं। परमेश्वर द्वारा तेरा उद्धार तुझे शैतान की इन बातों से निकालने के लिए है। परमेश्वर का कार्य ग़लत नहीं हो सकता है; यह सब लोगों को अन्धकार से बचाने के लिए है। जब तू एक हद तक विश्वास कर लेता है, और देह की भ्रष्टता से अपने आप को वंचित कर सकता है, और इस भ्रष्टता के द्वारा अब और जकड़ा हुआ नहीं है, तो क्या तू बचाया नहीं गया है? जब तू शैतान के अधिकार-क्षेत्र के अधीन रहता है, तो तू परमेश्वर को अभिव्यक्त करने में असमर्थ होता है, तू कोई गंदी चीज़ होता है, और परमेश्वर की विरासत को प्राप्त नहीं कर सकता है। एक बार जब तुझे शुद्ध कर दिया और पूर्ण बना दिया गया, तो तू पवित्र हो जाएगा, तू एक उचित व्यक्ति हो जाएगा, और तुझे परमेश्वर के द्वारा आशीष दिया जाएगा और तू परमेश्वर में आनंदित होगा। आज परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य उद्धार है, और इसके अतिरिक्त यह न्याय, ताड़ना, और श्रापित करना है। इसके अनेक पहलू हैं। तुम सभी देखते हो कि परमेश्वर के कथनों में न्याय और ताड़ना के साथ-साथ श्राप शामिल है। मैं एक प्रभाव डालने, लोगों को स्वयं को जानने देने के लिए बोलता हूँ न कि लोगों को जान से मारने के लिए। मेरा हृदय तुम सब के लिए है। बोलना अनेक विधियों में से एक विधि है जिसके द्वारा मैं कार्य करता हूँ; वचनों के द्वारा मैं परमेश्वर के स्वभाव को प्रकट करता हूँ, और तुम्हें परमेश्वर की इच्छा समझने देता हूँ। तुम्हारा शरीर मर सकता है, परन्तु तुम्हारे पास एक आत्मा और एक प्राण है। यदि लोगों के पास मात्र शरीर होता, तो उनकी आस्था का कोई अर्थ न होता और न ही इस समस्त कार्य का कोई अर्थ होता, जो मैं कर चुका हूँ। आज मैं एक तरह से बोलता हूँ और फिर दूसरी तरह से; कुछ समय के लिए तो मैं लोगों के प्रति

अत्यधिक घृणा रखता हूँ और फिर कुछ समय के लिए मैं अत्यधिक प्रेम करने वाला हो जाता हूँ; मैं यह सब तुम्हारे स्वभावों को बदलने और साथ ही परमेश्वर के कार्य के प्रति तुम्हारी धारणाओं का रूपांतरण करने के लिए करता हूँ।

अन्तिम दिन आ चुके हैं, और विश्वभर के देशों में अशान्ति है। राजनीतिक अस्त-व्यस्तता, अकाल, महामारी और बाढ़ें हैं, प्रत्येक स्थान पर अकाल पड़ रहे हैं। मानव-संसार पर महाविपत्ति है; स्वर्ग ने भी विनाश को नीचे भेज दिया है। ये अन्तिम दिनों के चिह्न हैं। परन्तु लोगों को यह आनन्द और वैभव जैसा संसार प्रतीत होता है, ऐसा संसार लगता है जो अधिक आनंद और वैभव से भरता चला जा रहा है। लोगों के हृदय इसकी ओर आकर्षित होते हैं और अनेक लोग फंस जाते हैं और स्वयं को इसके बन्धन से मुक्त करने में असमर्थ रहते हैं; बहुत अधिक संख्या में लोग उनके द्वारा मोहित किए जाएँगे जो धोखेबाज़ी और जादूटोने में संलिप्त हैं। यदि तुम उन्नति का प्रयास नहीं करते और तुम आदर्शरहित हो, और तुमने सच्चे मार्ग में अपनी जड़ें नहीं जमायी हैं, तो तुम पाप की हिलोरे मारती लहरों के द्वारा बहा लिए जाओगे। सभी देशों में चीन सबसे पिछड़ा हुआ है; यह वह देश है जहाँ बड़ा लाल अजगर कुण्डली मार कर बैठा हुआ है, इसके पास सबसे अधिक ऐसे लोग हैं, जो मूर्तिपूजा करते और जादूटोने में संलिप्त हैं, सबसे ज़्यादा मन्दिर हैं, और यह एक ऐसा स्थान है जहाँ अशुद्ध प्रेत निवास करते हैं। तुम इसमें जन्मे थे, तुमने यहाँ से शिक्षा पायी और इसका प्रभाव तुममें गहराई तक समाया है; तुम इसके द्वारा भ्रष्ट और पीड़ित किए गए हो, परन्तु जगा दिये जाने के पश्चात तुम इसे त्याग देते हो और परमेश्वर के द्वारा पूर्णत: प्राप्त कर लिए जाते हो। यही परमेश्वर की महिमा है, इसी कारण कार्य का यह चरण अत्यधिक महत्व रखता है। परमेश्वर ने इतने बड़े पैमाने पर कार्य किया है, इतने अधिक वचन बोले हैं, और अन्ततः वह तुम लोगों को पूरी तरह से प्राप्त कर लेगा—यह परमेश्वर के प्रबन्धन के कार्य का एक पक्ष है और तुम सब शैतान के साथ परमेश्वर के युद्ध में "विजय का लाभ" हो। तुम लोग जितना अधिक सत्य समझोगे, कलीसिया का जीवन जितना ही बेहतर होगा, उस बड़े लाल अजगर को उसके घुटनों पर उतना ही अधिक लाया जा सकेगा। ये आध्यात्मिक संसार के विषय हैं—ये आध्यात्मिक संसार के युद्ध हैं, और जब परमेश्वर जयवन्त है, तो शैतान लज्जित और धराशायी होगा। परमेश्वर के कार्य का यह चरण अत्यन्त महत्व रखता है। परमेश्वर इतने विशाल स्तर पर कार्य करता है और इस समूह के लोगों को पूरी तरह से बचाता है ताकि तुम शैतान के प्रभाव से बच सको, पवित्र देश में जीवनयापन कर सको, परमेश्वर की ज्योति में जीवनयापन कर सको, और ज्योति की अगुवाई

और मार्गदर्शन पा सको। फिर तुम्हारे जीवन का अर्थ है। तुम सब क्या खाते और क्या पहनते हो, यह अविश्वासियों से भिन्न है; तुम सब परमेश्वर के वचनों का आनन्द उठाते हो, और एक अर्थपूर्ण जीवन जीते हो—और वे किस से आनन्दित होते हैं? वे मात्र अपने "पूर्वजों की विरासत" और अपनी "देशभक्ति" का आनन्द लेते हैं। उनमें मानवता का थोड़ा-भी अवशेष नहीं है! तुम सब के वस्त्र, शब्द और कार्य उनसे भिन्न होते हैं। तुम सब अन्ततः अशुद्धता से पूरी तरह बच जाओगे, शैतान के प्रलोभन के फन्दे में और फंसे नहीं रहोगे और परमेश्वर का प्रतिदिन का प्रावधान प्राप्त करोगे। तुम सबको सर्वदा सावधान रहना चाहिए। यद्यपि तुम लोग एक गंदी जगह में रहते हो, तुम लोग गंदगी से बेदाग हो और परमेश्वर के साथ रह सकते हो, उसकी महान सुरक्षा को प्राप्त कर सकते हो। इस पीले देश में समस्त लोगों में से परमेश्वर ने तुम सबको चुना है। क्या तुम सब सबसे आशीषित लोग नहीं हो? तुम एक सृष्ट प्राणी हो—तुम्हें निस्संदेह परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए और एक अर्थपूर्ण जीवन जीना चाहिए। यदि तुम परमेश्वर की आराधना नहीं करते हो बल्कि अपने अशुद्ध शरीर में जीवनयापन करते रहते हो, तो क्या तुम बस मानव भेष में एक जानवर नहीं हो? चूँकि तुम एक मनुष्य हो, तुम्हें परमेश्वर के लिए खुद को खपाना और समस्त दुखों को सहना चाहिए! तुम्हें जो थोड़ा दुःख आज दिया जाता है, उसे तुम्हें प्रसन्नतापूर्वक और निश्चित ही स्वीकार करना चाहिए, अय्यूब और पतरस के समान एक अर्थपूर्ण जीवन जीना चाहिए। इस संसार में, मनुष्य शैतान का भेष धारण करता है, शैतान के द्वारा दिया गया भोजन खाता है, और शैतान के अधीन कार्य और सेवा करता है, और उसकी अशुद्धता में पूरी तरह कुचला जा रहा है। यदि तुम जीवन का अर्थ नहीं समझते हो या सच्चा मार्ग प्राप्त नहीं करते हो, तो इस तरह जीने का क्या महत्व है? तुम सब वे लोग हो, जो सही मार्ग का अनुसरण करते हो, सुधार को खोजते हो। तुम सब वे लोग हो, जो बड़े लाल अजगर के देश में ऊपर उठते हो, वे लोग जिन्हें परमेश्वर धर्मी बुलाता है। क्या यही सब से अर्थपूर्ण जीवन नहीं है?

देहधारण का रहस्य (1)

अनुग्रह के युग में यूहन्ना ने यीशु का मार्ग प्रशस्त किया। यूहन्ना स्वयं परमेश्वर का कार्य नहीं कर सकता था और उसने मात्र मनुष्य का कर्तव्य पूरा किया था। यद्यपि यूहन्ना प्रभु का अग्रदूत था, फिर भी वह परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ था; वह पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया मात्र एक मनुष्य था। यीशु के बपतिस्मा लेने के बाद पवित्र आत्मा कबूतर के समान उस पर उतरा। तब यीशु ने अपना काम

शुरू किया, अर्थात् उसने मसीह की सेवकाई करनी प्रारंभ की। इसीलिए उसने परमेश्वर की पहचान अपनाई, क्योंकि वह परमेश्वर से ही आया था। भले ही इससे पहले उसका विश्वास कैसा भी रहा हो—वह कई बार दुर्बल रहा होगा, या कई बार मज़बूत रहा होगा—यह सब अपनी सेवकाई करने से पहले के उसके सामान्य मानव-जीवन से संबंधित था। उसका बपतिस्मा (अभिषेक) होने के पश्चात्, उसके पास तुरंत ही परमेश्वर का सामर्थ्य और महिमा आ गई, और इस प्रकार उसने अपनी सेवकाई करनी आरंभ की। वह चिह्नों का प्रदर्शन और अद्‌भुत काम कर सकता था, चमत्कार कर सकता था, और उसके पास सामर्थ्य और अधिकार था, क्योंकि वह सीधे स्वयं परमेश्वर की ओर से काम कर रहा था; वह पवित्रात्मा के स्थान पर उसका काम कर रहा था और पवित्रात्मा की आवाज़ व्यक्त कर रहा था। इसलिए, वह स्वयं परमेश्वर था; यह निर्विवाद है। यूहन्ना वह व्यक्ति था, जिसका पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया था। वह परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था, न ही परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना उसके लिए संभव था। यदि वह ऐसा करना चाहता, तो पवित्र आत्मा ने इसकी अनुमति नहीं दी होती, क्योंकि वह उस काम को करने में असमर्थ था, जिसे स्वयं परमेश्वर संपन्न करने का इरादा रखता था। कदाचित् उसमें बहुत-कुछ ऐसा था, जो मनुष्य की इच्छा का था, या कुछ ऐसा, जो विचलन भरा था; वह किसी भी परिस्थिति में प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था। उसकी ग़लतियाँ और त्रुटिपूर्णता केवल उसका ही प्रतिनिधित्व करती थीं, किंतु उसका काम पवित्र आत्मा का प्रतिनिधि था। फिर भी, तुम यह नहीं कह सकते कि उसका सब-कुछ परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता था। क्या उसका विचलन और त्रुटिपूर्णता भी परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकते थे? मनुष्य का प्रतिनिधित्व करने में गलत होना सामान्य है, परंतु यदि कोई परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में विचलित होता है, तो क्या यह परमेश्वर के प्रति अनादर नहीं होगा? क्या यह पवित्र आत्मा के विरुद्ध ईशनिंदा नहीं होगी? पवित्र आत्मा मनुष्य को आसानी से परमेश्वर के स्थान पर खड़े होने की अनुमति नहीं देता, भले ही दूसरों के द्वारा उसे ऊँचा स्थान दिया गया हो। यदि वह परमेश्वर नहीं है, तो वह अंत में खड़े रहने में असमर्थ होगा। पवित्र आत्मा मनुष्य को, जैसे मनुष्य चाहे वैसे, परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने की अनुमति नहीं देता! उदाहरण के लिए, पवित्र आत्मा ने ही यूहन्ना की गवाही दी और उसी ने उसे यीशु के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले व्यक्ति के रूप में भी प्रकट किया, परंतु पवित्र आत्मा द्वारा उस पर किया गया कार्य अच्छी तरह से मापा हुआ था। यूहन्ना से कुल इतना कहा गया था कि वह यीशु के लिए मार्ग तैयार करने वाला बने, उसके लिए मार्ग तैयार करे। कहने का अभिप्राय यह है कि

पवित्र आत्मा ने केवल मार्ग बनाने में उसके कार्य का समर्थन किया और उसे केवल इसी प्रकार का कार्य करने की अनुमति दी—उसे कोई अन्य कार्य करने की अनुमति नहीं दी गई थी। यूहन्ना ने एलिय्याह का प्रतिनिधित्व किया था, और वह उस नबी का प्रतिनिधित्व करता था, जिसने मार्ग तैयार किया था। पवित्र आत्मा ने इसमें उसका समर्थन किया था; जब तक उसका कार्य मार्ग तैयार करना था, तब तक पवित्र आत्मा ने उसका समर्थन किया। किंतु यदि उसने दावा किया होता कि वह स्वयं परमेश्वर है और यह कहा होता कि वह छुटकारे का कार्य पूरा करने के लिए आया है, तो पवित्र आत्मा को उसे अनुशासित करना पड़ता। यूहन्ना का काम चाहे जितना भी बड़ा रहा हो, और चाहे पवित्र आत्मा ने उसे समर्थन दिया हो, फिर भी उसका काम असीम नहीं था। माना कि पवित्र आत्मा द्वारा उसके कार्य का समर्थन किया गया था, परंतु उस समय उसे दिया गया सामर्थ्य केवल उसके द्वारा मार्ग तैयार किए जाने तक ही सीमित था। वह कोई अन्य काम बिलकुल नहीं कर सकता था, क्योंकि वह सिर्फ यूहन्ना था जिसने मार्ग तैयार किया था, वह यीशु नहीं था। इसलिए, पवित्र आत्मा की गवाही महत्वपूर्ण है, किंतु पवित्र आत्मा जो कार्य मनुष्य को करने की अनुमति देता है, वह और भी अधिक महत्वपूर्ण है। क्या यूहन्ना ने उस समय ज़बरदस्त गवाही प्राप्त नहीं की थी? क्या उसका काम भी महान नहीं था? किंतु जो काम उसने किया, वह यीशु के काम से बढ़कर नहीं हो सका, क्योंकि वह पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किए गए व्यक्ति से अधिक नहीं था और वह सीधे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था, और इसलिए उसने जो काम किया, वह सीमित था। जब उसने मार्ग तैयार करने का काम समाप्त कर लिया, पवित्र आत्मा ने उसके बाद उसकी गवाही बरक़रार नहीं रखी, कोई नया काम उसके पीछे नहीं आया, और स्वयं परमेश्वर का काम शुरू होते ही वह चला गया।

कुछ ऐसे लोग हैं, जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त हैं और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते रहते हैं, "मैं परमेश्वर हूँ!" लेकिन अंत में, उनका भेद खुल जाता है, क्योंकि वे गलत चीज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे शैतान का प्रतिनिधित्व करते हैं, और पवित्र आत्मा उन पर कोई ध्यान नहीं देता। तुम अपने आपको कितना भी बड़ा ठहराओ या तुम कितना भी जोर से चिल्लाओ, तुम फिर भी एक सृजित प्राणी ही रहते हो और एक ऐसा प्राणी, जो शैतान से संबंधित है। मैं कभी नहीं चिल्लाता, "मैं परमेश्वर हूँ, मैं परमेश्वर का प्रिय पुत्र हूँ!" परंतु जो कार्य मैं करता हूँ, वह परमेश्वर का कार्य है। क्या मुझे चिल्लाने की आवश्यकता है? मुझे ऊँचा उठाए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर अपना काम स्वयं करता है और वह नहीं चाहता कि मनुष्य

उसे हैसियत या सम्मानजनक उपाधि प्रदान करे : उसका काम उसकी पहचान और हैसियत का प्रतिनिधित्व करता है। अपने बपतिस्मा से पहले क्या यीशु स्वयं परमेश्वर नहीं था? क्या वह परमेश्वर द्वारा धारित देह नहीं था? निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि केवल गवाही मिलने के पश्चात् ही वह परमेश्वर का इकलौता पुत्र बना। क्या उसके द्वारा काम शुरू करने से बहुत पहले ही यीशु नाम का कोई व्यक्ति नहीं था? तुम नए मार्ग लाने या पवित्रात्मा का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ हो। तुम पवित्र आत्मा के कार्य को या उसके द्वारा बोले जाने वाले वचनों को व्यक्त नहीं कर सकते। तुम स्वयं परमेश्वर का या पवित्रात्मा का कार्य करने में असमर्थ हो। परमेश्वर की बुद्धि, चमत्कार और अगाधता, और उसके स्वभाव की समग्रता, जिसके द्वारा परमेश्वर मनुष्य को ताड़ना देता है—इन सबको व्यक्त करना तुम्हारी क्षमता के बाहर है। इसलिए परमेश्वर होने का दावा करने की कोशिश करना व्यर्थ होगा; तुम्हारे पास सिर्फ़ नाम होगा और कोई सार नहीं होगा। स्वयं परमेश्वर आ गया है, किंतु कोई उसे नहीं पहचानता, फिर भी वह अपना काम जारी रखता है और ऐसा वह पवित्रात्मा के प्रतिनिधित्व में करता है। चाहे तुम उसे मनुष्य कहो या परमेश्वर, प्रभु कहो या मसीह, या उसे बहन कहो, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। परंतु जो कार्य वह करता है, वह पवित्रात्मा का है और वह स्वयं परमेश्वर के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। वह इस बात की परवाह नहीं करता कि मनुष्य उसे किस नाम से पुकारता है। क्या वह नाम उसके काम का निर्धारण कर सकता है? चाहे तुम उसे कुछ भी कहकर पुकारो, जहाँ तक परमेश्वर का संबंध है, वह परमेश्वर के आत्मा का देहधारी स्वरूप है; वह पवित्रात्मा का प्रतिनिधित्व करता है और उसके द्वारा अनुमोदित है। यदि तुम एक नए युग के लिए मार्ग नहीं बना सकते, या पुराने युग का समापन नहीं कर सकते, या एक नए युग का सूत्रपात या नया कार्य नहीं कर सकते, तो तुम्हें परमेश्वर नहीं कहा जा सकता!

यहाँ तक कि जिस मनुष्य का पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जाता है, वह भी स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। इतना ही नहीं कि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, बल्कि उसके द्वारा किया जाने वाला काम भी सीधे तौर पर परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में, मनुष्य के अनुभव को सीधे तौर पर परमेश्वर के प्रबंधन के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता, और वह परमेश्वर के प्रबंधन का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। वह समस्त कार्य, जिसे स्वयं परमेश्वर करता है, ऐसा कार्य है, जिसे वह अपनी स्वयं की प्रबंधन योजना में करने का इरादा करता है और वह बड़े प्रबंधन से संबंध रखता है। मनुष्य द्वारा किए गए कार्य में उसके व्यक्तिगत अनुभव की आपूर्ति शामिल रहती है।

उसमें उस मार्ग से भिन्न, जिस पर पहले के लोग चले थे, अनुभव के एक नए मार्ग की खोज, और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में अपने भाइयों और बहनों का मार्गदर्शन करना शामिल रहता है। इस तरह के लोग अपने व्यक्तिगत अनुभव या आध्यात्मिक मनुष्यों के आध्यात्मिक लेखन की ही आपूर्ति करते हैं। यद्यपि इन लोगों का पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जाता है, फिर भी वे जो कार्य करते हैं, वह छह-हज़ार-वर्षीय योजना के बड़े प्रबंधन-कार्य से संबंध नहीं रखता। वे सिर्फ ऐसे लोग हैं, जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा विभिन्न अवधियों में उभारा गया, ताकि वे तब तक पवित्र आत्मा की धारा में लोगों की अगुआई करें, जब तक कि वे जो कार्य कर सकते हैं, वे पूरे न हो जाएँ या उनके जीवन का अंत न हो जाए। जो कार्य वे करते हैं, वह केवल स्वयं परमेश्वर के लिए एक उचित मार्ग तैयार करना है या पृथ्वी पर स्वयं परमेश्वर की प्रबंधन-योजना का एक निश्चित पहलू जारी रखना है। अपने आप में ये लोग उसके प्रबंधन का महान कार्य करने में सक्षम नहीं होते, न ही वे नए मार्गों की शुरुआत कर सकते हैं, उनमें से कोई पिछले युग के परमेश्वर के समस्त कार्य का समापन तो बिलकुल भी नहीं कर सकता। इसलिए, जो कार्य वे करते हैं, वह केवल अपने कार्य संपन्न करने वाले एक सृजित प्राणी का प्रतिनिधित्व करता है, वह अपनी सेवकाई संपन्न करने वाले स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जो कार्य वे करते हैं, वह स्वयं परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य के समान नहीं है। एक नए युग की शुरुआत करने का कार्य ऐसा नहीं है, जो परमेश्वर के स्थान पर मनुष्य द्वारा किया जा सकता हो। इसे स्वयं परमेश्वर के अलावा किसी अन्य के द्वारा नहीं किया जा सकता। मनुष्य के द्वारा किया जाने वाला समस्त कार्य एक सृजित प्राणी के रूप में उसके कर्तव्य का निर्वहन है और वह तब किया जाता है, जब पवित्र आत्मा द्वारा उसे प्रेरित या प्रबुद्ध किया जाता है। इन लोगों द्वारा प्रदान किया जाने वाला मार्गदर्शन मनुष्य को बस दैनिक जीवन में अभ्यास का मार्ग दिखाना और यह बताना होता है कि उसे किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा के साथ समरसता में कार्य करना चाहिए। मनुष्य के कार्य में न तो परमेश्वर की प्रबंधन योजना सम्मिलित है और न ही वह पवित्रात्मा के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, गवाह ली और वॉचमैन नी का कार्य मार्ग की अगुआई करना था। मार्ग चाहे नया हो या पुराना, कार्य बाइबल के सिद्धांतों के भीतर ही बने रहने के आधार पर किया गया था। चाहे स्थानीय कलीसियाओं को पुनर्स्थापित करना हो या स्थानीय कलीसियाओं को बनाना हो, उनका कार्य कलीसियाओं की स्थापना से संबंधित था। उनके द्वारा किए गए कार्य ने उस कार्य को आगे बढ़ाया, जिसे यीशु और उसके प्रेरितों ने समाप्त नहीं किया था या अनुग्रह के युग में आगे विकसित नहीं किया था।

उन्होंने अपने कार्य में उस चीज़ को बहाल किया, जिसे यीशु ने अपने प्रारंभिक कार्य में अपने बाद आने वाली पीढ़ियों से करने को कहा था, जैसे कि अपना सिर ढककर रखना, बपतिस्मा लेना, रोटी साझा करना या दाखरस पीना। यह कहा जा सकता है कि उनका कार्य बाइबल का पालन करना था और बाइबल के भीतर ही मार्ग तलाशना था। उन्होंने किसी तरह के कोई नए प्रयास नहीं किए। इसलिए, कोई उनके कार्य में केवल बाइबल के भीतर ही नए मार्गों की खोज और साथ ही बेहतर और अधिक यथार्थवादी अभ्यास ही देख सकता है। किंतु कोई उनके कार्य में परमेश्वर की वर्तमान इच्छा नहीं खोज सकता, और उस कार्य को तो बिलकुल नहीं खोज सकता, जिसे अंत के दिनों में करने की परमेश्वर की योजना है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जिस मार्ग पर वे चले, वह फिर भी पुराना ही था—उसमें कोई नवीनीकरण और नवीनता नहीं थी। उन्होंने यीशु को सलीब पर चढ़ाए जाने के तथ्य को पकड़े रखना, लोगों को पश्चात्ताप करने और अपने पाप स्वीकार करने के लिए कहने के अभ्यास का पालन करना, और इस तरह की उक्तियों का पालन जारी रखा, जैसे कि, जो अंत तक सहन करता है उसे बचा लिया जाएगा, और कि पुरुष स्त्री का सिर है और स्त्री को अपने पति की आज्ञा का पालन करना चाहिए, यहाँ तक कि उन्होंने इस परंपरागत धारणा को भी बनाए रखा कि बहनें उपदेश नहीं दे सकतीं, वे केवल आज्ञापालन कर सकती हैं। यदि इस तरह की अगुआई जारी रही होती, तो पवित्र आत्मा कभी भी नया कार्य करने, मनुष्यों को सिद्धांत से मुक्त करने, या उन्हें स्वतंत्रता और सुंदरता के राज्य में ले जाने में समर्थ नहीं होता। इसलिए, कार्य का यह चरण, जो युग का परिवर्तन करता है, स्वयं परमेश्वर द्वारा किया और बोला जाना चाहिए, अन्यथा कोई व्यक्ति उसके स्थान पर ऐसा नहीं कर सकता। अभी तक, इस धारा के बाहर पवित्र आत्मा का समस्त कार्य एकदम रुक गया है, और जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया था, वे दिग्भ्रमित हो गए हैं। इसलिए, चूँकि पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किए गए मनुष्यों का कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य से भिन्न है, इसलिए उनकी पहचान और जिन व्यक्तियों की ओर से वे कार्य करते हैं, वे भी उसी तरह से भिन्न हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि पवित्र आत्मा जिस कार्य को करने का इरादा करता है, वह भिन्न है, और इसलिए समान रूप से कार्य करने वालों को अलग-अलग पहचान और हैसियत प्रदान की जाती है। पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किए जाने वाले लोग कुछ नया कार्य भी कर सकते हैं और वे पूर्व युग में किए गए किसी कार्य को हटा भी सकते हैं, किंतु उनके द्वारा किया गया कार्य नए युग में परमेश्वर के स्वभाव और उसकी इच्छा को व्यक्त नहीं कर सकता। वे केवल पूर्व युग के कार्य को हटाने के लिए कार्य करते हैं, और सीधे तौर पर स्वयं

परमेश्वर के स्वभाव और उसकी इच्छा का प्रतिनिधित्व करने के उद्देश्य से कोई नया कार्य करने के लिए कुछ नहीं करते। इस प्रकार, चाहे वे पुराने पड़ चुके कितने भी अभ्यासों का उन्मूलन कर दें या वे कितने भी नए अभ्यास आरंभ कर दें, वे फिर भी मनुष्य और सृजित प्राणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। किंतु जब स्वयं परमेश्वर कार्य करता है, तो वह खुलकर प्राचीन युग के अभ्यासों के उन्मूलन की घोषणा नहीं करता या सीधे तौर पर नए युग की शुरुआत की घोषणा नहीं करता। वह अपने कार्य में स्पष्ट और ईमानदार है। वह उस कार्य को करने में बेबाक है, जिसे करने का वह इरादा रखता है; अर्थात्, वह उस कार्य को सीधे तौर पर व्यक्त करता है जिसे उसने किया है, वह अपने अस्तित्व और स्वभाव को व्यक्त करते हुए अपने मूल इरादे के अनुसार सीधे तौर पर अपना कार्य करता है। जैसा कि मनुष्य देखता है, उसका स्वभाव और कार्य भी पिछले युगों से भिन्न हैं। किंतु स्वयं परमेश्वर के दृष्टिकोण से, यह मात्र उसके कार्य की निरंतरता और आगे का विकास है। जब स्वयं परमेश्वर कार्य करता है, तो वह अपने वचन व्यक्त करता है और सीधे नया कार्य लाता है। इसके विपरीत, जब मनुष्य काम करता है, तो वह विचार-विमर्श एवं अध्ययन के माध्यम से होता है, या वह दूसरों के कार्य की बुनियाद पर निर्मित ज्ञान का विस्तार और अभ्यास का व्यवस्थापन है। कहने का अर्थ है कि मनुष्य द्वारा किए गए कार्य का सार किसी स्थापित व्यवस्था का अनुसरण करना और "नए जूतों से पुराने मार्ग पर चलना" है। इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किए गए मनुष्यों द्वारा अपनाया गया मार्ग भी स्वयं परमेश्वर द्वारा शुरू किए गए मार्ग पर ही बना है। इसलिए, कुल मिलाकर मनुष्य फिर भी मनुष्य है, और परमेश्वर फिर भी परमेश्वर है।

यूहन्ना प्रतिज्ञा द्वारा जन्मा था, बहुत-कुछ वैसे ही, जैसे अब्राहम के यहाँ इसहाक पैदा हुआ था। उसने यीशु के लिए मार्ग तैयार किया और बहुत कार्य किया, किंतु वह परमेश्वर नहीं था। बल्कि, वह नबियों में से एक था, क्योंकि उसने केवल यीशु के लिए मार्ग प्रशस्त किया था। उसका कार्य भी महान था, और केवल उसके द्वारा मार्ग तैयार किए जाने के बाद ही यीशु ने आधिकारिक रूप से अपना कार्य शुरू किया। संक्षेप में, उसने केवल यीशु के लिए श्रम किया, और उसके द्वारा किया गया कार्य यीशु के कार्य की सेवा में था। उसके द्वारा मार्ग प्रशस्त किए जाने के बाद यीशु ने अपना कार्य शुरू किया, कार्य जो नया, अधिक ठोस और अधिक विस्तृत था। यूहन्ना ने कार्य का केवल शुरुआती अंश किया; नए कार्य का ज्यादा बड़ा भाग यीशु द्वारा किया गया था। यूहन्ना ने भी नया कार्य किया, किंतु उसने नए युग का सूत्रपात नहीं किया था। यूहन्ना प्रतिज्ञा द्वारा जन्मा था, और उसका नाम स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। उस समय, कुछ लोग उसका

नाम उसके पिता जकरयाह के नाम पर रखना चाहते थे, परंतु उसकी माँ ने कहा, "इस बालक को उस नाम से नहीं पुकारा जा सकता। उसे यूहन्ना के नाम से पुकारा जाना चाहिए।" यह सब पवित्र आत्मा के आदेश से हुआ था। यीशु का नाम भी पवित्र आत्मा के आदेश से रखा गया था, उसका जन्म पवित्र आत्मा से हुआ था, और पवित्र आत्मा द्वारा उसकी प्रतिज्ञा की गई थी। यीशु परमेश्वर, मसीह और मनुष्य का पुत्र था। किंतु, यूहन्ना का कार्य भी महान होने के बावजूद उसे परमेश्वर क्यों नहीं कहा गया? यीशु द्वारा किए गए कार्य और यूहन्ना द्वारा किए गए कार्य में ठीक-ठीक क्या अंतर था? क्या सिर्फ यही एक कारण था कि यूहन्ना वह व्यक्ति था, जिसने यीशु के लिए मार्ग तैयार किया था? या इसलिए, क्योंकि इसे परमेश्वर द्वारा पहले से ही नियत कर दिया गया था? यद्यपि यूहन्ना ने भी कहा था, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है," और उसने स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का भी उपदेश दिया था, किंतु उसका कार्य आगे नहीं बढ़ा और उसने मात्र शुरुआत की। इसके विपरीत, यीशु ने एक नए युग का सूत्रपात करने के साथ-साथ पुराने युग का अंत भी किया, किंतु उसने पुराने विधान की व्यवस्था भी पूरी की। उसके द्वारा किया गया कार्य यूहन्ना के कार्य से अधिक महान था, और इतना ही नहीं, वह समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाने के लिए आया—उसने कार्य के इस चरण को पूरा किया। जबकि यूहन्ना ने बस मार्ग तैयार किया। यद्यपि उसका कार्य महान था, उसके वचन बहुत थे, और उसका अनुसरण करने वाले चेले भी बहुत थे, फिर भी उसके कार्य ने लोगों के लिए एक नई शुरुआत लेकर आने से बढ़कर कुछ नहीं किया। मनुष्य ने उससे कभी जीवन, मार्ग या गहरे सत्य प्राप्त नहीं किए, न ही मनुष्य ने उसके जरिये परमेश्वर की इच्छा की समझ प्राप्त की। यूहन्ना एक बहुत बड़ा नबी (एलिय्याह) था, जिसने यीशु के कार्य के लिए नई ज़मीन खोली और चुने हुओं को तैयार किया; वह अनुग्रह के युग का अग्रदूत था। ऐसे मामले केवल उनके सामान्य मानवीय स्वरूप देखकर नहीं पहचाने जा सकते। यह इसलिए भी उचित है, क्योंकि यूहन्ना ने भी काफ़ी उल्लेखनीय काम किया; और इतना ही नहीं, पवित्र आत्मा द्वारा उसकी प्रतिज्ञा की गई थी, और उसके कार्य को पवित्र आत्मा द्वारा समर्थन दिया गया था। ऐसा होने के कारण, केवल उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य के माध्यम से व्यक्ति उनकी पहचान के बीच अंतर कर सकता है, क्योंकि किसी मनुष्य के बाहरी स्वरूप से उसके सार के बारे में बताने का कोई उपाय नहीं है, न ही कोई ऐसा तरीका है जिससे मनुष्य यह सुनिश्चित कर सके कि पवित्र आत्मा की गवाही क्या है। यूहन्ना द्वारा किया गया कार्य और यीशु द्वारा किया गया कार्य भिन्न प्रकृतियों के थे। इसी से व्यक्ति यह निर्धारित कर सकता है कि यूहन्ना परमेश्वर

था या नहीं। यीशु का कार्य शुरू करना, जारी रखना, समापन करना और सफल बनाना था। उसने इनमें से प्रत्येक चरण पूरा किया था, जबकि यूहन्ना का कार्य शुरुआत से अधिक और कुछ नहीं था। आरंभ में, यीशु ने सुसमाचार फैलाया और पश्चात्ताप के मार्ग का उपदेश दिया, और फिर वह मनुष्य को बपतिस्मा देने लगा, बीमारों को चंगा करने लगा, और दुष्टात्माओं को निकालने लगा। अंत में, उसने मानवजाति को पाप से छुटकारा दिलाया और संपूर्ण युग के अपने कार्य को पूरा किया। उसने लगभग हर स्थान पर जाकर मनुष्य को उपदेश दिया और स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैलाया। इस दृष्टि से यीशु और यूहन्ना समान थे, अंतर यह था कि यीशु ने एक नए युग का सूत्रपात किया और वह मनुष्य के लिए अनुग्रह का युग लाया। उसके मुँह से वह वचन निकला जिसका मनुष्य को अभ्यास करना चाहिए, और वह मार्ग निकला जिसका मनुष्य को अनुग्रह के युग में अनुसरण करना चाहिए, और अंत में उसने छुटकारे का कार्य पूरा किया। यूहन्ना यह कार्य कभी नहीं कर सकता था। और इसलिए, वह यीशु ही था जिसने स्वयं परमेश्वर का कार्य किया, और वही है जो स्वयं परमेश्वर है और सीधे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य की धारणाएँ कहती हैं कि वे सभी जो प्रतिज्ञा द्वारा जन्मे थे, पवित्र आत्मा से जन्मे थे, जिनका पवित्र आत्मा ने समर्थन किया था, और जिन्होंने नए मार्ग खोले, वे परमेश्वर हैं। इस तर्क के अनुसार, यूहन्ना भी परमेश्वर होगा, और मूसा, अब्राहम और दाऊद ..., ये सब भी परमेश्वर होंगे। क्या यह निरा मज़ाक नहीं है?

अपनी सेवकाई करने से पहले, यीशु भी केवल एक सामान्य व्यक्ति था, जिसने पवित्र आत्मा के हरेक कार्य के अनुसार कार्य किया। भले ही उस समय वह अपनी पहचान के बारे में जितना भी जानता हो, उसने उस सबका पालन किया, जो परमेश्वर से आया। पवित्र आत्मा ने उसकी सेवकाई शुरू होने से पहले कभी उसकी पहचान प्रकट नहीं की। यह उसकी सेवकाई शुरू करने के बाद था कि उसने उन नियमों और उन व्यवस्थाओं को समाप्त कर दिया, और उसके द्वारा आधिकारिक रूप से अपनी सेवकाई शुरू करने के उपरांत ही उसके वचनों में अधिकार और शक्ति व्याप्त हुए। उसके द्वारा अपनी सेवकाई शुरू करने के बाद ही एक नए युग को लाने का उसका कार्य शुरू हुआ। इससे पहले, पवित्र आत्मा 29 वर्षों तक उसके भीतर छिपा रहा, जिस समय के दौरान उसने केवल एक मनुष्य का प्रतिनिधित्व किया और वह परमेश्वर की पहचान के बिना रहा। उसके कार्य करने और अपनी सेवकाई शुरू करने के साथ ही परमेश्वर का कार्य शुरू हुआ, उसने इस बात की परवाह किए बिना कि मनुष्य उसे कितना जानता है, अपनी आंतरिक योजना के अनुसार अपना कार्य किया, और उसका कार्य स्वयं परमेश्वर का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व था। उस

समय, यीशु ने अपने आस-पास के लोगों से पूछा, "तुम मुझे क्या कहते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "तुम महानतम नबी और हमारे अच्छे चिकित्सक हो।" और कुछ ने उत्तर दिया, "तुम हमारे महायाजक हो," आदि-आदि। विभिन्न प्रकार के उत्तर दिए गए थे; कुछ ने यहाँ तक कहा कि वह यूहन्ना था, कि वह एलिय्याह था, फिर यीशु ने शमौन पतरस की ओर मुड़कर पूछा, "परंतु तुम मुझे क्या कहते हो?" पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" तब से लोगों को पता चला कि वह परमेश्वर है। जब उसकी पहचान ज्ञात करवा दी गई, तो यह पतरस था जिसे सबसे पहले इसका ज्ञान हुआ और उसके मुँह से ऐसा कहा गया। फिर यीशु ने कहा, "क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परंतु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।" उसके बपतिस्मा के बाद, चाहे यह दूसरों को ज्ञात हुआ हो या नहीं, उसका कार्य परमेश्वर की ओर से था। वह अपना कार्य करने के लिए आया था, अपनी पहचान प्रकट करने के लिए नहीं। पतरस के यह कहने के बाद ही उसकी पहचान खुलकर सामने आई। चाहे तुम्हें पता रहा हो या नहीं कि वह स्वयं परमेश्वर था, जब समय आया, तब उसने अपना कार्य शुरू कर दिया। और चाहे तुम्हें इसका पता रहा हो या नहीं, उसने अपना कार्य पहले की तरह जारी रखा। यहाँ तक कि यदि तुमने इनकार भी किया होता, तब भी वह समय आने पर अपना कार्य करता और उसे क्रियान्वित करता। वह अपना कार्य करने और अपनी सेवकाई करने के लिए आया था, इसलिए नहीं कि मनुष्य उसके देह को जान सके, बल्कि इसलिए कि मनुष्य उसके कार्य को प्राप्त कर सके। यदि तुम यह पहचानने में विफल रहे कि आज के कार्य का चरण स्वयं परमेश्वर का कार्य है, तो यह इसलिए है क्योंकि तुम्हारे पास दृष्टि का अभाव है। फिर भी, तुम कार्य के इस चरण से इनकार नहीं कर सकते; इसे पहचानने में तुम्हारी असफलता यह साबित नहीं करती कि पवित्र आत्मा कार्य नहीं कर रहा या उसका कार्य ग़लत है। ऐसे लोग भी हैं, जो वर्तमान समय के काम को बाइबल में उल्लिखित यीशु के काम से जाँचते हैं, और कार्य के इस चरण को नकारने के लिए किन्हीं भी विसंगतियों का उपयोग करते हैं। क्या यह किसी अंधे व्यक्ति का काम नहीं है? बाइबिल में दर्ज की गई चीज़ें सीमित हैं; वे परमेश्वर के संपूर्ण कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकतीं। सुसमाचार की चारों पुस्तकों में कुल मिलाकर एक सौ से भी कम अध्याय हैं, जिनमें एक सीमित संख्या में घटनाएँ लिखी हैं, जैसे यीशु का अंजीर के वृक्ष को शाप देना, पतरस का तीन बार प्रभु को नकारना, सलीब पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के बाद यीशु का चेलों को दर्शन देना, उपवास के बारे में शिक्षा, प्रार्थना के बारे में शिक्षा, तलाक के बारे में शिक्षा, यीशु का जन्म और वंशावली, यीशु द्वारा चेलों की नियुक्ति, इत्यादि।

फिर भी मनुष्य इन्हें ख़ज़ाने जैसा महत्व देता है, यहाँ तक कि उनसे आज के काम की जाँच तक करता है। यहाँ तक कि वे यह भी विश्वास करते हैं कि यीशु ने अपने जीवनकाल में सिर्फ इतना ही कार्य किया, मानो परमेश्वर केवल इतना ही कर सकता है, इससे अधिक नहीं। क्या यह बेतुका नहीं है?

यीशु के पास पृथ्वी पर साढ़े तेंतीस वर्ष का समय था, अर्थात् वह साढ़े तेंतीस वर्ष पृथ्वी पर रहा। इसमें से केवल साढ़े तीन वर्ष का समय ही उसने अपनी सेवकाई करने में बिताया था; शेष समय में उसने सिर्फ एक सामान्य मनुष्य का जीवन जीया था। आरंभ में, उसने आराधना-स्थल की सेवाओं में भाग लिया और वहाँ याजकों द्वारा धर्म-ग्रंथों की व्याख्या और अन्य लोगों के उपदेश सुने। उसने बाइबल का बहुत ज्ञान प्राप्त किया : वह ऐसे ज्ञान के साथ नहीं जन्मा था, और उसने केवल पढ़-सुनकर इसे प्राप्त किया। यह बाइबिल में स्पष्ट रूप से दर्ज है कि उसने बारह वर्ष की आयु में आराधना-स्थल में रब्बियों से प्रश्न पूछे : प्राचीन नबियों की क्या भविष्यवाणियाँ थीं? मूसा की क्या व्यवस्थाएँ हैं? पुराना नियम क्या है? और मंदिर में याजकीय लबादे में परमेश्वर की सेवा करने वाला मनुष्य कौन है? ... उसने कई प्रश्न पूछे, क्योंकि उसमें न तो ज्ञान था और न ही समझ थी। यद्यपि वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था, किंतु वह एक पूरी तरह से सामान्य व्यक्ति के रूप में जन्मा था; अपने में कुछ विशेष लक्षण होने के बावजूद, वह अभी भी एक सामान्य मनुष्य था। उसका ज्ञान उसकी कद-काठी और उम्र के अनुसार लगातार बढ़ता रहा, और वह साधारण मनुष्य के जीवन की अवस्थाओं से होकर गुज़रा था। मनुष्य की कल्पना में, यीशु ने न तो बचपन और न ही किशोरावस्था का अनुभव किया; उसने जन्मते ही एक तीस-वर्षीय मनुष्य का जीवन जीना शुरू कर दिया, और उसका कार्य पूरा हो जाने पर उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया। वह शायद एक सामान्य व्यक्ति के जीवन के चरणों से होकर नहीं गुजरा; उसने न तो खाया और न ही वह दूसरे लोगों के साथ जुड़ा, और लोगों के लिए उसकी झलक देख पाना आसान नहीं था। शायद वह एक असामान्य व्यक्ति था, जो उन्हें डरा देता था जो उसे देखते थे, क्योंकि वह परमेश्वर था। लोग मानते हैं कि देह में आने वाला परमेश्वर निश्चित रूप से सामान्य मनुष्य की तरह नहीं जीता; वे मानते हैं कि वह दंत-मंजन किए बिना या अपना चेहरा धोए बिना ही स्वच्छ रहता है, क्योंकि वह एक पवित्र व्यक्ति है। क्या ये सब विशुद्ध रूप से मनुष्य की धारणाएँ नहीं हैं? बाइबल एक मनुष्य के रूप में यीशु का जीवन दर्ज नहीं करती, केवल उसके कार्य को दर्ज करती है, किंतु इससे यह साबित नहीं होता कि उसके पास एक सामान्य मानवता नहीं थी या 30 वर्ष की आयु से पहले उसने सामान्य मानव-जीवन नहीं जीया था। उसने आधिकारिक रूप से 29 वर्ष

की आयु में अपना कार्य आरंभ किया, किंतु उस आयु से पहले तुम मनुष्य के रूप में उसका संपूर्ण जीवन बट्टे खाते नहीं डाल सकते। बाइबल ने बस उस अवधि को अपने अभिलेखों में शामिल नहीं किया; क्योंकि वह एक साधारण मनुष्य के रूप में उसका जीवन था और वह उसके दिव्य कार्य की अवधि नहीं थी, इसलिए उसे लिखे जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि यीशु के बपतिस्मा से पहले पवित्र आत्मा ने सीधे अपना कार्य नहीं किया, बल्कि उसने मात्र एक साधारण मनुष्य के रूप में उसके जीवन को उस दिन तक बनाए रखा, जबसे यीशु को अपनी सेवकाई शुरू करनी थी। यद्यपि वह देहधारी परमेश्वर था, फिर भी वह परिपक्व होने की प्रक्रिया से वैसे ही गुज़रा, जैसे एक सामान्य मानव गुज़रता है। परिपक्व होने की इस प्रक्रिया को बाइबल में शामिल नहीं किया गया। उसे इसलिए शामिल नहीं किया गया, क्योंकि वह मनुष्य के जीवन की उन्नति में कोई बड़ी सहायता प्रदान नहीं कर सकती थी। उसके बपतिस्मा से पहले की अवधि एक छिपी हुई अवधि थी, ऐसी अवधि, जिसमें उसने कोई चिह्न या चमत्कार नहीं दिखाए। केवल अपने बपतिस्मा के बाद ही यीशु ने मानवजाति के छुटकारे का समस्त कार्य आरंभ किया, ऐसा कार्य, जो विपुल है और अनुग्रह, सत्य, प्रेम और करुणा से भरा है। इस कार्य का आरंभ ठीक अनुग्रह के युग का आरंभ भी था; इसी कारण से इसे लिखा गया और वर्तमान तक पहुँचाया गया। यह अनुग्रह के युग के सभी लोगों के लिए एक मार्ग खोलने और उन्हें सफल बनाने के लिए था, ताकि वे अनुग्रह के युग के मार्ग पर और सलीब के मार्ग पर चल सकें। यद्यपि यह मनुष्य द्वारा लिखे गए अभिलेखों से आता है, फिर भी यह सब तथ्य है, केवल यहाँ-वहाँ कुछ मामूली त्रुटियाँ पाई जाती हैं। फिर भी, ये अभिलेख असत्य नहीं कहे जा सकते। दर्ज किए गए ये मामले पूरी तरह से तथ्यात्मक हैं, केवल उन्हें लिखते समय लोगों ने कुछ गलतियाँ कर दी हैं। कुछ लोग हैं, जो कहेंगे कि यदि यीशु एक सामान्य और साधारण मनुष्य था, तो ऐसा कैसे हो सकता है कि वह चिह्न और चमत्कार दिखाने में सक्षम था? चालीस दिनों का वह प्रलोभन, जिससे यीशु गुज़रा, एक चमत्कारी चिह्न था, जिसे प्राप्त करने में कोई सामान्य व्यक्ति अक्षम रहा होता। उसका चालीस दिनों का प्रलोभन पवित्र आत्मा के कार्य करने की प्रकृति में था; तो फिर कोई ऐसा कैसे कह सकता है कि उसमें लेश मात्र भी अलौकिकता नहीं थी? चिह्न और चमत्कार दिखाने की उसकी क्षमता यह साबित नहीं करती वह एक सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति था और कोई सामान्य व्यक्ति नहीं था; बात यह है कि पवित्र आत्मा ने उस जैसे एक सामान्य व्यक्ति में कार्य किया, और इस प्रकार उसके लिए चमत्कार करना, बल्कि और अधिक बड़ा कार्य करना संभव बनाया। यीशु के अपनी सेवकाई करने से पहले, या जैसा कि बाइबल में कहा गया है,

उसके ऊपर पवित्र आत्मा के उतरने से पहले, यीशु सिर्फ एक सामान्य मनुष्य था और किसी भी तरह से अलौकिक नहीं था। जब पवित्र आत्मा उस पर उतरा, अर्थात्, जब उसने अपनी सेवकाई करनी आरंभ की, तब उसमें अलौकिकता व्याप्त हो गई। इस तरह, लोग यह मानने लगे कि परमेश्वर द्वारा धारण किए गए देह में कोई सामान्य मानवता नहीं होती; और तो और, वे ग़लत ढंग से यह सोचते हैं कि देहधारी परमेश्वर के पास केवल दिव्यता होती है, मानवता नहीं। निश्चित रूप से, जब परमेश्वर धरती पर अपना कार्य करने आता है, तो मनुष्य जो देखता है, वे सब अलौकिक घटनाएँ होती हैं। लोग अपनी आँखों से जो कुछ देखते हैं और अपने कानों से जो कुछ सुनते हैं, वह सब अलौकिक होता है, क्योंकि उसके कार्य और उसके वचन उनके लिए अबोधगम्य और अप्राप्य होते हैं। यदि स्वर्ग की किसी चीज़ को पृथ्वी पर लाया जाता है, तो वह अलौकिक होने के सिवाय कोई अन्य चीज़ कैसे हो सकती है? जब स्वर्ग के राज्य के रहस्यों को पृथ्वी पर लाया जाता है, ऐसे रहस्य, जो मनुष्य के लिए अबोधगम्य और अगाध हैं, और जो बहुत चमत्कारी और बुद्धिमत्तापूर्ण हैं—क्या वे सब अलौकिक नहीं हैं? लेकिन, तुम्हें पता होना चाहिए कि कोई चीज़ कितनी भी अलौकिक हो, वह उसकी सामान्य मानवता के भीतर ही की जाती है। परमेश्वर द्वारा धारण किए गए देह में मानवता व्याप्त है, अन्यथा वह परमेश्वर द्वारा धारण किया गया देह न होता। यीशु ने अपने समय में बहुत चमत्कार किए। उस समय के इस्राएलियों ने जो देखा, वह अलौकिक चीजों से भरा था; उन्होंने फरिश्ते और दूत देखे, और उन्होंने यहोवा की आवाज़ सुनी। क्या ये सभी अलौकिक नहीं थे? निश्चित रूप से, आज कुछ दुष्ट आत्माएँ हैं, जो मनुष्य को अलौकिक चीजों के माध्यम से धोखा देती हैं; जो उनके द्वारा नक़ल किए जाने के अलावा और कुछ नहीं है, जो ऐसे कार्य के द्वारा मनुष्य को धोखा देने के लिए की जाती है, जो वर्तमान में पवित्र आत्मा द्वारा नहीं किया जाता। कई लोग चमत्कार करते हैं, बीमारों को चंगा करते हैं और दुष्टात्माओं को निकालते हैं; वे बुरी आत्माओं के कार्य के अलावा और कुछ नहीं हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा वर्तमान में ऐसा कार्य नहीं करता, और जिन्होंने उस समय के बाद से पवित्र आत्मा के कार्य की नकल की है, वे निस्संदेह बुरी आत्माएँ हैं। उस समय इस्राएल में किया गया समस्त कार्य अलौकिक प्रकृति का था, लेकिन पवित्र आत्मा अब इस तरीके से कार्य नहीं करता, और अब ऐसा हर कार्य शैतान द्वारा की गई नकल और उसका भेस है और उसके द्वारा की जाने वाली गड़बड़ी है। लेकिन तुम यह नहीं कह सकते कि जो कुछ भी अलौकिक है, वह बुरी आत्माओं से आता है—यह परमेश्वर के कार्य के युग पर निर्भर करता है। देहधारी परमेश्वर द्वारा वर्तमान में किए जाने वाले कार्य को लो : इसका कौन-सा पहलू अलौकिक नहीं

है? उसके वचन तुम्हारे लिए अबोधगम्य और अप्राप्य हैं, और उसके द्वारा किया जाने वाला कार्य किसी भी व्यक्ति के द्वारा नहीं किया जा सकता। जो वो समझता है, वह मनुष्य द्वारा किसी भी तरह से नहीं समझा जा सकता, और जहाँ तक उसके ज्ञान की बात है, मनुष्य नहीं जानता कि वह कहाँ से आता है। कुछ लोग हैं, जो कहते हैं, "मैं भी तुम्हारे जैसा ही सामान्य हूँ, तो ऐसा कैसे है कि मैं वह नहीं जानता, जो तुम जानते हो? मैं अनुभव में बड़ा और समृद्ध हूँ, फिर भी तुम वह कैसे जान सकते हो, जो मैं नहीं जानता?" जहाँ तक मनुष्य की बात है, यह सब उसके लिए अप्राप्य है। फिर कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो कहते हैं, "इस्राएल में किए गए कार्य को कोई नहीं जानता; यहाँ तक कि बाइबल के प्रतिपादक भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दे पाते; तुम उसे कैसे जानते हो?" क्या ये सभी अलौकिक मामले नहीं हैं? उसे चमत्कारों का कोई अनुभव नहीं है, फिर भी वह सब जानता है; वह अत्यधिक सहजता से सत्य बोलता और व्यक्त करता है। क्या यह अलौकिक नहीं है? उसका कार्य उससे बढ़कर है, जो देह प्राप्त कर सकता है। इसके बारे में मनुष्य सोच भी नहीं सकता और उसके मस्तिष्क के लिए यह पूरी तरह से अकल्पनीय है। यद्यपि उसने कभी बाइबल नहीं पढ़ी, फिर भी वह इस्राएल में किए गए परमेश्वर के कार्य को समझता है। और यद्यपि जब वह बोलता है तो वह पृथ्वी पर खड़ा होता है, किंतु वह तीसरे स्वर्ग के रहस्यों की बात करता है। जब मनुष्य इन वचनों को पढ़ता है, तो यह भावना उसे वशीभूत कर लेती है : "क्या यह तीसरे स्वर्ग की भाषा नहीं है?" क्या ये सभी ऐसे मामले नहीं हैं, जो सामान्य व्यक्ति की पहुँच से बाहर हैं? जब यीशु चालीस दिनों के उपवास से गुज़रा, तो क्या वह अलौकिक नहीं था? यदि तुम कहते हो कि चालीस दिनों का उपवास पूरी तरह से अलौकिक और दुष्ट आत्माओं का कार्य है, तो क्या तुमने यीशु की निंदा नहीं की है? अपनी सेवकाई प्रारंभ करने से पहले यीशु एक सामान्य मनुष्य की तरह ही था। वह भी विद्यालय गया; अन्यथा वह पढ़ना और लिखना कैसे सीख सकता था? जब परमेश्वर देह बना, तो पवित्रात्मा देह के भीतर छिपा हुआ था। फिर भी, एक सामान्य मनुष्य होने के नाते उसके लिए विकास और परिपक्वता की प्रक्रिया से गुज़रना आवश्यक था, और जब तक उसकी संज्ञानात्मक क्षमता परिपक्व नहीं हो गई, और वह चीजों को समझने में सक्षम नहीं हो गया, तब तक वह एक सामान्य व्यक्ति माना जा सकता था। केवल अपनी मानवता परिपक्व हो जाने के बाद ही वह अपनी सेवकाई का निष्पादन कर सकता था। जब तक उसकी सामान्य मानवता अपरिपक्व और विवेक-बुद्धि अपुष्ट थी, तब तक वह अपनी सेवकाई का निष्पादन कैसे कर सकता था? निश्चित रूप से उससे छह या सात वर्ष की उम्र में सेवकाई का निष्पादन करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी! पहली

बार देह धारण करने पर परमेश्वर ने स्वयं को खुलकर अभिव्यक्त क्यों नहीं किया? ऐसा इसलिए था, क्योंकि उसके देह की मानवता अभी तक अपरिपक्व थी; उसके देह की संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ, और साथ ही उसके देह की सामान्य मानवता पूरी तरह से उसके वश में नहीं थीं। इस कारण से, उसे सामान्य मानवता और एक सामान्य व्यक्ति का सामान्य बोध प्राप्त करने की अत्यंत आवश्यकता थी—उस बिंदु तक, जहाँ वह देह में अपना कार्य करने के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित न हो जाता—उसके बाद ही वह अपना कार्य शुरू कर सकता था। यदि वह कार्य करने योग्य न होता, तो उसके लिए विकसित और परिपक्व होते रहना आवश्यक होता। यदि यीशु ने सात-आठ वर्ष की आयु में अपना कार्य शुरू कर दिया होता, तो क्या मनुष्य ने उसे विलक्षण न मान लिया होता? क्या सभी लोग उसे बच्चा न समझते? कौन उसे विश्वसनीय समझता? सात-आठ वर्ष का बच्चा, जो उस पीठिका से ऊँचा नहीं है, जिसके पीछे वह खड़ा है—क्या वह उपदेश देने के योग्य होता? अपनी सामान्य मानवता के परिपक्व होने से पहले वह कार्य के लिए उपयुक्त नहीं था। जहाँ तक उसकी मानवता का संबंध है, जो अभी तक अपरिपक्व थी, कार्य का अधिकांश भाग उसके द्वारा पूरा किया ही नहीं जा सकता था। देह में परमेश्वर के आत्मा का कार्य भी अपने सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित होता है। सामान्य मानवता से सुसज्जित होने पर ही वह परमपिता का कार्य पूरा कर सकता है और उसका कार्यभार ग्रहण कर सकता है। केवल तभी वह अपना कार्य प्रारंभ कर सकता है। अपने बचपन में यीशु प्राचीन समय में घटित घटनाओं को बहुत ज़्यादा नहीं समझ पाता था, और केवल आराधना-स्थलों में रब्बियों से पूछकर ही उन्हें समझ पाया था। यदि पहली बार बोलना सीखते ही उसने अपना कार्य आरंभ कर दिया होता, तो यह कैसे संभव था कि वह कोई ग़लती न करता? परमेश्वर भूल-चूक कैसे कर सकता है? इसलिए, कार्य करने में सक्षम होने के पश्चात् ही उसने अपना कार्य आरंभ किया; उसने तब तक कोई कार्य नहीं किया, जब तक वह उसे करने में पूरी तरह से सक्षम नहीं हो गया। 29 वर्ष की आयु में यीशु पहले ही काफी परिपक्व हो चुका था और उसकी मानवता उस कार्य को करने के लिए पर्याप्त सक्षम हो चुकी थी, जो उसे करना था। केवल तभी परमेश्वर के आत्मा ने आधिकारिक रूप से उसमें कार्य करना आरंभ किया। उस समय यूहन्ना उसके लिए मार्ग खोलने हेतु सात वर्ष की तैयारी कर चुका था, और अपने कार्य के समापन पर उसे बंदीगृह में डाल दिया गया था। तब पूरा बोझ यीशु पर आ गया। यदि उसने इस कार्य को 21 या 22 वर्ष की आयु में प्रारंभ किया होता, जिस समय उसकी मानवता में अभी भी कमी थी, जब उसने युवावस्था में प्रवेश किया ही था, और अभी भी कई चीज़ें ऐसी थीं जिन्हें वह नहीं

समझता था, तो वह नियंत्रण अपने हाथों में ले पाने में असमर्थ होता। उस समय, यीशु के कार्य आरंभ करने से कुछ समय पूर्व ही यूहन्ना अपना कार्य कर चुका था, और उस समय तक वह मध्य आयु में प्रवेश कर चुका था। उस आयु में उसकी सामान्य मानवता उस कार्य को आरंभ करने के लिए पर्याप्त थी, जो उसे करना था। आज देहधारी परमेश्वर में भी सामान्य मानवता है और, यद्यपि वह तुम लोगों के बीच मौजूद बड़े-बूढ़ों जितनी परिवक्व नहीं है, फिर भी अपना कार्य आरंभ करने के लिए पर्याप्त है। आज के कार्य की परिस्थितियाँ पूरी तरह से वैसी नहीं हैं, जैसी वे यीशु के समय थीं। यीशु ने बारह प्रेरितों को क्यों चुना? यह सब उसके कार्य में सहायता के लिए और उसके सामंजस्य में था। एक ओर यह उस समय उसके कार्य की नींव रखने के लिए था, तो दूसरी ओर यह आने वाले दिनों में उसके कार्य की नींव रखने के लिए भी था। उस समय के कार्य के अनुसार, बारह प्रेरितों का चयन करना यीशु की इच्छा थी, और साथ ही यह स्वयं परमेश्वर की इच्छा भी थी। उसका मानना था कि उसे बारह प्रेरितों को चुनना चाहिए और फिर उन्हें सभी जगहों पर उपदेश के लिए भेजना चाहिए। लेकिन आज तुम लोगों के बीच इसकी कोई आवश्यकता नहीं है! जब देहधारी परमेश्वर देह में कार्य करता है, तो बहुत-से सिद्धांत होते हैं, और कई मामले होते हैं जिन्हें मनुष्य सामान्यतः नहीं समझता; मनुष्य उसकी थाह लेने के लिए या परमेश्वर से बहुत अधिक माँग करने के लिए लगातार अपनी धारणाओं का उपयोग करता है। फिर भी, आज के दिन भी बहुत लोग ऐसे हैं, जिन्हें बिलकुल भी नहीं पता कि उनका ज्ञान उनकी धारणाओं से युक्त है। परमेश्वर चाहे किसी भी युग या स्थान में देहधारण करे, देह में उसके कार्य के सिद्धांत अपरिवर्तनीय बने रहते हैं। वह देह बनकर भी अपने कार्य में देह से परे नहीं जा सकता; और यह तो बिलकुल भी नहीं कर सकता कि देह बनकर भी देह की सामान्य मानवता के भीतर काम न करे। अन्यथा परमेश्वर के देहधारण का अर्थ घुलकर शून्य हो जाएगा, और वचन का देह बनना पूरी तरह से निरर्थक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त, केवल स्वर्ग में परमपिता (पवित्रात्मा) ही परमेश्वर के देहधारण के बारे में जानता है, और दूसरा कोई नहीं, यहाँ तक कि स्वयं देह या स्वर्ग के दूत भी नहीं। ऐसा होने के कारण, देह में परमेश्वर का कार्य और भी अधिक सामान्य है और, और भी बेहतर ढंग से यह प्रदर्शित करने में सक्षम है कि निस्संदेह वचन देह बन गया है, और देह का अर्थ एक साधारण और सामान्य मनुष्य है।

कुछ लोग आश्चर्य कर सकते हैं, "युग का सूत्रपात स्वयं परमेश्वर द्वारा क्यों किया जाना चाहिए? क्या उसके स्थान पर कोई सृजित प्राणी नहीं खड़ा हो सकता?" तुम सब लोग जानते हो कि एक नए युग का

सूत्रपात करने के खास उद्देश्य से ही परमेश्वर देह बनता है, और, निस्संदेह, जब वह नए युग का सूत्रपात करता है, तो उसी समय वह पूर्व युग का समापन भी कर देता है। परमेश्वर आदि और अंत है; स्वयं वही है, जो अपने कार्य को गति प्रदान करता है और इसलिए स्वयं उसी को पिछले युग का समापन करने वाला भी होना चाहिए। यही उसके द्वारा शैतान को पराजित करने और संसार को जीतने का प्रमाण है। हर बार जब स्वयं वह मनुष्य के बीच कार्य करता है, तो यह एक नए युद्ध की शुरुआत होती है। नए कार्य की शुरुआत के बिना स्वाभाविक रूप से पुराने कार्य का समापन नहीं होगा। और पुराने का समापन न होना इस बात का प्रमाण है कि शैतान के साथ युद्ध अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। केवल स्वयं परमेश्वर के मनुष्यों के बीच आने और एक नया कार्य करने पर ही मनुष्य शैतान के अधिकार-क्षेत्र को तोड़कर पूरी तरह से स्वतंत्र हो सकता है और एक नया जीवन तथा एक नई शुरुआत प्राप्त कर सकता है। अन्यथा, मनुष्य सदैव पुराने युग में जीएगा और हमेशा शैतान के पुराने प्रभाव के अधीन रहेगा। परमेश्वर द्वारा लाए गए प्रत्येक युग के साथ मनुष्य के एक भाग को मुक्त किया जाता है, और इस प्रकार परमेश्वर के कार्य के साथ-साथ मनुष्य एक नए युग की ओर बढ़ता है। परमेश्वर की विजय का अर्थ उन सबकी विजय है, जो उसका अनुसरण करते हैं। यदि सृजित मानवजाति को युग के समापन का कार्यभार दिया जाता, तब चाहे यह मनुष्य के दृष्टिकोण से हो या शैतान के, यह परमेश्वर के विरोध या परमेश्वर के साथ विश्वासघात के कार्य से बढ़कर न होता, यह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का कार्य न होता, और मनुष्य का कार्य शैतान का साधन बन जाता। केवल जब मनुष्य स्वयं परमेश्वर द्वारा सूत्रपात किए गए युग में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन और उसका अनुसरण करता है, तभी शैतान पूरी तरह से आश्वस्त हो सकता है, क्योंकि यह सृजित प्राणी का कर्तव्य है। इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम लोगों को केवल अनुसरण और आज्ञापालन कंरने की आवश्यकता है, और इससे अधिक तुम लोगों से किसी बात की अपेक्षा नहीं की जाती। प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा अपने कर्तव्य का पालन करने और अपने कार्य को क्रियान्वित करने का यही अर्थ है। परमेश्वर अपना काम करता है और उसे कोई आवश्यकता नहीं है कि मनुष्य उसके स्थान पर काम करे, और न ही वह सृजित प्राणियों के काम में भाग लेता है। मनुष्य अपना कर्तव्य निभाता है और परमेश्वर के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करता। केवल यही सच्ची आज्ञाकारिता और शैतान की पराजय का सबूत है। स्वयं परमेश्वर द्वारा नए युग के सूत्रपात का कार्य पूरा कर देने के पश्चात्, वह मानवों के बीच अब और कार्य करने नहीं आता। केवल तभी एक सृजित प्राणी के रूप में मनुष्य अपना कर्तव्य और ध्येय पूरा करने के लिए आधिकारिक रूप से नए

युग में कदम रखता है। ये वे सिद्धांत हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है, जिनका उल्लंघन किसी के द्वारा नहीं किया जा सकता। केवल इस तरह से कार्य करना ही विवेकपूर्ण और तर्कसंगत है। परमेश्वर का कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाना है। वही है, जो अपने कार्य को गति प्रदान करता है, और वही है, जो अपने कार्य का समापन करता है। वही है, जो कार्य की योजना बनाता है, और वही है, जो उसका प्रबंधन करता है, और इतना ही नहीं, वही है, जो उस कार्य को सफल बनाता है। जैसा कि बाइबल में कहा गया है, "मैं ही आदि और अंत हूँ; मैं ही बोनेवाला और काटनेवाला हूँ।" वह सब-कुछ, जो उसके प्रबंधन के कार्य से संबंधित है, स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाता है। वह छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना का शासक है; कोई भी उसके स्थान पर उसका काम नहीं कर सकता और कोई भी उसके कार्य का समापन नहीं कर सकता, क्योंकि वही है, जो सब-कुछ अपने हाथ में रखता है। संसार का सृजन करने के कारण वह संपूर्ण संसार को अपने प्रकाश में रखने के लिए उसकी अगुआई करेगा, और वह संपूर्ण युग का समापन भी करेगा और इस प्रकार अपनी संपूर्ण योजना को सफल बनाएगा!

देहधारण का रहस्य (2)

जिस समय यीशु ने यहूदिया में कार्य किया था, तब उसने खुलकर ऐसा किया, परंतु अब, मैं तुम लोगों के बीच गुप्त रूप से काम करता और बोलता हूँ। अविश्वासी लोग इस बात से पूरी तरह से अनजान हैं। तुम लोगों के बीच मेरा कार्य बाहर के लोगों के लिए बंद है। इन वचनों, इन ताड़नाओं और न्यायों को केवल तुम लोग ही जानते हो, और कोई नहीं। यह समस्त कार्य तुम लोगों के बीच ही किया जाता है और केवल तुम लोगों के लिए ही प्रकट किया जाता है; अविश्वासियों में से कोई भी इसे नहीं जानता, क्योंकि अभी समय नहीं आया है। यहाँ ये लोग ताड़ना सहने के बाद पूर्ण बनाए जाने के समीप हैं, परंतु बाहर के लोग इस बारे में कुछ नहीं जानते। यह कार्य बहुत अधिक छिपा हुआ है! उनके लिए परमेश्वर का देह बन जाना छिपा हुआ है, परंतु जो इस धारा में हैं, उनके लिए कहा जा सकता है कि वह खुला है। यद्यपि परमेश्वर में सब-कुछ खुला है, सब-कुछ प्रकट है और सब-कुछ मुक्त है, लेकिन यह केवल उनके लिए सही है, जो उसमें विश्वास करते हैं; जहाँ तक शेष लोगों का, अविश्वासियों का संबंध है, उन्हें कुछ भी ज्ञात नहीं करवाया जाता। वर्तमान में तुम्हारे बीच और चीन में जो कार्य किया जा रहा है, वह एकदम छिपाया हुआ है, ताकि उन्हें इसके बारे में पता न चले। यदि उन्हें इस कार्य का पता चल गया, तो वे सिवाय उसकी निंदा और

उत्पीड़न के, कुछ नहीं करेंगे। वे उसमें विश्वास नहीं करेंगे। बड़े लाल अजगर के देश में, इस सबसे अधिक पिछड़े इलाके में, कार्य करना कोई आसान बात नहीं है। यदि इस कार्य को खुले तौर पर किया जाता, तो इसे जारी रखना असंभव होता। कार्य का यह चरण इस स्थान में किया ही नहीं जा सकता। यदि इस कार्य को खुले तौर पर किया जाता, तो वे इसे कैसे आगे बढ़ने दे सकते थे? क्या यह कार्य को और अधिक जोखिम में नहीं डाल देता? यदि इस कार्य को छिपाया नहीं जाता, बल्कि यीशु के समय के समान ही किया जाता, जब उसने असाधारण ढंग से बीमारों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाला था, तो क्या इसे बहुत पहले ही दुष्टात्माओं द्वारा "बंदी" नहीं बना लिया गया होता? क्या वे परमेश्वर के अस्तित्व को बरदाश्त कर पाते? यदि मुझे अब मनुष्य को उपदेश और व्याख्यान देने के लिए उपासना-गृहों में प्रवेश करना होता, तो क्या मुझे बहुत पहले ही टुकड़े-टुकड़े नहीं कर दिया गया होता? और यदि ऐसा होता, तो मेरा कार्य कैसे जारी रह पाता? चिह्न और चमत्कार खुले तौर पर बिलकुल भी अभिव्यक्त न करने का कारण अपने को छिपाना ही है। इसलिए, मेरा कार्य अविश्वासियों द्वारा देखा, खोजा या जाना नहीं जा सकता। यदि कार्य के इस चरण को अनुग्रह के युग में यीशु के तरीके से ही किया जाता, तो यह उतना सुस्थिर नहीं हो सकता था, जितना अब है। इसलिए, इस तरह गुप्त रूप से कार्य करना तुम लोगों के और समग्र कार्य के लाभ के लिए है। जब पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा, अर्थात् जब यह गुप्त कार्य पूरा हो जाएगा, तब कार्य का यह चरण एक झटके से प्रकट हो जाएगा। सब जान जाएँगे कि चीन में विजेताओं का एक समूह है; सब जान जाएँगे कि परमेश्वर ने चीन में देहधारण किया है और उसका कार्य समाप्ति पर आ गया है। केवल तभी मनुष्य पर यह प्रकट होगा : चीन ने अभी तक ह्रास या पतन का प्रदर्शन क्यों नहीं किया है? इससे पता चलता है कि परमेश्वर चीन में व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य कर रहा है और उसने लोगों के एक समूह को विजेताओं के रूप में पूर्ण बना दिया है।

देहधारी बना परमेश्वर स्वयं को सभी प्राणियों के बजाय केवल लोगों के उस हिस्से पर ही अभिव्यक्त करता है, जो उस अवधि के दौरान उसका अनुसरण करते हैं, जब वह व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करता है। वह केवल अपने कार्य के एक चरण को पूरा करने के लिए देह बनता है, मनुष्य को अपनी छवि दिखाने के लिए नहीं। चूँकि उसका कार्य स्वयं उसके द्वारा ही किया जाना चाहिए, इसलिए उसका देह में ऐसा करना आवश्यक है। जब यह कार्य पूरा हो जाएगा, तो वह मनुष्य की दुनिया से चला जाएगा; वह इस डर से लंबी अवधि तक मानव-जाति के बीच बना नहीं रह सकता, कि कहीं वह आगामी कार्य के मार्ग में

बाधा न बन जाए। जो कुछ वह जनसाधारण पर प्रकट करता है, वह केवल उसका धार्मिक स्वभाव और उसके समस्त कर्म हैं, अपने दो बार के देहधारणों की छवि नहीं, क्योंकि परमेश्वर की छवि केवल उसके स्वभाव के माध्यम से ही प्रदर्शित की जा सकती है, और उसे उसके देह की छवि से बदला नहीं जा सकता। उसके देह की छवि केवल लोगों की एक सीमित संख्या को, केवल उन लोगों को ही दिखाई जाती है, जो तब उसका अनुसरण करते हैं जब वह देह में कार्य करता है। इसीलिए जो कार्य अब किया जा रहा है, वह इस तरह गुप्त रूप से किया जा रहा है। इसी तरह से, यीशु ने जब अपना कार्य किया, तो उसने स्वयं को केवल यहूदियों को ही दिखाया, और अपने आप को कभी भी किसी दूसरे देश को सार्वजनिक रूप से नहीं दिखाया। इस प्रकार, जब एक बार उसने अपना काम समाप्त कर लिया, तो वह तुरंत ही मनुष्यों के बीच से चला गया और रुका नहीं; उसके बाद वह मनुष्य की उस छवि में नहीं रहा, जिसने स्वयं को मनुष्य को दर्शाया था, बल्कि वह पवित्र आत्मा था, जिसने सीधे तौर पर कार्य किया। एक बार जब देहधारी बने परमेश्वर का कार्य पूरी तरह से समाप्त हो जाता है, तो वह नश्वर संसार से चला जाता है, और फिर कभी उस तरह का कार्य नहीं करता, जो उसने तब किया था, जब वह देह में था। इसके बाद का समस्त कार्य पवित्र आत्मा द्वारा सीधे तौर पर किया जाता है। इस अवधि के दौरान मनुष्य मुश्किल से ही उसके हाड़-मांस के शरीर की छवि को देखने में समर्थ होता है; वह स्वयं को मनुष्य पर बिलकुल भी प्रकट नहीं करता, बल्कि हमेशा छिपा रहता है। देहधारी बने परमेश्वर के कार्य के लिए समय सीमित होता है। वह एक विशेष युग, अवधि, देश और विशेष लोगों के बीच किया जाता है। वह कार्य केवल परमेश्वर के देहधारण की अवधि के दौरान के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, और वह विशेषकर उस युग का होता है; वह एक युग-विशेष में परमेश्वर के आत्मा के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, उसके कार्य की संपूर्णता का नहीं। इसलिए, देहधारी बने परमेश्वर की छवि सभी लोगों को नहीं दिखाई जाती। जनसाधारण को जो दिखाया जाता है, वह परमेश्वर की धार्मिकता और अपनी संपूर्णता में उसका स्वभाव होता है, न कि उसकी उस समय की छवि, जब वह दो बार देह बना। यह न तो एकल छवि है जो मनुष्य को दिखाई जाती है, और न ही दो छवियाँ संयुक्त हैं। इसलिए, यह अनिवार्य है कि देहधारी परमेश्वर का देह उस कार्य की समाप्ति पर पृथ्वी से चला जाए, जिसे करना उसके लिए आवश्यक है, क्योंकि वह केवल उस कार्य को करने आता है जो उसे करना चाहिए, लोगों को अपनी छवि दिखाने नहीं आता। यद्यपि देहधारण का अर्थ परमेश्वर द्वारा पहले ही दो बार देहधारण करके पूरा किया जा चुका है, फिर भी वह किसी ऐसे देश पर अपने आपको

खुलकर प्रकट नहीं करेगा, जिसने उसे पहले कभी नहीं देखा है। यीशु फिर कभी स्वयं को धार्मिकता के सूर्य के रूप में यहूदियों को नहीं दिखाएगा, न ही वह जैतून के पहाड़ पर चढ़ेगा और सभी लोगों को दिखाई देगा; वह जो यहूदियों ने देखा है, वह यहूदिया में अपने समय के दौरान की यीशु की तसवीर है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अपने देहधारण में यीशु का कार्य दो हजार वर्ष पहले समाप्त हो गया; वह यहूदी की छवि में वापस यहूदिया नहीं आएगा, एक यहूदी की छवि में अपने आप को किसी भी अन्यजाति राष्ट्र को तो बिलकुल भी नहीं दिखाएगा, क्योंकि यीशु के देहधारी होने की छवि केवल एक यहूदी की छवि है, मनुष्य के उस पुत्र की छवि नहीं है, जिसे यूहन्ना ने देखा था। यद्यपि यीशु ने अपने अनुयायियों से वादा किया था कि वह फिर आएगा, फिर भी वह अन्यजाति राष्ट्रों में स्वयं को मात्र यहूदी की छवि में नहीं दिखाएगा। तुम लोगों को यह जानना चाहिए कि परमेश्वर के देह बनने का कार्य एक युग का सूत्रपात करना है। यह कार्य कुछ वर्षों तक सीमित है, और वह परमेश्वर के आत्मा का समस्त कार्य पूरा नहीं कर सकता। इसी तरह से, एक यहूदी के रूप में यीशु की छवि केवल परमेश्वर की उस छवि का प्रतिनिधित्व कर सकती है, जब उसने यहूदिया में कार्य किया था, और वह केवल सलीब पर चढ़ने का कार्य ही कर सकता था। उस अवधि के दौरान, जब यीशु देह में था, वह युग का अंत करने या मानवजाति को नष्ट करने का कार्य नहीं कर सकता था। इसलिए, जब उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया, और उसने अपना कार्य समाप्त कर लिया, तब वह ऊँचे पर चढ़ गया और उसने हमेशा के लिए स्वयं को मनुष्य से छिपा लिया। तब से, अन्यजाति देशों के वे वफादार विश्वासी प्रभु यीशु की अभिव्यक्ति को देखने में असमर्थ हो गए, वे केवल उसके चित्र को देखने में ही समर्थ रहे, जिसे उन्होंने दीवार पर चिपकाया था। यह तसवीर सिर्फ मनुष्य द्वारा बनाई गई तसवीर है, न कि वह छवि, जो स्वयं परमेश्वर ने मनुष्य को दिखाई थी। परमेश्वर अपने आपको खुलकर अपने दो बार देह बनने की छवि में जनसाधारण को नहीं दिखाएगा। जो कार्य वह मनुष्यों के बीच करता है, वह इसलिए करता है ताकि वे उसके स्वभाव को समझ सकें। यह सब मनुष्य को भिन्न-भिन्न युगों के कार्य के माध्यम से दिखाया जाता है; यह उस स्वभाव के माध्यम से, जो उसने ज्ञात करवाया है और उस कार्य के माध्यम से, जो उसने किया है, संपन्न किया जाता है, यीशु की अभिव्यक्ति के माध्यम से नहीं। अर्थात्, मनुष्य को परमेश्वर की छवि देहधारी छवि के माध्यम से नहीं, बल्कि देहधारी परमेश्वर के द्वारा, जिसके पास छवि और आकार दोनों हैं, किए गए कार्य के माध्यम से ज्ञात करवाई जाती है; और उसके कार्य के माध्यम से उसकी छवि दिखाई जाती है और उसका स्वभाव ज्ञात करवाया जाता है। यही उस कार्य का अर्थ

है, जिसे वह देह में करना चाहता है।

एक बार जब परमेश्वर के दो देहधारणों का कार्य समाप्त हो जाएगा, तो वह जनसाधारण को अपना स्वरूप देखने की अनुमति देते हुए समस्त अन्यजाति देशों में अपना धार्मिक स्वभाव दिखाना शुरू करेगा। वह अपने स्वभाव को अभिव्यक्त करेगा, और इसके माध्यम से विभिन्न श्रेणियों के मनुष्यों का अंत स्पष्ट करेगा, और इस प्रकार पुराने युग को पूरी तरह से समाप्त कर देगा। देह में उसका कार्य बड़ी सीमा तक विस्तारित नहीं होता (जैसे कि यीशु ने केवल यहूदिया में काम किया, और आज मैं केवल तुम लोगों बीच कार्य करता हूँ), जिसका कारण यह है कि देह में उसके कार्य की हदें और सीमाएँ हैं। वह एक साधारण और सामान्य देह में केवल एक अल्पावधि का कार्य करता है; वह इस धारित देह का उपयोग शाश्वतता का कार्य करने या अन्यजाति देशों के लोगों को दिखाई देने का कार्य करने के लिए नहीं करता। देह में किए जाने वाले कार्य को केवल दायरे में सीमित किया जा सकता है (जैसे कि सिर्फ यहूदिया में या सिर्फ तुम लोगों के बीच कार्य करना), और फिर, इन सीमाओं के भीतर किए गए कार्य के माध्यम से, इसके दायरे को तब विस्तारित किया जा सकता है। बेशक, विस्तार का कार्य सीधे तौर पर पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है और तब वह उसके द्वारा धारित देह का कार्य नहीं होगा। चूँकि देह में कार्य की सीमाएँ हैं और वह विश्व के समस्त कोनों तक नहीं फैलता—इसलिए वह इसे पूरा नहीं कर सकता। देह में कार्य के माध्यम से उसका आत्मा उस कार्य को करता है, जो उसके बाद आता है। इसलिए, देह में किया गया कार्य शुरुआती प्रकृति का होता है, जिसे कुछ निश्चित सीमाओं के भीतर किया जाता है; इसके बाद, उसका आत्मा उस कार्य को आगे बढ़ाता है, और इतना ही नहीं, ऐसा वह एक बढ़े हुए दायरे में करता है।

परमेश्वर इस पृथ्वी पर जिस कार्य को करने के लिए आता है, वह केवल युग की अगुआई करना, नए युग का आरंभ करना और पुराने युग को समाप्त करना है। वह पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन जीने, स्वयं मानव-जगत के जीवन के सुख-दुःख का अनुभव करने, या किसी व्यक्ति-विशेष को अपने हाथ से पूर्ण बनाने या किसी व्यक्ति-विशेष को व्यक्तिगत रूप से बढ़ते हुए देखने के लिए नहीं आया है। यह उसका कार्य नहीं है; उसका कार्य केवल एक नए युग का आरंभ करना और पुराने युग को समाप्त करना है। अर्थात्, वह व्यक्तिगत रूप से एक युग का आरंभ करेगा, व्यक्तिगत रूप से दूसरे युग का अंत करेगा, और व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करके शैतान को पराजित करेगा। हर बार जब वह व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करता है, तो यह ऐसा होता है मानो वह युद्ध के मैदान में कदम रख रहा हो। सबसे पहले, वह

विश्व को जीतता है और देह में रहते हुए शैतान पर विजय प्राप्त करता है; वह सारी महिमा का मालिक हो जाता है और दो हज़ार वर्षों के कार्य की समग्रता पर से पर्दा उठाता है, और उसे ऐसा बना देता है कि पृथ्वी के सभी मनुष्यों के पास चलने के लिए एक सही मार्ग और जीने के लिए एक शांतिपूर्ण और आनंदमय जीवन हो। किंतु, परमेश्वर लंबे समय तक मनुष्य के साथ पृथ्वी पर नहीं रह सकता, क्योंकि परमेश्वर तो परमेश्वर है, और अंततः मनुष्य के समान नहीं है। वह एक सामान्य मनुष्य का जीवनकाल नहीं जी सकता, अर्थात्, वह पृथ्वी पर एक ऐसे मनुष्य के रूप में नहीं रह सकता, जो साधारण के अलावा कुछ नहीं है, क्योंकि उसके पास अपने मानव-जीवन को बनाए रखने के लिए एक सामान्य मनुष्य की सामान्य मनुष्यता का केवल एक अल्पतम अंश ही है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पृथ्वी पर कैसे एक परिवार शुरू कर सकता है, कैसे आजीविका अपना सकता है, और कैसे बच्चों की परवरिश कर सकता है? क्या यह उसके लिए अपमानजनक नहीं होगा? वह सिर्फ सामान्य तरीके से कार्य करने के उद्देश्य से सामान्य मानवता से संपन्न है, न कि एक सामान्य मनुष्य के समान अपना परिवार और आजीविका रखने में समर्थ होने के लिए। उसकी सामान्य समझ, सामान्य मन और उसके देह के सामान्य भोजन और वस्त्र यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं कि उसमें एक सामान्य मानवता है; यह साबित करने के लिए कि वह सामान्य मानवता से सुसज्जित है, उसे परिवार या आजीविका रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह पूरी तरह से अनावश्यक होगा! परमेश्वर का पृथ्वी पर आना वचन का देह बनना है; वह मनुष्य को मात्र अपने वचन को समझने और अपने वचन को देखने दे रहा है, अर्थात्, मनुष्य को देह द्वारा किए गए कार्य को देखने दे रहा है। उसका यह इरादा नहीं है कि लोग उसके देह के साथ एक निश्चित तरीके से व्यवहार करें, बल्कि केवल यह है कि मनुष्य अंत तक आज्ञाकारी बने रहें, अर्थात्, उसके मुँह से निकलने वाले सभी वचनों का पालन करें, और उसके द्वारा किए जाने वाले समस्त कार्य के प्रति समर्पित हो जाएँ। वह मात्र देह में कार्य कर रहा है; जानबूझकर मनुष्य से यह नहीं कह रहा कि वे उसके देह की महानता या पवित्रता की सराहना करें, बल्कि वह मनुष्य को अपने कार्य की बुद्धि और वह समस्त अधिकार दिखा रहा है, जिसका वह प्रयोग करता है। इसलिए, भले ही उसके पास उत्कृष्ट मानवता है, फिर भी वह कोई घोषणा नहीं करता, और केवल उस कार्य पर ध्यान केंद्रित करता है, जो उसे करना चाहिए। तुम लोगों को जानना चाहिए कि ऐसा क्यों है कि परमेश्वर देह बना और फिर भी वह अपनी सामान्य मानवता का प्रचार नहीं करता या उसकी गवाही नहीं देता, बल्कि इसके बजाय केवल उस कार्य को करता है, जिसे वह करना चाहता है। इसलिए, जो कुछ तुम

लोग देहधारी परमेश्वर में देख सकते हो, वह उसका दिव्य स्वरूप है; इसका कारण यह है कि वह अपने मानवीय स्वरूप का ढिंढोरा नहीं पीटता, जिससे कि मनुष्य उसका अनुकरण करे। केवल जब मनुष्य लोगों की अगुआई करता है, तभी वह अपने मानवीय स्वरूप के बारे में बोलता है, ताकि वह उनकी प्रशंसा और समर्पण बेहतर ढंग से पा सके और इसके फलस्वरूप दूसरों की अगुआई प्राप्त कर सके। इसके विपरीत, परमेश्वर केवल अपने कार्य (अर्थात् मनुष्य के लिए अप्राप्य कार्य) के माध्यम से ही मनुष्य पर विजय प्राप्त करता है; मनुष्य द्वारा उसकी प्रशंसा किए जाने या मनुष्य से अपनी आराधना करवाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। जो कुछ भी वह करता है, वह अपने प्रति मनुष्य में आदर की भावना या अपनी अगाधता का भाव भरना है। मनुष्य को प्रभावित करने की परमेश्वर को कोई आवश्यकता नहीं है; वह तुम लोगों से बस इतना ही चाहता है कि जब एक बार तुम लोग उसके स्वभाव को देख लो, तो उसका आदर करो। परमेश्वर जो कार्य करता है, वह उसका अपना कार्य है; उसे उसके बजाय मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता, न ही उसे मनुष्य द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। केवल स्वयं परमेश्वर ही अपना कार्य कर सकता है और मनुष्य की नए जीवन में अगुआई करने के लिए उसे नए युग में ले जा सकता है। जो कार्य वह करता है, वह मनुष्य को एक नया जीवन धारण करने और नए युग में प्रवेश करने में सक्षम बनाने के लिए है। शेष कार्य उन लोगों को सौंप दिया जाता है, जो सामान्य मानवता वाले हैं और जिनकी दूसरों के द्वारा प्रशंसा की जाती है। इसलिए, अनुग्रह के युग में उसने दो हज़ार वर्षों के कार्य को देह में अपने तेंतीस वर्षों में से मात्र साढ़े तीन वर्षों में पूरा कर दिया। जब परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए पृथ्वी पर आता है, तो वह हमेशा दो हजार वर्षों के या एक समस्त युग के कार्य को कुछ ही वर्षों के लघुतम समय के भीतर पूरा कर देता है। वह विलंब नहीं करता, और वह रुकता नहीं है; वह बस कई वर्षों के काम को घनीभूत कर देता है, ताकि वह मात्र कुछ थोड़े-से वर्षों में ही पूरा हो जाए। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जिस कार्य को वह व्यक्तिगत रूप से करता है, वह पूर्णत: एक नया मार्ग प्रशस्त करने और एक नए युग की अगुआई करने के लिए होता है।

देहधारण का रहस्य (3)

जब परमेश्वर अपना कार्य करता है, तो वह किसी निर्माण या आंदोलनों में शामिल होने नहीं आता, बल्कि अपनी सेवकाई पूरी करने के लिए आता है। हर बार जब वह देह बनता है, तो यह केवल कार्य के किसी चरण को पूरा करने और एक नए युग का सूत्रपात करने के लिए होता है। अब राज्य के युग का

आगमन हो चुका है, और राज्य के लिए प्रशिक्षण की शुरुआत भी। कार्य का यह चरण मनुष्य का कार्य नहीं है, और यह एक खास हद तक मनुष्य को आकार देने के लिए नहीं है, बल्कि यह केवल परमेश्वर के कार्य के एक हिस्से को पूरा करने के लिए है। जो वह करता है, वह मनुष्य का कार्य नहीं है, यह पृथ्वी को छोड़ने से पहले एक निश्चित परिणाम प्राप्त करने हेतु मनुष्य को आकार देने के लिए नहीं है; यह उसकी सेवकाई पूरी करने और उस कार्य को समाप्त करने के लिए है, जो उसे करना चाहिए, जो पृथ्वी पर उसके कार्य के लिए उचित व्यवस्थाएँ करना और परिणामस्वरूप महिमान्वित हो जाना है। देहधारी परमेश्वर का कार्य उन व्यक्तियों के कार्य के समान नहीं है, जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया जाता है। जब परमेश्वर पृथ्वी पर अपना काम करने आता है, तो वह केवल अपनी सेवकाई पूरी करने की परवाह करता है। जहाँ तक उसकी सेवकाई से संबंध न रखने वाले अन्य समस्त मुद्दों की बात है, वह उनमें कोई भाग नहीं लेता, यहाँ तक कि वह उनसे आँख मूँद लेता है। वह मात्र उस कार्य को करता है जो उसे करना चाहिए, और वह उस कार्य की बिलकुल परवाह नहीं करता, जो मनुष्य को करना चाहिए। वह जो कार्य करता है, वह केवल उस युग से संबंधित होता है जिसमें वह होता है, और उस सेवकाई से संबंधित होता है जिसे उसे पूरा करना चाहिए, मानो अन्य सभी मुद्दे उसके दायरे से बाहर हों। वह स्वयं को एक मनुष्य के रूप में जीने से संबंधित अधिक मूलभूत ज्ञान से सुसज्जित नहीं करता, न ही वह अधिक सामाजिक कौशल सीखता है और न ही खुद को ऐसी अन्य किसी चीज़ से लैस करता है जिसे मनुष्य समझता है। वह उन तमाम चीज़ों की ज़रा भी परवाह नहीं करता जो इंसान में होनी चाहिए, और वह मात्र उस कार्य को करता है जो उसका कर्तव्य है। और इस प्रकार, जैसा कि मनुष्य इसे देखता है, देहधारी परमेश्वर इतना अपूर्ण है कि जो बातें मनुष्य में होनी चाहिए, वह उनकी तरफ भी कोई ध्यान नहीं देता, और उसे ऐसी बातों की कोई समझ नहीं है। जीवन के बारे में सामान्य ज्ञान और साथ ही व्यक्तिगत आचरण को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत और दूसरों के साथ बातचीत जैसे मामले मानो उससे कोई संबंध नहीं रखते। लेकिन तुम देहधारी परमेश्वर में असामान्यता का जरा-सा भी संकेत नहीं पा सकते। कहने का अभिप्राय यह है कि उसकी मानवता केवल एक सामान्य व्यक्ति के रूप में उसके जीवन और उसके मस्तिष्क के सामान्य विवेक को बनाए रखती है और उसे सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता प्रदान करती है। लेकिन उसके अंदर ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जो सिर्फ़ मनुष्य (सृजित प्राणियों) में होनी चाहिए। परमेश्वर केवल अपनी सेवकाई पूरी करने के लिए देहधारी बनता है। उसका कार्य पूरे युग की ओर निर्देशित होता है, न कि किसी

एक व्यक्ति या स्थान के लिए, वह समूचे ब्रह्मांड के लिए निर्देशित होता है। यही उसके कार्य की दिशा और वह सिद्धांत है, जिसके द्वारा वह कार्य करता है। कोई इसे बदल नहीं सकता, और मनुष्य के पास इसमें शामिल होने का कोई उपाय नहीं है। हर बार जब परमेश्वर देह बनता है, तो वह अपने साथ उस युग के कार्य को लेकर आता है, और बीस, तीस, चालीस यहाँ तक कि सत्तर या अस्सी वर्षों तक मनुष्य के साथ रहने का उसका कोई इरादा नहीं होता, जिससे कि मनुष्य उसे बेहतर ढंग से समझ सके और उसमें अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सके। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है! ऐसा करने से परमेश्वर के अंतर्निहित स्वभाव के बारे में मनुष्य का ज्ञान बिलकुल भी गहरा नहीं होगा; इसके बजाय, यह केवल उसकी धारणाओं में वृद्धि ही करेगा और उसकी धारणाओं और विचारों को पुख्ता ही बनाएगा। इसलिए तुम लोगों को यह समझना चाहिए कि वास्तव में देहधारी परमेश्वर का कार्य क्या है। निश्चित रूप से तुम लोग मेरे इन वचनों को समझने से चूक नहीं सकते, जो मैंने तुम लोगों से कहे थे : "मैं एक सामान्य मनुष्य के जीवन का अनुभव करने के लिए नहीं आया हूँ"। क्या तुम लोग इन वचनों को भूल गए हो : "परमेश्वर पृथ्वी पर एक सामान्य मनुष्य का जीवन जीने के लिए नहीं आता"? तुम लोग परमेश्वर के देह बनने के उद्देश्य को नहीं समझते, और न ही तुम लोग इसका अर्थ जानते हो कि "परमेश्वर एक सृजित प्राणी के जीवन का अनुभव करने के इरादे से पृथ्वी पर कैसे आ सकता है?" परमेश्वर पृथ्वी पर केवल अपना काम पूरा करने आता है, और इसलिए पृथ्वी पर उसका कार्य थोड़े समय का होता है। वह पृथ्वी पर इस इरादे के साथ नहीं आता कि परमेश्वर का आत्मा उसके देह को एक ऐसे श्रेष्ठ मानव के रूप में विकसित करे, जो कलीसिया की अगुआई करेगा। जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो यह वचन का देह बनना है; हालाँकि मनुष्य उसके कार्य को नहीं जानता और ज़बरदस्ती चीज़ों को उस पर थोपता है। किंतु तुम सब लोगों को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर "देह बना वचन" है, न कि उस समय के लिए परमेश्वर की भूमिका निभाने हेतु पवित्र आत्मा द्वारा विकसित किया गया एक देह। स्वयं परमेश्वर विकसित किया गया उत्पाद नहीं है, बल्कि देह बना वचन है और आज वह तुम सब लोगों के बीच अपने कार्य को आधिकारिक रूप से कर रहा है। तुम सब जानते और मानते हो कि परमेश्वर का देहधारण एक तथ्यामक सत्य है, लेकिन तुम लोग ऐसा अभिनय करते हो, मानो तुम इसे समझते हो। देहधारी परमेश्वर के कार्य से लेकर उसके देहधारण के महत्व और सार तक, तुम लोग इन्हें ज़रा-भी समझने में समर्थ नहीं हो, और स्मृति से वचनों को धाराप्रवाह बोलने में दूसरों का अनुसरण करते हो। क्या तुम मानते हो कि देहधारी परमेश्वर वैसा ही है, जैसी तुम कल्पना करते

हो?

परमेश्वर केवल युग की अगुआई करने और एक नए कार्य को गतिमान करने के लिए देह बनता है। तुम लोगों के लिए इस बिंदु को समझना आवश्यक है। यह मनुष्य के काम से बहुत अलग है, और दोनों एक साँस में उल्लेख किए जाने योग्य नहीं हैं। कार्य करने के लिए उपयोग किए जा सकने से पूर्व मनुष्य को लंबी अवधि तक विकसित और पूर्ण किए जाने की आवश्यकता होती है, और इसके लिए एक विशेष रूप से उच्च स्तर की मानवता अपेक्षित होती है। मनुष्य को न केवल अपना सामान्य मानवता के बोध को बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए, बल्कि उसे दूसरों के साथ अपने व्यवहार के अनेक सिद्धांतों और नियमों को भी समझने चाहिए, और इतना ही नहीं, उसे मनुष्य की बुद्धि और नैतिक ज्ञान का और अधिक अध्ययन करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। मनुष्य के अंदर ये तमाम बातें होनी चाहिए। लेकिन, देहधारी परमेश्वर के मामले में ऐसा नहीं है, क्योंकि उसका कार्य न तो मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है और न ही वह मनुष्य का कार्य है; बल्कि, यह उसके अस्तित्व की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है और उस कार्य का प्रत्यक्ष कार्यान्वियन है, जो उसे करना चाहिए। (स्वाभाविक रूप से उसका कार्य उपयुक्त समय पर किया जाता है, आकस्मिक या ऐच्छिक ढंग से नहीं, और वह तब शुरू होता है, जब उसकी सेवकाई पूरी करने का समय होता है।) वह मनुष्य के जीवन में या मनुष्य के कार्य में भाग नहीं लेता, अर्थात्, उसकी मानवता इनमें से किसी से युक्त नहीं होती (हालाँकि इससे उसका कार्य प्रभावित नहीं होता)। वह अपनी सेवकाई तभी पूरी करता है, जब उसके लिए ऐसा करने का समय होता है; उसकी स्थिति कुछ भी हो, वह बस उस कार्य को करने के लिए आगे बढ़ता है, जो उसे करना चाहिए। मनुष्य उसके बारे में जो कुछ भी जानता हो या उसके बारे में जो भी राय रखता हो, इससे उसके कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने अपना काम किया था, तब कोई नहीं जानता था कि वह कौन है, परंतु वह अपने काम में आगे बढ़ता गया। इसमें से किसी ने भी उसे उस कार्य को करने में बाधा नहीं डाली, जो उसे करना था। इसलिए, उसने पहले अपनी पहचान को स्वीकार या घोषित नहीं किया, और बस लोगों को अपना अनुसरण करने दिया। स्वाभाविक रूप से यह केवल परमेश्वर की विनम्रता नहीं थी; बल्कि वह तरीका भी था, जिससे परमेश्वर ने देह में काम किया था। वह केवल इसी तरीके से काम कर सकता था, क्योंकि मनुष्य के पास उसे खुली आँखों से पहचानने का कोई तरीका नहीं था। और यदि मनुष्य उसे पहचान भी लेता, तो भी वह उसके काम में सहायता कर पाने में सक्षम न होता। इसके अतिरिक्त, वह इसलिए देहधारी नहीं हुआ कि मनुष्य उसके

देह को जान जाए; बल्कि अपना कार्य और अपनी सेवकाई पूरी करने के लिए हुआ था। इस कारण से, उसने अपनी पहचान सार्वजनिक करने को कोई महत्व नहीं दिया। जब उसने वह सारा कार्य पूरा कर लिया, जो उसे करना चाहिए था, तब उसकी पूरी पहचान और हैसियत स्वभाविक रूप से मनुष्य पर स्पष्ट हो गई। देहधारी परमेश्वर मौन रहता है और कभी कोई घोषणाएँ नहीं करता। वह न तो मनुष्य पर, और न ही इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता है कि मनुष्य उसका अनुसरण किस तरह कर रहा है, वह बस अपनी सेवकाई पूरी करने और वह कार्य करने के लिए आगे बढ़ता जाता है, जो उसे करना चाहिए। कोई भी उसके कार्य के मार्ग में बाधा नहीं बन सकता। जब उसके कार्य के समापन का समय आएगा, तब वह अवश्य ही पूरा और समाप्त किया जाएगा, और कोई भी अन्यथा आदेश नहीं दे सकता। अपने कार्य की समाप्ति के बाद जब वह मनुष्य से विदा होकर चला जाएगा, तभी मनुष्य उसके द्वारा किए गए कार्य को समझेगा, यद्यपि पूरी तरह स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाएगा। और जिस इरादे से पहली बार उसने अपना कार्य किया, उसे समझने में मनुष्य को बहुत समय लगेगा। दूसरे शब्दों में, देहधारी परमेश्वर के युग का कार्य दो भागों में विभाजित है। एक भाग में स्वयं देहधारी परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य और उसके द्वारा बोले जाने वाले वचन शामिल हैं। एक बार जब उसके देह की सेवकाई पूरी तरह से संपन्न हो जाती है, तो कार्य का दूसरा भाग उन लोगों द्वारा किया जाना शेष रह जाता है, जिनका उपयोग पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है। इस समय इंसान को अपना काम पूरा करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर पहले ही मार्ग प्रशस्त कर चुका है, और अब मनुष्य को उस पर स्वयं चलने की आवश्यकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि कार्य के एक भाग को देहधारी परमेश्वर करता है, और इसके बाद पवित्र आत्मा और उसके द्वारा उपयोग किए जाने वाले लोग उस कार्य को आगे बढ़ाते हैं। अतः मनुष्य को पता होना चाहिए कि इस चरण में देहधारी परमेश्वर द्वारा प्राथमिक रूप से किए जाने वाले कार्य में क्या अपरिहार्य है, और उसे समझना चाहिए कि परमेश्वर के देहधारी होने का महत्व क्या है और उसके द्वारा किया जाने वाला कार्य क्या है, और परमेश्वर से वैसी माँगें नहीं करनी चाहिए, जैसी मनुष्य से की जाती हैं। इसी में मनुष्य की गलती, उसकी धारणा और अवज्ञा छिपी है।

परमेश्वर इस आशय से देह धारण नहीं करता कि मनुष्य उसे जाने, या देहधारी परमेश्वर के देह और मनुष्य के देह के अंतर पहचाने; न ही वह मनुष्य के विवेक की शक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए देह बनता है, और इस अभिप्राय से तो बिलकुल नहीं बनता कि मनुष्य परमेश्वर द्वारा धारित देह की आराधना

करे, जिससे उसे बड़ी महिमा मिले। इसमें से कोई भी परमेश्वर के देह बनने का मूल उद्देश्य नहीं है। न ही परमेश्वर मनुष्य की निंदा करने के लिए देह धारण करता है, न ही जानबूझकर मनुष्य को उजागर करने के लिए, और न ही उसके लिए चीज़ों को कठिन बनाने के लिए। इनमें से कोई भी परमेश्वर का मूल इरादा नहीं है। हर बार जब परमेश्वर देह बनता है, तो यह कार्य का एक अपरिहार्य रूप होता है। वह अपने महत्तर कार्य और महत्तर प्रबंधन की खातिर ऐसा करता है, न कि उन कारणों से, जिनकी मनुष्य कल्पना करता है। परमेश्वर पृथ्वी पर केवल अपने कार्य की अपेक्षाओं और जैसी आवश्यकता है उसके अनुसार आता है। वह पृथ्वी पर मात्र इधर-उधर देखने के इरादे से नहीं आता, बल्कि उस कार्य को करने लिए आता है जो उसे करना चाहिए। अन्यथा वह इतना भारी बोझ क्यों उठाएगा और इस कार्य को करने के लिए इतना बड़ा जोखिम क्यों लेगा? परमेश्वर केवल तभी देह बनता है, जब उसे बनना होता है, और वह हमेशा एक विशिष्ट अर्थ के साथ देह बनता है। यदि यह सिर्फ इसलिए होता कि मनुष्य उसे देखे और अपने अनुभव का क्षितिज व्यापक करे, तो वह निश्चित ही इतने हल्केपन से लोगों के बीच कभी नहीं आता। वह पृथ्वी पर अपने प्रबंधन और अपने महत्तर कार्य के लिए, और इस उद्देश्य से आता है, कि अधिक लोगों को प्राप्त कर सके। वह युग का प्रतिनिधित्व करने के लिए आता है, वह शैतान को पराजित करने के लिए आता है, और वह शैतान को पराजित करने के लिए देहधारण करता है। इसके अतिरिक्त, वह जीवन जीने में समस्त मानवजाति का मार्गदर्शन करने के लिए आता है। यह सब उसके प्रबंधन से संबंध रखता है, और यह पूरे ब्रह्मांड के कार्य से संबंध रखता है। यदि परमेश्वर मनुष्य को मात्र अपनी देह को जानने देने और मनुष्य की आँखें खोलने के लिए देह बनता, तो वह हर देश की यात्रा क्यों न करता? क्या यह अत्यधिक आसान न होता? परंतु उसने ऐसा नहीं किया, इसके बजाय वह रहने और उस कार्य को आरंभ करने के लिए, जो उसे करना चाहिए, एक उपयुक्त स्थान चुनता है। बस यह अकेला देह ही काफी अर्थपूर्ण है। वह संपूर्ण युग का प्रतिनिधित्व करता है, और संपूर्ण युग का कार्य भी करता है; वह पुराने युग का समापन और नए युग का सूत्रपात दोनों करता है। यह सब एक महत्वपूर्ण मामला है, जो परमेश्वर के प्रबंधन से संबंधित है, और यह सब कार्य के उस एक चरण के मायने हैं, जिसे संपन्न करने परमेश्वर पृथ्वी पर आता है। जब यीशु पृथ्वी पर आया, तो उसने केवल कुछ वचन बोले और कुछ कार्य किया; उसने स्वयं को मनुष्य की जिंदगी के साथ नहीं जोड़ा, और अपना कार्य पूरा करने के बाद तुरंत लौट गया। आज जब मैं बोलना समाप्त कर दूँगा और अपने वचन तुम लोगों को सौंप दूँगा, और तुम सभी लोग समझ लोगे, तो मेरे कार्य

का यह चरण समाप्त हो गया होगा, चाहे उस समय तुम लोगों की ज़िंदगी कैसी भी हो। भविष्य में कार्य के इस कदम को जारी रखने और पृथ्वी पर इन वचनों के अनुसार कार्य करने के लिए कुछ लोग अवश्य होंगे; तब मनुष्य का कार्य और मनुष्य का निर्माण शुरू होगा। किंतु अभी परमेश्वर केवल अपनी सेवकाई और अपने कार्य का एक चरण पूरा करने के लिए काम करता है। परमेश्वर मनुष्य से भिन्न तरीके से काम करता है। मनुष्य सभाएँ और मंच पसंद करता है और अनुष्ठान को महत्व देता है, जबकि परमेश्वर मनुष्य की सभाओं और बैठकों से ही सबसे अधिक घृणा करता है। परमेश्वर मनुष्य के साथ अनौपचारिक रूप से बातचीत करता और बोलता है; यह परमेश्वर का कार्य है, जो असाधारण रूप से मुक्त है और तुम लोगों को मुक्त भी करता है। लेकिन, मैं तुम लोगों के साथ सभाएँ करने से बेहद घृणा करता हूँ, और मैं तुम लोगों जैसे अनुशासित जीवन का अभ्यस्त नहीं हो सकता। मुझे नियमों से नफ़रत है; वे मनुष्य को इतना बाँध देते हैं कि वे आगे बढ़ने, बोलने और गाने तक से डरने लगते हैं, उनकी आँखें सीधे तुम्हें घूरती हैं। मैं तुम लोगों के जमघट लगाने के तरीके से अत्यधिक घृणा करता हूँ और मैं बड़ी सभाओं से भी अत्यधिक घृणा करता हूँ। मैं तुम लोगों के साथ इस तरह से सभा करने से सीधे इनकार करता हूँ, क्योंकि जीने का यह तरीका व्यक्ति को बेड़ियों से बँधा हुआ महसूस करवाता है और तुम लोग बहुत अधिक अनुष्ठान करते हो और बहुत सारे नियमों का पालन करते हो। अगर तुम्हें अगुआई करने दी जाए, तो तुम सब लोगों को नियमों के दायरे में ले आओगे, और तुम लोगों की अगुआई के अधीन उनके पास नियमों को किनारे करने का कोई उपाय नहीं होगा; बल्कि धर्म का माहौल और भी अधिक प्रचंड हो जाएगा, और मनुष्य के अभ्यासों की संख्या बढ़ती ही जाएगी। कुछ लोग एकत्र होने पर प्रचार करते और बोलते ही चले जाते हैं और कभी नहीं थकते, जबकि कुछ लोग दसियों दिन तक बिना रुके बोलते रह सकते हैं। ये सभी मनुष्यों की बड़ी सभाएँ और बैठकें मानी जाती हैं; उनका खाने-पीने, आनंदित होने या आत्मिक मुक्ति के जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। ये सभी बैठकें हैं! तुम लोगों की सह-कार्यकर्ताओं की बैठकें और छोटी-बड़ी सभाएँ, सभी मेरे लिए घृणित हैं, और मुझे कभी भी उनमें कोई रुचि नहीं रही है। यही वह सिद्धांत है, जिसके अनुसार मैं कार्य करता हूँ : मैं सभाओं के दौरान उपदेश देने का इच्छुक नहीं हूँ, न ही मैं किसी बड़ी सार्वजनिक सभा में कुछ घोषणा करना चाहता हूँ, तुम सब लोगों को किसी विशेष सम्मेलन में कुछ दिनों के लिए बुलाना तो बिलकुल भी नहीं चाहता। मुझे तुम सब लोगों का एक-साथ सभा में चुस्त-दुरुस्त बैठना स्वीकार्य नहीं है; तुम लोगों को किसी भी समारोह की सीमाओं में देख मुझे घृणा होती है, और इससे भी अधिक मैं तुम लोगों

के किसी भी ऐसे समारोह में हिस्सा लेने से इनकार करता हूँ। जितना अधिक तुम लोग ऐसा करते हो, मुझे यह उतना ही अधिक घृणित लगता है। तुम लोगों के इन समारोहों और नियमों में मेरी थोड़ी-सी भी रुचि नहीं है; चाहे तुम लोग उन्हें कितने भी अच्छे से क्यों न करते हो, मुझे ये सब घृणित ही लगता है। ऐसा नहीं है कि तुम लोगों की व्यवस्थाएँ अनुपयुक्त हैं या कि तुम लोग अत्यधिक अधम हो; इसका कारण यह है कि मैं तुम लोगों के जीने के तरीके से घृणा करता हूँ और, इतना ही नहीं, मैं इसका अभ्यस्त नहीं हो सकता। तुम लोग उस कार्य को बिलकुल नहीं समझते, जो मैं करना चाहता हूँ। जब यीशु अपना कार्य करता था, तब किसी स्थान पर धर्मोपदेश देने के बाद वह अपने शिष्यों को शहर के बाहर ले जाया करता था और उनसे उन मार्गों के बारे में बात करता था, जिनसे वे समझने के योग्य हो जाते थे। वह अकसर इस तरीके से कार्य करता था। जनसाधारण के बीच उसका कार्य बहुत कम और दुर्लभ होता था। तुम लोग देहधारी परमेश्वर से जो चाहते हो, उसके अनुसार, उसके पास एक साधारण व्यक्ति का जीवन नहीं होना चाहिए; उसे अपना कार्य करना चाहिए और चाहे वह बैठा हो, खड़ा हो या चल रहा हो, उसे बोलना चाहिए। उसे हर समय कार्य करते रहना चाहिए और उसकी "परिक्रमा" कभी नहीं रुक सकती, अन्यथा वह अपने कर्तव्यों की अनदेखी कर रहा होगा। क्या मनुष्य की ये माँगें मनुष्य की समझ के अनुसार उपयुक्त हैं? तुम लोगों की ईमानदारी कहाँ है? क्या तुम लोग बहुत ज्यादा नहीं माँगते? क्या मुझे इसकी आवश्यकता है कि कार्य करते समय तुम्हें मेरी जाँच-पड़ताल करो? क्या अपनी सेवकाई पूरी करते समय मुझे तुम्हारे निरीक्षण की आवश्यकता है? मुझे अच्छी तरह पता है कि मुझे कौन-सा कार्य करना चाहिए और कब करना चाहिए; दूसरों को उसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। शायद तुम्हें ऐसा लगे कि मैंने ज्यादा कुछ नहीं किया है, किंतु तब तक मेरा कार्य समाप्त हो चुका होता है। उदाहरण के लिए, चार सुसमाचारों में यीशु के वचनों को लो : क्या वे भी सीमित नहीं थे? जिस समय यीशु ने आराधना-स्थल में प्रवेश किया और धर्मोपदेश दिया, तो उसने इसे अधिक से अधिक कुछ ही पलों में समाप्त कर दिया, और जब वह बोल चुका, तो अपने शिष्यों को नाव में ले गया और बिना कोई स्पष्टीकरण दिए चला गया। अधिक से अधिक, आराधना-स्थल के भीतर मौजूद लोगों ने आपस में इसकी चर्चा की, लेकिन यीशु ने इसमें कोई हिस्सा नहीं लिया। परमेश्वर केवल वही कार्य करता है जो उसे करना चाहिए, उसके अलावा कुछ नहीं करता। आज, बहुत-से लोग चाहते हैं कि मैं अधिक बोलूँ और बात करूँ, कम से कम कई घंटे प्रतिदिन। तुम लोगों को लगता है, अगर परमेश्वर बोलता नहीं तो वह परमेश्वर नहीं रहता, और जो बोलता है, केवल वही परमेश्वर

होता है। तुम सब लोग अंधे हो! सभी जानवर हो! तुम सब अज्ञानी हो, जिन्हें कोई समझ नहीं है! तुम लोगों के पास बहुत अधिक धारणाएँ हैं! तुम लोगों की माँगें बहुत अधिक हैं! तुम लोग अमानवीय हो! तुम लोग बिलकुल भी नहीं समझते कि परमेश्वर क्या है! तुम लोग मानते हो कि सभी भाषण देने वाले और वक्ता परमेश्वर हैं, और जो कोई भी तुम लोगों को वचनों की आपूर्ति देने के लिए तैयार है, वह तुम लोगों का पिता है। मुझे बताओ, क्या "सुगठित" विशिष्टताओं और "असामान्य" रूप-रंग होने पर भी तुम सभी लोगों को अभी भी रत्ती भर भी समझ है? क्या तुम लोग अब तक स्वर्ग-सूर्य को जान पाए हो! तुम लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति लालची और भ्रष्ट अधिकारी की तरह है, तो तुम लोग समझदारी से काम कैसे कर सकते हो? तुम लोग सही और गलत के बीच भेद कैसे कर सकते हो? मैंने तुम लोगों को बहुत-कुछ दिया है, पर तुम लोगों में से कितनों ने उसे महत्व दिया है? किसने उसे पूरी तरह से प्राप्त किया है? तुम लोग नहीं जानते कि जिस मार्ग पर तुम लोग आज चल रहे हो, उसे किसने खोला है, इसलिए तुम लोग मुझसे माँगते रहते हो, मुझसे हास्यास्पद और बेतुकी माँगें करते रहते हो। क्या तुम लोग शर्मिंदगी से लाल नहीं हुए? क्या मैं काफ़ी नहीं बोल चुका? क्या मैंने पर्याप्त नहीं किया है? तुम लोगों में से कौन सचमुच मेरे वचनों को खजाने की तरह सँजो सकता है? तुम लोग मेरी उपस्थिति में मेरी चापलूसी करते हो, किंतु मेरी पीठ पीछे झूठ बोलते और धोखा देते हो! तुम लोगों के कार्य बहुत कुत्सित हैं और मुझे घृणा से भर देते हैं! मैं जानता हूँ कि तुम लोग केवल अपनी आँखों को सुख देने और अपने अनुभव का क्षितिज विस्तृत करने के लिए मुझसे बोलने और कार्य करने को कहते हो, अपने जीवन को रूपांतरित करने के लिए नहीं। मैं तुम लोगों से पहले ही इतना कुछ बोल चुका हूँ। तुम लोगों का जीवन बहुत पहले ही बदल जाना चाहिए था, तो फिर तुम लोग क्यों अब भी अपनी पुरानी स्थिति में लौटते रहते हो? क्या ऐसा हो सकता है कि मेरे वचनों को तुम लोगों से लूट लिया गया हो और तुम लोगों ने उन्हें प्राप्त नहीं किया? सच कहूँ तो, मैं तुम लोगों जैसे पतितों से और अधिक कुछ नहीं कहना चाहता—यह व्यर्थ होगा! मैं इतना व्यर्थ कार्य नहीं करना चाहता! तुम लोग केवल अपने अनुभव का क्षितिज विस्तृत करना या अपनी आँखों को सुख देना चाहते हो, जीवन प्राप्त करना नहीं चाहते! तुम सब लोग अपने आप को धोखा दे रहे हो! मैं तुम लोगों से पूछता हूँ, मैंने तुम लोगों के साथ आमने-सामने जितनी बातें की हैं, उनमें से कितनी बातों को तुम लोग अभ्यास में लाए हो? तुम लोग सिर्फ दूसरों को धोखा देने के लिए चालें चलते हो। मैं तुम लोगों में से उनसे घृणा करता हूँ, जो दर्शकों की तरह देखते रहने में आनंद लेते हैं, और मुझे तुम लोगों की जिज्ञासा बहुत घृणित लगती है। यदि तुम लोग यहाँ

सच्चे मार्ग की तलाश करने नहीं आए हो या तुममें सत्य के लिए प्यास नहीं है, तो तुम लोग मेरी घृणा के पात्र हो! मैं जानता हूँ कि तुम लोग केवल अपनी जिज्ञासा शांत करने या अपनी कोई इच्छा पूरी करने के लिए मुझे बोलते हुए सुनते हो। तुम लोगों का सत्य के अस्तित्व की तलाश करने या जीवन में प्रवेश के सही मार्ग का पता लगाने का कोई विचार नहीं है; ये माँगें तुम लोगों में बिलकुल भी विद्यमान नहीं हैं। तुम लोग परमेश्वर को केवल अध्ययन करने और प्रशंसा करने के लिए एक खिलौने के रूप में देखते हो। तुम लोगों के अंदर जीवन की तलाश करने का जुनून बहुत कम है, लेकिन जिज्ञासु होने की इच्छा बहुत ज्यादा है! ऐसे लोगों के सामने जीवन के मार्ग की व्याख्या करना भैंस के आगे बीन बजाने के समान है; इससे तो न बोलना बेहतर होगा! मैं तुम लोगों को बता दूँ: यदि तुम लोग केवल अपने हृदय के भीतर के शून्य को भरना चाह रहे हो, तो अच्छा होगा कि तुम लोग मेरे पास न आओ! तुम लोगों को जीवन प्राप्त करने को महत्व देना चाहिए! अपने आप को धोखा मत दो! अच्छा रहेगा कि तुम लोग अपनी जिज्ञासा को जीवन की खोज का आधार न समझो, या मुझे तुमसे बात करने को कहने के लिए इसे बहाना मत बनाओ। ये सब चालें हैं, जिनमें तुम लोग बहुत कुशल हो! मैं तुमसे फिर पूछता हूँ: जिसमें प्रवेश करने के लिए मैं तुमसे कहता हूँ, उसमें तुमने वास्तव में कितना प्रवेश किया है? क्या तुम वह सब समझ गए हो, जो मैंने तुमसे बोला है? क्या तुम उस सबको अभ्यास में लाने में सफल हुए हो, जो मैंने तुमसे कहा है?

प्रत्येक युग का कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा शुरू किया जाता है, परंतु तुम्हें पता होना चाहिए कि परमेश्वर के काम का तरीका कुछ भी हो, वह कोई आंदोलन शुरू करने या विशेष सम्मेलन आयोजित करने या तुम लोगों की ओर से किसी प्रकार का संगठन स्थापित करने के लिए नहीं आता। वह केवल उस कार्य को करने के लिए आता है, जो उसे करना चाहिए। उसका कार्य किसी मनुष्य द्वारा बाधित नहीं होता। वह अपने कार्य को जैसे चाहता है, वैसे करता है; भले ही मनुष्य उसके बारे में कुछ भी सोचता या जानता हो, वह केवल अपना कार्य करने की परवाह करता है। संसार की सृष्टि से लेकर आज तक, कार्य के तीन चरण पहले ही हो चुके हैं; यहोवा से यीशु तक, और व्यवस्था के युग से अनुग्रह के युग तक, परमेश्वर ने कभी भी मनुष्य के लिए कोई विशेष सम्मेलन आयोजित नहीं किया है, न ही उसने कभी कोई विशेष वैश्विक कार्यशील सम्मेलन आयोजित करने और उसके द्वारा अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करने के लिए समस्त मानवजाति को इकट्ठा किया है। वह केवल सही समय और सही स्थान पर एक संपूर्ण युग का प्रारंभिक कार्य करता है और इस तरह, नए युग का सूत्रपात और जीवन जीने में मानवजाति की अगुआई करता है।

विशेष सम्मेलन मनुष्य के जमावड़े होते हैं; छुट्टियाँ मनाने के लिए लोगों को एकत्र करना मनुष्य का काम है। परमेश्वर छुट्टियाँ नहीं मनाता, बल्कि उनसे घृणा करता है; वह विशेष सम्मेलनों का आयोजन नहीं करता, बल्कि उनसे घृणा करता है। अब तुम्हें समझ जाना चाहिए कि देहधारी परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य वास्तव में क्या है!

देहधारण का रहस्य (4)

तुम लोगों को बाइबल के सृजन और उसके पीछे की कहानी के बारे में जानना चाहिए। यह ज्ञान उन लोगों का नहीं है जिन्होंने परमेश्वर के नये कार्य को स्वीकार नहीं किया है। वे नहीं जानते हैं। अगर तुम उन्हें सार के ये मामले समझाओ, तो वे बाइबिल की तुम्हारे सामने ज़्यादा तरफ़दारी नहीं करेंगे। वे लगातार उसकी तुच्छतापूर्वक जाँच करते हैं जिसकी भविष्यवाणी की गई है: क्या यह वक्तव्य घटित हो गया है? क्या वह वक्तव्य घटित हो गया है? सुसमाचार की उनकी स्वीकृति बाइबल के अनुसार है; वे बाइबल के अनुसार सुसमाचार का उपदेश देते हैं। परमेश्वर पर उनका विश्वास बाइबल के वचनों पर टिका है; बाइबिल के बिना, वे परमेश्वर में विश्वास नहीं करेंगे। वे बाइबल की तुच्छतापूर्वक जाँच करते हुए जीते हैं। जब वे एक बार फिर बाइबल की जाँच करते हैं और तुमसे व्याख्याओं के लिए कहते हैं, तो तुम कहते हो कि, "सबसे पहले, चलो हम प्रत्येक वक्तव्य को सत्यापित नहीं करते हैं। इसके बजाय, चलो हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है। आओ हम जिस मार्ग पर चलते हैं उसकी सत्य के साथ तुलना करें ताकि हम जान सकें कि यह मार्ग वास्तव में पवित्र आत्मा का कार्य है या नहीं, और यह जाँचने के लिए कि क्या इस तरह का मार्ग सही है पवित्र आत्मा के कार्य का उपयोग करें। और जहाँ तक इस वक्तव्य या उस वक्तव्य के घटित होने की बात है, हम मनुष्यों को उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इसके बजाय हमारे लिए यह बेहतर है कि हम पवित्र आत्मा के कार्य और उस नवीनतम कार्य के बारे में बात करें जिसे परमेश्वर अब कर रहा है।" बाइबल में की गयी भविष्यवाणियाँ परमेश्वर के वचन हैं जो नबियों द्वारा उस समय प्रेषित हुए परमेश्वर के द्वारा उपयोग किए गए प्रेरणा पा चुके मनुष्यों द्वारा लिखे गए वचन हैं; केवल परमेश्वर स्वयं ही उन वचनों की व्याख्या कर सकता है, केवल पवित्र आत्मा ही उन वचनों का अर्थ ज्ञात करवा सकता है, और केवल परमेश्वर स्वयं ही सात मुहरों को तोड़ सकता है और पुस्तक को खोल सकता है। तुम कहते हो : "तुम परमेश्वर नहीं हो, और न ही मैं हूँ, इसलिए परमेश्वर के वचनों की कौन इच्छानुसार व्याख्या करने का

साहस करता है? क्या तुम उन वचनों की व्याख्या करने का साहस करते हो? यहाँ तक कि यदि भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह, यूहन्ना और एलिय्याह यहाँ होते, तो वे भी हिम्मत नहीं करते, क्योंकि वे मेम्ने नहीं हैं। केवल मेम्ना ही सात मुहरों को तोड़ सकता है और पुस्तक को खोल सकता है, और कोई भी अन्य उसके वचनों की व्याख्या नहीं कर सकता है। मैं परमेश्वर के नाम का दुरुपयोग करने का साहस नहीं करता हूँ, परमेश्वर के वचनों की व्याख्या करने का साहस तो बिल्कुल नहीं करता हूँ। मैं केवल एक ऐसा व्यक्ति हो सकता हूँ जो परमेश्वर का आज्ञापालन करता हो। क्या तुम परमेश्वर हो? परमेश्वर के प्राणियों में से कोई भी पुस्तक को खोलने या उन वचनों की व्याख्या करने का साहस नहीं करता है, और इसलिए मैं भी व्याख्या करने का साहस नहीं करता हूँ। बेहतर है कि तुम व्याख्या करने का प्रयास मत करो। कोई भी व्याख्या नहीं करेगा। चलो हम पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में बात करते हैं; यही है जो मनुष्य कर सकता है। मुझे यहोवा और यीशु के कार्य का थोड़ा-बहुत ज्ञान है, किन्तु क्योंकि मुझे इस तरह के कार्य का कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं है, इसलिए मैं इसके बारे में केवल कुछ हद तक ही बात कर सकता हूँ। जहाँ तक उस समय यशायाह या यीशु द्वारा बोले गए वचनों के अर्थ की बात है, तो मैं कोई व्याख्याएँ नहीं करूँगा। मैं बाइबल का अध्ययन नहीं करता हूँ; बल्कि, मैं परमेश्वर के वर्तमान कार्य का अनुसरण करता हूँ। तुम वास्तव में बाइबल को छोटी पुस्तक के रूप में देखते हो, लेकिन क्या यह सच नहीं है कि पुस्तक को केवल मेम्ने के द्वारा ही खोला जा सकता है? मेम्ने के अलावा, और कौन ऐसा कर सकता है? तुम मेम्ने नहीं हो, और मैं स्वयं परमेश्वर होने का दावा करने का साहस तो बिल्कुल नहीं करता हूँ, इसलिए चलो हम बाइबिल का विश्लेषण या उसकी तुच्छतापूर्वक जाँच नहीं करते हैं। बेहतर है कि पवित्र आत्मा द्वारा किए गए कार्य की चर्चा करें, अर्थात्, परमेश्वर स्वयं के द्वारा किया गया वर्तमान कार्य। चलो हम परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों और सार पर नज़र डालें, और उन से यह जाँच करें कि क्या आज हम जिस मार्ग पर चलते हैं वह सही और दोष-रहित है। चलो हम इसके बारे में निश्चित हों।" यदि तुम लोग सुसमाचार का उपदेश देना चाहते हो, विशेषरूप से धार्मिक दुनिया के लोगों को, तो तुम लोगों को बाइबल को समझना और इसके अंदर की कहानी में महारत प्राप्त करनी चाहिए, अन्यथा तुम सुसमाचार का उपदेश देने में पूरी तरह असमर्थ रहोगे। एक बार जब तुम सभी महत्वपूर्ण पहलुओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेते हो, तो बाइबल के मृत वचनों की जाँच करना बंद कर देते हो, और केवल परमेश्वर के कार्य और जीवन की सच्चाई की बात करते हो, तब तुम उन लोगों को प्राप्त करने में समर्थ होगे जो सच्चे हृदय से तलाश करते हैं।

तुम लोगों को यहोवा के कार्य को, उन व्यवस्थाओं को जिन्हें उसने स्थापित किया था, और उन सिद्धान्तों को जिनके द्वारा उसने मनुष्य के जीवन की अगुआई की थी, उस कार्य की विषयवस्तु को जो उसने व्यवस्था के युग में किया था, अपनी व्यवस्थाओं को यथास्थान रखने के महत्व को, अनुग्रह के युग के लिए उसके कार्य के महत्व को, और उस कार्य को जो परमेश्वर इस अंतिम चरण में करता है, समझना चाहिए। पहला चरण व्यवस्था के युग का कार्य है, दूसरा चरण अनुग्रह के युग का कार्य है, और तीसरा चरण अंत के दिनों का कार्य है। तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य के इन चरणों को अवश्य समझना चाहिए। आरंभ से अंत तक, कुल मिला कर तीन चरण हैं। कार्य के प्रत्येक चरण का सार क्या है? छः हजार वर्षीय प्रबंधन योजना के कार्य में कितने चरण किए जाते हैं? प्रत्येक चरण कैसे किया जाता है, और प्रत्येक को उसके तरीके से क्यों किया जाता है? ये सभी महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। प्रत्येक युग का कार्य प्रतिनिधिक है। यहोवा ने क्या कार्य किया? उसने ऐसा किस तरह किया? उसे यहोवा क्यों कहा गया? अनुग्रह के युग में यीशु ने क्या कार्य किया, और उसने ऐसा किस ढंग से किया? कार्य के प्रत्येक चरण और प्रत्येक युग द्वारा परमेश्वर के स्वभाव के कौन से पहलुओं को दर्शाया जाता है? व्यवस्था के युग में उसके स्वभाव के कौन से पहलू स्पष्ट हुए? और अनुग्रह के युग में? और फिर अंत के युग में? ये वे सारभूत प्रश्न हैं जिन्हें तुम लोगों को समझना चाहिए। परमेश्वर के सम्पूर्ण स्वभाव को छ: हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना के दौरान प्रकट किया गया है। इसे सिर्फ अनुग्रह के युग में, सिर्फ व्यवस्था के युग में प्रकट नहीं किया जाता है, ऐसा तो बिल्कुल नहीं है की इसे सिर्फ अंत के दिनों की इस समयावधि में प्रकट किया जाता है। अंत के दिनों में किया गया कार्य न्याय, कोप और ताड़ना का प्रतिनिधित्व करता है। अंत के दिनों में किया गया कार्य व्यवस्था के युग या अनुग्रह के युग के कार्य का स्थान नहीं ले सकता है। हालाँकि, तीनों चरण आपस में एक दूसरे से जुड़कर एक सत्त्व बन जाते हैं और सभी एक ही परमेश्वर के द्वारा किये गए कार्य हैं। स्वाभाविक रूप में, इस कार्य का क्रियान्वयन तीन अलग-अलग युगों में विभाजित है। अंत के दिनों में किया गया कार्य हर चीज़ को समाप्ति की ओर ले जाता है; जो कुछ व्यवस्था के युग में किया गया वह आरम्भ का कार्य है; और जो अनुग्रह के युग में किया गया वह छुटकारे का कार्य है। जहाँ तक इस सम्पूर्ण छ: हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना में कार्य के दर्शनों की बात है, तो कोई भी अंर्तदृष्टि या समझ प्राप्त करने में समर्थ नहीं है। ऐसे दर्शन हमेशा से ही रहस्य रहे हैं। अंत के दिनों में, राज्य के युग का सूत्रपात करने के लिए केवल वचन का कार्य किया जाता है, परन्तु यह सभी युगों का प्रतिनिधि नहीं है। अंत के दिन अंत के दिनों से बढ़कर नहीं हैं

और राज्य के युग से बढ़कर नहीं हैं, जो अनुग्रह के युग या व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। अंत के दिन मात्र वह समय है जिसमें छ: हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना के समस्त कार्य को तुम लोगों पर प्रकट किया जाता है। यह रहस्य से पर्दा उठाना है। ऐसे रहस्य को किसी भी मनुष्य के द्वारा अनावृत नहीं किया जा सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि मनुष्य के पास बाइबल की कितनी अधिक समझ है, यह वचनों से बढ़कर और कुछ नहीं है, क्योंकि मनुष्य बाइबल के सार को नहीं समझता है। जब मनुष्य बाइबल को पढ़ता है, तो वह कुछ सत्यों को प्राप्त कर सकता है, कुछ वचनों की व्याख्या कर सकता है या कुछ प्रसिद्ध अंशों या उद्धरणों का तुच्छ परीक्षण कर सकता है, परन्तु वह उन वचनों के भीतर निहित अर्थ को निकालने में कभी भी समर्थ नहीं होगा, क्योंकि मनुष्य जो कुछ देखता है वे मृत वचन हैं, यहोवा और यीशु के कार्य के दृश्य नहीं हैं, और मनुष्य ऐसे कार्य के रहस्य को सुलझाने में असमर्थ है। इसलिए, छ: हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना का रहस्य सबसे बड़ा रहस्य है, एक ऐसा रहस्य जो मनुष्य से बिलकुल छिपा हुआ और उसके लिए सर्वथा अबूझ है। कोई भी सीधे तौर पर परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझ सकता है, जब तक कि वह मनुष्य को स्वयं न समझाए और खुल कर न कहे, अन्यथा, वे सर्वदा मनुष्य के लिए पहेली बने रहेंगे और सर्वदा मुहरबंद रहस्य बने रहेंगे। जो धार्मिक जगत में हैं उनकी तो बात ही छोड़ो; यदि तुम लोगों को भी आज नहीं बताया जाता, तो तुम लोग भी समझने में असमर्थ होते। भविष्यद्वक्ताओं की सभी भविष्यवाणियों की तुलना में छः हज़ार वर्षों का यह कार्य अधिक रहस्यमय है। यह सृजन के बाद से अब तक का सबसे बड़ा रहस्य है, और पहले का कोई भी भविष्यद्वक्ता कभी भी इसकी थाह पाने में सफल नहीं हुआ है, क्योंकि इस रहस्य को केवल अंत के युग में ही खोला जाता है और पहले कभी प्रकट नहीं किया गया है। यदि तुम लोग इस रहस्य को समझ लेते हो और इसे पूरी तरह से प्राप्त करने में समर्थ हो, तो उन सभी धार्मिक व्यक्तियों को इस रहस्य से जीत लिया जाएगा। केवल यही सबसे बड़ा दर्शन है, जिसे समझने के लिए मनुष्य सबसे अधिक लालायित रहता है किन्तु जो उसके लिए सबसे अधिक अस्पष्ट भी है। जब तुम लोग अनुग्रह के युग में थे, तो तुम लोगों को न तो यीशु के द्वारा किए गए और न ही यहोवा के द्वारा किए गए कार्य का पता था। लोगों को समझ में नहीं आता था कि यहोवा ने क्यों व्यवस्थाएँ निर्धारित की, उसने क्यों लोगों को व्यवस्थाओं का पालन करने के लिए कहा अथवा मंदिर क्यों बनाने पड़े थे, और लोगों को यह तो बिल्कुल भी समझ में नहीं आया कि क्यों इस्राएलियों को मिस्र से बीहड़ में और फिर कनान देश में ले जाया गया। आज के दिन से पहले इन मामलों को प्रकट नहीं किया गया था।

अंत के दिनों का कार्य तीनों चरणों में से अंतिम चरण है। यह एक अन्य नए युग का कार्य है और संपूर्ण प्रबंधन कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। छ: हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना कार्य के तीन चरणों में विभाजित है। कोई भी अकेला चरण तीनों युगों के कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है बल्कि सम्पूर्ण के केवल एक भाग का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है। यहोवा नाम परमेश्वर के सम्पूर्ण स्वभाव का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। उसने व्यवस्था के युग में कार्य किया है, इस तथ्य से यह साबित नहीं होता है कि परमेश्वर केवल व्यवस्था के अधीन ही परमेश्वर हो सकता है। यहोवा ने, मनुष्य से मंदिर और वेदियाँ बनाने के लिए कहा, मनुष्य के लिए व्यवस्थाएँ निर्धारित की और आज्ञाओं की घोषणा की; उसने जो कार्य किया उसमें केवल व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व किया। उसने जो कार्य किये वह यह साबित नहीं करता है कि परमेश्वर वही परमेश्वर है जो मनुष्य से व्यवस्था बनाए रखने के लिए कहता है, या वो बस मंदिर में परमेश्वर है, या बस वेदी के सामने का परमेश्वर है। ऐसा कहना गलत है। व्यवस्था के अधीन कार्य केवल एक युग का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है। इसलिए, यदि परमेश्वर ने केवल व्यवस्था के युग में ही काम किया होता, तो मनुष्य ने परमेश्वर को एक परिभाषा में यह कहते हुए बंद कर दिया होता, "परमेश्वर मंदिर का परमेश्वर है। परमेश्वर की सेवा करने के लिए, हमें याजकीय वस्त्र पहनने ही चाहिए और मंदिर में प्रवेश करना चाहिए।" यदि अनुग्रह के युग में उस कार्य को कभी नहीं किया जाता और व्यवस्था का युग वर्तमान तक जारी रहता, तो मनुष्य यह नहीं जान पाता कि परमेश्वर दयावान और प्रेममय भी है। यदि व्यवस्था के युग में कोई कार्य नहीं किया जाता, और केवल अनुग्रह के युग में ही कार्य किया जाता, तो मनुष्य बस इतना ही जान पाता कि परमेश्वर मनुष्य को छुटकारा दे सकता है और मनुष्य के पापों को क्षमा कर सकता है। वे केवल इतना ही जान पाते कि वह पवित्र और निर्दोष है, कि वह मनुष्य के लिए स्वयं का बलिदान कर सकता है और सलीब पर चढ़ाया जा सकता है। मनुष्य केवल इतना ही जान पाता और अन्य सभी बातों के बारे में उसके पास कोई समझ नहीं होती। अतः, प्रत्येक युग परमेश्वर के स्वभाव के एक भाग का प्रतिनिधित्व करता है। व्यवस्था का युग कुछ पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, अनुग्रह का युग कुछ पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, और फिर यह युग कुछ पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है। परमेश्वर के स्वभाव को सिर्फ तीनों युगों को मिलाने के माध्यम से ही पूरी तरह से प्रकट किया जा सकता है। जब मनुष्य इन तीनों चरणों को जान जाता है केवल तभी मनुष्य इसे पूरी तरह से समझ सकता है। तीनों में से एक भी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता है। जब एक बार तुम कार्य के इन तीनों चरणों को जान लेते हो, केवल तभी

तुम परमेश्वर के स्वभाव को उसकी सम्पूर्णता में देखोगे। व्यवस्था के युग में परमेश्वर द्वारा अपने कार्य की पूर्णता यह साबित नहीं करती है कि वह व्यवस्था के अधीन परमेश्वर है, और छुटकारे के उसके कार्य की पूर्णता यह नहीं दर्शाती है कि परमेश्वर सदैव मानवजाति को छुटकारा देगा। ये सभी मनुष्य के द्वारा निकाले गए निष्कर्ष हैं। अब जबकि अनुग्रह का युग समाप्ति पर आ गया है, तो तुम यह नहीं कह सकते हो कि परमेश्वर केवल सलीब से ही सम्बन्धित है, कि केवल सलीब परमेश्वर द्वारा उद्धार का प्रतिनिधित्व करता है। यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम परमेश्वर को परिभाषित कर रहे हो। इस चरण में, परमेश्वर मुख्य रूप से वचन का कार्य कर रहा है, परन्तु तुम यह नहीं कह सकते हो कि परमेश्वर मनुष्य के प्रति कभी दयालु नहीं रहा है और वह जो कुछ लेकर आया है वह बस ताड़ना और न्याय है। अंत के दिनों का कार्य यहोवा और यीशु के कार्य को और उन सभी रहस्यों को प्रकट कर देता है जिन्हें मनुष्य के द्वारा समझा नहीं गया था। इसे मानवजाति की मंज़िल और अंत को प्रकट करने के लिए और मानवजाति के बीच उद्धार के सब कार्य का समापन करने के लिए किया जाता है। अंत के दिनों में कार्य का यह चरण सभी चीज़ों को समाप्ति की ओर ले आता है। मनुष्य के द्वारा समझे नहीं गए सभी रहस्यों को, मनुष्य को ऐसे रहस्यों में अंर्तदृष्टि पाने की अनुमति देने और उनके हृदयों में एक स्पष्ट समझ पाने के लिए, अवश्य उजागर किया जाना चाहिए। केवल तभी मनुष्य को उनके प्रकारों के अनुसार विभाजित किया जा सकता है। जब छ: हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना पूर्ण हो जाती है केवल उसके पश्चात् ही परमेश्वर का स्वभाव अपनी सम्पूर्णता में मनुष्य की समझ में आएगा, क्योंकि तब उसकी प्रबंधन योजना समाप्त होगी। अब जबकि तुम लोगों ने अंतिम युग में परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लिया है, तो परमेश्वर का स्वभाव क्या है? क्या तुम यह कहने का साहस करते हो कि परमेश्वर वह परमेश्वर है जो केवल वचन बोलता है? तुम यह निष्कर्ष निकालने का साहस नहीं करोगे। कुछ लोग कहेंगे कि परमेश्वर वह परमेश्वर है जो रहस्य को खोलता है, कि परमेश्वर मेम्ना है और वह है जो सात मुहरों को तोड़ता है। कोई भी यह निष्कर्ष निकालने का साहस नहीं करता है। और कुछ ऐसे लोग हैं जो कह सकते हैं कि परमेश्वर देहधारी देह है। यह अभी भी सही नहीं है। कुछ लोग कहेंगे कि देहधारी परमेश्वर केवल वचनों को बोलता है और चिह्नों को नहीं दिखाता और अद्भुत कामों को नहीं करता है। इस तरह से कहने का तो तुम साहस बिल्कुल नहीं करोगे, क्योंकि यीशु देह बना था और उसने चिह्न दिखाए और अद्भुत काम किये थे, इसलिए तुम परमेश्वर को हल्के में परिभाषित करने का साहस नहीं करोगे। छ: हजार वर्षों की प्रबंधन योजना के दौरान किया गया समस्त कार्य अब समाप्ति पर आ गया

है। जब यह सब कार्य मनुष्यों पर प्रकट कर दिया जाता है और मनुष्यों के बीच कर दिया जाता है केवल उसके पश्चात् ही वे परमेश्वर के सम्पूर्ण स्वभाव और अस्तित्व को जानेंगे। जब इस चरण का कार्य पूरी तरह से सम्पन्न कर लिया जाएगा, तो मनुष्य के द्वारा नहीं समझे गए सभी रहस्यों को प्रकट कर दिया जाएगा, पहले नहीं समझे गये सभी सत्यों को स्पष्ट कर दिया जाएगा, और मानवजाति को उसके भविष्य के मार्ग और मंज़िल के बारे में बता दिया जाएगा। यही वह सब कार्य है जो इस चरण में किया जाना है। यद्यपि आज जिस मार्ग पर मनुष्य चलता है वह भी सलीब का और दुःख का एक मार्ग है, फिर भी आज का मनुष्य जो अभ्यास करता है, खाता है, पीता है और आनंद लेता है वे व्यवस्था के अधीन और अनुग्रह के युग के मनुष्य से बहुत अलग हैं। आज मनुष्य से जो माँग की जाती है वह अतीत की माँग के असदृश है और व्यवस्था के युग में मनुष्य से की गई माँग के तो और भी अधिक असदृश है। जब इस्राएल में कार्य किया गया था तब व्यवस्था के अंतर्गत मनुष्य से क्या माँग की गई थी? उससे सब्त और यहोवा की व्यवस्थाओं का पालन करने से बढ़कर और कुछ की माँग नहीं की गई थी। किसी को भी सब्त के दिन काम नहीं करना था या यहोवा की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं करना था। परन्तु अब ऐसा नहीं है। सब्त पर, मनुष्य काम करते हैं, हमेशा की तरह इकट्ठे होते हैं और प्रार्थना करते हैं, और उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाए जाते हैं। वे जो अनुग्रह के युग में थे उन्हें बपतिस्मा लेना पड़ता था; सिर्फ इतना ही नहीं, उन्हें उपवास करने, रोटी तोड़ने, दाखमधु पीने, अपने सिरों को ढकने और दूसरों के पाँव धोने के लिए कहा जाता था। अब, इन नियमों का उन्मूलन कर दिया गया है और मनुष्यों से और भी बड़ी माँगें की जाती हैं, क्योंकि परमेश्वर का कार्य लगातार अधिक गहरा होता जाता है और मनुष्य का प्रवेश पहले से कहीं अधिक ऊँचा हो गया है। अतीत में, यीशु मनुष्य पर हाथ रखता था और प्रार्थना करता था, परन्तु अब जबकि सब कुछ कहा जा चुका है, तो हाथ रखने का क्या उपयोग है? वचन अकेले ही परिणामों को प्राप्त कर सकते हैं। जब अतीत में वह अपना हाथ मनुष्य के ऊपर रखता था, तो यह मनुष्य को आशीष देने और चंगा करने के लिए था। उस समय पवित्र आत्मा इसी प्रकार से काम करता था, परन्तु अब ऐसा नहीं है। अब, पवित्र आत्मा कार्य करने और परिणामों को हासिल करने के लिए वचनों का उपयोग करता है। उसने अपने वचनों को तुम लोगों के लिए स्पष्ट कर दिया है, और तुम लोगों को बस उन्हें वैसे ही अभ्यास में लाना चाहिए, जैसे तुम्हें बताया गया है। उसके वचन उसकी इच्छा हैं और उस कार्य को दर्शाते हैं जिसे वह करना चाहता है। उसके वचनों के माध्यम से, तुम उसकी इच्छा को और उस चीज को समझ सकते हो

जिसे प्राप्त करने के लिए वह तुम्हें कहता है। तुम्हें हाथ रखने की आवश्यकता नहीं है बस सीधे तौर पर उसके वचनों को अभ्यास में लाओ। कुछ लोग कह सकते हैं, "मुझ पर अपना हाथ रख! मुझ पर अपना हाथ रख ताकि मैं तेरे आशीष प्राप्त कर सकूँ और तेरा भागी बन सकूँ।" ये सभी पहले के अप्रचलित अभ्यास हैं जो अब निषिद्ध हैं, क्योंकि युग बदल चुका है। पवित्र आत्मा युग के अनुरूप कार्य करता है, न कि इच्छानुसार या तय नियमों के अनुसार। युग बदल चुका है, और एक नया युग अपने साथ नया काम अवश्य लेकर आता है। यह कार्य के प्रत्येक चरण के बारे में सच है, और इसलिए उसका कार्य कभी दोहराया नहीं जाता है। अनुग्रह के युग में, यीशु ने इस तरह का बहुत सा कार्य किया, जैसे कि बीमारियों को चंगा करना, दुष्टात्माओं को निकालना, मनुष्य के लिए प्रार्थना करने के लिए मनुष्य पर हाथ रखना, और मनुष्य को आशीष देना। हालाँकि, ऐसा करते रहने से वर्तमान में कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। उस समय पवित्र आत्मा उस तरह से काम करता था, क्योंकि वह अनुग्रह का युग था, और आनन्द के लिए मनुष्य पर बहुत अनुग्रह बरसाया गया था। मनुष्य को कोई कीमत चुकानी नहीं पड़ती थी और जब तक उसके पास विश्वास था वह अनुग्रह प्राप्त कर सकता था। सब के साथ अत्यधिक अनुग्रह के साथ व्यवहार किया जाता था। अब, युग बदल चुका है, और परमेश्वर का काम और आगे प्रगति कर चुका है, उसकी ताड़ना और न्याय के माध्यम से, मनुष्य की विद्रोहशीलता को और मनुष्य के भीतर की अशुद्धता को दूर किया जाएगा। चूँकि वह छुटकारे का चरण था, इसलिए, मनुष्य के आनन्द के लिए मनुष्य पर पर्याप्त अनुग्रह प्रदर्शित करते हुए, परमेश्वर को ऐसा काम करना पड़ा, ताकि मनुष्य को पापों से छुटकारा दिया जा सके, और अनुग्रह के माध्यम से उसके पापों को क्षमा किया जा सके। वर्तमान चरण ताड़ना, न्याय, वचनों के प्रहार, और साथ ही अनुशासन तथा वचनों के प्रकाशन के माध्यम से मनुष्य के भीतर के अधर्मों को प्रकट करने के लिए है, ताकि बाद में मानवजाति को बचाया जा सके। यह कार्य छुटकारे के कार्य से कहीं अधिक गहरा है। अनुग्रह के युग में, मनुष्य ने पर्याप्त अनुग्रह का आनन्द उठाया और चूँकि उसने पहले से इस अनुग्रह का अनुभव कर लिया है, और इस लिए मनुष्य के द्वारा इसका अब और आनन्द नहीं उठाया जाना है। ऐसे कार्य का समय अब चला गया है तथा अब और नहीं किया जाना है। अब, मनुष्य को वचन के न्याय के माध्यम से बचाया जाता है। मनुष्य का न्याय, उसकी ताड़ना और उसके परिष्कृत होने के पश्चात्, इन सबके परिणामस्वरूप उसका स्वभाव बदल जाता है। क्या यह उन वचनों की वजह से नहीं है जिन्हें मैंने कहा है? कार्य के प्रत्येक चरण को समूची मानवजाति की प्रगति और उस युग के अनुसार किया जाता है। समस्त

कार्य का अपना महत्व है; यह अंतिम उद्धार के लिए, मानवजाति की भविष्य में एक अच्छी मंज़िल के लिए है, और इसलिए है कि अंत में मनुष्य को उसके प्रकार के अनुसार विभाजित किया जा सके।

अंत के दिनों का कार्य वचनों को बोलना है। वचनों के माध्यम से मनुष्य में बड़े परिवर्तन किए जा सकते हैं। इन वचनों को स्वीकार करने पर इन लोगों में हुए परिवर्तन उन परिवर्तनों की अपेक्षा बहुत अधिक बड़े हैं जो चिन्हों और अद्‌भुत कामों को स्वीकार करने पर अनुग्रह के युग में लोगों पर हुए थे। क्योंकि, अनुग्रह के युग में, हाथ रखने और प्रार्थना से दुष्टात्माओं को मनुष्य से निकाला जाता था, परन्तु मनुष्य के भीतर का भ्रष्ट स्वभाव तब भी बना रहता था। मनुष्य को उसकी बीमारी से चंगा कर दिया जाता था और उसके पापों को क्षमा किया जाता था, परन्तु वह कार्य, कि आखिर किस प्रकार मनुष्य के भीतर से उन शैतानी स्वभावों को निकाला जाना है, अभी भी बाकी था। मनुष्य को केवल उसके विश्वास के कारण ही बचाया गया था और उसके पापों को क्षमा किया गया था, परन्तु उसका पापी स्वभाव उसमें से निकाला नहीं गया था और वह तब भी उसके अंदर बना हुआ था। मनुष्य के पापों को देहधारी परमेश्वर के द्वारा क्षमा किया गया था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य के भीतर कोई पाप नहीं रह गया है। पाप बलि के माध्यम से मनुष्य के पापों को क्षमा किया जा सकता है, परन्तु मनुष्य इस मसले को हल करने में पूरी तरह असमर्थ रहा है कि वह कैसे आगे और पाप नहीं कर सकता है और कैसे उसके पापी स्वभाव को पूरी तरह से दूर किया जा सकता है और उसे रूपान्तरित किया जा सकता है। परमेश्वर के सलीब पर चढ़ने के कार्य की वजह से मनुष्य के पापों को क्षमा किया गया था, परन्तु मनुष्य पुराने, भ्रष्ट शैतानी स्वभाव में जीवन बिताता रहा। ऐसा होने के कारण, मनुष्य को भ्रष्ट शैतानी स्वभाव से पूरी तरह से बचाया जाना चाहिए ताकि मनुष्य का पापी स्वभाव पूरी तरह से दूर किया जाए और वो फिर कभी विकसित न हो, जो मनुष्य के स्वभाव को बदलने में सक्षम बनाये। इसके लिए मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह जीवन में उन्नति के पथ को, जीवन के मार्ग को, और अपने स्वभाव को परिवर्तित करने के मार्ग को समझे। साथ ही इसके लिए मनुष्य को इस मार्ग के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है ताकि मनुष्य के स्वभाव को धीरे-धीरे बदला जा सके और वह प्रकाश की चमक में जीवन जी सके, और वो जो कुछ भी करे वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो, ताकि वो अपने भ्रष्ट शैतानी स्वभाव को दूर कर सके, और शैतान के अंधकार के प्रभाव को तोड़कर आज़ाद हो सके, और उसके परिणामस्वरूप पाप से पूरी तरह से ऊपर उठ सके। केवल तभी मनुष्य पूर्ण उद्धार प्राप्त करेगा। जब यीशु अपना काम कर रहा था, तो उसके बारे में मनुष्य का ज्ञान तब

भी अज्ञात और अस्पष्ट था। मनुष्य ने हमेशा यह विश्वास किया कि वह दाऊद का पुत्र है और उसके एक महान भविष्यद्वक्ता और उदार प्रभु होने की घोषणा की जो मनुष्य को पापों से छुटकारा देता था। विश्वास के आधार पर मात्र उसके वस्त्र के छोर को छू कर ही कुछ लोग चंगे हो गए थे; अंधे देख सकते थे और यहाँ तक कि मृतक को जिलाया भी जा सकता था। हालाँकि, मनुष्य अपने भीतर गहराई से जड़ जमाए हुए शैतानी भ्रष्ट स्वभाव को नहीं समझ सका और न ही मनुष्य यह जानता था कि उसे कैसे दूर किया जाए। मनुष्य ने बहुतायत से अनुग्रह प्राप्त किया, जैसे देह की शांति और खुशी, एक व्यक्ति के विश्वास करने पर पूरे परिवार की आशीष, और बीमारियों से चंगाई, इत्यादि। शेष मनुष्य के भले कर्म और उसका ईश्वर के अनुरूप प्रकटन था; यदि मनुष्य इस तरह के आधार पर जीवन जी सकता था, तो उसे एक उपयुक्त विश्वासी माना जाता था। केवल ऐसे विश्वासी ही मृत्यु के बाद स्वर्ग में प्रवेश कर सकते थे, जिसका अर्थ है कि उन्हें बचा लिया गया था। परन्तु, अपने जीवन काल में, उन्होंने जीवन के मार्ग को बिलकुल भी नहीं समझा था। वे अपना स्वभाव बदलने के किसी पथ के बिना बस एक निरंतर चक्र में पाप करते थे, फिर पाप-स्वीकारोक्ति करते थे: अनुग्रह के युग में मनुष्य की दशा ऐसी ही थी। क्या मनुष्य ने पूर्ण उद्धार पा लिया है? नहीं! इसलिए, उस चरण के कार्य के पूरा हो जाने के पश्चात्, अभी भी न्याय और ताड़ना का काम बाकी है। यह चरण वचन के माध्यम से मनुष्य को शुद्ध बनाने के लिए है ताकि मनुष्य को अनुसरण करने का एक मार्ग प्रदान किया जाए। यह चरण फलप्रद या अर्थपूर्ण नहीं होगा यदि यह दुष्टात्माओं को निकालना जारी रखता है, क्योंकि यह मनुष्य के पापी प्रकृति को दूर करने में असफल हो जाएगा और मनुष्य केवल पापों की क्षमा पर आकर रुक जाएगा। पापबलि के माध्यम से, मनुष्य के पापों को क्षमा किया गया है, क्योंकि सलीब पर चढ़ने का कार्य पहले से ही पूरा हो चुका है और परमेश्वर ने शैतान को जीत लिया है। परन्तु मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव अभी भी उसके भीतर बना हुआ है और मनुष्य अभी भी पाप कर सकता है और परमेश्वर का प्रतिरोध कर सकता है; परमेश्वर ने मानवजाति को प्राप्त नहीं किया है। इसीलिए कार्य के इस चरण में परमेश्वर मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव को प्रकट करने के लिए वचन का उपयोग करता है और मनुष्य से सही मार्ग के अनुसार अभ्यास करवाता है। यह चरण पिछले चरण की अपेक्षा अधिक अर्थपूर्ण और साथ ही अधिक लाभदायक भी है, क्योंकि अब वचन ही है जो सीधे तौर पर मनुष्य के जीवन की आपूर्ति करता है और मनुष्य के स्वभाव को पूरी तरह से नया बनाए जाने में सक्षम बनाता है; यह कार्य का ऐसा चरण है जो अधिक विस्तृत है। इसलिए, अंत के दिनों में देहधारण ने परमेश्वर के देहधारण के महत्व

को पूरा किया है और मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर की प्रबंधन योजना का पूर्णतः समापन किया है।

परमेश्वर के द्वारा मनुष्य को, सीधे तौर पर पवित्रात्मा के साधनों के माध्यम से और आत्मा की पहचान से बचाया नहीं जाता है, क्योंकि उसके आत्मा को मनुष्य के द्वारा न तो देखा जा सकता है और न ही स्पर्श किया जा सकता है, और मनुष्य के द्वारा उस तक पहुँचा नहीं जा सकता है। यदि उसने आत्मा के तरीके से सीधे तौर पर मनुष्य को बचाने का प्रयास किया होता, तो मनुष्य उसके उद्धार को प्राप्त करने में पूरी तरह असमर्थ होता। यदि परमेश्वर सृजित मनुष्य का बाहरी रूप धारण नहीं करता, तो वे इस उद्धार को पाने में असमर्थ होते। क्योंकि मनुष्य किसी भी तरीके से उस तक नहीं पहुँच सकता है, उसी प्रकार जैसे कोई भी मनुष्य यहोवा के बादल के पास नहीं जा सकता था। केवल सृष्टि का एक मनुष्य बनने के द्वारा ही, अर्थात्, अपने वचन को उस देह में, जो वो धारण करने वाला है, रखकर ही, वह व्यक्तिगत रूप से वचन को उन सभी मनुष्यों में पहुँचा सकता है जो उसका अनुसरण करते हैं। केवल तभी मनुष्य स्वयं उसके वचन को सुन सकता है, उसके वचन को देख सकता है, उसके वचन को ग्रहण कर सकता है, और इसके माध्यम से पूरी तरह से बचाया जा सकता है। यदि परमेश्वर देह नहीं बना होता, तो कोई भी शरीर युक्त मनुष्य ऐसे बड़े उद्धार को प्राप्त नहीं कर पाता, और न ही एक भी मनुष्य बचाया गया होता। यदि परमेश्वर का आत्मा सीधे तौर पर मनुष्य के बीच काम करता, तो पूरी मानवजाति खत्म हो जाती या शैतान के द्वारा पूरी तरह से बंदी बनाकर ले जाई गयी होती क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के साथ सम्बद्ध होने में पूरी तरह असमर्थ रहता। प्रथम देहधारण यीशु की देह के माध्यम से मनुष्य को पाप से छुटकारा देने के लिए था, अर्थात्, उसने मनुष्य को सलीब से बचाया, परन्तु भ्रष्ट शैतानी स्वभाव तब भी मनुष्य के भीतर रह गया था। दूसरा देहधारण अब और पापबलि के रूप में कार्य करने के लिए नहीं है परन्तु उन्हें पूरी तरह से बचाने के लिए है जिन्हें पाप से छुटकारा दिया गया था। इसे इसलिए किया जाता है ताकि जिन्हें क्षमा किया गया उन्हें उनके पापों से दूर किया जा सके और पूरी तरह से शुद्ध किया जा सके, और वे स्वभाव में परिवर्तन प्राप्त कर शैतान के अंधकार के प्रभाव को तोड़कर आज़ाद हो जाएँ और परमेश्वर के सिंहासन के सामने लौट आएँ। केवल इसी तरीके से ही मनुष्य को पूरी तरह से पवित्र किया जा सकता है। व्यवस्था के युग के अंत के बाद और अनुग्रह के युग के आरम्भ से, परमेश्वर ने उद्धार के अपने कार्य को शुरू किया, जो अंत के दिनों तक चलता है, जब वह विद्रोहशीलता के लिए मनुष्य के न्याय और ताड़ना का कार्य करते हुए मानवजाति को पूरी तरह से शुद्ध कर देगा। केवल तभी वो अपने उद्धार कार्य का समापन करेगा और

विश्राम में प्रवेश करेगा। इसलिए, कार्य के तीन चरणों में, परमेश्वर स्वयं मनुष्य के बीच अपने कार्य को करने के लिए मात्र दो बार देह बना। ऐसा इसलिए है क्योंकि कार्य के तीन चरणों में से केवल एक चरण ही मनुष्यों की उनकी ज़िन्दगियों में अगुवाई करने के लिए है, जबकि अन्य दो चरण उद्धार के कार्य हैं। केवल परमेश्वर के देह बनने से ही वह मनुष्य के साथ-साथ रह सकता है, संसार के दुःख का अनुभव कर सकता है, और एक सामान्य देह में रह सकता है। केवल इसी तरह से वह उस व्यावहारिक तरीके से मनुष्यों को आपूर्ति कर सकता है जिसकी उन्हें एक सृजित प्राणी होने के नाते आवश्यकता है। देहधारी परमेश्वर की वजह से मनुष्य परमेश्वर से पूर्ण उद्धार प्राप्त करता है, न कि सीधे तौर पर स्वर्ग से की गई अपनी प्रार्थनाओं से। क्योंकि मनुष्य शरीरी है; मनुष्य परमेश्वर के आत्मा को देखने में असमर्थ है और उस तक पहुँचने में तो बिलकुल भी समर्थ नहीं है। मनुष्य केवल परमेश्वर के देहधारी देह के साथ ही सम्बद्ध हो सकता है; केवल उसके माध्यम से ही मनुष्य सारे तरीकों और सारे सत्यों को समझ सकता है, और पूर्ण उद्धार प्राप्त कर सकता है। दूसरा देहधारण मनुष्य को पापों से पीछा छुड़ाने और मनुष्य को पूरी तरह से पवित्र करने के लिए पर्याप्त है। इसलिए, दूसरे देहधारण देह के साथ परमेश्वर के सभी कार्य समाप्त होंगे और परमेश्वर के देहधारण के अर्थ को पूर्ण किया जायेगा। उसके बाद, देह में परमेश्वर का काम पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। दूसरे देहधारण के बाद, वह अपने कार्य के लिए पुन: देह नहीं बनेगा। क्योंकि उसका सम्पूर्ण प्रबंधन समाप्त हो जाएगा। अंत के दिनों का, उसका देहधारण अपने चुने हुए लोगों को पूरी तरह से प्राप्त कर लेगा, और अंत के दिनों में मनुष्यको उनके प्रकार के अनुसार विभाजित कर दिया जाएगा। वह उद्धार का कार्य अब और नहीं करेगा, और न ही वह किसी कार्य को करने के लिए देह में लौटेगा। अंत के दिनों के कार्य में, वचन चिन्हों एवं अद्‌भुत कामों के प्रकटीकरण की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिमान है, और वचन का अधिकार चिन्हों एवं अद्‌भुत कामों से कहीं बढ़कर है। वचन मनुष्य के हृदय में गहराई से दबे सभी भ्रष्ट स्वभावों को प्रकट करता है। तुम अपने बल पर इन्हें पहचानने में असमर्थ हो। जब उन्हें वचन के माध्यम से तुम पर प्रकट किया जाता है, तब तुम्हें स्वाभाविक रुप से ही एहसास हो जाएगा; तुम उन्हें इनकार करने में समर्थ नहीं होगे, और तुम्हें पूरी तरह से यक़ीन हो जाएगा। क्या यह वचन का अधिकार नहीं है? यह वह परिणाम है जिसे वचन के वर्तमान कार्य के द्वारा प्राप्त किया गया है। इसलिए, बीमारियों की चंगाई और दुष्टात्माओं को निकालने के द्वारा मनुष्य को उसके पापों से पूरी तरह से बचाया नहीं जा सकता है और चिन्हों और अद्‌भुत कामों के प्रदर्शन के द्वारा उसे पूरी तरह से पूर्ण नहीं किया जा सकता

है। चंगाई करने और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार मनुष्य को केवल अनुग्रह प्रदान करता है, परन्तु मनुष्य का देह तब भी शैतान से सम्बन्धित होता है और भ्रष्ट शैतानी स्वभाव तब भी मनुष्य के भीतर बना रहता है। दूसरे शब्दों में, वह जिसे शुद्ध नहीं किया गया है अभी भी पाप और गन्दगी से सम्बन्धित है। जब वचनों के माध्यम से मनुष्य को स्वच्छ कर दिया जाता है केवल उसके पश्चात् ही उसे परमेश्वर के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है और वह पवित्र बन सकता है। जब मनुष्य के भीतर से दुष्टात्माओं को निकाला गया और उसे छुटकारा दिलाया गया, तो इसका अर्थ केवल इतना था कि, मनुष्य को शैतान के हाथ से छीन कर परमेश्वर को लौटा दिया गया है। हालाँकि, उसे परमेश्वर के द्वारा स्वच्छ या परिवर्तित नहीं किया गया है, इसलिए वह भ्रष्ट बना रहता है। मनुष्य के भीतर अब भी गन्दगी, विरोध, और विद्रोहशीलता बनी हुई है; मनुष्य केवल छुटकारे के माध्यम से ही परमेश्वर के पास लौटा है, परन्तु मनुष्य को परमेश्वर का जरा सा भी ज्ञान नहीं है और अभी भी परमेश्वर का विरोध करने और उसके साथ विश्वासघात करने में सक्षम है। मनुष्य को छुटकारा दिये जाने से पहले, शैतान के बहुत से ज़हर उसमें पहले से ही गाड़ दिए गए थे। हज़ारों वर्षों तक शैतान द्वारा भ्रष्ट किये जाने के बाद, मनुष्य के भीतर पहले ही ऐसा स्वभाव है जो परमेश्वर का विरोध करता है। इसलिए, जब मनुष्य को छुटकारा दिया गया है, तो यह छुटकारे से बढ़कर और कुछ नहीं है, जहाँ मनुष्य को एक ऊँची कीमत पर खरीदा गया है, परन्तु भीतर का विषैला स्वभाव नहीं हटाया गया है। मनुष्य जो इतना अशुद्ध है उसे परमेश्वर की सेवा करने के योग्य होने से पहले एक परिवर्तन से होकर अवश्य गुज़रना चाहिए। न्याय और ताड़ना के इस कार्य के माध्यम से, मनुष्य अपने भीतर के गन्दे और भ्रष्ट सार को पूरी तरह से जान जाएगा, और वह पूरी तरह से बदलने और स्वच्छ होने में समर्थ हो जाएगा। केवल इसी तरीके से मनुष्य परमेश्वर के सिंहासन के सामने वापस लौटने के योग्य हो सकता है। वह सब कार्य जिसे आज किया गया है वह इसलिए है ताकि मनुष्य को स्वच्छ और परिवर्तित किया जा सके; न्याय और ताड़ना के वचन के द्वारा और साथ ही शुद्धिकरण के माध्यम से, मनुष्य अपनी भ्रष्टता को दूर फेंक सकता है और उसे शुद्ध किया जा सकता है। इस चरण के कार्य को उद्धार का कार्य मानने के बजाए, यह कहना कहीं अधिक उचित होगा कि यह शुद्ध करने का कार्य है। सच में, यह चरण विजय का और साथ ही उद्धार के कार्य का दूसरा चरण है। मनुष्य को वचन द्वारा न्याय और ताड़ना के माध्यम से परमेश्वर के द्वारा प्राप्त किया जाता है; शुद्ध करने, न्याय करने और खुलासा करने के लिए वचन के उपयोग के माध्यम से मनुष्य के हृदय के भीतर की सभी अशुद्धताओं, अवधारणाओं, प्रयोजनों, और व्यक्तिगत

आशाओं को पूरी तरह से प्रकट किया जाता है। यद्यपि मनुष्य को छुटकारा दिया गया है और उसके पापों को क्षमा किया गया है, फिर भी इसे केवल इतना ही माना जा सकता है कि परमेश्वर मनुष्य के अपराधों का स्मरण नहीं करता है और मनुष्य के अपराधों के अनुसार मनुष्य से व्यवहार नहीं करता है। हालाँकि, जब मनुष्य जो देह में रहता है, जिसे पाप से मुक्त नहीं किया गया है, वह भ्रष्ट शैतानी स्वभाव को अंतहीन रूप से प्रकट करते हुए, केवल पाप करता रह सकता है। यही वह जीवन है जो मनुष्य जीता है, पाप और क्षमा का एक अंतहीन चक्र। अधिकांश मनुष्य दिन में सिर्फ इसलिए पाप करते हैं ताकि शाम को स्वीकार कर सकें। इस प्रकार, भले ही पापबलि मनुष्य के लिए सदैव प्रभावी है, फिर भी यह मनुष्य को पाप से बचाने में समर्थ नहीं होगी। उद्धार का केवल आधा कार्य ही पूरा किया गया है, क्योंकि मनुष्य में अभी भी भ्रष्ट स्वभाव है। उदाहरण के लिए, जब लोग जान गए कि वे मोआब के वंशज हैं, तो उन्होंने शिकायत के वचन जारी किए, जीवन की तलाश छोड़ दी, और पूरी तरह नकारात्मक हो गए। क्या यह इस बात को नहीं दर्शाता है कि मानवजाति अभी भी परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन पूरी तरह से समर्पित होने में असमर्थ हैं? क्या यह निश्चित रूप से उनका भ्रष्ट शैतानी स्वभाव नहीं है? जब तुम्हें ताड़ना के अधीन नहीं किया गया था, तो अन्य सभी की तुलना में तुम्हारे हाथ अधिक ऊँचे उठे हुए थे, यहाँ तक कि यीशु के हाथों से भी ऊँचे। और तुम ऊँची आवाज़ में चीख़ रहे थे: "परमेश्वर का प्रिय पुत्र बनो! परमेश्वर का अंतरंग बनो! हम शैतान को समर्पण करने के बजाय मरना चाहेंगे! पुराने शैतान के विरुद्ध विद्रोह करो! बड़े लाल अजगर के विरुद्ध विद्रोह करो! बड़ा लाल अजगर पूरी तरह से सत्ता से गिर जाये! परमेश्वर हमें पूरा करें!" अन्य सभी की तुलना में तुम्हारी चीख़े अधिक ऊँची थीं। किन्तु फिर ताड़ना का समय आया और, एक बार फिर, मनुष्यों का भ्रष्ट स्वभाव प्रकट हुआ। फिर, उनकी चीख़ें बंद हो गईं, और उनका संकल्प टूट गया। यही मनुष्य की भ्रष्टता है; यह पाप की अपेक्षा अधिक गहराई तक फैला है, इसे शैतान के द्वारा गाड़ा गया है और यह मनुष्य के भीतर गहराई से जड़ पकड़े हुए है। मनुष्य के लिए अपने पापों के प्रति अवगत होना आसान नहीं है; मनुष्य अपनी स्वयं की गहराई से जमी हुई प्रकृति को पहचानने में असमर्थ है। केवल वचन के न्याय के माध्यम से ही इन प्रभावों को प्राप्त किया जा सकता है। केवल इस प्रकार से ही मनुष्य को उस स्थिति से आगे धीरे-धीरे बदला जा सकता है। मनुष्य अतीत में इस प्रकार चिल्लाता था क्योंकि मनुष्य को अपने मूल भ्रष्ट स्वभाव की कोई समझ नहीं थी। मनुष्य के भीतर इस तरह की अशुद्धियाँ हैं। न्याय और ताड़ना की इतनी लंबी अवधि के दौरान, मनुष्य तनाव के माहौल में रहता था। क्या यह सब वचन के माध्यम से प्राप्त

नहीं किया गया था? क्या सेवा करने वालों की परीक्षा से पहले तुम भी बहुत ऊँची आवाज़ में नहीं चीख़े थे? "राज्य में प्रवेश करो! वे सभी जो इस नाम को स्वीकार करते हैं राज्य में प्रवेश करेंगे! सभी परमेश्वर का हिस्सा बनेंगे!" जब सेवा करने वालों की परीक्षा आयी, तो तुम ने चिल्लाना बंद कर दिया। सबसे पहले, सभी चीख़े थे, "हे परमेश्वर! तुम मुझे जहाँ कहीँ भी रखो, मैं तुम्हारे द्वारा मार्गदर्शन किए जाने के लिए समर्पित होऊँगा।" फिर उसने इन वचनों, "मेरा पौलुस कौन बनेगा?" को देखा और कहा, "मैं तैयार हूँ!" तब उसने इन वचनों, "और अय्यूब की आस्था का क्या?" को देखा। तो उसने कहा, "मैं अय्यूब की आस्था स्वयं पर लेने के लिए तैयार हूँ। परमेश्वर, कृपया मेरी परीक्षा लो!" जब सेवा करने वालों की परीक्षा आयी, तो वह तुरंत ढह गया और फिर न उठ सका। उसके बाद, मनुष्य के हृदय में अशुद्धियाँ धीरे-धीरे घट गईं। क्या यह वचन के माध्यम से प्राप्त नहीं किया गया था? इसलिए, वर्तमान में जो अनुभव तुम लोगों ने किए हैं, वे वचन के माध्यम से प्राप्त किए गए परिणाम हैं, जो यीशु के चिह्न दिखाने और अद्‌भुत काम करने के माध्यम से प्राप्त किए गए अनुभवों से भी बड़े हैं। परमेश्वर की महिमा और परमेश्वर स्वयं का अधिकार जिसे तुम देखते हो वे मात्र सलीब पर चढ़ने, बीमारी को चंगा करने और दुष्टात्माओं को बाहर निकालने के माध्यम से नहीं देखे जाते हैं, बल्कि वचन के द्वारा उसके न्याय के माध्यम से और अधिक देखे जाते हैं। यह तुम्हें दर्शाता है कि न केवल चिह्न दिखाना, बीमारियों को चंगा करना और दुष्टात्माओं को बाहर निकालना परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य है, बल्कि वचन द्वारा न्याय परमेश्वर के अधिकार का प्रतिनिधित्व करने और उसकी सर्वशक्तिमत्ता को प्रकट करने में बेहतर समर्थ है।

जो कुछ मनुष्यों ने अब प्राप्त किया है—आज की अपनी कद-काठी, ज्ञान, प्रेम, वफादारी, आज्ञाकारिता, और अंतर्दृष्टि—वे ऐसे परिणाम हैं जिन्हें वचन के न्याय के माध्यम से प्राप्त किया गया है। यह कि तुम वफादारी रखने में और आज के दिन तक खड़े रहने में समर्थ हो यह वचन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। अब मनुष्य देखता है कि देहधारी परमेश्वर का कार्य वास्तव में असाधारण है। बहुत कुछ ऐसा है जिसे मनुष्य के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है; वे रहस्य हैं और अद्‌भुत बातें हैं। इसलिए, बहुतों ने समर्पण कर दिया है। कुछ लोगों ने अपने जन्म के समय से ही किसी भी मनुष्य के प्रति समर्पण नहीं किया है, फिर भी जब वे आज के दिन परमेश्वर के वचनों को देखते हैं, तो वे पूरी तरह से समर्पण कर देते हैं इस बात पर ध्यान दिए बिना कि उन्होंने ऐसा किया है और वे सूक्ष्म परीक्षण करने या कुछ और कहने का जोखिम नहीं उठाते हैं; मनुष्य वचन के अधीन गिर गया है और वचन के द्वारा न्याय के अधीन

औंधे मुँह पड़ा है। यदि परमेश्वर का आत्मा मनुष्यों से सीधे तौर पर बात करता, तो वे सब उस वाणी के प्रति समर्पित हो जाते, प्रकाशन के वचनों के बिना नीचे गिर जाते, बिलकुल वैसे ही जैसे पौलुस दमिश्क की राह पर ज्योति के मध्य भूमि पर गिर गया था। यदि परमेश्वर लगातार इसी तरीके से काम करता रहा, तो मनुष्य वचन के द्वारा न्याय के माध्यम से अपने स्वयं के भ्रष्ट स्वभाव को जानने और इसके परिणामस्वरूप उद्धार प्राप्त करने में कभी समर्थ नहीं होता। केवल देह बनने के माध्यम से ही वह व्यक्तिगत रूप से अपने वचनों को सभी के कानों तक पहुँचा सकता है ताकि वे सभी जिनके पास कान हैं उसके वचनों को सुन सकें और वचन के द्वारा उसके न्याय के कार्य को प्राप्त कर सकें। उसके वचन के द्वारा प्राप्त किया गया परिणाम सिर्फ यही है, पवित्रात्मा का प्रकटन नहीं जो मनुष्य को भयभीत करके समर्पण करवाता है। केवल ऐसे ही व्यावहारिक और असाधारण कार्य के माध्यम से ही मनुष्य के पुराने स्वभाव को, जो अनेक वर्षों से भीतर गहराई में छिपा हुआ है, पूरी तरह से प्रकट किया जा सकता है ताकि मनुष्य उसे पहचान सके और उसे बदलवा सके। यह देहधारी परमेश्वर का व्यावहारिक कार्य है; वह वचन के द्वारा मनुष्य पर न्याय के परिणामों को प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक तरीके से बोलता है और न्याय को निष्पादित करता है। यह देहधारी परमेश्वर का अधिकार है और परमेश्वर के देहधारण का महत्व है। इसे देहधारी परमेश्वर के अधिकार को, वचन के कार्य के द्वारा प्राप्त किए गए परिणामों को, और इस बात को प्रकट करने के लिए किया जाता है कि आत्मा देह में आ चुका है; वह वचन के द्वारा मनुष्य का न्याय करने के माध्यम से अपने अधिकार को प्रदर्शित करता है। यद्यपि उसका देह एक साधारण और सामान्य मानवता का बाहरी रूप है, फिर भी ये उसके वचन से प्राप्त हुए परिणाम हैं जो मनुष्य को दिखाते हैं कि परमेश्वर अधिकार से परिपूर्ण है, कि वह परमेश्वर स्वयं है और उसके वचन स्वयं परमेश्वर की अभिव्यक्ति हैं। इसके माध्यम से सभी मनुष्यों को दिखाया जाता है कि वह परमेश्वर स्वयं है, कि वह परमेश्वर स्वयं है जो देह बन गया है, कि किसी के भी द्वारा उसका अपमान नहीं किया जा सकता है, और कि कोई भी उसके वचन के द्वारा किए गए न्याय से बढ़कर नहीं हो सकता है, और अंधकार की कोई भी शक्ति उसके अधिकार पर प्रबल नहीं हो सकती। मनुष्य उसके प्रति पूर्णतः समर्पण करता है क्योंकि वही देह बना वचन है, और उसके अधिकार, और वचन द्वारा उसके न्याय के कारण समर्पण करता है। उसके देहधारी देह द्वारा लाया गया कार्य ही वह अधिकार है जिसे वह धारण करता है। वह देहधारी हो गया क्योंकि देह भी अधिकार धारण कर सकता है, और वह एक व्यावहारिक तरीके से मनुष्यों के बीच इस प्रकार का कार्य करने में सक्षम है जो मनुष्यों के

लिए दृष्टिगोचर और मूर्त है। ऐसा कार्य परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सीधे तौर पर किए गए किसी भी कार्य की अपेक्षा कहीं अधिक वास्तविक है जो सारे अधिकार को धारण करता है, और इसके परिणाम भी स्पष्ट हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका देहधारी देह व्यावहारिक तरीके से बोल और कार्य कर सकता है; उसकी देह का बाहरी रूप कोई अधिकार धारण नहीं करता है और मनुष्य के द्वारा उस तक पहुँचा जा सकता है। जबकि उसका सार अधिकार को वहन करता है, किन्तु उसका अधिकार किसी के लिए भी दृष्टिगोचर नहीं है। जब वह बोलता और कार्य करता है, तो मनुष्य उसके अधिकार के अस्तित्व का पता लगाने में असमर्थ होता है; यह उसके वास्तविक प्रकृति के कार्य के लिए और भी अधिक अनुकूल है। और इस प्रकार के सभी कार्य परिणामों को प्राप्त कर सकते हैं। भले ही कोई मनुष्य यह एहसास नहीं करता है कि परमेश्वर अधिकार रखता है या यह नहीं देखता है कि परमेश्वर का अपमान नहीं किया जाना चाहिए या परमेश्वर के कोप को नहीं देखता है, फिर भी वो अपने छिपे हुए अधिकार और कोप और सार्वजनिक भाषण के माध्यम से, अपने वचनों के अभीष्ट परिणामों को प्राप्त कर लेता है। दूसरे शब्दों में, उसकी आवाज़ के लहजे, भाषण की कठोरता, और उसके वचनों की समस्त बुद्धि के माध्यम से, मनुष्य सर्वथा आश्वस्त हो जाता है। इस तरह से, मनुष्य उस देहधारी परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पण करता है, जिसके पास प्रतीत होता है कि कोई अधिकार नहीं है, और इससे मनुष्य के लिए परमेश्वर के उद्धार का लक्ष्य पूरा होता है। यह उसके देहधारण का एक और महत्व है: अधिक वास्तविक रूप से बोलना और अपने वचनों को मनुष्य पर प्रभाव डालने देना ताकि वे परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य के गवाह बनें। अतः यह कार्य, यदि देहधारण के माध्यम से नहीं किया जाए, तो थोड़े से भी परिणामों को प्राप्त नहीं करेगा और पापियों का पूरी तरह से उद्धार करने में समर्थ नहीं होगा। यदि परमेश्वर देह नहीं बना होता, तो वह पवित्रात्मा बना रहता जो मनुष्यों के लिए अदृश्य और अमूर्त है। चूँकि मनुष्य देह वाला प्राणी है, इसलिए मनुष्य और परमेश्वर दो अलग-अलग संसारों से सम्बन्धित हैं, और स्वभाव में भिन्न हैं। परमेश्वर का आत्मा देह वाले मनुष्य से बेमेल है, और उनके बीच कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सकता है; इसके अतिरिक्त, मनुष्य आत्मा नहीं बन सकता है। ऐसा होने के कारण, परमेश्वर के आत्मा को सृजित प्राणियों में से एक बनना ही चाहिए और अपना मूल काम करना चाहिए। परमेश्वर सबसे ऊँचे स्थान पर चढ़ सकता है और सृष्टि का एक मनुष्य बनकर, कार्य करने और मनुष्य के बीच रहने के लिए अपने आपको विनम्र भी कर सकता है, परन्तु मनुष्य सबसे ऊँचे स्थान पर नहीं चढ़ सकता है और पवित्रात्मा नहीं बन सकता है और वह निम्नतम स्थान में तो

बिलकुल भी नहीं उतर सकता है। इसलिए, अपने कार्य को करने के लिए परमेश्वर को देह अवश्य बनना चाहिए। उसी प्रकार, प्रथम देहधारण के दौरान, केवल देहधारी परमेश्वर का देह ही सलीब पर चढ़ने के माध्यम से मनुष्य को छुटकारा दे सकता था, जबकि परमेश्वर के आत्मा को मनुष्य के लिए पापबलि के रूप में सलीब पर चढ़ाया जाना सम्भव नहीं था। परमेश्वर मनुष्य के लिए एक पापबलि के रूप में कार्य करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से देह बन सकता था, परन्तु मनुष्य परमेश्वर द्वारा तैयार की गयी पापबलि को लेने के लिए प्रत्यक्ष रूप से स्वर्ग में चढ़ नहीं सकता था। ऐसा होने के कारण, मनुष्य को इस उद्धार को लेने के लिए स्वर्ग में चढ़ने देने की बजाए, यही सम्भव था कि परमेश्वर से स्वर्ग और पृथ्वी के बीच इधर-उधर आने-जाने का आग्रह किया जाये, क्योंकि मनुष्य पतित हो चुका था और स्वर्ग पर चढ़ नहीं सकता था, और पापबलि को तो बिलकुल भी प्राप्त नहीं कर सकता था। इसलिए, यीशु के लिए मनुष्यों के बीच आना और व्यक्तिगत रूप से उस कार्य को करना आवश्यक था जिसे मनुष्य के द्वारा पूरा किया ही नहीं जा सकता था। हर बार जब परमेश्वर देह बनता है, तब ऐसा करना नितान्त आवश्यक होता है। यदि किसी भी चरण को परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सीधे तौर पर सम्पन्न किया जा सकता, तो वो देहधारी होने के अनादर को सहन नहीं करता।

कार्य के इस अंतिम चरण में, वचन के द्वारा परिणामों को प्राप्त किया जाता है। वचन के माध्यम से, मनुष्य बहुत से रहस्यों को और पिछली पीढ़ियों के दौरान किये गए परमेश्वर के कार्य को समझ जाता है; वचन के माध्यम से, मनुष्य को पवित्र आत्मा के द्वारा प्रबुद्ध किया जाता है; वचन के माध्यम से, मनुष्य पिछली पीढ़ियों के द्वारा कभी नहीं सुलझाए गए रहस्यों को, और साथ ही अतीत के समयों के भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के कार्य को, और उन सिद्धान्तों को समझ जाता है जिनके द्वारा वे काम करते थे; वचन के माध्यम से, मनुष्य परमेश्वर स्वयं के स्वभाव को, और साथ ही मनुष्य की विद्रोहशीलता और विरोध को भी समझ जाता है, और स्वयं अपने सार को जान जाता है। कार्य के इन चरणों और बोले गए सभी वचनों के माध्यम से, मनुष्य आत्मा के कार्य को, परमेश्वर के देहधारी देह के कार्य को, और इसके अतिरिक्त, उसके सम्पूर्ण स्वभाव को जान जाता है। छ: हज़ार वर्षों से अधिक की परमेश्वर की प्रबंधन योजना का तुम्हारा ज्ञान भी वचन के माध्यम से प्राप्त किया गया था। क्या तुम्हारी पुरानी अवधारणाओं का तुम्हारा ज्ञान और उन्हें एक ओर करने में तुम्हारी सफलता भी वचन के माध्यम से प्राप्त नहीं की गयी थी? पिछले चरण में, यीशु ने चिह्न और अद्‌भुत काम किए थे, परन्तु इस चरण में ऐसा नहीं है। वह अब ऐसा

क्यों नहीं करता है, क्या इस बारे में तुम्हारी समझ भी वचन के माध्यम से ही प्राप्त नहीं की गई थी? इसलिए, इस चरण में बोले गए वचन पिछली पीढ़ियों के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा किए गए कार्यों से बढ़कर हैं। यहाँ तक कि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ भी ऐसे परिणामों को प्राप्त नहीं कर सकती थीं। भविष्यद्वक्ताओं ने केवल भविष्यवाणियां कीं थीं, कि भविष्य में क्या होगा, परन्तु उस कार्य के बारे में नहीं कहा था जिसे परमेश्वर उस समय करने वाला था। उन्होंने मनुष्य की ज़िन्दगियों में उनकी अगुवाई करने के लिए, मनुष्य को सच्चाई प्रदान करने के लिए या मनुष्य पर रहस्यों को प्रकट करने के लिए नहीं बोला था, और उनके बोल जीवन प्रदान करने के लिए तो बिलकुल भी नहीं थे। इस चरण में बोले गए वचनों के बारे में, इसमें भविष्यवाणी और सत्य है, परन्तु वे प्रमुख रूप से मनुष्य को जीवन प्रदान करने के काम आते हैं। वर्तमान समय के वचन भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यवाणियों से भिन्न हैं। यह कार्य का ऐसा चरण है जो भविष्यवाणियां करने के लिए नहीं बल्कि मनुष्य के जीवन के लिए है, और मनुष्य के जीवन स्वभाव को परिवर्तित करने के लिए है। प्रथम चरण पृथ्वी पर परमेश्वर की आराधना करने हेतु मनुष्य के लिए एक मार्ग तैयार करने का यहोवा का कार्य था। यह पृथ्वी पर कार्य के स्रोत को खोजने हेतु आरम्भ का कार्य था। उस समय, यहोवा ने इस्राएलियों को सब्त का पालन करना, अपने माता-पिता का आदर करना और दूसरों के साथ शांतिपूर्वक रहना सिखाया। चूँकि उस समय के मनुष्य नहीं समझते थे कि किस चीज ने मनुष्य को बनाया था, न ही वह समझते थे कि पृथ्वी पर किस प्रकार रहना है, इसलिए कार्य के प्रथम चरण में मनुष्य की ज़िन्दगियों में उनकी अगुवाई करना परमेश्वर के लिए आवश्यक था। वह सब कुछ जो यहोवा ने उनसे कहा था उसे इससे पहले मानवजाति को ज्ञात नहीं करवाया गया था या उनके पास नहीं था। उस समय भविष्यवाणियां करने के लिए परमेश्वर ने अनेक भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा किया, और वे सभी ऐसा यहोवा की अगुवाई में करते थे। यह परमेश्वर के कार्य का मात्र एक भाग था। प्रथम चरण में, परमेश्वर देह नहीं बना था, अतः वह भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से सभी कबीलों और जातियों से बात करता था। जब यीशु ने उस समय अपना कार्य किया, तब उसने इतनी बातें नहीं की जितनी आज के दिन हैं। अंत के दिनों में वचन के इस कार्य को युगों और पिछली पीढ़ियों में कभी नहीं किया गया था। यद्यपि यशायाह, दानिय्येल और यूहन्ना ने बहुत सी भविष्यवाणियाँ कीं थीं, फिर भी ऐसी भविष्यवाणियाँ उन वचनों से बिलकुल अलग हैं जिन्हें अब बोला जाता है। उन्होंने जो कुछ कहा था वे केवल भविष्यवाणियाँ थीं, किन्तु आज के वचन नहीं हैं। यदि आज जो कुछ मैंने कहा है मैं उसे भविष्यवाणियों में बदल दूँ, तो क्या तुम लोग

समझने में समर्थ होगे? मान लो कि जिस बारे में मैं बात करता हूँ वो ऐसे मुद्दों के बारे में होते जो मेरे जाने के बाद होंगे, तो तुम समझ कैसे प्राप्त कर सकते थे? वचन के कार्य को यीशु के समय में या व्यवस्था के युग में कभी नहीं किया गया था। कदाचित् कुछ लोग कह सकते हैं, "क्या यहोवा ने भी अपने कार्य के समय में वचनों को नहीं कहा था? बीमारियों की चंगा करने, दुष्टात्माओं को निकालने और चिह्न एवं अद्‌भुत कामों को करने के अतिरिक्त, क्या यीशु ने भी उस समय वचनों को नहीं कहा था?" वचन कैसे बोले जाते हैं इनमें अन्तर है। यहोवा के द्वारा कहे गए वचनों का सार क्या था? वह केवल पृथ्वी पर मनुष्य की उनकी ज़िन्दगियों में अगुवाई कर रहा था, जो जीवन के आध्यात्मिक मामलों को नहीं छूता था। ऐसा क्यों कहा जाता है कि यहोवा के वचनों की घोषणा सभी स्थानों के लोगों को निर्देश देने के लिए थी? "निर्देश" शब्द स्पष्ट रूप से बताने और सीधे आदेश देने की ओर संकेत करता है। उसने जीवन के साथ मनुष्य की आपूर्ति नहीं की; बल्कि इसके बजाए, उसने बस मनुष्य का हाथ पकड़कर उसको अपना आदर करना सिखाया था। यह ज़्यादातर दृष्टांत के माध्यम से नहीं किया गया था। इस्राएल में यहोवा का कार्य मनुष्य से व्यवहार करना या उसे अनुशासित करना या न्याय करना और ताड़ना देना नहीं था; यह अगुवाई करने के लिए था। यहोवा ने मूसा से कहा कि वो उसके लोगों से कहे कि वे जंगल में मन्ना इकट्ठा करें। प्रतिदिन सूर्योदय से पहले, उन्हें मन्ना इकट्ठा करना था, केवल इतना कि उसे उसी दिन ही खाया जा सके। मन्ना को अगले दिन के लिए नहीं रखा जा सकता था, क्योंकि तब उसमें फफूँद लग जाता। उसने मनुष्य को भाषण नहीं दिया या उनके स्वभावों को प्रकट नहीं किया था, और उसने उनकी राय और विचारों को प्रकट नहीं किया था। उसने मनुष्य को बदला नहीं था परन्तु उनकी ज़िन्दगियों में उनकी अगुवाई की थी। उस समय, मनुष्य एक बालक के समान था; मनुष्य कुछ नहीं समझता था और केवल कुछ मूलभूत यांत्रिक गतिविधियाँ ही कर सकता था; इसलिए, यहोवा ने केवल लोगों की अगुवाई करने के लिए व्यवस्थाओं की स्थापना की थी।

यदि तुम सुसमाचार फैलाना चाहते हो ताकि सभी लोग जो सच्चे हृदय से खोजते हैं वे उस कार्य का ज्ञान प्राप्त कर सकें जिसे आज किया गया है और पूरी तरह से आश्वस्त हो सकें, तब तुम्हें प्रत्येक चरण में किए गए कार्य के भीतर की कहानी, उसके सार और महत्व को समझना ही चाहिए। इसे ऐसा बनाओ कि तुम्हारे वार्तालाप को सुनने के द्वारा, वे यहोवा के कार्य और यीशु के कार्य और, इसके अतिरिक्त, उस समस्त कार्य को जिसे आज के दिन किया जा रहा है, और साथ ही कार्य के तीन चरणों के बीच के सम्बन्धों

एवं भिन्नताओं को समझ सकते हैं, ताकि, सुनने के पश्चात्, वे देख लेंगे कि तीनों चरणों में से कोई भी चरण अन्य चरणों में विघ्न नहीं डालता है। वास्तव में, सब कुछ एक ही आत्मा के द्वारा किया गया है। यद्यपि उन्होंने अलग-अलग युगों में अलग-अलग कार्य किए, उनके द्वारा किया गया कार्य और कहे गये वचन असमान हैं, फिर भी वे सिद्धान्त जिनके द्वारा वे कार्य करते हैं वे एक समान हैं। ये वे सबसे बड़े दर्शन हैं जिन्हें परमेश्वर का अनुसरण करने वाले सब लोगों को समझना चाहिए।

दो देहधारण पूरा करते हैं देहधारण के मायने

परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य के प्रत्येक चरण के अपने व्यवहारिक मायने हैं। जब यीशु का आगमन हुआ, वह पुरुष था, लेकिन इस बार के आगमन में परमेश्वर स्त्री है। इससे तुम देख सकते हो कि परमेश्वर ने अपने कार्य के लिए पुरुष और स्त्री दोनों का सृजन किया, वह कोई लिंग-भेद नहीं करता। जब उसका आत्मा आता है, तो वह इच्छानुसार किसी भी देह को धारण कर सकता है और वही देह उसका प्रतिनिधित्व करता है; चाहे पुरुष हो या स्त्री, दोनों ही परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, यदि यह उसका देहधारी शरीर है। यदि यीशु स्त्री के रूप में आ जाता, यानी अगर पवित्र आत्मा ने लड़के के बजाय लड़की के रूप में गर्भधारण किया होता, तब भी कार्य का वह चरण उसी तरह से पूरा किया गया होता। और यदि ऐसा होता, तो कार्य का वर्तमान चरण पुरुष के द्वारा पूरा किया जाता और कार्य उसी तरह से पूरा किया जाता। दोनों में से किसी भी चरण में किया गया कार्य समान रूप से अर्थपूर्ण है; कार्य का कोई भी चरण दोहराया नहीं जाता है या एक-दूसरे का विरोध नहीं करता है। उस समय जब यीशु कार्य कर रहा था, तो उसे इकलौता पुत्र कहा गया, और "पुत्र" का अर्थ है पुरुष लिंग। तो फिर इस चरण में इकलौते पुत्र का उल्लेख क्यों नहीं किया जाता है? क्योंकि कार्य की आवश्यकताओं ने लिंग में बदलाव को आवश्यक बना दिया जो यीशु के लिंग से भिन्न हो। परमेश्वर लिंग के बारे में कोई भेदभाव नहीं करता। वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता है, और अपने कार्य को करते समय उस पर किसी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं होता, वह स्वतंत्र होता है, परन्तु कार्य के प्रत्येक चरण के अपने ही व्यवहारिक मायने होते हैं। परमेश्वर ने दो बार देहधारण किया, और यह स्वत: प्रमाणित है कि अंत के दिनों में उसका देहधारण अंतिम है। वह अपने सभी कर्मों को प्रकट करने के लिए आया है। यदि इस चरण में वह व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए देहधारण नहीं करता जिसे मनुष्य देख सके, तो मनुष्य हमेशा के लिए यही धारणा बनाए रखता कि

परमेश्वर सिर्फ पुरुष है, स्त्री नहीं। इससे पहले, सब मानते थे कि परमेश्वर सिर्फ पुरुष ही हो सकता है, किसी स्त्री को परमेश्वर नहीं कहा जा सकता, क्योंकि सारी मानवजाति मानती थी कि पुरुषों का स्त्रियों पर अधिकार होता है। वे मानते थे कि किसी स्त्री के पास अधिकार नहीं हो सकता, अधिकार सिर्फ पुरुष के पास ही हो सकता है। वे तो यहाँ तक कहते थे कि पुरुष स्त्री का मुखिया होता है, स्त्री को पुरुष की आज्ञा का पालन करना चाहिए और वह उससे श्रेष्ठ नहीं हो सकती। अतीत में जब ऐसा कहा गया कि पुरुष स्त्री का मुखिया है, तो यह आदम और हव्वा के संबंध में कहा गया था जिन्हें सर्प के द्वारा छला गया था—न कि उस पुरुष और स्त्री के बारे में जिन्हें आरंभ में यहोवा ने रचा था। निस्संदेह, स्त्री को अपने पति का आज्ञापालन और उससे प्रेम करना चाहिए, उसी तरह पुरुष को अपने परिवार का भरण-पोषण करना आना चाहिए। ये वे नियम और आदेश हैं जिन्हें यहोवा ने बनाया, जिनका इंसान को धरती पर अपने जीवन में पालन करना चाहिए। यहोवा ने स्त्री से कहा, "तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" उसने यह सिर्फ इसलिए कहा ताकि मानवजाति (अर्थात् पुरुष और स्त्री दोनों) यहोवा के प्रभुत्व में सामान्य जीवन जी सकें, ताकि मानवजाति के जीवन की एक संरचना हो और वह अपने व्यवस्थित क्रम में ही रहे। इसलिए यहोवा ने उपयुक्त नियम बनाए कि पुरुष और स्त्री को किस तरह व्यवहार करना चाहिए, हालाँकि ये सब पृथ्वी पर रहने वाले प्राणीमात्र के सन्दर्भ में थे, न कि देहधारी परमेश्वर के देह के सन्दर्भ में। परमेश्वर अपनी ही सृष्टि के समान कैसे हो सकता था? उसके वचन सिर्फ उसके द्वारा रची गई मानवजाति के लिए थे; पुरुष और स्त्री के लिए उसने ये नियम इसलिए स्थापित किए थे ताकि मानवजाति सामान्य जीवन जी सके। आरंभ में, जब यहोवा ने मानवजाति का सृजन किया, तो उसने दो प्रकार के मनुष्य बनाए, पुरुष और स्त्री; इसलिए, उसके देहधारी शरीर में पुरुष और स्त्री का भेद किया गया। उसने अपना कार्य आदम और हव्वा को बोले गए वचनों के आधार पर तय नहीं किया। दोनों बार जब उसने देहधारण किया तो यह पूरी तरह से उसकी तब की सोच के अनुसार निर्धारित किया गया जब उसने सबसे पहले मानवजाति की रचना की थी; अर्थात्, उसने अपने दो देहधारणों के कार्य को उन पुरुष और स्त्री के आधार पर पूरा किया जिन्हें तब तक भ्रष्ट नहीं किया गया था। सर्प द्वारा छले गये आदम और हव्वा से कहे गए यहोवा के वचनों को यदि मनुष्य परमेश्वर के देहधारण के कार्य पर लागू करता है, तो क्या यीशु को अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम नहीं करना पड़ता जैसा कि उसे करना चाहिए था? इस तरह, क्या परमेश्वर तब भी परमेश्वर ही रहता? यदि ऐसा होता, तो क्या वह तब भी अपना कार्य पूरा कर पाता? यदि

देहधारी परमेश्वर का स्त्री होना गलत है, तो क्या परमेश्वर का स्त्री की रचना करना भी भयंकर भूल नहीं थी? यदि लोग अब भी मानते हैं कि परमेश्वर का स्त्री के रूप में देहधारण करना गलत है, तो क्या यीशु का देहधारण, जिसने विवाह नहीं किया जिस कारण वह अपनी पत्नी से प्रेम नहीं कर पाया, ऐसी ही त्रुटि नहीं होती जैसा कि वर्तमान देहधारण है? चूँकि तुम यहोवा के द्वारा हव्वा को बोले गए वचनों को परमेश्वर के वर्तमान देहधारण के सत्य को मापने के लिए उपयोग करते हो, तब तो तुम्हें, अनुग्रह के युग में देहधारण करने वाले प्रभु यीशु के बारे में राय बनाने के लिए यहोवा द्वारा आदम को बोले गए वचनों का उपयोग करना चाहिए। क्या वे दोनों एक ही नहीं हैं? चूँकि तुम प्रभु यीशु के बारे में उस पुरुष के हिसाब से राय बनाते हो जिसे सर्प के द्वारा छला नहीं गया था, तब तुम आज के देहधारण के सत्य के बारे में उस स्त्री के हिसाब से राय नहीं बना सकते जिसे सर्प के द्वारा छला गया था। यह तो अनुचित होगा! परमेश्वर को इस प्रकार मापना तुम्हारी विवेकहीनता को साबित करता है। जब यहोवा ने दो बार देहधारण किया, तो उसके देहधारण का लिंग उन पुरुष और स्त्री से संबंधित था जिन्हें सर्प के द्वारा छला नहीं गया था; उसने दो बार ऐसे पुरुष और स्त्री के अनुरूप देहधारण किया जिन्हें सर्प के द्वारा नहीं छला गया था। ऐसा न सोचो कि यीशु का पुरुषत्व वैसा ही था जैसा कि आदम का था, जिसे सर्प के द्वारा छला गया था। उन दोनों का कोई संबंध नहीं है, दोनों भिन्न प्रकृति के पुरुष हैं। निश्चय ही ऐसा तो नहीं हो सकता कि यीशु का पुरुषत्व यह साबित करे कि वह सिर्फ स्त्रियों का ही मुखिया है पुरुषों का नहीं? क्या वह सभी यहूदियों (पुरुषों और स्त्रियों सहित) का राजा नहीं है? वह स्वयं परमेश्वर है, वह न सिर्फ स्त्री का मुखिया है बल्कि पुरुष का भी मुखिया है। वह सभी प्राणियों का प्रभु और सभी प्राणियों का मुखिया है। तुम यीशु के पुरुषत्व को स्त्री के मुखिया का प्रतीक कैसे निर्धारित कर सकते हो? क्या यह ईशनिंदा नहीं है? यीशु ऐसा पुरुष है जिसे भ्रष्ट नहीं किया गया है। वह परमेश्वर है; वह मसीह है; वह प्रभु है। वह आदम की तरह का पुरुष कैसे हो सकता है जो भ्रष्ट हो गया था? यीशु वह देह है जिसे परमेश्वर के अति पवित्र आत्मा ने धारण किया हुआ है। तुम यह कैसे कह सकते हो कि वह ऐसा परमेश्वर है जो आदम के पुरुषत्व को धारण किए हुए है? उस स्थिति में, क्या परमेश्वर का समस्त कार्य गलत नहीं हो गया होता? क्या यहोवा यीशु के भीतर आदम के पुरुषत्व को समाविष्ट कर सकता था जिसे सर्प द्वारा छला गया था? क्या वर्तमान देहधारण देहधारी परमेश्वर के कार्य का दूसरा उदाहरण नहीं है जो कि यीशु के लिंग से भिन्न परन्तु प्रकृति में यीशु के ही समान है? क्या तुम अब भी यह कहने का साहस करते हो कि देहधारी परमेश्वर स्त्री नहीं हो सकता क्योंकि स्त्री ही

सबसे पहले सर्प के द्वारा छली गई थी? क्या तुम अब भी यह बात कह सकते हो कि चूँकि स्त्री सबसे अधिक अशुद्ध होती है और मानवजाति की भ्रष्टता का मूल है, इसलिए परमेश्वर संभवतः एक स्त्री के रूप में देह धारण नहीं कर सकता? क्या तुम अब भी यह कह सकते हो कि "स्त्री हमेशा पुरुष का आज्ञापालन करेगी और कभी भी परमेश्वर को अभिव्यक्त या प्रत्यक्ष रूप से उसका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती?" अतीत में तो तुम नहीं समझे; क्या तुम अब भी परमेश्वर के कार्य की, विशेषकर परमेश्वर के देहधारी शरीर की निंदा कर सकते हो? यदि तुम यह स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते, तो अच्छा होगा कि तुम अपनी जुबान पर लगाम लगाओ, ऐसा न हो कि तुम्हारी मूर्खता और अज्ञानता प्रकट हो जाए और तुम्हारी कुरूपता उजागर हो जाए। यह मत सोचो कि तुम सबकुछ समझते हो। मैं तुम्हें बता दूँ कि तुमने जो कुछ भी देखा और अनुभव किया है, वह मेरी प्रबन्धन योजना के हजारवें हिस्से को समझने के लिए भी अपर्याप्त है। तो फिर तुम इतनी ढिठाई से पेश क्यों आते हो? तुम्हारी जरा-सी प्रतिभा और अल्पतम ज्ञान यीशु के कार्य में एक पल के लिए भी उपयोग किए जाने के लिए पर्याप्त नहीं है! तुम्हें वास्तव में कितना अनुभव है? तुमने अपने जीवन में जो कुछ देखा और सुना है और जिसकी तुमने कल्पना की है, वह मेरे एक क्षण के कार्य से भी कम है! तुम्हारे लिए यही अच्छा होगा कि तुम आलोचक बनकर दोष मत ढूँढो। चाहे तुम कितने भी अभिमानी हो जाओ, फिर भी तुम्हारी औकात चींटी जितनी भी नहीं है! तुम्हारे पेट में उतना भी नहीं है जितना एक चींटी के पेट में होता है! यह मत सोचो चूँकि तुमने बहुत अनुभव कर लिया है और वरिष्ठ हो गए हो, इसलिए तुम बेलगाम ढंग से हाथ नचाते हुए बड़ी-बड़ी बातें कर सकते हो। क्या तुम्हारे अनुभव और तुम्हारी वरिष्ठता उन वचनों के परिणामस्वरूप नहीं है जो मैंने कहे हैं? क्या तुम यह मानते हो कि वे तुम्हारे परिश्रम और कड़ी मेहनत द्वारा अर्जित किए गए हैं? आज, तुम देखते हो कि मैंने देहधारण किया है, और परिणामस्वरूप तुम्हारे अंदर ऐसी प्रचुर अवधारणाएँ हैं, और उनसे निकली अवधारणाओं का कोई अंत नहीं है। यदि मेरा देहधारण न होता, तो तुम्हारे अंदर कितनी भी असाधारण प्रतिभाएँ होतीं, तब भी तुम्हारे अंदर इतनी अवधारणाएँ नहीं होतीं; और क्या तुम्हारी अवधारणाएँ इन्हीं से नहीं उभरतीं? यदि यीशु पहली बार देहधारण नहीं करता, तो क्या तुम देहधारण के बारे में जानते? क्या यह पहले देहधारण के तुम्हारे ज्ञान के कारण ही नहीं है कि तुम ढिठाई से दूसरे देहधारण के बारे में राय बनाते हो? तुम एक आज्ञाकारी अनुयायी बनने के बजाय इसकी जाँच क्यों कर रहे हो? जब तुमने इस धारा में प्रवेश कर लिया है और देहधारी परमेश्वर के सामने आ गए हो, तो क्या वह तुम्हें खुद की पड़ताल करने देगा? तुम अपने परिवार

के इतिहास की जाँच कर सकते हो, परन्तु यदि तुम परमेश्वर के "परिवार के इतिहास" की जाँच करते हो, तो क्या आज का परमेश्वर तुम्हें ऐसी पड़ताल करने देगा? क्या तुम अंधे नहीं हो? क्या तुम स्वयं तिरस्कार के भागी नहीं बन रहे हो?

यदि मात्र यीशु का कार्य किया गया होता और अंत के दिनों में इस चरण का कार्य इसका पूरक न होता, तो मनुष्य हमेशा के लिए इस अवधारणा से चिपका रहता कि केवल यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, अर्थात्, परमेश्वर का सिर्फ एक ही पुत्र है, यदि उसके बाद कोई किसी दूसरे नाम से आता है तो वह परमेश्वर का एकमात्र पुत्र नहीं होगा, स्वयं परमेश्वर तो बिल्कुल भी नहीं होगा। मनुष्य की यह अवधारणा है कि जो कोई भी पापबलि बनता है या जो परमेश्वर की ओर से सामर्थ्य ग्रहण करता है और समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाता है, वही परमेश्वर का एकमात्र पुत्र है। कुछ ऐसे भी हैं जो यह मानते हैं कि यदि आने वाला कोई पुरुष है, तो उसे ही परमेश्वर का एकमात्र पुत्र और परमेश्वर का प्रतिनिधि समझा जा सकता है। कुछ तो यहाँ तक कहते हैं कि यीशु यहोवा का पुत्र है, उसका एकमात्र पुत्र है। क्या मनुष्य की ऐसी अवधारणाएँ अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं हैं? यदि कार्य का यह चरण अंत के युग में न किया गया होता, तो जब परमेश्वर की बात आती तो समस्त मानवजाति एक काली परछाईं में ढकी होती। यदि ऐसा होता, तो पुरुष अपने आपको स्त्री से श्रेष्ठ समझता, और स्त्रियाँ कभी अपना सिर ऊँचा नहीं उठा पातीं, और तब एक भी स्त्री को बचाना संभव न होता। लोग हमेशा यही मानते हैं कि परमेश्वर पुरुष है, वह हमेशा से स्त्री से घृणा करता रहा है और कभी उसका उद्धार नहीं करेगा। यदि ऐसा होता, तो क्या यह सच नहीं है कि यहोवा द्वारा रची गयी सभी स्त्रियाँ, जो भ्रष्ट भी की जा चुकी हैं, उन्हें कभी भी बचाए जाने का अवसर न मिलता? तो क्या यहोवा के लिए स्त्री यानी हव्वा की रचना करना व्यर्थ नहीं हो गया होता? और क्या स्त्री अनंतकाल के लिए नष्ट नहीं हो जाती? इसलिए, अंत के दिनों में कार्य का यह चरण समस्त मानवजाति को बचाने के लिए किया जाना है, न कि सिर्फ स्त्री को। यदि कोई यह सोचता है कि अगर परमेश्वर ने स्त्री के रूप में देहधारण किया, और वह मात्र स्त्रियों को बचाने के लिये होगा, तो वह व्यक्ति सचमुच बेवकूफ़ है!

आज के कार्य ने अनुग्रह के युग के कार्य को आगे बढ़ाया है; अर्थात्, समस्त छह हजार सालों की प्रबंधन योजना का कार्य आगे बढ़ा है। यद्यपि अनुग्रह का युग समाप्त हो गया है, किन्तु परमेश्वर के कार्य ने प्रगति की है। मैं क्यों बार-बार कहता हूँ कि कार्य का यह चरण अनुग्रह के युग और व्यवस्था के युग पर आधारित है? क्योंकि आज का कार्य अनुग्रह के युग में किए गए कार्य की निरंतरता और व्यवस्था के युग में

किए कार्य की प्रगति है। तीनों चरण आपस में घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं और श्रृंखला की हर कड़ी निकटता से अगली कड़ी से जुड़ी है। मैं यह भी क्यों कहता हूँ कि कार्य का यह चरण यीशु द्वारा किए गए कार्य पर आधारित है? मान लो, यह चरण यीशु द्वारा किए गए कार्य पर आधारित न होता, तो फिर इस चरण में क्रूस पर चढ़ाए जाने का कार्य फिर से करना होता, और पहले किए गए छुटकारे के कार्य को फिर से करना पड़ता। यह अर्थहीन होता। इसलिए, ऐसा नही है कि कार्य पूरी तरह समाप्त हो चुका है, बल्कि युग आगे बढ़ गया है, और कार्य के स्तर को पहले से अधिक ऊँचा कर दिया गया है। यह कहा जा सकता है कि कार्य का यह चरण व्यवस्था के युग की नींव और यीशु के कार्य की चट्टान पर निर्मित है। परमेश्वर का कार्य चरण-दर-चरण निर्मित किया जाता है, और यह चरण कोई नई शुरुआत नहीं है। सिर्फ तीनों चरणों के कार्य के संयोजन को ही छह हजार सालों की प्रबंधन योजना माना जा सकता है। इस चरण का कार्य अनुग्रह के युग के कार्य की नींव पर किया जाता है। यदि कार्य के ये दो चरण जुड़े न होते, तो इस चरण में क्रूस पर चढ़ाए जाने का कार्य क्यों नहीं दोहराया गया? मैं मनुष्य के पापों को अपने ऊपर क्यों नहीं लेता हूँ, इसके बजाय सीधे उनका न्याय करने और उन्हें ताड़ना देने क्यों आता हूँ? अगर मनुष्य का न्याय करने और उन्हें ताड़ना देने का मेरा कार्य और पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आए बिना मेरा अब आना क्रूसीकरण के बाद नहीं होता, तो मैं मनुष्य को ताड़ना देने के योग्य नहीं होता। मैं यीशु से एकाकार हूँ, बस इसी कारण मैं प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य को ताड़ना देने और उसका न्याय करने के लिए आता हूँ। कार्य का यह चरण पूरी तरह से पिछले चरण पर ही निर्मित है। यही कारण है कि सिर्फ ऐसा कार्य ही चरण-दर-चरण मनुष्य का उद्धार कर सकता है। यीशु और मैं एक ही पवित्रात्मा से आते हैं। यद्यपि हमारे देह एक-दूसरे से जुड़े नहीं है, किन्तु हमारा आत्मा एक ही है; यद्यपि हमारे कार्य की विषयवस्तु और हम जो कार्य करते हैं, वे एक नहीं हैं, तब भी सार रूप में हम समान हैं; हमारे देह भिन्न रूप धारण करते हैं, लेकिन यह युग में परिवर्तन और हमारे कार्य की भिन्न आवश्यकताओं के कारण है; हमारी सेवकाई एक जैसी नहीं है, इसलिए जो कार्य हम आगे लाते हैं और जिस स्वभाव को हम मनुष्य पर प्रकट करते हैं, वे भी भिन्न हैं। यही कारण है कि आज मनुष्य जो देखता और समझता है वह अतीत के समान नहीं है; ऐसा युग में बदलाव के कारण है। यद्यपि उनके देह के लिंग और रूप भिन्न-भिन्न हैं, और वे दोनों एक ही परिवार में नहीं जन्मे हैं, उसी समयावधि में तो बिल्कुल नहीं, किन्तु फिर भी उनके आत्मा एक ही हैं। यद्यपि उनके देह किसी प्रकार के रक्त या भौतिक संबंध साझा नहीं करते, पर इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि वे भिन्न-भिन्न समयावधियों में

परमेश्वर के देहधारण हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि वे परमेश्वर के देहधारी शरीर हैं, यद्यपि वे एक ही व्यक्ति के वंशज या एक ही भाषा (एक पुरुष था जो यहूदियों की भाषा बोलता था और दूसरा शरीर स्त्री है जो सिर्फ चीनी भाषा बोलता है) साझा नहीं करते। इन्हीं कारणों से उन्हें जो कार्य करना चाहिए, उसे वे भिन्न-भिन्न देशों में, और साथ ही भिन्न-भिन्न समयावधियों में करते हैं। इस तथ्य के बावजूद वे एक ही आत्मा हैं, उनका सार एक ही है, लेकिन उनके देह के बाहरी आवरणों में कोई समानता नहीं है। बस उनकी मानवता समान है, परन्तु जहाँ तक उनके देह के प्रकटन और जन्म की परिस्थितियों की बात है, वे दोनों समान नहीं हैं। इनका उनके अपने-अपने कार्य या मनुष्य के पास उनके बारे में जो ज्ञान है, उस पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि आखिरकार, वे आत्मा तो एक ही हैं और उन्हें कोई अलग नहीं कर सकता। यद्यपि उनका रक्त-संबंध नहीं है, किन्तु उनका सम्पूर्ण अस्तित्व उनके आत्मा द्वारा निर्देशित होता है, जो उन्हें अलग-अलग समय में अलग-अलग कार्य देता है और उनके देह को अलग-अलग रक्त-संबंध से जोड़ता है। यहोवा का आत्मा यीशु के आत्मा का पिता नहीं है, यीशु का आत्मा यहोवा के आत्मा का पुत्र नहीं है : वे एक ही आत्मा हैं। उसी तरह, आज के देहधारी परमेश्वर और यीशु में कोई रक्त-संबंध नहीं है, लेकिन वे हैं एक ही, क्योंकि उनके आत्मा एक ही हैं। परमेश्वर दया और करुणा का, और साथ ही धार्मिक न्याय का, मनुष्य की ताड़ना का, और मनुष्य को श्राप देने का कार्य कर सकता है; अंत में, वह संसार को नष्ट करने और दुष्टों को सज़ा देने का कार्य कर सकता है। क्या वह यह सब स्वयं नहीं करता? क्या यह परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता नहीं है? उसने मनुष्य के लिए व्यवस्थाएँ निर्धारित कीं और आज्ञाएँ जारी कीं, वह आरंभिक इस्राएलियों की पृथ्वी पर उनके जीवन-यापन में अगुवाई करने में भी समर्थ था और मंदिर व वेदियाँ बनाने में उनका मार्गदर्शन करने, और समस्त इस्राएलियों को अपने प्रभुत्व में रखने में भी समर्थ था। अपने अधिकार के कारण, वह इस्राएल के लोगों के साथ पृथ्वी पर दो हज़ार वर्षों तक रहा। इस्राएलियों ने उसके खिलाफ विद्रोह करने का साहस नहीं किया; सब यहोवा के प्रति श्रद्धा रखते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते थे। उसके अधिकार और उसकी सर्वशक्तिमत्ता के कारण किया जाने वाला कार्य ऐसा था। तब अनुग्रह के युग में, यीशु संपूर्ण पतित मानवजाति (सिर्फ इस्राएलियों को नहीं) को छुटकारा दिलाने के लिए आया। उसने मनुष्य के प्रति दया और प्रेममयी करुणा दिखायी। मनुष्य ने अनुग्रह के युग में जिस यीशु को देखा वह मनुष्य के प्रति प्रेममयी करुणा से भरा हुआ और हमेशा ही प्रेममय था, क्योंकि वह मनुष्य को पाप से बचाने के लिए आया था। उसने मनुष्यों के पापों को क्षमा किया फिर उसके

क्रूस पर चढ़ने ने मानवजाति को पूरी तरह पाप से छुटकारा दिला दिया। उस दौरान, परमेश्वर मनुष्य के सामने दया और प्रेममयी करुणा के साथ प्रकट हुआ; अर्थात्, वह मनुष्य के लिए पापबलि बना और मनुष्य के पापों के लिए सूली पर चढ़ाया गया ताकि उन्हें हमेशा के लिए माफ किया जा सके। वह दयालु, करुणामय, सहिष्णु और प्रेममय था। और वे सब जिन्होंने अनुग्रह के युग में यीशु का अनुसरण किया था, उन्होंने भी सारी चीजों में सहिष्णु और प्रेममय बनने का प्रयास किया। उन्होंने लम्बे समय तक कष्ट सहे, यहाँ तक कि जब उन्हें पीटा गया, धिक्कारा गया या उन्हें पत्थर मारे गए, तो भी उन्होंने पलटकर वार नहीं किया। परन्तु इस अंतिम चरण में ऐसा नहीं हो सकता। हालाँकि यीशु और यहोवा का आत्मा एक ही था, लेकिन उनका कार्य पूरी तरह एक-सा नहीं था। यहोवा के कार्य ने युग का अंत नहीं किया बल्कि युग का मार्गदर्शन किया, पृथ्वी पर मानवजाति के जीवन का सूत्रपात किया, और आज का कार्य अन्यजाति के राष्ट्रों में गहराई से भ्रष्ट किए गए मनुष्यों को जीतने के लिए और न केवल चीन में परमेश्वर के चुने हुए लोगों की, बल्कि समस्त विश्व और मानवजाति की अगुआई करने के लिए है। तुम्हें ऐसा लग सकता है कि यह कार्य सिर्फ़ चीन में हो रहा है, परन्तु यह पहले से ही विदेशों में फैलना शुरू हो गया है। ऐसा क्यों है कि चीन के बाहर के लोग बार-बार सच्चे मार्ग को खोजते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि आत्मा ने अपना कार्य पहले से ही शुरू कर दिया है, और ये वचन अब समस्त विश्व के लोगों के लिए हैं। इसके साथ, आधा कार्य पहले ही प्रगति पर है। संसार के सृजन से लेकर आज तक, परमेश्वर के आत्मा ने इस महान कार्य को कार्यान्वित कर दिया है, इसके अलावा उसने विभिन्न युगों के दौरान, और भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न कार्य किए हैं। प्रत्येक युग के लोग उसके एक भिन्न स्वभाव को देखते हैं, जो कि उस भिन्न कार्य के माध्यम से सहज रूप से प्रकट होता है जिसे वह करता है। वह दया और प्रेममयी करुणा से भरा हुआ परमेश्वर है; वह मनुष्य के लिए पापबलि है और उसकी चरवाही करने वाला है, लेकिन वह मनुष्य का न्याय, ताड़ना, और श्राप भी है। उसने पृथ्वी पर दो हजार साल तक जीवन-यापन करने में मनुष्य की अगुआई की और भ्रष्ट मानवजाति को पाप से छुटकारा भी दिला पाया। आज, वह मानवजाति को जीतने में भी सक्षम है जो उससे अनजान है और उसे अपने अधीन दंडवत कराने में सक्षम है, ताकि हर कोई उसके आगे पूरी तरह से समर्पित हो जाए। अंत में, वह समस्त विश्व में मनुष्यों के अंदर जो कुछ भी अशुद्ध और अधार्मिक है उसे जला कर भस्म कर देगा, ताकि उन्हें यह दिखाए कि वह न सिर्फ करुणामय और प्रेमपूर्ण परमेश्वर है, न सिर्फ बुद्धि और चमत्कार का परमेश्वर है, न सिर्फ पवित्र परमेश्वर है, बल्कि वह मनुष्य का न्याय करने वाला परमेश्वर

भी है। मानवजाति के बीच दुष्टजनों के लिए, वह प्रज्ज्वलन, न्याय और दण्ड है; जिन्हें पूर्ण किया जाना है उनके लिए, वह क्लेश, शुद्धिकरण, परीक्षण के साथ-साथ आराम, संपोषण, वचनों की आपूर्ति, निपटारा और काट-छाँट है। और जिन्हें हटाया जाना है उनके लिए, वह सज़ा और प्रतिशोध भी है। बताओ, परमेश्वर सर्वशक्तिमान है या नहीं? ऐसा नहीं है कि वह केवल सूली पर ही चढ़ सकता है, जैसा कि तुम्हें लगता है, बल्कि वह सभी कार्य कर सकता है। परमेश्वर के बारे में तुम्हारी सोच बहुत तुच्छ है! क्या तुम्हें लगता है कि वह बस सूली पर चढ़कर समस्त मानवजाति को छुटकारा ही दिला सकता है और बात ख़त्म? उसके बाद, तुम स्वर्ग में उसके पीछे जाओगे, जीवन के वृक्ष से फल खाओगे और जीवन की नदी से जल पियोगे? ... क्या यह इतना आसान हो सकता है? अच्छा बताओ, तुमने क्या हासिल किया है? क्या तुममें यीशु का जीवन है? यह सच है कि उसने तुम्हें छुटकारा दिलाया था, लेकिन सूली पर चढ़ना स्वयं यीशु का कार्य था। एक मनुष्य के रूप में तुमने कौन-सा कर्तव्य निभाया है? तुममें सिर्फ दिखावे की धर्मनिष्ठा है परन्तु तुम उसके मार्ग को नहीं समझते। क्या ऐसे ही तुम उसे व्यक्त करते हो? यदि तुमने परमेश्वर का जीवन प्राप्त नहीं किया है या उसके धार्मिक स्वभाव की समग्रता को नहीं देखा है, तो तुम ऐसे व्यक्ति होने का दावा नहीं कर सकते जिसमें जीवन है, और तुम स्वर्ग के राज्य के द्वार में प्रवेश करने योग्य नहीं हो।

परमेश्वर न केवल आत्मा है बल्कि वह देहधारण भी कर सकता है। इसके अलावा, वह महिमा का एक शरीर है। यीशु को यद्यपि तुम लोगों ने नहीं देखा है, पर उसकी गवाही इस्राएलियों ने यानी उस समय के यहूदियों ने दी थी। पहले वह एक देह था, परन्तु उसे सलीब पर चढ़ाए जाने के बाद, वह महिमावान शरीर बन गया। वह व्यापक आत्मा है और सभी स्थानों में कार्य कर सकता है। वह यहोवा, यीशु या मसीहा हो सकता है; अंत में, वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी बन सकता है। वह धार्मिकता, न्याय, और ताड़ना है; वह श्राप और क्रोध है; परन्तु वह करुणा और प्रेममयी दया भी है। उसके द्वारा किया गया समस्त कार्य उसका प्रतिनिधित्व कर सकता है। तुम्हें वह किस प्रकार का परमेश्वर लगता है? तुम उसकी व्याख्या नहीं कर सकते। यदि तुम सच में उसकी व्याख्या नहीं कर सकते, तो तुम्हें परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिए। परमेश्वर हमेशा के लिए करुणा और प्रेममयी दया का ही परमेश्वर है, यह निष्कर्ष मात्र इसलिए मत निकालो क्योंकि परमेश्वर ने एक चरण में छुटकारे का कार्य किया। क्या तुम निश्चित हो सकते हो कि वह मात्र दयालु और प्रेमपूर्ण परमेश्वर है? यदि वह केवल एक दयालु और प्रेममय परमेश्वर है, तो वह अंत के दिनों में युग का अंत क्यों करेगा? वह बहुत-सी विपत्तियाँ क्यों भेजेगा? लोगों की अवधारणाओं और

विचारों के अनुसार परमेश्वर बिल्कुल अंत तक दयालु और प्रेममय रहना चाहिए, ताकि मानवजाति के आखिरी सदस्य को भी बचाया जा सके। लेकिन वह अंत के दिनों में इस दुष्ट मानवजाति को नष्ट करने के लिए, जो परमेश्वर को अपना दुश्मन समझती है, भूकंप, महामारी, सूखे जैसी आपदाएँ क्यों भेजता है? वह मनुष्य को इन विपत्तियों से पीड़ित क्यों होने देता है? तुम लोगों में से कोई भी यह नहीं बता सकता कि वह किस प्रकार का परमेश्वर है, और न ही कोई इस बात को समझा सकता है। क्या तुम निश्चित हो सकते हो कि वह आत्मा है? क्या तुम यह कहने का साहस रखते हो कि वह यीशु का ही देह है? और क्या तुम यह कह सकते हो कि वह ऐसा परमेश्वर है जिसे मनुष्य की खातिर हमेशा सलीब पर चढ़ाया जाएगा?

क्या त्रित्व का अस्तित्व है?

यीशु के देहधारी होने का सत्य अस्तित्व में आने के बाद, मनुष्य का मानना था: न केवल पिता स्वर्ग में है, बल्कि पुत्र भी है और यहां तक कि आत्मा भी है। यह पारंपरिक धारणा है, जिसे मनुष्य धारण किए है कि इस तरह का एक परमेश्वर स्वर्ग में हैः एक त्रयात्मक परमेश्वर जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है। समस्त मानवजाति की ये धारणाएं हैं: परमेश्वर एक परमेश्वर है, पर उसमें तीन भाग शामिल हैं, जिसे कष्टदायक रूप से पारंपरिक धारणाओं में जकड़े वे सभी पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा मानते हैं। केवल इन्हीं तीनों एकाकार हुए भाग से संपूर्ण परमेश्वर बनता है। पवित्र पिता के बिना परमेश्वर संपूर्ण नहीं होगा। इसी प्रकार से, न ही पुत्र और पवित्र आत्मा के बिना परमेश्वर संपूर्ण होगा। अपनी धारणाओं में वे यह विश्वास करते हैं कि न तो अकेले पिता को और न अकेले पुत्र को ही परमेश्वर माना जा सकता है। केवल पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को एक साथ मिलाकर परमेश्वर स्वयं माना जा सकता है। अब, सभी धार्मिक विश्वासी और तुम लोगों में से प्रत्येक अनुयायी भी इस बात पर विश्वास करता है। फिर भी, जैसे यह विश्वास सही है कि नहीं, कोई नहीं समझा सकता, क्योंकि तुम लोग हमेशा स्वयं परमेश्वर के मामलों को लेकर भ्रम के कोहरे में रहते हो। हालांकि ये धारणाएं हैं, तुम लोग नहीं जानते कि ये सही हैं या ग़लत क्योंकि तुम लोग धार्मिक धारणाओं से बुरी तरह संक्रमित हो गए हो। तुम लोगों ने धर्म की इन पारंपरिक धारणाओं को बहुत गहराई से स्वीकार कर लिया है और यह ज़हर तुम्हारे भीतर बहुत गहरे रिसकर चला गया है। इसलिए इस मामले में भी तुम इन हानिकारक प्रभाव के आगे झुक गए हो क्योंकि त्रयात्मक परमेश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। इसका मतलब यह है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का त्रित्व अस्तित्व में ही नहीं है। ये सब

मनुष्य की पारंपरिक धारणाएं हैं और मनुष्य के भ्रामक विश्वास हैं। कई सदियों से मनुष्य का इस त्रित्व पर विश्वास रहा है, ये मनुष्य के मन में धारणाओं से जन्मी, मनुष्य द्वारा गढ़ी गई और मनुष्य द्वारा पहले कभी नहीं देखी गई हैं। इन अनेक वर्षों के दौरान बाइबल के कई प्रतिपादक हुए हैं, जिन्होंने त्रित्व का "सही अर्थ" समझाया है, पर तीन अभिन्न तत्व व्यक्तियों वाले त्रयात्मक परमेश्वर की ऐसी व्याख्याएं अज्ञात और अस्पष्ट रहे हैं और लोग परमेश्वर की "रचना" के बारे में पूरी तरह संभ्रमित हैं। कोई भी महान व्यक्ति कभी भी इसकी पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं रहा है; अधिकांश व्याख्याएं, तर्क के मामले में और कागज़ पर जायज़ ठहरते हैं, परंतु किसी भी मनुष्य को इसके अर्थ की पूरी तरह साफ़ समझ नहीं है। यह इसलिए क्योंकि यह महान त्रित्व, जो मनुष्य अपने हृदय में धारण किए है, वह अस्तित्व में है ही नहीं। क्योंकि कभी भी किसी ने परमेश्वर के सच्चे स्वरूप को नहीं देखा है न ही कभी कोई प्राणी इतना भाग्यशाली रहा कि परमेश्वर के घर यह देखने जाए कि जहाँ परमेश्वर रहता है वहां क्या-क्या चीज़ें है, ताकि इसका निर्धारण कर सके कि "परमेश्वर के घर" में कितनी दसियों हज़ार या सैकड़ों लाख पीढ़ियाँ हैं या यह जांच सके कि परमेश्वर की निहित रचना कितने भागों से निर्मित है। जिसकी मुख्यत: जांच होनी चाहिए, वह हैः पिता और पुत्र की आयु, साथ ही पवित्र आत्मा की आयु; प्रत्येक व्यक्ति के संबंधित प्रकटन; वास्तव में यह कैसे होता है कि वे अलग हो जाते हैं और यह कैसे होता है कि वे एक हो जाते हैं। दुर्भाग्यवश, इन सभी वर्षों में, कोई एक भी मनुष्य इस मामले में सत्य का निर्धारण नहीं कर पाया है। वे बस अनुमान लगाते हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति स्वर्ग के दौरे पर नहीं गया और न समस्त मानवजाति के लिए "जांच रिपोर्ट" लेकर वापस आया है ताकि वह इस मामले के सत्य का उन उत्साही और निष्ठावान धार्मिक विश्वासियों से बयान कर सके, जो त्रित्व के बारे में चिंतित हैं। निश्चय ही, ऐसी धारणाएं बनाने के लिए मनुष्य को दोष नहीं दिया जा सकता कि क्यों पिता यहोवा ने पुत्र यीशु को मानवजाति की सृष्टि के समय अपने साथ नहीं रखा था? यदि आरंभ में, सभी कुछ यहोवा के नाम से हुआ होता, तो यह बेहतर होता। यदि दोष देना ही है तो, यह यहोवा परमेश्वर की क्षणिक चूक पर डालना चाहिए, जिसने सृष्टि के समय पुत्र और पवित्र आत्मा को अपने सामने नहीं बुलाया, बल्कि अपना कार्य अकेले क्रियान्वित किया। यदि उन सभी ने एक साथ कार्य किया होता, तो क्या वे एक ही नहीं बन गए होते? यदि उत्पत्ति से लेकर अंत तक, केवल यहोवा का ही नाम होता और अनुग्रह के युग से यीशु का नाम न होता या तब भी उसे यहोवा ही पुकारा जाता, तो क्या परमेश्वर मानवजाति के इस भेदभाव की यातना से बच नहीं जाता? सच तो यह है कि इस सबके लिए यहोवा को

दोषी नहीं ठहराया जा सकता; यदि दोष ही देना है तो पवित्र आत्मा को देना चाहिए, जो यहोवा, यीशु और यहां तक कि पवित्र आत्मा के नाम से हज़ारों सालों से अपना कार्य करता रहा है और उसने मनुष्य को ऐसा भ्रमित और चकरा दिया है कि वह जान ही नहीं पाया कि असल में परमेश्वर कौन है। यदि स्वयं पवित्र आत्मा ने किसी रूप या छवि के बिना कार्य किया होता और इसके अलावा यीशु जैसे नाम के बिना कार्य किया होता और मनुष्य उसे न छू पाता न देख पाता, केवल गर्जना की आवाज़ सुन पाता तो क्या इस प्रकार का कार्य मनुष्यों के लिए और अधिक फायदेमंद नहीं होता? तो अब क्या किया जा सकता है? मनुष्य की धारणाएं एकत्रित होकर पर्वत के समान ऊँची और समुद्र के समान व्यापक हो गई हैं, इस हद तक कि आज का परमेश्वर उन्हें अब और नहीं सह सकता और उलझन में है। अतीत में जब केवल यहोवा, यीशु और उन दोनों के मध्य पवित्र आत्मा था, तो मनुष्य पहले ही हैरान था कि कैसे इनका सामना करे और अब उसमें सर्वशक्तिमान भी जुड़ गया है, जिसे भी परमेश्वर का ही एक भाग कहा जाता है। कौन जानता है कि वह कौन है और त्रित्व के किस व्यक्तित्व के साथ कितने सालों से परस्पर मिश्रित है या भीतर छिपा हुआ है? मनुष्य इसे कैसे सह सकता है? पहले तो अकेले त्रयात्मक परमेश्वर ही मनुष्य के लिए जीवनभर व्याख्या के लिए काफ़ी था, पर अब यहां "एक परमेश्वर में चार व्यक्तित्व" है। इसकी व्याख्या कैसे की जा सकती है? क्या तुम इसकी व्याख्या कर सकते हो? भाइयो और बहनो! तुम लोगों ने आज तक इस प्रकार के परमेश्वर पर विश्वास कैसे किया है? मैं तुम लोगों से बेहद प्रभावित हूँ। त्रयात्मक परमेश्वर ही झेलने के लिए पर्याप्त था; तुम लोग इस एक परमेश्वर के चार रूपों पर अटूट विश्वास कैसे करते रहे? तुम लोगों को बाहर निकलने के लिए आग्रह किया गया है, फिर भी तुम मना करते हो। समझ से परे है! तुम लोग कमाल हो! एक व्यक्ति चार परमेश्वरों पर विश्वास तक कर जाता है और उसमें कुछ समझ नहीं पाता; तुम्हें नहीं लगता कि यह एक चमत्कार है? मैं नहीं कह सकता था कि तुम लोग इतना महान चमत्कार करने में सक्षम हो! मैं बताता हूँ कि वास्तव में, ब्रह्मांड में कहीं भी त्रयात्मक परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है। परमेश्वर का न पिता है और न पुत्र, और इस ख्याल का तो और भी वजूद नहीं है कि पिता और पुत्र संयुक्त तौर पर पवित्र आत्मा का उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं। यह सब बड़ा भ्रम है और संसार में इसका कोई अस्तित्व नहीं है! फिर भी इस प्रकार के भ्रम का अपना मूल है और यह पूरी तरह निराधार नहीं है, क्योंकि तुम लोगों के मन इतने साधारण नहीं हैं और तुम्हारे विचार तर्कहीन नहीं हैं। बल्कि, वे काफी उपयुक्त और चतुर हैं, इतने कि किसी शैतान द्वारा भी अभेद्य हैं। अफ़सोस यह कि ये विचार बिल्कुल भ्रामक हैं और बस इनका

अस्तित्व नहीं है! तुम लोगों ने वास्तविक सत्य को देखा ही नहीं है; तुम लोग केवल अटकलें और कल्पनाएं लगा रहे हो, फिर धोखे से दूसरों का विश्वास प्राप्त करने या सबसे अधिक बुद्धिहीन या तर्कहीन लोगों पर प्रभाव जमाने के लिए इस सबको कहानी में पिरो रहे हो, ताकि वे तुम लोगों की महान और प्रसिद्ध "विशेषज्ञ शिक्षाओं" पर विश्वास करें। क्या यह सच है? क्या यह जीवन का तरीका है, जो मनुष्य को प्राप्त करना चाहिए? यह सब बकवास है! एक शब्द भी उचित नहीं है! इतने सालों में, तुम लोगों के द्वारा परमेश्वर इस प्रकार विभाजित किया गया है, हर पीढ़ी द्वारा इसे इतना बारीक़ी से विभाजित किया गया है कि एक परमेश्वर को खुलकर तीन हिस्सों में बांट दिया गया है। और अब मनुष्य के लिए यह पूरी तरह असंभव है कि इन तीनों को फिर से एक परमेश्वर बना पाए, क्योंकि तुम लोगों ने उसे बहुत ही सूक्ष्मता से बांटा है! यदि मेरा कार्य सही समय पर शुरू न हुआ होता तो कहना कठिन है कि तुम लोग कब तक इसी तरह ढिठाई करते रहते! इस प्रकार से परमेश्वर को विभाजित करना जारी रखने से, वह अब तक तुम्हारा परमेश्वर कैसे रह सकता है? क्या तुम लोग अब भी परमेश्वर को पहचान सकते हो? क्या तुम अभी भी उसे अपना पिता स्वीकार करके उसके पास लौटोगे? यदि मैं थोड़ा और बाद में आता, तो हो सकता है कि तुम लोग "पिता और पुत्र", यहोवा और यीशु को इस्राएल वापस भेज चुके होते और दावा करते कि तुम लोग स्वयं ही परमेश्वर का एक भाग हो। भाग्यवश, अब ये अंत के दिन हैं। अंतत: वह दिन आ गया है, जिसकी मुझे बहुत प्रतीक्षा थी और मेरे अपने हाथों से इस चरण के कार्य को क्रियान्वित करने के बाद ही तुम लोगों द्वारा परमेश्वर स्वयं को बांटने का कार्य रुका है। यदि यह नहीं होता, तो तुम लोग और आगे बढ़ जाते, यहां तक कि अपने बीच सभी शैतानों को तुमने आराधना के लिए अपनी मेज़ों पर रख लिया होता। यह तुम लोगों की चाल है! परमेश्वर को बांटने के तुम्हारे तरीके! क्या तुम सब अभी भी ऐसा ही करोगे? मैं तुमसे पूछता हूँ: कितने परमेश्वर हैं? कौन सा परमेश्वर तुम लोगों के लिए उद्धार लाएगा? पहला परमेश्वर, दूसरा या फिर तीसरा, जिससे तुम सब हमेशा प्रार्थना करते हो? उनमें से तुम लोग हमेशा किस पर विश्वास करते हो? पिता पर? या फिर पुत्र पर? या फिर आत्मा पर? मुझे बताओ कि तुम किस पर विश्वास करते हो। हालांकि तुम्हारे हर शब्द में परमेश्वर पर विश्वास दिखता है, लेकिन तुम लोग जिस पर वास्तव में विश्वास करते हो, वह तुम्हारा दिमाग़ है। तुम लोगों के हृदय में परमेश्वर है ही नहीं! फिर भी तुम सबके दिमाग़ में इस प्रकार के कई "त्रित्व" हैं! क्या तुम लोग इससे सहमत नहीं हो?

यदि त्रित्व की इस अवधारणा के अनुसार काम के तीन चरणों का मूल्यांकन किया जाना है, तो तीन

परमेश्वर होने चाहिए क्योंकि प्रत्येक द्वारा क्रियान्वित कार्य एकसमान नहीं हैं। यदि तुम लोगों में से कोई भी कहता है कि त्रित्व वास्तव में है, तो समझाओ कि तीन व्यक्तियों में यह एक परमेश्वर क्या है। पवित्र पिता क्या है? पुत्र क्या है? पवित्र आत्मा क्या है? क्या यहोवा पवित्र पिता है? क्या यीशु पुत्र है? फिर पवित्र आत्मा का क्या? क्या पिता एक आत्मा नहीं है? पुत्र का सार भी क्या एक आत्मा नहीं है? क्या यीशु का कार्य पवित्र आत्मा का कार्य नहीं था? एक समय आत्मा द्वारा क्रियान्वित यहोवा का कार्य क्या यीशु के कार्य के समान नहीं था? परमेश्वर में कितने आत्माएं हो सकते हैं? तुम्हारे स्पष्टीकरण के अनुसार, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के तीन व्यक्ति एक हैं; यदि ऐसा है, तो तीन आत्माएं हैं, लेकिन तीन आत्माओं का अर्थ है कि तीन परमेश्वर हैं। इसका मतलब है कि कोई भी एक सच्चा परमेश्वर नहीं है; इस प्रकार के परमेश्वर में अभी भी परमेश्वर का निहित सार कैसे हो सकता है? यदि तुम मानते हो कि केवल एक ही परमेश्वर है, तो उसका एक पुत्र कैसे हो सकता है और वह पिता कैसे हो सकता है? क्या ये सब केवल तुम्हारी धारणाएं नहीं हैं? केवल एक परमेश्वर है, इस परमेश्वर में केवल एक ही व्यक्ति है, और परमेश्वर का केवल एक आत्मा है, वैसा ही जैसा बाइबल में लिखा गया है कि "केवल एक पवित्र आत्मा और केवल एक परमेश्वर है।" जिस पिता और पुत्र के बारे में तुम बोलते हो, वे चाहे अस्तित्व में हों, कुल मिलाकर परमेश्वर एक ही है और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का सार, जिसे तुम लोग मानते हो, पवित्र आत्मा का सार है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर एक आत्मा है लेकिन वह देहधारण करने और मनुष्यों के बीच रहने के साथ-साथ सभी चीजों से ऊँचा होने में सक्षम है। उसका आत्मा समस्त-समावेशी और सर्वव्यापी है। वह एक ही समय पर देह में हो सकता है और पूरे विश्व में और उसके ऊपर हो सकता है। चूंकि सभी लोग कहते हैं कि परमेश्वर एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, फिर एक ही परमेश्वर है, जो किसी की इच्छा से विभाजित नहीं होता! परमेश्वर केवल एक आत्मा है और केवल एक ही व्यक्ति है; और वह परमेश्वर का आत्मा है। यदि जैसा तुम कहते हो, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, तो क्या वे तीन परमेश्वर नहीं हैं? पवित्र आत्मा एक तत्व है, पुत्र दूसरा है, और पिता एक और है। उनके व्यक्तित्व अलग हैं और उनके सार अलग हैं, तो वे एक इकलौते परमेश्वर का हिस्सा कैसे हो सकते हैं? पवित्र आत्मा एक आत्मा है; यह मनुष्य के लिए समझना आसान है। यदि ऐसा है तो, पिता और भी अधिक एक आत्मा है। वह पृथ्वी पर कभी नहीं उतरा और कभी भी देह नहीं बना है; वह मनुष्यों के दिल में यहोवा परमेश्वर है और निश्चित रूप से वह भी एक आत्मा है। तो उसके और पवित्र आत्मा के बीच क्या संबंध है? क्या यह पिता और पुत्र के बीच का संबंध है? या यह पवित्र आत्मा और पिता के आत्मा के

बीच का रिश्ता है? क्या प्रत्येक आत्मा का सार एकसमान है? या पवित्र आत्मा पिता का एक साधन है? इसे कैसे समझाया जा सकता है? और फिर पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच क्या संबंध है? क्या यह दो आत्माओं का संबंध है या एक मनुष्य और आत्मा के बीच का संबंध है? ये सभी ऐसे मामले हैं, जिनकी कोई व्याख्या नहीं हो सकती! यदि वे सभी एक आत्मा हैं, तो तीन व्यक्तियों की कोई बात नहीं हो सकती, क्योंकि वे एक आत्मा के अधीन हैं। यदि वे अलग-अलग व्यक्ति होते, तो उनकी आत्माओं की शक्ति भिन्न होती और बस वे एक ही आत्मा नहीं हो सकते थे। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की यह अवधारणा सबसे बेतुकी है! यह परमेश्वर को खंडित करती है और प्रत्येक को एक ओहदा और आत्मा देकर उसे तीन व्यक्तियों में विभाजित करती है; तो कैसे वह अब भी एक आत्मा और एक परमेश्वर हो सकता है? मुझे बताओ कि क्या स्वर्ग, पृथ्वी और सभी चीज़ें पिता, पुत्र या पवित्र आत्मा द्वारा बनाई गई थीं? कुछ कहते हैं कि उन्होंने यह सब मिलकर बनाया। फिर किसने मानवजाति को छुटकारा दिलाया? क्या यह पवित्र आत्मा था, पुत्र था या पिता? कुछ कहते हैं कि वह पुत्र था, जिसने मानवजाति को छुटकारा दिलाया था। तो फिर सार में पुत्र कौन है? क्या वह परमेश्वर के आत्मा का देहधारण नहीं है? एक सृजित मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से देहधारी स्वर्ग में परमेश्वर को पिता के नाम से बुलाता है। क्या तुम्हें पता नहीं कि यीशु का जन्म पवित्र आत्मा के गर्भधारण से हुआ था? उसके भीतर पवित्र आत्मा है; तुम कुछ भी कहो, वह अभी भी स्वर्ग में परमेश्वर के साथ एकसार है, क्योंकि वह परमेश्वर के आत्मा का देहधारण है। पुत्र का यह विचार केवल असत्य है। यह एक आत्मा है जो सभी कार्य क्रियान्वित करता है; केवल परमेश्वर स्वयं, यानी परमेश्वर का आत्मा अपना कार्य क्रियान्वित करता है। परमेश्वर का आत्मा कौन है? क्या यह पवित्र आत्मा नहीं है? क्या यह पवित्र आत्मा नहीं है, जो यीशु में कार्य करता है? यदि कार्य पवित्र आत्मा (अर्थात, परमेश्वर का आत्मा) द्वारा क्रियान्वित नहीं किया गया था, तो क्या उसका कार्य स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकता था? जब प्रार्थना करते हुए यीशु ने स्वर्ग में परमेश्वर को पिता के नाम से बुलाया, तो यह केवल एक सृजित मनुष्य के परिप्रेक्ष्य से किया गया था, केवल इसलिए कि परमेश्वर के आत्मा ने एक सामान्य और साधारण देह का चोला धारण किया था और उसका वाह्य आवरण एक सृजित प्राणी का था। भले ही उसके भीतर परमेश्वर का आत्मा था, उसका बाहरी प्रकटन अभी भी एक सामान्य व्यक्ति का था; दूसरे शब्दों में, वह "मनुष्य का पुत्र" बन गया था, जिसके बारे में स्वयं यीशु समेत सभी मनुष्यों ने बात की थी। यह देखते हुए कि वह मनुष्य का पुत्र कहलाता है, वह एक व्यक्ति है (चाहे पुरुष हो या महिला, किसी भी हाल में एक इंसान के बाहरी चोले के साथ) जो सामान्य

लोगों के साधारण परिवार में पैदा हुआ। इसलिए, यीशु का स्वर्ग में परमेश्वर को पिता बुलाना, वैसा ही था जैसे तुम लोगों ने पहले उसे पिता कहा था; उसने सृष्टि के एक व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से ऐसा किया। क्या तुम लोगों को अभी भी प्रभु की प्रार्थना याद है, जो यीशु ने तुम लोगों को याद करने के लिए सिखाई थी? "स्वर्ग में हमारे पिता..." उसने सभी मनुष्यों से स्वर्ग में परमेश्वर को पिता के नाम से बुलाने को कहा। और चूँकि वह भी उसे पिता कहता था, उसने ऐसा उस व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य से किया, जो तुम सभी के साथ समान स्तर पर खड़ा था। चूंकि तुम लोगों ने स्वर्ग में परमेश्वर को पिता के नाम से बुलाया था, इससे पता चलता है कि यीशु ने स्वयं को तुम सबके साथ समान स्तर पर देखा और पृथ्वी पर परमेश्वर द्वारा चुने गए व्यक्ति (अर्थात परमेश्वर के पुत्र) के रूप में देखा। यदि तुम लोग परमेश्वर को पिता कहते हो, तो क्या यह इसलिए नहीं कि तुम सब सृजित प्राणी हो? पृथ्वी पर यीशु का अधिकार चाहे जितना अधिक हो, क्रूस पर चढ़ने से पहले, वह मात्र मनुष्य का पुत्र था, पवित्र आत्मा (यानी परमेश्वर) द्वारा नियंत्रित था और पृथ्वी के सृजित प्राणियों में से एक था क्योंकि उसे अभी भी अपना कार्य पूरा करना था। इसलिए, स्वर्ग में परमेश्वर को पिता बुलाना पूरी तरह से उसकी विनम्रता और आज्ञाकारिता थी। परमेश्वर (अर्थात स्वर्ग में आत्मा) को उसका इस प्रकार संबोधन करना हालांकि यह साबित नहीं करता कि वह स्वर्ग में परमेश्वर के आत्मा का पुत्र है। बल्कि, यह केवल यही है कि उसका दृष्टिकोण अलग था, न कि वह एक अलग व्यक्ति था। अलग व्यक्तियों का अस्तित्व एक मिथ्या है! क्रूस पर चढ़ने से पहले, यीशु मनुष्य का पुत्र था, जो देह की सीमाओं से बंधा था और उसमें पूरी तरह आत्मा का अधिकार नहीं था। यही कारण है कि वह केवल एक सृजित प्राणी के परिप्रेक्ष्य से परमपिता परमेश्वर की इच्छा तलाश सकता था। यह वैसा ही है जैसा गतसमनी में उसने तीन बार प्रार्थना की थी: "जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" क्रूस पर रखे जाने से पहले, वह बस यहूदियों का राजा था; वह मसीह मनुष्य का पुत्र था और महिमा का शरीर नहीं था। यही कारण है कि एक सृजित प्राणी के दृष्टिकोण से, उसने परमेश्वर को पिता बुलाया। अब तुम यह नहीं कह सकते कि सभी जो परमेश्वर को पिता बुलाते हैं, पुत्र हैं। यदि ऐसा होता, तो क्या यीशु द्वारा प्रभु की प्रार्थना सिखाए जाने के बाद, क्या तुम सभी पुत्र नहीं बन गए होते? यदि तुम लोग अभी भी आश्वस्त नहीं हो तो मुझे बताओ, वह कौन है जिसे तुम सब पिता कहते हो? यदि तुम यीशु की बात कर रहे हो तो तुम सबके लिए यीशु का पिता कौन है? एक बार जब यीशु चला गया तो पिता और पुत्र का यह विचार नहीं रहा। यह विचार केवल उन वर्षों के लिए उपयुक्त था जब यीशु देह में था; अन्य सभी परिस्थितियों में, जब तुम परमेश्वर को

पिता कहते हो, तो यह वह रिश्ता है, जो सृष्टि के परमेश्वर और सृजित प्राणी के बीच होता है। ऐसा कोई समय नहीं, जिस पर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के त्रित्व का विचार खड़ा रह सके; यह भ्रांति है, जो युगों तक शायद ही कभी समझी गई है और इसका अस्तित्व नहीं है!

यह अधिकांश लोगों को उत्पत्ति में परमेश्वर के वचनों की याद दिला सकता है: "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।" यह देखते हुए कि परमेश्वर कहता है, "हम" मनुष्य को "अपनी" छवि में बनाएँ, तो "हम" इंगित करता है दो या अधिक; चूंकि उसने "हम" कहा, तो फिर सिर्फ़ एक ही परमेश्वर नहीं है। इस तरह, मनुष्य ने अलग व्यक्तियों के अमूर्त पर सोचना शुरू कर दिया, और इन वचनों से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का विचार उभरा। तो फिर पिता कैसा है? पुत्र कैसा है? और पवित्र आत्मा कैसा है? क्या संभवत: यह हो सकता है कि आज की मानवजाति ऐसी छवि में बनाई गई थी, जो तीनों से मिलकर बनती है? तो मनुष्य की छवि क्या पिता की तरह है, या पुत्र की तरह या पवित्र आत्मा की तरह है? मनुष्य परमेश्वर के किस व्यक्ति की छवि है? मनुष्य का यह विचार बिल्कुल ग़लत और बेतुका है! यह केवल एक परमेश्वर को कई परमेश्वरों में विभाजित कर सकता है। जिस समय मूसा ने उत्पत्ति ग्रंथ लिखा था, उस समय तक दुनिया की सृष्टि के बाद मानवजाति का सृजन हो चुका था। बिल्कुल शुरुआत में, जब दुनिया शुरू हुई, तो मूसा मौजूद नहीं था। और मूसा ने बहुत बाद में बाइबल लिखी तो वह यह कैसे जान सकता था कि स्वर्ग में परमेश्वर ने क्या बोला? उसे ज़रा भी भान नहीं था कि परमेश्वर ने कैसे दुनिया बनाई। बाइबिल के पुराने नियम में, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का उल्लेख नहीं है, केवल एक ही सच्चे परमेश्वर यहोवा का है, जो इस्राएल में अपने कार्य को क्रियान्वित कर रहा है। जैसे युग बदलता है, उसके अनुसार उसे अलग-अलग नामों से बुलाया जाता है, लेकिन इससे यह साबित नहीं हो सकता कि प्रत्येक नाम एक अलग व्यक्ति का हवाला देता है। यदि ऐसा होता तो क्या परमेश्वर में असंख्य व्यक्ति न होते? पुराने नियम में जो लिखा है, वह यहोवा का कार्य है, व्यवस्था के युग की शुरुआत के लिए स्वयं परमेश्वर के कार्य का एक चरण है। यह परमेश्वर का कार्य था और जैसा उसने कहा, वैसा हुआ और जैसी उसने आज्ञा दी, वैसे स्थिर रहा। यहोवा ने कभी नहीं कहा कि वह पिता है जो कार्य क्रियान्वित करने आया है, न ही उसने कभी पुत्र के मानवजाति के छुटकारे के लिए आने की भविष्यवाणी की। जब यीशु के समय की बात आई, तो केवल यह कहा गया कि परमेश्वर समस्त मानवजाति को छुड़ाने के लिए देह बन गया था, न कि यह कि पुत्र आया था। चूंकि युग एक जैसे नहीं होते और जो कार्य परमेश्वर स्वयं करता है, वह भी अलग

होता है, उसे अपने कार्य को अलग-अलग क्षेत्रों में क्रियान्वित करना होता है। इस तरह, वह पहचान भी अलग होती है, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य का मानना है कि यहोवा यीशु का पिता है, लेकिन यह वास्तव में यीशु ने स्वीकार नहीं किया था, जिसने कहा: "हम पिता और पुत्र के रूप में कभी अलग नहीं थे; मैं और स्वर्ग में पिता एक हैं। पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ; जब मनुष्य पुत्र को देखता है, तो वे स्वर्गिक पिता को देख रहे हैं।" जब यह सब कहा जा चुका है, पिता हो या पुत्र, वे एक आत्मा हैं, अलग-अलग व्यक्तियों में विभाजित नहीं हैं। जब मनुष्य समझाने की कोशिश करता है, तो अलग-अलग व्यक्तियों के विचार के साथ ही मामला जटिल हो जाता है, साथ ही पिता, पुत्र और आत्मा के बीच का संबंध भी। जब मनुष्य अलग-अलग व्यक्तियों की बात करता है, तो क्या यह परमेश्वर को मूर्तरूप नहीं देता? यहां तक कि मनुष्य व्यक्तियों को पहले, दूसरे और तीसरे के रूप में स्थान भी देता है; ये सभी बस मनुष्य की कल्पनाएं हैं, संदर्भ के योग्य नहीं हैं और पूरी तरह अवास्तविक हैं! यदि तुमने उससे पूछा: "कितने परमेश्वर हैं?" वह कहेगा कि परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का त्रित्व है: एक सच्चा परमेश्वर। यदि तुमने फिर पूछा: "पिता कौन है?" वह कहेगा: "पिता स्वर्ग में परमेश्वर का आत्मा है; वह सबका प्रभारी है और स्वर्ग का स्वामी है।" "तो क्या यहोवा आत्मा है?" वह कहेगा: "हाँ!" यदि तुमने फिर उससे पूछा, "पुत्र कौन है?" तो वह कहेगा कि निश्चित रूप से यीशु पुत्र है। "तो यीशु की कहानी क्या है? वह कहाँ से आया था?" वह कहेगा: "यीशु का जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा मरियम के गर्भधारण करने से हुआ था।" तो क्या उसका सार भी आत्मा नहीं है? क्या उसका कार्य भी पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व नहीं करता? यहोवा आत्मा है और उसी तरह यीशु का सार भी है। अब अंत के दिनों में, यह कहना अनावश्यक है कि अभी भी आत्मा कार्य कर रहा है; वे अलग-अलग व्यक्ति कैसे हो सकते हैं? क्या यह महज़ परमेश्वर का आत्मा नहीं जो आत्मा के कार्य को अलग-अलग परिप्रेक्ष्यों से क्रियान्वित कर रहा है? ऐसे तो, व्यक्तियों के बीच कोई अंतर नहीं है। यीशु पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था और सुनिश्चित रूप से, उसका कार्य बिल्कुल पवित्र आत्मा के जैसा था। यहोवा द्वारा क्रियान्वित किए गए कार्य के पहले चरण में, वह न तो देह बना और न मनुष्य के सामने प्रकट हुआ। तो मनुष्य ने कभी उसके प्रकटन को नहीं देखा। कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह कितना बड़ा और कितना ऊँचा था, वह फिर भी आत्मा था, स्वयं परमेश्वर जिसने पहले मनुष्य को बनाया था। अर्थात, वह परमेश्वर का आत्मा था। जब वह बादलों में से मनुष्य से बात करता था, वह केवल एक आत्मा था। किसी ने भी उसके प्रकटन को नहीं देखा; केवल अनुग्रह के युग में जब परमेश्वर का आत्मा देह में आया

और यहूदिया में देहधारी हुआ, तो मनुष्य ने पहली बार एक यहूदी के रूप में देहधारण की छवि देखी। यहोवा की भावना को महसूस नहीं किया जा सकता था। हालांकि, वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था, अर्थात स्वयं यहोवा के आत्मा के गर्भ में आया था, और यीशु का जन्म तब भी परमेश्वर के आत्मा के मूर्तरूप में हुआ था। मनुष्य ने जो सबसे पहले देखा वह यह था कि पवित्र आत्मा यीशु पर एक कबूतर की तरह उतर रहा है; यह यीशु के लिए विशेष आत्मा नहीं था, बल्कि पवित्र आत्मा था। तो क्या यीशु का आत्मा पवित्र आत्मा से अलग हो सकता है? अगर यीशु यीशु है, पुत्र है, और पवित्र आत्मा पवित्र आत्मा है, तो वे एक कैसे हो सकते हैं? यदि ऐसा है तो कार्य क्रियान्वित नहीं किया जा सकता। यीशु के भीतर का आत्मा, स्वर्ग में आत्मा और यहोवा का आत्मा सब एक हैं। इसे पवित्र आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, सात गुना सशक्त आत्मा और सर्वसमावेशी आत्मा कहा जा सकता है। परमेश्वर का आत्मा बहुत से कार्य क्रियान्वित कर सकता है। वह दुनिया को बनाने और पृथ्वी को बाढ़ द्वारा नष्ट करने में सक्षम है; वह सारी मानव जाति को छुटकारा दिला सकता है और इसके अलावा वह सारी मानवजाति को जीत और नष्ट कर सकता है। यह सारा कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा क्रियान्वित किया गया है और उसके स्थान पर परमेश्वर के किसी भी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता था। उसके आत्मा को यहोवा और यीशु के नाम से, साथ ही सर्वशक्तिमान के नाम से भी बुलाया जा सकता है। वह प्रभु और मसीह है। वह मनुष्य का पुत्र भी बन सकता है। वह स्वर्ग में भी है और पृथ्वी पर भी है; वह ब्रह्मांडों के ऊपर और बहुलता के बीच में है। वह स्वर्ग और पृथ्वी का एकमात्र स्वामी है! सृष्टि के समय से अब तक, यह कार्य स्वयं परमेश्वर के आत्मा द्वारा क्रियान्वित किया गया है। यह कार्य स्वर्ग में हो या देह में, सब कुछ उसकी आत्मा द्वारा क्रियान्वित किया जाता है। सभी प्राणी, चाहे स्वर्ग में हों या पृथ्वी पर, उसकी सर्वशक्तिमान हथेली में हैं; यह सब स्वयं परमेश्वर का कार्य है और उसके स्थान पर किसी अन्य के द्वारा नहीं किया जा सकता। स्वर्ग में वह आत्मा है, लेकिन स्वयं परमेश्वर भी है; मनुष्यों के बीच वह देह है, पर स्वयं परमेश्वर बना रहता है। यद्यपि उसे सैकड़ों-हज़ारों नामों से बुलाया जा सकता है, तो भी वह स्वयं है और सारा कार्य उसके आत्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। उसके क्रूसीकरण के माध्यम से सारी मानव जाति का छुटकारा उसके आत्मा का प्रत्यक्ष कार्य था और वैसे ही अंत के दिनों के दौरान सभी देशों और सभी भूभागों के लिए उसकी घोषणा भी। हर समय, परमेश्वर को केवल सर्वशक्तिमान और एक सच्चा परमेश्वर, सभी समावेशी स्वयं परमेश्वर कहा जा सकता है। अलग-अलग व्यक्ति अस्तित्व में नहीं हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का यह विचार तो बिल्कुल

नहीं है! स्वर्ग में और पृथ्वी पर केवल एक ही परमेश्वर है!

परमेश्वर की प्रबंधन योजना छह हजार वर्षों तक फैली है और उसके कार्य में अंतर के आधार पर तीन युगों में विभाजित है: पहला युग पुराने नियम का व्यवस्था का युग है; दूसरा अनुग्रह का युग है; और तीसरा वह है जो कि अंत के दिनों का है—राज्य का युग। प्रत्येक युग में एक अलग पहचान का प्रतिनिधित्व किया जाता है। यह केवल कार्य में अंतर यानी कार्य की आवश्यकताओं के कारण है। व्यवस्था के युग के दौरान कार्य का पहला चरण इस्राएल में क्रियान्वित किया गया था और छुटकारे के कार्य के समापन का दूसरा चरण यहूदिया में क्रियान्वित किया गया था। छुटकारे के कार्य के लिए पवित्र आत्मा के गर्भधारण से और एकमात्र पुत्र के रूप में यीशु का जन्म हुआ। यह सब कार्य की आवश्यकताओं के कारण था। अंत के दिनों में, परमेश्वर अपने कार्य को अन्यजाति राष्ट्रों में विस्तारित करना और वहाँ के लोगों पर विजय प्राप्त करना चाहता है ताकि उनके बीच उसका नाम महान हो। वह सभी सत्य को समझने और उसमें प्रवेश करने में मनुष्य का मार्गदर्शन करना चाहता है। यह सब कार्य एक आत्मा द्वारा क्रियान्वित किया जाता है। हालाँकि वह अलग-अलग दृष्टिकोण से ऐसा कर सकता है तो भी, कार्य की प्रकृति और सिद्धांत एक समान रहते हैं। एक बार जब तुम उन कार्यों के सिद्धांतों और प्रकृति को देखते हो, जो उन्होंने क्रियान्वित किया है, तो तुम्हें पता चल जाएगा कि यह सब एक आत्मा द्वारा किया जाता है। फिर भी कुछ कह सकते हैं: "पिता पिता है; पुत्र पुत्र है; पवित्र आत्मा पवित्र आत्मा है और अंत में वे एक बनेंगे।" तो तुम उन्हें एक कैसे बना सकते हो? पिता और पवित्र आत्मा को एक कैसे बनाया जा सकता है? यदि वे मूल रूप से दो थे, तो चाहे वे एक साथ कैसे भी जोड़ें जाएं, क्या वे दो हिस्से नहीं बने रहेंगे? जब तुम उन्हें एक बनाने को कहते हो, तो क्या यह बस दो अलग हिस्सों को जोड़कर एक बनाना नहीं है? लेकिन क्या पूरे किए जाने से पहले वे दो भाग नहीं थे? प्रत्येक आत्मा का एक विशिष्ट सार होता है और दो आत्माएं एक नहीं बन सकतीं। आत्मा कोई भौतिक वस्तु नहीं है और भौतिक दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु के समान नहीं है। जैसे मनुष्य इसे देखता है, पिता एक आत्मा है, बेटा दूसरा, और पवित्र आत्मा एक और, फिर तीन आत्माएं एक साथ पूरे तीन गिलास पानी की तरह मिलकर पूरा एक बनते हैं। क्या यह तीन को एक बनाना नहीं है? यह एक शुद्ध रूप से ग़लत व्याख्या है! क्या यह परमेश्वर को विभाजित करना नहीं है? पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी को एक कैसे बनाया जा सकता है? क्या वे भिन्न प्रकृति वाले तीन भाग नहीं हैं? अभी भी ऐसे हैं, जो कहते हैं, "क्या परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया कि यीशु उसका प्रिय पुत्र है?" यीशु परमेश्वर का प्रिय पुत्र

है, जिस पर वह प्रसन्न है—यह निश्चित रूप से परमेश्वर ने स्वयं ही कहा था। यह परमेश्वर की स्वयं के लिए गवाही थी, लेकिन केवल एक अलग परिप्रेक्ष्य से, स्वर्ग में आत्मा के अपने स्वयं के देहधारण को गवाही देना। यीशु उसका देहधारण है, स्वर्ग में उसका पुत्र नहीं। क्या तुम समझते हो? यीशु के वचन, "मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है," क्या यह संकेत नहीं देते कि वे एक आत्मा हैं? और यह देहधारण के कारण नहीं है कि वे स्वर्ग और पृथ्वी के बीच अलग हो गए थे? वास्तव में, वे अभी भी एक हैं; चाहे कुछ भी हो, यह केवल परमेश्वर की स्वयं के लिए गवाही है। युग में परिवर्तन, कार्य की आवश्यकताओं और उसकी प्रबंधन योजना के विभिन्न चरणों के कारण, जिस नाम से मनुष्य उसे बुलाता है, वह भी अलग हो जाता है। जब वह कार्य के पहले चरण को क्रियान्वित करने आया था, तो उसे केवल यहोवा, इस्राएलियों का चरवाहा ही कहा जा सकता था। दूसरे चरण में, देहधारी परमेश्वर को केवल प्रभु और मसीह कहा जा सकता था। परंतु उस समय, स्वर्ग में आत्मा ने केवल यह बताया था कि वह परमेश्वर का प्यारा पुत्र है और उसके परमेश्वर का एकमात्र पुत्र होने का कोई उल्लेख नहीं किया था। ऐसा हुआ ही नहीं था। परमेश्वर की एकमात्र संतान कैसे हो सकती है? तब क्या परमेश्वर मनुष्य नहीं बन जाता? क्योंकि वह देहधारी था, उसे परमेश्वर का प्रिय पुत्र कहा गया और इससे पिता और पुत्र के बीच का संबंध आया। यह बस स्वर्ग और पृथ्वी के बीच जो विभाजन है, उसके कारण हुआ। यीशु ने देह के परिप्रेक्ष्य से प्रार्थना की। चूंकि उसने इस तरह की सामान्य मानवता की देह को धारण किया था, यह उस देह के परिप्रेक्ष्य से है, जो उसने कहा: “मेरा बाहरी आवरण एक सृजित प्राणी का है। चूंकि मैंने इस धरती पर आने के लिए देहधारण किया है, अब मैं स्वर्ग से बहुत दूर हूँ।” इस कारण से, वह केवल परमपिता परमेश्वर से देह के परिप्रेक्ष्य से ही प्रार्थना कर सकता था। यह उसका कर्तव्य था और यह वह था, जो परमेश्वर के देहधारी आत्मा में होना चाहिए। यह नहीं कहा जा सकता कि वह परमेश्वर नहीं था क्योंकि वह देह के दृष्टिकोण से पिता से प्रार्थना करता था। यद्यपि उसे परमेश्वर का प्रिय पुत्र कहा जाता था, वह अभी भी परमेश्वर था क्योंकि वह आत्मा का देहधारण था और उसका सार अब भी आत्मा का था। लोग ताज्जुब करते हैं कि वह क्यों प्रार्थना करता था, जब वह स्वयं परमेश्वर था। यह इसलिए क्योंकि वह देहधारी परमेश्वर था, देह के भीतर रह रहा परमेश्वर था, न कि स्वर्ग में आत्मा। जैसे मनुष्य इसे देखता है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी परमेश्वर हैं। केवल तीनों से एक बनने वाला ही एक सच्चा परमेश्वर माना जा सकता है और इस तरह उसकी शक्ति असाधारण रूप से महान है। अभी भी ऐसे हैं, जो कहते हैं कि केवल इस तरह से वह सात गुना सशक्त आत्मा है। जब पुत्र ने अपने आने के बाद

प्रार्थना की, तो वह आत्मा थी, जिससे उसने प्रार्थना की थी। वास्तव में, वह एक सृजित प्राणी होने के परिप्रेक्ष्य से प्रार्थना कर रहा था। क्योंकि देह पूर्ण नहीं है, वह पूर्ण नहीं था और जब वह देह में आया, तो उसमें कई कमजोरियां थीं और वह देह में अपना कार्य क्रियान्वित करते हुए बहुत परेशान था। यही कारण है कि क्रूस पर चढ़ने से पहले उसने परमपिता परमेश्वर से तीन बार प्रार्थना की और साथ ही उससे पहले भी कई बार प्रार्थना की थी। उसने अपने शिष्यों के बीच प्रार्थना की; अकेले एक पहाड़ पर प्रार्थना की; उसने मछली पकड़ने वाली नाव पर रहते हुए प्रार्थना की; उसने लोगों की भीड़ के बीच प्रार्थना की; खाना खाते वक्त प्रार्थना की; और दूसरों को आशीष देते समय उसने प्रार्थना की। उसने ऐसा क्यों किया? उसने आत्मा से प्रार्थना की थी; वह आत्मा से प्रार्थना कर रहा था, स्वर्ग में परमेश्वर से, देह के परिप्रेक्ष्य से। इसलिए मनुष्य के दृष्टिकोण से, यीशु कार्य के उस चरण में पुत्र बन गया। इस चरण में हालांकि वह प्रार्थना नहीं करता। ऐसा क्यों है? इसका कारण है कि वह जो उत्पन्न करता है, वह वचन का कार्य है और वचन का न्याय और ताड़ना है। उसे प्रार्थना की कोई आवश्यकता नहीं है और उसकी सेवकाई को बोलना है। वह क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता और लोग उसे उन्हें नहीं सौंपते, जो सत्ता में हैं। वह केवल अपना कार्य क्रियान्वित करता है। जिस वक्त यीशु ने प्रार्थना की, तो वह स्वर्ग के राज्य के अवतरण के लिए पिता की इच्छा पूरी होने और आने वाले कार्य के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था। इस चरण में, स्वर्ग का राज्य पहले ही उतर चुका है, तो क्या उसे अब भी प्रार्थना करने की ज़रूरत है? उसका कार्य युग खत्म करने का है और अब कोई नया युग नहीं है, इसलिए क्या अगले चरण के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है? अफ़सोस कि ऐसा नहीं है!

मनुष्य के स्पष्टीकरण में कई विरोधाभास हैं। वास्तव में, ये सभी मनुष्य की धारणाएं हैं; बिना किसी जाँच-पड़ताल के तुम सभी विश्वास कर लोगे कि वे सही हैं। क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर का त्रित्व का यह विचार मनुष्य की धारणा है? मनुष्य का कोई ज्ञान पूरा और संपूर्ण नहीं है। हमेशा अशुद्धियां होती हैं और मनुष्य के बहुत अधिक विचार हैं; यह दर्शाता है कि एक सृजन किया गया प्राणी, परमेश्वर के कार्य की व्याख्या कर ही नहीं सकता। मनुष्य के मन में बहुत कुछ है, सभी तर्क और विचार से आता है, जो सत्य के साथ संघर्ष करता है। क्या तुम्हारा तर्क परमेश्वर के कार्य का पूरी तरह से विश्लेषण कर सकता है? क्या तुम यहोवा के सभी कार्यों की अंतर्दृष्टि पा सकते हो? क्या यह तुम एक मानव होकर सब कुछ देख सकते हो या स्वयं परमेश्वर ही अनंत से अनंत तक देखने में सक्षम है? क्या तुम बीते अनंत काल से आने वाले

अनंत काल तक देख सकता है या यह परमेश्वर है, जो ऐसा कर सकता है? तुम्हारा क्या कहना है? परमेश्वर की व्याख्या करने के लिए तुम कैसे योग्य हो? तुम्हारे स्पष्टीकरण का आधार क्या है? क्या तुम परमेश्वर हो? स्वर्ग और पृथ्वी, और इसमें मौजूद सभी चीज़ें स्वयं परमेश्वर द्वारा बनाई गई थीं। यह तुम नहीं थे जिसने यह किया था, तो तुम ग़लत व्याख्याएं क्यों दे रहे हो? अब, क्या तुम त्रयात्मक परमेश्वर में विश्वास करना जारी रखे हो? क्या तुम्हें नहीं लगता कि इस तरह यह बहुत बोझिल है? तुम्हारे लिए सबसे अच्छा होगा कि तुम एक परमेश्वर में विश्वास करो, न कि तीन में। हल्का होना सबसे अच्छा है क्योंकि प्रभु का भार हल्का है।

अभ्यास (3)

तुम लोगों में अपने आप परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने, अपने बल पर परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने, और दूसरों की अगुआई के बिना एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन जीने में सक्षम होने के लिए स्वतंत्र रूप से रहने की क्षमता होनी चाहिए। तुम्हें जीने, सच्चे अनुभव में प्रवेश करने और सच्ची अंतर्दृष्टियाँ पाने के लिए परमेश्वर द्वारा आज बोले जा रहे वचनों पर निर्भर रहने में सक्षम होना चाहिए। केवल ऐसा करके ही तुम अडिग रह पाओगे। आज, बहुत लोग भविष्य के क्लेशों और परीक्षणों को पूरी तरह से नहीं समझते। भविष्य में कुछ लोग क्लेशों का अनुभव करेंगे, और कुछ लोग दंड का अनुभव करेंगे। यह दंड अधिक कठोर होगा; यह तथ्यों का आना होगा। आज तुम जो अनुभव, अभ्यास और अभिव्यक्त करते हो, वे सब भविष्य के परीक्षणों की नींव डालते हैं, और तुम्हें कम से कम स्वतंत्र रूप से जीने में सक्षम होना चाहिए। आज कलीसिया में कई लोगों की स्थिति आम तौर पर निम्नानुसार है : यदि कार्य करने के लिए अगुआ और कार्यकर्ता हैं, तो वे प्रसन्न हैं, और यदि नहीं हैं, तो वे अप्रसन्न हैं। वे कलीसिया के कार्य पर कोई ध्यान नहीं देते, और न ही अपने आध्यत्मिक जीवन पर ध्यान देते हैं, और उनके पास थोड़ी-सी भी ज़िम्मेदारी नहीं हैं—वे हानहाओ पक्षी की तरह अव्यवस्थित ढंग से जीते हैं।[क] स्पष्ट रूप से कहूँ तो, कई लोगों पर मैंने जो कार्य किया है, वह केवल जीतने का कार्य है, क्योंकि कई लोग मूलभूत रूप से पूर्ण बनाए जाने के अयोग्य हैं। केवल लोगों के एक छोटे-से हिस्से को ही पूर्ण बनाया जा सकता है। यदि इन वचनों को सुनकर तुम सोचते हो, "चूँकि परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य केवल लोगों को जीतने के लिए है, इसलिए मैं केवल बेमन से अनुसरण करूँगा," तो इस तरह का दृष्टिकोण कैसे

स्वीकार्य हो सकता है? यदि तुम्हारे पास वास्तव में विवेक है, तो तुम्हारे पास बोझ और उत्तरदायित्व की भावना अवश्य होनी चाहिए। तुम्हें कहना चाहिए : "चाहे मुझे जीता जाए या पूर्ण बनाया जाए, मुझे गवाही देने का यह चरण सही ढंग से पूरा करना चाहिए।" परमेश्वर के एक प्राणी के रूप में व्यक्ति परमेश्वर द्वारा सर्वथा जीता जा सकता है, और अंततः वह परमेश्वर से प्रेम रखने वाले दिल से परमेश्वर के प्रेम को चुकाते हुए और पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित होते हुए, परमेश्वर को संतुष्ट करने में सक्षम हो जाता है। यह मनुष्य का उत्तरदायित्व है, यह वह कर्तव्य है जिसे मनुष्य को अवश्य करना चाहिए, और यह वह बोझ है जिसे मनुष्य द्वारा अवश्य वहन किया जाना चाहिए, और मनुष्य को यह आदेश पूरा करना चाहिए। केवल तभी वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करता है। आज, तुम कलीसिया में जो करते हो, क्या वह तुम्हारे उत्तरदायित्व की पूर्ति है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम पर बोझ है या नहीं, और यह तुम्हारे अपने ज्ञान पर निर्भर करता है। इस कार्य का अनुभव करने में यदि मनुष्य जीत लिया जाता है और उसे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तो वह अपनी संभावनाओं या भाग्य की परवाह किए बिना आज्ञाकारिता में सक्षम हो जाएगा। इस तरह से, परमेश्वर का महान कार्य अपनी संपूर्णता में संपन्न होगा, क्योंकि तुम लोग इससे अधिक किसी चीज में सक्षम नहीं हो, और किसी भी उच्च माँग को पूरा करने में असमर्थ हो। फिर भी भविष्य में कुछ लोगों को पूर्ण बनाया जाएगा। उनकी क्षमता में सुधार होगा, अपनी आत्माओं में उन्हें अधिक गहरा ज्ञान प्राप्त होगा, उनका जीवन विकसित होगा...। मगर कुछ लोग इसे प्राप्त करने में पूरी तरह से असमर्थ हैं, और इसलिए वे बचाए नहीं जा सकते। मेरे यह कहने का एक कारण है कि उन्हें क्यों बचाया नहीं जा सकता। भविष्य में कुछ जीते जाएँगे, कुछ समाप्त कर दिए जाएँगे, कुछ पूर्ण बना दिए जाएँगे, और कुछ इस्तेमाल किए जाएँगे—और इसलिए कुछ लोग क्लेशों का अनुभव करेंगे, कुछ लोग दंड (प्राकृतिक आपदाओं और मानव-निर्मित दुर्भाग्य दोनों) का अनुभव करेंगे, कुछ समाप्त कर दिए जाएँगे, और कुछ जीवित रहेंगे। इसमें प्रत्येक को किस्म के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा और प्रत्येक समूह व्यक्ति की एक किस्म का प्रतिनिधित्व करेगा। सभी लोगों को समाप्त नहीं किया जाएगा, न ही सभी लोगों को पूर्ण बनाया जाएगा। इसका कारण यह है कि चीनी लोगों की क्षमता बहुत ख़राब है, और उनमें केवल एक छोटी-सी संख्या ऐसी है, जिसमें वह आत्म-जागरूकता है, जो पौलुस में थी। तुममें से कुछ लोगों में परमेश्वर को प्यार करने का वही दृढ़ संकल्प है, जो पतरस में था, या उसी प्रकार का विश्वास है, जैसा अय्यूब में था। तुम लोगों में मुश्किल से ही कोई ऐसा है, जो यहोवा से वैसे ही डरता है और उसकी वैसे ही

सेवा करता है, जैसे दाऊद ने की थी, जिसके पास वफ़ादारी का वही स्तर है। तुम लोग कितने दयनीय हो!

आज, पूर्ण बनाए जाने की बात मात्र एक पहलू है। चाहे जो भी हो, तुम लोगों को गवाही देने के इस चरण को सही ढंग से पूरा करना चाहिए। यदि तुम लोगों से मंदिर में परमेश्वर की सेवा करने के लिए कहा जाता, तो तुम ऐसा कैसे करते? यदि तुम याजक नहीं होते, और तुम्हारे पास परमेश्वर के ज्येष्ठ पुत्रों या बेटों की हैसियत न होती, तो क्या तुम तब भी वफ़ादारी में सक्षम होते? क्या तुम तब भी राज्य के विस्तार के कार्य में अपने सारे प्रयास लगाने में सक्षम होते? क्या तुम तब भी परमेश्वर द्वारा आदेशित कार्य को ठीक से करने में सक्षम होते? इस बात पर ध्यान दिए बिना कि तुम्हारी ज़िंदगी कितनी विकसित हुई है, आज का कार्य तुम्हें अंदर से पूरी तरह से आश्वस्त होने और अपनी सभी धारणाओं को अलग रखने के लिए प्रेरित करेगा। चाहे तुम्हारे पास वह चीज़ हो या नहीं, जो जीवन का अनुसरण करने के लिए चाहिए, परमेश्वर का कार्य तुम्हें पूरी तरह से आश्वस्त करेगा। कुछ लोग कहते हैं : "मैं बस परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, और मैं यह नहीं समझता कि जीवन का अनुसरण करने का क्या अर्थ है।" और कुछ कहते हैं : "मैं परमेश्वर पर अपने विश्वास में पूरा दिग्भ्रमित हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, और इसलिए मैं ताड़ित किए जाने के लिए तैयार हूँ।" यहाँ तक कि इस तरह के लोगों को भी, जो ताड़ित या नष्ट किए जाने के लिए तैयार हैं, यह स्वीकार करवाया जाना चाहिए कि आज का कार्य परमेश्वर द्वारा किया जाता है। कुछ लोग यह भी कहते हैं : "मैं पूर्ण बनाए जाने के लिए नहीं कहता, लेकिन आज मैं परमेश्वर के समस्त प्रशिक्षण को स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ, और मैं सामान्य मानवता को जीने, अपनी क्षमता को सुधारने और परमेश्वर की सभी व्यवस्थाओं का पालन करने के लिए तैयार हूँ...।" इसमें, उन्हें भी जीत लिया गया है और उनसे भी गवाही दिलवाई गई है, जिससे साबित होता है कि इन लोगों के भीतर परमेश्वर के कार्य का कुछ ज्ञान है। कार्य का यह चरण बहुत शीघ्रता से किया गया है, और भविष्य में, यह विदेशों में और भी तीव्रता से किया जाएगा। आज, विदेशों में लोग शायद ही प्रतीक्षा कर सकते हैं, वे सब चीन की ओर दौड़ रहे हैं—और इसलिए यदि तुम लोग पूर्ण नहीं बनाए जा सकते, तो तुम लोग विदेश में लोगों को रोकोगे। उस समय, चाहे तुम लोगों ने कितने भी अच्छे ढंग से प्रवेश किया हो या तुम कैसे भी हो, जब समय आएगा तो मेरा कार्य समाप्त और पूरा हो जाएगा! मेरे कार्य में तुम लोगों द्वारा देर नहीं की जाएगी। मैं समस्त मानवजाति का कार्य करता हूँ, और मुझे तुम लोगों पर और अधिक समय खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं है! तुम लोग अत्यधिक अनुत्साही हो, तुम लोगों में आत्म-जागरूकता की अत्यधिक कमी है! तुम लोग

पूर्ण बनाए जाने के योग्य नहीं हो—तुम लोगों में मुश्किल से ही कोई संभावना है! भविष्य में, भले ही लोग इतने ढीले और आलसी बने रहें, और अपनी क्षमताओं को सुधारने में असमर्थ रहें, इससे समस्त ब्रह्मांड का कार्य बाधित नहीं होगा। जब परमेश्वर के कार्य के पूरा होने का समय आएगा, तो वह पूरा हो जाएगा, और जब लोगों को समाप्त किए जाने का समय आएगा, तो वे समाप्त कर दिए जाएँगे। निस्संदेह, जिन लोगों को पूर्ण किया जाना चाहिए, और जो पूर्ण होने के योग्य हैं, वे भी पूर्ण किए जाएँगे—लेकिन यदि तुम लोगों के पास कोई आशा नहीं है, तो परमेश्वर का कार्य तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं करेगा! अंततः यदि तुम जीत लिए जाते हो, तो यह भी गवाही देना माना जा सकता है। इस बात की सीमाएँ हैं कि परमेश्वर तुम लोगों से क्या कहता है; मनुष्य जितना ऊँचा आध्यात्मिक कद प्राप्त करने में सक्षम होता है, उतनी ही ऊँची गवाही की अपेक्षा उससे की जाती है। ऐसा नहीं है कि, जैसी मनुष्य कल्पना करता है, इस तरह की गवाही बहुत उच्चतम सीमाओं तक पहुँच जाएगी और कि यह ज़बर्दस्त होगी—तुम चीनी लोगों में इसे हासिल कर सकने का कोई तरीका नहीं है। मैं इस पूरे समय तुम लोगों के साथ व्यस्त रहा हूँ, और तुम लोगों ने स्वयं इसे देखा है : मैं तुम लोगों से प्रतिरोध न करने, विद्रोही न होने, मेरी पीठ पीछे ऐसी चीज़ें न करने के लिए कह चुका हूँ, जो बाधा डालती हैं या विनाशकारी हैं। मैंने इस पर कई बार लोगों की सीधे तौर पर आलोचना की है, लेकिन यह भी पर्याप्त नहीं है—जिस क्षण वे मुड़ते हैं, वे बदल जाते हैं, जबकि कुछ लोग बिना किसी मलाल के गुप-चुप तरीके से मेरा प्रतिरोध करते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे इसका कुछ भी पता नहीं है? क्या तुम्हें लगता है कि तुम मेरे लिए परेशानी पैदा कर सकते हो और इससे कुछ नहीं होगा? क्या तुम्हें लगता है कि जब तुम मेरी पीठ पीछे मेरे कार्य को नष्ट करने का प्रयास करते हो, तो मुझे पता नहीं चलता? क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारी छोटी-मोटी चालें तुम्हारे चरित्र का स्थान ले सकती हैं? तुम प्रकट रूप से हमेशा आज्ञाकारी हो, लेकिन गुप्त रूप से विश्वासघाती हो, तुम अपने दिल में कुटिल विचारों को छिपाते हो, और यहाँ तक कि तुम जैसे लोगों के लिए मृत्यु भी पर्याप्त दंड नहीं है। क्या तुम्हें लगता है कि पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हारे भीतर किया गया कुछ मामूली कार्य मेरे प्रति तुम्हारे सम्मान का स्थान ले सकता है? क्या तुम्हें लगता है कि तुमने स्वर्ग को पुकारकर प्रबुद्धता प्राप्त कर ली है? तुम्हें कोई शर्म नहीं है! तुम बहुत बेकार हो! क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारे "अच्छे कर्म" स्वर्ग जा रहे थे, और उनके परिणामस्वरूप उसने अपवाद के तौर पर तुम्हें यत्किंचित प्रतिभा प्रदान कर दी, जिसने तुम्हें दूसरों को धोखा देने और मुझे धोखा देने की अनुमति देते हुए तुम्हें वाक्पटु बना दिया है? तुम कितने अविवेकी हो! क्या तुम जानते हो कि

तुम्हारी प्रबुद्धता कहाँ से आती है? क्या तुम नहीं जानते कि किसका भोजन खाकर तुम बड़े हो रहे हो? तुम कितने निर्लज्ज हो! तुम लोगों में से कुछ लोग चार या पाँच साल तक व्यवहार किए जाने के बाद भी नहीं बदले हैं, और तुम इन मामलों के बारे में स्पष्ट हो। तुम्हें अपनी प्रकृति के बारे में स्पष्ट होना चाहिए और जब किसी दिन तुम्हें त्याग दिया जाएगा, तो आपत्ति मत करना। ऐसे कुछ लोगों के साथ, जो अपनी सेवा में अपने ऊपर और नीचे वाले दोनों को धोखा देते हैं, अत्यधिक व्यवहार किया गया है; कुछ लोगों के साथ उनके धनलोलुप होने की वजह से भी कम व्यवहार नहीं किया गया है; पुरुषों और महिलाओं के बीच स्पष्ट सीमाएँ न बनाए रखने की वजह से भी कुछ लोगों के साथ अकसर व्यवहार किया गया है; कुछ लोगों को इसलिए अत्यधिक व्यवहार का भागी बनाया गया है क्योंकि वे आलसी हैं, केवल शरीर के प्रति सचेत हैं और जब कलीसिया में आते हैं तो सिद्धांतों के अनुसार कार्य नहीं करते; कुछ लोगों को, जो जहाँ भी जाते हैं, गवाही देने में विफल रहते हैं, मनमरज़ी और लापरवाही से कार्य करते हैं और यहाँ तक कि जानबूझकर पाप करते हैं, इस बारे में कई बार चेतावनी दी गई है; कुछ लोग सभाओं के दौरान केवल वचनों और सिद्धांतों की बात करते हैं, दूसरे सभी लोगों से श्रेष्ठतर होने का दिखावा करते हैं, उनमें सत्य की थोड़ी-सी भी वास्तविकता नहीं होती, और वे अपने भाइयों-बहनों के साथ साज़िश और होड़ करते हैं—वे प्रायः इसी वजह से उजागर किए गए हैं। मैंने ये वचन तुम लोगों से कई बार बोले हैं, और आज, मैं इस बारे में ज्यादा नहीं बोलूँगा—तुम जो चाहे करो! अपने निर्णय स्वयं लो! कई लोग न सिर्फ एक या दो वर्ष तक इस तरह से व्यवहार किए जाने के भागी बनाए गए हैं, कुछ के लिए यह तीन या चार वर्ष रहा है, और कुछ ने विश्वासी बन जाने पर व्यवहार किए जाने के भागी बनाए जाने का एक दशक से अधिक समय तक अनुभव किया है, किंतु आज के दिन तक उनमें थोड़ा-सा ही बदलाव हुआ है। तुम क्या कहते हो, क्या तुम सूअरों की तरह नहीं हो? क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर तुम्हारे प्रति अन्यायी है? ऐसा न सोचो कि यदि तुम लोग एक निश्चित स्तर तक पहुँचने में असमर्थ रहे, तो परमेश्वर का कार्य समाप्त नहीं होगा। यदि तुम लोग परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी करने में असमर्थ होगे, तो क्या परमेश्वर तब भी तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा? मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से बता देता हूँ—ऐसा मामला नहीं है। चीजों का ऐसा चित्ताकर्षक दृष्टिकोण मत रखो! आज के कार्य की एक समय-सीमा है, और परमेश्वर यूँ ही तुम्हारे साथ खेल नहीं रहा है! पहले, जब सेवाकर्मियों के परीक्षण का अनुभव करने की बात आई, तो लोगों ने सोचा कि यदि उन्हें परमेश्वर की अपनी गवाही में दृढ़ता से खड़े होना और उसके द्वारा जीता जाना है, तो उन्हें एक निश्चित बिंदु तक पहुँचना होगा—उन्हें

स्वेच्छा से और खुशी से सेवाकर्मी होना था, और उन्हें हर दिन परमेश्वर की स्तुति करनी थी, और थोड़ा-सा भी बेलगाम या लापरवाह नहीं होना था। उन्होंने सोचा कि केवल तभी वे सच में सेवाकर्मी होते, लेकिन क्या यह वास्तव में ऐसा ही मामला है? उस समय विभिन्न प्रकार के लोग उजागर किए गए; उन्होंने कई तरह के व्यवहार प्रदर्शित किए। कुछ ने शिकायतें कीं, कुछ ने धारणाएँ प्रचारित कीं, कुछ ने सभाओं में जाना छोड़ दिया, और कुछ ने तो कलीसिया के पैसे तक बाँट दिए। भाई-बहन एक-दूसरे के ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे थे। यह वास्तव में एक महान मुक्ति थी, लेकिन इसके बारे में एक बात अच्छी थी : कोई भी पीछे नहीं हटा। यह सबसे मज़बूत बिंदु था। इसकी वजह से उन्होंने शैतान के सामने गवाही का एक चरण पेश किया, और बाद में परमेश्वर के लोगों के रूप में पहचान प्राप्त की और आज तक सफल रहे हैं। परमेश्वर का कार्य उस तरह से नहीं किया जाता, जैसी तुम कल्पना करते हो, इसके बजाय, जब समय समाप्त हो जाता है, तो चाहे तुम किसी भी बिंदु पर क्यों न पहुँचे हो, कार्य समाप्त हो जाएगा। कुछ लोग कह सकते हैं : "इस तरह करके तुम लोगों को बचाते या उनसे प्यार नहीं करते—तुम धार्मिक परमेश्वर नहीं हो।" मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से बता देता हूँ : आज मेरे कार्य का मर्म तुम्हें जीतना और तुमसे गवाही दिलवाना है। तुम्हें बचाना तो सिर्फ उससे जुड़ा हुआ एक कार्य है; तुमको बचाया जा सकता है या नहीं, यह तुम्हारी स्वयं की खोज पर निर्भर करता है, और मुझसे संबद्ध नहीं है। फिर भी मुझे तुम्हें जीतना चाहिए; हमेशा मुझ पर हावी होने का प्रयास मत करो—आज मैं कार्य करता और तुम्हें बचाता हूँ, तुम नहीं!

आज तुम लोगों ने जो समझा है, वह पूरे इतिहास में ऐसे किसी भी व्यक्ति से ऊँचा है, जिसे पूर्ण नहीं बनाया गया था। चाहे तुम लोगों का परीक्षणों का ज्ञान हो या परमेश्वर में आस्था, वे परमेश्वर के किसी भी विश्वासी से ऊँचे हैं। जिन चीजों को तुम लोग समझते हो, ये वे हैं, जिन्हें तुम लोग परिवेशों के परीक्षणों से गुजरने से पहले जान गए हो, लेकिन तुम्हारा वास्तविक आध्यात्मिक कद उनके बिलकुल भी अनुरूप नहीं है। तुम लोग जो जानते हो, वह उससे अधिक है, जिसे तुम लोग अभ्यास में लाते हो। यद्यपि तुम लोग कहते हो कि जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, उन्हें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, और आशीषों के लिए नहीं बल्कि केवल परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए, किंतु जो तुम्हारे जीवन में अभिव्यक्त होता है, वह इससे एकदम अलग है, और बहुत दूषित हो गया है। अधिकतर लोग शांति और अन्य लाभों के लिए परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। जब तक तुम्हारे लिए लाभप्रद न हो, तब तक तुम परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते, और यदि तुम परमेश्वर के अनुग्रह प्राप्त नहीं कर पाते, तो तुम खीज जाते

हो। तुमने जो कहा, वो तुम्हारा असली आध्यात्मिक कद कैसे हो सकता है? जब अनिवार्य पारिवारिक घटनाओं, जैसे कि बच्चों का बीमार पड़ना, प्रियजनों का अस्पताल में भर्ती होना, फसल की ख़राब पैदावार, और परिवार के सदस्यों द्वारा उत्पीड़न, की बात आती है, तो ये अकसर घटित होने वाले रोज़मर्रा के मामले भी तुम्हारे लिए बहुत अधिक हो जाते हैं। जब ऐसी चीजें होती हैं, तो तुम दहशत में आ जाते हो, तुम नहीं जानते कि क्या करना है—और अधिकांश समय तुम परमेश्वर के बारे में शिकायत करते हो। तुम शिकायत करते हो कि परमेश्वर के वचनों ने तुमको धोखा दिया है, कि परमेश्वर के कार्य ने तुम्हारा उपहास किया है। क्या तुम लोगों के ऐसे ही विचार नहीं हैं? क्या तुम्हें लगता है कि ऐसी चीजें कभी-कभार ही तुम लोगों के बीच में होती हैं? तुम लोग हर दिन इसी तरह की घटनाओं के बीच रहते हुए बिताते हो। तुम लोग परमेश्वर में अपने विश्वास की सफलता के बारे में, और परमेश्वर की इच्छा कैसे पूरी करें, इस बारे में ज़रा भी विचार नहीं करते। तुम लोगों का असली आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है, यहाँ तक कि नन्हे चूज़े से भी छोटा। जब तुम्हारे पारिवारिक व्यवसाय में नुकसान होता है, तो तुम परमेश्वर के बारे में शिकायत करते हो, जब तुम लोग स्वयं को परमेश्वर की सुरक्षा से रहित किसी परिवेश में पाते हो, तब भी तुम परमेश्वर के बारे में शिकायत करते हो, यहाँ तक कि तुम तब भी शिकायत करते हो, जब तुम्हारे चूज़े मर जाते हैं या तुम्हारी बूढ़ी गाय बाड़े में बीमार पड़ जाती है। तुम तब शिकायत करते हो, जब तुम्हारे बेटे का शादी करने करने का समय आता है, लेकिन तुम्हारे परिवार के पास पर्याप्त धन नहीं होता; तुम मेज़बानी का कर्तव्य निभाना चाहते हो, लेकिन तुम्हारे पास पैसे नहीं होते, तब भी तुम शिकायत करते हो। तुम शिकायतों से लबालब भरे हो, और इस वजह से कभी-कभी सभाओं में भी नहीं जाते या परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते भी नहीं हो, कभी-कभी लंबे समय तक नकारात्मक भी हो जाते हो। आज तुम्हारे साथ जो कुछ भी होता है, उसका तुम्हारी संभावनाओं या भाग्य से कोई संबंध नहीं होता; ये चीजें तब भी होतीं, जब तुम परमेश्वर पर विश्वास न करते, मगर आज तुम उनका उत्तरदायित्व परमेश्वर पर डाल देते हो और जोर देकर कहते हो कि परमेश्वर ने तुम्हें हटा दिया है। परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास का क्या हाल है? क्या तुमने अपना जीवन सचमुच अर्पित किया है? यदि तुम लोगों ने अय्यूब के समान परीक्षण सहे होते, तो आज परमेश्वर का अनुसरण करने वाले तुम लोगों में से कोई भी अडिग न रह पाता, तुम सभी लोग नीचे गिर जाते। और, निस्संदेह, तुम लोगों और अय्यूब के बीच ज़मीन-आसमान का अंतर है। आज यदि तुम लोगों की आधी संपत्ति जब्त कर ली जाए, तो तुम लोग परमेश्वर के अस्तित्व को नकारने की हिम्मत कर लोगे; यदि तुम्हारा

बेटा या बेटी तुमसे ले लिया जाए, तो तुम चिल्लाते हुए सड़कों पर दौड़ोगे कि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है; यदि आजीविका कमाने का तुम्हारा एकमात्र रास्ता बंद हो जाए, तो तुम परमेश्वर से उसके बारे में पूछताछ करने की कोशिश करोगे; तुम पूछोगे कि मैंने तुम्हें डराने के लिए शुरुआत में इतने सारे वचन क्यों कहे। ऐसा कुछ नहीं है, जिसे तुम लोग ऐसे समय में करने की हिम्मत न करो। यह दर्शाता है कि तुम लोगों ने वास्तव में कोई सच्ची अंतर्दृष्टि नहीं पाई है, और तुम्हारा कोई वास्तविक आध्यात्मिक कद नहीं है। इसलिए, तुम लोगों में परीक्षण अत्यधिक बड़े हैं, क्योंकि तुम लोग बहुत ज्यादा जानते हो, लेकिन तुम लोग वास्तव में जो समझते हो, वह उसका हज़ारवाँ हिस्सा भी नहीं है जिससे तुम लोग अवगत हो। मात्र समझ और ज्ञान पर मत रुको; तुम लोगों ने अच्छी तरह से देखा है कि तुम लोग वास्तव में कितना अभ्यास में ला सकते हो, पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी में से कितनी तुम्हारे कठोर परिश्रम के पसीने से अर्जित की गई है, और तुम लोगों ने अपने कितने अभ्यासों में अपने स्वयं के संकल्प को साकार किया है। तुम्हें अपने आध्यात्मिक कद और अभ्यास को गंभीरता से लेना चाहिए। परमेश्वर में अपने विश्वास में तुम्हें किसी के लिए भी मात्र ढोंग करने का प्रयास नहीं करना चाहिए—अंतत: तुम सत्य और जीवन प्राप्त कर सकते हो या नहीं, यह तुम्हारी स्वयं की खोज पर निर्भर करता है।

फुटनोट :

क. हानहाओ पक्षी की कहानी ईसप की चींटी और टिड्डी की नीति-कथा से काफ़ी मिलती-जुलती है। जब मौसम गर्म होता है, तब हानहाओ पक्षी अपने पड़ोसी नीलकंठ द्वारा बार-बार चेताए जाने के बावजूद घोंसला बनाने के बजाय सोना पसंद करता है। जब सर्दी आती है, तो हानहाओ ठिठुरकर मर जाता है।

अभ्यास (4)

जिस शांति और आनंद के बारे में आज मैं बोलता हूँ, वे वैसे नहीं हैं, जैसे तुम विश्वास करते और समझते हो। तुम सोचा करते थे कि शांति और आनंद का अर्थ है दिन भर प्रसन्न रहना, तुम्हारे परिवार में बीमारी या दुर्भाग्य की अनुपस्थिति होना, अपने हृदय में सदैव खुश रहना, दु:ख की कोई भावना न होना, और एक अवर्णनीय आनंद का होना, चाहे तुम्हारा जीवन किसी भी सीमा तक विकसित हुआ हो। यह तुम्हारे वेतन में वृद्धि और तुम्हारे बेटे को हाल ही में विश्वविद्यालय में दाखिला मिलने के अतिरिक्त था। इन बातों को ध्यान में रखते हुए तुमने परमेश्वर से प्रार्थना की, और यह देखकर कि परमेश्वर का अनुग्रह कितना

अधिक है, तुम उल्लसित हो गए और एक बड़ी मुस्कुराहट तुम्हारे चेहरे पर आ गई, और तुम परमेश्वर का धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सके। ऐसी शांति और आनंद पवित्र आत्मा की उपस्थिति से आने वाली शांति और आनंद नहीं हैं। बल्कि, यह देह की संतुष्टि से पैदा होने वाली शांति और आनंद है। तुम्हें समझना चाहिए कि आज यह कौन-सा युग है; यह अनुग्रह का युग नहीं है, और यह अब वह समय नहीं है जब तुम मात्र रोटी से अपना पेट भरना चाहो। तुम उल्लसित हो सकते हो, क्योंकि तुम्हारे परिवार के साथ सब ठीक चल रहा है, किंतु तुम्हारा जीवन हाँफकर अपनी आखिरी साँस ले रहा है—और इसलिए, चाहे तुम्हारा आनंद कितना भी बड़ा हो, पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ नहीं है। पवित्र आत्मा की उपस्थिति पाना सरल है : तुम्हें जो करना चाहिए उसे ठीक से करो, मनुष्य के कर्तव्य और कार्य अच्छी तरह से करो, और अपनी कमियों की भरपाई करने के लिए आवश्यक चीजों से स्वयं को सुसज्जित करने में सक्षम बनो। यदि तुम्हारे पास अपने जीवन के लिए सदैव एक दायित्व है, और तुम इसलिए खुश हो कि तुमने एक सत्य जान लिया है या परमेश्वर के वर्तमान कार्य को समझ लिया है, तो यह वास्तव में पवित्र आत्मा की उपस्थिति का होना है। या अगर कभी तुम अकसर इसलिए व्यग्र हो जाते हो, क्योंकि तुम्हारा सामना किसी ऐसे मुद्दे से हो जाता है जिससे तुम नहीं जानते कि कैसे गुज़रना है, या तुम किसी ऐसे सत्य को समझने में असमर्थ होते हो, जिसकी संगति की जाती है, तो यह साबित करता है कि पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ है। ये जीवन के अनुभव की सामान्य अवस्थाएँ हैं। तुम्हें पवित्र आत्मा की उपस्थिति के होने और न होने के बीच के अंतर को अवश्य समझना चाहिए, और इस बारे में अपने दृष्टिकोण में बहुत ज्यादा एकांगी नहीं होना चाहिए।

पहले यह कहा जाता था कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति का होना और पवित्र आत्मा का कार्य पाना भिन्न-भिन्न हैं। पवित्र आत्मा की उपस्थिति होने की सामान्य अवस्था सामान्य विचारों, सामान्य विवेक और सामान्य मानवता होने में व्यक्त होती है। व्यक्ति का चरित्र वैसा ही रहेगा, जैसा वह हुआ करता था, किंतु उसके भीतर शांति होगी, और बाह्य रूप से उनमें संत की शिष्टता होगी। वे ऐसे ही होंगे, जब पवित्र आत्मा उनके साथ होता है। जब किसी के पास पवित्र आत्मा की उपस्थिति होती है, तो उसकी सोच सामान्य होती है। जब वे भूखे होते हैं तो वे खाना चाहते हैं, जब वे प्यासे होते हैं तो वे पानी पीना चाहते हैं। ... सामान्य मानवता की ये अभिव्यक्तियाँ पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता नहीं हैं, यह लोगों की सामान्य सोच और पवित्र आत्मा की उपस्थिति होने की सामान्य अवस्था है। कुछ लोग गलती से यह मानते हैं कि जिनमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति होती है, उन्हें भूख नहीं लगती, उन्हें थकान महसूस नहीं होती, और वे परिवार के बारे में

सोचते प्रतीत नहीं होते, उन्होंने अपने आप को देह से लगभग पूरी तरह से अलग कर लिया होता है। वास्तव में, जितना अधिक पवित्र आत्मा लोगों के साथ होता है, उतना अधिक वे सामान्य होते हैं। वे परमेश्वर के लिए कष्ट उठाना और चीज़ों को त्यागना, स्वयं को परमेश्वर के लिए खपाना, और परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होना जानते हैं; इसके अलावा, वे भोजन और वस्त्रों पर विचार करते हैं। दूसरे शब्दों में, उन्होंने सामान्य मानवता का ऐसा कुछ नहीं खोया होता, जो मनुष्य के पास होना चाहिए और जैसा उन्हें होना चाहिए, इसके बजाय, उनमें विवेक विशेष रूप से होता है। कभी-कभी वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं और परमेश्वर के कार्य पर विचार करते हैं; उनके हृदय में विश्वास होता है और वे सत्य का अनुसरण करने के इच्छुक होते हैं। बेशक, पवित्र आत्मा का कार्य इसी बुनियाद पर आधारित है। यदि लोग सामान्य सोच से रहित हैं, तो उनके पास कोई विवेक नहीं है—यह एक सामान्य अवस्था नहीं है। जब लोगों की सोच सामान्य होती है और पवित्र आत्मा उनके साथ होता है, तो उनमें निश्चित रूप से एक सामान्य व्यक्ति का विवेक होता है, और इसलिए, उनकी अवस्था सामान्य होती है। परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने में, पवित्र आत्मा का कार्य कभी-कभार होता है, जबकि पवित्र आत्मा की उपस्थिति लगभग सतत रहती है। जब तक लोगों का विवेक और सोच सामान्य रहते हैं, और जब तक उनकी अवस्थाएँ सामान्य होती हैं, तब पवित्र आत्मा निश्चित रूप से उनके साथ होता है। जब लोगों का विवेक और सोच सामान्य नहीं होते, तो उनकी मानवता सामान्य नहीं होती। यदि इस पल पवित्र आत्मा का कार्य तुममें है, तो पवित्र आत्मा भी निश्चित रूप से तुम्हारे साथ होगा। किंतु यदि पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ है, तो इसका यह अर्थ नहीं कि पवित्र आत्मा तुम्हारे भीतर निश्चित रूप से कार्य कर रहा है, क्योंकि पवित्र आत्मा विशेष समयों पर कार्य करता है। पवित्र आत्मा की उपस्थिति का होना केवल लोगों के सामान्य अस्तित्व को बनाए रख सकता है, किंतु पवित्र आत्मा केवल निश्चित समयों पर ही कार्य करता है। उदाहरण के लिए, यदि तुम कोई अगुआ या कार्यकर्ता हो, तो जब तुम कलीसिया को सिंचन और आपूर्ति प्रदान करते हो, तब पवित्र आत्मा तुम्हें कुछ वचनों से प्रबुद्ध करेगा, जो दूसरों के लिए शिक्षाप्रद होंगे और जो तुम्हारे भाइयों-बहनों की कुछ व्यावहारिक समस्याओं का समाधान कर सकते है—ऐसे समय पर पवित्र आत्मा कार्य कर रहा है। कभी-कभी जब तुम परमेश्वर के वचनों को खा-पी रहे होते हो, तो पवित्र आत्मा तुम्हें कुछ वचनों से प्रबुद्ध कर देता है, जो तुम्हारे अनुभवों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक होते हैं, जो तुम्हें अपनी खुद की अवस्थाओं का अधिक ज्ञान प्राप्त करने देते हैं; यह भी पवित्र आत्मा का कार्य है। कभी-कभी, जैसे मैं बोलता हूँ, तुम लोग सुनते हो, और मेरे

वचनों से अपनी अवस्थाओं को मापने में सक्षम होते हो, और कभी-कभी तुम द्रवित या प्रेरित हो जाते हो; यह सब पवित्र आत्मा का कार्य है। कुछ लोग कहते हैं कि पवित्र आत्मा हर समय उनमें कार्य कर रहा है। यह असंभव है। यदि वे कहते कि पवित्र आत्मा हमेशा उनके साथ है, तो यह यथार्थपरक होता। यदि वे कहते कि उनकी सोच और उनका बोध हर समय सामान्य रहता है, तो यह भी यथार्थपरक होता और दिखाता कि पवित्र आत्मा उनके साथ है। यदि वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा हमेशा उनके भीतर कार्य कर रहा है, कि वे हर पल परमेश्वर द्वारा प्रबुद्ध और पवित्र आत्मा द्वारा द्रवित किए जाते हैं, और हर समय नया ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो यह किसी भी तरह से सामान्य नहीं है। यह पूर्णत: अलौकिक है! बिना किसी संदेह के, ऐसे लोग बुरी आत्माएँ हैं! यहाँ तक कि जब परमेश्वर का आत्मा देह में आता है, तब भी ऐसे समय होते हैं जब उसे भोजन करना चाहिए और आराम करना चाहिए—मनुष्यों की तो बात ही छोड़ दो। जो लोग बुरी आत्माओं से ग्रस्त हो गए हैं, वे देह की कमजोरी से रहित प्रतीत होते हैं। वे सब-कुछ त्यागने और छोड़ने में सक्षम होते हैं, वे भावनाओं से रहित होते हैं, यातना सहने में सक्षम होते हैं और जरा-सी भी थकान महसूस नहीं करते, मानो वे देहातीत हो चुके हों। क्या यह नितांत अलौकिक नहीं है? दुष्ट आत्माओं का कार्य अलौकिक है और कोई मनुष्य ऐसी चीजें प्राप्त नहीं कर सकता। जिन लोगों में विवेक की कमी होती है, वे जब ऐसे लोगों को देखते हैं, तो ईर्ष्या करते हैं : वे कहते हैं कि परमेश्वर पर उनका विश्वास बहुत मजबूत है, उनकी आस्था बहुत बड़ी है, और वे कमज़ोरी का मामूली-सा भी चिह्न प्रदर्शित नहीं करते! वास्तव में, ये सब दुष्ट आत्मा के कार्य की अभिव्यक्तियाँ है। क्योंकि सामान्य लोगों में अनिवार्य रूप से मानवीय कमजोरियाँ होती हैं; यह उन लोगों की सामान्य अवस्था है, जिनमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति होती है।

अपनी गवाही में अडिग रहने का क्या अर्थ है? कुछ लोग कहते हैं कि वे बस वैसे ही अनुसरण करते हैं, जैसे अब करते हैं और इस चिंता में नहीं पड़ते कि वे जीवन प्राप्त करने में सक्षम हैं या नहीं; वे जीवन की खोज नहीं करते किंतु वे पीछे भी नहीं हटते। वे केवल यह स्वीकार करते हैं कि कार्य का यह चरण परमेश्वर द्वारा किया जा रहा है। क्या यह अपनी गवाही में विफल होना नहीं है? ऐसे लोग जीत लिए जाने की गवाही तक नहीं देते। जो लोग जीते जा चुके हैं, वे अन्य सभी की परवाह किए बिना अनुसरण करते हैं और जीवन की खोज करने में सक्षम होते हैं। वे न केवल व्यावहारिक परमेश्वर में विश्वास करते हैं, बल्कि परमेश्वर की सभी व्यवस्थाओं का पालन करना भी जानते हैं। ऐसे हैं वे लोग, जो गवाही देते हैं। जो लोग गवाही नहीं देते, उन्होंने कभी जीवन की खोज नहीं की है और वे अभी भी अस्पष्टता के साथ अनुसरण कर

रहे हैं। तुम अनुसरण कर सकते हो, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम जीते जा चुके हो, क्योंकि तुम्हें परमेश्वर के आज के कार्य की कोई समझ नहीं है। जीते जाने के लिए कुछ शर्तें पूरी करनी आवश्यक हैं। सभी अनुसरण करने वाले जीते नहीं गए हैं, क्योंकि अपने हृदय में तुम इस बारे में कुछ भी नहीं समझते कि तुम्हें आज के परमेश्वर का अनुसरण क्यों करना चाहिए, न ही तुम यह जानते हो कि तुम आज की स्थिति तक कैसे पहुँचे हो, किसने आज तक तुम्हें सहारा दिया है। परमेश्वर में विश्वास का कुछ लोगों का अभ्यास हमेशा कुंद और भ्रांत होता है; इस प्रकार, अनुसरण करने का आवश्यक रूप से यह अर्थ नहीं है कि तुम्हारे पास गवाही है। सच्ची गवाही वास्तव में क्या है? यहाँ कही गई गवाही के दो हिस्से हैं : एक तो जीत लिए जाने की गवाही, और दूसरी पूर्ण बना दिए जाने की गवाही (जो स्वाभाविक रूप से भविष्य के अधिक बड़े परीक्षणों और क्लेशों के बाद की गवाही होगी)। दूसरे शब्दों में, यदि तुम क्लेशों और परीक्षणों के दौरान अडिग रहने में सक्षम हो, तो तुमने दूसरे कदम की गवाही दे दी होगी। आज जो महत्वपूर्ण है, वह है गवाही का पहला कदम : ताड़ना और न्याय के परीक्षणों की हर घटना के दौरान अडिग रहने में सक्षम होना। यह जीत लिए जाने की गवाही है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह जीत का समय है। (तुम्हें पता होना चाहिए कि अब पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का समय है; पृथ्वी पर देहधारी परमेश्वर का मुख्य कार्य पृथ्वी पर अपना अनुसरण करने वाले लोगों के समूह को न्याय और ताड़ना के माध्यम से जीतना है)। तुम जीत लिए जाने की गवाही देने में सक्षम हो या नहीं, यह न केवल इस बात पर निर्भर करता है कि तुम बिल्कुल अंत तक अनुसरण कर सकते हो या नहीं, बल्कि, इससे भी महत्वपूर्ण रूप से यह इस बात पर निर्भर करता है कि जब तुम परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण का अनुभव करते हो, तो तुम परमेश्वर के ताड़ना और न्याय की सच्ची समझ प्राप्त करने में सक्षम होते हो या नहीं, और इस बात पर कि तुम इस समस्त कार्य को वास्तव में समझते हो या नहीं। बिल्कुल अंत तक अनुसरण करने मात्र से तुम आगे बढ़ने में सफल नहीं हो जाओगे। तुम्हें ताड़ना और न्याय की हर घटना के दौरान स्वेच्छा से समर्पण करने में सक्षम होना चाहिए, कार्य के हर उस चरण को, जिसका तुम अनुभव करते हो, वास्तव में समझने में सक्षम होना चाहिए, और परमेश्वर के स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करने और उसका आज्ञापालन करने में सक्षम होना चाहिए। यह जीत लिए जाने की परम गवाही है, जो तुम्हारे द्वारा दी जानी अपेक्षित है। जीत लिए जाने की गवाही मुख्य रूप से परमेश्वर के देहधारण के बारे में तुम्हारे ज्ञान को दर्शाती है। महत्त्वपूर्ण रूप से, इस कदम की गवाही परमेश्वर के देहधारण के लिए है। दुनिया के लोगों या सामर्थ्यवान व्यक्तियों के सामने तुम

क्या करते या कहते हो, यह मायने नहीं रखता; सबसे बढ़कर जो मायने रखता है, वह यह है कि तुम परमेश्वर के मुँह से निकले सभी वचनों और उसके समस्त कार्य का पालन करने में सक्षम हो या नहीं। इसलिए, इस कदम की गवाही शैतान सहित परमेश्वर के सभी दुश्मनों—राक्षसों और विरोधियों पर निर्देशित है, जो विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर दूसरी बार देहधारण करेगा तथा और भी बड़े कार्य करने के लिए आएगा, और इसके अतिरिक्त, जो परमेश्वर के देह में वापस आने के तथ्य पर विश्वास नहीं करते। दूसरे शब्दों में, यह सभी मसीह-विरोधियों—उन सभी शत्रुओं पर निर्देशित है, जो परमेश्वर के देहधारण में विश्वास नहीं करते।

परमेश्वर के बारे में सोचना और परमेश्वर के लिए तड़पना यह साबित नहीं करता कि तुम परमेश्वर द्वारा जीते जा चुके हो; यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम यह मानते हो या नहीं कि वह देह बना हुआ वचन है, तुम यह मानते हो या नहीं कि वचन देह बन गया है, और तुम यह मानते हो या नहीं कि पवित्रात्मा वचन बन गया है और वचन देह में प्रकट हुआ है। यही प्रमुख गवाही है। यह मायने नहीं रखता कि तुम किस तरह से अनुसरण करते हो, न ही यह कि तुम अपने आप को कैसे खपाते हो; महत्वपूर्ण यह है कि तुम इस सामान्य मानवता से यह पता लगाने में सक्षम हो या नहीं कि वचन देह बन गया है और सत्य का आत्मा देह में साकार हुआ है—कि समस्त सत्य, मार्ग और जीवन देह में आ गया है, परमेश्वर के आत्मा का वास्तव में पृथ्वी पर आगमन हो गया है और आत्मा देह में आ गया है। यद्यपि, सतही तौर पर, यह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भधारण से भिन्न प्रतीत होता है, किंतु इस कार्य से तुम और अधिक स्पष्टता से देखने में सक्षम होते हो कि पवित्रात्मा पहले ही देह में साकार हो गया है, और इसके अतिरिक्त, वचन देह बन गया है, और वचन देह में प्रकट हो गया है। तुम इन वचनों का वास्तविक अर्थ समझने में सक्षम हो : "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" इसके अलावा, तुम्हें यह भी समझना चाहिए कि आज का वचन परमेश्वर है, और देखना चाहिए कि वचन देह बनता है। यह सर्वोत्तम गवाही है, जो तुम दे सकते हो। यह साबित करता है कि तुम्हें परमेश्वर के देहधारण का सच्चा ज्ञान है—तुम न केवल उसे जानने में सक्षम हो, बल्कि यह भी जानते हो कि जिस मार्ग पर तुम आज चलते हो, वह जीवन का मार्ग है, और सत्य का मार्ग है। कार्य का जो चरण यीशु ने संपन्न किया, उसने केवल "वचन परमेश्वर के साथ था" का सार ही पूरा किया : परमेश्वर का सत्य परमेश्वर के साथ था, और परमेश्वर का आत्मा देह के साथ था और उस देह से अभिन्न था। अर्थात, देहधारी परमेश्वर का देह परमेश्वर के आत्मा के साथ था, जो इस बात

अधिक बड़ा प्रमाण है कि देहधारी यीशु परमेश्वर का प्रथम देहधारण था। कार्य का यह चरण ठीक-ठीक "वचन देह बनता है" के आंतरिक अर्थ को पूरा करता है, "वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था", को और गहन अर्थ देता है और तुम्हें इन वचनों पर दृढ़ता से विश्वास कराता है कि "आरंभ में वचन था"। कहने का अर्थ है कि सृष्टि के निर्माण के समय परमेश्वर वचनों से संपन्न था, उसके वचन उसके साथ थे और उससे अभिन्न थे, और अंतिम युग में वह अपने वचनों के सामर्थ्य और उसके अधिकार को और भी अधिक स्पष्ट करता है, और मनुष्य को परमेश्वर के सभी तरीके देखने—उसके सभी वचनों को सुनने का अवसर देता है। ऐसा है अंतिम युग का कार्य। तुम्हें इन चीजों को हर पहलू से जान लेना चाहिए। यह देह को जानने का प्रश्न नहीं है, बल्कि इस बात का है कि तुम देह और वचन को कैसे जानते हो। यही वह गवाही है, जो तुम्हें देनी चाहिए, जिसे हर किसी को जानना चाहिए। चूँकि यह दूसरे देहधारण का कार्य है—और यह आख़िरी बार है जब परमेश्वर देह बना है—यह देहधारण के अर्थ को सर्वथा पूरा कर देता है, देह में परमेश्वर के समस्त कार्य को पूरी तरह से कार्यान्वित और प्रकट करता है, और परमेश्वर के देह में होने के युग का अंत करता है। इसलिए तुम्हें देहधारण के अर्थ को अवश्य जानना चाहिए। यह मायने नहीं रखता कि तुम कितनी भाग-दौड़ करते हो, या तुम अन्य बाहरी मामलों को कितनी अच्छी तरह से पूरा करते हो; जो मायने रखता है, वह यह है कि तुम वास्तव में देहधारी परमेश्वर के सामने समर्पण करने और अपना पूरा अस्तित्व परमेश्वर को अर्पित करने, और उसके मुँह से निकलने वाले सभी वचनों का पालन करने में सक्षम हो या नहीं। यही है, जो तुम्हें करना चाहिए, और जिसका तुम्हें पालन करना चाहिए।

गवाही का आखिरी कदम इस बात की गवाही है कि तुम पूर्ण बनाए जाने के योग्य हो या नहीं—जिसका अर्थ है कि देहधारी परमेश्वर के मुँह से बोले गए सभी वचनों को समझने के बाद तुम्हें परमेश्वर का ज्ञान हो जाता है और तुम उसके बारे में निश्चित हो जाते हो, तुम परमेश्वर के मुँह से निकले सभी वचनों को जीते हो और वे स्थितियाँ प्राप्त करते हो, जिनके लिए परमेश्वर तुमसे कहता है—पतरस की शैली और अय्यूब की आस्था—ऐसे कि तुम मृत्यु तक आज्ञापालन कर सको, अपने आप को पूरी तरह से उसे सौंप दो, और अंततः ऐसे व्यक्ति की छवि प्राप्त करो जो मानक पर खरा उतरता हो, अर्थात् ऐसे व्यक्ति की छवि, जिसे परमेश्वर की ताड़ना और न्याय का अनुभव करने के बाद जीता और पूर्ण बनाया जा चुका हो। यही परम गवाही है—जो उस व्यक्ति द्वारा दी जानी ज़रूरी है, जिसे अंततः पूर्ण बना दिया गया है। ये गवाही के दो कदम हैं, जो तुम लोग को उठाने चाहिए, और ये परस्पर संबंधित हैं, और दोनों में से प्रत्येक

अपरिहार्य है। किंतु एक बात तुम्हें अवश्य जाननी चाहिए : आज जिस गवाही की मैं तुमसे अपेक्षा करता हूँ, वह न तो दुनिया के लोगों पर निर्देशित है, न ही किसी एक व्यक्ति पर, बल्कि उस पर है जो मैं तुमसे माँगता हूँ। यह इस बात से मापी जाती है कि तुम मुझे संतुष्ट करने में सक्षम हो या नहीं, और तुम मेरी उन अपेक्षाओं के मानकों को सर्वथा पूरा करने में समर्थ हो या नहीं, जो मैं तुम लोगों में से प्रत्येक से करता हूँ। यही वह चीज़ है, जिसे तुम लोगों को समझना चाहिए।

अभ्यास (5)

अनुग्रह के युग के दौरान, यीशु ने कुछ वचन कहे और कार्य के एक चरण को पूरा किया। उन सभी के लिए एक संदर्भ था और वे सभी उस समय के लोगों की स्थितियों के लिए उपयुक्त थे; यीशु ने उस समय के संदर्भ के अनुसार बोला और कार्य किया। उसने कुछ भविष्यवाणियां भी कीं। उसने भविष्यवाणी की कि सत्य का आत्मा अंतिम दिनों के दौरान आएगा, और कार्य का एक चरण पूरा करेगा। अर्थात उस युग के दौरान जो कार्य उसे स्वयं करना था उसके अलावा वो अन्य किसी चीज़ को नहीं समझता था; दूसरे शब्दों में, देहधारी परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य की सीमित था। इसलिए, वह केवल उस युग का कार्य करता है जिसमें वह है, और ऐसा कोई कार्य नहीं करता जिससे उसका कोई संबंध न हो। उस समय, यीशु ने भावनाओं या दर्शनों के अनुसार कार्य नहीं किया, बल्कि समय और संदर्भ के अनुरूप कार्य किया। किसी ने उसकी अगुवाई या मार्गदर्शन नहीं किया। उसकी कार्य की संपूर्णता उसका अपना स्वरूप था—वह कार्य था जिसे परमेश्वर के आत्मा के देहधारण द्वारा पूरा किया जाना था, यह वह संपूर्ण कार्य था जिसका देहधारण द्वारा सूत्रपात किया गया था। यीशु ने केवल उसके अनुसार कार्य किया जो उसने स्वयं देखा और सुना। दूसरे शब्दों में, आत्मा ने सीधे कार्य किया; उसके लिए यह आवश्यक नहीं था कि दूत सामने आयें और उसे सपने दिखाएँ या कोई महान रोशनी उस पर चमके और उसके लिए देख पाना संभव करे। वह स्वतंत्र और निर्बाध रूप से कार्य करता था, क्योंकि उसका कार्य भावनाओं पर आधारित नहीं था। दूसरे शब्दों में, कार्य करते समय वह टटोलता और अनुमान नहीं लगाता था, बल्कि आसानी से चीज़ों को पूरा करता था, अपने विचारों और अपनी आँखों देखी के अनुसार वह कार्य करता और बोलता था, और अपने उस प्रत्येक शिष्य को तात्कालिक पोषण प्रदान करता था जो उसका अनुसरण करता था। परमेश्वर और लोगों के कार्यों के बीच यही अंतर है : जब लोग कार्य करते हैं, तो वे अधिक गहरा प्रवेश प्राप्त करने के

लिए दूसरों द्वारा रखी गई बुनियाद पर हमेशा नकल करते हुए और विचार-विमर्श करते हुए खोजते और टटोलते रहते हैं। परमेश्वर का कार्य वह प्रावधान है जो वो स्वयं है, वह वही कार्य करता है जिसे उसे स्वयं करना चाहिए। किसी अन्य मनुष्य द्वारा किए गए कार्य के ज्ञान से कलीसिया को पोषण नहीं प्रदान करता। इसके बजाय, वह लोगों की स्थितियों के आधार पर अपना वर्तमान कार्य करता है। इसलिए, इस ढंग से कार्य करना, लोगों द्वारा किए गए कार्य के तरीके की तुलना में हज़ारों गुना मुक्त है। लोगों को यहाँ तक प्रतीत हो सकता है कि परमेश्वर अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता और अपनी मनमर्ज़ी से कार्य करता है—लेकिन वह जो भी कार्य करता है वह नया होता है। फिर भी तुम्हें पता होना चाहिए कि देहधारी परमेश्वर का कार्य कभी भावनाओं पर आधारित नहीं होता। जब यीशु ने क्रूसित होने का अपना काम पूरा कर लिया था, उस समय, जब यीशु के अनुयायी अपने अनुभव में एक निश्चित बिंदु तक पहुँच गए, तो उन्हें महसूस हुआ कि परमेश्वर का दिन आ रहा था, और वे जल्द ही प्रभु से मिलने वाले थे। उनकी यही भावना थी, और उनके लिए, यह भावना अत्यंत महत्वपूर्ण थी। परंतु, वास्तविकता यह है कि लोगों के भीतर की भावनाओं पर विश्वास नहीं किया जा सकता। शिष्यों को महसूस होता था कि शायद वे मार्ग के अंत पर पहुँचने वाले हैं, या जो भी उन्होंने किया और सहा वह परमेश्वर द्वारा नियत था। पौलुस ने यह भी कहा कि वह अपनी दौड़ पूरी कर चुका है, वह एक अच्छी लड़ाई लड़ चुका है, और उसके लिए अब धर्म का मुकुट रखा हुआ है। वह ऐसा ही महसूस करता था, और उसने इसे धर्मपत्रों में लिखा और कलीसियाओं को भेजा। इस तरह की क्रियाएं उस बोझ से उत्पन्न हुईं थीं जो उसने कलीसियाओं के लिए उठाया था, और इसलिए पवित्र आत्मा द्वारा इसे अनदेखा किया गया था। जब पौलुस ने उन शब्दों को कहा, तो उसे बेचैनी का कोई अहसास नहीं था, न ही उसने निंदा को महसूस किया, इसलिए उसे विश्वास था कि ऐसी बातें बिल्कुल सामान्य और सही हैं, और वे पवित्र आत्मा से आई हैं। परंतु आज जब हम इसे देखते हैं, तो पता चलता है कि वे पवित्र आत्मा से बिलकुल नहीं आई थीं। वे मनुष्य के भ्रम के अलावा कुछ भी नहीं थीं। मनुष्यों के बीच कई भ्रम हैं, और परमेश्वर उन पर ध्यान नहीं देता या उनके होने पर अपनी राय व्यक्त नहीं करता। पवित्र आत्मा के अधिकांश कार्य लोगों की भावनाओं के माध्यम से नहीं किए जाते हैं—पवित्र आत्मा लोगों की भावनाओं के भीतर कार्य नहीं करता है, परमेश्वर के देहधारण के पहले के उस कठोर, अंधेरे समय की अवधि के अलावा या उस अवधि के अलावा जब कोई भी प्रेरित या कर्मी नहीं हैं। कार्य के इस चरण के दौरान पवित्र आत्मा लोगों को कुछ विशेष भावनाएँ प्रदान करता है। उदाहरण के लिए : जब लोगों को

परमेश्वर के वचनों का मार्गदर्शन नहीं मिलता है, तो जब वे प्रार्थना करते हैं तब उनके पास खुशी का अवर्णनीय एहसास होता है; उनके दिलों में आनंद का अहसास होता था, और वे शांति और चैन महूसस करते हैं। एक बार जब उन्हें वचनों का मार्गदर्शन मिल जाता है, तो लोग अपनी आत्माओं में उजाले का एहसास करते हैं, और उनके कार्यों में अभ्यास का पथ होता है। स्वाभाविक रूप से उन्हें शांति और चैन का भी अहसास होता है। जब लोग ख़तरे का सामना करते हैं, या जब परमेश्वर उन्हें कुछ करने से रोकता है, तो वे दिल में एक बेचैनी और असंतोष महसूस करते हैं। यह पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्य को दी गयी भावनाएँ हैं। हालाँकि, अगर एक प्रतिकूल परिवेश डर का माहौल उत्पन्न करता है, जिससे लोग असाधारण रूप से बेचैन और डरपोक बन जाते हैं, तो यह मानवता की एक सामान्य अभिव्यक्ति है और पवित्र आत्मा के कार्य से संबंधित नहीं है।

लोग हमेशा अपनी भावनाओं के बीच रहते हैं, और कई वर्षों से ऐसा ही करते आ रहे हैं। जब वे अपने दिल के भीतर शांत रहते हैं, वे कार्य करते हैं (अपनी सम्मति को शांति की भावना मानते हैं), और जब वे अपने दिल में शांत नहीं रहते, तो वे कार्य नहीं करते (अपनी अनिच्छा या नापसंदगी को असहजता की भावना मानते हैं)। यदि चीज़ें सुचारू रूप से चलती हैं, तो उन्हें लगता है कि यह परमेश्वर की इच्छा है। (वास्तव में, यह एक ऐसी चीज़ है जिसे बहुत ही सुचारू रूप से चलना चाहिए था क्योंकि यह चीज़ों का प्राकृतिक नियम है।) जब चीज़ें सुचारू रूप से नहीं चलतीं, तो उन्हें लगता है कि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है। जब उनका सामना किसी ऐसी चीज़ से होता है जो सुचारु रूप से नहीं चलती, तो वे रुक जाते हैं। ऐसी भावनाएँ परिशुद्ध नहीं हैं, और उनके अनुसार काम करने से बहुत विलंब होगा। उदाहरण के लिए, सत्य को अभ्यास में लाने में निश्चित रूप से मुश्किलें होंगीं और परमेश्वर की इच्छा पूरी करते समय और भी अधिक मुश्किलें होंगीं। बहुत-सी सकरात्मक चीजों को साकार करना मुश्किल होगा। जैसी कि कहावत है, "अच्छी चीजों के साकार होने के पहले बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं।" अपने व्यवहारिक जीवन में लोगों की बहुत-सी भावनाएँ होती हैं, जिसके कारण वे हमेशा उलझन में होते हैं और अनेक चीजों को लेकर अनिश्चित होते हैं। जब तक लोग सत्य समझने में सक्षम नहीं हो जाते उन्हें कुछ भी स्पष्ट नहीं होता। लेकिन सामान्य रूप से, जब वे अपनी भावनाओं के अनुसार बोलते या काम करते हैं उसमें, जब तक कुछ ऐसा नहीं होता जो प्राथमिक सिद्धांतों का उल्लंघ्न करता हो, तब तक पवित्र आत्मा बिलकुल भी प्रतिक्रिया नहीं करता। यह पौलुस द्वारा महसूस किये गए "धर्म के मुकुट" की तरह है : कई सालों तक, किसी ने भी नहीं

माना कि उसकी भावनाएँ गलत थीं, न ही पौलुस ने कभी स्वयं महसूस किया कि उसकी भावनाएँ गलत थीं। लोगों की भावनाएँ कहां से आती हैं? निश्चित रूप से वे उनके मस्तिष्क से आई प्रतिक्रियाएँ हैं। अलग-अलग वातावरणों और विभिन्न मामलों के अनुसार भिन्न-भिन्न भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। अधिकतर समय, लोग मानवीय तर्क के अनुसार निष्कर्ष निकालते हैं ताकि फॉर्मूलों का एक सेट प्राप्त कर लें, जिसके परिणामस्वरूप कई मानवीय भावनाएँ स्वरूप लेती हैं। बिना महसूस किए, लोग अपने तार्किक निष्कर्षों पर पहुँच जाते हैं, और इस तरह से, लोग अपने जीवन में इन्हीं भावनाओं पर निर्भर करने लगते हैं; ये उनके जीवन की भावनात्मक बैसाखी बन जाती है, जैसे पौलुस का "धर्म का मुकुट" या विटनेस ली की "हवा में परमेश्वर से भेंट।" मनुष्यों की इन भावनाओं में हस्तक्षेप करने का परमेश्वर के पास लगभग कोई रास्ता नहीं है, और उसे इन भावनाओं को अपनी मर्ज़ी से विकसित होने देना पड़ता है। आज, मैंने तुमसे सत्य के विभिन्न पहलुओं पर स्पष्ट रूप से बात की है। यदि तुम अपनी भावनाओं के अनुसार चलते रहे, तो क्या तुम अभी भी अस्पष्टता के बीच नहीं जी रहे? तुम उन शब्दों को स्वीकार नहीं करते जो स्पष्ट रूप से तुम्हारे लिए निर्धारित किए गए हैं, और हमेशा अपनी व्यक्तिगत भावनाओं पर निर्भर करते हो। इसमें, क्या तुम हाथी को महसूस करते हुए अंधे आदमी की तरह नहीं हो? और अंत में तुम्हें क्या लाभ होगा?

आज देहधारी परमेश्वर द्वारा किए गए सभी कार्य वास्तविक हैं। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे तुम महसूस कर सकते हो, या जिसकी तुम कल्पना कर सकते हो, यह ऐसा कुछ तो बिलकुल नहीं है जिसका तुम अनुमान लगा सकते हो—यह ऐसी चीज़ है जिसे तुम केवल तब ही समझ पाओगे जब तथ्यों के साथ तुम्हारा संयोगवश सामना होगा। कभी-कभी, जब ऐसा होता भी है, तो भी तुम स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते, लोग तब तक नहीं समझ पाएंगे जब तक परमेश्वर, जो कुछ हो रहा है उसके सच्चे तथ्यों पर बड़ी स्पष्टता लाने के लिए व्यक्तिगत रूप से कार्य नहीं करता है। उस समय, यीशु का अनुसरण करने वाले शिष्यों के बीच कई भ्रम थे। उनका मानना था कि परमेश्वर का दिन आने ही वाला है और वे जल्द ही प्रभ के लिए मर जाएंगे और प्रभु यीशु से मिल पाएंगे। पतरस ने इस भावना के कारण पूरे सात साल तक इंतज़ार किया—लेकिन वह समय फिर भी नहीं आया। उन्हें लगा कि उनका जीवन परिपक्व हो गया है; और उनके भीतर की भावनाएँ कई गुना बढ़ गई और ये भावनाएँ अधिक तीक्ष्ण हो गईं, परंतु उन्होंने कई असफलताओं का अनुभव किया और वे सफल नहीं हो पाये। वे स्वयं नहीं जानते थे कि क्या चल रहा था। क्या ऐसा हो सकता है कि जो वास्तव में पवित्र आत्मा से आया हो वह पूरा न हो? लोगों की भावनाएँ विश्वसनीय नहीं होती हैं।

क्योंकि लोगों के पास सोचने के अपने ढंग होते हैं, इसलिए वे समय के संदर्भ और स्थितियों के आधार पर संबंधों की पूँजी खड़ी कर लेते हैं। विशेष रूप से, जब ऐसे लोगों के साथ कुछ होता है जिनके सोचने का ढंग स्वस्थ होता है, तो वे अति उत्तेजित हो जाते हैं, और स्वयं को संबंधों की पूँजी खड़ी करने से रोक नहीं पाते। यह विशेष रूप से उच्च ज्ञान और सिद्धांतों वाले "विशेषज्ञों" पर लागू होता है, जिनके संबंध कई सालों तक दुनिया से निपटने के बाद अधिक विपुल हो जाते हैं; उनके बिना जाने, ये उनके हृदय पर कब्जा कर लेते हैं, और उनकी अत्यंत शक्तिशाली भावनाओं का स्वरूप ले लेते हैं, और वे उससे संतुष्ट होते हैं। जब लोग कुछ करना चाहते हैं, तो उनके भीतर भावनाएँ और कल्पनाएं प्रकट होंगी, और वे महसूस करेंगे कि ये भावनाएँ और कल्पनाएं सही हैं। बाद में, जब वे देखते हैं कि ये पूरी नहीं हो पाईं, तो लोग यह नहीं समझ पाते कि गलती क्या हुई। शायद वे मानते हैं कि परमेश्वर ने अपनी योजना बदल दी है।

लोगों के पास भावनाएँ न हों ऐसा नहीं हो सकता। व्यवस्था के युग के दौरान भी कई लोगों की कुछ भावनाएँ थीं, लेकिन आज के लोगों की तुलना में उनकी भावनाओं में कम त्रुटियां थीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि, पहले, लोग यहोवा का प्रकटन देख पाए थे; वे दूतों को देख सकते थे, और वे सपने देखते थे। आज के लोग दर्शनों या दूतों को देखने में असमर्थ हैं, और इसलिए उनकी भावनाओं में त्रुटियां बहुगुणित हो गयी हैं। जब आज के लोगों को लगता है कि कोई बात विशेष तौर पर सही है, और वे उस पर अमल करने लगते हैं, तो पवित्र आत्मा उन्हें नहीं झिड़कता, और वे भीतर से काफी शांत महसूस करते हैं। तथ्य के बाद, केवल समन्वय करने या परमेश्वर के वचनों को पढ़ने से ही उन्हें पता चलता है कि वे गलत थे। इसका एक पहलू यह है कि लोगों को कोई दूत नहीं दिखाई देता, सपने बहुत दुर्लभ होते हैं, और लोग आकाश में दर्शन से संबंधित कुछ नहीं देख पाते हैं। दूसरा पहलू है कि, पवित्र आत्मा लोगों में अपनी उलाहना और अनुशासन को नहीं बढ़ाता; लोगों के भीतर पवित्र आत्मा का मुश्किल से ही कोई कार्य होता है। इसलिए, यदि लोग परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते नहीं हैं, व्यवहारिक ढंग से सत्य की खोज नहीं करते हैं, और अमल के रास्ते को समझ नहीं पाते, तो वे कोई फल नहीं प्राप्त कर पाएंगे। पवित्र आत्मा के कार्यों के सिद्धांत इस प्रकार हैं : वह उस पर ध्यान नहीं देता जो उसके कार्य में शामिल नहीं है; अगर कुछ उसके अधिकार क्षेत्र के दायरे में नहीं है, तो वह कभी भी हस्तक्षेप या दखलंदाज़ी नहीं करता, और लोगों को जो वे चाहें वह मुश्किल पैदा करने देता है। तुम जैसे चाहो वैसे कार्य कर सकते हो, लेकिन एक दिन आएगा जब तुम घबराए हुए और भ्रमित होगे। परमेश्वर अपनी देह में एकल-दिमाग़ से कार्य करता है, और कभी भी

मनुष्य के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करता। वह लोगों की दुनिया को एक व्यापक स्थान देता है और वही कार्य करता है जो उसे करना चाहिए। आज, अगर तुम कुछ गलत करो तो उलाहना नहीं पाओगे, न ही कल को कुछ अच्छा करने पर तुम्हें पुरस्कृत किया जायेगा। ये मानवीय मामले हैं, और पवित्र आत्मा के कार्य से इनका थोड़ा-सा भी संबंध नहीं है—यह बिलकुल भी मेरे कार्य के दायरे में नहीं आता है।

जिस समय पतरस कार्य कर रहा था, उसने कई बातें कहीं और बहुत कार्य किए। क्या यह संभव है कि इनमें से कोई भी बात या कार्य मानवीय विचारों से नहीं आए? इनका पूरी तरह से पवित्र आत्मा से आना असंभव है। पतरस केवल परमेश्वर का एक जीव था, वह अनुयायी था। वह पतरस था, यीशु नहीं, और उनके सार एक समान नहीं थे। हालाँकि, पतरस को पवित्र आत्मा ने भेजा था, उसने जो कुछ भी किया वो पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा से नहीं आया था क्योंकि आख़िरकार वह एक मनुष्य था। पौलुस ने कई वचन भी कहे और कलीसियाओं को बड़ी मात्रा में धर्मपत्र लिखे, जिसमें से कुछ बाइबल में संगृहीत हैं। पवित्र आत्मा ने कोई राय व्यक्त नहीं की क्योंकि उस समय पौलुस का पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा था। उसने कुछ अनुभव और ज्ञान पा लिया, और उन्हें लिखकर अपने प्रभु के विश्वासी भाई-बहनों तक पहुँचा दिया। यीशु ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उस समय पवित्र आत्मा ने उसे क्यों नहीं रोका? क्योंकि कुछ अशुद्धियाँ हैं जो लोगों के सोचने के सामान्य ढंग से उपजती हैं, और यह अपरिहार्य है। इसके अलावा, उसके कार्य उस बिन्दु तक नहीं पहुँचे थे जहाँ वे एक रुकावट या बाधा हों। जब मानव स्वभाव के इस प्रकार के कुछ काम होते हैं, तो लोगों के लिए उन्हें स्वीकार करना आसान हो जाता है। बशर्ते कि इंसान के सोचने के सामान्य ढंग की अशुद्धियाँ किसी भी चीज़ में हस्तक्षेप न करें, वे सामान्य मानी जाती हैं। दूसरे शब्दों में, सोचने के सामान्य ढंग वाले सभी लोग इस तरह सोचने में सक्षम होते हैं। जब लोग देह में रहते हैं, तो उनका सोचने का अपना ढंग होता है, लेकिन इन्हें निकाल फेंकने का कोई तरीका नहीं है। परंतु, कुछ देर के लिए परमेश्वर के कार्य को अनुभव करने और कुछ सत्य समझने के बाद, सोचने के ये ढंग कुछ कम होंगे। जब वे और अधिक चीज़ों का अनुभव कर लेते हैं, तो वे स्पष्ट रूप से देख पायेंगे, और चीज़ों को कम बाधित करेंगे; दूसरे शब्दों में, जब लोगों की कल्पनाओं और तर्कसंगत निष्कर्षों का खंडन किया जाता है, तो उनकी असामान्य भावनाएँ कम हो जाएंगी। जो लोग देह में रहते हैं, उन सभी के सोचने के अपने ढंग होते हैं, लेकिन अंत में, परमेश्वर का कार्य उन पर उस बिंदु तक कार्य करता है जहाँ उनके सोचने के ढंग उन्हें परेशान नहीं कर पाएंगे, वे अपने जीवन में भावनाओं पर निर्भर नहीं करेंगे, उनका वास्तविक कद

विकसित हो जाएगा, और वे वास्तविकता के भीतर परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन व्यतीत कर पाएंगे, और अब वे ऐसी चीज़ें नहीं करेंगे जो अस्पष्ट और खोखली हों, और फिर वे ऐसी बातें नहीं करेंगे जो रुकावट का कारण बनती हैं। इस तरह, उनके भ्रम खत्म हो जाएंगे, और इस समय से उनके कार्य ही उनका असल कद होंगे।

विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (1)

मनुष्यजाति, जो शैतान के द्वारा अत्यधिक भ्रष्ट कर दी गई है, नहीं जानती कि एक परमेश्वर भी है और इसने परमेश्वर की आराधना करनी बंद कर दी है। आरम्भ में, जब आदम और हव्वा को रचा गया था, तो यहोवा की महिमा और साक्ष्य सर्वदा उपस्थित था। परन्तु भ्रष्ट होने के पश्चात, मनुष्य ने उस महिमा और साक्ष्य को खो दिया, क्योंकि सभी ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसके प्रति श्रद्धा दिखाना पूर्णतया बन्द कर दिया। आज का विजय कार्य उस सम्पूर्ण साक्ष्य और उस सम्पूर्ण महिमा को पुनः प्राप्त करने और सभी मनुष्यों से परमेश्वर की आराधना करवाने के लिए है, जिससे सृजित जीवों के बीच साक्ष्य हो; कार्य के इस चरण के दौरान यही किए जाने की आवश्यकता है। मनुष्यजाति किस प्रकार जीती जानी है? मनुष्य को सम्पूर्ण रीति से कायल करने के लिए इस चरण के वचनों के कार्य का प्रयोग करके; उसे पूर्णत: अधीन बनाने के लिए, खुलासे, न्याय, ताड़ना और निर्मम श्राप का प्रयोग करके; मनुष्य के विद्रोहीपन के खुलासे और उसके विरोध का न्याय करके, ताकि वह मानवजाति की अधार्मिकता और मलिनता को जान सके और इस तरह वह इनका प्रयोग परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की विषमता के रूप में कर सके। मुख्यतः, मनुष्य को इन्हीं वचनों से जीता और पूर्णत: कायल किया जाता है। वचन मनुष्यजाति को अन्तिम रूप से जीत लेने के साधन हैं, और वे सभी जो परमेश्वर की जीत को स्वीकार करते हैं, उन्हें उसके वचनों के प्रहार और न्याय को भी स्वीकार करना चाहिए। बोलने की वर्तमान प्रक्रिया, जीतने की ही प्रक्रिया है। और लोगों को किस प्रकार सहयोग देना चाहिए? यह जानकर कि इन वचनों को कैसे खाना-पीना है और उनकी समझ हासिल करके। जहाँ तक लोग कैसे जीते जाते हैं इस की बात है, इसे इंसान खुद नहीं कर सकता। तुम सिर्फ इतना कर सकते हो कि इन वचनों को खाने और पीने के द्वारा, अपनी भ्रष्टता और अशुद्धता, अपने विद्रोहीपन और अपनी अधार्मिकता को जानकर, परमेश्वर के समक्ष दण्डवत हो सकते हो। यदि तुम परमेश्वर की इच्छा को समझकर, इसे अभ्यास में ला सको, और अगर तुम्हारे पास

दर्शन हों, और इन वचनों के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो सकते हो, और खुद कोई चुनाव नहीं करते हो, तब तुम जीत लिए जाओगे और ये उन वचनों का परिणाम होगा। मनुष्यजाति ने साक्ष्य क्यों खो दिया? क्योंकि कोई भी परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, क्योंकि लोगों के हृदयों में परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है। मनुष्यजाति की जीत लोगों के विश्वास की बहाली है। लोग हमेशा अंधाधुंध लौकिक संसार की ओर भागना चाहते हैं, वे अनेक आशाएँ रखते हैं, अपने भविष्य के लिए बहुत अधिक चाहते हैं और उनकी अनेक अनावश्यक मांगें हैं। वे हमेशा अपने शरीर के विषय में सोचते, शरीर के लिए योजनाएं बनाते रहते हैं, उनकी रुचि कभी भी परमेश्वर में विश्वास रखने के मार्ग की खोज में नहीं होती। उनके हृदय को शैतान के द्वारा छीन लिया गया है, उन्होंने परमेश्वर के लिए अपने सम्मान को खो दिया है, और उनका हृदय शैतान की ओर टकटकी लगाए रहता है परन्तु मनुष्य की सृष्टि परमेश्वर के द्वारा की गई थी। इसलिए, मनुष्य परमेश्वर के साक्ष्य को खो चुका है, अर्थात वह परमेश्वर की महिमा को खो चुका है। मनुष्य को जीतने का उद्देश्य परमेश्वर के लिए मनुष्य की श्रद्धा की महिमा को पुनः प्राप्त करना है। इसे इस प्रकार कहा जा सकता है : ऐसे अनेक लोग हैं जो जीवन की खोज नहीं करते; यदि कुछ हैं भी तो, उनकी संख्या को उँगलियों पर गिना जा सकता है। लोग अपने भविष्य के विषय में चिन्तित रहते हैं और जीवन की ओर ज़रा-सा भी ध्यान नहीं देते। कुछ लोग परमेश्वर से विद्रोह और उसका विरोध करते हैं, उसकी पीठ पीछे उस पर दोष लगाते हैं और सत्य का अभ्यास नहीं करते। इन लोगों को फिलहाल अनदेखा कर दिया गया है; फिलहाल विद्रोह के इन पुत्रों का कुछ नहीं किया जाता है, लेकिन भविष्य में तुम विलाप करते और दाँत पीसते हुए अन्धकार में रहोगे। जब तुम ज्योति में रह रहे होते हो तो उसकी बहूमूल्यता का अनुभव नहीं करते, परन्तु जब तुम अन्धेरी रात में रहने लगोगे, तब तुम इसकी बहुमूल्यता को जान जाओगे। तब तुम्हें अफसोस होगा। अभी तुम्हें अच्छा लगता है, परन्तु वह दिन आएगा जब तुम्हें अफसोस होगा। जब वह दिन आएगा और अन्धकार नीचे उतरेगा और रोशनी फिर कभी नहीं होगी, तब तुम्हारे पास अफसोस करने के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। क्योंकि तुम अभी भी आज के कार्य को नहीं समझते हो, इसलिए तुम अभी तुम्हारे पास जो समय है उसे संजोने में असफल हो। एक बार जब सम्पूर्ण कायनात का कार्य आरम्भ हो जाएगा अर्थात जो कुछ मैं आज कह रहा हूँ, जब वह पूर्ण हो चुका होगा, तो अनेक लोग अपना सर पकड़कर दु:ख के आँसू बहाएँगे। ऐसा करते समय, क्या वे रोते और दांत पीसते हुए अन्धकार में नहीं गिर चुके होंगे? जो लोग वास्तव में जीवन की खोज करते हैं और जिन्हें पूर्ण बना दिया गया है, उनका उपयोग

किया जा सकता है, जबकि विद्रोह के समस्त पुत्र, जो उपयोग किए जाने के लिए अनुपयुक्त हैं, अन्धकार में गिरेंगे। उन्हें पवित्र आत्मा का कोई भी कार्य प्राप्त नहीं होगा, और वे किसी भी चीज़ का अर्थ समझने में असक्षम होंगे। रो-रोकर उनका बुरा हाल होगा, वे दंड में झोंक दिये जाएँगे। कार्य के इस चरण में यदि तुम अच्छी तरह से सज्जित हो और तुम जीवन में विकसित हो चुके हो, तब तुम उपयोग किए जाने के उपयुक्त हो। यदि तुम अच्छी तरह से सज्जित नहीं हो, तब अगर तुम्हें कार्य के अगले चरण के लिए बुलाया भी गया है, तो भी इस मुकाम पर इस्तेमाल के लिए अनुपयुक्त ही रहोगे, यदि तुम स्वयं को तैयार करना भी चाहोगे, तो भी तुम्हें दूसरा अवसर नहीं मिलेगा। परमेश्वर जा चुका होगा; तब तुम इस प्रकार का अवसर प्राप्त करने के लिए कहाँ जाओगे, जो अभी तुम्हारे समक्ष है? तब तुम उस अभ्यास को प्राप्त करने कहाँ जाओगे, जो परमेश्वर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से उपलब्ध करवाया गया है? उस समय तक, परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से बात नहीं करेगा, और न ही अपनी वाणी प्रदान करेगा; तुम मात्र वही पढ़ने के योग्य होगे जो आज कहा जा रहा है; तो फिर सरलता से समझ कैसे मिलेगी? भविष्य का जीवन आज के जीवन से किस प्रकार बेहतर बन पायेगा? उस समय, क्या रोते और दाँत पीसते हुए तुम एक जीवित मृत्यु की पीड़ा नहीं झेल रहे होगे? अभी तुम्हें आशीष प्रदान की जा रही है; परन्तु तुम नहीं जानते कि उसका आनन्द कैसे उठाना है; तुम आशीष में जीवनयापन कर रहे हो; फिर भी तुम अनजान हो। यह प्रमाणित करता है कि तुम पीड़ा उठाने के लिए अभिशप्त हो! आज कुछ लोग विरोध करते हैं, कुछ विद्रोह करते हैं, और कुछ यह या वह करते हैं। मैं बस तुम्हें अनदेखा करता हूँ, लेकिन यह मत सोचना कि मैं तुम सबके कार्यों से अनभिज्ञ हूँ। क्या मैं तुम सबके सार को नहीं समझता? मुझसे लड़ने में क्यों लगे रहते हो? क्या तुम अपने हित की खातिर जीवन और आशीष की खोज के लिए परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते? तुम्हारे अंदर आस्था का होना क्या तुम्हारे अपने हित में नहीं है? फिलहाल मैं केवल बोलकर जीतने का कार्य कर रहा हूँ और जब जीतने का यह कार्य पूरा हो जाएगा, तो तुम्हारा अन्त साफ हो जाएगा। क्या मुझे और स्पष्ट रूप से बताने की आवश्यकता है?

आज का विजय कार्य यह स्पष्ट करने के लिए अभीष्ट है कि मनुष्य का अन्त क्या होगा। मैं क्यों कहता हूँ कि आज की ताड़ना और न्याय, अंत के दिनों के महान श्वेत सिंहासन के सामने का न्याय है? क्या तुम यह नहीं देखते हो? विजय का कार्य अन्तिम चरण क्यों है? क्या यह इस बात को प्रकट करने के लिए नहीं है कि मनुष्य के प्रत्येक वर्ग का अन्त कैसा होगा? क्या यह प्रत्येक व्यक्ति को, ताड़ना और न्याय के विजय

कार्य के दौरान, अपना असली रंग दिखाने और फिर उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करने के लिए नहीं है? यह कहने के बजाय कि यह मनुष्यजाति को जीतना है, यह कहना बेहतर होगा कि यह उस बात को दर्शाना है कि व्यक्ति के प्रत्येक वर्ग का अन्त किस प्रकार का होगा। यह लोगों के पापों का न्याय करने के बारे में है और फिर मनुष्यों के विभिन्न वर्गों को उजागर करना और इस प्रकार यह निर्णय करना है कि वे दुष्ट हैं या धार्मिक हैं। विजय-कार्य के पश्चात धार्मिक को पुरस्कृत करने और दुष्ट को दण्ड देने का कार्य आता है। जो लोग पूर्णतः आज्ञापालन करते हैं अर्थात जो पूर्ण रूप से जीत लिए गए हैं, उन्हें सम्पूर्ण कायनात में परमेश्वर के कार्य को फैलाने के अगले चरण में रखा जाएगा; जिन्हें जीता नहीं गया उनको अन्धकार में रखा जाएगा और उन पर महाविपत्ति आएगी। इस प्रकार मनुष्य को उसकी किस्म के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा, दुष्कर्म करने वालों को दुष्टों के साथ समूहित किया जाएगा और उन्हें फिर कभी सूर्य का प्रकाश नसीब नहीं होगा, और धर्मियों को रोशनी प्राप्त करने और सर्वदा रोशनी में रहने के लिए भले लोगों के साथ रखा जाएगा। सभी बातों का अन्त निकट है; मनुष्य को साफ तौर पर उसका अन्त दिखा दिया गया है, और सभी वस्तुओं का वर्गीकरण उनकी किस्म के अनुसार किया जाएगा। तब, लोग इस तरह वर्गीकरण किए जाने की पीड़ा से किस प्रकार बच सकते हैं? जब सभी चीज़ों का अन्त निकट होता है तो मनुष्य के प्रत्येक वर्ग के भिन्न अन्तों को प्रकट कर दिया जाता है, और यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड (इसमें समस्त विजय-कार्य सम्मिलित है जो वर्तमान कार्य से आरम्भ होता है) को जीतने के कार्य के दौरान किया जाता है। समस्त मनुष्यजाति के अन्त का प्रकटीकरण, न्याय के सिंहासन के सामने, ताड़ना के दौरान और अंत के दिनों के विजय-कार्य के दौरान किया जाता है। लोगों को किस्म के अनुसार वर्गीकृत करना, उन्हें उनके वास्तविक वर्ग में लौटाना नहीं है, क्योंकि संसार की रचना के समय जब मनुष्य को बनाया गया था, तब एक ही किस्म के मनुष्य थे, केवल पुरुष और स्त्री का विभाजन था। उस समय विभिन्न प्रकार के वर्ग नहीं थे। यह तो हज़ारों वर्षों की भ्रष्टता के पश्चात ही हुआ कि मनुष्य के अनेक वर्ग उत्पन्न हुए, जिसमें कुछ अशुद्ध हैवानों के अंतर्गत आते हैं, कुछ दुष्टात्माओं के अंतर्गत और कुछ जो सर्वशक्तिमान के प्रभुत्व के अधीन जीवन का मार्ग खोजते हैं। इसी रीति से ही धीरे-धीरे लोगों के मध्य वर्ग अस्तित्व में आते हैं और इस तरह ही लोग मनुष्य के विस्तृत परिवारों में से वर्गों में विभाजित होते हैं। समस्त लोगों के "पिता" भिन्न हो गए हैं; ऐसा नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति पूर्णतः सर्वशक्तिमान के अधिकार के अधीन आता है, क्योंकि इंसान बहुत ही विद्रोही है। धार्मिक न्याय प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति की वास्तविक किस्म को प्रकट करता है और

कुछ भी छिपा नहीं रहने देता। प्रकाश में प्रत्येक व्यक्ति अपना वास्तविक चेहरा दिखाता है। इस बिन्दु पर, मनुष्य वैसा नहीं है जैसा वह वास्तविक रूप में था और उसके पूर्वजों की वास्तविक समानता बहुत पहले ही अन्तर्धान हो चुकी है, क्योंकि आदम और हव्वा के अनगिनत वंशज बहुत पहले से स्वर्ग-सूर्य को पुनः कभी न जानने के लिए शैतान के द्वारा वश में कर लिए गए हैं, और क्योंकि लोग हर प्रकार से शैतान के विष से भर दिए गए हैं। इसीलिए, लोगों के लिए उनकी उपयुक्त मंजिलें हैं। इसके अलावा, उनके विभिन्न प्रकार के विषों के आधार पर उन्हें क़िस्मों में वर्गीकृत किया जाता है, अर्थात आज उन्हें जिस हद तक जीता गया है उसके अनुसार अलग-अलग किया जाता है। मनुष्य का अन्त संसार की सृष्टि के पहले ही निर्धारित नहीं किया गया था। क्योंकि आरंभ में मात्र एक ही वर्ग था, जिसे सामूहिक रूप से "मनुष्यजाति" पुकारा जाता था, और मनुष्य को पहले शैतान के द्वारा भ्रष्ट नहीं किया गया था, सभी लोग परमेश्वर के प्रकाश में जीवनयापन करते थे और उन पर किसी भी प्रकार का अन्धकार नहीं था। परन्तु बाद में जब मनुष्य शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया, तो सभी प्रकार और किस्म के लोग सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैल गए—सभी प्रकार और किस्म के लोग, जो उस परिवार से आए थे, जिसे सामूहिक रूप से "मनुष्यजाति" कहा जाता था, जो पुरुषों और स्त्रियाँ से बनी थी। अपने सबसे पुराने पूर्वज—मनुष्यजाति, जो पुरुष और स्त्री से बनी थी (अर्थात मूल आदम और हव्वा, जो उनके सबसे पुराने पूर्वज थे) से अलग होने के लिए उन सभी का मार्गदर्शन उनके पूर्वजों के द्वारा किया गया था। उस समय, इस्राएली वे एकमात्र लोग थे, जिनका पृथ्वी पर जीवनयापन के लिए यहोवा के द्वारा मार्गदर्शन किया जा रहा था। विभिन्न प्रकार के लोग, जो सम्पूर्ण इस्राएल (अर्थात वास्तविक पारिवारिक कुल से) से अस्तित्व में आए थे, उन्होंने बाद में यहोवा की अगुवाई को खो दिया। ये आरम्भिक लोग, जो मानव संसार के मामलों से पूरी तरह से अनभिज्ञ थे, वे उन क्षेत्रों में रहने के लिए अपने पूर्वजों के साथ हो लिए, जिन क्षेत्रों पर उन्होंने अधिकार किया था और आज तक ऐसा ही चला आ रहा है। इस तरह, वे आज भी अनजान हैं कि वे यहोवा से कैसे अलग हो गए और आज तक सभी प्रकार के अशुद्ध हैवानों और दुष्टात्माओं के द्वारा किस प्रकार भ्रष्ट किए गए हैं। जो अब तक अत्यधिक गहन रूप से भ्रष्ट और विष से भरे हुए हैं, जिन्हें अन्ततः बचाया नहीं जा सकता, उनके पास अपने पूर्वजों, अशुद्ध हैवानों, जिन्होंने उन्हें भ्रष्ट किया, उनके साथ जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा। वे लोग जिन्हें अन्ततः बचाया जा सकता है, वे मनुष्यजाति की उपयुक्त मंजिल पर पहुँच जाएँगे, अर्थात उस अन्त पर, जो बचाए गए और जीते गए लोगों के लिए संरक्षित रखा गया है। उन सभी को बचाने

के लिए सबकुछ किया जाएगा, जिन्हें बचाया जा सकता है, परन्तु उन असंवेदनशील, असाध्य लोगों के पास अपने पूर्वजों के पीछे-पीछे ताड़ना के अथाह गड्ढ़े में जाना ही एकमात्र विकल्प होगा। यह मत सोचो कि तुम्हारा अन्त, आरम्भ में ही पूर्वनियत कर दिया गया था और इसे अब प्रकट किया गया है। यदि तुम ऐसा सोचते हो, तब क्या तुम भूल गए हो कि मनुष्य की आरम्भिक रचना के दौरान, किसी भी अलग शैतानी वर्ग की रचना नहीं की गई थी? क्या तुम भूल चुके हो कि आदम और हव्वा से बनी मात्र एक ही मनुष्यजाति को रचा गया था (अर्थात मात्र पुरुष और स्त्री ही बनाए गए थे)? यदि तुम आरम्भ में ही शैतान के वंशज होते, तो क्या उसका अर्थ यह न होता कि जब यहोवा ने मनुष्य की रचना की, तब उसने एक शैतानी समूह को भी सम्मिलित कर लिया था? क्या वह ऐसा कुछ कर सकता था? उसने मनुष्य को अपने साक्ष्य के लिए बनाया था; उसने मनुष्य को अपनी महिमा के लिए रचा था। उसने जानबूझ कर अपने विरोध के लिए शैतान की सन्तान के एक वर्ग को स्वेच्छा से क्यों बनाया होता? यहोवा ऐसा कैसे कर सकता था? यदि उसने ऐसा किया होता तो कौन कहता कि वह धार्मिक परमेश्वर है? आज जब मैं यह बात कहता हूँ कि तुम सब में से कुछ लोग अन्त में शैतान के साथ जाएँगे, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम आरम्भ से ही शैतान के साथ थे; बल्कि इसका अर्थ यह है कि तुम इतना गिर चुके हो कि यदि परमेश्वर ने तुम्हें बचाने का प्रयास किया भी है, तब भी तुम वह उद्धार पाने में असफल हो गए हो। तुम्हें शैतान के साथ वर्गीकृत करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। क्योंकि तुम उद्धार के योग्य नहीं हो, इसका कारण यह नहीं है कि परमेश्वर तुम्हारे प्रति अधार्मिक है, अर्थात ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने जानबूझकर तुम्हारी नियति को शैतान की एक अभिव्यक्ति के रूप में तय कर दिया है, और फिर तुम्हें शैतान के साथ वर्गीकृत करके जानबूझकर तुम्हें पीड़ित करना चाहता है। यह विजय-कार्य का अंदरूनी सत्य नहीं है। यदि तुम ऐसा मानते हो तो तुम्हारी समझ बहुत ही एक पक्षीय है! विजय के अन्तिम चरण का उद्देश्य लोगों को बचाना और उनके अन्त को प्रकट करना है। यह न्याय के द्वारा लोगों की विकृति को भी प्रकट करना है और इस प्रकार उनसे पश्चाताप करवाना, उन्हें ऊपर उठाना, जीवन और मानवीय जीवन के सही मार्ग की खोज करवाना है। यह सुन्न और मन्दबुद्धि लोगों के हृदयों को जगाना और न्याय के द्वारा उनके भीतरी विद्रोह को प्रदर्शित करना है। परन्तु, यदि लोग अभी भी पश्चाताप करने के अयोग्य हैं, अभी भी मानव जीवन के सही मार्ग को खोजने में असमर्थ हैं और अपनी भ्रष्टताओं को दूर करने के योग्य नहीं हैं, तो उनका उद्धार नहीं हो सकता, और वे शैतान द्वारा निगल लिए जाएँगे। परमेश्वर के विजय-कार्य के ये मायने हैं : लोगों को

बचाना और उनका अन्त भी दिखाना। अच्छे अन्त, बुरे अन्त—वे सभी विजय-कार्य के द्वारा प्रकट किए जाते हैं। लोग बचाए जाएँगे या शापित होंगे, यह सब विजय-कार्य के दौरान प्रकट किया जाता है।

अंत के दिन वे होते हैं जब सभी वस्तुएँ जीतने के द्वारा किस्म के अनुसार वर्गीकृत की जाएँगी। जीतना, अंत के दिनों का कार्य है; दूसरे शब्दों में, प्रत्येक व्यक्ति के पापों का न्याय करना, अंत के दिनों का कार्य है। अन्यथा, लोगों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जाएगा? तुम सब में किया जाने वाला वर्गीकरण का कार्य सम्पूर्ण ब्रह्मांड में ऐसे कार्य का आरम्भ है। इसके पश्चात, समस्त देशों को और सभी लोगों में भी विजय-कार्य किया जाएगा। इसका अर्थ यह है कि सृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति किस्म के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा, वह न्याय किए जाने के लिए न्याय के सिंहासन के समक्ष आएगा। कोई भी व्यक्ति और कोई भी वस्तु इस ताड़ना और न्याय को सहने से बच नहीं सकती और न ही कोई व्यक्ति और वस्तु ऐसी है जिसका किस्म के अनुसार वर्गीकरण नहीं किया जाता; प्रत्येक को वर्गीकृत किया जाएगा, क्योंकि समस्त वस्तुओं का अन्त निकट आ रहा है और जो भी स्वर्ग में और पृथ्वी पर है, वह अपने अंत पर पहुँच गया है। मनुष्य मानवीय अस्तित्व के अंतिम दिनों से कैसे बच सकता है? और इस प्रकार, तुम सब और कितनी देर तक अपनी अनाज्ञाकारिता के कार्य को जारी रख सकते हो? क्या तुम सब नहीं देखते कि तुम्हारे अन्तिम दिन सन्निकट हैं। वे जो परमेश्वर का सम्मान करते हैं और उसके प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हैं, वे परमेश्वर की धार्मिकता के प्रकटन के दिन को कैसे नहीं देख सकते? वे नेकी के लिए अन्तिम पुरस्कार कैसे नहीं प्राप्त कर सकते? क्या तुम वह व्यक्ति हो, जो भला करता है या वह जो बुरा करता है? क्या तुम वह हो जो धार्मिक न्याय को स्वीकार करता है और फिर आज्ञापालन करता है या तुम वह हो जो धार्मिक न्याय को स्वीकार करता है फिर शापित किया जाता है? क्या तुम न्याय के सिंहासन के समक्ष प्रकाश में जीते हो या तुम अधोलोक के अन्धकार के बीच जीते हो? क्या तुम्हीं साफ तौर पर नहीं जानते हो कि तुम्हारा अंत पुरस्कार पाने का होगा या दंड? क्या तुम बहुत साफ तौर पर एवं गहराई से नहीं समझते हो कि परमेश्वर धार्मिक है? तो तुम्हारा आचरण और तुम्हारा हृदय किस प्रकार का है? आज जब मैं तुम्हें जीतता हूँ, तो क्या मुझे तुम्हें वास्तव में यह बताने की आवश्यकता है कि तुम्हारा आचरण भला है या बुरा? तुमने मेरे लिए कितना त्याग किया है? तुम मेरी आराधना कितनी गहराई से करते हो? क्या तुम स्वयं अच्छी तरह से नहीं जानते कि तुम मेरे प्रति कैसा व्यवहार करते हो? किसी और से ज़्यादा खुद तुम्हें अच्छी तरह ज्ञात होना चाहिए कि आखिरकार तुम्हारा अन्त क्या होगा! मैं तुम्हें सच कहता हूँ : मैंने ही मनुष्यजाति को सृजा है और

मैंने ही तुम्हें सृजा है; परन्तु मैंने तुम लोगों को शैतान के हाथों में नहीं दिया; और न ही मैंने जानबूझकर तुम्हें अपने विरुद्ध किया या मेरा विरोध करने दिया और इस प्रकार तुम्हें दण्डित किया। क्या ये सब विपत्तियाँ और पीड़ाएँ तुमने इसलिए नहीं सहीं हैं, क्योंकि तुम्हारे हृदय अत्यधिक कठोर और तुम्हारा आचरण अत्यधिक घृणित है। अत:, क्या तुम सबने अपना अन्त स्वयं निर्धारित नहीं किया है? क्या तुम अपने हृदय में, इस बात को दूसरों से बेहतर नहीं जानते कि तुम सब का अंत कैसा होगा? मैं लोगों को इसलिए जीतता हूँ, क्योंकि मैं उन्हें प्रकट करना और तुम्हारा उद्धार करना चाहता हूँ। यह तुम से बुरा करवाने या जानबूझकर तुम्हें विनाश के नरक में ले जाने के लिए नहीं है। समय आने पर, तुम्हारी समस्त भयानक पीड़ाएँ, तुम्हारा रोना और दाँत पीसना—क्या यह सब तुम्हारे पापों के कारण नहीं होगा? इस प्रकार, क्या तुम्हारी अपनी भलाई या तुम्हारी अपनी बुराई ही तुम्हारा सर्वोत्तम न्याय नहीं है? क्या यह उसका सर्वोत्तम प्रमाण नहीं है कि तुम्हारा अन्त क्या होगा?

आज, मैं चीन में परमेश्वर के चुने हुए लोगों में इसलिए काम करता हूँ ताकि उनके सारे विद्रोही स्वभावों को प्रकट करके उनकी समस्त कुरूपता को बेनकाब करूँ, और इससे मुझे वो सब बातें कहने के लिए संदर्भ मिलता है जो मुझे कहने की ज़रूरत है। तत्पश्चात, जब मैं सम्पूर्ण ब्रह्मांड को जीतने के कार्य के अगले चरण पर काम करूँगा, तो मैं पूरे ब्रह्मांड के लोगों की धार्मिकता का न्याय करने के लिए तुम लोगों के प्रति अपने न्याय का प्रयोग करूँगा, क्योंकि तुम्हीं लोग मनुष्यजाति में विद्रोहियों के प्रतिनिधि हो। जो लोग ऊपर नहीं उठ पाएँगे, वे सिर्फ विषमता और सेवा करने वाली चीज़ें बन जाएँगे, जबकि जो लोग ऊपर उठ पाएँगे, उनका प्रयोग किया जाएगा। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि वे जो लोग नहीं उठ पाएँगे, वे केवल विषमता के रूप में कार्य करेंगे? क्योंकि मेरे वर्तमान वचन और कार्य, तुम लोगों की पृष्ठभूमि को निशाना बनाते हैं और इसलिए कि तुम सब समस्त मनुष्यजाति में विद्रोही लोगों के प्रतिनिधि और साक्षात प्रतिमान बन चुके हो। बाद में, मैं इन वचनों को, जो तुम सबको जीतते हैं, विदेशों में ले जाऊँगा और वहाँ के लोगों को जीतने के लिए उनका प्रयोग करूँगा, फिर भी तुम उन्हें प्राप्त नहीं कर पाओगे। क्या वह तुम्हें एक विषमता नहीं बनाएगा? समस्त मनुष्यजाति का भ्रष्ट स्वभाव, मनुष्य के विद्रोही कार्य, मनुष्य की भद्दी छवियाँ और चेहरे, आज ये सभी उन वचनों में दर्ज होते हैं, जिनका प्रयोग तुम लोगों को जीतने के लिए किया गया था। तब मैं इन वचनों का प्रयोग प्रत्येक राष्ट्र और सम्प्रदाय के लोगों को जीतने के लिए करूँगा, क्योंकि तुम सब आदर्श और उदाहरण हो। हालाँकि, मैंने तुम लोगों को जानबूझकर नहीं त्यागा; यदि तुम

अपने अनुसरण में असफल होते हो और इस प्रकार तुम असाध्य होना प्रमाणित करते हो, तो क्या तुम सब मात्र सेवा करने वाली वस्तु और विषमता नहीं होगे? मैंने एक बार कहा था कि शैतान की युक्तियों के आधार पर मेरी बुद्धि प्रयुक्त की जाती है। मैंने ऐसा क्यों कहा था? क्या वह उसके पीछे का सत्य नहीं है, जो मैं अभी कह और कर रहा हूँ? यदि तुम आगे नहीं बढ़ सकते, यदि तुम पूर्ण नहीं किए जाते, बल्कि दण्डित किए जाते हो, तो क्या तुम विषमता नहीं बन जाओगे? हो सकता है तुम ने अपने समय में अत्यधिक पीड़ा सही हो, परन्तु तुम अभी भी कुछ नहीं समझते; तुम जीवन की प्रत्येक बात के विषय में अज्ञानी हो। यद्यपि तुम्हें ताड़ना दी गई और तुम्हारा न्याय किया गया; फिर भी तुम बिलकुल भी नहीं बदले और तुम ने भीतर तक जीवन ग्रहण ही नहीं किया है। जब तुम्हारे कार्य को जाँचने का समय आएगा, तुम अग्नि जैसे भयंकर परीक्षण और उस से भी बड़े क्लेश का अनुभव करोगे। यह अग्नि तुम्हारे सम्पूर्ण अस्तित्व को राख में बदल देगी। ऐसा व्यक्ति जिसमें जीवन नहीं है, ऐसा व्यक्ति जिसके भीतर एक रत्ती भी शुद्ध स्वर्ण न है, एक ऐसा व्यक्ति जो अभी भी पुराने भ्रष्ट स्वभाव में फंसा हुआ है, और ऐसा व्यक्ति जो विषमता होने का काम भी अच्छे से न कर सके, तो तुम्हें क्यों नहीं हटाया जाएगा? किसी ऐसे व्यक्ति का विजय-कार्य के लिए क्या उपयोग है, जिसका मूल्य एक पाई भी नहीं है और जिसके पास जीवन ही नहीं है? जब वह समय आएगा, तो तुम सब के दिन नूह और सदोम के दिनों से भी अधिक कठिन होंगे! तब तुम्हारी प्रार्थनाएँ भी तुम्हारा कुछ भला नहीं करेंगी। जब उद्धार का कार्य पहले ही समाप्त हो चुका है तो तुम बाद में वापस आकर नए सिरे से पश्चाताप करना कैसे आरम्भ कर सकते हो? एक बार जब उद्धार का सम्पूर्ण कार्य कर लिया जाएगा, तो उद्धार का और कार्य नहीं होगा; तब जो होगा, वह मात्र बुराई को दण्ड देने के कार्य का आरम्भ होगा। तुम विरोध करते हो, तुम विद्रोह करते हो, और तुम वो काम करते हो, जो तुम जानते हो कि बुरे हैं। क्या तुम कठोर दण्ड के लक्ष्य नहीं हो? मैं आज यह तुम्हारे लिए स्पष्ट रूप से बोल रहा हूँ। यदि तुम अनसुना करते हो, तो जब बाद में तुम पर विपत्ति टूटेगी, यदि तुम तब विश्वास और पछतावा करना आरम्भ करोगे, तो क्या इसमें तब बहुत देर नहीं हो चुकी होगी? मैं तुम्हें आज पश्चाताप करने का एक अवसर प्रदान कर रहा हूँ, परन्तु तुम ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हो। तुम और कितनी प्रतीक्षा करना चाहते हो? ताड़ना के दिन तक? मैं आज तुम्हारे पिछले अपराध याद नहीं रखता हूँ; मैं तुम्हें बार-बार क्षमा करता हूँ, मात्र तुम्हारे सकारात्मक पक्ष को देखने के लिए मैं तुम्हारे नकारात्मक पक्ष को अनदेखा करता हूँ, क्योंकि मेरे समस्त वर्तमान वचन और कार्य तुम्हें बचाने के लिए हैं। तुम्हारे प्रति मैं कोई बुरा इरादा नहीं रखता।

फिर भी तुम प्रवेश करने से इन्कार करते हो; तुम भले और बुरे में अंतर नहीं कर सकते और नहीं जानते कि दयालुता की प्रशंसा कैसे की जाती है। क्या ऐसे लोग बस दण्ड और धार्मिक प्रतिफल की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं?

जब मूसा ने चट्टान पर प्रहार किया, और यहोवा द्वारा प्रदान किया गया पानी उसमें से बहने लगा, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। जब दाऊद ने—आनंद से भरे अपने हृदय के साथ—मुझ यहोवा की स्तुति में वीणा बजायी तो यह उसके विश्वास की वजह से ही था। जब अय्यूब ने अपने पशुओं को जो पहाड़ों में भरे रहते थे और सम्पदा के गिने ना जा सकने वाले ढेरों को खो दिया, और उसका शरीर पीड़ादायक फोड़ों से भर गया, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। जब वह मुझ यहोवा की आवाज़ को सुन सका, और मुझ यहोवा की महिमा को देख सका, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। पतरस अपने विश्वास के कारण ही यीशु मसीह का अनुसरण कर सका था। उसे मेरे वास्ते सलीब पर चढ़ाया जा सका था और वह महिमामयी गवाही दे सका था, तो यह भी उसके विश्वास के कारण ही था। जब यूहन्ना ने मनुष्य के पुत्र की महिमामय छवि को देखा, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। जब उसने अंत के दिनों के दर्शन को देखा, तो यह सब और भी उसके विश्वास के कारण था। इतने सारे तथाकथित अन्य-जाति राष्ट्रों ने मेरा प्रकाशन प्राप्त कर लिया है, और जान गए हैं कि मैं मनुष्यों के बीच अपना कार्य करने के लिए देह में लौट आया हूँ, यह भी उनके विश्वास के कारण ही है। वे सब जो मेरे कठोर वचनों के द्वारा मार खाते हैं और फिर भी वे उनसे सांत्वना पाते हैं, और बचाए जाते हैं—क्या उन्होंने ऐसा अपने विश्वास के कारण ही नहीं किया है? लोग अपने विश्वास के कारण बहुत कुछ पा चुके हैं और वो हमेशा आशीष नहीं होता। उन्हें शायद उस तरह की प्रसन्नता और आनन्द का अनुभव न हो, जो दाऊद ने अनुभव किया था, या यहोवा के द्वारा प्रदान किया गया वैसा जल प्राप्त न हो, जैसा मूसा ने प्राप्त किया था। उदाहरण के लिए, अय्यूब को उसके विश्वास की वजह से यहोवा द्वारा आशीष प्रदान किया गया था, लेकिन वह विपत्ति से भी पीड़ित हुआ। चाहे तुम्हें आशीष प्राप्त हो, या तुम किसी आपदा से पीड़ित हो, दोनों ही आशीषित घटनाएँ हैं। विश्वास के बिना, तुम यह विजय-कार्य प्राप्त नहीं कर सकते, आज अपनी आँखों से यहोवा के कार्य को देख पाना तो दूर की बात है। तुम देख भी नहीं पाओगे, प्राप्त करना तो दूर की बात है। ये विपत्तियाँ, ये आपदाएँ, और ये समस्त न्याय-यदि ये तुम पर न टूटते, तो क्या तुम आज यहोवा के कार्य को देखने में समर्थ होते? आज, यह विश्वास ही है, जो तुम्हें जीत लिए जाने देता है, और यह तुम्हारा जीता जाना ही है जो तुम्हें यहोवा के प्रत्येक

कार्य पर विश्वास करने देता है। यह मात्र विश्वास के कारण ही है कि तुम इस प्रकार की ताड़ना और न्याय पाते हो। इस ताड़ना और न्याय के द्वारा तुम जीते और पूर्ण किए जाते हो। आज, जिस प्रकार की ताड़ना और न्याय तुम पा रहे हो, उसके बिना तुम्हारा विश्वास व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम परमेश्वर को नहीं जान पाओगे; इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम उसमें कितना विश्वास करते हो, तुम्हारा विश्वास फिर भी वास्तव में एक निराधार खाली अभिव्यक्ति ही होगी। जब तुम इस प्रकार के विजय कार्य को प्राप्त कर लेते हो, जो तुम्हें पूर्णत: आज्ञाकारी बनाता है, तभी तुम्हारा विश्वास सच्चा और विश्वसनीय बनता है और तुम्हारा हृदय परमेश्वर की ओर फिर जाता है। भले ही तुम "आस्था", इस शब्द के कारण न्याय और शाप झेलो, फिर भी तुम्हारी आस्था सच्ची है, और तुम सबसे वास्तविक और सबसे बहुमूल्य वस्तु प्राप्त करते हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि न्याय के इस मार्ग में ही तुम परमेश्वर की सृष्टि की अन्तिम मंजिल को देखते हो; इस न्याय में ही तुम देखते हो कि सृष्टिकर्ता से प्रेम करना है; इस प्रकार के विजय-कार्य में तुम परमेश्वर के हाथ को देखते हो; इसी विजय-कार्य में तुम मानव जीवन को पूरी तरह समझते हो; इसी विजय-कार्य में तुम मानव-जीवन के सही मार्ग को प्राप्त करते हो, और "मनुष्य" के वास्तविक अर्थ को समझ जाते हो; इसी विजय में तुम सर्वशक्तिमान के धार्मिक स्वभाव और उसके सुन्दर, महिमामय मुखमण्डल को देखते हो; इसी विजय-कार्य में तुम मनुष्य की उत्पत्ति को जान पाते और समस्त मनुष्यजाति के पूरे "अनश्वर इतिहास" को समझते हो; इसी विजय में तुम मनुष्यजाति के पूर्वजों और मनुष्यजाति के भ्रष्टाचार के उद्गम को समझते हो; इसी विजय में तुम आनन्द और आराम के साथ-साथ अनन्त ताड़ना, अनुशासन और उस मनुष्यजाति के लिए सृष्टिकर्त्ता की ओर से फटकार के वचन प्राप्त करते हो, जिसे उसने बनाया है; इसी विजय-कार्य में तुम आशीष प्राप्त करते हो और तुम वे आपदाएँ प्राप्त करते हो, जो मनुष्य को प्राप्त होनी चाहिए...। क्या यह सब तुम्हारे थोड़े से विश्वास के कारण नहीं है? और इन चीज़ों को प्राप्त करने के पश्चात क्या तुम्हारा विश्वास बढ़ा नहीं है? क्या तुमने बहुत कुछ प्राप्त नहीं कर लिया है? तुम ने मात्र परमेश्वर के वचन को ही नहीं सुना और परमेश्वर की बुद्धि को ही नहीं देखा, अपितु तुम ने उसके कार्य के प्रत्येक चरण को भी व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है। हो सकता है तुम कहो कि यदि तुम्हारे पास विश्वास नहीं होता, तो तुम इस प्रकार की ताड़ना और न्याय से पीड़ित न होते। परन्तु तुम्हें जानना चाहिए कि बिना विश्वास के, न केवल तुम इस प्रकार की ताड़ना और सर्वशक्तिमान से इस प्रकार की देखभाल प्राप्त करने में अयोग्य होते, अपितु तुम सृष्टिकर्ता से मिलने के सुअवसर को भी सर्वदा के लिए खो देते। तुम मनुष्यजाति के उद्गम

को कभी भी नहीं जान पाते और न ही मानव-जीवन की महत्ता को समझ पाते। चाहे तुम्हारे शरीर की मृत्यु हो जाती, और तुम्हारी आत्मा अलग हो जाती, फिर भी तुम सृष्टिकर्ता के समस्त कार्यों को नहीं समझ पाते, तुम्हें इस बात का ज्ञान तो कभी न हो पाता कि मनुष्यजाति को बनाने के पश्चात सृष्टिकर्ता ने इस पृथ्वी पर कितने महान कार्य किए। उसके द्वारा बनाई गई इस मनुष्यजाति के एक सदस्य के रूप में, क्या तुम इस प्रकार बिना-सोचे समझे अन्धकार में गिरने और अनन्त दण्ड की पीड़ा उठाने के लिए तैयार हो। यदि तुम स्वयं को आज की ताड़ना और न्याय से अलग करते हो, तो अंत में तुम्हें क्या मिलेगा? क्या तुम सोचते हो कि वर्तमान न्याय से एक बार अलग होकर, तुम इस कठिन जीवन से बचने में समर्थ हो जाओगे? क्या यह सत्य नहीं है कि यदि तुम "इस स्थान" को छोड़ते हो, तो जिससे तुम्हारा सामना होगा, वह शैतान के द्वारा दी जाने वाली पीड़ादायक यातना और क्रूर अपशब्द होंगे? क्या तुम असहनीय दिन और रात का सामना कर सकते हो? क्या तुम सोचते हो कि सिर्फ इसलिए कि आज तुम इस न्याय से बच जाते हो, तो तुम भविष्य की उस यातना को सदा के लिए टाल सकते हो? तुम्हारे मार्ग में क्या आएगा? क्या तुम किसी स्वप्न-लोक की आशा करते हो? क्या तुम सोचते हो कि वास्तविकता से तुम्हारे इस तरह से भागने से तुम भविष्य की उस अनन्त ताड़ना से बच सकते हो, जैसा कि तुम आज कर रहे हो? क्या आज के बाद, तुम कभी इस प्रकार का अवसर और इस प्रकार की आशीष पुनः प्राप्त कर पाओगे? क्या तुम उन्हें खोजने के योग्य होगे, जब घोर विपत्ति तुम पर आ पड़ेगी? क्या तुम उन्हें खोजने के योग्य होगे, जब सम्पूर्ण मनुष्यजाति विश्राम में प्रवेश करेगी? तुम्हारा वर्तमान खुशहाल जीवन और तुम्हारा छोटा-सा मैत्रीपूर्ण परिवार—क्या वे तुम्हारी भविष्य की अनन्त मंजिल की जगह ले सकते हैं? यदि तुम सच्चा विश्वास रखते हो, और तुम्हारे विश्वास के कारण यदि तुम्हें बहुत अधिक प्राप्त होता है, तो यह सबकुछ तुम्हें, एक सृजित प्राणी को, प्राप्त होना चाहिए और यह सब तुम्हारे पास पहले ही हो जाना चाहिए था। तुम्हारे विश्वास और तुम्हारे जीवन के लिए इस विजय से अधिक लाभकारी और कुछ नहीं है।

आज तुम्हें समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है, जो जीते जाते हैं उनके प्रति उसका क्या दृष्टिकोण है, जो पूर्ण बनाए जाते हैं और वर्तमान में तुम्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए। कुछ बातों को तुम्हें कम ही समझने की आवश्यकता है। तुम्हें परमेश्वर के कुछ रहस्यों की जाँच करने की आवश्यकता नहीं है; वे जीवन के लिए अधिक सहायक नहीं हैं, और उन्हें मात्र एक बार ही देखने की ही ज़रूरत है। तुम आदम और हव्वा के उन रहस्यों के बारे में पढ़ सकते हो : उस समय आदम और हव्वा

जो कुछ थे और परमेश्वर आज क्या काम करना चाहता है। तुम्हें समझने की आवश्यकता है कि मनुष्य को जीतने और पूर्ण बनाने में, परमेश्वर मनुष्य को वैसा ही बना देना चाहता है, जैसे आदम और हव्वा थे। तुम्हें अपने दिल में, पूर्णता के उस स्तर का पता होना चाहिए जो परमेश्वर के मानकों पर खरा उतरने के लिए प्राप्त किया जाना चाहिए और फिर तुम्हें उसे हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। यह तुम्हारे अभ्यास से संबंधित है और इसे तुम्हें समझना चाहिए। इन मामलों के विषय में परमेश्वर के वचनों के अनुसार तुम्हें प्रवेश करने का प्रयास करना ही तुम्हारे लिए पर्याप्त है। जब तुम पढ़ते हो कि "मनुष्यजाति के विकास का इतिहास दसियों हज़ार वर्ष पुराना है", तो तुम जिज्ञासु हो जाते हो, और तुम भाइयों और बहनों के साथ इसका उत्तर जानने का प्रयत्न करते हो। "परमेश्वर कहता है कि मनुष्यजाति का विकास छह हज़ार वर्ष पुराना है, ठीक है न? यह दसियों हज़ार वर्ष क्या हैं?" इसका उत्तर जानने का प्रयास करने से क्या लाभ है? चाहे परमेश्वर दसियों हज़ार वर्षों से कार्य कर रहा हो या लाखों वर्षों से, क्या वह वास्तव में चाहता है कि तुम यह सब जानो? एक सृजित प्राणी के रूप में तुम्हें यह सब जानने की आवश्यकता नहीं है। तुम इस प्रकार की वार्तालाप पर बस थोड़ा-सा विचार कर लो; लेकिन इसे एक दर्शन की तरह समझने का प्रयत्न न करो। तुम्हें केवल इतना जानने की आवश्यकता है कि आज तुम्हें किसमें प्रवेश करना है और क्या समझना और फिर उस पर अच्छी पकड़ बनानी है। तभी तुम्हें जीता जा सकेगा। उपरोक्त लेख को पढ़कर, तुममें एक सामान्य प्रतिक्रिया होनी चाहिए : परमेश्वर अत्यधिक उत्सुक है। वह हमें जीतकर महिमा और साक्ष्य प्राप्त करना चाहता है, तो हमें उसका सहयोग कैसे करना चाहिए? उसके द्वारा पूरी तरह जीत लिए जाने और उसका साक्ष्य बनने के लिए हमें क्या करना चाहिए? परमेश्वर को महिमा प्राप्त करने के समर्थ बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हमें शैतान के अधीन नहीं बल्कि परमेश्वर के अधिकार में जीने के लिए क्या करना चाहिए? लोगों को इसी बारे में सोचना चाहिए। तुम सब को परमेश्वर की विजय की महत्ता के विषय में स्पष्ट होना चाहिए। यह तुम्हारा उत्तरदायित्व है। इसकी स्पष्टता पाने के पश्चात ही, तुम्हें प्रवेश प्राप्त होगा, तुम सब इस चरण के कार्य को समझोगे और तुम पूर्णत: आज्ञाकारी बन जाओगे। अन्यथा, तुम लोग सच्ची आज्ञाकारिता प्राप्त नहीं कर पाओगे।

तुम विषमता होने के अनिच्छुक क्यों हो?

जिन लोगों को जीता जाता है वे विषमताएँ हैं और ऐसा केवल पूर्ण किए जाने के बाद ही होता है कि

लोग अंत के दिनों के कार्य के आदर्श और नमूने बन जाते हैं। पूर्ण किए जाने से पहले वे विषमताएँ, औजार और सेवा की वस्तुएँ होते हैं। जो लोग परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से जीते जा चुके हैं वे उसके प्रबंधन कार्य का क्रिस्टलीकरण, आदर्श और नमूने हैं। ये वचन जिन्हें मैंने ऐसे लोगों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया है मामूली हो सकते हैं, किन्तु वे कई रोचक कहानियाँ बयाँ करते हैं। तुम कम विश्वासी लोग हमेशा तुच्छ उपनाम पर तब तक बहस करोगे जब तक कि तुम लोगों के चेहरे लाल न हो जाएँ, और कभी-कभी तो इस वजह से हमारे संबंध भी खराब हो जाते हैं। यद्यपि यह बस एक छोटा सा उपनाम है, किन्तु तुम लोगों की सोच और विश्वास में, यह न केवल एक महत्वहीन उपनाम है, बल्कि यह तुम लोगों के भाग्य से संबंधित एक महत्वपूर्ण चीज है। इसलिए जो लोग समझदार नहीं हैं, उन्हें प्रायः इस तरह की छोटी-छोटी चीज़ों से बहुत नुकसान होगा—यह थोड़ा बचाने और ज़्यादा गँवाने के समान है। केवल किसी महत्वहीन उपनाम की वजह से तुम लोग भाग जाते हो और फिर कभी लौटकर नहीं आते। इसका कारण यह है कि तुम लोग जीवन को महत्वहीन मानते हो और तुम लोग उस नाम को बहुत महत्व देते हो जिससे तुम्हें पुकारा जाता है। इसलिए तुम लोगों के आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन में भी, तुम लोग अपनी हैसियत से संबंधित अवधारणाओं की वजह से प्रायः कई पेचीदा और अजीब कहानियाँ बना लोगे। शायद तुम लोग इसे स्वीकार नहीं करोगे, लेकिन मैं तुम्हें बताऊँगा कि ऐसे लोग वास्तविक जीवन में विद्यमान हैं, यद्यपि तुम लोगों को अभी तक अलग-अलग उजागर नहीं किया गया है। इस प्रकार की चीजें तुम सभी लोगों के जीवन में हुई हैं। यदि तुम्हें इस पर विश्वास नहीं है, तो नीचे एक बहन (या एक भाई) के जीवन के शब्दचित्र पर नज़र डालो। यह संभव है कि वह व्यक्ति वास्तव में तुम हो या हो सकता है कि वह कोई ऐसा व्यक्ति हो जिससे तुम परिचित हो। यदि मैं गलत नहीं हूँ, तो यह शब्दचित्र एक ऐसे अनुभव का वर्णन करता है जो तुम्हें हो चुका है। वर्णन में कोई कमी नहीं है, एक भी सोच-विचार को छोड़ा नहीं गया है, बल्कि उन्हें इस कहानी में पूरी तरह से दर्ज किया गया है। यदि तुम्हें विश्वास नहीं है, तो पहले इसे पढ़ो।

यह एक "आध्यात्मिक व्यक्ति" का छोटा सा अनुभव है।

वह यह देखकर बहुत व्याकुल हो गयी कि कलीसिया में भाई-बहन बहुत कुछ ऐसा करते थे जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं था इसलिए उसने उन्हें फटकारना शुरू किया : "तुम निकम्मे लोग हो! क्या तुम्हारा ज़मीर बिल्कुल मर चुका है? तुम लोग आखिर अविवेकपूर्ण काम क्यों कर रहे हो? तुम लोग जो मन में आए वह करने के बजाय सत्य को क्यों नहीं खोज रहे हो? ... और मैं यह बात तुम लोगों से कह

रही हूँ, लेकिन साथ ही मैं अपने आपसे भी घृणा कर रही हूँ। मैं देख रही हूँ कि परमेश्वर अधीरता से जल रहा है और मैं अपने अंदर एक आग महसूस कर रही हूँ। परमेश्वर ने जो कार्य मुझे सौंपा है मैं सच में उसे करना चाहती हूँ और मैं तुम लोगों के काम आना चाहती हूँ। लेकिन फिलहाल मैं बहुत कमज़ोर हूँ। परमेश्वर ने हम पर बहुत समय व्यय किया है और बहुत से वचन कहे हैं, किन्तु हम अभी भी वैसे ही हैं। मैं मन ही मन सोचती हूँ कि मैं परमेश्वर की बेहद ऋणी हूँ...।" (वह रोने लगी और बोल नहीं पायी)। तब वह प्रार्थना करने लगी: "हे परमेश्वर! मैं तुझसे विनती करती हूँ कि मुझे शक्ति दे और उससे भी अधिक प्रेरित कर जितना तूने पहले कभी किया है, और तेरा आत्मा मुझमें कार्य करे। मैं तेरे साथ सहयोग करने को तैयार हूँ। यदि अंत में तू महिमा प्राप्त करता है, तो मैं अपना सर्वस्व तुझे अर्पित करने को तैयार हूँ, भले ही मुझे अपना जीवन अर्पित करना पड़े। हम तेरी भरपूर स्तुति करना चाहते हैं ताकि तेरे पवित्र नाम की स्तुति करने, तुझे महिमान्वित करने, तुझे अभिव्यक्त करने, यह स्थापित करने के लिए कि तेरा कार्य सच्चा है और तू जिस जिम्मेदारी को वहन कर रहा है उसकी हर देखरेख के लिए, हमारे भाई-बहन खुशी से नाच-गा सकें...।" उसने इस तरह से ईमानदारी से प्रार्थना की और पवित्र आत्मा ने वास्तव में उसे एक ज़िम्मेदारी दे दी। इस दौरान उस पर असाधारण ज़िम्मेदारी थी और वह पूरा दिन पढ़ने, लिखने और सुनने में बिताती थी। वह बहुत व्यस्त रहती थी। उसकी आध्यात्मिक स्थिति उत्कृष्ट थी और अपने हृदय में, वह हर समय ऊर्जावान और ज़िम्मेदार बनी रहती थी। समय-समय पर वह कमजोर हो जाती थी और थककर चूर हो जाती थी, किन्तु शीघ्र ही फिर से सामान्य अवस्था में आ जाती थी। इसके बाद, उसने तेजी से प्रगति की, वह परमेश्वर के बहुत से वचनों की थोड़ी समझ पाने में सक्षम हो गई थी और उसने भजन भी तेजी से सीख लिये थे—कुल मिलाकर, उसकी आध्यात्मिक अवस्था उत्कृष्ट थी। जब उसने देखा कि कलीसिया में कई चीजें परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं हैं, तो वह चिंतित हो गई और उसने भाई-बहनों को झिड़का : "क्या अपने कर्तव्य के प्रति तुम्हारा यही समर्पण है? तुम लोग इतनी छोटी सी कीमत भी क्यों नहीं चुका पाते हो? यदि तुम लोग ऐसा नहीं करना चाहते हो, तो मैं करूँगी।..."

जब उस पर जिम्मेदारी पड़ी, तो पवित्र आत्मा के अधिकाधिक कार्य से उसने अपनी आस्था में खुद को मज़बूत महसूस किया। कभी-कभी मुश्किलें आने पर वह नकारात्मक हो जाती थी, लेकिन वह उन पर काबू पा लेती। अर्थात्, जब वह पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव करती, स्थिति अच्छी होने पर भी वह कुछ न कुछ कठिनाइयों का सामना करती या थोड़ी-बहुत कमजोरी महसूस करती थी। ऐसी चीज़ें होती ही

हैं, किन्तु शीघ्र ही वह उन स्थितियों से बाहर निकल आती थी। कमज़ोरी का अनुभव करते समय, वह प्रार्थना करती और उसे महसूस होता कि उसका अपना आध्यात्मिक कद अपर्याप्त है, लेकिन वह परमेश्वर के साथ सहयोग करने को तैयार थी। परमेश्वर चाहे जो करे, लेकिन वह उसकी इच्छा को संतुष्ट करने और उसकी सभी व्यवस्थाओं का पालन करने के लिए तैयार थी। कुछ ऐसे लोग थे जिनके मन में उसके बारे में कुछ राय और पूर्वाग्रह थे, लेकिन वह तटस्थ होकर उनके साथ संगति करने को तैयार रहती थी। पवित्र आत्मा के सामान्य कार्य के दौरान लोगों की अवस्थाएँ ऐसी ही होती हैं। कुछ समय के बाद, परमेश्वर का कार्य बदलने लगा और सभी लोग कार्य के दूसरे चरण में प्रवेश कर गए जिसमें परमेश्वर की उनसे अलग-अलग अपेक्षाएँ थीं। तो बोले गए नए वचनों में लोगों से नई अपेक्षाएँ की गयी थीं: "... तुम लोगों के लिए मेरे मन में केवल घृणा है, आशीष कदापि नहीं। मुझे तुम लोगों को आशीष देने का विचार कभी नहीं आया, न ही मुझे तुम लोगों को पूर्ण करने का विचार आया, क्योंकि तुम लोग बहुत विद्रोही हो। क्योंकि तुम लोग कुटिल और कपटी हो और क्योंकि तुम लोगों में क्षमता का अभाव है और तुम लोग निम्न हैसियत के हो, तुम लोग कभी भी मेरी दृष्टि में या मेरे हृदय में नहीं रहे। मेरा कार्य केवल तुम लोगों की निंदा करने के आशय से किया जाता है; मेरा हाथ कभी तुम लोगों से दूर नहीं रहा है, न ही मेरी ताड़ना तुम लोगों से दूर रही है। मैंने तुम लोगों का न्याय करता रहा हूँ और शाप देता रहा हूँ। क्योंकि तुम लोगों को मेरी कोई समझ नहीं है, इसलिए मेरा कोप हमेशा तुम लोगों पर रहा है। यद्यपि मैंने हमेशा तुम लोगों के बीच कार्य किया है, फिर भी तुम लोगों को अपने प्रति मेरी प्रवृत्ति का पता होना चाहिए। यह मात्र घृणा है—कोई अन्य प्रवृत्ति या राय नहीं है। मैं केवल यह चाहता हूँ कि तुम लोग मेरी बुद्धि और मेरे महान सामर्थ्य के लिए विषमता के रूप में कार्य करो। तुम लोग मेरी विषमताओं से अधिक कुछ नहीं हो क्योंकि मेरी धार्मिकता तुम लोगों के विद्रोहीपन के माध्यम से प्रकट होती है। मैं तुम लोगों से अपने कार्य के विषमता के रूप में, अपने कार्य का उपांग होने के लिए कार्य करवाता हूँ...।" जैसे ही उसने "उपांग" और "विषमता" शब्द देखे, वह सोचने लगी : "इन शब्दों के आलोक में मुझे कैसे अनुसरण करना चाहिए? ऐसी कीमत चुकाकर भी मैं विषमता ही हूँ। क्या कोई विषमता केवल एक सेवाकर्मी ही नहीं है? अतीत में कहा जाता था कि हम सेवाकर्मी नहीं होंगे, हम परमेश्वर-जन होंगे, मगर क्या हम आज भी यहाँ मात्र सेवाकर्मी की ही भूमिका में नहीं हैं? क्या सेवाकर्मियों में जीवन का अभाव नहीं होता? चाहे मुझे कितनी भी पीड़ा क्यों न सहनी पड़े, परमेश्वर मेरी प्रशंसा नहीं करेगा! जब मेरा एक विषमता होने का कार्य पूरा हो जाएगा, तो क्या यह समाप्त नहीं हो

जाएगा? ..." इस बारे में सोच-सोचकर वह निरुत्साहित हो गई थी। कलीसिया में आने पर अपने भाई-बहनों की अवस्था देखकर तो उसे और भी बुरा लगा : "तुम लोग सही नहीं हो! मैं भी सही नहीं हूँ! मैं नकारात्मक हो गयी हूँ। ओह! क्या किया जा सकता है? परमेश्वर अभी भी हमें नहीं चाहता है। इस तरह का कार्य करने पर, ऐसा कोई तरीका नहीं है कि वह हमें नकारात्मक न बनाए। मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मेरे साथ क्या समस्या है। मैं तो प्रार्थना भी नहीं करना चाहती। खैर, मैं अभी ठीक नहीं हूँ, मैं अपने आपको प्रेरित नहीं कर पा रही हूँ। अनेक बार प्रार्थना करने पर भी नहीं और इसे जारी नहीं रखना चाहती। मैं तो इसे इसी तरह से देखती हूँ। परमेश्वर कहता है कि हम विषमताएँ हैं, तो क्या विषमताएँ मात्र सेवाकर्मी ही नहीं हैं? परमेश्वर कहता है कि हम विषमताएँ हैं, उसके पुत्र नहीं और न ही हम उसके जन हैं। हम उसके पुत्र नहीं हैं, उसकी पहली संतान तो बिल्कुल नहीं। हम कुछ भी नहीं, मात्र विषमताएँ हैं। यदि हम यही हैं, तो क्या हमें संभवतः कोई अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकता है? विषमताओं को कोई आशा नहीं होती क्योंकि उनमें जीवन नहीं होता। यदि हम उसके पुत्र, उसके लोग होते, तो उसमें कोई आशा होती—हम पूर्ण बनाए जा सकते थे। क्या विषमताएं अपने अंदर परमेश्वर का जीवन वहन कर सकती हैं? क्या परमेश्वर उन लोगों को जीवन दे सकता है जो उसके लिए सेवा करते हैं? जिन्हें वह प्रेम करता है ये वे लोग हैं जिनमें उसका जीवन है और जिनमें उसका जीवन है मात्र वही उसके पुत्र, उसके जन हैं। यद्यपि मैं निराश और कमज़ोर हूँ, किन्तु मुझे आशा है कि तुम लोग निराश नहीं हो। मुझे पता है कि इस तरह से पीछे हटने और निराश होने से परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट नहीं किया जा सकता, लेकिन मैं विषमता बनने को तैयार नहीं हूँ। मुझे विषमता होने से डर लगता है। खैर, मेरे पास केवल इतनी ही ऊर्जा बची है और अब मैं आगे नहीं बढ़ सकती। मुझे आशा है कि तुम में से कोई भी वैसा नहीं करेगा जैसे मैंने किया है, बल्कि तुम मुझ से कुछ प्रेरणा पा सकोगे। मुझे लगता है जैसे कि मैं मर भी सकती हूँ! मैं मरने से पहले तुम लोगों के लिए कुछ अंतिम वचन छोड़ जाऊँगी—मुझे आशा है कि तुम लोग अंत तक विषमताओं के रूप में कार्य कर सकते हो; हो सकता है कि अंत में परमेश्वर विषमताओं की प्रशंसा करे...।" जब भाई-बहनों ने यह देखा, तो उन्होंने सोचा : वह इतनी निराश कैसे हो सकती है? क्या वह पिछले कुछ दिनों तक पूरी तरह से ठीक नहीं थी? वह अचानक इतनी निरुत्साही क्यों हो गई है? वह सामान्य क्यों नहीं हो रही है? उसने कहा : "मत कहो कि मैं सामान्य नहीं हो रही हूँ। दरअसल, मैं अपने हृदय में हर चीज के बारे में स्पष्ट हूँ। मैं जानती हूँ कि मैंने परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट नहीं किया है, लेकिन क्या यह मात्र इसलिए नहीं है क्योंकि मैं उसकी

विषमता के रूप में कार्य करने के लिए तैयार नहीं हूँ? मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है। शायद एक दिन परमेश्वर 'विषमताओं' के उपनाम को 'प्राणियों' में बदल दे, इतना ही नहीं, बल्कि अपने प्राणियों में बदल दे जिन्हें वह महत्वपूर्ण तरीकों से उपयोग में लाता है। क्या इस बात में कुछ आशा नहीं है? मुझे आशा है कि तुम लोग नकारात्मक या हतोत्साहित नहीं होगे और तुम लोग परमेश्वर का अनुसरण करने और विषमता के तौर पर कार्य करने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास कर सकोगे। बहरहाल, मैं जारी नहीं रख सकती। मेरे क्रियाकलापों से खुद को सीमित मत कर लेना।" अन्य लोगों ने सुनकर कहा : "भले ही तुम उसका अनुसरण करना बंद कर दो, किन्तु हम पालन करते रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर ने कभी हमारे साथ अन्याय नहीं किया है। हम तुम्हारी नकारात्मकता से लाचार नहीं होंगे।"

काफी समय तक इस अनुभव से गुजरने के बाद भी वह एक विषमता होने को लेकर निराश थी, इसलिए मैंने उससे कहा : "तुझे मेरे कार्य की कोई समझ नहीं है। तुझे मेरे वचनों की आंतरिक सच्चाई, सार या उनके अभीष्ट परिणामों की कोई समझ नहीं है। तू मेरे कार्य के लक्ष्यों को या इस बुद्धि को नहीं जानती। तुझे मेरी इच्छा की कोई समझ नहीं है। तू केवल पीछे हटना जानती है क्योंकि तू विषमता है—हैसियत के लिए तेरी अभिलाषा बहुत बड़ी है! तू कितनी बेवकूफ है! अतीत में मैंने तुझे बहुत कुछ कहा है। मैंने कहा है कि मैं तुझे पूर्ण बना दूँगा; क्या तू भूल गई? विषमताओं के बारे में बोलने से पहले, क्या मैंने पूर्ण बनाए जाने के बारे में नहीं बोला था?" "रुक, मुझे इसके बारे में सोचने दे। हाँ, सही है! विषमताओं के बारे में बात करने से पहले, तूने वे बातें कही थीं!" "जब मैंने पूर्ण बनाए जाने के बारे में बोला था, तो क्या मैंने नहीं कहा था कि लोगों को जीते जाने के बाद ही उन्हें पूर्ण बनाया जाएगा?" "हाँ!" "क्या मेरे वचन ईमानदार नहीं थे? क्या वे अच्छी भावना से नहीं कहे गए थे?" "हाँ! तू एक ऐसा परमेश्वर है जिसने कभी भी बेईमानी की बात नहीं कही है—कोई भी इस इसे नकारने की हिम्मत नहीं कर सकता। लेकिन तू कई भिन्न-भिन्न तरीकों से बोलता है।" "क्या मेरे बोलने का तरीका कार्य के भिन्न-भिन्न चरणों के अनुसार बदलता नहीं है? क्या जिन चीज़ों को मैं कहता हूँ वे तेरी आवश्यकताओं के आधार पर की और कही नहीं जाती हैं?" "तू लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करता है और तू उनकी आवश्यकता के अनुसार उनका भरण-पोषण करता है। यह असत्य नहीं है!" "तो क्या मैंने जो बातें तुझसे कही हैं वे लाभप्रद नहीं रही हैं? क्या मेरी ताड़नाएँ तेरे वास्ते संपन्न नहीं की गयी हैं?" "तू कैसे कह सकती है कि यह मेरे अपने लिए है! तूने मुझे लगभग मरने की हद तक ताड़ना दी है—मैं अब जीवित नहीं रहना चाहती हूँ। आज तू ऐसा कहता है, कल

तू वैसा कहता है। मुझे पता है कि मुझे पूर्ण बनाना मेरे अपने लिए है, किन्तु तूने मुझे पूर्ण नहीं बनाया है—तू मुझे विषमता बनाकर भी ताड़ना देता है। क्या तू मुझसे नफरत नहीं करता? कोई भी तेरे वचनों पर विश्वास नहीं करता और अब मैंने अच्छी तरह देख लिया है कि तेरी ताड़ना केवल तेरे हृदय से घृणा को दूर करने के लिए है, मुझे बचाने के लिए नहीं है। तूने पहले मुझसे सच्चाई छिपायी थी; तूने कहा था कि तू मुझे पूर्ण बनाएगा और यह कि ताड़ना मुझे पूर्ण बनाने के लिए है। इसलिए मैंने हमेशा तेरी ताड़ना का पालन किया है; मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आज मुझे एक विषमता का उपनाम मिलेगा। परमेश्वर, क्या यह बेहतर नहीं होता यदि तूने मुझसे किसी और रूप में कार्य करवाया होता? क्या तेरा मुझसे विषमता की भूमिका करवाना आवश्यक था? मैं तो स्वर्ग में द्वारपाल होना स्वीकार कर लेती। मैं इधर-उधर दौड़ती रही हूँ और स्वयं को खपा रही हूँ, किन्तु अंत में अब मेरे हाथ खाली हैं—मैं बिल्कुल कंगाल हूँ। मगर अभी भी तू मुझसे कहता है कि तू मुझसे अपने विषमता के रूप में कार्य करवाएगा। मैं अपना चेहरा भी कैसे दिखाऊँ?" "तू किस बारे में बात कर रही थी? मैंने अतीत में इतना अधिक न्याय का कार्य किया है और यह तेरी समझ में नहीं आ रहा? क्या तुझे अपने बारे में सच्ची समझ है? क्या 'विषमता' का उपनाम भी वचनों का न्याय नहीं है? क्या तुझे लगता है कि विषमताओं के बारे में मेरी सारी बातें भी एक तरीका है, तेरे साथ न्याय करने का एक तरीका है? तो कैसे तू मेरा अनुसरण करेगी?" "मैंने अभी तक योजना नहीं बनायी है कि तेरा अनुसरण कैसे करूँ! सबसे पहले मुझे जानना है: मैं विषमता हूँ या नहीं? क्या विषमताओं को भी पूर्ण बनाया जा सकता है? क्या 'विषमता' के उपनाम को बदला जा सकता है? क्या मैं विषमता होकर शानदार गवाही दे सकती हूँ और ऐसी इंसान बन सकती हूँ जिसे पूर्ण बनाया जा सके, जो परमेश्वर को प्यार करने का एक प्रतिमान हो और परमेश्वर का अंतरंग हो? क्या मुझे पूर्ण बनाया जा सकता है? मुझे सच बता!" "क्या तू नहीं जानती कि चीजें हमेशा विकसित हो रही हैं, हमेशा बदल रही हैं? अगर तू विषमता की अपनी भूमिका में वर्तमान में आज्ञाकारी होने की इच्छुक है, तो तू बदलने में सक्षम हो सकेगी। तू विषमता है या नहीं इसका तेरी नियति से कोई संबंध नहीं है। मुख्य बात यह है कि तू ऐसी इंसान हो सकती है या नहीं जिसके अपने जीवन स्वभाव में परिवर्तन हो गया है।" "क्या तू मुझे बता सकता है कि तू मुझे पूर्ण कर सकता है या नहीं?" "अगर तू अंत तक अनुसरण और आज्ञा पालन करेगी, तो मैं गारंटी देता हूँ कि मैं तुझे पूर्ण बना सकता हूँ।" "और मुझे किस तरह के दुःख से गुज़रना होगा?" "तुझे मुश्किलों से, वचनों के न्याय और ताड़ना से, विशेष रूप से वचनों की ताड़ना से गुज़रना होगा, जो विषमता होने की ताड़ना जैसी है!" "विषमता जैसी ही

ताड़ना? ठीक है, यदि मुश्किलों से गुजरकर मैं तेरे द्वारा पूर्ण बनायी जा सकूँ, यदि कोई आशा है तो ठीक है। यदि लेशमात्र भी आशा हो, तो यह विषमता होने से बेहतर है। उपनाम 'विषमता' का उपनाम बहुत खराब लगता है। मैं विषमता बनने की इच्छुक नहीं हूँ!" "विषमता में इतना खराब क्या है? क्या विषमताएँ अपने आप में पूरी तरह से अच्छे नहीं होते? क्या विषमताएँ आशीषों का आनंद लेने योग्य नहीं हैं? यदि मैं कहता हूँ कि विषमताएँ आशीषों का आनंद ले सकते हैं तो तुम आशीषों का आनंद लेने में सक्षम हो जाओगी। क्या यह सच नहीं है कि मेरे कार्य की वजह से लोगों उपनाम बदल जाता है? फिर भी मात्र एक उपनाम तुम्हें इतना परेशान कर रहा है? सच्चाई यह है कि तू इस तरह की विषमता की पूरी तरह हकदार है। तू अनुसरण करने के लिए तैयार है या नहीं?" "ठीक है, तू मुझे पूर्ण बना सकता है या नहीं? क्या तू मुझे अपने आशीषों का आनंद लेने दे सकता है?" "तू अंत तक अनुसरण करने के लिए तैयार है या नहीं? क्या तू खुद को अर्पित करने के लिए तैयार है?" "मुझे इस पर विचार करने दे। एक विषमता भी तेरे आशीष का आनंद ले सकता है, और उसे पूर्ण बनाया जा सकता है। पूर्ण बनाए जाने के बाद मैं तेरी अंतरंग हो जाऊँगी, तेरी सभी इच्छाओं को समझ जाऊँगी और मुझमें भी वही होगा जो तुझमें है। मैं भी वही आनंद ले पाऊँगी, जो आनंद तू लेता है और मैं भी वह जान जाऊँगी जो तू जानता है। ... मुश्किलों से गुजरने और पूर्ण किए जाने के बाद, मैं आशीषों का आनंद ले पाऊँगी। तो मैं वास्तव में किन आशीषों का आनंद लूँगी?" "तू किन आशीषों का आनंद लेगी इस बारे में चिंता मत कर। भले ही मैं तुझे बता दूँ, तब भी ये चीज़ें तेरी कल्पना से परे हैं। एक अच्छी विषमता होने के बाद, तू जीत ली जाएगी और तू एक सफल विषमता हो जाएगी। यह जीत लिए गए इंसान का एक प्रतिमान और नमूना है, लेकिन तू प्रतिमान और नमूना जीत लिए जाने के बाद ही हो सकती है।" "प्रतिमान और नमूना क्या होता है?" "यह सभी अन्य-जातियों के लिए एक प्रतिमान और नमूना है, अर्थात्, उनके लिए जिन्हें जीता नहीं गया है।" "इसमें कितने लोग शामिल होते हैं?" "बहुत से लोग। यह तुम लोगों में से मात्र चार या पाँच हजार नहीं होते—पूरी दुनिया में जो लोग इस नाम को स्वीकार करते हैं, उन सभी को जीता जाना ज़रूरी है।" "इसलिए यह मात्र पाँच या दस शहर नहीं हैं!" "इसके बारे में अभी चिंता मत कर, स्वयं को अत्यधिक चिंतित मत कर। बस इस बात पर ध्यान दे कि तुझे अभी प्रवेश कैसे पाना चाहिए! मैं गारंटी देता हूँ कि तुझे पूर्ण बनाया जा सकता है।" "किस स्तर तक? और मैं किन आशीषों का आनंद ले सकती हूँ?" "तू क्यों इतनी चिंतित है? मैंने गारंटी दी है कि तुझे पूर्ण बनाया जा सकता है। क्या तू भूल गई है कि मैं विश्वसनीय हूँ?" "यह सच है कि तू विश्वसनीय है, किन्तु बोलने के

तेरे कुछ तरीके हमेशा बदलते रहते हैं। आज तू कहता है कि तू गारंटी देता है कि मुझे पूर्ण बनाया जा सकता है, लेकिन कल तू कह सकता है कि यह अनिश्चित है। और कुछ लोगों को तू कहता है, 'मैं गारंटी देता हूँ कि तेरे जैसा कोई व्यक्ति पूर्ण नहीं बनाया जा सकता।' मुझे नहीं पता कि तेरे वचनों के साथ क्या चल रहा है। मैं बस उन पर विश्वास करने की हिम्मत नहीं कर पाती हूँ।" "तो तू स्वयं को अर्पित कर सकती है या नहीं?" "क्या अर्पित करूँ?" "अपने भविष्य को, अपनी आशाओं को अर्पित कर।" "इन चीज़ों को त्याग देना आसान है! मुख्य बात 'विषमता' उपनाम की है—यह मुझे नहीं चाहिए। यदि तू मुझसे यह उपनाम हटा ले तो मैं किसी भी चीज के लिए तैयार हो जाऊँगी, मैं कुछ भी करने को तैयार हो जाऊँगी। क्या ये मामूली चीज़ें नहीं हैं? क्या तू उस पदनाम को हटा सकता है?" "क्या यह बहुत आसान नहीं होगा? यदि मैं तुझे वह उपनाम दे सकता हूँ तो मैं निश्चित रूप से इसे वापस भी ले सकता हूँ। लेकिन अभी समय नहीं आया है। तुझे सबसे पहले कार्य के इस चरण का अनुभव पूरा कर लेना चाहिए, तभी तू एक नया उपनाम प्राप्त कर सकती है। कोई व्यक्ति जितना अधिक तेरे जैसा होगा, उसे उतना ही अधिक विषमता होना होगा। विषमता होने के लेकर तू जितना अधिक भयभीत होगी, उतना ही अधिक मैं तेरा इस रूप में वर्गीकरण करूँगा। तेरे जैसे व्यक्ति को सख्ती से अनुशासित किया जाना चाहिए और निपटा जाना चाहिए। कोई व्यक्ति जितना अधिक विद्रोही होगा, उतना ही अधिक वह एक सेवाकर्मी होगा और अंत में, उसे कुछ प्राप्त नहीं होगा।" "यह देखते हुए कि इतनी मेहनत से खोज कर रही हूँ, मैं 'विषमता' के उपनाम को क्यों नहीं हटा सकती? हमने इतने सारे वर्षों से तेरा अनुसरण किया है और बहुत अधिक दुःख सहा है। हमने तेरे लिए बहुत कुछ किया है। हमने तेरे लिए आँधी-तूफान झेले हैं; हमने लगभग अपनी जवानी गँवा दी है। हमने न विवाह किया है, न ही घर-परिवार बनाया है और हम में से जो भी ऐसा कर चुके हैं वे भी बाहर आ गए हैं। मैं हाई स्कूल तक विद्यालय में थी; लेकिन जैसे ही मैंने सुना कि तू आ गया है, मैंने कालेज जाने का अवसर त्याग दिया। और तू कहता है कि हम विषमता हैं! हमने बहुत कुछ गँवाया है! हम ये सब चीजें करते हैं लेकिन पता चलता है कि हम मात्र तेरी विषमता हैं। इससे मेरे पुराने सहपाठी और मेरे साथी मेरे बारे में क्या सोचते हैं? जब वे मुझे देखकर मेरी स्थिति और मेरी हैसियत के बारे में पूछते हैं, तो मुझे उन्हें बताने में शर्मिंदगी कैसे न होगी? सबसे पहले, तुझ पर अपने विश्वास की वजह से मैंने हर मूल्य चुकाया और लोगों ने मुझे बेवकूफ समझकर मेरा उपहास किया। लेकिन यह सोचकर मैंने अनुसरण किया कि मेरा दिन आएगा, जब मैं उन सभी को दिखा सकूँगी जिन्होंने विश्वास नहीं किया। लेकिन, आज तू मुझे

कहता है कि मैं एक विषमता हूँ। यदि तूने मुझे निम्नतम उपनाम दिया होता, यदि तूने मुझे राज्य का एक व्यक्ति होने की अनुमति दी होती, तो वह फिर भी ठीक होता! भले ही मैं तेरी अनुयायी या तेरी विश्वासपात्र न हो सकी हूँ, किन्तु मैं मात्र तेरी अनुयायी बन कर भी खुश रहती! हमने इतने सालों तक तेरा अनुसरण किया है, अपने परिवारों का त्याग किया है, और अब तक खोज करते रहना बहुत कठिन रहा है, और इसके बदले हमारे पास दिखाने को केवल 'विषमता' का उपनाम है! मैंने तेरे लिए हर चीज का परित्याग कर दिया है; मैंने सभी सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया है। पहले, किसी ने मुझे एक संभावित साथी से परिचित करवाया। वह सुंदर और सजीला था; वह किसी ऊँचे सरकारी अधिकारी का पुत्र था। उस समय मेरी उसमें रुचि थी। लेकिन जैसे ही मैंने सुना कि परमेश्वर प्रकट हुआ है और अपना कार्य कर रहा है, कि तू हमें राज्य में ले जाने, और हमें पूर्ण बनाने जा रहा है, और तूने हमें सब कुछ छोड़ने में समय न गँवाने का दृढ़ संकल्प लेने के लिए कहा है, जब मैंने यह सुना, तो मैंने देखा कि मुझमें थोड़ा-भी संकल्प नहीं है। तब मैंने अपने आपको मज़बूत बनाकर उस अवसर को अस्वीकार कर दिया। उसके बाद, उसने मेरे परिवार को कई बार उपहार भेजे, लेकिन मैंने उनको देखा भी नहीं। क्या तुझे लगता है कि मैं उस समय परेशान थी? यह इतनी अच्छी चीज़ थी लेकिन व्यर्थ हो गई। मैं परेशान कैसे न होती? मैं इसे लेकर कई दिनों तक इतनी परेशान रही कि रात को सो नहीं सकी, लेकिन अंत में मैंने तब भी उसे जाने दिया। जब भी मैंने प्रार्थना की तो मैं पवित्रात्मा से प्रेरित हुई, जिसने कहा: 'क्या तू मेरे लिए सब कुछ बलिदान करने को तैयार है? क्या तू मेरे लिए अपने आप को खपाने को तैयार है?' जब भी मैंने तेरे उन वचनों पर विचार करती, तो मैं रोती थी। मैं प्रेरित होकर न जाने कितनी बार रोती। एक साल बाद मैंने सुना कि उस आदमी ने शादी कर ली है। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं बेहद दुःखी हो गई थी, लेकिन मैंने तेरी खातिर उसे भी जाने दिया। और यह सब इस बात का ज़िक्र भी किये बिना कि मेरे कपड़े और खानपान अच्छे नहीं हैं—मैंने उस विवाह का त्याग कर दिया, मैंने यह सब त्याग दिया, इसलिए तुझे मुझसे विषमता के रूप में कार्य नहीं करवाना चाहिए! मैंने अपने आप को सिर्फ तेरे लिए अर्पित करने की खातिर अपने विवाह, अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना का त्याग कर दिया! एक व्यक्ति का पूरा जीवन एक अच्छा साथी खोजने और एक सुखी परिवार पाने से अधिक कुछ नहीं होता। मैंने इन सबको, बेहतरीन चीजों को जाने दिया, और अब मेरे पास कुछ भी नहीं है, मैं बिल्कुल अकेली हूँ। तू मुझे कहाँ भेजना चाहेगा? जब से मैंने तेरा अनुसरण करना शुरू किया है तब से मैं कष्ट ही उठाती रही हूँ। मेरा जीवन अच्छा नहीं रहा है। मैंने अपने परिवार, अपनी

जीविका और अपने सारे भौतिक सुख छोड़ दिए हैं, और हमारा यह सारा बलिदान भी तेरे आशीषों का आनंद लेने के लिए अभी भी पर्याप्त नहीं है? तो अब यह 'विषमता' की चीज आ गयी। परमेश्वर, तूने सचमुच सीमा लाँघ दी है! हमें देख—हमारे पास इस दुनिया में भरोसा करने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। हममें से कुछ ने अपने बच्चों को छोड़ दिया है, कुछ ने अपनी नौकरी, अपने जीवनसाथी[क] को छोड़ दिया है, वगैरह, वगैरह; हमने सभी दैहिक सुखों को छोड़ दिया है। हमारे लिए अब और क्या उम्मीद बची है? हम दुनिया में कैसे ज़िंदा रह सकते हैं? हमने जो कीमत चुकाई है, क्या उसका मूल्य एक पैसा भी नहीं हैं? क्या तू इसे बिल्कुल भी नहीं देख सकता? हमारी हैसियत निम्न है और हममें क्षमताओं का अभाव है—हम इसे स्वीकार करते हैं, लेकिन जो तू हमसे करवाना चाहता था हमने उस पर कब ध्यान नहीं दिया है? अब तू, हमें निर्दयतापूर्वक छोड़ रहा है और 'विषमता' के उपनाम के साथ 'चुकता' कर रहा है? क्या हमारे बलिदान ने हमें यही सब दिया है? अंत में, अगर लोग मुझसे पूछें कि मुझे परमेश्वर पर विश्वास करने से क्या प्राप्त हुआ है, तो क्या मैं सचमुच उन्हें यह 'विषमता' शब्द दिखा सकती हूँ? यह कहने के लिए मैं अपना मुँह कैसे खोल सकती हूँ कि मैं एक विषमता हूँ? मैं इसे अपने माता-पिता को नहीं समझा सकती, अपने पूर्व संभावित साथी को नहीं समझा सकती। मैंने कितनी बड़ी कीमत चुकाई है, और मुझे बदले में जो मिला है वह है एक विषमता होना! आह! मुझे बहुत बुरा लग रहा है!" (अपनी जाँघों को पीटते हुए रोना शुरू कर दिया।) "अब अगर मैं कहूँ कि मैं तुझे एक विषमता का उपनाम नहीं दे ने रहा हूँ, बल्कि तुझे अपने लोगों में से एक बनाऊँगा और सुसमाचार का प्रसार करवाने के लिए निर्देश दूँगा, यदि मैं तुझे कार्य करने के लिए हैसियत दे दूँ, तो क्या तू ये कार्य कर पाएगी? इस कार्य के कदम-दर-कदम तूने वास्तव में क्या प्राप्त किया है? और फिर भी तू अपनी कहानी से मुझे प्रसन्न कर रही है—तुझे कोई शर्म नहीं है! तू कहती है कि तूने कीमत चुकाई है लेकिन कुछ नहीं मिला है। क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने तुझे यह नहीं बताया है कि किसी व्यक्ति को पाने के लिए मेरी शर्तें क्या हैं? मेरा कार्य किसके लिए है? क्या तू जानती है? यहाँ तू पुराने दुःखों को पुनर्जीवित कर रही है! क्या अब तेरी गिनती इंसानों में होती है? तूने जो कष्ट भोगा है, क्या वह तेरी अपनी इच्छा से नहीं था? और क्या तेरा कष्ट आशीष पाने के उद्देश्य से नहीं था? क्या तूने मेरी अपेक्षाओं को पूरा किया है? तू तो बस आशीष चाहती है। तुझे कोई शर्म नहीं है! तुझसे मेरी अपेक्षाएँ कब अनिवार्य थीं? यदि तू मेरा अनुसरण करने की इच्छुक है तो तुझे हर चीज में मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिए। मुझसे सौदेबाज़ी मत कर। आखिरकार, मैंने तुझे पहले ही बता दिया था कि यह रास्ता कष्टों से

भरा है। यह विकट संभावनाओं और थोड़ी-बहुत शुभता से भरा हुआ है। क्या तू भूल गयी है? मैंने ऐसा कई बार कहा है। यदि तू कष्ट उठाने के लिए तैयार है, तो ही मेरा अनुसरण कर। यदि तू कष्ट उठाने के लिए तैयार नहीं है, तो रुक जा। मैं तुझे बाध्य नहीं कर रहा हूँ—तू आने-जाने के लिए स्वतंत्र है! लेकिन, मेरा कार्य ऐसे ही किया जाता है, और मैं तेरी व्यक्तिगत विद्रोहशीलता के कारण अपने समस्त कार्य में विलंब नहीं कर सकता। तू भले ही आज्ञापालन करने के लिए तैयार न हो, लेकिन अन्य लोग हैं जो तैयार हैं। तुम सभी हताश लोग हो! तुझे किसी चीज़ का डर नहीं है! तू मुझसे सौदेबाज़ी कर रही है—तू जीवित रहना चाहती है या नहीं? तू अपने लिए योजना बनाती है और अपनी प्रसिद्धि और लाभ के लिए संघर्ष करती है। क्या मेरा कार्य तुम सभी लोगों के लिए नहीं है? क्या तू अंधी है? मेरे शरीर धारण करने से पहले, तू मुझे नहीं देख सकती थी, और ये वचन जो तूने बोले हैं माफ करने योग्य होते, लेकिन अब मैं देहधारी हूँ और मैं तुम लोगों के बीच कार्य कर रहा हूँ, मगर तब भी तू नहीं देख पाती? तू क्या चीज़ है जो तू नहीं समझती? तू कहती है कि तूने नुकसान सहा है; इसलिए मैं तुम हताश लोगों को बचाने के लिए देह बन गया हूँ और इतना सारा कार्य किया है, और तब भी तू अब तक शिकायत कर रही है—क्या तू नहीं कहेगी कि मैंने नुकसान सहा है? क्या मैंने जो कुछ भी किया है वह तुम लोगों के लिए नहीं किया गया है? मैं लोगों को यह उपनाम उनके वर्तमान आध्यात्मिक कद के आधार पर देता हूँ। यदि मैं तुझे 'विषमता' कहता हूँ, तो तू तुरंत एक विषमता बन जाती है। इसी तरह, यदि मैं तुझे 'परमेश्वर-जन में से एक' कहता हूँ, तो तू तुरंत परमेश्वर-जन बन जाती है। मैं तुझे जो भी बुलाता हूँ, तू वही है। क्या यह मेरे होंठों के कुछ वचनों से प्राप्त नहीं होता है? मेरे ये कुछ वचन तुझे इतना क्रोधित कर रहे हैं? तो ठीक है, मुझे क्षमा कर! यदि तू अब आज्ञापालन नहीं करेगी, तो अंत में तुझे शाप दिया जाएगा—क्या तब तू खुश होगी? तू अपनी जीवन-शैली पर ध्यान न देकर केवल अपनी हैसियत और उपनाम पर ध्यान देती है; तेरा जीवन किस प्रकार का है? मैं इनकार नहीं करता कि तूने एक बड़ी कीमत चुकाई है, लेकिन तू अपने आध्यात्मिक कद और अभ्यास पर एक नज़र डाल, और अभी भी तू मुझसे शर्तों पर मोल-तोल कर रही है। क्या यही वह आध्यात्मिक कद है जो तूने अपने संकल्प से प्राप्त किया है? क्या तेरे अंदर कोई निष्ठा है? क्या तुझमें कोई विवेक है? क्या मैंने कुछ गलत कर दिया? क्या तुझसे मेरी अपेक्षाएँ गलत थीं? अच्छा, तो यह क्या है? मैं तुझसे कुछ दिनों के लिए एक विषमता के रूप में कार्य करवाता और फिर भी तू ऐसा करने के लिए तैयार नहीं है। यह किस तरह का संकल्प है? तुम सभी कमजोर इच्छाशक्ति वाले हो, तुम लोग कायर हो। अब तुझ जैसे लोगों को दंडित

करना निस्संदेह अनिवार्य बात है!" मेरे ऐसा कहने के बाद, वह एक शब्द नहीं बोली।

अब इस प्रकार के कार्य का अनुभव करते हुए, तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य के चरणों और लोगों को रूपांतरित करने के उसके तरीकों पर कुछ समझ अवश्य प्राप्त हो जानी चाहिए। रूपांतरण में परिणाम प्राप्त करने के लिए इनका होना एकमात्र तरीका है। तुम लोगों की खोज में, तुम्हारी बहुत सी व्यक्तिगत अवधारणाएँ, आशाएँ और भविष्य होते हैं। वर्तमान कार्य तुम लोगों की हैसियत पाने की अभिलाषा और तुम्हारी अनावश्यक अभिलाषाओं से निपटने के लिए है। आशाएँ, हैसियत और अवधारणाएँ सभी शैतानी स्वभाव के विशिष्ट प्रतिनिधित्व हैं। लोगों के हृदय में इन चीज़ों के होने का कारण पूरी तरह से यह है कि शैतान का विष हमेशा लोगों के विचारों को दूषित कर रहा है, और लोग शैतान के इन प्रलोभनों से पीछा छुड़ाने में हमेशा असमर्थ रहे हैं। वे पाप के बीच रह रहे हैं, मगर इसे पाप नहीं मानते, और अभी भी सोचते हैं: "हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, इसलिए उसे हमें आशीष प्रदान करना चाहिए और हमारे लिए सब कुछ सही ढंग से व्यवस्थित करना चाहिए। हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, इसलिए हमें दूसरों से श्रेष्ठतर होना चाहिए, और हमारे पास दूसरों की तुलना में बेहतर हैसियत और बेहतर भविष्य होना चाहिए। चूँकि हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, इसलिए उसे हमें असीम आशीष देनी चाहिए। अन्यथा, इसे परमेश्वर पर विश्वास करना नहीं कहा जाएगा।" बहुत सालों से, जिन विचारों पर लोगों ने अपने अस्तित्व के लिए भरोसा रखा था, वे उनके हृदय को इस स्थिति तक दूषित कर रहे हैं कि वे विश्वासघाती, डरपोक और नीच हो गए हैं। उनमें न केवल इच्छा-शक्ति और संकल्प का अभाव है, बल्कि वे लालची, अभिमानी और स्वेच्छाचारी भी बन गए हैं। उनमें ऐसे किसी भी संकल्प का सर्वथा अभाव है जो स्वयं को ऊँचा उठाता हो, बल्कि, उनमें इन अंधेरे प्रभावों की बाध्यताओं से पीछा छुड़ाने की लेश-मात्र भी हिम्मत नहीं है। लोगों के विचार और जीवन इतने सड़े हुए हैं कि परमेश्वर पर विश्वास करने के बारे में उनके दृष्टिकोण अभी भी बेहद वीभत्स हैं। यहाँ तक कि जब लोग परमेश्वर में विश्वास के बारे में अपना दृष्टिकोण बताते हैं तो इसे सुनना मात्र ही असहनीय होता है। सभी लोग कायर, अक्षम, नीच और दुर्बल हैं। उन्हें अंधेरे की शक्तियों के प्रति क्रोध नहीं आता, उनके अंदर प्रकाश और सत्य के लिए प्रेम पैदा नहीं होता; बल्कि, वे उन्हें बाहर निकालने का पूरा प्रयास करते हैं। क्या तुम लोगों के वर्तमान विचार और दृष्टिकोण ठीक ऐसे ही नहीं हैं? "चूँकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, इसलिए मुझ पर आशीषों की वर्षा होनी चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि मेरी हैसियत कभी न गिरे, यह अविश्वासियों की तुलना में अधिक बनी रहनी चाहिए।"

तुम्हारा यह दृष्टिकोण कोई एक-दो वर्षों से नहीं है; बल्कि बरसों से है। तुम लोगों की लेन-देन संबंधी मानसिकता कुछ ज़्यादा ही विकसित है। यद्यपि आज तुम लोग इस चरण तक पहुँच गए हो, तब भी तुम लोगों ने हैसियत का राग अलापना नहीं छोड़ा, बल्कि लगातार इसके बारे में पूछताछ करते रहते हो, और इस पर रोज नज़र रखते हो, इस गहरे डर के साथ कि कहीकहीं किसी दिन तुम लोगों की हैसियत खो न जाए और तुम लोगों का नाम बर्बाद न हो जाए। लोगों ने सहूलियत की अपनी अभिलाषा का कभी त्याग नहीं किया। इसलिए, जैसा कि मैं आज जिस तरह तुम्हारा न्याय कर रहा हूँ, अंत में तुम लोगों के अंदर किस स्तर की समझ होगी? तुम लोग कहोगे कि यद्यपि तुम लोगों की हैसियत ऊँची नहीं है, फिर भी तुम लोगों ने परमेश्वर के उत्कर्ष का आनंद तो लिया ही है। क्योंकि तुम लोग अधम पैदा हुए थे इसलिए तुम लोगों की कोई हैसियत नहीं है, लेकिन तुम हैसियत प्राप्त कर लेते हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा उत्कर्ष करता है—यह तुम लोगों को परमेश्वर ने प्रदान किया है। आज तुम लोग व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का प्रशिक्षण, उसकी ताड़ना और उसका न्याय प्राप्त करने में सक्षम हो। यह भी उसी का उत्कर्ष है। तुम लोग व्यक्तिगत रूप से उसके द्वारा शुद्धिकरण और प्रज्ज्वलन प्राप्त करने में सक्षम हो। यह परमेश्वर का महान प्रेम है। युगों-युगों से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसने उसका शुद्धिकरण और प्रज्ज्वलन प्राप्त किया हो और एक भी व्यक्ति उसके वचनों के द्वारा पूर्ण नहीं हो पाया है। परमेश्वर अब तुम लोगों से आमने-सामने बात कर रहा है, तुम लोगों को शुद्ध कर रहा है, तुम लोगों के भीतर के विद्रोहीपन को उजागर कर रहा है—यह सचमुच उसका उत्कर्ष है। लोगों में क्या योग्यता हैं? चाहे वे दाऊद के पुत्र हों या मोआब के वंशज, कुल मिला कर, लोग ऐसे सृजित प्राणी हैं जिनके पास गर्व करने के लिए कुछ नहीं है। चूँकि तुम लोग परमेश्वर के प्राणी हो, इसलिए तुम लोगों को एक प्राणी का कर्तव्य निभाना चाहिए। तुम लोगों से अन्य कोई अपेक्षाएँ नहीं हैं। तुम लोगों को ऐसे प्रार्थना करनी चाहिए : "हे परमेश्वर, चाहे मेरी हैसियत हो या न हो, अब मैं स्वयं को समझती हूँ। यदि मेरी हैसियत ऊँची है तो यह तेरे उत्कर्ष के कारण है, और यदि यह निम्न है तो यह तेरे आदेश के कारण है। सब-कुछ तेरे हाथों में है। मेरे पास न तो कोई विकल्प हैं न ही कोई शिकायत है। तूने निश्चित किया कि मुझे इस देश में और इन लोगों के बीच पैदा होना है, और मुझे पूरी तरह से तेरे प्रभुत्व के अधीन आज्ञाकारी होना चाहिए क्योंकि सब-कुछ उसी के भीतर है जो तूने निश्चित किया है। मैं हैसियत पर ध्यान नहीं देती हूँ; आखिरकार, मैं मात्र एक प्राणी ही तो हूँ। यदि तू मुझे अथाह गड्ढे में, आग और गंधक की झील में डालता है, तो मैं एक प्राणी से अधिक कुछ नहीं हूँ। यदि तू मेरा उपयोग करता है,

तो मैं एक प्राणी हूँ। यदि तू मुझे पूर्ण बनाता है, मैं तब भी एक प्राणी हूँ। यदि तू मुझे पूर्ण नहीं बनाता, तब भी मैं तुझ से प्यार करती हूँ क्योंकि मैं सृष्टि के एक प्राणी से अधिक कुछ नहीं हूँ। मैं सृष्टि के परमेश्वर द्वारा रचित एक सूक्ष्म प्राणी से अधिक कुछ नहीं हूँ, सृजित मनुष्यों में से सिर्फ एक हूँ। तूने ही मुझे बनाया है, और अब तूने एक बार फिर मुझे अपने हाथों में अपनी दया पर रखा है। मैं तेरा उपकरण और तेरी विषमता होने के लिए तैयार हूँ क्योंकि सब-कुछ वही है जो तूने निश्चित किया है। कोई इसे बदल नहीं सकता। सभी चीजें और सभी घटनाएँ तेरे हाथों में हैं।" जब वह समय आएगा, तब तू हैसियत पर ध्यान नहीं देगी, तब तू इससे छुटकारा पा लेगी। तभी तू आत्मविश्वास से, निर्भीकता से खोज करने में सक्षम होगी, और तभी तेरा हृदय किसी भी बंधन से मुक्त हो सकता है। एक बार लोग जब इन चीज़ों से छूट जाते हैं, तो उनके पास और कोई चिंताएँ नहीं होतीं। अभी तुम लोगों में से अधिकांश की चिंताएँ क्या हैं? तुम लोग हमेशा हैसियत के हाथों विवश हो जाते हो और हमेशा अपनी संभावनाओं की चिंता करते रहते हो। तुम लोग हमेशा परमेश्वर के कथनों की पुस्तक के पन्ने पलटते रहते हो, मानवजाति की मंज़िल से संबंधित कहावतों को पढ़ना चाहते हो और जानना चाहते हो कि तुम्हारी संभावनाएँ और मंज़िल क्या होगी। तुम सोचते हो, "क्या वाकई मेरी कोई संभावना है? क्या परमेश्वर ने उन्हें वापस ले लिया है? परमेश्वर बस यह कहता है कि मैं एक विषमता हूँ; तो फिर, मेरी संभावनाएँ क्या हैं?" अपनी संभावनाओं और नियति को दर-किनार करना तुम्हारे लिए मुश्किल है। अब तुम लोग अनुयायी हो, और तुम लोगों को कार्य के इस स्तर की कुछ समझ प्राप्त हो गयी है। लेकिन, तुम लोगों ने अभी तक हैसियत के लिए अपनी अभिलाषा का त्याग नहीं किया है। जब तुम लोगों की हैसियत ऊँची होती है तो तुम लोग अच्छी तरह से खोज करते हो, किन्तु जब तुम्हारी हैसियत निम्न होती है तो तुम लोग खोज नहीं करते। तुम्हारे मन में हमेशा हैसियत के आशीष होते हैं। ऐसा क्यों होता है कि अधिकांश लोग अपने आप को निराशा से निकाल नहीं पाते? क्या उत्तर हमेशा निराशाजनक संभावनाएँ नहीं होता? जैसे ही परमेश्वर के कथन उच्चारित होते हैं, तुम लोग यह देखने की हड़बड़ी करते हो कि तुम्हारी हैसियत और पहचान वास्तव में क्या है। तुम लोग हैसियत और पहचान को प्राथमिकता देते हो, और दर्शन को दूसरे स्थान पर रखते हो। तीसरे स्थान पर वह चीज़ है "जिसमें तुम लोगों को प्रवेश करना चाहिए", और चौथे स्थान पर परमेश्वर की वर्तमान इच्छा आती है। तुम लोग सबसे पहले यह देखते हो कि तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा दिए गए उपनाम "विषमता" को बदला गया है या नहीं। तुम लोग बार-बार पढ़ते हो, और जब देखते हो कि "विषमता" उपनाम हटा दिया गया है, तो

तुम लोग खुश होकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हो और उसके महान सामर्थ्य की स्तुति करते हो। लेकिन यदि तुम देखते हो कि तुम लोग अभी भी विषमता ही हो, तो तुम लोग तुरंत परेशान हो जाते हो और तुम लोगों के हृदय की प्रेरणा तुरंत गायब हो जाती है। जितना अधिक तू इस तरह से तलाश करेगी उतना ही कम तू पाएगी। हैसियत के लिए किसी व्यक्ति की अभिलाषा जितनी अधिक होगी, उतनी ही गंभीरता से उसके साथ निपटा जाएगा और उसे उतने ही बड़े शुद्धिकरण से गुजरना होगा। इस तरह के लोग निकम्मे होते हैं! उनके साथ अच्छी तरह से निपटने और उनका न्याय करने की ज़रूरत है ताकि वे इन चीज़ों को पूरी तरह से छोड़ दें। यदि तुम लोग अंत तक इसी तरह से अनुसरण करोगे, तो तुम लोग कुछ भी नहीं पाओगे। जो लोग जीवन का अनुसरण नहीं करते वे रूपान्तरित नहीं किए जा सकते; जिनमें सत्य की प्यास नहीं है वे सत्य प्राप्त नहीं कर सकते। तू व्यक्तिगत रूपान्तरण का अनुसरण करने और प्रवेश करने पर ध्यान नहीं देती; बल्कि तू हमेशा उन अनावश्यक अभिलाषाओं और उन चीज़ों पर ध्यान देती है जो परमेश्वर के लिए तेरे प्रेम को बाधित करती हैं और तुझे उसके करीब आने से रोकती हैं। क्या ये चीजें तुझे रूपान्तरित कर सकती हैं? क्या ये तुझे राज्य में ला सकती हैं? यदि तेरी खोज का उद्देश्य सत्य की तलाश करना नहीं है, तो तू इस अवसर का लाभ उठाकरइन चीज़ों को पाने के लिए फिर से दुनिया में लौट सकती है। अपने समय को इस तरह बर्बाद करना ठीक नहीं है—क्यों अपने आप को यातना देती है? क्या यह सच नहीं है कि तू सुंदर दुनिया में सभी प्रकार की चीजों का आनंद उठा सकती है? धन, सुंदर स्त्री-पुरुष, हैसियत, अभिमान, परिवार, बच्चे, इत्यादि—क्या तू दुनिया की इन बेहतरीन चीज़ों का आनंद नहीं उठा सकती? यहाँ एक ऐसे स्थान की खोज में इधर-उधर भटकना जहाँ तू खुश रह सके, उससे क्या फायदा? जब मनुष्य के पुत्र के पास ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ वह आराम करने के लिए अपना सिर रख सके, तो तुझे आराम के लिए जगह कैसे मिल सकती है? वह तेरे लिए आराम की एक सुन्दर जगह कैसे बना सकता है? क्या यह संभव है? मेरे न्याय के अतिरिक्त, आज तू केवल सत्य पर शिक्षाएँ प्राप्त कर सकती है। तू मुझ से आराम प्राप्त नहीं कर सकती और तू उस सुखद आशियाने को प्राप्त नहीं कर सकती जिसके बारे में तू दिन-रात सोचती रहती है। मैं तुझे दुनिया की दौलत प्रदान नहीं करूँगा। यदि तू सच्चे मन से अनुसरण करे, तो मैं तुझे समग्र जीवन का मार्ग देने, तुझे पानी में वापस आयी किसी मछली की तरह स्वीकार करने को तैयार हूँ। यदि तू सच्चे मन से अनुसरण नहीं करेगी, तो मैं यह सब वापस ले लूँगा। मैं अपने मुँह के वचनों को उन्हें देने को तैयार नहीं हूँ जो आराम के लालची हैं, जो बिल्कुल सूअरों और कुत्तों जैसे हैं!

फुटनोट :

क. मूल पाठ में "पत्नियाँ" लिखा है।

विजय-कार्य के दूसरे चरण के प्रभावों को कैसे प्राप्त किया जाता है

सेवाकर्ताओं का कार्य विजय-कार्य में पहला चरण था। आज विजय-कार्य में दूसरा चरण है। विजय-कार्य में पूर्ण बनाए जाने का भी उल्लेख क्यों है? यह भविष्य में नींव तैयार करने के लिए है। आज विजय-कार्य का अंतिम चरण है; आगे भयंकर कष्ट अनुभव करने का समय आएगा, जो मनुष्य को पूर्ण बनाने की आधिकारिक शुरुआत को चिह्नित करेगा। अब मुख्य मुद्दा विजय है, लेकिन अब पूर्णता की प्रक्रिया में प्रथम चरण का समय भी है। इस प्रथम चरण में लोगों के ज्ञान और आज्ञाकारिता को पूर्ण बनाना शामिल है, जो कि स्वभाविक तौर पर, विजय-कार्य की नींव तैयार करता है। अगर तुम्हें पूर्ण बनाया जाना है, तो तुम्हें भविष्य में आने वाले कष्टों के दौरान मज़बूती से खड़ा रहना होगा और कार्य के अगले चरण के प्रसार के लिए अपना सर्वस्व देना होगा; पूर्ण बनाए जाने का यही अर्थ है, और यही वह समय भी है, जब लोग पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। आज हम जीते जाने की बात कर रहे हैं, जो कि पूर्ण बनाए जाने जैसी बात ही है। लेकिन आज जो कार्य किया जा रहा है, वह भविष्य में पूर्ण बनाए जाने की नींव है; पूर्ण बनाए जाने के लिए लोगों को मुश्किलों का सामना करना चाहिए, और मुश्किलों के इस अनुभव का आधार विजय किया जाना होना चाहिए। अगर लोगों के पास आज का आधार न हो—अगर उन्हें पूरी तरह से जीता न जाए—तो उनके लिए कार्य के अगले चरण में मज़बूती से खड़ा रहना मुश्किल होगा। मात्र जीत लिया जाना अंतिम लक्ष्य नहीं है। यह तो शैतान के आगे परमेश्वर की गवाही का एक चरण मात्र है। पूर्ण बनाया जाना अंतिम लक्ष्य है, और अगर तुम्हें पूर्ण नहीं बनाया गया, तो शायद तुम्हें भी नकार दिया जाए। भविष्य में मुश्किलों का सामना करने पर ही तुम्हारा सच्चा आध्यात्मिक कद देखा जाएगा; यानी, परमेश्वर के लिए तुम्हारे प्रेम की निर्मलता का स्तर तभी स्पष्ट होगा। आज लोग कहते हैं : "परमेश्वर चाहे कुछ भी करे, हमें उसका पालन करना चाहिए। अत: हम ऐसी विषमता बनने के लिए तैयार हैं, जो परमेश्वर का महान सामर्थ्य और स्वभाव दर्शाए। परमेश्वर हम पर दया करे या हमें शाप दे, या वो हमारा न्याय करे, हम फिर भी उसके कृतज्ञ हैं।" दरअसल तुम्हारा यह कहना केवल यह दर्शाता है कि तुम्हें थोड़ा-बहुत ज्ञान है, लेकिन इस ज्ञान को वास्तव में उपयोग में लाया जा सकता है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर है कि तुम्हारा यह ज्ञान

वास्तविक है या नहीं। आज लोगों में अंतर्दृष्टियों और ज्ञान का होना विजय-कार्य का प्रभाव है। तुम्हें पूर्ण बनाया जा सकता है या नहीं, यह प्रतिकूल परिस्थिति में ही देखा जा सकता है, और उस समय यह देखा जाएगा कि तुम सचमुच परमेश्वर को दिल से प्रेम करते हो या नहीं। अगर तुम्हारा प्रेम वाकई शुद्ध है, तो तुम कहोगे : "हम विषमताएँ हैं, हम परमेश्वर के हाथों में जीव हैं।" जब तुम अन्यजाति राष्ट्रों में सुसमाचार का प्रसार करोगे, तो तुम कहोगे, "मैं तो बस सेवा कर रहा हूँ। हमारे अंदर के भ्रष्ट स्वभावों का इस्तेमाल करते हुए, परमेश्वर ने ये सारी बातें हमें अपना धार्मिक स्वभाव दिखाने के लिए कही हैं; अगर उसने ऐसी बातें न कही होतीं, तो हम परमेश्वर को नहीं देख पाते, न उसकी बुद्धिमत्ता को समझ पाते, न ही ऐसा महान उद्धार और आशीष प्राप्त कर पाते।" अगर तुममें सचमुच ऐसा अनुभवजन्य ज्ञान है, तो यह काफी है। लेकिन आज जो अधिकांश बातें तुम कहते हो उसमें कोई ज्ञान नहीं होता, और यह सब बस खोखले नारे हैं : "हम विषमताएँ और सेवाकर्ता हैं; हमारी कामना है कि हम जीते जाएँ और हम परमेश्वर की ज़बरदस्त गवाही देना चाहते हैं...।" सिर्फ चिल्लाने का अर्थ यह नहीं है कि तुममें वास्तविकता है, न ही ये साबित करता है कि तुम्हारे पास आध्यात्मिक कद है; तुम्हें विशुद्ध ज्ञान होना चाहिए, और तुम्हारे ज्ञान की परीक्षा होनी चाहिए।

तुम्हें ऐसे और कथनों को पढ़ना चाहिए जो परमेश्वर ने इस दौरान व्यक्त किए हैं, उनसे अपने क्रियाकलापों कि तुलना करनी चाहिए : यह बिलकुल एक तथ्य है कि तुम अच्छी तरह से और वास्तव में एक विषमता हो! आज तुम्हारे ज्ञान की क्या सीमा है? तुम्हारे विचार, तुम्हारा चिंतन, तुम्हारा व्यवहार, तुम्हारे शब्द और कर्म—क्या ये सभी अभिव्यक्तियाँ परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता के लिए विषमता के तुल्य नहीं हैं? क्या तुम्हारी अभिव्यक्तियाँ मनुष्य के उस भ्रष्ट स्वभाव का प्रकटीकरण नहीं है जिसे परमेश्वर के वचनों द्वारा उजागर किया गया है? तुम्हारे विचार और राय, तुम्हारी अभिप्रेरणाएँ, और जो भ्रष्टता तुममें प्रकट होती है, वह सभी परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव और साथ ही उसकी पवित्रता को दर्शाते हैं। परमेश्वर भी मलिनता की धरती पर ही पैदा हुआ था, फिर भी वह मलिनता से बेदाग रहा। वह उसी गंदी दुनिया में रहता है, जिसमें तुम रहते हो, पर उसमें विवेक और दृष्टिबोध है, वह गंदगी से घृणा करता है। तुम शायद अपने शब्दों और कर्मों में कुछ भी गंदगी न ढूँढ़ पाओ, लेकिन वह ढूँढ़ सकता है और तुम्हें बता सकता है। तुम्हारी वे पुरानी बातें—तुम्हारे अंदर संवर्धन का अभाव, अंतर्दृष्टि, बोध और जीने के तुम्हारे पिछड़े तरीके—वे सब आज के प्रकाशन से प्रकाश में लाए जा चुके हैं; केवल परमेश्वर के धरती पर आकर

इस तरह काम करने से ही लोग उसकी पवित्रता और धार्मिक स्वभाव का अवलोकन करते हैं। वह तुम्हारा न्याय करता है और तुम्हें ताड़ना देता है, जिससे तुम समझ हासिल कर पाते हो; कभी-कभी तुम्हारी हैवानी प्रकृति अभिव्यक्त हो जाती है, और वह उसकी ओर तुम्हारा ध्यान दिलाता है। वह मनुष्य के सार को अच्छी तरह से जानता है। वह तुम्हारे बीच रहता है, वही खाना खाता है जो तुम खाते हो और वह उसी परिवेश में रहता है—लेकिन फिर भी, वह तुमसे ज़्यादा जानता है; वह तुम्हें उजागर कर सकता है और मानवता के भ्रष्ट सार को साफ देख सकता है। उसे मनुष्य के जीने के फलसफों और कुटिलता और छल से ज्यादा किसी चीज़ से घृणा नहीं है। उसे लोगों की देह-सुख की अंत:क्रियाओं से विशेष रूप से घृणा है। वह मनुष्य के जीने के फलसफों से शायद परिचित न हो, लेकिन वह उन भ्रष्ट स्वभावों को साफ देख और उजागर कर सकता है जिसे लोग प्रकट करते हैं। वह इन चीज़ों के ज़रिये बोलने और मनुष्य को सिखाने का कार्य करता है, वह इन चीज़ों का इस्तेमाल लोगों का न्याय करने और अपने धार्मिक और पवित्र स्वभाव को अभिव्यक्त करने के लिए करता है। इस तरह लोग उसके कार्य के लिए विषमताएँ बन जाते हैं। केवल देहधारी परमेश्वर ही मनुष्य के भ्रष्ट स्वभावों और शैतान के सभी कुरूप चेहरों को स्पष्ट कर सकता है। भले ही वह तुम्हें दंडित नहीं करता, और तुम्हें अपनी धार्मिकता और पवित्रता के लिए बस एक विषमता के रूप में इस्तेमाल करता है, फिर भी तुम शर्मिंदा महसूस करते हो और खुद को छिपाने की जगह नहीं पाते हो। वह उन चीज़ों का इस्तेमाल करते हुए बोलता है, जो मनुष्य में उजागर होती हैं, और केवल इन चीज़ों के प्रकाश में आने पर ही लोग जान पाते हैं कि परमेश्वर कितना पवित्र है। वह लोगों में ज़रा-सी भी अशुद्धता को नज़रंदाज़ नहीं करता, यहाँ तक कि उनके दिलों के मलिन विचारों को भी नहीं; अगर लोगों के शब्द और कर्म उसकी इच्छा से मेल नही खाते, तो वह उन्हें माफ नहीं करता। उसके वचनों में मनुष्यों की मलिनता या ऐसी किसी और चीज़ की कोई जगह नहीं है—यह सब प्रकाश में आना चाहिए। तभी तुम्हें पता चलता है कि वह सचमुच मनुष्य जैसा नहीं है। अगर लोगों में ज़रा-सी भी मलिनता होती है, तो वह उससे बेहद नफरत करता है। कई बार तो लोग समझ ही नहीं पाते और कहते हैं, "परमेश्वर, तू इतना नाराज़ क्यों है? तू लोगों की कमज़ोरियाँ ध्यान में क्यों नहीं रखता? तू लोगों के प्रति थोड़ा क्षमाशील क्यों नहीं है? तू लोगों के प्रति विचारशील क्यों नहीं है? ज़ाहिर है, तू जानता ही है कि लोग किस हद तक भ्रष्ट हो चुके हैं, तो फिर तू लोगों के साथ इस ढंग से क्यों पेश आता है?" वह पाप से घृणा करता है, उसे इससे चिढ़ है, उसे तब विशेष रूप से चिढ़ होती है, जब तुम्हारे अंदर अवज्ञा का कोई चिह्न होता है। जब तुममें विद्रोही स्वभाव

प्रकट होता है, तो वह उसे देख लेता है और बुरी तरह से चिढ़ जाता है—भयंकर रूप से चिढ़ जाता है। इन्हीं बातों से परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप अभिव्यक्त होता है। जब तुम स्वयं को तुलना में रखते हो, तो तुम देखते हो कि यद्यपि वह वही खाना खाता है जो मनुष्य खाता है, वैसे ही कपड़े पहनता है, उन्हीं चीज़ों का आनंद लेता है जिनका आनंद मनुष्य लेता है, उन्हीं के साथ जीता और रहता है, फिर भी वह मनुष्य जैसा नहीं है। क्या विषमता के यही मायने नहीं हैं? इन्हीं इनसानी चीज़ों के ज़रिए परमेश्वर का सामर्थ्य दिखता है; अँधेरा ही प्रकाश के अस्तित्व को अलग दर्शाता है।

बेशक, परमेश्वर तुम लोगों को नाममात्र के लिए विषमता नहीं बनाता। बल्कि जब यह कार्य फलीभूत होता है, तभी यह स्पष्ट हो पाता है कि मनुष्य की विद्रोहशीलता परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के लिए विषमता है, और केवल तुम्हारे विषमता होने के कारण ही तुम्हारे पास परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की प्राकृतिक अभिव्यक्ति को जानने का अवसर है। तुम लोगों की विद्रोहशीलता के कारण तुम लोगों का न्याय किया जाता है और तुम्हें ताड़ना दी जाती है, लेकिन तुम लोगों की विद्रोहशीलता ही तुम्हें विषमता भी बनाती है, और तुम्हारी विद्रोहशीलता के कारण ही तुम्हें परमेश्वर का महान अनुग्रह भी प्राप्त होता है, जो वह तुम लोगों को प्रदान करता है। तुम लोगों की विद्रोहशीलता परमेश्वर की सर्वशक्ति और बुद्धिमत्ता के लिए विषमता है, और तुम्हारी विद्रोहशीलता के कारण ही तुम्हें ऐसा महान उद्धार और आशीष प्राप्त हुए हैं। हालाँकि मैंने बार-बार तुम लोगों का न्याय किया है, फिर भी तुम लोगों को मेरा भरपूर उद्धार प्राप्त हुआ है, जो मनुष्य को पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ। यह कार्य तुम लोगों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। तुम लोगों के लिए विषमता होना भी बेहद मूल्यवान है : तुम लोगों को तुम्हारे विषमता होने के कारण ही बचाया जाता है और तुम लोगों ने उद्धार का अनुग्रह प्राप्त कर लिया है, तो क्या ऐसी विषमता अत्यंत मूल्यवान नहीं है? क्या यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण नहीं है? चूँकि तुम लोग उसी क्षेत्र में, उसी मलिन धरती पर रहते हो, जिसमें परमेश्वर रहता है, इसलिए तुम विषमता हो और तुम्हें महानतम उद्धार प्राप्त होता है। अगर परमेश्वर ने देहधारण न किया होता, तो तुम जैसे नीच लोगों पर कौन दया करता और कौन तुम लोगों की देखभाल करता? कौन तुम लोगों की परवाह करता? अगर परमेश्वर ने तुम लोगों के बीच रहकर कार्य करने के लिए देहधारण न किया होता, तो तुम लोग वह उद्धार कब प्राप्त करते, जो तुमसे पहले वालों को कभी नसीब नहीं हुआ था? अगर मैंने तुम लोगों की परवाह करने के लिए, तुम्हारे पापों का न्याय करने के लिए देहधारण न किया होता, तो क्या तुम लोग बहुत पहले ही नरक में न जा गिरे होते? अगर मैं देहधारण

करके और दीन बनकर तुम लोगों के बीच न रहता, तो तुम लोग परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की विषमता बनने के पात्र कैसे हो सकते थे? क्या तुम लोग इसलिए विषमता नहीं हो, क्योंकि मैं देहधारण करके तुम लोगों के बीच आया, ताकि तुम लोग महानतम उद्धार पा सको? क्या तुम लोग यह उद्धार इसलिए नहीं पा रहे, क्योंकि मैंने देहधारण किया है? अगर परमेश्वर तुम लोगों के बीच रहने के लिए देहधारण न करता, तो क्या तुम लोगों को तब भी पता चल पाता कि तुम लोग मानवीय नरक में कुत्तों और सूअरों से भी अधम जीवन जी रहे हो? क्या तुम लोगों की ताड़ना और न्याय इस कारण नहीं हुए हैं, क्योंकि तुम मेरे देह रूप में कार्य के लिए विषमता हो? तुम लोगों के लिए विषमता से उपयुक्त कोई कार्य नहीं है, क्योंकि तुम लोग विषमता होने के कारण ही न्याय के मध्य बचाए गए हो। क्या तुम लोगों को यह नहीं लगता कि विषमता के रूप में कार्य करने के लिए पात्र होना ही तुम लोगों के जीवन का आशीष है? तुम लोग मात्र विषमता होने का कार्य करते हो, फिर भी तुम लोगों को ऐसा उद्धार प्राप्त होता है, जो न तो तुम लोगों को पहले कभी मिला था, न ही जिसकी तुम लोगों ने कभी कल्पना की थी। आज, विषमता होना तुम लोगों का कर्तव्य है, और भविष्य में अनंत आशीष का आनन्द लेना तुम लोगों का उचित पुरस्कार। तुम लोग जो उद्धार प्राप्त करते हो, वह कोई क्षणभंगुर अंतर्दृष्टि या आज के लिए कोई अस्थायी ज्ञान नहीं है, बल्कि कहीं महान आशीष है : जीवन का शाश्वत क्रम है। हालाँकि मैंने तुम लोगों को जीतने के लिए "विषमता" का इस्तेमाल किया है, लेकिन तुम लोगों को पता होना चाहिए कि यह उद्धार और आशीष तुम लोगों को पाने के लिए है; यह विजय के लिए है, लेकिन यह इसलिए भी है ताकि मैं तुम्हें बचा सकूँ। विषमता एक सच्चाई है, लेकिन तुम लोगों के विषमता होने का कारण तुम लोगों की विद्रोहशीलता है, और इसी वजह से तुमने वे आशीष प्राप्त किए हैं, जो कभी किसी को प्राप्त नहीं हुए। आज तुम लोगों को दिखाया और सुनाया जाता है; कल तुम लोग प्राप्त करोगे, और उससे भी अधिक, तुम लोग बहुत अधिक आशीष पाओगे। इस तरह, क्या विषमता अत्यंत मूल्यवान नहीं है? आज के विजय-कार्य के प्रभाव तुम लोगों के विषमता के रूप में कार्य करने वाले विद्रोहशील स्वभावों के माध्यम से प्राप्त होते हैं। यानी, ताड़ना और न्याय के दूसरे दृष्टांत का चरमोत्कर्ष तुम लोगों की मलिनता और विद्रोहशीलता को विषमता के रूप में इस्तेमाल करने के लिए है, ताकि तुम लोग परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का अवलोकन कर सको। जब तुम लोग ताड़ना और न्याय के दूसरे दृष्टांत के दौरान एक बार फिर से स्वयं को आज्ञाकारी बनाते हो, तो तुम लोगों को परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की समग्रता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यानी, जब तुम लोग विजय-कार्य को पूरी तरह से

स्वीकार कर लेते हो, तभी तुम लोगों का विषमता के रूप में कार्य करने का कर्तव्य भी पूरा हो जाता है। मेरा इरादा तुम लोगों पर कोई ठप्पा लगाना नहीं है। बल्कि, मैं तुम लोगों की सेवाकर्ता की भूमिका का इस्तेमाल परमेश्वर के अपमान न किए जा सकने योग्य स्वभाव को दर्शाते हुए विजय-कार्य के प्रथम दृष्टांत को पूरा करने के लिए कर रहा हूँ। तुम लोगों की पूरकता के ज़रिये, विषमता के रूप में कार्य करने वाली तुम लोगों की विद्रोहशीलता के ज़रिये, विजय-कार्य के दूसरे दृष्टांत के प्रभाव हासिल किए जाते हैं, तुम लोगों के समक्ष परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को पूरी तरह से प्रकट किया जाता है, जो पहले दृष्टांत में समग्रता से प्रकट नहीं हुआ था, और तुम लोगों के समक्ष परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को, उसके स्वरूप को, उसकी समग्रता में प्रकट किया जाता है, जिसमें उसकी बुद्धिमत्ता, अद्‌भुतता, और उसके कार्य की प्राचीन पवित्रता निहित है। इस तरह के कार्य के प्रभाव विभिन्न अवधियों में विजय के ज़रिए, और न्याय के विभिन्न स्तरों के ज़रिए हासिल किए जाते हैं। न्याय जितना अधिक अपने चरम के करीब आता है, वह लोगों के विद्रोही स्वभावों को उतना ही अधिक प्रकट करता है, और विजय उतनी ही अधिक प्रभावी होती है। इस विजय-कार्य के दौरान परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की समग्रता स्पष्ट की जाती है। विजय-कार्य को दो चरणों में बाँटा जाता है, उसके विभिन्न चरण और स्तर होते हैं, और बेशक, उससे प्राप्त प्रभाव भी विभिन्न होते हैं। यानी, लोगों के समर्पण की सीमा भी और अधिक गहन हो जाती है। इसके बाद ही लोगों को पूरी तरह से पूर्णता के सही मार्ग पर लाया जा सकता है; केवल संपूर्ण विजय-कार्य के पूरा हो जाने के बाद (जब न्याय का दूसरा दृष्टांत अपना अंतिम प्रभाव हासिल कर चुका होता है) फिर लोगों का न्याय नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें जीवन का अनुभव करने के सही मार्ग में प्रवेश करने की अनुमति दे दी जाती है। क्योंकि न्याय विजय का निरूपण है, और विजय न्याय और ताड़ना का रूप ले लेती है।

परमेश्वर ने सबसे पिछड़े और मलिन स्थान पर देहधारण किया, और केवल इसी तरह से परमेश्वर अपने पवित्र और धार्मिक स्वभाव की समग्रता को साफ तौर पर दिखा सकता है। और उसका धार्मिक स्वभाव किसके ज़रिये दिखाया जाता है? वह तब दिखाया जाता है, जब वह मनुष्य के पापों का न्याय करता है, जब वह शैतान का न्याय करता है, जब वह पाप से घृणा करता है, और जब वह उन शत्रुओं से नफरत करता है जो उसका विरोध और उससे विद्रोह करते हैं। मेरे आज के वचन मनुष्य के पापों का न्याय करने के लिए, मनुष्य की अधार्मिकता का न्याय करने के लिए और मनुष्य की अवज्ञाकारिता को शाप देने के लिए हैं। मनुष्य की कुटिलता और छल, उसके शब्द और कर्म—जो भी परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हैं,

उनका न्याय होना चाहिए, और मनुष्य की अवज्ञाकारिता की पाप के रूप में निंदा होनी चाहिए। उसके वचन न्याय के सिद्धांतों के इर्द-गिर्द घूमते हैं; वह मनुष्य की अधार्मिकता के न्याय का, मनुष्य की विद्रोहशीलता की निंदा का, मनुष्य के कुरूप चेहरों के खुलासे का इस्तेमाल अपने धार्मिक स्वभाव को अभिव्यक्त करने के लिए करता है। पवित्रता उसके धार्मिक स्वभाव का निरूपण है, और दरअसल, परमेश्वर की पवित्रता वास्तव में उसका धार्मिक स्वभाव है। तुम लोगों के भ्रष्ट स्वभाव आज के वचनों के प्रसंग हैं—मैं उनका इस्तेमाल बोलने, न्याय करने और विजय-कार्य संपन्न करने के लिए करता हूँ। मात्र यही असली कार्य है, और मात्र यही परमेश्वर की पवित्रता को जगमगाता है। अगर तुममें भ्रष्ट स्वभाव का कोई निशान नहीं है, तो परमेश्वर तुम्हारा न्याय नहीं करेगा, न ही वह तुम्हें अपना धार्मिक स्वभाव दिखाएगा। चूँकि तुम्हारा स्वभाव भ्रष्ट है, इसलिए परमेश्वर तुम्हें छोड़ेगा नहीं, और इसी के ज़रिये उसकी पवित्रता दिखाई जाती है। अगर परमेश्वर देखता कि मनुष्य की मलिनता और विद्रोहशीलता बहुत भयंकर हैं, लेकिन वह न तो बोलता, न तुम्हारा न्याय करता, न तुम्हारी अधार्मिकता के लिए तुम्हें ताड़ना देता, तो इससे यह साबित हो जाता कि वह परमेश्वर नहीं है, क्योंकि उसे पाप से कोई घृणा न होती; वह मनुष्य जितना ही मलिन होता। आज मैं तुम्हारी मलिनता के कारण ही तुम्हारा न्याय कर रहा हूँ, और तुम्हारी भ्रष्टता और विद्रोहशीलता के कारण ही तुम्हें ताड़ना दे रहा हूँ। मैं तुम लोगों के सामने अपने सामर्थ्य की अकड़ नहीं दिखा रहा या जानबूझकर तुम लोगों का दमन नहीं कर रहा; मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि इस मलिन धरती पर पैदा हुए तुम लोग मलिनता से बुरी तरह दूषित हो गए हो। तुम लोगों ने अपनी निष्ठा और मानवीयता खो दी है और तुम दुनिया की सबसे मलिन जगह पर पैदा हुए सूअर की तरह बन गए हो, और यही वजह है कि मैं तुम लोगों का न्याय करता हूँ और तुम लोगों पर अपना क्रोध बरसाता हूँ। ठीक इसी न्याय की वजह से तुम लोग यह देख पाए हो कि परमेश्वर धार्मिक परमेश्वर है, और कि परमेश्वर पवित्र परमेश्वर है; ठीक अपनी पवित्रता और धार्मिकता की वजह से ही वह तुम लोगों का न्याय करता है और तुम लोगों पर अपना क्रोध बरसाता है। चूँकि वह मनुष्य की विद्रोहशीलता देखकर अपना धार्मिक स्वभाव प्रकट कर सकता है, और चूँकि मनुष्य की मलिनता देखकर वह अपनी पवित्रता प्रकट कर सकता है, अत: यह यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि वह स्वयं परमेश्वर है, जो पवित्र और प्राचीन है, और फिर भी मलिनता की धरती पर रहता है। यदि कोई व्यक्ति दूसरों के साथ कीचड़ में लोट-पोट करता है, और उसके बारे में कुछ भी पवित्र नहीं है, और उसके पास कोई धार्मिक स्वभाव नहीं है, तो वह मनुष्य के अधर्म

का न्याय करने के लिए योग्य नहीं है, और न ही वह मनुष्य के न्याय को कार्यान्वित करने के योग्य है। अगर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का न्याय करता, तो क्या यह उनका स्वयं को थप्पड़ मारने जैसा नहीं होता? एक-जैसे मलिन व्यक्ति एक-दूसरे का न्याय करने के हकदार कैसे हो सकते हैं? केवल स्वयं पवित्र परमेश्वर ही पूरी मलिन मानव-जाति का न्याय करने में सक्षम है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के पापों का न्याय कैसे कर सकता है? एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के पाप कैसे देख सकता है, और वह इन पापों की निंदा करने का पात्र कैसे हो सकता है? अगर परमेश्वर मनुष्य के पापों का न्याय करने का पात्र न होता, तो वह स्वयं धार्मिक परमेश्वर कैसे हो सकता था? जब लोगों के भ्रष्ट स्वभाव प्रकट होते हैं, तो लोगों का न्याय करने के लिए परमेश्वर बोलता है, और केवल तभी लोग देखते हैं कि वह पवित्र है। जब वह मनुष्य के पापों के कारण उनका न्याय करता है और उन्हें ताड़ना देता है, मनुष्य के पापों को उजागर करता है, तो कोई भी मनुष्य या चीज़ इस न्याय से बच नहीं सकती; जो कुछ भी मलिन है, वह उसका न्याय करता है, और केवल इसी तरह से उसके स्वभाव को धार्मिक कहा जा सकता है। अगर इससे अलग कुछ होता, तो यह कैसे कहा जा सकता कि तुम लोग नाम और तथ्य दोनों से विषमता हो?

इजराइल में किए गए कार्य में और आज के कार्य में बहुत बड़ा अंतर है। यहोवा ने इजराइलियों के जीवन का मार्गदर्शन किया, तो उस समय इतनी ताड़ना और न्याय नहीं था, क्योंकि उस वक्त लोग दुनियादारी बहुत ही कम समझते थे और उनके स्वभाव थोड़े ही भ्रष्ट थे। तब इजराइली पूरी तरह से यहोवा की आज्ञा का पालन करते थे। जब उसने उन्हें वेदियों का निर्माण करने के लिए कहा, तो उन्होंने जल्दी से वेदियों का निर्माण कर दिया; जब उसने उन्हें याजकों का लिबास पहनने के लिए कहा, तो उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन किया। उन दिनों यहोवा भेड़ों के झुंड की देखभाल करने वाले चरवाहे की तरह था, जिसके मार्गदर्शन में भेड़ें हरे-भरे मैदान में घास चरती थीं; यहोवा ने उनकी ज़िंदगी को राह दिखाई, उनके खाने, पहनने, रहने और यात्रा करने में उनकी अगुआई की। वह समय परमेश्वर के स्वभाव को स्पष्ट करने का नहीं था, क्योंकि उस समय मनुष्य नवजात था; कुछ ही लोग थे, जो विद्रोही और विरोधी थे, मनुष्यों में मलिनता अधिक नहीं थी, इसलिए लोग परमेश्वर के स्वभाव के लिए विषमता नहीं बन सकते थे। परमेश्वर की पवित्रता मलिनता की धरती से आए लोगों के माध्यम से ज़ाहिर होती है; आज वह मलिनता की धरती के इन लोगों में दिखने वाली मलिनता का इस्तेमाल कर रहा है, और ऐसा करते समय उसके न्याय में उसका स्वरूप प्रकट होता है। वह न्याय क्यों करता है? वह न्याय के वचन इसलिए बोल पाता है, क्योंकि

वह पाप से घृणा करता है; अगर वह मनुष्य की विद्रोहशीलता से घृणा न करता, तो वह इतना क्रोधित कैसे हो सकता था? अगर उसके अंदर चिढ़ न होती, कोई नफरत न होती, अगर वह लोगों की विद्रोहशीलता की ओर कोई ध्यान न देता, तो इससे वह मनुष्य जितना ही मलिन प्रमाणित हो जाता। वह मनुष्य का न्याय और उसकी ताड़ना इसलिए कर सकता है, क्योंकि उसे मलिनता से घृणा है, और जिस मलिनता से वह घृणा करता है, वह उसके अंदर नहीं है। अगर उसके अंदर भी विरोध और विद्रोहशीलता होते, तो वह विरोधी और विद्रोही लोगों से घृणा न करता। अगर अंत के दिनों का कार्य इजराइल में किया गया होता, तो उसका कोई मतलब न होता। अंत के दिनों का कार्य सबसे अंधकारमय और सबसे पिछड़े स्थान चीन में ही क्यों किया जा रहा है? यह सब परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता दिखाने के लिए है। संक्षेप में, स्थान जितना अधिक अंधकारमय होता है, परमेश्वर की पवित्रता वहाँ उतनी ही स्पष्टता से दिखाई जा सकती है। दरअसल, यह सब परमेश्वर के कार्य के लिए है। केवल आज तुम लोगों को यह एहसास हुआ है कि परमेश्वर तुम लोगों के बीच रहने के लिए स्वर्ग से धरती पर उतर आया है, जो तुम लोगों की मलिनता और विद्रोहशीलता द्वारा दिखाया गया है, और केवल अब तुम लोग परमेश्वर को जानते हो। क्या यह सबसे बड़ा उत्कर्ष नहीं है? दरअसल, तुम लोग चीन में लोगों का वह समूह हो, जिन्हें चुना गया था। और चूँकि तुम्हें चुना गया था और तुमने परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लिया है, लेकिन चूँकि तुम लोग ऐसे महान अनुग्रह के उपयुक्त नहीं हो, इसलिए इससे साबित होता है कि यह सब तुम लोगों के लिए सर्वोच्च उत्कर्ष है। परमेश्वर तुम लोगों के समक्ष आया है, और उसने तुम लोगों को पूरी समग्रता में अपना पवित्र स्वभाव दिखाया है, उसने तुम लोगों को वह सब दिया है और उन तमाम आशीषों का आनंद लेने दिया है, जिसका तुम आनंद ले सकते थे। तुमने न केवल परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का स्वाद लिया है, बल्कि तुम परमेश्वर के उद्धार का, परमेश्वर के छुटकारे का और परमेश्वर के असीम और अनंत प्रेम का स्वाद भी ले चुके हो। तुम लोगों ने, जो कि सबसे मलिन हो, ऐसे महान अनुग्रह का आनंद लिया है—क्या तुम धन्य नहीं हो? क्या यह परमेश्वर द्वारा तुम लोगों को ऊपर उठाना नहीं है? तुम लोगों के सबसे निम्न कद हैं; तुम स्वाभाविक तौर पर ऐसे महान आशीष का आनंद उठाने के योग्य नहीं हो, फिर भी परमेश्वर ने तुम्हें अपवाद के रूप में उन्नत किया है। क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? अगर तुम अपना कर्तव्य नहीं निभा पाए, तो अंततः तुम्हें अपने आप पर शर्म आएगी, और तुम स्वयं को दंडित करोगे। आज तुम्हें न तो अनुशासित किया गया है, न ही तुम्हें दंड दिया गया है; तुम्हारी देह एकदम सही-सलामत है—लेकिन अंततः ये वचन तुम्हें शर्मिंदा करेंगे।

आज तक मैंने किसी को भी खुले आम ताड़ना नहीं दी है; हो सकता है कि मेरे वचन कठोर हों, लेकिन मैं लोगों से किस तरह पेश आता हूँ? मैं उन्हें सांत्वना देता हूँ, उपदेश देता हूँ और याद दिलाता हूँ। मैं ऐसा किसी और कारण से नहीं, बल्कि तुम लोगों को बचाने के लिए करता हूँ। क्या तुम लोग सचमुच मेरी इच्छा नहीं समझते? मैं जो कुछ भी कहता हूँ, उसे तुम लोगों को समझना चाहिए और उससे प्रेरित होना चाहिए। अब जाकर कई लोग समझने लगे हैं। क्या यह विषमता होने का आशीष नहीं है? क्या विषमता होना सर्वाधिक धन्य चीज़ नहीं है? अंततः, जब तुम सुसमाचार का प्रचार करने जाओगे, तो तुम लोग यह बात कहोगे : "हम विशिष्ट विषमताएँ हैं।" वे तुमसे पूछेंगे, "तुम्हारे विशिष्ट विषमता होने के क्या मायने हैं?" और तुम कहोगे, "हम परमेश्वर के कार्य और उसके महान सामर्थ्य के लिए विषमता हैं। हमारी विद्रोहशीलता परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की समग्रता को प्रकाश में लाती है; हम लोग अंत के दिनों के परमेश्वर के कार्य की सेवा में काम आने वाली वस्तुएँ हैं, हम लोग उसके कार्य की लटकन हैं और उसके औज़ार भी हैं।" जब वे सुनेंगे, तो उन्हें कुतूहल होगा। तुम आगे कहोगे : "हम लोग परमेश्वर के पूरे ब्रह्मांड के कार्य की पूर्णता और मानव-जाति पर उसकी विजय के नमूने और प्रतिमान हैं। हम लोग पवित्र हों या मलिन, कुल मिलाकर, हम लोग अभी भी तुमसे अधिक धन्य हैं, क्योंकि हमने परमेश्वर को देखा है, और उसके द्वारा हमें जीते जाने के अवसर के ज़रिये परमेश्वर का महान सामर्थ्य ज़ाहिर होता है; केवल हम लोगों के मलिन और भ्रष्ट होने के कारण ही उसका धार्मिक स्वभाव उभरा है। क्या तुम लोग इस प्रकार अंत के दिनों के परमेश्वर के कार्य की गवाही देने में सक्षम हो? तुम लोग पात्र नहीं हो! यह हमारे लिए परमेश्वर के उत्कर्ष के सिवा कुछ नहीं है! भले ही हम अहंकारी न हों, हम गर्व से परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं, क्योंकि कोई भी इस तरह की महान प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता, और कोई भी ऐसे महान आशीष का आनंद नहीं ले सकता। हम कृतज्ञ महसूस करते हैं कि हम लोग, जो कि इतने मलिन हैं, परमेश्वर के प्रबंधन के दौरान विषमता के रूप में कार्य कर सकते हैं।" और जब वे पूछेंगे, "नमूने और प्रतिमान क्या होते हैं?" तो तुम कहोगे, "मानव-जाति में हम लोग सबसे विद्रोही और मलिन हैं; हमें शैतान द्वारा सबसे ज्यादा गहराई से भ्रष्ट किया गया है, और हमारी देह बेहद पिछड़ी हुई और निम्न है। हम लोग शैतान द्वारा इस्तेमाल किए गए लोगों का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। आज हम जीते जाने के लिए परमेश्वर द्वारा मानव-जाति में से चुने गए पहले मनुष्य हैं, और हमने परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का अवलोकन किया है और उसकी प्रतिज्ञा को प्राप्त किया है; और हम और अधिक लोगों को जीतने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं, इस प्रकार हम मानव-

जाति के बीच जीते जाने वालों के नमूने और प्रतिमान हैं।" इन शब्दों से बेहतर कोई और गवाही नहीं है, और यह तुम्हारा सर्वश्रेष्ठ अनुभव है।

विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (2)

तुम लोग राजाओं की तरह राज करना चाहा करते थे, और तुम लोगों को आज भी इससे पूर्णतः छुटकारा पाना बाकी है; तुम अभी भी राजाओं की तरह राज करना, स्वर्ग को सँभालना और पृथ्वी को सहारा देना चाहते हो। अब, इस प्रश्न पर विचार करो : क्या तुम ऐसी योग्यताएँ रखते हो? क्या तुम पूरी तरह से बुद्धिहीन नहीं हो रहे? क्या तुम लोग जो चाहते हो और जिस पर अपना ध्यान समर्पित करते हो, वह वास्तविक है? तुम लोगों में तो सामान्य मानवता भी नहीं है—क्या यह दयनीय नहीं? इसलिए आज मैं केवल जीत लिए जाने, गवाही देने व अपनी क्षमता बढ़ाने और पूर्ण बनाए जाने के मार्ग में प्रवेश करने की बात करता हूँ, और इसके अलावा कुछ नहीं कहता। कुछ लोग शुद्ध सत्य से घबराते हैं, और वे जब सामान्य मानवता और लोगों की क्षमता बढाने की ये सब बातें होती देखते हैं, तो वे अनिच्छुक हो जाते हैं। जो सत्य से प्रेम नहीं करते, उन्हें पूर्ण बनाना आसान नहीं है। जब तक तुम लोग आज प्रवेश करते हो, और कदम-दर-कदम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करते हो, तब तक क्या तुम्हें हटाया जा सकता है? परमेश्वर द्वारा चीन के मुख्य भूभाग में इतना कार्य—इतने बड़े पैमाने का कार्य—कर चुकने और उसके द्वारा इतने वचन कहे जा चुकने के बाद, क्या वह इसे बीच रास्ते में छोड़ सकता है? क्या वह लोगों की अगुवाई करके उन्हें अतल कुंड में ले जा सकता है? आज महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम सब मनुष्य के सार को जानो, और यह जानो कि तुम लोगों को किसमें प्रवेश करना चाहिए; तुम्हें जीवन में प्रवेश, और स्वभाव में परिवर्तनों, वास्तव में कैसे विजित होना है, और परमेश्वर की आज्ञा का कैसे पूरी तरह से पालन करना है, परमेश्वर को अंतिम गवाही कैसे देनी है और मृत्युपर्यंत आज्ञाकारी कैसे बने रहना है, इन बातों की चर्चा करनी चाहिए। तुम्हें इन बातों पर केंद्रित होना चाहिए, और जो बात वास्तविक या महत्वपूर्ण न हो, पहले उसे किनारे कर नज़रंदाज कर देना चाहिए। आज तुम्हें पता होना चाहिए कि विजित कैसे हुआ जाए, और विजित होने के बाद लोग अपना आचरण कैसा रखें। तुम कह सकते हो कि तुम पर विजय पा ली गई है, पर क्या तुम मृत्युपर्यंत आज्ञाकारी रह सकते हो? इस बात की परवाह किए बिना कि इसमें कोई संभावना है या नहीं,

तुम्हें बिलकुल अंत तक अनुसरण करने में सक्षम होना चाहिए, और कैसा भी परिवेश हो, तुम्हें परमेश्वर में विश्वास नहीं खोना चाहिए। अतंतः तुम्हें गवाही के दो पहलू प्राप्त करने चाहिए : अय्यूब की गवाही—मृत्युपर्यंत आज्ञाकारिता; और पतरस की गवाही—परमेश्वर से परम प्रेम। एक मामले में तुम्हें अय्यूब की तरह होना चाहिए : उसने समस्त भौतिक संपत्ति गँवा दी और शारीरिक पीड़ा से घिर गया, फिर भी उसने यहोवा का नाम नहीं त्यागा। यह अय्यूब की गवाही थी। पतरस मृत्युपर्यंत परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम रहा। जब उसे क्रूस पर चढ़ाया गया और उसने अपनी मृत्यु का सामना किया, तब भी उसने परमेश्वर से प्रेम किया, उसने अपनी संभावनाओं का विचार नहीं किया या सुंदर आशाओं अथवा अनावश्यक विचारों का अनुसरण नहीं किया, और केवल परमेश्वर से प्रेम करने और परमेश्वर की व्यवस्थाओं का पूरी तरह से पालन करने की ही इच्छा की। इससे पहले कि यह माना जा सके कि तुमने गवाही दी है, इससे पहले कि तुम ऐसा व्यक्ति बन सको जिसे जीते जाने के बाद पूर्ण बना दिया गया है, तुम्हें यह स्तर हासिल करना होगा। आज यदि लोग वास्तव में अपने सार और स्थिति को जानते, तो क्या वे तब भी संभावनाएँ और आशाएँ खोजते? तुम्हें जो जानना चाहिए, वह यह है : परमेश्वर मुझे पूर्ण करे या न करे, मुझे परमेश्वर का अनुसरण करना चाहिए; अभी वह जो कुछ करता है, वह अच्छा है और वह मेरे लिए करता है, ताकि हमारा स्वभाव परिवर्तित हो सके और हम शैतान के प्रभाव से छुटकारा पा सकें, मलिन धरती पर पैदा होने के बावजूद अशुद्धता से मुक्त हो सकें, और गंदगी और शैतान के प्रभाव को झटककर उसे पीछे छोड़ सकें। निश्चित रूप से तुमसे यही अपेक्षा है, किंतु परमेश्वर के लिए यह विजय मात्र है, जो इसलिए की जाती है कि लोग आज्ञाकारी होने का संकल्प करें और स्वयं को परमेश्वर के समस्त आयोजनों के प्रति समर्पित कर सकें। इस तरह से चीज़ें संपन्न होंगी। आज ज्यादातर लोगों पर विजय पाई जा चुकी है, परंतु उनके अंदर अभी भी बहुत-कुछ है, जो विद्रोही और अवज्ञाकारी है। लोगों का वास्तविक आध्यात्मिक कद अभी भी बहुत छोटा है, और वे तभी जोश से भरते हैं, जब आशाएँ और संभावनाएँ होती हैं; आशाओं और संभावनाओं के अभाव में वे नकारात्मक हो जाते हैं, यहाँ तक कि परमेश्वर को छोड़ देने की सोचने लगते हैं। इतना ही नहीं, लोगों में सामान्य मानवता को जीने की कोई बड़ी इच्छा नहीं है। यह अस्वीकार्य है। इसलिए मुझे अब भी विजय की बात करनी चाहिए। दरअसल, पूर्णता विजय के वक़्त ही प्रकट होती है : जैसे ही तुम पर विजय पाई जाती है, पूर्ण किए जाने के पहले प्रभाव भी हासिल हो जाते हैं। जहाँ विजय पाने और पूर्ण किए जाने में अंतर होता है, तो वह लोगों में होने वाले परिवर्तन की मात्रा के अनुसार होता है।

विजित होना पूर्ण किए जाने का प्रथम चरण है, परंतु उसका यह अर्थ नहीं है कि वे पूरी तरह से पूर्ण बना दिए गए हैं, न ही वह यह साबित करता है कि परमेश्वर ने उन्हें पूरी तरह से प्राप्त कर लिया है। लोगों को जीते जाने के बाद उनके स्वभाव में कुछ परिवर्तन आते हैं, किंतु ये परिवर्तन उन लोगों की तुलना में बहुत कम होते हैं, जिन्हें परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से प्राप्त कर लिया गया है। आज जो किया जा रहा है, वह लोगों को पूर्ण बनाने का आरंभिक कार्य है—उन पर विजय पाना—और अगर तुम पर विजय नहीं पाई जाती, तो तुम्हारे पास परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने और उसके द्वारा पूरी तरह से प्राप्त किए जाने का कोई उपाय नहीं होगा। तुम सिर्फ ताड़ना और न्याय के कुछ वचन ही पाओगे, किंतु वे तुम्हारा हृदय पूरी तरह से परिवर्तित करने में असमर्थ होंगे। इस तरह, तुम उनमें से एक होगे, जिन्हें हटा दिया जाता है; यह मेज पर शानदार को दावत देखने किंतु उसे खा न पाने से अलग नहीं होगा। क्या यह तुम्हारे लिए एक दुखदायी परिदृश्य नहीं है? और इसलिए तुम्हें बदलाव खोजने चाहिए : जीत लिया जाना हो या पूर्ण बनाया जाना, दोनों का संबंध इस बात से है कि तुम्हारे अंदर बदलाव आए हैं या नहीं और तुम आज्ञाकारी हो या नहीं, और यह निश्चित करता है कि तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा सकते हो या नहीं। जान लो कि "विजित होना" और "पूर्ण किया जाना" केवल तुम्हारे अंदर आए बदलाव और आज्ञाकारिता की मात्रा पर निर्भर करते हैं, साथ ही इस बात पर कि परमेश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम कितना सच्चा है। आज जरूरत इस बात की है कि तुम्हें पूरी तरह से पूर्ण किया जा सके, परंतु शुरुआत में तुम्हारा विजित होना आवश्यक है—तुम्हें परमेश्वर की ताड़ना और न्याय का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए, अनुसरण करने का विश्वास होना चाहिए, और तुम्हें ऐसा व्यक्ति बनना चाहिए, जो बदलाव और परमेश्वर का ज्ञान खोजता हो। केवल तभी तुम ऐसे व्यक्ति होगे, जो पूर्ण बनाए जाने की खोज करता है। तुम लोगों को यह समझना चाहिए कि पूर्ण किए जाने के दौरान तुम लोगों को जीता जाएगा, और जीते जाने के दौरान तुम लोगों को पूर्ण बनाया जाएगा। आज तुम पूर्ण बनाए जाने का प्रयास कर सकते हो या अपने बाहरी मनुष्यत्व में बदलाव और क्षमता में विकास के लिए कोशिश कर सकते हो, परंतु प्रमुख महत्व की बात यह है कि तुम यह समझ सको कि जो कुछ आज परमेश्वर कर रहा है, वह सार्थक और लाभकारी है : यह तुम्हें, जो गंदगी की धरती पर पैदा हुए हो, उस गंदगी से बच निकलने और उसे झटक देने में सक्षम बनाता है, यह तुम्हें शैतान के प्रभाव से पार पाने और शैतान के अंधकारमय प्रभाव को पीछे छोड़ने में सक्षम बनाता है। इन बातों पर ध्यान देने से तुम इस अपवित्र भूमि पर सुरक्षा प्राप्त करते हो। आखिरकार तुम्हें क्या गवाही देने को कहा जाएगा? तुम एक

गंदगी की भूमि पर पैदा होते हो किंतु पवित्र बनने में, पुन: कभी गंदगी से ओतप्रोत न होने के लिए, शैतान के अधिकार-क्षेत्र में रहकर भी अपने आपको उसके प्रभाव से छुड़ा लेने के लिए, शैतान द्वारा न तो ग्रसित किए जाने के लिए और न ही सताए जाने के लिए, और सर्वशक्तिमान के हाथों में रहने के योग्य हो। यही गवाही और शैतान से युद्ध में विजय का साक्ष्य है। तुम शैतान को त्यागने में सक्षम हो, अपने जीवन में अब और शैतानी स्वभाव प्रकट नहीं करते, इसके बजाय उस स्थिति को जीते हो, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के सृजन के समय चाहा था कि मनुष्य प्राप्त करे : सामान्य मानवता, सामान्य विवेक, सामान्य अंतर्दृष्टि, परमेश्वर से प्रेम करने का सामान्य संकल्प, और परमेश्वर के प्रति निष्ठा। यह परमेश्वर के प्राणी द्वारा दी जाने वाली गवाही है। तुम कहते हो, "हम गंदगी की भूमि पर पैदा हुए हैं, परंतु परमेश्वर की सुरक्षा के कारण, उसकी अगुआई के कारण, और क्योंकि उसने हम पर विजय प्राप्त की है इसलिए, हमने शैतान के प्रभाव से मुक्ति पाई है। हम आज आज्ञा मान पाते हैं, तो यह भी इस बात का प्रभाव है कि परमेश्वर ने हम पर विजय पाई है, और यह इसलिए नहीं है कि हम अच्छे हैं, या हम स्वभावत: परमेश्वर से प्रेम करते थे। चूँकि परमेश्वर ने हमें चुना और हमें पूर्वनिर्धारित किया, इसीलिए आज हम पर विजय पाई गई है, और इसीलिए हम उसकी गवाही देने में समर्थ हुए हैं, और उसकी सेवा कर सकते हैं, ऐसा इसलिए भी है कि उसने हमें चुना और हमारी रक्षा की, इसी कारण हमें शैतान के अधिकार-क्षेत्र से बचाया और छुड़ाया गया है, और हम गंदगी को पीछे छोड़, लाल अजगर के देश में शुद्ध किए जा सकते हैं।" इसके अतिरिक्त, जिसे आज तुम बाहरी रूप से जीते हो, वह यह प्रकट करेगा कि क्या तम्हारे अंदर सामान्य मानवता है, तुम्हारे कहने का कोई अर्थ है, और क्या तुम एक सामान्य व्यक्ति के सदृश जीते हो। जब दूसरे तुम्हें देखें, तो तुम्हें उन्हें यह कहने का मौका नहीं देना चाहिए, "क्या यह बड़े लाल अजगर का स्वरूप नहीं है?" बहनों का आचरण बहनों के लिए शोभनीय नहीं है, भाइयों का आचरण भाइयों के लिए शोभनीय नहीं है, और तुममें संतों जैसा ज़रा भी शिष्टाचार नहीं है। फिर लोग कहेंगे, "कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने कहा कि वे मोआब के वंशज हैं, वह बिल्कुल सही था!" अगर लोग तुम लोगों को देखें और कहें, "हालाँकि परमेश्वर ने कहा था कि तुम मोआब के वंशज हो, परंतु जिस तरह का जीवन तुम जीते हो, उसने यह साबित कर दिया कि तुमने शैतान के प्रभाव को पीछे छोड़ दिया है; हालाँकि ये चीज़ें अभी भी तुम लोगों के अंदर हैं, लेकिन तुम लोग उनकी ओर से मुँह मोड़ने में सक्षम हो, यह दिखाता है कि तुम लोगों पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर ली गई है।" तुम लोग, जो जीत लिए गए और बचा लिए गए हो, कहोगे, "यह सत्य है कि हम मोआब के वंशज हैं, परंतु

हमें परमेश्वर द्वारा बचा लिया गया है, और हालाँकि अतीत में मोआब के वंशज त्यागे और शापित किए गए थे, और इस्राएल के लोगों द्वारा अन्यजातियों में निर्वासित कर दिए गए थे, किंतु आज परमेश्वर ने हमें बचा लिया है। यह सच है कि हम सभी लोगों में सबसे भ्रष्ट हैं—यह परमेश्वर की आज्ञानुसार था, यह सत्य है, और सबके द्वारा मान्य है। परंतु आज हम उस प्रभाव से बच निकले हैं। हम अपने पुरखे का तिरस्कार करते हैं, हम अपने पुरखे से पीठ फेरने को तैयार हैं, उसे पूर्णतः त्यागकर परमेश्वर की समस्त व्यवस्थाओं का पालन करना चाहते हैं, परमेश्वर की इच्छानुसार चलना चाहते हैं और वह हमसे जिन बातों की अपेक्षा करता है, उन्हें हासिल करना चाहते हैं और परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहते हैं। मोआब ने परमेश्वर को धोखा दिया, उसने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य नहीं किया और परमेश्वर ने उससे घृणा की। परंतु हमें परमेश्वर के हृदय का ख्याल रखना चाहिए, और आज चूँकि हम परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं, इसलिए हम परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकते, और हमें अपने पुरखे को त्याग देना चाहिए!" पहले मैंने बड़े लाल अजगर को त्यागने के बारे में बात की, और यह मुख्य रूप से लोगों के पुराने पुरखे को त्यागने के बारे में है। यह लोगों पर विजय पाने की एक गवाही है, और बिना इस पर ध्यान दिए कि आज तुम कैसे प्रवेश करते हो, इस क्षेत्र में तुम्हारी गवाही में कमी नहीं होनी चाहिए।

लोगों की क्षमता बहुत ख़राब हैं, उनमें सामान्य मानवता की बेहद कमी है, उनकी प्रतिक्रिया बहुत धीमी और बहुत सुस्त है, शैतान की भ्रष्टता ने उन्हें सुन्न और मंदबुद्धि बनाकर छोड़ दिया है, और हालाँकि वे एक-दो वर्षों में पूरी तरह से परिवर्तित नहीं हो सकते, फिर भी उनमें सहयोग करने का संकल्प होना चाहिए। कहा जा सकता है कि यह भी शैतान के समक्ष गवाही है। आज की गवाही विजय के वर्तमान कार्य से प्राप्त परिणाम है, साथ ही वह भावी अनुयायियों के लिए एक नमूना और आदर्श भी है। भविष्य में यह सभी राष्ट्रों में फैल जाएगा; चीन में जो कार्य किया जा रहा है, वह सब राष्ट्रों में फैल जाएगा। मोआब के वंशज विश्व में सब लोगों से निम्न हैं। कुछ लोग पूछते हैं, "क्या हाम के वंशज सबसे निम्न नहीं हैं?" बड़े लाल अजगर की संतानें और हाम के वंशज भिन्न-भिन्न प्रातिनिधिक महत्व के हैं, और हाम के वंशज एक अलग मामला हैं : भले ही उन्हें किसी भी प्रकार शापित किया जाता हो, वे फिर भी नूह के वंशज हैं; इस बीच, मोआब की उत्पत्ति शुद्ध नहीं थी : मोआब व्याभिचार से आया था, और इसी में अंतर निहित है। हालाँकि दोनों को शाप दिया गया था, पर उनकी हैसियत समान नहीं थी, और इसलिए मोआब के वंशज सब लोगों से निम्न हैं—और सबसे निम्न लोगों पर विजय से अधिक ठोस तथ्य कुछ नहीं हो सकता। अंत के समय का

कार्य सारे नियमों से अलग है, और चाहे तुम शापित हो या दंडित, जब तक तुम मेरे कार्य में सहायता करते हो और विजय के कार्य में लाभप्रद हो, और चाहे तुम मोआब के वंशज हो या बड़े लाल अजगर की संतान, जब तक तुम कार्य के इस चरण में परमेश्वर के प्राणी का कर्तव्य निभा सकते हो और यथासंभव सर्वोत्तम कार्य करते हो, तब तक उचित परिणाम प्राप्त होगा। तुम बड़े लाल अजगर की संतान हो, और तुम मोआब के वंशज हो; कुल मिलाकर, जो कोई भी रक्त-मांस से बने हैं, वे सभी परमेश्वर के प्राणी हैं, और वे सृष्टिकर्ता द्वारा बनाए गए थे। तुम परमेश्वर के प्राणी हो, तुम्हारी अपनी कोई पसंद नहीं होनी चाहिए, और यही तुम्हारा कर्तव्य है। निस्संदेह, आज सृष्टिकर्ता का कार्य समस्त ब्रह्मांड पर निर्देशित है। तुम किसी भी वंश के क्यों न हो, सबसे पहले तुम परमेश्वर के प्राणियों में से एक हो, तुम लोग—मोआब के वंशज—परमेश्वर के प्राणियों का अंग हो, अंतर सिर्फ़ यह है कि तुम्हारा मूल्य निम्नतर है। चूँकि आज परमेश्वर का कार्य समस्त प्राणियों में किया जा रहा है और समस्त ब्रह्मांड उसका लक्ष्य है, इसलिए सृष्टिकर्ता अपना कार्य करने के लिए किसी भी व्यक्ति, पदार्थ या वस्तु का चयन करने को स्वतंत्र है। वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तुम किसके वंशज हो, जब तक तुम उसके एक प्राणी हो, और जब तक तुम उसके कार्य—विजय और गवाही के कार्य—के लिए लाभदायक हो, तब तक वह बिना किसी हिचक के तुम्हारे भीतर अपना कार्य करेगा। यह लोगों की परंपरागत धारणाओं को खंड-खंड कर देता है, जैसे यह है कि परमेश्वर कभी अन्यजातियों के मध्य कार्य नहीं करेगा, विशेषकर उनमें, जो शापित और निम्न हैं, क्योंकि जो शापित हैं, उनकी आगामी समस्त पीढ़ियाँ भी सदा के लिए शापित रहेंगी, उन्हें कभी उद्धार का कोई अवसर प्राप्त नहीं होगा; परमेश्वर कभी अन्यजाति की भूमि पर उतरकर कार्य नहीं करेगा, और कभी मलिनता की भूमि पर अपने कदम नहीं रखेगा, क्योंकि वह पवित्र है। ये सभी धारणाएँ अंत के दिनों में परमेश्वर के कार्य द्वारा चकनाचूर कर दी गई हैं। जान लो कि परमेश्वर समस्त प्राणियों का परमेश्वर है, वह स्वर्ग, पृथ्वी और समस्त वस्तुओं पर प्रभुत्व रखता है, और केवल इस्राएल के लोगों का परमेश्वर नहीं है। इसलिए चीन में यह कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, और क्या यह समस्त राष्ट्रों में नहीं फैलेगा? भविष्य की महान गवाही चीन तक सीमित नहीं रहेगी; यदि परमेश्वर केवल तुम लोगों को जीतता है, तो क्या दानवों को कायल किया जा सकता है? वे जीते जाने या परमेश्वर के सामर्थ्य को नहीं समझते, और केवल जब समस्त ब्रह्मांड में परमेश्वर के चुने हुए लोग इस कार्य के चरम परिणामों का अवलोकन करेंगे, तभी सब प्राणी जीते जाएँगे। कोई भी मोआब के वंशजों से अधिक पिछड़ा और भ्रष्ट नहीं है। केवल यदि इन लोगों पर विजय पाई जा सके—जो कि सबसे

अधिक भ्रष्ट हैं, जिन्होंने परमेश्वर को स्वीकार नहीं किया, या इस बात पर विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर है, वे जब जीत लिए जाएँगे और वे अपने मुख से परमेश्वर को स्वीकार करेंगे, उसकी स्तुति करेंगे और उससे प्रेम करने में समर्थ होंगे—तो यह विजय की गवाही होगी। हालाँकि तुम लोग पतरस नहीं हो, पर तुम पतरस की छवि को जीते हो, तुम पतरस की गवाही धारण करने योग्य हो, और अय्यूब की भी, और यह सबसे महान गवाही है। अंततः तुम कहोगे : "हम इस्राएली नहीं हैं, बल्कि मोआब के त्यागे हुए वंशज हैं, हम पतरस नहीं, उसकी जैसी क्षमता पाने में हम सक्षम नहीं, न ही हम अय्यूब हैं, और हम पौलुस के परमेश्वर के लिए कष्ट सहने और खुद को परमेश्वर के प्रति समर्पित करने के संकल्प से तुलना भी नहीं कर सकते, और हम इतने पिछड़े हुए हैं, और इसलिए हम परमेश्वर के आशीषों का आनंद लेने के अयोग्य हैं। परमेश्वर ने फिर भी आज हमें उन्नत किया है; इसलिए हमें परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहिए, और हालाँकि हमारी क्षमता और योग्यताएँ अपर्याप्त हैं, लेकिन हम परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए तैयार हैं—यह हमारा संकल्प है। हम मोआब के वंशज हैं, और हम शापित हैं। यह परमेश्वर की आज्ञा से था, और हम इसे बदलने में असमर्थ हैं, परंतु हमारा जीवन और हमारा ज्ञान बदल सकता है, और हम परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए संकल्पित हैं।" जब तुम्हारे पास यह संकल्प होगा, तो यह साबित करेगा कि तुमने जीते जाने की गवाही दी है।

विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (3)

विजय के कार्य का अभीष्ट परिणाम मुख्य रूप से यह है कि मनुष्य की देह को विद्रोह से रोका जाए, अर्थात मनुष्य का मस्तिष्क परमेश्वर की नई समझ हासिल करे, उसका दिल पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे और वह परमेश्वर का होने की इच्छा करे। मनुष्य के मिज़ाज या देह बदलने का यह मतलब नहीं है कि उस पर विजय प्राप्त कर ली गई है; जब मनुष्य की सोच, उसकी चेतना और उसकी समझ बदलती है, अर्थात, जब तुम्हारी पूरी मनोवृत्ति में बदलाव होता है—तब परमेश्वर तुम पर विजय प्राप्त कर लेता है। जब तुम आज्ञापालन का संकल्प ले लेते हो और एक नई मानसिकता अपना लेते हो, जब तुम परमेश्वर के वचनों और कार्य के विषय में अपनी अवधारणाओं या इरादों को लाना बंद कर देते हो और जब तुम्हारा मस्तिष्क सामान्य रूप से सोच सकता हो—यानी, जब तुम परमेश्वर के लिए तहेदिल से प्रयास करने में जुट जाते हो—तो तुम उस प्रकार के व्यक्ति बन जाते हो जिस पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त की जा

चुकी है। धर्म के दायरे में बहुत से लोग सारा जीवन अत्यंत कष्ट भोगते हैं : अपने शरीर को वश में रखते हैं और चुनौतियों का सामना करते हैं, यहाँ तक कि अंतिम सांस तक पीड़ा भी सहते हैं! कुछ लोग अपनी मृत्यु की सुबह भी उपवास रखते हैं। वे जीवन-भर स्वयं को अच्छे भोजन और अच्छे कपड़े से दूर रखते हैं और केवल पीड़ा सहने पर ही ज़ोर देते हैं। वे अपने शरीर को वश में करके देहसुख का त्याग कर देते हैं। पीड़ा सहन करने का जोश सराहनीय है। लेकिन उनकी सोच, उनकी अवधारणाओं, उनके मानसिक रवैये और निश्चय ही उनके पुराने स्वभाव का ज़रा-भी निपटारा नहीं किया गया है। उनकी स्वयं के बारे में कोई सच्ची समझ नहीं होती। परमेश्वर के बारे में उनकी मानसिक छवि एक निराकार, अज्ञात परमेश्वर की पारंपरिक छवि होती है। परमेश्वर के लिए पीड़ा सहने का उनका संकल्प, उनके उत्साह और उनकी सकारात्मक प्रकृति से आता है। हालांकि वे परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, लेकिन वे न तो परमेश्वर को समझते हैं और न ही उसकी इच्छा जानते हैं। वे केवल अंधों की तरह परमेश्वर के लिए कार्य करते हैं और पीड़ा सहते हैं। विवेकपूर्ण कार्य करने पर वे बिल्कुल महत्व नहीं देते और उन्हें इसकी भी बहुत परवाह नहीं होती कि वे यह कैसे सुनिश्चित करें कि उनकी सेवा वास्तव में परमेश्वर की इच्छा पूरी करे। उन्हें इसका ज्ञान तो बिल्कुल ही नहीं होता कि परमेश्वर के विषय में समझ कैसे हासिल करें। जिस परमेश्वर की सेवा वे करते हैं, वह परमेश्वर की अपनी मूल छवि नहीं है, बल्कि दन्तकथाओं का ढका-छिपा एक परमेश्वर है, उन्हीं की कल्पना की उपज है, जिसके बारे में उन्होंने बस सुन रखा है या जो कहानियों में पाया जाता है। फिर वे अपनी उर्वर कल्पनाओं और धर्मनिष्ठता का उपयोग परमेश्वर की खातिर पीड़ा सहने के लिए करते हैं और परमेश्वर के लिए उस कार्य का दायित्व स्वयं ले लेते हैं जो परमेश्वर करना चाहता है। उनकी सेवा बहुत ही अनिश्चित होती है, ऐसी कि उनमें से कोई भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा करने के पूरी तरह योग्य नहीं होता। चाहे वे स्वेच्छा से जितनी भी पीड़ा भुगतते हों, सेवा पर उनका मूल परिप्रेक्ष्य और परमेश्वर की उनकी मानसिक छवि अपरिवर्तित रहती है, क्योंकि वे परमेश्वर के न्याय, उसकी ताड़ना, उसके शुद्धिकरण और उसकी पूर्णता से नहीं गुज़रे हैं, न ही किसी ने सत्य द्वारा उनका मार्गदर्शन किया है। भले ही वे उद्धारकर्ता यीशु पर विश्वास करते हों, तो भी उनमें से किसी ने कभी उद्धारकर्ता को देखा नहीं होता। वे केवल किंवदंती और अफ़वाहों के माध्यम से ही उसके बारे में जानते हैं। इसलिए उनकी सेवा आँख बंद करके बेतरतीब ढंग से की जाने वाली सेवा से अधिक कुछ नहीं है, जैसे एक नेत्रहीन आदमी अपने पिता की सेवा कर रहा हो। इस प्रकार की सेवा के माध्यम से आखिरकार क्या हासिल किया

जा सकता है? और इसे स्वीकृति कौन देगा? शुरुआत से लेकर अंत तक, उनकी सेवा कभी भी बदलती नहीं। वे केवल मानव-निर्मित पाठ प्राप्त करते हैं और अपनी सेवा को केवल अपनी स्वाभाविकता और ख़ुद की पसंद पर आधारित रखते हैं। इससे क्या इनाम प्राप्त हो सकता है? यहाँ तक कि पतरस, जिसने यीशु को देखा था, वह भी नहीं जानता था कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा कैसे करनी है; अंत में, वृद्धावस्था में पहुंचने के बाद ही वह इसे समझ पाया। यह उन नेत्रहीन लोगों के बारे में क्या कहता है जिन्होंने किसी भी तरह के निपटारे या काट-छाँट का ज़रा-भी अनुभव नहीं किया और जिनका किसी ने मार्गदर्शन नहीं किया? क्या आजकल तुम लोगों में से अधिकांश की सेवा उन नेत्रहीन लोगों की तरह ही नहीं है? जिन लोगों ने न्याय नहीं प्राप्त किया है, जिनकी काट-छाँट और जिनका निपटारा नहीं किया गया है, जो नहीं बदले हैं—क्या उन पर प्राप्त विजय अधूरी नहीं है? ऐसे लोगों का क्या उपयोग? यदि तुम्हारी सोच, जीवन की तुम्हारी समझ और परमेश्वर की तुम्हारी समझ में कोई नया परिवर्तन नहीं दिखता है, और तुम्हें वास्तव में थोड़ा-सा भी लाभ नहीं मिलता है, तो तुम कभी भी अपनी सेवा में कुछ भी उल्लेखनीय प्राप्त नहीं कर पाओगे! परमेश्वर के कार्य की एक नई समझ और दर्शन के बिना, तुम पर विजय नहीं पायी जा सकती। फिर परमेश्वर का अनुसरण करने का तुम्हारा तरीका उन्हीं लोगों की तरह होगा जो पीड़ा सहते हैं और उपवास रखते हैं : उसका कोई मूल्य नहीं होगा! वे जो करते हैं उसमें कोई गवाही नहीं होती, इसीलिए मैं कहता हूँ कि उनकी सेवा व्यर्थ होती है! वे जीवनभर कष्ट भोगते हैं और स्वयं को कैद किए रहते हैं; वे हर पल सहनशील, दयालु होते हैं और हमेशा चुनौतियों का सामना करते हैं। उन्हें दुनिया बदनाम करती है, नकार देती है और वे हर तरह की कठिनाई का अनुभव करते हैं। हालाँकि वे अंत तक आज्ञापालन करते हैं, लेकिन फिर भी, उन पर विजय प्राप्त नहीं की जाती और वे विजय प्राप्ति की कोई भी गवाही पेश नहीं कर पाते। वे कम कष्ट नहीं भोगते, लेकिन अपने भीतर वे परमेश्वर को बिल्कुल नहीं जानते। उनकी पुरानी सोच, पुरानी अवधारणाओं, धार्मिक प्रथाओं, मानव-निर्मित ज्ञान और मानवीय विचारों में से किसी से भी निपटा नहीं गया होता है। उनमें कोई नई समझ नहीं होती। परमेश्वर के बारे में उनकी थोड़ी-सी भी समझ सही या सटीक नहीं होती। उन्होंने परमेश्वर की इच्छा को गलत समझ लिया होता है। क्या इससे परमेश्वर की सेवा होती है? तुमने परमेश्वर के बारे में अतीत में जो कुछ भी समझा हो, यदि तुम उसे आज भी बनाए रखो और चाहे परमेश्वर कुछ भी करे, तुम परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान को अपनी अवधारणाओं और विचारों पर आधारित रखना जारी रखो, अर्थात्, तुम्हारे पास परमेश्वर का कोई नया, सच्चा ज्ञान न हो

और तुम परमेश्वर की वास्तविक छवि और स्वभाव को जानने में विफल रहे हो, यदि परमेश्वर के बारे में तुम्हारी समझ अभी भी सामंती, अंधविश्वासी सोच पर आधारित है और अब भी मानवीय कल्पनाओं और अवधारणाओं से पैदा हुई है, तो तुम पर विजय प्राप्त नहीं की गई है। आज मैं यह सब-कुछ तुम से इसलिए कह रहा हूँ ताकि तुम्हें पता चले और यह ज्ञान तुम्हें एक सटीक और नई समझ प्राप्त करने की ओर ले जाए; मैं यह इसलिए भी कह रहा हूँ ताकि तुम लोगों के भीतर बसी पुरानी अवधारणाएं और समझने के पुराने तरीके मिट जाएं और तुम एक नया ज्ञान प्राप्त कर सको। अगर तुम सच में मेरे वचनों को खाते-पीते हो, तो तुम्हारे ज्ञान में काफी बदलाव आएगा। यदि तुम एक आज्ञाकारी हृदय के साथ परमेश्वर के वचनों को खाओगे-पिओगे, तो तुम्हारा परिप्रेक्ष्य बदल जाएगा। यदि तुम बार-बार ताड़ना को स्वीकार कर पाओ, तो तुम्हारी पुरानी मानसिकता धीरे-धीरे बदल जाएगी। यदि तुम्हारी पुरानी मानसिकता पूरी तरह से नई बन जाए, तो तुम्हारा अभ्यास भी तदनुसार बदलेगा। इस तरह तुम्हारी सेवा अधिक से अधिक लक्ष्य पर होगी और अधिक से अधिक परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर पाएगी। यदि तुम अपना जीवन, मानव जीवन की अपनी समझ और परमेश्वर के बारे में अपनी अनेक अवधारणाओं को बदल सको, तो तुम्हारी स्वाभाविकता धीरे-धीरे कम होती जाएगी। यह परिणाम, और इससे कुछ भी कम नहीं, तब होता है जब परमेश्वर मनुष्य पर विजय प्राप्त कर लेता है; लोगों में यह परिवर्तन होने लगता है। यदि परमेश्वर पर विश्वास करने में, तुम केवल अपने शरीर को काबू में रखना एवं कष्ट और पीड़ा भुगतना जानते हो, और तुम्हें यह भी नहीं पता कि वह सही है या गलत, तुम्हें यह तो बिलकुल भी पता नहीं होता कि तुम किसके लिए ऐसा कर रहे हो, तो इस तरह के अभ्यास से परिवर्तन कैसे लाया जा सकता है?

इस बात को समझ लो कि मैं तुम लोगों से यह अपेक्षा नहीं कर रहा हूँ कि तुम अपने शरीर को बाँध कर रखो या अपने मस्तिष्क में मनमाने विचार आने मत दो। यह न तो कार्य का लक्ष्य है और न ही यह वह कार्य है जिसे अभी किए जाने की आवश्यकता है। अभी तुम लोगों को सकारात्मक रूप से समझ प्राप्त करने की आवश्यकता है, ताकि तुम लोग स्वयं को बदल सको। तुम लोगों के लिए सबसे आवश्यक है कि तुम लोग स्वयं को परमेश्वर के वचनों से युक्त करो, जिसका अर्थ है कि तुम लोग स्वयं को उस सत्य और दर्शन से युक्त करो जो अभी तुम लोगों के सामने है, और फिर आगे बढ़कर उन्हें व्यवहार में लाओ। यह तुम लोगों की ज़िम्मेदारी है। मैं तुम लोगों से यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम अधिक प्रकाशन की तलाश करो और उसे प्राप्त करो। फिलहाल, तुम लोगों का आध्यात्मिक कद इसके योग्य नहीं है। तुम लोग बस वह सब

करो जो परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के लिए आवश्यक है। यह आवश्यक है कि तुम लोग परमेश्वर के कार्य को समझो और अपनी प्रकृति, अपने सार और अपने पुराने जीवन को जानो। तुम लोगों को विशेष रूप से अतीत की उन गलत प्रथाओं और मानवीय कृत्यों को जानने की आवश्यकता है जो तुम करते आ रहे थे। बदलने के लिए, तुम लोगों को अपनी सोच बदलने से शुरुआत करनी होगी। पहले अपनी पुरानी सोच को नई सोच में बदलो, और अपनी नई सोच को अपने शब्दों, कार्यों और जीवन को नियंत्रित करने दो। अभी तुम सभी लोगों से यही करने के लिए कहा जा रहा है। आँखें मूंदकर अभ्यास या पालन न करो। तुम लोगों के पास एक आधार और एक लक्ष्य होना चाहिए। खुद को बेवकूफ मत बनाओ। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास किसलिए है, इससे क्या हासिल किया जाना चाहिए और अभी तुम लोगों को किसमें प्रवेश करना चाहिए। यह अनिवार्य है कि तुम ये सब कुछ जानो।

तुम लोगों को वर्तमान में जिसमें प्रवेश करना चाहिए, वह है अपने जीवन को ऊपर ले जाना और अपनी योग्यता को बढ़ाना। इसके अलावा, तुम लोगों को अतीत के उन पुराने दृष्टिकोणों को, अपनी सोच को और अपनी अवधारणाओं को बदलने की आवश्यकता है। तुम लोगों के पूरे जीवन को नवीनीकरण की आवश्यकता है। जब परमेश्वर के कार्यों की तुम्हारी समझ में परिवर्तन होगा, जब तुम्हें परमेश्वर की सभी बातों के सत्य की नई समझ प्राप्त होगी और जब तुम्हारी आंतरिक समझ बेहतर हो जाएगी, तो तुम्हारा जीवन एक बेहतर मोड़ ले लेगा। अब जो कुछ लोग करते और कहते हैं वह सब व्यावहारिक है। ये सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि ये वे चीजें हैं जिनकी लोगों को अपने जीवन के लिए ज़रूरत है और जो उनके पास होनी चाहिए। विजय के कार्य के दौरान मनुष्य में यही परिवर्तन होता है, मनुष्य को इसी परिवर्तन का अनुभव करना चाहिए, और यही वह परिणाम है जो मनुष्य पर विजय प्राप्ति के बाद होता है। तुम अपनी सोच बदल लेते हो, एक नया मानसिक दृष्टिकोण अपना लेते हो, अपनी अवधारणाओं, इरादों और अपने पिछले तार्किक विचारों को उलट देते हो, अपने भीतर गहरी जड़ें जमा चुकी चीज़ों को त्याग देते हो और परमेश्वर पर आस्था की एक नई समझ प्राप्त कर लेते हो, तो तुम्हारे द्वारा दी गई गवाहियां ऊँची उठ जाएँगी और तुम्हारा पूरा अस्तित्व सचमुच बदल जाएगा। ये सभी चीजें बेहद व्यावहारिक, यथार्थवादी और बुनियादी हैं जिन्हें अतीत में लोगों के लिए समझना मुश्किल था और जिनसे वे जुड़ नहीं पाते थे। वे आत्मा के सच्चे कार्य हैं। अतीत में तुमने बाइबल को कैसे समझा था? आज यदि तुम एक त्वरित तुलना करोगे तो तुम्हें पता चल जाएगा। अतीत में, तुमने मूसा, पतरस, पौलुस या उन सभी बाइबल के कथनों और दृष्टिकोणों को मानसिक

रूप से एक ऊँचाई पर और उन्हें बढ़ा-चढ़ा कर रखा था। आज अगर तुम्हें बाइबल को एक ऊँचाई पर रखने के लिए कहा जाए, तो क्या तुम ऐसा करोगे? तुम देखोगे कि बाइबल में मनुष्य द्वारा लिखे गए बहुत सारे अभिलेख हैं और बाइबल केवल परमेश्वर के कार्य के दो चरणों का मनुष्यों द्वारा लिखा गया विवरण है। यह एक इतिहास की पुस्तक है। क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि इस विषय में तुम्हारी समझ में बदलाव आया है? यदि तुम आज मत्ती के सुसमाचार में दी गयी यीशु की वंशावली पर गौर करो, तो तुम कहोगे, "यीशु की वंशावली? बकवास! यह यूसुफ़ की वंशावली है, यीशु की नहीं। यीशु और यूसुफ़ के बीच कोई रिश्ता नहीं है।" आज जब तुम बाइबल को देखोगे, तो उसके बारे में तुम्हारी समझ बदल गई है, जिसका मतलब है कि तुम्हारा दृष्टिकोण बदल गया है और तुम पुराने धार्मिक विद्वानों की तुलना में उसमें एक उच्च स्तर की समझ लेकर आते हो। अगर कोई कहे कि इस वंशावली में कुछ तो बात है, तो तुम जवाब दोगे, "इसमें क्या बात है? जरा समझाओ। यीशु और यूसुफ का आपस में कोई संबंध नहीं है। क्या तुम यह बात नहीं जानते? क्या यीशु की वंशावली हो सकती है? यीशु के पूर्वज कैसे हो सकते हैं? वह मनुष्य का वंशज कैसे हो सकता है? उसका देह मरियम से जन्मा था; उसका आत्मा परमेश्वर का आत्मा है, मनुष्य की आत्मा नहीं। यीशु परमेश्वर का प्रिय पुत्र है, तो क्या उसकी वंशावली हो सकती है? जब वह पृथ्वी पर था, तो वह मानवजाति का सदस्य नहीं था, तो उसकी वंशावली कैसे हो सकती है?" जब तुम वंशावली का विश्लेषण करके सच्चाई की स्पष्ट व्याख्या करोगे, अपनी समझ उस व्यक्ति को बताओगे, तो वह अवाक रह जाएगा। कुछ लोग बाइबल का हवाला देकर तुमसे पूछेंगे, "यीशु की वंशावली थी। क्या आज के तुम्हारे परमेश्वर की वंशावली है?" फिर तुम उन्हें अपनी सबसे यथार्थ समझ बताओगे। इस तरह तुम्हारी समझ का असर होगा। वास्तव में, यीशु का यूसुफ़ से कोई संबंध नहीं था और अब्राहम से संबंध तो दूर की बात है; बस यीशु का जन्म इस्राएल में हुआ था। परन्तु परमेश्वर न तो इस्राएली है और न ही इस्राएलियों का वंशज। केवल इसलिए कि यीशु का जन्म इस्राएल में हुआ, इसका यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है। केवल अपने कार्य के उद्देश्य से ही उसने देहधारण किया। परमेश्वर ब्रह्मांड की पूरी सृष्टि का परमेश्वर है। बात केवल इतनी ही है कि उसने पहले इस्राएल में कार्य का एक चरण पूरा किया और उसके बाद अन्य-जाति राष्ट्रों में कार्य करना शुरू किया। लेकिन लोग मानने लगे कि यीशु इस्राएलियों का परमेश्वर है, यहाँ तक कि लोगों ने उसे इस्राएलियों और दाऊद के वंशजों से जोड़ दिया। बाइबल कहती है कि अंत के दिनों में, अन्य-जाति राष्ट्रों के बीच यहोवा का नाम महान होगा, जिसका अर्थ है कि अंत के दिनों

में परमेश्वर अन्य-जाति राष्ट्रों में कार्य करेगा। परमेश्वर के यहूदिया में देहधारण करने का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर केवल यहूदियों से प्रेम करता है। केवल कार्य की आवश्यकता के कारण उसने वहाँ जन्म लिया; ऐसा नहीं है कि परमेश्वर का देहधारण केवल इस्राएल में ही हो सकता था (क्योंकि इस्राएली उसके चुने हुए लोग थे।) क्या परमेश्वर के चुने हुए लोग अन्य-जाति राष्ट्रों में नहीं हैं? यीशु ने जब यहूदिया में कार्य समाप्त कर लिया, तभी इस कार्य का विस्तार अन्य-जाति राष्ट्रों में हुआ। (इस्राएली लोग इस्राएल के अलावा सभी राष्ट्रों को "अन्य-जाति राष्ट्र" कहते थे।) सच तो यह है कि उन अन्य-जाति राष्ट्रों में भी परमेश्वर के चुने हुए लोग बसते थे; बात केवल इतनी ही थी कि उस समय तक वहाँ कोई कार्य नहीं किया जा रहा था। लोग इस्राएल पर इतना ज़ोर इसलिए देते हैं क्योंकि इस्राएल में कार्य के पहले दो चरण संपन्न हुए और अन्य-जाति राष्ट्रों में कोई कार्य नहीं किया गया था। अन्य-जाति राष्ट्रों में कार्य अब शुरू हो रहा है, और यही कारण है कि लोगों के लिए इसे स्वीकारना कठिन हो रहा है। यदि तुम इन सब बातों को स्पष्ट रूप से समझ सको, इन सभी मामलों को अपने भीतर समाविष्ट करके सही तरीके से देख सको, तो तुम्हें आज के और अतीत के परमेश्वर के बारे में सही समझ प्राप्त हो जाएगी, और यह समझ परमेश्वर के बारे में पूरे इतिहास के सभी संतों की समझ से अधिक होगी। यदि तुम आज के कार्य का अनुभव करो और आज परमेश्वर के व्यक्तिगत कथन सुनो, फिर भी तुम्हें परमेश्वर की संपूर्णता की कोई समझ नहीं होगी; अगर तुम्हारी खोज वैसी ही बनी रहे जैसी हमेशा रही है और उसके स्थान पर कोई नयी समझ विकसित न हो; और विशेषतः यदि तुम विजय के इस सारे कार्य का अनुभव करो, तो भी तुम में किसी भी तरह का कोई परिवर्तन नहीं देखा जा सकता, तो क्या तुम्हारी आस्था उन लोगों की तरह नहीं है जो अपनी भूख मिटाने के लिए केवल रोटी की तलाश में रहते हैं? उस स्थिति में, विजय के कार्य का तुम में कोई प्रभाव नहीं होगा। तो क्या तुम ऐसे ही व्यक्ति नहीं बन जाओगे जिसे हटा दिया जाना चाहिए?

विजय के सभी कार्यों के समापन पर, यह ज़रूरी है कि तुम सभी जानो कि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर नहीं है, बल्कि पूरी सृष्टि का परमेश्वर है। उसने सभी मनुष्यों की रचना की है, केवल इस्राएलियों की नहीं। यदि तुम कहते हो कि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है या परमेश्वर का इस्राएल के अलावा किसी भी देश में देहधारण करना असंभव है, तो तुम्हें विजय के कार्य के दौरान अब भी कोई भी समझ नहीं प्राप्त हुई है और तुम बिल्कुल भी इस बात को स्वीकार नहीं कर रहे हो कि परमेश्वर तुम्हारा परमेश्वर है; तुम बस यही मानते हो कि परमेश्वर इस्राएल से चीन चला गया और उसे

तुम्हारा परमेश्वर होने के लिए मजबूर किया जा रहा है। अगर तुम अभी भी इसे ऐसे देखते हो, तो तुम में मेरा कार्य बेकार हो गया है और तुमने मेरी कही हुई किसी भी बात को नहीं समझा है। अंत में, यदि तुम मत्ती की तरह मेरे लिए एक और वंशावली लिखते हो, मेरे लिए एक उपयुक्त पूर्वज ढूंढते हो और मेरे लिए कोई पुरखा तलाश कर लेते हो—ऐसे कि परमेश्वर के दो देहधारियों की दो वंशावलियां हैं—तो क्या यह विश्व का सबसे बड़ा मज़ाक नहीं होगा? क्या तुम जैसा "नेक इरादे" वाला व्यक्ति जिसने मेरी वंशावली ढूंढी है, एक ऐसा व्यक्ति नहीं बन जाएगा जिसने परमेश्वर को विभाजित कर दिया? क्या तुम इस पाप के बोझ को उठा पाओगे? इस सारे विजय-कार्य के बाद, यदि तुम अभी भी यह नहीं मानते कि परमेश्वर पूरी सृष्टि का परमेश्वर है, यदि तुम अभी भी यही सोचते हो कि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है, तो क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति नहीं हो जो खुले-आम परमेश्वर का विरोध करता है? आज तुम पर विजय प्राप्त करने का उद्देश्य यही है कि तुम स्वीकार करो कि परमेश्वर तुम्हारा परमेश्वर है और वह दूसरों का भी परमेश्वर है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह उन सभी का परमेश्वर है जो उससे प्यार करते हैं, वह सारी सृष्टि का परमेश्वर है। वह इस्राएलियों का परमेश्वर है और मिस्र के लोगों का भी परमेश्वर है। वह अंग्रेज़ों का भी परमेश्वर है और अमेरीकियों का भी परमेश्वर है। वह केवल आदम और हव्वा का परमेश्वर नहीं है, बल्कि उनके सभी वंशजों का भी परमेश्वर है। वह स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ का परमेश्वर है। इस्राएली परिवार और अन्य-जाति परिवार सभी एक ही परमेश्वर के हाथों में हैं। उसने न केवल कई हज़ार सालों तक इस्राएल में कार्य किया था और कभी यहूदिया में पैदा हुआ था, बल्कि आज वह चीन में अवतरित हो रहा है, वह जगह जहां बड़ा लाल अजगर कुंडली मारे बैठा है। यदि यहूदिया में पैदा होना उसे यहूदियों का राजा बना देता है, तो क्या तुम सभी के बीच में आज उसका अवतरण उसे तुम लोगों का परमेश्वर नहीं बना देता है? उसने इस्राएलियों की अगुवाई की और यहूदिया में पैदा हुआ, और वह एक अन्य-जाति भूमि में भी पैदा हुआ है। क्या उसका सभी कार्य उस मानवजाति के लिए नहीं किया जाता जिसकी उसने रचना की है? क्या वह इस्राएलियों को सौ गुना चाहता है और अन्य-जाति लोगों से एक हज़ार गुना घृणा करता है? क्या यह तुम्हारी अवधारणा नहीं है? ऐसा नहीं है कि परमेश्वर कभी तुम्हारा परमेश्वर था ही नहीं, बल्कि बात केवल इतनी है कि तुम उसे स्वीकारते नहीं; ऐसा नहीं है कि परमेश्वर तुम लोगों का परमेश्वर बनने के लिए तैयार नहीं है, बल्कि तुम लोग परमेश्वर को ठुकराते हो। सृजित प्राणियों में ऐसा कौन है जो सर्वशक्तिमान के हाथों में नहीं है? आज तुम लोगों पर विजय पाने के लिए, क्या यही लक्ष्य नहीं है कि तुम लोग मानो कि

परमेश्वर तुम लोगों का ही परमेश्वर है? यदि तुम अभी भी यही मानते हो कि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है, इस्राएल में दाऊद का घर ही परमेश्वर का जन्म-स्थान है और इस्राएल के अलावा कोई भी राष्ट्र परमेश्वर को "उत्पन्न" करने के योग्य नहीं है, और तो और, कोई अन्य-जाति परिवार यहोवा के कार्यों को निजी तौर पर प्राप्त करने के लिए सक्षम नहीं है—अगर तुम अभी भी इस तरह सोचते हो, तो क्या यह तुम्हें एक ज़िद्दी विरोधी नहीं बनाता? हमेशा इस्राएल पर मत अटके रहो। परमेश्वर तुम लोगों के बीच अभी उपस्थित है। स्वर्ग की ओर भी देखते मत रहो। स्वर्ग के अपने परमेश्वर के लिए तड़पना बंद करो! परमेश्वर तुम लोगों के बीच आ गया है, तो वह स्वर्ग में कैसे हो सकता है? परमेश्वर में तुम्हारी आस्था बहुत पुरानी नहीं है, फिर भी उसके बारे में तुममें बहुत सारी अवधारणाएं हैं, इस हद तक कि तुम लोग इस बारे में एक क्षण के लिए भी यह सोचने की हिम्मत नहीं करते कि इस्राएलियों का परमेश्वर अपनी उपस्थिति से तुम लोगों पर अनुग्रह करेगा। यह जानते हुए कि तुम कितने अधिक अपवित्र हो, तुम लोग इस बारे में सोचने की हिम्मत तो बिल्कुल नहीं करते कि तुम कैसे परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से प्रकट होते हुए देख सकते हो। न ही तुम लोगों ने कभी यह सोचा है कि कैसे एक अन्य-जाति भूमि में परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से अवतरित हो सकता है। उसे तो सिनाई पर्वत पर या जैतून पर्वत पर अवतरित होकर इस्राएलियों के समक्ष प्रकट होना चाहिए। क्या अन्य-जाति (यानी इस्राएल से बाहर के लोग) के सभी लोग उसकी घृणा के पात्र नहीं हैं? वह व्यक्तिगत रूप से उनके बीच कैसे काम कर सकता है? इन सभी अवधारणाओं ने बरसों से तुम्हारे अंदर गहरी जड़ें जमा ली हैं। आज तुम लोगों पर विजय प्राप्त करने का उद्देश्य है तुम लोगों की इन अवधारणाओं को ध्वस्त करना। इस तरह तुम लोग परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से अपने बीच में प्रकट होते हुए देखते हो—सिनाई पर्वत पर या जैतून पर्वत पर नहीं, बल्कि उन लोगों के बीच जिनकी उसने पहले कभी अगुवाई नहीं की है। जब परमेश्वर ने इस्राएल में अपने दो चरणों का कार्य कर लिया, तो इस्राएलियों और अन्य-जातियों ने समान रूप से यह अवधारणा अपना ली कि हालाँकि यह सच है कि परमेश्वर ने सभी चीज़ें बनाई हैं, लेकिन वह केवल इस्राएलियों का ही परमेश्वर बनने को तैयार है, अन्य-जातियों का नहीं। इस्राएली मानते हैं कि परमेश्वर केवल हमारा परमेश्वर हो सकता है, तुम सभी अन्य-जातियों का नहीं, और क्योंकि तुम लोग यहोवा का सम्मान नहीं करते, इसलिए यहोवा—हमारा परमेश्वर—तुम लोगों से घृणा करता है। उन यहूदियों का यह भी मानना है : प्रभु यीशु ने हम यहूदियों की छवि ग्रहण की थी और वह ऐसा परमेश्वर है जिस पर यहूदियों का चिह्न है। परमेश्वर हमारे बीच ही कार्य करता है। परमेश्वर की छवि

और हमारी छवि समान है; हमारी छवि परमेश्वर के करीब है। प्रभु यीशु हम यहूदियों का राजा है; अन्यजातियाँ ऐसा महान उद्धार प्राप्त करने के योग्य नहीं हैं। प्रभु यीशु हम यहूदियों के लिए पापबलि है। कार्य के केवल इन दो चरणों के आधार पर ही इस्राएलियों और यहूदियों ने ये सारी अवधारणाएं बना ली थीं। वे रोब से स्वयं के लिए परमेश्वर पर दावा करते हैं, और यह नहीं मानते कि परमेश्वर अन्य-जातियों का भी परमेश्वर है। इस प्रकार, परमेश्वर अन्य-जातियों के दिल में एक रिक्त स्थान बन गया। क्योंकि हर कोई यह मानने लगा था कि परमेश्वर अन्य-जातियों का परमेश्वर नहीं बनना चाहता, वह केवल इस्राएलियों को ही पसंद करता है—जो उसके चुने हुए लोग हैं—और वह यहूदियों को पसंद करता है, विशेषकर उन अनुयायियों को जो उसका अनुसरण करते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि यहोवा और यीशु ने जो कार्य किया, वह सारी मानवजाति के अस्तित्व के लिए किया था? क्या तुम लोग अब स्वीकारते हो कि परमेश्वर उन सभी लोगों का परमेश्वर है जो इस्राएल से बाहर पैदा हुए? क्या आज परमेश्वर तुम्हारे बीच नहीं है? यह कोई सपना नहीं है, है न? क्या तुम लोग इस वास्तविकता को नहीं स्वीकारते? तुम लोग इस पर विश्वास करने की या इसके बारे में सोचने की हिम्मत नहीं करते। तुम लोग इसे जैसे चाहे देखो, लेकिन क्या परमेश्वर तुम लोगों के बीच यहाँ नहीं है? क्या तुम लोग अभी भी इन शब्दों पर विश्वास करने से डरते हो? इस दिन से, क्या वे सभी जिन पर विजय प्राप्त कर ली गई है और जो लोग परमेश्वर के अनुयायी बनना चाहते हैं, वे परमेश्वर के चुने हुए लोग नहीं हैं? क्या तुम सभी, जो आज अनुयायी हो, इस्राएल के बाहर चुने हुए लोग नहीं हो? क्या तुम लोगों का दर्जा इस्राएलियों के बराबर नहीं है? क्या यह सब तुम लोगों को पहचान नहीं लेना चाहिए? क्या तुम लोगों पर विजय पाने के कार्य का यही उद्देश्य नहीं है? क्योंकि तुम लोग परमेश्वर को देख सकते हो, तो वह हमेशा ही तुम लोगों का परमेश्वर रहेगा, शुरू से लेकर भविष्य तक। जब तक तुम लोग उसका अनुसरण करने, उसके वफ़ादार और आज्ञाकारी सृजित प्राणी बने रहने के लिए तैयार रहोगे, तब तक वह तुम लोगों को अकेला नहीं छोड़ेगा।

इंसान चाहे परमेश्वर को प्रेम करने का कितना भी दृढ़ संकल्प दिखाए, वह सामान्य रूप से आज तक उसका आज्ञापूर्वक अनुसरण करता आया है। केवल अंत में, जब कार्य के इस चरण का समापन होगा, तभी मनुष्य को पूरी तरह से पश्चाताप होगा। तभी लोगों पर वास्तव में विजय प्राप्त की जाएगी। फिलहाल, उन पर विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया चल रही है। जैसे ही कार्य समाप्त होगा, उन पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर ली जाएगी, लेकिन अभी ऐसा नहीं है! चाहे हर कोई आश्वस्त हो गया हो, इसका मतलब यह नहीं

है कि उन पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर ली गयी है। क्योंकि फिलहाल लोगों ने केवल वचन देखे हैं, तथ्यात्मक घटनाएँ नहीं देखीं, और चाहे वे कितनी भी गहराई से क्यों न विश्वास करते हों, वे अभी भी अनिश्चित हैं। यही कारण है कि केवल उस अंतिम वास्तविक घटना के साथ ही, जब वचन वास्तविक रूप धारण करेंगे, लोगों पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त की जाएगी। अभी उन लोगों पर विजय प्राप्त की जा रही है क्योंकि वे ऐसे कई रहस्यों को सुन रहे हैं जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं सुना। लेकिन हर कोई अपने भीतर, अभी भी कुछ ऐसी वास्तविक घटनाओं की खोज में है और उनकी प्रतीक्षा कर रहा है जो उसे परमेश्वर के प्रत्येक वचन को यथार्थ करके दिखाए। तभी वे लोग पूरी तरह से आश्वस्त होंगे। जब अंत में, वे सभी इन यथार्थ तथ्यात्मक वास्तविकताओं को देख चुके होंगे, और जब ये वास्तविकताएँ उन्हें निश्चितता का एहसास करवा चुकी होंगी, तभी वे अपने दिल, अपनी बोली और अपनी आंखों में दृढ़-विश्वास दिखाएंगे और तभी वे तहेदिल से आश्वस्त होंगे। यह मनुष्य का स्वभाव है; तुम सभी को वचनों को सत्य होते हुए देखने की ज़रूरत है, तुम लोगों को कुछ तथ्यात्मक घटनाओं को घटते देखने की ज़रूरत है और कुछ लोगों पर आने वाली आपदा को देखने की ज़रूरत है, फिर तुम लोग पूरे दिल से आश्वस्त हो जाओगे। यहूदियों की तरह, तुम लोग भी संकेतों और चमत्कारों को बहुत महत्व देते हो। फिर भी, तुम यह नहीं देख पाते कि संकेत और चमत्कार मौजूद हैं और तुम्हारी आँखों को पूरी तरह खोलने के लिए वास्तविकताएं घटित हो रही हैं। चाहे वह किसी का आकाश से उतरना हो या बादलों के एक समूह का तुम लोगों से बात करना हो या मेरे द्वारा तुम लोगों में से किसी एक के भीतर से बुरी आत्माओं को निकालना हो, या तुम लोगों के बीच मेरी आवाज़ की गर्जना हो, तुम लोग हमेशा ऐसी घटनाओं को देखना चाहते हो और हमेशा चाहते रहोगे। कहा जा सकता है कि परमेश्वर पर विश्वास करके, तुम लोगों की सबसे बड़ी इच्छा होती है कि परमेश्वर आकर तुम्हें व्यक्तिगत रूप से संकेत दिखाए। तब तुम लोग संतुष्ट होगे। तुम लोगों पर विजय प्राप्त करने के लिए मुझे दुनिया के सृजन के समान कार्य करना होगा और फिर तुम्हें किसी तरह का संकेत दिखाना होगा। तब तुम लोगों के दिलों पर पूरी तरह से विजय प्राप्त की जाएगी।

विजय के कार्य की आंतरिक सच्चाई (4)

पूर्ण बनाए जाने का क्या अर्थ है? जीत लिए जाने का क्या अर्थ है? जीत लिए जाने हेतु लोगों को किन मानदंडों पर खरा उतरना अनिवार्य है? और पूर्ण बनाए जाने के लिए उन्हें किन मानदंडों पर खरा उतरना

अनिवार्य है? जीत लिया जाना और पूर्ण किया जाना दोनों मनुष्य को संपूर्ण बनाने के लिए हैं, ताकि उसे उसके वास्तविक रूप में लौटाया जा सके और उसे उसके भ्रष्ट शैतानी स्वभाव और शैतान के प्रभाव से मुक्त किया जा सके। यह जीत लिया जाना मनुष्य में कार्य किए जाने की प्रक्रिया में सबसे पहले आता है; निस्संदेह यह कार्य का पहला कदम है। पूर्ण किया जाना दूसरा कदम है, और वह समापन-कार्य है। प्रत्येक मनुष्य को जीत लिए जाने की प्रक्रिया से होकर गुजरना आवश्यक है। यदि वे ऐसा नहीं करते, तो उनके पास परमेश्वर को जानने का कोई तरीका नहीं होगा, न ही वे यह जानेंगे कि परमेश्वर है, अर्थात उनके लिए परमेश्वर को स्वीकार करना असंभव होगा। और यदि व्यक्ति परमेश्वर को स्वीकार नहीं करता, तो परमेश्वर द्वारा उसे संपूर्ण किया जाना भी असंभव होगा, क्योंकि वह इस संपूर्णता के मानदंड पर खरा नहीं उतरता। यदि तुम परमेश्वर को स्वीकार ही नहीं करते, तो तुम उसे जान कैसे सकते हो? तुम उसकी खोज कैसे कर सकते हो? तुम उसके लिए गवाही देने के भी अयोग्य होगे, उसे संतुष्ट करने के लिए विश्वास रखने की तो बात ही अलग है। अतः जो भी व्यक्ति संपूर्ण किया जाना चाहता है, उसके लिए पहला कदम जीत लिए जाने के कार्य से होकर गुज़रना है। यह पहली शर्त है। परंतु जीत लिया जाना और पूर्ण किया जाना, दोनों का उद्देश्य लोगों में कार्य करना और उन्हें परिवर्तित करना है, और दोनों में से प्रत्येक, मनुष्य के प्रबंधन के कार्य का अंग है। किसी व्यक्ति को संपूर्ण बनाने के लिए ये दोनों अपेक्षित हैं; इनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह सच है कि "जीत लिया जाना" सुनने में ज्यादा अच्छा नहीं लगता, परंतु वास्तव में, किसी को जीत लिए जाने की प्रक्रिया ही उसे परिवर्तित किए जाने की प्रक्रिया है। एक बार जब तुम्हें जीत लिया जाता है, तो तुम्हारा भ्रष्ट स्वभाव पूरी तरह से मिट भले ही न सकता हो, पर तुम उसे जान चुके होगे। विजय के कार्य के माध्यम से तुम अपनी निम्न मानवता को और साथ ही अपनी अवज्ञा को भी अच्छी तरह जान चुके होगे। यद्यपि तुम विजय के कार्य की छोटी अवधि में उन्हें त्याग देने या बदल देने में असमर्थ होगे, पर तुम उन्हें जान चुके होगे, और यह तुम्हारी पूर्णता की नींव रखेगा। इस तरह जीता जाना और पूर्ण किया जाना दोनों ही लोगों को बदलने के लिए, उन्हें उनके भ्रष्ट शैतानी स्वभावों से छुटकारा दिलाने के लिए किए जाते हैं, ताकि वे स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर को दे सकें। जीत लिया जाना लोगों के स्वभाव बदलने में केवल पहला कदम है, और साथ ही यह लोगों द्वारा परमेश्वर को पूरी तरह से दिए जाने का भी पहला कदम है, और यह पूर्ण किए जाने के कदम से निम्न है। एक जीत लिए गए व्यक्ति के जीवन का स्वभाव एक पूर्ण किए गए व्यक्ति के स्वभाव की तुलना में बहुत कम बदलता है। जीत लिया जाना और पूर्ण किया

जाना वैचारिक रूप से एक-दूसरे से भिन्न हैं, क्योंकि वे कार्य के भिन्न-भिन्न चरण हैं और लोगों को भिन्न स्तरों पर रखते हैं; जीत लिया जाना उन्हें निम्न स्तर पर और पूर्ण किया जाना उच्च स्तर पर रखता है। पूर्ण किए गए लोग धार्मिक लोग हैं, ऐसे लोग, जिन्हें पवित्र और शुद्ध बनाया गया है; वे मानवता के प्रबंधन के कार्य के स्फटिक रूप या अंतिम उत्पाद हैं। यद्यपि वे पूर्ण मानव नहीं हैं, फिर भी वे ऐसे लोग हैं, जो अर्थपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। जबकि जीते गए लोग परमेश्वर के अस्तित्व को मात्र शाब्दिक रूप से स्वीकार करते हैं; वे स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर ने देहधारण किया है, कि वचन देह में प्रकट हुआ है, और परमेश्वर पृथ्वी पर न्याय और ताड़ना का कार्य करने के लिए आया है। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर का न्याय, ताड़ना, प्रहार और शुद्धिकरण, सब मनुष्य के लिए लाभप्रद हैं। उन्होंने अभी हाल ही में मनुष्य जैसा होना आरंभ किया है। उनके पास जीवन की कुछ अंतर्दृष्टियाँ अवश्य हैं, परंतु अभी भी वह उनके लिए अस्पष्ट बना हुआ है। दूसरे शब्दों में, वे अभी मानवता को धारण करना आरंभ कर ही रहे हैं। ये जीत लिए जाने के परिणाम हैं। जब लोग पूर्णता के मार्ग पर कदम रखते हैं, तो उनका पुराना स्वभाव बदलना संभव हो जाता है। इसके अतिरिक्त, उनके जीवन निरंतर विकसित होते रहते हैं, और वे धीरे-धीरे सत्य में और गहरे प्रवेश करते जाते हैं। वे संसार से और उन सभी से घृणा करने में सक्षम होते हैं, जो सत्य का अनुसरण नहीं करते। वे विशेष रूप से स्वयं से घृणा करते हैं, परंतु उससे अधिक, वे स्वयं को स्पष्ट रूप से जानते हैं। वे सत्य के द्वारा जीने के इच्छुक होते हैं और वे सत्य के अनुसरण को अपना लक्ष्य बनाते हैं। वे अपने मस्तिष्क द्वारा उत्पन्न विचारों के भीतर जीवन जीने के लिए तैयार नहीं हैं और वे मनुष्य के पाखंड, दंभ और आत्म-संतोष से घृणा महसूस करते हैं। वे औचित्य की सशक्त भावना के साथ बोलते हैं, चीज़ों को विवेक और बुद्धि से सँभालते हैं, और परमेश्वर के प्रति निष्ठावान एवं आज्ञाकारी होते हैं। यदि वे ताड़ना और न्याय की किसी घटना का अनुभव करते हैं, तो न केवल वे निष्क्रिय और दुर्बल नहीं बनते, बल्कि वे परमेश्वर की इस ताड़ना और न्याय के प्रति आभारी होते हैं। वे विश्वास करते हैं कि वे परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के बिना नहीं रह सकते; कि वे उसकी रक्षा करते हैं। वे लोग शांति और आनंद प्राप्त करने और क्षुधा तृप्त करने के लिए विश्वास का अनुसरण नहीं करते, न ही वे अस्थायी दैहिक आनंद के पीछे भागते हैं। पूर्ण किए गए लोगों के साथ ऐसा ही होता है। जीत लिए जाने के पश्चात लोग स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर है, परंतु परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने के पश्चात जो उनमें अभिव्यक्त होता है, उसकी सीमाएँ हैं। वचन के देह में प्रकट होने का वास्तव में क्या अर्थ है? देहधारण का क्या अर्थ है?

देहधारी परमेश्वर ने क्या किया है? उसके कार्य का लक्ष्य और मायने क्या हैं? उसके कार्य को इतना अधिक अनुभव करने के पश्चात, देह में उसके कर्मों को अनुभव करने के पश्चात, तुमने क्या प्राप्त किया है? इन सब चीज़ों को समझने के बाद ही तुम जीते जाओगे। यदि तुम मात्र यही कहते हो मैं स्वीकार करता हूँ कि परमेश्वर है, परंतु उस चीज़ का त्याग नहीं करते जिसका त्याग तुम्हें करना चाहिए, और तुम वे दैहिक आनंद छोड़ने में असफल रहते हो जिन्हें तुम्हें छोड़ना चाहिए, बल्कि हमेशा की तरह तुम दैहिक सुख-सुविधाओं की लालसा करते रहते हो, और यदि तुम भाइयों और बहनों के प्रति पूर्वाग्रहों का त्याग करने में असमर्थ हो, और अनेक सरल अभ्यास करने में किसी कीमत का भुगतान नहीं करते, तो यह प्रमाणित करता है कि तुम्हें अभी भी जीता जाना बाक़ी है। उस मामले में, चाहे तुम बहुत अधिक समझते भी हो, तो भी यह सब व्यर्थ होगा। जीते गए लोग वे हैं, जिन्होंने कुछ आरंभिक बदलाव और आरंभिक प्रवेश प्राप्त कर लिया है। परमेश्वर के न्याय और ताड़ना का अनुभव लोगों को परमेश्वर के प्रारंभिक ज्ञान और सत्य की प्रारंभिक समझ देता है। तुम अधिक गहन, अधिक विस्तृत सत्यों की वास्तविकता में पूर्णतः प्रवेश करने में अक्षम हो सकते हो, परंतु अपने वास्तविक जीवन में तुम अनेक आधारभूत सत्यों का अभ्यास करने में सक्षम होते हो, जैसे कि तुम्हारे दैहिक आनंद या तुम्हारी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से संबंधित सत्य। यह सब जीते जाने की प्रक्रिया के दौरान लोगों में प्राप्त होने वाला प्रभाव है। विजितों के स्वभाव में परिवर्तन देखे जा सकते हैं; उदाहरण के लिए, जिस तरह वे पहनते-ओढ़ते और स्वयं को प्रस्तुत करते हैं, और जिस तरह वे जीते हैं—ये सब बदल सकते हैं। परमेश्वर में विश्वास का उनका दृष्टिकोण बदल जाता है, वे अपनी खोज के लक्ष्य में स्पष्ट होते हैं, और उनकी आकांक्षाएँ ऊँची हो जाती हैं। विजय के कार्य के दौरान उनके जीवन-स्वभाव में अनुरूपी बदलाव भी होते हैं, लेकिन वे उथले, प्राथमिक और उन बदलावों से हीन होते हैं, जो जीते गए लोगों के स्वभाव और खोज के लक्ष्यों में होते हैं। यदि जीते जाने के दौरान व्यक्ति का स्वभाव बिलकुल नहीं बदलता और वह कोई सत्य प्राप्त नहीं करता, तो यह व्यक्ति कचरा और पूर्णतः अनुपयोगी है! जो लोग जीते नहीं गए हैं, वे पूर्ण नहीं बनाए जा सकते! यदि कोई व्यक्ति मात्र जीता जाना चाहता है, तो उसे पूरी तरह से पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, भले ही उसके स्वभाव ने विजय के कार्य के दौरान कुछ अनुरूपी बदलाव दिखाए हों। वह स्वयं को प्राप्त प्रारंभिक सत्य भी खो देगा। जीते गए और पूर्ण किए गए लोगों के स्वभावों में होने वाले बदलाव की मात्रा में बहुत अंतर होता है। परंतु जीत लिया जाना बदलाव में पहला कदम है; यह नींव है। इस आरंभिक बदलाव की कमी इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति वास्तव में

परमेश्वर को बिलकुल नहीं जानता, क्योंकि यह ज्ञान न्याय से आता है, और यह न्याय विजय के कार्य का मुख्य अंग है। इस प्रकार, पूर्ण किए गए सभी लोगों को पहले जीते जाने से होकर गुज़रना चाहिए, अन्यथा उनके लिए पूर्ण किए जाने का कोई मार्ग नहीं है।

तुम कहते हो कि तुम देहधारी परमेश्वर को स्वीकार करते हो, और तुम स्वीकार करते हो कि वचन देह में प्रकट हुआ है, फिर भी उसकी पीठ पीछे तुम कुछ चीज़ें करते हो, ऐसी चीज़ें जो उसकी अपेक्षा के ख़िलाफ़ जाती हैं, और तुम्हारे हृदय में उसका कोई भय नहीं है। क्या यह परमेश्वर को स्वीकार करना है? तुम उस चीज़ को स्वीकार करते हो, जो वह कहता है, पर उन बातों का अभ्यास नहीं करते, जिनका कर सकते हो, न ही तुम उसके मार्ग पर चलते हो। क्या यह परमेश्वर को स्वीकार करना है? और हालाँकि तुम उसे स्वीकार करते हो, परंतु तुम्हारी मानसिकता उससे सतर्क रहने की है, उसका सम्मान करने की नहीं। यदि तुमने उसके कार्य को देखा और स्वीकार किया है और तुम जानते हो कि वह परमेश्वर है, और फिर भी तुम निरुत्साह और पूर्णतः अपरिवर्तित रहते हो, तो तुम उस तरह के व्यक्ति हो जिसे अभी जीता नहीं गया है। जिन्हें जीत लिया गया है, उन्हें वह सब करना चाहिए, जो वे कर सकते हैं; और हालाँकि वे उच्चतर सत्यों में प्रवेश करने में सक्षम नहीं हैं, और ये सत्य उनकी पहुँच से परे हो सकते हैं, फिर भी वे ऐसे लोग हैं, जो अपने हृदय में इन्हें प्राप्त करने के इच्छुक हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे जो स्वीकार कर सकते हैं, उसकी सीमाएँ हैं, और जिसका वे अभ्यास करने में सक्षम हैं, उसकी भी सीमाएँ हैं। फिर भी उन्हें कम से कम वह सब करना चाहिए, जो वे कर सकते हैं, और यदि तुम यह हासिल कर सकते हो, तो यह वह प्रभाव है, जो विजय के कार्य के कारण हासिल किया गया है। मान लो, तुम कहते हो, "यह देखते हुए कि वह ऐसे अनेक वचन सामने रख सकता है जिन्हें मनुष्य नहीं रख सकता, यदि वह परमेश्वर नहीं है, तो फिर कौन है?" इस प्रकार की सोच का यह अर्थ नहीं कि तुम परमेश्वर को स्वीकार करते हो। यदि तुम परमेश्वर को स्वीकार करते हो, तो यह तुम्हें अपने वास्तविक कार्यों के द्वारा प्रदर्शित करना चाहिए। यदि तुम किसी कलीसिया की अगुआई करते हो, परंतु धार्मिकता का अभ्यास नहीं करते, और धन और संपदा की लालसा रखते हो, और हमेशा कलीसिया का पैसा हड़प लेते हो, तो क्या यह, यह स्वीकार करना है कि परमेश्वर है? परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और श्रद्धा के योग्य है। तुम भयभीत कैसे नहीं होगे, यदि तुम वास्तव में स्वीकार करते हो कि परमेश्वर है? अगर तुम ऐसे घृणित कार्य करने में सक्षम हो, तो क्या तुम वास्तव में उसे स्वीकार करते हो? क्या वह परमेश्वर ही है, जिसमें तुम विश्वास करते हो? जिसमें तुम विश्वास करते हो, वह

एक अज्ञात परमेश्वर है; इसीलिए तुम भयभीत नहीं हो! जो लोग वास्तव में परमेश्वर को स्वीकार करते और उसे जानते हैं, वे सभी उसका भय मानते हैं और ऐसा कुछ भी करने से डरते हैं, जो उसके विरोध में हो या जो उनके विवेक के विरुद्ध जाता हो; वे विशेषतः ऐसा कुछ भी करने से डरते हैं, जिसके बारे में वे जानते हैं कि वह परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। केवल इसे ही परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना माना जा सकता है। तुम्हें क्या करना चाहिए, जब तुम्हारे माता-पिता तुम्हें परमेश्वर में विश्वास करने से रोकने की कोशिश करते हैं? तुम्हें परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए, जब तुम्हारा अविश्वासी पति तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करता है? और तुम्हें परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए, जब भाई और बहन तुमसे घृणा करते हैं? यदि तुम उसे स्वीकार करते हो, तो इन मामलों में तुम उचित रूप से व्यवहार करोगे और वास्तविकता को जियोगे। यदि तुम ठोस कार्य करने में असफल रहते हो, परंतु मात्र कहते हो कि तुम परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हो, तब तुम मात्र एक बकवादी व्यक्ति हो! तुम कहते हो कि तुम उसमें विश्वास करते और उसे स्वीकार करते हो, पर तुम किस तरह से उसे स्वीकार करते हो? तुम किस तरह से उसमें विश्वास करते हो? क्या तुम उसका भय मानते हो? क्या तुम उसका सम्मान करते हो? क्या तुम उसे आंतरिक गहराई से प्रेम करते हो? जब तुम व्यथित होते हो और तुम्हारे पास सहारे के लिए कोई नहीं होता, तो तुम परमेश्वर की मनोहरता का अनुभव करते हो, पर बाद में तुम इसके बारे में सब-कुछ भूल जाते हो। यह परमेश्वर से प्रेम करना नहीं है, और न ही यह उसमें विश्वास करना है! अंततः परमेश्वर मनुष्य से क्या प्राप्त करवाना चाहता है? वे सब स्थितियाँ, जिनका मैंने उल्लेख किया, जैसे कि अपने स्वयं के महत्व से अत्यधिक प्रभावित महसूस करना, यह अनुभव करना कि तुम नई चीज़ों को अतिशीघ्र पकड़ और समझ लेते हो, अन्य लोगों को नियंत्रित करना, दूसरों को नीची निगाह से देखना, लोगों को उनकी दिखावट से आँकना, निष्कपट लोगों को धौंस देना, कलीसिया के धन की लालसा रखना, आदि-आदि—जब ये सभी भ्रष्ट स्वभाव तुममें से अंशत: हटा दिए गए हों, केवल तभी तुम पर पाई गई जीत अभिव्यक्त होगी।

तुम लोगों पर किया गया विजय का कार्य गहनतम अर्थ रखता है : एक ओर, इस कार्य का उद्देश्य लोगों के एक समूह को पूर्ण करना है, और इसलिए पूर्ण करना है, ताकि वे विजेताओं का एक समूह बन सकें—पूर्ण किए गए लोगों का प्रथम समूह, अर्थात प्रथम फल। दूसरी ओर, यह सृजित प्राणियों को परमेश्वर के प्रेम का आनंद लेने देना, परमेश्वर के पूर्ण और महानतम उद्धार को प्राप्त करने देना और मनुष्य को न केवल उसकी दया और प्रेमपूर्ण करुणा का, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से

ताड़ना और न्याय का अनुभव लेने देना है। संसार की सृष्टि से अब तक परमेश्वर ने जो कुछ अपने कार्य में किया है, वह प्रेम ही है, जिसमें मनुष्य के लिए कोई घृणा नहीं है। यहाँ तक कि जो ताड़ना और न्याय तुमने देखे हैं, वे भी प्रेम ही हैं, अधिक सच्चा और अधिक वास्तविक प्रेम, ऐसा प्रेम जो लोगों को मानव-जीवन के सही मार्ग पर ले जाता है। तीसरी ओर, यह शैतान के समक्ष गवाही देना है। और चौथी ओर, यह भविष्य के सुसमाचार के कार्य को फैलाने की नींव रखना है। जो समस्त कार्य वह कर चुका है, उसका उद्देश्य लोगों को मानव-जीवन के सही मार्ग पर ले जाना है, ताकि वे सामान्य लोगों की तरह जी सकें, क्योंकि लोग नहीं जानते कि कैसे जीएँ, और बिना मार्गदर्शन के तुम केवल खोखला जीवन जियोगे; तुम्हारा जीवन मूल्यहीन और निरर्थक होगा, और तुम एक सामान्य व्यक्ति बनने में बिलकुल असमर्थ रहोगे। यह मनुष्य को जीते जाने का गहनतम अर्थ है। तुम लोग मोआब के वंशज हो; तुममें जीते जाने का कार्य किया जाता है, तो वह एक महान उद्धार है। तुम सब पाप और व्यभिचार की धरती पर रहते हो; और तुम सब व्यभिचारी और पापी हो। आज तुम न केवल परमेश्वर को देख सकते हो, बल्कि उससे भी महत्वपूर्ण रूप से, तुम लोगों ने ताड़ना और न्याय प्राप्त किया है, तुमने वास्तव में गहन उद्धार प्राप्त किया है, दूसरे शब्दों में, तुमने परमेश्वर का महानतम प्रेम प्राप्त किया है। वह जो कुछ करता है, उस सबमें वह तुम्हारे प्रति वास्तव में प्रेमपूर्ण है। वह कोई बुरी मंशा नहीं रखता। यह तुम लोगों के पापों के कारण है कि वह तुम लोगों का न्याय करता है, ताकि तुम आत्म-परीक्षण करो और यह ज़बरदस्त उद्धार प्राप्त करो। यह सब मनुष्य को संपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है। प्रारंभ से लेकर अंत तक, परमेश्वर मनुष्य को बचाने के लिए पूरी कोशिश कर रहा है, और वह अपने ही हाथों से बनाए हुए मनुष्य को पूर्णतया नष्ट करने का इच्छुक नहीं है। आज वह कार्य करने के लिए तुम लोगों के मध्य आया है, और क्या ऐसा उद्धार और भी बड़ा नहीं है? अगर वह तुम लोगों से नफ़रत करता, तो क्या फिर भी वह व्यक्तिगत रूप से तुम लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए इतने बड़े परिमाण का कार्य करता? वह इस प्रकार कष्ट क्यों उठाए? परमेश्वर तुम लोगों से घृणा नहीं करता, न ही तुम्हारे प्रति कोई बुरी मंशा रखता है। तुम लोगों को जानना चाहिए कि परमेश्वर का प्रेम सबसे सच्चा प्रेम है। यह केवल लोगों की अवज्ञा के कारण है कि उसे न्याय के माध्यम से उन्हें बचाना पड़ता है; यदि वह ऐसा न करे, तो उन्हें बचाया जाना असंभव होगा। चूँकि तुम लोग नहीं जानते कि कैसे जिया जाए, यहाँ तक कि तुम इससे बिलकुल भी अवगत नहीं हो, और चूँकि तुम इस दुराचारी और पापमय भूमि पर जीते हो और स्वयं दुराचारी और गंदे दानव हो, इसलिए वह तुम्हें और अधिक भ्रष्ट होते नहीं देख सकता;

वह तुम्हें इस मलिन भूमि पर रहते हुए नहीं देख सकता जहाँ तुम अभी रह रहे हो और शैतान द्वारा उसकी इच्छानुसार कुचले जा रहे हो, और वह तुम्हें अधोलोक में गिरने नहीं दे सकता। वह केवल लोगों के इस समूह को प्राप्त करना और तुम लोगों को पूर्णतः बचाना चाहता है। तुम लोगों पर विजय का कार्य करने का यह मुख्य उद्देश्य है—यह केवल उद्धार के लिए है। यदि तुम नहीं देख सकते कि जो कुछ तुम पर किया जा रहा है, वह प्रेम और उद्धार है, यदि तुम सोचते हो कि यह मनुष्य को यातना देने की एक पद्धति, एक तरीका भर है और विश्वास के लायक नहीं है, तो तुम पीड़ा और कठिनाई सहने के लिए वापस अपने संसार में लौट सकते हो! यदि तुम इस धारा में रहने और इस न्याय और अमित उद्धार का आनंद लेने, और मनुष्य के संसार में कहीं न पाए जाने वाले इन सब आशीषों का और इस प्रेम का आनंद उठाने के इच्छुक हो, तो अच्छा है : विजय के कार्य को स्वीकार करने के लिए इस धारा में बने रहो, ताकि तुम्हें पूर्ण बनाया जा सके। परमेश्वर के न्याय के कारण आज तुम्हें कुछ कष्ट और शुद्धिकरण सहना पड़ सकता है, लेकिन यह कष्ट मूल्यवान और अर्थपूर्ण है। यद्यपि परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के द्वारा लोग शुद्ध, और निर्ममतापूर्वक उजागर किए जाते हैं—जिसका उद्देश्य उन्हें उनके पापों का दंड देना, उनके देह को दंड देना है—फिर भी इस कार्य का कुछ भी उनके देह को नष्ट करने की सीमा तक नकारने के इरादे से नहीं है। वचन के समस्त गंभीर प्रकटीकरण तुम्हें सही मार्ग पर ले जाने के उद्देश्य से हैं। तुम लोगों ने इस कार्य का बहुत-कुछ व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है, और स्पष्टतः, यह तुम्हें बुरे मार्ग पर नहीं ले गया है! यह सब तुम्हें सामान्य मानवता को जीने योग्य बनाने के लिए है; और यह सब तुम्हारी सामान्य मानवता द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। परमेश्वर के कार्य का प्रत्येक कदम तुम्हारी आवश्यकताओं पर आधारित है, तुम्हारी दुर्बलताओं के अनुसार है, और तुम्हारे वास्तविक आध्यामिक कद के अनुसार है, और तुम लोगों पर कोई असहनीय बोझ नहीं डाला गया है। यह आज तुम्हें स्पष्ट नहीं है, और तुम्हें लगता है कि मैं तुम पर कठोर हो रहा हूँ, और निस्संदेह तुम सदैव यह विश्वास करते हो कि मैं तुम्हें प्रतिदिन इसलिए ताड़ना देता हूँ, इसलिए तुम्हारा न्याय करता हूँ और इसलिए तुम्हारी भर्त्सना करता हूँ, क्योंकि मैं तुमसे घृणा करता हूँ। किंतु यद्यपि जो तुम सहते हो, वह ताड़ना और न्याय है, किंतु वास्तव में यह तुम्हारे लिए प्रेम है, और यह सबसे बड़ी सुरक्षा है। यदि तुम इस कार्य के गहन अर्थ को नहीं समझ सकते, तो तुम्हारे लिए अनुभव जारी रखना असंभव होगा। इस उद्धार से तुम्हें सुख प्राप्त होना चाहिए। होश में आने से इनकार मत करो। इतनी दूर आकर तुम्हें विजय के कार्य का अर्थ स्पष्ट दिखाई देना चाहिए, और तुम्हें अब और इसके बारे में ऐसी-वैसी

राय नहीं रखनी चाहिए!

अभ्यास (6)

आज, पतरस के जैसी समझ हासिल करने की बात तो छोड़ो, बहुत से लोग वो समझ भी हासिल नहीं कर पाते जो पौलुस के पास थी। उनके पास पौलुस के जैसा आत्म-बोध भी नहीं है। यद्यपि पौलुस को प्रभु यीशु द्वारा गिराया गया था क्योंकि उसने प्रभु यीशु को सताया था, लेकिन बाद में उसने प्रभु के लिए काम करने और पीड़ा सहने का संकल्प पा लिया। यीशु ने उसे एक बीमारी दी, और बाद में जब पौलुस ने कार्य करना शुरू कर दिया, तो वह उस बीमारी से पीड़ित ही रहा। वह क्यों कहता था कि उसके शरीर में एक काँटा है? वह काँटा, वास्तव में वही बीमारी थी—और पौलुस के लिए यह एक घातक कमज़ोरी थी। कितना भी काम करने या पीड़ा सहने का बड़ा संकल्प करने के बावजूद वह उस काँटे से छुटकारा ना पा सका। लेकिन फिर भी, आजकल तुम लोगों की तुलना में पौलुस की क्षमता कहीं बेहतर थी; और उसमें आत्म-बोध भी था और उसके पास तुम लोगों से अधिक समझ थी। पौलुस को यीशु द्वारा गिरा दिए जाने के बाद उसने यीशु के शिष्यों को उत्पीड़ित करना बंद कर दिया, यीशु के लिए उपदेश देना और पीड़ा सहनी शुरू कर दी। उसे पीड़ा सहने के लिए किस बात ने प्रेरित किया? पौलुस का मानना था कि चूँकि उसने महान प्रकाश को देखा था, इसलिए उसे प्रभु यीशु की गवाही देनी ही चाहिए, यीशु के शिष्यों को अब और पीड़ित नहीं करना चाहिए, परमेश्वर के कार्य का अब और विरोध बिलकुल नहीं करना चाहिए। पौलुस धर्म के उच्च स्तरीय शख्सियतों में से एक था। वह बहुत सुविज्ञ और प्रतिभाशाली था, वह औसत लोगों को तुच्छ समझता था, और उसका व्यक्तित्व अधिकतर लोगों से अधिक शक्तिशाली था। परन्तु "महान प्रकाश" के उसके ऊपर चमकने के बाद, वह प्रभु यीशु के लिए काम करने, परमेश्वर के लिए पीड़ा सहने के लिए संकल्पित होने, परमेश्वर को खुद को अर्पित करने में समर्थ हो गया, जो यह साबित करता है कि उसके पास समझ थी। जब वह यीशु के शिष्यों को उत्पीड़ित और गिरफ्तार कर रहा था, तब यीशु ने उसके सामने प्रकट हो कर कहा: "पौलुस, तू मुझे क्यों सताता है?" पौलुस तुरन्त गिर पड़ा और बोला: "हे प्रभु, तू कौन है?" आकाश से एक आवाज़ ने कहा: "मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।" एकाएक, पौलुस जाग उठा, और तभी उसे पता चला कि यीशु तो मसीह है, कि वह परमेश्वर है। "मुझे अवश्य आज्ञा-पालन करना चाहिए। परमेश्वर ने मुझे यह अनुग्रह दिया है—मैंने उसे इस तरह से सताया, फिर भी उसने मुझे मार नहीं

गिराया, और न ही उसने मुझे शाप दिया। मुझे अवश्य उसके लिए कष्ट झेलना चाहिए।" पौलुस ने स्वीकार किया कि उसने प्रभु यीशु मसीह को सताया था और अब उसके शिष्यों को जान से मार रहा था, फिर भी परमेश्वर ने उसे शाप नहीं दिया था, बल्कि उस पर प्रकाश चमकाया था। इसने उसे प्रेरित किया, और उसने कहा : "हालाँकि मैंने उसका चेहरा नहीं देखा था, किन्तु मैंने उसकी आवाज़ सुनी और उसके महान प्रकाश को देखा था। केवल अब मैं वास्तव में देखता हूँ कि परमेश्वर मुझसे सच में प्रेम करता है, और प्रभु यीशु मसीह ही वास्तव में परमेश्वर है जो मनुष्य पर दया करता है और अनंतकाल के लिए मनुष्य के पापों को क्षमा करता है। मैं वास्तव में देखता हूँ कि मैं पापी हूँ।" यद्यपि, बाद में, परमेश्वर ने कार्य करने के लिए पौलुस की प्रतिभाओं का उपयोग किया, लेकिन कुछ समय के लिए इसे भूल जाओ। उस समय उसका संकल्प, उसकी उचित मानवीय समझ, और उसका आत्म-बोध—तुम लोग इन चीजों को हासिल करने में असमर्थ हो। आज, क्या तुम लोगों को काफी प्रकाश नहीं मिला है? क्या बहुत से लोगों ने नहीं देखा था कि परमेश्वर का स्वभाव प्रताप, कोप, न्याय और ताड़ना वाला है? लोगों पर शाप, परीक्षण और शुद्धिकरण कई बार पड़े हैं—और उन्होंने क्या सीखा है? तुमने अनुशाशित किए जाने और निपटारे से क्या प्राप्त किया है? तुम पर तीखे वचन, प्रहार और न्याय कई बार पड़े हैं, फिर भी तुम उन पर कोई ध्यान नहीं देते हो। तुम्हारे पास पौलुस द्वारा धारण की गई थोड़ी-सी समझ भी नहीं है—क्या तुम बेहद पिछड़े हुए नहीं हो? ऐसा बहुत कुछ था जिसे पौलुस ने स्पष्ट रूप से नहीं देखा था। वह केवल इतना जानता था कि प्रकाश उस पर चमका था, और नहीं जानता था कि उसे प्रहार करके गिराया गया है; वह व्यक्तिगत रूप से मानता था कि उस पर प्रकाश चमकने के बाद, उसे स्वयं को अवश्य परमेश्वर के लिए खपाना चाहिए, परमेश्वर के लिए कष्ट उठाना चाहिए, प्रभु यीशु मसीह के लिए मार्ग प्रशस्त करने के वास्ते सब कुछ करना चाहिए, और प्रभु द्वारा छुटकारा दिलाने के लिए अधिक पापियों को एकत्र करना चाहिए। यह उसका संकल्प, और उसके काम का एकमात्र उद्देश्य था—किन्तु जब वह कार्य कर रहा था, तब भी रोग ने उसकी मृत्यु तक उसे नहीं छोड़ा था। पौलुस ने बीस से अधिक वर्षों तक कार्य किया। उसने बहुत कष्ट सहे, और काफी उत्पीड़नों और क्लेशों का अनुभव किया था, यद्यपि निश्चित रूप से पतरस के परीक्षण की तुलना में ये बहुत कम थे। यदि तुम लोगों के पास पौलुस की समझ भी नहीं है तो यह कितनी निराशा की बात है? जब मामला ये है तो, परमेश्वर तुम लोगों में और भी बड़ा कार्य कैसे शुरू कर सकता है?

जब पौलुस ने सुसमाचार फैलाया, तो उसने बड़ी यातना झेली। उस समय, उसने जो कार्य किया,

उसका विश्वास, उसकी वफादारी, प्रेम, धैर्य और नम्रता, और कई अन्य बाह्य बातें जो उसने जिये, वे आज तुम लोगों की तुलना में अधिक ऊँचे थे। इसे और अधिक कठोरता से कहें तो, तुम लोगों के भीतर कोई उचित समझ नहीं है; यहाँ तक कि तुम लोगों के पास कोई अंतःकरण या मानवता भी नहीं है। तुम लोगों में बहुत कमियाँ हैं! इस प्रकार, अधिकांश समय, तुम लोग जो जीते हो, उसमें कोई उचित समझ नहीं मिलती है, और किसी आत्म-बोध का कोई नामोनिशान नहीं है। यद्यपि पौलुस शारीरिक बीमारी से ग्रस्त था, फिर भी वह प्रार्थना करता और खोजता रहता था : "यह बीमारी आखिर क्या है? मैंने प्रभु के लिए यह सब कार्य किया है, यह कष्ट मुझे क्यों नहीं छोड़ता है? क्या ऐसा हो सकता है कि प्रभु यीशु मेरी परीक्षा ले रहा है? क्या उसने मुझे मार गिराया है? यदि उसने मुझे मार गिराया होता, तो मैं तभी मर गया होता, और उसके लिए यह सब कार्य करने में असमर्थ होता, और न ही मुझे इतना प्रकाश प्राप्त हो सकता था। उसने मेरे संकल्प को साकार भी किया।" पौलुस हमेशा महसूस करता था कि यह बीमारी परमेश्वर द्वारा उसकी परीक्षा थी, कि यह उसके विश्वास और संकल्प को कड़ा कर रही थी—पौलुस इसे ऐसे ही देखता था। वास्तव में, उसकी बीमारी प्रभु यीशु द्वारा उसे मार गिराने का परिणाम थी। इससे वह मानसिक दबाव में आ गया था, और उसने अपने अधिकांश विद्रोही स्वभाव पर अंकुश लगा दिया। यदि तुम लोग अपने आप को पौलुस की परिस्थितियों में पाते, तो तुम लोग क्या करते? क्या तुम लोगों का संकल्प और दर्द सहने की क्षमता पौलुस की क्षमता की बराबरी कर सकती है? आज, यदि तुम लोग कुछ कुछ मामूली बीमारी से ग्रस्त हो जाओ या किसी बड़े परीक्षण से गुज़रो, और तुम्हें कष्ट सहने को मजबूर किया जाये तो, न जाने तुम्हारा व्यवहार कैसा हो। यदि तुम लोगों को पक्षी के एक पिंजरे में बंद कर दिया गया होता और निरंतर तुम्हारी आपूर्ति की जाती तो तुम ठीक रहते। अन्यथा तुम लोग, थोड़ी-भी मानवता से रहित, भेड़ियों की तरह हो जाते। तो जब तुम थोड़ी सी बाधा या कठिनाई से पीड़ित होते हो, तो ये तुम लोगों के लिए अच्छा है; यदि तुम लोगों को एक मौज करने का समय दिया गया होता, तो तुम लोग बर्बाद हो जाते, और तब तुम्हारी रक्षा कैसे की जाती? आज तुम लोगों को इसलिए सुरक्षा दी जाती है क्योंकि तुम लोगों को दंडित किया जाता है, शाप दिया जाता है, तुम लोगों का न्याय किया जाता है। क्योंकि तुम लोगों ने काफी कष्ट उठाया है इसलिए तुम्हें संरक्षण दिया जाता है। नहीं तो, तुम लोग बहुत समय पहले ही दुराचार में गिर गए होते। यह जानबूझ कर तुम लोगों के लिए चीज़ों को मुश्किल बनाना नहीं है—मनुष्य की प्रकृति को बदलना मुश्किल है, और उनके स्वभाव को बदलना भी ऐसा ही है। आज, तुम लोगों के पास वो समझ भी नहीं है जो पौलुस

के पास थी, और न ही तुम लोगों के पास उसका आत्म-बोध है। तुम लोगों की आत्माओं को जगाने के लिए तुम लोगों पर हमेशा दबाव डालना पड़ता है, और तुम लोगों को हमेशा ताड़ना देनी पड़ती है और तुम्हारा न्याय करना पड़ता है। ताड़ना और न्याय ही वह चीज़ हैं जो तुम लोगों के जीवन के लिए सर्वोत्तम हैं। और जब आवश्यक हो, तो तुम पर आ पड़ने वाले तथ्यों की ताड़ना भी होनी ही चाहिए; केवल तभी तुम लोग पूरी तरह से समर्पण करोगे। तुम लोगों की प्रकृतियाँ ऐसी हैं कि ताड़ना और शाप के बिना, तुम लोग अपने सिरों को झुकाने और समर्पण करने के अनिच्छुक होगे। तुम लोगों की आँखों के सामने तथ्यों के बिना, तुम पर कोई प्रभाव नहीं होगा। तुम लोग चरित्र से बहुत नीच और बेकार हो। ताड़ना और न्याय के बिना, तुम लोगों पर विजय प्राप्त करना कठिन होगा, और तुम लोगों की अधार्मिकता और अवज्ञा को जीतना मुश्किल होगा। तुम लोगों का पुराना स्वभाव बहुत गहरी जड़ें जमाए हुए है। यदि तुम लोगों को सिंहासन पर बिठा दिया जाए, तो तुम लोगों को स्वर्ग की ऊँचाई और पृथ्वी की गहराई के बारे में कोई अंदाज़ न हो, तुम लोग किस ओर जा रहे हो इसके बारे में तो बिल्कुल भी अंदाज़ा न हो। यहाँ तक कि तुम लोगों को यह भी नहीं पता कि तुम सब कहाँ से आए हो, तो तुम लोग सृष्टि के प्रभु को कैसे जान सकते हो? आज की समयोचित ताड़ना और शाप के बिना तुम लोगों के अंतिम दिन बहुत पहले आ चुके होते। तुम लोगों के भाग्य के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं—क्या यह और भी निकटस्थ खतरे की बात नहीं है? इस समयोचित ताड़ना और न्याय के बिना, कौन जाने कि तुम लोग कितने घमंडी हो गए होते, और कौन जाने तुम लोग कितने पथभ्रष्ट हो जाते। इस ताड़ना और न्याय ने तुम लोगों को आज के दिन तक पहुँचाया है, और इन्होंने तुम लोगों के अस्तित्व को संरक्षित रखा है। जिन तरीकों से तुम लोगों के "पिता" को "शिक्षित" किया गया था, यदि उन्हीं तरीकों से तुम लोगों को भी "शिक्षित" किया जाता, तो कौन जाने तुम लोग किस क्षेत्र में प्रवेश करते! तुम लोगों के पास स्वयं को नियंत्रित करने और आत्म-चिंतन करने की बिलकुल कोई योग्यता नहीं है। तुम जैसे लोग, अगर कोई हस्तक्षेप या गड़बड़ी किए बगैर मात्र अनुसरण करें, आज्ञापालन करें, तो मेरे उद्देश्य पूरे हो जाएंगे। क्या तुम लोगों के लिए बेहतर नहीं होगा कि तुम आज की ताड़ना और न्याय को स्वीकार करो? तुम लोगों के पास और क्या विकल्प हैं? जब पौलुस ने प्रभु यीशु को काम करते और बोलते हुए देखा था, उसने तब भी विश्वास नहीं किया था। बाद में, प्रभु यीशु को सलीब पर चढ़ाए जाने और उसके पुनर्जीवित होने के पश्चात्, उसने इस तथ्य को जाना, फिर भी वह उत्पीड़ित करता रहा और विरोध करता रहा। जानबूझकर पाप करने का यही अर्थ है, इसलिए ही उसे गिरा दिया गया। शुरुआत में, वह जानता था कि

यहूदियों के बीच एक राजा है जिसे यीशु कहा जाता है, उसने यह सुना था। बाद में, जब उसने मंदिर में धर्मोपदेश दिए और देश भर में उपदेश दिए, तो वह यीशु के विरुद्ध गया और उसने घमण्ड में किसी भी व्यक्ति का अनुसरण करने से इनकार कर दिया। उस समय के कार्य में ये चीजें एक ज़बर्दस्त बाधा बन गईं। जब यीशु काम कर रहा था, तो पौलुस ने प्रत्यक्ष रूप से लोगों को उत्पीड़ित और गिरफ्तार नहीं किया, परन्तु यीशु के कार्य का खंडन करने के लिए उपदेश और शब्दों का उपयोग किया। बाद में, जब प्रभु यीशु मसीह को सलीब पर चढ़ा दिया गया, तो उसने जगह-जगह पर भाग-दौड़ करके शिष्यों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया, और उन्हें उत्पीड़ित करने के लिए जो कुछ कर सकता था वह करने लगा। केवल जब उसके ऊपर प्रकाश चमका उसके बाद ही वह जागा और उसने बहुत पछतावा अनुभव किया। उसके गिर जाने के बाद, उसकी बीमारी ने उसे कभी नहीं छोड़ा। कभी-कभी उसे लगता था कि उसकी यातना बदतर हो गई है, और वह बिस्तर से निकल पाने में असमर्थ है। वह सोचता था : "यह क्या हो रहा है? क्या मुझे सचमुच गिरा दिया गया है?" बीमारी ने उसे कभी नहीं छोड़ा, और यह इस बीमारी की वजह से ही था कि उसने बहुत कार्य किया। यह कहा जा सकता है कि यीशु ने पौलुस के दंभ और उच्छृंखलता के कारण उसे यह बीमारी दी थी; यह उसके लिए एक दण्ड था, किन्तु परमेश्वर के कार्य के वास्ते पौलुस की प्रतिभा का उपयोग करने के लिए भी था, ताकि उसके काम का विस्तार किया जा सके। वस्तुतः, परमेश्वर का इरादा पौलुस को बचाना नहीं, बल्कि उसका उपयोग करना था। फिर भी पौलुस का स्वभाव बहुत अभिमानी और दुराग्रही था, और इसलिए उसमें एक "काँटा" रखा गया था। आखिरकार, जब तक पौलुस ने अपना कार्य समाप्त किया, तब तक वह बीमारी उसके लिए बहुत दर्दनाक नहीं रह गयी थी, और जब उसका काम खत्म हो रहा था तब वह इन वचनों को कहने में सक्षम था, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है"—जो उसने इसलिए कहा क्योंकि वह परमेश्वर के कार्य को नहीं जानता था। तुम लोगों के बीच पौलुस जैसे कई हैं, लेकिन अगर तुम सब मार्ग के अंत तक अनुसरण करने का संकल्प रखो, तो तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाएगा। यहाँ, हम, पौलुस कितने तरीकों से विद्रोही और प्रतिरोधी था, इस बारे में बात नहीं करेंगे, आओ हम उसके उसी अंश की बात करें जो सकारात्मक और प्रशंसनीय था : उसका एक अंतःकरण था, और एक बार "प्रकाश" प्राप्त करने के बाद, वह स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करने और परमेश्वर के लिए कष्ट सहने में सक्षम था। यह उसका मजबूत पक्ष था। लेकिन, यदि ऐसे

लोग हैं जो मानते हैं कि, क्योंकि उसके पास एक मजबूत पक्ष था, इसलिए वह धन्य था, यदि वे मानते हैं कि उसे आवश्यक रूप से ताड़ना नहीं दी गई थी, तो ये उन लोगों के शब्द हैं जिनमें समझ नहीं है।

परमेश्वर के वचनों को पढ़ते और प्रार्थना करते समय, कई लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर को समर्पित होने को तैयार हैं, लेकिन फिर अकेले में वे स्वच्छंद हो जाते हैं, और इसके बारे में नहीं सोचते। परत दर परत खोलते हुए, परमेश्वर वचन बार-बार बोले जाते हैं, और केवल जब लोगों की सबसे निचली परत उजागर हो जाती है, तभी उन्हें "शांति मिलती है" और वे कम अभिमानी, कम उच्छृंखल, कम दंभी हो जाते हैं। आज तुम लोगों की जो स्थितियाँ हैं उनके साथ, तुम लोगों पर अवश्य बेरहमी से प्रहार किया जाना चाहिए और तुम लोगों को उजागर किया जाना चाहिए, और तुम लोगों का विस्तार-दर-विस्तार न्याय किया जाना चाहिए, ताकि तुम लोगों को साँस लेने का मौका भी ना मिले। तुम लोगों के लिए यह बेहतर है कि ताड़ना और न्याय तुम्हें कभी नहीं छोड़ें, और दंड और अभिशाप तुमसे दूर ना हों, ताकि तुम लोग देख सको कि परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं का हाथ कभी भी तुम लोगों से दूर नहीं जाता है। बिलकुल व्यवस्था के युग की तरह, जब हारून ने देखा कि यहोवा ने उसे कभी नहीं छोड़ा था (उसने जो देखा था वह यहोवा का निरंतर मार्गदर्शन और संरक्षण था; परमेश्वर के जिस मार्गदर्शन को आज तुम लोग देखते हो वह ताड़ना, अभिशाप और न्याय है), आज, यहोवा की प्रशासनिक आज्ञाओं का हाथ तुम लोगों को नहीं छोड़ता है। लेकिन एक चीज है जिसके बारे में तुम लोग चैन से हो सकते हो : चाहे तुम लोग कितना ही विरोध, विद्रोह, और आलोचना क्यों न करो, तुम लोगों की देह को कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन अगर ऐसे लोग हैं जो अपने विरोध में बहुत दूर चले जाते हैं और कार्य को बाधित करते हैं, यह स्वीकार्य नहीं है; इसकी एक सीमा है। कलीसिया के जीवन को बाधित या अस्त-व्यस्त मत करो, और पवित्र आत्मा के कार्य को बाधित मत करो। बाकी तुम जो चाहो कर सकते हो। अगर तुम कहते हो कि तुम जीवन का अनुसरण नहीं करना चाहते और दुनिया में लौटना चाहते हो, तो जल्दी करो और जाओ! तुम लोग जो भी चाहो कर सकते हो, जब तक कि यह परमेश्वर के कार्य में बाधा नहीं डालता। फिर भी एक और बात है जो तुम्हें अवश्य मालूम होनी चाहिए : अंत में, इस तरह के सभी दुराग्रही पापियों को हटा दिया जाएगा। आज, हो सकता है कि तुम तिरस्कृत न किये जाओ, लेकिन अंत में, अंशमात्र लोग ही गवाही देने में सक्षम होंगे—और बाकी सभी खतरे में होंगे। अगर तुम इस धारा में रहना नहीं चाहते हो, तो ठीक है। आज लोगों के साथ सहनशीलता से व्यवहार किया जाता है; मैं तुम पर तब तक पाबंदी नहीं लगाता हूँ, जब तक तुम कल

की ताड़ना के बारे में भयभीत नहीं हो। लेकिन यदि तुम इस धारा में हो, तो तुम्हें गवाही अवश्य देनी होगी, और तुम्हें ताड़ित अवश्य किया जाना चाहिए। यदि तुम इसे अस्वीकार करना चाहते हो, और संसार में लौट जाना चाहते हो, तो ठीक है—तुम्हें कोई रोक नहीं रहा है! किन्तु तुम वह कार्य करते हो जो विनाशकारी है और जो पवित्र आत्मा के कार्य को बाधित करता है, तो तुम्हें इसके लिए हरगिज़ माफ़ नहीं किया जा सकता है! जहाँ तक कौन से लोगों को ताड़ना दी जाती है और किनके परिवारों को शापित किया जाता है, इसके बारे में तुम्हारी आँखें जो देखती हैं और तुम्हरे कान सुनते हैं—इस सबके लिए दायरे और सीमाएँ हैं। पवित्र आत्मा चीजों को अकारण ही नहीं करता है। तुम लोगों ने जो पाप किये हैं, उसके आधार पर, यदि तुम लोगों की अधार्मिकता के अनुसार तुम लोगों से व्यवहार किया जाता और तुम लोगों को गंभीरता से लिया जाता, तो तुम लोगों में से कौन जीवित बचने में समर्थ होता? तुम सभी बड़ी विपदा सहते, और तुम में से किसी का भी हश्र अच्छा नहीं होता। फिर भी, कई लोगों के साथ सहिष्णुता से व्यवहार किया जाता है। भले ही तुम लोग आलोचना, विद्रोह और विरोध करते हो, किन्तु जब तक तुम लोग व्यवधान नहीं डालते हो, तब तक मैं मुस्कुराहट के साथ तुम्हारा सामने आऊँगा। यदि तुम लोग वास्तव में जीवन का अनुसरण कर रहे हो, तो तुम लोगों को अवश्य थोड़ी ताड़ना भुगतनी चाहिए, और तुम लोगों को शल्य-चिकित्सा की मेज पर जाने के लिए उस सबसे बिछुड़ने की पीड़ा को अवश्य सहना चाहिए जो तुम लोगों को पसंद है; तुम्हें अवश्य पीड़ा सहनी चाहिए, जैसे कि पतरस ने परीक्षणों और दु:ख को स्वीकार किया था। आज तुम लोग न्याय के आसन के सामने हो। भविष्य में, तुम सब को "सिर काटने के यंत्र (गिलोटिन)" पर जाना पड़ेगा, जो कि तब होगा जब तुम लोग स्वयं का "बलिदान" करोगे।

अंत के दिनों में कार्य के इस अंतिम चरण के दौरान, शायद तुम यह मानते हो कि परमेश्वर तुम्हारी देह को जड़ से नहीं मिटाएगा, और यह कहा जा सकता है कि भले ही तुम उसका विरोध करते हो और उसकी आलोचना करते हो फिर भी हो सकता है तुम कोई बीमारी न भुगतो—किन्तु जब परमेश्वर के कठोर वचन तुम पर पड़ेंगे, जब तुम्हारे विद्रोहीपन, प्रतिरोध और तुम्हारे कुरूप चेहरे को उजागर कर दिया जाएगा, तो तुम कहीं छुप नहीं पाओगे। तुम खुद को घबराया हुआ और भ्रमित पाओगे। आज, तुम लोगों के पास थोड़ा अंतःकरण होना ही चाहिए। दुष्टों की भूमिका ना निभाओ, जो परमेश्वर के विरुद्ध विरोध और विद्रोह करते हैं। तुम्हें अपने पुराने पूर्वजों की ओर अपनी पीठ कर देनी चाहिए; तुम्हारे पास ऐसी कद-काठी होनी चाहिए, और यही वह मानवता है जो तुम्हारे पास होनी चाहिए। तुम हमेशा अपनी भविष्य की

संभावनाओं को या आज के सुखों को एक ओर रखने में असमर्थ रहते हो। परमेश्वर कहता है : जब तक तुम लोग मेरा अनुसरण करने और सत्य खोजने के लिए वह सब कुछ करते हो जो तुम लोग कर सकते हो, तो मैं निश्चित रूप से तुम लोगों को पूर्ण बना दूँगा। एक बार जब तुम लोगों को पूर्ण बना दिया जाएगा, तुम्हारे पास एक सुंदर मंज़िल होगी—मेरे साथ आशीषों का आनंद पाने के लिए तुम लोगों को मेरे राज्य में लाया जाएगा। तुम सबसे एक खूबसूरत मंज़िल का वादा किया गया है, फिर भी तुम लोगों से अपेक्षाएँ कभी कम नहीं हुई हैं। यहाँ एक शर्त भी है : चाहे तुम लोगों को जीता जाये या पूर्ण बनाया जाए या ऐसा न किया जाए, आज तुम लोगों को अवश्य कुछ ताड़ना, कुछ कष्ट के अधीन किया जाना चाहिए, तुम लोगों पर अवश्य प्रहार और तुम्हें अनुशासित किया जाना चाहिए; तुम लोगों को अवश्य मेरे वचनों को सुनना, मेरे मार्ग का अनुसरण करना और परमेश्वर की इच्छा पर चलना चाहिए—यही वह है जो तुम इंसानों को करना चाहिए। तुम चाहे जैसे भी अनुसरण करो, तुम्हें अवश्य स्पष्ट रूप से इस तरह से सुनना चाहिए। यदि तुम्हारे पास सच्चे अंतदर्शन हैं, तो तुम अनुसरण करना जारी रख सकते हो। यदि तुम्हें लगता है कि कोई संभावनाएँ या आशाएँ नहीं हैं, तो तुम जा सकते हो। ये वचन तुम्हें स्पष्ट रूप से कहे गए हैं, लेकिन यदि तुम सच में जाना चाहते हो, तो यह केवल इस बात को दर्शाता है कि तुम में जरा-सा भी अंतःकरण नहीं है; तुम्हारा कृत्य इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि तुम एक राक्षस हो। यद्यपि तुम कहते हो कि तुम सब कुछ परमेश्वर के आयोजन पर छोड़ते हो, किन्तु तुम्हारे देह और तुम जिस तरह जीवन-यापन करते हो, उसके आधार पर, तुम अभी भी शैतान के अधिकार-क्षेत्र के अधीन रहते हो। यद्यपि शैतान भी परमेश्वर के हाथों में है, किन्तु तुम स्वयं अभी भी शैतान से संबंधित हो, और अभी भी परमेश्वर के द्वारा तुम्हें बचाया जाना बाकी है, क्योंकि तुम अभी भी शैतान के प्रभाव के अधीन रहते हो। बचाए जाने के लिए तुम्हें कैसे अनुसरण करना चाहिए? चुनना तुम्हें है—तुम्हें वह मार्ग चुनना चाहिए जिस पर तुम्हें जाना चाहिए। अंततः, यदि तुम कह सकते हो : "मेरे पास और कुछ बेहतर नहीं है, मैं अपने अंतःकरण से परमेश्वर के प्रेम का प्रतिफल देता हूँ, और मुझ में अवश्य थोड़ी-सी मानवता होनी चाहिए। मैं इससे अधिक बड़ा कुछ प्राप्त नहीं कर सकता हूँ, और न ही मेरी क्षमता बहुत अधिक है; परमेश्वर के कार्यों के दर्शन और अर्थ मेरी समझ में नहीं आते हैं। मैं केवल परमेश्वर के प्रेम का प्रतिफल देता हूँ, जो कुछ भी परमेश्वर कहता है, मैं उसे करता हूँ, और मैं वह सब करता हूँ जो मैं कर सकता हूँ। मैं परमेश्वर की एक रचना के रूप में अपना कर्तव्य करता हूँ", तब मुझे संतुष्टि महसूस होगी। यही वह उच्चतम गवाही है जिसके लिए तुम सक्षम हो।

यह लोगों के एक हिस्से से अपेक्षित उच्चतम मानक है : परमेश्वर के एक प्राणी के कर्तव्य को करना। बस उतना करो जितना करने में तुम समर्थ हो; तुमसे अपेक्षाएँ बहुत अधिक नहीं हैं। जब तक तुम वह सब करते हो जो तुम कर सकते हो, तब यह तुम्हारी गवाही है।

अभ्यास (7)

तुम्हारी मानवीयता में बहुत कमी है, तुम्हारी जीवन-शैली बहुत ही निम्न और भ्रष्ट है, तुम्हारे अंदर कोई मानवीयता नहीं है, और तुम्हारे अंदर अंतर्दृष्टि का भी अभाव है। इसलिए तुम्हें सामान्य मानवीयता की बातों से युक्त होना चाहिए। अंतरात्मा, विवेक और अंतर्दृष्टि का होना; यह जानना कि कैसे बोलना और चीज़ों को कैसे देखना है; स्वच्छता का ध्यान रखना; सामान्य इंसान की तरह पेश आना—ये सारे सामान्य मानवीयता के ज्ञान के लक्षण हैं। जब तुम लोग इन बातों में उपयुक्त तरीके से व्यवहार करते हो, तो यह माना जाता है कि तुम लोगों में मानवीयता का स्वीकार्य स्तर है। तुम लोगों को आध्यात्मिक जीवन से भी युक्त होना चाहिए। तुम्हें धरती पर परमेश्वर के समस्त कार्य का ज्ञान और उसके वचनों का अनुभव होना चाहिए। तुम्हें पता होना चाहिए कि उसकी व्यवस्थाओं का पालन कैसे करना है और एक सृजित प्राणी के कर्तव्यों का निर्वहन कैसे करना है। ये उन बातों के दो पहलू हैं जिनमें आज तुम्हें प्रवेश करना चाहिए—मानवीयता के जीवन के लिए स्वयं को तैयार करना और आध्यात्मिकता के जीवन का अभ्यास करना। दोनों अपरिहार्य हैं।

कुछ लोग बेतुके होते हैं : वे केवल अपने आपको मानवीयता के गुणों से युक्त करना जानते हैं। उनके हाव-भाव और रूप-रंग में कोई दोष नहीं निकाला जा सकता; उनकी बातें और बोलने का तरीका सही होता है, उनका पहनावा गरिमापूर्ण और यथोचित होता है। लेकिन अंदर से वे खोखले होते हैं; उनमें सामान्य मानवीयता केवल सतही तौर पर नज़र आती है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका ध्यान सिर्फ खाने, पहनने और बोलचाल पर ही रहता है। कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जो केवल फर्श साफ करने, बिस्तर ठीक करने और आम साफ-सफाई पर ही ध्यान देते हैं। इन कामों में उनका कुशल-अभ्यास हो सकता है, लेकिन अगर ऐसे लोगों से अंत के दिनों के परमेश्वर के कार्य के उनके ज्ञान या ताड़ना और न्याय, परीक्षण और शुद्धिकरण के बारे में पूछ लिया जाए, तो वे अपना ज़रा-सा भी अनुभव ज़ाहिर नहीं कर पाएँगे। तुम उनसे पूछ सकते हो : "क्या तुम्हें धरती पर परमेश्वर के प्राथमिक कार्य की कोई समझ है? आज देहधारी परमेश्वर का कार्य यीशु के कार्य से भिन्न कैसे है? यहोवा के कार्य से भिन्न कैसे है? क्या वे दोनों एक ही

परमेश्वर हैं? क्या वह इस युग का अंत करने के लिए आया है या इंसान को बचाने के लिए आया है?" लेकिन ऐसे लोगों के पास इन मामलों पर बोलने के लिए कुछ नहीं है। कुछ लोग खूबसूरती से सज-धज कर रहते हैं, लेकिन बस ऊपर-ऊपर से : बहनें अपने आपको फूलों की तरह सँवारती हैं और भाई राजकुमारों या छबीले नौजवानों की तरह कपड़े पहनते हैं। वे केवल बाहरी चीज़ों की परवाह करते हैं, जैसे कि अपने खाने-पहनने की; लेकिन अंदर से वे कंगाल होते हैं, उन्हें परमेश्वर का ज़रा-सा भी ज्ञान नहीं होता। इसके क्या मायने हो सकते हैं? और कुछ तो ऐसे हैं जो भिखारियों की तरह कपड़े पहनते हैं—वे वाकई पूर्वी एशिया के गुलाम लगते हैं! क्या तुम लोगों को सचमुच नहीं पता कि मैं तुम लोगों से क्या अपेक्षा करता हूँ? आपस में सँवाद करो : तुम लोगों ने वास्तव में क्या पाया है? तुमने इतने सालों तक परमेश्वर में आस्था रखी है, फिर भी तुम लोगों ने इतना ही प्राप्त किया है—क्या तुम लोगों को शर्म नहीं आती? क्या तुम लज्जित महसूस नहीं करते? इतने सालों से तुम सत्य मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे हो, फिर भी तुम्हारा आध्यात्मिक कद नगण्य है! अपने मध्य तरुण महिलाओं को देखो, कपड़ों और मेकअप में तुम बहुत ही सुंदर दिखती हो, एक-दूसरे से अपनी तुलना करती हो—और तुलना क्या करती हो? अपनी मौज-मस्ती की? अपनी माँगों की? क्या तुम्हें यह लगता है कि मैं मॉडल भर्ती करने आया हूँ? तुम में ज़रा भी शर्म नहीं है! तुम लोगों का जीवन कहाँ है? जिन चीज़ों के पीछे तुम लोग भाग रही हो, क्या वे तुम्हारी फिज़ूल की इच्छाएँ नहीं हैं? तुम्हें लगता है कि तुम बहुत सुंदर हो, भले ही तुम्हें लगता हो कि तुम बहुत सजी-सँवरी हो, लेकिन क्या तुम सच में गोबर के ढेर में जन्मा कुलबुलाता कीड़ा नहीं हो? आज खुशकिस्मती से तुम जिस स्वर्गिक आशीष का आनंद ले रही हो, वो तुम्हारे सुंदर चेहरे के कारण नहीं है, बल्कि परमेश्वर अपवाद स्वरूप तुम्हें ऊपर उठा रहा है। क्या यह तुम्हें अब भी स्पष्ट नहीं हुआ कि तुम कहाँ से आई हो? जीवन का उल्लेख होने पर, तुम अपना मुँह बंद कर लेती हो और कुछ नहीं बोलती, बुत की तरह गूँगी बन जाती हो, फिर भी तुम सजने-सँवरने की जुर्रत करती हो! फिर भी तुम्हारा झुकाव अपने चेहरे पर लाली और पावडर पोतने की तरफ रहता है! और अपने बीच छबीले नौजवानों को देखो, ये अनुशासनहीन पुरुष जो दिनभर मटरगश्ती करते फिरते हैं, बेलगाम रहते हैं और अपने चेहरे पर लापरवाही के हाव-भाव लिए रहते हैं। क्या किसी व्यक्ति को ऐसा बर्ताव करना चाहिए? तुम लोगों में से हर एक आदमी और औरत का ध्यान दिनभर कहाँ रहता है? क्या तुम लोगों को पता है कि तुम लोग अपने भरण-पोषण के लिए किस पर निर्भर हो? अपने कपड़े देखो, देखो तुम्हारे हाथों ने क्या प्राप्त किया है, अपने पेट पर हाथ फेरो—इतने बरसों में तुमने

अपनी आस्था में जो खून-पसीना बहाया है, उसकी कीमत के बदले तुमने क्या लाभ प्राप्त किया है? तुम अब भी पर्यटन-स्थल के बारे में सोचते हो, अपनी बदबूदार देह को सजाने-सँवारने की सोचते हो—निरर्थक काम! तुमसे सामान्यता का इंसान बनने के लिए कहा जाता है, फिर भी तुम असामान्य हो, यही नहीं तुम पथ-भ्रष्ट भी हो। ऐसा व्यक्ति मेरे सामने आने की धृष्टता कैसे कर सकता है? इस तरह की मानवीयता के साथ, तुम्हारा अपनी सुंदरता का प्रदर्शन करना, देह पर इतराना और हमेशा देह की वासनाओं में जीना—क्या तुम मलिन हैवानों और दुष्ट आत्माओं के वंशज नहीं हो? मैं ऐसे मलिन हैवानों को लंबे समय तक अस्तित्व में नहीं रहने दूँगा! ऐसा मानकर मत चलो कि मुझे पता ही नहीं कि तुम दिल में क्या सोचते हो। तुम अपनी वासना और देह को भले ही कठोर नियंत्रण में रख लो, लेकिन तुम्हारे दिल में जो विचार हैं, उन्हें मैं कैसे न जानूँगा? तुम्हारी आँखों की सारी ख्वाहिशों को मैं कैसे न जानूँगा? क्या तुम युवतियाँ अपनी देह का प्रदर्शन करने के लिए अपने आपको इतना सुंदर नहीं बनाती हो? पुरुषों से तुम्हें क्या लाभ होगा? क्या वे तुम लोगों को अथाह पीड़ा से बचा सकते हैं? जहाँ तक तुम लोगों में छबीले नौजवानों की बात है, तुम सब अपने आपको सभ्य और विशिष्ट दिखाने के लिए सजते-सँवरते हो, लेकिन क्या यह तुम्हारी सुंदरता पर ध्यान ले जाने के लिए रचा गया फरेब नहीं है? तुम लोग यह किसलिए कर रहे हो? महिलाओं से तुम लोगों को क्या फायदा होगा? क्या वे तुम लोगों के पापों का मूल नहीं हैं? मैंने तुम स्त्री-पुरुषों से बहुत-सी बातें कही हैं, लेकिन तुम लोगों ने उनमें से कुछ का ही पालन किया है। तुम लोगों के कान बहरे हैं, तुम लोगों की आँखें कमज़ोर पड़ चुकी हैं, तुम्हारा दिल इस हद तक कठोर है कि तुम्हारे जिस्मों में वासना के अलावा कुछ नहीं है, और यह ऐसा है कि तुम इसके चँगुल में फँस गए हो और अब निकल नहीं सकते। गंदगी और मैल में छटपटाते तुम जैसे कीड़ों के इर्द-गिर्द कौन आना चाहता है? मत भूलो कि तुम्हारी औकात उनसे ज़्यादा कुछ नहीं है जिन्हें मैंने गोबर के ढेर से निकाला है, तुम्हें मूलत: सामान्य मानवीयता से संसाधित नहीं किया गया था। मैं तुम लोगों से उस सामान्य मानवीयता की अपेक्षा करता हूँ जो मूलत: तुम्हारे अंदर नहीं थी, इसकी नहीं कि तुम अपनी वासना की नुमाइश करो या अपनी दुर्गंध-युक्त देह को बेलगाम छोड़ दो, जिसे बरसों तक शैतान ने प्रशिक्षित किया है। जब तुम लोग सजते-सँवरते हो, तो क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि तुम इसमें और गहरे फँस जाओगे? क्या तुम लोगों को पता नहीं कि तुम लोग मूलत: पाप के हो? क्या तुम लोग जानते नहीं कि तुम्हारी देह वासना से इतनी भरी हुई है कि यह तुम्हारे कपड़ों तक से रिसती है, तुम लोगों की असह्य रूप से बदसूरत और मलिन दुष्टों जैसी स्थितियों को प्रकट

करती है? क्या बात ऐसी नहीं है कि तुम लोग इसे दूसरों से ज़्यादा बेहतर ढंग से जानते हो? क्या तुम्हारे दिलों को, तुम्हारी आँखों को, तुम्हारे होठों को मलिन दुष्टों ने बिगाड़ नहीं दिया है? क्या तुम्हारे ये अंग गंदे नहीं हैं? क्या तुम्हें लगता है कि जब तक तुम कोई क्रियाकलाप नहीं करते, तब तक तुम सर्वाधिक पवित्र हो? क्या तुम्हें लगता है कि सुदंर वस्त्रों में सजने-सँवरने से तुम्हारी नीच आत्माएँ छिप जाएँगी? ऐसा नहीं होगा! मेरी सलाह है कि अधिक यथार्थवादी बनो : कपटी और नकली मत बनो और अपनी नुमाइश मत करो। तुम लोग अपनी वासना को लेकर एक-दूसरे के सामने शान बघारते हो, लेकिन बदले में तुम लोगों को अनंत यातनाएँ और निर्मम ताड़ना ही मिलेगी! तुम लोगों को एक-दूसरे से आँखें लड़ाने और रोमाँस में लिप्त रहने की क्या आवश्यकता है? क्या यह तुम लोगों की सत्यनिष्ठा का पैमाना और ईमानदारी की हद है? मुझे तुम लोगों में से उनसे नफरत है जो बुरी औषधि और जादू-टोने में लिप्त रहते हैं; मुझे तुम लोगों में से उन नौजवान लड़के-लड़कियों से नफरत है जिन्हें अपने शरीर से लगाव है। बेहतर होगा अगर तुम लोग स्वयं पर नियंत्रण रखो, क्योंकि अब आवश्यक है कि तुम्हारे अंदर सामान्य मानवीयता हो, और तुम्हें अपनी वासना की नुमाइश करने की अनुमति नहीं है—लेकिन फिर भी तुम लोग हाथ से कोई मौका जाने नहीं देते हो, क्योंकि तुम्हारी देह बहुत उछाल मार रही है और तुम्हारी वासना बहुत प्रचंड है!

सतह पर तुम्हारी मानवीयता का जीवन सुव्यवस्थित है, लेकिन जब तुमसे तुम्हारे जीवन-ज्ञान के बारे में बताने को कहा जाता है, तो तुम्हारे पास कहने को कुछ नहीं होता; इसमें तुम निर्धन हो। तुम्हारे अंदर सत्य होना चाहिए! तुम्हारा मानवीयता का जीवन बेहतरी के लिए बदला है, वैसे ही तुम्हारे अंदर का जीवन भी बदलना चाहिए; अपने विचार बदलो, परमेश्वर के विषय में अपना दृष्टिकोण रूपांतरित करो, अपने अंदर के ज्ञान और विचार को बदलो, और परमेश्वर के बारे में ज्ञान बदलो क्योंकि यह तुम्हारी धारणाओं में बसा हुआ है। निपटारा किए जाने के ज़रिए, प्रकाशन और पोषण के ज़रिए, धीरे-धीरे स्वयं के विषय में, मानव जीवन के विषय में और परमेश्वर में आस्था के विषय में अपना ज्ञान बदलो; अपनी समझ को निर्मलता के योग्य बनाओ। इस तरह, इंसान के विचार बदलते हैं, वह चीज़ों को कैसे देखता है और उसका मानसिक रवैया बदलता है। केवल इसी को जीवन स्वभाव में बदलाव कहा जा सकता है। तुमसे यह नहीं कहा जाता कि तुम दिन भर परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हुए व्यतीत करो, या कपड़े धोते रहो और साफ-सफाई करते रहो। कम से कम, सामान्य मानवीयता का जीवन स्वाभाविक रूप से सहन करने योग्य होना चाहिए। इसके अलावा, जब बाहर के मामले सँभालने की बात आए, तो भी तुम्हें कुछ अंतर्दृष्टि और विवेक

का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए; लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम्हारे अंदर जीवन का सत्य होना चाहिए। जब तुम स्वयं को जीवन के लिए तैयार कर रहे हो, तो तुम्हें परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने पर ध्यान देना चाहिए, तुम्हें परमेश्वर के बारे में ज्ञान के विषय में, मानवीय जीवन के विषय में और विशेष रूप से अंत के दिनों में परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य के विषय में बातचीत करने के योग्य होना चाहिए। चूँकि तुम जीवन का अनुसरण करते हो, तो तुम्हारे अंदर ये चीज़ें होनी चाहिए। जब तुम परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते हो, तो तुम्हें इनके सामने अपनी स्थिति की वास्तविकता को मापना चाहिए। यानी, जब तुम्हें अपने वास्तविक अनुभव के दौरान अपनी कमियों का पता चले, तो तुम्हें अभ्यास का मार्ग ढूँढ़ने, गलत अभिप्रेरणाओं और धारणाओं से मुँह मोड़ने में सक्षम होना चाहिए। अगर तुम हमेशा इन बातों का प्रयास करो और इन बातों को हासिल करने में अपने दिल को उँड़ेल दो, तो तुम्हारे पास अनुसरण करने के लिए एक मार्ग होगा, तुम अपने अंदर खोखलापन महसूस नहीं करोगे, और इस तरह तुम एक सामान्य स्थिति बनाए रखने में सफल हो जाओगे। तब तुम ऐसे इंसान बन जाओगे जो अपने जीवन में भार वहन करता है, जिसमें आस्था है। ऐसा क्यों होता है कि कुछ लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़कर, उन्हें अमल में नहीं ला पाते? क्या इसकी वजह यह नहीं है कि वे सबसे अहम बात को समझ नहीं पाते? क्या इसकी वजह यह नहीं है कि वे जीवन को गंभीरता से नहीं लेते? वे अहम बात को समझ नहीं पाते और उनके पास अभ्यास का कोई मार्ग नहीं होता, उसका कारण यह है कि जब वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं, तो वे उनसे अपनी स्थितियों को जोड़ नहीं पाते, न ही वे अपनी स्थितियों को अपने वश में कर पाते हैं। कुछ लोग कहते हैं : "मैं परमेश्वर के वचनों को पढ़कर उनसे अपनी स्थिति को जोड़ पाता हूँ, और मैं जानता हूँ कि मैं भ्रष्ट हूँ और मेरी क्षमता खराब है, लेकिन मैं परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने के काबिल नहीं हूँ।" तुमने केवल सतह को ही देखा है; और भी बहुत-सी वास्तविक चीज़ें हैं जो तुम नहीं जानते : देह-सुख का त्याग कैसे करें, दंभ को दूर कैसे करें, स्वयं को कैसे बदलें, इन चीज़ों में कैसे प्रवेश करें, अपनी क्षमता कैसे बढ़ाएँ और किस पहलू से शुरू करें। तुम केवल सतही तौर पर कुछ चीज़ों को समझते हो, तुम बस इतना जानते हो कि तुम वाकई बहुत भ्रष्ट हो। जब तुम अपने भाई-बहनों से मिलते हो, तो तुम यह चर्चा करते हो कि तुम कितने भ्रष्ट हो, तो ऐसा लगता है कि तुम स्वयं को जानते हो और अपने जीवन के लिए एक बड़ा भार वहन करते हो। दरअसल, तुम्हारा भ्रष्ट स्वभाव बदला नहीं है, जिससे साबित होता है कि तुम्हें अभ्यास का मार्ग मिला नहीं है। अगर तुम किसी कलीसिया की अगुवाई करते हो, तो तुम्हें भाई-बहनों की स्थितियों को

समझने और उस ओर उनका ध्यान दिलाने में समर्थ होना चाहिए। क्या सिर्फ इतना कहना पर्याप्त होगा : "तुम अवज्ञाकारी और पिछड़े हुए हो!"? नहीं, तुम्हें खास तौर से बताना चाहिए कि उनकी अवज्ञाकारिता और पिछड़ापन किस प्रकार अभिव्यक्त हो रहा है। तुम्हें उनकी अवज्ञाकारी स्थिति पर, उनके अवज्ञाकारी बर्ताव पर और उनके शैतानी स्वभावों पर बोलना चाहिए, और इन बातों पर इस ढंग से बोलना चाहिए जिससे कि वे तुम्हारे शब्दों की सच्चाई से पूरी तरह आश्वस्त हो जाएँ। अपनी बात रखने के लिए तथ्यों और उदाहरणों का सहारा लो, और उन्हें बताओ कि वे किस तरह विद्रोही व्यवहार से अलग हो सकते हैं, और उन्हें अभ्यास का मार्ग बताओ—यह है लोगों को आश्वस्त करने का तरीका। जो इस तरह से काम करते हैं, वही दूसरों की अगुवाई कर सकते हैं; उन्हीं में सत्य की वास्तविकता होती है।

अब तुम लोगों को संगति के ज़रिए बहुत से सत्य मुहैया करा दिए गए हैं, और तुम्हें उनकी जाँच करनी चाहिए। तुम्हें इसका निर्णय करने में समर्थ होना चाहिए कि कुल मिलाकर कितने सत्य हैं। एक बार जब तुम सामान्य मानवीयता को जान लेते हो जो किसी इंसान में होनी चाहिए और स्वयं उसके विभिन्न पहलुओं में अंतर कर पाते हो, किसी के जीवन स्वभाव के बदलाव के मुख्य पहलुओं को जान लेते हो, दर्शनों के गहरे होने को और समझने एवं अनुभव करने के उन त्रुटिपूर्ण साधनों को, जो लोगों ने तमाम युगों में इस्तेमाल किए हैं, जान लेते हो—तभी तुम सही मार्ग पर होगे। धर्म के लोग बाइबल की आराधना इस तरह करते हैं मानो वह परमेश्वर हो; विशेषकर, वे नए नियम के चार सुसमाचारों को ऐसा मानते हैं जैसे वे यीशु के चार चेहरे हों, और वे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के त्रित्व की बात करते हैं। यह सब बेहद हास्यास्पद है, तुम लोगों को इसकी असलियत जाननी चाहिए; उससे भी अधिक, तुम्हें देहधारी परमेश्वर के सार का और अंत के दिनों के कार्य का ज्ञान होना चाहिए। अभ्यास करने के वे पुराने तरीके, अभ्यास से जुड़ी वे भ्रांतियाँ और भटकाव भी हैं जिन्हें तुम्हें जानना चाहिए, जैसे कि आत्मा में रहना, पवित्र आत्मा से भर दिया जाना, जो कुछ भी आए उसे स्वीकार करना, अधिकार के प्रति समर्पित होना; तुम्हें जानना चाहिए कि पहले लोग कैसे अभ्यास करते थे और आज लोगों को कैसे अभ्यास करना चाहिए। जहाँ तक इसकी बात है कि अगुवाओं और कर्मियों को कलीसिया में कैसे सहयोग करना चाहिए; दंभ और दूसरों के प्रति तिरस्कार को कैसे दूर करें; भाई-बहन परस्पर कैसे रहें; लोगों से और परमेश्वर से सामान्य संबंध कैसे बनाएँ; मानव जीवन में सामान्य-स्थिति कैसे पाएँ; लोगों को अपने आध्यात्मिक जीवन में क्या प्राप्त करना चाहिए; उन्हें परमेश्वर के वचनों को कैसे खाना-पीना चाहिए; परमेश्वर के कौन-से वचन ज्ञान से संबंधित हैं,

किनका संबंध दर्शनों से है, और उनमें से कौन-से अभ्यास के मार्ग से संबंधित हैं—क्या इन सबके बारे में बोला नहीं जा चुका है? ये वचन उनके लिए खुले हैं जो सत्य का अनुसरण करते हैं, किसी को कोई प्राथमिकता नहीं दी जाती। आज, तुम लोगों को स्वतंत्र रूप से रहने की योग्यता विकसित करनी चाहिए, दूसरों पर निर्भर रहने की मानसिकता नहीं बनानी चाहिए। भविष्य में, जब तुम लोगों को मार्गदर्शन देने के लिए कोई न होगा, तो तुम मेरे इन वचनों पर विचार करोगे। दु:ख के समय, जब कलीसियाई जीवन जीना संभव नहीं होता, जब भाई-बहन एक-दूसरे से नहीं मिल पाते, उनमें से अधिकतर अकेले रहते हैं, अधिक से अधिक अपने स्थानीय क्षेत्र के लोगों से ही संवाद कर पाते हैं, ऐसे समय में अपने वर्तमान आध्यात्मिक कद के कारण तुम मजबूती से खड़े रह ही नहीं पाते हो। कष्टों के मध्य, बहुत-से लोग दृढ़ता से टिके रहने में कठिनाई महसूस करते हैं। जो लोग जीवन का मार्ग जानते हैं और जिनमें पर्याप्त सत्य है, केवल वही प्रगति करते रह सकते हैं, धीरे-धीरे शुद्धिकरण और रूपांतरण पा सकते हैं। कष्टों से गुज़रना कोई आसान बात नहीं है; अगर तुम्हें लगता है कि तुम इनसे कुछ ही दिनों में बाहर निकल आओगे, तो इससे साबित होता है कि तुम्हारी सोच कितनी सरल है! तुम्हें लगता है कि सिद्धांतों की अधिक समझ से तुम दृढ़ रह पाओगे, लेकिन यह सच नहीं है! अगर तुम परमेश्वर के वचनों में सार की बातों को न पहचान पाओ, सत्य के महत्वपूर्ण लक्षण न पकड़ पाओ, और तुम्हारे पास अभ्यास का कोई मार्ग न हो, तो जब समय आएगा और तुम्हें कुछ हो जाएगा, तब तुम उलझन में फँस जाओगे। तुम शैतान के प्रलोभन का सामना नहीं कर पाओगे, न ही शुद्धिकरण का आरंभ सह पाओगे। अगर तुम में कोई सत्य न हो, तुम में दर्शनों का अभाव हो, तो जब समय आएगा, तब तुम स्वयं को ढह जाने से न रोक पाओगे। तुम सारी उम्मीदें खो दोगे और कहोगे, "खैर, अगर मुझे हर हालत में मरना ही है, तो अच्छा होगा कि आखिरी पल तक मेरी ताड़ना की जाए! चाहे ताड़ना हो या आग की झील में भेजा जाना हो—जैसी स्थिति होगी, मैं उसका सामना वैसे ही करूँगा!" यह वैसा ही है जैसा सेवाकर्ताओं के समय में था : कुछ लोगों को लगता था कि चाहे जो हो वे सेवाकर्ता हैं, इसलिए उन्होंने जीवन का अनुसरण बंद कर दिया। वे धूम्रपान करते, शराब पीते, देह-सुख में लिप्त रहते, और जो इच्छा होती करते। कुछ तो बस काम के लिए संसार में लौट आते। प्रतिकूल वातावरण भी ऐसा ही होता है; अगर तुम इस पर काबू न पा सको, तो स्वयं पर ज़रा-सी भी पकड़ ढीली पड़ते ही, तुम सारी उम्मीदें छोड़ दोगे। अगर तुम शैतान के प्रभाव पर काबू न पा सको, तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा और शैतान तुम्हें बंदी बना लेगा और एक बार फिर तबाही को सौंप दिये जाओगे। इसलिए, आज तुम्हें अपने

आपको सत्य से युक्त करना चाहिए; तुम्हें स्वतंत्र रूप से रहने में सक्षम होना चाहिए; और जब तुम परमेश्वर के वचनों को पढ़ो, तो तुम्हें अभ्यास के मार्ग की खोज करने में सक्षम होना चाहिए। तुम्हें सिंचित करने और तुम्हारी चरवाही करने के लिए अगर अगुवा और कर्मी न भी हों, तो भी तुम्हें अनुसरण का मार्ग ढूँढ़ने में, अपनी कमियों का पता लगाने में और उस सत्य को खोजने में सक्षम होना चाहिए जिससे तुम्हें युक्त होना चाहिए और जिसका तुम्हें अभ्यास करना है। क्या परमेश्वर धरती पर आने के बाद, लगातार इंसान के साथ रह सकता है? अपनी धारणाओं के कारण, कुछ लोगों का मानना है : "हे परमेश्वर, अगर तू एक मुकाम तक हम पर कार्य न करे, तो तेरा कार्य समाप्त नहीं माना जा सकता, क्योंकि शैतान तुझ पर आरोप लगा रहा है।" मैं कहता हूँ, एक बार जब मैं अपने वचन बोल चुका होऊँगा, तो मेरा कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हो चुका होगा। जब मेरे पास बोलने के लिए कुछ न होगा, तो मेरा कार्य पूरा हो जाएगा। मेरे कार्य का समापन शैतान की पराजय का सबूत होगा, और इस तरह, यह कहा जा सकता है कि शैतान की ओर से बिना किसी आरोप के, यह सफलतापूर्वक पूरा हो चुका है। लेकिन अगर मेरे कार्य की समाप्ति तक भी तुम्हारे अंदर कोई बदलाव नहीं आता है, तो तुम्हारे जैसे लोग उद्धार के परे हैं और तुम्हें हटा दिया जाएगा। मैं आवश्यकता से अधिक कार्य नहीं करूँगा। मैं तब तक अपना कार्य जारी नहीं रखूँगा जब तक तुम लोगों को एक निश्चित स्तर तक जीत नहीं लिया जाता, जब तक, तुम सब लोगों को सत्य के हर पहलू का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो जाता, तुम्हारी क्षमता में सुधार नहीं आ जाता, तुम आंतरिक और बाहरी तौर पर गवाही नहीं दे देते। यह असंभव होगा! आज मैं तुम पर जो कार्य कर रहा हूँ, वो तुम्हें सामान्य मानवीयता के जीवन में ले जाने के लिए है; यह नए युग के आरंभ और इंसान को नए युग में ले जाने के लिए है। यह कार्य कदम-दर-कदम किया जाता है और प्रत्यक्ष रूप से तुम लोगों के मध्य विकसित होता है : मैं तुम लोगों को रूबरू शिक्षा देता हूँ; मैं तुम्हें हाथ पकड़कर ले जाता हूँ; मैं तुम लोगों को वो बातें बताता हूँ जिसकी तुम्हें समझ नहीं है; तुम्हें वो चीज़ें प्रदान करता हूँ जिनका तुम्हारे अंदर अभाव है। यह कहा जा सकता है कि यह सारा कार्य तुम लोगों के जीवन-पोषण के लिए है, तुम लोगों को सामान्य मानवीयता के जीवन में ले जाने के लिए है; यह खास तौर से अंत के दिनों में लोगों के इस समूह को जीवन के लिए पोषण मुहैया कराने के लिए है। मेरे लिये, यह सारा कार्य पुराने युग का अंत करने और नए युग में ले जाने के लिए है; जहाँ तक शैतान का सवाल है, मैंने उसी को पराजित करने के लिए देहधारण किया। मैं तुम लोगों के बीच अब जो कार्य कर रहा हूँ, वह तुम्हारा आज का पोषण और सही समय पर तुम्हारा उद्धार है, लेकिन इन थोड़े-से वर्षों में, मैं

तुम लोगों को सारा सत्य, जीवन का सारा मार्ग बता दूँगा, यहाँ तक कि भविष्य का कार्य भी बता दूँगा; भविष्य में यह तुम लोगों को सामान्य तौर पर चीज़ों का अनुभव करने में समर्थ बनाने के लिए पर्याप्त होगा। मैंने बस अपने सारे वचन तुम लोगों को सौंप दिए हैं। मैं और कोई उपदेश नहीं देता हूँ; आज, मैंने तुम लोगों से जो सारे वचन बोले हैं, वे ही मेरे उपदेश हैं, क्योंकि आज तुम लोगों को मेरे बोले गए वचनों का कोई अनुभव नहीं है, और तुम लोग उनके आंतरिक अर्थ को नहीं समझते हो। एक दिन, तुम लोगों के अनुभव फलीभूत होंगे, जैसा कि आज मैंने कहा है। ये वचन तुम्हारे आज के दर्शन हैं, और भविष्य में तुम इन्हीं पर निर्भर रहोगे; वे आज जीवन के लिए पोषण हैं और भविष्य के लिए उपदेश हैं, इससे बेहतर उपदेश नहीं हो सकते थे। क्योंकि मेरे पास कार्य करने के लिए धरती पर उतना समय नहीं है जितना मेरे वचनों का अनुभव करने के लिए तुम्हारे पास है; मैं मात्र अपना कार्य पूरा कर रहा हूँ, जबकि तुम लोग जीवन का अनुसरण कर रहे हो, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें जीवन की लंबी यात्रा शामिल है। बहुत-सी चीज़ों का अनुभव करने के बाद ही तुम जीवन के मार्ग को पूरी तरह से प्राप्त कर पाओगे; तभी तुम मेरे आज बोले गए वचनों के अंदर छिपे हुए अर्थ को समझ पाओगे। जब तुम्हारे हाथों में मेरे वचन होंगे, जब तुम सब लोगों को मेरे सारे आदेश प्राप्त हो जाएँगे, एक बार जब मैं तुम्हें वो सारे कार्य सौंप दूँगा जो मुझे सौंपने चाहिए, और जब वचनों का कार्य समाप्त हो जाएगा, बिना इस बात की परवाह किए कि कितना विशाल प्रभाव प्राप्त हुआ है, तब परमेश्वर की इच्छा का कार्यांवयन भी हो चुका होगा। ऐसा नहीं है जैसा तुम सोचते हो कि तुम्हें एक निश्चित स्थिति तक बदलना चाहिए; परमेश्वर तुम्हारी धारणाओं के अनुसार कार्य नहीं करता।

लोग ज़िंदगी में कुछ ही दिनों में विकास प्राप्त नहीं कर लेते हैं। अगर वे हर दिन भी परमेश्वर के वचनों को खाएँ-पिएँ, तो भी यह पर्याप्त नहीं होता। उन्हें अपने जीवन में विकास की अवधि का अनुभव करना चाहिए। यह एक आवश्यक प्रक्रिया है। आज लोगों की क्षमता को देखते हुए, वे क्या हासिल कर सकते हैं? परमेश्वर लोगों की आवश्यकता के अनुसार कार्य करता है, वह उनकी आंतरिक क्षमता के आधार पर उपयुक्त अपेक्षा ही करता है। मान लो कि यह कार्य उच्च क्षमता वाले लोगों के समूह के मध्य किया गया होता : बोले गए वचन तुम लोगों के लिए बोले गए वचनों से अधिक उन्नत होते, दर्शन भी अधिक उन्नत होते, और सत्य भी अधिक उन्नत होते। कुछ वचनों को अधिक कठोर होना होता, इंसान के जीवन-पोषण के लिए अधिक सक्षम होना होता, रहस्यों का उद्‌घाटन करने में अधिक सक्षम होना होता। लोगों के मध्य

बोलते समय, परमेश्वर उनकी आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें पोषण देगा। आज तुमसे की गयी अपेक्षाएँ अत्यंत सख्त हो सकती हैं; अगर यही कार्य उच्चतर क्षमता वाले लोगों के समूह पर किया गया होता, तो अपेक्षाएँ कहीं अधिक बड़ी होतीं। परमेश्वर का सारा कार्य लोगों की निहित क्षमता के अनुसार किया जाता है। आज लोगों को जिस हद तक बदला और जीता गया है, वह अधिकतम सीमा है; कार्य का यह चरण कितना प्रभावी रहा है, इसे मापने के लिए अपनी धारणाओं का इस्तेमाल मत करो। सहज रूप से तुम्हारे अंदर जो कुछ है, उसके बारे में तुम लोगों को स्पष्ट होना चाहिए, अपने आपको बहुत ऊँचा मत समझो। मूलतः, तुम में से किसी ने भी जीवन का अनुसरण नहीं किया, बल्कि तुम लोग गलियों में भटकने वाले भिखारी थे। परमेश्वर का तुम्हारी कल्पना की हद तक तुम लोगों को आकार देना, ज़मीन पर तुमसे दंडवत करवाना, तुम्हें पूरी तरह से आश्वस्त करना, मानो कि तुम लोगों ने कोई महान दर्शन देख लिया हो—असंभव है! यह असंभव इसलिए है क्योंकि जिसने परमेश्वर के चमत्कारों को नहीं देखा है, वह मेरी बातों पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर सकता। अगर तुम लोग अच्छी तरह से मेरे वचनों की जाँच भी करते, तो भी तुम्हें पूरी तरह से यकीन न होता; यही इंसानी प्रकृति है। सत्य का अनुसरण करने वालों में कुछ बदलाव आएगा, जबकि जो लोग सत्य का अनुसरण नहीं करते, उनकी आस्था कम होगी और शायद समाप्त भी हो जाए। तुम लोगों की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि परमेश्वर के वचनों को पूरा होते देखे बिना, पूरी तरह से विश्वास नहीं कर पाते, उसके चमत्कारों को देखे बिना, तुम्हारा विरोध शांत नहीं होता। ऐसी चीज़ों को देखे बिना, कौन परमेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से निष्ठावान होगा? और इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम लोगों का जिसमें विश्वास है, वह परमेश्वर नहीं है, बल्कि वह चमत्कार है। मैं अब सत्य के विभिन्न पहलुओं पर साफ तौर पर बोल चुका हूँ; उनमें से प्रत्येक पूर्ण है और उन सभी के बीच बहुत करीबी संबंध है। तुमने उन्हें देखा है और अब तुम्हें उन्हें अमल में लाना चाहिए। आज मैं तुम्हें मार्ग दिखाता हूँ, और भविष्य में तुम्हें इन्हें अपने आप अमल में लाना चाहिए। मेरे बोले वचन लोगों से उनकी वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर अपेक्षा रखते हैं, और मैं उनकी आवश्यकताओं और उनमें निहित चीज़ों के अनुसार कार्य करता हूँ। व्यवहारिक परमेश्वर धरती पर व्यवहारिक कार्य करने के लिए आया है, लोगों की वास्तविक परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करने के लिए आया है। वह अतर्कसंगत नहीं है। जब परमेश्वर कार्य करता है, तो वह लोगों को बाध्य नहीं करता। मिसाल के तौर पर, तुम्हारा विवाह करना या न करना, तुम्हारी परिस्थितियों की वास्तविकता पर निर्भर करता है; तुम्हें साफ तौर पर सत्य पहले ही बता दिया गया

है, और मैं तुम्हें रोकता नहीं हूँ। कुछ लोगों का परिवार उन्हें परमेश्वर में आस्था रखने से रोकता है जिससे कि वे जब तक शादी न करें, परमेश्वर में आस्था न रख पाएँ। इस तरह, विवाह विपरीत तौर पर उनके लिए मददगार है। दूसरों के लिए, विवाह फायदेमंद नहीं है, बल्कि उसके कारण उन्हें वह भी गँवाना पड़ता है जो पहले उनके पास था। तुम्हारा अपना मामला तुम्हारी वास्तविक परिस्थितियों और तुम्हारे अपने संकल्प से तय होना चाहिए। मैं यहाँ तुम्हारे लिए नए नियम-कानून बनाने के लिए नहीं हूँ जिनके अनुसार मैं तुम लोगों से अपेक्षाएँ करूँ। बहुत-से लोग लगातार चिल्लाते रहते हैं, "परमेश्वर व्यवहारिक है; उसका कार्य वास्तविकता और हमारी परिस्थितियों की वास्तविकता पर आधारित है"—लेकिन क्या तुम जानते हो कि क्या इसे असल बनाता है? बहुत हुई तुम्हारी खोखली बातें! परमेश्वर का कार्य असल है और वास्तविकता पर आधारित है; इसके कोई सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि यह एकदम मुक्त है, पूरा का पूरा खुला हुआ और स्पष्ट। इन कुछ सिद्धांतों के विशिष्ट ब्यौरे क्या हैं? क्या तुम बता सकते हो कि परमेश्वर के कार्य के कौन-से हिस्से ऐसे हैं? तुम्हें विस्तार से बोलना चाहिए, तुम्हारे पास कई तरह की अनुभवजन्य गवाहियाँ होनी चाहिए, और तुम्हें परमेश्वर के कार्य की इस विशेषता के बारे में एकदम स्पष्ट होना चाहिए—तुम्हें इसका ज्ञान होना चाहिए, तभी तुम इन वचनों को बोलने के पात्र बन पाओगे। अगर तुमसे कोई यह पूछे तो क्या तुम उत्तर दे सकते हो : "देहधारी परमेश्वर ने अंत के दिनों में क्या कार्य किया है? यहाँ 'व्यवहारिक' का क्या अर्थ है? क्या तुम उसके व्यवहारिक कार्य के बारे में और उसमें विशेष रूप से क्या शामिल है, बता सकते हो? यीशु देहधारी परमेश्वर है, और आज का परमेश्वर भी देहधारी परमेश्वर है, तो इनमें क्या अंतर है? और क्या समानताएँ हैं? दोनों ने क्या कार्य किया है?" ये सब गवाही देने से संबंधित हैं! इन्हें लेकर भ्रमित मत हो जाना। कुछ लोग यह कहते हैं : "आज परमेश्वर का कार्य असली है। इसमें चमत्कारों और करामातों के प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं है।" क्या वह वाकई कोई चमत्कार और करामात नहीं दिखाता? तुम्हें पक्का यकीन है? तुम जानते हो सच में मेरा काम क्या है? कोई यह बात कह सकता है कि वह चमत्कार और करामात नहीं दिखाता, लेकिन वह जो काम करता है और जो वचन बोलता है, क्या वे सब चमत्कार नहीं हैं? कोई कह सकता है कि वह चमत्कार और करामात नहीं दिखाता, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी व्याख्या कैसे की जाती है और ये किनके लिए हैं? कलीसिया में जाए बिना, उसने लोगों की स्थितियों को उजागर कर दिया, और बोलने के अलावा कोई और काम किए बगैर उसने लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है—क्या ये सब चमत्कार नहीं हैं? केवल वचनों से, उसने लोगों को

जीत लिया है, और लोग बिना संभावनाओं या उम्मीदों के प्रसन्नता से उसका अनुसरण करते हैं—क्या यह भी चमत्कार नहीं है? जब वह बोलता है, तो उसके वचन लोगों में एक विशेष प्रकार के मनोभाव को प्रेरित करते हैं। अगर वे प्रसन्न महसूस नहीं करते, तो वे खिन्न हो जाते हैं; अगर वे शुद्धिकरण के अधीन नहीं हैं, तो ताड़ना के अधीन हैं। मात्र कुछ तीखे वचनों से, वह लोगों को ताड़ना देता है—क्या यह अलौकिक नहीं है? क्या इंसान ऐसा काम कर सकता है? तुमने इतने सालों तक बाइबल पढ़ी है, तुमने न तो कुछ समझा, न हासिल किया और न ही कोई अंतर्दृष्टि प्राप्त की; तुम अपने आपको विश्वास के उन पुराने और पारम्परिक तरीकों से अलग नहीं कर पाए। बाइबल को समझने का तुम्हारे पास कोई तरीका नहीं है। फिर भी वह बाइबल को पूरी तरह समझ सकता है—क्या यह अलौकिक नहीं है? परमेश्वर जब धरती पर आया, तब अगर उसके बारे में कुछ भी अलौकिक न होता, तो क्या वह तुम लोगों को जीत पाता? उसके असाधारण, दिव्य कार्य के बगैर, तुम में से कौन आश्वस्त होता? तुम्हारी नज़र में, तुम्हें लगता है कि एक सामान्य इंसान काम कर रहा है और तुम लोगों के साथ रह रहा है—बाहर से वह सामान्य, साधारण व्यक्ति दिखता है; तुम जो देखते हो वो सामान्य मानवीयता का मुखौटा है, जबकि सच्चाई यह है कि इसमें दिव्यता कार्यरत है। यह सामान्य मानवीयता नहीं है, बल्कि दिव्यता है; कार्य करता हुआ स्वयं परमेश्वर है, वह कार्य है जिसे वह सामान्य मानवीयता का उपयोग करके करता है। इस तरह, उसका कार्य सामान्य भी है और अलौकिक भी। उसके कार्य को इंसान नहीं कर सकता; और चूँकि इस कार्य को सामान्य इंसान नहीं कर सकता, तो यह असाधारण प्राणी द्वारा किया जाता है। फिर भी यह दिव्यता है जो असाधारण है, न कि मानवीयता; दिव्यता मानवीयता से भिन्न है। जिस व्यक्ति को पवित्र आत्मा उपयोग में लाता है, वह भी साधारण, सामान्य मानवीयता का होता है, लेकिन वह इस कार्य को करने में सक्षम नहीं है। यहाँ एक अंतर है। तुम कह सकते हो : "परमेश्वर कोई अलौकिक परमेश्वर नहीं है; वह कुछ भी अलौकिक नहीं करता। हमारा परमेश्वर व्यवहारिक और वास्तविक वचन बोलता है। वह कलीसिया में वास्तविक और व्यवहारिक कार्य करने आता है। वह हमसे प्रतिदिन आमने-सामने बोलता है, और वह रूबरू ही हमारी स्थिति की ओर इशारा करता है—हमारा परमेश्वर वास्तविक है! वह हमारे साथ रहता है, और उसके बारे में हर चीज़ पूरी तरह से सामान्य है। उसके वेष में कोई भी बात उसे परमेश्वर के रूप में विशिष्ट नहीं बनाती। कभी-कभी ऐसा भी समय आता है, जब वह क्रोधित हो जाता है और हम उसके रोष का प्रताप देखते हैं, कभी-कभी वह मुस्कुराता है, और हम उसका मुस्कुराने वाला व्यवहार देखते हैं। वह आकार और रूप के साथ

माँस और रक्त से बना, स्वयं परमेश्वर है जो असली और वास्तविक है।" जब तुम इस तरह से गवाही देते हो, तो वह अपूर्ण गवाही होती है। इससे दूसरों को क्या फायदा होगा? अगर तुम स्वयं परमेश्वर के कार्य की अंदरूनी कहानी और सार की गवाही न दे सको, तो तुम्हारी "गवाही" किसी काम की नहीं!

परमेश्वर की गवाही देना मूलत: परमेश्वर के कार्य के बारे में तुम्हारा अपने ज्ञान को बताने का मामला है, और यह बताना है कि परमेश्वर कैसे लोगों को जीतता है, कैसे उन्हें बचाता है और कैसे उन्हें बदलता है; यह बताना है कि वह सत्य की वास्तविकता में प्रवेश करने के लिए कैसे लोगों का मार्गदर्शन करता है, उन्हें जीते जाने की, पूर्ण बनाए जाने की और बचाए जाने की अनुमति देता है। गवाही देने का अर्थ है उसके कार्य के बारे में बोलना, और उस सब के बारे में बोलना जिसका तुमने अनुभव किया है। केवल उसका कार्य ही उसका प्रतिनिधित्व कर सकता है, उसका कार्य ही उसे सार्वजनिक रूप से उसकी समग्रता में प्रकट कर सकता है; उसका कार्य उसकी गवाही देता है। उसका कार्य और उसके कथन सीधे तौर पर पवित्रात्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं; वह जो कार्य करता है, उसे आत्मा द्वारा किया जाता है, और वह जो वचन बोलता है, वे आत्मा द्वारा बोले जाते हैं। ये बातें मात्र देहधारी परमेश्वर के ज़रिए व्यक्त की जाती हैं, फिर भी, असलियत में, वे आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। उसके द्वारा किए जाने वाले सारे कार्य और बोले जाने वाले सारे वचन उसके सार का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर, देहधारण करके और इंसान के बीच आकर, परमेश्वर न बोलता या कार्य न करता, और वह तुमसे उसकी वास्तविकता, उसकी सामान्यता और उसकी सर्वशक्तिमत्ता बताने के लिए कहता, तो क्या तुम ऐसा कर पाते? क्या तुम जान पाते कि आत्मा का सार क्या है? क्या तुम उसके देह के गुण जान पाते? चूँकि तुमने उसके कार्य के हर चरण का अनुभव कर लिया है, इसलिए उसने तुम लोगों को उसकी गवाही देने के लिए कहा। अगर तुम्हें ऐसा कोई अनुभव न होता, तो वो तुम लोगों को अपनी गवाही देने पर ज़ोर न देता। इस तरह, जब तुम परमेश्वर की गवाही देते हो, तो तुम न केवल उसकी सामान्य मानवीयता के बाह्य रूप की गवाही देते हो, बल्कि उसके कार्य की और उस मार्ग की भी गवाही देते हो जो वो दिखाता है; तुम्हें इस बात की गवाही देनी होती है कि तुम्हें उसने कैसे जीता है और तुम किन पहलुओं में पूर्ण बनाए गए हो। तुम्हें इस किस्म की गवाही देनी चाहिए। अगर, तुम कहीं भी जाकर चिल्लाओगे : "हमारा परमेश्वर कार्य करने आया है, और उसका कार्य सचमुच व्यवहारिक है! उसने हमें बिना अलौकिक कार्यों के, बिना चमत्कारों और करामातों के प्राप्त कर लिया है!" तो लोग पूछेंगे : "तुम्हारा यह कहने का क्या मतलब है कि वो चमत्कार और करामात नहीं दिखाता? बिना चमत्कार और

करामात दिखाए उसने तुम्हें कैसे जीत लिया?" और तुम कहते हो : "वह बोलता है और उसने बिना चमत्कार और करामात दिखाए, हमें जीत लिया। उसके कामों ने हमें जीत लिया।" आखिरकार, अगर तुम्हारी बातों में सार नहीं है, अगर तुम कोई विशिष्ट बात न बता सको, तो क्या यह सच्ची गवाही है? देहधारी परमेश्वर जब लोगों को जीतता है, तो यह कार्य उसके दिव्य वचन करते हैं। मानवीयता इस कार्य को नहीं कर सकती; इसे कोई नश्वर इंसान नहीं कर सकता, उच्चतम क्षमता वाले लोग भी इस कार्य को नहीं कर सकते, क्योंकि उसकी दिव्यता किसी भी सृजित प्राणी से ऊँची है। यह लोगों के लिए असाधारण है; आखिरकार, सृष्टिकर्ता सृजित प्राणी से ऊँचा है; सृजित प्राणी सृष्टिकर्ता से ऊँचा नहीं हो सकता; अगर तुम उससे ऊँचे होते, तो वो तुम्हें जीत नहीं पाता, वह तुम्हें इसलिए ही जीत पाता है क्योंकि वह तुमसे ऊँचा है। जो सारी मानवता को जीत सकता है वह सृष्टिकर्ता है, और अन्य कोई नहीं, केवल वही इस कार्य को कर सकता है। ये वचन "गवाही" हैं—ऐसी गवाही जो तुम्हें देनी चाहिए। तुमने धीरे-धीरे ताड़ना, न्याय, शुद्धिकरण, परीक्षण, विफलता और कष्टों का अनुभव किया है, और तुम्हें जीता गया है; तुमने देह की संभावनाओं का, निजी अभिप्रेरणाओं का, और देह के अंतरंग हितों का त्याग किया है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के वचनों ने तुम्हें पूरी तरह से जीत लिया है। हालाँकि तुम उसकी अपेक्षाओं के अनुसार अपने जीवन में उतना आगे नहीं बढ़े हो, तुम ये सारी बातें जानते हो और तुम उसके काम से पूरी तरह से आश्वस्त हो। इस तरह, इसे वो गवाही कहा जा सकता है, जो असली और सच्ची है। परमेश्वर न्याय और ताड़ना का जो कार्य करने आया है, उसका उद्देश्य इंसान को जीतना है, लेकिन वह अपने कार्य को समाप्त भी कर रहा है, युग का अंत कर रहा है और समाप्ति का कार्य कर रहा है। वह पूरे युग का अंत कर रहा है, हर इंसान को बचा रहा है, इंसान को हमेशा के लिए पाप से मुक्त कर रहा है; वह पूरी तरह से अपने द्वारा सृजित मानव को हासिल कर रहा है। तुम्हें इस सब की गवाही देनी चाहिए। तुमने परमेश्वर के इतने सारे कार्य का अनुभव किया है, तुमने इसे अपनी आँखों से देखा है और व्यक्तिगत रुप से अनुभव किया है; एकदम अंत तक पहुँचकर तुम्हें सौंपे गए कर्तव्य को पूरा करने में असफल नहीं होना चाहिए। यह कितना दुखद होगा! भविष्य में, जब सुसमाचार फैलेगा, तो तुम्हें अपने ज्ञान के बारे में बताने में सक्षम होना चाहिए, अपने दिल में तुमने जो कुछ पाया है, उसकी गवाही देने में सक्षम होना चाहिए और कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए। एक सृजित प्राणी को यह सब हासिल करना चाहिए। परमेश्वर के कार्य के इस चरण के असली मायने क्या हैं? इसका प्रभाव क्या है? और इसका कितना हिस्सा इंसान पर किया जाता है? लोगों

को क्या करना चाहिए? जब तुम लोग देहधारी परमेश्वर के धरती पर आने के बाद से उसके द्वारा किए सारे कार्य को साफ तौर पर बता सकोगे, तब तुम्हारी गवाही पूरी होगी। जब तुम लोग साफ तौर पर इन पाँच चीज़ों के बारे में बता सकोगे : उसके कार्य के मायने; उसकी विषय-वस्तु; उसका सार, वह स्वभाव जिसका प्रतिनिधित्व उसका कार्य करता है; उसके सिद्धांत, तब यह साबित होगा कि तुम परमेश्वर की गवाही देने में सक्षम हो और तुम्हारे अंदर सच्चा ज्ञान है। मेरी तुमसे बहुत अधिक अपेक्षाएँ नहीं हैं, जो लोग सच्ची खोज में लगे हैं, वे उन्हें प्राप्त कर सकते हैं। अगर तुम परमेश्वर के गवाहों में से एक होने के लिए दृढ़संकल्प हो, तो तुम्हें समझना चाहिए कि परमेश्वर को किससे घृणा है और किससे प्रेम। तुमने उसके बहुत सारे कार्य का अनुभव किया है; उसके कार्य के ज़रिए, तुम्हें उसके स्वभाव का ज्ञान होना चाहिए, उसकी इच्छा को और इंसान से उसकी अपेक्षाओं को समझना चाहिए, और इस ज्ञान का उपयोग उसकी गवाही देने और अपना कर्तव्य निभाने के लिए करना चाहिए। तुम इतना ही कह सकते हो : "हम परमेश्वर को जानते हैं। उसका न्याय और ताड़ना बहुत कठोर हैं। उसके वचन बहुत सख्त हैं; वे धार्मिक और प्रतापी हैं, और कोई इंसान उनका उल्लंघन नहीं कर सकता," लेकिन क्या ये वचन अंततः इंसान को पोषण देते हैं? लोगों पर इनका प्रभाव क्या होता है? क्या तुम वास्तव में जानते हो कि न्याय और ताड़ना का यह कार्य तुम्हारे लिए सर्वाधिक लाभकारी है? परमेश्वर के न्याय और ताड़ना तुम्हारी विद्रोहशीलता और भ्रष्टता को उजागर करते हैं, है ना? वे तुम्हारे भीतर की उन गंदी और भ्रष्ट चीजों को साफ़ कर सकते हैं और बाहर निकाल सकते हैं, है न? अगर ताड़ना और न्याय न होते, तो तुम्हारा क्या होता? क्या तुम वास्तव में इस तथ्य को समझते हो कि शैतान ने तुम्हें गंभीरतम बिन्दु तक भ्रष्ट कर दिया है? आज, तुम लोगों को इन चीज़ों से युक्त होना चाहिए और इन चीज़ों को अच्छी तरह जानना चाहिए।

आज के समय में परमेश्वर में विश्वास ऐसी आस्था नहीं है जिसकी शायद तुम लोग कल्पना करो—कि इतना पर्याप्त है कि परमेश्वर के वचन पढ़ लिए, प्रार्थना कर ली, भजन गा लिए, नाच लिए, अपने कर्तव्य का निर्वहन कर लिया और सामान्य मानवीयता का जीवन जी लिया। विश्वास रखना सचमुच इतना आसान है क्या? नतीजे मुख्य हैं। यह मुख्य नहीं कि काम को करने के कितने तरीके तुम्हारे पास हैं; बल्कि यह मुख्य है कि तुम सर्वश्रेष्ठ नतीजे आख़िर कैसे हासिल कर सकते हो। शायद तुम परमेश्वर के वचन लेकर अपना ज्ञान प्रतिपादित कर सकते हो, लेकिन जब तुम उन्हें एक ओर रख देते हो, तो तुम्हारे पास कहने को कुछ नहीं होता। इससे ज़ाहिर होता है कि तुम केवल पत्रों और सिद्धांतों की बात तो कर सकते हो लेकिन तुममें

अनुभव के ज्ञान का अभाव है। आज, अगर तुम अहम बातों को नहीं समझते हो, तो काम नहीं चलेगा—वास्तविकता में प्रवेश करने के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है! स्वयं को इस तरह से तैयार करो : पहले, परमेश्वर के वचन पढ़ो; उनमें दी गयी आध्यात्मिक शब्दावली को अच्छी तरह से समझो; उनमें दिए गए महत्वपूर्ण दर्शनों को ढूँढ़ो; अभ्यास से जुड़े हिस्सों को पहचानो; इन सारे तत्वों को एक-एक करके एक-साथ लाओ; अपने अनुभव में उनमें प्रवेश करो। इन महत्वपूर्ण बातों को समझो। परमेश्वर के वचनों को खाते-पीते समय सबसे महत्वपूर्ण अभ्यास यह है : परमेश्वर के वचनों के एक अध्याय को पढ़ लेने के बाद, तुम्हें दर्शनों से संबंधित अहम हिस्सों का पता लगाने में समर्थ होना चाहिए, और तुम्हें अभ्यास से संबंधित अहम हिस्सों का पता लगाने में समर्थ होना चाहिए; दर्शनों को आधार के रूप में उपयोग में लाओ और अभ्यास को अपने जीवन में अपने मार्गदर्शक के तौर पर इस्तेमाल करो। तुम लोगों के अंदर सबसे अधिक कमी इन्हीं चीज़ों की है, और यही तुम लोगों की सबसे बड़ी मुश्किल है; तुम लोग अपने दिल में शायद ही कभी इन बातों पर ध्यान देते हो। आमतौर पर, तुम लोग आलस्य की अवस्था में रहते हो, व्यक्तिगत त्याग करने में प्रेरणारहित और अनिच्छुक रहते हो; या निष्क्रिय रहकर प्रतीक्षा करते हो, और कुछ लोग तो शिकायत भी करते हैं; वे परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य और उसके मायने नहीं समझते, उनके लिए सत्य का अनुसरण करना कठिन होता है। ऐसे लोग सत्य से घृणा करते हैं और वे अंतत: हटा दिए जाएँगे। उनमें से किसी को भी पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, और कोई भी जीवित नहीं बच सकता। अगर लोगों में शैतानी ताकतों का विरोध करने का ज़रा-सा भी संकल्प नहीं है, तो उनमें सुधार की कोई उम्मीद नहीं है!

अब, तुम्हारा प्रयास प्रभावी रहा है या नहीं, यह इस बात से मापा जाता है कि इस समय तुम लोगों के अंदर क्या है। तुम लोगों के परिणाम का निर्धारण करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है; कहने का अर्थ है कि तुम लोगों ने जिन चीज़ों का त्याग किया है और जो कुछ काम किए हैं, उनसे तुम लोगों का परिणाम सामने आता है। तुम लोगों के प्रयास से, तुम लोगों की आस्था से, तुम लोगों ने जो कुछ किया है उनसे, तुम लोगों का परिणाम जाना जाएगा। तुम लोगों में, बहुत-से ऐसे हैं जो पहले ही उद्धार से परे हो चुके हैं, क्योंकि आज का दिन लोगों के परिणाम को उजागर करने का दिन है, और मैं अपने काम में उलझा हुआ नहीं रहूँगा; मैं अगले युग में उन लोगों को नहीं ले जाऊँगा जो पूरी तरह से उद्धार से परे हैं। एक समय आएगा, जब मेरा कार्य पूरा हो जाएगा। मैं उन दुर्गंधयुक्त, बेजान लाशों पर कार्य नहीं करूँगा जिन्हें बिल्कुल भी बचाया नहीं जा सकता; अब इंसान के उद्धार के अंतिम दिन हैं, और मैं निरर्थक कार्य

नहीं करूँगा। स्वर्ग और धरती का विरोध मत करो—दुनिया का अंत आ रहा है। यह अपरिहार्य है। चीज़ें इस मुकाम तक आ गयी हैं, और उन्हें रोकने के लिए तुम इंसान के तौर पर कुछ नहीं कर सकते; तुम अपनी इच्छानुसार चीज़ों को बदल नहीं सकते। कल, तुमने सत्य का अनुसरण करने के लिए कीमत अदा नहीं की थी और तुम निष्ठावान नहीं थे; आज, समय आ चुका है, तुम उद्धार से परे हो; और आने वाले कल में तुम्हारे उद्धार की कोई गुंजाइश नहीं होगी। हालाँकि मेरा दिल कोमल है और मैं तुम्हें बचाने के लिए सब-कुछ कर रहा हूँ, अगर तुम अपने स्तर पर प्रयास नहीं करते या अपने लिए विचार नहीं करते, तो इसका मुझसे क्या लेना-देना? जो लोग केवल अपने देह-सुख की सोचते हैं और सुख-साधनों का आनंद लेते हैं; जो विश्वास रखते हुए प्रतीत होते हैं लेकिन सचमुच विश्वास नहीं रखते; जो बुरी औषधियों और जादू-टोने में लिप्त रहते हैं; जो व्यभिचारी हैं, जो बिखर चुके हैं, तार-तार हो चुके हैं; जो यहोवा के चढ़ावे और उसकी संपत्ति को चुराते हैं; जिन्हें रिश्वत पसंद है; जो व्यर्थ में स्वर्गारोहित होने के सपने देखते हैं; जो अहंकारी और दंभी हैं, जो केवल व्यक्तिगत शोहरत और धन-दौलत के लिए संघर्ष करते हैं; जो कर्कश शब्दों को फैलाते हैं; जो स्वयं परमेश्वर की निंदा करते हैं; जो स्वयं परमेश्वर की आलोचना और बुराई करने के अलावा कुछ नहीं करते; जो गुटबाज़ी करते हैं और स्वतंत्रता चाहते हैं; जो खुद को परमेश्वर से भी ऊँचा उठाते हैं; वे तुच्छ नौजवान, अधेड़ उम्र के लोग और बुजुर्ग स्त्री-पुरुष जो व्यभिचार में फँसे हुए हैं; जो स्त्री-पुरुष निजी शोहरत और धन-दौलत का मज़ा लेते हैं और लोगों के बीच निजी रुतबा तलाशते हैं; जिन लोगों को कोई मलाल नहीं है और जो पाप में फँसे हुए हैं—क्या वे तमाम लोग उद्धार से परे नहीं हैं? व्यभिचार, पाप, बुरी औषधि, जादू-टोना, अश्लील भाषा और असभ्य शब्द सब तुम लोगों में निरंकुशता से फैल रहे हैं; सत्य और जीवन के वचन तुम लोगों के बीच कुचले जाते हैं और तुम लोगों के मध्य पवित्र भाषा मलिन की जाती है। तुम मलिनता और अवज्ञा से भरे हुए अन्यजाति राष्ट्रो! तुम लोगों का अंतिम परिणाम क्या होगा? जिन्हें देह-सुख से प्यार है, जो देह का जादू-टोना करते हैं, और जो व्यभिचार के पाप में फँसे हुए हैं, वे जीते रहने का दुस्साहस कैसे कर सकते हैं! क्या तुम नहीं जानते कि तुम जैसे लोग कीड़े-मकौड़े हैं जो उद्धार से परे हैं? किसी भी चीज़ की माँग करने का हक तुम्हें किसने दिया? आज तक, उन लोगों में ज़रा-सा भी परिवर्तन नहीं आया है जिन्हें सत्य से प्रेम नहीं है, जो केवल देह से प्यार करते हैं—ऐसे लोगों को कैसे बचाया जा सकता है? जो जीवन के मार्ग को प्रेम नहीं करते, जो परमेश्वर को ऊँचा उठाकर उसकी गवाही नहीं देते, जो अपने रुतबे के लिए षडयंत्र रचते हैं, जो अपनी प्रशंसा करते हैं—क्या वे आज भी वैसे ही नहीं

हैं? उन्हें बचाने का क्या मूल्य है? तुम्हारा बचाया जाना इस बात पर निर्भर नहीं है कि तुम कितने वरिष्ठ हो या तुम कितने साल से काम कर रहे हो, और इस बात पर तो बिल्कुल भी निर्भर नहीं है कि तुमने कितनी साख बना ली है। बल्कि इस बात पर निर्भर है कि क्या तुम्हारा लक्ष्य फलीभूत हुआ है। तुम्हें यह जानना चाहिए कि जिन्हें बचाया जाता है वे ऐसे "वृक्ष" होते हैं जिन पर फल लगते हैं, ऐसे वृक्ष नहीं जो हरी-भरी पत्तियों और फूलों से तो लदे होते हैं, लेकिन जिन पर फल नहीं आते। अगर तुम बरसों तक भी गलियों की खाक छानते रहे हो, तो उससे क्या फर्क पड़ता है? तुम्हारी गवाही कहाँ है? परमेश्वर के प्रति तुम्हारी श्रद्धा, खुद के लिए तुम्हारे प्रेम और तुम्हारी वासनायुक्त कामनाओं से कहीं कम है—क्या इस तरह का व्यक्ति पतित नहीं है? वे उद्धार के लिए नमूना और आदर्श कैसे हो सकते हैं? तुम्हारी प्रकृति सुधर नहीं सकती, तुम बहुत ही विद्रोही हो, तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता! क्या ऐसे लोगों को हटा नहीं दिया जाएगा? क्या मेरे काम के समाप्त हो जाने का समय तुम्हारा अंत आने का समय नहीं है? मैंने तुम लोगों के बीच बहुत सारा कार्य किया है और बहुत सारे वचन बोले हैं—इनमें से कितने सच में तुम लोगों के कानों में गए हैं? इनमें से कितनों का तुमने कभी पालन किया है? जब मेरा कार्य समाप्त होगा, तो यह वो समय होगा जब तुम मेरा विरोध करना बंद कर दोगे, तुम मेरे खिलाफ खड़ा होना बंद कर दोगे। जब मैं काम करता हूँ, तो तुम लोग लगातार मेरे खिलाफ काम करते रहते हो; तुम लोग कभी मेरे वचनों का अनुपालन नहीं करते। मैं अपना कार्य करता हूँ, और तुम अपना "काम" करते हो, और अपना छोटा-सा राज्य बनाते हो। तुम लोग लोमड़ियों और कुत्तों से कम नहीं हो, सब-कुछ मेरे विरोध में कर रहे हो! तुम लगातार उन्हें अपने आगोश में लाने का प्रयास कर रहे हो जो तुम्हें अपना अविभक्त प्रेम समर्पित करते हैं—तुम लोगों की श्रद्धा कहाँ है? तुम्हारा हर काम कपट से भरा होता है! तुम्हारे अंदर न आज्ञाकारिता है, न श्रद्धा है, तुम्हारा हर काम कपटपूर्ण और ईश-निंदा करने वाला होता है! क्या ऐसे लोगों को बचाया जा सकता है? जो पुरुष यौन-संबंधों में अनैतिक और लम्पट होते हैं, वे हमेशा कामोत्तेजक वेश्याओं को आकर्षित करके उनके साथ मौज-मस्ती करना चाहते हैं। मैं ऐसे काम-वासना में लिप्त अनैतिक राक्षसों को कतई नहीं बचाऊंगा। मैं तुम मलिन राक्षसों से घृणा करता हूँ, तुम्हारा व्यभिचार और तुम्हारी कामोत्तेजना तुम लोगों को नरक में धकेल देगी। तुम लोगों को अपने बारे में क्या कहना है? मलिन राक्षसो और दुष्ट आत्माओ, तुम लोग घिनौने हो! तुम निकृष्ट हो! ऐसे कूड़े-करकट को कैसे बचाया जा सकता है? क्या ऐसे लोगों को जो पाप में फँसे हुए हैं, उन्हें अब भी बचाया जा सकता है? आज, यह सत्य, यह मार्ग और यह जीवन तुम लोगों को आकर्षित

नहीं करता; बल्कि, तुम लोग पाप की ओर, धन की ओर, रुतबे की ओर, शोहरत और लाभ की ओर आकर्षित होते हो; देह-सुख की ओर आकर्षित होते हो; सुंदर स्त्री-पुरुषों की ओर आकर्षित होते हो। मेरे राज्य में प्रवेश करने की तुम लोगों की क्या पात्रता है? तुम लोगों की छवि परमेश्वर से भी बड़ी है, तुम लोगों का रुतबा परमेश्वर से भी ऊँचा है, लोगों में तुम्हारी प्रतिष्ठा का तो कहना ही क्या—तुम लोग ऐसे आदर्श बन गए हो जिन्हें लोग पूजते हैं। क्या तुम प्रधान स्वर्गदूत नहीं बन गए हो? जब लोगों के परिणाम उजागर होते हैं, जो वो समय भी है जब उद्धार का कार्य समाप्ति के करीब होने लगेगा, तो तुम लोगों में से बहुत-से ऐसी लाश होंगे जो उद्धार से परे होंगे और जिन्हें हटा दिया जाना होगा। उद्धार-कार्य के दौरान, मैं सभी लोगों के प्रति दयालु और नेक होता हूँ। जब कार्य समाप्त होता है, तो अलग-अलग किस्म के लोगों का परिणाम प्रकट किया जाएगा, और उस समय, मैं दयालु और नेक नहीं रहूँगा, क्योंकि लोगों का परिणाम प्रकट हो चुका होगा, और हर एक को उसकी किस्म के अनुसार वर्गीकृत कर दिया गया होगा, फिर और अधिक उद्धार-कार्य करने का कोई मतलब नहीं होगा, क्योंकि उद्धार का युग गुज़र चुका होगा, और गुज़र जाने के बाद वह वापस नहीं आएगा।

अभ्यास (8)

तुम लोग अभी भी सत्य के विभिन्न पहलुओं को नहीं समझते हो और तुम्हारे अभ्यास में अभी भी काफी गलतियाँ और भटकाव हैं; बहुत से क्षेत्रों में, तुम अपनी धारणाओं और कल्पनाओं के अनुसार जीते हो, लेकिन कभी भी अभ्यास के सिद्धांतों को समझ नहीं पाते। इसलिए सही मार्ग पर ले जाने के लिए लोगों का अभी भी मार्गदर्शन करना आवश्यक है; दूसरे शब्दों में, ये आवश्यक है ताकि वे अपने मानवीय और आध्यात्मिक जीवन को व्यवस्थित कर सकें, दोनों पहलुओं को अभ्यास में शामिल कर सकें, और उन्हें बार-बार सहारे की और मार्गदर्शन की आवश्यकता न पड़े। तभी वे सही कद-काठी में होंगे। और भले ही भविष्य में तुम्हारा मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं होगा, तब भी तुम लोग अकेले ही अनुभव कर पाओगे। आज, यदि तुम्हें इसकी समझ है कि सत्य के कौन-से पहलू महत्वपूर्ण हैं और कौन-से नहीं, तो भविष्य में तुम वास्तविकता में प्रवेश करने में सक्षम होगे। आज, तुम लोगों को सही मार्ग पर ले जाया जा रहा है, जिससे तुम सब कई सत्य समझ सको, और भविष्य में, तुम अधिक गहराई तक जा सकोगे। यह कहा जा सकता है कि लोगों को अब जो समझाया जा रहा है, वह सबसे शुद्ध मार्ग है। आज, तुम लोगों को सही

मार्ग पर ले जाया जा रहा है—और एक दिन, जब कोई भी तुम्हारा मार्गदर्शन करने वाला न होगा, तब तुम लोग सभी मार्गों में सबसे शुद्ध इस मार्ग के अनुसार, गहन अभ्यास करोगे और आगे बढ़ोगे। आज, लोगों को समझाया जा रहा है कि किस तरह के अभ्यास सही हैं, कौन-से भटके हुए हैं। इन चीजों को समझने के बाद, भविष्य में उनके अनुभव और गहरे होंगे। आज, तुम लोगों के अभ्यास में जो धारणाएँ, कल्पनाएँ और भटकाव है, उसे पूरी तरह से बदला जा रहा है। और अभ्यास और प्रवेश का मार्ग तुम सब के सामने प्रकट किया जा रहा है, जिसके बाद कार्य का यह चरण समाप्त हो जाएगा, और तुम लोग उस मार्ग पर चलना शुरू कर दोगे जिस पर मनुष्यों को चलना चाहिए। तब मेरा कार्य समाप्त हो जाएगा, और उस बिंदु से आगे तुम लोग मुझसे नहीं मिलोगे। आज, तुम सबकी कद-काठी अभी भी कमजोर है। कई कठिनाइयाँ हैं जो मानव की प्रकृति और सार से उपजती और कुछ गूढ़ बातें हैं जिनकी जानकारी जुटाना अभी बाकी है। तुम लोगों की प्रकृति और उनके सार की सूक्ष्मतर बातों को नहीं समझते हो, और अभी भी मेरी आवश्यकता है कि मैं स्पष्ट रूप से उन्हें बताऊँ; वर्ना तुम लोग उन्हें नहीं जान पाओगे। एक निश्चित बिंदु पर, जब तुम लोगों के हड्डियों और खून के भीतर समाई चीजों को उजागर किया जाता है, तो इसी को ताड़ना और न्याय कहा जाता है। केवल जब मेरा कार्य अच्छी तरह से और सम्पूर्ण रूप से पूरा होगा, तभी मैं इसे समाप्त करूँगा। जितनी अधिक गहराई से तुम लोगों के दूषित सार को प्रकट किया जाएगा, तुम लोग उतना अधिक ज्ञान प्राप्त करोगे, और यह तुम सब की भविष्य की गवाही और पूर्णता के लिए बहुत महत्व का होगा। केवल जब ताड़ना और न्याय का कार्य पूर्ण रूप से संपन्न हो जाएगा, तभी मेरा काम पूरा होगा और तुम लोग मुझे मेरी ताड़ना और न्याय के द्वारा जानोगे। तुम लोग न केवल मेरे स्वभाव और मेरी धार्मिकता को जानोगे, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम मेरी ताड़ना और मेरे न्याय को जान लोगे। तुम लोगों में से कईयों को मेरे कार्य में निहित नवीनता और विस्तृतता के स्तर के बारे में बड़ी धारणाएँ हैं। फिर भी, तुम लोगों को यह देखना चाहिए कि मेरा कार्य नया और विस्तृत है, और मैं तुम सब को आमने-सामने, हाथ पकड़कर अभ्यास करना सिखाता हूँ। भविष्य में यही चीज़ तुम सबके अभ्यास और तुम्हारे अटल बने रहने की क्षमता में लाभदायक होगी; अन्यथा, तुम लोग बिना रत्ती भर मोल के शरद ऋतु के पेड़ के पत्तों की तरह मुरझा जाओगे, पीले पड़ जाओगे और सूख जाओगे। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि तुम्हारे हृदय और तुम्हारी आत्माओं में जो भी है उसे मैं जानता हूँ; और तुम लोगों को पता होना चाहिए कि जो कार्य मैं करता हूँ और जो वचन मैं बोलता हूँ, वे बड़ी बारीक हैं। तुम सबके स्वभाव और क्षमता के आधार पर, तुम

लोगों से इस तरह से ही व्यवहार किया जाना चाहिए। केवल इसी तरह से मेरी ताड़ना और मेरे न्याय के बारे में तुम्हारा ज्ञान और स्पष्ट हो जाएगा, और भले ही तुम आज इसे नहीं जानते, लेकिन कल इसे जान लोगे। हर सृजित प्राणी मेरी ताड़ना और मेरे न्याय के वचनों के अंतर्गत होगा, क्योंकि मैं किसी भी व्यक्ति के प्रतिरोध को बर्दाश्त नहीं करता।

तुम सभी को अपने जीवन को उचित ढंग से नियमित करने में समर्थ होना चाहिए। हर दिन को तुम लोग जैसा चाहो वैसा प्रबंधित कर सकते हो, तुम जो चाहो, कर सकते हो; तुम परमेश्वर के वचन पढ़ सकते हो, भजन और धर्मोपदेश सुन सकते हो, और भक्ति संबंधी आख्याएं लिख सकते हो, और यदि तुम्हारी दिलचस्पी हो तो तुम भजन लिख सकते हो। क्या इन सबसे एक उपयुक्त जीवन नहीं बनता है? ये सभी चीजें ही मानव जीवन का निर्माण करती हैं। लोगों को स्वाभाविक रूप से जीवन जीना चाहिए; सामान्य मानवता और आध्यात्मिक जीवन दोनों से प्रतिफल मिलने पर ही यह माना जा सकता कि उन्होंने सामान्य जीवन में प्रवेश कर लिया है। आज केवल मानवता के दृष्टिकोण से ही तुम लोगों में अंतर्दृष्टि और विवेक की कमी नहीं है। ऐसे कई दर्शन भी हैं जिन्हें लोगों को जानना चाहिए और उन्हीं के अनुरूप स्वयं को तैयार करना चाहिए, जो भी सबक तुम लोगों के सामने आए, उसे तुम्हें सीखना चाहिए; तुम्हें परिवेश के अनुरूप ढलने में सक्षम होना चाहिए। तुम सबको दीर्घकालिक तौर पर शिक्षा के स्तर में सुधार करना चाहिए ताकि तुम्हें इसका फल मिल सके। सामान्य, मानवीय जीवन के लिए, कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे तुम्हें खुद को लैस करना चाहिए और तुम्हें अपने जीवन में प्रवेश को भी समझना चाहिए।आज तुम लोग परमेश्वर के बहुत से वचनों को दोबारा पढ़ने के बाद, समझ जाते हो जिन्हें तुम उस समय नहीं समझ पाते थे और अब तुम्हारा हृदय अधिक दृढ़ हो गया है।ये वो नतीजे हैं जिन्हें तुम लोगों ने जो अर्जित किया है। जिस दिन भी तुम परमेश्वर के वचनों को खाते और पीते हो और तुम्हारे भीतर थोड़ी-सी समझ आती है, तुम लोग अपने भाइयों और बहनों के साथ अबाध रूप से बातचीत कर सकते हो।क्या यह वो ज़िंदगी नहीं जो तुम्हारे पास होनी चाहिए? कभी-कभी, कुछ सवाल उठाए जाते हैं या तुम किसी विषय पर विचार करते हो, और यह तुम लोगों को विवेकपूर्ण होने में बेहतर बनाता है, और तुम्हें अधिक अंतर्दृष्टि और ज्ञान देता है, जिससे तुम कुछ सत्य समझ पाते हो—और क्या यह आध्यात्मिक जीवन में निहित वो नहीं है जिसकी आज बात की जा रही है? यह स्वीकार्य नहीं है कि आध्यात्मिक जीवन का केवल एक ही पहलू व्यवहार में लाया जाए; परमेश्वर के वचनों को खाना-पीना, प्रार्थना करना, और भजन गाना, ये सभी आध्यात्मिक जीवन का निर्माण

करते हैं, और जब तुम्हारा जीवन आध्यात्मिक हो जाता है, तो तुम्हारे पास सामान्य मानवता का जीवन भी होना चाहिए। आज, जो कहा गया है उसमें से काफी कुछ लोगों को विचार-शक्ति और अंतर्दृष्टि देने के लिए है, ताकि उन्हें सामान्य मानवता का जीवन प्राप्त हो सके। अंतर्दृष्टि होने का क्या मतलब है, सामान्य पारस्परिक संबंधों के होने का क्या मतलब है, तुम्हें लोगों के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए—परमेश्वर के वचनों को खाने-पीने के द्वारा तुम्हें इन चीजों के साथ स्वयं को लैस करना चाहिए, और तुमसे जो अपेक्षित है, वह सामान्य जीवन के जरिये हासिल किया जा सकता है। उन चीजों से खुद को सज्जित करो जिनसे तुम्हें तुम्हें सज्जित होना चाहिए और जो उचित हैं, जो उचित है उसके आगे मत बढ़ो; कुछ लोग हर तरह के शब्दों और शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं, और इसमें वे अपने आकर्षण का प्रदर्शन करते हैं। और कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सभी प्रकार की पुस्तकें पढ़ते हैं, जिसके द्वारा वे शरीर की इच्छाओं को तृप्त करते हैं। वे दुनिया के तथाकथित महान व्यक्तियों की जीवनी और उद्धरणों का अध्ययन और उनका अनुकरण भी करते हैं लेकिन वे अश्लील पुस्तकें भी पढ़ते हैं—यह तो और भी हास्यास्पद है! इस तरह के लोग जीवन में प्रवेश करने का रास्ता नहीं जानते, वे परमेश्वर के आज के कार्य को तो और भी नहीं जानते। उन्हें तो यह भी पता नहीं है कि हर दिन कैसे बिताना है। उनके जीवन का खालीपन ऐसा है! वे पूरी तरह से अनजान हैं कि उन्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए। वे बस इतना ही करते हैं कि दूसरों के साथ बातचीत और संवाद करते हैं, मानो कि बातचीत उनकी प्रविष्टि की जगह ले लेगी। क्या उन्हें कोई शर्म नहीं है? ये वे लोग हैं जो नहीं जानते कि कैसे जीना है, और जो मानव जीवन को नहीं समझते हैं; वे पूरे दिन खाते रहते हैं, और निरर्थक बातें करते हैं—इस तरह जीने का क्या अर्थ है? मैंने कई लोगों को देखा है कि कार्य करने, खाने और कपड़े पहनने के अलावा, उनके अनमोल समय पर व्यर्थ चीज़ों का कब्जा होता है, चाहे वह इधर-उधर भटकना और बेवकूफी करना, गपशप करना, या पूरे दिन सोना हो। क्या यह संत का जीवन है? क्या यह सामान्य व्यक्ति का जीवन है? क्या ऐसा जीवन तुम्हें पूर्ण बना सकता है जबकि यह इतना अधम, पिछड़ा और बेफ़िक्र है? क्या तुम खुद को शैतान के कब्जे में देने को तैयार हो? जब लोगों का जीवन आसान होता है, और उनके परिवेश में कोई दुःख नहीं होता है, तो वे इसका अनुभव नहीं कर पाते। आरामदायक परिवेश में लोगों के लिए भ्रष्ट होना आसान है—लेकिन प्रतिकूल वातावरण तुम्हें अधिक तात्कालिकता के साथ प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है और इससे तुम परमेश्वर को छोड़ने का दुस्साहस नहीं करते हो। जितना आसान और सुस्त लोगों का जीवन होता है, उतना ही अधिक उनका यह

मानना होता है कि जीवित रहने का कोई मतलब नहीं है, उन्हें यहाँ तक लगता है कि मर जाना बेहतर है। लोगों का शरीर इतना भ्रष्ट है; केवल परीक्षण का सामना करने पर ही वे लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यीशु के कार्य का चरण यहूदिया और गलील में किया गया था, और अन्य गैर-यहूदी जातियों को इसके बारे में पता नहीं था। जो कार्य उन्होंने किया वह बहुत ही गुप्त था, और इस्राएल के अलावा किसी भी राष्ट्र को इसके बारे में जानकारी नहीं थी। जब यीशु ने अपना कार्य पूरा किया और इसकी वजह से काफी शोर मचा, तभी लोगों को इस बारे में पता चला, लेकिन तब तक वो विदा हो चुका था। यीशु कार्य के एक चरण को करने के लिए आया, कुछ लोगों के समूह को प्राप्त किया, और कार्य का एक चरण पूरा किया। परमेश्वर द्वारा किये गए कार्य के किसी भी चरण में, ऐसे कई लोग होते हैं जो उसका अनुसरण करते हैं। यदि इसे केवल परमेश्वर द्वारा ही किया जाता, तो यह अर्थहीन होता; ऐसे लोग होने चाहिए जो परमेश्वर का अनुसरण तब तक करें जब तक वो उस कार्य का चरण पूरा न कर ले। जब परमेश्वर का स्वयं का कार्य पूरा हो जाता है, तभी लोग परमेश्वर द्वारा दिये किए कार्य को पूरा करना शुरू करते हैं, और उसके बाद ही परमेश्वर का कार्य फैलना शुरू होता है। परमेश्वर केवल एक नए युग का सूत्रपात करता है, और लोगों का काम इसे जारी रखना है। इस तरह, आज का कार्य लंबे समय तक नहीं रहेगा; मानव के साथ मेरा जीवन बहुत लंबे समय तक जारी नहीं रहेगा। मैं केवल अपने कार्य को पूरा करता हूँ, और तुम सब से वह कर्तव्य करवाता हूँ जो तुम लोगों को करना चाहिए, ताकि यह कार्य और यह सुसमाचार अन्य जातियों और अन्य राष्ट्रों में जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी फैल सके—केवल इसी तरह से, तुम सब इंसान होने के नाते जो तुम्हारा कर्तव्य है, उसे पूरा कर सकते हो। आज का समय सब से अधिक मूल्यवान है। यदि तुम लोग इसे अनदेखा करते हो, तो तुम मूर्ख हो; यदि इस परिवेश में, तुम इन वचनों को खाते-पीते हो और इस कार्य का अनुभव करते हो, और फिर भी तुममें सत्य का अनुसरण करने के संकल्प की कमी है, और तुम्हें दायित्व के भार की थोड़ी-सी भी समझ नहीं है, तो तुम्हारा भविष्य क्या होगा? क्या तुम्हारे जैसा व्यक्ति हटा दिये जाने के कगार पर नहीं आ गया है?

इस्राएलियों की तरह सेवा करो

इन दिनों, कई लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं कि दूसरों के साथ समन्वय करते समय क्या सबक सीखे जाने चाहिये। मैंने देखा है कि तुम लोगों में से कई लोग दूसरों के साथ सहयोग करते समय बिलकुल

सबक नहीं सीख पाते; तुममें से ज़्यादातर लोग अपने ही विचारों से चिपके रहते हैं। कलीसिया में काम करते समय, तुम अपनी बात कहते हो और दूसरे लोग उनकी बातें कहते हैं। एक की बात का दूसरे की बात से कोई संबंध नहीं होता है; दरअसल, तुम लोग बिलकुल भी सहयोग नहीं करते। तुम सभी लोग सिर्फ़ अपने परिज्ञान को बताने या उस "बोझ" को हल्का करने में लगे रहते हो जिसे तुम भीतर ढोते हो और किसी मामूली तरीके से भी जीवन नहीं खोजते हो। ऐसा लगता है कि तुम केवल लापरवाही से काम करते हो, तुम हमेशा यह मानते हो कि कोई और व्यक्ति चाहे जो भी कहता या करता हो, तुम्हें अपने ही चुने मार्ग पर चलना चाहिये। तुम सोचते हो कि चाहे दूसरे लोगों की परिस्थितियां कैसी भी हों, तुम्हें पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अनुसार सहभागिता करनी चाहिये। तुम दूसरों की क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम नहीं हो और ना ही तुम खुद की जाँच करने में सक्षम हो। तुम लोगों की चीज़ों की स्वीकृति वास्तव में गुमराह और गलत है। यह कहा जा सकता है कि अब भी तुम लोग दंभ का काफी प्रदर्शन करते हो, मानो कि तुम्हें वही पुरानी बीमारी फिर से लग गई है। तुम लोग एक दूसरे के साथ इस तरीके से बात नहीं करते हो जिसमें पूरा खुलापन हो, उदाहरण के लिये, किसी कलीसिया में काम करके तुमने किस तरह का परिणाम हासिल किया या तुम्हारी अंतरात्मा की हाल की स्थिति क्या है, वगैरह; तुम लोग ऐसी चीज़ों के बारे में कभी बात ही नहीं करते। तुम लोगों में अपनी धारणाओं को छोड़ने या खुद का त्याग करने जैसे अभ्यासों में बिलकुल भी प्रतिबद्धता नहीं है। अगुवा और कार्यकर्ता सिर्फ़ अपने भाई-बहनों को नकारात्मकता से दूर रखने और कैसे उनसे उत्साहपूर्वक अनुसरण करवाया जाए, इसके बारे में सोचते हैं। हालाँकि तुम सब लोग सोचते हो कि उत्साहपूर्वक अनुसरण करना अपने आप में काफी है और बुनियादी तौर पर तुम्हें इस बात की कोई समझ नहीं है कि स्वयं को जानने और त्यागने का क्या अर्थ है, दूसरों के साथ समन्वय में सेवा करने का क्या अर्थ है यह तो तुम और भी नहीं जानते। तुम बस स्वयं को परमेश्वर के प्रेम का मूल्य चुकाने का इच्छुक बनाने की सोचते हो, पतरस की शैली में जीवन जीने का इच्छुक बनाने की सोचते हो। इन चीज़ों के अलावा, तुम और कुछ भी नहीं सोचते। तुम तो यह भी कहते हो कि दूसरे लोग चाहे जो भी करें, तुम आँखें मूंदकर समर्पण नहीं करोगे और दूसरे लोग चाहे जैसे भी हों, तुम स्वयं परमेश्वर द्वारा पूर्णता की खोज करोगे, और ऐसा करना ही काफ़ी होगा। हालाँकि, सच तो यह है कि तुम्हारी इच्छाशक्ति को किसी भी तरह वास्तविकता में ठोस अभिव्यक्ति नहीं मिली है। क्या तुम लोग आजकल इसी तरह का व्यवहार नहीं करते हो? तुम लोगों में से हर कोई खुद की समझ से चिपका हुआ है और तुम सभी चाहते हो

कि तुम्हें पूर्ण किया जाये। मैं देख रहा हूँ कि तुम लोगों ने काफ़ी लंबे समय से सेवा की है, लेकिन कोई प्रगति नहीं की; खास तौर पर, सद्भावना में एक साथ मिलकर काम करने के इस सबक में, तुमने कुछ भी हासिल नहीं किया है! कलीसियाओं में जाते हुए तुम अपने ही तरीके से बात करते हो और दूसरे लोग उनके तरीके से बात करते हैं। सद्भावनापूर्ण सहयोग तो शायद ही कभी होता है और तुम्हारे अधीन सेवा करने वाले अनुयायियों के बारे में तो यह बात और भी सच है। कहने का मतलब है कि तुम लोगों में से शायद ही कोई इस बात को समझता है कि परमेश्वर की सेवा करना क्या है या परमेश्वर की सेवा कैसे करनी चाहिये। तुम लोग उलझन में हो और इस तरह के सबकों को छोटी-मोटी बात मानते हो। कई लोग तो ऐसे भी हैं जो न केवल सत्य के इस पहलू का अभ्यास करने में विफल रहते हैं, बल्कि जान-बूझकर गलती भी करते हैं। यहाँ तक कि जिन लोगों ने कई सालों तक सेवा की है वे भी एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते और एक दूसरे के खिलाफ़ षड्यंत्र करते हैं और ईर्ष्यालु और प्रतिस्पर्धात्मक होते हैं; हर व्यक्ति अपने से ही मतलब रखता है और वे ज़रा-भी सहयोग नहीं करते। क्या ये सारी चीज़ें तुम लोगों की वास्तविक कद-काठी को नहीं दर्शाती हैं? हर रोज़ साथ मिलकर सेवा करने वाले तुम लोग उन इस्राएलियों की तरह हो जो हर दिन मंदिर जाकर सीधे तौर पर परमेश्वर स्वयं की सेवा करते थे। ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम लोग जो परमेश्वर की सेवा करते हो, बिलकुल नहीं जानते कि समन्वय या सेवा कैसे करनी है?

उस ज़माने में, इस्राएली सीधे मंदिर में जाकर यहोवा की सेवा करते थे और उनकी पहचान याजकों के तौर पर थी। (बेशक, हर व्यक्ति याजक नहीं था; सिर्फ़ मंदिर में यहोवा की सेवा करने वाले कुछ लोगों को यह पहचान मिली थी।) वे यहोवा द्वारा दिया गया मुकुट पहनते थे (जिसका मतलब है कि वे ये मुकुट यहोवा की आवश्यकताओं के अनुसार बनाते थे; यहोवा ने सीधे उन्हें मुकुट नहीं सौंपा था)। वे याजकों वाली पोशाक भी पहनते थे जो उन्हें यहोवा ने दिये थे और वे सुबह से लेकर रात तक, नंगे पाँव मंदिर में सीधे तौर पर उसकी सेवा करते थे। यहोवा के लिये उनकी सेवा बिलकुल भी अव्यवस्थित नहीं थी और इसमें आँखें मूँदकर भाग-दौड़ करना शामिल नहीं था; इसके बजाय, यह सब उन नियमों के अनुसार किया जाता था जिनका उल्लंघन सीधे तौर पर उसकी सेवा करने वाला कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता था। उन सभी को इन नियमों का पालन करना होता था; अन्यथा उन्हें मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया जाता। अगर उनमें से कोई भी मंदिर के नियमों को तोड़ता था—यानी अगर कोई भी यहोवा की आज्ञाओं का उल्लंघन करता था—तो उस व्यक्ति के साथ यहोवा द्वारा जारी किये गए नियमों के अनुसार व्यवहार किया जाता था। किसी

भी व्यक्ति को इसका विरोध करने या नियम तोड़ने वाले को बचाने की अनुमति नहीं थी। चाहे लोगों ने कितने ही साल तक परमेश्वर की सेवा क्यों न की हो, सभी के लिए नियमों का पालन करना आवश्यक था। इसी कारण से, बहुत से याजक, याजकों वाली पोशाक पहनते थे और साल भर इसी तरीके से यहोवा की सेवा करते थे, बावजूद इसके कि यहोवा ने उनके साथ कोई विशेष तरीके का व्यवहार नहीं किया था। वे अक्सर अपना पूरा जीवन वेदी के सामने और मंदिर में बिता देते थे। यह उनकी वफ़ादारी और समर्पण की अभिव्यक्ति थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यहोवा ने उन्हें इतने आशीष दिये थे; यह सब उनकी वफ़ादारी की वजह से था कि उन्हें यहोवा की कृपा मिली और उन्होंने यहोवा के सभी कर्मों को देखा। उस ज़माने में, जब यहोवा इस्राइल में अपने चुने हुए लोगों के बीच काम करता था, उसने उनके सामने काफ़ी गंभीर मांगें रखीं। वे सभी बहुत आज्ञाकारी और नियमों से बंधे हुए लोग थे; ये नियम यहोवा की भक्ति करने की उनकी क्षमता की रक्षा करते थे। ये सभी यहोवा की प्रशासनिक आज्ञाएं थीं। अगर उनमें से कोई भी याजक सब्त का पालन नहीं करता था या यहोवा की आज्ञाओं का उल्लंघन करता था और अगर आम लोगों को इनका पता चल जाता था, तो उस व्यक्ति को तुरंत वेदी के सामने लाया जाता और पत्थर मार-मारकर मौत के घाट उतार दिया जाता था। उनके मृत शरीरों को मंदिर में या उसके आस-पास रखने की अनुमति नहीं दी थी; यहोवा इसकी अनुमति नहीं देता था। ऐसा करने वाले किसी भी व्यक्ति को "धर्मनिरपेक्ष भेंट" अर्पित करने वाला व्यक्ति माना जाता था और उसे एक गहरे गड्ढे में फ़ेंक कर मार दिया जाता था। बेशक, ऐसे सभी लोग अपनी ज़िंदगी गँवा बैठते थे; किसी को भी छोड़ा नहीं जाता था। इसके अलावा, ऐसे लोग भी थे जो "धर्मनिरपेक्ष अग्नि" अर्पित करते थे; दूसरे शब्दों में, जो लोग यहोवा द्वारा तय किये गए दिनों में भेंट नहीं देते थे, उन्हें उनकी भेंट की जाने वाली चीज़ों के साथ यहोवा की आग में जलाकर मार डाला जाता था। इन भेंट की गयी चीज़ों को वेदी पर रहने देने की अनुमति नहीं थी। याजकों से इस तरह की अपेक्षाएं की जाती थीं : उन्हें अपने पैर धोये बिना मंदिर या इसके बाहरी प्रांगण में भी प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी; वे अपनी याजकों वाली पोशाक पहने बिना मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते थे; वे अपने याजकों वाले मुकुट पहने बिना मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते थे; किसी शव द्वारा गंदे हो जाने पर भी वे मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते थे; वे किसी अधर्मी व्यक्ति के हाथों को छूने के बाद मंदिर में तब तक प्रवेश नहीं कर सकते थे जब तक कि वे पहले अपने हाथ नहीं धो लेते; वे किसी महिला के साथ शारीरिक संबंध बनाने के बाद मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते थे (तीन महीने के लिये, हमेशा के लिये नहीं); उन्हें यहोवा का चेहरा देखने

की अनुमति भी नहीं दी जाती थी। समय पूरा होने पर—अर्थात तीन महीने के बाद ही उन्हें याजकों वाली साफ़ पोशाक पहनने की अनुमति दी जाती थी—फिर उन्हें सात दिनों तक बाहरी प्रांगण में सेवा करनी होती थी, जिसके बाद ही वे यहोवा का चेहरा देखने के लिये मंदिर में प्रवेश कर सकते थे। उन्हें सिर्फ़ मंदिर के अंदर ही याजकों वाली कोई भी पोशाक पहनने की अनुमति थी, वे बाहर कभी भी इसे नहीं पहन सकते थे। ऐसा यहोवा के मंदिर को अपवित्र होने से बचाने के लिये किया जाता था। वे सभी लोग जो याजक थे, उन्हें ऐसे अपराधियों को यहोवा की वेदी के सामने लाना होता था जिन्होंने यहोवा के नियमों का उल्लंघन किया था, जहाँ उन्हें आम लोग मौत के घाट उतार देते थे; अन्यथा अपराध को देखने वाले याजक के ऊपर आग टूट पड़ती थी। इस तरह, वे यहोवा के प्रति हमेशा वफ़ादार होते थे, क्योंकि यहोवा के नियम उनके लिये बहुत ही गंभीर होते थे; वे कभी लापरवाही से उसकी प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं करते थे। इस्राइल के लोग यहोवा के प्रति वफ़ादार थे, क्योंकि उन लोगों ने उसकी आग को देखा था; उन्होंने उस हाथ को देखा था जिससे वो लोगों को ताड़ना देता था; साथ ही, इसलिए भी क्योंकि वे मूलतः यहोवा के प्रति बड़ी श्रद्धा की भावना रखते थे। इसलिये, उन्हें सिर्फ़ यहोवा की आग ही नहीं मिलती थी, बल्कि उसकी देखभाल, उसका संरक्षण, और उसकी आशीषें भी मिलती थीं। उनकी वफ़ादारी ऐसी थी कि वे अपने सभी कार्यों में यहोवा के वचनों का पालन करते थे और कोई भी उसकी अवज्ञा नहीं करता था। अगर कोई अवज्ञा होती थी, तो अन्य लोग फिर भी यहोवा के वचनों का पालन करते थे और यहोवा के ख़िलाफ़ जाने वाले किसी भी व्यक्ति को मार डालते थे और ऐसे व्यक्ति को यहोवा से बिलकुल भी नहीं छिपाते थे। सब्त का उल्लंघन करने वालों, कई महिलाओं से संबंध रखने के दोषी लोगों और यहोवा की भेंट को चुराने वालों को विशेष रूप से भारी दंड दिया जाता था। सब्त का उल्लंघन करने वालों को लोगों (आम लोगों) द्वारा पत्थर मार कर मौत के घाट उतार दिया जाता था या उन्हें चाबुक मार-मार कर ख़त्म कर दिया जाता था, इसमें कोई अपवाद नहीं था। व्यभिचार का अपराध करने वाले—यहाँ तक कि किसी ख़ूबसूरत महिला के प्रति काम-वासना का भाव रखने वाले या किसी दुष्ट महिला को देखकर मन में कामुकता भरे विचार को पैदा करने या किसी नवयुवती को देखकर कामुक हो जाने वाले—सभी लोगों को मौत के घाट उतार दिया जाता था। अगर कोई नवयुवती तन ढंकने या परदा करने वाले कपड़े पहने बिना किसी आदमी को दुराचार करने के लिये ललचाती, तो उस महिला को भी मौत के घाट उतार दिया जाता था। अगर इस तरह के नियमों का उल्लंघन करने वाला व्यक्ति कोई याजक (मंदिर में सेवा करने वाला

व्यक्ति) होता, तो उसे सूली पर लटका दिया जाता था या फांसी दे दी जाती थी। ऐसे किसी भी व्यक्ति को जीवित रहने की अनुमति नहीं थी और एक भी व्यक्ति यहोवा की कृपा नहीं पा सकता था। ऐसे व्यक्ति के रिश्तेदारों को उसकी मौत के बाद तीन सालों तक वेदी के सामने यहोवा को कोई भेंट देने की अनुमति नहीं होती थी। उन्हें यहोवा द्वारा आम लोगों को दी गई भेंट में भी हिस्सा लेने की अनुमति नहीं थी। केवल समय पूरा होने के बाद ही वे उत्तम गुणवत्ता के मवेशी या भेड़ को यहोवा की वेदी के सामने रख सकते थे। कोई अन्य अपराध करने पर, उन्हें यहोवा का अनुग्रह पाने की विनती करने के लिए, उसके सामने तीन दिनों का उपवास करना पड़ता था। वे सिर्फ़ इस कारण से यहोवा की आराधना नहीं करते थे कि उसके नियम बहुत गंभीर और कड़े थे; बल्कि वे उसके अनुग्रह और उसके प्रति वफ़ादारी के परिणामस्वरूप ऐसा करते थे। इस तरह, अब भी, वे अपनी सेवा में वैसे ही वफ़ादार बने हुए हैं और उन्होंने यहोवा के सामने अपनी प्रार्थनाओं से कभी भी मुँह नहीं मोड़ा। आज, इस्राइल के लोग अभी भी यहोवा की देखरेख और संरक्षण पाते हैं और वो अब भी उनके बीच का अनुग्रह है, सदा उनके साथ रहता है। वे सब जानते हैं कि उन्हें यहोवा का सम्मान कैसे करना चाहिये और उनकी सेवा कैसे करनी चाहिये। वे सब जानते हैं कि उसकी देखरेख और संरक्षण पाने के लिये उन्हें किस तरह काम करना चाहिये। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे सभी अपने दिलों में उसका सम्मान करते हैं। उनकी समस्त सेवा की सफलता का रहस्य श्रद्धा के अलावा कुछ भी नहीं है। तो आजकल, तुम सब किस तरह के लोग हो? क्या तुम लोगों और इस्राइल के लोगों में कोई समानता है? क्या तुम सोचते हो कि आजकल सेवा करना, एक महान आध्यात्मिक हस्ती की अगुवाई का अनुसरण करने जैसा है? तुम लोगों में कोई वफ़ादारी और श्रद्धा नहीं है। तुम लोगों को काफ़ी अनुग्रह मिलता है और तुम लोग इस मायने में इस्राइल के याजकों के बराबर हो कि तुम सभी लोग सीधे परमेश्वर की सेवा कर रहे हो। हालाँकि, तुम मंदिर में प्रवेश नहीं करते हो, लेकिन तुम लोग जो भी देखते और प्राप्त करते हो वह मंदिर में यहोवा की सेवा करने वाले याजकों को मिलने वाली चीज़ों की तुलना में बहुत ज़्यादा है। लेकिन, तुम लोग उनकी तुलना में कई गुणा ज़्यादा बार विद्रोह और विरोध करते हो, तुम लोगों की श्रद्धा बहुत लघु है और इसी कारण से तुम्हें बहुत कम अनुग्रह मिलता है। हालाँकि, तुम लोग बहुत कम अर्पित करते हो, फिर भी तुम लोगों को इस्राएलियों की तुलना में बहुत अधिक मिला है। इन सभी मामलों में, क्या तुम लोगों के साथ कृपापूर्ण व्यवहार नहीं किया गया है? जब इस्राइल में कार्य किया जा रहा था, तब लोग मनमाने ढंग से यहोवा की आलोचना करने की हिम्मत नहीं करते थे। लेकिन, तुम लोगों के बारे में

क्या कहा जाए? अगर वह काम न होता जो मैं वर्तमान में तुम लोगों को जीतने के लिए कर रहा हूँ, तो मैं तुम लोगों के इतने बुरे ढंग से मेरे नाम को शर्मिंदा करने को मैं कैसे सह पाता? अगर जिस युग में तुम लोग रहते हो वह व्यवस्था का युग होता, तो तुम्हारी बातों और कर्मों को देखते हुए, तुम में से एक भी इंसान जीवित नहीं होता। तुम लोगों की श्रद्धा बहुत कम है! तुम लोग हमेशा मुझे दोष देते हो कि मैंने तुम लोगों पर ज़्यादा कृपा नहीं की, और तुम यह भी दावा करते हो कि मैं तुम लोगों को आशीष के पर्याप्त वचन नहीं देता हूँ, और मेरे पास तुम लोगों के लिए केवल अभिशाप है। क्या तुम लोग यह नहीं जानते हो कि मेरे प्रति इतनी कम श्रद्धा के साथ तुम लोगों के लिए मेरे आशीषों को स्वीकार कर पाना असंभव है? क्या तुम लोग यह नहीं जानते हो कि तुम लोगों की सेवा की दयनीय स्थिति के कारण, मैं लगातार तुम लोगों का न्याय करता हूँ और तुम्हें अभिशाप देता हूँ? क्या तुम सभी को यह महसूस होता है कि तुम्हारे साथ गलत हुआ है? मैं अपने आशीष ऐसे लोगों के समूह को कैसे दे सकता हूँ, जो विद्रोही हैं और समर्पण नहीं करते हैं? मैं अपना अनुग्रह बस यों ही ऐसे लोगों को कैसे दे सकता हूँ जो मेरे नाम का अनादर करते हैं? तुम लोगों के साथ पहले ही बहुत करुणापूर्ण व्यवहार किया गया है। अगर इस्राइल के लोग उतने ही विद्रोही होते जितने आज तुम लोग हो, तो मैंने बहुत पहले ही उनका अस्तित्व मिटा दिया होता। हालाँकि, मैं तुम लोगों के साथ बस उदारता से पेश आता हूँ। क्या यह मेरी हितैषिता नहीं है? क्या तुम लोग इससे अधिक आशीष पाना चाहते हो? यहोवा सिर्फ़ उन लोगों को आशीष देता है जो उसके प्रति श्रद्धापूर्ण हैं। वह अपने ख़िलाफ़ विद्रोह करने वालों को ताड़ना देता है, उनमें से एक को भी कभी माफ़ नहीं करता है। क्या आज के तुम लोगों को, जो सेवा करने का तरीका नहीं जानते हैं, ताड़ना और न्याय की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है, जिससे कि तुम्हारे हृदय पूरी तरह से बदल जाएं? क्या ऐसी ताड़ना और न्याय तुम लोगों को देने के लिए सबसे अच्छी आशीष नहीं है? क्या वे तुम लोगों के लिये सबसे अच्छा संरक्षण नहीं हैं? उनके बिना, क्या तुम में से कोई भी यहोवा की जलती आग को सहन करने में सक्षम है? अगर तुम लोग सही मायनों में इस्राएलियों की तरह वफ़ादारी से सेवा कर सकते, तो क्या तुम्हें भी निरंतर अनुग्रह नहीं मिलता? क्या तुम लोगों को भी अक्सर खुशी और पर्याप्त कृपा नहीं होती? क्या तुम लोग यह जानते हो कि तुम्हें कैसे सेवा करनी चाहिये?

आज तुम लोगों से—सद्भावना में एक साथ मिलकर काम करने की अपेक्षा करना—उस सेवा के समान है जिसकी अपेक्षा यहोवा इस्राएलियों से करता था : अन्यथा, सेवा करना बंद कर दो। चूँकि तुम ऐसे लोग हो जो सीधे परमेश्वर की सेवा करते हैं, तुम्हें कम से कम अपनी सेवा में वफ़ादारी और समर्पण में

सक्षम होना चाहिये। साथ ही, तुम्हें एक व्यावहारिक तरीके से सबक सीखने में भी सक्षम होना चाहिये। खास तौर पर, तुम में से उन लोगों के लिये जो कलीसिया में काम करते हैं, क्या तुम्हारे अधीन काम करने वाले भाई-बहनों में से कोई भी तुम लोगों से निपटने की हिम्मत कर पाता है? क्या कोई भी तुम्हारे सामने तुम्हारी गलतियों के बारे में तुम्हें बताने की हिम्मत कर पाता है? तुम लोग बाकी सभी लोगों के ऊपर खड़े हो; तुम राजाओं की तरह शासन करते हो! तुम लोग तो इस तरह के व्यवहारिक सबकों का अध्ययन भी नहीं करते हो, न ही इनमें प्रवेश करते हो, फिर भी तुम परमेश्वर की सेवा करने की बात करते हो! वर्तमान में, तुम्हें कई कलीसियाओं की अगुवाई करने के लिए कहा जाता है, लेकिन न केवल तुम खुद का त्याग नहीं करते, बल्कि तुम अपनी ही धारणाओं और विचारों से चिपके भी रहते हो और इस तरह की बातें कहते हो, "मुझे लगता है यह काम इस तरह से किया जाना चाहिये, क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि हमें दूसरों के नियंत्रण में नहीं रहना चाहिए और आजकल हमें आँखें मूंदकर समर्पण नहीं करना चाहिये।" इसलिए, तुम में से हर कोई अपनी राय पर अड़ा रहता है और कोई भी एक दूसरे की बात नहीं मानता है। हालाँकि तुम स्पष्ट रूप से जानते हो कि तुम्हारी सेवा एक विकट स्थिति में पहुँच गयी है, फिर भी तुम कहते हो, "मेरे हिसाब से, मेरा रास्ता बहुत गलत नहीं है। जो भी हो, हम में से हर एक का अपना पक्ष होता है : तुम अपनी बात करो और मैं अपनी बात करूँगा; तुम अपने दर्शनों के बारे में सहभागिता करो और मैं अपने प्रवेश की बात करूँगा।" तुम कभी भी ऐसी किसी चीज़ की जिम्मेदारी नहीं लेते हो जिनका निपटारा किया जाना चाहिये या तुम बस लापरवाही से काम करते हो, तुम में से हर कोई अपनी ही राय व्यक्त करता है और दिमाग लगाकर अपने ही रुतबे, प्रतिष्ठा और साख को बचाने में लगा रहता है। तुम में से कोई भी विनम्र बनने का इच्छुक नहीं है और कोई भी पक्ष पीछे हटने और एक दूसरे की कमियों को दूर करने की पहल नहीं करेगा, ताकि जीवन ज़्यादा तेज़ रफ़्तार से आगे बढ़ सके। जब तुम लोग साथ मिलकर समन्वय करते हो, तो तुम्हें सत्य खोजना सीखना चाहिए। तुम कह सकते हो, "मुझे सत्य के इस पहलू की स्पष्ट समझ नहीं है। तुम्हें इसके साथ क्या अनुभव हुआ है?" या तुम लोग शायद कहो, "इस पहलू के संबंध में तेरा अनुभव मुझसे अधिक है; क्या तू कृपा करके मुझे कुछ मार्गदर्शन दे सकता है?" क्या यह एक अच्छा तरीका नहीं होगा? तुम लोगों ने ढेर सारे उपदेश सुने होंगे, और सेवा करने के बारे में तुम सबको कुछ अनुभव होगा। अगर कलीसियाओं में काम करते समय तुम लोग एक दूसरे से नहीं सीखते, एक दूसरे की मदद नहीं करते या एक दूसरे की कमियों को दूर नहीं करते हो, तो तुम कैसे कोई सबक सीख

पाओगे? जब भी किसी चीज़ से तुम्हारा सामना होता है, तुम लोगों को एक दूसरे से सहभागिता करनी चाहिये ताकि तुम्हारे जीवन को लाभ मिल सके। इसके अलावा, तुम लोगों को किसी भी चीज़ के बारे में कोई भी निर्णय लेने से पहले, उसके बारे में ध्यान से सहभागिता करनी चाहिये। सिर्फ़ ऐसा करके ही तुम लापरवाही से काम करने के बजाय कलीसिया की जिम्मेदारी उठा सकते हो। सभी कलीसियाओं में जाने के बाद, तुम्हें एक साथ इकट्ठा होकर उन सभी मुद्दों और समस्याओं के बारे में सहभागिता करनी चाहिये जो अपने काम के दौरान तुम्हें पता चली हैं; फिर तुम्हें उस प्रबुद्धता और रोशनी के बारे में बात करनी चाहिये जो तुम्हें प्राप्त हुई हैं—यह सेवा का एक अनिवार्य अभ्यास है। परमेश्वर के कार्य के प्रयोजन के लिए, कलीसिया के फ़ायदे के लिये और अपने भाई-बहनों को आगे बढ़ाने के वास्ते प्रोत्साहित करने के लिये, तुम लोगों को सद्भावपूर्ण सहयोग करना होगा। तुम्हें एक दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिये, एक दूसरे में सुधार करके कार्य का बेहतर परिणाम हासिल करना चाहिये, ताकि परमेश्वर की इच्छा का ध्यान रखा जा सके। सच्चे सहयोग का यही मतलब है और जो लोग ऐसा करेंगे सिर्फ़ वही सच्चा प्रवेश हासिल कर पाएंगे। सहयोग करते समय, तुम्हारे द्वारा बोली गई कुछ बातें अनुपयुक्त हो सकती हैं, लेकिन उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। इनके बारे में बाद में सहभागिता करो, और इनके बारे में अच्छी समझ हासिल करो, इन्हें अनदेखा मत करो। इस तरह की सहभागिता करने के बाद, तुम अपने भाई-बहनों की कमियों को दूर कर सकते हो। केवल इस तरह से अपने काम की अधिक गहराई में उतर कर ही तुम बेहतर परिणाम हासिल कर सकते हो। तुम में से हर व्यक्ति, परमेश्वर की सेवा करने वाले के तौर पर सिर्फ़ अपने हितों के बारे में सोचने के बजाय, अपने हर काम में कलीसिया के हितों की रक्षा करने में सक्षम होना चाहिये। हमेशा एक दूसरे को कमतर दिखाने की कोशिश करते हुए, अकेले काम करना अस्वीकार्य है। इस तरह का व्यवहार करने वाले लोग परमेश्वर की सेवा करने के योग्य नहीं हैं! ऐसे लोगों का स्वभाव बहुत बुरा होता है; उनमें ज़रा सी भी मानवता नहीं बची है। वे सौ फीसदी शैतान हैं! वे जंगली जानवर हैं! अब भी, इस तरह की चीज़ें तुम लोगों के बीच होती हैं; तुम लोग तो सहभागिता के दौरान एक दूसरे पर हमला करने की हद तक चले जाते हो, जान-बूझकर कपट करना चाहते हो और किसी छोटी सी बात पर बहस करते हुए भी गुस्से से तमतमा उठते हो, तुम में से कोई भी पीछे हटने के लिये तैयार नहीं होता। हर व्यक्ति अपने अंदरूनी विचारों को एक दूसरे से छिपा रहा होता है, दूसरे पक्ष को गलत इरादे से देखता है और हमेशा सतर्क रहता है। क्या इस तरह का स्वभाव परमेश्वर की सेवा करने के लिये उपयुक्त है? क्या तुम्हारा इस तरह का कार्य

तुम्हारे भाई-बहनों को कुछ भी दे सकता है? तुम न केवल लोगों को जीवन के सही मार्ग पर ले जाने में असमर्थ हो, बल्कि वास्तव में तुम अपने भ्रष्ट स्वभावों को अपने भाई-बहनों में डालते हो। क्या तुम दूसरों को नुकसान नहीं पहुंचा रहे हो? तुम्हारा ज़मीर बहुत बुरा है और यह पूरी तरह से सड़ चुका है! तुम वास्तविकता में प्रवेश नहीं करते हो, तुम सत्य का अभ्यास भी नहीं करते हो। इसके अतिरिक्त, तुम बेशर्मी से दूसरों के सामने अपनी शैतानी प्रकृति को उजागर करते हो। तुम्हें कोई शर्म है ही नहीं! इन भाई-बहनों की जिम्मेदारी तुम्हें सौंपी गई है, फिर भी तुम उन्हें नरक की ओर ले जा रहे हो। क्या तुम ऐसे व्यक्ति नहीं हो जिसका ज़मीर सड़ चुका है? तुम्हें बिलकुल भी शर्म नहीं है!

क्षमता को बढ़ाना परमेश्वर द्वारा उद्धार पाने के लिए है

लोगों की क्षमता बढ़ाने का अर्थ है, तुम लोगों से यह अपेक्षा करना कि तुम अपनी बोध शक्ति को बेहतर बनाओ ताकि तुम लोग परमेश्वर के वचनों को समझ सको और यह जान सको कि उनके अनुसार कार्यकैसे करना है। यह सबसे बुनियादी अपेक्षा है। यदि तुम यह समझे बिना कि मैं क्या कहता हूँ, मेरा अनुसरण करते हो, तो क्या यह उलझा हुआ विश्वास नहीं है? चाहे मैं कितने भी वचन कहूँ, लेकिन अगर वे तुम्हारी पहुँच से बाहर हों, मैं चाहे जो भी कहूँ अगर तुम उन्हें न समझ पाओ, तो इसका अर्थ है कि तुम लोगों की क्षमता निकृष्ट है। बोध शक्ति के बगैर, मैं जो कहता हूँ, उसमें से तुम कुछ नहीं समझते, जिससे इच्छित परिणाम हासिल करना बहुत मुश्किल हो जाता है; बहुत सी बातें हैं जो मैं तुम लोगों से सीधे नहीं कह सकता, और अभीष्ट प्रभाव प्राप्त नहीं किया जा सकता है, इस तरह, यह अतिरिक्त कार्यों को आवश्यक बना देता है। चूँकि, तुम लोगों की बोध शक्ति, चीजों को देखने की क्षमता, और जीवन जीने के मानक अत्यंत न्यूनहैं, तुम लोगों में "क्षमता को बढ़ाने" का काम किया ही जाना चाहिए। यह अपरिहार्य है, और इसकाकोई विकल्प नहीं है। केवल इस तरह से ही कुछ परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है, अन्यथा, वे सभी वचन जो मैं कहता हूँ व्यर्थ हो जाएँगे। और क्या तुम लोग इतिहास में पापियों के रूप में याद नहीं किए जाओगे? क्या तुम सब दुनिया के सबसे नीच लोग नहीं बन जाओगे? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम पर यह कौन सा कार्य किया जा रहा है और तुम लोगों से क्या अपेक्षित है? तुम लोगों को अपनी क्षमता का अवश्य पता होना चाहिए : यह मेरी अपेक्षा पर बिलकुल खरी नहीं उतरती है। और क्या इससे मेरे कार्य में देरी नहीं होती है? तुम लोगों की वर्तमान क्षमता और चरित्र की स्थिति के आधार पर,

तुम लोगों में से एक भी ऐसा नहीं है जो मेरे लिए गवाही देने के उपयुक्त हो, और कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे भविष्य के कार्य के भारी उत्तरदायित्वों को सँभालने में समर्थ हो। क्या तुम लोग इसे लेकर बहुत शर्मिंदा महसूस नहीं करते हो? अगर तुम ऐसे ही चलते रहे, तो तुम मेरी इच्छाओं को कैसे संतुष्ट कर सकोगे? तुम्हें अपना जीवन पूरी तरह से जीना चाहिए। समय व्यर्थ मत व्यतीत होनेदो। ऐसा करने का कोई फ़ायदा नहीं। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हें कौन-सी चीज़ों से सज्जित होना ही चाहिए। अपने आप को हरफ़नमौला न समझो, तुम्हें अभी भी बहुत काम करना है! यदि तुम्हें मानवता का न्यूनतम बुनियादी ज्ञान भी नहीं है, तो फिर कहनेके लिए बचा ही क्या? क्या यह सब व्यर्थ नहीं है? जहाँ तक उस मानवता और क्षमता की बात है जिसकी मुझे अपेक्षा है, तुम लोगों में से एक भी इसके लिए पूरी तरह से योग्य नहीं है। किसी ऐसे को ढूँढ़ना बहुत कठिन है जो उपयोग के लिए उपयुक्त हो। तुम लोग मानते हो कि तुम लोग मेरे लिए अधिक बड़ा कार्य करने और मुझसे कोई बड़ा उत्तरदायित्व पाने में सक्षम हो; वास्तव में, तुम लोगों को यह भी पता नहीं है कि तुम लोगों की आँखों के सामने जो अनेकों सबक हैं, उनमें प्रवेश कैसे किया जाए, तो तुम लोग अधिक गहरे सत्यों में प्रवेश कैसे कर सकते हो? तुम लोगों का प्रवेश चरण-दर-चरण और धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए। यह अव्यवस्थित नहीं होना चाहिए—यह किसी काम का नहीं होगा। सबसे उथले प्रवेश से शुरुआत करो : इन वचनों को तब तक पंक्ति दर पंक्ति पढ़ो जब तक तुम लोगों को ये स्पष्ट रूप से समझ न आ जाएँ। जब तुम परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हो, तो उन पर उड़ती नज़र मत डालो मानो कि तुम घुड़सवारी करते हुए नज़ारों का आनन्द ले रहे हो, और सिर्फ लापरवाही मत करो। तुम अपने ज्ञान में सुधार लाने के लिए नियमित रूप से कुछ संदर्भ पुस्तकों को भी पढ़ सकते हो (जैसे कि व्याकरण या साहित्य शास्त्र की पुस्तकें)। ऐसी पुस्तकें जैसे कि रोमांस उपन्यास, महान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ, या ऐसी पुस्तकें जो सामाजिक विज्ञान के बारे में हों न पढ़ो; इनसे कोई लाभ नहीं होता, केवल नुकसान ही होता है। तुम्हें उन सभी चीजों में निपुण अवश्य होना चाहिए जिनमें तुम्हें प्रवेश करना और समझना चाहिए। लोगों की क्षमता को बढ़ाने का प्रयोजन, उन्हें उनके सार, उनकी पहचान, हैसियत या मूल्य के बारे में जानने में सहायता करना है। तुम्हें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर पर विश्वास करने में लोगों को सच्चाई का अनुसरण क्यों करना होगा, और क्या लोगों का अपनी क्षमता नहीं बढ़ाना स्वीकार्यहै। यह अत्यावश्यक है कि तुम अपने आप को शिक्षित रखो;तुम्हें इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए! तुम लोगों को यह अवश्य समझना चाहिए कि लोगों की क्षमता को बढ़ाना क्यों आवश्यक है, क्षमता को कैसे बढ़ाना चाहिए, और

किन पहलुओं में प्रवेश करना है। तुम लोगों को सामान्य मानवता जीने का महत्त्व, यह कार्य क्यों किया जाना है और मनुष्य को जो भूमिका निभानी है, इन सबको अवश्य समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, शिक्षित होने में, तुम लोगों को समझना चाहिए कि कौन से पहलुओं काअध्ययन करना चाहिए, और किसी व्यक्ति को उनमें कैसे प्रवेश करना चाहिए। तुम सभी लोगों को यह जानना चाहिए कि शिक्षित होने का लक्ष्य क्या है। क्या यह परमेश्वर के वचनों को समझना और सत्य में प्रवेश करना नहीं है? आज कलीसियाओं में क्या प्रचलित है? लोगों को शिक्षित करने के कारण वे परमेश्वर के वचनों के आनंद के बारे में भूल जाते हैं। वे दिन भर शिक्षित होने के अलावा और कुछ नहीं करते हैं। यदि तुम चाहते हो कि वे सामान्य मानवता को जियें, तो वेकेवल अपना घर स्वच्छ रखने, खाना पकाने, और खाना पकाने के बर्तन खरीदने पर ध्यान देंगे। ये चीज़ें उनके ध्यान का एकमात्र विषय होंगी; यहाँ तक कि वे यह भी नहीं जानेंगे कि सामान्य कलीसियाई जीवन कैसे जीना है। यदि तुम स्वयं को वर्तमान परिस्थितियों में पाते हो तो तुम अपने अभ्यास से भटक गए हो। तो तुम्हें आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने के लिए क्यों कहा जाता है? केवल उन चीजों को सीखने से तुम उसे हासिल करने में अक्षमहो जाओगे जो तुमसे अपेक्षित है। अब भी सबसे महत्वपूर्ण बात, जीवन में प्रवेश है; इस बीच, उस कार्य को करने का कारण उन समस्याओं का समाधान करना है जिनका लोग अपने अनुभवों में सामना करते हैं। क्षमता को बढ़ाना तुम्हें मानवीय प्रकृति और मनुष्य के सार का ज्ञान देता है, जिसका प्रमुख प्रयोजन यहहै कि लोगों का आध्यात्मिक जीवन विकसित हो सके और उनका स्वभाव बदल सके। हो सकता है कि तुम्हें पता हो कि कैसे तैयार होना है और अच्छा दिखाई देना है, तुम्हारे पास अंतर्दृष्टि औरचातुर्य हो सकता है, फिर भी अंततः, जब तुम्हारे कार्य पर जाने का दिन आता है, तो तुम ऐसा करने में असमर्थ होते हो। इसलिए, तुम्हें पता होना चाहिए कि अपनी क्षमता बढ़ाने के दौरान भी तुम्हें क्या करना चाहिए। तुम्हें बदलना लक्ष्य है; क्षमता बढ़ाना अनुपूरक है। यदि तुम्हारी क्षमता बेहतर नहीं होती है तो इससे काम नहीं चलेगा। यदि तुम्हारा स्वभाव नहीं बदलता तो यह और भी बदतर है। किसी को भी छोड़ा नहीं जा सकता। एक सामान्य मानवता धारण करने का यह अर्थ नहीं है कि तुमने एक शानदार गवाही दी है—तुमसे जो अपेक्षित है वह इतना आसान नहीं है।

जब लोगों की क्षमता इस हद तक बढ़ाई जा चुकी होती है कि वे सामान्य मानवतायुक्त लोगों की समझ और जीवन शैली पा लेते हैं और जीवन में प्रवेश भी कर लेते हैं, केवल तभी उनमें बताने योग्य बदलाव और गवाहियाँ हो सकती हैं। जब तुम्हारा गवाही देने का दिन आता है, तो तुम्हें अपने मानवीय

जीवन के परिवर्तन के बारे में और अपने भीतर के परमेश्वर संबंधीज्ञान के बारे में भी अवश्य बात करनी चाहिए। केवल इन दोनों पहलुओं का संयोजन ही तुम्हारी सच्ची गवाही और तुम्हारा वास्तविक लाभ है। केवल बाहर से तुम्हारी मानवता में परिवर्तन आना लेकिन अंदर से तुम्हें कोई समझ न होना पर्याप्त नहीं है, न ही यह चलेगा कि तुम्हारे अंदर समझ और सत्य तो है, लेकिन तुम एक सामान्य मानवता जीने की अनदेखी करो। तुम पर आज किया गया कार्य दिखावे के लिए नहीं है बल्कि तुम्हें बदलने के लिए है। तुम्हें बस स्वयं को बदलने पर ध्यान देने की आवश्यकता है। बस रोज़ लिखने और सुनने से, जीवन में कुछ और ना होने से काम नहीं चलेगा; प्रत्येक पहलू में तुम्हारा प्रवेश होना चाहिए। तुम्हारे पास एक संत का सामान्य जीवन होना चाहिए। संतों की शालीनता को पूर्णतः छोड़ते हुए, बहुत सी बहनें तरुण महिलाओं की तरह वस्त्र पहनती हैं और भाई समृद्ध सज्जनों या कुलीनजनों की तरह वस्त्र पहनते हैं। एक व्यक्ति की क्षमता को बढ़ाना एक बात है—इसे संयोग से प्राप्त किया जाता है। परमेश्वर के वचनों को खाना और पीना अन्य बात है—यही मुख्य बात है। यदि तुम्हारी क्षमता बढ़ जाए लेकिन प्रयोग न की जाए क्योंकि तुमने परमेश्वर के वचनों को खाया-पीया नहीं, तो क्या तुमने सीखने में लगाई मेहनत व्यर्थ नहीं कर दी है? दोनों पहलुओं को अवश्य संयुक्त किया जाना चाहिए। तुमसे क्या अपेक्षित है, इसकी चर्चा में परमेश्वर के ज्ञान की चर्चा क्यों करना? क्या यह भावी कार्य के परिणामों के लिए नहीं है? तुम्हें जीत लिए जाने के बाद, तुम्हें अपने अनुभवों से गवाही देने में सक्षम अवश्य होना चाहिए। यदि तुम्हारा बाहरी रूप-रंग सामान्य मानवता का है, लेकिन तुम अपने अनुभवों को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते हो तो इससे काम नहीं चलेगा। जबकि तुम्हारे पास एक सामान्य आध्यात्मिक जीवन हो, तो तुम्हें सामान्य मानवता भी प्राप्त करनी चाहिए, जिसके कई पहलुओं को तुम संयोगवश सीखोगे। क्या तुम्हें लगता है कि फर्श पर झाड़ू लगाने के लिए किसी विशेष साधना की आवश्यकता है? इससे भी बदतर है खाना खाने के लिए चोपस्टिक्स कैसे पकड़ें, इसके अभ्यास में एक घंटा लगाना! सामान्य मानवता में कौन-से पहलू शामिल हैं? अंतर्दृष्टि, समझ, विवेक, और चरित्र। यदि तुम इनमें से प्रत्येक पहलू में सामान्यता प्राप्त कर सकते हो, तो तुम्हारी मानवता मानक के मुताबिक हो जाएगी। तुममें एक सामान्य इंसान से समरूपताहोनी चाहिए और तुम्हें परमेश्वर केविश्वासी की तरह लगनाचाहिए। तुम्हें बहुत अधिक हासिल नहीं करना है या कूटनीति में संलग्न नहीं होना है; तुम्हें बस एक सामान्य इंसान बनना है जिसके पास सामान्य व्यक्ति की समझ हो, जो चीज़ों को समझने में सक्षम हो, और जो कम से कम एक सामान्य इंसान की तरह दिखाई दे। यह पर्याप्त होगा। आज तुमसे अपेक्षित हर चीज़

तुम्हारी क्षमताओं के भीतर है और किसी भी तरह से तुमसे कुछ ऐसा करवाने के लिए नहीं है जो करने में तुम सक्षम नहीं हो। कोई अनुपयोगी वचन या अनुपयोगी कार्य तुम पर नहीं किया जाएगा। तुम्हारे जीवन में व्यक्त या प्रकट हुई समस्त कुरूपता का अवश्य त्याग कर दिया जाना चाहिए। तुम लोगों को शैतान द्वारा भ्रष्ट किया गया है और तुम लोग शैतान के ज़हर से भरे हुए हो। तुमसे केवल इस भ्रष्ट शैतानी स्वभाव से छुटकारा पाने के लिए कहा जाता है। तुमसे कोई उच्च पदस्थ व्यक्ति, या एक प्रसिद्ध या महान व्यक्ति बनने के लिए नहीं कहा जाता। इसका कोई अर्थ नहीं है। जो कार्य तुम लोगों पर किया जाता है वह उसके अनुसार होता है जो तुम लोगों में अंतर्निहित है। मैं लोगों से जो अपेक्षा करता हूँ उसकी सीमाएँ होती हैं। यदि तुमने उस तरीके और लहजे से अभ्यास किया है जिसमें बुद्धिजीवी बात करते हैं तो इससे काम नहीं चलेगा; तुम इसे नहीं कर पाओगे। तुम लोगों की क्षमता के हिसाब से तुम्हें कम से कम बुद्धिमानी और कुशलता के साथ बोलने में सक्षम होना चाहिए और चीज़ों को स्पष्ट रूप से और समझ में आने वाले ढंग से बताना चाहिए। अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए बस इतने की ज़रूरत है। कम से कम, यदि तुम अंतर्दृष्टि और समझ प्राप्त कर लेते हो, तो यह पर्याप्त है। अभी सबसे महत्वपूर्ण बात है स्वयं के भ्रष्ट शैतानी स्वभाव को दूर करना। तुम्हें उस कुरूपता को अवश्य त्याग देना चाहिए जो तुममें व्यक्त होती है। यदि तुमने इन्हें त्यागा नहीं है, तो परम समझ और परम अंतर्दृष्टि की बात कैसे कर सकते हो? यह देखते हुए कि युग बदल गया है, बहुत से लोगों में विनम्रता या धैर्य का अभाव है, और हो सकता है कि उनमें कोई प्रेम या संतों वाली शालीनता भी न हो। ये लोग कितनेबेहूदा हैं! क्या उनमें रत्ती भर भी सामान्य मानवता है? क्या उनके पास कोई बताने लायक गवाही है? उनके पास किसी भी तरह की कोई अंतर्दृष्टि और समझ नहीं है। निस्सन्देह, लोगों के व्यवहार के कुछ पहलुओं को, जो पथभ्रष्ट और गलत हैं, सही किए जाने की आवश्यकता है। उदाहरण के तौर पर, लोगों के अतीत का कठोर आध्यात्मिक जीवन और उनका संवेदनशून्य और मूर्खतापूर्ण रूप—इन सभी चीजों को बदलना होगा। परिवर्तन का अर्थ यह नहीं है कि तुम्हें स्वच्छंद होने दिया जाए या शरीर में आसक्त होने दिया जाए या तुम जो चाहो वह बोलने दिया जाए। तुम्हें लापरवाही से नहीं बोलना चाहिए। एक सामान्य इंसान की तरह व्यवहार करना और बोलना-चालना सुसंगति से बोलना है, जब तुम्हारा आशय "हाँ" होता है तो "हाँ" बोलना, "नहीं" आशय होने पर "नहीं" बोलना। तथ्यों के मुताबिक रहो और उचित तरीके से बोलो। कपट मत करो, झूठ मत बोलो। स्वभाव में बदलाव के संबंध में सामान्य व्यक्ति जिन सीमाओं तक पहुँच सकता है, उन्हें अवश्य समझना चाहिए।

अन्यथा तुम वास्तविकता में प्रवेश नहीं कर पाओगे।

मोआब के वंशजों को बचाने का अर्थ

इन दो से तीन वर्षों के कार्य में, तुम लोगों पर किए गए न्याय के काम में जो हासिल किया जाना चाहिए था, वह मूल रूप से हासिल कर लिया गया है। अधिकतर लोगों ने अपने भविष्य की कुछ संभावनाओं और नियति को छोड़ दिया है। फिर भी, जब यह उल्लेख किया जाता है कि तुम लोग मोआब के वंशज हो, तो तुममें से कई लोग इसे बरदाश्त नहीं कर पाते—तुम्हारे नाक-भौं सिकुड़ जाते हैं, मुँह बिगड़ जाते हैं, और तुम्हारी आँखों की टकटकी बँध जाती है। तुम विश्वास ही नहीं कर पाते कि तुम मोआब के वंशज हो। शापित होने के बाद मोआब को इस देश में निर्वासित किया गया था। मोआब की संतति की वंशावली आज तक चल रही है, और तुम सब उसके वंशज हो। मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता—किसने तुमसे मोआब के घर पैदा होने के लिए कहा था? मुझे तुम पर दया आती है और मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे साथ ऐसा हो, लेकिन इस तथ्य को कोई नहीं बदल सकता। तुम मोआब के वंशज हो और मैं यह नहीं कह सकता कि तुम दाऊद के वंशज हो। चाहे तुम किसी के भी वंशज हो, तुम फिर भी एक सृजित प्राणी हो, हालाँकि तुम निचले दर्जे के प्राणी हो, जन्म से एक अधम प्राणी। सभी सृजित प्राणियों को परमेश्वर के समस्त कार्य का अनुभव करना चाहिए; वे सभी उसके द्वारा जीते जाने के पात्र हैं, और उन सभी को उसका धर्मी स्वभाव देखना चाहिए और उसकी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता का अनुभव करना चाहिए। आज, तुम मोआब के वंशज हो और तुम्हें इस न्याय और ताड़ना को स्वीकार करना चाहिए; यदि तुम मोआब के वंशज नहीं होते, तो भी क्या तुम्हें इस न्याय और ताड़ना को स्वीकार करने की ज़रूरत न होती? इसे पहचानो! सच में, आज मोआब के वंशजों पर कार्य करना सबसे मूल्यवान और सबसे अर्थपूर्ण है। चूँकि यह कार्य तुम लोगों पर किया जाता है, इसलिए इसका बहुत बड़ा अर्थ है। अगर हाम के वंशजों पर कार्य किया जाता, तो यह अर्थपूर्ण न होता, क्योंकि वे मोआब के विपरीत, जन्म से अधम नहीं हैं। नूह के दूसरे बेटे हाम के वंशज केवल शापित हैं—वे व्यभिचार से नहीं आए थे। वे मात्र छोटे दर्जे के हैं, क्योंकि नूह ने उन्हें नौकरों के नौकर होने का शाप दिया था। उनका दर्जा छोटा है, लेकिन उनका मूल मूल्य कम नहीं था। मोआब की बात करें तो, लोग जानते हैं कि उसका दर्जा कम था, क्योंकि वह व्यभिचार से पैदा हुआ था। हालाँकि लूत की स्थिति बहुत ऊँची थी, फिर भी मोआब लूत और उसकी बेटी से आया था। लूत एक

धार्मिक व्यक्ति कहलाता था, लेकिन मोआब को फिर भी शाप दिया गया। मोआब का मोल कम और दर्जा छोटा था, और यदि उसे शापित नहीं भी किया जाता, तो भी वह गंदगी का था, और इसलिए वह हाम से अलग था। उसने यहोवा को स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसका विरोध किया और उसके खिलाफ विद्रोह किया—और इसलिए वह सबसे अंधकारमय जगह में गिर पड़ा। अब मोआब के वंशजों पर कार्य करना उन लोगों को बचाना है, जो सबसे गहरे अँधेरे में गिर गए हैं। यद्यपि वे शापित थे, फिर भी परमेश्वर उनसे महिमा पाने का इच्छुक है, क्योंकि पहले वे सभी ऐसे लोग थे, जिनके हृदयों में परमेश्वर की कमी थी; केवल उन लोगों को, जिनके हृदयों में परमेश्वर नहीं है, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने और उससे प्रेम करने के लिए तैयार करना ही सच्ची विजय है, और ऐसे कार्य का फल सबसे मूल्यवान और सबसे ठोस है। केवल यही महिमा प्राप्त कर रहा है—यही वह महिमा है, जिसे परमेश्वर अंत के दिनों में हासिल करना चाहता है। बावजूद इसके कि ये लोग कम दर्जे के हैं, अब इनका ऐसे महान उद्धार को प्राप्त करने में सक्षम होना वास्तव में परमेश्वर द्वारा एक उन्नयन है। यह काम बहुत ही सार्थक है, और वह न्याय के माध्यम से ही इन लोगों को प्राप्त करता है। उसका इरादा इन लोगों को दंडित करने का नहीं, बल्कि बचाने का है। यदि, अंत के दिनों में, वह अभी भी इस्राएल में विजय प्राप्त करने का काम कर रहा होता, तो वह बेकार होता; यदि वह फलदायक भी होता, तो उसका कोई मूल्य या कोई बड़ा अर्थ न होता, और वह समस्त महिमा प्राप्त करने में सक्षम न होता। वह तुम लोगों पर कार्य कर रहा है, अर्थात् उन लोगों पर, जो सबसे अंधकारमय स्थानों में गिर चुके हैं, जो सबसे अधिक पिछड़े हैं। ये लोग यह नहीं मानते कि परमेश्वर है और वे कभी नहीं जान पाए हैं कि परमेश्वर है। इन प्राणियों को शैतान ने इस हद तक भ्रष्ट किया है कि वे परमेश्वर को भूल गए हैं। वे शैतान द्वारा अंधे बना दिए गए हैं और वे बिलकुल नहीं जानते कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है। अपने दिलों में तुम सब लोग मूर्तियों और शैतान की पूजा करते हो, क्या तुम सबसे अधम, सबसे पिछड़े लोग नहीं हो? देह से तुम लोग निम्नतम हो, किसी भी निजी स्वतंत्रता से विहीन, और तुम लोग कष्टों से पीड़ित भी हो। तुम लोग इस समाज में सबसे निम्न स्तर पर भी हो, जिन्हें विश्वास की स्वतंत्रता तक नहीं है। तुम सब पर कार्य करने का यही अर्थ है। आज मोआब के तुम वंशजों पर कार्य करना जानबूझकर तुम लोगों को अपमानित करने के लिए नहीं है, बल्कि कार्य के अर्थ को प्रकट करने के लिए है। तुम लोगों के लिए यह एक महान उत्थान है। अगर व्यक्ति में विवेक और अंतर्दृष्टि हो, तो वह कहेगा : "मैं मोआब का वंशज हूँ, आज परमेश्वर द्वारा ऐसा महान उत्थान या ऐसे महान आशीष पाने के सचमुच अयोग्य। अपनी

समस्त करनी और कथनी में, और अपनी हैसियत और मूल्य के अनुसार, मैं परमेश्वर से ऐसे महान आशीष पाने के बिलकुल भी योग्य नहीं हूँ। इस्राएलियों को परमेश्वर से बहुत प्रेम है, और जिस अनुग्रह का वे आनंद उठाते हैं, वह उन्हें परमेश्वर द्वारा ही दिया जाता है, लेकिन उनकी हैसियत हमसे बहुत ऊँची है। अब्राहम यहोवा के प्रति बहुत समर्पित था, और पतरस यीशु के प्रति बहुत समर्पित था—उनकी भक्ति हमसे सौ गुना अधिक थी। और अपने कार्यों के आधार पर हम परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने के बिलकुल अयोग्य हैं।" चीन में इन लोगों की सेवा परमेश्वर के सामने बिलकुल नहीं लाई जा सकती। यह पूरा बूचड़खाना है; अब तुम जो परमेश्वर के अनुग्रह का इतना आनंद लेते हो, तो वह केवल परमेश्वर का उत्थान है! तुम लोगों ने कब परमेश्वर के कार्य की माँग की है? तुमने कब अपना जीवन परमेश्वर के लिए बलिदान किया है? तुमने कब अपने परिवार, अपने माता-पिता और अपने बच्चों का आसानी से त्याग किया है? तुममें से किसी ने भी कोई बड़ी कीमत नहीं चुकाई है! यदि पवित्र आत्मा तुम्हें बाहर नहीं लाता, तो तुममें से कितने सब-कुछ बलिदान करने में सक्षम होते? तुमने आज तक केवल बल और दबाव के तहत अनुसरण किया है। तुम लोगों की भक्ति कहाँ है? तुम लोगों की आज्ञाकारिता कहाँ है? तुम्हारे कर्मों के आधार पर तुम्हें बहुत पहले ही नष्ट कर दिया जाना चाहिए था—तुम लोगों का पूरी तरह सफाया होना चाहिए था। ऐसे महान आशीषों का आनंद लेने की तुम लोगों में क्या योग्यता है? तुम ज़रा भी योग्य नहीं हो! तुम लोगों में से किसने अपना स्वयं का मार्ग बनाया है? तुममें से किसने खुद सच्चा रास्ता खोजा है? तुम सभी आलसी, लोभी, आराम-तलब अभागे हो! क्या तुम लोग समझते हो कि तुम महान हो? तुम लोगों के पास शेखी बघारने के लिए क्या है? इसे अनदेखा करने पर भी कि तुम लोग मोआब के वंशज हो, क्या तुम लोगों की प्रकृति या तुम लोगों के जन्मस्थान सबसे ऊँची किस्म के हैं? इसे अनदेखा करने पर भी कि तुम लोग मोआब के वंशज हो, क्या तुम सभी पूरी तरह से मोआब के वंशज नहीं हो? क्या तथ्यों की सच्चाई बदली जा सकती है? क्या तुम लोगों की प्रकृति उजागर करने से अब तथ्यों की सच्चाई गलत हो जाती है? अपनी चापलूसी, अपने जीवन और अपने चरित्र देखो—क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम मानवजाति में निम्नतम हो? तुम लोगों के पास क्या है, जिसकी तुम शेखी बघार सकते हो? समाज में अपने दर्जे को देखो। क्या तुम लोग उसके सबसे निचले स्तर पर नहीं हो? क्या तुम लोगों को लगता है कि मैंने गलत कहा है? अब्राहम ने इसहाक को बलिदान किया—तुमने किसे बलिदान किया है? अय्यूब ने सब-कुछ बलिदान किया—तुमने क्या बलिदान किया है? इतने सारे लोगों ने अपना जीवन दिया है, अपने सिर कुर्बान किए हैं, अपना खून

बहाया है, सही राह तलाशने के लिए। क्या तुम लोगों ने वह कीमत चुकाई है? उनकी तुलना में तुम इस महान अनुग्रह का आनंद लेने के बिलकुल भी योग्य नहीं हो। तो क्या आज यह कहना तुम्हारे साथ अन्याय करना है कि तुम लोग मोआब के वंशज हो? तुम लोग खुद को बहुत ऊँचा मत समझो। तुम्हारे पास शेखी बघारने के लिए कुछ नहीं है। ऐसा महान उद्धार, ऐसा महान अनुग्रह तुम लोगों को मुफ्त में दिया जा रहा है। तुम लोगों ने कुछ भी बलिदान नहीं किया है, फिर भी तुम अनुग्रह का मुफ्त आनंद उठा रहे हो। क्या तुम लोगों को शर्म नहीं आती? क्या यह सच्चा मार्ग तुम लोगों ने स्वयं खोजा और पाया था? क्या पवित्र आत्मा ने तुम लोगों को इसे स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया? तुम लोगों के पास कभी भी एक खोजने वाला दिल नहीं था, सत्य की खोज करने वाला और उसकी लालसा रखने वाला दिल तो बिलकुल भी नहीं था। तुम बस बैठे-बिठाए इसका आनंद ले रहे हो; तुमने इस सत्य को ज़रा भी प्रयास किए बिना पाया है। तुम्हें शिकायत करने का क्या अधिकार है? क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारा मोल सबसे बड़ा है? उन लोगों की तुलना में, जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान किया और अपना रक्त बहाया, तुम लोगों के पास शिकायत करने को क्या है? अब तुम लोगों को नष्ट करना सही और स्वाभाविक होगा! तुम्हारे पास आज्ञा का पालन और अनुसरण करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। तुम लोग बस योग्य नहीं हो! तुम्हारे बीच में से अधिकतर लोगों को बुलाया गया था, लेकिन अगर तुम्हें तुम्हारे परिवेश ने मजबूर नहीं किया होता या अगर तुम्हें बुलाया नहीं गया होता, तो तुम लोग बाहर आने के लिए पूरी तरह से अनिच्छुक होते। ऐसे त्याग को लेने के लिए कौन तैयार है? देह का सुख छोड़ने के लिए कौन तैयार है? तुम सब वे लोग हो, जो लालच के साथ आराम से ऐश करते हैं और एक विलासी जीवन की चाह रखते हैं! तुम लोगों को इतने बड़े आशीष मिल गए हैं—तुम्हें और क्या कहना है? तुम्हें क्या शिकायतें हैं? तुम लोगों को स्वर्ग में सबसे बड़े आशीषों और सबसे बड़े अनुग्रह का आनंद लेने दिया गया है, और जो कार्य पृथ्वी पर पहले कभी नहीं किया गया था, उसे आज तुम पर प्रकट किया गया है, क्या यह एक आशीष नहीं है? आज तुम्हारी इसलिए इतनी ताड़ना की गई है, क्योंकि तुम लोगों ने परमेश्वर का विरोध किया है और उसके खिलाफ विद्रोह किया है। इस ताड़ना के कारण तुम लोगों ने परमेश्वर की दया और प्रेम देखा है, और उससे भी अधिक तुमने उसकी धार्मिकता और पवित्रता देखी है। इस ताड़ना की वजह से और मानव की गंदगी के कारण, तुम लोगों ने परमेश्वर की महान शक्ति देखी है, और उसकी पवित्रता और महानता देखी है। क्या यह एक दुर्लभतम सत्य नहीं है? क्या यह एक अर्थपूर्ण जीवन नहीं है? परमेश्वर जो कार्य करता है, वह अर्थ से भरा

है! अतः जितनी निम्न तुम लोगों की स्थिति है, उतना अधिक वह यह साबित करती है कि परमेश्वर ने तुम्हारा उत्थान किया है, और उतना ही अधिक आज तुम लोगों पर उसके कार्य का महान मूल्य साबित होता है। यह बस एक अनमोल खजाना है, जो कहीं और नहीं पाया जा सकता! युगों तक किसी ने भी ऐसे महान उद्धार का आनंद नहीं लिया है। यह तथ्य कि तुम्हारी स्थिति निम्न है, यह दर्शाता है कि परमेश्वर का उद्धार कितना महान है, और यह दर्शाता है कि परमेश्वर मानवजाति के प्रति वफादार है—वह बचाता है, नष्ट नहीं करता।

चीनी लोगों ने कभी परमेश्वर में विश्वास नहीं किया है; उन्होंने कभी भी यहोवा की सेवा नहीं की है, और कभी भी यीशु की सेवा नहीं की है। वे केवल धूप जलाना, जॉस पेपर जलाना, और बुद्ध की पूजा करना जानते हैं। वे सिर्फ मूर्तियों की पूजा करते हैं—वे सब चरम सीमा तक विद्रोही हैं। इसलिए लोगों की स्थिति जितनी अधिक निम्न है, उससे उतना ही अधिक पता चलता है कि परमेश्वर तुम लोगों से और भी अधिक महिमा पाता है। अपने दृष्टिकोण से कुछ लोग कह सकते हैं : "परमेश्वर, तुम यह क्या कार्य करते हो? तुम जैसा उत्कृष्ट परमेश्वर, तुम जैसा पवित्र परमेश्वर, एक गंदे मुल्क में आता है? क्या तुम खुद को इतना छोटा समझते हो? हम इतने गंदे हैं, और तुम हमारे साथ रहने को तैयार हो? तुम हमारे बीच रहने को तैयार हो? हम ऐसी निम्न स्थिति के हैं, लेकिन तुम हमें पूर्ण बनाने को तैयार हो? और तुम हमें प्रतिमान और नमूनों के रूप में इस्तेमाल करोगे?" मैं कहता हूँ : तुम मेरी इच्छा नहीं समझते। तुम उस कार्य को नहीं समझते, जिसे मैं करना चाहता हूँ, न ही तुम मेरे स्वभाव को समझते हो। मैं जो कार्य करने जा रहा हूँ, उसका अर्थ समझ पाना तुम्हारे वश में नहीं है। क्या मेरा कार्य तुम्हारी मानवीय धारणाओं के अनुरूप हो सकता है? मानवीय धारणाओं के अनुसार तो मुझे किसी अच्छे देश में जन्म लेना होगा, यह दिखाने के लिए कि मैं ऊँची हैसियत का हूँ, यह दिखाने के लिए कि मेरा मोल बहुत ज्यादा है, और अपना सम्मान, पवित्रता और महानता दिखाने के लिए। अगर मैं किसी ऐसे स्थान पर पैदा हुआ होता जो मुझे पहचानता, किसी संभ्रांत परिवार में, और अगर मैं उच्च स्थिति और हैसियत का होता, तो मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया जाता। इससे मेरे कार्य को कोई लाभ नहीं होता, और क्या तब भी ऐसा महान उद्धार प्रकट किया जा सकता था? वे सभी लोग जो मुझे देखते, वे मेरी आज्ञा का पालन करते, और वे गंदगी से प्रदूषित न होते। मुझे इस तरह के स्थान पर जन्म लेना चाहिए था। तुम लोग यही मानते हो। लेकिन इस बारे में सोचो : क्या परमेश्वर पृथ्वी पर आनंद लेने के लिए आया था, या कार्य करने के लिए? अगर मैं उस तरह के आसान,

आरामदायक स्थान पर काम करता, तो क्या मैं अपनी पूरी महिमा हासिल कर सकता था? क्या मैं अपनी समूची सृष्टि को जीत सकता था? जब परमेश्वर पृथ्वी पर आया, तो वह संसार का नहीं था, और संसार का सुख भोगने के लिए वह देह नहीं बना था। जिस स्थान पर कार्य करना सबसे अच्छी तरह से उसके स्वभाव को प्रकट करता और जो सबसे अर्थपूर्ण होता, वह वही स्थान है, जहाँ वह पैदा हुआ। चाहे वह स्थल पवित्र हो या गंदा, और चाहे वह कहीं भी काम करे, वह पवित्र है। दुनिया में हर चीज़ उसके द्वारा बनाई गई थी, हालाँकि शैतान ने सब-कुछ भ्रष्ट कर दिया है। फिर भी, सभी चीजें अभी भी उसकी हैं; वे सभी चीजें उसके हाथों में हैं। वह अपनी पवित्रता प्रकट करने के लिए एक गंदे देश में आता है और वहाँ कार्य करता है; वह केवल अपने कार्य के लिए ऐसा करता है, अर्थात् वह इस दूषित भूमि के लोगों को बचाने के लिए ऐसा कार्य करने में बहुत अपमान सहता है। यह पूरी मानवजाति की खातिर, गवाही के लिए किया जाता है। ऐसा कार्य लोगों को परमेश्वर की धार्मिकता दिखाता है, और वह परमेश्वर की सर्वोच्चता प्रदर्शित करने में अधिक सक्षम है। उसकी महानता और शुचिता उन नीच लोगों के एक समूह के उद्धार के माध्यम से व्यक्त होती है, जिनका अन्य लोग तिरस्कार करते हैं। एक मलिन भूमि में पैदा होना यह बिलकुल साबित नहीं करता कि वह दीन-हीन है; यह तो केवल सारी सृष्टि को उसकी महानता और मानवजाति के लिए उसका सच्चा प्यार दिखाता है। जितना अधिक वह ऐसा करता है, उतना ही अधिक यह मनुष्य के लिए उसके शुद्ध प्रेम, उसके दोषरहित प्रेम को प्रकट करता है। परमेश्वर पवित्र और धर्मी है। यद्यपि वह एक गंदी भूमि में पैदा हुआ था, और यद्यपि वह उन लोगों के साथ रहता है जो गंदगी से भरे हुए हैं, ठीक वैसे ही जैसे यीशु अनुग्रह के युग में पापियों के साथ रहता था, फिर भी क्या उसका हर कार्य संपूर्ण मानवजाति के अस्तित्व की खातिर नहीं किया जाता? क्या यह सब इसलिए नहीं है कि मानवजाति महान उद्धार प्राप्त कर सके? दो हजार साल पहले वह कई वर्षों तक पापियों के साथ रहा। वह छुटकारे के लिए था। आज वह गंदे, नीच लोगों के एक समूह के साथ रह रहा है। यह उद्धार के लिए है। क्या उसका सारा कार्य तुम मनुष्यों के लिए नहीं है? यदि यह मानवजाति को बचाने के लिए न होता, तो क्यों वह एक नाँद में पैदा होने के बाद कई सालों तक पापियों के साथ रहता और कष्ट उठाता? और यदि यह मानवजाति को बचाने के लिए न होता, तो क्यों वह दूसरी बार देह में लौटकर आता, इस देश में पैदा होता जहाँ दुष्ट आत्माएँ इकट्ठी होती हैं, और इन लोगों के साथ रहता जिन्हें शैतान ने गहराई से भ्रष्ट कर रखा है? क्या परमेश्वर वफ़ादार नहीं है? उसके कार्य का कौन-सा भाग मानवजाति के लिए नहीं रहा है? कौन-सा भाग तुम लोगों की नियति के लिए नहीं

रहा है? परमेश्वर पवित्र है—यह अपरिवर्तनीय है। वह गंदगी से प्रदूषित नहीं है, हालाँकि वह एक गंदे देश में आया है; इस सबका मतलब केवल यह हो सकता है कि मानवजाति के लिए परमेश्वर का प्रेम अत्यंत निस्वार्थ है और जो पीड़ा और अपमान वह सहता है, वह अत्यधिक है! क्या तुम लोग यह नहीं जानते कि वह तुम सभी के लिए, और तुम लोगों की नियति के लिए जो अपमान सहता है, वह कितना बड़ा है? वह बड़े लोगों या अमीर और शक्तिशाली परिवारों के पुत्रों को बचाने के बजाय विशेष रूप से उनको बचाता है, जो दीन-हीन हैं और नीची निगाह से देखे जाते हैं। क्या यह सब उसकी पवित्रता नहीं है? क्या यह सब उसकी धार्मिकता नहीं है? समस्त मानवजाति के अस्तित्व के लिए वह एक दूषित भूमि में पैदा होगा और हर अपमान सहेगा। परमेश्वर बहुत वास्तविक है—वह कोई मिथ्या कार्य नहीं करता। क्या उसके कार्य का हर चरण इतने व्यावहारिक रूप से नहीं किया गया है? यद्यपि सब लोग उसकी निंदा करते हैं और कहते हैं कि वह पापियों के साथ मेज पर बैठता है, यद्यपि सब लोग उसका मज़ाक उड़ाते हैं और कहते हैं कि वह गंदगी के पुत्रों के साथ रहता है, कि वह सबसे अधम लोगों के साथ रहता है, फिर भी वह निस्वार्थ रूप से अपने आपको समर्पित करता है, और वह अभी भी मानवजाति के बीच इस तरह नकारा जाता है। क्या जो कष्ट वह सहता है, वह तुम लोगों के कष्टों से बड़ा नहीं है? क्या जो कार्य वह करता है, वह तुम लोगों द्वारा चुकाई गई कीमत से ज्यादा नहीं है? तुम लोग गंदे देश में पैदा हुए, फिर भी तुमने परमेश्वर की पवित्रता प्राप्त की है। तुम लोग उस देश में पैदा हुए, जहाँ राक्षस एकत्र होते हैं, फिर भी तुम्हें महान सुरक्षा प्राप्त हुई है। तुम्हारे पास विकल्प क्या है? तुम्हारी शिकायतें क्या हैं? क्या जो पीड़ा उसने सही है, वह तुम लोगों द्वारा सही गई पीड़ा से अधिक नहीं है? वह पृथ्वी पर आया है और उसने मानव-जगत के सुखों का कभी आनंद नहीं उठाया। वह ऐसी चीज़ों से घृणा करता है। परमेश्वर मनुष्य से भौतिक चीज़ें पाने के लिए पृथ्वी पर नहीं आया, न ही वह मनुष्य के भोजन, कपड़ों और गहनों का आनंद उठाने के लिए आया है। वह इन चीज़ों पर कोई ध्यान नहीं देता। वह धरती पर मनुष्य की खातिर दुःख उठाने के लिए आया, न कि सांसारिक ऐश्वर्य का आनंद उठाने के लिए। वह पीड़ित होने, काम करने और अपनी प्रबंधन योजना पूरी करने के लिए आया। उसने किसी अच्छे स्थान का चयन नहीं किया, रहने के लिए कोई दूतावास या महँगा होटल पसंद नहीं किया, और न ही उसकी सेवा में कई नौकर खड़े थे। तुम लोगों ने जो देखा है, क्या उससे तुम्हें पता नहीं चलता कि वह काम करने के लिए आया या सुख भोगने के लिए? क्या तुम लोगों की आँखें नहीं देखतीं? तुम लोगों को उसने कितना दिया है? यदि वह किसी आरामदायक स्थान पर पैदा हुआ होता,

तो क्या वह महिमा पाने में सक्षम होता? क्या वह कार्य करने में सक्षम होता? क्या उसके ऐसा करने का कोई अर्थ होता? क्या वह मानवजाति को पूरी तरह से जीत पाता? क्या वह लोगों को गंदगी की भूमि से बचा सकता? अपनी धारणाओं के अनुसार लोग पूछते हैं, "चूँकि परमेश्वर पवित्र है, तो वह हमारे इस गंदे स्थान में क्यों पैदा हुआ? तुम हम गंदे मनुष्यों से घृणा करते हो और हमारा तिरस्कार करते हो; तुम हमारे प्रतिरोध और विद्रोह से घृणा करते हो, तो तुम हमारे साथ क्यों रहते हो? तुम सर्वोच्च परमेश्वर हो। तुम कहीं भी पैदा हो सकते थे, तो तुम्हें इस गंदे देश में क्यों पैदा होना पड़ा? तुम प्रतिदिन हमारा न्याय करते हो और हमें ताड़ना देते हो, और तुम स्पष्ट रूप से जानते हो कि हम मोआब के वंशज हैं, तो फिर भी तुम हमारे बीच क्यों रहते हो? तुम मोआब के वंशजों के परिवार में क्यों पैदा हुए? तुमने ऐसा क्यों किया?" तुम लोगों के इस तरह के विचार पूर्णत: विवेकरहित हैं! केवल इसी तरह का कार्य लोगों को उसकी महानता, उसकी विनम्रता और उसका छिपाव दिखाता है। वह अपने कार्य की खातिर सब-कुछ बलिदान करने को तैयार है, और उसने समस्त कष्ट अपने कार्य के लिए सहे हैं। ऐसा वह मानव-जाति की खातिर करता है, और इससे भी बढ़कर, शैतान को जीतने के लिए करता है, ताकि सभी जीव उसके प्रभुत्व के अंतर्गत आ सकें। केवल यही सार्थक, मूल्यवान कार्य है। अगर याकूब के वंशज चीन में, ज़मीन के इस टुकड़े पर, पैदा हुए होते, और वे तुम सब ही होते, तो तुम लोगों में किए गए कार्य का क्या अर्थ होता? शैतान क्या कहता? शैतान कहता : "वे पहले तुमसे डरते थे, उन्होंने शुरू से तुम्हारी आज्ञा का पालन किया, और उनके द्वारा तुम्हें धोखा दिए जाने का कोई इतिहास नहीं है। वे मानवजाति के सबसे कलंकित, अधम या सबसे पिछड़े नहीं हैं।" यदि कार्य वास्तव में इस तरह से किया जाता, तो इस कार्य से कौन प्रभावित होता? पूरे संसार में चीनी लोग सबसे पिछड़े हैं। वे कम ईमानदारी के साथ निम्न दर्जे में जन्म लेते हैं; वे मूर्ख और सुस्त हैं, और वे अशिष्ट और पतनशील हैं। वे शैतानी स्वभावों से ओतप्रोत, गंदे और कामुक हैं। तुम सबमें ऐसे शैतानी स्वभाव हैं। एक बार यह कार्य पूरा हो जाने पर लोग इन भ्रष्ट शैतानी स्वभावों को त्याग देंगे और पूरी तरह से आज्ञापालन करने में सक्षम हो जाएँगे और पूर्ण कर दिए जाएँगे। केवल कार्य के ऐसे फल ही सृष्टि के भीतर गवाही हैं! क्या तुम समझते हो कि गवाही क्या है? गवाही वास्तव में कैसे देनी चाहिए? इस तरह के काम ने तुम लोगों को विषमता, और साथ ही सेवा प्रदान करने वाली वस्तुएँ बना दिया है, और इससे भी बढ़कर, इसने तुम्हें उद्धार के लक्ष्यों में बदल दिया है। आज तुम परमेश्वर के लोग हो; बाद में तुम लोग प्रतिमान और नमूने होगे। इस कार्य में तुम लोग विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभाते हो, और अंत में तुम

उद्धार के लक्ष्य होगे। इस वजह से बहुत-से लोग नकारात्मक हैं; क्या वे पूरी तरह से अंधे नहीं हैं? तुम कुछ भी स्पष्ट नहीं देखते! क्या इस तरह बुलाना ही तुम्हें अभिभूत कर देता है? क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर का धर्मी स्वभाव क्या है? क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर का उद्धार क्या है? क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर का प्रेम क्या है? तुममें कोई निष्ठा नहीं है! जब तुम्हारा अच्छे ढंग से ज़िक्र किया जाता है, तो तुम खुश होते हो। जब तुम्हारा बुरे ढंग से ज़िक्र किया जाता है, तो तुम विमुख हो जाते हो और पीछे हट जाते हो। तुम क्या हो? तुम सही तरह से अनुसरण नहीं कर रहे हो! तुरंत खोजना बंद कर दो—यह शर्मनाक है! क्या यह शर्म की निशानी नहीं है कि कोई इतनी तुच्छ बात भी तुम्हें अभिभूत कर देती है?

बेहतर होता कि तुम लोग थोड़ा अपने बारे में जान लेते। अपने आपको बहुत ऊँचा मत समझो, और स्वर्ग जाने का सपना मत देखो—बस, कर्तव्यपरायण होकर पृथ्वी पर जीते जाने की चाह रखो। उन अवास्तविक सपनों के बारे में मत सोचो, जिनका अस्तित्व नहीं हैं। अगर कोई निम्नलिखित जैसा कुछ कहता है, तो ये किसी संकल्प और रीढ़ वाले व्यक्ति के शब्द हैं : "यद्यपि मैं मोआब का वंशज हूँ, फिर भी मैं परमेश्वर के लिए प्रयास करने को तैयार हूँ। मैं अपने पुराने पूर्वज से मुँह फेर लूँगा! उसने मुझे जन्म दिया और कुचल दिया, और मैं अब तक अँधेरे में जी रहा हूँ। आज परमेश्वर ने मुझे मुक्त किया है, और मैंने अंततः स्वर्ग के सूर्य को देख लिया है। परमेश्वर द्वारा उजागर किए जाने के माध्यम से मैंने अंततः देख लिया है कि मैं मोआब का वंशज हूँ। पहले मेरी आँखों पर पट्टी बँधी थी, और मुझे नहीं पता था कि परमेश्वर ने इतना कार्य किया है, क्योंकि मुझे उस पुराने शैतान द्वारा अंधा कर दिया गया था। मैं उसकी ओर पीठ कर लूँगा और उसे अच्छी तरह से अपमानित करूँगा।" तो क्या तुम लोगों के पास ऐसा संकल्प है? इस तथ्य के बावजूद कि तुम लोगों में से प्रत्येक इंसान जैसा दिखता है, तुम किसी और की तुलना में तेजी से बिखर जाते हो, और तुम लोग इस मामले के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील हो। जैसे ही इस बात का उल्लेख किया जाता है कि तुम लोग मोआब के वंशज हो, तुम लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं। क्या यह किसी सुअर का स्वभाव नहीं है? तुम बेकार हो। प्रसिद्धि और दौलत के लिए तुम अपने जीवन का भी बलिदान कर दोगे! तुम मोआब के वंशज न होने की कामना कर सकते हो, लेकिन क्या तुम वही नहीं हो? आज मैं कह रहा हूँ कि तुम हो, और तुम्हें इसे स्वीकार करना चाहिए। मैं तथ्यों के खिलाफ नहीं बोलता। कुछ लोग इस वजह से नकारात्मक हैं, लेकिन इसमें नकारात्मक होने की क्या बात है? क्या तुम लोग बड़े लाल अजगर के भी बच्चे नहीं हो? क्या यह कहना अन्यायपूर्ण है कि तुम मोआब के वंशज हो? जरा देखो कि अंदर और बाहर तुम

कैसा जीवन जी रहे हो। तुम्हारे सिर से पैर तक कुछ भी सराहनीय नहीं है। व्यभिचार, गंदगी, अंधापन, प्रतिरोध, विद्रोह—क्या ये सभी तुम्हारे स्वभाव के अंग नहीं हैं? तुम हमेशा व्यभिचार की भूमि पर रहते हो और कोई बुराई किए बिना नहीं छोड़ते। तुम्हें लगता है कि तुम आश्चर्यजनक ढंग से पवित्र हो। अपनी की हुई चीज़ों पर नज़र डालो, और फिर भी तुम अपने आपसे इतने प्रसन्न हो। तुमने ऐसा क्या किया है, जो प्रशंसा के योग्य हो? तुम पशुओं की तरह हो। तुममें कोई मानवता नहीं है! तुम पशुओं के सहचर हो और बुरे, अनैतिक विचारों से घिरे रहते हो। तुम लोगों में कितनी कमी है? तुम सहमत हो कि तुम लोग बड़े लाल अजगर के बच्चे हो, और तुम सेवा करने के लिए तैयार हो, लेकिन बाद में जब यह कहा जाता है कि तुम मोआब के वंशज हो, तो तुम नकारात्मक हो जाते हो। क्या यह सच नहीं है? बात बस ऐसी है कि तुम अपने माता-पिता से पैदा हुए थे—चाहे वे कितने ही भयानक हों, फिर भी तुम उन्हीं से पैदा हुए थे। यहाँ तक कि अगर तुम्हें कोई दत्तक माँ मिल जाए और तुम अपना घर छोड़ दो, तो फिर भी क्या तुम अपने मूल माता-पिता के बच्चे नहीं होगे? क्या वह तथ्य बदल सकता है? क्या मैंने तुम पर यों ही मोआब के वंशज होने का ठप्पा लगा दिया है? कुछ लोग कहते हैं : "क्या तुम मुझे कुछ और नहीं कह सकते?" मैं कहता हूँ : "कैसा रहेगा, अगर मैं तुम्हें एक विषमता कहूँ?" वे विषमताएँ होने के लिए भी तैयार नहीं हैं। तो तुम क्या बनना चाहते हो? विषमताएँ, सेवाकर्मी—क्या तुम लोग यही नहीं हो? तुम और क्या चुनोगे? क्या तुम बड़े लाल अजगर के देश में पैदा हुए व्यक्ति नहीं हो? चाहे तुम कितना भी कह लो कि तुम दाऊद की संतान हो, यह तथ्यों के अनुरूप नहीं है। क्या यह कोई ऐसी चीज़ है, जिसे तुम अपने लिए चुनते हो? क्या तुम अपने लिए अपनी पसंद का कोई सुंदर नाम चुन सकते हो? क्या जिन बड़े लाल अजगर के बच्चों का जिक्र किया गया था, वे भ्रष्ट लोग तुम्हीं नहीं हो? जहाँ तक सेवाकर्मियों का संबंध है—क्या वे भ्रष्ट लोग भी तुम्हीं नहीं हो? जिन जीत लिए गए प्रतिमानों और नमूनों का जिक्र किया गया था—क्या वे लोग भी तुम्हीं नहीं हो? क्या पूर्ण किए जाने का मार्ग तुम लोगों के लिए ही नहीं बोला गया? जिन्हें ताड़ना दी जा रही है और जिनका न्याय किया जा रहा है, वे तुम्हीं लोग हो; तो बाद में पूर्ण किए जाने वाले कुछ तुम्हीं लोगों में से नहीं होंगे? क्या यह उपाधि अभी भी कोई महत्त्व रखती है? तुम लोग इतने मूर्ख हो; क्या तुम इतनी मामूली बात भी स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते? तुम नहीं जानते कि कौन किसका वंशज है, लेकिन मुझे यह पता है, और मैं तुम लोगों को बता रहा हूँ। आज इसे पहचान सकना ठीक है। हमेशा इतना हीन महसूस मत करो। जितना अधिक तुम नकारात्मक होगे और पीछे हटोगे, उतना ही अधिक यह साबित करता है कि तुम शैतान के वंशज हो।

कुछ लोग हैं, जिन्हें जब तुम भजन सुनाते हो, तो वे कहते हैं : "क्या मोआब के वंशज भजन सुन सकते हैं? मैं नहीं सुनूँगा; मैं इसके योग्य नहीं हूँ!" यदि तुम उन्हें गाने के लिए कहो, तो वह कहता है : "अगर मोआब के वंशज गाएँ, तो क्या परमेश्वर सुनना चाहेगा? परमेश्वर मुझसे घृणा करता है। मुझे परमेश्वर के सामने जाने में बहुत शर्म आती है और मैं उसके लिए गवाही नहीं दे सकता। बस मैं नहीं गाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर इसे सुनकर कुपित हो जाए।" क्या इससे निपटने का यह एक नकारात्मक तरीका नहीं है? एक सृजित प्राणी के रूप में, तुम व्यभिचार की भूमि पर पैदा हुए थे, और तुम बड़े लाल अजगर के बच्चे हो, मोआब के एक वंशज; तुम्हें अपने पुराने पूर्वज से मुँह फेर लेना चाहिए और पुराने शैतान की ओर पीठ कर लेनी चाहिए। जो ऐसा करता है, केवल वही वास्तव में परमेश्वर को चाहता है।

शुरुआत में जब मैंने तुम लोगों को परमेश्वर के लोगों का स्थान दिया था, तो तुम लोग अन्य किसी से भी ज्यादा, अत्यधिक ख़ुशी से ऊपर-नीचे उछल रहे थे। लेकिन जैसे ही मैंने कहा कि तुम लोग मोआब के वंशज हो, तो तुम्हारा क्या हुआ? तुम सभी तितर-बितर हो गए! कहाँ है तुम लोगों का आध्यात्मिक कद? हैसियत की तुम लोगों की अवधारणा बहुत मजबूत है! ज्यादातर लोग खुद को ऊपर नहीं उठा सकते। कुछ लोग व्यवसाय करने के लिए जाते हैं, और कुछ काम करने के लिए। जैसे ही मैं कहता हूँ कि तुम मोआब के वंशज हो, तुम सब भाग जाना चाहते हो। क्या यही परमेश्वर के लिए गवाही देना है, जिसके बारे में तुम लोग दिन भर चिल्लाते हो? क्या शैतान इस तरह से आश्वस्त होगा? क्या यह शर्मिंदगी का चिह्न नहीं है? तुम लोगों के होने का क्या उपयोग है? तुम सब कचरा हो! तुम लोगों ने किस प्रकार की पीड़ा सहन की है, जो तुम यह महसूस करते हो कि तुम्हारे साथ बहुत गलत हुआ है? तुम लोग सोचते हो कि एक बार परमेश्वर ने तुम्हें एक निश्चित मात्रा में प्रताड़ित कर दिया, तो वह खुश हो जाएगा, मानो परमेश्वर जानबूझकर तुम्हारी निंदा करने आया है, और तुम लोगों की निंदा करने और तुम्हें नष्ट करने के बाद उसका कार्य पूरा हो जाएगा। क्या मैंने ऐसा ही कहा है? क्या तुम लोग ऐसा अपने अंधेपन के कारण नहीं सोचते हो? तुम लोग स्वयं अच्छा करने की कोशिश नहीं करते, या मैं जानबूझकर तुम लोगों की निंदा करता हूँ? मैंने कभी ऐसा नहीं किया है—ऐसा तुम लोगों ने खुद ही सोच लिया है। मैंने कभी बिलकुल भी इस तरह से कार्य नहीं किया है, न ही मेरा यह इरादा है। अगर मैं वास्तव में तुम लोगों को नष्ट करना चाहता, तो क्या मुझे इतनी कठिनाई उठाने की ज़रूरत थी? अगर मैं वास्तव में तुम लोगों को नष्ट करना चाहता, तो क्या मुझे तुम्हारे साथ इतनी ईमानदारी से बात करने की ज़रूरत थी? मेरी इच्छा यह है : मैं तभी आराम कर सकता हूँ, जब

मैं तुम लोगों को बचा लूँगा। कोई व्यक्ति जितना अधम होगा, वह उतना ही अधिक मेरे उद्धार का लक्ष्य होगा। जितना अधिक तुम लोग अग्रसक्रियता से प्रवेश करने में सक्षम होगे, उतना ही अधिक मैं प्रसन्न हूँगा। जितना अधिक तुम लोग टूटते हो, उतना ही अधिक मैं परेशान होता हूँ। तुम लोग हमेशा सिंहासन को अकड़कर लपकना चाहते हो—मैं तुमसे कहता हूँ, यह तुम्हें गंदगी से बचाने का मार्ग नहीं है। सिंहासन पर बैठने की विलक्षण कल्पना तुम लोगों को पूर्ण नहीं कर सकती; यह यथार्थवादी नहीं है। मैं कहता हूँ कि तुम मोआब के वंशज हो, और तुम दुखी हो। तुम कहते हो : "यदि तुम मुझे अतल गड्ढे में जाने देते हो, तो मैं तुम्हारे लिए गवाही नहीं दूँगा या तुम्हारे लिए कष्ट सहन नहीं करूँगा।" क्या तुम्हारा ऐसा करना मेरे विरोध में नहीं होगा? क्या ऐसा करने से तुम्हें फायदा होगा? मैंने तुम्हें इतना अनुग्रह दिया है—क्या तुम भूल गए हो? तुमने परमेश्वर के उस दिल को ठुकराया और अपमानित किया है, जो एक स्नेहमयी माँ की तरह है; तुम्हारे लिए इसके क्या परिणाम होंगे? क्या शैतान तुम्हें जाने देगा? यदि तुम मेरे लिए गवाही नहीं देते हो, तो मैं तुम्हें बाध्य नहीं करूँगा—लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि अंत में तुम विनाश के लक्ष्य होगे। अगर मैं तुमसे गवाही प्राप्त नहीं कर सकता, तो मैं इसे अन्य लोगों से प्राप्त कर लूँगा। इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन अंत में तुम्हें इसका अफ़सोस होगा, और उस समय तुम बहुत पहले ही अँधेरे में गिर चुके होगे। फिर तुम्हें कौन बचा पाएगा? ऐसा मत सोचो कि यह कार्य तुम्हारे बिना नहीं किया जा सकता—तुम्हारा होना कोई बहुत होना नहीं है और तुम्हारा न होना कोई बहुत न होना नहीं है। अपने आपको बहुत माननीय मत समझो। यदि तुम मेरा अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं हो, तो वह सिर्फ यह दिखाता है कि तुम विद्रोही हो, और तुममें कुछ भी वांछनीय नहीं है। यदि तुम एक अच्छे वक्ता हो, तो क्या यह सिर्फ इसलिए नहीं है कि तुमने अपने आपको उन शब्दों से लैस कर लिया है, जिन्हें मैं अपने कार्य के माध्यम से लाया था? तुममें शेखी बघारने लायक क्या है? अपनी कल्पना को अपने साथ भागने मत दो! यदि मैं मोआब के तुम वंशजों से महिमा हासिल नहीं कर सकता, तो मैं अपने कार्य के लिए मोआब के वंशजों के एक दूसरे और तीसरे समूह का चयन कर लूँगा, जब तक कि मैं महिमा हासिल नहीं कर लेता। यदि तुम मेरे लिए गवाही देने को तैयार नहीं हो, तो बाहर निकल जाओ! मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूँगा! यह मत सोचो कि मैं तुम लोगों के बिना एक कदम भी नहीं चल पाऊँगा। चीन के इस देश में अपने कार्य के लिए उपयुक्त पात्र ढूँढ़ना सरल है। इस देश में कुछ और पाया ही नहीं जा सकता—गंदे, भ्रष्ट लोग बिलकुल हर जगह हैं, और मेरा कार्य कहीं भी किया जा सकता है। इतने अभिमानी मत बनो! चाहे तुम कितने भी

अभिमानी हो, क्या तुम फिर भी व्यभिचार से जन्मे बच्चे नहीं हो? अपने मोल पर नज़र डालो—तुम्हारे पास और क्या विकल्प है? तुम्हें सिर्फ जीने देना ही एक बड़ा उत्थान है, फिर भी तुम किस बात पर अभिमान कर सकते हो? युग का अंत करना अगर मेरे कार्य के लिए जरूरी न होता, तो क्या तुम बहुत पहले ही प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाओं में न गिर गए होते? क्या तुम अभी भी इतने आराम से रह सकते हो? तुम अभी भी लगातार इस मामले पर बहस करते हो। जबसे मैंने तुम्हें मोआब के वंशज कहा है, तबसे तुम हर समय मुँह फुलाए रहते हो। तुम अपने को शिक्षित नहीं करते, तुम परमेश्वर के वचन नहीं पढ़ते, और तुम किसी को भी बरदाश्त नहीं कर पाते। जब तुम अन्य लोगों को शिक्षित होते देखते हो, तो तुम उन्हें बाधित करते हो और उन्हें हतोत्साहित करने वाली बातें कहते हो। तुममें कुछ साहस है! तुम कहते हो : "मोआब के वंशज कौन-सी शिक्षा पा सकते हैं? मैं ज़हमत नहीं उठाऊँगा।" क्या ऐसी बात कोई दरिंदा ही नहीं कहेगा? क्या तुम मानव के रूप में गिने भी जाते हो? मैंने इतना कुछ कहा है, लेकिन इससे तुममें कुछ भी हासिल नहीं हुआ है। क्या मैंने यह सब कार्य व्यर्थ ही किया है? क्या मैंने ये सब वचन व्यर्थ ही कहे हैं? एक कुत्ता भी अपनी पूँछ हिलाएगा; ऐसा व्यक्ति कुत्ते जितना भी अच्छा नहीं है! क्या तुम इंसान कहलाने लायक हो? जब मैं मोआब के वंशजों के बारे में बात करता हूँ, कुछ लोग जानबूझकर खुद को हीन बना लेते हैं। वे पहले की तुलना में अलग तरह से कपड़े पहनने लगते हैं और इतने मैले-कुचैले हो जाते हैं कि इंसानों की तरह दिखते ही नहीं, और वे कहते हैं : "मैं मोआब का वंशज हूँ। मैं अच्छा नहीं हूँ। मेरे लिए कोई आशीष पाने की बात सोचना दिन में सपने देखने जैसा है। क्या मोआब के वंशज पूर्ण किए जा सकते हैं?" जैसे ही मैं मोआब के वंशजों की बात करता हूँ, ज्यादातर लोगों के लिए कोई उम्मीद बाकी नहीं रह जाती, और वे कहते हैं : "परमेश्वर कहता है कि हम मोआब के वंशज हैं—यह क्या दर्शाता है? जो लहजा उसने अपनाया है, उसे देखो—वह अटल है! उसके शब्दों में कोई प्रेम नहीं है। क्या हम विनाश के लक्ष्य नहीं हैं?" क्या तुम वह भूल गए, जो पहले कहा गया था? अब तुम्हें केवल "मोआब के वंशज" शब्द ही याद हैं? वास्तव में, कई शब्द कोई परिणाम हासिल करने के लिए होते हैं, लेकिन वे तथ्यों की सच्चाई भी उजागर करते हैं। ज्यादातर लोग इसे नहीं मानते। तुम मेरे लिए उस तरह से कष्ट नहीं उठाना चाहते। तुम मौत से डरते हो और हमेशा बचकर भाग जाना चाहते हो। यदि तुम जाना चाहते हो, तो मैं तुम्हें रुकने के लिए मजबूर नहीं करूँगा, लेकिन मुझे तुमको यह स्पष्ट बता देना चाहिए : एक पूरी जिंदगी व्यर्थ मत जियो, और जो बातें मैंने तुम्हें पूर्व में बताई हैं, उन्हें मत भूलो। एक सृजित प्राणी के रूप में तुम्हें एक सृजित प्राणी

का कर्तव्य निभाना चाहिए। अपनी अंतरात्मा के खिलाफ काम मत करो; तुम्हें जो करना चाहिए, वह है सृष्टि के प्रभु के प्रति खुद को समर्पित करना। मोआब के वंशज भी सृजित प्राणी हैं, केवल इतना ही है कि वे लोग विषमताएँ हैं और उन्हें शाप दिया गया है। चाहे जो भी हो, तुम फिर भी एक सृजित प्राणी हो। तुम बहुत दूर नहीं हो, अगर तुम यह कहते हो : "भले ही मैं मोआब का वंशज हूँ, मैंने परमेश्वर के अनुग्रह का इतना आनंद लिया है कि मुझमें कुछ विवेक होना चाहिए। मैं इसे स्वीकार करूँगा, लेकिन इस पर ध्यान नहीं दूँगा। यहाँ तक कि अगर मैं इस धारा के भीतर पीड़ित होता हूँ, तो मैं अंत तक पीड़ा सहन करूँगा, और अगर मैं मोआब का वंशज हूँ, तो ऐसा ही सही। मैं फिर भी अंत तक अनुसरण करूँगा!" तुम्हें अंत तक अनुसरण करना चाहिए। यदि तुम भागते हो, तो तुम्हारे पास वास्तव में कोई संभावना नहीं होगी—तुमने विनाश के रास्ते पर कदम रख दिए होंगे।

तुम लोगों का अपनी उत्पत्ति को समझ लेना अच्छी बात है, और तुम लोगों द्वारा तथ्यों की सच्चाई को समझना इस कार्य के लिए लाभप्रद है। ऐसा किए बिना वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होगा। यह विजय के कार्य का एक हिस्सा है, और यह कार्य का एक आवश्यक चरण है। यह एक तथ्य है। यह कार्य लोगों की आत्माओं को जगाने, उनके विवेक की भावना को जगाने के लिए और यह महान उद्धार प्राप्त करने देने के लिए है। अगर लोगों में विवेक है, तो यह देखकर कि उनका दर्जा निम्न है, उन्हें विशेष रूप से परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। उन्हें उसके वचनों को अपने हाथों में थामना चाहिए और उसके द्वारा दिए गए अनुग्रह को कसकर थामे रहना चाहिए, और यहाँ तक कि उन्हें फूट-फूटकर रोते हुए कहना चाहिए : "हमारी स्थिति निम्न है और हमने दुनिया में कुछ भी हासिल नहीं किया है। हम नीच लोगों की कोई खोज-खबर नहीं लेता। हम अपने घर के माहौल में सताए जाते हैं, हमारे पति हमें अस्वीकार करते हैं, हमारी पत्नियाँ हमें बुरा-भला कहती हैं, हमारे बच्चे हमें तुच्छ समझते हैं, और जब हम बूढ़े होते हैं, तो हमारी बहुएँ भी हमारे साथ बुरा व्यवहार करती हैं। हमने कम दुःख नहीं सहे हैं, और अब कितने सौभाग्य की बात है कि हम परमेश्वर के महान प्रेम का आनंद लेते हैं! अगर परमेश्वर ने हमें बचाया न होता, तो हम मानव की पीड़ा को स्पष्ट कैसे देख पाते? क्या हम अभी भी इस पाप में विकृत नहीं हो रहे होते? क्या यह परमेश्वर द्वारा हमारा उत्थान नहीं है? मैं सबसे अधम लोगों में से एक हूँ, और परमेश्वर ने मुझे इतना ऊँचा उठा दिया है। अगर मैं नष्ट भी हो जाऊँ, तो भी मुझे उसके प्रेम का ऋण चुकाना चाहिए। परमेश्वर हमारे बारे में ऊँचा सोचता है और हम जैसे नीच लोगों के साथ आमने-सामने बात करता है। वह मुझे सिखाने के लिए मेरा

हाथ थामता है। अपने मुख से मुझे खिलाता है। वह मेरे साथ जीता और मेरे साथ पीड़ा भोगता है। अगर वह मुझे ताड़ना भी देता है—तो भी मैं क्या कह सकता हूँ? क्या ताड़ना दिया जाना भी परमेश्वर द्वारा उत्थान किया जाना नहीं है? मुझे ताड़ना दी जाती है, फिर भी मैं उसकी धार्मिकता देख सकता हूँ। मैं अंतरात्मा से रहित नहीं हो सकता—मुझे परमेश्वर के प्रेम का ऋण चुकाना ही चाहिए। मैं परमेश्वर के खिलाफ़ और विद्रोह नहीं कर सकता।" परमेश्वर की स्थिति और उसका दर्जा लोगों के समान नहीं है—लेकिन उसकी पीड़ा समान है, और उसका भोजन और कपड़े समान हैं, लेकिन सभी लोग उसका सम्मान करते हैं—और यही एकमात्र अंतर है। क्या उसका बाकी सब-कुछ मनुष्य के समान नहीं है? तो तुम लोगों को क्या अधिकार है परमेश्वर से यह कहने का कि वह तुम्हारे साथ एक विशेष तरीके से व्यवहार करे? परमेश्वर ने इतनी पीड़ा सही है और इतना महान कार्य किया है, और तुम लोग—जो चींटियों और खटमलों से भी निम्न हो—आज इतने ऊँचे उठा दिए गए हो। यदि तुम परमेश्वर के प्रेम का ऋण नहीं चुका सकते, तो तुम्हारी अंतरात्मा कहाँ है? कुछ लोग अपने दिल से कहते हैं : "हर बार जब मैं परमेश्वर को छोड़ने के बारे में सोचता हूँ, तो मेरी आँखें आँसुओं से भर जाती हैं और मेरी अंतरात्मा छलनी हो जाती है। मैं परमेश्वर का ऋणी हूँ। मैं यह नहीं कर सकता। मैं उसके साथ इस तरह से पेश नहीं आ सकता। अगर मैं मर जाता और मेरे मरने से उसके कार्य को महिमा मिलती, तो मुझे असीम संतोष होता। अन्यथा, अगर मैं जीता भी रहूँ, तो भी मुझे शांति नहीं मिलेगी।" इन शब्दों को सुनो—ये उस कर्तव्य का वर्णन करते हैं, जिसे कि एक सृजित प्राणी को पूरा करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति के भीतर हमेशा ऐसी अंतर्दृष्टि हो, तो वे आंतरिक रूप से स्पष्ट और सहज होंगे; वे इन मामलों में निश्चित होंगे। तुम कहोगे : "परमेश्वर मुझे नुकसान नहीं पहुँचा रहा है, और वह जानबूझकर मुझ पर हँस नहीं रहा है या मुझे अपमानित नहीं कर रहा है। यद्यपि वह कुछ कठोरता से बोलता है, जो दिल को चोट पहुँचाता है, लेकिन यह मेरी खातिर ही है। यद्यपि वह इतनी कठोरता से बोलता है, फिर भी वह मुझे बचा रहा है, और फिर भी वह मेरी कमजोरियों का ध्यान रखता है। वह तथ्यों का इस्तेमाल मुझे दंडित करने के लिए नहीं कर रहा। मेरा मानना है कि परमेश्वर उद्धार है।" यदि तुम्हारे पास वास्तव में यह दृष्टि हो, तो तुम्हारे भागने की संभावना नहीं होगी। तुम्हारी अंतरात्मा तुम्हें जाने नहीं देगी, और उसके द्वारा की जाने वाली निंदा तुम्हें बताएगी कि तुम्हें परमेश्वर के साथ उस तरह से पेश नहीं आना चाहिए। तुम उस समस्त अनुग्रह के बारे में सोचो, जो तुमने प्राप्त किया है। तुमने मेरे बहुत सारे वचन सुने हैं—क्या तुम उन्हें व्यर्थ में सुन सकते थे? चाहे और कोई भी भाग जाए,

तुम नहीं भाग सकते। अन्य लोग विश्वास नहीं करते, पर तुम्हें करना चाहिए। अन्य लोग परमेश्वर का त्याग करते हैं, लेकिन तुम्हें परमेश्वर का समर्थन करना चाहिए और उसकी गवाही देनी चाहिए। दूसरे लोग परमेश्वर की बदनामी करते हैं, लेकिन तुम नहीं कर सकते। चाहे परमेश्वर तुम्हारे प्रति कितना भी कठोर हो, तुम्हें फिर भी उसके साथ सही व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें उसके प्रेम का प्रतिदान देना चाहिए, और तुम्हारे पास एक अंतरात्मा होनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर निर्दोष है। मानवजाति के बीच कार्य करने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर आकर वह पहले ही बहुत अपमान सह चुका है। वह पवित्र है, जिसमें जरा-सी भी मलिनता नहीं। मलिन भूमि पर आकर उसने कितना अपमान सहा है? वह तुम लोगों पर तुम्हारी ही खातिर काम करता है। यदि तुम उसके साथ विवेकहीन तरीके से व्यवहार करते हो, तो बेहतर होगा कि तुम जल्दी मृत्यु को प्राप्त हो जाओ!

वर्तमान में ज्यादातर लोगों में दृष्टि के इस पहलू की कमी है; वे इस कार्य की थाह बिलकुल नहीं पा सकते और वे नहीं जानते कि परमेश्वर अंततः इस कार्य से क्या हासिल करना चाहता है। खासकर वे भ्रमित लोग—ऐसा लगता है, जैसे वे किसी भूलभुलैया में प्रवेश कर गए हैं और कुछ मोड़ों के बाद रास्ता भूल गए हैं। यदि तुम उन्हें परमेश्वर की प्रबंधन योजना के उद्देश्य को अच्छी तरह समझा दो, तो वे भ्रमित नहीं होंगे। बहुत-से लोग इसका अनुमान नहीं लगा पाते, और मानते हैं कि परमेश्वर का कार्य लोगों को सताना है। वे उसके कार्य की बुद्धिमत्ता और अद्भुतता को नहीं समझते, और वे यह नहीं समझते कि उसका कार्य उसका महान सामर्थ्य प्रकट करने के लिए है, और इससे भी बढ़कर, वह मानवजाति को बचाने के लिए है। वे वह सब नहीं देखते; वे बस यह देखते हैं कि क्या उनके पास कोई संभावना है, क्या वे स्वर्ग में प्रवेश करने में सक्षम होंगे। वे कहते हैं : "परमेश्वर का कार्य हमेशा इतना गोलमोल होता है; यदि तुम हमें अपनी बुद्धिमत्ता सीधे दिखा सको, तो अच्छा होगा। तुम्हें हमें इस तरह से नहीं सताना चाहिए। हममें क्षमता की बहुत अधिक कमी है और हम तुम्हारी इच्छा नहीं समझते। बहुत अच्छा होगा, अगर तुम सीधे बोलो और कार्य करो। तुम हमसे अनुमान लगवाना चाहते हो, लेकिन हम नहीं लगा सकते। अच्छा होगा कि तुम जल्दी करोगे और हमें अपनी महिमा देखने दो। ऐसे गोलमोल तरीके से कार्य करने की क्या आवश्यकता है?" अब तुम लोगों में जिस चीज़ की सबसे अधिक कमी है, वह है विवेक। अपना विवेक बढ़ाओ। अपनी आँखें अच्छी तरह खोलकर देखो कि इस कार्य के चरण वास्तव में कौन पूरे कर रहा है। निष्कर्षों पर मत कूदो। अब तुमने अधिक से अधिक उस जीवन के सतही पहलू की कुछ समझ पाई है, जिसका तुम्हें

अनुभव करना चाहिए। अभी भी तुम्हें सत्य को बहुत हद तक समझना बाक़ी है, और जिस दिन तुम इसे पूरी तरह से समझ लोगे, उस दिन इस तरह से नहीं बोलोगे, न ही तुम शिकायत करोगे। न ही तुम चीज़ों को परिभाषित करने में इतनी ज़ल्दबाज़ी करोगे। तुम कहोगे : "परमेश्वर बहुत बुद्धिमान है, परमेश्वर बहुत पवित्र है, परमेश्वर बहुत सामर्थ्यवान है!"

पतरस के अनुभव: ताड़ना और न्याय का उसका ज्ञान

जब पतरस को परमेश्वर द्वारा ताड़ना दी जा रही थी, तो उसने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर! मेरी देह अवज्ञाकारी है, और तू मुझे ताड़ना देकर मेरा न्याय कर रहा है। मैं तेरी ताड़ना और न्याय से खुश हूँ, अगर तू मुझे न भी चाहे, तो भी मैं तेरे न्याय में तेरा पवित्र और धार्मिक स्वभाव देखता हूँ। जब तू मेरा न्याय करता है, ताकि अन्य लोग तेरे न्याय में तेरा धार्मिक स्वभाव देख सकें, तो मैं संतुष्टि का एहसास करता हूँ। अगर यह तेरा धार्मिक स्वभाव प्रकट कर सके, सभी प्राणी तेरा धार्मिक स्वभाव देख सकें, और अगर यह तेरे लिए मेरे प्रेम को और शुद्ध बना सके ताकि मैं एक धार्मिक व्यक्ति की तरह बन सकूँ, तो तेरा न्याय अच्छा है, क्योंकि तेरी अनुग्रहकारी इच्छा ऐसी ही है। मैं जानता हूँ कि अभी भी मेरे भीतर बहुत कुछ ऐसा है जो विद्रोही है, और मैं अभी भी तेरे सामने आने के योग्य नहीं हूँ। मैं चाहता हूँ कि तू मेरा और भी अधिक न्याय करे, चाहे क्रूर वातावरण के जरिए करे या घोर क्लेश के जरिए; तू मेरा न्याय कैसे भी करे, यह मेरे लिए बहुमूल्य है। तेरा प्यार बहुत गहरा है, और मैं बिना कोई शिकायत किए स्वयं को तेरे आयोजन पर छोड़ने को तैयार हूँ।" यह परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लेने के बाद का पतरस का ज्ञान है, यह परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम की गवाही भी है। आज, तुम लोगों को पहले से ही जीत लिया गया है—पर यह जीत तुम लोगों में किस प्रकार प्रकट होती है? कुछ लोग कहते हैं, "मेरी जीत परमेश्वर का सर्वोच्च अनुग्रह और उत्कर्ष है। अब जाकर मुझे एहसास हुआ कि मनुष्य का जीवन खोखला और निरर्थक है। मनुष्य पीढ़ी दर पीढ़ी संतान पैदा करता है, उसकी परवरिश करता है, और भागदौड़ करके जीवन बिताता है, और अंत में उसे कुछ हासिल नहीं होता। आज, परमेश्वर द्वारा जीत लिए जाने के बाद ही मुझे एहसास हुआ कि इस तरह जीने का कोई मूल्य नहीं है; यह सचमुच ही एक अर्थहीन जीवन है। ऐसे ही मैं मर भी जाऊँगा और सब कुछ खत्म हो जाएगा!" ऐसे लोग जिन पर विजय पाई जा चुकी है, क्या उन्हें परमेश्वर के द्वारा ग्रहण किया जा सकता है? क्या वे आदर्श और मिसाल बन सकते हैं? ऐसे लोग निष्क्रियता की मिसाल हैं; उनकी

कोई आकांक्षाएँ नहीं हैं, न ही वे अपने-आपको सुधारने के लिए कोई मेहनत करते हैं। हालाँकि वे ऐसा समझते हैं कि उन पर विजय पा ली गई है, लेकिन ऐसे निष्क्रिय लोग पूर्ण बनाए जाने के काबिल नहीं होते। पूर्ण बना दिए जाने पर, अपने जीवन के आखिरी पलों में, पतरस ने कहा "हे परमेश्वर! यदि मैं कुछ वर्ष और जीवित रहता, तो मैं तेरे और ज्यादा शुद्ध और गहरे प्रेम को हासिल करने की कामना करता।" जब उसे क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था, तो उसने मन ही मन प्रार्थना की, "हे परमेश्वर! अब तेरा समय आ गया है, तूने मेरे लिए जो समय तय किया था वह आ गया है। मुझे तेरे लिए क्रूस पर चढ़ना चाहिए, मुझे तेरे लिए यह गवाही देनी चाहिए, मुझे उम्मीद है मेरा प्रेम तेरी अपेक्षाओं को संतुष्ट करेगा, और यह और ज्यादा शुद्ध बन सकेगा। आज, तेरे लिए मरने में सक्षम होने और क्रूस पर चढ़ने से मुझे तसल्ली मिल रही है और मैं आश्वस्त हो रहा हूँ, क्योंकि तेरे लिए क्रूस पर चढ़ने में सक्षम होने और तेरी इच्छाओं को संतुष्ट करने, स्वयं को तुझे सौंपने और अपने जीवन को तेरे लिए अर्पित करने में सक्षम होने से बढ़कर कोई और बात मुझे तृप्त नहीं कर सकती। हे परमेश्वर! तू कितना प्यारा है! यदि तू मुझे और जीवन बख्श देता, तो मैं तुझसे और भी अधिक प्रेम करना चाहता। मैं आजीवन तुझसे प्रेम करूँगा, मैं तुझसे और गहराई से प्रेम करना चाहता हूँ। तू मेरा न्याय करता है, मुझे ताड़ना देता है, और मेरी परीक्षा लेता है क्योंकि मैं धार्मिक नहीं हूँ, क्योंकि मैंने पाप किया है। और तेरा धार्मिक स्वभाव मेरे लिए और अधिक स्पष्ट होता जाता है। यह मेरे लिए एक आशीष है, क्योंकि मैं तुझे और भी अधिक गहराई से प्रेम कर सकता हूँ, अगर तू मुझसे प्रेम न भी करे तो भी मैं तुझसे इसी तरह से प्रेम करने को तैयार हूँ। मैं तेरे धार्मिक स्वभाव को देखने की इच्छा करता हूँ, क्योंकि यह मुझे अर्थपूर्ण जीवन जीने के और ज्यादा काबिल बनाता है। मुझे लगता है कि अब मेरा जीवन और भी अधिक सार्थक हो गया है, क्योंकि मैं तेरे लिए क्रूस पर चढ़ा हूँ, और तेरे लिए मरना सार्थक है। फिर भी मुझे अब तक संतुष्टि का एहसास नहीं हुआ है, क्योंकि मैं तेरे बारे में बहुत थोड़ा जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि मैं तेरी इच्छाओं को संपूर्ण रूप से पूरा नहीं कर सकता, और मैंने बदले में तुझे बहुत ही कम लौटाया है। मैं अपने जीवन में तुझे अपना सब कुछ नहीं लौटा पाया हूँ; मैं इससे बहुत दूर हूँ। इस घड़ी पीछे मुड़कर देखते हुए, मैं तेरा बहुत ऋणी महसूस करता हूँ, और अपनी सारी गलतियों की भरपाई करने और सारे बकाया प्रेम को चुकाने के लिए मेरे पास यही एक घड़ी है।"

मनुष्य को अर्थपूर्ण जीवन जीने का प्रयास अवश्य करना चाहिए और उसे अपनी वर्तमान परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। पतरस की छवि के अनुरूप अपना जीवन जीने के लिए, उसमें पतरस के ज्ञान

और अनुभवों का होना जरूरी है। मनुष्य को ज़्यादा ऊँची और गहन चीजों के लिए अवश्य प्रयास करना चाहिए। उसे परमेश्वर को अधिक गहराई एवं शुद्धता से प्रेम करने का, और एक ऐसा जीवन जीने का प्रयास अवश्य करना चाहिए जिसका कोई मोल हो और जो सार्थक हो। सिर्फ यही जीवन है; तभी मनुष्य पतरस जैसा बन पाएगा। तुम्हें सकारात्मक तरीके से प्रवेश के लिए सक्रिय होने पर ध्यान देना चाहिए, और अधिक गहन, विशिष्ट और व्यावहारिक सत्यों को नजरअंदाज करते हुए क्षणिक आराम के लिए पीछे नहीं हट जाना चाहिए। तुम्हारा प्रेम व्यावहारिक होना चाहिए, और तुम्हें जानवरों जैसे इस निकृष्ट और बेपरवाह जीवन को जीने के बजाय स्वतंत्र होने के रास्ते ढूँढ़ने चाहिए। तुम्हें एक ऐसा जीवन जीना चाहिए जो अर्थपूर्ण हो और जिसका कोई मोल हो; तुम्हें अपने-आपको मूर्ख नहीं बनाना चाहिए या अपने जीवन को एक खिलौना नहीं समझना चाहिए। परमेश्वर से प्रेम करने की चाह रखने वाले व्यक्ति के लिए कोई भी सत्य अप्राप्य नहीं है, और ऐसा कोई न्याय नहीं जिस पर वह अटल न रह सके। तुम्हें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए? तुम्हें परमेश्वर से कैसे प्रेम करना चाहिए और इस प्रेम का उपयोग करके उसकी इच्छा को कैसे संतुष्ट करना चाहिए? तुम्हारे जीवन में इससे बड़ा कोई मुद्दा नहीं है। सबसे बढ़कर, तुम्हारे अंदर ऐसी आकांक्षा और कर्मठता होनी चाहिए, न कि तुम्हें एक रीढ़विहीन और निर्बल प्राणी की तरह होना चाहिए। तुम्हें सीखना चाहिए कि एक अर्थपूर्ण जीवन का अनुभव कैसे किया जाता है, तुम्हें अर्थपूर्ण सत्यों का अनुभव करना चाहिए, और अपने-आपसे लापरवाही से पेश नहीं आना चाहिए। यह अहसास किए बिना, तुम्हारा जीवन तुम्हारे हाथ से निकल जाएगा; क्या उसके बाद तुम्हें परमेश्वर से प्रेम करने का दूसरा अवसर मिलेगा? क्या मनुष्य मरने के बाद परमेश्वर से प्रेम कर सकता है? तुम्हारे अंदर पतरस के समान ही आकांक्षाएँ और चेतना होनी चाहिए; तुम्हारा जीवन अर्थपूर्ण होना चाहिए, और तुम्हें अपने साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए! एक मनुष्य के रूप में, और परमेश्वर का अनुसरण करने वाले एक व्यक्ति के रूप में, तुम्हें इस योग्य होना होगा कि तुम बहुत ध्यान से यह विचार कर सको कि तुम्हें अपने जीवन के साथ कैसे पेश आना चाहिए, तुम्हें अपने-आपको परमेश्वर के सम्मुख कैसे अर्पित करना चाहिए, तुममें परमेश्वर के प्रति और अधिक अर्थपूर्ण विश्वास कैसे होना चाहिए और चूँकि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो, तुम्हें उससे कैसे प्रेम करना चाहिए कि वह ज्यादा पवित्र, ज्यादा सुंदर और बेहतर हो। आज, तुम केवल इस बात से संतुष्ट नहीं हो सकते कि तुम पर किस प्रकार विजय पाई जाती है, बल्कि तुम्हें उस पथ पर भी विचार करना होगा जिस पर तुम भविष्य में चलोगे। तुम पूर्ण बनाए जा सको, इसके लिए तुम्हारे अंदर आकांक्षाएँ और

साहस होना चाहिए, और तुम्हें हमेशा यह नहीं सोचते रहना चाहिए कि तुम असमर्थ हो। क्या सत्य के भी अपने चहेते होते हैं? क्या सत्य जानबूझकर लोगों का विरोध कर सकता है? यदि तुम सत्य का अनुसरण करते हो, तो क्या यह तुम पर हावी हो सकता है? यदि तुम न्याय के लिए मजबूती से खड़े रहते हो, तो क्या यह तुम्हें चित कर देगा? यदि जीवन की तलाश सच में तुम्हारी आकांक्षा है, तो क्या जीवन तुम्हें चकमा दे सकता है? यदि तुम्हारे अंदर सत्य नहीं है, तो इसका कारण यह नहीं है कि सत्य तुम्हें नजरअंदाज करता है, बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम सत्य से दूर रहते हो; यदि तुम न्याय के लिए मजबूती से खड़े नहीं हो सकते हो, तो इसका कारण यह नहीं है कि न्याय के साथ कुछ गड़बड़ है, बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम यह मानते हो कि यह तथ्यों के साथ मेल नहीं खाता; कई सालों तक जीवन की तलाश करने पर भी यदि तुमने जीवन प्राप्त नहीं किया है, तो इसका कारण यह नहीं है कि जीवन की तुम्हारे प्रति कोई चेतना नहीं है, बल्कि इसका कारण यह है कि तुम्हारे अंदर जीवन के प्रति कोई चेतना नहीं है, और तुमने जीवन को स्वयं से दूर कर दिया है; यदि तुम प्रकाश में जीते हो, लेकिन प्रकाश को पाने में असमर्थ रहे हो, तो इसका कारण यह नहीं है कि प्रकाश तुम्हें प्रकाशित करने में असमर्थ है, बल्कि यह है कि तुमने प्रकाश के अस्तित्व पर कोई ध्यान नहीं दिया है, और इसलिए प्रकाश तुम्हारे पास से खामोशी से चला गया है। यदि तुम अनुसरण नहीं करते हो, तो यही कहा जा सकता है कि तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जो किसी काम का नहीं है, तुम्हारे जीवन में बिलकुल भी साहस नहीं है, और तुम्हारे अंदर अंधकार की ताकतों का विरोध करने का हौसला नहीं है। तुम बहुत कमजोर हो! तुम उन शैतानी ताकतों से बचने में असमर्थ हो जिन्होंने तुम्हारी घेराबंदी कर रखी है, तुम ऐसा ही सकुशल और सुरक्षित जीवन जीना और अपनी अज्ञानता में मर जाना चाहते हो। जो तुम्हें हासिल करना चाहिए वह है जीत लिए जाने का तुम्हारा प्रयास; यह तुम्हारा परम कर्तव्य है। यदि तुम स्वयं पर विजय पाए जाने से संतुष्ट हो जाते हो तो तुम प्रकाश के अस्तित्व को दूर हटाते हो। तुम्हें सत्य के लिए कष्ट उठाने होंगे, तुम्हें सत्य के लिए समर्पित होना होगा, तुम्हें सत्य के लिए अपमान सहना होगा, और अधिक सत्य प्राप्त करने के लिए तुम्हें अधिक कष्ट उठाने होंगे। यही तुम्हें करना चाहिए। एक शांतिपूर्ण पारिवारिक जीवन के लिए तुम्हें सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए, और क्षणिक आनन्द के लिए तुम्हें अपने जीवन की गरिमा और सत्यनिष्ठा को नहीं खोना चाहिए। तुम्हें उस सबका अनुसरण करना चाहिए जो खूबसूरत और अच्छा है, और तुम्हें अपने जीवन में एक ऐसे मार्ग का अनुसरण करना चाहिए जो ज्यादा अर्थपूर्ण है। यदि तुम एक घिनौना जीवन जीते हो और किसी भी उद्देश्य को पाने की कोशिश नहीं

करते हो तो क्या तुम अपने जीवन को बर्बाद नहीं कर रहे हो? ऐसे जीवन से तुम क्या हासिल कर पाओगे? तुम्हें एक सत्य के लिए देह के सभी सुखों को छोड़ देना चाहिए, और थोड़े-से सुख के लिए सारे सत्यों का त्याग नहीं कर देना चाहिए। ऐसे लोगों में कोई सत्यनिष्ठा या गरिमा नहीं होती; उनके अस्तित्व का कोई अर्थ नहीं होता!

परमेश्वर मनुष्य का न्याय करता है और उसे ताड़ना देता है क्योंकि यह उसके कार्य की मांग है, और मनुष्य को इसकी आवश्यकता भी है। मनुष्य को ताड़ना दिए जाने और उसका न्याय किए जाने की आवश्यकता है, तभी वह परमेश्वर से प्रेम कर सकता है। आज, तुम लोग पूरी तरह से आश्वस्त हो चुके हो, लेकिन जैसे ही थोड़ी-सी मुश्किल आती है, तो तुम परेशान हो जाते हो; तुम्हारा आध्यात्मिक कद अभी भी बहुत छोटा है, और गहरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए तुम लोगों को अभी भी ऐसी ताड़ना और न्याय का अनुभव करने की आवश्यकता है। आज, तुम लोगों में परमेश्वर के प्रति थोड़ी श्रद्धा है, तुम परमेश्वर का भय मानते हो, और जानते हो कि वह सच्चा परमेश्वर है, परंतु तुम लोगों में उसके लिए प्रगाढ़ प्रेम नहीं है, और तुमने उससे शुद्ध प्रेम तो किया ही नहीं है ; तुम लोगों का ज्ञान बहुत ही सतही है, और तुम्हारा आध्यात्मिक कद अभी भी नाकाफी है। जब तुम लोग सचमुच किसी स्थिति का सामना करते हो, तो तुम अब तक गवाही नहीं दे सके हो, तुम्हारा प्रवेश बहुत कम सक्रिय है, और तुममें अभ्यास करने की कोई समझ नहीं है। अधिकतर लोग निष्क्रिय और सुस्त होते हैं; वे केवल गुप्त रूप से अपने हृदय में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, किंतु उनके पास अभ्यास का कोई तरीका नहीं होता, न ही वे अपने लक्ष्यों को लेकर स्पष्ट होते हैं। पूर्ण बनाए गए लोगों में न केवल सामान्य मानवता होती है, बल्कि उनमें ऐसे सत्य होते हैं जो चेतना के मापदंडों से बढ़कर होते हैं, और जो चेतना के मानकों से ऊँचे हैं; वे परमेश्वर के प्रेम का प्रतिफल देने के लिए न केवल अपनी चेतना का इस्तेमाल करते हैं, बल्कि, वे परमेश्वर को जान चुके होते हैं, यह देख चुके होते हैं कि परमेश्वर प्रिय है, वह मनुष्य के प्रेम के योग्य है, परमेश्वर में प्रेम करने योग्य इतना कुछ है कि मनुष्य उसे प्रेम किए बिना नहीं रह सकता! वे लोग जिन्हें पूर्ण बनाया जा चुका है उनका परमेश्वर के लिए प्रेम उनकी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए है। उनका प्रेम स्वैच्छिक है, एक ऐसा प्रेम जो बदले में कुछ भी नहीं चाहता, और जो सौदेबाज़ी नहीं है। परमेश्वर से उनके प्रेम का कारण उसके बारे में उनके ज्ञान को छोड़कर और कुछ भी नहीं है। ऐसे लोग यह परवाह नहीं करते कि परमेश्वर उन पर अनुग्रह करेगा कि नहीं, और वे परमेश्वर को संतुष्ट करने के सिवा और किसी भी चीज से तृप्त नहीं होते हैं। वे

परमेश्वर से मोल-भाव नहीं करते, न ही वे परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को चेतना से मापते हैं : "तुमने मुझे दिया है, तो उसके बदले में मैं तुमसे प्रेम करता हूँ; यदि तुम मुझे कुछ नहीं देते, तो बदले में मेरे पास भी तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है।" जिन्हें पूर्ण बनाया गया है, वे हमेशा यह विश्वास करते हैं : "परमेश्वर सृष्टिकर्ता है, और वह हम पर अपना कार्य करता है। चूँकि मेरे पास पूर्ण बनाए जाने का यह अवसर, परिस्थिति और योग्यता है, इसीलिए एक अर्थपूर्ण जीवन बिताना ही मेरा लक्ष्य होना चाहिए, और मुझे परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहिए।" यह बिलकुल वैसा ही है जैसा पतरस ने अनुभव किया था : जब वह सबसे कमजोर स्थिति में था, तब उसने प्रार्थना की और कहा, "हे परमेश्वर! तू जानता है कि मैंने समय और स्थान की परवाह न करते हुए, हमेशा तुझे याद किया है। तू जानता है कि चाहे कोई भी समय और स्थान हो, मैं तुझसे प्रेम करना चाहता हूँ, परंतु मेरा आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है, मैं बहुत कमजोर और शक्तिहीन हूँ, मेरा प्रेम बहुत सीमित है, और तेरे प्रति मेरी सत्यनिष्ठा बहुत कम है। तेरे प्रेम की तुलना में, मैं जीने के योग्य भी नहीं हूँ। मैं केवल यही कामना करता हूँ कि मेरा जीवन व्यर्थ न हो, और मैं न केवल तेरे प्रेम का प्रतिफल दे सकूँ, बल्कि, इसके अतिरिक्त जो कुछ भी मेरे पास है वह सब तुझे समर्पित कर सकूँ। यदि मैं तुझे संतुष्ट कर सकूँ, तो एक प्राणी के नाते, मेरे मन में शांति होगी, और मैं कुछ और नहीं मांगूंगा। यद्यपि अभी मैं कमजोर और शक्तिहीन हूँ, फिर भी मैं तेरे उपदेशों को नहीं भूलूंगा, और मैं तेरे प्रेम को नहीं भूलूंगा। अभी तो मैं बस तेरे प्रेम का प्रतिफल देने के सिवा कुछ और नहीं कर रहा हूँ। हे परमेश्वर, मुझे बहुत बुरा लग रहा है! मेरे हृदय में तेरे लिए जो प्रेम है उसे मैं तुझे वापस कैसे लौटा सकता हूँ, मेरी क्षमता में जो भी है उसे मैं कैसे कर सकता हूँ, मैं तेरी इच्छाओं को पूरा करने के योग्य कैसे बन सकता हूँ, और जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब कुछ तुझे भेंट चढ़ाने के योग्य कैसे बन सकता हूँ? तू मनुष्य की कमजोरी को जानता है; मैं तेरे प्रेम के काबिल कैसे हो सकता हूँ? हे परमेश्वर! तू जानता है कि मेरा आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है, मेरा प्रेम बहुत थोड़ा-सा है। इस प्रकार की परिस्थितियों में मैं अपनी क्षमतानुसार सर्वोत्तम कार्य कैसे कर सकता हूँ? मैं जानता हूँ कि मुझे तेरे प्रेम का प्रतिफल देना चाहिए, मैं जानता हूँ कि मुझे वह सब कुछ देना चाहिए जो मेरे पास है, परंतु आज मेरा आध्यात्मिक कद बहुत छोटा है। मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू मुझे सामर्थ्य और आत्मविश्वास दे, जिससे तुझे अर्पित करने के लिए मैं और अधिक शुद्ध प्रेम को प्राप्त करने के काबिल हो जाऊँ, और जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब कुछ अर्पित कर पाऊँ; न केवल मैं तेरे प्रेम का प्रतिफल देने के योग्य हो जाऊँगा, बल्कि तेरी ताड़ना, न्याय और परीक्षणों, यहाँ तक

कि कठिन अभिशापों का भी अनुभव करने के योग्य हो जाऊँगा। तूने मुझे अपना प्रेम दिखा दिया, और मैं ऐसा नहीं कर सकता कि तुझसे प्रेम न करूँ। आज भले ही मैं कमजोर और शक्तिहीन हूँ, फिर भी मैं तुझे कैसे भूल सकता हूँ? तेरे प्रेम, ताड़ना और न्याय से मैंने तुझे जाना है, फिर भी तेरे प्रेम की पूर्ति करने में मैं ख़ुद को असमर्थ पा रहा हूँ, क्योंकि तू महान है। जो कुछ मेरे पास है, वह सब-कुछ मैं सृष्टिकर्ता को कैसे अर्पित कर सकता हूँ?" पतरस की विनती ऐसी थी, फिर भी उसका आध्यात्मिक कद बहुत मामूली था। उस क्षण, उसने ऐसा महसूस किया मानो एक कटार उसके हृदय के आर-पार हो गई हो। वह अत्यंत दुखी था; वह नहीं जानता था कि ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए। फिर भी वह लगातार प्रार्थना करता रहा : "हे परमेश्वर! मनुष्य का आध्यात्मिक कद एक बच्चे जैसा है, उसकी चेतना बहुत कमजोर है, और तेरा प्रेम ही एकमात्र ऐसी चीज है जिसका प्रतिफल मैं दे सकता हूँ। आज, मैं नहीं जानता कि तेरी इच्छाओं को कैसे संतुष्ट करूँ, और मैं बस वह सब करना चाहता हूँ जो मैं कर सकता हूँ, वह सब तुझे देना चाहता हूँ जो मेरे पास है और अपना सब-कुछ तुझे अर्पित कर देना चाहता हूँ। तेरे न्याय के बावजूद, तेरी ताड़नाओं के बावजूद, इसके बावजूद कि तू मुझे क्या देता है, इसके बावजूद कि तू मुझसे क्या ले लेता है, मुझे तेरे प्रति जरा-सी भी शिकायत से मुक्त कर दे। कई बार, जब तूने मुझे ताड़ना दी और मेरा न्याय किया, तो मैं मन ही मन भुनभुनाया करता था, और मैं शुद्ध नहीं हो पाता था या तेरी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता था। मैंने मजबूरी में ही तेरे प्रेम का प्रतिफल दिया था, और इस क्षण मैं अपने-आपसे और भी अधिक नफरत कर रहा हूँ।" चूँकि पतरस परमेश्वर से अधिक शुद्ध प्रेम करने का प्रयास कर रहा था, इसलिए उसने ऐसी प्रार्थना की थी। वह खोज रहा था, और विनती कर रहा था, उससे भी बढ़कर, वह खुद को दोष दे रहा था, परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार कर रहा था। उसने महसूस किया कि वह परमेश्वर का ऋणी है, उसे अपने-आपसे नफरत होने लगी, लेकिन वह थोड़ा उदास और निढाल भी था। उसे हमेशा ऐसा महसूस होता था, मानो वह परमेश्वर की इच्छाओं को पूरा करने लायक नहीं है, और वह अपना सर्वोत्तम देने में असमर्थ है। ऐसी स्थितियों में, पतरस ने अय्यूब के विश्वास का ही अनुसरण किया। उसने देखा था कि अय्यूब का विश्वास कितना बड़ा था, क्योंकि अय्यूब ने जान लिया था कि उसका सब कुछ परमेश्वर का दिया हुआ है, और अगर परमेश्वर सब कुछ वापस ले लेता है तो यह स्वभाविक ही है, परमेश्वर जिसको चाहेगा उसको देगा—ऐसा था परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव। अय्यूब ने कोई शिकायत नहीं की थी, और वह तब भी परमेश्वर की स्तुति कर रहा था। पतरस भी अपने-आपको जानता था, उसने मन ही मन प्रार्थना की, "आज

अपनी चेतना का इस्तेमाल करके और तेरे प्रेम का बदला चुका कर मुझे संतुष्ट नहीं होना चाहिए, मैं तुझे चाहे जितना प्रेम वापस लौटाऊँ उससे भी मुझे संतुष्ट नहीं होना चाहिए, क्योंकि मेरे विचार बहुत ही भ्रष्ट हैं, और मैं तुझे सृष्टिकर्ता के रूप में देख पाने में असमर्थ हूँ। क्योंकि मैं अभी भी तुझसे प्रेम करने योग्य नहीं हूँ, मुझे वह योग्यता हासिल करनी होगी जिससे मेरे पास जो भी है, वह सब कुछ मैं तुझे अर्पित कर सकूँ, और मैं यह खुशी से करूँगा। मुझे वह सब कुछ जानना होगा जो तूने किया है, और मेरे पास कोई और विकल्प नहीं है, मुझे तेरे प्रेम को देखना होगा, मुझे तेरी स्तुति करने और तेरे पवित्र नाम का गुणगान करने के योग्य होना होगा, ताकि तू मेरे ज़रिए महान महिमा प्राप्त कर सके। मैं तेरी इस गवाही में मजबूती के साथ खड़ा होने को तैयार हूँ। हे परमेश्वर! तेरा प्रेम कितना बहुमूल्य और सुंदर है; मैं उस दुष्ट के हाथों में जीने की कामना कैसे कर सकता था? क्या मुझे तूने नहीं बनाया था? मैं शैतान के अधीन कैसे रह सकता था? मैं अपने समूचे अस्तित्व के साथ तेरी ताड़नाओं में रहना अधिक पसंद करूंगा। मैं उस दुष्ट के अधीन नहीं जीना चाहता। यदि मुझे पवित्र बनाया जा सके और यदि मैं अपना सब कुछ तुझे अर्पित कर सकूँ, तो मैं अपने शरीर और मन को तेरे न्याय और ताड़ना की भेंट चढ़ाने को तैयार हूँ, क्योंकि मैं शैतान से घृणा करता हूँ, मैं उसके अधीन जीवन बिताने को तैयार नहीं हूँ। मेरा न्याय करके तू अपना धार्मिक स्वभाव दर्शाता है; मैं खुश हूँ, और मुझे जरा-सी भी शिकायत नहीं है। यदि मैं एक प्राणी होने के कर्तव्य को निभा सकूँ, तो मैं तैयार हूँ कि मेरा संपूर्ण जीवन तेरे न्याय से जुड़ जाए, जिसके जरिए मैं तेरे धार्मिक स्वभाव को जान पाऊँगा, और शैतान के प्रभाव से अपने-आपको छुड़ा पाऊँगा।" पतरस ने हमेशा इस प्रकार प्रार्थना की, हमेशा इस प्रकार ही खोज की, और सापेक्ष रूप से कहें तो, वह एक ऊँचे आयाम पर पहुँच गया। वह न केवल परमेश्वर के प्रेम का प्रतिफल दे पाया, बल्कि, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसने एक प्राणी के तौर पर भी अपना कर्तव्य निभाया। न केवल उसकी चेतना ने उसे दोषी नहीं ठहराया, बल्कि वह चेतना के मानकों से भी ऊँचा उठ सका। उसकी प्रार्थनाएँ लगातार ऊपर परमेश्वर के सामने पहुँचती रहीं, कुछ इस तरह कि उसकी आकांक्षाएँ और भी ऊँची हो गईं, और परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम और भी विशाल हो गया। यद्यपि उसने भयानक पीड़ा सही, फिर भी वह परमेश्वर से प्रेम करना नहीं भूला, और फिर भी उसने परमेश्वर की इच्छा को समझने की क्षमता प्राप्त करने का प्रयास किया। अपनी प्रार्थनाओं में उसने ये बातें कहीं : तेरे प्रेम का प्रतिफल देने के अलावा मैंने और कुछ नहीं किया है। "मैंने शैतान के सामने तेरे लिए गवाही नहीं दी है, मैंने अपने-आपको शैतान के प्रभाव से आजाद नहीं किया है, और मैं अब

भी देह की इच्छाओं में ही जी रहा हूँ। मैं अपने प्रेम का इस्तेमाल करके शैतान को हराने की, उसे लज्जित करने की, और इस प्रकार तेरी इच्छा को संतुष्ट करने की कामना कर रहा हूँ। मैं तुझे अपना सर्वस्व अर्पित करना चाहता हूँ, मैं अपना थोड़ा-सा भी अंश शैतान को नहीं देना चाहता, क्योंकि शैतान तेरा शत्रु है।" उसने इस दिशा में जितना ज्यादा प्रयास किया, उतना ही ज्यादा वह प्रेरित हुआ, और उतना ही ज्यादा इन विषयों पर उसका ज्ञान बढ़ता गया। इसका अहसास किए बिना ही, उसे यह ज्ञान हो गया कि उसे अपने-आपको शैतान के प्रभाव से मुक्त कर लेना चाहिए, और पूरी तरह परमेश्वर के पास लौट आना चाहिए। उसने ऐसा आयाम हासिल कर लिया था। वह शैतान के प्रभाव से ऊपर उठ रहा था, और वह शरीर के सुख और आनंद से अपने-आपको मुक्त कर रहा था, वह परमेश्वर की ताड़ना और न्याय दोनों को और अधिक गंभीरता से अनुभव करने को तैयार था। उसने कहा, "यद्यपि मैं तेरी ताड़नाओं और तेरे न्याय के बीच रहता हूँ, इससे जुड़ी कठिनाई के बावजूद, मैं शैतान के अधीन जीवन व्यतीत नहीं करना चाहता, मैं शैतान के छल-कपट को तो बिल्कुल नहीं सहना चाहता। मैं तेरे अभिशापों के बीच जी कर आनंदित हूँ, और मेरे लिए शैतान के आशीषों में जीना कष्टदायक है। तेरे न्याय के बीच जीवन बिताते हुए मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, क्योंकि तेरे न्याय में जीवन बिताकर मुझे बहुत आनंद प्राप्त होता है। तेरी ताड़ना और न्याय धार्मिक और पवित्र हैं; ये मुझे शुद्ध करने और इससे भी बढ़कर मुझे बचाने के लिए हैं। मैं अपना सारा जीवन तेरे न्याय में बिताना चाहता हूँ ताकि मैं तेरी देखरेख में रहूँ। मैं एक घड़ी भी शैतान के अधिकार क्षेत्र में रहने को तैयार नहीं हूँ; मैं तेरे द्वारा शुद्ध होना चाहता हूँ; भले ही मुझे कष्ट झेलने पड़ें, मैं शैतान द्वारा शोषित होने और छले जाने को तैयार नहीं हूँ। मुझ प्राणी को, तेरे द्वारा इस्तेमाल किया जाना चाहिए, तेरे द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए, तेरे द्वारा न्याय दिया जाना चाहिए, और तेरे द्वारा ताड़ना दी जानी चाहिए। यहाँ तक कि मुझे तेरे द्वारा शापित भी किया जाना चाहिए। जब तू मुझे आशीष देने की इच्छा करता है तो मेरा हृदय आनंदित हो उठता है, क्योंकि मैं तेरे प्रेम को देख चुका हूँ। तू सृष्टिकर्ता है, और मैं इस सृष्टि का एक प्राणी हूँ : तुझको धोखा देकर, मुझे शैतान के अधिकार क्षेत्र में नहीं रहना चाहिए, न ही मुझे शैतान के हाथों शोषित होना चाहिए। शैतान के लिए जीने से अच्छा है, मैं तेरा घोड़ा या बैल बन जाऊँ। मैं बिना भौतिक सुखों के, तेरी ताड़नाओं में रहकर जीवन व्यतीत करना ज्यादा पसंद करूँगा, और इसमें मुझे आनंद मिलेगा, फिर भले ही मैं तेरा अनुग्रह गँवा दूँ। हालाँकि तेरा अनुग्रह मेरे साथ नहीं है, फिर भी मैं तेरे द्वारा ताड़ना दिए जाने और न्याय किए जाने से प्रसन्न हूँ; यह तेरा सर्वोत्तम आशीष है, तेरा सबसे बड़ा

अनुग्रह है। हालाँकि मेरे प्रति तू हमेशा प्रतापी और रोषपूर्ण रहा है, फिर भी मैं तुझे नहीं छोड़ सकता, मैं तुझसे बेहद प्रेम करता हूँ। मैं तेरे घर में रहना पसंद करूँगा, मैं तेरे द्वारा शापित और प्रताड़ित किया जाना, और तेरे प्रेम में पीड़ित होना पसंद करूँगा, मैं शैतान के कब्जे में रहकर जीने को तैयार नहीं हूँ, न ही मैं केवल देह के लिए भाग-दौड़ करने और व्यस्त रहने को तैयार हूँ, सिर्फ देह के लिए जीने को तो बिलकुल भी नहीं।" पतरस का प्रेम पवित्र प्रेम था। यह पूर्ण बनाए जाने का अनुभव है, यह पूर्ण बनाए जाने का सर्वोच्च आयाम है; और इससे अधिक सार्थक जीवन नहीं हो सकता। उसने परमेश्वर की ताड़ना और न्याय को स्वीकार किया, उसने परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को बड़े चाव से देखा, और पतरस में इससे अधिक मूल्यवान और कुछ भी नहीं था। उसने कहा, "शैतान मुझे भौतिक सुख देता है, परंतु मुझे इन सुखों का चाव नहीं है। मुझ पर परमेश्वर की ताड़ना और न्याय आते हैं—मैं इसी में अनुग्रहित हूँ, और मुझे इसी में आनंद मिलता है, इसी में मैं धन्य हूँ। यदि परमेश्वर का न्याय न होता, तो मैं परमेश्वर से कभी प्रेम न कर पाता, मैं अभी भी शैतान के कब्जे में ही रह रहा होता, मैं उसी के नियंत्रण और आदेश के अधीन होता। यदि ऐसा होता, तो मैं कभी भी एक सच्चा इंसान न बन पाता, क्योंकि मैं परमेश्वर को संतुष्ट न कर पाता, और मैं पूरी तरह से खुद को परमेश्वर के प्रति समर्पित न कर पाता। भले ही परमेश्वर मुझे आशीष न दे, और मुझे बिना किसी भीतरी सुख के इसी तरह छोड़ दे, मानो एक आग मेरे भीतर जल रही हो, और बिना किसी शांति या आनंद के छोड़ दे, भले ही परमेश्वर की ताड़ना और अनुशासन कभी मुझसे दूर नहीं हुआ, फिर भी मैं परमेश्वर की ताड़ना और न्याय में उसके धार्मिक स्वभाव को देख पाता हूँ। मैं इसी में आनंदित हूँ; जीवन में इससे बढ़कर कोई मूल्यवान और अर्थपूर्ण बात नहीं है। यद्यपि उसकी सुरक्षा और देखभाल क्रूर ताड़ना, न्याय, अभिशाप और पीड़ा बन चुके हैं, फिर भी मैं इन चीज़ों में आनंदित होता हूँ, क्योंकि वे मुझे बेहतर ढंग से शुद्ध कर सकते हैं, बदल सकते हैं, मुझे परमेश्वर के नजदीक लाकर, परमेश्वर से और अधिक प्रेम करने योग्य बना सकते हैं, परमेश्वर के प्रति मेरे प्रेम को और अधिक शुद्ध कर सकते हैं। यह मुझे इस योग्य बनाता है कि मैं एक प्राणी के रूप में अपने कर्तव्य को पूरा करूँ, यह मुझे परमेश्वर के सामने और शैतान के प्रभाव से दूर ले जाता है, ताकि मैं आगे से शैतान की सेवा न करूँ। जब मैं शैतान के कब्जे में जीवन नहीं बिताऊँगा, बिना हिचकिचाए, अपना सब कुछ जो मेरे पास है और वह सब कुछ जो मैं कर सकूँ, उसे परमेश्वर को अर्पित करने योग्य हो जाऊँगा—तभी मैं पूरी तरह से संतुष्ट होऊँगा। मुझे परमेश्वर की ताड़ना और न्याय ने ही बचाया है, मेरे जीवन को परमेश्वर की ताड़नाओं और न्याय से अलग

नहीं किया जा सकता। पृथ्वी पर मेरा जीवन शैतान के कब्जे में है, और यदि मुझे परमेश्वर की ताड़ना और न्याय की देखभाल और सुरक्षा न मिली होती, तो मैं हमेशा शैतान के कब्जे में ही जीवन बिताता, और तब मेरे पास न तो सार्थक जीवन जीने का अवसर होता, न ही कोई साधन होता। अगर परमेश्वर की ताड़ना और न्याय मुझे कभी छोड़ें, तो मैं परमेश्वर द्वारा शुद्ध किया जा सकता हूँ। परमेश्वर के कठोर वचनों, धार्मिक स्वभाव, और उसके प्रतापी न्याय के कारण ही मैंने सर्वोच्च सुरक्षा प्राप्त की है, और मैं प्रकाश में रहा हूँ, और मैंने उसका आशीष प्राप्त किया है। परमेश्वर द्वारा शुद्ध किया जाना, अपने-आपको शैतान से मुक्त करा पाना, और परमेश्वर के प्रभुत्व में जीवन बिताना—यह आज मेरे जीवन का सबसे बड़ा आशीष है।" यह पतरस द्वारा अनुभव किया गया सर्वोच्च आयाम है।

यह बिल्कुल वही अवस्था है जो पूर्ण होने के बाद मनुष्य को प्राप्त करनी चाहिए। यदि तुम इतना हासिल नहीं कर सकते, तो तुम एक सार्थक जीवन नहीं बिता सकते। मनुष्य शरीर के बीच रहता है, जिसका मतलब है कि वह मानवीय नरक में रहता है, और परमेश्वर के न्याय और ताड़ना के बगैर, मनुष्य शैतान के समान ही अशुद्ध है। मनुष्य पवित्र कैसे हो सकता है? पतरस मानता था कि परमेश्वर की ताड़ना और उसका न्याय मनुष्य की सबसे बड़ी सुरक्षा और महान अनुग्रह है। परमेश्वर की ताड़ना और न्याय से ही मनुष्य जाग सकता है, और शरीर और शैतान से घृणा कर सकता है। परमेश्वर का कठोर अनुशासन मनुष्य को शैतान के प्रभाव से मुक्त करता है, उसे उसके खुद के छोटे-से संसार से मुक्त करता है, और उसे परमेश्वर की उपस्थिति के प्रकाश में जीवन बिताने का अवसर देता है। ताड़ना और न्याय से बेहतर कोई उद्धार नहीं है! पतरस ने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर! जब तक तू मुझे ताड़ना देता और मेरा न्याय करता रहेगा, मुझे पता होगा कि तूने मुझे नहीं छोड़ा है। भले ही तू मुझे आनंद या शांति न दे, और मुझे कष्ट में रहने दे, और मुझे अनगिनत ताड़नाओं से प्रताड़ित करे, किंतु जब तक तू मुझे छोड़ेगा नहीं, तब तक मेरा हृदय सुकून में रहेगा। आज, तेरी ताड़ना और न्याय मेरी बेहतरीन सुरक्षा और महानतम आशीष बन गए हैं। जो अनुग्रह तू मुझे देता है वह मेरी सुरक्षा करता है। जो अनुग्रह आज तू मुझे देता है वह तेरे धार्मिक स्वभाव की अभिव्यक्ति है, और ताड़ना और न्याय है; इसके अतिरिक्त, यह एक परीक्षा है, और इससे भी बढ़कर, यह एक कष्टों भरा जीवनयापन है।" पतरस ने दैहिक सुख को एक तरफ रखकर, एक ज्यादा गहरे प्रेम और ज्यादा बड़ी सुरक्षा की खोज की, क्योंकि उसने परमेश्वर की ताड़ना और न्याय से बहुत सारा अनुग्रह हासिल कर लिया था। अपने जीवन में, यदि मनुष्य शुद्ध होकर अपने स्वभाव में परिवर्तन लाना

चाहता है, यदि वह एक सार्थक जीवन बिताना चाहता है, और एक प्राणी के रूप में अपने कर्तव्य को निभाना चाहता है, तो उसे परमेश्वर की ताड़ना और न्याय को स्वीकार करना चाहिए, और उसे परमेश्वर के अनुशासन और प्रहार को अपने-आपसे दूर नहीं होने देना चाहिए, ताकि वह खुद को शैतान की चालाकी और प्रभाव से मुक्त कर सके, और परमेश्वर के प्रकाश में जीवन बिता सके। यह जान लो कि परमेश्वर की ताड़ना और न्याय प्रकाश है, मनुष्य के उद्धार का प्रकाश है, और मनुष्य के लिए इससे बेहतर कोई आशीष, अनुग्रह या सुरक्षा नहीं है। मनुष्य शैतान के प्रभाव में रहता है, और देह में जीता है; यदि उसे शुद्ध न किया जाए और उसे परमेश्वर की सुरक्षा प्राप्त न हो, तो वह और भी ज्यादा भ्रष्ट हो जाएगा। यदि वह परमेश्वर से प्रेम करना चाहता है, तो उसे शुद्ध होना और उद्धार पाना होगा। पतरस ने प्रार्थना की, "परमेश्वर, जब तू मुझ पर दया दिखाता है तो मैं प्रसन्न हो जाता हूँ, और मुझे सुकून मिलता है; जब तू मुझे ताड़ना देता है, तब मुझे और भी ज्यादा सुकून और आनंद मिलता है। यद्यपि मैं कमजोर हूँ, और अकथनीय कष्ट सहता हूँ, यद्यपि मेरे जीवन में आँसू और उदासी है, लेकिन तू जानता है कि यह उदासी मेरी अवज्ञा और कमजोरी के कारण है। मैं रोता हूँ क्योंकि मैं तेरी इच्छाओं को संतुष्ट नहीं कर पाता, मुझे दुख और पछतावा है, क्योंकि मैं तेरी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर रहा हूँ, लेकिन मैं इस आयाम को हासिल करने के लिए तैयार हूँ, मैं तुझे संतुष्ट करने के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। तेरी ताड़ना ने मुझे सुरक्षा दी है, और मेरा श्रेष्ठतम उद्धार किया है; तेरा न्याय तेरी सहनशीलता और धीरज को ढँक देता है। तेरी ताड़ना और न्याय के बगैर, मैं तेरी दया और करूणा का आनंद नहीं ले पाऊँगा। आज, मैं और भी अधिक देख रहा हूँ कि तेरा प्रेम स्वर्ग से भी ऊँचा उठकर अन्य सभी चीजों पर छा गया है। तेरा प्रेम मात्र दया और करूणा नहीं है; बल्कि उससे भी बढ़कर, यह ताड़ना और न्याय है। तेरी ताड़ना और न्याय ने मुझे बहुत कुछ दिया है। तेरी ताड़ना और न्याय के बगैर, एक भी व्यक्ति शुद्ध नहीं हो सकता, और एक भी व्यक्ति सृष्टिकर्ता के प्रेम को अनुभव नहीं कर सकता। यद्यपि मैंने सैकड़ों परीक्षण और क्लेश सहे हैं, यहाँ तक कि मौत को भी करीब से देखा है, फिर भी मुझे इन्हीं के कारण तुझे जानने और सर्वोच्च उद्धार प्राप्त करने का अवसर मिला है। यदि तेरी ताड़ना, न्याय और अनुशासन मुझसे दूर हो गए होते, तो मैं अंधकार में शैतान के अधीन जीवन बिता रहा होता। मनुष्य की देह का क्या लाभ है? यदि तेरी ताड़ना और न्याय मुझे छोड़कर चले गए होते, तो ऐसा लगता मानो तेरे आत्मा ने मुझे छोड़ दिया है, मानो अब से तू मेरे साथ नहीं है। यदि ऐसा हो जाता, तो मैं कैसे जी पाता? यदि तू मुझे बीमारी देकर मेरी स्वतंत्रता छीन लेता है, तो

भी मैं जीवित रह सकता हूँ, परंतु अगर तेरी ताड़ना और न्याय मुझे छोड़ दें, तो मेरे पास जीने का कोई रास्ता न होगा। यदि मेरे पास तेरी ताड़ना और न्याय न होता, तो मैंने तेरे प्रेम को खो दिया होता, एक ऐसा प्रेम जो इतना गहरा है कि मैं इसे शब्दों में बयाँ नहीं कर सकता। तेरे प्रेम के बिना, मैं शैतान के कब्जे में जी रहा होता, और तेरे महिमामय मुखड़े को न देख पाता। मैं कैसे जीवित रह पाता? मैं ऐसा अंधकार, ऐसा जीवन सहन नहीं कर पाता। मेरे साथ तेरे होने का अर्थ है कि मैं तुझे देख रहा हूँ, तो मैं तुझे कैसे छोड़ सकता हूँ? मैं तुझसे विनती करता हूँ, याचना करता हूँ, तू मेरे सबसे बड़े सुख को मत छीन, भले ही ये आश्वासन के मात्र थोड़े से शब्द ही क्यों न हों। मैंने तेरे प्रेम का आनंद लिया है, और आज मैं तुझसे दूर नहीं रह सकता; मैं तुझसे कैसे प्रेम न करूँ? मैंने तेरे प्रेम के कारण दुख में बहुत आँसू बहाए हैं, फिर भी हमेशा यही लगा है कि इस तरह का जीवन अधिक अर्थपूर्ण है, मुझे समृद्ध बनाने में अधिक सक्षम है, मुझे बदलने में अधिक सक्षम है, और वह सत्य हासिल करने में अधिक सक्षम है जो सभी प्राणियों के पास होना चाहिए।"

मनुष्य का सारा जीवन शैतान के अधीन बीतता है, और ऐसा एक भी इंसान नहीं है जो अपने बलबूते पर खुद को शैतान के प्रभाव से आजाद कर सके। सभी लोग भ्रष्टता और खोखलेपन में, बिना किसी अर्थ या मूल्य के, एक अशुद्ध संसार में रहते हैं; वे शरीर के लिए, वासना के लिए और शैतान के लिए बहुत लापरवाही भरा जीवन बिताते हैं। उनके अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। मनुष्य उस सत्य को खोज पाने में असमर्थ है जो उसे शैतान के प्रभाव से मुक्त कर दे। यद्यपि मनुष्य परमेश्वर पर विश्वास करता है, बाइबल पढ़ता है, फिर भी वह यह नहीं समझ पाता कि अपने-आपको शैतान के नियंत्रण से कैसे मुक्त करे। विभिन्न युगों में, बहुत ही कम लोगों ने इस रहस्य को जाना है, बहुत ही कम लोगों ने इसे समझा है। वैसे तो, मनुष्य शैतान से और देह से घृणा करता है, फिर भी वह नहीं जानता कि अपने-आपको शैतान के लुभावने प्रभाव से कैसे बचाए। क्या आज भी तुम लोग शैतान के अधीन नहीं हो? तुम लोग अपने अवज्ञाकारी कार्यों पर पछताते नहीं हो, और यह तो बिलकुल भी महसूस नहीं करते कि तुम अशुद्ध और अवज्ञाकारी हो। परमेश्वर का विरोध करके भी तुम लोगों को मन की शांति मिलती है और तुम्हें शांतचित्तता का एहसास होता है। क्या तुम्हारी यह शांतचित्तता इसलिए नहीं है क्योंकि तुम भ्रष्ट हो? क्या यह मन की शांति तुम्हारी अवज्ञा से नहीं उपजती है? मनुष्य एक मानवीय नरक में रहता है, वह शैतान के अंधेरे प्रभाव में रहता है; पूरी धरती पर, प्रेत मनुष्य के साथ-साथ जीते हैं, और मनुष्य की देह का अतिक्रमण करते हैं। पृथ्वी पर तुम

किसी सुंदर स्वर्गलोक में नहीं रहते। जहाँ तुम रहते हो वह दुष्ट आत्मा का संसार है, एक मानवीय नरक है, अधोलोक है। यदि मनुष्य को शुद्ध न किया जाए, तो वह मलिन ही रहता है; यदि परमेश्वर उसकी सुरक्षा और देखभाल न करे, तो वह शैतान का बंदी ही बना रहता है; यदि उसका न्याय और उसकी ताड़ना नहीं की जाए, तो उसके पास शैतान के बुरे प्रभाव के दमन से बचने का कोई उपाय नहीं होगा। जो भ्रष्ट स्वभाव तुम दिखाते हो और जो अवज्ञाकारी व्यवहार तुम करते हो, वह इस बात को साबित करने के लिए काफी है कि तुम अभी भी शैतान के अधीन जी रहे हो। यदि तुम्हारे मस्तिष्क और विचारों को शुद्ध न किया गया, और तुम्हारे स्वभाव का न्याय न हुआ और उसे ताड़ना न दी गई, तो इसका अर्थ है कि तुम्हारे पूरे व्यक्तित्व को अभी भी शैतान के द्वारा ही नियंत्रित किया जा रहा है, तुम्हारा मस्तिष्क शैतान के द्वारा ही नियंत्रित किया जा रहा है, तुम्हारे विचार कपटपूर्ण तरीके से शैतान के द्वारा ही इस्तेमाल किए जा रहे हैं, और तुम्हारा पूरा अस्तित्व शैतान के हाथों नियंत्रित हो रहा है। क्या तुम जानते हो, तुम फिलहाल पतरस के स्तर से कितनी दूर हो? क्या तुममें वह योग्यता है? तुम आज की ताड़ना और न्याय के विषय में कितना जानते हो? जितना पतरस जान पाया उसमें से तुम कितना जान पाए हो? यदि तुम आज जानने में असमर्थ हो, तो क्या तुम इस ज्ञान को भविष्य में जानने योग्य हो पाओगे? तुम जैसा आलसी और डरपोक व्यक्ति परमेश्वर के न्याय और ताड़ना को जानने में असमर्थ होता है। यदि तुम दैहिक शांति और दैहिक सुख की खोज करते हो, तो तुम्हारे पास शुद्ध होने का कोई उपाय नहीं होगा, और अंत में तुम शैतान के पास ही लौट जाओगे, क्योंकि जिस प्रकार का जीवन तुम जीते हो, वह शैतानी और दैहिक है। आज स्थिति यह है कि बहुत से लोग जीवन के विकास की खोज नहीं करते, जिसका मतलब है कि वे शुद्ध होने या जीवन के अधिक गहरे अनुभव में प्रवेश करने की परवाह नहीं करते। इस प्रकार कैसे उन्हें पूर्ण बनाया जा सकता है? जो लोग जीवन के विकास की खोज नहीं करते, उनके पास पूर्ण किए जाने का कोई अवसर नहीं होता, और जो लोग परमेश्वर के ज्ञान की खोज नहीं करते, और अपने स्वभाव में बदलाव का प्रयास नहीं करते, वे शैतान के बुरे प्रभाव से बच पाने में असमर्थ होते हैं। वे लोग परमेश्वर के विषय में अपने ज्ञान और अपने स्वभाव में परिवर्तन के प्रति गंभीर नहीं होते, ठीक उनकी तरह जो सिर्फ धर्म में विश्वास करते हैं, जो मात्र धार्मिक रस्में निभाते हैं और नियमित सेवाओं में हाजिरी देते हैं। क्या यह समय की बर्बादी नहीं है? परमेश्वर पर अपने विश्वास के सन्दर्भ में, यदि मनुष्य, जीवन-विकास के मामलों के प्रति गंभीर नहीं है, वह सत्य में प्रवेश करने की कोशिश नहीं करता, अपने स्वभाव में परिवर्तन की कोशिश नहीं करता, और परमेश्वर के

कार्य के ज्ञान की खोज तो और भी कम करता है, तो उसे पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। यदि तुम पूर्ण बनना चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के कार्य को समझना होगा। खासतौर से, तुम्हें उसकी ताड़ना और उसके न्याय के अर्थ को समझना होगा, और यह समझना होगा कि इस कार्य को मनुष्य पर क्यों किया जाता है। क्या तुम यह स्वीकार कर सकते हो? इस प्रकार की ताड़ना के दौरान, क्या तुम पतरस की तरह ही अनुभव और ज्ञान प्राप्त कर सकते हो? यदि तुम परमेश्वर के ज्ञान और पवित्र आत्मा के कार्य को खोजोगे, और अपने स्वभाव में परिवर्तनों की कोशिश करोगे, तो तुम्हारे पास पूर्ण बनाए जाने का अवसर होगा।

जिन्हें पूर्ण बनाया जाना है, उनके लिए जीत लिए जाने के कार्य का यह कदम अति आवश्यक है; जब मनुष्य पर विजय पा ली जाती है, तो उसके बाद ही मनुष्य पूर्ण बनाए जाने के कार्य का अनुभव कर सकता है। केवल जीत लिए जाने की भूमिका को निभाने का कोई बड़ा महत्व नहीं है, जो तुम्हें परमेश्वर के इस्तेमाल के योग्य नहीं बनाएगा। सुसमाचार फैलाने की अपनी भूमिका को निभाने के लिए तुम्हारे पास कोई साधन नहीं होगा, क्योंकि तुम जीवन-विकास की खोज नहीं कर रहे, अपने अंदर परिवर्तन लाने और नवीनीकरण का प्रयास नहीं कर रहे, और इसलिए तुम्हारे पास जीवन-विकास का कोई वास्तविक अनुभव नहीं होता। इस कदम दर कदम कार्य के दौरान, तुम जब एक बार एक सेवाकर्मी और एक विषम के तौर पर कार्य कर लेते हो, लेकिन अगर अंततः तुम पतरस की तरह बनने का प्रयास नहीं करते, और यदि तुम्हारी खोज उस मार्ग के अनुसार नहीं है जिसके द्वारा पतरस को पूर्ण बनाया गया था, तो स्वाभाविक रूप से, तुम अपने स्वभाव में परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाओगे। यदि तुम पूर्ण बनाए जाने का प्रयास करते हो, तो तुम गवाही दे चुके होगे, और तुम कहोगे: "परमेश्वर के इस कदम दर कदम कार्य में, मैंने परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के कार्य को स्वीकार कर लिया है, और हालाँकि मैंने बड़ा कष्ट सहा है, फिर भी मैं जान गया हूँ कि परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण कैसे बनाता है, मैंने परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य को प्राप्त कर लिया है, मैंने परमेश्वर की धार्मिकता का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, और उसकी ताड़ना ने मुझे बचा लिया है। उसका धार्मिक स्वभाव मुझ पर अपना प्रभाव दिखा रहा है, और मेरे लिए आशीष और अनुग्रह लेकर आया है; उसके न्याय और ताड़ना ने ही मुझे बचाया है और मुझे शुद्ध किया है। यदि परमेश्वर ने मुझे ताड़ना न दी होती और मेरा न्याय न किया होता, और यदि परमेश्वर ने मुझे कठोर वचन न कहे होते, तो मैं परमेश्वर को नहीं जान पाता, और न ही मुझे बचाया जा सका होता। आज मैं देखता हूँ : एक प्राणी के रूप में, न केवल व्यक्ति परमेश्वर द्वारा बनाई गई सभी चीजों का आनंद उठाता है, बल्कि, महत्वपूर्ण यह है कि

सभी प्राणी परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का आनंद उठाएँ, और उसके धार्मिक न्याय का आनन्द उठाएँ, क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव मनुष्य के आनंद के योग्य है। एक ऐसे प्राणी के रूप में जिसे शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, इंसान को परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का आनंद उठाना चाहिए। उसके धार्मिक स्वभाव में उसकी ताड़ना और न्याय है, इससे भी बढ़कर, उसमें महान प्रेम है। हालाँकि आज मैं परमेश्वर के प्रेम को पूरी तरह प्राप्त करने में असमर्थ हूँ, फिर भी मुझे उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और इससे मैं धन्य हो गया हूँ।" यह वह पथ है जिस पर वे लोग चले हैं जो पूर्ण बनाए जाने का अनुभव करते हैं और इस ज्ञान के बारे में बोलते हैं। ऐसे लोग पतरस के समान हैं; उनके अनुभव भी पतरस के समान ही होते हैं। ऐसे लोग वे लोग भी हैं जो जीवन-विकास प्राप्त कर चुके होते हैं, जिनके अंदर सत्य है। जब उनका अनुभव अंत तक बना रहता है, तो परमेश्वर के न्याय के दौरान वे अपने-आपको पूरी तरह से शैतान के प्रभाव से छुड़ा लेते हैं और परमेश्वर को प्राप्त हो जाते हैं।

उन पर विजय पा लिए जाने के बाद, लोगों की कोई शानदार गवाही नहीं होती। उन्होंने महज शैतान को शर्मिंदा किया होता है, किंतु परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता को नहीं जिया होता। तुमने दूसरा उद्धार प्राप्त नहीं किया है; तुमने महज एक पापबलि प्राप्त की है, पर तुम्हें पूर्ण नहीं बनाया गया है—यह बहुत बड़ा नुकसान है। तुम लोगों को समझना चाहिए कि तुम्हें किसमें प्रवेश करना है, और तुम्हें किसे जीना है, और तुम्हें उनमें प्रवेश करना चाहिए। यदि, अंततः तुम पूर्ण नहीं बनाए जाते हो, तो तुम एक सच्चे मनुष्य नहीं बन पाओगे और तुम पछतावे से भर जाओगे। जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया था, तो शुरू में वे पवित्र थे, दूसरे शब्दों में, जब वे अदन की वाटिका में थे, तब वे पवित्र थे और उनमें कोई अशुद्धता नहीं थी। वे यहोवा के प्रति भी निष्ठावान थे, और यहोवा को धोखा देने के विषय में कुछ नहीं जानते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि उनमें शैतान के प्रभाव का उपद्रव नहीं था, उनमें शैतान का जहर नहीं था, और वे इंसानों में सबसे शुद्ध थे। वे अदन की वाटिका में रहकर हर प्रकार की मलिनता से दूर थे, वे देह के कब्जे में नहीं थे, और यहोवा के प्रति श्रद्धावान थे। लेकिन जब शैतान ने उन्हें प्रलोभन दिया, तो उनके अंदर साँप का ज़हर आ गया और उनमें यहोवा को धोखा देने की इच्छा पैदा हुई, और वे शैतान के प्रभाव में जीने लगे। शुरू में, वे पवित्र थे और यहोवा का आदर करते थे; सिर्फ इस अवस्था में वे मानव थे। बाद में, जब शैतान ने उन्हें प्रलोभन दिया, तो उन्होंने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया, और शैतान के प्रभाव में आ गए। धीरे धीरे शैतान ने उन्हें भ्रष्ट कर दिया, और उन्होंने मनुष्य का मूल स्वरूप गँवा

दिया। शुरू में, मनुष्य के अंदर यहोवा की श्वास थी, वह थोड़ा भी अवज्ञाकारी नहीं था, उसके हृदय में कोई बुराई नहीं थी। उस समय, मनुष्य सचमुच मानवीय था। शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जाने के बाद, मनुष्य पशु बन गया। उसके विचार बुराई और मलिनता से भर गए, और उसमें कोई अच्छाई और पवित्रता नहीं रही। क्या यह शैतान नहीं है? तुमने परमेश्वर के बहुत से कार्यों का अनुभव किया है, फिर भी न तो तुम बदले हो, न ही तुम शुद्ध हुए हो। तुम अभी भी शैतान के अधीन जी रहे हो, और परमेश्वर को समर्पित नहीं हो। तुम ऐसे व्यक्ति हो जिस पर विजय पाई जा चुकी है लेकिन जिसे पूर्ण नहीं बनाया गया है। और ऐसा क्यों कहा जाता है कि ऐसे व्यक्ति को पूर्ण नहीं बनाया गया है? इसका कारण यह है कि क्योंकि ऐसा व्यक्ति जीवन-विकास या परमेश्वर के कार्य के ज्ञान की खोज नहीं करता, और दैहिक आनंद और क्षणिक सुख से अधिक और कुछ नहीं चाहता। इसके परिणामस्वरूप, उसके जीवन-स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं होता, और वह मनुष्य के उस मूल रूप को फिर से प्राप्त नहीं कर पाता जिसे परमेश्वर द्वारा बनाया गया था। ऐसे लोग चलती-फिरती लाश होते हैं, वे मरे हुए लोग होते हैं जिनमें कोई आत्मा नहीं होती! जो लोग आत्मा के मामलों से जुड़े ज्ञान की खोज नहीं करते, जो पवित्रता की खोज नहीं करते, जो सत्य को जीने का प्रयास नहीं करते, जो केवल नकारात्मक पाले में स्वयं पर परमेश्वर द्वारा विजय पा लिए जाने से ही संतुष्ट हो जाते हैं, और जो परमेश्वर के वचनों के अनुसार जी कर पवित्र मनुष्य नहीं बन पाते—वे ऐसे लोग हैं जिन्हें बचाया नहीं गया है। क्योंकि, अगर मनुष्य में सत्य नहीं है, तो वह परमेश्वर के परीक्षणों में टिक नहीं पाता; जो लोग परमेश्वर के परीक्षणों के दौरान टिक पाते हैं, केवल उन्हीं लोगों को बचाया गया है। मुझे पतरस जैसे लोग चाहिए, ऐसे लोग जो पूर्ण बनाए जाने का प्रयास करते हैं। आज का सत्य उन्हें दिया जाता है जो उसकी कामना और खोज करते हैं। यह उद्धार उन्हें दिया जाता है जो परमेश्वर द्वारा बचाए जाने की कामना करते हैं, यह सिर्फ तुम लोगों द्वारा प्राप्त करने के लिए नहीं है। इसका उद्देश्य यह है कि तुम लोग परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाओ; तुम लोग परमेश्वर को ग्रहण करते हो ताकि परमेश्वर तुम्हें ग्रहण कर सके। आज मैंने ये वचन तुम लोगों से कहे हैं, और तुमने इन्हें सुना है, तुम्हें इन वचनों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। अंत में, जब तुम लोग इन वचनों को व्यवहार में लाओगे, तो उस समय मैं इन वचनों द्वारा तुम्हें ग्रहण कर लूँगा; उसी समय, तुम भी इन वचनों को ग्रहण कर लोगे, यानी तुम लोग यह सर्वोच्च उद्धार पा लोगे। एक बार शुद्ध हो जाने के बाद तुम सच्चे मानव बन जाओगे। यदि तुम सत्य को जीने में असमर्थ हो, या उस व्यक्ति के समान जीवन बिताने में असमर्थ हो, जिसे पूर्ण बना दिया गया है, तो यह कहा जा सकता है कि तुम एक

मानव नहीं, एक चलती-फिरती लाश हो, पशु हो, क्योंकि तुममें सत्य नहीं है, दूसरे शब्दों में, तुममें यहोवा की श्वास नहीं है, और इस प्रकार तुम एक मरे हुए इंसान हो जिसमें कोई आत्मा नहीं है! यद्यपि जीत लिए जाने के बाद गवाही देना संभव है, लेकिन इससे तुम्हें थोड़ा-सा ही उद्धार प्राप्त होता है, और तुम ऐसे जीवित प्राणी नहीं बन पाते जिसमें आत्मा है। हालाँकि तुमने ताड़ना और न्याय का अनुभव कर लिया होता है, फिर भी तुम्हारा स्वभाव नहीं बदलता या नवीनीकृत नहीं हुआ होता; तुम अभी भी पुराने बने रहते हो, तुम अभी भी शैतान के अधिकार में होते हो, और तुम एक शुद्ध किए गए इंसान नहीं होते। केवल उन्हीं का मूल्य है जिन्हें पूर्ण बनाया जा चुका है, और केवल ऐसे ही लोगों ने एक सच्चा जीवन प्राप्त किया होता है। एक दिन, कोई तुमसे कहेगा, "तुमने परमेश्वर का अनुभव किया है, तो बताओ उसका कार्य कैसा है। दाऊद ने परमेश्वर के काम का अनुभव किया था, उसने यहोवा के कार्यों को देखा था, मूसा ने भी यहोवा के कार्यों को देखा था, और वे दोनों यहोवा के कर्मों का बखान कर सकते थे, यहोवा की विलक्षणता के बारे में बोल सकते थे। तुम लोगों ने अंत के दिनों में देहधारी परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य को देखा है; क्या तुम उसकी बुद्धि के बारे में बात कर सकते हो? क्या तुम उसके कार्य की विलक्षणता के बारे में बात कर सकते हो? परमेश्वर ने तुम लोगों से क्या अपेक्षाएं की थीं, और तुमने उनका अनुभव कैसे किया? तुमने अंत के दिनों में परमेश्वर के कार्य का अनुभव किया है, तुम्हारा सबसे बड़ा दर्शन क्या है? क्या तुम लोग इसके बारे में बात कर सकते हो? क्या तुम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के बारे में बात कर सकते हो?" इन प्रश्नों से सामना होने पर तुम कैसे उत्तर दोगे? यदि तुम कहो, "परमेश्वर बहुत धार्मिक है, वह हमें ताड़ना देता है और हमारा न्याय करता है, और कठोरता से हमें उजागर करता है; परमेश्वर का स्वभाव मनुष्य द्वारा किए गए अपराध बर्दाश्त नहीं करता; परमेश्वर के कार्य का अनुभव करने के बाद, मैं अपनी पाशविकता को जान गया हूँ, और मैंने परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को देख लिया है," तो दूसरा व्यक्ति तुमसे आगे पूछेगा, "तुम परमेश्वर के विषय में और क्या जानते हो? इंसान जीवन-विकास में प्रवेश कैसे करता है? क्या तुम्हारी कोई व्यक्तिगत आकांक्षाएँ हैं?" तुम जवाब दोगे, "शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जाने के बाद, परमेश्वर के प्राणी पशु बन गए, और वे गधों से भिन्न नहीं रहे। आज, मैं परमेश्वर के हाथों में रहता हूँ, इसलिए मुझे सृष्टिकर्ता की इच्छाओं को संतुष्ट करना चाहिए, और उसकी शिक्षाओं का पालन करना चाहिए। मेरे पास और कोई विकल्प नहीं है।" यदि तुम केवल ऐसी व्यापकता के साथ बात करोगे, तो वह व्यक्ति तुम्हारी बात को नहीं समझेगा। जब वे तुमसे पूछते हैं कि तुम्हारे पास परमेश्वर के कार्य का क्या ज्ञान है, तो वे तुम्हारे व्यक्तिगत

अनुभवों की ओर संकेत कर रहे हैं। वे पूछ रहे हैं कि परमेश्वर की ताड़ना और उसके न्याय का अनुभव करने के बाद तुम्हारे पास उसका क्या ज्ञान है, और इस तरह वे तुम्हारे व्यक्तिगत अनुभवों की ओर संकेत कर रहे होते हैं, वे चाहते हैं कि तुम सत्य के अपने ज्ञान के बारे में बोलो। यदि तुम ऐसी चीजों के बारे में बोलने में असमर्थ हो, तो इससे यह साबित होता है कि तुम आज के कार्य के बारे में कुछ नहीं जानते। तुम हमेशा ऐसी बातें बोलते हो जो दिखावटी हैं, या जिन्हें पूरी दुनिया जानती है; तुम्हारे पास कोई विशिष्ट अनुभव नहीं है, तुम्हारे ज्ञान में सार तो और भी कम है, तुम्हारे पास कोई सच्ची गवाही भी नहीं है, और इसलिए लोग तुमसे आश्वस्त नहीं होते। परमेश्वर के निष्क्रिय अनुयायी मत बनो, और उसकी खोज मत करो जिससे तुम्हारे भीतर कौतूहल जागता है। इस तरह की दुविधा में पड़कर तुम अपने-आपको बर्बाद कर लोगे और अपने जीवन-विकास में देरी करोगे। तुम्हें स्वयं को ऐसी शिथिलता और निष्क्रियता से मुक्त करके, सकारात्मक चीजों का अनुसरण करने एवं अपनी कमजोरियों पर विजय पाने में कुशल बनना चाहिए, ताकि तुम सत्य को प्राप्त करके उसे जी सको। तुम्हें अपनी कमजोरियों को लेकर डरने की जरूरत नहीं है, तुम्हारी कमियां तुम्हारी सबसे बड़ी समस्या नहीं है। तुम्हारी सबसे बड़ी समस्या, और सबसे बड़ी कमी है तुम्हारा दुविधाग्रस्त होना, और तुममें सत्य खोजने की इच्छा की कमी होना। तुम लोगों की सबसे बड़ी समस्या है तुम्हारी डरपोक मानसिकता जिसके कारण तुम लोग यथास्थिति से खुश हो जाते हो, और निष्क्रिय होकर इंतजार करते हो। यही तुम्हारी सबसे बड़ी बाधा है, यही सत्य की खोज करने में तुम्हारा सबसे बड़ा शत्रु है। यदि तुम केवल इसलिए आज्ञा मानते हो क्योंकि जो वचन मैंने कहे हैं वे बहुत गहन हैं, तो तुममें सचमुच ज्ञान नहीं है, न ही तुम सत्य का बहुत चाव रखते हो। तुम्हारी जैसी आज्ञाकारिता गवाही नहीं है, और मैं ऐसी आज्ञाकारिता को स्वीकार नहीं करता। कोई तुमसे पूछ सकता है, "तुम्हारा परमेश्वर वास्तव में कहाँ से आता है? तुम्हारे इस परमेश्वर का सार क्या है?" तो तुम कहोगे, "उसका सार ताड़ना और न्याय है।" फिर वह पूछेगा, "क्या परमेश्वर मनुष्य के प्रति दयालु और प्रेमी नहीं है? क्या तुम यह नहीं जानते?" तुम कहोगे, "यह दूसरों का परमेश्वर है। यह वह परमेश्वर है जिस पर धर्म को मानने वाले लोग विश्वास करते हैं, यह हमारा परमेश्वर नहीं है।" जब तुम जैसे लोग सुसमाचार फैलाते हैं, तो तुम सत्य मार्ग को विकृत कर देते हो, और इस प्रकार तुम किस काम के हो? लोग तुमसे सत्य मार्ग कैसे प्राप्त कर सकते हैं? तुममें सत्य नहीं है, और तुम सत्य के बारे में कुछ नहीं बोल सकते, न ही तुम सत्य को जी सकते हो। परमेश्वर के सामने रहने के लिए तुममें क्या योग्यता है? जब तुम दूसरों तक सुसमाचार फैलाओगे, सत्य

के बारे में संगति करोगे, परमेश्वर की गवाही दोगे, यदि तुम उन्हें जीत नहीं पाओगे, तो वे तुम्हारी बातों का खंडन करेंगे। क्या तुम बेहद निकम्मे नहीं हो? तुमने परमेश्वर के कार्य का इतना अनुभव किया है, फिर भी जब तुम सत्य बोलते हो तो उसका कोई अर्थ नहीं निकलता। क्या तुम बिल्कुल फालतू नहीं हो? तुम्हारी क्या उपयोगिता है? तुमने परमेश्वर के कार्य का इतना अनुभव कैसे कर लिया, जबकि तुम्हारे पास उसका थोड़ा-सा भी ज्ञान नहीं है? जब वे पूछते हैं कि तुम्हारे पास परमेश्वर का क्या वास्तविक ज्ञान है, तो तुम्हें शब्द नहीं मिलते, या फिर ऐसे बेतुके जवाब देते हो कि परमेश्वर शक्तिमान है, जो सबसे बड़ा आशीष तुमने प्राप्त किया है वह सचमुच में परमेश्वर का उत्कर्ष है, और परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से देख पाने से बढ़कर कोई सौभाग्य नहीं है। ऐसा कहने का क्या मूल्य है? ये बेकार और खोखले शब्द हैं! परमेश्वर के कार्य का इतना अनुभव प्राप्त करने के बाद, क्या तुम केवल इतना जानते हो कि परमेश्वर का उत्कर्ष ही सत्य है? तुम्हें परमेश्वर के कार्य का पता होना चाहिए, तभी तुम परमेश्वर की सच्ची गवाही दे पाओगे। जिन्होंने सत्य को प्राप्त ही नहीं किया, वे कैसे परमेश्वर की गवाही दे सकते हैं?

यदि इतने सारे कार्य, और इतने सारे वचनों का तुम पर कोई असर नहीं हुआ है, तो जब परमेश्वर के कार्य को फैलाने का समय आएगा, तब तुम अपने कर्तव्य को निभाने में असमर्थ रहोगे और तुम्हें शर्मिंदा और अपमानित होना पड़ेगा। उस समय, तुम ऐसा महसूस करोगे कि तुम परमेश्वर के कितने ऋणी हो, कि परमेश्वर के विषय में तुम्हारा ज्ञान कितना सतही है। यदि तुम आज परमेश्वर के ज्ञान का अनुसरण नहीं करते हो, जबकि वह कार्य कर रहा है, तो बाद में बहुत देर हो जाएगी। अंत में, तुम्हारे पास कहने के लिए कोई ज्ञान नहीं होगा—तुम खोखले रह जाओगे, और तुम्हारे पास कुछ भी न होगा। परमेश्वर को हिसाब देने के लिए तुम किसका उपयोग करोगे? क्या तुममें इतना दम-खम है कि परमेश्वर की तरफ देख पाओ? तुम्हें इसी वक्त अपने लक्ष्य के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए, ताकि तुम अंतत: पतरस की तरह जान पाओ कि परमेश्वर की ताड़ना और उसका न्याय मनुष्य के लिए कितना लाभकारी है, और बिना उसकी ताड़ना और न्याय के मनुष्य को बचाया नहीं जा सकता, वह इस अपवित्र भूमि और दलदल में गहराई तक धंसता ही चला जाएगा। शैतान द्वारा भ्रष्ट लोग एक-दूसरे के विरूद्ध साजिश करते रहे हैं और एक-दूसरे की राह में काँटे बिछाते रहे हैं, उनके मन से परमेश्वर का भय खत्म हो गया है। वे बहुत अवज्ञाकारी बन गए हैं, उन्होंने ढेरों धारणाएँ पाल रखी हैं, और वे शैतान के लोग बन गए हैं। परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के बगैर, मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव को शुद्ध नहीं किया जा सकता और उसे बचाया नहीं जा सकता। जो कुछ

देहधारी परमेश्वर के कार्य के द्वारा प्रकट किया गया है, बिल्कुल वही आत्मा के द्वारा प्रकट किया गया है, और परमेश्वर का कार्य भी आत्मा द्वारा किए गए कार्य के अनुसार ही किया जाता है। आज, यदि तुम्हारे पास इस कार्य का कोई ज्ञान नहीं है, तो तुम बहुत ही मूर्ख हो, तुमने बहुत कुछ खो दिया है! यदि तुमने परमेश्वर का उद्धार नहीं पाया है, तो तुम्हारा विश्वास धार्मिक विश्वास है, और तुम एक ऐसे ईसाई है जो धर्म का ईसाई है। चूँकि तुम एक मृत धर्म सिद्धांत को कसकर थामे हुए हो, तुमने पवित्र आत्मा के नए कार्य को खो दिया है; अन्य लोग, जो परमेश्वर को प्रेम करते हैं, सत्य और जीवन पाने में सक्षम हैं, जबकि तुम्हारा विश्वास परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने में असमर्थ है। इसकी बजाय, तुम बुरे काम करने वाले बन गए हो, तुम एक ऐसे व्यक्ति बन गए हो जो घातक और घृणित कार्य करता है; तुम शैतान की हँसी के पात्र और उसके कैदी बन गए हो। मनुष्य को परमेश्वर पर केवल विश्वास ही नहीं करना है, बल्कि उसे परमेश्वर से प्रेम करना है, उसका अनुसरण और उसकी आराधना करनी है। यदि आज तुम अनुसरण नहीं करोगे, तो वह दिन आएगा जब तुम कहोगे, "मैंने पहले सही तरीके से परमेश्वर का अनुसरण क्यों नहीं किया, उसे सही ढंग से संतुष्ट क्यों नहीं किया, मैं अपने जीवन-स्वभाव में परिवर्तन क्यों नहीं लाया? उस समय परमेश्वर के प्रति समर्पित होने, और परमेश्वर के वचन का ज्ञान पाने का प्रयास न करने के कारण आज मैं कितना पछता रहा हूँ। उस समय परमेश्वर ने कितना कुछ कहा था; मैंने अनुसरण क्यों नहीं किया? मैं कितना मूर्ख था!" तुम कुछ हद तक अपने-आपसे नफरत करोगे। आज, तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते, और उन पर ध्यान नहीं देते; जब इस कार्य को फैलाने का दिन आएगा, और तुम उसकी संपूर्णता को देखोगे, तब तुम्हें अफसोस होगा, और उस समय तुम भौंचक्के रह जाओ। आशीषें हैं, फिर भी तुम्हें उनका आनंद लेना नहीं आता, सत्य है, फिर भी तुम्हें उसका अनुसरण करना नहीं आता। क्या तुम अपने-आप पर अवमानना का दोष नहीं लाते? आज, यद्यपि परमेश्वर के कार्य का अगला कदम अभी शुरू होना बाकी है, फिर भी तुमसे जो कुछ अपेक्षित है और तुम्हें जिन्हें जीने के लिए कहा जाता है, उनमें कुछ भी असाधारण नहीं है। इतना सारा कार्य है, इतने सारे सत्य हैं; क्या वे इस योग्य नहीं हैं कि तुम उन्हें जानो? क्या परमेश्वर की ताड़ना और न्याय तुम्हारी आत्मा को जागृत करने में असमर्थ हैं? क्या परमेश्वर की ताड़ना और न्याय तुममें खुद के प्रति नफरत पैदा करने में असमर्थ हैं? क्या तुम शैतान के प्रभाव में जी कर, और शांति, आनंद और थोड़े-बहुत दैहिक सुख के साथ जीवन बिताकर संतुष्ट हो? क्या तुम सभी लोगों में सबसे अधिक निम्न नहीं हो? उनसे ज्यादा मूर्ख और कोई नहीं है जिन्होंने उद्धार को देखा तो है लेकिन उसे प्राप्त करने का

प्रयास नहीं करते; वे ऐसे लोग हैं जो पूरी तरह से देह-सुख में लिप्त होकर शैतान का आनंद लेते हैं। तुम्हें लगता है कि परमेश्वर में अपनी आस्था के लिए तुम्हें चुनौतियों और क्लेशों या कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। तुम हमेशा निरर्थक चीजों के पीछे भागते हो, और तुम जीवन के विकास को कोई अहमियत नहीं देते, बल्कि तुम अपने फिजूल के विचारों को सत्य से ज्यादा महत्व देते हो। तुम कितने निकम्मे हो! तुम सूअर की तरह जीते हो—तुममें और सूअर और कुत्ते में क्या अंतर है? जो लोग सत्य का अनुसरण नहीं करते, बल्कि शरीर से प्यार करते हैं, क्या वे सब पूरे जानवर नहीं हैं? क्या वे मरे हुए लोग जिनमें आत्मा नहीं है, चलती-फिरती लाशें नहीं हैं? तुम लोगों के बीच कितने सारे वचन कहे गए हैं? क्या तुम लोगों के बीच केवल थोड़ा-सा ही कार्य किया गया है? मैंने तुम लोगों के बीच कितनी आपूर्ति की है? तो फिर तुमने इसे प्राप्त क्यों नहीं किया? तुम्हें किस बात की शिकायत है? क्या यह बात नहीं है कि तुमने इसलिए कुछ भी प्राप्त नहीं किया है क्योंकि तुम देह से बहुत अधिक प्रेम करते हो? क्योंकि तुम्हारे विचार बहुत ज्यादा निरर्थक हैं? क्योंकि तुम बहुत ज्यादा मूर्ख हो? यदि तुम इन आशीषों को प्राप्त करने में असमर्थ हो, तो क्या तुम परमेश्वर को दोष दोगे कि उसने तुम्हें नहीं बचाया? तुम परमेश्वर में विश्वास करने के बाद शांति प्राप्त करना चाहते हो—ताकि अपनी संतान को बीमारी से दूर रख सको, अपने पति के लिए एक अच्छी नौकरी पा सको, अपने बेटे के लिए एक अच्छी पत्नी और अपनी बेटी के लिए एक अच्छा पति पा सको, अपने बैल और घोड़े से जमीन की अच्छी जुताई कर पाने की क्षमता और अपनी फसलों के लिए साल भर अच्छा मौसम पा सको। तुम यही सब पाने की कामना करते हो। तुम्हारा लक्ष्य केवल सुखी जीवन बिताना है, तुम्हारे परिवार में कोई दुर्घटना न हो, आँधी-तूफान तुम्हारे पास से होकर गुजर जाएँ, धूल-मिट्टी तुम्हारे चेहरे को छू भी न पाए, तुम्हारे परिवार की फसलें बाढ़ में न बह जाएं, तुम किसी भी विपत्ति से प्रभावित न हो सको, तुम परमेश्वर के आलिंगन में रहो, एक आरामदायक घरौंदे में रहो। तुम जैसा डरपोक इंसान, जो हमेशा दैहिक सुख के पीछे भागता है—क्या तुम्हारे अंदर एक दिल है, क्या तुम्हारे अंदर एक आत्मा है? क्या तुम एक पशु नहीं हो? मैं बदले में बिना कुछ मांगे तुम्हें एक सत्य मार्ग देता हूँ, फिर भी तुम उसका अनुसरण नहीं करते। क्या तुम उनमें से एक हो जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं? मैं तुम्हें एक सच्चा मानवीय जीवन देता हूँ, फिर भी तुम अनुसरण नहीं करते। क्या तुम कुत्ते और सूअर से भिन्न नहीं हो? सूअर मनुष्य के जीवन की कामना नहीं करते, वे शुद्ध होने का प्रयास नहीं करते, और वे नहीं समझते कि जीवन क्या है। प्रतिदिन, उनका काम

बस पेट भर खाना और सोना है। मैंने तुम्हें सच्चा मार्ग दिया है, फिर भी तुमने उसे प्राप्त नहीं किया है: तुम्हारे हाथ खाली हैं। क्या तुम इस जीवन में एक सूअर का जीवन जीते रहना चाहते हो? ऐसे लोगों के जिंदा रहने का क्या अर्थ है? तुम्हारा जीवन घृणित और ग्लानिपूर्ण है, तुम गंदगी और व्यभिचार में जीते हो और किसी लक्ष्य को पाने का प्रयास नहीं करते हो; क्या तुम्हारा जीवन अत्यंत निकृष्ट नहीं है? क्या तुम परमेश्वर की ओर देखने का साहस कर सकते हो? यदि तुम इसी तरह अनुभव करते रहे, तो क्या केवल शून्य ही तुम्हारे हाथ नहीं लगेगा? तुम्हें एक सच्चा मार्ग दे दिया गया है, किंतु अंततः तुम उसे प्राप्त कर पाओगे या नहीं, यह तुम्हारी व्यक्तिगत खोज पर निर्भर करता है। लोग कहते हैं कि परमेश्वर एक धार्मिक परमेश्वर है, और अगर मनुष्य अंत तक उसका अनुसरण करता रहे, तो वह निश्चित रूप से मनुष्य के प्रति निष्पक्ष होगा, क्योंकि वह परम धार्मिक है। यदि मनुष्य अंत तक उसका अनुसरण करता रहे, तो क्या वह मनुष्य को दरकिनार कर सकता है? मैं सभी लोगों के प्रति निष्पक्ष हूँ, और अपने धार्मिक स्वभाव से सभी का न्याय करता हूँ, फिर भी मैं जो अपेक्षाएं इंसान से करता हूँ उसके लिए कुछ यथोचित स्थितियाँ होती हैं, और मैं जो अपेक्षा करता हूँ उसे सभी के लिए पूरा करना जरूरी है, चाहे वे कोई भी हों। मैं इसकी परवाह नहीं करता कि तुम्हारी योग्यता कितनी है और कब से है; मैं सिर्फ इसकी परवाह करता हूँ कि तुम मेरे मार्ग पर चल रहे हो या नहीं, सत्य के लिए तुममें प्रेम और प्यास है या नहीं। यदि तुममें सत्य की कमी है, और इसकी बजाय तुम मेरे नाम को लज्जित कर रहे हो, और मेरे मार्ग के अनुसार क्रिया-कलाप नहीं कर रहे हो, और किसी बात की परवाह या चिंता किए बगैर सिर्फ अनुसरण मात्र कर रहे हो, तो मैं उस समय तुम पर प्रहार करूंगा और तुम्हारी दुष्टता के लिए तुम्हें दंड दूँगा, तब फिर तुम्हारे पास कहने के लिए क्या होगा? तब क्या तुम यह कह पाओगे कि परमेश्वर धार्मिक नहीं है? आज, यदि तुम मेरे द्वारा बोले गए वचनों का पालन करते हो, तो तुम एक ऐसे इंसान हो जिसे मैं स्वीकार करता हूँ। तुम कहते हो कि तुमने परमेश्वर का अनुसरण करते हुए हमेशा दुख उठाया है, तुमने हर परिस्थिति में उसका अनुसरण किया है, और तुमने उसके साथ अच्छा-बुरा समय बिताया है, लेकिन तुमने परमेश्वर द्वारा बोले गए वचनों को नहीं जिया है; तुम हर दिन सिर्फ परमेश्वर के लिए भाग-दौड़ करना और उसके लिए स्वयं को खपाना चाहते हो, तुमने कभी भी एक अर्थपूर्ण जीवन बिताने के बारे में नहीं सोचा है। तुम यह भी कहते हो, "खैर, मैं यह तो मानता ही हूँ कि परमेश्वर धार्मिक है। मैंने उसके लिए दुख उठाया है, मैंने उसके लिए भाग-दौड़ की है, और उसके लिए अपने आपको समर्पित किया है, और इसके लिए कोई मान्यता प्राप्त किए बिना मैंने कड़ी

मेहनत की है; वह निश्चित ही मुझे याद रखेगा।" यह सच है कि परमेश्वर धार्मिक है, फिर भी इस धार्मिकता पर किसी अशुद्धता का दाग नहीं है: इसमें कोई मानवीय इच्छा नहीं है, और इस पर शरीर या मानवीय सौदेबाजी का कोई धब्बा नहीं है। जो लोग विद्रोही हैं और विरोध में खड़े हैं, वे सब जो उसके मार्ग के अनुरूप नहीं हैं, उन्हें दंडित किया जाएगा; न तो किसी को क्षमा किया जाएगा, न ही किसी को बख्शा जाएगा! कुछ लोग कहते हैं, "आज मैं तुम्हारे लिए भाग-दौड़ कर रहा हूँ; जब अंत आएगा, तो क्या तुम मुझे थोड़ा-सा आशीष दे सकते हो?" तो मैं तुमसे पूछता हूँ, "क्या तुमने मेरे वचनों का पालन किया है?" तुम जिस धार्मिकता की बात करते हो, वह एक सौदे पर आधारित है। तुम केवल यह सोचते हो कि मैं सभी लोगों के प्रति धार्मिक और निष्पक्ष हूँ, और जो लोग अंत तक मेरा अनुसरण करेंगे उन्हें निश्चित रूप से बचा लिया जाएगा और वे मेरे आशीष प्राप्त करेंगे। "जो लोग अंत तक मेरा अनुसरण करेंगे उन्हें निश्चित रूप से बचा लिया जाएगा" : मेरे इन वचनों का एक भीतरी अर्थ है: जो लोग अंत तक मेरा अनुसरण करते हैं, उन्हें मेरे द्वारा पूरी तरह से ग्रहण कर लिया जाएगा, वे ऐसे लोग हैं जो मेरे द्वारा जीते जाने के बाद, सत्य खोजते हैं और जिन्हें पूर्ण बनाया जाता है। तुमने कैसी स्थितियाँ हासिल की हैं? तुमने केवल अंत तक मेरा अनुसरण करना ही हासिल किया है, लेकिन तुमने और क्या हासिल किया है? क्या तुमने मेरे वचनों का पालन किया है? तुमने मेरी पाँच अपेक्षाओं में से एक को पूरा किया है, लेकिन बाकी चार को पूरा करने का तुम्हारा कोई इरादा नहीं है। तुमने बस सबसे सरल और आसान रास्ता ढूँढ़ लिया है और इसी का अनुसरण किया है। तुम्हारे जैसे इंसान के लिए मेरा धार्मिक स्वभाव ताड़ना और न्याय का है, यह धार्मिक प्रतिफल है, और यह बुरा काम करने वालों के लिए धार्मिक दंड है; जो लोग मेरे मार्ग पर नहीं चलते उन्हें निश्चित ही दंड दिया जाएगा, भले ही वे अंत तक अनुसरण करते रहें। यह परमेश्वर की धार्मिकता है। जब यह धार्मिक स्वभाव मनुष्य के दंड में व्यक्त होता है, तो मनुष्य भौंचक्का रह जाता है, और उसे अफसोस होता है कि परमेश्वर का अनुसरण करते हुए वह उसके मार्ग पर क्यों नहीं चला। "उस समय, परमेश्वर का अनुसरण करते हुए मैंने केवल थोड़ा-सा दुख उठाया, किंतु मैं परमेश्वर के मार्ग पर नहीं चला। इसके लिए क्या बहाने बनाये जा सकते हैं? ताड़ना दिए जाने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है!" फिर भी वह अपने मन में सोच रहा होता है, "जो भी हो, मैंने अंत तक अनुसरण किया है, अगर तू मुझे ताड़ना भी देगा, तो वह ताड़ना बहुत कठोर नहीं हो सकती, और इस ताड़ना के बाद भी तू मुझे चाहेगा। मैं जानता हूँ कि तू धार्मिक है, और तू हमेशा मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं करेगा। आखिरकार, मैं उनके समान नहीं हूँ जिन्हें

मिटा दिया जाएगा; जो मिटा दिए जाएंगे, उन्हें कठोर ताड़ना मिलेगी, जबकि मेरी ताड़ना हल्की होगी।" परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव वैसा नहीं है जैसा तुम कहते हो। ऐसा नहीं है कि जो अपने पाप स्वीकारते हैं उनके साथ कोमलता के साथ व्यवहार किया जाता है। धार्मिकता पवित्रता है, और एक ऐसा स्वभाव है जो मनुष्य के अपराध को सहन नहीं कर सकता, और वह सब कुछ जो अशुद्ध है और जो परिवर्तित नहीं हुआ है, वह परमेश्वर की घृणा का पात्र है। परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव व्यवस्था नहीं, बल्कि प्रशासनिक आज्ञा है: यह राज्य के भीतर एक प्रशासनिक आज्ञा है, और यह प्रशासनिक आज्ञा हर उस व्यक्ति के लिए धार्मिक दंड है जिसमें सत्य नहीं है और जो परिवर्तित नहीं हुआ है, और जिसके उद्धार की कोई गुंजाइश नहीं है। क्योंकि जब प्रत्येक मनुष्य को उसकी किस्म के अनुसार वर्गीकृत किया जायेगा, तो अच्छे को पुरस्कार और बुरे को दंड दिया जाएगा। इसी समय मनुष्य के गंतव्य को भी स्पष्ट किया जाएगा; यह वह समय होगा जब उद्धार का कार्य भी समाप्त हो जाएगा, उसके बाद मनुष्य के उद्धार का कार्य नहीं किया जाएगा, और बुराई करने वाले हर इंसान को कठोर दंड दिया जाएगा। कुछ लोग कहते हैं, "परमेश्वर उनमें से हर एक को याद रखता है जो अक्सर उसकी तरफ होते हैं। वह हममें से किसी को भी नहीं भूलेगा। हमें निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाएगा। परमेश्वर हमसे नीचे के लोगों को याद नहीं रखेगा, जिन्हें पूर्ण बनाया जाना है, वे यकीनन हमसे कम होंगे, हम जो अक्सर परमेश्वर से रूबरू होते हैं; हममें से किसी को भी परमेश्वर ने भुलाया नहीं है, हम सभी को परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त है, और परमेश्वर निश्चित रूप से हमें पूर्ण बनाएगा।" तुम सभी के अंदर ऐसी ही धारणाएँ हैं। क्या यह धार्मिकता है? तुम सत्य को अभ्यास में लाए हो या नहीं? दरअसल, तुम इस तरह की अफवाहें फैलाते हो—तुममें कोई शर्म नहीं है!

आज, कुछ लोग लगातार प्रयास कर रहे हैं कि वे परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाएँ, किंतु जब उन पर विजय पा ली जाती है तो उसके बाद सीधे तौर पर उनका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। जहाँ तक आज कहे गए वचनों का प्रश्न है, यदि, जब परमेश्वर लोगों को इस्तेमाल करता है, तुम अभी भी उन्हें सम्पन्न नहीं कर पाते, तो तुम्हें पूर्ण नहीं बनाया गया है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य को पूर्ण बनाए जाने की अवधि के अंत का आगमन यह निर्धारित करेगा कि परमेश्वर द्वारा मनुष्य को हटाया जाएगा या इस्तेमाल किया जाएगा। ऐसे लोग जिन पर विजय पा ली गई है वे निष्क्रियता और नकारात्मकता के उदाहरणों से बढ़कर और कुछ नहीं हैं; वे नमूने और आदर्श हैं, किंतु वे एक सहायक सुर से ज्यादा कुछ नहीं हैं। जब मनुष्य का जीवन-स्वभाव बदल जाता है, और जब उसके अंदर और बाहर आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है, तभी वह

पूर्ण बनता है। आज, तुम क्या बनना चाहते हो : तुम पर विजय पाई जाए, या तुम्हें पूर्ण बना दिया जाए? तुम क्या पाना चाहते हो? क्या तुमने पूर्ण किए जाने की शर्तें पूरी कर ली हैं? तुममें अभी किन शर्तों की कमी है? तुम्हें स्वयं को किन बातों से युक्त करना चाहिए, और तुम्हें अपनी कमियों को कैसे दूर करना चाहिए? तुम्हें पूर्ण किए जाने के पथ पर कैसे प्रवेश करना चाहिए? तुम्हें पूरी तरह समर्पण कैसे करना चाहिए? तुम पूर्ण होना चाहते हो, तो क्या तुम पवित्र होने का प्रयास करते हो? क्या तुम ऐसे इंसान हो जो ताड़ना और न्याय का अनुभव पाने की चेष्टा करता है ताकि तुम्हें शुद्ध किया जा सके? तुम शुद्ध होने का प्रयास करते हो, तो क्या तुम ताड़ना और न्याय को स्वीकार करने के लिए तैयार हो? तुम परमेश्वर को जानना चाहते हो, किंतु क्या तुम्हें उसकी ताड़ना और उसके न्याय का ज्ञान है? आज, अधिकतर कार्य जो वह तुम पर करता है, वो ताड़ना और न्याय है; इस कार्य के विषय में तुम्हारा ज्ञान क्या है, जो तुम पर किया गया है? क्या जिस ताड़ना और न्याय का तुमने अनुभव किया है उसने तुम्हें शुद्ध किया है? क्या इसने तुम्हें परिवर्तित किया है? क्या इसका तुम पर कोई प्रभाव पड़ा है? क्या तुम शाप, न्याय और रहस्यों के खुलासे जैसे आज के बहुत-से कार्यों से थक गए हो, या क्या तुम्हें लगता है कि वे तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक हैं? तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो, लेकिन तुम उससे प्रेम क्यों करते हो? क्या तुम उससे इसलिए प्रेम करते हो क्योंकि तुमने उससे थोड़ा-सा अनुग्रह प्राप्त किया है? या शांति और आनंद प्राप्त करने के बाद तुम उससे प्रेम करने लगे हो? या उसकी ताड़ना और न्याय से शुद्ध होकर तुम उससे प्रेम करते हो? तुम किस चीज से प्रेरित होकर परमेश्वर से प्रेम करते हो? पतरस ने पूर्ण होने के लिए किन शर्तों को पूरा किया था? पूर्ण होने के बाद, इसे किस अहम तरीके से अभिव्यक्त किया गया था? क्या उसने प्रभु यीशु से इसलिए प्रेम किया क्योंकि वह उसकी कामना करता था, या इसलिए क्योंकि वह उसे देख नहीं सकता था, या इसलिए क्योंकि उसे फटकारा गया था? या उसने प्रभु यीशु से और भी ज्यादा प्रेम इसलिए किया क्योंकि उसने क्लेशों के कष्ट को स्वीकार कर लिया था, अपनी अशुद्धता और अवज्ञा को जान लिया था, और उसने प्रभु की पवित्रता को जान लिया था? क्या परमेश्वर की ताड़ना और उसके न्याय के कारण परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम और अधिक शुद्ध हो गया था, या किसी और कारण से? इसमें से कौनसा कारण सही है? तुम परमेश्वर के अनुग्रह के कारण उससे प्रेम करते हो और इसलिए क्योंकि आज उसने तुम्हें थोड़ा-सा आशीष दिया है। क्या यह सच्चा प्रेम है? तुम्हें परमेश्वर से प्रेम कैसे करना चाहिए? क्या तुम्हें उसकी ताड़ना और न्याय को स्वीकार करना चाहिए और उसके धार्मिक स्वभाव को देखने के बाद, उसे सच में प्रेम करने में समर्थ होना

चाहिए, कुछ इस तरह कि तुम पूरी तरह विश्वस्त हो जाओ, और तुम्हें उसका ज्ञान हो जाए? पतरस की तरह, क्या तुम कह सकते हो कि तुम परमेश्वर से पर्याप्त प्रेम नहीं कर सकते? क्या तुम ताड़ना और न्याय के बाद जीत लिए जाने की कामना करते हो, या ताड़ना और न्याय के बाद शुद्ध किए जाने, रक्षा किए जाने और सँभाल लिए जाने की कामना करते हो? तुम इनमें से क्या पाना चाहते हो? क्या तुम्हारा जीवन अर्थपूर्ण है, या अर्थहीन और मूल्यहीन है? तुम्हें शरीर चाहिए या सत्य चाहिए? तुम न्याय चाहते हो या सुख? परमेश्वर के कार्यों का इतना अनुभव कर लेने, और परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता को देख लेने के बाद, तुम्हें किस प्रकार खोज करनी चाहिए? तुम्हें इस पथ पर किस प्रकार चलना चाहिए? तुम्हें परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को व्यवहार में कैसे लाना चाहिए? क्या परमेश्वर की ताड़ना और न्याय ने तुम पर कोई असर डाला है? तुम्हें परमेश्वर की ताड़ना और उसके न्याय का ज्ञान है कि नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम किसे जी रहे हो, और तुम किस सीमा तक परमेश्वर से प्रेम करते हो! तुम्हारे होंठ कहते हैं कि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो, फिर भी तुम उसी पुराने और भ्रष्ट स्वभाव को जी रहे हो; तुममें परमेश्वर का कोई भय नहीं है, और तुम्हारे अंदर चेतना तो और भी कम है। क्या ऐसे लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं? क्या ऐसे लोग परमेश्वर के प्रति वफादार होते हैं? क्या वे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर की ताड़ना और उसके न्याय को स्वीकार करते हैं? तुम कहते हो कि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो और उसमें विश्वास करते हो, फिर भी तुम अपनी धारणाओं को नहीं छोड़ पाते। तुम्हारे कार्य में, तुम्हारे प्रवेश में, उन शब्दों में जो तुम बोलते हो, और तुम्हारे जीवन में परमेश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम की कोई अभिव्यक्ति नहीं है, और परमेश्वर के प्रति कोई आदर नहीं है। क्या यह एक ऐसा इंसान है जिसने ताड़ना और न्याय प्राप्त कर लिए हैं? क्या ऐसा कोई इंसान पतरस के समान हो सकता है? क्या जो लोग पतरस के समान हैं उनमें केवल ज्ञान होता है, वे उसे जीते नहीं हैं? आज, वह कौनसी शर्त है जिसके अनुसार मनुष्य को एक सच्चा जीवन जीना चाहिए? क्या पतरस के मुँह से निकलने वाली प्रार्थनाएँ शब्द-मात्र थीं? क्या वे उसके हृदय की गहराइयों से निकले हुए शब्द नहीं थे? क्या पतरस केवल प्रार्थना करता था, वह सत्य का अभ्यास नहीं करता था? तुम्हारी खोज किसके लिए है? परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के दौरान तुम्हें किस प्रकार सुरक्षा और शुद्धता ग्रहण करनी चाहिए? क्या परमेश्वर की ताड़ना और न्याय से मनुष्य को कोई लाभ नहीं है? क्या सारा न्याय दंड है? क्या ऐसा हो सकता है कि केवल शांति एवं आनंद, और केवल भौतिक आशीष एवं क्षणिक सुख ही मनुष्य के जीवन-विकास के लिए लाभदायक हैं? यदि मनुष्य न्याय की जीवन-शैली के बिना एक सुहावने

और आरामदेह वातावरण में रहे, तो क्या उसे शुद्ध किया जा सकता है? यदि मनुष्य बदलना और शुद्ध होना चाहता है, तो उसे पूर्ण किए जाने को कैसे स्वीकार करना चाहिए? आज तुम्हें कौनसा पथ चुनना चाहिए?

तुम लोगों को कार्य को समझना चाहिए—भ्रम में अनुसरण मत करो!

आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो भ्रमित तरीके से आस्था रखते हैं। तुम लोगों के अंदर जिज्ञासा बहुत अधिक है, आशीषों को प्राप्त करने की इच्छा बहुत अधिक है, और जीवन खोजने की आकांक्षा बहुत कम है। आजकल, लोग यीशु में अपने विश्वास को लेकर उत्साह से भरे हुए हैं। यीशु उन्हें वापस स्वर्गिक घर में ले जाने वाला है, तो वे विश्वास कैसे न करें? कुछ लोग जीवन भर विश्वासी रहे हैं; चालीस या पचास वर्षों तक विश्वास रखने के बाद भी वे बाइबल पढ़ते हुए कभी थकते नहीं। इसका कारण यह है कि उनका मानना है[क] कि चाहे कुछ भी हो जाए, जब तक उनमें आस्था है, तब तक वे स्वर्ग जा पाएंगे। तुम लोग केवल कुछ ही सालों से इस पथ पर परमेश्वर के पीछे चल रहे हो, लेकिन तुम्हारे कदम पहले ही लड़खड़ा गए हैं; तुम लोगों ने सहनशीलता खो दी है, क्योंकि आशीष प्राप्त करने की तुम लोगों की इच्छा कुछ ज़्यादा ही मज़बूत है। तुम लोगों का इस सच्ची राह पर चलना, आशीष प्राप्त करने की तुम्हारी इच्छा और तुम्हारी जिज्ञासा द्वारा संचालित है। तुम लोगों को कार्य के इस चरण के विषय में बहुत समझ नहीं है। आज जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह अधिकतर उन लोगों पर लक्षित नहीं है जो यीशु में विश्वास रखते हैं, न ही मैं यह उनकी धारणाओं का विरोध करने के लिए कह रहा हूँ। वास्तव में, जिन धारणाओं का खुलासा किया गया है ये वही हैं जो तुम लोगों के अंदर मौजूद हैं, क्योंकि तुम लोग समझते नहीं कि बाइबल को क्यों त्याग दिया गया है, मैं क्यों कहता हूँ कि यहोवा का कार्य पुराना हो गया है, या मैं क्यों कहता हूँ कि यीशु का कार्य पुराना हो गया है। बात यह है कि तुम लोग कई धारणाएं पाले हुए हो जिन्हें तुम लोगों ने अब तक खुलकर कहा नहीं है, साथ ही तुम लोगों के दिल की गहराई में कई विचार बंद हैं, और तुम लोग बस भीड़ के पीछे चलते हो। क्या तुम लोगों को सच में लगता है कि तुम लोगों ने कई धारणाएं नहीं पाल रखी हैं? बात बस इतनी-सी है कि तुम लोग उनके बारे में बोलते नहीं हो! दरअसल, तुम लोग केवल बेमन से परमेश्वर का अनुसरण करते हो, और सही राह की खोज करने की कोशिश नहीं करते, तुम जीवन को प्राप्त करने के इरादे से नहीं आए हो। तुम लोगों का रवैया बस ये है कि देखें क्या होता है। क्योंकि तुम लोगों ने अपनी कई

पुरानी धारणाओं को छोड़ा नहीं है, तुम लोगों में से ऐसा कोई भी नहीं है जो स्वयं को पूरी तरह से अर्पित करने में सक्षम हो। इस बिंदु पर पहुंचने के बाद भी, दिन और रात तुम्हारे अंदर विचार उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं, तुम लोग अभी भी अपनी नियति के बारे में चिंतित बने रहते हो और कभी भी इसे छोड़ नहीं पाते। क्या तुम्हें लगता है कि जब मैं फ़रीसियों के बारे में बात करता हूँ, तो मैं धर्म के "पुरनियों" का उल्लेख कर रहा होता हूँ? क्या तुम लोग वर्तमान युग के सबसे अग्रिम फ़रीसियों के प्रतिनिधि नहीं हो? क्या तुम्हें लगता है कि जब मैं उन लोगों का उल्लेख करता हूँ, जो मुझे बाइबल की कसौटी पर जांचते हैं, तो मैं वे केवल धार्मिक मंडलियों के उन बाइबल विशेषज्ञों के बारे में ही बात कर रहा होता हूँ? क्या तुम मानते हो कि जब मैं उन लोगों के बारे में बात करता हूँ जो एक बार फिर क्रूस पर परमेश्वर को चढ़ा रहे हैं, तो मैं धार्मिक मंडलियों के अगुआओं के बारे में बात कर रहा हूँ? क्या तुम लोग उन सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में से एक नहीं हो जो यह भूमिका निभाने के एकदम योग्य हैं? क्या तुम्हें लगता है कि लोगों की धारणाओं के विरुद्ध मैं जो वचन कहता हूँ वो बस मज़हबी पादरियों और एल्डरों का मज़ाक उड़ाना है? क्या तुम लोगों ने भी इन सभी चीज़ों में अपनी भूमिका नहीं निभाई है? क्या तुम लोग आश्वस्त हो कि तुम लोगों ने बस कुछ ही धारणाएं पाल रखी हैं? बात बस इतनी-सी है कि अब तुम सबने चालाक बनना सीख लिया है। तुम लोग उन चीज़ों के बारे में बात नहीं करते या उनके बारे में अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं करते जिन्हें तुम लोग समझते नहीं हो, लेकिन तुम्हारे भीतर ऐसा दिल नहीं है जिसमें श्रद्धा और समर्पण हो| जैसा कि तुम लोग देख सकते हो, पढ़ना, देखना, और प्रतीक्षा करना, आज तुम लोगों के अभ्यास के सर्वोत्तम तरीके हैं। तुम लोगों ने ज़्यादा ही चालाक होना सीख लिया है। परंतु, क्या तुम लोगों को इसका एहसास है कि यह एक तरह का मनोवैज्ञानिक कपट है? क्या तुम लोगों को लगता है कि तुम लोगों की कुछ पल की चतुराई तुम लोगों को अनन्त ताड़ना से बचने में मदद करेगी? तुम लोगों ने इतना "बुद्धिमान" होना सीख लिया है! और तो और, कुछ लोग तो मुझसे ऐसे प्रश्न करते हैं : "किसी दिन, जब धार्मिक जगत के लोग मुझसे पूछेंगे, तुम लोगों के परमेश्वर ने एक भी चमत्कार 'क्यों नहीं किया है?' मैं उन्हें कैसे समझाऊँ?" आजकल, यह ऐसा कुछ नहीं जो केवल धर्म जगत के लोग पूछेंगे; बात ये भी है कि तुम आज के कार्य को समझते नहीं हो, और तुम बहुत सी धारणाओं के तहत जीते हो। क्या तुम्हें अब भी नहीं पता है कि जब मैं धार्मिक अधिकारियों का उल्लेख करता हूँ, तो मैं किसके बारे में बात कर रहा होता हूँ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं किसके लिए बाइबल समझा रहा हूँ? क्या तुम नहीं जानते कि जब मैं परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों को स्पष्ट करता हूँ,

तो मैं किसके लिए बोल रहा हूँ? अगर मैं इन बातों को न कहता, तो क्या तुम लोग इतनी आसानी से आश्वस्त हो जाते? क्या तुम लोग इतनी आसानी से सर झुकाते? क्या तुम लोग इतनी आसानी से उन पुरानी धारणाओं को छोड़ देते? विशेषकर वे "मर्दाने पुरुष", जिन्होंने कभी भी किसी को समर्पण नहीं किया है—क्या वे इतनी आसानी से समर्पित हो जाते? हालांकि मुझे पता है कि तुम लोगों की मानवता निचली कोटि की है, तुम बहुत कम योग्य हो, तुम्हारे पास कम विकसित मस्तिष्क है, और परमेश्वर में विश्वास करने का लंबा इतिहास नहीं है, दरअसल वास्तव में तुम लोगों की कई धारणाएं हैं, और तुम लोगों की अंतर्निहित प्रकृति यह नहीं है कि तुम किसी के समक्ष भी आसानी से झुक जाओ। परंतु, आज तुम इसलिए झुक पा रहे हो क्योंकि तुम मजबूर और असहाय हो; तुम एक लोहे के पिंजरे में बंद बाघ की तरह हो, जो अपने कौशल का स्वतंत्र रूप से उपयोग नहीं कर पा रहा है। अगर तुम लोगों के पास पंख भी होते, तो भी तुम्हें उड़ान भरना मुश्किल लगता। भले ही तुम लोगों को आशीष नहीं दी गयी है, फिर भी तुम लोग पीछे चलने के लिए तैयार हो। लेकिन, यह तुम लोगों का "अच्छे इंसानों" वाला मिजाज नहीं है, बल्कि बात यह है कि तुम लोगों को पूरी तरह चित्त कर दिया गया है, और तुम लोगों को कुछ समझ नहीं आ रहा है। बात यह है कि इस सारे कार्य ने तुम लोगों को चारों खाने चित्त कर दिया है। यदि कोई ऐसी चीज़ होती जिसे तुम लोग प्राप्त कर सकते, तो तुम लोग जितने आज्ञाकारी आज हो उतने नहीं होते, क्योंकि पहले, तुम लोग जंगल में घूमते जंगली गधों की तरह थे। इस प्रकार, आज जो कहा जा रहा है, वह केवल विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के लिए नहीं है, न ही यह सिर्फ़ उनकी धारणाओं का विरोध करने के लिए है; बल्कि यह तुम लोगों की धारणाओं का विरोध करने के लिए है।

धार्मिकता का न्याय शुरू हो चुका है। क्या अब भी परमेश्वर लोगों के लिए एक पाप-बलि होगा? क्या वह एक बार फिर उनके लिए एक उत्कृष्ट चिकित्सक के रूप में कार्य करेगा? क्या परमेश्वर का इससे बड़ा कोई अधिकार नहीं है? लोगों के एक समूह को पहले ही पूरा किया जा चुका है, और उन्हें सिंहासन के सामने लाया जा चुका है; क्या वह अभी भी दुष्टात्माओं को निकालेगा और बीमारों के रोगों को दूर करेगा? क्या यह कुछ ज़्यादा ही पुराना नहीं है? अगर इसी तरह से चलता रहा तो क्या गवाही संभव होगी? एक बार क्रूस पर लटकाये जाने से क्या परमेश्वर हमेशा के लिए क्रूस पर चढ़ा दिया जाएगा? क्या एक बार दुष्टात्माओं को बाहर निकालने के बाद, वह उन्हें हमेशा ही बाहर निकालता रहेगा? क्या यह अपमान के तुल्य नहीं होगा? जब कार्य का यह चरण पहले की तुलना में अधिक उत्कृष्ट होगा, तब ही युग प्रगति की

ओर आगे बढ़ेगा, और तब अंत के दिन आ चुके होंगे, और यह इस युग की समाप्ति का समय होगा। इसलिए जो लोग सत्य के पीछे चलते हैं, उन्हें दर्शनों की थाह पाने पर ध्यान देना चाहिए; यही नींव है। हर बार जब दर्शनों के बारे में मैं तुम लोगों के साथ सहभागिता करता हूँ, तो मैं हमेशा देखता हूँ कि कुछ लोगों की पलकें झपक जाती हैं और वे सो जाते हैं, सुनना नहीं चाहते। दूसरे लोग पूछते हैं : "तुम सुन क्यों नहीं रहे हो?" वे कहते हैं, "यह मेरे जीवन या वास्तविकता में मेरे प्रवेश की मदद नहीं करता। हमें अभ्यास की राहों की आवश्यकता है।" जब भी मैं अभ्यास के मार्गों की बजाय कार्य की बात करता हूँ, तो वे कहते हैं, "जैसे ही तुम कार्य के बारे में बात करते हो, मुझे नींद आने लगती है।" जब मैं अभ्यास के मार्गों के बारे में बात करना शुरू करता हूँ, वे नोट लिखने लगते हैं, जब मैं फिर से कार्य समझाने की बात करना शुरू करता हूँ, तो वे वापस सुनना बंद कर देते हैं। क्या तुम लोगों को पता है कि फिलहाल तुम्हारे अंदर कौन-सी बातें होनी चाहिए? इसके एक पहलू में कार्य के बारे में दर्शन शामिल है, और दूसरा पहलू है तुम्हारा अभ्यास। तुम्हें इन दोनों पहलुओं को समझना होगा। यदि जीवन में प्रगति करने की तुम्हारी खोज में दर्शनों की कमी है, तो तुम्हारी कोई नींव नहीं होगी। यदि तुम्हारे पास केवल अभ्यास के मार्ग हैं और दर्शन बिल्कुल भी नहीं है, और पूरी प्रबंधन योजना के कार्य की कोई भी समझ नहीं है, तो तुम बेकार हो। तुम्हें उन सत्यों को समझना होगा जिसमें दर्शन शामिल हैं, और जहाँ तक अभ्यास से संबंधित सत्यों का प्रश्न है, तुम्हें उन्हें समझने के बाद अभ्यास के उचित मार्गों की खोज करनी होगी; तुम्हें वचनों के अनुसार अभ्यास करना चाहिए, और अपनी स्थिति के अनुसार उसमें प्रवेश करना चाहिए। दर्शन नींव हैं, और यदि तुम इस तथ्य पर ध्यान नहीं देते, तो तुम अंत तक अनुसरण नहीं कर सकोगे। इस तरह अनुभव करना, या तो तुम्हें भटका देगा या तुम्हें नीचे गिराकर विफल कर देगा। तुम्हारे लिए सफल होने का कोई रास्ता नहीं होगा! जिन लोगों की नींव में महान दर्शन नहीं हैं, वे विफल ही होते हैं, सफल नहीं हो सकते। तुम मजबूती से खड़े नहीं रह सकते हो! क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर में विश्वास करने का अर्थ क्या है? क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर के अनुसरण में क्या शामिल होता है? दर्शनों के बिना, तुम किस मार्ग पर चलोगे? आज के कार्य में, यदि तुम्हारे पास दर्शन नहीं हैं तो तुम किसी भी हाल में पूरे नहीं किए जा सकोगे। तुम किस पर विश्वास करते हो? तुम उसमें आस्था क्यों रखते हो? तुम उसके पीछे क्यों चलते हो? क्या तुम्हें अपना विश्वास कोई खेल लगता है? क्या तुम अपने जीवन के साथ किसी खेल की तरह बर्ताव कर रहे हो? आज का परमेश्वर सबसे महान दर्शन है। उसके बारे में तुम्हें कितना पता है? तुमने उसे कितना देखा है? आज

के परमेश्वर को देखने के बाद क्या परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास की नींव मजबूत है? क्या तुम्हें लगता है कि जब तक तुम इस उलझन भरे रास्ते पर चलते रहोगे, तुम्हें उद्धार प्राप्त होगा? क्या तुम्हें लगता है कि तुम कीचड़ से भरे पानी में मछली पकड़ सकते हो? क्या यह इतना सरल है? परमेश्वर ने आज जो वचन कहे हैं, उनसे संबंधित कितनी धारणाएं तुमने दरकिनार की हैं? क्या तुम्हारे पास आज के परमेश्वर का कोई दर्शन है? आज के परमेश्वर के बारे में तुम्हारी समझ क्या है? तुम हमेशा मानते हो कि उसके पीछे चलकर तुम उसे[ख] प्राप्त कर सकते हो, उसे देखकर तुम उसे प्राप्त कर सकते हो, और कोई भी तुम्हें हटा नहीं सकेगा। ऐसा न मान लो कि परमेश्वर के पीछे चलना इतनी आसान बात है। मुख्य बात यह है कि तुम्हें उसे जानना चाहिए, तुम्हें उसका कार्य पता होना चाहिए, और तुम में उसके वास्ते कठिनाई का सामना करने की इच्छा होनी चाहिए, उसके लिए अपने जीवन का त्याग करने और उसके द्वारा पूर्ण किए जाने की इच्छा होनी चाहिए। तुम्हारे पास यह दर्शन होना चाहिए। अगर तुम्हारे ख़्याल हमेशा अनुग्रह पाने की ओर झुके रहते हैं, तो यह नहीं चलेगा। यह मानकर न चलो कि परमेश्वर यहाँ केवल लोगों के आनंद और केवल उन पर अनुग्रह बरसाने के लिए है। अगर तुम ऐसा सोचते हो तुम गलत होगे! अगर कोई उसका अनुसरण करने के लिए अपने जीवन को जोखिम में नहीं डाल सकता, संसार की प्रत्येक संपत्ति को त्याग नहीं कर सकता, तो वह अंत तक कदापि अनुसरण नहीं कर पाएगा! तुम्हारे दर्शन तुम्हारी नींव होने चाहिए। अगर किसी दिन तुम पर दुर्भाग्य आ पड़े, तो तुम्हें क्या करना चाहिए? क्या तुम तब भी उसका अनुसरण कर पाओगे? तुम अंत तक अनुसरण कर पाओगे या नहीं, इस बात को हल्के में न कहो। बेहतर होगा कि तुम पहले अपनी आँखों को अच्छे से खोलो और देखो कि अभी समय क्या है। भले ही तुम लोग वर्तमान में मंदिर के खंभों की तरह हो, परंतु एक समय आएगा जब ऐसे खंभे कीड़ों द्वारा कुतर दिये जाएंगे जिससे मंदिर ढह जाएगा, क्योंकि फिलहाल तुम लोगों में अनेक दर्शनों की बहुत कमी है। तुम लोग केवल अपने छोटे-से संसार पर ध्यान देते हो, तुम लोगों को नहीं पता कि खोजने का सबसे विश्वसनीय, सबसे उपयुक्त तरीका क्या है। तुम लोग आज के कार्य के दर्शन पर ध्यान नहीं देते, न ही तुम लोग इन बातों को अपने दिल में रखते हो। क्या तुम लोगों ने कभी सोचा है कि एक दिन परमेश्वर तुम लोगों को एक बहुत अपरिचित जगह में रखेगा? क्या तुम लोग सोच सकते हो जब मैं तुम लोगों से सब कुछ छीन लूँगा, तो तुम लोगों का क्या होगा? क्या उस दिन तुम लोगों की ऊर्जा वैसी ही होगी जैसी आज है? क्या तुम लोगों की आस्था फिर से प्रकट होगी? परमेश्वर के अनुसरण में, तुम लोगों का सबसे बड़ा दर्शन "परमेश्वर" होना चाहिए : यह

सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसके अलावा, यह न मान बैठो कि पवित्र होने के इरादे से सांसारिक मनुष्यों से मेलजोल छोड़कर तुम लोग परमेश्वर का परिवार बन ही जाओगे। इन दिनों में, परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि के बीच कार्य कर रहा है; वही लोगों के बीच अपना कार्य करने के लिए आया है—वह अभियान चलाने नहीं आया। तुम लोगों के बीच में, मुट्ठीभर भी ऐसे नहीं हैं जो जानते हों कि आज का कार्य स्वर्ग के परमेश्वर का कार्य है, जिसने देहधारण किया है। यह तुम लोगों को प्रतिभा से भरपूर उत्कृष्ट व्यक्ति बनाने के लिए नहीं है; यह मानवीय जीवन के मायने को जानने में, मनुष्यों की मंज़िल जानने के लिए, और परमेश्वर और उसकी समग्रता को जानने में तुम लोगों की मदद के लिए है। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम सृष्टिकर्ता के हाथ में सृजन की वस्तु हो। तुम्हें क्या समझना चाहिए, तुम्हें क्या करना चाहिए और तुम्हें परमेश्वर का अनुसरण कैसे करना चाहिए—क्या ये वे सत्य नहीं हैं जिन्हें तुम्हें समझना चाहिए? क्या ये वे दर्शन नहीं हैं जिन्हें तुम्हें देखना चाहिए?

एक बार जब लोगों को दर्शन हो जाते हैं, तो उनका एक आधार होता है। जब तुम इस आधार पर अभ्यास करोगे, तो प्रवेश करना बहुत आसान होगा। इस तरह, एक बार जब तुम्हारे पास प्रवेश करने का आधार होगा, तो तुम्हें कोई गलतफहमी नहीं होगी, और तुम्हारे लिए प्रवेश करना बहुत आसान होगा। दर्शनों को समझने का, परमेश्वर के कार्य को जानने का यह पहलू महत्वपूर्ण है; तुम लोगों के भंडार में यह होना ही चाहिए। यदि सत्य का यह पहलू तुम्हारे अंदर नहीं है, और तुम केवल अभ्यास के मार्गों के बारे में ही बात करना जानते हो, तो तुम्हारे अंदर बहुत से दोष होंगे। मुझे पता चला है कि तुम लोगों में से कई सत्य के इस पहलू पर बल नहीं देते, और जब तुम इसे सुनते हो तो ऐसा लगता है कि तुम लोग केवल सिद्धांतों और शब्दों को सुन रहे हो। एक दिन तुम हार जाओगे। इन दिनों कुछ ऐसे कुछ कथन हैं जो तुम्हें ठीक से समझ नहीं आते हैं और जिन्हें तुम स्वीकार नहीं करते हो; ऐसे मामलों में तुम्हें धैर्यपूर्वक खोज करनी चाहिए, और वह दिन आएगा जब तुम समझ जाओगे। थोड़ा-थोड़ा करके तुम अधिक से अधिक दर्शन-लाभ करो। अगर तुम केवल कुछ आध्यात्मिक सिद्धांतों को ही समझ लो, तो भी यह दर्शनों की ओर ध्यान न देने से बेहतर होगा, और यह किसी भी सिद्धांत को न समझने से बेहतर होगा। यह सभी तुम्हारे प्रवेश के लिए सहायक हैं, और तुम्हारे उन संदेहों को दूर कर देंगे। यह तुम्हारे धारणाओं से भरा होने से बेहतर है। नींव के रूप में इन दर्शनों को रखने से तुम कहीं बेहतर स्थिति में होगे। तुम्हें किसी प्रकार की कोई गलतफहमी नहीं होगी, और तुम सिर उठाकर और आत्मविश्वास के साथ प्रवेश कर पाओगे। हमेशा

इतने भ्रमित और संदेहयुक्त होकर अनुसरण करने का क्या लाभ? क्या यह रेत में मुँह छिपाने जैसा नहीं है? विश्वास के साथ और सिर उठाकर राज्य में प्रवेश करना कितना अच्छा होगा! इतनी गलतफहमियाँ पालने से क्या लाभ? क्या तुम अपने पैर पर कुल्हाड़ी नहीं मार रहे हो? एक बार जब तुम्हें यहोवा के कार्य, यीशु के कार्य और कार्य के इस चरण की समझ प्राप्त हो जायेगी, तो तुम्हारे पास एक आधार होगा। इस पल, तुम्हें यह बहुत सरल लग सकता है। कुछ लोग कहते हैं, "जब समय आएगा और पवित्र आत्मा महान कार्य शुरू करेगा, तो मैं इन सभी चीज़ों पर बात कर पाऊँगा। अभी मैं इसलिए समझ नहीं पा रहा हूँ क्योंकि पवित्र आत्मा ने अभी तक मुझे उतना अधिक प्रबुद्ध नहीं किया है।" यह इतना आसान नहीं है; ऐसा कुछ नहीं है कि अगर तुम अभी सत्य[ग] स्वीकार करने के लिए तैयार हो, तो समय आने पर तुम इसका कुशलतापूर्वक उपयोग करोगे। ऐसा होगा आवश्यक नहीं है! तुम मानते हो कि तुम वर्तमान में बहुत अच्छी तरह से तैयार हो, और तुम्हें उन धार्मिक लोगों और महानतम सिद्धांतकारों को जवाब देने में कोई समस्या नहीं होगी, यहां तक कि उन्हें खारिज करने में भी कोई दिक्कत नहीं आएगी। क्या तुम वास्तव में ऐसा कर पाओगे? अपने इस सतही अनुभव के साथ तुम किस समझ की बात कर सकते हो? सत्य से युक्त होकर, सत्य की लड़ाई लड़ते हुए, परमेश्वर के नाम की गवाही देना, ये सब वैसे नहीं हैं जैसा तुम सोचते हो—कि जब तक परमेश्वर कार्य कर रहा है, सब कुछ पूरा हो जाएगा। उस समय तक, शायद तुम कुछ प्रश्नों से स्तब्ध हो जाओ, और फिर तुम अचंभित रह जाओगे। मुख्य बात यह है कि कार्य के इस चरण के बारे में तुम्हारे पास स्पष्ट समझ है या नहीं, और तुम वास्तव में इस बारे में कितना समझते हो। यदि तुम शत्रु शक्तियों पर विजय नहीं पा सकते, या तुम धार्मिक शक्तियों को पराजित नहीं कर सकते, तो फिर क्या तुम बेकार की वस्तु नहीं होगे? तुमने आज के कार्य का अनुभव किया है, इसे अपनी आंखों से देखा है और इसे अपने कानों से सुना है, लेकिन अगर अंत में तुम गवाही न दे पाओ, तो क्या फिर भी तुम्हारी इतनी जुर्रत होगी कि तुम जीवित बने रह सको? तुम किसका सामना कर पाओगे? अभी ऐसा न सोचो कि यह इतना सरल होगा। भविष्य का कार्य उतना सरल नहीं होगा जितनी तुम कल्पना करते हो; सत्य की लड़ाई लड़ना इतना आसान नहीं है, इतना सीधा नहीं है। इस वक्त, तुम्हें तैयार रहने की आवश्यकता है; यदि तुम सत्य से युक्त नहीं हो तो जब समय आएगा और पवित्र आत्मा अलौकिक तरीके से काम नहीं कर रहा होगा, तो तुम भ्रमित हो जाओगे।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "उनका मानना है" यह वाक्यांश नहीं है।

ख. मूल पाठ में "उसे" शब्द शामिल नहीं है।

ग. मूल पाठ में "सत्य" शब्द शामिल नहीं है।

अपने मार्ग के अंतिम दौर में तुम्हें कैसे चलना चाहिए

तुम सब अब अपने मार्ग के अंतिम चरण में हो, और यह इसका एक महत्वपूर्ण भाग है। शायद तुमने काफी दुःख सहा है, बहुत कार्य किया है, बहुत से मार्गों पर यात्रा की है, और बहुत उपदेशों को सुना है, और यहाँ तक पहुँचना सरल नहीं रहा है। यदि तुम उस दुःख को सह नहीं सकते जो तुम्हारे सामने है और यदि तुम वही करते रहते हो जो तुमने अतीत में किया था तो तुम सिद्ध नहीं किए जा सकते। यह तुम्हें डराने के लिए नहीं है—यह एक सच्चाई है। पतरस जब परमेश्वर के कार्य में से काफी हद तक होकर गया, तो उसने कुछ अंतर्दृष्टि और बातों को पहचानने की योग्यता प्राप्त की। उसने सेवा के सिद्धांत को भी काफी हद तक समझ लिया, बाद में वह उस कार्य के प्रति पूरी तरह से समर्पित होने में समर्थ हो गया जो यीशु ने उसे सौंपा था। वह महान शोधन जो उसने प्राप्त किया अधिकांशतः इसलिए था कि जो कार्य उसने किए, उनमें उसने अनुभव किया कि वह परमेश्वर के प्रति बहुत अधिक ऋणी है और वह कभी उस तक पहुँच नहीं पाएगा, और उसने पहचाना कि मनुष्यजाति बहुत अधिक भ्रष्ट है, इसलिए उसमें आत्म—ग्लानि की भावना थी। यीशु ने उससे बहुत सी बातें कहीं थीं और उस समय उसके पास थोड़ी सी समझ थी। कई बार उसने फिर भी विरोध और विद्रोह किया। यीशु के क्रूस पर चढ़ा दिए जाने के बाद, अंततः उसमें कुछ जागृति आई और उसने भयंकर रूप से दोषपूर्ण अनुभव किया। अंत में, यह एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया जहाँ अगर उसमें कोई त्रुटिपूर्ण विचार हो तो यह अस्वीकार्य लगता था। वह अपनी दशा को अच्छी तरह से जानता था, और वह प्रभु की पवित्रता को भी अच्छी तरह से जानता था। परिणामस्वरूप, प्रभु के लिए प्रेम से भरा ह्रदय उसमें और अधिक बढ़ गया, और उसने अपने जीवन पर और अधिक ध्यान दिया। इसके कारण, उसने बहुत सी मुश्किलों को सहा, और यद्यपि कई बार यह ऐसा था मानो कि उसे कोई गंभीर बीमारी हो और प्रतीत होता था मानो कि वह मर गया हो, बहुत बार इस प्रकार से शोधन किए जाने के बाद

उसे अपने बारे में अधिक समझ प्राप्त हुई, और केवल इस रीति से ही उसने प्रभु के लिए खरे प्रेम को विकसित किया था। ऐसा कहा जा सकता है कि उसका संपूर्ण जीवन शोधन में बीता, और उससे भी अधिक ताड़ना में बीता। उसका अनुभव दूसरे व्यक्ति के अनुभव से भिन्न था, और उसका प्रेम हर उस व्यक्ति से बढ़कर था जो सिद्ध नहीं किया गया था। उसको एक आदर्श के रूप में चुने जाने का कारण यह है कि उसने अपने जीवनकाल में सबसे अधिक पीड़ा का अनुभव किया और उसके अनुभव सबसे अधिक सफल थे। यदि तुम लोग वास्तव में मार्ग के अंतिम चरण में पतरस के समान चलने के योग्य हो, तो ऐसा कोई प्राणी नहीं है जो तुम्हारी आशीषों को छीन सके।

पतरस विवेक से भरा एक मनुष्य था और उस प्रकार के मनुष्यत्व के साथ भी, जब वह पहले-पहल यीशु का अनुसरण कर रहा था, तो उसके मन में विरोध और विद्रोह के बहुत से विचार अपरिहार्य रूप से आए। परंतु जब वह यीशु का अनुसरण कर रहा था, तो उसने इन बातों को गंभीरता से नहीं लिया, और उसने विश्वास किया कि लोगों को वैसा ही होना चाहिए। इसलिए, पहले-पहल उसने किसी आरोप को महसूस नहीं किया, और न ही उसने उससे कोई व्यवहार किया। यीशु उसकी प्रतिक्रियाओं के विषय में गंभीर नहीं था, और न ही उसने उन पर कोई ध्यान दिया। वह केवल उस कार्य को निरंतर करता रहा जो उसे करना था। उसने कभी पतरस और दूसरों में कमियाँ नहीं निकालीं। तुम ऐसा कह सकते हो: "क्या ऐसा हो सकता था कि यीशु उन विचारों के बारे में जानता ही न हो जिनके साथ उन्होंने प्रतिक्रिया दी थी।" बिलकुल नहीं! इसका कारण यह था कि वह पतरस को वास्तव में समझ गया था—यह कहा जा सकता था कि उसके बारे में उसे बहुत समझ थी—कि उसने पतरस के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाए। उसने मनुष्यजाति से घृणा की परंतु उस पर दया भी की। क्या अब तुम लोगों में ऐसे बहुत से लोग नहीं है जो पौलुस के समान विरोधी हों, और जिनमें पतरस के समान उस समय प्रभु यीशु के प्रति बहुत सी धारणाएँ हों? मैं तुम्हें बता दूँ, अच्छा होगा कि तुम अपने तीसरे इंद्रियज्ञान में विश्वास न करो। तुम्हारी भावना भरोसा करने योग्य नहीं है और बहुत पहले उसे शैतान की भ्रष्टता के द्वारा पूरी तरह से नाश कर दिया गया था। क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारी भावना पूर्ण रूप से सिद्ध है? पौलुस ने प्रभु यीशु का बहुत बार विरोध किया परंतु यीशु ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। क्या ऐसा हो सकता था कि वह बीमारों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने में तो समर्थ था, परंतु पौलुस के भीतर की "दुष्टात्मा" को निकालने में समर्थ नहीं था? ऐसा क्यों है कि यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद ही, जब पौलुस ने निर्दयतापूर्वक यीशु के

चेलों को गिरफ़्तार करना जारी रखा, यीशु अंततः दमिश्क के मार्ग पर उसके सामने प्रकट हुआ, और उसे नीचे गिरा दिया? क्या ऐसा हो सकता था कि यीशु ने बहुत धीरे प्रतिक्रिया दी हो? या फिर यह इसलिए था कि उसके पास शरीर में कोई अधिकार नहीं था? क्या तुम सोचते हो कि जब तुम मेरी पीठ पीछे गुप्त रूप से विनाशकारी और विरोधी होते हो, तो मुझे पता नहीं चलता? क्या तुम सोचते हो कि पवित्र आत्मा की ओर से तुम्हें मिले प्रबोधन के टुकड़ों का प्रयोग मेरा विरोध करने के लिए किया जा सकता है? जब पतरस अपरिपक्व था, तो उसने यीशु के प्रति बहुत से विचारों को विकसित किया, फिर उसको दोष के अधीन क्यों नहीं रखा गया? इस समय, बहुत से लोग बिना दोष के कार्य कर रहे हैं, और तब भी जब उन्हें स्पष्ट रूप से बताया जाता है कि वैसा करना ठीक नहीं है, वे फिर भी नहीं सुनते। क्या यह पूरी तरह से मनुष्य के विद्रोह के कारण नहीं है? मैं अब बहुत कुछ कह चुका हूँ, परंतु अब भी तुममें विवेक की थोड़ी सी भी समझ नहीं है, फिर तुम मार्ग के अंतिम चरण में अंत तक कैसे चल पाओगे? क्या तुम्हें महसूस नहीं होता कि यह एक महत्वपूर्ण विषय है?

जब लोगों पर विजय प्राप्त कर ली जाती है तब वे परमेश्वर की कार्ययोजना का पालन करने के योग्य हो जाते हैं; वे परमेश्वर से प्रेम करने और उसका अनुसरण करने के लिए अपने विश्वास और अपनी इच्छा पर भरोसा करने के योग्य हो जाते हैं। अतः मार्ग के अंतिम चरण में कैसे चला जा सकता है? क्लेश का अनुभव करने के तुम्हारे दिनों में तुम्हें सभी कठिनाइयों को सहना आवश्यक है, और तुममें दुःख सहने की इच्छा भी होनी चाहिए; केवल इसी रीति से तुम मार्ग के इस चरण में अच्छी तरह से चल पाओगे। क्या तुम सोचते हो कि मार्ग के इस चरण में चलना उतना सरल है? तुम्हें जानना चाहिए कि तुम्हें कौनसा कार्य पूरा करना है, तुम सबको अपनी—अपनी क्षमता बढ़ानी होगी और अपने को पर्याप्त सत्य के साथ लैस करना होगा। यह एक या दो दिनों का कार्य नहीं है—यह उतना सरल भी नहीं जितना तुम सोचते हो! मार्ग के अंतिम चरण में चलना इस बात पर निर्भर करता है कि वास्तव में तुममें किस प्रकार का विश्वास और किस प्रकार की इच्छा है। शायद तुम अपने भीतर पवित्र आत्मा को कार्य करता हुआ नहीं देख सकते, या शायद तुम कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य को खोज नहीं सकते, इसलिए तुम आगे के मार्ग के विषय में निराशावादी और हताश हो, और मायूसी से भरे हुए हो। विशेष रूप से, जो पहले बड़े—बड़े योद्धा थे वे सब गिर गए हैं—क्या यह सब तुम्हारे लिए आघात नहीं है? तुम्हें इन सब बातों को कैसे देखना चाहिए? क्या तुममें विश्वास है या नहीं? क्या तुम आज के कार्य को पूरी तरह से समझते हो या नहीं? ये बातें

निर्धारित कर सकती हैं कि तुम मार्ग के अंतिम चरण में अच्छी तरह से चलने में समर्थ हो या नहीं।

ऐसा क्यों कहा जाता है कि तुम सब अपने अपने मार्ग के अंतिम चरण में हो? यह इसलिए है कि तुम सब वह सब कुछ समझ गए हो जो तुम्हें समझना चाहिए, और मैंने तुम सबको वह सब कुछ बता दिया है जो तुम लोगों को हासिल करना है। मैंने तुम सबको वह सब कुछ भी बता दिया है जो तुम लोगों के भरोसे छोड़ा गया है। अतः, जिसमें अब तुम सब चल रहे हो वह मेरे द्वारा अगुवाई प्राप्त मार्ग का अंतिम चरण है। मैं केवल यही चाहता हूँ कि तुम सब स्वतंत्र रूप से रहने की योग्यता को प्राप्त कर सको, कि चाहे समय कोई भी हो तुम्हारे पास सदैव चलने के लिए एक मार्ग हो, हमेशा के समान अपनी क्षमता को बढ़ाओ, परमेश्वर के वचनों को सामान्य रूप से पढ़ो, और एक सामान्य मानवीय जीवन जीयो। मैं अब तुम्हारी इस प्रकार से जीने में अगुवाई कर रहा हूँ, परंतु भविष्य में मैं जब तुम्हारी अगुआई नहीं करूँगा, क्या तुम तब भी इस प्रकार जी पाओगे? क्या तुम निरंतर आगे बढ़ पाओगे? पतरस का अनुभव यही था। जब यीशु उसकी अगुवाई कर रहा था, तो उसमें कोई समझ नहीं थी; वह हमेशा एक बच्चे के समान बेफिक्र था, और वह उन कार्यों के प्रति गंभीर नहीं था जो उसने किए। यीशु के प्रस्थान के बाद ही उसने अपना सामान्य मानवीय जीवन आरंभ किया। उसका अर्थपूर्ण जीवन यीशु के चले जाने के बाद ही आरंभ हुआ। यद्यपि उसमें सामान्य मनुष्यत्व का थोड़ा सा विवेक था और जो एक सामान्य मनुष्य में होना चाहिए, फिर भी उसका सच्चा अनुभव और अनुसरण यीशु के प्रस्थान तक नए रूप में आरंभ नहीं हुआ। इस समय तुम सबके लिए परिस्थितियाँ कैसी हैं? मैं अभी तुम्हारी अगुवाई इस मार्ग में कर रहा हूँ और तुम सोचते हो कि यह बहुत अच्छा है। ऐसे कोई बुरे वातावरण और कोई परीक्षाएँ नहीं हैं जो तुम पर पड़ती हैं, परंतु इस रीति से ऐसा कोई तरीका नहीं है कि तुम यह देख सको कि वास्तव में तुम्हारी क्षमता कितनी है, और न ही ऐसा कोई तरीका है जिसमें तुम यह देख सको कि क्या तुम वास्तव में एक ऐसे व्यक्ति हो या नहीं जो सत्य का अनुसरण करता है। तुम अपने मुंह से कहते हो कि तुम अपने तत्व को जानते हो, परंतु ये सब व्यर्थ के शब्द हैं। बाद में जब तुम वास्तविकताओं का सामना करोगे, केवल तभी तुम्हारी समझ प्रमाणित होगी। यद्यपि अभी तुम्हारे पास इस प्रकार की समझ है: "मैं समझता हूँ कि मेरा अपना शरीर बहुत ही भ्रष्ट है, और लोगों के शरीर का सार परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करना और उसका विरोध करना है। परमेश्वर के दंड और उसकी ताड़ना को ग्रहण करने के योग्य बनना ही उसकी संपूर्ण उन्नति है। मैं अब यह समझ चुका हूँ, और मैं परमेश्वर के प्रेम का बदला चुकाने के लिए तैयार हूँ," जो कि कहना आसान है, बाद में जब

तुम पर क्लेश, परीक्षाएँ और दुःख आएँगे तो उनमें से होकर जाना आसान नहीं होगा। तुम सब प्रतिदिन इस तरीके का अनुसरण करते हो, परंतु तुम सब अब भी अपने अनुभव को निरंतर जारी रखने में असमर्थ हो। यह तब और भी बदतर हो जाएगा यदि मैं तुमको छोड़ दूँ और फिर कभी तुम पर कोई ध्यान न दूँ; अधिकाँश लोग गिर पड़ेंगे और नमक का खंभा, अर्थात् अपमान का प्रतीक बन जाएँगे। ये सब बातें संभव हैं। क्या तुम इनके विषय में चिंतित या व्याकुल नहीं हो? पतरस इस प्रकार के वातावरण से होकर गया और उसने इस प्रकार के दुःख का अनुभव किया, परंतु वह फिर भी दृढ़ खड़ा रहा। यदि ऐसा वातावरण तुम्हारे जीवन में लाया जाए, तो क्या तुम दृढ़ खड़े रह पाओगे? वे बातें जो यीशु ने कहीं और जो कार्य उसने किया जब वह पृथ्वी पर था, उसने पतरस को एक नींव प्रदान की, और इस नींव से वह बाद के मार्ग में चला। क्या तुम सब उस स्तर तक पहुँच सकते हो? जिन मार्गों पर तुम पहले चले हो और वे सत्य जिन्हें तुम समझ चुके हो—क्या वे तुम्हारी नींव बन सकते हैं जिस पर तुम भविष्य में दृढ़ खड़े रह सकते हो? क्या वे बाद में दृढ़ खड़े रहने का तुम्हारा दर्शन बन सकते हैं? मैं तुम लोगों को सत्य बताऊँगा—कोई यह कह सकता है कि जो कुछ लोग वर्तमान में समझते हैं वे सब धर्मसिद्धांत हैं। यह इसलिए है क्योंकि जो वे समझते हैं वे सब ऐसी बातें नहीं हैं जिनका अनुभव उन्होंने किया है। अब तक जिसे तुम निरंतर जारी रख सके वह पूरी तरह से नए प्रकाश की अगुवाई के कारण है। यह नहीं कि तुम्हारी क्षमता एक निश्चित स्तर तक पहुँच गई है, परंतु ये मेरे शब्द हैं जिन्होंने तुम्हारी आज तक अगुवाई की है; यह नहीं कि तुममें एक बड़ा विश्वास है, बल्कि मेरे वचनों की बुद्धि के कारण तुम अब तक मेरा अनुसरण कर पाए। यदि मैं अब नहीं बोलता, अपनी आवाज नहीं निकालता, तो तुम आगे बढ़ने में असमर्थ होते और उसी समय आगे बढ़ने से रुक जाते। क्या यह तुम लोगों की वास्तविक क्षमता नहीं है? तुम लोग बिलकुल नहीं जानते कि किन पहलुओं से भीतर प्रवेश करना है और किन पहलुओं से उनकी पूर्ति करनी है जिनकी तुममें कमी है। तुम लोग नहीं समझते कि एक अर्थपूर्ण मानवीय जीवन को कैसे जीएँ, परमेश्वर के प्रेम का बदला कैसे चुकाएँ, या एक मजबूत या प्रभावशाली गवाही कैसे दें। तुम लोग इन कार्यों को पूरा कर ही नहीं सकते। तुम लोग आलसी और निर्बुद्धि दोनों हो! तुम लोग केवल यह कर सकते हो कि किसी और बात पर निर्भर रहो, और जिस पर तुम लोग निर्भर रहते हो वह नया प्रकाश है, और वह है जो आगे तुम्हारी अगुवाई कर रहा है। आज तक तुम्हारा दृढ़ बने रहना पूरी तरह से नए प्रकाश और ताजा वचनों पर पूरी तरह से निर्भर रहने के द्वारा ही हुआ है। तुम लोग पतरस के समान बिलकुल नहीं हो, जो सच्चे मार्ग का अनुसरण करने में प्रवीण

था, या अय्यूब के समान जो भक्ति के साथ यहोवा की आराधना करने और यह विश्वास करने में समर्थ था कि यहोवा ने चाहे कैसे भी उसकी परीक्षा ली हो और चाहे वह उसे आशीष दे या न दे, वह परमेश्वर ही है। क्या तुम ऐसा कर सकते हो? तुम सब पर विजय कैसे पाई गई है? एक पहलू है दंड, ताड़ना और श्राप, और दूसरा पहलू है वे रहस्य जो तुम सब पर विजय प्राप्त करते हैं। तुम सब गधों के समान हो। जो मैं कहता हूँ यदि वह आकर्षित करने वाला न हो, यदि कोई रहस्य न हो, तो तुम सब पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। यदि कोई प्रचार करने वाले व्यक्ति हों और वे कुछ समय तक हमेशा एक जैसी बातों का प्रचार करते रहें, तो तुम सब दो सालों से भी कम समय में भाग खड़े होओगे, और तुम लोग आगे नहीं बढ़ पाओगे। तुम लोग नहीं जानते कि गहराई में कैसे जाएँ, न ही तुम लोग समझते हो कि सत्य या जीवन के मार्ग का अनुसरण कैसे करें। तुम लोग केवल उसे ही ग्रहण करने की बात समझते हो जो कुछ नया हो, जैसे कि रहस्यों या दर्शनों को सुनना, या फिर यह सुनना कि परमेश्वर कैसे कार्य करता था, या पतरस के अनुभवों को सुनना, या फिर यीशु के क्रूसीकरण की पृष्ठभूमि को सुनना...। तुम लोग केवल इन बातों को सुनना चाहते हो, और जितना तुम सुनते हो, उतने ही अधिक उत्साहित हो जाते हो। तुम लोग यह सब अपने दुःख और विरक्ति को दूर करने के लिए सुनते हो। तुम्हारे जीवन इन नई बातों के द्वारा ही पूरी तरह से चलाए जाते हैं। क्या तुम सोचते हो कि तुम आज यहाँ तुम्हारे अपने विश्वास के द्वारा पहुंचे हो? क्या यह तुम्हारी उस क्षमता का तुच्छ, दयनीय अंश नहीं है जो तुममे है? तुम्हारी खराई कहाँ है? क्या तुम लोगों में मानवीय जीवन है? सिद्ध किए जाने के लिए तुम लोगों में कितने तत्व हैं? क्या मैं जो कह रहा हूँ वह वास्तविकता नहीं है? मैं इस रीति से बोलता और कार्य करता हूँ परंतु तुम लोग फिर भी कोई ध्यान नहीं देते। जब तुम लोग अनुसरण करते हो तो तुम लोग देखते भी रहते हो। तुम लोग हमेशा उदासीनता का रूप बनाए रखते हो, और तुम सब हमेशा नाक के द्वारा अगुवाई पाते हो। तुम सब लोग ऐसे ही आगे बढ़े हो। आज तक ताड़ना, शुद्धिकरणों और कष्टों ने ही तुम सब की यहाँ तक अगुवाई की है। यदि जीवन के प्रवेश पर आधारित कुछ संदेशों का ही प्रचार किया जाता, तो क्या तुम लोग बहुत पहले ही नहीं भटक गए होते? तुम लोगों में से प्रत्येक दूसरे से अधिक दंभ से भरा हुआ है; वास्तव में तुम सब कुछ और से नहीं बल्कि गंदे पानी से भरे हुए हो! तुमने कुछ रहस्यों को समझ लिया है, और तुमने कुछ ऐसी बातों को समझ लिया है जिन्हें मनुष्यों ने पहले नहीं समझा था, इस प्रकार तुम अब तक मुश्किल से बने रहे हो। तुम लोगों के पास अनुसरण न करने का कोई कारण नहीं है, इसलिए तुमने मुश्किल से ही अपने आपको मजबूत

किया है और बहाव के साथ बहे हो। यही वह परिणाम है जो मेरे वचनों के द्वारा प्राप्त किया गया है, परंतु यह निश्चित रूप से तुम्हारी सफलता नहीं है। तुम्हारे पास घमंड करने के लिए कुछ भी नहीं है। अतः कार्य के इस चरण में तुम लोगों की आज तक मुख्य रूप से वचनों के द्वारा अगुवाई की गई है। अन्यथा, तुममें से कौन लोग आज्ञा मानने में सक्षम होंगे? कौन आज तक बने रहने में सक्षम होगा? आरंभ से ही तुम लोग छोड़ देना चाहते थे, परंतु तुमने इसका साहस नहीं किया; तुम लोगों में साहस नहीं था। आज तक तुम लोग आधे—अधूरे मन से अनुसरण कर रहे हो।

यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिए जाने और उसके प्रस्थान के बाद ही पतरस अपने मार्ग में आगे बढ़ने लगा, उस मार्ग में चलने लगा जिसमें उसे चलना चाहिए था; वह अपनी कमजोरियों और कमियों को देख लेने के बाद ही प्रशिक्षित होना आरंभ हुआ। उसने देखा कि उसमें परमेश्वर के लिए बहुत कम प्रेम था और दुःख सहने की उसकी इच्छा अपर्याप्त थी, कि उसमें कोई अंतर्दृष्टि नहीं थी, और कि उसके विवेक में कमी थी। उसने देखा कि उसमें ऐसी बहुत सी बातें थीं जो यीशु की इच्छा के अनुरूप नहीं थीं, और ऐसी बहुत सी बातें थीं जो विद्रोही और विरोधी थीं और ऐसी भी बहुत सी बातें थीं जो मानवीय इच्छा के साथ मिली हुई थीं। यह उसके बाद ही हुआ कि उसे प्रत्येक पहलू में प्रवेश मिला। जब यीशु उसकी अगुवाई कर रहा था, तो उसने उसकी दशा को प्रकट किया और पतरस ने उसे स्वीकार किया और आसानी से सहमत हो गया, परंतु उस समय से पहले तक उसमें सच्ची समझ नहीं थी। यह इसलिए था क्योंकि उसमें कोई अनुभव नहीं था, और वह अपनी क्षमता को बिलकुल नहीं जानता था। कहने का अर्थ यह है कि मैं तुम लोगों को अगुवाई देने के लिए अब केवल वचनों का प्रयोग कर रहा हूँ, और इतने कम समय में तुम लोगों को सिद्ध बनाना असंभव है, और तुम लोग केवल सत्य को समझ और जान पाओगे। इसका कारण यह है कि तुम पर विजय पाना और तुम्हारे हृदयों में तुम्हें आश्वस्त करना वर्तमान कार्य है, लोगों पर विजय प्राप्त करने के बाद ही उनमें से कुछ लोग सिद्ध किए जाएँगे। इस समय वे दर्शन और वे सत्य जिन्हें तुम समझते हो, वे तुम्हारे भविष्य के अनुभवों की एक नींव की रचना कर रहे हैं; भविष्य के क्लेश में तुम सब इन वचनों के व्यावहारिक अनुभव को प्राप्त करोगे। बाद में, जब परीक्षाएँ तुम्हारे ऊपर आएँगी और तुम क्लेश से होकर जाओगे, तो तुम उन वचनों के बारे में सोचोगे जिन्हें तुम आज कहते हो: चाहे कैसे भी क्लेश, परीक्षाओं, या बड़े कष्टों का मैं अनुभव करूँ, मुझे परमेश्वर को संतुष्ट करना आवश्यक है। पतरस के अनुभव के बारे में सोचें, और अय्यूब के अनुभव के बारे में सोचें—तुम आज के वचनों के द्वारा उत्तेजित हो जाओगे। केवल

इस प्रकार से तुम्हारा विश्वास प्रेरित हो सकता है। उस समय, पतरस ने कहा कि वह परमेश्वर के दंड और उसकी ताड़ना को प्राप्त करने के योग्य नहीं था, और तब तक तुम भी सब लोगों को अपने द्वारा परमेश्वर के धर्मी स्वभाव को दिखाने के लिए तैयार हो जाओगे। तुम तत्परता के साथ उसके दंड और उसकी ताड़ना को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाओगे, और उसका दंड, उसकी ताड़ना, और उसका श्राप तुम्हारे लिए राहत का कारण होगा। अब, तुम्हारा सत्य से लैस न होना बिलकुल स्वीकार्य नहीं है। न केवल तुम भविष्य में दृढ़ खड़े रहने में असमर्थ होओगे, बल्कि वर्तमान कार्य में से होकर जाने में भी शायद सक्षम नहीं होओगे। इस रीति से, क्या तुम निष्कासन और सजा के पात्र नहीं होओगे? अभी ऐसी कोई वास्तविकताएँ नहीं हैं जो तुम पर आ पड़ी हों, और जिन किन्हीं पहलुओं में तुममें घटी है, मैंने उनमें तुम्हारी पूर्ति की है; मैं हर पहलू से बात करता हूँ। तुम लोगों ने वास्तव में अधिक दुःख नहीं सहे हैं; तुम लोग केवल वही ले लेते हो जो उपलब्ध होता है, तुम लोगों ने कोई मूल्य नहीं चुकाया है, और इससे बढ़कर तुम लोगों के पास अपने सच्चे अनुभव और अंतर्दृष्टियाँ भी नहीं हैं। इसलिए, जो तुम समझते हो वह तुम्हारी सच्ची क्षमता नहीं है। तुम लोग केवल समझ, ज्ञान और दृष्टि तक सीमित हो, परंतु तुमने अधिकाँश कटनी नहीं काटी है। यदि मैंने तुम लोगों पर कभी ध्यान नहीं दिया होता बल्कि तुम्हें तुम्हारे अपने घर में अनुभवों से होकर जाने देता, तो तुम बहुत पहले ही निकलकर इस बड़े संसार में वापस चले गए होते। जिस मार्ग पर तुम लोग भविष्य में चलोगे वह दुःख का मार्ग होगा, और यदि तुम लोग मार्ग के वर्तमान चरण में अच्छी तरह से चलते हो, और जब बाद में तुम बड़े क्लेश से होकर जाते हो, तो तुम लोगों के पास एक साक्षी होगी। अगर तुम मानवीय जीवन के महत्व को समझते हो, और तुमने मानवीय जीवन के सही मार्ग को अपनाया है, और अगर भविष्य में परमेश्वर तुमसे जैसा भी व्यवहार करे, तुम बिना किन्हीं शिकायतों या विकल्पों के परमेश्वर की योजनाओं के प्रति समर्पित हो जाओगे, और तुम्हें परमेश्वर से कोई मांगें भी नहीं रहेंगी, इस रीति से तुम महत्व से युक्त एक व्यक्ति होगे। अभी तक तुम क्लेश से होकर नहीं गए हो, इसलिए तुम किसी भी बात का पालन कर सकते हो। तुम कहते हो कि परमेश्वर जैसे भी अगुवाई करता है ठीक है, और कि तुम उसकी सारी योजनाओं के प्रति समर्पित रहोगे। परमेश्वर चाहे तुम्हें ताड़ना देता है या श्राप, तुम उसे संतुष्ट करने के लिए तैयार रहोगे। ऐसा कहकर जो अब तुम कहते हो वह जरुरी नहीं है कि तुम्हारी क्षमता को प्रस्तुत करे। अब तुम जो करने के लिए तैयार हो वह यह नहीं दर्शा सकता कि तुम अंत तक अनुसरण करने में सक्षम हो। जब बड़े क्लेश तुम पर आते हैं या जब तुम किसी सताव या उत्पीड़न से, या फिर बड़ी

परीक्षाओं से होकर जाते हो, तो तुम उन शब्दों को नहीं कह पाओगे। यदि तुम उस प्रकार की समझ रख सकते हो तब तुम दृढ़ खड़े रहोगे, केवल यही तुम्हारी क्षमता होगी। उस समय पतरस कैसा था? उसने कहा: "प्रभु, मैं तेरे लिए अपना जीवन बलिदान कर दूँगा। यदि तू कहे कि मैं मरूँ, तो मैं मर जाऊँगा!" उस समय भी उसने इस रीति से प्रार्थना की थी, और उसने यह भी कहा था, "यदि दूसरे तुझसे प्रेम नहीं भी करते हैं तो भी मैं तुझसे अंत तक अवश्य प्रेम करूँगा। मैं हर समय तेरा अनुसरण करूँगा।" उस समय उसने यह कहा, परंतु जैसे ही परीक्षाएँ उस पर आईं, तो वह टूट गया और रोने लगा। तुम सब जानते हो कि पतरस ने तीन बार प्रभु का इनकार किया, है ना? ऐसे बहुत से लोग हैं जो तब रोएँगे और मानवीय निर्बलताओं को व्यक्त करेंगे जब परीक्षाएँ उन पर आ पड़ती हैं। तुम अपने स्वामी नहीं हो। इसमें, तुम स्वयं को नियंत्रित नहीं कर सकते। शायद आज तुम वास्तव में अच्छा कर रहे हो, परंतु वह इसलिए है क्योंकि तुम्हारे पास एक उपयुक्त वातावरण है। यदि कल यह बदल जाए, तो तुम अपनी कायरता और अयोग्यता को दिखाओगे, और तुम अपनी तुच्छता और अनुपयुक्तता को भी दिखाओगे। तुम्हारी "मर्दानगी" बहुत पहले ही बरबाद हो गई होगी, और कभी—कभी तुम हार मानकर बाहर भी निकल जाओगे। यह दिखाता है कि उस समय जो तुम समझते थे वह तुम्हारी वास्तविक क्षमता नहीं थी। एक व्यक्ति को लोगों की वास्तविक क्षमता को देखना आवश्यक होता है कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं या नहीं, क्या वे वास्तव में परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पित होने के योग्य हैं या नहीं, और क्या वे इस योग्य हैं या नहीं कि अपने सारे बल को वह प्राप्त करने में लगा दें जिसकी माँग परमेश्वर करता है और फिर भी परमेश्वर के प्रति समर्पित रहें और परमेश्वर को अपना सर्वोत्तम दें, फिर चाहे इसका अर्थ उनके द्वारा स्वयं को बलिदान चढ़ाना ही क्यों न हो।

तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि वचनों को अब कह दिया गया है: बाद में, तुम बड़े क्लेश और बड़े दुःख से होकर जाओगे! सिद्ध बनना सरल या आसान बात नहीं है। कम से कम तुममें अय्यूब के समान विश्वास होना चाहिए या शायद उसके विश्वास से भी बड़ा विश्वास। तुम्हें जानना चाहिए कि भविष्य में परीक्षाएँ अय्यूब की परीक्षाओं से बड़ी होंगी, और कि तुम्हें फिर भी लम्बे समय की ताड़ना से होकर जाना अवश्य होगा। क्या यह एक सरल बात है? यदि तुम्हारी क्षमता में सुधार नहीं हो सकता, तो समझने की तुम्हारी योग्यता में कमी है, और तुम बहुत कम जानते हो, फिर उस समय तुम्हारे पास कोई साक्षी नहीं होगी, बल्कि तुम उपहास का पात्र बन जाओगे, अर्थात् शैतान के लिए एक खिलौना बन जाओगे। यदि तुम

अभी दर्शनों को थामे नहीं रह सकते, तो तुम्हारी कोई नींव नहीं है, और भविष्य में तुम दुत्कार दिए जाओगे! मार्ग का हर भाग चलने के लिए सरल नहीं होता, इसलिए इसे हल्के में न लो। अभी इसे ध्यान से समझो और इस बात की तैयारी करो कि इस मार्ग के अंतिम चरण में उचित रीति से कैसे चलना है। यही वह मार्ग है जिस पर भविष्य में चलना होगा और इसमें सब लोगों को चलना होगा। तुम इस वर्तमान समझ को एक कान से सुनकर दूसरे से बाहर निकलने की अनुमति नहीं दे सकते, और यह न सोचो कि जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ बिलकुल व्यर्थ है। ऐसा दिन आएगा जब तुम इसका सदुपयोग करोगे—शब्दों को व्यर्थ ही नहीं कहा जा सकता। यह अपने आपको तैयार करने का समय है, यह भविष्य का मार्ग तैयार करने का समय है। तुम्हें उस मार्ग को तैयार करना चाहिए जिसमें तुम्हें बाद में चलना है; तुम्हें इस बात के प्रति चिंतित और व्याकुल होना चाहिए कि बाद में तुम कैसे स्थिर खड़े रह पाओगे और भविष्य के मार्ग के लिए कैसे अच्छी तरह से तैयारी कर पाओगे। पेटू और आलसी मत बनो! तुम्हें अपनी जरुरत की सब चीजों को प्राप्त करने हेतु अपने समय का सर्वोत्तम इस्तेमाल करने के लिए सब कुछ करना होगा। मैं तुम्हें सब कुछ दे रहा हूँ ताकि तुम समझ जाओ। तुम लोगों ने अपनी—अपनी आँखों से देखा है कि तीन वर्षों से भी कम समय में मैंने बहुत सी बातें कहीं है और बहुत सा कार्य किया है। इस रीति से कार्य करने का एक पहलू यह है कि लोगों में बहुत घटी है, और दूसरा पहलू यह है कि समय बहुत कम है और इसमें और देरी नहीं की जा सकती। तुम जिस प्रकार से इसकी कल्पना करते हो, उसके आधार पर लोगों को गवाही देने और उपयोग में लाये जाने के पहले पूर्ण आंतरिक स्पष्टता पानी होगी—क्या यह बहुत धीमा नहीं है? अतः मुझे कितनी दूर तुम्हारे साथ चलना होगा? यदि तुम चाहते हो मैं तब तक तुम्हारे साथ चलूँ जब तक कि बूढ़ा न हो जाऊँ, तो यह असंभव है! बड़े क्लेश से होकर जाने के द्वारा सब लोगों के भीतर सच्ची समझ विकसित हो जाएगी। ये कार्य के चरण हैं। एक बार जब तुम उन दर्शनों को समझ लेते हो जो आज पाए जाते हैं और सच्ची क्षमता को प्राप्त कर लेते हो, तो भविष्य में चाहे तुम जैसी भी कठिनाइयों से होकर गुजरो वे तुम पर जयवंत नहीं होंगी—तुम उनका सामना कर पाओगे। जब मैं कार्य के इस अंतिम चरण को पूरा कर लूँगा, और अंतिम वचनों को भी कह लूँगा, तो भविष्य में लोगों को अपने—अपने मार्ग पर चलना होगा। यह पहले कहे वचनों को पूरा करेगा: पवित्र आत्मा के पास हर व्यक्ति के लिए आदेश है और हर व्यक्ति के द्वारा किया जाने वाला कार्य है। भविष्य में, प्रत्येक व्यक्ति पवित्र आत्मा की अगुवाई के द्वारा उस मार्ग पर चलेगा जिस पर उन्हें चलना चाहिए। क्लेश के समय में होकर जाते हुए कौन दूसरों को संभाल पाएगा? हरेक

व्यक्ति के अपने दुःख हैं, और हरेक व्यक्ति की अपनी क्षमता है। किसी की क्षमता किसी दूसरे के जैसी नहीं होती। पति अपनी पत्नियों को नहीं संभालेंगे और माता—पिता अपने बच्चों को नहीं संभालेंगे; कोई किसी को नहीं संभाल पाएगा। यह आज के जैसा नहीं है—पारस्परिक संभाल और सहयोग आज भी संभव है। वह हर प्रकार के व्यक्ति का खुलासा किए जाने का समय होगा। कहने का अर्थ यह है कि जब परमेश्वर चरवाहों को मारेगा तो झुंड की भेड़ें तितर—बितर हो जाएँगी, और उस समय तुम लोगों के पास कोई सच्चा अगुवा नहीं होगा। लोगों में फूट पड़ जाएगी—यह आज के जैसा नहीं होगा, जहाँ तुम लोग एक सभा के रूप में एक साथ एकत्रित हो सकते हो। बाद में, जिनके पास पवित्र आत्मा का कार्य नहीं होगा वे अपने वास्तविक रंग को दिखाएँगे। पति अपनी पत्नियों को बेच देंगे, पत्नियाँ अपने पतियों को बेच देंगी, बच्चे अपने माता—पिता को बेच देंगे, माता—पिता अपने बच्चों को सताएँगे—मानवीय हृदय का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता! केवल यह किया जा सकता है कि एक व्यक्ति उसी को थामे रहे जो उसके पास है, और मार्ग के अंतिम चरण में अच्छी तरह से चले। अभी तुम लोग इसे स्पष्टता से नहीं देखते और तुम सब निकटदर्शी हो। कार्य के इस चरण में से सफलतापूर्वक होकर जाना कोई सरल कार्य नहीं है।

क्लेश का समय बहुत अधिक लंबा नहीं होगा—यह एक वर्ष का भी नहीं होगा। यदि यह एक वर्ष जितना हो तो यह कार्य के अगले चरण में विलंब कर देगा, और लोगों की क्षमता अपर्याप्त होगी। यदि यह बहुत अधिक लंबा हो तो वे इसको सहन नहीं कर पाएँगे—उनकी क्षमता की अपनी सीमितताएँ हैं। जब मेरा अपना कार्य समाप्त हो जाएगा, तो अगला चरण लोगों के लिए उस मार्ग पर चलना होगा जिसमें उन्हें चलना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना आवश्यक है कि उन्हें किस मार्ग पर चलना चाहिए—यह दुःख सहने का मार्ग है और दुःख सहने की प्रक्रिया है, और यह परमेश्वर से प्रेम करने की तुम्हारी इच्छा को शुद्ध करने का भी मार्ग है। कौनसे सत्यों में तुम्हें प्रवेश करना है, किन सत्यों को तुम्हें जोड़ना है, तुम्हें कैसे अनुभव करना है, और किस सत्य से तुम्हें प्रवेश करना है—तुम्हें ये सब बातें समझनी आवश्यक हैं। तुम्हें अभी अपने आपको लैस करना है। यदि तुम तब तक प्रतीक्षा करते हो जब क्लेश तुम पर आ पड़ता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के जीवन के बोझ को सहना आवश्यक है, और सदैव दूसरों की प्रतीक्षा न करो कि वे चेतावनियाँ दें या तुम्हें सदा तुम्हारे कान पकड़कर साथ खींचें। मैं बहुत कुछ कह चुका हूँ पर तुम अभी तक नहीं जानते कि तुम्हें किस सत्य में प्रवेश करना है या किसके साथ स्वयं को लैस करना है। यह दर्शाता है कि तुमने परमेश्वर के वचनों को पढ़ने का प्रयास नहीं किया है।

अपने स्वयं के जीवन के लिए कोई बोझ नहीं उठाते हो—यह कैसे ठीक हो सकता है? तुम इस बात के प्रति स्पष्ट नहीं हो कि तुम्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए, तुम नहीं समझते कि तुम्हें क्या समझना चाहिए, और तुम इस बारे में अभी-भी अनिश्चित हो कि तुम्हें भविष्य का कौनसा मार्ग लेना चाहिए—क्या तुम समुद्र में बिखरे जहाज के टुकड़ों के समान नहीं हो? तुम किस कार्य के लायक हो? तुम लोग अभी अपने स्वयं के मार्गों का निर्माण कर रहे हो और उन्हें तैयार कर रहे हो। तुम्हें यह जानना आवश्यक है कि लोगों को क्या हासिल करना चाहिए और यह भी कि मनुष्य से परमेश्वर की मांगों का स्तर क्या है। तुममे यह समझ होनी आवश्यक है: चाहे कुछ भी हो, यद्यपि मैं बहुत ही भ्रष्ट हूँ, फिर भी मुझे परमेश्वर के समक्ष इन खराबियों को ठीक करना है। जब परमेश्वर ने मुझे नहीं बताया था, तो मैं नहीं समझता था, परंतु अब उसने मुझे बता दिया है, क्योंकि मैं समझ चुका हूँ तो मुझे इसे ठीक करने के लिए जल्दी करनी चाहिए कि मैं एक सामान्य मनुष्यत्व को जीऊँ, और एक ऐसे स्वरूप में जीऊँ जो परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करे। यद्यपि मैं पतरस के स्तर तक न भी जी पाऊँ, फिर भी कम से कम मुझे एक सामान्य मनुष्यत्व को जीना चाहिए, और इस रीति से मैं परमेश्वर के हृदय संतुष्ट कर सकता हूँ।

इस मार्ग का अंतिम चरण अब से लेकर भविष्य के क्लेश की समाप्ति तक रहेगा। मार्ग का यह चरण तब होगा जब लोगों की सच्ची क्षमता प्रकट होगी और यह भी प्रकट होगा कि क्या उनमें सच्चा विश्वास है या नहीं। क्योंकि मार्ग का यह चरण अतीत में लिए गए अन्य किसी चरण से कठिन होगा, और यह सड़क पहले से अधिक पथरीली होगी, इसे "मार्ग का अंतिम चरण" कहा जाता है। सत्य यह है कि यह मार्ग का सबसे अंतिम भाग नहीं है; इसका कारण यह है कि क्लेश में से होकर जाने के बाद तुम सुसमाचार को फ़ैलाने के कार्य में से होकर जाओगे और लोगों का एक ऐसा समूह होगा जो प्रयोग किए जाने के कार्य में से होकर जाएगा। अतः "मार्ग के अंतिम चरण" का उल्लेख केवल लोगों का शोधन करने के क्लेश और कठोर वातावरण के संदर्भ में किया गया है। अतीत में लिए गए मार्ग के भाग में, यह मैं था जो तुम्हें तुम्हारी प्रसन्नता भरी यात्रा में व्यक्तिगत रूप से अगुवाई कर रहा था, मैं तुम्हें अपने हाथ में लिए चल रहा था कि तुम्हें सिखाऊँ और मैं तुम्हें भोजन करा रहा था। यद्यपि तुम बहुत बार ताड़ना और दंड से होकर गए हो, फिर भी उन्होंने थोड़ा सा ही कष्ट तुम्हें दिया है। निःसंदेह उसने परमेश्वर पर विश्वास के तुम्हारे दृष्टिकोणों को थोड़ा बदल दिया है; यह तुम्हारे स्वभाव को काफी स्थिर बनाने का भी कारण रहा है, और इसने तुम्हें मेरे बारे में थोड़ी समझ प्राप्त करने भी दी है। परंतु मैं यह कह रहा हूँ, मार्ग के उस भाग में चलने में लोगों के

द्वारा चुकाया जाने वाला मूल्य या पीड़ादायक प्रयास काफी कम है—यह मैं हूँ जिसने आज तक तुम्हारी अगुवाई की है। इसका कारण यह है कि मैं तुमसे कुछ भी करने की मांग नहीं करता और तुमसे रखी गई मेरी मांगें अधिक नहीं हैं—मैं केवल तुमसे वही लेने की मांग करता हूँ जो उपलब्ध है। इस समय के दौरान मैंने निरंतर तुम लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया है, और मैंने कभी अनुचित मांगों को नहीं रखा है। तुम लोगों ने बार—बार ताड़ना को सहा है, फिर भी तुम लोगों ने मेरी मूल मांगों को पूरा नहीं किया है। तुम लोग पीछे हट जाते हो और निरुत्साहित हो जाते हो, परंतु मैं इस पर ध्यान नहीं देता क्योंकि यह अब मेरे व्यक्तिगत कार्य का समय है और मैं मेरे प्रति तुम्हारी "भक्ति" को अधिक गंभीरता से नहीं लेता। परंतु यहाँ से बाहर जाने के मार्ग पर मैं न तो कार्य करूँगा और न ही बोलूँगा, और उस समय मैं तुम लोगों को ऐसे उबाऊ तरीके से निरंतर जारी रखने नहीं दूँगा। मैं तुम सबको अनुमति दूँगा कि तुम बहुत से सबक सीखो, और मैं तुम लोगों को केवल वही ले लेने की अनुमति नहीं दूँगा जो उपलब्ध है। जो सच्ची क्षमता तुम लोगों के भीतर आज है उसका खुलासा होना आवश्यक है। वर्षों चले तुम्हारे प्रयास फलदायक रहे हैं या नहीं यह इसमें देखा जाएगा कि तुम लोग मार्ग के अंतिम चरण में कैसे चलते हो। अतीत में, तुम लोगों ने सोचा था कि परमेश्वर पर विश्वास करना बहुत सरल था, और उसका कारण यह था कि परमेश्वर तुम्हारे साथ गंभीर नहीं था। और अब कैसी परिस्थिति है? क्या तुम लोग सोचते हो कि परमेश्वर पर विश्वास करना सरल है? क्या तुम लोग अब भी महसूस करते हो कि परमेश्वर पर विश्वास करना उतना प्रसन्नचित्त और चिंतामुक्त है जितने सड़क पर खेल रहे बच्चे होते हैं? यह सत्य है कि तुम लोग भेड़ें हो, फिर भी तुम लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह का मूल्य चुकाने, और उस परमेश्वर को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए जिस पर तुम लोग विश्वास करते हो, उस मार्ग पर चलने के योग्य होना आवश्यक है जिस पर तुम्हें चलना चाहिए। अपने साथ खेल मत खेलो—स्वयं को मूर्ख मत बनाओ! यदि तुम मार्ग के इस चरण को पूरा कर सको, तो तुम मेरे सुसमाचार के कार्य के इस पूरे जगत में फैलने के अभूतपूर्व और विशाल दृश्य को देख पाओगे, और तुम्हें मेरे घनिष्ट बनने और सारे जगत में मेरे कार्य को फ़ैलाने में अपनी भूमिका को अदा करने का सौभाग्य मिलेगा। उस समय तुम बहुत ख़ुशी से उस मार्ग में निरंतर चलते रहोगे जिसमें तुम्हे चलना चाहिए। भविष्य असीमित रूप से उज्ज्वल होगा, परंतु प्राथमिक कार्य अभी मार्ग के इस अंतिम चरण में अच्छी तरह से चलना है। तुम्हें इस कार्य को करने के लिए प्रयास करना है और तैयारी करनी है। तुम्हें यह कार्य अभी करना आवश्यक है—यह अब अत्यावश्यकता का कार्य है!

कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (III) (जुलाई 1993 से मार्च 1994)

तुझे अपने भविष्य के मिशन पर कैसे ध्यान देना चाहिए?

क्या तू "हर युग में परमेश्वर द्वारा व्यक्त स्वभाव" को ठोस ढंग से ऐसी भाषा में बता सकता है जो उपयुक्त तरीके से युग की सार्थकता को व्यक्त करे? क्या तू, जो अंत के दिनों में परमेश्वर के कार्य को अनुभव करता है, परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का वर्णन विस्तार से कर सकता है? क्या तू स्पष्ट एवं सटीक ढंग से परमेश्वर के स्वभाव की गवाही दे सकता है? तू उन दयनीय, बेचारे और धार्मिकता के भूखे-प्यासे धर्मनिष्ठ विश्वासियों के साथ, जो तेरी देखरेख की आस लगाए बैठे हैं, अपने दर्शनों और अनुभवों को कैसे बांटेगा? किस प्रकार के लोग तेरी देखरेख की प्रतीक्षा कर रहे हैं? क्या तू सोच सकता है? क्या तू अपने कधों के बोझ, अपने आदेश और अपने उत्तरदायित्व से अवगत है? ऐतिहासिक मिशन का तेरा बोध कहाँ है? तू अगले युग में प्रधान के रूप में सही ढंग से काम कैसे करेगा? क्या तुझमें प्रधानता का प्रबल बोध है? तू समस्त पृथ्वी के प्रधान का वर्णन कैसे करेगा? क्या वास्तव में संसार के समस्त सजीव प्राणियों और सभी भौतिक वस्तुओं का कोई प्रधान है? कार्य के अगले चरण के विकास हेतु तेरे पास क्या योजनाएं हैं? तुझे चरवाहे के रूप में पाने हेतु कितने लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं? क्या तेरा कार्य काफी कठिन है? वे लोग दीन-दुखी, दयनीय, अंधे, भ्रमित, अंधकार में विलाप कर रहे हैं—मार्ग कहाँ है? उनमें टूटते तारे जैसी रोशनी के लिए कितनी ललक है जो अचानक नीचे आकर उन अंधकार की शक्तियों को तितर-बितर कर दे, जिन्होंने वर्षों से मनुष्यों का दमन किया है। कौन जान सकता है कि वे किस हद तक उत्सुकतापूर्वक आस लगाए बैठे हैं और कैसे दिन-रात इसके लिए लालायित रहते हैं? उस दिन भी जब रोशनी चमकती है, भयंकर कष्ट सहते, रिहाई से नाउम्मीद ये लोग, अंधकार में कैद रहते हैं; वे कब रोना बंद करेंगे? ये दुर्बल आत्माएँ बेहद बदकिस्मत हैं, जिन्हें कभी विश्राम नहीं मिला है। सदियों से ये इसी स्थिति में क्रूर बधंनों और अवरुद्ध इतिहास में जकड़े हुए हैं। उनकी कराहने की आवाज किसने सुनी है? किसने उनकी दयनीय दशा को देखा है? क्या तूने कभी सोचा है कि परमेश्वर का हृदय कितना व्याकुल और चिंतित है? जिस मानवजाति को उसने अपने हाथों से रचा, उस निर्दोष मानवजाति को ऐसी पीड़ा में दु:ख उठाते देखना वह कैसे सह सकता है? आखिरकार मानवजाति को विष देकर पीड़ित किया गया है। यद्यपि मनुष्य आज तक जीवित

है, लेकिन कौन यह जान सकता था कि उसे लंबे समय से दुष्टात्मा द्वारा विष दिया गया है? क्या तू भूल चुका है कि शिकार हुए लोगों में से तू भी एक है? परमेश्वर के लिए अपने प्रेम की खातिर, क्या तू उन जीवित बचे लोगों को बचाने का इच्छुक नहीं है? क्या तू उस परमेश्वर को प्रतिफल देने के लिए अपना सारा ज़ोर लगाने को तैयार नहीं है जो मनुष्य को अपने शरीर और लहू के समान प्रेम करता है? सभी बातों को नज़र में रखते हुए, तू एक असाधारण जीवन व्यतीत करने के लिए परमेश्वर द्वारा प्रयोग में लाए जाने की व्याख्या कैसे करेगा? क्या सच में तुझमें एक धर्म-परायण, परमेश्वर-सेवी जैसा अर्थपूर्ण जीवन जीने का संकल्प और विश्वास है?

मानव-जाति के प्रबंधन का उद्देश्य

यदि लोग वास्तव में मानव-जीवन के सही मार्ग को और साथ ही परमेश्वर के मानव-जाति के प्रबंधन के उद्देश्य को पूरी तरह से समझ सकें, तो वे अपने व्यक्तिगत भविष्य और भाग्य को एक खजाने के रूप में अपने दिल में थामे नहीं रहेंगे। तब वे अपने उन माता-पिता की सेवा करने में और दिलचस्पी नहीं रखेंगे, जो सूअरों और कुत्तों से भी बदतर हैं। क्या मनुष्य का भविष्य और भाग्य ठीक वर्तमान समय के पतरस के तथाकथित "माता-पिता" नहीं हैं? वे मनुष्य के मांस और रक्त की तरह हैं। देह का गंतव्य और भविष्य भला क्या होगा? क्या वह जीते-जी परमेश्वर का दर्शन करना होगा, या मृत्यु के बाद आत्मा का परमेश्वर से मिलना? क्या कल देह क्लेशों की एक बड़ी भट्ठी में नष्ट होगी, या अग्निकांड में? क्या इस तरह के प्रश्न इससे संबंधित नहीं हैं कि क्या मनुष्य की देह दुर्भाग्य सहन करेगी, या उस सबसे बड़ी खबर से पीड़ित होगी, जिससे इस वर्तमान धारा में कोई भी व्यक्ति, जिसके पास दिमाग है और जो समझदार है, सबसे ज्यादा चिंतित है? (यहाँ पीड़ा आशीर्वाद पाने से संबंध रखती है; इसका अर्थ है कि भविष्य के परीक्षण मनुष्य के गंतव्य के लिए लाभदायक हैं। दुर्भाग्य का मतलब है दृढ़ता से खड़ा न रह पाना या धोखा खाना; या इसका मतलब है व्यक्ति को दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियाँ मिलेंगी और वह आपदाओं के बीच अपना जीवन गँवा देगा, और कि व्यक्ति की आत्मा के लिए कोई उपयुक्त गंतव्य नहीं है।) यद्यपि मनुष्यों के पास ठोस विवेक है, लेकिन संभवतः वे जो सोचते हैं, वह उससे पूरी तरह मेल नहीं खाता, जिससे उनका विवेक सुसज्जित होना चाहिए। इसका कारण यह है कि वे सब अपेक्षाकृत भ्रमित हैं और आँख मूँदकर चीज़ों का अनुसरण करते हैं। उन सभी को इस बात की पूरी समझ होनी चाहिए कि उन्हें किस चीज़ में प्रवेश करना चाहिए,

और विशेष रूप से, उन्हें यह पता लगाना चाहिए कि क्लेश के दौरान किस चीज़ में प्रवेश किया जाना चाहिए (यानी, भट्ठी में शुद्धिकरण के दौरान), और साथ ही, उन्हें अग्नि-परीक्षाओं के दौरान किस-किस चीज़ से लैस होना चाहिए। हमेशा अपने माता-पिता (अर्थात देह) की सेवा न करो, जो सूअरों और कुत्तों की तरह हैं, और चींटियों और कीड़ों से भी बदतर हैं। इस पर दुखी होने, इतना सोच-विचार करने और अपने दिमाग को परेशान करने से क्या फायदा? यह देह तेरी अपनी नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के हाथों में है, जो न केवल तुझे नियंत्रित करता है, बल्कि शैतान को भी आज्ञा देता है। (मूलतः इसका अर्थ है कि यह देह मूलत: शैतान की है। चूँकि शैतान भी परमेश्वर के हाथों में है, इसलिए इसे केवल इसी तरह से कहा जा सकता है। इसका कारण यह है कि इसे इस तरह से कहना अधिक प्रेरणास्पद है; यह बताता है कि मानव पूरी तरह से शैतान के अधिकार-क्षेत्र में नहीं, बल्कि परमेश्वर के हाथों में हैं।) तू देह के उत्पीड़न तले जी रहा है, लेकिन क्या देह तेरी है? क्या यह तेरे नियंत्रण में है? इस पर परेशान होकर क्यों अपना दिमाग ख़राब करता है? क्यों पागलों की तरह अपनी बदबूदार देह के लिए, जो लंबे समय से निंदित, शापित और अशुद्ध आत्माओं द्वारा मलिन की गई है, परमेश्वर से आग्रह करने की परेशानी उठाता है? शैतान के सहयोगियों को हमेशा अपने दिल के इतने करीब रखने की क्या ज़रूरत है? क्या तुझे चिंता नहीं है कि देह तेरे वास्तविक भविष्य को, तेरी अद्‌भुत आशाओं को और तेरे जीवन के वास्तविक गंतव्य को बरबाद कर सकती है?

आज के मार्ग पर चलना आसान नहीं है। कहा जा सकता है कि इसे पाना कठिन है, और यह युगों-युगों से बहुत दुर्लभ रहा है। किंतु किसने सोचा होगा कि मनुष्य की देह अकेले ही उसे बरबाद करने के लिए काफी होगी? आज का कार्य निश्चित रूप से वसंत की बारिश जितना कीमती है और मनुष्य के प्रति परमेश्वर की दया जैसा मूल्यवान है। फिर भी, अगर मनुष्य उसके वर्तमान कार्य के उद्देश्य को नहीं जानता या मानवजाति के सार को नहीं समझता, तो उसके कीमती और अमूल्य होने की बात कैसे बताई सकती है? देह मनुष्यों की अपनी नहीं है, इसलिए कोई स्पष्ट रूप से यह नहीं देख सकता कि उसका गंतव्य वास्तव में कहाँ होगा। फिर भी, तुझे यह अच्छी तरह से जानना चाहिए कि सृष्टि का प्रभु मानवजाति को, जिसे सृजित किया गया था, उसकी मूल स्थिति में वापस लौटाएगा, और उसके सृजन के समय की उसकी मूल छवि को बहाल कर देगा। वह पूरी तरह से उस साँस को वापस ले लेगा, जो उसने मनुष्य में ली थी, और उसके हाड़-मांस को वापस लेकर सब-कुछ सृष्टि के स्वामी को लौटा देगा। वह मानवता को पूरी तरह

से रूपांतरित और नवीकृत करेगा, और मनुष्य से परमेश्वर की पूरी विरासत वापस ले लेगा, जो मानवजाति की नहीं है, बल्कि परमेश्वर की है, और फिर कभी उसे मानव-जाति को नहीं सौंपेगा। इसका कारण यह है कि अव्वल तो उनमें से कुछ भी मानवजाति का नहीं है। वह वो सब-कुछ वापस ले लेगा—यह अनुचित लूट नहीं है, बल्कि यह स्वर्ग और पृथ्वी को उनकी मूल अवस्था में बहाल करने के साथ-साथ मनुष्य को रूपांतरित और नवीकृत करने के लिए है। यह मनुष्य के लिए उचित गंतव्य है, हालाँकि यह शायद देह को ताड़ना दिए जाने के बाद उसका पुनर्नियोजन नहीं होगा, जैसा कि लोग कल्पना कर सकते हैं। परमेश्वर देह के विनाश के बाद उसके कंकाल नहीं चाहता; वह मनुष्य के मूल तत्व चाहता है, जो शुरुआत में परमेश्वर के ही थे। इसलिए, वह मानवता का सफ़ाया अथवा मनुष्य की देह को पूरी तरह से खत्म नहीं करेगा, क्योंकि देह मनुष्य की निजी संपत्ति नहीं है। बल्कि, यह परमेश्वर की अनुलग्नक है, जो मानव-जाति का प्रबंधन करता है। वह अपने "आनंद" के लिए मनुष्य की देह का सर्वनाश कैसे कर सकता है? अब तक क्या तूने सचमुच अपनी उस देह की संपूर्णता को त्याग दिया है, जिसका मूल्य एक फूटी कौड़ी भी नहीं है? यदि तू आखिरी दिनों के तीस प्रतिशत कार्य को समझ सके (इस केवल तीस प्रतिशत का अर्थ है आज पवित्र आत्मा के कार्य के साथ-साथ अंत के दिनों में परमेश्वर के वचन के कार्य को समझना), तो तू आज की तरह अपनी देह की "सेवा" करना या उसके साथ "संतानोचित" व्यवहार करना जारी नहीं रखेगा, जो कई वर्षों से भ्रष्ट हो गई है। तुझे स्पष्ट रूप से देखना चाहिए कि मनुष्य अब एक अभूतपूर्व स्थिति में आगे बढ़ चुके हैं और अब वे इतिहास के पहियों की तरह आगे लुढ़कते नहीं रहेंगे। तेरी फफूंदी लगी हुई देह लंबे समय से मक्खियों से आच्छादित है, तो कैसे उसमें इतिहास के उन पहियों को उलटाने की शक्ति हो सकती है, जिन्हें परमेश्वर ने आज तक चलते रहने में समर्थ बनाया है? कैसे वह अंत के दिनों की चुपचाप टिकटिक करती घड़ी को दोबारा चालू कर सकती है और उसकी सुइयाँ घड़ी की दिशा में मोड़ सकती है? कैसे वह घने कोहरे में लिपटी प्रतीत होने वाली दुनिया को पुनः रूपांतरित कर सकती है? क्या तेरी देह पहाड़ों और नदियों को फिर से जीवित कर सकती है? क्या तेरी देह, जिसका छोटा-सा काम है, वास्तव में मानव की उस तरह की दुनिया को बहाल कर सकती है, जिसकी तूने लालसा की है? क्या तू वास्तव में अपने वंशजों को "मानव" बनने के लिए शिक्षित कर सकता है? क्या तू अब समझ सकता है? तेरी देह वास्तव में किसकी है? मानव को बचाने, उसे परिपूर्ण करने और उसे रूपांतरित करने का परमेश्वर का मूल इरादा तुझे एक खूबसूरत मातृभूमि देना या मनुष्य की देह को शांतिपूर्ण आराम प्रदान करना नहीं था;

यह परमेश्वर की महिमा और गवाही के लिए था, भविष्य में मनुष्यों के बेहतर आनंद के लिए था, और इसलिए था कि वे शीघ्र ही आराम कर सकें। फिर भी, यह तेरी देह के लिए नहीं था, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के प्रबंधन की पूँजी है और मनुष्य की देह एक अनुलग्नक मात्र है। (मानव आत्मा और शरीर दोनों का पिंड है, जबकि देह केवल एक सड़ने वाली चीज़ है। इसका मतलब है कि देह प्रबंधन योजना में इस्तेमाल के लिए एक उपकरण है।) तुझे यह जानना चाहिए कि परमेश्वर का मनुष्यों को पूर्ण बनाना, उन्हें पूरा करना और उन्हें प्राप्त करना उसकी देह पर तलवारों और प्रहारों के, और साथ ही अंतहीन पीड़ा, अग्निकांड, निष्ठुर न्याय, ताड़ना, शाप और असीम परीक्षणों के सिवाय कुछ नहीं लाया है। ऐसी है मानव का प्रबंधन करने के कार्य की अंदर की कहानी और सच्चाई। किंतु ये सभी चीज़ें मनुष्य की देह पर निर्देशित हैं, और शत्रुता के सभी तीर निर्दयतापूर्वक मनुष्य की देह पर लक्षित हैं (क्योंकि मनुष्य निर्दोष है)। यह सब परमेश्वर की महिमा और गवाही के लिए और उसके प्रबंधन के लिए है। इसका कारण यह है कि उसका कार्य केवल मानव-जाति के लिए नहीं है, बल्कि पूरी योजना के लिए भी है और साथ ही मानव-जाति के सृजन के समय की उसकी मूल इच्छा पूरी करने के लिए भी है। इसलिए, मनुष्य जो अनुभव करता है, उसके शायद नब्बे प्रतिशत में पीड़ाएँ और अग्नि-परीक्षाएँ शामिल हैं, और वे मीठे और सुखद दिन बहुत कम या बिलकुल नहीं हैं, जिनके लिए मनुष्य की देह लालायित रही है। परमेश्वर के साथ खूबसूरत समय बिताते हुए देह में सुखद पलों का आनंद लेने में तो मनुष्य बिलकुल भी सक्षम नहीं है। देह मलिन है, इसलिए मनुष्य की देह जो देखती है या भोगती है, वह परमेश्वर की ताड़ना के अलावा और कुछ नहीं है, जिसे मनुष्य प्रतिकूल पाता है, मानो उसमें सामान्य बुद्धि की कमी हो। इसका कारण यह है कि परमेश्वर अपने धार्मिक स्वभाव को प्रकट करेगा, जो मनुष्य को पसंद नहीं है, जो मनुष्य के अपराधों को बरदाश्त नहीं करता, और दुश्मनों से घृणा करता है। परमेश्वर अपना स्वभाव किसी भी तरीके से खुले तौर पर प्रकाशित करता है, और इस तरह शैतान के साथ अपने छह-हजार-वर्षीय युद्ध का कार्य पूरा करता है—जो संपूर्ण मानव-जाति के उद्धार और पुराने शैतान के विनाश का कार्य है!

मनुष्य का सार और उसकी पहचान

वास्तव में, इस्राएली निराश नहीं हैं; उन्होंने छह हजार वर्षों से परमेश्वर द्वारा किए जा रहे कार्य को देखा है, क्योंकि मैंने उन्हें त्याग नहीं दिया था। बल्कि, चूँकि उनके पूर्वजों ने अच्छाई और बुराई के ज्ञान के

पेड़ से फल खाया था, जिसे शैतान ने उन्हें भेंट किया था, उन्होंने पाप के लिए मुझे त्याग दिया। अच्छाई हमेशा मेरी रही है, जबकि बुराई शैतान से संबंधित है जो पाप की खातिर मेरी ख़ुशामद करता है। मैं मनुष्य को दोष नहीं देता, न ही मैं उन्हें क्रूरता से नष्ट करता हूँ या उन्हें निर्दयी ताड़ना के अधीन करता हूँ, क्योंकि बुराई मूल रूप से मानवजाति में नहीं थी। अतः, यद्यपि उन इस्राएली लोगों ने मुझे खुले आम सलीब पर चढ़ा दिया, वे जो मसीहा और यहोवा का इंतज़ार करते रहे हैं और उद्धारकर्ता यीशु के लिए तड़पते रहे हैं, मेरा वादा कभी नहीं भूले, क्योंकि मैंने उन्हें त्याग नहीं दिया है। आख़िरकार, जो वाचा मैंने मानवजाति के साथ स्थापित की, उसके प्रमाण के रूप में मैंने लहू लिया था। यह तथ्य युवा और निर्दोष लोगों के दिलों में "लहू-वाचा" बनकर अंकित हो गया है, जैसे कि इसे चिन्हित किया गया हो, और यह स्वर्ग और पृथ्वी के समान एक दूसरे पर हमेशा के लिए निर्भर हैं। मैंने उन दुखी आत्माओं को कभी धोखा नहीं दिया जिनको मैंने पूर्वनिर्धारित किया और चुना, फिर बाद में मुक्ति दी और प्राप्त किया, और जो मुझे शैतान से अधिक प्रेम करते हैं। इसलिए, वे उत्सुकता से मेरी वापसी की आशा करते हैं और व्यग्रता से मुझसे मिलने की प्रतीक्षा करते हैं। चूँकि मैंने कभी भी उस वाचा को नहीं मिटाया जिसे मैंने उनके साथ लहू से स्थापित किया था, यह कोई आश्चर्य नहीं है कि वे उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं इन मेमनों को फिर से पा लूँगा जो वर्षों पहले खो गए थे, क्योंकि मैंने हमेशा मनुष्यों से प्रेम किया है; बात बस इतनी है कि मनुष्यों की भलाई में बुराई के तत्व मिलाये गये हैं। मैं उन बेचारी आत्माओं को तो पा लूँगा जिन्हें मुझसे प्रेम है और जिनको मैंने लंबे समय से प्रेम किया है, पर मैं उन बुरे लोगों को अपने घर में कैसे ला सकता हूँ जिन्होंने मुझे कभी प्रेम नहीं किया है और शत्रुओं की तरह व्यवहार किया है? मैं अपने राज्य में शैतान और दुर्जन नाग के वंशज को नहीं लाऊँगा जो मुझसे नफ़रत, मुकाबला, विरोध, वार करते हैं और मुझे कोसते हैं, भले ही मैंने मानवजाति के साथ लहू से वाचा की है। तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि मेरे कार्य का असल उद्देश्य क्या है और मैं किसके लिए यह कार्य करता हूँ। तुम्हारे प्रेम में अच्छाई है या बुराई? क्या तुम वाकई मुझे वैसे ही जानते हो जैसे दाऊद और मूसा ने जाना था? क्या तुम वास्तव में मेरी वैसे ही सेवा करते हो जैसे इब्राहिम ने की? यह सच है कि मेरे द्वारा तुमको पूर्ण बनाया जा रहा है, लेकिन तुम्हें यह जानना चाहिए तुम किसका प्रतिनिधित्व करोगे और तुम किसके जैसा परिणाम लेना चाहोगे। अपने जीवन में, क्या तुमने मेरे कार्य का अनुभव लेकर एक आनन्दमय और प्रचुर फ़सल प्राप्त की है? क्या यह भरपूर और फलदायी है? तुम्हें आत्म-मंथन करना चाहिए। कई वर्षों से तुमने मेरे लिए काम किया है, लेकिन क्या तुमने कभी कुछ हासिल

किया? क्या तुम कुछ बदले या तुमने कुछ प्राप्त किया? कठिनाई के अपने अनुभव के बदले, क्या तुम पतरस की तरह बन गए हो जिसे सलीब पर चढ़ाया गया था या पौलुस की तरह जो कि मार गिराया गया था और जिसने एक महान प्रकाश को प्राप्त किया था? तुम्हें इनके बारे में अवगत होना चाहिए। मैं लगातार तुम्हारे जीवन के बारे में बोल और सोच नहीं रहा हूँ जो सरसों के बीज से भी छोटा है, जो रेत के कण जितना ही बड़ा है। स्पष्ट कहें तो, मैं मानवता का प्रबंधन करता हूँ। हालाँकि, अपने प्रबंधन के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में मैं उस मनुष्य के जीवन पर विचार नहीं करता जिससे मैंने एक बार नफरत की थी, लेकिन बाद में मैंने फिर से उसे अपना लिया। तुम्हें यह स्पष्ट पता होना चाहिए कि तुम्हारी पिछली पहचान वास्तव में क्या थी, और तुम लोग गुलाम के रूप में किसकी सेवा किया करते थे। इसलिए, मैं मनुष्यों का प्रबंधन करने के लिए उनके चेहरों का, जो शैतान से मिलते-जुलते हैं, कच्चे माल के रूप में उपयोग नहीं करता, क्योंकि मनुष्य मूल्यवान वस्तुएँ नहीं हैं। तुम लोगों को याद होना चाहिए कि शुरुआत में तुम्हारे प्रति मेरा रवैया कैसा था, और उस समय तुम लोगों के लिए मेरा क्या संबोधन था—एक उपाधि जिसके व्यवहारिक मायने थे। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम पर जो लेबल लगाए गए हैं, वे निराधार नहीं हैं। मेरा मानना है कि तुम सभी जानते हो कि तुम लोग शुरू में परमेश्वर के नहीं थे, बल्कि तुम लोगों पर काफी समय पहले शैतान ने कब्जा कर लिया था और उसके घर में तुम लोगों ने वफादार नौकरों के रूप में सेवा की थी। इसके अतिरिक्त, तुम लंबे समय से मुझे भूल गए थे क्योंकि तुम लोग बहुत पहले ही मेरे घर से जा चुके थे लेकिन शैतान के हाथ में थे। जिन्हें मैं बचाता हूँ, उन मनुष्यों को मैंने बहुत पहले से पूर्वनिर्धारित किया था और जिन्हें मेरे द्वारा छुटकारा दिलाया गया है, जबकि तुम लोग वो बेचारी आत्माएँ हो जो नियमों के अपवाद के रूप में मनुष्यों के बीच रखी गई हैं। तुम लोगों को यह जानना चाहिए कि तुम दाऊद या याकूब के घर के नहीं, बल्कि मोआब के परिवार के सदस्य हो, किसी अन्य-राष्ट्र जाति के सदस्य। क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ एक वाचा स्थापित नहीं की, परन्तु केवल तुम्हारे बीच कार्य किया और बात की और तुम्हारी अगुआई की। मेरा लहू तुम्हारे लिए नहीं बहा था; मैं केवल अपनी गवाही की खातिर तुम लोगों के बीच कार्य कर रहा था। क्या तुम लोग नहीं जानते? क्या मेरा कार्य वास्तव में यीशु की तरह तुम्हारी तरफ से खून में लथपथ होकर मरने जैसा है? पहली बात तो ये कि तुम लोगों के लिए मेरा इस तरह से अपमान सहना ही बेकार था। परमेश्वर जो बिल्कुल निष्पाप है, सीधे एक अत्यंत घिनौने और घृणास्पद स्थान पर आया, कुत्तों और सूअरों की दुनिया में, जो इंसानों के रहने लायक नहीं है, मगर तब भी मैंने

अपने परमपिता की महिमा और शाश्वत गवाही की खातिर इन सभी क्रूर अपमानों को सहन किया। तुम्हें अपने आचरण को जानना चाहिए और यह देखना चाहिए कि तुम लोग "समृद्ध और शक्तिशाली परिवारों" में पैदा हुए बच्चे नहीं बल्कि शैतान की बेसहारा संतान मात्र हो। तुम मानवजाति के संस्थापक भी नहीं हो, और न ही तुम्हारे पास मानव अधिकार या स्वतंत्रता है। तुम्हारे पास पहले से मानवता या स्वर्ग के राज्य के किन्हीं आशीर्वादों का कोई हिस्सा नहीं था। क्योंकि तुम लोग मानवजाति में सबसे निम्न कोटि के हो और मैंने तुम्हारे भविष्य के बारे में कभी कोई विचार नहीं किया है। इसलिए, हालाँकि यह मेरी योजना का एक हिस्सा था कि आज मुझे तुम लोगों को पूर्ण करने के लिए विश्वास प्राप्त होगा, यह एक अभूतपूर्व कार्य है, क्योंकि तुम्हारी स्थिति बहुत नीची है और तुम्हारा मूल रूप से मानवजाति में कोई हिस्सा नहीं था। क्या यह मनुष्यों के लिए एक वरदान नहीं है?

जिन लोगों को मैं बचाता हूँ वे वो आत्माएँ हैं जिन्हें मैंने बहुत पहले यातनाओं के शोधनस्थल से रिहा किया था और वे चुने हुए लोग जिनसे मैं बहुत पहले मिला था, क्योंकि उन्होंने अपने बीच फिर से मेरे प्रकट होने की लालसा की है। उन्होंने मुझसे प्रेम किया है, और मेरी वाचा को जो मैंने लहू से स्थापित की थी, अपने दिलों में अंकित किया है, क्योंकि मैंने उनसे प्रेम किया है। वे खोए हुए मेमनों के समान हैं, जो मुझे कई वर्षों से खोजते रहे हैं, और वे अच्छे हैं: इसलिए मैं उन्हें अच्छे इस्राएली और प्यारे नन्हे स्वर्गदूत कहता हूँ। अगर मैं उनके बीच होता, तो इस तरह के अपमान का सामना नहीं करता। क्योंकि वे मुझे अपने जीवन से ज्यादा प्रेम करते हैं, और मैं उनसे ऐसे प्रेम करता हूँ मानो सभी चीजों में वे सबसे सुंदर हों। क्योंकि वे मेरे द्वारा बनाए गए थे और मेरे अपने हैं; वे मुझे कभी नहीं भूले हैं। उनका प्यार तुम्हारे प्यार से बढ़कर है, और जितना तुम लोग अपने जीवन से प्रेम करते हो, वे मुझे उससे अधिक प्रेम करते हैं। जैसे नन्हे सफेद कबूतर आकाश को समर्पित होते हैं, वैसे ही वे मेरे प्रति समर्पित हैं और उनके दिलों में मेरी आज्ञा का पालन करने की भावना तुमसे कहीं अधिक है। क्योंकि वे याकूब के वंशज हैं, आदम की औलाद और मेरे चुने हुए लोगों में से हैं, क्योंकि मैंने उन्हें बहुत पहले से प्रेम किया है, मैं तुम्हें जितना प्रेम करता हूँ उससे भी ज्यादा, क्योंकि तुम लोग बहुत विद्रोही हो, तुम्हारा प्रतिरोध बहुत गंभीर है, तुम मुझे बहुत तुच्छ समझते हो, तुम मेरे प्रति बहुत ही उदासीन हो, मुझसे बहुत कम प्रेम करते हो और बहुत ज्यादा नफरत। तुम मेरे कार्य का तिरस्कार करते हो और मेरे कार्यों से बहुत घृणा करते हो। उनके विपरीत, तुमने कभी भी मेरे कार्यों को मूल्यवान नहीं माना है। बजाय इसके, तुम उन्हें लाल, चिंतित आँखों से तिरस्कृत करते हो, बिलकुल

शैतान की तरह। तुम्हारा समर्पण कहाँ है? तुम्हारा चरित्र कहाँ है? तुम्हारा प्रेम कहाँ है? तुमने कब अपने भीतरी प्रेम के तत्वों को प्रदर्शित किया है? कब तुमने मेरे कार्य को गंभीरता से लिया है? दया आती है उन सुंदर स्वर्गदूतों पर जो उत्सुकता से मेरी प्रतीक्षा करते हैं और चिंतावश मेरी प्रतीक्षा करते हुए घोर कष्ट उठाते हैं, क्योंकि मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूँ। हालाँकि जिसे मैं आज देख रहा हूँ वह एक इतनी अमानवीय दुनिया है जिसका उन लोगों से कोई संबंध नहीं है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम लोगों का विवेक बहुत पहले सुन्न और निर्मम हो गया था? क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम लोग वे गिरे हुए इंसान हो जो उन सुंदर स्वर्गदूतों के साथ मेरे पुनर्मिलन को रोकते हैं? वे कब मेरी वापसी की प्रतीक्षा नहीं करते रहे हैं? कब वे मुझसे फिर से जुड़ने का इंतज़ार नहीं करते रहे हैं? कब वे मेरे साथ खूबसूरत दिन बिताने और मेरे साथ भोजन करने की प्रतीक्षा नहीं करते रहे हैं? क्या तुम लोगों ने कभी सोचा है जो तुम आज कर रहे हो—दुनिया भर में उपद्रव करना; एक दूसरे के खिलाफ षडयंत्र करना; एक दूसरे को धोखा देना, विश्वासघात, गोपनीयता और बेशर्मी का व्यवहार करना; सच्चाई को न जानना; कुटिलता और धोखेबाजी करना, चापलूसी करना; खुद को हमेशा सही और दूसरों से बेहतर मानना; घमंडी बनना; और पहाड़ों में जंगली जानवरों की तरह जंगली और जानवरों के राजा की तरह कठोर व्यवहार करना—क्या ये चालचलन किसी मानव के लिए उचित है? तुम लोग असभ्य और अनुचित हो। तुमने कभी मेरे वचन को कीमती नहीं माना है, बल्कि तुम लोगों ने इनके प्रति एक तिरस्कारपूर्ण रवैया अपनाया है। इस तरह कहाँ से उपलब्धियां, एक सच्चा मानव-जीवन, और सुंदर आशाएं आएंगी? क्या तुम्हारी असंयत कल्पना वास्तव में तुम्हें बाघ के मुँह से बचा पाएगी? क्या यह वास्तव में तुम्हें जलती हुई आग से बचा पाएगी? अगर तुमने वास्तव में मेरे कार्य को अमूल्य खजाना माना होता तो क्या तुम इतने गिर गए होते? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम्हारे नसीब को वास्तव में बदला नहीं जा सकता? क्या तुम इस तरह के अफसोस के साथ मरने के लिए तैयार हो?

मनुष्य की अंतर्निहित पहचान और उसका मूल्य : उनका स्वरूप कैसा है?

तुम लोग कीचड़ से अलग किये गए थे और हर हाल में, तुम सब उसी मैल से बने थे जिसे कीचड़ के बीच से उठाया गया था, गंदे और परमेश्वर द्वारा घृणित थे। तुम लोग शैतान के थे और कभी उसके द्वारा

कुचले और दूषित किये गये थे। इसीलिए यह कहा जाता है कि तुम सब कीचड़ से निकाले गए थे और तुम लोग पवित्र से कहीं दूर, वे गैर-मानवीय वस्तुएँ हो जो काफी समय से शैतान के कपट के लक्ष्य थे। यह तुम सब का सबसे उपयुक्त आंकलन है। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम सब मछली और झींगे जैसी वांछनीय वस्तुओं के विपरीत मूल रूप से रुके हुए पानी और कीचड़ में पाई जाने वाली गन्दगी थे, क्योंकि तुम सब से आनंद देने वाली कोई चीज़ नहीं मिल सकती है। इसे साफ़-साफ़ कहें तो, तुम लोग हीन सामाजिक वर्ग के सबसे नीच जानवर हो, सूअरों और कुत्तों से भी बदतर जानवर हो। सच कहूँ तो, तुम सब को इस तरह से संबोधित करना अतिरेक या अतिशयोक्ति नहीं हैं; बल्कि यह मुद्दे को सरल बना देता है। तुम सभी को ऐसे शब्दों से संबोधित करना वास्तव में तुम्हें सम्मान देने का एक तरीका है। तुम लोगों की अंतर्दृष्टि, बोलचाल, मनुष्यों के रूप में आचरण और कीचड़ में तुम्हारी स्थिति सहित तुम्हारी ज़िंदगी के हर पहलू, यह साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि तुम लोगों की पहचान "असामान्य" है।

जो लोग सीखते नहीं और अज्ञानी बने रहते हैं : क्या वे जानवर नहीं हैं?

जब तुम आज के मार्ग पर चलते हो, तो किस प्रकार का अनुगमन सबसे अच्छा होता है? अपने अनुगमन में तुम्हें खुद को किस तरह के व्यक्ति के रूप में देखना चाहिए? तुम्हें पता होना चाहिए कि आज जो कुछ भी तुम पर पड़ता है, उसके प्रति तुम्हारा नज़रिया क्या होना चाहिए, चाहे वह परीक्षण हों या कठिनाई, या फिर निर्मम ताड़ना और श्राप। तुम्हें इस पर सभी मामलों में सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। मैं यह क्यों कहता हूँ? मैं इसे इसलिए कहता हूँ, क्योंकि आज जो कुछ भी तुम पर पड़ता है, आख़िरकार, वे छोटे-छोटे परीक्षण हैं जो बार-बार आते हैं; शायद तुम उन्हें मानसिक रूप से बहुत कष्टदायक नहीं समझते, और इसलिए तुम चीजों को बस बह जाने देते हो, और प्रगति की खोज में उन्हें मूल्यवान संपत्ति नहीं मानते। तुम कितने लापरवाह हो! यहाँ तक कि तुम इस मूल्यवान संपत्ति को अपनी आँखों के सामने उड़ते एक बादल जैसा समझते हो, और तुम बार-बार बरसने वाले इन कठोर आघातों को सँजोकर नहीं रखते—आघात, जो कि अल्पकालीन होते हैं और तुम्हें कम भारी लगते हैं—बल्कि उन्हें दिल पर न लेते हुए उन्हें ठंडी अनासक्ति से देखते हो, और उन्हें सिर्फ़ सांयोगिक आघात समझते हो। तुम इतने घमंडी हो! इन भयंकर हमलों के प्रति, हमले जो कि बार-बार आने वाले तूफानों की तरह हैं, तुम केवल

क्षुद्र अनादर दिखाते हो; कभी-कभी तुम अपनी पूर्ण उदासीनता की अभिव्यक्ति प्रकट करते हुए एक ठंडी मुस्कान तक देने पर उतारू हो जाते हो—क्योंकि तुमने मन में कभी एक बार भी नहीं सोचा कि तुम इस तरह के "दुर्भाग्य" क्यों झेलते रहते हो। क्या मैं मनुष्य के साथ बहुत अन्याय करता हूँ? क्या मैं तुम्हारी गलतियाँ निकालता हूँ? हालाँकि तुम्हारी मानसिकता संबंधी समस्याएँ उतनी गंभीर नहीं भी हो सकती हैं, जितना मैंने वर्णित किया है, फिर भी तुमने अपने बाहरी आत्मसंयम के माध्यम से, लंबे समय से अपनी आंतरिक दुनिया की एक उत्तम छवि बनाई हुई है। मुझे यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं है कि तुम्हारे दिल की गहराइयों में छिपी एकमात्र चीज़ है असभ्य कटूक्ति और उदासी के हलके निशान, जो दूसरों को मुश्किल से दिखाई पड़ते हैं। क्योंकि तुम्हें लगता है कि इस तरह के परीक्षण झेलना बहुत गलत है, तुम श्राप देते हो; परीक्षण तुम्हें दुनिया की वीरानी का एहसास कराते हैं और इस वजह से तुम उदासी से भर जाते हो। इन बार-बार के आघातों और अनुशासन को बहुत अच्छी सुरक्षा के रूप में देखने के बजाय तुम उन्हें स्वर्ग द्वारा निरर्थक परेशानी पैदा किए जाने के रूप में, या फिर स्वयं से लिए जाने वाले उपयुक्त प्रतिशोध के रूप में देखते हो। तुम कितने अज्ञानी हो! तुम निर्दयता से अच्छे समय को अँधेरे में कैद कर लेते हो; बार-बार तुम अद्भुत परीक्षणों और अनुशासन को अपने दुश्मनों द्वारा किए गए हमलों के रूप में देखते हो। तुम अपने वातावरण के अनुकूल होने में असमर्थ हो; और उसके लिए इच्छुक तो और भी कम हो, क्योंकि तुम इस बार-बार की—और अपनी दृष्टि में निर्मम—ताड़ना से कुछ भी हासिल करने के लिए तैयार नहीं हो। तुम न तो खोज करने का प्रयास करते हो और न ही अन्वेषण करने का, बस अपने भाग्य के आगे नतमस्तक हो जाते हो, चाहे वह तुम्हें जहाँ भी ले जाए। जो बातें तुम्हें बर्बर ताड़ना लगती हैं उन्होंने तुम्हारा दिल नहीं बदला, न ही उन्होंने तुम्हारे दिल पर कब्ज़ा किया है; इसके बजाय उन्होंने तुम्हारे दिल में छुरा घोंपा। तुम इस "क्रूर ताड़ना" को इस जीवन में अपने दुश्मन से ज्यादा नहीं देखते, और तुमने कुछ भी हासिल नहीं किया है। तुम इतने दंभी हो! शायद ही कभी तुम मानते हो कि तुम इस तरह के परीक्षण इसलिए भुगतते हो, क्योंकि तुम बहुत घिनौने हो; इसके बजाय, तुम खुद को बहुत अभागा समझते हो, और कहते हो कि मैं हमेशा तुम्हारी गलतियाँ निकालता रहता हूँ। आज तक, जो मैं कहता और करता हूँ, तुम्हें वास्तव में उसका कितना ज्ञान है? ऐसा मत सोचो कि तुम एक अंतर्जात प्रतिभा हो, जो स्वर्ग से थोड़ी ही निम्न, किंतु पृथ्वी से बहुत अधिक ऊँची है। तुम किसी भी अन्य से ज्यादा होशियार नहीं हो—यहाँ तक कि यह भी कहा जा सकता है कि पृथ्वी पर जितने भी विवेकशील लोग हैं, तुम उनसे कहीं ज्यादा मूर्ख हो,

क्योंकि तुम खुद को बहुत ऊँचा समझते हो, और तुममें कभी भी हीनता की भावना नहीं रही; ऐसा लगता है कि तुम मेरे कार्यों को बड़े विस्तार से अनुभव करते हो। वास्तव में, तुम ऐसे व्यक्ति हो, जिसके पास विवेक की मूलभूत रूप से कमी है, क्योंकि तुम्हें इस बात का कुछ पता नहीं है कि मैं क्या करूँगा, और उससे भी कम तुम्हें इस बात की जानकारी है कि मैं अभी क्या कर रहा हूँ। इसीलिए मैं कहता हूँ कि तुम जमीन पर कड़ी मेहनत करने वाले किसी बूढ़े किसान के बराबर भी नहीं हो, ऐसा किसान, जिसे मानव-जीवन की थोड़ी भी समझ नहीं है और फिर भी जो जमीन पर खेती करते हुए स्वर्ग के आशीषों पर निर्भर करता है। तुम अपने जीवन के संबंध में एक पल भी विचार नहीं करते, तुम्हें यश के बारे में कुछ नहीं पता, और तुम्हारे पास कोई आत्म-ज्ञान तो बिलकुल नहीं है। तुम इतने "उन्नत" हो! सच में, मैं तुम बाँके छैलों और तुम नाजुक युवतियों के लिए चिंता करता हूँ : तुम आँधी-तूफानों के अधिक भीषण घातक हमले कैसे झेल पाओगे? छैले उस वातावरण के प्रति पूरी तरह से उदासीन हैं, जिसमें वे स्वयं को पाते हैं। उनकी नज़र में यह नगण्य है, वे इसके बारे में कुछ नहीं सोचते, वे नकारात्मक नहीं हैं, और ना ही वे खुद को नीच समझते हैं; इसके बजाय, वे अपने प्रशंसकों को साथ बहाकर ले जाते हुए गलियों में मटकते फिरते हैं। ये अज्ञानी "प्रतिष्ठित लोग", जो सीखते नहीं और अज्ञानी बने रहते हैं, बिलकुल नहीं जानते कि मैं पृथ्वी पर उनसे ऐसी बातें क्यों कहूँगा; उनके चेहरे खीज से भरे हैं, वे केवल अपना आकस्मिक निरीक्षण करते हैं, और बाद में अपने बुरे तरीके बदले बिना जीते रहते हैं; एक बार जब वे मुझे छोड़ देते हैं, तो वे नए सिरे से अकड़ते और ठगते हुए फिर से दुनिया में उन्मत्त होकर दौड़ना शुरू कर देते हैं। तुम्हारे चेहरे के भाव कितनी तेज़ी से बदलते हैं। तो, एक बार फिर, तुम मुझे इस तरह से धोखा देने की कोशिश कर रहे हो—तुम कितने दबंग हो! और भी हास्यास्पद वे नकचढ़ी देवियाँ हैं। मेरे अत्यावश्यक कथन सुनकर, और उस वातावरण को देखकर, जिसमें वे हैं, उनके चेहरे से आँसू—बिन बुलाए—बहने लगते हैं, वे फूट-फूटकर रोने लगती हैं, और तमाशा खड़ा कर देती हैं—कितना घृणित है! अपने आध्यात्मिक कद को महसूस करते हुए वे अपने बिस्तर पर गिर जाती हैं और वहाँ अनवरत रोते हुए पड़ी रहती हैं, मानो लगभग अपनी आखिरी साँस ले रही हों। और जब ये वचन उन्हें उनका बचपना और उनकी नीचता दिखा देते हैं, तो बाद में वे नकारात्मकता के बोझ से इतनी दब जाती हैं कि उनकी आँखों से प्रकाश चला जाता है, और न तो मेरे बारे में शिकायत करते हुए और न ही मुझसे नफरत करते हुए वे अपनी निष्क्रियता में पूरी तरह से निश्चल बन जाती हैं और इस प्रकार वे सीखने में असफल रहती हैं और अज्ञानी बनी रहती हैं। मुझे छोड़ने के बाद

वे खिलवाड़ करती हैं और "राजकुमारी सिल्वर बेल" जैसी अपनी खनखनाती हँसी हँसती हैं। वे कितनी नाजुक हैं और उनमें आत्म-प्रेम की कितनी कमी है! मानवजाति के ख़राब रद्दी माल जैसे तुम लोग—मनुष्यता का कितना अभाव है तुम लोगों में! तुम नहीं जानते कि अपने आप से कैसे प्रेम करें, या अपनी रक्षा कैसे करें, तुम्हें कोई होश नहीं है, तुम सच्चे मार्ग की तलाश नहीं करते, तुम सच्ची रोशनी से प्रेम नहीं करते, और इससे भी बढ़कर, तुम नहीं जानते कि खुद को कैसे सँजोएँ। तुमने मेरे द्वारा बार-बार दी गई शिक्षाओं को लंबे समय से अपने दिमाग के पीछे रख दिया है। यहाँ तक कि तुम उन्हें अपने खाली समय में खेलने की चीज़ें समझते हो, और हमेशा उन्हें अपना "संरक्षक ताबीज" मानते हो। जब शैतान द्वारा आरोप लगाया जाता है, तो तुम प्रार्थना करते हो; नकारात्मक होने पर तुम ऊँघने लगते हो; जब तुम खुश होते हो, तो तुम दौड़ते हो; जब मैं तुम्हें धिक्कारता हूँ, तो तुम झुक जाते हो और विनम्र बन जाते हो; और जब तुम मुझे छोड़ते हो, तो तुम उन्मादपूर्वक हँसते हो। भीड़ में तुमसे ऊँचा कोई नहीं होता, लेकिन तुम कभी भी खुद को सबसे घमंडी नहीं समझते। तुम हमेशा इतने अभिमानी, आत्म-संतुष्ट और उद्धत होते हो कि शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐसे "भद्र युवक", "भद्र युवतियाँ" "सज्जन" और "देवियाँ", जो सीखते नहीं और अज्ञानी बने रहते हैं, मेरे वचनों को अनमोल खजाना कैसे मान सकते हैं? अब मैं तुमसे सवाल करना जारी रखूँगा : इतने लंबे समय में तुमने मेरे वचनों और कार्य से आख़िर क्या सीखा है? क्या तुम धोखा देने में ज्यादा चतुर नहीं हो गए हो? अपनी देह में अधिक परिष्कृत नहीं हो गए हो? मेरे प्रति अपने दृष्टिकोण में अधिक लापरवाह नहीं हो गए हो? मैं तुमसे सीधे कहता हूँ : यह सब मेरे द्वारा किया गया काम है, जिसने तुम्हें, जिसमें एक चूहे के जैसा साहस हुआ करता था, अधिक निडर बनाया है। मेरे प्रति तुम्हारे द्वारा अनुभव की जाने वाली डर की भावना हर गुज़रते दिन के साथ कम होती जाती है, क्योंकि मैं बहुत दयालु हूँ, और मैंने हिंसा के माध्यम से तुम्हारी देह पर प्रतिबंध नहीं लगाए हैं। शायद, जैसा कि तुम समझते हो, मैं केवल कठोर शब्द बोल रहा हूँ—लेकिन अधिक बार ऐसा होता है कि मैं तुम्हें मुस्कुराता हुआ चेहरा दिखाता हूँ, और तुम्हारे मुँह पर तुम्हारी निंदा नहीं करता। इसके अलावा, मैं हमेशा तुम्हारी कमजोरी के लिए तुम्हें क्षमा कर रहा हूँ, और पूर्णत: इसी वजह से तुम मेरे साथ उस तरह का व्यवहार करते हो, जैसे साँप ने दयालु किसान के साथ किया था। मैं मानवजाति के कौशल की चरम मात्रा और उसकी पर्यवेक्षण-शक्तियों की कुशाग्रता की कितनी प्रशंसा करता हूँ! मैं तुम्हें एक सत्य बता दूँ : आज यह बहुत कम महत्त्व रखता है कि तुम्हारे पास श्रद्धापूर्ण हृदय है या नहीं; उसके बारे में मैं न तो उत्सुक हूँ और न ही चिंतित।

लेकिन मुझे तुमको यह भी बताना चाहिए : इस "प्रतिभा के धनी" तुम, जो सीखते नहीं और अज्ञानी बने रहते हो, अंततः अपनी आत्म-प्रशंसात्मक क्षुद्र चतुराई द्वारा नीचे गिरा दिए जाओगे—तुम वह होगे, जो दुःख भोगता है और जिसे ताड़ना दी जाती है। मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूँ कि जब तुम नरक में दुःख भुगतो तो मैं तुम्हारा साथ दूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ। यह मत भूलो कि तुम मेरे द्वारा सृजित ऐसे प्राणी हो, जिसे मेरे द्वारा श्राप दिया गया है, और फिर भी जिसे मेरे द्वारा सिखाया और बचाया जाता है। मेरे लिए तुम्हारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे मैं छोड़ने का अनिच्छुक होऊँ। मैं जब भी काम करता हूँ, तो कोई भी व्यक्ति, घटना या वस्तु मुझे रोक नहीं सकती। मानवजाति के प्रति मेरी प्रवृत्तियाँ और मत हमेशा एक-से रहे हैं। मैं विशेष रूप से तुम्हारी ओर बहुत प्रवृत नहीं हूँ, क्योंकि तुम मेरे प्रबंधन के लिए एक संलग्नक हो, और किसी भी अन्य प्राणी से अधिक विशेष होने से बहुत दूर हो। तुम्हें मेरी यह सलाह है : हर समय याद रखो कि तुम परमेश्वर द्वारा सृजित प्राणी से अधिक कुछ नहीं हो! तुम मेरे साथ रह सकते हो, लेकिन तुम्हें अपनी पहचान पता होनी चाहिए; अपने बारे में बहुत ऊँची राय मत रखो। अगर मैं तुम्हारी निंदा नहीं भी करता, या तुमसे नहीं निपटता, और मुस्कुराहट के साथ तुम्हारा सामना करता हूँ, तो इससे यह साबित नहीं होता कि तुम मेरे समान ही हो; तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम सत्य का अनुसरण करने वालों में से एक हो, न कि स्वयं सत्य हो! तुम्हें कभी मेरे वचनों के साथ-साथ बदलना बंद नहीं करना चाहिए। तुम इससे बच नहीं सकते। मैं तुम्हें इस महान समय के दौरान, यह दुर्लभ अवसर आने पर प्रयास करके कुछ सीखने की सलाह देता हूँ। मुझे मूर्ख मत बनाओ; मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं कि तुम मुझे धोखा देने हेतु चापलूसी का उपयोग करो। जब तुम मुझे खोजते हो, तो यह सब मेरे लिए नहीं, बल्कि तुम्हारे खुद के लिए है!

चीन के चुने हुए लोग इस्राएल की किसी जनजाति का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम नहीं हैं

दाऊद का घराना वह परिवार था, जिसने मूल रूप से यहोवा की प्रतिज्ञा और उसका उत्तराधिकार प्राप्त किया था। वह मूल रूप से इस्राएल की एक जनजाति थी और चुने हुए लोगों से संबंधित थी। उस समय यहोवा ने इस्रालियों के लिए एक आज्ञा निकाली कि दाऊद के घराने से संबंध रखने वाले सभी यहूदी लोग—वे सब, जिनका जन्म उस घराने में हुआ था—उसका उत्तराधिकार प्राप्त करेंगे। वे सौ गुना प्राप्त करेंगे और ज्येष्ठ पुत्रों का दर्जा हासिल करेंगे। उस समय वे संपूर्ण इस्राएलियों में सबसे ऊँचे होंगे—इस्राएल

के सभी परिवारों में उनका स्तर सबसे ऊँचा होगा, और वे याजकीय वस्त्र और मुकुट पहनकर मंदिर में सीधे यहोवा की सेवा करेंगे। उस समय यहोवा ने उन्हें विश्वासपात्र और पवित्र सेवक कहा और उन्हें इस्राएल की सभी जनजातियों का सम्मान प्राप्त हुआ। इस प्रकार, उस समय उन्हें बड़े आदर के साथ स्वामी कहा जाता था—यह सब व्यवस्था के युग में यहोवा का कार्य था। आज भी वे मंदिर में यहोवा की ऐसी ही सेवा कर रहे हैं, अतः वे सदा के लिए यहोवा द्वारा सिंहासन पर बैठाए गए राजा हैं। कोई उनसे उनका मुकुट नहीं छीन सकता, न ही कोई उनकी सेवा बदल सकता है, क्योंकि वे मूल रूप से दाऊद के घराने से संबंधित हैं; यह दर्जा उन्हें यहोवा ने दिया था। तुम लोगों के दाऊद के घराने से संबंधित न होने का कारण यह है कि तुम इस्राएल के नहीं हो, बल्कि तुम इस्राएल से बाहर के अन्यजातीय परिवारों से संबंधित हो। इतना ही नहीं, तुम्हारी प्रकृति भी यहोवा की आराधना करने की नहीं है, बल्कि उसका प्रतिरोध करने की है, अतः स्वभावत: तुम्हारा रुतबा दाऊद के घराने के लोगों के रुतबे से अलग है, और तुम वे नहीं हो जो मेरा उत्तराधिकार प्राप्त करेंगे, और उनमें से तो बिल्कुल भी नहीं हो जो सौ गुना प्राप्त करेंगे।

उस समय इस्राएल कई विभिन्न घरानों और कई विभिन्न जनजातियों में बँटा हुआ था, हालाँकि वे सब चुने हुए लोग थे। परंतु, इस्राएल दूसरे देशों से इस मामले में भिन्न है कि उसके लोग जनजातियों के रूप में श्रेणियों में बँटे हुए हैं, जैसे यहोवा के सामने उनका स्थान, और वह धरती, जिससे प्रत्येक व्यक्ति जुड़ा हुआ है। इस्राएल से इतर देशों में लोग स्वयं को यों ही दाऊद, याकूब या मूसा के घरानों से संबंधित होने का दावा नहीं कर सकते। यह तथ्य के विपरीत होगा—इस्राएल की जातियों का संबंध यों ही गलत ढंग से दूसरे देशों से नहीं जोड़ा जा सकता। लोग अकसर दाऊद, अब्राहम, एसाव इत्यादि के नामों का दुरुपयोग करते हैं, या वे कहते हैं : "अब हमने परमेश्वर को स्वीकार कर लिया है, इसलिए हम याकूब के घराने के हैं।" इस तरह की बातें कहना निराधार मानवीय तर्क के सिवाय कुछ नहीं है; यह सीधे यहोवा से नहीं आता, न ही यह मेरे अपने विचारों से आता है। यह विशुद्ध रूप से मानवीय बकवास है! उस वक्ता की तरह, जो बड़ी-बड़ी कहानियाँ गढ़ता है, लोग निराधार ही स्वयं को दाऊद के वंशज या याकूब के परिवार का भाग समझते हैं, और वे खुद को इस योग्य मानते भी हैं। क्या लोग नहीं जानते कि दाऊद के घराने के लोगों को बहुत पहले यहोवा द्वारा अभिषिक्त किया गया था, और दाऊद ने स्वयं को राजा के रूप में नियुक्त नहीं किया था? परंतु, ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो बेशर्मी के साथ दाऊद के घराने के वंशज होने का दावा करते हैं—लोग बहुत ही अज्ञानी हैं! सत्य यह है कि इस्राएल के मामलों का अन्य राष्ट्र-जातियों से कोई संबंध नहीं है

—ये दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं, पूरी तरह से असंबद्ध। इस्राएल के मामलों पर केवल इस्राएल के लोगों से ही बोला जा सकता है, क्योंकि अन्य राष्ट्र-जातियों से उनका कोई संबंध नहीं है, और उसी तरह वर्तमान में अन्य राष्ट्र-जातियों के बीच किए जाने वाले कार्य का इस्राएल के लोगों के साथ कोई संबंध नहीं है। अभी जो मैं कह रहा हूँ, वह निर्धारित करता है कि अन्य राष्ट्र-जातियों के बारे में क्या कहा जाता है, और इस्राएल में किया गया कार्य अन्य राष्ट्र-जातियों के बीच किए जाने वाले कार्य के नमूने के रूप में नहीं लिया जा सकता। क्या यह इस बात को नहीं दिखाएगा कि परमेश्वर बहुत ही रूढ़िवादी है? जब अन्य राष्ट्र-जातियों के बीच कार्य फैलना शुरू होता है, तो उनके विषय में जो कहा गया है, या जो उनका परिणाम है, वह प्रकट होता है। इसलिए लोगों का यह कहना, जैसा कि उन्होंने पहले भी कहा है, "हम दाऊद के वंशज हैं," या "यीशु दाऊद की संतान है," और भी अधिक असंगत है। मेरा कार्य वर्गीकृत है। मैं "हिरण को घोड़ा" नहीं कहूँगा; बल्कि कार्य को उसके क्रमबद्ध तरीके से विभाजित किया जाता है।

आशीषों से तुम लोग क्या समझते हो?

यद्यपि इस युग में जन्मे लोग शैतान और गंदे राक्षसों द्वारा भ्रष्ट कर दिए गए हैं, लेकिन यह भ्रष्टता उनके लिए परम उद्धार भी लेकर आई है, पहाड़ों और मैदानों पर फैले हुए अय्यूब के पशु-धन और विशाल संपत्ति से भी बड़ा उद्धार, और उस आशीष से भी बड़ा जो अय्यूब को अपने परीक्षणों के बाद यहोवा को देखने के रूप में मिला था। अय्यूब अपनी मौत के परीक्षण के बाद ही यहोवा को बोलते हुए सुन पाया था और बवंडर में से यहोवा की आवाज़ सुन सका था। फिर भी, उसने यहोवा का चेहरा नहीं देखा और उसके स्वभाव को नहीं जाना था। अय्यूब को केवल शारीरिक सुख प्रदान करने वाली भौतिक संपत्ति, आसपास के समस्त शहरों के बच्चों में सबसे सुंदर बच्चे और साथ ही स्वर्गदूतों द्वारा सुरक्षा प्राप्त हुई थी। उसने कभी यहोवा के दर्शन नहीं किए, और भले ही वह धार्मिक कहलाता था, फिर भी उसने कभी यहोवा का स्वभाव नहीं जाना था। यद्यपि, यह कहा जा सकता है कि, आज के लोगों के भौतिक सुख अस्थायी रूप से अल्प हैं, या बाहरी दुनिया का परिवेश शत्रुतापूर्ण है, फिर भी मैं अपना स्वभाव, जिसे मैंने प्राचीन काल से मनुष्य पर कभी प्रकट नहीं किया है और जो हमेशा से गुप्त रहा है, और साथ ही पिछले युगों के रहस्य उन लोगों पर प्रकट करता हूँ, जो सबसे निम्न हैं, पर जिन्हें मैने अपना सबसे महान उद्धार प्रदान किया है। इतना ही नहीं, यह पहली बार है जब मैंने ये चीज़ें प्रकट की हैं; मैंने इस तरह का कार्य पहले कभी नहीं

किया है। यद्यपि तुम लोग अय्यूब से बहुत हीन हो, किंतु तुम लोगों ने जो हासिल किया है और जो तुम लोगों ने देखा है, वह अय्यूब से काफी बढ़कर है। यद्यपि तुम लोगों ने सभी तरह की पीड़ाएँ झेली हैं और हर तरह की यातना का अनुभव किया है, लेकिन वह पीड़ा अय्यूब के परीक्षणों की तरह बिलकुल नहीं है, बल्कि यह न्याय और ताड़ना है, जो लोगों को उनके विद्रोह, उनके प्रतिरोध, और मेरे धार्मिक स्वभाव के कारण प्राप्त हुए हैं; यह धार्मिक न्याय, ताड़ना और शाप है। दूसरी ओर, अय्यूब इस्राएलियों के बीच एक धार्मिक मनुष्य था, जिसने यहोवा का महान प्रेम और दया प्राप्त की। उसने कोई बुरे काम नहीं किए थे, और उसने यहोवा का विरोध नहीं किया; बल्कि, वह यहोवा के प्रति निष्ठापूर्वक समर्पित था। अपनी धार्मिकता के कारण उसे परीक्षणों का भागी बनना पड़ा, और वह अग्नि-परीक्षाओं से इसलिए गुजरा क्योंकि वह यहोवा का एक वफ़ादार सेवक था। आज के लोग अपनी गंदगी और अधार्मिकता के कारण मेरे न्याय और शाप के भागी होते हैं। यद्यपि उनकी पीड़ा अय्यूब द्वारा झेली गई उस पीड़ा के सामने कुछ भी नहीं, जब उसने अपने पशु-धन, अपनी संपत्ति, अपने नौकरों, अपने बच्चों और अपने सभी प्रियजनों को खो दिया था, लोग जो सहन कर रहे हैं, वह उग्र शोधन और ज्वलन है। और जो बात इसे अय्यूब के अनुभव से भी ज्यादा गंभीर बनाती है, वह यह है कि इस प्रकार के परीक्षण लोगों की कमज़ोरी को देखकर कम किए या हटाए नहीं जाते, बल्कि वे दीर्घकालीन हैं, लोगों के जीवन के अंतिम दिन तक चलने वाले हैं। यह सज़ा, न्याय और शाप है—यह बेरहमी से जलाना है, और इससे भी अधिक, यह मानवजाति का उचित "उत्तराधिकार" है। लोग इसी के योग्य हैं, और मेरा धार्मिक स्वभाव यहीं अभिव्यक्त होता है। यह एक ज्ञात तथ्य है। फिर भी, लोगों ने आज जो कुछ हासिल किया है, वह उस पीड़ा से बहुत ज्यादा है, जो वे सहन करते हैं। जो दुःख तुम लोग झेलते हो, वह केवल तुम्हारी मूर्खता की वजह से मिला झटका है, जबकि जो कुछ तुमने प्राप्त किया है, वह तुम्हारे दुःख से सौ गुना अधिक है। पुराने विधान में इस्राएल के कानूनों के अनुसार, जो लोग मेरा विरोध करते हैं, जो लोग खुले तौर पर मेरी आलोचना करते हैं, और जो लोग मेरे मार्ग का अनुसरण नहीं करते लेकिन दुस्साहस के साथ मुझे अपवित्र बलियाँ चढ़ाते हैं, वे सब निश्चित रूप से मंदिर की आग से नष्ट हो जाएँगे, या चुने हुए कुछ लोगों द्वारा पत्थर मार-मारकर मौत के घाट उतार दिए जाएँगे, और यहाँ तक कि उनके अपने वंशज और अन्य प्रत्यक्ष परिजन भी मेरे शाप को झेलेंगे। आने वाले जीवन में वे स्वतंत्र नहीं होंगे, बल्कि मेरे गुलामों के गुलाम होंगे, और मैं उन्हें अन्य जातियों में निर्वासित कर दूँगा, और वे अपने देश लौटने में असमर्थ होंगे। आज के लोगों द्वारा अपने कार्यों और व्यवहार के आधार पर झेली गई पीड़ा

इस्राएलियों द्वारा सहन किए गए दंड जितनी गंभीर नहीं है। यह कहना अनुचित नहीं है कि जो पीड़ा तुम लोग वर्तमान में सहन कर रहे हो, वह तुम्हारे किए का प्रतिफल है, क्योंकि तुम लोगों ने वास्तव में हद पार कर ली है। यदि तुम लोग इस्राएल में होते, तो तुम अनंत पापी बन जाते और इस्राएलियों द्वारा तुम्हें बहुत पहले ही टुकड़ों में काट दिया गया होता और यहोवा के मंदिर में स्वर्ग से आती आग से जला दिया गया होता। तुम लोगों ने अब क्या प्राप्त किया है? तुम लोगों को क्या मिला है, और तुमने किस चीज़ का आनंद उठाया है? मैंने तुम लोगों में अपना धार्मिक स्वभाव प्रकट किया है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैंने मानवजाति के छुटकारे के लिए अपना धैर्य प्रकट किया है। यह कहा जा सकता है कि मैंने जो कुछ तुम लोगों में किया है, वह धैर्य का ही कार्य है; यह मेरे प्रबंधन के लिए किया जाता है, और इससे भी अधिक, यह मानवजाति के आनंद की खातिर किया जाता है।

यद्यपि अय्यूब यहोवा के परीक्षणों से गुजरा, किंतु वह सिर्फ एक धार्मिक इंसान था, जो यहोवा की आराधना करता था। उन परीक्षणों से गुज़रने के बावजूद उसने यहोवा के बारे में शिकायत नहीं की, और उसने यहोवा के साथ अपने साक्षात्कार को सँजोकर रखा। आज के लोग न सिर्फ यहोवा की उपस्थिति को सँजोकर नहीं रखते, बल्कि वे उसकी उपस्थिति को अस्वीकार करते हैं, उससे घृणा करते हैं, उसकी शिकायत करते हैं और उसका मज़ाक बनाते हैं। क्या तुम लोगों ने बहुत ज्यादा प्राप्त नहीं किया है? क्या तुम लोगों के दुःख सचमुच इतने बड़े रहे हैं? क्या तुम लोग मरियम और याकूब से अधिक भाग्यशाली नहीं हो? क्या तुम लोगों का प्रतिरोध इतना मामूली रहा है? क्या यह हो सकता है कि मैंने तुम लोगों से जो अपेक्षा की है और मैंने तुम लोगों से जो माँगा है, वह बहुत बड़ा और बहुत ज्यादा रहा है? मेरा कोप केवल उन इस्राएलियों पर टूटा था, जिन्होंने मेरा विरोध किया, सीधे तुम लोगों पर नहीं; तुम लोगों ने जो प्राप्त किया है, वह केवल मेरा निर्मम न्याय और खुलासे और साथ ही सतत अग्निमय शुद्धिकरण रहा है। इसके बावजूद लोग मेरा प्रतिरोध और खंडन करते रहते हैं, और ऐसा वे बिना किसी समर्पण के करते हैं। यहाँ तक कि कुछ ऐसे भी हैं, जो खुद को मुझसे दूर रखते हैं और मुझे नकारते हैं; ऐसे लोग मूसा का विरोध करने वाले कोरह और दातान के दल से बेहतर नहीं हैं। लोगों के दिल बहुत कठोर और उनकी प्रकृति बहुत हठी है। वे अपने पुराने तरीके कभी नहीं बदलते। मैं कहता हूँ, वे दिन के उजाले में एक वेश्या की तरह उजागर हो जाते हैं, और मेरे शब्द इस हद तक कठोर हैं कि शायद वे "कानों के लिए अशोभनीय" हो सकते हैं, जो दिन के उजाले में लोगों की प्रकृति उजागर करते हैं—लेकिन फिर भी वे केवल अपने सिर

हिलाते हैं, चंद आँसू बहाते हैं, और खुद को थोड़ा दुखी महसूस करने के लिए बाध्य करते हैं। एक बार यह बीत जाने के बाद, वे पहाड़ों में जंगली जानवरों के राजा की तरह क्रूर हो जाते हैं, और उनमें ज़रा भी जागरूकता नहीं है। इस प्रकार के स्वभाव वाले लोग कैसे जान सकते हैं कि वे अय्यूब से सौ गुना अधिक भाग्यशाली रहे हैं? वे कैसे महसूस कर सकते हैं कि जिन आशीषों का वे आनंद ले रहे हैं, वे युगों-युगों में शायद ही देखे गए हों, और इससे पहले किसी भी व्यक्ति ने उनका आनंद नहीं लिया है? लोगों के अंतःकरण इस तरह के आशीषों को कैसे महसूस कर सकते हैं, आशीष, जो सजा से युक्त हैं? स्पष्ट कहूँ, तो मुझे तुम लोगों से सिर्फ यह अपेक्षा है कि तुम लोग मेरे कार्य के लिए आदर्श बन सको, मेरे संपूर्ण स्वभाव और मेरे सभी कार्यों के लिए गवाह बन सको, और कि तुम लोग शैतान की यातनाओं से मुक्त हो सको। फिर भी लोग हमेशा मेरे कार्य से घृणा करते हैं और जान-बूझकर उसके प्रतिकूल रहते हैं। यह कैसे हो सकता है कि इस तरह के लोग मुझे इस्राएल के कानूनों को वापस लाने, और उन पर वह कोप बरसाने के लिए न उकसाएँ, जो मैंने इस्राएल पर बरसाया था? यद्यपि तुम लोगों में से कई मेरे प्रति "आज्ञाकारी और विनम्र" हैं, लेकिन उनसे भी ज्यादा ऐसे हैं, जो कोरह की टोली जैसे हैं। एक बार जब मैं अपनी पूर्ण महिमा प्राप्त कर लूँगा, तो मैं स्वर्ग की आग का उपयोग करके उन्हें जलाकर राख कर दूँगा। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि मैं अब अपने वचनों से लोगों को ताड़ना नहीं दूँगा; बल्कि, इस्राएल का कार्य करने से पहले, मैं कोरह की टोली को, जो मेरा विरोध करती है और जिसे मैंने बहुत पहले ही हटा दिया था, पूरी तरह से भस्म करूँगा। मानवजाति के पास अब मेरा आनंद लेने का अवसर नहीं होगा, इसके बजाय वे जो कुछ भी देखेंगे, वह मेरा कोप होगा और स्वर्ग से "आग की लपटें" होंगी। मैं सभी प्रकार के लोगों के विभिन्न परिणामों का खुलासा करूँगा, और मैं उन सभी को श्रेणियों में बाँट दूँगा। मैं उनके हर विद्रोही कृत्य का ध्यान रखूँगा और फिर अपना कार्य ख़त्म कर दूँगा, ताकि लोगों के परिणाम पृथ्वी पर रहते हुए मेरे निर्णय के आधार के साथ-साथ मेरे प्रति उनके दृष्टिकोण के आधार पर भी निर्धारित किया जाए। जब वह समय आएगा, तो ऐसा कुछ भी नहीं होगा जो उनके परिणामों को बदल सके। लोगों को अपने स्वयं के परिणाम प्रकट करने दो! फिर मैं लोगों के परिणाम स्वर्गिक पिता को सौंप दूँगा।

परमेश्वर के बारे में तुम्हारी समझ क्या है?

लोगों ने लम्बे समय से परमेश्वर में विश्वास किया है, फिर भी उनमें से ज्यादातर को कोई समझ नहीं है

कि "परमेश्वर" शब्द का अर्थ क्या है, वे बस घबराहट में अनुसरण करते हैं। उन्हें पता नहीं है कि वास्तव में मनुष्य को परमेश्वर में विश्वास क्यों करना चाहिए, या परमेश्वर क्या है। यदि लोग सिर्फ़ परमेश्वर में विश्वास करना और उसका अनुसरण करना जानते हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि परमेश्वर क्या है, और यदि वे परमेश्वर को भी नहीं जानते, तो क्या यह बस एक बहुत बड़ा मज़ाक नहीं है? इतनी दूर आने के बाद, भले ही लोगों ने अब तक बहुत-से स्वर्गिक रहस्य देखे हैं और अथाह ज्ञान की बहुत-सी बातें सुनी हैं, जो मनुष्य ने पहले कभी नहीं समझी थीं, तब भी वे बहुत से अत्यंत प्राथमिक सत्यों से अनजान हैं जिन पर मनुष्य ने पहले कभी चिंतन-मनन नहीं किया। कुछ लोग कह सकते हैं, "हमने कई वर्ष परमेश्वर में विश्वास किया है। हम कैसे नहीं जान सकते हैं कि परमेश्वर क्या है? क्या यह प्रश्न हमारा निरादर नहीं करता?" परन्तु वास्तविकता में, यद्यपि आज लोग मेरा अनुसरण करते हैं, किंतु वे आज के किसी कार्य के बारे में कुछ भी नहीं जानते, और सबसे सीधे-सादे और सबसे आसान प्रश्नों को भी समझने में विफल हो जाते हैं, फिर ऐसे अत्यंत जटिल प्रश्नों की तो बात ही छोड़ दें जो परमेश्वर के बारे में हैं। जान लो कि जिन प्रश्नों से तुम लोगों का कोई वास्ता नहीं है, जिन्हें तुम लोगों ने पहचाना नहीं है, यही वे प्रश्न हैं जिन्हें समझना तुम लोगों के लिए सबसे आवश्यक है, क्योंकि तुम लोग केवल भीड़ के पीछे चलना जानते हो और जिनसे तुम लोगों को स्वयं को सुसज्जित करना चाहिए उन पर कोई ध्यान नहीं देते हो और उनकी कोई परवाह नहीं करते हो। क्या तुम सचमुच जानते भी हो कि तुम्हें परमेश्वर में विश्वास क्यों करना चाहिए? क्या तुम सचमुच जानते हो कि परमेश्वर क्या है? क्या तुम लोग सचमुच जानते हो कि मनुष्य क्या है? परमेश्वर में विश्वास करने वाले व्यक्ति के रूप में यदि तुम इन बातों को समझने में विफल हो जाते हो, तो क्या तुम परमेश्वर के विश्वासी की गरिमा खो नहीं देते? आज मेरा कार्य यह है : लोगों को उनका सार समझाना, वह सब समझाना जो मैं करता हूँ, और परमेश्वर के असली चेहरे से परिचित करवाना। यह मेरी प्रबंधन योजना का समापन भाग, मेरे कार्य का अंतिम चरण है। यही कारण है कि मैं जीवन के सारे सत्य तुम लोगों को पहले से बता रहा हूँ, ताकि तुम लोग उन्हें मुझ से स्वीकार कर सको। चूंकि यह अंतिम युग का कार्य है, इसलिए मुझे तुम सब लोगों को जीवन के सारे सत्य बताने होंगे जिन्हें तुम लोगों ने पहले कभी ग्रहण नहीं किया है, बावजूद इसके कि बहुत अपूर्ण और बहुत अनुपयुक्त होने के कारण तुम लोग उन्हें समझने या धारण करने में असमर्थ हो। मैं अपने कार्य का समापन करूँगा; मुझे जो कार्य करना है, उसे मैं पूरा करूँगा, और तुम लोगों को मैंने जो आदेश दिए हैं उन सबके बारे में तुम लोगों को बताऊँगा, ताकि कहीं ऐसा न हो कि जब अँधेरा छाये तब तुम लोग

फिर भटक जाओ और दुष्ट के कुचक्रों के फेर में पड़ जाओ। कई तरीके हैं जो तुम नहीं समझते हो, कई मामले हैं जिनका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है। तुम लोग इतने अज्ञानी हो; मैं तुम लोगों की कद-काठी और तुम लोगों की कमियां अच्छी तरह जानता हूँ। इसलिए, यद्यपि कई वचन हैं जिन्हें समझने में तुम लोग असमर्थ हो, फिर भी मैं तुम सब लोगों को ये सारे सत्य बताने का इच्छुक हूँ जिन्हें तुमने पहले कभी ग्रहण नहीं किया हैहे, क्योंकि मैं चिंता करता रहता हूँ कि तुम लोगों की वर्तमान कद-काठी में, तुम मेरे प्रति अपनी गवाही पर डटे रहने में समर्थ हो या नहीं। ऐसा नहीं है कि मुझे तुम लोगों की कोई परवाह नहीं है; तुम लोग पूरे जंगली हो जिन्हें अभी मेरे औपचारिक प्रशिक्षण से गुज़रना है, और मैं पूरी तरह देख नहीं सकता कि तुम लोगों के भीतर कितनी महिमा है। हालाँकि तुम लोगों पर कार्य करते हुए मैंने बहुत ऊर्जा व्यय की है, तब भी तुम लोगों में सकारात्मक तत्व वास्तव में अविद्यमान प्रतीत होते हैं, जबकि नकारात्मक तत्व अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं और केवल ऐसी गवाहियों का काम कर सकते हैं, जो शैतान को लज्जित करती हैं। तुम्हारे भीतर लगभग बाकी सब कुछ शैतान का ज़हर है। तुम लोग मुझे ऐसे दिखते हो जैसे तुम उद्धार से परे हो। अभी स्थिति यह है कि मैं तुम लोगों की विभिन्न अभिव्यक्तियों और व्यवहारों को देखता हूँ, और अंततः, मैं तुम लोगों की असली कद-काठी जानता हूँ। यही कारण है कि मैं तुम लोगों को लेकर अत्यधिक चिंता करता रहता हूँ: जीवन जीने के लिए अकेले छोड़ दिये जायें, तो क्या मनुष्य आज जैसे हैं, उसके तुल्य या उससे बेहतर हो पाएंगे? क्या तुम लोगों की बचकानी कद-काठी तुम लोगों को व्याकुल नहीं करती? क्या तुम लोग सचमुच इस्राएल के चुने हुए लोगों जैसे हो सकते हो-हर समय, केवल और केवल मेरे प्रति निष्ठावान? तुम लोगों में जो उद्घाटित हुआ है, वह अपने माता-पिता से बिछड़े बच्चों का शरारतीपन नहीं है, बल्कि जंगलीपन है जो अपने स्वामियों के चाबुक की पहुँच से बाहर हो चुके जानवरों से फूटकर बाहर आ जाता है। तुम लोगों को अपनी प्रकृति जाननी चाहिए, जो तुम लोगों में समान कमज़ोरी भी है; यह एक रोग है जो तुम लोगों में समान है। इस प्रकार, आज तुम लोगों को मेरा एकमात्र उपदेश यह है कि मेरे प्रति अपनी गवाही पर अडिग रहो। किसी भी परिस्थिति में पुरानी बीमारी को फिर भड़कने न दो। गवाही देना ही वह है, जो सबसे महत्वपूर्ण है—यह मेरे कार्य का मर्म है। तुम लोगों कोमेरे वचन वैसे ही स्वीकार करने चाहिए जैसे मरियम ने यहोवा का प्रकाशन स्वीकार किया था, जो उस तक एक स्वप्न में आया था : विश्वास करके और आज्ञापालन करके। केवल यही पवित्रता की कसौटी पर खरा उतरता है। क्योंकि तुम लोग ही हो जो मेरे वचनों को सबसे अधिक सुनते हो, जिन्हें मेरा सबसे अधिक आशीष प्राप्त है। मैंने तुम लोगों को

अपनी समस्त मूल्यवान चीज़ें दे दी हैं, मैंने सब कुछ तुम लोगों को प्रदान कर दिया है, तो भी तुम लोग इस्राएल के लोगों से इतने अत्यधिक भिन्न कद-काठी के हो; तुम बहुत ही अलग-अलग हो। लेकिन उनकी तुलना में, तुम लोगों ने इतना अधिक प्राप्त किया है; जहां वे मेरे प्रकटन की हताशा से प्रतीक्षा करते हैं, तुम लोग मेरे साथ, मेरी उदारता को साझा करते हुए, सुखद दिन बिताते हो। इस भिन्नता को देखते हुए, मेरे ऊपर चीखने-चिल्लाने और मेरे साथ झगड़ा करने और जो मेरा है, उसमें अपने हिस्से की माँग करने का अधिकार तुम लोगों को कौन देता है? क्या तुम लोगों को बहुत नहीं मिला है? मैं तुम लोगों को इतना अधिक देता हूँ, परन्तु बदले में तुम लोग जो मुझे देते हो, वह है हृदयविदारक उदासी और दुष्चिंता और अदम्य रोष और असंतोष। तुम बहुत घृणास्पद हो—तथापि तुम दयनीय भी हो, इसलिए मेरे पास इसके सिवा कोई चारा नहीं है कि मैं अपना सारा रोष निगल लूँ और तुम लोगों के सामने बार-बार अपनी आपत्तियों को ज़ाहिर करूँ। हज़ारों वर्षों के कार्य के दौरान, मैंने कभी मानवजाति के साथ प्रतिवाद नहीं किया क्योंकि मैंने पाया है कि मानवता के समूचे विकास में, तुम लोगों के बीच केवल "चकमेबाज" ही हैं जो सबसे अधिक प्रख्यात बने हैं, प्राचीन कालों के प्रसिद्ध पुरखों द्वारा तुम लोगों के लिए छोड़ी गई बहुमूल्य धरोहरों की तरह। उन सूअर और कुत्तों से, निचले दर्जे के इन्सानों से मुझे कितनी घृणा है। तुम लोगों में अंतरात्मा की कमी है! तुम लोग बहुत अधम चरित्र के हो! तुम लोगों के हृदय बहुत कठोर हैं! यदि मैं अपने ऐसे वचनों और कार्य को इस्राएलियों के बीच ले गया होता, तो मैं बहुत पहले ही महिमा प्राप्त कर चुका होता। परन्तु तुम लोगों के बीच यह अप्राप्य है; तुम लोगों के बीच सिर्फ़ क्रूर उपेक्षा, तुम्हारा रूखा व्यवहार और तुम्हारे बहाने हैं। तुम लोग बहुत संवेदनाशून्य और बिल्कुल बेकार हो!

तुम लोगों को अपना सर्वस्व मेरे कार्य के लिए अर्पित कर देना चाहिए। तुम लोगों को वह कार्य करना चाहिए जो मुझे लाभ पहुंचाता हो। मैं तुम लोगों को वह सब समझाने का इच्छुक हूँ जो तुम लोग नहीं समझते ताकि तुम लोग मुझसे वह सब प्राप्त कर सको जिसका तुम लोगों में अभाव है। यद्यपि तुम लोगों में इतने अनगिनत दोष हैं कि गिने नहीं जा सकते, फिर भी, तुम लोगों को अपनी अंतिम दया प्रदान करते हुए, मैं तुम लोगों पर वह कार्य करते रहने को तत्पर हूँ जो कार्य मुझे करना चाहिए, ताकि तुम लोग मुझ से लाभ प्राप्त कर सको और उस महिमा को प्राप्त कर सको जो तुम लोगों में अनुपस्थित है और जिसे संसार ने कभी देखा नहीं है। मैंने इतने अधिक वर्षों तक कार्य किया है, फिर भी मनुष्यों में से किसी ने भी कभी मुझे नहीं जाना है। मैं तुम लोगों को वे रहस्य बताना चाहता हूँ जो मैंने कभी भी किसी और को नहीं बताए

हैं।

मनुष्यों के बीच, मैं वह पवित्रात्मा था जिसे वे देख नहीं सकते थे, वह पवित्रात्मा जिसके सम्पर्क में वे कभी भी नहीं आ सकते थे। पृथ्वी पर मेरे कार्य के तीन चरणों (संसार का सृजन, छुटकारा और विनाश) के कारण, मैं मनुष्यों के बीच अपना कार्य करने के लिए भिन्न-भिन्न समयों पर प्रकट हुआ हूँ (कभी भी सार्वजनिक रूप से नहीं)। मैं पहली बार उनके बीच छुटकारे के युग के दौरान आया। निस्संदेह मैं यहूदी परिवार में आया; इस प्रकार पृथ्वी पर परमेश्वर का आगमन देखने वाले सबसे पहले लोग यहूदी थे। मैंने इस कार्य को व्यक्तिगत रूप से किया, उसका कारण यह था कि छुटकारे के अपने कार्य में, मैं अपने देहधारी शरीर का उपयोग पापबलि के रूप में करना चाहता था। इस प्रकार मुझे सबसे पहले देखने वाले अनुग्रह के युग के यहूदी थे। वह पहली बार था जब मैंने देह में कार्य किया था। राज्य के युग में, मेरा कार्य जीतना और पूर्ण बनाना है, इसलिए मैं पुनः देह में चरवाही का कार्य करता हूँ। यह दूसरी बार है जब मैं देह में कार्य कर रहा हूँ। कार्य के अंतिम दो चरणों में, लोग जिसके सम्पर्क में आते हैं, वह अब अदृश्य, अस्पर्शनीय पवित्रात्मा नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति है जो देह के रूप में साकार पवित्रात्मा है। इस प्रकार मनुष्य की नज़रों में, मैं पुनः इन्सान बन जाता हूँ जिसमें परमेश्वर के रूप और एहसास का लेशमात्र भी नहीं है। इतना ही नहीं, जिस परमेश्वर को लोग देखते हैं, वह न सिर्फ़ नर, बल्कि नारी भी है, जो कि उनके लिए सबसे अधिक विस्मयकारी और उलझन में डालने वाला है। मेरे असाधारण कार्य ने बार-बार, कई-कई वर्षों से धारण किए गए पुराने विश्वासों को चूर-चूर किया है। लोग अवाक रह गए हैं! परमेश्वर केवल पवित्रात्मा, सात गुना तीव्र पवित्रात्मा, या सर्व-व्यापी पवित्रात्मा ही नहीं है, बल्कि एक मनुष्य भी है—एक साधारण मनुष्य, अत्यधिक सामान्य मनुष्य। वह न सिर्फ़ नर, बल्कि नारी भी है। वे इस बात में एक समान हैं कि वे दोनों ही एक मनुष्य से जन्मे हैं, और इस बात में असमान हैं कि एक पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया और दूसरा, मनुष्य से जन्मा है, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से पवित्रात्मा से उत्पन्न है। वे इस बात में एक समान हैं कि परमेश्वर द्वारा धारण किए गए दोनों शरीर परमपिता परमेश्वर का कार्य करते हैं, और इस बात में असमान हैं कि एक ने छुटकारे का कार्य किया जबकि दूसरा विजय का कार्य करता है। दोनों पिता परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं, परन्तु एक प्रेममय करुणा और दयालुता से भरा मुक्तिदाता है और दूसरा प्रचंड क्रोध और न्याय से भरा धार्मिकता का परमेश्वर है। एक सर्वोच्च सेनापति है जिसने छुटकारे का कार्य आरंभ किया, जबकि दूसरा धार्मिक परमेश्वर है जो विजय का कार्य संपन्न करता है। एक आरम्भ है, दूसरा

अंत है। एक निष्पाप शरीर है, दूसरा वह शरीर है जो छुटकारे को पूरा करता है, कार्य को आगे बढ़ाता है और कभी भी पापी नहीं है। दोनों एक ही पवित्रात्मा हैं, परन्तु वे भिन्न-भिन्न देहों में वास करते हैं और भिन्न-भिन्न स्थानों में पैदा हुए हैं और उनके बीच कई हज़ार वर्षों का अंतर है। फिर भी उनका सम्पूर्ण कार्य एक दूसरे का पूरक है, कभी भी परस्पर विरोधी नहीं है, और एक दूसरे के तुल्य है। दोनों ही लोग हैं, परन्तु एक बालक शिशु था और दूसरी बालिका शिशु थी। इन कई वर्षों तक, लोगों ने न सिर्फ़ पवित्रात्मा को और न सिर्फ एक मनुष्य, एक नर को देखा है, बल्कि कई ऐसी चीजों को भी देखा है जो मानव धारणाओं मेल नहीं खातीं; इस प्रकार, वे कभी भी मुझे पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं। वे मुझ पर आधा विश्वास और आधा संदेह करते रहते हैं, मानो मेरा अस्तित्व है, परन्तु मैं एक मायावी स्वप्न भी हूँ। यही कारण है कि आज तक, लोग अभी भी नहीं जानते हैं कि परमेश्वर क्या है। क्या तुम वास्तव में एक सीधे-सादे वाक्य में मेरा सार प्रस्तुत कर सकते हो? क्या तुम सचमुच यह कहने का साहस करते हो "यीशु परमेश्वर के अलावा कोई और नहीं है, और परमेश्वर यीशु के अलावा कोई और नहीं है"? क्या तुम सचमुच यह कहने का साहस रखते हो, "परमेश्वर पवित्रात्मा के अलावा कोई और नहीं है, और पवित्रात्मा परमेश्वर के अलावा कोई और नहीं है"? क्या तुम सहजता से कह सकते हो, "परमेश्वर बस देह धारण किए एक मनुष्य है"? क्या तुममें सचमुच दृढ़तापूर्वक कहने का साहस है कि "यीशु की छवि परमेश्वर की महान छवि है"? क्या तुम परमेश्वर के स्वभाव और छवि को पूर्ण रूप से समझाने के लिए अपनी वाक्पटुता का उपयोग कर सकते हो? क्या तुम वास्तव में यह कहने की हिम्मत करते हो, "परमेश्वर ने अपनी छवि के अनुरूप सिर्फ़ नरों की रचना की, नारियों की नहीं"? यदि तुम ऐसा कहते हो, तो फिर मेरे चुने हुए लोगों के बीच कोई नारी नहीं होगी, नारियां मानवजाति का एक वर्ग तो और भी नहीं क्या अब तुम वास्तव में जानते हो कि परमेश्वर क्या है? क्या परमेश्वर मनुष्य है? क्या परमेश्वर पवित्रात्मा है? क्या परमेश्वर वास्तव में नर है? मुझे जो कार्य करना है, क्या वह केवल यीशु ही पूरा कर सकता है? यदि तुम मेरा सार प्रस्तुत करने के लिए उपरोक्त में से केवल एक को चुनते हो, तो फिर तुम एक अत्यंत अज्ञानी निष्ठावान विश्वासी हो। यदि मैंने एक बार और केवल एक बार देहधारी के रूप में कार्य किया, तो क्या तुम लोग मेरा सीमांकन करोगे? क्या तुम सचमुच एक झलक में मुझे पूरी तरह समझ सकते हो? अपने जीवनकाल के दौरान जिन बातों का तुमने अनुभव किया है, क्या पूर्णतः उन्हीं के आधार पर सचमुच तुम मेरा सम्पूर्ण सार प्रस्तुत कर सकते हो? और यदि मैं अपने दोनों देहधारणों में एक समान कार्य करता, तो तुम मेरे बारे में क्या सोचते? क्या तुम मुझे हमेशा के लिए सलीब

पर कीलों से जड़ा छोड़ दोगे? क्या परमेश्वर उतना सीधा-सरल हो सकता है जैसा कि तुम दावा करते हो?

यद्यपि तुम लोगों का विश्वास बहुत सच्चा है, फिर भी तुम लोगों में से कोई भी मेरा पूर्ण विवरण दे पाने में समर्थ नहीं है कोई भी उन सारे तथ्यों की पूर्ण गवाही नहीं दे सकता जिन्हें तुम देखते हो। इसके बारे में सोचो: आज तुममें से ज्यादातर लोग अपने कर्तव्यों में लापरवाह हैं, शरीर का अनुसरण कर रहे हैं, शरीर को तृप्त कर रहे हैं, और लालचपूर्वक शरीर का आनंद ले रहे हैं। तुम लोगों के पास सत्य बहुत कम है। तो फिर तुम लोग उस सबकी गवाही कैसे दे सकते हो जो तुम लोगों ने देखा है? क्या तुम लोग सचमुच आश्वस्त हो कि तुम लोग मेरे गवाह बन सकते हो? यदि ऐसा एक दिन आता है जब तुम उस सबकी गवाही देने में असमर्थ हो जो तुमने आज देखा है, तो तुम सृजित प्राणी के कार्यकलाप गंवा चुके होगे, और तुम्हारे अस्तित्व का ज़रा-भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। तुम एक मनुष्य होने के लायक नहीं होगे। यह कहा जा सकता है कि तुम मानव नहीं रहोगे! मैंने तुम लोगों पर अथाह कार्य किया है, परन्तु चूंकि फिलहाल तुम न कुछ सीख रहे हो, न कुछ जानते हो, और तुम्हारा परिश्रम अकारथ है, इसलिए जब मेरे लिए अपने कार्य का विस्तार करने का समय होगा, तब तुम बस शून्य में ताकोगे, तुम्हारे मुँह से आवाज़ न निकलेगी और सर्वथा बेकार हो जाओगे। क्या यह तुम्हें सदा के लिए पापी नहीं बना देगा? जब वह समय आएगा, क्या तुम सबसे अधिक पछतावा महसूस नहीं करोगे? क्या तुम उदासी में नहीं डूब जाओगे? आज का मेरा सारा कार्य बेकारी और ऊब के कारण नहीं, बल्कि भविष्य के मेरे कार्य की नींव रखने के लिए किया जाता है। ऐसा नहीं है कि मैं बंद गली में हूँ और मुझे कुछ नया सोचने की जरूरत है। मैं जो कार्य करता हूँ, उसे तुम्हें समझना चाहिए; यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे सड़क पर खेल रहे किसी बच्चे द्वारा नहीं किया गया है, बल्कि यह ऐसा कार्य है जो मेरे पिता के प्रतिनिधित्व में किया जाता है। तुम लोगों को यह जानना चाहिए कि यह केवल मैं नहीं हूँ जो स्वयं यह सब कर रहा है; बल्कि, मैं अपने पिता का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। इस बीच, तुम लोगों की भूमिका केवल दृढ़ता से अनुसरण, आज्ञापालन, परिवर्तन करने और गवाही देने की है। तुम लोगों को समझना चाहिए कि तुम लोगों को मुझमें विश्वास क्यों करना चाहिए; यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है जो तुम लोगों में से प्रत्येक को समझना चाहिए। मेरे पिता ने अपनी महिमा के वास्ते तुम सब लोगों को उसी क्षण मेरे लिए पूर्वनियत कर दिया था, जिस क्षण उसने इस संसार की सृष्टि की थी। मेरे कार्य के वास्ते, और उसकी महिमा के वास्ते उसने तुम लोगों को पूर्वनियत किया था। यह मेरे पिता के कारण ही है कि तुम लोग मुझ में विश्वास करते हो; यह मेरे पिता द्वारा पूर्वनियत करने के कारण ही है कि तुम मेरा

अनुसरण करते हो। इसमें से कुछ भी तुम लोगों का अपना चुनाव नहीं है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि तुम लोग यह समझो कि तुम्हीं वे लोग हो जिन्हें मेरे लिए गवाही देने के उद्देश्य से मेरे पिता ने मुझे प्रदान किया है। चूंकि उसने तुम लोगों को मुझे दिया है, इसलिए तुम लोगों को उन तरीकों का पालन करना चाहिए, जो मैं तुम लोगों को प्रदान करता हूँ, साथ ही उन तरीकों और वचनों का भी, जो मैं तुम लोगों को सिखाता हूँ, क्योंकि मेरे तरीकों का पालन करना तुम लोगों का कर्तव्य है। यह मुझ में तुम्हारे विश्वास का मूल उद्देश्य है। इसलिए मैं तुम लोगों से कहता हूँ: तुम मात्र वे लोग हो, जिन्हें मेरे पिता ने मेरे तरीकों का पालन करने के लिए मुझे प्रदान किया है। हालाँकि, तुम लोग सिर्फ़ मुझ में विश्वास करते हो; तुम लोग मेरे नहीं हो क्योंकि तुम लोग इस्राएली परिवार के नहीं हो, और इसके बजाय प्राचीन साँप जैसे हो। मैं तुम लोगों से सिर्फ़ इतना करने को कह रहा हूँ कि मेरे लिए गवाही दो, परन्तु आज तुम लोगों को मेरे तौर-तरीकों के अनुसार चलना ही चाहिए। यह सब भविष्य की गवाही के वास्ते है। यदि तुम लोग केवल उन लोगों की तरह कार्य करते हो जो मेरे तरीकों को सुनते हैं, तो तुम्हारा कोई मूल्य नहीं होगा और मेरे पिता द्वारा तुम लोगों को मुझे प्रदान किए जाने का महत्त्व व्यर्थ हो जायेगा। तुम लोगों को जो बताने पर मैं जोर दे रहा हूँ, वह यह है: तुम्हें मेरे तरीकों पर चलना चाहिए।

एक वास्तविक व्यक्ति होने का क्या अर्थ है

मनुष्य का प्रबंधन करना, हमेशा से मेरा कर्तव्य रहा है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य पर विजय को मैंने तब नियत किया था जब मैंने संसार की रचना की थी। शायद लोग नहीं जानते हों कि अंत के दिनों में, मैं मनुष्य को पूरी तरह से जीत लूँगा या कि मानवजाति के बीच से विद्रोही लोगों को जीत लेना शैतान को मेरे द्वारा हराए जाने का प्रमाण है। परन्तु जब मेरे शत्रु ने मेरे साथ संघर्षशुरू किया, तो मैंने उसे पहले से ही बता दिया कि मैं उन सभी को जीत लूँगा, जिन्हें शैतान ने बंदी और अपनी संतान बना लिया था और उसके घर की निगरानी करने वाले वफादार सेवकों में तब्दील कर दिया था। जीतने का मूल अर्थ है—परास्त करना और अपमानित करना; इस्राएलियों की भाषा में, इसका अर्थ बुरी तरह से परास्त करना, नष्ट करना, और मेरे विरुद्ध फिर से विद्रोह करने में अक्षम कर देना है। परन्तु आज, जब तुम्हारे बीच इसका उपयोग किया जाता है, तो इसका अर्थ होता है जीतना। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि मेरा इरादा हमेशा से मानवजाति के दुष्ट को पूरी तरह से समाप्त और निकाल बाहर करना है, ताकि वह मेरे विरुद्ध अब विद्रोह

न कर सके, मेरे कार्य में अवरोध उत्पन्न करने या उसे अस्त-व्यस्त करने की तो हिम्मत भी न सके। इस प्रकार, जहाँ तक मनुष्य का सवाल है, इस शब्द का अर्थ जीतना हो गया है। शब्द के चाहे कुछ भी अर्थ हों, मेरा कार्य मानवजाति को हराना है। क्योंकि, जहाँ यह बात सत्य है कि मानवजाति मेरे प्रबंधन में एक सहायक है, परन्तु सटीक रूप से कहें तो मानवजाति मेरी शत्रु के अलावा और कुछ नहीं है। मानवजाति ऐसी दुष्ट है जो मेरा विरोध और मेरी अवज्ञा करती है। मानवजाति मेरे द्वारा श्रापित दुष्ट की संतान के अतिरिक्त और कोई नहीं है। मानवजाति उस प्रधान दूत की वंशज ही है जिसने मेरे साथ विश्वासघात किया था। मानवजाति और कोई नहीं बल्कि उस शैतान की विरासत है जो बहुत पहले ही मेरे द्वारा ठुकराया गया था और हमेशा से मेरा कट्टर विरोधी शत्रु रहा है। चूँकि सारी मानवजाति के ऊपर का आसमान, बगैर स्पष्टता की ज़रा-सी झलक के, मलिन और अँधकारमय है, और मानव दुनिया स्याह अंधेरे में डूबी हुई है, कुछ इस तरह कि उसमें रहने वाला कोई व्यक्ति अपने चेहरे के सामने हाथ को या अपना सिर उठाने पर सूरज को नहीं देख सकता है। उसके पैरों के नीचे की कीचड़दार और गड्ढों से भरी सड़क, घुमावदार और टेढ़ी-मेढ़ी है; पूरी जमीन पर लाशें बिखरी हुई हैं। अँधेरे कोने मृतकों के अवशेषों से भरे पड़े हैं जबकि ठण्डे और छाया वाले कोनों में दुष्टात्माओं की भीड़ ने अपना निवास बना लिया है। मनुष्यों के संसार में हर कहीं, दुष्टात्माएँ जत्थों में आती-जाती रहती हैं। सभी तरह के जंगली जानवरों की गन्दगी से ढकी हुई संतानें घमासान युद्ध में उलझी हुई हैं, जिनकी आवाज़ दिल में दहशत पैदा करती है। ऐसे समयों में, इस तरह के संसार में, एक ऐसे "सांसारिक स्वर्गलोक" में, कोई व्यक्ति जीवन के आनंद की खोज करने कहाँ जा सकता है? अपने जीवन की मंजिल की खोज करने के लिए कोई कहाँ जाएगा? बहुत पहले से शैतान के पैरों के नीचे रौंदी हुई मानवजाति, शुरू से ही शैतान की छवि लिये एक अभिनेता—उससे भी अधिक, मानवजाति शैतान का मूर्त रूप है, जो उस साक्ष्य के रूप में काम करती है जो जोरदार तरीके से और स्पष्ट रूप से शैतान की गवाही देती है। ऐसी मानवजाति, ऐसे अधम लोगों का झुंड, इस भ्रष्ट मानव परिवार की ऐसी संतान, कैसे परमेश्वर की गवाही दे सकती है? मेरी महिमा किस स्थान से आएगी? कोई मेरी गवाही के बारे में बोलना कहाँ से शुरू कर सकता है? क्योंकि उस शत्रु ने, जो मानवजाति को भ्रष्ट करके मेरे विरोध में खड़ा है, पहले ही उस मानवजाति को जिसे मैंने बहुत पहले बनाया था, जो मेरी महिमा और मेरे जीवन से भरी थी, उसे दबोच कर दूषित कर दिया है। उसने मेरी महिमा को छीन लिया है और उसने मनुष्य को जिस चीज़ से भर दिया है, वह शैतान की कुरूपता की भारी मिलावट वाला ज़हर, और अच्छे और बुरे के

ज्ञान के वृक्ष के फल का रस है। आरंभ में, मैंने मानवजाति का सृजन किया; अर्थात्, मैंने मानवजाति के पूर्वज, आदम का सृजन किया। वह उत्साह से भरपूर, जीवन की क्षमता से भरपूर, रूप और छवि से सम्पन्न था और उससे बढ़कर, वह मेरी महिमा के साहचर्य में था। यह महिमामय दिन था जब मैंने मनुष्य का सृजन किया। उसके बाद, आदम के शरीर से हव्वा को बनाया गया, वह भी मनुष्य की पूर्वज थी, और इस प्रकार जिन लोगों का मैंने सृजन किया था वे मेरी श्वास से भरे थे और मेरी महिमा से भरपूर थे। आदम को मूल रूप से मेरे हाथों के द्वारा बनाया गया था और वह मेरी छवि का निरूपण था। इसलिए "आदम" का मूल अर्थ था मेरे द्वारा सृजन किया गया प्राणी, जो मेरी प्राणाधार ऊर्जा से भरा हुआ, मेरी महिमा में भरा हुआ, रूप और छवि वाला, आत्मा और श्वास वाला था। आत्मा से सम्पन्न, वही एकमात्र सृजित प्राणी था जो मेरा प्रतिनिधित्व करने, मेरी छवि को धारण करने, और मेरी श्वास को प्राप्त करने में सक्षम था। आरंभ में, हव्वा दूसरी ऐसी इंसान थी जो श्वास से संपन्न थी, जिसके सृजन का मैंने आदेश दिया था, इसलिए "हव्वा" का मूल अर्थ था, एक ऐसा सृजित प्राणी जो मेरी महिमा को जारी रखेगा, जो मेरी प्राण शक्ति से भरा हुआ और उससे भी अधिक मेरी महिमा से संपन्न है। हव्वा आदम से आई, इसलिए उसने भी मेरा रूप धारण किया, क्योंकि वह मेरी छवि में सृजन की जाने वाली दूसरी इंसान थी। "हव्वा" का मूल अर्थ था, आत्मा, देह और हड्डियों युक्त जीवित प्राणी, मेरी दूसरी गवाही और साथ ही मानवजाति के बीच मेरी दूसरी छवि। वे मानवजाति के पूर्वज, मनुष्य का शुद्ध और बहुमूल्य खजाना थे, और शुरू से, आत्मा से सम्पन्न जीवित प्राणी थे। हालाँकि, दुष्ट ने मानवजाति के पूर्वजों की संतान को कुचल दिया और उन्हें बंदी बना लिया, उसने मानव संसार को पूर्णतः अंधकार में डुबो दिया, और हालात ऐसे बना दिये कि उनकी संतान मेरे अस्तित्व में अब और विश्वास नहीं करती है। इससे भी अधिक घिनौना यह है कि दुष्ट, लोगों को भ्रष्ट करते और उन्हें कुचलते हुए मेरी महिमा, मेरी गवाही, प्राणशक्ति जो मैंने उन्हें प्रदान की थी, वह श्वास और जीवन जो मैंने उनमें डाला था, मानव संसार में मेरी समस्त महिमा, और हृदय का समस्त रक्त जो मैंने मानवजाति पर खर्च किया था, उन सब को भी क्रूरतापूर्वक छीन रहा है। मानवजाति अब और प्रकाश में नहीं है, और लोगों ने वह सब कुछ खो दिया है जो मैंने उन्हें प्रदान किया था, उस महिमा को भी अस्वीकार कर दिया है जो मैंने उसे प्रदान की थी। वे कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि मैं सभी सृजित प्राणियों का प्रभु हूँ? वे स्वर्ग में मेरे अस्तित्व में कैसे विश्वास करते रह सकते हैं? वे कैसे पृथ्वी पर मेरी महिमा की अभिव्यक्तियों की खोज कर सकते हैं? ये पोते और पोतियाँ, उसे वो परमेश्वर कैसे मान सकते हैं जिसका उनके पूर्वज ऐसे प्रभु के

रूप में आदर करते थे जिसने उनका सृजन किया था? इन बेचारे पोते और पोतियों ने उस महिमा, छवि, और वह गवाही जो मैंने आदम और हव्वा को प्रदान की थी, और उस जीवन को जो मैंने मानवजाति को प्रदान किया था और अस्तित्व में रहने के लिए जिस पर वे निर्भर हैं, उसे उदारता से दुष्ट को "प्रस्तुत कर दिया"; वे दुष्ट की उपस्थिति से बिलकुल बेख़बर हैंऔर मेरी सारी महिमा उसे देते हैं। क्या यह "नीच" शब्द का स्रोत नहीं है? ऐसी मानवजाति, ऐसे दुष्ट राक्षस, ऐसी चलती-फिरती लाशें, ऐसी शैतान की आकृतियाँ, मेरे ऐसे शत्रु, मेरी महिमा से कैसे सम्पन्न हो सकते हैं? मैं अपनी महिमा को वापिस ले लूँगा, अपनी गवाही को जो मनुष्यों के बीच अस्तित्व में है, और सभी चीज़ों को वापस ले लूँगा जो कभी मेरी थीं और जिसे मैंने बहुत पहले मानवजाति को दे दिया था—मैं मानवजाति को पूरी तरह से जीत लूँगा। हालाँकि, तुम्हें पता होना चाहिए कि जिन मनुष्यों का मैंने सृजन किया था, वे पवित्र मनुष्य थे जो मेरी छवि और मेरी महिमा को धारण करते थे। वे शैतान से संबंधित नहीं थे, न ही वे इससे कुचले जाने के अधीन थे, बल्कि शैतान के लेशमात्र ज़हर से मुक्त, शुद्ध रूप से मेरी ही अभिव्यक्ति थे। इसलिए, मैं मानवजाति को सूचित करता हूँ कि मैं सिर्फ़ उसे चाहता हूँ जो मेरे हाथों से सृजित है, वे पवित्र जन जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ और जो किसी अन्य चीज़ से संबंधित नहीं हैं। इससे अतिरिक्त, मैं उनमें आनंद लूँगा और उन्हें अपनी महिमा के रूप में मानूँगा। हालाँकि, जिसे मैं चाहता हूँ यह वह शैतान द्वारा भ्रष्ट की गयी वो मानवजाति नहीं है जो आज शैतान से संबंधित है, और जो अब मेरा मूल सृजन नहीं है। क्योंकि मैं अपनी उस महिमा को वापस लेना चाहता हूँ जो मानव संसार में विद्यमान है, इसलिए मैं शैतान को पराजित करने में अपनी महिमा के प्रमाण के रूप में, मानवजाति के शेष उत्तरजीवियों को पूर्ण रूप से जीत लूँगा। मैं सिर्फ़ अपनी गवाही को, अपनी आनंद की वस्तु के रूप में, अपना स्वयं का निश्चित रूप मानता हूँ। यही मेरी इच्छा है।

आज मानवजाति जहाँ है, वहाँ तक पहुँचने के लिए उसे इतिहास के दसियों हज़ार साल लग गए हैं, फिर भी, जिस मानवजाति की सृष्टि मैंने आरंभ में की थी वह बहुत पहले ही अधोगति में डूब गई है। जिस मनुष्य की मैंने कामना की थी अब मनुष्य वैसा नहीं रह गया है, और इस प्रकार मेरी नज़रों में, लोग अब मानवजाति कहलाने योग्य नहीं हैं। बल्कि वे मानवजाति के मैल हैं, जिन्हें शैतान ने बंदी बना लिया है, वे चलती-फिरती सड़ी हुई लाशें हैं जिनमें शैतान बसा हुआ है और जिनसे शैतान स्वयं को आवृत करता है। लोगों को मेरे अस्तित्व में थोड़ा सा भी विश्वास नहीं है, न ही वे मेरे आने का स्वागत करते हैं। मानवजाति बस मेरे अनुरोधों को अस्थायी रूप से स्वीकार करते हुए, केवल डाह के साथ उत्तर देती है, और जीवन के

सुख-दुःख को मेरे साथ ईमानदारी से साझा नहीं करती है। चूँकि लोग मुझे अगम्य के रूप में देखते हैं, इसलिए वे मुझे ईर्ष्या से सनी मुस्कुराहट देते हैं, उनका रवैया किसी शक्तिवान का अनुग्रह प्राप्त करने का होता है, क्योंकि लोगों को मेरे कार्य के बारे में ज्ञान नहीं है, वर्तमान में मेरी इच्छा को तो वे बिल्कुल भी नहीं जानते हैं। मैं तुम लोगों को अपनी असल सोच बताता हूँ : जब वह दिन आयेगा, तो हर वह व्यक्ति जो मेरी आराधना करता है, उसका दुःख तुम लोगों के दुःख की अपेक्षा सहने में ज़्यादा आसान होगा। मुझमें तुम्हारे विश्वास की मात्रा, वास्तव में, अय्यूब के विश्वास से अधिक नहीं है—यहाँ तक कि यहूदी फरीसियों का विश्वास भी तुम लोगों से बढ़कर है—और इसलिए, यदि आग का दिन उतरेगा, तो तुम लोगों के दुःख उन फरीसियों के दुःखों की अपेक्षा अधिक गंभीर होंगे जिन्हें यीशु ने फटकार लगाईं थी, उन 250 अगुवाओं के दुःखों की अपेक्षा अधिक गंभीर होंगे जिन्होंने मूसा का विरोध किया था, और ये विनाशकरी, जलाने वाली आग की लपटों के तले सदोम के दुःखों की अपेक्षा भी अधिक गंभीर होंगे। जब मूसा ने चट्टान पर प्रहार किया, और यहोवा द्वारा प्रदान किया गया पानी उसमें से बहने लगा, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। जब दाऊद ने—आनंद से भरे अपने हृदय के साथ—मुझ यहोवा की स्तुति में वीणा बजायी तो यह उसके विश्वास की वजह से ही था। जब अय्यूब ने अपने पशुओं को जो पहाड़ों में भरे रहते थे और सम्पदा के गिने ना जा सकने वाले ढेरों को खो दिया, और उसका शरीर पीड़ादायक फोड़ों से भर गया, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। जब वह मुझ यहोवा की आवाज़ को सुन सका, और मुझ यहोवा की महिमा को देख सका, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। पतरस अपने विश्वास के कारण ही यीशु मसीह का अनुसरण कर सका था। उसे मेरे वास्ते सलीब पर चढ़ाया जा सका था और वह महिमामयी गवाही दे सका था, तो यह भी उसके विश्वास के कारण ही था। जब यूहन्ना ने मनुष्य के पुत्र की महिमामय छवि को देखा, तो यह उसके विश्वास के कारण ही था। जब उसने अंत के दिनों के दर्शन को देखा, तो यह सब और भी उसके विश्वास के कारण था। इतने सारे तथाकथित अन्य-जाति राष्ट्रों ने मेरा प्रकाशन प्राप्त कर लिया है, और जान गए हैं कि मैं मनुष्यों के बीच अपना कार्य करने के लिए देह में लौट आया हूँ, यह भी उनके विश्वास के कारण ही है। वे सब जो मेरे कठोर वचनों के द्वारा मार खाते हैं और फिर भी वे उनसे सांत्वना पाते हैं, और बचाए जाते हैं—क्या उन्होंने ऐसा अपने विश्वास के कारण ही नहीं किया है? वे जो मुझ में विश्वास करते हुए भी कठिनाइयों का सामना करते हैं, क्या वे भी संसार के द्वारा अस्वीकृत नहीं किए गए हैं? जो मेरे वचन से बाहर जी रहे हैं, परीक्षा के दुःखों से भाग रहे हैं, क्या वे सभी संसार में उद्देश्यहीन नहीं

भटक रहे हैं? वह मेरी सांत्वना के वचनों से बहुत दूर, पतझड़ के पत्तों के सदृश इधर-उधर फड़फड़ा रहे हैं, उनके पास आराम के लिए कोई जगह नहीं है। यद्यपि मेरी ताड़ना और शुद्धिकरण उनका पीछा नहीं करते हैं, तब भी क्या वे ऐसे भिखारी नहीं हैं जो स्वर्ग के राज्य के बाहर सड़कों पर, एक जगह से दूसरी जगह उद्देश्यहीन भटक रहे हैं? क्या संसार सचमुच में तुम्हारे आराम करने की जगह है? क्या तुम लोग वास्तव में, मेरी ताड़ना से बच कर संसार से संतुष्टि की कमज़ोर-सी मुस्कुराहट प्राप्त कर सकते हो? क्या तुम लोग वास्तव में अपने क्षणभंगुर आनंद का उपयोग अपने हृदय के खालीपन को ढकने के लिए कर सकते हो, उस खालीपन को जिसे कि छुपाया नहीं जा सकता है? तुम लोग अपने परिवार में हर किसी को मूर्ख बना सकते हो, मगर तुम मुझे कभी भी मूर्ख नहीं बना सकते। क्योंकि तुम लोगों का विश्वास अत्यधिक अल्प है, तुम आज तक ऐसी किसी भी खुशी को पाने में असमर्थ हो जिसे कि जीवन प्रदान करने में समर्थ है। मैं तुमसे आग्रह करता हूँ : बेहतर होगा कि अपना आधा जीवन ईमानदारी से मेरे वास्ते बिताओ, बजाय इसके कि अपने पूरे जीवन को औसत दर्जे में और देह के लिए अल्प मूल्य का कार्य करते और उन सभी दुःखों को सहन करते हुए बिताओ जिसे एक व्यक्ति शायद ही सहन कर सकता है। अपने आप को इतना अधिक संजोना और मेरी ताड़ना से भागना कौन सा उद्देश्य पूरा करता है? अनंतकाल की शर्मिंदगी, अनंतकाल की ताड़ना का फल भुगतने के लिए मेरी क्षणिक ताड़ना से अपने आप को छुपाना कौन से उद्देश्य को पूरा करता है? मैं वस्तुतः अपनी इच्छा के प्रति किसी को भी नहीं झुकाता। यदि कोई सचमुच में मेरी सभी योजनाओं के प्रति समर्पण करने का इच्छुक है, तो मैं उसके साथ ख़राब बर्ताव नहीं करूँगा। परन्तु मैं अपेक्षा करता हूँ कि सभी लोग मुझमें विश्वास करें, बिल्कुल वैसे ही जैसे अय्यूब ने मुझ यहोवा में विश्वास किया था। यदि तुम लोगों का विश्वास थोमा से बढ़कर होगा, तब तुम लोगों का विश्वास मेरी प्रशंसा प्राप्त करेगा, अपनी ईमानदारी में तुम लोग मेरा परम सुख पाओगे, और निश्चित रूप से तुम लोग अपने दिनों में मेरी महिमा को पाओगे। लेकिन, जो लोग संसार में विश्वास करते हैं और शैतान पर विश्वास करते हैं उन्होंने अपने हृदयों को ठीक वैसे ही कठोर बना लिया है जैसे कि सदोम शहर के जनसमूहों ने किया था, जिनकी आँखों में हवा से उड़े हुए रेत के कण और मुँह में शैतान से मिली भेंट भरी हुई थी, जिनके अस्पष्ट मन बहुत पहले ही उस दुष्ट के द्वारा कब्ज़े में कर लिए गए हैं जिसने संसार को हड़प लिया है। उनके विचार लगभग पूरी तरह से प्राचीन काल के शैतान के वश में आ गए हैं। इस प्रकार मानवजाति का विश्वास हवा के झोंके के साथ उड़ गया है, और वे लोग मेरे कार्य पर ध्यान देने में भी असमर्थ हैं। वे केवल इतना ही

कर सकते हैं कि मेरे कार्य के साथ यंत्रवत ढंग से पेश आयें या इसका एक मोटे तौर पर विश्लेषण करें, क्योंकि वे बहुत पहले से ही शैतान के ज़हर से वश में कर लिए गए हैं।

मैं मानवजाति को जीत लूँगा क्योंकि लोग मेरे द्वारा बनाये गए थे और इसके अलावा, उन्होंने मेरी सृष्टि की बहुतायत में दी गयी सभी वस्तुओं का आनंद लिया है। किन्तु लोगों ने मुझे अस्वीकार भी किया है, और मैं उनके हृदय में नहीं हूँ, और वे मुझे अपने अस्तित्व पर एक बोझ के रूप में देखते हैं, इस बिन्दु तक कि जहाँ वे वास्तव में मुझे देखने के बाद भी अस्वीकार करते हैं और मुझे हराने के हर सम्भव तरीके पर विचार करते हुए अपने दिमाग खंगालते हैं। लोग मुझे अपने साथ गंभीर रूप से व्यवहार करने या उनसे सख्त माँग नहीं करने देते हैं, न ही वे मुझे अपनी अधार्मिकता का न्याय करने या उसके लिए ताड़ना देने देते हैं। इसमें रुचि लेने के बजाय वे इसे कष्टप्रद पाते हैं। इसलिए मेरा कार्य उस मानवजाति को परास्त करना है, जो मुझमें खाती, पीती और मौज-मस्ती करती है किन्तु मुझे नहीं जानती है। मैं मानवजाति को निरस्त्र कर दूँगा, और फिर, अपने स्वर्गदूतों को लेकर, अपनी महिमा को लेकर, अपने निवास स्थान में लौट जाऊँगा। क्योंकि लोगों के क्रियाकलापों ने मेरे हृदय को बहुत पहले ही तोड़ दिया है और मेरे कार्य को टुकड़ों में ध्वस्त कर दिया है। मैं ख़ुशी-ख़ुशी जाने से पहले अपनी उस महिमा को वापिस लेना चाहता हूँ जिसे शैतान ने छीन लिया है, और मानवजाति को उनका जीवन जीते रहने देना, "शांति और तुष्टि में रहने और कार्य करते रहने", "अपनी स्वयं के खेतों में खेती करते रहने" देना चाहता हूँ, और मैं उनके जीवन में अब और हस्तक्षेप नहीं करूँगा। किन्तु अब मेरा इरादा अपनी महिमा को दुष्ट के हाथ से पूरी तरह से वापिस ले लेने का है, उस महिमा की सम्पूर्णता को वापस लेने का है जिसे मैंने संसार के सृजन के समय मनुष्य में गढ़ा था। मैं फिर दोबारा कभी भी इसे पृथ्वी पर मानवजाति को प्रदान नहीं करूँगा। क्योंकि, लोग न केवल मेरी महिमा को परिरक्षित करने में असफल हुए हैं, बल्कि उन्होंने इसकी शैतान की छवि के साथ अदला-बदली कर दी है। लोग मेरे आने को बहुमूल्य नहीं समझते हैं, न ही वे मेरी महिमा के दिनों को महत्व देते हैं। वे मेरी ताड़ना प्राप्त करने पर आनंदित नहीं हैं, मेरी महिमा मुझे वापिस लौटाने के इच्छुक तो बिल्कुल भी नहीं हैं, न ही वे दुष्ट के ज़हर को निकाल फेंकने के इच्छुक हैं। इंसान उसी पुराने तरीके से मुझे धोखा देना जारी रखते हैं, अभी भी उसी पुराने तरीके से उज्ज्वल मुस्कुराहट और ख़ुशनुमा चेहरों को पहने हुए हैं। लोग अंधकार की उस गहराई से अनजान हैं जो मानवजाति पर उस समय उतरेगी जब मेरी महिमा उन्हें छोड़ देगी। विशेष रूप से, वे अनजान हैं कि जब समस्त मानव जाति के सामने मेरा दिन आएगा, तब यह

उनके लिए नूह के समय के लोगों की अपेक्षा और भी अधिक कठिनाई पैदा करेगा, क्योंकि वे नहीं जानते हैं कि जब इस्राएल से मेरी महिमा चली गई थी तो वह कितना अंधकारमय बन गया था, क्योंकि मनुष्य भूल जाता है कि भोर के समय अंधकार की गहरी रात को गुज़ारना कितना मुश्किल था। जब सूर्य वापिस छुप जाएगा और मनुष्य पर अंधकार उतरेगा, तो वह फिर दोबारा विलाप करेगा और अंधकार में अपने दाँतों को पीसेगा। क्या तुम लोग भूल गए हो, जब मेरी महिमा इस्राएल से चली गई, तो इस्राएलियों के लिए दुःखों के उन दिनों को सहना कितना मुश्किल हो गया था? अब वह समय है जब तुम लोग मेरी महिमा को देखते हो, और यही वह समय भी है जब तुम लोग मेरी महिमा के दिन को साझा करते हो। जब मेरी महिमा गंदी धरती को छोड़ देगी, तब मनुष्य अंधकार के बीच विलाप करेगा। अब महिमा का वह दिन है जब मैं अपना कार्य करता हूँ, और यही वह दिन भी है जब मैं मानवजाति को दुःखों से मुक्त करता हूँ, क्योंकि मैं उसके साथ यातना और क्लेश के पलों को साझा नहीं करूँगा। मैं सिर्फ़ मानवजाति को पूरी तरह से जीतना और मानवजाति के दुष्ट को पूरी तरह से परास्त करना चाहता हूँ।

तुम विश्वास के बारे में क्या जानते हो?

मनुष्य में केवल विश्वास का अनिश्चित शब्द मौजूद है, फिर भी वह यह नहीं जानता कि विश्वास क्या होता है, और यह तो बिलकुल भी नहीं जानता कि उसे विश्वास क्यों है। मनुष्य बहुत कम जानता है, और स्वयं मनुष्य में बहुत सारी कमियाँ हैं; मुझ पर उसका विश्वास नासमझी और अज्ञानता से भरा है। यद्यपि वह नहीं जानता कि विश्वास क्या होता है, न ही वह यह जानता है कि वह मुझमें विश्वास क्यों करता है, फिर भी वह सनकियों की तरह मुझें विश्वास किए चला जाता है। मैं मनुष्य से मात्र यह नहीं चाहता कि वह मुझे सनकियों की तरह इस तरीके से पुकारे या मुझ पर असंगत तरीके से विश्वास करे, क्योंकि जो काम मैं करता हूँ, वह इसलिए करता हूँ कि वह मुझे देख और जान सके, इसलिए नहीं कि वह मुझसे प्रभावित हो और एक नई रोशनी में मुझे देखे। मैंने एक बार कई चिह्न और अचंभे दिखाए थे और कई चमत्कार प्रदर्शित किए थे, और उस समय के इजराइलियों ने मेरी बहुत प्रशंसा की थी तथा बीमारों को चंगा करने तथा दुष्टात्माओं को निकालने की मेरी विलक्षण क्षमता का बड़ा सम्मान किया था। उस समय यहूदी सोचते थे कि मेरी चंगाई की शक्तियाँ अति उत्तम और असाधारण हैं—और मेरे अनेक कर्मों के कारण उन्होंने मेरा बड़ा सम्मान किया, और मेरी सारी शक्तियों की बहुत प्रशंसा की। इस प्रकार, जिन्होंने भी मुझे

चमत्कार करते देखा, उन सबने निकटता से मेरा अनुसरण किया, यहाँ तक कि बीमारों को चंगा करते देखने के लिए हज़ारों लोग मेरे इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए। मैंने इतने सारे चिह्न और चमत्कार प्रकट किए, फिर भी लोगों ने मुझे एक महान चिकित्सक ही माना; मैंने उस समय लोगों को शिक्षा देने के लिए बहुत सारे वचन भी कहे, फिर भी उन्होंने मुझे मात्र अपने चेलों से बेहतर एक अच्छा शिक्षक ही समझा। यहाँ तक कि आज भी, जबकि मनुष्य मेरे कार्य के ऐतिहासिक दस्तावेज देख चुके हैं, उनकी व्याख्या यही चली आ रही है कि मैं बीमारों को चंगा करने वाला एक महान चिकित्सक और अज्ञानियों का शिक्षक हूँ, और उन्होंने मुझे दयावान प्रभु यीशु मसीह के रूप में परिभाषित किया है। पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने वाले हो सकता है, चंगाई की मेरी कुशलता को पार कर गए हों, या चेले अपने गुरु से आगे निकल गए हों, फिर भी ऐसे प्रसिद्ध मनुष्य, जिनका नाम सारे संसार में जाना जाता है, मुझे मात्र चिकित्सक जितना छोटा समझते हैं। मेरे कर्मों की संख्या समुद्र-तटों की रेत के कणों से भी ज़्यादा है, और मेरी बुद्धि सुलेमान के सभी पुत्रों से बढ़कर है, फिर भी लोग मुझे मामूली हैसियत का मात्र एक चिकित्सक और मनुष्यों का कोई अज्ञात शिक्षक समझते हैं। बहुत-से लोग केवल इसलिए मुझ पर विश्वास करते हैं कि मैं उनको चंगा कर सकता हूँ। बहुत-से लोग सिर्फ इसलिए मुझ पर विश्वास करते हैं कि मैं उनके शरीर से अशुद्ध आत्माओं को निकालने के लिए अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करूँगा, और बहुत-से लोग मुझसे बस शांति और आनंद प्राप्त करने के लिए मुझ पर विश्वास करते हैं। बहुत-से लोग मुझसे सिर्फ और अधिक भौतिक संपदा माँगने के लिए मुझ पर विश्वास करते हैं। बहुत-से लोग मुझसे सिर्फ इस जीवन को शांति से गुज़ारने और आने वाले संसार में सुरक्षित और स्वस्थ रहने के लिए मुझ पर विश्वास करते हैं। बहुत-से लोग केवल नरक की पीड़ा से बचने के लिए और स्वर्ग के आशीष प्राप्त करने के लिए मुझ पर विश्वास करते हैं। बहुत-से लोग केवल अस्थायी आराम के लिए मुझ पर विश्वास करते हैं और आने वाले संसार में कुछ हासिल करने की कोशिश नहीं करते। जब मैंने अपना क्रोध नीचे मनुष्यों पर उतारा और उसका सारा आनंद और शांति छीन ली, तो मनुष्य संदिग्ध हो गया। जब मैंने मनुष्य को नरक का कष्ट दिया और स्वर्ग के आशीष वापस ले लिए, तो मनुष्य की लज्जा क्रोध में बदल गई। जब मनुष्य ने मुझसे खुद को चंगा करने के लिए कहा, तो मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया और उसके प्रति घृणा महसूस की; तो मनुष्य मुझे छोड़कर चला गया और बुरी दवाइयों तथा जादू-टोने का मार्ग खोजने लगा। जब मैंने मनुष्य द्वारा मुझसे माँगा गया सब-कुछ वापस ले लिया, तो हर कोई बिना कोई निशान छोड़े गायब हो गया। इसलिए मैं कहता हूँ कि मनुष्य मुझ पर इसलिए

विश्वास करता है, क्योंकि मैं बहुत अनुग्रह देता हूँ, और प्राप्त करने के लिए और भी बहुत-कुछ है। यहूदी मुझ पर मेरे अनुग्रह के कारण ही विश्वास करते थे और जहाँ कहीं मैं जाता था, मेरा अनुसरण करते थे। सीमित ज्ञान और अनुभव वाले वे अज्ञानी मनुष्य केवल वे चिह्न और चमत्कार देखना चाहते थे, जिन्हें मैं प्रकट करता था। वे मुझे यहूदियों के घराने के मुखिया के रूप में मानते थे, जो सबसे बड़े चमत्कार कर सकता था। और इसलिए जब मैंने मनुष्यों में से दुष्टात्माओं को निकाला, तो उनके बीच बड़ी चर्चा हुई : उन्होंने कहा कि मैं एलियाह हूँ, मैं मूसा हूँ, मैं सभी पैगंबरों में सबसे प्राचीन हूँ, कि मैं चिकित्सकों में सबसे महान हूँ। मेरे यह कहने के बावजूद कि मैं जीवन, मार्ग और सत्य हूँ, कोई मेरी हस्ती और मेरी पहचान को नहीं जान सका। मेरे यह कहने के बावजूद कि स्वर्ग वह जगह है जहाँ मेरा पिता रहता है, कोई यह नहीं जान पाया कि मैं परमेश्वर का पुत्र और स्वयं परमेश्वर हूँ। मेरे यह कहने के बावजूद कि मैं सारी मानव-जाति के लिए छुटकारा लाऊँगा और मनुष्यों को दाम देकर छुड़ाऊँगा, कोई नहीं जान पाया कि मैं मनुष्यों का उद्धारकर्ता हूँ; और मनुष्यों ने मुझे केवल एक उदार और दयालु मनुष्य के रूप में जाना। और यह स्पष्ट कर देने पर भी कि सब-कुछ मेरा है, किसी ने मेरे बारे में नहीं जाना, और किसी ने यह विश्वास नहीं किया कि मैं जीवित परमेश्वर का पुत्र हूँ। लोगों का मुझमें ऐसा विश्वास है, और इस तरह वे मुझे धोखा देते हैं। जब वे मेरे बारे में ऐसे विचार रखते हैं, तो वे मेरी गवाही कैसे दे सकते हैं?

लोग मुझ पर विश्वास करते हैं, लेकिन वे मेरे लिए गवाही देने में असमर्थ हैं, न ही वे मेरे द्वारा अपना परिचय देने से पहले मेरी गवाही दे सकते हैं। लोग केवल यह देखते हैं कि मैं सभी प्राणियों और सभी पवित्र मनुष्यों से श्रेष्ठ हूँ, और यह देखते हैं कि मैं जो करता हूँ, उसे मनुष्यों द्वारा नहीं किया जा सकता। इसलिए, यहूदियों से लेकर आज के लोगों तक, जिन्होंने भी मेरे गौरवशाली कर्मों को देखा है, वे मेरे प्रति जिज्ञासा से भर जाते हैं, फिर भी, एक भी प्राणी अपने मुँह से मेरी गवाही नहीं दे सकता। केवल मेरे पिता ने मेरी गवाही दी थी और सभी प्राणियों के बीच मेरे लिए मार्ग बनाया था। अगर उसने गवाही न दी होती, तो चाहे मैं जैसा भी काम करता, मनुष्य कभी नहीं जान पाता कि मैं सृष्टि का प्रभु हूँ, क्योंकि मनुष्य केवल मुझसे लेना ही जानता है और मेरे कार्य के परिणामस्वरूप मुझ पर विश्वास नहीं करता। मनुष्य मुझे केवल इसीलिए जानता है, क्योंकि मैं निर्दोष हूँ और किसी भी तरह से पापी नहीं हूँ, क्योंकि मैं अनेक रहस्यों को स्पष्ट कर सकता हूँ, क्योंकि मैं भीड़ से ऊपर हूँ, या क्योंकि मनुष्य ने मुझसे बहुत लाभ प्राप्त किया है, फिर भी कुछ ही लोग हैं, जो यह विश्वास करते हैं कि मैं सृष्टि का प्रभु हूँ। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मनुष्य नहीं जानता कि

वह मुझ पर क्यों विश्वास करता है; वह मुझ पर विश्वास करने का प्रयोजन या महत्व नहीं जानता। मनुष्य में वास्तविकता की कमी है, इतनी कि मुश्किल से ही वह मेरी गवाही देने के लायक है। तुम लोगों के पास सच्चा विश्वास बहुत ही कम है और तुम लोगों ने बहुत ही कम ग्रहण किया है, इसलिए तुम लोगों के पास बहुत ही कम गवाही है। इतना ही नहीं, तुम लोग बहुत कम समझते हो और तुम सबमें बहुत कमी है, इतनी कि तुम लोग मेरे कर्मों की गवाही देने के लगभग नाकाबिल हो। तुम लोगों का संकल्प सचमुच विचारणीय है, लेकिन क्या तुम लोग निश्चित हो कि तुम परमेश्वर के सार की सफलतापूर्वक गवाही दे सकते हो? जो कुछ तुम लोगों ने अनुभव किया और देखा है, वह हर युग के संतों और पैगंबरों के अनुभवों से बढ़कर है, लेकिन क्या तुम लोग अतीत के इन संतों और पैगंबरों के वचनों से बड़ी गवाही देने में सक्षम हो? अब जो कुछ मैं तुम लोगों को देता हूँ, वह मूसा से बढ़कर और दाऊद से बड़ा है, अतः उसी प्रकार मैं कहता हूँ कि तुम्हारी गवाही मूसा से बढ़कर और तुम्हारे वचन दाऊद के वचनों से बड़े हों। मैं तुम लोगों को सौ गुना देता हूँ—अत: उसी प्रकार मैं तुम लोगों से कहता हूँ मुझे उतना ही वापस करो। तुम लोगों को पता होना चाहिए कि वह मैं ही हूँ, जो मनुष्य को जीवन देता है, और तुम्हीं लोग हो, जो मुझसे जीवन प्राप्त करते हो और तुम्हें मेरी गवाही अवश्य देनी चाहिए। यह तुम लोगों का वह कर्तव्य है, जिसे मैं नीचे तुम लोगों के लिए भेजता हूँ और जिसे तुम लोगों को मेरे लिए अवश्य निभाना चाहिए। मैंने अपनी सारी महिमा तुम लोगों को दे दी है, मैंने तुम लोगों को वह जीवन दिया है, जो चुने हुए लोगों, इजरायलियों को भी कभी नहीं मिला। उचित तो यही है कि तुम लोग मेरे लिए गवाही दो, अपनी युवावस्था मुझे समर्पित कर दो और अपना जीवन मुझ पर कुर्बान कर दो। जिस किसी को मैं अपनी महिमा दूँगा, वह मेरा गवाह बनेगा और मेरे लिए अपना जीवन देगा। इसे मैंने पहले से नियत किया हुआ है। यह तुम लोगों का सौभाग्य है कि मैं अपनी महिमा तुम्हें देता हूँ, और तुम लोगों का कर्तव्य है कि तुम लोग मेरी महिमा की गवाही दो। अगर तुम लोग केवल आशीष प्राप्त करने के लिए मुझ पर विश्वास करते हो, तो मेरे कार्य का ज़्यादा महत्व नहीं रह जाएगा, और तुम लोग अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर रहे होगे। इजराइलियों ने केवल मेरी दया, प्रेम और महानता को देखा था, और यहूदी केवल मेरे धीरज और छुटकारे के गवाह बने थे। उन्होंने मेरे आत्मा के कार्य का एक बहुत ही छोटा भाग देखा था; इतना कि तुम लोगों ने जो देखा और सुना है, वह उसका दस हज़ारवाँ हिस्सा ही था। जो कुछ तुम लोगों ने देखा है, वह उससे भी बढ़कर है, जो उनके बीच के महायाजकों ने देखा था। आज तुम लोग जिन सत्यों को समझते हो, वह उनके द्वारा समझे गए सत्यों से

बढ़कर है; जो कुछ तुम लोगों ने आज देखा है, वह उससे बढ़कर है जो व्यवस्था के युग में देखा गया था, साथ ही अनुग्रह के युग में भी, और जो कुछ तुम लोगों ने अनुभव किया है, वह मूसा और एलियाह के अनुभवों से कहीं बढ़कर है। क्योंकि जो कुछ इजरायलियों ने समझा था, वह केवल यहोवा की व्यवस्था थी, और जो कुछ उन्होंने देखा था, वह केवल यहोवा की पीठ की झलक थी; जो कुछ यहूदियों ने समझा था, वह केवल यीशु का छुटकारा था, जो कुछ उन्होंने प्राप्त किया था, वह केवल यीशु द्वारा दिया गया अनुग्रह था, और जो कुछ उन्होंने देखा था, वह केवल यहूदियों के घर के भीतर यीशु की तसवीर थी। आज तुम लोग यहोवा की महिमा, यीशु का छुटकारा और आज के मेरे सभी कार्य देख रहे हो। तुम लोगों ने मेरे आत्मा के वचनों को भी सुना है, मेरी बुद्धिमत्ता की तारीफ की है, मेरे चमत्कार देखे हैं, और मेरे स्वभाव के बारे में जाना है। मैंने तुम लोगों को अपनी संपूर्ण प्रबंधन योजना के बारे में भी बताया है। तुम लोगों ने मात्र एक प्यारा और दयालु परमेश्वर ही नहीं, बल्कि धार्मिकता से भरा हुआ परमेश्वर देखा है। तुम लोगों ने मेरे आश्चर्यजनक कामों को देखा है और जान गए हो कि मैं प्रताप और क्रोध से भरपूर हूँ। इतना ही नहीं, तुम लोग जानते हो कि मैंने एक बार इजराइल के घराने पर अपने क्रोध का प्रकोप उड़ेला था, और आज यह तुम लोगों पर आ गया है। तुम लोग यशायाह और यूहन्ना की अपेक्षा स्वर्ग के मेरे रहस्यों को कहीं ज़्यादा समझते हो; पिछली पीढ़ियों के सभी संतों की अपेक्षा तुम लोग मेरी मनोरमता और पूजनीयता को कहीं ज़्यादा जानते हो। तुम लोगों ने केवल मेरे सत्य, मेरे मार्ग और मेरे जीवन को ही प्राप्त नहीं किया है, अपितु मेरी उस दृष्टि और प्रकटीकरण को भी प्राप्त किया है, जो यूहन्ना को प्राप्त दृष्टि और प्रकटीकरण से भी बड़ा है। तुम लोग कई और रहस्य समझते हो, और तुमने मेरा सच्चा चेहरा भी देख लिया है; तुम लोगों ने मेरे न्याय को अधिक स्वीकार किया है और मेरे धर्मी स्वभाव को अधिक जाना है। और इसलिए, यद्यपि तुम लोग इन अंत के दिनों में जन्मे हो, फिर भी तुम लोग पूर्व की और पिछली बातों की भी समझ रखते हो, और तुम लोगों ने आज की चीजों का भी अनुभव किया है, और यह सब मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया गया था। जो मैं तुम लोगों से माँगता हूँ, वह बहुत ज्यादा नहीं है, क्योंकि मैंने तुम लोगों को इतना ज़्यादा दिया है और तुम लोगों ने मुझमें बहुत-कुछ देखा है। इसलिए, मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि सभी युगों के संतों के लिए मेरी गवाही दो, और यह मेरे हृदय की एकमात्र इच्छा है।

मेरे पिता ने सबसे पहले मेरी गवाही दी थी, पर मैं उससे भी बड़ी महिमा और सृजित प्राणियों के मुख से निकले हुए गवाही के वचन प्राप्त करना चाहता हूँ—इसलिए मैं तुम लोगों को अपना सब-कुछ देता हूँ,

ताकि तुम अपना कर्तव्य निभा सको, और मनुष्यों के मध्य मेरा कार्य समाप्त हो सके। तुम लोगों को समझना चाहिए कि तुम मुझ पर विश्वास क्यों करते हो; अगर तुम केवल मेरे शिक्षार्थी या मेरे रोगी बनना चाहते हो, या स्वर्ग में मेरे संतों में से एक बनना चाहते हो, तो फिर तुम्हारे द्वारा मेरा अनुसरण करना व्यर्थ होगा। इस तरह मेरा अनुसरण करना केवल ऊर्जा की बरबादी होगा; मुझमें इस प्रकार विश्वास रखना अपनी युवावस्था को गँवाते हुए केवल समय व्यर्थ बिताना होगा। और अंत में तुम लोगों को कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। क्या यह व्यर्थ में परिश्रम करना नहीं है? मैं बहुत पहले ही यहूदियों के बीच से चला गया था और मैं अब मनुष्यों का चिकित्सक या मनुष्यों की औषधि नहीं हूँ। अब मैं मनुष्य के लिए बोझ उठाने वाला जानवर नहीं हूँ, जिसे जब चाहे हाँक या काट दिया जाता है; बल्कि मैं मनुष्यों के बीच उनका न्याय करने और उन्हें ताड़ना देने आया हूँ, ताकि वे मुझे जान सकें। तुम्हें जानना चाहिए कि मैंने एक बार छुटकारे का काम किया था; मैं एक समय यीशु था, लेकिन मैं हमेशा के लिए यीशु नहीं रह सकता था, जैसे कि मैं एक बार यहोवा था, लेकिन बाद में यीशु बन गया। मैं मानव-जाति का परमेश्वर हूँ, सृष्टि का प्रभु हूँ, लेकिन मैं सदा के लिए यीशु और यहोवा बनकर नहीं रह सकता। मनुष्य की दृष्टि में मैं चिकित्सक बनकर रहा, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि परमेश्वर मानव-जाति के लिए मात्र एक चिकित्सक है। इसलिए अगर तुम मेरे प्रति अपने विश्वास में पुराने विचारों को थामे रहोगे, तो तुम कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाओगे। आज तुम चाहे मेरी कैसे भी प्रशंसा क्यों न करो : "परमेश्वर मनुष्य के लिए कितना प्यारा है; वह मुझे चंगा करता है और मुझे आशीष, शांति और आनंद देता है। मनुष्य के लिए परमेश्वर कितना अच्छा है; अगर हम उस पर मात्र विश्वास करते हैं, तो हमें धन-संपत्ति की चिंता करने की जरूरत नहीं है...," लेकिन मैं अपनी मूल योजना में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। अगर तुम आज मुझ पर विश्वास करोगे, तो तुम्हें केवल मेरी महिमा मिलेगी और अगर तुम मेरी गवाही देने योग्य जाओ, तो बाकी सभी चीज़ें गौण हो जाएँगी। यह तुम्हें स्पष्ट रूप से जान लेना चाहिए।

अब क्या तुम सच में जानते हो कि तुम मुझ पर क्यों विश्वास करते हो? क्या तुम सच में मेरे कार्य के उद्देश्य और महत्व को जानते हो? क्या तुम सच में अपने कर्तव्य को जानते हो? क्या तुम सच में मेरी गवाही को जानते हो? अगर तुम मुझमें मात्र विश्वास करते हो, और तुममें मेरी महिमा या गवाही नहीं पाई जाती, तो मैंने तुम्हें बहुत पहले ही खारिज कर दिया है। जहाँ तक सब-कुछ जानने वालों का सवाल हैं, वे मेरी आँख के और भी ज्यादा काँटे हैं, और मेरे घर में वे मेरे रास्ते की अड़चनों से ज्यादा कुछ नहीं हैं। वे

गेहूँ जैसी दिखने वाली मोठ घास हैं, जिसे मेरे कार्य से पूरी तरह से पछोर दिया जाना चाहिए, वे किसी काम के नहीं हैं, वे बेकार हैं; मैंने लंबे समय से उनसे घृणा की है। अकसर मेरा प्रकोप उन पर टूटता है, जिनके पास गवाही नहीं है, और मेरी लाठी कभी उन पर से नहीं हटती। मैंने बहुत पहले ही उन्हें दुष्ट के हाथों में दे दिया है; वे मेरे आशीषों से वंचित हैं। जब दिन आएगा, उनका दंड मूर्ख स्त्रियों के दंड से भी कहीं ज़्यादा पीड़ादायक होगा। आज मैं केवल वही काम करता हूँ, जो मेरा कर्तव्य है; मैं सारे गेहूँ को उस मोठ घास के साथ गठरियों में बाँधूँगा। आज मेरा यही कार्य है। पछोरने के समय वह सारी मोठ घास मेरे द्वारा पछोर दी जाएगी, और फिर गेहूँ के दानों को भंडार-गृह में इकट्ठा किया जाएगा, और पछोरी गई उस मोठ घास को जलाकर राख कर देने के लिए आग में डाल दिया जाएगा। अब मेरा कार्य मात्र सभी मनुष्यों को एक गठरी में बाँधना है, अर्थात् उन सभी को पूरी तरह से जीतना है। तब सभी मनुष्यों के अंत को प्रकट करने के लिए मैं पछोरना शुरू करूँगा। अतः तुम्हें जानना ही होगा कि अब तुम मुझे कैसे संतुष्ट कर सकते हो और तुम्हें किस तरह मेरे प्रति विश्वास में सही पथ पर आना चाहिए। अब मैं तुम्हारी निष्ठा और आज्ञाकारिता, तुम्हारा प्रेम और गवाही चाहता हूँ। यहाँ तक कि अगर तुम इस समय नहीं जानते कि गवाही क्या होती है या प्रेम क्या होता है, तो तुम्हें अपना सब-कुछ मेरे पास ले आना चाहिए और जो एकमात्र खजाना तुम्हारे पास है : तुम्हारी निष्ठा और आज्ञाकारिता, उसे मुझे सौंप देना चाहिए। तुम्हें जानना चाहिए कि मेरे द्वारा शैतान को हराए जाने की गवाही मनुष्य की निष्ठा और आज्ञाकारिता में निहित है, साथ ही मनुष्य के ऊपर मेरी संपूर्ण विजय की गवाही भी। मुझ पर तुम्हारे विश्वास का कर्तव्य है मेरी गवाही देना, मेरे प्रति वफादार होना, और किसी और के प्रति नहीं, और अंत तक आज्ञाकारी बने रहना। इससे पहले कि मैं अपने कार्य का अगला चरण आरंभ करूँ, तुम मेरी गवाही कैसे दोगे? तुम मेरे प्रति वफादार और आज्ञाकारी कैसे बने रहोगे? तुम अपने कार्य के प्रति अपनी सारी निष्ठा समर्पित करते हो या उसे ऐसे ही छोड़ देते हो? इसके बजाय तुम मेरे प्रत्येक आयोजन (चाहे वह मृत्यु हो या विनाश) के प्रति समर्पित हो जाओगे या मेरी ताड़ना से बचने के लिए बीच रास्ते से ही भाग जाओगे? मैं तुम्हारी ताड़ना करता हूँ ताकि तुम मेरी गवाही दो, और मेरे प्रति निष्ठावान और आज्ञाकारी बनो। इतना ही नहीं, ताड़ना वर्तमान में मेरे कार्य के अगले चरण को प्रकट करने के लिए और उस कार्य को निर्बाध आगे बढ़ने देने के लिए है। अतः मैं तुम्हें समझाता हूँ कि तुम बुद्धिमान हो जाओ और अपने जीवन या अस्तित्व के महत्व को बेकार रेतकी तरह मत समझो। क्या तुम सही-सही जान सकते हो कि मेरा आने वाला काम क्या होगा? क्या तुम जानते हो कि आने वाले दिनों में मैं किस तरह

काम करूँगा और मेरा कार्य किस तरह प्रकट होगा? तुम्हें मेरे कार्य के अपने अनुभव का महत्व और साथ ही मुझ पर अपने विश्वास का महत्व जानना चाहिए। मैंने इतना कुछ किया है; मैं उसे बीच में कैसे छोड़ सकता हूँ, जैसा कि तुम सोचते हो? मैंने ऐसा व्यापक काम किया है; मैं उसे नष्ट कैसे कर सकता हूँ? निस्संदेह, मैं इस युग को समाप्त करने आया हूँ। यह सही है, लेकिन इससे भी बढ़कर तुम्हें जानना चाहिए कि मैं एक नए युग का आरंभ करने वाला हूँ, एक नया कार्य आरंभ करने के लिए, और, सबसे बढ़कर, राज्य के सुसमाचार को फैलाने के लिए। अतः तुम्हें जानना चाहिए कि वर्तमान कार्य केवल एक युग का आरंभ करने और आने वाले समय में सुसमाचार को फैलाने की नींव डालने तथा भविष्य में इस युग को समाप्त करने के लिए है। मेरा कार्य उतना सरल नहीं है जितना तुम समझते हो, और न ही वैसा बेकार और निरर्थक है, जैसा तुम्हें लग सकता है। इसलिए, मैं अब भी तुमसे कहूँगा : तुम्हें मेरे कार्य के लिए अपना जीवन देना ही होगा, और इतना ही नहीं, तुम्हें मेरी महिमा के लिए अपने आपको समर्पित करना हगा। लंबे समय से मैं उत्सुक हूँ कि तुम मेरी गवाही दो, और इससे भी बढ़कर, लंबे समय से मैं उत्सुक हूँ कि तुम सुसमाचार फैलाओ। तुम्हें समझना ही होगा कि मेरे हृदय में क्या है।

जब झड़ते हुए पत्ते अपनी जड़ों की ओर लौटेंगे, तो तुम्हें अपनी की हुई सभी बुराइयों पर पछतावा होगा

तुम सभी लोगों ने अपनी आँखों से उस कार्य को देखा है जो मैने तुम लोगों के बीच किया है, तुम लोगों ने स्वयं उन वचनों को सुना है जो मैने बोले हैं, और तुम लोग अपने प्रति मेरे दृष्टिकोण को जानते हो, इसलिए तुम लोगों को पता होना चाहिए कि मैं तुम लोगों में इस कार्य को क्यों कर रहा हूँ। मैं तुम लोगों को पूरी ईमानदारी से बताता हूँ, तुम लोग अंत के दिनों में विजय के मेरे कार्य के उपकरणों से, अन्य जातियों के देशों के बीच मेरे कार्य का विस्तार करने के औजारों से अधिक कुछ नहीं हो। मैं अन्य जातियों के देशों के बीच अपने कार्य का बेहतर ढंग से विस्तार करने और अपने नाम का प्रसार करने हेतु, अर्थात्, उसका इस्राएल के बाहर के किसी भी अन्य देश में प्रसार करने हेतु, तुम लोगों की अधार्मिकता, गंदगी, प्रतिरोध और विद्रोहशीलता के माध्यम से बात करता हूँ। ऐसा इसलिए है, ताकि मेरा नाम, मेरे कर्म और मेरी वाणी अन्य जातियों के देशों में सर्वत्र प्रसारित हो जाएँ, और इस प्रकार वे सभी राष्ट्र जो इस्राएल के नहीं हैं, मेरे द्वारा जीत लिए जाएँ और मेरी आराधना करें, और इस्राएल और मिस्र की भूमि के बाहर मेरी पवित्र भूमियाँ

बन जाएँ। मेरे कार्य का विस्तार करना वास्तव में मेरे विजय के कार्य का विस्तार करना है और मेरी पवित्र भूमि का विस्तार करना है; यह पृथ्वी पर मेरे आधार का विस्तार करना है। तुम लोगों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि तुम लोग उन अन्य जातियों के देशों में, जिन्हें मैं जीतता हूँ, सृजित प्राणी मात्र हो। मूल रूप से, तुम लोगों की न तो कोई हैसियत थी और न ही उपयोग के लिए कोई मूल्य था, और तुम लोग ज़रा भी काम के नहीं थे। यह केवल इसलिए है, क्योंकि पूरी दुनिया पर अपनी विजय के नमूनों के रूप में, पूरी दुनिया पर अपनी विजय की एकमात्र "संदर्भ सामग्री" के रूप में, मैंने गोबर के ढेर से भुनगे उठा लिए थे, और तुम लोग काफी भाग्यशाली रहे कि मेरे संपर्क में आ गए और अब मेरे साथ इकट्ठे हो गए। तुम लोगों की निम्न हैसियत की वजह से मैंने तुम्हें विजय के अपने कार्य के नमूने और आदर्श होने के लिए चुना है। केवल इसी वजह से मैं तुम लोगों के बीच कार्य करता और बोलता हूँ, और तुम लोगों के साथ जीता और थोड़े दिनों के लिए रहता हूँ। तुम्हें पता होना चाहिए कि यह केवल मेरे प्रबंधन की वजह से और गोबर के ढेर में पड़े भुनगों के प्रति मेरी अत्यधिक घृणा के कारण है कि मैं तुम लोगों के बीच बोल रहा हूँ—वह उस बिंदु पर पहुँच गई है कि मैं आगबबूला हूँ। तुम लोगों के बीच मेरा कार्य करना इस्राएल में यहोवा के कार्य करने के समान बिलकुल नहीं है, और विशेष रूप से, वैसा नहीं है जैसा यीशु ने यहूदिया में किया था। मैं बड़ी सहिष्णुता के साथ बोलता और कार्य करता हूँ, और मैं क्रोध और न्याय के साथ इन पतितों को जीतता हूँ। यह यहोवा द्वारा इस्राएल में अपने लोगों की अगुआई करने जैसा नहीं है। इस्राएल में उसका कार्य भोजन और जीवन का जल प्रदान करना था, और अपने लोगों का भरण-पोषण करते हुए वह उनके लिए करुणा और प्रेम से परिपूर्ण था। आज का कार्य उन शापग्रस्त लोगों के देश में किया जाता है, जिन्हें चुना नहीं जाता। वहाँ प्रचुर मात्रा में भोजन नहीं है, न ही प्यास बुझाने वाले जीवन के जल का पोषण है, और वहाँ प्रचुर मात्रा में भौतिक वस्तुओं की आपूर्ति तो बिलकुल भी नहीं है; वहाँ केवल प्रचुर मात्रा में न्याय, शाप और ताड़ना की आपूर्ति है। गोबर के ढेर में रहने वाले ये भुनगे मवेशियों और भेड़ों से भरी पहाड़ियाँ, महान संपत्ति, और पूरी भूमि पर सबसे सुंदर बच्चे, जो मैंने इस्राएल को प्रदान किए थे, प्राप्त करने के सर्वथा अयोग्य हैं। समकालीन इस्राएल वेदी पर मवेशी और भेड़ें तथा सोने और चाँदी की वस्तुएँ चढ़ाता है, जिनसे मैं उसके लोगों का पोषण करता हूँ, जो व्यवस्था के तहत यहोवा द्वारा आवश्यक दसवें हिस्से को पार कर जाता है, और इसलिए मैंने उन्हें और भी अधिक दिया है—व्यवस्था के तहत जो इस्राएल द्वारा प्राप्त किया जाना था, उससे एक सौ गुना से भी अधिक। मैं जिससे इस्राएल का पोषण करता हूँ, वह उस सबसे बढ़कर

है जो अब्राहम ने प्राप्त किया था, और उस सबसे बढ़कर है जो इसहाक ने प्राप्त किया था। मैं इस्राएल के परिवार को फलदायक और बहुगुणित बना दूँगा, और मैं इस्राएल के अपने लोगों को पूरी दुनिया में फैलाऊँगा। मैं जिन्हें आशीष देता हूँ और जिनकी देखभाल करता हूँ, वे अभी भी इस्राएल के चुने हुए लोग हैं, अर्थात्, ऐसे लोग जो मुझे सब-कुछ समर्पित करते हैं, जिन्होंने मुझसे सब-कुछ प्राप्त किया है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे मुझे ध्यान में रखते हैं और मेरी पवित्र वेदी पर अपने नवजात बछड़ों और मेमनों का बलिदान करते हैं और उनके पास जो कुछ भी है, उसे मेरे सामने अर्पित करते हैं, यहाँ तक कि मेरे लौटने की प्रत्याशा में अपने नवजात प्रथम पुत्रों को भी अर्पित कर देते हैं। और तुम लोगों बारे में क्या है? तुम मेरे क्रोध को भड़काते हो, मुझसे माँग करते हो, और उन लोगों की भेंटों की चोरी कर लेते हो, जो मुझे चीजें चढ़ाते हैं, और तुम नहीं जानते कि तुम लोग मेरा अपमान कर रहे हो; इस प्रकार तुम सब लोग अँधेरे में विलाप और दंड प्राप्त करते हो। तुम लोगों ने मेरा गुस्सा कई बार भड़काया है, और मैंने अपनी जलती हुई अग्नियों की इस हद तक वर्षा की है कि बहुत-से लोगों का दुःखद अंत हो गया है, और खुशहाल घर उजाड़ कब्रें बन गए हैं। इन भुनगों के लिए मेरे पास बस अनंत क्रोध है, और इन्हें आशीष देने का मेरा कोई इरादा नहीं है। यह तो केवल अपने कार्य की खातिर मैंने एक अपवाद के रूप में तुम लोगों का उत्थान किया है और बहुत अपमान सहा है और तुम लोगों के बीच कार्य किया है। यदि यह मेरे पिता की इच्छा के लिए नहीं होता, तो मैं गोबर के ढेर में चारों ओर घूमते हुए भुनगों के साथ एक ही घर में कैसे रह सकता था? मुझे तुम लोगों के सभी कार्यों और शब्दों से अत्यंत घृणा महसूस होती है, लेकिन फिर भी, चूँकि मुझे तुम लोगों की गंदगी और विद्रोहशीलता में कुछ "रुचि" है, इसलिए यह मेरे वचनों का एक बड़ा संकलन बन गया है। अन्यथा मैं तुम लोगों के बीच इतने लंबे समय तक बिलकुल न रहता। इसलिए, तुम लोगों को यह जान लेना चाहिए कि तुम लोगों के प्रति मेरा रवैया सिर्फ सहानुभूति और तरस का है; मुझे तुम लोगों से लेश मात्र भी प्रेम नहीं है। मुझमें तुम लोगों के लिए मात्र सहिष्णुता है, क्योंकि मैं यह केवल अपने कार्य के वास्ते करता हूँ। और तुम लोगों ने मेरे कर्मों को केवल इसलिए देखा है, क्योंकि मैंने गंदगी और विद्रोहशीलता को "कच्चे माल" के रूप में चुना है; अन्यथा मैं अपने कर्मों को इन भुनगों के सामने बिलकुल भी प्रकट न करता। मैं सिर्फ अनिच्छा से तुम लोगों में कार्य करता हूँ; उस तत्परता और इच्छा के साथ बिलकुल नहीं, जिससे मैंने इस्राएल में अपना कार्य किया था। मैं अपने आप को तुम लोगों के बीच बोलने के लिए मज़बूर करते हुए अपने क्रोध को सहन कर रहा हूँ। यदि यह मेरे बृहत्तर कार्य के लिए नहीं होता, तो मैं इस तरह के भुनगों

के सतत दृश्य को कैसे सहन कर सकता था? यदि यह मेरे नाम के वास्ते नहीं होता, तो मैंने बहुत पहले ही उच्चतम ऊँचाइयों पर आरोहण कर लिया होता और इन भुनगों को इनके गोबर के ढेर के साथ ही पूरी तरह से भस्म कर दिया होता! यदि यह मेरी महिमा के वास्ते नहीं होता, तो मैं कैसे अपनी आँखों के सामने इन दुष्ट राक्षसों को अपने सिर मसखरों की तरह हिलाते हुए खुलेआम अपना विरोध करने दे सकता था? यदि यह थोड़ी-सी भी बाधा के बिना अपना कार्य निर्विघ्न रूप से करवाने के लिए नहीं होता, तो मैं कैसे इन भुनगे-जैसे लोगों को बेहूदगी से मुझे दुर्वचन कहने दे सकता था? यदि इस्राएल के किसी गाँव में एक सौ लोग इस तरह से मेरा विरोध करने के लिए उठ खड़े होते, तो भले ही उन्होंने मेरे लिए भेंटें दी होतीं, मैं फिर भी उन्हें अन्य शहरों के लोगों को कभी भी दोबारा विद्रोह करने से रोकने के लिए जमीन की दरारों में डालकर मिटा देता। मैं एक सर्वभक्षी अग्नि हूँ और मैं अपमान बरदाश्त नहीं करता। क्योंकि सभी मानव मेरे द्वारा बनाए गए थे, इसलिए मैं जो कुछ कहता और करता हूँ, उन्हें उसका पालन करना चाहिए और वे विद्रोह नहीं कर सकते। लोगों को मेरे कार्य में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है, और वे इस बात का विश्लेषण करने के योग्य तो बिलकुल नहीं हैं कि मेरे कार्य और मेरे वचनों में क्या सही या ग़लत है। मैं सृष्टि का प्रभु हूँ, और सृजित प्राणियों को मेरे प्रति श्रद्धापूर्ण हृदय के साथ वह सब-कुछ प्राप्त करना चाहिए, जिसकी मुझे आवश्यकता है; उन्हें मेरे साथ बहस नहीं करनी चाहिए, और विशेष रूप से उन्हें मेरा विरोध नहीं करना चाहिए। मैं अपने अधिकार के साथ अपने लोगों पर शासन करता हूँ, और वे सभी लोग जो मेरी सृष्टि का हिस्सा हैं, उन्हें मेरे अधिकार के प्रति समर्पण करना चाहिए। यद्यपि आज तुम लोग मेरे सामने दबंग और धृष्ट हो, यद्यपि तुम उन वचनों की अवज्ञा करते हो जिनसे मैं तुम लोगों को शिक्षा देता हूँ, और कोई डर नहीं मानते, फिर भी मैं तुम लोगों की विद्रोहशीलता का केवल सहिष्णुता से सामना करता हूँ; मैं अपना आपा नहीं खोऊँगा और अपने कार्य को इसलिए प्रभावित नहीं करूँगा, क्योंकि छोटे, तुच्छ भुनगों ने गोबर के ढेर में गंदगी मचा दी है। मैं अपने पिता की इच्छा के वास्ते हर उस चीज़ के अविरत अस्तित्व को सहता हूँ जिससे मैं घृणा करता हूँ, और उन सभी चीज़ों को बरदाश्त करता हूँ, जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ, और मैं अपने कथन पूरे होने तक, अपने अंतिम क्षण तक ऐसा करूँगा। चिंता मत करो! मैं किसी अनाम भुनगे के स्तर तक नहीं गिर सकता, और मैं अपने कौशल की मात्रा की तुम्हारे साथ तुलना नहीं करूँगा। मैं तुमसे घृणा करता हूँ, किंतु मैं सहने में सक्षम हूँ। तुम मेरी अवज्ञा करते हो, किंतु तुम उस दिन से नहीं बच सकते, जब मैं तुम्हारी ताड़ना करूँगा, जिसका मेरे पिता ने मुझसे वादा किया है। क्या एक सृजित

भुनगा सृष्टि के प्रभु से तुलना कर सकता है? शरद ऋतु में झड़ते हुए पत्ते अपनी जड़ों की ओर लौट जाते हैं; तुम अपने "पिता" के घर लौट जाओगे, और मैं अपने पिता के पास लौट जाऊँगा। मेरे साथ मेरे पिता का कोमल स्नेह होगा, और तुम अपने पिता के द्वारा कुचले जाओगे। मेरे पास मेरे पिता की महिमा होगी, और तुम्हारे पास तुम्हारे पिता की शर्मिंदगी होगी। मैं उस ताड़ना का उपयोग करूँगा, जिसे मैंने तुम्हारा साथ देने के लिए लंबे समय से रोककर रखा है, और तुम अपनी दुर्गंधयुक्त देह से, जो हज़ारों साल से भ्रष्ट हो चुकी है, मेरी ताड़ना को भुगतोगे। मैंने सहिष्णुता के साथ तुममें वचनों के अपने कार्य का समापन कर लिया होगा, और तुम मेरे वचनों से विपदा भोगने की भूमिका निभाना शुरू करोगे। मैं इस्राएल में बहुत आनंदित होऊँगा और कार्य करूँगा; तुम रोओगे और अपने दाँत पीसोगे और कीचड़ में जीते और मरते रहोगे। मैं अपना मूल स्वरूप पुनः प्राप्त कर लूँगा और तुम्हारे साथ अब और गंदगी में नहीं रहूँगा, जबकि तुम अपनी मूल कुरूपता को पुनः प्राप्त कर लोगे और गोबर के ढेर के इर्द-गिर्द बिल बनाते रहोगे। जब मेरा कार्य और वचन पूरे हो जाएँगे, तो वह मेरे लिए खुशी का दिन होगा। जब तुम्हारा प्रतिरोध और विद्रोहशीलता पूरे हो जाएँगे, तो वह तुम्हारे लिए रोने का दिन होगा। मैं तुमसे सहानुभूति नहीं रखूँगा, और तुम मुझे पुनः कभी नहीं देखोगे। मैं तुम्हारे साथ और अधिक संवाद में संलग्न नहीं होऊँगा, और तुम्हारा मुझसे कभी सामना नहीं होगा। मैं तुम्हारी विद्रोहशीलता से नफ़रत करूँगा, और तुम्हें मेरी मनोरमता याद आएगी। मैं तुम पर प्रहार करूँगा, और तुम मेरे लिए विलाप करोगे। मैं ख़ुशी से तुमसे विदाई लूँगा, और तुम्हे मेरे प्रति अपने कर्ज़ के बारे में पता चलेगा। मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देखूँगा, लेकिन तुम हमेशा मुझे देखने की आशा करोगे। मैं तुमसे नफ़रत करूँगा क्योंकि तुम वर्तमान में मेरा विरोध करते हो, और तुम्हें मेरी याद आएगी क्योंकि मैं वर्तमान में तुम्हें ताड़ना देता हूँ। मैं तुम्हारे साथ रहने का इच्छुक नहीं होऊँगा, लेकिन तुम इसके लिए बुरी तरह लालायित रहोगे और अनंत काल तक रोओगे, क्योंकि तुम्हें उस सबके लिए पछतावा होगा, जो तुमने मेरे साथ किया है। तुम्हें अपनी विद्रोहशीलता और अपने प्रतिरोध के लिए ग्लानि होगी, यहाँ तक कि तुम पछतावे में औंधे मुँह ज़मीन पर लेट जाओगे, और मेरे सामने गिर जाओगे और पुनः मेरी अवज्ञा नहीं करने की कसम खाओगे। हालाँकि, अपने हृदय में तुम केवल मुझे प्यार करोगे, मगर तुम कभी भी मेरी आवाज नहीं सुन पाओगे। मैं तुम्हें तुमसे ही शर्मिंदा करवाऊँगा।

अब मैं तुम्हारी अनुरक्त देह को देख रहा हूँ जो मुझे विचलित कर देगी, और मेरे पास तुम्हारे लिए केवल एक छोटी-सी चेतावनी है, हालाँकि मैं ताड़ना से तुम्हारी "सेवा" नहीं करूँगा। तुम्हें पता होना चाहिए

कि तुम मेरे कार्य में क्या भूमिका निभाते हो, और तब मैं संतुष्ट रहूँगा। इससे परे के मामलों में, यदि तुम मेरा विरोध करते हो या मेरे पैसे खर्च करते हो, या मुझ यहोवा के लिए चढ़ाई गई भेंटें खा जाते हो, या तुम भुनगे एक-दूसरे को काटते हो, या तुम कुत्ते-जैसे प्राणी आपस में संघर्ष या एक-दूसरे का अतिक्रमण करते हो—तो मेरी इनमें से किसी में भी दिलचस्पी नहीं है। तुम लोगों को केवल इतना ही जानने की आवश्यकता है कि तुम लोग किस प्रकार की चीजें हो, और मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। इस सबके अलावा, यदि तुम लोग एक-दूसरे पर हथियार तानना चाहते हो या शब्दों से एक-दूसरे के साथ लड़ना चाहते हो, तो ठीक है; ऐसी चीजों में हस्तक्षेप करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है, और मैं मनुष्य के मामलों में बिलकुल भी शामिल नहीं होता। ऐसा नहीं है कि मैं तुम लोगों के बीच के संघर्षों की परवाह नहीं करता; बल्कि ऐसा है कि मैं तुम लोगों में से एक नहीं हूँ, और इसलिए मैं उन मामलों में भाग नहीं लेता, जो तुम लोगों के बीच होते हैं। मैं स्वयं एक सृजित प्राणी नहीं हूँ और दुनिया का नहीं हूँ, इसलिए मैं लोगों के हलचल भरे जीवन से और उनके बीच गंदे, अनुचित संबंधों से घृणा करता हूँ। मैं विशेष रूप से कोलाहलपूर्ण भीड़ से घृणा करता हूँ। हालाँकि, मुझे प्रत्येक सृजित प्राणी के हृदय की अशुद्धियों की गहरी जानकारी है, और तुम लोगों को सृजित करने से पहले से ही मैं मानव-हृदय में गहराई से विद्यमान अधार्मिकता को जानता था, और मुझे मानव-हृदय के सभी धोखों और कुटिलता की जानकारी थी। इसलिए, भले ही जब लोग अधार्मिक कार्य करते हैं, तब उसका बिलकुल भी कोई निशान दिखाई न देता हो, किंतु मुझे तब भी पता चल जाता है कि तुम लोगों के हृदयों में समाई अधार्मिकता उन सभी चीजों की प्रचुरता को पार कर जाती है, जो मैंने बनाई हैं। तुम लोगों में से हर एक अधिकता के शिखर तक उठ चुका है; तुम लोग बहुतायत के पितरों के रूप में आरोहण कर चुके हो। तुम लोग अत्यंत स्वेच्छाचारी हो, और आराम के स्थान की तलाश करते हुए और अपने से छोटे भुनगों को निगलने का प्रयास करते हुए उन सभी भुनगों के बीच पगलाकर दौड़ते हो। अपने हृदयों में तुम लोग द्वेषपूर्ण और कुटिल हो, और समुद्र-तल में डूबे हुए भूतों को भी पीछे छोड़ चुके हो। तुम गोबर की तली में रहते हो और ऊपर से नीचे तक भुनगों को तब तक परेशान करते हो, जब तक कि वे बिलकुल अशांत न हो जाएँ, और थोड़ी देर एक-दूसरे से लड़ने-झगड़ने के बाद शांत होते हो। तुम लोगों को अपनी जगह का पता नहीं है, फिर भी तुम लोग गोबर में एक-दूसरे के साथ लड़ाई करते हो। इस तरह की लड़ाई से तुम क्या हासिल कर सकते हो? यदि तुम लोगों के हृदय में वास्तव में मेरे लिए आदर होता, तो तुम लोग मेरी पीठ पीछे एक-दूसरे के साथ कैसे लड़ सकते थे? तुम्हारी हैसियत कितनी भी ऊँची क्यों

न हो, क्या तुम फिर भी गोबर में एक बदबूदार छोटा-सा कीड़ा ही नहीं हो? क्या तुम पंख उगाकर आकाश में उड़ने वाला कबूतर बन पाओगे? बदबूदार छोटे कीड़ो, तुम लोग मुझ यहोवा की वेदी के चढ़ावे चुराते हो; ऐसा करके क्या तुम लोग अपनी बरबाद, असफल प्रतिष्ठा बचा सकते हो और इस्राएल के चुने हुए लोग बन सकते हो? तुम लोग बेशर्म कमीने हो! वेदी पर वे भेंटें लोगों द्वारा अपनी उन उदार भावनाओं की अभिव्यक्ति के रूप में मुझे चढ़ाई गई थीं, जिनसे वे मेरा आदर करते हैं। वे मेरे नियंत्रण और मेरे उपयोग के लिए होती हैं, तो लोगों द्वारा मुझे दिए गए छोटे जंगली कबूतर संभवतः तुम मुझसे कैसे लूट सकते हो? क्या तुम एक यहूदा बनने से नहीं डरते? क्या तुम इस बात से नहीं डरते कि तेरी भूमि रक्त का मैदान बन सकती है? बेशर्म चीज़! क्या तुम्हें लगता है कि लोगों द्वारा चढ़ाए गए जंगली कबूतर तुम भुनगों का पेट भरने के लिए हैं? मैंने तुम्हें जो दिया है, वह वही है जिससे मैं संतुष्ट हूँ और तुम्हें देने का इच्छुक हूँ; मैंने तुम्हें जो नहीं दिया है, वह मेरी इच्छा पर है। तुम बस मेरे चढ़ावे चुरा नहीं सकते। वह एक, जो कार्य करता है, वह मैं, यहोवा—सृष्टि का प्रभु—हूँ, और लोग मेरी वजह से भेंटें चढ़ाते हैं। क्या तुम्हे लगता है कि तुम जो दौड़-भाग करते हो, यह उसकी भरपाई है? तुम सच में बेशर्म हो! तुम किसके लिए दौड़-भाग करते हो? क्या यह तुम्हारे अपने लिए नहीं है? तुम मेरी भेंटें क्यों चुराते हो? तुम मेरे बटुए में से पैसे क्यों चुराते हो? क्या तुम यहूदा इस्करियोती के बेटे नहीं हो? मुझ यहोवा को चढ़ाई गई भेंटें याजकों द्वारा उपभोग किए जाने के लिए हैं। क्या तुम याजक हो? तुम मेरी भेंटें दंभ के साथ खाने की हिम्मत करते हो, यहाँ तक कि उन्हें मेज पर छोड़ देते हो; तुम किसी लायक नहीं हो! नालायक कमीने! मुझ यहोवा की आग तुम्हें भस्म कर देगी!

कोई भी जो देह में है, कोप के दिन से नहीं बच सकता

आज, मैं तुम लोगों को तुम्हारे ही अस्तित्व के लिए इस प्रकार धिक्कारता हूँ, ताकि मेरा कार्य सुचारु रूप से आगे बढ़े और पूरे ब्रह्मांड में मेरा उद्घाटन कार्य अधिक उचित और उत्तम ढंग से क्रियान्वित किया जा सके। मैं सभी देशों और राष्ट्रों के लोगों के लिए अपने वचनों, अधिकार, प्रताप और न्याय को प्रकट करता हूँ। जो कार्य मैं तुम लोगों के बीच करता हूँ, वह संपूर्ण जगत में मेरे कार्य का आरंभ है। यद्यपि अभी अंत के दिन चल रहे हैं, याद रहे कि "अंत के दिन" केवल एक युग का नाम है; ठीक व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग के समान यह एक युग का संकेत देता है और यह अंतिम कुछ वर्षों या महीनों के बजाय

एक संपूर्ण युग को इंगित करता है। फिर भी अंत के दिन अनुग्रह के युग और व्यवस्था के युग से काफ़ी अलग हैं। अंत के दिनों का कार्य इस्राएल में क्रियान्वित नहीं किया जाता बल्कि अन्यजाति राष्ट्रों के बीच किया जाता है; यह मेरे सिंहासन के सामने, इस्राएल के बाहर के सभी राष्ट्रों और कबीलों के लोगों पर विजय है, ताकि संपूर्ण जगत में मेरी जो महिमा है, वो ब्रह्मांड और नभमंडल को भर सके। यह इसलिए ताकि मैं और अधिक महिमा प्राप्त कर सकूँ, ताकि पृथ्वी के सभी प्राणी मेरी महिमा को हर राष्ट्र को, निरंतर पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंप सकें, और स्वर्ग एवं पृथ्वी के सभी प्राणी मेरी उस समस्त महिमा को देख सकें, जो मैंने पृथ्वी पर अर्जित की है। अंत के दिनों के दौरान क्रियान्वित कार्य विजय का कार्य है। यह पृथ्वी पर सभी लोगों के जीवन का मार्गदर्शन नहीं, बल्कि पृथ्वी पर मानवजाति के सहस्रों-वर्ष लंबे अविनाशी दुःख का अंत है। परिणामस्वरूप, अंत के दिनों का कार्य इस्राएल में किए गए हज़ारों वर्षों के कार्य जैसा नहीं हो सकता, न ही यह यहूदिया में महज़ कुछ सालों के कार्य जैसा हो सकता है, जो परमेश्वर के दूसरे देहधारण होने तक दो हज़ार साल तक जारी रहा। अंतिम दिनों के लोग केवल देह में आए मुक्तिदाता के पुनः प्रकटन को देखते हैं, और वे परमेश्वर के व्यक्तिगत कार्य और वचन को प्राप्त करते हैं। अंत के दिनों की समाप्ति में दो हज़ार वर्ष नहीं लगेंगे; वे संक्षिप्त हैं, उस समय की तरह जैसे जब यीशु ने यहूदिया में अनुग्रह के युग का कार्य किया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि अंत के दिन संपूर्ण युग का उपसंहार हैं। ये परमेश्वर की छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना की पूर्णता और समाप्ति हैं और ये मनुष्य के दुःखों की जीवन यात्रा का समापन करते हैं। ये समस्त मानवजाति को एक नए युग में नहीं ले जाते या मानवजाति का जीवन जारी नहीं रहने देते; इसका मेरी प्रबंधन योजना या मनुष्य के अस्तित्व के लिए कोई महत्व नहीं होगा। यदि मानवजाति इसी प्रकार चलती रही, तो देर-सवेर उसे शैतान द्वारा पूरी तरह निगल लिया जाएगा, और वे आत्माएँ जो मुझ से संबद्ध हैं, अंततः पूरी तरह उसके हाथों द्वारा बर्बाद कर दी जाएँगी। मेरा कार्य केवल छह हज़ार वर्ष तक चलता है और मैंने वादा किया कि समस्त मानवजाति पर उस दुष्ट का नियंत्रण भी छह हजार वर्षों से अधिक तक नहीं रहेगा। इसलिए, अब समय पूरा हुआ। मैं अब और न तो जारी रखूँगा और न ही विलंब करूँगा : अंत के दिनों के दौरान मैं शैतान को परास्त कर दूँगा, मैं अपनी संपूर्ण महिमा वापस ले लूँगा और मैं पृथ्वी पर उन सभी आत्माओं को वापस प्राप्त करूँगा जो मुझसे संबंधित हैं, ताकि ये व्यथित आत्माएँ दुःख के सागर से बच सकें और इस प्रकार पृथ्वी पर मेरे समस्त कार्य का समापन होगा। इस दिन के बाद, मैं पृथ्वी पर फिर कभी भी देहधारी नहीं बनूँगा और फिर कभी भी पूर्ण-नियंत्रण करने वाला मेरा

आत्मा पृथ्वी पर कार्य नहीं करेगा। मैं पृथ्वी पर केवल एक कार्य करूँगा : मैं मानवजाति को पुनः बनाऊँगा, ऐसी मानवजाति जो पवित्र हो और जो पृथ्वी पर मेरा विश्वसनीय शहर हो। पर जान लो कि मैं संपूर्ण संसार को जड़ से नहीं मिटाऊँगा, न ही मैं समस्त मानवजाति को जड़ से मिटाऊँगा। मैं उस शेष तृतीयांश को रखूँगा—वह तृतीयांश जो मुझसे प्रेम करता है और मेरे द्वारा पूरी तरह से जीत लिया गया है और मैं इस तीसरे तृतीयांश को फलदायी बनाऊँगा और पृथ्वी पर कई गुना बढ़ाऊँगा, ठीक वैसे जैसे इस्राएली व्यवस्था के तहत फले-फूले थे, उन्हें ख़ूब सारी भेड़ों और मवेशियों और पृथ्वी की सारी समृद्धि के साथ पोषित करूँगा। यह मानवजाति हमेशा मेरे साथ रहेगी, मगर यह आज की बुरी तरह से गंदी मानवजाति की तरह नहीं होगी, बल्कि ऐसी मानवजाति होगी, जो उन सभी लोगों का जनसमूह होगी जो मेरे द्वारा प्राप्त कर लिए गए हैं। इस प्रकार की मानवजाति को शैतान के द्वारा नष्ट, बिगाड़ा या घेरा नहीं जाएगा और ऐसी एकमात्र मानवजाति होगी जो मेरे द्वारा शैतान पर विजय प्राप्त करने के बाद पृथ्वी पर विद्यमान रहेगी। यही वह मानवजाति है, जो आज मेरे द्वारा जीत ली गई है और जिसे मेरी प्रतिज्ञा हासिल है। और इसलिए, अंत के दिनों के दौरान मेरे द्वारा जीती गई मानवजाति वह मानवजाति भी होगी, जिसे बख़्श दिया जाएगा और जिसे मेरे अनंत आशीष प्राप्त होंगे। शैतान पर मेरी विजय का यही एकमात्र सुबूत होगा और शैतान के साथ मेरे युद्ध का एकमात्र विजयोपहार होगा। युद्ध के ये विजयोपहार मेरे द्वारा शैतान के अधिकार क्षेत्र से बचाए गए हैं और ये ही मेरी छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना के ठोस-रूप और परिणाम हैं। ये विश्वभर के हर राष्ट्र और संप्रदाय, हर स्थान और देश से हैं। ये भिन्न-भिन्न जातियों के हैं, भिन्न-भिन्न भाषाओं, रीति-रिवाज़ों और त्वचा के रंगों वाले हैं और ये विश्व के हर देश और संप्रदाय में और यहाँ तक कि संसार के हर कोने में भी फैले हैं। अंततः वे पूर्ण मानवजाति बनाने के लिए साथ आएंगे, मनुष्यों का ऐसा जनसमूह, जिस तक शैतान की ताकतें नहीं पहुँच सकतीं। मानवजाति के बीच जिन लोगों को मेरे द्वारा बचाया और जीता नहीं गया है, वे ख़ामोशी से समुद्र की गहराइयों में डूब जाएँगे, और मेरी भस्म करने वाली लपटों द्वारा हमेशा के लिए जला दिए जाएँगे। मैं इस पुरानी, अत्यधिक गंदी मानवजाति को जड़ से उसी तरह मिटाऊँगा, जैसे मैंने मिस्र की पहली संतानों और मवेशियों को जड़ से मिटाया था, केवल इस्राएलियों को छोड़ा था, जिन्होंने मेमने का माँस खाया, मेमने का लहू पिया और अपने दरवाज़े की चौखटों को मेमने के लहू से चिह्नित किया। क्या जो लोग मेरे द्वारा जीत लिए गए हैं और मेरे परिवार के हैं, वे भी ऐसे लोग नहीं, जो उस मेमने का माँस खाते हैं जो मैं हूँ और उस मेमने का लहू पीते हैं जो मैं हूँ और जिन्हें मेरे द्वारा छुटकारा दिलाया

गया है और जो मेरी आराधना करते हैं? क्या ऐसे लोगों के साथ हमेशा मेरी महिमा नहीं बनी रहती? क्या वे लोग जो उस मेमने के माँस के बिना हैं, जो मैं हूँ, पहले ही चुपचाप सागर की गहराइयों में नहीं डूब गए हैं? आज तुम मेरा विरोध करते हो और आज मेरे वचन ठीक इस्राएल के पुत्रों और पौत्रों को यहोवा द्वारा कहे गए वचनों के अनुसार हैं। फिर भी तुम लोगों के हृदय की गहराइयों में मौजूद कठोरता मेरे कोप के संचय का कारण बन रही है, जो तुम लोगों की देह पर और अधिक दुःख, तुम्हारे पापों पर और अधिक न्याय, और तुम लोगों की अधार्मिकता पर और अधिक क्रोध ला रही है। जब आज तुम लोग मुझसे ऐसा व्यवहार करते हो, तो मेरे कोप के दिन किसे बख़्शा जा सकता है? किसकी अधार्मिकता ताड़ना की मेरी आँखों से बच सकती है? किसके पाप मुझ सर्वशक्तिमान के हाथों से बच सकते हैं? किसकी अवज्ञा मुझ सर्वशक्तिमान के न्याय से बच सकती है? मैं, यहोवा इस प्रकार तुम लोगों से, अन्यजातियों के परिवार के वंशजों से बात करता हूँ और जिन वचनों को मैं तुम लोगों से कहता हूँ, वे व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग के सभी कथनों से बढ़कर हैं, फिर भी तुम लोग मिस्र के सभी लोगों से ज़्यादा कठोर हो। जब मैं तसल्ली से काम करता हूँ, तो क्या तुम लोग मेरे कोप को संचित नहीं करते? कैसे तुम लोग मुझ सर्वशक्तिमान के दिन से बिना चोट खाए बच सकते हो?

मैंने इस तरह से तुम लोगों के बीच कार्य किया और बात की है, मैंने बहुत सारी ऊर्जा व्यय की और प्रयास किए हैं, फिर भी तुम लोगों ने कब वह सुना है, जो मैं तुम लोगों से सीधे तौर पर कहता हूँ? तुम लोग कहाँ मुझ सर्वशक्तिमान के सामने झुके हो? तुम लोग मुझसे ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं? क्यों जो तुम लोग कहते और करते हो, वह मेरा क्रोध भड़काता है? तुम्हारे हृदय इतने कठोर क्यों हैं? क्या मैंने कभी भी तुम्हें मार गिराया है? क्यों तुम लोग मुझे दुःखी और चिंतित करने के अलावा और कुछ नहीं करते? क्या तुम लोग अपने ऊपर मेरे, यहोवा के, कोप के दिन के आने की प्रतीक्षा में हो? क्या तुम लोग प्रतीक्षा कर रहे हो कि मैं तुम्हारी अवज्ञा से भड़का क्रोध भेजूँ? क्या मैं जो कुछ करता हूँ, वह तुम लोगों के लिए नहीं है? फिर भी तुम लोगों ने सदैव मुझ यहोवा के साथ ऐसा व्यवहार किया है : मेरे बलिदान को चुराना, मेरे घर की वेदी के चढ़ावों को भेड़ियों की माँद में ले जाकर शावकों और शावकों के शावकों को खिलाना; लोग मुझ सर्वशक्तिमान के वचनों को मलमूत्र के समान गंदा करने के लिए पाखाने में उछालते हुए एक दूसरे से लड़ाई करते हैं, गुस्से से घूरते हुए तलवारों और भालों के साथ एक दूसरे का सामना करते हैं। तुम लोगों की ईमानदारी कहाँ है? तुम लोगों की मानवता पाशविकता बन गई है! तुम लोगों के हृदय बहुत पहले

पत्थरों में बदल गए हैं। क्या तुम लोग नहीं जानते हो कि जब मेरे कोप का दिन आएगा, तब मुझ सर्वशक्तिमान के विरुद्ध आज की गई तुम लोगों की दुष्टता का मैं न्याय करूँगा? क्या तुम लोगों को लगता है कि मुझे इस प्रकार से बेवकूफ़ बनाकर, मेरे वचनों को कीचड़ में फेंककर और उन पर ध्यान न देकर—क्या तुम लोगों को लगता है कि मेरी पीठ पीछे ऐसा करके तुम लोग मेरी कुपित नज़रों से बच सकते हो? क्या तुम लोग नहीं जानते कि जब तुम लोगों ने मेरे बलिदानों को चुराया और मेरी चीज़ों के लिए लालायित हुए, तभी तुम लोग मुझ यहोवा की आँखों द्वारा पहले ही देखे जा चुके थे? क्या तुम लोग नहीं जानते कि जब तुम लोगों ने मेरे बलिदान चुराए, तो यह उस वेदी के सामने किया, जिस पर बलिदान चढ़ाए जाते हैं? तुमने कैसे मान लिया कि तुम इतने चालाक हो कि मुझे इस तरह से धोखा दे सकोगे? तुम लोगों की बुरी करतूतें मेरे प्रकोप से कैसे बच सकती हैं? मेरा प्रचंड क्रोध कैसे तुम लोगों के बुरे कामों को नज़रंदाज़ कर सकता है? आज तुम लोग जो बुराई करते हो, वह तुम लोगों के लिए कोई बचने का मार्ग नहीं खोलती, बल्कि तुम्हारे कल के लिए ताड़ना इकट्ठी करती है; यह तुम लोगों के प्रति मुझ सर्वशक्तिमान की ताड़ना को भड़काती है। कैसे तुम लोगों की बुरी करतूतें और बुरे वचन मेरी ताड़ना से बच सकते हैं? कैसे तुम लोगों की प्रार्थनाएँ मेरे कानों तक पहुँच सकती हैं? कैसे मैं तुम लोगों को अधार्मिकता से बचाने का मार्ग खोल सकता हूँ? मैं कैसे अपनी अवहेलना करने में तुम लोगों की बुरी करतूतों को जाने दे सकता हूँ? ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं तुम लोगों की जुबानें काटकर अलग न कर दूँ, जो साँप के समान ज़हरीली हैं? तुम लोग मुझे अपनी धार्मिकता के वास्ते नहीं पुकारते, बल्कि इसके बजाय अपनी अधार्मिकता के परिणामस्वरूप मेरा कोप संचित करते हो। मैं तुम लोगों को कैसे क्षमा कर सकता हूँ? मेरी, सर्वशक्तिमान की नज़रों में, तुम लोगों के वचन और कार्य दोनों ही गंदे हैं। मेरी, सर्वशक्तिमान की नज़रें, तुम लोगों की अधार्मिकता को एक निर्मम ताड़ना के रूप में देखती हैं। कैसे मेरी धार्मिक ताड़ना और न्याय तुम लोगों से दूर जा सकती है? क्योंकि तुम लोग मेरे साथ ऐसा करते हो, मुझे दुःखी और कुपित करते हो, तो मैं कैसे तुम लोगों को अपने हाथों से बचकर जाने दे सकता हूँ और उस दिन से दूर होने दे सकता हूँ जब मैं, यहोवा तुम लोगों को ताड़ना और शाप दूँगा? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों के सभी बुरे वचन और कथन पहले ही मेरे कानों तक पहुँच चुके हैं? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों की अधार्मिकता ने पहले ही मेरी धार्मिकता के पवित्र लबादे को गंदा कर दिया है? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों की अवज्ञा ने पहले से ही मेरे उग्र क्रोध को भड़का दिया है? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों ने बहुत

पहले से ही मुझे अति कुपित कर रखा है और बहुत समय पहले ही मेरे धैर्य को आज़मा चुके हो? क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग मेरी देह के टुकड़े करके उसे पहले ही नष्ट कर चुके हो? मैंने अब तक इतना सहा है कि मैं तुम लोगों के प्रति अब और सहिष्णु नहीं होता और अपना क्रोध प्रकट करता हूँ। क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों की बुरी करतूतें पहले ही मेरी आँखों के सामने आ गई हैं कि मेरी पुकार मेरे पिता के कानों तक पहले ही पहुँच चुकी हैं? वह कैसे तुम लोगों को मेरे साथ ऐसा व्यवहार करने दे सकता है? क्या मैं तुम लोगों में जो भी कार्य करता हूँ, वह तुम लोगों के वास्ते नहीं है? फिर भी तुम लोगों में से कौन मेरे, यहोवा के, कार्य को अधिक प्रेम करने लगा है? क्या मैं अपने पिता की इच्छा के प्रति विश्वासघाती हो सकता हूँ क्योंकि मैं कमज़ोर हूँ और क्योंकि मैंने पीड़ा सही है? क्या तुम लोग मेरे हृदय को नहीं समझते? मैं तुम लोगों से उसी तरह बोलता हूँ जैसे यहोवा बोलता था; क्या मैंने तुम लोगों के लिए काफ़ी कुछ नहीं त्यागा है? भले ही मैं अपने पिता के कार्य के वास्ते ये सभी कष्ट सहने को तैयार हूँ, फिर भी तुम लोग उस ताड़ना से कैसे मुक्त हो सकते हो, जिसे मैं अपने कष्टों के परिणामस्वरूप तुम्हें दूँगा? क्या तुम लोगों ने मेरा बहुत आनंद नहीं लिया है? आज, मैं अपने परमपिता द्वारा तुम को प्रदान किया गया हूँ; क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोग मेरे उदार वचनों से कहीं अधिक का आनंद लेते हो? क्या तुम लोग नहीं जानते कि मेरा जीवन तुम लोगों के जीवन और जिन चीजों का तुम आनंद लेते हो उनके बदले दिया गया था? क्या तुम लोग नहीं जानते कि मेरे पिता ने शैतान के साथ युद्ध के लिए मेरे जीवन का उपयोग किया और कि उसने मेरा जीवन तुम लोगों को प्रदान किया है, जिससे तुम लोगों को सौ गुना प्राप्त हो और तुम लोग कितने ही प्रलोभनों से बचने में सक्षम हो? क्या तुम लोग नहीं जानते कि यह केवल मेरे कार्य के माध्यम से ही है कि तुम लोगों को कई प्रलोभनों और कई उग्र ताड़नाओं से छूट दी गई है? क्या तुम लोग नहीं जानते कि यह केवल मेरे ही कारण है कि मेरे पिता ने तुम लोगों को अभी तक आनंद लेने दिया है? आज तुम लोग कैसे इतने कठोर और ज़िद्दी बने रह सकते हो, इतना कि जैसे तुम्हारे हृदयों के ऊपर घट्टे उग आए हों? वह दुष्टता जो तुम आज करते हो, कैसे उस कोप के दिन से बच सकती है, जो पृथ्वी से मेरे जाने के बाद आएगा? कैसे मैं उन कठोर और ज़िद्दी लोगों को यहोवा के क्रोध से बचने दे सकता हूँ?

अतीत के बारे में सोचो : कब तुम लोगों के प्रति मेरी दृष्टि क्रोधित, और मेरी आवाज़ कठोर हुई है? मैंने कब तुम लोगों में मीनमेख निकाली है? मैंने कब तुम लोगों को बेवजह प्रताड़ित किया है? मैंने कब तुम लोगों को तुम्हारे मुँह पर डाँटा है? क्या यह मेरे कार्य के वास्ते नहीं है कि मैं तुम लोगों को हर प्रलोभन से

बचाने के लिए अपने परमपिता को पुकारता हूँ? तुम लोग मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार क्यों करते हो? क्या मैंने कभी भी अपने अधिकार का उपयोग तुम लोगों की देह को मार गिराने के लिए किया है? तुम लोग मुझे इस प्रकार का प्रतिफल क्यों दे रहे हो? मेरे प्रति कभी हाँ और कभी ना करने के बाद, तुम लोग न हाँ में हो और न ही ना में, और फिर तुम मुझे मनाने और मुझसे बातें छिपाने का प्रयास करते हो और तुम लोगों के मुँह अधार्मिकता के थूक से भरे हुए हैं? क्या तुम लोगों को लगता है कि तुम लोगों की ज़ुबानें मेरे आत्मा को धोखा दे सकती हैं? क्या तुम लोगों को लगता है कि तुम लोगों की ज़ुबानें मेरे कोप से बच सकती हैं? क्या तुम लोगों को लगता है कि तुम लोगों की ज़ुबानें मुझ यहोवा के कार्यों की, जैसी चाहे वैसी आलोचना कर सकती हैं? क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जिसके बारे में मनुष्य आलोचना कर सकता है? क्या मैं छोटे से भुनगे को इस प्रकार अपनी ईशनिंदा करने दे सकता हूँ? मैं ऐसे अवज्ञाकारिता के पुत्रों को कैसे अपने अनंत आशीषों के बीच रख सकता हूँ? तुम लोगों के वचनों और कार्यों ने तुम लोगों को काफी समय तक उजागर और निंदित किया है। जब मैंने स्वर्ग का विस्तार किया और सभी चीज़ों का सृजन किया, तो मैंने किसी भी प्राणी को उसके मन मुताबिक़ भाग लेने की अनुमति नहीं दी, किसी भी चीज़ को उसके हिसाब से मेरे कार्य और मेरे प्रबंधन में गड़बड़ करने की अनुमति तो बिल्कुल नहीं दी। मैंने किसी भी मनुष्य या वस्तु को सहन नहीं किया; मैं कैसे उन लोगों को छोड़ सकता हूँ, जो मेरे प्रति निर्दयी और क्रूर और अमानवीय हैं? मैं कैसे उन लोगों को क्षमा कर सकता हूँ, जो मेरे वचनों के ख़िलाफ़ विद्रोह करते हैं? मैं कैसे उन्हें छोड़ सकता हूँ, जो मेरी अवज्ञा करते हैं? क्या मनुष्य की नियति मुझ सर्वशक्तिमान के हाथों में नहीं है? मैं कैसे तुम्हारी अधार्मिकता और अवज्ञा को पवित्र मान सकता हूँ? तुम्हारे पाप मेरी पवित्रता को कैसे मैला कर सकते हैं? मैं अधर्मी की अशुद्धता से दूषित नहीं होता, न ही मैं अधर्मियों के चढ़ावों का आनंद लेता हूँ। यदि तुम मुझ यहोवा के प्रति वफादार होते, तो क्या तुम मेरी वेदी से बलिदानों को अपने लिए ले सकते थे? क्या तुम मेरे पवित्र नाम की ईशनिंदा के लिए अपनी विषैली ज़ुबान का उपयोग कर सकते थे? क्या तुम इस प्रकार मेरे वचनों के विरुद्ध विद्रोह कर सकते थे? क्या तुम मेरी महिमा और पवित्र नाम को, एक दुष्ट, शैतान की सेवा के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग कर सकते थे? मेरा जीवन पवित्र लोगों के आनंद के लिए प्रदान किया जाता है। मैं तुम्हें कैसे अपने जीवन के साथ तुम्हारी इच्छानुसार खेलने और तुम लोगों के बीच के संघर्ष में इसे एक उपकरण के रूप में उपयोग करने की इजाज़त दे सकता हूँ? तुम लोग अच्छाई के मार्ग में इतने निर्दयी और इतने अभावग्रस्त कैसे हो सकते हो, जैसे तुम मेरे

प्रति हो? क्या तुम लोग नहीं जानते कि मैंने पहले ही तुम लोगों की बुरी करतूतों को जीवन के इन वचनों में लिख दिया है? जब मैं मिस्र को ताड़ना देता हूँ, तब तुम लोग कोप के दिन से कैसे बच सकते हो? कैसे तुम लोगों को इस तरह बार-बार अपना विरोध और अनादर करने की अनुमति दे सकता हूँ? मैं तुम लोगों को सीधे तौर पर कहता हूँ कि जब वह दिन आएगा, तो तुम लोगों की ताड़ना मिस्र की ताड़ना की अपेक्षा अधिक असहनीय होगी! तुम लोग कैसे मेरे कोप के दिन से बच सकते हो? मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ: मेरी सहनशीलता तुम लोगों की बुरी करतूतों के लिए तैयार की गई थी और उस दिन तुम लोगों की ताड़ना के लिए मौजूद है। एक बार जब मेरी सहनशीलता चुक गई, तो क्या तुम लोग वह नहीं होगे जो कुपित न्याय भुगतेंगे? क्या सभी चीज़ें मुझ सर्वशक्तिमान के हाथों में नहीं हैं? मैं कैसे इस प्रकार स्वर्ग के नीचे तुम लोगों को अपनी अवज्ञा की अनुमति दे सकता हूँ? तुम लोगों का जीवन अत्यंत कठोर होगा क्योंकि तुम मसीहा से मिल चुके हो, जिसके बारे में कहा गया था कि वह आएगा, फिर भी जो कभी नहीं आया। क्या तुम लोग उसके शत्रु नहीं हो? यीशु तुम लोगों का मित्र रहा है, फिर भी तुम लोग मसीहा के शत्रु हो। क्या तुम लोग नहीं जानते कि यद्यपि तुम लोग यीशु के मित्र हो, पर तुम लोगों की बुरी करतूतों ने उन लोगों के पात्रों को भर दिया है, जो घृणा योग्य हैं? यद्यपि तुम लोग यहोवा के बहुत करीबी हो, पर क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों के बुरे वचन यहोवा के कानों तक पहुँच गए हैं और उन्होंने उसके क्रोध को भड़का दिया है? वह तुम्हारा करीबी कैसे हो सकता है, और वह कैसे तुम्हारे उन पात्रों को नहीं जला सकता, जो बुरी करतूतों से भरे हुए हैं? कैसे वह तुम्हारा शत्रु नहीं हो सकता?

उद्धारकर्ता पहले ही एक "सफेद बादल" पर सवार होकर वापस आ चुका है

कई सहस्राब्दियों से मनुष्य ने उद्धारकर्ता के आगमन को देख पाने की लालसा की है। मनुष्य उद्धारकर्ता यीशु को एक सफेद बादल पर सवार होकर व्यक्तिगत रूप से उन लोगों के बीच उतरते देखने के लिए तरसा है, जिन्होंने हज़ारों सालों से उसकी अभिलाषा की है और उसके लिए लालायित रहे हैं। मनुष्य ने उद्धारकर्ता के वापस लौटने और लोगों के साथ फिर से जुड़ने की लालसा भी की है; अर्थात् उन्होंने लोगों से हज़ारों सालों से अलग हुए उद्धारकर्ता यीशु के वापस आने और एक बार फिर से छुटकारे के उस कार्य को करने की, जो उसने यहूदियों के बीच किया था, मनुष्य के प्रति करुणामय और प्रेममय

होने की, मनुष्य के पाप क्षमा करने और उन्हें अपने ऊपर लेने की, यहाँ तक कि मनुष्य के सभी अपराध ग्रहण करने और उसे पापमुक्त करने की लालसा की है। मनुष्य उद्धारकर्ता यीशु से पहले के समान होने की लालसा करता है—ऐसा उद्धारकर्ता जो प्यारा, दयालु और आदरणीय है, जो मनुष्य के प्रति कभी कोप से भरा नहीं रहता, और जो कभी मनुष्य को धिक्कारता नहीं, बल्कि जो मनुष्य के सारे पाप क्षमा करता है और उन्हें अपने ऊपर ले लेता है, यहाँ तक कि जो एक बार फिर से मनुष्य के लिए सलीब पर अपनी जान दे देगा। जब से यीशु गया है, वे चेले जो उसका अनुसरण करते थे, और वे सभी संत जिन्हें उसके नाम पर बचाया गया था, बेसब्री से उसकी अभिलाषा और प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे सभी, जो अनुग्रह के युग के दौरान यीशु मसीह के अनुग्रह द्वारा बचाए गए थे, अंत के दिनों के दौरान उस उल्लासभरे दिन की लालसा कर रहे हैं, जब उद्धारकर्ता यीशु सफेद बादल पर सवार होकर सभी लोगों के बीच उतरेगा। निस्संदेह, यह उन सभी लोगों की सामूहिक इच्छा भी है, जो आज उद्धारकर्ता यीशु के नाम को स्वीकार करते हैं। विश्व भर में वे सभी, जो उद्धारकर्ता यीशु के उद्धार को जानते हैं, यीशु मसीह के अचानक आकर, पृथ्वी पर कहे अपने ये वचन पूरे करने की लालसा कर रहे हैं : "मैं जैसे गया था वैसे ही मैं वापस आऊँगा।" मनुष्य मानता है कि सलीब पर चढ़ने और पुनरुत्थान के बाद यीशु सर्वोच्च परमेश्वर की दाईं ओर अपना स्थान ग्रहण करने के लिए सफेद बादल पर सवार होकर स्वर्ग वापस चला गया था। इसी प्रकार यीशु फिर से सफेद बादल पर सवार होकर (यह बादल उस बादल को संदर्भित करता है, जिस पर यीशु तब सवार हुआ था, जब वह स्वर्ग वापस गया था), उन लोगों के बीच वापस आएगा, जिन्होंने हज़ारों सालों से उसके लिए बेतहाशा लालसा की है, और वह यहूदियों का स्वरूप और उनके कपड़े धारण करेगा। मनुष्यों के सामने प्रकट होने के बाद वह उन्हें भोजन प्रदान करेगा, उनके लिए जीवन के जल की बौछार करवाएगा और मनुष्यों के बीच में रहेगा, अनुग्रह और प्रेम से भरा हुआ, जीवंत और वास्तविक। ये सभी वे धारणाएँ हैं, जिन्हें लोग मानते हैं। किंतु उद्धारकर्ता यीशु ने ऐसा नहीं किया; उसने मनुष्य की कल्पना के विपरीत किया। वह उन लोगों के बीच में नहीं आया, जिन्होंने उसकी वापसी की लालसा की थी, और वह सफेद बादल पर सवार होकर सभी मनुष्यों के सामने प्रकट नहीं हुआ। वह पहले ही आ चुका है, किंतु मनुष्य उसे नहीं जानता, वह उससे अनभिज्ञ रहता है। मनुष्य केवल निरुद्देश्य होकर उसका इंतज़ार कर रहा है, इस बात से अनभिज्ञ कि वह तो पहले ही "सफेद बादल" पर सवार होकर आ चुका है (वह बादल, जो उसका आत्मा, उसके वचन, उसका संपूर्ण स्वभाव और उसका स्वरूप है), और वह अब उन विजेताओं के समूह के बीच है, जिसे वह

अंत के दिनों के दौरान बनाएगा। मनुष्य इसे नहीं जानता : मनुष्य के प्रति संपूर्ण स्नेह और प्रेम रखने के बावजूद पवित्र उद्धारकर्ता यीशु अशुद्ध और अपवित्र आत्माओं से भरे "मंदिरों" में कैसे कार्य कर सकता है? यद्यपि मनुष्य उसके आगमन का इंतज़ार करता रहा है, फिर भी वह उनके सामने कैसे प्रकट हो सकता है जो अधार्मिक का मांस खाते हैं, अधार्मिक का रक्त पीते हैं और अधार्मिकों के वस्त्र पहनते हैं, जो उस पर विश्वास तो करते हैं परंतु उसे जानते नहीं, और लगातार उससे जबरदस्ती माँगते रहते हैं? मनुष्य केवल यही जानता है कि उद्धारकर्ता यीशु प्रेम और करुणा से परिपूर्ण है, और वह एक पाप-बलि है जो छुटकारे से भरपूर है। परंतु मनुष्य को नहीं पता कि वह स्वयं परमेश्वर है, जो धार्मिकता, प्रताप, कोप और न्याय से लबालब भरा है, और अधिकार और गौरव से संपन्न है। इसलिए, भले ही मनुष्य छुटकारा दिलाने वाले की वापसी के लिए लालायित रहता है और उसके लिए तरसता है, यहाँ तक कि उसकी प्रार्थनाएँ स्वर्ग को भी द्रवित कर देती हैं, किंतु उद्धारकर्ता यीशु उन लोगों के सामने प्रकट नहीं होता, जो उस पर विश्वास तो करते हैं किंतु उसे जानते नहीं।

"यहोवा" वह नाम है, जिसे मैंने इस्राएल में अपने कार्य के दौरान अपनाया था, और इसका अर्थ है इस्राएलियों (परमेश्वर के चुने हुए लोगों) का परमेश्वर, जो मनुष्य पर दया कर सकता है, मनुष्य को शाप दे सकता है, और मनुष्य के जीवन का मार्गदर्शन कर सकता है; वह परमेश्वर, जिसके पास बड़ा सामर्थ्य है और जो बुद्धि से भरपूर है। "यीशु" इम्मानुएल है, जिसका अर्थ है वह पाप-बलि, जो प्रेम से परिपूर्ण है, करुणा से भरपूर है, और मनुष्य को छुटकारा दिलाता है। उसने अनुग्रह के युग का कार्य किया, और वह अनुग्रह के युग का प्रतिनिधित्व करता है, और वह प्रबंधन-योजना के केवल एक भाग का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है। अर्थात्, केवल यहोवा ही इस्राएल के चुने हुए लोगों का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, याकूब का परमेश्वर, मूसा का परमेश्वर और इस्राएल के सभी लोगों का परमेश्वर है। और इसलिए, वर्तमान युग में यहूदी लोगों के अलावा सभी इस्राएली यहोवा की आराधना करते हैं। वे वेदी पर उसके लिए बलिदान करते हैं, और याजकीय लबादे पहनकर मंदिर में उसकी सेवा करते हैं। वे यहोवा के पुन: प्रकट होने की आशा करते हैं। केवल यीशु ही मानवजाति को छुटकारा दिलाने वाला है, और वह वो पाप-बलि है, जिसने मानवजाति को पाप से छुटकारा दिलाया है। कहने का तात्पर्य यह है कि यीशु का नाम अनुग्रह के युग से आया, और अनुग्रह के युग में छुटकारे के कार्य के कारण विद्यमान रहा। यीशु का नाम अनुग्रह के युग के लोगों को पुनर्जन्म दिए जाने और बचाए जाने के लिए अस्तित्व में आया, और वह

पूरी मानवजाति के उद्धार के लिए एक विशेष नाम है। इस प्रकार, "यीशु" नाम छुटकारे के कार्य को दर्शाता है और अनुग्रह के युग का द्योतक है। "यहोवा" नाम इस्राएल के उन लोगों के लिए एक विशेष नाम है, जो व्यवस्था के अधीन जीए थे। प्रत्येक युग में और कार्य के प्रत्येक चरण में मेरा नाम आधारहीन नहीं है, बल्कि प्रातिनिधिक महत्व रखता है : प्रत्येक नाम एक युग का प्रतिनिधित्व करता है। "यहोवा" व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व करता है, और उस परमेश्वर के लिए सम्मानसूचक है, जिसकी आराधना इस्राएल के लोगों द्वारा की जाती है। "यीशु" अनुग्रह के युग का प्रतिनिधित्व करता है और उन सबके परमेश्वर का नाम है, जिन्हें अनुग्रह के युग के दौरान छुटकारा दिया गया था। यदि मनुष्य अब भी अंत के दिनों के दौरान उद्धारकर्ता यीशु के आगमन की अभिलाषा करता है, और उसके अब भी उसी छवि में आने की अपेक्षा करता है जो उसने यहूदिया में अपनाई थी, तो छह हज़ार सालों की संपूर्ण प्रबंधन-योजना छुटकारे के युग में रुक गई होती, और आगे प्रगति न कर पाती। इतना ही नहीं, अंत के दिनों का आगमन कभी न होता, और युग का समापन कभी न किया जा सकता। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उद्धारकर्ता यीशु सिर्फ मानवजाति के छुटकारे और उद्धार के लिए है। "यीशु" नाम मैंने अनुग्रह के युग के सभी पापियों की खातिर अपनाया था, और यह वह नाम नहीं है जिसके द्वारा मैं पूरी मानवजाति को समापन पर ले जाऊँगा। यद्यपि यहोवा, यीशु और मसीहा सभी मेरे पवित्रात्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं, किंतु ये नाम केवल मेरी प्रबंधन-योजना के विभिन्न युगों के द्योतक हैं, और मेरी संपूर्णता में मेरा प्रतिनिधित्व नहीं करते। पृथ्वी पर लोग मुझे जिन नामों से पुकारते हैं, वे मेरे संपूर्ण स्वभाव और स्वरूप को व्यक्त नहीं कर सकते। वे मात्र अलग-अलग नाम हैं, जिनके द्वारा मुझे विभिन्न युगों के दौरान पुकारा जाता है। और इसलिए, जब अंतिम युग—अंत के दिनों के युग—का आगमन होगा, तो मेरा नाम पुनः बदल जाएगा। मुझे यहोवा या यीशु नहीं कहा जाएगा, मसीहा तो कदापि नहीं—मुझे सामर्थ्यवान स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहा जाएगा, और इस नाम के तहत ही मैं समस्त युग का समापन करूँगा। मैं कभी यहोवा के नाम से जाना जाता था। मुझे मसीहा भी कहा जाता था, और लोग कभी मुझे प्यार और सम्मान से उद्धारकर्ता यीशु भी कहते थे। किंतु आज मैं वह यहोवा या यीशु नहीं हूँ, जिसे लोग बीते समयों में जानते थे; मैं वह परमेश्वर हूँ जो अंत के दिनों में वापस आया है, वह परमेश्वर जो युग का समापन करेगा। मैं स्वयं परमेश्वर हूँ, जो अपने संपूर्ण स्वभाव से परिपूर्ण और अधिकार, आदर और महिमा से भरा, पृथ्वी के छोरों से उदित होता है। लोग कभी मेरे साथ संलग्न नहीं हुए हैं, उन्होंने मुझे कभी जाना नहीं है, और वे मेरे स्वभाव से हमेशा अनभिज्ञ रहे हैं। संसार की रचना

के समय से लेकर आज तक एक भी मनुष्य ने मुझे नहीं देखा है। यह वही परमेश्वर है, जो अंत के दिनों के दौरान मनुष्यों पर प्रकट होता है, किंतु मनुष्यों के बीच में छिपा हुआ है। वह सामर्थ्य से भरपूर और अधिकार से लबालब भरा हुआ, दहकते हुए सूर्य और धधकती हुई आग के समान, सच्चे और वास्तविक रूप में, मनुष्यों के बीच निवास करता है। ऐसा एक भी व्यक्ति या चीज़ नहीं है, जिसका मेरे वचनों द्वारा न्याय नहीं किया जाएगा, और ऐसा एक भी व्यक्ति या चीज़ नहीं है, जिसे जलती आग के माध्यम से शुद्ध नहीं किया जाएगा। अंततः मेरे वचनों के कारण सारे राष्ट्र धन्य हो जाएँगे, और मेरे वचनों के कारण टुकड़े-टुकड़े भी कर दिए जाएँगे। इस तरह, अंत के दिनों के दौरान सभी लोग देखेंगे कि मैं ही वह उद्धारकर्ता हूँ जो वापस लौट आया है, और मैं ही वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ जो समस्त मानवजाति को जीतता है। और सभी देखेंगे कि मैं ही एक बार मनुष्य के लिए पाप-बलि था, किंतु अंत के दिनों में मैं सूर्य की ज्वाला भी बन जाता हूँ जो सभी चीज़ों को जला देती है, और साथ ही मैं धार्मिकता का सूर्य भी बन जाता हूँ जो सभी चीज़ों को प्रकट कर देता है। अंत के दिनों में यह मेरा कार्य है। मैंने इस नाम को इसलिए अपनाया और मेरा यह स्वभाव इसलिए है, ताकि सभी लोग देख सकें कि मैं एक धार्मिक परमेश्वर हूँ, दहकता हुआ सूर्य हूँ और धधकती हुई ज्वाला हूँ, और ताकि सभी मेरी, एक सच्चे परमेश्वर की, आराधना कर सकें, और ताकि वे मेरे असली चेहरे को देख सकें : मैं केवल इस्राएलियों का परमेश्वर नहीं हूँ, और मैं केवल छुटकारा दिलाने वाला नहीं हूँ; मैं समस्त आकाश, पृथ्वी और महासागरों के सारे प्राणियों का परमेश्वर हूँ।

यदि अंत के दिनों के दौरान उद्धारकर्ता का आगमन होता और उसे तब भी यीशु कहकर पुकारा जाता, और उसने दोबारा यहूदिया में जन्म लिया होता और वहीं अपना काम किया होता, तो इससे यह प्रमाणित होता कि मैंने केवल इस्राएल के लोगों की ही रचना की थी और केवल इस्राएल के लोगों को ही छुटकारा दिलाया था, और अन्य जातियों से मेरा कोई वास्ता नहीं है। क्या यह मेरे इन वचनों खंडन न करता कि "मैं वह प्रभु हूँ जिसने आकाश, पृथ्वी और सभी वस्तुओं को बनाया है?" मैंने यहूदिया को छोड़ दिया और अन्य जातियों के बीच कार्य करता हूँ, क्योंकि मैं मात्र इस्राएल के लोगों का ही परमेश्वर नहीं हूँ, बल्कि सभी प्राणियों का परमेश्वर हूँ। मैं अंत के दिनों के दौरान अन्य जातियों के बीच प्रकट होता हूँ, क्योंकि मैं केवल इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा नहीं हूँ, बल्कि, इससे भी बढ़कर, मैं अन्य जातियों के बीच अपने चुने हुए सभी लोगों का रचयिता भी हूँ। मैंने न केवल इस्राएल, मिस्र और लेबनान की रचना की, बल्कि इस्राएल से बाहर के सभी अन्य जाति के राष्ट्रों की भी रचना की। इस कारण, मैं सभी प्राणियों का

प्रभु हूँ। मैंने इस्राएल का मात्र अपने कार्य के आरंभिक बिंदु के रूप में इस्तेमाल किया था, मैंने यहूदिया और गलील को छुटकारे के अपने कार्य के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में इस्तेमाल किया था, और अब मैं अन्य जाति के राष्ट्रों को ऐसे आधार के रूप में इस्तेमाल करता हूँ, जहाँ से मैं पूरे युग का समापन करूँगा। मैंने कार्य के दो चरण इस्राएल में पूरे किए थे (ये दो चरण हैं व्यवस्था का युग और अनुग्रह का युग), और मैं कार्य के आगे के दो चरण (अनुग्रह का युग और राज्य का युग) इस्राएल के बाहर तमाम देशों में करता आ रहा हूँ। अन्य जाति के राष्ट्रों के बीच मैं विजय का कार्य करूँगा और इस तरह युग का समापन करूँगा। यदि मनुष्य मुझे हमेशा यीशु मसीह कहता है, किंतु यह नहीं जानता कि मैंने अंत के दिनों के दौरान एक नए युग की शुरुआत कर दी है और एक नया कार्य प्रारंभ कर दिया है, और यदि मनुष्य हमेशा सनकियों की तरह उद्धारकर्ता यीशु के आगमन का इंतज़ार करता रहता है, तो मैं कहूँगा कि ऐसे लोग उनके समान हैं जो मुझ पर विश्वास नहीं करते; वे वो लोग हैं जो मुझे नहीं जानते, और मुझ पर उनका विश्वास झूठा है। क्या ऐसे लोग उद्धारकर्ता यीशु का स्वर्ग से आगमन देख सकते हैं? वे मेरे आगमन का इंतज़ार नहीं करते, बल्कि यहूदियों के राजा के आगमन का इंतज़ार करते हैं। वे मेरे द्वारा इस पुराने अशुद्ध संसार के विनाश की लालसा नहीं करते, बल्कि इसके बजाय यीशु के द्वितीय आगमन की लालसा करते हैं, जिसके पश्चात् उन्हें छुटकारा दिया जाएगा। वे यीशु द्वारा एक बार फिर से पूरी मानवजाति को इस अशुद्ध और अधार्मिक भूमि से छुटकारा दिलाए जाने की प्रतीक्षा करते हैं। ऐसे लोग अंत के दिनों के दौरान मेरे कार्य को पूरा करने वाले कैसे बन सकते हैं? मनुष्य की कामनाएँ मेरी इच्छाएँ पूरी करने या मेरा कार्य पूरा करने में अक्षम हैं, क्योंकि मनुष्य केवल उस कार्य की प्रशंसा करता है और उस कार्य से प्यार करता है, जिसे मैंने पहले किया है, और उसे कोई अंदाजा नहीं है कि मैं स्वयं परमेश्वर हूँ जो हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं होता। मनुष्य केवल इतना जानता है कि मैं यहोवा और यीशु हूँ, उसे कोई आभास नहीं है कि मैं ही वह अंतिम परमेश्वर हूँ, जो मानवजाति का समापन करेगा। वह सब, जिसके लिए मनुष्य तरसता है और जो वह जानता है, उसकी अपनी धारणाओं से आता है, जो मात्र वह है, जिसे वह अपनी आँखों से देख सकता है। वह उस कार्य के अनुरूप नहीं है, जो मैं करता हूँ, बल्कि उससे असंगत है। यदि मेरा कार्य मनुष्य के विचारों के अनुसार किया जाता, तो यह कब समाप्त होता? कब मानवजाति विश्राम में प्रवेश करती? और कैसे मैं सातवें दिन, सब्त, में प्रवेश करने में सक्षम होता? मैं अपनी योजना के अनुसार और अपने लक्ष्य के अनुसार कार्य करता हूँ—मनुष्य के इरादों के अनुसार नहीं।

सुसमाचार को फैलाने का कार्य मनुष्य को बचाने का कार्य भी है

सभी लोगों को पृथ्वी पर मेरे कार्य के उद्देश्यों को समझने की आवश्यकता है, अर्थात् मैं अंततः क्या प्राप्त करना कहता हूँ, और इस कार्य को पूरा करने से पहले मुझे इसमें कौन-सा स्तर प्राप्त कर लेना चाहिए। यदि आज तक मेरे साथ चलते रहने के बाद भी लोग यह नहीं समझते कि मेरा कार्य क्या है, तो क्या वे मेरे साथ व्यर्थ में नहीं चले? यदि लोग मेरा अनुसरण करते हैं, तो उन्हें मेरी इच्छा जाननी चाहिए। मैं पृथ्वी पर हज़ारों सालों से कार्य कर रहा हूँ और आज भी मैं अपना कार्य इसी तरह से जारी रखे हुए हूँ। यद्यपि मेरे कार्य में कई परियोजनाएँ शामिल हैं, किंतु इसका उद्देश्य अपरिवर्तित है; यद्यपि, उदाहरण के लिए, मैं मनुष्य के प्रति न्याय और ताड़ना से भरा हुआ हूँ, फिर भी मैं जो करता हूँ, वह उसे बचाने के वास्ते, और अपने सुसमाचार को बेहतर ढंग से फैलाने और मुनष्य को पूर्ण बना दिए जाने पर अन्यजाति देशों के बीच अपने कार्य को आगे बढ़ाने के वास्ते है। इसलिए आज, एक ऐसे वक्त, जब कई लोग लंबे समय से निराशा में गहरे डूब चुके हैं, मैं अभी भी अपना कार्य जारी रखे हुए हूँ, मैं वह कार्य जारी रखे हुए हूँ जो मनुष्य को न्याय और ताड़ना देने के लिए मुझे करना चाहिए। इस तथ्य के बावजूद कि जो कुछ मैं कहता हूँ, मनुष्य उससे उकता गया है और मेरे कार्य से जुड़ने की उसकी कोई इच्छा नहीं है, मैं फिर भी अपना कर्तव्य कर रहा हूँ, क्योंकि मेरे कार्य का उद्देश्य अपरिवर्तित है और मेरी मूल योजना भंग नहीं होगी। मेरे न्याय का कार्य मनुष्य को मेरी आज्ञाओं का बेहतर ढंग से पालन करने में सक्षम बनाना है, और मेरी ताड़ना का कार्य मनुष्य को अधिक प्रभावी ढंग से बदलने देना है। यद्यपि मैं जो करता हूँ, वह मेरे प्रबंधन के वास्ते है, फिर भी मैंने कभी ऐसा कुछ नहीं किया है, जो मनुष्य के लाभ के लिए न हो, क्योंकि मैं इस्राएल से बाहर के सभी देशों को इस्राएलियों के समान ही आज्ञाकारी बनाना चाहता हूँ, उन्हें वास्तविक मनुष्य बनाना चाहता हूँ, ताकि इस्राएल के बाहर के देशों में मेरे लिए पैर रखने की जगह हो सके। यही मेरा प्रबंधन है; यही वह कार्य है जिसे मैं अन्यजाति देशों के बीच पूरा कर रहा हूँ। अभी भी, बहुत-से लोग मेरे प्रबंधन को नहीं समझते, क्योंकि उन्हें ऐसी चीज़ों में कोई रुचि नहीं है, और वे केवल अपने स्वयं के भविष्य और मंज़िल की परवाह करते हैं। मैं चाहे कुछ भी कहता रहूँ, लोग उस कार्य के प्रति उदासीन हैं जो मैं करता हूँ, इसके बजाय वे अनन्य रूप से अपनी कल की मंज़िलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अगर चीज़ें इसी तरह से चलती रहीं, तो मेरा कार्य कैसे फैल सकता है? मेरा सुसमाचार पूरे संसार में कैसे फैल सकता है? जान लो, कि जब मेरा कार्य फैलेगा, तो मैं तुम्हें तितर-बितर कर दूँगा और उसी तरह मारूँगा, जैसे

यहोवा ने इस्राएल के प्रत्येक कबीले को मारा था। यह सब इसलिए किया जाएगा, ताकि मेरा सुसमाचार समस्त पृथ्वी पर फैल सके और अन्यजाति देशों तक पहुँच सके, ताकि मेरा नाम वयस्कों और बच्चों द्वारा समान रूप से बढ़ाया जा सके, और मेरा पवित्र नाम सभी कबीलों और देशों के लोगों के मुँह से गूँजता रहे। ऐसा इसलिए है, ताकि इस अंतिम युग में, मेरा नाम अन्यजाति देशों के बीच गौरवान्वित हो सके, मेरे कर्म अन्यजातियों द्वारा देखे जा सकें और वे मुझे मेरे कर्मों के आधार पर सर्वशक्तिमान कह सकें, और मेरे वचन शीघ्र ही साकार हो सकें। मैं सभी लोगों को ज्ञात करवाऊँगा कि मैं केवल इस्राएलियों का ही परमेश्वर नहीं हूँ, बल्कि अन्यजातियों के समस्त देशों का भी परमेश्वर हूँ, यहाँ तक कि उनका भी परमेश्वर हूँ जिन्हें मैंने शाप दिया है। मैं सभी लोगों को यह देखने दूँगा कि मैं समस्त सृष्टि का परमेश्वर हूँ। यह मेरा सबसे बड़ा कार्य है, अंत के दिनों के लिए मेरी कार्य-योजना का उद्देश्य है, और अंत के दिनों में पूरा किया जाने वाला एकमात्र कार्य है।

यह केवल अंत के दिनों के दौरान है कि जिस कार्य का मैं हज़ारों सालों से प्रबंधन करता आ रहा हूँ, वह मनुष्य के सामने पूर्णतः प्रकट कर दिया गया है। केवल अब मैंने अपने प्रबंधन का पूरा रहस्य मनुष्य पर प्रकट किया है, और मनुष्य ने मेरे कार्य का उद्देश्य जान लिया है, और इसके अतिरिक्त, उसने मेरे सभी रहस्यों को समझ लिया है। मैंने मनुष्य को पहले ही उस मंज़िल के बारे में सब-कुछ बता दिया है, जिसके बारे में वह चिंतित रहता है। मैंने पहले ही मनुष्य पर अपने सारे रहस्य उजागर कर दिए हैं, जो लगभग 5,900 सालों से अधिक समय से गुप्त थे। यहोवा कौन है? मसीहा कौन है? यीशु कौन है? तुम लोगों को यह सब ज्ञात होना चाहिए। मेरा कार्य इन्हीं नामों पर निर्भर करता है। क्या तुम लोग इसे समझ गए हो? मेरा पवित्र नाम कैसे घोषित किया जाना चाहिए? मेरा नाम किसी ऐसे देश में कैसे फैलाया जाना चाहिए, जिसने मुझे मेरे किसी भी नाम से पुकारा हो? मेरा कार्य फैल रहा है, और मैं उसकी परिपूर्णता को किसी भी देश में और सभी देशों में फैलाऊँगा। चूँकि मेरा कार्य तुम लोगों में किया गया है, इसलिए मैं तुम लोगों को वैसे ही मारूँगा, जैसे यहोवा ने इस्राएल में दाऊद के घर के चरवाहों को मारा था, जिससे तुम हर देश में बिखर जाओ। क्योंकि अंत के दिनों में मैं सभी देशों को चूर-चूर कर दूँगा, जिससे उनके लोग नए सिरे से बँट जाएँगे। जब मैं पुनः वापस आऊँगा, तो सारे देश पहले ही मेरी जलती हुई आग की लपटों द्वारा निर्धारित सीमाओं में विभाजित हो चुके होंगे। उस समय मैं अपने आप को मानवजाति के सामने नए सिरे से, झुलसा देने वाले सूरज के समान, अभिव्यक्त करूँगा, और अपने आपको स्पष्ट रूप से उन्हें पवित्र

व्यक्ति की उस छवि में दिखाऊँगा, जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा है, और असंख्य देशों के बीच चलूँगा, ठीक वैसे ही, जैसे मैं, यहोवा, कभी यहूदी कबीलों के बीच चला था। तब से मैं पृथ्वी पर मानवजाति के जीवन में उनकी अगुआई करूँगा। वे वहाँ मेरी महिमा निश्चित रूप से देखेंगे, और अपने जीवन में अगुआई के लिए वे हवा में बादल के एक खंभे को भी निश्चित रूप से देखेंगे, क्योंकि मैं अपना प्रकटन पवित्र स्थानों में करूँगा। मनुष्य मेरी धार्मिकता का दिन, और मेरी महिमामय अभिव्यक्ति भी, देखेगा। वह तब होगा, जब मैं पूरी पृथ्वी पर शासन करूँगा और अपने कई पुत्रों को महिमा में लाऊँगा। पृथ्वी पर हर कहीं मनुष्य झुकेगा और मानवजाति के बीच मेरा तंबू उस कार्य की नींव पर दृढ़ता से खड़ा होगा, जिसे मैं आज कर रहा हूँ। लोग मंदिर में भी मेरी सेवा करेंगे। गंदी और घृणित चीज़ों से ढकी हुई वेदी को मैं चूर-चूर कर दूँगा और नए सिरे से बनाऊँगा। पवित्र वेदी पर नवजात मेमनों और बछड़ों का चट्टा लग जाएगा। मैं आज के मंदिर को ढहा दूँगा और एक नया मंदिर बनाऊँगा। घृणित लोगों से भरे हुए जो मंदिर अभी खड़े हैं, वे ढह जाएँगे और जो मंदिर मैं बनाऊँगा, वह मेरे प्रति वफादार सेवकों से भरा होगा। मेरे मंदिर की महिमा के वास्ते वे एक बार फिर से उठ खड़े होंगे और मेरी सेवा करेंगे। तुम लोग वह दिन निश्चित रूप से देखोगे, जब मैं बहुत बड़ी महिमा प्राप्त करूँगा, और तुम लोग निश्चित रूप से वह दिन भी देखोगे, जब मैं मंदिर ढहाऊँगा और एक नया मंदिर बनाऊँगा। तुम लोग मनुष्यों के संसार में मेरे तंबू के आने का दिन भी अवश्य देखोगे। जैसे ही मैं मंदिर को चकनाचूर करूँगा, वैसे ही मैं अपने तंबू को मनुष्यों के संसार में ले आऊँगा, ठीक वैसे ही वे मेरा अवरोहण निहारेंगे। जब मैं सभी देशों को चकनाचूर कर दूँगा, तब से अपने मंदिर को बनाते हुए और अपनी वेदी को स्थापित करते हुए मैं उन्हें नए सिरे से एक-साथ इकट्ठा करूँगा, ताकि सभी मुझे बलि अर्पित करें, मेरे मंदिर में मेरी सेवा करें, और अन्यजाति देशों में मेरे कार्य के प्रति स्वयं को निष्ठापूर्वक समर्पित करें। वे याजक के लबादे और मुकुट से सजे हुए आज के इस्राएलियों जैसे होंगे, और उनके बीच मुझ यहोवा की महिमा होगी, और मेरा प्रताप उनके ऊपर मँडराते हुए उनके साथ बना रहेगा। अन्यजाति देशों में भी मेरा कार्य इसी तरह से पूरा किया जाएगा। जैसा मेरा कार्य इस्राएल में था, वैसा ही मेरा कार्य अन्यजाति देशों में भी होगा, क्योंकि मैं इस्राएल में अपने कार्य का विस्तार करूँगा और उसे अन्यजाति देशों में फैलाऊँगा।

अब वह समय है, जब मेरा आत्मा बड़ी चीजें करता है, और वह समय है, जब मैं अन्यजाति देशों के बीच कार्य आरंभ करता हूँ। इससे भी अधिक, यह वह समय है, जब मैं सभी सृजित प्राणियों को वर्गीकृत

करता हूँ और उनमें से प्रत्येक को उसकी संबंधित श्रेणी में रख रहा हूँ, ताकि मेरा कार्य अधिक तेजी से और प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ सके। इसलिए, मैं तुम लोगों से जो माँग करता हूँ, वह अभी भी यही है कि तुम लोग मेरे संपूर्ण कार्य के लिए अपने पूरे अस्तित्व को अर्पित करो; और, इसके अतिरिक्त, तुम उस संपूर्ण कार्य को स्पष्ट रूप से जान लो और उसके बारे में निश्चित हो जाओ, जो मैंने तुम लोगों में किया है, और मेरे कार्य में अपनी पूरी ताक़त लगा दो, ताकि यह और अधिक प्रभावी हो सके। इसे तुम लोगों को अवश्य समझ लेना चाहिए। बहुत पीछे तक देखते हुए, या दैहिक सुख की खोज करते हुए, आपस में लड़ना बंद करो, उससे मेरे कार्य और तुम्हारे बेहतरीन भविष्य में विलंब होगा। ऐसा करने से तुम्हें सुरक्षा मिलनी तो दूर, तुम पर बरबादी और आ जाएगी। क्या यह तुम्हारी मूर्खता नहीं होगी? जिस चीज़ का तुम आज लालच के साथ आनंद उठा रहे हो, वही तुम्हारे भविष्य को बरबाद कर रही है, जबकि वह दर्द जिसे तुम आज सह रहे हो, वही तुम्हारी सुरक्षा कर रहा है। तुम्हें इन चीज़ों का स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए, ताकि तुम उन प्रलोभनों से दूर रह सको जिनसे बाहर निकलने में तुम्हें मुश्किल होगी, और ताकि तुम घने कोहरे में डगमगाने और सूर्य को खोज पाने में असमर्थ होने से बच सको। जब घना कोहरा छँटेगा, तुम अपने आपको महान दिन के न्याय के मध्य पाओगे। उस समय तक मेरा दिन मानव-जाति के करीब आ रहा होगा। तुम लोग मेरे न्याय से कैसे बच निकलोगे? तुम सूर्य की झुलसा देने वाली गर्मी को कैसे सह पाओगे? जब मैं मनुष्य को अपनी विपुलता प्रदान करता हूँ, तो वह उसे छाती से नहीं लगाता, बल्कि उसे ऐसी जगह पर फेंक देता है, जहाँ उस पर कोई ध्यान नहीं देता। जब मेरा दिन मनुष्य पर उतरेगा, तो वह मेरी विपुलता को खोज पाने या सत्य के उन कड़वे वचनों का पता लगा पाने में समर्थ नहीं होगा, जो मैंने उसे बहुत पहले बोले थे। वह बिलखेगा और रोएगा, क्योंकि उसने प्रकाश की चमक खो दी है और अंधकार में गिर गया है। आज तुम लोग जो देखते हो, वह मात्र मेरे मुँह की तीखी तलवार है। तुमने मेरे हाथ में छड़ी या उस ज्वाला को नहीं देखा है, जिससे मैं मनुष्य को जलाता हूँ, और इसीलिए तुम लोग अभी भी मेरी उपस्थिति में अभिमानी और असंयमी हो। इसीलिए तुम लोग उस बात पर अपनी इंसानी ज़बान से विवाद करते हुए, जो मैंने तुम लोगों से कही थी, अभी भी मेरे घर में मुझसे लड़ते हो। मनुष्य मुझसे नहीं डरता, और यद्यपि आज भी वह मेरे साथ शत्रुता जारी रख रहा है, उसे बिल्कुल भी कोई भय नहीं है। तुम लोगों के मुँह में अधर्मी जिह्वा और दाँत हैं। तुम लोगों के वचन और कार्य उस साँप के समान हैं, जिसने हव्वा को पाप करने के लिए बहकाया था। तुम एक-दूसरे से आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत

की माँग करते हो, और तुम अपने लिए पद, प्रतिष्ठा और लाभ झपटने के लिए मेरी उपस्थिति में संघर्ष करते हो, लेकिन तुम लोग नहीं जानते कि मैं गुप्त रूप से तुम लोगों के वचनों एवं कर्मों को देख रहा हूँ। इससे पहले कि तुम लोग मेरी उपस्थिति में आओ, मैंने तुम लोगों के हृदयों की गहराइयों की थाह ले ली है। मनुष्य हमेशा मेरे हाथ की पकड़ से बच निकलना और मेरी आँखों के अवलोकन से बचना चाहता है, किंतु मैं कभी उसके कथनों या कर्मों से कतराया नहीं हूँ। इसके बजाय, मैं उद्देश्यपूर्वक उन कथनों और कर्मों को अपनी नज़रों में प्रवेश करने देता हूँ, ताकि मैं मनुष्य की अधार्मिकता को ताड़ना दे सकूँ और उनके विद्रोह का न्याय कर सकूँ। इस प्रकार, मनुष्य के गुप्त कथन और कर्म हमेशा मेरे न्याय के आसन के सामने रहते हैं, और मेरे न्याय ने मनुष्य को कभी नहीं छोड़ा है, क्योंकि उसका विद्रोह बहुत ज़्यादा है। मेरा कार्य मनुष्य के उन सभी वचनों और कर्मों को जलाकर शुद्ध करना है, जो मेरे आत्मा की उपस्थिति में कहे और किए गए थे। इस तरह से,[क] जब मैं पृथ्वी से चला जाऊँगा, तब भी लोग मेरे प्रति वफादारी बनाए रखेंगे, और मेरी सेवा उसी तरह से करेंगे, जैसे मेरे पवित्र सेवक मेरे कार्य में करते हैं, और पृथ्वी पर मेरे कार्य को उस दिन तक जारी रहने देंगे, जब तक कि वह पूरा न हो जाए।

फ़ुटनोट :

क. मूल पाठ में, "इस तरह से" यह वाक्यांश नहीं है।

तुम सभी कितने नीच चरित्र के हो!

तुम सभी शानदार कुर्सियों पर बैठते हो और युवा पीढ़ी के अपनी किस्म के लोगों को अपने पास बैठाकर भाषण देते हो। तुम लोग नहीं जानते कि तुम्हारे इन "वंशजों" की साँस बहुत पहले ही उखड़ चुकी है और वे मेरा कार्य खो चुके हैं। मेरी महिमा पूरब की भूमि से लेकर पश्चिम की भूमि तक चमकती है, लेकिन जब वह पृथ्वी के छोर तक फैलकर, उठने और चमकने लगेगी, तो मैं उसे पूरब से हटाकर पश्चिम में ले आऊँगा, ताकि तब से अँधेरे के लोग, जिन्होंने पूरब में मुझे त्याग दिया है, प्रकाश से वंचित हो जाएँ। जब ऐसा होगा, तब तुम लोग परछाई की घाटी में रहोगे। भले ही आज के लोग पहले से सौ गुना बेहतर हों, फिर भी वे मेरी अपेक्षाएँ पूरी नहीं कर सकते, और वे अभी भी मेरी महिमा के गवाह नहीं हैं। यह जो तुम लोग पहले से सौ गुना बेहतर हो पाए हो, यह पूरी तरह से मेरे कार्य का परिणाम है; यह पृथ्वी पर मेरे कार्य का फल है। लेकिन मुझे फिर भी तुम लोगों के वचनों और कर्मों के साथ-साथ तुम्हारे चरित्र से घृणा महसूस

होती है, और जिस तरह से तुम मेरे सामने कार्य करते हो, उसके प्रति मुझे अत्यधिक आक्रोश महसूस होता है, क्योंकि तुम्हें मेरे बारे में कोई समझ नहीं है। तो फिर तुम मेरी महिमा को कैसे जी सकते हो, और मेरे भविष्य के कार्य के प्रति पूरी तरह से कैसे निष्ठावान रह सकते हो? तुम लोगों का विश्वास बहुत सुंदर है; तुम्हारा कहना है कि तुम अपना सारा जीवन-काल मेरे कार्य के लिए खपाने को तैयार हो, और तुम इसके लिए अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार हो, लेकिन तुम्हारे स्वभाव में अधिक बदलाव नहीं आया है। तुम लोग बस हेकड़ी से बोलते हो, बावजूद इस तथ्य के कि तुम्हारा वास्तविक व्यवहार बहुत घिनौना है। यह ऐसा है जैसे कि लोगों की जीभ और होंठ तो स्वर्ग में हों, लेकिन उनके पैर बहुत नीचे पृथ्वी पर हों, परिणामस्वरूप उनके वचन और कर्म तथा उनकी प्रतिष्ठा अभी भी चिथड़ा-चिथड़ा और विध्वस्त हैं। तुम लोगों की प्रतिष्ठा नष्ट हो गई है, तुम्हारा ढंग खराब है, तुम्हारे बोलने का तरीका निम्न कोटि का है, तुम्हारा जीवन घृणित है; यहाँ तक कि तुम्हारी सारी मनुष्यता डूबकर नीच अधमता में पहुँच गई है। तुम दूसरों के प्रति संकीर्ण सोच रखते हो और छोटी-छोटी बात पर बखेड़ा करते हो। तुम अपनी प्रतिष्ठा और हैसियत को लेकर इस हद तक झगड़ते हो कि नरक और आग की झील में उतरने तक को तैयार रहते हो। तुम लोगों के वर्तमान वचन और कर्म मेरे लिए यह तय करने के लिए काफी हैं कि तुम लोग पापी हो। मेरे कार्य के प्रति तुम लोगों का रवैया मेरे लिए यह तय करने के लिए काफी है कि तुम लोग अधर्मी हो, और तुम लोगों के समस्त स्वभाव यह इंगित करने के लिए पर्याप्त हैं कि तुम लोग घृणित आत्माएँ हो, जो गंदगी से भरी हैं। तुम लोगों की अभिव्यक्तियाँ और जो कुछ भी तुम प्रकट करते हो, वह यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि तुम वे लोग हो, जिन्होंने अशुद्ध आत्माओं का पेट भरकर रक्त पी लिया है। जब राज्य में प्रवेश करने का जिक्र होता है, तो तुम लोग अपनी भावनाएँ जाहिर नहीं करते। क्या तुम लोग मानते हो कि तुम्हारा मौजूदा ढंग तुम्हें मेरे स्वर्ग के राज्य के द्वार में प्रवेश कराने के लिए पर्याप्त है? क्या तुम लोग मानते हो कि तुम मेरे कार्य और वचनों की पवित्र भूमि में प्रवेश पा सकते हो, इससे पहले कि मैं तुम लोगों के वचनों और कर्मों का परीक्षण करूँ? कौन है, जो मेरी आँखों में धूल झोंक सकता है? तुम लोगों का घृणित, नीच व्यवहार और बातचीत मेरी दृष्टि से कैसे छिपे रह सकते हैं? तुम लोगों के जीवन मेरे द्वारा उन अशुद्ध आत्माओं का रक्त और मांस पीने और खाने वालों के जीवन के रूप में तय किए गए हैं, क्योंकि तुम लोग रोज़ाना मेरे सामने उनका अनुकरण करते हो। मेरे सामने तुम्हारा व्यवहार विशेष रूप से ख़राब रहा है, तो मैं तुम्हें घृणित कैसे न समझता? तुम्हारे शब्दों में अशुद्ध आत्माओं की अपवित्रताएँ है : तुम फुसलाते हो, भेद छिपाते हो

चापलूसी करते हो, ठीक उन लोगों की तरह जो टोने-टोटकों में संलग्न रहते हैं और उनकी तरह भी जो विश्वासघाती हैं और अधर्मियों का खून पीते हैं। मनुष्य के समस्त भाव बेहद अधार्मिक हैं, तो फिर सभी लोगों को पवित्र भूमि में कैसे रखा जा सकता है, जहाँ धर्मी रहते हैं? क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारा यह घिनौना व्यवहार तुम्हें उन अधर्मी लोगों की तुलना में पवित्र होने की पहचान दिला सकता है? तुम्हारी साँप जैसी जीभ अंततः तुम्हारी इस देह का नाश कर देगी, जो तबाही बरपाती है और घृणा ढोती है, और तुम्हारे वे हाथ भी, जो अशुद्ध आत्माओं के रक्त से सने हैं, अंततः तुम्हारी आत्मा को नरक में खींच लेंगे। तो फिर तुम मैल से सने अपने हाथों को साफ़ करने का यह मौका क्यों नहीं लपकते? और तुम अधर्मी शब्द बोलने वाली अपनी इस जीभ को काटकर फेंकने के लिए इस अवसर का लाभ क्यों नहीं उठाते? कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम अपने हाथों, जीभ और होंठों के लिए नरक की आग में जलने के लिए तैयार हो? मैं अपनी दोनों आँखों से हरेक व्यक्ति के दिल पर नज़र रखता हूँ, क्योंकि मानव-जाति के निर्माण से बहुत पहले मैंने उनके दिलों को अपने हाथों में पकड़ा था। मैंने बहुत पहले लोगों के दिलों के भीतर झाँककर देख लिया था, इसलिए उनके विचार मेरी दृष्टि से कैसे बच सकते थे? मेरे आत्मा द्वारा जलाए जाने से बचने में उन्हें ज्यादा देर कैसे नहीं हो सकती थी?

तुम्हारे होंठ कबूतरों से अधिक दयालु हैं, लेकिन तुम्हारा दिल पुराने साँप से ज्यादा भयानक है। तुम्हारे होंठ लेबनानी महिलाओं जितने सुंदर हैं, लेकिन तुम्हारा दिल उनकी तरह दयालु नहीं है, और कनानी लोगों की सुंदरता से तुलना तो वह निश्चित रूप से नहीं कर सकता। तुम्हारा दिल बहुत धोखेबाज़ है! जिन चीज़ों से मुझे घृणा है, वे केवल अधर्मी के होंठ और उनके दिल हैं, और लोगों से मेरी अपेक्षाएँ, संतों से मेरी अपेक्षा से जरा भी अधिक नहीं हैं; बात बस इतनी है कि मुझे अधर्मियों के बुरे कर्मों से घृणा महसूस होती है, और मुझे उम्मीद है कि वे अपनी मलिनता दूर कर पाएँगे और अपनी मौजूदा दुर्दशा से बच सकेंगे, ताकि वे उन अधर्मी लोगों से अलग खड़े हो सकें और उन लोगों के साथ रह सकें और पवित्र हो सकें, जो धर्मी हैं। तुम लोग उन्हीं परिस्थितियों में हो जिनमें मैं हूँ, लेकिन तुम लोग मैल से ढके हो; तुम्हारे पास उन मनुष्यों की मूल समानता का छोटे से छोटा अंश भी नहीं है, जिन्हें शुरुआत में बनाया गया था। इतना ही नहीं, चूँकि तुम लोग रोज़ाना उन अशुद्ध आत्माओं की नकल करते हो, और वही करते हो जो वे करती हैं और वही कहते हो जो वे कहती हैं, इसलिए तुम लोगों के समस्त अंग—यहाँ तक कि तुम लोगों की जीभ और होंठ भी—उनके गंदे पानी से इस क़दर भीगे हुए हैं कि तुम लोग पूरी तरह से दाग़ों से ढँके हुए हो,

और तुम्हारा एक भी अंग ऐसा नहीं है जिसका उपयोग मेरे कार्य के लिए किया जा सके। यह बहुत हृदय-विदारक है! तुम लोग घोड़ों और मवेशियों की ऐसी दुनिया में रहते हो, और फिर भी तुम लोगों को वास्तव में परेशानी नहीं होती; तुम लोग आनंद से भरे हुए हो और आज़ादी तथा आसानी से जीते हो। तुम लोग उस गंदे पानी में तैर रहे हो, फिर भी तुम्हें वास्तव में इस बात का एहसास नहीं है कि तुम इस तरह की दुर्दशा में गिर चुके हो। हर दिन तुम अशुद्ध आत्माओं के साहचर्य में रहते हो और "मल-मूत्र" के साथ व्यवहार करते हो। तुम्हारा जीवन बहुत भद्दा है, फिर भी तुम इस बात से अवगत नहीं हो कि तुम बिलकुल भी मनुष्यों की दुनिया में नहीं रहते और तुम अपने नियंत्रण में नहीं हो। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा जीवन बहुत पहले ही अशुद्ध आत्माओं द्वारा रौंद दिया गया था, या कि तुम्हारा चरित्र बहुत पहले ही गंदे पानी से मैला कर दिया गया था? क्या तुम्हें लगता है कि तुम एक सांसारिक स्वर्ग में रह रहे हो, और तुम खुशियों के बीच में हो? क्या तुम नहीं जानते कि तुमने अपना जीवन अशुद्ध आत्माओं के साथ बिताया है, और तुम हर उस चीज़ के साथ सह-अस्तित्व में रहे हो जो उन्होंने तुम्हारे लिए तैयार की है? तुम्हारे जीने के ढंग का कोई अर्थ कैसे हो सकता है? तुम्हारे जीवन का कोई मूल्य कैसे हो सकता है? तुम अपने माता-पिता के लिए, अशुद्ध आत्माओं के माता-पिता के लिए, दौड़-भाग करते रहे हो, फिर भी तुम्हें वास्तव में इस बात का अंदाज़ा नहीं है कि तुम्हें फँसाने वाले वे अशुद्ध आत्माओं के माता-पिता हैं, जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया और पाल-पोसकर बड़ा किया। इसके अलावा, तुम नहीं जानते कि तुम्हारी सारी गंदगी वास्तव में उन्होंने ही तुम्हें दी है; तुम बस यही जानते हो कि वे तुम्हें "आनंद" दे सकते हैं, वे तुम्हें ताड़ना नहीं देते, न ही वे तुम्हारी आलोचना करते हैं, और विशेष रूप से वे तुम्हें शाप नहीं देते। वे कभी तुम पर गुस्से से भड़के नहीं, बल्कि तुम्हारे साथ स्नेह और दया का व्यवहार करते हैं। उनके शब्द तुम्हारे दिल को पोषण देते हैं और तुम्हें लुभाते हैं, ताकि तुम गुमराह हो जाओ, और बिना एहसास किए, तुम फँसालिए जाते हो और उनकी सेवा करने के इच्छुक हो जाते हो, उनके निकास और नौकर बन जाते हो। तुम्हें कोई शिकायत नहीं होती है, बल्कि तुम उनके लिए कुत्तों और घोड़ों की तरह कार्य करने के लिए तैयार रहते हो; वे तुम्हें धोखा देते हैं। यही कारण है कि मेरे कार्य के प्रति तुम्हारी कोई प्रतिक्रिया नहीं है। कोई आश्चर्य नहीं कि तुम हमेशा मेरे हाथों से चुपके से निकल जाना चाहते हो, और कोई आश्चर्य नहीं कि तुम हमेशा मीठे शब्दों का प्रयोग करके छल से मेरी सहायता चाहते हो। इससे पता चलता है कि तुम्हारे पास पहले से एक दूसरी योजना थी, एक दूसरी व्यवस्था थी। तुम मेरे कुछ कार्यों को सर्वशक्तिमान के कार्य के रूप में देख सकते हो, पर तुम्हें

मेरे न्याय और ताड़ना की जरा-सी भी जानकारी नहीं है। तुम्हें कोई अंदाज़ा नहीं है कि मेरी ताड़ना कब शुरू हुई; तुम केवल मुझे धोखा देना जानते हो—लेकिन तुम यह नहीं जानते कि मैं मनुष्य का कोई उल्लंघन बरदाश्त नहीं करूँगा। चूँकि तुम पहले ही मेरी सेवा करने का संकल्प ले चुके हो, इसलिए मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। मैं वह परमेश्वर हूँ, जो बुराई से घृणा करता है, और मैं वह परमेश्वर हूँ, जो मनुष्य के प्रति शंकालु है। चूँकि तुमने पहले ही अपने शब्दों को वेदी पर रख दिया है, इसलिए मैं यह बरदाश्त नहीं करूँगा कि तुम मेरी ही आँखों के सामने से भाग जाओ, न ही मैं यह बरदाश्त करूँगा कि तुम दो स्वामियों की सेवा करो। क्या तुम्हें लगता है कि मेरी वेदी पर और मेरी आँखों के सामने अपने शब्दों को रखने के बाद तुम किसी दूसरे से प्रेम कर सकते हो? मैं लोगों को इस तरह से मुझे मूर्ख कैसे बनाने दे सकता हूँ? क्या तुम्हें लगता था कि तुम अपनी जीभ से यूँ ही मेरे लिए प्रतिज्ञा और शपथ ले सकते हो? तुम मेरे सिंहासन की शपथ कैसे ले सकते हो, मेरा सिंहासन, मैं जो सबसे ऊँचा हूँ? क्या तुम्हें लगा कि तुम्हारी शपथ पहले ही खत्म हो चुकी है? मैं तुम लोगों को बता दूँ: तुम्हारी देह भले ही खत्म हो जाए, पर तुम्हारी शपथ खत्म नहीं हो सकती। अंत में, मैं तुम लोगों की शपथ के आधार पर तुम्हें दंड दूंगा। हालाँकि तुम लोगों को लगता है कि अपने शब्द मेरे सामने रखकर मेरा सामना कर लोगे, और तुम लोगों के दिल अशुद्ध और बुरी आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। मेरा क्रोध उन कुत्ते और सुअर जैसे लोगों को कैसे सहन कर सकता है, जो मुझे धोखा देते हैं? मुझे अपने प्रशासनिक आदेश कार्यान्वित करने होंगे, और अशुद्ध आत्माओं के हाथों से उन सभी पाखंडी, "पवित्र" लोगों को वापस खींचना होगा जिनका मुझमें विश्वास है, ताकि वे एक अनुशासित प्रकार से मेरे लिए "सेवारत" हो सकें, मेरे बैल बन सकें, मेरे घोड़े बन सकें, मेरे संहार की दया पर रह सकें। मैं तुमसे तुम्हारा पिछला संकल्प फिर से उठवाऊँगा और एक बार फिर से अपनी सेवा करवाऊँगा। मैं ऐसे किसी भी सृजित प्राणी को बरदाश्त नहीं करूँगा, जो मुझे धोखा दे। तुम्हें क्या लगा कि तुम बस बेहूदगी से अनुरोध कर सकते हो और मेरे सामने झूठ बोल सकते हो? क्या तुम्हें लगा कि मैंने तुम्हारे वचन और कर्म सुने या देखे नहीं? तुम्हारे वचन और कर्म मेरी दृष्टि में कैसे नहीं आ सकते? मैं लोगों को इस तरह अपने को धोखा कैसे देने दे सकता हूँ?

मैं तुम लोगों के बीच में रहा हूँ, कई वसंत और पतझड़ तुम्हारे साथ जुड़ा रहा हूँ; मैं लंबे समय तक तुम लोगों के बीच जीया हूँ, और तुम लोगों के साथ जीया हूँ। तुम लोगों का कितना घृणित व्यवहार मेरी आँखों के सामने से फिसला है? तुम्हारे वे हृदयस्पर्शी शब्द लगातार मेरे कानों में गूँजते हैं; तुम लोगों की

हज़ारों-करोड़ों आकांक्षाएँ मेरी वेदी पर रखी गई हैं—इतनी ज्यादा कि उन्हें गिना भी नहीं जा सकता। लेकिन तुम लोगों का जो समर्पण है और जितना तुम अपने आपको खपाते हो, वह रंचमात्र भी नहीं है। मेरी वेदी पर तुम लोग ईमानदारी की एक नन्ही बूँद भी नहीं रखते। मुझ पर तुम लोगों के विश्वास के फल कहाँ हैं? तुम लोगों ने मुझसे अनंत अनुग्रह प्राप्त किया है और तुमने स्वर्ग के अनंत रहस्य देखे हैं; यहाँ तक कि मैंने तुम लोगों को स्वर्ग की लपटें भी दिखाई हैं, लेकिन तुम लोगों को जला देने को मेरा दिल नहीं माना। फिर भी, बदले में तुम लोगों ने मुझे कितना दिया है? तुम लोग मुझे कितना देने के लिए तैयार हो? जो भोजन मैंने तुम्हारे हाथ में दिया है, पलटकर उसी को तुम मुझे पेश कर देते हो, बल्कि यह कहते हो कि वह तुम्हें अपनी कड़ी मेहनत के पसीने के बदले मिला है और तुम अपना सर्वस्व मुझे अर्पित कर रहे हो। तुम यह कैसे नहीं जानते कि मेरे लिए तुम्हारा "योगदान" बस वे सभी चीज़ें हैं, जो मेरी ही वेदी से चुराई गई हैं? इतना ही नहीं, अब तुम वे चीज़ें मुझे चढ़ा रहे हो, क्या तुम मुझे धोखा नहीं दे रहे? तुम यह कैसे नहीं जान पाते कि आज जिन भेंटों का आनंद मैं उठा रहा हूँ, वे मेरी वेदी पर चढ़ाई गई सभी भेंटें हैं, न कि जो तुमने अपनी कड़ी मेहनत से कमाई हैं और फिर मुझे प्रदान की हैं। तुम लोग वास्तव में मुझे इस तरह धोखा देने की हिम्मत करते हो, इसलिए मैं तुम लोगों को कैसे माफ़ कर सकता हूँ? तुम लोग मुझसे इसे और सहने की अपेक्षा कैसे कर सकते हो? मैंने तुम लोगों को सब-कुछ दे दिया है। मैंने तुम लोगों के लिए सब-कुछ खोलकर रख दिया है, तुम्हारी ज़रूरतें पूरी की हैं, और तुम लोगों की आँखें खोली हैं, फिर भी तुम लोग अपनी अंतरात्मा की अनदेखी कर इस तरह मुझे धोखा देते हो। मैंने नि:स्वार्थ भाव से अपना सब-कुछ तुम लोगों पर न्योछावर कर दिया है, ताकि तुम लोग अगर पीड़ित भी होते हो, तो भी तुम लोगों को मुझसे वह सब मिल जाए, जो मैं स्वर्ग से लाया हूँ। इसके बावजूद तुम लोगों में बिलकुल भी समर्पण नहीं है, और अगर तुमने कोई छोटा-मोटा योगदान किया भी हो, तो बाद में तुम मुझसे उसका "हिसाब बराबर" करने की कोशिश करते हो। क्या तुम्हारा योगदान शून्य नहीं माना जाएगा? तुमने मुझे मात्र रेत का एक कण दिया है, जबकि माँगा एक टन सोना है। क्या तुम सर्वथा विवेकहीन नहीं बन रहे हो? मैं तुम लोगों के बीच काम करता हूँ। बदले में जो कुछ मुझे मिलना चाहिए, उसके दस प्रतिशत का भी कोई नामोनिशान नहीं है, अतिरिक्त बलिदानों की तो बात ही छोड़ दो। इसके अलावा, धर्मपरायण लोगों द्वारा दिए जाने वाले उस दस प्रतिशत को भी दुष्टों द्वारा छीन लिया जाता है। क्या तुम लोग मुझसे तितर-बितर नहीं हो गए हो? क्या तुम सब मेरे विरोधी नहीं हो? क्या तुम सब मेरी वेदी को नष्ट नहीं कर रहे हो? ऐसे लोगों को मेरी आँखें

एक खज़ाने के रूप में कैसे देख सकती हैं? क्या वे सुअर और कुत्ते नहीं हैं, जिनसे मैं घृणा करता हूँ? मैं तुम लोगों के दुष्कर्मों को खज़ाना कैसे कह सकता हूँ? मेरा कार्य वास्तव में किसके लिए किया जाता है? क्या इसका प्रयोजन केवल मेरे द्वारा तुम लोगों को मार गिराकर अपना अधिकार प्रकट करना हो सकता है? क्या तुम लोगों के जीवन मेरे एक ही वचन पर नहीं टिके हैं? ऐसा क्यों है कि मैं तुम लोगों को निर्देश देने के लिए केवल वचनों का प्रयोग कर रहा हूँ, और मैंने जितनी जल्दी हो सके, तुम लोगों को मार गिराने के लिए अपने वचनों को तथ्यों में नहीं बदला है? क्या मेरे वचनों और कार्य का उद्देश्य केवल मानवजाति को समाप्त करना ही है? क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जो अंधाधुंध निर्दोषों को मार डालता है? इस समय तुम लोगों में से कितने मानव-जीवन का सही मार्ग खोजने के लिए अपने पूर्ण अस्तित्व के साथ मेरे सामने आ रहे हैं? मेरे सामने केवल तुम लोगों के शरीर हैं, तुम्हारे दिल अभी भी स्वतंत्र और मुझसे बहुत, बहुत दूर हैं। चूँकि तुम लोग नहीं जानते कि मेरा कार्य वास्तव में क्या है, इसलिए तुम लोगों में से कई ऐसे हैं, जो मुझे छोड़ जाना और मुझसे दूरी बनाना चाहते हैं, और इसके बजाय ऐसे स्वर्ग में रहने की आशा करते हैं, जहाँ कोई ताड़ना या न्याय नहीं है। क्या लोग अपने दिलों में इसी की कामना नहीं करते? मैं निश्चित रूप से तुम्हें बाध्य करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। तुम जो भी मार्ग अपनाते हो, वह तुम्हारी अपनी पसंद है। आज का मार्ग न्याय और शाप से युक्त है, लेकिन तुम सबको पता होना चाहिए कि जो कुछ भी मैंने तुम लोगों को दिया है—चाहे वह न्याय हो या ताड़ना—वे सर्वोत्तम उपहार हैं जो मैं तुम लोगों को दे सकता हूँ, और वे सब वे चीज़ें हैं जिनकी तुम लोगों को तत्काल आवश्यकता है।

व्यवस्था के युग का कार्य

यहोवा ने जो कार्य इस्राएलियों पर किया, उसने मानव-जाति के बीच पृथ्वी पर परमेश्वर के मूल स्थान को स्थापित किया, जो कि ऐसा पवित्र स्थान भी था जहाँ वह उपस्थित रहता था। उसने अपने कार्य को इस्राएल के लोगों तक ही सीमित रखा। आरंभ में उसने इस्राएल के बाहर कार्य नहीं किया, बल्कि उसने अपने कार्यक्षेत्र को सीमित रखने के लिए ऐसे लोगों को चुना, जिन्हें उसने उचित पाया। इस्राएल वह जगह है, जहाँ परमेश्वर ने आदम और हव्वा की रचना की, और उस जगह की धूल से यहोवा ने मनुष्य को बनाया; यह स्थान पृथ्वी पर उसके कार्य का आधार बन गया। इस्राएली, जो नूह के वंशज थे और आदम के भी वंशज थे, पृथ्वी पर यहोवा के कार्य की मानवीय बुनियाद थे।

उस समय, इस्राएल में यहोवा के कार्य की महत्ता, उद्देश्य और कदम पूरी पृथ्वी पर अपना कार्य शुरू करने के लिए थे, जो इस्राएल को अपना केंद्र बनाकर धीरे-धीरे अन्य-जाति राष्ट्रों में फैल गया। वह इसी सिद्धांत के अनुसार पूरे ब्रह्मांड में कार्य करता है—एक प्रतिमान स्थापित करता है और फिर उसे तब तक व्यापक करता है जब तक कि विश्व के सभी लोग उसके सुसमाचार को प्राप्त न कर लें। प्रथम इस्राएली नूह के वंशज थे। इन लोगों को केवल यहोवा की श्वास प्रदान की गई थी और वे जीवन की मूल आवश्यकताएँ पूरी करने की पर्याप्त समझ रखते थे, किंतु वे नहीं जानते थे कि यहोवा किस प्रकार का परमेश्वर है या मनुष्य के लिए उसकी इच्छा क्या है, और यह तो वे बिलकुल नहीं जानते थे कि समस्त सृष्टि के प्रभु का सम्मान कैसे करें। जहाँ तक इस बात का संबंध है कि क्या ऐसे नियम और व्यवस्थाएँ हैं जिनका पालन किया जाना था[क], या क्या सृजित प्राणियों को स्रष्टा के लिए कोई कर्तव्य निभाना चाहिए, आदम के वंशज इन बातों के बारे में कुछ नहीं जानते थे। वे बस इतना ही जानते थे कि पति को अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पसीना बहाना और परिश्रम करना चाहिए, और पत्नी को अपने पति के प्रति समर्पित होकर यहोवा द्वारा सृजित मानव-जाति को बनाए रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, वे लोग जिनके पास केवल यहोवा की श्वास और उसका जीवन था, इस बारे में कुछ भी नहीं जानते थे कि परमेश्वर की व्यवस्थाओं का पालन कैसे करें या समस्त सृष्टि के प्रभु को कैसे संतुष्ट करें। वे बहुत ही कम समझते थे। इसलिए भले ही उनके हृदय में कुछ भी कुटिलता या छल-कपट नहीं था, और उनके बीच ईर्ष्या और कलह कभी-कभार ही उत्पन्न होते थे, फिर भी उन्हें समस्त सृष्टि के प्रभु, यहोवा के बारे में कोई ज्ञान या समझ नहीं थी। मनुष्य के ये पूर्वज केवल यहोवा की चीज़ों को खाना और उनका आनंद लेना जानते थे, किंतु वे यहोवा का आदर करना नहीं जानते थे; वे नहीं जानते थे कि उन्हें घुटने टेककर यहोवा की आराधना करनी चाहिए। तो वे उसके प्राणी कैसे कहला सकते थे? यदि ऐसा होता, तो क्या इन वचनों का बोला जाना, "यहोवा समस्त सृष्टि का प्रभु है" और "उसने मनुष्य को सृजित किया ताकि मनुष्य उसे अभिव्यक्त कर सके, उसे महिमामंडित कर सके और उसका प्रतिनिधित्व कर सके"—व्यर्थ न हो जाता? जिन लोगों में यहोवा के लिए आदर नहीं था, वे उसकी महिमा के गवाह कैसे बन सकते थे? वे उसकी महिमा की अभिव्यक्ति कैसे बन सकते थे? तब क्या यहोवा के ये वचन "मैंने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया" दुष्टात्मा शैतान के हाथों में हथियार न बन जाते? क्या तब ये वचन यहोवा द्वारा मनुष्य के सृजन को लेकर अपमान का एक चिह्न न बन जाते? कार्य के उस चरण को पूरा करने के लिए, मनुष्य को बनाने के बाद, यहोवा ने आदम से नूह

तक उन्हें निर्देश या मार्गदर्शन नहीं दिया। बल्कि, जल-प्रलय द्वारा दुनिया को नष्ट किए जाने के बाद ही उसने औपचारिक तौर पर नूह और आदम के वंशज, इस्राएलियों का मार्गदर्शन करना आरंभ किया था। इस्राएल में उसके कार्य और कथनों ने इस्राएल में रहने वाले सभी लोगों को मार्गदर्शन दिया और इस तरह मानव-जाति को दिखाया कि यहोवा न केवल मनुष्य में श्वास फूँकने में समर्थ है, ताकि वह परमेश्वर से जीवन प्राप्त कर सके और मिट्टी में से उठकर एक सृजित मानव बन सके, बल्कि वह मानव-जाति पर शासन करने के लिए उसे भस्म भी कर सकता है, उसे शाप भी दे सकता है और उस पर अपने राजदंड का उपयोग भी कर सकता है। इसलिए उन्होंने देखा कि यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का मार्गदर्शन कर सकता है और मानव-जाति के बीच दिन और रात के समय के अनुसार बोल सकता है और कार्य कर सकता है। जो कार्य उसने किया, वह केवल इसलिए किया ताकि उसके प्राणी जान सकें कि मनुष्य उसके द्वारा उठाई गई धूल से उत्पन्न हुआ है। इसके अलावा, मनुष्य उसके द्वारा ही बनाया गया है। इतना ही नहीं, बल्कि उसने पहले इस्राएल में कार्य किया ताकि दूसरे लोग और राष्ट्र (जो वास्तव में इस्राएल से पृथक नहीं थे, बल्कि इस्राएलियों से अलग हो गए थे, मगर फिर भी वे आदम और हव्वा के वंशज ही थे) इस्राएल से यहोवा का सुसमाचार प्राप्त कर सकें ताकि विश्व में सभी सृजित प्राणी यहोवा का आदर कर सकें और उसे महान समझ सकें। यदि यहोवा ने अपना कार्य इस्राएल में आरंभ न किया होता, बल्कि मनुष्यों को बनाने के बाद उन्हें पृथ्वी पर निश्चिंत जीवन जीने दिया होता, तो उस स्थिति में, मनुष्य की भौतिक प्रकृति के कारण (प्रकृति का अर्थ है कि मनुष्य उन चीज़ों को कभी नहीं जान सकता, जिन्हें वह देख नहीं सकता, अर्थात् वह कभी नहीं जान पाएगा कि मानव-जाति को यहोवा ने बनाया है, और यह तो बिल्कुल नहीं जान पाएगा कि उसने ऐसा क्यों किया), वह कभी नहीं जान पाएगा कि यहोवा ने ही मानवजाति को बनाया है अथवा वह समस्त सृष्टि का प्रभु है। यदि यहोवा ने मनुष्य का सृजन करके उसे पृथ्वी पर छोड़ दिया होता और एक अवधि तक मनुष्यों का मार्गदर्शन करने के लिए उनके बीच रहने के बजाय ऐसे ही अपने हाथ झाड़कर चला गया होता, तो सारी मानव-जाति वापस शून्यता की ओर लौट गई होती; यहाँ तक कि स्वर्ग, पृथ्वी और उसकी बनाई हुई असंख्य चीज़ें और समस्त मानव-जाति शून्यता की ओर लौट गई होती और इतना ही नहीं, शैतान द्वारा कुचल दी गई होती। इस तरह से यहोवा की यह इच्छा "पृथ्वी पर अर्थात्, उसके सृजन के बीच, उसके पास पृथ्वी पर खड़े होने के लिए एक स्थान, एक पवित्र स्थान होना चाहिए" बिखर गई होती। इसलिए मानवजाति को बनाने के बाद, वह मनुष्यों के जीवन में मार्गदर्शन करने के लिए उनके

बीच रह पाया और उनसे बात कर पाया—यह सब उसका अपनी इच्छा और योजना को पूरा करने के लिए था। उसने जो कार्य इस्राएल में किया, वह केवल उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए था जिसे उसने सभी चीज़ों की रचना करने से पहले बनाया था, इसलिए उसका पहले इस्राएलियों के मध्य कार्य करना और सभी चीज़ों का सृजन करना एक-दूसरे से असंगत नहीं था, बल्कि दोनों उसके प्रबंधन, उसके कार्य और उसकी महिमा के लिए और उसके द्वारा मानव-जाति के सृजन के अर्थ को और अधिक गहरा करने के लिए किए गए थे। उसने नूह के बाद दो हज़ार वर्षों तक पृथ्वी पर मानवजाति के जीवन का मार्गदर्शन किया, उस दौरान उसने मानवजाति को यह समझाया कि समस्त सृष्टि के प्रभु यहोवा का किस प्रकार आदर करें, अपना जीवन कैसे चलाएँ और जीवन कैसे जिएँ, और इन सबसे बढ़कर, यहोवा के गवाह के रूप में कार्य कैसे करें, उसका आज्ञापालन कैसे करें और उसका सम्मान कैसे करें, यहाँ तक कि कैसे संगीत के साथ उसकी स्तुति करें जैसे दाऊद और उसके याजकों ने की थी।

दो हज़ार वर्ष पूर्व जब यहोवा ने अपना कार्य किया, तो मनुष्य कुछ नहीं जानता था, और लगभग समस्त मानव-जाति पतित हो चुकी थी, जल-प्रलय द्वारा संसार के विनाश से पहले तक, मनुष्य स्वच्छंद संभोग और भ्रष्टता की गहराई में गिर चुका था, मनुष्य का हृदय पूरी तरह से यहोवा से रहित था और उसके मार्ग से तो बिल्कुल ही रहित था। उसने उस कार्य को कभी नहीं समझा था, जिसे यहोवा करने जा रहा था; लोगों में विवेक का अभाव था, ज्ञान और भी कम था, और एक साँस लेती हुई मशीन के समान वे मनुष्य, परमेश्वर, संसार, जीवन आदि से पूर्णतया अनभिज्ञ थे। पृथ्वी पर वे साँप के समान, बहुत-से प्रलोभनों में लिप्त थे, और बहुत-सी ऐसी बातें कहते थे जो यहोवा के लिए अपमानजनक थीं, लेकिन चूँकि वे अनभिज्ञ थे, इसलिए यहोवा ने उन्हें ताड़ना नहीं दी या अनुशासित नहीं किया। केवल जल-प्रलय के बाद ही, जब नूह 601 वर्ष का था, तो यहोवा ने औपचारिक रूप से नूह के सामने प्रकट होकर उसका तथा उसके परिवार का मार्गदर्शन किया और 2,500 वर्षों तक चले व्यवस्था के युग की समाप्ति तक नूह और उसके वंशजों के साथ-साथ, जल-प्रलय में जिंदा बचे पक्षियों और जानवरों की अगुआई की। वह इस्राएल में कार्यरत था, अर्थात् कुल 2,000 वर्षों तक औपचारिक रूप से इस्राएल में कार्यरत था और 500 वर्षों तक इस्राएल और उसके बाहर एक-साथ कार्यरत था, जो मिलकर 2,500 वर्ष होते हैं। इस दौरान उसने इस्राएलियों को निर्देश दिया कि यहोवा की सेवा करने के लिए उन्हें एक मंदिर का निर्माण करना चाहिए, याजकों के लबादे पहनने चाहिए और उषाकाल में नंगे पाँव मंदिर में प्रवेश करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि उनके जूते

मंदिर को अपवित्र कर दें और मंदिर के शिखर से उन पर आग गिरा दी जाए और उन्हें जलाकर मार डाला जाए। उन्होंने अपने कर्तव्य पूरे किए और यहोवा की योजनाओं के प्रति समर्पित हो गए। उन्होंने मंदिर में यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा का प्रकाशन प्राप्त करने के बाद, अर्थात् यहोवा के बोलने के बाद, उन्होंने जनसाधारण की अगुआई की और उन्हें सिखाया कि उन्हें उनके परमेश्वर, यहोवा के प्रति आदर दिखाना चाहिए। यहोवा ने उनसे कहा कि उन्हें एक मंदिर और एक वेदी बनानी चाहिए, और यहोवा द्वारा निर्धारित समय पर, अर्थात् फसह के पर्व पर उन्हें यहोवा की सेवा के लिए बलि के रूप में वेदी पर रखने के लिए नवजात बछड़े और मेमने तैयार करने चाहिए, जिससे लोगों को नियंत्रण में रखा जा सके और उनके हृदय में यहोवा के लिए आदर उत्पन्न किया जा सके। उनका इस व्यवस्था का पालन करना या न करना यहोवा के प्रति उनकी वफादारी का पैमाना बन गया। यहोवा ने उनके लिए सब्त का दिन भी नियत किया, जो उसकी सृष्टि की रचना का सातवाँ दिन था। सब्त के अगले दिन उसने पहला दिन बनाया, अर्थात् उनके द्वारा यहोवा की स्तुति करने, उसे चढ़ावा चढ़ाने और उसके लिए संगीत की रचना करने का दिन। इस दिन यहोवा ने सभी याजकों को एक-साथ बुलाकर वेदी पर रखे चढ़ावे को लोगों के खाने हेतु बाँटने के लिए कहा, ताकि वे यहोवा की वेदी के चढ़ावों का आनंद उठा सकें। यहोवा ने कहा कि वे धन्य हैं कि उन्होंने उसके साथ एक हिस्सा साझा किया, और कि वे उसके चुने हुए लोग हैं (जो कि इस्राएलियों के साथ यहोवा की वाचा थी)। यही कारण है कि आज तक भी इस्राएल के लोग यही कहते हैं कि यहोवा केवल उनका ही परमेश्वर है, वह अन्य-जातियों का परमेश्वर नहीं है।

व्यवस्था के युग के दौरान, यहोवा ने मूसा को उन इस्राएलियों तक पहुँचाने के लिए अनेक आज्ञाएँ निर्धारित कीं, जो मिस्र के बाहर उसका अनुसरण करते थे। ये आज्ञाएँ यहोवा द्वारा इस्राएलियों को दी गई थीं, उनका मिस्र के लोगों से कोई संबंध नहीं था; वे इस्राएलियों को नियंत्रित करने के लिए थीं, उसने उनसे माँग करने के लिए इन आज्ञाओं का उपयोग किया। वे सब्त का पालन करते थे या नहीं, अपने माता-पिता का आदर करते थे या नहीं, मूर्तियों की आराधना करते थे या नहीं, इत्यादि—यही वे सिद्धांत थे, जिनसे उनके पापी या धार्मिक होने का आकलन किया जाता था। उनमें से कुछ ऐसे थे जो यहोवा की आग से जला दिए गए, कुछ ऐसे थे जो पत्थरों से मार डाले गए, और कुछ ऐसे थे जिन्होंने यहोवा का आशीष प्राप्त किया, इसका निर्धारण इस बात से किया जाता था कि उन्होंने इन आज्ञाओं का पालन किया या नहीं। जो सब्त का पालन नहीं करते थे, उन्हें पत्थरों से मार डाला गया। जो याजक सब्त का पालन नहीं करते थे,

उन्हें यहोवा की आग में जला दिया गया। जो अपने माता-पिता का आदर नहीं करते थे, उन्हें भी पत्थरों से मार डाला गया। यह सब यहोवा द्वारा कहा गया था। यहोवा ने अपनी आज्ञाओं और व्यवस्थाओं को इसलिए स्थापित किया था, ताकि जब वह लोगों के जीवन की अगुआई करे, तो वे उसके वचन सुनकर उनका पालन करें, उसके विरुद्ध विद्रोह न करें। उसने नवजात मानव-जाति को नियंत्रण में रखने, अपने भविष्य के कार्य की नींव को बेहतर ढंग से डालने के लिए इन व्यवस्थाओं का उपयोग किया। इसलिए, यहोवा द्वारा किए गए कार्य के आधार पर प्रथम युग को व्यवस्था का युग कहा गया। यद्यपि यहोवा ने बहुत-से कथन कहे और बहुत कार्य किया, किंतु उसने केवल लोगों का सकारात्मक ढंग से मार्गदर्शन किया और उन अज्ञानी लोगों को इंसान बनना सिखाया, जीना सिखाया, यहोवा के मार्ग को समझना सिखाया। उसके द्वारा किए गए कार्य का अधिकांश भाग लोगों से अपने मार्ग का पालन करवाना और अपनी व्यवस्थाओं का अनुसरण करवाना था। यह कार्य उन लोगों पर किया गया, जो कम भ्रष्ट थे; इसका उद्देश्य उनके स्वभाव का रूपांतरण या उनके जीवन का विकास नहीं था। वह केवल लोगों को मर्यादित और नियंत्रित करने हेतु व्यवस्थाओं का उपयोग करने के लिए चिंतित था। उस समय इस्राएलियों के लिए यहोवा मात्र मंदिर में विद्यमान परमेश्वर, स्वर्ग का परमेश्वर था। वह बादल का एक खंभा, आग का एक खंभा था। यहोवा का उद्देश्य मात्र लोगों से उन बातों का आज्ञापालन करवाना था जिन्हें आज लोग उसकी व्यवस्थाओं और आज्ञाओं के तौर पर जानते हैं, क्योंकि यहोवा ने जो किया, वह उन्हें रूपांतरित करने के लिए नहीं था, बल्कि उन्हें और बहुत-सी वस्तुएँ देने के लिए था, जो मनुष्य के पास होनी चाहिए, उन्हें स्वयं अपने मुँह से निर्देश देना था, क्योंकि सृजित किए जाने के बाद मनुष्य के पास ऐसा कुछ नहीं था, जो उसके पास होना चाहिए। इसलिए, यहोवा ने लोगों को वे वस्तुएँ दीं, जो पृथ्वी पर उनके जीवन के लिए उनके पास होनी चाहिए थीं, और ऐसा करके उन लोगों को, जिनकी यहोवा ने अगुआई की थी, उनके पूर्वजों, आदम और हव्वा से भी श्रेष्ठ बना दिया, क्योंकि जो कुछ यहोवा ने उन्हें दिया, वह उससे बढ़कर था जो उसने आरंभ में आदम और हव्वा को दिया था। इसके बावजूद, यहोवा ने इस्राएल में जो कार्य किया, वह केवल मानवजाति का मार्गदर्शन करने और उसे अपने रचयिता को पहचानना सिखाने के लिए था। उसने उन्हें जीता या रूपांतरित नहीं किया था, बल्कि मात्र उनका मार्गदर्शन किया था। व्यवस्था के युग में कुलमिलाकर यहोवा का यही कार्य था। यह इस्राएल की संपूर्ण धरती पर उसके कार्य की पृष्ठभूमि, उसकी सच्ची कहानी और उसका सार है, जो मानव-जाति को यहोवा के नियंत्रण में रखने के लिए—उसके छह हज़ार वर्षों के कार्य

का आरंभ है। इसी से उसकी छह हज़ार वर्षीय प्रबंधन योजना में और अधिक कार्य उत्पन्न हुआ।

फुटनोट :

क. मूल पाठ में, "पालन किया जाना था" यह वाक्यांश नहीं है।

छुटकारे के युग के कार्य के पीछे की सच्ची कहानी

मेरी संपूर्ण प्रबंधन योजना, छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना, के तीन चरण या तीन युग हैं : आरंभ में व्यवस्था का युग; अनुग्रह का युग (जो छुटकारे का युग भी है); और अंत के दिनों का राज्य का युग। इन तीनों युगों में मेरे कार्य की विषयवस्तु प्रत्येक युग के स्वरूप के अनुसार अलग-अलग है, परंतु प्रत्येक चरण में यह कार्य मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप है—या, ज्यादा सटीक रूप में, यह शैतान द्वारा उस युद्ध में चली जाने वाली चालों के अनुसार किया जाता है, जो मैं उससे लड़ रहा हूँ। मेरे कार्य का उद्देश्य शैतान को हराना, अपनी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता व्यक्त करना, शैतान की सभी चालों को उजागर करना और परिणामस्वरूप समस्त मानवजाति को बचाना है, जो शैतान के अधिकार-क्षेत्र के अधीन रहती है। यह मेरी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता दिखाने के लिए और शैतान की असहनीय विकरालता प्रकट करने के लिए है; इससे भी अधिक, यह सृजित प्राणियों को अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने देने के लिए है, यह जानने देने के लिए कि मैं सभी चीज़ों का शासक हूँ, यह देखने देने के लिए कि शैतान मानवजाति का शत्रु है, अधम है, दुष्ट है; और उन्हें पूरी निश्चितता के साथ अच्छे और बुरे, सत्य और झूठ, पवित्रता और मलिनता के बीच का अंतर बताने देने के लिए है, और यह भी कि क्या महान है और क्या हेय है। इस तरह, अज्ञानी मानवजाति मेरी गवाही देने में समर्थ हो जाएगी कि वह मैं नहीं हूँ जो मानवजाति को भ्रष्ट करता है, और केवल मैं—सृष्टिकर्ता—ही मानवजाति को बचा सकता हूँ, लोगों को उनके आनंद की वस्तुएँ प्रदान कर सकता हूँ; और उन्हें पता चल जाएगा कि मैं सभी चीज़ों का शासक हूँ और शैतान मात्र उन प्राणियों में से एक है, जिनका मैंने सृजन किया है, और जो बाद में मेरे विरुद्ध हो गया। मेरी छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना तीन चरणों में विभाजित है, और मैं इस तरह इसलिए कार्य करता हूँ, ताकि सृजित प्राणियों को मेरी गवाही देने, मेरी इच्छा समझ पाने, और मैं ही सत्य हूँ यह जान पाने के योग्य बनाने का प्रभाव प्राप्त कर सकूँ। इस प्रकार, अपनी छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना के आरंभिक कार्य के दौरान मैंने व्यवस्था का काम किया, जो कि ऐसा कार्य था जिसमें यहोवा ने लोगों की अगुआई की। दूसरे चरण में यहूदिया के गाँवों

में अनुग्रह के युग का कार्य आरंभ किया गया। यीशु अनुग्रह के युग के समस्त कार्य का प्रतिनिधित्व करता है; वह देहधारी हुआ और उसे सलीब पर चढ़ाया गया, और उसने अनुग्रह के युग का आरंभ भी किया। उसे छुटकारे का कार्य पूरा करने, व्यवस्था के युग का अंत करने और अनुग्रह के युग का आरंभ करने के लिए सलीब पर चढ़ाया गया था, और इसलिए उसे "सर्वोच्च सेनापति," "पाप-बलि," और "उद्धारकर्ता" कहा गया। परिणामस्वरूप, यीशु के कार्य की विषयवस्तु यहोवा के कार्य से अलग थी, यद्यपि वे सैद्धांतिक रूप से एक ही थे। यहोवा ने व्यवस्था का युग आरंभ करके और व्यवस्थाएँ तथा आज्ञाएँ जारी करके पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का आधार—उद्गम-स्थल—स्थापित किया। ये उसके द्वारा किए गए दो कार्य हैं, और ये व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो कार्य यीशु ने अनुग्रह के युग में किया, वह व्यवस्थाएँ जारी करना नहीं था बल्कि उन्हें पूरा करना था, और परिणामस्वरूप अनुग्रह के युग का सूत्रपात करना और व्यवस्था के युग को समाप्त करना था, जो दो हज़ार सालों तक रहा था। वह युग-प्रवर्तक था, जो अनुग्रह के युग को शुरू करने के लिए आया, फिर भी उसके कार्य का मुख्य भाग छुटकारे में निहित था। इसलिए उसका कार्य भी दोहरा था : एक नए युग का मार्ग प्रशस्त करना, और सलीब पर चढ़ने के माध्यम से छुटकारे का कार्य पूरा करना, जिसके बाद वह चला गया। उसके बाद से व्यवस्था का युग समाप्त हो गया और अनुग्रह का युग शुरू हो गया।

यीशु ने जो कार्य किया, वह उस युग में मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार था। उसका कार्य मानवजाति को छुटकारा दिलाना, उसे उसके पापों के लिए क्षमा करना था, और इसलिए उसका स्वभाव पूरी तरह से विनम्रता, धैर्य, प्रेम, धर्मपरायणता, सहनशीलता, दया और करुणामय प्यार से भरा था। वह मानवजाति के लिए भरपूर अनुग्रह और आशीष लाया, और उसने वे सभी चीज़ें, जिनका लोग संभवतः आनंद ले सकते थे, उन्हें उनके आनंद के लिए दीं : शांति और प्रसन्नता, अपनी सहनशीलता और प्रेम, अपनी दया और अपना करुणामय प्यार। उस समय मनुष्य के आनंद की ढेर सारी चीज़ें—उनके हृदयों में शांति और सुरक्षा का बोध, उनकी आत्माओं में आश्वासन की भावना, और उद्धारकर्ता यीशु पर उनकी निर्भरता—ये चीज़ें उस युग में सबको सुलभ थीं, जिसमें वे रहते थे। अनुग्रह के युग में मनुष्य पहले ही शैतान द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका था, इसलिए समस्त मानवजाति को छुटकारा दिलाने का कार्य पूरा करने के लिए भरपूर अनुग्रह, अनंत सहनशीलता और धैर्य, और उससे भी बढ़कर, मानवजाति के पापों का प्रायश्चित करने के लिए पर्याप्त बलिदान की आवश्यकता थी, ताकि परिणाम हासिल किया जा सके।

अनुग्रह के युग में मानवजाति ने जो देखा, वह मानवजाति के पापों के प्रायश्चित के लिए मेरा बलिदान मात्र था : यीशु। वे केवल इतना ही जानते थे कि परमेश्वर दयावान और सहनशील हो सकता है, और उन्होंने केवल यीशु की दया और करुणामय प्रेम ही देखा था। ऐसा पूरी तरह से इसलिए था, क्योंकि वे अनुग्रह के युग में जन्मे थे। इसलिए, इससे पहले कि उन्हें छुटकारा दिलाया जा सके, उन्हें कई प्रकार के अनुग्रह का आनंद उठाना था, जो यीशु ने उन्हें प्रदान किए थे; ताकि वे उनसे लाभान्वित हो सकें। इस तरह, उनके द्वारा अनुग्रह का आनंद उठाने के माध्यम से उनके पापों को क्षमा किया जा सकता था, और यीशु की सहनशीलता और धैर्य का आनंद उठाने के माध्यम से उनके पास छुटकारा पाने का एक अवसर भी हो सकता था। केवल यीशु की सहनशीलता और धैर्य के माध्यम से ही उन्होंने क्षमा पाने का अधिकार जीता और यीशु द्वारा दिए गए अनुग्रह की प्रचुरता का आनंद उठाया। जैसा कि यीशु ने कहा था : मैं धार्मिकों को नहीं बल्कि पापियों को छुटकारा दिलाने, पापियों को उनके पापों के लिए क्षमा करवाने के लिए आया हूँ। यदि यीशु मनुष्य के अपराधों के लिए उनका न्याय करने, उन्हें शाप देने और उनके प्रति असहिष्णुता का स्वभाव लाया होता, तो मनुष्य को छुटकारा पाने का अवसर कभी न मिला होता, और वह हमेशा के लिए पापी रह गया होता। यदि ऐसा हुआ होता, तो छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना व्यवस्था के युग में ही रुक गई होती, और व्यवस्था का युग छह हज़ार वर्ष लंबा हो गया होता। मनुष्य के पाप अधिक विपुल और अधिक गंभीर हो गए होते, और मानवजाति के सृजन का कोई अर्थ न रह जाता। मनुष्य केवल व्यवस्था के अधीन यहोवा की सेवा करने में ही समर्थ हो पाता, परंतु उसके पाप प्रथम सृजित मनुष्यों से अधिक बढ़ गए होते। यीशु ने मनुष्यों को जितना अधिक प्रेम किया और उनके पापों को क्षमा करते हुए उन पर पर्याप्त दया और करुणामय प्रेम बरसाया, उतना ही अधिक उन्होंने यीशु द्वारा बचाए जाने और खोए हुए मेमने कहलाने की पात्रता हासिल की जिन्हें यीशु ने बड़ी कीमत देकर वापस खरीदा। शैतान इस काम में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था, क्योंकि यीशु अपने अनुयायियों के साथ इस तरह व्यवहार करता था, जैसे कोई स्नेहमयी माता अपने शिशु को अपने आलिंगन में लेकर करती है। वह उन पर क्रोधित नहीं हुआ या उसने उनका तिरस्कार नहीं किया, बल्कि वह सांत्वना से भरा हुआ था; वह उनके बीच कभी भी क्रोध से नहीं भड़का; बल्कि उनके पाप सहन किए और उनकी मूर्खता और अज्ञानता के प्रति आँखें मूँद लीं, और यहाँ तक कहा कि "दूसरों को सत्तर गुना सात बार क्षमा करो।" इस प्रकार उसके हृदय ने दूसरों के हृदयों को रूपांतरित कर दिया, और केवल इसी तरह से लोगों ने उसकी सहनशीलता के माध्यम से अपने पापों

के लिए क्षमा प्राप्त की।

यद्यपि यीशु अपने देहधारण में पूरी तरह से भावनाहीन था, फिर भी उसने हमेशा अपने चेलों को दिलासा दी, उन्हें पोषण प्रदान किया, उनकी सहायता की और उन्हें सहारा दिया। उसने चाहे जितना भी अधिक कार्य किया या जितना भी अधिक दर्द सहा, फिर भी उसने कभी भी लोगों से बहुत ज़्यादा माँग नहीं की, बल्कि उनके पापों के प्रति हमेशा धैर्यवान और सहनशील रहा, इतना कि अनुग्रह के युग में लोग उसे स्नेह के साथ "प्यारा उद्धारकर्ता यीशु" कहते थे। उस समय के लोगों के लिए—सभी लोगों के लिए—यीशु के पास जो था और जो यीशु स्वयं था, वह था दया और करुणामय प्रेम। उसने कभी लोगों के अपराधों को स्मरण नहीं किया, और उनके प्रति उसका व्यवहार उनके अपराधों पर आधारित नहीं था। चूँकि वह एक भिन्न युग था, वह प्रायः लोगों को प्रचुर मात्रा में भोजन प्रदान करता था, ताकि वे पेट भरकर खा सकें। उसने अपने सभी अनुयायियों के साथ अनुग्रहपूर्वक व्यवहार किया, बीमारों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला और मुर्दों को जिलाया। इस उद्देश्य से कि लोग उस पर विश्वास कर सकें और देख सकें कि जो कुछ भी उसने किया, सच्चाई और ईमानदारी से किया, उसने उन्हें यह दिखाते हुए कि उसके हाथों में मृतक भी पुनर्जीवित हो सकते हैं, एक सड़ती हुई लाश तक को पुनर्जीवित कर दिया। इस तरह से उसने खामोशी से सहा और उनके बीच छुटकारे का अपना कार्य किया। यहाँ तक कि सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले ही यीशु मानवता के पाप अपने ऊपर ले चुका था और मानवजाति के लिए एक पाप-बलि बन गया था। यहाँ तक कि सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले ही उसने मानवजाति को छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से सलीब का मार्ग खोल दिया था। अंततः उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया, उसने अपने आपको सलीब के वास्ते बलिदान कर दिया, और उसने अपनी सारी दया, करुणामय प्रेम और पवित्रता मानवजाति को प्रदान कर दी। वह मानवजाति के लिए हमेशा सहिष्णु रहा, उसने उससे कभी बदला नहीं लिया, बल्कि उसके पापों को क्षमा कर दिया, उसे पश्चात्ताप करने के लिए प्रोत्साहित किया, उसे धैर्य, सहनशीलता और प्रेम रखना, अपने पदचिह्नों का अनुसरण करना और सलीब के वास्ते स्वयं को बलिदान करना सिखाया। अपने भाई-बहनों के प्रति उसका प्रेम मरियम के प्रति प्रेम से भी बढ़कर था। उसने जो कार्य किया, उसमें उसने लोगों को चंगा करने और उनके भीतर की दुष्टात्माओं को निकालने को उसके सिद्धांत के रूप में अपनाया था, और यह सब कुछ उसके द्वारा छुटकारे के लिए था। वह जहाँ भी गया, उसने उन सभी के साथ अनुग्रहपूर्ण व्यवहार किया, जिन्होंने उसका अनुसरण किया। उसने ग़रीबों को अमीर बनाया, लँगड़ों को

चलाया, अंधों को आँखें दीं, और बहरों को सुनने की शक्ति दी। यहाँ तक कि उसने सबसे अधम, बेसहारा लोगों, पापियों को भी अपने साथ एक ही मेज पर बैठने के लिए आमंत्रित किया, उनसे किनारा नहीं किया, हमेशा धैर्यवान रहा, बल्कि यहाँ तक कहा : जब चरवाहा सौ में से एक भेड़ खो देता है, तो उस एक खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ने के लिए वह निन्यानवे भेड़ों को छोड़ देता है, और जब वह उसे खोज लेता है, तो वह बहुत आनंदित होता है। वह अपने अनुयायियों से ऐसे ही प्रेम करता था, जैसे भेड़ अपने मेमनों से करती है। यद्यपि वे मूर्ख और अज्ञानी थे, और उसकी नज़रों में पापी थे, और इतना ही नहीं, समाज के सबसे दीन-हीन सदस्य थे, फिर भी उसने उन पापियों को—उन मनुष्यों को, जिनका दूसरे तिरस्कार करते थे—अपनी आँख का तारा समझा। चूँकि उसने उनका पक्ष लिया, इसलिए उसने उनके लिए, वेदी पर बलि चढ़ाए गए मेमने के समान अपना जीवन त्याग दिया। वह उनके बीच इस तरह गया, मानो वह उनका दास हो, और उनके प्रति बिना शर्त समर्पण करते हुए उन्हें अपना उपयोग करने और अपनी बलि चढ़ाने दी। अपने अनुयायियों के लिए वह प्यारा उद्धारकर्ता यीशु था, परंतु ऊँचे मंच से लोगों को उपदेश देने वाले फरीसियों के प्रति उसने कोई दया और करुणामय प्रेम नहीं दिखाया, बल्कि घृणा और आक्रोश दिखाए। उसने फरीसियों के बीच अधिक काम नहीं किया, केवल कभी-कभार उन्हें उपदेश दिया और फटकारा; वह छुटकारे का कार्य करते हुए उनके बीच नहीं गया, न ही उसने उन्हें चिह्न और चमत्कार दिखाए। उसने अपनी समस्त दया और करुणामय प्रेम अपने अनुयायियों को प्रदान किया, सलीब पर चढ़ाए जाने के समय बिल्कुल अंत तक वह इन पापियों के वास्ते कष्ट सहता रहा, और जब तक उसने पूरी मानवता को छुटकारा नहीं दिला दिया, तब तक हर प्रकार का अपमान भुगतता रहा। कुल मिलाकर यही उसका कार्य था।

यीशु द्वारा छुटकारा दिलाए बिना मानवजाति हमेशा के लिए पाप में रह रही होती और पाप की संतान और दुष्टात्माओं की वंशज बन जाती। इस तरह चलते हुए समस्त पृथ्वी शैतान का निवास-स्थान, उसके रहने की जगह बन जाती। परंतु छुटकारे के कार्य के लिए मानवजाति के प्रति दया और करुणामय प्रेम दर्शाने की ज़रूरत थी; केवल इस तरीके से ही मानवजाति क्षमा प्राप्त कर सकती थी और अंततः पूर्ण किए जाने और परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से प्राप्त किए जाने का अधिकार जीत सकती थी। कार्य के इस चरण के बिना छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना आगे न बढ़ पाती। यदि यीशु को सलीब पर न चढ़ाया गया होता, यदि उसने केवल लोगों को चंगा ही किया होता और उनकी दुष्टात्माओं को निकाला ही होता, तो लोगों को

उनके पापों के लिए पूर्णतः क्षमा नहीं किया जा सकता था। जो साढ़े तीन साल यीशु ने पृथ्वी पर कार्य करते हुए व्यतीत किए, उनमें उसने छुटकारे के अपने कार्य में से केवल आधा ही किया था; फिर, सलीब पर चढ़ाए जाने और पापमय देह के समान बनकर, शैतान को सौंपे जाकर उसने सलीब पर चढ़ाए जाने का काम पूरा किया और मानवजाति की नियति वश में कर ली। केवल शैतान के हाथों में सौंपे जाने के बाद ही उसने मानवजाति को छुटकारा दिलाया। साढ़े तैंतीस सालों तक उसने पृथ्वी पर कष्ट सहा; उसका उपहास उड़ाया गया, उसकी बदनामी की गई और उसे त्याग दिया गया, यहाँ तक कि उसके पास सिर रखने की भी जगह नहीं थी, आराम करने की कोई जगह नहीं थी और बाद में उसे सलीब पर चढ़ा दिया गया, उसका संपूर्ण अस्तित्व—एक निष्कलंक और निर्दोष शरीर—सलीब पर चढ़ा दिया गया। उसने हर संभव कष्ट सहे। जो सत्ता में थे, उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया और उसे चाबुक मारे, यहाँ तक कि सैनिकों ने उसके मुँह पर थूक भी दिया; फिर भी वह चुप रहा और अंत तक सहता रहा, बिना किसी शर्त के समर्पण करते हुए उसने मृत्यु के क्षण तक कष्ट सहा, जिसके पश्चात उसने पूरी मानवजाति को छुटकारा दिला दिया। केवल तभी उसे आराम करने की अनुमति दी गई। यीशु ने जो कार्य किया, वह केवल अनुग्रह के युग का प्रतिनिधित्व करता है; वह व्यवस्था के युग का प्रतिनिधित्व नहीं करता, न ही वह अंत के दिनों के कार्य की जगह ले सकता है। यही अनुग्रह के युग, दूसरे युग, जिससे मानवजाति गुज़री है—छुटकारे के युग—में यीशु के कार्य का सार है।

युवा और वृद्ध लोगों के लिए वचन

मैंने पृथ्वी पर बहुत अधिक कार्य किया है और मैं बहुत वर्षों तक मानव-जाति के बीच चला हूँ, फिर भी लोगों को मेरी छवि और स्वभाव का शायद ही ज्ञान है और कुछ ही लोग उस कार्य के बारे में पूरी तरह से बता सकते हैं जो मैं करता हूँ। लोगों में बहुत सी चीज़ों की कमी है, उनमें इस समझ की कमी हमेशा रहती है कि मैं क्या करता हूँ, और उनके दिल हमेशा सतर्क रहते हैं, मानो वे बहुत डरते हों कि मैं उन्हें किसी दूसरी स्थिति में डाल दूँगा और फिर उन पर कोई ध्यान नहीं दूँगा। इस प्रकार, मेरे प्रति लोगों का रवैया हमेशा अत्यंत सतर्कता के साथ बहुत उदासीन रहता है। इसका कारण यह है कि मैं जो कार्य करता हूँ, लोग उसे समझे बिना वर्तमान तक आए हैं, और विशेषकर, वे उन वचनों से चकित हैं, जो मैं उनसे कहता हूँ। वे मेरे वचनों को यह जाने बिना अपने हाथों में रखते हैं कि उन्हें इन पर अटल विश्वास करने के

लिए खुद को प्रतिबद्ध करना चाहिए या अनिर्णय का विकल्प चुनते हुए उन्हें भूल जाना चाहिए। वे नहीं जानते कि उन्हें इन शब्दों को अभ्यास में लाना चाहिए या इंतजार करना और देखना चाहिए; उन्हें सब-कुछ छोड़कर बहादुरी से अनुसरण करना चाहिए, या पहले की तरह दुनिया के साथ मित्रता जारी रखनी चाहिए। लोगों की आंतरिक दुनिया बहुत जटिल है और वे बहुत धूर्त हैं। चूँकि लोग मेरे वचनों को स्पष्ट या पूर्ण रूप से देख नहीं पाते, इसलिए उनमें से बहुतों को अभ्यास करने में कष्ट होता है और अपना दिल मेरे सामने रखने में कठिनाई होती है। मैं तुम लोगों की कठिनाइयों को गहराई से समझता हूँ। देह में रहते हुए कई कमजोरियाँ अपरिहार्य होती हैं और कई वस्तुगत कारक तुम्हारे लिए कठिनाइयाँ पैदा करते हैं। तुम लोग अपने परिवार का पालन-पोषण करते हो, अपने दिन कड़ी मेहनत करते हुए बिताते हो, और तुम्हारे साल-दर-साल तुम्हारा समय कष्ट में बीतता है। देह में रहने में कई कठिनाइयाँ हैं—मैं इससे इनकार नहीं करता, और तुम लोगों से मेरी अपेक्षाएँ निश्चित रूप से तुम्हारी कठिनाइयों के अनुसार हैं। मेरे कार्य की सभी अपेक्षाएँ तुम्हारे वास्तविक आध्यात्मिक कद पर आधारित हैं। शायद अतीत में लोगों द्वारा अपने कार्य में तुम लोगों से की गई अपेक्षाएँ अत्यधिकता के तत्त्वों से युक्त थीं, लेकिन तुम लोगों को यह जान लेना चाहिए कि मैंने कभी भी अपने कहने और करने में तुम लोगों से अत्यधिक अपेक्षाएँ नहीं की। मेरी समस्त अपेक्षाएँ लोगों की प्रकृति, देह और उनकी जरूरतों पर आधारित हैं। तुम लोगों को पता होना चाहिए और मैं तुम लोगों को बहुत स्पष्ट रूप से बता सकता हूँ कि मैं लोगों के सोचने के कुछ तर्कसंगत तरीकों का विरोध नहीं करता, और न मैं मनुष्य की अंतर्निहित प्रकृति का विरोध करता हूँ। ऐसा केवल इसलिए है, क्योंकि लोग नहीं समझते कि मेरे द्वारा उनके लिए निर्धारित मानक वास्तव में क्या हैं, न वे मेरे वचनों का मूल अर्थ ही समझते हैं; लोग अभी तक मेरे वचनों के बारे में संदेह से ग्रस्त हैं, यहाँ तक कि आधे से भी कम लोग मेरे वचनों पर विश्वास करते हैं। शेष लोग अविश्वासी हैं, और ज्यादातर ऐसे हैं जो मुझे "कहानियाँ कहते" सुनना पसंद करते हैं। इतना ही नहीं, कई लोग ऐसे भी हैं जो इसे तमाशा समझकर इसका मज़ा लेते हैं। मैं तुम लोगों को सावधान करता हूँ : मेरे बहुत-से वचन उन लोगों के लिए प्रकट कर दिए गए हैं जो मुझ पर विश्वास करते हैं, और जो लोग राज्य के सुंदर दृश्य का आनंद तो लेते हैं लेकिन उसके दरवाज़ों के बाहर बंद हैं, वे मेरे द्वारा पहले ही मिटा दिए गए हैं। क्या तुम लोग बस मेरे द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत मोठ घास नहीं हो? तुम लोग कैसे मुझे जाते देख सकते हो और फिर खुशी से मेरी वापसी का स्वागत कर सकते हो? मैं तुम लोगों से कहता हूँ, नीनवे के लोगों ने यहोवा के क्रोध भरे शब्दों को सुनने के बाद तुरंत

टाट के वस्त्र और राख में पश्चात्ताप किया था। चूँकि उन्होंने उसके वचनों पर विश्वास किया, इसलिए वे भय और खौफ़ से भर गए और इसलिए उन्होंने तुरंत टाट और राख में पश्चात्ताप किया। जहाँ तक आज के लोगों का संबंध है, हालाँकि तुम लोग भी मेरे वचनों पर विश्वास करते हो, बल्कि इससे भी बढ़कर यह मानते हो कि आज एक बार फिर यहोवा तुम लोगों के बीच आ गया है; लेकिन तुम लोगों का रवैया सरासर श्रद्धाहीन है, मानो तुम लोग बस उस यीशु को देख रहे हो, जो हजारों साल पहले यहूदिया में पैदा हुआ था और अब तुम्हारे बीच उतर आया है। मैं गहराई से उस धोखेबाजी को समझता हूँ, जो तुम लोगों के दिल में मौजूद है; तुममें से अधिकतर लोग केवल जिज्ञासावश मेरा अनुसरण करते हैं और अपने खालीपन के कारण मेरी खोज में आए हैं। जब तुम लोगों की तीसरी इच्छा—एक शांतिपूर्ण और सुखी जीवन जीने की इच्छा—टूट जाती है, तो तुम लोगों की जिज्ञासा भी गायब हो जाती है। तुम लोगों में से प्रत्येक के दिल के भीतर मौजूद धोखाधड़ी तुम्हारे शब्दों और कर्मों के माध्यम से उजागर होती है। स्पष्ट कहूँ तो, तुम लोग मेरे बारे में केवल उत्सुक हो, मुझसे भयभीत नहीं हो; तुम लोग अपनी जीभ पर काबू नहीं रखते और अपने व्यवहार को तो और भी कम नियंत्रित करते हो। तो तुम लोगों का विश्वास आखिर कैसा है? क्या यह वास्तविक है? तुम लोग सिर्फ अपनी चिंताएँ दूर करने और अपनी ऊब मिटाने के लिए, अपने जीवन में मौजूद खालीपन को भरने के लिए मेरे वचनों का उपयोग करते हो। तुम लोगों में से किसने मेरे वचनों को अभ्यास में ढाला है? वास्तविक विश्वास किसे है? तुम लोग चिल्लाते रहते हो कि परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है, जो लोगों के दिलों में गहराई से देखता है, परंतु जिस परमेश्वर के बारे में तुम अपने दिलों में चिल्लाते रहते हो, उसकी मेरे साथ क्या अनुरूपता है? जब तुम लोग इस तरह से चिल्ला रहे हो, तो फिर वैसे कार्य क्यों करते हो? क्या इसलिए कि यही वह प्रेम है जो तुम लोग मुझे प्रतिफल में चुकाना चाहते हो? तुम्हारे होंठों पर समर्पण की थोड़ी भी बात नहीं है, लेकिन तुम लोगों के बलिदान और अच्छे कर्म कहाँ हैं? अगर तुम्हारे शब्द मेरे कानों तक न पहुँचते, तो मैं तुम लोगों से इतनी नफरत कैसे कर पाता? यदि तुम लोग वास्तव में मुझ पर विश्वास करते, तो तुम इस तरह के संकट में कैसे पड़ सकते थे? तुम लोगों के चेहरों पर ऐसे उदासी छा रही है, मानो तुम अधोलोक में खड़े परीक्षण दे रहे हो। तुम लोगों के पास जीवन-शक्ति का एक कण भी नहीं है, और तुम अपने अंदर की आवाज़ के बारे में क्षीणता से बात करते हो; यहाँ तक कि तुम शिकायत और धिक्कार से भी भरे हुए हो। मैं जो करता हूँ, उसमें तुम लोगों ने बहुत पहले ही अपना विश्वास खो दिया था, यहाँ तक कि तुम्हारा मूल विश्वास भी गायब हो गया है, इसलिए तुम अंत तक संभवतः कैसे अनुसरण कर

सकते हो? ऐसी स्थिति में तुम लोगों को कैसे बचाया जा सकता है?

यद्यपि मेरा कार्य तुम लोगों के लिए बहुत सहायक है, किंतु मेरे वचन तुम लोगों पर हमेशा खो जाते हैं और बेकार हो जाते हैं। मेरे द्वारा पूर्ण बनाए जाने के लिए किसी को ढूँढ़ पाना मुश्किल है, और आज मैं तुम लोगों को लेकर आशा लगभग खो ही चुका हूँ। मैंने तुम्हारे बीच कई सालों तक खोज की है, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ पाना मुश्किल है, जो मेरा विश्वासपात्र बन सकता हो। मुझे लगता है कि मुझमें तुम लोगों के अंदर कार्य जारी रखने का भरोसा नहीं है, और न कोई प्रेम है जिससे मैं तुमसे प्रेम करना जारी रखूँ। इसका कारण यह है कि मैं बहुत पहले ही तुम लोगों की उन तुच्छ, दयनीय उपलब्धियों से निराश हो गया था; ऐसा लगता है जैसे मैंने कभी तुम लोगों के बीच बात नहीं की और कभी तुम लोगों में कार्य नहीं किया। तुम्हारी उपलब्धियाँ कितनी घृणास्पद हैं। तुम लोग अपने लिए हमेशा बरबादी और शर्मिंदगी लाते हो और तुम्हारा लगभग कोई मूल्य नहीं है। मैं शायद ही तुम लोगों में इंसान से समानता खोज पाऊँ, न ही मैं तुम्हारे अंदर इंसान होने का चिह्न भाँप सकता हूँ। तुम्हारी ताज़ी सुगंध कहाँ है? वह कीमत कहाँ है, जो तुम लोगों ने कई वर्षों में चुकाई है और उसके परिणाम कहाँ हैं? क्या तुम लोगों को कभी कोई परिणाम नहीं मिला? मेरे कार्य में अब एक नई शुरुआत है, एक नया प्रारंभ। मैं भव्य योजनाएँ पूरी करने जा रहा हूँ तथा मैं और भी बड़ा कार्य संपन्न करना चाहता हूँ, फिर भी तुम लोग पहले की तरह कीचड़ में लोट रहे हो, अतीत के गंदे पानी में रहते हुए और व्यावहारिक रूप से तुम अपनी मूल दुर्दशा से खुद को मुक्त करने में असफल रहे हो। इसलिए तुम लोगों ने अभी तक मेरे वचनों से कुछ हासिल नहीं किया है। तुम लोगों ने अब तक खुद को कीचड़ और गंदे पानी के अपने मूल स्थान से नहीं छुड़ाया है, और तुम लोग केवल मेरे वचनों को जानते हो, लेकिन तुमने वास्तव में मेरे वचनों की मुक्ति के दायरे में प्रवेश नहीं किया है, इसलिए मेरे वचन कभी भी तुम लोगों के लिए प्रकट नहीं किए गए हैं; वे भविष्यवाणी की एक किताब की तरह हैं, जो हजारों वर्षों से मुहरबंद रही है। मैं तुम लोगों के जीवन में प्रकट होता हूँ, लेकिन तुम लोग इससे हमेशा अनजान रहते हो। यहाँ तक कि तुम लोग मुझे पहचानते भी नहीं। मेरे द्वारा कहे गए वचनों में से लगभग आधे वचन तुम लोगों का न्याय करते हैं, और वे उससे आधा प्रभाव ही हासिल कर पाते हैं, जितना कि उन्हें करना चाहिए, जो तुम्हारे भीतर गहरा भय पैदा करना है। शेष आधे वचन तुम लोगों को जीवन के बारे में सिखाने के लिए और स्वयं को संचालित कैसे करें, इस बारे में बताने के लिए हैं। लेकिन जहाँ तक तुम्हारा संबंध है, ऐसा लगता है, जैसे ये वचन तुम लोगों के लिए मौजूद ही नहीं हैं, या जैसे कि तुम लोग बच्चों की बातें सुन रहे थे,

ऐसी बातें जिन्हें सुनकर तुम हमेशा दबे-ढके ढंग से मुसकरा देते हो, लेकिन उन पर कार्रवाई कुछ नहीं करते। तुम लोग इन चीज़ों के बारे में कभी चिंतित नहीं रहे हो; तुम लोगों ने हमेशा मेरे कार्यों को मुख्यत: जिज्ञासा के नाम पर ही देखा है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि अब तुम लोग अँधेरों में घिर गए हो और प्रकाश को देख नहीं सकते, और इसलिए तुम लोग अँधेरे में दयनीय ढंग से रोते हो। मैं जो चाहता हूँ, वह तुम लोगों की आज्ञाकारिता है, तुम्हारी बेशर्त आज्ञाकारिता, और इससे भी बढ़कर, मेरी अपेक्षा है कि तुम लोग मेरी कही हर चीज़ के बारे में पूरी तरह से निश्चित रहो। तुम लोगों को उपेक्षा का रवैया नहीं अपनाना चाहिए और खास तौर से मेरी कही चीज़ों के बारे में चयनात्मक व्यवहार नहीं करना चाहिए, न ही मेरे वचनों और कार्य के प्रति उदासीन रहना चाहिए, जिसके कि तुम आदी हो। मेरा कार्य तुम लोगों के बीच किया जाता है और मैंने तुम लोगों के लिए बहुत सारे वचन प्रदान किए हैं, लेकिन यदि तुम लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करोगे, तो जो कुछ तुमने न तो हासिल किया और न ही जिसे अभ्यास में लाए हो, उसे मैं केवल गैर-यहूदी परिवारों को दे सकता हूँ। समस्त सृजित प्राणियों में से कौन है, जिसे मैंने अपने हाथों में नहीं रखा हुआ है? तुम लोगों में से अधिकांश "पके बुढ़ापे" की उम्र के हो और तुम लोगों के पास इस तरह के कार्य को स्वीकार करने की ऊर्जा नहीं है, जो मेरे पास है। तुम लोग मुश्किल से गुज़ारा करने वाले हानहाओ पक्षी[क] की तरह हो और तुम ने कभी भी मेरे वचनों को गंभीरता से नहीं लिया है। युवा लोग अत्यंत व्यर्थ और अति-आसक्त हैं और मेरे कार्य पर और भी कम ध्यान देते हैं। वे मेरे भोज के व्यंजनों का आनंद लेने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते; वे उस छोटे-से पक्षी की तरह हैं, जो अपने पिंजरे से बाहर निकलकर बहुत दूर जाने के लिए उड़ गया है। इस तरह के युवा और वृद्ध लोग मेरे लिए कैसे उपयोगी हो सकते हैं? पकी उम्र के लोग मेरे वचनों को तब तक पेंशन के रूप में इस्तेमाल करने के लिए तैयार हैं, जब तक वे अपनी कब्र में नहीं पहुँच जाते, ताकि मरने के बाद उनकी आत्माएँ स्वर्ग तक जा सकें; उनके लिए यही पर्याप्त है। ये बूढ़े लोग अब हमेशा "महान आकांक्षाएँ" और "अटूट आत्मविश्वास" पालते हैं। हालाँकि उनमें मेरे कार्य के लिए बहुत धैर्य है, और उनमें वे गुण हैं जो बूढ़े लोगों में पाए जाते हैं, जैसे कि ईमानदार होना, अडिग रहना, किसी भी व्यक्ति या वस्तु द्वारा दूर खींचे जाने या हारने से इनकार करना—सचमुच वे एक अभेद्य किले की तरह हैं—पर क्या इन लोगों का विश्वास किसी लाश की अंधविश्वासी गंध से नहीं भरा है? उनका मार्ग कहाँ है? क्या उन लोगों के लिए उनका मार्ग बहुत लंबा, बहुत दूर नहीं है? वे लोग मेरी इच्छा कैसे जान सकते हैं? भले ही उनका आत्मविश्वास प्रशंसनीय है, फिर भी इन बुजुर्गों में से कितने

वास्तव में एक भ्रांत तरीके से चलते हुए जीवन की खोज नहीं कर रहे? सही मायने में कितने लोग मेरे कार्य का वास्तविक महत्व समझते हैं? आज इस संसार में मेरा अनुसरण करने का किसका प्रयोजन निकट भविष्य में नरक में उतरने के बजाय मेरे द्वारा किसी दूसरे राज्य में ले जाया जाना नहीं है? क्या तुम लोगों को लगता है कि तुम्हारा गंतव्य इतना आसान मामला है? यद्यपि तुम युवा लोग जवान शेरों के समान हो, पर तुम्हारे दिलों में शायद ही सच्चा मार्ग है। तुम्हारा यौवन तुम लोगों को मेरे अधिक कार्य का हकदार नहीं बनाता; उलटे तुम हमेशा अपने प्रति मेरी घृणा को भड़काते हो। यद्यपि तुम लोग युवा हो, लेकिन तुम लोगों में या तो जीवन-शक्ति या फिर महत्वाकांक्षा की कमी है, और तुम लोग अपने भविष्य के बारे में हमेशा अप्रतिबद्ध रहते हो; ऐसा लगता है, मानो तुम लोग उदासीन और चिंताग्रस्त हो। यह कहा जा सकता है कि युवा लोगों में जो जीवन-शक्ति, आदर्श और उद्देश्य पाए जाने चाहिए, वे तुम लोगों में बिलकुल नहीं मिल सकते; इस तरह के तुम युवा लोग उद्देश्यहीन हो और सही और गलत, अच्छे और बुरे, सुंदरता और कुरूपता के बीच भेद करने की कोई योग्यता नहीं रखते। तुम लोगों में कोई भी ऐसे तत्त्व खोज पाना असंभव है, जो ताज़ा हों। तुम लोग लगभग पूरी तरह से पुराने ढंग के हो, और इस तरह के तुम युवा लोगों ने भीड़ का अनुसरण करना, तर्कहीन होना भी सीख लिया है। तुम लोग स्पष्ट रूप से सही को गलत से अलग नहीं कर सकते, सच और झूठ में भेद नहीं कर सकते, उत्कृष्टता के लिए कभी प्रयास नहीं कर सकते, न ही तुम लोग यह बता सकते हो कि सही क्या है और गलत क्या है, सत्य क्या है और ढोंग क्या है। तुम लोगों में धर्म की सड़ांध बूढ़े लोगों से भी अधिक भारी और गंभीर है। तुम लोग अभिमानी और अविवेकी भी हो, तुम प्रतिस्पर्धी हो, और तुम लोगों में आक्रामकता का शौक बहुत मजबूत है—इस तरह के युवा व्यक्ति के पास सत्य कैसे हो सकता है? इस तरह का युवा व्यक्ति, जिसका कोई रुख ही न हो, गवाही कैसे दे सकता है? जिस व्यक्ति में सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता न हो, उसे युवा कैसे कहा जा सकता है? जिस व्यक्ति में एक युवा व्यक्ति की जीवन-शक्ति, जोश, ताज़गी, शांति और स्थिरता नहीं है, उसे मेरा अनुयायी कैसे कहा जा सकता है? जिस व्यक्ति में कोई सच्चाई, कोई न्याय की भावना न हो, बल्कि जिसे खेलना और लड़ना पसंद हो, वह मेरा गवाह बनने के योग्य कैसे हो सकता है? युवा लोगों की आँखें दूसरों के लिए धोखे और पूर्वाग्रह से भरी हुई नहीं होनी चाहिए, और उन्हें विनाशकारी, घृणित कृत्य नहीं करने चाहिए। उन्हें आदर्शों, आकांक्षाओं और खुद को बेहतर बनाने की उत्साहपूर्ण इच्छा से रहित नहीं होना चाहिए; उन्हें अपनी संभावनाओं को लेकर निराश नहीं होना चाहिए और न ही उन्हें

जीवन में आशा और भविष्य में भरोसा खोना चाहिए, उनमें उस सत्य के मार्ग पर बने रहने की दृढ़ता होनी चाहिए, जिसे उन्होंने अब चुना है—ताकि वे मेरे लिए अपना पूरा जीवन खपाने की अपनी इच्छा साकार कर सकें। उन्हें सत्य से रहित नहीं होना चाहिए, न ही उन्हें ढोंग और अधर्म को छिपाना चाहिए—उन्हें उचित रुख पर दृढ़ रहना चाहिए। उन्हें सिर्फ यूँ ही धारा के साथ बह नहीं जाना चाहिए, बल्कि उनमें न्याय और सत्य के लिए बलिदान और संघर्ष करने की हिम्मत होनी चाहिए। युवा लोगों में अँधेरे की शक्तियों के दमन के सामने समर्पण न करने और अपने अस्तित्व के महत्व को रूपांतरित करने का साहस होना चाहिए। युवा लोगों को प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने नतमस्तक नहीं हो जाना चाहिए, बल्कि अपने भाइयों और बहनों के लिए माफ़ी की भावना के साथ खुला और स्पष्ट होना चाहिए। बेशक, मेरी ये अपेक्षाएँ सभी से हैं, और सभी को मेरी यह सलाह है। लेकिन इससे भी बढ़कर, ये सभी युवा लोगों के लिए मेरे सुखदायक वचन हैं। तुम लोगों को मेरे वचनों के अनुसार आचरण करना चाहिए। विशेष रूप से, युवा लोगों को मुद्दों में विवेक का उपयोग करने और न्याय और सत्य की तलाश करने के संकल्प से रहित नहीं होना चाहिए। तुम लोगों को सभी सुंदर और अच्छी चीज़ों का अनुसरण करना चाहिए, और तुम्हें सभी सकारात्मक चीजों की वास्तविकता प्राप्त करनी चाहिए। तुम्हें अपने जीवन के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए और उसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। लोग पृथ्वी पर आते हैं और मेरे सामने आ पाना दुर्लभ है, और सत्य को खोजने और प्राप्त करने का अवसर पाना भी दुर्लभ है। तुम लोग इस खूबसूरत समय को इस जीवन में अनुसरण करने का सही मार्ग मानकर महत्त्व क्यों नहीं दोगे? और तुम लोग हमेशा सत्य और न्याय के प्रति इतने तिरस्कारपूर्ण क्यों बने रहते हो? तुम लोग क्यों हमेशा उस अधार्मिकता और गंदगी के लिए स्वयं को रौंदते और बरबाद करते रहते हो, जो लोगों के साथ खिलवाड़ करती है? और तुम लोग क्यों उन बूढ़े लोगों की तरह वैसे काम करते हो जो अधर्मी करते हैं? तुम लोग पुरानी चीज़ों के पुराने तरीकों का अनुकरण क्यों करते हो? तुम लोगों का जीवन न्याय, सत्य और पवित्रता से भरा होना चाहिए; उसे इतनी कम उम्र में इतना भ्रष्ट नहीं होना चाहिए, जो तुम्हें नरक में गिराने की ओर अग्रसर करे। क्या तुम लोगों को नहीं लगता कि यह एक भयानक दुर्भाग्य होगा? क्या तुम लोगों को नहीं लगता कि यह बहुत अन्यायपूर्ण होगा?

तुम सभी लोगों को अपना कार्य पूर्णरूपेण उत्तम ढंग से करना चाहिए और उसे मुझे अर्पित किए जाने वाले एक उत्कृष्ट और अद्वितीय बलिदान के रूप में मेरी वेदी पर बलिदान कर देना चाहिए। तुम लोगों को अपने रुख पर अडिग होना चाहिए और आकाश में बादलों की तरह हवा के हर झोंके के साथ उड़

नहीं जाना चाहिए। अपने आधे जीवन में तुम लोग कड़ी मेहनत करते हो, तो तुम उस गंतव्य की तलाश क्यों नहीं करोगे, जो तुम लोगों का होना चाहिए? तुम लोग आधे जीवन-काल में कठिन परिश्रम करते हो, फिर भी तुम लोग सुअर और कुत्ते जैसे अपने माता-पिताओं को अपने अस्तित्व की सच्चाई और उसके महत्व को कब्र में घसीटने देते हो। क्या तुम्हें यह अपने प्रति भारी अन्याय नहीं लगता? क्या तुम्हें नहीं लगता कि इस तरह से जीवन जीना पूरी तरह से निरर्थक है? इस तरह से सत्य और उचित मार्ग की तलाश करने से अंततः समस्याएँ खड़ी हो जाएँगी, जिससे पड़ोसी बेचैन होंगे और पूरा परिवार नाखुश होगा, और इससे घातक विपत्तियाँ आएँगी। क्या तुम्हारा इस तरह से जीना सबसे ज्यादा अर्थहीन जीवन नहीं है? तुमसे ज्यादा भाग्यशाली जीवन किसका हो सकता है, और तुमसे ज्यादा हास्यास्पद जीवन भी किसका हो सकता है? क्या तुम मुझे अपने लिए मेरे आनंद और मेरे सुखद वचनों को पाने के लिए नहीं खोजते? लेकिन अपने आधे जीवन-काल तक दौड़-भाग कर चुकने के बाद, तुम मुझे इतना उत्तेजित कर देते हो कि मैं क्रोध से भर जाता हूँ और तुम्हारी ओर कोई ध्यान नहीं देता या तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता—क्या इसका मतलब यह नहीं है कि तुम्हारा पूरा जीवन व्यर्थ चला गया है? किस मुँह से तुम युगों-युगों के उन संतों की आत्माओं को देखने के लिए जा सकोगे, जो पापशोधन-स्थल से मुक्त हो गए हैं? तुम मेरे प्रति उदासीन हो और अंत में तुम एक घातक आपदा को उकसाते हो—बेहतर होगा कि तुम इस मौके का लाभ उठाओ और विशाल समुद्र में एक सुहावनी यात्रा करो और फिर मेरे "सौंपे गए कार्य" को पूरा करो। मैंने तुम लोगों को बहुत पहले बताया था कि आज, चलने के प्रति इतने उदासीन और अनिच्छुक तुम लोग अंत में मेरे द्वारा उठाई गई लहरों द्वारा अपने में समा और निगल लिए जाओगे। क्या तुम लोग वाकई खुद को बचा सकते हो? क्या तुम वास्तव में आश्वस्त हो कि अनुसरण करने की तुम्हारी वर्तमान पद्धति यह सुनिश्चित करेगी कि तुम पूर्ण किए जाओगे? क्या तुम्हारा दिल बहुत कठोर नहीं है? इस तरह का अनुसरण, इस तरह का अनुगमन, इस तरह का जीवन और इस प्रकार का चरित्र—यह मेरी प्रशंसा कैसे प्राप्त कर सकता है?

फुटनोट:

क. हानहाओ पक्षी की कहानी ईसप की चींटी और टिड्डी की नीति-कथा से काफ़ी मिलती-जुलती है। जब मौसम गर्म होता है, तब हानहाओ पक्षी अपने पड़ोसी नीलकंठ द्वारा बार-बार चेताए जाने के बावजूद घोंसला बनाने के बजाय सोना पसंद करता है। जब सर्दी आती है, तो हानहाओ ठिठुरकर मर जाता है।

तुम्हें पता होना चाहिए कि समस्त मानवजाति आज के दिन तक कैसे विकसित हुई

भिन्न-भिन्न युगों के आने-जाने के साथ छह हज़ार वर्षों के दौरान किए गए कार्य की समग्रता धीरे-धीरे बदलती गई है। इस कार्य में आए बदलाव समस्त संसार की परिस्थितियों और एक इकाई के तौर पर मानवजाति की विकासात्मक प्रवृत्ति पर आधारित रहे हैं। परमेश्वर का प्रबंधन का कार्य इसके अनुसार केवल धीरे-धीरे बदला है। सृष्टि के आरंभ से इस सबकी योजना नहीं बनाई गई थी। संसार का सृजन होने से पहले, या इस सृजन के ठीक बाद तक, यहोवा ने कार्य के प्रथम चरण, व्यवस्था का कार्य; कार्य के दूसरे चरण, अनुग्रह का कार्य; और कार्य के तीसरे चरण, विजय का कार्य की योजना नहीं बनाई थी। विजय के कार्य के दौरान वह पहले मोआब के कुछ वंशजों से शुरुआत करेगा और इसके माध्यम से समस्त ब्रह्मांड को जीतेगा। संसार का सृजन करने के बाद, उसने कभी ये वचन नहीं कहे; न ही उसने ये मोआब के बाद कहे, दरअसल लूत से पहले उसने इन्हें कभी नहीं कहा। परमेश्वर का समस्त कार्य अनायास तरीके से ही किया जाता है। उसका छह-हजार-वर्षों का प्रबंधन कार्य इसी तरह से विकसित हुआ है; किसी भी हाल में, संसार का सृजन करने से पहले उसने "मानवजाति के विकास के लिए सारांश चार्ट" के रूप में कोई योजना नहीं रची थी। परमेश्वर अपने कार्य में, प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करता है कि वह क्या है; वह किसी योजना को बनाने पर मगजपच्ची नहीं करता है। निस्संदेह, बहुत से नबियों ने बहुत सी भविष्यवाणियाँ की हैं, परंतु फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि परमेश्वर का कार्य सदैव एक सटीक योजना पर आधारित रहा है; वे भविष्यवाणियाँ परमेश्वर के उस समय के कार्य के अनुसार की गई थीं। वह जो भी कार्य करता है वह सब सर्वाधिक वास्तविक कार्य होता है। वह प्रत्येक युग के विकास के अनुसार अपने कार्य को संपन्न करता है, और यह इस बात पर आधारित होता है कि चीज़ें कैसे बदलती हैं। उसके लिए, कार्य को संपन्न करना किसी बीमारी के लिए दवा देने के सदृश है; अपना कार्य करते समय वह अवलोकन करता है और अपने अवलोकनों के अनुसार कार्य जारी रखता है। अपने कार्य के प्रत्येक चरण में, परमेश्वर अपनी प्रचुर बुद्धि और अपनी योग्यता को व्यक्त करने में सक्षम है; वह किसी युग विशेष के कार्य के अनुसार अपनी प्रचुर बुद्धि और अधिकार को प्रकट करता है, और उस युग के दौरान अपने द्वारा वापस लाए गए सभी लोगों को अपना समस्त स्वभाव देखने देता है। प्रत्येक युग में जिस कार्य के किए जाने की आवश्यकता है उसके अनुसार वह लोगों की आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है, वह सब कार्य जो उसे करना चाहिए।

वह लोगों की आवश्यकताओं की आपूर्ति इस आधार पर करता है कि शैतान ने उन्हें किस हद तक भ्रष्ट कर दिया है। यह उसी तरह है जब यहोवा ने आरंभ में आदम और हव्वा का सृजन किया था, उसने ऐसा इसलिए किया ताकि वे पृथ्वी पर परमेश्वर को अभिव्यक्त करने में समर्थ हों और सृजन के बीच परमेश्वर की गवाही दे सकें। किंतु सर्प द्वारा प्रलोभन दिए जाने के बाद हव्वा ने पाप किया, आदम ने भी वही किया; उन दोनों ने बगीचे से अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया। इस प्रकार, यहोवा के पास उन पर करने के लिए अतिरिक्त कार्य था। उनकी नग्नता देखकर उसने पशुओं की खालों से बने वस्त्रों से उनके शरीर को ढक दिया। इसके बाद उसने आदम से कहा, "तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तू ने खाया है इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है ... और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है; तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" स्त्री से उसने कहा, "मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" उसके बाद से उसने उन्हें अदन की वाटिका से निर्वासित कर दिया, और उन्हें वाटिका से बाहर रहने पर मजबूर किया, जैसेकि अब आधुनिक मानव पृथ्वी पर रहता है। जब परमेश्वर ने आरंभ में मनुष्य का सृजन किया, तब उसने यह योजना नहीं बनाई थी कि सृजन के बाद मनुष्य साँप द्वारा प्रलोभित हो और फिर वह मनुष्य और साँप को शाप दे। उसकी वास्तव में इस प्रकार की कोई योजना नहीं थी; जिस तरह चीज़ों का विकास हुआ उसी ने उसे अपनी सृष्टि के बीच नया कार्य करने को दिया। यहोवा द्वारा पृथ्वी पर आदम और हव्वा के बीच इस कार्य को संपन्न करने के बाद, मानवजाति कई हजार वर्षों तक विकसित होती रही, तब तक जब, "यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। ... परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।" इस समय यहोवा के पास करने के लिए और नए कार्य थे, क्योंकि जिस मानवजाति का उसने सृजन किया था वह सर्प के द्वारा प्रलोभित किए जाने के बाद बहुत अधिक पापमय हो चुकी थी। इन परिस्थितियों को देखते हुए, यहोवा ने समस्त मानवता में से बचाने के लिए नूह के परिवार का चयन किया, और संसार को जलप्रलय के द्वारा नष्ट करने का अपना कार्य संपन्न किया। मानवजाति आज के दिन तक भी इसी तरीके से विकसित हो रही है, उत्तरोत्तर भ्रष्ट हो रही है, और जब मानवजाति का विकास अपने शिखर पर पहुँच

जाएगा, तब इसका अर्थ मानवजाति का अंत होगा। संसार के बिल्कुल आरंभ से लेकर अंत तक परमेश्वर के कार्य का भीतरी सत्य सदैव ऐसा ही रहा है और सदा ऐसा ही रहेगा। यह वैसा ही है जैसे कि मनुष्यों को उनके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा; यह ऐसा मामला नहीं है कि हर एक व्यक्ति को बिल्कुल आरंभ से एक श्रेणी से संबंधित होने के लिए पूर्वनियत कर दिया जाता है, बल्कि इसमें हर एक को केवल विकास की एक प्रक्रिया से गुजरने के बाद ही धीरे-धीरे श्रेणीबद्ध किया जाता है। अंत में, जिस किसी का भी पूरी तरह से उद्धार नहीं किया जा सकता है उसे उसके "पुरखों" के पास लौटा दिया जाएगा। मानवजाति के बीच परमेश्वर का कोई भी कार्य संसार के सृजन के समय पहले से तैयार नहीं किया गया था; बल्कि, यह चीजों का विकास है जिसने परमेश्वर को मानवजाति के बीच अधिक वास्तविक एवं व्यवहारिक रूप से कदम-दर-कदम अपना कार्य करने दिया है। उदाहरण के लिए, यहोवा परमेश्वर ने स्त्री को प्रलोभित करने के लिए साँप का सृजन नहीं किया था। यह उसकी कोई विशिष्ट योजना नहीं थी, न ही यह कुछ ऐसा था जिसे उसने जानबूझकर पूर्वनियत किया था। यह कहा जा सकता है कि यह अनपेक्षित घटना थी। इस प्रकार, इसी कारण से यहोवा ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से निष्कासित किया और फिर कभी मनुष्य का सृजन न करने की शपथ ली। परंतु लोगों को केवल इसी आधार पर परमेश्वर की बुद्धि का पता चलता है। यह वैसा ही है जैसा मैंने पहले कहा था : "मैं अपनी बुद्धि शैतान के षडयंत्रों के आधार पर प्रयोग में लाता हूँ।" चाहे मानवजाति कितनी भी भ्रष्ट हो जाए या साँप उन्हें कैसे भी प्रलोभित करे, यहोवा के पास तब भी अपनी बुद्धि है; इस तरह, जबसे उसने संसार का सृजन किया है, वह नए-नए कार्य में लगा रहा है और उसके कार्य का कोई भी कदम कभी भी दोहराया नहीं गया है। शैतान ने लगातार षड्यंत्र किए हैं; मानवजाति लगातार शैतान के द्वारा भ्रष्ट की गई है, और यहोवा परमेश्वर ने अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य को लगातार संपन्न किया है। वह कभी भी असफल नहीं हुआ है, और संसार के सृजन से लेकर अब तक उसने कार्य करना कभी नहीं रोका है। शैतान द्वारा मानवजाति को भ्रष्ट करने के बाद से, परमेश्वर अपने उस शत्रु को परास्त करने के लिए उनके बीच लगातार कार्य करता रहा है जो भ्रष्टता का स्रोत है। यह लड़ाई आरंभ से शुरू हुई है और संसार के अंत तक चलती रहेगी। यह सब कार्य करते हुए, यहोवा परमेश्वर ने न केवल शैतान द्वारा भ्रष्ट की जा चुकी मनुष्यजाति को अपने द्वारा महान उद्धार को प्राप्त करने की अनुमति दी है, बल्कि उसे अपनी बुद्धि, सर्वशक्तिमत्ता और अधिकार को देखने की अनुमति भी दी है। इसके अलावा, अंत में वह मानवजाति को दुष्टों को दंड, और अच्छों को पुरस्कार देने

वाला अपना धार्मिक स्वभाव देखने देगा। उसने आज के दिन तक शैतान के साथ युद्ध किया है और कभी भी पराजित नहीं हुआ है। इसलिए, क्योंकि वह एक बुद्धिमान परमेश्वर है, वह अपनी बुद्धि शैतान के षड्यंत्रों के आधार पर प्रयोग करता है। और इसलिए परमेश्वर न केवल स्वर्ग की सब चीजों से अपने अधिकार का पालन करवाता है; बल्कि वह पृथ्वी की सभी चीज़ों को अपने पाँव रखने की चौकी के नीचे रखवाता है, और एक अन्य महत्वपूर्ण बात है, वह दुष्टों को, जो मानवजाति पर आक्रमण करते हैं और उसे सताते हैं, अपनी ताड़ना के अधीन करता है। इन सभी कार्यों के परिणाम उसकी बुद्धि के कारण प्राप्त होते हैं। उसने मानवजाति के अस्तित्व से पहले कभी भी अपनी बुद्धि को प्रकट नहीं किया था, क्योंकि स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, या समस्त ब्रह्मांड में उसके कोई शत्रु नहीं थे, और कोई अंधकार की शक्तियाँ नहीं थीं जो प्रकृति में मौजूद किसी भी चीज पर आक्रमण करती थीं। प्रधान स्वर्गदूत द्वारा उसके साथ विश्वासघात किए जाने के बाद, उसने पृथ्वी पर मानवजाति का सृजन किया, और यह मानवजाति के कारण ही था कि उसने औपचारिक रूप से प्रधान स्वर्गदूत, शैतान के साथ अपना सहस्राब्दी जितना लंबा युद्ध आरंभ किया, ऐसा युद्ध जो हर उत्तरोत्तर चरण के साथ और अधिक घमासान होता जाता है। इनमें से प्रत्येक चरण में उसकी सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धि उपस्थित रहती है। केवल तभी स्वर्ग और पृथ्वी में हर चीज परमेश्वर की बुद्धि, सर्वशक्तिमत्ता, और विशेषकर परमेश्वर की यथार्थता को देख सकती है। वह आज भी अपने कार्य को उसी यथार्थवादी तरीके से संपन्न करता है; इसके अतिरिक्त, जब वह अपने कार्य को करता है, तो वह अपनी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता को भी प्रकट करता है; वह तुम लोगों को प्रत्येक चरण के भीतरी सत्य को देखने की अनुमति देता है, यह देखने की अनुमति देता है कि परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की आखिर कैसे व्याख्या की जाए, और इससे भी बढ़कर परमेश्वर की वास्तविकता की निर्णायक व्याख्या को देखने देता है।

यहूदा द्वारा यीशु को दिए गए धोखे के बारे में कुछ लोग आश्चर्य करते हैं : क्या यह दुनिया के सृजन से पहले ही पूर्वनियत नहीं था? वास्तव में, पवित्र आत्मा ने उस समय की वास्तविकता के आधार पर यह योजना बनाई थी। हुआ यों कि यहूदा नाम का कोई व्यक्ति था, जो सदैव पैसों का गबन किया करता था। इसलिए उसे इस भूमिका को निभाने और इस तरह से सेवा में होने के लिए चुना गया। यह स्थानीय संसाधन उपयोग में लाने का एक सच्चा उदाहरण था। पहले यीशु इस बात से अनभिज्ञ था; उसे इसका बाद में केवल तभी पता चला, जब यहूदा को उजागर कर दिया गया। यदि कोई अन्य व्यक्ति इस भूमिका को निभाने में समर्थ होता, तो यहूदा के बजाय उसने इसे किया होता। वह जो पूर्वनियत किया गया था, वास्तव

में वह था जो पवित्र आत्मा ने उस क्षण में किया। पवित्र आत्मा का कार्य सदैव अनायास किया जाता है; वह किसी भी समय अपने कार्य की योजना बना सकता है, और कभी भी उसे संपन्न कर सकता है। मैं क्यों सदैव कहता हूँ कि पवित्र आत्मा का कार्य यथार्थवादी होता है, और वह सदैव नया होता है, कभी पुराना नहीं होता, और सदैव सबसे अधिक ताजा होता है? जब संसार का सृजन किया गया था, तब उसके कार्य की योजना पहले से नहीं बनाई गई थी; ऐसा बिलकुल भी नहीं हुआ था! कार्य का हर कदम अपने सही समय पर समुचित परिणाम प्राप्त करता है, और वे एक-दूसरे में हस्तक्षेप नहीं करते। बहुत बार तुम्हारे मन की योजनाएँ पवित्र आत्मा के नवीनतम कार्य के साथ बिलकुल मेल नहीं खातीं। उसका कार्य मनुष्य की तर्कबुद्धि जैसा सरल नहीं है, न ही वह मनुष्य की कल्पनाओं जैसा जटिल है—इसमें किसी भी समय और स्थान पर लोगों को उनकी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार आपूर्ति करना शामिल है। कोई भी मनुष्यों के सार के बारे में उतना स्पष्ट नहीं है, जितना वह है, और ठीक इसी कारण से कोई भी चीज लोगों की यथार्थपरक आवश्यकताओं के उतनी अनुकूल नहीं हो सकती, जितना उसका कार्य है। इसलिए, मनुष्य के दृष्टिकोण से, उसका कार्य कई सहस्राब्दी पूर्व अग्रिम रूप से योजनाबद्ध किया गया प्रतीत होता है। अब जबकि वह तुम लोगों के बीच कार्य करता है, इस पूरे समय में कार्य करते और बोलते हुए जब वह उन स्थितियों को देखता है जिनमें तुम हो, तो हर प्रकार की परिस्थिति से सामना होने पर उसके पास बोलने के लिए बिलकुल सही वचन होते हैं, वह ठीक वे ही वचन बोलता है, जिनकी लोगों को आवश्यकता होती है। उसके कार्य के पहले कदम को लो : ताड़ना का समय। उसके बाद, लोगों ने सभी तरह का व्यवहार प्रदर्शित किया और कुछ तरीकों से विद्रोहपूर्ण ढंग से कार्य किया; विभिन्न सकारात्मक स्थितियाँ उभरीं, वैसे ही कुछ नकारात्मक स्थितियाँ भी उभरीं। वे अपनी नकारात्मकता के एक बिंदु तक पहुँच गए और उन्होंने वे निम्नतम सीमाएँ दिखाईं, जिन तक वे गिर सकते थे। परमेश्वर ने इन सब चीजों के आधार पर अपना कार्य किया, और इस प्रकार अपने कार्य से अधिक बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए उन्हें पकड़ लिया। अर्थात, वह लोगों के बीच किसी समय-विशेष में उनकी वर्तमान स्थिति के अनुसार चिरस्थायी कार्य करता है; वह अपने कार्य का हर कदम लोगों की वास्तविक स्थितियों के अनुसार संपन्न करता है। समस्त सृष्टि उसके हाथों में है, वह उन्हें कैसे नहीं जान सकता? परमेश्वर लोगों की स्थितियों के अनुसार, किसी भी समय और स्थान पर, कार्य के उस अगले कदम को कार्यान्वित करता है, जो किया जाना चाहिए। यह कार्य किसी भी तरह से हजारों वर्ष पहले से योजनाबद्ध नहीं किया गया था; यह एक मानवीय धारणा है! वह

अपने कार्य के परिणाम देखकर कार्य करता है, और उसका कार्य लगातार अधिक गहन और विकसित होता जाता है; प्रत्येक बार, अपने कार्य के परिणामों का अवलोकन करने के बाद वह अपने कार्य के अगले कदम को कार्यान्वित करता है। वह धीरे-धीरे एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाने के लिए और समय के साथ लोगों को अपना नया कार्य दृष्टिगोचर कराने के लिए कई चीजों का उपयोग करता है। कार्य का यह तरीका लोगों की आवश्यकताओं की आपूर्ति करने में समर्थ हो सकता है, क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों को बहुत अच्छी तरह से जानता है। वह अपने कार्य को स्वर्ग से इसी तरह संपन्न करता है। इसी प्रकार, देहधारी परमेश्वर भी, वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्था करते हुए और मनुष्यों के बीच कार्य करते हुए अपना कार्य इसी तरह संपन्न करता है। उसका कोई भी कार्य संसार के सृजन से पहले व्यवस्थित नहीं किया गया था, न ही उसकी पहले से ध्यानपूर्वक योजना बनाई गई थी। संसार के सृजन के दो हजार वर्षों के बाद, यहोवा ने देखा कि मानवजाति इतनी भ्रष्ट हो गई है कि उसने यह भविष्यवाणी करने के लिए नबी यशायाह के मुख का उपयोग किया कि व्यवस्था के युग का अंत होने के बाद यहोवा अनुग्रह के युग में मानवजाति को छुटकारा दिलाने का अपना कार्य करेगा। निस्संदेह, यह यहोवा की योजना थी, किंतु यह योजना भी उन परिस्थितियों के अनुसार बनाई गई थी जिनका वह उस समय अवलोकन कर रहा था; उसने निश्चित रूप से आदम का सृजन करने के तुरंत बाद इस बारे में नहीं सोचा था। यशायाह ने केवल भविष्यवाणी कही, किंतु यहोवा ने व्यवस्था के युग के दौरान इस कार्य के लिए अग्रिम तैयारियाँ नहीं की थीं; बल्कि उसने अनुग्रह के युग के आरंभ में इस कार्य की शुरुआत की, जब दूत यूसुफ के स्वप्न में उसे इस संदेश से प्रबुद्ध करने के लिए दिखाई दिया कि परमेश्वर देहधारी बनेगा, और केवल तभी देहधारण का उसका कार्य आरंभ हुआ। परमेश्वर ने संसार के सृजन के ठीक बाद अपने देहधारण के कार्य के लिए तैयारी नहीं कर ली थी, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं; इसका निर्णय केवल मानवजाति के विकास की मात्रा और शैतान के साथ परमेश्वर के युद्ध की स्थिति के आधार पर लिया गया था।

जब परमेश्वर देह बनता है, तो उसका आत्मा किसी मनुष्य पर उतरता है; दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का आत्मा भौतिक शरीर के वस्त्र पहनता है। पृथ्वी पर अपना कार्य करने के लिए वह अपने साथ विभिन्न सीमित कदम लाने के लिए नहीं आता; उसका कार्य पूर्णतया असीमित होता है। पवित्र आत्मा देह में रहकर जो कार्य करता है, वह भी उसके कार्य के परिणामों द्वारा ही निर्धारित होता है और वह इन चीजों का उपयोग उस समयावधि का निर्धारण करने के लिए करता है, जिसमें वह देह में रहते हुए कार्य करेगा।

पवित्र आत्मा अपने कार्य में आगे बढ़ते हुए उसकी जाँच करके उसके प्रत्येक चरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता है; यह कार्य ऐसा कुछ अलौकिक नहीं है कि मानवीय कल्पना की सीमाओं को विस्तार दे दे। यह यहोवा द्वारा आकाश और पृथ्वी और अन्य सब वस्तुओं के सृजन के कार्य के समान है; उसने साथ-साथ योजना बनाई और कार्य किया। उसने प्रकाश को अंधकार से अलग किया, और सुबह और शाम अस्तित्व में आ गए—इसमें एक दिन लगा। दूसरे दिन उसने आकाश का सृजन किया, और उसमें भी एक दिन लगा; फिर उसने पृथ्वी, समुद्र और उन्हें आबाद करने वाले सब प्राणी बनाए, जिसमें एक दिन और लगा। यह छठे दिन तक चला, जब परमेश्वर ने मनुष्य का सृजन किया और उससे पृथ्वी पर सभी चीजों का प्रबंधन कराया। तब सातवें दिन, जब उसने सभी चीजों का सृजन पूरा कर लिया, तब उसने विश्राम किया। परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दिया और उसे पवित्र दिन के रूप में निर्दिष्ट किया। उसने इस पवित्र दिन को स्थापित करने का निर्णय सभी चीजों का सृजन करने के बाद ही लिया, उनका सृजन करने से पहले नहीं। यह कार्य भी अनायास ही किया गया था; सभी चीजों का सृजन करने से पहले उसने छह दिनों में संसार का सृजन करना और सातवें दिन विश्राम करना तय नहीं किया था; यह बिलकुल भी तथ्य के अनुरूप नहीं है। उसने ऐसा कुछ नहीं कहा था, न ही इसकी योजना बनाई थी। उसने यह कदापि नहीं कहा था कि सभी चीजों का सृजन छठे दिन पूरा किया जाएगा और सातवें दिन वह विश्राम करेगा; बल्कि उसे उस समय जो अच्छा लगा, उसके अनुसार उसने सृजन किया। जब उसने सभी चीजों का सृजन समाप्त कर लिया, तो छठा दिन हो चुका था। यदि वह पाँचवाँ दिन रहा होता, जब उसने सभी चीजों का सृजन करना समाप्त किया होता, तो उसने छठे दिन को पवित्र दिन के रूप में निर्दिष्ट किया होता। किंतु वास्तव में उसने सभी चीजों का सृजन करना छह दिनों में समाप्त किया, और इसलिए सातवाँ दिन पवित्र दिन बन गया, जो आज तक चला आ रहा है। इसलिए, उसका वर्तमान कार्य इसी तरीके से संपन्न किया जा रहा है। वह तुम लोगों की स्थितियों के अनुसार तुम लोगों की आवश्यकताओं के लिए आपूर्ति करता है। अर्थात्, पवित्रात्मा लोगों की परिस्थितियों के अनुसार बोलता और कार्य करता है; वह सब पर निगरानी रखता है और किसी भी समय, किसी भी स्थान पर कार्य करता है। मैं जो कुछ करता हूँ, कहता हूँ, तुम लोगों पर रखता हूँ और तुम लोगों को प्रदान करता हूँ, बिना अपवाद के वह वो है जिसकी तुम लोगों को आवश्यकता है। इस प्रकार, मेरा कोई भी कार्य वास्तविकता से अलग नहीं है; वह सब वास्तविक है, क्योंकि तुम सब लोग जानते हो कि "परमेश्वर का आत्मा सब पर निगरानी रखता है।" यदि यह सब समय से

पहले तय किया गया होता, तो क्या यह बहुत रूखा-सूखा न होता? यह तो ऐसा लगता है, मानो तुम सोचते हो कि परमेश्वर ने पूरी छह सहस्राब्दियों की योजना बना ली और फिर मानवजाति को विद्रोही, प्रतिरोधी, कुटिल और धोखेबाज होने, देह की भ्रष्टता, शैतानी स्वभाव, आँखों की वासना और व्यक्तिगत भोग-विलासों से युक्त होने के लिए पूर्वनियत किया। इसमें से कुछ भी परमेश्वर द्वारा पूर्वनियत नहीं किया गया था, बल्कि यह सब-कुछ शैतान की भ्रष्टता के परिणामस्वरूप हुआ। कुछ लोग कह सकते हैं, "क्या शैतान भी परमेश्वर की मुट्ठी में नहीं था? परमेश्वर ने पूर्वनियत किया था कि शैतान मनुष्य को इस तरह से भ्रष्ट करेगा, और उसके बाद परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच अपना कार्य संपन्न किया।" क्या परमेश्वर वास्तव में मानवजाति को भ्रष्ट करने के लिए शैतान को पूर्वनियत करेगा? परमेश्वर तो केवल मानवजाति को सामान्य रूप से जीने देने के लिए ही अत्यधिक उत्सुक है, तो क्या वह वाकई उसके जीवन में हस्तक्षेप करेगा? अगर ऐसा होता, तो क्या शैतान को हराना और मानवजाति को बचाना एक निरर्थक प्रयास न होता? मानवजाति की विद्रोहशीलता कैसे पूर्वनियत की जा सकती थी? यह शैतान के हस्तक्षेप के कारण पैदा हुई चीज है, तो यह परमेश्वर द्वारा पूर्वनियत कैसे की जा सकती थी? शैतान के परमेश्वर की पकड़ में होने की तुम लोग जिस रूप में कल्पना करते हो, वह शैतान के परमेश्वर की पकड़ में होने को मैं जिस रूप में कहता हूँ, उससे बिलकुल अलग है। तुम लोगों के कथनों के अनुसार कि "परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, और शैतान उसके हाथों में है," शैतान उसके साथ कभी विश्वासघात नहीं कर सकता। क्या तुमने यह नहीं कहा कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है? तुम लोगों का ज्ञान अत्यधिक अमूर्त और वास्तविकता से अछूता है; मनुष्य कभी परमेश्वर के विचारों की थाह नहीं पा सकता, न ही वह कभी परमेश्वर की बुद्धि को समझ सकता है! परमेश्वर सर्वशक्तिमान है; यह बिल्कुल भी गलत नहीं है। प्रधान स्वर्गदूत ने परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया, क्योंकि परमेश्वर ने आरंभ में उसे अधिकार का एक भाग दिया था। निस्संदेह, यह एक अनपेक्षित घटना थी, जैसे कि हव्वा का साँप के बहकावे में आना। किंतु शैतान चाहे किसी भी तरह से विश्वासघात करे, वह फिर भी उतना सर्वशक्तिमान नहीं है, जितना कि परमेश्वर है। जैसा कि तुम लोगों ने कहा है, शैतान महज शक्तिमान है; वह चाहे जो भी करे, परमेश्वर का अधिकार उसे सदैव पराजित करेगा। "परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, और शैतान उसके हाथों में है," कथन के पीछे यही वास्तविक अर्थ है। इसलिए, शैतान के साथ युद्ध को एक बार में एक कदम आगे बढ़ाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर शैतान की चालबाजियों के उत्तर में अपने कार्य की योजना बनाता है—अर्थात् वह मानवजाति के लिए उद्धार उस रूप

में लाता है और अपनी बुद्धि एवं सर्वशक्तिमत्ता उस रूप में प्रकट करता है, जो वर्तमान युग के लिए उपयुक्त है। इसी प्रकार, अंत के दिनों का कार्य अनुग्रह के युग से पहले पूर्वनियत नहीं किया गया था; पूर्वनियत करने के काम ऐसे व्यवस्थित ढंग से नहीं किए जाते : पहले, मनुष्य के बाहरी स्वभाव में परिवर्तन करना; दूसरे, मनुष्य को परमेश्वर की ताड़ना और परीक्षणों का भागी बनाना; तीसरे, मनुष्य को मृत्यु के परीक्षण से गुजारना; चौथे, मनुष्य को परमेश्वर से प्रेम करने के समय का अनुभव कराना और एक सृजित प्राणी का संकल्प व्यक्त कराना; पाँचवें, मनुष्य को परमेश्वर की इच्छा दिखाना और परमेश्वर को पूर्णतः जानने देना; और अंततः मनुष्य को पूर्ण करना। इन सब चीजों की योजना उसने अनुग्रह के युग के दौरान नहीं बनाई; बल्कि उसने इनकी योजना वर्तमान युग में बनानी आरंभ की। शैतान कार्य कर रहा है, वैसे ही परमेश्वर भी कार्य कर रहा है। शैतान अपना भ्रष्ट स्वभाव व्यक्त करता है, जबकि परमेश्वर स्पष्ट रूप से बोलता है और कुछ अनिवार्य चीजें प्रकट करता है। आज यही कार्य किया जा रहा है, और कार्य करने का यही सिद्धांत बहुत पहले, संसार के सृजन के बाद उपयोग में लाया गया था।

पहले, परमेश्वर ने आदम और हव्वा का सृजन किया, और उसने साँप का भी सृजन किया। सभी चीज़ों में साँप सर्वाधिक विषैला था; उसकी देह में विष था, जिसका शैतान ने उस विष का लाभ उठाने के लिए उपयोग किया। यह साँप ही था जिसने पाप करने के लिए हव्वा को प्रलोभित किया। हव्वा के बाद आदम ने पाप किया, और तब वे दोनों अच्छे और बुरे के बीच भेद करने में समर्थ हो गए। यदि यहोवा जानता था कि साँप हव्वा को प्रलोभित करेगा और हव्वा आदम को प्रलोभित करेगी, तो उसने उन सबको एक ही वाटिका के भीतर क्यों रखा? यदि वह इन चीज़ों का पूर्वानुमान करने में समर्थ था, तो उसने क्यों साँप की रचना की और उसे अदन की वाटिका के भीतर रखा? अदन की वाटिका में अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल क्यों था? क्या वह चाहता था कि वे उस फल को खाएँ? जब यहोवा आया, तब न आदम को और न हव्वा में उसका सामना करने का साहस हुआ, और तब जाकर यहोवा को पता चला कि उन्होंने अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया है और वे साँप के फरेब का शिकार बन गए हैं। अंत में, उसने साँप को शाप दिया, और उसने आदम और हव्वा को भी शाप दिया। जब उन दोनों ने उस वृक्ष के फल को खाया, तब यहोवा को बिल्कुल भी पता नहीं था कि वे ऐसा कर रहे हैं। मानवजाति दुष्टता और यौन स्वच्छंदता की सीमा तक भ्रष्ट हो गई, यहाँ तक कि उनके हृदयों में जो कुछ भी था वह सिर्फ बुरा और अधार्मिक था; यह सिर्फ गंदगी थी। इसलिए, यहोवा को मानवजाति का सृजन करके पछतावा हुआ।

उसके बाद उसने संसार को जलप्रलय के द्वारा नष्ट करने का अपना कार्य संपन्न किया, जिसमें नूह और उसके पुत्र बच गए। कुछ चीजें वास्तव में इतनी अधिक उन्नत और अलौकिक नहीं होती हैं जितनी लोग कल्पना कर सकते हैं। कुछ लोग पूछते हैं, "चूँकि परमेश्वर जानता था कि प्रधान स्वर्गदूत उसके साथ विश्वासघात करेगा, तो परमेश्वर ने उसका सृजन क्यों किया?" तथ्य ये हैं : पृथ्वी के अस्तित्व से पहले, प्रधान स्वर्गदूत स्वर्ग के स्वर्गदूतों में सबसे महान था। स्वर्ग के सभी स्वर्गदूतों पर उसका अधिकार था; और यह अधिकार उसे परमेश्वर ने दिया था। परमेश्वर के अपवाद के साथ, वह स्वर्ग के स्वर्गदूतों में सर्वोच्च था। बाद में जब परमेश्वर ने मानवजाति का सृजन किया, तब प्रधान स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर परमेश्वर के विरुद्ध और भी बड़ा विश्वासघात किया। मैं इसलिए कहता हूँ कि उसने परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया क्योंकि वह मानवजाति का प्रबंधन करना और परमेश्वर के अधिकार से आगे बढ़ना चाहता था। यह प्रधान स्वर्गदूत ही था जिसने हव्वा को पाप करने के लिए प्रलोभित किया; उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करना और मानवजाति द्वारा परमेश्वर से मुख फेरकर अपना आज्ञापालन करवाना चाहता था। उसने देखा कि बहुत-सी चीजें हैं जो उसका आज्ञापालन कर सकती थीं—स्वर्गदूत उसकी आज्ञा मान सकते थे, ऐसे ही पृथ्वी पर लोग भी उसकी आज्ञा मान सकते थे। पृथ्वी पर पक्षी और पशु, वृक्ष और जंगल, पर्वत और नदियाँ और सभी वस्तुएँ मनुष्य—अर्थात, आदम और हव्वा—की देखभाल के अधीन थीं, जबकि आदम और हव्वा प्रधान स्वर्गदूत का आज्ञापालन करते थे। इसलिए प्रधान स्वर्गदूत परमेश्वर के अधिकार से आगे बढ़ना और परमेश्वर के साथ विश्वासघात करना चाहता था। इसके बाद उसने परमेश्वर के साथ विश्वासघात करने के लिए बहुत से स्वर्गदूतों की अगुआई की, जो बाद में विभिन्न अशुद्ध आत्माएँ बन गए। क्या आज के दिन तक मानवजाति का विकास प्रधान स्वर्गदूत की भ्रष्टता के कारण नहीं है? मानवजाति जैसी आज है, केवल इसलिए है क्योंकि प्रधान स्वर्गदूत ने परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया और मानवजाति को भ्रष्ट कर दिया। यह कदम-दर-कदम कार्य उतना अमूर्त और आसान नहीं है जितना कि लोग कल्पना कर सकते हैं। शैतान ने एक कारणवश विश्वासघात किया, फिर भी लोग इतनी आसान-सी बात को समझने में असमर्थ हैं। जिस परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी और सब वस्तुओं का सृजन किया, उसने क्यों शैतान का भी सृजन किया? चूँकि परमेश्वर शैतान से बहुत अधिक घृणा करता है, और शैतान परमेश्वर का शत्रु है, तो परमेश्वर ने उसका सृजन क्यों किया? शैतान का सृजन करके, क्या वह एक शत्रु का सृजन नहीं कर रहा था? परमेश्वर ने वास्तव में एक शत्रु का सृजन नहीं किया था; बल्कि उसने एक

स्वर्गदूत का सृजन किया था, और बाद में इस स्वर्गदूत ने परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया। उसकी हैसियत इतनी बढ़ गई थी कि उसमें परमेश्वर के साथ विश्वासघात करने की इच्छा होने लगी। कहा जा सकता है कि यह मात्र एक संयोग था, परंतु यह अपरिहार्य भी था। यह उस बात के समान है कि कैसे कोई व्यक्ति एक निश्चित आयु तक बढ्ने के बाद अपरिहार्य रूप से मरेगा; चीजें उस स्तर तक विकसित हो चुकी हैं। कुछ बेतुके और मूर्ख लोग कहते हैं : "जब शैतान तुम्हारा शत्रु है, तो तुमने उसका सृजन क्यों किया? क्या तुम नहीं जानते थे कि प्रधान स्वर्गदूत तुम्हारे साथ विश्वासघात करेगा? क्या तुम अनंतकाल से अनंतकाल में नहीं झाँक सकते हो? क्या तुम उसका स्वभाव नहीं जानते थे? जब तुम्हें स्पष्ट रूप से पता था कि वह तुम्हारे साथ विश्वासघात करेगा, तो तुमने उसे प्रधान स्वर्गदूत क्यों बनाया? न सिर्फ़ उसने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया, बल्कि उसने कितने ही स्वर्गदूतों की अगुआई करते हुए उन्हें अपने साथ ले लिया और मनुष्यजाति को भ्रष्ट करने के लिए नश्वरों के संसार में उतर आया; फिर भी आज के दिन तक, तुम अपनी छह—हजार—वर्षीय प्रबंधन योजना को पूरा करने में असमर्थ रहे हो।" क्या ये शब्द सही हैं? जब तुम इस तरीके से सोचते हो, तो क्या तुम अपने-आपको आवश्यकता से अधिक संकट में नहीं डाल रहे हो? कुछ अन्य लोग हैं जो कहते हैं : "यदि शैतान ने वर्तमान समय तक मानवजाति को भ्रष्ट नहीं किया होता, तो परमेश्वर ने मानवजाति का इस प्रकार उद्धार नहीं किया होता। इस प्रकार, परमेश्वर की बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता अदृश्य ही रहते; उसकी बुद्धि कहाँ प्रकट होती? इसलिए परमेश्वर ने शैतान के लिए मानवजाति का सृजन किया; ताकि भविष्य में परमेश्वर अपनी सर्वशक्तिमत्ता प्रकट कर सके—अन्यथा मनुष्य परमेश्वर की बुद्धि को कैसे खोज सकता था? यदि मनुष्य ने परमेश्वर का प्रतिरोध नहीं किया और उसके प्रति विद्रोह नहीं किया होता, तो परमेश्वर की क्रियाओं की अभिव्यक्ति अनावश्यक होती। यदि संपूर्ण सृष्टि उसकी आराधना और उसका आज्ञापालन करे, तो परमेश्वर के पास करने के लिए कोई कार्य नहीं होगा।" यह वास्तविकता से और भी दूर है, क्योंकि परमेश्वर में कुछ भी गंदा नहीं है, और इसलिए वह गंदगी का सृजन नहीं कर सकता है। वह अब अपने कार्यों को केवल इसलिए प्रकट करता है ताकि अपने शत्रु को परास्त करे, अपने द्वारा सृजित मानव को बचाए, दुष्ट आत्माओं और शैतान को पराजित करे, जो उससे घृणा करते हैं, विश्वासघात करते हैं, और उसका प्रतिरोध करते हैं, जो बिल्कुल आरंभ में उसके अधिकार क्षेत्र के अधीन थे और उसी से संबंधित थे। वह इन दुष्ट आत्माओं को पराजित करना चाहता है और ऐसा करके वह सभी चीजों पर अपनी सर्वशक्तिमत्ता को प्रकट करता है। मानवजाति और पृथ्वी पर

सभी वस्तुएँ अब शैतान के अधिकार क्षेत्र के अधीन हैं और दुष्ट के अधिकार क्षेत्र के अधीन हैं। परमेश्वर अपने कार्यों को सभी चीजों पर प्रकट करना चाहता है ताकि लोग उसे जान सकें, और परिणामस्वरूप शैतान को पराजित और परमेश्वर के शत्रुओं को सर्वथा पस्त कर सकें। इस कार्य की समग्रता परमेश्वर की क्रियाओं के प्रकट होने के माध्यम से संपन्न होती है। उसकी सारी सृष्टि शैतान के अधिकार क्षेत्र में है, और इसलिए वह उन पर अपनी सर्वशक्तिमत्ता प्रकट करना चाहता है, और परिणामस्वरूप शैतान को पराजित करना चाहता है। यदि कोई शैतान नहीं होता, तो उसे अपने कार्यों को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती। यदि शैतान का उत्पीड़न न होता, तो परमेश्वर ने मानवजाति का सृजन किया होता और अदन की वाटिका में उनके रहने के लिए उनकी अगुवाई की होती। उसने शैतान के विश्वासघात से पहले स्वर्गदूतों या प्रधान स्वर्गदूत के लिए अपने समूचे क्रिया-कलाप को प्रकट क्यों नहीं किया? यदि स्वर्गदूतों और प्रधान स्वर्गदूत ने परमेश्वर को जान लिया होता और उसके अधीन हो गए होते, तो उसने कार्य के उन निरर्थक क्रिया-कलापों को नहीं किया होता। शैतान और दुष्ट आत्माओं के अस्तित्व की वजह से, मनुष्य भी परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं और विद्रोही स्वभाव से लबालब भरे हुए हैं। इसलिए परमेश्वर अपने क्रिया-कलापों को प्रकट करना चाहता है। चूंकि वह शैतान से युद्ध करना चाहता है, इसलिए शैतान को पराजित करने के लिए उसे अवश्य अपने अधिकार का उपयोग करना चाहिए और अपने सभी क्रिया-कलापों का उपयोग करना चाहिए; इस तरह, परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के बीच किया गया उद्धार का कार्य उन्हें उसकी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता को देखने देगा। आज परमेश्वर जो कार्य करता है, वह अर्थपूर्ण है, और किसी भी तरह से वैसा नहीं है जैसाकि कुछ लोग कहते हैं: "क्या तुम जो कार्य करते हो वह विरोधाभासी नहीं है? क्या कार्य का यह सिलसिला अपने आपको परेशानी में डालने के लिए किया गया काम नहीं है? तुमने शैतान का सृजन किया, फिर उसे तुम्हारे साथ विश्वासघात और तुम्हारा प्रतिरोध करने दिया। तुमने मानवजाति का सृजन किया, और फिर उसे शैतान को सौंप दिया, और तुमने आदम और हव्वा को प्रलोभित होने दिया। चूँकि तुमने यह सब कुछ जानबूझकर किया है, तो तुम मानवजाति से नफरत क्यों करते हो? तुम शैतान से नफरत क्यों करते हो? क्या ये चीजें तुम्हारे स्वयं के द्वारा बनाई हुई नहीं हैं? इसमें तुम्हारे लिए घृणा करने वाली क्या बात है?" बहुत से बेहूदा लोग इस तरह की बातें कहते हैं। वे परमेश्वर से प्रेम करना चाहते हैं, परंतु वे अपने हृदयों की गहराई में परमेश्वर के बारे में शिकायत करते हैं। कितनी विरोधाभासी बात है! तुम सत्य को नहीं समझते हो, तुम्हारे पास बहुत-से अलौकिक विचार हैं, और तुम यहाँ तक दावा करते हो कि

परमेश्वर ने गलती की है—तुम कितने बेहूदा हो! यह तुम्हीं हो जो सत्य के साथ हेराफेरी करते हो; इसलिए बात यह नहीं है कि परमेश्वर ने गलती की है! कुछ लोग तो बार-बार शिकायत करते हैं: "यह तुम ही थे जिसने शैतान का सृजन किया, और तुमने ही शैतान को मनुष्यों के बीच भेज दिया और उन्हें उसके हवाले कर दिया। मनुष्यों द्वारा शैतानी स्वभाव धारण कर लेने के बाद तुमने उन्हें क्षमा नहीं किया; इसके विपरीत, तुमने उनसे एक हद तक नफरत की। आरंभ में तुमने मनुष्य को एक हद तक प्रेम किया और अब तुम मानवजाति से नफरत करते हो। यह तुम ही हो जो मानवजाति से नफरत करते हो, लेकिन तुम वह भी हो जिसने मानवजाति से प्रेम किया है। आखिर यह क्या हो रहा है? क्या यह एक विरोधाभास नहीं है?" इस बात से फर्क नहीं पड़ता है कि तुम लोग इसे कैसे देखते हो, स्वर्ग में यही हुआ था; प्रधान स्वर्गदूत ने इसी तरीके से परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया, और मानवजाति को इसी प्रकार भ्रष्ट किया गया, और आज के दिन तक मनुष्य ऐसे ही चलता रहा है। इस बात से फर्क नहीं पड़ता है कि तुम इसे किन शब्दों में व्यक्त करते हो, पूरी कहानी यही है। फिर भी, तुम लोगों को यह अवश्य समझना चाहिए कि परमेश्वर वर्तमान में जो कार्य कर रहा है, उसका पूरा उद्देश्य तुम लोगों को बचाना और शैतान को पराजित करना है।

चूँकि स्वर्गदूत विशेष रूप से निर्बल थे और उनमें कोई उल्लेखनीय योग्यता नहीं थी, इसलिए अधिकार मिलते ही वे घमंडी बन जाते थे। प्रधान स्वर्गदूत के लिए यह विशेष रूप से सत्य था, जिसका पद किसी भी अन्य स्वर्गदूत से उच्चतर था। स्वर्गदूतों के मध्य एक राजा की तरह होते हुए उसने लाखों स्वर्गदूतों की अगुआई की, और यहोवा के अधीन उसका अधिकार किसी भी अन्य स्वर्गदूत से बढ़चढ़कर था। वह बहुत-सी चीजें करना चाहता था, और संसार पर नियंत्रण करने के लिए स्वर्गदूतों की अगुआई करके उन्हें मनुष्यों के संसार में ले जाना चाहता था। परमेश्वर ने कहा कि वह ब्रह्मांड का कर्ता-धर्ता है; किंतु प्रधान स्वर्गदूत ने दावा किया कि वह ब्रह्मांड का कर्ता-धर्ता है, और तभी से उसने परमेश्वर के साथ विश्वासघात कर दिया। स्वर्ग में, परमेश्वर ने एक अन्य संसार का सृजन किया था। प्रधान स्वर्गदूत उस संसार पर भी प्रशासन करना चाहता था और साथ ही नश्वर संसार में भी उतरना चाहता था। क्या परमेश्वर उसे ऐसा करने की अनुमति दे सकता था? इसलिए, उसने स्वर्गदूत पर प्रहार किया और उसे अधर में गिरा दिया। जबसे उसने मनुष्यों को भ्रष्ट किया, तबसे मनुष्यों के उद्धार के लिए परमेश्वर ने उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है; उसने इन छह सहस्राब्दियों का उपयोग उसे हराने के लिए किया है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विषय में तुम लोगों की अवधारणा परमेश्वर द्वारा वर्तमान में किए जा रहे कामों से असंगत है; यह पूरी

तरह अव्यवहारिक है और काफी हद तक गलत है! वास्तव में, परमेश्वर ने प्रधान स्वर्गदूत द्वारा विश्वासघात के बाद ही उसे अपना शत्रु घोषित कर दिया। अपने विश्वासघात के कारण ही नश्वर संसार में आने के बाद प्रधान स्वर्गदूत ने मानवजाति को कुचलना शुरू किया, और इसी कारण मानवजाति इस चरण तक पहुँच गई है। इसके बाद, परमेश्वर ने शैतान के सामने शपथ ली : "मैं तुझे पराजित करूँगा और मेरे द्वारा सृजित मनुष्यों को बचाऊँगा।" पहले-पहल तो शैतान को विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा, "तू आखिर मेरा क्या बिगाड़ सकता है? क्या तू मुझे वास्तव में प्रहार कर अधर में गिरा सकता है? क्या तू सच में मुझे पराजित कर सकता है?" जब परमेश्वर ने उसे अधर में गिरा दिया, उसके बाद उसने उस पर और ध्यान नहीं दिया और फिर, शैतान द्वारा निरंतर तंग किए जाने के बावजूद, उसने मानवजाति को बचाना और अपना कार्य करना शुरू कर दिया। शैतान बहुत कुछ कर सकता था, यह उसे परमेश्वर द्वारा पहले दी गई सामर्थ्य के कारण था; वह इन चीज़ों को अपने साथ अधर में ले गया और आज के दिन तक उन्हें धारण किए हुए है। स्वर्गदूत को प्रहार करके अधर में गिराते समय, परमेश्वर ने उसका अधिकार वापस नहीं लिया, और इसलिए वह मानवजाति को भ्रष्ट करता रहा। दूसरी ओर, परमेश्वर ने मानवजाति को बचाना आरंभ कर दिया, जिसे उनके सृजन के बाद ही शैतान ने भ्रष्ट कर दिया था। परमेश्वर ने स्वर्ग में रहने के दौरान अपने कार्यों को प्रकट नहीं किया; हालाँकि, पृथ्वी का सृजन करने से पहले, उसने स्वर्ग में सृजित संसार के लोगों को अवसर दिया कि वे उसके क्रिया-कलाप को देख सकें और इस प्रकार उसने लोगों की ऊपर स्वर्ग में अगुवाई की। उसने उन्हें बुद्धि और सूझबूझ दी, और उन लोगों की उस संसार में रहने में अगुवाई की। स्वाभाविक है कि तुम लोगों में से किसी ने भी यह पहले नहीं सुना है। बाद में, जब परमेश्वर ने मानवजाति का सृजन कर लिया तो प्रधान स्वर्गदूत ने मानवजाति को भ्रष्ट करना आरंभ कर दिया; पृथ्वी पर समस्त मानवजाति अराजकता में घिर गई। इसी समय परमेश्वर ने शैतान के विरुद्ध अपना युद्ध आरंभ कर दिया, और यह केवल इसी समय था कि लोगों ने उसके कर्मों को देखा। आरंभ में उसके क्रिया-कलाप मानवजाति से छिपे हुए थे। जब शैतान अधर में गिरा दिया गया तो उसने अपने काम किए और परमेश्वर ने अपने काम जारी रखे, और अंत के दिनों तक उसके विरुद्ध लगातार युद्ध करता रहा है। अब वह समय है जिसमें शैतान को नष्ट कर दिया जाना चाहिए। आरंभ में परमेश्वर ने उसे अधिकार दिया, बाद में उसने उसे अधर में गिरा दिया, मगर वह अवज्ञाकारी बना रहा। इसके बाद उसने पृथ्वी पर मानवजाति को भ्रष्ट किया, परंतु परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्यों का प्रबंधन कर रहा था। परमेश्वर लोगों के प्रबंधन का उपयोग शैतान को

पराजित करने के लिए करता है। लोगों को भ्रष्ट करके शैतान लोगों के भाग्य का अंत कर देता है और परमेश्वर के कार्य में व्यवधान उत्पन्न करता है। दूसरी ओर, परमेश्वर का कार्य मनुष्यों का उद्धार करना है। परमेश्वर के कार्य का कौनसा कदम मानवजाति को बचाने के अभिप्राय से नहीं है? कौनसा कदम लोगों को स्वच्छ बनाने, उनसे धार्मिक आचरण करवाने और उनके ऐसी छवि में ढल जाने के लिए नहीं है जिससे प्रेम किया जा सके? पर शैतान ऐसा नहीं करता है। वह मानवजाति को भ्रष्ट करता है; मानवजाति को भ्रष्ट करने के अपने कार्य को सारे ब्रह्मांड में निरंतर करता रहता है। निस्संदेह, परमेश्वर भी अपना स्वयं का कार्य करता है। वह शैतान की ओर जरा भी ध्यान नहीं देता है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि शैतान के पास कितना अधिकार है, उसे यह अधिकार परमेश्वर द्वारा ही दिया गया था; परमेश्वर ने उसे अपना पूरा अधिकार नहीं दिया था, और इसलिए वह चाहे जो कुछ करे, वह परमेश्वर से आगे नहीं बढ़ सकता और सदैव परमेश्वर की पकड़ में रहेगा। परमेश्वर ने स्वर्ग में रहने के समय अपने क्रिया-कलाप को प्रकट नहीं किया। उसने शैतान को स्वर्गदूतों पर नियंत्रण रखने की अनुमति देने के लिए उसे अपने अधिकार में से मात्र कुछ हिस्सा ही दिया था। इसलिए वह चाहे जो कुछ करे, वह परमेश्वर के अधिकार से बढ़कर नहीं हो सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने मूल रूप से उसे जो अधिकार दिया है वह सीमित है। जब परमेश्वर कार्य करता है, तो शैतान बाधा उत्पन्न करता है। अंत के दिनों में, उसकी बाधाएँ समाप्त हो जाएंगी; उसी तरह, परमेश्वर का कार्य भी पूरा हो जाएगा, और परमेश्वर जिस प्रकार के व्यक्ति को संपूर्ण बनाना चाहता है वह संपूर्ण बना दिया जाएगा। परमेश्वर लोगों को सकारात्मक रूप से निर्देशित करता है; उसका जीवन जीवित जल है, अगाध और असीम है। शैतान ने मनुष्य को एक हद तक भ्रष्ट किया है; अंत में, जीवन का जीवित जल मनुष्य को संपूर्ण बनाएगा, और शैतान के लिए हस्तक्षेप करना और अपना कार्य करना असंभव हो जायेगा। इस प्रकार, परमेश्वर इन लोगों को पूर्णतः प्राप्त करने में समर्थ हो जाएगा। शैतान अब भी इसे मानने से मना करता है; वह लगातार स्वयं को परमेश्वर के विरोध में खड़ा रखता है, परंतु परमेश्वर उस पर कोई ध्यान नहीं देता है। परमेश्वर ने कहा है, "मैं शैतान की सभी अँधेरी शक्तियों के ऊपर और उसके सभी अँधेरे प्रभावों के ऊपर विजय प्राप्त करूंगा।" यही वह कार्य है जो अब देह में अवश्य किया जाना चाहिए, और यही देहधारण को महत्वपूर्ण बनाता है : अर्थात अंत के दिनों में शैतान को पराजित करने के चरण को पूरा करना और शैतान से जुड़ी सभी चीज़ों को मिटाना। परमेश्वर की शैतान पर विजय अपरिहार्य है! वास्तव में शैतान बहुत पहले ही असफल हो चुका है। जब बड़े लाल अजगर के पूरे देश में सुसमाचार

फैलने लगा, अर्थात्, जब देहधारी परमेश्वर ने कार्य करना आरंभ किया, और यह कार्य गति पकड़ने लगा, तो शैतान बुरी तरह परास्त हो गया था, क्योंकि देहधारण का मूल उद्देश्य ही शैतान को पराजित करना था। जैसे ही शैतान ने देखा कि परमेश्वर एक बार फिर से देह बन गया और उसने अपना कार्य करना भी आरंभ कर दिया, जिसे कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती, तो जब उसने इस कार्य को देखा, तो वह अवाक रह गया और उसने कोई और शरारत करने का साहस नहीं किया। पहले-पहल तो शैतान ने सोचा कि उसके पास भी प्रचुर बुद्धि है, और उसने परमेश्वर के कार्य में बाधा और परेशानियाँ डालीं; लेकिन, उसने यह आशा नहीं की थी कि परमेश्वर एक बार फिर देह बन जाएगा, या अपने कार्य में, परमेश्वर शैतान के विद्रोहीपन को मानवजाति के लिए प्रकटन और न्याय के रूप में काम में लायेगा, और परिणामस्वरूप मानवजाति को जीतेगा और शैतान को पराजित करेगा। परमेश्वर शैतान की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान है, और उसका कार्य शैतान के कार्य से बहुत बढ़कर है। इसलिए, जैसा मैंने पहले कहा था : "मैं जिस कार्य को करता हूँ वह शैतान की चालबाजियों के प्रत्युत्तर में किया जाता है; अंत में, मैं अपनी सर्वशक्तिमत्ता और शैतान की सामर्थ्यहीनता को प्रकट करूँगा।" परमेश्वर अपना कार्य सामने आकर करेगा तो शैतान पीछे छूट जाएगा, जब तक कि अंत में वह अंततः नष्ट नहीं हो जाता है—उसे पता भी नहीं चलेगा कि उस पर किसने प्रहार किया! कुचलकर चूर—चूर कर दिए जाने के बाद ही उसे सत्य का ज्ञान होगा; उस समय तक उसे पहले से ही आग की झील में जला दिया गया होगा। तब क्या वह पूरी तरह से विश्वस्त नहीं हो जाएगा? क्योंकि उसके पास चलने के लिए और कोई चालें नहीं होंगी!

यह कदम-दर-कदम वास्तविक कार्य ही है जो मानवजाति के प्रति दुख के कारण परमेश्वर के हृदय को अक्सर बोझिल करता है, जिसकी वजह से शैतान के साथ उसका युद्ध छह हज़ार साल तक चला है। परमेश्वर ने कहा है : "मैं फिर कभी मानवजाति का सृजन नहीं करूँगा और न ही मैं स्वर्गदूतों को अधिकार प्रदान करूँगा।" उसके बाद से, जब स्वर्गदूत पृथ्वी पर कुछ कार्य के लिए आए, तो उन्होंने कुछ कार्य करने के लिए मात्र परमेश्वर का अनुसरण किया। उसने स्वर्गदूतों को फिर कभी भी कोई अधिकार नहीं दिया। उन स्वर्गदूतों ने अपना कार्य कैसे किया था जिन्हें इस्राएलियों ने देखा था? वे स्वयं को सपनों में प्रकट करते थे और यहोवा के वचनों को दूसरों तक पहुँचाते थे। जब सलीब पर चढ़ाए जाने के तीन दिन बाद यीशु पुनर्जीवित हुए, तो ये स्वर्गदूत ही थे जिन्होंने शिलाखंड को एक ओर धकेला था; परमेश्वर के आत्मा ने व्यक्तिगत रूप में यह कार्य नहीं किया था। स्वर्गदूतों ने केवल इस प्रकार के कार्य ही किए; उन्होंने

सहायक की भूमिका निभाई, लेकिन उनके पास कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि परमेश्वर दोबारा उन्हें कभी भी कोई अधिकार नहीं देगा। कुछ समय तक कार्य करने के बाद, परमेश्वर ने जिन लोगों को पृथ्वी पर उपयोग किया था, उन्होंने परमेश्वर का स्थान ले लिया और कहा, "मैं ब्रह्मांड से बढ़कर होना चाहता हूँ! मैं तीसरे स्वर्ग में खड़ा होना चाहता हूँ! हम सार्वभौम सत्ता की कमान थामना चाहते हैं!" कुछ दिनों तक कार्य करने के बाद वे घमंडी बन जाते थे; वे पृथ्वी पर सार्वभौम सत्ता पाना चाहते थे, वे एक अन्य राष्ट्र स्थापित करना चाहते थे, वे सब चीजों को अपने कदमों के नीचे चाहते थे, और तीसरे स्वर्ग में खड़े होना चाहते थे। क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम परमेश्वर के द्वारा उपयोग किए गए एक मनुष्य मात्र हो? तुम तीसरे स्वर्ग तक कैसे आरोहण कर सकते हो? परमेश्वर पृथ्वी पर शांति से और बिना शोर किए कार्य करने के लिए आता है, और अपना कार्य पूरा करने के बाद चुपचाप चला जाता है। वह कभी भी मनुष्यों के समान हो-हल्ला नहीं करता है, बल्कि अपना कार्य करने में व्यवहारिक है। न ही वह कभी किसी कलीसिया में जाकर चिल्लाता है, "मैं तुम सब लोगों को मिटा दूँगा! मैं तुम्हें शाप दूँगा, और तुम लोगों को ताड़ना दूँगा!" वह बस अपना कार्य करता रहता है, और जब वह समाप्त कर लेता है तो चला जाता है। वे धार्मिक पादरी जो बीमारों को चंगा करते हैं और दुष्ट आत्माओं को निकालते हैं, मंच से दूसरों को व्याख्यान देते हैं, लंबे और आडंबरपूर्ण भाषण देते हैं, और अवास्तविक मामलों की चर्चा करते हैं, वे सभी भीतर तक अहंकारी हैं! वे प्रधान स्वर्गदूत के वंशज हैं!

आज के दिन तक अपने छह हज़ार वर्षों का कार्य करते हुए, परमेश्वर ने अपने बहुत से क्रिया-कलाप को पहले ही प्रकट कर दिया है, जनका प्राथमिक प्रयोजन शैतान को पराजित करना और समस्त मानवजाति के लिए उद्धार लाना रहा है। वह स्वर्ग की हर चीज, पृथ्वी के ऊपर की हर चीज और समुद्र के अंदर की हर चीज और साथ ही पृथ्वी पर परमेश्वर के सृजन के हर अंतिम पदार्थ को परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता को देखने और परमेश्वर के समूचे क्रिया-कलाप को देखने की अनुमति देने के लिए इस अवसर का उपयोग करता है। वह शैतान को पराजित करने से प्राप्त हुए इस अवसर का उपयोग, मानवजाति पर अपने समूचे क्रिया-कलाप को प्रकट करने, लोगों को अपनी स्तुति के लिए सक्षम बनाने और शैतान को पराजित करने वाली अपनी बुद्धि का गुणगान करने में समर्थ बनाने के लिए करता है। पृथ्वी पर, स्वर्ग में, और समुद्र के भीतर की प्रत्येक वस्तु परमेश्वर की जय-जयकार करती है, उसकी सर्वशक्तिमत्ता का स्तुतिगान करती है, उसके सभी कर्मों का स्तुतिगान करती है, और उसके पवित्र नाम

को ऊँचे स्वर में पुकारती है। यह उसके द्वारा शैतान की पराजय का प्रमाण है; यह शैतान पर उसकी विजय का प्रमाण है। और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण, यह उसके द्वारा मानवजाति के उद्धार का प्रमाण है। परमेश्वर की समस्त सृष्टि उसकी जय-जयकार करती है, अपने शत्रु को पराजित करने और विजयी होकर लौटने के लिए उसका स्तुतिगान करती है और एक महान विजयी राजा के रूप में उसका स्तुतिगान करती है। उसका उद्देश्य केवल शैतान को पराजित करना नहीं है, इसीलिए उसका कार्य छह हज़ार वर्ष तक जारी रहा। वह मानवजाति को बचाने के लिए शैतान की पराजय का उपयोग करता है; वह अपने सभी क्रिया-कलापों को प्रकट करने के लिए और अपनी सारी महिमा को प्रकट करने के लिए शैतान की पराजय का उपयोग करता है। वह महिमा प्राप्त करेगा, और स्वर्गदूतों का समस्त जमघट उसकी संपूर्ण महिमा को देखेगा। स्वर्ग में दूत, पृथ्वी पर मनुष्य, और पृथ्वी पर समस्त सृष्टि सृजनकर्ता की महिमा को देखेंगे। यही वह कार्य है जो वह करता है। स्वर्ग में और पृथ्वी पर उसकी सृष्टि, सभी उसकी महिमा को देखेंगे और वह शैतान को सर्वथा पराजित करने के बाद विजयोल्लास के साथ वापस लौटेगा, और मानवजाति को अपनी प्रशंसा करने देगा, इस प्रकार वह अपने कार्य में दोहरी विजय प्राप्त करेगा। अंत में समस्त मानवजाति उसके द्वारा जीत ली जाएगी, और वह ऐसे हर व्यक्ति को मिटा देगा जो उसका विरोध या विद्रोह करेगा, अर्थात्, वह उन सभी को मिटा देगा जो शैतान से संबंधित हैं। वर्तमान में तुम परमेश्वर के बहुत-से क्रिया-कलाप को देख रहे हो, मगर तब भी तुम प्रतिरोध करते हो और विद्रोही हो, और समर्पण नहीं करते हो; तुम अपने भीतर बहुत सी चीज़ों को आश्रय देते हो, और वही करते हो जो तुम चाहते हो; तुम अपनी वासनाओं और अपनी पसंद का अनुसरण करते हो; यह विद्रोहीपन और प्रतिरोध है। परमेश्वर पर वह विश्वास जो देह के लिए, वासनाओं के लिए, अपनी खुद की पसंद के लिए, संसार के लिए, और शैतान के लिए किया जाता है, वह कलुषित है; वह प्रकृति से प्रतिरोधी व विद्रोही है। आज सभी भिन्न-भिन्न प्रकार के विश्वास हैं : कुछ आपदा से बचने के लिए आश्रय खोजते हैं, अन्य आशीषें प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं; जबकि कुछ रहस्यों को समझना चाहते हैं, और कुछ अन्य कुछ धन पाने का प्रयास करते हैं; ये सभी प्रतिरोध के रूप हैं; ये सब ईशनिंदा के प्रतीक हैं! यह कहना कि कोई व्यक्ति प्रतिरोध या विद्रोह करता है—क्या यह इन व्यवहारों के संदर्भ में नहीं है? बहुत-से लोग आजकल बड़बड़ाते हैं, शिकायतें करते हैं या आलोचनाएँ करते हैं। ये सभी चीजें दुष्टों के द्वारा की जाती हैं; वे मानव प्रतिरोध और विद्रोहीपन के उदाहरण हैं; ऐसे व्यक्ति शैतान के अधिकार और नियंत्रण में होते हैं। जिन लोगों को परमेश्वर प्राप्त कर

लेता है, वे ऐसे लोग होते हैं जो पूर्ण रूप से उसके प्रति समर्पण करते हैं, जो शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिए गये हैं, किंतु अब परमेश्वर के वर्तमान कार्य के द्वारा बचा लिए और जीत लिए गए हैं, जिन्होंने क्लेशों को सहा है और अंत में परमेश्वर के द्वारा पूर्णतः प्राप्त कर लिए गए हैं, तथा अब शैतान के अधिकार क्षेत्र में नहीं रहे हैं, और अधार्मिकता से पूरी तरह मुक्त हो गए हैं, जो पवित्रता को जीना चाहते हैं—ये ही सबसे अधिक पवित्र लोग हैं; ये ही सचमुच पवित्र लोग हैं। यदि तुम्हारे वर्तमान क्रिया-कलाप परमेश्वर की अपेक्षाओं के एक भाग से भी मेल नहीं खाते हैं, तो तुम्हें हटा दिया जाएगा। यह निर्विवाद है। सब कुछ इस बात पर निर्भर है कि अब क्या होता है; यद्यपि तुम पूर्वनियत कर दिए गए हो और चुन लिए गए हो, किंतु फिर भी आज के तुम्हारे क्रिया-कलाप ही तुम्हारा परिणाम निर्धारित करेंगे। यदि आज तुम कदम-से-कदम नहीं मिला सकते हो तो तुम्हें हटा दिया जाएगा। यदि तुम आज कदम-से-कदम नहीं मिला सकते हो, तो तुम बाद में ऐसा कैसे करोगे? इतना बड़ा चमत्कार तुम्हारे सामने प्रकट हो चुका है, फिर भी तुम विश्वास नहीं करते हो। तो बाद में तुम उस पर कैसे विश्वास करोगे, जब वह अपना कार्य समाप्त कर लेगा और आगे ऐसा और कार्य नहीं करेगा? उस समय तुम्हारे लिए उसका अनुसरण करना और भी अधिक असंभव होगा! बाद में यह निर्धारित करने के लिए कि तुम पापी हो या धार्मिक हो, या यह निर्धारित करने के लिए कि तुम्हें पूर्ण बनाया जाना है या हटा दिया जाना है, परमेश्वर तुम्हारी प्रवृत्ति पर और देहधारी परमेश्वर के कार्य के प्रति तुम्हारे ज्ञान और तुम्हारे अनुभव पर निर्भर करेगा। तुम्हें अब यह स्पष्ट रूप से देख लेना चाहिए। पवित्र आत्मा इसी तरह से कार्य करता है : वह आज के तुम्हारे व्यवहार के अनुसार तुम्हारा परिणाम निर्धारित करता है। आज के वचन कौन बोलता है? आज का कार्य कौन करता है? कौन तय करता है कि आज तुम्हें निकाल दिया जाएगा? कौन तुम्हें पूर्ण बनाना तय करता है? क्या यह वह नहीं है जो मैं स्वयं करता हूँ? मैं ही वह हूँ जो इन वचनों को बोलता हूँ; मैं ही वह हूँ जो इस काम को संपन्न करता हूँ। लोगों को शाप देना, ताड़ना देना, और उनका न्याय करना ये सभी मेरे कार्य के हिस्से हैं। अंत में, तुम्हें हटा देना भी मुझ पर निर्भर करेगा! सब मेरा ही कार्य है! तुम्हें पूर्ण बनाना मेरा कार्य है, और तुम्हें अपनी आशीषों का आनंद लेने देना भी मेरा कार्य है। यह सब मेरा कार्य है जो मैं करता हूँ। तुम्हारा परिणाम यहोवा के द्वारा पूर्वनियत नहीं किया गया था; यह आज के परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किया जाता है। यह ठीक इस समय निर्धारित किया जा रहा है; यह बहुत पहले संसार का सृजन किए जाने से पूर्व निर्धारित नहीं किया गया था। कुछ बेतुके लोग कहते हैं, "संभवतः तुम्हारी आँखों में कुछ खराबी है, और तुम मुझे उस तरह से नहीं देखते हो, जिस तरह से तुम्हें

देखना चाहिए। अंत में तुम देखोगे कि पवित्र आत्मा आखिर क्या प्रकट करता है!" यीशु ने मूलरूप से यहूदा को अपने शिष्य के रूप में चुना था। लोग पूछते हैं, "यीशु कैसे किसी ऐसे शिष्य को चुन सकता था, जो उसके साथ विश्वासघात करेगा?" पहली बात तो यहूदा का यीशु के साथ विश्वासघात का कोई इरादा नहीं था; यह तो बाद में हुआ। उस समय, यीशु ने यहूदा को काफी कृपादृष्टि से देखा था; उसने उस मनुष्य से अपना अनुसरण करवाया, और उसे उनके आर्थिक मामलों के लिए उत्तरदायी बनाया। यदि वह जानता कि यहूदा धन का गबन करेगा, तो वह उसे ऐसे मामलों का प्रभारी नहीं बनाता। कहा जा सकता है कि यीशु शुरू में यह नहीं जानता था कि यह व्यक्ति कुटिल और धोखेबाज़ है, या वह अपने भाइयों और बहनों के साथ धोखाधड़ी करेगा। बाद में यहूदा द्वारा कुछ समय तक अनुसरण किए जाने के बाद, यीशु ने उसे अपने भाइयों और बहनों को फुसलाते हुए, और परमेश्वर को फुसलाते हुए देखा। लोगों को यह भी पता चल गया कि उसे पैसों के थैले में से पैसे निकालने की आदत थी, और तब उन्होंने यीशु को इसके बारे में बताया। तब जाकर यीशु को ये सब बातें पता चलीं। क्योंकि यीशु सलीब पर चढ़ने के अपने कार्य को संपन्न करने वाला था, और उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उसके साथ विश्वासघात करे, और यहूदा इस भूमिका को निभाने के लिए बिल्कुल सही व्यक्ति लग रहा था, इसलिए यीशु ने कहा, "तुम में से कोई एक होगा जो मेरे साथ विश्वासघात करेगा। मनुष्य का पुत्र इस विश्वासघात को सलीब पर चढ़ाए जाने के लिए उपयोग करेगा और तीन दिन में पुनर्जीवित हो जाएगा।" उस समय, वास्तव में यीशु ने यहूदा को नहीं चुना था कि वह उसके साथ विश्वासघात करे; इसके विपरीत वह आशा करता था कि यहूदा एक स्वामिभक्त शिष्य बनेगा। पर अनपेक्षित रूप से, यहूदा ऐसा अधम लालची निकला जिसने प्रभु के साथ विश्वासघात कर दिया, और इसलिए यीशु ने इस काम के लिए यहूदा का चयन करने के लिए इस स्थिति का उपयोग किया। यदि यीशु के सभी बारह चेले निष्ठावान होते, और उनमें यहूदा जैसा कोई नहीं होता, तो यीशु के साथ विश्वासघात करने वाला व्यक्ति अंततः चेलों की बजाय कोई और व्यक्ति होता। परंतु, उस समय ऐसा हुआ कि शिष्यों में ही एक ऐसा था जिसे रिश्वत लेना अच्छा लगता था : यहूदा। इसलिए यीशु ने अपने कार्य को पूरा करने के लिए इस व्यक्ति का उपयोग किया। यह कितना आसान था! यीशु ने अपने कार्य के आरंभ में यह पूर्व-निर्धारित नहीं किया था; उसने यह निर्णय तब लिया जब चीजें एक निश्चित स्तर तक विकसित हो गईं। यह यीशु का निर्णय था, यानी, स्वयं परमेश्वर के आत्मा का निर्णय था। मूल रूप से यह यीशु था जिसने यहूदा को चुना था; जब बाद में यहूदा ने यीशु के साथ विश्वासघात किया, तो यह अपने

लक्ष्य को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा का कार्य था। उस समय यह पवित्र आत्मा द्वारा संपन्न किया गया कार्य था। जब यीशु ने यहूदा को चुना, तब उसे पता नहीं था कि यहूदा उसके साथ विश्वासघात करेगा। वह केवल इतना जानता था कि वह यहूदा इस्करियोती है। तुम लोगों के परिणाम भी आज तुम लोगों के समर्पण के स्तर के अनुसार और तुम लोगों के जीवन की उन्नति के स्तर के अनुसार निर्धारित होते हैं, किसी ऐसी मानवीय धारणा के अनुसार नहीं कि तुम्हारा परिणाम विश्व के सृजन के समय से ही पूर्वनियत हो चुका है। तुम्हें इन सब बातों को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। यह संपूर्ण कार्य वैसे नहीं किया जाता जैसी तुम कल्पना करते हो।

पदवियों और पहचान के सम्बन्ध में

यदि तुम परमेश्वर द्वारा उपयोग के लिए उपयुक्त होने की कामना करते हो तो तुम्हें परमेश्वर के कार्य के बारे में अवश्य जानना चाहिए, तुम्हें उस कार्य को अवश्य जानना चाहिए जो उसने पहले किया था (नए और पुराने नियमों में); और, इसके अतिरिक्त, तुम्हें उसके वर्तमान कार्य को भी अवश्य जानना चाहिए जिसका तात्पर्य है, तुम्हें 6,000 वर्षों में परमेश्वर द्वारा सम्पन्न कार्य के तीनों चरणों को अवश्य जानना चाहिए। यदि तुम्हें सुसमाचार फैलाने के लिए कहा जाता है, तो तुम परमेश्वर के कार्य को जाने बिना ऐसा करने में समर्थ नहीं होंगे। कोई तुमसे इस बारे में पूछ सकता है कि बाइबल, पुराने नियम और उस समय यीशु के कार्य और वचनों के बारे में तुम लोगों के परमेश्वर ने क्या कहा है। यदि तुम बाइबल की अंदरूनी कहानी नहीं बता सकते, तो वे आश्वस्त नहीं होंगे। उस समय, यीशु ने अपने चेलों के साथ पुराने नियम के बारे में काफ़ी बात की थी। उनके द्वारा पढ़ी गई हर एक चीज़, पुराने नियम में से ही थी; नया नियम तो यीशु को सलीब पर चढ़ाये जाने के अनेक दशकों बाद लिखा गया था। सुसमाचार फैलाने के लिए, सैद्धान्तिक रूप से तुम लोगों को बाइबल के भीतर की सच्चाई को और इस्राएल में परमेश्वर के कार्य को, यानि यहोवा द्वारा किये गए कार्य को समझना चाहिए और तुम लोगों को यीशु द्वारा किए गए कार्य को भी समझना है। ये ऐसे मामले हैं जिनके बारे में सभी लोग सर्वाधिक चिन्तित रहते हैं, और कार्य के उन दो चरणों की कहानी वह है जिसे उन्होंने नहीं सुना है। सुसमाचार को फैलाते समय, पहले पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्य की बात को एक तरफ रख दो। कार्य का यह चरण उनकी पहुँच से परे है, क्योंकि जिसकी तुम लोग खोज करते हो, वह सर्वोच्च है—परमेश्वर का ज्ञान, और पवित्र आत्मा के कार्य का ज्ञान—और इन

दोनों की तुलना में कोई भी चीज़ अधिक उत्कृष्ट नहीं है। यदि तुम पहले उसके बारे में बात करो जो सर्वोच्च है, तो यह उनके लिए बहुत ज्यादा होगा, क्योंकि किसी ने भी पवित्र आत्मा द्वारा किये गए ऐसे कार्य का अनुभव नहीं किया है; इसकी कोई मिसाल नहीं है, और इसे स्वीकार करना मनुष्य के लिए आसान नहीं है। उनके अनुभव, पवित्र आत्मा के द्वारा कभी-कभार किये गये कुछ कार्य के साथ, अतीत की पुरानी बातें हैं। जो वे अनुभव करते हैं वह पवित्र आत्मा का आज का कार्य, या आज परमेश्वर की इच्छा नहीं है। वे अभी भी, किसी नई रोशनी, या नई चीज़ों के बिना, पुराने अभ्यासों के अनुसार कार्य करते हैं।

यीशु के युग में, पवित्र आत्मा ने मुख्य रूप से अपना कार्य यीशु में किया था, जबकि ऐसे लोग जो मन्दिर में याजकीय पोशाक पहन कर यहोवा की सेवा करते थे, वे अटल वफादारी के साथ ऐसा करते थे। उनके पास भी पवित्र आत्मा का कार्य था, परन्तु वे परमेश्वर की वर्तमान इच्छा को समझने में असमर्थ थे, और किसी नए मार्गदर्शन के बिना, पुराने अभ्यासों के अनुसार मात्र यहोवा के प्रति निष्ठावान बने रहे। यीशु नया कार्य लेकर आया था, फिर भी जो मन्दिर में सेवा करते थे, उनके पास नया मार्गदर्शन नहीं था, न ही उनके पास नया कार्य था। मन्दिर में सेवा करते हुए वे मात्र पुराने अभ्यासों को बनाए रख सकते थे और मन्दिर को छोड़े बिना, वे कोई नया प्रवेश पाने में असमर्थ थे। नया कार्य यीशु द्वारा लाया गया था, और यीशु अपना कार्य करने के लिए मन्दिर में नहीं गया था। उसने अपना कार्य सिर्फ मन्दिर के बाहर ही किया था क्योंकि परमेश्वर के कार्य का दायरा बहुत पहले ही बदल चुका था। उसने मन्दिर के भीतर कार्य नहीं किया, जब मनुष्य वहाँ परमेश्वर की सेवा करता था, तो इससे चीज़ों को सिर्फ़ यथावत बनाए रखा जा सकता था, और कोई नया कार्य नहीं लाया जा सकता था। इसी तरह, धार्मिक लोग आज भी बाइबल की आराधना करते हैं। यदि तुम उनमें सुसमाचार फैलाओगे, तो वे बाइबल के वचनों के छोटे-छोटे विवरणों से तुम पर हमला कर देंगे और बहुत से सबूत ढूंढ लाएँगे और तुम्हें हक्का-बक्का और निरुत्तर कर देंगे; फिर वे तुम पर एक लेबल लगा देंगे और सोचेंगे कि अपनी आस्था के मामले में तुम लोग मूर्ख हो। वे कहेंगे, "तुम बाइबल, परमेश्वर के वचन तक को तो जानते नहीं हो, तो तुम कैसे कह सकते हो कि तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो?" तब वे तुम्हें तुच्छ जानेंगे, और यह भी कहेंगे, "चूँकि वह एक, जिस पर तुम लोग विश्वास करते हो, परमेश्वर है, तो वह तुम लोगों को पुराने नियम और नए नियम के बारे में सब कुछ क्यों नहीं बताता है? चूँकि उसने अपनी महिमा को इस्राएल से पूर्व की ओर पहुँचाया है, तो वह इस्राएल में किये गए कार्य को क्यों नहीं जानता है? वह यीशु के कार्य को क्यों नहीं जानता है? यदि तुम लोग नहीं जानते हो, तो

इससे साबित होता है कि तुम लोगों को बताया नहीं गया है; चूँकि वह यीशु का दूसरा देहधारण है, तो ऐसा कैसे हो सकता है कि वह इन चीज़ों को न जाने? यीशु यहोवा के द्वारा किये गए कार्य को जानता था; वह कैसे नहीं जान सकता था?" जब समय आएगा, तो वे सब तुमसे ऐसे प्रश्न पूछेंगे? उनके सिर ऐसी चीज़ों से भरे हुए हैं; वे कैसे न पूछें? जो लोग इस धारा के भीतर हैं वे बाइबल पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते हैं, क्योंकि तुम लोग आज परमेश्वर के द्वारा किये गए कदम-दर-कदम कार्य से अवगत रहे हो, तुम लोगों ने अपनी आँखों से इस कदम-दर-कदम कार्य को देखा है, तुम लोगों ने कार्य के तीनों चरणों को स्पष्ट रूप से देखा है, और इसलिए तुम लोगों को बाइबल को नीचे रख देना और इसका अध्ययन बन्द कर देना चाहिए था। परन्तु वे इसका अध्ययन नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उन्हें इस कदम-दर-कदम कार्य का कोई ज्ञान नहीं है। कुछ लोग पूछेंगे, "देहधारी परमेश्वर के द्वारा किये गए कार्य और अतीत के भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों द्वारा किये गए कार्य में क्या अन्तर है? दाऊद को भी प्रभु कहकर पुकारा गया था, और उसी प्रकार यीशु को भी; यद्यपि उन्होंने जो कार्य किया वह भिन्न था, फिर भी उन्हें एक जैसे ही नाम से पुकारा गया था। मुझे बताओ उनकी पहचान एक जैसी क्यों नहीं थी? जिसकी यूहन्ना ने गवाही दी थी वह एक दर्शन था, ऐसा दर्शन जो पवित्र आत्मा से भी आया था, और वह उन वचनों को कहने में समर्थ था जो पवित्र आत्मा ने कहने का इरादा किया था; तो यूहन्ना की पहचान यीशु से भिन्न क्यों है?" यीशु के द्वारा कहे गए वचन परमेश्वर का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करने में समर्थ थे और वे परमेश्वर के कार्य का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करते थे। जो यूहन्ना ने देखा वह एक दर्शन था, और वह परमेश्वर के कार्य का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ था। ऐसा क्यों है कि यूहन्ना, पतरस और पौलुस ने बहुत से वचन कहे—जैसे यीशु ने कहे थे—फिर भी उनके पास यीशु के समान पहचान नहीं थी? मुख्य रूप से ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने जो कार्य किया वह भिन्न था। यीशु ने परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व किया, और वह परमेश्वर का आत्मा था जो सीधे तौर पर कार्य कर रहा था। उसने नये युग का कार्य किया, ऐसा कार्य जिसे पहले कभी किसी ने नहीं किया था। उसने एक नया मार्ग प्रशस्त किया, उसने यहोवा का प्रतिनिधित्व किया, और उसने स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया जबकि पतरस, पौलुस और दाऊद, इस बात की परवाह किए बिना कि उन्हें क्या कहकर पुकारा जाता था, उन्होंने केवल परमेश्वर के एक प्राणी की पहचान का प्रतिनिधित्व किया था, और उन्हें यीशु या यहोवा द्वारा भेजा गया था। इसलिए भले ही उन्होंने कितना ही काम क्यों न किया हो, भले ही उन्होंने कितने ही बड़े चमत्कार क्यों न किये हों, वे तब भी बस परमेश्वर के

प्राणी ही थे, और परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ थे। उन्होंने परमेश्वर के नाम पर या परमेश्वर द्वारा भेजे जाने के बाद ही कार्य किया था; इससे भी बढ़कर, उन्होंने यीशु या यहोवा द्वारा शुरू किए गए युगों में कार्य किया था, और उन्होंने जो कार्य किया वह पृथक नहीं था। आख़िरकार, वे मात्र परमेश्वर के प्राणी ही थे। पुराने नियम में, बहुत सारे भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणियाँ की थीं, या भविष्यवाणी की पुस्तकें लिखी थीं। किसी ने भी नहीं कहा था कि वे परमेश्वर हैं, परन्तु जैसे ही यीशु ने कार्य करना आरम्भ किया, परमेश्वर के आत्मा ने उसकी गवाही दी कि वह परमेश्वर है। ऐसा क्यों है? इस बिन्दु पर यह तुम्हें पहले से ही जान लेना चाहिए! इससे पहले, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने विभिन्न धर्मपत्र लिखे, और बहुत सी भविष्यवाणियाँ कीं। बाद में, लोगों ने बाइबल में रखने के लिए उनमें से कुछ को चुन लिया और कुछ खो गई थीं। चूँकि ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि उनके द्वारा बोला गया सब कुछ पवित्र आत्मा से आया, तो क्यों इसमें से कुछ को अच्छा माना जाता है, और कुछ को खराब? और क्यों कुछ को चुना गया था और अन्यों को नहीं? यदि वे वाकई में पवित्र आत्मा के द्वारा कहे गए वचन होते, तो क्या लोगों को उनका चयन करने की आवश्यकता होती? क्यों यीशु द्वारा बोले गए वचनों और उसके कार्यों का विवरण चारों सुसमाचारों में से प्रत्येक में भिन्न है? क्या यह उन लोगों का दोष नहीं हैं जिन्होंने इसे दर्ज किया? कुछ लोग पूछेंगे, "चूँकि पौलुस और नए नियम के अन्य लेखकों द्वारा लिखे गए धर्मपत्र और उनके द्वारा किए गए कार्य आंशिक रूप से मनुष्य की इच्छा से आये थे, और मनुष्य की धारणाओं से मिश्रित हो गए थे, तो क्या उन वचनों में कोई मानवीय अशुद्धता नहीं है जिन्हें आज तुम (परमेश्वर) बोलते हो, क्या उनमें वास्तव में कोई भी मानवीय धारणा शामिल नहीं है?" परमेश्वर के द्वारा किये गए कार्य का यह चरण पौलुस और अनेक प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा किये गए कार्य से पूरी तरह से भिन्न है। न केवल यहाँ पहचान में अन्तर है, बल्कि, मुख्य रूप से, कार्यान्वित किए गए कार्य में भी अन्तर है। जब पौलुस को नीचे गिराया गया और वह प्रभु के सामने गिर पड़ा उसके पश्चात्, कार्य करने के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा उसकी अगुवाई की गई थी, और वह ऐसा बन गया था जिसे भेजा गया था। इसलिए उसने कलीसियाओं को धर्मपत्र लिखे, और इन सभी धर्मपत्रों ने यीशु की शिक्षाओं का अनुसरण किया था। पौलुस को प्रभु यीशु के नाम पर कार्य करने के लिए प्रभु के द्वारा भेजा गया था, परन्तु जब परमेश्वर स्वयं आया, तो उसने किसी नाम से कार्य नहीं किया, तथा अपने कार्य में किसी और का नहीं बल्कि परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व किया। परमेश्वर अपने कार्य को सीधे तौर पर करने के लिए आया:उसे मनुष्य के द्वारा सिद्ध नहीं बनाया

गया था, और उसके कार्य को किसी मनुष्य की शिक्षाओं के आधार पर कार्यान्वित नहीं किया गया था। कार्य के इस चरण में परमेश्वर अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बात करने के द्वारा अगुवाई नहीं करता है, बल्कि जो कुछ उसके पास है उसके अनुसार अपने कार्य को सीधे तौर पर कार्यान्वित करता है। उदाहरण के लिए, सेवा करने वालों की परीक्षा, ताड़ना का समय, मृत्यु की परीक्षा, परमेश्वर से प्रेम करने का समय...। यह सब वह कार्य है जो पहले कभी नहीं किया गया है, और ऐसा कार्य है जो, मनुष्य के अनुभवों के बजाय, वर्तमान युग का है। उन वचनों में जो मैंने कहे है, मनुष्य के अनुभव कौन से हैं? क्या वे सब सीधे तौर पर पवित्रात्मा से नहीं आते हैं, और क्या वे पवित्रात्मा के द्वारा जारी नहीं किये जाते हैं? बस इतना ही है कि तुम्हारी क्षमता इतनी कम है कि तुम सत्य को देखने में असमर्थ हो! जीवन का वह व्यावहारिक तरीका जिसकी मैं बात करता हूँ, पथ के मार्गदर्शन के लिए है, और इसे किसी के द्वारा पहले कभी नहीं कहा गया है, न ही कभी किसी ने इस पथ का अनुभव किया है, या इसकी वास्तविकता को जाना है। इन वचनों को मेरे कहने से पहले, किसी ने कभी नहीं कहा था। किसी ने कभी ऐसे अनुभवों के बारे में बात नहीं की थी, न ही उन्होंने कभी ऐसे विवरणों को कहा था, और, इससे भी बढ़ कर, किसी ने भी इन चीज़ों को प्रकट करने के लिए ऐसी अवस्थाओं की ओर कभी संकेत नहीं किया था। किसी ने कभी भी उस पथ की अगुवाई नहीं की जिसकी अगुवाई आज मैं करता हूँ, और यदि इसकी अगुवाई मनुष्य के द्वारा की जाती, तो यह एक नया मार्ग नहीं होता। उदाहरण के लिए, पौलुस और पतरस को लें। उनके पास यीशु द्वारा पथ की अगुआई किए जाने से पहले अपने स्वयं के कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं थे। जब यीशु ने उस पथ की अगुवाई की केवल उसके बाद ही उन्होंने यीशु के द्वारा बोले गए वचनों का, और उसके द्वारा अगुआई किए गए पथ का अनुभव किया; इससे उन्होंने अनेक अनुभव अर्जित किए, और धर्मपत्रों को लिखा। और इस प्रकार, मनुष्य के अनुभव परमेश्वर के कार्य के समान नहीं हैं, और परमेश्वर का कार्य उस ज्ञान के समान नहीं है जैसा मनुष्य की धारणाओं और अनुभवों के द्वारा वर्णन किया जाता है। मैंने बार-बार कहा है कि मैं एक नए पथ की अगुवाई कर रहा हूँ, और नया कार्य कर रहा हूँ, और मेरा कार्य और मेरे कथन यूहन्ना और अन्य सभी भविष्यवक्ताओं से भिन्न हैं। मैं कभी भी ऐसा नहीं करता हूँ कि पहले अनुभवों को प्राप्त करूँ और फिर उन्हें तुम लोगों से कहूँ—ऐसा मामला तो बिल्कुल भी नहीं है। यदि ऐसा होता, तो क्या इससे तुम लोगों को बहुत पहले ही देर न हो जाती? अतीत में, जिस ज्ञान के बारे में बहुतों ने बात की थी उसे भी ऊँचा उठा दिया जाता, परन्तु उनके सभी वचनों को केवल उन तथाकथित आध्यात्मिक

व्यक्तियों के आधार पर बोला गया था। उन्होंने पथ प्रदर्शन नहीं किया, परन्तु वे उनके अनुभवों से आये थे, जो कुछ उन्होंने देखा था उससे, और उनके ज्ञान से आये थे। कुछ उनकी धारणाएँ थीं, और कुछ अनुभव थे जिनका उन्होंने सार प्रस्तुत किया था। आज, मेरे कार्य की प्रकृति उनसे पूरी तरह से भिन्न है। मैंने दूसरों के द्वारा अगुवाई किये जाने का अनुभव नहीं किया है, न ही मैंने दूसरों के द्वारा सिद्ध किये जाने को स्वीकार किया है। इससे भी बढ़ कर, मैंने जो कुछ भी कहा और जिसकी भी संगति की है, वह सब किसी भी अन्य के असदृश है, और किसी अन्य के द्वारा कभी नहीं बोला गया है। आज, इस बात की परवाह किए बिना कि तुम कौन हो, तुम लोगों का कार्य उन वचनों के आधार पर कार्यान्वित किया जाता है जिन्हें मैं बोलता हूँ। इन कथनों और कार्य के बिना, कौन इन चीज़ों का अनुभव करने में सक्षम होता (सेवा करने वालों की परीक्षा, ताड़ना का समय...), और कौन ऐसे ज्ञान को कहने में समर्थ होता? क्या तुम सचमुच इसे देखने में असमर्थ हो? इस बात से फर्क नहीं पड़ता है कि, जैसे ही मेरे वचन कहे जाते हैं, तुम लोग मेरे वचनों के अनुसार कार्य के किस कदम पर संगति करना शुरू करते हो, और उनके अनुसार काम करते हो, और यह ऐसा मार्ग नहीं है जिसके बारे में तुम लोगों में से किसी ने भी सोचा है। इतनी दूर तक आने के बाद, क्या तुम इतने स्पष्ट और सरल प्रश्न को देखने में असमर्थ हो? यह ऐसा मार्ग नहीं है जिसे किसी ने सोचा है, न ही यह किसी आध्यात्मिक व्यक्ति पर आधारित है। यह एक नया पथ है, और यहाँ तक कि बहुत से वचन भी जिन्हें कभी यीशु के द्वारा कहा गया था, वे अब और लागू नहीं होते हैं। जो मैं कहता हूँ वह एक नये युग को शुरू करने का कार्य है, और यह ऐसा कार्य है जो अकेला जारी रहता है; जो कार्य मैं करता हूँ, और जो वचन मैं कहता हूँ, वे सब नए हैं। क्या यह आज का नया कार्य नहीं है? यीशु का कार्य भी इसके जैसा ही था। उसका कार्य भी मन्दिर के लोगों से भिन्न था, और इसलिए यह फरीसियों के कार्य से भी भिन्न था, और न ही यह उस कार्य के समान था जो इस्राएल के सभी लोगों द्वारा किया गया था। इसे देखने के बाद, लोग अपना मन नहीं बना सके: "क्या इसे सचमुच में परमेश्वर के द्वारा किया गया था?" यीशु ने यहोवा की व्यवस्था को नहीं माना; जब वह मनुष्य को सिखाने आया, तो जो कुछ उसने कहा वह उससे नया और भिन्न था जिन्हें प्राचीन संतों और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा गया था, और इस वजह से, लोग अनिश्चित बने रहे। यह वह बात है जिससे मनुष्य के साथ निपटना बहुत ही कठिन हो जाता है। कार्य के इस नये चरण को स्वीकार करने से पहले, वह पथ जिस पर तुम में से अधिकतर लोग चलते थे, वह उन आध्यात्मिक व्यक्तियों की उस नींव का अभ्यास करना और उसमें प्रवेश करना था। परन्तु आज,

वह कार्य जिसे मैं करता हूँ वह बहुत ही भिन्न है, और इसलिए तुम लोग यह निर्णय लेने में असमर्थ हो कि यह सही है या नहीं। मैं परवाह नहीं करता हूँ कि पहले तुम किस पथ पर चले थे, न ही मेरी इसमें रुचि है कि तुमने किसका "भोजन" खाया था, या किसे तुमने अपने "पिता" के रूप में अपनाया था। चूँकि मैं आ गया हूँ और मनुष्य का मार्गदर्शन करने के लिए नया कार्य लाया हूँ, इसलिए जो मेरा अनुसरण करते हैं उन सभी को जो कुछ मैं कहता हूँ उसके अनुसार अवश्य कार्य करना चाहिए। तुम चाहे कितने ही सामर्थ्यवान "परिवार" से क्यों न आते हों, तुम्हें मेरा अनुसरण करना ही होगा, तुम्हें अपने पहले के अभ्यासों के अनुसार अवश्य ही काम नहीं करना चाहिए, तुम्हारे "पालक पिता" को पद से हट जाना चाहिए, और अपना न्यायसंगत हिस्सा खोजने के लिए तुम्हें अपने परमेश्वर के सामने आना चाहिए। तुम समग्र रूप से मेरे ही हाथों में हो, और तुम्हें अपने पालक पिता के प्रति बहुत अधिक अंधा विश्वास अर्पित नहीं करना चाहिए; वह तुम्हें पूरी तरह से नियन्त्रित नहीं कर सकता है। आज का कार्य अकेले जारी है। जो कुछ मैं आज कहता हूँ वह सब स्पष्ट रूप से अतीत की किसी बुनियाद पर आधारित नहीं है; यह एक नई शुरुआत है, और यदि तुम कहो कि इसे मनुष्य के हाथ से सृजित किया जाता है, तो तुम ऐसे व्यक्ति हो जो इतना अंधा है कि बचाया नहीं जा सकता है!

यशायाह, यहेजकेल, मूसा, दाऊद, अब्राहम और दानिय्येल इस्राएल के चुने हुए लोगों में से अगुवे या भविष्यवक्ता थे। उन्हें परमेश्वर क्यों नहीं कहा गया था? क्यों पवित्र आत्मा ने उनकी गवाही नहीं दी? क्यों जैसे ही यीशु ने अपना कार्य प्रारम्भ किया और अपने वचनों को बोलना आरम्भ किया तो पवित्र आत्मा ने यीशु की गवाही दी? और क्यों पवित्र आत्मा ने अन्य लोगों की गवाही नहीं दी? जो मनुष्य हाड़-माँस के थे, उन्हें, "प्रभु" कहकर पुकारा जाता था। इस बात की परवाह किये बिना कि उन्हें क्या कहकर पुकारा जाता था, उनका कार्य उनके अस्तित्व और सार को दर्शाता है, और उनका अस्तित्व और सार उनकी पहचान को दर्शाता है। उनका सार उनकी पदवियों से सम्बंधित नहीं है; जो कुछ वे अभिव्यक्त करते थे, और जैसा जीवन वे जीते थे, इसे उसके द्वारा दर्शाया जाता है। पुराने नियम में, प्रभु कहकर पुकारा जाना सामान्य बात था, और किसी भी व्यक्ति को किसी भी तरह से पुकारा जा सकता था, परन्तु उसका सार और अंतर्निहित पहचान अपरिवर्तनीय रहती थी। उन झूठे मसीहाओं, झूठे भविष्यवक्ताओं और धोखेबाजों के बीच, क्या ऐसे लोग भी नहीं हैं जिन्हें "परमेश्वर" कहा जाता है? और वे परमेश्वर क्यों नहीं हैं? क्योंकि वे परमेश्वर का कार्य करने में असमर्थ हैं। मूलतः वे मनुष्य और लोगों को धोखा देने वाले हैं, न कि परमेश्वर; और इसलिए

उनके पास परमेश्वर की पहचान नहीं है। क्या बारह गोत्रों में दाऊद को भी प्रभु कहकर नहीं पुकारा जाता था? यीशु को भी प्रभु कहकर पुकारा गया था; क्यों सिर्फ यीशु को ही देहधारी परमेश्वर कहकर पुकारा गया था? क्या यिर्मयाह को भी मनुष्य के पुत्र के रूप में नहीं जाना जाता था? और क्या यीशु को मनुष्य के पुत्र के रूप में नहीं जाना जाता था? क्यों यीशु को परमेश्वर की ओर से सलीब पर चढ़ाया गया था? क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि उसका सार भिन्न था? क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि जो कार्य उसने किया वह भिन्न था? क्या पद नाम से फर्क पड़ता है? यद्यपि यीशु को भी मनुष्य का पुत्र कहा जाता था, फिर भी वह परमेश्वर का पहला देहधारण था, वह सामर्थ्य ग्रहण करने, और छुटकारे के कार्य को पूरा करने के लिए आया था। यह साबित करता है कि यीशु की पहचान और सार उन दूसरों से भिन्न थे जिन्हें भी मनुष्य का पुत्र कहा जाता था। आज, तुम लोगों में से कौन यह कहने का साहस कर सकता है कि पवित्र आत्मा के द्वारा उपयोग किए गए लोगों द्वारा कहे गए सभी वचन पवित्र आत्मा से आये थे? क्या किसी में ऐसी चीज़ें कहने का साहस है? यदि तुम ऐसी चीज़ें कहते हो, तो फिर क्यों एज्रा की भविष्यवाणी की पुस्तक को नामंज़ूर कर दिया गया था, और क्यों यही उन प्राचीन संतों और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों के साथ किया गया था? यदि वे सभी पवित्र आत्मा से आयी थीं, तो तुम लोग क्यों ऐसे स्वेच्छाचारी चुनाव करने का साहस करते हो? क्या तुम पवित्र आत्मा के कार्य को चुनने के योग्य हो? इस्राएल की बहुत सारी कहानियों को भी नामंज़ूर कर दिया दिया गया था। और यदि तुम मानते हो कि अतीत के ये सभी लेख पवित्र आत्मा से आये, तो फिर क्यों कुछ पुस्तकों को नामंज़ूर क्यों कर दिया गया था? यदि वे सभी पवित्र आत्मा से आये, तो उन सब को सुरक्षित रखा जाना चाहिए था, और पढ़ने के लिए कलीसियाओं के भाइयों और बहनों को भेजा जाना चाहिए था। उन्हें मानवीय इच्छा के अनुसार नहीं चुना या नामंज़ूर किया जाना चाहिए था; ऐसा करना ग़लत है। यह कहना कि पौलुस और यूहन्ना के अनुभव उनकी व्यक्तिगत अंतर्दृष्टियों के साथ घुल-मिल गए थे इसका यह मतलब नहीं है कि उनके अनुभव और ज्ञान शैतान से आये थे, बल्कि बात केवल इतनी है कि उनके पास ऐसी चीज़ें थीं जो उनके व्यक्तिगत अनुभवों और अंतर्दृष्टियों से आई थीं। उनका ज्ञान उस समय के उनके वास्तविक अनुभवों की पृष्ठभूमि के अनुसार था, और कौन आत्मविश्वास के साथ कह सकता था कि यह सब पवित्र आत्मा से आया था। यदि चारों सुसमाचार पवित्र आत्मा से आये, तो ऐसा क्यों था कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना प्रत्येक ने यीशु के कार्य के बारे कुछ भिन्न कहा? यदि तुम लोग इस पर विश्वास नहीं करते हो, तो फिर तुम बाइबल के विवरणों में देखो कि किस प्रकार पतरस ने प्रभु को तीन बार

नकारा था: वे सब भिन्न हैं, और उनमें से प्रत्येक की अपनी विशेषताएँ हैं। बहुत से अज्ञानी लोग कहते हैं, "देहधारी परमेश्वर भी एक मनुष्य है, तो क्या जो वचन वह कहता है, वे पूरी तरह से पवित्र आत्मा से आ सकते हैं? जब पौलुस और यूहन्ना के वचन मानवीय इच्छा के साथ मिले हुए थे, तो क्या जिन वचनों को वो कहता है वे वास्तव में मानवीय इच्छा के साथ मिले हुए नहीं हैं?" जो लोग ऐसी बातें करते हैं वे अन्धे और अज्ञानी हैं! चारों सुसमाचारों को ध्यानपूर्वक पढ़ो; पढ़ो कि उन्होंने उन चीज़ों के बारे में क्या दर्ज किया है जो यीशु ने की थीं, और उन वचनों को पढ़ो जो उसने कहे थे। प्रत्येक विवरण, एकदम सरल रूप में भिन्न है और प्रत्येक का अपना परिप्रेक्ष्य है। यदि इन पुस्तकों के लेखकों के द्वारा जो कुछ लिखा गया था, वह सब पवित्र आत्मा से आया, तो यह सब एक समान और सुसंगत होना चाहिए। तो फिर उनमें विसंगतियाँ क्यों हैं? क्या मनुष्य अत्यंत मूर्ख नहीं है जो इसे देखने में असमर्थ है? यदि तुम्हें परमेश्वर की गवाही देने के लिए कहा जाता है, तो तुम किस प्रकार की गवाही प्रदान कर सकते हो? क्या परमेश्वर को जानने का ऐसा तरीका उसकी गवाही दे सकता है? यदि अन्य लोग तुमसे पूछें, "यदि यूहन्ना और लूका के लेख मानवीय इच्छा के साथ मिश्रित हो गए थे, तो क्या तुम लोगों के परमेश्वर के द्वारा कहे गए वचन मानवीय इच्छा से मिश्रित नहीं हैं?" क्या तुम एक स्पष्ट उत्तर दे पाओगे? लूका और मत्ती द्वारा यीशु के वचनों को सुनने और यीशु के कार्यों को देखने के पश्चात्, उन्होंने यीशु द्वारा किये गए कार्य के कुछ तथ्यों के संस्मरणों का विवरण देने के तरीके से स्वयं के ज्ञान के बारे में बोला था। क्या तुम कह सकते हो कि उनके ज्ञान को पूरी तरह से पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किया गया था? बाइबल के बाहर, कई आध्यात्मिक व्यक्ति थे जिनके पास उनसे भी अधिक ज्ञान था तो बाद की पीढ़ियों के द्वारा उनके वचनों को क्यों नहीं अपनाया गया था? क्या उनका भी पवित्र आत्मा के द्वारा उपयोग नहीं किया गया था? यह जान लें कि आज के कार्य में, मैं यीशु के कार्य की बुनियाद पर अपनी अंतर्दृष्टियों के बारे में नहीं बोल रहा हूँ, न ही मैं यीशु के कार्य की पृष्ठभूमि में अपने ज्ञान के बारे में बोल रहा हूँ। उस समय यीशु ने कौन सा कार्य किया था? और आज मैं कौन सा कार्य कर रहा हूँ? जो मैं करता और कहता हूँ उसकी कोई मिसाल नहीं है। जिस पथ पर मैं आज चलता हूँ उस पर इससे पहले कभी नहीं चला गया है, इस पर बीते युगों और अतीत की पीढ़ियों के लोगों द्वारा कभी नहीं चला गया था। आज, इसका शुभारंभ कर दिया गया है, और क्या यह पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है? यद्यपि यह पवित्र आत्मा का कार्य था, फिर भी अतीत के सभी अगुवाओं ने अपने कार्य को औरों की बुनियाद पर कार्यान्वित किया था; हालाँकि, स्वयं परमेश्वर का कार्य भिन्न होता है। यीशु के कार्य

का चरण वही था: उसने एक नया मार्ग प्रशस्त किया। जब वह आया तब उसने स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का उपदेश दिया, और कहा कि मनुष्य को पश्चाताप करना और पाप-स्वीकार करना चाहिए। जब यीशु ने अपना कार्य पूरा किया, उसके बाद पतरस और पौलुस और दूसरों ने यीशु के कार्य को जारी रखना प्रारम्भ किया था। जब यीशु को सलीब पर चढ़ा दिया गया और उसका स्वर्ग में आरोहण हो गया, उसके बाद उन्हें सलीब के मार्ग को फैलाने के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा भेजा गया था। यद्यपि पौलुस के वचन उत्कृष्ट थे, फिर भी, वे भी यीशु द्वारा कहे गए की बुनियाद पर आधारित थे, जैसे कि धैर्य, प्रेम, कष्ट, सिर ढकना, बपतिस्मा, या पालन किए जाने वाले अन्य सिद्धान्त। यह सब यीशु के वचनों की बुनियाद पर था। वे एक नया मार्ग खोलने में असमर्थ थे, क्योंकि वे सभी परमेश्वर के द्वारा उपयोग किए गए मनुष्य थे।

उस समय यीशु के कथन और कार्य सिद्धान्त के अनुसार नहीं थे, और उसने अपने कार्य को पुराने नियम की व्यवस्था के कार्य के अनुसार कार्यान्वित नहीं किया था। यह उस कार्य के अनुसार कार्यान्वित किया गया था जो अनुग्रह के युग में किया जाना चाहिए। उसने उस कार्य के अनुसार जो वह सामने लाया था, स्वयं की योजना के अनुसार, और अपने सेवकाई के अनुसार परिश्रम किया; उसने पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार कार्य नहीं किया। उसने जो भी किया उसमें कुछ भी पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार नहीं था, और वह भविष्यवक्ताओं के वचनों को पूरा करने के कार्य को करने के लिए नहीं आया था। परमेश्वर के कार्य का प्रत्येक चरण स्पष्ट रूप से प्राचीन भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए नहीं किया गया था, वह सिद्धान्त का पालन करने या प्राचीन भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को जान-बूझकर साकार करने के लिए नहीं आया था। फिर भी उसके कार्यों ने प्राचीन भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों में व्यावधान नहीं डाला, न ही उन्होंने उसके द्वारा पहले किए गए कार्य में व्यावधान डाला था। उसके कार्य का प्रमुख बिन्दु किसी सिद्धान्त का पालन नहीं करना, और इसके बजाय उस कार्य को करना था जो उसे स्वयं करना चाहिए था। वह कोई भविष्यवक्ता या नबी नहीं था, बल्कि कार्य करने वाला था, जो वास्तव में उस कार्य को करने आया था जिसे करने की अपेक्षा उससे की गई थी, और वह अपने नए युग को शुरू करने और अपने नये कार्य को कार्यान्वित करने के लिए आया था। निस्संदेह, जब यीशु अपना कार्य करने के लिए आया, तो उसने पुराने नियम में प्राचीन भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहे गए बहुत से वचनों को भी पूरा किया। इसलिए आज के कार्य ने पुराने नियम के प्राचीन भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को भी पूरा किया है। बस ऐसा है कि मैं उस "पीली पड़ चुकी पुरानी

जन्त्री" को पकड़े नहीं रहता हूँ, बस इतना ही। क्योंकि और भी बहुत से कार्य हैं जो मुझे करने हैं, तथा और भी बहुत से वचन हैं जो मुझे तुम लोगों से अवश्य कहने हैं; और यह कार्य और ये वचन बाइबल के अंशों की व्याख्या करने की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ऐसे कार्य का तुम लोगों के लिए कोई बड़ा महत्व या मूल्य नहीं है, और यह तुम लोगों की सहायता नहीं कर सकता है, या तुम लोगों को बदल नहीं सकता है। मैं नया कार्य करने का इरादा बाइबल के किसी अंश को पूरा करने के वास्ते नहीं करता हूँ। यदि परमेश्वर केवल बाइबल के प्राचीन भविष्यवक्ताओं के वचनों को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर आया, तो अधिक बड़ा कौन है, देहधारी परमेश्वर या वे प्राचीन भविष्यवक्ता? आख़िरकार, क्या भविष्यवक्ता परमेश्वर के प्रभारी हैं, या परमेश्वर भविष्यवक्ताओं का प्रभारी है? तुम इन वचनों की व्याख्या कैसे करते हो?

शुरुआत में, जब यीशु ने आधिकारिक रूप से अपनी सेवकाई को क्रियान्वित नहीं किया था, तब उन चेलों के समान जो उसका अनुसरण करते थे, वह भी कभी-कभी सभाओं में उपस्थित होता था, और मन्दिर में भजनों को गाता था, स्तुति करता था, और पुराना नियम पढ़ता था। जब उसने बपतिस्मा लिया और उसका अभ्युदय हुआ, उसके बाद पवित्र आत्मा ने, उसकी पहचान को और उस सेवकाई को जो वह शुरू करने वाला था, प्रकट करते हुए आधिकारिक रूप से उस पर उतर कर कार्य करना शुरू किया। इससे पहले, कोई उसे नहीं पहचानता था, और मरियम को छोड़कर, यहाँ तक कि यूहन्ना भी नहीं जानता था। यीशु 29 वर्ष का था जब उसने बपतिस्मा लिया। जब उसका बपतिस्मा पूरा हो गया उसके बाद, आकाश खुल गया और एक आवाज आई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" जब एक बार यीशु का बपतिस्मा हो गया, तो पवित्र आत्मा ने इस तरह से उसकी गवाही देनी शुरू कर दी। बपतिस्मा दिए जाने से पहले 29 वर्ष की आयु तक, उसने एक साधारण मनुष्य का जीवन जिया था, तब खाया जब उसे खाना चाहिए था, वह सामान्य रूप से सोता और कपड़े पहनता था, और उसके बारे में कुछ भी अन्य लोगों से भिन्न नहीं था, निस्संदेह ऐसा सिर्फ मनुष्य की दैहिक आँखों के लिए था। कभी-कभी वह भी कमज़ोर हो जाता था, और कभी-कभी वह भी चीज़ों को नहीं समझ पाता था, ठीक जैसा कि बाइबल में लिखा हुआ है: उसकी बुद्धि उसकी आयु के साथ-साथ बढ़ने लगी। ये वचन मात्र इस बात को दर्शाते हैं कि उसके पास एक साधारण और सामान्य मानवता थी, और वह अन्य सामान्य लोगों से विशेष रूप से भिन्न नहीं था। वह भी एक सामान्य व्यक्ति के समान ही बड़ा हुआ था, और उसके बारे में कुछ भी विशेष नहीं था। फिर भी वह परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा के अधीन था। बपतिस्मा होने के बाद, वह प्रलोभित

किया जाने लगा, जिसके बाद उसने अपनी सेवकाई को और कार्य को करना शुरू किया, और वह सामर्थ्य, बुद्धि और अधिकार का धारक बन गया। कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि उसके बपतिस्मा से पहले पवित्र आत्मा ने उसमें कार्य नहीं किया, या उसके भीतर नहीं था। उसके बपतिस्मा से पहले भी पवित्र आत्मा उसके भीतर रहता था परन्तु उसने आधिकारिक रूप से कार्य करना शुरू नहीं किया था, क्योंकि इस बात की सीमाएँ है कि कब परमेश्वर अपना कार्य करता है, और, इसके अतिरिक्त, सामान्य लोगों में बढ़ने की एक सामान्य प्रक्रिया होती है। पवित्र आत्मा हमेशा उसके भीतर रहता था। जब यीशु का जन्म हुआ, तो वह दूसरों से भिन्न था, और एक भोर का तारा प्रकट हुआ था; उसके जन्म से पहले, एक स्वर्ग दूत यूसुफ के स्वप्न में प्रकट हुआ और उससे कहा कि मरियम को एक बालक शिशु को जन्म देना है, और यह कि पवित्र आत्मा के द्वारा उस बालक को गर्भ में धारण किया गया था। यीशु के बपतिस्मा के बाद, पवित्र आत्मा ने अपने कार्य को शुरू किया, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं था कि पवित्र आत्मा केवल अभी-अभी यीशु पर उतरा था। यह कहना कि पवित्र आत्मा एक कबूतर के रूप में उस पर उतरा था, यह उसकी सेवकाई की आधिकारिक शुरुआत के सन्दर्भ में है। परमेश्वर का आत्मा पहले से ही उसके भीतर था, परन्तु उसने कार्य करना शुरू नहीं किया था, क्योंकि समय नहीं आया था, और पवित्रात्मा ने उतावलेपन में कार्य करना शुरू नहीं किया था। पवित्रात्मा ने बपतिस्मा के माध्यम से उसकी गवाही दी। जब वह पानी से बाहर आ कर प्रकट हुआ, तो पवित्रात्मा ने आधिकारिक रूप से उसमें कार्य करना शुरू कर दिया, जो इस बात का द्योतक था कि देहधारी परमेश्वर की देह ने अपनी सेवकाई को पूरा करना शुरू कर दिया था, और छुटकारे का कार्य शुरू कर दिया था, अर्थात्, अनुग्रह का युग आधिकारिक रूप से शुरू हो गया था। और इसलिए, परमेश्वर के कार्य का एक समय होता है, चाहे वह कोई भी कार्य क्यों न करता हो। बपतिस्मा के बाद, यीशु में कोई विशेष बदलाव नहीं हुए थे: वह अब भी अपनी मूल देह में ही था। बस इतना ही था कि उसने अपने कार्य को शुरू किया और अपनी पहचान को प्रकट किया, और वह अधिकार और सामर्थ्य से भरपूर था। इस लिहाज से वह पहले से भिन्न था। उसकी पहचान भिन्न थी, कहने का तात्पर्य है कि उसकी हैसियत में एक महत्वपूर्ण बदलाव हुआ था; यह पवित्र आत्मा की गवाही थी, और ऐसा कार्य नहीं था जिसे मनुष्य के द्वारा किया गया था। शुरुआत में, लोग नहीं जानते थे, और उन्हें थोड़ा सा केवल तभी पता चला था जब एक बार पवित्र आत्मा ने इस तरह से यीशु की गवाही दी थी। यदि पवित्र आत्मा द्वारा यीशु की गवाही दिए जाने से पहले, किन्तु स्वयं परमेश्वर की गवाही के बिना, यीशु ने कोई बड़ा कार्य किया होता, तो

इस बात पर ध्यान दिए बिना कि उसका कार्य कितना बड़ा है, लोग उसकी पहचान को कभी नहीं जान पाते, क्योंकि मानवीय आँख इसे देखने में असमर्थ होती। पवित्र आत्मा की गवाही के कदम के बिना, कोई भी उसे देहधारी परमेश्वर के रूप में नहीं पहचान सकता था। जब पवित्र आत्मा ने उसकी गवाही दी उसके पश्चात्, यदि यीशु उसी तरह से, बिना किसी अन्तर के, कार्य करना जारी रखता, तो इसका वैसा प्रभाव नहीं हुआ होता और इसमें मुख्य रूप से पवित्र आत्मा का भी कार्य प्रदर्शित होता है। पवित्र आत्मा के गवाही देने के बाद, पवित्र आत्मा को स्वयं को दिखाना पड़ा था, ताकि तुम स्पष्ट रूप से देख सको कि वह परमेश्वर है, यह कि उसके भीतर परमेश्वर का आत्मा है; परमेश्वर की गवाही गलत नहीं है, और यह साबित कर सकता था कि उसकी गवाही सही है। यदि पवित्र आत्मा की गवाही से पहले और उसके बाद का कार्य एक समान ही होता, तो उसकी देहधारी सेवकाई और पवित्र आत्मा का कार्य अधिक सुस्पष्ट नहीं हुआ होता, और इसलिए मनुष्य पवित्र आत्मा के कार्य को पहचानने में असमर्थ रहा होता, क्योंकि वहाँ कोई स्पष्ट अन्तर नहीं रहता। गवाही देने के बाद, पवित्र आत्मा को इस गवाही को बनाए रखना था, और इसलिए उसे यीशु में अपनी बुद्धि और अधिकार को प्रदर्शित करना पड़ा था, जो बीते समयों से भिन्न था। निस्संदेह, यह बपतिस्मा का प्रभाव नहीं था—बपतिस्मा मात्र एक धार्मिक अनुष्ठान है—बस इतना ही है कि बपतिस्मा यह दर्शाने का तरीका था कि यह उसकी सेवकाई को क्रियान्वित करने का समय था। ऐसा कार्य परमेश्वर के बड़े सामर्थ्य को सुस्पष्ट करने, पवित्र आत्मा की गवाही को सुस्पष्ट करने के लिए था, और पवित्र आत्मा बिल्कुल अन्त तक इस गवाही की ज़िम्मेदारी लेगा। अपनी सेवकाई को क्रियान्वित करने से पहले, यीशु ने धर्मोपदेशों को भी सुना, विभिन्न स्थानों में सुसमाचार का उपदेश दिया और उसे फैलाया। उसने कोई बड़ा कार्य नहीं किया क्योंकि उसके लिए अपनी सेवकाई को क्रियान्वित करने का समय अभी नहीं आया था, और इसलिए भी क्योंकि स्वयं परमेश्वर दीनता से देह में छिपा हुआ था, और जब तक उपयुक्त समय नहीं आया तब तक उसने कोई कार्य नहीं किया। उसने बपतिस्मा से पहले दो कारणों से कार्य नहीं किया था: पहला, क्योंकि कार्य करने के लिए पवित्र आत्मा उस पर आधिकारिक रूप से नहीं उतरा था (कहने का तात्पर्य है कि, ऐसा कार्य करने के लिए पवित्र आत्मा ने यीशु को सामर्थ्य और अधिकार प्रदान नहीं किया था), और भले ही उसे स्वयं की पहचान ज्ञात हो जाती, तब भी यीशु उस कार्य को करने में असमर्थ होता जिसे उसने बाद में करने का इरादा किया था, और उसे अपने बपतिस्मा के दिन तक इन्तज़ार करना पड़ता। यह परमेश्वर का समय था, और कोई भी, यहाँ तक कि स्वयं यीशु भी, इसका उल्लंघन करने में

समर्थ नहीं था; स्वयं यीशु भी अपने स्वयं के कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। निस्संदेह, यह परमेश्वर की नम्रता थी, और परमेश्वर के कार्य की व्यवस्था भी थी; यदि परमेश्वर का आत्मा कार्य नहीं करता, तो कोई भी उसके कार्य को नहीं कर सकता था। दूसरा, उसका बपतिस्मा होने से पहले, वह बस एक बहुत ही साधारण और सामान्य मनुष्य था, और अन्य आम और सामान्य लोगों से अलग नहीं था; यह इस बात का एक पहलू है कि कैसे देहधारी परमेश्वर अलौकिक नहीं था। देहधारी परमेश्वर ने परमेश्वर के आत्मा की व्यवस्थाओं का उल्लंघन नहीं किया; वह एक व्यवस्थित तरीके से और बहुत ही सामान्य रूप से कार्य करता था। यह केवल बपतिस्मा के बाद ही हुआ कि उसके कार्य में अधिकार और सामर्थ्य था। कहने का तात्पर्य है कि, यद्यपि वह देहधारी परमेश्वर था, फिर भी उसने किसी अलौकिक कार्य को कार्यान्वित नहीं किया, और सामान्य लोगों के समान ही बड़ा हुआ था। यदि यीशु ने पहले से ही अपनी पहचान को जान लिया होता, अपने बपतिस्मा के पहले सम्पूर्ण धरा पर बड़ा कार्य किया होता, और वह सामान्य लोगों से भिन्न होता, उसने अपने आप को असाधारण दिखाया होता, तो न केवल यूहन्ना के लिए अपना कार्य करना असंभव होता, बल्कि परमेश्वर के लिए भी अपने कार्य के अगले चरण को शुरू करने का कोई तरीका नहीं होता। और इसलिए इससे यह प्रमाणित हो गया होता कि जो कुछ परमेश्वर ने किया वह ग़लत हो गया था, और मनुष्य को ऐसा प्रतीत हुआ होता कि परमेश्वर का आत्मा और देहधारी परमेश्वर का देह एक ही स्रोत से नहीं आए थे। इसलिए, बाइबल में दर्ज यीशु का कार्य ऐसा कार्य है जिसे उसके बपतिस्मा के बाद कार्यान्वित किया गया था, ऐसा कार्य है जिसे तीन वर्षों के दौरान किया गया था। बाइबल इस बात को दर्ज नहीं करती है कि उसने बपतिस्मा से पहले क्या किया था क्योंकि उसने इस कार्य को बपतिस्मा किए जाने से पहले नहीं किया था। वह मात्र एक साधारण मनुष्य था, और एक साधारण मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता था; यीशु के अपनी सेवकाई को क्रियान्वित करना शुरू करने से पहले, वह साधारण लोगों से भिन्न नहीं था, और दूसरे उसमें कोई भिन्नता नहीं देख सकते थे। जब वह 29 वर्ष का हो गया उसके बाद ही ऐसा हुआ कि यीशु ने जाना कि वह परमेश्वर के कार्य के एक चरण को पूरा करने के लिए आया है; इससे पहले, वह स्वयं यह नहीं जानता था, क्योंकि परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य अलौकिक नहीं था। जब बारह वर्ष की आयु में वह आराधनालय में एक सभा में उपस्थित हुआ, तो मरियम उसकी तलाश कर रही थी, और उसने किसी भी अन्य बच्चे की तरह सिर्फ एक वाक्य कहा: "माँ! क्या तू नहीं जानती कि मुझे अपने पिता की इच्छा को सभी चीज़ों से ऊपर रखना ही चाहिए?" निस्संदेह, चूँकि वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में

आरोपित किया गया था, इसलिए क्या यीशु किसी तरह से विशेष नहीं हो सकता था? परन्तु उसकी विशेषता का अर्थ यह नहीं था कि वह अलौकिक था, बल्कि मात्र इतना ही था कि वह किसी दूसरे छोटे बच्चे से बढ़कर परमेश्वर से प्रेम करता था। यद्यपि वह रंग-रूप में मनुष्य था, तब भी उसका सार दूसरों से विशेष और भिन्न था। बल्कि, यह केवल उसके बपतिस्मा के बाद ही था कि पवित्र आत्मा का उसमें कार्य करना उसकी वास्तव में समझ में आया, और यह समझ में आया कि वह स्वयं परमेश्वर है। जब वह 33 वर्ष की आयु में पहुँचा केवल तभी ऐसा हुआ कि उसने सचमुच में जाना कि पवित्र आत्मा ने उसके माध्यम से सलीब पर चढ़ने के कार्य को कार्यान्वित करने का इरादा किया था। 32 वर्ष की आयु में, उसने कुछ आन्तरिक सच्चाइयों को जान लिया था, ठीक जैसा कि मत्ती के सुसमाचार में लिखा हुआ है: "शमौन पतरस ने उत्तर दिया, 'तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।' ... उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि कैसे उसे यरूशलेम जाना ही होगा और पुरनियों, और प्रधान याजकों, और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाना होगा और उसे मार डाला जाएगा; और तीसरे दिन उसे जी उठना होगा।" उसे पहले नहीं पता था कि उसे क्या कार्य करना है, परन्तु एक विशिष्ट समय पर पता चला। जैसे ही वह पैदा हुआ वह पूरी तरह से नहीं जानता था; पवित्र आत्मा ने धीरे-धीरे उसमें कार्य किया, और उस कार्य को करने की एक प्रक्रिया थी। यदि, बिल्कुल शुरुआत में ही, उसे पता चल गया था कि वह परमेश्वर, और मसीह, और मनुष्य का देहधारी पुत्र है, कि उसे सलीब पर चढ़ने के कार्य को पूरा करना है, तो उसने पहले कार्य क्यों नहीं किया? अपने चेलों को सेवकाई के बारे में बताने के बाद ही ऐसा क्यों हुआ कि यीशु ने दुःख महसूस किया, और इसके लिए ईमानदारी से प्रार्थना की? क्यों यूहन्ना ने उसके लिए मार्ग खोला और उसे बपतिस्मा दिया इससे पहले कि वह बहुत सी चीज़ों को समझ पाता जिन्हें उसने नहीं समझा था? जो कुछ यह साबित करता है वह यह है कि यह देहधारी परमेश्वर का कार्य था, और इसलिए उसके लिए समझने, और प्राप्त करने के लिए एक प्रकिया थी, क्योंकि वह देहधारी परमेश्वर का देह था, जिसका कार्य आत्मा के द्वारा सीधे तौर पर किये गए कार्य से भिन्न था।

परमेश्वर के कार्य का प्रत्येक चरण एक ही धारा का अनुसरण करता है, और इसलिए परमेश्वर की छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना में, संसार की नींव से लेकर ठीक आज तक, प्रत्येक कदम का अगले कदम के द्वारा नज़दीकी से अनुसरण किया गया है। यदि मार्ग प्रशस्त करने के लिए कोई न होता, तो पीछे चलने के लिए कोई न होता; चूँकि ऐसे लोग हैं जो पीछे चलते हैं, इसलिए ऐसे लोग हैं जो मार्ग प्रशस्त करते

हैं। इस तरह से कदम-दर-कदम कार्य को आगे बढ़ाया गया है। एक कदम दूसरे कदम का अनुसरण करता है, और मार्ग प्रशस्त करने वाले किसी व्यक्ति के बिना, कार्य को आरंभ करना असंभव होता, और परमेश्वर के पास अपने कार्य को आगे ले जाने का कोई साधन नहीं होता। कोई भी कदम दूसरे कदम का खण्डन नहीं करता है, और एक धारा बनाने के लिए प्रत्येक कदम दूसरे कदम का क्रम से अनुसरण करता है; यह सब एक ही पवित्रात्मा के द्वारा किया जाता है। परन्तु इस बात पर ध्यान दिए बिना कि कोई व्यक्ति मार्ग खोलता है या नहीं, या दूसरे के कार्य को जारी रखता है या नहीं, यह उनकी पहचान को निर्धारित नहीं करता है। क्या यह सही नहीं है? यूहन्ना ने मार्ग खोला, और यीशु ने उसके कार्य को जारी रखा, तो क्या इससे साबित होता है कि यीशु की पहचान यूहन्ना से निम्नतर थी? यीशु से पहले यहोवा ने अपने कार्य को कार्यान्वित किया, तो क्या तुम कह सकते हो कि यहोवा यीशु से अधिक महान है? यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उन्होंने मार्ग प्रशस्त किया या दूसरे के कार्य को जारी रखा; जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है वह उनके कार्य का सार, और वह पहचान जो इसे दर्शाती है। क्या यह सही नहीं है? चूँकि परमेश्वर का मनुष्य के बीच कार्य करने का इरादा था, इसलिए उसे ऐसे लोगों का पोषण करना था जो मार्ग प्रशस्त करने का कार्य कर सकते थे। जब यूहन्ना ने धर्म का उपदेश देना शुरू किया ही था, तो उसने कहा था, "प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।" "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" उसने शुरुआत से ही ऐसा कहा, और वह इन वचनों को क्यों कह पाया था? जिस क्रम में इन वचनों को कहा गया था उस लिहाज से, यह यूहन्ना था जिसने सबसे पहले स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार को कहा था, और यीशु ने उसके बाद बोला था। मनुष्य की धारणाओं के अनुसार, यह यूहन्ना था जिसने नया पथ प्रशस्त किया था, और इसलिए निस्संदेह यूहन्ना यीशु से अधिक महान था। परन्तु यूहन्ना ने नहीं कहा था कि वह मसीह है, और परमेश्वर ने परमेश्वर के प्रिय पुत्र के रूप में उसकी गवाही नहीं दी थी, बल्कि मार्ग को प्रशस्त करने और प्रभु के लिए मार्ग तैयार करने के लिए मात्र उसका उपयोग किया था। उसने यीशु के लिए मार्ग प्रशस्त किया था, परन्तु वह यीशु की ओर से कार्य नहीं कर सकता था। मनुष्य का समस्त कार्य भी पवित्र आत्मा के द्वारा बनाए रखा जाता है।

पुराने नियम के युग में, यहोवा ने मार्ग की अगुवाई की थी, और यहोवा का कार्य पुराने नियम के सम्पूर्ण युग, और इस्राएल में किये गये समस्त कार्य को दर्शाता था। मूसा ने तो मात्र इस कार्य को पृथ्वी पर कायम रखा था, और उसके परिश्रम को मनुष्य के द्वारा प्रदान किया गया सहयोग माना जाता है। उस

समय, यह यहोवा ही था जो बोलता था, मूसा को बुलाता था, और उसने मूसा को इस्राएल के लोगों में से ऊपर उठाया था, और उससे जंगल में और कनान की ओर उनकी अगुवाई करवाई थी। यह स्वयं मूसा का कार्य नहीं था, परन्तु ऐसा कार्य था जिसे यहोवा द्वारा व्यक्तिगत रूप से निर्देशित किया गया था, और इसलिए मूसा को परमेश्वर नहीं कहा जा सकता है। मूसा ने भी व्यवस्था निर्धारित की, परन्तु इस व्यवस्था का आदेश यहोवा के द्वारा व्यक्तिगत रूप से दिया गया था। बस इतना ही था कि उसने उन्हें मूसा से व्यक्त करवाया था। यीशु ने भी आज्ञाएँ दी, और पुराने नियम की व्यवस्था का उन्मूलन किया और नये युग के लिए आज्ञाएँ निर्दिष्ट कीं। यीशु स्वयं परमेश्वर क्यों है? क्योंकि यहाँ एक फ़र्क है। उस समय, मूसा के द्वारा किया गया कार्य युग को नहीं दर्शाता था, न ही उसने कोई नया मार्ग खोला था; उसे यहोवा के द्वारा आगे निर्देशित किया गया था, और वह मात्र ऐसा व्यक्ति था जिसे परमेश्वर के द्वारा उपयोग किया गया था। जब यीशु आया, तब यूहन्ना ने मार्ग प्रशस्त करने के कार्य के एक कदम को कार्यान्वित कर लिया था, और स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार को फैलाना शुरू कर दिया था (पवित्र आत्मा ने इसे शुरू किया था)। जब यीशु आया, तो उसने सीधे तौर पर खुद का कार्य किया, परन्तु उसके कार्य और मूसा के कार्य के बीच में एक बहुत बड़ा अन्तर था। यशायाह ने भी बहुत सी भविष्यवाणियाँ कहीं, फिर भी क्यों वह स्वयं परमेश्वर नहीं था? यीशु ने बहुत सी भविष्यवाणियाँ नहीं कही, फिर भी क्यों वह स्वयं परमेश्वर था? किसी ने भी यह कहने का साहस नहीं किया कि उस समय यीशु का समस्त कार्य पवित्र आत्मा की ओर से आया, न ही उन्होंने यह कहने का साहस किया कि यह सब मनुष्य की इच्छा से आया, या यह पूरी तरह स्वयं परमेश्वर का कार्य था। मनुष्य के पास ऐसी बातों का विश्लेषण करने का कोई तरीका नहीं था। यह कहा जा सकता है कि यशायाह ने ऐसा कार्य किया था, और ऐसी भविष्यवाणियाँ कही, और वे सभी पवित्र आत्मा से आयीं; वे सीधे तौर पर स्वयं यशायाह से नहीं आयीं, बल्कि यहोवा की ओर से प्रकाशन थे। यीशु ने बड़ी मात्रा में कार्य नहीं किया, और बहुत सारे वचनों को नहीं कहा, न ही उसने बहुत सारी भविष्यवाणियाँ कहीं। मनुष्य के लिए, उसका उपदेश विशेष रूप से उत्कृष्ट प्रतीत नहीं होता था, फिर भी वह स्वयं परमेश्वर था, और यह मनुष्य के लिए अकथनीय है। किसी ने कभी भी यूहन्ना, या यशायाह, या दाऊद पर विश्वास नहीं किया है; न ही किसी ने कभी उन्हें परमेश्वर कहा, या दाऊद परमेश्वर, या यूहन्ना परमेश्वर कहा; किसी ने कभी भी ऐसा नहीं बोला, और केवल यीशु को ही हमेशा मसीह कहा गया है। यह वर्गीकरण परमेश्वर की गवाही, उस कार्य जिसका उसने उत्तरदायित्व लिया, और उस सेवकाई, जो उसने की, उसके अनुसार किया जाता है।

बाइबल के महापुरुषों—अब्राहम, दाऊद, यहोशू, दानिय्येल, यशायाह, यूहन्ना और यीशु—के संबंध में उनके द्वारा किए गए कार्य के माध्यम से तुम कह सकते हो कि स्वयं परमेश्वर कौन है, और किस प्रकार के लोग भविष्यवक्ता हैं, और कौन प्रेरित हैं। किसे परमेश्वर के द्वारा उपयोग किया गया था, और कौन स्वयं परमेश्वर था, यह सार और जिस प्रकार का कार्य उन्होंने किया, उसके द्वारा विभेदित और निर्धारित किया जाता है। यदि तुम अन्तर बताने में असमर्थ हो, तो इससे साबित होता है कि तुम नहीं जानते हो कि परमेश्वर में विश्वास करने का अर्थ क्या होता है। यीशु परमेश्वर है क्योंकि उसने बहुत सारे वचन कहे, और बहुत अधिक कार्य किया, विशेष रूप से उसके द्वारा अनेक चमत्कारों का प्रदर्शन। उसी तरह, यूहन्ना ने भी बहुत अधिक कार्य किया, और बहुत सारे वचनों को बोला, मूसा ने भी ऐसा ही किया था; क्यों उन्हें परमेश्वर नहीं कहा गया था? आदम का सृजन सीधे तौर पर परमेश्वर के द्वारा किया गया था; सिर्फ एक प्राणी कहे जाने के बजाए, क्यों उसे परमेश्वर नहीं कहा गया था? यदि कोई तुमसे कहे, "आज, परमेश्वर ने बहुत अधिक कार्य किया है, और बहुत सारे वचन कहे हैं; वह स्वयं परमेश्वर है। तो, चूँकि मूसा ने बहुत सारे वचन कहे, इसलिए वह भी स्वयं परमेश्वर अवश्य होना चाहिए!" तुम्हें बदले में उनसे पूछना चाहिए, "उस समय, क्यों परमेश्वर ने स्वयं परमेश्वर के रूप में यीशु की गवाही दी, और यूहन्ना की नहीं दी?" क्या यूहन्ना यीशु से पहले नहीं आया था? यूहन्ना का कार्य महान था या यीशु का कार्य? मनुष्य को यूहन्ना का कार्य यीशु के कार्य से अधिक महान प्रतीत होता है, परन्तु क्यों पवित्र आत्मा ने यीशु की गवाही दी, और यूहन्ना की नहीं? आज भी वही चीज़ हो रही है! उस समय, जब मूसा ने इस्राएल के लोगों की अगुवाई की, तो यहोवा ने बादलों में से उससे बात की। मूसा ने सीधे तौर पर बात नहीं की, बल्कि इसके बजाए यहोवा के द्वारा सीधे तौर पर उसका मार्गदर्शन किया गया था। यह पुराने नियम के इस्राएल का कार्य था। मूसा के भीतर पवित्रात्मा, या परमेश्वर का अस्तित्व नहीं था। वह उस कार्य को नहीं कर सकता था, और इसलिए उसके द्वारा और यीशु के द्वारा किए गए कार्य में एक बड़ा अन्तर है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने जो कार्य किया वह भिन्न था! किसी व्यक्ति को परमेश्वर के द्वारा उपयोग किया जाता है या नहीं, या वह कोई भविष्यवक्ता, या कोई प्रेरित, या स्वयं परमेश्वर है या नहीं, इसे उसके कार्य की प्रकृति के द्वारा पहचाना जा सकता है, और यह तुम्हारे सन्देहों का अन्त कर देगा। बाइबल में यह लिखा है कि सिर्फ मेमना ही सात मुहरों को खोल सकता है। विभिन्न युगों के दौरान, उन महान व्यक्तियों में पवित्रशास्त्रों के अनेक प्रतिपादक हुए हैं, और इसलिए क्या तुम कह सकते हो कि वे सब मेमने हैं? क्या तुम कह सकते हो कि उनकी सभी व्याख्याएँ परमेश्वर से

आई थीं? वे तो मात्र प्रतिपादक हैं; उनके पास मेमने की पहचान नहीं है। वे कैसे सात मोहरों को खोलने के योग्य हो सकते हैं? यह सत्य है कि "सिर्फ मेमना ही सात मोहरों को खोल सकता है," परन्तु वह सिर्फ सात मुहरों को खोलने के लिए ही नहीं आता है; इस कार्य की कोई आवश्यकता नहीं है, यह संयोगवश होता है। वह अपने कार्य के बारे में बिल्कुल स्पष्ट है; क्या पवित्रशास्त्रों की व्याख्या करने में काफ़ी समय बिताना उसके लिए आवश्यक है? क्या "पवित्रशास्त्रों की व्याख्या करते मेमने के युग" को छह हज़ार वर्षों के कार्य के साथ अवश्य जोड़ा जाना चाहिए? वह नया कार्य करने के लिए आता है, परन्तु वह, लोगों को छह हज़ार वर्षों के कार्य के सत्य को समझाते हुए, बीते समयों के कार्य के बारे में भी कुछ प्रकाशनों को प्रदान करता है। बाइबल के बहुत सारे अंशों की व्याख्या करने की कोई आवश्यकता नहीं है; यह आज का कार्य है जो प्रमुख है, जो महत्वपूर्ण है। तुम्हें जानना चाहिए कि परमेश्वर विशेष रूप से सात मुहरों को तोड़ने के लिए नहीं आता है, बल्कि उद्धार के कार्य को करने के लिए आता है।

तुम सिर्फ यह जानते हो कि यीशु अंत के दिनों में उतरेगा, परन्तु वास्तव में वह कैसे उतरेगा? तुम लोगों जैसा पापी, जिसे परमेश्वर के द्वारा अभी-अभी छुड़ाया गया है, और जो परिवर्तित नहीं किया गया है, या सिद्ध नहीं बनाया गया है, क्या तुम परमेश्वर के हृदय के अनुसार हो सकते हो? तुम्हारे लिए, तुम जो कि अभी भी पुराने अहम् वाले हो, यह सत्य है कि तुम्हें यीशु के द्वारा बचाया गया था, और कि परमेश्वर द्वारा उद्धार की वजह से तुम्हें एक पापी के रूप में नहीं गिना जाता है, परन्तु इससे यह साबित नहीं होता है कि तुम पापपूर्ण नहीं हो, और अशुद्ध नहीं हो। यदि तुम्हें बदला नहीं गया तो तुम संत जैसे कैसे हो सकते हो? भीतर से, तुम अशुद्धता से घिरे हुए हो, स्वार्थी और कुटिल हो, मगर तब भी तुम यीशु के साथ अवतरण चाहते हो—क्या तुम इतने भाग्यशाली हो सकते हो? तुम परमेश्वर पर अपने विश्वास में एक कदम चूक गए हो: तुम्हें मात्र छुटकारा दिया गया है, परन्तु परिवर्तित नहीं किया गया है। तुम्हें परमेश्वर के हृदय के अनुसार होने के लिए, परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से तुम्हें परिवर्तित और शुद्ध करने का कार्य करना होगा; यदि तुम्हें सिर्फ छुटकारा दिया जाता है, तो तुम पवित्रता को प्राप्त करने में असमर्थ होंगे। इस तरह से तुम परमेश्वर के आशीषों में साझेदारी के अयोग्य होंगे, क्योंकि तुमने मनुष्य का प्रबंधन करने के परमेश्वर के कार्य के एक कदम का सुअवसर खो दिया है, जो कि परिवर्तित करने और सिद्ध बनाने का मुख्य कदम है। और इसलिए तुम, एक पापी जिसे अभी-अभी छुटकारा दिया गया है, परमेश्वर की विरासत को सीधे तौर पर उत्तराधिकार के रूप में पाने में असमर्थ हो।

कार्य के इस नए चरण की शुरुआत के बिना, कौन जानता है कि तुम ईसाई मत के प्रचारक, उपदेशक, प्रतिपादक और तथाकथित बड़े आध्यात्मिक मनुष्य, कितनी दूर तक जाते! कार्य के इस नए चरण की शुरुआत के बिना, जिसके बारे में तुम लोग बात करते हो, वह गतप्रयोग होता! या तो यह सिंहासन पर विराजमान होना है, या एक राजा बनने की कद-काठी को तैयार करना है; या तो स्वयं को नकारना है या अपनी देह को वशीभूत करना है; या तो धैर्यवान होना है या सभी चीज़ों से सबक लेना है; या तो विनम्रता है या प्रेम। क्या यह वही पुरानी धुन गुनगुनाना नहीं है? यह एक ही चीज़ को भिन्न नाम से पुकारने मात्र का मामला है! या तो अपने सिर को ढकना और भोजन करना, या हाथ जोड़कर प्रार्थना करना, तथा बीमारों को दुरुस्त करना और दुष्ट आत्माओं को निकालना। क्या कोई नया कार्य हो सकता है? क्या विकास की कोई संभावना हो सकती है? यदि तुम इस तरह से अगुवाई करना जारी रखते हो, तो तुम आँख मूँद कर सिद्धान्त का अनुसरण करोगे, या परम्परा का पालन करोगे। तुम लोग अपने कार्य को बहुत उत्कृष्ट मानते हो, परन्तु क्या तुम लोग नहीं जानते हो कि यह सब प्राचीन कालों के उन "वृद्ध मनुष्यों" के द्वारा आगे बढ़ाया और सिखाया गया था? क्या वह सब जो तुम लोग कहते और करते हो उन वृद्ध मनुष्यों के अन्तिम वचन नहीं हैं? क्या यह उन वृद्ध मनुष्यों के गुज़र जाने से पहले उनके द्वारा दिया गया दायित्व नहीं है? क्या तुम्हें लगता है कि तुम लोगों के कार्य अतीत की पीढ़ियों के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं से बढ़कर हैं, और यहाँ तक कि सभी चीज़ों से बढ़कर हैं? कार्य के इस चरण की शुरुआत ने राजा बनने और सिंहासन पर विराजमान होने के विटनेस ली के प्रयास की तुम लोगों की प्रशंसा को समाप्ति पर पहुँचा दिया है, और तुम्हारे घमण्ड और शेखी को रोक दिया है, ताकि तुम लोग कार्य के इस चरण में दखल देने में असमर्थ हो जाओ। कार्य के इस चरण के बिना, तुम लोग अब तक के सबसे सबसे गहरे गर्त में डूब जाते, इतना कि तुम्हें छुटकारा तक नहीं दिलाया जा सकता। तुम लोगों के बीच ऐसा बहुत कुछ है जो पुराना है! सौभाग्यवश, आज का कार्य तुम लोगों को वापस लेकर आ गया है; अन्यथा, कौन जानता कि तुम लोग किस दिशा में जाते! चूँकि परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो हमेशा से नया है और कभी पुराना नहीं होता है, इसलिए क्यों तुम नई चीज़ों की तलाश नहीं करते हो? क्यों तुम सदैव पुरानी चीज़ों के साथ चिपके रहते हो? और इसलिए, आज पवित्र आत्मा के कार्य को जानना अत्यधिक महत्वपूर्ण है!

केवल पूर्ण बनाया गया मनुष्य ही सार्थक जीवन जी सकता है

सच में, जो कार्य अब किया जा रहा है, वह लोगों से अपने पूर्वज शैतान का त्याग करवाने के लिए किया जा रहा है। वचन के द्वारा सभी न्यायों का उद्देश्य मानवजाति के भ्रष्ट स्वभाव को उजागर करना और लोगों को जीवन का सार समझने में सक्षम बनाना है। ये बार-बार के न्याय लोगों के हृदयों को बेध देते हैं। प्रत्येक न्याय सीधे उनके भाग्य से संबंधित होता है और उनके हृदयों को घायल करने के लिए होता है, ताकि वे उन सभी बातों को जाने दें और फलस्वरूप जीवन के बारे में जान जाएँ, इस गंदी दुनिया को जान जाएँ, परमेश्वर की बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता को जान जाएँ, और मानवजाति को भी जान जाएँ, जिसे शैतान ने भ्रष्ट कर दिया है। जितना अधिक मनुष्य इस प्रकार की ताड़ना और न्याय प्राप्त करता है, उतना ही अधिक मनुष्य का हृदय घायल किया जा सकता है और उतना ही अधिक उसकी आत्मा को जगाया जा सकता है। इन अत्यधिक भ्रष्ट और सबसे अधिक गहराई से धोखा खाए हुए लोगों की आत्माओं को जगाना इस प्रकार के न्याय का लक्ष्य है। मनुष्य के पास कोई आत्मा नहीं है, अर्थात् उसकी आत्मा बहुत पहले ही मर गई और वह नहीं जानता है कि स्वर्ग है, नहीं जानता कि परमेश्वर है, और निश्चित रूप से नहीं जानता कि वह मौत की अतल खाई में संघर्ष कर रहा है; वह संभवतः कैसे जान सकता है कि वह पृथ्वी पर इस गंदे नरक में जी रहा है? वह संभवतः कैसे जान सकता है कि उसका यह सड़ा हुआ शव शैतान की भ्रष्टता के माध्यम से मृत्यु के अधोलोक में गिर गया है? वह संभवतः कैसे जान सकता है कि पृथ्वी पर प्रत्येक चीज़ मानवजाति द्वारा बहुत पहले ही इतनी बरबाद कर दी गई है कि अब सुधारी नहीं जा सकती? और वह संभवतः कैसे जान सकता है कि आज स्रष्टा पृथ्वी पर आया है और भ्रष्ट लोगों के एक समूह की तलाश कर रहा है, जिसे वह बचा सके? मनुष्य द्वारा हर संभव शुद्धिकरण और न्याय का अनुभव करने के बाद भी, उसकी सुस्त चेतना मुश्किल से ही हिलती-डुलती है और वास्तव में लगभग प्रतिक्रियाहीन रहती है। मानवजाति कितनी पतित है! और यद्यपि इस प्रकार का न्याय आसमान से गिरने वाले क्रूर ओलों के समान है, फिर भी वह मनुष्य के लिए सर्वाधिक लाभप्रद है। यदि इस तरह से लोगों का न्याय न हो, तो कोई भी परिणाम नहीं निकलेगा और लोगों को दुःख की अतल खाई से बचाना नितांत असंभव होगा। यदि यह कार्य न हो, तो लोगों का अधोलोक से बाहर निकलना बहुत कठिन होगा, क्योंकि उनके हृदय बहुत पहले ही मर चुके हैं और उनकी आत्माओं को शैतान द्वारा बहुत पहले ही कुचल दिया गया है। पतन की गहराइयों में डूब चुके तुम लोगों को बचाने के लिए तुम्हें सख़्ती से पुकारने, तुम्हारा सख़्ती से न्याय करने की आवश्यकता है; केवल तभी तुम लोगों के जमे हुए हृदयों को जगाना संभव होगा।

तुम लोगों की देह, तुम लोगों की असाधारण इच्छाएँ, तुम लोगों का लोभ और तुम लोगों की वासना तुम लोगों में गहराई तक जमी हुई हैं। ये चीजें तुम लोगों के हृदयों को निरंतर इतना नियंत्रित कर रही हैं कि तुम लोगों में अपने उन सामंती और पतित विचारों के जुए को अपने ऊपर से उतार फेंकने शक्ति नहीं है। तुम लोग न तो अपनी वर्तमान स्थिति को बदलने के लिए लालायित हो, न ही अंधकार के प्रभाव से बच निकलने के लिए। तुम बस इन चीजों से बँधे हुए हो। भले ही तुम लोग जानते हो कि यह जीवन इतना दर्दनाक है और मनुष्यों की यह दुनिया इतनी अंधकारमय, फिर भी तुम लोगों में से किसी एक में भी अपना जीवन बदलने का साहस नहीं है। तुम केवल इस जीवन की वास्तविकताओं से पलायन करने, आत्मा की इंद्रियातीतता हासिल करने और एक शांत, सुखद, स्वर्ग जैसे परिवेश में जीने की अभिलाषा करते हो। तुम लोग अपने वर्तमान जीवन को बदलने के लिए कठिनाइयाँ सहने को तैयार नहीं हो; न ही तुम इस न्याय और ताड़ना के अंदर उस जीवन की खोज करने की इच्छा रखते हो, जिसमें तुम लोगों को प्रवेश करना चाहिए। इसके विपरीत, तुम देह से परे उस सुंदर संसार के बारे में अवास्तविक स्वप्न देखते हो। जिस जीवन की तुम लोग अभिलाषा करते हो, वह एक ऐसा जीवन है जिसे तुम बिना कोई पीड़ा सहे अनायास ही प्राप्त कर सकते हो। यह पूरी तरह से अवास्तविक है! क्योंकि तुम लोग जिसकी आशा करते हो, वह देह में एक सार्थक जीवनकाल जीने के लिए जीवनकाल के दौरान सत्य प्राप्त करने के लिए, अर्थात्, सत्य के लिए जीने और इंसाफ़ के लिए अडिग रहने के लिए नहीं है। यह वह नहीं है, जिसे तुम लोग उज्ज्वल, चकाचौंध करने वाला जीवन मानोगे। तुम लोगों को लगता है कि यह एक मोहक या सार्थक जीवन नहीं होगा। तुम्हारी नज़र में, ऐसा जीवन जीना अन्याय जैसा लगता होगा। भले ही तुम लोग आज इस ताड़ना को स्वीकार करते हो, फिर भी तुम लोग जिसकी खोज कर रहे हो, वह सत्य को प्राप्त करना या वर्तमान में सत्य को जीना नहीं है, बल्कि इसके बजाय बाद में देह से परे एक सुखी जीवन में प्रवेश करने में समर्थ होना है। तुम लोग सत्य की तलाश नहीं कर रहे हो, न ही तुम सत्य के पक्ष में खड़े हो, और तुम निश्चित रूप से सत्य के लिए अस्तित्व में नहीं हो। तुम लोग आज प्रवेश की खोज नहीं कर रहे हो, बल्कि इसके बजाय तुम्हारे विचारों पर भविष्य का और इस बात का कब्ज़ा है कि एक दिन क्या हो सकता है : तुम नीले आसमान पर टकटकी लगाए हो, कड़वे आँसू बहा रहे हो, और किसी दिन स्वर्ग में ले जाए जाने की अपेक्षा कर रहे हो। क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों के सोचने का तरीका पहले से ही वास्तविकता से परे है? तुम लोग सोचते रहते हो कि अनंत दया और करुणा करने वाला उद्धारकर्ता एक दिन निसंदेह इस

संसार में कठिनाई और पीड़ा सहने वाले तुम्हें अपने साथ ले जाने के लिए आएगा, और कि वह निसंदेह तुम्हारी ओर से बदला लेगा, जिसे कि सताया और उत्पीड़ित किया गया है। क्या तुम पाप से भरे हुए नहीं हो? क्या तुम अकेले हो, जिसने इस संसार में दुःख झेला है? तुम स्वयं ही शैतान के अधिका-क्षेत्र में गिरे हो और तुमने दुःख झेला है, क्या परमेश्वर को अभी भी सचमुच तुम्हारा बदला लेने की आवश्यकता है? जो लोग परमेश्वर की इच्छाएँ पूरी करने में असमर्थ हैं—क्या वे परमेश्वर के शत्रु नहीं हैं? जो लोग देहधारी परमेश्वर में विश्वास नहीं करते—क्या वे मसीह-विरोधी नहीं हैं? तुम्हारे अच्छे कर्म क्या मायने रखते हैं? क्या वे परमेश्वर की आराधना करने वाले किसी हृदय का स्थान ले सकते हैं? तुम सिर्फ़ कुछ अच्छे कार्य करके परमेश्वर के आशीष प्राप्त नहीं कर सकते, और परमेश्वर केवल इसलिए तुम्हारे साथ किए गए अन्याय का बदला नहीं ले सकता कि तुम्हें उत्पीड़ित किया गया और सताया गया है। जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और फिर भी परमेश्वर को नहीं जानते, परंतु जो अच्छे कर्म करते हैं—क्या वे सब भी ताड़ित नहीं किए जाते? तुम सिर्फ़ परमेश्वर पर विश्वास करते हो, सिर्फ़ यह चाहते हो कि परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध हुए अन्याय का समाधान करे और उसका बदला ले, और तुम चाहते हो कि परमेश्वर तुम्हें तुम्हारा दिन प्रदान करे, वह दिन, जब तुम अंतत: अपना सिर ऊँचा कर सको। लेकिन तुम सत्य पर ध्यान देने से इनकार करते हो और न ही तुम सत्य को जीने की प्यास रखते हो। तुम इस कठिन, खोखले जीवन से बच निकलने में सक्षम तो बिलकुल भी नहीं हो। इसके बजाय, देह में अपना जीवन बिताते हुए और अपना पापमय जीवन जीते हुए तुम अपेक्षापूर्वक परमेश्वर की ओर देखते हो कि वह तुम्हारी शिकायतें दूर करे और तुम्हारे अस्तित्व के कोहरे को हटा दे। परंतु क्या यह संभव है? यदि तुम्हारे पास सत्य हो, तो तुम परमेश्वर का अनुसरण कर सकते हो। यदि तुम जीवन जीते हो, तो तुम परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति हो सकते हो। यदि तुम्हारे पास जीवन हो, तो तुम परमेश्वर के आशीषों का आनंद ले सकते हो। जिन लोगों के पास सत्य होता है, वे परमेश्वर के आशीष का आनंद ले सकते हैं। परमेश्वर उन लोगों के कष्टों का निवारण सुनिश्चित करता है, जो उसे संपूर्ण हृदय से प्रेम करते हैं और जो कठिनाइयाँ और दुःख सहते हैं, उनके नहीं जो केवल अपने आप से प्रेम करते हैं और जो शैतान के धोखों का शिकार हो चुके हैं। उन लोगों में अच्छाई कैसे हो सकती है, जो सत्य से प्रेम नहीं करते? उन लोगों में धार्मिकता कैसे हो सकती है, जो केवल देह से प्रेम करते हैं? क्या धार्मिकता और अच्छाई दोनों सत्य के संदर्भ में नहीं बोली जातीं? क्या वे उन लोगों के लिए आरक्षित नहीं हैं, जो परमेश्वर से संपूर्ण हृदय से प्रेम करते हैं? जो लोग सत्य से प्रेम नहीं करते और जो

केवल सड़ी हुई लाशें हैं—क्या वे सभी लोग बुराई को आश्रय नहीं देते? जो लोग सत्य को जीने में असमर्थ हैं—क्या वे सब सत्य के शत्रु नहीं हैं? और तुम्हारा क्या हाल है?

यदि तुम अंधकार के इन प्रभावों से बच सकते हो और इन अशुद्ध वस्तुओं से संबंध-विच्छेद कर सकते हो, यदि तुम पवित्र बन सकते हो, तो तुम्हारे पास सत्य होगा। ऐसा नहीं कि तुम्हारी प्रकृति बदल गई है, अपितु केवल यह कि तुम सत्य को अभ्यास में लाने और देह-सुख त्यागने में सक्षम हो। यही वह गुण है, जो उन लोगों के पास होता है, जिन्हें शुद्ध किया जा चुका है। विजय प्राप्त करने का मुख्य लक्ष्य मानवता को शुद्ध करना है, ताकि मनुष्य सत्य को धारण कर सके, क्योंकि मनुष्य सत्य को बहुत कम समझता है! ऐसे लोगों पर विजय पाने का कार्य करने का गहनतम अर्थ है। तुम सभी लोग अंधकार के प्रभाव में आ गए हो और तुम्हें गहरा नुकसान पहुँचा है। अत: इस कार्य का लक्ष्य तुम लोगों को मानव-प्रकृति को जानने और परिणामस्वरूप सत्य को जीने में सक्षम बनाना है। पूर्ण बनाया जाना ऐसी चीज़ है, जिसे सभी सृजित प्राणियों को स्वीकार करना चाहिए। यदि इस चरण के कार्य में केवल लोगों को पूर्ण बनाना ही शामिल होता, तो इसे इंग्लैंड या अमेरिका या इस्राएल में किया जा सकता था; इसे किसी भी देश के लोगों पर किया जा सकता था। परंतु विजय का कार्य चयनात्मक है। विजय के कार्य का पहला चरण अल्पकालिक है; इतना ही नहीं, इसे शैतान को अपमानित करने और संपूर्ण ब्रह्मांड पर विजय प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। यह विजय का आरंभिक कार्य है। कहा जा सकता है कि परमेश्वर पर विश्वास करने वाले किसी भी प्राणी को पूर्ण बनाया जा सकता है, क्योंकि पूर्ण बनाया जाना ऐसा काम है, जिसे केवल एक दीर्घकालिक परिवर्तन के बाद ही हासिल किया जा सकता है। परंतु जीता जाना अलग बात है। जीत के लिए नमूना और आदर्श वह होना चाहिए, जो बहुत अधिक पीछे रह गया है और गहनतम अंधकार में जी रहा है; वे सर्वाधिक तुच्छ और परमेश्वर को स्वीकार करने के सर्वाधिक अनिच्छुक तथा परमेश्वर के सर्वाधिक अवज्ञाकारी भी होने चाहिए। ठीक इसी प्रकार का व्यक्ति जीते जाने की गवाही दे सकता है। विजय के कार्य का मुख्य लक्ष्य शैतान को हराना है, जबकि लोगों को पूर्ण बनाने का मुख्य लक्ष्य उन्हें प्राप्त करना है। विजय का यह कार्य यहाँ तुम जैसे लोगों पर इसलिए किया जा रहा है, ताकि तुम लोगों को जीते जाने के बाद गवाही देने में सक्षम बनाया जा सके। इसका लक्ष्य है विजय प्राप्त करने के बाद लोगों से गवाही दिलवाना। इन जीते गए लोगों का उपयोग शैतान को अपमानित करने का लक्ष्य हासिल करने के लिए किया जाएगा। तो, विजय का मुख्य तरीका क्या है? ताड़ना, न्याय, शाप देना और प्रकटन—लोगों को

जीतने के लिए धार्मिक स्वभाव का उपयोग करना, ताकि वे परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के कारण पूरी तरह से आश्वस्त हो जाएँ। लोगों को जीतने और उन्हें पूरी तरह से आश्वस्त करने के लिए वचन की वास्तविकता और अधिकार का उपयोग करना—यही जीते जाने का अर्थ है। जो लोग पूर्ण बनाए जा चुके हैं, वे जीते जाने के बाद न केवल आज्ञाकारिता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं, बल्कि वे न्याय के कार्य का ज्ञान प्राप्त करने, अपने स्वभाव को बदलने और परमेश्वर को जानने में भी समर्थ होते हैं। वे परमेश्वर से प्रेम करने के मार्ग का अनुभव करते हैं और सत्य से भर जाते हैं। वे सीखते हैं कि परमेश्वर के कार्य का अनुभव कैसे किया जाए, वे परमेश्वर के लिए दुःख उठाने और अपनी स्वयं की इच्छाएँ रखने में समर्थ हो जाते हैं। पूर्ण किए गए लोग वे हैं, जिन्हें परमेश्वर के वचन का अनुभव होने के कारण सत्य की वास्तविक समझ होती है। जीते गए लोग वे हैं, जो सत्य को जानते हैं परंतु जिन्होंने सत्य के वास्तविक अर्थ को स्वीकार नहीं किया है। जीते जाने के बाद वे आज्ञापालन करते हैं, परंतु उनकी आज्ञाकारिता उनके द्वारा प्राप्त किए गए न्याय का परिणाम होती है। उन्हें कई सत्यों के वास्तविक अर्थ की बिलकुल भी समझ नहीं है। वे सत्य को मौखिक रूप से स्वीकारते हैं, परंतु उन्होंने सत्य में प्रवेश नहीं किया है; वे सत्य को समझते हैं, परंतु उन्होंने सत्य का अनुभव नहीं किया है। पूर्ण बनाए जा रहे लोगों पर किए जा रहे कार्य में जीवन के पोषण के साथ-साथ ताड़ना और न्याय शामिल हैं। जो व्यक्ति सत्य में प्रवेश करने को महत्व देता है, वही पूर्ण बनाया जाने वाला व्यक्ति है। पूर्ण बनाए जाने वालों और जीते जाने वालों के मध्य अंतर इस बात में निहित है कि वे सत्य में प्रवेश करते हैं या नहीं। पूर्ण बनाए गए लोग वे हैं, जो सत्य को समझते हैं, सत्य में प्रवेश कर चुके हैं और सत्य को जी रहे हैं; पूर्ण न बनाए जा सकने वाले लोग वे हैं, जो सत्य को नहीं समझते और सत्य में प्रवेश नहीं करते, अर्थात् जो सत्य को जी नहीं रहे हैं। यदि ऐसे लोग अब पूरी तरह से आज्ञापालन करने में समर्थ हैं, तो वे जीते जाते है। यदि जीते गए लोग सत्य को नहीं खोजते—यदि वे सत्य का अनुसरण करते हैं परंतु सत्य को जीते नहीं, यदि वे सत्य को देखते और सुनते हैं किंतु सत्य के अनुसार जीने को महत्व नहीं देते—तो वे पूर्ण नहीं बनाए जा सकते। जिन लोगों को पूर्ण बनाया जाना है, वे पूर्णता के मार्ग के समानांतर परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार सत्य का अभ्यास करते हैं। इसके माध्यम से वे परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, और वे पूर्ण बना दिए जाते हैं। जो कोई भी विजय के कार्य का समापन होने से पूर्व अंत तक अनुसरण करता है, वह जीता गया होता है, परंतु उसे पूर्ण बनाया गया नहीं कहा जा सकता। "पूर्ण बनाए गए" उन लोगों को संदर्भित करता है, जो जीते जाने का कार्य समाप्त होने के बाद सत्य का अनुसरण करने

और परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जाने में सक्षम होते हैं। यह उन लोगों को संदर्भित करता है, जो जीते जाने का कार्य समाप्त होने के बाद विपत्ति में अडिग रहते हैं और सत्य को जीते हैं। जीते जाने से पूर्ण बनाए जाने को कार्य के चरणों की भिन्नताएँ और लोगों द्वारा सत्य को समझने तथा सत्य में प्रवेश करने की मात्रा की भिन्नताएँ अलग करती हैं। जिन लोगों ने पूर्णता के मार्ग पर चलना आरंभ नहीं किया है, अर्थात् जो सत्य को धारण नहीं करते, वे फिर भी अंततः निकाल दिए जाएँगे। केवल वे लोग ही पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं, जो सत्य को धारण करते हैं और उसे जीते हैं। अर्थात्, जो पतरस की छवि को जीते हैं, वे पूर्ण बनाए गए हैं, जबकि बाकी सब जीते गए हैं। जीते जा रहे सभी लोगों पर किए जा रहे कार्य में शाप देना, ताड़ना देना और कोप दर्शाना शामिल हैं, और जो कुछ उन पर पड़ता है, वह धार्मिकता और शाप है। ऐसे व्यक्ति पर कार्य करना बिना समारोह या विनम्रता के प्रकट करना—उनके भीतर के भ्रष्ट स्वभाव को प्रकट करना है, ताकि वे अपने आप इसे पहचान लें और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाएँ। एक बार जब मनुष्य पूरी तरह से आज्ञाकारी बन जाता है, तो विजय का कार्य समाप्त हो जाता है। यहाँ तक कि यदि अधिकतर लोग अभी भी सत्य को समझने की कोशिश नहीं करते, तो भी विजय का कार्य समाप्त हो जाएगा।

यदि तुम्हें पूर्ण बनाया जाना है, तो कुछ मानदंड पूरे करने होंगे। अपने संकल्प, अपनी दृढ़ता और अपने अंतःकरण के माध्यम से और अपनी खोज के माध्यम से तुम जीवन को अनुभव करने और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में समर्थ हो जाओगे। यह तुम्हारा प्रवेश है, और ये वे चीज़ें हैं, जो पूर्णता के मार्ग पर आवश्यक हैं। पूर्णता का कार्य सभी लोगों पर किया जा सकता है। जो कोई भी परमेश्वर को खोजता है, उसे पूर्ण बनाया जा सकता है और उसके पास पूर्ण बनाए जाने का अवसर और योग्यताएँ हैं। यहाँ कोई नियत नियम नहीं है। कोई व्यक्ति पूर्ण बनाया जा सकता है या नहीं, यह मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्या खोजता है। जो लोग सत्य से प्रेम करते हैं और सत्य को जीने में सक्षम हैं, वे निश्चित रूप से पूर्ण बनाए जाने में सक्षम हैं। जो लोग सत्य से प्रेम नहीं करते, परमेश्वर उनकी प्रशंसा नहीं करता; वे ऐसा जीवन धारण नहीं करते, जिसकी परमेश्वर माँग करता है और वे पूर्ण बनाए जाने में अक्षम हैं। पूर्णता का कार्य केवल लोगों को प्राप्त करने के वास्ते है और शैतान से युद्ध करने के कार्य का अंग नहीं है; विजय का कार्य केवल शैतान से युद्ध करने के वास्ते है, जिसका अर्थ है मनुष्य पर विजय का उपयोग शैतान को हराने के लिए करना। विजय का कार्य ही मुख्य कार्य है, नवीनतम कार्य है, ऐसा कार्य है जो सभी युगों में कभी

नहीं किया गया है। कहा जा सकता है कि इस चरण के कार्य का लक्ष्य मुख्य रूप से सभी लोगों को जीतना है, ताकि शैतान को हराया जा सके। लोगों को पूर्ण बनाने का कार्य—यह नया कार्य नहीं है। देह में परमेश्वर के कार्य के दौरान समस्त कार्य का मर्म सभी लोगों को जीतना है। यह अनुग्रह के युग के समान है, जब सलीब पर चढ़ने के माध्यम से संपूर्ण मानवजाति का छुटकारा मुख्य कार्य था। "लोगों को प्राप्त करना" देह में किए गए गए कार्य से अतिरिक्त था और केवल सलीब पर चढ़ने के बाद किया गया था। जब यीशु ने आकर अपना कार्य किया, तो उसका लक्ष्य मुख्य रूप से मृत्यु और अधोलोक के बंधन पर विजय प्राप्त करने के लिए, शैतान के प्रभाव पर विजय प्राप्त करने के लिए, अर्थात् शैतान को हराने के लिए अपने सलीब पर चढ़ने का उपयोग करना था। यीशु के सलीब पर चढ़ने के बाद ही पतरस एक-एक कदम उठाकर पूर्णता के मार्ग पर चला। बेशक, पतरस उन लोगों में से था, जिन्होंने तब यीशु का अनुसरण किया, जब यीशु कार्य कर रहा था, परंतु उस दौरान वह पूर्ण नहीं बना था। बल्कि, यीशु के अपना कार्य समाप्त करने के बाद उसने धीरे-धीरे सत्य को समझा और तब पूर्ण बना। देहधारी परमेश्वर पृथ्वी पर थोड़े-से समय में केवल कार्य के एक मुख्य, महत्वपूर्ण चरण को पूरा करने आता है, पृथ्वी पर लोगों को पूर्ण बनाने के इरादे से उनके बीच लंबे समय तक रहने के लिए नहीं। वह उस कार्य को नहीं करता। वह अपना कार्य पूरा करने के लिए उस समय तक प्रतीक्षा नहीं करता, जब तक कि मनुष्य को पूरी तरह से पूर्ण नहीं बना दिया जाता। यह उसके देहधारण का लक्ष्य और मायने नहीं है। वह केवल मानवजाति को बचाने का अल्पकालिक कार्य करने आता है, न कि मानवजाति को पूर्ण बनाने का अति दीर्घकालिक कार्य करने। मानवजाति को बचाने का कार्य प्रातिनिधिक है, जो एक नया युग आरंभ करने में सक्षम है। इसे एक अल्प समय में समाप्त किया जा सकता है। परंतु मानवजाति को पूर्ण बनाने के लिए मनुष्य को एक निश्चित स्तर तक लाना आवश्यक है; ऐसे कार्य में लंबा समय लगता है। यह वह कार्य है, जिसे परमेश्वर के आत्मा द्वारा किया जाना चाहिए, परंतु यह उस सत्य की उस बुनियाद पर किया जाता है, जिसके बारे में देह में कार्य के दौरान बोला गया था। इसे मानवजाति को पूर्ण बनाने का अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए चरवाही का दीर्घकालिक कार्य करने हेतु प्रेरितों को उन्नत करने के उसके कार्य के माध्यम से भी किया जाता है। देहधारी परमेश्वर इस कार्य को नहीं करता। वह केवल जीवन के मार्ग के बारे में बोलता है, ताकि लोग समझ जाएँ, और वह मानवजाति को केवल सत्य प्रदान करता है, सत्य का अभ्यास करने में लगातार मनुष्य के साथ नहीं रहता, क्योंकि यह उसकी सेवकाई के अंतर्गत नहीं है। इसलिए वह मनुष्य के साथ उस

दिन तक नहीं रहेगा, जब तक कि मनुष्य सत्य को पूरी तरह से न समझ ले और सत्य को पूरी तरह से प्राप्त न कर ले। देह में उसका कार्य तभी समाप्त हो जाता है, जब मनुष्य परमेश्वर में विश्वास के सही मार्ग पर औपचारिक रूप से प्रवेश कर लेता है, जब मनुष्य पूर्ण बनाए जाने के सही मार्ग पर कदम रख लेता है। यह भी वास्तव में तब होगा, जब परमेश्वर ने शैतान को पूरी तरह से हरा दिया होगा और संसार पर विजय प्राप्त कर ली होगी। वह इस बात की परवाह नहीं करता कि मनुष्य ने अंततः उस समय सत्य में प्रवेश कर लिया होगा या नहीं, न ही वह इस बात की परवाह करता है कि मनुष्य का जीवन बड़ा है या छोटा। इसमें से कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसका देह में उसे प्रबंधन करना चाहिए; इसमें से कुछ भी देहधारी परमेश्वर की सेवकाई के अंदर नहीं है। एक बार जब वह अपना अभीष्ट कार्य पूरा कर लेगा, तो वह देह में अपने कार्य का समापन कर देगा। इसलिए, जो कार्य देहधारी परमेश्वर करता है, वह केवल वही कार्य है, जिसे परमेश्वर का आत्मा सीधे तौर पर नहीं कर सकता। इतना ही नहीं, यह उद्धार का अल्पकालिक कार्य है, ऐसा कार्य नहीं है जिसे वह पृथ्वी पर दीर्घकालिक आधार पर करेगा।

तुम्हारी क्षमता को बढ़ाना मेरे कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत नहीं है। मैं तुम लोगों से ऐसा करने के लिए सिर्फ इसलिए कहता हूँ, क्योंकि तुम्हारी क्षमता बहुत कम है। वास्तव में यह पूर्णता के कार्य का हिस्सा नहीं है; बल्कि यह एक अतिरिक्त कार्य है, जो तुम लोगों पर किया जा रहा है। आज तुम लोगों पर पूरा किया जा रहा कार्य तुम्हारी आवश्यकता के अनुसार है। यह व्यक्तिगत है और ऐसा मार्ग नहीं है, जिसमें पूर्ण बनाए जा रहे हर-एक व्यक्ति को प्रवेश करना हो। चूँकि तुम्हारी क्षमता अतीत में पूर्ण बनाए गए किसी भी व्यक्ति से कम है, इसलिए जब यह कार्य तुम लोगों पर किया जाता है, तो बहुत अधिक अवरोध आते हैं। मैं तुम लोगों के बीच यह अतिरिक्त कार्य इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि पूर्णता के लक्ष्य अलग हैं। अनिवार्यत:, जब परमेश्वर पृथ्वी पर आता है, तो वह अन्य मामलों से परेशान न होकर अपने उचित अधिकार-क्षेत्र के भीतर रहता है और अपना कार्य करता है। वह लोगों के पारिवारिक मामलों में शामिल नहीं होता या उनके जीवन में भागीदार नहीं बनता। वह ऐसी तुच्छ चीज़ों से सर्वथा विरक्त रहता है; ये उसकी सेवकाई के हिस्से नहीं हैं। परंतु तुम्हारी क्षमता मेरी माँग से इतनी कम है—वास्तव में इसकी कोई तुलना नहीं है—कि वह कार्य में चरम अवरोध खड़े करती है। इतना ही नहीं, यह कार्य इस देश अर्थात् चीन के लोगों के बीच किया जाना चाहिए। तुम लोग इतने अल्पशिक्षित हो कि मेरे पास बोलने और यह माँग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है कि तुम लोग खुद को शिक्षित करो। मैंने तुम लोगों से कहा है कि यह अतिरिक्त कार्य है, परंतु यह

ऐसा भी है, जिसे तुम लोगों को प्राप्त करना चाहिए, कुछ ऐसा, जो तुम लोगों को पूर्ण बनने में मदद करेगा। सच में, शिक्षा, आत्म-आचरण के बारे में बुनियादी ज्ञान, और जीवन के बारे में बुनियादी ज्ञान सब ऐसी चीज़ें हैं, जो तुम लोगों के पास स्वाभाविक रूप से होनी चाहिए; मुझे तुमसे इन चीजों के बारे में बात करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। परंतु चूँकि तुम लोगों के पास ये चीजें नहीं हैं, इसलिए मेरे पास तुम्हारे इस दुनिया में जन्म ले चुकने के बाद ये चीज़ें तुम्हारे अंदर बैठाने का कार्य करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। भले ही तुम लोग मेरे बारे में कई धारणाएँ पालो, मैं फिर भी तुम लोगों से यह माँग करता हूँ—मैं फिर भी माँग करता हूँ कि तुम लोग अपनी क्षमता बढ़ाओ। मेरा इरादा आकर इस कार्य को करने का नहीं है, क्योंकि मेरा कार्य सिर्फ़ तुम लोगों को जीतना भर है, तुम लोगों का न्याय करके तुम्हारी पूरी आस्था प्राप्त करना और उसके द्वारा तुम लोगों को जीवन का वह मार्ग दिखाना भर है, जिसमें तुम लोगों को प्रवेश करना चाहिए। दूसरे ढंग से कहूँ तो, तुम लोग कितने शिक्षित हो और क्या तुम्हें जीवन का ज्ञान है, इस बात का मुझसे बिलकुल भी कोई लेना-देना न होता, यदि यह तथ्य न होता कि मुझे अपने वचन से तुम लोगों को जीतने की आवश्यकता है। यह सब विजय के कार्य से परिणामों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए और तुम्हारी अनुवर्ती पूर्णता के वास्ते जोड़ा जा रहा है। यह विजय के कार्य का अंग नहीं है। चूँकि तुम लोग कम क्षमता वाले हो, और तुम आलसी, लापरवाह, मूर्ख, मंदबुद्धि, काठ और कुंद हो—चूँकि तुम अत्यधिक असामान्य हो—मैं अपेक्षा करता हूँ कि तुम लोग पहले अपनी क्षमता बढ़ाओ। जो कोई पूर्ण बनाया जाना चाहता है, उसे कुछ मानदंड पूरे करने चाहिए। पूर्ण बनाए जाने के लिए व्यक्ति को स्पष्ट और शांत मन वाला तथा एक अर्थपूर्ण जीवन जीने की इच्छा रखने वाला होना चाहिए। यदि तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो खोखला जीवन जीने का अनिच्छुक है, जो सत्य की खोज करता है, जो अपने प्रत्येक कार्य में ईमानदार है, और जो असाधारण रूप से सामान्य मानवता वाला व्यक्ति है, तो तुम पूर्ण बनाए जाने की शर्तें पूरी करते हो।

तुम लोगों के बीच किया जा रहा यह कार्य तुम लोगों पर उस कार्य के अनुसार किया जा रहा है, जिसे किए जाने की आवश्यकता है। इन व्यक्तियों पर विजय के बाद लोगों के एक समूह को पूर्ण बनाया जाएगा। इसलिए वर्तमान में बहुत-सा कार्य तुम लोगों को पूर्ण बनाने के लक्ष्य की तैयारी के लिए भी है, क्योंकि कई लोग सत्य के लिए भूखे हैं, जिन्हें पूर्ण बनाया जा सकता है। यदि विजय का कार्य तुम लोगों पर किया जाना होता और इसके बाद कोई और कार्य न किया जाता, तो क्या यह ऐसा मामला न होता कि जो

व्यक्ति सत्य की अभिलाषा रखता है, वह इसे प्राप्त नहीं करेगा? वर्तमान कार्य का लक्ष्य बाद में लोगों को पूर्ण बनाने के लिए मार्ग खोलना है। यद्यपि मेरा कार्य सिर्फ़ विजय का कार्य है, फिर भी मेरे द्वारा बोला गया जीवन का मार्ग बाद में लोगों को पूर्ण बनाने की तैयारी के लिए है। जो कार्य विजय के बाद आता है, वह लोगों को पूर्ण बनाने पर केंद्रित है, और विजय पूर्णता के कार्य की नींव डालने के लिए की जाती है। मनुष्य को केवल जीते जाने के बाद ही पूर्ण बनाया जा सकता है। अभी मुख्य कार्य जीतना है; बाद में, सत्य की खोज और कामना करने वालों को पूर्ण बनाया जाएगा। पूर्ण बनाए जाने में लोगों के प्रवेश के सक्रिय पहलू शामिल हैं : क्या तुम्हारे पास ईश्वर से प्रेम करने वाला हृदय है? इस मार्ग पर चलते हुए तुम्हारे अनुभव की गहराई कितनी रही है? परमेश्वर के लिए तुम्हारा प्रेम कितना शुद्ध है? सत्य का तुम्हारा अभ्यास कितना सही है? पूर्ण बनने के लिए व्यक्ति को मानवता के सभी पहलुओं की आधारभूत जानकारी होनी चाहिए। यह एक मूलभूत आवश्यकता है। जीते जाने के बाद जो लोग पूर्ण नहीं बनाए जा सकते, वे सेवा की वस्तुएँ बन जाते हैं और फिर भी अंततः वे आग और गंधक की झील में डाल दिए जाएँगे और फिर भी वे अतल गड्ढे में गिर जाएँगे, क्योंकि तुम्हारा स्वभाव नहीं बदला है और तुम अभी भी शैतान से संबंधित हैं। यदि किसी मनुष्य में पूर्णता के लिए आवश्यक स्थितियों का अभाव है, तो वह बेकार है—वह रद्दी है, उपकरण है, और ऐसी चीज़ है जो अग्निपरीक्षा में ठहर नहीं सकती! अभी ईश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम कितना अधिक है? तुम्हारी स्वयं के प्रति घृणा कितनी अधिक है? तुम शैतान को कितनी गहराई से जानते हो? क्या तुम लोगों ने अपना संकल्प मजबूत कर लिया है? क्या मानवता के बीच तुम्हारा जीवन अच्छी तरह से विनियमित है? क्या तुम्हारा जीवन बदल गया है? क्या तुम एक नया जीवन जी रहे हो? क्या तुम लोगों का जीवन-दृष्टिकोण बदल गया है? यदि ये चीजें नहीं बदली हैं, तो तुम्हें पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, भले ही तुम पीछे नहीं हटते; बल्कि, तुम्हें केवल जीता गया है। तुम्हारी परीक्षा का समय आने पर तुममें सत्य का अभाव होगा, तुम्हारी मानवता असामान्य होगी, और तुम बोझ ढोने वाले जानवर जितने निम्न होगे। तुम्हारी एकमात्र उपलब्धि यह होगी कि तुम्हें जीता गया है—तुम सिर्फ़ मेरे द्वारा जीती गई एक वस्तु होगे। बस एक गधे की तरह, जिसे एक बार मालिक के कोड़े की मार का अनुभव हो जाए, तो वह भयभीत हो जाता है और हर बार जब भी वह अपने मालिक को देखता है, तो घबरा जाता है और ख़राब काम करने से डरता है, तुम भी केवल एक जीते गए गधे होगे। यदि किसी व्यक्ति में उन सकारात्मक पहलुओं का अभाव है और इसके बजाय वह सभी बातों में निष्क्रिय और भयभीत, डरपोक और संकोची है, किसी भी चीज को

स्पष्टता से पहचानने में असमर्थ है, सत्य को स्वीकार करने में असमर्थ है, अभी भी उसके पास अभ्यास का मार्ग नहीं है, और इससे भी परे, परमेश्वर को प्रेम करने वाला हृदय नहीं है—यदि किसी व्यक्ति को इस बात की समझ नहीं है कि ईश्वर से कैसे प्रेम किया जाए, एक अर्थपूर्ण जीवन कैसे जीया जाए, या एक असली व्यक्ति कैसे बना जाए—ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की गवाही कैसे दे सकता है? यह दर्शाएगा कि तुम्हारे जीवन का बहुत कम मूल्य है और तुम सिर्फ़ एक जीते गए गधे हो। तुम्हें जीता जाएगा, परंतु इसका सिर्फ यह अर्थ होगा कि तुमने बड़े लाल अजगर को त्याग दिया है और उसके अधिकार-क्षेत्र में समर्पण करने से इनकार कर दिया है; इसका अर्थ होगा कि तुम मानते हो कि परमेश्वर है, तुम परमेश्वर की सभी योजनाओं का पालन करना चाहते हो, और तुम्हें कोई शिकायत नहीं है। परंतु जहाँ तक सकारात्मक पहलुओं की बात है, क्या तुम परमेश्वर के वचन को जीने और परमेश्वर को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो? अगर तुम्हारे पास इनमें से कोई भी पहलू नहीं है, तो इसका अर्थ है कि तुम परमेश्वर के द्वारा प्राप्त नहीं किए गए हो, और तुम सिर्फ़ एक जीते गए गधे हो। तुममें कुछ भी वांछनीय नहीं है, और पवित्र आत्मा तुममें कार्य नहीं कर रहा है। तुम्हारी मानवता में बहुत कमी है, परमेश्वर के लिए तुम्हारा उपयोग करना असंभव है। तुम्हें परमेश्वर द्वारा अनुमोदित होना है और अविश्वसनीय जानवरों और चलते-फिरते मृतकों से सौ गुना बेहतर होना है—केवल इस स्तर तक पहुँचने वाले ही पूर्ण किए जाने के योग्य होते हैं। केवल यदि किसी में मानवता और अंत:करण हैं, तो ही वह परमेश्वर के उपयोग के योग्य है। केवल पूर्ण बनाए जाने पर ही तुम मानव समझे जा सकते हो। केवल पूर्ण बनाए गए लोग ही अर्थपूर्ण जीवन जीते हैं। केवल ऐसे लोग ही परमेश्वर के लिए और अधिक प्रबलता से गवाही दे सकते हैं।

मनुष्य के उद्धार के लिए तुम्हें सामाजिक प्रतिष्ठा के आशीष से दूर रहकर परमेश्वर की इच्छा को समझना चाहिए

मानवीय दृष्टिकोण से, मोआब के वंशजों को पूर्ण बनाना संभव नहीं है, न ही वे पूर्ण बनाए जाने के योग्य हैं। दूसरी ओर, दाऊद के बच्चों को लेकर निश्चित रूप से आशा है और उन्हें यकीनन पूर्ण बनाया जा सकता है। यदि कोई मोआब का वंशज है, तो उसे पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। अब भी तुम लोग अपने बीच किए जा रहे काम के मायने को नहीं जानते; इस मुकाम पर भी तुम लोगों के दिल में अपने भविष्य कीसंभावनाएँ हैं, और तुम उन्हें त्यागना नहीं चाहते। आज किसी को इस बात की परवाह नहीं है कि

परमेश्वर ने तुम जैसे सबसे अयोग्य लोगों के समूह पर काम करना क्यों चुना है। क्या इसकी वजह यह हो सकती है कि उसने इस काम में कोई गलती कर दी है? क्या यह कार्य कोई क्षणिक चूक है? परमेश्वर तो हमेशा से जानता है कि तुम लोग मोआब के बच्चे हो, फिर वह तुम्हारे बीच ही काम करने के लिए क्यों आया है? क्या यह बात तुम्हारे दिमाग में कभी नहीं आती? क्या परमेश्वर अपना कार्य करते समय कभी इस पर विचार नहीं करता? क्या वह अनाड़ी की तरह व्यवहार करता है? क्या वह शुरू से ही नहीं जानता था कि तुम लोग मोआब के वंशज हो? क्या तुम लोग इन बातों पर विचार करना नहीं जानते? तुम लोगों की धारणाएँ कहाँ चली गईं? क्या तुम लोगों की स्वस्थ सोच परिस्थिति अनुकूल सिद्ध नहीं हो पा रही है? तुम लोगों की चतुराई और बुद्धि कहाँ चली गई? क्या तुम लोग इतने उदार-मना हो कि इस तरह के छोटे-मोटे मामलों पर ध्यान नहीं देते? तुम लोग अपने भविष्य की संभावनाओं और नियति को लेकर तो बहुत संवेदनशील हो, लेकिन जब बात किसी और चीज़ की आती है, तो तुम सुन्न, मंदबुद्धि और पूरी तरह से नासमझ बन जाते हो। आखिर तुम किस बात पर विश्वास करते हो? अपने भविष्य की संभावनाओं पर? या परमेश्वर पर? जिन बातों पर तुम लोग विश्वास करते हो, क्या वे तुम्हारी सुंदर मंज़िल नहीं हैं? क्या वे तुम्हारे भविष्य की संभावनाएँ नहीं हैं? तुम लोग जीवन के मार्ग को कितना समझते हो? तुमने कितना पाया है? फिलहाल मोआब के वंशजों पर जो कार्य किया जा रहा है, क्या वह तुम लोगों को अपमानित करने के लिए है? क्या यह तुम्हारी कुरूपता को जानबूझकर उजागर करने के लिए किया जा रहा है? क्या यह तुमसे मजबूरन ताड़ना स्वीकार करवाने और फिर तुम्हें आग की झील में फेंक देने के लिए किया जा रहा है? मैंने कभी नहीं कहा कि तुम लोगों के लिए भविष्य की कोई संभावनाएँ नहीं है, और यह तो बिल्कुल नहीं कहा कि तुम लोगों को तबाह और बर्बाद कर दिया जाएगा। क्या मैंने सार्वजनिक रूप से कभी ऐसी बातों की घोषणा की है? तुम कहते हो कि तुम नाउम्मीद हो, लेकिन क्या यह निष्कर्ष तुमने खुद नहीं निकाला है? क्या यह तुम्हारी अपनी मन:स्थिति का परिणाम नहीं है? क्या तुम्हारे निष्कर्ष कोई महत्त्व रखते हैं? यदि मैं कहूँ कि तुम धन्य नहीं हो, तो तुम्हारा विनाश निश्चित है; और यदि मैं कहूँ कि तुम धन्य हो, तो तुम्हारा विनाश निश्चित रूप से नहीं होगा। मैं केवल यह कह रहा हूँ कि तुम मोआब के वंशज हो; मैंने यह नहीं कहा कि तुम नष्ट हो जाओगे। मैंने बस इतना ही कहा है कि मोआब के वंशज शापित हैं, और वे भ्रष्ट मनुष्यों की एक नस्ल हैं। पहले पाप का उल्लेख किया गया था; क्या तुम सभी पापी नहीं हो? क्या सभी पापी शैतान द्वारा भ्रष्ट नहीं किए गए हैं? क्या सभी पापी परमेश्वर की अवहेलना और उसके विरुद्ध विद्रोह

नहीं करते? क्या परमेश्वर की अवहेलना करने वाले शापित नहीं होंगे? क्या सभी पापियों को नष्ट नहीं किया जाना चाहिए? उस स्थिति में, मांस और रक्त से बने लोगों में से किसे बचाया जा सकता है? तुम लोग आज तक बचे कैसे रहे? तुम लोग नकारात्मक हो गए हो, क्योंकि तुम मोआब के वंशज हो; क्या तुम लोग पापी होकर भी मनुष्यों में नहीं गिने जाते हो? तुम लोग आज तक बचे कैसे रहे? पूर्णता का उल्लेख होने पर तुम लोग खुश हो जाते हो। यह सुनकर कि तुम्हें भयंकर क्लेश का अनुभव करना चाहिए, तुम और भी धन्य होने का एहसास करते हो। तुम्हें लगता है कि क्लेश से उबरने के बाद तुम विजेता हो सकते हो, और इसके अलावा, यह तुम पर परमेश्वर का महान आशीष और उसके द्वारा तुम्हारा महान उत्थान है। मोआब का उल्लेख होने पर तुम लोगों के बीच हंगामा खड़ा हो जाता है; वयस्क और बच्चे समान रूप से बहुत ज़्यादा उदासी महसूस करते हैं, तुम्हारे दिल में कोई खुशी नहीं रहती, और तुम लोगों को पैदा होने पर पछतावा होता है। तुम लोग मोआब के वंशजों पर किए जा रहे कार्य के इस चरण के मायने नहीं समझते; तुम केवल उच्च पदों की माँग करना जानते हो, और जब भी तुम्हें लगता है कि कोई उम्मीद नहीं है, तुम पीछे हट जाते हो। पूर्णता और भविष्य की मंज़िलका उल्लेख करने पर तुम लोग खुश हो जाते हो; तुम लोग परमेश्वर में इसलिए विश्वास रखते हो ताकि उसका आशीष प्राप्त कर सको, एक अच्छी मंज़िल पा सको। कुछ लोग अब अपनी हैसियत के कारण आशंका महसूस करते हैं। चूँकि वे लोग निम्न स्थिति और निम्न हैसियत के हैं, इसलिए वे पूर्ण होने की कोशिश नहीं करना चाहते। पहले पूर्णता की बात की गई थी और फिर मोआब के वंशजों का उल्लेख किया गया था, इसलिए लोगों ने पहले वर्णित पूर्णता के मार्ग को नकार दिया। क्योंकि तुम लोगों ने आदि से अंत तक इस काम के महत्त्वको कभी जाना ही नहीं, न ही तुम लोग इसके मायने की परवाह करते हो। तुम लोग बहुत ही छोटे आध्यात्मिक कद के हो, और थोड़ी-सी भी बाधा सहन नहीं कर पाते। जब तुम देखते हो कि तुम्हारी अपनी हैसियत बहुत ही निम्न है, तो तुम नकारात्मक हो जाते हो और खोजते रहने का आत्मविश्वास खो बैठते हो। लोग अनुग्रह की प्राप्ति और शांति के आनंद को केवल विश्वास का प्रतीक मानते हैं, और आशीष की तलाश को परमेश्वर में अपने विश्वास का आधार समझते हैं। बहुत कम लोग परमेश्वर को जानना चाहते हैं या अपने स्वभाव में बदलाव की कोशिश करते हैं। अपने विश्वास में लोग परमेश्वर को उन्हें एक उपयुक्त मंज़िल और जितना वे चाहते हैं, उतना अनुग्रह देने, उसे अपना सेवक बनाने, उसे अपने साथ एक शांतिपूर्ण, मैत्रीपूर्ण संबंध, फिर वह चाहे कभी भी हो, बनाए रखने के लिए बाध्य करना चाहते हैं, ताकि उनके बीच कभी कोई संघर्ष न हो। अर्थात् परमेश्वर में

उनका विश्वास यह माँग करता है कि वह उनकी सभी आवश्यकताएँ पूरी करने का वादा करे और उनके द्वारा बाइबल में पढ़े गए इन वचनों को ध्यान में रखते हुए कि, "मैं तुम लोगों की प्रार्थनाएँ सुनूँगा," उन्हें वह सब प्रदान करे, जिसके लिए वे प्रार्थना करें। वे परमेश्वर से किसी का न्याय या निपटारा न करने की अपेक्षा करते हैं, क्योंकि वह हमेशा दयालु उद्धारकर्ता यीशु रहा है, जो हर समय और सभी जगहों पर लोगों के साथ एक अच्छा संबंध रखता है। लोग परमेश्वर में कुछ इस तरह विश्वास करते हैं : वे बस बेशर्मी से परमेश्वर से माँग माँगें करते हैं, यह मानते हैं कि चाहे वे विद्रोही हों या आज्ञाकारी, वह बस आँख मूँदकर उन्हें सब-कुछ प्रदान करेगा। वे बस परमेश्वर से लगातार "ऋण वसूली" करते हैं, यह विश्वास करते हुए कि उसे उन्हें बिना किसी प्रतिरोध के "चुकाना" चाहिए और इतना ही नहीं, दोगुना भुगतान करना चाहिए; वे सोचते हैं कि परमेश्वर ने उनसे कुछ लिया हो या नहीं, वे उसके साथ चालाकी कर सकते हैं, वह लोगों के साथ मनमानी नहीं कर सकता, और लोगों के सामने जब वह चाहे और बिना उनकी अनुमति के अपनी बुद्धि और धार्मिक स्वभाव तो बिलकुल भी प्रकट नहीं कर सकता, जो कई वर्षों से छिपाए हुए हैं। वे बस परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करते हैं, और यह मानते हैं कि परमेश्वर उन्हें दोषमुक्त कर देगा, वह ऐसा करने से नाराज़ नहीं होगा, और यह हमेशा के लिए चलता रहेगा। वे परमेश्वर को आदेश दे देते हैं, और यह मानकर चलते हैं कि वह उनका पालन करेगा, क्योंकि यह बाइबल में दर्ज है कि परमेश्वर मनुष्यों से सेवा करवाने के लिए नहीं आया, बल्कि उनकी सेवा करने के लिए आया है, वह यहाँ उनका सेवक है। क्या तुम लोग अब तक यही मानते नहीं आए हो? जब भी तुम परमेश्वर से कुछ पाने में असमर्थ होते हो, तुम भाग जाना चाहते हो; जब तुम्हें कुछ समझ में नहीं आता, तो तुम बहुत क्रोधित हो जाते हो, और इस हद तक चले जाते हो कि उसे तरह-तरह की गालियाँ देने लगते हो। तुम लोग स्वयं परमेश्वर को पूरी तरह से अपनी बुद्धि और चमत्कार भी व्यक्त नहीं करने दोगे, तुम लोग तो बस अस्थायी आराम और सुविधा का आनंद लेना चाहते हो। परमेश्वर में आस्था को लेकर अब तक तो तुम्हारा वही पुराना दृष्टिकोण रहा है। यदि परमेश्वर तुम लोगों को थोड़ा-सा प्रताप दिखा दे, तो तुम लोग दुखी हो जाते हो। क्या तुम लोग देख रहे हो कि तुम्हारा आध्यात्मिक कद कितना कितनी महान है? यह न समझो कि तुम सभी परमेश्वर के प्रति वफ़ादार हो, जबकि वास्तव में तुम लोगों के पुराने विचार नहीं बदले हैं। जब तक तुम पर कोई मुसीबत नहीं आ पड़ती, तुम्हें लगता है कि सब-कुछ सुचारु रूप से चल रहा है, और परमेश्वर के प्रति तुम्हारा प्रेम एक ऊँचे मुकाम पर पहुँच जाता है। अगर तुम्हारे साथ कुछ मामूली-सा भी घट जाए, तो तुम रसातल में जा

गिरते हो। क्या यही परमेश्वर के प्रति तुम्हारा निष्ठावान होना है?

यदि विजय-कार्य का अंतिम चरण इस्राएल में शुरू हुआ होता, तो विजय के ऐसे कार्य का कोई अर्थ नहीं होता। इस कार्य का सर्वाधिक महत्व तभी है, जब यह चीन में किया जाता है, जब यह तुम लोगों पर किया जाता है। तुम लोग सबसे दीन-हीन हो, सबसे कम हैसियत वाले लोग हो; तुम लोग इस समाज के निम्नतम स्तर वाले लोगों में से हो, और तुम वे हो, जिन्होंने शुरुआत में परमेश्वर को सबसे कम स्वीकार किया था। तुम वे लोग हो, जो परमेश्वर से भटककर सबसे दूर चले गए हो और जिन्हें सबसे गंभीर नुकसान पहुँचाया गया है। चूँकि कार्य का यह चरण केवल विजय के लिए ही है, इसलिए क्या भावी गवाही देने के लिए तुम लोगों का चुना जाना सबसे उपयुक्त नहीं है? यदि विजय के कार्य का पहला चरण तुम लोगों पर न किया जाना होता, तो आने वाले विजय के कार्य को आगे बढ़ाना मुश्किल हो जाता, क्योंकि विजय के आगामी कार्य को आज किए जाने वाले इस कार्य के तथ्य के आधार पर ही परिणाम प्राप्त होंगे। विजय का वर्तमान कार्य विजय के समग्र कार्य की शुरुआत मात्र है। तुम लोग जीता जाने वाला पहला जत्था हो; तुम जीती जाने वाली समस्त मानवजाति के प्रतिनिधि हो। वास्तव में ज्ञानप्राप्त लोग देखेंगे कि परमेश्वर आज जो भी कार्य करता है, वह महान है, कि परमेश्वर न केवल लोगों को अपने विद्रोह को जानने देता है, बल्कि वह उनकी हैसियत को भी प्रकट करता है। उसके वचनों का उद्देश्य और अर्थ लोगों को हतोत्साह करना नहीं है, न ही उन्हें गिराना है। यह उसके वचनों के माध्यम से उनके द्वारा प्रबुद्धता और उद्धार प्राप्त करने के लिए है; यह उसके वचनों के माध्यम से उनकी आत्मा को जाग्रत करने के लिए है। विश्व के सृजन के समय से, मनुष्य शैतान के अधिकार-क्षेत्र में रहा है, और उसने न तो यह जाना और न ही विश्वास किया कि परमेश्वर का अस्तित्व है। इन लोगों को परमेश्वर के महान उद्धार में शामिल किया जा सकता है और परमेश्वर द्वारा ऊपर उठाया जा सकता है, यह वास्तव में परमेश्वर के प्यार को दर्शाता है; जो लोग वास्तव में समझते हैं, वे सब इस पर विश्वास करेंगे। उनके बारे में क्या कहा जाए, जिन्हें इस तरह की समझ नहीं है? वे कहेंगे, "आह, परमेश्वर कहता है कि हम मोआब के वंशज हैं; यह उसने अपने वचनों में कहा। क्या हम अभी भी अच्छा परिणाम पा सकते हैं? हमें किसने मोआब का वंशज बनाया? किसने पूर्व में हमसे उसका इतना विरोध करवाया? परमेश्वर हमारी निंदा करने के लिए आया है; क्या तुम नहीं देखते कि कैसे शुरू से ही उसने हमेशा हमारा न्याय किया है? चूँकि हमने परमेश्वर का विरोध किया है, इसलिए हमें इसी तरीके से ताड़ना दी जानी चाहिए।" क्या ये शब्द सही हैं? आज परमेश्वर तुम लोगों का न्याय करता है, तुम लोगों को

ताड़ना देता है, और तुम्हारी निंदा करता है, लेकिन तुम्हें यह अवश्य जानना चाहिए कि तुम्हारी निंदा इसलिए की जाती है, ताकि तुम स्वयं को जान सको। वह इसलिए निंदा करता है, शाप देता है, न्याय करता और ताड़ना देता है, ताकि तुम स्वयं को जान सको, ताकि तुम्हारे स्वभाव में परिवर्तन हो सके, और, इसके अलावा, तुम अपनी कीमत जान सको, और यह देख सको कि परमेश्वर के सभी कार्य धार्मिक और उसके स्वभाव और उसके कार्य की आवश्यकताओं के अनुसार हैं, और वह मनुष्य के उद्धार के लिए अपनी योजना के अनुसार कार्य करता है, और कि वह धार्मिक परमेश्वर है, जो मनुष्य को प्यार करता है, उसे बचाता है, उसका न्याय करता है और उसे ताड़ना देता है। यदि तुम केवल यह जानते हो कि तुम निम्न हैसियत के हो, कि तुम भ्रष्ट और अवज्ञाकारी हो, परंतु यह नहीं जानते कि परमेश्वर आज तुममें जो न्याय और ताड़ना का कार्य कर रहा है, उसके माध्यम से वह अपने उद्धार के कार्य को स्पष्ट करना चाहता है, तो तुम्हारे पास अनुभव प्राप्त करने का कोई मार्ग नहीं है, और तुम आगे जारी रखने में सक्षम तो बिल्कुल भी नहीं हो। परमेश्वर मारने या नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि न्याय करने, शाप देने, ताड़ना देने और बचाने के लिए आया है। उसकी 6,000-वर्षीय प्रबंधन योजना के समापन से पहले—इससे पहले कि वह मनुष्य की प्रत्येक श्रेणी का परिणाम स्पष्ट करे—पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य उद्धार के लिए होगा; इसका प्रयोजन विशुद्ध रूप से उन लोगों को पूर्ण बनाना—पूरी तरह से—और उन्हें अपने प्रभुत्व की अधीनता में लाना है, जो उससे प्रेम करते हैं। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि परमेश्वर लोगों को कैसे बचाता है, यह सब उन्हें उनके पुराने शैतानी स्वभाव से अलग करके किया जाता है; अर्थात्, वह उनसे जीवन की तलाश करवाकर उन्हें बचाता है। यदि वे ऐसा नहीं करते, तो उनके पास परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार करने का कोई रास्ता नहीं होगा। उद्धार स्वयं परमेश्वर का कार्य है, और जीवन की तलाश करना ऐसी चीज़ है, जिसे उद्धार स्वीकार करने के लिए मनुष्य को करना ही चाहिए। मनुष्य की निगाह में, उद्धार परमेश्वर का प्रेम है, और परमेश्वर का प्रेम ताड़ना, न्याय और शाप नहीं हो सकता; उद्धार में प्रेम, करुणा और, इनके अलावा, सांत्वना के वचनों के साथ-साथ परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए असीम आशीष समाविष्ट होने चाहिए। लोगों का मानना है कि जब परमेश्वर मनुष्य को बचाता है, तो ऐसा वह उन्हें अपने आशीषों और अनुग्रह से प्रेरित करके करता है, ताकि वे अपने हृदय परमेश्वर को दे सकें। दूसरे शब्दों में, उसका मनुष्य को स्पर्श करना उसे बचाना है। इस तरह का उद्धार एक सौदा करके किया जाता है। केवल जब परमेश्वर मनुष्य को सौ गुना प्रदान करता है, तभी मनुष्य परमेश्वर के नाम के प्रति समर्पित होता है और उसके लिए अच्छा करने

और उसे महिमामंडित करने का प्रयत्न करता है। यह मानवजाति के लिए परमेश्वर की अभिलाषा नहीं है। परमेश्वर पृथ्वी पर भ्रष्ट मानवता को बचाने के लिए कार्य करने आया है—इसमें कोई झूठ नहीं है। यदि होता, तो वह अपना कार्य करने के लिए व्यक्तिगत रूप से निश्चित ही नहीं आता। अतीत में, उद्धार के उसके साधन में परम प्रेम और करुणा दिखाना शामिल था, यहाँ तक कि उसने संपूर्ण मानवजाति के बदले में अपना सर्वस्व शैतान को दे दिया। वर्तमान अतीत जैसा नहीं है : आज तुम लोगों को दिया गया उद्धार अंतिम दिनों के समय में प्रत्येक व्यक्ति का उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकरण किए जाने के दौरान घटित होता है; तुम लोगों के उद्धार का साधन प्रेम या करुणा नहीं है, बल्कि ताड़ना और न्याय है, ताकि मनुष्य को अधिक अच्छी तरह से बचाया जा सके। इस प्रकार, तुम लोगों को जो भी प्राप्त होता है, वह ताड़ना, न्याय और निर्दय मार है, लेकिन यह जान लो : इस निर्मम मार में थोड़ा-सा भी दंड नहीं है। मेरे वचन कितने भी कठोर हों, तुम लोगों पर जो पड़ता है, वे कुछ वचन ही हैं, जो तुम लोगों को अत्यंत निर्दय प्रतीत हो सकते हैं, और मैं कितना भी क्रोधित क्यों न हूँ, तुम लोगों पर जो पड़ता है, वे फिर भी कुछ शिक्षाप्रद वचन ही हैं, और मेरा आशय तुम लोगों को नुकसान पहुँचाना या तुम लोगों को मार डालना नहीं है। क्या यह सब तथ्य नहीं है? जान लो कि आजकल हर चीज़ उद्धार के लिए है, चाहे वह धार्मिक न्याय हो या निर्मम शुद्धिकरण और ताड़ना। भले ही आज प्रत्येक व्यक्ति का उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकरण किया जा रहा हो या मनुष्य की श्रेणियाँ प्रकट की जा रही हों, परमेश्वर के समस्त वचनों और कार्य का प्रयोजन उन लोगों को बचाना है, जो परमेश्वर से सचमुच प्यार करते हैं। धार्मिक न्याय मनुष्य को शुद्ध करने के उद्देश्य से लाया जाता है, और निर्मम शुद्धिकरण उन्हें निर्मल बनाने के लिए किया जाता है; कठोर वचन या ताड़ना, दोनों शुद्ध करने के लिए किए जाते हैं और वे उद्धार के लिए हैं। इस प्रकार, उद्धार का आज का तरीका अतीत के तरीके जैसा नहीं है। आज तुम्हारे लिए उद्धार धार्मिक न्याय के ज़रिए लाया जाता है, और यह तुम लोगों में से प्रत्येक को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करने का एक अच्छा उपकरण है। इसके अतिरिक्त, निर्मम ताड़ना तुम लोगों के सर्वोच्च उद्धार का काम करती है—और ऐसी ताड़ना और न्याय का सामना होने पर तुम लोगों को क्या कहना है? क्या तुम लोगों ने शुरू से अंत तक उद्धार का आनंद नहीं लिया है? तुम लोगों ने देहधारी परमेश्वर को देखा है और उसकी सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धि का एहसास किया है; इसके अलावा, तुमने बार-बार मार और अनुशासन का अनुभव किया है। लेकिन क्या तुम लोगों को सर्वोच्च अनुग्रह भी प्राप्त नहीं हुआ है? क्या तुम लोगों को प्राप्त हुए आशीष किसी भी अन्य की तुलना

में अधिक नहीं हैं? तुम लोगों को प्राप्त हुए अनुग्रह सुलेमान को प्राप्त महिमा और संपत्ति से भी अधिक विपुल हैं! इसके बारे में सोचो : यदि आगमन के पीछे मेरा इरादा तुम लोगों को बचाने के बजाय तुम्हारी निंदा करना और सज़ा देना होता, तो क्या तुम लोगों का जीवन इतने लंबे समय तक चल सकता था? क्या तुम, मांस और रक्त के पापी प्राणी आज तक जीवित रहते? यदि मेरा उद्देश्य केवल तुम लोगों को दंड देना होता, तो मैं देह क्यों बनता और इतने महान उद्यम की शुरुआत क्यों करता? क्या तुम पूर्णत: नश्वर प्राणियों को दंडित करने का काम एक वचन भर कहने से ही न हो जाता? क्या तुम लोगों की जानबूझकर निंदा करने के बाद अभी भी मुझे तुम लोगों को नष्ट करने की आवश्यकता होगी? क्या तुम लोगों को अभी भी मेरे इन वचनों पर विश्वास नहीं है? क्या मैं केवल प्यार और करुणा के माध्यम से मनुष्य को बचा सकता हूँ? या क्या मैं मनुष्यों को बचाने के लिए केवल सूली पर चढ़ने के तरीके का ही उपयोग कर सकता हूँ? क्या मेरा धार्मिक स्वभाव मनुष्य को पूरी तरह से आज्ञाकारी बनाने में अधिक सहायक नहीं है? क्या यह मनुष्य को पूरी तरह से बचाने में अधिक सक्षम नहीं है?

यद्यपि मेरे वचन कठोर हो सकते हैं, किंतु वे सब मनुष्य के उद्धार के लिए कहे जाते हैं, क्योंकि मैं केवल वचन बोल रहा हूँ, मनुष्य की देह को दंडित नहीं कर रहा हूँ। इन वचनों के कारण मनुष्य प्रकाश में रह पाता है, यह जान पाता है कि प्रकाश मौजूद है, यह जान पाता है कि प्रकाश अनमोल है, और, इससे भी बढ़कर, यह जान पाता है कि ये वचन उसके लिए कितने फायदेमंद हैं, साथ ही यह भी जान पाता है कि परमेश्वर उद्धार है। यद्यपि मैंने ताड़ना और न्याय के बहुत-से वचन कहे हैं, लेकिन वे जिसका प्रतिनिधित्व करते हैं, वह तुम्हारे साथ किया नहीं गया है। मैं अपना काम करने और अपने वचन बोलने के लिए आया हूँ, मेरे वचन सख्त हो सकते हैं, लेकिन वे तुम्हारी भ्रष्टता और विद्रोहशीलता का न्याय करने के लिए बोले जाते हैं। मेरे ऐसा करने का उद्देश्य मनुष्य को शैतान के अधिकार-क्षेत्र से बचाना है; मैं अपने वचनों का उपयोग मनुष्य को बचाने के लिए कर रहा हूँ। मेरा उद्देश्य अपने वचनों से मनुष्य को नुकसान पहुँचाना नहीं है। मेरे वचन कठोर इसलिए हैं, ताकि मेरे कार्य में परिणाम प्राप्त हो सकें। केवल ऐसे कार्य से ही मनुष्य खुद को जान सकता है और अपने विद्रोही स्वभाव से दूर हो सकता है। वचनों के कार्य की सबसे बड़ी सार्थकता यह है लोग सत्य को समझकर उसे अभ्यास में लाएँ, अपने स्वभाव में बदलाव लाएँ, खुद को जानें और परमेश्वर के कार्य का ज्ञान प्राप्त करें। वचनों को बोलकर कार्य करने से ही परमेश्वर और मनुष्य के बीच संवाद संभव हो सकता है, केवल वचन ही सत्य की व्याख्या कर सकते हैं। इस तरह से

काम करना मनुष्य को जीतने का सबसे अच्छा साधन है; वचनों को बोलने के अलावा कोई भी अन्य विधि लोगों को सत्य और परमेश्वर के कार्य की स्पष्ट समझ देने में सक्षम नहीं है। इसलिए, अपने कार्य के अंतिम चरण में परमेश्वर वे सभी सत्य और रहस्य खोलने के लिए मनुष्य से बात करता है, जिन्हें वे अभी तक नहीं समझते, ताकि वे परमेश्वर से सच्चा मार्ग और जीवन प्राप्त कर सकें और ऐसा करके उसकी इच्छा पूरी कर सकें। मनुष्य पर परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य उसे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में सक्षम बनाना है, और ऐसा उनका उद्धार करने के लिए किया जाता है। इसलिए, मनुष्य का उद्धार करते समय, परमेश्वर उसे दंड देने का काम नहीं करता। मनुष्य के उद्धार के समय परमेश्वर न तो बुरे को दंडित करता है, न अच्छे को पुरस्कृत करता है, और न ही वह विभिन्न प्रकार के लोगों की मंज़िल प्रकट करता है। बल्कि, अपने कार्य के अंतिम चरण के पूरा होने के बाद ही वह बुरे को दंडित और अच्छे को पुरस्कृत करने का काम करेगा, और केवल तभी वह सभी प्रकार के लोगों के अंत को भी प्रकट करेगा। दंडित केवल वही लोग किए जाएँगे, जिन्हें बचाया जाना संभव नहीं है, जबकि बचाया केवल उन्हीं लोगों को जाएगा, जिन्होंने परमेश्वर द्वारा मनुष्य के उद्धार के समय उसका उद्धार प्राप्त कर लिया है। जब परमेश्वर द्वारा उद्धार का कार्य किया जा रहा होगा, उस समय यथासंभव हर उस व्यक्ति को बचा लिया जाएगा, जिसे बचाया जा सकता है, और उनमें से किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, क्योंकि परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य मनुष्य को बचाना है। जो लोग परमेश्वर द्वारा उद्धार के दौरान अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं ला पाएँगे—और वे भी, जो पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित नहीं हो पाएँगे—वे दंड के भागी होंगे। कार्य का यह चरण—वचनों का कार्य—लोगों के लिए उन सभी तरीकों और रहस्यों को खोल देगा, जिन्हें वे नहीं समझते, ताकि वे परमेश्वर की इच्छा और स्वयं से परमेश्वर की अपेक्षाओं को समझ सकें, और अपने अंदर परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाने की पूर्वपेक्षाएँ पैदा करके अपने स्वभाव में परिवर्तन ला सकें। परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए केवल वचनों का उपयोग करता है, अगर लोग थोड़े विद्रोही हो जाएँ, तो वह उन्हें दंडित नहीं करता; क्योंकि यह उद्धार के कार्य का समय है। यदि विद्रोही ढंग से कार्य करने वाले व्यक्ति को दंडित किया जाएगा, तो किसी को भी बचाए जाने का अवसर नहीं मिलेगा; हर व्यक्ति दंडित होकर रसातल में जा गिरेगा। मनुष्य का न्याय करने वाले वचनों का उद्देश्य उन्हें स्वयं को जानने और परमेश्वर के प्रति समर्पित होने देना है; यह उन्हें इस तरह के न्याय से दंडित करना नहीं है। वचनों के कार्य के दौरान बहुत-से लोग देहधारी परमेश्वर के प्रति अपनी विद्रोहशीलता और अवहेलना, और साथ ही अपनी अवज्ञा

भी उजागर करेंगे। फिर भी, वह उन्हें दंडित नहीं करेगा, बल्कि केवल उन लोगों को अलग कर देगा, जो पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुके हैं और जिन्हें बचाया नहीं जा सकता। वह उनकी देह शैतान को दे देगा, और कुछ मामलों में, उनकी देह का अंत कर देगा। शेष लोग निपटे जाने और काट-छाँट किए जाने का अनुसरण और अनुभव करना जारी रखेंगे। यदि अनुसरण करते समय भी ये लोग निपटे जाने और काट-छाँट किए जाने को स्वीकार नहीं करते, और ज़्यादा पतित हो जाते हैं, तो वे उद्धार पाने के अपने अवसर से वंचित हो जाएँगे। वचनों द्वारा जीते जाने के लिए प्रस्तुत प्रत्येक व्यक्ति के पास उद्धार के लिए पर्याप्त अवसर होगा; उद्धार के समय परमेश्वर इन लोगों के प्रति परम उदारता दिखाएगा। दूसरे शब्दों में, उनके प्रति परम सहनशीलता दिखाई जाएगी। अगर लोग गलत रास्ता छोड़ दें और पश्चात्ताप करें, तो परमेश्वर उन्हें उद्धार प्राप्त करने का अवसर देगा। जब मनुष्य पहली बार परमेश्वर से विद्रोह करते हैं, तो वह उन्हें मृत्युदंड नहीं देना चाहता; बल्कि, वह उन्हें बचाने की पूरी कोशिश करता है। यदि किसी में वास्तव में उद्धार के लिए कोई गुंजाइश नहीं है, तो परमेश्वर उन्हें दर-किनार कर देता है। कुछ लोगों को दंडित करने में परमेश्वर थोड़ा धीमा इसलिए चलता है क्योंकि वह हर उस व्यक्ति को बचाना चाहता है, जिसे बचाया जा सकता है। वह केवल वचनों से लोगों का न्याय करता है, उन्हें प्रबुद्ध करता है और उनका मार्गदर्शन करता है, वह उन्हें मारने के लिए छड़ी का उपयोग नहीं करता। मनुष्य को उद्धार दिलाने के लिए वचनों का प्रयोग करना कार्य के अंतिम चरण का उद्देश्य और महत्त्व है।

वो मनुष्य, जिसने परमेश्वर को अपनी ही धारणाओं में सीमित कर दिया है, किस प्रकार उसके प्रकटनों को प्राप्त कर सकता है?

परमेश्वर का कार्य निरंतर आगे बढ़ता रहता है। यद्यपि उसके कार्य का प्रयोजन नहीं बदलता, लेकिन जिन तरीकों से वह कार्य करता है, वे निरंतर बदलते रहते हैं, जिसका अर्थ यह हुआ कि जो लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, वे भी निरंतर बदलते रहते हैं। परमेश्वर जितना अधिक कार्य करता है, मनुष्य का परमेश्वर का ज्ञान उतना ही अधिक होता है। परमेश्वर के कार्य के कारण मनुष्य के स्वभाव में तदनुरूप बदलाव आता है। लेकिन चूँकि परमेश्वर का कार्य हमेशा बदलता रहता है, इसलिए पवित्र आत्मा के कार्य को न समझने वाले और सत्य को न जानने वाले बेतुके लोग परमेश्वर का विरोध करने लग जाते हैं। परमेश्वर का कार्य कभी भी मनुष्यों की धारणाओं के अनुरूप नहीं होता, क्योंकि उसका कार्य हमेशा नया होता है

और कभी भी पुराना नहीं होता, न ही वह कभी पुराने कार्य को दोहराता है, बल्कि पहले कभी नहीं किए गए कार्य के साथ आगे बढ़ता जाता है। चूँकि परमेश्वर अपने कार्य को दोहराता नहीं और मनुष्य परमेश्वर द्वारा अतीत में किए गए कार्य के आधार पर ही उसके आज के कार्य का आकलन करता है, इस कारण परमेश्वर के लिए नए युग के कार्य के प्रत्येक चरण को करना लगातार अत्यंत कठिन हो गया है। मनुष्य के सामने बहुत अधिक मुश्किलें हैं! मनुष्य की सोच बहुत ही रूढ़िवादी है! कोई भी मनुष्य परमेश्वर के कार्य को नहीं जानता, फिर भी हर कोई उसे सीमा में बांध देता है। जब मनुष्य परमेश्वर से दूर जाता है, तो वह जीवन, सत्य और परमेश्वर की आशीषों को खो देता है, फिर भी मनुष्य न तो सत्य, और न ही जीवन को स्वीकार करता है, परमेश्वर द्वारा मानवजाति को प्रदान किए जाने वाले अधिक बड़े आशीषों को तो बिल्कुल ग्रहण नहीं करता। सभी मनुष्य परमेश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं, फिर भी परमेश्वर के कार्य में किसी भी बदलाव को सहन नहीं कर पाते। जो लोग परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार नहीं करते, उन्हें लगता है परमेश्वर का कार्य अपरिवर्तनशील है, और परमेश्वर का कार्य हमेशा ठहरा रहता है। उनके विश्वास के अनुसार, परमेश्वर से जो कुछ भी शाश्वत उद्धार प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, वह है व्यवस्था का पालन करना, अगर वे पश्चाताप करेंगे और अपने पापों को स्वीकार करेंगे, तो परमेश्वर की इच्छा हमेशा संतुष्ट रहेगी। वे इस विचार के हैं कि परमेश्वर केवल वही हो सकता है जो व्यवस्था के अधीन है और जिसे मनुष्य के लिए सलीब पर चढ़ाया गया था; उनका यह भी विचार है कि परमेश्वर न तो बाइबल से बढ़कर होना चाहिए और न ही वो हो सकता है। उनके इन्हीं विचारों ने उन्हें पुरानी व्यवस्था से दृढ़ता से बाँध रखा है और मृत नियमों में जकड़ कर रखा है। ऐसे लोग तो और भी हैं जो यह मानते हैं कि परमेश्वर का नया कार्य जो भी हो, उसे भविष्यवाणियों द्वारा सही साबित किया जाना ही चाहिए और कार्य के प्रत्येक चरण में, जो भी "सच्चे" मन से उसका अनुसरण करते हैं, उन्हें प्रकटन भी अवश्य दिखाया जाना चाहिए; अन्यथा वह कार्य परमेश्वर का कार्य नहीं हो सकता। परमेश्वर को जानना मनुष्य के लिए पहले ही आसान कार्य नहीं है। मनुष्य के बेतुके हृदय और उसके आत्म-महत्व एवं दंभी विद्रोही स्वभाव को देखते हुए, परमेश्वर के नए कार्य को ग्रहण करना मनुष्य के लिए और भी अधिक कठिन है। मनुष्य न तो परमेश्वर के कार्य पर ध्यान से विचार करता है और न ही इसे विनम्रता से स्वीकार करता है; बल्कि मनुष्य परमेश्वर से प्रकाशन और मार्गदर्शन का इंतजार करते हुए, तिरस्कार का रवैया अपनाता है। क्या यह ऐसे मनुष्य का व्यवहार नहीं है जो परमेश्वर का विरोधी और उससे विद्रोह करने वाला है? इस प्रकार के मनुष्य कैसे परमेश्वर का

अनुमोदन प्राप्त कर सकते हैं?

यीशु ने कहा था कि यहोवा का कार्य अनुग्रह के युग में ही समाप्त हो गया, वैसे ही जैसे मैं आज कहता हूँ कि यीशु का कार्य भी पीछे छूट गया है। यदि केवल व्यवस्था का युग होता और अनुग्रह का युग न होता, तो यीशु को सलीब पर नहीं चढ़ाया गया होता और वह पूरी मानवजाति का उद्धार नहीं कर पाता; यदि केवल व्यवस्था का युग होता, तो क्या मानवजाति कभी आज तक पहुँच पाती? इतिहास आगे बढ़ता है, क्या इतिहास परमेश्वर के कार्य की प्राकृतिक व्यवस्था नहीं है? क्या यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भर में मनुष्य के लिए उसके प्रबंधन का चित्रण नहीं है? इतिहास आगे प्रगति करता है, वैसे ही परमेश्वर का कार्य भी आगे बढ़ता है, और परमेश्वर की इच्छा निरंतर बदलती रहती है। वह कार्य के एक ही चरण में छः हज़ार साल तक नहीं रह सकता था, क्योंकि हर कोई जानता है कि परमेश्वर हमेशा नया है और कभी पुराना नहीं होता है, और वह हमेशा सलीब पर चढ़ने जैसा काम नहीं कर सकता, सलीब पर एक बार, दो बार, तीन बार नहीं चढ़ सकता...। ऐसा सोचना हास्यास्पद होगा। परमेश्वर वही कार्य करता नहीं रह सकता; उसका कार्य हमेशा बदलता रहता है और हमेशा नया रहता है, बहुत कुछ वैसा ही जैसे कि मैं प्रतिदिन तुम लोगों से नए वचन कहता और नया कार्य करता हूँ। यही वह कार्य है जो मैं करता हूँ, और मुख्य शब्द हैं "नया" और "अद्‌भुत"। "परमेश्वर अपरिवर्तनशील है, और परमेश्वर हमेशा परमेश्वर ही रहेगा" : यह कहावत वास्तव में सही है। परमेश्वर का सार कभी भी नहीं बदलता, परमेश्वर हमेशा परमेश्वर, और वह कभी शैतान नहीं बन सकता, परन्तु इनसे यह सिद्ध नहीं होता है कि उसका कार्य उसके सार की तरह ही अचर और अचल है। तुम कहते हो कि परमेश्वर अपरिवर्तनशील है, परन्तु फिर तुम किस प्रकार से यह समझा सकते हो कि परमेश्वर हमेशा नया है और कभी भी पुराना नहीं होता? परमेश्वर का कार्य हमेशा फैलता और निरंतर बदलता रहता है, उसकी इच्छा निरंतर व्यक्त होती रहती है और मनुष्य को ज्ञात करवाई जाती है। जैसे-जैसे मनुष्य परमेश्वर के कार्य का अनुभव करता है, मनुष्य का स्वभावबिना रुके बदलता जाता है, और उसका ज्ञान भी बदलता जाता है। तो फिर, यह परिवर्तन कहाँ से उत्पन्न होता है? क्या यह परमेश्वर के चिर-परिवर्तनशील कार्य से नहीं होता? यदि मनुष्य का स्वभाव बदल सकता है, तो मनुष्य मेरे कार्य और मेरे वचनों को निरंतर बदलने क्यों नहीं दे सकता? क्या मेरा मनुष्यों के प्रतिबंधों के अधीन होना आवश्यक है? इसमें, तुम क्या केवल ज़बर्दस्ती की बहस और कुतर्क का इस्तेमाल नहीं ले रहे हो?

अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने अपने अनुयायियों के सामने प्रकट होकर कहा, "जिसकी प्रतिज्ञा

मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" क्या तुम जानते हो कि इन वचनों को किस प्रकार से समझाया जा सकता है? क्या तुम अब उसकी सामर्थ्य को धारण करते हो? क्या तुम समझ गए कि "सामर्थ्य" किसे संदर्भित करता हैं? यीशु ने घोषणा की थी कि अंत के दिनों में मनुष्य को सत्य का आत्मा प्रदान किया जाएगा। अब अंत के दिन आ चुके हैं; क्या तुम जानते हो कि सत्य का आत्मा किस प्रकार वचनों को व्यक्त करता है? सत्य का आत्मा कहाँ प्रकट होकर कार्य करता है? नबी यशायाह की भविष्यवाणियों की पुस्तक में कभी भी यह उल्लेख नहीं किया गया कि नए नियम के युग में, यीशु नाम का बच्चा पैदा होगा; केवल यह लिखा था कि इम्मानुएल नाम का एक नर शिशु पैदा होगा। "यीशु" नाम का उल्लेख क्यों नहीं किया गया? पुराने नियम में कहीं भी उसका नाम नहीं दिखाई देता, तब भी तुम यीशु में विश्वास क्यों रखते हो? तुमने यीशु में विश्वास रखने से पहले निश्चित रूप से उसे अपनी आँखों से तो नहीं देखा था? या तुमने प्रकाशन प्राप्त करने पर विश्वास रखना प्रारम्भ किया? क्या परमेश्वर वास्तव में तुम पर ऐसा अनुग्रह दर्शाएगा? और तुम पर इस प्रकार के महान आशीष बरसाएगा? यीशु में तुम्हारी आस्था का आधार क्या है? तुम यह विश्वास क्यों नहीं करते कि आज परमेश्वर देहधारी हो गया है? तुम यह क्यों कहते हो कि तुम्हारे लिए परमेश्वर द्वारा प्रकाशन की अनुपस्थिति यह सिद्ध करती है कि वह देहधारी नहीं हुआ है? क्या परमेश्वर को अपना कार्य प्रारम्भ करने से पहले मनुष्य को सूचित करना चाहिए? क्या पहले उसे मनुष्य से अनुमोदन लेना चाहिए? यशायाह ने केवल यह घोषणा की थी कि चरणी में एक नर शिशु का जन्म होगा; उसने यह भविष्यवाणी नहीं की थी कि मरियम यीशु को जन्म देगी। मरियम से जन्मे यीशु पर तुम्हारे विश्वास का आधार क्या है? निश्चय ही तुम्हारा विश्वास भ्रमपूर्ण नहीं है! कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर का नाम नहीं बदलता, तो फिर यहोवा का नाम यीशु क्यों हो गया? यह भविष्यवाणी की गई थी मसीहा आएगा, तो फिर यीशु नाम का एक व्यक्ति क्यों आ गया? परमेश्वर का नाम क्यों बदल गया? क्या इस तरह का कार्य काफी समय पहले नहीं किया गया था? क्या परमेश्वर आज नया कार्य नहीं कर सकता? कल का कार्य बदला जा सकता है, और यीशु का कार्य यहोवा के कार्य के बाद आ सकता है। तो क्या यीशु के कार्य के बाद कोई अन्य कार्य नहीं हो सकता? यदि यहोवा का नाम बदल कर यीशु हो सकता है, तो क्या यीशु का नाम भी नहीं बदला जा सकता? इसमें कुछ भी असामान्य नहीं है; बात केवल इतनी-सी है कि लोग बहुत सरल दिमाग के हैं। परमेश्वर हमेशा परमेश्वर ही रहेगा। चाहे उसका काम कैसे भी बदले, चाहे उसका नाम कैसे भी बदल जाए, लेकिन उसका

स्वभाव और बुद्धि कभी नहीं बदलेगी। यदि तुम्हें लगता है कि परमेश्वर को केवल यीशु के नाम से ही पुकारा जा सकता है, तो फिर तुम्हारा ज्ञान बहुत सीमित है। क्या तुम यह दावे से कह सकते हो कि परमेश्वर का नाम हमेशा के लिए यीशु रहेगा, परमेश्वर हमेशा यीशु नाम से ही जाना जाएगा, और यह कभी नहीं बदलेगा? क्या तुम यह यकीन से कह सकते हो कि यीशु नाम ने ही व्यवस्था के युग का समापन किया और वही अंतिम युग का भी समापन करेगा? कौन कह सकता है कि यीशु का अनुग्रह, युग का समापन कर सकता है? यदि तुम्हें इन सत्यों की साफ समझ नहीं है, तो तुम न तो सुसमाचार का प्रचार करने के योग्य होगे, न ही तुम स्वयं मज़बूती से टिक पाओगे। जब वह दिन आएगा जब तुम उन धर्म जगत के लोगों की सभी समस्याओं को हल करोगे और उनकी भ्रांतियों का खंडन करोगे, तो यह सिद्ध हो जाएगा कि तुम कार्य के इस चरण के बारे में पूरी तरह से निश्चित हो और तुम्हें जरा-सा भी संदेह नहीं है। यदि तुम उनकी भ्रांतियों का खंडन नहीं कर पाए, तो वे तुम पर झूठे आरोप लगाएँगे और तुम्हारी निंदा करेंगे। क्या यह शर्मनाक नहीं होगा?

सभी यहूदी पुराने नियम पढ़ते थे और यशायाह की भविष्यवाणी को जानते थे कि चरणी में एक नर शिशु जन्म लेगा। तो फिर इस भविष्यवाणी को भलीभाँति जानते हुए भी उन्होंने यीशु को क्यों सताया? क्या ऐसा उनकी विद्रोही प्रकृति और पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति अज्ञानता के कारण नहीं हुआ? उस समय, फरीसियों को विश्वास था कि यीशु का कार्य उस भविष्यवाणी से भिन्न था जो वे नर शिशु के बारे में जानते थे; और आज लोग परमेश्वर को इसलिए अस्वीकार करते हैं क्योंकि देहधारी परमेश्वर का कार्य बाइबल के अनुरूप नहीं है। क्या परमेश्वर के विरुद्ध उनके विद्रोहीपन का सार समान नहीं है? क्या तुम बिना कोई प्रश्न किए, पवित्र आत्मा के समस्त कार्य को स्वीकार कर सकते हो? यदि यह पवित्र आत्मा का कार्य है, तो यह धारा सही है और तुम्हें बिना किसी आशंका के इसे स्वीकार कर लेना चाहिये; और क्या स्वीकार करना है, इसे लेकर तुम्हें कोई आनाकानी नहीं करनी चाहिए। यदि तुम परमेश्वर से और अधिक अंतर्दृष्टि पाते हो फिर भी उसके खिलाफ ज़्यादा चौकस रहने लगते हो, तो क्या यह अनुचित नहीं है? तुम्हें बाइबल में और अधिक प्रमाण की तलाश नहीं करनी चाहिए; अगर यह पवित्र आत्मा का कार्य है, तो तुम्हें उसे स्वीकार कर लेना चाहिये, क्योंकि तुम परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए परमेश्वर पर विश्वास करते हो, तुम्हें उसकी जाँच-पड़ताल नहीं करनी चाहिए। यह दिखाने के लिए कि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ, तुम्हें मुझसे और सबूत नहीं माँगने चाहिए, बल्कि तुम्हें यह विचार करने में सक्षम होना चाहिए कि क्या मैं तुम्हारे लिए लाभदायक

हूँ, यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। भले ही तुम्हें बाइबल में बहुत सारे अखंडनीय सबूत प्राप्त हो जाएँ, फिर भी ये तुम्हें पूरी तरह से मेरे सामने नहीं ला सकते। तुम केवल बाइबल के दायरे में ही रहते हो, न कि मेरे सामने; बाइबल मुझे जानने में तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती है, न ही यह मेरे लिए तुम्हारे प्रेम को गहरा कर सकती है। यद्यपि बाइबल में भविष्यवाणी की गई थी कि एक नर शिशु जन्म लेगा, मगर कोई इसकी थाह नहीं पा सका कि किस पर यह भविष्यवाणी खरी उतरेगी, क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर का कार्य नहीं पता था, और यही कारण था कि फरीसी यीशु के विरोध में खड़े हो गए। कुछ लोग जानते हैं कि मेरा कार्य मनुष्य के हित में है, फिर भी वे निरंतर यह विश्वास करते रहते हैं कि यीशु और मैं, दो पूरी तरह से अलग, परस्पर असंगत प्राणी हैं। उस समय, यीशु ने अनुग्रह के युग में अपने अनुयायियों को इन विषयों पर बस उपदेशों की एक श्रृंखला दी, जैसे कि कैसे अभ्यास करें, कैसे एक साथ इकट्ठा हों, प्रार्थना में कैसे याचना करें, दूसरों से कैसा व्यवहार करें इत्यादि। उसने अनुग्रह के युग का कार्य किया, और उसने केवल यह प्रतिपादित किया कि शिष्य और वे लोग जो उसका अनुसरण करते हैं, कैसे अभ्यास करें। उसने केवल अनुग्रह के युग का ही कार्य किया और अंत के दिनों का कोई कार्य नहीं किया। जब यहोवा ने व्यवस्था के युग में पुराने नियम निर्धारित किए, तब उसने अनुग्रह के युग का कार्य क्यों नहीं किया? उसने पहले से ही अनुग्रह के युग के कार्य को स्पष्ट क्यों नहीं किया? क्या यह मनुष्यों को इसे स्वीकार करने में मदद नहीं करता? उसने केवल यह भविष्यवाणी की कि एक नर शिशु जन्म लेगा और सामर्थ्य में आएगा, परन्तु उसने पहले से ही अनुग्रह के युग का कार्य नहीं किया। प्रत्येक युग में परमेश्वर के कार्य की स्पष्ट सीमाएँ हैं; वह केवल वर्तमान युग का कार्य करता है और कभी भी कार्य का आगामी चरण पहले से नहीं करता। केवल इस तरह से उसका प्रत्येक युग का प्रतिनिधि कार्य सामने लाया जा सकता है। यीशु ने केवल अंत के दिनों के चिह्नों के बारे में बात की, इस बारे में बात की कि किस प्रकार से धैर्यवान बनें, कैसे बचाए जाएँ, कैसे पश्चाताप करें, कैसे अपने पापों को स्वीकार करें, सलीब को कैसे धारण करें और कैसे पीड़ा सहन करें; उसने कभी इस पर कुछ नहीं कहा कि अंत के दिनों में मनुष्य को किस प्रकार प्रवेश हासिल करना चाहिए या उसे परमेश्वर की इच्छा को किस प्रकार से संतुष्ट करने की कोशिश करनी चाहिए। वैसे, क्या अंत के दिनों के परमेश्वर के कार्य को बाइबल के अंदर खोजना हास्यास्पद नहीं है? महज़ बाइबल को हाथों में पकड़कर तुम क्या देख सकते हो? चाहे बाइबल का व्याख्याता हो या उपदेशक, आज के कार्य को कौन पहले से देख सकता था?

"जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।" क्या तुम लोगों ने अब पवित्र आत्मा के वचन सुन लिए हैं? तुम लोगों पर परमेश्वर के वचन आ चुके हैं। क्या तुम लोग उन्हें सुनते हो? अंत के दिनों में परमेश्वर वचनों का कार्य करता है, और ऐसे वचन पवित्र आत्मा के वचन हैं, क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा है और वह देहधारी भी हो सकता है; इसलिए, पवित्र आत्मा के वचन, जैसे अतीत में बोले गए थे, आज देहधारी परमेश्वर के वचन हैं। कई बेतुके लोगों का मानना है कि चूँकि पवित्र आत्मा बोल रहा है, इसलिए उसकी वाणी स्वर्ग से आनी चाहिए ताकि सब सुन सकें। इस प्रकार सोचने वाला कोई भी मनुष्य परमेश्वर के कार्य को नहीं जानता। वास्तव में, पवित्र आत्मा के द्वारा कहे गए कथन वही हैं जो देहधारी परमेश्वर द्वारा कहे गए हैं। पवित्र आत्मा प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य से बात नहीं कर सकता; व्यवस्था के युग में भी, यहोवा ने प्रत्यक्ष रूप से लोगों से बात नहीं की थी। क्या इस बात की संभावना और भी कम नहीं होगी कि वह आज के युग में ऐसा करेगा? कार्य करने और वचन बोलने की खातिर परमेश्वर के लिए देहधारण करना ज़रूरी है; अन्यथा उसका कार्य अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकता। जो लोग देहधारी परमेश्वर को नकारते हैं, वे आत्मा को या उन सिद्धान्तों को नहीं जानते जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है। जो मानते हैं कि अब पवित्र आत्मा का युग है, फिर भी उसके नए कार्य को स्वीकार नहीं करते, वे अस्पष्ट और अमूर्त विश्वास के बीच जीने वाले लोग हैं। ऐसे लोगों को कभी भी पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त नहीं होगा। जो लोग बस चाहते हैं कि पवित्र आत्मा प्रत्यक्ष रूप से उनसे बात करके अपना कार्य करे और देहधारी परमेश्वर के वचनों या कार्य को स्वीकार नहीं करते, वे कभी भी नए युग में प्रवेश या परमेश्वर से पूरी तरह से उद्धार प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

जो परमेश्वर को और उसके कार्य को जानते हैं, केवल वे ही परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हैं

देहधारी परमेश्वर के कार्य में दो भाग शामिल हैं। जब वह पहली बार देह बना, तो लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया या उसे नहीं पहचाना, और उन्होंने यीशु को सलीब पर चढ़ा दिया। फिर, जब वह दूसरी बार देह बना, तो लोगों ने फिर भी उस पर विश्वास नहीं किया, और पहचाना तो बिलकुल भी नहीं, और उन्होंने एक बार फिर से मसीह को सलीब पर चढ़ा दिया। क्या मनुष्य परमेश्वर का बैरी नहीं है? यदि मनुष्य उसे नहीं जानता, तो वह परमेश्वर का अंतरंग कैसे हो सकता है? कैसे वह परमेश्वर की गवाही देने के योग्य

हो सकता है? क्या परमेश्वर से प्यार करने, परमेश्वर की सेवा करने, और परमेश्वर की महिमा बढ़ाने के मनुष्य के दावे कपटपूर्ण झूठ नहीं हैं? यदि तुम अपने जीवन को इन अवास्तविक, अव्यावहारिक बातों को समर्पित करते हो, तो क्या तुम व्यर्थ में श्रम नहीं करते हो? तुम परमेश्वर के अंतरंग कैसे हो सकते हो, जब तुम जानते तक नहीं कि परमेश्वर कौन है? क्या इस प्रकार की खोज अस्पष्ट और अमूर्त नहीं है? क्या यह कपटपूर्ण नहीं है? कोई परमेश्वर का अंतरंग कैसे हो सकता है? परमेश्वर का अंतरंग होने के व्यावहारिक मायने क्या हैं? क्या तुम परमेश्वर के आत्मा के अंतरंग हो सकते हो? क्या तुम देख सकते हो कि पवित्रात्मा कितना महान और उच्च है? किसी अदृश्य, अमूर्त परमेश्वर का अंतरंग होना—क्या यह अस्पष्ट और अमूर्त नहीं है? इस प्रकार की खोज के व्यावहारिक मायने क्या हैं? क्या यह सब एक कपटपूर्ण झूठ नहीं है? तुम जिस चीज का प्रयास करते हो, वह है परमेश्वर का अंतरंग बनना, पर वास्तव में तुम शैतान के छोटे-से पालतू कुत्ते हो, क्योंकि तुम परमेश्वर को नहीं जानते, और तुम अस्तित्वहीन "सभी चीजों के परमेश्वर" की खोज करते हो, जो कि अदृश्य, अमूर्त और तुम्हारी अपनी धारणाओं का उत्पाद है। अस्पष्ट रूप से से कहा जाए, तो इस प्रकार का "परमेश्वर" शैतान है, और व्यावहारिक रूप से कहा जाए तो यह तुम स्वयं हो। तुम अपना स्वयं का ही अंतरंग होने का प्रयास करते हो, फिर भी कहते हो कि तुम परमेश्वर का अंतरंग होने का प्रयास करते हो—क्या यह ईशनिंदा नहीं है? ऐसी खोज का क्या मूल्य है? यदि परमेश्वर का आत्मा देह नहीं बनता, तो परमेश्वर का सार मनुष्य के लिए केवल अदृश्य, अमूर्त जीवन का आत्मा, रूपहीन और निराकार है, अभौतिक प्रकार का, अगम्य और अबोधगम्य है। मनुष्य किसी निराकार, चमत्कारी, अथाह आत्मा का अंतरंग कैसे हो सकता है? क्या यह एक मजाक नहीं है? इस प्रकार के बेतुके तर्क गलत और अव्यावहारिक हैं। सृजित मनुष्य परमेश्वर के आत्मा के लिए अंतर्निहित रूप से भिन्न है, इसलिए ये दोनों अंतरंग कैसे हो सकते हैं? यदि परमेश्वर का आत्मा देह में साकार नहीं होता, यदि परमेश्वर देह न बनता और उसने एक सृजित प्राणी बनकर अपने आपको विनीत न बनाया होता, तो सृजित मनुष्य उसका अंतरंग होने में अयोग्य और असमर्थ दोनों होता, और उन परमेश्वर के विश्वासियों के अलावा, जिनके पास उनकी आत्माओं के स्वर्ग में प्रवेश कर जाने के बाद परमेश्वर का अंतरंग होने का एक अवसर हो सकता है, अधिकतर लोग परमेश्वर के आत्मा के अंतरंग होने के अयोग्य होते। और यदि लोग देहधारी परमेश्वर के मार्गदर्शन में स्वर्ग में परमेश्वर के अंतरंग होने की इच्छा करते हैं, तो क्या वे आश्चर्यजनक ढंग से मूर्ख अमानव नहीं हैं? लोग केवल अदृश्य परमेश्वर के प्रति "वफ़ादारी" का अनुसरण करते हैं और देखे जा

सकने वाले परमेश्वर पर थोड़ा-सा भी ध्यान नहीं देते, क्योंकि किसी अदृश्य परमेश्वर का अनुसरण करना बहुत आसान है। लोग उसे जिस तरह चाहें, कर सकते हैं। किंतु दृश्यमान परमेश्वर का अनुसरण इतना आसान नहीं है। जो व्यक्ति किसी अज्ञात परमेश्वर को खोजता है, वह परमेश्वर को प्राप्त करने में पूरी तरह असमर्थ रहता है, क्योंकि सभी अज्ञात और अमूर्त वस्तुएँ मनुष्य द्वारा कल्पित हैं, और मनुष्य उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता। यदि तुम लोगों के बीच आया हुआ परमेश्वर एक उच्च और असाधारण परमेश्वर होता, जो तुम लोगों के लिए अगम्य होता, तो तुम लोग उसकी इच्छा को कैसे समझ पाते? और तुम किस तरह उसे जान और समझ पाते? यदि वह केवल अपना कार्य करता, और मनुष्य के साथ उसका कोई भी सामान्य संपर्क न होता, या उसमें कोई सामान्य मानवता नहीं होती और वह मनुष्यों की पहुँच से बाहर होता, तो भले ही उसने तुम लोगों के लिए कितना भी अधिक कार्य किया होता, किंतु तुम लोगों का उसके साथ कोई संपर्क न होता, और तुम लोग उसे देखने में असमर्थ होते, तो तुम लोग उसे कैसे जान सकते थे? यदि यह सामान्य मानवता से युक्त देह का मामला न होता, तो मनुष्य के पास परमेश्वर को जानने का कोई तरीका न होता; यह केवल परमेश्वर के देह बनने के कारण है कि मनुष्य देहधारी परमेश्वर का अंतरंग होने के योग्य है। लोग परमेश्वर के अंतरंग इसलिए हो पाते हैं, क्योंकि वे उसके संपर्क में आते हैं, क्योंकि वे उसके साथ इकट्ठे रहते हैं और उसका साथ बनाए रखते हैं, और इसलिए धीरे-धीरे उसे जान जाते हैं। यदि ऐसा न होता, तो क्या मनुष्य का अनुसरण व्यर्थ न होता? अर्थात्, यह सब परमेश्वर के कार्य के कारण नहीं, बल्कि देहधारी परमेश्वर की वास्तविकता और सामान्यता की वजह से है कि मनुष्य परमेश्वर का अंतरंग होने में सक्षम है। यह केवल परमेश्वर के देह बनने के कारण है कि लोगों के पास अपना कर्तव्य पूरा करने का अवसर है, और वास्तविक परमेश्वर की आराधना करने का अवसर है। क्या यह सर्वाधिक वास्तविक और व्यावहारिक सत्य नहीं है? अब, क्या तुम अभी भी स्वर्ग के परमेश्वर का अंतरंग होने की इच्छा करते हो? केवल जब परमेश्वर अपने आपको एक निश्चित बिंदु तक विनम्र कर लेता है, अर्थात्, केवल जब परमेश्वर देह बनता है, तभी मनुष्य उसका अंतरंग और विश्वासपात्र बन सकता है। परमेश्वर पवित्रात्मा का है : लोग इस पवित्रात्मा के अंतरंग होने के योग्य कैसे हो सकते हैं, जो कि बहुत ही उच्च और अथाह है? केवल जब परमेश्वर का आत्मा देह में अवरोहण करता है, और मनुष्य के जैसे बाह्य स्वरूप वाला प्राणी बनता है, तभी लोग उसकी इच्छा को समझ सकते हैं और वास्तव में उसके द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। वह देह में बोलता और कार्य करता है, मानवजाति की खुशियों, दुःखों और क्लेशों में सहभागी होता है, उसी संसार में

रहता है जिसमें मानवजाति रहती है, मनुष्यों की रक्षा करता है, उनका मार्गदर्शन करता है, और इसके माध्यम से लोगों को शुद्ध करता है और उन्हें अपना उद्धार और अपने आशीष प्राप्त करने देता है। इन चीज़ों को प्राप्त करने के बाद लोग वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं, और केवल तभी वे परमेश्वर के अंतरंग बन सकते हैं। केवल यही व्यावहारिक है। यदि परमेश्वर लोगों के लिए अदृश्य और अमूर्त होता, तो फिर वे उसके अंतरंग कैसे हो सकते थे? क्या यह खोखला सिद्धांत नहीं है?

अब तक परमेश्वर पर विश्वास करने के बाद, कई लोग अभी भी उसका अनुसरण करते हैं, जो अज्ञात और अमूर्त है। उन्हें आज परमेश्वर के कार्य की वास्तविकता की कोई समझ नहीं है, और वे अभी भी शाब्दिक अर्थों और सिद्धांतों के बीच जीते हैं। इतना ही नहीं, कई लोगों को अभी भी नए वाक्यांशों की वास्तविकता में प्रवेश करना बाकी है, जैसे कि "परमेश्वर से प्रेम करने वालों की नई पीढ़ी", "परमेश्वर का अंतरंग", "परमेश्वर से प्रेम करने का अनुकरणीय आदर्श और प्रतिमान" और "पतरस की शैली"; इसके बजाय, उनकी खोज अभी भी अज्ञात और अमूर्त है, वे अभी भी सिद्धांत में इधर-उधर टटोलते हैं, और उन्हें इन शब्दों की वास्तविकता की कोई समझ नहीं है। जब परमेश्वर का आत्मा देह बनता है, तो तुम देह में उसके कार्य को देख और छू सकते हो। पर यदि तुम अभी भी उसका अंतरंग बनने में अक्षम हो, यदि तुम अभी भी उसका विश्वासपात्र बनने में असमर्थ हो, तो तुम परमेश्वर के आत्मा के विश्वासपात्र कैसे हो सकते हो? यदि तुम आज के परमेश्वर को नहीं जानते, तो तुम परमेश्वर से प्रेम करने वाली नई पीढ़ी में से एक कैसे हो सकते हो? क्या ये वाक्यांश खोखले शाब्दिक अर्थ और सिद्धांत नहीं हैं? क्या तुम पवित्रात्मा को देखने और उसकी इच्छा को समझ सकने में सक्षम हो? क्या ये वाक्यांश खोखले नहीं हैं? तुम्हारे लिए इन वाक्यांशों और पदों को केवल बोलना पर्याप्त नहीं है, और न ही तुम केवल संकल्प के माध्यम से परमेश्वर की संतुष्टि को प्राप्त कर सकते हो। तुम इन वाक्यांशों को केवल बोलकर ही संतुष्ट हो, और ऐसा तुम अपनी खुद की इच्छाओं को संतुष्ट करने, अपने खुद के अवास्तविक आदर्शों को संतुष्ट करने, और अपनी खुद की धारणाओं और सोच को संतुष्ट करने के लिए करते हो। यदि तुम आज के परमेश्वर को नहीं जानते, तो चाहे तुम कुछ भी करो, तुम परमेश्वर के हृदय की इच्छा पूरी करने में असमर्थ रहोगे। परमेश्वर का विश्वासपात्र होने का क्या अर्थ है? क्या तुम अभी भी इसे नहीं समझते? चूँकि परमेश्वर का अंतरंग मनुष्य है, इसलिए परमेश्वर भी मनुष्य है। अर्थात्, परमेश्वर देह बन गया है, मनुष्य बन गया है। केवल एक ही प्रकार के लोग एक-दूसरे को विश्वासपात्र कह सकते हैं, केवल तभी वे अंतरंग माने जा सकते हैं। यदि परमेश्वर

पवित्रात्मा का होता, तो सृजित मनुष्य उसका अंतरंग कैसे बन सकता था?

परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास, सत्य की तुम्हारी खोज, और यहाँ तक कि तुम्हारे आचरण का तरीका, सब वास्तविकता पर आधारित होने चाहिए : जो कुछ भी तुम करते हो वह व्यावहारिक होना चाहिए, और तुम्हें भ्रामक और काल्पनिक बातों का अनुसरण नहीं करना चाहिए। इस प्रकार से व्यवहार करने का कोई मूल्य नहीं है, और, इतना ही नहीं, ऐसे जीवन का कोई अर्थ नहीं है। चूँकि तुम्हारी खोज और जीवन केवल मिथ्या और कपट के बीच व्यतीत होते हैं, और चूँकि तुम उन चीजों की खोज नहीं करते जो मूल्यवान और अर्थपूर्ण हैं, इसलिए तुम्हें केवल अनर्गल तर्क-वितर्क और सिद्धांत प्राप्त होते हैं, जो सत्य से संबंधित नहीं होते। ऐसी चीजों का तुम्हारे अस्तित्व के अर्थ और मूल्य से कोई संबंध नहीं है और ये तुम्हारे लिए केवल खोखला अधिकार ला सकती हैं। इस तरह, तुम्हारा पूरा जीवन बिना किसी मूल्य और अर्थ का हो जाएगा—और यदि तुम सार्थक जीवन की खोज नहीं करते, तो तुम सौ वर्षों तक भी जीवित रह सकते हो किंतु यह सब व्यर्थ होगा। उसे मानव-जीवन कैसे कहा जा सकता है? क्या यह वास्तव में एक जानवर का जीवन नहीं है? इसी प्रकार, यदि तुम लोग परमेश्वर पर विश्वास के मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास तो करते हो, किंतु उस परमेश्वर को खोजने का कोई प्रयास नहीं करते, जिसे देखा जा सकता है, और इसके बजाय अदृश्य एवं अमूर्त परमेश्वर की आराधना करते हो, तो क्या इस प्रकार की खोज और भी अधिक व्यर्थ नहीं है? अंत में, तुम्हारी खोज खंडहरों का ढेर बन जाएगी। ऐसी खोज का तुम्हें क्या लाभ है? मनुष्य के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह केवल उन्हीं चीजों से प्यार करता है, जिन्हें वह देख या स्पर्श नहीं कर सकता, जो अत्यधिक रहस्यमयी और अद्भुत होती हैं, और जो मनुष्यों द्वारा अकल्पनीय और अप्राप्य हैं। जितनी अधिक अवास्तविक ये वस्तुएँ होती हैं, उतना ही अधिक लोगों द्वारा उनका विश्लेषण किया जाता है, और यहाँ तक कि लोग अन्य सभी से बेपरवाह होकर भी उनकी खोज करते हैं और उन्हें प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जितना अधिक अवास्तविक ये चीज़ें होती हैं, उतना ही अधिक बारीकी से लोग उनकी जाँच और विश्लेषण करते हैं और, यहाँ तक कि इतनी दूर चले जाते हैं कि उनके बारे में अपने स्वयं के व्यापक विचार बना लेते हैं। इसके विपरीत, चीजें जितनी अधिक वास्तविक होती है, लोग उनके प्रति उतने ही अधिक उपेक्षापूर्ण होते हैं; वे केवल उन्हें हेय दृष्टि से देखते हैं और यहाँ तक कि उनके प्रति तिरस्कारपूर्ण भी हो जाते हैं। क्या यही प्रवृत्ति तुम लोगों की उस यथार्थपरक कार्य के प्रति नहीं है, जो मैं आज करता हूँ? ये चीज़ें जितनी अधिक वास्तविक होती हैं, उतना ही अधिक तुम लोग उनके विरुद्ध

पूर्वाग्रही हो जाते हो। तुम उनकी जाँच करने के लिए ज़रा भी समय नहीं निकालते, बल्कि केवल उनकी उपेक्षा कर देते हो; तुम लोग इन यथार्थवादी, निम्नस्तरीय अपेक्षाओं को हेय दृष्टि से देखते हो, और यहाँ तक कि इस परमेश्वर के बारे में कई धारणाओं को प्रश्रय देते हो, जो कि सर्वाधिक वास्तविक है, और बस उसकी वास्तविकता और सामान्यता को स्वीकार करने में अक्षम हो। इस तरह, क्या तुम लोग एक अज्ञात विश्वास नहीं रखते? तुम लोगों का अतीत के अज्ञात परमेश्वर में अचल विश्वास है, और आज के वास्तविक परमेश्वर में कोई रुचि नहीं है। क्या ऐसा इसलिए नहीं है, क्योंकि कल का परमेश्वर और आज का परमेश्वर दो भिन्न-भिन्न युगों से हैं? क्या ऐसा इसलिए भी नहीं है, क्योंकि कल का परमेश्वर स्वर्ग का उच्च परमेश्वर है, जबकि आज का परमेश्वर धरती पर एक छोटा-सा मनुष्य है? इसके अलावा, क्या ऐसा इसलिए नहीं है, क्योंकि मनुष्यों द्वारा आराधना किया जाने वाला परमेश्वर उनकी अपनी धारणाओं से उत्पन्न हुआ है, जबकि आज का परमेश्वर धरती पर उत्पन्न, वास्तविक देह है? हर चीज पर विचार करने के बाद, क्या ऐसा इसलिए नहीं है, क्योंकि आज का परमेश्वर इतना अधिक वास्तविक है कि मनुष्य उसकी खोज नहीं करता? क्योंकि आज का परमेश्वर लोगों से जो कहता है, वह ठीक वही है, जिसे करने के लिए लोग सबसे अधिक अनिच्छुक हैं, और जो उन्हें लज्जित महसूस करवाता है। क्या यह लोगों के लिए चीज़ों को कठिन बनाना नहीं है? क्या यह उसके दागों को उघाड़ नहीं देता? इस प्रकार से, वास्तविकता की खोज न करने वालों में से कई लोग देहधारी परमेश्वर के शत्रु बन जाते हैं, मसीह-विरोधी बन जाते हैं। क्या यह एक स्पष्ट तथ्य नहीं है? अतीत में, जब परमेश्वर का अभी देह बनना बाकी था, तो तुम कोई धार्मिक हस्ती या कोई धर्मनिष्ठ विश्वासी रहे होगे। परमेश्वर के देह बनने के बाद ऐसे कई धर्मनिष्ठ विश्वासी अनजाने में मसीह-विरोधी बन गए। क्या तुम जानते हो, यहाँ क्या चल रहा है? परमेश्वर पर अपने विश्वास में तुम वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित नहीं करते या सत्य की खोज नहीं करते, बल्कि इसके बजाय तुम झूठ से ग्रस्त हो जाते हो—क्या यह देहधारी परमेश्वर के प्रति तुम्हारी शत्रुता का स्पष्टतम स्रोत नहीं है? देहधारी परमेश्वर मसीह कहलाता है, इसलिए क्या देहधारी परमेश्वर पर विश्वास न करने वाले सभी लोग मसीह-विरोधी नहीं हैं? इसलिए क्या तुम जिस पर विश्वास करते हो और जिससे प्रेम करते हो, वह सच में देहधारी परमेश्वर है? क्या यही वास्तव में जीवित, श्वास लेता हुआ वह परमेश्वर है, जो बहुत ही वास्तविक और असाधारण रूप से सामान्य है? तुम्हारी खोज का ठीक-ठीक क्या उद्देश्य है? क्या यह स्वर्ग में है या पृथ्वी पर? क्या यह एक धारणा है या सत्य? क्या यह परमेश्वर है या कोई अलौकिक प्राणी? वास्तव में, सत्य जीवन की सर्वाधिक वास्तविक सूक्ति

है, और मानवजाति के बीच इस तरह की सूक्तियों में सर्वोच्च है। क्योंकि यही वह अपेक्षा है, जो परमेश्वर मनुष्य से करता है, और यही परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाने वाला कार्य है, इसीलिए इसे "जीवन की सूक्ति" कहा जाता है। यह कोई ऐसी सूक्ति नहीं है, जिसे किसी चीज में से संक्षिप्त किया गया है, न ही यह किसी महान हस्ती द्वारा कहा गया कोई प्रसिद्ध उद्धरण है। इसके बजाय, यह स्वर्ग और पृथ्वी तथा सभी चीजों के स्वामी का मानवजाति के लिए कथन है; यह मनुष्य द्वारा किया गया कुछ वचनों का सारांश नहीं है, बल्कि परमेश्वर का अंतर्निहित जीवन है। और इसीलिए इसे "समस्त जीवन की सूक्तियों में उच्चतम" कहा जाता है। लोगों की सत्य को अभ्यास में लाने की खोज उनके कर्तव्य का निर्वाह है, अर्थात्, यह परमेश्वर की अपेक्षा पूरी करने की कोशिश है। इस अपेक्षा का सार किसी भी मनुष्य द्वारा प्राप्त न किए जा सकने योग्य खोखले सिद्धांत के बजाय, सभी सत्यों में सबसे अधिक वास्तविक है। यदि तुम्हारी खोज सिद्धांत के अलावा कुछ नहीं है और वह वास्तविकता से युक्त नहीं है, तो क्या तुम सत्य के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हो? क्या तुम ऐसे व्यक्ति नहीं हो, जो सत्य पर आक्रमण करता है? ऐसा व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम की अभिलाषा रखने वाला कैसे हो सकता है? वास्तविकता से रहित लोग वे लोग हैं, जो सत्य के साथ विश्वासघात करते हैं, और वे सभी सहज रूप से विद्रोही हैं!

तुम कैसे भी खोज करो, तुम्हें सर्वोपरि, परमेश्वर द्वारा आज किए जाने वाले कार्य और उसके महत्व को समझना चाहिए। तुम्हें यह अवश्य समझना और जानना चाहिए कि जब परमेश्वर अंत के दिनों में आता है तो वह कौन-सा कार्य लाता है, कैसा स्वभाव लेकर आता है, और मनुष्य में क्या चीज़ पूर्ण की जाएगी। यदि तुम उस कार्य को नहीं जानते या समझते, जिसे करने के लिए वह देह धारण करके आया है, तो तुम उसकी इच्छा कैसे समझ सकते हो, और तुम उसके अंतरंग कैसे बन सकते हो? वास्तव में, परमेश्वर का अंतरंग होना जटिल नहीं है, किंतु यह सरल भी नहीं है। यदि लोग इसे पूरी तरह से समझ सकें और इसे अमल में ला सकें, तो यह सरल बन जाता है; यदि लोग इसे पूरी तरह से न समझ सकें, तो यह बहुत कठिन बन जाता है, और, इतना ही नहीं, वे अपनी खोज द्वारा खुद को अस्पष्टता में ले जाए जाने के लिए प्रवण हो जाते हैं। यदि परमेश्वर की खोज में लोगों की साथ खड़े होने की अपनी स्थिति नहीं है, और वे नहीं जानते कि उन्हें किस सत्य को धारण करना चाहिए, तो इसका अर्थ है कि उनका कोई आधार नहीं है, और इसलिए उनके लिए अडिग रहना आसान नहीं है। आज, ऐसे बहुत लोग हैं जो सत्य को नहीं समझते, जो भले और बुरे के बीच अंतर नहीं कर सकते या यह नहीं बता सकते कि किससे प्रेम या घृणा करें। ऐसे लोग

मुश्किल से ही अडिग रह पाते हैं। परमेश्वर में विश्वास की कुंजी सत्य को अभ्यास में लाने, परमेश्वर की इच्छा का ध्यान रखने, और जब परमेश्वर देह में आता है, तब मनुष्य पर उसके कार्य और उन सिद्धांतों को, जिनसे वह बोलता है, जानने में सक्षम होना है। भीड़ का अनुसरण मत करो। तुम्हारे पास इसके सिद्धांत होने चाहिए कि तुम्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए, और तुम्हें उन पर अडिग रहना चाहिए। अपने भीतर परमेश्वर की प्रबुद्धता द्वारा लाई गई चीजों पर अडिग रहना तुम्हारे लिए सहायक होगा। यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो आज तुम एक दिशा में जाओगे तो कल दूसरी दिशा में, और कभी भी कोई वास्तविक चीज़ प्राप्त नहीं करोगे। ऐसा होना तुम्हारे जीवन के लिए ज़रा भी लाभदायक नहीं है। जो सत्य को नहीं समझते, वे हमेशा दूसरों का अनुसरण करते हैं : यदि लोग कहते हैं कि यह पवित्र आत्मा का कार्य है, तो तुम भी कहते हो कि यह पवित्र आत्मा का कार्य है; यदि लोग कहते हैं कि यह दुष्टात्मा का कार्य है, तो तुम्हें भी संदेह हो जाता है, या तुम भी कहते हो कि यह किसी दुष्टात्मा का कार्य है। तुम हमेशा दूसरों के शब्दों को तोते की तरह दोहराते हो, और स्वयं किसी भी चीज़ का अंतर करने में असमर्थ होते हो, न ही तुम स्वयं सोचने में सक्षम होते हो। ऐसे व्यक्ति का कोई दृष्टिकोण नहीं होता, वह अंतर करने में असमर्थ होता है—ऐसा व्यक्ति बेकार अभागा होता है! तुम हमेशा दूसरों के वचनों को दोहराते हो : आज ऐसा कहा जाता है कि यह पवित्र आत्मा का कार्य है, परंतु संभव है, कल कोई कहे कि यह पवित्र आत्मा का कार्य नहीं है, और कि यह असल में यह मनुष्य के कर्मों के अतिरिक्त कुछ नहीं है—फिर भी तुम इसे समझ नहीं पाते, और जब तुम इसे दूसरों के द्वारा कहा गया देखते हो, तो तुम भी वही बात कहते हो। यह वास्तव में पवित्र आत्मा का कार्य है, परंतु तुम कहते हो कि यह मनुष्य का कार्य है; क्या तुम पवित्र आत्मा के कार्य की ईशनिंदा करने वालों में से एक नहीं बन गए हो? इसमें, क्या तुमने परमेश्वर का इसलिए विरोध नहीं किया है, क्योंकि तुम अंतर नहीं कर सकते? शायद किसी दिन कोई मूर्ख प्रकट होकर कहे कि "यह किसी दुष्टात्मा का कार्य है," और इन शब्दों को सुनकर तुम हैरान रह जाओ, और एक बार फिर तुम दूसरों के शब्दों में बँध जाओगे। हर बार जब कोई गड़बड़ी करता है, तो तुम अपने दृष्टिकोण पर अडिग रहने में असमर्थ हो जाते हो, और यह सब इसलिए होता है क्योंकि तुम्हारे पास सत्य नहीं है। परमेश्वर पर विश्वास करना और परमेश्वर को जानना आसान बात नहीं है। ये चीज़ें एक-साथ इकट्ठे होने और उपदेश सुनने भर से हासिल नहीं की जा सकतीं, और तुम केवल जुनून के द्वारा पूर्ण नहीं किए जा सकते। तुम्हें अपने कार्यों को अनुभव करना और जानना चाहिए, और उनमें सैद्धांतिक होना चाहिए, और पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करना चाहिए। जब

तुम अनुभवों से गुज़र जाओगे, तो तुम कई चीजों में अंतर करने में सक्षम हो जाओगे—तुम भले और बुरे के बीच, धार्मिकता और दुष्टता के बीच, देह और रक्त से संबंधित चीज़ों और सत्य से संबंधित चीज़ों के बीच अंतर करने में सक्षम हो जाओगे। तुम्हें इन सभी चीजों के बीच अंतर करने में सक्षम होना चाहिए, और ऐसा करने में, चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ हों, तुम कभी भी नहीं खोओगे। केवल यही तुम्हारा वास्तविक आध्यात्मिक कद है।

परमेश्वर के कार्य को जानना कोई आसान बात नहीं है। अपनी खोज में तुम्हारे पास मानक और एक उद्देश्य होना चाहिए, तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि सच्चे मार्ग को कैसे खोजें, यह कैसे मापें कि यह सच्चा मार्ग है या नहीं, और यह परमेश्वर का कार्य है या नहीं। सच्चे मार्ग की खोज करने में सबसे बुनियादी सिद्धांत क्या है? तुम्हें देखना होगा कि इस मार्ग में पवित्र आत्मा का कार्य है या नहीं, ये वचन सत्य की अभिव्यक्ति हैं या नहीं, किसके लिए गवाही देनी है, और यह तुम्हारे लिए क्या ला सकता है। सच्चे मार्ग और झूठे मार्ग के बीच अंतर करने के लिए बुनियादी ज्ञान के कई पहलू आवश्यक हैं, जिनमें सबसे मूलभूत है यह बताना कि इसमें पवित्र आत्मा का कार्य मौजूद है या नहीं। क्योंकि परमेश्वर पर लोगों के विश्वास का सार परमेश्वर के आत्मा पर विश्वास है, और यहाँ तक कि देहधारी परमेश्वर पर उनका विश्वास इसलिए है, क्योंकि यह देह परमेश्वर के आत्मा का मूर्त रूप है, जिसका अर्थ यह है कि ऐसा विश्वास अभी भी पवित्र आत्मा पर विश्वास है। आत्मा और देह के मध्य अंतर हैं, परंतु चूँकि यह देह पवित्रात्मा से आता है और वचन देह बनता है, इसलिए मनुष्य जिसमें विश्वास करता है, वह अभी भी परमेश्वर का अंतर्निहित सार है। अत:, यह पहचानने के लिए कि यह सच्चा मार्ग है या नहीं, सर्वोपरि तुम्हें यह देखना चाहिए कि इसमें पवित्र आत्मा का कार्य है या नहीं, जिसके बाद तुम्हें यह देखना चाहिए कि इस मार्ग में सत्य है या नहीं। सत्य सामान्य मानवता का जीवन-स्वभाव है, अर्थात्, वह जो मनुष्य से तब अपेक्षित था, जब परमेश्वर ने आरंभ में उसका सृजन किया था, यानी, अपनी समग्रता में सामान्य मानवता (मानवीय भावना, अंतर्दृष्टि, बुद्धि और मनुष्य होने के बुनियादी ज्ञान सहित) है। अर्थात्, तुम्हें यह देखने की आवश्यकता है कि यह मार्ग लोगों को एक सामान्य मानवता के जीवन में ले जा सकता है या नहीं, बोला गया सत्य सामान्य मानवता की आवश्यकता के अनुसार अपेक्षित है या नहीं, यह सत्य व्यावहारिक और वास्तविक है या नहीं, और यह सबसे सामयिक है या नहीं। यदि इसमें सत्य है, तो यह लोगों को सामान्य और वास्तविक अनुभवों में ले जाने में सक्षम है; इसके अलावा, लोग हमेशा से अधिक सामान्य बन जाते हैं, उनका मानवीय बोध हमेशा से अधिक पूरा बन

जाता है, उनका दैहिक और आध्यात्मिक जीवन हमेशा से अधिक व्यवस्थित हो जाता है, और उनकी भावनाएँ हमेशा से और अधिक सामान्य हो जाती हैं। यह दूसरा सिद्धांत है। एक अन्य सिद्धांत है, जो यह है कि लोगों के पास परमेश्वर का बढ़ता हुआ ज्ञान है या नहीं, और इस प्रकार के कार्य और सत्य का अनुभव करना उनमें परमेश्वर के लिए प्रेम को प्रेरित कर सकता है या नहीं और उन्हें परमेश्वर के हमेशा से अधिक निकट ला सकता है या नहीं। इसमें यह मापा जा सकता है कि यह सही मार्ग है अथवा नहीं। सबसे बुनियादी बात यह है कि क्या यह मार्ग अलौकिक के बजाय यर्थाथवादी है, और यह मनुष्य के जीवन के लिए पोषण प्रदान करने में सक्षम है या नहीं। यदि यह इन सिद्धांतों के अनुरूप है, तो निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह मार्ग सच्चा मार्ग है। मैं ये वचन तुम लोगों से तुम्हारे भविष्य के अनुभवों में अन्य मार्गों को स्वीकार करवाने के लिए नहीं कह रहा हूँ, न ही किसी भविष्यवाणी के रूप में कह रहा हूँ कि भविष्य में एक अन्य नए युग का कार्य होगा। मैं इन्हें इसलिए कह रहा हूँ, ताकि तुम लोग निश्चित हो जाओ कि आज का मार्ग ही सच्चा मार्ग है, ताकि आज के कार्य के प्रति अपने विश्वास में तुम लोग केवल आधे-अधूरे ही निश्चित न रहो और इसमें अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में असमर्थ न रहो। यहाँ ऐसे कई लोग हैं, जो निश्चित होने के बावजूद अभी भी भ्रम में अनुगमन करते हैं; ऐसी निश्चितता का कोई सिद्धांत नहीं होता, और ऐसे लोगों को देर-सबेर हटा दिया जाना चाहिए। यहाँ तक कि वे भी, जो अपने अनुसरण में विशेष रूप से उत्साही हैं, तीन भाग ही निश्चित हैं और पाँच भाग अनिश्चित हैं, जो दर्शाता है कि उनका कोई आधार नहीं है। चूँकि तुम लोगों की क्षमता बहुत कमज़ोर है और तुम्हारी नींव बहुत सतही है, इसलिए तुम लोगों को अंतर करने की समझ नहीं है। परमेश्वर अपने कार्य को दोहराता नहीं है, वह ऐसा कार्य नहीं करता जो वास्तविक न हो, वह मनुष्य से अत्यधिक अपेक्षाएँ नहीं रखता, और वह ऐसा कार्य नहीं करता जो मनुष्यों की समझ से परे हो। वह जो भी कार्य करता है, वह सब मनुष्य की सामान्य समझ के दायरे के भीतर होता है, और सामान्य मानवता की समझ से परे नहीं होता, और उसका कार्य मनुष्य की सामान्य अपेक्षाओं के अनुसार किया जाता है। यदि यह पवित्र आत्मा का कार्य होता है, तो लोग हमेशा से अधिक सामान्य बन जाते हैं, और उनकी मानवता हमेशा से अधिक सामान्य बन जाती है। लोग अपने शैतानी स्वभाव का, और मनुष्य के सार का बढ़ता हुआ ज्ञान प्राप्त करते हैं, और वे सत्य के लिए हमेशा से अधिक ललक भी प्राप्त करते हैं। अर्थात्, मनुष्य का जीवन अधिकाधिक बढ़ता जाता है और मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव बदलाव में अधिकाधिक सक्षम हो जाता है—जिस सबका अर्थ है परमेश्वर का मनुष्य का जीवन बनना। यदि कोई मार्ग उन चीजों

को प्रकट करने में असमर्थ है जो मनुष्य का सार हैं, मनुष्य के स्वभाव को बदलने में असमर्थ है, और, इसके अलावा, लोगों को परमेश्वर के सामने लाने में असमर्थ है या उन्हें परमेश्वर की सच्ची समझ प्रदान करने में असमर्थ है, और यहाँ तक कि उसकी मानवता के हमेशा से अधिक निम्न होने और उसकी भावना के हमेशा से अधिक असामान्य होने का कारण बनता है, तो यह मार्ग सच्चा मार्ग नहीं होना चाहिए, और यह दुष्टात्मा का कार्य या पुराना मार्ग हो सकता है। संक्षेप में, यह पवित्र आत्मा का वर्तमान कार्य नहीं हो सकता। तुम लोगों ने इन सभी वर्षों में परमेश्वर पर विश्वास किया है, फिर भी तुम्हें सच्चे और झूठे मार्ग के मध्य अंतर करने या सच्चे मार्ग की तलाश करने के सिद्धांतों का कोई आभास नहीं है। अधिकतर लोग इन मामलों में दिलचस्पी तक नहीं रखते; वे सिर्फ़ वहाँ चल पड़ते हैं जहाँ बहुसंख्यक जाते हैं, और वह दोहरा देते हैं जो बहुसंख्यक कहते हैं। ऐसा व्यक्ति सत्य की खोज करने वाला कैसे हो सकता है? और ऐसे लोग सच्चा मार्ग कैसे पा सकते हैं? यदि तुम इन अनेक मुख्य सिद्धांतों को समझ लो, तो चाहे कुछ भी हो जाए, तुम धोखा नहीं खाओगे। आज यह महत्वपूर्ण है कि लोग अंतर करने में सक्षम हो जाएँ; यही वह चीज़ है जो सामान्य मानवता के पास होनी चाहिए, और यही वह चीज़ है जो लोगों के अनुभव में आनी चाहिए। यदि आज भी लोग अपने अनुगमन में कुछ भी अंतर नहीं करते, और उनका मानवता-बोध अभी भी नहीं बढ़ा है, तो लोग बहुत मूर्ख हैं, और उनकी खोज ग़लत और भटकी हुई है। आज तुम्हारी खोज में थोड़ा-सा भी विभेदन नहीं है, और जबकि यह सत्य है, जैसा कि तुम कहते हो, कि तुमने सच्चा मार्ग तलाश कर लिया है, क्या तुमने उसे प्राप्त कर लिया है? क्या तुम कुछ भी अंतर करने में समर्थ रहे हो? सच्चे मार्ग का सार क्या है? सच्चे मार्ग में, तुमने सच्चा मार्ग प्राप्त नहीं किया है; तुमने कुछ भी सत्य प्राप्त नहीं किया है। अर्थात्, तुमने वह प्राप्त नहीं किया है, जिसकी परमेश्वर तुमसे अपेक्षा करता है, और इसलिए तुम्हारी भ्रष्टता में कोई परिवर्तन नहीं आया है। यदि तुम इसी तरह खोज करते रहे, तो तुम अंततः हटा दिए जाओगे। आज के दिन तक अनुसरण करके, तुम्हें निश्चित हो जाना चाहिए कि जिस मार्ग को तुमने अपनाया है वह सच्चा मार्ग है, और तुम्हें कोई और संदेह नहीं होने चाहिए। कई लोग हमेशा अनिश्चित रहते हैं और छोटी-छोटी बातों के कारण सत्य की खोज करना बंद कर देते हैं। ये ऐसे लोग हैं, जिन्हें परमेश्वर के कार्य का कोई ज्ञान नहीं है; ये वे लोग हैं, जो भ्रम में परमेश्वर का अनुसरण करते हैं। जो लोग परमेश्वर के कार्य को नहीं जानते, वे उसके अंतरंग होने या उसकी गवाही देने में असमर्थ हैं। जो लोग केवल आशीषों की तलाश करते हैं और केवल उसकी खोज करते हैं जो कि अज्ञात और अमूर्त है, मैं उन्हें यथाशीघ्र सत्य की खोज करने की सलाह

देता हूँ, ताकि उनके जीवन का कोई अर्थ हो सके। अपने आपको अब और मूर्ख मत बनाओ!

देहधारी परमेश्वर की सेवकाई और मनुष्य के कर्तव्य के बीच अंतर

तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य के दर्शनों को जानना और उसके कार्य के सामान्य निर्देशों को समझना होगा। यह सकारात्मक प्रवेश है। एक बार जब तुम दर्शनों के सत्य में सही ढंग से महारत हासिल कर लोगे, तो तुम्हारा प्रवेश सुरक्षित हो जाएगा; चाहे परमेश्वर का कार्य कैसे भी क्यों न बदले, तुम अपने हृदय में अडिग बने रहोगे, दर्शनों के बारे में स्पष्ट रहोगे, और तुम्हारे पास तुम्हारे प्रवेश और तुम्हारी खोज के लिए एक लक्ष्य होगा। इस तरह से, तुम्हारे भीतर का समस्त अनुभव और ज्ञान अधिक गहरा और विस्तृत हो जाएगा। एक बार जब तुम इन सारे महत्वपूर्ण चरणों को उनकी संपूर्णता में समझ लोगे, तो तुम्हें जीवन में कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ेगा, और तुम भटकोगे नहीं। यदि तुम कार्यों के इन चरणों को नहीं जानोगे, तो तुम्हें इनमें से प्रत्येक चरण पर नुकसान उठाना पड़ेगा, और तुम्हें चीजें ठीक करने में कुछ ज्यादा दिन लगेंगे, और तुम कुछ सप्ताह में भी सही मार्ग पकड़ने में सक्षम नहीं हो पाओगे। क्या इससे देरी नहीं होगी? सकारात्मक प्रवेश और अभ्यास के मार्ग में बहुत-कुछ ऐसा है, जिसमें तुम लोगों को महारत हासिल करनी होगी। जहाँ तक परमेश्वर के कार्य के दर्शनों का संबंध है, तुम्हें इन बिंदुओं को अवश्य समझना चाहिए : उसके विजय के कार्य के मायने, पूर्ण बनाए जाने का भावी मार्ग, परीक्षणों और क्लेश के अनुभवों के माध्यम से क्या हासिल किया जाना चाहिए, न्याय और ताड़ना के मायने, पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांत, तथा पूर्णता और विजय के सिद्धांत। ये सब दर्शनों के सत्य से संबंध रखते हैं। शेष हैं व्यवस्था के युग, अनुग्रह के युग और राज्य के युग के कार्य के तीन चरण, और साथ ही भावी गवाही। ये भी दर्शनों के सत्य हैं, और ये सर्वाधिक मूलभूत होने के साथ-साथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण भी हैं। वर्तमान में तुम लोगों के पास अभ्यास में प्रवेश करने के लिए बहुत-कुछ है, और वह अब बहुस्तरीय और अधिक विस्तृत है। यदि तुम्हें इन सत्यों का कोई ज्ञान नहीं है, तो यह साबित होता है कि तुम्हें अभी प्रवेश करना शेष है। अधिकांश समय लोगों का सत्य का ज्ञान बहुत उथला होता है; वे कुछ बुनियादी सत्यों को अभ्यास में लाने में अक्षम होते हैं और नहीं जानते कि तुच्छ मामलों को भी कैसे सँभाला जाए। लोगों के सत्य का अभ्यास करने में अक्षम होने का कारण यह है कि उनका स्वभाव विद्रोही है, और आज के कार्य का उनका ज्ञान बहुत ही सतही और एकतरफ़ा है। इसलिए, लोगों को पूर्ण बनाए जाने का काम आसान नहीं है। तुम बहुत ज्यादा

विद्रोही हो, और तुम अपने पुराने अहं को बहुत ज़्यादा बनाए रखते हो; तुम सत्य के पक्ष में खड़े रहने में अक्षम हो, और तुम सबसे स्पष्ट सत्यों तक का अभ्यास करने में असमर्थ हो। ऐसे लोगों को बचाया नहीं जा सकता और ये वे लोग हैं, जिन्हें जीता नहीं गया है। यदि तुम्हारा प्रवेश न तो विस्तृत है और न ही सोद्देश्य, तो तुम्हारा विकास धीमी गति से होगा। यदि तुम्हारे प्रवेश में जरा-सी भी वास्तविकता नहीं हुई, तो तुम्हारी खोज व्यर्थ हो जाएगी। यदि तुम सत्य के सार से अनभिज्ञ हो, तो तुम अपरिवर्तित रहोगे। मनुष्य के जीवन में विकास और उसके स्वभाव में परिवर्तन वास्तविकता में प्रवेश करने, और इससे भी अधिक, विस्तृत अनुभवों में प्रवेश करने से प्राप्त होते हैं। यदि तुम्हारे प्रवेश के दौरान तुम्हारे पास कई विस्तृत अनुभव हैं, और तुम्हारे पास अधिक वास्तविक ज्ञान और प्रवेश है, तो तुम्हारा स्वभाव शीघ्रता से बदल जाएगा। भले ही वर्तमान में तुम अभ्यास के बारे में पूरी तरह से स्पष्ट न हो, तो भी तुम्हें कम से कम परमेश्वर के कार्य के दर्शनों के बारे में स्पष्ट अवश्य होना चाहिए। यदि नहीं, तो तुम प्रवेश करने में अक्षम होगे; प्रवेश केवल तुम्हें सत्य का ज्ञान होने पर ही संभव है। केवल पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हें तुम्हारे अनुभव में प्रबुद्ध करने पर ही तुम सत्य की अधिक गहरी समझ प्राप्त करोगे और अधिक गहराई से प्रवेश करोगे। तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य को जानना चाहिए।

आरंभ में, मानवजाति के सृजन के बाद, इस्राएलियों ने परमेश्वर के कार्य के आधार के रूप में काम किया। संपूर्ण इस्राएल पृथ्वी पर यहोवा के कार्य का आधार था। यहोवा का कार्य व्यवस्थाओं की स्थापना करके मनुष्य की सीधे अगुआई और चरवाही करना था, ताकि मनुष्य एक उपयुक्त जीवन जी सके और पृथ्वी पर सही तरीके से यहोवा की आराधना कर सके। व्यवस्था के युग में परमेश्वर मनुष्य के द्वारा न तो देखा जा सकता था और न ही उसे छुआ जा सकता था। क्योंकि उसने उन लोगों का मार्गदर्शन किया, जिन्हें शैतान ने सबसे पहले भ्रष्ट किया था, उन्हें शिक्षा दी, उनकी देखभाल की, उसके वचनों में केवल व्यवस्थाओं, विधानों और मानव-व्यवहार के मानदंड थे, उनमें उन लोगों के लिए जीवन के सत्य नहीं थे। उसकी अगुआई में इस्राएली शैतान द्वारा गहराई से भ्रष्ट नहीं किए गए थे। उसका व्यवस्था का कार्य उद्धार के कार्य में केवल पहला चरण था, उद्धार के कार्य का एकदम आरंभ, और वास्तव में उसका मनुष्य के जीवन-स्वभाव में होने वाले परिवर्तनों से कुछ लेना-देना नहीं था। इसलिए, उद्धार के कार्य के आरंभ में उसे इस्राएल में अपने कार्य के लिए देह धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसीलिए उसे एक माध्यम—एक उपकरण—की आवश्यकता थी, जिसके ज़रिए मनुष्य के साथ संपर्क किया जा सकता। इस प्रकार,

सृजित प्राणियों के मध्य से यहोवा की ओर से बोलने और कार्य करने वाले लोग उठ खड़े हुए, और इस तरह से मनुष्य के पुत्र और नबी मनुष्यों के मध्य कार्य करने के लिए आए। मनुष्य के पुत्रों ने यहोवा की ओर से मनुष्यों के मध्य कार्य किया। यहोवा द्वारा उन्हें "मनुष्य के पुत्र" कहे जाने का अर्थ है कि ऐसे लोग यहोवा की ओर से व्यवस्था निर्धारित करते हैं। वे लोग इस्राएलियों के बीच याजक भी थे; ऐसे याजक, जिनका यहोवा द्वारा ध्यान रखा जाता था और जिनकी रक्षा की जाती थी, जिनमें यहोवा का आत्मा कार्य करता था; वे लोगों के मध्य अगुआ थे और सीधे यहोवा की सेवा करते थे। दूसरी ओर, नबी सभी देशों और सभी कबीलों के लोगों के साथ यहोवा की ओर से बोलने का कार्य करते थे। उन्होंने यहोवा के कार्य की भविष्यवाणी भी की। चाहे वे मनुष्य के पुत्र हों या नबी, सभी को स्वयं यहोवा के आत्मा द्वारा ऊपर उठाया गया था और उनमें यहोवा का कार्य था। लोगों के मध्य ये वे लोग थे, जो सीधे यहोवा का प्रतिनिधित्व करते थे; उन्होंने अपना कार्य केवल इसलिए किया, क्योंकि उन्हें यहोवा ने ऊपर उठाया था, इसलिए नहीं कि वे ऐसे देह थे, जिनमें स्वयं पवित्र आत्मा ने देहधारण किया था। इसलिए, हालाँकि वे परमेश्वर की ओर से बोलने और कार्य करने में एक-समान थे, फिर भी व्यवस्था के युग में वे मनुष्य के पुत्र और नबी देहधारी परमेश्वर का देह नहीं थे। अनुग्रह के युग और अंतिम चरण में परमेश्वर का कार्य ठीक विपरीत था, क्योंकि मनुष्य के उद्धार और न्याय का कार्य दोनों स्वयं देहधारी परमेश्वर द्वारा किए गए थे, इसलिए उसकी ओर से कार्य करने के लिए नबियों और मनुष्य के पुत्रों को फिर से ऊपर उठाने की आवश्यकता नहीं थी। मनुष्य की नज़रों में उनके कार्य के सार और पद्धति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसी कारण से लोग लगातार नबियों एवं मनुष्य के पुत्रों के कार्यों को देहधारी परमेश्वर के कार्य समझ रहे हैं। देहधारी परमेश्वर का रंग-रूप मूल रूप से वैसा ही था, जैसा कि नबियों और मनुष्य के पुत्रों का था। देहधारी परमेश्वर तो नबियों की अपेक्षा और भी अधिक साधारण एवं अधिक वास्तविक था। इसलिए मनुष्य उनके मध्य अंतर करने में अक्षम है। मनुष्य केवल रूप-रंग पर ध्यान देता है, इस बात से पूरी तरह से अनजान, कि यद्यपि दोनों काम करने और बोलने में एक-जैसे हैं, फिर भी उनमें मूलभूत अंतर है। चूँकि चीज़ों को अलग-अलग करके बताने की मनुष्य की क्षमता बहुत ख़राब है, इसलिए वह सरल मुद्दों के बीच अंतर करने में भी अक्षम है, जटिल चीज़ों का तो फिर कहना ही क्या। नबियों और पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए गए लोग बोलते और कार्य करते थे, तो यह मनुष्य के कर्तव्य निभाने के लिए था, यह एक सृजित प्राणी का कार्य करने के लिए था, जिसे मनुष्य को करना चाहिए। किंतु देहधारी परमेश्वर के वचन और कार्य उसकी सेवकाई करने

के लिए थे। यद्यपि उसका बाहरी स्वरूप एक सृजित प्राणी का था, किंतु उसका काम अपना कार्य करने के लिए नहीं, बल्कि अपनी सेवकाई करने के लिए था। "कर्तव्य" शब्द सृजित प्राणियों के संबंध में इस्तेमाल किया जाता है, जबकि "सेवकाई" देहधारी परमेश्वर के देह के संबंध में। इन दोनों के बीच एक अनिवार्य अंतर है; इन दोनों की अदला-बदली नहीं की जा सकती। मनुष्य का कार्य केवल अपना कर्तव्य निभाना है, जबकि परमेश्वर का कार्य अपनी सेवकाई का प्रबंधन करना और उसे कार्यान्वित करना है। इसलिए, यद्यपि कई प्रेरित पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए गए और कई नबी उसके साथ थे, किंतु फिर भी उनका कार्य और उनके वचन केवल सृजित प्राणियों के रूप में अपना कर्तव्य निभाने के लिए थे। हो सकता है, उनकी भविष्यवाणियाँ देहधारी परमेश्वर द्वारा कहे गए जीवन के मार्ग से बढ़कर रही हों, और उनकी मानवता देहधारी परमेश्वर की मानवता का अतिक्रमण करती हो, पर फिर भी वे अपना कर्तव्य ही निभा रहे थे, सेवकाई पूरी नहीं कर रहे थे। मनुष्य का कर्तव्य उसके कार्य को संदर्भित करता है; मनुष्य के लिए केवल यही प्राप्य है। जबकि, देहधारी परमेश्वर द्वारा की जाने वाली सेवकाई उसके प्रबंधन से संबंधित है, और यह मनुष्य द्वारा अप्राप्य है। चाहे देहधारी परमेश्वर बोले, कार्य करे, या चमत्कार करे, वह अपने प्रबंधन के अंतर्गत महान कार्य कर रहा है, इस प्रकार का कार्य उसके बदले मनुष्य नहीं कर सकता। मनुष्य का कार्य केवल सृजित प्राणी के रूप में परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य के किसी दिए गए चरण में केवल अपना कर्तव्य पूरा करना है। परमेश्वर के प्रबंधन के बिना, अर्थात्, यदि देहधारी परमेश्वर की सेवकाई खो जाती है, तो सृजित प्राणी का कर्तव्य भी खो जाएगा। अपनी सेवकाई करने में परमेश्वर का कार्य मनुष्य का प्रबंधन करना है, जबकि मनुष्य द्वारा अपने कर्तव्य की पूर्ति स्रष्टा की माँगें पूरी करने के लिए अपने दायित्वों की पूर्ति है, और उसे किसी भी तरह से अपनी सेवकाई करना नहीं माना जा सकता। परमेश्वर के अंतर्निहित सार के लिए—उसके पवित्रात्मा के लिए—परमेश्वर का कार्य उसका प्रबंधन है, किंतु देहधारी परमेश्वर के लिए, जो एक सृजित प्राणी का बाहरी रूप धारण करता है, उसका कार्य अपनी सेवकाई करना है। वह जो कुछ भी कार्य करता है, अपनी सेवकाई करने के लिए करता है, और मनुष्य जो अधिकतम कर सकता है, वह है उसके प्रबंधन के क्षेत्र के भीतर और उसकी अगुआई के अधीन अपना सर्वश्रेष्ठ देना।

मनुष्य द्वारा अपना कर्तव्य निभाना वास्तव में उस सबकी सिद्धि है, जो मनुष्य के भीतर अंतर्निहित है, अर्थात् जो मनुष्य के लिए संभव है। इसके बाद उसका कर्तव्य पूरा हो जाता है। मनुष्य की सेवा के दौरान उसके दोष उसके क्रमिक अनुभव और न्याय से गुज़रने की प्रक्रिया के माध्यम से धीरे-धीरे कम होते जाते

हैं; वे मनुष्य के कर्तव्य में बाधा या विपरीत प्रभाव नहीं डालते। वे लोग, जो इस डर से सेवा करना बंद कर देते हैं या हार मानकर पीछे हट जाते हैं कि उनकी सेवा में कमियाँ हो सकती हैं, वे सबसे ज्यादा कायर होते हैं। यदि लोग वह व्यक्त नहीं कर सकते, जो उन्हें सेवा के दौरान व्यक्त करना चाहिए या वह हासिल नहीं कर सकते, जो उनके लिए सहज रूप से संभव है, और इसके बजाय वे सुस्ती में समय गँवाते हैं और बेमन से काम करते हैं, तो उन्होंने अपना वह प्रयोजन खो दिया है, जो एक सृजित प्राणी में होना चाहिए। ऐसे लोग "औसत दर्जे के" माने जाते हैं; वे बेकार का कचरा हैं। इस तरह के लोग उपयुक्त रूप से सृजित प्राणी कैसे कहे जा सकते हैं? क्या वे भ्रष्ट प्राणी नहीं हैं, जो बाहर से तो चमकते हैं, परंतु भीतर से सड़े हुए हैं? यदि कोई मनुष्य अपने आपको परमेश्वर कहता है, मगर अपनी दिव्यता व्यक्त करने, स्वयं परमेश्वर का कार्य करने या परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने में अक्षम है, तो वह नि:संदेह परमेश्वर नहीं है, क्योंकि उसमें परमेश्वर का सार नहीं है, और परमेश्वर जो सहज रूप से प्राप्त कर सकता है, वह उसके भीतर विद्यमान नहीं है। यदि मनुष्य वह खो देता है, जो उसके द्वारा सहज रूप से प्राप्य है, तो वह अब और मनुष्य नहीं समझा जा सकता, और वह सृजित प्राणी के रूप में खड़े होने या परमेश्वर के सामने आकर उसकी सेवा करने के योग्य नहीं है। इतना ही नहीं, वह परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने या परमेश्वर द्वारा ध्यान रखे जाने, बचाए जाने और पूर्ण बनाए जाने के योग्य भी नहीं है। कई लोग जो परमेश्वर का भरोसा खो चुके हैं, परमेश्वर का अनुग्रह भी खोते चले जाते हैं। वे न केवल अपने कुकर्मों से घृणा नहीं करते, बल्कि ढिठाई से इस बात का प्रचार भी करते हैं कि परमेश्वर का मार्ग गलत है, और वे विद्रोही परमेश्वर के अस्तित्व तक से इनकार कर देते हैं। इस प्रकार की विद्रोहशीलता रखने वाले लोग परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने के पात्र कैसे हो सकते हैं? जो लोग अपना कर्तव्य नहीं निभाते, वे परमेश्वर के विरुद्ध अत्यधिक विद्रोही और उसके अत्यधिक ऋणी होते हैं, फिर भी वे पलट जाते हैं और हमलावर होकर कहते हैं कि परमेश्वर गलत है। इस तरह के मनुष्य पूर्ण बनाए जाने लायक कैसे हो सकते हैं? क्या यह हटा दिए जाने और दंडित किए जाने की ओर नहीं ले जाता? जो लोग परमेश्वर के सामने अपना कर्तव्य नहीं निभाते, वे पहले से ही सर्वाधिक जघन्य अपराधों के दोषी हैं, जिसके लिए मृत्यु भी अपर्याप्त सज़ा है, फिर भी वे परमेश्वर के साथ बहस करने और उसके साथ अपनी बराबरी करने की धृष्टता करते हैं। ऐसे लोगों को पूर्ण बनाने का क्या महत्व है? जब लोग अपना कर्तव्य पूरा करने में विफल होते हैं, तो उन्हें अपराध और कृतज्ञता महसूस करनी चाहिए; उन्हें अपनी कमजोरी और अनुपयोगिता, अपनी विद्रोहशीलता और भ्रष्टता से घृणा करनी

चाहिए, और इससे भी अधिक, उन्हें परमेश्वर को अपना जीवन अर्पित कर देना चाहिए। केवल तभी वे सृजित प्राणी होते हैं, जो परमेश्वर से सच्चा प्रेम करते हैं, और केवल ऐसे लोग ही परमेश्वर के आशीषों और प्रतिज्ञाओं का आनंद लेने और उसके द्वारा पूर्ण किए जाने के योग्य हैं। और तुम लोगों में से अधिकतर क्या हैं? तुम लोग उस परमेश्वर के साथ कैसा व्यवहार करते हो, जो तुम लोगों के मध्य रहता है? तुम लोगों ने उसके सामने अपना कर्तव्य किस तरह निभाया है? क्या तुमने, अपने जीवन की कीमत पर भी, वह सब कर लिया है, जिसे करने के लिए तुम लोगों से कहा गया था? तुम लोगों ने क्या बलिदान किया है? क्या तुम लोगों को मुझसे कुछ ज्यादा नहीं मिला है? क्या तुम लोग विचार कर सकते हो? तुम लोग मेरे प्रति कितने वफादार हो? तुम लोगों ने मेरी किस प्रकार से सेवा की है? और उस सबका क्या हुआ, जो मैंने तुम लोगों को दिया है और तुम लोगों के लिए किया है? क्या तुम लोगों ने यह सब माप लिया है? क्या तुम सभी लोगों ने इसका आकलन और तुलना उस जरा-से विवेक के साथ कर ली है, जो तुम लोगों के भीतर है? तुम्हारे शब्द और कार्य किसके योग्य हो सकते हैं? क्या तुम लोगों का इतना छोटा-सा बलिदान उस सबके बराबर है, जो मैने तुम लोगों को दिया है? मेरे पास और कोई विकल्प नहीं है और मैं पूरे हृदय से तुम लोगों के प्रति समर्पित रहा हूँ, फिर भी तुम लोग मेरे बारे में दुष्ट इरादे रखते हो और मेरे प्रति अनमने रहते हो। यही तुम लोगों के कर्तव्य की सीमा, तुम लोगों का एकमात्र कार्य है। क्या ऐसा ही नहीं है? क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम एक सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाने में बिलकुल असफल हो गए हो? तुम लोगों को सृजित प्राणी कैसे माना जा सकता है? क्या तुम लोगों को यह स्पष्ट नहीं है कि तुम क्या व्यक्त कर रहे हो और क्या जी रहे हो? तुम लोग अपना कर्तव्य पूरा करने में असफल रहे हो, पर तुम परमेश्वर की सहनशीलता और भरपूर अनुग्रह प्राप्त करना चाहते हो। इस प्रकार का अनुग्रह तुम जैसे बेकार और अधम लोगों के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए तैयार किया गया है, जो कुछ नहीं माँगते और खुशी से बलिदान करते हैं। तुम जैसे मामूली लोग स्वर्ग के अनुग्रह का आनंद लेने के बिलकुल भी योग्य नहीं हैं। केवल कठिनाई और अनंत सज़ा ही तुम लोगों को अपने जीवन में मिलेगी! यदि तुम लोग मेरे प्रति विश्वसनीय नहीं हो सकते, तो तुम लोगों के भाग्य में दुःख ही होगा। यदि तुम लोग मेरे वचनों और कार्यों के प्रति जवाबदेह नहीं हो सकते, तो तुम्हारा परिणाम दंड होगा। राज्य के समस्त अनुग्रह, आशीषों और अद्‌भुत जीवन का तुम लोगों के साथ कोई लेना-देना नहीं होगा। यही वह अंत है, जिसके तुम काबिल हो और जो तुम लोगों की अपनी करतूतों का परिणाम है! वे अज्ञानी और घमंडी लोग न केवल पूरी कोशिश नहीं करते, बल्कि वे अपना

कर्तव्य भी नहीं निभाते, बस वे अनुग्रह के लिए अपने हाथ पसार देते हैं, मानो वे जो माँगते हैं, उसके योग्य हों। और यदि वे वह प्राप्त नहीं कर पाते, जो वे माँगते हैं, तो वे और भी कम विश्वासपात्र बन जाते हैं। ऐसे लोगों को सही कैसे माना जा सकता है? तुम लोग कमजोर क्षमता के और विवेकशून्य हो; प्रबंधन के कार्य के दौरान तुम लोगों को जो कर्तव्य पूरा करना चाहिए, उसे करने में तुम पूर्णतः अक्षम हो। तुम लोगों का महत्व पहले ही तेजी से घट चुका है। अपने साथ ऐसा उपकार करने का बदला चुकाने की तुम्हारी विफलता पहले ही चरम विद्रोह का कृत्य है, जो तुम्हारी निंदा करने के लिए पर्याप्त है और तुम्हारी कायरता, अक्षमता, अधमता और अनुपयुक्तता प्रदर्शित करता है। कौन-सी चीज़ तुम्हें अपने हाथ पसारे रखने का अधिकार देती है? तुम लोगों का मेरे कार्य में थोड़ी-सी भी सहायता करने में अक्षम होना, वफ़ादार होने में अक्षम होना, और मेरे लिए गवाही देने में अक्षम होना तुम्हारे कुकर्म और असफलताएँ हैं, इसके बावजूद तुम लोग मुझ पर आक्रमण करते हो, मेरे बारे में झूठी बातें करते हो, और शिकायत करते हो कि मैं अधर्मी हूँ। क्या यही तुम्हारी निष्ठा है? क्या यही तुम्हारा प्रेम है? इससे अधिक तुम लोग और क्या कर सकते हो? जो भी कार्य किया गया है, उसमें तुम लोगों ने क्या योगदान दिया है? तुमने खुद को कितना खपाया किया है? तुम लोगों को कोई दोष न देकर मैंने पहले ही बड़ी सहनशीलता दिखाई है, फिर भी तुम लोग बेशर्मी से मुझसे बहाने बनाते हो और निजी तौर पर मेरी शिकायत करते हो। क्या तुम लोगों में मानवता का हलका-सा भी निशान है? यद्यपि मनुष्य का कर्तव्य उसके मन और उसकी अवधारणाओं से दूषित है, फिर भी तुम्हें अपना कर्तव्य अवश्य निभाना चाहिए और अपनी वफादारी दिखानी चाहिए। मनुष्य के कार्य में अशुद्धताएँ उसकी क्षमता की समस्या हैं, जबकि, यदि मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा नहीं करता, तो यह उसकी विद्रोहशीलता दर्शाता है। मनुष्य के कर्तव्य और वह धन्य है या शापित, इनके बीच कोई सह-संबंध नहीं है। कर्तव्य वह है, जो मनुष्य के लिए पूरा करना आवश्यक है; यह उसकी स्वर्ग द्वारा प्रेषित वृत्ति है, जो प्रतिफल, स्थितियों या कारणों पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। केवल तभी कहा जा सकता है कि वह अपना कर्तव्य पूरा कर रहा है। धन्य होना उसे कहते हैं, जब कोई पूर्ण बनाया जाता है और न्याय का अनुभव करने के बाद वह परमेश्वर के आशीषों का आनंद लेता है। शापित होना उसे कहते हैं, जब ताड़ना और न्याय का अनुभव करने के बाद भी लोगों का स्वभाव नहीं बदलता, ऐसा तब होता है जब उन्हें पूर्ण बनाए जाने का अनुभव नहीं होता, बल्कि उन्हें दंडित किया जाता है। लेकिन इस बात पर ध्यान दिए बिना कि उन्हें धन्य किया जाता है या शापित, सृजित प्राणियों को अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए; वह करते

हुए, जो उन्हें करना ही चाहिए, और वह करते हुए, जिसे करने में वे सक्षम हैं। यह न्यूनतम है, जो व्यक्ति को करना चाहिए, ऐसे व्यक्ति को, जो परमेश्वर की खोज करता है। तुम्हें अपना कर्तव्य केवल धन्य होने के लिए नहीं करना चाहिए, और तुम्हें शापित होने के भय से अपना कार्य करने से इनकार भी नहीं करना चाहिए। मैं तुम लोगों को यह बात बता दूँ : मनुष्य द्वारा अपने कर्तव्य का निर्वाह ऐसी चीज़ है, जो उसे करनी ही चाहिए, और यदि वह अपना कर्तव्य करने में अक्षम है, तो यह उसकी विद्रोहशीलता है। अपना कर्तव्य पूरा करने की प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य धीरे-धीरे बदलता है, और इसी प्रक्रिया के माध्यम से वह अपनी वफ़ादारी प्रदर्शित करता है। इस प्रकार, जितना अधिक तुम अपना कार्य करने में सक्षम होगे, उतना ही अधिक तुम सत्य को प्राप्त करोगे, और उतनी ही अधिक तुम्हारी अभिव्यक्ति वास्तविक हो जाएगी। जो लोग अपना कर्तव्य बेमन से करते हैं और सत्य की खोज नहीं करते, वे अंत में हटा दिए जाएँगे, क्योंकि ऐसे लोग सत्य के अभ्यास में अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते, और अपना कर्तव्य पूरा करने में सत्य का अभ्यास नहीं करते। ये वे लोग हैं, जो अपरिवर्तित रहते हैं और शापित किए जाएँगे। उनकी न केवल अभिव्यक्तियाँ अशुद्ध हैं, बल्कि वे जो कुछ भी व्यक्त करते हैं, वह दुष्टतापूर्ण होता है।

अनुग्रह के युग में यीशु ने भी कई वचन बोले और बहुत कार्य किया। वह यशायाह से कैसे अलग था? वह दानिय्येल से कैसे अलग था? क्या वह कोई नबी था? ऐसा क्यों कहा जाता है कि वह मसीह है? उनके मध्य क्या भिन्नताएँ हैं? वे सभी मनुष्य थे, जिन्होंने वचन बोले थे, और उनके वचन मनुष्य को लगभग एक-से प्रतीत होते थे। उन सभी ने वचन बोले और कार्य किए। पुराने विधान के नबियों ने भविष्यवाणियाँ कीं, और उसी तरह से, यीशु भी वैसा ही कर सकता था। ऐसा क्यों है? यहाँ भेद कार्य की प्रकृति के आधार पर है। इस मामले को समझने के लिए तुम्हें देह की प्रकृति पर विचार नहीं करना चाहिए, न ही तुम्हें उनके वचनों की गहराई या सतहीपन पर विचार करना चाहिए। तुम्हें हमेशा सबसे पहले उनके कार्य और उसके द्वारा मनुष्य में प्राप्त किए जाने वाले परिणामों पर विचार करना चाहिए। उस समय नबियों द्वारा की गई भविष्यवाणियों ने मनुष्य के जीवन की आपूर्ति नहीं की, यशायाह और दानिय्येल जैसे लोगों द्वारा प्राप्त की गई प्रेरणाएँ मात्र भविष्यवाणियाँ थीं, जीवन का मार्ग नहीं। यदि यहोवा की ओर से प्रत्यक्ष प्रकाशन नहीं होता, तो कोई भी इस कार्य को नहीं कर सकता था, जो नश्वर लोगों के लिए संभव नहीं है। यीशु ने भी कई वचन बोले, परंतु वे वचन जीवन का मार्ग थे, जिनमें से मनुष्य अभ्यास का मार्ग प्राप्त कर सकता था। दूसरे शब्दों में, एक तो वह मनुष्य के जीवन की आपूर्ति कर सकता था, क्योंकि यीशु जीवन है; दूसरे, वह मनुष्यों

के विचलनों को उलट सकता था; तीसरे, युग को आगे बढ़ाने के लिए उसका कार्य यहोवा के कार्य का अनुवर्ती हो सकता था; चौथे, वह मनुष्य के भीतर की आवश्यकताएँ जान सकता था और समझ सकता था कि मनुष्य में किस चीज का अभाव है; पाँचवें, वह नए युग का सूत्रपात कर सकता था और पुराने युग का समापन कर सकता था। यही कारण है कि उसे परमेश्वर और मसीह कहा जाता है; वह न केवल यशायाह से भिन्न है, अपितु अन्य सभी नबियों से भी भिन्न है। नबियों के कार्य के लिए तुलना के रूप में यशायाह को लें। पहले तो वह मनुष्य के जीवन की आपूर्ति नहीं कर सकता था; दूसरे, वह नए युग का सूत्रपात नहीं कर सकता था। वह यहोवा की अगुआई के अधीन कार्य कर रहा था, न कि नए युग का सूत्रपात करने के लिए। तीसरे, उसके द्वारा बोले गए शब्द उससे परे थे। वह सीधे परमेश्वर के आत्मा से प्रकाशन प्राप्त कर रहा था, और दूसरे लोग उन्हें सुनकर भी नहीं समझे होंगे। ये कुछ चीज़ें अकेले ही यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि उसके वचन भविष्यवाणियों से अधिक और यहोवा के बदले किए गए कार्य के एक पहलू से ज़्यादा कुछ नहीं थे। वह पूरी तरह से यहोवा का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था। वह यहोवा का सेवक था, यहोवा के काम में एक उपकरण। वह केवल व्यवस्था के युग के भीतर और यहोवा के कार्य-क्षेत्र के भीतर ही कार्य कर रहा था; उसने व्यवस्था के युग से आगे कार्य नहीं किया। इसके विपरीत, यीशु का कार्य भिन्न था। उसने यहोवा के कार्य-क्षेत्र को पार कर लिया; उसने देहधारी परमेश्वर के रूप में कार्य किया और संपूर्ण मानवजाति के छुटकारे के लिए सलीब पर चढ़ गया। दूसरे शब्दों में, उसने यहोवा द्वारा किए गए कार्य के बाहर नया कार्य किया। यह नए युग का सूत्रपात करना था। इसके अतिरिक्त, वह उस बारे में बोलने में सक्षम था, जिसे मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता था। उसका कार्य परमेश्वर के प्रबंधन के भीतर का कार्य था, जो संपूर्ण मानवजाति को समाविष्ट करता था। उसने मात्र कुछ ही मनुष्यों में कार्य नहीं किया, न ही उसका कार्य कुछ सीमित संख्या के लोगों की अगुआई करना था। जहाँ तक इस बात का संबंध है कि कैसे परमेश्वर मनुष्य के रूप में देहधारी हुआ, कैसे उस समय पवित्रात्मा ने प्रकाशन दिए, और कैसे पवित्रात्मा कार्य करने के लिए एक मनुष्य पर उतरा, तो ये ऐसी बातें हैं, जिन्हें मनुष्य देख या छू नहीं सकता। इन सत्यों का इस बात का साक्ष्य होना सर्वथा असंभव है कि वह देहधारी परमेश्वर है। इस प्रकार, अंतर केवल परमेश्वर के वचनों और कार्य में ही किया जा सकता है, जो मनुष्य के लिए दृष्टिगोचर हैं। केवल यही वास्तविक है। इसका कारण यह है कि पवित्रात्मा के मामले तुम्हारे लिए दृष्टिगोचर नहीं हैं और केवल स्वयं परमेश्वर को ही स्पष्ट रूप से ज्ञात हैं, यहाँ तक कि देहधारी परमेश्वर का देह भी सारी चीज़ें नहीं जानता; तुम

केवल उसके द्वारा किए गए कार्य से ही सत्यापन कर सकते हो कि वह परमेश्वर है या नहीं? उसके कार्यों से यह देखा जा सकता है कि एक तो वह एक नए युग की शुरुआत करने में सक्षम है; दूसरे, वह मनुष्य के जीवन की आपूर्ति करने और मनुष्य को अनुसरण का मार्ग दिखाने में सक्षम है। यह इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि वह स्वयं परमेश्वर है। कम से कम, जो कार्य वह करता है, वह पूरी तरह से परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व कर सकता है, और ऐसे कार्य से यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर का आत्मा उसके भीतर है। चूँकि देहधारी परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य मुख्य रूप से नए युग का सूत्रपात करना, नए कार्य की अगुआई करना और नया राज्य खोलना था, इसलिए ये कुछ स्थितियाँ अकेले ही यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि वह स्वयं परमेश्वर है। इस प्रकार यह उसे यशायाह, दानिय्येल और अन्य महान नबियों से भिन्नता प्रदान करता है। यशायाह, दानिय्येल और अन्य नबी उच्च शिक्षित वर्ग के और सुसंस्कृत मनुष्य थे; वे यहोवा की अगुआई में असाधारण लोग थे। देहधारी परमेश्वर का देह भी ज्ञान-संपन्न था और उसमें विवेक का अभाव नहीं था, किंतु उसकी मानवता विशेष रूप से सामान्य थी। वह एक साधारण मनुष्य था, और नग्न आँखें उसके बारे में कोई विशेष मानवता नहीं देख सकती थीं या उसकी मानवता में दूसरों से भिन्न कोई बात नहीं ढूँढ़ सकती थीं। वह अलौकिक या अद्वितीय बिलकुल नहीं था, और वह उच्चतर शिक्षा, ज्ञान या सिद्धांत से संपन्न भी नहीं था। जिस जीवन के बारे में उसने कहा और जिस मार्ग की उसने अगुआई की, वे सिद्धांत के माध्यम से, ज्ञान के माध्यम से, जीवन के अनुभव के माध्यम से अथवा पारिवारिक पालन-पोषण के माध्यम से प्राप्त नहीं किए गए थे। बल्कि, वे पवित्र आत्मा का प्रत्यक्ष कार्य थे, जो कि देहधारी देह का कार्य है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर के बारे में मनुष्य महान धारणाएँ रखता है, और विशेष रूप से चूँकि ये धारणाएँ बहुत सारे अस्पष्ट और अलौकिक तत्त्वों से बनी हैं, इसलिए मनुष्य की दृष्टि में मानवीय कमज़ोरियों वाला साधारण परमेश्वर, जो संकेत और चमत्कार प्रदर्शित नहीं कर सकता, वह निश्चित रूप से परमेश्वर नहीं है। क्या ये मनुष्य की गलत धारणाएँ नहीं है? यदि देहधारी परमेश्वर का देह एक सामान्य मनुष्य न होता, तो उसे देह बन जाना कैसे कहा जा सकता था? देह का होना एक साधारण, सामान्य मनुष्य होना है; यदि वह कोई ज्ञानातीत प्राणी होता, तो फिर वह देह का नहीं होता। यह साबित करने के लिए कि वह देह का है, देहधारी परमेश्वर को एक सामान्य देह धारण करने की आवश्यकता थी। यह सिर्फ़ देहधारण के मायने पूरे करने के लिए था। किंतु नबियों और मनुष्य के पुत्रों के साथ यह मामला नहीं था। वे पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए गए मेधावी मनुष्य थे; मनुष्य की

नज़रों में उनकी मानवता विशेष रूप से महान थी, और उन्होंने ऐसे कई कार्य किए, जो सामान्य मानवता से आगे निकल गए। इसी कारण से, मनुष्य ने उन्हें परमेश्वर माना। अब तुम सब लोगों को इसे स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसा मुद्दा रहा है, जिसे पिछले युगों में सभी मनुष्यों द्वारा सर्वाधिक आसानी से गलत समझा गया है। इसके अतिरिक्त, देहधारण सबसे अधिक रहस्यमय चीज़ है, और देहधारी परमेश्वर को स्वीकार करना मनुष्य के लिए सर्वाधिक कठिन है। मैं जो कहता हूँ, वह तुम लोगों को अपना कार्य पूरा करने और देहधारण का रहस्य समझने में सहायक है। यह सब परमेश्वर के प्रबंधन, उसके दर्शनों से संबंधित है। इसके बारे में तुम लोगों की समझ दर्शनों, अर्थात् परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य, का ज्ञान प्राप्त करने में अधिक लाभदायक होगी। इस तरह, तुम लोग विभिन्न प्रकार के लोगों द्वारा अवश्य करने योग्य कर्तव्य के बारे में और अधिक समझ प्राप्त करोगे। यद्यपि ये वचन तुम्हें प्रत्यक्ष रूप से मार्ग नहीं दिखाते, फिर भी ये तुम लोगों के प्रवेश के लिए बहुत सहायक हैं, क्योंकि वर्तमान में तुम लोगों के जीवन में दर्शनों का अत्यधिक अभाव है, और यह तुम लोगों के प्रवेश में रुकावट डालने वाली एक महत्वपूर्ण बाधा बन जाएगा। यदि तुम लोग इन मुद्दों को समझने में अक्षम रहते हो, तो तुम लोगों के प्रवेश को प्रेरित करने वाली कोई प्रेरणा नहीं होगी। और इस तरह की खोज तुम लोगों को अपना कर्तव्य पूरा करने में सक्षम कैसे बना सकती है?

परमेश्वर संपूर्ण सृष्टि का प्रभु है

पिछले दो युगों के कार्य का एक चरण इस्राएल में पूरा किया गया, और एक यहूदिया में। सामान्य तौर पर कहा जाए तो, इस कार्य का कोई भी चरण इस्राएल छोड़कर नहीं गया, और प्रत्येक चरण पहले चुने गए लोगों पर किया गया। परिणामस्वरूप, इस्राएली मानते हैं कि यहोवा परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है। चूँकि यीशु ने यहूदिया में कार्य किया, जहाँ उसने सूली पर चढ़ने का काम किया, इसलिए यहूदी उसे यहूदी लोगों के उद्धारक के रूप में देखते हैं। वे सोचते हैं कि वह केवल यहूदियों का राजा है, अन्य किसी का नहीं; कि वह अंग्रेजों को छुटकारा दिलाने वाला प्रभु नहीं है, न ही अमेरिकियों को छुटकारा दिलाने वाला प्रभु, बल्कि वह इस्राएलियों को छुटकारा दिलाने वाला प्रभु है, और इस्राएल में भी उसने यहूदियों को छुटकारा दिलाया। वास्तव में, परमेश्वर सभी चीज़ों का स्वामी है। वह संपूर्ण सृष्टि का परमेश्वर है। वह केवल इस्राएलियों का परमेश्वर नहीं है, न यहूदियों का; बल्कि वह संपूर्ण सृष्टि का परमेश्वर है।

उसके कार्य के पिछले दो चरण इस्राएल में हुए, जिसने लोगों में कुछ निश्चित धारणाएँ पैदा कर दी हैं। वे मानते हैं कि यहोवा ने अपना कार्य इस्राएल में किया, और स्वयं यीशु ने अपना कार्य यहूदिया में किया, और इतना ही नहीं, कार्य करने के लिए उसने देहधारण किया—और जो भी हो, यह कार्य इस्राएल से आगे नहीं बढ़ा। परमेश्वर ने मिस्रियों या भारतीयों में कार्य नहीं किया; उसने केवल इस्राएलियों में कार्य किया। लोग इस प्रकार विभिन्न धारणाएँ बना लेते हैं, वे परमेश्वर के कार्य को एक निश्चित दायरे में बाँध देते हैं। वे कहते हैं कि जब परमेश्वर कार्य करता है, तो अवश्य ही उसे ऐसा चुने हुए लोगों के बीच और इस्राएल में करना चाहिए; इस्राएलियों के अलावा परमेश्वर किसी अन्य पर कार्य नहीं करता, न ही उसके कार्य का कोई बड़ा दायरा है। वे देहधारी परमेश्वर को नियंत्रित करने में विशेष रूप से सख़्त हैं और उसे इस्राएल की सीमा से बाहर नहीं जाने देते। क्या ये सब मानवीय धारणाएँ मात्र नहीं हैं? परमेश्वर ने संपूर्ण स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजें बनाईं, उसने संपूर्ण सृष्टि बनाई, तो वह अपने कार्य को केवल इस्राएल तक सीमित कैसे रख सकता है? अगर ऐसा होता, तो उसके संपूर्ण सृष्टि की रचना करने का क्या तुक था? उसने पूरी दुनिया को बनाया, और उसने अपनी छह हजार वर्षीय प्रबंधन योजना केवल इस्राएल में नहीं, बल्कि ब्रह्मांड में प्रत्येक व्यक्ति पर कार्यान्वित की। चाहे वे चीन में रहते हों या संयुक्त राज्य अमेरिका में, यूनाइटेड किंगडम में या रूस में, प्रत्येक व्यक्ति आदम का वंशज है; वे सब परमेश्वर के बनाए हुए हैं। उनमें से एक भी सृष्टि की सीमा से बाहर नहीं जा सकता, और उनमें से एक भी खुद को "आदम का वंशज" होने के ठप्पे से अलग नहीं कर सकता। वे सभी परमेश्वर के प्राणी हैं, वे सभी आदम की संतानें हैं, और वे सभी आदम और हव्वा के भ्रष्ट वंशज भी हैं। केवल इस्राएली ही परमेश्वर की रचना नहीं हैं, बल्कि सभी लोग परमेश्वर की रचना हैं; बस इतना ही है कि कुछ को शाप दिया गया है, और कुछ को आशीष। इस्राएलियों के बारे में कई स्वीकार्य बातें हैं; परमेश्वर ने आरंभ में उन पर कार्य किया क्योंकि वे सबसे कम भ्रष्ट थे। चीनियों की उनसे तुलना नहीं की जा सकती; वे उनसे बहुत हीन हैं। इसलिए, आरंभ में परमेश्वर ने इस्राएलियों के बीच कार्य किया, और उसके कार्य का दूसरा चरण केवल यहूदिया में संपन्न हुआ—जिससे मनुष्यों में बहुत सारी धारणाएँ और नियम बन गए हैं। वास्तव में, यदि परमेश्वर मनुष्य की धारणाओं के अनुसार कार्य करता, तो वह केवल इस्राएलियों का ही परमेश्वर होता, और इस प्रकार वह अन्यजाति-राष्ट्रों के बीच अपने कार्य का विस्तार करने में असमर्थ होता, क्योंकि वह केवल इस्राएलियों का ही परमेश्वर होता, संपूर्ण सृष्टि का परमेश्वर नहीं। भविष्यवाणियों में कहा गया है कि यहोवा का नाम अन्यजाति-राष्ट्रों में

खूब बढ़ेगा, कि वह अन्यजाति-राष्ट्रों में फैल जाएगा। यह भविष्यवाणी क्यों की गई थी? यदि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर होता, तो वह केवल इस्राएल में ही कार्य करता। इतना ही नहीं, वह इस कार्य का विस्तार न करता, और वह ऐसी भविष्यवाणी न करता। चूँकि उसने यह भविष्यवाणी की थी, इसलिए वह निश्चित रूप से अन्यजाति-राष्ट्रों में, प्रत्येक राष्ट्र में और समस्त भूमि पर, अपने कार्य का विस्तार करेगा। चूँकि उसने ऐसा कहा है, इसलिए वह ऐसा ही करेगा; यह उसकी योजना है, क्योंकि वह स्वर्ग और पृथ्वी तथा सभी चीज़ों का सृष्टिकर्ता प्रभु और संपूर्ण सृष्टि का परमेश्वर है। चाहे वह इस्राएलियों के बीच कार्य करता हो या संपूर्ण यहूदिया में, वह जो कार्य करता है, वह संपूर्ण ब्रह्मांड और संपूर्ण मानवता का कार्य होता है। आज जो कार्य वह बड़े लाल अजगर के राष्ट्र—एक अन्यजाति-राष्ट्र में—करता है, वह भी संपूर्ण मानवता का कार्य है। इस्राएल पृथ्वी पर उसके कार्य का आधार हो सकता है; इसी प्रकार, अन्यजाति-राष्ट्रों के बीच चीन भी उसके कार्य का आधार हो सकता है। क्या उसने अब इस भविष्यवाणी को पूरा नहीं किया है कि "यहोवा का नाम अन्यजाति-राष्ट्रों में खूब बढ़ेगा"? अन्यजाति-राष्ट्रों के बीच उसके कार्य का पहला चरण यह कार्य है, जिसे वह बड़े लाल अजगर के राष्ट्र में कर रहा है। देहधारी परमेश्वर का इस राष्ट्र में कार्य करना और इन शापित लोगों के बीच कार्य करना विशेष रूप से मनुष्य की धारणाओं के विपरीत है; ये लोग सबसे निम्न स्तर के हैं, इनका कोई मूल्य नहीं है, और इन्हें यहोवा ने आरंभ में त्याग दिया था। लोगों को दूसरे लोगों द्वारा त्यागा जा सकता है, परंतु यदि वे परमेश्वर द्वारा त्यागे जाते हैं, तो किसी की भी हैसियत उनसे कम नहीं होगी, और किसी का भी मूल्य उनसे कम नहीं होगा। परमेश्वर के प्राणी के लिए शैतान द्वारा कब्ज़े में ले लिया जाना या लोगों द्वारा त्याग दिया जाना कष्टदायक चीज़ है—परंतु किसी सृजित प्राणी को उसके सृष्टिकर्ता द्वारा त्याग दिए जाने का अर्थ है कि उसकी हैसियत उससे कम नहीं हो सकती। मोआब के वंशज शापित थे और वे इस पिछड़े देश में पैदा हुए थे; निःसंदेह अंधकार के प्रभाव से ग्रस्त सभी लोगों में मोआब के वंशजों की हैसियत सबसे कम है। चूँकि अब तक ये लोग सबसे कम हैसियत वाले रहे हैं, इसलिए उन पर किया गया कार्य मनुष्य की धारणाओं को खंडित करने में सबसे सक्षम है, और परमेश्वर की संपूर्ण छह हजार वर्षीय प्रबंधन योजना के लिए सबसे लाभदायक भी है। इन लोगों के बीच ऐसा कार्य करना मनुष्य की धारणाओं को खंडित करने का सर्वोत्तम तरीका है; और इसके साथ परमेश्वर एक युग का सूत्रपात करता है; इसके साथ वह मनुष्य की सभी धारणाओं को खंडित कर देता है; इसके साथ वह संपूर्ण अनुग्रह के युग के कार्य का समापन करता है। उसका पहला कार्य इस्राएल की सीमा के

भीतर यहूदिया में किया गया था; अन्यजाति-राष्ट्रों में उसने नए युग का सूत्रपात करने के लिए कोई कार्य नहीं किया। कार्य का अंतिम चरण न केवल अन्यजातियों के बीच किया जा रहा है; बल्कि इससे भी अधिक, उन लोगों में किया जा रहा है, जिन्हें शापित किया गया है। यह एक बिंदु शैतान को अपमानित करने के लिए सबसे सक्षम प्रमाण है, और इस प्रकार, परमेश्वर ब्रह्मांड में संपूर्ण सृष्टि का परमेश्वर, सभी चीज़ों का प्रभु, और सभी जीवधारियों की आराधना की वस्तु "बन" जाता है।

आज ऐसे लोग हैं, जो अभी भी नहीं समझते कि परमेश्वर ने कौन-सा नया कार्य आरंभ किया है। अन्यजाति-राष्ट्रों में परमेश्वर ने एक नई शुरुआत की है। उसने एक नया युग प्रारंभ किया है, और एक नया कार्य शुरू किया है—और वह इस कार्य को मोआब के वंशजों पर कर रहा है। क्या यह उसका नवीनतम कार्य नहीं है? पूरे इतिहास में पहले कभी किसी ने इस कार्य का अनुभव नहीं किया है। किसी ने कभी इसके बारे में नहीं सुना है, समझना तो दूर की बात है। परमेश्वर की बुद्धि, परमेश्वर का चमत्कार, परमेश्वर की अज्ञेयता, परमेश्वर की महानता, परमेश्वर की पवित्रता सब कार्य के इस चरण के माध्यम से प्रकट किए जाते हैं, जो कि अंत के दिनों का कार्य है। क्या यह नया कार्य नहीं है, ऐसा कार्य, जो मानव की धारणाओं को खंडित करता है? ऐसे लोग भी हैं, जो इस प्रकार सोचते हैं : "चूँकि परमेश्वर ने मोआब को शाप दिया था और कहा था कि वह मोआब के वंशजों का परित्याग कर देगा, तो वह उन्हें अब कैसे बचा सकता है?" ये अन्यजाति के वे लोग हैं, जिन्हें परमेश्वर द्वारा शाप दिया गया था और इस्राएल से बाहर निकाल दिया गया था; इस्राएली उन्हें "अन्यजाति के कुत्ते" कहते थे। हरेक की दृष्टि में, वे न केवल अन्यजाति के कुत्ते हैं, बल्कि उससे भी बदतर, विनाश के पुत्र हैं; कहने का तात्पर्य यह कि वे परमेश्वर द्वारा चुने हुए लोग नहीं हैं। वे इस्राएल की सीमा में पैदा हुए होंगे, लेकिन वे इस्राएल के लोगों से संबंधित नहीं थे; और अन्यजाति-राष्ट्रों में निष्कासित कर दिए गए थे। ये सबसे हीन लोग हैं। चूंकि वे मानवता के बीच हीनतम हैं, यही कारण है कि परमेश्वर एक नए युग को आरंभ करने का अपना कार्य उनके बीच करता है, क्योंकि वे भ्रष्ट मानवता के प्रतिनिधि हैं। परमेश्वर का कार्य चयनात्मक और लक्षित है; जो कार्य वह आज इन लोगों में करता है, वह सृष्टि में किया जाने वाला कार्य भी है। नूह परमेश्वर का एक सृजन था, जैसे कि उसके वंशज हैं। दुनिया में हाड़-मांस से बने सभी प्राणी परमेश्वर के सृजन हैं। परमेश्वर का कार्य संपूर्ण सृष्टि पर निर्देशित है; यह इस बात पर आधारित नहीं है कि सृजित किए जाने के बाद किसी को शापित किया गया है या नहीं। उसका प्रबंधन-कार्य समस्त सृष्टि पर निर्देशित है, केवल उन चुने हुए लोगों पर नहीं, जिन्हें शापित नहीं किया गया

है। चूँकि परमेश्वर अपनी सृष्टि के बीच अपना कार्य करना चाहता है, इसलिए वह इसे निश्चित रूप से सफलतापूर्वक पूरा करेगा, और वह उन लोगों के बीच कार्य करेगा जो उसके कार्य के लिए लाभदायक हैं। इसलिए, जब वह मनुष्यों के बीच कार्य करता है, तो सभी परंपराओं को तहस-नहस कर देता है; उसके लिए, "शापित," "ताड़ित" और "धन्य" शब्द निरर्थक हैं! यहूदी लोग अच्छे हैं, इस्राएल के चुने हुए लोग भी अच्छे हैं; वे अच्छी क्षमता और मानवता वाले लोग हैं। प्रारंभ में यहोवा ने उन्हीं के बीच अपना कार्य आरंभ किया, और अपना सबसे पहला कार्य किया—परंतु आज उन पर विजय प्राप्त करने का कार्य अर्थहीन होगा। वे भी सृष्टि का एक हिस्सा हो सकते हैं और उनमें बहुत-कुछ सकारात्मक हो सकता है, किंतु उनके बीच कार्य के इस चरण को कार्यान्वित करना बेमतलब होगा; परमेश्वर लोगों को जीत पाने में सक्षम नहीं होगा, न ही वह सृष्टि के सारे लोगों को समझाने में सक्षम होगा, जो कि उसके द्वारा अपने कार्य को बड़े लाल अजगर के राष्ट्र के इन लोगों तक ले जाने का आशय है। यहाँ सबसे अधिक महत्वपूर्ण उसका युग आरंभ करना, उसका सभी नियमों और मानवीय धारणाओं को खंडित करना और संपूर्ण अनुग्रह के युग के कार्य का समापन करना है। यदि उसका वर्तमान कार्य इस्राएलियों के मध्य किया गया होता, तो जब तक उसकी छह हजार वर्षीय प्रबंधन योजना समाप्त होने को आती, हर कोई यह विश्वास करने लगता कि परमेश्वर केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है, कि केवल इस्राएली ही परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, कि केवल इस्राएली ही परमेश्वर का आशीष और प्रतिज्ञा विरासत में पाने योग्य हैं। अंत के दिनों के दौरान बड़े लाल अजगर के राष्ट्र के अन्यजाति-देश में परमेश्वर का देहधारण संपूर्ण सृष्टि के परमेश्वर के रूप में परमेश्वर का कार्य पूरा करता है; वह अपना संपूर्ण प्रबंधन-कार्य पूरा करता है, और वह बड़े लाल अजगर के देश में अपने कार्य के केंद्रीय भाग को समाप्त करता है। कार्य के इन तीनों चरणों के मूल में मनुष्य का उद्धार है—अर्थात, संपूर्ण सृष्टि से सृष्टिकर्ता की आराधना करवाना। इस प्रकार, कार्य के प्रत्येक चरण का बहुत बड़ा अर्थ है; परमेश्वर ऐसा कुछ नहीं करता जिसका कोई अर्थ या मूल्य न हो। एक ओर, कार्य का यह चरण एक नए युग का सूत्रपात और पिछले दो युगों का अंत करता है; दूसरी ओर, यह मनुष्य की समस्त धारणाओं और उसके विश्वास और ज्ञान के सभी पुराने तरीकों को खंडित करता है। पिछले दो युगों का कार्य मनुष्य की विभिन्न धारणाओं के अनुसार किया गया था; किंतु यह चरण मनुष्य की धारणाओं को पूरी तरह मिटा देता है, और ऐसा करके वह मानवजाति को पूरी तरह से जीत लेता है। मोआब के वंशजों के बीच किए गए कार्य के माध्यम से उसके वंशजों को जीतकर परमेश्वर संपूर्ण ब्रह्मांड में सभी लोगों को जीत लेगा। यह

उसके कार्य के इस चरण का गहनतम अर्थ है, और यही उसके कार्य के इस चरण का सबसे मूल्यवान पहलू है। भले ही तुम अब जानते हो कि तुम्हारी अपनी हैसियत निम्न है और तुम कम मूल्य के हो, फिर भी तुम यह महसूस करोगे कि तुम्हारी सबसे आनंददायक वस्तु से भेंट हो गई है : तुमने एक बहुत बड़ा आशीष विरासत में प्राप्त किया है, एक बड़ी प्रतिज्ञा प्राप्त की है, और तुम परमेश्वर के इस महान कार्य को पूरा करने में सहायता कर सकते हो। तुमने परमेश्वर का सच्चा चेहरा देखा है, तुम परमेश्वर के अंतर्निहित स्वभाव को जानते हो, और तुम परमेश्वर की इच्छा पर चलते हो। परमेश्वर के कार्य के पिछले दो चरण इस्राएल में संपन्न किए गए थे। यदि अंत के दिनों के दौरान उसके कार्य का यह चरण भी इस्राएलियों के बीच किया जाता, तो न केवल संपूर्ण सृष्टि मान लेती कि केवल इस्राएली ही परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, बल्कि परमेश्वर की संपूर्ण प्रबंधन योजना भी अपना वांछित परिणाम प्राप्त न कर पाती। जिस समय इस्राएल में उसके कार्य के दो चरण पूरे किए गए थे, उस दौरान अन्यजाति-राष्ट्रों के बीच न तो कोई नया कार्य—न ही नया युग प्रारंभ करने का कोई कार्य—किया गया था। कार्य का आज का चरण—एक नए युग के सूत्रपात का कार्य—पहले अन्यजाति-राष्ट्रों में किया जा रहा है, और इतना ही नहीं, प्रारंभ में मोआब के वंशजों के बीच किया जा रहा है; और इस प्रकार संपूर्ण युग का आरंभ किया गया है। परमेश्वर ने मनुष्य की धारणाओं में निहित किसी भी ज्ञान को बाकी नहीं रहने दिया और सब खंडित कर दिया। विजय प्राप्त करने के अपने कार्य में उसने मानवीय धारणाओं को, ज्ञान के उन पुराने, आरंभिक मानवीय तरीकों को ध्वस्त कर दिया है। वह लोगों को देखने देता है कि परमेश्वर पर कोई नियम लागू नहीं होते, कि परमेश्वर के मामले में कुछ भी पुराना नहीं है, कि वह जो कार्य करता है वह पूरी तरह से स्वतंत्र है, पूरी तरह से मुक्त है, और कि वह अपने समस्त कार्य में सही है। वह सृष्टि के बीच जो भी कार्य करता है, उसके प्रति तुम्हें पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए। उसके समस्त कार्य में अर्थ होता है, और वह उसकी अपनी इच्छा और बुद्धि के अनुसार किया जाता है, मनुष्य की पसंद और धारणाओं के अनुसार नहीं। अगर कोई चीज़ उसके कार्य के लिए लाभदायक होती है, तो वह उसे करता है; और अगर कोई चीज़ उसके कार्य के लिए लाभदायक नहीं होती, तो वह उसे नहीं करता, चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हो! वह कार्य करता है और अपने कार्य के अर्थ और प्रयोजन के अनुसार अपने कार्य के प्राप्तकर्ताओं और स्थान का चयन करता है। कार्य करते हुए वह पुराने नियमों से चिपका नहीं रहता, न ही वह पुराने सूत्रों का पालन करता है। इसके बजाय, वह अपने कार्य की योजना उसके मायने के अनुसार बनाता है। अंतत: वह वास्तविक प्रभाव

और प्रत्याशित लक्ष्य प्राप्त करेगा। यदि तुम आज इन बातों को नहीं समझते, तो इस कार्य का तुम पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

तेरह धर्मपत्रों पर तुम्हारा दृढ़ मत क्या है?

बाइबल के नए नियम में पौलुस के तेरह धर्मपत्र हैं। जिस समयावधि में पौलुस ने अपना कार्य किया, उसमें उसने उन कलीसियाओं को ये तेरह पत्र लिखे जो प्रभु यीशु में विश्वास करते थे। यानी, पौलुस को उन्नत किया गया और उसने ये पत्र यीशु के स्वर्गारोहण के बाद लिखे थे। पौलुस के पत्र प्रभु यीशु के देहांत के बाद उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की गवाहियाँ हैं। उन पत्रों ने प्रायश्चित तथा क्रूस धारण करने के तरीकों का प्रसार भी किया। बेशक, इन तमाम संदेशों और गवाहियों का अभिप्राय उस समय यहूदा के आसपास के विभिन्न स्थानों में भाइयों-बहनों को शिक्षा देना था, क्योंकि उस वक्त, पौलुस प्रभु यीशु का सेवक था और उसे प्रभु यीशु की गवाही देने के लिए उन्नत किया जा चुका था। पवित्र आत्मा के कार्य की प्रत्येक अवधि में, उसके विभिन्न कार्यों को करने के लिए, यानी प्रेरितों का कार्य करने के लिए, अनेक लोगों को उन्नत किया जाता है ताकि जिस कार्य को परमेश्वर स्वयं पूरा करता है, उस कार्य को जारी रखा जा सके। अगर पवित्र आत्मा इसे प्रत्यक्षत: करता और किसी व्यक्ति को उन्नत न किया गया होता, तो कार्य को पूरा करना बहुत मुश्किल हो जाता। इस तरह, पौलुस वह व्यक्ति बना जिस पर दमिश्क की ओर जाते हुए प्रहार किया गया, और फिर उसे प्रभु यीशु की गवाही देने के लिए उन्नत किया गया। वह यीशु के बारह अनुयायियों में से एक होने के अलावा एक प्रेरित भी था। सुसमाचार का प्रसार करने के अतिरिक्त, उसने विभिन्न स्थानों पर कलीसियाओं की देखभाल करने का कार्य भी अपने हाथ में लिया जिसमें कलीसियाओं के भाई-बहनों की देखभाल शामिल थी। दूसरे शब्दों में, भाई-बहनों की प्रभु में अगुआई करना। पौलुस की गवाही का उद्देश्य प्रभु यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के तथ्य से लोगों को अवगत कराना था, साथ ही लोगों को प्रायश्चित करना, पाप-स्वीकार करना और क्रूस के मार्ग पर चलना सिखाना भी था। वह उस समय प्रभु यीशु के गवाहों में से एक था।

बाइबल में इस्तेमाल के लिए पौलुस के तेरह धर्मपत्र चुने गये थे। उसने ये तेरह पत्र भिन्न स्थानों के लोगों की विभिन्न अवस्थाओं को संबोधित करने के लिए लिखे थे। इन पत्रों को लिखने के लिए उसे पवित्र

आत्मा द्वारा प्रेरित किया गया था, और उसने हर जगह एक प्रेरित के रूप में ही (प्रभु यीशु के सेवक के दृष्टिकोण से) भाइयों-बहनों को सिखाया। इस तरह, पौलुस के पत्रों का जन्म भविष्यवाणियों या सीधे दर्शनों से नहीं हुआ, बल्कि उस कार्य से हुआ जो उसने हाथ में लिया था। ये कोई अनोखे पत्र नहीं हैं, न ही इन्हें भविष्यवाणियों की तरह समझना मुश्किल है। इन्हें मात्र पत्रों की तरह ही लिखा गया है, इनमें न तो भविष्यवाणियाँ शामिल हैं और न ही रहस्य; इनमें महज़ साधारण प्रशिक्षण संबंधी शब्द हैं। भले ही लोगों के लिए इन पत्रों के बहुत से शब्दों को समझना मुश्किल हो, लेकिन ये पौलुस की अपनी व्याख्याओं और पवित्र आत्मा के प्रबोधन से ही उपजे हैं। पौलुस मात्र एक प्रेरित था; वह एक सेवक था जिसका इस्तेमाल प्रभु यीशु ने किया था, वह कोई नबी नहीं था। अलग-अलग स्थानों से गुज़रते हुए, उसने कलीसियाओं के भाई-बहनों को पत्र लिखे, या अपनी बीमारी के दौरान, उसने उन कलीसियाओं को लिखा जो खास तौर से उसके दिमाग में थे लेकिन जहाँ वह जा नहीं सकता था। उसी तरह, लोगों ने उसके पत्रों को संभाल कर रख लिया और बाद में उन्हें आने वाली पीढ़ियों द्वारा बाइबल में चार सुसमाचारों के पश्चात संकलित, संगठित और व्यवस्थित किया गया। बेशक, उन्होंने उसके लिखे सर्वश्रेष्ठ पत्रों को चुनकर एक संकलन बनाया। ये धर्मपत्र कलीसियाओं के भाई-बहनों के जीवन के लिए लाभदायक थे और उसके समय में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए थे। जब पौलुस ने वे पत्र लिखे, तो उसका उद्देश्य कोई आध्यात्मिक कार्य लिखना नहीं था जिससे कि उसके भाई-बहन अभ्यास का कोई मार्ग पा सकें या अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए कोई आध्यात्मिक जीवनी लिखना नहीं था; उसका इरादा लेखक बनने के लिए पुस्तक लिखना नहीं था। वह महज़ प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के अपने भाई-बहनों के लिए पत्र लिख रहा था। पौलुस ने एक सेवक के दर्जे से, अपने भाई-बहनों को अपने भार के बारे में, उन्हें प्रभु यीशु की इच्छा के बारे में और प्रभु ने भविष्य के लिए लोगों को क्या काम सौंपे थे, ये सब बताने के लिए अपने भाई-बहनों को शिक्षा दी। यह कार्य था जो पौलुस ने किया। उसके वचन भविष्य के सभी भाई-बहनों के अनुभव के लिए बहुत शिक्षाप्रद थे। इन अनेक पत्रों में उसने जो सत्य कहे थे, उन्हें लोगों को अनुग्रह के युग में अमल में लाना चाहिए, यही वजह है कि बाद की पीढ़ियों ने इन पत्रों को नए नियम में शामिल किया। पौलुस के परिणाम अंततः जो भी हुआ हो, लेकिन वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसका उसके समय में इस्तेमाल किया गया और जिसने कलीसियाओं के अपने भाई-बहनों का साथ दिया। उसका परिणाम उसके सार से, साथ ही शुरू में उस पर प्रहार किए जाने से तय हुआ था। वह उस समय उन शब्दों को बोल पाया क्योंकि उसमें पवित्र

आत्मा का कार्य था और इसी कार्य के कारण कलीसियाओं के प्रति पौलुस का एक दायित्व था। इस प्रकार, वह अपने भाई-बहनों को पोषण दे पाया। लेकिन, कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण, पौलुस कार्य करने के लिए व्यक्तिगत रूप से कलीसियाओं में नहीं जा पाया, इसलिए उसने प्रभु में आस्था रखने वाले भाई-बहनों को झिड़कने के लिए उन्हें पत्र लिखे। पहले तो पौलुस ने प्रभु यीशु के अनुयायियों को सताया, लेकिन यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, यानी पौलुस के "प्रकाश देखने" के बाद, उसने प्रभु यीशु के अनुयायियों को सताना छोड़ दिया, और उन संतों को भी नहीं सताया जो प्रभु के मार्ग की खातिर सुसमाचार का प्रचार करते थे। यीशु को चमकदार प्रकाश के रूप में प्रकट होते देखने के बाद, पौलुस ने प्रभु के आदेश को स्वीकार कर लिया, और इस प्रकार वह एक ऐसा इंसान बन गया जिसका इस्तेमाल पवित्र आत्मा द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने के लिए किया गया था।

उस समय पौलुस का काम सिर्फ भाई-बहनों को सहारा और पोषण देना था। वह ऐसा इंसान नहीं था जो अपना भविष्य बनाना या साहित्य-कार्य की रचना करना, बचने के अन्य मार्गों की तलाश करना चाहता हो, या कलीसिया के इन लोगों की अगुआई करने के लिए बाइबल के अलावा कोई और मार्ग ढूँढ़ना चाहता हो ताकि वे तमाम लोग नया प्रवेश पा सकें। पौलुस ऐसा व्यक्ति था जिसका इस्तेमाल किया गया था; वह जो कुछ कर रहा था, उन्हें करते हुए वह मात्र अपना कर्तव्य निभा रहा था। अगर उसने कलीसियाओं के प्रति दायित्व का वहन न किया होता, तो ऐसा माना जाता कि उसने अपने कर्तव्य को नजरंदाज़ कर दिया। अगर कुछ हानिकारक घटित हो जाता, या कलीसिया में दगाबाज़ी की कोई घटना घट जाती जिससे वहाँ के लोगों की अवस्था असामान्य हो जाती, तो ऐसा माना जा सकता था कि उसने अपना काम बखूबी नहीं किया। अगर कोई कर्मी कलीसिया के प्रति दायित्व वहन करता है, और अपनी सर्वश्रेष्ठ योग्यता के अनुसार काम भी करता है, तो इससे यह साबित होता है कि यह व्यक्ति एक योग्य कर्मी है—इस्तेमाल किए जाने योग्य है। अगर कोई व्यक्ति कलीसिया के प्रति कोई दायित्व महसूस नहीं करता, अपने काम में कोई परिणाम हासिल नहीं करता, और उनमें से अधिकतर लोग जिनकी वह अगुवाई करता है, कमज़ोर हैं अथवा पतित तक हो जाते हैं, तो ऐसे कर्मी ने अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं किया है। इसी प्रकार, पौलुस भी कोई अपवाद नहीं था, यही वजह है कि उसे कलीसियाओं की देखभाल करनी थी और अक्सर अपने भाई-बहनों को पत्र लिखने थे। इस तरीके से वह कलीसियाओं को पोषण दे पाया और अपने भाई-बहनों की देखभाल कर पाया; मात्र इसी तरीके से कलीसियाएँ उससे पोषण और देखभाल प्राप्त कर सकती थीं।

उसके लिखे पत्रों के शब्द बहुत गहन थे, लेकिन वे पवित्र आत्मा द्वारा प्रबोधन प्राप्त कर लेने की स्थिति में उसके भाई-बहनों को लिखे गए थे, उसने अपने निजी अनुभव और जो दायित्व उसने महसूस किया था, उसे अपने लेखन में पिरो दिया था। पौलुस मात्र एक व्यक्ति था जिसका इस्तेमाल पवित्र आत्मा ने किया था, और उसके पत्रों की विषय-वस्तु उसके निजी अनुभवों के साथ गुँथी हुई थी। उसने जो कार्य किया वह महज़ एक प्रेरित के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, न कि प्रत्यक्ष तौर पर पवित्र आत्मा द्वारा किए गए कार्य का, और यह मसीह के कार्य से भी भिन्न है। पौलुस मात्र अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहा था, यही वजह थी कि उसने प्रभु में आस्था रखने वाले अपने भाई-बहनों को अपने दायित्व की, साथ ही अपने निजी अनुभवों और अंतर्दृष्टियों की आपूर्ति की। पौलुस अपनी निजी अंतर्दृष्टियाँ और समझ प्रदान करके मात्र परमेश्वर के आदेश को पूरा करने का काम कर रहा था; यह निश्चित रूप से स्वयं परमेश्वर द्वारा प्रत्यक्ष तौर पर किए गए कार्य का उदाहरण नहीं था। इस तरह, पौलुस के कार्य में इंसानी अनुभव, इंसानी दृष्टिकोण और कलीसिया के कार्य की इंसानी समझ मिली हुई थी। लेकिन इन इंसानी दृष्टिकोणों और समझ को दुष्ट आत्माओं या मनुष्य का कार्य नहीं कहा जा सकता; इन्हें एक ऐसे व्यक्ति का ज्ञान और अनुभव कहा जा सकता है जिसे पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध किया गया था। मेरे कहने का अर्थ यह है कि पौलुस के पत्र स्वर्ग की पुस्तकें नहीं हैं। वे पवित्र नहीं हैं और वे बिल्कुल भी पवित्र आत्मा द्वारा कहे या व्यक्त किए गए नहीं थे; वे मात्र कलीसिया के प्रति पौलुस के दायित्व का प्रकटीकरण हैं। मेरे ये सब कहने का अभिप्राय तुम लोगों को परमेश्वर के कार्य और इंसान के कार्य में अंतर समझाना है : परमेश्वर का कार्य स्वयं परमेश्वर के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इंसान का काम इंसान के कर्तव्य और अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है। किसी को परमेश्वर के सामान्य कार्य को, इंसान की इच्छा और परमेश्वर के अलौकिक कार्य को परमेश्वर की इच्छा नहीं मानना चाहिए; इसके अलावा, इंसान के बड़े-बड़े उपदेशों को परमेश्वर के कथन या स्वर्ग की पुस्तकें नहीं मानना चाहिए। ऐसे सारे विचार अनैतिक होंगे। मुझे पौलुस के तेरह धर्मपत्रों का विश्लेषण करते हुए सुनकर, बहुत-से लोगों को लग सकता है कि पौलुस के पत्रों को नहीं पढ़ा जाना चाहिए, और यह कि पौलुस बेहद पापी इंसान था। बहुत-से ऐसे लोग भी हैं जिन्हें लगता है कि मेरे शब्द भावनाशून्य हैं, पौलुस के पत्रों का मेरा आकलन गलत है, और उन पत्रों को इंसान के अनुभवों और दायित्व की अभिव्यक्ति नहीं माना जा सकता। उनका मानना है कि उन्हें परमेश्वर के वचन माना जाना चाहिए, वे उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितनी यूहन्ना की प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, उन्हें न तो संक्षिप्त किया जा सकता है और न

ही उनमें कुछ जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, उनकी व्याख्या यूँ ही नहीं की जा सकती। क्या ये सभी इंसानी अभिकथन गलत नहीं हैं? क्या ये पूरी तरह से लोगों की नासमझी की वजह से नहीं है? पौलुस के पत्रों से लोगों को लाभ अवश्य होता है, और उनका इतिहास पहले ही 2,000 साल से भी अधिक पुराना है। लेकिन आज तक, अभी भी ऐसे बहुत-से लोग हैं जो पूरी तरह से समझ नहीं पाते कि उसने उस समय क्या कहा था। लोग पौलुस के पत्रों को पूरी ईसाइयत में उत्कृष्टतम मानते हैं, और मानते हैं कि उनके रहस्य को कोई नहीं सुलझा सकता, न ही उन्हें पूरी तरह से कोई समझ सकता है। दरअसल, ये पत्र किसी आध्यात्मिक व्यक्ति की जीवनी की तरह ही हैं, उनकी तुलना यीशु के वचनों या यूहन्ना द्वारा देखे गए महान दर्शनों से नहीं की जा सकती। इसके विपरीत, यूहन्ना ने जो देखे थे वे स्वर्ग की ओर से महान दर्शन थे—परमेश्वर के अपने कार्य की भविष्यवाणियाँ थीं—जो इंसान के लिए अप्राप्य था, जबकि पौलुस के पत्र इंसान ने जो देखा और अनुभव किया था, उसका वर्णन-मात्र हैं। वे वो हैं जो इंसान कर पाने योग्य है, लेकिन ये न तो भविष्यवाणियाँ हैं और न ही दर्शन हैं; ये मात्र ऐसे पत्र हैं जिन्हें विभिन्न स्थानों पर भेजा गया था। लेकिन उस समय के लोगों के लिए, पौलुस एक कर्मी था, और इसलिए उसके शब्दों का मूल्य था, क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति था जिसने उस कार्य को स्वीकार कर लिया था जो उसे सौंपा गया था। अत:, उसके पत्र उन तमाम लोगों के लिए लाभदायक थे जिन्हें मसीह की तलाश थी। भले ही वे शब्द यीशु द्वारा व्यक्तिगत रूप से नहीं बोले गए थे, लेकिन अंतत: उनके समय में वे अनिवार्य थे। इस तरह, पौलुस के बाद जो लोग आए, उन्होंने उसके पत्रों को बाइबल में व्यवस्थित कर दिया, और इस प्रकार उन पत्रों को आज के समय को सौंप दिया गया। क्या तुम लोग मेरा अर्थ समझ रहे हो? मैं मात्र तुम लोगों को इनकी एक सटीक व्याख्या दे रहा हूँ और संदर्भ के तौर पर लोगों के लिए इन पत्रों के लाभ और मूल्य को नकारे बिना इनका विश्लेषण कर रहा हूँ। अगर मेरे शब्दों को पढ़ने के बाद, तुम लोग पौलुस के पत्रों को न केवल नकारते हो, बल्कि उन्हें पाखंड या मूल्यहीन मानने का निश्चय करते हो, तब केवल यही कहा जा सकता है कि तुम लोगों की समझने की योग्यता बेहद कमज़ोर है, उसी तरह जैसे चीज़ों के बारे में तुम्हारी अंतर्दृष्टियाँ और परख कमज़ोर है; यकीनन यह नहीं कहा जा सकता कि मेरे शब्द कुछ ज़्यादा ही एक-तरफा हैं। क्या अब तुम लोग समझते हो? तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण चीज़ उस समय पौलुस के कार्य की वास्तविक स्थिति और उस पृष्ठभूमि को समझना है जिसमें उसके पत्र लिखे गए थे। अगर इन परिस्थितियों के बारे में तुम्हारा दृष्टिकोण सही होगा, तो पौलुस के धर्मपत्रों के बारे में भी तुम लोगों का दृष्टिकोण सही होगा। साथ ही, एक बार जब तुमने उन

पत्रों के सार को गहराई से समझ लिया, तो बाइबल का तुम्हारा आकलन सही होगा और तुम समझ जाओगे कि इतने बरसों से लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी पौलुस के पत्रों की इतनी पूजा क्यों करते चले आ रहे हैं, साथ ही यह भी कि इतने सारे लोग उसे परमेश्वर की तरह क्यों मानते हैं। अगर तुम लोग न समझते, तो क्या तुम भी यही नहीं सोचते?

जो स्वयं परमेश्वर नहीं है, वह स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। पौलुस के कार्य को केवल मानवीय दृष्टिकोण का हिस्सा और पवित्र आत्मा के प्रबोधन का भाग कहा जा सकता है। पौलुस ने ये शब्द पवित्र आत्मा के प्रबोधन के साथ, मानवीय दृष्टिकोण से लिखे थे। यह कोई दुर्लभ चीज़ नहीं है। इसलिए उसके शब्दों में मानवीय अनुभवों का मिश्रण न हो ऐसा नहीं हो सकता था, और बाद में उसने उस समय अपने भाई-बहनों को पोषण और सहारा देने के लिए अपने निजी अनुभवों का इस्तेमाल किया। उसके लिखे पत्रों को जीवन-अध्ययन के तौर पर वर्गीकृत नहीं किया जा सकता, न ही उन्हें जीवनियों या संदेशों के रुप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसके अलावा, ये न तो कलीसियाओं द्वारा अमल में लाए जाने वाले सत्य थे, न ही कलीसियाई प्रशासनिक आज्ञाएँ थीं। किसी दायित्व-पूर्ण व्यक्ति के रुप में—जिसे पवित्र आत्मा ने कार्य सौंपा हो—यह ऐसा कार्य है जो उसे करना ही है। अगर पवित्र आत्मा लोगों को उन्नत करता है और उन्हें दायित्व प्रदान करता है, लेकिन वे कलीसिया का कार्य नहीं करते हैं, और उसकी व्यवस्थाओं का प्रबंधन ठीक से नहीं कर सकते हैं, या संतोषजनक ढंग से उसकी सारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते हैं, तो इससे साबित होता है कि वे लोग अपने कर्तव्यों का निर्वहन ठीक तरीके से नहीं करते हैं। इसलिए किसी प्रेरित के लिए अपने कार्य के दौरान पत्र लिख पाना कोई बहुत रहस्यमय चीज़ नहीं थी। यह उनके कार्य का अंग था; वे ऐसा करने के लिए बाध्य थे। पत्र लिखने के पीछे उनका उद्देश्य कोई जीवन अध्ययन या आध्यात्मिक जीवनी लिखना नहीं था, और यह संतों के लिए नया मार्ग खोलना तो बिल्कुल नहीं था। बल्कि, वे अपना कार्य करने और परमेश्वर के लिए निष्ठावान सेवक बनने के लिए यह करते थे, ताकि परमेश्वर ने उन्हें जो कार्य सौंपा था उसे पूरा करके, वे उसे उस कार्य का हिसाब दे सकें। उन्हें अपने कार्य में स्वयं के लिए और अपने भाई-बहनों के लिए उत्तरदायित्व लेना था, और अपना कार्य सही ढंग से करना था और कलीसिया के मामलों को गंभीरता से लेना था : यह सब उनके कार्य का अंग था।

अगर तुम लोगों ने पौलुस के पत्र की समझ हासिल कर ली है, तो पौलुस और यूहन्ना के धर्मपत्रों के

बारे में तुम लोगों का विचार और आकलन भी सही होगा। तुम लोग इन पत्रों को कभी भी स्वर्ग की ऐसी पुस्तकों के रूप में नहीं देखोगे जो पवित्र और अलंघनीय हों, तुम पौलुस को परमेश्वर तो कभी नहीं मानोगे। आखिरकार, परमेश्वर का कार्य इंसान के कार्य से अलग है और, इसके अलावा, उसकी अभिव्यक्तियाँ इंसानों की अभिव्यक्तियों के समान कैसे हो सकती हैं? परमेश्वर का अपना विशेष स्वभाव है, जबकि इंसानों के ऐसे कर्तव्य हैं जिनका उन्हें निर्वहन करना चाहिए। परमेश्वर का स्वभाव उसके कार्य में व्यक्त होता है, जबकि इंसान का कर्तव्य इंसान के अनुभवों में समाविष्ट होता है और इंसान के अनुसरण में व्यक्त होता है। इसलिए यह किए गए कार्य से स्पष्ट हो जाता है कि कोई चीज़ परमेश्वर की अभिव्यक्ति है या इंसान की अभिव्यक्ति। इसे स्वयं परमेश्वर द्वारा बताने की आवश्यकता नहीं है, न ही इंसान को गवाही देने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है; इसके अलावा, स्वयं परमेश्वर को किसी व्यक्ति का दमन करने की आवश्यकता है। यह सब सहज प्रकटन के रूप में आता है; न तो यह जबरन होता है, न ही इंसान इसमें हस्तक्षेप कर सकता है। इंसान के कर्तव्य को उसके अनुभवों से जाना जा सकता है, और इसके लिए लोगों को कोई अतिरिक्त अनुभवजन्य कार्य करने की आवश्यकता नहीं है। इंसान जब अपना कर्तव्य निभाता है तो उसका समस्त सार प्रकट हो सकता है, जबकि परमेश्वर अपना कार्य करते समय अपना अंतर्निहित स्वभाव प्रकट कर सकता है। अगर यह इंसान का कार्य है, तो इसे छिपाया नहीं जा सकता। अगर यह परमेश्वर का कार्य है, तो किसी के लिए भी परमेश्वर के स्वभाव को छिपाना और भी असंभव है, इसे इंसान द्वारा नियंत्रित करना तो बिल्कुल ही संभव नहीं। किसी भी इंसान को परमेश्वर नहीं कहा जा सकता, न ही उसके काम और शब्दों को पवित्र या अपरिवर्तनीय माना जा सकता है। परमेश्वर को इंसान कहा जा सकता है क्योंकि उसने देहधारण किया, लेकिन उसके कार्य को इंसान का कार्य या इंसान का कर्तव्य नहीं माना जा सकता। इसके अलावा, परमेश्वर के कथन और पौलुस के पत्रों को समान नहीं माना जा सकता, न ही परमेश्वर के न्याय और ताड़ना को और इंसान के अनुदेशों के शब्दों को समान दर्जा दिया जा सकता है। इसलिए, ऐसे सिद्धांत हैं जो परमेश्वर के कार्य को इंसान के काम से अलग करते हैं। इन्हें उनके सारों के अनुसार अलग किया जाता है, न कि कार्य के विस्तार या उसकी अस्थायी कार्यकुशलता के आधार पर। इस विषय पर, अधिकतर लोग सिद्धांतों की गलती करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इंसान बाह्य स्वरूप को देखता है, जिसे वह हासिल कर सकता है, जबकि परमेश्वर सार को देखता है, जिसे इंसान की भौतिक आँखों से नहीं देखा जा सकता। अगर तुम परमेश्वर के वचनों और कार्य को औसत इंसान के

कर्तव्य मानते हो, और इंसान के बड़े पैमाने के काम को उसका कर्तव्य-निर्वहन मानने के बजाय देहधारी परमेश्वर का कार्य मानते हो, तो क्या तुम सैद्धांतिक रूप से गलत नहीं हो? इंसान के पत्र और जीवनियाँ आसानी से लिखी जा सकती हैं, मगर केवल पवित्र आत्मा के कार्य की बुनियाद पर। लेकिन परमेश्वर के कथनों और कार्य को इंसान आसानी से संपन्न नहीं कर सकता या उन्हें मानवीय बुद्धि और सोच द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता, न ही लोग उनकी जाँच-पड़ताल करने के बाद पूरी तरह से उनकी व्याख्या कर सकते हैं। यदि सिद्धांत के ये मामले तुम लोगों के अंदर कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करते हैं, तो तुम लोगों की आस्था स्पष्टत: बहुत सच्ची या शुद्ध नहीं है। केवल यही कहा जा सकता है कि तुम लोगों की आस्था अस्पष्टता से भरी हुई है, और उलझी हुई तथा सिद्धांतविहीन है। परमेश्वर और इंसान के सर्वाधिक मौलिक अनिवार्य मसलों को समझे बिना, क्या इस प्रकार की आस्था पूरी तरह से प्रत्यक्षबोध से रहित नहीं है? पौलुस पूरे इतिहास में इस्तेमाल किया जाने वाला इकलौता व्यक्ति कैसे हो सकता है? वही इकलौता व्यक्ति कैसे हो सकता है जिसने कभी कलीसिया के लिए कार्य किया? वही इकलौता व्यक्ति कैसे हो सकता है जिसने कलीसियाओं को सहारा देने के लिए उन्हें पत्र लिखा? इन लोगों के कार्य का परिमाण या प्रभाव कुछ भी रहा हो, या उनके कार्य का परिणाम कुछ भी रहा हो, क्या ऐसे कार्य के तमाम सिद्धांत और सार एक-से नहीं हैं? क्या इनके बारे में ऐसी चीज़ें नहीं हैं जो परमेश्वर के कार्य से एकदम भिन्न हैं? भले ही परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण में स्पष्ट भिन्नताएँ हैं, और भले ही उसके कार्य के तरीके पूरी तरह से वही नहीं हैं, फिर भी क्या उन सबका सार और स्रोत एक ही नहीं है? उसी तरह, यदि कोई व्यक्ति अभी भी इन चीज़ों के बारे में अस्पष्ट है, तो उसके अंदर विवेक की बहुत कमी है। इन वचनों को पढ़ने के बाद भी, यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि पौलुस के पत्र पवित्र और अलंघनीय हैं और किसी भी आध्यात्मिक हस्ती की जीवनी से भिन्न हैं, तो ऐसे व्यक्ति का विवेक बहुत ही असामान्य है और ऐसा व्यक्ति निस्संदेह मत-संबंधी विशेषज्ञ है जो पूरी तरह से बुद्धिहीन है। भले ही तुम पौलुस की पूजा करते हो, लेकिन तुम उसके प्रति अपनी स्नेहमयी भावनाओं का इस्तेमाल तथ्यों के सत्य को तोड़ने-मरोड़ने या सत्य के अस्तित्व का खंडन करने के लिए नहीं कर सकते। इसके अलावा, मैंने जो कुछ कहा है वह किसी भी तरह से पौलुस के कार्य और पत्रों को आग नहीं लगा देते हैं या संदर्भों के रूप में उनके मूल्य को पूरी तरह से नकार नहीं देते हैं। कुछ भी हो, इन वचनों को बोलने के पीछे मेरा इरादा यह है कि तुम लोग तमाम चीज़ों और लोगों के बारे में उचित समझ और विवेकपूर्ण आकलन प्राप्त करो : यही सामान्य विवेक है; जिन धार्मिक लोगों में सत्य

है, उन्हें इसी से स्वयं को युक्त करना चाहिए।

सफलता या विफलता उस पथ पर निर्भर होती है जिस पर मनुष्य चलता है

अधिकांश लोग अपनी भविष्य की मंज़िल के लिए, या अल्पकालिक आनंद के लिए परमेश्वर में विश्वास करते हैं। उन लोगों की बात करें जो किसी व्यवहार से नहीं गुज़रे हैं, तो वे स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए, पुरस्कार प्राप्त करने के लिए परमेश्वर में विश्वास करते हैं। वे पूर्ण बनाए जाने के लिए, या परमेश्वर के सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाने के लिए परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं। कहने का तात्पर्य है कि अधिकांश लोग अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए, या अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं। सार्थक जीवन जीने के लिए वे बिरले ही कभी परमेश्वर में विश्वास करते हैं, न ही ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि जब तक मनुष्य जीवित है, उसे परमेश्वर से इसलिए प्रेम करना चाहिए क्योंकि ऐसा करना स्वर्ग द्वारा विहित और पृथ्वी द्वारा अभिस्वीकृत किया गया है, और यह मनुष्य का स्वाभाविक उद्यम है। इस ढंग से, यद्यपि विभिन्न लोग अपने-अपने लक्ष्यों का अनुसरण करते हैं, फिर भी उनके अनुसरण का उद्देश्य और उसके पीछे की प्रेरणा सब समान होते हैं, और इतना ही नहीं, उनमें से अधिकांश लोगों के लिए उनकी आराधना के विषय बहुत कुछ समान हैं। पिछले कई हज़ार वर्षों के दौरान, बहुत-से विश्वासी मर चुके हैं, और बहुत-से मरकर पुनः जन्म ले चुके हैं। मात्र एक या दो लोग नहीं हैं जो परमेश्वर की खोज करते हैं, न ही एक या दो हज़ार लोग हैं, फिर भी इनमें से अधिकांश लोग भविष्य के लिए स्वयं अपनी संभावनाओं या अपनी उज्ज्वल आशाओं की ख़ातिर अनुसरण करते हैं। वे जो मसीह के प्रति समर्पित हैं, बिरले और बहुत कम हैं। अब भी अनेक समर्पित विश्वासी अपने ही बिछाए जालों में फँसकर मर चुके हैं, और यही नहीं, जो लोग विजेता रहे हैं उनकी संख्या महत्वहीन होने की हद तक कम है। आज भी, लोग अपनी विफलता के कारणों से, या अपनी विजय के रहस्यों से अनजान ही बने हुए हैं। उन लोगों ने जिन पर मसीह का अनुसरण खोजने की धुन सवार है अकस्मात अंतर्दृष्टि का अपना पल अब भी प्राप्त नहीं किया है, वे इन रहस्यों के तल तक नहीं पहुँचे हैं, क्योंकि वे कुछ जानते ही नहीं हैं। यद्यपि वे अपने अनुसरण में कष्टसाध्य प्रयास करते हैं, किंतु वे जिस पथ पर चलते हैं वह विफलता का वही पथ है जिस पर कभी उनके पूर्वज चले थे, और सफलता का पथ नहीं है। इस तरह, वे चाहे जैसे खोज करते हों, क्या वे उस पथ पर नहीं

चलते हैं जो अंधकार की ओर ले जाता है? वे जो प्राप्त करते हैं क्या वह कड़वा फल नहीं है? यह पहले से बता पाना काफ़ी कठिन है कि वे लोग जो बीते हुए समयों में सफल रहे लोगों का अनुकरण करते हैं अंततः सौभाग्य पर पहुँचेंगे या दुर्भाग्य पर। ऐसे में, विफल लोगों के पदचिन्हों पर चलकर खोज करने वाले लोगों की कठिनाइयाँ और भी कितनी बदतर हैं? क्या उनकी विफलता की संभावना और भी अधिक नहीं है? उस पथ का भला क्या मूल्य है जिस पर वे चलते हैं? क्या वे अपना समय बर्बाद नहीं कर रहे हैं? संक्षेप में, लोग अपने अनुसरण में सफल हों या विफल, उनके ऐसा करने का एक कारण है, और बात यह नहीं है कि उनकी सफलता या विफलता उनके द्वारा किसी भी मनचाहे ढंग से की गई उनकी खोज से निर्धारित होती है।

परमेश्वर में मनुष्य के विश्वास की सबसे मूलभूत आवश्यकता यह है कि उसका हृदय ईमानदार हो, और वह स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दे, और सच्चे अर्थ में आज्ञापालन करे। मनुष्य के लिए सबसे कठिन है सच्चे विश्वास के बदले अपना संपूर्ण जीवन प्रदान करना, जिसके माध्यम से वह समूचा सत्य प्राप्त कर सकता है, और परमेश्वर का सृजित प्राणी होने के नाते अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकता है। यह वह है जो उन लोगों द्वारा अप्राप्य है जो विफल रहते हैं, और उन लोगों द्वारा तो और भी अधिक अप्राप्य है जो मसीह को पा नहीं सकते हैं। चूँकि मनुष्य परमेश्वर के प्रति स्वयं को पूर्णतः समर्पित करने में निपुण नहीं है; चूँकि मनुष्य सृष्टिकर्ता के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का अनिच्छुक है, चूँकि मनुष्य ने सत्य देखा तो है किंतु उसे अनदेखा करता है और स्वयं अपने पथ पर चलता है, चूँकि मनुष्य हमेशा उन लोगों के पथ का अनुसरण करते हुए तलाश करता है जो विफल हो चुके हैं, चूँकि मनुष्य हमेशा स्वर्ग की अवज्ञा करता है, इसलिए मनुष्य हमेशा विफल होता है, हमेशा शैतान के छल-कपट के झाँसे में आ जाता है, और स्वयं अपने जाल में फँस जाता है। चूँकि मनुष्य मसीह को नहीं जानता है, चूँकि मनुष्य सत्य को समझने और अनुभव करने में पारंगत नहीं है, चूँकि मनुष्य पौलुस की बहुत अधिक आराधना के भाव से और स्वर्ग की अत्यधिक लालसा से परिपूर्ण है, चूँकि मनुष्य हमेशा माँग करता रहता है कि मसीह उसकी आज्ञा माने और परमेश्वर को जहाँ-तहाँ आदेश देता रहता है, इसलिए वे महान हस्तियाँ और वे लोग जिन्होंने संसार के उतार-चढ़ावों का अनुभव किया है अब भी नश्वर हैं, और परमेश्वर की ताड़ना के बीच अब भी मरते हैं। ऐसे लोगों के विषय में मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि वे एक दुखद मौत मरते हैं, और उनका यह परिणाम —उनकी मृत्यु—औचित्य से रहित नहीं है। क्या उनकी विफलता स्वर्ग की व्यवस्था के लिए और भी अधिक

असहनीय नहीं है? सत्य मनुष्य के संसार से आता है, किंतु मनुष्य के बीच सत्य मसीह द्वारा लाया जाता है। यह मसीह से, अर्थात् स्वयं परमेश्वर से उत्पन्न होता है, और यह कुछ ऐसा नहीं है जिसमें मनुष्य समर्थ हो। फिर भी मसीह सिर्फ़ सत्य प्रदान करता है; वह यह निर्णय लेने के लिए नहीं आता है कि मनुष्य सत्य के अपने अनुसरण में सफल होगा या नहीं। इस प्रकार इसका अर्थ है कि सत्य में सफलता या विफलता पूर्णतः मनुष्य के अनुसरण पर निर्भर करती है। सत्य में मनुष्य की सफलता या विफलता का मसीह के साथ कभी कोई लेना-देना नहीं रहा है, बल्कि इसके बजाय यह उसके अनुसरण से निर्धारित होती है। मनुष्य की मंज़िल और उसकी सफलता या विफलता परमेश्वर के मत्थे नहीं मढ़ी जा सकती, ताकि स्वयं परमेश्वर से ही इसका बोझ उठवाया जाए, क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर का विषय नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध उस कर्तव्य से है जो परमेश्वर के सृजित प्राणियों को निभाना चाहिए। अधिकांश लोगों को पौलुस और पतरस के अनुसरण और मंज़िल का थोड़ा-सा ज्ञान अवश्य है, फिर भी लोग पतरस और पौलुस के परिणामों से अधिक कुछ नहीं जानते हैं, और वे पतरस की सफलता के पीछे के रहस्य, और पौलुस को विफलता की ओर ले गई कमियों से अनजान हैं। और इसलिए, यदि तुम लोग उनके अनुसरण का सार अच्छी तरह समझ पाने में पूरी तरह असमर्थ हो, तो तुम लोगों में से अधिकांश का अनुसरण अब भी विफल हो जाएगा, और यदि तुममें से एक छोटी-सी संख्या सफल भी हो जाती है, तब भी वे पतरस के समकक्ष नहीं होंगे। यदि तुम्हारे अनुसरण का पथ सही पथ है, तो तुम्हारे पास सफलता की आशा है; सत्य का अनुसरण करते हुए तुमने जिस पथ पर क़दम रखा है यदि वह ग़लत पथ है, तो तुम सदा के लिए सफलता के अयोग्य होगे, और वही अंत प्राप्त करोगे जो पौलुस का हुआ था।

पतरस वह मनुष्य था जिसे पूर्ण बनाया गया था। ताड़ना और न्याय का अनुभव करने, और इस प्रकार परमेश्वर के प्रति शुद्ध प्रेम प्राप्त करने के बाद ही, उसे पूरी तरह पूर्ण बनाया गया था; वह जिस पथ चला वह पूर्ण किए जाने का पथ था। कहने का तात्पर्य यह है, बिलकुल शुरुआत से ही, पतरस जिस पथ पर चला वह सही पथ था, और परमेश्वर में विश्वास करने के लिए उसकी प्रेरणा सही प्रेरणा थी, और इसलिए वह ऐसा व्यक्ति बना जिसे पूर्ण बनाया गया था और उसने एक नए पथ पर क़दम रखा जिस पर मनुष्य पहले कभी नहीं चला था। परंतु पौलुस शुरुआत से ही जिस पथ पर चला था वह मसीह के विरोध का पथ था, और केवल इसलिए कि पवित्र आत्मा अपने कार्य के लिए उसका उपयोग करना चाहता था, और उसकी सभी प्रतिभाओं और उसके सभी गुणों का लाभ उठाना चाहता था, उसने कई दशकों तक मसीह

के लिए कार्य किया। वह मात्र ऐसा व्यक्ति था जिसका पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किया गया था, और उसका उपयोग इसलिए नही किया गया था कि यीशु उसकी मानवता को प्रशंसात्मक ढंग से देखता था, बल्कि उसकी प्रतिभाओं के कारण उसका उपयोग किया था। वह यीशु के लिए कार्य कर पाया तो इसलिए कि उसे विवश कर दिया गया था, इसलिए नहीं कि वह ऐसा करते हुए प्रसन्न था। वह ऐसा कार्य कर पाया तो पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और मार्गदर्शन के कारण कर पाया था, और उसने जो कार्य किया वह किसी भी तरह उसके अनुसरण, या उसकी मानवता को नहीं दर्शाता था। पौलुस का कार्य एक सेवक का कार्य दर्शाता था, जिसका तात्पर्य है कि उसने एक प्रेरित का कार्य किया था। हालाँकि पतरस भिन्न था : उसने भी कुछ कार्य किया था, यह पौलुस के कार्य जितना बड़ा नहीं था, किंतु उसने स्वयं अपने प्रवेश का अनुसरण करते हुए कार्य किया था, और उसका कार्य पौलुस के कार्य से भिन्न था। पतरस का कार्य परमेश्वर के एक सृजित प्राणी के कर्तव्य का निर्वहन था। उसने प्रेरित की भूमिका में कार्य नहीं किया था, बल्कि परमेश्वर के प्रति प्रेम का अनुसरण करते हुए कार्य किया था। पौलुस के कार्य के क्रम में उसका व्यक्तिगत अनुसरण भी निहित था : उसका अनुसरण भविष्य की उसकी आशाओं, और एक अच्छी मंज़िल की उसकी इच्छा से अधिक किसी चीज़ के लिए नहीं था। उसने अपने कार्य के दौरान शुद्धिकरण स्वीकार नहीं किया था, न ही उसने काँट-छाँट और व्यवहार स्वीकार किया था। वह मानता था कि उसने जो कार्य किया वह जब तक परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करता था, और उसने जो कुछ किया वह सब जब तक परमेश्वर को प्रसन्न करता था, तब तक पुरस्कार अंततः उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके कार्य में कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं थे—यह सब स्वयं उसके लिए था, और परिवर्तन के अनुसरण के बीच नहीं किया गया था। उसके कार्य में सब कुछ एक सौदा था, इसमें परमेश्वर के सृजित प्राणी का एक भी कर्तव्य या समर्पण निहित नहीं था। अपने कार्य के क्रम के दौरान, पौलुस के पुराने स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। उसका कार्य दूसरों की सेवा मात्र का था, और उसके स्वभाव में बदलाव लाने में असमर्थ था। पौलुस ने अपना कार्य सीधे, पूर्ण बनाए या निपटे बिना ही किया था, और वह पुरस्कार से प्रेरित था। पतरस भिन्न था : वह ऐसा व्यक्ति था जो काँट-छाँट और व्यवहार से गुज़रा था, और शुद्धिकरण से गुज़रा था। पतरस के कार्य का लक्ष्य और प्रेरणा पौलुस से कार्य के लक्ष्य और प्रेरणा से मूलतः भिन्न थे। यद्यपि पतरस ने बडी मात्रा में काम नहीं किया था, किंतु उसका स्वभाव कई बदलावों से होकर गुज़रा था, और उसने जिसकी खोज की, वह सत्य, और वास्तविक बदलाव था। उसका कार्य मात्र कार्य करने की ख़ातिर नहीं किया गया था। यद्यपि

पौलुस ने बहुत कार्य किया था, किंतु वह सब पवित्र आत्मा का कार्य था, और यद्यपि पौलुस ने इस कार्य में सहयोग किया था, किंतु उसने इसका अनुभव नहीं किया था। पतरस ने बहुत कम कार्य किया तो केवल इसलिए कि पवित्र आत्मा ने उसके माध्यम से अधिक कार्य नहीं किया था। उनके कार्य की मात्रा ने यह निर्धारित नहीं किया कि उन्हें पूर्ण बनाया गया या नहीं बनाया गया; एक का अनुसरण पुरस्कार प्राप्त करने के लिए था, और दूसरे का अनुसरण परमेश्वर के प्रति सर्वोत्तम प्रेम प्राप्त करने के लिए, और परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में अपना कर्तव्य निभाने के लिए था, इस हद तक कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए वह प्यारी-सी छवि जी सका था। बाहर से वे भिन्न थे, और इसलिए उनके सार भी भिन्न-भिन्न थे। इस आधार पर कि उन्होंने कितना कार्य किया था, तुम यह निर्धारित नहीं कर सकते कि उनमें से किसे पूर्ण बनाया गया था। पतरस ने प्रयास किया कि वह ऐसे व्यक्ति की छवि जिए जो परमेश्वर से प्रेम करता है, ऐसा व्यक्ति बने जो परमेश्वर की आज्ञा मानता था, ऐसा व्यक्ति बने जो व्यवहार और काँट-छाँट स्वीकार करता था, और ऐसा व्यक्ति बने जिसने परमेश्वर का सृजित प्राणी होने के नाते अपना कर्तव्य निभाया था। वह परमेश्वर के प्रति अपने को समर्पित करने, अपने को संपूर्णता में परमेश्वर के हाथों में सौंप देने, और मृत्युपर्यंत उसकी आज्ञा मानने में सक्षम था। यह वह था जो उसने करने का संकल्प लिया था, और इतना ही नहीं, यह वह था जिसे उसने प्राप्त किया था। यही वह मूलभूत कारण था जिससे उसका अंत पौलुस के अंत से अंततः भिन्न था। पवित्र आत्मा ने पतरस में जो कार्य किया था वह उसे पूर्ण बनाना था, और पवित्र आत्मा ने पौलुस में जो कार्य किया था वह उसका उपयोग करना था। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी प्रकृतियाँ और अनुसरण के प्रति उनके विचार एक समान नहीं थे। दोनों में पवित्र आत्मा का कार्य था। पतरस ने यह कार्य अपने पर लागू किया था, और इसे दूसरों को भी प्रदान किया था; जबकि पौलुस ने पवित्र आत्मा का समूचा कार्य दूसरों को प्रदान कर दिया था, और इसमें से कुछ भी स्वयं अपने लिए प्राप्त नहीं किया था। इस तरह, पवित्र आत्मा के कार्य का इतने अधिक वर्षों तक अनुभव कर चुकने के बाद भी, पौलुस में हुए बदलाव न के बराबर थे। वह अब भी लगभग अपनी प्राकृतिक अवस्था में ही था, और वह अब भी पहले का पौलुस ही था। बात बस इतनी थी कि कई वर्षों के कार्य की तक़लीफ़ सहने के बाद, उसने सीख लिया था कि कैसे "कार्य करना" है, और सहनशीलता सीख ली थी, किंतु उसकी पुरानी प्रकृति—उसकी अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक और स्वार्थलोलुप प्रकृति—अब भी क़ायम थी। इतने वर्षों तक कार्य करने के बाद भी, वह अपना भ्रष्ट स्वभाव नहीं जानता था, न ही उसने स्वयं को अपने पुराने स्वभाव से

मुक्त किया था, और यह उसके कार्य में अब भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। उसमें कार्य का अधिक अनुभव मुश्किल से ही था, किंतु इतना थोड़ा-सा अनुभव मात्र उसे बदलने में असमर्थ था और अस्तित्व या उसके अनुसरण के महत्व के बारे में उसके विचारों को नहीं बदल सकता था। हालाँकि उसने मसीह के लिए कई सालों तक कार्य किया था, और प्रभु यीशु को फिर कभी सताया नहीं था, लेकिन उसके हृदय में परमेश्वर के उसके ज्ञान में कोई परिवर्तन नहीं आया था। इसका अर्थ है कि उसने स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करने के लिए कार्य नहीं किया, बल्कि इसके बजाय वह भविष्य की अपनी मंज़िल के ख़ातिर कार्य करने के लिए बाध्य था। क्योंकि, आरंभ में, उसने मसीह को सताया था, और मसीह के प्रति समर्पित नहीं हुआ था; वह सहज रूप से विद्रोही था जो जानबूझकर मसीह का विरोध करता था, और ऐसा व्यक्ति जिसे पवित्र आत्मा के कार्य का कोई ज्ञान नहीं था। जब उसका कार्य लगभग समाप्त हो गया था, तब भी वह पवित्र आत्मा का कार्य नहीं जानता था, और पवित्र आत्मा की इच्छा पर रत्ती भर भी ध्यान दिए बिना, स्वयं अपने चरित्र के अनुसार स्वयं अपनी इच्छा से काम करता था। और इसलिए उसकी प्रकृति मसीह के प्रति शत्रुतापूर्ण थी और सत्य का पालन नहीं करती थी। इस तरह का कोई व्यक्ति, जिसे पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा त्याग दिया गया था, जो पवित्र आत्मा का कार्य नहीं जानता था, और जो मसीह का विरोध भी करता था—ऐसे व्यक्ति को कैसे बचाया जा सकता था? मनुष्य को बचाया जा सकता है या नहीं, यह इस पर निर्भर नहीं करता है कि उसने कितना कार्य किया है, या वह कितना समर्पण करता है, बल्कि इसके बजाय इससे निर्धारित होता है कि वह पवित्र आत्मा के कार्य को जानता है या नहीं, वह सत्य को अभ्यास में ला सकता है या नहीं, और अनुसरण के प्रति उसके विचार सत्य की अनुरूपता में हैं या नहीं।

यद्यपि पतरस द्वारा यीशु का अनसुरण प्रारंभ करने के बाद प्राकृतिक प्रकाशन घटित हुए थे, किंतु प्रकृति से वह, बिलकुल आरंभ से ही, ऐसा व्यक्ति था जो पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होने और मसीह के अनुसरण की तलाश करने का इच्छुक था। पवित्र आत्मा के प्रति उसकी आज्ञाकारिता शुद्ध थी : उसने प्रसिद्धि और सौभाग्य की खोज नहीं की, बल्कि इसके बजाय वह सत्य का अनुपालन करने से प्रेरित था। यद्यपि तीन बार ऐसा हुआ कि पतरस ने यीशु को जानने से इनकार कर दिया था, और यद्यपि उसने प्रभु यीशु को जाँचा-परखा था, किंतु ऐसी हल्की-सी मानवीय कमज़ोरी का उसकी प्रकृति से कोई संबंध नहीं था, इसने उसके भविष्य के अनुसरण को प्रभावित नहीं किया था, और यह समुचित रूप से सिद्ध नहीं कर सकता है कि उसकी जाँच-परख मसीह-विरोधी का कार्य था। सामान्य मानवीय कमज़ोरी कुछ ऐसी चीज़ है

जो संसार के सभी लोगों द्वारा साझा की जाती है—क्या तुम पतरस के ज़रा भी भिन्न होने की अपेक्षा करते हो? क्या पतरस के बारे में लोगों के कुछ निश्चित विचार इसलिए नहीं हैं क्योंकि उसने अनेक मूर्खतापूर्ण ग़लतियाँ की थीं? और क्या लोग पौलुस द्वारा किए गए समस्त कार्य, और उसके द्वारा लिखी गई सभी पत्रियों के कारण उसकी अत्यधिक प्रशंसा नहीं करते हैं? मनुष्य के सार को अच्छी तरह समझने में भला मनुष्य कैसे सक्षम हो सकता है? निश्चय ही जिनमें सच्ची समझ है वे ऐसी कोई महत्वहीन चीज़ समझ सकते हैं? यद्यपि पतरस के दर्दनाक अनुभवों के कई वर्ष बाइबिल में दर्ज़ नहीं किए गए हैं, किंतु इससे यह साबित नहीं होता है कि पतरस को वास्तविक अनुभव नहीं हुए थे, या पतरस को पूर्ण नहीं बनाया गया था। मनुष्य परमेश्वर के कार्य की पूरी थाह कैसे ले सकता है? बाइबिल के अभिलेख यीशु द्वारा व्यक्तिगत रूप से नहीं चुने गए थे, बल्कि बाद की पीढ़ियों द्वारा संकलित किए गए थे। ऐसा होने से, क्या वह सब जो बाइबिल में दर्ज़ किया गया था मनुष्य के विचारों के अनुसार नहीं चुना गया था? इतना ही नहीं, पतरस और पौलुस के अंत पत्रियों में स्पष्ट रूप से वर्णित नहीं हैं, अतः मनुष्य पतरस और पौलुस को स्वयं अपनी धारणाओं के अनुसार, और स्वयं अपनी वरीयताओं के अनुसार परखता है। और चूँकि पौलुस ने इतना अधिक कार्य किया था, चूँकि उसके "योगदान" इतने बड़े थे, इसलिए उसने जनसमुदाय का भरोसा जीत लिया था। क्या मनुष्य केवल उथली बातों पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करता है? मनुष्य का सार अच्छी तरह समझने में भला मनुष्य कैसे सक्षम हो सकता है? इसके साथ ही, इस बात को देखते हुए कि पौलुस हज़ारों सालों से आराधना का विषय रहा है, भला कौन उसके कार्य को जल्दबाज़ी में नकारने की हिम्मत करेगा? पतरस मात्र एक मछुआरा था, तो उसका योगदान पौलुस के योगदान जितना बड़ा कैसे हो सकता था? उनके द्वारा दिए गए योगदान की दृष्टि से, पौलुस को पतरस से पहले पुरस्कृत किया जाना चाहिए था, और उसे वह व्यक्ति होना चाहिए था जो परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए बेहतर योग्य था। कौन यह कल्पना कर सकता था कि पौलुस के प्रति अपने बर्ताव में, परमेश्वर ने उससे मात्र उसकी प्रतिभाओं के माध्यम से कार्य करवाया था, जबकि परमेश्वर ने पतरस को पूर्ण बना दिया था। बात निश्चित रूप से यह नहीं है कि प्रभु यीशु ने, बिल्कुल शुरुआत से ही, पतरस और पौलुस के लिए योजनाएँ बना ली थीं : इसके बजाय उन्हें उनकी अंतर्निहित प्रकृतियों के अनुसार पूर्ण बनाया गया था या कार्य में लगाया गया था। और इसलिए, लोग जो देखते हैं वे मनुष्य के बाह्य योगदान मात्र हैं, जबकि परमेश्वर जो देखता है वह मनुष्य का सार है, साथ ही वह पथ है जिसका मनुष्य आरंभ से अनुसरण करता है, और मनुष्य के अनुसरण के पीछे निहित

प्रेरणा है। लोग मनुष्य को अपनी धारणाओं के अनुसार, और स्वयं अपने पूर्वाग्रहों के अनुसार आँकते हैं, फिर भी मनुष्य का निर्णायक अंत उसकी बाहरी चीज़ों के अनुसार निर्धारित नहीं होता है। और इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम शुरुआत से जो पथ लेते हो यदि वह सफलता का पथ है, और अनुसरण के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण शुरुआत से ही सही दृष्टिकोण है, तो तुम पतरस के समान हो; तुम जिस पथ पर क़दम रखते हो यदि वह विफलता का पथ है, तो तुम चाहे जो क़ीमत चुकाओ, तुम्हारा अंत भी वही होगा जो पौलुस का हुआ था। जो भी स्थिति हो, तुम्हारी मंज़िल, और तुम सफल होते हो या विफल होते हो, दोनों तुम्हारे समर्पण और तुम्हारे द्वारा चुकाई गई क़ीमत के बजाय, इससे निर्धारित होते हैं कि तुम जिस पथ की तलाश करते हो वह सही पथ है या नहीं। पतरस और पौलुस के सार, और वे लक्ष्य जिनका उन्होंने अनुसरण किया था, भिन्न-भिन्न थे; मनुष्य इन चीज़ों की खोज कर पाने में असमर्थ है, और केवल परमेश्वर ही इन्हें उनकी संपूर्णता में जान सकता है। क्योंकि परमेश्वर जो देखता है वह मनुष्य का सार है, जबकि मनुष्य स्वयं अपने सार के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। मनुष्य, मनुष्य के भीतर के सार या उसकी वास्तविक कद-काठी को देख पाने में असमर्थ है, और इस प्रकार वह पौलुस और पतरस की विफलता और सफलता के कारणों की पहचान करने में असमर्थ है। अधिकांश लोग पौलुस की आराधना क्यों करते हैं और पतरस की क्यों नहीं, तो इसका कारण यह है कि पौलुस को सार्वजनिक कार्य के लिए उपयोग किया गया था, और मनुष्य इस कार्य का बोध कर पाता है, और इसलिए लोग पौलुस की "कार्यसिद्धियों" को स्वीकार करते हैं। इसी समय, पतरस के अनुभव मनुष्य के लिए अदृश्य हैं, और उसने जिसकी तलाश की थी वह मनुष्य के द्वारा अप्राप्य है, और इसलिए पतरस में मनुष्य की कोई रुचि नहीं है।

पतरस को व्यवहार और शुद्धिकरण का अनुभव करने के माध्यम से पूर्ण बनाया गया था। उसने कहा था, "मुझे हर समय परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करना ही चाहिए। मैं जो भी करता हूँ उस सबमें मैं केवल परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने की तलाश करता हूँ, और चाहे मुझे ताड़ना मिले, या मेरा न्याय किया जाए, तो भी मैं ऐसा करके प्रसन्न हूँ।" पतरस ने अपना सब कुछ परमेश्वर को दे दिया था, और उसका कार्य, वचन, और संपूर्ण जीवन सब परमेश्वर को प्रेम करने के लिए थे। वह ऐसा व्यक्ति था जो पवित्रता की खोज करता था, और जितना अधिक उसने अनुभव किया, उसके हृदय की गहराई के भीतर परमेश्वर के लिए उसका प्रेम उतना ही अधिक बढ़ता गया। इसी समय, पौलुस ने बस बाहरी कार्य ही किया था, और यद्यपि उसने भी कड़ी मेहनत की थी, किंतु उसका परिश्रम अपना कार्य उचित ढंग से करने और इस तरह

पुरस्कार पाने के लिए था। अगर वह जानता कि उसे कोई पुरस्कार नहीं मिलेगा, तो उसने अपने काम छोड़ दिया होता। पतरस जिस चीज़ की परवाह करता था वह उसके हृदय के भीतर सच्चा प्रेम था, और वह था जो व्यावहारिक था और जिसे प्राप्त किया जा सकता था। उसने इसकी परवाह नहीं की कि उसे पुरस्कार मिलेगा या नहीं, बल्कि इसकी परवाह की कि उसके स्वभाव को बदला जा सकता है या नहीं। पौलुस ने और भी कड़ी मेहनत करने की परवाह की थी, उसने बाहरी कार्य और समर्पण की, और सामान्य लोगों द्वारा अनुभव नहीं किए गए सिद्धांतों की परवाह की थी। वह न तो अपने भीतर गहराई में बदलावों की और न ही परमेश्वर के प्रति सच्चे प्रेम की परवाह करता था। पतरस के अनुभव परमेश्वर का सच्चा प्रेम और सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए थे। उसके अनुभव परमेश्वर से निकटतर संबंध पाने के लिए, और व्यावहारिक जीवन यापन करने के लिए थे। पौलुस का कार्य इसलिए किया गया था क्योंकि यह यीशु के द्वारा उसे सौंपा गया था, और उन चीज़ों को पाने के लिए था जिनकी वह लालसा करता था, फिर भी ये स्वयं अपने और परमेश्वर के विषय में उसके ज्ञान से असंबद्ध थे। उसका कार्य केवल ताड़ना और न्याय से बचने के लिए था। पतरस ने जिसकी खोज की वह शुद्ध प्रेम था, और पौलुस ने जिसकी खोज की वह धार्मिकता का मुकुट था। पतरस ने पवित्र आत्मा के कार्य का कई वर्षों का अनुभव प्राप्त किया था, और उसे मसीह का व्यावहारिक ज्ञान, साथ ही स्वयं अपना अथाह ज्ञान भी था। और इसलिए, परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम शुद्ध था। कई वर्षों के शुद्धिकरण ने यीशु और जीवन के उसके ज्ञान को उन्नत बना दिया था, और उसका प्रेम बिना शर्त प्रेम था, यह स्वतःस्फूर्त प्रेम था, और उसने बदले में कुछ नहीं माँगा, न ही उसने किसी लाभ की आशा की थी। पौलुस ने कई वर्ष काम किया, फिर भी उसने मसीह का अत्यधिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया, और स्वयं अपने विषय में उसका ज्ञान भी दयनीय रूप से थोड़ा ही था। उसमें मसीह के प्रति कोई प्रेम ही नहीं था, और उसका कार्य और जिस राह पर वह चला निर्णायक कीर्ति पाने के लिए थे। उसने जिसकी खोज की वह श्रेष्ठतम मुकुट था, शुद्धतम प्रेम नहीं। उसने सक्रिय रूप से नहीं, बल्कि निष्क्रिय रूप से खोज की; वह अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर रहा था, बल्कि पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा पकड़ लिए जाने के बाद अपने अनुसरण में बाध्य था। और इसलिए, उसका अनुसरण यह साबित नहीं करता है कि वह परमेश्वर का गुणसंपन्न सृजित प्राणी था; यह पतरस था जो परमेश्वर का गुणसंपन्न सृजित प्राणी था जिसने अपना कर्तव्य निभाया था। मनुष्य सोचता है कि उन सभी को जो परमेश्वर के लिए कोई न कोई योगदान देते हैं पुरस्कार मिलना चाहिए, और योगदान जितना अधिक होता है, उतना ही

अधिक यह मान लिया जाता है कि उन्हें परमेश्वर की कृपा प्राप्त होनी चाहिए। मनुष्य के दृष्टिकोण का सार लेन-देन से संबंधित है, और वह परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में अपना कर्तव्य निभाने की सक्रिय रूप से खोज नहीं करता है। परमेश्वर के लिए, लोग परमेश्वर के प्रति सच्चे प्रेम की और परमेश्वर के प्रति संपूर्ण आज्ञाकारिता की जितनी अधिक खोज करते हैं, जिसका अर्थ परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में अपना कर्तव्य निभाने की खोज करना भी है, उतनी ही अधिक वे परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त कर पाते हैं। परमेश्वर का दृष्टिकोण यह माँग करना है कि मनुष्य अपना मूल कर्तव्य और हैसियत पुनः प्राप्त करे। मनुष्य परमेश्वर का सृजित प्राणी है और इसलिए मनुष्य को परमेश्वर से कोई भी माँग करके अपनी सीमा नहीं लाँघनी चाहिए, और परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में अपना कर्तव्य निभाने से अधिक कुछ नहीं करना चाहिए। पतरस और पौलुस की मंज़िलों को, उनके योगदान के आकार के अनुसार नहीं, बल्कि इस बात के अनुसार आँका गया था कि परमेश्वर के सृजित प्राणियों के रूप में वे अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकते थे या नहीं; उनकी मंजिलें उससे निर्धारित हुई थीं जिसकी उन्होंने शुरुआत से खोज की थी, इसके अनुसार नहीं कि उन्होंने कितना कार्य किया था, या अन्य लोगों का आँकलन क्या था। और इसलिए, परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में अपना कर्तव्य सक्रिय रूप से निभाना ही सफलता का पथ है; परमेश्वर के प्रति सच्चे प्रेम के पथ की खोज करना ही सबसे सही पथ है; अपने पुराने स्वभाव में बदलावों की खोज करना, और परमेश्वर के प्रति शुद्ध प्रेम की खोज करना ही सफलता का पथ है। सफलता का ऐसा ही पथ मूल कर्तव्य की पुनः प्राप्ति का और साथ ही परमेश्वर के सृजित प्राणी के मूल प्रकटन का पथ भी है। यह पुनः प्राप्ति का पथ है, और यह आरंभ से अंत तक परमेश्वर के समस्त कार्य का लक्ष्य भी है। यदि मनुष्य का अनुसरण व्यक्तिगत असंयमी माँगों और विवेकहीन लालसाओं से कलंकित है, तो प्राप्त किया गया प्रभाव मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन नहीं होगा। यह पुनः प्राप्ति के कार्य के विपरीत है। यह निस्संदेह पवित्र आत्मा द्वारा किया गया कार्य नहीं है, और इसलिए यह साबित करता है कि इस प्रकार का अनुसरण परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं है। उस अनुसरण का भला क्या महत्व है जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं है?

पौलुस द्वारा किया गया कार्य मनुष्य के सामने प्रदर्शित किया गया था, किंतु जहाँ तक यह बात है कि परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम कितना शुद्ध था और अपने हृदय की गहराई में वह परमेश्वर से कितना प्रेम करता था—तो ये चीज़ें मनुष्य देख नहीं सकता है। मनुष्य केवल वह कार्य देख सकता है जो उसने किया था, जिससे मनुष्य जान जाता है कि उसका पवित्र आत्मा द्वारा निश्चिय ही उपयोग किया गया था, और

इसलिए मनुष्य सोचता है कि पौलुस पतरस से बेहतर था, कि उसका कार्य अधिक बड़ा था, क्योंकि वह कलीसियाओं का पोषण कर पाता था। पतरस ने केवल अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर ही निर्भर किया और अपने आकस्मिक कार्य के दौरान बस थोड़े-से लोग ही प्राप्त किए थे। उसकी बस कुछेक ही अल्पज्ञात पत्रियाँ हैं, किंतु कौन जानता है कि उसके हृदय के भीतर गहराई में परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम कितना अधिक था? पौलुस दिन-रात लगातार परमेश्वर के लिए काम करता था : जब तक करने के लिए काम था, उसने वह किया। उसे लगा कि इस तरह वह मुकुट प्राप्त कर पाएगा, और परमेश्वर को संतुष्ट कर सकेगा, तो भी उसने अपने कार्य के माध्यम से स्वयं को बदलने के तरीक़ों की खोज नहीं की। पतरस के जीवन की ऐसी कोई भी चीज़ जो परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट नहीं करती थी उसे असहज महसूस करवाती थी। यदि वह परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट नहीं करती, तो वह ग्लानि से भरा महसूस करता, और ऐसे उपयुक्त रास्ते की तलाश करता जिसके द्वारा वह परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट करने के लिए पूरा ज़ोर लगा पाता। अपने जीवन के छोटे से छोटे और महत्वहीन पहलुओं में भी, वह अब भी परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करने की स्वयं से अपेक्षा करता था। जब उसके पुराने स्वभाव की बात आती तब भी वह स्वयं से ज़रा भी कम अपेक्षा नहीं करता था, सत्य में अधिक गहराई तक आगे बढ़ने के लिए स्वयं से अपनी अपेक्षाओं में सदैव अत्यधिक कठोर होता था। पौलुस केवल सतही प्रतिष्ठा और रुतबे की खोज करता था। वह मनुष्य के सामने स्वयं का दिखावा करने की चेष्टा करता था, और जीवन प्रवेश में ज़रा भी अधिक गहरी प्रगति करने की तलाश नहीं करता था। वह जिसकी परवाह करता था, वह सिद्धांत था, वास्तविकता नहीं। कुछ लोग कहते हैं, "पौलुस ने परमेश्वर के लिए इतना अधिक कार्य किया था, तो उसे परमेश्वर द्वारा याद क्यों नहीं रखा गया? पतरस ने परमेश्वर के लिए बस थोड़ा-सा ही कार्य किया था, और कलीसिया के लिए कोई बड़ा योगदान नहीं दिया था, तो उसे पूर्ण क्यों बनाया गया?" पतरस एक निश्चित बिंदु तक, जिसकी परमेश्वर द्वारा अपेक्षा की जाती थी, परमेश्वर से प्रेम करता था; केवल इस जैसे लोगों की ही गवाही होती है। और पौलुस के विषय में क्या? पौलुस किस सीमा तक परमेश्वर से प्रेम करता था? क्या तुम जानते हो? पौलुस का कार्य किसके लिए किया गया था? और पतरस का कार्य किसके लिए किया गया था? पतरस ने अधिक कार्य नहीं किया था, लेकिन क्या तुम जानते हो कि उसके हृदय के भीतर गहराई में क्या था? पौलुस का कार्य कलीसियाओं के पोषण, और कलीसियाओं की सहायता से संबंधित था। पतरस ने जो अनुभव किया वे उसके जीवन स्वभाव में हुए परिवर्तन थे; उसने परमेश्वर के प्रति प्रेम अनुभव किया था। अब जब तुम उनके सार में अंतर जानते हो, तब

तुम देख सकते हो कि अंततः कौन परमेश्वर में सचमुच विश्वास करता था, और कौन परमेश्वर में सचमुच विश्वास नहीं करता था। उनमें से एक परमेश्वर से सच्चे अर्थ में प्रेम करता था, और दूसरा परमेश्वर से सच्चे अर्थ में प्रेम नहीं करता था; एक अपने स्वभाव में परिवर्तनों से गुज़रा था, और दूसरा नहीं गुज़रा था; एक ने विनम्रतापूर्वक सेवा की थी, और आसानी से लोगों के ध्यान में नहीं आता था, और दूसरे की लोगों द्वारा आराधना की जाती थी, और वह महान छवि वाला था; एक पवित्रता की खोज करता था, और दूसरा नहीं करता था, और यद्यपि वह अशुद्ध नहीं था, किंतु वह शुद्ध प्रेम से युक्त नहीं था; एक सच्ची मानवता से युक्त था, और दूसरा नहीं था; एक परमेश्वर के सृजित प्राणी के बोध से युक्त था, और दूसरा नहीं था। ऐसी हैं पतरस और पौलुस के सार की भिन्नताएँ। पतरस जिस पथ पर चला वह सफलता का पथ था, जो सामान्य मानवता की पुनः प्राप्ति और परमेश्वर के सृजित प्राणी के कर्तव्य की पुनः प्राप्ति पाने का पथ भी था। पतरस उन सभी का प्रतिनिधित्व करता है जो सफल हैं। पौलुस जिस पथ पर चला वह विफलता का पथ था, और वह उन सभी का प्रतिनिधित्व करता है जो केवल ऊपरी तौर पर स्वयं को समर्पित करते और खपाते हैं, और परमेश्वर से सच्चे अर्थ में प्रेम नहीं करते हैं। पौलुस उन सभी का प्रतिनिधित्व करता है जो सत्य से युक्त नहीं हैं। परमेश्वर में अपने विश्वास में, पतरस ने प्रत्येक चीज़ में परमेश्वर को संतुष्ट करने की चेष्टा की थी, और उस सब की आज्ञा मानने की चेष्टा की थी जो परमेश्वर से आया था। रत्ती भर शिकायत के बिना, वह ताड़ना और न्याय, साथ ही शुद्धिकरण, घोर पीड़ा और अपने जीवन की वंचनाओं को स्वीकार कर पाता था, जिनमें से कुछ भी परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम को बदल नहीं सका था। क्या यह परमेश्वर के प्रति सर्वोत्तम प्रेम नहीं था? क्या यह परमेश्वर के सृजित प्राणी के कर्तव्य की पूर्ति नहीं थी? चाहे ताड़ना में हो, न्याय में हो, या घोर पीड़ा में हो, तुम मृत्यु पर्यंत आज्ञाकारिता प्राप्त करने में सदैव सक्षम होते हो, और यह वह है जो परमेश्वर के सृजित प्राणी को प्राप्त करना चाहिए, यह परमेश्वर के प्रति प्रेम की शुद्धता है। यदि मनुष्य इतना प्राप्त कर सकता है, तो वह परमेश्वर का गुणसंपन्न सृजित प्राणी है, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो सृष्टिकर्ता की इच्छा को इससे बेहतर ढंग से संतुष्ट कर सकता हो। कल्पना करो कि तुम परमेश्वर के लिए कार्य कर पाते हो, किंतु तुम परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते हो, और परमेश्वर से सच्चे अर्थ में प्रेम करने में असमर्थ हो। इस तरह, तुमने न केवल परमेश्वर के सृजित प्राणी के अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं किया होगा, बल्कि तुम्हें परमेश्वर द्वारा निंदित भी किया जाएगा, क्योंकि तुम ऐसे व्यक्ति हो जो सत्य से युक्त नहीं है, जो परमेश्वर का आज्ञापालन करने में असमर्थ है, और जो परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी है। तुम

केवल परमेश्वर के लिए कार्य करने की परवाह करते हो, और सत्य को अभ्यास में लाने, या स्वयं को जानने की परवाह नहीं करते हो। तुम सृष्टिकर्ता को समझते या जानते नहीं हो, और सृष्टिकर्ता का आज्ञापालन या उससे प्रेम नहीं करते हो। तुम ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर के प्रति स्वाभाविक रूप से अवज्ञाकारी है, और इसलिए ऐसे लोग सृष्टिकर्ता के प्रिय नहीं हैं।

कुछ लोग कहते हैं, "पौलुस ने अत्यधिक मात्रा में कार्य किया था, और उसने कलीसियाओं के लिए बड़े बोझ अपने कंधों पर उठाए थे और उनके लिए इतना अधिक योगदान दिया था। पौलुस की तेरह पत्रियों ने 2,000 वर्षों के अनुग्रह के युग का समर्थन किया था, और उन्हें केवल चार सुसमाचार के पश्चात सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। कौन उसके साथ तुलना कर सकता है? कोई भी यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य के गूढ़ अर्थ समझ नहीं सकता है, जबकि पौलुस की पत्रियाँ जीवन प्रदान करती हैं, और उसने जो कार्य किया था वह कलीसियाओं के लिए लाभकारी था। भला दूसरा कौन ऐसी चीज़ें प्राप्त कर सकता था? और पतरस ने क्या काम किया था?" जब मनुष्य दूसरों को आँकता है, तो वह उनके योगदान के अनुसार उन्हें आँकता है। जब परमेश्वर मनुष्य को आँकता है, तो वह मनुष्य की प्रकृति के अनुसार उन्हें आँकता है। उन लोगों में जो जीवन की तलाश करते हैं, पौलुस ऐसा व्यक्ति था जो स्वयं अपना सार नहीं जानता था। वह किसी भी तरह विनम्र या आज्ञाकारी नहीं था, न ही वह अपना सार जानता था, जो परमेश्वर के विरुद्ध था। और इसलिए, वह ऐसा व्यक्ति था जो विस्तृत अनुभवों से नहीं गुज़रा था, और ऐसा व्यक्ति था जो सत्य को अभ्यास में नहीं लाया था। पतरस भिन्न था। वह परमेश्वर का सृजित प्राणी होने के नाते अपनी अपूर्णताएँ, कमज़ोरियाँ, और अपना भ्रष्ट स्वभाव जानता था, और इसलिए उसके पास अभ्यास का एक मार्ग था जिसके माध्यम से वह अपने स्वभाव को बदल सके; वह उन लोगों में से नहीं था जिनके पास केवल सिद्धांत था किंतु जो वास्तविकता से युक्त नहीं थे। वे लोग जो परिवर्तित होते हैं नए लोग हैं जिन्हें बचा लिया गया है, वे ऐसे लोग हैं जो सत्य का अनुसरण करने की योग्यता से संपन्न हैं। वे लोग जो नहीं बदलते हैं उन लोगों में आते हैं जो स्वभाविक रूप से पुराने और बेकार हैं; ये वे लोग हैं जिन्हें बचाया नहीं गया है, अर्थात्, वे लोग जिनसे परमेश्वर घृणा करता है और जिन्हें ठुकरा चुका है। उनका कार्य चाहे जितना भी बड़ा हो, उन्हें परमेश्वर द्वारा याद नहीं रखा जाएगा। जब तुम इसकी तुलना स्वयं अपने अनुसरण से करते हो, तब यह स्वतः स्पष्ट हो जानना चाहिए कि तुम अंततः उसी प्रकार के व्यक्ति हो या नहीं जैसे पतरस या पौलुस थे। यदि तुम जो खोजते हो उसमें अब भी कोई सत्य नहीं है, और यदि तुम आज भी उतने ही अहंकारी और

अभद्र हो जितना पौलुस था, और अब भी उतने ही बकवादी और शेखीबाज हो जितना वह था, तो तुम बिना किसी संदेह के पतित व्यक्ति हो जो विफल होता है। यदि तुम पतरस के समान खोज करते हो, यदि तुम अभ्यासों और सच्चे बदलावों की खोज करते हो, और अहंकारी या उद्दंड नहीं हो, बल्कि अपना कर्तव्य निभाने की तलाश करते हो, तो तुम परमेश्वर के सृजित प्राणी होगे जो विजय प्राप्त कर सकता है। पौलुस स्वयं अपना सार या भ्रष्टता नहीं जानता था, वह अपनी अवज्ञाकारिता तो और भी नहीं जानता था। उसने मसीह के प्रति अपनी कुत्सित अवज्ञा का कभी उल्लेख नहीं किया, न ही वह बहुत अधिक पछतावे से भरा था। उसने बस एक स्पष्टीकरण दिया, और, अपने हृदय की गहराई में, उसने परमेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से समर्पण नहीं किया था। यद्यपि वह दमिश्क के रास्ते पर गिर पड़ा था, फिर भी उसने अपने भीतर गहराई से झाँककर नहीं देखा था। वह मात्र काम करते रहने से ही संतुष्ट था, और वह स्वयं को जानने और अपना पुराना स्वभाव बदलने को सबसे महत्वपूर्ण विषय नहीं मानता था। वह तो बस सत्य बोलकर, स्वयं अपने अंतःकरण के लिए औषधि के रूप में दूसरों को पोषण देकर, और अपने अतीत के पापों के लिए अपने को सांत्वना देने और अपने को माफ़ करने की ख़ातिर यीशु के शिष्यों को अब और न सताकर ही संतुष्ट था। उसने जिस लक्ष्य का अनुसरण किया वह भविष्य के मुकुट और क्षणिक कार्य से अधिक कुछ नहीं था, उसने जिस लक्ष्य का अनुसरण किया वह भरपूर अनुग्रह था। उसने पर्याप्त सत्य की खोज नहीं की थी, न ही उसने उस सत्य की अधिक गहराई में जाने की खोज की थी जिसे उसने पहले नहीं समझा था। इसलिए स्वयं के विषय में उसके ज्ञान को झूठ कहा जा सकता है, और उसने ताड़ना और न्याय स्वीकार नहीं किया था। वह कार्य करने में सक्षम था इसका अर्थ यह नहीं है कि वह स्वयं अपनी प्रकृति या सार के ज्ञान से युक्त था; उसका ध्यान केवल बाहरी अभ्यासों पर था। यही नहीं, उसने जिसके लिए कठिन परिश्रम किया था वह बदलाव नहीं, बल्कि ज्ञान था। उसका कार्य पूरी तरह दमिश्क के मार्ग पर यीशु के प्रकटन का परिणाम था। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे उसने मूल रूप से करने का संकल्प लिया था, न ही यह वह कार्य था जो उसके द्वारा अपने पुराने स्वभाव की काँट-छाँट स्वीकार करने के बाद हुआ था। उसने चाहे जिस प्रकार कार्य किया, उसका पुराना स्वभाव नहीं बदला था, और इसलिए उसके कार्य ने उसके अतीत के पापों का प्रायश्चित नहीं किया बल्कि उस समय की कलीसियाओं के मध्य एक निश्चित भूमिका मात्र निभाई थी। इस जैसे व्यक्ति के लिए, जिसका पुराना स्वभाव नहीं बदला था—कहने का तात्पर्य यह, जिसने उद्धार प्राप्त नहीं किया था, तथा सत्य से और भी अधिक रहित था—वह प्रभु यीशु द्वारा स्वीकार किए गए

लोगों में से एक बनने में बिलकुल असमर्थ था। वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसमें यीशु मसीह के लिए प्रेम और आदर समाया था, न ही वह ऐसा व्यक्ति था जो सत्य की खोज करने में पारंगत था, वह ऐसा व्यक्ति तो और भी नहीं था जो देहधारण के रहस्य की खोज करता था। वह मात्र ऐसा व्यक्ति था जो मिथ्या वाद-विवाद में निपुण था, और जो किसी के भी आगे झुकता नहीं था जो उससे ऊपर थे या जो सत्य से युक्त थे। वह उन लोगों या सत्यों से ईर्ष्या करता था जो उसके विपरीत थे, या उसके प्रति शत्रुतापूर्ण थे, वह उन प्रतिभावान लोगों को प्रमुखता देता था जो बहुत अच्छी छवि प्रस्तुत करते थे और गहन ज्ञान से युक्त थे। वह उन गरीब लोगों से बातचीत करना पसंद नहीं करता था जो सच्चे मार्ग की खोज करते थे और सत्य के अलावा किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते थे, और इसके बजाय उसने धार्मिक संगठनों के वरिष्ठ व्यक्तियों से सरोकार रखा जो केवल सिद्धांतों की बात करते थे, और जो भरपूर ज्ञान से युक्त थे। उसमें पवित्र आत्मा के नए कार्य के प्रति कोई प्रेम नहीं था, और उसने पवित्र आत्मा के नए कार्य की हलचल की परवाह नहीं की। इसके बजाय, उसने उन नियमों और सिद्धांतों की तरफ़दारी की जो सामान्य सत्यों से कहीं अधिक ऊँचे थे। अपने जन्मजात सार और अपनी संपूर्ण खोज में, वह सत्य का अनुसरण करने वाला ईसाई कहलाने योग्य नहीं था, परमेश्वर के घर में वफादार सेवक कहलाने योग्य तो और भी नहीं था, क्योंकि उसका पाखंड बहुत अधिक था, और उसकी अवज्ञाकारिता बहुत विशाल थी। यद्यपि वह प्रभु यीशु के सेवक के रूप में जाना जाता है, किंतु वह स्वर्ग के राज्य के दरवाज़े में प्रवेश करने योग्य बिल्कुल नहीं था, क्योंकि आरंभ से अंत तक उसके कार्यकलापों को धार्मिक नहीं कहा जा सकता है। उसे बस ऐसे मनुष्य के रूप में देखा जा सकता है जो पांखडी था, जिसने अधार्मिकता की थी, किंतु जिसने मसीह के लिए कार्य किया था। यद्यपि उसे दुष्ट नहीं कहा जा सकता है, फिर भी उसे उपयुक्त रूप से ऐसा मनुष्य कहा जा सकता है जिसने अधार्मिकता की थी। उसने बहुत कार्य किया था, फिर भी उसे उसके द्वारा किए गए कार्य की मात्रा के आधार पर नहीं ही परखा जाना चाहिए, बल्कि केवल उसकी गुणवत्ता और सार के आधार पर ही परखा जाना चाहिए। केवल इसी ढंग से इस मामले की तह तक पहुँचना संभव है। वह हमेशा मानता था : "मैं कार्य करने में सक्षम हूँ, मैं अधिकांश लोगों से बेहतर हूँ; मैं प्रभु के बोझ का उतना ध्यान रखता हूँ जितना कोई और नहीं रखता है, और कोई भी उतनी गहराई से पश्चाताप नहीं करता है जितना मैं करता हूँ, क्योंकि बड़ी ज्योति मेरे ऊपर चमकी थी, और मैं बड़ी ज्योति देख चुका हूँ, और इसलिए मेरा पश्चाताप किसी भी अन्य की अपेक्षा अधिक गहरा है।" यही वह है जो उसने उस समय अपने हृदय के भीतर सोचा

था। अपने कार्य के अंत में, पौलुस ने कहा : "मैं लड़ाई लड़ चुका हूँ, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, और मेरे लिए धर्म का मुकुट रखा हुआ है।" उसकी लड़ाई, कार्य और दौड़ पूरी तरह धार्मिकता के मुकुट के लिए थे, और वह सक्रिय रूप से तेज़ी से आगे नहीं निकला था। यद्यपि वह अपने कार्य में असावधान नहीं था, फिर भी यह कहा जा सकता है कि उसका कार्य बस उसकी ग़लतियों की भरपाई करने के लिए, और उसके अंतःकरण के आरोपों की क्षतिपूर्ति करने के लिए था। वह बस यथासंभव जल्दी से जल्दी अपना कार्य पूरा करने, अपनी दौड़ समाप्त करने, और अपनी लड़ाई लड़ने की आशा करता था, ताकि वह अपना इच्छित धार्मिकता का मुकुट जल्द से जल्द प्राप्त कर सके। वह जिस चीज़ के लिए लालायित था वह अपने अनुभवों और सच्चे ज्ञान के साथ प्रभु यीशु से मिलना नहीं था, बल्कि यथासंभव जल्द से जल्द अपना कार्य समाप्त करना था, ताकि प्रभु यीशु से मिलने पर वह वे पुरस्कार प्राप्त करेगा जो उसने अपने कार्य से कमाए थे। उसने अपने को आराम देने के लिए, और भविष्य के मुकुट के लिए बदले में एक सौदा करने के लिए अपने कार्य का उपयोग किया था। उसने जिसकी खोज की वह सत्य या परमेश्वर नहीं था, बल्कि केवल मुकुट था। ऐसा अनुसरण मानक स्तर का कैसे हो सकता है? उसकी प्रेरणा, उसका कार्य, उसने जो मूल्य चुकाया, और उसके समस्त प्रयास—उसकी अद्‌भुत स्वैर कल्पनाएँ उन सबमें व्याप्त थीं, और उसने पूरी तरह स्वयं अपनी इच्छाओं के अनुसार कार्य किया था। उसके कार्य की संपूर्णता में, वह मूल्य चुकाने की रत्ती भर इच्छा नहीं थी जो उसने चुकाया था; वह तो बस सौदा करने में लगा था। उसके प्रयास अपना कर्तव्य निभाने के लिए सहर्ष नहीं किए गए थे, बल्कि सौदे का उद्देश्य प्राप्त करने के लिए सहर्ष किए गए थे। क्या ऐसे प्रयासों का कोई मूल्य है? कौन ऐसे अशुद्ध प्रयासों की प्रशंसा करेगा? किसे ऐसे प्रयासों में रुचि है? उसका कार्य भविष्य के स्वप्नों से भरा था, अद्‌भुत योजनाओं से भरा था, और उसमें ऐसा कोई मार्ग नहीं था जिससे मानव स्वभाव को बदला जा सके। उसका बहुत कुछ परोपकार ढोंग था; उसका कार्य जीवन प्रदान नहीं करता था, बल्कि शिष्टता का ढकोसला था; यह सौदा करना था। इस जैसा कार्य मनुष्य को अपने मूल कर्तव्य की पुनः प्राप्ति के पथ पर कैसे ले जा सकता है?

पतरस ने जो खोज की थी, वह सब परमेश्वर के हृदय का अनुसरण था। उसने परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की कोशिश की थी, और पीड़ा तथा प्रतिकूल परिस्थितियों पर ध्यान दिए बिना वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का इच्छुक था। परमेश्वर के किसी विश्वासी द्वारा इससे बड़ा कोई अनुसरण नहीं है। पौलुस ने जो खोज की थी, वह उसकी अपनी देह, अपनी अवधारणाओं, और उसकी अपनी योजनाओं तथा षडयंत्रों से

कलंकित थी। वह किसी भी तरह परमेश्वर का गुणसंपन्न सृजित प्राणी नहीं था, ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की कोशिश की थी। परतस ने परमेश्वर के आयोजनों के प्रति समर्पित होने का प्रयास किया था, और यद्यपि उसने जो कार्य किया वह बड़ा नहीं था, फिर भी उसके अनुसरण के पीछे की प्रेरणा और जिस पथ पर वह चला, सही थे; यद्यपि वह बहुत सारे लोगों को प्राप्त नहीं कर पाया, फिर भी वह सत्य के मार्ग का अनुसरण कर सका था। इसी कारण से कहा जा सकता है कि वह परमेश्वर का गुणसंपन्न सृजित प्राणी था। आज, यदि तुम कार्यकर्ता नहीं हो, तब भी तुम्हें परमेश्वर के सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाने और परमेश्वर के समस्त आयोजनों के प्रति समर्पित होने की कोशिश करने में सक्षम होना चाहिए। परमेश्वर जो भी कहता है तुम्हें उसका पालन कर पाना, और सभी प्रकार के क्लेशों और शुद्धिकरण का अनुभव कर पाना, और यद्यपि तुम कमज़ोर हो, फिर भी तुम्हें अपने हृदय में परमेश्वर से प्रेम कर पाना चाहिए। जो स्वयं अपने जीवन की ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हैं वे परमेश्वर के सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाने के इच्छुक होते हैं, और अनुसरण के बारे में ऐसे लोगों का दृष्टिकोण सही होता है। यही वे लोग हैं जिनकी परमेश्वर को ज़रूरत है। यदि तुमने बहुत सारा कार्य किया है, और दूसरों ने तुम्हारी शिक्षाएँ प्राप्त की हैं, किंतु तुम स्वयं नहीं बदले हो, और कोई गवाही नहीं दी है, या कोई सच्चा अनुभव नहीं लिया है, यहाँ तक कि अपने जीवन के अंत में भी, तुमने जो कुछ किया उसमें से किसी कार्य ने भी गवाही नहीं दी है, तो क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो बदल चुका है? क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो सत्य का अनुसरण करता है? उस समय, पवित्र आत्मा ने तुम्हारा उपयोग किया था, किंतु जब उसने तुम्हारा उपयोग किया, तब उसने तुम्हारे उस भाग का उपयोग किया था जिसका कार्य के लिए उपयोग किया जा सकता था, और उसने तुम्हारे उस भाग का उपयोग नहीं किया जिसका उपयोग नहीं किया जा सकता था। यदि तुम बदलने की कोशिश करते, तो तुम्हें उपयोग करने की प्रक्रिया के दौरान धीरे-धीरे पूर्ण बनाया गया होता। परंतु पवित्र आत्मा इस बात की ज़िम्मेदारी नहीं लेता कि तुम्हें अंततः प्राप्त किया जाएगा या नहीं, और यह तुम्हारे अनुसरण के तरीक़े पर निर्भर करता है। यदि तुम्हारे व्यक्तिगत स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आए हैं, तो इसलिए क्योंकि अनुसरण के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण ग़लत है। यदि तुम्हें कोई पुरस्कार नहीं दिया गया है, तो यह तुम्हारी अपनी समस्या है, और इसलिए कि तुमने स्वयं सत्य को अभ्यास में नहीं लाया और तुम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में असमर्थ हो। और इसलिए, तुम्हारे व्यक्तिगत अनुभवों से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है, और तुम्हारे व्यक्तिगत प्रवेश से अधिक अत्यावश्यक कुछ भी नहीं है! कुछ लोग अंततः

कहेंगे, "मैंने तुम्हारे लिए इतना अधिक कार्य किया है, और मैंने कोई प्रशंसनीय उपलब्धियाँ भले प्राप्त न की हों, फिर भी मैंने पूरी मेहनत से अपने प्रयास किए हैं। क्या तुम मुझे जीवन के फल खाने के लिए बस स्वर्ग में प्रवेश करने नहीं दे सकते?" तुम्हें जानना ही चाहिए कि मैं किस प्रकार के लोगों को चाहता हूँ; वे जो अशुद्ध हैं उन्हें राज्य में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है, वे जो अशुद्ध हैं उन्हें पवित्र भूमि को मैला करने की अनुमति नहीं है। तुमने भले ही बहुत कार्य किया हो, और कई सालों तक कार्य किया हो, किंतु अंत में यदि तुम अब भी बुरी तरह मैले हो, तो यह स्वर्ग की व्यवस्था के लिए असहनीय होगा कि तुम मेरे राज्य में प्रवेश करना चाहते हो! संसार की स्थापना से लेकर आज तक, मैंने अपने राज्य में उन लोगों को कभी आसान प्रवेश नहीं दिया है जो अनुग्रह पाने के लिए मेरे साथ साँठ-गाँठ करते हैं। यह स्वर्गिक नियम है, और कोई इसे तोड़ नहीं सकता है! तुम्हें जीवन की खोज करनी ही चाहिए। आज, जिन्हें पूर्ण बनाया जाएगा वे उसी प्रकार के हैं जैसा पतरस था : ये वे लोग हैं जो स्वयं अपने स्वभाव में परिवर्तनों की तलाश करते हैं, और जो परमेश्वर के लिए गवाही देने, और परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में अपना कर्तव्य निभाने के इच्छुक होते हैं। केवल ऐसे लोगों को ही पूर्ण बनाया जाएगा। यदि तुम केवल पुरस्कारों की प्रत्याशा करते हो, और स्वयं अपने जीवन स्वभाव को बदलने की कोशिश नहीं करते, तो तुम्हारे सारे प्रयास व्यर्थ होंगे—यह अटल सत्य है!

पतरस और पौलुस के सार में अंतर से तुम्हें समझना चाहिए कि वे सब जो जीवन का अनुसरण नहीं करते, व्यर्थ परिश्रम करते हैं! तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो और परमेश्वर का अनुसरण करते हो, और इसलिए अपने हृदय में तुम्हें परमेश्वर से प्रेम करना ही चाहिए। तुम्हें अपना भ्रष्ट स्वभाव जरूर छोड़ देना चाहिए, तुम्हें परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति की खोज अवश्य करनी चाहिए, और तुम्हें परमेश्वर के सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाना ही चाहिए। चूँकि तुम परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर का अनुसरण करते हो, तुम्हें अपना सर्वस्व उसे अर्पित कर देना चाहिए, और व्यक्तिगत चुनाव या माँगें नहीं करनी चाहिए, और तुम्हें परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति करनी चाहिए। चूँकि तुम्हें सृजित किया गया था, इसलिए तुम्हें उस प्रभु का आज्ञापालन करना चाहिए जिसने तुम्हें सृजित किया, क्योंकि तुम्हारा स्वयं अपने ऊपर स्वाभाविक कोई प्रभुत्व नहीं है, और स्वयं अपनी नियति को नियंत्रित करने की क्षमता नहीं है। चूँकि तुम ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर में विश्वास करता है, इसलिए तुम्हें पवित्रता और परिवर्तन की खोज करनी चाहिए। चूँकि तुम परमेश्वर के सृजित प्राणी हो, इसलिए तुम्हें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, और अपनी स्थिति के

अनुरूप व्यवहार करना चाहिए, और तुम्हें अपने कर्तव्य का अतिक्रमण कदापि नहीं करना चाहिए। यह तुम्हें सिद्धांत के माध्यम से बाध्य करने, या तुम्हें दबाने के लिए नहीं है, बल्कि इसके बजाय यह वह पथ है जिसके माध्यम तुम अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकते हो, और यह उन सभी के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है—और प्राप्त किया जाना चाहिए—जो धार्मिकता का पालन करते हैं। यदि तुम पतरस और पौलुस के सार की तुलना करो, तो तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हें खोज किस प्रकार करनी चाहिए। पतरस और पौलुस जिन पथों पर चले थे, उनमें से एक पूर्ण बनाए जाने का पथ है, और एक निष्कासन का पथ है; पतरस और पौलुस दो भिन्न-भिन्न पथों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यद्यपि प्रत्येक ने पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त किया था, और प्रत्येक ने पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और प्रकाशन प्राप्त किया था, और प्रत्येक ने वह स्वीकार किया था जो प्रभु यीशु द्वारा उन्हें सौंपा गया था, किंतु प्रत्येक में उत्पन्न फल समान नहीं था : एक ने सचमुच फल उत्पन्न किया था, और दूसरे ने नहीं किया था। उनके सार से, उन्होंने जो कार्य किया उससे, उनके द्वारा बाह्य रूप में जो अभिव्यक्त किया गया उससे, और उनके निर्णायक अंत से, तुम्हें समझना चाहिए कि तुम्हें कौन-सा पथ अपनाना चाहिए, चलने के लिए तुम्हें कौन-सा पथ चुनना चाहिए। वे दो बिल्कुल भिन्न पथों पर चले थे। पौलुस और पतरस, वे प्रत्येक पथ के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण थे, और इसलिए बिल्कुल आरंभ से ही वे इन दो पथों का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रदर्शित किए गए थे। पौलुस के अनुभवों के मुख्य बिंदु क्या हैं, और वह सफल क्यों नहीं हुआ? पतरस के अनुभवों के मुख्य बिंदु क्या हैं, और उसने पूर्ण बनाए जाने का अनुभव कैसे किया? यदि तुम उसकी तुलना करो जिसकी उनमें से प्रत्येक ने परवाह की थी, तो तुम्हें पता चलेगा कि परमेश्वर ठीक किस प्रकार का व्यक्ति चाहता है, परमेश्वर की इच्छा क्या है, परमेश्वर का स्वभाव क्या है, किस प्रकार के व्यक्ति को अंततः पूर्ण बनाया जाएगा, और यह भी कि किस प्रकार के व्यक्ति को पूर्ण नहीं बनाया जाएगा; तुम्हें पता चलेगा कि उन लोगों का स्वभाव कैसा है जिन्हें पूर्ण बनाया जाएगा, और उन लोगों का स्वभाव कैसा है जिन्हें पूर्ण नहीं बनाया जाएगा—सार के ये मुद्दे पतरस और पौलुस के अनुभवों में देखे जा सकते हैं। परमेश्वर ने सभी चीज़ों की सृष्टि की थी, और इसलिए वह समूची सृष्टि को अपने प्रभुत्व के अधीन लाता और अपने प्रभुत्व के प्रति समर्पित करवाता है; वह सभी चीज़ों पर अधिकार रखेगा, ताकि सभी चीज़ें उसके हाथों में हों। परमेश्वर की सारी सृष्टि, पशुओं, पेड़-पौधों, मानवजाति, पहाड़ तथा नदियों, और झीलों सहित—सभी को उसके प्रभुत्व के अधीन आना ही होगा। आकाश में और धरती पर सभी चीज़ों को उसके प्रभुत्व के अधीन आना ही होगा। उनके पास कोई विकल्प नहीं हो सकता है और

सभी को उसके आयोजनों के समक्ष समर्पण करना ही होगा। इसकी आज्ञा परमेश्वर द्वारा दी गई थी, और यह परमेश्वर का अधिकार है। परमेश्वर सब कुछ पर अधिकार रखता है, और सभी चीज़ों का क्रम और उनकी श्रेणी निर्धारित करता है, जिसमें प्रत्येक को, परमेश्वर की इच्छानुसार, प्रकार के अनुरूप वर्गीकृत किया जाता है, और उनका अपना स्थान प्रदान किया जाता है। चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो, कोई भी चीज़ परमेश्वर से बढ़कर नहीं हो सकती है, और सभी चीज़ें परमेश्वर द्वारा सृजित मानवजाति की सेवा करती हैं, और कोई भी चीज़ परमेश्वर की अवज्ञा करने या परमेश्वर से कोई भी माँग करने की हिम्मत नहीं करती है। इसलिए मनुष्य को भी, परमेश्वर का सृजित प्राणी होने के नाते, मनुष्य का कर्तव्य निभाना ही चाहिए। वह सभी चीज़ों का चाहे प्रभु हो या देख-रेख करने वाला हो, सभी चीजों के बीच मनुष्य का कद चाहे जितना ऊँचा हो, तो भी वह परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन एक अदना मानव भर है, और महत्वहीन मानव, परमेश्वर के सृजित प्राणी से अधिक कुछ नहीं है, और वह कभी परमेश्वर से ऊपर नहीं होगा। परमेश्वर के सृजित प्राणी के रूप में, मनुष्य को परमेश्वर के सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाने की कोशिश करनी चाहिए, और दूसरे विकल्पों को छोड़ कर परमेश्वर से प्रेम करने की तलाश करनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के प्रेम के योग्य है। वे जो परमेश्वर से प्रेम करने की तलाश करते हैं, उन्हें कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं ढूँढने चाहिए या वह नहीं ढूँढना चाहिए जिसके लिए वे व्यक्तिगत रूप से लालायित हैं; यह अनुसरण का सबसे सही माध्यम है। यदि तुम जिसकी खोज करते हो वह सत्य है, तुम जिसे अभ्यास में लाते हो वह सत्य है, और यदि तुम जो प्राप्त करते हो वह तुम्हारे स्वभाव में परिवर्तन है, तो तुम जिस पथ पर क़दम रखते हो वह सही पथ है। यदि तुम जिसे खोजते हो वह देह के आशीष हैं, और तुम जिसे अभ्यास में लाते हो वह तुम्हारी अपनी अवधारणाओं का सत्य है, और यदि तुम्हारे स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं होता है, और तुम देहधारी परमेश्वर के प्रति बिल्कुल भी आज्ञाकारी नहीं हो, और तुम अभी भी अस्पष्टता में जीते हो, तो तुम जिसकी खोज कर रहे हो वह निश्चय ही तुम्हें नरक ले जाएगा, क्योंकि जिस पथ पर तुम चल रहे हो वह विफलता का पथ है। तुम्हें पूर्ण बनाया जाएगा या हटा दिया जाएगा यह तुम्हारे अपने अनुसरण पर निर्भर करता है, जिसका तात्पर्य यह भी है कि सफलता या विफलता उस पथ पर निर्भर होती है जिस पर मनुष्य चलता है।

परमेश्वर का कार्य और मनुष्य का कार्य

मनुष्य के कार्य में कितना पवित्र आत्मा का कार्य है और कितना मनुष्य का अनुभव है? ऐसा कहा जा सकता है कि लोग अभी तक इन प्रश्नों को नहीं समझते, और इसकी वजह यह है कि लोग पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांतों को नहीं समझते। जब मैं "मनुष्य का कार्य" की बात करता हूँ, तो निस्संदेह मैं उन लोगों के कार्य की बात कर रहा हूँ जिनके पास पवित्र आत्मा का कार्य है या जिन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा उपयोग किया जाता है। मैं मनुष्य की इच्छा से उत्पन्न होने वाले कार्य की बात नहीं कर रहा, बल्कि प्रेरितों, कर्मियों या साधारण भाई-बहनों के कार्यों की बात कर रहा हूँ जो पवित्र आत्मा के कार्य के दायरे के भीतर आता है। यहाँ, "मनुष्य का कार्य" देहधारी परमेश्वर को संदर्भित नहीं करता, बल्कि पवित्र आत्मा द्वारा लोगों पर किए जाने वाले कार्य के दायरे और सिद्धांतों के संदर्भ में है। जबकि ये सिद्धांत पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांत और दायरे हैं, फिर भी ये देहधारी परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों और दायरे के समान नहीं हैं। मनुष्य के कार्य में मनुष्य का सार और सिद्धांत होते हैं, और परमेश्वर के कार्य में परमेश्वर का सार और सिद्धांत होते हैं।

पवित्र आत्मा की मुख्य धारा में जो कार्य है वह पवित्र आत्मा का कार्य है, चाहे यह परमेश्वर का अपना कार्य हो या उपयोग किए जा रहे मनुष्यों का कार्य। स्वयं परमेश्वर का सार आत्मा है, जिसे पवित्र आत्मा या सात गुना सघन आत्मा भी कहा जा सकता है। कुल मिलाकर, वे परमेश्वर के आत्मा हैं, हालाँकि भिन्न-भिन्न युगों में परमेश्वर के आत्मा को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा गया है। परन्तु उनका सार तब भी एक ही है। इसलिए, स्वयं परमेश्वर का कार्य पवित्र आत्मा का कार्य है, जबकि देहधारी परमेश्वर का कार्य, पवित्र आत्मा के कार्य से ज़रा-भी कम नहीं है। जिन मनुष्यों का उपयोग किया जाता है उनका कार्य भी पवित्र आत्मा का कार्य है। फिर भी परमेश्वर का कार्य पवित्र आत्मा की पूर्ण अभिव्यक्ति है, जो सर्वथा सत्य है, जबकि उपयोग किए जा रहे लोगों का कार्य बहुत-सी मानवीय चीज़ों के साथ मिश्रित होता है, और वह पवित्र आत्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति नहीं होता, परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति होने की तो बात ही छोड़ो। पवित्र आत्मा का कार्य विविध होता है और यह किसी परिस्थिति द्वारा सीमित नहीं होता। भिन्न-भिन्न लोगों में पवित्र आत्मा का कार्य भिन्न-भिन्न होता है; इससे भिन्न-भिन्न सार अभिव्यक्त होते हैं, और यह भिन्न-भिन्न युगों और देशों में भी अलग-अलग होता है। निस्संदेह, यद्यपि पवित्र आत्मा कई भिन्न-भिन्न तरीकों से और कई सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता है, इसका सार हमेशा भिन्न होता है, फिर चाहे कार्य जैसे भी किया जाए या जिस भी प्रकार के लोगों पर किया जाए; भिन्न-भिन्न लोगों पर किए गए सभी कार्यों के अपने सिद्धांत होते

हैं और सभी अपने लक्ष्यों के सार का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। इसकी वजह यह है कि पवित्र आत्मा का कार्य दायरे में काफी विशिष्ट और काफी नपा-तुला होता है। देहधारी शरीर में किया गया कार्य उस कार्य के समान नहीं होता जो लोगों पर किया जाता है, और जिन लोगों पर यह कार्य किया जाता है, उनकी क्षमता के आधार पर वह कार्य भी भिन्न-भिन्न होता है। देहधारी शरीर में किया गया कार्य लोगों पर नहीं किया जाता, और यह वही कार्य नहीं होता जो लोगों पर किया जाता है। संक्षेप में, इससे फर्क नहीं पड़ता है कि कार्य कैसे किया जाता है, विभिन्न लक्ष्यों पर किया गया कार्य कभी एक समान नहीं होता, और जिन सिद्धांतों के द्वारा वह कार्य करता है वे भिन्न-भिन्न लोगों की अवस्था और प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। पवित्र आत्मा भिन्न-भिन्न लोगों पर उनके अंतर्निहित सार के आधार पर कार्य करता है और उनसे उनके अंतर्निहित सार से अधिक की माँग नहीं करता, न ही वह उन पर उनकी अंतर्निहित क्षमता से ज़्यादा कार्य करता है। इसलिए, मनुष्य पर पवित्र आत्मा का कार्य लोगों को कार्य के लक्ष्य के सार को देखने देता है। मनुष्य का अंतर्निहित सार परिवर्तित नहीं होता; मनुष्य की अंतर्निहित क्षमता सीमित है। पवित्र आत्मा लोगों की क्षमता के अनुसार उनका उपयोग या उन पर कार्य करता है, ताकि वे इससे लाभान्वित हो सकें। जब पवित्र आत्मा उपयोग किए जा रहे मनुष्यों पर कार्य करता है, तो उनकी प्रतिभा और अंतर्निहित क्षमता को उन्मुक्त कर दिया जाता है, उन्हें रोककर नहीं रखा जाता। उनकी अंतर्निहित क्षमता को कार्य के लिए काम में लाया जाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि वह अपने कार्य में परिणाम हासिल करने के लिए, इंसान के उन हिस्सों का उपयोग करता है, जिनका उसके कार्य में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके विपरीत, देहधारी शरीर में किया गया कार्य सीधे तौर पर पवित्रात्मा के कार्य को व्यक्त करता है और इसमें मानवीय मन और विचारों की मिलावट नहीं होती; इस तक न तो इंसान की प्रतिभा की, न उसके अनुभव या उसकी सहज स्थिति की पहुँच होती है। पवित्र आत्मा के समस्त असंख्य कार्यों का लक्ष्य इंसान को लाभ पहुँचाना और शिक्षित करना होता है। हालाँकि, कुछ लोगों को पूर्ण बनाया जा सकता है जबकि अन्य लोग पूर्ण बनने की अवस्था में नहीं होते, जिसका तात्पर्य है कि उन्हें पूर्ण नहीं किया जा सकता और उन्हें शायद ही बचाया जा सकता है, और भले ही उनमें पवित्र आत्मा का कार्य रहा हो, फिर भी अंततः उन्हें निष्कासित कर दिया जाता है। कहने का अर्थ है कि यद्यपि पवित्र आत्मा का कार्य लोगों को शिक्षित करना है, फिर भी इसका यह अर्थ नहीं है कि वे सभी लोग जिनमें पवित्र आत्मा का कार्य रहा है, उन्हें पूरी तरह से पूर्ण बनाया जाएगा, क्योंकि बहुत से लोग अपनी खोज में जिस मार्ग का अनुसरण करते हैं, वह पूर्ण बनाए जाने का

मार्ग नहीं है। उनमें पवित्र आत्मा का केवल एकतरफ़ा कार्य है, आत्मपरक मानवीय सहयोग या सही मानवीय खोज नहीं है। इस तरह, इन लोगों पर पवित्र आत्मा का कार्य उन लोगों की सेवा के लिए आता है जिन्हें पूर्ण बनाया जा रहा है। पवित्र आत्मा के कार्य को लोग सीधे तौर पर न तो देख सकते हैं, न ही उसे स्पर्श कर सकते हैं। इसे केवल कार्य करने की प्रतिभा वाले लोग ही व्यक्त कर सकते हैं, इसका अर्थ यह है कि अनुयायियों को पवित्र आत्मा का कार्य लोगों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

पवित्र आत्मा के कार्य को कई प्रकार के लोगों और अनेक भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के माध्यम से संपन्न और पूरा किया जाता है। यद्यपि देहधारी परमेश्वर का कार्य एक संपूर्ण युग के कार्य का प्रतिनिधित्व कर सकता है, और एक संपूर्ण युग में लोगों के प्रवेश का प्रतिनिधित्व कर सकता है, फिर भी लोगों के प्रवेश के विस्तृत विवरण पर कार्य अभी भी उन लोगों द्वारा किए जाने की आवश्यकता है जिनका उपयोग पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है, न कि इसे देहधारी परमेश्वर द्वारा किए जाने की आवश्यकता है। इसलिए, परमेश्वर का कार्य, या परमेश्वर की अपनी सेवकाई, देहधारी परमेश्वर के देह का कार्य है, इसे परमेश्वर के बदले मनुष्य नहीं कर सकता। पवित्र आत्मा का कार्य विभिन्न प्रकार के मनुष्यों द्वारा पूरा किया जाता है; और इसे केवल एक ही व्यक्ति-विशेष द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता या एक ही व्यक्ति-विशेष के माध्यम से पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता। जो लोग कलीसियाओं की अगुवाई करते हैं, वे भी पूरी तरह से पवित्र आत्मा के कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते; वे केवल अगुआई का कुछ कार्य ही कर सकते हैं। इस तरह, पवित्र आत्मा के कार्य को तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है : परमेश्वर का अपना कार्य, प्रयुक्त लोगों का कार्य, और उन सभी लोगों पर किया गया कार्य जो पवित्र आत्मा की धारा में हैं। परमेश्वर का अपना कार्य संपूर्ण युग की अगुवाई करना है; प्रयुक्त लोगों का कार्य, परमेश्वर के अपने कार्य कर लेने के पश्चात् भेजे जाने या आज्ञा प्राप्त करने के द्वारा परमेश्वर के सभी अनुयायियों की अगुवाई करना है, और यही वे लोग हैं जो परमेश्वर के कार्य में सहयोग करते हैं; पवित्र आत्मा द्वारा धारा में मौजूद लोगों पर किया गया कार्य उसके अपने कार्य को बनाए रखने के लिए है, अर्थात्, संपूर्ण प्रबंधन को और अपनी गवाही को बनाए रखने के लिए है, साथ ही उन लोगों को पूर्ण बनाने के लिए है जिन्हें पूर्ण बनाया जा सकता है। ये तीनों हिस्से मिलकर, पवित्र आत्मा का पूर्ण कार्य हैं, किन्तु स्वयं परमेश्वर के कार्य के बिना, संपूर्ण प्रबंधन कार्य रूक जाएगा। स्वयं परमेश्वर के कार्य में संपूर्ण मनुष्यजाति का कार्य समाविष्ट है, और यह संपूर्ण युग के कार्य का भी प्रतिनिधित्व करता है, कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर का अपना कार्य पवित्र

आत्मा के सभी कार्य की गतिक और रुझान का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि प्रेरितों का कार्य परमेश्वर के अपने कार्य के बाद आता है और वहाँ से उसका अनुसरण करता है, वह न तो युग की अगुवाई करता है, न ही वह पूरे युग में पवित्र आत्मा के कार्य के रुझान का प्रतिनिधित्व करता है। वे केवल वही कार्य करते हैं जो मनुष्य को करना चाहिए, जिसका प्रबंधन कार्य से कोई लेना-देना नहीं है। परमेश्वर का अपना कार्य प्रबंधन कार्य के भीतर ही एक परियोजना है। मनुष्य का कार्य केवल वही कर्तव्य है जिसका निर्वहन प्रयुक्त लोग करते हैं, और उसका प्रबंधन कार्य से कोई संबंध नहीं है। कार्य की विभिन्न पहचान और कार्य के विभिन्न निरूपणों के कारण, इस तथ्य के बावजूद कि वे दोनों पवित्र आत्मा के कार्य हैं, परमेश्वर के कार्य और मनुष्य के कार्य के बीच स्पष्ट और सारभूत अंतर हैं। इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा द्वारा किए गए कार्य की सीमा विभिन्न पहचानों वाली वस्तुओं के अनुसार भिन्न होती है। ये पवित्र आत्मा के कार्य के सिद्धांत और दायरे हैं।

मनुष्य का कार्य उसके अनुभव और उसकी मानवता के तात्पर्य को सूचित करता है। मनुष्य जो कुछ मुहैया कराता है और जो कार्य करता है, वह उसका प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य की अंतर्दृष्टि, उसकी विवेक-बुद्धि, उसकी तर्कशक्ति और उसकी समृद्ध कल्पना, सभी उसके कार्य में शामिल होते हैं। मनुष्य का अनुभव, विशेष रूप से उसके कार्य के तात्पर्य को सूचित करने में समर्थ होता है, और व्यक्ति के अनुभव उसके कार्य के घटक बन जाते हैं। मनुष्य का कार्य उसके अनुभव को व्यक्त कर सकता है। जब कुछ लोग नकारात्मक तरीके से अनुभव करते हैं, तो उनकी संगति की अधिकांश भाषा नकारात्मक तत्वों से ही युक्त होती है। यदि कुछ समयावधि तक उनका अनुभव सकारात्मक है और उनके पास विशेष रूप से, सकारात्मक पहलू में एक मार्ग होता है, तो उनकी संगति बहुत प्रोत्साहन देने वाली होती है, और लोग उनसे सकारात्मक आपूर्ति प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई कर्मी कुछ समयावधि तक नकारात्मक हो जाता है, तो उसकी संगति में हमेशा नकारात्मक तत्व होंगे। इस प्रकार की संगति निराशाजनक होती है, और अन्य लोग अनजाने में ही उसकी संगति के बाद निराश हो जाएँगे। अगुआ की अवस्था के आधार पर अनुयायियों की अवस्था बदलती है। एक कर्मी भीतर से जैसा होता है, वह वैसा ही व्यक्त करता है, और पवित्र आत्मा का कार्य प्रायः मनुष्य की अवस्था के साथ बदल जाता है। वह मनुष्य के अनुभव के अनुसार कार्य करता है और उसे बाध्य नहीं करता, बल्कि लोगों के अनुभव के सामान्य क्रम के अनुसार उनसे माँग करता है। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य की संगति परमेश्वर के वचन से भिन्न होती है। लोग जो संगति

करते हैं वह उनकी व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि और अनुभव को बताती है, और परमेश्वर के कार्य के आधार पर उनकी अंतर्दृष्टि और अनुभव को व्यक्त करती है। उनकी ज़िम्मेदारी यह है कि परमेश्वर के कार्य करने या बोलने के पश्चात्, वे पता लगायें कि उन्हें इसमें से किसका अभ्यास करना चाहिए, या किसमें प्रवेश करना चाहिए, और फिर इसे अनुयायियों को सौंप दें। इसलिए, मनुष्य का कार्य उसके प्रवेश और अभ्यास का प्रतिनिधित्व करता है। निस्संदेह, ऐसा कार्य मानवीय सबक और अनुभव या कुछ मानवीय विचारों के साथ मिश्रित होता है। पवित्र आत्मा चाहे जैसे कार्य करे, चाहे वह मनुष्य में कार्य करे या देहधारी परमेश्वर में, कर्मी हमेशा वही व्यक्त करते हैं जो वे होते हैं। यद्यपि कार्य पवित्र आत्मा ही करता है, फिर भी मनुष्य अंतर्निहित रूप से जैसा होता है कार्य उसी पर आधारित होता है, क्योंकि पवित्र आत्मा बिना आधार के कार्य नहीं करता। दूसरे शब्दों में, कार्य शून्य में से नहीं आता, बल्कि वह हमेशा वास्तविक परिस्थितियों और असली स्थितियों के अनुसार किया जाता है। केवल इसी तरह से मनुष्य के स्वभाव को रूपान्तरित किया जा सकता है और उसकी पुरानी धारणाओं एवं पुराने विचारों को बदला जा सकता है। जो कुछ मनुष्य देखता है, अनुभव करता है, और कल्पना कर सकता है, वह उसी को अभिव्यक्त करता है, और यह मनुष्य के विचारों द्वारा प्राप्य होता है, भले ही ये सिद्धांत या धारणाएँ ही क्यों न हों। चाहे मनुष्य के कार्य का आकार कुछ भी हो, यह उसके अनुभव के दायरे से परे नहीं जा सकता, न ही जो वह देखता है, या जिसकी वह कल्पना या जिसका विचार कर सकता है, उससे बढ़कर हो सकता है। परमेश्वर वही सब प्रकट करता है जो वह स्वयं है, और यह मनुष्य की पहुँच से परे है, अर्थात्, मनुष्य की सोच से परे है। वह संपूर्ण मानवजाति की अगुवाई करने के अपने कार्य को व्यक्त करता है, इसका मानवीय अनुभव के विवरणों से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि यह उसके अपने प्रबंधन से संबंधित है। मनुष्य जो व्यक्त करता है वह उसका अपना अनुभव है, जबकि परमेश्वर अपने स्वरूप को व्यक्त करता है, जो कि उसका अंतर्निहित स्वभाव है और मनुष्य की पहुँच से परे है। मनुष्य का अनुभव उसकी अंतर्दृष्टि और वह ज्ञान है जो उसने परमेश्वर द्वारा अपने स्वरूप की अभिव्यक्ति के आधार पर प्राप्त किया है। ऐसी अंतर्दृष्टि और ज्ञान मनुष्य का स्वरूप कहलाता है, और उनकी अभिव्यक्ति का आधार मनुष्य का अंतर्निहित स्वभाव और उसकी क्षमता होते हैं—इसलिए इन्हें मनुष्य का अस्तित्व भी कहा जाता है। जो कुछ मनुष्य देखता और अनुभव करता है वह उसकी संगति कर पाता है। अत: कोई भी व्यक्ति उस पर संगति नहीं कर सकता जिसका उसने अनुभव नहीं किया है या देखा नहीं है या जिस तक उसका मन नहीं पहुँच पाता है, वे ऐसी

चीज़ें हैं जो उसके भीतर नहीं हैं। यदि जो कुछ मनुष्य व्यक्त करता है वह उसके अनुभव से नहीं आया है, तो यह उसकी कल्पना या सिद्धांत है। सीधे-सीधे कहें तो, उसके वचनों में कोई वास्तविकता नहीं होती। यदि तुम समाज की चीज़ों से कभी संपर्क में न आते, तो तुम समाज के जटिल संबंधों की स्पष्टता से संगति करने में समर्थ नहीं होते। यदि तुम्हारा कोई परिवार न होता परन्तु अन्य लोग परिवारिक मुद्दों के बारे में बात करते, तो तुम उनकी अधिकांश बातों को नहीं समझ पाते। इसलिए, जो कुछ मनुष्य संगति करता है और जिस कार्य को वह करता है, वे उसके भीतरी अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि किसी ने ताड़ना और न्याय के बारे में अपनी समझ की संगति की, परन्तु तुम्हारे पास उसका कोई अनुभव नहीं है, तो तुम उसके ज्ञान को नकारने का साहस नहीं करोगे उसके बारे में सौ प्रतिशत निश्चित होने का साहस तो बिलकुल भी नहीं करोगे। क्योंकि उसकी संगति ऐसी चीज़ है जिसका तुमने कभी अनुभव नहीं किया है, जिसके बारे में तुमने कभी जाना नहीं है, तुम्हारा मन उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। तुम उसके ज्ञान से बस भविष्य में ताड़ना और न्याय से गुज़रने का एक मार्ग पा सकते हो। परन्तु यह मार्ग केवल एक सैद्धांतिक ज्ञान ही हो सकता है; यह तुम्हारी समझ का स्थान नहीं ले सकता, तुम्हारे अनुभव का स्थान तो बिलकुल भी नहीं ले सकता। शायद तुम सोचते हो कि जो कुछ वह कहता है वह काफी सही है, परन्तु अपने अनुभव में, तुम इसे अनेक बातों में अव्यावहारिक पाते हो। शायद तुम्हें लगे जो तुमने सुना वो पूरी तरह अव्यावहारिक है; उस समय तुम इसके बारे में धारणाएँ पाल लेते हो, तुम इसे स्वीकार तो करते हो, लेकिन केवल अनिच्छा से। परन्तु जब तुम अनुभव करते हो, तो वह ज्ञान जिससे तुमने धारणाएँ बनायी थीं, तुम्हारे अभ्यास का मार्ग बन जाता है। जितना अधिक तुम अभ्यास करते हो, उतना ही अधिक तुम उन वचनों के सही मूल्य और अर्थ को समझते हो जो तुमने सुने हैं। स्वयं अनुभव प्राप्त कर लेने के पश्चात्, तुम उस ज्ञान के बारे में बात कर पाते हो जो तुम्हारे पास उन चीज़ों के बारे में होना चाहिए जो तुमने अनुभव की हैं। इसके साथ, तुम ऐसे लोगों के बीच अंतर कर सकते हो जिनका ज्ञान वास्तविक और व्यावहारिक है और ऐसे लोग जिनका ज्ञान सिद्धांत पर आधारित है और बेकार है। इसलिए, वह ज्ञान जिसकी तुम चर्चा करते हो वह सत्य के अनुरूप है या नहीं, यह मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि तुम्हारे पास उसका व्यावहारिक अनुभव है या नहीं। जहाँ तुम्हारे अनुभवों में सच्चाई होगी, वहाँ तुम्हारा ज्ञान व्यावहारिक और मूल्यवान होगा। तुम अपने अनुभव के माध्यम से, विवेक और अंतर्दृष्टि भी प्राप्त कर सकते हो, अपने ज्ञान को गहरा कर सकते हो, तुम्हें कैसा आचरण करना चाहिए, इस बारे में अपनी बुद्धि

और सामान्य बोध बढ़ा सकते हो। जिन लोगों में सत्य नहीं होता, उनके द्वारा व्यक्त ज्ञान मात्र सिद्धांत होता है, फिर भले ही वह ज्ञान कितना ही ऊँचा क्यों न हो। जब देह के मामलों की बात आती है तो हो सकता है कि इस प्रकार का व्यक्ति बहुत बुद्धिमान हो, परन्तु जब आध्यात्मिक मामलों की बात आती है तो वह अंतर नहीं कर पाता। क्योंकि आध्यात्मिक मामलों में ऐसे लोगों को कोई अनुभव नहीं होता। ऐसे लोग आध्यात्मिक मामलों में प्रबुद्ध नहीं होते और आध्यात्मिक मामलों को बिल्कुल नहीं समझते। चाहे तुम किसी भी तरह का ज्ञान व्यक्त करो, अगर यह तुम्हारा अस्तित्व है, तो यह तुम्हारा व्यक्तिगत अनुभव है, तुम्हारा वास्तविक ज्ञान है। जो लोग केवल सिद्धांत की ही बात करते हैं—जिनमें सत्य या वास्तविकता नहीं होती—वे जिस बारे में बात करते हैं, उसे उनका अस्तित्व भी कहा जा सकता है, क्योंकि उनका सिद्धांत गहरे चिंतन से ही आया है और यह उनके गहरे मनन का परिणाम है। परन्तु यह केवल सिद्धांत ही है, यह कल्पना से अधिक कुछ नहीं है! विभिन्न प्रकार के लोगों के अनुभव उनकी आंतरिक चीज़ों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आध्यात्मिक अनुभव के बिना कोई सत्य के ज्ञान पर बात नहीं कर सकता, न ही विभिन्न आध्यात्मिक चीज़ों के सही ज्ञान के बारे में बात कर सकता है। इंसान वही व्यक्त करता है जो वह भीतर से होता है—यह निश्चित है। यदि कोई आध्यात्मिक चीज़ों और सत्य का ज्ञान पाना चाहता है, तो उसके पास वास्तविक अनुभव होना चाहिए। यदि तुम मानवीय जीवन में सामान्य बोध के बारे में स्पष्ट रूप से बात नहीं कर सकते, तो तुम आध्यात्मिक चीज़ों के बारे में तो कितना कम बात कर पाओगे? जो लोग कलीसिया की अगुवाई कर सकते हैं, लोगों को जीवन प्रदान कर सकते हैं, और लोगों के लिए एक प्रेरित हो सकते हैं, उनके पास वास्तविक अनुभव होने ही चाहिए; उन्हें आध्यात्मिक चीज़ों की सही समझ, सत्य की सही समझ और अनुभव होना चाहिए। ऐसे ही लोग कलीसिया की अगुवाई करने वाले कर्मी या प्रेरित होने के योग्य हैं। अन्यथा, वे न्यूनतम रूप में केवल अनुसरण ही कर सकते हैं, अगुवाई नहीं कर सकते, वे लोगों को जीवन प्रदान करने में समर्थ प्रेरित तो बिलकुल भी नहीं हो सकते। क्योंकि प्रेरित का कार्य भाग-दौड़ करना या लड़ना नही है; बल्कि जीवन की सेवकाई का कार्य करना और लोगों के स्वभाव में परिवर्तन लाने के लिए उनकी अगुवाई करना है। इस कार्य को करने वालों को बड़ा दायित्व दिया जाता है जिसे हर कोई नहीं कर सकता है। इस प्रकार के कार्य का बीड़ा केवल ऐसे लोगों द्वारा ही उठाया जा सकता है जिन्हें जीवन की समझ है, अर्थात जिन्हें सत्य का अनुभव है। इसे बस यों ही ऐसा कोई व्यक्ति नहीं कर सकता है जो त्याग कर सकता हो, भाग-दौड़ कर सकता हो या जो खुद को खपाने की इच्छा रखता हो; जिन्हें सत्य

का कोई अनुभव नहीं है, जिनकी काट-छाँट या जिनका न्याय नहीं किया गया है, वे इस प्रकार का कार्य करने में असमर्थ होते हैं। ऐसे लोग जिनके पास कोई अनुभव नहीं है, लोग जिनके पास कोई वास्तविकता नहीं है, वे वास्तविकता को स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते, क्योंकि उनके पास ऐसा अस्तित्व नहीं होता। इसलिए, इस प्रकार का व्यक्ति न केवल अगुवाई का कार्य नहीं कर पाता, बल्कि यदि उसमें लम्बी अवधि तक कोई सत्य न हो, तो वह निष्कासन की वस्तु बन जाएगा। जो अंतर्दृष्टि तुम व्यक्त करते हो, वह उन कठिनाइयों का प्रमाण बन सकती है जिनका तुमने जीवन में अनुभव किया है, जिन चीज़ों के लिए तुम्हें ताड़ना दी गई है और जिन मामलों में तुम्हारा न्याय किया गया है। यह बात परीक्षणों पर भी लागू होती है : जहाँ एक व्यक्ति शुद्ध है, जहाँ एक व्यक्ति कमज़ोर है—इन क्षेत्रों में मनुष्य को अनुभव होता है, इनमें मनुष्य के पास मार्ग होता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई विवाह में कुंठाओं से पीड़ित है, तो वह अक्सर ऐसी संगति करेगा, "परमेश्वर का धन्यवाद, परमेश्वर की स्तुति हो, मुझे परमेश्वर के हृदय की इच्छा को संतुष्ट करना चाहिए और अपना संपूर्ण जीवन उसे अर्पित कर देना चाहिए, अपने विवाह को पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए। मैं अपना संपूर्ण जीवन परमेश्वर को देने की प्रतिज्ञा करने को तैयार हूँ।" संगति के माध्यम से मनुष्य के भीतर की सभी चीज़ें यह दर्शा सकती हैं कि वह क्या है। किसी व्यक्ति के बोलने की गति, वह ज़ोर से बोलता है या धीमे से—ऐसे मामले अनुभव के मामले नहीं हैं और वे उन बातों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते जो उसके पास है और जो वह है। ये चीज़ें केवल इतना ही बता सकती हैं कि उसका चरित्र अच्छा है या बुरा, या उसकी प्रकृति अच्छी है या बुरी, परन्तु यह इस बात के बराबर नहीं कहा जा सकता कि उसके पास अनुभव है या नहीं। बोलते समय स्वयं को व्यक्त करने की योग्यता, या बोलने की कुशलता या गति, सिर्फ अभ्यास की बातें हैं, ये चीज़ें उसके अनुभव का स्थान नहीं ले सकतीं। जब तुम व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बात करते हो, तो तुम उन सभी चीज़ों की संगति करते हो जिन्हें तुम महत्वपूर्ण मानते हो और जो तुम्हारे भीतर हैं। मेरा व्याख्यान मेरे अस्तित्व को दर्शाता है, परन्तु जो मैं कहता हूँ वह मनुष्य की पहुँच से परे होता है। मैं जो कहता हूँ, वह वो नहीं है जिसका मनुष्य अनुभव करता है, वह कुछ ऐसा नहीं है जिसे मनुष्य देख सकता है; न ही वो है जिसे वह स्पर्श कर सकता है; बल्कि यह वो है जो मैं हूँ। कुछ लोग केवल इतना ही स्वीकार करते हैं कि जो मैं संगति करता हूँ वह मैंने अनुभव किया है, परन्तु वे इस बात को नहीं पहचानते कि यह पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। निस्संदेह, जो मैं कहता हूँ वह मैंने अनुभव किया है। मैंने ही छः हजार वर्षों से प्रबंधन का कार्य किया है।

मैंने मनुष्यजाति के सृजन के आरम्भ से लेकर आज तक हर चीज़ का अनुभव किया है; कैसे मैं इसके बारे में बात नहीं कर पाऊँगा? जब मनुष्य की प्रकृति की बात आती है, तो मैंने इसे स्पष्ट रूप से देखा है; मैंने बहुत पहले ही इसका अवलोकन कर लिया था। कैसे मैं इसके बारे में स्पष्ट रूप से बात नहीं कर पाऊँगा? चूँकि मैंने मनुष्य के सार को स्पष्टता से देखा है, इसलिए मैं मनुष्य को ताड़ना देने और उसका न्याय करने के योग्य हूँ, क्योंकि सभी मनुष्य मुझ से ही आए हैं परन्तु उन्हें शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है। निस्संदेह, मैं उस कार्य का आकलन करने के भी योग्य हूँ जो मैंने किया है। यद्यपि यह कार्य मेरे देह द्वारा नहीं किया जाता, फिर भी यह पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है, और यही मेरा स्वरूप है। इसलिए, मैं इसे व्यक्त करने और उस कार्य को करने के योग्य हूँ जो मुझे करना चाहिए। जो कुछ लोग कहते हैं उसका उन्होंने अनुभव किया होता है। वही उन्होंने देखा है, जहाँ तक उनका दिमाग पहुँच सकता है और जिसे उनकी इंद्रियाँ महसूस कर सकती हैं। उसी की वे संगति कर सकते हैं। देहधारी परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं और वे उस कार्य को अभिव्यक्त करते हैं जो पवित्रात्मा द्वारा किया गया है, जिसे देह ने अनुभव नहीं किया है या देखा नहीं है, लेकिन फिर भी अपने अस्तित्व को व्यक्त करता है, क्योंकि देह का सार पवित्रात्मा है, और वह पवित्रात्मा के कार्य को व्यक्त करता है। यद्यपि यह देह की पहुँच से परे है, फिर भी इस कार्य को पवित्रात्मा द्वारा पहले ही कर लिया गया है। देहधारण के पश्चात्, देह की अभिव्यक्ति के माध्यम से, वह लोगों को परमेश्वर के अस्तित्व को जानने में सक्षम बनाता है और लोगों को परमेश्वर के स्वभाव और उस कार्य को देखने देता है जो उसने किया है। मनुष्य का कार्य लोगों को इस बारे में अधिक स्पष्ट होने में सक्षम बनाता है कि उन्हें किसमें प्रवेश करना चाहिए और उन्हें क्या समझना चाहिए; इसमें लोगों को सत्य को समझने और उसका अनुभव करने की ओर ले जाना शामिल है। मनुष्य का कार्य लोगों को पोषण देना है; परमेश्वर का कार्य मानवजाति के लिए नए मार्गों और नए युगों को प्रशस्त करना है, और लोगों के सामने वह प्रकट करना है जिसे नश्वर लोग नहीं जानते, जिससे वे परमेश्वर के स्वभाव को जानने में सक्षम हो जाएँ। परमेश्वर का कार्य सम्पूर्ण मानवजाति की अगुवाई करना है।

पवित्र आत्मा का सारा कार्य लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए किया जाता है। यह पूर्ण रूप से लोगों को शिक्षित करने के बारे में है; ऐसा कोई कार्य नहीं है जो लोगों को लाभान्वित न करता हो। चाहे सत्य गहरा हो या उथला, चाहे सत्य को स्वीकार करने वाले लोगों की क्षमता कैसी भी क्यों न हो, जो कुछ भी पवित्र

आत्मा करता है, यह सब लोगों के लिए लाभदायक है। परन्तु पवित्र आत्मा का कार्य सीधे तौर पर नहीं किया जा सकता; इसे पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करने वाले लोगों के ज़रिए व्यक्त किया जाना चाहिए। तभी पवित्र आत्मा के कार्य के परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। निस्संदेह, जब पवित्र आत्मा प्रत्यक्ष तौर पर कार्य करता है, तो उसमें कोई मिलावट नहीं होती; परन्तु जब पवित्र आत्मा मनुष्य के माध्यम से कार्य करता है, तो यह कलुषित हो जाता है और पवित्र आत्मा का मूल कार्य नहीं रह जाता। इस तरह से, सत्य विभिन्न अंशों तक बदल जाता है। अनुयायी पवित्र आत्मा के मूल इरादे को न पा कर, पवित्र आत्मा के कार्य और मनुष्य के अनुभव एवं ज्ञान के संयोजन को प्राप्त करते हैं। अनुयायियों के द्वारा जो प्राप्त किया जाता है उसका जो भाग पवित्र आत्मा का कार्य है, सही होता है, जबकि उनके द्वारा प्राप्त मनुष्य का अनुभव और ज्ञान भिन्न-भिन्न होते हैं क्योंकि कर्मी भिन्न-भिन्न होते हैं। जिन कर्मियों को पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है, वे प्रबुद्धता और मार्गदर्शन के आधार पर अनुभव पाते जाएँगे। इन अनुभवों में मनुष्य का मन और अनुभव, और साथ ही मानवता का अस्तित्व मिला हुआ होता है, उसके बाद वे वह ज्ञान या अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं जो उनमें होनी चाहिए। सत्य का अनुभव कर लेने पर, यह मनुष्य के अभ्यास का मार्ग होता है। अभ्यास का यह मार्ग हमेशा वही नहीं रहता क्योंकि लोगों के अनुभव भिन्न-भिन्न होते हैं और जिन चीज़ों का लोग अनुभव करते हैं, वे भी भिन्न-भिन्न होती हैं। इस तरह, पवित्र आत्मा की वही प्रबुद्धता भिन्न-भिन्न ज्ञान और अभ्यास में परिणत होती है, क्योंकि प्रबुद्धता प्राप्त करने वाले लोग भिन्न-भिन्न होते हैं। कुछ लोग अभ्यास के दौरान मामूली गलतियाँ करते हैं जबकि कुछ लोग बड़ी गलतियाँ करते हैं, और कुछ लोग तो सिर्फ गलतियाँ ही करते हैं। क्योंकि लोगों की समझने की क्षमता भिन्न होती हैं और उनकी अंतर्निहित क्षमता भी भिन्न होती है। कुछ लोग किसी सन्देश को सुनकर उसे एक तरह से समझते हैं, जबकि कुछ लोग किसी सत्य को सुनकर उसे दूसरी तरह से समझते हैं। कुछ लोग जरा-सा भटक जाते हैं; जबकि कुछ लोग सत्य के अर्थ को बिल्कुल भी नहीं समझते। इसलिए, इंसान की समझ ही तय करती है कि वह दूसरों की अगुवाई कैसे करेगा; यह बिल्कुल सत्य है, क्योंकि इंसान का कार्य उसके अस्तित्व की अभिव्यक्ति ही है। जो लोग सत्य की समझ रखने वाले लोगों की अगुवाई में होते हैं, उनकी भी सत्य की समझ सही होगी। अगर ऐसे लोग हैं भी जिनकी समझ में त्रुटियाँ हैं, तो भी ऐसे लोग बहुत कम हैं, और सभी में त्रुटियाँ नहीं होंगी। यदि किसी की सत्य की समझ में त्रुटियाँ हैं, तो निस्संदेह उनमें भी त्रुटियाँ होंगी जो उसका अनुसरण करते हैं। ऐसे लोग हर तरह से गलत होंगे। अनुयायियों की सत्य की समझ की मात्रा

मुख्य रूप से कर्मियों पर निर्भर करती है। निस्संदेह, परमेश्वर से आया सत्य सही और त्रुटिहीन है, और इसमें कोई संदेह नहीं है। परन्तु, कर्मी पूरी तरह से सही नहीं होते और उन्हें पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। यदि कर्मियों के पास सत्य का अभ्यास करने का बहुत व्यावहारिक तरीका है, तो अनुयायियों के पास भी अभ्यास का तरीका होगा। यदि कर्मियों के पास सत्य का अभ्यास करने का कोई तरीका न होकर, केवल सिद्धांत है, तो अनुयायियों में कोई वास्तविकता नहीं होगी। अनुयायियों की क्षमता और स्वभाव जन्म से ही निर्धारित होते हैं और वे कार्यकर्ताओं के साथ संबद्ध नहीं होते, परन्तु अनुयायियों के सत्य को समझने और परमेश्वर को जानने की सीमा कर्मियों पर निर्भर करती है (यह बात केवल कुछ लोगों पर ही लागू होती है)। जैसा कर्मी होगा, वैसे ही उसके अनुयायी होंगे जिनकी वह अगुवाई करता है। कर्मी पूरी तरह से अपने ही अस्तित्व को व्यक्त करता है। वह जिन चीज़ों की अपेक्षा अपने अनुयायियों से करता है, उन्हीं चीज़ों को वह स्वयं प्राप्त करना चाहता है या प्राप्त करने में समर्थ होता है। अधिकांश कर्मी जो कुछ स्वयं करते हैं, उसी के आधार पर अपने अनुयायियों से अपेक्षाएँ करते हैं, इसके बावजूद कि उनके अनुयायी बहुत-सी चीज़ों को बिल्कुल भी प्राप्त नहीं कर पाते—और जिस चीज़ को इंसान प्राप्त नहीं कर पाता, वह उसके प्रवेश में बाधा बन जाती है।

उन लोगों के कार्य में बहुत कम विचलन होता है, जो काट-छाँट, निपटे जाने, न्याय और ताड़ना से होकर गुज़र चुके होते हैं, और उनके कार्य की अभिव्यक्ति भी कहीं अधिक सटीक होती है। जो लोग कार्य करने की अपनी स्वाभाविकता पर निर्भर करते हैं, वे काफी बड़ी गलतियाँ करते हैं। अपूर्ण लोगों के कार्य में उनकी स्वाभाविकता बहुत अधिक अभिव्यक्त होती है, जो पवित्र आत्मा के कार्य में बड़ा अवरोध उत्पन्न करती है। किसी व्यक्ति की क्षमता कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसे भी परमेश्वर के आदेश का कार्य करने से पहले काट-छाँट, निपटे जाने और न्याय से गुज़रना ही चाहिए। यदि वह ऐसे न्याय से होकर नहीं गुज़रा है, तो उसका कार्य, चाहे कितनी भी अच्छी तरह से क्यों न किया गया हो, सत्य के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हो सकता, वह हमेशा उसकी अपनी स्वाभाविकता और मानवीय भलाई का परिणाम होता है। काट-छाँट, निपटे जाने और न्याय से होकर गुज़र चुके लोगों का कार्य उन लोगों के कार्य से कहीं अधिक सटीक होता है, जिनकी काट-छाँट, निपटारा और न्याय नहीं किया गया है। जो लोग न्याय से होकर नहीं गुज़रे हैं, वे मानव-देह और विचारों के सिवाय और कुछ भी व्यक्त नहीं करते, जिनमें बहुत सारी मानव-बुद्धि और जन्मजात प्रतिभा मिली होती है। यह मनुष्य द्वारा परमेश्वर के कार्य की सटीक अभिव्यक्ति नहीं है। जो लोग

ऐसे लोगों का अनुसरण करते हैं, वे अपनी जन्मजात क्षमता द्वारा उनके सामने लाए जाते हैं। चूँकि वे मनुष्य की अंतर्दृष्टि और अनुभव को बहुत अधिक व्यक्त करते हैं, जो परमेश्वर के मूल इरादे से लगभग कटे हुए और उससे बहुत भटके हुए होते हैं, इसलिए इस प्रकार के व्यक्ति का कार्य लोगों को परमेश्वर के सम्मुख नहीं ला पाता, बल्कि वह उन्हें मनुष्य के सामने ले आता है। इसलिए, जो लोग न्याय और ताड़ना से होकर नहीं गुज़रे हैं, वे परमेश्वर के आदेश के कार्य को क्रियान्वित करने योग्य नहीं हैं। योग्य कर्मी का कार्य लोगों को सही मार्ग पर लाकर उन्हें सत्य में बेहतर प्रवेश प्रदान कर सकता है। उसका कार्य लोगों को परमेश्वर के सम्मुख ला सकता है। इसके अतिरिक्त, जो कार्य वह करता है, वह भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न हो सकता है, और वह नियमों से बँधा हुआ नहीं होता, उन्हें मुक्ति और स्वतंत्रता तथा जीवन में क्रमश: आगे बढ़ने और सत्य में अधिक गहन प्रवेश करने की क्षमता प्रदान करता है। अयोग्य कर्मी का कार्य कम पड़ जाता है। उसका कार्य मूर्खतापूर्ण होता है। वह लोगों को केवल नियमों के अधीन ला सकता है; और लोगों से उसकी अपेक्षाएँ हर व्यक्ति के लिए भिन्न-भिन्न नहीं होतीं; वह लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुसार कार्य नहीं करता। इस प्रकार के कार्य में बहुत अधिक नियम और सिद्धांत होते हैं, और वह लोगों को वास्तविकता में नहीं ला सकता, न ही वह उन्हें जीवन में विकास के सामान्य अभ्यास में ला सकता है। वह लोगों को केवल कुछ बेकार नियमों का पालन करने में ही सक्षम बना सकता है। ऐसा मार्गदर्शन लोगों को केवल भटका सकता है। वह तुम्हें अपने जैसा बनाने में तुम्हारी अगुआई करता है; वह तुम्हें अपने स्वरूप में ला सकता है। इस बात को समझने के लिए कि अगुआ योग्य हैं या नहीं, अनुयायियों को अगुवाओं के उस मार्ग को जिस पर वे लोगों को ले जा रहे हैं और उनके कार्य के परिणामों को देखना चाहिए, और यह भी देखना चाहिए कि अनुयायी सत्य के अनुसार सिद्धांत पाते हैं या नहीं और अपने रूपांतरण के लिए उपयुक्त अभ्यास के तरीके प्राप्त करते हैं या नहीं। तुम्हें विभिन्न प्रकार के लोगों के विभिन्न कार्यों के बीच भेद करना चाहिए; तुम्हें मूर्ख अनुयायी नहीं होना चाहिए। यह लोगों के प्रवेश के मामले पर प्रभाव डालता है। यदि तुम यह भेद करने में असमर्थ हो कि किस व्यक्ति की अगुआई में एक मार्ग है और किसकी अगुआई में नहीं है, तो तुम आसानी से धोखा खा जाओगे। इस सबका तुम्हारे अपने जीवन के साथ सीधा संबंध है। अपूर्ण लोगों के कार्य में बहुत अधिक स्वाभाविकता होती है; उसमें बहुत अधिक मानवीय इच्छा मिली हुई होती है। उनका अस्तित्व स्वाभाविकता है—जिसके साथ वे पैदा हुए हैं। वह निपटे जाने के बाद का जीवन या रूपांतरित किए जाने के बाद की वास्तविकता नहीं है। ऐसा व्यक्ति

उन्हें सहारा कैसे दे सकता हैं, जो जीवन की खोज कर रहे हैं? मनुष्य का जीवन मूलत: उसकी जन्मजात बुद्धि या प्रतिभा है। इस प्रकार की बुद्धि या प्रतिभा मनुष्य से परमेश्वर की सटीक अपेक्षाओं से काफी दूर होती है। यदि किसी मनुष्य को पूर्ण नहीं किया गया है और उसके भ्रष्ट स्वभाव की काट-छाँट नहीं की गई है और उससे निपटा नहीं गया है, तो उसकी अभिव्यक्ति और सत्य के बीच एक बहुत बड़ा अंतर होगा; उसकी अभिव्यक्ति में उसकी कल्पना और एकतरफा अनुभव जैसी अस्पष्ट चीज़ों का मिश्रण होगा। इतना ही नहीं, वह कैसे भी कार्य क्यों न करे, लोग यही महसूस करते हैं कि उसमें ऐसा कोई समग्र लक्ष्य और ऐसा कोई सत्य नहीं है, जो सभी लोगों के प्रवेश के लिए उपयुक्त हो। लोगों से जो अपेक्षाएँ की जाती हैं, उनमें से अधिकांश उनकी योग्यता से परे होती हैं, मानो वे मचान पर बैठने के लिए मजबूर की जा रही बतख़ें हों। यह मनुष्य की इच्छा का कार्य है। मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव, उसके विचार और उसकी धारणाएँ उसके शरीर के सभी अंगों में व्याप्त हैं। मनुष्य सत्य का अभ्यास करने की प्रवृत्ति के साथ पैदा नहीं होता, न ही उसमें सीधे तौर पर सत्य को समझने की प्रवृत्ति होती है। उसमें मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव जोड़ दो—जब इस प्रकार का स्वाभाविक व्यक्ति कार्य करता है, तो क्या इससे व्यवधान नहीं उत्पन्न होते? परंतु जो मनुष्य पूर्ण किया जा चुका है, उसके पास सत्य का अनुभव होता है जिसे लोगों को समझना चाहिए, और उसके पास अपने भ्रष्ट स्वभाव का ज्ञान होता है, जिससे उसके कार्य की अस्पष्ट और अवास्तविक चीज़ें धीरे-धीरे कम हो जाती हैं, मानवीय मिलावटें पहले से कम हो जाती हैं, और उसका काम और सेवा परमेश्वर द्वारा अपेक्षित मानकों के अधिक करीब पहुँच जाता है। इस प्रकार, उसका काम सत्य-वास्तविकता में प्रवेश कर गया है और वह वास्तविक भी बन गया है। मनुष्य के मन के विचार विशेष रूप से पवित्र आत्मा के कार्य को अवरुद्ध कर देते हैं। मनुष्य के पास समृद्ध कल्पना और उचित तर्क होते हैं, और उसके पास मामलों से निपटने का लंबा अनुभव होता है। यदि मनुष्य के ये पहलू काट-छाँट और सुधार से होकर नहीं गुज़रते, तो वे सभी कार्य की बाधाएँ हैं। इसलिए मनुष्य का कार्य सटीकता के सर्वोच्च स्तर तक नहीं पहुँच सकता, विशेषकर अपूर्ण लोगों का कार्य।

मनुष्य का कार्य एक विस्तार और सीमा के भीतर रहता है। एक व्यक्ति केवल किसी निश्चित चरण के कार्य को करने में ही समर्थ होता है, वह संपूर्ण युग का कार्य नहीं कर सकता—अन्यथा, वह लोगों को नियमों के भीतर ले जाएगा। मनुष्य के कार्य को केवल एक विशेष समय या चरण पर ही लागू किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य के अनुभव का एक दायरा होता है। परमेश्वर के कार्य की तुलना

मनुष्य के कार्य से नहीं की जा सकती। मनुष्य के अभ्यास करने के तरीके और सत्य का उसका ज्ञान, ये सभी एक विशेष दायरे में लागू होते हैं। तुम यह नहीं कह सकते कि जिस मार्ग पर मनुष्य चलता है वह पूरी तरह से पवित्र आत्मा की इच्छा है, क्योंकि मनुष्य को केवल पवित्र आत्मा द्वारा ही प्रबुद्ध किया जा सकता है और उसे पवित्र आत्मा से पूरी तरह से नहीं भरा जा सकता। जिन चीज़ों को मनुष्य अनुभव कर सकता है, वे सभी सामान्य मानवता के दायरे के भीतर हैं और वे सामान्य मानवीय बुद्धि में मौजूद विचारों की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सकतीं। वे सभी लोग, जो सत्य-वास्तविकता को जी सकते हैं, इस सीमा के भीतर अनुभव करते हैं। जब वे सत्य का अनुभव करते हैं, तो यह हमेशा पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध सामान्य मानवीय जीवन का अनुभव होता है; यह उस तरह से अनुभव करना नहीं है जो सामान्य मानवीय जीवन से भटक जाता है। वे अपने मानवीय जीवन को जीने की बुनियाद पर पवित्र आत्मा के द्वारा प्रबुद्ध किए गए सत्य का अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह सत्य हर व्यक्ति के लिए अलग होता है, और इसकी गहराई उस व्यक्ति की अवस्था से संबंधित होती है। यह कहा जा सकता है कि जिस मार्ग पर वे चलते हैं वह ऐसे व्यक्ति का सामान्य मानवीय जीवन है जो सत्य की खोज कर रहा है, और इसे ऐसा मार्ग कहा जा सकता है जिस पर पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध कोई सामान्य व्यक्ति चल चुका है। कोई यह नहीं कह सकता कि जिस मार्ग पर वे चलते हैं वह ऐसा मार्ग है जिस पर पवित्र आत्मा चलता है। सामान्य मानवीय अनुभव में, क्योंकि जो लोग अनुसरण करते हैं वे एक समान नहीं होते, इसलिए पवित्र आत्मा का कार्य भी समान नहीं होता। इसके अतिरिक्त, क्योंकि जिन परिवेशों का लोग अनुभव करते हैं और उनके अनुभव की सीमाएँ एक समान नहीं होतीं, इसलिए उनके मन और विचारों के मिश्रण की वजह से, उनका अनुभव विभिन्न अंशों तक मिश्रित हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भिन्न व्यक्तिगत परिस्थितियों के अनुसार ही किसी सत्य को समझता है। सत्य के वास्तविक अर्थ की उसकी समझ पूर्ण नहीं होती और यह उसका केवल एक या कुछ ही पहलू होते हैं। मनुष्य सत्य के जिस दायरे का अनुभव करता है, वह प्रत्येक इंसान की परिस्थितियों के अनुरूप बदलता है। इस तरह, एक ही सत्य के बारे में विभिन्न लोगों द्वारा व्यक्त ज्ञान एक समान नहीं होता। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य के अनुभव की हमेशा सीमाएँ होती हैं और यह पवित्र आत्मा की इच्छा को पूरी तरह से नहीं दर्शा सकता, और न ही मनुष्य के कार्य को परमेश्वर का कार्य समझा जा सकता, फिर भले ही जो कुछ मनुष्य द्वारा व्यक्त किया गया है, वह परमेश्वर की इच्छा से बहुत बारीकी से मेल क्यों न खाता हो, भले ही मनुष्य का अनुभव पवित्र आत्मा द्वारा किए जाने वाले पूर्ण करने के कार्य के बेहद करीब ही क्यों न

हो। मनुष्य केवल परमेश्वर का सेवक हो सकता है, जो केवल वही कार्य करता है जो परमेश्वर उसे सौंपता है। मनुष्य केवल पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध ज्ञान और व्यक्तिगत अनुभवों से प्राप्त सत्यों को ही व्यक्त कर सकता है। मनुष्य अयोग्य है और पवित्र आत्मा का निर्गम बनने की शर्तों को पूरा नहीं करता। वह यह कहने का हकदार नहीं है कि उसका कार्य परमेश्वर का कार्य है। मनुष्य के पास मनुष्य के कार्य करने के सिद्धांत हैं, सभी लोगों के अनुभव अलग होते हैं और उनकी स्थितियाँ अलग होती हैं। मनुष्य के कार्य में पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता के अंतर्गत उसके सभी अनुभव शामिल होते हैं। ये अनुभव केवल मनुष्य के अस्तित्व का ही प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, ये परमेश्वर के अस्तित्व का या पवित्र आत्मा की इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं करते। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य जिस मार्ग पर चलता है, उसी पर पवित्र आत्मा भी चलता है क्योंकि मनुष्य का कार्य परमेश्वर के कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, मनुष्य के कार्य और अनुभव पवित्र आत्मा की संपूर्ण इच्छा नहीं हैं। मनुष्य का कार्य नियमों के चक्कर में पड़ सकता है, और उसकी कार्य-पद्धति आसानी से एक दायरे में सीमित हो जाती है और यह लोगों की स्वतंत्र मार्ग पर अगुवाई करने में असमर्थ होती है। अधिकांश अनुयायी एक सीमित दायरे में जीवन जीते हैं, और उनके अनुभव करने का तरीका भी अपने दायरे में सीमित होता है। मनुष्य का अनुभव हमेशा सीमित होता है; उसकी कार्य-पद्धति भी कुछ प्रकारों तक ही सीमित होती है और इसकी तुलना पवित्र आत्मा के कार्य से या स्वयं परमेश्वर के कार्य से नहीं की जा सकती—क्योंकि अंततः मनुष्य का अनुभव सीमित होता है। परमेश्वर अपना कार्य चाहे जिस तरह करे, वह किसी नियम से बंधा नहीं होता; इसे जैसे भी किया जाए, यह किसी एक पद्धति तक सीमित नहीं होता। परमेश्वर के कार्य के किसी प्रकार के कोई नियम नहीं होते—उसका समस्त कार्य मुक्त और स्वतंत्र होता है। भले ही मनुष्य परमेश्वर का अनुसरण करते हुए कितना ही समय क्यों न बिताए, वह उसके निचोड़कर ऐसे नियम नहीं निकाल सकता जो परमेश्वर के कार्य करने के तरीके का संचालन करते हों। यद्यपि उसके कार्य के सिद्धांत हैं, फिर भी वह कार्य हमेशा नए-नए तरीकों से किया जाता है और उसमें नये-नये विकास होते रहते हैं, और यह मनुष्य की पहुँच से परे होता है। एक ही समयावधि के दौरान, परमेश्वर के पास भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य और लोगों की अगुवाई करने के भिन्न-भिन्न तरीके हो सकते हैं, ताकि लोगों के पास हमेशा नए-नए प्रवेश और नए-नए परिवर्तन हों। तुम उसके कार्य के नियमों का पता नहीं लगा सकते क्योंकि वह हमेशा नए तरीकों से कार्य करता है, और केवल इस तरह परमेश्वर के अनुयायी नियमों से नहीं बंधते। स्वयं परमेश्वर का कार्य हमेशा लोगों की

धारणाओं से परहेज करता है और उनका विरोध करता है। जो लोग सच्चे हृदय से उसका अनुसरण और उसकी खोज करते हैं, केवल वही अपने स्वभाव में बदलाव लाकर स्वतंत्रता से जी सकते हैं, वे किसी नियम या किसी भी धार्मिक धारणा के बंधन में नहीं बंधते। मनुष्य का कार्य लोगों से उसके अपने अनुभव और जो वह स्वयं हासिल कर सकता है, उसके आधार पर माँगें करता है। इन अपेक्षाओं का स्तर एक निश्चित दायरे के भीतर सीमित होता है, और अभ्यास के तरीके भी बहुत सीमित होते हैं। इसलिए अनुयायी अनजाने में ही सीमित दायरे के भीतर जीवन जीते हैं; जैसे-जैसे समय गुज़रता है, ये बातें नियम और रिवाज बन जाती हैं। यदि एक अवधि के कार्य की अगुवाई कोई ऐसा व्यक्ति करता है जो परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से पूर्ण किए जाने से नहीं गुज़रा है और जिसने न्याय प्राप्त नहीं किया है, तो उसके सभी अनुयायी धर्मावलम्बी बन जाएँगे और परमेश्वर का विरोध करने में माहिर हो जाएँगे। इसलिए, यदि कोई योग्य अगुवा है, तो उसने अवश्य ही न्याय से गुज़रकर, पूर्ण किया जाना स्वीकार किया होगा। जो लोग न्याय से नहीं गुज़रे हैं, उनमें भले ही पवित्र आत्मा का कार्य हो, वे केवल अस्पष्ट और अवास्तविक चीज़ों को ही व्यक्त करते हैं। समय के साथ, वे लोगों को अस्पष्ट और अलौकिक नियमों में ले जाएँगे। परमेश्वर का कार्य मनुष्य की देह से मेल नहीं खाता; वह मनुष्य के विचारों से मेल नहीं खाता, बल्कि मनुष्य की धारणाओं का विरोध करता है; यह अस्पष्ट धार्मिक रंग से कलंकित नहीं होता। परमेश्वर के कार्य के परिणामों को ऐसा व्यक्ति प्राप्त नहीं कर सकता है जो उसके द्वारा पूर्ण नहीं किया गया है; वे मनुष्य की सोच से परे होते हैं।

जो कार्य मनुष्य के मन में होता है उसे वह बहुत आसानी से प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिए, धार्मिक संसार के पादरी और अगुवे अपना कार्य करने के लिए अपनी प्रतिभाओं और पदों पर भरोसा रखते हैं। जो लोग लम्बे समय तक उनका अनुसरण करते हैं वे उनकी प्रतिभाओं से संक्रमित होकर उनके अस्तित्व के कुछ हिस्से से प्रभावित हो जाते हैं। वे लोगों की प्रतिभा, योग्यता और ज्ञान को निशाना बनाते हैं, वे अलौकिक चीज़ों और अनेक गहन और अवास्तविक सिद्धांतों पर ध्यान देते हैं (निस्संदेह, ये गहन सिद्धांत अप्राप्य हैं)। वे लोगों के स्वभाव में बदलाव पर ध्यान न देकर, लोगों को उपदेश देने और कार्य करने का प्रशिक्षण देने, लोगों के ज्ञान और उनके भरपूर धार्मिक सिद्धांतों को सुधारने पर ध्यान देते हैं। वे इस बात पर ध्यान नहीं देते कि लोगों के स्वभाव में कितना परिवर्तन हुआ है, न ही इस बात पर ध्यान देते हैं कि लोग कितना सत्य समझते हैं। उन्हें लोगों के सार से कोई लेना-देना नहीं होता, वे लोगों की सामान्य और असामान्य दशा को जानने की कोशिश तो बिल्कुल नहीं करते। वे लोगों की धारणाओं का विरोध नहीं

करते, न ही वे अपनी धारणाओं को प्रकट करते हैं, वे लोगों की कमियों या भ्रष्टता के लिए उनकी काट-छाँट तो बिल्कुल भी नहीं करते। उनका अनुसरण करने वाले अधिकांश लोग अपनी प्रतिभा से सेवा करते हैं, और जो कुछ वे प्रदर्शित करते हैं, वह धार्मिक धारणाएँ और धर्म-संबंधी सिद्धांत होते हैं, जिनका वास्तविकता से कोई नाता नहीं होता और वे लोगों को जीवन प्रदान करने में पूरी तरह से असमर्थ होते हैं। वास्तव में, उनके कार्य का सार प्रतिभाओं का पोषण करना, प्रतिभाहीन व्यक्ति का पोषण करके उसे एक योग्य सेमेनरी स्नातक बनाना है जो बाद में कार्य और अगुवाई करता है। क्या तुम परमेश्वर के छः हज़ार वर्षों के कार्य में किसी नियम का पता लगा सकते हो? मनुष्य के कार्य में बहुत से नियम और प्रतिबन्ध होते हैं, और मानवीय मस्तिष्क बहुत ही रूढ़िवादी होता है। इसलिए मनुष्य जो कुछ व्यक्त करता है, वह उसके अनुभव के दायरे में मौजूद उसका ज्ञान और एहसास होता है। मनुष्य इसके अलावा कुछ भी व्यक्त करने में असमर्थ है। मनुष्य के अनुभव या उसका ज्ञान, उसकी जन्मजात प्रतिभाओं या सहज-प्रवृत्ति से उत्पन्न नहीं होते; वे परमेश्वर के मार्गदर्शन और उसकी प्रत्यक्ष चरवाही की वजह से उत्पन्न होते हैं। मनुष्य के पास केवल इस चरवाही को स्वीकार करने का गुण होता है और उसके पास वह गुण नहीं होता जिससे वह सीधे तौर पर यह अभिव्यक्त करे कि दिव्यता क्या है। मनुष्य स्रोत बनने में असमर्थ है; वह केवल ऐसा पात्र हो सकता है जो स्रोत से पानी को स्वीकार करता है; यह मनुष्य की सहज-प्रवृत्ति है, ऐसा गुण है जो मनुष्य होने के नाते उसमें होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने वाले उस गुण को गँवा देता है और मानवीय सहज-प्रवृत्ति को गँवा देता है, तो वह व्यक्ति उसे भी खो देता है जो अत्यंत बहुमूल्य है, और सृजित मनुष्य के कर्तव्य को भी गँवा देता है। यदि किसी मनुष्य में परमेश्वर के वचन या कार्य का ज्ञान या अनुभव नहीं है, तो वह व्यक्ति अपना कर्तव्य, ऐसा कर्तव्य जो उसे एक सृजित प्राणी के रूप में निभाना चाहिए, गँवा देता है, और वह सृजित प्राणी के रूप में अपनी गरिमा गँवा देता है। यह व्यक्त करना परमेश्वर की सहज-प्रवृत्ति है कि दिव्यता क्या है, फिर चाहे इसे देह में व्यक्त किया जाए या सीधे तौर पर पवित्रात्मा द्वारा व्यक्त किया जाए; यह परमेश्वर की सेवकाई है। मनुष्य परमेश्वर के कार्य के दौरान या उसके बाद अपना अनुभव या ज्ञान व्यक्त करता है (अर्थात्, जो वह है उसे व्यक्त करता है); यह मनुष्य की सहज-प्रवृत्ति और कर्तव्य है, और वही मनुष्य को प्राप्त करना चाहिए। यद्यपि मनुष्य की अभिव्यक्ति परमेश्वर की अभिव्यक्ति से बहुत ही कम होती है, हालाँकि मनुष्य की अभिव्यक्ति बहुत से नियमों से बंधी होती है, फिर भी मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाना चाहिए और उसे वह कार्य करना चाहिए जो उसे करना

है। मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए, और उसे कोई भी संदेह नहीं होना चाहिए।

वर्षों तक कार्य करने के पश्चात्, मनुष्य अपने बरसों के काम कुछ अनुभव और साथ ही संचित बुद्धि और नियमों का सार निकालेगा। जो इंसान लम्बे समय तक कार्य करता रहा है, वह जानता है कि पवित्र आत्मा के कार्य की गति को कैसे समझना है; वह जानता है कि पवित्र आत्मा कब कार्य कर रहा है और कब नहीं; वह जानता है कि ज़िम्मेदारी वहन करते हुए कैसे संगति करनी है; वह पवित्र आत्मा के कार्य की सामान्य स्थिति से और जीवन में लोगों के विकास की सामान्य स्थिति से अवगत होता है। वह ऐसा व्यक्ति है जिसने वर्षों तक कार्य किया है और जो पवित्र आत्मा के कार्य को जानता है। जिन लोगों ने लम्बे समय तक कार्य किया है वे दृढ़निश्चय से और बिना हड़बड़ाए बोलते हैं; यहाँ तक कि जब उनके पास कहने के लिए कुछ भी नहीं होता, तब भी वे शांत रहते हैं। भीतर ही भीतर वे पवित्र आत्मा के कार्य को खोजने के लिए प्रार्थना करते रह सकते हैं। वे कार्य करने में अनुभवी होते हैं। जिस व्यक्ति ने लम्बे समय तक कार्य किया है और जिसके पास बहुत से सबक और अनुभव हैं, उसके भीतर ऐसा बहुत कुछ होता है जो पवित्र आत्मा के कार्य को बाधित करता है; यह उसके लम्बी-अवधि के कार्य का दोष है। कोई व्यक्ति जिसने अभी-अभी कार्य करना आरम्भ किया है, उसमें मानवीय सबक या अनुभव की विशुद्धियाँ नहीं हैं, उसे खासकर यह पता नहीं होता कि पवित्र आत्मा किस प्रकार कार्य करता है। हालाँकि, कार्य के दौरान, वह धीरे-धीरे यह समझना सीख जाता है कि पवित्र आत्मा किस प्रकार कार्य करता है और इस बात से अवगत हो जाता है कि पवित्र आत्मा के कार्य को पाने के लिए क्या करना है, दूसरों के मर्मस्थलों पर सटीक प्रहार करने के लिए क्या करना है, और ऐसा अन्य सामान्य ज्ञान, जो उन लोगों के पास होना चाहिए, जो कार्य करते हैं। समय के साथ, वह कार्य करने की ऐसी बुद्धि और साधारण ज्ञान में सिद्ध-हस्त हो जाता है, और कार्य करते समय इन्हें आसानी से उपयोग करने लगता है। हालाँकि, जब पवित्र आत्मा अपने कार्य करने के तरीके को बदलता है, तो वह तब भी कार्य करने के अपने पुराने ज्ञान और पुराने नियमों से चिपका रहता है, उसे कार्य करने के नए तौर-तरीकों का बहुत कम ज्ञान होता है। वर्षों का कार्य और पवित्र आत्मा की उपस्थिति और मार्गदर्शन से भरपूर होना, उसे अधिकाधिक कार्य करने के सबक और अनुभव देते हैं। ऐसी चीज़ें उसे आत्मविश्वास से भर देती हैं जो घमण्ड नहीं है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य अपने कार्य से बहुत खुश होता है और उस साधारण ज्ञान से बहुत तुष्ट होता है जो उसने पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में प्राप्त किया है।

विशेष रूप से, ऐसी चीज़ें जिन्हें अन्य लोगों ने प्राप्त नहीं किया है या समझा नहीं है, उसे स्वयं में और अधिक आत्मविश्वास प्रदान करती हैं; ऐसा प्रतीत होता है कि उसके अंदर पवित्र आत्मा के कार्य की अग्नि कभी नहीं बुझायी जा सकती, जबकि अन्य लोग इस विशेष सम्मान के योग्य नहीं होते हैं। केवल इसी तरह के लोग जिन्होंने वर्षों तक कार्य किया है और जिनकी उपयोगिता बहुत अधिक है, इसका आनन्द लेने के योग्य होते हैं। ये चीज़ें उसके द्वारा पवित्र आत्मा के नए कार्य को स्वीकार करने में एक बड़ा अवरोध बन जाती हैं। भले ही वह नए कार्य को स्वीकार कर सकता है, फिर भी वह रातों-रात यह नहीं कर पाता। इसे स्वीकार करने से पहले उसे निश्चित ही कई तरह के उतार-चढ़ाव से गुज़रना पड़ता है। इस स्थिति को उसकी पुरानी धारणाओं से निपटने और उसके पुराने स्वभाव का न्याय करने के बाद धीरे-धीरे ही पलटा जा सकता है। इन चरणों से गुज़रे बिना, वह चीज़ों को नहीं छोड़ता और आसानी से उन नई शिक्षाओं और कार्य को स्वीकार नहीं करता जो उसकी पुरानी धारणाओं से मेल नहीं खातीं। मनुष्य के अंदर मौजूद इस चीज़ से निपटना सबसे कठिन कार्य है, और इसे बदलना आसान नहीं होता। यदि, एक कर्मी के रुप में, वह पवित्र आत्मा के कार्य की समझ झट से प्राप्त करने और उसकी गतिशीलता का सारांश निकालने में सक्षम है, और साथ ही यदि वह कार्य के अपने अनुभवों द्वारा बाधित न होने में सक्षम है और पुराने कार्य के आलोक में नए कार्य को स्वीकार करने में सक्षम है, तो वह एक बुद्धिमान मनुष्य और योग्य कर्मी है। लोग अक्सर ऐसे होते हैं : अपने कार्य के अनुभव का सारांश निकालने में सक्षम हुए बिना वे कई वर्षों तक कार्य करते हैं, या अपने कार्य से संबंधित अनुभव और बुद्धि का सारांश निकालने के बाद, उनका नए कार्य को स्वीकार करना बाधित हो जाता है और वे पुराने और नए कार्य को ठीक से समझ नहीं पाते या उससे सही तरह से बर्ताव नहीं कर पाते। लोगों को सँभालना वास्तव में कठिन है! तुममें से अधिकांश लोग ऐसे ही हैं। जिन लोगों ने वर्षों तक पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव किया है, उन्हें नए कार्य को स्वीकार करना मुश्किल लगता है, वे हमेशा ऐसी धारणाओं से भरे रहते हैं जिन्हें वे छोड़ नहीं पाते, जबकि जिस व्यक्ति ने अभी-अभी कार्य करना आरम्भ किया है, उसमें कार्य के बारे में साधारण ज्ञान की कमी होती है और वह बहुत ही सरल मामलों को भी सँभाल नहीं पाता। तुम लोगों को संभालना वास्तव में बहुत मुश्किल है। जो लोग थोड़े वरिष्ठ हैं, वे इतने घमण्डी और दंभी हैं कि वे यह भूल ही गए हैं कि वे कहाँ से आए हैं। वे छोटे लोगों को हमेशा नीची नज़रों से देखते हैं, मगर वे नए कार्य को स्वीकार नहीं कर पाते और न ही उन धारणाओं को दूर कर पाते हैं जो उन्होंने वर्षों से एकत्रित करके रखी हुई है। यद्यपि वे अज्ञानी युवा लोग

पवित्र आत्मा के नए कार्य को थोड़ा-बहुत स्वीकार तो कर लेते हैं और बहुत उत्साहित होते हैं, फिर भी वे हमेशा संभ्रमित हो जाते हैं, उन्हें पता नहीं होता कि समस्याएँ आने पर उनका सामना कैसे करना है। वे उत्साही तो हैं, मगर अज्ञानी हैं। उन्हें पवित्र आत्मा के कार्य की बहुत कम समझ होती है और वे अपने जीवन में उसका उपयोग नहीं कर पाते; यह पूरी तरह से निरर्थक सिद्धांत है। तुम जैसे बहुत से लोग हैं; कितने लोग उपयोग के लायक हैं? ऐसे कितने लोग हैं जो पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी का पालन कर सकते हैं और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हो सकते हैं? ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोगों में से जो अब तक अनुयायी रहे हैं वे बहुत आज्ञाकारी रहे हैं, परंतु वास्तव में, तुम लोगों ने अपनी धारणाओं को छोड़ा नहीं है, तुम लोग अभी भी बाइबल में खोज रहे हो, अस्पष्टता में विश्वास कर रहे हो, या धारणाओं में ही भटक रहे हो। ऐसा कोई नहीं है जो सावधानीपूर्वक आज के वास्तविक कार्य की खोज करता हो या उसकी गहराई में जाता हो। तुम लोग आज के मार्ग को अपनी पुरानी धारणाओं के साथ स्वीकार कर रहे हो। तुम लोग ऐसे विश्वास से क्या प्राप्त कर सकते हो? ऐसा कहा जा सकता है कि तुम लोगों में बहुत-सी धारणाएँ छिपी हुई हैं जो प्रकट नहीं हुई हैं, और तुम लोग उन्हें छिपाने का भरपूर प्रयास कर रहे हो और उन्हें आसानी से प्रकट नहीं करते हो। तुम लोग नए कार्य को ईमानदारी से स्वीकार नहीं करते और अपनी पुरानी धारणाओं को छोड़ने की तुम्हारी कोई योजना नहीं है; तुम लोगों के पास जीवन के बहुत-से फलसफे हैं और वे बहुत ज़्यादा हैं। तुम लोग अपनी पुरानी धारणाओं को छोड़ते नहीं हो और नए कार्य के साथ अनिच्छा से व्यवहार करते हो। तुम लोगों का हृदय बहुत ही कुटिल है, और तुम लोग नए कार्य को गंभीरता से लेने के लिए कोई कदम नहीं उठाते। क्या तुम जैसे निकम्मे लोग सुसमाचार को फैलाने का कार्य कर सकते हैं? क्या तुम लोग संपूर्ण विश्व में इसे फैलाने का कार्य करने की ज़िम्मेदारी लेने के काबिल हो? तुम लोगों के ये अभ्यास तुम्हें तुम्हारे स्वभाव को रूपान्तरित करने और परमेश्वर को जानने से रोक रहे हैं। यदि तुम्हारा यही रवैया रहा, तो तुम लोग अवश्य ही हटा दिए जाओगे।

तुम लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर के कार्य और मनुष्य के कार्य में भेद कैसे करना है। तुम मनुष्य के कार्य में क्या देख सकते हो? मनुष्य के कार्य में उसके अनुभव के बहुत से तत्व होते हैं; मनुष्य वही व्यक्त करता है जैसा वह होता है। परमेश्वर का अपना कार्य भी वही अभिव्यक्त करता है जो वह है, परंतु उसका अस्तित्व मनुष्य से भिन्न है। मनुष्य का अस्तित्व मनुष्य के अनुभव और जीवन का प्रतिनिधि है (जो कुछ मनुष्य अपने जीवन में अनुभव करता या जिससे सामना होता है, या जो उसके जीने के फलसफे

हैं), और भिन्न-भिन्न परिवेशों में रहने वाले लोग भिन्न-भिन्न अस्तित्व व्यक्त करते हैं। क्या तुम्हारे पास सामाजिक अनुभव है और तुम वास्तव में किस प्रकार अपने परिवार में रहते और उसके भीतर कैसे अनुभव करते हो, इसे तुम्हारी अभिव्यक्ति में देखा जा सकता है, जबकि तुम देहधारी परमेश्वर के कार्य से यह नहीं देख सकते कि उसके पास सामाजिक अनुभव हैं या नहीं। वह मनुष्य के सार से अच्छी तरह से अवगत है, वह सभी प्रकार के लोगों से संबंधित हर तरह के अभ्यास प्रकट कर सकता है। वह मानव के भ्रष्ट स्वभाव और विद्रोही व्यवहार को भी बेहतर ढंग से प्रकट करता है। वह सांसारिक लोगों के बीच नहीं रहता, परंतु वह नश्वर लोगों की प्रकृति और सांसारियों की समस्त भ्रष्टता से अवगत है। यही उसका अस्तित्व है। यद्यपि वह संसार के साथ व्यवहार नहीं करता, लेकिन वह संसार के साथ व्यवहार करने के नियम जानता है, क्योंकि वह मानवीय प्रकृति को पूरी तरह से समझता है। वह पवित्रात्मा के आज के और अतीत के, दोनों कार्यों के बारे में जानता है जिन्हें मनुष्य की आँखें नहीं देख सकतीं और कान नहीं सुन सकते। इसमें बुद्धि शामिल है जो कि जीने का फलसफा और चमत्कार नहीं है जिनकी थाह पाना मनुष्य के लिए कठिन है। यही उसका अस्तित्व है, लोगों के लिए खुला भी और उनसे छिपा हुआ भी है। वह जो कुछ व्यक्त करता है, वह असाधारण मनुष्य का अस्तित्व नहीं है, बल्कि पवित्रात्मा के अंतर्निहित गुण और अस्तित्व हैं। वह दुनिया भर में यात्रा नहीं करता परंतु उसकी हर चीज़ को जानता है। वह "वन-मानुषों" के साथ संपर्क करता है जिनके पास कोई ज्ञान या अंतर्दृष्टि नहीं होती, परंतु वह ऐसे वचन व्यक्त करता है जो ज्ञान से ऊँचे और महान लोगों से ऊपर होते हैं। वह मंदबुद्धि और संवेदनशून्य लोगों के समूह में रहता है जिनमें न तो मानवीयता होती है और न ही वे मानवीय परंपराओं और जीवन को समझते हैं, परंतु वह लोगों से सामान्य मानवता का जीवन जीने के लिए कह सकता है, साथ ही वह इंसान की नीच और अधम मानवता को भी प्रकट करता है। यह सब-कुछ उसका अस्तित्व ही है, किसी भी रक्त-माँस के इंसान के अस्तित्व की तुलना में कहीं अधिक ऊँचा है। उसके लिए, यह आवश्यक नहीं है कि वह उस कार्य को करने के लिए जो उसे करना है और भ्रष्ट मनुष्य के सार को पूरी तरह से प्रकट करने के लिए जटिल, बोझिल और पतित सामाजिक जीवन का अनुभव करे। पतित सामाजिक जीवन उसके देह को कुछ नहीं सिखाता। उसके कार्य और वचन केवल मनुष्य की अवज्ञा को प्रकट करते हैं, वे संसार के साथ निपटने के लिए मनुष्य को अनुभव और सबक प्रदान नहीं करते। जब वह मनुष्य को जीवन की आपूर्ति करता है तो उसे समाज या मनुष्य के परिवार की जाँच-पड़ताल करने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य को उजागर

करना और न्याय करना उसके देह के अनुभवों की अभिव्यक्ति नहीं है; यह लम्बे समय तक मनुष्य की अवज्ञा को जानने के बाद, उसका मनुष्य की अधार्मिकता को प्रकट करना और मनुष्य की भ्रष्टता से घृणा करना है। परमेश्वर के सारे कार्य का तात्पर्य मनुष्य के सामने अपने स्वभाव को प्रकट करना और अपने अस्तित्व को व्यक्त करना है। केवल वही इस कार्य को कर सकता है; इस कार्य को रक्त-माँस का व्यक्ति नहीं कर सकता। परमेश्वर के कार्य से, मनुष्य यह नहीं बता सकता कि परमेश्वर किस प्रकार का व्यक्ति है। मनुष्य परमेश्वर के कार्य के आधार पर उसे एक सृजित व्यक्ति के रूप में वर्गीकृत भी नहीं कर सकता। परमेश्वर का अस्तित्व भी उसे एक सृजित प्राणी के रूप में वर्गीकृत करना असंभव बना देता है। मनुष्य उसे केवल एक गैर-मानव मान सकता है, उसे यह नहीं पता कि परमेश्वर को किस श्रेणी में रखा जाए, इसलिए मनुष्य उसे परमेश्वर की श्रेणी में रखने के लिए मजबूर है। मनुष्य के लिए ऐसा करना तर्कसंगत है, क्योंकि परमेश्वर ने लोगों के बीच बहुत कार्य किया है जिसे मनुष्य नहीं कर सकता।

जिस कार्य को परमेश्वर करता है वह उसके देह के अनुभव का प्रतिनिधित्व नहीं करता; जिस कार्य को मनुष्य करता है वह मनुष्य के अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है। हर कोई अपने व्यक्तिगत अनुभव की बात करता है। परमेश्वर सीधे तौर पर सत्य व्यक्त कर सकता है, जबकि मनुष्य केवल सत्य का अनुभव करने के पश्चात् तदनुरूप अनुभव को व्यक्त कर सकता है। परमेश्वर के कार्य में कोई नियम नहीं होते और वह समय या भौगोलिक सीमाओं से मुक्त है। वह जो है उसे वह किसी भी समय, कहीं पर भी प्रकट कर सकता है। उसे जैसा अच्छा लगता है वह वैसा ही करता है। मनुष्य के कार्य में परिस्थितियाँ और सन्दर्भ होते हैं; उनके बिना, वह कार्य करने में असमर्थ होता है और वह परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान को व्यक्त करने या सत्य के बारे में अपने अनुभव को व्यक्त करने में भी असमर्थ होता है। यह बताने के लिए कि यह परमेश्वर का कार्य है या मनुष्य का, तुम्हें बस उनके बीच अन्तर की तुलना करनी है। यदि कोई कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा नहीं किया गया है और वह केवल मनुष्य का ही कार्य है, तो तुम्हें आसानी से पता चल जाएगा कि मनुष्य की शिक्षाएँ ऊँची हैं, जो किसी की भी क्षमता से परे हैं; उसके बोलने का अंदाज़, चीज़ों को सँभालने का उसका सिद्धांत और कार्य करने का उसका अनुभवी और सधा हुआ तरीका दूसरों की पहुँच से बाहर होते हैं। तुम सभी इन अच्छी क्षमता और उत्कृष्ट ज्ञान वाले लोगों की सराहना करते हो, परंतु तुम परमेश्वर के कार्य और वचनों से यह नहीं देख पाते कि उसकी मानवता कितनी ऊँची है। इसके बजाए, वह साधारण है, और कार्य करते समय, वह सामान्य और वास्तविक होता है, फिर भी नश्वर इंसान के लिए वह

असीमित भी है, जिसकी वजह से लोग उसके प्रति एक श्रद्धा का भाव रखते हैं। शायद किसी व्यक्ति का अपने कार्य में अनुभव विशेष रूप से ऊँचा हो, या उसकी कल्पना और तर्कशक्ति विशेष रूप से ऊँची हो, और उसकी मानवता विशेष रूप से अच्छी हो; ये चीज़ें केवल लोगों की प्रशंसा ही अर्जित कर सकती हैं, परंतु उनके अंदर श्रद्धा या भय जागृत नहीं कर सकतीं। सभी लोग ऐसे लोगों की प्रशंसा करते हैं जो अच्छी तरह कार्य कर सकते हैं, विशेष रुप से जिनका अनुभव गहरा होता है और जो सत्य का अभ्यास कर सकते हैं, परंतु ऐसे लोग कभी भी श्रद्धा प्राप्त नहीं कर सकते, केवल प्रशंसा और ईर्ष्या प्राप्त कर सकते हैं। परंतु जिन लोगों ने परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लिया है वे परमेश्वर की प्रशंसा नहीं करते; बल्कि उन्हें लगता है कि परमेश्वर का कार्य मनुष्य की पहुँच से परे है और यह मनुष्य के लिए अथाह है, यह तरोताज़ा और अद्भुत है। जब लोग परमेश्वर के कार्य का अनुभव करते हैं, तो उसके बारे में उनका पहला ज्ञान यह होता है कि वह अथाह, बुद्धिमान और अद्भुत है, और वे अनजाने में उसका आदर करते हैं और उस कार्य के रहस्य को महसूस करते हैं जो वह करता है, जो कि मनुष्य के दिमाग की पहुँच से परे है। लोग केवल परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करने, उसकी इच्छाओं को संतुष्ट करने में समर्थ होना चाहते हैं; वे उससे बढ़कर होने की इच्छा नहीं करते, क्योंकि जो कार्य परमेश्वर करता है वह मनुष्य की सोच और कल्पना से परे होता है और वह परमेश्वर के बदले उस कार्य को नहीं कर सकता। यहाँ तक कि मनुष्य खुद अपनी कमियों को नहीं जानता, फिर भी परमेश्वर ने एक नया मार्ग प्रशस्त किया है और वह मनुष्य को एक अधिक नए और अधिक खूबसूरत संसार में ले जाने के लिए आया है, जिससे मनुष्य ने नई प्रगति और एक नई शुरुआत की है। लोगों के मन में परमेश्वर के लिए जो भाव है वो प्रशंसा का भाव नहीं है, या सिर्फ प्रशंसा नहीं है। उनका गहनतम अनुभव श्रद्धा और प्रेम है; और उनकी भावना यह है कि परमेश्वर वास्तव में अद्भुत है। वह ऐसा कार्य करता है जिसे करने में मनुष्य असमर्थ है, और ऐसी बातें कहता है जिसे कहने में मनुष्य असमर्थ है। जिन लोगों ने परमेश्वर के कार्य का अनुभव किया है उन्हें हमेशा एक अवर्णनीय एहसास होता है। पर्याप्त गहरे अनुभव वाले लोग परमेश्वर के लिए प्रेम को समझ सकते हैं; वे हमेशा उसकी मनोरमता को महसूस कर सकते हैं, महसूस कर सकते हैं कि उसका कार्य बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण और बहुत अद्भुत है, और परिणामस्वरूप उनके बीच असीमित सामर्थ्य उपजती है। यह भय या कभी-कभार का प्रेम और श्रद्धा नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के लिए परमेश्वर की करुणा और सहिष्णुता की गहरी भावना है। हालाँकि, जिन लोगों ने उसकी ताड़ना और न्याय का अनुभव किया है, उन्हें बोध है कि वह

प्रतापी है और अपमान सहन नहीं करता। यहाँ तक कि जिन लोगों ने उसके अधिकांश कार्य का अनुभव किया है, वे भी उसकी थाह पाने में असमर्थ हैं; जो लोग सचमुच उसका आदर करते हैं, जानते हैं कि उसका कार्य लोगों की धारणाओं से मेल नहीं खाता बल्कि हमेशा उनकी धारणाओं के विरुद्ध होता है। उसे लोगों की संपूर्ण प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है या वे उसके प्रति समर्पण-भाव का दिखावा करें; बल्कि वह चाहता है कि उनके अंदर सच्ची श्रद्धा और सच्चा समर्पण हो। उसके इतने सारे कार्य में, सच्चे अनुभव वाला कोई भी व्यक्ति उसके प्रति श्रद्धा रखता है, जो प्रशंसा से बढ़कर है। लोगों ने ताड़ना और न्याय के उसके कार्य के कारण उसके स्वभाव को देखा है, और इसलिए वे हृदय से उसका आदर करते हैं। परमेश्वर श्रद्धेय और आज्ञापालन करने योग्य है, क्योंकि उसका अस्तित्व और उसका स्वभाव सृजित प्राणियों के समान नहीं है, ये सृजित प्राणियों से ऊपर हैं। परमेश्वर स्व-अस्तित्वधारी, चिरकालीन और गैर-सृजित प्राणी है, और केवल परमेश्वर ही श्रद्धा और समर्पण के योग्य है; मनुष्य इसके योग्य नहीं है। इसलिए, जिन लोगों ने उसके कार्य का अनुभव किया है और जिन्होंने सचमुच में उसे जाना है, वे उसके प्रति श्रद्धा रखते हैं। लेकिन, जो लोग उसके बारे में अपनी धारणाएँ नहीं छोड़ते—जो उसे परमेश्वर मानते ही नहीं—उनके अंदर उसके प्रति कोई श्रद्धा नहीं है, हालाँकि वे उसका अनुसरण करते हैं फिर भी उन्हें जीता नहीं जाता; वे प्रकृति से ही अवज्ञाकारी लोग हैं। वह ऐसे परिणाम को प्राप्त करने के लिए इस कार्य को करता है ताकि सभी सृजित प्राणी सृजनकर्ता का आदर करें, उसकी आराधना करें, और बिना किसी शर्त के उसके प्रभुत्व के अधीन हो सकें। उसके समस्त कार्य का लक्ष्य इसी अंतिम परिणाम को हासिल करना है। यदि जिन लोगों ने ऐसे कार्य का अनुभव कर लिया है, वे परमेश्वर का जरा-सा भी आदर नहीं करते हैं, यदि अतीत की उनकी अवज्ञा बिल्कुल भी नहीं बदलती है, तो उन्हें निश्चित ही हटा दिया जाएगा। यदि परमेश्वर के प्रति किसी व्यक्ति की प्रवृत्ति केवल दूर से ही प्रशंसा करना या सम्मान प्रकट करना है और जरा-सा भी प्रेम करना नहीं है, तो यह वो परिणाम है जिस पर वह व्यक्ति आ पहुँचा है जिसके पास परमेश्वर से प्रेम करने वाला हृदय नहीं है, और उस व्यक्ति में पूर्ण किए जाने की शर्तों का अभाव है। यदि इतना अधिक कार्य भी किसी व्यक्ति के सच्चे प्रेम को प्राप्त करने में असमर्थ है, तो इसका अर्थ है उस व्यक्ति ने परमेश्वर को प्राप्त नहीं किया है और वह असल में सत्य की खोज नहीं कर रहा। जो व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम नहीं करता, वह सत्य से भी प्रेम नहीं करता और इस तरह वह परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता, वह परमेश्वर की स्वीकृति तो बिलकुल भी प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसे लोग, पवित्र आत्मा के कार्य

का अनुभव चाहे जैसे कर लें, और न्याय का चाहे जैसे अनुभव कर लें, वे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा नहीं रख सकते। ऐसे लोगों की प्रकृति अपरिवर्तनीय होती है, और उनका स्वभाव अत्यंत दुष्ट होता है। जो लोग परमेश्वर पर श्रद्धा नहीं रखते, उन्हें हटा दिया जाएगा, वे दण्ड के पात्र बनेंगे, और उन्हें उसी तरह दण्ड दिया जाएगा जैसे दुष्टों को दिया जाता है, और ऐसे लोग उनसे भी अधिक कष्ट सहेंगे जिन्होंने अधार्मिक दुष्कर्म किए हैं।

परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों को जानना ही परमेश्वर को जानने का मार्ग है

मानवजाति के प्रबंधन का कार्य तीन चरणों में बंटा हुआ है, जिसका अर्थ यह है कि मानवजाति को बचाने का कार्य तीन चरणों में बंटा हुआ है। इन चरणों में संसार की रचना का कार्य समाविष्ट नहीं है, बल्कि ये व्यवस्था के युग, अनुग्रह के युग और राज्य के युग के कार्य के तीन चरण हैं। संसार की रचना करने का कार्य संपूर्ण मानवजाति को उत्पन्न करने का कार्य था। यह मानवजाति को बचाने का कार्य नहीं था, और मानवजाति को बचाने के कार्य से कोई संबंध नहीं रखता है, क्योंकि जब संसार की रचना हुई थी तब मानवजाति शैतान के द्वारा भ्रष्ट नहीं की गई थी, और इसलिए मानवजाति के उद्धार का कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मानवजाति को बचाने का कार्य शैतान द्वारा मानवजाति को भ्रष्ट किए जाने के बाद ही आरंभ हुआ, और इसलिए मानवजाति के प्रबंधन का कार्य भी मानवजाति के भ्रष्ट हो जाने पर ही आरम्भ हुआ। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का मनुष्य के प्रबंधन का कार्य मनुष्य को बचाने के कार्य के परिणामस्वरूप आरंभ हुआ, और यह संसार की रचना के कार्य से उत्पन्न नहीं हुआ। मानवजाति के स्वभाव के भ्रष्ट हो जाने के बाद ही प्रबंधन का कार्य अस्तित्व में आया, और इसलिए मानवजाति के प्रबंधन के कार्य में चार चरणों या चार युगों की बजाय तीन भागों का समावेश है। परमेश्वर के मानवजाति को प्रबंधित करने के कार्य का उल्लेख करने का केवल यही सही तरीका है। जब अंतिम युग समाप्त होगा, तब तक मानवजाति को प्रबंधित करने का कार्य पूर्ण समाप्ति तक पहुँच चुका होगा। प्रबंधन के कार्य के समापन का अर्थ है कि समस्त मानवजाति को बचाने का कार्य पूरी तरह से समाप्त हो गया होगा, और मानवजाति अपनी यात्रा के अंत में पहुँच चुकी होगी। समस्त मानवजाति को बचाने के कार्य के बिना, मानवजाति के प्रबंधन के कार्य का कोई अस्तित्व नहीं होता, न ही कार्य के तीन चरण होते। यह निश्चित

रूप से मानवजाति की नैतिक चरित्रहीनता की वजह से था, और क्योंकि मानवजाति को उद्धार की इतनी अधिक आवश्यकता थी, कि यहोवा ने संसार का सृजन पूरा किया और व्यवस्था के युग का कार्य आरम्भ कर दिया। केवल तभी मानवजाति के प्रबंधन का कार्य आरम्भ हुआ, जिसका अर्थ है कि केवल तभी मानवजाति को बचाने का कार्य आरम्भ हुआ। "मानवजाति का प्रबंधन करने" का अर्थ पृथ्वी पर नव-सृजित मानवजाति (कहने का अर्थ है, कि ऐसी मानवजाति जो अभी तक भ्रष्ट नहीं हुई थी) के जीवन का मार्गदर्शन करना नहीं है। बल्कि, यह उस मानवजाति के उद्धार का कार्य है जिसे शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, जिसका अर्थ है, कि यह इस भ्रष्ट मानवजाति को बदलने का कार्य है। "मानवजाति के प्रबंधन" का यही अर्थ है। मानवजाति को बचाने के कार्य में संसार की रचना करने का कार्य सम्मिलित नहीं है, और इसलिए मानवजाति के प्रबंधन का कार्य संसार की रचना करने के कार्य को भी समाविष्ट नहीं करता है, बल्कि केवल इस कार्य के उन तीन चरणों को ही समाविष्ट करता है जो संसार की रचना से अलग हैं। मानवजाति के प्रबंधन के कार्य को समझने के लिए कार्य के तीन चरणों के इतिहास के बारे में अवगत होना आवश्यक है—बचाए जाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को इससे अवगत अवश्य होना चाहिए। परमेश्वर के प्राणियों के रूप में, तुम लोगों को यह जानना चाहिए कि मनुष्य परमेश्वर द्वारा रचा गया था, और तुम्हें मानवजाति की भ्रष्टता के स्रोत को पहचानना चाहिए, और, इसके अलावा, मनुष्य के उद्धार की प्रक्रिया को भी जानना चाहिए। यदि तुम लोग केवल इतना ही जानते हो कि परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के प्रयास में सिद्धांतों के अनुसार कैसे व्यवहार किया जाए, परंतु तुम्हें इस बात का कोई भान नहीं है कि परमेश्वर मानवजाति को किस प्रकार बचाता है, या मानवजाति की भ्रष्टता का स्रोत क्या है, तो परमेश्वर की एक रचना के रूप में यही तुम लोगों में कमी है। परमेश्वर के प्रबंधन कार्य के व्यापक दायरे से अनभिज्ञ रहते हुए, तुम्हें केवल उन सत्यों को समझ कर संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए जिन्हें व्यवहार में लाया जा सकता है—यदि ऐसा मामला है, तो तुम बहुत ही हठधर्मी हो। कार्य के तीन चरण परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के प्रबंधन की आंतरिक कथा है, संपूर्ण ब्रह्मांड के सुसमाचार का आगमन हैं, समस्त मानवजाति के बीच सबसे बड़ा रहस्य हैं, और वे सुसमाचार के प्रसार का आधार भी हैं। यदि तुम केवल अपने जीवन से संबंधित सामान्य सत्यों को समझने पर ही ध्यान केंद्रित करते हो, और उसके बारे में कुछ नहीं जानते हो जो सबसे बड़ा रहस्य और दर्शन है, तो क्या तुम्हारा जीवन किसी दोषपूर्ण उत्पाद के समान नहीं है, जो सिर्फ देखने के अलावा किसी काम का नहीं होता?

यदि मनुष्य केवल अभ्यास पर ही ध्यान केंद्रित करता है, और परमेश्वर के कार्य और मनुष्य के ज्ञान को गौण समझता है, तो क्या यह अधिक महत्वपूर्ण बातों की अवहेलना करते हुए मामूली बातों में लगे रहने के समान नहीं है? वह जिसे तुम्हें अवश्य जानना चाहिए, तुम्हें उसे अवश्य जानना चाहिए, और वह जिसे तुम्हें अभ्यास में अवश्य लाना चाहिए, तुम्हें उसे अभ्यास में अवश्य लाना चाहिए। तभी तुम एक ऐसे इंसान बनोगे जो जानता है कि सत्य की खोज कैसे करनी है। जब तुम्हारा सुसमाचार फैलाने का दिन आता है, उस दिन यदि तुम सिर्फ़ यह कह पाते हो कि परमेश्वर एक महान और धार्मिक परमेश्वर है, कि वह सर्वोच्च परमेश्वर है, ऐसा परमेश्वर है जिससे किसी भी महान व्यक्ति की तुलना नहीं की जा सकती है, और जिससे ऊपर और कोई भी नहीं है..., यदि तुम केवल ये अप्रासंगिक और सतही बातें ही कह सकते हो, और तुम अत्यधिक महत्व और सार से युक्त शब्दों को कहने में सर्वथा असमर्थ हो, यदि तुम लोगों के पास परमेश्वर को जानने के बारे में, या परमेश्वर के कार्य के बारे में कहने के लिए कुछ भी नहीं है, और, इसके साथ ही, तुम सत्य की व्याख्या नहीं कर सकते हो, या वह प्रदान नहीं कर सकते हो जिसकी मनुष्य में कमी है, तो तुम्हारे जैसा व्यक्ति अपने कर्तव्य को अच्छी तरह से निभाने में अक्षम है। परमेश्वर की गवाही देना और राज्य के सुसमाचार को फैलाना कोई आसान बात नहीं है। सबसे पहले तुम लोगों के पास सत्य होना चाहिए और वे दर्शन होने चाहिए, जिन्हें समझना परम आवश्यक है। जब तुम परमेश्वर के कार्य के विभिन्न पहलुओं के सत्य और दर्शनों के बारे में स्पष्ट हो जाओगे, जब तुम अपने हृदय में परमेश्वर के कार्य को जान जाओगे, और इसकी परवाह किए बिना कि परमेश्वर क्या करता है—चाहे यह धार्मिक न्याय हो या मनुष्य का शुद्धिकरण—तुम अपनी बुनियाद के रूप में सबसे महत्वपूर्ण दर्शन से सम्पन्न हो जाओगे, और अभ्यास में लाने के लिए सही सत्य से सम्पन्न हो जाओगे, तब तुम बिल्कुल अंत तक परमेश्वर का अनुसरण करने के योग्य बन जाओगे। तुम लोगों को यह अवश्य जानना चाहिए कि परमेश्वर चाहे जो भी कार्य करे, उसके कार्य का उद्देश्य नहीं बदलता है, उसके कार्य का मर्म नहीं बदलता है और मनुष्य के प्रति उसकी इच्छा नहीं बदलती है। इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि उसके वचन कितने कठोर हैं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि परिस्थिति कितनी विपरीत है, उसके कार्य के सिद्धांत नहीं बदलेंगे, और मनुष्यों को बचाने का उसका ध्येय नहीं बदलेगा। उसके कार्य का मर्म भी नहीं बदलेगा, बशर्ते कि यह मनुष्य के अंत या गंतव्य के प्रकाशन का कार्य न हो, और अंतिम चरण का कार्य न हो, या परमेश्वर के प्रबंधन की संपूर्ण योजना को समाप्त करने का कार्य न हो, और बशर्ते कि यह उस समय के दौरान हो जब वह मनुष्य पर कार्य करता

है। उसके कार्य का मर्म हमेशा मानवजाति का उद्धार होगा; यह परमेश्वर में तुम लोगों के विश्वास का आधार होना चाहिए। कार्य के तीन चरणों का उद्देश्य समस्त मानवजाति का उद्धार है—जिसका अर्थ है शैतान के अधिकार क्षेत्र से मनुष्य का पूर्ण उद्धार। यद्यपि कार्य के इन तीन चरणों में से प्रत्येक का एक भिन्न उद्देश्य और महत्व है, किंतु प्रत्येक मानवजाति को बचाने के कार्य का हिस्सा है, और प्रत्येक उद्धार का एक भिन्न कार्य है जो मानवजाति की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है। एक बार जब तुम कार्य के तीन चरणों के उद्देश्य के बारे में अवगत हो जाओगे, तब तुम समझ जाओगे कि तुम्हें कार्य के प्रत्येक चरण के महत्व को पूरी तरह कैसे समझना है, और तुम जान जाओगे कि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए किस तरह से व्यवहार करना है। यदि तुम इस स्थिति तक पहुँच सकते हो, तो यह सबसे बड़ा दर्शन, परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास का आधार बन जाएगा। तुम्हें न केवल अभ्यास करने के आसान तरीकों को, या गहरे सत्यों को खोजना चाहिए, बल्कि दर्शन को अभ्यास के साथ जोड़ देना चाहिए, ताकि वह सत्य भी हो जिसे अभ्यास में लाया जा सके, और वह ज्ञान भी हो जो दर्शनों पर आधारित हो। तभी तुम एक ऐसे व्यक्ति बनोगे जो पूरी तरह से सत्य की तलाश करता है।

कार्य के तीनों चरण परमेश्वर के प्रबंधन का मुख्य केंद्र हैं और उनमें परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप अभिव्यक्त होते हैं। जो लोग परमेश्वर के कार्य के तीनों चरणों के बारे में नहीं जानते हैं वे यह जानने में अक्षम हैं कि परमेश्वर कैसे अपने स्वभाव को अभिव्यक्त करता है, न ही वे परमेश्वर के कार्य की बुद्धिमत्ता को जानते है। वे उन अनेक मार्गों से, जिनके माध्यम से परमेश्वर मानवजाति को बचाता है, और संपूर्ण मानवजाति के लिए उसकी इच्छा से भी अनभिज्ञ रहते हैं। कार्य के तीनों चरण मानवजाति को बचाने के कार्य की पूर्ण अभिव्यक्ति हैं। जो लोग कार्य के तीन चरणों के बारे में नहीं जानते, वे पवित्र आत्मा के कार्य के विभिन्न तरीकों और सिद्धांतों से अनभिज्ञ रहेंगे; और वे लोग जो सख्ती से केवल उस सिद्धांत से चिपके रहते हैं जो कार्य के किसी एक चरण से बचा रह जाता है, ऐसे लोग होते हैं जो परमेश्वर को केवल सिद्धांत तक सीमित कर देते हैं, और परमेश्वर में जिनका विश्वास अस्पष्ट और अनिश्चित होता है। ऐसे लोग परमेश्वर के उद्धार को कभी भी प्राप्त नहीं करेंगे। केवल परमेश्वर के कार्य के तीन चरण ही परमेश्वर के स्वभाव की संपूर्णता को पूरी तरह से अभिव्यक्त कर सकते हैं और संपूर्ण मानवजाति को बचाने के परमेश्वर के ध्येय को, और मानवजाति के उद्धार की संपूर्ण प्रक्रिया को पूरी तरह से अभिव्यक्त कर सकते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने शैतान को हरा दिया है और मानवजाति को जीत लिया है, यह परमेश्वर की

जीत का प्रमाण है और परमेश्वर के संपूर्ण स्वभाव की अभिव्यक्ति है। जो लोग परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों में से केवल एक चरण को ही समझते हैं, वे परमेश्वर के स्वभाव को केवल आंशिक रूप से ही जानते हैं। मनुष्य की धारणा में, कार्य के इस अकेले चरण का सिद्धांत बन जाना आसान है, इस बात की संभावना बन जाती है कि मनुष्य परमेश्वर के बारे में निश्चित नियम स्थापित कर लेगा, और परमेश्वर के स्वभाव के इस अकेले भाग का परमेश्वर के संपूर्ण स्वभाव के प्रतिनिधि के रूप में उपयोग करेगा। इसके अलावा, यह विश्वास करते हुए कि यदि परमेश्वर एक बार ऐसा था तो वह हर समय वैसा ही बना रहेगा, और कभी भी नहीं बदलेगा, मनुष्य की अधिकांश कल्पनाएँ अंदर-ही-अंदर इस तरह से मिश्रित रहती हैं कि वह परमेश्वर के स्वभाव, अस्तित्व और बुद्धि, और साथ ही परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों को, सीमित मापदंडों के भीतर कठोरता से कैद कर देता है। केवल वे लोग ही जो कार्य के तीनों चरणों को जानते और समझते हैं, परमेश्वर को पूरी तरह से और सही ढ़ंग से जान सकते हैं। कम से कम, वे परमेश्वर को इस्राएलियों या यहूदियों के परमेश्वर के रूप में परिभाषित नहीं करेंगे और उसे ऐसे परमेश्वर के रूप में नहीं देखेंगे जिसे मनुष्यों के वास्ते सदैव के लिए सलीब पर चढ़ा दिया जाएगा। यदि कोई परमेश्वर को उसके कार्य के केवल एक चरण के माध्यम से जानता है, तो उसका ज्ञान बहुत अल्प है और समुद्र में एक बूँद से ज्यादा नहीं है। यदि नहीं, तो कई पुराने धर्म-रक्षकों ने परमेश्वर को जीवित सलीब पर क्यों चढ़ाया होता? क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि मनुष्य परमेश्वर को निश्चित मापदंडों के भीतर सीमित कर देता है? क्या बहुत से लोग इसलिए परमेश्वर का विरोध नहीं करते और पवित्र आत्मा के कार्य में इसलिए बाधा नहीं डालते क्योंकि वे परमेश्वर के विभिन्न और विविधतापूर्ण कार्यों को नहीं जानते हैं, और इसके अलावा, क्योंकि वे केवल चुटकीभर ज्ञान और सिद्धांत से संपन्न होते हैं जिससे वे पवित्र आत्मा के कार्य को मापते हैं? यद्यपि इस प्रकार के लोगों का अनुभव केवल सतही होता है, किंतु वे घमंडी और आसक्त प्रकृति के होते हैं और वे पवित्र आत्मा के कार्य को अवमानना से देखते हैं, पवित्र आत्मा के अनुशासन की उपेक्षा करते हैं और इसके अलावा, पवित्र आत्मा के कार्यों की "पुष्टि" करने के लिए अपने पुराने तुच्छ तर्कों का उपयोग करते हैं। वे दिखावा भी करते हैं, और अपनी शिक्षा और पांडित्य को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त होते हैं, और उन्हें यह भी भरोसा रहता है कि वे संसार भर में यात्रा करने में सक्षम हैं। क्या ये ऐसे लोग नहीं हैं जो पवित्र आत्मा द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत कर दिए गए हैं और क्या ये नए युग के द्वारा हटा नहीं दिए जाएँगे? क्या ये वही अज्ञानी और अल्पसूचित तुच्छ लोग नहीं हैं जो परमेश्वर के सामने आते हैं और खुलेआम उसका

विरोध करते हैं, जो केवल यह दिखाने का प्रयास कर रहे हैं कि वे कितने मेधावी हैं? बाइबल के अल्प ज्ञान के साथ, वे संसार के "शैक्षणिक समुदाय" में पैर पसारने की कोशिश करते हैं, और केवल एक सतही सिद्धांत के साथ लोगों को सिखाते हुए, वे पवित्र आत्मा के कार्य को पलटने का प्रयत्न करते हैं, और इसे अपने खुद के विचारों की प्रक्रिया के इर्दगिर्द घुमाने का प्रयास करते हैं। अपनी अदूरदर्शिता के कारण वे एक ही झलक में परमेश्वर के 6,000 सालों के कार्यों को देखने की कोशिश करते हैं। इन लोगों के पास समझ नाम की कोई चीज ही नहीं है! वास्तव में, परमेश्वर के बारे में लोगों को जितना अधिक ज्ञान होता है, वे उसके कार्य का आकलन करने में उतने ही धीमे होते हैं। इसके अलावा, वे परमेश्वर के आज के कार्य के बारे में अपने ज्ञान की बहुत कम बात करते हैं, लेकिन वे अपने निर्णय में जल्दबाज़ी नहीं करते हैं। लोग परमेश्वर के बारे में जितना कम जानते हैं, वे उतने ही अधिक घमंडी और अति आत्मविश्वासी होते हैं और उतनी ही अधिक बेहूदगी से परमेश्वर के अस्तित्व की घोषणा करते हैं—फिर भी वे केवल सिद्धांत की बात ही करते हैं और कोई भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते। इस प्रकार के लोगों का कोई मूल्य नहीं होता है। जो लोग पवित्र आत्मा के कार्य को एक खेल की तरह देखते हैं वे ओछे लोग होते हैं! जो लोग पवित्र आत्मा के नए कार्य का सामना करते समय सचेत नहीं रहते हैं, जो अपना मुँह चलाते रहते हैं, जो मीन-नेख निकालते रहते हैं, जो पवित्र आत्मा के धार्मिक कार्यों को नकारने की अपनी सहज प्रवृत्ति पर लगाम नहीं लगाते हैं, और जो उसका अपमान और ईशनिंदा भी करते हैं—क्या इस प्रकार के अशिष्ट लोग पवित्र आत्मा के कार्य से अनभिज्ञ नहीं हैं? इसके अलावा, क्या वे अत्यंत अहंकारी, अंतर्निहित रूप से घमंडी और दुर्दमनीय लोग नहीं हैं? कोई ऐसा दिन आ भी जाए जब ऐसे लोग पवित्र आत्मा के नए कार्य को स्वीकार कर लें, तो भी परमेश्वर उन्हें सहन नहीं करेगा। न केवल वे उन्हें तुच्छ समझते हैं जो परमेश्वर के लिए कार्य करते हैं, बल्कि वे स्वयं भी परमेश्वर के विरुद्ध ईशनिंदा करते हैं, इस प्रकार के दुस्साहसी लोग, न तो इस युग में और न ही आने वाले युग में क्षमा किए जाएँगे, और वे हमेशा के लिए नरक में सड़ेंगे! इस प्रकार के अशिष्ट, आसक्त लोग परमेश्वर में भरोसा करने का दिखावा करते हैं और लोग जितने अधिक इस तरह के होते हैं, उतनी ही अधिक उनकी परमेश्वर के प्रशासकीय आदेशों का उल्लंघन करने की संभावना रहती है। क्या वे सभी अहंकारी लोग, जो स्वाभाविक रूप से उच्छृंखल हैं, और जिन्होंने कभी भी किसी का भी आज्ञापालन नहीं किया है, इसी मार्ग पर नहीं चलते हैं? क्या वे दिन प्रतिदिन परमेश्वर का विरोध नहीं करते हैं, वह परमेश्वर जो हमेशा नया रहता है और कभी पुराना नहीं पड़ता है? आज तुम लोगों को यह समझना

चाहिए कि परमेश्वर के कार्यों के तीन चरणों के महत्व को जानना क्यों आवश्यक है। जिन वचनों को मैं कहता हूँ वे तुम लोगों के लिए लाभकारी हैं, और वे केवल खोखली बातें नहीं हैं। यदि तुम लोग उन्हें ऐसे पढ़ोगे मानो तुम सरपट दौड़ते घोड़े की सवारी करते हुए फूलों की सराहना कर रहे हो तो क्या मेरी सारी मेहनत व्यर्थ नहीं चली जाएगी? तुम लोगों में से प्रत्येक को अपनी प्रकृति को जानना चाहिए। तुममें से अधिकांश लोग तर्क करने में कुशल होते हैं; सैद्धांतिक प्रश्नों के जवाब तुम लोगों की ज़ुबान पर होते हैं, परंतु सार से संबंधित प्रश्नों के बारे में कहने के लिए तुम लोगों के पास कुछ भी नहीं है। आज भी, तुम लोग तुच्छ बातचीत में ही लगे रहते हो, तुम अपनी पुरानी प्रकृति को बदलने में अक्षम हो, और तुम लोगों में से अधिकांश उच्च सत्य को प्राप्त करने के लिए जिस मार्ग का अनुसरण करते हैं, उसे बदलने का भी कोई अभिप्राय नहीं रखते हैं, लेकिन इसकी बजाय तुम लोग अपने जीवन को केवल आधे-अधूरे मन से जी रहे हो। ऐसे लोग किस प्रकार से अंत तक परमेश्वर का अनुसरण करने में सक्षम हैं? अगर तुम लोग मार्ग पर अंत तक बने भी रहो, तो इसका तुम लोगों को क्या लाभ होगा? इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, अपने विचारों को बदलना बेहतर है, या तो सच्चे तरीके से खोज करो, या जल्दी ही पीछे हट जाओ। जैसे-जैसे समय बीतता है तुम लोग एक मुफ़्तखोर परजीवी बन जाते हो—क्या तुम इस प्रकार की निम्न और अप्रतिष्ठित भूमिका निभाने को तैयार हो?

कार्य के तीन चरण परमेश्वर के संपूर्ण कार्य का अभिलेख हैं; ये परमेश्वर द्वारा मानवजाति के उद्धार के अभिलेख हैं, और ये काल्पनिक नहीं हैं। यदि तुम लोग परमेश्वर के संपूर्ण स्वभाव के ज्ञान की वास्तव में खोज करना चाहते हो, तो तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य के तीनों चरणों को जानना होगा और, साथ ही, तुम लोगों को किसी भी चरण को चूकना नहीं चाहिए। जो लोग परमेश्वर को जानने की खोज में लगे हैं, उन्हें कम से कम इतना तो हासिल कर ही लेना चाहिए। मनुष्य स्वयं परमेश्वर का सच्चा ज्ञान नहीं रच सकता। मनुष्य स्वयं इसकी कल्पना नहीं कर सकता है, न ही यह पवित्र आत्मा द्वारा किसी एक व्यक्ति को दिये गए विशेष अनुग्रह का परिणाम हो सकता है। इसकी बजाय, यह वह ज्ञान है जो तब आता है जब मनुष्य परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लेता है, और यह परमेश्वर का वह ज्ञान है जो केवल परमेश्वर के कार्य के तथ्यों का अनुभव करने के बाद ही आता है। इस प्रकार का ज्ञान यूँ ही हासिल नहीं किया जा सकता, न ही यह कोई ऐसी चीज है जिसे सिखाया जा सकता है। यह पूरी तरह से व्यक्तिगत अनुभव से संबंधित है। इन तीन चरणों के मूल में परमेश्वर द्वारा मनुष्यों का उद्धार निहित है, मगर उद्धार के कार्य के

भीतर कार्य करने के कई तरीके और साधन शामिल हैं जिनके माध्यम से परमेश्वर का स्वभाव व्यक्त होता है। मनुष्य के लिए इसे पहचानना बेहद मुश्किल है और यही है जिसे समझना उसके लिए मुश्किल है। युगों का पृथक्करण, परमेश्वर के कार्य में बदलाव, कार्य के स्थान में बदलाव, इस कार्य को ग्रहण करने वाले में बदलाव आदि, ये सभी कार्य के तीन चरणों में समाविष्ट हैं। विशेष रूप से, पवित्र आत्मा के कार्य करने के तरीकों में भिन्नता, और साथ ही परमेश्वर के स्वभाव, छवि, नाम, पहचान में परिवर्तन या अन्य बदलाव, ये सभी कार्य के तीन चरणों के ही भाग हैं। कार्य का एक चरण केवल एक ही भाग का प्रतिनिधित्व कर सकता है, और यह एक निश्चित दायरे के भीतर ही सीमित है। यह युगों के विभाजन, या परमेश्वर के कार्य में बदलाव से संबंधित नहीं है, और अन्य पहलुओं से तो बिल्कुल भी संबंधित नहीं है। यह एक सुस्पष्ट तथ्य है। कार्य के तीन चरण मानवजाति को बचाने में परमेश्वर के कार्य की संपूर्णता हैं। मनुष्य को परमेश्वर के कार्य को और उद्धार के कार्य में परमेश्वर के स्वभाव को अवश्य जानना चाहिए; इस तथ्य के बिना, परमेश्वर का तुम्हारा ज्ञान खोखले शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं है, यह सैद्धांतिक बातों का दिखावा मात्र है। इस प्रकार का ज्ञान मनुष्य को न तो यकीन दिला सकता है और न ही उसे जीत सकता है; यह वास्तविकता से बेमेल है और यह सत्य नहीं है। यह बहुत भरपूर मात्रा में, और कानों के लिए सुखद हो सकता है, परन्तु यदि यह परमेश्वर के अंतर्निहित स्वभाव से विपरीत है, तो परमेश्वर तुम्हें नहीं बख़्शेगा। न केवल वह तुम्हारे ज्ञान की प्रशंसा नहीं करेगा बल्कि उसकी निंदा करने वाले पापी होने के कारण तुमसे प्रतिशोध लेगा। परमेश्वर को जानने के वचन हल्के में नहीं बोले जाते हैं। भले ही तुम चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले और वाक्पटु हो सकते हो, और भले ही तुम्हारे शब्द इतने चतुर हों कि तुम अपनी बहस से काले को सफेद और सफेद को काला बना सकते हो, तब भी जब परमेश्वर के ज्ञान की बात आती है तो तुम्हारी अज्ञानता सामने आ जाती है। परमेश्वर कोई ऐसी चीज नहीं है जिसका तुम जल्दबाजी में आकलन कर सकते हो या जिसकी तुम यूं ही प्रशंसा कर सकते हो या जिसे तुम बेपरवाही से कलंकित कर सकते हो। तुम लोग किसी की भी और हर किसी की प्रशंसा करते हो, फिर भी परमेश्वर के सद्‌गुणों और अनुग्रह का वर्णन करने के लिए सही शब्द खोजने में तुम्हें संघर्ष करना पड़ता है—यही सभी हारने वालों द्वारा महसूस किया जाता है। भले ही ऐसे कई भाषा के माहिर हैं जो परमेश्वर का वर्णन करने में सक्षम हैं, लेकिन वे जो वर्णन करते हैं उसकी सटीकता उन लोगों द्वारा बोले गए सत्य का सौवाँ हिस्सा ही है जो परमेश्वर से जुड़े हुए होते हैं, ऐसे लोग जिनका शब्द-संग्रह तो सीमित होता है, लेकिन उनका अनुभव समृद्ध होता है, जिससे सीखा जा सकता है।

इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर का ज्ञान सटीकता और वास्तविकता में निहित है, न कि शब्दों का चतुराई से उपयोग करने या समृद्ध शब्द-संग्रह में, और यह कि मनुष्य के ज्ञान और परमेश्वर के ज्ञान का आपस में कोई संबंध नहीं है। परमेश्वर को जानने का पाठ मानवजाति के किसी भी प्राकृतिक विज्ञान से ऊँचा है। यह ऐसा सबक है जो केवल उन्हीं बहुत थोड़े-से लोगों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जो परमेश्वर को जानने की खोज करते हैं, इसे यूँ ही किसी भी प्रतिभावान व्यक्ति द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए तुम लोगों को परमेश्वर को जानने और सत्य की तलाश करने को ऐसे नहीं देखना चाहिए मानो कि वे ऐसी चीजें हैं जिन्हें किसी बच्चे द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है। हो सकता है कि तुम अपने पारिवारिक जीवन, अपने कार्यक्षेत्र या अपने वैवाहिक जीवन में पूरी तरह से सफल हो, परंतु जब सत्य की और परमेश्वर को जानने के सबक की बात आती है, तो तुम्हारे पास दिखाने के लिए कुछ नहीं है, तुमने कुछ भी हासिल नहीं किया है। ऐसा कहा जा सकता है कि सत्य को व्यवहार में लाना तुम लोगों के लिए बहुत ही कठिन बात है, और परमेश्वर को जानना तो और भी बड़ी समस्या है। यही तुम लोगों की कठिनाई है, और इसी कठिनाई का सामना संपूर्ण मानवजाति कर रही है। जिन्होंने परमेश्वर को जानने के ध्येय में कुछ प्राप्त कर लिया है उनमें से शायद ऐसा कोई नहीं है जो मापदंड पर खरा उतरता हो। मनुष्य नहीं जानता है कि परमेश्वर को जानने का अर्थ क्या है, या परमेश्वर को जानना क्यों आवश्यक है या एक व्यक्ति को किस अंश तक ज्ञान हासिल करना चाहिए ताकि वह परमेश्वर को जान सके। यही मानवजाति के लिए बहुत उलझन वाली बात है और सीधे-सीधे यही वह सबसे बड़ी पहेली है जिसका सामना मानवजाति द्वारा किया जा रहा है—कोई भी इस प्रश्न का उत्तर देने में सक्षम नहीं है, न ही कोई इस प्रश्न का उत्तर देने की इच्छा रखता है, क्योंकि आज तक मानवजाति में से किसी को भी इस कार्य के अध्ययन में कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई है। शायद, जब कार्य के तीन चरणों की पहेली मानवजाति को बताई जाएगी, तो अनुक्रम से परमेश्वर को जानने वाले प्रतिभावान लोगों का एक समूह प्रकट होगा। मैं आशा करता हूँ कि ऐसा ही हो, और साथ ही, मैं इस कार्य को करने की प्रक्रिया में हूँ और निकट भविष्य में ऐसे और भी अधिक प्रतिभावान लोगों के प्रकट होने की आशा करता हूँ। वे कार्य के इन तीन चरणों के तथ्य की गवाही देने वाले लोग बन जाएँगे और वे वास्तव में, कार्य के इन तीनों चरणों की गवाही देने वाले प्रथम लोग भी होंगे। परंतु इससे अधिक दुखद और खेदजनक कुछ भी नहीं होगा कि परमेश्वर के कार्य की समाप्ती के दिन इस प्रकार के प्रतिभावान लोग प्रकट न हों, या केवल एक या दो ही लोग सामने आएं जिन्होंने देहधारी

परमेश्वर द्वारा पूर्ण बनाया जाना व्यक्तिगत रूप से स्वीकार कर लिया हो। फिर भी, यह सिर्फ़ सबसे बुरी संभावना है। चाहे जो भी हो, मैं अभी भी आशा करता हूँ कि जो वास्तव में परमेश्वर की तलाश में लगे हैं, वे इस आशीष को प्राप्त कर पाएँ। समय के आरम्भ से ही, इस प्रकार का कार्य पहले कभी नहीं हुआ; मानव विकास के इतिहास में कभी भी इस प्रकार का कार्य नहीं हुआ है। यदि तुम वास्तव में परमेश्वर को जानने वालों में सबसे प्रथम लोगों में से एक हुए, तो क्या यह सभी प्राणियों में सर्वोच्च आदर की बात नहीं होगी? क्या मानवजाति में ऐसा कोई प्राणी होगा जो परमेश्वर से इससे बेहतर प्रशंसा प्राप्त कर सके? इस प्रकार का कार्य कर पाना आसान नहीं है, परंतु अंत में प्रतिफल प्राप्त करेगा। लिंग या राष्ट्रीयता से निरपेक्ष, वे सभी लोग जो परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हैं, अंत में, परमेश्वर का सबसे महान सम्मान प्राप्त करेंगे और एकमात्र वे ही परमेश्वर के अधिकार को प्राप्त करेंगे। यही आज का कार्य है, और भविष्य का कार्य भी है; यह 6,000 सालों के कार्य में निष्पादित किया जाने वाला अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, और यह कार्य करने का ऐसा तरीका है जो मनुष्य की प्रत्येक श्रेणी को प्रकट करता है। मनुष्य को परमेश्वर का ज्ञान करवाने के कार्य के माध्यम से, मनुष्य की विभिन्न श्रेणियाँ प्रकट होती हैं : जो परमेश्वर को जानते हैं वे परमेश्वर के आशीष प्राप्त करने और उसकी प्रतिज्ञाओं को स्वीकार करने के योग्य होते हैं, जबकि जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते हैं वे परमेश्वर के आशीषों और प्रतिज्ञाओं को स्वीकारने के योग्य नहीं होते हैं। जो परमेश्वर को जानते हैं वे परमेश्वर के अंतरंग होते हैं, और जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं वे परमेश्वर के अंतरंग नहीं कहे जा सकते हैं; परमेश्वर के अंतरंग परमेश्वर का कोई भी आशीष प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु जो उसके घनिष्ठ नहीं हैं वे उसके किसी भी काम के लायक नहीं हैं। चाहे यह क्लेश, शुद्धिकरण या न्याय हो, ये सभी चीजें अंततः मनुष्य को परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनाने की खातिर हैं, और इसलिए हैं ताकि मनुष्य परमेश्वर के प्रति समर्पण करे। यही एकमात्र प्रभाव है जो अंततः प्राप्त किया जाएगा। कार्य के तीनों चरणों में से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, और यह मनुष्य के परमेश्वर के ज्ञान के लिए लाभकारी है, और परमेश्वर का अधिक पूर्ण और विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में मनुष्य की सहायता करता है। यह समस्त कार्य मनुष्य के लिए लाभप्रद है।

स्वयं परमेश्वर का कार्य वह दर्शन है जो मनुष्य को अवश्य जानना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर का कार्य मनुष्यों द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता, और मनुष्यों द्वारा धारण नहीं किया जाता। कार्य के तीन चरण परमेश्वर के प्रबंधन की संपूर्णता हैं, और इससे बड़ा कोई दर्शन नहीं है जिसे मनुष्य को जानना चाहिए।

यदि मनुष्य इस शक्तिशाली दर्शन को नहीं जानता है, तो परमेश्वर को जानना आसान नहीं है, परमेश्वर की इच्छा को समझना आसान नहीं है, और, इसके साथ ही, मनुष्य जिस मार्ग पर चलता है वह उत्तरोत्तर कठिन बनता जायेगा। दर्शन के बिना, मनुष्य इतनी दूर तक नहीं आ सकता था। ये दर्शन ही हैं जिन्होंने आज तक मनुष्य की सुरक्षा की है और जिन्होंने मनुष्य को सबसे बड़ा संरक्षण प्रदान किया है। भविष्य में, तुम लोगों का ज्ञान अवश्य ही अधिक गहरा होना चाहिए और तुम लोगों को उसकी इच्छा की संपूर्णता को और कार्य के तीन चरणों में उसके बुद्धिमानी भरे कार्य के सार को अवश्य ही जानना चाहिए। केवल यही तुम लोगों की असली आध्यात्मिक कद-काठी है। कार्य का अंतिम चरण अकेला नहीं होता है, बल्कि यह उस संपूर्ण का हिस्सा है जो पिछले दो चरणों के साथ मिलकर बनता है, कहने का अर्थ है कि कार्य के तीनों चरणों में से केवल एक को करके उद्धार के समस्त कार्य को पूरा करना असंभव है। भले ही कार्य का अंतिम चरण मनुष्य को पूरी तरह से बचाने में समर्थ है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल इसी एक चरण को इसी के दम पर करना आवश्यक है, और यह कि कार्य के पिछले दो चरण मनुष्यों को शैतान के प्रभाव से बचाने के लिए आवश्यक नहीं हैं। इन तीन चरणों में से किसी भी एक चरण को ही एकमात्र ऐसा दर्शन नहीं ठहराया जा सकता है जिसे समस्त मानवजाति को जानना होगा, क्योंकि उद्धार के कार्य की संपूर्णता कार्य के तीन चरण हैं न कि उनमें से कोई एक चरण। जब तक उद्धार का कार्य पूर्ण नहीं होगा तब तक परमेश्वर का प्रबंधन का कार्य पूरी तरह से समाप्त नहीं हो पाएगा। परमेश्वर का अस्तित्व, स्वभाव और बुद्धि उद्धार के कार्य की संपूर्णता में व्यक्त होते हैं, वे मनुष्य पर बिलकुल आरंभ में प्रकट नहीं होते हैं, बल्कि उद्धार के कार्य में धीरे-धीरे व्यक्त किए जाते हैं। उद्धार के कार्य का प्रत्येक चरण परमेश्वर के स्वभाव के एक भाग को और उसके अस्तित्व के एक भाग को व्यक्त करता है; कार्य का हर चरण प्रत्यक्षतः और पूर्णतः परमेश्वर के अस्तित्व की संपूर्णता को व्यक्त नहीं कर सकता है। इसलिए, उद्धार का कार्य केवल तभी पूरी तरह से संपन्न हो सकता है जब कार्य के ये तीनों चरण पूरे हो जाते हैं, और इसीलिए परमेश्वर की संपूर्णता का मनुष्य का ज्ञान परमेश्वर के कार्य के तीनों चरणों से अलग नहीं किया जा सकता। कार्य के एक चरण से मनुष्य जो प्राप्त करता है वह सिर्फ परमेश्वर का वह स्वभाव है जो उसके कार्य के सिर्फ एक भाग में व्यक्त होता है। यह उस स्वभाव और अस्तित्व का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है जो इससे पहले या बाद के चरणों में व्यक्त होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानवजाति को बचाने का कार्य सीधे एक ही अवधि के दौरान या एक ही स्थान पर समाप्त नहीं किया जा सकता, बल्कि भिन्न-भिन्न समयों

और स्थानों पर मनुष्य के विकास के स्तरों के अनुसार यह धीरे-धीरे अधिक गहरा होता जाता है। यह वह कार्य है जो चरणों में किया जाता है, और एक ही चरण में पूरा नहीं होता है। इसलिए, परमेश्वर की संपूर्ण बुद्धि एक अकेले चरण के बजाय तीन चरणों में एक ठोस रूप लेती है। उसका संपूर्ण अस्तित्व और उसकी संपूर्ण बुद्धि इन तीन चरणों में व्यक्त होते हैं, और प्रत्येक चरण में उसके अस्तित्व का समावेश है और प्रत्येक चरण उसके कार्य की बुद्धिमत्ता का अभिलेख है। मनुष्य को इन तीन चरणों में व्यक्त परमेश्वर के संपूर्ण स्वभाव को जानना चाहिए। परमेश्वर के अस्तित्व का यह सब कुछ समस्त मानवजाति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यदि लोगों को परमेश्वर की आराधना करते समय यह ज्ञान न हो, तो वे उन लोगों से किसी भी प्रकार से भिन्न नहीं हैं जो बुद्ध की पूजा करते हैं। मनुष्यों के बीच परमेश्वर का कार्य मनुष्यों से छिपा नहीं है, और उन सभी को यह जानना चाहिए जो परमेश्वर की आराधना करते हैं। चूँकि परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच उद्धार के कार्य के तीन चरणों को पूरा कर लिया है, इसलिए मनुष्य को कार्य के इन तीन चरणों के दौरान परमेश्वर के पास क्या है और वह क्या है इसकी अभिव्यक्ति को जानना चाहिए। यह काम मनुष्य को अवश्य करना चाहिए। परमेश्वर मनुष्य से जो कुछ छिपाता है वह ऐसी चीज है जिसे मनुष्य प्राप्त करने में अक्षम है और जिसे मनुष्य को नहीं जानना चाहिए, जबकि परमेश्वर मनुष्य को जो कुछ दिखाता है वह ऐसी चीज है जिसे मनुष्य को जानना चाहिए, और जो मनुष्य के पास होना चाहिए। कार्य के तीनों चरणों में से प्रत्येक चरण पूर्ववर्ती चरण की बुनियाद पर पूरा किया जाता है; इसे स्वतंत्र रूप से, उद्धार के कार्य से पृथक नहीं किया जाता है। यद्यपि किए गए कार्य के युग और प्रकार में काफी बड़े अंतर हैं, पर इसके मूल में मानवजाति का उद्धार ही है, और उद्धार के कार्य का प्रत्येक चरण पिछले चरण से ज्यादा गहरा होता है। कार्य का प्रत्येक चरण पिछले चरण की बुनियाद पर ही आगे बढ़ता है, जिसे ध्वस्त नहीं किया जाता है। इस प्रकार, अपने कार्य में, जो हमेशा नया रहता है और कभी भी पुराना नहीं पड़ता है, परमेश्वर निरंतर अपने स्वभाव के उन पहलुओं को व्यक्त करता रहता है जिन्हें पहले कभी भी मनुष्य के सामने व्यक्त नहीं किया गया है, और वह हमेशा मनुष्य के सामने अपना नया कार्य और अपना नया अस्तित्व प्रकट करता रहता है। भले ही पुराने धर्म-रक्षक इसका प्रतिरोध करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं और इसका खुलेआम विरोध करते हैं, तब भी परमेश्वर हमेशा वह नया कार्य करता रहता है जिसे वह करना चाहता है। उसका कार्य हमेशा बदलता रहता है और इस कारण से, यह हमेशा मनुष्य के विरोध का सामना करता रहता है। इसलिए, उसका स्वभाव भी युगों और उसके कार्य को ग्रहण करने वालों की तरह सदैव बदलता

रहता है। इसके साथ ही, वह हमेशा वह काम करता है जो पहले कभी नहीं किया गया है, वह ऐसा कार्य भी करता है जो मनुष्यों को पहले किए गए कार्य से विरोधाभासी, उससे बिलकुल उलट दिखाई देता है। मनुष्य केवल एक ही प्रकार का कार्य या एक ही प्रकार का अभ्यास स्वीकार करने में समर्थ है, और मनुष्य के लिए ऐसे कार्य या अभ्यास के तरीकों को स्वीकार करना कठिन होता है, जो उनके साथ बेमेल प्रतीत होते हैं, या उनसे उच्चतर हैं। परंतु पवित्र आत्मा हमेशा नया कार्य करता है, और इसलिए धार्मिक विशेषज्ञों के समूह के समूह परमेश्वर के नए कार्य का विरोध करते दिखाई देते हैं। ये लोग इसलिए विशेषज्ञ बन गए हैं क्योंकि मनुष्य के पास यह ज्ञान ही नहीं है कि परमेश्वर किस प्रकार हमेशा नया रहता है और कभी भी पुराना नहीं पड़ता है, और मनुष्य को परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों का भी कोई ज्ञान नहीं है, और इसके अलावा, उसे उन विभिन्न तरीकों का ज्ञान नहीं है जिनके द्वारा परमेश्वर मनुष्य को बचाता है। देखा जाए तो मनुष्य यह बताने में सर्वथा असमर्थ है कि क्या यह वह कार्य है जो पवित्र आत्मा की ओर से आता है, और क्या यह स्वयं परमेश्वर का कार्य है। कई लोग इस रवैये पर अड़े रहते हैं कि यदि कोई चीज़ पहले आए हुए वचनों के अनुरूप है, तभी वे इसे स्वीकार करते हैं, और यदि इसमें और पहले किए गए कार्य में कोई अंतर है, तो वे इसका विरोध करते हैं और इसे अस्वीकार कर देते हैं। क्या तुम लोग आज इसी प्रकार के सिद्धांतों से बँधे हुए नहीं हो? उद्धार के कार्य के तीन चरणों का तुम लोगों पर कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ा है, और यहाँ ऐसे लोग भी हैं जो यह मानते हैं कि कार्य के पहले के दो चरण एक बोझ हैं, जिन्हें जानने की उन्हें कोई जरूरत नहीं है। उन्हें लगता है कि इन चरणों को आम जनता के लिए घोषित नहीं किया जाना चाहिए, और जितनी जल्दी हो सके इन्हें हटा लिया जाना चाहिए, ताकि लोग कार्य के तीन चरणों के इन पिछले दो चरणों के बोझ को महसूस न करें। अधिकांश लोग ऐसा मानते हैं कि कार्य के पिछले दो चरणों का ज्ञान करवाना हद से आगे बढ़ जाने वाली बात है, और परमेश्वर को जानने में यह बिल्कुल भी मददगार नहीं है—तुम लोग ऐसा ही सोचते हो। आज, तुम सभी लोग ऐसा मानते हो कि इस तरह से व्यवहार करना उचित है, परंतु एक दिन आएगा जब तुम लोग मेरे कार्य के महत्व को महसूस करोगे : यह जान लो कि मैं बिना महत्व का कोई भी कार्य नहीं करता हूँ। चूँकि मैं कार्य के तीन चरणों को तुम लोगों के लिए घोषित कर रहा हूँ, इसलिए वे तुम लोगों के लिए अवश्य लाभदायक होंगे; चूँकि कार्य के ये तीन चरण परमेश्वर के संपूर्ण प्रबंधन का मुख्य भाग हैं, इसलिए संपूर्ण विश्व में उन्हें प्रत्येक का केंद्र बिंदु बनना होगा। एक दिन, तुम सभी लोग इस कार्य के महत्व को महसूस करोगे। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम लोग परमेश्वर के

कार्य का विरोध इसलिए करते हो, या आज के कार्य को मापने के लिए अपनी ही धारणाओं का इसलिए उपयोग करते हो, क्योंकि तुम लोग परमेश्वर के कार्य के सिद्धांतों को नहीं जानते हो, और क्योंकि तुम पवित्र आत्मा के कार्य को पर्याप्त गंभीरता से नहीं लेते हो। तुम लोगों का परमेश्वर के प्रति विरोध और पवित्र आत्मा के कार्य में अवरोध तुम लोगों की धारणाओं और तुम लोगों के अंतर्निहित अहंकार के कारण है। ऐसा इसलिए नहीं है कि परमेश्वर का कार्य गलत है, बल्कि इसलिए है कि तुम लोग प्राकृतिक रूप से अत्यंत अवज्ञाकारी हो। परमेश्वर में विश्वास हो जाने के बाद भी, कुछ लोग यकीन से यह भी नहीं कह सकते हैं कि मनुष्य कहाँ से आया, फिर भी वे पवित्र आत्मा के कार्यों के सही और गलत होने के बारे में बताते हुए सार्वजनिक भाषण देने का साहस करते हैं। यहाँ तक कि वे उन प्रेरितों को भी व्याख्यान देते हैं जिनके पास पवित्र आत्मा का नया कार्य है, उन पर टिप्पणी करते हैं और बेमतलब बोलते रहते हैं; उनकी मानवता बहुत ही निम्न है, और उनमें बिल्कुल भी समझ नहीं होती है। क्या वह दिन नहीं आएगा जब इस प्रकार के लोग पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा अस्वीकृत कर दिए जाएँगे, और नरक की आग द्वारा भस्म कर दिए जाएँगे? वे परमेश्वर के कार्यों को नहीं जानते हैं, फिर भी उसके कार्य की आलोचना करते हैं और परमेश्वर को यह निर्देश देने की कोशिश करते हैं कि कार्य किस प्रकार किया जाए। इस प्रकार के अविवेकी लोग परमेश्वर को कैसे जान सकते हैं? मनुष्य खोजने और अनुभव करने की प्रक्रिया के दौरान ही परमेश्वर को जान पाता है; न कि अपनी सनक में उसकी आलोचना करने के द्वारा मनुष्य पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता के माध्यम से परमेश्वर को जान पाया है। परमेश्वर के बारे में लोगों का ज्ञान जितना अधिक सही होता जाता है, उतना ही कम वे उसका विरोध करते हैं। इसके विपरीत, लोग परमेश्वर के बारे में जितना कम जानते हैं, उतनी ही ज्यादा उनके द्वारा परमेश्वर का विरोध करने की संभावना रहती है। तुम लोगों की धारणाएँ, तुम्हारी पुरानी प्रकृति, और तुम्हारी मानवता, चरित्र और नैतिक दृष्टिकोण वह "पूँजी" है जिससे तुम परमेश्वर का प्रतिरोध करते हो, और तुम जितना अधिक भ्रष्ट, तुच्छ और निम्न होगे, उतना ही अधिक तुम परमेश्वर के शत्रु बन जाते हो। जो लोग प्रबल धारणाएँ रखते हैं और आत्मतुष्ट स्वभाव के होते हैं, वे देहधारी परमेश्वर के प्रति और भी अधिक शत्रुतापूर्ण होते हैं; इस प्रकार के लोग मसीह-विरोधी हैं। यदि तुम्हारी धारणाओं में सुधार न किया जाए, तो वे सदैव परमेश्वर की विरोधी रहेंगी; तुम कभी भी परमेश्वर के अनुकूल नहीं होगे, और सदैव उससे दूर रहोगे।

अपनी पुरानी धारणाओं को एक तरफ रखकर ही तुम नए ज्ञान को प्राप्त कर सकते हो, फिर भी

पुराना ज्ञान आवश्यक नहीं कि पुरानी धारणाएँ हो। मनुष्य द्वारा कल्पना की गई बातों को "धारणाएँ" कहते हैं जो वास्तविकताओं के साथ मेल नहीं खाती हैं। यदि पुराना ज्ञान पुराने युग में पहले से ही पुराना हो गया हो, और मनुष्य को नए कार्य में प्रवेश करने से रोक देता हो, तो इस प्रकार का ज्ञान भी एक धारणा है। यदि मनुष्य इस प्रकार के ज्ञान के संबंध में सही दृष्टिकोण अपनाने में समर्थ हो, और, पुरानी और नई बातों को जोड़कर विभिन्न पहलुओं से परमेश्वर को जान सकता हो, तो पुराना ज्ञान मनुष्य के लिए सहायक बन जाता है और वह आधार बन जाता है जिसके द्वारा मनुष्य नए युग में प्रवेश करता है। परमेश्वर को जानने के सबक के लिए कई सिद्धांतों में निपुण होना आवश्यक है : जैसे कि परमेश्वर को जानने के मार्ग पर किस प्रकार प्रवेश करें, परमेश्वर को जानने के लिए तुम्हें कौन से सत्यों को समझना चाहिए और किस प्रकार से अपनी धारणाओं और पुराने स्वभाव से छुटकारा पाएं, ताकि तुम परमेश्वर के नए कार्य की सभी व्यवस्थाओं के लिए समर्पित हो सको। यदि तुम परमेश्वर को जानने के सबक में प्रवेश करने के लिए इन सिद्धांतों का आधार के रूप में उपयोग करते हो, तो तुम्हारा ज्ञान और गहरा हो जाएगा। यदि तुम्हें कार्य के तीन चरणों—अर्थात परमेश्वर की संपूर्ण प्रबंधन योजना—की स्पष्ट जानकारी है और यदि तुम वर्तमान चरण के साथ परमेश्वर के कार्य के पिछले दोनों चरणों को पूरी तरह से जोड़ सको, और देख सको कि यह कार्य एक ही परमेश्वर द्वारा किया गया है, तो तुम्हारे पास अतुलनीय रूप से एक दृढ़ आधार होगा। कार्य के तीनों चरण एक ही परमेश्वर द्वारा किए गए थे; यही सबसे महान दर्शन है और यह परमेश्वर को जानने का एकमात्र मार्ग है। कार्य के तीनों चरण केवल स्वयं परमेश्वर द्वारा ही किए गए हो सकते हैं, और कोई भी मनुष्य इस प्रकार का कार्य उसकी ओर से नहीं कर सकता है—कहने का तात्पर्य है कि आरंभ से लेकर आज तक केवल स्वयं परमेश्वर ही अपना कार्य कर सकता था। यद्यपि परमेश्वर के कार्य के तीनों चरण विभिन्न युगों और स्थानों में किए गए हैं, और यद्यपि प्रत्येक का कार्य भी अलग-अलग है, किंतु यह सब कार्य एक ही परमेश्वर द्वारा किया गया है। सभी दर्शनों में, यह सबसे महान दर्शन है जो मनुष्य को जानना चाहिए, और यदि यह पूरी तरह से मनुष्य के द्वारा समझा जा सके, तो वह अडिग रहने में समर्थ होगा। आज विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं जानते हैं और वे पवित्र आत्मा के कार्य तथा जो कार्य पवित्र आत्मा के नहीं हैं, उनके बीच अंतर नहीं कर पाते—और इस कारण वे नहीं बता सकते कि क्या कार्य का यह चरण भी, कार्य के पिछले दो चरणों के समान, यहोवा परमेश्वर के द्वारा किया गया है। यद्यपि लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, तब भी उनमें से अधिकांश लोग अभी भी

यह बताने में समर्थ नहीं हैं कि क्या यही सही मार्ग है। मनुष्य चिंता करता रहता है कि क्या यही वह मार्ग है जिसकी अगुवाई स्वयं परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से की है और क्या परमेश्वर का देहधारण एक तथ्य है, और अधिकांश लोगों को तब भी कुछ पता नहीं होता कि इन चीजों को कैसे जानें। जो लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हैं वे मार्ग का निर्धारण करने में असमर्थ होते हैं, और इसलिए जो संदेश बोले जाते हैं उनका इन लोगों पर आंशिक प्रभाव पड़ता है, और वे पूरा प्रभाव डालने में असमर्थ रहते हैं, और इसलिए यह ऐसे लोगों के जीवन प्रवेश को प्रभावित करता है। यदि मनुष्य कार्य के तीनों चरणों में देख सकता कि वे विभिन्न समयों, स्थानों और लोगों में स्वयं परमेश्वर के द्वारा किए गए हैं, अगर मनुष्य यह देख सकता है कि, यद्यपि कार्य भिन्न है, तब भी यह सब एक ही परमेश्वर के द्वारा किया गया है, और चूँकि यह कार्य एक ही परमेश्वर द्वारा किया गया है, तो इसे सही और त्रुटिहीन होना चाहिए, और यह भी कि यद्यपि यह मनुष्यों की धारणाओं से मेल नहीं खाता है, तो भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि यह एक ही परमेश्वर का कार्य है—यदि मनुष्य निश्चित होकर कह सके कि यह एक ही परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य है, तो मनुष्य की धारणाएँ तुच्छ और गौण हो जाएँगी। क्योंकि मनुष्य के दर्शन अस्पष्ट हैं, और क्योंकि मनुष्य केवल यहोवा को परमेश्वर के रूप में और यीशु को प्रभु के रूप में जानता है, और आज के देहधारी परमेश्वर के बारे में दुविधा में है, इसलिए कई लोग यहोवा और यीशु के कार्यों के प्रति समर्पित रहते हैं, और आज के कार्य के बारे में धारणाओं से ग्रस्त हैं, अधिकांश लोग हमेशा संशय में रहते हैं और आज के कार्य को गंभीरता से नहीं लेते हैं। मनुष्य की कार्य के पिछले दो चरणों के बारे में कोई धारणाएँ नहीं हैं, जो अदृश्य थे। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य पिछले दोनों चरणों की वास्तविकता को नहीं समझता है और व्यक्तिगत रूप से वह उनका साक्षी नहीं रहा है। चूँकि कार्य के इन चरणों को देखा नहीं जा सकता है, इसलिए मनुष्य इनके बारे में मनचाही कल्पनाएँ करता है; वह कुछ भी क्यों न सोचता रहे, पर इन कल्पनाओं को सिद्ध करने के लिए कोई तथ्य नहीं हैं, और इन्हें सुधारने वाला भी कोई नहीं है। मनुष्य कोई सावधानी बरते बिना और अपनी कल्पनाओं को बेलगाम दौड़ाते हुए अपनी प्राकृतिक सहज प्रवृत्ति को खुली छूट दे देता है, क्योंकि उसकी कल्पनाओं को सत्यापित करने के लिए कोई तथ्य नहीं हैं, इसलिए मनुष्य की कल्पनाएँ "तथ्य" बन जाती हैं, भले ही उनका कोई प्रमाण हो या न हो। इस प्रकार, मनुष्य अपने मन में कल्पित परमेश्वर को ही मानने लगता है और वास्तविकता के परमेश्वर को नहीं खोजता है। यदि एक व्यक्ति का एक प्रकार का विश्वास है, तो सौ लोगों के बीच सौ प्रकार के विश्वास होंगे। मनुष्य के पास इसी

प्रकार के विश्वास हैं क्योंकि उसने परमेश्वर के कार्य की वास्तविकता को नहीं देखा है, क्योंकि उसने इसे सिर्फ अपने कानों से सुना है और अपनी आँखों से नहीं देखा है। मनुष्य ने उपाख्यानों और कहानियों को सुना है, परंतु उसने परमेश्वर के कार्य के तथ्यों के ज्ञान के बारे में शायद ही सुना है। इस प्रकार, वे जो केवल एक वर्ष से विश्वासी रहे हैं, परमेश्वर पर अपनी खुद की धारणाओं के माध्यम से विश्वास करते हैं। यही उन सभी के बारे में भी सत्य है जिन्होंने परमेश्वर पर जीवन भर विश्वास किया है। जो लोग तथ्यों को नहीं देख सकते वे ऐसे विश्वास से बच नहीं सकते जिसमें परमेश्वर के बारे में उनकी अपनी धारणाएँ हैं। मनुष्य यह मानता है कि उसने स्वयं को अपनी सभी पुरानी धारणाओं के बंधनों से मुक्त कर लिया है और एक नए क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है। क्या मनुष्य यह नहीं जानता कि उन लोगों का ज्ञान जो परमेश्वर का असली चेहरा नहीं देख सकते, केवल धारणाएँ और अफ़वाहें हैं? मनुष्य सोचता है कि उसकी धारणाएँ सही हैं और बिना गलतियों की हैं, और सोचता है कि ये धारणाएँ परमेश्वर की ओर से आती हैं। आज, जब मनुष्य परमेश्वर के कार्य देखता है, वह उन धारणाओं को खुला छोड़ देता है जो कई सालों से बनती रही हैं। अतीत की कल्पनाएँ और विचार इस चरण के कार्य में अवरोध बन गए हैं और मनुष्य के लिए इस प्रकार की धारणाओं को छोड़ना और इस प्रकार के विचारों का खंडन करना कठिन हो गया है। इस कदम-दर-कदम कार्य को लेकर ऐसे बहुत-से लोगों की धारणाएँ, जिन्होंने आज तक परमेश्वर का अनुसरण किया है, अत्यंत हानिकारक हो गई हैं और इन लोगों ने देहधारी परमेश्वर के प्रति धीरे-धीरे एक हठी शत्रुता विकसित कर ली है। इस घृणा का स्रोत मनुष्य की धारणाओं और कल्पनाओं में निहित है। मनुष्य की धारणाएँ और कल्पनाएँ आज के कार्य की शत्रु बन गई हैं, वह कार्य जो मनुष्य की धारणाओं से मेल नहीं खाता। ऐसा इसीलिए हुआ है क्योंकि तथ्य मनुष्य को उसकी कल्पनाशीलता को खुली छूट देने की अनुमति नहीं देते, और इसके साथ ही, वे मनुष्य द्वारा आसानी से खंडित नहीं किए जा सकते, और मनुष्य की धारणाएँ और कल्पनाएँ तथ्यों के अस्तित्व को मिटा नहीं सकतीं, और साथ ही, क्योंकि मनुष्य तथ्यों की सटीकता और सच्चाई पर विचार नहीं करता है, और केवल एक ही तरह सोचते हुए अपनी धारणाओं को खुला छोड़ देता है, और अपनी खुद की कल्पनाओं को काम में लाता है। इसे केवल मनुष्यों की धारणाओं का दोष ही कहा जा सकता है, इसे परमेश्वर के कार्य का दोष नहीं कहा जा सकता। मनुष्य जो चाहे कल्पना कर सकता है, परंतु वह परमेश्वर के कार्य के किसी भी चरण या इसके छोटे से भी अंश के बारे में मुक्त भाव से विवाद नहीं कर सकता है; परमेश्वर के कार्य का तथ्य मनुष्य द्वारा अनुल्लंघनीय है। तुम अपनी कल्पनाओं को

खुली छूट दे सकते हो, और यहाँ तक कि यहोवा एवं यीशु के कार्यों के बारे में बढ़िया कथाओं का भी संकलन कर सकते हो, परंतु तुम यहोवा और यीशु के कार्य के प्रत्येक चरण के तथ्य का खंडन नहीं कर सकते; यह एक सिद्धांत है, और एक प्रशासकीय आदेश भी है, और तुम लोगों को इन मामलों के महत्व को समझना चाहिए। मनुष्य यह समझता है कि कार्य का यह चरण मनुष्य की धारणाओं के साथ असंगत है, जबकि पिछले दो चरणों के कार्य के साथ ऐसी कोई बात नहीं है। अपनी कल्पना में, मनुष्य यह विश्वास करता है कि पिछले दोनों चरणों का कार्य निश्चित रूप से आज के कार्य के समान नहीं है—परंतु क्या तुमने कभी यह ध्यान दिया है कि परमेश्वर के कार्य के सभी सिद्धांत एक ही हैं, कि उसका कार्य हमेशा व्यावहारिक होता है, और युग चाहे कोई भी हो, ऐसे लोगों की हमेशा भरमार होगी जो उसके कार्य के तथ्य का प्रतिरोध और विरोध करते हैं? आज जो लोग कार्य के इस चरण का प्रतिरोध और विरोध करते हैं वे निस्संदेह अतीत में भी परमेश्वर का विरोध करते, क्योंकि इस प्रकार के लोग सदैव परमेश्वर के शत्रु रहेंगे। वे लोग जो परमेश्वर के कार्य के तथ्य को जानते हैं, कार्यों के इन तीन चरणों को एक ही परमेश्वर के कार्य के रूप में देखेंगे, और अपनी धारणाओं को छोड़ देंगे। ये वे लोग हैं जो परमेश्वर को जानते हैं, और सचमुच परमेश्वर का अनुसरण करते हैं। जब परमेश्वर के प्रबंधन का संपूर्ण कार्य समाप्ति के निकट होगा, तो परमेश्वर प्रत्येक वस्तु को उसके प्रकार के आधार पर श्रेणीबद्ध करेगा। मनुष्य रचयिता के हाथों से रचा गया था, और अंत में वह मनुष्य को पूरी तरह से अपने प्रभुत्व में ले लेगा; कार्य के तीन चरणों का यही निष्कर्ष है। अंत के दिनों में कार्य का चरण और इस्राएल एवं यहूदा में पिछले दो चरण, संपूर्ण ब्रह्मांड में परमेश्वर के प्रबंधन की योजना के हिस्से हैं। इसे कोई नकार नहीं सकता है, और यह परमेश्वर के कार्य का तथ्य है। यद्यपि लोगों ने इस कार्य के बहुत-से हिस्से का अनुभव नहीं किया है या इसके साक्षी नहीं हैं, परंतु तथ्य तब भी तथ्य ही हैं और इसे किसी भी मनुष्य के द्वारा नकारा नहीं जा सकता है। ब्रह्मांड के हर देश के लोग जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वे सभी कार्य के इन तीनों चरणों को स्वीकार करेंगे। यदि तुम कार्य के किसी एक विशेष चरण को ही जानते हो, और कार्य के अन्य दो चरणों को नहीं समझते हो, अतीत में परमेश्वर द्वारा किए गए कार्यों को नहीं समझते हो, तो तुम परमेश्वर के प्रबंधन की समस्त योजना के संपूर्ण सत्य के बारे में बात करने में असमर्थ हो, और परमेश्वर के बारे में तुम्हारा ज्ञान एक-पक्षीय है, क्योंकि तुम परमेश्वर को जानते या समझते नहीं हो, और इसलिए तुम परमेश्वर की गवाही देने के लिए उपयुक्त नहीं हो। इन चीज़ों के बारे में तुम्हारा वर्तमान ज्ञान चाहे गहरा हो या सतही, अंत में, तुम लोगों के पास ज्ञान होना चाहिए,

और तुम्हें पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहिए, और सभी लोग परमेश्वर के कार्य की संपूर्णता को देखेंगे और उसके प्रभुत्व के अधीन समर्पित होंगे। इस कार्य के अंत में, सभी धर्म एक हो जाएँगे, सभी प्राणी सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व के अधीन वापस लौट जाएँगे, सभी प्राणी एक ही सच्चे परमेश्वर की आराधना करेंगे, और सभी दुष्ट धर्म नष्ट हो जाएँगे और फिर कभी भी प्रकट नहीं होंगे।

कार्य के इन तीनों चरणों का निरंतर उल्लेख क्यों किया जा रहा है? युगों का बीतना, सामाजिक विकास और प्रकृति का बदलता हुआ स्वरूप सभी कार्य के तीनों चरणों में परिवर्तनों का अनुसरण करते हैं। मानवजाति परमेश्वर के कार्य के साथ समय के अनुसार बदलती है, और अपने-आप विकसित नहीं होती है। परमेश्वर के कार्यों के तीन चरणों का उल्लेख सभी प्राणियों को और प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के लोगों को एक ही परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन लाने के लिए है। चाहे तुम किसी भी धर्म से संबंधित हो, अंततः तुम परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन समर्पित हो जाओगे। केवल स्वयं परमेश्वर ही इस कार्य को कर सकता है; यह किसी धर्म-प्रमुख द्वारा नहीं किया जा सकता। संसार में कई प्रमुख धर्म हैं, प्रत्येक का अपना प्रमुख, या अगुआ है, और उनके अनुयायी संसार भर के देशों और सम्प्रदायों में सभी ओर फैले हुए हैं; प्रत्येक देश में, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, भिन्न-भिन्न धर्म हैं। फिर भी, संसार भर में चाहे कितने ही धर्म क्यों न हों, ब्रह्मांड के सभी लोग अंततः एक ही परमेश्वर के मार्गदर्शन के अधीन अस्तित्व में हैं, और उनका अस्तित्व धर्म-प्रमुखों या अगुवाओं द्वारा मार्गदर्शित नही है। कहने का अर्थ है कि मानवजाति किसी विशेष धर्म-प्रमुख या अगुवा द्वारा मार्गदर्शित नहीं है; बल्कि संपूर्ण मानवजाति को एक ही रचयिता के द्वारा मार्गदर्शित किया जाता है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी का और सभी चीजों का और मानवजाति का भी सृजन किया है—यह एक तथ्य है। यद्यपि संसार में कई प्रमुख धर्म हैं, किंतु वे कितने ही महान क्यों न हों, वे सभी सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व के अधीन अस्तित्व में हैं और उनमें से कोई भी इस प्रभुत्व के दायरे से बाहर नहीं जा सकता है। मानवजाति का विकास, सामाजिक प्रगति, प्राकृतिक विज्ञानों का विकास—प्रत्येक सृष्टिकर्ता की व्यवस्थाओं से अविभाज्य है और यह कार्य ऐसा नहीं है जो किसी धर्म-प्रमुख द्वारा किया जा सके। धर्म-प्रमुख किसी विशेष धर्म के सिर्फ़ अगुआ हैं, और वे परमेश्वर का, या उसका जिसने स्वर्ग, पृथ्वी और सभी चीज़ों को रचा है, प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं। धर्म-प्रमुख पूरे धर्म के भीतर सभी का नेतृत्व कर सकते हैं, परंतु वे स्वर्ग के नीचे के सभी प्राणियों को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं—यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत तथ्य है। धर्म-प्रमुख मात्र अगुआ हैं, और वे परमेश्वर (सृष्टिकर्ता) के समकक्ष खड़े नहीं हो सकते। सभी चीजें

रचयिता के हाथों में हैं, और अंत में वे सभी रचयिता के हाथों में लौट जाएँगी। मानवजाति मूल रूप से परमेश्वर द्वारा बनाई गई थी, और किसी का धर्म चाहे कुछ भी हो, प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन लौट जाएगा—यह अपरिहार्य है। केवल परमेश्वर ही सभी चीज़ों में सर्वोच्च है, और सभी प्राणियों में उच्चतम शासक को भी उसके प्रभुत्व के अधीन लौटना होगा। मनुष्य की कद-काठी चाहे कितनी भी ऊँची क्यों न हो, लेकिन वह मनुष्य मानवजाति को किसी उपयुक्त गंतव्य तक नहीं ले जा सकता, और कोई भी सभी चीजों को उनके प्रकार के आधार पर वर्गीकृत करने में सक्षम नहीं है। स्वयं यहोवा ने मानवजाति की रचना की और प्रत्येक को उसके प्रकार के आधार पर वर्गीकृत किया, और जब अंत का समय आएगा तो वह तब भी, सभी चीजों को उनकी प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत करते हुए, अपना कार्य स्वयं ही करेगा—यह कार्य परमेश्वर के अलावा और किसी के द्वारा नहीं किया जा सकता है। आरंभ से आज तक किए गए कार्य के सभी तीन चरण स्वयं परमेश्वर के द्वारा किए गए थे और एक ही परमेश्वर के द्वारा किए गए थे। कार्य के तीन चरणों का तथ्य परमेश्वर की समस्त मानवजाति की अगुआई का तथ्य है, एक ऐसा तथ्य जिसे कोई नकार नहीं सकता। कार्य के तीन चरणों के अंत में, सभी चीजें उनके प्रकारों के आधार पर वर्गीकृत की जाएँगी और परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन लौट जाएँगी, क्योंकि संपूर्ण ब्रह्मांड में केवल इसी एक परमेश्वर का अस्तित्व है, और कोई दूसरे धर्म नहीं हैं। जो संसार का निर्माण करने में अक्षम है वह उसका अंत करने में भी अक्षम होगा, जबकि जिसने संसार की रचना की है वह उसका अंत भी निश्चित रूप से करेगा। इसलिए, यदि कोई युग का अंत करने में असमर्थ है और केवल मानव के मस्तिष्क को विकसित करने में उसकी सहायता करने में सक्षम है, तो वह निश्चित रूप से परमेश्वर नहीं होगा, और निश्चित रूप से मानवजाति का प्रभु नहीं होगा। वह इस तरह के महान कार्य को करने में असमर्थ होगा; केवल एक ही है जो इस प्रकार का कार्य कर सकता है, और वे सभी जो यह कार्य करने में असमर्थ हैं, निश्चित रूप से शत्रु हैं, न कि परमेश्वर। सभी दुष्ट धर्म परमेश्वर के साथ असंगत हैं, और चूँकि वे परमेश्वर के साथ असंगत हैं, वे परमेश्वर के शत्रु हैं। समस्त कार्य केवल इसी एक सच्चे परमेश्वर द्वारा किया जाता है, और संपूर्ण ब्रह्मांड केवल इसी एक परमेश्वर द्वारा आदेशित किया जाता है। चाहे वह इस्राएल में कर रहा है या चीन में, चाहे यह कार्य पवित्रात्मा द्वारा किया जाए या देह के द्वारा, किया सब कुछ परमेश्वर के द्वारा ही जाता है, किसी अन्य के द्वारा नहीं। बिल्कुल इसीलिए क्योंकि वह समस्त मानवजाति का परमेश्वर है और किसी भी परिस्थिति से बाधित हुए बिना, स्वतंत्र रूप से कार्य करता है—यह सभी दर्शनों में सबसे महान है। परमेश्वर

के एक प्राणी के रूप में, यदि तुम परमेश्वर के प्राणी के कर्तव्य को निभाना चाहते हो और परमेश्वर की इच्छा को समझते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के कार्य को अवश्य समझना चाहिए, प्राणियों के लिए परमेश्वर की इच्छा को अवश्य समझना चाहिए, तुम्हें उसकी प्रबंधन योजना को अवश्य समझना चाहिए, और उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य के समस्त महत्व को भी अवश्य समझना चाहिए। जो लोग इस बात को नहीं समझते हैं वे परमेश्वर के प्राणी होने के योग्य नहीं हैं! परमेश्वर के प्राणी के रूप में, यदि तुम यह नहीं समझते हो कि तुम कहाँ से आए हो, मानवजाति के इतिहास और परमेश्वर द्वारा किए गए संपूर्ण कार्य को नहीं समझते हो, और, इसके अलावा, यह नहीं समझते हो कि आज तक मानवजाति का विकास कैसे हुआ है, और नहीं समझते हो कि कौन संपूर्ण मानवजाति को नियंत्रित करता है, तो तुम अपने कर्तव्य को करने में अक्षम हो। परमेश्वर ने आज तक मानवजाति की अगुवाई की है, और जब से उसने पृथ्वी पर मनुष्य की रचना की है तब से उसने उसे कभी भी नहीं छोड़ा है। पवित्र आत्मा कभी भी कार्य करना बंद नहीं करता है, उसने मानवजाति की अगुवाई करना कभी भी बंद नहीं किया है, और कभी भी मानवजाति को नहीं त्यागा है। परंतु परमेश्वर के बारे में जानना तो दूर, मानवजाति को यह भी अहसास नहीं होता कि परमेश्वर है, और क्या परमेश्वर के सभी प्राणियों के लिए इससे अधिक अपमानजनक कुछ और हो सकता है? परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से मनुष्य की अगुवाई करता है, परंतु मनुष्य परमेश्वर के कार्य को नहीं समझता है। तुम परमेश्वर के एक प्राणी हो, फिर भी तुम अपने ही इतिहास को नहीं समझते हो, और इस बात से अनजान हो कि किसने तुम्हारी यात्रा में तुम्हारी अगुआई की है, तुम परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य के प्रति बेसुध हो और इसलिए तुम परमेश्वर को नहीं जान सकते हो। यदि तुम नहीं जानते हो, तो तुम कभी भी परमेश्वर की गवाही देने के योग्य नहीं बनोगे। आज, सृष्टिकर्ता व्यक्तिगत तौर पर एक बार फिर से सभी लोगों की अगुवाई कर रहा है, और सभी लोगों को अपनी बुद्धि, सर्वशक्तिमत्ता, उद्धार और उत्कृष्टता दिखाता है। फिर भी तुम्हें अब भी न तो इसका अहसास है और न तुम इसे समझते हो—इसलिए क्या तुम वह नहीं हो जिसे उद्धार प्राप्त नहीं होगा? जो शैतान से संबंधित होते हैं वे परमेश्वर के वचनों को नहीं समझते हैं और जो परमेश्वर से संबंधित होते हैं वे परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकते हैं। वे सभी लोग जो मेरे द्वारा बोले गए वचनों को महसूस करते और समझते हैं ऐसे लोग हैं जो बचा लिए जाएँगे, और परमेश्वर की गवाही देंगे; वे सभी लोग जो मेरे द्वारा बोले गए वचनों को नहीं समझते हैं, परमेश्वर की गवाही नहीं दे सकते हैं, वे ऐसे लोग हैं जो निकाल दिए जाएँगे। जो लोग परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते हैं और

परमेश्वर के कार्य का अहसास नहीं करते हैं वे परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करने में अक्षम हैं, और इस प्रकार के लोग परमेश्वर की गवाही नहीं देंगे। यदि तुम परमेश्वर की गवाही देना चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर को अवश्य जानना होगा, और परमेश्वर के कार्य के द्वारा ही परमेश्वर के ज्ञान को पाया जा सकता है। कुल मिला कर, यदि तुम परमेश्वर को जानने की इच्छा करते हो, तो तुम्हें उसके कार्य को अवश्य जानना चाहिए : परमेश्वर के कार्य को जानना सबसे महत्वपूर्ण बात है। जब कार्य के तीन चरण समाप्ति पर पहुँचेंगे, तो ऐसे लोगों का एक समूह बनाया जाएगा जो परमेश्वर की गवाही देंगे, ऐसे लोगों का समूह जो परमेश्वर को जानते हैं। ये सभी लोग परमेश्वर को जानेंगे और सत्य को व्यवहार में लाने में समर्थ होंगे। उनमें मानवता और समझ होगी और उन्हें परमेश्वर के उद्धार के कार्य के तीनों चरणों का ज्ञान होगा। यही कार्य अंत में निष्पादित होगा, और यही लोग 6,000 साल के प्रबंधन के कार्य का सघनित रूप हैं, और शैतान की अंतिम पराजय की सबसे शक्तिशाली गवाही हैं। जो परमेश्वर की गवाही दे सकते है वे ही परमेश्वर की प्रतिज्ञा और आशीष को प्राप्त करने में समर्थ होंगे, और ऐसा समूह होंगे जो बिल्कुल अंत तक बना रहेगा, वह समूह जो परमेश्वर के अधिकार को धारण करेगा और परमेश्वर की गवाही देगा। शायद तुम लोगों में से सभी, या शायद केवल आधे या केवल थोड़े से ही इस समूह के सदस्य बन सकते हैं—यह तुम लोगों की इच्छा और खोज पर निर्भर करता है।

भ्रष्ट मनुष्यजाति को देहधारी परमेश्वर द्वारा उद्धार की अधिक आवश्यकता है

परमेश्वर इसलिए देहधारी बना क्योंकि उसके कार्य का लक्ष्य शैतान की आत्मा, या कोई अमूर्त चीज़ नहीं, बल्कि मनुष्य है, जो हाड़-माँस का बना है और जिसे शैतान ने भ्रष्ट कर दिया है। चूँकि इंसान की देह को भ्रष्ट कर दिया गया है, इसलिए परमेश्वर ने हाड़-माँस के मनुष्य को अपने कार्य का लक्ष्य बनाया है; इसके अतिरिक्त, चूँकि मनुष्य भ्रष्टता का लक्ष्य है, इसलिए परमेश्वर ने उद्धार-कार्य के समस्त चरणों के दौरान मनुष्य को अपने कार्य का एकमात्र लक्ष्य बनाया है। मनुष्य एक नश्वर प्राणी है, हाड़-माँस और लहू से बना है, और एकमात्र परमेश्वर ही मनुष्य को बचा सकता है। इस तरह, परमेश्वर को अपना कार्य करने के लिए ऐसा देह बनना होगा जिसमें मनुष्य के समान ही गुण हों, ताकि उसका कार्य बेहतर प्रभाव पैदा कर सके। परमेश्वर को अपना कार्य करने के लिए इसलिए देहधारण करना होगा क्योंकि मनुष्य हाड़-माँस से

बना है और वह न तो पाप पर विजय पा सकता है और न ही स्वयं को शरीर से अलग कर सकता है। हालाँकि देहधारी परमेश्वर का सार और उसकी पहचान, मनुष्य के सार और पहचान से बहुत अधिक भिन्न है, फिर भी उसका रूप-रंग तो मनुष्य के समान ही है; उसका रूप-रंग किसी सामान्य व्यक्ति जैसा है, वह एक सामान्य व्यक्ति की तरह ही जीवन जीता है, देखने वाले उसमें और किसी सामान्य व्यक्ति में भेद नहीं कर सकते। यह सामान्य रूप-रंग और सामान्य मानवता उसके लिए सामान्य मानवता में अपना दिव्य कार्य करने हेतु पर्याप्त हैं। इस देह से वह सामान्य मानवता में अपना कार्य कर सकता है, यह देह इंसानों के बीच कार्य करने में उसकी सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, सामान्य मानवता इंसानों के बीच उद्धार-कार्य को कार्यान्वित करने में उसकी सहायता करती है। हालाँकि उसकी सामान्य मानवता ने लोगों में काफी कोलाहल मचा दिया है, फिर भी ऐसे कोलाहल ने उसके कार्य के सामान्य प्रभावों पर कोई असर नहीं डाला है। संक्षेप में, उसके सामान्य देह का कार्य मनुष्य के लिए सर्वाधिक लाभदायक है। हालाँकि अधिकांश लोग उसकी सामान्य मानवता को स्वीकार नहीं करते, तब भी उसका कार्य परिणाम हासिल कर सकता है, और ये परिणाम उसकी सामान्य मानवता के कारण प्राप्त होते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है। देह में उसके कार्य से, मनुष्य उन धारणाओं की अपेक्षा दस गुना या दर्जनों गुना ज़्यादा चीज़ों को प्राप्त करता है जो मनुष्य के बीच उसकी सामान्य मानवता को लेकर मौजूद हैं, और ऐसी धारणाओं को अंततः उसका कार्य पूरी तरह से निगल जाएगा। और वह प्रभाव जो उसके कार्य ने प्राप्त किया है, यानी वह ज्ञान जो मनुष्य को उसके बारे में है, मनुष्य की धारणाओं से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। वह देह में जो कार्य करता है उसकी कल्पना करने या उसे मापने का कोई तरीका नहीं है, क्योंकि उसका देह हाड़-माँस के इंसान की तरह नहीं है; हालाँकि उनका बाहरी आवरण एक जैसा है, फिर भी सार एक जैसा नहीं है। उसका देह परमेश्वर के बारे में लोगों के बीच कई तरह की धारणाओं को जन्म देता है, फिर भी उसका देह मनुष्य को अधिक ज्ञान भी अर्जित करने दे सकता है, और वह किसी भी ऐसे व्यक्ति पर विजय प्राप्त कर सकता है जिसका बाहरी आवरण समान ही है। क्योंकि वह मात्र एक मनुष्य नहीं है, बल्कि मनुष्य जैसे बाहरी आवरण वाला परमेश्वर है, कोई भी पूरी तरह से उसकी गहराई को न तो माप सकता है और न ही उसे समझ सकता है। सभी लोग एक अदृश्य और अस्पृश्य परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसका स्वागत करते हैं। यदि परमेश्वर मात्र एक अदृश्य आत्मा हो, तो परमेश्वर पर विश्वास करना इंसान के लिए बहुत आसान हो जाता है। लोग जैसी चाहे कल्पना कर सकते हैं, अपने आपको खुश करने के लिए किसी भी

आकृति को परमेश्वर की आकृति के रूप में चुन सकते हैं। इस तरह से, लोग बेहिचक वह सब कर सकते हैं जो उनके परमेश्वर को पसंद हो और जो वह उनसे करवाना चाहता हो, इसके अलावा, लोग मानते हैं कि परमेश्वर के प्रति उनसे ज़्यादा निष्ठावान भक्त और कोई नहीं है, बाकी सब तो अन्य जातियों के कुत्ते हैं, और परमेश्वर के प्रति वफादार नहीं हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि इसे वे लोग खोजते हैं जिनकी परमेश्वर में आस्था अस्पष्ट और सिद्धान्तों पर आधारित होती है; ऐसे लोगों की खोज कमोबेश एक-सी ही होती है। बात केवल इतनी ही है कि उनकी कल्पनाओं में परमेश्वर की छवि अलग-अलग होती हैं, उसके बावजूद उनका सार वास्तव में एक ही होता है।

मनुष्य परमेश्वर में अपने बेफिक्री भरे विश्वास से परेशान नहीं होता, और जैसा उसे भाता है उसी तरह से परमेश्वर में विश्वास करता है। यह मनुष्य के "अधिकार और आज़ादी" में से एक है, जिसमें कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता, क्योंकि मनुष्य अपने परमेश्वर में विश्वास करता है, किसी अन्य के परमेश्वर में नहीं; यह उसकी निजी सम्पत्ति है, और लगभग हर कोई इस तरह की निजी सम्पत्ति रखता है। लोग इस सम्पत्ति को एक बहुमूल्य ख़ज़ाने की तरह मानते हैं, किन्तु परमेश्वर के लिए इससे अधिक अधम या मूल्यहीन चीज़ और कोई नहीं है, क्योंकि मनुष्य की इस निजी सम्पत्ति से अधिक और कोई भी चीज़ परमेश्वर के विरोध का स्पष्ट संकेत नहीं हो सकती। देहधारी परमेश्वर के कार्य की वजह से परमेश्वर स्पर्श-गम्य देह धारण करता है, जिसे इंसान देख और छू सकता है। वह कोई निराकार पवित्रात्मा नहीं है, बल्कि एक देह है मनुष्य जिसे देख सकता है और जिससे सम्पर्क कर सकता है। लेकिन अधिकांश लोग जिन परमेश्वरों पर विश्वास करते हैं, वे निराकार देवता होते हैं, उनका कोई रूप नहीं होता। इस तरह, देहधारी परमेश्वर उनमें से अधिकांश लोगों का शत्रु बन गया है जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, और जो लोग परमेश्वर के देहधारण के तथ्य को स्वीकार नहीं कर पाते, उसी तरह, वे भी परमेश्वर के विरोधी बन गए हैं। इंसान ने अपने सोचने के तरीके या अपनी विद्रोहशीलता की वजह से नहीं बल्कि अपनी इस निजी सम्पत्ति की वजह से धारणाएँ बना ली हैं। इसी निजी सम्पत्ति की वजह से अधिकांश लोग मरते हैं, और यही वह अस्पष्ट परमेश्वर है जिसे स्पर्श नहीं किया जा सकता, देखा नहीं जा सकता, उस वास्तविकता में उसका कोई अस्तित्व नहीं है जो इंसान के जीवन को बर्बाद कर देती है। मनुष्य के जीवन को देहधारी परमेश्वर ने नहीं, स्वर्ग के परमेश्वर ने तो बिलकुल नहीं, बल्कि इंसान की अपनी कल्पना के परमेश्वर ने दबोच लिया है। भ्रष्ट इंसान की आवश्यकताओं के कारण ही देहधारी परमेश्वर देह में आया है। परमेश्वर के समस्त बलिदान और कष्ट

मनुष्य की आवश्यकताओं की वजह से हैं, न कि परमेश्वर की आवश्यकताओं के कारण, न ही वे स्वयं परमेश्वर के लाभ के लिए हैं। परमेश्वर के लिए कोई फायदे-नुकसान या प्रतिफल नहीं हैं; परमेश्वर को भविष्य में कोई लाभ नहीं मिलने वाला, बल्कि जो मूल रूप से उसके प्रति बकाया था वह बस वही प्राप्त करेगा। वह इंसान के लिए जो कुछ करता और त्यागता है, इसलिए नहीं है कि वह कोई बड़ा प्रतिफल प्राप्त कर सके, बल्कि यह पूरी तरह इंसान के लिए ही है। हालाँकि देह में परमेश्वर के कार्य से अनेक अकल्पनीय मुश्किलें जुड़ी हैं, फिर भी जिन प्रभावों को वह अंततः प्राप्त करता है वे उन कार्यों से कहीं बढ़कर होते हैं जिन्हें पवित्रात्मा के द्वारा सीधे तौर पर किया जाता है। देह के कार्य में काफी कठिनाइयाँ अपरिहार्य हैं, देह वही पहचान धारण नहीं कर सकता जो पवित्रात्मा की होती है, वह आत्मा की तरह अलौकिक कार्य नहीं कर सकता, उसमें आत्मा के समान अधिकार होने का तो सवाल ही नहीं। फिर भी इस मामूली देह के द्वारा किए गए कार्य का सार पवित्रात्मा के द्वारा सीधे तौर पर किए गए कार्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, और यह स्वयं देह ही है जो समस्त मानवजाति की आवश्यकताओं का उत्तर है। क्योंकि जिन्हें बचाया जाना है उनके लिए, पवित्रात्मा का उपयोगिता मूल्य देह की अपेक्षा कहीं अधिक निम्न है: पवित्रात्मा का कार्य संपूर्ण विश्व, सारे पहाड़ों, नदियों, झीलों और महासागरों को समाविष्ट करने में सक्षम है, मगर देह का कार्य और अधिक प्रभावकारी ढंग से प्रत्येक ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध रखता है जिसके साथ वो सम्पर्क में आता है। इसके अलावा, स्पर्श-गम्य रूप वाले परमेश्वर के देह को मनुष्य के द्वारा बेहतर ढंग से समझा जा सकता है और उस पर भरोसा किया जा सकता है, और यह परमेश्वर के बारे में मनुष्य के ज्ञान को और गहरा कर सकता है, तथा मनुष्य पर परमेश्वर के वास्तविक कर्मों का और अधिक गंभीर प्रभाव छोड़ सकता है। आत्मा का कार्य रहस्य से ढका हुआ है; इसकी थाह पाना नश्वर प्राणियों के लिए कठिन है, उनके लिए उसे देख पाना तो और भी मुश्किल है। इसलिए वे मात्र खोखली कल्पनाओं पर ही भरोसा कर सकते हैं। लेकिन देह का कार्य सामान्य है और वास्तविकता पर आधारित है, उसकी बुद्धि कुशाग्र है, और एक ऐसी सच्चाई है जिसे इंसान अपनी आँखों से देख सकता है; इंसान परमेश्वर के कार्य की बुद्धि का अनुभव व्यक्तिगत रूप से कर सकता है, उसके लिए उसे अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाने की आवश्यकता नहीं है। यह देहधारी परमेश्वर के कार्य की सटीकता और उसका वास्तविक मूल्य है। पवित्रात्मा केवल उन्हीं कार्यों को कर सकता है जो मनुष्य के लिए अदृश्य हैं और जिसकी कल्पना करना उसके लिए कठिन है, उदाहरण के लिए पवित्रात्मा की प्रबुद्धता, पवित्रात्मा का प्रेरित करना, और पवित्रात्मा का मार्गदर्शन,

लेकिन समझदार इंसान को इनका कोई स्पष्ट अर्थ समझ में नहीं आता। वे केवल एक चलता-फिरता या एक मोटा-मोटा अर्थ प्रदान करते हैं, और शब्दों से कोई निर्देश नहीं दे पाते। जबकि, देह में परमेश्वर का कार्य बहुत भिन्न होता है: इसमें वचनों का सटीक मार्गदर्शन होता है, स्पष्ट इच्छा होती है, और उसमें स्पष्ट अपेक्षित लक्ष्य होते हैं। इसलिए इंसान को अँधेरे में भटकने या अपनी कल्पना का उपयोग करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है, और अंदाज़ा लगाने की तो बिलकुल भी आवश्यकता नहीं होती। देह में किया गया कार्य बहुत स्पष्ट होता है, और पवित्रात्मा के कार्य से काफी अलग होता है। पवित्रात्मा का कार्य केवल एक सीमित दायरे में ही उपयुक्त होता है, यह देह के कार्य का स्थान नहीं ले सकता। देह का कार्य मनुष्य को पवित्रात्मा के कार्य की अपेक्षा कहीं अधिक सटीक और आवश्यक लक्ष्य तथा कहीं अधिक वास्तविक, मूल्यवान ज्ञान प्रदान करता है। भ्रष्ट मनुष्य के लिए सबसे अधिक मूल्य रखने वाला कार्य वो है जो सटीक वचन, अनुसरण के लिए स्पष्ट लक्ष्य प्रदान करे, जिसे देखा या स्पर्श किया जा सके। केवल यथार्थवादी कार्य और समयोचित मार्गदर्शन ही मनुष्य की अभिरुचियों के लिए उपयुक्त होता है, और केवल वास्तविक कार्य ही मनुष्य को उसके भ्रष्ट और दूषित स्वभाव से बचा सकता है। इसे केवल देहधारी परमेश्वर के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है; केवल देहधारी परमेश्वर ही मनुष्य को उसके पूर्व के भ्रष्ट और पथभ्रष्ट स्वभाव से बचा सकता है। यद्यपि पवित्रात्मा परमेश्वर का अंतर्निहित सार ही है, फिर भी इस तरह के कार्य को केवल उसके देह के द्वारा ही किया जा सकता है। यदि पवित्रात्मा अकेले ही कार्य करता, तब उसके कार्य का प्रभावशाली होना संभव नहीं होता—यह एक स्पष्ट सत्य है। यद्यपि अधिकांश लोग इस देह के कारण परमेश्वर के शत्रु बन गए हैं, फिर भी जब वह अपना कार्य पूरा करेगा, तो जो लोग उसके विरोधी हैं वे न केवल उसके शत्रु नहीं रहेंगे, बल्कि उसके गवाह बन जाएँगे। वे ऐसे गवाह बन जाएँगे जिन्हें उसके द्वारा जीत लिया गया है, ऐसे गवाह जो उसके अनुकूल हैं और उससे अभिन्न हैं। मनुष्य के लिए देह में उसने जो कार्य किया है उसके महत्व को वह मनुष्य को ज्ञात करवाएगा, और मनुष्य के अस्तित्व के अर्थ के लिए इस देह के महत्व को मनुष्य जानेगा, मनुष्य के जीवन के विकास के लिए उसके वास्तविक मूल्य को जानेगा, और इसके अतिरिक्त, यह जानेगा कि यह देह जीवन का एक जीवंत स्रोत बन जाएगा जिससे अलग होने की बात को मानव सहन नहीं कर सकता। हालाँकि देहधारी परमेश्वर का देह परमेश्वर की पहचान और रुतबे से बिल्कुल मेल नहीं खाता, और मनुष्य को परमेश्वर की वास्तविक हैसियत से असंगत प्रतीत होता है, फिर भी यह देह, जो परमेश्वर की असली छवि या परमेश्वर की सच्ची पहचान नहीं दर्शाता, वह कार्य कर

सकता है जिसे परमेश्वर का आत्मा सीधे तौर पर करने में असमर्थ है। ये हैं परमेश्वर के देहधारण के असली मायने और मूल्य, इस महत्व और मूल्य को इंसान न तो समझ पाता है और न ही स्वीकार कर पाता है। यद्यपि सभी लोग परमेश्वर के आत्मा का आदर करते हैं और परमेश्वर के देह का तिरस्कार करते हैं, फिर भी इस बात पर ध्यान न देते हुए कि वे क्या सोचते या देखते हैं, देह के वास्तविक मायने और मूल्य पवित्रात्मा से बहुत बढ़कर हैं। निस्संदेह, यह केवल भ्रष्ट मनुष्य के संबंध में है। चूँकि हर कोई जो सत्य की खोज करता है और परमेश्वर के प्रकटन की लालसा रखता है, उसके लिए पवित्रात्मा का कार्य केवल दिल को छू सकता या प्रेरणा प्रदान कर सकता है, अद्‌भुतता की समझ प्रदान कर सकता है जो बताती है कि यह अवर्णनीय और अकल्पनीय है, और एक बोध प्रदान कर सकता है जो बताता है कि यह महान, ज्ञानातीत, और प्रशंसनीय है, मगर सभी के लिए अलभ्य और अप्राप्य भी है। मनुष्य और परमेश्वर का आत्मा एक-दूसरे को केवल दूर से ही देख सकते हैं, मानो उनके बीच बहुत दूरी हो, और वे कभी भी एक समान नहीं हो सकते, मानो मनुष्य और परमेश्वर किसी अदृश्य विभाजन रेखा द्वारा अलग कर दिए गए हों। वास्तव में, यह पवित्रात्मा के द्वारा मनुष्य को दिया गया एक मायाजाल है, जो इसलिए है क्योंकि पवित्रात्मा और मनुष्य दोनों एक ही प्रकार के नहीं हैं, दोनों एक ही संसार में कभी साथ नहीं रह सकते, और क्योंकि पवित्रात्मा में मनुष्य का कुछ भी नहीं है। इसलिए मनुष्य को पवित्रात्मा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पवित्रात्मा सीधे तौर पर वह कार्य नहीं कर सकता जिसकी मनुष्य को सबसे अधिक आवश्यकता है। देह का कार्य मनुष्य को खोज करने के लिए वास्तविक लक्ष्य, स्पष्ट वचन, और यह समझ प्रदान करता है कि परमेश्वर वास्तविक, सामान्य, विनम्र और साधारण है। यद्यपि मनुष्य उसका भय मान सकता है, फिर भी अधिकांश लोगों के लिए उससे सम्बन्ध रखना आसान है : मनुष्य उसका चेहरा देख सकता है, उसकी आवाज़ सुन सकता है, इंसान को उसे दूर से देखने की आवश्यकता नहीं है। यह देह इंसान को सुगम्य लगता है, दूर या अथाह नहीं, बल्कि दृश्य और स्पर्शगम्य महसूस होता है, क्योंकि यह देह मनुष्य के समान इसी संसार में है।

जो लोग देह में जीवन बिताते हैं उन सभी के लिए, अपने स्वभाव को परिवर्तित करने के लिए ऐसे लक्ष्यों की आवश्यकता होती है जिनका अनुसरण किया जा सके, और परमेश्वर को जानने के लिए आवश्यक है परमेश्वर के वास्तविक कर्मों एवं वास्तविक चेहरे को देखना। दोनों को सिर्फ परमेश्वर के देहधारी रूप से ही प्राप्त किया जा सकता है, दोनों को सिर्फ साधारण और वास्तविक देह से ही पूरा किया

जा सकता है। इसीलिए देहधारण ज़रूरी है, और इसीलिए पूरी तरह से भ्रष्ट मनुष्यजाति को इसकी आवश्यकता है। चूँकि लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे परमेश्वर को जानें, इसलिए अस्पष्ट और अलौकिक परमेश्वरों की छवि को उनके हृदय से दूर हटाया जाना चाहिए, और चूँकि उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने भ्रष्ट स्वभाव को दूर करें, इसलिए उन्हें पहले अपने भ्रष्ट स्वभाव को पहचानना चाहिए। यदि लोगों के हृदय से अस्पष्ट परमेश्वरों की छवि को हटाने का कार्य केवल मनुष्य करे, तो वह उपयुक्त प्रभाव प्राप्त करने में असफल हो जाएगा। लोगों के हृदय से अस्पष्ट परमेश्वर की छवि को केवल वचनों से उजागर, दूर या पूरी तरह से निकाला नहीं जा सकता। ऐसा करने से, अंततः इन गहरी समाई चीज़ों को लोगों से हटाना तब भी संभव नहीं होगा। केवल इन अस्पष्ट और अलौकिक चीज़ों की जगह व्यावहारिक परमेश्वर और परमेश्वर की सच्ची छवि को रख कर, और लोगों को धीरे-धीरे इन्हें ज्ञात करवा कर ही उचित प्रभाव प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य को एहसास होता है कि जिस परमेश्वर को वह पहले से खोजता रहा है वह अस्पष्ट और अलौकिक है। पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अगुवाई इस प्रभाव को प्राप्त नहीं कर सकती, किसी व्यक्ति विशेष की नहीं बल्कि देहधारी परमेश्वर की शिक्षाएँ ऐसा कर सकती हैं। मनुष्य की धारणाएँ तब उजागर होती हैं जब देहधारी परमेश्वर आधिकारिक रूप से अपना कार्य करता है, क्योंकि देहधारी परमेश्वर की सामान्यता और वास्तविकता मनुष्य की कल्पना के अस्पष्ट एवं अलौकिक परमेश्वर से विपरीत हैं। मनुष्य की मूल धारणाएँ तो तभी उजागर हो सकती हैं जब उनकी देहधारी परमेश्वर से तुलना की जाये। देहधारी परमेश्वर से तुलना के बिना, मनुष्य की धारणाओं को उजागर नहीं किया जा सकता; दूसरे शब्दों में, वास्तविकता की विषमता के बिना अस्पष्ट चीज़ों को उजागर नहीं किया जा सकता। इस कार्य को करने के लिए कोई भी वचनों का उपयोग करने में सक्षम नहीं है, और कोई भी वचनों का उपयोग करके इस कार्य को स्पष्टता से व्यक्त करने में सक्षम नहीं है। केवल स्वयं परमेश्वर ही अपना कार्य कर सकता है, अन्य कोई उसकी ओर से इस कार्य को नहीं कर सकता। मनुष्य की भाषा कितनी भी समृद्ध क्यों न हो, वह परमेश्वर की वास्तविकता और सामान्यता को स्पष्टता से व्यक्त करने में असमर्थ है। यदि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से मनुष्य के बीच कार्य करे और अपनी छवि और अपने स्वरूप को पूरी तरह से प्रकट करे, तभी मनुष्य अधिक व्यावहारिकता से परमेश्वर को जान सकता है और अधिक स्पष्टता से देख सकता है। इस प्रभाव को कोई हाड़-माँस का इंसान प्राप्त नहीं कर सकता। निस्संदेह, परमेश्वर का आत्मा भी इस प्रभाव को प्राप्त करने में असमर्थ है। परमेश्वर भ्रष्ट मनुष्य को शैतान के प्रभाव से बचा सकता है, परन्तु इस

कार्य को सीधे तौर पर परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सम्पन्न नहीं किया जा सकता; इसे केवल उस देह के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है जिसे परमेश्वर का आत्मा पहनता है, अर्थात् देहधारी परमेश्वर के देह द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। यह देह मनुष्य भी है और परमेश्वर भी, यह एक सामान्य मानवता धारण किए हुए मनुष्य है और दिव्यता धारण किए हुए परमेश्वर भी है। और इसलिए, हालाँकि यह देह परमेश्वर का आत्मा नहीं है, और पवित्रात्मा से बिल्कुल भिन्न है, फिर भी वह देहधारी स्वयं परमेश्वर है जो मनुष्य को बचाता है, जो पवित्रात्मा है और देह भी है। उसे किसी भी नाम से पुकारो, आखिर वह है स्वयं परमेश्वर ही जो मनुष्यजाति को बचाता है। क्योंकि परमेश्वर का आत्मा देह से अविभाज्य है, और देह का कार्य भी परमेश्वर के आत्मा का कार्य है; अंतर बस इतना ही है कि इस कार्य को पवित्रात्मा की पहचान का उपयोग करके नहीं किया जाता, बल्कि देह की पहचान का उपयोग करके किया जाता है। सीधे तौर पर पवित्रात्मा द्वारा किए जाने वाले कार्य में देहधारण की आवश्यकता नहीं होती, और जिस कार्य को करने के लिए देह की आवश्यकता होती है उसे पवित्रात्मा द्वारा सीधे तौर पर नहीं किया जा सकता, उसे केवल देहधारी परमेश्वर द्वारा ही किया जा सकता है। इस कार्य के लिए इसी की आवश्यकता होती है, और भ्रष्ट इंसान को भी इसी की आवश्यकता है। परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों में, पवित्रात्मा द्वारा केवल एक ही चरण सीधे तौर पर सम्पन्न किया गया था, और शेष दो चरणों को देहधारी परमेश्वर द्वारा सम्पन्न किया जाता है, न कि सीधे पवित्रात्मा द्वारा। पवित्रात्मा द्वारा व्यवस्था के युग में किए गए कार्य में मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव को परिवर्तित करना शामिल नहीं था, और न ही इसका परमेश्वर के बारे में मनुष्य के ज्ञान से कोई सम्बन्ध था। हालाँकि, अनुग्रह के युग में और राज्य के युग में परमेश्वर के देह के कार्य में, मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव और परमेश्वर के बारे में उसका ज्ञान शामिल है, और उद्धार के कार्य का एक महत्वपूर्ण और निर्णायक हिस्सा है। इसलिए, भ्रष्ट मनुष्यजाति को देहधारी परमेश्वर के उद्धार और प्रत्यक्ष कार्य की और भी अधिक आवश्यकता है। मनुष्य को इस बात की आवश्यकता है कि देहधारी परमेश्वर उसकी चरवाही करे, उसे समर्थन दे, उसका सिंचन और पोषण करे, उसका न्याय करे, उसे ताड़ना दे। उसे देहधारी परमेश्वर से और अधिक अनुग्रह तथा बड़े छुटकारे की आवश्यकता है। केवल देह में प्रकट परमेश्वर ही मनुष्य का विश्वासपात्र, उसका चरवाहा, उसकी हर वक्त मौजूद सहायता बन सकता है, और यह सब वर्तमान और अतीत दोनों के ही देहधारण की आवश्यकताएँ हैं।

मनुष्य को शैतान ने भ्रष्ट कर दिया है, मनुष्य ही परमेश्वर के जीवधारियों में श्रेष्ठतम है, इसलिए मनुष्य

को परमेश्वर के उद्धार की आवश्यकता है। परमेश्वर के उद्धार का लक्ष्य मनुष्य है, शैतान नहीं, और जिसे बचाया जाएगा वह मनुष्य की देह और आत्मा है, शैतान नहीं। शैतान परमेश्वर के विनाश का लक्ष्य है और मनुष्य परमेश्वर के उद्धार का लक्ष्य है। मनुष्य के देह को शैतान के द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका है, इसलिए सबसे पहले मनुष्य की देह को ही बचाया जाएगा। मनुष्य की देह को इतना ज़्यादा भ्रष्ट किया जा चुका है कि वह परमेश्वर का इस हद तक विरोध करती है कि वह खुले तौर पर परमेश्वर का विरोध कर बैठती है और उसके अस्तित्व को ही नकारती है। यह भ्रष्ट देह बेहद अड़ियल है, देह के भ्रष्ट स्वभाव से निपटने और उसे परिवर्तित करने से ज़्यादा कठिन और कुछ भी नहीं। शैतान परेशानियाँ खड़ी करने के लिए मनुष्य की देह में आता है, और परमेश्वर के कार्य में व्यवधान उत्पन्न करने और उसकी योजना को बाधित करने के लिए मनुष्य की देह का उपयोग करता है। इस प्रकार इंसान शैतान बनकर परमेश्वर का शत्रु हो गया है। मनुष्य को बचाने के लिए, पहले उस पर विजय पानी होगी। इसी चुनौती से निपटने के लिए परमेश्वर जो कार्य करने का इरादा रखता है, उसकी खातिर देह में आता है और शैतान के साथ युद्ध करता है। उसका उद्देश्य भ्रष्ट मनुष्य का उद्धार, शैतान की पराजय और उसका विनाश है, जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करता है। परमेश्वर मनुष्य पर विजय पाने के अपने कार्य के माध्यम से शैतान को पराजित करता है, और साथ ही भ्रष्ट मनुष्यजाति को भी बचाता है। इस प्रकार, यह एक ऐसा कार्य है जो एक ही समय में दो लक्ष्यों को प्राप्त करता है। इंसान के साथ बेहतर ढंग से जुड़ने और उस पर विजय पाने के लिए वह देह में रहकर कार्य करता है, देह में रहकर बात करता है और देह में रहकर समस्त कार्यों की शुरुआत करता है। अंतिम बार जब परमेश्वर देहधारण करेगा, तो अंत के दिनों के उसके कार्य को देह में पूरा किया जाएगा। वह सभी मनुष्यों को उनके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करेगा, अपने सम्पूर्ण प्रबंधन को समाप्त करेगा, और साथ ही देह में अपने समस्त कार्यों को भी पूरा करेगा। पृथ्वी पर उसके सभी कार्यों के समाप्त हो जाने के बाद, वह पूरी तरह से विजयी हो जाएगा। देह में कार्य करते हुए, परमेश्वर मनुष्यजाति को पूरी तरह से जीत लेगा और उसे प्राप्त कर लेगा। क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि उसका समस्त प्रबंधन समाप्त हो चुका होगा? शैतान को पूरी तरह से हराने और विजयी होने के बाद, जब परमेश्वर देह में अपने कार्य का समापन करेगा, तो शैतान के पास मनुष्य को भ्रष्ट करने का फिर और कोई अवसर नहीं होगा। परमेश्वर के प्रथम देहधारण का कार्य छुटकारा और मनुष्य के पापों को क्षमा करना था। अब यह मनुष्यजाति को जीतने और पूरी तरह से प्राप्त करने का कार्य है, ताकि शैतान के पास अपना कार्य करने का कोई मार्ग न बचेगा,

और वह पूरी तरह से हार चुका होगा, और परमेश्वर पूरी तरह से विजयी हो चुका होगा। यह देह का कार्य है, और स्वयं परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य है। परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों के शुरुआती कार्य को सीधे तौर पर पवित्रात्मा के द्वारा किया गया था, देह के द्वारा नहीं। लेकिन, परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों का अंतिम कार्य देहधारी परमेश्वर द्वारा किया जाता है, पवित्रात्मा द्वारा सीधे तौर पर नहीं किया जाता। मध्यवर्ती चरण का छुटकारे का कार्य भी देह में परमेश्वर के द्वारा किया गया था। समस्त प्रबंधन कार्य के दौरान, सबसे महत्वपूर्ण कार्य शैतान के प्रभाव से मनुष्य को बचाना है। मुख्य कार्य भ्रष्ट मनुष्य पर सम्पूर्ण विजय है, इस प्रकार जीते गए मनुष्य के हृदय में परमेश्वर के प्रति मूल श्रद्धा बहाल करना, और उसे एक सामान्य जीवन, यानी परमेश्वर के एक प्राणी का सामान्य जीवन प्राप्त करने देना है। यह कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, और प्रबंधन कार्य का मूल है। उद्धार के कार्य के तीन चरणों में, व्यवस्था के युग का प्रथम चरण प्रबंधन कार्य के मूल से काफी दूर था; इसमें उद्धार के कार्य का केवल हल्का-सा आभास था, यह शैतान के अधिकार क्षेत्र से मनुष्य को बचाने के परमेश्वर के कार्य का आरम्भ नहीं था। कार्य का पहला चरण सीधे तौर पर पवित्रात्मा के द्वारा किया गया था क्योंकि, व्यवस्था के अन्तर्गत, मनुष्य केवल व्यवस्था का पालन करना जानता था, उसके अंदर अधिक सत्य नहीं था, और चूँकि व्यवस्था के युग के कार्य में मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन करना शामिल नहीं था, वह मनुष्य को शैतान के अधिकार-क्षेत्र से बचाने के कार्य से तो और भी संबंधित नहीं था। इस प्रकार परमेश्वर के आत्मा ने कार्य के इस अत्यंत सरल चरण को पूरा किया था जो मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव से संबंधित नहीं था। प्रबंधन के मूल से इस चरण के कार्य का कोई संबंध नहीं था, इसका मनुष्य के उद्धार के आधिकारिक कार्य से कोई बड़ा संबंध नहीं था, और इसलिए निजी तौर पर इस कार्य को करने के लिए परमेश्वर को देहधारण करने की आवश्यकता नहीं थी। पवित्रात्मा द्वारा किया गया कार्य अप्रत्यक्ष और अथाह है, यह मनुष्य के लिए भयावह और अगम्य है; पवित्रात्मा उद्धार के कार्य को करने और मनुष्य को सीधे तौर पर जीवन प्रदान करने के लिए उपयुक्त नहीं है। मनुष्य के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है पवित्रात्मा के कार्य को ऐसे उपमार्ग में रूपान्तरित करना जो मनुष्य के करीब हो, यानी जो मनुष्य के लिए अत्यंत उपयुक्त है वह यह है कि परमेश्वर अपने कार्य को करने के लिए एक साधारण, सामान्य व्यक्ति बन जाए। इसके लिए आवश्यक है कि पवित्रात्मा के कार्य का स्थान लेने के लिए परमेश्वर देहधारण करे, और मनुष्य के लिए, कार्य करने हेतु परमेश्वर के पास इससे अधिक उपयुक्त मार्ग नहीं है। कार्य के इन तीन चरणों में से, दो चरणों को देह के द्वारा सम्पन्न किया जाता है, और ये दो

चरण प्रबंधन कार्य की मुख्य अवस्थाएँ हैं। दो देहधारण परस्पर पूरक हैं और एक दूसरे की बढ़िया ढंग से अनुपूर्ति भी करते हैं। परमेश्वर के देहधारण के प्रथम चरण ने द्वितीय चरण की नींव डाली, ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर के दोनों देहधारण एक पूर्ण इकाई बनाते हैं, और एक-दूसरे से असंगत नहीं हैं। परमेश्वर के कार्य के इन दो चरणों को परमेश्वर द्वारा अपनी देहधारी पहचान में कार्यान्वित किया जाता है क्योंकि वे समस्त प्रबंधन के कार्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लगभग ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर के दो देहधारणों के कार्य के बिना, समस्त प्रबंधन कार्य थम गया होता, और मनुष्यजाति को बचाने का कार्य खोखली बातों के सिवाय और कुछ न होता। यह कार्य महत्वपूर्ण है या नहीं, यह मनुष्यजाति की आवश्यकताओं, उसकी कलुषता की वास्तविकता, शैतान की अवज्ञा की गंभीरता और कार्य में उसके व्यवधान पर आधारित है। कार्य करने में सक्षम सही व्यक्ति को कार्यकर्ता द्वारा किए गए कार्य की प्रकृति, और कार्य के महत्व पर निर्दिष्ट किया जाता है। जब इस कार्य के महत्व की बात आती है कि इस सम्बन्ध में कार्य के कौन से तरीके को अपनाया जाए—परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सीधे तौर पर किया गया कार्य, या देहधारी परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य, या मनुष्य के माध्यम से किया गया कार्य—तो सबसे पहले इंसान के माध्यम से किए गए कार्य को हटाया जाता है, और फिर कार्य की प्रकृति, पवित्रात्मा के कार्य की प्रकृति बनाम देह के कार्य की प्रकृति के आधार पर, अंततः यह निर्णय लिया जाता है कि पवित्रात्मा द्वारा सीधे तौर पर किए गए कार्य की अपेक्षा देह के द्वारा किया गया कार्य मनुष्य के लिए अधिक लाभदायक है और अधिक लाभ प्रदान करता है। जब परमेश्वर ने यह निर्णय लिया कि कार्य पवित्रात्मा के द्वारा किया जाएगा या देह के द्वारा तो उस समय परमेश्वर के मन में यह विचार आया था। कार्य के प्रत्येक चरण का एक अर्थ और एक आधार होता है। वे आधारहीन कल्पनाएँ नहीं होतीं, न ही उन्हें मनमाने ढंग से कार्यान्वित किया जाता है; उनमें एक विशेष बुद्धि होती है। परमेश्वर के समस्त कार्य के पीछे की यह सच्चाई है। विशेष रूप से, ऐसे बड़े कार्य में परमेश्वर की और भी बड़ी योजना होती है क्योंकि देहधारी परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से लोगों के बीच में कार्य कर रहा है। इसलिए, प्रत्येक क्रिया, विचार और मत में परमेश्वर की बुद्धि और उसके स्वरूप की समग्रता प्रतिबिम्बित होती है; यह परमेश्वर का बेहद मूर्त और सुव्यवस्थित स्वरूप है। इंसान के लिए इन गूढ़ विचारों और मतों की कल्पना करना और उन पर विश्वास करना बेहद कठिन है और इन्हें जानना तो और भी कठिन है। इंसान जो काम करता है, वह सामान्य सिद्धान्त के अनुसार किया जाता है, जो उसके लिए अत्यंत संतोषजनक होता है। लेकिन परमेश्वर के कार्य

की तुलना में, इसमें बहुत बड़ी असमानता दिखाई देती है; हालाँकि परमेश्वर के कर्म महान होते हैं और उसके कार्य भव्य पैमाने पर होते हैं, फिर भी उनके पीछे अनेक सूक्ष्म और सटीक योजनाएँ और व्यवस्थाएँ होती हैं जो मनुष्य के लिए अकल्पनीय हैं। उसके कार्य का प्रत्येक चरण न केवल सिद्धान्त के अनुसार किया जाता है, बल्कि प्रत्येक चरण में अनेक ऐसी चीज़ें होती हैं जिन्हें मानवीय भाषा में स्पष्टता से व्यक्त नहीं किया जा सकता, और ये चीज़ें इंसान के लिए अदृश्य होती हैं। यह कार्य चाहे पवित्रात्मा का हो या देहधारी परमेश्वर का, प्रत्येक में उसके कार्य की योजनाएँ निहित हैं, वह बिना किसी आधार के कार्य नहीं करता, और निरर्थक कार्य नहीं करता। जब पवित्रात्मा सीधे तौर पर कार्य करता है तो वह उसके लक्ष्यों के अनुसार होता है, और जब वह कार्य करने के लिए मनुष्य बनता है (यानी जब वह अपने बाहरी आवरण को रूपान्तरित करता है), तो उसमें उसका उद्देश्य और भी ज़्यादा निहित होता है। अन्यथा वह इतनी तत्परता से अपनी पहचान क्यों बदलेगा? वह इतनी तत्परता से ऐसा व्यक्ति क्यों बनेगा जिसे निकृष्ट माना जाता है और जिसे यातना दी जाती है?

देह में उसका कार्य बहुत सार्थक है, यह कार्य के सम्बन्ध में कहा जाता है, और अंततः देहधारी परमेश्वर ही कार्य का समापन करता है, पवित्रात्मा नहीं। कुछ लोग मानते हैं कि परमेश्वर किसी अनजान समय पृथ्वी पर आकर लोगों को दिखाई दे सकता है, जिसके बाद वह व्यक्तिगत रूप से संपूर्ण मनुष्यजाति का न्याय करेगा, एक-एक करके सबकी परीक्षा लेगा, कोई भी नहीं छूटेगा। जो लोग इस ढंग से सोचते हैं, वे देहधारण के इस चरण के कार्य को नहीं जानते। परमेश्वर एक-एक करके मनुष्य का न्याय नहीं करता, एक-एक करके उनकी परीक्षा नहीं लेता; ऐसा करना न्याय का कार्य नहीं होगा। क्या समस्त मनुष्यजाति की भ्रष्टता एक समान नहीं है? क्या पूरी मनुष्यजाति का सार समान नहीं है? न्याय किया जाता है इंसान के भ्रष्ट सार का, शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए इंसानी सार का, और इंसान के सारे पापों का। परमेश्वर मनुष्य के छोटे-मोटे और मामूली दोषों का न्याय नहीं करता। न्याय का कार्य निरूपक है, और किसी व्यक्ति-विशेष के लिए कार्यान्वित नहीं किया जाता। बल्कि यह ऐसा कार्य है जिसमें समस्त मनुष्यजाति के न्याय का प्रतिनिधित्व करने के लिए लोगों के एक समूह का न्याय किया जाता है। देहधारी परमेश्वर लोगों के एक समूह पर व्यक्तिगत रूप से अपने कार्य को कार्यान्वित करके, इस कार्य का उपयोग संपूर्ण मनुष्यजाति के कार्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए करता है, जिसके बाद यह धीरे-धीरे फैलता जाता है। न्याय का कार्य ऐसा ही है। परमेश्वर किसी व्यक्ति-विशेष या लोगों के किसी समूह-विशेष का न्याय नहीं करता, बल्कि

संपूर्ण मनुष्यजाति की अधार्मिकता का न्याय करता है—उदाहरण के लिए, परमेश्वर के प्रति मनुष्य का विरोध, या उसके प्रति मनुष्य का अनादर, या परमेश्वर के कार्य में व्यवधान इत्यादि। जिसका न्याय किया जाता है वो है इंसान का परमेश्वर-विरोधी सार, और यह कार्य अंत के दिनों का विजय-कार्य है। देहधारी परमेश्वर का कार्य और वचन जिनकी गवाही इंसान देता है, वे अंत के दिनों के दौरान बड़े श्वेत सिंहासन के सामने न्याय के कार्य हैं, जिसकी कल्पना इंसान के द्वारा अतीत में की गई थी। देहधारी परमेश्वर द्वारा वर्तमान में किया जा रहा कार्य वास्तव में बड़े श्वेत सिंहासन के सामने न्याय है। आज का देहधारी परमेश्वर वह परमेश्वर है जो अंत के दिनों के दौरान संपूर्ण मनुष्यजाति का न्याय करता है। यह देह और उसका कार्य, उसका वचन और उसका समस्त स्वभाव उसकी समग्रता हैं। यद्यपि उसके कार्य का दायरा सीमित है, और उसमें सीधे तौर पर संपूर्ण विश्व शामिल नहीं है, फिर भी न्याय के कार्य का सार संपूर्ण मनुष्यजाति का प्रत्यक्ष न्याय है—यह कार्य केवल चीन के चुने हुए लोगों के लिए नहीं, न ही यह थोड़े-से लोगों के लिए है। देह में परमेश्वर के कार्य के दौरान, यद्यपि इस कार्य के दायरे में संपूर्ण ब्रह्माण्ड नहीं है, फिर भी यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, जब वह अपनी देह के कार्य के दायरे में उस कार्य को समाप्त कर लेगा तो उसके बाद, वह तुरन्त ही इस कार्य को संपूर्ण ब्रह्माण्ड में उसी तरह से फैला देगा जैसे यीशु के पुनरूत्थान और आरोहण के बाद उसका सुसमाचार सारी दुनिया में फैल गया था। चाहे यह पवित्रात्मा का कार्य हो या देह का कार्य, यह ऐसा कार्य है जिसे एक सीमित दायरे में किया जाता है, परन्तु जो संपूर्ण ब्रह्माण्ड के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। अन्त के दिनों में, परमेश्वर देहधारी रूप में प्रकट होकर अपना कार्य करता है, और देहधारी परमेश्वर ही वह परमेश्वर है जो बड़े श्वेत सिंहासन के सामने मनुष्य का न्याय करता है। चाहे वह आत्मा हो या देह, जो न्याय का कार्य करता है वही ऐसा परमेश्वर है जो अंत के दिनों के दौरान मनुष्य का न्याय करता है। इसे उसके कार्य के आधार पर परिभाषित किया जाता है, न कि उसके बाहरी रंग-रूप या दूसरी बातों के आधार पर। यद्यपि इन वचनों के बारे में मनुष्य की धारणाएँ हैं, लेकिन कोई भी देहधारी परमेश्वर के न्याय और संपूर्ण मनुष्यजाति पर विजय के तथ्य को नकार नहीं सकता। इंसान चाहे कुछ भी सोचे, मगर तथ्य आखिरकार तथ्य ही हैं। कोई यह नहीं कह सकता है कि "कार्य परमेश्वर द्वारा किया जाता है, परन्तु देह परमेश्वर नहीं है।" यह बकवास है, क्योंकि इस कार्य को देहधारी परमेश्वर के सिवाय और कोई नहीं कर सकता। चूँकि इस कार्य को पहले ही पूरा किया जा चुका है, इसलिए इस कार्य के बाद मनुष्य के लिए परमेश्वर के न्याय का कार्य दूसरी बार प्रकट नहीं होगा; अपने

दूसरे देहधारण में परमेश्वर ने पहले ही संपूर्ण प्रबंधन के समस्त कार्य का समापन कर लिया है, इसलिए परमेश्वर के कार्य का चौथा चरण नहीं होगा। क्योंकि जिसका न्याय किया जाता है वह मनुष्य है, मनुष्य जो कि हाड़-माँस का है और भ्रष्ट किया जा चुका है, और यह शैतान की आत्मा नहीं है जिसका सीधे तौर पर न्याय किया जाता है, इसलिए न्याय का कार्य आध्यात्मिक संसार में कार्यान्वित नहीं किया जाता, बल्कि मनुष्यों के बीच किया जाता है। मनुष्य की देह की भ्रष्टता का न्याय करने के लिए देह में प्रकट परमेश्वर से अधिक उपयुक्त और कोई योग्य नहीं है। यदि न्याय सीधे तौर पर परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किया जाए, तो यह सर्वव्यापी नहीं होता। इसके अतिरिक्त, ऐसे कार्य को स्वीकार करना मनुष्य के लिए कठिन होता है, क्योंकि पवित्रात्मा मनुष्य के रूबरू आने में असमर्थ है, और इस वजह से, प्रभाव तत्काल नहीं होते, और मनुष्य परमेश्वर के अपमान न किए जाने योग्य स्वभाव को साफ-साफ देखने में बिलकुल भी सक्षम नहीं होता। यदि देह में प्रकट परमेश्वर मनुष्यजाति की भ्रष्टता का न्याय करे तभी शैतान को पूरी तरह से हराया जा सकता है। मनुष्य के समान सामान्य मानवता धारण करने वाला बन कर ही, देह में प्रकट परमेश्वर सीधे तौर पर मनुष्य की अधार्मिकता का न्याय कर सकता है; यही उसकी जन्मजात पवित्रता, और उसकी असाधारणता का चिन्ह है। केवल परमेश्वर ही मनुष्य का न्याय करने के योग्य है, और उसका न्याय करने की स्थिति में है, क्योंकि वह सत्य और धार्मिकता को धारण किए हुए है, और इस प्रकार वह मनुष्य का न्याय करने में समर्थ है। जो सत्य और धार्मिकता से रहित हैं वे दूसरों का न्याय करने लायक नहीं हैं। यदि इस कार्य को परमेश्वर के आत्मा द्वारा किया जाता, तो इसका अर्थ शैतान पर विजय नहीं होता। पवित्रात्मा अंतर्निहित रूप से ही नश्वर प्राणियों की तुलना में अधिक उत्कृष्ट है, और परमेश्वर का आत्मा अंतर्निहित रूप से पवित्र है, और देह पर विजय प्राप्त किए हुए है। यदि पवित्रात्मा ने इस कार्य को सीधे तौर पर किया होता, तो वह मनुष्य की समस्त अवज्ञा का न्याय नहीं कर पाता, और उसकी सारी अधार्मिकता को प्रकट नहीं कर पाता। क्योंकि न्याय के कार्य को परमेश्वर के बारे में मनुष्य की धारणाओं के माध्यम से भी कार्यान्वित किया जाता है, और मनुष्य के अंदर कभी भी पवित्रात्मा के बारे में कोई धारणाएँ नहीं रही हैं, इसलिए पवित्रात्मा मनुष्य की अधार्मिकता को बेहतर तरीके से प्रकट करने में असमर्थ है, वह ऐसी अधार्मिकता को पूरी तरह से उजागर करने में तो बिल्कुल भी समर्थ नहीं है। देहधारी परमेश्वर उन सब लोगों का शत्रु है जो उसे नहीं जानते। अपने प्रति मनुष्य की धारणाओं और विरोध का न्याय करके, वह मनुष्यजाति की सारी अवज्ञा का खुलासा करता है। देह में उसके कार्य के प्रभाव पवित्रात्मा के कार्य की

तुलना में अधिक स्पष्ट होते हैं। इसलिए, संपूर्ण मनुष्यजाति के न्याय को पवित्रात्मा के द्वारा सीधे तौर पर सम्पन्न नहीं किया जाता, बल्कि यह देहधारी परमेश्वर का कार्य है। देहधारी परमेश्वर को मनुष्य देख और छू सकता है, और देहधारी परमेश्वर मनुष्य पर पूरी तरह से विजय पा सकता है। देहधारी परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में, मनुष्य विरोध से आज्ञाकारिता की ओर, उत्पीड़न से स्वीकृति की ओर, धारणा से ज्ञान की ओर, और तिरस्कार से प्रेम की ओर प्रगति करता है—ये हैं देहधारी परमेश्वर के कार्य के प्रभाव। मनुष्य को परमेश्वर के न्याय की स्वीकृति से ही बचाया जाता है, वह परमेश्वर के बोले गए वचनों से ही धीरे-धीरे उसे जानने लगता है, परमेश्वर के प्रति उसके विरोध के दौरान परमेश्वर द्वारा मनुष्य पर विजय पायी जाती है, और परमेश्वर की ताड़ना की स्वीकृति के दौरान वह उससे जीवन की आपूर्ति प्राप्त करता है। यह समस्त कार्य देहधारी परमेश्वर के कार्य हैं, यह पवित्रात्मा के रूप में परमेश्वर के कार्य नहीं हैं। देहधारी परमेश्वर के द्वारा किया गया कार्य महानतम और बेहद गंभीर कार्य है, परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों का अति महत्वपूर्ण भाग देहधारण के कार्य के दो चरण हैं। इंसान की भयंकर भ्रष्टता देहधारी परमेश्वर के कार्य में एक बड़ी बाधा है। विशेष रूप से, अंत के दिनों के लोगों पर किया गया कार्य बहुत ही कठिन है, परिवेश शत्रुतापूर्ण है, और हर प्रकार के लोगों की क्षमता बहुत ही कमज़ोर है। फिर भी इस कार्य के अंत में, यह बिना किसी त्रुटि के उचित प्रभाव ही प्राप्त करेगा; यह देह के कार्य का प्रभाव है, और यह प्रभाव पवित्रात्मा के कार्य की तुलना में अधिक प्रेरक है। परमेश्वर के कार्य के तीन चरणों का समापन देह में किया जाएगा, और इसे देहधारी परमेश्वर द्वारा ही पूरा किया जाना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण और सबसे निर्णायक कार्य देह में किया जाता है, और मनुष्य का उद्धार व्यक्तिगत रूप से देहधारी परमेश्वर द्वारा ही किया जाना चाहिए। हर इंसान को यही लगता है कि देहधारी परमेश्वर इंसान से संबंधित नहीं है, जबकि सच्चाई यह है कि देह पूरी मनुष्यजाति की नियति और अस्तित्व से सम्बन्धित है।

परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण का कार्यान्वयन पूरी मनुष्यजाति के लिए किया जाता है, और उसका लक्ष्य मानवजाति ही है। यद्यपि उसका कार्य देह में है, फिर भी यह सम्पूर्ण मनुष्यजाति के लिये है; वह संपूर्ण मनुष्यजाति का परमेश्वर है, वह सभी सृजित और गैर-सृजित प्राणियों का परमेश्वर है। यद्यपि देह में उसका कार्य एक सीमित दायरे के भीतर है, और इस कार्य का लक्ष्य भी सीमित है, लेकिन जब भी वह कार्य करने के लिए देहधारण करता है तो कार्य का एक लक्ष्य चुनता है जो अत्यंत निरूपक होता है; वह अपने कार्य के लिए सामान्य और मामूली लोगों के समूह को नहीं चुनता, बल्कि कार्य के लक्ष्य के रूप में

ऐसे लोगों के समूह को चुनता है जो देह में उसके कार्य के प्रतिनिधि होने में सक्षम हों। वह ऐसे लोगों के समूह को इसलिए चुनता है क्योंकि देह में उसके कार्य का दायरा सीमित होता है, और इसे विशेष रूप से उसके देह के लिए तैयार किया गया है, और इसे विशेष रूप से देह में उसके कार्य के लिए चुना गया है। परमेश्वर का अपने कार्य के लक्ष्यों का चयन बेबुनियाद नहीं होता, बल्कि सिद्धान्त के अनुसार किया जाता है : कार्य का लक्ष्य देहधारी परमेश्वर के कार्य के लिए लाभदायक होना चाहिए, और उसे सम्पूर्ण मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व करने लायक होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यीशु के व्यक्तिगत छुटकारे को स्वीकार करने में यहूदी सम्पूर्ण मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व कर सकते थे, और देहधारी परमेश्वर की व्यक्तिगत विजय को स्वीकार करने में चीनी लोग सम्पूर्ण मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। यहूदियों द्वारा सम्पूर्ण मनुष्यजाति के प्रतिनिधित्व का एक आधार है, और परमेश्वर की व्यक्तिगत विजय को स्वीकार करने में चीनियों द्वारा सम्पूर्ण मनुष्यजाति के प्रतिनिधित्व का भी एक आधार है। यहूदियों के बीच किए गए छुटकारे के कार्य से अधिक और कोई चीज़ छुटकारे के महत्व को प्रकट नहीं करती, और चीनी लोगों के बीच किए जा रहे विजय-कार्य से अधिक अन्य कोई भी चीज़ विजय-कार्य की सम्पूर्णता और सफलता को प्रकट नहीं करती। देहधारी परमेश्वर का कार्य और वचन लोगों के एक छोटे से समूह पर ही लक्षित प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में, इस छोटे समूह के बीच उसका कार्य संपूर्ण ब्रह्माण्ड का कार्य है, और उसका वचन समस्त मनुष्यजाति के लिए है। देह में उसका कार्य समाप्त हो जाने के बाद, जो लोग उसका अनुसरण करते हैं, वे उस कार्य को फैलाना शुरू कर देंगे जो उसने उनके बीच किया है। देह में उसके कार्य के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वह उन लोगों के लिए सटीक वचन, उपदेश और मनुष्यजाति के लिए अपनी विशिष्ट इच्छा को उन लोगों के लिए छोड़ सकता है जो उसका अनुसरण करते हैं, ताकि बाद में उसके अनुयायी देह में किए गए उसके समस्त कार्य और संपूर्ण मनुष्यजाति के लिए उसकी इच्छा को अत्यधिक सटीकता से, ठोस तरीके से उन लोगों तक पहुँचा सकें जो इस मार्ग को स्वीकार करते हैं। मनुष्यों के बीच केवल देहधारी परमेश्वर का कार्य ही सही अर्थों में परमेश्वर के मनुष्य के साथ रहने और उसके साथ जीने के सच को पूरा करता है। केवल यही कार्य परमेश्वर के चेहरे को देखने, परमेश्वर के कार्य की गवाही देने, और परमेश्वर के व्यक्तिगत वचन को सुनने की मनुष्य की इच्छा को पूरा करता है। देहधारी परमेश्वर उस युग का अंत करता है जब सिर्फ यहोवा की पीठ ही मनुष्यजाति को दिखाई देती थी, और साथ ही वह अज्ञात परमेश्वर में मनुष्यजाति के विश्वास करने के युग को भी समाप्त

करता है। विशेष रूप से, अंतिम देहधारी परमेश्वर का कार्य संपूर्ण मनुष्यजाति को एक ऐसे युग में लाता है जो अधिक वास्तविक, अधिक व्यावहारिक, और अधिक सुंदर है। वह केवल व्यवस्था और सिद्धान्त के युग का ही अंत नहीं करता; बल्कि अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह मनुष्यजाति पर ऐसे परमेश्वर को प्रकट करता है जो वास्तविक और सामान्य है, जो धार्मिक और पवित्र है, जो प्रबंधन योजना के कार्य का खुलासा करता है और मनुष्यजाति के रहस्यों और मंज़िल को प्रदर्शित करता है, जिसने मनुष्यजाति का सृजन किया और प्रबंधन कार्य को अंजाम तक पहुँचाता है, और जिसने हज़ारों वर्षों तक खुद को छिपा कर रखा है। वह अस्पष्टता के युग का पूर्णतः अंत करता है, वह उस युग का समापन करता है जिसमें संपूर्ण मनुष्यजाति परमेश्वर का चेहरा खोजना तो चाहती थी मगर खोज नहीं पायी, वह उस युग का अंत करता है जिसमें संपूर्ण मनुष्यजाति शैतान की सेवा करती थी, और एक पूर्णतया नए युग में संपूर्ण मनुष्यजाति की अगुवाई करता है। यह सब परमेश्वर के आत्मा के बजाए देह में प्रकट परमेश्वर के कार्य का परिणाम है। जब परमेश्वर अपने देह में कार्य करता है, तो जो लोग उसका अनुसरण करते हैं, वे उन चीज़ों को खोजते और टटोलते नहीं हैं जो विद्यमान और अविद्यमान दोनों प्रतीत होती हैं, और वे अस्पष्ट परमेश्वर की इच्छा का अंदाज़ा लगाना बंद कर देते हैं। जब परमेश्वर देह में अपने कार्य को फैलाता है, तो जो लोग उसका अनुसरण करते हैं वे उसके द्वारा देह में किए गए कार्य को सभी धर्मों और पंथों में आगे बढ़ाएँगे, और वे उसके सभी वचनों को संपूर्ण मनुष्यजाति के कानों तक पहुँचाएँगे। उसके सुसमाचार को प्राप्त करने वाले जो सुनेंगे, वे उसके कार्य के तथ्य होंगे, ऐसी चीज़ें होंगी जो मनुष्य के द्वारा व्यक्तिगत रूप से देखी और सुनी गई होंगी, और तथ्य होंगे, अफ़वाह नहीं। ये तथ्य ऐसे प्रमाण हैं जिनसे वह कार्य को फैलाता है, और वे ऐसे साधन भी हैं जिन्हें वह कार्य को फैलाने में उपयोग करता है। बिना तथ्यों के उसका सुसमाचार सभी देशों और सभी स्थानों तक नहीं फैलेगा; बिना तथ्यों के केवल मनुष्यों की कल्पनाओं के सहारे, वह कभी भी संपूर्ण ब्रह्माण्ड पर विजय नहीं पा सकेगा। पवित्रात्मा मनुष्य के लिए अस्पृश्य और अदृश्य है, और पवित्रात्मा का कार्य मनुष्य के लिए परमेश्वर के कार्य के किसी और प्रमाण या तथ्यों को छोड़ने में असमर्थ है। मनुष्य परमेश्वर के असली चेहरे को कभी नहीं देख पाएगा, वह हमेशा ऐसे अस्पष्ट परमेश्वर में विश्वास करेगा जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। मनुष्य कभी भी परमेश्वर के मुख को नहीं देखेगा, न ही मनुष्य परमेश्वर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से बोले गए वचनों को कभी सुन पाएगा। आखिर, मनुष्य की कल्पनाएँ खोखली होती हैं, वे परमेश्वर के असली चेहरे का स्थान कभी नहीं ले सकतीं; मनुष्य परमेश्वर के अंतर्निहित

स्वभाव, और स्वयं परमेश्वर के कार्य का अभिनय नहीं कर सकता। स्वर्ग के अदृश्य परमेश्वर और उसके कार्य को केवल देहधारी परमेश्वर द्वारा ही पृथ्वी पर लाया जा सकता है जो मनुष्यों के बीच व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करता है। परमेश्वर के लिए मनुष्य के सामने प्रकट होने का यही सबसे आदर्श तरीका है, जिसमें मनुष्य परमेश्वर को देखता है और परमेश्वर के असली चेहरे को जानने लगता है। इसे कोई गैर-देहधारी परमेश्वर संपन्न नहीं कर सकता। इस चरण तक अपने कार्य को कार्यान्वित कर लेने के बाद, परमेश्वर के कार्य ने पहले ही इष्टतम प्रभाव प्राप्त कर लिया है, और पूरी तरह सफल रहा है। देह में परमेश्वर के व्यक्तिगत कार्य ने पहले ही उसके संपूर्ण प्रबंधन के कार्य का नब्बे प्रतिशत पूरा कर लिया है। इस देह ने उसके समस्त कार्य को एक बेहतर शुरूआत और एक संक्षिप्त रूप प्रदान किया है, उसके समस्त कार्य की घोषणा की है, और इस समस्त कार्य के लिए पूरी तरह से अंतिम भरपाई की है। इसके बाद, परमेश्वर के कार्य के चौथे चरण को करने के लिए अन्य कोई देहधारी परमेश्वर नहीं होगा, और परमेश्वर के तीसरे देहधारण का कभी कोई चमत्कारी कार्य नहीं होगा।

देह में परमेश्वर के कार्य का प्रत्येक चरण संपूर्ण युग के उसके कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, मनुष्य के काम की तरह किसी समय-विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसलिए उसके अंतिम देहधारण के कार्य के अन्त का यह अर्थ नहीं है कि उसका कार्य पूर्ण रूप से समाप्त हो गया है, क्योंकि देह में उसका कार्य संपूर्ण युग का प्रतिनिधित्व करता है, और केवल उसी समयावधि का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता है जिसमें वह देह में कार्य करता है। बात बस इतनी है कि जब वह देह में होता है तब उस दौरान समूचे युग के अपने कार्य को पूरा करता है, उसके पश्चात् यह सभी स्थानों में फैल जाता है। देहधारी परमेश्वर अपनी सेवकाई को पूरा करने के बाद, अपने भविष्य के कार्य को उन्हें सौंप देगा जो उसका अनुसरण करते हैं। इस तरह, संपूर्ण युग का उसका कार्य अखंड रूप से चलता रहेगा। देहधारण के संपूर्ण युग का कार्य केवल तभी पूर्ण माना जाएगा जब यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड में पूरी तरह से फैल जाएगा। देहधारी परमेश्वर का कार्य एक नये विशेष युग का आरम्भ करता है, और उसके कार्य को जारी रखने वाले वे लोग हैं जिनका उपयोग परमेश्वर करता है। मनुष्य के द्वारा किया गया समस्त कार्य देहधारी परमेश्वर की सेवकाई के भीतर होता है, वह इस दायरे के परे नहीं जा सकता। यदि देहधारी परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए न आता, तो मनुष्य पुराने युग को समाप्त कर, नए युग की शुरुआत नहीं कर पाता। मनुष्य द्वारा किया गया कार्य मात्र उसके कर्तव्य के दायरे के भीतर होता है जो मानवीय रूप से करना संभव है, वह परमेश्वर के कार्य का

प्रतिनिधित्व नहीं करता। केवल देहधारी परमेश्वर ही आकर उस कार्य को पूरा कर सकता है जो उसे करना चाहिए, उसके अलावा, इस कार्य को उसकी ओर से और कोई नहीं कर सकता। निस्संदेह, मैं देहधारण के कार्य के सम्बन्ध के बारे में बात कर रहा हूँ। यह देहधारी परमेश्वर पहले कार्य के एक कदम को कार्यान्वित करता है जो मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं होता, उसके बाद वह और कार्य करता है, वह भी मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं होता। कार्य का लक्ष्य मनुष्य पर विजय पाना है। एक लिहाज से, परमेश्वर का देहधारण मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं होता, जिसके अतिरिक्त वह और भी अधिक कार्य करता है जो मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं होता, और इसलिए मनुष्य उसके बारे में और भी अधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपना लेता है। वह उन लोगों के बीच विजय-कार्य करता है जिनकी उसके प्रति अनेक धारणाएँ होती हैं। इस बात की परवाह किए बिना कि वे किस प्रकार उससे व्यवहार करते हैं, एक बार जब वह अपनी सेवकाई पूरी कर लेगा, तो सभी लोग उसके प्रभुत्व में आ चुके होंगे। इस कार्य का तथ्य न केवल चीनी लोगों के बीच प्रतिबिम्बित होता है, बल्कि यह इस बात का प्रतिनिधित्व भी करता है कि किस प्रकार सम्पूर्ण मनुष्यजाति को जीता जाएगा। इन लोगों पर हासिल किए गए प्रभाव उन प्रभावों के अग्रगामी हैं जो संपूर्ण मनुष्यजाति पर प्राप्त किए जाएँगे, और जो कार्य वह भविष्य में करेगा उसके प्रभाव, इन लोगों पर प्रभावों से भी कहीं बढ़कर होंगे। देहधारी परमेश्वर के कार्य में कोई तामझाम नहीं होता, न ही यह धुँधलेपन में घिरा होता है। यह असली और वास्तविक होता है, और यह ऐसा कार्य है जिसमें एक और एक दो होते हैं। यह न तो किसी से छिपा होता है, न ही किसी को धोखा देता है। लोग वास्तविक और विशुद्ध चीजें देखते हैं, वास्तविक सत्य और ज्ञान प्राप्त करते हैं। कार्य समाप्त होने पर, इंसान के पास परमेश्वर के बारे में नया ज्ञान होगा, और जो लोग सच्चे खोजी हैं, उनके अंदर उसके बारे में कोई धारणाएँ नहीं होंगी। यह सिर्फ चीनी लोगों पर उसके कार्य का प्रभाव नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण मनुष्यजाति को जीतने में उसके कार्य के प्रभाव को भी दर्शाता है, क्योंकि इस देह, इस देह के कार्य, और इस देह की हर एक चीज़ की तुलना में कोई भी चीज़ सम्पूर्ण मनुष्यजाति पर विजय पाने के कार्य के लिए अधिक लाभदायक नहीं है। वे आज उसके कार्य के लिए लाभदायक हैं, और भविष्य में भी उसके कार्य के लिए लाभदायक होंगे। यह देह संपूर्ण मनुष्यजाति को जीत लेगा और उसे प्राप्त कर लेगा। ऐसा कोई बेहतर कार्य नहीं है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण मनुष्यजाति परमेश्वर को देखे, उसका आज्ञापालन करे और उसे जाने। मनुष्य के द्वारा किया गया कार्य मात्र एक सीमित दायरे को दर्शाता है, और जब परमेश्वर अपना कार्य

करता है तो वह किसी व्यक्ति-विशेष से बात नहीं करता, बल्कि उन सारे लोगों से बात करता है जो उसके वचनों को स्वीकार करते हैं। वह जिस अन्त की घोषणा करता है वह पूरी मानवजाति का अन्त है, सिर्फ किसी व्यक्ति-विशेष का अन्त नहीं है। वह किसी के साथ विशेष व्यवहार नहीं करता, न ही किसी को सताता है, वह सम्पूर्ण मनुष्यजाति के लिए कार्य करता है और उससे बात करता है। इस देहधारी परमेश्वर ने पहले ही संपूर्ण मनुष्यजाति को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत कर दिया है, उसका न्याय कर दिया है, और उपयुक्त मंज़िल की व्यवस्था कर दी है। भले ही परमेश्वर सिर्फ चीन में ही कार्य करता है, लेकिन वास्तव में, उसने तो पहले से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के कार्य का समाधान कर चुका है। अपने कथनों और व्यवस्थाओं को चरणबद्ध तरीके से कार्यांवित करने से पहले, वह इसकी प्रतीक्षा नहीं कर सकता कि उसका कार्य समस्त मनुष्यजाति में फैल जाए। क्या तब तक बहुत देर नहीं हो जाएगी? अब वह भविष्य के कार्य को पहले से ही पूरा कर सकता है। क्योंकि जो कार्य कर रहा है वही एकमात्र देहधारी परमेश्वर है, वह सीमित दायरे में असीमित कार्य कर रहा है, उसके बाद वह इंसान से वह काम करवाएगा जो इंसान को करना चाहिए; यह उसके कार्य का सिद्धान्त है। वह इंसान के साथ केवल थोड़े समय तक ही रह सकता है, वह उसके साथ पूरे युग का कार्य समाप्त होने तक नहीं रह सकता। चूँकि वह परमेश्वर है इसलिए पहले ही अपने भविष्य के कार्य की भविष्यवाणी कर देता है। उसके बाद, वह अपने वचनों से पूरी मनुष्यजाति को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करेगा, और मनुष्यजाति उसके वचनों के अनुसार उसके चरणबद्ध कार्य में प्रवेश करेगी। कोई भी बच नहीं पाएगा, सभी को इसके अनुसार अभ्यास करना होगा। इस तरह भविष्य में उसके वचन युग का मार्गदर्शन करेंगे, पवित्रात्मा नहीं।

देहधारी परमेश्वर का कार्य देह में ही किया जाना चाहिए। यदि इसे सीधे तौर पर परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किया जाए तो उसका कोई प्रभाव नहीं होगा। यदि इसे पवित्रात्मा द्वारा किया भी जाता, तो भी उस कार्य के कोई खास मायने नहीं होते, और अंततः यह कोई प्रेरक सिद्ध नहीं हो पाता। सभी प्राणी जानना चाहते हैं कि क्या सृजनकर्ता के कार्य का कोई अर्थ है, यह क्या दर्शाता है, और यह किसलिए किया जाता है, क्या परमेश्वर के कार्य में अधिकार और बुद्धि है, और क्या यह अत्यंत मूल्यवान और सार्थक है। उसका कार्य सम्पूर्ण मनुष्यजाति के उद्धार के लिए, शैतान को हराने के लिए, और सभी चीज़ों में स्वयं की गवाही देने के लिए किया जाता है। इस तरह, उसका कार्य बेहद सार्थक होना चाहिए। मनुष्य की देह को शैतान के द्वारा भष्ट कर दिया गया है, उसे एकदम अन्धा करके बुरी तरह से नुकसान पहुँचाया गया है। परमेश्वर

देह में आकर निजी तौर पर कार्य इसलिए करता है क्योंकि उसके उद्धार का लक्ष्य हाड़-माँस का इंसान है, और इसलिए भी क्योंकि परमेश्वर के कार्य को बिगाड़ने के लिए शैतान भी मनुष्य की देह का उपयोग करता है। दरअसल, शैतान के साथ युद्ध इंसान पर विजय पाने का कार्य है, और साथ ही, इंसान परमेश्वर के उद्धार का लक्ष्य भी है। इस तरह, देहधारी परमेश्वर का कार्य आवश्यक है। शैतान के हाथों भ्रष्ट होकर इंसान शैतान का मूर्त रूप बन गया है, परमेश्वर के हाथों हराये जाने का लक्ष्य बन गया है। इस तरह, पृथ्वी पर शैतान से युद्ध करने और मनुष्यजाति को बचाने का कार्य किया जाता है। इसलिए शैतान से युद्ध करने के लिए परमेश्वर का मनुष्य बनना आवश्यक है। यह अत्यंत व्यावहारिकता का कार्य है। जब परमेश्वर देह में कार्य कर रहा होता है, तो वह वास्तव में देह में शैतान से युद्ध कर रहा होता है। जब वह देह में कार्य करता है, तो वह आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना कार्य कर रहा होता है, वह आध्यात्मिक क्षेत्र के अपने समस्त कार्य को पृथ्वी पर साकार करता है। जिस पर विजय पायी जाती है वो इंसान है, वो इंसान जो उसके प्रति अवज्ञाकारी है, जिसे पराजित किया जाता है वो शैतान का मूर्त रूप है (बेशक, यह भी इंसान ही है) जो उससे शत्रुता रखता है, और अंतत: जिसे बचाया जाता है वह भी इंसान ही है। इस तरह, यह परमेश्वर के लिए और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि वह ऐसा इंसान बने जिसका बाहरी आवरण एक सृजन का हो, ताकि वह शैतान से वास्तविक युद्ध कर सके, समान बाहरी आवरण धारण किए हुए अपने प्रति अवज्ञाकारी और शैतान द्वारा नुकसान पहुँचाये गये इंसान पर विजय पा सके, उसे बचा सके। उसका शत्रु मनुष्य है, उसकी विजय का लक्ष्य मनुष्य है, और उसके उद्धार का लक्ष्य भी मनुष्य ही है, जिसे उसने बनाया है। इसलिए उसे मनुष्य बनना ही होगा, मनुष्य बनकर उसका कार्य कहीं ज़्यादा आसान हो जाता है। वह शैतान को हराने और मनुष्य को जीतने में समर्थ है, और मनुष्य को बचाने में समर्थ है। हालाँकि यह देह सामान्य और वास्तविक है, फिर भी यह मामूली देह नहीं है : यह ऐसी देह नहीं है जो केवल मानवीय हो, बल्कि ऐसी देह है जो मानवीय और दिव्य दोनों है। यही उसमें और मनुष्य में अन्तर है, और यही परमेश्वर की पहचान का चिह्न है। ऐसे ही देह से वह अपेक्षित कार्य कर सकता है, देह में परमेश्वर की सेवकाई को पूरा कर सकता है, और मनुष्यों के बीच में अपने कार्य को पूर्ण कर सकता है। यदि यह ऐसा नहीं होता, तो मनुष्यों के बीच उसका कार्य हमेशा खोखला और त्रुटिपूर्ण होता। यद्यपि परमेश्वर शैतान की आत्मा के साथ युद्ध कर सकता है और विजयी हो सकता है, फिर भी भ्रष्ट हो चुके मनुष्य की पुरानी प्रकृति का समाधान कभी नहीं किया जा सकता, ऐसे लोग जो परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी हैं और उसका विरोध

करते हैं, वे कभी भी उसके प्रभुत्व में नहीं आ सकते, यानी वह कभी भी मनुष्यजाति को जीत कर उसे प्राप्त नहीं कर सकता। यदि पृथ्वी पर उसके कार्य का समाधान न हो, तो उसका प्रबन्धन कभी समाप्त नहीं होगा, और संपूर्ण मनुष्यजाति विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाएगी। यदि परमेश्वर अपने सभी प्राणियों के साथ विश्राम में प्रवेश नहीं कर सके तो ऐसे प्रबंधन-कार्य का कभी भी कोई परिणाम नहीं होगा, और फलस्वरूप परमेश्वर की महिमा विलुप्त हो जाएगी। यद्यपि उसके देह के पास कोई अधिकार नहीं है, फिर भी उसका कार्य अपना प्रभाव प्राप्त कर लेगा। यह उसके कार्य की अनिवार्य दिशा है। उसके देह में अधिकार हो या न हो, अगर वह स्वयं परमेश्वर का कार्य कर पाता है, तो वह स्वयं परमेश्वर है। यह देह कितना भी सामान्य और साधारण क्यों न हो, वह वो कार्य कर सकता है जिसे उसे करना चाहिए, क्योंकि यह देह परमेश्वर है, मात्र मनुष्य नहीं है। यह देह उस कार्य को कर सकता है जिसे मनुष्य नहीं कर सकता क्योंकि उसका आंतरिक सार इंसान से अलग है, वह इंसान को इसलिए बचा सकता है क्योंकि उसकी पहचान किसी भी इंसान से अलग है। यह देह इंसान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि वह इंसान है और उससे भी बढ़कर वह परमेश्वर है, क्योंकि वह उस कार्य को कर सकता है जिसे हाड़-माँस का कोई सामान्य इंसान नहीं कर सकता, क्योंकि वह भ्रष्ट इंसान को बचा सकता है, जो पृथ्वी पर उसके साथ मिलकर रहता है। हालाँकि वह इंसान जैसा ही है, फिर भी देहधारी परमेश्वर किसी भी मूल्यवान व्यक्ति की तुलना में मनुष्यजाति के लिए अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह उस कार्य को कर सकता है जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा नहीं किया जा सकता, वह स्वयं परमेश्वर की गवाही देने के लिए परमेश्वर के आत्मा की तुलना में अधिक सक्षम है, और मनुष्यजाति को पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के आत्मा की तुलना में अधिक समर्थ है। परिणामस्वरूप, यद्यपि यह देह सामान्य और साधारण है, लेकिन मनुष्यजाति के प्रति उसका योगदान और मनुष्यजाति के अस्तित्व के प्रति उसके मायने उसे अत्यंत बहुमूल्य बना देते हैं। इस देह का वास्तविक मूल्य और मायने किसी भी इंसान के लिए विशाल हैं। यद्यपि यह देह सीधे तौर पर शैतान को नष्ट नहीं कर सकता, फिर भी वह मनुष्यजाति को जीतने और शैतान को हराने के लिए अपने कार्य का उपयोग कर सकता है, शैतान को पूरी तरह से अपने प्रभुत्व में ला सकता है। चूँकि परमेश्वर देहधारी है, वह शैतान को हरा कर इंसान को बचा सकता है। वह सीधे तौर पर शैतान को नष्ट नहीं करता, बल्कि जिस मनुष्यजाति को शैतान ने भ्रष्ट किया है, उसे जीतने का कार्य करने के लिए वह देह बनता है। इस तरह से, वह अपने प्राणियों के बीच बेहतर ढंग से गवाही दे सकता है, और वह भ्रष्ट हुए

इंसान को बेहतर ढंग से बचा सकता है। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा शैतान के प्रत्यक्ष विनाश की तुलना में देहधारी परमेश्वर के द्वारा शैतान की पराजय अधिक बड़ी गवाही देती है और ज़्यादा प्रेरक है। देहधारी परमेश्वर सृजनकर्ता को जानने में मनुष्य की बेहतर ढंग से सहायता कर सकता है, और अपने प्राणियों के बीच स्वयं की बेहतर ढंग से गवाही दे सकता है।

परमेश्वर द्वारा धारण किये गए देह का सार

अपने पहले देहधारण में परमेश्वर पृथ्वी पर साढ़े तैंतीस साल रहा, उसने उन सालों में से केवल साढ़े तीन साल ही अपनी सेवकाई की। कार्य करने के दौरान और कार्य आरम्भ करने से पहले, इन दोनों अवधियों में, उसके पास सामान्य मानवता थी; वह साढ़े तैंतीस साल तक अपनी सामान्य मानवता में रहा। अंत के पूरे साढ़े तीन साल तक उसने अपने आपको देहधारी परमेश्वर के रूप में प्रकट किया। अपनी सेवकाई का कार्य प्रारंभ करने से पहले, वह साधारण और सामान्य मानवता के साथ ही प्रकट हुआ, उसने अपनी दिव्यता का कोई भी चिन्ह प्रकट नहीं किया। जब उसने औपचारिक रूप से अपनी सेवकाई प्रारंभ की, तभी उसकी दिव्यता अभिव्यक्त हुई। पहले उनतीस साल तक का उसका जीवन और कार्य दर्शाता है कि वह एक सच्चा मानव, मनुष्य का पुत्र और एक देह था; क्योंकि सही तौर पर उसकी सेवकाई उनतीस साल की उम्र के बाद ही आरंभ हुई थी। "देहधारण" परमेश्वर का देह में प्रकट होना है; परमेश्वर सृष्टि के मनुष्यों के मध्य देह की छवि में कार्य करता है। इसलिए, परमेश्वर को देहधारी होने के लिए, सबसे पहले देह बनना होता है, सामान्य मानवता वाला देह; यह सबसे मौलिक आवश्यकता है। वास्तव में, परमेश्वर के देहधारण का निहितार्थ यह है कि परमेश्वर देह में रह कर कार्य करता है, परमेश्वर अपने वास्तविक सार में देहधारी बन जाता है, वह मनुष्य बन जाता है। उसके देहधारी जीवन और कार्य को दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है। पहला वह जीवन है जो वह सेवकाई प्रारम्भ करने से पहले जीता है। वह एकदम सामान्य मानवता में रहता है, सामान्य मानवीय परिवार में रहकर, जीवन की सामान्य नैतिकताओं और व्यवस्थाओं का पालन करता है, उसकी सामान्य मानवीय आवश्यकताएँ होती हैं, (भोजन, कपड़ा, आवास, निद्रा), उसमें सामान्य मानवीय कमज़ोरियाँ और सामान्य मानवीय भावनाएँ होती हैं। दूसरे शब्दों में, इस पहले चरण में वह सभी मानवीय क्रियाकलापों में शामिल होते हुए, बिना दिव्यता के, पूरी तरह से सामान्य मानवता में रहता है। दूसरा चरण वह जीवन है जो वह अपनी सेवकाई को आरंभ करने के बाद जीता है।

वह इस अवधि में भी, सामान्य मानव-आवरण के साथ, सामान्य मानवता में रहता है, और किसी तरह की अलौकिकता का कोई संकेत नहीं देता। फिर भी वह पूरी तरह से अपनी सेवकाई के लिए ही जीता है, और इस दौरान उसकी सामान्य मानवता पूरी तरह से उसकी दिव्यता के सामान्य कार्य को करने में लगी रहती है, क्योंकि तब तक उसकी सामान्य मानवता उसकी सेवकाई के कार्य को करने में सक्षम होने की स्थिति तक परिपक्व हो चुकी होती है। तो उसके जीवन का दूसरा चरण सामान्य मानवता में अपनी सेवकाई को करना है, जब यह सामान्य मानवता और पूर्ण दिव्यता दोनों का जीवन होता है। अपने जीवन के प्रथम चरण में वह पूरी तरह से साधारण मानवता का जीवन क्यों जीता है, उसका कारण यह है कि उसकी मानवता अभी तक दिव्य कार्य की समग्रता को संभालने लायक नहीं हो पायी है, अभी तक वह परिपक्व नहीं हुई है; जब उसकी मानवता परिपक्व हो जाती है, उसकी सेवकाई को सहारा प्रदान करने के योग्य बन जाती है, तभी वह जो सेवकाई उसे करनी चाहिए, उसकी शुरूआत कर सकता है। चूँकि उसे देह के रूप में विकसित होकर परिपक्व होने की आवश्यकता होती है, इसलिए उसके जीवन का पहला चरण सामान्य मानवता का जीवन होता है, जबकि दूसरे चरण में, क्योंकि उसकी मानवता उसके कार्य का दायित्व लेने और उसकी सेवकाई को करने में सक्षम होती है, अपनी सेवकाई के दौरान देहधारी परमेश्वर जिस जीवन को जीता है वह मानवता और पूर्ण दिव्यता दोनों का जीवन होता है। यदि अपने जन्म के समय से ही देहधारी परमेश्वर, अलौकिक संकेतों और चमत्कारों को दिखाते हुए, गंभीरता से अपनी सेवकाई आरंभ कर देता, तो उसमें कोई भी दैहिक सार नहीं होता। इसलिए, उसकी मानवता उसके दैहिक सार के लिए अस्तित्व में है; मानवता के बिना कोई देह नहीं हो सकता, और मानवता के बिना कोई व्यक्ति मानव नहीं होता। इस तरह, परमेश्वर के देह की मानवता, परमेश्वर के देहधारण की अंतर्भूत सम्पत्ति है। ऐसा कहना कि "जब परमेश्वर देहधारण करता है तो वह पूरी तरह से दिव्य होता है, मानव बिल्कुल नहीं होता," ईशनिंदा है, क्योंकि इस वक्तव्य का कोई अस्तित्व ही नहीं है, और यह देहधारण के सिद्धांत का उल्लंघन करता है। अपनी सेवकाई आरंभ करने के बाद भी, अपना कार्य करते हुए वह बाह्य मानवीय आवरण के साथ ही अपनी दिव्यता में रहता है; बात सिर्फ़ इतनी ही है कि उस समय, उसकी मानवता उसकी दिव्यता को सामान्य देह में कार्य करने देने के एकमात्र प्रयोजन को पूरा करती है। इसलिए कार्य की अभिकर्ता उसकी मानवता में रहने वाली दिव्यता है। कार्य उसकी दिव्यता करती है, न कि उसकी मानवता, मगर यह दिव्यता उसकी मानवता में छिपी रहती है; सार रूप में, उसका कार्य उसकी संपूर्ण दिव्यता द्वारा ही किया

जाता है, न कि उसकी मानवता द्वारा। परन्तु कार्य को करने वाला उसका देह है। कह सकते हैं कि वह मनुष्य भी है और परमेश्वर भी, क्योंकि परमेश्वर, मानवीय आवरण और मानवीय सार के साथ, देह में रहने वाला परमेश्वर बन जाता है, लेकिन उसमें परमेश्वर का सार भी होता है। चूँकि वह परमेश्वर के सार वाला मनुष्य है इसलिए वह सभी सृजित मानवों से ऊपर है, ऐसे किसी भी मनुष्य से ऊपर है जो परमेश्वर का कार्य कर सकता है। तो, उसके समान मानवीय आवरण वाले सभी लोगों में, सभी मानवता धारियों में, एकमात्र वही देहधारी स्वयं परमेश्वर है—अन्य सभी सृजित मानव हैं। यद्यपि उन सभी में मानवता है, किन्तु सृजित मानव में केवल मानवता ही है, जबकि देहधारी परमेश्वर भिन्न है : उसके देह में न केवल मानवता है, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसमें दिव्यता भी है। उसकी मानवता उसके देह के बाहरी रूप-रंग में और उसके दिन-प्रतिदिन के जीवन में देखी जा सकती है, किन्तु उसकी दिव्यता को देख पाना मुश्किल है। क्योंकि उसकी दिव्यता केवल तभी व्यक्त होती है जब उसमें मानवता होती है, और यह वैसी अलौकिक नहीं होती जैसी लोग कल्पना करते हैं, इसलिए लोगों के लिए इसे देख पाना बहुत कठिन होता है। आज भी, लोगों के लिए देहधारी परमेश्वर के सच्चे सार की थाह पाना बहुत कठिन है। इसके बारे में इतने विस्तार से बताने के बाद भी, मुझे लगता है कि तुम लोगों में से अधिकांश के लिए यह एक रहस्य ही है। वास्तव में, यह मामला बहुत सरल है : चूँकि परमेश्वर देहधारी बन जाता है, इसलिए उसका सार मानवता और दिव्यता का संयोजन है। यह संयोजन स्वयं परमेश्वर, पृथ्वी पर स्वयं परमेश्वर कहलाता है।

पृथ्वी पर यीशु ने जो जीवन जिया वह देह में एक सामान्य जीवन था। उसने अपने देह का सामान्य जीवन जिया। अपना कार्य करना, वचन बोलना, या बीमार को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना, ऐसे असाधारण कार्य करने के उसके अधिकार ने स्वयं को तब तक प्रकट नहीं किया जब तक कि उसने अपनी सेवकाई आरंभ नहीं की। उनतीस वर्ष की उम्र से पहले, अपनी सेवकाई आरंभ करने से पहले उसका जीवन, इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि वह बस एक सामान्य देह था। इस कारण से और क्योंकि उसने अभी तक अपनी सेवकाई आरंभ नहीं की थी, लोगों को उसमें कुछ भी दिव्य नहीं दिखाई दिया, एक सामान्य मानव, एक सामान्य मनुष्य से अधिक कुछ नहीं दिखाई दिया—ठीक जैसे कि उस समय कुछ लोग उसे यूसुफ का पुत्र ही मानते थे। लोगों को लगता था कि वह एक सामान्य मनुष्य का पुत्र है, उनके पास यह बताने का कोई तरीका नहीं था कि वह देहधारी परमेश्वर का देह है; यहाँ तक कि जब, अपनी सेवकाई करने के दौरान, उसने कई चमत्कार किए, तब भी अधिकांश लोगों ने यही कहा कि वह यूसुफ

का पुत्र है, क्योंकि वह सामान्य मानवता के बाह्य आवरण वाला मसीह था। उसकी सामान्य मानवता और कार्य दोनों पहले देहधारण की महत्ता को पूर्ण करने के लिए थे, यह सिद्ध करने के लिए थे कि परमेश्वर पूरी तरह से देह में आकर एक अत्यंत साधारण मनुष्य बन गया है। अपना कार्य शुरु करने के पहले की उसकी सामान्य मानवता इस बात का प्रमाण थी कि वह एक साधारण देह था; और बाद में उसके कार्य करने ने भी यह प्रमाणित कर दिया कि वह एक साधारण देह था, क्योंकि उसने सामान्य मानवता द्वारा संकेत और चमत्कार किए, बीमार को चंगा किया और दुष्टात्माओं को देह से बाहर निकाला। वह इसलिए चमत्कार कर सका क्योंकि उसका देह परमेश्वर के अधिकार के युक्त था, परमेश्वर के आत्मा ने उसके देह को धारण किया था। उसके पास यह अधिकार परमेश्वर के आत्मा के कारण था, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं था कि वह देह नहीं था। उसे अपनी सेवकाई में बीमार को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने का कार्य करना था, यह उसकी मानवता में छिपी दिव्यता की अभिव्यक्ति थी, भले ही उसने कोई भी संकेत दिखाए हों या अपने अधिकार को कैसे भी प्रदर्शित किया हो, लेकिन तब भी वह सामान्य मानवता में रहने वाला सामान्य देह ही था। सलीब पर जान देने से लेकर पुनर्जीवित होने तक, वह सामान्य देह में ही रहा। अनुग्रह प्रदान करना, बीमार को चंगा करना, और दुष्टात्माओं को निकालना, ये सब उसकी सेवकाई का हिस्सा थे, ये सारे कार्य उसके सामान्य देह में किए गए थे। चाहे वह कोई भी कार्य कर रहा हो, लेकिन क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, वह कभी भी अपने सामान्य मानव देह से अलग नहीं हुआ। वह स्वयं परमेश्वर था, परमेश्वर का अपना कार्य कर रहा था, लेकिन चूँकि वह देहधारी परमेश्वर था, इसलिए वह खाना भी खाता था, कपड़े भी पहनता था, उसकी आवश्यकताएँ सामान्य इंसानों जैसी थीं, उसमें सामान्य मानवीय तर्क-शक्ति और सामान्य मानवीय मन था। यह सब इस बात का प्रमाण है कि वह एक सामान्य मनुष्य था, इससे सिद्ध होता है कि देहधारी परमेश्वर का देह सामान्य मानवता से युक्त देह था, न कि कोई अलौकिक देह। उसका कार्य परमेश्वर के पहले देहधारण के कार्य को पूरा करना था, उस सेवकाई को पूरा करना था जो पहले देहधारण को पूरी करनी चाहिए। देहधारण की महत्ता यह है कि एक साधारण, सामान्य मनुष्य स्वयं परमेश्वर का कार्य करता है; अर्थात्, परमेश्वर मानव देह में अपना दिव्य कार्य करके शैतान को परास्त करता है। देहधारण का अर्थ है कि परमेश्वर का आत्मा देह बन जाता है, अर्थात्, परमेश्वर देह बन जाता है; देह के द्वारा किया जाने वाला कार्य पवित्रात्मा का कार्य है, जो देह में साकार होता है, देह द्वारा अभिव्यक्त होता है। परमेश्वर के देह को छोड़कर अन्य कोई भी देहधारी परमेश्वर की सेवकाई को पूरा नहीं कर सकता;

अर्थात्, केवल परमेश्वर का देहधारी देह, यह सामान्य मानवता—अन्य कोई नहीं—दिव्य कार्य को व्यक्त कर सकता है। यदि, परमेश्वर के पहले आगमन के दौरान, उनतीस वर्ष की उम्र से पहले उसमें सामान्य मानवता नहीं होती—यदि जन्म लेते ही वह चमत्कार करने लगता, बोलना आरंभ करते ही वह स्वर्ग की भाषा बोलने लगता, यदि पृथ्वी पर कदम रखते ही सभी सांसारिक मामलों को समझने लगता, हर व्यक्ति के विचारों और इरादों को समझने लगता—तो ऐसे इंसान को सामान्य मनुष्य नहीं कहा जा सकता था, और ऐसे देह को मानवीय देह नहीं कहा जा सकता था। यदि मसीह के साथ ऐसा ही होता, तो परमेश्वर के देहधारण का कोई अर्थ और सार ही नहीं रह जाता। उसका सामान्य मानवता से युक्त होना इस बात को सिद्ध करता है कि वह शरीर में देहधारी हुआ परमेश्वर है; उसका सामान्य मानव विकास प्रक्रिया से गुज़रना दिखाता है कि वह एक सामान्य देह है; इसके अलावा, उसका कार्य इस बात का पर्याप्त सबूत है कि वह परमेश्वर का वचन है, परमेश्वर का आत्मा है जिसने देहधारण किया है। अपने कार्य की आवश्यकताओं की वजह से परमेश्वर देहधारी बनता है; दूसरे शब्दों में, कार्य का यह चरण देह में पूरा किया जाना चाहिए, सामान्य मानवता में पूरा किया जाना चाहिए। यही "वचन के देह बनने" के लिए, "वचन के देह में प्रकट होने" के लिए पहली शर्त है, और यही परमेश्वर के दो देहधारणों के पीछे की सच्ची कहानी है। हो सकता है लोग यह मानते हों कि यीशु ने जीवनभर चमत्कार किए, पृथ्वी पर अपने कार्य की समाप्ति तक उसने मानवता का कोई चिह्न प्रकट नहीं किया, उसकी आवश्यकताएँ सामान्य मानव जैसी नहीं थीं, या उसमें मानवीय कमज़ोरियाँ या मानवीय भावनाएँ नहीं थीं, उसे जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की ज़रूरत नहीं थी या उसे सामान्य मानवीय विचारों पर चिंतन करने की ज़रूरत नहीं थी। वे यही कल्पना करते हैं कि उसका मन अतिमानवीय है, उसके पास श्रेष्ठ मानवता है। वे मानते हैं कि चूँकि वह परमेश्वर है, इसलिए उसे उस तरह से रहना और सोचना नहीं चाहिए जैसे सामान्य मानव रहते और सोचते हैं, कोई सामान्य व्यक्ति, एक वास्तविक इंसान, ही सामान्य मानवीय सोच-विचार रख सकता और एक सामान्य मानवीय जीवन जी सकता है। ये सभी मनुष्य के विचार, और मनुष्य की धारणाएँ हैं, और ये धारणाएँ परमेश्वर के कार्य के वास्तविक इरादों के प्रतिकूल हैं। सामान्य मानव सोच, सामान्य मानव सूझ-बूझ और साधारण मानवता को बनाए रखती है; सामान्य मानवता देह के सामान्य कार्यों को बनाए रखती है; और देह के सामान्य कार्य, देह के सामान्य जीवन को उसकी समग्रता में बनाए रखते हैं। ऐसे देह में कार्य करके ही परमेश्वर अपने देहधारण के उद्देश्य को पूरा कर सकता है। यदि देहधारी परमेश्वर केवल देह के बाहरी

आवरण को ही धारण किए रहता, लेकिन उसमें सामान्य मानवीय विचार न आते, तो उसके देह में मानवीय सूझ-बूझ न होती, वास्तविक मानवता तो बिल्कुल न होती। ऐसा मानवता रहित देह, उस सेवकाई को कैसे पूरा कर सकता है जिसे देहधारी परमेश्वर को करना चाहिए? सामान्य मन मानव जीवन के सभी पहलुओं को बनाए रखता है; बिना सामान्य मन के, कोई व्यक्ति मानव नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति जो सामान्य ढंग से सोच-विचार नहीं करता, वह मानसिक रूप से बीमार है, और एक मसीह जिसमें मानवता न होकर केवल दिव्यता हो, उसे परमेश्वर का देहधारी शरीर नहीं कहा जा सकता। इसलिए, ऐसा कैसे हो सकता है कि परमेश्वर के देहधारी शरीर में कोई सामान्य मानवता न हो? क्या ऐसा कहना ईशनिंदा नहीं होगी कि मसीह में कोई मानवता नहीं है? ऐसे सभी क्रियाकलाप जिनमें सामान्य मानव शामिल होते हैं एक सामान्य मानव मन की कार्यशीलता के भरोसे होते हैं। इसके बिना, मानव पथभ्रष्ट की तरह व्यवहार करते; यहाँ तक कि वे सफेद और काले, अच्छे और बुरे में अंतर भी न कर पाते; उनमें कोई भी मानवीय आचरण न होता, और नैतिक सिद्धांत न होते। इसी प्रकार से, यदि देहधारी परमेश्वर एक सामान्य मानव की तरह न सोचता, तो वह एक प्रामाणिक देह, एक सामान्य देह न होता। सोच-विचार न करने वाला ऐसा देह दिव्य कार्य न कर पाता। वह सामान्य रूप से सामान्य देह की गतिविधियों में शामिल न हो पाता, पृथ्वी पर मनुष्यों के साथ रहने की तो बात ही छोड़ दो। और इस तरह, परमेश्वर के देहधारण की महत्ता, परमेश्वर का देह में आने का वास्तविक सार ही खो गया होता। देहधारी परमेश्वर की मानवता देह में सामान्य दिव्य कार्य को बनाए रखने के लिए मौजूद रहती है; उसकी सामान्य मानवीय सोच उसकी सामान्य मानवता को और उसकी समस्त सामान्य दैहिक गतिविधियों को बनाए रखती है। ऐसा कहा जा सकता है कि उसकी सामान्य मानवीय सोच देह में परमेश्वर के समस्त कार्य को बनाए रखने के उद्देश्य से विद्यमान रहती है। यदि इस देह में सामान्य मानवीय मन न होता, तो परमेश्वर देह में कार्य न कर पाता और जो उसे देह में करना था, वह कभी न कर पाता। यद्यपि देहधारी परमेश्वर में एक सामान्य मानवीय मन होता है, किन्तु उसके कार्य में मानवीय विचारों की मिलावट नहीं होती; वह सामान्य मन के साथ मानवता में कार्य करता है जिसमें मन-युक्त मानवता के होने की पूर्वशर्त रहती है, न कि सामान्य मानवीय विचारों को प्रयोग में लाने की। उसके देह के विचार कितने भी उत्कृष्ट क्यों न हों, लेकिन उसका कार्य तर्क या सोच से कलंकित नहीं होता। दूसरे शब्दों में, उसके कार्य की कल्पना उसके देह के मन के द्वारा नहीं की जाती, बल्कि वह उसकी मानवता में दिव्य कार्य की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। उसका समस्त कार्य उसकी वह सेवकाई है जिसे

उसे पूरा करना है, उसमें से कुछ भी उसके मस्तिष्क की कल्पना नहीं होता। उदाहरण के लिए, बीमार को चंगा करना, दुष्टात्माओं को निकालना, और क्रूसीकरण उसके मानवीय मन की उपज नहीं थे, उन्हें किसी भी मानवीय मन वाले मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता था। उसी तरह, आज का विजय-कार्य ऐसी सेवकाई है जिसे देहधारी परमेश्वर द्वारा किया जाना चाहिए, किन्तु यह किसी मानवीय इच्छा का कार्य नहीं है, यह ऐसा कार्य है जो उसकी दिव्यता को करना चाहिए, ऐसा कार्य जिसे करने में कोई भी दैहिक मानव सक्षम नहीं है। इसलिए देहधारी परमेश्वर में सामान्य मानव मन होना चाहिए, सामान्य मानवता से संपन्न होना चाहिए, क्योंकि उसे एक सामान्य मन के साथ मानवता में कार्य करना चाहिए। यही देहधारी परमेश्वर के कार्य का सार है, देहधारी परमेश्वर के कार्य का वास्तविक सार है।

कार्य आरंभ करने से पहले, यीशु सामान्य मानवता में रहता था। कोई नहीं कह सकता था कि वह परमेश्वर है, किसी को भी पता नहीं चला कि वह देहधारी परमेश्वर है; लोग उसे पूरी तरह से एक साधारण व्यक्ति ही समझते थे। उसकी सर्वथा सामान्य, साधारण मानवता इस बात का प्रमाण थी कि परमेश्वर ने देहधारण किया है, और अनुग्रह का युग देहधारी परमेश्वर के कार्य का युग है, न कि पवित्रात्मा के कार्य का युग। यह इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर का आत्मा पूरी तरह से देह में साकार हुआ है और परमेश्वर के देहधारण के युग में उसका देह पवित्रात्मा का समस्त कार्य करेगा। सामान्य मानवता वाला मसीह ऐसा देह है जिसमें आत्मा साकार हुआ है, जिसमें सामान्य मानवता है, सामान्य बोध है और मानवीय विचार हैं। "साकार होने" का अर्थ है परमेश्वर का मानव बनना, आत्मा का देह बनना; इसे और स्पष्ट रूप से कहें, तो यह तब होता है जब स्वयं परमेश्वर सामान्य मानवता वाले देह में वास करके उसके माध्यम से अपने दिव्य कार्य को व्यक्त करता है—यही साकार होने या देहधारी होने का अर्थ है। अपने पहले देहधारण के दौरान, परमेश्वर के लिए बीमारों को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना आवश्यक था, क्योंकि उसका कार्य छुटकारा दिलाना था। पूरी मानवजाति को छुटकारा दिलाने के लिए, उसका दयालु और क्षमाशील होना आवश्यक था। सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले उसने बीमार को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने का कार्य किया, जो उसके द्वारा मनुष्य के पाप और मलिनता से उद्धार के पूर्वलक्षण थे। चूँकि वह अनुग्रह का युग था, इसलिए बीमारों को चंगा करके संकेत और चमत्कार दिखाना परमेश्वर के लिए आवश्यक था, जो उस युग में अनुग्रह के प्रतिनिधि थे—क्योंकि अनुग्रह का युग अनुग्रह प्रदान करने के आस-पास केन्द्रित था, जिसका प्रतीक शान्ति, आनंद और भौतिक आशीष थे, जो कि सभी यीशु में लोगों के विश्वास की

निशानियाँ थीं। अर्थात् बीमार को चंगा करना, दुष्टात्माओं को निकालना, और अनुग्रह प्रदान करना, अनुग्रह के युग में यीशु के देह की सहज क्षमताएँ थीं, ये देह में साकार हुए पवित्रात्मा के कार्य थे। किन्तु जब वह ऐसे कार्य कर रहा था, तब वह देह में रह रहा था, देह से परे नहीं गया था। उसने चंगाई का चाहे कैसा भी कार्य क्यों न किया हो, तब भी उसमें सामान्य मानवता ही थी, तब भी वह एक सामान्य मानव जीवन ही जी रहा था। परमेश्वर के देहधारण के युग में देह ने पवित्रात्मा के सभी कार्य किए, मेरा ऐसा कहने का कारण यह है कि चाहे उसने कोई भी कार्य किया हो, उसने वह कार्य देह में रहकर ही किया था। किन्तु उसके कार्य की वजह से, लोगों ने उसके देह को पूरी तरह से दैहिक सार धारण करने वाला नहीं माना, क्योंकि वह देह चमत्कार कर सकता था, और किसी विशेष समय में ऐसे कार्य कर सकता था जो देह से परे के होते थे। बेशक, ये सारी घटनाएँ उसकी सेवकाई आरंभ करने के बाद हुईं, जैसे कि उसका चालीस दिनों तक उसकी परीक्षा लिया जाना या पहाड़ पर रूपान्तरित होना। तो यीशु के साथ, परमेश्वर के देहधारण का अर्थ पूर्ण नहीं हुआ था, बल्कि केवल आंशिक तौर पर पूर्ण हुआ था। अपना कार्य आरंभ करने से पहले उसने देह में जो जीवन जिया वह हर तरह से एकदम सामान्य था। कार्य आरंभ करने के बाद, उसने केवल अपने देह के बाहरी आवरण को बनाए रखा। क्योंकि उसका कार्य दिव्यता की अभिव्यक्ति था, इसलिए यह देह के सामान्य कार्यों से बढ़कर था। आख़िरकार, परमेश्वर का देहधारी देह मांस-और-रक्त वाले मानव से भिन्न था। बेशक, अपने दैनिक जीवन में, उसे भोजन, कपड़ों, नींद और आश्रय की आवश्यकता पड़ती थी, उसे सभी आम ज़रूरत की चीज़ों की आवश्यकता होती थी, उसमें सामान्य मानवीय बोध था, और वह एक आम इंसान की तरह ही सोचता था। उसके अलौकिक कार्य को छोड़कर, लोग अभी भी उसे एक सामान्य मनुष्य ही मान रहे थे। वास्तव में, प्रत्येक कार्य करते हुए वह एक साधारण और सामान्य मानवता में ही जी रहा था और जहाँ तक उसने जो कार्य किया, उसकी बात है, उसकी समझ विशेष रूप से सामान्य थी, उसके विचार, किसी भी अन्य सामान्य मनुष्य की अपेक्षा, विशेष रूप से अधिक सुस्पष्ट थे। इस प्रकार की सोच और समझ एक देहधारी परमेश्वर के लिए आवश्यक थी, क्योंकि दिव्य कार्य को ऐसे देह के द्वारा व्यक्त किए जाने की आवश्यकता थी जिसकी समझ बहुत ही सामान्य हो और विचार बहुत ही सुस्पष्ट हों—केवल इसी प्रकार से उसका देह दिव्य कार्य को व्यक्त कर सकता था। यीशु ने इस पृथ्वी पर अपने पूरे साढ़े तैंतीस साल के वास में, अपनी सामान्य मानवता बनाए रखी, किन्तु उसकी इन साढ़े तैंतीस साल की सेवकाई के दौरान, लोगों ने सोचा कि वह सर्वश्रेष्ठ है, पहले की अपेक्षा बहुत ही अलौकिक है।

जबकि असलियत में, यीशु की सामान्य मानवता सेवकाई आरंभ करने से पहले और बाद में अपरिवर्तित रही; पूरे समय उसकी मानवता एक-सी थी, किन्तु जब उसने अपनी सेवकाई आरंभ की उससे पहले और उसके बाद के अंतर के कारण, उसके देह को लेकर, दो भिन्न-भिन्न मत उभरे। लोगों की राय कुछ भी रही हो, लेकिन देहधारी परमेश्वर ने पूरी अवधि में, अपनी सामान्य मानवता बनाए रखी, क्योंकि जबसे परमेश्वर देहधारी हुआ था, तब से वह देह में ही रहा, ऐसे देह में जिसमें सामान्य मानवता थी। चाहे वह अपनी सेवकाई कर रहा हो या न कर रहा हो, उसके देह की सामान्य मानवता को मिटाया नहीं जा सकता था, क्योंकि मानवता देह का मूल सार है। अपनी सेवकाई से पहले, सभी सामान्य मानवीय क्रियाकलापों में संलग्न रहते हुए यीशु का देह पूरी तरह से सामान्य रहा; वह जरा-सा भी अलौकिक नज़र नहीं आया, उसने कोई भी चमत्कारी संकेत नहीं दिखाए। उस समय, वह केवल एक आम इंसान था जो परमेश्वर की आराधना करता था, भले ही उसका लक्ष्य अधिक ईमानदार था, किसी भी किसी भी व्यक्ति से अधिक निष्ठापूर्ण था। इस प्रकार उसकी सर्वथा सामान्य मानवता ने स्वयं को अभिव्यक्त किया। चूँकि सेवकाई का कार्य शुरू करने से पहले, उसने कोई कार्य नहीं किया था, इसलिए कोई उसे पहचानता नहीं था, कोई नहीं कह सकता था कि उसका देह बाकी लोगों से अलग है, क्योंकि उसने एक भी चमत्कार नहीं किया था, स्वयं परमेश्वर का ज़रा-सा भी कार्य नहीं किया था। लेकिन, सेवकाई का कार्य प्रारंभ करने के बाद, उसने सामान्य मानवता का बाहरी आवरण बनाए रखा और तब भी सामान्य मानवीय सूझबूझ के साथ ही जीता रहा, लेकिन क्योंकि उसने स्वयं परमेश्वर का कार्य करना, मसीह की सेवकाई अपनाना और उन कार्यों को करना आरंभ कर दिया था जिन्हें करने में नश्वर प्राणी, मांस-और-रक्त से बने प्राणी अक्षम थे, इसलिए लोगों ने मान लिया कि उसकी सामान्य मानवता नहीं है, उसका देह पूरी तरह से सामान्य नहीं है बल्कि अपूर्ण देह है। उसके द्वारा किए गए कार्य की वजह से, लोगों ने कहा कि वह देह में परमेश्वर है जिसके पास सामान्य मानवता नहीं है। ऐसी समझ गलत है, क्योंकि लोगों ने देहधारी परमेश्वर की महत्ता को नहीं समझा। यह गलतफहमी इस तथ्य से पैदा हुई थी कि परमेश्वर द्वारा देह में व्यक्त कार्य दिव्य कार्य है, जो ऐसे देह में व्यक्त किया जाता है जिसकी एक सामान्य मानवता है। परमेश्वर देह के आवरण में था, उसका वास देह में था, परमेश्वर की मानवता में उसके कार्य ने उसकी मानवता की सामान्यता को धुँधला कर दिया था। इसी कारण से लोगों ने विश्वास कर लिया कि परमेश्वर में मानवता नहीं है केवल दिव्यता है।

अपने पहले देहधारण में परमेश्वर ने देहधारण के कार्य को पूरा नहीं किया; उसने उस कार्य के पहले

चरण को ही पूरा किया जिसे परमेश्वर के लिए देह में रहकर करना आवश्यक था। इसलिए, देहधारण के कार्य को समाप्त करने के लिए, परमेश्वर एक बार फिर देह में वापस आया है, और देह की समस्त सामान्यता और वास्तविकता को जी रहा है, अर्थात्, एकदम सामान्य और साधारण देह में परमेश्वर के वचन को प्रकट कर रहा है, इस प्रकार उस कार्य का समापन कर रहा है जिसे उसने देह में अधूरा छोड़ दिया था। दूसरा देहधारण सार रूप में पहले के ही समान है, लेकिन यह अधिक वास्तविक और पहले से भी अधिक सामान्य है। परिणामस्वरूप, दूसरा देहधारी देह पहले देहधारण से भी अधिक पीड़ा सहता है, किन्तु यह पीड़ा देह में उसकी सेवकाई का परिणाम है, जो कि एक भ्रष्ट मानव की पीड़ा से भिन्न है। यह भी उसके देह की सामान्यता और वास्तविकता से उत्पन्न होती है। क्योंकि वह अपनी सेवकाई का कार्य सर्वथा सामान्य और वास्तविक देह में करता है, इसलिए उसके देह को अत्यधिक कठिनाई सहनी होगी। उसका देह जितना अधिक सामान्य और वास्तविक होगा, उतना ही अधिक वह अपनी सेवकाई में कष्ट उठाएगा। परमेश्वर का कार्य एक बहुत ही आम देह में अभिव्यक्त होता है, ऐसा देह जो कि बिल्कुल भी अलौकिक नहीं है। चूँकि उसका देह सामान्य है और उसे मनुष्य को बचाने के कार्य का दायित्व भी लेना है, इसलिए वह अलौकिक देह की अपेक्षा और भी अधिक पीड़ा भुगतता है—और ये सारी पीड़ा उसके देह की वास्तविकता और सामान्यता से उत्पन्न होती है। सेवकाई का कार्य करते समय जिस पीड़ा से दोनों देहधारी देह गुज़रे हैं, उससे देहधारी देह के सार को देखा जा सकता है। देह जितना अधिक सामान्य होगा, उसे कार्य करते समय उतनी ही अधिक कठिनाई सहनी होगी; कार्य करने वाला देह जितना अधिक वास्तविक होता है, लोगों की धारणाएँ भी उतनी ही अधिक कठोर होती हैं, और उस पर आने वाले ख़तरों की आशंका उतनी ही अधिक होती है। फिर भी, देह जितना अधिक वास्तविक होता है, और उसमें सामान्य मानव की जितनी अधिक आवश्यकताएँ और पूर्ण बोध होता है, वह उतना ही अधिक वह परमेश्वर के कार्य को देह में कर पाने में सक्षम होता है। यीशु के देह को सलीब पर चढ़ाया गया था, उसी ने पापबलि के रूप में अपने देह का को दिया था; उसने सामान्य मानवता वाले देह से ही शैतान को हराकर सलीब से मनुष्य को पूरी तरह से बचाया था। और पूरी तरह से देह के रूप में ही परमेश्वर अपने दूसरे देहधारण में विजय का कार्य करता है और शैतान को हराता है। केवल ऐसा देह जो पूरी तरह से सामान्य और वास्तविक है, अपनी समग्रता में विजय का कार्य करके एक सशक्त गवाही दे सकता है। अर्थात्, देह में परमेश्वर की वास्तविकता और सामान्यता के माध्यम से ही मानव पर विजय को प्रभावी बनाया जाता है, न कि

अलौकिक चमत्कारों और प्रकटनों के माध्यम से। इस देहधारी परमेश्वर की सेवकाई बोलना, मनुष्य को जीतना और उसे पूर्ण बनाना है; दूसरे शब्दों में, देह में साकार हुए पवित्रात्मा का कार्य, देह का कर्तव्य, बोलकर मनुष्य को पूरी तरह से जीतना, उजागर करना, पूर्ण बनाना और हटाना है। इसलिए, विजय के कार्य में ही देह में परमेश्वर का कार्य पूरी तरह से सम्पन्न होगा। आरंभिक छुटकारे का कार्य देहधारण के कार्य का आरंभ मात्र था; विजय का कार्य करने वाला देह देहधारण के समस्त कार्य को पूरा करेगा। लिंग रूप में, एक पुरुष है और दूसरा महिला; यह परमेश्वर के देहधारण की महत्ता को पूर्णता देकर, परमेश्वर के बारे में मनुष्य की धारणाओं को दूर करता है : परमेश्वर पुरुष और महिला दोनों बन सकता है, सार रूप में देहधारी परमेश्वर स्त्रीलिंग या पुल्लिंग नहीं है। उसने पुरुष और महिला दोनों को बनाया है, और उसके लिए कोई लिंगभेद नहीं है। कार्य के इस चरण में, परमेश्वर संकेत और चमत्कार नहीं दिखाता, ताकि कार्य वचनों के माध्यम से अपने परिणाम प्राप्त करे। क्योंकि देहधारी परमेश्वर का इस बार का कार्य बीमार को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना नहीं है, बल्कि बोलकर मनुष्य को जीतना है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर के इस देहधारण का सहज गुण वचन बोलना और मनुष्य को जीतना है, न कि बीमार को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना। सामान्य मानवता में उसका कार्य चमत्कार करना नहीं है, बीमार को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना नहीं है, बल्कि बोलना है, और इसलिए दूसरा देहधारी देह लोगों को पहले वाले की तुलना में अधिक सामान्य लगता है। लोग देखते हैं कि परमेश्वर का देहधारण मिथ्या नहीं है; बल्कि यह देहधारी परमेश्वर यीशु के देहधारण से भिन्न है, हालाँकि दोनों ही परमेश्वर के देहधारण हैं, फिर भी वे पूरी तरह से एक नहीं हैं। यीशु में सामान्य और साधारण मानवता थी, लेकिन उसमें अनेक संकेत और चमत्कार दिखाने की शक्ति थी। जबकि इस देहधारी परमेश्वर में, मानवीय आँखों को न तो कोई संकेत दिखाई देगा, और न कोई चमत्कार, न तो बीमार चंगे होते हुए दिखाई देंगे, न ही दुष्टात्माएँ बाहर निकाली जाती हुई दिखाई देंगी, न तो समुद्र पर चलना दिखाई देगा, न ही चालीस दिन तक उपवास रखना दिखाई देगा...। वह उसी कार्य को नहीं करता जो यीशु ने किया, इसलिए नहीं कि उसका देह सार रूप में यीशु से भिन्न है, बल्कि इसलिए कि बीमार को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना उसकी सेवकाई नहीं है। वह अपने ही कार्य को ध्वस्त नहीं करता, अपने ही कार्य में विघ्न नहीं डालता। चूँकि वह मनुष्य को अपने वास्तविक वचनों से जीतता है, इसलिए उसे चमत्कारों से वश में करने की आवश्यकता नहीं है, और इसलिए यह चरण देहधारण के कार्य को पूरा करने के लिए है। आज तुम जिस देहधारी परमेश्वर को देखते

हो वह पूरी तरह से देह है, और उसमें कुछ भी अलौकिक नहीं है। वह दूसरों की तरह ही बीमार पड़ता है, उसे बाकी लोगों की तरह ही बीमार पड़ता है, उसी तरह उसे भोजन और कपड़ों की आवश्यकता होती है; वह पूरी तरह से देह है। यदि इस बार भी देहधारी परमेश्वर अलौकिक संकेत और चमत्कार दिखाता, बीमारों को चंगा करता, दुष्टात्माओं को निकालता, या एक वचन से मार सकता, तो विजय का कार्य कैसे हो पाता? कार्य को अन्यजाति राष्ट्रों में कैसे फैलाया जा सकता था? बीमार को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना अनुग्रह के युग का कार्य था, छुटकारे के कार्य का यह पहला चरण था, और अब जबकि परमेश्वर ने लोगों को सलीब से बचा लिया है, इसलिए अब वह उस कार्य को नहीं करता। यदि अंत के दिनों में यीशु के जैसा ही कोई "परमेश्वर" प्रकट हो जाता, जो बीमार को चंगा करता और दुष्टात्माओं को निकालता, और मनुष्य के लिए सलीब पर चढ़ाया जाता, तो वह "परमेश्वर", बाइबल में वर्णित परमेश्वर के समरूप तो अवश्य होता और उसे मनुष्य के लिए स्वीकार करना भी आसान होता, लेकिन तब वह अपने सार रूप में, परमेश्वर के आत्मा द्वारा नहीं, बल्कि एक दुष्टात्मा द्वारा धारण किया गया देह होता। क्योंकि जो परमेश्वर ने पहले ही पूरा कर लिया है, उसे कभी नहीं दोहराना, यह परमेश्वर के कार्य का सिद्धांत है। इसलिए परमेश्वर के दूसरे देहधारण का कार्य पहले देहधारण के कार्य से भिन्न है। अंत के दिनों में, परमेश्वर विजय का कार्य एक सामान्य और साधारण देह में पूरा करता है; वह बीमार को चंगा नहीं करता, उसे मनुष्य के लिए सलीब पर नहीं चढ़ाया जाएगा, बल्कि वह केवल देह में वचन कहता है, देह में मानव को जीतता है। ऐसा देह ही देहधारी परमेश्वर का देह है; ऐसा देह ही देह में परमेश्वर के कार्य को पूर्ण कर सकता है।

इस चरण में देहधारी परमेश्वर चाहे कठिनाइयाँ सह रहा हो या सेवकाई कर रहा हो, वह ऐसा केवल देहधारण के अर्थ को पूरा करने के लिए करता है, क्योंकि यह परमेश्वर का अंतिम देहधारण है। परमेश्वर केवल दो बार देहधारण कर सकता है। ऐसा तीसरी बार नहीं हो सकता। पहला देहधारण पुरुष था; दूसरा स्त्री, तो मनुष्य के मन में परमेश्वर की देह की छवि पूरी हो चुकी है; इसके अलावा, दोनों देहधारण ने पहले ही परमेश्वर के कार्य को देह में समाप्त कर लिया है। पहली बार, देहधारण के अर्थ को पूरा करने के लिए परमेश्वर के देहधारण ने सामान्य मानवता धारण की। इस बार उसने सामान्य मानवता भी धारण की है, किन्तु इस देहधारण का अर्थ भिन्न है : यह अधिक गहरा है, और उसका कार्य अधिक गहन महत्ता का है। परमेश्वर के पुनः देहधारी होने का कारण देहधारण के अर्थ को पूरा करना है। जब परमेश्वर इस चरण के

कार्य को पूरी तरह से समाप्त कर लेगा, तो देहधारण का संपूर्ण अर्थ, अर्थात्, देह में परमेश्वर का कार्य पूरा हो जाएगा, और फिर देह में करने के लिए और कार्य बाकी नहीं रह जाएगा। अर्थात्, अब से परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए फिर कभी देहधारण नहीं करेगा। केवल मानवजाति को बचाने और पूर्ण करने के लिए ही परमेश्वर देहधारण करता है। दूसरे शब्दों में, कार्य के अलावा किसी और कारण से देह में आना परमेश्वर के लिए किसी भी तरह से सामान्य बात नहीं है। कार्य करने के लिए देह में आ कर, वह शैतान को दिखाता है कि परमेश्वर देह है, एक सामान्य, एक साधारण व्यक्ति है—और फिर भी वह संसार पर विजयी शासन कर सकता है, शैतान को परास्त कर सकता है, मानवजाति को छुटकारा दिला सकता है, मानवजाति को जीत सकता है! शैतान के कार्य का लक्ष्य मानवजाति को भ्रष्ट करना है, जबकि परमेश्वर का लक्ष्य मानवजाति को बचाना है। शैतान मनुष्य को अथाह कुंड में फँसाता है, जबकि परमेश्वर उसे इससे बचाता है। शैतान सभी लोगों से अपनी आराधना करवाता है, जबकि परमेश्वर उन्हें अपने प्रभुत्व के अधीन करता है, क्योंकि वह संपूर्ण सृष्टि का प्रभु है। यह समस्त कार्य परमेश्वर के दो देहधारणों द्वारा पूरा किया जाता है। उसका देह सार रूप में मानवता और दिव्यता का मिलाप है और उसमें सामान्य मानवता है। इसलिए देहधारी परमेश्वर के देह के बिना, परमेश्वर मानवजाति को नहीं बचा सकता, और देह की सामान्य मानवता के बिना, देह में उसका कार्य परिणाम हासिल नहीं कर सकता। परमेश्वर के देहधारण का सार यह है कि उसमें सामान्य मानवता होनी चाहिए; इसके इतर कुछ भी होने पर यह देहधारण करने के परमेश्वर के मूल आशय के विपरीत चला जाएगा।

मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि देहधारण का अर्थ यीशु के कार्य में पूर्ण नहीं हुआ था? क्योंकि वचन पूरी तरह से देह नहीं बना था। यीशु ने जो किया वह देह में परमेश्वर के कार्य का केवल एक अंश ही था; उसने केवल छुटकारे का कार्य किया और मनुष्य को पूरी तरह से प्राप्त करने का कार्य नहीं किया। इसी कारण से परमेश्वर एक बार पुनः अंत के दिनों में देह बना है। कार्य का यह चरण भी एक सामान्य देह में किया जाता है; यह एक सर्वथा सामान्य मानव द्वारा किया जाता है, जिसकी मानवता अंश मात्र भी सर्वोत्कृष्ट नहीं होती। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर पूरी तरह से इंसान बन गया है; और वह ऐसा व्यक्ति है जिसकी पहचान परमेश्वर की है, एक पूर्ण मानव, एक पूर्ण देह की, जो कार्य को कर रहा है। मानवीय आँखों के लिए, वह केवल एक देह है जो बिल्कुल भी सर्वोत्कृष्ट नहीं है, एक अति सामान्य व्यक्ति जो स्वर्ग की भाषा बोल सकता है, जो कोई भी अद्भुत संकेत और चमत्कार नहीं दिखाता है, वृहद सभाकक्षों में धर्म के बारे में

आंतरिक सत्य को तो उजागर बिल्कुल नहीं करता। लोगों को दूसरे देहधारी देह का कार्य पहले वाले से एकदम अलग प्रतीत होता है, इतना अलग कि दोनों में कुछ भी समान नहीं दिखता, और इस बार पहले वाले के कार्य का थोड़ा-भी अंश नहीं देखा जा सकता। यद्यपि दूसरे देहधारण के देह का कार्य पहले वाले से भिन्न है, लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं होता कि उनका स्रोत एक ही नहीं है। उनका स्रोत एक ही है या नहीं, यह दोनों देह के द्वारा किए गए कार्य की प्रकृति पर निर्भर करता है, न कि उनके बाहरी आवरण पर। अपने कार्य के तीन चरणों के दौरान, परमेश्वर ने दो बार देहधारण किया है, और दोनों बार देहधारी परमेश्वर के कार्य ने एक नए युग का शुभारंभ किया है, एक नए कार्य का सूत्रपात किया है; दोनों देहधारण एक-दूसरे के पूरक हैं। मानवीय आँखों के लिए यह बताना असंभव है कि दोनों देह वास्तव में एक ही स्रोत से आते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह मानवीय आँखों या मानवीय मन की क्षमता से बाहर है। किन्तु अपने सार में वे एक ही हैं, क्योंकि उनका कार्य एक ही पवित्रात्मा से उत्पन्न होता है। दोनों देहधारी देह एक ही स्रोत से उत्पन्न होते हैं या नहीं, इस बात को उस युग और उस स्थान से जिसमें वे पैदा हुए थे, या ऐसे ही अन्य कारकों से नहीं, बल्कि उनके द्वारा किए गए दिव्य कार्य से तय किया जा सकता है। दूसरा देहधारी देह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करता जिसे यीशु कर चुका है, क्योंकि परमेश्वर का कार्य किसी परंपरा का पालन नहीं करता, बल्कि हर बार वह एक नया मार्ग खोलता है। दूसरे देहधारी देह का लक्ष्य, लोगों के मन पर पहले देह के प्रभाव को गहरा या दृढ़ करना नहीं है, बल्कि इसे पूरक करना और पूर्ण बनाना है, परमेश्वर के बारे में मनुष्य के ज्ञान को गहरा करना है, उन सभी नियमों को तोड़ना है जो लोगों के हृदय में विद्यमान हैं, और उनके हृदय से परमेश्वर की भ्रामक छवि को मिटाना है। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर के अपने कार्य का कोई भी अकेला चरण मनुष्य को उसके बारे में पूरा ज्ञान नहीं दे सकता; प्रत्येक चरण केवल एक भाग का ज्ञान देता है, न कि संपूर्ण का। यद्यपि परमेश्वर ने अपने स्वभाव को पूरी तरह से व्यक्त कर दिया है, किन्तु मनुष्य की समझ के सीमित गुणों की वजह से, परमेश्वर के बारे में उसका ज्ञान अभी भी अपूर्ण है। मानव भाषा का उपयोग करके, परमेश्वर के स्वभाव की समग्रता को संप्रेषित करना असंभव है; इसके अलावा, परमेश्वर के कार्य का एक चरण परमेश्वर को पूरी तरह से कैसे व्यक्त कर सकता है? वह देह में अपनी सामान्य मानवता की आड़ में कार्य करता है, उसे केवल उसकी दिव्यता की अभिव्यक्तियों से ही जाना जा सकता है, न कि उसके दैहिक आवरण से। परमेश्वर मनुष्य को अपने विभिन्न कार्यों के माध्यम से स्वयं को जानने देने के लिए देह में आता है। उसके कार्य के कोई भी दो

चरण एक जैसे नहीं होते। केवल इसी प्रकार से मनुष्य, एक अकेले पहलू तक सीमित न होकर, देह में परमेश्वर के कार्य का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यद्यपि दोनों देहधारण के कार्य भिन्न हैं, किन्तु देह का सार, और उनके कार्यों का स्रोत समान है; बात केवल इतनी ही है कि उनका अस्तित्व कार्य के दो विभिन्न चरणों को करने के लिए है, और वे दो अलग-अलग युग में आते हैं। कुछ भी हो, देहधारी परमेश्वर के देह एक ही सार और एक ही स्रोत को साझा करते हैं—यह एक ऐसा सत्य है जिसे कोई नकार नहीं सकता।

परमेश्वर का कार्य और मनुष्य का अभ्यास

मनुष्यों के बीच परमेश्वर का कार्य मनुष्य से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि मनुष्य ही इस कार्य का लक्ष्य और परमेश्वर द्वारा रचा गया एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो परमेश्वर की गवाही दे सकता है। मनुष्य का जीवन और उसके समस्त क्रियाकलाप परमेश्वर से अलग नहीं किए जा सकते और वे सब परमेश्वर के हाथों से नियंत्रित किए जाते हैं, यहाँ तक कि यह भी कहा जा सकता है कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर से स्वतंत्र होकर अस्तित्व में नहीं रह सकता। कोई भी इसे नकार नहीं सकता, क्योंकि यह एक तथ्य है। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, वह सब मानवजाति के लाभ के लिए है, और शैतान के षड्यंत्रों की ओर निर्देशित है। वह सब-कुछ, जिसकी मनुष्य को आवश्यकता होती है, परमेश्वर से आता है, और परमेश्वर ही मनुष्य के जीवन का स्रोत है। इस प्रकार, मनुष्य परमेश्वर से अलग होने में एकदम असमर्थ है। इतना ही नहीं, परमेश्वर का मनुष्य से अलग होने का कभी कोई इरादा भी नहीं रहा। जो कार्य परमेश्वर करता है, वह संपूर्ण मानवजाति के लिए है और उसके विचार हमेशा उदार होते हैं। तो मनुष्य के लिए परमेश्वर का कार्य और परमेश्वर के विचार (अर्थात् परमेश्वर की इच्छा) दोनों ही ऐसे "दर्शन" हैं, जिन्हें मनुष्य को जानना चाहिए। वे दर्शन परमेश्वर का प्रबंधन भी हैं, और यह ऐसा कार्य है, जिसे करने में मनुष्य अक्षम है। इस बीच, परमेश्वर द्वारा अपने कार्य के दौरान मनुष्य से की जाने वाली अपेक्षाएँ मनुष्य का "अभ्यास" कहलाती हैं। दर्शन स्वयं परमेश्वर का कार्य हैं, या वे मानवजाति के लिए उसकी इच्छा हैं या उसके कार्य के लक्ष्य और महत्व हैं। दर्शनों को प्रबंधन का एक हिस्सा भी कहा जा सकता है, क्योंकि यह प्रबंधन परमेश्वर का कार्य है, और मनुष्य की ओर निर्देशित है, जिसका अभिप्राय है कि यह वह कार्य है, जिसे परमेश्वर मनुष्यों के बीच करता है। यह कार्य वह प्रमाण और वह मार्ग है, जिसके माध्यम से मनुष्य परमेश्वर को जान पाता है, और मनुष्य के लिए इसका अत्यधिक महत्व है। यदि परमेश्वर के कार्य के ज्ञान पर ध्यान देने के बजाय

लोग केवल परमेश्वर में विश्वास के सिद्धांतों पर या तुच्छ महत्वहीन ब्योरों पर ही ध्यान देते हैं, तो वे परमेश्वर को कभी नहीं जानेंगे, और इसके अतिरिक्त, वे परमेश्वर के हृदय के अनुरूप नहीं होंगे। परमेश्वर का कार्य, जो परमेश्वर के बारे में मनुष्य के ज्ञान के लिए अत्यधिक सहायक है, दर्शन कहलाता है। ये दर्शन परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर की इच्छा और परमेश्वर के कार्य के लक्ष्य और महत्व हैं; वे सब मनुष्य के लाभ के लिए हैं। अभ्यास का तात्पर्य उससे है, जो मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए, जो परमेश्वर का अनुसरण करने वाले प्राणियों द्वारा किया जाना चाहिए, और यह मनुष्य का कर्तव्य भी है। जो मनुष्य को करना चाहिए, वह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मनुष्य द्वारा बिलकुल आरंभ से ही समझ लिया गया था, बल्कि ये वे अपेक्षाएँ हैं जो परमेश्वर अपने कार्य के दौरान मनुष्य से करता है। जैसे-जैसे परमेश्वर कार्य करता जाता है, ये अपेक्षाएँ धीरे-धीरे अधिक गहरी और अधिक उन्नत होती जाती हैं। उदाहरण के लिए, व्यवस्था के युग के दौरान मनुष्य को व्यवस्था का पालन करना था, और अनुग्रह के युग के दौरान मनुष्य को सलीब को सहना था। राज्य का युग भिन्न है : इसमें मनुष्य से की जाने वाली अपेक्षाएँ व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग के दौरान की गई अपेक्षाओं से ऊँची हैं। जैसे-जैसे दर्शन अधिक उन्नत होते जाते हैं, मनुष्य से अपेक्षाएँ भी पहले से अधिक उन्नत, और पहले से अधिक स्पष्ट तथा अधिक वास्तविक होती जाती हैं। इसी प्रकार, दर्शन भी उत्तरोत्तर वास्तविक होते जाते हैं। ये अनेक वास्तविक दर्शन न केवल परमेश्वर के प्रति मनुष्य की आज्ञाकारिता के लिए सहायक हैं, बल्कि इससे भी अधिक, परमेश्वर के बारे में उसके ज्ञान के लिए भी सहायक हैं।

पिछले युगों की तुलना में राज्य के युग के दौरान परमेश्वर का कार्य अधिक व्यावहारिक, मनुष्य के सार और उसके स्वभाव में परिवर्तनों पर अधिक निर्देशित, और उन सभी के लिए स्वयं परमेश्वर की गवाही देने हेतु अधिक समर्थ है, जो उसका अनुसरण करते हैं। दूसरे शब्दों में, राज्य के युग के दौरान जब परमेश्वर कार्य करता है, तो वह मनुष्य को अतीत के किसी भी समय की तुलना में स्वयं को अधिक दिखाता है, जिसका अर्थ है कि वे दर्शन, जो मनुष्य को जानने चाहिए, किसी भी पिछले युग की तुलना में अधिक ऊँचे हैं। चूँकि मनुष्यों के बीच परमेश्वर का कार्य अभूतपूर्व क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है, इसलिए राज्य के युग के दौरान मनुष्य द्वारा जाने गए दर्शन संपूर्ण प्रबंधन कार्य में सर्वोच्च हैं। परमेश्वर का कार्य अभूतपूर्व क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है, इसलिए मनुष्य द्वारा ज्ञात किए जाने वाले दर्शन सभी दर्शनों में सर्वोच्च बन गए हैं, और इसके परिणामस्वरूप मनुष्य का अभ्यास भी किसी भी पिछले युग की तुलना में उच्चतर है, क्योंकि मनुष्य का अभ्यास दर्शनों के साथ कदम मिलाते हुए बदलता जाता है, और दर्शनों की परिपूर्णता मनुष्य से की

जाने वाली अपेक्षाओं की परिपूर्णता को भी चिह्नित करती है। जैसे ही परमेश्वर का संपूर्ण प्रबंधन रुकता है, वैसे ही मनुष्य का अभ्यास भी रुक जाता है, और परमेश्वर के कार्य के बिना मनुष्य के पास अतीत के समयों के सिद्धांत का पालन करने के सिवाय कोई विकल्प नहीं होगा, या फिर उसके पास मुड़ने की कोई जगह नहीं होगी। नए दर्शनों के बिना मनुष्य द्वारा कोई नया अभ्यास नहीं किया जाएगा; संपूर्ण दर्शनों के बिना मनुष्य द्वारा कोई परिपूर्ण अभ्यास नहीं किया जाएगा; उच्चतर दर्शनों के बिना मनुष्य द्वारा कोई उच्चतर अभ्यास नहीं किया जाएगा। मनुष्य का अभ्यास परमेश्वर के पदचिह्नों के साथ-साथ बदलता जाता है, और उसी प्रकार मनुष्य का ज्ञान और अनुभव भी परमेश्वर के कार्य के साथ-साथ बदलता जाता है। मनुष्य चाहे कितना भी सक्षम हो, वह फिर भी परमेश्वर से अलग नहीं हो सकता, और यदि परमेश्वर एक क्षण के लिए भी कार्य करना बंद कर दे, तो मनुष्य तुरंत ही उसके कोप से मर जाएगा। मनुष्य के पास घमंड करने लायक कुछ भी नहीं है, क्योंकि आज मनुष्य का ज्ञान कितना ही ऊँचा क्यों न हो, उसके अनुभव कितने ही गहन क्यों न हों, वह परमेश्वर के कार्य से अलग नहीं किया जा सकता—क्योंकि मनुष्य का अभ्यास, और जो उसे परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में खोजना चाहिए वह, दर्शनों से अलग नहीं किए जा सकते। परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक उदाहरण में ऐसे दर्शन हैं, जिन्हें मनुष्य को जानना चाहिए, और इनके बाद, मनुष्य से उचित अपेक्षाएँ की जाती हैं। नींव के रूप में इन दर्शनों के बिना मनुष्य न तो अभ्यास में समर्थ होगा, और न ही वह दृढ़तापूर्वक परमेश्वर का अनुसरण करने में समर्थ होगा। यदि मनुष्य परमेश्वर को नहीं जानता या परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझता, तो वह जो कुछ भी करता है, वह सब व्यर्थ है, और वह परमेश्वर द्वारा अनुमोदित किए जाने के योग्य नहीं है। मनुष्य की प्रतिभा कितनी भी समृद्ध क्यों न हों, वह फिर भी परमेश्वर के कार्य तथा परमेश्वर के मार्गदर्शन से अलग नहीं किया जा सकता। भले ही मनुष्य के कार्य कितने भी अच्छे क्यों न हों, या वह कितने भी कार्य क्यों न करे, फिर भी वे परमेश्वर के कार्य का स्थान नहीं ले सकते। और इसलिए, किसी भी परिस्थिति में मनुष्य का अभ्यास दर्शनों से अलग नहीं किया जा सकता। जो नए दर्शनों को स्वीकार नहीं करते, उनके पास कोई नया अभ्यास नहीं होता। उनके अभ्यास का सत्य के साथ कोई संबंध नहीं होता, क्योंकि वे सिद्धांत का पालन करते हैं और मृत व्यवस्था को बनाए रखते हैं; उनके पास नए दर्शन बिलकुल नहीं होते, और परिणामस्वरूप, वे नए युग से कुछ भी अभ्यास में नहीं लाते। उन्होंने दर्शनों को गँवा दिया है, और ऐसा करके उन्होंने पवित्र आत्मा के कार्य को भी गँवा दिया है, और उन्होंने सत्य को गँवा दिया है। जो लोग सत्य से विहीन हैं, वे बेहूदगी की संतति हैं, वे

शैतान के मूर्त रूप हैं। भले ही कोई किसी भी प्रकार का व्यक्ति क्यों न हो, वह परमेश्वर के कार्य के दर्शनों से रहित नहीं हो सकता, और पवित्र आत्मा की उपस्थिति से वंचित नहीं हो सकता; जैसे ही व्यक्ति दर्शनों को गँवा देता है, वह तुरंत अधोलोक में पतित हो जाता है और अंधकार के बीच रहता है। दर्शनों से विहीन लोग वे लोग हैं जो परमेश्वर का अनुसरण मूर्खतापूर्वक करते हैं, वे वो लोग हैं जो पवित्र आत्मा के कार्य से रहित हैं, और वे नरक में रह रहे हैं। ऐसे लोग सत्य की खोज नहीं करते, बल्कि परमेश्वर के नाम को एक तख़्ती के रूप में लटकाए रहते हैं। जो लोग पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं जानते, जो देहधारी परमेश्वर को नहीं जानते, जो परमेश्वर के प्रबंधन की संपूर्णता में कार्य के तीन चरणों को नहीं जानते—वे दर्शनों को नहीं जानते, और इसलिए वे सत्य से रहित हैं। और क्या जो लोग सत्य को धारण नहीं करते, वे सभी कुकर्मी नहीं हैं? जो सत्य को अभ्यास में लाने के इच्छुक हैं, जो परमेश्वर के ज्ञान को खोजने के इच्छुक हैं, और जो सच में परमेश्वर के साथ सहयोग करते हैं, वे ऐसे लोग हैं जिनके लिए दर्शन नींव के रूप में कार्य करते हैं। उन्हें परमेश्वर द्वारा अनुमोदित किया जाता है, क्योंकि वे परमेश्वर के साथ सहयोग करते हैं, और यह सहयोग ही है, जिसे मनुष्य द्वारा अभ्यास में लाया जाना चाहिए।

दर्शनों में अभ्यास के अनेक मार्ग समाविष्ट हैं। मनुष्य से की गई व्यावहारिक माँगें भी दर्शनों के भीतर समाविष्ट होती हैं, जैसे परमेश्वर का कार्य समाविष्ट होता है, जिसे मनुष्य को जानना चाहिए। अतीत में, विशेष सभाओं या विशाल सभाओं के दौरान, जो विभिन्न स्थानों पर होती थीं, अभ्यास के मार्ग के केवल एक पहलू के बारे में ही बोला जाता था। इस प्रकार का अभ्यास वह था, जिसे अनुग्रह के युग के दौरान अभ्यास में लाया जाना था, और जिसका परमेश्वर के ज्ञान से शायद ही कोई संबंध था, क्योंकि अनुग्रह के युग का दर्शन केवल यीशु के सलीब पर चढ़ने का दर्शन था, और उससे बड़े कोई दर्शन नहीं थे। मनुष्य से सलीब पर चढ़ने के माध्यम से मानवजाति के छुटकारे के उसके कार्य से अधिक कुछ जानना अपेक्षित नहीं था, और इसलिए अनुग्रह के युग के दौरान मनुष्य के जानने के लिए कोई अन्य दर्शन नहीं थे। इस तरह, मनुष्य के पास परमेश्वर का सिर्फ थोड़ा-सा ही ज्ञान था, और यीशु के प्रेम और करुणा के ज्ञान के अलावा उसके लिए अभ्यास में लाने हेतु केवल कुछ साधारण और दयनीय चीजें ही थीं, ऐसी चीज़ें जो आज से एकदम अलग थीं। अतीत में, मनुष्य की सभा भले ही किसी भी आकार की रही हो, मनुष्य परमेश्वर के कार्य के व्यावहारिक ज्ञान के बारे में बात करने में असमर्थ था, और कोई भी स्पष्ट रूप से यह कहने में समर्थ तो बिलकुल भी नहीं था कि मनुष्य के लिए प्रवेश करने हेतु अभ्यास का सबसे उचित मार्ग कौन-सा

है। मनुष्य ने सहनशीलता और धैर्य की नींव में मात्र कुछ सरल विवरण जोड़े; उसके अभ्यास के सार में कोई भी परिवर्तन नहीं आया, क्योंकि उसी युग के भीतर परमेश्वर ने कोई नया कार्य नहीं किया, और मनुष्य से उसने केवल सहनशीलता और धैर्य की, या सलीब वहन करने की ही अपेक्षाएँ कीं। ऐसे अभ्यासों के अलावा, यीशु के सलीब पर चढ़ने की तुलना में कोई ऊँचे दर्शन नहीं थे। अतीत में अन्य दर्शनों का कोई उल्लेख नहीं था, क्योंकि परमेश्वर ने बहुत अधिक कार्य नहीं किया था और उसने मनुष्य से केवल सीमित माँगें ही की थीं। इस तरह से, मनुष्य ने चाहे कुछ भी किया हो, वह इन सीमाओं का अतिक्रमण करने में अक्षम था, ऐसी सीमाएँ जो मनुष्य द्वारा अभ्यास में लाने हेतु मात्र कुछ सरल और सतही चीज़ें थीं। आज मैं अन्य दर्शनों की बात करता हूँ, क्योंकि आज अधिक कार्य किया गया है, कार्य जो व्यवस्था के युग और अनुग्रह के युग से कई गुना अधिक है। मनुष्य से अपेक्षाएँ भी अतीत के युगों की तुलना में कई गुना ऊँची हैं। यदि मनुष्य ऐसे कार्य को पूर्ण रूप से जानने में अक्षम है, तो इसका कोई बड़ा महत्व नहीं होगा; ऐसा कहा जा सकता है कि यदि मनुष्य इसमें अपने पूरे जीवनकाल की कोशिशें नहीं लगाता, तो उसे ऐसे कार्य को पूरी तरह से समझने में कठिनाई होगी। विजय के कार्य में केवल अभ्यास के मार्ग के बारे में बात करना मनुष्य पर विजय को असंभव बना देगा। मनुष्य से कोई अपेक्षा किए बिना केवल दर्शनों की बात करना भी मनुष्य पर विजय को असंभव कर देगा। यदि अभ्यास के मार्ग के अलावा और कुछ नहीं बोला जाता, तो मनुष्य के मर्म पर प्रहार करना या मनुष्य की धारणाओं को दूर करना असंभव होता, और इसलिए भी मनुष्य पर पूर्ण रूप से विजय पाना असंभव होता। दर्शन मनुष्य पर विजय के प्रमुख साधन हैं, किंतु यदि दर्शनों के अलावा अभ्यास का कोई मार्ग नहीं होता, तो मनुष्य के पास अनुसरण करने का कोई मार्ग नहीं होता, और प्रवेश का कोई साधन तो बिलकुल नहीं होता। आरंभ से लेकर अंत तक परमेश्वर के कार्य का सिद्धांत यह रहा है : दर्शनों में वह बात है, जिसे अभ्यास में लाया जा सकता है, इसलिए अभ्यास के अतिरिक्त दर्शन भी हैं। मनुष्य के जीवन और उसके स्वभाव दोनों में होने वाले परिवर्तनों की मात्रा दर्शनों में होने वाले परिवर्तनों के साथ होती है। यदि मनुष्य केवल अपने प्रयासों पर ही निर्भर रहता, तो उसके लिए बड़ी मात्रा में परिवर्तन हासिल करना असंभव होता। दर्शन स्वयं परमेश्वर के कार्य और परमेश्वर के प्रबंधन के बारे में बोलते हैं। अभ्यास मनुष्य के अभ्यास के मार्ग को, और मनुष्य के अस्तित्व के मार्ग को संदर्भित करता है; परमेश्वर के संपूर्ण प्रबंधन में दर्शनों और अभ्यास के बीच का संबंध परमेश्वर और मनुष्य के बीच का संबंध है। यदि दर्शनों को हटा दिया जाता, या यदि अभ्यास के बारे में बात किए बिना ही उन्हें

बोला जाता, या यदि केवल दर्शन ही होते और मनुष्य के अभ्यास का उन्मूलन कर दिया जाता, तो ऐसी चीज़ों को परमेश्वर का प्रबंधन नहीं माना जा सकता था, और ऐसा तो बिलकुल भी नहीं कहा जा सकता था कि परमेश्वर का कार्य मानवजाति के लिए है; इस तरह से, न केवल मनुष्य के कर्तव्य को हटा दिया जाता, बल्कि यह परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य का खंडन भी होता। यदि, आरंभ से लेकर अंत तक, परमेश्वर के कार्य को सम्मिलित किए बिना, मनुष्य से मात्र अभ्यास करने की अपेक्षा की जाती, और इसके अतिरिक्त, यदि मनुष्य से परमेश्वर के कार्य को जानने की अपेक्षा न की जाती, तो ऐसे कार्य को परमेश्वर का प्रबंधन बिलकुल भी नहीं कहा जा सकता था। यदि मनुष्य परमेश्वर को न जानता, और परमेश्वर की इच्छा से अनजान होता, और आँख मूँदकर अस्पष्ट और अमूर्त तरीके से अपने अभ्यास को कार्यान्वित करता, तो वह कभी भी पूरी तरह से योग्य प्राणी नहीं बनता। और इसलिए ये दोनों चीज़ें अनिवार्य हैं। यदि केवल परमेश्वर का कार्य ही होता, अर्थात् यदि केवल दर्शन ही होते और मनुष्य द्वारा कोई सहयोग या अभ्यास न होता, तो ऐसी चीज़ों को परमेश्वर का प्रबंधन नहीं कहा जा सकता था। यदि केवल मनुष्य का अभ्यास और प्रवेश ही होता, तो भले ही वह मार्ग कितना भी ऊँचा होता जिसमें मनुष्य ने प्रवेश किया होता, वह भी अस्वीकार्य होता। मनुष्य के प्रवेश को कार्य और दर्शनों के साथ कदम मिलाते हुए धीरे-धीरे परिवर्तित होना चाहिए; वह सनक के आधार पर नहीं बदल सकता। मनुष्य के अभ्यास के सिद्धांत स्वतंत्र और अनियंत्रित नहीं हैं, बल्कि निश्चित सीमाओं के अंतर्गत निर्धारित हैं। वे सिद्धांत कार्य के दर्शनों के साथ कदम मिलाते हुए परिवर्तित होते हैं। इसलिए परमेश्वर का प्रबंधन अंततः परमेश्वर के कार्य और मनुष्य के अभ्यास में घटित होता है।

प्रबंधन-कार्य केवल मानवजाति के कारण ही घटित हुआ, जिसका अर्थ है कि वह केवल मानवजाति के अस्तित्व के कारण ही उत्पन्न हुआ। मानवजाति से पहले, या शुरुआत में, जब स्वर्ग और पृथ्वी तथा समस्त वस्तुओं का सृजन किया गया था, कोई प्रबंधन नहीं था। यदि, परमेश्वर के संपूर्ण कार्य में, मनुष्य के लिए लाभकारी कोई अभ्यास न होता, अर्थात् यदि परमेश्वर भ्रष्ट मानवजाति से उचित अपेक्षाएँ न करता (यदि परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य में मनुष्य के अभ्यास हेतु कोई उचित मार्ग न होता), तो इस कार्य को परमेश्वर का प्रबंधन नहीं कहा जा सकता था। यदि परमेश्वर के कार्य की संपूर्णता में केवल भ्रष्ट मानवजाति को यह बताना शामिल होता कि वह किस प्रकार अपने अभ्यास को करे, और परमेश्वर अपने किसी भी उद्यम को कार्यान्वित न करता, और अपनी सर्वशक्तिमत्ता या बुद्धि का लेशमात्र भी प्रदर्शन न करता, तो

मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाएँ चाहे कितनी भी ऊँची क्यों न होतीं, चाहे परमेश्वर कितने भी लंबे समय तक मनुष्यों के बीच क्यों न रहता, मनुष्य परमेश्वर के स्वभाव के बारे में कुछ भी नहीं जानता; यदि ऐसा होता, तो इस प्रकार का कार्य परमेश्वर का प्रबंधन कहलाने के योग्य बिलकुल भी नहीं होता। सरल शब्दों में कहें तो, परमेश्वर के प्रबंधन का कार्य, और परमेश्वर के मार्गदर्शन के अंतर्गत उन लोगों द्वारा किया गया संपूर्ण कार्य, जिन्हें परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिया गया है, ही परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य है। ऐसे कार्य को संक्षेप में प्रबंधन कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, मनुष्यों के बीच परमेश्वर का कार्य, और साथ ही परमेश्वर का अनुसरण करने वाले सभी लोगों द्वारा उसका सहयोग सम्मिलित रूप से प्रबंधन कहा जाता है। यहाँ, परमेश्वर का कार्य दर्शन कहलाता है, और मनुष्य का सहयोग अभ्यास कहलाता है। परमेश्वर का कार्य जितना अधिक ऊँचा होता है (अर्थात् दर्शन जितने अधिक ऊँचे होते हैं), परमेश्वर का स्वभाव मनुष्य के लिए उतना ही अधिक स्पष्ट किया जाता है, उतना ही अधिक वह मनुष्य की धारणाओं के विपरीत होता है, और उतना ही ऊँचा मनुष्य का अभ्यास और सहयोग हो जाता है। मनुष्य से अपेक्षाएँ जितनी अधिक ऊँची होती हैं, उतना ही अधिक परमेश्वर का कार्य मनुष्य की धारणाओं के विपरीत होता है, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य के परीक्षण और वे मानक भी, जिन्हें पूरे करने की उससे अपेक्षा की जाती है, अधिक ऊँचे हो जाते हैं। इस कार्य के समापन पर समस्त दर्शनों को पूरा कर लिया गया होगा, और वह, जिसे अभ्यास में लाने की मनुष्य से अपेक्षा की जाती है, परिपूर्णता की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका होगा। यह वह समय भी होगा, जब प्रत्येक प्राणी को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा, क्योंकि जिस बात को जानने की मनुष्य से अपेक्षा की जाती है, उसे मनुष्य को दिखाया जा चुका होगा। इसलिए, जब दर्शन सफलता के अपने चरम बिंदु पर पहुँच जाएँगे, तो कार्य तदनुसार अपने अंत तक पहुँच जाएगा, और मनुष्य का अभ्यास भी अपने चरम पर पहुँच जाएगा। मनुष्य का अभ्यास परमेश्वर के कार्य पर आधारित है, और परमेश्वर का प्रबंधन केवल मनुष्य के अभ्यास और सहयोग के कारण ही पूरी तरह से व्यक्त होता है। मनुष्य परमेश्वर के कार्य की प्रदर्शन-वस्तु और परमेश्वर के संपूर्ण प्रबंधन-कार्य का लक्ष्य है, और साथ ही परमेश्वर के संपूर्ण प्रबंधन का उत्पाद भी है। यदि परमेश्वर ने मनुष्य के सहयोग के बिना अकेले ही कार्य किया होता, तो ऐसा कुछ भी न होता, जो उसके संपूर्ण कार्य को स्फटिक की तरह ठोस बनाने का कार्य करता, और तब परमेश्वर के प्रबंधन का जरा-सा भी महत्व न होता। अपने कार्य के अतिरिक्त, केवल अपने कार्य को व्यक्त करने, और अपनी सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धि को प्रमाणित करने के लिए उपयुक्त लक्ष्य

चुनकर ही परमेश्वर अपने प्रबंधन का उद्देश्य हासिल कर सकता है, और शैतान को पूरी तरह से हराने के लिए इस संपूर्ण कार्य का उपयोग करने का उद्देश्य प्राप्त कर सकता है। इसलिए मनुष्य परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य का एक अपरिहार्य अंग है, और मनुष्य ही वह एकमात्र प्राणी है जो परमेश्वर के प्रबंधन को सफल करवा सकता है और उसके चरम उद्देश्य को प्राप्त करवा सकता है; मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कोई जीवन-रूप ऐसी भूमिका नहीं निभा सकता। यदि मनुष्य को परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य का सच्चा स्फटिकवत् ठोस रूप बनना है, तो भ्रष्ट मानवजाति की अवज्ञा को पूरी तरह से दूर करना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य को विभिन्न समयों के लिए उपयुक्त अभ्यास दिया जाए और परमेश्वर मनुष्यों के बीच तदनुरूप कार्य करे। केवल इसी तरह से अंततः ऐसे लोगों का समूह प्राप्त किया जाएगा, जो प्रबंधन-कार्य का स्फटिकवत् ठोस रूप हैं। मनुष्यों के बीच परमेश्वर का कार्य सिर्फ अकेले परमेश्वर के कार्य के माध्यम से स्वयं परमेश्वर की गवाही नहीं दे सकता; हासिल किए जाने के लिए ऐसी गवाही को जीवित मनुष्यों की भी आवश्यकता होती है जो उसके कार्य के लिए उपयुक्त हों। परमेश्वर पहले इन लोगों पर कार्य करेगा, तब उनके माध्यम से उसका कार्य व्यक्त होगा, और इस प्रकार उसकी इच्छा की ऐसी गवाही प्राणियों के बीच दी जाएगी, और इसमें परमेश्वर अपने कार्य के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। परमेश्वर शैतान को पराजित करने के लिए अकेले कार्य नहीं करता, क्योंकि वह समस्त प्राणियों के बीच अपने लिए सीधे गवाही नहीं दे सकता। यदि वह ऐसा करता, तो मनुष्य को पूर्ण रूप से आश्वस्त करना असंभव होता, इसलिए मनुष्य को जीतने के लिए परमेश्वर को उस पर कार्य करना होगा, केवल तभी वह समस्त प्राणियों के बीच गवाही प्राप्त करने में समर्थ होगा। यदि मनुष्य के सहयोग के बिना सिर्फ परमेश्वर ही कार्य करता, या मनुष्य को सहयोग करने की आवश्यकता न होती, तो मनुष्य कभी परमेश्वर के स्वभाव को जानने में समर्थ न होता, और वह सदा के लिए परमेश्वर की इच्छा से अनजान रहता; परमेश्वर के कार्य को तब परमेश्वर के प्रबंधन का कार्य न कहा जा सकता। यदि परमेश्वर के कार्य को समझे बिना केवल मनुष्य स्वयं ही प्रयास, खोज और कठिन परिश्रम करता, तो मनुष्य चालबाजी कर रहा होता। पवित्र आत्मा के कार्य के बिना मनुष्य जो कुछ करता है, वह शैतान का होता है, वह विद्रोही और कुकर्मी होता है; भ्रष्ट मानवजाति द्वारा जो कुछ किया जाता है, उस सबमें शैतान प्रदर्शित होता है, और उसमें ऐसा कुछ भी नहीं होता जो परमेश्वर के साथ संगत हो, और जो कुछ मनुष्य करता है, वह शैतान की अभिव्यक्ति होता है। जो कुछ भी कहा गया है, उसमें से कुछ भी दर्शनों और अभ्यास से अलग नहीं है। दर्शनों की बुनियाद पर मनुष्य

अभ्यास, और आज्ञाकारिता का मार्ग पाता है, ताकि वह अपनी धारणाओं को एक ओर रख सके और वे चीज़ें प्राप्त कर सके, जो अतीत में उसके पास नहीं थीं। परमेश्वर अपेक्षा करता है कि मनुष्य उसके साथ सहयोग करे, कि मनुष्य उसकी आवश्यकताओं के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो जाए, और मनुष्य स्वयं परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य को देखने, परमेश्वर के सर्वशक्तिमान सामर्थ्य का अनुभव करने और परमेश्वर के स्वभाव को जानने की माँग करता है। संक्षेप में, ये ही परमेश्वर के प्रबंधन हैं। मनुष्य के साथ परमेश्वर का मिलन ही प्रबंधन है, और यह महानतम प्रबंधन है।

जिसमें दर्शन शामिल होते हैं, वह मुख्यतः स्वयं परमेश्वर के कार्य को संदर्भित करता है, और जिसमें अभ्यास शामिल होता है, वह मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए और उसका परमेश्वर से कोई संबंध नहीं है। परमेश्वर का कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा पूरा किया जाता है, और मनुष्य का अभ्यास स्वयं मनुष्य द्वारा प्राप्त किया जाता है। जो स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाना चाहिए, उसे मनुष्य द्वारा किए जाने की आवश्यकता नहीं है, और जिसका मनुष्य द्वारा अभ्यास किया जाना चाहिए, वह परमेश्वर से संबंधित नहीं है। परमेश्वर का कार्य उसकी अपनी सेवकाई है और उसका मनुष्य से कोई संबंध नहीं है। यह कार्य मनुष्य द्वारा किए जाने की आवश्यकता नहीं है, और, इतना ही नहीं, मनुष्य परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य को करने में असमर्थ होगा। जिसका अभ्यास मनुष्य द्वारा किए जाने की आवश्यकता है, उसे मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए, चाहे वह उसके जीवन का बलिदान हो, या गवाही देने के लिए उसे शैतान के सुपुर्द करना हो—ये सब मनुष्य द्वारा पूरे किए जाने चाहिए। स्वयं परमेश्वर वह समस्त कार्य पूरा करता है, जो उसे पूरा करना चाहिए, और जो मनुष्य को करना चाहिए, वह मनुष्य को दिखाया जाता है, और शेष कार्य मनुष्य के करने के लिए छोड़ दिया जाता है। परमेश्वर अतिरिक्त कार्य नहीं करता। वह केवल वही कार्य करता है जो उसकी सेवकाई के अंतर्गत है, और वह मनुष्य को केवल मार्ग दिखाता है, और केवल मार्ग को खोलने का कार्य करता है, और मार्ग प्रशस्त करने का कार्य नहीं करता; इसे सभी को समझ लेना चाहिए। सत्य को अभ्यास में लाने का अर्थ है परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाना, और यह सब मनुष्य का कर्तव्य है, और यह वह है जिसे मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए, और इसका परमेश्वर के साथ कोई लेना-देना नहीं है। यदि मनुष्य माँग करता है कि परमेश्वर भी सत्य में उसी तरह से यंत्रणा और शुद्धिकरण सहन करे जैसे मनुष्य सहन करता है, तो मनुष्य अवज्ञाकारी हो रहा है। परमेश्वर का कार्य अपनी सेवकाई करना है, और मनुष्य का कर्तव्य बिना किसी प्रतिरोध के परमेश्वर के समस्त मार्गदर्शन का पालन करना है। परमेश्वर चाहे किसी

भी ढंग से कार्य करे या रहे, मनुष्य को वह करना उचित है, जो उसे प्राप्त करना चाहिए। केवल स्वयं परमेश्वर ही मनुष्य से अपेक्षाएँ कर सकता है, अर्थात् केवल स्वयं परमेश्वर ही मनुष्य से अपेक्षाएँ करने के लिए उपयुक्त है। मनुष्य के पास कोई विकल्प नहीं होना चाहिए और उसे पूरी तरह से समर्पण और अभ्यास करने के सिवा कुछ नहीं करना चाहिए; यही वह समझ है, जो मनुष्य में होनी चाहिए। जब वह कार्य पूरा हो जाता है जो स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाना चाहिए, तो मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह कदम-दर-कदम उसका अनुभव करे। यदि, अंत में, जब परमेश्वर का संपूर्ण प्रबंधन पूरा हो जाता है, तब भी मनुष्य वह नहीं करता, जिसकी परमेश्वर द्वारा अपेक्षा की गई है, तो मनुष्य को दंडित किया जाना चाहिए। यदि मनुष्य परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी नहीं करता, तो यह उसकी अवज्ञा के कारण है; इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने अपना कार्य पर्याप्त पूर्णता से नहीं किया है। वे सभी, जो परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में नहीं ला सकते, वे जो परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी नहीं कर सकते, और वे जो अपनी वफादारी नहीं दे सकते और अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर सकते, उन सभी को दंड दिया जाएगा। आज तुम लोगों से जो कुछ हासिल करने की अपेक्षा की जाती है, वे अतिरिक्त माँगें नहीं, बल्कि मनुष्य का कर्तव्य है, जिसे सभी लोगों द्वारा किया जाना चाहिए। यदि तुम लोग अपना कर्तव्य तक निभाने में या उसे भली-भाँति करने में असमर्थ हो, तो क्या तुम लोग अपने ऊपर मुसीबतें नहीं ला रहे हो? क्या तुम लोग मृत्यु को आमंत्रित नहीं कर रहे हो? कैसे तुम लोग अभी भी भविष्य और संभावनाओं की आशा कर सकते हो? परमेश्वर का कार्य मानवजाति के लिए किया जाता है, और मनुष्य का सहयोग परमेश्वर के प्रबंधन के लिए दिया जाता है। जब परमेश्वर वह सब कर लेता है जो उसे करना चाहिए, तो मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने अभ्यास में उदार हो और परमेश्वर के साथ सहयोग करे। परमेश्वर के कार्य में मनुष्य को कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए, उसे अपनी वफादारी प्रदान करनी चाहिए, और अनगिनत धारणाओं में सलंग्न नहीं होना चाहिए, या निष्क्रिय बैठकर मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। परमेश्वर मनुष्य के लिए स्वयं को बलिदान कर सकता है, तो क्यों मनुष्य परमेश्वर को अपनी वफादारी प्रदान नहीं कर सकता? परमेश्वर मनुष्य के प्रति एक हृदय और मन वाला है, तो क्यों मनुष्य थोड़ा-सा सहयोग प्रदान नहीं कर सकता? परमेश्वर मानवजाति के लिए कार्य करता है, तो क्यों मनुष्य परमेश्वर के प्रबंधन के लिए अपना कुछ कर्तव्य पूरा नहीं कर सकता? परमेश्वर का कार्य इतनी दूर तक आ गया है, पर तुम लोग अभी भी देखते ही हो किंतु करते नहीं, सुनते ही हो किंतु हिलते नहीं। क्या ऐसे लोग तबाही के लक्ष्य नहीं हैं? परमेश्वर पहले ही

अपना सर्वस्व मनुष्य को अर्पित कर चुका है, तो क्यों आज मनुष्य ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाने में असमर्थ है? परमेश्वर के लिए उसका कार्य उसकी पहली प्राथमिकता है, और उसके प्रबंधन का कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मनुष्य के लिए परमेश्वर के वचनों को अभ्यास में लाना और परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी करना उसकी पहली प्राथमिकता है। इसे तुम सभी लोगों को समझ लेना चाहिए। तुम लोगों से कहे गए वचन तुम लोगों के सार के बिलकुल मूल तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर का कार्य अभूतपूर्व क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। अनेक लोग अभी भी इस मार्ग की सच्चाई या झूठ को नहीं समझते; वे अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हैं और देख रहे हैं, और अपना कर्तव्य नहीं निभा रहे। इसके बजाय, वे परमेश्वर द्वारा कहे और किए गए प्रत्येक वचन और कार्य को जाँचते हैं, वे इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि वह क्या खाता है और पहनता है, और उनकी धारणाएँ और भी अधिक दु:खद हो जाती हैं। क्या ऐसे लोग बेवजह बात का बतंगड़ नहीं बना रहे हैं? ऐसे लोग उस तरह के कैसे हो सकते हैं, जो परमेश्वर को खोजते हैं? और वे लोग उस तरह के कैसे हो सकते हैं, जो परमेश्वर के प्रति समर्पण करने का इरादा रखते हैं? वे अपनी वफादारी और अपने कर्तव्य को अपने मस्तिष्क में पीछे रख देते हैं, और इसके बजाय परमेश्वर के पते-ठिकाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे एक उपद्रव हैं! यदि मनुष्य ने वह सब-कुछ समझ लिया है जो उसे समझना चाहिए, और वह सब अभ्यास में ला चुका है जो उसे अभ्यास में लाना चाहिए, तो परमेश्वर निश्चित रूप से उसे अपने आशीष प्रदान करेगा, क्योंकि वह मनुष्य से जो अपेक्षा करता है, वह मनुष्य का कर्तव्य है, जिसे मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए। यदि मनुष्य यह समझने में असमर्थ है कि उसे क्या समझना चाहिए, और यदि वह उसे अभ्यास में लाने में असमर्थ है जिसे उसे अभ्यास में लाना चाहिए, तो उसे दंड दिया जाएगा। जो लोग परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं करते, वे उसके प्रति शत्रुता रखते हैं, जो लोग नए कार्य को स्वीकार नहीं करते, वे उसके विरुद्ध हैं, भले ही वे ऐसा कुछ न करते हों, जो स्पष्ट रूप से उसके विरुद्ध हो। जो लोग परमेश्वर द्वारा अपेक्षित सत्य को अभ्यास में नहीं लाते, वे सब ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के वचनों का जानबूझकर विरोध करते हैं और उसके प्रति अवज्ञाकारी हैं, भले ही ऐसे लोग पवित्र आत्मा के कार्य पर विशेष ध्यान देते हों। जो लोग परमेश्वर के वचनों का पालन और परमेश्वर के प्रति समर्पण नहीं करते, वे विद्रोही हैं, और वे परमेश्वर के विरोध में हैं। जो लोग अपना कर्तव्य नहीं निभाते हैं, वे वो लोग हैं जो परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं करते, और जो लोग परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं करते, वे वो लोग हैं जो पवित्र आत्मा के कार्य को स्वीकार नहीं करते।

जब परमेश्वर का कार्य एक निश्चित बिंदु तक पहुँच जाता है, और उसका प्रबंधन एक निश्चित बिंदु पर पहुँच जाता है, तो जो लोग उसके हृदय के अनुरूप हैं, वे सब उसकी अपेक्षाएँ पूरी करने में सक्षम होते हैं। परमेश्वर अपने मानकों और मनुष्य की क्षमताओं के अनुसार मनुष्य से अपेक्षाएँ करता है। अपने प्रबंधन के बारे में बात करते हुए वह मनुष्य के लिए मार्ग भी बताता है, और मनुष्य को जीवित रहने के लिए एक मार्ग प्रदान करता है। परमेश्वर का प्रबंधन और मनुष्य का अभ्यास दोनों कार्य के एक ही चरण के होते हैं और उन्हें एक-साथ ही कार्यान्वित किया जाता है। परमेश्वर के प्रबंधन की बात मनुष्य के स्वभाव के परिवर्तनों से संबंध रखती है, और उस बारे में बात करती है जो मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए, और मनुष्य के स्वभाव के परिवर्तन परमेश्वर के कार्य से संबंध रखते हैं; ऐसा कोई समय नहीं होता जब इन दोनों को अलग किया जा सके। मनुष्य का अभ्यास कदम-दर-कदम बदल रहा है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाएँ भी बदल रही हैं, और परमेश्वर का कार्य हमेशा बदल रहा है और प्रगति कर रहा है। यदि मनुष्य का अभ्यास सिद्धांतों के जाल में उलझा रहता है, तो यह साबित करता है कि वह परमेश्वर के कार्य और मार्गदर्शन से वंचित है; यदि मनुष्य का अभ्यास कभी नहीं बदलता या गहराई तक नहीं जाता, तो यह साबित करता है कि मनुष्य का अभ्यास मनुष्य की इच्छानुसार किया जाता है, और वह सत्य का अभ्यास नहीं है; यदि मनुष्य के पास चलने के लिए कोई मार्ग नहीं है, तो वह पहले ही शैतान के हाथों में पड़ चुका है और शैतान द्वारा नियंत्रित होता है, जिसका अर्थ है कि वह दुष्ट आत्माओं द्वारा नियंत्रित है। यदि मनुष्य का अभ्यास अधिक गहराई तक नहीं जाता, तो परमेश्वर का कार्य विकास नहीं करेगा, और यदि परमेश्वर के कार्य में कोई बदलाव नहीं होता, तो मनुष्य का प्रवेश रुक जाएगा; यह अपरिहार्य है। परमेश्वर के संपूर्ण कार्य के दौरान यदि मनुष्य को सदैव यहोवा की व्यवस्था का पालन करना होता, तो परमेश्वर का कार्य प्रगति नहीं कर सकता था, और संपूर्ण युग का अंत करना तो बिलकुल भी संभव न होता। यदि मनुष्य हमेशा सलीब को पकड़े रहता और धैर्य और विनम्रता का अभ्यास करता रहता, तो परमेश्वर के कार्य का प्रगति करते रहना असंभव होता। छह हजार वर्षों का प्रबंधन ऐसे ही उन लोगों के बीच समाप्त नहीं किया जा सकता, जो केवल व्यवस्था का पालन करते हैं, या सिर्फ सलीब थामे रहते हैं और धैर्य और विनम्रता का अभ्यास करते हैं। इसके बजाय, परमेश्वर के प्रबंधन का संपूर्ण कार्य अंत के दिनों के उन लोगों के बीच समाप्त किया जाता है, जो परमेश्वर को जानते हैं, जिन्हें शैतान के चंगुल से छुड़ाया गया है, और जिन्होंने अपने आप को शैतान के प्रभाव से पूरी तरह से मुक्त कर लिया है। यह परमेश्वर के कार्य की अनिवार्य

दिशा है। ऐसा क्यों कहा जाता है कि धार्मिक कलीसियाओं के लोगों का अभ्यास पुराना पड़ गया है? वह इसलिए, क्योंकि जिसका वे अभ्यास करते हैं, वह आज के कार्य से असंबद्ध है। अनुग्रह के युग में जिसका वे अभ्यास करते थे वह सही था, किंतु चूँकि युग गुज़र चुका है और परमेश्वर का कार्य बदल चुका है, इसलिए उनका अभ्यास धीरे-धीरे प्रचलन से बाहर हो गया है। उसे नए कार्य और नए प्रकाश ने पीछे छोड़ दिया है। अपनी मूल बुनियाद के आधार पर पवित्र आत्मा का कार्य कई कदम गहरी प्रगति कर चुका है। किंतु वे लोग अभी भी परमेश्वर के कार्य के मूल चरण पर अटके हुए हैं और अभी भी पुराने अभ्यासों और पुराने प्रकाश से चिपके हुए हैं। तीन या पाँच वर्षों में ही परमेश्वर का कार्य बहुत बदल सकता है, तो क्या 2,000 वर्षों के दौरान और भी अधिक बड़े रूपांतरण नहीं हुए होंगे? यदि मनुष्य के पास कोई नया प्रकाश या अभ्यास नहीं है, तो इसका अर्थ है कि वह पवित्र आत्मा के कार्य के साथ बना नहीं रहा है। यह मनुष्य की असफलता है; परमेश्वर के नए कार्य के अस्तित्व को इसलिए नहीं नकारा जा सकता कि जिन लोगों के पास पहले पवित्र आत्मा का कार्य था, वे आज भी प्रचलन से बाहर हो चुके अभ्यासों का पालन करते हैं। पवित्र आत्मा का कार्य हमेशा आगे बढ़ रहा है, और जो लोग पवित्र आत्मा की धारा में हैं, उन्हें भी अधिक गहरे जाना और कदम-दर-कदम बदलना चाहिए। उन्हें एक ही चरण पर रुक नहीं जाना चाहिए। जो लोग पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं जानते, केवल वे ही परमेश्वर के मूल कार्य के बीच बने रहेंगे और पवित्र आत्मा के नए कार्य को स्वीकार नहीं करेंगे। जो लोग अवज्ञाकारी हैं, केवल वे ही पवित्र आत्मा के कार्य को प्राप्त करने में अक्षम होंगे। यदि मनुष्य का अभ्यास पवित्र आत्मा के नए कार्य के साथ गति बनाए नहीं रखता, तो मनुष्य का अभ्यास निश्चित रूप से आज के कार्य से कटा हुआ है, और वह निश्चित रूप से आज के कार्य के साथ असंगत है। ऐसे पुराने लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में एकदम अक्षम होते हैं, और वे ऐसे लोग तो बिलकुल भी नहीं बन सकते, जो अंततः परमेश्वर की गवाही देंगे। इतना ही नहीं, संपूर्ण प्रबंधन-कार्य ऐसे लोगों के समूह के बीच समाप्त नहीं किया जा सकता। क्योंकि जिन लोगों ने किसी समय यहोवा की व्यवस्था थामी थी, और जिन्होंने कभी सलीब का दुःख सहा था, यदि वे अंत के दिनों के कार्य के चरण को स्वीकार नहीं कर सकते, तो जो कुछ भी उन्होंने किया, वह सब व्यर्थ और निष्फल होगा। पवित्र आत्मा के कार्य की स्पष्टतम अभिव्यक्ति अभी वर्तमान को गले लगाने में है, अतीत से चिपके रहने में नहीं। जो लोग आज के कार्य के साथ बने नहीं रहे हैं, और जो आज के अभ्यास से अलग हो गए हैं, वे वो लोग हैं जो पवित्र आत्मा के कार्य का विरोध करते हैं और उसे स्वीकार नहीं करते। ऐसे लोग परमेश्वर के वर्तमान कार्य

की अवहेलना करते हैं। यद्यपि वे अतीत के प्रकाश को पकड़े रहते हैं, किंतु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि वे पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं जानते। मनुष्य के अभ्यास में परिवर्तनों के बारे में, अतीत और वर्तमान के बीच के अभ्यास की भिन्नताओं के बारे में, पूर्ववर्ती युग के दौरान किस प्रकार अभ्यास किया जाता था और आज किस प्रकार किया जाता है इस बारे में, यह सब बातचीत क्यों की गई है? मनुष्य के अभ्यास में ऐसे विभाजनों के बारे में हमेशा बात की जाती है, क्योंकि पवित्र आत्मा का कार्य लगातार आगे बढ़ रहा है, इसलिए मनुष्य के अभ्यास का निरंतर बदलना आवश्यक है। यदि मनुष्य एक ही चरण में अटका रहता है, तो यह प्रमाणित करता है कि वह परमेश्वर के नए कार्य और नए प्रकाश के साथ बने रहने में असमर्थ है; इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि परमेश्वर की प्रबंधन-योजना नहीं बदली है। जो पवित्र आत्मा की धारा के बाहर हैं, वे सदैव सोचते हैं कि वे सही हैं, किंतु वास्तव में उनके भीतर परमेश्वर का कार्य बहुत पहले ही रुक गया है, और पवित्र आत्मा का कार्य उनमें अनुपस्थित है। परमेश्वर का कार्य बहुत पहले ही लोगों के एक अन्य समूह को हस्तांतरित हो गया था, ऐसे लोगों के समूह को, जिन पर वह अपने नए कार्य को पूरा करने का इरादा रखता है। चूँकि धर्म में मौजूद लोग परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार करने में अक्षम हैं और केवल अतीत के पुराने कार्य को ही पकड़े रहते हैं, इसलिए परमेश्वर ने इन लोगों को छोड़ दिया है, और वह अपना कार्य उन लोगों पर करता है जो इस नए कार्य को स्वीकार करते हैं। ये वे लोग हैं, जो उसके नए कार्य में सहयोग करते हैं, और केवल इसी तरह से उसका प्रबंधन पूरा हो सकता है। परमेश्वर का प्रबंधन सदैव आगे बढ़ रहा है, और मनुष्य का अभ्यास हमेशा ऊँचा हो रहा है। परमेश्वर सदैव कार्य कर रहा है, और मनुष्य हमेशा जरूरतमंद है, इस तरह से दोनों अपने चरम बिंदु पर पहुँच गए हैं, और परमेश्वर और मनुष्य का पूर्ण मिलन हो गया है। यह परमेश्वर के कार्य की पूर्णता की अभिव्यक्ति है, और यह परमेश्वर के संपूर्ण प्रबंधन का अंतिम परिणाम है।

परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक चरण में मनुष्य से तदनुरूपी अपेक्षाएँ भी होती हैं। जो लोग पवित्र आत्मा की धारा के भीतर हैं, वे सभी पवित्र आत्मा की उपस्थिति और अनुशासन के अधीन हैं, और जो पवित्र आत्मा की मुख्य धारा में नहीं हैं, वे शैतान के नियंत्रण में और पवित्र आत्मा के किसी भी कार्य से रहित हैं। जो लोग पवित्र आत्मा की धारा में हैं, वे वो लोग हैं जो परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार करते हैं और उसमें सहयोग करते हैं। यदि इस मुख्य धारा में मौजूद लोग सहयोग करने में अक्षम रहते हैं और इस दौरान परमेश्वर द्वारा अपेक्षित सत्य का अभ्यास करने में असमर्थ रहते हैं, तो उन्हें अनुशासित किया जाएगा, और

सबसे खराब बात यह होगी कि उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा त्याग दिया जाएगा। जो पवित्र आत्मा के नए कार्य को स्वीकार करते हैं, वे पवित्र आत्मा की मुख्य धारा में जीएँगे और पवित्र आत्मा की देखभाल और सुरक्षा प्राप्त करेंगे। जो लोग सत्य को अभ्यास में लाने के इच्छुक हैं, उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा प्रबुद्ध किया जाता है, और जो लोग सत्य को अभ्यास में लाने के अनिच्छुक हैं, उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा अनुशासित किया जाता है, यहाँ तक कि उन्हें दंड भी दिया जा सकता है। चाहे वे किसी भी प्रकार के व्यक्ति हों, यदि वे पवित्र आत्मा की मुख्य धारा के भीतर हैं, तो परमेश्वर उन सभी लोगों की ज़िम्मेदारी लेगा, जो उसके नाम की खातिर उसके नए कार्य को स्वीकार करते हैं। जो लोग उसके नाम को महिमामंडित करते हैं और उसके वचनों को अभ्यास में लाने के इच्छुक हैं, वे उसके आशीष प्राप्त करेंगे; जो लोग उसकी अवज्ञा करते हैं और उसके वचनों को अभ्यास में नहीं लाते, वे उसका दंड प्राप्त करेंगे। जो लोग पवित्र आत्मा की मुख्य धारा में हैं, वे वो लोग हैं जो नए कार्य को स्वीकार करते हैं, और चूँकि उन्होंने नए कार्य को स्वीकार कर लिया है, इसलिए उन्हें परमेश्वर के साथ उचित सहयोग करना चाहिए, और उन विद्रोहियों के समान कार्य नहीं करना चाहिए, जो अपना कर्तव्य नहीं निभाते। यह मनुष्य से परमेश्वर की एकमात्र अपेक्षा है। यह उन लोगों के लिए नहीं है, जो नए कार्य को स्वीकार नहीं करते : वे पवित्र आत्मा की धारा से बाहर हैं, और पवित्र आत्मा का अनुशासन और फटकार उन पर लागू नहीं होते। पूरे दिन ये लोग देह में जीते हैं, अपने मस्तिष्क के भीतर जीते हैं, और वे जो कुछ भी करते हैं, वह सब उनके अपने मस्तिष्क के विश्लेषण और अनुसंधान से उत्पन्न हुए सिद्धांत के अनुसार होता है। यह वह नहीं है, जो पवित्र आत्मा के नए कार्य द्वारा अपेक्षित है, और यह परमेश्वर के साथ सहयोग तो बिलकुल भी नहीं है। जो लोग परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार नहीं करते, वे परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित रहते हैं, और, इससे भी बढ़कर, वे परमेश्वर के आशीषों और सुरक्षा से रहित होते हैं। उनके अधिकांश वचन और कार्य पवित्र आत्मा की पुरानी अपेक्षाओं को थामे रहते हैं; वे सिद्धांत हैं, सत्य नहीं। ऐसे सिद्धांत और विनियम यह साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि इन लोगों का एक-साथ इकट्ठा होना धर्म के अलावा कुछ नहीं है; वे चुने हुए लोग या परमेश्वर के कार्य के लक्ष्य नहीं हैं। उनमें से सभी लोगों की सभा को मात्र धर्म का महासम्मेलन कहा जा सकता है, उन्हें कलीसिया नहीं कहा जा सकता। यह एक अपरिवर्तनीय तथ्य है। उनके पास पवित्र आत्मा का नया कार्य नहीं है; जो कुछ वे करते हैं वह धर्म का द्योतक प्रतीत होता है, जैसा जीवन वे जीते हैं वह धर्म से भरा हुआ प्रतीत होता है; उनमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य नहीं होता, और वे पवित्र आत्मा का अनुशासन या प्रबुद्धता

प्राप्त करने के लायक तो बिलकुल भी नहीं हैं। ये समस्त लोग निर्जीव लाशें और कीड़े हैं, जो आध्यात्मिकता से रहित हैं। उन्हें मनुष्य की विद्रोहशीलता और विरोध का कोई ज्ञान नहीं है, मनुष्य के समस्त कुकर्मों का कोई ज्ञान नहीं है, और वे परमेश्वर के समस्त कार्य और परमेश्वर की वर्तमान इच्छा के बारे में तो बिलकुल भी नहीं जानते। वे सभी अज्ञानी, अधम लोग हैं, और वे कूड़ा-करकट हैं जो विश्वासी कहलाने के योग्य नहीं हैं! वे जो कुछ भी करते हैं, उसका परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य के साथ कोई संबंध नहीं है, और वह परमेश्वर के कार्य को बिगाड़ तो बिलकुल भी नहीं सकता। उनके वचन और कार्य अत्यंत घृणास्पद, अत्यंत दयनीय, और एकदम अनुल्लेखनीय हैं। जो लोग पवित्र आत्मा की धारा में नहीं हैं, उनके द्वारा किए गए किसी भी कार्य का पवित्र आत्मा के नए कार्य के साथ कोई लेना-देना नहीं है। इस वजह से, चाहे वे कुछ भी क्यों न करें, वे पवित्र आत्मा के अनुशासन से रहित होते हैं, और, इससे भी बढ़कर, वे पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता से रहित होते हैं। कारण, वे सभी ऐसे लोग हैं, जिन्हें सत्य से कोई प्रेम नहीं है, और जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत कर दिया गया है। उन्हें कुकर्मी कहा जाता हैं, क्योंकि वे देह के अनुसार चलते हैं, और परमेश्वर के नाम की तख्ती के नीचे जो उन्हें अच्छा लगता है, वही करते हैं। जब परमेश्वर कार्य करता है, तो वे जानबूझकर उसके प्रति शत्रुता रखते हैं और उसकी विपरीत दिशा में दौड़ते हैं। परमेश्वर के साथ सहयोग करने में मनुष्य की असफलता अपने आप में चरम रूप से विद्रोही है, इसलिए क्या वे लोग, जो जानबूझकर परमेश्वर के प्रतिकूल चलते हैं, विशेष रूप से अपना उचित प्रतिफल प्राप्त नहीं करेंगे? इन लोगों के कुकर्मों का उल्लेख होने पर कुछ लोग उन्हें कोसने के लिए आतुर होते हैं, जबकि परमेश्वर उन्हें अनदेखा करता है। मनुष्य के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि उनके कार्य परमेश्वर के नाम से संबंध रखते हैं, किंतु वास्तव में, परमेश्वर के अनुसार, उनका उसके नाम या उसकी गवाही से कोई संबंध नहीं है। ये लोग चाहे कुछ भी क्यों न करें, वह परमेश्वर से संबंध नहीं रखता : वह उसके नाम और उसके वर्तमान कार्य दोनों से संबंधित नहीं है। ये लोग स्वयं को ही अपमानित करते हैं और शैतान को अभिव्यक्त करते हैं; ये कुकर्मी हैं जो कोप के दिन के लिए संचय कर रहे हैं। आज, उनके कैसे भी कार्य हों, यदि वे परमेश्वर के प्रबंधन को बाधित नहीं करते और उनका परमेश्वर के नए कार्य के साथ कोई लेना-देना नहीं है, तो ऐसे लोगों को अनुरूपी प्रतिफल का भागी नहीं बनाया जाएगा, क्योंकि कोप का दिन अभी आया नहीं है। लोगों का मानना है ऐसा बहुत-कुछ है, जिससे परमेश्वर को पहले ही निपट लेना चाहिए था, और उन्हें लगता है कि उन कुकर्मियों को यथाशीघ्र प्रतिफल का भागी बनाया जाना

चाहिए। किंतु चूँकि परमेश्वर का प्रबंधन-कार्य अभी तक समाप्त नहीं हुआ है, और कोप का दिन अभी आना बाकी है, इसलिए अधार्मिक लोग अभी भी अपने अधार्मिक कर्म जारी रखे हुए हैं। कुछ लोग कहते हैं, "जो धर्म में हैं, वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति या कार्य से रहित हैं, और वे परमेश्वर के नाम को लज्जित करते हैं; तो परमेश्वर उनके उच्छृंखल व्यवहार को सहन करने के बजाय उन्हें नष्ट क्यों नहीं कर देता?" ये लोग, जो शैतान की अभिव्यक्ति हैं और देह को व्यक्त करते हैं, अज्ञानी, अधम लोग हैं; वे बेतुके लोग हैं। वे यह समझने से पहले कि परमेश्वर मनुष्यों के बीच अपना कार्य किस प्रकार करता है, परमेश्वर के कोप का आगमन नहीं देखेंगे, और जब उन पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर ली जाएगी, तब वे सभी कुकर्मी अपना प्रतिफल प्राप्त करेंगे, और उनमें से एक भी कोप के दिन से बच निकलने में समर्थ नहीं होगा। अभी मनुष्य को दंड देने का समय नहीं है, बल्कि विजय का कार्य करने का समय है, जब तक कि ऐसे लोग न हों जो परमेश्वर के प्रबंधन को बाधित करते हों, उस स्थिति में उनके कार्यों की क्रूरता के आधार पर उन्हें दंड का भागी बनाया जाएगा। परमेश्वर के मानवजाति के प्रबंधन के दौरान वे सभी, जो पवित्र आत्मा की धारा के अंतर्गत हैं, परमेश्वर से संबंध रखते हैं। जो पवित्र आत्मा द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत किए जाते हैं, वे शैतान के प्रभाव में जीते हैं, और जिसे वे अभ्यास में लाते हैं, उसका परमेश्वर से कोई संबंध नहीं होता। जो लोग परमेश्वर के नए कार्य को स्वीकार करते हैं और परमेश्वर के साथ सहयोग करते हैं, केवल वे ही परमेश्वर से संबंध रखते हैं, क्योंकि परमेश्वर का कार्य केवल उन्हीं के लिए है जो उसे स्वीकार करते हैं, वह सभी लोगों के लिए नहीं है, चाहे वे उसे स्वीकार करते हों या नहीं। परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य का सदैव एक लक्ष्य होता है, उसे सनक में नहीं किया जाता। जो लोग शैतान से संबद्ध हैं, वे परमेश्वर की गवाही देने के योग्य नहीं हैं, और वे परमेश्वर के साथ सहयोग करने के योग्य तो बिलकुल भी नहीं हैं।

पवित्र आत्मा के कार्य के प्रत्येक चरण के लिए मनुष्य की गवाही की भी आवश्यकता होती है। कार्य का प्रत्येक चरण परमेश्वर और शैतान के बीच एक युद्ध है, और इस युद्ध का लक्ष्य शैतान है, जबकि वह मनुष्य है, जिसे इस कार्य से पूर्ण बनाया जाएगा। परमेश्वर का कार्य सफल हो सकता है या नहीं, यह परमेश्वर के प्रति मनुष्य की गवाही के तरीके पर निर्भर करता है। यह गवाही परमेश्वर उन लोगों से चाहता है, जो उसका अनुसरण करते हैं; यह गवाही शैतान के सामने दी जाती है, और यह परमेश्वर के कार्य के प्रभावों का प्रमाण भी है। परमेश्वर का संपूर्ण प्रबंधन तीन चरणों में विभाजित है, और प्रत्येक चरण में मनुष्य से यथोचित अपेक्षाएँ की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, जैसे-जैसे युग बीतते और आगे बढ़ते जाते हैं, परमेश्वर

की समस्त मानवजाति से अपेक्षाएँ और अधिक ऊँची होती जाती हैं। इस प्रकार, कदम-दर-कदम परमेश्वर का प्रबंधन अपने चरम पर पहुँचता जाता है, जब तक कि मनुष्य "वचन का देह में प्रकट होना" नहीं देख लेता, और इस तरह मनुष्य से की गई अपेक्षाएँ अधिक ऊँची हो जाती हैं, जैसे कि मनुष्य से गवाही देने की अपेक्षाएँ अधिक ऊँची हो जाती हैं। मनुष्य परमेश्वर के साथ वास्तव में सहयोग करने में जितना अधिक सक्षम होता है, उतना ही अधिक वह परमेश्वर को महिमामंडित करता है। मनुष्य का सहयोग वह गवाही है, जिसे देने की उससे अपेक्षा की जाती है, और जो गवाही वह देता है, वह मनुष्य का अभ्यास है। इसलिए, परमेश्वर के कार्य का उचित प्रभाव हो सकता है या नहीं, और सच्ची गवाही हो सकती है या नहीं, ये अटूट रूप से मनुष्य के सहयोग और गवाही से जुड़े हुए हैं। जब कार्य समाप्त हो जाएगा, अर्थात् जब परमेश्वर का संपूर्ण प्रबंधन अपनी समाप्ति पर पहुँच जाएगा, तो मनुष्य से अधिक ऊँची गवाही देने की अपेक्षा की जाएगी, और जब परमेश्वर का कार्य अपनी समाप्ति पर पहुँच जाएगा, तब मनुष्य का अभ्यास और प्रवेश अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाएँगे। अतीत में मनुष्य से व्यवस्था और आज्ञाओं का पालन करना अपेक्षित था, और उससे धैर्यवान और विनम्र बनने की अपेक्षा की जाती थी। आज मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह परमेश्वर के समस्त प्रबंधन का पालन करे और परमेश्वर के प्रति सर्वोच्च प्रेम रखे, और अंततः उससे अपेक्षा की जाती है कि वह क्लेश के बीच भी परमेश्वर से प्रेम करे। ये तीन चरण वे अपेक्षाएँ हैं, जो परमेश्वर अपने संपूर्ण प्रबंधन के दौरान कदम-दर-कदम मनुष्य से करता है। परमेश्वर के कार्य का प्रत्येक चरण पिछले चरण की तुलना में अधिक गहरे जाता है, और प्रत्येक चरण में मनुष्य से की जाने वाली अपेक्षाएँ पिछले चरण की तुलना में और अधिक गंभीर होती हैं, और इस तरह, परमेश्वर का संपूर्ण प्रबंधन धीरे-धीरे आकार लेता है। यह ठीक इसलिए है, क्योंकि मनुष्य से की गई अपेक्षाएँ हमेशा इतनी ऊँची होती है कि मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर द्वारा अपेक्षित मानकों के निरंतर अधिक नज़दीक आ जाता है, और केवल तभी संपूर्ण मानवजाति धीरे-धीरे शैतान के प्रभाव से अलग होना शुरू करती है; जब तक परमेश्वर का कार्य पूर्ण समाप्ति पर आएगा, संपूर्ण मानवजाति शैतान के प्रभाव से बचा ली गई होगी। जब वह समय आएगा, तो परमेश्वर का कार्य अपनी समाप्ति पर पहुँच चुका होगा, और अपने स्वभाव में परिवर्तन हासिल करने के लिए परमेश्वर के साथ मनुष्य का सहयोग अब नहीं होगा, और संपूर्ण मानवजाति परमेश्वर के प्रकाश में जीएगी, और तब से परमेश्वर के प्रति कोई विद्रोहशीलता या विरोध नहीं होगा। परमेश्वर भी मनुष्य से कोई माँग नहीं करेगा, और मनुष्य और परमेश्वर के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण सहयोग होगा, ऐसा सहयोग जो

मनुष्य और परमेश्वर दोनों का एक-साथ जीवन होगा, ऐसा जीवन, जो परमेश्वर के प्रबंधन का पूरी तरह से समापन होने और परमेश्वर द्वारा मनुष्य को शैतान के शिकंजों से पूरी तरह से बचा लिए जाने के बाद आता है। जो लोग परमेश्वर के पदचिह्नों का निकट से अनुसरण नहीं कर सकते, वे ऐसा जीवन पाने में अक्षम होते हैं। उन्होंने अपने आपको अंधकार में नीचे गिरा दिया होगा, जहाँ वे रोएँगे और अपने दाँत पीसेंगे; वे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर में विश्वास तो करते हैं किंतु उसका अनुसरण नहीं करते, जो परमेश्वर में विश्वास तो करते हैं किंतु उसके संपूर्ण कार्य का पालन नहीं करते। चूँकि मनुष्य परमेश्वर में विश्वास करता है, इसलिए उसे परमेश्वर के पदचिह्नों का, कदम-दर-कदम, निकट से अनुसरण करना चाहिए; और उसे "जहाँ कहीं मेमना जाता है, उसका अनुसरण करना" चाहिए। केवल ऐसे लोग ही सच्चे मार्ग को खोजते हैं, केवल ऐसे लोग ही पवित्र आत्मा के कार्य को जानते हैं। जो लोग शाब्दिक अर्थों और सिद्धांतों का ज्यों का त्यों अनुसरण करते हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्हें पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा निष्कासित कर दिया गया है। प्रत्येक समयावधि में परमेश्वर नया कार्य आरंभ करेगा, और प्रत्येक अवधि में मनुष्य के बीच एक नई शुरुआत होगी। यदि मनुष्य केवल इन सत्यों का ही पालन करता है कि "यहोवा ही परमेश्वर है" और "यीशु ही मसीह है," जो ऐसे सत्य हैं, जो केवल उनके अपने युग पर ही लागू होते हैं, तो मनुष्य कभी भी पवित्र आत्मा के कार्य के साथ कदम नहीं मिला पाएगा, और वह हमेशा पवित्र आत्मा के कार्य को हासिल करने में अक्षम रहेगा। परमेश्वर चाहे कैसे भी कार्य करता हो, मनुष्य बिना किसी संदेह के अनुसरण करता है, और वह निकट से अनुसरण करता है। इस तरह, मनुष्य पवित्र आत्मा द्वारा कैसे निष्कासित किया जा सकता है? परमेश्वर चाहे जो भी करे, जब तक मनुष्य निश्चित है कि यह पवित्र आत्मा का कार्य है, और बिना किसी आशंका के पवित्र आत्मा के कार्य में सहयोग करता है, और परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी करने का प्रयास करता है, तो उसे कैसे दंड दिया जा सकता है? परमेश्वर का कार्य कभी नहीं रुका है, उसके कदम कभी नहीं थमे हैं, और अपने प्रबंधन-कार्य की पूर्णता से पहले वह सदैव व्यस्त रहा है और कभी नहीं रुकता। किंतु मनुष्य अलग है : पवित्र आत्मा के कार्य का थोड़ा-सा अंश प्राप्त करने के बाद वह उसके साथ इस तरह व्यवहार करता है मानो वह कभी नहीं बदलेगा; जरा-सा ज्ञान प्राप्त करने के बाद वह परमेश्वर के नए कार्य के पदचिह्नों का अनुसरण करने के लिए आगे नहीं बढ़ता; परमेश्वर के कार्य का थोड़ा-सा ही अंश देखने के बाद वह तुरंत ही परमेश्वर को लकड़ी की एक विशिष्ट आकृति के रूप में निर्धारित कर देता है, और यह मानता है कि परमेश्वर सदैव उसी रूप में बना रहेगा जिसे वह अपने सामने देखता है, कि यह

अतीत में भी ऐसा ही था और भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा; सिर्फ एक सतही ज्ञान प्राप्त करने के बाद मनुष्य इतना घमंडी हो जाता है कि स्वयं को भूल जाता है और परमेश्वर के स्वभाव और अस्तित्व के बारे में बेहूदा ढंग से घोषणा करने लगता है, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं होता; और पवित्र आत्मा के कार्य के एक चरण के बारे में निश्चित हो जाने के बाद, परमेश्वर के नए कार्य की घोषणा करने वाला यह व्यक्ति चाहे किसी भी प्रकार का क्यों न हो, मनुष्य उसे स्वीकार नहीं करता। ये ऐसे लोग हैं, जो पवित्र आत्मा के नए कार्य को स्वीकार नहीं कर सकते; वे बहुत रूढ़िवादी हैं और नई चीज़ों को स्वीकार करने में अक्षम हैं। ये वे लोग हैं, जो परमेश्वर में विश्वास तो करते हैं, किंतु परमेश्वर को अस्वीकार भी करते हैं। मनुष्य का मानना है कि इस्राएलियों का "केवल यहोवा में विश्वास करना और यीशु में विश्वास न करना" ग़लत था, किंतु अधिकतर लोग ऐसी ही भूमिका निभाते हैं, जिसमें वे "केवल यहोवा में विश्वास करते हैं और यीशु को अस्वीकार करते हैं" और "मसीहा के लौटने की लालसा करते हैं, किंतु उस मसीहा का विरोध करते हैं जिसे यीशु कहते हैं।" तो कोई आश्चर्य नहीं कि लोग पवित्र आत्मा के कार्य के एक चरण को स्वीकार करने के पश्चात् अभी भी शैतान के अधिकार-क्षेत्र में जीते हैं, और अभी भी परमेश्वर के आशीष प्राप्त नहीं करते। क्या यह मनुष्य की विद्रोहशीलता का परिणाम नहीं है? दुनिया भर के सभी ईसाई, जिन्होंने आज के नए कार्य के साथ कदम नहीं मिलाया है, यह मानते हुए कि परमेश्वर उनकी हर इच्छा पूरी करेगा, इस उम्मीद से चिपके रहते हैं कि वे भाग्यशाली होंगे। फिर भी वे निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि क्यों परमेश्वर उन्हें तीसरे स्वर्ग तक ले जाएगा, न ही वे इस बारे निश्चित हैं कि कैसे यीशु उनका स्वागत करने के लिए सफेद बादल पर सवार होकर आएगा, और वे पूर्ण निश्चय के साथ यह तो बिलकुल नहीं कह सकते कि यीशु वास्तव में उस दिन सफेद बादल पर सवार होकर आएगा या नहीं, जिस दिन की वे कल्पना करते हैं। वे सभी चितित और हैरान हैं; वे स्वयं भी नहीं जानते कि परमेश्वर उनमें से प्रत्येक को ऊपर ले जाएगा या नहीं, जो विभिन्न समूहों के थोड़े-से मुट्ठी भर लोग हैं, जो हर पंथ से आते हैं। परमेश्वर द्वारा अभी किया जाने वाला कार्य, वर्तमान युग, परमेश्वर की इच्छा—इनमें से किसी भी चीज़ की उन्हें कोई समझ नहीं है, और वे अपनी उँगलियों पर दिन गिनने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते। जो लोग बिलकुल अंत तक मेमने के पदचिह्नों का अनुसरण करते हैं, केवल वे ही अंतिम आशीष प्राप्त कर सकते हैं, जबकि वे "चतुर लोग", जो बिलकुल अंत तक अनुसरण करने में असमर्थ हैं, किंतु विश्वास करते हैं कि उन्होंने सब-कुछ प्राप्त कर लिया है, वे परमेश्वर के प्रकटन को देखने में असमर्थ हैं। वे सभी विश्वास करते हैं कि वे पृथ्वी पर सबसे

चतुर व्यक्ति हैं, और वे बिलकुल अकारण ही परमेश्वर के कार्य के लगातार जारी विकास को काटकर छोटा करते हैं, और पूर्ण निश्चय के साथ विश्वास करते प्रतीत होते हैं कि परमेश्वर उन्हें स्वर्ग तक ले जाएगा, वे जो कि "परमेश्वर के प्रति अत्यधिक वफादार हैं, परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, और परमेश्वर के वचनों का पालन करते हैं।" भले ही उनमें परमेश्वर द्वारा बोले गए वचनों के प्रति "अत्यधिक वफादारी" हो, फिर भी उनके वचन और करतूतें अत्यंत घिनौनी हैं क्योंकि वे पवित्र आत्मा के कार्य का विरोध करते हैं, और छल और दुष्टता करते हैं। जो लोग बिलकुल अंत तक अनुसरण नहीं करते, जो पवित्र आत्मा के कार्य के साथ कदम मिलाकर नहीं चलते, और जो केवल पुराने कार्य से चिपके रहते हैं, वे न केवल परमेश्वर के प्रति वफादारी हासिल करने में असफल हुए हैं, बल्कि इसके विपरीत, वे ऐसे लोग बन गए हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं, ऐसे लोग बन गए हैं जिन्हें नए युग द्वारा ठुकरा दिया गया है, और जिन्हें दंड दिया जाएगा। क्या उनसे भी अधिक दयनीय कोई है? अनेक लोग तो यहाँ तक विश्वास करते हैं कि जो लोग प्राचीन व्यवस्था को ठुकराते हैं और नए कार्य को स्वीकार करते हैं, वे सभी विवेकहीन हैं। ये लोग, जो केवल "विवेक" की बात करते हैं और पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं जानते, अंततः अपने ही विवेक द्वारा अपने भविष्य की संभावनाओं को कटवाकर छोटा कर लेंगे। परमेश्वर का कार्य सिद्धांत का पालन नहीं करता, और भले ही वह उसका अपना कार्य हो, फिर भी परमेश्वर उससे चिपका नहीं रहता। जिसे नकारा जाना चाहिए, उसे नकारा जाता है, जिसे हटाया जाना चाहिए, उसे हटाया जाता है। फिर भी मनुष्य परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य के सिर्फ एक छोटे-से भाग को ही पकड़े रहकर स्वयं को परमेश्वर से शत्रुता की स्थिति में रख लेता है। क्या यह मनुष्य की बेहूदगी नहीं है? क्या यह मनुष्य की अज्ञानता नहीं है? परमेश्वर के आशीष प्राप्त न करने के डर से लोग जितना अधिक भयभीत और अति-सतर्क होते हैं, उतना ही अधिक वे और बड़े आशीष प्राप्त करने और अंतिम आशीष पाने में अक्षम होते हैं। जो लोग दासों की तरह व्यवस्था का पालन करते हैं, वे सभी व्यवस्था के प्रति अत्यंत वफादारी का प्रदर्शन करते हैं, और जितना अधिक वे व्यवस्था के प्रति ऐसी वफादारी का प्रदर्शन करते हैं, उतना ही अधिक वे ऐसे विद्रोही होते हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं। क्योंकि अब राज्य का युग है, व्यवस्था का युग नहीं, और आज के कार्य और अतीत के कार्य को एक जैसा नहीं बताया जा सकता, न ही अतीत के कार्य की तुलना आज के कार्य से की जा सकती है। परमेश्वर का कार्य बदल चुका है, और मनुष्य का अभ्यास भी बदल चुका है; वह व्यवस्था को पकड़े रहना या सलीब को सहना नहीं है, इसलिए, व्यवस्था और सलीब के प्रति लोगों की वफादारी को परमेश्वर

का अनुमोदन प्राप्त नहीं होगा।

राज्य के युग में मनुष्य को पूरी तरह से पूर्ण किया जाएगा। विजय के कार्य के पश्चात् मनुष्य को शुद्धिकरण और क्लेश का भागी बनाया जाएगा। जो लोग विजय प्राप्त कर सकते हैं और इस क्लेश के दौरान गवाही दे सकते हैं, वे वो लोग हैं जिन्हें अंततः पूर्ण बनाया जाएगा; वे विजेता हैं। इस क्लेश के दौरान मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह इस शुद्धिकरण को स्वीकार करे, और यह शुद्धिकरण परमेश्वर के कार्य की अंतिम घटना है। यह अंतिम बार है कि परमेश्वर के प्रबंधन के समस्त कार्य के समापन से पहले मनुष्य को शुद्ध किया जाएगा, और जो परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, उन सभी को यह अंतिम परीक्षा स्वीकार करनी चाहिए, और उन्हें यह अंतिम शुद्धिकरण स्वीकार करना चाहिए। जो लोग क्लेश से व्याकुल हैं, वे पवित्र आत्मा के कार्य और परमेश्वर के मार्गदर्शन से रहित हैं, किंतु जिन्हें सच में जीत लिया गया है और जो सच में परमेश्वर की खोज करते हैं, वे अंततः डटे रहेंगे; ये वे लोग हैं, जिनमें मानवता है, और जो सच में परमेश्वर से प्रेम करते हैं। परमेश्वर चाहे कुछ भी क्यों न करे, इन विजयी लोगों को दर्शनों से वंचित नहीं किया जाएगा, और ये फिर भी अपनी गवाही में असफल हुए बिना सत्य को अभ्यास में लाएँगे। ये वे लोग हैं, जो अंततः बड़े क्लेश से उभरेंगे। भले ही आपदा को अवसर में बदलने वाले आज भी मुफ़्तख़ोरी कर सकते हों, किंतु अंतिम क्लेश से बच निकलने में कोई सक्षम नहीं है, और अंतिम परीक्षा से कोई नहीं बच सकता। जो लोग विजय प्राप्त करते हैं, उनके लिए ऐसा क्लेश जबरदस्त शुद्धिकरण हैं; किंतु आपदा को अवसर में बदलने वालों के लिए यह पूरी तरह से उनके उन्मूलन का कार्य है। जिनके हृदय में परमेश्वर है, उनकी चाहे किसी भी प्रकार से परीक्षा क्यों न ली जाए, उनकी निष्ठा अपरिवर्तित रहती है; किंतु जिनके हृदय में परमेश्वर नहीं है, वे अपने देह के लिए परमेश्वर का कार्य लाभदायक न रहने पर परमेश्वर के बारे में अपना दृष्टिकोण बदल लेते हैं, यहाँ तक कि परमेश्वर को छोड़कर चले जाते हैं। इस प्रकार के लोग ऐसे होते हैं जो अंत में डटे नहीं रहेंगे, जो केवल परमेश्वर के आशीष खोजते हैं और उनमें परमेश्वर के लिए अपने आपको व्यय करने और उसके प्रति समर्पित होने की कोई इच्छा नहीं होती। ऐसे सभी अधम लोगों को परमेश्वर का कार्य समाप्ति पर आने पर बहिष्कृत कर दिया जाएगा, और वे किसी भी प्रकार की सहानुभूति के योग्य नहीं हैं। जो लोग मानवता से रहित हैं, वे सच में परमेश्वर से प्रेम करने में अक्षम हैं। जब परिवेश सही-सलामत और सुरक्षित होता है, या जब लाभ कमाया जा सकता है, तब वे परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी रहते हैं, किंतु जब जो वे चाहते हैं, उसमें कमी-बेशी की जाती है या अंततः उसके

लिए मना कर दिया जाता है, तो वे तुरंत बगावत कर देते हैं। यहाँ तक कि एक ही रात के अंतराल में वे अपने कल के उपकारियों के साथ अचानक बिना किसी तुक या तर्क के अपने घातक शत्रु के समान व्यवहार करते हुए, एक मुसकराते, "उदार-हृदय" व्यक्ति से एक कुरूप और जघन्य हत्यारे में बदल जाते हैं। यदि इन पिशाचों को निकाला नहीं जाता, तो ये पिशाच बिना पलक झपकाए हत्या कर देंगे, तो क्या वे एक छिपा हुआ ख़तरा नहीं बन जाएँगे? विजय के कार्य के समापन के बाद मनुष्य को बचाने का कार्य हासिल नहीं किया जाता। यद्यपि विजय का कार्य समाप्ति पर आ गया है, किंतु मनुष्य को शुद्ध करने का कार्य नहीं; वह कार्य केवल तभी समाप्त होगा, जब मनुष्य को पूरी तरह से शुद्ध कर दिया जाएगा, जब परमेश्वर के प्रति वास्तव में समर्पण करने वाले लोगों को पूर्ण कर दिया जाएगा, और जब अपने हृदय में परमेश्वर से रहित छद्मवेशियों को शुद्ध कर दिया जाएगा। जो लोग परमेश्वर के कार्य के अंतिम चरण में उसे संतुष्ट नहीं करते, उन्हें पूरी तरह से निष्कासित कर दिया जाएगा, और जिन्हें निष्कासित कर दिया जाता है, वे शैतान के हो जाते हैं। चूँकि वे परमेश्वर को संतुष्ट करने में अक्षम हैं, इसलिए वे परमेश्वर के प्रति विद्रोही हैं, और भले ही वे लोग आज परमेश्वर का अनुसरण करते हों, फिर भी इससे यह साबित नहीं होता कि ये वो लोग हैं, जो अंततः बने रहेंगे। "जो लोग अंत तक परमेश्वर का अनुसरण करेंगे, वे उद्धार प्राप्त करेंगे," इन वचनों में "अनुसरण" का अर्थ क्लेश के बीच डटे रहना है। आज बहुत-से लोग मानते हैं कि परमेश्वर का अनुसरण करना आसान है, किंतु जब परमेश्वर का कार्य समाप्त होने वाला होगा, तब तुम "अनुसरण करने" का असली अर्थ जानोगे। सिर्फ इस बात से कि जीत लिए जाने के पश्चात् तुम आज भी परमेश्वर का अनुसरण करने में समर्थ हो, यह प्रमाणित नहीं होता कि तुम उन लोगों में से एक हो, जिन्हें पूर्ण बनाया जाएगा। जो लोग परीक्षणों को सहने में असमर्थ हैं, जो क्लेशों के बीच विजयी होने में अक्षम हैं, वे अंततः डटे रहने में अक्षम होंगे, और इसलिए वे बिलकुल अंत तक अनुसरण करने में असमर्थ होंगे। जो लोग सच में परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, वे अपने कार्य की परीक्षा का सामना करने में समर्थ हैं, जबकि जो लोग सच में परमेश्वर का अनुसरण नहीं करते, वे परमेश्वर के किसी भी परीक्षण का सामना करने में अक्षम हैं। देर-सवेर उन्हें निर्वासित कर दिया जाएगा, जबकि विजेता राज्य में बने रहेंगे। मनुष्य वास्तव में परमेश्वर को खोजता है या नहीं, इसका निर्धारण उसके कार्य की परीक्षा द्वारा किया जाता है, अर्थात्, परमेश्वर के परीक्षणों द्वारा, और इसका स्वयं मनुष्य द्वारा लिए गए निर्णय से कोई लेना-देना नहीं है। परमेश्वर सनक के आधार पर किसी मनुष्य को अस्वीकार नहीं करता; वह जो कुछ भी करता है, वह मनुष्य को पूर्ण रूप से

आश्वस्त कर सकता है। वह ऐसा कुछ नहीं करता, जो मनुष्य के लिए अदृश्य हो, या कोई ऐसा कार्य जो मनुष्य को आश्वस्त न कर सके। मनुष्य का विश्वास सही है या नहीं, यह तथ्यों द्वारा साबित होता है, और इसे मनुष्य द्वारा तय नहीं किया जा सकता। इसमें कोई संदेह नहीं कि "गेहूँ को जंगली दाने नहीं बनाया जा सकता, और जंगली दानों को गेहूँ नहीं बनाया जा सकता"। जो सच में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे सभी अंततः राज्य में बने रहेंगे, और परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार नहीं करेगा, जो वास्तव में उससे प्रेम करता है। अपने विभिन्न कार्यों और गवाहियों के आधार पर राज्य के भीतर विजेता लोग याजकों और अनुयायियों के रूप में सेवा करेंगे, और जो क्लेश के बीच विजेता होंगे, वे राज्य के भीतर याजकों का एक निकाय बन जाएँगे। याजकों का निकाय तब बनाया जाएगा, जब संपूर्ण विश्व में सुसमाचार का कार्य समाप्ति पर आ जाएगा। जब वह समय आएगा, तब जो मनुष्य के द्वारा किया जाना चाहिए, वह परमेश्वर के राज्य के भीतर अपने कर्तव्य का निष्पादन होगा, और राज्य के भीतर परमेश्वर के साथ उसका जीना होगा। याजकों के निकाय में महायाजक और याजक होंगे, और शेष लोग परमेश्वर के पुत्र और उसके लोग होंगे। यह सब क्लेश के दौरान परमेश्वर के प्रति उनकी गवाहियों से निर्धारित होता है, ये ऐसी उपाधियाँ नहीं हैं जो सनक के आधार पर दी जाती हैं। जब मनुष्य की हैसियत स्थापित कर दी जाएगी, तो परमेश्वर का कार्य रुक जाएगा, क्योंकि प्रत्येक को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत कर दिया जाएगा और उसकी मूल स्थिति में लौटा दिया जाएगा, और यह परमेश्वर के कार्य के समापन का चिह्न है, यह परमेश्वर के कार्य और मनुष्य के अभ्यास का अंतिम परिणाम है, और यह परमेश्वर के कार्य के दर्शनों और मनुष्य के सहयोग का स्फटिकवत् ठोस रूप है। अंत में, मनुष्य परमेश्वर के राज्य में विश्राम पाएगा, और परमेश्वर भी विश्राम करने के लिए अपने निवास-स्थान में लौट जाएगा। यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच 6,000 वर्षों के सहयोग का अंतिम परिणाम होगा।

स्वर्गिक परमपिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता ही मसीह का सार है

देहधारी परमेश्वर मसीह कहलाता है और मसीह परमेश्वर के आत्मा द्वारा धारण की गई देह है। यह देह किसी भी मनुष्य की देह से भिन्न है। यह भिन्नता इसलिए है क्योंकि मसीह मांस तथा खून से बना हुआ नहीं है; वह आत्मा का देहधारण है। उसके पास सामान्य मानवता तथा पूर्ण दिव्यता दोनों हैं। उसकी

दिव्यता किसी भी मनुष्य द्वारा धारण नहीं की जाती। उसकी सामान्य मानवता देह में उसकी समस्त सामान्य गतिविधियां बनाए रखती है, जबकि उसकी दिव्यता स्वयं परमेश्वर के कार्य अभ्यास में लाती है। चाहे यह उसकी मानवता हो या दिव्यता, दोनों स्वर्गिक परमपिता की इच्छा को समर्पित हैं। मसीह का सार पवित्र आत्मा, यानी दिव्यता है। इसलिए, उसका सार स्वयं परमेश्वर का है; यह सार उसके स्वयं के कार्य में बाधा उत्पन्न नहीं करेगा और वह संभवतः कोई ऐसा कार्य नहीं कर सकता, जो उसके स्वयं के कार्य को नष्ट करता हो, न ही वह ऐसे वचन कहेगा, जो उसकी स्वयं की इच्छा के विरुद्ध जाते हों। इसलिए, देहधारी परमेश्वर कभी भी कोई ऐसा कार्य बिल्कुल नहीं करेगा, जो उसके अपने प्रबंधन में बाधा उत्पन्न करता हो। यह वह बात है, जिसे सभी मनुष्यों को समझना चाहिए। पवित्र आत्मा के कार्य का सार मनुष्य को बचाना और परमेश्वर के अपने प्रबंधन के वास्ते है। इसी प्रकार, मसीह का कार्य भी मनुष्य को बचाना है तथा परमेश्वर की इच्छा के वास्ते है। यह देखते हुए कि परमेश्वर देह बन जाता है, वह अपने देह में अपने सार का, इस प्रकार अहसास करता है कि उसकी देह उसके कार्य का भार उठाने के लिए पर्याप्त है। इसलिए देहधारण के समय परमेश्वर के आत्मा का संपूर्ण कार्य मसीह के कार्य द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है और देहधारण के पूरे समय के दौरान संपूर्ण कार्य के केंद्र में मसीह का कार्य होता है। इसे किसी भी अन्य युग के कार्य के साथ मिलाया नहीं जा सकता। और चूँकि परमेश्वर देहधारी हो जाता है, वह अपनी देह की पहचान में कार्य करता है; चूँकि वह देह में आता है, वह अपनी देह में वह कार्य पूरा करता है, जो उसे करना चाहिए। चाहे वह परमेश्वर का आत्मा हो या चाहे वह मसीह हो, दोनों स्वयं परमेश्वर हैं और वह उस कार्य को करता है, जो उसे करना चाहिए और उस सेवकाई को करता है, जो उसे करनी चाहिए।

परमेश्वर का सार ही अधिकार को काम में लाता है, लेकिन वह पूर्ण रूप से उस अधिकार के प्रति समर्पित हो पाता है, जो उसकी ओर से आता है। चाहे वह पवित्र आत्मा का कार्य हो या देह का, दोनों का एक दूसरे से टकराव नहीं होता। परमेश्वर का आत्मा संपूर्ण सृष्टि पर अधिकार रखता है। परमेश्वर के सार वाली देह भी अधिकार संपन्न है, पर देह में परमेश्वर वह सब कार्य कर सकता है, जिससे स्वर्गिक पिता की इच्छा का आज्ञा पालन होता है। इसे किसी मनुष्य द्वारा प्राप्त किया या समझा नहीं जा सकता। परमेश्वर स्वयं अधिकार है, पर उसकी देह उसके अधिकार के प्रति समर्पित हो सकती है। जब यह कहा जाता है तो इसमें निहित होता हैः "मसीह परमपिता परमेश्वर की इच्छा का आज्ञापालन करता है।" परमेश्वर आत्मा है और उद्धार का कार्य कर सकता है, जैसे परमेश्वर मनुष्य बन सकता है। किसी भी क़ीमत पर, परमेश्वर

स्वयं अपना कार्य करता है; वह न तो बाधा उत्पन्न करता है न दखल देता है, ऐसे कार्य का अभ्यास तो नहीं ही करता, जो परस्पर विपरीत हो क्योंकि आत्मा और देह द्वारा किए गए कार्य का सार एक समान है। चाहे आत्मा हो या देह, दोनों एक इच्छा को पूरा करने और उसी कार्य को प्रबंधित करने के लिए कार्य करते हैं। यद्यपि आत्मा और देह की दो भिन्न विशेषताएं हैं, किंतु उनके सार एक ही हैं; दोनों में स्वयं परमेश्वर का सार है और स्वयं परमेश्वर की पहचान है। स्वयं परमेश्वर में अवज्ञा के तत्व नहीं होते; उसका सार अच्छा है। वह समस्त सुंदरता और अच्छाई की और साथ ही समस्त प्रेम की अभिव्यक्ति है। यहाँ तक कि देह में भी परमेश्वर ऐसा कुछ नहीं करता, जिससे परमपिता परमेश्वर की अवज्ञा होती हो। यहाँ तक कि अपने जीवन का बलिदान करने की क़ीमत पर भी वह ऐसा करने को पूरे मन से तैयार रहेगा और कोई विकल्प नहीं बनाएगा। परमेश्वर में आत्मतुष्टि और ख़ुदगर्ज़ी के या दंभ या घमंड के तत्व नहीं हैं; उसमें कुटिलता के कोई तत्व नहीं हैं। जो कोई भी परमेश्वर की अवज्ञा करता है, वह शैतान से आता है; शैतान समस्त कुरूपता तथा दुष्टता का स्रोत है। मनुष्य में शैतान के सदृश विशेषताएं होने का कारण यह है कि मनुष्य को शैतान द्वारा भ्रष्ट और संसाधित किया गया है। मसीह को शैतान द्वारा भ्रष्ट नहीं किया गया है, अतः उसके पास केवल परमेश्वर की विशेषताएं हैं तथा शैतान की एक भी विशेषता नहीं है। इस बात की परवाह किए बिना कि कार्य कितना कठिन है या देह कितनी निर्बल, परमेश्वर जब वह देह में रहता है, कभी भी ऐसा कुछ नहीं करेगा, जिससे स्वयं परमेश्वर का कार्य बाधित होता हो, अवज्ञा में परमपिता परमेश्वर की इच्छा का त्याग तो बिल्कुल नहीं करेगा। वह देह में पीड़ा सह लेगा, मगर परमपिता परमेश्वर की इच्छा के विपरीत नहीं जाएगा; यह वैसा है, जैसा यीशु ने प्रार्थना में कहा, "पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" लोग अपने चुनाव करते हैं, किंतु मसीह नहीं करता। यद्यपि उसके पास स्वयं परमेश्वर की पहचान है, फिर भी वह परमपिता परमेश्वर की इच्छा की तलाश करता है और देह के दृष्टिकोण से वह पूरा करता है, जो उसे परमपिता परमेश्वर द्वारा सौंपा गया है। यह कुछ ऐसा है, जो मनुष्य हासिल नहीं कर सकता। जो कुछ शैतान से आता है, उसमें परमेश्वर का सार नहीं हो सकता; उसमें केवल परमेश्वर की अवज्ञा और उसका विरोध हो सकता है। वह पूर्ण रूप से परमेश्वर का आज्ञापालन नहीं कर सकता, स्वेच्छा से परमेश्वर की इच्छा का पालन तो दूर की बात है। मसीह के अलावा सभी पुरुष ऐसा कर सकते हैं, जिससे परमेश्वर का विरोध होता हो, और एक भी व्यक्ति परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्य को सीधे नहीं कर सकता; एक भी परमेश्वर के प्रबंधन को अपने

कर्तव्य के रूप में मानने में सक्षम नहीं है। मसीह का सार परमपिता परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करना है; परमेश्वर की अवज्ञा शैतान की विशेषता है। ये दोनों विशेषताएं असंगत हैं और कोई भी जिसमें शैतान के गुण हैं, मसीह नहीं कहलाया जा सकता। मनुष्य परमेश्वर के बदले उसका कार्य नहीं कर सकता, इसका कारण है कि मनुष्य में परमेश्वर का कोई भी सार नहीं है। मनुष्य परमेश्वर का कार्य मनुष्य के व्यक्तिगत हितों और भविष्य की संभावनाओं के वास्ते करता है, किंतु मसीह परमपिता परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए कार्य करता है।

मसीह की मानवता उसकी दिव्यता द्वारा संचालित होती है। यद्यपि वह देह में है, किंतु उसकी मानवता पूर्ण रूप से देह वाले एक मनुष्य के समान नहीं है। उसका अपना अनूठा चरित्र है और यह भी उसकी दिव्यता द्वारा संचालित होता है। उसकी दिव्यता में कोई निर्बलता नहीं है; मसीह की निर्बलता उसकी मानवता से संबंधित है। एक निश्चित सीमा तक, यह निर्बलता उसकी दिव्यता को विवश करती है, पर इस प्रकार की सीमाएं एक निश्चित दायरे और समय के भीतर होती हैं और असीम नहीं हैं। जब उसकी दिव्यता का कार्य क्रियान्वित करने का समय आता है, तो वह उसकी मानवता की परवाह किए बिना किया जाता है। मसीह की मानवता पूर्णतः उसकी दिव्यता द्वारा निर्देशित होती है। उसके मानवता के साधारण जीवन से अलग, उसकी मानवता के अन्य सभी काम उसकी दिव्यता द्वारा प्रेरित, प्रभावित और निर्देशित होते हैं। यद्यपि मसीह में मानवता है, पर इससे उसकी दिव्यता का कार्य बाधित नहीं होता और ऐसा ठीक इसलिए है क्योंकि मसीह की मानवता उसकी दिव्यता द्वारा निर्देशित है; हालांकि उसकी मानवता दूसरों के साथ आचरण में परिपक्व नहीं है, इससे उसकी दिव्यता का सामान्य कार्य प्रभावित नहीं होता। जब मैं यह कहता हूँ कि उसकी मानवता भ्रष्ट नहीं हुई है, तब मेरा मतलब है कि मसीह की मानवता उसकी दिव्यता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्देशित की जा सकती है और यह कि वह साधारण मनुष्य की तुलना में उच्चतर समझ से संपन्न है। उसकी मानवता उसके कार्य में दिव्यता द्वारा निर्देशित होने के लिए सबसे अनुकूल है; उसकी मानवता दिव्यता के कार्य को अभिव्यक्त करने के लिए सबसे अनुकूल है और साथ ही ऐसे कार्य के प्रति समर्पण करने के सबसे योग्य है। जब परमेश्वर देह में कार्य करता है, वह कभी उस कर्तव्य से नज़र नहीं हटाता, जिसे मनुष्य को देह में होते हुए पूरा करना चाहिए; वह सच्चे हृदय से स्वर्ग में परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम है। उसमें परमेश्वर का सार है और उसकी पहचान स्वयं परमेश्वर की पहचान है। केवल इतना है कि वह पृथ्वी पर आया है और एक सृजित किया प्राणी बन गया है, जिसका बाहरी आवरण

सृजन किए प्राणी का है और अब ऐसी मानवता से संपन्न है, जो पहले उसके पास नहीं थी; वह स्वर्ग में परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम है; यह स्वयं परमेश्वर का अस्तित्व है तथा मनुष्य उसका अनुकरण नहीं कर सकता। उसकी पहचान स्वयं परमेश्वर है। देह के परिप्रेक्ष्य से वह परमेश्वर की आराधना करता है; इसलिए, ये वचन "मसीह स्वर्ग में परमेश्वर की आराधना करता है" त्रुटिपूर्ण नहीं हैं। वह मनुष्य से जो माँगता है, वह ठीक-ठीक उसका स्वयं का अस्तित्व है; मनुष्य से कुछ भी माँगने से पहले वह उसे पहले ही प्राप्त कर चुका होता है। वह कभी भी दूसरों से माँग नहीं करता जबकि वह स्वयं उनसे मुक्त है, क्योंकि इन सबसे उसका अस्तित्व गठित होता है। इस बात की परवाह किए बिना कि वह कैसे अपना कार्य क्रियान्वित करता है, वह इस प्रकार कार्य नहीं करेगा, जिससे परमेश्वर की अवज्ञा हो। चाहे वह मनुष्य से कुछ भी माँगे, कोई भी माँग मनुष्य द्वारा प्राप्य से बढ़कर नहीं होती। वह जो कुछ करता है, वह परमेश्वर की इच्छा पर चलता है और उसके प्रबंधन के वास्ते है। मसीह की दिव्यता सभी मनुष्यों से ऊपर है; इसलिए सभी सृजित प्राणियों में वह सर्वोच्च अधिकारी है। यह अधिकार उसकी दिव्यता है, यानी परमेश्वर का स्वयं का अस्तित्व और स्वभाव उसकी पहचान निर्धारित करता है। इसलिए, चाहे उसकी मानवता कितनी ही साधारण हो, इससे इनकार नहीं हो सकता कि उसके पास स्वयं परमेश्वर की पहचान है; चाहे वह किसी भी दृष्टिकोण से बोले और किसी भी तरह परमेश्वर की इच्छा का आज्ञा पालन करे, यह नहीं कहा जा सकता है कि वह स्वयं परमेश्वर नहीं है। मूर्ख और नासमझ लोग मसीह की सामान्य मानवता को प्रायः एक खोट मानते हैं। चाहे वह किसी भी तरह अपनी दिव्यता के अस्तित्व को अभिव्यक्त और प्रकट करे, मनुष्य यह स्वीकार करने में असमर्थ है कि वह मसीह है। और मसीह जितना अधिक अपनी आज्ञाकारिता और नम्रता प्रदर्शित करता है, मूर्ख मनुष्य मसीह को उतना ही हल्के ढंग से लेते हैं। यहाँ तक कि ऐसे लोग भी हैं, जो उसके प्रति बहिष्कार तथा तिरस्कार की प्रवृत्ति अपना लेते हैं, फिर भी उन "महान लोगों" की शानदार प्रतिमाओं को आराधना के लिए मेज़ पर रखते हैं। परमेश्वर के प्रति मनुष्य का प्रतिरोध और अवज्ञा इस तथ्य से जन्मता है कि देहधारी परमेश्वर का सार परमेश्वर की इच्छा, साथ ही मसीह की सामान्य मानवता से समर्पण कराता है; यह परमेश्वर के प्रति मनुष्य के प्रतिरोध और उसकी अवज्ञा का स्रोत है। यदि मसीह न तो अपनी मानवता का भेष रखता, न ही सृजित प्राणी के दृष्टिकोण से परमपिता परमेश्वर की इच्छा की खोज करता, बल्कि इसके बजाय अति मानवता से संपन्न होता, तो किसी मनुष्य में अवज्ञा करने की संभावना न होती। मनुष्य की सदैव स्वर्ग में एक अदृश्य परमेश्वर में विश्वास करने की इच्छा का कारण है

कि स्वर्ग में परमेश्वर के पास कोई मानवता नहीं है, न ही उसमें सृजित प्राणी की एक भी विशेषता है। अतः मनुष्य उसका सदैव सर्वोच्च सम्मान के साथ आदर करता है, किंतु मसीह के प्रति तिरस्कार का रवैया रखता है।

यद्यपि पृथ्वी पर मसीह, स्वयं परमेश्वर के स्थान पर कार्य करने में समर्थ है, पर वह सभी मनुष्यों को देह में अपनी छवि दिखाने के आशय से नहीं आता। वह सब लोगों को अपना दर्शन कराने नहीं आता; वह मनुष्य को अपने हाथ की अगुआई में चलने की अनुमति देने आता है, और इस प्रकार मनुष्य नए युग में प्रवेश करता है। मसीह की देह का काम स्वयं परमेश्वर के कार्य के लिए है, यानी देह में परमेश्वर के कार्य के लिए है, और अपनी देह के सार को पूर्णतः मनुष्य को समझाने में समर्थ करने के लिए नहीं है। चाहे वह जैसे भी कार्य करे, वह कुछ ऐसा नहीं करता, जो देह के लिए प्राप्य से परे हो। चाहे वह जैसे कार्य करे, वह ऐसा देह में होकर सामान्य मानवता के साथ करता है और वह मनुष्य के सामने परमेश्वर की वास्तविक मुखाकृति प्रकट नहीं करता। इसके अतिरिक्त, देह में उसका कार्य इतना अलौकिक या अपरिमेय नहीं है, जैसा मनुष्य समझता है। यद्यपि मसीह देह में स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है और व्यक्तिगत रूप से वह कार्य करता है, जिसे स्वयं परमेश्वर को करना चाहिए, वह स्वर्ग में परमेश्वर के अस्तित्व को नहीं नकारता, न ही वह उत्तेजनापूर्वक अपने स्वयं के कर्मों की घोषणा करता है। इसके बजाय, वह विनम्रतापूर्वक अपनी देह के भीतर छिपा रहता है। मसीह के अलावा, जो मसीह होने का झूठा दावा करते हैं, उनमें उसकी विशेषताएं नहीं हैं। अभिमानी और ख़ुद की बढ़ाई के स्वभाव वाले उन झूठे मसीहों से तुलना में यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तव में किस प्रकार की देह में मसीह है। जितने वे झूठे होते हैं, उतना ही अधिक इस प्रकार के झूठे मसीह स्वयं का दिखावा करते हैं और उतना ही लोगों को धोखा देने के लिये वे ऐसे संकेत और चमत्कार करने में समर्थ होते हैं। झूठे मसीहों में परमेश्वर के गुण नहीं होते; मसीह पर झूठे मसीहों से संबंधित किसी भी तत्व का दाग़ नहीं लगता। परमेश्वर केवल देह का कार्य पूर्ण करने के लिए देहधारी बनता है, न कि महज़ मनुष्यों को उसे देखने की अनुमति देने के लिए। इसके बजाय, वह अपने कार्य से अपनी पहचान की पुष्टि होने देता है और जो वह प्रकट करता है, उसे अपना सार प्रमाणित करने देता है। उसका सार निराधार नहीं है; उसकी पहचान उसके हाथ से ज़ब्त नहीं की गई थी; यह उसके कार्य और उसके सार से निर्धारित होती है। यद्यपि उसमें स्वयं परमेश्वर का सार है और स्वयं परमेश्वर का कार्य करने में समर्थ है, किंतु वह अभी भी अंततः आत्मा से भिन्न देह है। वह आत्मा की

विशेषताओं वाला परमेश्वर नहीं है; वह देह के आवरण वाला परमेश्वर है। इसलिए, चाहे वह जितना सामान्य और जितना निर्बल हो और जैसे भी वह परमपिता परमेश्वर की इच्छा को खोजे, उसकी दिव्यता से इनकार नहीं किया जा सकता। देहधारी परमेश्वर में न केवल सामान्य मानवता और उसकी कमज़ोरियां विद्यमान रहती हैं; उसमें उसकी दिव्यता की अद्‌भुतता और अथाहपन के साथ ही देह में उसके सभी कर्म विद्यमान रहते हैं। इसलिए, वास्तव में तथा व्यावहारिक रूप से मानवता तथा दिव्यता दोनों मसीह में मौजूद हैं। यह ज़रा भी निस्सार या अलौकिक नहीं है। वह पृथ्वी पर कार्य करने के मुख्य उद्देश्य से आता है; पृथ्वी पर कार्य करने के लिए सामान्य मानवता से संपन्न होना अनिवार्य है; अन्यथा, उसकी दिव्यता की शक्ति चाहे जितनी महान हो, उसके मूल कार्य का सदुपयोग नहीं हो सकता। यद्यपि उसकी मानवता अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु यह उसका सार नहीं है। उसका सार दिव्यता है; इसलिए जिस क्षण वह पृथ्वी पर अपनी सेवकाई आरंभ करता है, उसी क्षण वह अपनी दिव्यता के अस्तित्व को अभिव्यक्त करना आरंभ कर देता है। उसकी मानवता केवल अपनी देह के सामान्य जीवन को बनाए रखने के लिए होती है ताकि उसकी दिव्यता देह में सामान्य रूप से कार्य क्रियान्वित कर सके; यह दिव्यता ही है, जो पूरी तरह उसके कार्य को निर्देशित करती है। जब वह अपना कार्य समाप्त करेगा, तो वह अपनी सेवकाई को पूर्ण कर चुका होगा। जो मनुष्य को जानना चाहिए, वह है परमेश्वर के कार्य की संपूर्णता और अपने कार्य के ज़रिए वह मनुष्य को उसे जानने में सक्षम बनाता है। अपने कार्य के दौरान वह पूर्णतः अपनी दिव्यता के होने को अभिव्यक्त करता है, जो ऐसा स्वभाव नहीं है, जिसे मानवता दूषित कर पाए, या ऐसा होना नहीं है, जो विचार एवं मानव व्यवहार द्वारा दूषित किया गया हो। जब समय आता है कि उसकी संपूर्ण सेवकाई का अंत आ गया है, वह पहले ही उस स्वभाव को उत्तमता से और पूर्णतः अभिव्यक्त कर चुका होगा, जो उसे अभिव्यक्त करना चाहिए। उसका कार्य किसी मनुष्य के निर्देशों पर नहीं होता; उसके स्वभाव की अभिव्यक्ति भी काफ़ी स्वतंत्र है और मन द्वारा नियंत्रित या विचार द्वारा संसाधित नहीं की जाती, बल्कि प्राकृतिक रूप से प्रकट होती है। यह ऐसा है, जिसे कोई मनुष्य हासिल नहीं कर सकता। यहाँ तक कि यदि परिस्थितियाँ कठोर हों या स्थितियाँ आज्ञा न देतीं हों, तब भी वह उचित समय पर अपने स्वभाव को व्यक्त करने में सक्षम है। जो मसीह है, मसीह के होने को अभिव्यक्त करता है, जबकि जो नहीं हैं, उनमें मसीह का स्वभाव नहीं है। इसलिए, भले ही सभी उसका विरोध करें या उसके प्रति धारणाएं रखें, मनुष्य की धारणाओं के आधार पर कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता कि मसीह का अभिव्यक्त किया हुआ

स्वभाव परमेश्वर का है। वे सब जो सच्चे हृदय से मसीह का अनुसरण करते हैं, या इस आशय से परमेश्वर को खोजते हैं, यह मानेंगे कि अपनी दिव्यता की अभिव्यक्ति के आधार पर वह मसीह है। वे कभी भी ऐसे किसी पहलू के आधार पर मसीह को इनकार नहीं करेंगे, जो मनुष्य की धारणाओं के अनुरूप नहीं है। यद्यपि मनुष्य अत्यंत मूर्ख है, किंतु सभी जानते हैं कि मनुष्य की इच्छा क्या है और परमेश्वर से क्या उत्पन्न होता है। मात्र इतना है कि बहुत से लोग अपनी स्वयं की इच्छाओं के कारण जानबूझकर मसीह का विरोध करते हैं। यदि ऐसा न हो, तो एक भी मनुष्य के पास मसीह के अस्तित्व से इनकार करने का कारण नहीं होगा, क्योंकि मसीह द्वारा अभिव्यक्त दिव्यता वास्तव में अस्तित्व में है और उसके कार्य को सबकी नंगी आँखों द्वारा देखा जा सकता है।

मसीह का कार्य तथा अभिव्यक्ति उसके सार को निर्धारित करते हैं। वह अपने सच्चे हृदय से उस कार्य को पूर्ण करने में सक्षम है, जो उसे सौंपा गया है। वह सच्चे हृदय से स्वर्ग में परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम है और सच्चे हृदय से परमपिता परमेश्वर की इच्छा खोजने में सक्षम है। यह सब उसके सार द्वारा निर्धारित होता है। और इसी प्रकार उसका प्राकृतिक प्रकाशन भी उसके सार द्वारा निर्धारित किया जाता है; इसे मैं उसका "प्राकृतिक प्रकाशन" कहता हूँ क्योंकि उसकी अभिव्यक्ति कोई नकल नहीं है, या मनुष्य द्वारा शिक्षा का परिणाम, या मनुष्य द्वारा कई वर्षों का संवर्धन का परिणाम नहीं है। उसने इसे सीखा या इससे स्वयं को सँवारा नहीं; बल्कि, यह उसमें अंतर्निहित है। मनुष्य उसके कार्य, उसकी अभिव्यक्ति, उसकी मानवता, और सामान्य मानवता के उसके संपूर्ण जीवन से इनकार कर सकता है, किंतु कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता कि वह सच्चे हृदय से स्वर्ग के परमेश्वर की आराधना करता है; कोई इनकार नहीं कर सकता है कि वह स्वर्गिक परमपिता की इच्छा पूरी करने के लिए आया है, और कोई उस निष्कपटता से इनकार नहीं कर सकता, जिससे वह परमपिता परमेश्वर की खोज करता है। यद्यपि उसकी छवि इंद्रियों के लिए सुखद नहीं, उसके प्रवचन असाधारण हाव-भाव से संपन्न नहीं हैं और उसका कार्य धरती या आकाश को थर्रा देने वाला नहीं है जैसा मनुष्य कल्पना करता है, वास्तव में वह मसीह है, जो सच्चे हृदय से स्वर्गिक परमपिता की इच्छा पूरी करता है, पूर्णतः स्वर्गिक परमपिता के प्रति समर्पण करता है और मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहता है। यह इसलिए क्योंकि उसका सार मसीह का सार है। मनुष्य के लिए इस सत्य पर विश्वास करना कठिन है किंतु यह एक तथ्य है। जब मसीह की सेवकाई पूर्णतः संपन्न हो गई है, तो मनुष्य उसके कार्य से देखने में सक्षम होगा कि उसका स्वभाव और उसका अस्तित्व स्वर्ग के

परमेश्वर के स्वभाव और अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। उस समय, उसके संपूर्ण कार्य का कुल योग इसकी पुष्टि कर सकता है कि वह वास्तव में वही देह है, जिसे वचन धारण करता है, और एक हाड़-मांस के मनुष्य के सदृश नहीं है। पृथ्वी पर मसीह के कार्य के प्रत्येक चरण का प्रतिनिधिक महत्व है, किंतु मनुष्य जो प्रत्येक चरण के वास्तविक कार्य का अनुभव करता है, उसके कार्य के महत्व को ग्रहण करने में अक्षम है। ऐसा विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा अपने दूसरे देहधारण में किए गए कार्य के अनेक चरणों के लिए है। अधिकांशत: वे जिन्होंने मसीह के वचनों को केवल सुना या देखा है, मगर जिन्होंने उसे कभी देखा नहीं है, उनके पास उसके कार्य की कोई धारणाएं नहीं होतीं; जो मसीह को देख चुके हैं और उसके वचनों को सुना है और साथ ही उसके कार्य का अनुभव किया है, वे उसके कार्य को स्वीकार करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। क्या यह इस वजह से नहीं है कि मसीह का प्रकटन और सामान्य मानवता मनुष्य की अभिरुचि के अनुसार नहीं है? जो मसीह के चले जाने के बाद उसके कार्य को स्वीकार करते हैं, उन्हें ऐसी कठिनाइयां नहीं आएँगी, क्योंकि वे मात्र उसका कार्य स्वीकार करते हैं और मसीह की सामान्य मानवता के संपर्क में नहीं आते। मनुष्य परमेश्वर के बारे में अपनी धारणाएं छोड़ने में असमर्थ है तथा इसके बजाय कठोरता से उसकी पड़ताल करता है; ऐसा इस तथ्य के कारण है कि मनुष्य केवल उसके प्रकटन पर अपना ध्यान केंद्रित करता है तथा उसके कार्य तथा वचनों के आधार पर उसके सार को पहचानने में असमर्थ रहता है। यदि मनुष्य उसके प्रकटन के प्रति अपनी आँखें बंद कर ले या मसीह की मानवता पर चर्चा से बचे और केवल उसकी दिव्यता की बात करे, जिसके कार्य तथा वचन किसी भी मनुष्य द्वारा अप्राप्य हैं, तो मनुष्य की धारणाएं घटकर आधी रह जाएँगी, इस हद तक कि मनुष्य की समस्त कठिनाइयों का समाधान हो जाएगा। देहधारी परमेश्वर के कार्य के दौरान, मनुष्य उसे सहन नहीं कर सकता और उसके बारे में असंख्य धारणाओं से भरा रहता है और प्रतिरोध एवं अवज्ञा के दृष्टांत आम बात हैं। मनुष्य परमेश्वर के अस्तित्व को सहन नहीं कर सकता, मसीह की विनम्रता तथा अदृश्यता के प्रति उदारता नहीं दिखा सकता, या मसीह के उस सार को क्षमा नहीं कर सकता, जो स्वर्गिक परमपिता का आज्ञापालन करता है। इसलिए अपना कार्य समाप्त करने के पश्चात वह मनुष्य के साथ अनंतकाल तक नहीं रह सकता, क्योंकि मनुष्य अपने साथ परमेश्वर को रहने की अनुमति देने में अनिच्छुक है। यदि मनुष्य उसके कार्य के समय के दौरान उसके प्रति उदारता नहीं दिखा सकता, तो उसके द्वारा सेवकाई पूर्ण करने के बाद वे अपने को धीरे-धीरे उसके वचनों का अनुभव लेते देखते हुए, संभवतः कैसे उसे अपने साथ रखना सहन

कर सकते हैं? क्या कई उसके कारण पतित नहीं हो जाएँगे? मनुष्य केवल पृथ्वी पर उसे कार्य करने की अनुमति देता है; यह मनुष्य की उदारता की अधिकतम सीमा है। यदि उसके कार्य के लिए न होता, तो मनुष्य ने बहुत पहले ही उसे धरती से निष्कासित कर दिया होता, इसलिए एक बार उसका कार्य समाप्त हो जाने के पश्चात् वे कितनी कम उदारता दिखाएँगे? तब क्या मनुष्य उसे मार नहीं देगा और यंत्रणा देकर मार नहीं डालेगा? यदि उसे मसीह नहीं कहा जाता, तब संभवतः वह मानव जाति के बीच कार्य नहीं कर सकता था; यदि वह स्वयं परमेश्वर की पहचान लेकर कार्य न करता और इसके बजाय केवल एक सामान्य व्यक्ति के रूप में कार्य करता, तो मनुष्य उसके द्वारा एक भी वाक्य कहा जाना सहन न करता, उसके कार्य को तो लेशमात्र भी सहन नहीं करता। अतः वह अपनी पहचान को केवल अपने कार्य में अपने साथ रख सकता है। इस तरीके से, उसका कार्य तब की तुलना में अधिक शक्तिशाली होता है जब वह ऐसा नहीं करता, क्योंकि सभी मनुष्य प्रतिष्ठा तथा बड़ी पहचान की आज्ञापालन के इच्छुक होते हैं। यदि उसने तब स्वयं परमेश्वर की पहचान धारण न की होती जब उसने स्वयं परमेश्वर के रूप में कार्य किया या प्रकट हुआ था, तो उसे कार्य करने का अवसर बिलकुल भी न मिलता। इस तथ्य के बावज़ूद कि उसमें परमेश्वर का सार और मसीह का अस्तित्व है, मनुष्य चैन से नहीं बैठता और मानवजाति के बीच उसे आराम से कार्य करने की अनुमति नहीं देता। वह अपने कार्य में स्वयं परमेश्वर की पहचान रखता है; यद्यपि इस प्रकार का कार्य बिना ऐसी पहचान के दर्जनों बार किए गए कार्य से अधिक शक्तिशाली है, फिर भी मनुष्य उसके प्रति पूर्ण रूप से आज्ञाकारी नहीं है, क्योंकि मनुष्य केवल उसकी प्रतिष्ठा के प्रति समर्पण करता है, उसके सार को नहीं। यदि ऐसा है, तो किसी दिन जब शायद मसीह अपना पद छोड़ देगा, तब क्या मनुष्य उसे केवल एक दिन को भी जीवित रहने की अनुमति देगा? परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्य के साथ रहने का इच्छुक है ताकि वह उन प्रभावों को देख सके, जो उसके हाथ से किया गया कार्य आने वाले वर्षों में उत्पन्न करेगा। हालाँकि, मनुष्य एक दिन के लिए भी उसकी मौजूदगी सहने में असमर्थ है, इसलिए वह केवल त्याग कर सकता है। परमेश्वर को मनुष्य के बीच वह कार्य करने की, जो उसे करना चाहिए तथा अपनी सेवकाई पूरी करने की अनुमति देना पहले ही मनुष्य की उदारता तथा अनुग्रह की अधिकतम सीमा है। यद्यपि जो उसके द्वारा व्यक्तिगत रूप से जीते जा चुके हैं, वही उसके प्रति ऐसा अनुग्रह दर्शाते हैं, तब भी वे उसे रुके रहने की अनुमति तब तक देते हैं, जब तक कि उसका कार्य समाप्त नहीं हो जाता और उसके बाद एक क्षण भी नहीं। यदि ऐसा है, तो उनका क्या, जिन्हें उसने नहीं जीता है? क्या यह कारण नहीं है कि मनुष्य देहधारी

परमेश्वर से इस प्रकार का व्यवहार करता है क्योंकि वह ऐसा मसीह है, जो सामान्य मनुष्य के आवरण में है? यदि उसके पास केवल दिव्यता होती और सामान्य मानवता न होती, तब क्या मनुष्य की कठिनाइयां अत्यंत आसानी से सुलझाई नहीं जातीं? इस तथ्य के बावज़ूद कि उसका सार बिलकुल मसीह का सार है, जो अपने स्वर्गिक परमपिता की इच्छा के प्रति समर्पित है, मनुष्य ईर्ष्या से उसकी दिव्यता स्वीकार करता है और उसके सामान्य मनुष्य के आवरण में कोई रुचि नहीं दिखाता। अपने आप में, वह मनुष्य के बीच ख़ुशी तथा दुःख दोनों में सहभागी बनने के अपने कार्य को केवल निरस्त कर सकता है, क्योंकि मनुष्य उसके अस्तित्व को अब और नहीं सह सकता।

मनुष्य के सामान्य जीवन को बहाल करना और उसे एक अद्‌भुत मंज़िल पर ले जाना

मनुष्य आज के कार्य और भविष्य के कार्य को तो थोड़ा समझता है, किंतु वह उस मंज़िल को नहीं समझता, जिसमें मानव-जाति प्रवेश करेगी। एक प्राणी के रूप में मनुष्य को प्राणी का कर्तव्य निभाना चाहिए : जो कुछ भी परमेश्वर करता है, उसमें मनुष्य को उसका अनुसरण करना चाहिए; जैसे मैं तुम लोगों को बताता हूँ, वैसे ही तुम्हें आगे बढ़ना चाहिए। तुम्हारे पास अपने लिए चीज़ों का प्रबंधन करने का कोई तरीका नहीं है, और तुम्हारा स्वयं पर कोई अधिकार नहीं है; सब-कुछ परमेश्वर के आयोजन पर छोड़ दिया जाना चाहिए, और हर चीज़ उसके हाथों में है। यदि परमेश्वर के कार्य ने मनुष्य को एक अंत, एक अद्‌भुत मंज़िल समय से पहले प्रदान कर दिए होते, और यदि परमेश्वर ने इसका उपयोग मनुष्य को लुभाने और उससे अपना अनुसरण करवाने के लिए किया होता—यदि उसने मनुष्य के साथ कोई सौदा किया होता—तो यह विजय न होती, न ही यह मनुष्य के जीवन को आकार देने के लिए होता। यदि परमेश्वर को मनुष्य के अंत का उपयोग उसे नियंत्रित करने और उसके हृदय को पाने के लिए करना होता, तो इसमें वह मनुष्य को पूर्ण नहीं कर रहा होता, न ही वह मनुष्य को पाने में सक्षम होता, बल्कि इसके बजाय वह मंज़िल का उपयोग मनुष्य को नियंत्रित करने के लिए कर रहा होता। मनुष्य भावी अंत, अंतिम मंज़िल, और आशा करने के लिए कोई अच्छी चीज़ है या नहीं, इससे अधिक और किसी चीज़ की परवाह नहीं करता। यदि विजय के कार्य के दौरान मनुष्य को एक खूबसूरत आशा दे दी जाती, और यदि मनुष्य पर विजय से पहले उसे पाने के लिए उपयुक्त मंज़िल दे दी जाती, तो न केवल मनुष्य पर विजय ने अपना परिणाम प्राप्त न

किया होता, बल्कि विजय के कार्य का परिणाम भी प्रभावित हो गया होता। अर्थात्, विजय का कार्य मनुष्य के भाग्य और उसके भविष्य की संभावनाओं को छीनने और मनुष्य के विद्रोही स्वभाव का न्याय और उसकी ताड़ना करने से अपना परिणाम प्राप्त करता है। इसे मनुष्य के साथ सौदा करके, अर्थात् मनुष्य को आशीष और अनुग्रह देकर प्राप्त नहीं किया जाता, बल्कि मनुष्य को उसकी "स्वतंत्रता" से वंचित करके और उसकी भविष्य की संभावनाओं को जड़ से उखाड़कर उसकी वफादारी प्रकट करके प्राप्त किया जाता है। यह विजय के कार्य का सार है। यदि मनुष्य को बिलकुल आरंभ में ही एक खूबसूरत आशा दे दी गई होती, और ताड़ना और न्याय का कार्य बाद में किया जाता, तो मनुष्य इस ताड़ना और न्याय को इस आधार पर स्वीकार कर लेता कि उसके पास भविष्य की संभावनाएँ हैं, और अंत में, सभी प्राणियों द्वारा सृजनकर्ता की शर्त-रहित आज्ञाकारिता और आराधना प्राप्त नहीं होती; वहाँ केवल अंधी, ज्ञान से रहित आज्ञाकारिता ही होती, या फिर मनुष्य परमेश्वर से आँख मूँदकर माँगें करता, और मनुष्य के हृदय पर पूरी तरह से विजय प्राप्त करना असंभव होता। इसके परिणामस्वरूप, विजय के ऐसे कार्य के लिए मनुष्य को प्राप्त करना, या, इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के लिए गवाही देना असंभव होता। ऐसे प्राणी अपना कर्तव्य निभाने में असमर्थ होते, और वे परमेश्वर के साथ केवल मोल-भाव ही करते; यह विजय न होती, बल्कि करुणा और आशीष होता। मनुष्य के साथ सबसे बड़ी समस्या यही है कि वह अपने भाग्य और भविष्य की संभावनाओं के सिवाय और कुछ नहीं सोचता, और उनसे बहुत प्रेम करता है। मनुष्य अपने भाग्य और भविष्य की संभावनाओं के वास्ते परमेश्वर का अनुसरण करता है; वह परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम की वजह से उसकी आराधना नहीं करता। और इसलिए, मनुष्य पर विजय में, मनुष्य के स्वार्थ, लोभ और ऐसी सभी चीज़ों से निपटकर उन्हें मिटा दिया जाना चाहिए, जो उसके द्वारा परमेश्वर की आराधना में सबसे अधिक व्यवधान डालती हैं। ऐसा करने से मनुष्य पर विजय के परिणाम प्राप्त कर लिए जाएँगे। परिणामस्वरूप, मनुष्य पर विजय के पहले चरणों में यह ज़रूरी है कि मनुष्य की अनियंत्रित महत्वाकांक्षाओं और सबसे घातक कमज़ोरियों को शुद्ध किया जाए, और इसके माध्यम से परमेश्वर के प्रति मनुष्य के प्रेम को प्रकट किया जाए, और मानव-जीवन के बारे में उसके ज्ञान को, परमेश्वर के बारे में उसके दृष्टिकोण को, और उसके अस्तित्व के अर्थ को बदल दिया जाए। इस तरह से, परमेश्वर के प्रति मनुष्य के प्रेम की शुद्धि होती है, जिसका तात्पर्य है कि मनुष्य के हृदय को जीत लिया जाता है। किंतु सभी प्राणियों के प्रति अपने दृष्टिकोण में परमेश्वर केवल जीतने के वास्ते विजय प्राप्त नहीं करता; बल्कि वह मनुष्य को पाने के लिए,

अपनी स्वयं की महिमा के लिए, और मनुष्य की आदिम, मूल सदृशता पुन: हासिल करने के लिए विजय प्राप्त करता है। यदि उसे केवल विजय पाने के वास्ते ही विजय पानी होती, तो विजय के कार्य का महत्व खो गया होता। कहने का तात्पर्य है कि यदि मनुष्य पर विजय पाने के बाद परमेश्वर मनुष्य से पीछा छुड़ा लेता, और उसके जीवन और मृत्यु पर कोई ध्यान नहीं देता, तो यह मानव-जाति का प्रबंधन न होता, न ही मनुष्य पर विजय उसके उद्धार के वास्ते होती। मनुष्य पर विजय पाने के बाद उसे प्राप्त करना, और अंततः एक अद्‌भुत मंज़िल पर उसका आगमन ही उद्धार के समस्त कार्य के केंद्र में है, और केवल यही मनुष्य के उद्धार का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। दूसरे शब्दों में, केवल एक खूबसूरत मंज़िल पर मनुष्य का आगमन और विश्राम में उसका प्रवेश ही भविष्य की वे संभावनाएँ हैं, जो सभी प्राणियों के पास होनी चाहिए, और वह कार्य है जिसे सृजनकर्ता द्वारा किया जाना चाहिए। यदि मनुष्य को यह कार्य करना पड़ता, तो यह बहुत ही सीमित होता : यह मनुष्य को एक निश्चित बिंदु तक ले जा सकता था, किंतु यह मनुष्य को शाश्वत मंज़िल पर ले जाने में सक्षम न होता। मनुष्य की नियति निर्धारित करने में मनुष्य सक्षम नहीं है, इसके अलावा, वह मनुष्य की भविष्य की संभावनाओं और भविष्य की मंज़िल सुनिश्चित करने में भी सक्षम नहीं है। किंतु परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य भिन्न है। चूँकि उसने मनुष्य को सृजा है, इसलिए वह उसकी अगुआई करता है; चूँकि वह मनुष्य को बचाता है, इसलिए वह उसे पूरी तरह से बचाएगा और उसे पूरी तरह से प्राप्त करेगा; चूँकि वह मनुष्य की अगुआई करता है, इसलिए वह उसे उस उपयुक्त मंज़िल पर ले जाएगा, और चूँकि उसने मनुष्य का सृजन किया है और उसका प्रबंध करता है, इसलिए उसे मनुष्य के भाग्य और उसकी भविष्य की संभावनाओं की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। यही वह कार्य है, जिसे सृजनकर्ता द्वारा किया जाता है। यद्यपि विजय का कार्य मनुष्य को भविष्य की संभावनाओं से वंचित करके प्राप्त किया जाता है, फिर भी अंततः मनुष्य को उस उपयुक्त मंज़िल पर अवश्य लाया जाना चाहिए, जिसे परमेश्वर द्वारा उसके लिए तैयार किया गया है। परमेश्वर द्वारा मनुष्य को आकार देने के कारण ही मनुष्य के पास एक मंज़िल है और उसका भाग्य सुनिश्चित है। यहाँ उल्लिखित उपयुक्त मंज़िल, अतीत में शुद्ध की गईं मनुष्य की आशाएँ और भविष्य की संभावनाएँ नहीं हैं; ये दोनों भिन्न हैं। जिन चीज़ों की मनुष्य आशा और खोज करता है, वे मनुष्य की नियत मंज़िल के बजाय, देह की फिज़ूल अभिलाषाओं के अनुसरण से उत्पन्न लालसाएँ हैं। इस बीच, जो कुछ परमेश्वर ने मनुष्य के लिए तैयार किया है, वह उसे शुद्ध किए जाने के बाद देय ऐसे आशीष और प्रतिज्ञाएँ हैं, जिन्हें परमेश्वर ने संसार के सृजन के बाद मनुष्य के लिए तैयार किया था,

और जो मनुष्य की पसंद, धारणाओं, कल्पनाओं या देह के द्वारा दूषित नहीं हैं। यह मंज़िल किसी व्यक्ति-विशेष के लिए तैयार नहीं की गई है, बल्कि यह संपूर्ण मानव-जाति के लिए विश्राम का स्थल है। और इसलिए, यह मंज़िल मानव-जाति के लिए सबसे उपयुक्त मंज़िल है।

सृजनकर्ता सृष्टि के सभी प्राणियों का आयोजन करने का इरादा रखता है। तुम्हें उसके द्वारा की जाने वाली किसी भी चीज़ को ठुकराना या उसकी अवज्ञा नहीं करनी चाहिए, न ही तुम्हें उसके प्रति विद्रोही होना चाहिए। जब उसके द्वारा किया जाने वाला कार्य अंततः उसके लक्ष्य हासिल करेगा, तो वह इसमें महिमा प्राप्त करेगा। आज ऐसा क्यों नहीं कहा जाता कि तुम मोआब के वंशज हो, या बड़े लाल अजगर की संतान हो? क्यों चुने हुए लोगों के बारे में कोई बातचीत नहीं होती, और केवल सृजित प्राणियों के बारे में ही बातचीत होती है? सृजित प्राणी—यह मनुष्य का मूल नाम था, और यही उसकी स्वाभाविक पहचान है। नाम केवल इसलिए अलग-अलग होते हैं, क्योंकि कार्य के युग और काल अलग-अलग होते हैं; वास्तव में, मनुष्य एक साधारण प्राणी है। सभी प्राणियों को, चाहे वे अत्यंत भ्रष्ट हों या अत्यंत पवित्र, एक प्राणी का कर्तव्य अवश्य निभाना चाहिए। जब परमेश्वर विजय का कार्य करता है, तो वह तुम्हारे भविष्य की संभावनाओं, भाग्य या मंज़िल का उपयोग करके तुम्हें नियंत्रित नहीं करता। वास्तव में इस तरह से कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है। विजय के कार्य का लक्ष्य मनुष्य से एक सृजित प्राणी के कर्तव्य का पालन करवाना है, उससे सृजनकर्ता की आराधना करवाना है; केवल इसके बाद ही वह अद्भुत मंज़िल में प्रवेश कर सकता है। मनुष्य का भाग्य परमेश्वर के हाथों से नियंत्रित होता है। तुम स्वयं को नियंत्रित करने में असमर्थ हो : हमेशा अपनी ओर से भाग-दौड़ करते रहने और व्यस्त रहने के बावजूद मनुष्य स्वयं को नियंत्रित करने में अक्षम रहता है। यदि तुम अपने भविष्य की संभावनाओं को जान सकते, यदि तुम अपने भाग्य को नियंत्रित कर सकते, तो क्या तुम तब भी एक सृजित प्राणी होते? संक्षेप में, परमेश्वर चाहे जैसे भी कार्य करे, उसका समस्त कार्य केवल मनुष्य के वास्ते होता है। उदाहरण के लिए, स्वर्ग और पृथ्वी और उन सभी चीज़ों को लो, जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य की सेवा करने के लिए सृजित किया : चंद्रमा, सूर्य और तारे, जिन्हें उसने मनुष्य के लिए बनाया, जानवर और पेड़-पौधे, बसंत, ग्रीष्म, शरद और शीत ऋतु इत्यादि—ये सब मनुष्य के अस्तित्व के वास्ते ही बनाए गए हैं। और इसलिए, परमेश्वर मनुष्य को चाहे जैसे भी ताड़ित करता हो या चाहे जैसे भी उसका न्याय करता हो, यह सब मनुष्य के उद्धार के वास्ते ही है। यद्यपि वह मनुष्य को उसकी दैहिक आशाओं से वंचित कर देता है, पर यह मनुष्य को शुद्ध करने के वास्ते है,

और मनुष्य का शुद्धिकरण इसलिए किया जाता है, ताकि वह जीवित रह सके। मनुष्य की मंज़िल सृजनकर्ता के हाथ में है, तो मनुष्य स्वयं को नियंत्रित कैसे कर सकता है?

एक बार जब विजय का कार्य पूरा कर लिया जाएगा, तब मनुष्य को एक सुंदर संसार में लाया जाएगा। निस्संदेह, यह जीवन तब भी पृथ्वी पर ही होगा, किंतु यह मनुष्य के आज के जीवन के बिलकुल विपरीत होगा। यह वह जीवन है, जो संपूर्ण मानव-जाति पर विजय प्राप्त कर लिए जाने के बाद मानव-जाति के पास होगा, यह पृथ्वी पर मनुष्य के लिए एक नई शुरुआत होगी, और मनुष्य के पास इस प्रकार का जीवन होना इस बात का सबूत होगा कि मनुष्य ने एक नए और सुंदर क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है। यह पृथ्वी पर मनुष्य और परमेश्वर के जीवन की शुरुआत होगी। ऐसे सुंदर जीवन का आधार ऐसा होना चाहिए, कि मनुष्य को शुद्ध कर दिए जाने और उस पर विजय पा लिए जाने के बाद वह परमेश्वर के सम्मुख समर्पण कर दे। और इसलिए, मानव-जाति के अद्‌भुत मंज़िल में प्रवेश करने से पहले विजय का कार्य परमेश्वर के कार्य का अंतिम चरण है। ऐसा जीवन ही पृथ्वी पर मनुष्य का भविष्य का जीवन है, पृथ्वी पर सबसे अधिक सुंदर जीवन, उस प्रकार का जीवन जिसकी लालसा मनुष्य करता है, और उस प्रकार का जीवन, जिसे मनुष्य ने संसार के इतिहास में पहले कभी प्राप्त नहीं किया है। यह 6,000 वर्षों के प्रबधंन के कार्य का अंतिम परिणाम है, यह वही है जिसकी मानव-जाति सर्वाधिक अभिलाषा करती है, और यह मनुष्य के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा भी है। किंतु यह प्रतिज्ञा तुरंत पूरी नहीं हो सकती : मनुष्य भविष्य की मंज़िल में केवल तभी प्रवेश करेगा, जब अंत के दिनों का कार्य पूरा कर लिया जाएगा और उस पर पूरी तरह से विजय पा ली जाएगी, अर्थात् जब शैतान को पूरी तरह से पराजित कर दिया जाएगा। शुद्ध कर दिए जाने के बाद मनुष्य पापपूर्ण स्वभाव से रहित हो जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने शैतान को पराजित कर दिया होगा, अर्थात् विरोधी ताक़तों द्वारा कोई अतिक्रमण नहीं होगा, और कोई विरोधी ताक़तें नहीं होंगी जो मनुष्य की देह पर आक्रमण कर सकें। और इसलिए मनुष्य स्वतंत्र और पवित्र होगा—वह शाश्वतता में प्रवेश कर चुका होगा। अंधकार की विरोधी ताकतों को बंधन में रखे जाने पर ही मनुष्य जहाँ कहीं जाएगा, वहाँ स्वतंत्र होगा, और इसलिए वह विद्रोहशीलता या विरोध से रहित होगा। बस शैतान को क़ैद में रखना है, और मनुष्य के साथ सब ठीक हो जाएगा; वर्तमान स्थिति इसलिए विद्यमान है, क्योंकि शैतान अभी भी पृथ्वी पर हर जगह परेशानियाँ खड़ी करता है, और क्योंकि परमेश्वर के प्रबधंन का सपूर्ण कार्य अभी तक समाप्ति पर नहीं पहुँचा है। एक बार जब शैतान को पराजित कर दिया जाएगा, तो मनुष्य पूरी तरह से मुक्त हो जाएगा; जब

मनुष्य परमेश्वर को प्राप्त कर लेगा और शैतान के अधिकार-क्षेत्र से बाहर आ जाएगा, तो वह धार्मिकता के सूर्य को देखेगा। सामान्य मनुष्य के लिए उचित जीवन पुन: प्राप्त कर लिया जाएगा; वह सब, जो सामान्य मनुष्य के पास होना चाहिए—जैसे भले और बुरे में भेद करने की योग्यता, और इस बात की समझ कि किस प्रकार भोजन करना है और किस प्रकार कपड़े पहनने हैं, और सामान्य मानव-जीवन जीने की योग्यता—यह सब पुनः प्राप्त कर लिया जाएगा। यदि हव्वा को साँप द्वारा प्रलोभन न दिया गया होता, तब शुरुआत में मनुष्य के सृजन के बाद उसके पास ऐसा ही सामान्य जीवन होना चाहिए था। उसे पृथ्वी पर भोजन करना, कपड़े पहनना और सामान्य मानव-जीवन जीना चाहिए था। किंतु मनुष्य के भ्रष्ट हो जाने के बाद यह जीवन एक अप्राप्य भ्रम बन गया, यहाँ तक कि आज भी मनुष्य ऐसी चीज़ों की कल्पना करने का साहस नहीं करता। वास्तव में, यह सुंदर जीवन, जिसकी मनुष्य अभिलाषा करता है, एक आवश्यकता है : यदि मनुष्य ऐसी मंज़िल से रहित होता, तब पृथ्वी पर उसका भ्रष्ट जीवन कभी समाप्त न होता, और यदि ऐसा कोई सुंदर जीवन न होता, तो शैतान के भाग्य का या उस युग का कोई समापन न होता, जिसमें शैतान पृथ्वी पर सामर्थ्य रखता है। मनुष्य को ऐसे क्षेत्र में पहुँचना चाहिए, जो अंधकार की ताक़तों के लिए अगम्य हो, और जब मनुष्य वहाँ पहुँच जाएगा, तो यह प्रमाणित हो जाएगा कि शैतान को पराजित कर दिया गया है। इस तरह से, एक बार जब शैतान द्वारा कोई व्यवधान नहीं रहेगा, तो स्वयं परमेश्वर मानव-जाति को नियंत्रित करेगा, और वह मनुष्य के संपूर्ण जीवन को आदेशित और नियंत्रित करेगा; केवल तभी शैतान वास्तव में पराजित होगा। आज मनुष्य का जीवन अधिकांशत: गंदगी का जीवन है; वह अभी भी पीड़ा और संताप का जीवन है। इसे शैतान की पराजय नहीं कहा जा सकता; मनुष्य को अभी भी संताप के सागर से बचना है, अभी भी मानव-जीवन की कठिनाइयों से या शैतान के प्रभाव से बचना है, और उसे अभी भी परमेश्वर का बहुत कम ज्ञान है। मनुष्य की समस्त कठिनाई शैतान द्वारा उत्पन्न की गई थी, यह शैतान ही था जो मनुष्य के जीवन में पीड़ा लाया, और शैतान को बंधन में रखने के बाद ही मनुष्य संताप के सागर से पूरी तरह से बचने में सक्षम होगा। किंतु शैतान का बंधन मनुष्य को शैतान के साथ युद्ध में जीत के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ लाभ बनाकर, मनुष्य के हृदय पर विजय पाने और उसे प्राप्त करने के माध्यम से हासिल किया जाता है।

आज, विजेता बनने और पूर्ण बनाए जाने की मनुष्य की कोशिश ऐसी चीज़ें हैं, जिनकी खोज वह अपने पास पृथ्वी पर समान्य जीवन होने से पहले से कर रहा है, और ये ऐसे उद्देश्य हैं जिनकी तलाश वह

शैतान को बंधन में डालने से पहले करता है। सार रूप में, विजेता बनने और पूर्ण बनाए जाने, या अपना भरपूर उपयोग किए जाने की मनुष्य की कोशिश शैतान के प्रभाव से बचने के लिए है : मनुष्य की कोशश विजेता बनने के लिए है, किंतु अंतिम परिणाम उसका शैतान के प्रभाव से बचना ही होगा। केवल शैतान के प्रभाव से बचने से ही मनुष्य पृथ्वी पर सामान्य मानव-जीवन, और परमेश्वर की आराधना करने वाला जीवन जी सकता है। आज, विजेता बनने और पूर्ण बनाए जाने की मनुष्य की कोशिश ऐसी चीज़ें हैं, जिनकी खोज पृथ्वी पर सामान्य जीवन पाने से पहले की जाती है। उनकी खोज मुख्य रूप से शुद्ध किए जाने और सत्य को अभ्यास में लाने, और सृजनकर्ता की आराधना करने के लिए की जाती है। यदि मनुष्य पृथ्वी पर सामान्य मानव-जीवन, ऐसा जीवन जो कठिनाई या संताप से रहित है, धारण करता है, तो वह विजेता बनने की कोशिश में संलग्न नहीं होगा। "विजेता बनना" और "पूर्ण बनाया जाना" ऐसे उद्देश्य हैं, जिन्हें परमेश्वर मनुष्य को खोज करने के लिए देता है, और इन उद्देश्यों की खोज के माध्यम से वह मनुष्य द्वारा सत्य को अभ्यास में लाने और एक अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करने का कारण बनता है। इसका उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण बनाना और प्राप्त करना है, और विजेता बनने और पूर्ण बनाए जाने की कोशिश मात्र एक साधन है। यदि भविष्य में मनुष्य अद्भुत मंज़िल में प्रवेश करता है, तो वहाँ विजेता बनने और पूर्ण बनाए जाने का कोई संदर्भ नहीं होगा; वहाँ हर सृजित प्राणी केवल अपना कर्तव्य निभा रहा होगा। आज मनुष्य से इन चीज़ों की खोज केवल उसके लिए एक दायरा परिभाषित करने हेतु करवाई जाती है, ताकि मनुष्य की खोज अधिक लक्षित और अधिक व्यावहारिक हो सके। अन्यथा, मनुष्य अस्पष्ट अन्यमनस्कता के बीच रहता और शाश्वत जीवन में प्रवेश का अनुसरण करता, और यदि ऐसा होता, तो क्या मनुष्य और भी अधिक दयनीय न होता? इस तरह से लक्ष्यों या सिद्धांतों के बिना खोज करना—क्या यह आत्म-वंचना नहीं है? अंततः, यह खोज स्वाभाविक रूप से निष्फल होती; अंत में, मनुष्य अभी भी शैतान के अधिकार-क्षेत्र में जीवन बिताता और स्वयं को उससे छुड़ाने में अक्षम होता। स्वयं को ऐसी लक्ष्यहीन खोज के अधीन क्यों किया जाए? जब मनुष्य शाश्वत मंज़िल में प्रवेश करेगा, तो मनुष्य सृजनकर्ता की आराधना करेगा, और चूँकि मनुष्य ने उद्धार प्राप्त कर लिया है और शाश्वतता में प्रवेश कर लिया है, इसलिए मनुष्य किसी उद्देश्य की खोज नहीं करेगा, इसके अतिरिक्त, न ही उसे शैतान द्वारा घेरे जाने की चिंता करने की आवश्यकता होगी। इस समय मनुष्य अपने स्थान को जानेगा और अपना कर्तव्य निभाएगा, और भले ही लोगों को ताड़ना न दी जाए या उनका न्याय न किया जाए, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्तव्य निभाएगा। उस समय मनुष्य पहचान और

हैसियत दोनों से एक प्राणी होगा। तब ऊँच और नीच का भेद नहीं रहेगा; प्रत्येक व्यक्ति बस एक भिन्न कार्य करेगा। फिर भी मनुष्य एक मंज़िल में जीवन बिताएगा, जो मानव-जाति के लिए एक व्यवस्थित और उपयुक्त मंज़िल होगी; मनुष्य सृजनकर्ता की आराधना करने के वास्ते अपना कर्तव्य निभाएगा, और यही वह मानव-जाति होगी, जो शाश्वतता की मानव-जाति बनेगी। उस समय, मनुष्य ने परमेश्वर द्वारा रोशन किया गया जीवन प्राप्त कर लिया होगा, ऐसा जीवन जो परमेश्वर की देखरेख और संरक्षण के अधीन है, ऐसा जीवन जो परमेश्वर के साथ है। मानव-जाति पृथ्वी पर एक सामान्य जीवन जीएगी, और सभी लोग सही मार्ग में प्रवेश करेंगे। 6,000-वर्षीय प्रबंधन योजना ने शैतान को पूरी तरह से पराजित कर दिया होगा, अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य के सृजन के समय की उसकी मूल छवि पुनः प्राप्त कर ली होगी, और इस प्रकार, परमेश्वर का मूल इरादा पूरा हो गया होगा। शुरुआत में, शैतान द्वारा मानव-जाति को भ्रष्ट किए जाने से पहले, मानव-जाति पृथ्वी पर एक सामान्य जीवन जीती थी। बाद में, जब मनुष्य को शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया, तो मनुष्य ने इस सामान्य जीवन को गँवा दिया, और इसलिए, मनुष्य के सामान्य जीवन को पुनः प्राप्त करने के लिए परमेश्वर का प्रबधंन-कार्य और शैतान के साथ उसका युद्ध शुरू हुआ। जब परमेश्वर का 6,000-वर्षीय कार्य समाप्ति पर पहुँचेगा, केवल तभी पृथ्वी पर संपूर्ण मानव-जाति का जीवन आधिकारिक रूप से आरंभ होगा, केवल तभी मनुष्य के पास एक अद्‌भुत जीवन होगा, और परमेश्वर आरंभ में मनुष्य के सृजन के प्रयोजन को और साथ ही मनुष्य की मूल सदृशता को पुनः प्राप्त करेगा। और इसलिए, एक बार जब मनुष्य के पास पृथ्वी पर मानव-जाति का सामान्य जीवन होगा, तो मनुष्य विजेता बनने या पूर्ण बनाए जाने की कोशिश नहीं करेगा, क्योंकि मनुष्य पवित्र होगा। जिस "विजेता" और "पूर्ण बनाए जाने" के बारे में लोग बात करते हैं, वे ऐसे उद्देश्य हैं, जो मनुष्य को परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध के दौरान खोज करने के लिए दिए गए हैं, और वे केवल इसलिए अस्तित्व में हैं, क्योंकि मनुष्य को भ्रष्ट कर दिया गया है। ऐसा है कि तुम्हें एक उद्देश्य देने और तुमसे उस उद्देश्य के लिए प्रयास करवाने से शैतान पराजित हो जाएगा। तुमसे विजेता बनने या तुम्हें पूर्ण बनाए जाने या उपयोग किए जाने के लिए कहना यह आवश्यक बनाता है कि तुम शैतान को लज्जित करने के लिए गवाही दो। अंत में, मनुष्य पृथ्वी पर सामान्य मानव-जीवन जीएगा, और मनुष्य पवित्र होगा; जब ऐसा होगा, तो क्या लोग फिर भी विजेता बनना चाहेंगे? क्या वे सभी सृष्टि के प्राणी नहीं हैं? विजेता बनने और पूर्ण होने की बात करें, तो ये वचन शैतान की ओर, और मनुष्य की मलिनता की ओर निर्देशित हैं। क्या यह "विजेता" शब्द शैतान पर और विरोधी ताक़तों पर

विजय के संदर्भ में नहीं है? जब तुम कहते हो कि तुम्हें पूर्ण बना दिया गया है, तो तुम्हारे भीतर क्या पूर्ण बनाया गया है? क्या ऐसा नहीं है कि तुमने स्वयं को अपने भ्रष्ट शैतानी स्वभाव से अलग कर लिया है, ताकि तुम परमेश्वर के लिए सर्वोच्च प्रेम प्राप्त कर सको? ऐसी बातें मनुष्य के भीतर की गंदी चीज़ों के संबंध में, और शैतान के संबंध में कही जाती हैं; उन्हें परमेश्वर के संबंध में नहीं कहा जाता।

यदि तुम अब विजेता बनने और पूर्ण बनाए जाने की कोशिश नहीं करते, तो भविष्य में जब पृथ्वी पर मानव-जाति एक सामान्य जीवन व्यतीत करेगी, तो ऐसी कोशिश के लिए कोई अवसर नहीं होगा। उस समय हर प्रकार के व्यक्ति का अंत प्रकट कर दिया गया होगा। उस समय यह स्पष्ट हो जाएगा कि तुम किस प्रकार की चीज़ हो, और यदि तुम विजेता होने की इच्छा करते हो या पूर्ण बनाए जाने की इच्छा करते हो, तो यह असंभव होगा। केवल इतना ही होगा कि उजागर किए जाने के बाद मनुष्य को उसकी विद्रोहशीलता के कारण दंड दिया जाएगा। उस समय कुछ लोगों के लिए विजेता बनने और दूसरों के लिए पूर्ण बनाए जाने हेतु, या कुछ लोगों के लिए परमेश्वर का ज्येष्ठ पुत्र बनने और दूसरों के लिए परमेश्वर के पुत्र बनने हेतु, मनुष्य की खोज दूसरों की अपेक्षा ऊँचे दर्जे की नहीं होगी; वे इन चीज़ों की खोज नहीं करेंगे। सभी परमेश्वर के प्राणी होंगे, सभी पृथ्वी पर जीवन बिताएँगे, और सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के साथ मिलकर जीवन जीएँगे। अभी परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध का समय है, यह ऐसा समय है जिसमें यह युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है, ऐसा समय जिसमें मनुष्य को अभी तक पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया गया है; यह संक्रमण की अवधि है। और इसलिए, मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह या तो एक विजेता या परमेश्वर के लोगों में से एक बनने की कोशिश करे। आज हैसियत में भिन्नताएँ हैं, किंतु जब समय आएगा तब ऐसी कोई भिन्नताएँ नहीं होंगी : उन सभी लोगों की हैसियत एक जैसी होगी जो विजयी हुए हैं, वे मानव-जाति के योग्य सदस्य होंगे, और पृथ्वी पर समानता से जीवन बिताएँगे, जिसका अर्थ है कि वे सभी योग्य सृजित प्राणी होंगे, और सभी को एक जैसा प्रदान किया जाएगा। चूँकि परमेश्वर के कार्य के युग भिन्न-भिन्न हैं, और उसके कार्य के उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए यदि यह कार्य तुम लोगों में किया जाता है, तो तुम लोग पूर्ण बनाए जाने और विजेता बनने के पात्र हो; यदि इसे विदेश में किया जाता, तो वे जीते जाने वाले लोगों का पहला समूह बनने, और पूर्ण बनाए जाने वाले लोगों का पहला समूह बनने के पात्र होते। आज इस कार्य को विदेश में नहीं किया जाता, इसलिए दूसरे देशों के लोग पूर्ण बनाए जाने और विजेता बनने के पात्र नहीं हैं, और पहला समूह बनना उनके लिए असंभव है। चूँकि परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य भिन्न है, परमेश्वर के

कार्य का युग भिन्न है, और इसका दायरा भिन्न है, इसलिए यहाँ पहला समूह है, अर्थात् यहाँ विजेता हैं, और इसलिए एक दूसरा समूह भी होगा, जिसे पूर्ण बनाया जाएगा। एक बार जब पहले समूह को पूर्ण बनाया जा चुका होगा, तो यह एक नमूना और आदर्श होगा, और इसलिए भविष्य में पूर्ण किए जाने वालों का एक दूसरा और तीसरा समूह होगा, किंतु शाश्वतता में वे सभी एक-समान होंगे, और हैसियत का कोई वर्गीकरण नहीं होगा। उन्हें बस विभिन्न समयों में पूर्ण बनाया गया होगा, और उनकी हैसियत में कोई अंतर नहीं होंगे। जब वह समय आएगा कि प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण बना लिया जाएगा और संपूर्ण विश्व का कार्य समाप्त कर लिया जाएगा, तो हैसियत में कोई भिन्नताएँ नहीं होंगी, और सभी समान हैसियत के होंगे। आज इस कार्य को तुम लोगों के बीच किया जाता है, ताकि तुम लोग विजेता बन जाओ। यदि इसे ब्रिटेन में किया जाता, तो ब्रिटेन में पहला समूह होता, उसी तरह से जैसे तुम पहले समूह होगे। आज जिस प्रकार तुम लोगों में कार्य किया जा रहा है, उसमें तुम अनुग्रह द्वारा विशेष रूप से धन्य हो, और यदि यह कार्य तुम लोगों पर न किया गया होता, तो तुम लोग भी दूसरा समूह, या तीसरा, या चौथा, या पाँचवाँ समूह होते। यह केवल कार्य के क्रम में भिन्नता की वजह से है; पहला समूह और दूसरा समूह यह सूचित नहीं करता कि एक दूसरे से ऊँचा या नीचा है, यह केवल उस क्रम को सूचित करता है जिसमें इन लोगों को पूर्ण बनाया जाता है। आज ये वचन तुम लोगों को संप्रेषित किए जा रहे हैं, किंतु तुम लोगों को पहले सूचित क्यों नहीं किया गया? क्योंकि, किसी प्रक्रिया के बिना लोगों में चरम स्थितियों तक जाने की प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए, यीशु ने अपने समय में कहा था : "जैसे मैं गया था, वैसे ही आऊँगा।" आज, बहुत-से लोग इन शब्दों से मोहित हैं, और वे केवल सफेद पोशाक पहनना चाहते हैं और अपने स्वर्गारोहण का इंतजार करते हैं। इसलिए, ऐसे बहुत-से वचन हैं, जिन्हें बहुत पहले नहीं बोला जा सकता; यदि उन्हें बहुत पहले बोल दिया जाए, तो मनुष्य चरम स्थितियों तक जाने में प्रवृत्त हो जाएगा। मनुष्य की कद-काठी बहुत छोटी है, और वह इन वचनों की सच्चाई देखने में असमर्थ है।

जब मनुष्य पृथ्वी पर मनुष्य का असली जीवन प्राप्त कर लेगा और शैतान की सभी ताक़तों को बंधन में डाल दिया जाएगा, तब मनुष्य आसानी से पृथ्वी पर जीवन-यापन करेगा। चीज़ें उतनी जटिल नहीं होंगी, जितनी आज हैं : मानवीय रिश्ते, सामाजिक रिश्ते, जटिल पारिवारिक रिश्ते—वे इतनी परेशानी, इतना दर्द लेकर आते हैं! यहाँ मनुष्य का जीवन कितना दयनीय है! एक बार मनुष्य पर विजय प्राप्त कर ली जाएगी, तो उसका दिल और दिमाग बदल जाएगा : उसके पास ऐसा हृदय होगा, जो परमेश्वर पर श्रद्धा रखेगा और

उससे प्रेम करेगा। एक बार जब विश्व के ऐसे लोगों पर, जो परमेश्वर से प्रेम करने की इच्छा रखते हैं, विजय पा ली जाएगी, अर्थात् एक बार जब शैतान को हरा दिया जाएगा, और एक बार जब शैतान को—अंधकार की सभी ताक़तों को—बंधन में डाल दिया जाएगा, तो पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन कष्टहीन हो जाएगा, और वह पृथ्वी पर आज़ादी से जीवन जीने में सक्षम हो जाएगा। यदि मनुष्य का जीवन दैहिक रिश्तों और देह की जटिलताओं से रहित होता, तो यह बहुत अधिक आसान होता। मनुष्य के दैहिक रिश्ते बहुत जटिल होते हैं, और मनुष्य के लिए ऐसी चीज़ों का होना इस बात का प्रमाण है कि उसने स्वयं को अभी तक शैतान के प्रभाव से मुक्त नहीं किया है। यदि अपने प्रत्येक भाई-बहन के साथ तुम्हारा रिश्ता समान होता, यदि अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ तुम्हारा रिश्ता समान होता, तो तुम्हें कोई चिंता न होती और किसी के बारे में चिंता करने की आवश्यकता न होती। इससे बेहतर और कुछ नहीं हो सकता था, और इस तरह से मनुष्य को उसकी आधी तकलीफों से मुक्ति मिल गई होती। पृथ्वी पर एक सामान्य मानवीय जीवन जीने से मनुष्य स्वर्गदूतों के समान होगा; यद्यपि अभी भी वह देह का प्राणी होगा, फिर भी वह स्वर्गदूत के समान होगा। यही वह अंतिम प्रतिज्ञा है, आख़िरी वादा, जो मनुष्य को प्रदान किया गया है। आज मनुष्य ताड़ना और न्याय से होकर गुज़रता है; क्या तुम सोचते हो कि मनुष्य का इन चीज़ों का अनुभव अर्थहीन है? क्या ताड़ना और न्याय का कार्य बिना किसी कारण के किया जा सकता है? पहले ऐसा कहा गया है कि मनुष्य को ताड़ना देना और उसका न्याय करना उसे अथाह गड्ढे में डालना है, जिसका अर्थ है उसके भाग्य और उसके भविष्य की संभावनाओं को छीन लेना। यह एक चीज़ के वास्ते है : मनुष्य का शुद्धिकरण। ऐसा नहीं है कि मनुष्य को जानबूझकर अथाह गड्ढे में डाला जाता है, जिसके बाद परमेश्वर उससे अपना पीछा छुड़ा लेता है। इसके बजाय, यह मनुष्य के भीतर की विद्रोहशीलता से निपटने के लिए है, ताकि अंत में मनुष्य के भीतर की चीज़ों को शुद्ध किया जा सके, ताकि उसे परमेश्वर का सच्चा ज्ञान हो सके और वह एक पवित्र इंसान के समान हो सके। यदि ऐसा कर लिया जाता है, तो सब-कुछ पूरा हो जाएगा। वास्तव में, जब मनुष्य के भीतर की उन चीज़ों से निपटा जाता है जिनसे निपटा जाना है, और मनुष्य ज़बर्दस्त गवाही देता है, तो शैतान भी परास्त हो जाएगा, और यद्यपि उन चीज़ों में से कुछ चीज़ें हो सकती हैं, जो मूल रूप से मनुष्य के भीतर हों, जिन्हें पूरी तरह से शुद्ध न किया गया हो, फिर भी एक बार जब शैतान को हरा दिया जाएगा, तो वह अब और समस्या खड़ी नहीं करेगा, और उस समय मनुष्य को पूरी तरह से शुद्ध कर लिया गया होगा। मनुष्य ने कभी भी ऐसे जीवन का अनुभव नहीं किया है, किंतु जब शैतान को हरा दिया जाएगा, तब सब-

कुछ व्यवस्थित हो जाएगा और मनुष्य के भीतर की उन सभी तुच्छ चीज़ों का समाधान हो जाएगा; एक बार जब मुख्य समस्या को सुलझा दिया जाएगा, तो अन्य सभी परेशानियाँ समाप्त हो जाएँगी। पृथ्वी पर परमेश्वर के इस देहधारण के दौरान, जब वह मनुष्य के बीच व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करता है, तो वह सब कार्य जिसे वह करता है, शैतान को हराने के लिए है, और वह मनुष्य पर विजय पाने और तुम लोगों को पूर्ण करने के माध्यम से शैतान को हराएगा। जब तुम लोग ज़बर्दस्त गवाही दोगे, तो यह भी शैतान की हार का एक चिह्न होगा। शैतान को हराने के लिए पहले मनुष्य पर विजय पाई जाती है और अंततः उसे पूरी तरह से पूर्ण बनाया जाता है। किंतु, सार रूप में, शैतान की हार के साथ-साथ यह संताप के इस खाली सागर से संपूर्ण मानव-जाति का उद्धार भी है। कार्य चाहे संपूर्ण जगत में किया जाए या चीन में, यह सब शैतान को हराने और संपूर्ण मानव-जाति का उद्धार करने के लिए है, ताकि मनुष्य विश्राम के स्थान में प्रवेश कर सके। देहधारी परमेश्वर, यह सामान्य देह, निश्चित रूप से शैतान को हराने के वास्ते है। देह में परमेश्वर के कार्य का उपयोग स्वर्ग के नीचे के उन सभी लोगों का उद्धार करने के लिए किया जाता है, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, यह संपूर्ण मानव-जाति पर विजय पाने, और इसके अतिरिक्त, शैतान को हराने के वास्ते है। परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य के मर्म को संपूर्ण मानव-जाति का उद्धार करने के लिए शैतान की पराजय से अलग नहीं किया जा सकता। क्यों इस कार्य में अधिकांशतः तुम लोगों से हमेशा गवाही देने की बात की जाती है? और यह गवाही किसकी ओर निर्देशित है? क्या यह शैतान की ओर निर्देशित नहीं है? यह गवाही परमेश्वर के लिए दी जाती है और यह प्रमाणित करने के लिए दी जाती है कि परमेश्वर के कार्य ने अपना परिणाम प्राप्त कर लिया है। गवाही देना शैतान को हराने के कार्य से संबंधित है; यदि शैतान के साथ कोई युद्ध न होता, तो मनुष्य से गवाही देने की अपेक्षा न की जाती। ऐसा इसलिए है, क्योंकि शैतान को हराया जाना चाहिए, उसी समय, मनुष्य को बचाने के रूप में, परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य शैतान के सामने परमेश्वर की गवाही दे, जिसका उपयोग वह मनुष्य का उद्धार करने और शैतान के साथ युद्ध करने के लिए करता है। परिणामस्वरूप, मनुष्य उद्धार का लक्ष्य और शैतान को हराने का एक साधन दोनों है, और इसलिए मनुष्य परमेश्वर के संपूर्ण प्रबधंन-कार्य के केंद्रीय भाग में है, और शैतान महज विनाश का लक्ष्य है, शत्रु है। तुम्हें लग सकता है कि तुमने कुछ नहीं किया है, किंतु तुम्हारे स्वभाव में बदलावों के कारण गवाही दे दी गई है, और यह गवाही शैतान की ओर निर्देशित है और यह मनुष्य के लिए नहीं दी गई है। मनुष्य ऐसी गवाही का आनंद लेने के लिए उपयुक्त नहीं है। वह परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य को कैसे

समझ सकता है? परमेश्वर की लड़ाई का लक्ष्य शैतान है; इस बीच मनुष्य केवल उद्धार का लक्ष्य है। मनुष्य का भ्रष्ट शैतानी स्वभाव है, और वह इस कार्य को समझने में अक्षम है। यह शैतान की भ्रष्टता के कारण है और मनुष्य में जन्मजात नहीं है, बल्कि शैतान द्वारा निर्देशित किया जाता है। आज परमेश्वर का मुख्य कार्य शैतान को हराना है, अर्थात् मनुष्य पर पूरी तरह से विजय पाना है, ताकि मनुष्य शैतान के सामने परमेश्वर की अंतिम गवाही दे सके। इस तरह सभी चीज़ें पूरी कर ली जाएँगी। बहुत-से मामलों में, तुम्हारी खुली आँखों को ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ भी नहीं किया गया है, किंतु वास्तव में कार्य पहले ही पूरा किया जा चुका होता है। मनुष्य अपेक्षा करता है कि पूर्णता का समस्त कार्य दृष्टिगोचर हो, किंतु तुम्हारे लिए इसे दृष्टिगोचर किए बिना ही मैंने अपना कार्य पूरा कर लिया है, क्योंकि शैतान ने समर्पण कर दिया है, जिसका मतलब है कि उसे पूरी तरह से पराजित किया जा चुका है, कि परमेश्वर की बुद्धि, सामर्थ्य और अधिकार सबने शैतान को परास्त कर दिया है। यह ठीक वही गवाही है, जिसे दिया जाना चाहिए, और हालाँकि मनुष्य में इसकी कोई स्पष्ट अभिव्यक्ति नहीं है, हालाँकि यह खुली आँखों देखी नहीं जा सकती, फिर भी शैतान को पहले ही पराजित किया जा चुका है। यह संपूर्ण कार्य शैतान के विरुद्ध निर्देशित है और शैतान के साथ युद्ध के कारण किया जाता है। और इसलिए, ऐसी बहुत-सी चीज़ें हैं, जिन्हें मनुष्य सफल हुई नहीं देखता, किंतु जो परमेश्वर की नज़रों में बहुत समय पहले ही सफलतापूर्वक पूरी कर दी गई थीं। यह परमेश्वर के समस्त कार्य की भीतरी सच्चाइयों में से एक है।

एक बार जब शैतान को पराजित कर दिया जाएगा, अर्थात् एक बार जब मनुष्य पर पूरी तरह से विजय पा ली जाएगी, तो मनुष्य की समझ में आ जाएगा कि यह सब कार्य उद्धार के वास्ते है, और इस उद्धार का तात्पर्य मनुष्य को शैतान के हाथों से पुनः प्राप्त करना है। परमेश्वर के 6,000 वर्षों के प्रबधंन-कार्य को तीन चरणों में बाँटा जाता है : व्यवस्था का युग, अनुग्रह का युग और राज्य का युग। कार्य के ये तीनों चरण मानव-जाति के उद्धार के वास्ते हैं, अर्थात् ये उस मानव-जाति के उद्धार के लिए हैं, जिसे शैतान द्वारा बुरी तरह से भ्रष्ट कर दिया गया है। किंतु, साथ ही, वे इसलिए भी हैं, ताकि परमेश्वर शैतान के साथ युद्ध कर सके। इस प्रकार, जैसे उद्धार के कार्य को तीन चरणों में बाँटा जाता है, ठीक वैसे ही शैतान के साथ युद्ध को भी तीन चरणों में बाँटा जाता है, और परमेश्वर के कार्य के ये दो पहलू एक-साथ संचालित किए जाते हैं। शैतान के साथ युद्ध वास्तव में मानव-जाति के उद्धार के वास्ते है, और चूँकि मानव-जाति के उद्धार का कार्य कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे एक ही चरण में सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता हो,

इसलिए शैतान के साथ युद्ध को भी चरणों और अवधियों में बाँटा जाता है, और मनुष्य की आवश्यकताओं और मनुष्य में शैतान की भ्रष्टता की सीमा के अनुसार शैतान के साथ युद्ध छेड़ा जाता है। कदाचित् मनुष्य अपनी कल्पना में यह विश्वास करता है कि इस युद्ध में परमेश्वर शैतान के विरुद्ध शस्त्र उठाएगा, वैसे ही, जैसे दो सेनाएँ आपस में लड़ती हैं। मनुष्य की बुद्धि मात्र यही कल्पना करने में सक्षम है; यह अत्यधिक अस्पष्ट और अवास्तविक सोच है, फिर भी मनुष्य यही विश्वास करता है। और चूँकि मैं यहाँ कहता हूँ कि मनुष्य के उद्धार का साधन शैतान के साथ युद्ध करने के माध्यम से है, इसलिए मनुष्य कल्पना करता है कि युद्ध इसी तरह से संचालित किया जाता है। मनुष्य के उद्धार के कार्य के तीन चरण हैं, जिसका तात्पर्य है कि शैतान को हमेशा के लिए पराजित करने हेतु उसके साथ युद्ध को तीन चरणों में विभाजित किया गया है। किंतु शैतान के साथ युद्ध के समस्त कार्य की भीतरी सच्चाई यह है कि इसके परिणाम कार्य के अनेक चरणों में हासिल किए जाते हैं : मनुष्य को अनुग्रह प्रदान करना, मनुष्य के लिए पापबलि बनना, मनुष्य के पापों को क्षमा करना, मनुष्य पर विजय पाना और मनुष्य को पूर्ण बनाना। वस्तुतः शैतान के साथ युद्ध करना उसके विरुद्ध हथियार उठाना नहीं है, बल्कि मनुष्य का उद्धार करना है, मनुष्य के जीवन में कार्य करना है, और मनुष्य के स्वभाव को बदलना है, ताकि वह परमेश्वर के लिए गवाही दे सके। इसी तरह से शैतान को पराजित किया जाता है। मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव को बदलने के माध्यम से शैतान को पराजित किया जाता है। जब शैतान को पराजित कर दिया जाएगा, अर्थात् जब मनुष्य को पूरी तरह से बचा लिया जाएगा, तो अपमानित शैतान पूरी तरह से लाचार हो जाएगा, और इस तरह से, मनुष्य को पूरी तरह से बचा लिया जाएगा। इस प्रकार, मनुष्य के उद्धार का सार शैतान के विरुद्ध युद्ध है, और यह युद्ध मुख्य रूप से मनुष्य के उद्धार में प्रतिबिंबित होता है। अंत के दिनों का चरण, जिसमें मनुष्य को जीता जाना है, शैतान के साथ युद्ध का अंतिम चरण है, और यह शैतान के अधिकार-क्षेत्र से मनुष्य के संपूर्ण उद्धार का कार्य भी है। मनुष्य पर विजय का आंतरिक अर्थ मनुष्य पर विजय पाने के बाद शैतान के मूर्त रूप—मनुष्य, जिसे शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है—का अपने जीते जाने के बाद सृजनकर्ता के पास वापस लौटना है, जिसके माध्यम से वह शैतान को छोड़ देगा और पूरी तरह से परमेश्वर के पास वापस लौट जाएगा। इस तरह मनुष्य को पूरी तरह से बचा लिया जाएगा। और इसलिए, विजय का कार्य शैतान के विरुद्ध युद्ध में अंतिम कार्य है, और शैतान की पराजय के वास्ते परमेश्वर के प्रबंधन में अंतिम चरण है। इस कार्य के बिना मनुष्य का संपूर्ण उद्धार अंततः असंभव होगा, शैतान की संपूर्ण पराजय भी असंभव होगी, और मानव-

जाति कभी भी अपनी अद्‌भुत मंज़िल में प्रवेश करने या शैतान के प्रभाव से छुटकारा पाने में सक्षम नहीं होगी। परिणामस्वरूप, शैतान के साथ युद्ध की समाप्ति से पहले मनुष्य के उद्धार का कार्य समाप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि परमेश्वर के प्रबधंन के कार्य का केंद्रीय भाग मानव-जाति के उद्धार के वास्ते है। आदिम मानव-जाति परमेश्वर के हाथों में थी, किंतु शैतान के प्रलोभन और भ्रष्टता की वजह से, मनुष्य को शैतान द्वारा बाँध लिया गया और वह इस दुष्ट के हाथों में पड़ गया। इस प्रकार, परमेश्वर के प्रबधंन-कार्य में शैतान पराजित किए जाने का लक्ष्य बन गया। चूँकि शैतान ने मनुष्य पर कब्ज़ा कर लिया था, और चूँकि मनुष्य वह पूँजी है जिसे परमेश्वर संपूर्ण प्रबंधन पूरा करने के लिए इस्तेमाल करता है, इसलिए यदि मनुष्य को बचाया जाना है, तो उसे शैतान के हाथों से वापस छीनना होगा, जिसका तात्पर्य है कि मनुष्य को शैतान द्वारा बंदी बना लिए जाने के बाद उसे वापस लेना होगा। इस प्रकार, शैतान को मनुष्य के पुराने स्वभाव में बदलावों के माध्यम से पराजित किया जाना चाहिए, ऐसे बदलाव, जो मनुष्य की मूल विवेक-बुद्धि को बहाल करते हैं। और इस तरह से मनुष्य को, जिसे बंदी बना लिया गया था, शैतान के हाथों से वापस छीना जा सकता है। यदि मनुष्य शैतान के प्रभाव और बंधन से मुक्त हो जाता है, तो शैतान शर्मिंदा हो जाएगा, मनुष्य को अंततः वापस ले लिया जाएगा, और शैतान को हरा दिया जाएगा। और चूँकि मनुष्य को शैतान के अंधकारमय प्रभाव से मुक्त किया जा चुका है, इसलिए एक बार जब यह युद्ध समाप्त हो जाएगा, तो मनुष्य इस संपूर्ण युद्ध में जीत के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ लाभ बन जाएगा, और शैतान वह लक्ष्य बन जाएगा जिसे दंडित किया जाएगा, जिसके पश्चात् मानव-जाति के उद्धार का संपूर्ण कार्य पूरा कर लिया जाएगा।

परमेश्वर को सृष्टि के प्राणियों के प्रति कोई द्वेष नहीं है; वह केवल शैतान को पराजित करना चाहता है। उसका समस्त कार्य—चाहे वह ताड़ना हो या न्याय—शैतान की ओर निर्देशित है; इसे मानव-जाति के उद्धार के वास्ते किया जाता है, यह सब शैतान को पराजित करने के लिए है, और इसका एक ही उद्देश्य है : शैतान के विरुद्ध बिलकुल अंत तक युद्ध करना! परमेश्वर जब तक शैतान पर विजय प्राप्त न कर ले, तब तक कभी विश्राम नहीं करेगा! वह केवल तभी विश्राम करेगा, जब वह शैतान को हरा देगा। चूँकि परमेश्वर द्वारा किया गया समस्त कार्य शैतान की ओर निर्देशित है, और चूँकि वे सभी लोग जिन्हें शैतान द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, शैतान के अधिकार-क्षेत्र के नियंत्रण में हैं और सभी शैतान के अधिकार-क्षेत्र में जीवन बिताते हैं, इसलिए शैतान के विरुद्ध युद्ध किए बिना और उससे संबंध-विच्छेद किए बिना शैतान इन लोगों पर से अपने शिकंजा ढीला नहीं करेगा, और उन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। यदि उन्हें प्राप्त नहीं किया

गया, तो यह साबित करेगा कि शैतान को पराजित नहीं किया गया है, कि उसे वश में नहीं किया गया है। और इसलिए, अपनी 6,000-वर्षीय प्रबंधन योजना में परमेश्वर ने प्रथम चरण के दौरान व्यवस्था का कार्य किया, दूसरे चरण के दौरान उसने अनुग्रह के युग का कार्य किया, अर्थात् सलीब पर चढ़ने का कार्य, और तीसरे चरण के दौरान वह मानव-जाति पर विजय प्राप्त करने का कार्य करता है। यह समस्त कार्य उस सीमा पर निर्देशित है, जिस तक शैतान ने मानव-जाति को भ्रष्ट किया है, यह सब शैतान को पराजित करने के लिए है, और इन चरणों में से प्रत्येक चरण शैतान को पराजित करने के वास्ते है। परमेश्वर के प्रबंधन के 6,000 वर्ष के कार्य का सार बड़े लाल अजगर के विरुद्ध युद्ध है, और मानव-जाति का प्रबंधन करने का कार्य भी शैतान को हराने का कार्य है, शैतान के साथ युद्ध करने का कार्य है। परमेश्वर ने 6,000 वर्षों तक युद्ध किया है, और इस प्रकार उसने अंततः मनुष्य को नए क्षेत्र में लाने के लिए 6,000 वर्षों तक कार्य किया है। जब शैतान पराजित हो जाएगा, तो मनुष्य पूरी तरह से मुक्त हो जाएगा। क्या यह आज परमेश्वर के कार्य की दिशा नहीं है? यह निश्चित रूप से आज के कार्य की दिशा है : मनुष्य की पूर्ण मुक्ति और स्वतंत्रता, ताकि वह किसी नियम के अधीन न हो, न ही वह किसी प्रकार के बंधनों या प्रतिबंधों द्वारा सीमित हो। यह समस्त कार्य तुम लोगों की कद-काठी के अनुसार और तुम लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है, जिसका अर्थ है कि जो कुछ तुम लोग पूरा कर सकते हैं, वही तुम लोगों को प्रदान किया जाता है। यह "किसी बतख़ को मचान पर हाँकने" का मामला नहीं है, या तुम लोगों पर कुछ थोपने का मामला नहीं है; इसके बजाय, यह समस्त कार्य तुम लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है। कार्य का प्रत्येक चरण मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुसार कार्यान्वित किया जाता है, और यह शैतान को हराने के वास्ते है। वास्तव में, आरंभ में सृजनकर्ता और उसके प्राणियों के बीच किसी प्रकार की बाधाएँ नहीं थीं। ये सब अवरोध शैतान द्वारा उत्पन्न किए गए। शैतान ने मनुष्य को इतना परेशान और भ्रष्ट किया है कि वह किसी भी चीज़ को देखने या छूने में असमर्थ हो गया है। मनुष्य पीड़ित है, जिसे धोखा दिया गया है। जब शैतान को हरा दिया जाएगा, तो सृजित प्राणी सृजनकर्ता को देखेंगे, और सृजनकर्ता सृजित प्राणियों को देखेगा और व्यक्तिगत रूप से उनकी अगुआई करने में समर्थ होगा। केवल यही वह जीवन है, जो पृथ्वी पर मनुष्य के पास होना चाहिए। और इसलिए, परमेश्वर का कार्य मुख्य रूप से शैतान को हराना है, और जब शैतान को हरा दिया जाएगा, तो हर चीज़ का समाधान हो जाएगा। आज तुमने देख लिया है कि परमेश्वर का मनुष्य के बीच आना आसान बात नहीं

है। वह इसलिए नहीं आया कि हर दिन तुम लोगों में ग़लती खोजते हुए बिताए, ऐसा कहे और वैसा कहे, या बस तुम लोगों को यह देखने दे कि वह कैसा दिखता है और कैसे बोलता और रहता है। परमेश्वर ने केवल स्वयं को तुम्हें देखने देने या तुम लोगों की आँखें खोलने या तुम लोगों को स्वयं द्वारा कहे गए रहस्य और स्वयं द्वारा खोली गई सात मुहरों के बारे में सुनाने के लिए देहधारण नहीं किया है। बल्कि उसने शैतान को हराने के लिए देहधारण किया है। वह मनुष्य को बचाने के लिए और शैतान के साथ युद्ध करने के लिए व्यक्तिगत रूप से देह में मनुष्यों के बीच आया है, और यह उसके देहधारण का महत्व है। यदि यह शैतान को पराजित करने के लिए न होता, तो वह व्यक्तिगत रूप से इस कार्य को न करता। परमेश्वर मनुष्यों के बीच अपना कार्य करने, मनुष्य पर स्वयं को व्यक्तिगत रूप से प्रकट करने और उसे स्वयं को देखने देने के लिए पृथ्वी पर आया है; क्या यह कोई साधारण मामला है? यह वास्तव में सरल नहीं है! यह ऐसा नहीं है, जैसा कि मनुष्य कल्पना करता है : कि परमेश्वर आ गया है, इसलिए मनुष्य उसकी ओर देख सकता है, ताकि मनुष्य समझ सके कि परमेश्वर वास्तविक है और अस्पष्ट या खोखला नहीं है, और कि परमेश्वर उच्च है किंतु विनम्र भी है। क्या यह इतना सरल हो सकता है? यह ठीक इसलिए है, क्योंकि शैतान ने मनुष्य की देह को भ्रष्ट कर दिया है और मनुष्य ही वह प्राणी है जिसे परमेश्वर बचाना चाहता है, और इसलिए भी कि परमेश्वर को शैतान के साथ युद्ध करने और व्यक्तिगत रूप से मनुष्य की चरवाही करने के लिए देह धारण करनी चाहिए। केवल यही उसके कार्य के लिए लाभदायक है। परमेश्वर के दो देहधारी रूप शैतान को हराने के लिए, और मनुष्य को बेहतर ढंग से बचाने के लिए भी, अस्तित्व में रहे हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जो शैतान के साथ युद्ध कर रहा है, वह केवल परमेश्वर ही हो सकता है, चाहे वह परमेश्वर का आत्मा हो या परमेश्वर का देहधारी रूप। संक्षेप में, शैतान के साथ युद्ध करने वाले स्वर्गदूत नहीं हो सकते, और वह मनुष्य तो बिलकुल नहीं हो सकता, जिसे शैतान द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका है। यह युद्ध लड़ने में स्वर्गदूत निर्बल हैं, और मनुष्य तो और भी अधिक अशक्त है। इसलिए, यदि परमेश्वर मनुष्य के जीवन में कार्य करना चाहता है, यदि वह मनुष्य को बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से पृथ्वी पर आना चाहता है, तो उसे व्यक्तिगत रूप से देह बनना होगा—अर्थात् उसे व्यक्तिगत रूप से देह धारण करना होगा, और अपनी अंतर्निहित पहचान तथा उस कार्य के साथ, जिसे उसे अवश्य करना चाहिए, मनुष्य के बीच आना होगा और व्यक्तिगत रूप से मनुष्य को बचाना होगा। अन्यथा, यदि वह परमेश्वर का आत्मा या मनुष्य होता, जो यह कार्य करता, तो इस युद्ध से कभी कुछ न निकलता, और यह कभी समाप्त न होता। जब परमेश्वर

मनुष्य के बीच व्यक्तिगत रूप से शैतान के साथ युद्ध करने के लिए देह बनता है, केवल तभी मनुष्य के पास उद्धार का एक अवसर होता है। इसके अतिरिक्त, केवल तभी शैतान लज्जित होता है, और उसके पास लाभ उठाने के लिए कोई अवसर नहीं होता या कार्यान्वित करने के लिए कोई योजना नहीं बचती। देहधारी परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य परमेश्वर के आत्मा के द्वारा अप्राप्य है, और परमेश्वर की ओर से किसी दैहिक मनुष्य द्वारा उसे किया जाना तो और भी अधिक असंभव है, क्योंकि जो कार्य वह करता है, वह मनुष्य के जीवन के वास्ते और मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव को बदलने के लिए है। यदि मनुष्य इस युद्ध में भाग लेता, तो उसकी दुर्गति हो जाती और वह भाग जाता, और अपने भ्रष्ट स्वभाव को बदलने में एकदम असमर्थ रहता। वह सलीब से मनुष्य को बचाने या संपूर्ण विद्रोही मानव-जाति पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ होता, केवल थोड़ा-सा पुराना कार्य करने में सक्षम होता जो सिद्धांतों से परे नहीं जाता, या कोई और कार्य, जिसका शैतान की पराजय से कोई संबंध नहीं है। तो परेशान क्यों हुआ जाए? उस कार्य का क्या महत्व है, जो मानव-जाति को प्राप्त न कर सकता हो, और शैतान को पराजित तो बिलकुल न कर सकता हो? और इसलिए, शैतान के साथ युद्ध केवल स्वयं परमेश्वर द्वारा ही किया जा सकता है, और इसे मनुष्य द्वारा किया जाना पूरी तरह से असंभव होगा। मनुष्य का कर्तव्य आज्ञापालन करना और अनुसरण करना है, क्योंकि मनुष्य स्वर्ग और धरती के सृजन के समान कार्य करने में असमर्थ है, इसके अतिरिक्त, न ही वह शैतान के साथ युद्ध करने का कार्य कर सकता है। मनुष्य केवल स्वयं परमेश्वर की अगुआई के तहत ही सृजनकर्ता को संतुष्ट कर सकता है, जिसके माध्यम से शैतान पराजित होता है; केवल यही वह एकमात्र कार्य है जो मनुष्य कर सकता है। और इसलिए, हर बार जब एक नया युद्ध आरंभ होता है, अर्थात् हर बार जब नए युग का कार्य शुरू होता है, तो इस कार्य को स्वयं परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है, जिसके माध्यम से वह संपूर्ण युग की अगुआई करता है, और संपूर्ण मानव-जाति के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करता है। प्रत्येक नए युग की भोर शैतान के साथ युद्ध में एक नई शुरुआत है, जिसके माध्यम से मनुष्य एक अधिक नए, अधिक सुंदर क्षेत्र और एक नए युग में प्रवेश करता है, जिसकी अगुआई परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से की जाती है। मनुष्य सभी चीज़ों का स्वामी है, किंतु वे लोग, जिन्हें प्राप्त कर लिया गया है, शैतान के साथ सारे युद्धों के परिणाम बन जाएँगे। शैतान सभी चीज़ों को भ्रष्ट करने वाला है, वह सभी युद्धों के अंत में हारने वाला है, और वह इन युद्धों के बाद दंडित किया जाने वाला भी है। परमेश्वर, मनुष्य और शैतान में से केवल शैतान ही है, जिससे घृणा की जाएगी और जिसे ठुकरा दिया

जाएगा। इस बीच, शैतान द्वारा प्राप्त किए गए और परमेश्वर द्वारा वापस न लिए गए लोग शैतान की ओर से सज़ा प्राप्त करने वाले बन जाएँगे। इन तीनों में से केवल परमेश्वर की ही सही चीज़ों के द्वारा आराधना की जानी चाहिए। जिन्हें शैतान द्वारा भ्रष्ट किया गया किंतु परमेश्वर द्वारा वापस ले लिया जाता है और जो परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करते हैं, वे इस बीच ऐसे लोग बन जाते हैं, जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा प्राप्त करेंगे और परमेश्वर के लिए दुष्ट लोगों का न्याय करेंगे। परमेश्वर निश्चित रूप से विजयी होगा और शैतान निश्चित रूप से पराजित होगा, किंतु मनुष्यों के बीच ऐसे लोग भी हैं, जो जीतेंगे और ऐसे लोग भी हैं, जो हारेंगे। जो जीतेंगे, वे विजेताओं के साथ होंगे और जो हारेंगे, वे हारने वाले के साथ होंगे; यह प्रत्येक का उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकरण है, यह परमेश्वर के संपूर्ण कार्य का अंतिम परिणाम है, यह परमेश्वर के संपूर्ण कार्य का लक्ष्य भी है, और यह कभी नहीं बदलेगा। परमेश्वर की प्रबधंन योजना के मुख्य कार्य का केंद्रीय भाग मानव-जाति के उद्धार पर केंद्रित है, और परमेश्वर मुख्य रूप से इस केंद्रीय भाग के वास्ते, इस कार्य के वास्ते, और शैतान को पराजित करने के उद्देश्य से देह बनता है। पहली बार परमेश्वर देह बना, तो वह भी शैतान को पराजित करने के लिए था : वह व्यक्तिगत रूप से देह बना, और पहले युद्ध का कार्य पूरा करने के लिए, जो कि मानव-जाति के छुटकारे का कार्य था, उसे व्यक्तिगत रूप से सलीब पर चढ़ा दिया गया। इसी प्रकार, कार्य के इस चरण को भी परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है, जो मनुष्य के बीच अपना कार्य करने के लिए, और व्यक्तिगत रूप से अपने वचनों को बोलने और मनुष्य को स्वयं को देखने देने के लिए देह बना है। निस्संदेह, यह अपरिहार्य है कि वह मार्ग में साथ-साथ कुछ अन्य कार्य भी करता है, किंतु जिस मुख्य कारण से वह अपने कार्य को व्यक्तिगत रूप से कार्यान्वित करता है, वह है शैतान को हराना, संपूर्ण मानव-जाति पर विजय पाना, और इन लोगों को प्राप्त करना। इसलिए, देहधारी परमेश्वर का कार्य वास्तव में सरल नहीं है। यदि उसका उद्देश्य मनुष्य को केवल यह दिखाना होता कि परमेश्वर विनम्र और छिपा हुआ है, और यह कि परमेश्वर वास्तविक है, यदि यह मात्र इस कार्य को करने के वास्ते होता, तो देह बनने की कोई आवश्यकता न होती। परमेश्वर ने देहधारण न किया होता, तब भी वह अपनी विनम्रता और गंभीरता, अपनी महानता और पवित्रता सीधे मनुष्य पर प्रकट कर सकता था, किंतु ऐसी चीज़ों का मानव-जाति के प्रबधंन के कार्य से कोई लेना-देना नहीं है। ये मनुष्य को बचाने या उसे पूर्ण करने में असमर्थ हैं, और ये शैतान को पराजित तो बिलकुल भी नहीं कर सकतीं। यदि शैतान की पराजय में केवल पवित्रात्मा ही शामिल होता, जो किसी आत्मा से युद्ध करता, तो ऐसे कार्य का और भी

कम व्यावहारिक मूल्य होता; यह मनुष्य को प्राप्त करने में असमर्थ होता और मनुष्य के भाग्य और उसकी भविष्य की संभावनाओं को बरबाद कर देता। इस प्रकार, आज परमेश्वर के कार्य का गहरा महत्व है। यह केवल इसलिए नहीं है कि मनुष्य उसे देख सके, या कि मनुष्य की आँखें खोली जा सकें, या उसे प्रेरणा और प्रोत्साहन का थोड़ा एहसास कराया जा सके; ऐसे कार्य का कोई महत्व नहीं है। यदि तुम केवल इस प्रकार के ज्ञान के बारे में ही बोल सकते हो, तो यह साबित करता है कि तुम परमेश्वर के देहधारण के सच्चे महत्व को नहीं जानते।

परमेश्वर की संपूर्ण प्रबंधन योजना का कार्य व्यक्तिगत रूप से स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाता है। प्रथम चरण—संसार का सृजन—परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया गया था, और यदि ऐसा न किया जाता, तो कोई भी मनुष्य का सृजन कर पाने में सक्षम न हुआ होता; दूसरा चरण संपूर्ण मानव-जाति के छुटकारे का था, और उसे भी देहधारी परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से कार्यान्वित किया गया था; तीसरा चरण स्वत: स्पष्ट है : परमेश्वर के संपूर्ण कार्य के अंत को स्वयं परमेश्वर द्वारा किए जाने की और भी अधिक आवश्यकता है। संपूर्ण मानव-जाति के छुटकारे, उस पर विजय पाने, उसे प्राप्त करने, और उसे पूर्ण बनाने का समस्त कार्य स्वयं परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है। यदि वह व्यक्तिगत रूप से इस कार्य को न करता, तो मनुष्य द्वारा उसकी पहचान नहीं दर्शाई जा सकती थी, न ही उसका कार्य मनुष्य द्वारा किया जा सकता था। शैतान को हराने, मानव-जाति को प्राप्त करने, और मनुष्य को पृथ्वी पर एक सामान्य जीवन प्रदान करने के लिए वह व्यक्तिगत रूप से मनुष्य की अगुआई करता है और व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों के बीच कार्य करता है; अपनी संपूर्ण प्रबधंन योजना के वास्ते और अपने संपूर्ण कार्य के लिए उसे व्यक्तिगत रूप से इस कार्य को करना चाहिए। यदि मनुष्य केवल यह विश्वास करता है कि परमेश्वर इसलिए आया था कि मनुष्य उसे देख सके, या वह मनुष्य को खुश करने के लिए आया था, तो ऐसे विश्वास का कोई मूल्य, कोई महत्व नहीं है। मनुष्य की समझ बहुत ही सतही है! केवल इसे स्वयं कार्यान्वित करके ही परमेश्वर इस कार्य को अच्छी तरह से और पूरी तरह से कर सकता है। मनुष्य इसे परमेश्वर की ओर से करने में असमर्थ है। चूँकि उसके पास परमेश्वर की पहचान या उसका सार नहीं है, इसलिए वह पमेश्वर का कार्य करने में असमर्थ है, और यदि मनुष्य इसे करता भी, तो इसका कोई प्रभाव नहीं होता। पहली बार जब परमेश्वर ने देहधारण किया था, तो वह छुटकारे के वास्ते था, संपूर्ण मानव-जाति को पाप से छुटकारा देने के लिए था, मनुष्य को शुद्ध किए जाने और उसे उसके पापों से क्षमा किए जाने में सक्षम बनाने के लिए

था। विजय का कार्य भी परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के बीच व्यक्तिगत रूप से किया जाता है। इस चरण के दौरान यदि परमेश्वर को केवल भविष्यवाणी ही करनी होती, तो किसी भविष्यवक्ता या किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति को उसका स्थान लेने के लिए ढूँढ़ा जा सकता था; यदि केवल भविष्यवाणी ही कहनी होती, तो मनुष्य परमेश्वर की जगह ले सकता था। किंतु यदि मनुष्य व्यक्तिगत रूप से स्वयं परमेश्वर का कार्य करने की कोशिश करता और मनुष्य के जीवन का कार्य करने का प्रयास करता, तो उसके लिए इस कार्य को करना असंभव होता। इसे व्यक्तिगत रूप से स्वयं परमेश्वर द्वारा ही किया जाना चाहिए : इस कार्य को करने के लिए परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से देह बनना चाहिए। वचन के युग में, यदि केवल भविष्यवाणी ही कही जाती, तो इस कार्य को करने के लिए नबी यशायाह या एलिय्याह को ढूँढ़ा जा सकता था, और इसे व्यक्तिगत रूप से करने के लिए स्वयं परमेश्वर की कोई आवश्यकता न होती। चूँकि इस चरण में किया जाने वाला कार्य मात्र भविष्यवाणी कहना नहीं है, और चूँकि इस बात का अत्यधिक महत्व है कि वचनों के कार्य का उपयोग मनुष्य पर विजय पाने और शैतान को पराजित करने के लिए किया जाता है, इसलिए इस कार्य को मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता, और इसे स्वयं परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाना चाहिए। व्यवस्था के युग में यहोवा ने अपने कार्य का एक भाग किया था, जिसके पश्चात् उसने कुछ वचन कहे और नबियों के जरिये कुछ कार्य किया। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य यहोवा के कार्य में उसका स्थान ले सकता था, और भविष्यद्रष्टा उसकी ओर से चीज़ों की भविष्यवाणी और कुछ स्वप्नों की व्याख्या कर सकते थे। आरंभ में किया गया कार्य सीधे-सीधे मनुष्य के स्वभाव को परिवर्तित करने का कार्य नहीं था, और वह मनुष्य के पाप से संबंध नहीं रखता था, और मनुष्य से केवल व्यवस्था का पालन करने की अपेक्षा की गई थी। अतः यहोवा देह नहीं बना और उसने स्वयं को मनुष्य पर प्रकट नहीं किया; इसके बजाय उसने मूसा और अन्य लोगों से सीधे बातचीत की, उनसे बुलवाया और अपने स्थान पर कार्य करवाया, और उनसे मानव-जाति के बीच सीधे तौर पर कार्य करवाया। परमेश्वर के कार्य का पहला चरण मनुष्य की अगुआई का था। यह शैतान के विरुद्ध युद्ध का आरंभ था, किंतु यह युद्ध आधिकारिक रूप से शुरू होना बाक़ी था। शैतान के विरुद्ध आधिकारिक युद्ध परमेश्वर के प्रथम देहधारण के साथ आरंभ हुआ, और यह आज तक जारी है। इस युद्ध की पहली लड़ाई तब हुई, जब देहधारी परमेश्वर को सलीब पर चढ़ाया गया। देहधारी परमेश्वर के सलीब पर चढ़ाए जाने ने शैतान को पराजित कर दिया, और यह युद्ध में प्रथम सफल चरण था। जब देहधारी परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन में सीधे कार्य करना आरंभ किया, तो यह

मनुष्य को पुनः प्राप्त करने के कार्य की आधिकारिक शुरुआत थी, और चूँकि यह मनुष्य के पुराने स्वभाव को परिवर्तित करने का कार्य था, इसलिए यह शैतान के साथ युद्ध करने का कार्य था। आरंभ में यहोवा द्वारा किए गए कार्य का चरण पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन की अगुआई मात्र था। यह परमेश्वर के कार्य का आरंभ था, और हालाँकि इसमें अभी कोई युद्ध या कोई बड़ा कार्य शामिल नहीं हुआ था, फिर भी इसने आने वाले युद्ध के कार्य की नींव डाली थी। बाद में, अनुग्रह के युग के दौरान दूसरे चरण के कार्य में मनुष्य के पुराने स्वभाव को परिवर्तित करना शामिल था, जिसका अर्थ है कि स्वयं परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन को गढ़ा था। इसे परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाना था : इसमें अपेक्षित था कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से देह बन जाए। यदि वह देह न बनता, तो कार्य के इस चरण में कोई अन्य उसका स्थान नहीं ले सकता था, क्योंकि यह शैतान के विरुद्ध सीधी लड़ाई के कार्य को दर्शाता था। यदि परमेश्वर की ओर से मनुष्य ने यह कार्य किया होता, तो जब मनुष्य शैतान के सामने खड़ा होता, तो शैतान ने समर्पण न किया होता और उसे हराना असंभव हो गया होता। देहधारी परमेश्वर को ही उसे हराने के लिए आना था, क्योंकि देहधारी परमेश्वर का सार फिर भी परमेश्वर है, वह फिर भी मनुष्य का जीवन है, और वह फिर भी सृजनकर्ता है; कुछ भी हो, उसकी पहचान और सार नहीं बदलेगा। और इसलिए, उसने देहधारण किया और शैतान से संपूर्ण समर्पण करवाने के लिए कार्य किया। अंत के दिनों के कार्य के चरण के दौरान, यदि मनुष्य को यह कार्य करना होता और उससे सीधे तौर पर वचनों को बुलवाया जाता, तो वह उन्हें बोलने में असमर्थ होता, और यदि भविष्यवाणी कही जाती, तो यह भविष्यवाणी मनुष्य पर विजय पाने में असमर्थ होती। देहधारण करके परमेश्वर शैतान को हराने और उससे संपूर्ण समर्पण करवाने के लिए आता है। जब वह शैतान को पूरी तरह से पराजित कर लेगा, पूरी तरह से मनुष्य पर विजय पा लेगा और मनुष्य को पूरी तरह से प्राप्त कर लेगा, तो कार्य का यह चरण पूरा हो जाएगा और सफलता प्राप्त कर ली जाएगी। परमेश्वर के प्रबधंन में मनुष्य परमेश्वर का स्थान नहीं ले सकता। विशेष रूप से, युग की अगुआई करने और नया कार्य आरंभ करने का काम स्वयं परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत रूप से किए जाने की और भी अधिक आवश्यकता है। मनुष्य को प्रकाशन देना और उसे भविष्यवाणी प्रदान करना मनुष्य द्वारा किया जा सकता है, किंतु यदि यह ऐसा कार्य है जिसे व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर द्वारा किया जाना चाहिए, अर्थात् स्वयं परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध का कार्य, तो इस कार्य को मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता। कार्य के प्रथम चरण के दौरान, जब शैतान के साथ कोई युद्ध नहीं था, तब यहोवा ने नबियों द्वारा बोली गई

भविष्यवाणियों का उपयोग करके व्यक्तिगत रूप से इस्राएल के लोगों की अगुआई की थी। उसके बाद, कार्य का दूसरा चरण शैतान के साथ युद्ध था, और स्वयं परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से देह बना और इस कार्य को करने के लिए देह में आया। जिस भी चीज़ में शैतान के साथ युद्ध शामिल होता है, उसमें परमेश्वर का देहधारण भी शामिल होता है, जिसका अर्थ है कि यह युद्ध मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता। यदि मनुष्य को युद्ध करना पड़ता, तो वह शैतान को पराजित करने में असमर्थ होता। उसके पास उसके विरुद्ध लड़ने की ताक़त कैसे हो सकती है, जबकि वह अभी भी उसके अधिकार-क्षेत्र के अधीन है? मनुष्य बीच में है : यदि तुम शैतान की ओर झुकते हो तो तुम शैतान से संबंधित हो, किंतु यदि तुम परमेश्वर को संतुष्ट करते हो, तो तुम परमेश्वर से संबंधित हो। यदि इस युद्ध के कार्य में मनुष्य को प्रयास करना होता और उसे परमेश्वर का स्थान लेना होता, तो क्या वह कर पाता? यदि वह युद्ध करता, तो क्या वह बहुत पहले ही नष्ट नहीं हो गया होता? क्या वह बहुत पहले ही नरक में नहीं समा गया होता? इसलिए, परमेश्वर के कार्य में मनुष्य उसका स्थान लेने में अक्षम है, जिसका तात्पर्य है कि मनुष्य के पास परमेश्वर का सार नहीं है, और यदि तुम शैतान के साथ युद्ध करते, तो तुम उसे पराजित करने में अक्षम होते। मनुष्य केवल कुछ कार्य ही कर सकता है; वह कुछ लोगों को जीत सकता है, किंतु वह स्वयं परमेश्वर के कार्य में परमेश्वर का स्थान नहीं ले सकता। मनुष्य शैतान के साथ युद्ध कैसे कर सकता है? तुम्हारे शुरुआत करने से पहले ही शैतान ने तुम्हें बंदी बना लिया होता। केवल जब स्वयं परमेश्वर ही शैतान के साथ युद्ध करता है और मनुष्य इस आधार पर परमेश्वर का अनुसरण और आज्ञापालन करता है, तभी परमेश्वर द्वारा मनुष्य को प्राप्त किया जा सकता है और वह शैतान के बंधनों से बच सकता है। मनुष्य द्वारा अपनी स्वयं की बुद्धि और योग्यताओं से प्राप्त की जा सकने वाली चीज़ें बहुत ही सीमित हैं; वह मनुष्य को पूर्ण बनाने, उसकी अगुआई करने, और, इसके अतिरिक्त, शैतान को हराने में असमर्थ है। मनुष्य की प्रतिभा और बुद्धि शैतान के षड्यंत्रों को नाकाम करने में असमर्थ हैं, इसलिए मनुष्य उसके साथ युद्ध कैसे कर सकता है?

उन सभी लोगों के पास पूर्ण बनाए जाने का अवसर है, जो पूर्ण बनाए जाने की इच्छा रखते हैं, इसलिए हर किसी को शांत हो जाना चाहिए : भविष्य में तुम सभी मंज़िल में प्रवेश करोगे। किंतु यदि तुम पूर्ण बनाए जाने की इच्छा नहीं रखते, और अद्‌भुत क्षेत्र में प्रवेश करना नहीं चाहते, तो यह तुम्हारी अपनी समस्या है। वे सभी, जो पूर्ण बनाए जाने की इच्छा रखते हैं और परमेश्वर के प्रति वफ़ादार हैं, वे सभी जो आज्ञापालन करते हैं, और वे सभी जो वफ़ादारी से अपना कार्य करते हैं—ऐसे सभी लोगों को पूर्ण बनाया

जा सकता है। आज, वे सभी जो वफादारी से अपना कर्तव्य नहीं निभाते, वे सभी जो परमेश्वर के प्रति वफ़ादार नहीं हैं, वे सभी जो परमेश्वर के प्रति समर्पण नहीं करते, विशेष रूप से वे जिन्होंने पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त कर ली है किंतु उसे अभ्यास में नहीं लाते—ऐसे सभी लोग पूर्ण बनाए जाने में असमर्थ हैं। उन सभी को पूर्ण बनाया जा सकता है, जो वफ़ादार होने और परमेश्वर का आज्ञापालन करने की इच्छा रखते हैं, भले ही वे थोड़े अज्ञानी हों; उन सभी को पूर्ण बनाया जा सकता है, जो खोज करने की इच्छा रखते हैं। इस बारे में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि तुम इस दिशा में खोज करने के इच्छुक हो, तो तुम्हें पूर्ण बनाया जा सकता है। मैं तुम लोगों में से किसी को भी छोड़ने या निष्कासित करने का इच्छुक नहीं हूँ, किंतु यदि मनुष्य अच्छा करने का प्रयत्न नहीं करता, तो वह केवल अपने आप को बरबाद कर रहा है; वह मैं नहीं हूँ जो तुम्हें निष्कासित करता है, बल्कि वह तुम स्वयं हो। यदि तुम स्वयं अच्छा करने का प्रयत्न नहीं करते—यदि तुम आलसी हो, या अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते, या वफादार नहीं हो, या सत्य की खोज नहीं करते, और हमेशा जैसा चाहते हो वैसा ही करते हो, यदि तुम लापरवाही से व्यवहार करते हो, अपनी प्रसिद्धि और सौभाग्य के लिए लड़ते हो, और विपरीत लिंग के साथ अपने व्यवहार में बेईमान हो, तो तुम अपने पापों के बोझ को स्वयं वहन करोगे; तुम किसी की भी दया के योग्य नहीं हो। मेरा इरादा तुम सभी लोगों को पूर्ण बनाना है, और कम से कम तुम लोगों पर विजय पाना है, ताकि कार्य के इस चरण को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सके। प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की इच्छा है कि उसे पूर्ण बनाया जाए, अंततः उसके द्वारा उसे प्राप्त किया जाए, उसके द्वारा उसे पूरी तरह से शुद्ध किया जाए, और वह ऐसा इंसान बने जिससे वह प्रेम करता है। यह मायने नहीं रखता कि मैं तुम लोगों को पिछड़ा हुआ कहता हूँ या निम्न क्षमता वाला—यह सब तथ्य है। मेरा ऐसा कहना यह प्रमाणित नहीं करता कि मेरा तुम्हें छोड़ने का इरादा है, कि मैंने तुम लोगों में आशा खो दी है, और यह तो बिलकुल नहीं कि मैं तुम लोगों को बचाना नहीं चाहता। आज मैं तुम लोगों के उद्धार का कार्य करने के लिए आया हूँ, जिसका तात्पर्य है कि जो कार्य मैं करता हूँ, वह उद्धार के कार्य की निरंतरता है। प्रत्येक व्यक्ति के पास पूर्ण बनाए जाने का एक अवसर है : बशर्ते तुम तैयार हो, बशर्ते तुम खोज करते हो, अंत में तुम इस परिणाम को प्राप्त करने में समर्थ होगे, और तुममें से किसी एक को भी त्यागा नहीं जाएगा। यदि तुम निम्न क्षमता वाले हो, तो तुमसे मेरी अपेक्षाएँ तुम्हारी निम्न क्षमता के अनुसार होंगी; यदि तुम उच्च क्षमता वाले हो, तो तुमसे मेरी अपेक्षाएँ तुम्हारी उच्च क्षमता के अनुसार होंगी; यदि तुम अज्ञानी और निरक्षर हो, तो तुमसे

मेरी अपेक्षाएँ तुम्हारी निरक्षरता के अनुसार होंगी; यदि तुम साक्षर हो, तो तुमसे मेरी अपेक्षाएँ इस तथ्य के अनुसार होंगी कि तुम साक्षर हो; यदि तुम बुजुर्ग हो, तो तुमसे मेरी अपेक्षाएँ तुम्हारी उम्र के अनुसार होंगी; यदि तुम आतिथ्य प्रदान करने में सक्षम हो, तो तुमसे मेरी अपेक्षाएँ इस क्षमता के अनुसार होंगी; यदि तुम कहते हो कि तुम आतिथ्य प्रदान नहीं कर सकते और केवल कुछ निश्चित कार्य ही कर सकते हो, चाहे वह सुसमाचार फैलाने का कार्य हो या कलीसिया की देखरेख करने का कार्य या अन्य सामान्य मामलों में शामिल होने का कार्य, तो मेरे द्वारा तुम्हारी पूर्णता भी उस कार्य के अनुसार होगी, जो तुम करते हो। वफ़ादार होना, बिल्कुल अंत तक आज्ञापालन करना, और परमेश्वर के प्रति सर्वोच्च प्रेम रखने की कोशिश करना—यह तुम्हें अवश्य करना चाहिए, और इन तीन चीज़ों से बेहतर कोई अभ्यास नहीं है। अंततः, मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह इन तीन चीज़ों को प्राप्त करे, और यदि वह इन्हें प्राप्त कर सकता है, तो उसे पूर्ण बनाया जाएगा। किंतु, इन सबसे ऊपर, तुम्हें सच में खोज करनी होगी, तुम्हें सक्रियता से आगे और ऊपर की ओर बढ़ते जाना होगा, और इसके संबंध में निष्क्रिय नहीं होना होगा। मैं कह चुका हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति के पास पूर्ण बनाए जाने का अवसर है, और प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण बनाए जाने में सक्षम है, और यह सत्य है, किंतु तुम अपनी खोज में बेहतर होने की कोशिश नहीं करते। यदि तुम ये तीनों मापदंड प्राप्त नहीं करते, तो अंत में तुम्हें अवश्य निष्कासित कर दिया जाना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि हर कोई उस स्तर तक पहुँचे, मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक के पास पवित्र आत्मा का कार्य और प्रबुद्धता हो, और वह बिलकुल अंत तक आज्ञापालन करने में समर्थ हो, क्योंकि यही वह कर्तव्य है, जिसे तुम लोगों में से प्रत्येक को करना चाहिए। जब तुम सभी लोगों ने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया होगा, तो तुम सभी लोगों को पूर्ण बनाया जा चुका होगा, तुम लोगों के पास ज़बरदस्त गवाही भी होगी। जिन लोगों के पास गवाही है, वे सभी ऐसे लोग हैं, जो शैतान के ऊपर विजयी हुए हैं और जिन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा प्राप्त कर ली है, और वे ऐसे लोग हैं, जो उस अद्‌भुत मंज़िल में जीने के लिए बने रहेंगे।

परमेश्वर और मनुष्य साथ-साथ विश्राम में प्रवेश करेंगे

आरंभ में परमेश्वर विश्राम में था। उस समय पृथ्वी पर कोई मनुष्य या अन्य कुछ भी नहीं था और परमेश्वर ने तब तक किसी भी तरह का कोई कार्य नहीं किया था। उसने अपने प्रबंधन का कार्य केवल तब आरंभ किया, जब मानवता अस्तित्व में आ गई और जब मानवता भ्रष्ट कर दी गई; उस पल से, उसने

विश्राम नहीं किया बल्कि इसके बजाय उसने स्वयं को मानवता के बीच व्यस्त रखना आरंभ कर दिया। मानवता के भ्रष्ट होने की वजह से और प्रधान स्वर्गदूत के विद्रोह के कारण भी परमेश्वर को विश्राम से उठना पड़ा। यदि परमेश्वर शैतान को परास्त नहीं करता और भ्रष्ट हो चुकी मानवता को नहीं बचाता, तो वह पुनः कभी भी विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाएगा। मनुष्य के समान ही परमेश्वर को भी विश्राम नहीं मिलता और जब वह एक बार फिर विश्राम करेगा, तो मनुष्य भी करेंगे। विश्राम में जीवन का अर्थ है युद्ध के बिना, गंदगी के बिना और स्थायी अधार्मिकता के बिना जीवन। कहने का अर्थ है कि यह जीवन शैतान की रुकावटों (यहाँ "शैतान" शत्रुतापूर्ण शक्तियों के संदर्भ में है) और शैतान की भ्रष्टता से मुक्त है और इसे परमेश्वर विरोधी किसी भी शक्ति के आक्रमण का ख़तरा नहीं है; यह ऐसा जीवन है, जिसमें हर चीज़ अपनी किस्म का अनुसरण करती है और सृष्टि के प्रभु की आराधना कर सकती है और जिसमें स्वर्ग और पृथ्वी पूरी तरह शांत हैं—"मनुष्यों का विश्रामपूर्ण जीवन", इन शब्दों का यही अर्थ है। जब परमेश्वर विश्राम करेगा, तो पृथ्वी पर अधार्मिकता नहीं रहेगी, न ही शत्रुतापूर्ण शक्तियों का फिर कोई आक्रमण होगा और मानवजाति एक नए क्षेत्र में प्रवेश करेगी—शैतान द्वारा भ्रष्ट मानवता नहीं होगी, बल्कि ऐसी मानवता होगी, जिसे शैतान के भ्रष्ट किए जाने के बाद बचाया गया है। मानवता के विश्राम का दिन ही परमेश्वर के विश्राम का दिन भी होगा। मानवता के विश्राम में प्रवेश करने में असमर्थता के कारण परमेश्वर ने अपना विश्राम खोया था, इसलिए नहीं कि वह मूल रूप से विश्राम करने में असमर्थ था। विश्राम में प्रवेश करने का अर्थ यह नहीं कि सभी चीज़ों का चलना या विकसित होना बंद हो जाएगा, न ही इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर कार्य करना बंद कर देगा या मनुष्यों का जीवन रुक जाएगा। विश्राम में प्रवेश करने का चिह्न होगा जब शैतान नष्ट कर दिया गया है, जब उसके साथ बुरे कामों में शामिल दुष्ट लोग दंडित किए गए हैं और मिटा दिए गए हैं और जब परमेश्वर के प्रति सभी शत्रुतापूर्ण शक्तियों का अस्तित्व समाप्त हो गया है। परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने का अर्थ है कि वह मानवता के उद्धार का कार्य अब और नहीं करेगा। मानवता के विश्राम में प्रवेश करने का अर्थ है कि समस्त मानवता परमेश्वर के प्रकाश के भीतर और उसके आशीष के अधीन, शैतान की भ्रष्टता के बिना जिएगी और कोई अधार्मिकता नहीं होगी। परमेश्वर की देखभाल में मनुष्य सामान्य रूप से पृथ्वी पर रहेंगे। जब परमेश्वर और मनुष्य दोनों एक साथ विश्राम में प्रवेश करेंगे, तो इसका अर्थ होगा कि मानवता को बचा लिया गया है और शैतान का विनाश हो चुका है, कि मनुष्यों के बीच परमेश्वर का कार्य पूरी तरह समाप्त हो गया है। परमेश्वर मनुष्यों के बीच अब और कार्य नहीं करता

रहेगा और वे वेअब शैतान के अधिकार क्षेत्र में और नहीं रहेंगे। वैसे तो, परमेश्वर अब और व्यस्त नहीं रहेगा और मनुष्य लगातार गतिमान नहीं रहेंगे; परमेश्वर और मानवता एक साथ विश्राम में प्रवेश करेंगे। परमेश्वर अपने मूल स्थान पर लौट जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्थान पर लौट जाएगा। ये वे गंतव्य हैं, जहाँ परमेश्वर का समस्त प्रबंधन पूरा होने पर परमेश्वर और मनुष्य रहेंगे। परमेश्वर के पास परमेश्वर की मंज़िल है, और मानवता के पास मानवता की। विश्राम करते समय, परमेश्वर पृथ्वी पर सभी मनुष्यों के जीवन का मार्गदर्शन करता रहेगा, जबकि वे उसके प्रकाश में, स्वर्ग के एकमात्र सच्चे परमेश्वर की आराधना करेंगे। परमेश्वर अब मानवता के बीच और नहीं रहेगा, न ही मनुष्य परमेश्वर के साथ उसके गंतव्य में रहने में समर्थ होंगे। परमेश्वर और मनुष्य दोनों एक ही क्षेत्र के भीतर नहीं रह सकते; बल्कि दोनों के जीने के अपने-अपने तरीक़े हैं। परमेश्वर वह है, जो समस्त मानवता का मार्गदर्शन करता है और समस्त मानवता परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य का ठोस स्वरूप है। मनुष्य वे हैं, जिनकी अगुआई की जाती है और वे परमेश्वर के सार के समान नहीं हैं। "विश्राम" का अर्थ है अपने मूल स्थान में लौटना। इसलिए, जब परमेश्वर विश्राम में प्रवेश करता है, तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने मूल स्थान में लौट जाता है। वह पृथ्वी पर अब और नहीं रहेगा, या मानवता की ख़ुशियाँ या उसके दु:ख साझा नहीं करेगा। जब मनुष्य विश्राम में प्रवेश करते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे सृष्टि की सच्ची वस्तु बन गए हैं; वे पृथ्वी से परमेश्वर की आराधना करेंगे और सामान्य मानवीय जीवन जिएंगे। लोग अब और परमेश्वर की अवज्ञा या प्रतिरोध नहीं करेंगे और वे आदम और हव्वा के मूल जीवन की ओर लौट जाएंगे। विश्राम में प्रवेश करने के बाद ये परमेश्वर और मनुष्य के अपने-अपने जीवन और गंतव्य होंगे। परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध में शैतान की पराजय अपरिहार्य प्रवृत्ति है। इसी तरह, अपना प्रबंधन-कार्य पूरा करने के बाद परमेश्वर का विश्राम में प्रवेश करना और मनुष्य का पूर्ण उद्धार और विश्राम में प्रवेश अपरिहार्य प्रवृत्ति बन गए हैं। मनुष्य के विश्राम का स्थान पृथ्वी है और परमेश्वर के विश्राम का स्थान स्वर्ग में है। जब मनुष्य विश्राम में परमेश्वर की आराधना करते हैं, वे पृथ्वी पर रहेंगे और जब परमेश्वर बाकी मानवता को विश्राम में ले जाएगा, वह स्वर्ग से उनका नेतृत्व करेगा न कि पृथ्वी से। परमेश्वर तब भी पवित्र आत्मा ही होगा, जबकि मनुष्य तब भी देह होंगे। परमेश्वर और मनुष्य दोनों अलग ढंग से विश्राम करते हैं। जब परमेश्वर विश्राम करता है, वह मनुष्यों के बीच आएगा और प्रकट होगा; जबकि मनुष्यों को विश्राम के दौरान स्वर्ग की यात्रा करने और साथ ही वहाँ के जीवन का आनंद उठाने के लिए परमेश्वर द्वारा अगुआई की जाएगी। परमेश्वर और मनुष्य के विश्राम में प्रवेश करने के

बाद, शैतान का अस्तित्व नहीं रहेगा; उसी तरह, वे दुष्ट लोग भी अस्तित्व में नहीं रहेंगे। परमेश्वर और मनुष्यों के विश्राम में जाने से पहले, वे दुष्ट व्यक्ति जिन्होंने कभी पृथ्वी पर परमेश्वर को उत्पीड़ित किया था, साथ ही वे शत्रु जो पृथ्वी पर उसके प्रति अवज्ञाकारी थे, वे पहले ही नष्ट कर दिए गए होंगे; वे अंत के दिनों की बड़ी आपदा द्वारा नष्ट कर दिए गए होंगे। उन दुष्ट लोगों के पूर्ण विनाश के बाद, पृथ्वी फिर कभी शैतान का उत्पीड़न नहीं जानेगी। केवल तब मानवता पूर्ण उद्धार को प्राप्त करेगी और परमेश्वर का कार्य पूर्णतः समाप्त होगा। परमेश्वर और मनुष्य के विश्राम में प्रवेश करने के लिए ये पूर्व अपेक्षाएँ हैं।

सभी चीज़ों के अंत का पास आना परमेश्वर के कार्य की समाप्ति की ओर और साथ ही मानवता के विकास के अंत का संकेत करता है। इसका अर्थ है कि शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए मनुष्य अपने विकास के अंतिम चरण तक पहुँच गए होंगे और आदम व हव्वा के वंशजों ने अपनी वंश-वृद्धि पूरी कर ली होगी। इसका अर्थ यह भी है कि अब शैतान द्वारा भ्रष्ट की जा चुकी मानवता के लिए लगातार विकास करते रहना असंभव होगा। आदम और हव्वा को आरंभ में भ्रष्ट नहीं किया गया था, पर आदम और हव्वा जो अदन की वाटिका से निकाले गए, उन्हें शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए थे। जब परमेश्वर और मनुष्य एक साथ विश्राम में प्रवेश करते हैं, तो आदम और हव्वा—जो अदन वाटिका से बाहर निकाले गए थे—और उनके वंशजों का आखिरकार अंत हो जाएगा। भविष्य की मानवता आदम और हव्वा के वंशजों से ही बनेगी, परंतु वे ऐसे लोग नहीं होंगे, जो शैतान के अधिकार क्षेत्र के अधीन रहते हों। बल्कि ये वे लोग होंगे, जिन्हें बचाया और शुद्ध किया गया है। यह वह मानवता होगी, जिसका न्याय किया गया है और जिसे ताड़ना दी गई है और जो पवित्र है। ये लोग उस मानवजाति के समान नहीं होंगे, जो वह मूल रूप से थी; यह कहा जा सकता है कि वे शुरुआती आदम और हव्वा से पूरी तरह भिन्न प्रकार की मानवता हैं। इन लोगों को उन सभी लोगों में से चुना गया है, जिन्हें शैतान द्वारा भ्रष्ट किया गया था और ये वे लोग होंगे, जो अंततः परमेश्वर के न्याय और ताड़ना के दौरान अडिग रहे हैं; वे भ्रष्ट मानवजाति में से लोगों का अंतिम शेष समूह होंगे। केवल यही लोग परमेश्वर के साथ-साथ अंतिम विश्राम में प्रवेश कर पाएँगे। जो अंत के दिनों के दौरान परमेश्वर के न्याय और ताड़ना के कार्य के दौरान अडिग रहने में समर्थ हैं—यानी, शुद्धिकरण के अंतिम कार्य के दौरान—वे लोग होंगे, जो परमेश्वर के साथ अंतिम विश्राम में प्रवेश करेंगे; वैसे, वे सभी जो विश्राम में प्रवेश करेंगे, शैतान के प्रभाव से मुक्त हो चुके होंगे और परमेश्वर के शुद्धिकरण के अंतिम कार्य से गुज़रने के बाद उसके द्वारा प्राप्त किए जा चुके होंगे। ये लोग, जो अंततः परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए जा चुके होंगे, अंतिम विश्राम में प्रवेश

करेंगे। परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के कार्य का मूलभूत उद्देश्य मानवता को शुद्ध करना है और उन्हें उनके अंतिम विश्राम के लिए तैयार करना है; इस शुद्धिकरण के बिना संपूर्ण मानवता अपने प्रकार के मुताबिक़ विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत नहीं की जा सकेगी, या विश्राम में प्रवेश करने में असमर्थ होगी। यह कार्य ही मानवता के लिए विश्राम में प्रवेश करने का एकमात्र मार्ग है। केवल परमेश्वर द्वारा शुद्धिकरण का कार्य ही मनुष्यों को उनकी अधार्मिकता से शुद्ध करेगा और केवल उसकी ताड़ना और न्याय का कार्य ही मानवता के उन अवज्ञाकारी तत्वों को सामने लाएगा, और इस तरह बचाये जा सकने वालों से बचाए न जा सकने वालों को अलग करेगा, और जो बचेंगे उनसे उन्हें अलग करेगा जो नहीं बचेंगे। इस कार्य के समाप्त होने पर जिन्हें बचने की अनुमति होगी, वे सभी शुद्ध किए जाएँगे, और मानवता की उच्चतर दशा में प्रवेश करेंगे जहाँ वे पृथ्वी पर और अद्भुत द्वितीय मानव जीवन का आनंद उठाएंगे; दूसरे शब्दों में, वे अपने मानवीय विश्राम का दिन शुरू करेंगे और परमेश्वर के साथ रहेंगे। जिन लोगों को रहने की अनुमति नहीं है, उनकी ताड़ना और उनका न्याय किया गया है, जिससे उनके असली रूप पूरी तरह सामने आ जाएँगे; उसके बाद वे सब के सब नष्ट कर दिए जाएँगे और शैतान के समान, उन्हें पृथ्वी पर रहने की अनुमति नहीं होगी। भविष्य की मानवता में इस प्रकार के कोई भी लोग शामिल नहीं होंगे; ऐसे लोग अंतिम विश्राम की धरती पर प्रवेश करने के योग्य नहीं हैं, न ही ये उस विश्राम के दिन में प्रवेश के योग्य हैं, जिसे परमेश्वर और मनुष्य दोनों साझा करेंगे क्योंकि वे दंड के लायक हैं और दुष्ट, अधार्मिक लोग हैं। उन्हें एक बार छुटकारा दिया गया था और उन्हें न्याय और ताड़ना भी दी गई थी; उन्होंने एक बार परमेश्वर को सेवा भी दी थी। हालाँकि जब अंतिम दिन आएगा, तो भी उन्हें अपनी दुष्टता के कारण और अवज्ञा एवं छुटकारा न पाने की योग्यता के परिणामस्वरूप हटाया और नष्ट कर दिया जाएगा; वे भविष्य के संसार में अब कभी अस्तित्व में नहीं आएँगे और कभी भविष्य की मानवजाति के बीच नहीं रहेंगे। जैसे ही मानवता के पवित्र जन विश्राम में प्रवेश करेंगे, चाहे वे मृत लोगों की आत्मा हों या अभी भी देह में रह रहे लोग, सभी बुराई करने वाले और वे सभी जिन्हें बचाया नहीं गया है, नष्ट कर दिए जाएँगे। जहाँ तक इन बुरा करने वाली आत्माओं और मनुष्यों, या धार्मिक लोगों की आत्माओं और धार्मिकता करने वालों की बात है, चाहे वे जिस युग में हों, बुराई करने वाले सभी अंततः नष्ट हो जाएँगे और जो लोग धार्मिक हैं, वे बच जाएँगे। किसी व्यक्ति या आत्मा को उद्धार प्राप्त होगा या नहीं, यह पूर्णतः अंत के युग के समय के कार्य के आधार पर तय नहीं होगा; बल्कि इस आधार पर निर्धारित किया जाता है कि क्या उन्होंने परमेश्वर का प्रतिरोध किया था, या वे परमेश्वर के प्रति

अवज्ञाकारी रहे हैं। पिछले युगों में जिन लोगों ने बुरा किया और जो उद्धार नहीं प्राप्त कर पाए, निःसंदेह वे दंड के भागी बनेंगे और वे जो इस युग में बुरा करते हैं और उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते, तो वे भी निश्चित रूप से दंड के भागी बनेंगे। मनुष्य अच्छे और बुरे के आधार पर पृथक किए जाते हैं, युग के आधार पर नहीं। एक बार इस प्रकार वर्गीकृत किए जाने पर, उन्हें तुरंत दंड या पुरस्कार नहीं दिया जाएगा; बल्कि, परमेश्वर अंत के दिनों में अपने विजय के कार्य को समाप्त करने के बाद ही बुराई को दंडित करने और अच्छाई को पुरस्कृत करने का अपना कार्य करेगा। वास्तव में, वह मनुष्यों को तबसे अच्छे और बुरे में पृथक कर रहा है, जबसे उसने उनके बीच अपना कार्य आरंभ किया था। बात बस इतनी है कि वह धार्मिकों को पुरस्कृत और दुष्टों को दंड देने का कार्य केवल तब करेगा, जब उसका कार्य समाप्त हो जाएगा; ऐसा नहीं है कि वह अपने कार्य के पूरा होने पर उन्हें श्रेणियों में पृथक करेगा और फिर तुरंत दुष्टों को दंडित करना और धार्मिकों को पुरस्कृत करना शुरू करेगा। बुराई को दंडित करने और अच्छाई को पुरस्कृत करने के परमेश्वर के अंतिम कार्य के पीछे का पूरा उद्देश्य, सभी मनुष्यों को पूरी तरह शुद्ध करना है, ताकि वह पूरी तरह पवित्र मानवता को शाश्वत विश्राम में ला सके। उसके कार्य का यह चरण सबसे अधिक महत्वपूर्ण है; यह उसके समस्त प्रबंधन-कार्य का अंतिम चरण है। यदि परमेश्वर ने दुष्टों का नाश नहीं किया होता, बल्कि उन्हें बचा रहने देता तो प्रत्येक मनुष्य अभी भी विश्राम में प्रवेश करने में असमर्थ होता और परमेश्वर समस्त मानवता को एक बेहतर क्षेत्र में नहीं ला पाता। ऐसा कार्य पूर्ण नहीं होता। जब वह अपना कार्य समाप्त कर लेगा, तो संपूर्ण मानवता पूर्णतः पवित्र हो जाएगी। केवल इसी तरीक़े से परमेश्वर शांतिपूर्वक विश्राम में रह सकता है।

आजकल लोग अभी भी देह की चीज़ें छोड़ने में असमर्थ हैं; वे देह के सुख नहीं छोड़ सकते, न वे संसार, धन और अपने भ्रष्ट स्वभाव छोड़ पाते हैं। अधिकांश लोग अपनी कोशिशें बेपरवाही से करते हैं। वास्तव में इन लोगों के हृदय में परमेश्वर है ही नहीं; इससे भी बुरा यह है कि वे परमेश्वर का भय नहीं मानते। परमेश्वर उनके दिलों में नहीं है और इसलिए वे वह सब नहीं समझ पाते, जो परमेश्वर करता है और वे उसके द्वारा कहे गए वचनों पर विश्वास करने में तो और भी असमर्थ हैं। ऐसे लोग अत्यधिक देह में रमे होते हैं, वे आकंठ भ्रष्ट होते हैं और उनमें पूरी तरह सत्य का अभाव होता है। और तो और, उन्हें विश्वास नहीं कि परमेश्वर देहधारी हो सकता है। जो कोई देहधारी परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता—अर्थात, जो कोई प्रत्यक्ष परमेश्वर या उसके कार्य और वचनों पर विश्वास नहीं करता और इसके बजाय स्वर्ग के अदृश्य

परमेश्वर की आराधना करता है—वह व्यक्ति है, जिसके हृदय में परमेश्वर नहीं है। ये लोग विद्रोही हैं और परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं। इन लोगों में मानवता और तर्क का अभाव होता है, सत्य के बारे में तो कहना ही क्या। इसके अतिरिक्त, इन लोगों के लिए, प्रत्यक्ष और स्पर्शनीय परमेश्वर तो और भी विश्वास के योग्य नहीं है, फिर भी वे अदृश्य और अस्पर्शनीय परमेश्वर को सर्वाधिक विश्वसनीय और खुशी देने वाला मानते हैं। वे जिसे खोजते हैं, वह वास्तविक सत्य नहीं है, न ही वह जीवन का वास्तविक सार है; परमेश्वर की इच्छा तो और भी नहीं। इसके उलट वे रोमांच खोजते हैं। जो भी वस्तुएं उन्हें अधिक से अधिक उनकी इच्छाओं को पूरा करने में सक्षम बनाती हैं, बिना शक वे वो वस्तुएँ हैं जिनमें उनका विश्वास है और जिसका वे अनुसरण करते हैं। वे परमेश्वर पर केवल इसलिए विश्वास करते हैं ताकि निजी इच्छाएं पूरी कर पाएं, सत्य की खोज के लिए नहीं। क्या ऐसे लोग बुराई करने वाले नहीं हैं? वे आत्मविश्वास से अत्यधिक भरे हैं, और वे यह बिल्कुल विश्वास नहीं करते कि स्वर्ग का परमेश्वर उनके जैसे इन "भले लोगों" को नष्ट कर देगा। इसके बजाय, उनका मानना है कि परमेश्वर उन्हें बना रहने देगा और इसके अलावा, उन्हें परमेश्वर के लिए कई चीज़ें करने और उसके प्रति यथेष्ट "वफ़ादारी" दिखाने के कारण उन्हें अच्छी तरह पुरस्कृत करेगा। अगर वे भी प्रत्यक्ष परमेश्वर का भी अनुसरण करते, तो जैसे ही उनकी इच्छाएँ पूरी न होतीं, वे तुरंत परमेश्वर के ख़िलाफ़ जवाबी हमला कर देते या बेहद नाराज़ हो जाते। वे ख़ुद को नीच और अवमानना करने वाले लोगों की तरह दिखाते हैं, जो हमेशा अपनी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं; वे सत्य की खोज में लगे ईमानदार लोग नहीं हैं। ऐसे लोग वे तथाकथित दुष्ट हैं, जो मसीह के पीछे चलते हैं। जो लोग सत्य की खोज नहीं करते, वे संभवत: सत्य पर विश्वास नहीं कर सकते और मानवता के भविष्य का परिणाम समझने में और भी अधिक अयोग्य हैं, क्योंकि वे प्रत्यक्ष परमेश्वर के किसी कार्य या वचनों पर विश्वास नहीं करते—और इसमें मानवता के भविष्य के गंतव्य पर विश्वास नहीं कर पाना शामिल है। इसलिए, यदि वे साक्षात परमेश्वर का अनुसरण करते भी हैं, तब भी वे बुरा करेंगे और सत्य को बिल्कुल नहीं खोजेंगे, न ही वे उस सत्य का अभ्यास करेंगे, जिसकी मुझे अपेक्षा है। वे लोग जो यह विश्वास नहीं करते कि वे नष्ट हो जाएंगे, वही लोग असल में नष्ट होंगे। वे सब स्वयं को बहुत चतुर मानते हैं और वे सोचते हैं कि वे ही वो लोग हैं, जो सत्य का अभ्यास करते हैं। वे अपने बुरे आचरण को सत्य मानते हैं और इसलिए उसे सँजोते हैं। ऐसे दुष्ट लोग अत्यधिक आत्मविश्वास से भरे हैं; वे सत्य को सिद्धांत मानते हैं और अपने बुरे कार्यों को सत्य मानते हैं, लेकिन अंत में, वे केवल वहीं काटेंगे, जो उन्होंने बोया है। लोग जितना अधिक आत्मविश्वासी हैं और जितना

अधिक घमंडी हैं, उतना ही अधिक वे सत्य को पाने में असमर्थ हैं; लोग जितना ज़्यादा स्वर्गिक परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, वे उतना अधिक परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं। ये वे लोग हैं, जो दंडित किए जाएंगे। मानवता के विश्राम में प्रवेश से पहले, हर एक व्यक्ति का दंडित होना या पुरस्कृत होना इस बात पर आधारित होगा कि क्या उन्होंने सत्य की खोज की है, क्या वे परमेश्वर को जानते हैं और क्या वे प्रत्यक्ष परमेश्वर को समर्पण कर सकते हैं। जिन्होंने प्रत्यक्ष परमेश्वर को सेवा दी है, पर उसे न तो जानते हैं न ही उसे समर्पण करते हैं, उनमें सत्य नहीं है। ऐसे लोग बुराई करने वाले हैं और बुराई करने वाले निःसंदेह दंड के भागी होंगे; इससे अलावा, वे अपने दुष्ट आचरण के अनुसार दंड पाएंगे। परमेश्वर मनुष्यों के विश्वास करने के लिए है और वह उनकी आज्ञाकारिता के योग्य भी है। वे जो केवल अज्ञात और अदृश्य परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, वे लोग हैं जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते और परमेश्वर को समर्पण करने में असमर्थ हैं। यदि ये लोग तब भी दृश्यमान परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर पाते, जब उसका विजय कार्य समाप्त होता है और लगातार अवज्ञाकारी बने रहते हैं और देह में दिखाई देने वाले परमेश्वर का विरोध करते हैं, तो ये "अज्ञातवादी" बिना संदेह विनाश की वस्तुएँ बन जाएँगे। यह उसी प्रकार है, जैसे तुम सब के बीच के कुछ लोग जो मौखिक रूप में देहधारी परमेश्वर को पहचानते हैं, फिर भी देहधारी परमेश्वर के प्रति समर्पण के सत्य का अभ्यास नहीं कर पाते, तो वे अंत में हटाने और विनाश की वस्तु बनेंगे। इसके अलावा, जो कोई मौखिक रूप में प्रत्यक्ष परमेश्वर को मानता है, देहधारी परमेश्वर द्वारा अभिव्यक्त सत्य को खाता और पीता है जबकि अज्ञात और अदृश्य परमेश्वर को भी खोजता है, तो भविष्य में उसके नष्ट होने की और भी अधिक संभावना होगी। इन लोगों में से कोई भी, परमेश्वर का कार्य पूरा होने के बाद उसके विश्राम का समय आने तक नहीं बचेगा, न ही उस विश्राम के समय, ऐसे लोगों के समान एक भी व्यक्ति बच सकता है। दुष्टात्मा लोग वे हैं, जो सत्य का अभ्यास नहीं करते; उनका सार प्रतिरोध करना और परमेश्वर की अवज्ञा करना है और उनमें परमेश्वर के समक्ष समर्पण की लेशमात्र भी इच्छा नहीं है। ऐसे सभी लोग नष्ट किए जाएँगे। तुम्हारे पास सत्य है या नहीं और तुम परमेश्वर का प्रतिरोध करते हो या नहीं, यह तुम्हारे प्रकटन पर या तुम्हारी कभीकभार की बातचीत और आचरण पर नहीं बल्कि तुम्हारे सार पर निर्भर है। प्रत्येक व्यक्ति का सार तय करता है कि उसे नष्ट किया जाएगा या नहीं; यह किसी के व्यवहार और किसी की सत्य की खोज द्वारा उजागर हुए सार के अनुसार तय किया जाता है। उन लोगों में जो कार्य करने में एक दूसरे के समान हैं, और जो समान मात्रा में कार्य करते हैं, जिनके मानवीय सार अच्छे हैं और जिनके पास सत्य है, वे

लोग हैं जिन्हें रहने दिया जाएगा, जबकि वे जिनका मानवीय सार दुष्टता भरा है और जो दृश्यमान परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, वे विनाश की वस्तु होंगे। परमेश्वर के सभी कार्य या मानवता के गंतव्य से संबंधित वचन प्रत्येक व्यक्ति के सार के अनुसार उचित रूप से लोगों के साथ व्यवहार करेंगे; थोड़ी-सी भी त्रुटि नहीं होगी और एक भी ग़लती नहीं की जाएगी। केवल जब लोग कार्य करते हैं, तब ही मनुष्य की भावनाएँ या अर्थ उसमें मिश्रित होते हैं। परमेश्वर जो कार्य करता है, वह सबसे अधिक उपयुक्त होता है; वह निश्चित तौर पर किसी प्राणी के विरुद्ध झूठे दावे नहीं करता। अभी बहुत से लोग हैं, जो मानवता के भविष्य के गंतव्य को समझने में असमर्थ हैं और वे उन वचनों पर विश्वास नहीं करते, जो मैं कहता हूँ। वे सभी जो विश्वास नहीं करते और वे भी जो सत्य का अभ्यास नहीं करते, दुष्टात्मा हैं!

आजकल, वे जो खोज करते हैं और वे जो नहीं करते, दो पूरी तरह भिन्न प्रकार के लोग हैं, जिनके गंतव्य भी काफ़ी अलग हैं। वे जो सत्य के ज्ञान का अनुसरण करते हैं और सत्य का अभ्यास करते हैं, वे लोग हैं जिनका परमेश्वर उद्धार करेगा। वे जो सच्चे मार्ग को नहीं जानते, वे दुष्टात्माओं और शत्रुओं के समान हैं। वे प्रधान स्वर्गदूत के वंशज हैं और विनाश की वस्तु होंगे। यहाँ तक कि एक अज्ञात परमेश्वर के धर्मपरायण विश्वासीजन—क्या वे भी दुष्टात्मा नहीं हैं? जिन लोगों का अंत:करण साफ़ है, परंतु सच्चे मार्ग को स्वीकार नहीं करते, वे भी दुष्टात्मा हैं; उनका सार भी परमेश्वर का प्रतिरोध करने वाला है। वे जो सत्य के मार्ग को स्वीकार नहीं करते, वे हैं जो परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं और भले ही ऐसे लोग बहुत-सी कठिनाइयाँ सहते हैं, तब भी वे नष्ट किए जाएँगे। वे सभी जो संसार को छोड़ना नहीं चाहते, जो अपने माता-पिता से अलग होना नहीं सह सकते और जो स्वयं को देह के सुख से दूर रखना सहन नहीं कर सकते, परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी हैं और वे सब विनाश की वस्तु बनेंगे। जो भी देहधारी परमेश्वर को नहीं मानता, दुष्ट है और इसके अलावा, वे नष्ट किए जाएँगे। वे सब जो विश्वास करते हैं, पर सत्य का अभ्यास नहीं करते, वे जो देहधारी परमेश्वर में विश्वास नहीं करते और वे जो परमेश्वर के अस्तित्व पर लेशमात्र भी विश्वास नहीं रखते, वे सब नष्ट होंगे। वे सभी जिन्हें रहने दिया जाएगा, वे लोग हैं, जो शोधन के दुख से गुज़रे हैं और डटे रहे हैं; ये वे लोग हैं, जो वास्तव में परीक्षणों से गुज़रे हैं। यदि कोई परमेश्वर को नहीं पहचानता, शत्रु है; यानी कोई भी जो देहधारी परमेश्वर को नहीं पहचानता—चाहे वह इस धारा के भीतर है या बाहर—एक मसीह-विरोधी है! शैतान कौन है, दुष्टात्माएँ कौन हैं और परमेश्वर के शत्रु कौन हैं, क्या ये वे नहीं, जो परमेश्वर का प्रतिरोध करते और परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते? क्या ये वे लोग नहीं, जो परमेश्वर के प्रति

अवज्ञाकारी हैं? क्या ये वे नहीं, जो विश्वास करने का दावा तो करते हैं, परंतु उनमें सत्य नहीं है? क्या ये वे लोग नहीं, जो सिर्फ़ आशीष पाने की फ़िराक में रहते हैं जबकि परमेश्वर के लिए गवाही देने में असमर्थ हैं? तुम अभी भी इन दुष्टात्माओं के साथ घुलते-मिलते हो और उनके प्रति साफ़ अंत:करण और प्रेम रखते हो, लेकिन क्या इस मामले में तुम शैतान के प्रति सदिच्छाओं को प्रकट नहीं कर रहे? क्या तुम दुष्टात्माओं के साथ संबद्ध नहीं हो रहे? यदि आज कल भी लोग अच्छे और बुरे में भेद नहीं कर पाते और परमेश्वर की इच्छा जानने का कोई इरादा न रखते हुए या परमेश्वर की इच्छाओं को अपनी इच्छा की तरह मानने में असमर्थ रहते हुए, आँख मूँदकर प्रेम और दया दर्शाते रहते हैं, तो उनके अंत और भी अधिक ख़राब होंगे। यदि कोई देहधारी परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, तो वह परमेश्वर का शत्रु है। यदि तुम शत्रु के प्रति साफ़ अंत:करण और प्रेम रख सकते हो, तो क्या तुममें धार्मिकता की समझ का अभाव नहीं है? यदि तुम उनके साथ सहज हो, जिनसे मैं घृणा करता हूँ, और जिनसे मैं असहमत हूँ और तुम तब भी उनके प्रति प्रेम और निजी भावनाएँ रखते हो, तब क्या तुम अवज्ञाकारी नहीं हो? क्या तुम जानबूझकर परमेश्वर का प्रतिरोध नहीं कर रहे हो? क्या ऐसे व्यक्ति में सत्य होता है? यदि लोग शत्रुओं के प्रति साफ़ अंत:करण रखते हैं, दुष्टात्माओं से प्रेम करते हैं और शैतान पर दया दिखाते हैं, तो क्या वे जानबूझकर परमेश्वर के कार्य में रुकावट नहीं डाल रहे हैं? वे लोग जो केवल यीशु पर विश्वास करते हैं और अंत के दिनों के देहधारी परमेश्वर को नहीं मानते, और जो ज़बानी तौर पर देहधारी परमेश्वर में विश्वास करने का दावा करते हैं, परंतु बुरे कार्य करते हैं, वे सब मसीह-विरोधी हैं, उनकी तो बात ही क्या जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते। ये सभी लोग विनाश की वस्तु बनेंगे। मनुष्य जिस मानक से दूसरे मनुष्य को आंकता है, वह व्यवहार पर आधारित है; वे जिनका आचरण अच्छा है, धार्मिक हैं और जिनका आचरण घृणित है, दुष्ट हैं। परमेश्वर जिस मानक से मनुष्यों का न्याय करता है, उसका आधार है कि क्या व्यक्ति का सार परमेश्वर को समर्पित है या नहीं; वह जो परमेश्वर को समर्पित है, धार्मिक है और जो नहीं है वह शत्रु और दुष्ट व्यक्ति है, भले ही उस व्यक्ति का आचरण अच्छा हो या बुरा, भले ही इस व्यक्ति की बातें सही हो या ग़लत हो। कुछ लोग अच्छे कर्मों का उपयोग भविष्य में अच्छी मंज़िल प्राप्त करने के लिए करना चाहते हैं और कुछ लोग अच्छी वाणी का उपयोग एक अच्छी मंज़िल हासिल करने में करना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का यह ग़लत विश्वास है कि परमेश्वर मनुष्य के व्यवहार को देखकर या उनकी बातें सुनकर उसका परिणाम निर्धारित करता है; इसलिए बहुत से लोग परमेश्वर को धोखा देने के लिए इसका फ़ायदा उठाना चाहते हैं, ताकि वह उन पर

क्षणिक कृपा कर दे। भविष्य में, जो लोग विश्राम की अवस्था में जीवित बचेंगे, उन सभी ने क्लेश के दिन को सहन किया हुआ होगा और परमेश्वर की गवाही दी हुई होगी; ये वे सब लोग होंगे, जिन्होंने अपने कर्तव्य पूरे किए हैं और जिन्होंने जानबूझकर परमेश्वर को समर्पण किया है। जो केवल सत्य का अभ्यास करने से बचने की इच्छा के साथ सेवा करने के अवसर का लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें रहने नहीं दिया जाएगा। परमेश्वर के पास प्रत्येक व्यक्ति के परिणामों के प्रबंधन के लिए उचित मानक हैं; वह केवल यूँ ही किसी के शब्दों या आचरण के अनुसार ये निर्णय नहीं लेता, न ही वह एक अवधि के दौरान किसी के व्यवहार के अनुसार निर्णय लेता है। अतीत में किसी व्यक्ति द्वारा परमेश्वर के लिए की गई किसी सेवा की वजह से वह किसी के दुष्ट व्यवहार के प्रति नर्मी कतई नहीं करेगा, न ही वह परमेश्वर के लिए एक बार स्वयं को खपाने के कारण किसी को मृत्यु से बचाएगा। कोई भी अपनी दुष्टता के लिए प्रतिफल से नहीं बच सकता, न ही कोई अपने दुष्ट आचरण को छिपा सकता है और फलस्वरूप विनाश की पीड़ा से बच सकता है। यदि लोग वास्तव में अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे अनंतकाल तक परमेश्वर के प्रति वफ़ादार हैं और उन्हें इसकी परवाह नहीं होती कि उन्हें आशीष मिलते हैं या वे दुर्भाग्य से पीड़ित होते हैं, वे पुरस्कार की तलाश नहीं करते। यदि लोग तब परमेश्वर के लिए वफ़ादार हैं, जब उन्हें आशीष दिखते हैं और जब उन्हें आशीष नहीं दिखाई देते, तो अपनी वफ़ादारी खो देते हैं और अगर अंत में भी वे परमेश्वर की गवाही देने में असमर्थ रहते हैं या उन कर्तव्यों को करने में असमर्थ रहते हैं जिसके लिए वे ज़िम्मेदार हैं, तो पहले वफ़ादारी से की गई परमेश्वर की सेवा के बावजूद वे विनाश की वस्तु बनेंगे। संक्षेप में, दुष्ट लोग अनंतकाल तक जीवित नहीं रह सकते, न ही वे विश्राम में प्रवेश कर सकते हैं; केवल धार्मिक लोग ही विश्राम के अधिकारी हैं। जब मानवता सही मार्ग पर होगी, लोग सामान्य मानवीय जीवन जिएँगे। वे सब अपने-अपने कर्तव्य निभाएँगे और परमेश्वर के प्रति पूर्णतः वफ़ादार होंगे। वे अपनी अवज्ञा और अपने भ्रष्ट स्वभाव को पूरी तरह छोड़ देंगे और वे अवज्ञा और प्रतिरोध दोनों के बिना परमेश्वर के लिए और परमेश्वर के कारण जिएंगे। वे पूर्णतः परमेश्वर को समर्पित होने में सक्षम होंगे। यही परमेश्वर और मानवता का जीवन होगा; यह राज्य का जीवन होगा और यह विश्राम का जीवन होगा।

जो अपने सर्वथा अविश्वासी बच्चों और रिश्तेदारों को कलीसिया में खींचकर लाते हैं, वे बेहद स्वार्थी हैं और सिर्फ़ अपनी दयालुता का प्रदर्शन कर रहे हैं। ये लोग इसकी परवाह किए बिना कि उनका विश्वास है भी या नहीं और यह परमेश्वर की इच्छा है या नहीं, केवल प्रेमपूर्ण बने रहने पर ध्यान देते हैं। कुछ लोग

अपनी पत्नी को परमेश्वर के सामने लाते हैं या अपने माता-पिता को परमेश्वर के सामने खींचकर लाते हैं और इसकी परवाह किए बिना कि क्या पवित्र आत्मा सहमत है या उनमें कार्य कर रहा है, वे आँखें बंद कर परमेश्वर के लिए "प्रतिभाशाली लोगों को अपनाते रहते हैं"। इन गैर-विश्वासियों के प्रति दयालुता दिखाने से आखिर क्या लाभ मिल सकता है? यहाँ तक कि अगर वे जिनमें पवित्र आत्मा उपस्थित नहीं है, परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए संघर्ष भी करते हैं, तब भी उन्हें बचाया नहीं जा सकता। जो लोग उद्धार प्राप्त कर सकते हैं, उनके लिए वास्तव में इसे प्राप्त करना उतना आसान नहीं है। जो लोग पवित्र आत्मा के कार्य और परीक्षणों से नहीं गुज़रे हैं और देहधारी परमेश्वर के द्वारा पूर्ण नहीं बनाए गए हैं, वे पूर्ण बनाए जाने में सर्वथा असमर्थ हैं। इसलिए जिस क्षण से वे नाममात्र के लिए परमेश्वर का अनुसरण आरंभ करते हैं, उन लोगों में पवित्र आत्मा मौजूद नहीं होता। उनकी स्थिति और वास्तविक अवस्थाओं के प्रकाश में, उन्हें पूर्ण बनाया ही नहीं जा सकता। इसलिए, पवित्र आत्मा उन पर अधिक ऊर्जा व्यय न करने का निर्णय लेता है, न ही वह उन्हें किसी प्रकार का प्रबोधन प्रदान करता है, न उनका मार्गदर्शन करता है; वह उन्हें केवल साथ चलने की अनुमति देता है और अंततः उनके परिणाम प्रकट करेगा—यही पर्याप्त है। मानवता का उत्साह और इच्छाएँ शैतान से आते हैं और किसी भी तरह ये चीज़ें पवित्र आत्मा का कार्य पूर्ण नहीं कर सकतीं। चाहे लोग किसी भी प्रकार के हों, उनमें पवित्र आत्मा का कार्य अवश्य होना चाहिए। क्या मनुष्य दूसरे मनुष्यों को पूरा कर सकते हैं? पति अपनी पत्नी से क्यों प्रेम करता है? पत्नी अपने पति से क्यों प्रेम करती है? बच्चे क्यों माता-पिता के प्रति कर्तव्यशील रहते हैं? और माता-पिता क्यों अपने बच्चों से अतिशय स्नेह करते हैं? लोग वास्तव में किस प्रकार की इच्छाएँ पालते हैं? क्या उनकी मंशा उनकी खुद की योजनाओं और स्वार्थी आकांक्षाओं को पूरा करने की नहीं है? क्या उनका इरादा वास्तव में परमेश्वर की प्रबंधन योजना के लिए कार्य करने का है? क्या वे परमेश्वर के कार्य के लिए कार्य कर रहे हैं? क्या उनकी मंशा सृजित प्राणी के कर्तव्य को पूरा करने की है? वे जो परमेश्वर पर विश्वास करना शुरू करने के समय से पवित्र आत्मा की उपस्थिति को नहीं पा सके हैं, वे कभी भी पवित्र आत्मा के कार्य को नहीं पा सकते; ये लोग विनाश की वस्तुओं के रूप में नामित किए गए हैं। इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि कोई उनसे कितना प्रेम करता है, यह पवित्र आत्मा के कार्य का स्थान नहीं ले सकता। लोगों का उत्साह और प्रेम, मानवीय इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता है, पर परमेश्वर की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता और न ही वे परमेश्वर के कार्य का स्थान ले सकते हैं। यहाँ तक कि अगर कोई उन लोगों के प्रति अत्यधिक प्रेम या दया दिखा भी दे,

जो नाममात्र के लिए परमेश्वर में विश्वास करते हैं और उसके अनुसरण का दिखावा करते हैं, बिना यह जाने कि वास्तव में परमेश्वर में विश्वास करने का क्या मतलब है, फिर भी वे परमेश्वर की सहानुभूति प्राप्त नहीं करेंगे, न ही वे पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त करेंगे। भले ही जो लोग ईमानदारी से परमेश्वर का अनुसरण करते हैं कमज़ोर काबिलियत वाले हों, और बहुत सी सच्चाइयाँ न समझते हों, वे तब भी कभी-कभी पवित्र आत्मा का कार्य प्राप्त कर सकते हैं; लेकिन जो अपेक्षाकृत अच्छी काबिलियत वाले हैं, मगर ईमानदारी से विश्वास नहीं करते, वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति प्राप्त कर ही नहीं सकते। ऐसे लोगों के उद्धार की कोई संभावना नहीं है। यदि वे परमेश्वर के वचनों को पढ़ें या कभी-कभी उपदेश सुनें, या परमेश्वर की स्तुति गाएं, तब भी वे अंतत: विश्राम के समय तक बच नहीं पाएंगे। लोग सचमुच खोजते हैं या नहीं यह इससे निर्धारित नहीं होता कि दूसरे उन्हें कैसे आंकते हैं या आसपास के लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं, बल्कि इससे निर्धारित होता है कि क्या पवित्र आत्मा उसके ऊपर कार्य करता है और क्या उन्होंने पवित्र आत्मा की उपस्थिति हासिल कर ली है। इसके अतिरिक्त यह इस बात पर निर्भर है कि क्या एक निश्चित अवधि तक पवित्र आत्मा के कार्य से गुज़रने के बाद उनके स्वभाव बदलते हैं और क्या उन्हें परमेश्वर का कोई ज्ञान मिला है। यदि किसी व्यक्ति पर पवित्र आत्मा कार्य करेगा, तो धीरे-धीरे उस व्यक्ति का स्वभाव बदल जाएगा और परमेश्वर में विश्वास करने का उसका विचार धीरे-धीरे और शुद्ध होता जाएगा। जब तक लोगों में परिवर्तन होता है, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वे कितने समय परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा उन पर कार्य कर रहा है। यदि उनमें परिवर्तन नहीं हुआ है, इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा उन पर कार्य नहीं कर रहा है। ऐसे लोग कुछ सेवा करते भी हैं, तो भी ऐसा करने की प्रेरणा अच्छा भविष्य पाने की आकांक्षा ही होती है। कभी-कभी सेवा करना, उनके स्वभावों में परिवर्तन के अनुभव का स्थान नहीं ले सकती। आख़िरकार वे तब भी नष्ट किए जाएंगे, क्योंकि राज्य में सेवाकर्मियों की आवश्यकता नहीं होगी, न ही उनकी आवश्यकता होगी, जिनका स्वभाव उन लोगों की सेवा के योग्य होने के लिए नहीं बदला है, जिन्हें पूर्ण बनाया जा चुका है और जो परमेश्वर के प्रति वफ़ादार हैं। अतीत में बोले गए ये वचन, "जब कोई प्रभु पर विश्वास करता है, तो सौभाग्य उसके पूरे परिवार पर मुस्कराता है" अनुग्रह के युग के लिए उपयुक्त हैं, परंतु मानवता के गंतव्य से संबंधित नहीं हैं। ये केवल अनुग्रह के युग के दौरान एक चरण के लिए ही उपयुक्त थे। उन वचनों का अर्थ शांति और भौतिक आशीष पर आधारित था, जिनका लोगों ने आनंद लिया; उनका मतलब यह नहीं था कि प्रभु को मानने वाले का पूरा परिवार बच

जाएगा, न ही उनका मतलब था कि जब कोई सौभाग्य पा लेता है, तो पूरे परिवार को भी विश्राम में लाया जा सकता है। किसी को आशीष मिलेगा या दुर्भाग्य सहना पड़ेगा, इसका निर्धारण व्यक्ति के सार के अनुसार होता है, न कि सामान्य सार के अनुसार, जो वह दूसरों के साथ साझा करता है। इस प्रकार की लोकोक्ति या नियम का राज्य में कोई स्थान है ही नहीं। यदि कोई अंत में बच पाता है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा किया है और यदि कोई विश्राम के दिनों तक बचने में सक्षम नहीं हो पाता, तो इसलिए क्योंकि वे परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी रहे हैं और उन्होंने परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया है। प्रत्येक के पास एक उचित गंतव्य है। ये गंतव्य प्रत्येक व्यक्ति के सार के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं और दूसरे लोगों से इनका कोई संबंध नहीं होता। किसी बच्चे का दुष्ट व्यवहार उसके माता-पिता को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता और न ही किसी बच्चे की धार्मिकता को उसके माता-पिता के साथ साझा किया जा सकता है। माता-पिता का दुष्ट आचरण उनकी संतानों को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता, न ही माता-पिता की धार्मिकता उनके बच्चों के साथ साझा की जा सकती है। हर कोई अपने-अपने पाप ढोता है और हर कोई अपने-अपने सौभाग्य का आनंद लेता है। कोई भी दूसरे का स्थान नहीं ले सकता; यही धार्मिकता है। मनुष्य के नज़रिए से, यदि माता-पिता अच्छा सौभाग्य पाते हैं, तो उनके बच्चों को भी मिलना चाहिए, यदि बच्चे बुरा करते हैं, तो उनके पापों के लिए माता-पिता को प्रायश्चित करना चाहिए। यह मनुष्य का दृष्टिकोण है और कार्य करने का मनुष्य का तरीक़ा है; यह परमेश्वर का दृष्टिकोण नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति के परिणाम का निर्धारण उसके आचरण से पैदा होने वाले सार के अनुसार होता है और इसका निर्धारण सदैव उचित तरीक़े से होता है। कोई भी दूसरे के पापों को नहीं ढो सकता; यहाँ तक कि कोई भी दूसरे के बदले दंड नहीं पा सकता। यह सुनिश्चित है। माता-पिता द्वारा अपनी संतान की बहुत ज़्यादा देखभाल का अर्थ यह नहीं कि वे अपनी संतान के बदले धार्मिकता के कर्म कर सकते हैं, न ही किसी बच्चे के माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ स्नेह का यह अर्थ है कि वे अपने माता-पिता के लिए धार्मिकता के कर्म कर सकते हैं। यही इन वचनों का वास्तविक अर्थ है, "उस समय दो जन खेत में होंगे; एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी; एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।" लोग बुरा करने वाले बच्चों के प्रति गहरे प्रेम के आधार पर उन्हें विश्राम में नहीं ले जा सकते, न ही कोई अपनी पत्नी (या पति) को अपने धार्मिक आचरण के आधार पर विश्राम में ले जा सकता है। यह एक प्रशासनिक नियम है; किसी के लिए कोई अपवाद नहीं हो सकता। अंत में,

धार्मिकता करने वाले धार्मिकता ही करते हैं और बुरा करने वाले, बुरा ही करते हैं। अंतत: धार्मिकों को बचने की अनुमति मिलेगी, जबकि बुरा करने वाले नष्ट हो जाएंगे। पवित्र, पवित्र हैं; वे गंदे नहीं हैं। गंदे, गंदे हैं और उनमें पवित्रता का एक भी अंश नहीं है। जो लोग नष्ट किए जाएँगे, वे सभी दुष्ट हैं और जो बचेंगे वे सभी धार्मिक हैं—भले ही बुरा कार्य करने वालों की संतानें धार्मिक कर्म करें और भले ही किसी धार्मिक व्यक्ति के माता-पिता दुष्टता के कर्म करें। एक विश्वास करने वाले पति और विश्वास न करने वाली पत्नी के बीच कोई संबंध नहीं होता और विश्वास करने वाले बच्चों और विश्वास न करने वाले माता-पिता के बीच कोई संबंध नहीं होता; ये दोनों तरह के लोग पूरी तरह असंगत हैं। विश्राम में प्रवेश से पहले एक व्यक्ति के रक्त-संबंधी होते हैं, किंतु एक बार जब उसने विश्राम में प्रवेश कर लिया, तो उसके कोई रक्त-संबंधी नहीं होंगे। जो अपना कर्तव्य करते हैं, उनके शत्रु हैं जो कर्तव्य नहीं करते हैं; जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जो उससे घृणा करते हैं, एक दूसरे के उलट हैं। जो विश्राम में प्रवेश करेंगे और जो नष्ट किए जा चुके होंगे, दो अलग-अलग असंगत प्रकार के प्राणी हैं। जो प्राणी अपने कर्तव्य निभाते हैं, बचने में समर्थ होंगे, जबकि वे जो अपने कर्तव्य नहीं निभाते, विनाश की वस्तु बनेंगे; इसके अलावा, यह सब अनंत काल के लिए होगा। क्या तुम एक सृजित प्राणी के तौर पर अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए अपने पति से प्रेम करती हो? क्या तुम एक सृजित प्राणी के तौर पर अपने कर्तव्य पूरा करने के लिए अपनी पत्नी से प्रेम करते हो? क्या तुम एक सृजित प्राणी के तौर पर अपने नास्तिक माता-पिता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो? परमेश्वर पर विश्वास करने के मामले में मनुष्य का दृष्टिकोण सही या ग़लत है? तुम परमेश्वर में विश्वास क्यों करते हो? तुम क्या पाना चाहते हो? तुम परमेश्वर से कैसे प्रेम करते हो? जो लोग पैदा हुए प्राणियों के रूप में अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर सकते और जो पूरा प्रयास नहीं कर सकते, वे विनाश की वस्तु बनेंगे। आज लोगों में एक दूसरे के बीच भौतिक संबंध होते हैं, उनके बीच खून के रिश्ते होते हैं, किंतु भविष्य में, यह सब ध्वस्त हो जाएगा। विश्वासी और अविश्वासी संगत नहीं हैं, बल्कि वे एक दूसरे के विरोधी हैं। वे जो विश्राम में हैं, विश्वास करेंगे कि कोई परमेश्वर है और उसके प्रति समर्पित होंगे, जबकि वे जो परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी हैं, वे सब नष्ट कर दिए गए होंगे। पृथ्वी पर परिवारों का अब और अस्तित्व नहीं होगा; तो माता-पिता या संतानें या पतियों और पत्नियों के बीच के रिश्ते कैसे हो सकते हैं? विश्वास और अविश्वास की अत्यंत असंगतता से ये संबंध पूरी तरह टूट चुके होंगे!

मानवता के बीच मूल रूप से परिवार नहीं थे; केवल एक पुरुष और एक महिला का ही अस्तित्व था

—दो भिन्न प्रकार के मनुष्य। कोई देश नहीं थे, परिवारों की तो बात ही छोड़ो, परंतु मानवता की भ्रष्टता के कारण, सभी प्रकार के लोगों ने स्वयं को व्यक्तिगत क़बीलों में संगठित कर लिया, बाद में ये देशों और राष्ट्रों में विकसित हो गए। ये देश और राष्ट्र छोटे-छोटे परिवारों से मिलकर बने थे और इस तरीक़े से सभी प्रकार के लोग, भाषा की भिन्नताओं और सीमाओं के अनुसार विभिन्न नस्लों में बंट गए। वास्तव में, दुनिया में चाहे कितनी भी नस्लें हों, मानवता का केवल एक ही पूर्वज है। आरंभ में, केवल दो प्रकार के ही मनुष्य थे और ये दो प्रकार पुरुष और स्त्री थे। हालाँकि, परमेश्वर के कार्य की प्रगति, इतिहास की गति और भौगोलिक परिवर्तनों के कारण, विभिन्न अंशों तक ये दो प्रकार के लोग और अधिक प्रकारों में विकसित हो गए। आधारभूत रूप में, मानवता में चाहे कितनी नस्लें शामिल हों, समस्त मानवता अभी भी परमेश्वर का सृजन है। लोग चाहे किसी भी नस्ल से संबंधित हों, वे सब उसका सृजन हैं; वे सब आदम और हव्वा के वंशज हैं। यद्यपि वे परमेश्वर के हाथों से नहीं बनाए गए थे, फिर भी वे आदम और हव्वा के वंशज हैं, जिन्हें परमेश्वर ने निजी तौर पर सृजित किया। लोग चाहे किसी भी श्रेणी से संबंधित हों, वे सभी उसके प्राणी हैं; चूँकि वे मानवता से संबंधित हैं जिसका सृजन परमेश्वर ने किया था, इसलिए उनकी मंज़िल वही है, जो मानवता की होनी चाहिए और वे उन नियमों के तहत विभाजित किए गए हैं, जो मनुष्यों को संगठित करते हैं। कहने का अर्थ है कि सभी बुरा करने वाले और सभी धार्मिक लोग अंततः प्राणी ही हैं। प्राणी जो बुरा करते हैं अंततः नष्ट किए जाएंगे, और प्राणी जो धार्मिक कर्म करते हैं, बचे रहेंगे। इन दो प्रकार के प्राणियों के लिए यह सबसे उपयुक्त व्यवस्था है। बुरा करने वाले अपनी अवज्ञा के कारण इनकार नहीं कर सकते कि परमेश्वर की सृष्टि होने पर भी वे शैतान द्वारा क़ब्ज़ा लिए गए हैं और इस कारण बचाए नहीं जा सकते। प्राणी जो स्वयं धार्मिक आचरण करते हैं, इस तथ्य के मुताबिक़ कि वे बच जाएँगे, इनकार नहीं कर सकते कि उन्हें परमेश्वर ने बनाया है और शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जाने के बाद भी उद्धार प्राप्त किया है। बुरा करने वाले ऐसे प्राणी हैं, जो परमेश्वर के लिए अवज्ञाकारी हैं; ये ऐसे प्राणी हैं, जिन्हें बचाया नहीं जा सकता और वे पहले ही पूरी तरह शैतान की पकड़ में जा चुके हैं। बुराई करने वाले लोग भी मनुष्य ही हैं; वे ऐसे मनुष्य हैं, जो चरम सीमा तक भ्रष्ट किए जा चुके हैं और जो बचाए नहीं जा सकते। ठीक जिस प्रकार वे भी प्राणी हैं, धार्मिक आचरण वाले लोग भी भ्रष्ट किए गए हैं, परंतु ये वे मनुष्य हैं, जो अपना भ्रष्ट स्वभाव छोड़कर मुक्त होना चाहते हैं और परमेश्वर को समर्पित होने में सक्षम हैं। धार्मिक आचरण वाले लोग धार्मिकता से नहीं भरे हैं; बल्कि, वे उद्धार प्राप्त कर चुके हैं और अपना भ्रष्ट स्वभाव छोड़कर मुक्त हो गए हैं; वे परमेश्वर को

समर्पित हो सकते हैं। वे अंत तक डटे रहेंगे, परंतु कहने का अर्थ यह नहीं कि वे शैतान द्वारा कभी भ्रष्ट नहीं किए गए हैं। परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाने के बाद, उसके सभी प्राणियों में, वे लोग होंगे, जो नष्ट किए जाएंगे और वे होंगे जो बचे रहेंगे। यह उसके प्रबंधन कार्य की एक अपरिहार्य प्रवृत्ति है; इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता। बुरा करने वालों को बचने की अनुमति नहीं होगी; जो अंत तक परमेश्वर के प्रति समर्पण और उसका अनुसरण करते हैं, उनका जीवित रहना निश्चित है। चूँकि यह कार्य मानवता के प्रबंधन का है, इसलिए कुछ होंगे जो बचे रहेंगे और कुछ होंगे जो हटा दिए जाएंगे। ये अलग-अलग प्रकार के लोगों के लिए अलग-अलग परिणाम हैं और ये परमेश्वर के प्राणियों के लिए सबसे अधिक उपयुक्त व्यवस्थाएँ हैं। मानवजाति के लिए परमेश्वर का अंतिम प्रबंधन परिवारों को तोड़कर उसे बाँटना है, देशों को ध्वस्त करके और राष्ट्रीय सीमाओं को ध्वस्त कर ऐसा प्रबंधन बनाना जिसमें परिवारों और राष्ट्रों की सीमाएं न हों क्योंकि अंततः मनुष्यों का पूर्वज एक ही है और वे परमेश्वर की सृष्टि हैं। संक्षेप में, बुरा करने वाले सभी प्राणी नष्ट कर दिए जाएंगे और जो प्राणी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, वे बचेंगे। इस तरह, न कोई परिवार होंगे न देश होंगे, विशेष रूप से आने वाले विश्राम के समय कोई राष्ट्र नहीं होंगे; इस प्रकार की मानवता सबसे अधिक पवित्र प्रकार की मानवता होगी। आदम और हव्वा का सृजन मूल रूप से इसलिए किया गया था ताकि मानवता पृथ्वी की सभी चीज़ों की देखभाल कर सके; आरंभ में मनुष्य सभी चीज़ों के स्वामी थे। मनुष्य के सृजन में यहोवा की इच्छा मनुष्य का पृथ्वी पर अस्तित्व बनाए रखने और इसके ऊपर सभी चीज़ों की देखभाल करने की अनुमति देना था, क्योंकि आरंभ में मानवता भ्रष्ट नहीं की गई थी और बुरा करने में असमर्थ थी। हालांकि मनुष्य भ्रष्ट हो जाने के बाद सभी चीज़ों का रखवाला नहीं रहा। परमेश्वर द्वारा उद्धार का उद्देश्य मानवता की इस भूमिका को वापस लाना है, मानवजाति की मूल समझ और मूल आज्ञाकारिता को वापस लाना है; विश्राम में मानवता उस परिणाम को सटीक रूप से दर्शाती है जो परमेश्वर अपने उद्धार के कार्य से प्राप्त करने की आशा रखता है। हालाँकि यह अदन की वाटिका के जीवन के समान जीवन नहीं होगा, किंतु उसका सार वही होगा; अब मानवता न सिर्फ़ अपनी आरंभिक भ्रष्टता-रहित अवस्था जैसी होगी बल्कि ऐसी मानवता होगी, जिसे भ्रष्ट किया गया था और जिसने बाद में उद्धार प्राप्त किया। ये लोग जिन्होंने उद्धार प्राप्त कर लिया है, अंततः (यानी जब परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाता है) विश्राम में प्रवेश करेंगे। इसी प्रकार, जिन्हें दंड दिया गया है, उनके परिणाम भी अंत में पूर्ण रूप से प्रकट किए जाएँगे और उन्हें केवल तभी नष्ट किया जाएगा, जब परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा। दूसरे शब्दों में, जब उसका कार्य

समाप्त हो जाता है, तो वे बुरा करने वाले और वे जिन्हें बचाया जा चुका है, सभी प्रकट किए जाएँगे, क्योंकि सभी प्रकार के लोगों को प्रकट करने का कार्य (चाहे वे बुरा करने वाले हों या उनमें से हों जो बचाए गए हैं) सभी मनुष्यों पर एक साथ संपन्न किया जाएगा। बुरा करने वाले हटा दिए जाएँगे और जिन्हें बचे रहने की अनुमति है, वे साथ-साथ प्रकट किए जाएँगे। इसलिए सभी प्रकार के लोगों के परिणाम एक साथ प्रकट किए जाएँगे। बुराई करने वालों को अलग करके धीरे-धीरे उनका न्याय या उन्हें दंडित करने से पहले परमेश्वर उद्धार पा चुके लोगों के समूह को विश्राम में प्रवेश की अनुमति नहीं देगा; यह तथ्यों के अनुरूप नहीं होगा। जब बुरा करने वाले नष्ट हो जाते हैं और जो बचे रह सकते हैं, वे विश्राम में प्रवेश करते हैं, तब समस्त ब्रह्मांड में परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा। वहाँ जो आशीष पाएँगे और जो दुर्भाग्य से पीड़ित होंगे, उनके बीच प्राथमिकता का क्रम नहीं होगा; जो आशीष पाएँगे, वे अनंतकाल तक जीवित रहेंगे जबकि जो दुर्भाग्य से पीड़ित होंगे, वे अनंतकाल तक नष्ट होते रहेंगे। कार्य के ये दोनों क़दम साथ-साथ पूर्ण होंगे। यह अवज्ञाकारी लोगों के अस्तित्व के कारण ही है कि समर्पण करने वालों की धार्मिकता प्रकट होगी, और चूँकि ऐसे लोग हैं जिन्होंने आशीष प्राप्त किए हैं, इसलिए ही दुष्टों द्वारा झेले जाने वाला दुर्भाग्य प्रकट किया जाएगा जो उन्हें उनके दुष्ट आचरण के लिए मिलता है। यदि परमेश्वर ने बुरा करने वालों को प्रकट न किया, तो वे लोग, जो ईमानदारी से परमेश्वर को समर्पण करते हैं, कभी भी प्रकाश नहीं देखेंगे; यदि परमेश्वर उन्हें उचित गंतव्य पर नहीं पहुँचाता जो उसे समर्पण करते हैं, तो जो परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी हैं, वे उचित दंड प्राप्त नहीं कर पाएँगे। यही परमेश्वर के कार्य की प्रक्रिया है। यदि वह बुरे को दंड देने एवं अच्छे को पुरस्कृत करने का यह कार्य नहीं करता, तो उसके प्राणी कभी अपने-अपने गंतव्यों तक पहुँचने में सक्षम नहीं हो पाएँगे। जब एक बार मानवजाति विश्राम में प्रवेश कर लेती है, तो बुराई करने वाले नष्ट किए जा चुके होंगे, समस्त मानवता सही मार्ग पर होगी; सभी प्रकार के लोग अपने-अपने प्रकार के साथ होंगे, उन कार्यों के अनुसार जिनका उन्हें अभ्यास करना चाहिए। केवल यही मानवता के विश्राम का दिन होगा, यह मानवता के विकास की अपरिहार्य प्रवृत्ति होगी और केवल जब मानवता विश्राम में प्रवेश करेगी केवल तभी परमेश्वर की महान और चरम कार्यसिद्धि पूर्णता पर पहुँचेगी; यह उसके कार्य का समापन अंश होगा। यह कार्य मानवता के पतनशील भौतिक जीवन का अंत करेगा, साथ ही यह भ्रष्ट मानवता के जीवन का अंत करेगा। इसके बाद से मनुष्य एक नए क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। यद्यपि सभी मनुष्य देहधारी होते हैं, किंतु उसके इस जीवन के सार और भ्रष्ट मानवता के सार में महत्त्वपूर्ण अंतर होते हैं। उसके अस्तित्व का अर्थ और भ्रष्ट

मानवता के अस्तित्व का अर्थ भी भिन्न होता है। हालाँकि यह एक नए प्रकार के व्यक्ति का जीवन नहीं होगा, यह कहा जा सकता है कि यह उस मानवता का जीवन है, जो उद्धार प्राप्त कर चुकी है, साथ ही ऐसा जीवन, जिसने मानवता और तर्क को पुनः प्राप्त कर लिया है। ये वे लोग हैं, जो कभी परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी थे, जिन्हें परमेश्वर द्वारा जीता गया था और फिर उसके द्वारा बचाया गया था; ये वे लोग हैं, जिन्होंने परमेश्वर का अपमान किया और बाद में उसकी गवाही दी। उसकी परीक्षा से गुज़रकर बचने के बाद उनका अस्तित्व सबसे अधिक अर्थपूर्ण अस्तित्व है; ये वे लोग हैं, जिन्होंने शैतान के सामने परमेश्वर की गवाही दी और वे मनुष्य हैं, जो जीवित रहने के योग्य हैं। जो नष्ट किए जाएँगे वे लोग हैं, जो परमेश्वर के गवाह नहीं बन सकते और जो जीवित रहने के योग्य नहीं हैं। उनका विनाश उनके दुष्ट आचरण के कारण होगा और ऐसा विनाश ही उनके लिए सर्वोत्तम गंतव्य है। भविष्य में, जब मानवता एक सुंदर क्षेत्र में प्रवेश करेगी, तब पति और पत्नी के बीच, पिता और पुत्री के बीच या माँ और पुत्र के बीच ऐसे कोई संबंध नहीं होंगे, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं। उस समय, प्रत्येक मनुष्य अपने प्रकार के लोगों का अनुसरण करेगा और परिवार पहले ही ध्वस्त हो चुके होंगे। पूरी तरह असफल होने के बाद, शैतान फिर कभी मानवता को परेशान नहीं करेगा और मनुष्यों में अब और भ्रष्ट शैतानी स्वभाव नहीं होंगे। वे अवज्ञाकारी लोग पहले ही नष्ट किए जा चुके होंगे और केवल समर्पण करने वाले लोग ही बचेंगे। जब बहुत थोड़े से परिवार पूरी तरह बचेंगे; तो भौतिक संबंध कैसे बने रह सकते हैं? अतीत का मनुष्य का दैहिक जीवन पूरी तरह निषिद्ध होगा; तो लोगों के बीच भौतिक संबंध कैसे अस्तित्व में रह सकते हैं? शैतान के भ्रष्ट स्वभावों के बिना, मनुष्यों का जीवन अब अतीत के पुराने जीवन के समान नहीं होगा बल्कि एक नया जीवन होगा। माता-पिता बच्चों को गँवा देंगे और बच्चे माता-पिता को गँवा देंगे। पति पत्नियों को गँवा देंगे और पत्नियाँ पतियों को गँवा देंगी। फिलहाल लोगों का एक दूसरे के साथ भौतिक संबंध होता है, पर जब प्रत्येक विश्राम में प्रवेश कर लेगा, तो उनके बीच कोई संबंध नहीं होगा। केवल इस प्रकार की मानवता में ही धार्मिकता और पवित्रता होगी; केवल इस प्रकार की मानवता ही परमेश्वर की आराधना कर सकती है।

परमेश्वर ने मनुष्यों का सृजन किया और उन्हें पृथ्वी पर रखा और तब से उनकी अगुआई की। फिर उसने उन्हें बचाया और मानवता के लिये पापबलि बना। अंत में, उसे अभी भी मानवता को जीतना होगा, मनुष्यों को पूरी तरह से बचाना होगा और उन्हें उनकी मूल समानता में वापस लौटाना होगा। यही वह कार्य है, जिसे वह आरंभ से करता रहा है—मनुष्य को उसकी मूल छवि और उसकी मूल समानता में वापस

लौटाना। परमेश्वर अपना राज्य स्थापित करेगा और मनुष्य की मूल समानता बहाल करेगा, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर पृथ्वी और समस्त सृष्टि पर अपने अधिकार को बहाल करेगा। मानवता ने शैतान से भ्रष्ट होने के बाद परमेश्वर के प्राणियों के साथ-साथ अपने धर्मभीरु हृदय भी गँवा दिए, जिससे वह परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण और अवज्ञाकारी हो गया। तब मानवता शैतान के अधिकार क्षेत्र में रही और शैतान के आदेशों का पालन किया; इस प्रकार, अपने प्राणियों के बीच कार्य करने का परमेश्वर के पास कोई तरीक़ा नहीं था और वह अपने प्राणियों से भयपूर्ण श्रद्धा पाने में असमर्थ हो गया। मनुष्यों को परमेश्वर ने बनाया था और उन्हें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए थी, पर उन्होंने वास्तव में परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया और इसके बजाय शैतान की आराधना करने लगे। शैतान उनके दिलों में बस गया। इस प्रकार, परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में अपना स्थान खो दिया, जिसका मतलब है कि उसने मानवता के सृजन के पीछे का अर्थ खो दिया। इसलिए मानवता के सृजन के अपने अर्थ को बहाल करने के लिए उसे उनकी मूल समानता को बहाल करना होगा और मानवता को उसके भ्रष्ट स्वभाव से मुक्ति दिलानी होगी। शैतान से मनुष्यों को वापस प्राप्त करने के लिए, उसे उन्हें पाप से बचाना होगा। केवल इसी तरह परमेश्वर धीरे-धीरे उनकी मूल समानता और भूमिका को बहाल कर सकता है और अंत में, अपने राज्य को बहाल कर सकता है। अवज्ञा करने वाले उन पुत्रों का अंतिम तौर पर विनाश भी क्रियान्वित किया जाएगा, ताकि मनुष्य बेहतर ढंग से परमेश्वर की आराधना कर सकें और पृथ्वी पर बेहतर ढंग से रह सकें। चूँकि परमेश्वर ने मानवों का सृजन किया, इसलिए वह मनुष्य से अपनी आराधना करवाएगा; क्योंकि वह मानवता के मूल कार्य को बहाल करना चाहता है, वह उसे पूर्ण रूप से और बिना किसी मिलावट के बहाल करेगा। अपना अधिकार बहाल करने का अर्थ है, मनुष्यों से अपनी आराधना कराना और समर्पण कराना; इसका अर्थ है कि वह अपनी वजह से मनुष्यों को जीवित रखेगा और अपने अधिकार की वजह से अपने शत्रुओं के विनाश करेगा। इसका अर्थ है कि परमेश्वर किसी प्रतिरोध के बिना, मनुष्यों के बीच उस सब को बनाए रखेगा जो उसके बारे में है। जो राज्य परमेश्वर स्थापित करना चाहता है, वह उसका स्वयं का राज्य है। वह जिस मानवता की आकांक्षा रखता है, वह है, जो उसकी आराधना करेगी, जो उसे पूरी तरह समर्पण करेगी और उसकी महिमा का प्रदर्शन करेगी। यदि परमेश्वर भ्रष्ट मानवता को नहीं बचाता, तो उसके द्वारा मानवता के सृजन का अर्थ खत्म हो जाएगा; उसका मनुष्यों के बीच अब और अधिकार नहीं रहेगा और पृथ्वी पर उसके राज्य का अस्तित्व अब और नहीं रह पाएगा। यदि परमेश्वर उन शत्रुओं का नाश नहीं करता, जो उसके प्रति

अवज्ञाकारी हैं, तो वह अपनी संपूर्ण महिमा प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा, वह पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना भी नहीं कर पाएगा। ये उसका कार्य पूरा होने और उसकी महान उपलब्धि के प्रतीक होंगे : मानवता में से उन सबको पूरी तरह नष्ट करना, जो उसके प्रति अवज्ञाकारी हैं और जो पूर्ण किए जा चुके हैं, उन्हें विश्राम में लाना। जब मनुष्यों को उनकी मूल समानता में बहाल कर लिया जाएगा, और जब वे अपने-अपने कर्तव्य निभा सकेंगे, अपने उचित स्थानों पर बने रह सकेंगे और परमेश्वर की सभी व्यवस्थाओं को समर्पण कर सकेंगे, तब परमेश्वर ने पृथ्वी पर उन लोगों का एक समूह प्राप्त कर लिया होगा, जो उसकी आराधना करते हैं और उसने पृथ्वी पर एक राज्य भी स्थापित कर लिया होगा, जो उसकी आराधना करता है। पृथ्वी पर उसकी अनंत विजय होगी और वे सभी जो उसके विरोध में हैं, अनंतकाल के लिए नष्ट हो जाएँगे। इससे मनुष्य का सृजन करने की उसकी मूल इच्छा बहाल होगी; इससे सब चीज़ों के सृजन की उसकी मूल इच्छा बहाल होगी और इससे पृथ्वी पर सभी चीज़ों पर और शत्रुओं के बीच उसका अधिकार भी बहाल हो जाएगा। ये उसकी संपूर्ण विजय के प्रतीक होंगे। इसके बाद से मानवता विश्राम में प्रवेश करेगी और ऐसे जीवन में प्रवेश करेगी, जो सही मार्ग पर है। मानवता के साथ परमेश्वर भी अनंत विश्राम में प्रवेश करेगा और मनुष्यों और स्वयं के साथ एक अनंत जीवन का आरंभ करेगा। पृथ्वी पर से गंदगी और अवज्ञा ग़ायब हो जाएगी, पृथ्वी पर से सारा विलाप भी समाप्त हो जाएगा और परमेश्वर का विरोध करने वाली प्रत्येक चीज़ का अस्तित्व नहीं रहेगा। केवल परमेश्वर और वही लोग बचेंगे, जिनका उसने उद्धार किया है; केवल उसकी सृष्टि ही बचेगी।

कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (IV) (1994 से 1997, 2003 से 2005)

जब तक तुम यीशु के आध्यात्मिक शरीर को देखोगे, परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी को नया बना चुका होगा

क्या तुम यीशु को देखना चाहते हो? क्या तुम यीशु के साथ रहना चाहते हो? क्या तुम यीशु के द्वारा कहे गए वचन सुनना चाहते हो? यदि ऐसा है, तो तुम यीशु के लौटने का स्वागत कैसे करोगे? क्या तुम पूरी तरह तैयार हो? किस ढंग से तुम यीशु के लौटने का स्वागत करोगे? मुझे लगता है कि हर भाई-बहन, जो

यीशु का अनुसरण करते हैं, यीशु का अच्छी तरह स्वागत करना चाहेंगे। मगर क्या तुम लोगों ने इस पर विचार किया है : जब यीशु लौटेगा, तो क्या तुम सचमुच उसे पहचान लोगे? जो वह कहेगा, क्या तुम लोग सचमुच वह सब कुछ समझ जाओगे? वे सब कार्य जो वह करेगा, क्या तुम लोग उन्हें बिना शर्त सचमुच स्वीकार कर लोगे? जिन्होंने भी बाइबल पढ़ी है, वे यीशु की वापसी के बारे में जानते हैं और जिन्होंने भी बाइबल अभिप्राय से पढ़ी है, उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। तुम सब लोग उस क्षण के आने पर टकटकी लगाए हो, और तुम लोगों की ईमानदारी प्रशंसनीय है, तुम लोगों का विश्वास सच में ईर्ष्या योग्य है, पर क्या तुम लोगों को पता है कि तुम लोगों ने एक गंभीर ग़लती कर दी है? यीशु किस ढंग से वापस आएगा? तुम लोगों को विश्वास है कि यीशु श्वेत बादल पर वापस आएगा, पर मैं तुम लोगों से पूछता हूँ : यह श्वेत बादल किस चीज़ का इशारा करता है? जबकि इतने सारे अनुयायी यीशु के आगमन की प्रतीक्षा में हैं, वह किन लोगों के बीच उतरेगा? यदि तुम लोग उन प्रथम लोगों में से हो, जिनके बीच यीशु उतरता है, तो क्या अन्य इसे पूरी तरह अनुचित नहीं मानेंगे? मैं जानता हूँ कि तुम लोगों की यीशु के प्रति ईमानदारी और सत्यनिष्ठा बहुत है, पर क्या तुम लोग कभी यीशु से मिले हो? क्या तुम्हें उसका स्वभाव पता है? क्या तुम लोग कभी उसके साथ रहे हो? तुम लोग उसके बारे में वास्तव में कितना समझते हो? कुछ कहेंगे कि ये वचन उन्हें एक अजीब स्थिति में डाल देते हैं। वे कहेंगे, "मैंने बाइबल को शुरू से लेकर अंत तक बहुत बार पढ़ा है। मैं यीशु को कैसे नहीं समझ सकता? यीशु के स्वभाव की तो बात छोड़ो—मैं तो उसके पसंद के कपड़ों का रंग भी जानता हूँ। जब तुम यह कहते हो कि मैं उसे नहीं समझता तो क्या तुम मेरा अनादर नहीं कर रहे हो?" मेरा सुझाव है कि तुम इन मुद्दों पर विवाद न करो; बेहतर होगा कि शांत हो जाओ और इन प्रश्नों के बारे में संगति करो: सबसे पहले, क्या तुम जानते हो कि वास्तविकता क्या है और सिद्धांत क्या है? दूसरा, क्या तुम जानते हो कि धारणाएं क्या हैं और सत्य क्या है? तीसरा, क्या तुम जानते हो कि कल्पित क्या है और वास्तविक क्या है?

कुछ लोग इस तथ्य से इनकार करते हैं कि वे यीशु को नहीं समझते। फिर भी मैं कहता हूँ कि तुम लोग उसे थोड़ा भी नहीं जानते और यीशु के एक भी वचन को नहीं समझते। ऐसा इसलिए क्योंकि तुम लोगों में से हर एक बाइबल के विवरणों के कारण, दूसरों द्वारा जो कहा गया है उसकी वजह से, उसका अनुसरण करता है। उसके साथ रहना तो दूर, तुम लोगों ने यीशु को कभी देखा भी नहीं है और यहाँ तक कि तुम थोड़े समय भी उसके साथ नहीं रहे हो। वैसे, क्या यीशु के बारे में तुम्हारी समझ बस सिद्धांत ही

नहीं है? क्या यह वास्तविकता से विहीन नहीं है? शायद कुछ लोगों ने यीशु का चित्र देखा है, या कुछ व्यक्तिगत रूप से यीशु के घर को देखा है। हो सकता है, कुछ ने यीशु के कपड़ों को छुआ हो। फिर भी उसके बारे में तुम्हारी समझ सैद्धांतिक है और व्यवहारिक नहीं है, भले ही तुमने यीशु द्वारा खाए गए भोजन को व्यक्तिगत रूप से चखा हो। चाहे जो बात हो, तुमने यीशु को कभी नहीं देखा है, और दैहिक रूप में कभी उसके साथ नहीं रहे हो, इसलिए यीशु के बारे में तुम्हारी समझ हमेशा खोखला सिद्धांत ही होगी, जो वास्तविकता से विहीन है। शायद मेरे वचनों में तुम्हारी रुचि कम हो, पर मैं तुमसे यह पूछता हूँ : यद्यपि तुमने अपने पसंदीदा लेखक की कई पुस्तकें पढ़ी होंगी, क्या तुम कभी उसके साथ समय बिताए बिना उसे पूरी तरह समझ सकते हो? क्या तुम जानते हो कि उसका व्यक्तित्व कैसा है? क्या तुम जानते हो कि वह किस प्रकार का जीवन जीता है? क्या तुम उसकी भावनात्मक स्थिति के बारे में कुछ भी जानते हो? तुम तो उस व्यक्ति को भी पूरी तरह नहीं समझ सकते, जिसके तुम प्रशंसक हो, तो तुम यीशु मसीह को कैसे समझ पाओगे? प्रत्येक चीज़ जो तुम यीशु के बारे में समझते हो, कल्पनाओं और धारणाओं से भरपूर है और उसमें कोई सत्य या वास्तविकता नहीं है। इससे दुर्गंध आती है, यह माँस से भरा है। कैसे इस तरह की कोई समझ तुम्हें यीशु के लौटने का स्वागत करने योग्य बनाती है? यीशु उन्हें स्वीकार नहीं करेगा, जो देह की कल्पनाओं और धारणाओं से भरे हैं। वे जो यीशु को नहीं समझ पाते, कैसे उसका विश्वासी होने के योग्य हैं?

क्या तुम लोग कारण जानना चाहते हो कि फरीसियों ने यीशु का विरोध क्यों किया? क्या तुम फरीसियों के सार को जानना चाहते हो? वे मसीहा के बारे में कल्पनाओं से भरे हुए थे। इससे भी ज़्यादा, उन्होंने केवल इस पर विश्वास किया कि मसीहा आएगा, फिर भी जीवन-सत्य की खोज नहीं की। इसलिए, वे आज भी मसीहा की प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि उन्हें जीवन के मार्ग के बारे में कोई ज्ञान नहीं है, और नहीं जानते कि सत्य का मार्ग क्या है? तुम लोग क्या कहते हो, ऐसे मूर्ख, हठधर्मी और अज्ञानी लोग परमेश्वर का आशीष कैसे प्राप्त करेंगे? वे मसीहा को कैसे देख सकते हैं? उन्होंने यीशु का विरोध किया क्योंकि वे पवित्र आत्मा के कार्य की दिशा नहीं जानते थे, क्योंकि वे यीशु द्वारा बताए गए सत्य के मार्ग को नहीं जानते थे और इसके अलावा क्योंकि उन्होंने मसीहा को नहीं समझा था। और चूँकि उन्होंने मसीहा को कभी नहीं देखा था और कभी मसीहा के साथ नहीं रहे थे, उन्होंने मसीहा के नाम के साथ व्यर्थ ही चिपके रहने की ग़लती की, जबकि हर मुमकिन ढंग से मसीहा के सार का विरोध करते रहे। ये फरीसी सार रूप से

हठधर्मी एवं अभिमानी थे और सत्य का पालन नहीं करते थे। परमेश्वर में उनके विश्वास का सिद्धांत था : इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम्हारा उपदेश कितना गहरा है, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम्हारा अधिकार कितना ऊँचा है, जब तक तुम्हें मसीहा नहीं कहा जाता, तुम मसीह नहीं हो। क्या ये दृष्टिकोण हास्यास्पद और बेतुके नहीं हैं? मैं तुम लोगों से आगे पूछता हूँ : क्या तुम लोगों के लिए वो ग़लतियां करना बेहद आसान नहीं, जो बिल्कुल आरंभ के फरीसियों ने की थीं, क्योंकि तुम लोगों के पास यीशु की थोड़ी-भी समझ नहीं है? क्या तुम सत्य का मार्ग जानने योग्य हो? क्या तुम सचमुच विश्वास दिला सकते हो कि तुम मसीह का विरोध नहीं करोगे? क्या तुम पवित्र आत्मा के कार्य का अनुसरण करने योग्य हो? यदि तुम नहीं जानते कि तुम मसीह का विरोध करोगे या नहीं, तो मेरा कहना है कि तुम पहले ही मौत की कगार पर जी रहे हो। जो लोग मसीहा को नहीं जानते थे, वे सभी यीशु का विरोध करने, यीशु को अस्वीकार करने, उसे बदनाम करने में सक्षम थे। जो लोग यीशु को नहीं समझते, वे सब उसे अस्वीकार करने एवं उसे बुरा-भला कहने में सक्षम हैं। इसके अलावा, वे यीशु के लौटने को शैतान द्वारा किए गए धोखे की तरह देखने में सक्षम हैं और अधिकांश लोग देह में लौटे यीशु की निंदा करेंगे। क्या इस सबसे तुम लोगों को डर नहीं लगता? जिसका तुम लोग सामना करते हो, वह पवित्र आत्मा के ख़िलाफ़ निंदा होगी, कलीसियाओं के लिए कहे गए पवित्र आत्मा के वचनों का विनाश होगा और यीशु द्वारा व्यक्त किए गए समस्त वचनों को ठुकराना होगा। यदि तुम लोग इतने संभ्रमित हो, तो यीशु से क्या प्राप्त कर सकते हो? यदि तुम हठपूर्वक अपनी ग़लतियां मानने से इनकार करते हो, तो श्वेत बादल पर यीशु के देह में लौटने पर तुम लोग उसके कार्य को कैसे समझ सकते हो? मैं तुम लोगों को यह बताता हूँ : जो लोग सत्य स्वीकार नहीं करते, फिर भी अंधों की तरह श्वेत बादलों पर यीशु के आगमन का इंतज़ार करते हैं, निश्चित रूप से पवित्र आत्मा के ख़िलाफ़ निंदा करेंगे और ये वे वर्ग हैं, जो नष्ट किए जाएँगे। तुम लोग सिर्फ़ यीशु के अनुग्रह की कामना करते हो और सिर्फ़ स्वर्ग के सुखद क्षेत्र का आनंद लेना चाहते हो, जब यीशु देह में लौटा, तो तुमने यीशु के कहे वचनों का कभी पालन नहीं किया और यीशु द्वारा व्यक्त किए सत्य को कभी ग्रहण नहीं किया। यीशु के एक श्वेत बादल पर लौटने के तथ्य के बदले तुम लोग क्या दोगे? क्या यह वही ईमानदारी है, जिसमें तुम लोग बार-बार पाप करते हो और फिर बार-बार उनकी स्वीकारोक्ति करते हो? श्वेत बादल पर लौटने वाले यीशु को तुम बलिदान में क्या अर्पण करोगे? क्या ये कार्य के वे वर्ष हैं, जिनके ज़रिए तुम स्वयं अपनी बढ़ाई करते हो? लौटकर आए यीशु को तुम लोगों पर विश्वास कराने के लिए तुम लोग किस चीज को थामकर

रखोगे? क्या वह तुम लोगों का अभिमानी स्वभाव है, जो किसी भी सत्य का पालन नहीं करता?

तुम लोगों की सत्यनिष्ठा सिर्फ़ वचन में है, तुम लोगों का ज्ञान सिर्फ़ बौद्धिक और वैचारिक है, तुम लोगों की मेहनत सिर्फ़ स्वर्ग की आशीष पाने के लिए है और इसलिए तुम लोगों का विश्वास किस प्रकार का होना चाहिए? आज भी, तुम लोग सत्य के प्रत्येक वचन को अनसुना कर देते हो। तुम लोग नहीं जानते कि परमेश्वर क्या है, तुम लोग नहीं जानते कि मसीह क्या है, तुम लोग नहीं जानते कि यहोवा का आदर कैसे करें, तुम लोग नहीं जानते कि कैसे पवित्र आत्मा के कार्य में प्रवेश करें और तुम लोग नहीं जानते कि परमेश्वर स्वयं के कार्य और मनुष्य के धोखों के बीच कैसे भेद करें। तुम परमेश्वर द्वारा व्यक्त सत्य के किसी भी ऐसे वचन की केवल निंदा करना ही जानते हो, जो तुम्हारे विचारों के अनुरूप नहीं होता। तुम्हारी विनम्रता कहाँ है? तुम्हारी आज्ञाकारिता कहाँ है? तुम्हारी सत्यनिष्ठा कहाँ है? सत्य खोजने की तुम्हारी इच्छा कहाँ है? परमेश्वर के लिए तुम्हारा आदर कहाँ है? मैं तुम लोगों को बता दूँ कि जो परमेश्वर में संकेतों की वजह से विश्वास करते हैं, वे निश्चित रूप से वह श्रेणी होगी, जो नष्ट की जाएगी। जो देह में लौटे यीशु के वचनों को स्वीकार करने में अक्षम हैं, वे निश्चित ही नरक के वंशज, महादूत के वंशज हैं, उस श्रेणी में हैं, जो अनंत विनाश झेलेगी। बहुत से लोगों को शायद इसकी परवाह न हो कि मैं क्या कहता हूँ, किंतु मैं ऐसे हर तथाकथित संत को, जो यीशु का अनुसरण करते हैं, बताना चाहता हूँ कि जब तुम लोग यीशु को एक श्वेत बादल पर स्वर्ग से उतरते अपनी आँखों से देखोगे, तो यह धार्मिकता के सूर्य का सार्वजनिक प्रकटन होगा। शायद वह तुम्हारे लिए एक बड़ी उत्तेजना का समय होगा, मगर तुम्हें पता होना चाहिए कि जिस समय तुम यीशु को स्वर्ग से उतरते देखोगे, यही वह समय भी होगा जब तुम दंडित किए जाने के लिए नीचे नरक में जाओगे। वह परमेश्वर की प्रबंधन योजना की समाप्ति का समय होगा, और वह समय होगा, जब परमेश्वर सज्जन को पुरस्कार और दुष्ट को दंड देगा। क्योंकि परमेश्वर का न्याय मनुष्य के देखने से पहले ही समाप्त हो चुका होगा, जब सिर्फ़ सत्य की अभिव्यक्ति होगी। वे जो सत्य को स्वीकार करते हैं और संकेतों की खोज नहीं करते और इस प्रकार शुद्ध कर दिए गए हैं, वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने लौट चुके होंगे और सृष्टिकर्ता के आलिंगन में प्रवेश कर चुके होंगे। सिर्फ़ वे जो इस विश्वास में बने रहते हैं कि "ऐसा यीशु जो श्वेत बादल पर सवारी नहीं करता, एक झूठा मसीह है" अनंत दंड के अधीन कर दिए जाएँगे, क्योंकि वे सिर्फ़ उस यीशु में विश्वास करते हैं जो संकेत प्रदर्शित करता है, पर उस यीशु को स्वीकार नहीं करते, जो कड़े न्याय की घोषणा करता है और जीवन का सच्चा मार्ग बताता है। इसलिए केवल यही हो सकता है कि

जब यीशु खुलेआम श्वेत बादल पर वापस लौटे, तो वह उनके साथ निपटे। वे बहुत हठधर्मी, अपने आप में बहुत आश्वस्त, बहुत अभिमानी हैं। ऐसे अधम लोग यीशु द्वारा कैसे पुरस्कृत किए जा सकते हैं? यीशु की वापसी उन लोगों के लिए एक महान उद्धार है, जो सत्य को स्वीकार करने में सक्षम हैं, पर उनके लिए जो सत्य को स्वीकार करने में असमर्थ हैं, यह दंडाज्ञा का संकेत है। तुम लोगों को अपना स्वयं का रास्ता चुनना चाहिए, और पवित्र आत्मा के ख़िलाफ़ निंदा नहीं करनी चाहिए और सत्य को अस्वीकार नहीं करना चाहिए। तुम लोगों को अज्ञानी और अभिमानी व्यक्ति नहीं बनना चाहिए, बल्कि ऐसा बनना चाहिए, जो पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करता हो और सत्य की खोज के लिए लालायित हो; सिर्फ़ इसी तरीके से तुम लोग लाभान्वित होगे। मैं तुम लोगों को परमेश्वर में विश्वास के रास्ते पर सावधानी से चलने की सलाह देता हूँ। निष्कर्ष पर पहुँचने की जल्दी में न रहो; और परमेश्वर में अपने विश्वास में लापरवाह और विचारहीन न बनो। तुम लोगों को जानना चाहिए कि कम से कम, जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं उन्हें विनम्र और श्रद्धावान होना चाहिए। जिन्होंने सत्य सुन लिया है और फिर भी इस पर अपनी नाक-भौं सिकोड़ते हैं, वे मूर्ख और अज्ञानी हैं। जिन्होंने सत्य सुन लिया है और फिर भी लापरवाही के साथ निष्कर्षों तक पहुँचते हैं या उसकी निंदा करते हैं, ऐसे लोग अभिमान से घिरे हैं। जो भी यीशु पर विश्वास करता है वह दूसरों को शाप देने या निंदा करने के योग्य नहीं है। तुम सब लोगों को ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जो समझदार है और सत्य स्वीकार करता है। शायद, सत्य के मार्ग को सुनकर और जीवन के वचन को पढ़कर, तुम विश्वास करते हो कि इन 10,000 वचनों में से सिर्फ़ एक ही वचन है, जो तुम्हारे दृढ़ विश्वास और बाइबल के अनुसार है, और फिर तुम्हें इन 10,000 वचनों में खोज करते रहना चाहिए। मैं अब भी तुम्हें सुझाव देता हूँ कि विनम्र बनो, अति-आत्मविश्वासी न बनो और अपनी बहुत बढ़ाई न करो। परमेश्वर के लिए अपने हृदय में इतना थोड़ा-सा आदर रखकर तुम बड़े प्रकाश को प्राप्त करोगे। यदि तुम इन वचनों की सावधानी से जाँच करो और इन पर बार-बार मनन करो, तब तुम समझोगे कि वे सत्य हैं या नहीं, वे जीवन हैं या नहीं। शायद, केवल कुछ वाक्य पढ़कर, कुछ लोग इन वचनों की आँखें मूँदकर यह कहते हुए निंदा करेंगे, "यह पवित्र आत्मा की थोड़ी प्रबुद्धता से अधिक कुछ नहीं है," या "यह एक झूठा मसीह है जो लोगों को धोखा देने आया है।" जो लोग ऐसी बातें कहते हैं वे अज्ञानता से अंधे हो गए हैं! तुम परमेश्वर के कार्य और बुद्धि को बहुत कम समझते हो और मैं तुम्हें पुनः शुरू से आरंभ करने की सलाह देता हूँ! तुम लोगों को अंत के दिनों में झूठे मसीहों के प्रकट होने की वजह से आँख बंदकर परमेश्वर द्वारा अभिव्यक्त

वचनों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए और चूँकि तुम धोखे से डरते हो, इसलिए तुम्हें पवित्र आत्मा के ख़िलाफ़ निंदा नहीं करनी चाहिए। क्या यह बड़ी दयनीय स्थिति नहीं होगी? यदि, बहुत जाँच के बाद, अब भी तुम्हें लगता है कि ये वचन सत्य नहीं हैं, मार्ग नहीं हैं और परमेश्वर की अभिव्यक्ति नहीं हैं, तो फिर अंततः तुम दंडित किए जाओगे और आशीष के बिना होगे। यदि तुम ऐसा सत्य, जो इतने सादे और स्पष्ट ढंग से कहा गया है, स्वीकार नहीं कर सकते, तो क्या तुम परमेश्वर के उद्धार के अयोग्य नहीं हो? क्या तुम ऐसे व्यक्ति नहीं हो, जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने लौटने के लिए पर्याप्त सौभाग्यशाली नहीं है? इस बारे में सोचो! उतावले और अविवेकी न बनो और परमेश्वर में विश्वास को खेल की तरह पेश न आओ। अपनी मंज़िल के लिए, अपनी संभावनाओं के वास्ते, अपने जीवन के लिए सोचो और स्वयं से खेल न करो। क्या तुम इन वचनों को स्वीकार कर सकते हो?

वे सभी जो मसीह से असंगत हैं निश्चित ही परमेश्वर के विरोधी हैं

सभी मनुष्य यीशु के सच्चे रूप को देखने और उसके साथ रहने की इच्छा करते हैं। मुझे नही लगता कि भाई-बहनों में से एक भी ऐसा है जो कहेगा कि वह यीशु को देखने या उसके साथ रहने की इच्छा नहीं करता। यीशु को देखने से पहले अर्थात, देहधारी परमेश्वर को देखने से पहले, संभवत: तुम लोगों के भीतर अनेक तरह के विचार होंगे, उदाहरण के लिए, यीशु के रूप के बारे में, उसके बोलने के तरीके, उसकी जीवन-शैली के बारे में इत्यादि। लेकिन एक बार उसे वास्तव में देख लेने के बाद तुम्हारे विचार तेजी से बदल जाएँगे। ऐसा क्यों है? क्या तुम लोग जानना चाहते हो? यह सच है कि मनुष्य की सोच को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि मसीह का सार इंसान द्वारा किए गए किसी भी परिवर्तन को सहन नहीं करता। तुम लोग मसीह को अविनाशी या एक संत मानते हो, लेकिन कोई भी उसे दिव्य सार धारी सामान्य मनुष्य नहीं मानता है। इसलिए, ऐसे बहुत-से लोग जो दिन-रात परमेश्वर को देखने की कामना करते हैं, वास्तव में परमेश्वर के शत्रु हैं और परमेश्वर के अनुरूप नहीं हैं। क्या यह मनुष्य की ओर से की गई गलती नहीं है? तुम लोग अभी भी यह सोचते हो कि तुम्हारा विश्वास और तुम्हारी निष्ठा ऐसी है कि तुम सब मसीह के रूप को देखने के योग्य हो, परन्तु मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम अपने आपको और ज्यादा व्यवहारिक चीज़ों से युक्त कर लो! क्योंकि अतीत, वर्तमान और भविष्य में ऐसे बहुत-से लोग जो मसीह के सम्पर्क में आए, वे असफल हो गए हैं और असफल हो

जाएँगे; वे सभी फरीसियों की भूमिका निभाते हैं। तुम लोगों की असफलता का क्या कारण है? इसका सीधा-सा कारण यह है कि तुम्हारी धारणाओं में एक ऐसा परमेश्वर है जो बहुत ऊंचा और विराट है और प्रशंसा के योग्य है। परन्तु सत्य वह नहीं होता जो मनुष्य चाहता है। न केवल मसीह ऊँचा और विराट नहीं है, बल्कि वह विशेष रूप से छोटा है; वह न केवल मनुष्य है बल्कि वह एक सामान्य मनुष्य है; वह न केवल स्वर्ग में आरोहित नहीं हो सकता, बल्कि वह पृथ्वी पर भी स्वतन्त्रता से नहीं घूम सकता। इसीलिए लोग उसके साथ सामान्य मनुष्य जैसा व्यवहार करते हैं; जब वे उसके साथ होते हैं तो उसके साथ बेतकल्लुफ़ी भरा व्यवहार करते हैं, और उसके साथ लापरवाही से बात करते हैं, और तब भी पूरे समय "सच्चे मसीह" के आने का इन्तज़ार करते रहते हैं। जो मसीह पहले ही आ चुका है उसे तुम लोग एक साधारण मनुष्य समझते हो और उसके वचनों को भी एक साधारण मनुष्य के शब्द मानते हो। इसलिए, तुमने मसीह से कुछ भी प्राप्त नहीं किया है, बल्कि अपनी कुरूपता को ही प्रकाश में पूरी तरह से उजागर कर दिया है।

मसीह के संपर्क में आने से पहले, तुम लोगों को शायद यह विश्वास हो कि तुम्हारा स्वभाव पूरी तरह से बदल चुका है, और तुम मसीह के निष्ठावान अनुयायी हो, और यह भी विश्वास हो कि तुम मसीह के आशीष पाने के सबसे ज़्यादा योग्य हो। क्योंकि तुम कई मार्गों की यात्रा कर चुके हो, बहुत सारा काम करके बहुत-सा फल प्राप्त कर चुके हो, इसलिए अंत में तुम्हें ही मुकुट मिलेगा। फिर भी, एक सच्चाई ऐसी है जिसे शायद तुम नहीं जानते: जब मनुष्य मसीह को देखता है तो मनुष्य का भ्रष्ट स्वभाव, उसका विद्रोह और प्रतिरोध उजागर हो जाता है। किसी अन्य अवसर की तुलना में इस अवसर पर उसका विद्रोही स्वभाव और प्रतिरोध कहीं ज्यादा पूर्ण और निश्चित रूप से उजागर होता है। मसीह मनुष्य का पुत्र है—मनुष्य का ऐसा पुत्र जिसमें सामान्य मानवता है—इसलिए मनुष्य न तो उसका सम्मान करता है और न ही उसका आदर करता है। चूँकि परमेश्वर देह में रहता है, इसलिए मनुष्य का विद्रोह पूरी तरह से और स्पष्ट विवरण के साथ प्रकाश में आ जाता है। अतः मैं कहता हूँ कि मसीह के आगमन ने मानवजाति के सारे विद्रोह को खोद निकाला है और मानवजाति के स्वभाव को बहुत ही स्पष्ट रूप से प्रकाश में ला दिया है। इसे कहते हैं "लालच देकर एक बाघ को पहाड़ के नीचे ले आना" और "लालच देकर एक भेड़िए को उसकी गुफा से बाहर ले आना।" क्या तुम लोग कह सकते हो कि तुम परमेश्वर के प्रति निष्ठावान हो? क्या तुम लोग कह सकते हो कि तुम परमेश्वर के प्रति संपूर्ण आज्ञाकारिता दिखाते हो? क्या तुम लोग कह सकते हो कि तुम विद्रोही नहीं हो? कुछ लोग कहेंगेः जब भी परमेश्वर मुझे नई परिस्थिति में डालता है, तो मैं इसे स्वीकार कर

लेता हूँ और कभी कोई शिकायत नहीं करता। साथ ही, मैं परमेश्वर के बारे में कोई धारणा नहीं बनाता। कुछ कहेंगेः परमेश्वर मुझे जो भी काम सौंपता है, मैं उसे अपनी पूरी योग्यता के साथ करता हूँ और कभी भी लापरवाही नहीं करता। तब मैं तुम लोगों से यह पूछता हूँ: क्या तुम सब मसीह के साथ रहते हुए उसके अनुरूप हो सकते हो? और कितने समय तक तुम सब उसके अनुरूप रहोगे? एक दिन? दो दिन? एक घंटा? दो घंटे? हो सकता है तुम्हारी आस्था प्रशंसा के योग्य हो, परन्तु तुम लोगों में कोई खास दृढ़ता नहीं है। जब तुम सचमुच में मसीह के साथ रहोगे, तो तुम्हारा दंभ और अहंकार धीरे-धीरे तुम्हारे शब्दों और कार्यों के द्वारा प्रकट होने लगेगा, और इसी प्रकार तुम्हारी अत्यधिक इच्छाएँ, अवज्ञाकारी मानसिकता और असंतुष्टि स्वतः ही उजागर हो जाएँगी। आखिरकार, तुम्हारा अहंकार बहुत ज़्यादा बड़ा हो जाएगा, जब तक कि तुम मसीह के साथ वैसे ही बेमेल नहीं हो जाते जैसे पानी और आग, और तब तुम लोगों का स्वभाव पूरी तरह से उजागर हो जायेगा। उस समय, तुम्हारी धारणाएँ पर्दे में नहीं रह सकेंगी। तुम्हारी शिकायतें भी अनायास ही बाहर आ जाएँगी, और तुम्हारी नीच मानवता पूरी तरह से उजागर हो जाएगी। फिर भी, तुम अपने विद्रोहीपन को स्वीकार करने से लगातार इनकार करते रहते हो। बल्कि तुम यह विश्वास करते रहते हो कि ऐसे मसीह को स्वीकार करना मनुष्य के लिए आसान नहीं है, वह मनुष्य के प्रति बहुत अधिक कठोर है, अगर वह कोई अधिक दयालु मसीह होता तो तुम पूरी तरह से उसे समर्पित हो जाते। तुम लोग यह विश्वास करते हो कि तुम्हारे विद्रोह का एक जायज़ कारण है, तुम केवल तभी मसीह के विरूद्ध विद्रोह करते हो जब वह तुम लोगों को हद से ज़्यादा मजबूर कर देता है। तुमने कभी यह एहसास नहीं किया कि तुम मसीह को परमेश्वर नहीं मानते, न ही तुम्हारा इरादा उसकी आज्ञा का पालन करने का है। बल्कि, तुम ढिठाई से यह आग्रह करते हो कि मसीह तुम्हारे मन के अनुसार काम करे, और यदि वह एक भी कार्य ऐसा करे जो तुम्हारे मन के अनुकूल नहीं हो तो तुम लोग मान लेते हो कि वह परमेश्वर नहीं, मनुष्य है। क्या तुम लोगों में से बहुत से लोग ऐसे ही नहीं हैं जिन्होंने उसके साथ इस तरह से विवाद किया है? आख़िरकार तुम लोग किसमें विश्वास करते हो? और तुम लोग उसे किस तरह से खोजते हो?

तुम सब हमेशा मसीह को देखने की कामना करते हो, लेकिन मैं तुम सबसे विनती करता हूँ कि तुम अपने आपको इतना ऊँचा न समझो; हर कोई मसीह को देख सकता है, परन्तु मैं कहता हूँ कि कोई भी मसीह को देखने के लायक नहीं है। क्योंकि मनुष्य का स्वभाव बुराई, अहंकार और विद्रोह से भरा हुआ है, इस समय तुम मसीह को देखोगे तो तुम्हारा स्वभाव तुम्हें बर्बाद कर देगा और बेहद तिरस्कृत करेगा।

किसी भाई (या बहन) के साथ तुम्हारी संगति शायद तुम्हारे बारे में बहुत कुछ न दिखाए, परन्तु जब तुम मसीह के साथ संगति करते हो तो यह इतना आसान नहीं होता। किसी भी समय, तुम्हारी धारणा जड़ पकड़ सकती है, तुम्हारा अहंकार फूटना शुरू कर सकता है, और तुम्हारा विद्रोह फलना-फूलना शुरू कर सकता है। ऐसी मानवता के साथ तुम लोग कैसे मसीह की संगति के काबिल हो सकते हो? क्या तुम उसके साथ प्रत्येक दिन के प्रत्येक पल में परमेश्वर जैसा बर्ताव कर सकते हो? क्या तुममें सचमुच परमेश्वर के प्रति समर्पण की वास्तविकता होगी? तुम सब अपने हृदय में यहोवा के रूप में एक ऊँचे परमेश्वर की आराधना करते हो, लेकिन दृश्यमान मसीह को मनुष्य समझते हो। तुम लोगों की समझ बहुत ही हीन है और तुम्हारी मानवता अत्यंत नीची है! तुम सब सदैव के लिए मसीह को परमेश्वर के रूप में मानने में असमर्थ हो; कभी-कभार ही, जब तुम्हारा मन होता है, तुम उसकी ओर लपकते हो और परमेश्वर के रूप में उसकी आराधना करने लगते हो। इसीलिए मैं कहता हूँ कि तुम लोग परमेश्वर के विश्वासी नहीं हो, बल्कि उन लोगों का सहभागी जत्था हो जो मसीह के विरूद्ध लड़ते हैं। ऐसे मनुष्यों को भी जो दूसरों के प्रति हमदर्दी दिखाते हैं, इसका प्रतिफल दिया जाता है। फिर भी मसीह को, जिसने तुम्हारे मध्य ऐसा कार्य किया है, न तो मनुष्य का प्रेम मिला है और न ही मनुष्य की तरफ से उसे कोई प्रतिफल या समर्पण मिला है। क्या यह दिल दुखाने वाली बात नहीं है?

हो सकता है कि परमेश्वर में अपने इतने वर्षों के विश्वास के कारण तुमने कभी किसी को कोसा न हो और न ही कोई बुरा कार्य किया हो, फिर भी अगर मसीह के साथ अपनी संगति में तुम सच नहीं बोल सकते, सच्चाई से कार्य नहीं कर सकते, या मसीह के वचन का पालन नहीं कर सकते; तो मैं कहूँगा कि तुम संसार में सबसे अधिक कुटिल और कपटी व्यक्ति। हो सकता है तुम अपने रिश्तेदारों, मित्रों, पत्नी (या पति), बेटों और बेटियों, और माता पिता के प्रति अत्यंत स्नेहपूर्ण और निष्ठावान हो, और कभी दूसरों का फायदा नहीं उठाते हो, लेकिन अगर तुम मसीह के अनुरूप नहीं पाते हो और उसके साथ समरसता के साथ व्यवहार नहीं कर पाते हो, तो भले ही तुम अपने पड़ोसियों की सहायता के लिए अपना सब कुछ खपा दो या अपने माता-पिता और घरवालों की अच्छी देखभाल करो, तब भी मैं कहूँगा कि तुम धूर्त हो, और साथ में चालाक भी हो। सिर्फ इसलिए कि तुम दूसरों के साथ अच्छा तालमेल बिठा लेते हो या कुछ अच्छे काम कर लेते हो, तो यह न सोचो कि तुम मसीह के अनुरूप हो। क्या तुम लोग सोचते हो कि तुम्हारी उदारता स्वर्ग की आशीष बटोर सकती है? क्या तुम सोचते हो कि थोड़े-से अच्छे काम कर लेना तुम्हारी

आज्ञाकारिता का स्थान ले सकता है? तुम लोगों में से कोई भी निपटारा और काट-छांट स्वीकार नहीं कर पाता, और तुम सभी को मसीह की सरल मानवता को अंगीकार करने में कठिनाई होती है। फिर भी तुम सब परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का निरंतर ढोल पीटते रहते हो। तुम्हारी इस तरह की आस्था का तुम पर उचित प्रतिकार फूटेगा। काल्पनिक भ्रमों में लिप्त होना और मसीह को देखने की इच्छा करना छोड़ दो, क्योंकि तुम सब आध्यात्मिक कद में बहुत छोटे हो, इतने कि तुम लोग उसे देखने के योग्य भी नहीं हो। जब तुम अपने विद्रोह से पूरी तरह से मुक्त हो जाओगे, और मसीह के साथ समरसता स्थापित कर लोगे, तभी परमेश्वर स्वाभाविक रूप से तुम्हारे सामने प्रकट होगा। यदि तुम काट-छांट या न्याय से गुज़रे बिना परमेश्वर को देखने जाते हो, तो तुम निश्चित तौर पर परमेश्वर के विरोधी बन जाओगे और विनाश तुम्हारी नियति बन जाएगा। मनुष्य के स्वभाव में परमेश्वर के प्रति बैर-भाव अंतर्निहित है, क्योंकि सभी मनुष्यों को शैतान के द्वारा पूरी तरह से भ्रष्ट कर दिया गया है। यदि कोई मनुष्य भ्रष्ट होते हुए परमेश्वर से संगति करने का प्रयास करे, तो यह निश्चित है कि इसका कोई अच्छा परिणाम नहीं हो सकता; मनुष्य के सारे कर्म और शब्द निश्चित तौर पर हर मोड़ पर उसकी भ्रष्टता को उजागर करेंगे; और जब वह परमेश्वर के साथ जुड़ेगा, तो उसका विद्रोह अपने सभी पहलुओं के साथ प्रकट हो जाएगा। मनुष्य अनजाने में मसीह का विरोध करता है, मसीह को धोखा देता है, और मसीह को अस्वीकार करता है; जब यह होता है तो मनुष्य और भी ज़्यादा संकट की स्थिति में आ जाता है, और यदि यह जारी रहता है, तो वह दंड का भागी बनता है।

कुछ लोग यह मान सकते हैं कि यदि परमेश्वर के साथ संगति इतनी खतरनाक है, तो बुद्धिमानी यही होगी कि परमेश्वर से दूर रहा जाए। तब, ऐसे लोगों को भला क्या हासिल होगा? क्या वे परमेश्वर के प्रति निष्ठावान हो सकते हैं? निश्चित ही, परमेश्वर के साथ संगति बहुत कठिन है, परन्तु ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य भ्रष्ट है, न कि इसलिए कि परमेश्वर मनुष्य के साथ जुड़ नहीं सकता। तुम लोगों के लिए सबसे अच्छा यह होगा कि तुम सब स्वयं को जानने की सच्चाई पर ज़्यादा ध्यान दो। तुम लोग परमेश्वर की कृपा क्यों नहीं प्राप्त कर पाए हो? तुम्हारा स्वभाव उसे घिनौना क्यों लगता है? तुम्हारे शब्द उसके अंदर जुगुप्ता क्यों उत्पन्न करते हैं? जैसे ही तुम लोग थोड़ी-सी निष्ठा दिखाते हो, तो खुद ही तुम अपनी तारीफ करने लगते हो और अपने छोटे से योगदान के लिए पुरस्कार चाहते हो; जब तुम थोड़ी-सी आज्ञाकारिता दिखाते हो तो दूसरों को नीची दृष्टि से देखते हो, और कोई छोटा-मोटा काम संपन्न करते ही तुम परमेश्वर का अनादर करने लगते हो। तुम लोग परमेश्वर का स्वागत करने के बदले में धन-संपत्ति, भेंटों और प्रशंसा की

अभिलाषा करते हो। एक या दो सिक्के देते हुए भी तुम्हारा दिल दुखता है; जब तुम दस सिक्के देते हो तो तुम आशीषों की और दूसरों से विशिष्ट माने जाने की अभिलाषा करते हो। तुम लोगों जैसी मानवता के बारे में तो बात करना और सुनना भी अपमानजनक है। क्या तुम्हारे शब्दों और कार्यों में कुछ प्रशंसा योग्य है? वे जो अपने कर्तव्यों को निभाते हैं और वे जो नहीं निभाते; वे जो अगुवाई करते हैं और वे जो अनुसरण करते हैं; वे जो परमेश्वर का स्वागत करते और वे जो नहीं करते; वे जो दान देते हैं और वे जो नहीं देते; वे जो उपदेश देते हैं और वे जो वचन को ग्रहण करते हैं, इत्यादि; इस प्रकार के सभी लोग अपनी तारीफ करते हैं। क्या तुम्हें यह हास्यास्पद नहीं लगता? तुम लोग भली-भांति जानते हो कि तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो, फिर भी तुम परमेश्वर के अनुरूप नहीं हो सकते हो। तुम लोग भली-भांति यह जानते हुए भी कि तुम सब बिल्कुल अयोग्य हो, तुम लोग डींगें मारते रहते हो। क्या तुम्हें ऐसा महसूस नहीं होता कि तुम्हारी समझ इतनी खराब हो चुकी है कि तुम्हारे पास अब आत्म-नियंत्रण ही नहीं रहा है? इस तरह की समझ के साथ तुम लोग परमेश्वर के साथ संगति करने के योग्य कैसे हो सकते हो? क्या तुम लोगों को इस मुकाम पर अपने लिए डर नहीं लगता है? तुम्हारा स्वभाव पहले ही इतना खराब हो चुका है कि तुम परमेश्वर के अनुरूप होने में समर्थ नहीं हो। इस बात को देखते हुए, क्या तुम लोगों की आस्था हास्यास्पद नहीं है? क्या तुम्हारी आस्था बेतुकी नहीं है? तुम अपने भविष्य से कैसे निपटोगे? तुम उस मार्ग का चुनाव कैसे करोगे जिस पर तुम्हें चलना है?

बहुत बुलाए जाते हैं, पर कुछ ही चुने जाते हैं

मैंने इस पृथ्वी पर बहुत से लोगों को खोजा है जो मेरे अनुयायी हो सकें। इन सभी अनुयायियों में, ऐसे लोग हैं जो याजकों की तरह सेवा करते हैं, अगुवाई करते हैं, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, परमेश्वर के लोग हैं और जो सेवा करते हैं। वे मेरे प्रति जो निष्ठा दिखाते हैं, उसके अनुसार मैं उन्हें श्रेणियों में विभाजित करता हूँ। जब सभी मनुष्यों को उनके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत कर दिया जाएगा, अर्थात्, जब हर प्रकार के मनुष्य की प्रकृति स्पष्ट कर दी जाएगी, तब मैं उनकी उचित श्रेणी के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को एक संख्या दूँगा और हर प्रकार के मनुष्य को उसके उपयुक्त स्थान पर रखूँगा ताकि मैं मानवजाति के उद्धार के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकूँ। मैं बारी-बारी से, उन लोगों के समूह को अपने घर बुलाता हूँ जिन्हें मैं बचाना चाहता हूँ, और फिर मैं उनसे अपने अंत के दिनों के कार्य को स्वीकार करवाता हूँ। इसके

साथ ही, मैं लोगों को उनके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करता हूँ, फिर उनके कर्मों के आधार पर उन्हें प्रतिफल या दण्ड देता हूँ। ये सभी चरण मेरे कार्य का अंग हैं।

आज मैं पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच रहता हूँ। लोग मेरे कार्य का अनुभव करते हैं और मेरे कथनों को देखते हैं, और इसके साथ ही मैं अपने प्रत्येक अनुयायी को सभी सत्य प्रदान करता हूँ ताकि वह मुझसे जीवन प्राप्त कर, ऐसा मार्ग प्राप्त करे जिस पर वह चल सके। क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ, जीवनदाता हूँ। मेरे कार्य के कई वर्षों के दौरान, मनुष्य ने बहुत अधिक प्राप्त किया और बहुत त्याग किया है, फिर भी मैं कहता हूँ कि लोग मुझ पर वास्तव में विश्वास नहीं करते। क्योंकि लोग केवल यह मानते हैं कि मैं परमेश्वर हूँ जबकि मेरे द्वारा बोले गए सत्य से वे असहमत होते हैं, और वे उन सत्यों का भी अभ्यास नहीं करते, जिनकी अपेक्षा मैं उनसे करता हूँ। कहने का अर्थ है कि मनुष्य केवल परमेश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकार करता है, लेकिन सत्य के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता; मनुष्य केवल परमेश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकार करता है परन्तु जीवन के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, मनुष्य केवल परमेश्वर के नाम को स्वीकार करता है परन्तु उसके सार को स्वीकार नहीं करता। अपने उत्साह के कारण, मनुष्य मेरे लिए घृणित बन गया है। क्योंकि वह केवल मुझे धोखा देने के लिए कानों को अच्छे लगने वाले शब्द बोलता है; कोई भी सच्चे हृदय से मेरी आराधना नहीं करता। तुम लोगों के शब्दों में दुष्ट व्यक्ति का प्रलोभन है; इसके अलावा, इंसान बेहद अहंकारी है, प्रधान स्वर्गदूत की यह पक्की उद्घोषणा है। इतना ही नहीं, तुम्हारे कर्म हद दर्जे तक तार-तार हो चुके हैं; तुम लोगों की असंयमित अभिलाषाएँ और लोलुप अभिप्राय सुनने में अपमानजनक हैं। तुम सब लोग मेरे घर में कीड़े और घृणित त्याज्य वस्तु बन गए हो। क्योंकि तुम लोगों में से कोई भी सत्य का प्रेमी नहीं है, बल्कि तुम इंसान हो जो आशीष चाहता है, स्वर्ग में जाना चाहता है, और पृथ्वी पर अपने सामर्थ्य का उपयोग करते हुए मसीह के दर्शन करना चाहता है। क्या तुम लोगों ने कभी सोचा है कि कोई तुम लोगों के समान व्यक्ति, जो इतनी गहराई तक भ्रष्ट हो चुका है, और जो नहीं जानता कि परमेश्वर क्या है, वह परमेश्वर का अनुसरण करने योग्य कैसे हो सकता है? तुम लोग स्वर्ग में कैसे आरोहण कर सकते हो? तुम लोग उस महिमा को देखने योग्य कैसे बन सकते हो, जो अपने वैभव में अभूतपूर्व है। तुम लोगों के मुँह छल और गंदगी, विश्वासघात और अहंकार के वचनों से भरे हैं। तुम लोगों ने मुझसे कभी ईमानदारी के वचन नहीं कहे, मेरे वचनों का अनुभव करने पर कोई पवित्र बातें, समर्पण करने के शब्द नहीं कहे। आखिर तुम लोगों का यह कैसा विश्वास है? तुम लोगों के हृदय में केवल अभिलाषाएँ

और धन भरा हुआ है; तुम्हारे दिमाग में भौतिक वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। तुम लोग प्रतिदिन हिसाब लगाते हो कि तुमने मुझसे कितनी सम्पत्ति और कितनी भौतिक वस्तुएँ प्राप्त की हैं। तुम लोग प्रतिदिन और भी अधिक आशीष पाने की प्रतीक्षा करते हो ताकि तुम लोग और भी अधिक तथा और भी बेहतर तरीके से उन चीज़ों का आनन्द ले सको जिनका आनंद लिया जा सकता है। मैं तुम लोगों के विचारों में हर समय नहीं रहता, न ही वह सत्य रहता है जो मुझसे आता है, बल्कि तुम लोगों के विचारों में पति (पत्नी), बेटे, बेटियाँ, या तुम क्या खाते-पहनते हो, यही आते हैं। तुम लोग यही सोचते हो कि तुम अपने आनंद को और कैसे बढ़ा सकते हो। लेकिन अपने पेट को ठूँस-ठूँसकर भरकर भी क्या तुम लोग महज़ लाश ही नहीं हो? यहाँ तक कि जब तुम लोग अपने बाहरी स्वरूप को सजा लेते हो, क्या तब भी तुम लोग एक चलती-फिरती लाश नहीं हो जिसमें कोई जीवन नहीं है? तुम लोग पेट की खातिर तब तक कठिन परिश्रम करते हो जब तक कि तुम लोगों के बाल सफेद नहीं हो जाते, फिर भी तुममें से कोई भी मेरे कार्य के लिए एक बाल तक का त्याग नहीं करता। तुम लोग अपनी देह, अपने बेटे-बेटियों के लिए लगातार सक्रिय रहते हो, अपने तन को थकाते रहते हो और अपने मस्तिष्क को कष्ट देते रहते हो, फिर भी तुम में से कोई एक भी मेरी इच्छा के लिए चिंता या परवाह नहीं दिखाता। ऐसा क्या है जो तुम अब भी मुझ से प्राप्त करने की आशा रखते हो?

मैं अपना कार्य करने में कभी जल्दबाज़ी नहीं करता। मनुष्य चाहे किसी भी तरीके से मेरा अनुसरण करे, मैं अपना कार्य चरणबद्ध और योजना के अनुसार करता हूँ। इसलिए, तुम लोगों के सारे विद्रोह के बावजूद मैं अपना कार्य नहीं रोकता और तब भी वही वचन कहता हूँ जो मैं बोलना चाहता हूँ। मैं अपने घर में उन सबको बुलाता हूँ जिन्हें मैंने पूर्व-नियत किया है ताकि वे मेरे वचनों के श्रोता हो सकें। जो मेरे वचन का पालन करते हैं और मेरे वचन की अभिलाषा करते हैं उन्हें मैं अपने सिंहासन के सामने लाता हूँ; जो मेरे वचनों की ओर पीठ फेर लेते हैं, जो मेरी आज्ञा का पालन करने और मेरे प्रति समर्पण करने में असफल रहते हैं, और जो खुलकर मेरी अवहेलना करते हैं, उन्हें मैं अंतिम दण्ड की प्रतीक्षा करने के लिए एक ओर कर देता हूँ। सभी लोग भ्रष्टाचार में और दुष्ट के अधीन रहते हैं, इसलिए मेरा अनुसरण करने वालों में से बहुत कम लोग सत्य की अभिलाषा हैं। कहने का अर्थ है कि अधिकांश लोग सच्चे हृदय से मेरी आराधना नहीं करते, बल्कि भ्रष्टता, विद्रोह और कपटपूर्ण उपायों से मेरा विश्वास पाने की कोशिश करते हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ: बहुतों को बुलाया गया, लेकिन बहुत कम को चुना गया। बुलाए गए सभी

लोग बेहद भ्रष्ट हैं और एक ही युग में रहते हैं, किन्तु जो चुने गए हैं वे केवल उनका एक हिस्सा हैं जो सत्य पर विश्वास करते हैं और उसे स्वीकार करते हैं और जो सत्य का अभ्यास करते हैं। ये लोग समष्टि का एक मामूली-सा हिस्सा हैं, और इन लोगों के बीच मैं और भी अधिक महिमा प्राप्त करूँगा। इन वचनों की कसौटी पर, क्या तुम लोग जानते हो कि तुम चुने हुए लोगों में से हो या नहीं? तुम लोगों का अन्त कैसा होगा?

जैसा मैंने कहा कि मेरा अनुसरण करने वाले बहुत लोग हैं परन्तु मुझे सच्चे दिल से प्रेम करने वाले बहुत ही कम हैं। हो सकता है कुछ लोग कहें "यदि मैं तुमसे प्रेम नहीं करता तो क्या मैंने इतनी बड़ी क़ीमत चुकाई होती? यदि मैं तुमसे प्रेम नहीं करता तो क्या मैंने इस हद तक तुम्हारा अनुसरण किया होता?" निश्चित रूप से तुम लोगों के पास कई कारण हैं, और तुम लोगों का प्रेम, निश्चित रूप से बहुत ही ऊँचा है, किन्तु मेरे लिए तुम लोगों के प्रेम का क्या सार है? जैसा कि "प्रेम" के लिए कहा जाता है, यह एक ऐसा भाव है जो पूर्ण रूप से विशुद्ध व निष्कलंक है, जहाँ तुम प्रेम करने, महसूस करने, और विचारशील होने के लिए अपने हृदय का उपयोग करते हो। प्रेम में कोई शर्त, कोई अवरोध या कोई दूरी नहीं होती। प्रेम में कोई संदेह, कोई कपट, और कोई धूर्तता नहीं होती। प्रेम में कोई व्यापार नहीं होता और कुछ भी अशुद्ध नहीं होता। यदि तुम लोग प्रेम करते हो, तो तुम धोखा नहीं दोगे, शिकायत, विश्वासघात, विद्रोह नहीं करोगे, किसी चीज को छीनने या उसे प्राप्त करने की या कोई खास धनराशि प्राप्त करने की कोशिश नहीं करोगे। यदि तुम लोग प्रेम करते हो, तो खुशी-खुशी खुद को समर्पित करोगे, विपत्ति को सहोगे, और मेरे अनुकूल हो जाओगे, तुम अपना सर्वस्व मेरे लिए त्याग दोगे, तुम अपना परिवार, भविष्य, जवानी और विवाह तक छोड़ दोगे। वरना तुम लोगों का प्रेम, प्रेम न होकर केवल कपट और विश्वासघात होगा! तुम लोगों का प्रेम किस प्रकार का है? क्या यह सच्चा प्रेम है? या झूठा प्रेम है? तुम लोगों ने कितना त्याग किया है? तुमने कितना अर्पण किया है? मुझे तुम लोगों से कितना प्रेम प्राप्त हुआ है? क्या तुम लोग जानते हो? तुम लोगों का हृदय बुराई, विश्वासघात और कपट से भरा हुआ है, और इसके परिणामस्वरूप, तुम लोगों के प्रेम में कितनी अशुद्धियाँ हैं? तुम लोग सोचते हो कि तुमने मेरे लिए पर्याप्त त्याग किया है; तुम सोचते हो कि मेरे लिए तुम्हारा प्रेम पहले से ही पर्याप्त है। किन्तु फिर तुम लोगों के वचन और कार्य क्यों हमेशा विद्रोही और कपटपूर्ण होते हैं? तुम मेरा अनुसरण करते हो, फिर भी तुम मेरे वचन को स्वीकार नहीं करते। क्या इसे प्रेम कहा जाता है? तुम लोग मेरा अनुसरण करते हो, फिर भी मुझे एक तरफ़ कर देते हो। क्या इसे प्रेम

कहा जाता है? तुम लोग मेरा अनुसरण करते हो, परंतु फिर भी मुझ पर संदेह रखते हो? क्या इसे प्रेम कहा जाता है? तुम लोग मेरा अनुसरण करते हो, फिर भी तुम मेरे अस्तित्व को स्वीकार नहीं कर पाते हो। क्या इसे प्रेम कहा जाता है? तुम मेरा अनुसरण करते हो, फिर भी मेरे स्वरूप के अनुकूल मेरे साथ व्यवहार नहीं करते और हर मोड़ पर मेरे लिए चीज़ों को मुश्किल बनाते हो। क्या इसे प्रेम कहा जाता है? तुम लोग मेरा अनुसरण करते हो, फिर भी तुम मुझे मूर्ख बनाने और हर मामले में धोखा देने का प्रयास करते हो। क्या इसे प्रेम कहा जाता है? तुम लोग मेरी सेवा करते हो, फिर भी तुम मेरा भय नहीं मानते। क्या इसे प्रेम कहा जाता है? तुम लोग सर्वथा और सभी चीजों में मेरा विरोध करते हो। क्या इस सबको प्रेम कहा जाता है? तुम लोगों ने बहुत त्याग किया है, यह सच है, परंतु तुमने उसका अभ्यास कभी नहीं किया जो मैं तुमसे चाहता हूँ। क्या इसे प्रेम कहा जा सकता है? सावधानी पूर्वक किया गया अनुमान दर्शाता है कि तुम लोगों के भीतर मेरे लिए प्रेम का ज़रा-सा भी अंश नहीं है। इतने वर्षों के कार्य और मेरी ओर से कहे गए इतने वचनों के बाद, तुम लोगों ने वास्तव में कितना प्राप्त किया है? क्या यह एक बार पीछे मुड़कर विचार करने योग्य नहीं है? मैं तुम लोगों की भर्त्सना करता हूँ: जिन्हें मैं अपने पास बुलाता हूँ ये वे लोग नहीं हैं जो कभी भ्रष्ट नहीं हुए; बल्कि जिन्हें मैं चुनता हूँ ये वे लोग हैं जो मुझसे वास्तव में प्रेम करते हैं। इसलिए, तुम लोगों को अपने वचनों और कर्मों के प्रति सजग रहते हुए, अपने अभिप्रायों और विचारों को जाँचना चाहिए ताकि वे अपनी सीमा रेखा को पार न करें। अंत के दिनों में, मेरे सम्मुख अपना प्रेम अर्पित करने के लिए अधिकतम प्रयास करो, कहीं ऐसा न हो कि मेरा कोप तुम लोगों पर हमेशा बना रहे!

तुम्हें मसीह के साथ अनुकूलता का तरीका खोजना चाहिए

मैं मनुष्यों के मध्य बहुत कार्य कर चुका हूँ और इस दौरान मैंने कई वचन भी व्यक्त किए हैं। ये समस्त वचन मनुष्य के उद्धार के लिए हैं, और इसलिए व्यक्त किए गए थे, ताकि मनुष्य मेरे अनुकूल बन सके। फिर भी, पृथ्वी पर मैंने थोड़े ही लोग पाए हैं, जो मेरे अनुकूल हैं, और इसलिए मैं कहता हूँ कि मनुष्य मेरे वचनों कोनहीं सँजोता—ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य मेरे अनुकूल नहीं है। इस तरह, मैं जो कार्य करता हूँ, वह सिर्फ़ इसलिए नहीं किया जाता कि मनुष्य मेरी आराधना कर सके; बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से वह इसलिए किया जाता है ताकि मनुष्य मेरे अनुकूल बन सके। मनुष्य भ्रष्ट हो चुका है और शैतान के फंदे में जी रहा है। सभी लोग देह में जीते हैं, स्वार्थपूर्ण अभिलाषाओं में जीते हैं, और उनके

मध्य एक भी व्यक्ति नहीं, जो मेरे अनुकूल हो। ऐसे लोग भी हैं, जो कहते हैं कि वे मेरे अनुकूल हैं, परंतु वे सब अस्पष्ट मूर्तियों की आराधना करते हैं। हालाँकि वे मेरे नाम को पवित्र मानते हैं, पर वे उस रास्ते पर चलते हैं जो मेरे विपरीत जाता है, और उनके शब्द घमंड और आत्मविश्वास से भरे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मूलत: वे सब मेरे विरोध में हैं और मेरे अनुकूल नहीं हैं। प्रतिदिन वे बाइबल में मेरे निशान ढूँढ़ते हैं, और यों ही "उपयुक्त" अंश तलाश लेते हैं, जिन्हें वे अंतहीन रूप से पढ़ते रहते हैं और उनका वाचनपवित्रशास्त्र के रूप में करते हैं। वे नहीं जानते कि मेरे अनुकूल कैसे बनें, न ही वे यह जानते हैं कि मेरे विरुद्ध होने का क्या अर्थ है। वे केवल पवित्रशास्त्रों को आँख मूँदकर पढ़ते रहते हैं। वे बाइबल के भीतर एक ऐसे अज्ञात परमेश्वर को कैद कर देते हैं, जिसे उन्होंने स्वयं भी कभी नहीं देखा है, और जिसे देखने में वे अक्षम हैं, और जिसे वे फ़ुरसत के समय में ही निगाह डालने के लिए बाहर निकालते हैं। वे मेरा अस्तित्व मात्र बाइबल के दायरे में ही सीमित मानते हैं, और वे मेरी बराबरी बाइबल से करते हैं; बाइबल के बिना मैं नहीं हूँ, और मेरे बिना बाइबल नहीं है। वे मेरे अस्तित्व या क्रियाकलापोंपर कोई ध्यान नहीं देते, बल्कि पवित्रशास्त्र के हर एक वचन पर परम और विशेष ध्यान देते हैं। बहुत सेलोग तो यहाँ तक मानते हैं कि अपनी इच्छा से मुझे ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए, जो पवित्रशास्त्र द्वारा पहले से न कहा गया हो। वे पवित्रशास्त्र को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं। कहा जा सकता है कि वे वचनों और उक्तियों को बहुत महत्वपूर्ण समझते हैं, इस हद कि हर एक वचन जो मैं बोलता हूँ, वे उसे मापने और मेरी निंदा करने के लिए बाइबल के छंदों का उपयोग करते हैं। वे मेरे साथ अनुकूलता का मार्ग या सत्य के साथ अनुकूलता का मार्ग नहीं खोजते, बल्कि बाइबल के वचनों के साथ अनुकूलता का मार्ग खोजते हैं, औरविश्वास करते हैं कि कोई भी चीज़ जो बाइबल के अनुसार नहीं है, बिना किसी अपवाद के, मेरा कार्य नहीं है। क्या ऐसे लोग फरीसियों के कर्तव्यपरायण वंशज नहीं हैं? यहूदी फरीसी यीशु को दोषी ठहराने के लिए मूसा की व्यवस्था का उपयोग करते थे। उन्होंने उस समय के यीशु के साथ अनुकूल होने की कोशिश नहीं की, बल्कि कर्मठतापूर्वक व्यवस्था का इस हद तक अक्षरशः पालन किया कि—यीशु पर पुराने विधान की व्यवस्था का पालन न करने और मसीहा न होने का आरोप लगाते हुए—निर्दोष यीशु को सूली पर चढ़ा दिया। उनका सार क्या था? क्या यह ऐसा नहीं था कि उन्होंने सत्य के साथ अनुकूलता के मार्ग की खोज नहीं की? उनके दिमाग़ में पवित्रशास्त्र का एक-एक वचन घर कर गया था, जबकि मेरी इच्छा और मेरे कार्य के चरणों और विधियों पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। वे सत्य की खोज करने वाले लोग नहीं, बल्कि सख्तीसे

पवित्रशास्त्र के वचनों से चिपकने वाले लोग थे; वे परमेश्वर में विश्वास करने वाले लोग नहीं, बल्कि बाइबल में विश्वास करने वाले लोग थे। दरअसल वे बाइबल की रखवाली करने वाले कुत्ते थे। बाइबल के हितों की रक्षा करने, बाइबल की गरिमा बनाए रखने और बाइबल की प्रतिष्ठा बचाने के लिए वे यहाँ तक चले गए कि उन्होंने दयालु यीशु को सूली पर चढ़ा दिया। ऐसा उन्होंने सिर्फ़ बाइबल का बचाव करने के लिए और लोगों के हृदय में बाइबल के हर एक वचन की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए किया। इस प्रकार उन्होंने अपना भविष्य त्यागने और यीशु की निंदा करने के लिए उसकी मृत्यु के रूप में पापबलि देने को प्राथमिकता दी, क्योंकि यीशु पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं था। क्या वे लोग पवित्रशास्त्र के एक-एक वचन के नौकर नहीं थे?

और आज के लोगों के बारे में क्या कहूँ? मसीह सत्य बताने के लिए आया है, फिर भी वे निश्चित ही उसे इस दुनिया से निष्कासित कर देंगे, ताकि वे स्वर्ग में प्रवेश हासिल कर सकें और अनुग्रह प्राप्त कर सकें। वे बाइबल के हितों की रक्षा करने के लिए सत्य के आगमन को पूरी तरह से नकार देंगे और बाइबल का चिरस्थायी अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए देह में लौटे मसीह को फिर से सूली पर चढ़ा देंगे। मनुष्य मेरा उद्धार कैसे प्राप्त कर सकता है, जब उसका हृदय इतना अधिक द्वेष से भरा है और उसकी प्रकृति मेरेइतनी विरोधी है? मैं मनुष्य के मध्य रहता हूँ, फिर भी मनुष्य मेरे अस्तित्व के बारे नहीं जानता। जब मैं मनुष्य पर अपना प्रकाश डालता हूँ, तब भी वह मेरे अस्तित्व से अनभिज्ञ रहता है। जब मैं लोगों पर क्रोधित होता हूँ, तो वे मेरे अस्तित्व को और अधिक प्रबलता से नकारते हैं। मनुष्य वचनों और बाइबल के साथ अनुकूलता की खोज करता है, लेकिन सत्य के साथ अनुकूलता का मार्ग खोजने के लिए एक भी व्यक्ति मेरे समक्ष नहीं आता। मनुष्य मुझे स्वर्ग में खोजता है और स्वर्ग में मेरे अस्तित्व की विशेष चिंता करता है, लेकिन देह में कोई मेरी परवाह नहीं करता, क्योंकि मैं जो देह में उन्हीं के बीच रहता हूँ, बहुत मामूली हूँ। जो लोग सिर्फ़ बाइबल के वचनों के साथ अनुकूलता की खोज करते हैं और जो लोग सिर्फ़ एक अज्ञात परमेश्वर के साथ अनुकूलता की खोज करते हैं, वे मेरे लिए एक घृणित दृश्य हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे मृत शब्दों की आराधना करते हैं, और एक ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं, जो उन्हें अनकहा ख़ज़ाना देने में सक्षम है; जिस परमेश्वर की वे आराधना करते हैं, वह एक ऐसा परमेश्वर है, जो अपने आपको मनुष्य के नियंत्रण मेंछोड़ देता है—ऐसा परमेश्वर, जिसका अस्तित्व ही नहीं है। तो फिर, ऐसे लोग मुझसे क्या प्राप्त कर सकते हैं? मनुष्य बस वचनों के लिए बहुत नीच है। जो मेरे विरोध में हैं, जो मेरे सामने असीमित माँगें

रखते हैं, जिनमें सत्य के लिए कोई प्रेम नहीं है, जो मेरे प्रति विद्रोही हैं—वे मेरे अनुकूल कैसे हो सकते हैं?

जो लोग मेरे विरुद्ध हैं, वे मेरे अनुकूल नहीं हैं। ऐसा ही मामला उनका है, जो सत्य से प्रेम नहीं करते। जो मेरे प्रति विद्रोह करते हैं, वे मेरे और भी अधिक विरुद्ध हैं और मेरे अनुकूल नहीं हैं। जो मेरे अनुकूल नहीं हैं, मैं उन सभी को बुराई के हाथों में छोड़ देता हूँ, जो मेरे अनुकूल नहीं हैं, मैं उन सभी को बुराई द्वारा भ्रष्ट किए जाने के लिए त्याग देता हूँ, उन्हें अपने दुष्कर्म प्रकट करने के लिए असीमित स्वतंत्रता दे देता हूँ, और अंत में उन्हें बुराई को सौंप देता हूँ कि वह उन्हें निगल जाए। मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कितने लोग मेरी आराधना करते हैं, अर्थात्, मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कितने लोग मुझ पर विश्वास करते हैं। मुझे सिर्फ इस बात की फिक्र है कि कितने लोग मेरे अनुकूल हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे सब जो मेरे अनुकूल नहीं हैं, वे ऐसे दुष्ट हैं जो मुझे धोखा देते हैं; वे मेरे शत्रु हैं, और मैं अपने शत्रुओं को अपने घर में "प्रतिष्ठापित" नहीं करूँगा। जो मेरे अनुकूल हैं, वे हमेशा मेरे घर में मेरी सेवा करेंगे, और जो मेरे विरुद्ध जाते हैं, वे हमेशा मेरी सज़ा भुगतेंगे। जो सिर्फ़ बाइबल के वचनों पर ही ध्यान देते हैं और न तो सत्य में दिलचस्पी रखते हैं और न मेरे पदचिह्न खोजने में—वे मेरे विरुद्ध हैं, क्योंकि वे मुझे बाइबल के अनुसार सीमित कर देते हैं, मुझे बाइबल में ही कैद कर देते हैं, और इसलिए वे मेरे परम निंदक हैं। ऐसे लोग मेरे सामने कैसे आ सकते हैं? वे मेरे कर्मों या मेरी इच्छा या सत्य पर कोई ध्यान नहीं देते, बल्कि वचनों से ग्रस्त हो जाते हैं—वचन जो मार देते हैं। ऐसे लोग मेरे अनुकूल कैसे हो सकते हैं?

मैंने बहुत सारे वचन कहे हैं, और अपनी इच्छा और अपने स्वभाव को भी व्यक्त किया है, फिर भी लोग अभी भी मुझे जानने और मुझ पर विश्वास करने में अक्षम हैं। या यह कहा जा सकता है कि लोग अभी भी मेरी आज्ञा का पालन करने में अक्षम हैं। जो बाइबल में जीते हैं, जो व्यवस्था में जीते हैं, जो सलीब पर जीते हैं, जो सिद्धांत के अनुसार जीते हैं, जो उस कार्य के मध्य जीते हैं जिसे मैं आज करता हूँ—उनमें से कौन मेरे अनुकूल है? तुम लोग सिर्फ़ आशीष और पुरस्कार पाने के बारे में ही सोचते हो, पर कभी यह नहीं सोचा कि मेरे अनुकूल वास्तव में कैसे बनो, या अपने को मेरे विरुद्ध होने से कैसे रोको। मैं तुम लोगों से बहुत निराश हूँ, क्योंकि मैंने तुम लोगों को बहुत अधिक दिया है, जबकि मैंने तुम लोगों से बहुत कम हासिल किया है। तुम लोगों का छल, तुम लोगों का घमंड, तुम लोगों का लालच, तुम लोगों की फालतू इच्छाएँ, तुम लोगों का धोखा, तुम लोगों की अवज्ञा—इनमें से कौन-सी चीज़ मेरी नज़र से बच सकती है? तुम लोग मेरे प्रति असावधान हो, मुझे मूर्ख बनाते हो, मेरा अपमान करते हो, मुझे फुसलाते हो, मुझसे

ज़बरन वसूली करते हो, बलिदानों के लिए मुझसे ज़बरदस्ती करते हो—ऐसे दुष्कर्म मेरी सज़ा से कैसे बचकर निकल सकते हैं? ये सब दुष्कर्म मेरे साथ तुम लोगों की शत्रुता का प्रमाण हैं, और तुम लोगों की मेरे साथ अनुकूलता न होने का प्रमाण हैं। तुम लोगों में से प्रत्येक अपने को मेरे साथ बहुत अनुकूल समझता है, परंतु यदि ऐसा होता, तो फिर यह अकाट्य प्रमाण किस पर लागू होगा? तुम लोगों को लगता है कि तुम्हारे अंदर मेरे प्रति बहुत ईमानदारी और निष्ठा है। तुम लोग सोचते हो कि तुम बहुत ही रहमदिल, बहुत ही करुणामय हो और तुमने मेरे प्रति बहुत समर्पण किया है। तुम लोग सोचते हो कि तुम लोगों ने मेरे लिए पर्याप्त से अधिक किया है। लेकिन क्या तुम लोगों ने कभी इसे अपने कामों से मिलाकर देखा है? मैं कहता हूँ, तुम लोग बहुत हीघमंडी, बहुत ही लालची, बहुत ही लापरवाह हो; और जिन चालबाज़ियों से तुम मुझे मूर्ख बनाते हो, वे बहुत शातिर हैं, और तुम्हारे इरादे और तरीके बहुत घृणित हैं। तुम लोगों की वफ़ादारी बहुत ही थोड़ी है, तुम्हारी ईमानदारी बहुत ही कम है, और तुम्हारी अंतरात्मा तो और अधिक क्षुद्र है। तुम लोगों के हृदय में बहुत ही अधिक द्वेष है, और तुम्हारे द्वेष से कोई नहीं बचा है, यहाँ तक कि मैं भी नहीं। तुम लोग अपने बच्चों या अपने पति या आत्म-रक्षा के लिए मुझे बाहर निकाल देते हो। मेरी चिंता करने के बजाय तुम लोग अपने परिवार, अपने बच्चों, अपनी हैसियत, अपने भविष्य और अपनी संतुष्टि की चिंता करते हो। तुम लोगों ने बातचीत या कार्य करते समय कभी मेरे बारे में सोचा है? ठंड के दिनों में तुम लोगों के विचार अपने बच्चों, अपने पति, अपनी पत्नी या अपने माता-पिता की तरफ मुड़ जाते हैं। गर्मी के दिनों में भी तुम सबके विचारों में मेरे लिए कोई स्थान नहीं होता। जब तुम अपना कर्तव्य निभाते हो, तब तुम अपने हितों, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा, अपने परिवार के सदस्यों के बारे में ही सोच रहे होते हो। तुमने कब मेरे लिए क्या किया है? तुमने कब मेरे बारे में सोचा है? तुमने कब अपने आप को, हर कीमत पर, मेरे लिए और मेरे कार्य के लिए समर्पित किया है? मेरे साथ तुम्हारी अनुकूलता का प्रमाण कहाँ है? मेरे साथ तुम्हारी वफ़ादारी की वास्तविकता कहाँ है? मेरे साथ तुम्हारी आज्ञाकारिता की वास्तविकता कहाँ है? कब तुम्हारे इरादे केवल मेरे आशीष पाने के लिए नहीं रहे हैं? तुम लोग मुझे मूर्ख बनाते और धोखा देते हो, तुम लोग सत्य के साथ खेलते हो, तुम सत्य के अस्तित्व को छिपाते हो, और सत्य के सार को धोखा देते हो। इस तरह मेरे ख़िलाफ़ जाने से भविष्य में क्या चीज़ तुम लोगों की प्रतीक्षा कर रही है? तुम लोग केवल एक अज्ञात परमेश्वर के साथ अनुकूलता की खोज करते हो, और मात्र एक अज्ञात विश्वास की खोज करते हो, लेकिन तुम मसीह के साथ अनुकूल नहीं हो। क्या तुम्हारी दुष्टता के लिए भी वही प्रतिफल नहीं मिलेगा, जो

दुष्ट को मिलता है? उस समय तुम लोगों को एहसास होगा कि जो कोई मसीह के अनुकूल नहीं होता, वह कोप के दिन से बच नहीं सकता, और तुम लोगों को पता चलेगा कि जो मसीह के शत्रु हैं, उन्हें कैसा प्रतिफल दिया जाएगा। जब वह दिन आएगा, तो परमेश्वर में विश्वास के कारण धन्य होने और स्वर्ग में प्रवेश पाने के तुम लोगों के सभी सपने चूर-चूर हो जाएँगे। परंतु यह उनके लिए नहीं है, जो मसीह के अनुकूल हैं। यद्यपि उन्होंने बहुत-कुछ खोया है, यद्यपि उन्होंने बहुत कठिनाइयों का सामना किया है, तथापि वे उस सब उत्तराधिकार को प्राप्त करेंगे, जो मैं मानवजाति को वसीयत के रूप में दूँगा। अंततः तुम लोग समझ जाओगे कि सिर्फ़ मैं ही धार्मिक परमेश्वर हूँ, और केवल मैं ही मानवजाति को उसकी खूबसूरत मंज़िल तक ले जाने में सक्षम हूँ।

क्या तुम परमेश्वर के एक सच्चे विश्वासी हो?

शायद तुम परमेश्वर में विश्वास के पथ पर एक या दो वर्ष से अधिक चले होगे, और शायद इन वर्षों में तुमने बहुत-सी कठिनाइयों को झेला हो; या शायद तुमने ज्यादा कठिनाई नहीं झेली, और इसके बजाय तुमने अत्यधिक अनुग्रह प्राप्त किया हो। ऐसा भी हो सकता है कि तुमने न तो कठिनाइयों का और न ही अनुग्रह का अनुभव किया हो, बल्कि एक साधारण जीवन व्यतीत किया हो। चाहे जैसा भी हो, तुम अभी भी परमेश्वर के अनुयायी हो, इसलिए आओ, उसका अनुसरण करने के विषय पर संगति करें। हालाँकि, मैं उन सभी को जो इन वचनों को पढ़ रहे हैं, यह याद दिलाना चाहता हूँ कि परमेश्वर का वचन उन सभी की ओर निर्देशित है, जो परमेश्वर को स्वीकार करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं, सभी लोगों की ओर नहीं, चाहे वे उसे स्वीकार करते हों या न करते हों। यदि तुम यह मानते हो कि परमेश्वर बड़ी संख्या में लोगों से, संसार के सभी लोगों से बात करता है, तो तुम्हारे जीवन पर परमेश्वर के वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए, तुम्हें इन सभी वचनों को अपने हृदय से याद रखना चाहिए और हमेशा खुद को उनसे बाहर नहीं रखना चाहिए। बहरहाल, आओ हमारे घर में क्या हो रहा है, उस पर बात करें।

तुम सभी को अब परमेश्वर पर विश्वास करने का सही अर्थ समझना चाहिए। परमेश्वर पर विश्वास करने के जिस अर्थ के बारे में मैंने पहले बोला था, वह तुम लोगों के सकारात्मक प्रवेश से सम्बन्धित है। आज ऐसा नहीं है : आज मैं परमेश्वर पर तुम सब के विश्वास के सार का विश्लेषण करना चाहूँगा। बेशक, यह तुम लोगों का नकारात्मकता के एक पहलू से मार्गदर्शन करना है; यदि मैं ऐसा नहीं करूँगा, तो, तुम अपना

सच्चा चेहरा कभी नहीं देख पाओगे, और हमेशा अपनी धर्मपरायणता और निष्ठा पर घमण्ड करोगे। यह कहना उचित होगा कि यदि मैं तुम लोगों के हृदय की गहराई में छिपी हुई कुरूपता को प्रकट न करूँ, तो तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने सिर पर मुकुट रखकर समस्त महिमा अपने लिए रख लेगा। तुम सबकी अभिमानी और दंभी प्रकृति तुम सबको अपने अंतःकरण के साथ विश्वासघात करने, मसीह के खिलाफ विद्रोह करने और उसका विरोध करने और अपनी कुरूपता प्रकट करने के लिए प्रेरित करती है, और इस तरह तुम सबके इरादों, धारणाओं, असाधारण इच्छाओं और लालच से भरी नज़रों को प्रकाश में ले आती है। फिर भी तुम सब मसीह के कार्य के लिए अपने जीवन भर के जोश के बारे में बक-बक करते रहते हो और मसीह के द्वारा बहुत पहले कहे गए सत्यों को बार-बार दोहराते रहते हो। यही तुम सबका "विश्वास" है—यही तुम सबका "अशुद्धता रहित विश्वास" है। मैंने मनुष्य के लिए आरंभ से ही बहुत कठोर मानक रखा है। यदि तुम्हारी वफ़ादारी इरादों और शर्तों के साथ आती है, तो मैं तुम्हारी तथाकथित वफादारी के बिना रहूँगा, क्योंकि मैं उन लोगों से घृणा करता हूँ जो मुझे अपने इरादों से धोखा देते हैं और शर्तों के साथ मुझसे ज़बरन वसूली करते हैं। मैं मनुष्यों से सिर्फ़ यही चाहता हूँ कि वे मेरे प्रति पूरे वफादार हों और सब चीज़े एक शब्द : विश्वास के वास्ते—और उसे साबित करने के लिए करें। मैं तुम्हारे द्वारा मुझे प्रसन्न करने की कोशिश करने के लिए की जाने वाली खुशामद का तिरस्कार करता हूँ, क्योंकि मैंने हमेशा तुम सबके साथ ईमानदारी से व्यवहार किया है, और इसलिए मैं तुम सब से भी यही चाहता हूँ कि तुम भी मेरे प्रति एक सच्चे विश्वास के साथ कार्य करो। जब विश्वास की बात आती है, तो कई लोग यह सोच सकते हैं कि वे परमेश्वर का अनुसरण इसलिए करते हैं क्योंकि उनमें विश्वास है, अन्यथा वे इस प्रकार की पीड़ा नहीं सहते। तो मैं तुम से पूछता हूँ : यदि तुम परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हो, तो उसका आदर क्यों नहीं करते? यदि तुम परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हो तो तुम्हारे हृदय में उसका थोड़ा-सा भी भय क्यों नहीं है? तुम स्वीकार करते हो कि मसीह परमेश्वर का देहधारण है, तो तुम उसकी अवमानना क्यों करते हो? तुम उसके प्रति इतने अनादरपूर्वक कार्य क्यों करते हो? तुम उसकी खुलेआम आलोचना क्यों करते हो? तुम हमेशा उसकी गतिविधियों की जासूसी क्यों करते हो? तुम उसकी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पित क्यों नहीं होते? तुम उसके वचन के अनुसार कार्य क्यों नहीं करते? क्यों तुम उसकी भेंटों को जबरन छीनने और लूटने का प्रयास करते हो? क्यों तुम मसीह के स्थान से बोलते हो? क्यों तुम उसके कार्य और वचनों के सही या गलत होने का का आकलन करते हो? क्यों तुम पीठ पीछे उसकी निंदा करने का साहस करते

हो? क्या यही और अन्य बातें हैं, जो तुम सबके विश्वास का निर्माण करती हैं?

तुम सबके शब्दों और व्यवहार में मसीह के प्रति तुम्हारे अविश्वास के तत्व प्रकट होते हैं। तुम जो कुछ भी करते हो उसके इरादों और लक्ष्यों में अविश्वास व्याप्त रहता है। यहाँ तक कि तुम सबकी नज़रों में भी मसीह के प्रति अविश्वास होता है। यह कहा जा सकता है कि पल-प्रति-पल तुम सब अविश्वास के तत्वों को स्थान देते हो। इसका अर्थ है किहर पल तुम सब मसीह के साथ विश्वासघात करने के खतरे में हो, क्योंकि तुम सबके शरीर में दौड़ने वाला रक्त देहधारी परमेश्वर में अविश्वास से तर रहता है। इसलिए, मैं कहता हूँ कि परमेश्वर पर विश्वास के मार्ग पर जिन पदचिह्नों को तुम छोडते हो, वे वास्तविक नहीं हैं; जब तुम लोग परमेश्वर में विश्वास के मार्ग पर चलते हो, तो तुम जमीन पर अपने पैर मजबूती से नहीं रखते—तुम बस बेमन से कार्य करते हो। तुम सब कभी मसीह के वचनों पर पूरी तरह से विश्वास नहीं करते और उन्हें तुरंत अभ्यास में लाने में अक्षम हो। यही कारण है कि तुम सब मसीह पर विश्वास नहीं करते, और हमेशा उसके बारे में धारणाएँ रखना एक अन्य कारण है कि तुम मसीह पर विश्वास नहीं करते। मसीह के कार्य के बारे में हमेशा संशय ग्रस्त रहना, मसीह के वचनों पर कान न देना, मसीह के द्वारा किए गए जो भी कार्य हैं उनके बारे में राय रखना और उसके कार्य को सही तरह से समझने में समर्थ नहीं होना, तुम्हें चाहे कैसा भी स्पष्टीकरण क्यों न प्राप्त हो, अपनी धारणाओं को छोड़ने में कठिनाई महसूस करना, इत्यादि—ये सभी अविश्वास के तत्व तुम सबके हृदय में मिश्रित हो गए हैं। यद्यपि तुम सब मसीह के कार्य का अनुसरण करते हो और कभी भी पीछे नहीं रहते हो, किन्तु तुम सबके हृदयों में अत्यधिक विद्रोह मिश्रित हो गया है। यह विद्रोह परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास की एक अशुद्धि है। शायद तुम सबको ऐसा न लगता हो, किन्तु यदि इसमें तुम अपने इरादों को नहीं पहचान सकते, तो तुम्हारा उन लोगों में से होना निश्चित है जो नष्ट होंगे, क्योंकि परमेश्वर केवल उन्हें ही पूर्ण करता है जो वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं, उन्हें नहीं जो उस पर संशय करते हैं, और उन सबको तो बिल्कुल नहीं जो कभी भी उसे परमेश्वर न मानने के बावजूद उसका अनिच्छा से अनुसरण करते हैं।

कुछ लोग सत्य में आनंदित नहीं होते, न्याय में तो बिल्कुल भी नहीं। बल्कि वे शक्ति और सम्पत्तियों में आनन्दित होते हैं; इस प्रकार के लोग शक्ति के खोजी कहे जाते हैं। वे केवल दुनिया के प्रभावशाली सम्प्रदायों तथा सेमिनरी से आने वाले पादरियों और शिक्षकों को खोजते हैं। हालंकि उन्होंने सत्य के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, फिर भी वे आधा विश्वास करते हैं; और वे अपने दिलो-दिमाग को पूरी तरह से

समर्पित करने में असमर्थ होते हैं, वे मुख से तो परमेश्वर के लिए खुद को खपाने की बात करते हैं, किन्तु उनकी नज़रें बड़े पादरियों और शिक्षकों पर केन्द्रित रहती हैं, और वे मसीह की ओर दूसरी नजर भी नहीं डालते। उनके हृदय प्रसिद्धि, वैभव और महिमा पर ही टिक गए हैं। वे इसे असंभव समझते हैं कि ऐसा मामूली व्यक्ति इतने लोगों पर विजय प्राप्त कर सकता है कि एक इतना साधारण व्यक्ति लोगों को पूर्ण बनाबना सकता है। वे इसे असंभव समझते हैं कि ये धूल और घूरे में पड़े नाचीज़ लोग परमेश्वर के द्वारा चुने गए हैं। वे मानते हैं कि यदि ऐसे लोग परमेश्वर के उद्धार की योजना के लक्ष्य रहे होते, तो स्वर्ग और पृथ्वी उलट-पुलट हो जाते और सभी लोग ठहाके लगाकर हँसते। उनका मानना है कि यदि परमेश्वर ने ऐसे नाचीज़ों को पूर्ण बनाने के लिए चुना होता, तो वे सभी बड़े लोग स्वयं परमेश्वर बन जाते। उनके दृष्टिकोण अविश्वास से दूषित हैं; अविश्वास करने से अधिक, वे बेहूदे जानवर हैं। क्योंकि वे केवल पद, प्रतिष्ठा और सत्ता को महत्व देते है और केवल बड़े समूहों और सम्प्रदायों को सम्मान देते हैं। उनमें उनके लिए बिल्कुल भी सम्मान नहीं है जिनकी अगुवाई मसीह करता है; वे तो बस ऐसे गद्दार हैं जिन्होंने मसीह से, सत्य से और जीवन से अपना मुँह मोड़ लिया है।

तुम मसीह की विनम्रता की प्रशंसा नहीं करते, बल्कि विशेष हैसियत वाले उन झूठे चरवाहों की प्रशंसा करते हो। तुम मसीह की मनोहरता या बुद्धि से प्रेम नहीं करते हो, बल्कि उन व्यभिचारियों से प्रेम करते हो जो संसार की कीचड़ में लोट लगाते हैं। तुम मसीह की पीड़ा पर हँसते हो, जिसके पास अपना सिर टिकाने तक की जगह नहीं है, किन्तु उन मुरदों की तारीफ़ करते हो जो चढ़ावों को हड़प लेते हैं और अय्याशी में जीते हैं। तुम मसीह के साथ कष्ट सहने को तैयार नहीं हो, परन्तु उन धृष्ट मसीह-विरोधियों की बाँहों में प्रसन्नता से जाते हो, हालाँकि वे तुम्हें सिर्फ देह, शब्द और नियंत्रण ही प्रदान करते हैं। अब भी तुम्हारा हृदय उनकी ओर, उनकी प्रतिष्ठा की ओर, उनकी हैसियत की ओर, उनके प्रभाव की ओर मुड़ता है। फिर भी तुम ऐसा रवैया बनाये रखते हो जहाँ तुम मसीह के कार्य को गले से उतारना कठिन पाते हो और उसे स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होते। इसीलिए मैं कहता हूँ कि तुममें मसीह को स्वीकार करने का विश्वास नहीं है। तुमने आज तक उसका अनुसरण सिर्फ़ इसलिए किया, क्योंकि तुम्हारे पास कोई और चारा नहीं था। तुम्हारे हृदय में हमेशा बुलंद छवियों का स्थान रहा है; तुम न तो उनके हर वचन और कर्म को, और न ही उनके प्रभावशाली वचनों और हाथों को भूल सकते हो। तुम सबके हृदय में वे हमेशा सर्वोच्च और हमेशा नायक हैं। किन्तु आज के मसीह के लिए ऐसा नहीं है। तुम्हारे हृदय में वह हमेशा महत्वहीन

और हमेशा आदर के अयोग्य है। क्योंकि वह बहुत ही साधारण है, उसका बहुत ही कम प्रभाव है और वह उत्कृष्ट तो बिल्कुल नहीं है।

बहरहाल, मैं कहता हूँ कि जो लोग सत्य का सम्मान नहीं करते हैं वे सभी अविश्वासी और सत्य के प्रति गद्दार हैं। ऐसे लोगों को कभी भी मसीह का अनुमोदन प्राप्त नहीं होगा। क्या अब तुमने पहचान लिया है कि तुम्हारे भीतर कितना अधिक अविश्वास है, और मसीह के प्रति कितना विश्वासघात है? मैं तुमको इस तरह से शिक्षा देता हूँ : चूँकि तुमने सत्य का मार्ग चुना है, तो तुम्हें सम्पूर्ण हृदय से खुद को समर्पित कर देना चाहिए; दुविधाग्रस्त या अधूरे मन वाले न बनो। तुम्हें समझना चाहिए कि परमेश्वर इस संसार या किसी एक व्यक्ति का नहीं है, बल्कि उन सबका है जो उस पर सचमुच विश्वास करते हैं, उन सबका जो उसकी आराधना करते हैं, और उन सबका है जो उसके प्रति समर्पित और निष्ठावान है।

आज, तुम लोगों के भीतर बहुत अविश्वास बचा हुआ है। खुद के भीतर ध्यान से देखो, और तुम्हें तुम्हारा उत्तर निश्चित रूप से मिल जाएगा। जब तुम्हें वास्तविक उत्तर मिल जाएगा, तब तुम स्वीकार करोगे कि तुम परमेश्वर के विश्वासी नहीं हो, बल्कि ऐसे व्यक्ति हो जो उसे धोखा देता है, उसकी निंदा करता है और उसके साथ विश्वासघात करता है, और जो उसके प्रति निष्ठाहीन है। तब तुम्हें महसूस होगा कि मसीह कोई व्यक्ति नहीं बल्कि परमेश्वर है। जब वह दिन आएगा, तब तुम उसका आदर करोगे, उससे डरोगे और वास्तव में मसीह से प्रेम करोगे। वर्तमान में, तुम सबका हृदय केवल तीस प्रतिशत ही विश्वास से भरा है, बाकि सत्तर प्रतिशत संदेह से भरा है। मसीह के द्वारा किया गया कोई भी कर्म और बोला गया कोई भी वचन तुम सबमें उसके बारे में धारणाएँ या राय बनाने का कारण बन सकता है, वे धारणाएँ और राय जो उसमें तुम सबके पूर्ण अविश्वास से उत्पन्न होती हैं। तुम सब केवल स्वर्ग के अनदेखे परमेश्वर की प्रशंसा करते हो और उसका भय मानते हो, और धरती पर जीवित मसीह के लिए तुम्हारे मन में कोई सम्मान नहीं है। क्या यह भी तुम सबका अविश्वास नहीं है? तुम सब केवल उस परमेश्वर के लिए लालायित रहते हो जिसने अतीत में कार्य किया था, किन्तु आज के मसीह का सामना तक नहीं करते हो। ये हमेशा से तुम सबके हृदय में मिश्रित "आस्था" है, वह आस्था है जो आज के मसीह पर विश्वास नहीं करती। मैं तुम सबको कम करके नहीं आँकता हूँ, क्योंकि तुम सबके भीतर अत्यधिक अविश्वास है, तुममें बहुत ज्यादा अशुद्धि है और इसका विश्लेषण किया जाना चाहिए। ये अशुद्धियाँ इस बात का संकेत हैं कि तुम सबमें बिल्कुल भी विश्वास नहीं है; ये तुम सबके मसीह को त्यागने के संकेत हैं, और तुम सब पर मसीह के विश्वासघाती के

रूप में कलंक हैं। वे मसीह के बारे में तुम सबके ज्ञान को ढकने वाला पर्दा हैं, मसीह द्वारा तुम सबको प्राप्त किये जाने में एक बाधा है, मसीह के साथ तुम सबकी अनुरूपता होने में एक रुकावट हैं, और सबूत हैं कि मसीह तुम सबका अनुमोदन नहीं करता। अब तुम सबके जीवन के सभी हिस्सों की जाँच करने का समय है! ऐसा करने से तुम सबको हर कल्पनीय तरीके से लाभ होगा!

मसीह न्याय का कार्य सत्य के साथ करता है

अंत के दिनों का कार्य सभी को उनके स्वभाव के आधार पर पृथक करना और परमेश्वर की प्रबंधन योजना का समापन करना है, क्योंकि समय निकट है और परमेश्वर का दिन आ गया है। परमेश्वर उन सभी को, जो उसके राज्य में प्रवेश करते हैं—वे सभी, जो बिलकुल अंत तक उसके वफादार रहे हैं—स्वयं परमेश्वर के युग में ले जाता है। फिर भी, स्वयं परमेश्वर के युग के आगमन से पूर्व, परमेश्वर का कार्य मनुष्य के कर्मों को देखना या मनुष्य के जीवन की जाँच-पड़ताल करना नहीं, बल्कि उसकी अवज्ञा का न्याय करना है, क्योंकि परमेश्वर उन सभी को शुद्ध करेगा, जो उसके सिंहासन के सामने आते हैं। वे सभी, जिन्होंने आज के दिन तक परमेश्वर के पदचिह्नों का अनुसरण किया है, वे लोग हैं, जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने आते हैं, और ऐसा होने से, हर वह व्यक्ति, जो परमेश्वर के कार्य को उसके अंतिम चरण में स्वीकार करता है, परमेश्वर द्वारा शुद्ध किए जाने लायक है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के कार्य को उसके अंतिम चरण में स्वीकार करने वाला हर व्यक्ति परमेश्वर के न्याय का पात्र है।

बीते समय में जो यह कहा गया था कि न्याय परमेश्वर के घर से शुरू होगा, उन वचनों में "न्याय" उस फ़ैसले को संदर्भित करता है, जो परमेश्वर आज उन लोगों के बारे में देता है, जो अंत के दिनों में उसके सिंहासन के सामने आते हैं। शायद कुछ लोग ऐसे हैं, जो ऐसी अलौकिक कल्पनाओं पर विश्वास करते हैं, जैसे कि, जब अंत के दिन आ चुके होंगे, तो परमेश्वर स्वर्ग में एक बड़ी मेज़ स्थापित करेगा, जिस पर एक सफेद मेज़पोश बिछा होगा, और फिर एक बड़े सिंहासन पर बैठकर, जिसके सामने सभी मनुष्य ज़मीन पर घुटने टेके होंगे, वह प्रत्येक मनुष्य के पाप उजागर करेगा और इसके द्वारा यह निर्धारित करेगा कि उन्हें स्वर्ग में आरोहण करना है या नीचे आग और गंधक की झील में डाला जाना है। मनुष्य किसी भी प्रकार की कल्पना क्यों न करे, उससे परमेश्वर के कार्य का सार नहीं बदल सकता। मनुष्य की कल्पनाएँ मनुष्य के विचारों की रचनाओं के सिवा कुछ नहीं हैं; वे उसकी देखी-सुनी बातों के जुड़ने और एकत्र होने पर उसके

दिमाग़ से निकलती हैं। इसलिए मैं कहता हूँ, कल्पित तसवीरें कितनी भी शानदार क्यों न हों, हैं वे तसवीरें ही, और वे परमेश्वर के कार्य की योजना की स्थानापन्न बनने में अक्षम हैं। मनुष्य आख़िरकार शैतान द्वारा भ्रष्ट किया जा चुका है, इसलिए वह परमेश्वर के विचारों की थाह कैसे पा सकता है? मनुष्य परमेश्वर के न्याय के कार्य के विलक्षण होने की कल्पना करता है। वह मानता है कि चूँकि यह स्वयं परमेश्वर है, जो न्याय का कार्य करता है, इसलिए यह कार्य अवश्य ही बहुत ज़बरदस्त पैमाने का, और मनुष्यों की समझ से बाहर होना चाहिए, और इसे स्वर्ग भर में गूँजना और पृथ्वी को हिला देना चाहिए; वरना यह परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला न्याय का कार्य कैसे हो सकता है? वह मानता है कि, चूँकि यह न्याय का कार्य है, अत: कार्य करते समय परमेश्वर को विशेष रूप से रोबीला और प्रतापी अवश्य होना चाहिए, और जिनका न्याय किया जा रहा है, उन्हें आँसू बहाते हुए आर्तनाद करना चाहिए और घुटने टेककर दया की भीख माँगनी चाहिए। इस तरह के दृश्य भव्य और उत्तेजक होंगे...। हर कोई परमेश्वर के न्याय के कार्य के चमत्कारी होने की कल्पना करता है। लेकिन क्या तुम जानते हो कि काफी समय पहले जबसे परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच न्याय का अपना कार्य आरंभ किया था, तबसे तुम सुस्ती भरी नींद में आश्रय लिए हुए हो? कि जिस समय तुम सोचते हो कि परमेश्वर के न्याय का कार्य औपचारिक रूप से आरंभ हुआ, तब तक परमेश्वर ने पहले ही स्वर्ग और पृथ्वी को नए सिरे से बना लिया होगा? उस समय शायद तुमने केवल जीवन का अर्थ समझा ही होगा, परंतु परमेश्वर के न्याय का निष्ठुर कार्य तुम्हें नरक में और भी गहरी नींद में ले जाएगा। केवल तभी तुम अचानक महसूस करोगे कि परमेश्वर के न्याय का कार्य पहले ही संपन्न हो चुका है।

आओ, हम अपना अनमोल समय नष्ट न करें, और अब इन वीभत्स और घृणित विषयों पर और बात न करें। इसके बजाय इस पर बात करें कि न्याय का गठन किस चीज़ से होता है। "न्याय" शब्द का जिक्र होने पर संभवत: तुम उन वचनों के बारे में सोचोगे, जो यहोवा ने सभी स्थानों पर कहे थे और फटकार के जो वचन यीशु ने फरीसियों से कहे थे। अपनी समस्त कठोरता के बावजूद, ये वचन परमेश्वर द्वारा मनुष्य का न्याय नहीं थे; बल्कि वे विभिन्न परिस्थितियों, अर्थात् विभिन्न संदर्भों में परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन हैं। ये वचन मसीह द्वारा अंत के दिनों में मनुष्यों का न्याय करते हुए कहे जाने वाले शब्दों से भिन्न हैं। अंत के दिनों में मसीह मनुष्य को सिखाने, उसके सार को उजागर करने और उसके वचनों और कर्मों की चीर-फाड़ करने के लिए विभिन्न प्रकार के सत्यों का उपयोग करता है। इन वचनों में विभिन्न सत्यों का समावेश है, जैसे कि मनुष्य का कर्तव्य, मनुष्य को परमेश्वर का आज्ञापालन किस प्रकार करना चाहिए, मनुष्य को किस

प्रकार परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होना चाहिए, मनुष्य को किस प्रकार सामान्य मनुष्यता का जीवन जीना चाहिए, और साथ ही परमेश्वर की बुद्धिमत्ता और उसका स्वभाव, इत्यादि। ये सभी वचन मनुष्य के सार और उसके भ्रष्ट स्वभाव पर निर्देशित हैं। खास तौर पर वे वचन, जो यह उजागर करते हैं कि मनुष्य किस प्रकार परमेश्वर का तिरस्कार करता है, इस संबंध में बोले गए हैं कि किस प्रकार मनुष्य शैतान का मूर्त रूप और परमेश्वर के विरुद्ध शत्रु-बल है। अपने न्याय का कार्य करने में परमेश्वर केवल कुछ वचनों के माध्यम से मनुष्य की प्रकृति को स्पष्ट नहीं करता; बल्कि वह लंबे समय तक उसे उजागर करता है, उससे निपटता है और उसकी काट-छाँट करता है। उजागर करने, निपटने और काट-छाँट करने की इन विधियों को साधारण वचनों से नहीं, बल्कि उस सत्य से प्रतिस्थापित किया जा सकता है, जिसका मनुष्य में सर्वथा अभाव है। केवल इस तरह की विधियाँ ही न्याय कही जा सकती हैं; केवल इस तरह के न्याय द्वारा ही मनुष्य को वशीभूत और परमेश्वर के प्रति समर्पण के लिए पूरी तरह से आश्वस्त किया जा सकता है, और इतना ही नहीं, बल्कि मनुष्य परमेश्वर का सच्चा ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है। न्याय का कार्य मनुष्य में परमेश्वर के असली चेहरे की समझ पैदा करने और उसकी स्वयं की विद्रोहशीलता का सत्य उसके सामने लाने का काम करता है। न्याय का कार्य मनुष्य को परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर के कार्य के उद्देश्य और उन रहस्यों की अधिक समझ प्राप्त कराता है, जो उसकी समझ से परे हैं। यह मनुष्य को अपने भ्रष्ट सार तथा अपनी भ्रष्टता की जड़ों को जानने-पहचानने और साथ ही अपनी कुरूपता को खोजने का अवसर देता है। ये सभी परिणाम न्याय के कार्य द्वारा लाए जाते हैं, क्योंकि इस कार्य का सार वास्तव में उन सभी के लिए परमेश्वर के सत्य, मार्ग और जीवन का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य है, जिनका उस पर विश्वास है। यह कार्य परमेश्वर के द्वारा किया जाने वाला न्याय का कार्य है। अगर तुम इन सत्यों को महत्वपूर्ण नहीं समझते, अगर तुम सिवाय इसके कुछ नहीं समझते कि इनसे कैसे बचा जाए, या किस तरह कोई ऐसा नया तरीका ढूँढ़ा जाए जिनमें ये शामिल न हों, तो मैं कहूँगा कि तुम घोर पापी हो। अगर तुम्हें परमेश्वर में विश्वास है, फिर भी तुम सत्य को या परमेश्वर की इच्छा को नहीं खोजते, न ही उस मार्ग से प्यार करते हो, जो परमेश्वर के निकट लाता है, तो मैं कहता हूँ कि तुम एक ऐसे व्यक्ति हो, जो न्याय से बचने की कोशिश कर रहा है, और यह कि तुम एक कठपुतली और ग़द्दार हो, जो महान श्वेत सिंहासन से भागता है। परमेश्वर ऐसे किसी भी विद्रोही को नहीं छोड़ेगा, जो उसकी आँखों के नीचे से बचकर भागता है। ऐसे मनुष्य और भी अधिक कठोर दंड पाएँगे। जो लोग न्याय किए जाने के लिए परमेश्वर के सम्मुख आते हैं, और इसके अलावा शुद्ध

किए जा चुके हैं, वे हमेशा के लिए परमेश्वर के राज्य में रहेंगे। बेशक, यह कुछ ऐसा है, जो भविष्य से संबंधित है।

न्याय का कार्य परमेश्वर का अपना कार्य है, इसलिए स्वाभाविक रूप से इसे परमेश्वर द्वारा ही किया जाना चाहिए; उसकी जगह इसे मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता। चूँकि न्याय सत्य के माध्यम से मानवजाति को जीतना है, इसलिए परमेश्वर निःसंदेह अभी भी मनुष्यों के बीच इस कार्य को करने के लिए देहधारी छवि के रूप में प्रकट होगा। अर्थात्, अंत के दिनों में मसीह दुनिया भर के लोगों को सिखाने के लिए और उन्हें सभी सच्चाइयों का ज्ञान कराने के लिए सत्य का उपयोग करेगा। यह परमेश्वर के न्याय का कार्य है। कई लोगों में परमेश्वर के दूसरे देहधारण के बारे में बुरी भावना है, क्योंकि लोगों को यह बात मानने में कठिनाई होती है कि परमेश्वर न्याय का कार्य करने के लिए देह धारण करेगा। फिर भी, मुझे तुम्हें यह अवश्य बताना होगा कि प्रायः परमेश्वर का कार्य मनुष्य की अपेक्षाओं से बहुत आगे तक जाता है, और मनुष्य के मन के लिए इसे स्वीकार करना कठिन होता है। क्योंकि लोग पृथ्वी पर मात्र कीड़े-मकौड़े हैं, जबकि परमेश्वर सर्वोच्च है जो ब्रह्मांड में समाया हुआ है; मनुष्य का मन गंदे पानी से भरे हुए एक गड्ढे के सदृश है, जो केवल कीड़े-मकोड़ों को ही उत्पन्न करता है, जबकि परमेश्वर के विचारों द्वारा निर्देशित कार्य का प्रत्येक चरण परमेश्वर की बुद्धि का परिणाम है। लोग हमेशा परमेश्वर के साथ संघर्ष करने की कोशिश करते हैं, जिसके बारे में मैं कहता हूँ कि यह स्वत: स्पष्ट है कि अंत में कौन हारेगा। मैं तुम सबको समझा रहा हूँ कि अपने आपको स्वर्ण से अधिक मूल्यवान मत समझो। जब दूसरे लोग परमेश्वर का न्याय स्वीकार कर सकते हैं, तो तुम क्यों नहीं? तुम दूसरों से कितने ऊँचे हो? अगर दूसरे लोग सत्य के आगे सिर झुका सकते हैं, तो तुम भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते? परमेश्वर के कार्य का वेग अबाध है। वह सिर्फ़ तुम्हारे द्वारा दिए गए "सहयोग" के कारण न्याय के कार्य को फिर से नहीं दोहराएगा, और तुम इतने अच्छे अवसर के हाथ से निकल जाने पर पछतावे से भर जाओगे। अगर तुम्हें मेरे वचनों पर विश्वास नहीं है, तो फिर आकाश में स्थित उस महान श्वेत सिंहासन द्वारा खुद पर "न्याय पारित किए जाने" की प्रतीक्षा करो! तुम्हें अवश्य पता होना चाहिए कि सभी इजराइलियों ने यीशु को ठुकराया और अस्वीकार किया था, और फिर भी यीशु द्वारा मानवजाति के छुटकारे का तथ्य फिर भी पूरे ब्रह्मांड और पृथ्वी के के छोरों तक फैल गया। क्या यह परमेश्वर द्वारा बहुत पहले बनाई गई वास्तविकता नहीं है? अगर तुम अभी भी यीशु द्वारा स्वयं को स्वर्ग में ले जाए जाने का इंतज़ार कर रहे हो, तो मैं कहता हूँ कि तुम एक निर्जीव काष्ठ के बेकार टुकड़े हो।[क]

यीशु तुम जैसे किसी भी झूठे विश्वासी को स्वीकार नहीं करेगा, जो सत्य के प्रति निष्ठाहीन है और केवल आशीष चाहता है। इसके विपरीत, वह तुम्हें हज़ारों वर्षों तक जलने देने के लिए आग की झील में फेंकने में कोई दया नहीं दिखाएगा।

क्या अब तुम समझ गए हो कि न्याय क्या है और सत्य क्या है? अगर तुम समझ गए हो, तो मैं तुम्हें न्याय किए जाने के लिए आज्ञाकारी ढंग से समर्पित होने की नसीहत देता हूँ, वरना तुम्हें कभी भी परमेश्वर द्वारा सराहे जाने या उसके द्वारा अपने राज्य में ले जाए जाने का अवसर नहीं मिलेगा। जो केवल न्याय को स्वीकार करते हैं लेकिन कभी शुद्ध नहीं किए जा सकते, अर्थात् जो न्याय के कार्य के बीच से ही भाग जाते हैं, वे हमेशा के लिए परमेश्वर की घृणा के शिकार हो जाएँगे और नकार दिए जाएँगे। फरीसियों के पापों की तुलना में उनके पाप संख्या में बहुत अधिक और ज्यादा संगीन हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया है और वे परमेश्वर के प्रति विद्रोही हैं। ऐसे लोग, जो सेवा करने के भी योग्य नहीं हैं, अधिक कठोर दंड प्राप्त करेंगे, जो चिरस्थायी भी होगा। परमेश्वर ऐसे किसी भी गद्दार को नहीं छोड़ेगा, जिसने एक बार तो वचनों से वफादारी दिखाई, मगर फिर परमेश्वर को धोखा दे दिया। ऐसे लोग आत्मा, प्राण और शरीर के दंड के माध्यम से प्रतिफल प्राप्त करेंगे। क्या यह हूबहू परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का प्रकटन नहीं है? क्या मनुष्य का न्याय करने और उसे उजागर करने में परमेश्वर का यह उद्देश्य नहीं है? परमेश्वर उन सभी को, जो न्याय के समय के दौरान सभी प्रकार के दुष्ट कर्म करते हैं, दुष्टात्माओं से आक्रांत स्थान पर भेजता है, और उन दुष्टात्माओं को इच्छानुसार उनके दैहिक शरीर नष्ट करने देता है, और उन लोगों के शरीरों से लाश की दुर्गंध निकलती है। ऐसा उनका उचित प्रतिशोध है। परमेश्वर उन निष्ठाहीन झूठे विश्वासियों, झूठे प्रेरितों और झूठे कार्यकर्ताओं का हर पाप उनकी अभिलेख-पुस्तकों में लिखता है; और फिर जब सही समय आता है, वह उन्हें गंदी आत्माओं के बीच में फेंक देता है, और उन अशुद्ध आत्माओं को इच्छानुसार उनके संपूर्ण शरीरों को दूषित करने देता है, ताकि वे कभी भी पुन: देहधारण न कर सकें और दोबारा कभी भी रोशनी न देख सकें। वे पाखंडी, जो किसी समय सेवा करते हैं, किंतु अंत तक वफ़ादार बने रहने में असमर्थ रहते हैं, परमेश्वर द्वारा दुष्टों में गिने जाते हैं, ताकि वे दुष्टों की सलाह पर चलें, और उनकी उपद्रवी भीड़ का हिस्सा बन जाएँ; अंत में परमेश्वर उन्हें जड़ से मिटा देगा। परमेश्वर उन लोगों को अलग फेंक देता है और उन पर कोई ध्यान नहीं देता, जो कभी भी मसीह के प्रति वफादार नहीं रहे या जिन्होंने अपने सामर्थ्य का कुछ भी योगदान नहीं किया, और युग बदलने पर वह उन

सभी को जड़ से मिटा देगा। वे अब और पृथ्वी पर मौजूद नहीं रहेंगे, परमेश्वर के राज्य का मार्ग तो बिलकुल भी प्राप्त नहीं करेंगे। जो कभी भी परमेश्वर के प्रति ईमानदार नहीं रहे, किंतु उसके साथ बेमन से व्यवहार करने के लिए परिस्थिति द्वारा मजबूर किए जाते हैं, वे परमेश्वर के लोगों की सेवा करने वालों में गिने जाते हैं। ऐसे लोगों की एक छोटी-सी संख्या ही जीवित बचेगी, जबकि बड़ी संख्या उन लोगों के साथ नष्ट हो जाएगी, जो सेवा करने के भी योग्य नहीं हैं। अंतत: परमेश्वर उन सभी को, जिनका मन परमेश्वर के समान है, अपने लोगों और पुत्रों को, और परमेश्वर द्वारा याजक बनाए जाने के लिए पूर्वनियत लोगों को अपने राज्य में ले आएगा। वे परमेश्वर के कार्य के परिणाम होंगे। जहाँ तक उन लोगों का प्रश्न है, जो परमेश्वर द्वारा निर्धारित किसी भी श्रेणी में नहीं आ सकते, वे अविश्वासियों में गिने जाएँगे—तुम लोग निश्चित रूप से कल्पना कर सकते हो कि उनका क्या परिणाम होगा। मैं तुम सभी लोगों से पहले ही वह कह चुका हूँ, जो मुझे कहना चाहिए; जो मार्ग तुम लोग चुनते हो, वह केवल तुम्हारी पसंद है। तुम लोगों को जो समझना चाहिए, वह यह है : परमेश्वर का कार्य ऐसे किसी शख्स का इंतज़ार नहीं करता, जो उसके साथ कदमताल नहीं कर सकता, और परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव किसी भी मनुष्य के प्रति कोई दया नहीं दिखाता।

फुटनोट:

क. निर्जीव काष्ठ का टुकड़ा : एक चीनी मुहावरा, जिसका अर्थ है—"सहायता से परे"।

क्या तुम जानते हो? परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच एक बहुत बड़ा काम किया है

पुराना युग बीत चुका है, और नया युग आ गया है। वर्ष दर वर्ष, और दिन-ब-दिन परमेश्वर ने बहुत-से काम किए हैं। वह इस संसार में आया और फिर लौट गया। ऐसा चक्र अनेक पीढ़ियों तक लगातार चलता रहा। आज भी, पहले की ही तरह, परमेश्वर वह काम कर रहा है जिसे उसे करना ही है, वह काम जो उसे अभी पूरा करना है, क्योंकि उसने आज तक विश्राम में प्रवेश नहीं किया है। सृष्टि निर्माण के समय से लेकर आज तक परमेश्वर ने बहुत-से काम किये हैं। परंतु क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर आज पहले से कहीं ज्यादा काम करता है, और उसके कार्य का स्तर पहले की तुलना में बहुत अधिक है? इसीलिए मैं कहता हूँ कि परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच एक बहुत बड़ा काम किया है। परमेश्वर के सभी काम, चाहे मनुष्यों के लिये हों, या परमेश्वर के लिये, सभी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि उसके काम के प्रत्येक भाग का संबंध मनुष्य

से होता है।

चूँकि परमेश्वर का कार्य न तो देखा जा सकता है, और न महसूस किया जा सकता है, और संसार तो इसे बिल्कुल ही नहीं देख पाता, इसलिये वह महान कैसे हो सकता है? आखिर किस प्रकार की चीज़ को बहुत महान कहा जा सकता है? निश्चय ही, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि परमेश्वर जो भी काम करता है, उसे महान कहा जा सकता है, परंतु मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि परमेश्वर इस दिन जो करता है वह महान है? जब मैं कहता हूँ कि परमेश्वर ने एक बहुत महान काम किया है, तो निश्चय ही इसमें बहुत से ऐसे रहस्य शामिल हैं जिन्हें मनुष्य को समझना अभी बाकी है। आओ, हम उन पर अब चर्चा करें।

यीशु एक चरनी में ऐसे युग में जन्मा, जो उसके अस्तित्व को स्वीकार न कर सका, परंतु संसार तब भी उसके मार्ग में अवरोधक नहीं बन सका और वह परमेश्वर की छत्रछाया में मनुष्यों के बीच तैंतीस वर्ष तक रहा। उन वर्षों में उसने संसार की कड़वाहट और पृथ्वी पर दुर्दशा के जीवन की अनुभूति की। वह सारी मानवजाति को छुटकारा दिलाने के लिये सूली पर चढ़ने की बहुत भारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लिए हुए था। उसने उन सभी पापियों को, जो शैतान के अधिकार क्षेत्र में जी रहे थे, छुटकारा दिलाया और आखिरकार उसकी पुनर्जीवित देह अपने विश्राम स्थान को लौट गई। अब परमेश्वर का नया काम आरंभ हो गया है और यह एक नये युग का आरंभ भी है। परमेश्वर उद्धार का अपना नया काम आरंभ करने के लिए छुटकारा पाये हुए लोगों को अपने घर में लाता है। इस समय उद्धार का कार्य पिछले समय में किये गये कामों से अधिक विस्तृत है। इंसानों में कार्य कर रहे पवित्र आत्मा के कारण इंसान स्वयं बदलेंगे, और न तो मनुष्यों के बीच प्रकट हुए यीशु के देह के द्वारा यह होगा, और यह कार्य किसी और तरीके से तो बिलकुल नहीं होगा। बल्कि यह कार्य देहधारी परमेश्वर स्वयं करेगा, और वही इसे संचालित करेगा। वह इसे ऐसे इसलिए करता है ताकि वह लोगों का नए कार्य में अगुवाई करे। क्या यह बहुत बड़ी बात नहीं है? परमेश्वर यह काम मानवता के एक भाग के माध्यम से या भविष्यवाणियों के माध्यम से नहीं करता है; बल्कि परमेश्वर इसे स्वयं करता है। कुछ लोग कह सकते हैं कि यह कोई बहुत महान काम नहीं है, और यह मनुष्यों को परमानंद नहीं दे सकता। परंतु मैं फिर भी तुम से कहूँगा कि परमेश्वर का काम केवल इतना ही नहीं है, बल्कि इससे भी व्यापक और महान है।

इस बार, परमेश्वर कार्य करने आध्यात्मिक देह में नहीं, बल्कि एकदम साधारण देह में आया है। इसके अलावा, यह न केवल परमेश्वर के दूसरी बार देहधारण का देह है, बल्कि यह वही देह है जिसमें वह

लौटकर आया है। यह बिलकुल साधारण देह है। इस देह में तुम ऐसा कुछ नहीं देख सकते जो इसे दूसरों से अलग करता हो, परंतु तुम उससे वह सत्य ग्रहण कर सकते हो जिसके विषय में पहले कभी नहीं सुना गया। यह तुच्छ देह, परमेश्वर के सभी सत्य के वचनों का मूर्त रूप है, जो अंत के दिनों में परमेश्वर के काम की ज़िम्मेदारी लेता है, और मनुष्यों के समझने के लिये परमेश्वर के संपूर्ण स्वभाव को अभिव्यक्त करता है। क्या तुम स्वर्ग के परमेश्वर को देखने की प्रबल अभिलाषा नहीं करते हो? क्या तुम स्वर्ग के परमेश्वर को समझने की प्रबल अभिलाषा नहीं करते हो? क्या तुम मनुष्यजाति के गंतव्य को जानने की प्रबल अभिलाषा नहीं करते हो? वह तुम्हें वो सभी अकल्पनीय रहस्य बतायेगा—वो रहस्य जो कभी कोई इंसान नहीं बता सका, और तुम्हें वो सत्य भी बतायेगा जिन्हें तुम नहीं समझते। वह राज्य में तुम्हारे लिये द्वार है, और नये युग में तुम्हारा मार्गदर्शक है। ऐसी साधारण देह अनेक अथाह रहस्यों को समेटे हुये है। उसके कार्य तुम्हारे लिए गूढ़ हो सकते हैं, परंतु उसके कार्य का संपूर्ण लक्ष्य, तुम्हें इतना बताने के लिये पर्याप्त है कि वह कोई साधारण देह नहीं है, जैसा लोग मानते हैं। क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही साथ अंत के दिनों में मानवजाति के प्रति परमेश्वर की परवाह को भी दर्शाता है। यद्यपि तुम उसके द्वारा बोले गये उन वचनों को नहीं सुन सकते, जो आकाश और पृथ्वी को कंपाते-से लगते हैं, या उसकी ज्वाला-सी धधकती आंखों को नहीं देख सकते, और यद्यपि तुम उसके लौह दण्ड के अनुशासन का अनुभव नहीं कर सकते, तुम उसके वचनों से सुन सकते हो कि परमेश्वर क्रोधित है, और जान सकते हो कि परमेश्वर मानवजाति पर दया दिखा रहा है; तुम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव और उसकी बुद्धि को समझ सकते हो, और इसके अलावा, समस्त मानवजाति के लिये परमेश्वर की चिंता और परवाह को समझ सकते हो। अंत के दिनों में परमेश्वर के काम का उद्देश्य स्वर्ग के परमेश्वर को मनुष्यों के बीच पृथ्वी पर रहते हुए दिखाना है और मनुष्यों को इस योग्य बनाना है कि वे परमेश्वर को जानें, उसकी आज्ञा मानें, आदर करें, और परमेश्वर से प्रेम करें। यही कारण है कि वह दूसरी बार देह में लौटकर आया है। यद्यपि आज मनुष्य देखता है कि परमेश्वर मनुष्यों के ही समान है, उसकी एक नाक और दो आँखें हैं और वह एक साधारण परमेश्वर है, अंत में परमेश्वर तुम लोगों को दिखाएगा कि अगर यह मनुष्य नहीं होता तो स्वर्ग और पृथ्वी एक अभूतपूर्व बदलाव से होकर गुज़रते; अगर यह मनुष्य नहीं होता तो, स्वर्ग मद्धिम हो जाता, पृथ्वी पर उथल-पुथल हो जाती, समस्त मानवजाति अकाल और महामारियों के बीच जीती। परमेश्वर तुम लोगों को दर्शायेगा कि यदि अंत के दिनों में देहधारी परमेश्वर तुम लोगों को बचाने के लिए नहीं आया होता तो परमेश्वर ने समस्त

मानवजाति को बहुत पहले ही नर्क में नष्ट कर दिया होता; यदि यह देह नहीं होता तो तुम लोग सदैव ही कट्टर पापी होते, और तुम हमेशा के लिए लाश बन जाते। तुम सबको यह जानना चाहिये कि यदि यह देह नहीं होता तो समस्त मानवजाति को एक अवश्यंभावी संकट का सामना करना होता, और अंत के दिनों में मानवजाति के लिये परमेश्वर के कठोर दण्ड से बच पाना कठिन होता। यदि इस साधारण शरीर का जन्म नहीं होता तो तुम सबकी दशा ऐसी होती जिसमें तुम लोग जीने में सक्षम न होते हुए जीवन की भीख माँगते और मृत्यु के लिए प्रार्थना करते लेकिन मर न पाते; यदि यह देह नहीं होता तो तुम लोग सत्य को नहीं पा सकते थे और न ही आज परमेश्वर के सिंहासन के पास आ पाते, बल्कि तुम लोग परमेश्वर से दण्ड पाते क्योंकि तुमने जघन्य पाप किये हैं। क्या तुम सब जानते हो, यदि परमेश्वर का वापस देह में लौटा न होता, तो किसी को भी उद्धार का अवसर नहीं मिलता; और यदि इस देह का आगमन न होता, तो परमेश्वर ने बहुत पहले पुराने युग को समाप्त कर दिया होता? अब जबकि यह स्पष्ट है, क्या तुम लोग अभी भी परमेश्वर के दूसरी बार के देहधारण को नकार सकते हो? जब तुम लोग इस साधारण मनुष्य से इतने सारे लाभ प्राप्त कर सकते हो, तो तुम लोग उसे प्रसन्नतापर्वूक स्वीकार क्यों नहीं करते हो?

परमेश्वर का कार्य ऐसा है जिसे तुम समझ नहीं सकते। यदि तुम न तो पूरी तरह से समझ सकते हो कि तुम्हारा निर्णय सही है या नहीं, और न ही तुम जान सकते हो कि परमेश्वर का कार्य सफल होगा या नहीं, तब तुम अपनी किस्मत क्यों नहीं आज़माते और क्यों नहीं यह देखते हो कि यह साधारण मनुष्य तुम्हारे बड़े काम का है या नहीं और परमेश्वर ने वास्तव में बहुत महान काम किया है या नहीं? हालांकि मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि नूह के दिनों में लोग इस हद तक खाते और पीते थे, विवाहों में लगे रहते थे, कि यह सब देखना परमेश्वर के लिए असहनीय हो गया था, इसलिए उसने समस्त मानवजाति के विनाश के लिये एक बहुत बड़ी बाढ़ भेजी और बस नूह के परिवार के आठ सदस्यों, और सभी प्रकार के पशु-पक्षियों को बचाया। हालाँकि अंत के दिनों में जिन्हें परमेश्वर ने जीवित बचाकर रखा, ये वे लोग हैं जो अंत तक परमेश्वर के स्वामिभक्त रहे हैं। यद्यपि दोनों ही काल बहुत अधिक भ्रष्टाचार के युग थे जो परमेश्वर के लिये असहनीय था, और दोनों ही युगों में मानवजाति का इतना पतन हो चुका था कि उन्होंने यह नकार दिया कि परमेश्वर उनका प्रभु है, फिर भी परमेश्वर ने सिर्फ नूह के समय के सभी लोगों को नष्ट किया। दोनों युगों में मानवजाति ने परमेश्वर को बहुत दुखी किया, फिर भी परमेश्वर ने अंत के दिनों में मनुष्यों के प्रति संयम बरता है। ऐसा क्यों है? क्या तुम सबने कभी इस बात पर विचार नहीं किया? यदि तुम लोग सचमुच नहीं

जानते, तो मैं तुम्हें बताता हूँ। अंत के दिनों में मनुष्यों के प्रति परमेश्वर का धीरज धरने का कारण यह नहीं है कि वे नूह के दिनों की तुलना में कमतर भ्रष्ट हैं या उन्होंने परमेश्वर के सामने पश्चाताप किया है और यह कारण तो बिलकुल नहीं है कि परमेश्वर तकनीकी विकास के अत्यंत उन्नत होने के कारण अंत के दिनों में मनुष्यों का सर्वनाश नहीं कर सकता। बल्कि कारण यह है कि अंत के दिनों में परमेश्वर को मनुष्यों के एक समूह में कार्य करना है, और यह कार्य परमेश्वर अपने देहधारण में स्वयं करना चाहता है। साथ ही परमेश्वर इस समूह के एक भाग को अपने उद्धार का पात्र, और अपनी प्रबंधन योजना का परिणाम बनाना चाहता है, और इन लोगों को अगले युग में प्रवेश कराना चाहता है। इसलिए चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर ने जो कीमत चुकाई है वह पूरी तरह से अंत के दिनों में उसके देहधारी देह द्वारा किये जाने वाले कार्य की तैयारी में है। जिस तथ्य तक तुम लोग आज पहुँचे हो यह इसी देह के कारण है। क्योंकि परमेश्वर इस देह में जीता है इसीलिए तुम सबके पास जीवित रहने का मौका है। यह सभी उत्तम भाग्य जो तुम सबने पाया है, वह इस साधारण मनुष्य के कारण है। न केवल इतना, बल्कि अंत में समस्त जातियाँ इस साधारण मनुष्य की उपासना करेंगी साथ ही साथ उसे धन्यवाद देंगी और इस मामूली व्यक्ति की आज्ञा का पालन करेंगी, क्योंकि उसके द्वारा लाये गए सत्य, जीवन और मार्ग ने समस्त मानवजाति को बचाया है, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच के संघर्ष को शांत किया है, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच की दूरी कम की है, और परमेश्वर और मनुष्यों के के बीच के विचारों के संपर्क का रास्ता खोला है। इसी ने परमेश्वर को और अधिक महान महिमा प्रदान की है। क्या ऐसा साधारण व्यक्ति तुम्हारे विश्वास और श्रद्धा के योग्य नहीं है? क्या यह साधारण देह, मसीह कहलाने के योग्य नहीं है? क्या ऐसा साधारण मनुष्य, मनुष्यों के बीच परमेश्वर की अभिव्यक्ति नहीं हो सकता? क्या ऐसा व्यक्ति जिसने मानवजाति को आपदा से बचाया है, वह तुम लोगों के प्रेम और अवलंबन के योग्य नहीं हो सकता? यदि तुम लोग उसके मुख से निकले सत्य को नकारते हो, और तुम लोग अपने बीच में उसके अस्तित्व का तिरस्कार करते हो, तो तुम लोगों का अंत में क्या होगा?

अंत के दिनों में परमेश्वर के सभी काम इस साधारण मनुष्य के द्वारा किये जाते हैं। वह तुम्हें सब कुछ प्रदान करेगा और वह तुमसे जुड़ी हर बात तय कर सकेगा। क्या ऐसा व्यक्ति वैसा हो सकता है जैसा तुम लोग सोचते हो : एक ऐसा व्यक्ति जो इतना अधिक साधारण है कि वह उल्लेख करने योग्य भी नहीं है? क्या उसका सत्य तुम लोगों को पूर्ण रूप से आश्वस्त करने योग्य नहीं है? क्या उसके कार्य की गवाही तुम लोगों को पूर्ण रूप से आश्वस्त करने योग्य नहीं है? या फिर वह मार्ग जिस पर वह तुम्हारी अगुवाई करता

है, इस योग्य नहीं है कि तुम लोग उसका अनुसरण करो? सबकुछ कहने करने के बाद वह कौन-सी बात है जिसके कारण तुम लोग उससे घृणा करते हो और उसे अपने आप से दूर रखते हो और उससे बचकर रहते हो? यही व्यक्ति सत्य की अभिव्यक्ति करता है, यह वही व्यक्ति है जो सत्य प्रदान करता है, और यह वही व्यक्ति है जो तम लोगों को अनुसरण करने का मार्ग प्रदान करता है। क्या अब भी तुम लोगों को इन सत्यों के भीतर परमेश्वर के कार्य के संकेत नहीं मिल पा रहे? यीशु के कार्य के बिना मानवजाति सूली से उतर नहीं सकती थी, परन्तु बिना आज के देहधारण के वे लोग कभी परमेश्वर की सराहना नहीं पा सकते या नये युग में प्रवेश नहीं कर सकते जो सूली से उतर गए हैं। इस साधारण मनुष्य के आगमन के बिना, तुम लोगों को कभी भी यह अवसर नहीं मिलता या तुम लोग कभी भी इस योग्य नहीं हो सकते थे कि परमेश्वर के सच्चे मुखमंडल का दर्शन कर सको, क्योंकि तुम लोग ऐसी वस्तु हो जिसे बहुत पहले ही नष्ट कर दिया जाना चाहिए था। परमेश्वर के द्वितीय देहधारण के आगमन के कारण, परमेश्वर ने तुम लोगों को क्षमा कर दिया है और तुम लोगों पर दया दिखाई है। खैर, मैं अंत में इन वचनों के साथ तुम लोगों से विदा लेना चाहता हूँ : यह साधारण मनुष्य जो देहधारी परमेश्वर है, तुम लोगों के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। यही वह सबसे बड़ा काम है जिसे परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच पहले ही कर दिया है।

केवल अंत के दिनों का मसीह ही मनुष्य को अनंत जीवन का मार्ग दे सकता है

जीवन का मार्ग कोई ऐसी चीज नहीं है जो हर किसी के पास होता है, न ही यह कोई ऐसी चीज है जिसे हर कोई आसानी से प्राप्त कर सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जीवन केवल परमेश्वर से ही आ सकता है, कहने का तात्पर्य है कि केवल स्वयं परमेश्वर के पास ही जीवन का सार है, और केवल स्वयं परमेश्वर के पास ही जीवन का मार्ग है। और इसलिए केवल परमेश्वर ही जीवन का स्रोत है, और जीवन के जल का सदा बहने वाला सोता है। जब से परमेश्वर ने संसार को रचा है, उसने जीवन की प्राणशक्ति से जुड़ा बहुत-सा कार्य किया है, बहुत-सा कार्य मनुष्य को जीवन प्रदान करने के लिए किया है, और मनुष्य जीवन प्राप्त कर सके इसके लिए उसने भारी मूल्य चुकाया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर स्वयं अनंत जीवन है, और परमेश्वर स्वयं वह मार्ग है जिससे मनुष्य पुनर्जीवित होता है। परमेश्वर मनुष्य के हृदय से कभी अनुपस्थित नहीं होता, और हर समय मनुष्य के बीच रहता है। वह मनुष्य के जीवनयापन की प्रेरक

शक्ति, मनुष्य के अस्तित्व का आधार, और जन्म के बाद मनुष्य के अस्तित्व के लिए समृद्ध भंडार रहा है। वह मनुष्य के पुनः जन्म लेने का निमित्त है, और उसे प्रत्येक भूमिका में दृढ़तापूर्वक जीने के लिए समर्थ बनाता है। उसकी सामर्थ्य और उसकी कभी न बुझने वाली जीवन शक्ति की बदौलत, मनुष्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रहा है, इस दौरान परमेश्वर के जीवन की सामर्थ्य मनुष्य के अस्तित्व का मुख्य आधार रही है, और जिसके लिए परमेश्वर ने वह कीमत चुकाई है जो कभी किसी साधारण मनुष्य ने नहीं चुकाई। परमेश्वर की जीवन शक्ति किसी भी अन्य शक्ति से जीत सकती है; इससे भी अधिक, यह किसी भी शक्ति से बढ़कर है। उसका जीवन अनंत है, उसकी सामर्थ्य असाधारण है, और उसकी जीवन शक्ति को किसी भी सृजित प्राणी या शत्रु शक्ति द्वारा पराजित नहीं किया जा सकता है। समय और स्थान चाहे जो हो, परमेश्वर की जीवन शक्ति विद्यमान रहती है और अपने देदीप्यमान तेजस्व से चमकती है। स्वर्ग और पृथ्वी बड़े बदलावों से गजर सकते हैं, परंतु परमेश्वर का जीवन हमेशा एक समान ही रहता है। हर चीज का अस्तित्व समाप्त हो सकता है, परंतु परमेश्वर का जीवन फिर भी अस्तित्व में रहेगा, क्योंकि परमेश्वर ही सभी चीजों के अस्तित्व का स्रोत और उनके अस्तित्व का मूल है। मनुष्य का जीवन परमेश्वर से उत्पन्न होता है, स्वर्ग का अस्तित्व परमेश्वर के कारण है, और पृथ्वी का अस्तित्व परमेश्वर के जीवन की सामर्थ्य से उत्पन्न होता है। प्राणशक्ति से युक्त कोई भी वस्तु परमेश्वर की प्रभुसत्ता से बाहर नहीं हो सकती, और ऊर्जा से युक्त कोई भी वस्तु परमेश्वर के अधिकार क्षेत्र से बाहर नहीं जा सकती। इस प्रकार, वे चाहे कोई भी हों, सभी को परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन समर्पित होना ही होगा, प्रत्येक को परमेश्वर की आज्ञा के अधीन रहना ही होगा, और कोई भी उसके हाथों से बच नहीं सकता है।

हो सकता है कि अब तुम जीवन प्राप्त करना चाहते हो या हो सकता है कि तुम सत्य प्राप्त करना चाहते हो। बात जो भी हो, लेकिन तुम परमेश्वर को खोजना चाहते हो, उस परमेश्वर को खोजना चाहते हो जिस पर तुम भरोसा कर सको, और जो तुम्हें अनंत जीवन प्रदान कर सके। यदि तुम अनंत जीवन प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें सबसे पहले अनंत जीवन के स्रोत को समझना चाहिए और यह जानना चाहिए कि परमेश्वर कहाँ है। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि केवल परमेश्वर अपरिवर्तनीय जीवन है, और केवल परमेश्वर के पास ही जीवन का मार्ग है। चूँकि उसका जीवन अपरिवर्तनीय है, इसलिए यह अनंत है; चूँकि केवल परमेश्वर ही जीवन का मार्ग है, इसलिए परमेश्वर स्वयं ही अनंत जीवन का मार्ग है। अत: सबसे पहले तुम्हें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर कहाँ है, और अनंत जीवन का यह मार्ग कैसे प्राप्त करें। आओ हम इन

दोनों विषयों पर अलग-अलग अध्ययन करें।

यदि तुम सचमुच अनंत जीवन का मार्ग प्राप्त करना चाहते हो, और यदि तुममें इसको खोजने की ललक है, तो पहले इस प्रश्न का उत्तर दो : आज परमेश्वर कहाँ है? हो सकता है कि तुम कहो, "निस्संदेह, परमेश्वर स्वर्ग में रहता है—वह तुम्हारे घर में तो रहेगा नहीं, रहेगा क्या?" हो सकता है कि तुम कहो कि परमेश्वर जाहिर तौर पर सारी चीजों में बसता है। या तुम कह सकते हो कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में रहता है, या परमेश्वर आध्यात्मिक संसार में है। मैं इनमें से किसी से भी इनकार नहीं करता हूँ, परंतु मुझे यह विषय स्पष्ट कर देना चाहिए। यह कहना पूरी तरह सही नहीं है कि परमेश्वर मनुष्य के हृदय में रहता है, किंतु यह पूरी तरह गलत भी नहीं है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर के विश्वासियों में ऐसे लोग भी हैं जिनका विश्वास सच्चा है, और ऐसे भी हैं जिनका विश्वास झूठा है, ऐसे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर स्वीकृति देता है और ऐसे भी हैं जिन्हें परमेश्वर स्वीकृति नहीं देता है, ऐसे लोग हैं जिनसे वह प्रसन्न होता है और ऐसे भी हैं जिनसे वह घृणा करता है, और ऐसे लोग हैं जिन्हें वह पूर्ण बनाता है और ऐसे भी हैं जिन्हें वह मिटा देता है। और इसलिए मैं कहता हूँ कि परमेश्वर बस कुछ ही लोगों के हृदय में रहता है, और ये लोग निस्संदेह वे हैं जो परमेश्वर में सचमुच विश्वास करते हैं, वे जिन्हें परमेश्वर स्वीकृति देता है, वे जिनसे वह प्रसन्न होता है, और वे जिन्हें वह पूर्ण बनाता है। ये वे लोग हैं जिनकी परमेश्वर द्वारा अगुआई की जाती है। चूँकि उनकी परमेश्वर द्वारा अगुआई की जाती है, इसलिए ये वे लोग हैं जो परमेश्वर का अनंत जीवन का मार्ग पहले ही सुन और देख चुके हैं। जिनका परमेश्वर में विश्वास झूठा है, जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं हैं, जिनसे परमेश्वर घृणा करता है, जो परमेश्वर द्वारा मिटा दिए जाते हैं—उनका परमेश्वर द्वारा अस्वीकार किया जाना तय है, उनका जीवन के मार्ग से विहीन रहना तय है, और इस बात से अनभिज्ञ बने रहना तय है कि परमेश्वर कहाँ है। इसके विपरीत, जिनके हृदय में परमेश्वर रहता है वे जानते हैं कि वह कहाँ है। ये ही वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर अनंत जीवन का मार्ग प्रदान करता है, और ये ही परमेश्वर का अनुसरण करते हैं। अब क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर कहाँ है? परमेश्वर मनुष्य के हृदय में भी है और मनुष्य की बगल में भी है। वह न केवल आध्यात्मिक संसार में है, और सभी चीज़ों के ऊपर है, बल्कि उस पृथ्वी पर तो वह और भी अधिक है जिस पर मनुष्य रहता है। और इसलिए अंत के दिनों का आगमन परमेश्वर के कार्य के चरणों को नए क्षेत्र में ले आया है। परमेश्वर ब्रह्मांड की सभी चीजों पर प्रभुसत्ता रखता है, और वह मनुष्य के हृदय में उसका मुख्य आधार है, और इससे भी अधिक, वह मनुष्य के बीच विद्यमान है। केवल इसी तरह से वह

मनुष्यजाति तक जीवन का मार्ग ला सकता है, और मनुष्य को जीवन के मार्ग में ला सकता है। परमेश्वर पृथ्वी पर आया है और मनुष्य के बीच रहता है, ताकि मनुष्य जीवन का मार्ग प्राप्त कर सके, और मनुष्य विद्यमान रह सके। साथ ही, परमेश्वर ब्रह्मांड की सभी चीजों को आदेश देता है, ताकि वे मनुष्य के बीच उसके प्रबंधन में सहयोग कर सकें। और इसलिए, यदि तुम केवल इस सिद्धांत को स्वीकार करते हो कि परमेश्वर स्वर्ग में और मनुष्य के हृदय में है, किंतु मनुष्य के बीच परमेश्वर के अस्तित्व के सत्य को स्वीकार नहीं करते हो, तो तुम कभी जीवन प्राप्त नहीं करोगे, और न ही कभी सत्य का मार्ग प्राप्त करोगे।

परमेश्वर स्वयं ही जीवन है, और सत्य है, और उसका जीवन और सत्य साथ-साथ विद्यमान हैं। वे लोग जो सत्य प्राप्त करने में असमर्थ हैं कभी भी जीवन प्राप्त नहीं करेंगे। मार्गदर्शन, समर्थन, और पोषण के बिना, तुम केवल अक्षर, सिद्धांत, और सबसे बढ़कर, मृत्यु ही प्राप्त करोगे। परमेश्वर का जीवन सतत विद्यमान है, और उसका सत्य और जीवन साथ-साथ विद्यमान हैं। यदि तुम सत्य का स्रोत नहीं खोज पाते हो, तो तुम जीवन की पौष्टिकता प्राप्त नहीं करोगे; यदि तुम जीवन का पोषण प्राप्त नहीं कर सकते हो, तो तुममें निश्चित ही सत्य नहीं होगा, और इसलिए कल्पनाओं और धारणाओं के अलावा, संपूर्णता में तुम्हारा शरीर तुम्हारी देह—दुर्गंध से भरी तुम्हारी देह—के सिवा कुछ न होगा। यह जान लो कि किताबों की बातें जीवन नहीं मानी जाती हैं, इतिहास के अभिलेख सत्य नहीं माने जा सकते हैं, और अतीत के नियम वर्तमान में परमेश्वर द्वारा कहे गए वचनों के वृतांत का काम नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर पृथ्वी पर आकर और मनुष्य के बीच रहकर जो अभिव्यक्त करता है, केवल वही सत्य, जीवन, परमेश्वर की इच्छा, और उसका कार्य करने का वर्तमान तरीक़ा है। यदि तुम अतीत के युगों के दौरान परमेश्वर द्वारा कहे गए वचनों के अभिलेखों को आज पर लागू करते हो, तो यह तुम्हें पुरातत्ववेत्ता बना देता है, और तुम्हें ज्यादा-से-ज्यादा ऐतिहासिक धरोहर का विशेषज्ञ ही कहा जा सकता है। इसका कारण यह है कि तुम हमेशा परमेश्वर द्वारा बीते समयों में किए गए कार्य के अवशेषों पर विश्वास करते हो, केवल पूर्व में मनुष्य के बीच कार्य करते समय छोड़ी गई परमेश्वर की परछाई में विश्वास करते हो, और केवल पहले के समयों में परमेश्वर द्वारा अपने अनुयायियों को दिए गए मार्ग में विश्वास करते हो। तुम परमेश्वर के आज के कार्य के मार्गदर्शन में विश्वास नहीं करते हो, परमेश्वर के आज के महिमामयी मुखमंडल में विश्वास नहीं करते हो, और परमेश्वर द्वारा आज के समय में व्यक्त किए गए सत्य के मार्ग में विश्वास नहीं करते हो। और इसलिए तुम निर्विवाद रूप से एक दिवास्वप्नदर्शी हो जो वास्तविकता से कोसों दूर है। यदि तुम अब भी उन वचनों से चिपके हुए

हो जो मनुष्य को जीवन प्रदान करने में असमर्थ हैं, तो तुम एक निर्जीव काष्ठ[क] के बेकार टुकड़े हो, क्योंकि तुम अत्यंत रूढ़िवादी, अत्यंत असभ्य, तर्क के प्रति अत्यंत विवेकशून्य हो।

देहधारी हुए परमेश्वर को मसीह कहा जाता है, और इसलिए वह मसीह जो लोगों को सत्य दे सकता है परमेश्वर कहलाता है। इसमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है, क्योंकि वह परमेश्वर का सार धारण करता है, और अपने कार्य में परमेश्वर का स्वभाव और बुद्धि धारण करता है, जो मनुष्य के लिए अप्राप्य हैं। वे जो अपने आप को मसीह कहते हैं, परंतु परमेश्वर का कार्य नहीं कर सकते हैं, धोखेबाज हैं। मसीह पृथ्वी पर परमेश्वर की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, बल्कि वह विशेष देह भी है जिसे धारण करके परमेश्वर मनुष्य के बीच रहकर अपना कार्य करता और पूरा करता है। यह देह किसी भी आम मनुष्य द्वारा उसके बदले धारण नहीं की जा सकती है, बल्कि यह वह देह है जो पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य पर्याप्त रूप से संभाल सकती है और परमेश्वर का स्वभाव व्यक्त कर सकती है, और परमेश्वर का अच्छी तरह प्रतिनिधित्व कर सकती है, और मनुष्य को जीवन प्रदान कर सकती है। जो मसीह का भेस धारण करते हैं, उनका देर-सवेर पतन हो जाएगा, क्योंकि वे भले ही मसीह होने का दावा करते हैं, किंतु उनमें मसीह के सार का लेशमात्र भी नहीं है। और इसलिए मैं कहता हूँ कि मसीह की प्रामाणिकता मनुष्य द्वारा परिभाषित नहीं की जा सकती, बल्कि स्वयं परमेश्वर द्वारा ही इसका उत्तर दिया और निर्णय लिया जा सकता है। इस तरह, यदि तुम जीवन का मार्ग सचमुच खोजना चाहते हो, तो पहले तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि पृथ्वी पर आकर ही परमेश्वर मनुष्य को जीवन का मार्ग प्रदान करने का कार्य करता है, और तुम्हें स्वीकार करना होगा कि अंत के दिनों के दौरान ही वह मनुष्य को जीवन का मार्ग प्रदान करने के लिए पृथ्वी पर आता है। यह अतीत नहीं है; यह आज हो रहा है।

अंत के दिनों का मसीह जीवन लेकर आता है, और सत्य का स्थायी और शाश्वत मार्ग लेकर आता है। यह सत्य वह मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य जीवन प्राप्त करता है, और यह एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर को जानेगा और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत किया जाएगा। यदि तुम अंत के दिनों के मसीह द्वारा प्रदान किया गया जीवन का मार्ग नहीं खोजते हो, तो तुम यीशु की स्वीकृति कभी प्राप्त नहीं करोगे, और स्वर्ग के राज्य के फाटक में प्रवेश करने के योग्य कभी नहीं हो पाओगे, क्योंकि तुम इतिहास की कठपुतली और कैदी दोनों ही हो। वे लोग जो नियमों से, शब्दों से नियंत्रित होते हैं, और इतिहास की जंजीरों में जकड़े हुए हैं, न तो कभी जीवन प्राप्त कर पाएँगे और न ही जीवन का शाश्वत मार्ग प्राप्त कर पाएँगे। ऐसा इसलिए

है क्योंकि उनके पास, सिंहासन से प्रवाहित होने वाले जीवन के जल की बजाय, बस मैला पानी ही है जिससे वे हजारों सालों से चिपके हुए हैं। वे जिन्हें जीवन के जल की आपूर्ति नहीं की गई है, हमेशा के लिए मुर्दे, शैतान के खिलौने, और नरक की संतानें बने रहेंगे। फिर वे परमेश्वर को कैसे देख सकते हैं? यदि तुम केवल अतीत को पकड़े रखने की कोशिश करते हो, केवल जड़वत खड़े रहकर चीजों को जस का तस रखने की कोशिश करते हो, और यथास्थिति को बदलने और इतिहास को ख़ारिज़ करने की कोशिश नहीं करते हो, तो क्या तुम हमेशा परमेश्वर के विरुद्ध नहीं होगे? परमेश्वर के कार्य के चरण उमड़ती लहरों और गरजते तूफ़ानों की तरह विशाल और शक्तिशाली हैं—फिर भी तुम निठल्ले बैठकर तबाही का इंतजार करते हो, अपनी नादानी से चिपके रहते हो और कुछ भी नहीं करते हो। इस तरह, तुम्हें मेमने के पदचिह्नों का अनुसरण करने वाला व्यक्ति कैसे माना जा सकता है? तुम जिस परमेश्वर को थामे हो उसे उस परमेश्वर के रूप में सही कैसे ठहरा सकते हो जो हमेशा नया है और कभी पुराना नहीं होता? और तुम्हारी पीली पड़ चुकी किताबों के शब्द तुम्हें नए युग में कैसे ले जा सकते हैं? वे परमेश्वर के कार्य के चरणों को ढूँढ़ने में तुम्हारी अगुआई कैसे कर सकते हैं? और वे तुम्हें ऊपर स्वर्ग में कैसे ले जा सकते हैं? तुम अपने हाथों में जो थामे हो वे शब्द हैं, जो तुम्हें केवल अस्थायी सांत्वना दे सकते हैं, जीवन देने में सक्षम सत्य नहीं दे सकते। तुम जो शास्त्र पढ़ते हो वे केवल तुम्हारी जिह्वा को समृद्ध कर सकते हैं और ये बुद्धिमत्ता के वचन नहीं हैं जो मानव जीवन को जानने में तुम्हारी मदद कर सकते हैं, तुम्हें पूर्णता की ओर ले जाने की बात तो दूर रही। क्या यह विसंगति तुम्हारे लिए गहन चिंतन का कारण नहीं है? क्या यह तुम्हें अपने भीतर समाहित रहस्यों का बोध नहीं करवाती है? क्या तुम परमेश्वर से अकेले में मिलने के लिए अपने आप को स्वर्ग को सौंप देने में समर्थ हो? परमेश्वर के आए बिना, क्या तुम परमेश्वर के साथ पारिवारिक आनंद मनाने के लिए अपने आप को स्वर्ग में ले जा सकते हो? क्या तुम अभी भी स्वप्न देख रहे हो? तो मेरा सुझाव यह है कि तुम स्वप्न देखना बंद कर दो और उसकी ओर देखो जो अभी कार्य कर रहा है—उसकी ओर देखो जो अब अंत के दिनों में मनुष्य को बचाने का कार्य कर रहा है। यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो तुम कभी भी सत्य प्राप्त नहीं करोगे, और न ही कभी जीवन प्राप्त करोगे।

मसीह द्वारा बोले गए सत्य पर भरोसा किए बिना जो लोग जीवन प्राप्त करना चाहते हैं, वे पृथ्वी पर सबसे बेतुके लोग हैं, और जो मसीह द्वारा लाए गए जीवन के मार्ग को स्वीकार नहीं करते हैं, वे कोरी कल्पना में खोए हैं। और इसलिए मैं कहता हूँ कि वे लोग जो अंत के दिनों के मसीह को स्वीकार नहीं करते

हैं सदा के लिए परमेश्वर की घृणा के भागी होंगे। मसीह अंत के दिनों के दौरान राज्य में जाने के लिए मनुष्य का प्रवेशद्वार है, और ऐसा कोई नहीं जो उससे कन्नी काटकर जा सके। मसीह के माध्यम के अलावा किसी को भी परमेश्वर द्वारा पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, और इसलिए तुम्हें उसके वचनों को स्वीकार करना और उसके मार्ग का पालन करना चाहिए। सत्य को प्राप्त करने में या जीवन का पोषण स्वीकार करने में असमर्थ रहते हुए तुम केवल आशीष प्राप्त करने के बारे में नहीं सोच सकते हो। मसीह अंत के दिनों में आता है ताकि वह उसमें सच्चा विश्वास करने वाले सभी लोगों को जीवन प्रदान कर सके। उसका कार्य पुराने युग को समाप्त करने और नए युग में प्रवेश करने के लिए है, और उसका कार्य वह मार्ग है जिसे उन सभी लोगों को अपनाना चाहिए जो नए युग में प्रवेश करेंगे। यदि तुम उसे पहचानने में असमर्थ हो, और इसकी बजाय उसकी भर्त्सना, निंदा, या यहाँ तक कि उसे उत्पीड़ित करते हो, तो तुम्हें अनंतकाल तक जलाया जाना तय है और तुम परमेश्वर के राज्य में कभी प्रवेश नहीं करोगे। क्योंकि यह मसीह स्वयं पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति है, और परमेश्वर की अभिव्यक्ति है, वह जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर करने के लिए अपना कार्य सौंपा है। और इसलिए मैं कहता हूँ कि यदि तुम वह सब स्वीकार नहीं करते हो जो अंत के दिनों के मसीह के द्वारा किया जाता है, तो तुम पवित्र आत्मा की निंदा करते हो। पवित्र आत्मा की निंदा करने वालों को जो प्रतिशोध सहना होगा वह सभी के लिए स्वत: स्पष्ट है। मैं तुम्हें यह भी बताता हूँ कि यदि तुम अंत के दिनों के मसीह का प्रतिरोध करोगे, यदि तुम अंत के दिनों के मसीह को ठुकराओगे, तो तुम्हारी ओर से परिणाम भुगतने वाला कोई अन्य नहीं होगा। इतना ही नहीं, इस दिन के बाद तुम्हें परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने का दूसरा अवसर नहीं मिलेगा; यदि तुम अपने प्रायश्चित का प्रयास भी करते हो, तब भी तुम दोबारा कभी परमेश्वर का चेहरा नहीं देखोगे। क्योंकि तुम जिसका प्रतिरोध करते हो वह मनुष्य नहीं है, तुम जिसे ठुकरा रहे हो वह कोई अदना प्राणी नहीं है, बल्कि मसीह है। क्या तुम जानते हो कि इसके क्या परिणाम होंगे? तुमन कोई छोटी-मोटी गलती नहीं, बल्कि एक जघन्य अपराध किया होगा। और इसलिए मैं सभी को सलाह देता हूँ कि सत्य के सामने अपने जहरीले दाँत मत दिखाओ, या छिछोरी आलोचना मत करो, क्योंकि केवल सत्य ही तुम्हें जीवन दिला सकता है, और सत्य के अलावा कुछ भी तुम्हें पुनः जन्म लेने नहीं दे सकता, और न ही तुम्हें दोबारा परमेश्वर का चेहरा देखने दे सकता है।

फुटनोट :

क. निर्जीव काष्ठ का टुकड़ा : एक चीनी मुहावरा, जिसका अर्थ है—"सहायता से परे"।

अपनी मंज़िल के लिए पर्याप्त संख्या में अच्छे कर्मों की तैयारी करो

मैंने तुम लोगों के बीच बहुत काम किया है और निस्संदेह, बहुत से कथन भी कहे हैं। फिर भी मुझे महसूस होता है कि मेरे वचनों और कार्य ने अंत के दिनों में मेरे कार्य के उद्देश्य को अच्छी तरह से पूरा नहीं किया है। क्योंकि, अंत के दिनों में, मेरा कार्य किसी विशेष व्यक्ति या विशेष लोगों के लिए नहीं है, बल्कि मेरे अन्तर्निहित स्वभाव को प्रदर्शित करने के लिए है। लेकिन, असंख्य कारणों से—संभवतः समय की कमी या कार्य की व्यस्तता के कारण—लोगों ने मेरे स्वभाव से मेरे बारे में कोई ज्ञान प्राप्त नहीं किया है। इसलिए मैं अपनी नयी योजना की ओर, अपने अंतिम कार्य की ओर कदम बढ़ाता हूँ और अपने कार्य में एक नया पन्ना खोलता हूँ, ताकि वे सब जो मुझे देखते हैं, मेरे अस्तित्व के कारण लगातार अपनी छाती पीटेंगे, रोएँगे और निरंतर विलाप करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं संसार में मनुष्यों का अंत करता हूँ, और इस समय से, मैं मनुष्यों के सामने अपने सम्पूर्ण स्वभाव को प्रकट करता हूँ, ताकि वे सभी लोग जो मुझे जानते हैं, और जो नहीं जानते, अपनी आँखों को तृप्त कर सकें और देखें कि मैं वास्तव में मनुष्यों के संसार में आ गया हूँ, पृथ्वी पर आ गया हूँ, जहाँ सभी चीज़ें गुणात्मक रूप से बढ़ती रहती हैं। मनुष्यों के सृजन के समय से यह मेरी योजना है, तथा मेरी एकमात्र "स्वीकारोक्ति" है। तुम लोग अपना अखण्ड ध्यान मेरी प्रत्येक गतिविधि पर दो, क्योंकि मेरी छड़ी एक बार फिर मनुष्यों के, मेरा विरोध करने वालों के पास आती है।

स्वर्ग के साथ मिलकर, मैं उस कार्य को आरंभ करता हूँ जो मुझे करना चाहिए। इसलिए मैं लोगों की भीड़ के बीच से निकलता हूँ, आसमान और पृथ्वी के बीच विचरण करता हूँ और किसी को भी मेरी गतिविधियों की भनक नहीं पड़ती, न कोई मेरे वचनों पर ध्यान देता है। इसलिये, मेरी योजना निरंतर अबाध गति से चलती रहती है। बात केवल इतनी ही है कि तुम्हारी सभी इंद्रियाँ इतनी सुन्न हो गई हैं कि तुम लोग मेरे कार्य के चरणों के प्रति अनजान रहते हो। किन्तु, निश्चित रूप से एक दिन आएगा, जब तुम लोग मेरे इरादों को जान जाओगे। आज, मैं तुम लोगों के साथ रहता हूँ और तुम लोगों के साथ ही दुःख सहता हूँ, मैंने बहुत पहले ही मेरे प्रति इंसान की जो प्रवृत्ति है, उसे समझ लिया है। मैं इसके बारे में और बात नहीं करना चाहता, और तुम्हें शर्मिंदा करने के लिये इस कष्टदायक विषय की अन्य घटनाओं को तो

बिल्कुल नहीं उठाना चाहता। मेरी केवल यही आशा है कि तुम लोग वह सब अपने हृदय में याद रखो, जो तुम लोगों ने किया है ताकि जिस दिन हम पुनः मिलें, उस दिन अपने लेखे-जोखे का मिलान कर सकें। मैं तुम लोगों में से किसी पर भी झूठा आरोप नहीं लगाना चाहता, क्योंकि मैंने सदैव न्यायपूर्वक, निष्पक्षता और सम्मानपूर्वक कार्य किया है। बेशक, मैं यह भी आशा करता हूँ कि तुम लोग निष्कपट और उदार बनो और ऐसा कुछ न करो जो स्वर्ग, पृथ्वी और तुम्हारे विवेक के विरुद्ध हो। यही एकमात्र चीज़ है जो मैं तुम लोगों से माँगता हूँ। कई लोग बेचैनी और व्यग्रता महसूस करते हैं क्योंकि उन्होंने भयानक गलतियाँ की हैं, और बहुत से लोग स्वयं पर शर्मिंदा होते हैं क्योंकि उन्होंने कभी कोई अच्छा कर्म नहीं किया है। फिर भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपने पापों पर शर्मिंदा होने की बजाय, बद से बदतर होते हुए अपने घिनौने चेहरे को—जिसे अभी पूरी तरह से उजागर किया जाना बाकी था—छुपाने वाले मुखौटे को पूरी तरह से फाड़ देते हैं ताकि वे मेरे स्वभाव की परीक्षा ले सकें। मैं किसी एक व्यक्ति के कार्यों की न तो परवाह करता हूँ, न ही उस पर विशेष ध्यान देता हूँ। बल्कि, मैं उस कार्य को करता हूँ जो मुझे करना चाहिए, चाहे यह जानकारी इकट्ठा करना हो, या देश भर में घूमना हो, या कुछ ऐसा करना हो जो मुझे रुचिकर लगता है। मुख्य समयों पर, मैं लोगों के बीच अपने कार्य को, एक भी पल पहले या देर से किये बिना, सहजता और स्थिरता से, मूल योजना अनुसार आगे बढ़ाता हूँ। हालाँकि, मेरे कार्य में हर चरण के साथ कुछ लोगों को त्याग दिया जाता है, क्योंकि मैं उनके चापलूसी भरे तौर-तरीकों और उनकी झूठी आज्ञाकारिता से घृणा करता हूँ। जो मेरे विरोधी हैं, चाहे जानबूझकर या अनजाने में, निश्चित रूप से त्याग दिये जाएँगे। संक्षेप में, मैं चाहता हूँ, जिनसे मैं घृणा करता हूँ, वे मुझसे दूर हो जाएँ। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं अपने घर में बचे हुए दुष्टों को छोड़ूँगा नहीं। क्योंकि मनुष्य को दण्ड देने का दिन निकट है, मैं उन सभी नीच आत्माओं को अपने घर से बाहर निकालने की जल्दबाजी नहीं करता, क्योंकि मेरी अपनी एक योजना है।

अब वह समय आ गया है जब मैं प्रत्येक व्यक्ति के अंत को निर्धारित करता हूँ, यह वो चरण नहीं जिसमें मैंने मनुष्यों को आकार देना आरंभ किया था। मैं अपनी अभिलेख पुस्तक में एक-एक करके, प्रत्येक व्यक्ति के कार्यों और कथनों को, और साथ ही उस मार्ग को जिस पर चलकर उन्होंने मेरा अनुसरण किया है, उनके अंतर्निहित अभिलक्षणों को और उन लोगों ने कैसा आचरण किया है, इन सबको लिखता हूँ। इस तरह, किसी भी प्रकार का मनुष्य मेरे हाथ से नहीं बचेगा, और सभी लोग अपने जैसे लोगों के साथ होंगे, जैसा कि मैं उन्हें नियत करूँगा। मैं प्रत्येक व्यक्ति की मंज़िल, उसकी आयु, वरिष्ठता, पीड़ा की मात्रा

के आधार पर तय नहीं करता और जिस सीमा तक वे दया के पात्र होते हैं, उसके आधार पर तो बिल्कल भी तय नहीं करता बल्कि इस बात के अनुसार तय करता हूँ कि उनके पास सत्य है या नहीं। इसके अतिरक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। तुम्हें यह अवश्य समझना चाहिए कि वे सब जो परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण नहीं करते हैं, दण्डित किए जाएँगे। यह एक अडिग तथ्य है। इसलिए, वे सब जो दण्ड पाते हैं, वे परमेश्वर की धार्मिकता के कारण और अपने अनगिनत बुरे कार्यों के प्रतिफल के रूप में इस तरह के दण्ड पाते हैं। मैंने अपनी योजना के आरंभ से उसमें एक भी परिवर्तन नहीं किया है। बात केवल इतनी ही है कि जहाँ तक मनुष्य का संबंध है, ऐसा प्रतीत होता है कि जिनकी ओर मैं अपने वचनों को निर्देशित करता हूँ उनकी संख्या उसी तरह से घटती जा रही है जैसे कि उनकी संख्या घट रही है जिन्हें मैं सही मायनों में स्वीकार करता हूँ। लेकिन, मैं अभी भी यही कहता हूँ कि मेरी योजना में कभी बदलाव नहीं आया है; बल्कि, यह मनुष्य के विश्वास और प्रेम हैं जो हमेशा बदलते रहते हैं, सदैव कम होते हैं, इस हद तक कि प्रत्येक मनुष्य के लिए संभव है कि वह मेरी चापलूसी करने से लेकर मेरे प्रति उदासीन हो जाये या मुझे निकालकर बाहर कर दे। जब तक मैं चिढ़ न जाऊं या घृणा महसूस न करने लगूँ, और अंत में दण्ड न देने लगूँ, तब तक तुम लोगों के प्रति मेरी प्रवृत्ति न तो उत्साहपूर्ण होगी और न ही उत्साहहीन। हालाँकि, तुम लोगों के दंड के दिन भी मैं तुम लोगों को देखूँगा, परंतु तुम लोग अब से मुझे देखने में समर्थ नहीं होगे। चूँकि तुम लोगों के बीच जीवन पहले से ही थकाऊ और सुस्त हो गया है, इसलिए कहने की आवश्यकता नहीं कि मैंने रहने के लिये एक अलग परिवेश चुन लिया है ताकि बेहतर रहे कि तुम लोगों के अभद्र शब्दों की चोट से बचूँ और तुम लोगों के असहनीय रूप से गंदे व्यवहार से दूर रहूँ, ताकि तुम लोग मुझे अब और मूर्ख न बना सको या मेरे साथ लापरवाह ढंग से व्यवहार न कर सको। इसके पहले कि मैं तुम लोगों को छोड़कर जाऊँ, मुझे तुम लोगों को ऐसे कर्मों को करने से बचने के लिए आग्रह अवश्य करना चाहिए जो सत्य के अनुरूप नहीं हैं। बल्कि, तुम लोगों को वह करना चाहिए जो सबके लिए सुखद हो, जो सभी मनुष्यों को लाभ पहुँचाता हो, और जो तुम लोगों की अपनी मंज़िल के लिए लाभदायक हो, अन्यथा, आपदा के बीच दुःख उठाने वाला इंसान, और कोई नहीं बल्कि तुम ही होगे।

मेरी दया उन पर होती है जो मुझसे प्रेम करते हैं और स्वयं को नकारते हैं। दुष्टों को मिला दण्ड निश्चित रूप से मेरे धार्मिक स्वभाव का प्रमाण है, और उससे भी बढ़कर, मेरे क्रोध का प्रमाण है। जब आपदा आएगी, तो उन सभी पर अकाल और महामारी आ पड़ेगी जो मेरा विरोध करते हैं और वे विलाप

करेंगे। जो लोग सभी तरह के दुष्टतापूर्ण कर्म कर चुके हैं, किन्तु कई वर्षों तक मेरा अनुसरण किया है, वे अपने पापों का फल भुगतने से नहीं बचेंगे; वे भी लाखों वर्षों में शायद ही देखी गयी आपदा में डुबा दिये जाएँगे, और वे लगातार आंतक और भय की स्थिति में जीते रहेंगे। और केवल मेरे ऐसे अनुयायी जिन्होंने मेरे प्रति निष्ठा दर्शायी है, मेरी शक्ति का आनंद लेंगे और गुणगान करेंगे। वे अवर्णनीय तृप्ति का अनुभव करेंगे और ऐसे आनंद में रहेंगे जो मैंने मानवजाति को पहले कभी प्रदान नहीं किया है। क्योंकि मैं मनुष्यों के अच्छे कर्मों को सँजोकर रखता हूँ और उनके बुरे कर्मों से घृणा करता हूँ। जबसे मैंने सबसे पहले मानवजाति की अगुवाई करनी आरंभ की, तबसे मैं उत्सुकतापूर्वक मनुष्यों के ऐसे समूह को पाने की आशा करता रहा हूँ जो मेरे साथ एक मन वाले हों। इस बीच मैं उन लोगों को कभी नहीं भूलता हूँ जो मेरे साथ एक मन वाले नहीं हैं; अपने हृदय में मैं हमेशा उनसे घृणा करता हूँ, उन्हें प्रतिफल देने के अवसर की प्रतीक्षा करता हूँ, जिसे देखना मुझे आनंद देगा। अंततः आज मेरा दिन आ गया है, और मुझे अब और प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है!

मेरा अंतिम कार्य न केवल मनुष्यों को दण्ड देने के लिए है बल्कि मनुष्य की मंज़िल की व्यवस्था करने के लिए भी है। इससे भी अधिक, यह इसलिए है कि सभी लोग मेरे कर्मों और कार्यों को अभिस्वीकार करें। मैं चाहता हूँ कि हर एक मनुष्य देखे कि जो कुछ मैंने किया है, वह सही है, और जो कुछ मैंने किया है वह मेरे स्वभाव की अभिव्यक्ति है। यह मनुष्य का कार्य नहीं है, और उसकी प्रकृति तो बिल्कुल भी नहीं है, जिसने मानवजाति की रचना की है, यह तो मैं हूँ जो सृष्टि में हर जीव का पोषण करता है। मेरे अस्तित्व के बिना, मानवजाति केवल नष्ट होगी और विपत्तियों के दंड को भोगेगी। कोई भी मानव सुन्दर सूर्य और चंद्रमा या हरे-भरे संसार को फिर कभी नहीं देखेगा; मानवजाति केवल शीत रात्रि और मृत्यु की छाया की निर्मम घाटी को देखेगी। मैं ही मनुष्यजाति का एकमात्र उद्धार हूँ। मैं ही मनुष्यजाति की एकमात्र आशा हूँ और, इससे भी बढ़कर, मैं ही वह हूँ जिस पर संपूर्ण मानवजाति का अस्तित्व निर्भर करता है। मेरे बिना, मानवजाति तुरंत रुक जाएगी। मेरे बिना मानवजाति तबाही झेलेगी और सभी प्रकार के भूतों द्वारा कुचली जाएगी, इसके बावजूद कोई भी मुझ पर ध्यान नहीं देता है। मैंने वह काम किया है जो किसी दूसरे के द्वारा नहीं किया जा सकता है, मेरी एकमात्र आशा है कि मनुष्य कुछ अच्छे कर्मों के साथ मेरा कर्ज़ा चुका सके। यद्यपि कुछ ही लोग मेरा कर्ज़ा चुका पाये हैं, तब भी मैं मनुष्यों के संसार में अपनी यात्रा पूर्ण करूँगा और विकास के अपने कार्य के अगले चरण को आरंभ करूंगा, क्योंकि इन अनेक वर्षों में मनुष्यों के बीच मेरे

आने और जाने की सारी भागदौड़ फलदायक रही है, और मैं अति प्रसन्न हूँ। मैं जिस चीज़ की परवाह करता हूँ वह मनुष्यों की संख्या नहीं, बल्कि उनके अच्छे कर्म हैं। किसी भी स्थिति में, मुझे आशा है कि तुम लोग अपनी मंज़िल के लिए पर्याप्त संख्या में अच्छे कर्म तैयार करोगे। तब मुझे संतुष्टि होगी; अन्यथा तुम लोगों में से कोई भी उस आपदा से नहीं बचेगा जो तुम लोगों पर पड़ेगी। आपदा मेरे द्वारा उत्पन्न की जाती है और निश्चित रूप से मेरे द्वारा ही आयोजित की जाती है। यदि तुम लोग मेरी नज़रों में अच्छे इंसान के रूप में नहीं दिखाई दे सकते हो, तो तुम लोग आपदा भुगतने से नहीं बच सकते। गहरी पीड़ा के बीच में, तुम लोगों के कार्य और कर्म पूरी तरह से उचित नहीं माने गए थे, क्योंकि तुम लोगों का विश्वास और प्रेम खोखला था, और तुम लोगों ने स्वयं को केवल डरपोक या कठोर दिखाया। इस सन्दर्भ में, मैं केवल भले या बुरे का ही न्याय करूँगा। मेरी चिंता तुम लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने और अपने आप को व्यक्त करने के तरीके को लेकर बनी रहती है, जिसके आधार पर मैं तुम लोगों का अंत निर्धारित करूँगा। हालाँकि, मुझे यह स्पष्ट अवश्य कर देना चाहिए कि मैं उन लोगों पर अब और दया नहीं करूँगा जिन्होंने गहरी पीड़ा के दिनों में मेरे प्रति रत्ती भर भी निष्ठा नहीं दिखाई है, क्योंकि मेरी दया का विस्तार केवल इतनी ही दूर तक है। इसके अतिरिक्त, मुझे ऐसा कोई इंसान पसंद नहीं है जिसने कभी मेरे साथ विश्वासघात किया हो, ऐसे लोगों के साथ जुड़ना तो मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं है जो अपने मित्रों के हितों को बेच देते हैं। चाहे व्यक्ति जो भी हो, मेरा स्वभाव यही है। मुझे तुम लोगों को अवश्य बता देना चाहिए कि जो कोई भी मेरा दिल तोड़ता है, उसे दूसरी बार मुझसे क्षमा प्राप्त नहीं होगी, और जो कोई भी मेरे प्रति निष्ठावान रहा है वह सदैव मेरे हृदय में बना रहेगा।

तुम किसके प्रति वफादार हो?

इस समय तुम लोगों के जीवन का हर दिन निर्णायक है, और यह तुम्हारे गंतव्य और भाग्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, अतः आज जो कुछ तुम्हारे पास है, तुम्हें उससे आनंदित होना चाहिए और गुजरने वाले हर क्षण को सँजोना चाहिए। ख़ुद को अधिकतम लाभ देने के लिए तुम्हें जितना संभव हो, उतना समय निकालना चाहिए, ताकि तुम्हारा यह जीवन बेकार न चला जाए। तुम लोग भ्रमित महसूस कर सकते हो कि मैं इस तरह के वचन क्यों कह रहा हूँ? स्पष्ट कहूँ तो, मैं तुम लोगों में से किसी के भी व्यवहार से बिलकुल प्रसन्न नहीं हूँ। क्योंकि तुम्हारे बारे में मुझे जो आशाएँ थीं, वे वैसी नहीं थीं, जैसे तुम आज हो। इस प्रकार, मैं

यह कह सकता हूँ : तुम लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति खतरे के मुहाने पर है, और मदद के लिए तुम्हारा पहले का रोना और सत्य का अनुसरण तथा ज्योति की खोज करने की तुम्हारी पूर्व आकांक्षाएँ खत्म होने वाली हैं। यह तुम्हारे प्रतिदान का अंतिम प्रदर्शन है, और यह कुछ ऐसी चीज है, जिसकी मैंने कभी अपेक्षा नहीं की थी। मैं तथ्यों के विपरीत कुछ नहीं कहना चाहता, क्योंकि तुम लोगों ने मुझे बहुत निराश किया है। शायद तुम लोग इसे स्वीकार नहीं करना चाहते, वास्तविकता का सामना नहीं करना चाहते—फिर भी मुझे तुमसे गंभीरता से यह पूछना चाहिए : इन सभी वर्षों में तुम्हारे हृदय किन चीजों से भरे रहे हैं? वे किसके प्रति वफादार हैं? यह मत कहना कि ये प्रश्न अनायास कहाँ से आ गए, और मुझसे यह मत पूछना कि मैंने ऐसी बातें क्यों पूछी हैं। यह जान लो : ऐसा इसलिए है, क्योंकि मैं लोगों को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ, मैं तुम्हारी बहुत परवाह करता हूँ, और तुम्हारे आचरण और कर्मों पर मैंने अपना बहुत ज्यादा दिल झोंका है, जिनके लिए मैंने लगातार तुमसे प्रश्न किया है और सख्त तकलीफ सही है। फिर भी तुम लोग मुझे बदले में उदासीनता और असहनीय उपेक्षा के सिवा कुछ नहीं देते। तुम लोग मेरे प्रति इतने लापरवाह रहे हो; क्या यह संभव है कि मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानूँगा? अगर तुम लोग यही मानते हो, तो इससे यह तथ्य और भी अधिक प्रमाणित हो जाता है कि तुम मेरे साथ दयालुता का व्यवहार नहीं करते। और इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम लोग कटु सच्चाइयों से मुँह मोड़ रहे हो। तुम सभी लोग इतने चतुर हो कि तुम जानते तक नहीं कि तुम क्या कर रहे हो—तो फिर तुम मुझे अपना हिसाब देने के लिए किस चीज का उपयोग करोगे?

मेरे लिए सबसे ज्यादा चिंता का सवाल यह है कि तुम लोगों के हृदय किसके प्रति वफादार हैं। मुझे यह भी आशा है कि तुममें से प्रत्येक अपने विचारों को व्यवस्थित करने की कोशिश करेगा और खुद से पूछेगा कि तुम किसके प्रति वफादार हो और किसके लिए जीते हो। शायद तुम लोगों ने इन प्रश्नों पर कभी सावधानीपूर्वक विचार नहीं किया है, अतः मेरे द्वारा तुम्हारे सामने इनका उत्तर प्रकट करना कैसा रहेगा?

स्मृति वाला कोई भी व्यक्ति इस तथ्य को स्वीकार करेगा : मनुष्य अपने लिए जीता है और अपने प्रति वफादार होता है। मैं तुम लोगों के उत्तरों को पूरी तरह से सही नहीं मानता, क्योंकि तुममें से प्रत्येक अपनी-अपनी जिंदगी में गुजर-बसर कर रहा है और अपने स्वयं के कष्ट से जूझ रहा है। इसलिए, तुम ऐसे लोगों के प्रति वफादार हो, जिनसे तुम प्रेम करते हो और जो चीजें तुम्हें खुश करती हैं; तुम अपने प्रति पूर्णतः वफादार नहीं हो। क्योंकि तुममें से हर एक अपने आसपास के लोगों, घटनाओं, और चीजों से प्रभावित है, इसलिए तुम अपने प्रति सच्चे अर्थों में वफादार नहीं हो। मैं ये वचन तुम लोगों के अपने प्रति वफादार होने

का समर्थन करने के लिए नहीं, बल्कि किसी एक चीज के प्रति तुम्हारी वफादारी उजागर करने के लिए कह रहा हूँ, क्योंकि इतने वर्षों के दौरान मैंने तुममें से किसी से भी कभी कोई वफादारी नहीं पाई है। इन सब वर्षों में तुम लोगों ने मेरा अनुसरण किया है, फिर भी तुमने मुझे कभी वफादारी का एक कण भी नहीं दिया है। इसकी बजाय, तुम उन लोगों के इर्दगिर्द घूमते रहे हो, जिनसे तुम प्रेम करते हो और जो चीज़ें तुम्हें प्रसन्न करती हैं—इतना कि हर समय, और हर जगह जहाँ तुम जाते हो, उन्हें अपने हृदय के करीब रखते हो और तुमने कभी भी उन्हें छोड़ा नहीं है। जब भी तुम लोग किसी एक चीज के बारे में, जिससे तुम प्रेम करते हो, उत्सुकता और चाहत से भर जाते हो, तो ऐसा तब होता है जब तुम मेरा अनुसरण कर रहे होते हो, या तब भी जब तुम मेरे वचनों को सुन रहे होते हो। इसलिए मैं कहता हूँ कि जिस वफादारी की माँग मैं तुमसे करता हूँ, उसे तुम अपने "पालतुओं" के प्रति वफादार होने और उन्हें प्रसन्न करने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो। हालाँकि तुम लोग मेरे लिए एक-दो चीजों का त्याग करते हो, पर वह तुम्हारे सर्वस्व का प्रतिनिधित्व नहीं करता, और यह नहीं दर्शाता कि वह मैं हूँ, जिसके प्रति तुम सचमुच वफादार हो। तुम लोग खुद को उन उपक्रमों में संलग्न कर देते हो, जिनके प्रति तुम बहुत गहरा चाव रखते हो : कुछ लोग अपने बेटे-बेटियों के प्रति वफादार हैं, तो अन्य अपने पतियों, पत्नियों, धन-संपत्ति, व्यवसाय, वरिष्ठ अधिकारियों, हैसियत या स्त्रियों के प्रति वफादार हैं। जिन चीजों के प्रति तुम लोग वफादार होते हो, उनसे तुम कभी ऊबते या नाराज नहीं होते; उलटे तुम उन चीजों को ज्यादा बड़ी मात्रा और बेहतर गुणवत्ता में पाने के लिए और अधिक लालायित हो जाते हो, और तुम कभी भी ऐसा करना छोडते नहीं हो। मैं और मेरे वचन हमेशा उन चीजों के पीछे धकेल दिए जाते हैं, जिनके प्रति तुम गहरा चाव रखते हो। और तुम्हारे पास उन्हें आखिरी स्थान पर रखने के सिवा कोई विकल्प नहीं बचता। ऐसे लोग भी हैं जो इस आखिरी स्थान को भी अपनी वफादारी की उन चीजों के लिए छोड़ देते हैं, जिन्हें अभी खोजना बाकी है। उनके दिलों में कभी भी मेरा मामूली-सा भी निशान नहीं रहा है। तुम लोग सोच सकते हो कि मैं तुमसे बहुत ज्यादा अपेक्षा रखता हूँ या तुम पर गलत आरोप लगा रहा हूँ—लेकिन क्या तुमने कभी इस तथ्य पर ध्यान दिया है कि जब तुम खुशी-खुशी अपने परिवार के साथ समय बिता रहे होते हो, तो तुम कभी भी मेरे प्रति वफादार नहीं रहते? ऐसे समय में, क्या तुम्हें इससे तकलीफ नहीं होती? जब तुम्हारा दिल खुशी से भरा होता है, और तुम्हें अपनी मेहनत का फल मिलता है, तब क्या तुम खुद को पर्याप्त सत्य से लैस न करने के कारण निराश महसूस नहीं करते? मेरा अनुमोदन प्राप्त न करने पर तुम लोग कब रोए हो? तुम लोग अपने बेटे-बेटियों के

लिए अपना दिमाग खपाते हो और बहुत तकलीफ उठाते हो, फिर भी तुम संतुष्ट नहीं होते; फिर भी तुम यह मानते हो कि तुमने उनके लिए ज्यादा मेहनत नहीं की है, कि तुमने उनके लिए वह सब कुछ नहीं किया है जो तुम कर सकते थे, जबकि मेरे लिए तुम हमेशा से असावधान और लापरवाह रहे हो; मैं केवल तुम्हारी यादों में रहता हूँ, तुम्हारे दिलों में नहीं। मेरा प्रेम और कोशिशें लोगों के द्वारा कभी महसूस नहीं की जातीं और तुमने उनकी कभी कोई कद्र नहीं की। तुम सिर्फ मामूली संक्षिप्त सोच-विचार करते हो, और समझते हो कि यह काफी होगा। यह "वफादारी" वह नहीं है, जिसकी मैंने लंबे समय से कामना की है, बल्कि वह है जो लंबे समय से मेरे लिए घृणास्पद रही है। फिर भी, चाहे मैं कुछ भी कहूँ, तुम केवल एक-दो चीजें ही स्वीकार करते रहते हो; तुम इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं कर सकते, क्योंकि तुम सभी बहुत "आत्मविश्वासी" हो, और तुम हमेशा मेरे द्वारा कहे गए वचनों में से सावधानी से छाँट लेते हो कि क्या स्वीकार करना है और क्या नहीं। अगर तुम लोग आज भी ऐसे ही हो, तो मेरे पास भी तुम्हारे आत्मविश्वास से निपटने के लिए कुछ तरीके हैं—और तो और, मैं तुम्हें स्वीकार करवा दूँगा कि मेरे वचन सत्य हैं और उनमें से कोई भी तथ्यों को विकृत नहीं करता।

अगर मैं तुम लोगों के सामने कुछ पैसे रखूँ और तुम्हें चुनने की आजादी दूँ—और अगर मैं तुम्हारी पसंद के लिए तुम्हारी निंदा न करूँ—तो तुममें से ज्यादातर लोग पैसे का चुनाव करेंगे और सत्य को छोड़ देंगे। तुममें से जो बेहतर होंगे, वे पैसे को छोड़ देंगे और अनिच्छा से सत्य को चुन लेंगे, जबकि इन दोनों के बीच वाले एक हाथ से पैसे को पकड़ लेंगे और दूसरे हाथ से सत्य को। इस तरह तुम्हारा असली रंग क्या स्वत: प्रकट नहीं हो जाता? सत्य और किसी ऐसी अन्य चीज के बीच, जिसके प्रति तुम वफादार हो, चुनाव करते समय तुम सभी ऐसा ही निर्णय लोगे, और तुम्हारा रवैया ऐसा ही रहेगा। क्या ऐसा नहीं है? क्या तुम लोगों में बहुतेरे ऐसे नहीं हैं, जो सही और ग़लत के बीच में झूलते रहे हैं? सकारात्मक और नकारात्मक, काले और सफेद के बीच प्रतियोगिता में, तुम लोग निश्चित तौर पर अपने उन चुनावों से परिचित हो, जो तुमने परिवार और परमेश्वर, संतान और परमेश्वर, शांति और विघटन, अमीरी और ग़रीबी, हैसियत और मामूलीपन, समर्थन दिए जाने और दरकिनार किए जाने इत्यादि के बीच किए हैं। शांतिपूर्ण परिवार और टूटे हुए परिवार के बीच, तुमने पहले को चुना, और ऐसा तुमने बिना किसी संकोच के किया; धन-संपत्ति और कर्तव्य के बीच, तुमने फिर से पहले को चुना, यहाँ तक कि तुममें किनारे पर वापस लौटने की इच्छा[क] भी नहीं रही; विलासिता और निर्धनता के बीच, तुमने पहले को चुना; अपने बेटों, बेटियों, पत्नियों और

पतियों तथा मेरे बीच, तुमने पहले को चुना; और धारणा और सत्य के बीच, तुमने एक बार फिर पहले को चुना। तुम लोगों के दुष्कर्मों को देखते हुए मेरा विश्वास ही तुम पर से उठ गया है। मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि तुम्हारा हृदय कोमल बनने का इतना प्रतिरोध करता है। सालों की लगन और प्रयास से मुझे स्पष्टत: केवल तुम्हारे परित्याग और निराशा से अधिक कुछ नहीं मिला, लेकिन तुम लोगों के प्रति मेरी आशाएँ हर गुजरते दिन के साथ बढ़ती ही जाती हैं, क्योंकि मेरा दिन सबके सामने पूरी तरह से खुला पड़ा रहा है। फिर भी तुम लोग लगातार अँधेरी और बुरी चीजों की तलाश में रहते हो, और उन पर अपनी पकड़ ढीली करने से इनकार करते हो। तो फिर तुम्हारा परिणाम क्या होगा? क्या तुम लोगों ने कभी इस पर सावधानी से विचार किया है? अगर तुम लोगों को फिर से चुनाव करने को कहा जाए, तो तुम्हारा क्या रुख रहेगा? क्या अब भी तुम लोग पहले को ही चुनोगे? क्या अब भी तुम मुझे निराशा और भयंकर कष्ट ही पहुँचाओगे? क्या अब भी तुम्हारे हृदयों में थोड़ा-सा भी सौहार्द होगा? क्या तुम अब भी इस बात से अनभिज्ञ रहोगे कि मेरे हृदय को सुकून पहुँचाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए? इस क्षण तुम्हारा चुनाव क्या है? क्या तुम मेरे वचनों के प्रति सर्मपण करोगे या उनसे उकताए रहोगे? मेरा दिन तुम लोगों की आँखों के सामने रख दिया गया है, और एक नया जीवन और एक नया प्रस्थान-बिंदु तुम लोगों के सामने है। लेकिन मुझे तुम्हें बताना होगा कि यह प्रस्थान-बिंदु पिछले नए कार्य का प्रारंभ नहीं है, बल्कि पुराने का अंत है। अर्थात् यह अंतिम कार्य है। मेरा ख्याल है कि तुम लोग समझ सकते हो कि इस प्रस्थान-बिंदु के बारे में असामान्य क्या है। लेकिन जल्दी ही किसी दिन तुम इस लोग प्रस्थान-बिंदु का सही अर्थ समझ जाओगे, अतः आओ, हम एक-साथ इससे आगे बढ़ें और आने वाले समापन का स्वागत करें! लेकिन तुम्हारे बारे में जो बात मुझे चिंतित किए रहती है, वह यह है कि अन्याय और न्याय से सामना होने पर तुम लोग हमेशा पहले को चुनते हो। हालाँकि यह सब तुम्हारे अतीत की बात है। मैं भी तुम्हारे अतीत की हर बात भूल जाने की उम्मीद करता हूँ, हालाँकि ऐसा करना बहुत मुश्किल है। फिर भी मेरे पास ऐसा करने का एक अच्छा तरीका है : भविष्य को अतीत का स्थान लेने दो और अपने अतीत की छाया मिटाकर अपने आज के सच्चे व्यक्तित्व को उसकी जगह लेने दो। इस तरह मैं एक बार फिर तुम लोगों को चुनाव करने का कष्ट दूँगा : तुम वास्तव में किसके प्रति वफादार हो?

फ़ुटनोट:

क. किनारे पर वापस लौटने की इच्छा : एक चीनी कहावत, जिसका मतलब है "अपने बुरे कामों से विमुख होना; अपने बुरे काम

छोड़ना।"

गंतव्य के बारे में

जब भी गंतव्य का जिक्र होता है, तुम लोग उसे विशेष गंभीरता से लेते हो; इतना ही नहीं, यह एक ऐसी चीज़ है, जिसके बारे में तुम सभी विशेष रूप से संवेदनशील हो। कुछ लोग तो एक अच्छा गंतव्य पाने के लिए परमेश्वर के सामने दंडवत करते हुए अपने सिर जमीन से लगने का भी इंतज़ार नहीं करते। मैं तुम्हारी उत्सुकता समझता हूँ, जिसे शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है। यह इससे अधिक कुछ नहीं है कि तुम लोग अपनी देह विपत्ति में नहीं डालना चाहते, और भविष्य में चिरस्थायी सजा तो बिलकुल भी नहीं भुगतना चाहते। तुम लोग केवल स्वयं को थोड़ा और उन्मुक्त, थोड़ा और आसान जीवन जीने देने की आशा करते हो। इसलिए जब भी गंतव्य का जिक्र होता है, तुम लोग खास तौर से बेचैन महसूस करते हो और अत्यधिक डर जाते हो कि अगर तुम लोग पर्याप्त सतर्क नहीं रहे, तो तुम परमेश्वर को नाराज़ कर सकते हो और इस प्रकार उस दंड के भागी हो सकते हो, जिसके तुम पात्र हो। अपने गंतव्य की खातिर तुम लोग समझौते करने से भी नहीं हिचकेहो, यहाँ तक कि तुममें से कई लोग, जो कभी कुटिल और चंचल थे, अचानक विशेष रूप से विनम्र और ईमानदार बन गए हैं; तुम्हारी ईमानदारी का दिखावा लोगों की मज्जा तक को कँपा देता है। फिर भी, तुम सभी के पास "ईमानदार" दिल हैं, और तुम लोगों ने लगातार बिना कोई बात छिपाए अपने दिलों के राज़ मेरे सामने खोले हैं, चाहे वह शिकायत हो, धोखा हो या भक्ति हो। कुल मिलाकर, तुम लोगों ने अपने अस्तित्व के गहनतम कोनों में पड़ी महत्वपूर्ण चीज़ें मेरे सामने खुलकर "कबूल" की हैं। बेशक, मैंने कभी इन चीज़ों पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे सब मेरे लिए बहुत आम हो गई हैं। लेकिन अपने अंतिम गंतव्य के लिए तुम लोग परमेश्वर का अनुमोदन पाने के लिए अपने सिर के बाल का एक रेशा भी गँवाने के बजाय आग के दरिया में कूद जाओगे। ऐसा नहीं है कि मैं तुम लोगों के साथ बहुत कट्टर हो रहा हूँ; बात यह है कि मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसके रूबरू आने के लिए तुम्हारे हृदय के भक्ति-भाव में बहुत कमी है। तुम लोग शायद न समझ पाओ कि मैंने अभी क्या कहा है, इसलिए मैं तुम्हें एक आसान स्पष्टीकरण देता हूँ : तुम लोगों को सत्य और जीवन की ज़रूरत नहीं है; न ही तुम्हें अपने आचरण के सिद्धांतों की ज़रूरत है, मेरे श्रमसाध्य कार्य की तो निश्चित रूप से ज़रूरतनहीं है। इसके बजाय तुम लोगों को उन चीज़ों की ज़रूरत है, जो तुम्हारी देह से जुड़ी हैं—धन-संपत्ति, हैसियत,

परिवार, विवाह आदि। तुम लोग मेरे वचनों और कार्य को पूरी तरह से ख़ारिज करते हो, इसलिए मैं तुम्हारे विश्वास को एक शब्द में समेट सकता हूँ : उथला। जिन चीज़ों के प्रति तुम लोग पूर्णत: समर्पित हो, उन्हें हासिल करने के लिए तुम किसी भी हद तक जा सकते हो, लेकिन मैंने पाया है कि तुम लोग परमेश्वर में अपने विश्वास से संबंधित मामलों में ऐसा नहीं करते। इसके बजाय, तुम सापेक्ष रूप से समर्पित हो, सापेक्ष रूप से ईमानदार हो। इसीलिए मैं कहता हूँ कि जिनके दिल में पूर्ण निष्ठा का अभाव है, वे परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में असफल हैं। ध्यान से सोचो—क्या तुम लोगों के बीच कई लोग असफल हैं?

तुम लोगों को ज्ञात होना चाहिए कि परमेश्वर पर विश्वास में सफलता लोगों के अपने कार्यों का परिणाम होती है; जब लोग सफल नहीं होते, बल्कि असफल होते हैं, तो वह भी उनके अपने कार्यों के कारण ही होता है, उसमें किसी अन्य कारक की कोई भूमिका नहीं होती। मेरा मानना है कि तुम लोग ऐसी चीज़ प्राप्त करने के लिए सब-कुछ करोगे, जो परमेश्वर में विश्वास करने से ज्यादा मुश्किल होती है और जिसे पाने के लिए उससे ज्यादा कष्ट उठाने पड़ते हैं, और उसे तुम बड़ी गंभीरता से लोगे, यहाँ तक कि तुम उसमें कोई गलती बरदाश्त करने के लिए भी तैयार नहींहोंगे; इस तरह के निरंतर प्रयास तुम लोग अपने जीवन में करते हो। यहाँ तक कि तुम लोग उन परिस्थितियों में भी मेरी देह को धोखा दे सकते हो, जिनमें तुम अपने परिवार के किसी सदस्य को धोखा नहीं दोगे। यही तुम लोगों का अटल व्यवहार और तुम लोगों का जीवनसिद्धांत है। क्या तुम लोग अभी भी अपने गंतव्य की खातिर मुझे धोखा देने के लिए एक झूठा मुखौटा नहीं लगा रहे हो, ताकि तुम्हारा गंतव्य पूरी तरह से खूबसूरत हो जाए और तुम जो चाहते हो वह सब हो? मुझे ज्ञात है कि तुम लोगों की भक्ति वैसी ही अस्थायी है, जैसी अस्थायी तुम लोगों की ईमानदारी है। क्या तुम लोगों का संकल्प और वह कीमत जो तुम लोग चुकाते हो, भविष्य के बजाय वर्तमान क्षण के लिए नहीं हैं? तुम लोग केवल एक खूबसूरत गंतव्य सुरक्षित कर लेने के लिए एक अंतिम प्रयास करना चाहते हो, जिसका एकमात्र उद्देश्य सौदेबाज़ी है। तुम यह प्रयास सत्य के ऋणी होने से बचने के लिए नहीं करते, और मुझे उस कीमत का भुगतान करने के लिए तो बिलकुल भी नहीं, जो मैंने अदा की है। संक्षेप में, तुम केवल जो चाहते हो, उसे प्राप्त करने के लिए अपनी चतुर चालें चलने के इच्छुक हो, लेकिन उसके लिए खुला संघर्ष करने के लिए तैयार नहीं हो। क्या यही तुम लोगों की दिली ख्वाहिश नहीं है? तुम लोगों को अपने को छिपाना नहीं चाहिए, न ही अपने गंतव्य को लेकर इतनी माथापच्ची करनी चाहिए कि न तो तुम खा सको, न सो सको। क्या यह सच नहीं है कि अंत में तुम्हारा परिणाम पहले ही निर्धारित हो चुका

होगा? तुम लोगों में से प्रत्येक को अपना कर्तव्य अपनी पूरी क्षमता से, खुले और ईमानदार दिलों के साथ पूरा करना चाहिए, और जो भी कीमत ज़रूरी हो, उसे चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए। जैसा कि तुम लोगों ने कहा है, जब दिन आएगा, तो परमेश्वर ऐसे किसी भी व्यक्ति के प्रति लापरवाह नहीं रहेगा, जिसने उसके लिए कष्ट उठाए होंगे या कीमत चुकाई होगी। इस प्रकार का दृढ़ विश्वास बनाए रखने लायक है, और यह सही है कि तुम लोगों को इसे कभी नहीं भूलना चाहिए। केवल इसी तरह से मैं तुम लोगों के बारे में निश्चिंत हो सकता हूँ। वरना तुम लोगों के बारे में मैं कभी निश्चिंत नहीं हो पाऊँगा, और तुम हमेशा मेरी घृणा के पात्र रहोगे। अगर तुम सभी अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुन सको और अपना सर्वस्व मुझे अर्पित कर सको, मेरे कार्य के लिए कोई कोर-कसर न छोड़ो, और मेरे सुसमाचार के कार्य के लिए अपनी जीवन भर की ऊर्जा अर्पित कर सको, तो क्या फिर मेरा हृदय तुम्हारे लिए अक्सरहर्ष से नहीं उछलेगा? इस तरह से मैं तुम लोगों के बारे में पूरी तरह से निश्चिंत हो सकूँगा, या नहीं? यह शर्म की बात है कि तुम लोग जो कर सकते हो, वह मेरी अपेक्षाओं का दयनीय रूप से एक बहुत छोटा-सा भाग है। ऐसे में, तुम लोग मुझसे वे चीज़ें पाने की धृष्टता कैसे कर सकते हो, जिनकी तुम आशा करते हो?

तुम्हारा गंतव्य और तुम्हारी नियति तुम लोगों के लिए बहुत अहम हैं—वे गंभीर चिंता के विषय हैं। तुम मानते हो कि अगर तुम अत्यंत सावधानी से कार्य नहीं करते, तो इसका अर्थ यह होगा कि तुम्हारा कोई गंतव्य नहीं होगा, कि तुमने अपना भाग्य बिगाड़ लिया है। लेकिन क्या तुम लोगों ने कभी सोचा है कि अगर कोई मात्र अपने गंतव्य के लिए प्रयास करता है, तो वह व्यर्थ ही परिश्रम करता है? ऐसे प्रयास सच्चे नहीं हैं—वे नकली और कपटपूर्ण हैं। यदि ऐसा है, तो जो लोग केवल अपने गंतव्य के लिए कार्य करते हैं, वे अपनी अंतिम पराजय की दहलीज पर हैं, क्योंकि परमेश्वर में व्यक्ति के विश्वास की विफलता धोखे के कारण होती है। मैं पहले कह चुका हूँ कि मुझे चाटुकारिता या खुशामद या अपने साथ उत्साह के साथ व्यवहार किया जाना पसंद नहीं है। मुझे ऐसे ईमानदार लोग पसंद हैं, जो मेरे सत्य और अपेक्षाओं का सामना कर सकें। इससे भी अधिक मुझे तब अच्छा लगता है, जब लोग मेरे हृदय के प्रति अत्यधिक चिंता या आदर का भाव दिखाते हैं, और जब वे मेरी खातिर सब-कुछ छोड़ देने में सक्षम होते हैं। केवल इसी तरह से मेरे हृदय को सुकून मिल सकता है। इस समय, तुम लोगों के विषय में ऐसी कितनी चीज़ें हैं, जो मुझे नापसंद हैं? तुम लोगों के विषय में ऐसी कितनी चीज़ें हैं, जो मुझे पसंद हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम लोगों में से किसी ने भी कुरूपता की वे सभी विभिन्न अभिव्यक्तियाँ महसूस न की हों, जो तुम लोगों ने

अपने गंतव्य की खातिर प्रदर्शित की हैं?

अपने दिल में मैं ऐसे किसी भी दिल के लिए हानिकारक नहीं होना चाहता, जो सकारात्मक है और ऊपर उठने की आकांक्षा रखता है, और ऐसे किसी व्यक्ति की ऊर्जा कम करने की इच्छा तो मैं बिलकुल भी नहीं रखता, जो निष्ठा से अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहा है। फिर भी, मुझे तुम लोगों में से प्रत्येक को तुम्हारी कमियों और तुम्हारे दिलों के गहनतम कोनों में मौजूद गंदी आत्मा की याद ज़रूर दिलानी होगी। मैं ऐसा इस उम्मीद में करता हूँ कि तुम लोग मेरे वचनों के रूबरू आने के लिए अपना सच्चा हृदय अर्पित करने में सक्षम होगे, क्योंकि मुझे सबसे ज्यादा घृणा लोगों द्वारा मेरे साथ किए जाने वाले धोखे से है। मैं केवल यह उम्मीद करता हूँ कि मेरे कार्य के अंतिम चरण में तुम लोग अपनेसर्वोत्कृष्ट निष्पादन में सक्षमहोंगे, और कि तुम स्वयंको पूरे मन से समर्पित करोगे, अधूरे मन से नहीं। बेशक, मैं यह उम्मीद भी करता हूँ कि तुम लोगों को सर्वोत्तम गंतव्य प्राप्त हो सके। फिर भी, मेरे पास अभी भी मेरी अपनी आवश्यकता है, और वह यह कि तुम लोग मुझे अपनी आत्मा और अंतिम भक्ति समर्पित करने में सर्वोत्तम निर्णय करो। अगर किसी की भक्ति एकनिष्ठ नहीं है, तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से शैतान की सँजोई हुई संपत्ति है, और मैं आगे उसे इस्तेमाल करने के लिए नहीं रखूँगा, बल्कि उसे उसके माता-पिता द्वारा देखे-भाले जाने के लिए घर भेज दूँगा। मेरा कार्य तुम लोगों के लिए एक बड़ी मदद है; मैं तुम लोगों से केवल एक ईमानदार और ऊपर उठने का आकांक्षी हृदय पाने की उम्मीद करता हूँ, लेकिन मेरे हाथ अभी तक खाली हैं। इस बारे में सोचो : अगर मैं किसी दिन इतना दुखी हुआकि उसे शब्दों में बयान न कर सकूँ, तो फिर तुम लोगों के प्रति मेरा रवैया क्या होगा? क्या मैं तब भी तुम्हारे प्रति वैसा ही सौम्य रहूँगा, जैसा अब हूँ? क्या मेरा हृदय तब भी उतना ही शांत होगा, जितना अब है? क्या तुम लोग उस व्यक्ति की भावनाएँ समझते हो, जिसने कड़ी मेहनत से खेत जोता हो और उसे फसल की कटाई में अन्न का एक दाना भी नसीब न हुआ हो? क्या तुम लोग यह समझते हो कि आदमी को बड़ा आघात लगने पर उसके दिल को कितनी भारी चोट पहुँचती है? क्या तुम लोग उस व्यक्ति की कड़वाहटका अंदाज़ालगा सकते हो, जो कभी आशा से भरा हो, पर जिसे ख़राब शर्तों पर विदा होना पड़ा हो? क्या तुम लोगों ने उस व्यक्ति का क्रोध निकलते देखा है, जिसे उत्तेजित किया गया हो? क्या तुम लोग उस व्यक्ति की बदला लेने की आतुरता जान सकते हो, जिसके साथ शत्रुता और धोखे का व्यवहार किया गया हो? अगर तुम इन लोगों की मानसिकता समझ सकते हो, तो मैं सोचता हूँ, तुम्हारे लिए यह कल्पना करना कठिन नहीं होना चाहिए कि अपने

प्रतिशोध के समय परमेश्वर का रवैया क्या होगा! अंत में, मुझे उम्मीद है कि तुम सब अपने गंतव्य के लिए गंभीर प्रयास करोगे; हालाँकि, अच्छा होगा कि तुम अपने प्रयासों में कपटपूर्ण साधन न अपनाओ, अन्यथा मैं अपने दिल में तुमसे निराश बना रहूँगा। और यह निराशा कहाँ ले जाती है? क्या तुम लोग स्वयं को ही बेवकूफ नहीं बना रहे हो? जो लोग अपने गंतव्य के विषय में सोचते हैं, पर फिर भी उसे बरबाद कर देते हैं, वे बचाए जाने के बहुत कम योग्य होते हैं। यहाँ तक कि अगर वहउत्तेजित और क्रोधित भी हो जाए, तो ऐसे व्यक्ति पर कौन दया करेगा? संक्षेप में, मैं अभी भी तुम लोगों के लिए ऐसे गंतव्य की कामना करता हूँ, जो उपयुक्त और अच्छा दोनों हो, और उससे भी बढ़कर, मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम लोगों में से कोई भी विपत्ति में नहीं फँसेगा।

तीन चेतावनियाँ

परमेश्वर के विश्वासी के रूप में, तुम लोगों को हर चीज में परमेश्वर के अलावा अन्य किसी के प्रति वफादार नहीं होना चाहिए और हर चीज में उसी की इच्छा के अनुरूप बनना चाहिए। यद्यपि हर कोई इस संदेश को समझता है, लेकिन इंसान की तरह-तरह की मुश्किलों—उदाहरण के लिए, अज्ञानता, बेतुकेपन और भ्रष्टता के कारण, ये सच्चाइयाँ जो एकदम साफ और बुनियादी हैं, इंसान में पूरी तरह से दिखाई नहीं देतीं। इसलिए, इससे पहले कि तुम लोगों का अंत पत्थर की लकीर बन जाए, मैं पहले कुछ ऐसी बातें बता दूँ जो तुम लोगों के लिए अत्यधिक महत्व की हैं। इससे पहले कि मैं आरंभ करूँ, तुम्हें पहले इस बात को समझ लेना चाहिए : मैं जो वचन कहता हूँ वे सत्य हैं और समूची मानवजाति के लिए हैं; केवल किसी विशिष्ट या खास किस्म के व्यक्ति के लिए नहीं हैं। इसलिए, तुम लोगों को मेरे वचनों को सत्य के नजरिए से समझने पर ध्यान देना चाहिए और पूरी एकाग्रता एवं ईमानदारी की प्रवृत्ति रखनी चाहिए; मेरे द्वारा बोले गए एक भी वचन या सत्य की उपेक्षा मत करो, और उन्हें हल्के में मत लो। मैं देखता हूँ कि तुम लोगों ने अपने जीवन में ऐसा बहुत कुछ किया है जो सत्य के अनुरूप नहीं है, इसलिए मैं तुम लोगों से खास तौर से सत्य के सेवक बनने, दुष्टता और कुरूपता का दास न बनने के लिए कह रहा हूँ। सत्य को मत कुचलो और परमेश्वर के घर के किसी भी कोने को दूषित मत करो। तुम लोगों के लिए यह मेरी चेतावनी है। अब मैं मौजूदा प्रसंग पर बात करूँगा।

सबसे पहले, अपनी नियति के लिए, तुम लोगों को परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त करना चाहिए। कहने

का अर्थ है, चूँकि तुम लोग यह मानते हो कि तुम परमेश्वर के घर के एक सदस्य हो, तो तुम्हें परमेश्वर के मन को शांति प्रदान करनी चाहिए और सभी बातों में उसे संतुष्ट करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, तुम लोगों को अपने कार्यों में सिद्धांतवादी और सत्य के अनुरूप होना चाहिए। यदि यह तुम्हारी क्षमता के परे है, तो परमेश्वर तुमसे घृणा करेगा और तुम्हें अस्वीकृत कर देगा, और हर इंसान तुम्हें ठुकरा देगा। अगर एक बार तुम ऐसी दुर्दशा में पड़ गए, तो तुम्हारी गिनती परमेश्वर के घर में नहीं की जा सकती। परमेश्वर द्वारा अनुमोदित नहीं किए जाने का यही अर्थ है।

दूसरा, तुम लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर ईमानदार इंसान को पसंद करता है। मूल बात यह है कि परमेश्वर निष्ठावान है, अत: उसके वचनों पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है; इसके अतिरिक्त, उसका कार्य दोषरहित और निर्विवाद है, यही कारण है कि परमेश्वर उन लोगों को पसंद करता है जो उसके साथ पूरी तरह से ईमानदार होते हैं। ईमानदारी का अर्थ है अपना हृदय परमेश्वर को अर्पित करना; हर बात में उसके साथ सच्चाई से पेश आना; हर बात में उसके साथ खुलापन रखना, कभी तथ्यों को न छुपाना; अपने से ऊपर और नीचे वालों को कभी भी धोखा न देना, और परमेश्वर से लाभ उठाने मात्र के लिए काम न करना। संक्षेप में, ईमानदार होने का अर्थ है अपने कार्यों और शब्दों में शुद्धता रखना, न तो परमेश्वर को और न ही इंसान को धोखा देना। मैं जो कहता हूँ वह बहुत सरल है, किंतु तुम लोगों के लिए दुगुना मुश्किल है। बहुत-से लोग ईमानदारी से बोलने और कार्य करने की बजाय नरक में दंडित होना पसंद करेंगे। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि जो बेईमान हैं उनके लिए मेरे भंडार में अन्य उपचार भी है। मैं अच्छी तरह से जानता हूँ तुम्हारे लिए ईमानदार इंसान बनना कितना मुश्किल काम है। चूँकि तुम लोग बहुत चतुर हो, अपने तुच्छ पैमाने से लोगों का मूल्यांकन करने में बहुत अच्छे हो, इससे मेरा कार्य और आसान हो जाता है। और चूंकि तुम में से हरेक अपने भेदों को अपने सीने में भींचकर रखता है, तो मैं तुम लोगों को एक-एक करके आपदा में भेज दूँगा ताकि अग्नि तुम्हें सबक सिखा सके, ताकि उसके बाद तुम मेरे वचनों के प्रति पूरी तरह समर्पित हो जाओ। अंततः, मैं तुम लोगों के मुँह से "परमेश्वर एक निष्ठावान परमेश्वर है" शब्द निकलवा लूँगा, तब तुम लोग अपनी छाती पीटोगे और विलाप करोगे, "कुटिल है इंसान का हृदय!" उस समय तुम्हारी मनोस्थिति क्या होगी? मुझे लगता है कि तुम उतने खुश नहीं होगे जितने अभी हो। तुम लोग इतने "गहन और गूढ़" तो बिल्कुल भी नहीं होगे जितने कि तुम अब हो। कुछ लोग परमेश्वर की उपस्थिति में नियम-निष्ठ और उचित शैली में व्यवहार करते हैं, वे "शिष्ट व्यवहार" के लिए

कड़ी मेहनत करते हैं, फिर भी आत्मा की उपस्थिति में वे अपने जहरीले दाँत और पँजे दिखाने लगते हैं। क्या तुम लोग ऐसे इंसान को ईमानदार लोगों की श्रेणी में रखोगे? यदि तुम पाखंडी और ऐसे व्यक्ति हो जो "व्यक्तिगत संबंधों" में कुशल है, तो मैं कहता हूँ कि तुम निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति हो जो परमेश्वर को हल्के में लेने का प्रयास करता है। यदि तुम्हारी बातें बहानों और महत्वहीन तर्कों से भरी हैं, तो मैं कहता हूँ कि तुम ऐसे व्यक्ति हो जो सत्य का अभ्यास करने से घृणा करता है। यदि तुम्हारे पास ऐसी बहुत-से गुप्त भेद हैं जिन्हें तुम साझा नहीं करना चाहते, और यदि तुम प्रकाश के मार्ग की खोज करने के लिए दूसरों के सामने अपने राज़ और अपनी कठिनाइयाँ उजागर करने के विरुद्ध हो, तो मैं कहता हूँ कि तुम्हें आसानी से उद्धार प्राप्त नहीं होगा और तुम सरलता से अंधकार से बाहर नहीं निकल पाओगे। यदि सत्य का मार्ग खोजने से तुम्हें प्रसन्नता मिलती है, तो तुम सदैव प्रकाश में रहने वाले व्यक्ति हो। यदि तुम परमेश्वर के घर में सेवाकर्मी बने रहकर बहुत प्रसन्न हो, गुमनाम बनकर कर्मठतापूर्वक और शुद्ध अंतःकरण से काम करते हो, हमेशा देने का भाव रखते हो, लेने का नहीं, तो मैं कहता हूँ कि तुम एक निष्ठावान संत हो, क्योंकि तुम्हें किसी फल की अपेक्षा नहीं है, तुम एक ईमानदार व्यक्ति हो। यदि तुम स्पष्टवादी बनने को तैयार हो, अपना सर्वस्व खपाने को तैयार हो, यदि तुम परमेश्वर के लिए अपना जीवन दे सकते हो और दृढ़ता से अपनी गवाही दे सकते हो, यदि तुम इस स्तर तक ईमानदार हो जहाँ तुम्हें केवल परमेश्वर को संतुष्ट करना आता है, और अपने बारे में विचार नहीं करते हो या अपने लिए कुछ नहीं लेते हो, तो मैं कहता हूँ कि ऐसे लोग प्रकाश में पोषित किए जाते हैं और वे सदा राज्य में रहेंगे। तुम्हें पता होना चाहिए कि क्या तुम्हारे भीतर सच्चा विश्वास और सच्ची वफादारी है, क्या परमेश्वर के लिए कष्ट उठाने का तुम्हारा कोई इतिहास है, और क्या तुमने परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पण किया है। यदि तुममें इन बातों का अभाव है, तो तुम्हारे भीतर अवज्ञा, धोखा, लालच और शिकायत अभी शेष हैं। चूँकि तुम्हारा हृदय ईमानदार नहीं है, इसलिए तुमने कभी भी परमेश्वर से सकारात्मक स्वीकृति प्राप्त नहीं की है और प्रकाश में जीवन नहीं बिताया है। अंत में किसी व्यक्ति की नियति कैसे काम करती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या उसके अंदर एक ईमानदार और भावुक हृदय है, और क्या उसके पास एक शुद्ध आत्मा है। यदि तुम ऐसे इंसान हो जो बहुत बेईमान है, जिसका हृदय दुर्भावना से भरा है, जिसकी आत्मा अशुद्ध है, तो तुम अंत में निश्चित रूप से ऐसी जगह जाओगे जहाँ इंसान को दंड दिया जाता है, जैसाकि तुम्हारी नियति में लिखा है। यदि तुम बहुत ईमानदार होने का दावा करते हो, मगर तुमने कभी सत्य के अनुसार कार्य नहीं किया है या

सत्य का एक शब्द भी नहीं बोला है, तो क्या तुम तब भी परमेश्वर से पुरस्कृत किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हो? क्या तुम तब भी परमेश्वर से आशा करते हो कि वह तुम्हें अपनी आँख का तारा समझे? क्या यह सोचने का बेहूदा तरीका नहीं है? तुम हर बात में परमेश्वर को धोखा देते हो; तो परमेश्वर का घर तुम जैसे इंसान को, जिसके हाथ अशुद्ध हैं, जगह कैसे दे सकता है?

मैं तुम लोगों से तीसरी बात यह कहना चाहता हूँ : हर व्यक्ति ने अपने जीवन में परमेश्वर में आस्था के दौरान किसी न किसी स्तर पर परमेश्वर का प्रतिरोध किया है, उसे धोखा दिया है। कुछ गलत कामों को अपराध के रूप में दर्ज करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन कुछ अक्षम्य होते हैं; क्योंकि बहुत से कर्म ऐसे होते हैं जिनसे प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन होता है, जो परमेश्वर के स्वभाव के प्रति अपराध होते हैं। भाग्य को लेकर चिंतित बहुत से लोग पूछ सकते हैं कि ये कर्म कौनसे हैं। तुम लोगों को यह पता होना चाहिए कि तुम प्रकृति से ही अहंकारी और अकड़बाज हो, और सत्य के प्रति समर्पित होने के इच्छुक नहीं हो। इसलिए जब तुम लोग आत्म-चिंतन कर लोगे, तो मैं थोड़ा-थोड़ा करके तुम लोगों को बताऊँगा। मैं तुम लोगों से प्रशासनिक आज्ञाओं के विषय की बेहतर समझ हासिल करने और परमेश्वर के स्वभाव को जानने का प्रयास करने का आग्रह करता हूँ। अन्यथा, तुम लोग अपनी जबान बंद नहीं रख पाओगे और बड़ी-बड़ी बातें करोगे, तुम अनजाने में परमेश्वर के स्वभाव का अपमान करके अंधकार में जा गिरोगे और पवित्र आत्मा एवं प्रकाश की उपस्थिति को गँवा दोगे। चूँकि तुम्हारे काम के कोई सिद्धांत नहीं हैं, तुम्हें जो नहीं करना चाहिए वह करते हो, जो नहीं बोलना चाहिए वह बोलते हो, इसलिए तुम्हें यथोचित दंड मिलेगा। तुम्हें पता होना चाहिए कि, हालाँकि कथन और कर्म में तुम्हारे कोई सिद्धांत नहीं हैं, लेकिन परमेश्वर इन दोनों बातों में अत्यंत सिद्धांतवादी है। तुम्हें दंड मिलने का कारण यह है कि तुमने परमेश्वर का अपमान किया है, किसी इंसान का नहीं। यदि जीवन में बार-बार तुम परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध अपराध करते हो, तो तुम नरक की संतान ही बनोगे। इंसान को ऐसा प्रतीत हो सकता है कि तुमने कुछ ही कर्म तो ऐसे किए हैं जो सत्य के अनुरूप नहीं हैं, और इससे अधिक कुछ नहीं। लेकिन क्या तुम जानते हो कि परमेश्वर की निगाह में, तुम पहले ही एक ऐसे इंसान हो जिसके लिए अब पाप करने की कोई और छूट नहीं बची है? क्योंकि तुमने एक से अधिक बार परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन किया है और फिर तुममें पश्चाताप के कोई लक्षण भी नहीं दिखते, इसलिए तुम्हारे पास नरक में जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है, जहाँ परमेश्वर इंसान को दंड देता है। परमेश्वर का अनुसरण करते समय, कुछ थोड़े-से लोगों ने कुछ ऐसे

कर्म कर दिए जिनसे सिद्धांतों का उल्लंघन हुआ, लेकिन निपटारे और मार्गदर्शन के बाद, उन्होंने धीरे-धीरे अपनी भ्रष्टता का अहसास किया, उसके बाद वास्तविकता के सही मार्ग में प्रवेश किया, और आज वे एक ठोस जमीन पर खड़े हैं। वे ऐसे लोग हैं जो अंत तक बने रहेंगे। मुझे ईमानदार इंसान की तलाश है; यदि तुम एक ईमानदार व्यक्ति हो और सिद्धांत के अनुसार कार्य करते हो, तो तुम परमेश्वर के विश्वासपात्र हो सकते हो। यदि अपने कामों से तुम परमेश्वर के स्वभाव का अपमान नहीं करते, और तुम परमेश्वर की इच्छा की खोज करते हो और परमेश्वर के प्रति तुम्हारे मन में आदर है, तो तुम्हारी आस्था मापदंड के अनुरूप है। जो कोई भी परमेश्वर का आदर नहीं करता, और उसका हृदय भय से नहीं काँपता, तो इस बात की प्रबल संभावना है कि वह परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं का उल्लंघन करेगा। बहुत-से लोग अपनी तीव्र भावना के बल पर परमेश्वर की सेवा तो करते हैं, लेकिन उन्हें परमेश्वर की प्रशासनिक आज्ञाओं की कोई समझ नहीं होती, उसके वचनों में छिपे अर्थों का तो उन्हें कोई भान तक नहीं होता। इसलिए, नेक इरादों के बावजूद वे प्रायः ऐसे काम कर बैठते हैं जिनसे परमेश्वर के प्रबंधन में बाधा पहुँचती है। गंभीर मामलों में, उन्हें बाहर निकाल दिया जाता है, आगे से परमेश्वर का अनुसरण करने के किसी भी अवसर से वंचित कर दिया जाता है, नरक में फेंक दिया जाता है और परमेश्वर के घर के साथ उनके सभी संबंध समाप्त हो जाते हैं। ये लोग अपने नादान नेक इरादों की शक्ति के आधार पर परमेश्वर के घर में काम करते हैं, और अंत में परमेश्वर के स्वभाव को क्रोधित कर बैठते हैं। लोग अधिकारियों और स्वामियों की सेवा करने के अपने तरीकों को परमेश्वर के घर में ले आते हैं, और व्यर्थ में यह सोचते हुए कि ऐसे तरीकों को यहाँ आसानी से लागू किया जा सकता है, उन्हें उपयोग में लाने की कोशिश करते हैं। उन्हें यह पता नहीं होता कि परमेश्वर का स्वभाव किसी मेमने का नहीं बल्कि एक सिंह का स्वभाव है। इसलिए, जो लोग पहली बार परमेश्वर से जुड़ते हैं, वे उससे संवाद नहीं कर पाते, क्योंकि परमेश्वर का हृदय इंसान की तरह नहीं है। जब तुम बहुत-से सत्य समझ जाते हो, तभी तुम परमेश्वर को निरंतर जान पाते हो। यह ज्ञान शब्दों या धर्म सिद्धांतों से नहीं बनता, बल्कि इसे एक खज़ाने के रूप में उपयोग किया जा सकता है जिससे तुम परमेश्वर के साथ गहरा विश्वास पैदा कर सकते हो और इसे एक प्रमाण के रूप में उपयोग सकते हो कि वह तुमसे प्रसन्न होता है। यदि तुममें ज्ञान की वास्तविकता का अभाव है और तुम सत्य से युक्त नहीं हो, तो मनोवेग में की गई तुम्हारी सेवा से परमेश्वर सिर्फ तुमसे घृणा और ग्लानि ही करेगा। अब तक तो तुम समझ ही गए होगे कि परमेश्वर में विश्वास धर्मशास्त्र का अध्ययन मात्र नहीं है!

हालाँकि मैं तुम लोगों को बहुत कम शब्दों में चेतावनी देता हूँ, फिर भी जो कुछ भी मैंने बताया है उसका तुम लोगों में सबसे ज़्यादा अभाव है। तुम लोगों को यह पता होना चाहिए कि मैं अब जिस बारे में बता रहा हूँ वह इंसानों के बीच मेरे अंतिम कार्य के लिए है, इंसान के अंत का निर्धारण करने के लिए है। मैं ऐसा और कोई कार्य नहीं करना चाहता जिसका कोई प्रयोजन न हो, न ही मैं ऐसे लोगों का मार्गदर्शन करते रहना चाहता हूँ जिनसे सड़ी-गली लकड़ी की तरह कोई उम्मीद नहीं की जा सकती, उनकी अगुवाई तो मैं बिलकुल नहीं करना चाहता हूँ जो गुप्त रूप से बुरे इरादे पाले रहते हैं। शायद एक दिन तुम लोग इंसान के लिए मेरे वचनों के पीछे छिपे ईमानदार इरादों को और मानवजाति के लिए मेरे योगदान को समझ पाओगे। शायद एक दिन तुम लोग उस संदेश को समझ पाओगे जिससे तुम अपना अंत तय करने के योग्य बन सको।

अपराध मनुष्य को नरक में ले जाएँगे

मैंने तुम लोगों को कई चेतावनियाँ दी हैं और तुम लोगों को जीतने के इरादे से कई सत्य दिए हैं। अब तक, तुम लोग अतीत की तुलना में काफी अधिक समृद्ध अनुभव करते हो, इस बारे में कई सिद्धांत समझ गए हो कि व्यक्ति को कैसा होना चाहिए, और तुमने उतना सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लिया है जो वफ़ादार लोगों में होना चाहिए। अनेक वर्षों के दौरान तुम लोगों ने यही फसल काटी है। मैं तुम्हारी उपलब्धियों से इनकार नहीं करता, लेकिन मुझे यह भी स्पष्ट रूप से कहना है कि मैं इन कई वर्षों में मेरे प्रति की गई तुम्हारी अवज्ञाओं और विद्रोहों से भी इनकार नहीं करता, क्योंकि तुम लोगों के बीच एक भी संत नहीं है। बिना किसी अपवाद के तुम शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए लोग हो; तुम मसीह के शत्रु हो। आज तक तुम लोगों के अपराधों और अवज्ञाओं की संख्या इतनी ज्यादा रही है कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती, इसलिए इसे शायद ही अजीब माना जाए कि मैं लगातार तुम लोगों के सामने अपने आपको दोहरा रहा हूँ। मैं तुम लोगों के साथ इस तरह सह-अस्तित्व की इच्छा नहीं रखता, लेकिन तुम्हारे भविष्य की खातिर, तुम्हारी मंज़िल की खातिर मैं, यहाँ और अभी, एक बार फिर वह दोहराऊँगा, जो मैं पहले ही कह चुका हूँ। मुझे आशा है, तुम लोग मुझे कहने दोगे, और इतना ही नहीं, मेरे हर कथन पर विश्वास करने में सक्षम होगे और मेरे वचनों का गहरा निहितार्थ समझ पाओगे। मेरे कहे पर संदेह न करो, मेरे वचनों को जैसे चाहो, वैसे लेकर उन्हें दरकिनार करने की बात तो छोड़ ही दो; यह मेरे लिए असहनीय होगा। मेरे वचनों की

आलोचना मत करो, उन्हें हलके में तो तुम्हें बिलकुल नहीं लेना चाहिए, न ऐसा कुछ कहना चाहिए कि मैं हमेशा तुम लोगों को फुसलाता हूँ, या उससे भी ज्यादा ख़राब यह कि मैंने तुमसे जो कुछ कहा है, वह ठीक नहीं है। ये चीज़ें भी मेरे लिए असहनीय हैं। चूँकि तुम लोग मुझे और मेरी कही गई बातों को संदेह की नज़र से देखते हो, मेरे वचनों को कभी स्वीकार नहीं करते और मेरी उपेक्षा करते हो, मैं तुम सब लोगों से पूरी गंभीरता से कहता हूँ : मेरी कही बातों को दर्शन-शास्त्र से मत जोड़ो; मेरे वचनों को कपटी लोगों के झूठ से मत जोड़ो। मेरे वचनों की अवहेलना तो तुम्हें बिलकुल भी नहीं करनी चाहिए। भविष्य में शायद कोई तुम्हें वह नहीं बता पाएगा जो मैं बता रहा हूँ, या तुम्हारे साथ इतनी उदारता से नहीं बोलेगा, या तुम लोगों को एक-एक बात इतने धैर्य से समझाने वाला तो बिलकुल नहीं मिलेगा। इन अच्छे दिनों को तुम लोग केवल याद करते रह जाओगे, या ज़ोर-ज़ोर से सुबकोगे, अथवा दर्द से कराहोगे, या फिर अँधेरी रातों में जीवन-यापन कर रहे होगे जहाँ सत्य या जीवन का अंश-मात्र भी नहीं होगा, या नाउम्मीदी में बस इंतज़ार कर रहे होगे, या फिर भयंकर पश्चात्ताप में विवेक ही खो बैठोगे...। वस्तुत: तुममें से कोई इन संभावनाओं से नहीं बच सकता। क्योंकि तुममें से किसी के पास वह आसन नहीं है, जिससे तुम परमेश्वर की सच्ची आराधना कर सको, इसके बजाय तुम लोग व्यभिचार और बुराई की दुनिया में निमग्न हो गए हो, और तुम्हारे विश्वासों में, तुम्हारी आत्मा, रूह और शरीर में ऐसी बहुत-सी चीज़ें घुल-मिल गई हैं, जिनका जीवन और सत्य से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि जो इनके विरोध में हैं। इसलिए मुझे तुम लोगों को लेकर बस यही आशा है कि तुम लोगों को प्रकाश-पथ पर लाया जा सके। मेरी एकमात्र आशा है कि तुम लोग अपना ख़याल रख पाओ, और अपने व्यवहार और अपराधों को उदासीनता से देखते हुए तुम अपनी मंज़िल पर इतना अधिक बल न दो।

एक अरसे से, परमेश्वर में आस्था रखने वाले सभी लोग एक खूबसूरत मंज़िल की आशा कर रहे हैं, और परमेश्वर के सभी विश्वासियों को उम्मीद है कि सौभाग्य अचानक उनके पास आ जाएगा। उन्हें आशा है कि उन्हें पता भी नहीं चलेगा और वे शांति से स्वर्ग में किसी स्थान पर विराजमान होंगे। लेकिन मैं कहता हूँ कि प्यारे विचारों वाले इन लोगों ने कभी नहीं जाना कि वे स्वर्ग से आने वाले ऐसे सौभाग्य को पाने के या वहाँ किसी आसन पर बैठने तक के पात्र भी हैं या नहीं। आज तुम लोग अपनी स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ़ हो, फिर भी यह उम्मीद लगाए बैठे हो कि तुम लोग अंतिम दिनों की विपत्तियों और दुष्टों को दंडित करने वाले परमेश्वर के हाथों से बच जाओगे। ऐसा लगता है कि सुनहरे सपने देखना और चीज़ों के अपने

मन-मुताबिक होने की अभिलाषा करना उन सभी लोगों की एक आम विशेषता है, जिन्हें शैतान ने भ्रष्ट कर दिया है, और जिनमें से एक भी ज़रा भी प्रतिभाशाली नहीं है। फिर भी, मैं तुम लोगों की अनावश्यक इच्छाओं और साथ ही आशीष पाने की तुम्हारी उत्सुकता का अंत करना चाहता हूँ। यह देखते हुए कि तुम्हारे अपराध असंख्य हैं, और तुम्हारी विद्रोहशीलता का तथ्य हमेशा बढ़ता जा रहा है, ये चीज़ें तुम्हारी भविष्य की प्यारी योजनाओं में कैसे फबेंगी? यदि तुम मनमाने ढंग से चलते रहना चाहते हो, गलत मार्ग पर बने रहते हो और तुम्हें रोकने-टोकने वाला भी कोई नहीं है, और तुम फिर भी चाहते हो कि तुम्हारे सपने पूरे हों, तो मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि अपनी जड़ता में बने रहो और कभी जागना मत, क्योंकि तुम्हारे सपने थोथे हैं, और धार्मिक परमेश्वर के होते हुए, वह तुम्हें कोई अपवाद नहीं बनाएगा। यदि तुम अपने सपने पूरे करना चाहते हो, तो कभी सपने मत देखो, बल्कि हमेशा सत्य और तथ्यों का सामना करो। ख़ुद को बचाने का यही एकमात्र तरीका है। ठोस रूप में, इस पद्धति के क्या चरण हैं?

पहला, अपने सभी अपराधों पर एक नज़र डालो, और जाँच करो कि तुम्हारे व्यवहार तथा विचारों में से कोई ऐसा तो नहीं है, जो सत्य के अनुरूप नहीं है।

यह एक ऐसी चीज़ है, जिसे तुम आसानी से कर सकते हो, और मुझे विश्वास है कि सभी बुद्धिमान लोग यह कर सकते हैं। लेकिन जिन लोगों को यह नहीं पता कि अपराध और सत्य होते क्या हैं, वे अपवाद हैं, क्योंकि मूलतः ऐसे लोग बुद्धिमान नहीं होते। मैं उन लोगों से बात कर रहा हूँ, जो परमेश्वर द्वारा अनुमोदित हैं, ईमानदार हैं, जिन्होंने परमेश्वर के किसी प्रशासनिक आदेश का गंभीर उल्लंघन नहीं किया है, और जो सहजता से अपने अपराधों का पता लगा सकते हैं। हालाँकि यह एक ऐसी चीज़ है, जिसकी मुझे तुमसे अपेक्षा है, और जिसे तुम लोग आसानी से कर सकते हो, लेकिन यही एकमात्र चीज़ नहीं है, जो मैं तुम लोगों से चाहता हूँ। कुछ भी हो, मुझे आशा है कि तुम लोग अकेले में इस अपेक्षा पर हँसोगे नहीं, और खास तौर पर तुम इसे हिकारत से नहीं देखोगे या फिर हलके में नहीं लोगे। तुम्हें इसे गंभीरता से लेना चाहिए और ख़ारिज नहीं करना चाहिए।

दूसरे, अपने प्रत्येक अपराध और अवज्ञा के लिए तुम्हें एक तदनुरूप सत्य खोजना चाहिए, और फिर उन सत्यों का उपयोग उन मुद्दों को हल करने के लिए करना चाहिए। उसके बाद, अपने आपराधिक कृत्यों और अवज्ञाकारी विचारों व कृत्यों को सत्य के अभ्यास से बदल लो।

तीसरे, तुम्हें एक ईमानदार व्यक्ति बनना चाहिए, न कि एक ऐसा व्यक्ति, जो हमेशा चालबाज़ी या कपट करे। (यहाँ मैं तुम लोगों से पुन: ईमानदार व्यक्ति बनने के लिए कह रहा हूँ।)

यदि तुम ये तीनों चीज़ें कर पाते हो, तो तुम ख़ुशकिस्मत हो—ऐसे व्यक्ति, जिसके सपने पूरे होते हैं और जो सौभाग्य प्राप्त करता है। शायद तुम इन तीन नीरस अपेक्षाओं को गंभीरता से लोगे या शायद तुम इन्हें गैर-ज़िम्मेदारी से लोगे। जो भी हो, मेरा उद्देश्य तुम्हारे सपने पूरा करना और तुम्हारे आदर्श अमल में लाना है, न कि तुम लोगों का उपहास करना या तुम लोगों को बेवकूफ़ बनाना।

मेरी माँगें सरल हो सकती हैं, लेकिन मैं जो कह रहा हूँ, वह उतना सरल नहीं है, जितना सरल एक जमा एक बराबर दो होते हैं। अगर तुम लोग इस बारे में केवल कुछ भी बोलोगे, या बेसिर-पैर की बातें करोगे या ऊँची-ऊँची फेंकोगे, तो फिर तुम्हारी योजनाएँ और ख़्वाहिशें धरी की धरी रह जाएँगी। मुझे तुममें से ऐसे लोगों के साथ कोई सहानुभूति नहीं होगी, जो बरसों कष्ट झेलते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन जिनके पास दिखाने के लिए कुछ नहीं होता। इसके विपरीत, जिन्होंने मेरी माँगें पूरी नहीं की हैं, मैं उन्हें पुरस्कृत नहीं, दंडित करता हूँ, उनसे सहानुभूति तो बिलकुल नहीं रखता। तुम लोग सोचते होगे कि बरसों अनुयायी बने रहकर तुमने बहुत मेहनत कर ली है, और कुछ भी हो, केवल सेवा-कर्मी होने के नाते ही तुम्हें परमेश्वर के भवन में एक कटोरी चावल मिल जाना चाहिए। मैं कहूँगा कि तुममें से अधिकतर ऐसा ही सोचते हैं, क्योंकि तुम लोगों ने हमेशा इस सिद्धांत का पालन किया है कि चीज़ों का फ़ायदा कैसे उठाया जाए, न कि अपना फायदा कैसे उठाने दिया जाए। इसलिए अब मैं तुम लोगों से बहुत गंभीरता से कहता हूँ : मुझे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं है कि तुम्हारी मेहनत कितनी उत्कृष्ट है, तुम्हारी योग्यताएँ कितनी प्रभावशाली हैं, तुम कितनी निकटता से मेरा अनुसरण करते हो, तुम कितने प्रसिद्ध हो, या तुमने अपने रवैये में कितना सुधार किया है; जब तक तुम मेरी अपेक्षाएँ पूरी नहीं करते, तब तक तुम कभी मेरी प्रशंसा प्राप्त नहीं कर पाओगे। अपने विचारों और गणनाओं को जितनी जल्दी हो सके, बट्टे खाते डाल दो, और मेरी अपेक्षाओं को गंभीरता से लेना शुरू कर दो; वरना मैं अपना काम समाप्त करने के लिए सभी को भस्म कर दूँगा और, सबसे अच्छा यह होगा कि मैं अपने वर्षों के कार्य और पीड़ा को शून्य में बदल दूँ, क्योंकि मैं अपने शत्रुओं और उन लोगों को, जिनमें से दुर्गंध आती है और जो शैतान जैसे दिखते हैं, अपने राज्य में नहीं ला सकता या उन्हें अगले युग में नहीं ले जा सकता।

मुझे बहुत उम्मीदें हैं। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग उपयुक्त और अच्छी तरह से व्यवहार करो,

अपना कर्तव्य निष्ठा से पूरा करो, सत्य और मानवता को अपनाओ, ऐसे व्यक्ति बनो जो अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि अपना जीवन भी परमेश्वर के लिए न्योछावर कर सके, वगैरह-वगैरह। ये सारी आशाएँ तुम लोगों की कमियों, भ्रष्टता और अवज्ञाओं से उत्पन्न होती हैं। अगर तुम लोगों से मेरी कोई भी बातचीत तुम्हारा ध्यान आकर्षित के लिए पर्याप्त नहीं रही है, तो शायद मैं यही कर सकता हूँ कि अब कुछ न कहूँ। हालाँकि, तुम लोग इसके परिणाम को समझते हो। मैं कभी आराम नहीं करता, इसलिए अगर मैं बोलूँगा नहीं, तो कुछ ऐसा करूँगा कि लोग देखते रह जाएँगे। मैं किसी की जीभ गला सकता हूँ, या किसी के अंग भंग करके उसे मार सकता हूँ, या लोगों को स्नायु की विषमताएँ दे सकता हूँ और उन्हें अनेक प्रकार से कुरूप बना सकता हूँ। इसके अतिरिक्त, मैं लोगों को ऐसी यातनाएँ दे सकता हूँ, जो मैंने खास तौर से उनके लिए निर्मित की हैं। इस तरह मुझे ख़ुशी होगी, और मैं बहुत ज्यादा सुखी और प्रसन्न हो जाऊँगा। हमेशा से यही कहा गया है कि "भलाई का बदला भलाई से और बुराई का बदला बुराई से दिया जाता है", तो फिर अभी क्यों नहीं? यदि तुम मेरा विरोध करना चाहते हो और मेरी आलोचना करना चाहते हो, तो मैं तुम्हारे मुँह को गला दूँगा, और उससे मुझे अपार प्रसन्नता होगी। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आख़िरकार जो कुछ तुमने किया है, वह सत्य नहीं है, ज़िंदगी से उसका कुछ लेना-देना तो बिलकुल भी नहीं है, जबकि मैं जो कुछ करता हूँ, वह सत्य होता है; मेरी समस्त क्रियाएँ मेरे कार्य के सिद्धांतों और मेरे द्वारा निर्धारित प्रशासनिक आदेशों के लिए प्रासंगिक होती हैं। अत: मेरी तुम सभी से गुज़ारिश है कि कुछ गुण संचित करो, इतनी बुराई करना बंद करो, और अपने फुरसत के समय में मेरी माँगों पर ध्यान दो। तब मुझे ख़ुशी होगी। तुम लोग जितना प्रयास देह-सुख के लिए करते हो, उसका हज़ारवाँ हिस्सा भी सत्य के लिए योगदान (या दान) करो, तो मैं कहता हूँ कि तुम बहुधा अपराध नहीं करोगे और अपना मुँह भी नहीं गलवाओगे। क्या यह स्पष्ट नहीं है?

तुम जितने अधिक अपराध करोगे, उतने ही कम अवसर तुम्हें अच्छी मंज़िल पाने के लिए मिलेंगे। इसके विपरीत, तुम जितने कम अपराध करोगे, परमेश्वर की प्रशंसा पाने के तुम्हारे अवसर उतने ही बेहतर हो जाएँगे। यदि तुम्हारे अपराध इतने बढ़ जाएँ कि मैं भी तुम्हें क्षमा न कर सकूँ, तो तुम क्षमा किए जाने के अपने अवसर पूरी तरह से गँवा दोगे। इस तरह, तुम्हारी मंज़िल उच्च नहीं, निम्न होगी। यदि तुम्हें मेरी बातों पर यकीन न हो, तो बेधड़क गलत काम करो और उसके नतीजे देखो। यदि तुम एक ईमानदार व्यक्ति हो और सत्य पर अमल करते हो, तो तुम्हें अपने अपराधों के लिए क्षमा किए जाने का अवसर अवश्य मिलेगा,

और तुम कम से कम अवज्ञा करोगे। और यदि तुम ऐसे व्यक्ति हो, जो सत्य पर अमल नहीं करना चाहता, तो परमेश्वर के समक्ष तुम्हारे अपराधों की संख्या निश्चित रूप से बढ़ जाएगी और तुम तब तक बार-बार अवज्ञा करोगे, जब तक कि सीमा पार नहीं कर लोगे, जो तुम्हारी पूरी तबाही का समय होगा। यह तब होगा, जब आशीष पाने का तुम्हारा खूबसूरत सपना चूर-चूर हो चुका हो जाएगा। अपने अपराधों को किसी अपरिपक्व या मूर्ख व्यक्ति की गलतियाँ मात्र मत समझो, यह बहाना मत करो कि तुमने सत्य पर अमल इसलिए नहीं किया, क्योंकि तुम्हारी ख़राब क्षमता ने उसे असंभव बना दिया था। इसके अतिरिक्त, स्वयं द्वारा किए गए अपराधों को किसी अज्ञानी व्यक्ति के कृत्य भी मत समझ लेना। यदि तुम स्वयं को क्षमा करने और अपने साथ उदारता का व्यवहार करने में अच्छे हो, तो मैं कहता हूँ, तुम एक कायर हो, जिसे कभी सत्य हासिल नहीं होगा, न ही तुम्हारे अपराध तुम्हारा पीछा छोड़ेंगे, वे तुम्हें कभी सत्य की अपेक्षाएँ पूरी नहीं करने देंगे और तुम्हें हमेशा के लिए शैतान का वफ़ादार साथी बनाए रखेंगे। तुम्हें फिर भी मेरी यही सलाह है : अपने गुप्त अपराधों का पता लगाने में विफल रहते हुए केवल अपनी मंज़िल पर ध्यान मत दो; अपने अपराधों को गंभीरता से लो, अपनी मंज़िल की चिंता में उनमें से किसी को नज़रअंदाज़ मत करो।

परमेश्वर के स्वभाव को समझना अति महत्वपूर्ण है

मैं तुम लोगों से आशा करता हूँ कि तुम सब बहुत सारी चीज़ें हासिल करोगे, लेकिन फिर भी, तुम्हारे सारे कार्यकलाप और तुम्हारे जीवन की सभी बातें, मेरी माँगों को पूरा करने में असमर्थ हैं, इसलिए सीधे मुद्दे पर आकर अपनी इच्छा तुम्हें समझाने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं है। यह मानते हुए कि तुम्हारी परखने और अभिस्वीकारने की योग्यताएँ बेहद कमज़ोर हैं, तुम सब पूरी तरह मेरे स्वभाव और सार से लगभग बिलकुल अनजान हो—तो ये अति आवश्यक है कि मैं इसके बारे में तुम्हें सूचित करूँ। इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम पहले कितना समझते थे या फिर तुम इन विषयों को समझने के इच्छुक हो या नहीं, मुझे उनके बारे में तुम्हें विस्तारपूर्वक बताना होगा। ये कोई ऐसे विषय नहीं हैं जो तुम लोगों के लिए बिलकुल अनजान हों, फिर भी इनमें जो अर्थ निहित है तुममें उसकी समझ, उससे परिचय की काफी कमी है। तुम में से बहुतों के पास थोड़ी-सी समझ है जो कि आंशिक और अधूरी है। सत्य का बेहतर ढंग से अभ्यास करने में तुम सबकी मदद करने के लिये अर्थात मेरे वचनों को बेहतर ढंग से अभ्यास में लाने के

लिये सबसे पहले तुम्हें इन विषयों से अवगत होना होगा। अन्यथा तुम लोगों का विश्वास अस्पष्ट, पाखंडी, और धर्म के रंग-ढंग में ढला होगा। यदि तुम परमेश्वर के स्वभाव को नहीं समझते, तब तुम्हारे लिए उस काम को करना असंभव होगा जो उसके लिए तुम्हें करना चाहिए। यदि तुम परमेश्वर के सार को नहीं जानते हो, तो उसके प्रति आदर और भय को धारण करना तुम्हारे लिए असंभव होगा; तुम केवल बेपरवाह यंत्रवत ढंग से काम करोगे और घुमा-फिराकर बात कहोगे, इसके अतिरिक्त असाध्य ईश-निन्दा करोगे। हालाँकि परमेश्वर के स्वभाव को समझना वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है, और परमेश्वर के अस्तित्व के ज्ञान को कभी भी नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता, फिर भी किसी ने भी पूरी तरह इस विषय का परीक्षण नहीं किया है या कोई उसकी गहराई में नहीं गया है। यह बिलकुल साफ-साफ देखा जा सकता है कि तुम सबने मेरे द्वारा दिए गए सभी प्रशासनिक आदेशों को अस्वीकार कर दिया है। यदि तुम लोग परमेश्वर के स्वभाव को नहीं समझते, तो बहुत संभव है कि तुम उसके स्वभाव को ठेस पहुँचा दो। उसके स्वभाव का अपमान ऐसा अपराध है जो स्वयं परमेश्वर के क्रोध को भड़काने के समान है, अगर ऐसा होता है तो अंततः तुम्हारे क्रियाकलापों का परिणाम प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन होगा। अब तुम्हें एहसास हो जाना चाहिए कि जब तुम उसके सार को जान जाते हो तो तुम परमेश्वर के स्वभाव को भी समझ सकते हो, और जब तुम परमेश्वर के स्वभाव को समझ जाते हो तो तुम उसके प्रशासनिक आदेशों को भी समझ जाओगे। कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रशासनिक आदेशों में जो निहित है उसमें से काफी कुछ परमेश्वर के स्वभाव का जिक्र करता है, परन्तु उसका सम्पूर्ण स्वभाव प्रशासनिक आदेशों में प्रकट नहीं किया गया है; अतः परमेश्वर के स्वभाव की समझ को और ज़्यादा विकसित करने के लिए तुम्हें एक कदम और आगे बढ़ना चाहिए।

आज मैं तुम सब से सामान्य बातचीत नहीं कर रहा हूँ, अतः तुम्हारे लिए उचित है कि तुम सब मेरे वचनों पर ध्यान दो और इसके अतिरिक्त, गहराई से उन पर विचार करो। इस से मेरा अभिप्राय यह है कि तुम सब ने उन वचनों के प्रति जो मैंने कहे हैं बहुत थोड़ा-सा प्रयास अर्पित किया है। तुम लोग परमेश्वर के स्वभाव पर मनन करने के और भी अनिच्छुक हो; शायद ही कभी कोई इसके लिए प्रयास करता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम्हारा विश्वास मात्र शब्दों का आडम्बर है। अभी भी, अपनी अति महत्वपूर्ण कमज़ोरियों के लिए तुम लोगों में से एक ने भी कोई सच्चा प्रयास नहीं किया है। तुम सबके लिए इतना दर्द सहने के बावजूद तुमने मुझे निराश किया है। इस में कोई आश्चर्य नहीं कि तुम लोगों में परमेश्वर के प्रति

सम्मान नहीं है और तुम्हारे जीवन सत्यविहीन हैं। इस प्रकार के लोगों को संत कैसे माना जा सकता है? स्वर्ग की व्यवस्था ऐसी बात को बर्दाश्त नहीं करेगी! चूंकि तुम लोगों में इसकी इतनी कम समझ है, तो मेरे पास और प्रयास करने के अलावा कोई चारा नहीं है।

परमेश्वर का स्वभाव एक ऐसा विषय है जो सबको बहुत अमूर्त दिखाई देता है, इसके अलावा यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे लोग आसानी से स्वीकार कर सकें, क्योंकि उसका स्वभाव मनुष्यों के व्यक्तित्व के समान नहीं है। परमेश्वर के पास भी आनन्द, क्रोध, दुखः और खुशी की भावनाएँ हैं, परन्तु ये भावनाएँ मनुष्यों की भावनाओं से जुदा हैं। परमेश्वर वो है जो वो है और उसके पास वो है जो उसके पास है। जो कुछ वह प्रकट और उजागर करता है वह उसके सार और उसकी पहचान के निरूपण हैं। उसका स्वरूप, उसका सार और उसकी पहचान ऐसी चीज़ें हैं जिनकी जगह कोई मनुष्य नहीं ले सकता है। उसका स्वभाव मानवजाति के प्रति उसके प्रेम, मानवजाति के लिए उसकी दिलासा, मानवजाति के प्रति नफरत, और उस से भी बढ़कर, मानवजाति की सम्पूर्ण समझ को समेटे हुए है। जबकि, मुनष्य का व्यक्तित्व आशावादी, जीवन्त, या निष्ठुर हो सकता है। परमेश्वर का स्वभाव सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों के शासक, सारी सृष्टि के प्रभु का स्वभाव है। उसका स्वभाव सम्मान, सामर्थ, कुलीनता, महानता, और सब से बढ़कर, सर्वोच्चता को दर्शाता है। उसका स्वभाव अधिकार का प्रतीक है, उन सबका प्रतीक है जो धर्मी, सुन्दर, और अच्छा है। इस के अतिरिक्त, यह उस परमेश्वर का भी प्रतीक है जिसे अंधकार और शत्रु बल के द्वारा हराया या आक्रमण नहीं किया जा सकता है,[क] साथ ही उस परमेश्वर का प्रतीक भी है जिसे किसी भी सृजे गए प्राणी के द्वारा ठेस नहीं पहुंचाई जा सकती है (न ही वह ठेस पहुंचाया जाना बर्दाश्त करेगा)।[ख] उसका स्वभाव सब से ऊँची सामर्थ का प्रतीक है। कोई भी मनुष्य या लोग उसके कार्य और उसके स्वभाव को बाधित नहीं कर सकते हैं। परन्तु मनुष्य का व्यक्तित्व, पशुओं से थोड़ा बेहतर होने के चिह्न से बढ़कर कुछ भी नहीं है। मनुष्य के पास अपने आप में और स्वयं में कोई अधिकार नहीं है, कोई स्वायत्तता नहीं है, स्वयं को श्रेष्ठ बनाने की कोई योग्यता नहीं है, बल्कि उसके सार में यह है कि वो हर प्रकार के व्यक्तियों, घटनाओं, या वस्तुओं के नियंत्रण में रहता है। परमेश्वर का आनन्द, धार्मिकता और ज्योति की उपस्थिति और अभ्युदय के कारण है; अँधकार और बुराई के विनाश के कारण है। वह मानवजाति तक ज्योति और अच्छा जीवन पहुंचाने में आनन्दित होता है; उसका आनन्द धार्मिक आनंद है, हर सकारात्मक चीज़ के अस्तित्व में होने का प्रतीक, और सब से बढ़कर कल्याण का प्रतीक है। परमेश्वर के क्रोध का कारण

मानवजाति को अन्याय की मौजूदगी और उसके हस्तक्षेप के कारण पहुँचने वाली हानि है; बुराई और अँधकार है, और ऐसी चीज़ों का अस्तित्व है जो सत्य को निकाल बाहर करती हैं, और उस से भी बढ़कर इसका कारण ऐसी चीज़ों का अस्तित्व है जो उसका विरोध करती हैं जो भला और सुन्दर है। उसका क्रोध एक चिह्न है कि वे सभी चीज़ें जो नकारात्मक हैं आगे से अस्तित्व में न रहें, और इसके अतिरिक्त यह उसकी पवित्रता का प्रतीक है। उसका दुखः मानवजाति के कारण है, जिसके लिए उसने आशा की है परन्तु वह अंधकार में गिर गई है, क्योंकि जो कार्य वह मनुष्यों पर करता है, वह उसकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता और क्योंकि वह जिस मानवजाति से प्रेम करता है वह समस्त मानवजाति ज्योति में जीवन नहीं जी सकती। वह दुखः की अनुभूति करता है अपनी निष्कपट मानवजाति के लिए, ईमानदार किन्तु अज्ञानी मनुष्य के लिए, और उस मनुष्य के लिए जो भला तो है लेकिन जिसमें खुद के विचारों की कमी है। उसका दुखः, उसकी भलाई और उसकी करूणा का चिह्न है, सुन्दरता और उदारता का चिह्न है। उसकी प्रसन्नता वास्तव में, उसके शत्रुओं को हराने और मनुष्यों के भले विश्वास को प्राप्त करने से आती है। इसके अतिरिक्त, सभी शत्रु ताकतों को भगाने और उनके विनाश से उपजती है और मनुष्यों के भले और शांतिपूर्ण जीवन को प्राप्त करने से आती है। परमेश्वर की प्रसन्नता, मनुष्य के आनंद के समान नहीं है; उसके बजाए, यह मनोहर फलों को एकत्र करने का एहसास है, एक एहसास जो आनंद से भी बढ़कर है। उसकी प्रसन्नता इस बात का चिह्न है कि मानवजाति दुखः की जंज़ीरों को तोड़कर अब आज़ाद हो गयी है, यह मानवजाति के ज्योति के संसार में प्रवेश करने का चिह्न है। दूसरी ओर, मनुष्यों की भावनाएँ सिर्फ उनके स्वयं के सारे स्वार्थों के उद्देश्य से जन्मती हैं, धार्मिकता, ज्योति, या जो सुन्दर है उसके लिए नहीं है, और स्वर्ग द्वारा प्रदत्त अनुग्रह के लिए तो बिल्कुल नहीं है। मानवजाति की भावनाएँ स्वार्थी हैं और अँधकार के संसार से वास्ता रखती हैं। वे परमेश्वर की इच्छा के लिए अस्तित्व में नहीं हैं, परमेश्वर की योजना के लिए तो बिल्कुल नहीं हैं। इसलिए मनुष्य और परमेश्वर का उल्लेख एक साँस में नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर सर्वदा सर्वोच्च है और हमेशा आदरणीय है, जबकि मनुष्य सर्वदा तुच्छ और हमेशा निकम्मा है। यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमेशा मनुष्यों के लिए बलिदान करता रहता है और अपने आप को समर्पित करता है; जबकि, मनुष्य हमेशा लेता है और सिर्फ अपने आप के लिए ही परिश्रम करता है। परमेश्वर सदा मानवजाति के अस्तित्व के लिए परिश्रम करता रहता है, फिर भी मनुष्य ज्योति और धार्मिकता में कभी भी कोई योगदान नहीं देता है। भले ही मनुष्य कुछ समय के लिए परिश्रम करे, लेकिन

वह इतना कमज़ोर होता है कि हल्के से झटके का भी सामना नहीं सकता है, क्योंकि मनुष्य का परिश्रम केवल अपने लिए होता है दूसरों के लिए नहीं। मनुष्य हमेशा स्वार्थी होता है, जबकि परमेश्वर सर्वदा स्वार्थविहीन होता है। परमेश्वर उन सब का स्रोत है जो धर्मी, अच्छा, और सुन्दर है, जबकि मनुष्य सब प्रकार की गन्दगी और बुराई का वाहक और प्रकट करने वाला है। परमेश्वर कभी भी अपनी धार्मिकता और सुन्दरता के सार-तत्व को नहीं बदलेगा, जबकि मनुष्य किसी भी समय, किसी भी परिस्थिति में, धार्मिकता से विश्वासघात कर सकता है और परमेश्वर से दूर जा सकता है।

हर एक वाक्य जो मैंने कहा है वह अपने भीतर परमेश्वर के स्वभाव को लिए हुए है। तुम सब यदि मेरे वचनों पर सावधानी से मनन करोगे तो अच्छा होगा, और तुम निश्चय ही उनसे बड़ा लाभ पाओगे। परमेश्वर के सार-तत्व को समझना बड़ा ही कठिन काम है, परन्तु मैं भरोसा करता हूँ कि तुम सभी के पास कम से कम परमेश्वर के स्वभाव का कुछ तो अनुमान है। तब, मैं आशा करता हूँ कि तुम सब परमेश्वर को अपमानित न करने वाले कार्य अधिक करोगे और मुझे दिखाओगे भी। तब ही मुझे पुनः आश्वासन मिलेगा। उदाहरण के लिए, परमेश्वर को हर समय अपने दिल में रखो। उसके वचनों के अनुसार कार्य करो। सब बातों में उसके विचारों की खोज करो, और ऐसा कोई भी काम मत करो जिससे परमेश्वर का अनादर और अपमान हो। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर को अपने हृदय के भविष्य के खालीपन को भरने के लिए अपने मन के पीछे के कोने में मत रखो। यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम परमेश्वर के स्वभाव को ठेस पहुंचाओगे। यदि मान लिया जाए कि तुमने अपने पूरे जीवन में परमेश्वर के विरूद्ध कभी भी ईशनिन्दा की टिप्पणी या शिकायत नहीं की है और मान लिया जाए कि तुम्हारे सम्पूर्ण जीवन में जो कुछ उसने तुम्हें सौंपा है उसे तुम यथोचित रूप से करने में समर्थ रहे हो, साथ ही उसके सभी वचनों के लिए पूर्णतया समर्पित रहे हो, तो तुम प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन करने से बच गये हो। उदाहरण के लिए, यदि तुम ने कभी ऐसा कहा है, "मैं ऐसा क्यों नहीं सोचता कि वह परमेश्वर है?", "मैं सोचता हूँ कि ये शब्द पवित्र आत्मा के प्रबोधन से बढ़कर और कुछ नहीं हैं", "मैं नहीं सोचता कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सब सही है", "परमेश्वर की मानवीयता मेरी मानवीयता से बढ़कर नहीं है", "परमेश्वर का वचन विश्वास करने योग्य है ही नहीं," या इस तरह की अन्य प्रकार की आलोचनात्मक टीका टिप्पणियाँ की हैं, तो मैं तुम्हें प्रोत्साहित करता हूँ कि तुम अपने पापों को अंगीकार करो और पश्चाताप करो। अन्यथा, तुम्हें पापों की क्षमा के लिए कभी अवसर नहीं मिलेगा, क्योंकि तुमने किसी मनुष्य को नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर को ठेस पहुँचाई है। तुम मान सकते हो

कि तुम मात्र एक मनुष्य की आलोचना कर रहे हो, किन्तु परमेश्वर का आत्मा इस रीति से इसे नहीं देखता है। उसके देह का अनादर उसके अनादर के बराबर है। यदि ऐसा है, तो क्या तुमने परमेश्वर के स्वभाव को ठेस नहीं पहुँचाई है? तुम्हें याद रखना होगा कि जो कुछ भी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किया गया है वह उसके देह में किए गए कार्य का बचाव करने के लिए है और इसलिए किया गया है ताकि इस कार्य को भली भांति किया जा सके। यदि तुम इसे महत्व न दो, तब मैं कहता हूँ कि तुम वो शख़्स हो जो परमेश्वर पर विश्वास करने में कभी सफल नहीं हो पायेगा। क्योंकि तुमने परमेश्वर के क्रोध को भड़का दिया है, इस लिए तुम्हें सबक सिखाने के लिए वो उचित दण्ड का इस्तेमाल करेगा।

परमेश्वर के सार-तत्व से परिचित होना कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। तुम्हें उसके स्वभाव को समझना होगा। इस तरह से तुम धीरे-धीरे, अनजाने में परमेश्वर के सार-तत्व से परिचित हो जाओगे, जब तुम इस ज्ञान में प्रवेश कर लोगे, तुम खुद को एक उच्चतर और अधिक ख़ूबसूरत राज में प्रवेश करता हुआ पाओगे। अंत में तुम अपनी घृणित आत्मा पर लज्जा महसूस करोगे, और तो और तुम अपनी शक्ल दिखाने से भी लजाओगे। उस समय, तुम्हारे आचरण में ऐसी बातें कम होती चली जाएंगी जो परमेश्वर के स्वभाव को ठेस पहुँचायें, तुम्हारा हृदय परमेश्वर के निकट होता जाएगा, और धीरे-धीरे उसके लिए तुम्हारे हृदय में प्रेम बढ़ता जाएगा। ये मानवजाति के ख़ूबसूरत राज में प्रवेश करने का एक चिह्न है। परन्तु तुम सबने इसे अभी प्राप्त नहीं किया है। अपनी नियति के लिए यहाँ-वहाँ भटकते हुए परमेश्वर के सार को जानने की रुचि किसमें है? अगर ये जारी रहा तो तुम अनजाने में प्रशासनिक आदेशों के विरूद्ध अपराध करोगे क्योंकि तुम परमेश्वर के स्वभाव के बारे में बहुत ही कम जानते हो। तो क्या अब तुम सब जो कर रहे हो वो परमेश्वर के स्वभाव के विरूद्ध तुम्हारे अपराधों की नींव नहीं डाल रहा? मेरा तुमसे यह अपेक्षा करना कि तुम परमेश्वर के स्वभाव को समझो, मेरे कार्य के विपरीत नहीं है। क्योंकि यदि तुम लोग बार-बार प्रशासनिक आदेशों के विरूद्ध अपराध करते रहोगे, तो तुम में से कौन है जो दण्ड से बच पाएगा? तो क्या मेरा कार्य पूरी तरह व्यर्थ नहीं हो जाएगा? इसलिए, मैं अभी भी माँग करता हूँ कि अपने कार्यों का सूक्ष्म परीक्षण करने के साथ-साथ, तुम जो कदम उठा रहे हो उसके प्रति सावधान रहो। यह एक बड़ी माँग है जो मैं तुम लोगों से करता हूँ और आशा करता हूँ कि तुम सब इस पर सावधानी से विचार करोगे और इस पर ईमानदारी से ध्यान दोगे। यदि एक दिन ऐसा आया जब तुम लोगों के कार्य मुझे प्रचण्ड रूप से क्रोधित कर दें, तब परिणाम सिर्फ तुम्हें ही भुगतने होंगे, और तुम लोगों के स्थान पर दण्ड को सहने वाला और कोई

नहीं होगा।

फ़ुटनोट :

क. मूल पाठ में "यह असमर्थ होने का प्रतीक है" लिखा है।

ख. मूल पाठ में "साथ ही अपमान के अयोग्य (और अपमान सहन न करने) होने का भी प्रतीक है" लिखा है।

पृथ्वी के परमेश्वर को कैसे जानें

तुम सभी परमेश्वर के समक्ष पुरस्कृत होने और उसका अनुग्रह पाने की इच्छा रखते हो; सभी ऐसी चीजों की आशा करते हैं, जब वे परमेश्वर में विश्वास रखना शुरू करते हैं, क्योंकि सभी उच्चतर चीजों की खोज में लीन रहते हैं, और कोई भी दूसरों से पीछे नहीं रहना चाहता। लोग बस ऐसे ही हैं। यही कारण है कि तुम लोगों में से बहुत-से लोग लगातार स्वर्ग के परमेश्वर की चापलूसी करके उसका अनुग्रह पाने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि वास्तव में, परमेश्वर के प्रति तुम लोगों की निष्ठा और निष्कपटता अपने प्रति तुम लोगों की निष्ठा और निष्कपटता से बहुत कम है। मैं यह क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि मैं परमेश्वर के प्रति तुम लोगों की निष्ठा को बिलकुल भी स्वीकार नहीं करता, और इसलिए भी, क्योंकि मैं उस परमेश्वर के अस्तित्व को नकारता हूँ, जो तुम लोगों के दिलों में है। दूसरे शब्दों में, जिस परमेश्वर की तुम लोग आराधना करते हो, जिस अस्पष्ट परमेश्वर का तुम लोग गुणगान करते हो, उसका कोई अस्तित्व नहीं है। मैं यह इतनी निश्चितता से इसलिए कह सकता हूँ, क्योंकि तुम लोग सच्चे परमेश्वर से बहुत दूर हो। तुम लोगों की निष्ठा का कारण तुम लोगों के दिलों के भीतर की मूर्ति है; इस बीच, मेरी नज़र में, जिस परमेश्वर को तुम लोग मानते हो, वह न तो बड़ा है और न ही छोटा, तुम लोग उसे केवल शब्दों से स्वीकार करते हो। जब मैं कहता हूँ कि तुम लोग परमेश्वर से बहुत दूर हो, तो मेरा मतलब है कि तुम लोग सच्चे परमेश्वर से दूर हो, जबकि अस्पष्ट परमेश्वर निकट प्रतीत होता है। जब मैं कहता हूँ, "बड़ा नहीं," तो यह इस संदर्भ में है कि आज तुम लोग जिस परमेश्वर में विश्वास रखते हो, वह केवल महान क्षमताओं से रहित कोई व्यक्ति प्रतीत होता है, ऐसा व्यक्ति जो बहुत बुलंद नहीं है। और जब मैं "छोटा नहीं" कहता हूँ, तो इसका मतलब है कि हालाँकि यह व्यक्ति हवा को नहीं बुला सकता और बारिश को आज्ञा नहीं दे सकता, फिर भी वह परमेश्वर के आत्मा को वह कार्य करने के लिए बुलाने में सक्षम है, जो आकाश और पृथ्वी को हिला देता है, और

लोगों को पूरी तरह से भौचक्का कर देता है। बाहरी तौर पर, तुम सभी पृथ्वी पर इस मसीह के प्रति अत्यधिक आज्ञाकारी दिखाई देते हो, किंतु सार में, तुम लोगों को उस में विश्वास नहीं है, और न ही तुम उससे प्यार करते हो। दूसरे शब्दों में, जिसमें तुम लोग वास्तव में विश्वास रखते हो, वह तुम लोगों की खुद की भावनाओं का अस्पष्ट परमेश्वर है, और जिसे तुम लोग वास्तव में प्यार करते हो, वह वो परमेश्वर है जिसके लिए तुम दिन-रात तरसते हो, किंतु जिसे तुमने व्यक्तिगत रूप से कभी नहीं देखा है। किंतु इस मसीह के प्रति तुम्हारा विश्वास खंडित और शून्य है। विश्वास का अर्थ है आस्था और भरोसा; प्रेम का अर्थ है व्यक्ति के हृदय में श्रद्धा और प्रशंसा, कभी वियोग नहीं। किंतु आज के मसीह के प्रति तुम लोगों का विश्वास और प्रेम इससे बहुत कम है। जब विश्वास की बात आती है, तो तुम लोग कैसे उसमें विश्वास रखते हो? जब प्यार की बात आती है, तो तुम लोग किस तरह से उससे प्यार करते हो? तुम लोगों को उसके स्वभाव की कोई समझ ही नहीं है, उसके सार को तो तुम बिलकुल भी नहीं जानते, तो फिर तुम लोग उसमें विश्वास कैसे रखते हो? उसमें तुम लोगों के विश्वास की वास्तविकता कहाँ है? तुम लोग उसे कैसे प्यार करते हो? उसके प्रति तुम लोगों के प्यार की वास्तविकता कहाँ है?

बहुत-से लोगों ने आज तक बिना किसी हिचकिचाहट के मेरा अनुसरण किया है। इसी तरह, तुम लोगों ने भी पिछले कई वर्षों में बहुत मेहनत की है। तुममें से प्रत्येक के सहज चरित्र और आदतों को मैंने शीशे की तरह साफ़ समझा है; तुममें से प्रत्येक के साथ बातचीत अत्यधिक दुष्कर रही है। अफ़सोस की बात यह है कि यद्यपि मैंने तुम लोगों के बारे में बहुत-कुछ समझा है, लेकिन तुम लोग मेरे बारे में कुछ भी नहीं समझते। कोई आश्चर्य नहीं कि लोग कहते हैं कि तुम लोग पलभर को भ्रमित होकर किसी की चाल में आ गए। वास्तव में, तुम लोग मेरे स्वभाव के बारे में कुछ नहीं समझते, और इसकी थाह तो तुम पा ही नहीं सकते कि मेरे मन में क्या है। आज, मेरे बारे में तुम लोगों की गलतफहमियाँ तेजी से बढ़ रही हैं, और मुझमें तुम लोगों का विश्वास एक भ्रमित विश्वास बना हुआ है। यह कहने के बजाय कि तुम लोगों को मुझमें विश्वास है, यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि तुम लोग चापलूसी से मेरा अनुग्रह पाने की कोशिश कर रहे हो और मेरी खुशामद कर रहे हो। तुम लोगों के इरादे बहुत सरल हैं : जो भी कोई मुझे पुरस्कृत कर सकता है, मैं उसी का अनुसरण करूँगा और जो भी कोई मुझे महान आपदाओं से बचाएगा, मैं उसी में विश्वास रखूँगा, चाहे वह परमेश्वर हो या कोई ईश्वर-विशेष हो। इनमें से किसी में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। तुम लोगों के बीच ऐसे कई लोग हैं, और यह स्थिति बहुत गंभीर है। अगर किसी दिन इस बात की

परीक्षा हो जाए कि तुम लोगों में से कितनों को मसीह में उसके सार में अंतर्दृष्टि के कारण विश्वास है, तो मुझे डर है कि तुम लोगों में से एक भी मेरे लिए संतोषजनक नहीं होगा। इसलिए तुममें से प्रत्येक के लिए इस प्रश्न पर विचार करना दुखदायी नहीं होगा : जिस परमेश्वर में तुम लोग विश्वास रखते हो, वह मुझसे बहुत अलग है, और ऐसा होने के कारण, परमेश्वर में तुम लोगों के विश्वास का सार क्या है? जितना अधिक तुम लोग अपने तथाकथित परमेश्वर में विश्वास रखते हो, उतना ही अधिक तुम लोग मुझसे दूर भटक जाते हो। तो फिर, इस मुद्दे का सार क्या है? यह निश्चित है कि तुम लोगों में से किसी ने भी कभी इस तरह के प्रश्न पर विचार नहीं किया है, लेकिन क्या तुम लोगों को इसकी गंभीरता का एहसास हुआ है? क्या तुम लोगों ने इस तरह से विश्वास रखते रहने के परिणामों के बारे में सोचा है?

आज, तुम लोग कई मुद्दों का सामना करते हो, और तुममें से एक भी समस्या-समाधान में माहिर नहीं है। अगर यह स्थिति जारी रही, तो नुकसान में केवल तुम्हीं लोग रहोगे। मैं मुद्दों की पहचान करने में तुम लोगों की मदद करूँगा, लेकिन उन्हें हल करना तुम्हीं लोगों पर है।

मैं उन लोगों में प्रसन्नता अनुभव करता हूँ जो दूसरों पर शक नहीं करते, और मैं उन लोगों को पसंद करता हूँ जो सच को तत्परता से स्वीकार कर लेते हैं; इन दो प्रकार के लोगों की मैं बहुत परवाह करता हूँ, क्योंकि मेरी नज़र में ये ईमानदार लोग हैं। यदि तुम धोखेबाज हो, तो तुम सभी लोगों और मामलों के प्रति सतर्क और शंकित रहोगे, और इस प्रकार मुझमें तुम्हारा विश्वास संदेह की नींव पर निर्मित होगा। मैं इस तरह के विश्वास को कभी स्वीकार नहीं कर सकता। सच्चे विश्वास के अभाव में तुम सच्चे प्यार से और भी अधिक वंचित हो। और यदि तुम परमेश्वर पर इच्छानुसार संदेह करने और उसके बारे में अनुमान लगाने के आदी हो, तो तुम यकीनन सभी लोगों में सबसे अधिक धोखेबाज हो। तुम अनुमान लगाते हो कि क्या परमेश्वर मनुष्य जैसा हो सकता है : अक्षम्य रूप से पापी, क्षुद्र चरित्र का, निष्पक्षता और विवेक से विहीन, न्याय की भावना से रहित, शातिर चालबाज़ियों में प्रवृत्त, विश्वासघाती और चालाक, बुराई और अँधेरे से प्रसन्न रहने वाला, आदि-आदि। क्या लोगों के ऐसे विचारों का कारण यह नहीं है कि उन्हें परमेश्वर का थोड़ा-सा भी ज्ञान नहीं है? ऐसा विश्वास पाप से कम नहीं है! कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो मानते हैं कि जो लोग मुझे खुश करते हैं, वे बिल्कुल ऐसे लोग हैं जो चापलूसी और खुशामद करते हैं, और जिनमें ऐसे हुनर नहीं होंगे, वे परमेश्वर के घर में अवांछनीय होंगे और वे वहाँ अपना स्थान खो देंगे। क्या तुम लोगों ने इतने बरसों में बस यही ज्ञान हासिल किया है? क्या तुम लोगों ने यही प्राप्त किया है? और मेरे बारे में तुम लोगों का

ज्ञान इन गलतफहमियों पर ही नहीं रुकता; परमेश्वर के आत्मा के खिलाफ तुम्हारी निंदा और स्वर्ग की बदनामी इससे भी बुरी बात है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि ऐसा विश्वास तुम लोगों को केवल मुझसे दूर भटकाएगा और मेरे खिलाफ बड़े विरोध में खड़ा कर देगा। कार्य के कई वर्षों के दौरान तुम लोगों ने कई सत्य देखे हैं, किंतु क्या तुम लोग जानते हो कि मेरे कानों ने क्या सुना है? तुम में से कितने लोग सत्य को स्वीकारने के लिए तैयार हैं? तुम सब लोग विश्वास करते हो कि तुम सत्य के लिए कीमत चुकाने को तैयार हो, किंतु तुम लोगों में से कितनों ने वास्तव में सत्य के लिए दुःख झेला है? तुम लोगों के हृदय में अधार्मिकता के सिवाय कुछ नहीं है, जिससे तुम लोगों को लगता है कि हर कोई, चाहे वह कोई भी हो, धोखेबाज और कुटिल है—यहाँ तक कि तुम यह भी विश्वास करते हो कि देहधारी परमेश्वर, किसी सामान्य मनुष्य की तरह, दयालु हृदय या कृपालु प्रेम से रहित हो सकता है। इससे भी अधिक, तुम लोग विश्वास करते हो कि कुलीन चरित्र और दयालु, कृपालु प्रकृति केवल स्वर्ग के परमेश्वर में ही होती है। तुम लोग विश्वास करते हो कि ऐसा कोई संत नहीं होता, कि केवल अंधकार एवं दुष्टता ही पृथ्वी पर राज करते हैं, जबकि परमेश्वर एक ऐसी चीज़ है, जिसे लोग अच्छाई और सुंदरता के लिए अपने मनोरथ सौंपते हैं, वह उनके द्वारा गढ़ी गई एक किंवदंती है। तुम लोगों के विचार से, स्वर्ग का परमेश्वर बहुत ही ईमानदार, धार्मिक और महान है, आराधना और श्रद्धा के योग्य है, जबकि पृथ्वी का यह परमेश्वर स्वर्ग के परमेश्वर का एक स्थानापन्न और साधन है। तुम विश्वास करते हो कि यह परमेश्वर स्वर्ग के परमेश्वर के समकक्ष नहीं हो सकता, उनका एक-साथ उल्लेख तो बिलकुल नहीं किया जा सकता। जब परमेश्वर की महानता और सम्मान की बात आती है, तो वे स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा से संबंधित होते हैं, किंतु जब मनुष्य की प्रकृति और भ्रष्टता की बात आती है, तो ये ऐसे लक्षण हैं जिनमें पृथ्वी के परमेश्वर का एक अंश है। स्वर्ग का परमेश्वर हमेशा उत्कृष्ट है, जबकि पृथ्वी का परमेश्वर हमेशा ही नगण्य, कमज़ोर और अक्षम है। स्वर्ग के परमेश्वर में भावना नहीं, केवल धार्मिकता है, जबकि धरती के परमेश्वर के केवल स्वार्थपूर्ण उद्देश्य हैं और वह निष्पक्षता और विवेक से रहित है। स्वर्ग के परमेश्वर में थोड़ी-सी भी कुटिलता नहीं है और वह हमेशा विश्वसनीय है, जबकि पृथ्वी के परमेश्वर में हमेशा बेईमानी का एक पक्ष होता है। स्वर्ग का परमेश्वर मनुष्यों से बहुत प्रेम करता है, जबकि पृथ्वी का परमेश्वर मनुष्य की पर्याप्त परवाह नहीं करता, यहाँ तक कि उसकी पूरी तरह से उपेक्षा करता है। यह त्रुटिपूर्ण ज्ञान तुम लोगों के हृदय में काफी समय से रखा गया है और भविष्य में भी बनाए रखा जा सकता है। तुम लोग मसीह के सभी कर्मों पर अधार्मिकता के दृष्टिकोण

से विचार करते हो और उसके सभी कार्यों और साथ ही उसकी पहचान और सार का मूल्यांकन दुष्ट के परिप्रेक्ष्य से करते हो। तुम लोगों ने बहुत गंभीर गलती की है और ऐसा काम किया है, जो तुमसे पहले के लोगों ने कभी नहीं किया। अर्थात्, तुम लोग केवल अपने सिर पर मुकुट धारण करने वाले स्वर्ग के उत्कृष्ट परमेश्वर की सेवा करते हो और उस परमेश्वर की सेवा कभी नहीं करते, जिसे तुम इतना महत्वहीन समझते हो, मानो वह तुम लोगों को दिखाई तक न देता हो। क्या यह तुम लोगों का पाप नहीं है? क्या यह परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध तुम लोगों के अपराध का विशिष्ट उदाहरण नहीं है? तुम लोग स्वर्ग के परमेश्वर की आराधना करते हो। तुम बुलंद छवियों से प्रेम करते हो और उन लोगों का सम्मान करते हो, जो अपनी वाक्पटुता के लिए प्रतिष्ठित हैं। तुम सहर्ष उस परमेश्वर द्वारा नियंत्रित हो जाते हो, जो तुम लोगों के हाथ धन-दौलत से भर देता है, और उस परमेश्वर के लिए बहुत अधिक लालायित रहते हो जो तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकता है। तुम केवल इस परमेश्वर की आराधना नहीं करते, जो अभिमानी नहीं है; तुम केवल इस परमेश्वर के साथ जुड़ने से घृणा करते हो, जिसे कोई मनुष्य ऊँची नज़र से नहीं देखता। तुम केवल इस परमेश्वर की सेवा करने के अनिच्छुक हो, जिसने तुम्हें कभी एक पैसा नहीं दिया है, और जो तुम्हें अपने लिए लालायित करवाने में असमर्थ है, वह केवल यह अनाकर्षक परमेश्वर ही है। इस प्रकार का परमेश्वर तुम्हारे क्षितिज को विस्तृत करने में, तुम्हें खज़ाना मिल जाने का एहसास करने में सक्षम नहीं बना सकता, तुम्हारी इच्छा पूरी तो बिलकुल नहीं कर सकता। तो फिर तुम उसका अनुसरण क्यों करते हो? क्या तुमने कभी इस तरह के प्रश्न पर विचार किया है? तुम जो करते हो, वह केवल इस मसीह का ही अपमान नहीं करता, बल्कि, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, वह स्वर्ग के परमेश्वर का अपमान करता है। मेरे विचार से परमेश्वर पर तुम लोगों के विश्वास का यह उद्देश्य नहीं है!

तुम लोग लालायित रहते हो कि परमेश्वर तुम पर प्रसन्न हो, मगर तुम लोग परमेश्वर से दूर हो। यह क्या मामला है? तुम लोग केवल उसके वचनों को स्वीकार करते हो, उसके व्यवहार या काट-छाँट को नहीं, उसके प्रत्येक प्रबंध को स्वीकार करने, उस पर पूर्ण विश्वास रखने में तो तुम बिलकुल भी समर्थ नहीं हो। तो आखिर मामला क्या है? अंतिम विश्लेषण में, तुम लोगों का विश्वास अंडे के खाली खोल के समान है, जो कभी चूज़ा पैदा नहीं कर सकता। क्योंकि तुम लोगों का विश्वास तुम्हारे लिए सत्य लेकर नहीं आया है या उसने तुम्हें जीवन नहीं दिया है, बल्कि इसके बजाय तुम लोगों को पोषण और आशा का एक भ्रामक बोध दिया है। पोषण और आशा का बोध ही परमेश्वर पर तुम लोगों के विश्वास का उद्देश्य है, सत्य और

जीवन नहीं। इसलिए मैं कहता हूँ कि परमेश्वर पर तुम लोगों के विश्वास का आधार चापलूसी और बेशर्मी से परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने की कोशिश के अलावा और कुछ नहीं रहा है, और उसे किसी भी तरह से सच्चा विश्वास नहीं माना जा सकता। इस प्रकार के विश्वास से कोई चूज़ा कैसे पैदा हो सकता है? दूसरे शब्दों में, इस तरह के विश्वास से क्या हासिल हो सकता है? परमेश्वर पर तुम लोगों के विश्वास का प्रयोजन तुम्हारे अपने लक्ष्य पूरे करने के लिए परमेश्वर का उपयोग करना है। क्या यह तुम्हारे द्वारा परमेश्वर के स्वभाव के अपमान का एक और तथ्य नहीं है? तुम लोग स्वर्ग के परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हो, परंतु पृथ्वी के परमेश्वर के अस्तित्व से इनकार करते हो; लेकिन मैं तुम लोगों के विचार स्वीकार नहीं करता; मैं केवल उन लोगों की सराहना करता हूँ, जो अपने पैरों को ज़मीन पर रखते हैं और पृथ्वी के परमेश्वर की सेवा करते हैं, किंतु उनकी सराहना कभी नहीं करता, जो पृथ्वी के मसीह को स्वीकार नहीं करते। ऐसे लोग स्वर्ग के परमेश्वर के प्रति कितने भी वफादार क्यों न हों, अंत में वे दुष्टों को दंड देने वाले मेरे हाथ से बचकर नहीं निकल सकते। ये लोग दुष्ट हैं; ये वे बुरे लोग हैं, जो परमेश्वर का विरोध करते हैं और जिन्होंने कभी खुशी से मसीह का आज्ञापालन नहीं किया है। निस्संदेह, उनकी संख्या में वे सब सम्मिलित हैं जो मसीह को नहीं जानते, और इसके अलावा, उसे स्वीकार नहीं करते। क्या तुम समझते हो कि जब तक तुम स्वर्ग के परमेश्वर के प्रति वफादार हो, तब तक मसीह के प्रति जैसा चाहो वैसा व्यवहार कर सकते हो? गलत! मसीह के प्रति तुम्हारी अज्ञानता स्वर्ग के परमेश्वर के प्रति अज्ञानता है। तुम स्वर्ग के परमेश्वर के प्रति चाहे कितने भी वफादार क्यों न हो, यह मात्र खोखली बात और दिखावा है, क्योंकि पृथ्वी का परमेश्वर मनुष्य के लिए न केवल सत्य और अधिक गहरा ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है, बल्कि इससे भी अधिक, मनुष्य की भर्त्सना करने और उसके बाद दुष्टों को दंडित करने के लिए तथ्य हासिल करने में सहायक है। क्या तुमने यहाँ लाभदायक और हानिकारक परिणामों को समझ लिया है? क्या तुमने उनका अनुभव किया है? मैं चाहता हूँ कि तुम लोग शीघ्र ही किसी दिन इस सत्य को समझो : परमेश्वर को जानने के लिए तुम्हें न केवल स्वर्ग के परमेश्वर को जानना चाहिए, बल्कि, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, पृथ्वी के परमेश्वर को भी जानना चाहिए। अपनी प्राथमिकताओं को गड्डमड्ड मत करो या गौण को मुख्य की जगह मत लेने दो। केवल इसी तरह से तुम परमेश्वर के साथ वास्तव में एक अच्छा संबंध बना सकते हो, परमेश्वर के नज़दीक हो सकते हो, और अपने हृदय को उसके और अधिक निकट ले जा सकते हो। यदि तुम काफी वर्षों से विश्वासी रहे हो और लंबे समय से मुझसे जुड़े हुए हो, किंतु फिर भी मुझसे दूर हो, तो मैं

कहता हूँ कि अवश्य ही तुम प्रायः परमेश्वर के स्वभाव का अपमान करते हो, और तुम्हारे अंत का अनुमान लगाना बहुत मुश्किल होगा। यदि मेरे साथ कई वर्षों का संबंध न केवल तुम्हें ऐसा मनुष्य बनाने में असफल रहा है जिसमें मानवता और सत्य हो, बल्कि, इससे भी अधिक, उसने तुम्हारे दुष्ट तौर-तरीकों को तुम्हारी प्रकृति में बद्धमूल कर दिया है, और न केवल तुम्हारा अहंकार पहले से दोगुना हो गया है, बल्कि मेरे बारे में तुम्हारी गलतफहमियाँ भी कई गुना बढ़ गई हैं, यहाँ तक कि तुम मुझे अपना छोटा सह-अपराधी मान लेते हो, तो मैं कहता हूँ कि तुम्हारा रोग अब त्वचा में ही नहीं रहा, बल्कि तुम्हारी हड्डियों तक में घुस गया है। तुम्हारे लिए बस यही शेष बचा है कि तुम अपने अंतिम संस्कार की व्यवस्था किए जाने की प्रतीक्षा करो। तब तुम्हें मुझसे प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है कि मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँ, क्योंकि तुमने मृत्यु के योग्य पाप किया है, एक अक्षम्य पाप किया है। मैं तुम पर दया कर भी दूँ, तो भी स्वर्ग का परमेश्वर तुम्हारा जीवन लेने पर जोर देगा, क्योंकि परमेश्वर के स्वभाव के प्रति तुम्हारा अपराध कोई साधारण समस्या नहीं है, बल्कि बहुत ही गंभीर प्रकृति का है। जब समय आएगा, तो मुझे दोष मत देना कि मैंने तुम्हें पहले नहीं बताया था। मैं फिर से कहता हूँ : जब तुम मसीह—पृथ्वी के परमेश्वर—से एक साधारण मनुष्य के रूप में जुड़ते हो, अर्थात् जब तुम यह मानते हो कि यह परमेश्वर एक व्यक्ति के अलावा कुछ नहीं है, तो तुम नष्ट हो जाओगे। तुम सबके लिए मेरी यही एकमात्र चेतावनी है।

एक बहुत गंभीर समस्या : विश्वासघात (1)

जल्द ही, मेरा कार्य पूरा हो जाएगा। कई वर्ष जो हमने एक साथ बिताए हैं वे असहनीय यादें बन गए हैं। मैंने अनवरत अपने वचनों को दोहराया है और हमेशा अपने नये कार्य को प्रसारित किया है। निस्संदेह, मैं जो कार्य करता हूँ उसके प्रत्येक अंश में मेरी सलाह एक आवश्यक घटक है। मेरी सलाह के बिना, तुम सभी लोग भटक जाओगे, यहाँ तक कि पूरी तरह उलझन में पड़ जाओगे। मेरा कार्य अब समाप्त होने ही वाला है और अपने अंतिम चरण में है। मैं अभी भी सलाह प्रदान करने का कार्य करना चाहता हूँ, अर्थात्, तुम लोगों के सुनने के लिए सलाह के वचन पेश करना चाहता हूँ। मैं केवल यह आशा करता हूँ कि तुम लोग मेरे श्रमसाध्य प्रयासों को बर्बाद नहीं करोगे और इसके अलावा, तुम लोग मेरी सहृदय परवाह को समझोगे, और मेरे वचनों को एक इंसान के रूप में अपने व्यवहार का आधार बनाओगे। चाहे ये वचन ऐसे हों जिन्हें तुम लोग सुनना चाहो या न चाहो, चाहे ये वचन ऐसे हों जिन्हें स्वीकार कर तुम लोगों को आनंद हो

या तुम इसे बस असहजता के साथ ही स्वीकार कर सको, तुम लोगों को उन्हें गंभीरता से अवश्य लेना चाहिए। अन्यथा, तुम लोगों के लापरवाह और निश्चिंत स्वभाव और व्यवहार मुझे गंभीर रूप से परेशान कर देंगे और, निश्चय ही, मुझे घृणा से भर देंगे। मुझे बहुत आशा है कि तुम सभी लोग मेरे वचनों को बार-बार—हजारों बार—पढ़ सकते हो और यहाँ तक कि उन्हें याद भी कर सकते हो। केवल इसी तरीके से तुम लोग से मेरी अपेक्षाओं पर सफल हो सकोगे। हालाँकि, अभी तुम लोगों में से कोई भी इस तरह से नहीं जी रहा है। इसके विपरीत, तुम सभी एक ऐयाश जीवन में डूबे हुए हो, जी-भर कर खाने-पीने का जीवन, और तुम लोगों में से कोई भी अपने हृदय और आत्मा को समृद्ध करने के लिए मेरे वचनों का उपयोग नहीं करता है। यही कारण है कि मैंने मनुष्य जाति के असली चेहरे के बारे में यह निष्कर्ष निकाला है : मनुष्य कभी भी मेरे साथ विश्वासघात कर सकता है और कोई भी मेरे वचनों के प्रति पूर्णतः निष्ठावान नहीं हो सकता है।

"मनुष्य शैतान के द्वारा इतना भ्रष्ट किया गया है कि अब और वह मनुष्य जैसा प्रतीत ही नहीं होता है।" इस वाक्यांश को अब अधिकांश लोग एक हद तक मान गए हैं। मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि मैं जिस "मान्यता" की बात कर रहा हूँ वह वास्तविक ज्ञान के विपरीत केवल सतही अभिस्वीकृति है। चूँकि तुम में से कोई भी स्वयं का सही तरीके से मूल्यांकन या पूरी तरह से विश्लेषण नहीं कर सकता है, इसलिए तुम लोग मेरे वचनों पर हमेशा अनिश्चित रहते हो। लेकिन इस बार, मैं तुम लोगों में मौजूद सबसे गंभीर समस्या की व्याख्या करने के लिए तथ्यों का उपयोग कर रहा हूँ। वह समस्या है "विश्वासघात"। तुम सभी लोग "विश्वासघात" शब्द से परिचित हो क्योंकि अधिकांश लोगों ने दूसरों को धोखा देने वाला कुछ काम किया है, जैसे कि किसी पति का अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात करना, किसी पत्नी का अपने पति के साथ विश्वासघात करना, किसी बेटे का अपने पिता के साथ विश्वासघात करना, किसी बेटी का अपनी माँ के साथ विश्वासघात करना, किसी गुलाम का अपने मालिक के साथ विश्वासघात करना, दोस्तों का एक दूसरे के साथ विश्वासघात करना, रिश्तेदारों का एक दूसरे के साथ विश्वासघात करना, विक्रेताओं का क्रेताओं के साथ विश्वासघात करना, इत्यादि। इन सभी उदाहरणों में विश्वासघात का सार निहित है। संक्षेप में, विश्वासघात व्यवहार का एक ऐसा रूप है जिसमें वादा तोड़ा जाता है, नैतिक सिद्धांतों का उल्लंघन किया जाता है, या मानवीय नैतिकता के विरुद्ध काम किया जाता है, जो मानवता के ह्रास को प्रदर्शित करता है। आम तौर पर, इस दुनिया में जन्म लेने वाले एक इंसान के नाते, तुमने कुछ ऐसा किया होगा जिसमें सत्य के साथ विश्वासघात निहित है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हें याद है या नहीं कि

तुमने कभी किसी दूसरे को धोखा देने के लिए कुछ किया है, या तुमने पहले कई बार दूसरों को धोखा दिया है। चूँकि तुम अपने माता-पिता या दोस्तों को धोखा देने में सक्षम हो, तो तुम दूसरों के साथ भी विश्वासघात करने में सक्षम हो, और इससे भी बढ़कर तुम मुझे धोखा देने में और उन चीजों को करने में सक्षम हो जो मेरे लिए घृणित हैं। दूसरे शब्दों में, विश्वासघात महज़ एक सतही अनैतिक व्यवहार नहीं है, बल्कि यह कुछ ऐसा है जो सत्य के साथ टकराता है। यह वास्तव में मानव जाति के मेरे प्रति विरोध और अवज्ञा का स्रोत है। यही कारण है कि मैंने निम्नलिखित कथन में इसका सारांश दिया है : विश्वासघात मनुष्य की प्रकृति है, और यह प्रकृति मेरे साथ प्रत्येक व्यक्ति के सामंजस्य की बहुत बड़ी शत्रु है।

ऐसा व्यवहार जो पूरी तरह से मेरी आज्ञा का पालन नहीं कर सकता है, विश्वासघात है। ऐसा व्यवहार जो मेरे प्रति निष्ठावान नहीं हो सकता है विश्वासघात है। मेरे साथ छल करना और मेरे साथ धोखा करने के लिए झूठ का उपयोग करना, विश्वासघात है। धारणाओं से भरा होना और हर जगह उन्हें फैलाना विश्वासघात है। मेरी गवाहियों और हितों की रक्षा नहीं कर पाना विश्वासघात है। दिल में मुझसे दूर होते हुए भी झूठमूठ मुस्कुराना विश्वासघात है। ये सभी विश्वासघात के काम हैं जिन्हें करने में तुम लोग हमेशा सक्षम रहे हो, और ये तुम लोगों के बीच आम बात है। तुम लोगों में से शायद कोई भी इसे समस्या न माने, लेकिन मैं ऐसा नहीं सोचता हूँ। मैं अपने साथ किसी व्यक्ति के विश्वासघात को एक तुच्छ बात नहीं मान सकता हूँ, और निश्चय ही, मैं इसे अनदेखा नहीं कर सकता हूँ। अब, जबकि मैं तुम लोगों के बीच कार्य कर रहा हूँ, तो तुम लोग इस तरह से व्यवहार कर रहे हो—यदि किसी दिन तुम लोगों की निगरानी करने के लिए कोई न हो, तो क्या तुम लोग ऐसे डाकू नहीं बन जाओगे जिन्होंने खुद को राजा घोषित कर दिया है? जब ऐसा होगा और तुम विनाश का कारण बनोगे, तब तुम्हारे पीछे उस गंदगी को कौन साफ करेगा ? तुम सोचते हो कि विश्वासघात के कुछ कार्य तुम्हारे सतत व्यवहार नहीं, बल्कि मात्र कभी-कभी होने वाली घटनाएँ हैं, और उनकी इतने गंभीर तरीके से चर्चा नहीं होनी चाहिए कि तुम्हारे अहं को ठेस पहुँचे। यदि तुम वास्तव में ऐसा मानते हो, तो तुम में समझ का अभाव है। इस तरीके से सोचना विद्रोह का एक नमूना और विशिष्ट उदाहरण है। मनुष्य की प्रकृति उसका जीवन है; यह एक सिद्धांत है जिस पर वह जीवित रहने के लिए निर्भर करता है और वह इसे बदलने में असमर्थ है। विश्वासघात की प्रकृति भी वैसी ही है—यदि तुम किसी रिश्तेदार या मित्र को धोखा देने के लिए कुछ कर सकते हो, तो यह साबित करता है कि यह तुम्हारे जीवन और तुम्हारी प्रकृति का हिस्सा है जिसके साथ तुम पैदा हुए थे। यह कुछ ऐसा है जिससे कोई

भी इनकार नहीं कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति अन्य लोगों की चीजें चुराना पसंद करता है, तो यह "चुराना पसंद करना" उसके जीवन का एक हिस्सा है, भले ही कभी-कभी वह चोरी करता है, और अन्य समय वह नहीं करता है। चाहे वह चोरी करता है अथवा नहीं, इससे यह साबित नहीं हो सकता कि उसका चोरी करना केवल एक प्रकार का व्यवहार है। बल्कि, इससे साबित होता है कि उसका चोरी करना उसके जीवन का एक हिस्सा, अर्थात्, उसकी प्रकृति है। कुछ लोग पूछेंगे : चूँकि यह उसकी प्रकृति है, तो ऐसा क्यों है कि वह कभी-कभी अच्छी चीजें देखता है लेकिन उन्हें चोरी नहीं करता है? उत्तर बहुत आसान है। उसके चोरी नहीं करने के कई कारण हैं। हो सकता है कि वह इसलिए चोरी न करता हो क्योंकि चौकस निगाहों के नीचे से निकाल ले जाने के लिए वस्तु बहुत बड़ी हो, या चोरी करने के लिए उपयुक्त समय न हो, या वस्तु बहुत महँगी हो, बहुत कड़े पहरे में हो, या शायद उसकी इस चीज में विशेष रूप से रुचि न हो, या उसे यह न समझ आये कि उसके लिए इसका क्या उपयोग है, इत्यादि। ये सभी कारण संभव हैं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कोई वस्तु चुराता है या नहीं, इससे यह साबित नहीं होता है कि यह विचार उसके अंदर केवल क्षण भर के लिये रहता है, एक पल के लिए कौंधता है। इसके विपरीत, यह उसकी प्रकृति का एक हिस्सा है जिसमें सुधार लाना कठिन है। ऐसा व्यक्ति केवल एक बार चोरी करके संतुष्ट नहीं होता है; बल्कि जब भी कोई अच्छी वस्तु या उपयुक्त स्थिति उसके सामने आती है, तो दूसरों की चीजों को अपनी बना लेने के ऐसे विचार उसमें जाग जाते हैं। यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि यह विचार केवल समय-समय पर नहीं उठता है, बल्कि इस व्यक्ति की स्वयं की प्रकृति में ही शामिल है।

कोई भी अपना सच्चा चेहरा दर्शाने के लिए अपने स्वयं के शब्दों और क्रियाओं का उपयोग कर सकता है। यह सच्चा चेहरा निश्चित रूप से उसकी प्रकृति है। यदि तुम बहुत कुटिल ढंग से बोलने वाले व्यक्ति हो, तो तुम कुटिल प्रकृति के हो। यदि तुम्हारी प्रकृति धूर्त है, तो तुम कपटी ढंग से काम करते हो, और इससे तुम बहुत आसानी से लोगों को धोखा दे देते हो। यदि तुम्हारी प्रकृति अत्यंत कुटिल है, तो हो सकता है कि तुम्हारे वचन सुनने में सुखद हों, लेकिन तुम्हारे कार्य तुम्हारी कुटिल चालों को छिपा नहीं सकते हैं। यदि तुम्हारी प्रकृति आलसी है, तो तुम जो कुछ भी कहते हो, उस सबका उद्देश्य तुम्हारी लापरवाही और अकर्मण्यता के लिए उत्तरदायित्व से बचना है, और तुम्हारे कार्य बहुत धीमे और लापरवाह होंगे, और सच्चाई को छिपाने में बहुत माहिर होंगे। यदि तुम्हारी प्रकृति सहानुभूतिपूर्ण है, तो तुम्हारे वचन

तर्कसंगत होंगे और तुम्हारे कार्य भी सत्य के अत्यधिक अनुरूप होंगे। यदि तुम्हारी प्रकृति निष्ठावान है, तो तुम्हारे वचन निश्चय ही खरे होंगे और जिस तरीके से तुम कार्य करते हो, वह भी व्यावहारिक और यथार्थवादी होगा, जिसमें ऐसा कुछ न होगा जिससे तुम्हारे मालिक को असहजता महसूस हो। यदि तुम्हारी प्रकृति कामुक या धन लोलुप है, तो तुम्हारा हृदय प्रायः इन चीजों से भरा होगा और तुम बेइरादा कुछ विकृत, अनैतिक काम करोगे, जिन्हें भूलना लोगों के लिए कठिन होगा और वे काम उनमें घृणा पैदा करेंगे। जैसा कि मैंने कहा है, यदि तुम्हारी प्रकृति विश्वासघात की है तो तुम मुश्किल से ही स्वयं को इससे छुड़ा सकते हो। इसे भाग्य पर मत छोड़ दो कि अगर तुम लोगों ने किसी के साथ गलत नहीं किया है तो तुम लोगों की विश्वासघात की प्रकृति नहीं है। यदि तुम ऐसा ही सोचते हो तो तुम घृणित हो। मेरे सभी वचन, हर बार जो मैं बोलता हूँ, वे सभी लोगों पर लक्षित होते हैं, न कि केवल एक व्यक्ति या एक प्रकार के व्यक्ति पर। सिर्फ इसलिए कि तुमने मेरे साथ एक मामले में विश्वासघात नहीं किया है, यह साबित नहीं करता कि तुम मेरे साथ किसी अन्य मामले में विश्वासघात नहीं कर सकते हो। कुछ लोग अपने विवाह में असफलताओं के दौरान सत्य की तलाश करने में अपना आत्मविश्वास खो देते हैं। कुछ लोग परिवार के टूटने के दौरान मेरे प्रति निष्ठावान होने के अपने दायित्व को त्याग देते हैं। कुछ लोग खुशी और उत्तेजना के एक पल की तलाश करने के लिए मेरा परित्याग कर देते हैं। कुछ लोग प्रकाश में रहने और पवित्र आत्मा के कार्य का आनंद प्राप्त करने के बजाय एक अंधेरी खोह में पड़े रहना पसंद करेंगे। कुछ लोग धन की अपनी लालसा को संतुष्ट करने के लिए दोस्तों की सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं, और अब भी अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं कर सकते हैं और स्वयं में बदलाव नहीं कर सकते हैं। कुछ लोग मेरा संरक्षण प्राप्त करने के लिए केवल अस्थायी रूप से मेरे नाम के अधीन रहते हैं, जबकि अन्य लोग केवल दबाव में मेरे प्रति थोड़ा-सा समर्पित होते हैं क्योंकि वे जीवन से चिपके रहते हैं और मृत्यु से डरते हैं। क्या ये और अन्य अनैतिक और, इससे भी बढ़कर, अशोभनीय कार्य ऐसे व्यवहार नहीं हैं जिनसे लोग लंबे समय पहले अपने दिलों की गहराई में मेरे साथ विश्वासघात करते आ रहे हैं? निस्संदेह, मुझे पता है कि लोग मुझसे विश्वासघात करने की पहले से योजना नहीं बनाते; उनका विश्वासघात उनकी प्रकृति का स्वाभाविक रूप से प्रकट होना है। कोई मेरे साथ विश्वासघात नहीं करना चाहता है, और कोई भी इस बात से खुश नहीं है कि उसने मेरे साथ विश्वासघात करने का कोई काम किया है। इसके विपरीत, वे डर से काँप रहे हैं, है ना? तो क्या तुम लोग इस बारे में सोच रहे हो कि तुम लोग इन विश्वासघातों से कैसे छुटकारा पा सकते हो,

और कैसे तुम लोग वर्तमान परिस्थिति को बदल सकते हो?

एक बहुत गंभीर समस्या : विश्वासघात (2)

मनुष्य का स्वभाव मेरे सार से काफी भिन्न है, क्योंकि मनुष्य की भ्रष्ट प्रकृति पूरी तरह से शैतान से उत्पन्न होती है और मनुष्य की प्रकृति को शैतान द्वारा संसाधित और भ्रष्ट किया गया है। अर्थात्, मनुष्य इसकी बुराई और कुरूपता के प्रभाव के अधीन जीता है। मनुष्य सत्य के संसार या पवित्र वातावरण में बड़ा नहीं होता है, और प्रकाश में तो बिलकुल नहीं। इसलिए, जन्म से ही किसी व्यक्ति की प्रकृति के भीतर सत्य सहज रूप से निहित हो, यह संभव नहीं है, और कोई परमेश्वर के भय, परमेश्वर की आज्ञाकारिता के सार के साथ तो पैदा हो ही नहीं सकता। इसके विपरीत, लोग एक ऐसी प्रकृति से युक्त होते हैं जो परमेश्वर का विरोध करती है, परमेश्वर की अवज्ञा करती है, और जिसमें सत्य के लिए कोई प्रेम नहीं होता। यही प्रकृति वह समस्या है जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ—विश्वासघात। विश्वासघात प्रत्येक व्यक्ति के परमेश्वर के प्रतिरोध का स्रोत है। यह एक ऐसी समस्या है जो केवल मनुष्य में विद्यमान है और मुझमें नहीं है। कुछ लोग पूछेंगे : चूँकि सभी मनुष्य दुनिया में वैसे ही रह रहे हैं जैसे मसीह रहता है, तो ऐसा क्यों है कि सभी मनुष्यों की ऐसी प्रकृति है जो परमेश्वर को धोखा देती है, लेकिन मसीह की प्रकृति ऐसी नहीं है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे तुम लोगों को स्पष्ट रूप से अवश्य समझाया जाना चाहिए।

मानव जाति का अस्तित्व बार-बार आत्मा के देहधारण पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक व्यक्ति तब देह में मानव जीवन प्राप्त करता है जब उसकी आत्मा देहधारण करती है। एक व्यक्ति की देह का जन्म होने के बाद, उसका जीवन तब तक रहता है जब तक देह की अंतिम सीमा नहीं आ जाती है, अर्थात्, वो अंतिम क्षण जब आत्मा अपना आवरण छोड़ देता है। यह प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है, व्यक्ति की आत्मा बारम्बार आती और जाती है, और इस प्रकार मानवजाति का अस्तित्व बना रहता है। शरीर का जीवन मनुष्य के आत्मा का भी जीवन है और मनुष्य का आत्मा मनुष्य के शरीर के अस्तित्व को सहारा देता है। अर्थात्, प्रत्येक व्यक्ति का जीवन उसकी आत्मा से आता है; और जीवन देह में अंतर्निहित नहीं है। इस प्रकार, मनुष्य की प्रकृति उसकी आत्मा से आती है, न कि उसके शरीर से। प्रत्येक व्यक्ति का केवल आत्मा ही जानता है कि कैसे उसने शैतान के प्रलोभनों, यातना और भ्रष्टता का अनुभव किया है। मनुष्य के शरीर के लिए ये बातें ज्ञानातीत हैं। इसलिए, मानवजाति अनचाहे ही उत्तरोत्तर अधिक अंधकारमय,

कलुषित और दुष्ट बनती जाती है, जबकि मेरे और मनुष्य के बीच की दूरी अधिक से अधिक बढ़ती जाती है, और मानवजाति का जीवन और अधिक अंधकारमय होता जाता है। मानवजाति की आत्माएँ शैतान की मुट्ठी में हैं, इसलिए ज़ाहिर है कि मनुष्य का शरीर भी शैतान के कब्जे में है। तो फिर कैसे इस तरह का शरीर और इस तरह की मानवजाति परमेश्वर का विरोध नहीं करेंगे? वे उसके साथ सहज ही संगत कैसे हो सकते हैं? मैंने इस कारण से शैतान को हवा में बहिष्कृत किया है क्योंकि उसने मेरे साथ विश्वासघात किया था। तो फिर, मनुष्य अपनी संलग्नता से कैसे मुक्त हो सकते हैं? यही कारण है कि मनुष्य की प्रकृति विश्वासघात की है। मुझे विश्वास है कि एक बार जब तुम लोग इस तर्क को समझ लोगे तो तुम लोगों में मसीह के सार के प्रति विश्वास भी आ जाना चाहिए! परमेश्वर के आत्मा द्वारा धारण की हुई देह परमेश्वर की अपनी देह है। परमेश्वर का आत्मा सर्वोच्च है; वह सर्वशक्तिमान, पवित्र और धार्मिक है। इसी तरह, उसकी देह भी सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान, पवित्र और धार्मिक है। इस तरह की देह केवल वह करने में सक्षम है जो मानवजाति के लिए धार्मिक और लाभकारी है, वह जो पवित्र, महिमामयी और प्रतापी है; वह ऐसी किसी भी चीज को करने में असमर्थ है जो सत्य, नैतिकता और न्याय का उल्लंघन करती हो, वह ऐसी किसी चीज को करने में तो बिल्कुल भी समर्थ नहीं है जो परमेश्वर के आत्मा के साथ विश्वासघात करती हो। परमेश्वर का आत्मा पवित्र है, और इसलिए उसका शरीर शैतान द्वारा भ्रष्ट नहीं किया जा सकता; उसका शरीर मनुष्य के शरीर की तुलना में भिन्न सार का है। क्योंकि यह परमेश्वर नहीं बल्कि मनुष्य है, जो शैतान द्वारा भ्रष्ट किया गया है; यह संभव नहीं कि शैतान परमेश्वर के शरीर को भ्रष्ट कर सके। इस प्रकार, इस तथ्य के बावजूद कि मनुष्य और मसीह एक ही स्थान के भीतर रहते हैं, यह केवल मनुष्य है, जो शैतान द्वारा काबू और उपयोग किया जाता है और जाल में फँसाया जाता है। इसके विपरीत, मसीह शैतान की भ्रष्टता के लिए शाश्वत रूप से अभेद्य है, क्योंकि शैतान कभी भी उच्चतम स्थान तक आरोहण करने में सक्षम नहीं होगा, और कभी भी परमेश्वर के निकट नहीं पहुँच पाएगा। आज, तुम सभी लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि यह केवल शैतान द्वारा भ्रष्ट मानवजाति है, जो मेरे साथ विश्वासघात करती है। मसीह के लिए विश्वासघात की समस्या हमेशा अप्रासंगिक रहेगी।

शैतान द्वारा भ्रष्ट की गई सभी आत्माएँ, शैतान के अधिकार क्षेत्र के नियंत्रण में हैं। केवल वे लोग जो मसीह में विश्वास करते हैं, शैतान के शिविर से बचा कर, अलग कर दिए गए हैं, और आज के राज्य में लाए गए हैं। अब ये लोग शैतान के प्रभाव में नहीं रहे हैं। फिर भी, मनुष्य की प्रकृति अभी भी मनुष्य के शरीर में

जड़ जमाए हुए है। कहने का अर्थ है कि भले ही तुम लोगों की आत्माएँ बचा ली गई हैं, तुम लोगों की प्रकृति अभी भी पहले जैसी ही है और इस बात की अभी भी सौ प्रतिशत संभावना है कि तुम लोग मेरे साथ विश्वासघात करोगे। यही कारण है कि मेरा कार्य इतने लंबे समय तक चलता है, क्योंकि तुम्हारी प्रकृति दु:साध्य है। अब तुम अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए इतने अधिक कष्ट उठा रहे हो जितने तुम उठा सकते हो, फिर भी तुम लोगों में से प्रत्येक मुझे धोखा देने और शैतान के अधिकार क्षेत्र, उसके शिविर में लौटने, और अपने पुराने जीवन में वापस जाने में सक्षम है—यह एक अखंडनीय तथ्य है। उस समय, तुम लोगों के पास लेशमात्र भी मानवता या मनुष्य से समानता दिखाने के लिए नहीं होगी, जैसी तुम अब दिखा रहे हो। गंभीर मामलों में, तुम लोगों को नष्ट कर दिया जाएगा और इससे भी बढ़कर तुम लोगों को, फिर कभी भी देहधारण नहीं करने के लिए, बल्कि गंभीर रूप से दंडित करने के लिए अनंतकाल के लिए अभिशप्त कर दिया जाएगा। यह तुम लोगों के सामने रख दी गई समस्या है। मैं तुम लोगों को इस तरह से याद दिला रहा हूँ ताकि एक तो, मेरा कार्य व्यर्थ नहीं जाएगा, और दूसरे, ताकि तुम सभी लोग प्रकाश के दिनों में रह सको। वास्तव में, मेरा कार्य व्यर्थ होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या नहीं है। महत्वपूर्ण है तुम लोगों का एक खुशहाल जीवन और एक अद्‌भुत भविष्य पाने में सक्षम होना। मेरा कार्य लोगों की आत्माओं को बचाने का कार्य है। यदि तुम्हारी आत्मा शैतान के हाथों में पड़ जाती है, तो तुम्हारा शरीर शांति में नहीं रहेगा। यदि मैं तुम्हारे शरीर की रक्षा कर रहा हूँ, तो तुम्हारी आत्मा भी निश्चित रूप से मेरी देखभाल के अधीन होगी। यदि मैं तुमसे सच में घृणा करूँ, तो तुम्हारा शरीर और आत्मा तुरंत शैतान के हाथों में पड़ जाएँगे। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि तब तुम्हारी स्थिति किस तरह की होगी? यदि किसी दिन मेरे वचनों का तुम पर कोई असर न हुआ, तो मैं तुम सभी लोगों को तब तक के लिए घोर यातना देने के लिए शैतान को सौंप दूँगा जब तक कि मेरा गुस्सा पूरी तरह से खत्म नहीं हो जाता, अथवा मैं कभी न सुधर सकने योग्य तुम मानवों को व्यक्तिगत रूप से दंडित करूँगा, क्योंकि मेरे साथ विश्वासघात करने वाले तुम लोगों के हृदय कभी नहीं बदलेंगे।

अब तुम सभी लोगों को अपने अंदर यथाशीघ्र झांककर देखना चाहिए कि तुम लोगों के अंदर मेरे प्रति कितना विश्वासघात बाक़ी है। मैं बेसब्री से तुम्हारी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरे साथ अपने व्यवहार में लापरवाह मत होना। मैं कभी भी लोगों के साथ खेल नहीं खेलता हूँ। यदि मैं कहता हूँ कि मैं कुछ करूँगा तो मैं निश्चित रूप से ऐसा करूँगा। मुझे आशा है कि तुम सभी ऐसे लोग हो सकते हो जो मेरे

वचनों को गंभीरता से लेते हो और यह नहीं सोचते हो कि वे मात्र वैज्ञानिक कपोल कथाएँ हैं। मैं तुम लोगों से एक ठोस कार्रवाई चाहता हूँ, न कि तुम लोगों की कल्पनाएँ। इसके बाद, तुम लोगों को मेरे प्रश्नों के उत्तर देने होंगे, जो इस प्रकार हैं : 1. यदि तुम सचमुच में सेवा करने वाले हो, तो क्या तुम बिना किसी लापरवाही या नकारात्मक तत्वों के निष्ठापूर्वक मुझे सेवा प्रदान कर सकते हो? 2. यदि तुम्हें पता चले कि मैंने कभी भी तुम्हारी सराहना नहीं की है, तो क्या तब भी तुम जीवन भर टिके रह कर मुझे सेवा प्रदान कर पाओगे? 3. यदि तुमने मेरी ख़ातिर बहुत सारे प्रयास किए हैं लेकिन मैं तब भी तुम्हारे प्रति बहुत रूखा रहूँ, तो क्या तुम गुमनामी में भी मेरे लिए कार्य करना जारी रख पाओगे? 4. यदि, तुम्हारे द्वारा मेरे लिए खर्च करने के बाद भी मैंने तुम्हारी तुच्छ माँगों को पूरा नहीं किया, तो क्या तुम मेरे प्रति निरुत्साहित और निराश हो जाओगे या यहाँ तक कि क्रोधित होकर गालियाँ भी बकने लगोगे? 5. यदि तुम हमेशा मेरे प्रति बहुत निष्ठावान रहे हो, मेरे लिए तुममें बहुत प्रेम है, मगर फिर भी तुम बीमारी, दरिद्रता, और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के द्वारा त्यागे जाने की पीड़ा को भुगतते हो या जीवन में किसी भी अन्य दुर्भाग्य को सहन करते हो, तो क्या तब भी मेरे लिए तुम्हारी निष्ठा और प्यार बना रहेगा? 6. यदि मैने जो किया है उसमें से कुछ भी उससे मेल नहीं खाता है जिसकी तुमने अपने हृदय में कल्पना की है, तो तुम अपने भविष्य के मार्ग पर कैसे चलोगे? 7. यदि तुम्हें वह कुछ भी प्राप्त नहीं होता है जो तुमने प्राप्त करने की आशा की थी, तो क्या तुम मेरे अनुयायी बने रह सकते हो? 8. यदि तुम्हें मेरे कार्य का उद्देश्य और महत्व कभी भी समझ में नहीं आए हों, तो क्या तुम ऐसे आज्ञाकारी व्यक्ति हो सकते हो जो मनमाने निर्णय और निष्कर्ष नहीं निकालता हो? 9. मानवजाति के साथ रहते समय, मैंने जो वचन कहे हैं और मैंने जो कार्य किए हैं उन सभी को क्या तुम संजोए रख सकते हो? 10. यदि तुम कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते हो, तो भी क्या तुम मेरे निष्ठावान अनुयायी बने रहने में सक्षम हो, और आजीवन मेरे लिए कष्ट भुगतने को तैयार हो? 11. क्या तुम मेरे वास्ते भविष्य में अपने जीने के मार्ग पर विचार न करने, योजना न बनाने या तैयारी न करने में सक्षम हो? ये प्रश्न तुम लोगों से मेरी अंतिम अपेक्षाओं को दर्शाते हैं, और मुझे आशा है कि तुम सभी लोग मुझे उत्तर दे सकते हो। यदि तुम इन प्रश्नों में पूछी गई एक या दो चीजों को पूरा कर चुके हो, तो तुम्हें अपना प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है। यदि तुम इन अपेक्षाओं में से किसी एक को भी पूरा नहीं कर सकते हो, तो तुम निश्चित रूप से उस प्रकार के व्यक्ति हो जिसे नरक में डाला जाएगा। ऐसे लोगों से मुझे अब कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे निश्चित रूप से ऐसे लोग नहीं हैं जो मेरे अनुकूल हो सकते हों। मैं किसी ऐसे

व्यक्ति को अपने घर में कैसे रख सकता हूँ जो किसी भी परिस्थिति में मेरे साथ विश्वासघात कर सकता है? जहाँ तक ऐसे लोगों की बात है जो अधिकांश परिस्थितियों में मेरे साथ विश्वासघात कर सकते हैं, मैं अन्य व्यवस्थाएँ करने से पहले उनके प्रदर्शन का अवलोकन करूँगा। फिर भी, वे सब लोग जो, चाहे किसी भी परिस्थिति में, मेरे साथ विश्वासघात करने में सक्षम हैं, मैं उन्हें कभी भी नहीं भूलूँगा; मैं उन्हें अपने मन में याद रखूँगा और उनके बुरे कार्यों का बदला चुकाने के अवसर की प्रतीक्षा करूँगा। मैंने जो अपेक्षाएँ की हैं वे सभी ऐसी समस्याऐं हैं, जिनका तुम्हें स्वयं में निरीक्षण करना चाहिए। मुझे आशा है कि तुम सभी लोग उन पर गंभीरता से विचार कर सकते हो और मेरे साथ लापरवाही से व्यवहार नहीं करोगे। निकट भविष्य में, मैं अपनी अपेक्षाओं के जवाब में तुम्हारे द्वारा दिए गए उत्तरों की जाँच करूँगा। उस समय तक, मैं तुम लोगों से कुछ और अपेक्षा नहीं करूँगा तथा तुम लोगों को कड़ी फटकार नहीं लगाऊँगा। इसकी बजाय, मैं अपने अधिकार का प्रयोग करूँगा। जिन्हें रखा जाना चाहिए उन्हें रखा जाएगा, जिन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, जिन्हें शैतान को दिया जाना चाहिए, उन्हें शैतान को दिया जाएगा, जिन्हें भारी दंड मिलना चाहिए, उन्हें भारी दंड दिया जाएगा, और जिनका नाश हो जाना चाहिए, उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा। इस तरह, मेरे दिनों में मुझे परेशान करने वाला कोई भी नहीं होगा। क्या तुम मेरे वचनों पर विश्वास करते हो? क्या तुम प्रतिकार में विश्वास करते हो? क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं उन सभी बुरे लोगों को दंड दूँगा जो मुझे धोखा देते हैं और मेरे साथ विश्वासघात करते हैं? तुम उस दिन के जल्दी आने की आशा करते हो या उसके देर से आने की? क्या तुम ऐसे व्यक्ति हो जो सज़ा से बहुत भयभीत है, या कोई ऐसे व्यक्ति हो जो मेरा प्रतिरोध करेगा, भले ही उसे दंड भुगतना पड़े? जब वह दिन आएगा, तो क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि तुम हँसी-खुशी के बीच रह रहे होगे, या रो रहे होगे और अपने दांत भींच रहे होगे? तुम क्या आशा करते हो कि तुम्हारा किस तरह का अंत होगा? क्या तुमने कभी गंभीरता से विचार किया है कि तुम मुझ पर शत प्रतिशत विश्वास करते हो या मुझ पर शत प्रतिशत संदेह करते हो? क्या तुमने कभी ध्यान से विचार किया है कि तुम्हारे कार्य और व्यवहार तुम्हारे लिए किस प्रकार के परिणाम और अंत लाएँगे? क्या तुम सचमुच में आशा करते हो कि मेरे सभी वचन एक-एक करके पूरे होंगे, या तुम बहुत डरे हुए हो कि मेरे वचन एक-एक करके पूरे होंगे? यदि तुम आशा करते हो कि अपने वचनों को पूरा करने के लिए मैं शीघ्र ही प्रस्थान करूँ, तो तुम्हें अपने स्वयं के शब्दों और कार्यों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? यदि तुम मेरे प्रस्थान की आशा नहीं करते हो और यह आशा नहीं करते हो कि मेरे सभी

वचन तुरंत पूरे हो जाएँ, तो तुम मुझ पर विश्वास ही क्यों करते हो? क्या तुम सचमुच जानते हो कि तुम मेरा अनुसरण क्यों कर रहे हो? यदि यह केवल तुम्हारे क्षितिज का विस्तार करने के लिए है, तो तुम्हें इतनी मुश्किलें उठाने की आवश्यकता नहीं है। यदि यह आशीष पाने और भविष्य की आपदा से बचने के लिए है, तो तुम अपने स्वयं के आचरण के बारे में चिंतित क्यों नहीं हो? तुम अपने आपसे क्यों नहीं पूछते हो कि क्या तुम मेरी अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हो? तुम अपने आपसे क्यों नहीं पूछते हो कि तुम मेरी भविष्य की आशीषों को प्राप्त करने के योग्य हो या नहीं?

दस प्रशासनिक आदेश जो राज्य के युग में परमेश्वर के चुने लोगों द्वारा पालन किए जाने चाहिए

1. मनुष्य को स्वयं को बड़ा नहीं दिखाना चाहिए, न अपनी बड़ाई करनी चाहिए। उसे परमेश्वर की आराधना और बड़ाई करनी चाहिए।

2. वह सब कुछ करो जो परमेश्वर के कार्य के लिए लाभदायक है और ऐसा कुछ भी न करो जो परमेश्वर के कार्य के हितों के लिए हानिकर हो। परमेश्वर के नाम, परमेश्वर की गवाही और परमेश्वर के कार्य की रक्षा करो।

3. परमेश्वर के घर में धन, भौतिक पदार्थ और समस्त संपत्ति ऐसी भेंट हैं, जो मनुष्य द्वारा दी जानी चाहिए। इन भेंटों का आनंद याजक और परमेश्वर के अलावा अन्य कोई नहीं ले सकता, क्योंकि मनुष्य की भेंटें परमेश्वर के आनंद के लिए हैं। परमेश्वर इन भेंटों को केवल याजकों के साथ साझा करता है; और उनके किसी भी अंश का आनंद उठाने के लिए अन्य कोई योग्य और पात्र नहीं है। मनुष्य की समस्त भेंटें (धन और आनंद लिए जा सकने योग्य भौतिक चीज़ों सहित) परमेश्वर को दी जाती हैं, मनुष्य को नहीं और इसलिए, इन चीज़ों का मनुष्य द्वारा आनंद नहीं लिया जाना चाहिए; यदि मनुष्य उनका आनंद उठाता है, तो वह इन भेंटों को चुरा रहा होगा। जो कोई भी ऐसा करता है वह यहूदा है, क्योंकि, एक ग़द्दार होने के अलावा, यहूदा ने बिना इजाज़त थैली में रखा धन भी लिया था।

4. मनुष्य का स्वभाव भ्रष्ट है और इसके अतिरिक्त, उसमें भावनाएँ हैं। इसलिए, परमेश्वर की सेवा के समय विपरीत लिंग के दो सदस्यों को अकेले एक साथ मिलकर काम करना पूरी तरह निषिद्ध है। जो भी

ऐसा करते पाए जाते हैं, उन्हें बिना किसी अपवाद के निष्कासित कर दिया जाएगा।

5. परमेश्वर की आलोचना न करो और न परमेश्वर से संबंधित बातों पर यूँ ही चर्चा करो। वैसा करो, जैसा मनुष्य को करना चाहिए और वैसे बोलो जैसे मनुष्य को बोलना चाहिए, तुम्हें अपनी सीमाओं को पार नहीं करनी चाहिए और न अपनी सीमाओं का उल्लंघन करना चाहिए। अपनी ज़ुबान पर लगाम लगाओ और ध्यान दो कि कहाँ कदम रख रहे हो, ताकि परमेश्वर के स्वभाव का अपमान न कर बैठो।

6. वह करो जो मनुष्य द्वारा किया जाना चाहिए और अपने दायित्वों का पालन करो, अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करो और अपने कर्तव्य को धारण करो। चूँकि तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, इसलिए तुम्हें परमेश्वर के कार्य में अपना योगदान देना चाहिए; यदि तुम नहीं देते हो, तो तुम परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने के योग्य नहीं हो और परमेश्वर के घर में रहने के योग्य नहीं हो।

7. कलीसिया के कार्यों और मामलों में, परमेश्वर की आज्ञाकारिता के अलावा, उस व्यक्ति के निर्देशों का पालन करो, जिसे पवित्र आत्मा हर चीज़ में उपयोग करता है। ज़रा-सा भी उल्लंघन अस्वीकार्य है। अपने अनुपालन में एकदम सही रहो और सही या ग़लत का विश्लेषण न करो; क्या सही या ग़लत है, इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं। तुम्हें ख़ुद केवल संपूर्ण आज्ञाकारिता की चिंता करनी चाहिए।

8. जो लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, उन्हें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए और उसकी आराधना करनी चाहिए। किसी व्यक्ति को ऊँचा न ठहराओ, न किसी पर श्रद्धा रखो; परमेश्वर को पहले, जिनका आदर करते हो उन्हें दूसरे और ख़ुद को तीसरे स्थान पर मत रखो। किसी भी व्यक्ति का तुम्हारे हृदय में कोई स्थान नहीं होना चाहिए और तुम्हें लोगों को—विशेषकर उन्हें जिनका तुम सम्मान करते हो—परमेश्वर के समतुल्य या उसके बराबर नहीं मानना चाहिए। यह परमेश्वर के लिए असहनीय है।

9. अपने विचार कलीसिया के कार्य पर लगाए रखो। अपनी देह की इच्छाओं को एक तरफ़ रखो, पारिवारिक मामलों के बारे में निर्णायक रहो, स्वयं को पूरे हृदय से परमेश्वर के कार्य में समर्पित करो और परमेश्वर के कार्य को पहले और अपने जीवन को दूसरे स्थान पर रखो। यह एक संत की शालीनता है।

10. सगे-संबंधी जो विश्वास नहीं रखते (तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे पति या पत्नी, तुम्हारी बहनें या तुम्हारे माता-पिता इत्यादि) उन्हें कलीसिया में आने को बाध्य नहीं करना चाहिए। परमेश्वर के घर में सदस्यों की कमी नहीं है और ऐसे लोगों से इसकी संख्या बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं, जिनका कोई उपयोग नहीं

है। वे सभी जो ख़ुशी-ख़ुशी विश्वास नहीं करते, उन्हें कलीसिया में बिल्कुल नहीं ले जाना चाहिए। यह आदेश सब लोगों पर निर्देशित है। इस मामले में तुम लोगों को एक दूसरे की जाँच, निगरानी करनी चाहिए और याद दिलाना चाहिए; कोई भी इसका उल्लंघन नहीं कर सकता। यहाँ तक कि जब ऐसे सगे-संबंधी जो विश्वास नहीं करते, अनिच्छा से कलीसिया में प्रवेश करते हैं, उन्हें किताबें जारी नहीं की जानी चाहिए या नया नाम नहीं देना चाहिए; ऐसे लोग परमेश्वर के घर के नहीं हैं और कलीसिया में उनके प्रवेश पर जैसे भी ज़रूरी हो, रोक लगाई जानी चाहिए। यदि दुष्टात्माओं के आक्रमण के कारण कलीसिया पर समस्या आती है, तो तुम निर्वासित कर दिए जाओगे या तुम पर प्रतिबंध लगा दिये जाएँगे। संक्षेप में, इस मामले में हरेक का उत्तरदायित्व है, हालांकि तुम्हें असावधान नहीं होना चाहिए, न ही इसका इस्तेमाल निजी बदला लेने के लिए करना चाहिए।

तुम लोगों को अपने कर्मों पर विचार करना चाहिए

जीवन में तुम लोगों के कर्मों और कार्यों से पता चलता है कि तुम लोगों को तुम्हारे पुनर्भरण के लिए मेरे वचनों के अंश की प्रतिदिन आपूर्ति की जानी आवश्यक है, क्योंकि तुम लोगों में बहुत सारी कमियाँ हैं और तुम लोगों में ग्रहण करने की योग्यता और ज्ञान बहुत ही कम है। अपने दैनिक जीवन में तुम लोग एक ऐसे माहौल और वातावरण में रहते हो, जो सत्य या अच्छे बोध से रहित हैं। तुम लोगों में जीवित रहने के लिए पूँजी की कमी है और मुझे या सत्य को जानने के लिए आधार नहीं है। तुम लोगों का विश्वास महज एक ऐसे अस्पष्ट और अमूर्त आस्था या अत्यधिक सैद्धांतिक ज्ञान और धार्मिक कर्मकांडों पर निर्मित है। प्रतिदिन मैं तुम लोगों के क्रियाकलापों को देखकर तुम्हारे इरादों और बुरे परिणामों की जाँच करता हूँ, और मैंने कभी एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं पाया, जो सचमुच अपना हृदय और अपनी आत्मा मेरी चिरस्थायी वेदी के ऊपर रखे। इसलिए मैं वे सब वचन कहने में समय नष्ट नहीं करना चाहता, जिन्हें मैं ऐसी मानवजाति के सामने व्यक्त करना चाहता हूँ; मेरे हृदय में केवल अपने अपूर्ण कार्यों और उन मनुष्यों के लिए योजनाएँ हैं, जिन्हें मुझे अभी बचाना है। फिर भी, मैं उन सभी के लिए कामना करता हूँ, जो मेरे वचनों द्वारा प्रदान किए जाने वाले मेरे उद्धार और सत्य को प्राप्त करने हेतु मेरा अनुसरण करते हैं। मैं आशा करता हूँ कि एक दिन जब तुम अपनी आँखें बंद करोगे, तो तुम एक ऐसा संसार देखोगे, जहाँ खुशबू हवा को भरती है और जीवित जल की धाराएँ बहती हैं—एक बेरंग, ठंडी दुनिया नहीं, जहाँ काले बादल आसमान को मैला करते

हैं और जहाँ चीख-पुकार कभी नहीं थमती।

प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति के कर्म और विचार उस एक की आँखों के द्वारा देखे जाते हैं, और साथ ही, वे अपने कल की तैयारी कर रहे होते हैं। यही वह मार्ग है, जिस पर सभी प्राणियों को चलना चाहिए; यही वह मार्ग है, जिसे मैंने सभी के लिए पूर्वनिर्धारित कर दिया है, और कोई इससे बच या छूट नहीं सकता। मैंने अनगिनत वचन कहे हैं और साथ ही मैंने अनगिनत कार्य किए हैं। प्रतिदिन मैं प्रत्येक मनुष्य को स्वाभाविक रूप से वह सब करते हुए देखता हूँ, जो उसे अपने अंतर्निहित स्वभाव और अपनी प्रकृति की घटनाओं के अनुसार करना है। अनजाने में अनेक लोगों ने पहले ही "सही मार्ग" पर चलना आरंभ कर दिया है, जिसे मैंने विभिन्न प्रकार के लोगों के लिए निर्धारित किया है। इन विभिन्न प्रकार के लोगों को मैंने लंबे समय से विभिन्न वातावरणों में रखा है और अपने-अपने स्थान पर प्रत्येक ने अपनी अंतर्निहित विशेषताओं को व्यक्त किया है। उन्हें कोई बाँध नहीं सकता और कोई उन्हें बहका नहीं सकता। वे पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं और वे जो अभिव्यक्त करते हैं, वह स्वभाविक रूप से अभिव्यक्त होता है। केवल एक चीज़ उन्हें नियंत्रण में रखती है : मेरे वचन। इस तरह कुछ लोग मेरे वचन अनमने भाव से पढ़ते हैं, कभी उनका अभ्यास नहीं करते, केवल मृत्यु से बचने के लिए ऐसा करते हैं; जबकि कुछ लोगों के लिए मेरे वचनों के मार्गदर्शन और आपूर्ति के बिना दिन गुज़ारना कठिन होता है, और इसलिए वे स्वभाविक तौर पर मेरे वचनों को हर समय थामे रहते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है, वे मनुष्य के जीवन के रहस्य, मानव-जाति के गंतव्य और मनुष्य होने के महत्त्व की खोज करते जाते हैं। मानव-जाति मेरे वचनों की उपस्थिति में इससे अलग कुछ नहीं है और मैं बस चीज़ों को उनके अपने हिसाब से होने देता हूँ। मैं ऐसा कुछ नहीं करता, जो लोगों को मेरे वचनों को अपने अस्तित्व का आधार बनाने के लिए बाध्य करे। तो जिन लोगों में कभी विवेक नहीं रहा और जिनके अस्तित्व का कभी कोई मूल्य नहीं रहा, वे बेधड़क मेरे वचनों को दरकिनार कर देते हैं और चुपचाप चीज़ों को घटित होते देखने के बाद जो चाहते हैं, करते हैं। वे सत्य से और उस सबसे जो मुझसे आता है, उकताने लगते हैं। इतना ही नहीं, वे मेरे घर में रहने से भी उकता जाते हैं। अपने गंतव्य की खातिर, और सजा से बचने के लिए ये लोग कुछ समय के लिए मेरे घर में रहते हैं, भले ही सेवा प्रदान कर रहे हों। परंतु उनके इरादे और कार्य कभी नहीं बदलते। इससे आशीष पाने की उनकी इच्छा और एक बार राज्य में प्रवेश करने और उसके बाद वहाँ हमेशा के लिए रहने—यहाँ तक कि अनंत स्वर्ग में प्रवेश करने की उनकी इच्छा बढ़ जाती है। जितना अधिक वे मेरे दिन के जल्दी आने की लालसा करते हैं, उतना ही

अधिक वे महसूस करते हैं कि सत्य उनके मार्ग की बाधा और अड़चन बन गया है। वे हमेशा के लिए स्वर्ग के राज्य के आशीषों का आनंद उठाने हेतु राज्य में कदम रखने के लिए मुश्किल से इंतजार कर पाते हैं—सब-कुछ बिना सत्य की खोज करने या न्याय और ताड़ना स्वीकार करने, यहाँ तक कि मेरे घर में विनीत भाव से रहने और मेरी आज्ञा के अनुसार कार्य करने की जरूरत समझे बिना। ये लोग न तो सत्य की खोज करने की अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मेरे घर में प्रवेश करते हैं, न ही मेरे प्रबंधन में सहयोग करने के लिए; उनका उद्देश्य महज उन लोगों में शामिल होने का होता है, जिन्हें आने वाले युग में नष्ट नहीं किया जाएगा। इसलिए उनके हृदय ने कभी नहीं जाना कि सत्य क्या है, या सत्य को कैसे ग्रहण किया जाए। यही कारण है कि ऐसे लोगों ने कभी सत्य का अभ्यास या अपनी भ्रष्टता की गहराई का एहसास नहीं किया, और फिर भी वे मेरे घर में हमेशा "सेवकों" के रूप में रहे हैं। वे "धैर्यपूर्वक" मेरे दिन के आने का इंतज़ार करते हैं और मेरे कार्य के तरीके से यहाँ-वहाँ उछाले जाकर भी थकते नहीं। लेकिन भले ही उनकी कोशिश कितनी भी बड़ी हो और उन्होंने उसकी कुछ भी कीमत चुकाई हो, किसी ने उन्हें सत्य के लिए कष्ट उठाते हुए या मेरी खातिर कुछ देते हुए नहीं देखा। अपने हृदय में वे उस दिन को देखने के लिए बेचैन हैं, जब मैं पुराने युग का अंत करूँगा, और इससे भी बढ़कर, वे यह जानने का इंतज़ार नहीं कर सकते कि मेरा सामर्थ्य और मेरा अधिकार कितने विशाल हैं। जिस चीज़ के लिए उन्होंने कभी शीघ्रता नहीं की, वह है खुद को बदलना और सत्य का अनुसरण करना। वे उससे प्रेम करते हैं, जिससे मैं उकता गया हूँ और उससे उकता गए हैं, जिससे मैं प्रेम करता हूँ। वे उसकी अभिलाषा करते हैं जिससे मैं नफरत करता हूँ, लेकिन उसे खोने से डरते हैं जिससे मैं घृणा करता हूँ। वे इस बुरे संसार में रहते हुए भी इससे कभी नफरत नहीं करते, फिर भी इस बात से बहुत डरते हैं कि मैं इसे नष्ट कर दूँगा। अपने परस्पर विरोधी इरादों के बीच वे इस संसार से प्यार करते हैं जिससे मैं घृणा करता हूँ, लेकिन इस बात के लिए लालायित भी रहते हैं कि मैं इस संसार को शीघ्र नष्ट कर दूँ, और इससे पहले कि वे सच्चे मार्ग से भटक जाएँ, उन्हें विनाश के कष्ट से बचा लिया जाए और अगले युग के स्वामियों के रूप में रूपांतरित कर दिया जाए। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे सत्य से प्रेम नहीं करते और उस सबसे उकता गए हैं, जो मुझसे आता है। वे आशीष खोने के डर से थोड़े समय के लिए "आज्ञाकारी लोग" बन सकते हैं, लेकिन आशीष पाने के लिए उनकी उत्कंठा और नष्ट होने तथा जलती हुई आग की झील में प्रवेश करने का उनका भय कभी छिपाया नहीं जा। जैसे-जैसे मेरा दिन नज़दीक आता है, उनकी इच्छा लगातार उत्कट होती जाती है। और आपदा जितनी बड़ी होती है, उतना ही

वह उन्हें असहाय बना देती है और वे यह नहीं जान पाते कि मुझे प्रसन्न करने के लिए एवं उन आशीषों को खोने से बचाने के लिए, जिनकी उन्होंने लंबे समय से लालसा की है, कहाँ से शुरुआत करें। जैसे ही मेरा हाथ अपना काम करना शुरू करता है, ये लोग एक अग्र-दल के रूप में कार्य करने के लिए उत्सुक हो जाते हैं। इस डर से कि मैं उन्हें नहीं देखूँगा, वे बस सेना की सबसे आगे की टुकड़ी में आने की सोचते हैं। वे वही करते और कहते हैं, जिसे वे सही समझते हैं, और यह कभी नहीं जान पाते कि उनके क्रिया-कलाप कभी सत्य के अनुरूप नहीं रहे, और कि उनके कर्म मेरी योजनाओं में गड़बड़ी और हस्तक्षेप मात्र करते हैं। उन्होंने कड़ी मेहनत की हो सकती है, और वे कष्ट सहने के अपने इरादे और प्रयास में सच्चे हो सकते हैं, पर उनके कार्यों से मेरा कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि मैंने कभी नहीं देखा कि उनके कार्य अच्छे इरादे के साथ किए गए हैं, और उन्हें अपनी वेदी पर कुछ रखते हुए तो मैंने बहुत ही कम देखा है। इन अनेक वर्षों में मेरे सामने उन्होंने ऐसे ही कार्य किए हैं।

मूल रूप से मैं तुम लोगों को और अधिक सत्य प्रदान करना चाहता था, लेकिन मुझे इससे विरत होना पड़ा, क्योंकि सत्य के प्रति तुम्हारा रवैया बहुत ठंडा और उदासीन है; मैं नहीं चाहता कि मेरी कोशिशें व्यर्थ जाएँ, न ही मैं यह देखना चाहता हूँ कि लोग मेरे वचनों को तो थामे रहें, लेकिन काम हर लिहाज से ऐसे करें, जिनसे मेरा विरोध होता हो, जो मुझे कलंकित करते हों और मेरा तिरस्कार करते हों। तुम लोगों के रवैये और मानवीय स्वभाव के कारण, मैं तुम्हें अपने वचनों का एक छोटा-सा भाग ही प्रदान करता हूँ, जो तुम्हारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, और जो मनुष्यों के बीच मेरा परीक्षण-कार्य है। केवल अब मैंने वास्तव में पुष्टि की है कि जो निर्णय और योजनाएँ मैंने बनाई हैं, वे तुम लोगों की जरूरतों के अनुरूप हैं, और यह भी कि मानव-जाति के प्रति मेरा रवैया सही है। मेरे सामने तुम लोगों के कई वर्षों के व्यवहार ने मुझे बिना दृष्टांत के उत्तर दे दिया, और इस उत्तर का प्रश्न यह है कि : "सत्य और सच्चे परमेश्वर के सामने मनुष्य का रवैया क्या है?" मैंने मनुष्य के लिए जो प्रयास किए हैं, वे मनुष्य के लिए मेरे प्रेम के सार को प्रमाणित करते हैं, और मेरे सामने मनुष्य का हर कार्य सत्य से घृणा करने और मेरा विरोध करने के उसके सार को प्रमाणित करता है। मैं हर समय उन सबके लिए चिंतित रहता हूँ, जो मेरा अनुसरण करते हैं, लेकिन मेरा अनुसरण करने वाले कभी मेरे वचनों को ग्रहण करने में समर्थ नहीं होते; यहाँ तक कि वे मेरे सुझाव स्वीकार करने में भी सक्षम नहीं हैं। यह बात मुझे सबसे ज़्यादा उदास करती है। कोई भी मुझे कभी भी समझ नहीं पाया है, और इतना ही नहीं, कोई भी मुझे कभी भी स्वीकार नहीं कर पाया है, बावजूद इसके

कि मेरा रवैया नेक और मेरे वचन सौम्य हैं। सभी लोग मेरे द्वारा उन्हें सौंपा गया कार्य अपने विचारों के अनुसार करने की कोशिश करते हैं; वे मेरे इरादे को जानने की कोशिश नहीं करते, मेरी अपेक्षाओं के बारे में पूछने की बात तो छोड़ ही दीजिए। वे अभी भी वफादारी के साथ मेरी सेवा करने का दावा करते हैं, जबकि वे मेरे खिलाफ विद्रोह करते हैं। बहुतों का यह मानना है कि जो सत्य उन्हें स्वीकार्य नहीं हैं या जिनका वे अभ्यास नहीं कर पाते, वे सत्य ही नहीं हैं। ऐसे लोगों में सत्य ऐसी चीज़ बन जाते हैं, जिन्हें नकार दिया जाता है और दरकिनार कर दिया जाता है। उसी समय, लोग मुझे वचन में परमेश्वर के रूप में पहचानते हैं, परंतु साथ ही मुझे एक ऐसा बाहरी व्यक्ति मानते हैं, जो सत्य, मार्ग या जीवन नहीं है। कोई इस सत्य को नहीं जानता : मेरे वचन सदा-सर्वदा अपरिवर्तनीय सत्य हैं। मैं मनुष्य के लिए जीवन की आपूर्ति और मानव-जाति के लिए एकमात्र मार्गदर्शक हूँ। मेरे वचनों का मूल्य और अर्थ इससे निर्धारित नहीं होता कि उन्हें मानव-जाति द्वारा पहचाना या स्वीकारा जाता है या नहीं, बल्कि स्वयं वचनों के सार द्वारा निर्धारित होता है। भले ही इस पृथ्वी पर एक भी व्यक्ति मेरे वचनों को ग्रहण न कर पाए, मेरे वचनों का मूल्य और मानव-जाति के लिए उनकी सहायता किसी भी मनुष्य के लिए अपरिमेय है। इसलिए ऐसे अनेक लोगों से सामना होने पर, जो मेरे वचनों के खिलाफ विद्रोह करते हैं, उनका खंडन करते हैं, या उनका पूरी तरह से तिरस्कार करते हैं, मेरा रुख केवल यह रहता है : समय और तथ्यों को मेरी गवाही देने दो और यह दिखाने दो कि मेरे वचन सत्य, मार्ग और जीवन हैं। उन्हें यह दिखाने दो कि जो कुछ मैंने कहा है, वह सही है, और वह ऐसा है जिसकी आपूर्ति लोगों को की जानी चाहिए, और इतना ही नहीं, जिसे मनुष्य को स्वीकार करना चाहिए। मैं उन सबको, जो मेरा अनुसरण करते हैं, यह तथ्य ज्ञात करवाऊँगा : जो लोग पूरी तरह से मेरे वचनों को स्वीकार नहीं कर सकते, जो मेरे वचनों का अभ्यास नहीं कर सकते, जिन्हें मेरे वचनों में कोई लक्ष्य नहीं मिल पाता, और जो मेरे वचनों के कारण उद्धार प्राप्त नहीं कर पाते, वे लोग हैं जो मेरे वचनों के कारण निंदित हुए हैं और इतना ही नहीं, जिन्होंने मेरे उद्धार को खो दिया है, और मेरी लाठी उन पर से कभी नहीं हटेगी।

16 अप्रैल, 2003

परमेश्वर मनुष्य के जीवन का स्रोत है

जिस क्षण तुम रोते हुए इस दुनिया में आते हो, उसी पल से तुम अपना कर्तव्य पूरा करना शुरू कर

देते हो। परमेश्वर की योजना और उसके विधान में अपनी भूमिका निभाते हुए तुम अपनी जीवन-यात्रा शुरू करते हो। तुम्हारी पृष्ठभूमि जो भी हो और तुम्हारी आगे की यात्रा जैसी भी हो, कोई भी स्वर्ग के आयोजनों और व्यवस्थाओं से बच नहीं सकता, और किसी का भी अपनी नियति पर नियंत्रण नहीं है, क्योंकि केवल वही, जो सभी चीज़ों पर शासन करता है, ऐसा करने में सक्षम है। जिस दिन से मनुष्य अस्तित्व में आया है, परमेश्वर ने ब्रह्मांड का प्रबंधन करते हुए, सभी चीज़ों के लिए परिवर्तन के नियमों और उनकी गतिविधियों के पथ को निर्देशित करते हुए हमेशा ऐसे ही काम किया है। सभी चीज़ों की तरह मनुष्य भी चुपचाप और अनजाने में परमेश्वर से मिठास और बारिश तथा ओस द्वारा पोषित होता है; सभी चीज़ों की तरह मनुष्य भी अनजाने में परमेश्वर के हाथ के आयोजन के अधीन रहता है। मनुष्य का हृदय और आत्मा परमेश्वर के हाथ में हैं, उसके जीवन की हर चीज़ परमेश्वर की दृष्टि में रहती है। चाहे तुम यह मानो या न मानो, कोई भी और सभी चीज़ें, चाहे जीवित हों या मृत, परमेश्वर के विचारों के अनुसार ही जगह बदलेंगी, परिवर्तित, नवीनीकृत और गायब होंगी। परमेश्वर सभी चीज़ों को इसी तरीके से संचालित करता है।

जब रात चुपचाप आती है, मनुष्य अनजान रहता है, क्योंकि मनुष्य का हृदय यह नहीं समझ सकता कि रात कैसे आती है या कहाँ से आती है। जब रात चुपचाप चली जाती है, मनुष्य दिन के उजाले का स्वागत करता है, लेकिन उजाला कहाँ से आया है और कैसे इसने रात के अँधेरे को दूर भगाया है, मनुष्य यह तो बिलकुल भी नहीं जानता और इससे तो बिलकुल भी अवगत नहीं है। दिन और रात की यह बारंबार होने वाली अदला-बदली मनुष्य को एक अवधि से दूसरी अवधि में, एक ऐतिहासिक संदर्भ से अगले संदर्भ में ले जाती है, और यह भी सुनिश्चित करती है कि हर अवधि में परमेश्वर का कार्य और हर युग के लिए उसकी योजना कार्यान्वित की जाए। मनुष्य इन विभिन्न अवधियों में परमेश्वर के साथ चला है, फिर भी वह नहीं जानता कि परमेश्वर सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों की नियति पर शासन करता है, न ही यह जानता है कि कैसे परमेश्वर सभी चीज़ों को आयोजित और निर्देशित करता है। इसने मनुष्य को अनादि काल से आज तक भ्रम में रखा है। जहाँ तक कारण का सवाल है, ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि परमेश्वर के तरीके बहुत छिपे हुए हैं, न इसलिए कि परमेश्वर की योजना अभी तक साकार नहीं हुई है, बल्कि इसलिए है कि मनुष्य का हृदय और आत्मा परमेश्वर से बहुत दूर हैं, उतनी दूर, जहाँ मनुष्य परमेश्वर का अनुसरण करते हुए भी शैतान की सेवा में बना रहता है—और उसे इसका भान भी नहीं होता। कोई भी सक्रिय रूप से परमेश्वर के पदचिह्नों और उसके प्रकटन को नहीं खोजता और कोई भी परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा

में रहने के लिए तैयार नहीं है। इसके बजाय, वे इस दुनिया के और दुष्ट मानवजाति द्वारा अनुसरण किए जाने वाले अस्तित्व के नियमों के अनुकूल होने के लिए, उस दुष्ट शैतान द्वारा किए जाने वाले क्षरण पर भरोसा करना चाहते हैं। इस बिंदु पर, मनुष्य का हृदय और आत्मा शैतान के लिए आभार व्यक्त करते उपहार और उसका भोजन बन गए हैं। इससे भी अधिक, मानव हृदय और आत्मा एक ऐसा स्थान बन गए हैं, जिसमें शैतान निवास कर सकता है, और वे शैतान के खेल का उपयुक्त मैदान बन गए हैं। इस तरह, मनुष्य अनजाने में मानव होने के सिद्धांतों और मानव-अस्तित्व के मूल्य और अर्थ के बारे में अपनी समझ को खो देता है। परमेश्वर की व्यवस्थाएँ और परमेश्वर और मनुष्य के बीच का प्रतिज्ञा-पत्र धीरे-धीरे मनुष्य के हृदय में धुँधला होता जाता है, और वह परमेश्वर की तलाश करना या उस पर ध्यान देना बंद कर देता है। समय बीतने के साथ मनुष्य अब यह नहीं समझता कि परमेश्वर ने उसे क्यों बनाया है, न ही वह उन वचनों को जो परमेश्वर के मुख से आते हैं और न उस सबको समझता है, जो परमेश्वर से आता है। मनुष्य फिर परमेश्वर की व्यवस्थाओं और आदेशों का विरोध करने लगता है, और उसका हृदय और आत्मा शिथिल हो जाते हैं...। परमेश्वर उस मनुष्य को खो देता है, जिसे उसने मूल रूप से बनाया था, और मनुष्य अपनी शुरुआत का मूल खो देता है : यही इस मानव-जाति की त्रासदी है। वास्तव में, बिल्कुल शुरुआत से अब तक, परमेश्वर ने मनुष्य-जाति के लिए एक त्रासदी का मंचन किया है, ऐसी त्रासदी, जिसमें मनुष्य नायक और पीड़ित दोनों है। और कोई इसका उत्तर नहीं दे सकता कि इस त्रासदी का निर्देशक कौन हैं।

दुनिया के विशाल विस्तार में अनगिनत परिवर्तन हो चुके हैं, बार-बार गाद भरने से महासागर मैदानों में बदल रहे हैं, खेत बाढ़ से महासागरों में बदल रहे हैं। सिवाय उसके जो ब्रह्मांड में सभी चीज़ों पर शासन करता है, कोई भी इस मानव-जाति की अगुआई और मार्गदर्शन करने में समर्थ नहीं है। कोई ऐसा पराक्रमी नहीं है, जो इस मानव-जाति के लिए श्रम या तैयारी कर सकता हो, और ऐसा तो कोई भी नहीं है, जो इस मानव-जाति को प्रकाश की मंजिल की ओर ले जा सके और इसे सांसारिक अन्यायों से मुक्त कर सके। परमेश्वर मनुष्य-जाति के भविष्य पर विलाप करता है, वह मनुष्य-जाति के पतन पर शोक करता है, और उसे पीड़ा होती है कि मनुष्य-जाति, कदम-दर-कदम, क्षय और ऐसे मार्ग की ओर बढ़ रही है, जहाँ से वापसी संभव नहीं है। ऐसी मनुष्य-जाति, जिसने परमेश्वर का हृदय तोड़ दिया है और दुष्ट की तलाश करने के लिए उसका त्याग कर दिया है : क्या किसी ने कभी उस दिशा पर विचार किया है, जिस ओर ऐसी मनुष्य-जाति जा रही है? ठीक इसी कारण से कोई परमेश्वर के कोप को महसूस नहीं करता, कोई परमेश्वर

को खुश करने का तरीका नहीं खोजता या परमेश्वर के करीब आने की कोशिश नहीं करता, और इससे भी अधिक, कोई परमेश्वर के दुःख और दर्द को समझने की कोशिश नहीं करता। परमेश्वर की वाणी सुनने के बाद भी मनुष्य अपने रास्ते पर चलता रहता है, परमेश्वर से दूर जाने, परमेश्वर के अनुग्रह और देखभाल से बचने, उसके सत्य से कतराने में लगा रहता है, अपने आप को परमेश्वर के दुश्मन, शैतान को बेचना पसंद करता है। और किसने इस बात पर कोई विचार किया है—क्या मनुष्य को अपनी जिदपर अड़े रहना चाहिए—कि परमेश्वर इस मानव-जाति के साथ कैसा व्यवहार करेगा, जिसने उसे मुड़कर एक नज़र देखे बिना ही खारिज कर दिया? कोई नहीं जानता कि परमेश्वर के बार-बार के अनुस्मारकों और आग्रहों का कारण यह है कि उसने अपने हाथों में एक अभूतपूर्व आपदा तैयार की है, एक ऐसी आपदा, जो मनुष्य की देह और आत्मा के लिए असहनीय होगी। यह आपदा केवल देह का ही नहीं, बल्कि आत्मा का भी दंड है। तुम्हें यह जानने की आवश्यकता है : जब परमेश्वर की योजना निष्फल होती है और जब उसके अनुस्मारकों और आग्रहों का कोई उत्तर नहीं मिलता, तो वह किस प्रकार का क्रोध प्रकट करेगा? यह ऐसा होगा, जिसे पहले किसी सृजित प्राणी ने कभी अनुभव किया या सुना नहीं होगा। और इसलिए मैं कहता हूँ, यह आपदा बेमिसाल है और कभी दोहराई नहीं जाएगी। क्योंकि परमेश्वर की योजना मनुष्य-जाति का केवल एक बार सृजन करने और उसे केवल एक बार बचाने की है। यह पहली बार है, और यही अंतिम बार भी है। इसलिए, जिन श्रमसाध्य इरादों और उत्साहपूर्ण प्रत्याशा से परमेश्वर इस बार इंसान को बचाता है, उसे कोई नहीं समझ सकता।

परमेश्वर ने इस संसार की रचना की और इसमें एक जीवित प्राणी, मनुष्य को लेकर आया, जिसे उसने जीवन प्रदान किया। इसके बाद, मनुष्य के माता-पिता और परिजन हुए, और वह अकेला नहीं रहा। जब से मनुष्य ने पहली बार इस भौतिक दुनिया पर नजरें डालीं, तब से वह परमेश्वर के विधान के भीतर विद्यमान रहने के लिए नियत था। परमेश्वर की दी हुई जीवन की साँस हर एक प्राणी को उसके वयस्कता में विकसित होने में सहयोग देती है। इस प्रक्रिया के दौरान किसी को भी महसूस नहीं होता कि मनुष्य परमेश्वर की देखरेख में बड़ा हो रहा है, बल्कि वे यह मानते हैं कि मनुष्य अपने माता-पिता की प्रेमपूर्ण देखभाल में बड़ा हो रहा है, और यह उसकी अपनी जीवन-प्रवृत्ति है, जो उसके बढ़ने की प्रक्रिया को निर्देशित करती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य नहीं जानता कि उसे जीवन किसने प्रदान किया है या यह कहाँ से आया है, और यह तो वह बिलकुल भी नहीं जानता कि जीवन की प्रवृत्ति किस तरह से

चमत्कार करती है। वह केवल इतना ही जानता है कि भोजन ही वह आधार है जिस पर उसका जीवन चलता रहता है, अध्यवसाय ही उसके अस्तित्व का स्रोत है, और उसके मन के विश्वास वह पूँजी है जिस पर उसका अस्तित्व निर्भर करता है। परमेश्वर के अनुग्रह और भरण-पोषण से मनुष्य पूरी तरह से बेखबर है, और इस तरह वह परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया जीवन गँवा देता है...। जिस मानवजाति की परमेश्वर दिन-रात परवाह करता है, उसका एक भी व्यक्ति परमेश्वर की आराधना करने की पहल नहीं करता। परमेश्वर ही अपनी बनाई योजना के अनुसार, मनुष्य पर कार्य करता रहता है, जिससे वह कोई अपेक्षाएँ नहीं करता। वह इस आशा में ऐसा करता है कि एक दिन मनुष्य अपने सपने से जागेगा और अचानक जीवन के मूल्य और अर्थ को समझेगा, परमेश्वर ने उसे जो कुछ दिया है, उसके लिए परमेश्वर द्वारा चुकाई गई कीमत और परमेश्वर की उस उत्सुक व्यग्रता को समझेगा, जिसके साथ परमेश्वर मनुष्य के वापस अपनी ओर मुड़ने की प्रतीक्षा करता है। किसी ने कभी भी मनुष्य के जीवन की उत्पत्ति और निरंतरता को नियंत्रित करने वाले रहस्यों पर गौर नहीं किया है। केवल परमेश्वर, जो इस सब को समझता है, चुपचाप उस ठेस और आघात को सहन करता है, जो वह मनुष्य उसे देता है जिसने परमेश्वर से सब-कुछ प्राप्त किया है किंतु जो उसका आभारी नहीं है। जीवन से जो कुछ मिलता है, मनुष्य उसका सही मूल्य नहीं समझता, और इसी तरह, यह एक "स्वाभाविक बात" है कि मनुष्य द्वारा परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया जाता है, उसे भुला दिया जाता है, और उससे जबरन वसूली की जाती है। क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर की योजना सच में इतने ही महत्व की है? क्या ऐसा हो सकता है कि यह जीवित प्राणी, यह मनुष्य, जो कि परमेश्वर के हाथ से आया है, वास्तव में इतने महत्व का है? परमेश्वर की योजना निश्चित रूप से महत्व की है; किंतु परमेश्वर के हाथ से बनाया गया यह जीवित प्राणी उसकी योजना के वास्ते विद्यमान है। इसलिए परमेश्वर इस मानव-जाति के प्रति घृणा के कारण अपनी योजना को बेकार नहीं कर सकता। यह परमेश्वर की योजना के वास्ते और उसके द्वारा फूँकी गई साँस के लिए है कि परमेश्वर, मनुष्य की देह के लिए नहीं बल्कि मनुष्य के जीवन के लिए, समस्त यातनाएँ सहता है। वह ऐसा मनुष्य की देह को वापस लेने के लिए नहीं, बल्कि उस जीवन को वापस लेने के लिए करता है, जिसमें उसने साँस फूँकी है। यही उसकी योजना है।

इस दुनिया में आने वाले सभी लोगों को जीवन और मृत्यु से गुजरना होता है, और उनमें से अधिकांश मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से गुजर चुके हैं। जो जीवित हैं, वे शीघ्र ही मर जाएँगे और मृत शीघ्र ही लौट

आएँगे। यह सब परमेश्वर द्वारा प्रत्येक जीवित प्राणी के लिए व्यवस्थित जीवन का क्रम है। फिर भी यह क्रम और यह चक्र ठीक वह सत्य है, जो परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य देखे : कि परमेश्वर द्वारा मनुष्य को प्रदान किया गया जीवन असीम और भौतिकता, समय या स्थान से मुक्त है। यह परमेश्वर द्वारा मनुष्य को प्रदान किए गए जीवन का रहस्य है, और इस बात का प्रमाण है कि जीवन उसी से आया है। यद्यपि हो सकता है कि बहुत-से लोग यह न मानें कि जीवन परमेश्वर से आया है, फिर भी मनुष्य अनिवार्य रूप से उस सब का आनंद लेता है जो परमेश्वर से आता है, चाहे वह परमेश्वर के अस्तित्व को मानता हो या उसे नकारता हो। यदि किसी दिन परमेश्वर का अचानक हृदय-परिवर्तन हो जाए और वह दुनिया में विद्यमान हर चीज़ वापस प्राप्त करने और अपना दिया जीवन वापस लेने की इच्छा करे, तो कुछ भी नहीं रहेगा। परमेश्वर सभी चीज़ों, जीवित और निर्जीव दोनों, को आपूर्ति करने के लिए अपने जीवन का उपयोग करता है, और अपनी शक्ति और अधिकार के बल पर सभी को सुव्यवस्थित करता है। यह एक ऐसा सत्य है, जिसकी किसी के द्वारा कल्पना नहीं की जा सकती या जिसे किसी के द्वारा समझा नहीं जा सकता, और ये अबूझ सत्य परमेश्वर की जीवन-शक्ति की मूल अभिव्यक्ति और प्रमाण हैं। अब मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ : परमेश्वर के जीवन की महानता और उसके जीवन के सामर्थ्य की थाह कोई भी प्राणी नहीं पा सकता। यह अभी भी वैसा ही है, जैसा अतीत में था, और आने वाले समय में भी यह ऐसा ही रहेगा। दूसरा रहस्य जो मैं बताऊँगा, वह यह है : सभी सृजित प्राणियों के लिए जीवन का स्रोत, चाहे वे रूप या संरचना में कितने ही भिन्न हों, परमेश्वर से आता है। तुम चाहे किसी भी प्रकार के जीव हो, तुम उस जीवन-पथ के विपरीत नहीं चल सकते, जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है। हर हाल में, मेरी इच्छा है कि मनुष्य इसे समझे : परमेश्वर की देखभाल, रखरखाव और भरण-पोषण के बिना मनुष्य वह सब प्राप्त नहीं कर सकता, जो उसे प्राप्त करना था, चाहे वह कितनी भी तत्परता से कोशिश क्यों न करे या कितना भी कठिन संघर्ष क्यों न करे। परमेश्वर से जीवन की आपूर्ति के बिना मनुष्य जीवन के मूल्य और उसकी सार्थकता के बोध को गँवा देता है। परमेश्वर उस मनुष्य को इतना बेफिक्र कैसे होने दे सकता है, जो मूर्खतापूर्ण ढंग से अपने जीवन की सार्थकता को गँवा देता है? जैसा कि मैंने पहले कहा है : मत भूलो कि परमेश्वर तुम्हारे जीवन का स्रोत है। यदि मनुष्य वह सब सँजोने में विफल रहता है, जो परमेश्वर ने प्रदान किया है, तो परमेश्वर न केवल उसे वापस ले लेगा जो उसने शुरुआत में दिया था, बल्कि वह मनुष्य से क्षतिपूर्ति के रूप में उस सबका दोगुना मूल्य वसूल करेगा, जो उसने दिया है।

26 मई, 2003

सर्वशक्तिमान की आह

तुम्हारे दिल में एक बहुत बड़ा रहस्य है, जिसके बारे में तुमने कभी नहीं जाना है, क्योंकि तुम एक प्रकाशविहीन दुनिया में रह रहे हो। तुम्हारा दिल और तुम्हारी आत्मा शैतान द्वारा छीन लिए गए हैं। तुम्हारी आँखें अंधकार से धुंधला गई हैं, तुम न तो आकाश में सूर्य को देख सकते हो और न ही रात के टिमटिमाते तारे को। तुम्हारे कान कपटपूर्ण शब्दों से भरे हुए हैं, तुम न तो यहोवा की गरजती वाणी सुनते हो, न ही सिंहासन से बहने वाले पानी की आवाज़ को। तुमने वह सब कुछ खो दिया है जिस पर तुम्हारा हक है, वह सब भी जो सर्वशक्तिमान ने तुम्हें प्रदान किया था। तुम दु:ख के अनंत सागर में प्रवेश कर चुके हो, तुम्हारे पास न तो बचाव की शक्ति है, न जीवित बचे रहने की कोई उम्मीद है। तुम बस संघर्ष करते हो और व्यर्थ की भाग-दौड़ करते हो...। उस क्षण से, सर्वशक्तिमान के आशीषों से दूर, सर्वशक्तिमान के प्रावधानों की पहुंच से बाहर, ऐसे पथ पर चलते हुए जहां से लौटना संभव नहीं, तुम दुष्ट के द्वारा पीड़ित होने के लिए शापित हो गए थे। लाखों पुकार भी शायद ही तुम्हारे दिल और तुम्हारी आत्मा को जगा सकें। तुम उस शैतान की गोद में गहरी नींद में सो रहे हो, जो तुम्हें फुसलाकर एक ऐसे असीम क्षेत्र में ले गया है, जहाँ न कोई दिशा है, न कोई दिशा-सूचक। अब से, तुमने अपनी मौलिक मासूमियत और शुद्धता खो दी, और सर्वशक्तिमान की देखभाल से दूर रहना शुरू कर दिया। तुम्हारे दिल के भीतर, सभी मामलों में तुम्हें चलाने वाला शैतान है, वो तुम्हारा जीवन बन गया है। अब तुम उससे न तो डरते हो, न बचते हो, न ही उस पर शक करते हो; इसके बजाय, तुम उसे अपने दिल में परमेश्वर मानते हो। तुमने उसकी आराधना करना, उसे पूजना शुरू कर दिया है, तुम दोनों शरीर और छाया जैसे अविभाज्य हो गए हो, जो जीवन और मृत्यु में समान रूप से एक-दूसरे के लिए प्रतिबद्ध हैं। तुम्हें कुछ पता नहीं है कि तुम कहाँ से आए, क्यों पैदा हुए, या तुम क्यों मरोगे। तुम सर्वशक्तिमान को एक अजनबी के रूप में देखते हो; तुम उसके उद्गम को नहीं जानते, तुम्हारे लिए जो कुछ उसने किया है, वो जानने की तो बात ही दूर है। उससे जो कुछ भी आता है वह तुम्हारे लिए घृणित हो गया है; तुम न तो इसकी कद्र करते हो और न ही इसकी कीमत जानते हो। तुम उस दिन से शैतान के साथ-साथ चलते हो, जबसे तुमने सर्वशक्तिमान का प्रावधान प्राप्त किया है। तुमने शैतान के साथ हजारों वर्षों के संकटों और तूफानों को सहा है, और तुम उसके साथ उस परमेश्वर के

खिलाफ खड़े हो जो तुम्हारे जीवन का स्रोत है। तुम पश्चाताप के बारे में कुछ नहीं जानते, तो यह जानने की तो बात ही छोड़ो कि तुम अपने पतन के कगार पर आ गए हो। तुम यह भूल गए हो कि शैतान ने तुम्हें बहकाया और पीड़ित किया है; तुम अपने मूल को भूल गए हो। इस तरह शैतान ने आज तक, तुम्हें पूरे रास्ते, हर कदम पर कष्ट दिया है। तुम्हारा दिल और तुम्हारी आत्मा सुन्न हो गए हैं, सड़ गए हैं। तुमने इंसानी दुनिया के संताप के बारे में शिकायत करना बंद कर दिया है; तुम तो अब यह भी नहीं मानते कि दुनिया अन्यायपूर्ण है। सर्वशक्तिमान का अस्तित्व है या नहीं इसकी परवाह तो तुम्हें और भी कम है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तुमने बहुत पहले शैतान को अपना सच्चा पिता मान लिया था और तुम उससे अलग नहीं हो सकते। यह तुम्हारे दिल के भीतर का रहस्य है।

जैसे-जैसे भोर होती है, एक सुबह का तारा पूर्व में चमकने लगता है। यह एक ऐसा सितारा है जो पहले वहाँ कभी नहीं था, यह शांत, जगमगाते आसमान को रोशन करता है, मनुष्यों के दिलों में बुझी हुई रोशनी को फिर से जलाता है। तुम्हारे और अन्य लोगों पर समान रूप से चमकने वाले इस प्रकाश के कारण मनुष्य अब अकेला नहीं रह गया है। फिर भी तुम इकलौते हो जो कि अंधेरी रात में सोये रहते हो। तुम न कोई ध्वनि सुनते हो और न ही कोई प्रकाश देखते हो; तुम एक नए युग के, एक नए स्वर्ग और पृथ्वी के आगमन से अनजान हो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुमसे कहता है, "मेरे बच्चे, उठो मत, अभी भी रात है। मौसम ठंडा है, इसलिए बाहर मत जाओ, ऐसा न हो कि तलवार और भाले तुम्हारी आंखों को बेध दें।" तुम केवल अपने पिता की चेतावनियों पर भरोसा करते हो, क्योंकि तुम्हारा मानना है कि केवल तुम्हारा पिता सही है, क्योंकि वह तुमसे उम्र में बड़ा है और वह तुमसे बहुत प्यार करता है। इस तरह की चेतावनी और प्रेम तुम्हें इस पौराणिक कथा पर विश्वास नहीं करने देते कि दुनिया में प्रकाश है; वे तुम्हें इस बात की परवाह करने से रोक देते हैं कि सत्य अभी भी इस दुनिया में मौजूद है या नहीं। अब तुम सर्वशक्तिमान द्वारा बचाये जाने की आशा नहीं करते। तुम यथास्थिति से संतुष्ट हो, अब तुम प्रकाश के आगमन की प्रतीक्षा नहीं करते, पौराणिक कथाओं में सर्वशक्तिमान के जिस आगमन के बारे मे बताया गया है तुम उसकी राह नहीं देखते। तुम्हारे अनुसार जो भी सुंदर है उसे पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता, वह अस्तित्व में नहीं हो सकता। तुम्हारी नज़र में, मानवजाति का आने वाला कल, मानवजाति का भविष्य, बस गायब हो जाता है, मिट जाता है। यात्रा के अपने साथी या सूदूर की यात्रा की दिशा को खोने के गहरे डर से और कष्टों को साझा करने के लिए प्रफुल्लित, तुम अपने पिता के कपड़ों से पूरी ताकत से चिपके रहते हो।

मनुष्यों की विशाल और धुंधली दुनिया ने तुम जैसे कइयों को बनाया है, जो इस दुनिया की विभिन्न भूमिकाओं को निभाने में निर्भीक और निडर हैं। इसने कई "योद्धाओं" को बनाया है जिनमें मृत्यु का भय नहीं है। इससे भी बड़ी बात यह है कि इसने सुन्न और लकवाग्रस्त मनुष्यों के एक के बाद एक कई जत्थे तैयार किए हैं जो अपनी रचना के उद्देश्य से अनभिज्ञ हैं। सर्वशक्तिमान की आंखें गहराई से पीड़ित मानवजाति के प्रत्येक सदस्य का अवलोकन करती हैं। सर्वशक्तिमान को पीड़ितों की कराहें सुनायी देती हैं, उसे पीड़ितों की बेशर्मी दिखायी देती है, और वह उस मानवजाति की लाचारी और खौफ को महसूस करता है जो उद्धार का अनुग्रह खो चुकी है। मानवजाति परमेश्वर की देखभाल को अस्वीकार कर, अपने ही रास्ते पर चलती है; उसकी आँखों की जांच से बचने का प्रयास करते हुए, आखिरी सांस तक दुश्मन की संगति में गहरे समुद्र की कड़वाहट का स्वाद लेना पसंद करती है। अब मनुष्य को सर्वशक्तिमान की आह सुनाई नहीं देती; अब इस दु:खद मानवजाति को सहलाने के लिए सर्वशक्तिमान के हाथ तैयार नहीं हैं। वह बार-बार पकड़ता है, और बार-बार गँवा देता है, इस तरह उसका किया कार्य दोहराया जाता है। उस क्षण से, वह थकान महसूस करने लगता है, उकताने लगता है और इसलिए वह उस काम को बंद कर देता है जो उसके हाथ में है और मानवजाति के बीच में चलना बंद कर देता है...। मनुष्य इनमें से किसी भी परिवर्तन से अनजान है, सर्वशक्तिमान के आने और जाने से, उसकी उदासी और विषाद से अनजान है।

इस दुनिया की हर चीज़ तेज़ी से सर्वशक्तिमान के विचारों और उसकी नज़रों तले बदलती है। मानवजाति ने जिन चीज़ों के बारे में कभी नहीं सुना है वो अचानक आ जाती हैं, जबकि माउसके पास जो कुछ लंबे समय से रहा है वो अनजाने में उसके हाथ से फिसल जाता है। सर्वशक्तिमान के ठौर-ठिकाने की थाह कोई नहीं पा सकता, सर्वशक्तिमान की जीवन शक्ति की उत्कृष्टता और महानता का एहसास करने की तो बात ही दूर है। वह इसलिए उत्कृष्ट है कि वह वो समझ सकता है जो मनुष्य नहीं समझ सकता। वह महान इसलिए है कि वह मानवजाति द्वारा त्यागे जाने के बाद भी उसे बचाता है। वह जीवन और मृत्यु का अर्थ जानता है, इसके अतिरिक्त, वह जानता है कि उसके द्वारा सृजित मानवजाति के अस्तित्व को संचालित करने के लिए कौन से नियम उपयुक्त हैं। वह मानव अस्तित्व की नींव है, वह मानवजाति को फिर से जीवित करने वाला मुक्तिदाता है। वह प्रसन्नचित्त दिलों को दु:ख देकर नीचे लाता है और दुखी दिलों को खुशी देकर ऊपर उठाता है, ये सब उसके कार्य के लिए है, उसकी योजना के लिए है।

सर्वशक्तिमान के जीवन के प्रावधान से भटके हुए मनुष्य, अस्तित्व के उद्देश्य से अनभिज्ञ हैं, लेकिन

फिर भी मृत्यु से डरते हैं। उनके पास मदद या सहारा नहीं है, लेकिन फिर भी वे अपनी आंखों को बंद करने के अनिच्छुक हैं, इस दुनिया में एक अधम अस्तित्व को घसीटने के लिए खुद को मजबूत बनाते हैं, जो अपनी आत्मा के बोध के बगैर बस माँस के बोरे हैं। तुम अन्य लोगों की तरह ही, आशारहित और उद्देश्यहीन होकर जीते हो। केवल पौराणिक कथा का पवित्र जन ही उन लोगों को बचाएगा, जो अपने दु:ख में कराहते हुए उसके आगमन के लिए बहुत ही बेताब हैं। अभी तक, चेतनाविहीन लोगों को इस तरह के विश्वास का एहसास नहीं हुआ है। फिर भी, लोग अभी भी इसके लिए तरस रहे हैं। सर्वशक्तिमान ने हुरी तरह से पीड़ित इन लोगों पर दया की है; साथ ही, वह उन लोगों से तंग आ गया है, जिनमें चेतना की कमी है, क्योंकि उसे मनुष्य से जवाब पाने के लिए बहुत लंबा इंतजार करना पड़ा है। वह तुम्हारे हृदय की, तुम्हारी आत्मा की तलाश करना चाहता है, तुम्हें पानी और भोजन देना और तुम्हें जगाना चाहता है, ताकि अब तुम भूखे और प्यासे न रहो। जब तुम थक जाओ और तुम्हें इस दुनिया की बेरंग उजड़ेपन का कुछ-कुछ अहसास होने लगे, तो तुम हारना मत, रोना मत। द्रष्टा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, किसी भी समय तुम्हारे आगमन को गले लगा लेगा। वह तुम्हारी बगल में पहरा दे रहा है, तुम्हारे लौट आने का इंतजार कर रहा है। वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा है जिस दिन तुम अचानक अपनी याददाश्त फिर से पा लोगे: जब तुम्हें यह एहसास होगा कि तुम परमेश्वर से आए हो लेकिन किसी अज्ञात समय में तुमने अपनी दिशा खो दी थी, किसी अज्ञात समय में तुम सड़क पर होश खो बैठे थे, और किसी अज्ञात समय में तुमने एक "पिता" को पा लिया था; इसके अलावा, जब तुम्हें एहसास होगा कि सर्वशक्तिमान तो हमेशा से ही तुम पर नज़र रखे हुए है, तुम्हारी वापसी के लिए बहुत लंबे समय से इंतजार कर रहा है। वह हताश लालसा लिए देखता रहा है, जवाब के बिना, एक प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करता रहा है। उसका स्थायी रूप से नज़र रखना अनमोल है, और यह मानवीय हृदय और मानवीय आत्मा के लिए है। शायद ऐसे नज़र रखना अनिश्चितकालीन है, शायद इसका अंत होने वाला है। लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हारा दिल और तुम्हारी आत्मा इस वक्त कहाँ हैं।

28 मई, 2003

परमेश्वर के प्रकटन ने एक नए युग का सूत्रपात किया है

परमेश्वर की छह-हज़ार-वर्षीय प्रबंधन योजना समाप्त हो रही है, और राज्य का द्वार उन सभी लोगों

के लिए पहले से ही खोल दिया गया है, जो उसका प्रकटन चाहते हैं। प्रिय भाइयो और बहनो, तुम लोग किस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हो? वह क्या है, जो तुम खोजते हो? क्या तुम परमेश्वर के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हो? क्या तुम उसके पदचिह्न खोज रहे हो? परमात्मा के दर्शन के लिए व्यक्ति कैसे लालायित होता है! और परमेश्वर के पदचिह्नों को पाना कितना कठिन है! इस तरह के युग में, इस तरह की दुनिया में, हमें उस दिन को देखने के लिए क्या करना चाहिए, जिस दिन परमेश्वर प्रकट होता है? हमें परमेश्वर के पदचिह्नों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए? इस तरह के प्रश्नों से उन सभी का सामना होता है, जो परमेश्वर के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम लोगों ने उन सभी पर एक से अधिक अवसरों पर विचार किया है—लेकिन परिणाम क्या रहा? परमेश्वर कहाँ प्रकट होता है? परमेश्वर के पदचिह्न कहाँ हैं? क्या तुम लोगों को उत्तर मिल गया है? बहुत-से लोग इस तरह उत्तर देंगे : "परमेश्वर उन सभी के बीच प्रकट होता है, जो उसका अनुसरण करते हैं और उसके पदचिह्न हमारे बीच में हैं; यह इतना आसान है!" कोई भी फार्मूलाबद्ध उत्तर दे सकता है, किंतु क्या तुम लोग समझते हो कि परमेश्वर के प्रकटन या उसके पदचिह्नों का क्या अर्थ है? परमेश्वर का प्रकटन व्यक्तिगत रूप से अपना कार्य करने के लिए उसके पृथ्वी पर आगमन को संदर्भित करता है। अपनी स्वयं की पहचान और स्वभाव के साथ, और अपने जन्मजात तरीके से वह एक युग का आरंभ करने और एक युग का अंत करने के कार्य का संचालन करने के लिए मनुष्यजाति के बीच उतरता है। इस तरह का प्रकटन किसी समारोह का रूप नहीं है। यह कोई संकेत, कोई तसवीर, कोई चमत्कार या किसी प्रकार का भव्य दर्शन नहीं है, और यह किसी प्रकार की धार्मिक प्रक्रिया तो बिलकुल भी नहीं है। यह एक असली और वास्तविक तथ्य है, जिसे किसी के भी द्वारा छुआ और देखा जा सकता है। इस तरह का प्रकटन बेमन से किसी कार्य को करने के लिए, या किसी अल्पकालिक उपक्रम के लिए नहीं है; बल्कि यह उसकी प्रबंधन योजना में कार्य के एक चरण के वास्ते है। परमेश्वर का प्रकटन हमेशा अर्थपूर्ण होता है और हमेशा उसकी प्रबंधन योजना से कुछ संबंध रखता है। यहाँ जिसे "प्रकटन" कहा गया है, वह उस प्रकार के "प्रकटन" से पूरी तरह से भिन्न है, जिसमें परमेश्वर मनुष्य का मार्गदर्शन, अगुआई और प्रबोधन करता है। हर बार जब परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है, तो वह अपने महान कार्य के एक चरण को कार्यान्वित करता है। यह कार्य किसी भी अन्य युग के कार्य से भिन्न होता है। यह मनुष्य के लिए अकल्पनीय है, और इसका मनुष्य द्वारा कभी भी अनुभव नहीं किया गया है। यह वह कार्य है, जो एक नए युग का आरंभ करता है और पुराने युग का समापन करता है, और यह

मनुष्यजाति के उद्धार के कार्य का एक नया और बेहतर रूप है; इतना ही नहीं, यह वह कार्य है, जो मनुष्यजाति को नए युग में लाता है। परमेश्वर के प्रकटन का यही तात्पर्य है।

एक बार जब तुम लोग समझ जाते हो कि परमेश्वर के प्रकटन का क्या अर्थ है, तो तुम्हें परमेश्वर के पदचिह्न कैसे खोजने चाहिए? इस प्रश्न को समझाना कठिन नहीं है : जहाँ कहीं भी परमेश्वर का प्रकटन होता है, वहाँ तुम्हें उसके पदचिह्न मिलेंगे। इस तरह की व्याख्या सीधी-सादी लगती है, किंतु इसे अभ्यास में लाना इतना आसान नहीं है, क्योंकि बहुत लोग नहीं जानते कि परमेश्वर कहाँ प्रकट होता है, और यह तो बिलकुल भी नहीं जानते कि वह कहाँ प्रकट होना चाहता है, या उसे कहाँ प्रकट होना चाहिए। कुछ लोग आवेगपूर्वक यह मान लेते हैं कि जहाँ भी पवित्र आत्मा कार्य पर है, वहाँ परमेश्वर प्रकट होता है। या फिर वे यह मानते हैं कि जहाँ भी आध्यात्मिक हस्तियाँ होती हैं, वहाँ परमेश्वर प्रकट होता है। या फिर वे यह मानते हैं कि जहाँ कहीं अत्यधिक प्रतिष्ठित लोग होते हैं, वहाँ परमेश्वर प्रकट होता है। फिलहाल, आओ इस बात को छोड़ दें कि ऐसी मान्यताएँ सही हैं या ग़लत। इस तरह के प्रश्न को समझाने के लिए पहले हमारे पास एक स्पष्ट उद्देश्य होना चाहिए : हम परमेश्वर के पदचिह्नों की खोज कर रहे हैं। हम आध्यात्मिक हस्तियों की खोज नहीं कर रहे हैं, हम विख्यात हस्तियों की खोज तो बिलकुल नहीं कर रहे है; हम परमेश्वर के पदचिह्नों की खोज कर रहे हैं। चूँकि हम परमेश्वर के पदचिह्नों की खोज कर रहे हैं, इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हम परमेश्वर की इच्छा, उसके वचन और कथनों की खोज करें—क्योंकि जहाँ कहीं भी परमेश्वर द्वारा बोले गए नए वचन हैं, वहाँ परमेश्वर की वाणी है, और जहाँ कहीं भी परमेश्वर के पदचिह्न हैं, वहाँ परमेश्वर के कर्म हैं। जहाँ कहीं भी परमेश्वर की अभिव्यक्ति है, वहाँ परमेश्वर प्रकट होता है, और जहाँ कहीं भी परमेश्वर प्रकट होता है, वहाँ सत्य, मार्ग और जीवन विद्यमान होता है। परमेश्वर के पदचिह्नों की तलाश में तुम लोगों ने इन वचनों की उपेक्षा कर दी है कि "परमेश्वर सत्य, मार्ग और जीवन है।" और इसलिए, बहुत-से लोग सत्य को प्राप्त करके भी यह नहीं मानते कि उन्हें परमेश्वर के पदचिह्न मिल गए हैं, और वे परमेश्वर के प्रकटन को तो बिलकुल भी स्वीकार नहीं करते। कितनी गंभीर ग़लती है! परमेश्वर के प्रकटन का समाधान मनुष्य की धारणाओं से नहीं किया जा सकता, और परमेश्वर मनुष्य के आदेश पर तो बिलकुल भी प्रकट नहीं हो सकता। परमेश्वर जब अपना कार्य करता है, तो वह अपनी पसंद और अपनी योजनाएँ बनाता है; इसके अलावा, उसके अपने उद्देश्य और अपने तरीके हैं। वह जो भी कार्य करता है, उसके बारे में उसे मनुष्य से चर्चा करने या उसकी सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है, और अपने कार्य के

बारे में हर-एक व्यक्ति को सूचित करने की आवश्यकता तो उसे बिलकुल भी नहीं है। यह परमेश्वर का स्वभाव है, जिसे हर व्यक्ति को पहचानना चाहिए। यदि तुम लोग परमेश्वर के प्रकटन को देखने और उसके पदचिह्नों का अनुसरण करने की इच्छा रखते हो, तो तुम लोगों को पहले अपनी धारणाओं को त्याग देना चाहिए। तुम लोगों को यह माँग नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर ऐसा करे या वैसा करे, तुम्हें उसे अपनी सीमाओं और अपनी धारणाओं तक सीमित तो बिलकुल भी नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, तुम लोगों को यह पूछना चाहिए कि तुम्हें परमेश्वर के पदचिह्नों की तलाश कैसे करनी है, तुम्हें परमेश्वर के प्रकटन को कैसे स्वीकार करना है, और तुम्हें परमेश्वर के नए कार्य के प्रति कैसे समर्पण करना है। मनुष्य को ऐसा ही करना चाहिए। चूँकि मनुष्य सत्य नहीं है, और उसके पास भी सत्य नहीं है, इसलिए उसे खोजना, स्वीकार करना और आज्ञापालन करना चाहिए।

चाहे तुम अमेरिकी हो, ब्रिटिश या फिर किसी अन्य देश के, तुम्हें अपनी राष्ट्रीयता की सीमाओं से बाहर कदम रखना चाहिए, अपनी अस्मिता के पार जाना चाहिए, और परमेश्वर के कार्य को एक सृजित प्राणी के दृष्टिकोण से देखना चाहिए। इस तरह तुम परमेश्वर के पदचिह्नों को सीमाओं में नहीं बाँधोगे। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आजकल बहुत-से लोग इसे असंभव समझते हैं कि परमेश्वर किसी विशेष राष्ट्र में या कुछ निश्चित लोगों के बीच प्रकट होगा। परमेश्वर के कार्य का कितना गहन अर्थ है, और परमेश्वर का प्रकटन कितना महत्वपूर्ण है! मनुष्य की धारणाएँ और सोच भला उन्हें कैसे माप सकती हैं? और इसलिए मैं कहता हूँ, कि तुम्हें परमेश्वर के प्रकटन की तलाश करने के लिए अपनी राष्ट्रीयता और जातीयता की धारणाओं को तोड़ देना चाहिए। केवल इसी प्रकार से तुम अपनी धारणाओं से बाध्य नहीं होगे; केवल इसी प्रकार से तुम परमेश्वर के प्रकटन का स्वागत करने के योग्य होगे। अन्यथा, तुम शाश्वत अंधकार में रहोगे, और कभी भी परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त नहीं करोगे।

परमेश्वर संपूर्ण मानवजाति का परमेश्वर है। वह स्वयं को किसी भी राष्ट्र या लोगों की निजी संपत्ति नहीं मानता, बल्कि अपना कार्य अपनी बनाई योजना के अनुसार, किसी भी रूप, राष्ट्र या लोगों द्वारा बाधित हुए बिना, करता जाता है। शायद तुमने इस रूप की कभी कल्पना नहीं की है, या शायद इस रूप के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण इनकार करने वाला है, या शायद वह देश, जहाँ परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है और वे लोग, जिनके बीच वह स्वयं को प्रकट करता है, ऐसे हैं, जिनके साथ सभी के द्वारा भेदभाव किया जाता है और वे पृथ्वी पर सर्वाधिक पिछड़े हुए हैं। लेकिन परमेश्वर के पास अपनी बुद्धि है। उसने अपने महान

सामर्थ्य के साथ, और अपने सत्य और स्वभाव के माध्यम से, सचमुच ऐसे लोगों के समूह को प्राप्त कर लिया है, जो उसके साथ एक मन वाले हैं, और जिन्हें वह पूर्ण बनाना चाहता है—उसके द्वारा विजित समूह, जो सभी प्रकार के परीक्षणों, क्लेशों और उत्पीड़न को सहन करके, अंत तक उसका अनुसरण कर सकता है। किसी भी रूप या राष्ट्र की बाध्यताओं से मुक्त, परमेश्वर के प्रकटन का लक्ष्य उसे अपनी योजना के अनुसार कार्य पूरा करने में सक्षम बनाना है। यह वैसा ही है जैसे, जब परमेश्वर यहूदिया में देह बना, तब उसका लक्ष्य समस्त मानवजाति के छुटकारे के लिए सलीब पर चढ़ने का कार्य पूरा करना था। फिर भी यहूदियों का मानना था कि परमेश्वर के लिए ऐसा करना असंभव है, और उन्हें यह असंभव लगता था कि परमेश्वर देह बन सकता है और प्रभु यीशु का रूप ग्रहण कर सकता है। उनका "असंभव" वह आधार बन गया, जिस पर उन्होंने परमेश्वर की निंदा और उसका विरोध किया, और जो अंततः इस्राएल को विनाश की ओर ले गया। आज कई लोगों ने उसी तरह की ग़लती की है। वे अपनी समस्त शक्ति के साथ परमेश्वर के आसन्न प्रकटन की घोषणा करते हैं, मगर साथ ही उसके प्रकटन की निंदा भी करते हैं; उनका "असंभव" परमेश्वर के प्रकटन को एक बार फिर उनकी कल्पना की सीमाओं के भीतर कैद कर देता है। और इसलिए मैंने कई लोगों को परमेश्वर के वचनों के आने के बाद जँगली और कर्कश हँसी का ठहाका लगाते देखा है। लेकिन क्या यह हँसी यहूदियों के तिरस्कार और ईशनिंदा से किसी भी तरह से भिन्न है? तुम लोग सत्य की उपस्थिति में श्रद्धावान नहीं हो, और सत्य के लिए तरसने की प्रवृत्ति तो तुम लोगों में बिलकुल भी नहीं है। तुम बस इतना ही करते हो कि अंधाधुंध अध्ययन करते हो और पुलक भरी उदासीनता के साथ प्रतीक्षा करते हो। इस तरह से अध्ययन और प्रतीक्षा करने से तुम क्या हासिल कर सकते हो? क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हें परमेश्वर से व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिलेगा? यदि तुम परमेश्वर के कथनों को नहीं समझ सकते, तो तुम किस तरह से परमेश्वर के प्रकटन को देखने के योग्य हो? जहाँ कहीं भी परमेश्वर प्रकट होता है, वहाँ सत्य व्यक्त होता है, और वहाँ परमेश्वर की वाणी होगी। केवल वे लोग ही परमेश्वर की वाणी सुन पाएँगे, जो सत्य को स्वीकार कर सकते हैं, और केवल इस तरह के लोग ही परमेश्वर के प्रकटन को देखने के योग्य हैं। अपनी धारणाओं को जाने दो! स्वयं को शांत करो और इन वचनों को ध्यानपूर्वक पढ़ो। यदि तुम सत्य के लिए तरसते हो, तो परमेश्वर तुम्हें प्रबुद्ध करेगा और तुम उसकी इच्छा और उसके वचनों को समझोगे। "असंभव" के बारे में अपनी राय जाने दो! लोग किसी चीज़ को जितना अधिक असंभव मानते हैं, उसके घटित होने की उतनी ही अधिक संभावना होती है, क्योंकि परमेश्वर की बुद्धि स्वर्ग से ऊँची उड़ान

भरती है, परमेश्वर के विचार मनुष्य के विचारों से ऊँचे हैं, और परमेश्वर का कार्य मनुष्य की सोच और धारणा की सीमाओं के पार जाता है। जितना अधिक कुछ असंभव होता है, उतना ही अधिक उसमें सत्य होता है, जिसे खोजा जा सकता है; कोई चीज़ मनुष्य की धारणा और कल्पना से जितनी अधिक परे होती है, उसमें परमेश्वर की इच्छा उतनी ही अधिक होती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भले ही वह स्वयं को कहीं भी प्रकट करे, परमेश्वर फिर भी परमेश्वर है, और उसका सार उसके प्रकटन के स्थान या तरीके के आधार पर कभी नहीं बदलेगा। परमेश्वर के पदचिह्न चाहे कहीं भी हों, उसका स्वभाव वैसा ही बना रहता है, और चाहे परमेश्वर के पदचिह्न कहीं भी हों, वह समस्त मनुष्यजाति का परमेश्वर है, ठीक वैसे ही, जैसे कि प्रभु यीशु न केवल इस्राएलियों का परमेश्वर है, बल्कि वह एशिया, यूरोप और अमेरिका के सभी लोगों का, और इससे भी अधिक, समस्त ब्रह्मांड का एकमात्र परमेश्वर है। तो आओ, हम परमेश्वर की इच्छा खोजें और उसके कथनों में उसके प्रकटन की खोज करें, और उसके पदचिह्नों के साथ तालमेल रखें! परमेश्वर सत्य, मार्ग और जीवन है। उसके वचन और उसका प्रकटन साथ-साथ विद्यमान हैं, और उसका स्वभाव और पदचिह्न मनुष्यजाति के लिए हर समय खुले हैं। प्यारे भाइयो और बहनो, मुझे आशा है कि तुम लोग इन वचनों में परमेश्वर का प्रकटन देख सकते हो, एक नए युग में आगे बढ़ते हुए तुम उसके पदचिह्नों का अनुसरण करना शुरू कर सकते हो, और उस सुंदर नए स्वर्ग और पृथ्वी में प्रवेश कर सकते हो, जिसे परमेश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार किया है, जो उसके प्रकटन का इंतजार करते हैं!

परमेश्वर संपूर्ण मानवजाति के भाग्य का नियंता है

मानवजाति के एक सदस्य और एक सच्चे ईसाई होने के नाते अपने मन और शरीर परमेश्वर के आदेश की पूर्ति करने के लिए समर्पित करना हम सभी का उत्तरदायित्व और कर्तव्य है, क्योंकि हमारा संपूर्ण अस्तित्व परमेश्वर से आया है, और वह परमेश्वर की संप्रभुता के कारण अस्तित्व में है। यदि हमारे मन और शरीर परमेश्वर के आदेश और मानवजाति के धार्मिक कार्य के लिए नहीं हैं, तो हमारी आत्माएँ उन लोगों के योग्य नहीं होंगी, जो परमेश्वर के आदेश के लिए शहीद हुए थे, और परमेश्वर के लिए तो और भी अधिक अयोग्य होंगी, जिसने हमें सब-कुछ प्रदान किया है।

परमेश्वर ने इस संसार की सृष्टि की, उसने इस मानवजाति को बनाया, और इतना ही नहीं, वह प्राचीन यूनानी संस्कृति और मानव-सभ्यता का वास्तुकार भी था। केवल परमेश्वर ही इस मानवजाति को सांत्वना

देता है, और केवल परमेश्वर ही रात-दिन इस मानवजाति का ध्यान रखता है। मानव का विकास और प्रगति परमेश्वर की संप्रभुता से जुड़ी है, मानव का इतिहास और भविष्य परमेश्वर की योजनाओं में निहित है। यदि तुम एक सच्चे ईसाई हो, तो तुम निश्चित ही इस बात पर विश्वास करोगे कि किसी भी देश या राष्ट्र का उत्थान या पतन परमेश्वर की योजनाओं के अनुसार होता है। केवल परमेश्वर ही किसी देश या राष्ट्र के भाग्य को जानता है और केवल परमेश्वर ही इस मानवजाति की दिशा नियंत्रित करता है। यदि मानवजाति अच्छा भाग्य पाना चाहती है, यदि कोई देश अच्छा भाग्य पाना चाहता है, तो मनुष्य को परमेश्वर की आराधना में झुकना होगा, पश्चात्ताप करना होगा और परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करने होंगे, अन्यथा मनुष्य का भाग्य और गंतव्य एक अपरिहार्य विभीषिका बन जाएँगे।

पीछे मुड़कर उस समय को देखो, जब नूह ने नाव बनाई थी : मानवजाति पूरी तरह से भ्रष्ट थी, लोग परमेश्वर के आशीषों से भटक गए थे, परमेश्वर द्वारा अब और उनकी देखभाल नहीं की जा रही थी, और वे परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ खो चुके थे। वे परमेश्वर की रोशनी के बिना अंधकार में रहते थे। फिर वे स्वभाव से व्यभिचारी बन गए, और उन्होंने स्वयं को घृणित चरित्रहीनता में झोंक दिया। ऐसे लोग अब और परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ प्राप्त नहीं कर सकते थे; वे परमेश्वर के चेहरे की गवाही देने या परमेश्वर की वाणी सुनने के अयोग्य थे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया था, उन सब चीजों को बेक़ार समझकर छोड़ दिया था, जो परमेश्वर ने उन्हें प्रदान की थीं, और वे परमेश्वर की शिक्षाओं को भूल गए थे। उनका हृदय परमेश्वर से अधिकाधिक दूर भटक गया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे विवेक और मानवता से वंचित होकर पथभ्रष्ट हो गए और अधिक से अधिक दुष्ट होते गए। फिर वे मृत्यु के और भी निकट पहुँच गए, और परमेश्वर के कोप और दंड के भागी हो गए। केवल नूह ने परमेश्वर की आराधना की और बुराई से दूर रहा, और इसलिए वह परमेश्वर की वाणी और निर्देशों को सुनने में सक्षम था। उसने परमेश्वर के वचन के अनुसार नाव बनाई, और सभी प्रकार के जीवित प्राणियों को उसमें एकत्र किया। और इस तरह, जब एक बार सब-कुछ तैयार हो गया, तो परमेश्वर ने संसार पर अपनी विनाशलीला शुरू कर दी। केवल नूह और उसके परिवार के सात अन्य लोग इस विनाशलीला में जीवित बचे, क्योंकि नूह ने यहोवा की आराधना की थी और बुराई से दूर रहा था।

अब वर्तमान युग को देखो : नूह जैसे धर्मी मनुष्य, जो परमेश्वर की आराधना कर सके और बुराई से दूर रह सके, होने बंद हो गए हैं। फिर भी परमेश्वर इस मानवजाति के प्रति दयालु है, और इस अंतिम युग

में अभी भी उन्हें दोषमुक्त करता है। परमेश्वर उनकी खोज कर रहा है, जो उसके प्रकट होने की लालसा करते हैं। वह उनकी खोज करता है, जो उसके वचनों को सुनने में सक्षम हैं, जो उसके आदेश को नहीं भूले और अपना तन-मन उसे समर्पित करते हैं। वह उनकी खोज करता है, जो उसके सामने बच्चों के समान आज्ञाकारी हैं, और उसका विरोध नहीं करते। यदि तुम किसी भी ताकत या बल से अबाधित होकर ईश्वर के प्रति समर्पित होते हो, तो परमेश्वर तुम्हारे ऊपर अनुग्रह की दृष्टि डालेगा और तुम्हें अपने आशीष प्रदान करेगा। यदि तुम उच्च पद वाले, सम्मानजनक प्रतिष्ठा वाले, प्रचुर ज्ञान से संपन्न, विपुल संपत्तियों के मालिक हो, और तुम्हें बहुत लोगों का समर्थन प्राप्त है, तो भी ये चीज़ें तुम्हें परमेश्वर के आह्वान और आदेश को स्वीकार करने, और जो कुछ परमेश्वर तुमसे कहता है, उसे करने के लिए उसके सम्मुख आने से नहीं रोकतीं, तो फिर तुम जो कुछ भी करोगे, वह पृथ्वी पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा और मनुष्य का सर्वाधिक धर्मी उपक्रम होगा। यदि तुम अपनी हैसियत और लक्ष्यों की खातिर परमेश्वर के आह्वान को अस्वीकार करोगे, तो जो कुछ भी तुम करोगे, वह परमेश्वर द्वारा श्रापित और यहाँ तक कि तिरस्कृत भी किया जाएगा। शायद तुम कोई अध्यक्ष, कोई वैज्ञानिक, कोई पादरी या कोई एल्डर हो, किंतु इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम्हारा पद कितना उच्च है, यदि तुम अपने ज्ञान और अपने उपक्रमों की योग्यता पर भरोसा रखते हो, तो तुम हमेशा असफल रहोगे, और हमेशा परमेश्वर के आशीषों से वंचित रहोगे, क्योंकि परमेश्वर ऐसा कुछ भी स्वीकार नहीं करता जो तुम करते हो, और वह नहीं मानता कि तुम्हारे उपक्रम धर्मी हैं, या यह स्वीकार नहीं करता कि तुम मानवजाति के भले के लिए कार्य कर रहे हो। वह कहेगा कि जो कुछ भी तुम करते हो, वह मानवजाति को परमेश्वर की सुरक्षा और आशीषों से वंचित करने के लिए करते हो। वह कहेगा कि तुम मानवजाति को अंधकार की ओर, मृत्यु की ओर, और एक ऐसे अंतहीन अस्तित्व के आरंभ की ओर ले जा रहे हो, जिसमें मनुष्य ने परमेश्वर और उसके आशीष खो दिए हैं।

मानवजाति द्वारा सामाजिक विज्ञानों के आविष्कार के बाद से मनुष्य का मन विज्ञान और ज्ञान से भर गया है। तब से विज्ञान और ज्ञान मानवजाति के शासन के लिए उपकरण बन गए हैं, और अब मनुष्य के पास परमेश्वर की आराधना करने के लिए पर्याप्त गुंजाइश और अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं रही हैं। मनुष्य के हृदय में परमेश्वर की स्थिति सबसे नीचे हो गई है। हृदय में परमेश्वर के बिना मनुष्य की आंतरिक दुनिया अंधकारमय, आशारहित और खोखली है। बाद में मनुष्य के हृदय और मन को भरने के लिए कई समाज-वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और राजनीतिज्ञों ने सामने आकर सामाजिक विज्ञान के सिद्धांत, मानव-विकास के

सिद्धांत और अन्य कई सिद्धांत व्यक्त किए, जो इस सच्चाई का खंडन करते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की है, और इस तरह, यह विश्वास करने वाले बहुत कम रह गए हैं कि परमेश्वर ने सब-कुछ बनाया है, और विकास के सिद्धांत पर विश्वास करने वालों की संख्या और अधिक बढ़ गई है। अधिकाधिक लोग पुराने विधान के युग के दौरान परमेश्वर के कार्य के अभिलेखों और उसके वचनों को मिथक और किंवदंतियाँ समझते हैं। अपने हृदयों में लोग परमेश्वर की गरिमा और महानता के प्रति, और इस सिद्धांत के प्रति भी कि परमेश्वर का अस्तित्व है और वह सभी चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है, उदासीन हो जाते हैं। मानवजाति का अस्तित्व और देशों एवं राष्ट्रों का भाग्य उनके लिए अब और महत्वपूर्ण नहीं रहे, और मनुष्य केवल खाने-पीने और भोग-विलासिता की खोज में चिंतित, एक खोखले संसार में रहता है। ... कुछ लोग स्वयं इस बात की खोज करने का उत्तरदायित्व लेते हैं कि आज परमेश्वर अपना कार्य कहाँ करता है, या यह तलाशने का उत्तरदायित्व कि वह किस प्रकार मनुष्य के गंतव्य पर नियंत्रण और उसकी व्यवस्था करता है। और इस तरह, मनुष्य के बिना जाने ही मानव-सभ्यता मनुष्य की इच्छाओं के अनुसार चलने में और भी अधिक अक्षम हो गई है, और कई ऐसे लोग भी हैं, जो यह महसूस करते हैं कि इस प्रकार के संसार में रहकर वे, उन लोगों के बजाय जो चले गए हैं, कम खुश हैं। यहाँ तक कि उन देशों के लोग भी, जो अत्यधिक सभ्य हुआ करते थे, इस तरह की शिकायतें व्यक्त करते हैं। क्योंकि परमेश्वर के मार्गदर्शन के बिना शासक और समाजशास्त्री मानवजाति की सभ्यता को सुरक्षित रखने के लिए अपना कितना भी दिमाग क्यों न ख़पा लें, कोई फायदा नहीं होगा। मनुष्य के हृदय का खालीपन कोई नहीं भर सकता, क्योंकि कोई मनुष्य का जीवन नहीं बन सकता, और कोई सामाजिक सिद्धांत मनुष्य को उस खालीपन से मुक्ति नहीं दिला सकता, जिससे वह व्यथित है। विज्ञान, ज्ञान, स्वतंत्रता, लोकतंत्र, फुरसत, आराम : ये मनुष्य को केवल अस्थायी सांत्वना देते हैं। यहाँ तक कि इन बातों के साथ मनुष्य निश्चित रूप से पाप करेगा और समाज के अन्याय का रोना रोएगा। ये चीज़ें मनुष्य की अन्वेषण की लालसा और इच्छा को दबा नहीं सकतीं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर द्वारा बनाया गया था और मनुष्यों के बेतुके त्याग और अन्वेषण केवल और अधिक कष्ट की ओर ही ले जा सकते हैं और मनुष्य को एक निरंतर भय की स्थिति में रख सकते हैं, और वह यह नहीं जान सकता कि मानवजाति के भविष्य या आगे आने वाले मार्ग का सामना किस प्रकार किया जाए। यहाँ तक कि मनुष्य विज्ञान और ज्ञान से भी डरने लगेगा, और खालीपन के एहसास से और भी भय खाने लगेगा। इस संसार में, चाहे तुम किसी स्वतंत्र देश में रहते हो या बिना

मानवाधिकारों वाले देश में, तुम मानवजाति के भाग्य से बचकर भागने में सर्वथा असमर्थ हो। तुम चाहे शासक हो या शासित, तुम भाग्य, रहस्यों और मानवजाति के गंतव्य की खोज करने की इच्छा से बचकर भागने में सर्वथा अक्षम हो, और खालीपन के व्याकुल करने वाले बोध से बचकर भागने में तो और भी ज्यादा अक्षम हो। इस प्रकार की घटनाएँ, जो समस्त मानवजाति के लिए सामान्य हैं, समाजशास्त्रियों द्वारा सामाजिक घटनाएँ कही जाती हैं, फिर भी कोई महान व्यक्ति इस समस्या का समाधान करने के लिए सामने नहीं आ सकता। मनुष्य आखिरकार मनुष्य है, और परमेश्वर का स्थान और जीवन किसी मनुष्य द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। मानवजाति को केवल एक निष्पक्ष समाज की ही आवश्यकता नहीं है, जिसमें हर व्यक्ति को नियमित रूप से अच्छा भोजन मिलता हो और जिसमें सभी समान और स्वतंत्र हों, बल्कि मानवजाति को आवश्यकता है परमेश्वर के उद्धार और अपने लिए जीवन की आपूर्ति की। केवल जब मनुष्य परमेश्वर का उद्धार और जीवन की आपूर्ति प्राप्त करता है, तभी उसकी आवश्यकताओं, अन्वेषण की लालसा और आध्यात्मिक रिक्तता का समाधान हो सकता है। यदि किसी देश या राष्ट्र के लोग परमेश्वर के उद्धार और उसकी देखभाल प्राप्त करने में अक्षम हैं, तो वह देश या राष्ट्र विनाश के मार्ग पर, अंधकार की ओर चला जाएगा, और परमेश्वर द्वारा जड़ से मिटा दिया जाएगा।

शायद तुम्हारा देश वर्तमान में समृद्ध हो रहा हो, किंतु यदि तुम लोगों को परमेश्वर से भटकने देते हो, तो वह स्वयं को उत्तरोत्तर परमेश्वर के आशीषों से वंचित होता हुआ पाएगा। तुम्हारे देश की सभ्यता उत्तरोत्तर पैरों तले रौंदी जाएगी, और जल्दी ही लोग परमेश्वर के विरुद्ध उठ खड़े होंगे और स्वर्ग को कोसने लगेंगे। और इसलिए, मनुष्य के बिना जाने ही देश का भाग्य नष्ट हो जाएगा। परमेश्वर शक्तिशाली देशों को उन देशों से निपटने के लिए ऊपर उठाएगा, जिन्हें परमेश्वर द्वारा श्राप दिया गया है, यहाँ तक कि वह पृथ्वी से उनका अस्तित्व भी मिटा सकता है। किसी देश का उत्थान और पतन इस बात पर आधारित होता है कि क्या उसके शासक परमेश्वर की आराधना करते हैं, और क्या वे अपने लोगों को परमेश्वर के निकट लाने और उसकी आराधना करने में उनकी अगुआई करते हैं। इतना ही नहीं, इस अंतिम युग में, चूँकि वास्तव में परमेश्वर को खोजने और उसकी आराधना करने वाले लोग तेजी से दुर्लभ होते जा रहे हैं, इसलिए परमेश्वर उन देशों पर अपना विशेष अनुग्रह बरसाता है, जिनमें ईसाइयत एक राज्य धर्म है। वह संसार में एक अपेक्षाकृत धार्मिक शिविर बनाने के लिए उन देशों को इकट्ठा करता है, जबकि नास्तिक देश और वे देश, जो सच्चे परमेश्वर की आराधना नहीं करते, धार्मिक शिविर के विरोधी बन जाते हैं। इस तरह, परमेश्वर

का मानवजाति के बीच न केवल एक स्थान होता है, जिसमें वह अपना कार्य करता है, बल्कि वह उन देशों को भी प्राप्त करता है, जो धर्मी अधिकार का प्रयोग कर सकते हैं, और उन देशों पर अंकुश और प्रतिबंध लगाने देता है, जो परमेश्वर का विरोध करते हैं। इसके बावजूद, अभी भी ज्यादा लोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए आगे नहीं आते, क्योंकि मनुष्य उससे बहुत दूर भटक गया है और बहुत समय से उसे भूल चुका है। पृथ्वी पर केवल वे ही देश बचते हैं, जो धार्मिकता का अभ्यास करते हैं और अधार्मिकता का विरोध करते हैं। किंतु यह परमेश्वर की इच्छाओं से दूर है, क्योंकि किसी भी देश का शासक अपने लोगों के ऊपर परमेश्वर को नियंत्रण नहीं करने देगा, और कोई राजनीतिक दल अपने लोगों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए इकट्ठा नहीं करेगा; परमेश्वर प्रत्येक देश, राष्ट्र, सत्तारूढ़ दल, और यहाँ तक कि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में अपना यथोचित स्थान खो चुका है। यद्यपि धार्मिक ताक़तें इस दुनिया में मौजूद हैं, शासन करती हैं जिसमें मनुष्य के हृदय में परमेश्वर का स्थान भंगुर है। परमेश्वर के आशीष के बिना राजनीतिक क्षेत्र अव्यवस्था में पड़ जाएगा और हमले के लिए भेद्य हो जाएगा। मानवजाति के लिए परमेश्वर के आशीष से रहित होना सूर्य से रहित होने के समान है। शासक अपने लोगों के लिए चाहे कितने भी परिश्रम से काम क्यों न करें, मानवजाति चाहे कितने भी धर्मी सम्मेलन आयोजित क्यों न करे, इनमें से कोई भी घटनाक्रम को या मानवजाति के भाग्य को नहीं बदलेगा। मनुष्य का मानना है कि वह देश, जिसमें लोगों को भोजन और वस्त्र मिलते हैं, जिसमें वे शांति से एक-साथ रहते हैं, एक अच्छा देश है, और उसका नेतृत्व अच्छा है। किंतु परमेश्वर ऐसा नहीं सोचता। उसका मानना है कि वह देश, जिसमें कोई उसकी आराधना नहीं करता, एक ऐसा देश है, जिसे वह जड़ से मिटा देगा। मनुष्य के सोचने का तरीका परमेश्वर के सोचने के तरीके से पूरी तरह भिन्न है। तो यदि किसी देश का मुखिया परमेश्वर की आराधना नहीं करता, तो उस देश का भाग्य दुःखद होगा, और उस देश का कोई गंतव्य नहीं होगा।

परमेश्वर मनुष्य की राजनीति में भाग नहीं लेता, फिर भी देश या राष्ट्र का भाग्य परमेश्वर द्वारा नियंत्रित होता है। परमेश्वर इस संसार को और संपूर्ण ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है। मनुष्य का भाग्य और परमेश्वर की योजना घनिष्ठता से जुड़े हैं, और कोई भी मनुष्य, देश या राष्ट्र परमेश्वर की संप्रभुता से मुक्त नहीं है। यदि मनुष्य अपने भाग्य को जानना चाहता है, तो उसे परमेश्वर के सामने आना होगा। परमेश्वर उन लोगों को समृद्ध करेगा, जो उसका अनुसरण और उसकी आराधना करते हैं, और वह उनका पतन और विनाश करेगा, जो उसका विरोध करते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं।

बाइबल के उस दृश्य का स्मरण करो, जब परमेश्वर ने सदोम पर तबाही बरपाई थी, और यह भी सोचो कि किस प्रकार लूत की पत्नी नमक का खंभा बन गई थी। वापस सोचो कि किस प्रकार नीनवे के लोगों ने टाट और राख में अपने पापों का पश्चात्ताप किया था, और याद करो कि 2,000 वर्ष पहले यहूदियों द्वारा यीशु को सलीब पर चढ़ाए जाने के बाद क्या हुआ था। यहूदी इजराइल से निर्वासित कर दिए गए थे और वे दुनिया भर के देशों में भाग गए थे। बहुत लोग मारे गए थे, और संपूर्ण यहूदी राष्ट्र अभूतपूर्व विनाश का भागी हो गया था। उन्होंने परमेश्वर को सलीब पर चढ़ाया था—जघन्य पाप किया था—और परमेश्वर के स्वभाव को भड़काया था। उनसे उनके किए का भुगतान करवाया गया था, और उन्हें उनके कार्यों के परिणाम भुगतने के लिए मजबूर किया गया था। उन्होंने परमेश्वर की निंदा की थी, परमेश्वर को अस्वीकार किया था, और इसलिए उनकी केवल एक ही नियति थी : परमेश्वर द्वारा दंडित किया जाना। यही वह कड़वा परिणाम और आपदा थी, जो उनके शासक उनके देश और राष्ट्र पर लाए थे।

आज परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए संसार में लौट आया है। उसका पहला पड़ाव तानाशाही शासकों का विशाल जमावड़ा : नास्तिकता का कट्टर गढ़ चीन है। परमेश्वर ने अपनी बुद्धि और सामर्थ्य से लोगों का एक समूह प्राप्त कर लिया है। इस अवधि के दौरान चीन की सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा उसका हर तरह से शिकार किया जाता रहा है और उसे अत्यधिक पीड़ा का भागी बनाया जाता रहा है, उसे अपना सिर टिकाने के लिए भी कोई जगह नहीं मिली और वह कोई आश्रय पाने में असमर्थ रहा। इसके बावजूद, परमेश्वर अभी भी वह कार्य जारी रखे हुए है, जिसे करने का उसका इरादा है : वह अपनी वाणी बोलता है और सुसमाचार का प्रसार करता है। कोई भी परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की थाह नहीं पा सकता। चीन में, जो परमेश्वर को शत्रु माननेवाला देश है, परमेश्वर ने कभी भी अपना कार्य बंद नहीं किया है। इसके बजाय, और अधिक लोगों ने उसके कार्य और वचन को स्वीकार किया है, क्योंकि परमेश्वर मानवजाति के हर एक सदस्य को बचाने के लिए वह सब-कुछ करता है, जो वह कर सकता है। हमें विश्वास है कि परमेश्वर जो कुछ प्राप्त करना चाहता है, उसके मार्ग में कोई भी देश या शक्ति ठहर नहीं सकती। जो लोग परमेश्वर के कार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं, परमेश्वर के वचन का विरोध करते हैं, और परमेश्वर की योजना में विघ्न डालते और उसे बिगाड़ते हैं, अंततः परमेश्वर द्वारा दंडित किए जाएँगे। जो परमेश्वर के कार्य की अवहेलना करता है, उसे नरक भेजा जाएगा; जो कोई राष्ट्र परमेश्वर के कार्य का विरोध करता है, उसे नष्ट कर दिया जाएगा; जो कोई राष्ट्र परमेश्वर के कार्य को अस्वीकार करने के लिए उठता है, उसे इस पृथ्वी से मिटा दिया जाएगा,

और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मैं सभी राष्ट्रों, सभी देशों, और यहाँ तक कि सभी उद्योगों के लोगों से विनती करता हूँ कि परमेश्वर की वाणी को सुनें, परमेश्वर के कार्य को देखें, और मानवजाति के भाग्य पर ध्यान दें, परमेश्वर को सर्वाधिक पवित्र, सर्वाधिक सम्माननीय, मानवजाति के बीच आराधना का सर्वोच्च और एकमात्र लक्ष्य बनाएँ, और संपूर्ण मानवजाति को परमेश्वर के आशीष के अधीन जीने की अनुमति दें, ठीक उसी तरह से, जैसे अब्राहम के वंशज यहोवा की प्रतिज्ञाओं के अधीन रहे थे और ठीक उसी तरह से, जैसे आदम और हव्वा, जिन्हें परमेश्वर ने सबसे पहले बनाया था, अदन के बगीचे में रहे थे।

परमेश्वर का कार्य एक ज़बरदस्त लहर के समान उमड़ता है। उसे कोई नहीं रोक सकता, और कोई भी उसके प्रयाण को बाधित नहीं कर सकता। केवल वे लोग ही उसके पदचिह्नों का अनुसरण कर सकते हैं और उसकी प्रतिज्ञा प्राप्त कर सकते हैं, जो उसके वचन सावधानीपूर्वक सुनते हैं, और उसकी खोज करते हैं और उसके लिए प्यासे हैं। जो ऐसा नहीं करते, वे ज़बरदस्त आपदा और उचित दंड के भागी होंगे।

मनुष्य को केवल परमेश्वर के प्रबंधन के बीच ही बचाया जा सकता है

प्रत्येक व्यक्ति की नज़र में परमेश्वर का प्रबंधन एक बहुत अजीब चीज़ है, क्योंकि लोग परमेश्वर के प्रबंधन को मनुष्य से पूरी तरह असंबद्ध समझते हैं। वे सोचते हैं कि परमेश्वर का प्रबंधन केवल परमेश्वर का ही कार्य है और वह केवल उसी से संबंध रखता है—और इसलिए मनुष्य उसके प्रबंधन के प्रति उदासीन है। इस प्रकार, मानवजाति का उद्धार अस्पष्ट और अव्यक्त हो गया है, और अब केवल खोखली बयानबाजी है। हालाँकि मनुष्य उद्धार प्राप्त करने और अद्‌भुत मंज़िल में प्रवेश पाने के लिए परमेश्वर का अनुसरण करता है, किंतु उसे इस बात की परवाह नहीं है कि परमेश्वर अपना कार्य किस प्रकार करता है। मनुष्य इस बात की परवाह नहीं करता कि परमेश्वर ने क्या योजना बनाई है, न ही वह इस बात की परवाह करता है कि अपने उद्धार के लिए उसे क्या भूमिका अदा करनी चाहिए। यह वास्तव में दु:खद है! मनुष्य का उद्धार परमेश्वर के प्रबंधन से अलग नहीं किया जा सकता, न ही उसे परमेश्वर की योजना से अलग किया जा सकता है। फिर भी मनुष्य परमेश्वर के प्रबंधन के बारे में कुछ भी नहीं सोचता, और इस प्रकार वह परमेश्वर से और भी अधिक दूर होता जाता है। इससे उन लोगों की संख्या बढ़ी है, जो उद्धार के प्रश्न से घनिष्ठता से जुड़े मुद्दों से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं—जैसे कि सृष्टि क्या है, परमेश्वर में विश्वास क्या है, परमेश्वर की आराधना कैसे करें, इत्यादि—ताकि उसके अनुयायियों के समूह में शामिल हुआ जा सके। इसलिए अब

हमें परमेश्वर के प्रबंधन पर चर्चा करनी चाहिए, ताकि उसका प्रत्येक अनुयायी स्पष्ट रूप से यह समझ जाए कि उसका अनुसरण करने और उसमें विश्वास करने का क्या अर्थ है। ऐसा करने से प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर का अनुसरण मात्र आशीष पाने, आपदाओं से बचने या दूसरों से अलग दिखने के लिए करने के बजाय ज्यादा सही तरह से उस मार्ग को चुनने में मदद मिलेगी, जिस पर उन्हें चलना चाहिए।

हालाँकि परमेश्वर का प्रबंधन गहरा है, पर यह मनुष्य की समझ से परे नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर का संपूर्ण कार्य उसके प्रबंधन और मनुष्य के उद्धार के कार्य से जुड़ा हुआ है, और मानवजाति के जीवन, रहन-सहन और मंज़िल से संबंध रखता है। परमेश्वर मनुष्य के मध्य और उनपर जो कार्य करता है, उसे बहुत ही व्यावहारिक और अर्थपूर्ण कहा जा सकता है। वह मनुष्य द्वारा देखा और अनुभव किया जा सकता है, और वह अमूर्त बिलकुल नहीं है। यदि मनुष्य परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले समस्त कार्य को स्वीकार करने में अक्षम है, तो उसके कार्य का महत्व ही क्या है? और इस प्रकार का प्रबंधन मनुष्य को उद्धार की ओर कैसे ले जा सकता है? परमेश्वर का अनुसरण करने वाले बहुत सारे लोग केवल इस बात से मतलब रखते हैं कि आशीष कैसे प्राप्त किए जाएँ या आपदा से कैसे बचा जाए। जैसे ही परमेश्वर के कार्य और प्रबंधन का उल्लेख किया जाता है, वे चुप हो जाते हैं और उनकी सारी रुचि समाप्त हो जाती है। उन्हें लगता है कि इस प्रकार के उबाऊ मुद्दों को समझने से उनके जीवन के विकास में मदद नहीं मिलेगी या कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। परिणामस्वरूप, हालाँकि उन्होंने परमेश्वर के प्रबंधन के बारे में सुना होता है, वे उसपर बहुत कम ध्यान देते हैं। उन्हें वह इतना मूल्यवान नहीं लगता कि उसे स्वीकारा जाए, और उसे अपने जीवन का अंग तो वे बिलकुल नहीं समझते। ऐसे लोगों का परमेश्वर का अनुसरण करने का केवल एक सरल उद्देश्य होता है, और वह उद्देश्य है आशीष प्राप्त करना। ऐसे लोग ऐसी किसी भी दूसरी चीज़ पर ध्यान देने की परवाह नहीं कर सकते जो इस उद्देश्य से सीधे संबंध नहीं रखती। उनके लिए, आशीष प्राप्त करने के लिए परमेश्वर में विश्वास करने से ज्यादा वैध उद्देश्य और कोई नहीं है—यह उनके विश्वास का असली मूल्य है। यदि कोई चीज़ इस उद्देश्य को प्राप्त करने में योगदान नहीं करती, तो वे उससे पूरी तरह से अप्रभावित रहते हैं। आज परमेश्वर में विश्वास करने वाले अधिकांश लोगों का यही हाल है। उनके उद्देश्य और इरादे न्यायोचित प्रतीत होते हैं, क्योंकि जब वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, तो वे परमेश्वर के लिए स्वयं को खपाते भी हैं, परमेश्वर के प्रति समर्पित होते हैं और अपना कर्तव्य भी निभाते हैं। वे अपनी जवानी न्योछावर कर देते हैं, परिवार और आजीविका त्याग देते हैं, यहाँ तक कि वर्षों अपने घर

से दूर व्यस्त रहते हैं। अपने परम उद्देश्य के लिए वे अपनी रुचियाँ बदल डालते हैं, अपने जीवन का दृष्टिकोण बदल देते हैं, यहाँ तक कि अपनी खोज की दिशा तक बदल देते हैं, किंतु परमेश्वर पर अपने विश्वास के उद्देश्य को नहीं बदल सकते। वे अपने आदर्शों के प्रबंधन के लिए भाग-दौड़ करते हैं; चाहे मार्ग कितना भी दूर क्यों न हो, और मार्ग में कितनी भी कठिनाइयाँ और अवरोध क्यों न आएँ, वे दृढ़ रहते हैं और मृत्यु से नहीं डरते। इस तरह से अपने आप को समर्पित रखने के लिए उन्हें कौन-सी ताकत बाध्य करती है? क्या यह उनका विवेक है? क्या यह उनका महान और कुलीन चरित्र है? क्या यह बुराई से बिलकुल अंत तक लड़ने का उनका दृढ़ संकल्प है? क्या यह बिना प्रतिफल की आकांक्षा के परमेश्वर की गवाही देने का उनका विश्वास है? क्या यह परमेश्वर की इच्छा प्राप्त करने के लिए सब-कुछ त्याग देने की तत्परता के प्रति उनकी निष्ठा है? या यह अनावश्यक व्यक्तिगत माँगें हमेशा त्याग देने की उनकी भक्ति-भावना है? ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए, जिसने कभी परमेश्वर के प्रबंधन को नहीं समझा, फिर भी इतना कुछ देना एक चमत्कार ही है! फिलहाल, आओ इसकी चर्चा न करें कि इन लोगों ने कितना कुछ दिया है। किंतु उनका व्यवहार हमारे विश्लेषण के बहुत योग्य है। उनके साथ इतनी निकटता से जुड़े उन लाभों के अतिरिक्त, परमेश्वर को कभी नहीं समझने वाले लोगों द्वारा उसके लिए इतना कुछ दिए जाने का क्या कोई अन्य कारण हो सकता है? इसमें हमें पूर्व की एक अज्ञात समस्या का पता चलता है : मनुष्य का परमेश्वर के साथ संबंध केवल एक नग्न स्वार्थ है। यह आशीष देने वाले और लेने वाले के मध्य का संबंध है। स्पष्ट रूप से कहें तो, यह कर्मचारी और नियोक्ता के मध्य के संबंध के समान है। कर्मचारी केवल नियोक्ता द्वारा दिए जाने वाले प्रतिफल प्राप्त करने के लिए कार्य करता है। इस प्रकार के संबंध में कोई स्नेह नहीं होता, केवल एक लेनदेन होता है। प्रेम करने या प्रेम पाने जैसी कोई बात नहीं होती, केवल दान और दया होती है। कोई समझदारी नहीं होती, केवल दबा हुआ आक्रोश और धोखा होता है। कोई अंतरंगता नहीं होती, केवल एक अगम खाई होती है। अब जबकि चीज़ें इस बिंदु तक आ गई हैं, तो कौन इस क्रम को उलट सकता है? और कितने लोग इस बात को वास्तव में समझने में सक्षम हैं कि यह संबंध कितना भयानक बन चुका है? मैं मानता हूँ कि जब लोग आशीष प्राप्त होने के आनंद में निमग्न हो जाते हैं, तो कोई यह कल्पना नहीं कर सकता कि परमेश्वर के साथ इस प्रकार का संबंध कितना शर्मनाक और भद्दा है।

परमेश्वर में मानवजाति के विश्वास के बारे में सबसे दु:खद बात यह है कि मनुष्य परमेश्वर के कार्य के बीच अपने खुद के प्रबंधन का संचालन करता है, जबकि परमेश्वर के प्रबंधन पर कोई ध्यान नहीं देता।

मनुष्य की सबसे बड़ी असफलता इस बात में है कि जब वह परमेश्वर के प्रति समर्पित होने और उसकी आराधना करने का प्रयास करता है, उसी समय कैसे वह अपनी आदर्श मंज़िल का निर्माण कर रहा होता है और इस बात की साजिश रच रहा होता है कि सबसे बड़ा आशीष और सर्वोत्तम मंज़िल कैसे प्राप्त किए जाएँ। यहाँ तक कि अगर कोई समझता भी है कि वह कितना दयनीय, घृणास्पद और दीन-हीन है, तो भी ऐसे कितने लोग अपने आदर्शों और आशाओं को तत्परता से छोड़ सकते हैं? और कौन अपने कदमों को रोकने और केवल अपने बारे में सोचना बंद कर सकने में सक्षम हैं? परमेश्वर को उन लोगों की ज़रूरत है, जो उसके प्रबंधन को पूरा करने के लिए उसके साथ निकटता से सहयोग करेंगे। उसे उन लोगों की ज़रूरत है, जो अपने पूरे तन-मन को उसके प्रबंधन के कार्य में अर्पित कर उसके प्रति समर्पित होंगे। उसे ऐसे लोगों की ज़रूरत नहीं है, जो हर दिन उससे भीख माँगने के लिए अपने हाथ फैलाए रहते हैं, और उनकी तो बिलकुल भी ज़रूरत नहीं है, जो थोड़ा-सा देते हैं और फिर पुरस्कृत होने का इंतज़ार करते हैं। परमेश्वर उन लोगों से घृणा करता है, जो तुच्छ योगदान करते हैं और फिर अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट हो जाते हैं। वह उन निष्ठुर लोगों से नफरत करता है, जो उसके प्रबंधन-कार्य से नाराज़ रहते हैं और केवल स्वर्ग जाने और आशीष प्राप्त करने के बारे में बात करना चाहते हैं। वह उन लोगों से और भी अधिक घृणा करता है, जो उसके द्वारा मानवजाति के बचाव के लिए किए जा रहे कार्य से प्राप्त अवसर का लाभ उठाते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इन लोगों ने कभी इस बात की परवाह नहीं की है कि परमेश्वर अपने प्रबंधन-कार्य के माध्यम से क्या हासिल और प्राप्त करना चाहता है। उनकी रुचि केवल इस बात में होती है कि किस प्रकार वे परमेश्वर के कार्य द्वारा प्रदान किए गए अवसर का उपयोग आशीष प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं। वे परमेश्वर के हृदय की परवाह नहीं करते, और पूरी तरह से अपनी संभावनाओं और भाग्य में तल्लीन रहते हैं। जो लोग परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य से कुढ़ते हैं और इस बात में ज़रा-सी भी रुचि नहीं रखते कि परमेश्वर मानवजाति को कैसे बचाता है और उसकी क्या मर्ज़ी है, वे केवल वही कर रहे हैं जो उन्हें अच्छा लगता है और उनका तरीका परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य से अलग-थलग है। उनके व्यवहार को परमेश्वर द्वारा न तो याद किया जाता है और न ही अनुमोदित किया जाता है—परमेश्वर द्वारा उसे कृपापूर्वक देखे जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

ब्रह्मांड और आकाश की विशालता में अनगिनत जीव रहते और प्रजनन करते हैं, जीवन के चक्रीय नियम का पालन करते हैं, और एक अटल नियम का अनुसरण करते हैं। जो मर जाते हैं, वे अपने साथ

जीवित लोगों की कहानियाँ लेकर चले जाते हैं, और जो लोग जी रहे हैं, वे खत्म हो चुके लोगों के त्रासद इतिहास को ही दोहराते हैं। और इसलिए, मानवजाति खुद से पूछे बिना नहीं रह पाती : हम क्यों जीते हैं? और हमें मरना क्यों पड़ता है? इस संसार को कौन नियंत्रित करता है? और इस मानवजाति को किसने बनाया? क्या मानवजाति को वास्तव में प्रकृति माता ने बनाया? क्या मानवजाति वास्तव में अपने भाग्य की नियंत्रक है? ... ये वे सवाल हैं, जो मानवजाति ने हजारों वर्षों से निरंतर पूछे हैं। दुर्भाग्य से, जितना अधिक मनुष्य इन सवालों से ग्रस्त हुआ है, उसमें उतनी ही अधिक प्यास विज्ञान के लिए विकसित हुई है। विज्ञान देह की संक्षिप्त तृप्ति और अस्थायी आनंद प्रदान करता है, लेकिन वह मनुष्य को उसकी आत्मा के भीतर की तन्हाई, अकेलेपन, बमुश्किल छिपाए जा सकने वाले आतंक और लाचारी से मुक्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। मानवजाति केवल उसी वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग करती है, जिसे वह अपनी खुली आँखों से देख सकती है और अपने मस्तिष्क से समझ सकती है, ताकि अपने हृदय को चेतनाशून्य कर सके। फिर भी यह वैज्ञानिक ज्ञान मानवजाति को रहस्यों की खोज करने से रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है। मानवजाति यह नहीं जानती कि ब्रह्मांड और सभी चीज़ों का संप्रभु कौन है, और मानवजाति के प्रारंभ और भविष्य के बारे में तो वह बिलकुल भी नहीं जानती। मानवजाति केवल इस व्यवस्था के बीच विवशतापूर्वक जीती है। इससे कोई बच नहीं सकता और इसे कोई बदल नहीं सकता, क्योंकि सभी चीज़ों के बीच और स्वर्ग में अनंतकाल से लेकर अनंतकाल तक वह एक ही है, जो सभी चीज़ों पर अपनी संप्रभुता रखता है। वह एक ही है, जिसे मनुष्य द्वारा कभी देखा नहीं गया है, वह जिसे मनुष्य ने कभी नहीं जाना है, जिसके अस्तित्व पर मनुष्य ने कभी विश्वास नहीं किया है—फिर भी वह एक ही है, जिसने मनुष्य के पूर्वजों में साँस फूँकी और मानवजाति को जीवन प्रदान किया। वह एक ही है, जो मानवजाति का भरण-पोषण करता है और उसका अस्तित्व बनाए रखता है; और वह एक ही है, जिसने आज तक मानवजाति का मार्गदर्शन किया है। इतना ही नहीं, वह और केवल वह एक ही है, जिस पर मानवजाति अपने अस्तित्व के लिए निर्भर करती है। वह सभी चीज़ों पर संप्रभुता रखता है और ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणियों पर राज करता है। वह चारों मौसमों पर नियंत्रण रखता है, और वही है जो हवा, ठंड, हिमपात और बारिश लाता है। वह मानवजाति के लिए सूर्य का प्रकाश लाता है और रात्रि का सूत्रपात करता है। यह वही था, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की व्यवस्था की, और मनुष्य को पहाड़, झीलें और नदियाँ और उनके भीतर के सभी जीव प्रदान किए। उसके कर्म सर्वव्यापी हैं, उसकी सामर्थ्य सर्वव्यापी है, उसकी बुद्धि सर्वव्यापी है, और उसका

अधिकार सर्वव्यापी है। इन व्यवस्थाओं और नियमों में से प्रत्येक उसके कर्मों का मूर्त रूप है और प्रत्येक उसकी बुद्धिमत्ता और अधिकार को प्रकट करता है। कौन खुद को उसके प्रभुत्व से मुक्त कर सकता है? और कौन उसकी अभिकल्पनाओं से खुद को छुड़ा सकता है? सभी चीज़ें उसकी निगाह के नीचे मौजूद हैं, और इतना ही नहीं, सभी चीज़ें उसकी संप्रभुता के अधीन रहती हैं। उसके कर्म और उसकी सामर्थ्य मानवजाति के लिए इस तथ्य को स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं छोड़ती कि वह वास्तव में मौजूद है और सभी चीज़ों पर संप्रभुता रखता है। उसके अतिरिक्त कोई ब्रह्मांड पर नियंत्रण नहीं रख सकता, और मानवजाति का निरंतर भरण-पोषण तो बिलकुल नहीं कर सकता। चाहे तुम परमेश्वर के कर्मों को पहचानने में सक्षम हो या न हो, और चाहे तुम परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हो या न करते हो, इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा भाग्य परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया जाता है, और इसमें भी कोई शक नहीं कि परमेश्वर हमेशा सभी चीज़ों पर अपनी संप्रभुता रखेगा। उसका अस्तित्व और अधिकार इस बात से निर्धारित नहीं होता कि वे मनुष्य द्वारा पहचाने और समझे जाते हैं या नहीं। केवल वही मनुष्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानता है, और केवल वही मानवजाति के भाग्य का निर्धारण कर सकता है। चाहे तुम इस तथ्य को स्वीकार करने में सक्षम हो या न हो, इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा, जब मानवजाति अपनी आँखों से यह सब देखेगी, और परमेश्वर जल्दी ही इस तथ्य को साकार करेगा। मनुष्य परमेश्वर की आँखों के सामने जीता है और मर जाता है। मनुष्य परमेश्वर के प्रबंधन के लिए जीता है, और जब उसकी आँखें आखिरी बार बंद होती हैं, तो इस प्रबंधन के लिए ही बंद होती हैं। मनुष्य बार-बार, आगे-पीछे, आता और जाता रहता है। बिना किसी अपवाद के, यह परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी अभिकल्पना का हिस्सा है। परमेश्वर का प्रबंधन कभी रुका नहीं है; वह निरंतर अग्रसर है। वह मानवजाति को अपने अस्तित्व से अवगत कराएगा, अपनी संप्रभुता में विश्वास करवाएगा, अपने कर्मों का अवलोकन करवाएगा, और अपने राज्य में वापस लौट जाएगा। यही उसकी योजना और कार्य है, जिनका वह हजारों वर्षों से प्रबंधन कर रहा है।

परमेश्वर का प्रबंधन-कार्य संसार की उत्पत्ति से प्रारंभ हुआ, और मनुष्य इस कार्य के केंद्र में है। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों की सृष्टि मनुष्य के लिए ही है। चूँकि उसके प्रबंधन का कार्य हज़ारों सालों में फैला हुआ है, और वह केवल एक ही मिनट या सेकंड के अंतराल में या पलक झपकते या एक या दो सालों में पूरा नहीं होता, इसलिए उसे मनुष्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक और

अधिक चीज़ों का सृजन करना पड़ा, जैसे कि सूर्य, चंद्रमा, सभी प्रकार के जीव, भोजन और एक अनुकूल पर्यावरण। यह परमेश्वर के प्रबंधन का प्रारंभ था।

इसके बाद परमेश्वर ने मनुष्य को शैतान के हाथों में सौंप दिया, और मनुष्य शैतान के अधिकार-क्षेत्र में रहने लगा, जिसने धीरे-धीरे परमेश्वर के प्रथम युग के कार्य की शुरुआत की : व्यवस्था के युग की कहानी...। व्यवस्था के युग के दौरान कई हज़ार सालों में, मानवजाति व्यवस्था के युग के मार्गदर्शन की आदी हो गई और उसे हलके में लेने लगी। धीरे-धीरे मनुष्य ने परमेश्वर की देखभाल छोड़ दी। और इसलिए, व्यवस्था का अनुसरण करते हुए लोग मूर्तिपूजा और बुरे कर्म भी करने लगे। वे यहोवा की सुरक्षा से वंचित थे और केवल मंदिर की वेदी के सामने अपना जीवनयापन कर रहे थे। वास्तव में, परमेश्वर का कार्य उन्हें बहुत पहले छोड़ चुका था, और हालाँकि इस्राएली अभी भी व्यवस्था से चिपके हुए थे और यहोवा का नाम लेते थे, यहाँ तक कि गर्व से विश्वास करते थे कि केवल वे ही यहोवा के लोग हैं और वे यहोवा के चुने हुए हैं, किंतु परमेश्वर की महिमा ने उन्हें चुपके से त्याग दिया था ...

जब परमेश्वर अपना कार्य करता है, तो वह हमेशा चुपचाप एक स्थान को छोड़ कर धीरे से दूसरे स्थान पर अपना नया कार्य प्रारंभ कर देता है। यह उन लोगों को अविश्वसनीय लगता है, जो सुन्न होते हैं। लोगों ने हमेशा पुरानी बातों को सँजोया है और नई, अपरिचित चीज़ों से शत्रुता बरती है या उन्हें विघ्न माना है। इसलिए, जो कुछ भी नया कार्य परमेश्वर करता है, प्रारंभ से बिलकुल अंत तक, मनुष्य समस्त चीज़ों में अंतिम होता है, जो इसे जान पाता है।

जैसा कि हमेशा से होता आया है, व्यवस्था के युग में यहोवा के कार्य के बाद परमेश्वर ने दूसरे चरण का अपना कार्य प्रारंभ किया : देह धारण कर—दस, बीस साल के लिए मनुष्य के समान देह में आकर—विश्वासियों के बीच बोलते और अपना कार्य करते हुए उसने ऐसा किया। फिर भी बिना किसी अपवाद के, कोई भी यह बात नहीं जान पाया और प्रभु यीशु को सलीब पर लटकाए जाने और उसके पुनर्जीवित होने के बाद बहुत थोड़े-से लोगों ने ही माना कि वह देहधारी परमेश्वर था। समस्यापूर्ण ढंग से, पौलुस नाम का एक व्यक्ति प्रकट हुआ, जिसने परमेश्वर के साथ घातक शत्रुता पाल ली। यहाँ तक कि मार डाले जाने के बाद प्रेरित बनकर भी पौलुस ने अपना पुराना स्वभाव नहीं बदला और वह परमेश्वर का विरोध करने के पथ पर चलता रहा। पौलुस ने अपने कार्य-काल के दौरान कई धर्मपत्रियाँ लिखीं; दुर्भाग्य से, बाद की पीढ़ियों ने उन धर्मपत्रियों का परमेश्वर के वचनों के तौर पर आनंद लिया, यहाँ तक कि उन्हें नया नियम में शामिल भी

कर लिया गया और उन्हें गलती से परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन समझ लिया गया। पवित्रशास्त्र के आगमन के बाद से यह एक घोर अपमान है! और क्या यह गलती मनुष्य की परम मूर्खता की वजह से नहीं हुई थी? वे नहीं के बराबर जानते थे कि अनुग्रह के युग में परमेश्वर के कार्य के अभिलेखों में मनुष्य की धर्मपत्रियाँ या आध्यात्मिक लेख परमेश्वर के कार्य और वचनों के रूप में शामिल नहीं होने चाहिए। परंतु यह विषयांतर है, इसलिए आओ, हम अपने मूल विषय पर लौटें। जैसे ही परमेश्वर के कार्य का दूसरा चरण पूरा हुआ—सलीब पर चढ़ाए जाने के बाद—मनुष्य को पाप से बचाने (अर्थात मनुष्य को शैतान के हाथों से छुड़ाने) का परमेश्वर का कार्य संपन्न हो गया। और इसलिए, उस क्षण के बाद से, मानवजाति को केवल प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना था, और उसके पाप क्षमा कर दिए जाते। मोटे तौर पर, मनुष्य के पाप अब उसके द्वारा उद्धार प्राप्त करने और परमेश्वर के सामने आने में बाधक नहीं रहे थे और न ही शैतान द्वारा मनुष्य को दोषी ठहराने का कारण रह गए थे। ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर स्वयं ने वास्तविक कार्य किया था, उसने पापमय देह के समान बनकर उसका अनुभव किया था, और परमेश्वर स्वयं ही पापबलि था। इस प्रकार, मनुष्य सलीब से उतर गया, परमेश्वर के देह—इस पापमय देह की समानता के जरिये छुड़ा और बचा लिया गया। और इसलिए, शैतान द्वारा बंदी बना लिए जाने के बाद, मनुष्य परमेश्वर के सामने उसका उद्धार स्वीकार करने के एक कदम और पास आ गया। बेशक, कार्य का यह चरण व्यवस्था के युग में परमेश्वर के प्रबंधन से अधिक गहन और अधिक विकसित था।

परमेश्वर का प्रबंधन ऐसा है : मनुष्य को शैतान के हवाले करना—मनुष्य, जो नहीं जानता कि परमेश्वर क्या है, सृष्टिकर्ता क्या है, परमेश्वर की आराधना कैसे करें, या परमेश्वर के प्रति समर्पित होना क्यों आवश्यक है—और शैतान को उसे भ्रष्ट करने देना। कदम-दर-कदम, परमेश्वर तब मनुष्य को शैतान के हाथों से बचाता है, जबतक कि मनुष्य पूरी तरह से परमेश्वर की आराधना नहीं करने लगता और शैतान को अस्वीकार नहीं कर देता। यही परमेश्वर का प्रबंधन है। यह किसी मिथक-कथा जैसा और अजीब लग सकता है। लोगों को यह किसी मिथक-कथा जैसा इसलिए लगता है, क्योंकि उन्हें इसका भान नहीं है कि पिछले हज़ारों सालों में मनुष्य के साथ कितना कुछ घटित हुआ है, और यह तो वे बिलकुल भी नहीं जानते कि इस ब्रह्मांड और नभमंडल में कितनी कहानियाँ घट चुकी हैं। इसके अलावा, यही कारण है कि वे उस अधिक आश्चर्यजनक, अधिक भय-उत्प्रेरक संसार को नहीं समझ सकते, जो इस भौतिक संसार से परे मौजूद है, परंतु जिसे देखने से उनकी नश्वर आँखें उन्हें रोकती हैं। वह मनुष्य को अबोधगम्य लगता है,

क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर द्वारा मानवजाति के उद्धार या परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य की महत्ता की समझ नहीं है, और वह यह नहीं समझता कि परमेश्वर अंततः मनुष्य को कैसा देखना चाहता है। क्या वह उसे शैतान द्वारा बिलकुल भी भ्रष्ट न किए गए आदम और हव्वा के समान देखना चाहता है? नहीं! परमेश्वर के प्रबंधन का उद्देश्य लोगों के एक ऐसे समूह को प्राप्त करना है, जो उसकी आराधना करे और उसके प्रति समर्पित हो। हालाँकि ये लोग शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जा चुके हैं, परंतु वे अब शैतान को अपने पिता के रूप में नहीं देखते; वे शैतान के घिनौने चेहरे को पहचानते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं, और वे परमेश्वर के न्याय और ताड़ना को स्वीकार करने के लिए उसके सामने आते हैं। वे जान गए हैं कि क्या बुरा है और वह उससे कितना विषम है जो पवित्र है, और वे परमेश्वर की महानता और शैतान की दुष्टता को भी पहचान गए हैं। इस प्रकार के मनुष्य अब शैतान के लिए कार्य नहीं करेंगे, या शैतान की आराधना नहीं करेंगे, या शैतान को प्रतिष्ठापित नहीं करेंगे। इसका कारण यह है कि यह एक ऐसे लोगों का समूह है, जो सचमुच परमेश्वर द्वारा प्राप्त कर लिए गए हैं। यही परमेश्वर द्वारा मानवजाति के प्रबंधन की महत्ता है। इस समय परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य के दौरान मानवजाति शैतान की भ्रष्टता और परमेश्वर के उद्धार दोनों की वस्तु है, और मनुष्य वह उत्पाद है, जिसके लिए परमेश्वर और शैतान दोनों लड़ रहे हैं। चूँकि परमेश्वर अपना कार्य कर रहा है, इसलिए वह धीरे-धीरे मनुष्य को शैतान के हाथों से बचा रहा है, और इसलिए मनुष्य पहले से ज्यादा परमेश्वर के निकट आता जा रहा है ...

और फिर राज्य का युग आया, जो कार्य का अधिक व्यावहारिक चरण है, और फिर भी जिसे स्वीकार करना मनुष्य के लिए सबसे कठिन भी है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जितना अधिक मनुष्य परमेश्वर के नज़दीक आता है, परमेश्वर की छड़ी उसके उतने ही करीब पहुँचती है और परमेश्वर का चेहरा उतनी ही अधिक स्पष्टता से मनुष्य के सामने प्रकट हो जाता है। मानवजाति के छुटकारे के बाद मनुष्य औपचारिक रूप से परमेश्वर के परिवार में लौट आता है। मनुष्य ने सोचा कि अब आनंद का समय आया है, किंतु परमेश्वर द्वारा उसे ऐसे पुरज़ोर आक्रमण का भागी बनाया जाता है, जैसा कभी किसी ने अनुमान नहीं लगाया होगा। होता यह है कि, यह एक बपतिस्मा है, जिसका परमेश्वर के लोगों को "आनंद" लेना है। इस प्रकार के व्यवहार के अंतर्गत, लोगों के पास ठहरकर स्वयं के बारे में यह सोचने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता, "मैं, कई सालों तक खोया हुआ वह मेमना हूँ, जिसे वापस पाने के लिए परमेश्वर ने कितना कुछ खर्च किया है, फिर परमेश्वर मुझसे ऐसा व्यवहार क्यों करता है? क्या यह परमेश्वर का मुझपर

हँसने और मुझे उजागर करने का तरीका है? ..." बरसों बीत जाने के बाद, शुद्धिकरण और ताड़ना की कठिनाइयाँ सहकर मनुष्य वैसा मजबूत हो गया है, जैसा मौसम की मार से हो जाता है। हालाँकि मनुष्य ने अतीत की "महिमा" और "रोमांस" खो दिया है, पर उसने अनजाने ही मानवीय आचरण के सिद्धांतों को समझ लिया है, और वह मानवजाति को बचाने के लिए परमेश्वर के वर्षों के समर्पण को समझ गया है। मनुष्य धीरे-धीरे अपनी बर्बरता से घृणा करने लगता है। वह अपनी असभ्यता से, परमेश्वर के प्रति सभी प्रकार की गलतफहमियों से और परमेश्वर से की गई अपनी सभी अनुचित माँगों से घृणा करने लगता है। समय को वापस नहीं लाया जा सकता। अतीत की घटनाएँ मनुष्य की खेदजनक स्मृतियाँ बन जाती हैं, और परमेश्वर के वचन और उसके प्रति प्रेम मनुष्य के नए जीवन में प्रेरक शक्ति बन जाते हैं। मनुष्य के घाव दिन-प्रतिदिन भरने लगते हैं, उसकी सामर्थ्य लौट आती है, और वह उठ खड़ा होता है और सर्वशक्तिमान के चेहरे की ओर देखने लगता है ... और यही पाता है कि परमेश्वर हमेशा मेरे साथ रहा है, और उसकी मुस्कान और उसका सुंदर चेहरा अभी भी भावोद्दीपक हैं। उसके हृदय में अभी भी अपने द्वारा सृजित मानवजाति के लिए चिंता रहती है, और उसके हाथ अभी भी उतने ही गर्मजोशी से भरे और सशक्त हैं, जैसे वे आरंभ में थे। यह ऐसा है, मानो मनुष्य अदन के बाग में लौट आया हो, लेकिन इस बार मनुष्य साँप के प्रलोभन नहीं सुनता और अब वह यहोवा के चेहरे से विमुख नहीं होता। मनुष्य परमेश्वर के सामने घुटने टेकता है, परमेश्वर के मुस्कुराते हुए चेहरे को देखता है, और उसे अपनी सबसे कीमती भेंट चढ़ाता है—ओह! मेरे प्रभु, मेरे परमेश्वर!

परमेश्वर का प्रेम और उसकी दया उसके प्रबंधन-कार्य के हर ब्योरे में व्याप्त रहती है और चाहे लोग परमेश्वर के अच्छे इरादे समझ पाएँ या नहीं, वह अभी भी अथक रूप से अपने उस कार्य में लगा हुआ है, जिसे वह पूरा करना चाहता है। इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर के प्रबंधन को लोग कितना समझते हैं, परमेश्वर के कार्य से मनुष्य को हुए लाभ और सहायता को हर व्यक्ति भली-भाँति समझ सकता है। शायद आज तुमने परमेश्वर द्वारा प्रदत्त प्रेम या जीवन को थोड़ा भी महसूस नहीं किया है, परंतु यदि तुम परमेश्वर को और सत्य का अनुसरण करने के अपने संकल्प को नहीं छोड़ते, तो एक दिन ऐसा आएगा, जब परमेश्वर की मुस्कान तुम पर प्रकट होगी। क्योंकि परमेश्वर के प्रबंधन-कार्य का उद्देश्य शैतान के अधिकार-क्षेत्र में मौजूद लोगों को बचाना है, न कि उन लोगों को त्याग देना, जो शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जा चुके हैं और परमेश्वर का विरोध करते हैं।

23 सितंबर, 2005

कलीसियाओं में चलने के दौरान मसीह द्वारा बोले गए वचन (जारी है) (17 अक्टूबर, 2013 से 18 अगस्त 2014)

परमेश्वर को जानना परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग है

तुम में से प्रत्येक व्यक्ति को नए सिरे से जाँच करनी चाहिए कि अपने पूरे जीवन में तुमने परमेश्वर पर किस तरह से विश्वास किया है, ताकि तुम यह देख सको कि परमेश्वर का अनुसरण करने की प्रक्रिया में तुम परमेश्वर को वास्तव में समझ, बूझ और जान पाए हो या नहीं, तुम वास्तव में जानते हो या नहीं कि विभिन्न प्रकार के मनुष्यों के प्रति परमेश्वर कैसा रवैया रखता है, और तुम वास्तव में उस कार्य को समझ पाए हो या नहीं, जो परमेश्वर तुम पर कर रहा है और परमेश्वर तुम्हारे प्रत्येक कार्य को किस तरह परिभाषित करता है। यह परमेश्वर, जो तुम्हारे साथ है, तुम्हारी प्रगति को दिशा दे रहा है, तुम्हारी नियति निर्धारित कर रहा है, और तुम्हारी आवश्यकताओं के लिए आपूर्ति कर रहा है—आखिर तुम इस परमेश्वर को कितना समझते हो? तुम इस परमेश्वर के बारे में वास्तव में कितना जानते हो? क्या तुम जानते हो कि हर दिन वह तुम पर क्या कार्य करता है? क्या तुम उन सिद्धांतों और उद्देश्यों को जानते हो, जिन पर वह अपने हर क्रियाकलाप को आधारित करता है? क्या तुम जानते हो, वह कैसे तुम्हारा मार्गदर्शन करता है? क्या तुम उन साधनों को जानते हो, जिनसे वह तुम्हारे लिए आपूर्ति करता है? क्या तुम जानते हो कि किन तरीकों से वह तुम्हारी अगुआई करता है? क्या तुम जानते हो कि वह तुमसे क्या प्राप्त करना चाहता है और तुम में क्या हासिल करना चाहता है? क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे अलग-अलग तरह के व्यवहार के प्रति उसका क्या रवैया रहता है? क्या तुम जानते हो कि तुम उसके प्रिय व्यक्ति हो या नहीं? क्या तुम उसके आनंद, क्रोध, दु:ख और प्रसन्नता के उद्गम और उनके पीछे छिपे विचारों और अभिप्रायों तथा उसके सत्व को जानते हो? अंतत:, क्या तुम जानते हो कि जिस परमेश्वर पर तुम विश्वास करते हो, वह किस प्रकार का परमेश्वर है? क्या ये और इसी प्रकार के अन्य प्रश्न, ऐसे प्रश्न हैं जिनके बारे में तुमने पहले कभी नहीं सोचा या समझा? परमेश्वर पर अपने विश्वास का अनुसरण करते हुए, क्या तुमने परमेश्वर के वचनों

की वास्तविक समझ और उनके अनुभव से उसके बारे में अपनी सभी गलतफहमियाँ दूर की हैं? क्या तुमने परमेश्वर के अनुशासन और ताड़ना से गुज़र कर सच्ची आज्ञाकारिता और परवाह पाई है? क्या तुम परमेश्वर की ताड़ना और न्याय के दौरान मनुष्य की विद्रोहशीलता और शैतानी प्रकृति को जान पाए हो और क्या तुमने परमेश्वर की पवित्रता के बारे में थोड़ी-सी भी समझ प्राप्त की है? क्या तुमने परमेश्वर के वचनों के मार्गदर्शन और प्रबुद्धता से जीवन का कोई नया नज़रिया अपनाया है? क्या तुमने परमेश्वर द्वारा भेजे गए परीक्षणों के दौरान मनुष्य के अपराधों के प्रति उसकी असहिष्णुता के साथ-साथ यह महसूस किया है कि वह तुमसे क्या अपेक्षा रखता है और वह तुम्हें कैसे बचा रहा है? यदि तुम यह नहीं जानते कि परमेश्वर को गलत समझना क्या है या इस गलतफहमी को कैसे दूर किया जाए, तो यह कहा जा सकता है कि तुमने परमेश्वर के साथ कभी भी वास्तविक समागम में प्रवेश नहीं किया है और परमेश्वर को कभी नहीं समझा है, या कम-से-कम यह कहा जा सकता है कि तुमने उसे कभी समझना नहीं चाहा है। यदि तुम नहीं जानते कि परमेश्वर का अनुशासन और ताड़ना क्या हैं, तो निश्चित रूप से तुम नहीं जानते कि आज्ञाकारिता और परवाह क्या हैं, या कम से कम तुमने कभी वास्तव में परमेश्वर का आज्ञापालन और उसकी परवाह नहीं की। यदि तुमने कभी परमेश्वर की ताड़ना और न्याय का अनुभव नहीं किया है, तो तुम निश्चित रूप से नहीं जान पाओगे कि उसकी पवित्रता क्या है, और यह तो बिलकुल भी नहीं समझ पाओगे कि मनुष्यों का विद्रोह क्या होता है। यदि जीवन के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण कभी उचित नहीं रहा है या जीवन में सही उद्देश्य नहीं रहा है, बल्कि तुम अभी भी अपने भविष्य के मार्ग के प्रति दुविधा और अनिर्णय की स्थिति में हो, यहाँ तक कि तुम्हें आगे बढ़ने में भी हिचकिचाहट महसूस होती है, तो यह निश्चित है कि तुमने कभी परमेश्वर की प्रबुद्धता और मार्गदर्शन नहीं पाया है; यह भी कहा जा सकता है कि तुम्हें कभी वास्तव में परमेश्वर के वचनों की आपूर्ति या पुन:पूर्ति प्राप्त नहीं हुई है। यदि तुम अभी तक परमेश्वर के परीक्षणों से नहीं गुज़रे हो, तो कहने की आवश्यकता नहीं है कि तुम निश्चित रूप से नहीं जान पाओगे कि मनुष्य के अपराधों के प्रति परमेश्वर की असहिष्णुता क्या है, न ही तुम यह समझ पाओगे कि आख़िरकार परमेश्वर तुमसे क्या चाहता है, और यह तो बिलकुल भी नहीं समझ पाओगे कि अंतत: मनुष्य के प्रबंधन और बचाव का उसका कार्य क्या है। चाहे कोई व्यक्ति कितने ही वर्षों से परमेश्वर पर विश्वास कर रहा हो, यदि उसने कभी उसके वचनों में कुछ अनुभव नहीं किया या उनसे कोई बोध हासिल नहीं किया है, तो फिर वह निश्चित रूप से उद्धार के मार्ग पर नहीं चल रहा है, परमेश्वर पर उसका विश्वास किसी वास्तविक तत्त्व से

रहित है, उसका परमेश्वर का ज्ञान भी निश्चित ही शून्य है, और कहने की आवश्यकता नहीं कि परमेश्वर के प्रति श्रद्धा क्या होती है, इसका उसे बिलकुल भी पता नहीं है।

परमेश्वर का स्वरूप और अस्तित्व, परमेश्वर का सार, परमेश्वर का स्वभाव—यह सब मानवजाति को उसके वचनों के माध्यम से अवगत कराया जा चुका है। जब मनुष्य परमेश्वर के वचनों को अनुभव करता है, तो उन्हें अभ्यास में लाने की प्रक्रिया में क्रमशः परमेश्वर के कहे वचनों के पीछे छिपे उद्देश्य को समझेगा, परमेश्वर के वचनों के स्रोत और पृष्ठभूमि को समझेगा, और परमेश्वर के वचनों के अभीष्ट प्रभाव को समझेगा और बूझेगा। जीवन और सत्य में प्रवेश करने, परमेश्वर के इरादों को समझने, अपना स्वभाव परिवर्तित करने, परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं के प्रति आज्ञाकारी होने में सक्षम होने के लिए मनुष्य को ये सब चीज़ें अनुभव करनी, समझनी और प्राप्त करनी चाहिए। जिस समय मनुष्य इन चीज़ों को अनुभव करता, समझता और प्राप्त करता है, उसी समय वह धीरे-धीरे परमेश्वर की समझ प्राप्त कर लेता है, और साथ ही उसके विषय में वह ज्ञान के विभिन्न स्तरों को भी प्राप्त कर लेता है। यह समझ और ज्ञान मनुष्य द्वारा कल्पित या निर्मित किसी चीज़ से नहीं आती, बल्कि उससे आती है, जिसे वह अपने भीतर समझता, अनुभव करता, महसूस करता और पुष्टि करता है। इन बातों को समझने, अनुभव करने, महसूस करने और पुष्टि करने के बाद ही मनुष्य के परमेश्वर संबंधी ज्ञान में तत्त्व की प्राप्ति होती है; केवल मनुष्य द्वारा इस समय प्राप्त ज्ञान ही वास्तविक, असली और सटीक होता है और यह प्रक्रिया—परमेश्वर के वचनों को समझने, अनुभव करने, महसूस करने और उनकी पुष्टि करने के माध्यम से परमेश्वर की वास्तविक समझ और ज्ञान प्राप्त करने की यह प्रक्रिया, और कुछ नहीं, वरन् परमेश्वर और मनुष्य के मध्य सच्चा संवाद है। इस प्रकार के समागम के मध्य मनुष्य सच में परमेश्वर के उद्देश्यों को समझ-बूझ पाता है, परमेश्वर के स्वरूप और अस्तित्व को जान पाता है, सच में परमेश्वर के सार को समझ और जान पाता है, धीरे-धीरे परमेश्वर के स्वभाव को जान और समझ पाता है, संपूर्ण सृष्टि के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व के बारे में निश्चितता और उसकी सही परिभाषा पर पहुँच पाता है और परमेश्वर की पहचान और स्थिति का ठोस निश्चय और उसका ज्ञान प्राप्त कर पाता है। इस प्रकार के समागम के मध्य मनुष्य परमेश्वर के प्रति अपने विचार थोड़ा-थोड़ा करके बदलता है, वह परमेश्वर को अपनी कल्पना की उड़ान नहीं मानता, या वह उसके बारे में अपने संदेहों को बेलगाम नहीं दौड़ाता, या उसे गलत नहीं समझता, उसकी निंदा नहीं करता, उसकी आलोचना नहीं करता या उस पर संदेह नहीं करता। इस प्रकार, परमेश्वर के साथ मनुष्य के

विवाद बहुत कम होंगे, वह परमेश्वर के साथ कम संघर्ष करेगा, और ऐसे मौके कम आएँगे, जब वह परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करेगा। इसके विपरीत, मनुष्य द्वारा परमेश्वर की परवाह और आज्ञाकारिता बढ़ेगी और परमेश्वर के प्रति उसका आदर अधिक वास्तविक और गहन होगा। ऐसे समागम के मध्य, मनुष्य न केवल सत्य का पोषण और जीवन का बपतिस्मा प्राप्त करेगा, बल्कि उसी समय वह परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान भी प्राप्त करेगा। ऐसे समागम के मध्य न केवल मनुष्य का स्वभाव बदलेगा और वह उद्धार पाएगा, बल्कि उसी समय वह परमेश्वर के प्रति एक सृजित प्राणी की वास्तविक श्रद्धा और आराधना भी प्राप्त करेगा। इस प्रकार का समागम कर लेने के बाद मनुष्य का परमेश्वर पर विश्वास किसी कोरे कागज़ की तरह या दिखावटी प्रतिज्ञा के समान, या एक अंधानुकरण अथवा मूर्ति-पूजा के रूप में नहीं रहेगा; केवल इस प्रकार के समागम से ही मनुष्य का जीवन दिन-प्रतिदिन परिपक्वता की ओर बढ़ेगा, और तभी उसका स्वभाव धीरे-धीरे परिवर्तित होगा और परमेश्वर के प्रति उसका विश्वास कदम-दर-कदम अस्पष्ट और अनिश्चित विश्वास से एक सच्ची आज्ञाकारिता और परवाह में, वास्तविक श्रद्धा में बदलेगा और परमेश्वर के अनुसरण की प्रक्रिया में मनुष्य का रुख भी उत्तरोत्तर निष्क्रियता से सक्रियता, नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़ेगा; केवल इस प्रकार के समागम से ही मनुष्य परमेश्वर के बारे में वास्तविक समझ-बूझ और सच्चा ज्ञान प्राप्त करेगा। चूँकि अधिकतर लोगों ने कभी परमेश्वर के साथ वास्तविक समागम नहीं किया है, अत: परमेश्वर के बारे में उनका ज्ञान सिद्धांत, शब्द और वाद पर आकर ठहर जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि लोगों का एक बड़ा समूह, भले ही कितने भी सालों से परमेश्वर पर विश्वास करता आ रहा हो, लेकिन परमेश्वर को जानने के संबंध में अभी भी उसी स्थान पर है, जहाँ से उसने शुरुआत की थी, और वह सामंती अंधविश्वासों और रोमानी रंगों से युक्त भक्ति के पारंपरिक रूपों के बुनियादी चरण में ही अटका हुआ है। मनुष्य के परमेश्वर संबंधी ज्ञान के प्रस्थान-बिंदु पर ही रुके होने का अर्थ व्यावहारिक रूप से उसका न होना है। मनुष्य द्वारा परमेश्वर की स्थिति और पहचान की पुष्टि के अलावा परमेश्वर पर मनुष्य का विश्वास अभी भी अस्पष्ट अनिश्चितता की स्थिति में ही है। ऐसा होने से, मनुष्य परमेश्वर के प्रति कितनी वास्तविक श्रद्धा रख सकता है?

चाहे तुम कितनी भी दृढ़ता से परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास क्यों न करो, वह परमेश्वर संबंधी तुम्हारे ज्ञान की जगह नहीं ले सकता, न ही वह परमेश्वर के प्रति तुम्हारी श्रद्धा की जगह ले सकता है। चाहे तुमने उसके आशीष और अनुग्रह का कितना भी आनंद क्यों न लिया हो, वह तुम्हारे परमेश्वर

संबंधी ज्ञान की जगह नहीं ले सकता। चाहे तुम उस पर अपना सर्वस्व अर्पित करने और उसके लिए अपना सब-कुछ व्यय करने के लिए कितने भी तैयार हो, वह तुम्हारे परमेश्वर संबंधी ज्ञान का स्थान नहीं ले सकता। शायद तुम परमेश्वर के कहे हुए वचनों से बहुत परिचित हो गए हो, या शायद तुमने उन्हें रट भी लिया हो और तुम उन्हें तेजी से दोहरा सकते हो; लेकिन यह तुम्हारे परमेश्वर संबंधी ज्ञान का स्थान नहीं ले सकता। मनुष्य परमेश्वर का अनुसरण करने का कितना भी अभिलाषी हो, यदि उसका परमेश्वर के साथ वास्तविक समागम नहीं हुआ है, या उसने परमेश्वर के वचनों का वास्तविक अनुभव नहीं किया है, तो परमेश्वर संबंधी उसका ज्ञान खाली शून्य या एक अंतहीन दिवास्वप्न पर आधारित होगा; तुम भले ही परमेश्वर के संपर्क में रहे हो या उससे रूबरू हुए हो, तुम्हारा परमेश्वर संबंधी ज्ञान फिर भी शून्य ही है और परमेश्वर के प्रति तुम्हारी श्रद्धा खोखले नारे या आदर्शवादी अवधारणा के अलावा और कुछ नहीं है।

कई लोग परमेश्वर के वचनों को दिन-रात पढ़ते रहते हैं, यहाँ तक कि उनके उत्कृष्ट अंशों को सबसे बेशकीमती संपत्ति के तौर पर स्मृति में अंकित कर लेते हैं, इतना ही नहीं, वे जगह-जगह परमेश्वर के वचनों का प्रचार करते हैं, और दूसरों को भी परमेश्वर के वचनों की आपूर्ति करके उनकी सहायता करते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसा करना परमेश्वर की गवाही देना है, उसके वचनों की गवाही देना है; ऐसा करना परमेश्वर के मार्ग का पालन करना है; वे सोचते हैं कि ऐसा करना परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीना है, ऐसा करना उसके वचनों को अपने जीवन में लागू करना है, ऐसा करना उन्हें परमेश्वर की सराहना प्राप्त करने, बचाए जाने और पूर्ण बनाए जाने योग्य बनाएगा। परंतु परमेश्वर के वचनों का प्रचार करते हुए भी वे कभी परमेश्वर के वचनों पर खुद अमल नहीं करते या परमेश्वर के वचनों में जो प्रकाशित किया गया है, उसके अनुरूप अपने आप को ढालने की कोशिश नहीं करते। इसके बजाय, वे परमेश्वर के वचनों का उपयोग छल से दूसरों की प्रशंसा और विश्वास प्राप्त करने, अपने दम पर प्रबंधन में प्रवेश करने, परमेश्वर की महिमा का गबन और उसकी चोरी करने के लिए करते हैं। वे परमेश्वर के वचनों के प्रसार से मिले अवसर का दोहन परमेश्वर का कार्य और उसकी प्रशंसा पाने के लिए करने की व्यर्थ आशा करते हैं। कितने ही वर्ष गुज़र चुके हैं, परंतु ये लोग परमेश्वर के वचनों का प्रचार करने की प्रक्रिया में न केवल परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं, परमेश्वर के वचनों की गवाही देने की प्रक्रिया में न केवल उस मार्ग को खोजने में असफल रहे हैं जिसका उन्हें अनुसरण करना चाहिए, दूसरों को परमेश्वर के वचनों से सहायता और पोषण प्रदान करने की प्रक्रिया में न केवल उन्होंने स्वयं सहायता और पोषण नहीं पाया है,

और इन सब चीज़ों को करने की प्रक्रिया में वे न केवल परमेश्वर को जानने या परमेश्वर के प्रति स्वयं में वास्तविक श्रद्धा जगाने में असमर्थ रहे हैं; बल्कि, इसके विपरीत, परमेश्वर के बारे में उनकी गलतफहमियाँ और अधिक गहरी हो रही हैं; उस पर अविश्वास और अधिक बढ़ रहा है और उसके बारे में उनकी कल्पनाएँ और अधिक अतिशयोक्तिपूर्ण होती जा रही हैं। परमेश्वर के वचनों के बारे में अपने सिद्धांतों से आपूर्ति और निर्देशन पाकर वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो वे बिलकुल मनोनुकूल परिस्थिति में हों, मानो वे अपने कौशल का सरलता से इस्तेमाल कर रहे हों, मानो उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य, अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया हो, और मानो उन्होंने एक नया जीवन जीत लिया हो और वे बचा लिए गए हों, मानो परमेश्वर के वचनों को धाराप्रवाह बोलने से उन्होंने सत्य प्राप्त कर लिया हो, परमेश्वर के इरादे समझ लिए हों, और परमेश्वर को जानने का मार्ग खोज लिया हो, मानो परमेश्वर के वचनों का प्रचार करने की प्रक्रिया में वे अकसर परमेश्वर से रूबरू होते हों। साथ ही, अक्सर वे "द्रवित" होकर बार-बार रोते हैं और बहुधा परमेश्वर के वचनों में "परमेश्वर" की अगुआई प्राप्त करते हुए, वे उसकी गंभीर परवाह और उदार मंतव्य समझते प्रतीत होते हैं और साथ ही लगता है कि उन्होंने मनुष्य के लिए परमेश्वर के उद्धार और उसके प्रबंधन को भी जान लिया है, उसके सार को भी जान लिया है और उसके धार्मिक स्वभाव को भी समझ लिया है। इस नींव के आधार पर, वे परमेश्वर के अस्तित्व पर और अधिक दृढ़ता से विश्वास करते, उसकी उत्कृष्टता की स्थिति से और अधिक परिचित होते और उसकी भव्यता एवं श्रेष्ठता को और अधिक गहराई से महसूस करते प्रतीत होते हैं। परमेश्वर के वचनों के सतही ज्ञान से ओतप्रोत होने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विश्वास में वृद्धि हुई है, कष्ट सहने का उनका संकल्प दृढ़ हुआ है, और परमेश्वर संबंधी उनका ज्ञान और अधिक गहरा हुआ है। वे नहीं जानते कि जब तक वे परमेश्वर के वचनों का वास्तव में अनुभव नहीं करेंगे, तब तक उनका परमेश्वर संबंधी सारा ज्ञान और उसके बारे में उनके विचार उनकी अपनी इच्छित कल्पनाओं और अनुमान से निकलते हैं। उनका विश्वास परमेश्वर की किसी भी प्रकार की परीक्षा के सामने नहीं ठहरेगा, उनकी तथाकथित आध्यात्मिकता और उनका आध्यात्मिक कद परमेश्वर के किसी भी परीक्षण या निरीक्षण के तहत बिलकुल नहीं ठहरेगी, उनका संकल्प रेत पर बने हुए महल से अधिक कुछ नहीं है, और उनका परमेश्वर संबंधी तथाकथित ज्ञान उनकी कल्पना की उड़ान से अधिक कुछ नहीं है। वास्तव में इन लोगों ने, जिन्होंने एक तरह से परमेश्वर के वचनों पर काफी परिश्रम किया है, कभी यह एहसास ही नहीं किया कि सच्ची आस्था क्या है, सच्ची आज्ञाकारिता क्या है, सच्ची

देखभाल क्या है, या परमेश्वर का सच्चा ज्ञान क्या है। वे सिद्धांत, कल्पना, ज्ञान, हुनर, परंपरा, अंधविश्वास, यहाँ तक कि मानवता के नैतिक मूल्यों को भी परमेश्वर पर विश्वास करने और उसका अनुसरण करने के लिए "पूँजी" और "हथियार" का रूप दे देते हैं, उन्हें परमेश्वर पर विश्वास करने और उसका अनुसरण करने का आधार बना लेते हैं। साथ ही, वे इस पूँजी और हथियार का जादुई तावीज़ भी बना लेते हैं और उसके माध्यम से परमेश्वर को जानते हैं और उसके निरीक्षणों, परीक्षणों, ताड़ना और न्याय का सामना करते हैं। अंत में जो कुछ वे प्राप्त करते हैं, उसमें फिर भी परमेश्वर के बारे में धार्मिक संकेतार्थों और सामंती अंधविश्वासों से ओतप्रोत निष्कर्षों से अधिक कुछ नहीं होता, जो हर तरह से रोमानी, विकृत और रहस्यमय होता है। परमेश्वर को जानने और उसे परिभाषित करने का उनका तरीका उन्हीं लोगों के साँचे में ढला होता है, जो केवल ऊपर स्वर्ग में या आसमान में किसी वृद्ध के होने में विश्वास करते हैं, जबकि परमेश्वर की वास्तविकता, उसका सार, उसका स्वभाव, उसका स्वरूप और अस्तित्व आदि—वह सब, जो वास्तविक स्वयं परमेश्वर से संबंध रखता है—ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें समझने में उनका ज्ञान विफल रहा है, जिनसे उनके ज्ञान का पूरी तरह से संबंध-विच्छेद हो गया है, यहाँ तक कि वे इतने अलग हैं, जितने उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव। इस तरह, हालाँकि वे लोग परमेश्वर के वचनों की आपूर्ति और पोषण में जीते हैं, फिर भी वे परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर सचमुच चलने में असमर्थ हैं। इसका वास्तविक कारण यह है कि वे कभी भी परमेश्वर से परिचित नहीं हुए हैं, न ही उन्होंने उसके साथ कभी वास्तविक संपर्क या समागम किया है, अत: उनके लिए परमेश्वर के साथ पारस्परिक समझ पर पहुँचना, या अपने भीतर परमेश्वर के प्रति सच्चा विश्वास पैदा कर पाना, उसका सच्चा अनुसरण या उसकी सच्ची आराधना जाग्रत कर पाना असंभव है। इस परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण ने—कि उन्हें इस प्रकार परमेश्वर के वचनों को देखना चाहिए, उन्हें इस प्रकार परमेश्वर को देखना चाहिए, उन्हें अनंत काल तक अपने प्रयासों में खाली हाथ लौटने, और परमेश्वर का भय मानने तथा बुराई से दूर रहने के मार्ग पर न चल पाने के लिए अभिशप्त कर दिया है। जिस लक्ष्य को वे साध रहे हैं और जिस ओर वे जा रहे हैं, वह प्रदर्शित करता है कि अनंत काल से वे परमेश्वर के शत्रु हैं और अनंत काल तक वे कभी उद्धार प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

यदि किसी ऐसे व्यक्ति की, जिसने कई वर्षों तक परमेश्वर का अनुसरण किया है और कई सालों तक उसके वचनों के पोषण का आनंद लिया है, परमेश्वर संबंधी परिभाषा अनिवार्यत: वैसी ही है, जैसी मूर्तियों के सामने भक्ति-भाव से दंडवत करने वाले व्यक्ति की होती है, तो यह इस बात का सूचक है कि इस

व्यक्ति ने परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता प्राप्त नहीं की है। इसका कारण यह है कि उसने परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में बिलकुल भी प्रवेश नहीं किया है और इस कारण से, परमेश्वर के वचनों में निहित वास्तविकता, सत्य, इरादों और मनुष्य से उसकी अपेक्षाओं का उस व्यक्ति से कुछ लेना-देना नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के वचनों के सतही अर्थ पर चाहे कितनी भी मेहनत से कार्य करे, वह सब व्यर्थ है : क्योंकि वह मात्र शब्दों का अनुसरण करता है, इसलिए उसे अनिवार्य रूप से मात्र शब्द ही प्राप्त होंगे। परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन दिखने में भले ही सीधे-सादे या गहन हों, लेकिन वे सभी सत्य हैं, और जीवन में प्रवेश करने वाले मनुष्य के लिए अपरिहार्य हैं; वे जीवन-जल के ऐसे झरने हैं, जो मनुष्य को आत्मा और देह दोनों से जीवित रहने में सक्षम बनाते हैं। वे मनुष्य को जीवित रहने के लिए हर ज़रूरी चीज़ मुहैया कराते हैं; उसके दैनिक जीवन के लिए सिद्धांत और मत; मार्ग, लक्ष्य और दिशा, जिससे होकर गुज़रना उद्धार पाने के लिए आवश्यक है; उसके अंदर परमेश्वर के समक्ष एक सृजित प्राणी के रूप में हर सत्य होना चाहिए; तथा हर वह सत्य होना चाहिए कि मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाकारिता और आराधना कैसे करता है। वे मनुष्य का अस्तित्व सुनिश्चित करने वाली गारंटी हैं, वे मनुष्य का दैनिक आहार हैं, और ऐसा मजबूत सहारा भी हैं, जो मनुष्य को सशक्त और अटल रहने में सक्षम बनाते हैं। वे उस सामान्य मानवता के सत्य की वास्तविकता से संपन्न हैं जिसे सृजित मनुष्य जीता है, वे उस सत्य से संपन्न हैं, जिससे मनुष्य भ्रष्टता से मुक्त होता है और शैतान के जाल से बचता है, वे उस अथक शिक्षा, उपदेश, प्रोत्साहन और सांत्वना से संपन्न हैं, जो स्रष्टा सृजित मानवजाति को देता है। वे ऐसे प्रकाश-स्तंभ हैं, जो मनुष्य को सभी सकारात्मक बातों को समझने के लिए मार्गदर्शन और प्रबुद्धता देते हैं, ऐसी गारंटी हैं जो यह सुनिश्चित करती है कि मनुष्य उस सबको जो धार्मिक और अच्छा है, उन मापदंडों को जिन पर सभी लोगों, घटनाओं और वस्तुओं को मापा जाता है, तथा ऐसे सभी दिशानिर्देशों को जिए और प्राप्त करे, जो मनुष्य को उद्धार और प्रकाश के मार्ग पर ले जाते हैं। केवल परमेश्वर के वचनों के वास्तविक अनुभवों में ही मनुष्य को सत्य और जीवन की आपूर्ति की जा सकती है; केवल इनसे ही मनुष्य की समझ में आ सकता है कि सामान्य मानवता क्या है, सार्थक जीवन क्या है, वास्तविक सृजित प्राणी क्या है, परमेश्वर के प्रति वास्तविक आज्ञाकारिता क्या है; केवल इनसे ही मनुष्य को समझ में आ सकता है कि उसे परमेश्वर की परवाह किस तरह करनी चाहिए, सृजित प्राणी का कर्तव्य कैसे पूरा करना चाहिए, और एक वास्तविक मनुष्य की समानता कैसे प्राप्त करनी चाहिए; केवल इनसे ही

मनुष्य को समझ में आ सकता है कि सच्ची आस्था और सच्ची आराधना क्या है; केवल इनसे ही मनुष्य समझ पाता है कि स्वर्ग, पृथ्वी और सभी चीजों का शासक कौन है; केवल इनसे ही मनुष्य समझ सकता है कि वह जो समस्त सृष्टि का स्वामी है, किन साधनों से सृष्टि पर शासन करता है, उसकी अगुआई करता है और उसका पोषण करता है; और केवल इनसे ही मनुष्य समझ-बूझ सकता है कि वह, जो समस्त सृष्टि का स्वामी है, किन साधनों के ज़रिये मौजूद रहता है, स्वयं को अभिव्यक्त करता है और कार्य करता है। परमेश्वर के वचनों के वास्तविक अनुभवों से अलग, मनुष्य के पास परमेश्वर के वचनों और सत्य का कोई वास्तविक ज्ञान या अंतदृष्टि नहीं होती। ऐसा व्यक्ति पूरी तरह से एक ज़िंदा लाश, पूरा घोंघा होता है, और स्रष्टा से संबंधित किसी भी ज्ञान का उससे कोई वास्ता नहीं होता। परमेश्वर की दृष्टि में, ऐसे व्यक्ति ने कभी उस पर विश्वास नहीं किया है, न कभी उसका अनुसरण किया है, और इसलिए परमेश्वर न तो उसे अपना विश्वासी मानता है और न ही अपना अनुयायी, एक सच्चा सृजित प्राणी मानना तो दूर की बात रही।

एक सच्चे सृजित प्राणी को यह जानना चाहिए कि स्रष्टा कौन है, मनुष्य का सृजन किसलिए हुआ है, एक सृजित प्राणी की ज़िम्मेदारियों को किस तरह पूरा करें, और संपूर्ण सृष्टि के प्रभु की आराधना किस तरह करें, उसे स्रष्टा के इरादों, इच्छाओं और अपेक्षाओं को समझना, बूझना और जानना चाहिए, उनकी परवाह करनी चाहिए, और स्रष्टा के तरीके के अनुरूप कार्य करना चाहिए—परमेश्वर का भय मानो और बुराई से दूर रहो।

परमेश्वर का भय मानना क्या है? और बुराई से दूर कैसे रहा जा सकता है?

"परमेश्वर का भय मानने" का अर्थ अज्ञात डर या दहशत नहीं होता, न ही इसका अर्थ टाल-मटोल करना, दूर रहना, मूर्तिपूजा करना या अंधविश्वास होता है। वरन् यह श्रद्धा, सम्मान, विश्वास, समझ, परवाह, आज्ञाकारिता, समर्पण और प्रेम के साथ-साथ बिना शर्त और बिना शिकायत आराधना, प्रतिदान और समर्पण होता है। परमेश्वर के सच्चे ज्ञान के बिना मनुष्य में सच्ची श्रद्धा, सच्चा विश्वास, सच्ची समझ, सच्ची परवाह या आज्ञाकारिता नहीं होगी, वरन् केवल डर और व्यग्रता, केवल शंका, गलतफहमी, टालमटोल और आनाकानी होगी; परमेश्वर के सच्चे ज्ञान के बिना मनुष्य में सच्चा समर्पण और प्रतिदान नहीं होगा; परमेश्वर के सच्चे ज्ञान के बिना मनुष्य में सच्ची आराधना और समर्पण नहीं होगा, मात्र अंधी मूर्तिपूजा और अंधविश्वास होगा; परमेश्वर के सच्चे

ज्ञान के बिना मनुष्य परमेश्वर के तरीके के अनुसार कार्य नहीं कर पाएगा, या परमेश्वर का भय नहीं मानेगा, या बुराई का त्याग नहीं कर पाएगा। इसके विपरीत, मनुष्य का हर क्रियाकलाप और व्यवहार, परमेश्वर के प्रति विद्रोह और अवज्ञा से, निंदात्मक आरोपों और आलोचनात्मक आकलनों से तथा सत्य और परमेश्वर के वचनों के वास्तविक अर्थ के विपरीत चलने वाले दुष्ट आचरण से भरा होगा।

जब मनुष्य को परमेश्वर में सच्चा विश्वास होगा, तो वह सच्चाई से उसका अनुसरण करेगा और उस पर निर्भर रहेगा; केवल परमेश्वर पर सच्चे विश्वास और निर्भरता से ही मनुष्य में सच्ची समझ और सच्चा बोध होगा; परमेश्वर के वास्तविक बोध के साथ उसके प्रति वास्तविक परवाह आती है; परमेश्वर के प्रति सच्ची परवाह से ही मनुष्य में सच्ची आज्ञाकारिता आ सकती है; परमेश्वर के प्रति सच्ची आज्ञाकारिता से ही मनुष्य में सच्चा समर्पण आ सकता है; परमेश्वर के प्रति सच्चे समर्पण से ही मनुष्य बिना शर्त और बिना शिकायत प्रतिदान कर सकता है; सच्चे विश्वास और निर्भरता, सच्ची समझ और परवाह, सच्ची आज्ञाकारिता, सच्चे समर्पण और प्रतिदान से ही मनुष्य परमेश्वर के स्वभाव और सार को जान सकता है, स्रष्टा की पहचान को जान सकता है; स्रष्टा को वास्तव में जान लेने के बाद ही मनुष्य अपने भीतर सच्ची आराधना और समर्पण जाग्रत कर सकता है; स्रष्टा के प्रति सच्ची आराधना और समर्पण होने के बाद ही वह वास्तव में बुरे मार्गों का त्याग कर पाएगा, अर्थात्, बुराई से दूर रह पाएगा।

इससे "परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने" की संपूर्ण प्रक्रिया बनती है, और यही परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मूल तत्व भी है। यही वह मार्ग है, जिसे परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के लिए पार करना आवश्यक है।

"परमेश्वर का भय मानना और दुष्टता का त्याग करना" तथा परमेश्वर को जानना अभिन्न रूप से असंख्य सूत्रों से जुड़े हैं, और उनके बीच का संबंध स्वत: स्पष्ट है। यदि कोई बुराई से दूर रहना चाहता है, तो उसमें पहले परमेश्वर का वास्तविक भय होना चाहिए; यदि कोई परमेश्वर का वास्तविक भय मानना चाहता है, तो उसमें पहले परमेश्वर का सच्चा ज्ञान होना चाहिए; यदि कोई परमेश्वर का ज्ञान हासिल करना चाहता है, तो उसे पहले परमेश्वर के वचनों का अनुभव करना चाहिए, परमेश्वर के वचनों की वास्तविकता में प्रवेश करना चाहिए, परमेश्वर की ताड़ना,

अनुशासन और न्याय का अनुभव करना चाहिए; यदि कोई परमेश्वर के वचनों का अनुभव करना चाहता है, तो उसे पहले परमेश्वर के वचनों के रूबरू आना चाहिए, परमेश्वर के रूबरू आना चाहिए, और परमेश्वर से निवेदन करना चाहिए कि वह लोगों, घटनाओं और वस्तुओं से युक्त सभी प्रकार के परिवेशों के रूप में परमेश्वर के वचनों को अनुभव करने के अवसर प्रदान करे; यदि कोई परमेश्वर और उसके वचनों के रूबरू आना चाहता है, तो उसे पहले एक सरल और सच्चा हृदय, सत्य को स्वीकार करने की तत्परता, कष्ट झेलने की इच्छा, और बुराई से दूर रहने का संकल्प और साहस, और एक सच्चा सृजित प्राणी बनने की अभिलाषा रखनी चाहिए...। इस प्रकार कदम-दर-कदम आगे बढ़ते हुए, तुम परमेश्वर के निरंतर करीब आते जाओगे, तुम्हारा हृदय निरंतर शुद्ध होता जाएगा, और तुम्हारा जीवन और जीवित रहने के मूल्य, परमेश्वर के तुम्हारे ज्ञान के साथ-साथ, निरंतर अधिक अर्थपूर्ण और दीप्तिमान होते जाएँगे। फिर एक दिन तुम अनुभव करोगे कि स्रष्टा अब कोई पहेली नहीं रह गया है, स्रष्टा कभी तुमसे छिपा नहीं था, स्रष्टा ने कभी अपना चेहरा तुमसे छिपाया नहीं था, स्रष्टा तुमसे बिलकुल भी दूर नहीं है, स्रष्टा अब बिलकुल भी वह नहीं है जिसके लिए तुम अपने विचारों में लगातार तरस रहे हो लेकिन जिसके पास तुम अपनी भावनाओं से पहुँच नहीं पा रहे हो, वह वाकई और सच में तुम्हारे दाएँ-बाएँ खड़ा तुम्हारी सुरक्षा कर रहा है, तुम्हारे जीवन को पोषण दे रहा है और तुम्हारी नियति को नियंत्रित कर रहा है। वह सुदूर क्षितिज पर नहीं है, न ही उसने अपने आपको ऊपर कहीं बादलों में छिपाया हुआ है। वह एकदम तुम्हारी बगल में है, तुम्हारे सर्वस्व पर आधिपत्य कर रहा है, वह वो सब है जो तुम्हारे पास है, और वही एकमात्र चीज़ है जो तुम्हारे पास है। ऐसा परमेश्वर तुम्हें स्वयं को अपने हृदय से प्रेम करने देता है, स्वयं से लिपटने देता है, स्वयं को पकड़ने देता है, अपनी स्तुति करने देता है, गँवा देने का भय पैदा करता है, अपना त्याग करने, अपनी अवज्ञा करने, अपने को टालने या दूर करने का अनिच्छुक बना देता है। तुम बस उसकी परवाह करना, उसका आज्ञापालन करना, जो भी वह देता है उस सबका प्रतिदान करना और उसके प्रभुत्व के प्रति समर्पित होना चाहते हो। तुम अब उसके द्वारा मार्गदर्शन किए जाने, पोषण दिए जाने, निगरानी किए जाने, उसके द्वारा देखभाल किए जाने से इंकार नहीं करते और न ही उसकी आज्ञा और आदेश का पालन करने से इंकार करते हो। तुम सिर्फ़ उसका अनुसरण करना चाहते हो, उसके साथ चलना चाहते हो, उसे अपना एकमात्र जीवन स्वीकार करना चाहते हो, उसे अपना एकमात्र प्रभु, अपना एकमात्र परमेश्वर

स्वीकार करना चाहते हो।

18 अगस्त, 2014

परमेश्वर का स्वभाव और उसका कार्य जो परिणाम हासिल करेगा, उसे कैसे जानें

सबसे पहले, आओ हम एक भजन गाएँ: राज्य गान (I) राज्य जगत में अवतरित होता है।

संगत: जन समूह मेरा जय-जयकार करता है, जन समूह मेरी स्तुति करता है; सभी अपने मुख से एकमात्र सच्चे ईश्वर का नाम लेते हैं। राज्य लोगों के जगत में अवतरित होता है।

1. जन समूह मेरा जय-जयकार करता है, समूह मेरी स्तुति करता है; सभी अपने मुख से एकमात्र सच्चे ईश्वर का नाम लेते हैं, सभी की दृष्टि मेरे कर्मों को देखने के लिए उठती है। राज्य लोगों के जगत में अवतरित होता है, मेरा व्यक्तित्व समृद्ध और प्रचुर है। इस पर कौन खुश न होगा? कौन है जो इसके लिए आनंदित हो, नृत्य न करेगा? ओह, सिय्योन! मेरा जश्न मनाने के लिए अपनी विजयी-पताका उठाओ! मेरे पवित्र नाम को फैलाने के लिए जीत का अपना विजय-गीत गाओ!

2. पृथ्वी की समस्त वस्तुओ! स्वयं को जल्दी शुद्ध करो ताकि तुम्हें मेरे लिए भेंट के रूप में बनाया जा सके! आसमान के तारा समूहो! अपने स्थानों पर जल्दी लौट जाओ और नभ-मंडल में मेरा प्रबल सामर्थ्य दिखाओ! मैं पृथ्वी के उन लोगों की आवाज़ों को सुनता हूँ, जो गायन में मेरे लिए असीम प्रेम और श्रद्धा प्रकट करते हैं! इस दिन, जबकि हर चीज़ फिर से जीवित होती है, मैं पृथ्वी पर आता हूँ। इस पल, इस वक्त, फूल खिल जाते हैं, पक्षी एक सुर में गाते हैं, हर चीज़ उल्लास से धड़कती है! राज्य के अभिनंदन की ध्वनि में, शैतान का राज्य ध्वस्त हो जाता है, राज्य-गान की गूंज में, फिर कभी न उठने के लिए नष्ट हो जाता है!

3. पृथ्वी पर कौन है जो सिर उठाने और विरोध करने का साहस करे? जब मैं पृथ्वी पर आता हूँ तो मैं ज्वलन लाता हूँ, कोप लाता हूँ, तमाम प्रकारों की विपदाएँ लाता हूँ। संसार के राज्य अब मेरे राज्य हैं! ऊपर आकाश में बादल गोते लगाते और तरंगित होते हैं; आकाश के नीचे झीलें और नदियाँ हिलोरे मारती हैं जिससे मधुर संगीत निकलता है। अपनी मांद में विश्राम करते जीव-जंतु बाहर निकलते हैं, मैं सभी उनींदे

लोगों को जगाता हूँ। असंख्य लोग जिस दिन की प्रतीक्षा में थे, वो दिन आखिर आ गया! वे मुझे सर्वाधिक सुंदर गीत भेंट करते हैं!

इस भजन को गाते हुए, हर बार तुम लोग क्या सोचते हो? (हम उत्तेजित और रोमांचित हो जाते हैं, और सोचते हैं कि राज्य का सौन्दर्य कितना महिमामय है, कैसे मनुष्य और परमेश्वर हमेशा के लिए साथ होंगे।) क्या किसी ने सोचा है कि परमेश्वर के साथ रहने के लिए मनुष्य को कौन-सा रूप अपनाना पड़ेगा? तुम लोगों के ख्याल में, किसी व्यक्ति को परमेश्वर के साथ जुड़ने और राज्य के महिमामय जीवन का आनन्द लेने के लिए कैसा होना चाहिए? (उसके स्वभाव में बदलाव आना चाहिए।) उसके स्वभाव में बदलाव आना चाहिए, लेकिन किस सीमा तक? इस बदलाव के बाद वह कैसा हो जाएगा? (वह पवित्र बन जाएगा।) पवित्रता का मानक क्या है? (इंसान के सभी विचार और सोच मसीह के अनुकूल होने चाहिए।) ऐसी अनुकूलता कैसे प्रदर्शित होती है? (इंसान परमेश्वर का प्रतिरोध नहीं करता या उससे विश्वासघात नहीं करता, बल्कि परमेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो सकता है, और वह अपने हृदय में परमेश्वर का भय मानते हुए श्रद्धा रखता है।) तुम लोगों के कुछ उत्तर सही दिशा में हैं। तुम लोग दिल खोलकर अपनी बात कहो। (जो लोग राज्य में परमेश्वर के साथ रहते हैं वे किसी व्यक्ति, घटना एवं वस्तु द्वारा बाधित हुए बिना, सत्य का अनुसरण करने के द्वारा, निष्ठापूर्वक अपना कर्तव्य निभा सकते हैं। फिर वे अंधकार के प्रभाव से पूरी तरह अलग हो सकते हैं, अपन दिल परमेश्वर के अनुरूप बना सकते हैं, और परमेश्वर का भय मानते हुए, बुराई से दूर रह सकते हैं।) (चीज़ों के बारे में हमारा दृष्टिकोण परमेश्वर के अनुरूप बन सकता है, और हम अंधकार के प्रभाव से अलग हो सकते हैं। कम से कम ऐसी जगह जा सकते हैं जहाँ शैतान हमारा शोषण न करे, हम अपने भ्रष्ट स्वभाव को दूर करके परमेश्वर के प्रति समर्पित हो सकें। हम मानते हैं कि अंधकार के प्रभाव से अलग होना आवश्यक है। यदि कोई अंधकार के प्रभाव से अलग नहीं हो सके और शैतान के बंधनों को तोड़कर आज़ाद न हो सके, तो उसने परमेश्वर क उद्धार को प्राप्त नहीं किया है।) (परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने के मानक पर खरा उतरने के लिए लोगों को परमेश्वर के साथ हृदय एवं मन से एक होना चाहिए और परमेश्वर का प्रतिरोध नहीं करना चाहिए। उन्हें स्वयं को जानने, सत्य को अभ्यास में लाने, परमेश्वर की समझ प्राप्त करने, परमेश्वर से प्रेम कर सकने, और परमेश्वर के अनुरूप हो सकने में समर्थ होना चाहिए। एक व्यक्ति को बस इतना ही करने की आवश्यकता है।)

लोगों के हृदय में परिणाम का बोझ कितना भारी होता है

ऐसा लगता है कि तुम लोगों के हृदय में उस मार्ग के बारे में कुछ विचार हैं, जिसका तुम लोगों को पालन करना चाहिए, और तुम लोगों ने उसकी कुछ समझ या जानकारी विकसित कर ली है। किन्तु जो कुछ तुम लोगों ने कहा है, वे खोखले शब्द हैं या वास्तविक, यह तुम लोगों के दिन-प्रतिदिन के अभ्यास में ध्यान लगाने पर निर्भर करता है। बीते वर्षों में तुम लोगों ने सिद्धांतों और सत्य की वास्तविक विषयवस्तु के संदर्भ में सत्य के प्रत्येक पहलू से विशेष फल प्राप्त किए हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि लोग आजकल सत्य के लिए प्रयास करने पर जोर देते हैं, और परिणामस्वरूप, सत्य के हर पहलू और हर मद ने निश्चित रूप से कुछ लोगों के हृदय में जड़ें जमा ली हैं। लेकिन वह क्या है जिससे मैं सबसे अधिक डरता हूँ? वह ये है कि इस तथ्य के बावजूद कि सत्य के इन विषयों और इन सिद्धांतों ने तुम्हारे दिल में जड़ें जमा ली हैं, तुम्हारे दिल में उनकी वास्तविक विषयवस्तु का सार बहुत कम है। जब तुम लोग समस्याओं का सामना करते हो, तुम्हारा परीक्षणों और विकल्पों से सामना होता है—तब तुम लोगों के लिए इन सत्यों की वास्तविकता का कितना व्यवहारिक उपयोग होगा? क्या यह तुम्हें कठिनाइयों से पार पाने और परीक्षाओं से उबरने में सहायता कर सकती है जिससे तुम परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट कर सको? क्या तुम लोग परीक्षणों में अडिग रहकर परमेश्वर के लिए शानदार गवाही दोगे? क्या तुम लोगों ने इन मामलों से कभी कोई सरोकार रखा है? मैं तुम लोगों से पूछता हूँ : तुम्हारे दिल में और प्रतिदिन के अपने विचारों और चिंतन में, तुम लोगों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्या है? क्या तुम लोग कभी इसके निष्कर्ष पर पहुँचे हो? ऐसा क्या है जो तुम लोगों को सबसे महत्वपूर्ण लगता है? कुछ लोग कहते हैं, "बेशक, वह सत्य को अभ्यास में लाना है," जबकि कुछ लोग कहते हैं "बेशक, वह प्रतिदिन परमेश्वर के वचन पढ़ना है।" कुछ लोग कहते हैं, " बेशक, वह प्रतिदिन परमेश्वर के सामने आकर उससे प्रार्थना करना है," और ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं, "बेशक, वह हर दिन अपने कर्तव्य का ठीक से निर्वहन करना है।" फिर कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि वे सदा इस बारे में सोचते रहते हैं कि परमेश्वर को किस प्रकार से संतुष्ट किया जाए, कैसे सभी चीज़ों में उसका आज्ञापालन किया जाए, और कैसे उसकी इच्छा के साथ सामंजस्य बिठाकर कार्य किया जाए। क्या यह सही है? क्या यह बस इतना ही है? उदाहरण के लिए, कुछ लोग कहते हैं: "मैं केवल परमेश्वर को समर्पित होना चाहता हूँ, किन्तु जब कोई समस्या आती है तब मैं ऐसा नहीं कर पाता।" कुछ लोग कहते हैं, "मैं केवल परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहता हूँ, अगर मैं उसे केवल एक बार ही संतुष्ट कर पाऊँ तो भी मुझे मंज़ूर है—लेकिन मैं उसे कभी संतुष्ट नहीं कर पाता।" कुछ लोग कहते हैं, "मैं केवल परमेश्वर को समर्पित

होना चाहता हूँ। परीक्षण के समय बिना किसी शिकायत या निवेदन के, मैं केवल उसके आयोजनों, संप्रभुता और व्यवस्थाओं को समर्पित होना चाहता हूँ। लेकिन लगभग हर बार मैं ऐसा कर पाने में असफल हो जाता हूँ।" कुछ लोग तो ये भी कहते हैं, "जब निर्णय लेने की बात आती है, तब मैं कभी सत्य को अभ्यास में लाने को नहीं चुन पाता। मैं हमेशा देह को संतुष्ट करना चाहता हूँ, हमेशा अपनी व्यक्तिगत, स्वार्थी अभिलाषाओं को संतुष्ट करना चाहता हूँ।" इसका क्या कारण है? परमेश्वर के परीक्षणों के आने से पहले ही, क्या तुम लोगों ने स्वयं को कई बार चुनौती दी है, और स्वयं को कई बार आजमाया और जाँचा है? विचार करो कि क्या तुम लोग वास्तव में परमेश्वर को समर्पित हो सकते हो, क्या परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हो, और क्या गारंटी दे सकते हो कि तुम परमेश्वर से विश्वासघात नही करोगे; विचार करो कि क्या तुम लोग स्वयं को संतुष्ट किये बिना, अपनी अभिलाषाओं को संतुष्ट किये बिना, व्यक्तिगत पसंद के बगैर, केवल परमेश्वर को संतुष्ट कर सकते हो। क्या कोई ऐसा करता है? वास्तव में, केवल एक ही तथ्य है जिसे तुम लोगों की आँखों के सामने रखा गया है। उसी में तुममें से हर एक की सबसे ज़्यादा रूचि है, वही तुम लोग सबसे अधिक जानना चाहते हो, और यह प्रत्येक व्यक्ति के परिणाम और मंज़िल का मामला है। तुम लोगों को शायद इसका एहसास न हो, परन्तु इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। जब मनुष्य के परिणाम की सच्चाई की, मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रतिज्ञा की, और परमेश्वर मनुष्य को किस प्रकार की मंज़िल तक पहुँचाने का इरादा करता है, इन सबकी बात आती है, तो मैं जानता हूँ कि ऐसे कुछ लोग हैं जो पहले ही कई बार इन विषयों पर परमेश्वर के वचनों का अध्ययन कर चुके हैं। फिर ऐसे भी लोग हैं जो बारंबार इसके उत्तर खोज कर रहे हैं और अपने मन में इस पर विचार कर रहे हैं, लेकिन फिर भी उन्हें कोई परिणाम नहीं मिलता, या शायद किसी अस्पष्ट निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। अंत में वे इस बारे में निश्चित नहीं हो पाते कि किस प्रकार का परिणाम उनका इंतज़ार कर रहा है। अपना कर्तव्य निभाते समय, अधिकांश लोग निम्नलिखित प्रश्नों के निश्चित उत्तर जानना चाहते हैं : "मेरा परिणाम क्या होगा? क्या मैं इस मार्ग पर अंत तक चल सकता हूँ? मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है?" कुछ लोग इस प्रकार चिंता करते हैं : "मैंने अतीत में कुछ काम किए हैं, कुछ बातें कही हैं; मैं परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी रहा हूँ, मैंने परमेश्वर से विश्वासघात करने वाले कुछ काम किए हैं, और कुछ मामलों में मैं परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर पाया हूँ, परमेश्वर के हृदय को ठेस पहुँचायी है, उसे निराश किया, उसे मुझसे घृणा और नफरत करने पर मजबूर किया है। इसलिए शायद मेरा परिणाम अज्ञात है।" यह कहना उचित होगा कि अधिकतर लोग अपने

परिणाम के बारे में असहज महसूस करते हैं। कोई यह कहने का साहस नहीं करता, "मैं सौ प्रतिशत निश्चित हूँ कि मैं जीवित रहूँगा; मैं सौ प्रतिशत निश्चित हूँ कि मैं परमेश्वर के इरादों को संतुष्ट कर सकता हूँ। मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जो परमेश्वर के हृदय के अनुरूप है; मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जिसकी परमेश्वर प्रशंसा करता है।" कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करना कठिन है, और सत्य को अभ्यास में लाना सबसे कठिन है। परिणामस्वरूप, ये लोग सोचते हैं कि कोई उनकी सहायता नहीं कर सकता, और वे अच्छे परिणाम हासिल करने की आशा नहीं कर पाते। या शायद वे मानते हैं कि वे परमेश्वर के इरादों को संतुष्ट नहीं कर सकते, इसलिए जीवित नहीं रह सकते। इसी वजह से वे कहते हैं कि उनके पास कोई परिणाम नहीं है, और वे एक अच्छी मंज़िल हासिल नहीं कर सकते। लोग वास्तव में चाहे जिस प्रकार भी सोचते हों, उन सभी ने कई बार अपने परिणाम के बारे में विचार किया होता है। ये लोग अपने भविष्य के प्रश्नों पर और उन प्रश्नों पर कि जब परमेश्वर अपना कार्य को समाप्त कर लेगा, तो उन्हें क्या मिलेगा, वे हमेशा गुणा-भाग करने और योजना बनाने में लगे रहते हैं। कुछ लोग दोगुनी कीमत चुकाते हैं; कुछ लोग अपने परिवार और अपनी नौकरियाँ छोड़ देते हैं; कुछ लोग विवाह-बंधन को तोड़ देते हैं; कुछ लोग परमेश्वर के लिए स्वयं को खपाने की खातिर के लिए त्यागपत्र दे देते हैं; कुछ लोग अपना कर्तव्य निभाने के लिए घर छोड़ देते हैं; कुछ लोग कठिन रास्ता अपना कर बेहद कठोर और थका देने वाले काम हाथ में लेने लगते हैं; कुछ लोग धन अर्पित करते हैं, अपना सर्वस्व अर्पित कर देते हैं; कुछ लोग सत्य और परमेश्वर को जानने का प्रयास हैं। तुम लोग चाहे जैसे अभ्यास करो, क्या वह तरीका जिससे तुम लोग अभ्यास करते हो वह महत्वपूर्ण है या नहीं? (नहीं, महत्वपूर्ण नहीं है।) तो फिर हम इस महत्वहीनता की व्याख्या कैसे करें? यदि अभ्यास का तरीका महत्वपूर्ण नहीं है, तो क्या महत्वपूर्ण है? (बाहरी अच्छा व्यवहार सत्य को अभ्यास में लाने का द्योतक नहीं है।) (हर व्यक्ति के विचार महत्वपूर्ण नहीं हैं; यहाँ मुख्य बात यह है कि हम सत्य को अभ्यास में लाए हैं या नहीं, और हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं या नहीं।) (मसीह-विरोधियों और झूठे अगुवाओं का पतन यह समझने में हमारी सहायता करता है कि बाहरी व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है। बाहरी तौर पर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने बहुत कुछ त्याग दिया है, और वे कीमत चुकाने के लिए तैयार लगते हैं, परन्तु करीब से जाँचने पर हम देख सकते हैं कि उनमें परमेश्वर के लिए श्रद्धा नहीं है; बल्कि वे हर प्रकार से उसका विरोध करते हैं। निर्णायक समय में वे हमेशा शैतान के साथ खड़े रहकर परमेश्वर के कार्य में हस्तक्षेप करते हैं। इस प्रकार, यहाँ मुख्य विचारणीय बातें ये हैं कि समय आने पर हम

किसके साथ खड़े होते हैं, और हमारा दृष्टिकोण क्या है।) तुम सभी लोग अच्छा बोलते हो, और ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोगों में पहले से ही सत्य को अभ्यास में लाने की, परमेश्वर के इरादों की, और जो कुछ परमेश्वर मनुष्य से अपेक्षा रखता है, उसकी एक बुनियादी समझ और मानक है। तुम लोग इस प्रकार से बोल पाते हो यह अत्यंत मर्मस्पर्शी है। हालाँकि तुम्हारी बहुत-सी बातें सटीक नहीं होतीं, फिर भी तुम लोग पहले ही सत्य की सही व्याख्या के निकट पहुँच चुके हो, और इससे प्रमाणित होता है कि तुमने लोगों, घटनाओं और अपने आसपास की वस्तुओं की, परमेश्वर द्वारा व्यवस्थित तुम्हारे समस्त परिवेश की, और हर दृश्य वस्तु के बारे में वास्तविक समझ विकसित कर ली है। ये समझ सत्य के निकट है। भले ही जो कुछ तुम लोगों ने कहा है वो बहुत विस्तृत नहीं है, और कुछ शब्द बहुत उचित नहीं हैं, लेकिन तुम्हारी समझ पहले ही सत्य की वास्तविकता के करीब पहुँच रही है। तुम लोगों को इस तरह बोलते हुए सुनकर मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।

लोगों का विश्वास सत्य का स्थान नहीं ले सकता

कुछ लोग कठिनायाँ सह सकते हैं; वे कीमत चुका सकते हैं; उनका बाहरी आचरण बहुत अच्छा होता है, वे बहुत आदरणीय होते हैं; और लोग उनकी सराहना करते हैं। क्या तुम लोग इस प्रकार के बाहरी आचरण को, सत्य को अभ्यास में लाना कह सकते हो? क्या तुम लोग कह सकते हो कि ऐसे लोग परमेश्वर के इरादों को संतुष्ट कररहे हैं? लोग बार-बार ऐसे व्यक्तियों को देखकर ऐसा क्यों समझ लेते हैं कि वे परमेश्वर को संतुष्ट कर रहे हैं, वे सत्य को अभ्यास में लाने के मार्ग पर चल रहे हैं, और वे परमेश्वर के मार्ग पर चल रहे हैं? क्यों कुछ लोग इस प्रकार सोचते हैं? इसका केवल एक ही स्पष्टीकरण है। और वह स्पष्टीकरण क्या है? स्पष्टीकरण यह है कि बहुत से लोगों को, ऐसे प्रश्न—जैसे कि सत्य को अभ्यास में लाना क्या है, परमेश्वर को संतुष्ट करना क्या है, और यथार्थ में सत्य-वास्तविकता से युक्त होना क्या है—ये बहुत स्पष्ट नहीं हैं। अतः कुछ लोग अक्सर ऐसे लोगों के हाथों धोखा खा जाते हैं जो बाहर से आध्यात्मिक, कुलीन, ऊँचे और महान प्रतीत होते हैं। जहाँ तक उन लोगों की बात है जो वाक्पटुता से शाब्दिक और सैद्धांतिक बातें कर सकते हैं, और जिनके भाषण और कार्यकलाप सराहना के योग्य प्रतीत होते हैं, तो जो लोग उनके हाथों धोखा खा चुके हैं उन्होंने उनके कार्यकलापों के सार को, उनके कर्मों के पीछे के सिद्धांतों को, और उनके लक्ष्य क्या हैं, इसे कभी नहीं देखा है। उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि ये लोग वास्तव में परमेश्वर का आज्ञापालन करते हैं या नहीं, वे लोग सचमुच परमेश्वर का भय मानकर बुराई से दूर रहते हैं या

नहीं हैं। उन्होंने इन लोगों के मानवता के सार को कभी नहीं पहचाना। बल्कि, उनसे परिचित होने के साथ ही, थोड़ा-थोड़ा करके वे उन लोगों की तारीफ करने, और आदर करने लगते हैं, और अंत में ये लोग उनके आदर्श बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ लोगों के मन में, वे आदर्श जिनकी वे उपासना करते हैं, मानते हैं कि वे अपने परिवार एवं नौकरियाँ छोड़ सकते हैं, और सतही तौर पर कीमत चुका सकते हैं—ये आदर्श ऐसे लोग हैं जो वास्तव में परमेश्वर को संतुष्ट कर रहे हैं, और एक अच्छा परिणाम और एक अच्छी मंज़िल प्राप्त कर सकते हैं। उन्हें मन में लगता है कि परमेश्वर इन आदर्श लोगों की प्रशंसा करता है। उनके ऐसे विश्वास की वजह क्या है? इस मुद्दे का सार क्या है? इसके क्या परिणाम हो सकते हैं? आओ, हम सबसे पहले इसके सार के मामले पर चर्चा करें।

लोगों का दृष्टिकोण, उनका अभ्यास, लोग अभ्यास करने के लिए किन सिद्धांतों को चुनते हैं, और लोग किस चीज़ पर जोर देता है, इन सब बातों का लोगों से परमेश्वर की अपेक्षाओं का कोई लेना-देना नहीं है। चाहे लोग सतही मसलों पर ध्यान दें या गंभीर मसलों पर, शब्दों एवं सिद्धांतों पर ध्यान दें या वास्तविकता पर, लेकिन लोग उसके मुताबिक नहीं चलते जिसके मुताबिक उन्हें सबसे अधिक चलना चाहिए, और उन्हें जिसे सबसे अधिक जानना चाहिए, उसे जानते नहीं। इसका कारण यह है कि लोग सत्य को बिल्कुल भी पसंद नहीं करते; इसलिए, लोग परमेश्वर के वचन में सिद्धांतों को खोजने और उनका अभ्यास करने के लिए समय लगाने एवं प्रयास करने को तैयार नहीं है। इसके बजाय, वे छोटे रास्तों का उपयोग करने को प्राथमिकता देते हैं, और जिन्हें वे समझते हैं, जिन्हें वे जानते हैं, उसे अच्छा अभ्यास और अच्छा व्यवहार मान लेते हैं; तब यही सारांश, खोज करने के लिए उनका लक्ष्य बन जाता है, जिसे वे अभ्यास में लाए जाने वाला सत्य मान लेते हैं। इसका प्रत्यक्ष परिणाम ये होता है कि लोग अच्छे मानवीय व्यवहार को, सत्य को अभ्यास में लाने के विकल्प के तौर पर उपयोग करते हैं, इससे परमेश्वर की कृपा पाने की उनकी अभिलाषा भी पूरी हो जाती है। इससे लोगों को सत्य के साथ संघर्ष करने का बल मिलता है जिसे वे परमेश्वर के साथ तर्क करने तथा स्पर्धा करने के लिए भी उपयोग करते हैं। साथ ही, लोग अनैतिक ढंग से परमेश्वर को भी दरकिनार कर देते हैं, और जिन आदर्शों को वे सराहते हैं उन्हें परमेश्वर के स्थान पर रख देते हैं। लोगों के ऐसे अज्ञानता भरे कार्य और दृष्टिकोण का, या एकतरफा दृष्टिकोण और अभ्यास का केवल एक ही मूल कारण है, आज मैं तुम लोगों को उसके बारे में बताऊँगा : कारण यह है कि भले ही लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हों, प्रतिदिन उससे प्रार्थना करते हों, और प्रतिदिन परमेश्वर के कथन

पढ़ते हों, फिर भी वे परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते। और यही समस्या की जड़ है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के हृदय को समझता है, और जानता है कि परमेश्वर क्या पसंद करता है, किस चीज़ से वो घृणा करता है, वो क्या चाहता है, किस चीज़ को वो अस्वीकार करता है, किस प्रकार के व्यक्ति से परमेश्वर प्रेम करता है, किस प्रकार के व्यक्ति को वो नापसंद करता है, लोगों से अपेक्षाओं के उसके क्या मानक हैं, मनुष्य को पूर्ण करने के लिए वह किस प्रकार की पद्धति अपनाता है, तो क्या तब भी उस व्यक्ति का व्यक्तिगत विचार हो सकता है? क्या वह यूँ ही जा कर किसी अन्य व्यक्ति की आराधना कर सकता है? क्या कोई साधारण व्यक्ति लोगों का आदर्श बन सकता है? जो लोग परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं, उनका दृष्टिकोण इसकी अपेक्षा थोड़ा अधिक तर्कसंगत होता है। वे मनमाने ढंग से किसी भ्रष्ट व्यक्ति की आदर्श के रूप में आराधना नहीं करेंगे, न ही वे सत्य को अभ्यास में लाने के मार्ग पर चलते हुए, यह विश्वास करेंगे कि मनमाने ढंग से कुछ साधारण नियमों या सिद्धांतों के मुताबिक चलना सत्य को अभ्यास में लाने के बराबर है।

परमेश्वर जिस मानक से मनुष्य का परिणाम निर्धारित करता है, उस बारे में अनेक राय हैं

आओ हम इस विषय पर वापस आएँ और परिणाम के मामले पर चर्चा करना जारी रखें।

चूँकि प्रत्येक व्यक्ति अपने परिणाम को लेकर चिंतित होता है, क्या तुम लोग जानते हो कि परमेश्वर किस प्रकार उस परिणाम को निर्धारित करता है? परमेश्वर किस तरीके से किसी व्यक्ति का परिणाम निर्धारित करता है? और किसी व्यक्ति के परिणाम को निर्धारित करने के लिए वह किस प्रकार के मानक का उपयोग करता है? अगर किसी मनुष्य का परिणाम निर्धारित नहीं हुआ है, तो परमेश्वर इस परिणाम को प्रकट करने के लिए क्या करता है? क्या कोई जानता है? जैसा मैंने अभी कहा, कुछ लोगों ने इंसान के परिणाम का, उन श्रेणियों के बारे में जिसमें इस परिणाम को विभाजित किया जाता है, और उन विभिन्न लोगों का जो परिणाम होने वाला है, उस के बारे में पता लगाने के लिए परमेश्वर के वचन पर शोध करने में पहले ही काफी समय बिता दिया है। वे यह भी जानना चाहते हैं कि परमेश्वर के वचन किस प्रकार मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करते हैं, परमेश्वर किस प्रकार के मानक का उपयोग करता है, और किस तरह वह मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करता है। फिर भी, अंत में ये लोग कोई भी उत्तर नहीं खोज पाते। वास्तविक तथ्य में, परमेश्वर के कथनों में इस मामले पर ज़्यादा कुछ कहा नहीं गया है। ऐसा क्यों है? जब तक मनुष्य का परिणाम प्रकट नहीं किया जाता, परमेश्वर किसी को बताना नहीं चाहता है कि अंत में क्या

होने जा रहा है, न ही वह किसी को समय से पहले उसकी नियति के बारे में सूचित करना चाहता है—क्योंकि ऐसा करने से मनुष्य को कोई लाभ नहीं होगा। अभी मैं तुम लोगों को केवल उस तरीके के बारे में बताना चाहता हूँ जिससे परमेश्वर मनुष्य का परिणाम निर्धारित करता है, उन सिद्धांतों के बारे में बताना चाहता हूँ जिन्हें वह मनुष्य का परिणाम निर्धारित करने और उस परिणाम को अभिव्यक्त करने के लिए अपने कार्य में उपयोग करता है, और उस मानक के बारे में बताना चाहता हूँ जिसे वह यह निर्धारित करने के लिए उपयोग में लाता है कि कोई व्यक्ति जीवित बच सकता है या नहीं। क्या इन्हीं सवालों को लेकर तुम लोग सर्वाधिक चिंतित नहीं हो? तो फिर, लोग कैसे विश्वास करते हैं परमेश्वर ही मनुष्य का परिणाम निर्धारित करता है? तुम लोगों ने इस मामले पर अभी-अभी कुछ कहा है : तुममें से किसी ने कहा था कि यह कर्तव्य को निष्ठापूर्वक करने और परमेश्वर के लिए खुद को खपाने की खातिर है; कुछ ने कहा कि यह परमेश्वर का आज्ञापालन करना और परमेश्वर को संतुष्ट करना है; किसी ने कहा कि यह परमेश्वर के आयोजनों के प्रति समर्पित होना है; और किसी ने कहा था कि यह गुमनामी में जीना है...। जब तुम लोग इन सत्यों को अभ्यास में लाते हो, जब तुम सिद्धांतों के अनुरूप अभ्यास करते हो जो तुम्हें सही लगते हैं, तो जानते हो परमेश्वर क्या सोचता है? क्या तुम लोगों ने विचार किया है कि इसी प्रकार से चलते रहना परमेश्वर के इरादों को संतुष्ट करता है या नहीं? क्या यह परमेश्वर के मानक को पूरा करता है? क्या यह परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करता है? मेरा मानना है कि अधिकांश लोग इस पर विचार नहीं करते। वे बस परमेश्वर के वचन के किसी एक भाग को या धर्मोपदेशों के किसी एक भाग को या उन कुछ आध्यात्मिक मनुष्यों के मानकों को यंत्रवत् लागू करते हैं जिनका वे आदर करते हैं, और फलां-फलां कार्य करने के लिए स्वयं को बाध्य करते हैं। वे मानते हैं कि यही सही तरीका है, अतः वे उसी के मुताबिक चलते हुए काम करते रहते हैं, चाहे अंत में कुछ भी क्यों न हो। कुछ लोग सोचते हैं : "मैंने बहुत वर्षों तक विश्वास किया है; मैंने हमेशा इसी तरह अभ्यास किया है; लगता है मैंने वास्तव में परमेश्वर को संतुष्ट किया है; और मुझे यह भी लगता है कि मैंने बहुत कुछ प्राप्त किया है। क्योंकि इस दौरान मैं अनेक सत्य समझने लगा हूँ, और ऐसी बहुत-सी बातों को समझने लगा हूँ जिन्हें मैं पहले नहीं समझता था—विशेष रूप से, मेरे बहुत से विचार और दृष्टिकोण बदल चुके हैं, मेरे जीवन के मूल्य काफी बदल चुके हैं, और अब मुझे इस संसार की अच्छी-खासी समझ हो गई है।" ऐसे लोग मानते हैं कि यह पैदावार है, और यह मनुष्य के लिए परमेश्वर के कार्य का अंतिम परिणाम है। तुम्हारी राय में, इन मानकों और तुम लोगों के सभी अभ्यासों को एक साथ लेकर,

क्या तुम लोग परमेश्वर के इरादों को संतुष्ट कर रहे हो? कुछ लोग पूर्ण निश्चय के साथ कहेंगे, "निस्संदेह! हम परमेश्वर के वचन के अनुसार अभ्यास कर रहे हैं; ऊपर के लोगों ने जो उपदेश दिया था और जो बताया था, हम उसी के अनुसार अभ्यास कर रहे हैं; हम लोग हमेशा अपना कर्तव्य निभाते हैं, परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, हमने परमेश्वर को कभी नहीं छोड़ा है। इसलिए हम पूरे आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं कि हम परमेश्वर को संतुष्ट कर रहे हैं। हम चाहे परमेश्वर के इरादों को कितना ही क्यों न समझते हों, उसके वचन को चाहे कितना ही क्यों न समझते हों, हम हमेशा परमेश्वर के अनुकूल होने के मार्ग की खोज करते रहे हैं। यदि हम सही तरीके से कार्य करते हैं, और सही तरीके से अभ्यास करते हैं, तो परिणाम निश्चित रूप से सही होगा।" इस दृष्टिकोण के बारे में तुम लोग क्या सोचते हो? क्या यह सही है? शायद कुछ ऐसे लोग हों जो कहें, "मैंने इन चीज़ों के बारे में पहले कभी नहीं सोचा। मैं तो केवल इतना सोचता हूँ कि यदि मैं अपने कर्तव्य का पालन करता रहूँ और परमेश्वर के वचन की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करता रहूँ, तो मैं जीवित रह सकता हूँ। मैंने कभी इस प्रश्न पर विचार नहीं किया कि मैं परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट कर सकता हूँ या नहीं, न ही मैंने कभी यह विचार किया है कि मैं उसके द्वारा अपेक्षित मानक को प्राप्त कर रहा हूँ या नहीं। चूँकि परमेश्वर ने मुझे कभी नहीं बताया, और न ही मुझे कोई स्पष्ट निर्देश प्रदान किए हैं, इसलिए मैं मानता हूँ कि यदि मैं बिना रुके कार्य करता रहूँ, तो परमेश्वर संतुष्ट रहेगा और मुझसे उसकी कोई अतिरिक्त अपेक्षा नहीं होनी चाहिए।" क्या ये विश्वास सही हैं? जहाँ तक मेरी बात है, अभ्यास करने का यह तरीका, सोचने का यह तरीका, और ये सारे दृष्टिकोण—वे सब अपने साथ कल्पनाओं और कुछ अंधेपन को लेकर आते हैं। जब मैं ऐसा कहता हूँ, तो शायद थोड़ी निराशा महसूस करें और सोचें, "अंधापन? यदि यह अंधापन है, तो हमारे उद्धार की आशा, हमारे जीवित रहने की आशा बहुत कम और अनिश्चित है, है कि नहीं? क्याऐसी बातें बोलकर तुम हमारा उत्साह नहीं मार रहे?" तुम लोग कुछ भी मानो, मैं जो कहता और करता हूँ उसका आशय तुम लोगों को यह महसूस करवाना नहीं है, मानो तुम लोगों के उत्साह को मारा जा रहा है। बल्कि, यह परमेश्वर के इरादों के बारे में तुम लोग की समझ को बेहतर करने के लिए है और परमेश्वर क्या सोच रहा है, वो क्या करना चाहता है, वो किस प्रकार के व्यक्ति को पसंद करता है, किससे घृणा करता है, किसे तुच्छ समझता है, वो किस प्रकार के व्यक्ति को पाना चाहता है, और किस प्रकार के व्यक्ति को ठुकराता है, इस पर तुम लोगों की समझ को बेहतर करने के लिए है। यह तुम लोगों के मन को स्पष्टता देने, तुम्हें स्पष्ट रूप से यह जानने में सहायता करने के आशय

से है कि तुम लोगों में से हर एक व्यक्ति के कार्य और विचार उस मानक से कितनी दूर भटक गए हैं जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है। क्या इन विषयों पर विचार-विमर्श करना आवश्यक है? क्योंकि मैं जानता हूँ तुम लोगों ने लंबे समय तक विश्वास किया है, और बहुत उपदेश सुने हैं, लेकिन तुम लोगों में इन्हीं चीज़ों का अभाव है। हालाँकि, तुम लोगों ने अपनी पुस्तिका में हर सत्य लिख लिया है, तुम लोगों ने उसे भी कंठस्त और अपने हृदय में दर्ज कर लिया है जिसे तुम लोग महत्वपूर्ण मानते हो, हालाँकि तुम लोग अभ्यास करते समय परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए इसका उपयोग करने, अपनी आवश्यकता में इसका उपयोग करने, या आने वाले मुश्किल समय को काटने की खातिर इसका उपयोग करने की योजना बनाते हो, या फिर केवल इन चीज़ों को जीवन में अपने साथ रहने देना चाहते हो, लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, यदि तुम केवल अभ्यास कर रहे हो, फिर चाहे जैसे भी करो, केवल अभ्यास कर रहे हो, तो यह महत्वपूर्ण नहीं है। तब सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्या है? महत्वपूर्ण यह है कि जब तुम अभ्यास कर रहे होते हो, तब तुम्हें अंतर्मन में पूरे यकीन से पता होना चाहिए कि तुम्हारा हर एक कार्य, हर एक कर्म परमेश्वर की इच्छानुसार है या नहीं, तुम्हारा हर कार्यकलाप, तुम्हारी हर सोच और जो परिणाम एवं लक्ष्य तुम हासिल करना चाहते हो, वे वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करते हैं या नहीं, परमेश्वर की माँगों को पूरा करते हैं या नहीं, और परमेश्वर उन्हें स्वीकृति देता है या नहीं। ये सारी बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं।

परमेश्वर के मार्ग पर चलो : परमेश्वर का भय मानो और बुराई से दूर रहो

एक कहावत है जिस पर तुम लोगों को ध्यान देना चाहिए। मेरा मानना है कि यह कहावत अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मेरे मन में हर दिन अनेक बार आती है। ऐसा क्यों है? इसलिए क्योंकि जब भी किसी से मेरा सामना होता है, जब भी किसी की कहानी सुनता हूँ, मैं जब भी किसी के अनुभव या परमेश्वर में विश्वास करने की उसकी गवाही सुनता हूँ, तो मैं अपने मन में इस बात का निर्णय करने के लिए कि यह व्यक्ति उस प्रकार का व्यक्ति है या नहीं जिसे परमेश्वर चाहता है, या जिसे परमेश्वर पसंद करता है, मैं इस कहावत का उपयोग करता हूँ। तो, वह कहावत क्या है? तुम सभी लोग पूरी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हो। जब मैं वो कहावत तुम्हें बताऊँगा, तो शायद तुम्हें निराशा हो, क्योंकि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो इससे वर्षों से दिखावटी प्रेम दिखाते आ रहे हैं। किन्तु जहाँ तक मेरी बात है, मैंने इससे कभी भी दिखावटी प्रेम नहीं किया। यह कहावत मेरे दिल में बसी हुई है। तो वह कहावत क्या है? वो है: "परमेश्वर के मार्ग में चलो : परमेश्वर का भय मानो और बुराई से दूर रहो।" क्या यह बहुत ही सरल वाक्यांश नहीं है? हालाँकि यह

कहावत सरल हो सकती है, तब भी कोई व्यक्ति जिसमें असल में इसकी गहरी समझ है, वह महसूस करेगा कि इसका बड़ा महत्व है, अभ्यास में इसका बड़ा मूल्य है; यह जीवन की भाषा से एक पंक्ति है जिसमें सत्य-वास्तविकता निहित है, जो लोग परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहते हैं, यह उनके लिए जीवन भर का लक्ष्य है, यह ऐसे व्यक्ति के लिए अनुसरण करने योग्य जीवन भर का मार्ग है जो परमेश्वर के इरादों के प्रति विचारशील है। तो तुम लोग क्या सोचते हो : क्या यह कहावत सत्य नहीं है? इसकी ऐसी महता है या नहीं? शायद कुछ लोग इस कहावत पर विचार करके, इसे समझने का प्रयास भी कर रहे हों, और शायद कुछ ऐसे हों जो इसके बारे में शंका रखते हों : क्या यह कहावत बहुत महत्वपूर्ण है? क्या यह बहुत महत्वपूर्ण है? क्या इस पर इतना ज़ोर देना ज़रूरी है? शायद कुछ ऐसे लोग भी हों जो इस कहावत को अधिक पसंद न करते हों, क्योंकि उन्हें लगता है कि परमेश्वर के मार्ग पर चलना और उसे एक कहावत में सारभूत करना इसका अत्यधिक सरलीकरण है। जो कुछ परमेश्वर ने कहा, उसे लेकर एक छोटी-सी कहावत में पिरो देना—क्या ऐसा करना परमेश्वर को एकदम महत्वहीन बना देना नहीं है? क्या यह ऐसा ही है? ऐसा हो सकता है कि तुम लोगों में से अधिकांश इन वचनों के पीछे के गहन अर्थ को पूरी तरह से न समझते हों। यद्यपि तुम लोगों ने इसे लिख लिया है, फिर भी तुम सब इस कहावत को अपने हृदय में स्थान देने का कोई इरादा नहीं रखते; तुमने इसे बस अपनी पुस्तिका में लिख लिया है ताकि अपने खाली समय में इसे फिर से पढ़कर इस पर विचार कर सको। कुछ तो इस कहावत को याद रखने की भी परवाह नहीं करेंगे, इसे अच्छे उपयोग में लाने का प्रयास करने की तो बात छोड़ ही दो। परन्तु मैं इस कहावत पर चर्चा क्यों करना चाहता हूँ? तुम लोगों का दृष्टिकोण या तुम लोग क्या सोचोगे, इसकी परवाह किए बिना, मुझे इस कहावत पर चर्चा करनी ही थी क्योंकि यह इस बात को लेकर अत्यंत प्रासंगिक है कि किस प्रकार परमेश्वर मनुष्य के परिणामों को निर्धारित करता है। इस कहावत के बारे में तुम लोगों की वर्तमान समझ चाहे कुछ भी क्यों न हो, या तुम इससे कैसे भी पेश क्यों न आओ, मैं तब भी तुम लोगों को यह बताऊँगा : यदि लोग इस कहावत के शब्दों को अभ्यास में ला सकें, उनका अनुभव कर सकें, और परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मानक को प्राप्त कर सकें, तो वे लोग जीवित बचे रहेंगे और यकीनन उनके परिणाम अच्छे होंगे। यदि तुम इस कहावत के द्वारा तय मानक को पूरा न कर पाओ, तो ऐसा कहा जा सकता है कि तुम्हारा परिणाम अज्ञात है। इस प्रकार मैं तुम्हारी मानसिक तैयारी के लिए तुम्हें कहावत बता रहा हूँ, ताकि तुम लोग जान लो कि तुम्हें मापने के लिए परमेश्वर किस प्रकार के मानक का उपयोग

करता है। जैसे कि मैंने अभी-अभी चर्चा की है, यह कहावत मनुष्य के बारे में परमेश्वर द्वारा इंसान के उद्धार के, और वह किस प्रकार इंसान के परिणाम को निर्धारित करता है, उससे पूरी तरह से प्रासंगिक है। यह किस तरह से प्रासंगिक है? तुम लोग सचमुच जानना चाहोगे, इसलिए आज हम इस बारे में बात करेंगे।

परमेश्वर विभिन्न परीक्षणों से जाँच करता है कि लोग परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते हैं या नहीं

हर युग में, जब परमेश्वर संसार में कार्य करता है तब वह मनुष्य को कुछ वचन प्रदान करता है, और उन्हें कुछ सत्य बताता है। ये सत्य ऐसे मार्ग के रूप में कार्य करते हैं जिसके मुताबिक मनुष्य को चलना चाहिए, जिस पर मनुष्य को चलना चाहिए, ऐसा मार्ग जो मनुष्य को परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने में सक्षम बनाता है, ऐसा मार्ग जिसे मनुष्य को अभ्यास में लाना चाहिए और अपने जीवन में और अपनी जीवन यात्राओं के दौरान उसके मुताबिक चलना चाहिए। इन्हीं कारणों से परमेश्वर इन वचनों को मनुष्य को प्रदान करता है। ये वचन जो परमेश्वर से आते हैं उनके मुताबिक ही मनुष्य को चलना चाहिए, और उनके मुताबिक चलना ही जीवन पाना है। यदि कोई व्यक्ति उनके मुताबिक नहीं चलता, उन्हें अभ्यास में नहीं लाता, और अपने जीवन में परमेश्वर के वचनों को नहीं जीता, तो वह व्यक्ति सत्य को अभ्यास में नहीं ला रहा है। यदि लोग सत्य को अभ्यास में नहीं ला रहे हैं, तो वे परमेश्वर का भय नहीं मान रहे हैं और बुराई से दूर नहीं रह रहे हैं, और न ही वे परमेश्वर को संतुष्ट कर रहे हैं। यदि कोई परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर पाता, तो वह परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकता, ऐसे लोगों का कोई परिणाम नहीं होता। तब परमेश्वर अपने कार्य के दौरान, किस प्रकार किसी व्यक्ति के परिणाम को निर्धारित करता है? मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करने के लिए परमेश्वर किस पद्धति का उपयोग करता है। शायद इस वक्त भी तुम लोग इस बारे में अस्पष्ट हो, परन्तु जब मैं तुम लोगों को प्रक्रिया बताऊँगा, तो यह बिलकुल स्पष्ट हो जाएगा, क्योंकि तुममें से बहुत से लोगों ने पहले ही इसका अनुभव कर लिया है।

परमेश्वर के कार्य के दौरान, आरंभ से लेकर अब तक, परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए—या तुम लोग कह सकते हो, उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए जो उसका अनुसरण करता है—परीक्षाएँ निर्धारित कर रखी हैं और ये परीक्षाएँ भिन्न-भिन्न आकारों में होती हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने परिवार के द्वारा ठुकराए जाने की परीक्षा का अनुभव किया है; कुछ ने विपरीत परिवेश की परीक्षा का अनुभव किया है; कुछ लोगों ने गिरफ्तार किए जाने और यातना दिए जाने की परीक्षा का अनुभव किया है; कुछ लोगों ने

विकल्प का सामना करने की परीक्षा का अनुभव किया है; और कुछ लोगों ने धन एवं हैसियत की परीक्षाओं का सामना करने का अनुभव किया है। सामान्य रूप से कहें, तो तुम लोगों में से प्रत्येक ने सभी प्रकार की परीक्षाओं का सामना किया है। परमेश्वर इस प्रकार से कार्य क्यों करता है? परमेश्वर हर किसी के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करता है? वह किस प्रकार के परिणाम देखना चाहता है? जो कुछ मैं तुम लोगों से कहना चाहता हूँ उसका महत्वपूर्ण बिंदु यह है : परमेश्वर देखना चाहता है कि यह व्यक्ति उस प्रकार का है या नहीं जो परमेश्वर का भय मानता है और बुराई से दूर रहता है। इसका अर्थ यह है कि जब परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा ले रहा होता है, तुम्हें किसी परिस्थिति का सामना करने पर मजबूर कर रहा होता है, तो वह यह जाँचना चाहता है कि तुम ऐसे व्यक्ति हो या नहीं जो उसका भय मानता और बुराई से दूर रहता है। यदि किसी व्यक्ति को किसी भेंट को सुरक्षित रखने का काम दिया गया है, और वह अपने कर्तव्य के कारण परमेश्वर की भेंट के संपर्क में आता है, तो क्या तुम्हें लगता है कि यह ऐसा काम है जिसकी व्यवस्था परमेश्वर ने की है? इसमें कोई शक ही नहीं है! हर चीज़ जो तुम्हारे सामने आती है, उसकी व्यवस्था परमेश्वर ने की होती है। जब तुम्हारा सामना ऐसे मामले से होगा, तो परमेश्वर गुप्त रूप से तुम्हारा अवलोकन करेगा, देखेगा कि तुम क्या चुनाव करते हो, कैसे अभ्यास करते हो, तुम्हारे विचार क्या हैं। परमेश्वर को सबसे अधिक चिंता अंतिम परिणाम की होती है, चूँकि इसी परिणाम से वह मापेगा कि इस परीक्षा-विशेष में तुमने परमेश्वर के मानक को हासिल किया है या नहीं। हालाँकि, जब लोगों का सामना किसी मसले से होता है, तो वे प्रायः इस बारे में नहीं सोचते कि उनका सामना इससे क्यों हो रहा है, परमेश्वर को उनसे किस मानक पर खरा उतारने की अपेक्षा है, वह उनमें क्या देखना चाहता है, या उनसे क्या प्राप्त करना चाहता है। ऐसे मामले से सामना होने पर, इस प्रकार का व्यक्ति केवल यह सोच रहा होता है: "मैं इस चीज़ का सामना कर रहा हूँ; मुझे सावधान रहना चाहिए, लापरवाह नहीं! चाहे कुछ भी हो, यह परमेश्वर की भेंट है और मैं इसे छू नहीं सकता हूँ।" ऐसे सरल विचार रखकर वे सोचते हैं कि उन्होंने अपना उत्तरदायित्व पूरा कर लिया। परमेश्वर इस परीक्षा के परिणाम से संतुष्ट होगा या नहीं? तुम लोग इस पर चर्चा करो। (यदि कोई अपने हृदय में परमेश्वर का भय मानता है, तो जब उस कर्तव्य से सामना होता है जिसमें वह परमेश्वर को अर्पित गई भेंट के संपर्क में आता है, तो वह विचार करेगा कि परमेश्वर के स्वभाव को अपमानित करना कितना आसान होगा, अतः वह सावधानी से कार्य करेगा।) तुम्हारा उत्तर सही दिशा में है, परन्तु यह अभी सटीक नहीं है। परमेश्वर के मार्ग पर चलना सतही तौर पर नियमों का पालन करना

नहीं है; बल्कि, इसका अर्थ है कि जब तुम्हारा सामना किसी मामले से होता है, तो सबसे पहले, तुम इसे एक ऐसी परिस्थिति के रूप में देखते हो जिसकी व्यवस्था परमेश्वर के द्वारा की गई है, ऐसे उत्तरदायित्व के रूप में देखते हो जिसे उसके द्वारा तुम्हें प्रदान किया गया है, या किसी ऐसे कार्य के रूप में देखते हो जो उसने तुम्हें सौंपा है। जब तुम इस मामले का सामना कर रहे होते हो, तो तुम्हें इसे परमेश्वर से आयी किसी परीक्षा के रूप में भी देखना चाहिए। इस मामले का सामना करते समय, तुम्हारे पास एक मानक अवश्य होना चाहिए, तुम्हें सोचना चाहिए कि यह परमेश्वर की ओर से आया है। तुम्हें इस बारे में सोचना चाहिए कि कैसे इस मामले से इस तरह से निपटा जाए कि तुम अपने उत्तरदायित्व को पूरा कर सको, और परमेश्वर के प्रति वफ़ादार भी रह सको, इसे कैसे किया जाए कि परमेश्वर क्रोधित न हो, या उसके स्वभाव का अपमान न हो। हमने अभी-अभी भेंटों की सुरक्षा के बारे में बात की। इस मामले में भेंटें शामिल हैं, और इसमें तुम्हारा कर्तव्य, एवं तुम्हारा उत्तरदायित्व भी शामिल है। तुम इस उत्तरदायित्व के प्रति कर्तव्य से बँधे हुए हो। फिर भी जब तुम्हारा सामना इस मामले से होता है, तो क्या कोई प्रलोभन है? हाँ, है! यह प्रलोभन कहाँ से आता है? यह प्रलोभन शैतान की ओर से आता है, और यह मनुष्य की दुष्टता और उसके भ्रष्ट स्वभाव से भी आता है। चूँकि यहाँ प्रलोभन है, इसमें गवाही देने वाली बात आती है, जो लोगों को देनी चाहिए, जो तुम्हारा उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य भी है। कुछ लोग कहते हैं, "यह तो कितना छोटा-सा मसला है; क्या वास्तव में इस बात का बतंगड़ बनाना ज़रूरी है?" हाँ, यह ज़रूरी है! क्योंकि परमेश्वर के मार्ग पर चलने के लिए, हम किसी भी ऐसी चीज़ को जाने नहीं दे सकते जिसका हमसे लेना-देना है, या जो हमारे आसपास घटती है, यहाँ तक कि छोटी से छोटी चीज़ भी; हमें यह मसला ध्यान देने योग्य लगे या न लगे, अगर उससे हमारा सामना हो रहा है तो हमें उसे जाने नहीं देना चाहिए। इस सबको हमारे लिए परमेश्वर की परीक्षा के रूप में देखा जाना चाहिए। चीज़ों को इस ढंग से देखने की प्रवृत्ति कैसी है? यदि तुम्हारी प्रवृत्ति इस प्रकार की है, तो यह एक तथ्य की पुष्टि करती है : तुम्हारा हृदय परमेश्वर का भय मानता है, और बुराई से दूर रहने के लिए तैयार है। यदि परमेश्वर को संतुष्ट करने की तुम्हारी ऐसी इच्छा है, तो जिसे तुम अभ्यास में लाते हो वह परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मानक से दूर नहीं है।

प्रायः ऐसे लोग होते हैं जो मानते हैं कि ऐसे मामले जिन पर लोगों के द्वारा अधिक ध्यान नहीं दिया जाता, और जिनका सामान्यतः उल्लेख नहीं किया जाता, वो महज छोटी-मोटी निरर्थक बातें होती हैं, और उनका सत्य को अभ्यास में लाने से कोई लेना-देना नहीं है। जब इन लोगों के सामने ऐसे मामले आते हैं, तो

वे उस पर अधिक विचार नहीं करते और उसे जाने देते हैं। परन्तु वास्तव में, यह मामला एक सबक है जिसका तुम्हें अध्ययन करना चाहिए, यह एक सबक कि किस प्रकार परमेश्वर का भय मानना है, और किस प्रकार बुराई से दूर रहना है। इसके अतिरिक्त, जिस बारे में तुम्हें और भी अधिक चिंता करनी चाहिए वह यह जानना है कि जब यह मामला तुम्हारे सामने आता है तो परमेश्वर क्या कर रहा है। परमेश्वर ठीक तुम्हारी बगल में है, तुम्हारे प्रत्येक शब्द और कर्म का अवलोकन कर रहा है, तुम्हारे क्रियाकलापों, तुम्हारे मन में हुए परिवर्तनों का अवलोकन कर रहा है—यह परमेश्वर का कार्य है। कुछ लोग पूछते हैं, "अगर ये सच है, तो मुझे यह महसूस क्यों नहीं होता है?" तुमने इसका एहसास नहीं किया है क्योंकि तुम परमेश्वर के भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग को अपना प्राथमिक मार्ग मानकर इसके मुताबिक नही चले हो; इसलिए, तुम मनुष्य में परमेश्वर के सूक्ष्म कार्य को महसूस नहीं कर पाते, जो लोगों के भिन्न-भिन्न विचारों और भिन्न-भिन्न कार्यकलापों के अनुसार स्वयं को अभिव्यक्त करता है। तुम एक चंचलचित्त वाले व्यक्ति हो। बड़ा मामला क्या है? छोटा मामला क्या है? उन सभी मामलों को बड़े और छोटे मामलों में विभाजित नहीं किया जाता जिसमें परमेश्वर के मार्ग पर चलना शामिल है, पर क्या तुम लोग उसे स्वीकार कर सकते हो? (हम इसे स्वीकार कर सकते हैं।) प्रतिदिन के मामलों के संबंध में, कुछ मामले ऐसे होते हैं जिन्हें लोग बहुत बड़े और महत्वपूर्ण मामले के रूप में देखते हैं, और अन्य मामलों को छोटे-मोटे निरर्थक मामलों के रूप में देखा जाता है। लोग प्रायः इन बड़े मामलों को अत्यंत महत्वपूर्ण मामलों के रूप में देखते हैं, और वे उन्हें परमेश्वर के द्वारा भेजा गया मानते हैं। हालाँकि, इन बड़े मामलों के चलते रहने के दौरान, अपने अपरिपक्व आध्यात्मिक कद के कारण, और अपनी कम क्षमता के कारण, मनुष्य प्रायः परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने योग्य नहीं होता, कोई प्रकाशन प्राप्त नहीं कर पाता, और ऐसा कोई वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता जो किसी मूल्य का हो। जहाँ तक छोटे-छोटे मामलों की बात है, लोगों द्वारा इनकी अनदेखी की जाती है, और थोड़ा-थोड़ा करके हाथ से फिसलने के लिए छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार, लोगों ने परमेश्वर के सामने जाँचे जाने, और उसके द्वारा परीक्षण किए जाने के अनेक अवसरों को गँवा दिया है। यदि तुम हमेशा लोगों, चीज़ों, मामलों और परिस्थितियों को अनदेखा कर देते हो जिनकी व्यवस्था परमेश्वर तुम्हारे लिए करता है, तो इसका क्या अर्थ होगा? इसका अर्थ है कि हर दिन, यहाँ तक कि हर क्षण, तुम अपने बारे में परमेश्वर की पूर्णता का और परमेश्वर की अगुवाई का परित्याग कर रहे हो। जब कभी परमेश्वर तुम्हारे लिए किसी परिस्थिति की व्यवस्था करता है, तो वह गुप्त रीति से देख रहा होता है, तुम्हारे

हृदय को देख रहा होता है, तुम्हारी सोच और विचारों को देख रहा होता है, देख रहा होता है कि तुम किस प्रकार सोचते हो, किस प्रकार कार्य करोगे। यदि तुम एक लापरवाह व्यक्ति हो—ऐसे व्यक्ति जो परमेश्वर के मार्ग, परमेश्वर के वचन, या जो सत्य के बारे में कभी भी गंभीर नहीं रहा है—तो तुम उसके प्रति सचेत नहीं रहोगे, उस पर ध्यान नहीं दोगे जिसे परमेश्वर पूरा करना चाहता है, न उन अपेक्षाओं पर ध्यान दोगे जिन्हें वो तुमसे तब पूरा करवाना चाहता था जब उसने तुम्हारे लिए परिस्थितियों की व्यवस्था की थी। तुम यह भी नहीं जानोगे कि लोग, चीज़ें, और मामले जिनका तुम लोग सामना करते हो वे किस प्रकार सत्य से या परमेश्वर के इरादों से संबंध रखते हैं। तुम्हारे इस प्रकार बार-बार परिस्थितियों और परीक्षणों का सामना करने के पश्चात्, जब परमेश्वर तुममें कोई परिणाम नहीं देखता, तो परमेश्वर कैसे आगे बढ़ेगा? बार-बार परीक्षणों का सामना करके, तुमने अपने हृदय में परमेश्वर को महिमान्वित नहीं किया है, न ही तुमने उन परिस्थितियों का अर्थ समझा है जिनकी व्यवस्था परमेश्वर ने तुम्हारे लिए की है—परमेश्वर के परीक्षण और परीक्षाएँ। इसके बजाय, तुमने एक के बाद एक उन अवसरों को अस्वीकार कर दिया जो परमेश्वर ने तुम्हें प्रदान किए, तुमने बार-बार उन्हें हाथ से जाने दिया। क्या यह मनुष्य के द्वारा बहुत बड़ी अवज्ञा नहीं है? (हाँ, है।) क्या इसकी वजह से परमेश्वर दुखी होगा? (वह दुखी होगा।) परमेश्वर दुखी नहीं होगा! मुझे इस प्रकार कहते हुए सुनकर तुम लोगों को एक बार फिर झटका लगा है। तुम सोच रहे होगे : "क्या ऐसा पहले नहीं कहा गया था कि परमेश्वर हमेशा दुखी होता है? इसलिए क्या परमेश्वर दुखी नहीं होगा? तो परमेश्वर दुखी कब होता है?" संक्षेप में, परमेश्वर इस स्थिति से दुखी नहीं होगा। तो उस प्रकार के व्यवहार के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या होती है जिसके बारे में ऊपर बताया गया है? जब लोग परमेश्वर द्वारा भेजे गए परीक्षणों, परीक्षाओं को अस्वीकार करते हैं, जब वे उनसे बच कर भागते हैं, तो इन लोगों के प्रति परमेश्वर की केवल एक ही प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति क्या है? परमेश्वर इस प्रकार के व्यक्ति को अपने हृदय की गहराई से ठुकरा देता है। यहाँ "ठुकराने" शब्द के दो अर्थ हैं। मैं उन्हें अपने दृष्टिकोण से किस प्रकार समझाऊँ? गहराई में, यह शब्द घृणा का, नफ़रत का संकेतार्थ लिए हुए है। दूसरा अर्थ क्या? दूसरे भाग का तात्पर्य है किसी चीज़ को त्याग देना। तुम लोग जानते हो कि "त्याग देने" का क्या अर्थ है, ठीक है न? संक्षेप में, ठुकराने का अर्थ है ऐसे लोगों के प्रति परमेश्वर की अंतिम प्रतिक्रिया और प्रवृत्ति जो इस तरह से व्यवहार कर रहे हैं; यह उनके प्रति भयंकर घृणा है, और चिढ़ है, इसलिए उनका परित्याग करने का निर्णय लिया जाता है। यह ऐसे व्यक्ति के प्रति परमेश्वर का अंतिम निर्णय है जो परमेश्वर के मार्ग पर कभी

नहीं चला है, जिसने कभी भी परमेश्वर का भय नहीं माना है और जो कभी भी बुराई से दूर नहीं रहा है। क्या अब तुम लोग इस कहावत के महत्व को समझ गए जो मैंने कही थी?

क्या अब वह तरीका तुम्हारी समझ में आ गया है जिसे परमेश्वर मनुष्य का परिणाम निर्धारित करने के लिए उपयोग करता है? (वह हर दिन भिन्न-भिन्न परिस्थितियों की व्यवस्था करता है।) "वह भिन्न-भिन्न परिस्थितियों की व्यवस्था करता है"—ये वो चीज़ें हैं जिन्हें लोग महसूस और स्पर्श कर सकते हैं। तो ऐसा करने के पीछे परमेश्वर की मंशा क्या है? मंशा यह है कि परमेश्वर हर एक व्यक्ति की भिन्न-भिन्न तरीकों से, भिन्न-भिन्न समय पर, और भिन्न-भिन्न स्थानों पर परीक्षाएँ लेना चाहता है। किसी परीक्षा में मनुष्य के किन पहलुओं को जाँचा जाता है? परीक्षण यह तय करता है कि क्या तुम हर उस मामले में परमेश्वर का भय मानते हो और बुराई से दूर रहते हो जिसका तुम सामना करते हो, जिसके बारे में तुम सुनते हो, जिसे तुम देखते हो, और जिसका तुम व्यक्तिगत रूप से अनुभव करते हो। हर कोई इस प्रकार के परीक्षण का सामना करेगा, क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों के प्रति निष्पक्ष है। तुममें से कुछ लोग कहते हैं, "मैंने बहुत वर्षों तक परमेश्वर में विश्वास किया है; ऐसा कैसे है कि मैंने किसी परीक्षण का सामना नहीं किया?" तुम्हें लगता है कि तुमने किसी परीक्षण का सामना नहीं किया है क्योंकि जब भी परमेश्वर ने तुम्हारे लिए परिस्थितियों की व्यवस्था की, तुमने उन्हें गंभीरता से नहीं लिया, और परमेश्वर के मार्ग पर चलना नहीं चाहा। इसलिए तुम्हें परमेश्वर के परीक्षण का कोई बोध ही नहीं है। कुछ लोग कहते हैं, "मैंने कुछ परीक्षणों का सामना तो किया है, किन्तु मैं अभ्यास करने के उचित तरीके को नहीं जानता। जब मैंने अभ्यास किया तो भी मुझे पता नहीं कि मैं परीक्षण के दौरान डटा रहा था या नहीं।" इस प्रकार की अवस्था वाले लोगों की संख्या भी कम नहीं है। तो फिर वह कौन-सा मानक है जिससे परमेश्वर लोगों को मापता है? मानक वही है जो मैंने कुछ देर पहले कहा था : जो कुछ भी तुम करते हो, सोचते हो, व्यक्त करते हो, उसमें तुम परमेश्वर का भय मानकर बुराई से दूर रहते हो या नहीं। इसी प्रकार से यह निर्धारित होता है कि तुम ऐसे व्यक्ति हो या नहीं जो परमेश्वर का भय मानता है और बुराई से दूर रहता है। यह अवधारणा सरल है या नहीं? इसे कहना तो आसान है, किन्तु क्या इसे अभ्यास में लाना आसान है? (यह इतना आसान नहीं है।) यह इतना आसान क्यों नहीं है? (क्योंकि लोग परमेश्वर को नहीं जानते, नहीं जानते कि परमेश्वर किस प्रकार मनुष्य को पूर्ण बनाता है, इसलिए जब उनका सामना समस्याओं से होता है तो वे नहीं जानते कि समस्याओं को सुलझाने के लिए सत्य की खोज कैसे करें। परमेश्वर का भय मानने की वास्तविकता को अंगीकृत करने से पहले, लोगों को

भिन्न-भिन्न परीक्षणों, शुद्धिकरणों, ताड़नाओं, और न्यायों से होकर गुज़रना पड़ता है।) तुम इसे उस ढंग कह सकते हो, परन्तु जहाँ तक तुम लोगों का संबंध है, परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना इस वक्त आसानी से करने योग्य प्रतीत होता है। मैं क्यों ऐसा कहता हूँ? क्योंकि तुम लोगों ने बहुत से धर्मोपदेशों को सुना है, और सत्य-वास्तविकता की सिंचाई को अच्छी मात्रा में प्राप्त किया है; इससे तुम लोग यह समझ गए हो कि किस प्रकार सिद्धान्त और सोच के संबंध में परमेश्वर का भय मानना है और बुराई से दूर रहना है। परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के तुम लोगों के अभ्यास के संबंध में, यह सब सहायक रहा है और इसने तुम लोगों को महसूस करवाया है कि इसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। तब क्यों लोग वास्तव में इसे कभी प्राप्त नहीं कर पाते? क्योंकि मनुष्य का स्वभाव-सार परमेश्वर का भय नहीं मानता, और बुराई को पसंद करता है। यही वास्तविक कारण है।

परमेश्वर का भय न मानना और बुराई से दूर न रहना परमेश्वर का विरोध करना है

चलो मैं शुरुआत इस सवाल से करता हूँ कि यह कहावत "परमेश्वर का भय मानें और बुराई से दूर रहें" कहाँ से आई है। (अय्यूब की पुस्तक से।) चूँकि हमने अय्यूब का उल्लेख कर दिया है, तो आओ हम उसकी चर्चा करें। अय्यूब के समय में, क्या परमेश्वर मनुष्य को जीतने और उसका उद्धार करने के लिए कार्य कर रहा था? नहीं, है न? और जहाँ तक अय्यूब का संबंध है, उस समय उसे परमेश्वर का कितना ज्ञान था? (बहुत अधिक ज्ञान नहीं था।) और परमेश्वर के बारे में उस ज्ञान की तुलना में तुम्हारा अभी का ज्ञान कैसा है? तुम लोग इसका उत्तर देने का साहस क्यों नहीं करते? अय्यूब का ज्ञान तुम लोगों के आज के ज्ञान से ज़्यादा था या कम? (कम था।) इस प्रश्न का उत्तर देना बड़ा आसान है। कम था! यह तो निश्चित है! आज तुम लोग परमेश्वर के आमने-सामने हो, और परमेश्वर के वचन के आमने-सामने हो; परमेश्वर के बारे में तुम लोगों का ज्ञान अय्यूब के ज्ञान की तुलना में बहुत अधिक है। मैं यह बात क्यों कह रहा हूँ? ये बातें कहने का मेरा क्या अभिप्राय है? मैं तुम लोगों को एक तथ्य समझाना चाहता हूँ, लेकिन उससे पहले मैं तुम लोगों से एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ : अय्यूब परमेश्वर के बारे में बहुत कम जानता था, फिर भी वह परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था; लेकिन आजकल लोग ऐसा करने में असफल क्यों रहते हैं? (क्योंकि वे बुरी तरह से भ्रष्ट हैं।) "बुरी तरह से भ्रष्ट"—यह एक सतही घटना है, लेकिन मैं कभी इसे इस तरह नहीं देखूँगा। तुम लोग प्रायः इस्तेमाल किए जाने वाले सिद्धांतों और शब्दों को अपनाते हो, जैसे कि "बुरी तरह से भ्रष्ट," "परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करना," "परमेश्वर के प्रति विश्वासघात," "अवज्ञा,"

"सत्य को पसंद न करना", वगैरह-वगैरह, और हर एक समस्या के सार की व्याख्या करने के लिए तुम लोग इन वाक्यांशों का उपयोग करते हो। यह अभ्यास करने का एक दोषपूर्ण तरीका है। भिन्न-भिन्न प्रकृतियों के मामलों को समझाने के लिए एक ही उत्तर का उपयोग करना सत्य और परमेश्वर की निंदा करने के संदेह उत्पन्न करता है; मुझे इस तरह का उत्तर सुनना पसंद नहीं है। इसके बारे में अच्छी तरह सोचो! तुममें से किसी ने भी इस मामले पर विचार नहीं किया है, परन्तु मैं इसे हर दिन देख सकता हूँ, और हर दिन इसे महसूस कर सकता हूँ। इस प्रकार, जब तुम लोग कार्य कर रहे होते हो, तो मैं देख रहा होता हूँ। जब तुम लोग ये कर रहे होते हो, तब तुम इस मामले के सार को महसूस नहीं पाते। किंतु जब मैं इसे देखता हूँ, तो मैं इसके सार को भी देख सकता हूँ, और मैं इसके सार को महसूस भी कर सकता हूँ। तो फिर यह सार क्या है? इन दिनों लोग परमेश्वर का भय क्यों नहीं मान पाते और बुराई से दूर क्यों नहीं रह पाते? तुम लोगों के उत्तर दूर-दूर तक इस प्रश्न के सार की व्याख्या नहीं कर सकते, न ही वे इस प्रश्न के सार का समाधान कर सकते हैं। क्योंकि इसका एक स्रोत है जिसके बारे में तुम लोग नहीं जानते। यह स्रोत क्या है? मैं जानता हूँ कि तुम लोग इस बारे में सुनना चाहते हो, इसलिए मैं तुम लोगों को इस समस्या के स्रोत के बारे में बताऊँगा।

जब से परमेश्वर ने कार्य की शुरुआत की, तब से उसने मनुष्य को कैसे देखा है? परमेश्वर ने मनुष्य को बचाया; वह मनुष्य को अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में, अपने कार्य के लक्ष्य के रूप में, उस रूप में देखा है जिसे वह जीतना और बचाना चाहता था, जिसे वह पूर्ण करना चाहता था। अपने कार्य के आरंभ में मनुष्य के प्रति यह परमेश्वर की प्रवृत्ति थी। परन्तु उस समय परमेश्वर के प्रति मनुष्य की प्रवृत्ति क्या थी? परमेश्वर मनुष्य के लिए अपरिचित था, और मनुष्य परमेश्वर को एक अजनबी मानता था। यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर के प्रति मनुष्य की प्रवृत्ति ने सही परिणाम नहीं दिए, और मनुष्य इस बारे स्पष्ट नहीं था कि उसे परमेश्वर के साथ कैसे पेश आना चाहिए। इसलिए उसने परमेश्वर के साथ मनमाना व्यवहार किया और जैसा चाहा वैसा किया। क्या परमेश्वर के प्रति मनुष्य का कोई दृष्टिकोण था? आरंभ में नहीं था; परमेश्वर के संबंध में मनुष्य का तथाकथित दृष्टिकोण उसके बारे में बस कुछ धारणाओं और कल्पनाओं तक ही सीमित था। जो कुछ लोगों की धारणाओं के अनुरूप था उसे स्वीकार किया गया, और जो कुछ अनुरूप नहीं था उसका ऊपरी तौर पर पालन किया गया, लेकिन मन ही मन एक संघर्ष चल रहा था और वे उसका विरोध करते थे। आरंभ में यह मनुष्य और परमेश्वर का संबंध था: परमेश्वर मनुष्य को

परिवार के एक सदस्य के रूप में देखता था, फिर भी मनुष्य परमेश्वर से एक अजनबी-सा व्यवहार करता था। परन्तु परमेश्वर के कार्य की एक समयावधि के पश्चात्, मनुष्य की समझ में आ गया कि परमेश्वर क्या प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। लोग जानने लगे थे कि वही सच्चा परमेश्वर है; वे यह भी जान गए थे कि वे परमेश्वर से क्या प्राप्त कर सकते हैं। उस समय मनुष्य परमेश्वर को किस रूप में देखता था? मनुष्य अनुग्रह, आशीष एवं प्रतिज्ञाएँ पाने की आशा करते हुए परमेश्वर को जीवनरेखा के रूप में देखता था। उस समय परमेश्वर मनुष्य को किस रूप में देखता था? परमेश्वर मनुष्य को अपने विजय के एक लक्ष्य के रूप में देखता था। परमेश्वर मनुष्य का न्याय करने, उसकी परीक्षा लेने, उसका परीक्षण करने के लिए वचनों का उपयोग करना चाहता था। किन्तु उस समय जहाँ तक मनुष्य का संबंध था, परमेश्वर एक वस्तु था जिसे वह अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए उपयोग कर सकता था। लोगों ने देखा कि परमेश्वर द्वारा जारी सत्य उन पर विजय पा सकता है, उन्हें बचा सकता है, उनके पास उन चीज़ों को जिन्हें वे परमेश्वर से चाहते थे और उस मंज़िल को जिसे वे चाहते थे, प्राप्त करने का एक अवसर है। इस कारण, उनके हृदय में थोड़ी सी ईमानदारी आ गयी, और वे इस परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए तैयार हो गए। कुछ समय बीत गया, और लोगों को परमेश्वर के बारे में कुछ सतही और सैद्धांतिक ज्ञान हो जाने से, ऐसा भी कहा जा सकता है कि वे परमेश्वर और उसके द्वारा कहे गए वचनों के साथ, उसके उपदेशों के साथ, उस सत्य के साथ जिसे उसने जारी किया था, और उसके कार्य के साथ "परिचित" होने लगे थे। इसलिए, लोग इस गलतफहमी का शिकार हो गए कि परमेश्वर अब अजनबी नहीं रहा, और वे पहले ही परमेश्वर के अनुरूप होने के पथ पर चल पड़े हैं। तब से लेकर अब तक, लोगों ने सत्य पर बहुत से धर्मोपदेश सुने हैं, और परमेश्वर के बहुत से कार्यों का अनुभव किया है। फिर भी भिन्न-भिन्न कारकों एवं परिस्थितियों के हस्तक्षेप एवं अवरोधों के कारण, अधिकांश लोग सत्य को अभ्यास में नहीं ला पाते, न ही वे परमेश्वर को संतुष्ट कर पाते हैं। लोग उत्तरोत्तर आलसी होते जा रहे हैं, और उनके आत्मविश्वास में उत्तरोत्तर कमी आती जा रही है। वे उत्तरोत्तर महसूस कर रहे हैं कि उनका परिणाम अज्ञात है। वे कोई अनावश्यक विचार लेकर नहीं आते, और कोई प्रगति नहीं करते; वे बस अनमने ढंग से अनुसरण करते हैं, और धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहते हैं। मनुष्य की वर्तमान अवस्था के संबंध में, मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है? परमेश्वर की एकमात्र इच्छा है कि वह मनुष्य को ये सत्य प्रदान करे, उसके मन में अपना मार्ग बैठा दे, और फिर भिन्न-भिन्न तरीकों से मनुष्य को जाँचने के लिए भिन्न-भिन्न परिस्थितियों की व्यवस्था करे। उसका लक्ष्य इन वचनों, इन सत्यों, और अपने

कार्य को लेकर ऐसा परिणाम उत्पन्न करना है जहाँ मनुष्य परमेश्वर का भय मान सके और बुराई से दूर रह सके। मैंने देखा है कि अधिकांश लोग बस परमेश्वर के वचन को लेते हैं और उसे सिद्धांत मान लेते हैं, उस कागज़ पर लिखे शब्दों के रूप में मानते हैं, और पालन किए जाने वाले विनियमों के रूप में मानते हैं। जब वे कार्य करते हैं और बोलते हैं, या परीक्षणों का सामना करते हैं, तब वे परमेश्वर के मार्ग को उस मार्ग के रूप में नहीं मानते जिसका उन्हें पालन करना चाहिए। यह बात विशेष रूप से तब लागू होती है जब लोगों का बड़े परीक्षणों से सामना होता है; मैंने किसी भी व्यक्ति को परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने की दिशा में अभ्यास करते नहीं देखा। इस वजह से, मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति अत्यधिक घृणा एवं अरुचि से भरी हुई है! परमेश्वर द्वारा लोगों का बार-बार, यहाँ तक कि सैकड़ों बार, परीक्षण कर लेने पर भी उनमें यह दृढ़संकल्प प्रदर्शित करने की कोई स्पष्ट प्रवृत्ति नहीं होती कि "मैं परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना चाहता हूँ!" चूँकि लोगों का ऐसा दृढ़संकल्प नहीं है, और वे इस प्रकार का प्रदर्शन नहीं करते, इसलिए उनके प्रति परमेश्वर की वर्तमान प्रवृत्ति अब वैसी नहीं है जैसी पहले थी, जब उसने उन पर दया दिखायी थी, सहनशीलता, सहिष्णुता और धैर्य प्रदान किया था। बल्कि वह मनुष्य से बेहद निराश है। किसने ये निराशा पैदा की? मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति किस पर निर्भर है? यह हर उस व्यक्ति पर निर्भर है जो परमेश्वर का अनुसरण करता है। अपने अनेक वर्षों के कार्य के दौरान, परमेश्वर ने मनुष्य से अनेक माँगें की हैं, और मनुष्य के लिए उसने अनेक परिस्थितियों की व्यवस्था की है। चाहे मनुष्य ने कैसा ही प्रदर्शन क्यों न किया हो, और परमेश्वर के प्रति मनुष्य की प्रवृत्ति कैसी भी क्यों न हो, मनुष्य परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के लक्ष्य की स्पष्ट अनुरूपता में अभ्यास करने में असफल रहा है। मैं इस बात को एक वाक्यांश में समेटूँगा, और उसकी व्याख्या करने के लिए इस वाक्यांश का उपयोग करूँगा जिसके बारे में हमने अभी बात की है कि क्यों लोग परमेश्वर के भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर नहीं चल पाते। यह वाक्यांश क्या है! यह वाक्यांश है : परमेश्वर मनुष्य को अपने उद्धार को अपना लक्ष्य, अपने कार्य लक्ष्य मानता है; मनुष्य परमेश्वर को अपना शत्रु, अपना विरोधी मानता है। क्या अब तुम लोग इस विषय को अच्छी तरह समझ गए? मनुष्य की प्रवृत्ति क्या है; परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है; मनुष्य और परमेश्वर के बीच क्या रिश्ता है—ये सब बिलकुल स्पष्ट है। चाहे तुम लोगों ने कितने ही धर्मोपदेश क्यों न सुने हों, जिन चीज़ों का निष्कर्ष तुम लोगों ने स्वयं निकाला है—जैसे कि परमेश्वर के प्रति वफ़ादार होना, परमेश्वर के प्रति समर्पित होना, परमेश्वर के अनुरुप होने के लिए मार्ग खोजना, पूरा जीवन

परमेश्वर के लिए खपाने की इच्छा रखना, परमेश्वर के लिए जीना चाहना—मेरे लिए ये चीज़ें होशोहवास में परमेश्वर के मार्ग पर चलना नहीं है, जो कि परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना है। ये केवल ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा तुम लोग कुछ लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हो। इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए, तुम लोग अनिच्छा से कुछ नियमों का पालन करते हो। यही नियम लोगों को परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग से और भी दूर ले जाते हैं, और एक बार फिर से परमेश्वर को मनुष्य के विरोध में लाकर रख देते हैं।

आज जिस विषय पर हम चर्चा कर रहे हैं वह थोड़ा गंभीर है, परन्तु चाहे जो भी हो, मुझे अभी भी आशा है कि तुम लोग जब आने वाले अनुभवों से और आने वाले समय से गुज़रोगे तो तुम वो कर सकोगे जो मैंने अभी तुमसे कहा है। परमेश्वर को ऐसी हवाबाज़ी मत समझो कि जब वह तुम लोगों के लिए उपयोगी हो तो वह मौजूद है, पर जब उसका कोई उपयोग न हो तो वह मौजूद नहीं है। अगर तुम्हारे अवचेतन में ऐसे विचार हैं, तो समझो, तुमने परमेश्वर को पहले ही क्रोधित कर दिया है। शायद ऐसे कुछ लोग हों जो कहते हैं, "मैं परमेश्वर को खाली हवाबाज़ी नहीं मानता, मैं हमेशा उससे प्रार्थना करता हूँ, उसे संतुष्ट करने का प्रयास करता हूँ, मेरा हर काम उसकी अपेक्षाओं के दायरे, मानक और सिद्धांतों के अंतर्गत आता है। मैं निश्चित रूप से अपने विचारों के अनुसार अभ्यास नहीं कर रहा हूँ।" हाँ, जिस ढंग से तुम अभ्यास कर रहे हो वह सही है! किन्तु जब कोई समस्या आती है तो क्या सोचते हो? जब तुम्हारा सामना किसी मसले से होता है तो तुम किस प्रकार अभ्यास करते हो? कुछ लोग महसूस करते हैं कि जब वे परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, और उससे आग्रह करते हैं तो वह मौजूद होता है। किन्तु जब उनका सामना किसी मसले से होता है, तो वे अपने विचारों के अनुसार ही चलना चाहते हैं। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर को खाली हवाबाज़ी मानते हैं और ऐसी स्थिति में उनके दिमाग में परमेश्वर नहीं होता। लोग सोचते हैं कि जब उन्हें परमेश्वर की ज़रूरत होती तो उसे मौजूद होना चाहिए, न कि तब जब उन्हें उसकी ज़रूरत न हो। लोगों को लगता है कि अभ्यास करने के लिए अपने विचारों के अनुसार चलना ही काफी है। वे मानते हैं कि वे सबकुछ अपने मन-मुताबिक कर सकते हैं; वे सोचते हैं कि उन्हें परमेश्वर के मार्ग को खोजने की आवश्यकता बिलकुल नहीं है। जो लोग वर्तमान में इस प्रकार की स्थिति में हैं, और इस प्रकार की अवस्था में हैं—क्या वे खतरे को दावत नहीं दे रहे? कुछ लोग कहते हैं, "चाहे मैं खतरे को बुलावा दे रहा हूँ या नहीं, मैंने अनेक वर्षों से विश्वास किया है, और मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मेरा परित्याग नहीं

करेगा, क्योंकि मेरे परित्याग को वह सहन नहीं कर सकता।" अन्य लोग कहते हैं, "मैं तो तब से प्रभु में विश्वास करता आ रहा हूँ जब मैं अपनी माँ के गर्भ में था। करीब चालीस, पचास वर्ष हो गए, समय की दृष्टि से देखा जाये तो मैं परमेश्वर द्वारा बचाए जाने के अत्यंत योग्य हूँ और मैं जीवित रहने के अत्यंत योग्य हूँ। चार या पाँच दशकों की इस समय अवधि में, मैंने अपने परिवार और अपनी नौकरी का परित्याग कर दिया। जो कुछ मेरे पास था, जैसे धन, हैसियत, मौज-मस्ती, और पारिवारिक समय, मैंने वह सब त्याग दिया; मैंने बहुत से स्वादिष्ट व्यंजन नहीं खाए; मैंने बहुत-सी मनोरंजन की चीज़ों का आनंद नहीं लिया; मैंने बहुत से दिलचस्प जगहों का दौरा नहीं किया, यहाँ तक कि मैंने उस कष्ट का भी अनुभव किया है जिसे साधारण लोग नहीं सह सकते। यदि इन सब कारणों से परमेश्वर मुझे नहीं बचा सकता, तो यह मेरे साथ अन्याय है और मैं इस तरह के परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर सकता।" क्या इस तरह का दृष्टिकोण रखने वाले लोग काफी संख्या में हैं? (हाँ, काफी हैं।) ठीक है, तो आज मैं तुम लोगों को एक तथ्य समझने में मदद करता हूँ : इस प्रकार के दृष्टिकोण वाले लोग अपने ही पाँव में कुल्हाड़ी मार रहे हैं। क्योंकि वे अपनी कल्पनाओं से अपनी आँखें ढक रहे हैं। ये कल्पनाएँ और उनके निष्कर्ष, उस मानक का स्थान ले लेते हैं जिसे परमेश्वर इंसान से पूरा करने की अपेक्षा करता है, और उन्हें परमेश्वर के सच्चे इरादों को स्वीकार करने से रोकता है। यह उन्हें परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व का बोध नहीं होने देता, और उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा के किसी भी अंश का त्याग करते हुए, परमेश्वर द्वारा पूर्ण किए जाने का अवसर गँवाने का कारण बनता है।

परमेश्वर मनुष्य के परिणाम और परिणाम-निर्धारण के मानकों को कैसे तय करता है

इससे पहले कि तुम्हारा अपना कोई दृष्टिकोण या निष्कर्ष हो, तुम्हें सबसे पहले अपने प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति को और वह क्या सोच रहा है, इसे समझना चाहिए, और तब तुम्हें निर्णय लेना चाहिए कि तुम्हारी सोच सही है या नहीं। परमेश्वर ने मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करने के लिए कभी भी समय का माप की इकाई के रूप में उपयोग नहीं किया है, और न ही कभी उसने परिणाम निर्धारित करने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा सहे गए कष्ट की मात्रा का उपयोग किया है। तब परमेश्वर किसी व्यक्ति के परिणाम को निर्धारित करने के लिए मानक के रूप में किसका उपयोग करता है? समय के आधार पर परिणाम-निर्धारण लोगों की धारणाओं के सर्वाधिक अनुरूप होता है। इसके अलावा, ऐसे लोग अक्सर नज़र आ जाएँगे, जिन्होंने किसी समय बहुत कुछ समर्पित किया था, खुद को बहुत खपाया था, बड़ी कीमत चुकायी

थी, और बहुत कष्ट सहा था। ये वे लोग हैं जिन्हें, तुम लोगों की दृष्टि में, परमेश्वर द्वारा बचाया जा सकता है। जो कुछ ये लोग दिखाते हैं और जीते हैं, वह मनुष्य का परिणाम निर्धारित करने के लिए परमेश्वर द्वारा तय मानकों के बारे में लोगों की धारणाओं के अनुरूप है। तुम लोग चाहे जो मानो, मैं एक-एक करके इन उदाहरणों को सूचीबद्ध नहीं करूँगा। संक्षेप में, अगर कोई चीज़ परमेश्वर की सोच के अनुसार मानक नहीं है, तो वह मनुष्य की कल्पना की उपज है और ऐसी सारी चीज़ें उसकी धारणाएँ हैं। अगर तुम आँख बंद करके अपनी धारणाओं और कल्पनाओं पर ही ज़ोर देते रहो, तो क्या परिणाम होगा? स्पष्ट रूप से, इसका परिणाम केवल परमेश्वर के द्वारा तुम्हें ठुकराना हो सकता है। क्योंकि तुम हमेशा परमेश्वर के सामने अपनी योग्यताओं का दिखावा करते हो, परमेश्वर से स्पर्धा करते हो, और उससे बहस करते हो, तुम लोग परमेश्वर की सोच को समझने का प्रयास नहीं करते, न ही तुम मानवजाति के प्रति परमेश्वर की इच्छा और प्रवृत्ति को समझने की कोशिश करते हो। इस तरह तुम सबसे अधिक अपना सम्मान बढ़ाते हो, परमेश्वर का नहीं। तुम स्वयं में विश्वास करते हो, परमेश्वर में नहीं। परमेश्वर ऐसे लोगों को नहीं चाहता, न ही वह उनका उद्धार करेगा। यदि तुम इस प्रकार का दृष्टिकोण त्याग सको, और अतीत के अपने उन गलत दृष्टिकोणों को सुधार लो, यदि तुम परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार आगे बढ़ सको, अगर तुम परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अभ्यास कर सको, अगर तुम सभी चीज़ों में परमेश्वर को महान मानकर उसका सम्मान करो, खुद को और परमेश्वर को परिभाषित करने के लिए अपनी निजी कल्पनाओं, दृष्टिकोणों या आस्था का सहारा न लो, बल्कि सभी मायनों में परमेश्वर के इरादों की खोज करो, मानवता के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति का एहसास करो और समझो, परमेश्वर के मानकों पर खरा उतरकर परमेश्वर को संतुष्ट करो, तो यह शानदार बात होगी! इसका अर्थ यह होगा कि तुम परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर कदम रखने वाले हो।

अगर परमेश्वर लोगों के सोचने के ढंग, उनके विचारों और दृष्टिकोणों का उपयोग मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करने के लिए एक मानक के रूप में नहीं करता, तो वह किस प्रकार के मानक का उपयोग करता है? वह मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करने के लिए परीक्षणों का उपयोग करता है। मनुष्य के परिणाम को निर्धारित करने हेतु परमेश्वर के परीक्षणों का उपयोग करने के दो मानक हैं : पहला तो परीक्षणों की संख्या है जिनसे होकर लोग गुज़रते हैं, और दूसरा मानक इन परीक्षणों का लोगों पर परिणाम है। ये दो सूचक हैं जो मनुष्य का परिणाम निर्धारित करते हैं। आओ, अब हम इन दो मानकों पर विस्तार से

बात करें।

सबसे पहले, जब परमेश्वर तुम्हारा परीक्षण करता है (नोट: यह संभव है कि तुम्हारी नज़र में यह परीक्षण छोटा-सा हो और उल्लेख करने लायक भी न हो), तो परमेश्वर तुम्हें स्पष्ट रूप से अवगत कराएगा कि तुम्हारे ऊपर परमेश्वर का हाथ है, और उसी ने तुम्हारे लिए इस परिस्थिति की व्यवस्था की है। तुम्हारे आध्यात्मिक कद की अपरिपक्वता की स्थिति में ही, परमेश्वर तुम्हारी जाँच करने के लिए परीक्षणों की व्यवस्था करेगा। ये परीक्षण तुम्हारे आध्यात्मिक कद, और तुम जो कुछ समझने और सहन करने योग्य हो, उसके अनुरूप होते हैं। तुम्हारे कौन-से हिस्से की जाँच की जाएगी? परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति की जाँच की जाएगी। क्या यह प्रवृत्ति अत्यंत महत्वपूर्ण है? निश्चित रूप से यह महत्वपूर्ण है! इसका विशेष महत्व है! मनुष्य की यह प्रवृत्ति ही वो परिणाम है जो परमेश्वर चाहता है, इसलिए जहाँ तक परमेश्वर की बात है, यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। वरना परमेश्वर इस तरह के कार्य में लगकर लोगों पर अपने प्रयास व्यर्थ नहीं करता। इन परीक्षणों के माध्यम से परमेश्वर अपने प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति देखना चाहता है; वह देखना चाहता है कि तुम सही पथ पर हो या नहीं। वह यह भी देखना चाहता है कि तुम परमेश्वर का भय मानकर बुराई से दूर रह रहे हो या नहीं। इसलिए, समय-विशेष पर चाहे तुम बहुत-सा सत्य समझो या थोड़ा-सा, तुम्हें परमेश्वर के परीक्षण का सामना तो करना ही होगा, और जैसे-जैसे तुम अधिक सत्य समझने लगोगे, परमेश्वर उसी के अनुरूप तुम्हारे लिए परीक्षणों की व्यवस्था करता रहेगा। और जब फिर से तुम्हारा सामना किसी परीक्षण से होगा, तो परमेश्वर देखना चाहेगा कि इस बीच तुम्हारा दृष्टिकोण, तुम्हारे विचार, और परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति में कोई विकास हुआ है या नहीं। कुछ लोग सोचते हैं, "परमेश्वर हमेशा लोगों की प्रवृत्ति क्यों देखना चाहता है? क्या उसने देखा नहीं कि लोग किस प्रकार सत्य को अभ्यास में लाते हैं? वह अभी भी लोगों की प्रवृत्ति क्यों देखना चाहता है?" यह निरर्थक बात है! चूँकि परमेश्वर इस तरह से कार्य करता है, तो ज़रूर उसमें परमेश्वर की इच्छा निहित होगी। परमेश्वर हमेशा किनारे रहकर लोगों को देखता है, उनके हर शब्द और कर्म को देखता है, उनके हर कर्म और कृत्य पर नज़र रखता है; उनकी हर सोच और हर विचार का भी अवलोकन करता है। वो लोगों के साथ होने घटने वाली हर घटना को ध्यान में रखता है—उनके नेक कर्मों को, उनके दोषों को, उनके अपराधों को, यहाँ तक कि उनके विद्रोह और विश्वासघात को भी—परमेश्वर उनके परिणाम को निर्धारित करने के लिए इन्हें सबूत के रूप में अपने पास रखता है। जैसे-जैसे परमेश्वर का कार्य आगे बढ़ेगा है, तुम ज़्यादा से ज़्यादा सत्य सुनकर ज़्यादा

से ज़्यादा सकारात्मक बातों और जानकारी को स्वीकार करोगे, और तुम अधिक से अधिक सत्य की वास्तविकता प्राप्त करोगे। इस प्रक्रिया के दौरान, तुमसे परमेश्वर की अपेक्षाएँ भी बढ़ेंगी। उसके साथ-साथ, परमेश्वर तुम्हारे लिए और भी कठिन परीक्षणों की व्यवस्था करेगा। उसका लक्ष्य यह जाँच करना है कि इस बीच परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति में कोई विकास हुआ है या नहीं। निश्चित रूप से, इस दौरान, परमेश्वर तुमसे जिस दृष्टिकोण की अपेक्षा करता है, वह सत्य-वास्तविकता की तुम्हारी समझ के अनुरूप होगा।

जैसे-जैसे तुम्हारा आध्यात्मिक कद बढ़ेगा, वैसे-वैसे वह मानक भी बढ़ता जाएगा जिसकी अपेक्षा परमेश्वर तुमसे करता है। जब तक तुम अपरिपक्व हो, तब तक परमेश्वर तुम्हें एक बहुत ही निम्न मानक देगा; जब तुम्हारा आध्यात्मिक कद थोड़ा बड़ा होगा, तो परमेश्वर तुम्हें थोड़ा ऊँचा मानक देगा। परन्तु जब तुम सारे सत्य समझ जाओगे तब परमेश्वर क्या करेगा? परमेश्वर तुमसे और भी अधिक बड़े परीक्षणों का सामना करवाएगा। इन परीक्षणों के बीच, परमेश्वर जो तुमसे कुछ पाना चाहता है, जो कुछ तुमसे देखना चाहता है, वो है कि परमेश्वर के बारे में तुम्हारा गहन ज्ञान और उसके प्रति तुम्हारी सच्ची श्रद्धा। इस समय, तुमसे परमेश्वर की अपेक्षाएँ पहले की तुलना में, जब तुम्हारा आध्यात्मिक कद अपरिपक्व था, और ऊँची और "अधिक कठोर" होंगी (नोट : लोग शायद इसे कठोर मानें, परन्तु परमेश्वर इसे तर्कसंगत मानता है।) जब परमेश्वर लोगों की परीक्षा लेता है, तो परमेश्वर किस प्रकार की वास्तविकता की रचना करना चाहता है? परमेश्वर लगातार चाहता है कि लोग उसे अपना हृदय दें। कुछ लोग कहेंगे : "मैं अपना हृदय कैसे दे सकता हूँ? मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया, अपना घर-बार, रोज़ी-रोटी त्याग दी, खुद को खपा दिया! क्या ये सब परमेश्वर को अपना हृदय देने के उदाहरण नहीं हैं? मैं और कैसे परमेश्वर को अपना हृदय दूँ? क्या ये परमेश्वर को अपना हृदय देने के उदाहरण नहीं हैं? मैं और किस तरह अपना हृदय परमेश्वर को दे सकता हूँ? क्या ऐसा हो सकता है कि वास्तव में ये तरीके परमेश्वर को अपना हृदय देने के नहीं थे? परमेश्वर की विशिष्ट अपेक्षा क्या है?" अपेक्षा बहुत साधारण है। वास्तव में, कुछ लोग परीक्षणों के अलग-अलग चरणों में विभिन्न स्तर पर अपना हृदय पहले ही परमेश्वर को दे चुके होते हैं, परन्तु ज़्यादातर लोग अपना हृदय परमेश्वर को कभी नहीं देते। जब परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा लेता है, तब वह देखता है कि तुम्हारा हृदय परमेश्वर के साथ है, शरीर के साथ है, या शैतान के साथ है। जब परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा लेता है, तब परमेश्वर देखता है कि तुम परमेश्वर के विरोध में खड़े हो या तुम ऐसी स्थिति में खड़े हो जो परमेश्वर के अनुरूप है, और वह यह देखता है कि तुम्हारा हृदय उसकी तरफ है या नहीं। जब तुम अपरिपक्व होते हो

और परीक्षणों का सामना कर रहे होते हो, तब तुम्हारा आत्मविश्वास बहुत ही कम होता है, और तुम्हें ठीक से पता नहीं होता कि वह क्या है जिससे तुम परमेश्वर के इरादों को संतुष्ट कर सकते हो, क्योंकि तुम्हें सत्य की एक सीमित समझ है। लेकिन अगर तुम ईमानदारी और सच्चाई से परमेश्वर से प्रार्थना करो, परमेश्वर को अपना हृदय देने के लिए तैयार हो जाओ, परमेश्वर को अपना अधिपति बना सको, और वे चीज़ें अर्पित करने के लिए तैयार हो जाओ जिन्हें तुम अत्यंत बहुमूल्य मानते हो, तो तुम पहले ही उसे अपना दिल दे चुके हो। जब तुम अधिक धर्मोपदेश सुनोगे, और अधिक सत्य समझोगे, तो तुम्हारा आध्यात्मिक कद भी धीरे-धीरे परिपक्व होता जाएगा। इस समय तुमसे परमेश्वर की वे अपेक्षाएँ नहीं होंगी जो तब थीं जब तुम अपरिपक्व थे; उसे तुमसे अधिक ऊँचे स्तर की अपेक्षा होगी। जैसे-जैसे लोग परमेश्वर को अपना हृदय देते हैं, वह परमेश्वर के निकटतर आते हैं; जब लोग सचमुच परमेश्वर के निकट आ जाते हैं, तो उनका हृदय परमेश्वर के प्रति और भी अधिक श्रद्धा रखने लगता है। परमेश्वर को ऐसा ही हृदय चाहिए।

जब परमेश्वर किसी का हृदय पाना चाहता है, तो वह उसकी अनगिनित परीक्षाएँ लेता है। इन परीक्षणों के दौरान, यदि परमेश्वर उस व्यक्ति के हृदय को नहीं पाता है, और या वह उस व्यक्ति में किसी तरह की प्रवृति नहीं देखता—यानी वह उस व्यक्ति को उस तरह से अभ्यास या व्यवहार करते नहीं देखता जिससे परमेश्वर के प्रति उसकी श्रद्धा नज़र आए, और अगर उसे उस व्यक्ति में बुराई से दूर रहने की प्रवृत्ति तथा दृढ़ता नज़र न आए—तो अनगिनत परीक्षणों के बाद, ऐसे व्यक्ति के प्रति परमेश्वर का धैर्य टूट जाएगा, और वह उसे बर्दाश्त नहीं करेगा, उसका परीक्षण नहीं लेगा और उस पर कार्य नहीं करेगा। तो उस व्यक्ति के परिणाम के लिए इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि उसका कोई परिणाम नहीं होगा। संभव है ऐसे व्यक्ति ने कुछ बुरा न किया हो; संभव है उसने कोई रुकावट या परेशानी पैदा करने के लिए कुछ न किया हो। शायद उसने खुलकर परमेश्वर का प्रतिरोध न किया हो। लेकिन ऐसे व्यक्ति का हृदय परमेश्वर से छिपा रहता है; परमेश्वर के प्रति उसकी प्रवृत्ति और दृष्टिकोण कभी स्पष्ट नहीं रहा है, परमेश्वर स्पष्ट रूप से नहीं देख पाता कि उसका हृदय परमेश्वर को दिया गया है या नहीं या ऐसा व्यक्ति परमेश्वर का भय मानकर बुराई से दूर रहने का प्रयास कर रहा है या नहीं? ऐसे लोगों के प्रति परमेश्वर का धैर्य जवाब देने लगता है, और अब वह उनके लिए कोई कीमत नहीं चुकायेगा, वह उन पर दया नहीं करेगा, या उन पर कार्य नहीं करेगा। ऐसे व्यक्ति के परमेश्वर में विश्वास का जीवन पहले ही समाप्त हो चुका होता है। क्योंकि उन सभी परीक्षणों में जो परमेश्वर ने इस व्यक्ति को दिए हैं, परमेश्वर ने वह परिणाम प्राप्त नहीं

किया जो वह चाहता है। इस प्रकार, ऐसे बहुत से लोग हैं जिनमें मैंने कभी भी पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता और रोशनी नहीं देखी। इसे देखना कैसे संभव है? शायद इस प्रकार के व्यक्तियों ने बहुत वर्षों से परमेश्वर में विश्वास किया हो, और सतही तौर पर वे बहुत सक्रिय रहे हों, उनका व्यवहार काफी जोशीला रहा हो; उन्होंने बहुत-सी पुस्तकें पढ़ी हों, बहुत से मामलों को सँभाला हो, दर्जनों नोटबुक भर दी हों, और बहुत से वचनों और सिद्धान्तों पर महारत हासिल कर ली हो। लेकिन, उनमें कभी कोई स्पष्ट प्रगति नहीं हुई, परमेश्वर के प्रति उनका दृष्टिकोण अदृश्य रहता है, और उनकी प्रवृत्ति अभी भी अस्पष्ट है। यानी ऐसे व्यक्तियों के हृदय को नहीं देखा जा सकता; वे हमेशा ढके हुए और सीलबंद लिफाफे की तरह रहते हैं—वे परमेश्वर के प्रति सीलबंद रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि परमेश्वर ने उनके सच्चे हदय को कभी देखा ही नहीं होता, उसने अपने प्रति ऐसे व्यक्ति में सच्ची श्रद्धा कभी देखी ही नहीं, और तो और उसने कभी नहीं देखा कि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के मार्ग पर कैसे चलता है। यदि अब तक भी परमेश्वर ने ऐसे व्यक्ति को प्राप्त नहीं किया है, तो क्या वह उन्हें भविष्य में प्राप्त कर सकता है? नहीं! क्या परमेश्वर उन चीज़ों के लिए प्रयास करता रहेगा जिन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता? नहीं! तब ऐसे लोगों के प्रति आज परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है? (वह उन्हें ठुकरा देता है, उन पर ध्यान नहीं देता।) वह उन्हें अनदेखा कर देता है! परमेश्वर ऐसे लोगों पर ध्यान नहीं देता; वह उन्हें ठुकरा देता है। तुम लोगों ने इन बातों को बहुत शीघ्रता से, बहुत सटीकता से याद कर लिया है। ऐसा लगता है कि जो कुछ तुम लोगों ने सुना है वह सब तुम्हारी समझ में आ गया!

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो परमेश्वर के अनुसरण के आरंभ में, अपरिपक्व और अज्ञानी होते हैं; वे परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझते; न ही वे यह समझते हैं कि वे उसमें विश्वास करने का क्या अर्थ है। वे परमेश्वर में विश्वास करने, उसका अनुसरण करने के मानव-निर्मित और गलत मार्ग को अपना लेते हैं। जब इस प्रकार के व्यक्ति का सामना किसी परीक्षण से होता है, तो उन्हें इसका पता ही नहीं होता; वे परमेश्वर के मार्गदर्शन और प्रबुद्धता के प्रति सुन्न होते हैं। वे नहीं जानते कि परमेश्वर को अपना हृदय देना क्या होता है, या किसी परीक्षण के दौरान दृढ़ता से खड़ा रहना क्या होता है। परमेश्वर ऐसे लोगों को सीमित समय देगा, और इस दौरान, वह उन्हें समझने देगा कि उसके परीक्षण और इरादे क्या हैं। बाद में, इन लोगों को अपना दृष्टिकोण प्रदर्शित करना होता है। जो लोग इस चरण में हैं, उनकी परमेश्वर अभी भी प्रतीक्षा कर रहा है। जहाँ तक उनकी बात है जिनके कुछ दृष्टिकोण तो हैं फिर भी डगमगाते रहते हैं, जो अपना हृदय

परमेश्वर को देना तो चाहते हैं किन्तु ऐसा करने के लिए सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाए हैं, जो कुछ मूल सत्यों को अभ्यास में लाने के बावजूद, किसी बड़े परीक्षण से सामने होने पर, छुपना और हार मान लेना चाहते हैं—उन लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है? परमेश्वर अभी भी ऐसे लोगों से थोड़ी-बहुत अपेक्षा रखता है। परिणाम उनके दृष्टिकोण एवं प्रदर्शन पर निर्भर करता है। यदि लोग प्रगति करने के लिए सक्रिय नहीं होते तो परमेश्वर क्या करता है? वह उनसे आशा रखना छोड़ देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के तुमसे आशा छोड़ने से पहले ही तुमने स्वयं से आशा छोड़ दी है। इस प्रकार, ऐसा करने के लिए तुम परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते, है न? क्या यह उचित है? (हाँ, उचित है।)

व्यावहारिक प्रश्न लोगों में तरह-तरह की उलझनें पैदा करता है

एक अन्य प्रकार का व्यक्ति होता है जिसका परिणाम सबसे अधिक दुःखद होता है; यह ऐसा व्यक्ति होता है जिसकी चर्चा मैं कम से कम करना चाहता हूँ। दुःखद होने का कारण यह नहीं है कि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर से दण्ड प्राप्त करता है या उससे परमेश्वर की अपेक्षाएँ कठोर होती हैं इसलिए उसका परिणाम दुःखद होता है; बल्कि, दुःखद होने कारण यह है कि वह खुद ही अपने लिए ऐसा करता है। जैसी कि आम कहावत है, ऐसे लोग अपनी कब्र खुद खोदते हैं। ये किस प्रकार के व्यक्ति होते हैं? ऐसे लोग सही पथ पर नहीं चलते, और उनका परिणाम पहले से ही उजागर कर दिया जाता है। परमेश्वर की नज़र में ऐसे लोग बेहद घृणा के पात्र होते हैं। इंसानी नज़रिये से ऐसे लोग बहुत ही दयनीय होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति जब परमेश्वर का अनुसरण करने लगते हैं तो वे बेहद उत्साहित रहते हैं; वे बहुत कीमत चुकाते हैं, परमेश्वर के कार्य की संभावनाओं पर उनकी राय काफी अच्छी होती है; और जब बात उनके भविष्य की हो, तो वे भरपूर कल्पनाएँ करते हैं। उनमें परमेश्वर को लेकर बहुत आत्मविश्वास होता है, उन्हें यह विश्वास होता है कि परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण करके एक गौरवमय मंज़िल प्रदान कर सकता है। फिर भी कारण कोई भी हो, ऐसे व्यक्ति परमेश्वर के कार्य के दौरान पलायन कर जाते हैं। यहाँ "पलायन कर जाते हैं" से क्या अभिप्राय है? इसका अर्थ है कि वे बिना अलविदा कहे, बिना आवाज़ किए गायब हो जाते हैं; वे बिना कुछ कहे चले जाते हैं। यद्यपि इस प्रकार के व्यक्ति परमेश्वर पर विश्वास करने का दावा करते हैं, फिर भी वे परमेश्वर पर विश्वास करने के पथ पर दृढ़ नहीं होते। इस प्रकार, चाहे उन्होंने कितने ही समय तक विश्वास किया हो, वे कभी भी परमेश्वर से दूर जा सकते हैं। कुछ लोग कारोबार की खातिर चले जाते हैं, कुछ अपने ढंग से जीवन जीने के लिए छोड़कर चले जाते हैं, कुछ लोग धनवान बनने के लिए छोड़कर चले जाते हैं, कुछ लोग

विवाह करके संतान प्राप्ति के लिए चले जाते हैं...। जो लोग चले जाते हैं उनमें से, कुछ ऐसे होते हैं जिनका विवेक बाद में उन्हें कचोटता है और वे वापस आना चाहते हैं, और कुछ ऐसे होते हैं जो मुश्किल हालात में जीवन गुज़ारते है, और साल दर साल भटकते रहते हैं। ये भटकने वाले लोग बहुत से कष्ट उठाते हैं, उन्हें लगता है कि संसार में रहना बहुत कष्टदायी है, और वे परमेश्वर से अलग नहीं रह सकते। वे लोग आराम, शांति एवं आनंद पाने के लिए परमेश्वर के घर में लौटना चाहते हैं, आपदाओं से बचने, या उद्धार और एक खूबसूरत मंज़िल पाने के लिए परमेश्वर में लगातार विश्वास बनाए रखना चाहते हैं। क्योंकि ये लोग मानते हैं कि परमेश्वर का प्रेम असीम है, उसका अनुग्रह अक्षय है। उन्हें लगता है कि किसी व्यक्ति ने कुछ भी क्यों न किया हो, परमेश्वर को उन्हें क्षमा कर देना चाहिए और उनके अतीत के बारे में सहनशील होना चाहिए। ये लोग बारंबार यही कहते हैं कि वे वापस आकर काम करना चाहते हैं। कुछ तो ऐसे भी होते हैं जो अपनी संपत्ति का कुछ भाग कलीसिया को दे देते हैं, और आशा करते हैं कि इससे परमेश्वर के घर उनकी वापसी आसान हो जाएगी। ऐसे लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या होती है? परमेश्वर को उनका परिणाम कैसे निर्धारित करना चाहिए? खुलकर बोलो। (मुझे लगता था कि परमेश्वर इस प्रकार के व्यक्ति को स्वीकार करेगा, पर अब सुनकर लगता है कि वह उन्हें स्वीकार नहीं करेगा।) और तुम्हारा तर्क क्या है? (ऐसे लोग परमेश्वर के समक्ष इसलिए आते हैं ताकि उनका परिणाम मृत्यु न हो। वे ईमानदारी से परमेश्वर में विश्वास रखने नहीं आते; वे इसलिए आते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर का कार्य शीघ्र पूरा हो जाएगा, तो वे इस भ्रम में रहते हैं कि वे आकर आशीष पा सकते हैं।) तुम कह रहे हो कि ऐसे व्यक्ति ईमानदारी से परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, अतः परमेश्वर उन्हें स्वीकार नहीं कर सकता, है न? (हाँ।) (मेरी समझ से इस प्रकार के व्यक्ति अवसरवादी होते हैं, और वे ईमानदारी से परमेश्वर में विश्वास नहीं करते।) वे परमेश्वर में विश्वास करने नहीं आए हैं; वे अवसरवादी हैं। सही कहा! ऐसे अवसरवादी लोगों से हर कोई नफ़रत करता है। जिस दिशा में हवा बहती है वे उसी दिशा में बह जाते हैं, और तब तक किसी कार्य को करने की परवाह नहीं करते जब तक कि उन्हें उससे कुछ प्राप्त नहीं होता। निश्चित रूप से वे घृणित हैं! किसी और भाई-बहन की कोई और राय है? (परमेश्वर उन्हें अब और स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि परमेश्वर का कार्य समाप्त होने को है और इस समय लोगों के परिणाम तय किए जा रहे हैं। ऐसे समय में ये लोग वापस आना चाहते हैं—इसलिए नहीं कि वे वास्तव में सत्य की खोज करना चाहते हैं, बल्कि वे इसलिए वापस आना चाहते हैं क्योंकि वे आपदाएँ आते हुए देखते हैं, या वे बाहरी चीज़ों से प्रभावित हो रहे हैं। यदि उनमें वास्तव

में ऐसा हृदय होता जिसमें सत्य खोजने की इच्छा होती, तो वे परमेश्वर के कार्य के बीच में ही छोड़कर न भागे होते।) क्या कोई अन्य राय है? (उन्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा। दरअसल परमेश्वर ने उन्हें पहले ही अवसर दिया था लेकिन उन्होंने परमेश्वर के प्रति लापरवाही का रवैया बनाए रखा। ऐसे व्यक्तियों के इरादे चाहे कुछ भी न हों, भले ही वे पश्चाताप कर लें, परमेश्वर उन्हें तब भी स्वीकार नहीं करेगा। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें बहुत सारे अवसर दिए थे, लेकिन उन्होंने अपनी प्रवृत्ति का प्रदर्शन कर दिया है : वे परमेश्वर को छोड़ देना चाहते थे। इसलिए, अब अगर वापस आएँगे, तो परमेश्वर उन्हें स्वीकार नहीं करेगा।) (मैं भी यह स्वीकार करता हूँ कि परमेश्वर इस प्रकार के व्यक्ति को स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि यदि किसी व्यक्ति ने सच्चे मार्ग को देख लिया है, इतनी लम्बी समयावधि तक परमेश्वर के कार्य का अनुभव कर लिया है, और तब भी संसार में वापस लौट जाता है, और शैतान को अंगीकार कर लेता है, तो यह परमेश्वर के साथ एक बड़ा विश्वासघात है। इस तथ्य के बावजूद कि परमेश्वर का सार करुणा है, प्रेम है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि इस सार का लक्ष्य कैसा व्यक्ति है। यदि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष आराम की खोज में या किसी ऐसी चीज़ की खोज में आता है जिससे वो उम्मीद लगा सके, तो परमेश्वर में ऐसे व्यक्ति का विश्वास सच्चा नहीं है, और उस पर परमेश्वर की दया वहीं तक सीमित रहती है।) अगर परमेश्वर का सार करुणा है, तो वह ऐसे व्यक्ति को थोड़ी और करुणा क्यों नहीं दे देता? थोड़ी और करुणा से, क्या उसे एक अवसर नहीं मिल जाएगा? पहले, प्रायः ऐसा कहा जाता था कि परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति उद्धार पाए और वह नहीं चाहता कि कोई भी तबाही झेले। यदि सौ में से एक भेड़ खो जाए, तो परमेश्वर निन्यानवे भेड़ों को छोड़ देगा और उस खोई हुई एक को खोजेगा। अब, जहाँ तक ऐसे व्यक्ति का सवाल है, यदि उसका विश्वास सच्चा है, तो क्या परमेश्वर को उसे स्वीकार करना और एक और अवसर देना चाहिए? यह कोई कठिन प्रश्न नहीं है; यह बिलकुल सरल है! यदि तुम लोग सच में परमेश्वर को समझते हो और तुम्हें परमेश्वर की वास्तविक समझ है, तो अधिक व्याख्या की आवश्यकता नहीं है; और अधिक अनुमान लगाने की भी आवश्यकता नहीं है, ठीक है न? तुम लोगों के उत्तर सही दिशा में हैं, लेकिन वे अभी भी परमेश्वर की प्रवृत्ति के अनुरूप नहीं हैं।

अभी तुममें से कुछ लोगों ने कहा कि परमेश्वर ऐसे लोगों को स्वीकार नहीं कर सकता। अन्य लोग अधिक स्पष्ट नहीं हैं, उन्हें लगता है कि हो सकता है परमेश्वर उन्हें स्वीकार कर ले, और यह भी हो सकता है कि उन्हें स्वीकार न करे—यह थोड़ा बीच का रवैया है। तुममें से कुछ लोगों को आशा करते हैं कि

परमेश्वर इस प्रकार के लोगों को स्वीकार कर ले—यह और भी ज़्यादा अस्पष्ट प्रवृत्ति है। निश्चित सोच वाले लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने इतने समय तक कार्य किया है और उसका कार्य पूरा हो चुका है, अतः परमेश्वर को इन लोगों के प्रति सहिष्णु होने की आवश्यकता नहीं है; इसलिए तुम्हें लगता है कि वह उन्हें दोबारा स्वीकार नहीं करेगा। जो लोग बीच की सोच रखते हैं, मानते हैं कि इन मामलों को उनकी व्यक्तिगत परिस्थितियों के अनुसार सँभाला जाना चाहिए; यदि ऐसे लोगों के हदय परमेश्वर से अविभाज्य हैं, और वे अभी भी ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर में सचमुच विश्वास करते हैं, और सत्य की खोज करते हैं, तो परमेश्वर को उनकी पिछली दुर्बलताओं और दोषों को याद नहीं रखना चाहिए; उसे उन्हें क्षमा करके एक और अवसर देना चाहिए, परमेश्वर के घर में वापस आने देना चाहिए, और परमेश्वर से उद्धार ग्रहण करने देना चाहिए। लेकिन अगर ऐसा व्यक्ति फिर से भाग जाता है, तब परमेश्वर को उसकी आवश्यकता नहीं होगी और इसे उसके प्रति अन्याय करना नहीं माना जा सकता। एक और समूह है जो उम्मीद करता है कि परमेश्वर ऐसे व्यक्तियों को स्वीकार कर सके। यह समूह स्पष्ट रूप से नहीं जानता कि परमेश्वर उन्हें स्वीकार करेगा या नहीं। यदि उन्हें लगता है कि परमेश्वर को उन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए, किन्तु परमेश्वर उन्हें स्वीकार नहीं करता है, तब ऐसा प्रतीत होता है कि वे परमेश्वर के दृष्टिकोण की अनुरूपता से थोड़ा अलग हैं। यदि उन्हें लगता है कि परमेश्वर को उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए, और परमेश्वर कहता है कि मनुष्य के प्रति उसका प्रेम असीम है और वह ऐसे व्यक्ति को एक और अवसर देने का इच्छुक है, तो क्या यह मानवीय अज्ञानता को उजागर करने का उदाहरण नहीं है? खैर, तुम लोगों का अपना दृष्टिकोण है। तुम्हारी इस तरह की राय से तुम्हारी सोच में जिस तरह का ज्ञान है, उसका पता चलता है; साथ ही वे तुम लोगों की सत्य और परमेश्वर की इच्छा की समझ की गहराई का भी प्रतिबिम्ब है। सही कहा न? अच्छा है कि इस मसले पर तुम लोगों की कोई राय है! परन्तु तुम लोगों की राय सही है या नहीं, यह प्रश्न अभी भी बना हुआ है। तुम सब लोग थोड़ा चिंतित हो न? "तो सही क्या है? मैं स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहा और सच में नहीं जानता कि परमेश्वर क्या सोच रहा है? परमेश्वर ने मुझे कुछ नहीं बताया है। मैं कैसे जान सकता हूँ कि परमेश्वर क्या सोच रहा है? मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति प्रेम है। अतीत में परमेश्वर की प्रवृत्ति के अनुसार, उसे इस व्यक्ति को स्वीकार करना चाहिए। किन्तु मैं परमेश्वर की वर्तमान प्रवृत्ति को लेकर अधिक स्पष्ट नहीं हूँ; मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि हो सकता है कि वह ऐसे व्यक्ति को स्वीकार कर ले, और यह भी हो सकता है कि न करे।" यह हास्यास्पद है, है ना? इस सवाल ने तुम लोगों को वास्तव

में उलझा दिया है। यदि इस मसले पर तुम लोगों के पास एक उचित नज़रिया नहीं है, तब तुम लोग क्या करोगे जब सचमुच कलीसिया का सामना किसी ऐसे व्यक्ति से होगा? यदि तुम इसे सही ढंग से संभाल नहीं पाए, तो हो सकता है कि तुम लोग परमेश्वर का अपमान कर बैठो। क्या यह एक ख़तरनाक मामला नहीं है?

मैंने अभी जिस मामले पर चर्चा की है, मैं उस पर तुम लोगों का दृष्टिकोण क्यों जानना चाहता था? मैं तुम्हारी राय जाँचना चाहता था, जाँचना चाहता था कि तुम लोगों को परमेश्वर का कितना ज्ञान है, परमेश्वर के इरादों और प्रवृत्ति का कितना ज्ञान है। उत्तर क्या है? उत्तर खुद तुम्हारी राय में निहित है। तुममें से कुछ बहुत रूढ़िवादी हैं, और कुछ लोग अन्दाज़ा लगाने की कोशिश कर रहे हैं। "अन्दाज़ा लगाना" क्या है? इसका मतलब है तुम्हें पता नहीं कि परमेश्वर कैसे सोचता है, अतः तुम लोग निराधार विचार रख रहे हो कि परमेश्वर को इस तरह सोचना चाहिए; दरअसल तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारा अनुमान सही है या गलत, अतः तुम अस्पष्ट दृष्टिकोण व्यक्त करते हो। इस तथ्य से सामना होने पर तुमने क्या देखा? परमेश्वर का अनुसरण करते समय, लोग परमेश्वर की इच्छा, विचारों और मनुष्य के प्रति उसकी प्रवृत्ति पर कभी-कभार ही ध्यान देते हैं। लोग परमेश्वर के विचारों को नहीं समझते, अतः जब परमेश्वर के इरादों और स्वभाव पर प्रश्न पूछे जाते हैं, तो तुम लोग हड़बड़ा जाते हो; फिर गहरी अनिश्चितता की स्थिति में पड़ जाते हो और फिर या तो अनुमान लगाते हो या दाँव खेलते हो। यह किस तरह की मानसिकता है? इससे एक तथ्य तो साबित होता है कि परमेश्वर में विश्वास करने वाले अधिकांश लोग उसे हवाबाज़ी समझते हैं और ऐसी चीज़ समझते हैं जिसका एक पल अस्तित्व है और अगले ही पल नहीं है। मैंने ऐसा क्यों कहा? क्योंकि जब भी तुम लोगों के सामने समस्या आती है, तो तुम लोग परमेश्वर की इच्छा को नहीं जानते। क्यों नहीं जानते? बस अभी नहीं, बल्कि तुम तो आरंभ से लेकर अंत तक नहीं जानते कि इस समस्या को लेकर परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है। तुम नहीं जान सकते, तुम नहीं जानते कि परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है, लेकिन क्या तुमने उस पर विचार किया है? क्या तुमने जानने की कोशिश की है? क्या तुमने उस पर संगति की है? नहीं! इससे एक तथ्य की पुष्टि होती है : तुम्हारे विश्वास के परमेश्वर का वास्तविकता के परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास में, तुम केवल अपने और अपने अगुआओं के इरादों पर विचार करते हो; और परमेश्वर के वचन के केवल शाब्दिक एवं सैद्धांतिक अर्थ पर विचार करते हो, मगर सच में परमेश्वर की इच्छा को जानने और खोजने की कोशिश नहीं करते। क्या ऐसा ही नहीं होता है? इस मामले का सार बहुत डरावना

है! मैंने वर्षों से परमेश्वर में विश्वास रखने वाले लोगों को देखा है। उनके विश्वास ने परमेश्वर को उनके मन में क्या आकार दिया है? कुछ लोग तो परमेश्वर में ऐसे विश्वास करते हैं मानो वह मात्र हवाबाज़ी हो। इन लोगों के पास परमेश्वर के अस्तित्व के प्रश्नों के बारे में कोई उत्तर नहीं होता क्योंकि वे परमेश्वर की उपस्थिति या अनुपस्थिति को महसूस नहीं कर पाते, न ही उसका बोध कर पाते हैं, इसे साफ-साफ देखने या समझने की तो बात ही छोड़ दो। अवचेतन रूप से, ये लोग सोचते हैं कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है। कुछ लोग परमेश्वर को मनुष्य समझते हैं। उन्हें लगता है कि परमेश्वर उन सभी कार्यों को करने में असमर्थ है जिन्हें करने में वे भी असमर्थ हैं, और परमेश्वर को वैसा ही सोचना चाहिए जैसा वे सोचते हैं। उनकी परमेश्वर की परिभाषा एक "अदृश्य और अस्पर्शनीय व्यक्ति" की है। कुछ लोग परमेश्वर को कठपुतली समझते हैं; उन्हें लगता है कि परमेश्वर के अंदर कोई भावनाएँ नहीं होतीं। उन्हें लगता है कि परमेश्वर मिट्टी की एक मूर्ति है, और जब कोई समस्या आती है, तो परमेश्वर के पास कोई प्रवृत्ति, कोई दृष्टिकोण, कोई विचार नहीं होता; वे मानते हैं कि वह मानवजाति की दया पर है। जो दिल चाहे लोग उस पर विश्वास कर लेते हैं। यदि वे उसे महान बनाते हैं, तो वह महान हो जाता है; वे उसे छोटा बनाते हैं, तो वह छोटा हो जाता है। जब लोग पाप करते हैं और उन्हें परमेश्वर की दया, सहिष्णुता और प्रेम की आवश्यकता होती है, वे मानते हैं कि परमेश्वर को अपनी दया प्रदान करनी चहिए। ये लोग अपने मन में एक "परमेश्वर" को गढ़ लेते हैं, और फिर उस "परमेश्वर" से अपनी माँगें पूरी करवाते हैं और अपनी सारी इच्छाएँ पूरी करवाते हैं। ऐसे लोग कभी भी, कहीं भी, कुछ भी करें, वे परमेश्वर के प्रति अपने व्यवहार में, और परमेश्वर में अपने विश्वास में इसी कल्पना का इस्तेमाल करते हैं। यहाँ तक कि ऐसे लोग भी होते हैं, जो परमेश्वर के स्वभाव को भड़काकर भी सोचते हैं कि परमेश्वर उन्हें बचा सकता है, क्योंकि वे मानते हैं कि परमेश्वर का प्रेम असीम है, उसका स्वभाव धार्मिक है, चाहे कोई परमेश्वर का कितना भी अपमान करे, परमेश्वर कुछ याद नहीं रखेगा। उन्हें लगता है चूँकि मनुष्य के दोष, अपराध, और उसकी अवज्ञा इंसान के स्वभाव की क्षणिक अभिव्यक्तियाँ हैं, इसलिए परमेश्वर लोगों को अवसर देगा, और उनके साथ सहिष्णु एवं धैर्यवान रहेगा; परमेश्वर तब भी उनसे पहले की तरह प्रेम करेगा। अतः वे अपने उद्धार की आशा बनाए रखते हैं। वास्तव में, चाहे कोई व्यक्ति परमेश्वर पर कैसे भी विश्वास करे, अगर वह सत्य की खोज नहीं करता, तो परमेश्वर उसके प्रति नकारात्मक प्रवृत्ति रखेगा। क्योंकि जब तुम परमेश्वर पर विश्वास कर रहे होते हो उस समय, भले ही तुम परमेश्वर के वचन की पुस्तक को संजोकर रखते हो, तुम प्रतिदिन उसका अध्ययन करते हो,

उसे पढ़ते हो, फिर भी तुम वास्तविक परमेश्वर को दरकिनार कर देते हो। तुम उसे निरर्थक मानते हो, या मात्र एक व्यक्ति मानते हो, और तुममें से कुछ तो उसे केवल एक कठपुतली ही समझते हैं। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? क्योंकि जिस प्रकार से मैं इसे देखता हूँ, उसमें चाहे तुम लोगों का सामना किसी मसले से हो या किसी परिस्थिति से, वे बातें जो तुम्हारे अवचेतन मन में मौजूद होती हैं, जिन बातों को तुम भीतर ही भीतर विकसित करते हो, उनमें से किसी का भी संबंध परमेश्वर के वचन से या सत्य की खोज करने से नहीं होता। तुम केवल वही जानते हो जो तुम स्वयं सोच रहे होते हो, जो तुम्हारा अपना दृष्टिकोण होता है, और फिर तुम अपने विचारों, और दृष्टिकोण को ज़बरदस्ती परमेश्वर पर थोप देते हो। तुम्हारे मन में वह परमेश्वर का दृष्टिकोण बन जाता है, और तुम इस दृष्टिकोण को मानक बना लेते हो जिसे तुम दृढ़ता से कायम रखते हो। समय के साथ, इस प्रकार का चिंतन तुम्हें परमेश्वर से निरंतर दूर करता चला जाता है।

परमेश्वर की प्रवृत्ति को समझो और परमेश्वर के बारे में सभी गलत धारणाओं को छोड़ दो

आज जिस परमेश्वर पर तुम लोग विश्वास करते हो, वह किस तरह का परमेश्वर है? क्या तुम लोगों ने कभी इस बारे में सोचा है कि यह किस प्रकार का परमेश्वर है? जब वह किसी दुष्ट व्यक्ति को दुष्ट कार्य करते हुए देखता है, तो क्या वह उससे घृणा करता है? (हाँ, घृणा करता है।) जब वह अज्ञानी लोगों की गलतियाँ करते देखता है, तो उसकी प्रवृत्ति क्या होती है? (दु:ख।) जब वह लोगों को अपनी भेटें चुराते हुए देखता है, तो उसकी प्रवृत्ति क्या होती है? (वह उनसे घृणा करता है।) यह सब बिलकुल साफ है, है न? जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को अपने प्रति विश्वास में भ्रमित होते हुए, और किसी भी तरह से सत्य की खोज न करते हुए देखता है, तो परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या होती है? तुम लोग इस पर पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो, है न? प्रवृत्ति के तौर पर "भ्रमित होना" कोई पाप नहीं है, न ही यह परमेश्वर का अपमान करता है। लोगों को लगता है कि यह कोई बड़ी भूल नहीं है। तो बताओ, इस मामले में, परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है? (वह उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।) "स्वीकार करने के लिए तैयार न होना"—यह कैसी प्रवृत्ति है? इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर उन लोगों को तुच्छ मानकर उनका तिरस्कार करता है! परमेश्वर ऐसे लोगों से निपटने के लिए उनके प्रति उदासीन हो जाता है। उसका तरीका है उन्हें दरकिनार करना, उन पर कोई कार्य न करना जिसमें प्रबुद्धता, रोशनी, ताड़ना या अनुशासन के कार्य शामिल हैं। ऐसे लोग परमेश्वर के कार्य की गिनती में नहीं आते। ऐसे लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या होती है जो परमेश्वर के स्वभाव को क्रोधित करते हैं, और उसके प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन करते हैं? भयंकर घृणा! परमेश्वर ऐसे लोगों

से अत्यंत क्रोधित हो जाता है जो उसके स्वभाव को भड़काने को लेकर पश्चाताप नहीं करते! "अत्यंत क्रोधित होना" मात्र एक अनुभूति, एक मनोदशा है; यह एक स्पष्ट प्रवृत्ति के अनुरूप नहीं होती। परन्तु यह अनुभूति, यह मनोदशा, ऐसे लोगों के लिए परिणाम उत्पन्न करती है : यह परमेश्वर को भयंकर घृणा से भर देगी! इस भयंकर घृणा का परिणाम क्या होता है? इसका परिणाम यह होता है कि परमेश्वर ऐसे लोगों को दरकिनार कर देता है और कुछ समय तक उन्हें कोई उत्तर नहीं देता। फिर वह "शरद ऋतु के बाद" उन्हें छाँटकर अलग करने की प्रतीक्षा करता है। इसका क्या तात्पर्य है? क्या ऐसे लोगों का तब भी कोई परिणाम होगा? परमेश्वर ने इस प्रकार के व्यक्ति को कभी भी कोई परिणाम देने का इरादा नहीं किया था! तो क्या यह एकदम सामान्य बात नहीं है कि परमेश्वर ऐसे लोगों को कोई उत्तर नहीं देता? (हाँ, सामान्य बात है।) ऐसे लोगों को किस प्रकार तैयारी करनी चाहिए? उन्हें अपने व्यवहार एवं दुष्ट कृत्यों से पैदा हुए नकारात्मक परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे लोगों के लिए यह परमेश्वर का उत्तर है। इसलिए अब मैं ऐसे लोगों से साफ-साफ कहता हूँ : अब भ्रांतियों को पकड़े न रहो, और ख्याली पुलाव पकाने में न लगे रहो। परमेश्वर अनिश्चित काल तक लोगों के प्रति सहिष्णु नहीं रहेगा; वह अनिश्चित काल तक उनके अपराधों और अवज्ञा को सहन नहीं करेगा। कुछ लोग कहेंगे, "मैंने भी इस प्रकार के कुछ लोगों को देखा है। जब वे प्रार्थना करते हैं तो उन्हें विशेष रूप से लगता है कि परमेश्वर उन्हें स्पर्श कर रहा है, और वे फूट-फूट कर रोते हैं। सामान्यतया वे भी बहुत खुश होते हैं; ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पास परमेश्वर की उपस्थिति, और परमेश्वर का मार्गदर्शन है।" ऐसी बेतुकी बातें मत करो! ज़रूरी नहीं कि फूट-फूट कर रोने का मतलब यह नहीं कि व्यक्ति परमेश्वर द्वारा स्पर्श किया जा रहा हो या परमेश्वर की उपस्थिति आनंद ले रहा हो, परमेश्वर के मार्गदर्शन की तो बात ही छोड़ दो। यदि लोग परमेश्वर को क्रोध दिलाते हैं, तो क्या परमेश्वर तब भी उनका मार्गदर्शन करेगा? संक्षेप में, जब परमेश्वर ने किसी व्यक्ति को बहिष्कृत करने, उसका परित्याग करने का निश्चय कर लिया है, तो उस व्यक्ति का परिणाम समाप्त हो जाता है। प्रार्थना करते समय किसी की भावनाएँ कितनी ही अनुकूल हों, उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति कितना ही विश्वास हो; उसका कोई परिणाम नहीं होता। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर को इस प्रकार के विश्वास की आवश्यकता नहीं है; परमेश्वर ने पहले ही ऐसे लोगों को ठुकरा दिया है। उनके साथ आगे कैसे निपटा जाए यह भी महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि जैसे ही ऐसा इंसान परमेश्वर को क्रोधित करता है, उसका परिणाम निर्धारित हो जाता है। यदि परमेश्वर ने तय कर लिया कि ऐसे इंसान को नहीं

बचाना, तो उसे दण्डित होने के लिए छोड़ दिया जाएगा। यह परमेश्वर की प्रवृत्ति है।

यद्यपि परमेश्वर के सार का एक हिस्सा प्रेम है, और वह हर एक के प्रति दयावान है, फिर भी लोग उस बात की अनदेखी कर भूल जाते हैं कि उसका सार महिमा भी है। उसके प्रेममय होने का अर्थ यह नहीं है कि लोग खुलकर उसका अपमान कर सकते हैं, ऐसा नहीं है कि उसकी भावनाएँ नहीं भड़केंगी या कोई प्रतिक्रियाएँ नहीं होगी। उसमें करुणा होने का अर्थ यह नहीं है कि लोगों से व्यवहार करने का उसका कोई सिद्धांत नहीं है। परमेश्वर सजीव है; सचमुच उसका अस्तित्व है। वह न तो कोई कठपुतली है, न ही कोई वस्तु है। चूँकि उसका अस्तित्व है, इसलिए हमें हर समय सावधानीपूर्वक उसके हृदय की आवाज़ सुननी चाहिए, उसकी प्रवृत्ति पर ध्यान देना चाहिए, और उसकी भावनाओं को समझना चाहिए। परमेश्वर को परिभाषित करने के लिए हमें अपनी कल्पनाओं का उपयोग नहीं करना चाहिए, न ही हमें अपने विचार और इच्छाएँ परमेश्वर पर थोपनी चाहिए, जिससे कि परमेश्वर इंसान के साथ इंसानी कल्पनाओं के आधार पर मानवीय व्यवहार करे। यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम परमेश्वर को क्रोधित कर रहे हो, तुम उसके कोप को बुलावा देते हो, उसकी महिमा को चुनौती देते हो! एक बार जब तुम लोग इस मसले की गंभीरता को समझ लोगे, मैं तुम लोगों से आग्रह करूँगा कि तुम अपने कार्यकलापों में सावधानी और विवेक का उपयोग करो। अपनी बातचीत में सावधान और विवेकशील रहो। साथ ही, तुम लोग परमेश्वर के प्रति व्यवहार में जितना अधिक सावधान और विवेकशील रहोगे, उतना ही बेहतर होगा! अगर तुम्हें परमेश्वर की प्रवृत्ति समझ में न आ रही हो, तो लापरवाही से बात मत करो, अपने कार्यकलापों में लापरवाह मत बनो, और यूँ ही कोई लेबल न लगा दो। और सबसे महत्वपूर्ण बात, मनमाने ढंग से निष्कर्षों पर मत पहुँचो। बल्कि, तुम्हें प्रतीक्षा और खोज करनी चाहिए; ये कृत्य भी परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने की अभिव्यक्ति है। सबसे बड़ी बात, यदि तुम ऐसा कर सको, और ऐसी प्रवृत्ति अपना सको, तो परमेश्वर तुम्हारी मूर्खता, अज्ञानता, और चीज़ों के पीछे तर्कों की समझ की कमी के लिए तुम्हें दोष नहीं देगा। बल्कि, परमेश्वर को अपमानित करने के तुम्हारे भय मानने, उसके इरादों के प्रति तुम्हारे सम्मान, और परमेश्वर का आज्ञापालन करने की तुम्हारी तत्परता के कारण, परमेश्वर तुम्हें याद रखेगा, तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा और तुम्हें प्रबुद्धता देगा, या तुम्हारी अपरिपक्वता और अज्ञानता को सहन करेगा। इसके विपरीत, यदि उसके प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति श्रद्धाविहीन होती है—तुम मनमाने ढंग से परमेश्वर की आलोचना करते हो, मनमाने ढंग से परमेश्वर के विचारों का अनुमान लगाकर उन्हें परिभाषित करते हो—तो परमेश्वर तुम्हें

अपराधी ठहराएगा, अनुशासित करेगा, बल्कि दण्ड भी देगा; या वह तुम पर टिप्पणी करेगा। हो सकता है कि इस टिप्पणी में ही तुम्हारा परिणाम शामिल हो। इसलिए, मैं एक बार फिर से इस बात पर जोर देना चाहता हूँ : परमेश्वर से आने वाली हर चीज़ के प्रति तुम्हें सावधान और विवेकशील रहना चाहिए। लापरवाही से मत बोलो, और अपने कार्यकलापों में लापरवाह मत हो। कुछ भी कहने से पहले रुककर सोचो : क्या मेरा ऐसा करना परमेश्वर को क्रोधित करेगा? क्या ऐसा करना परमेश्वर के प्रति श्रद्धा दिखाना है? यहाँ तक कि साधारण मामलों में भी, तुम्हें इन प्रश्नों को समझकर उन पर विचार करना चाहिए। यदि तुम हर चीज़ में, हर समय, इन सिद्धांतों के अनुसार सही मायने में अभ्यास करो, विशेषरूप से इस तरह की प्रवृत्ति तब अपना सको, जब कोई चीज़ तुम्हारी समझ में न आए, तो परमेश्वर तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा, और तुम्हें अनुसरण योग्य मार्ग देगा। लोग चाहे जो दिखावा करें, लेकिन परमेश्वर सबकुछ स्पष्ट रूप में देख लेता है, और वह तुम्हारे दिखावे का सटीक और उपयुक्त मूल्यांकन प्रदान करेगा। जब तुम अंतिम परीक्षण का अनुभव कर लोगे, तो परमेश्वर तुम्हारे समस्त व्यवहार को लेकर उससे तुम्हारा परिणाम निर्धारित करेगा। यह परिणाम निस्सन्देह हर एक को आश्वस्त करेगा। मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि तुम लोगों का हर कर्म, हर कार्यकलाप, हर विचार तुम्हारे भाग्य को निर्धारित करता है।

मनुष्य के परिणाम कौन निर्धारित करता है?

चर्चा करने के लिए एक और बेहद महत्वपूर्ण मामला है, और वह है परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति। यह प्रवृत्ति बेहद अहम है! इससे यह निर्धारित होगा कि तुम लोग विनाश की ओर जाओगे, या उस सुन्दर मंज़िल की ओर जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे लिए तैयार किया है। राज्य के युग में, परमेश्वर पहले ही बीस से अधिक वर्षों तक कार्य चुका है, और इन बीस वर्षों के दौरान शायद तुम लोगों का हृदय तुम्हारे प्रदर्शन को लेकर थोड़ा बहुत अनिश्चित रहा है। लेकिन, परमेश्वर ने मन ही मन तुममें से हर एक व्यक्ति का एक वास्तविक और सच्चा अभिलेख बना लिया है। जबसे इंसान ने परमेश्वर का अनुसरण करना, उसके उपदेश सुनना, और धीरे-धीरे अधिक सत्य समझना शुरू किया है, तब से लेकर इंसान के अपना कर्तव्य निभाने तक, परमेश्वर के पास प्रत्येक व्यक्ति के हर एक कार्यकलापों का लेखा-जोखा है। कर्तव्य निभाने, परिस्थितियों, परीक्षणों का सामना करते समय लोगों की प्रवृत्ति क्या होती है? उनका प्रदर्शन कैसा रहता है? मन ही मन वे परमेश्वर के प्रति कैसा महसूस करते हैं?...परमेश्वर के पास इन सभी चीज़ों का लेखा-जोखा रहता है; उसके पास सभी चीजों का लेखा-जोखा है। शायद तुम्हारे नज़रिए से, ये मामले भ्रमित

करने वाले हों। लेकिन परमेश्वर नज़रिए से, वे मामले एकदम स्पष्ट हैं, उसमें ज़रा-सी भी लापरवाही नहीं होती। इस मामले में हर एक व्यक्ति का परिणाम शामिल है, इसमें, उनके भाग्य और भविष्य की संभावनाएँ सम्मिलित हैं। इससे भी बढ़कर, इसी स्थान पर परमेश्वर अपने सभी श्रमसाध्य प्रयास लगाता है। इसलिए परमेश्वर कभी इसकी उपेक्षा नहीं करता, न ही वह कोई लापरवाही बर्दाश्त करता है। परमेश्वर शुरु से लेकर अंत तक मनुष्य के परमेश्वर का अनुसरण करने के सारे क्रम का हिसाब-किताब रख रहा है। इस समय के दौरान परमेश्वर के प्रति तुम्हारी जो प्रवृत्ति रही है, उसी ने तुम्हारी नियति तय की है। क्या यह सच नहीं है? क्या अब तुम्हें भरोसा है कि परमेश्वर धार्मिक है? क्या उसके कार्य उचित हैं? क्या तुम्हारे दिमाग में अभी भी परमेश्वर के बारे में दूसरी कल्पनाएँ हैं? (नहीं।) तो क्या तुम लोग कहोगे कि मनुष्य का परिणाम निर्धारित करना परमेश्वर का कार्य है, या स्वयं मनुष्य को निर्धारित करना चाहिए? (इसे परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए।) उसे कौन तय करता है? (परमेश्वर।) तुम निश्चित नहीं हो न? हांग कांग के भाई-बहनो, बोलो—इसे कौन निर्धारित करता है? (मनुष्य स्वयं निर्धारित करता है।) क्या मनुष्य स्वयं इसे निर्धारित करता है? तो क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि इसका परमेश्वर के साथ कोई लेना देना नहीं है? दक्षिण कोरिया के भाई-बहनो, बोलो (परमेश्वर लोगों के कार्यकलापों, कर्मों और उस मार्ग के आधार पर उनका परिणाम निर्धारित करता है जिस पर वे चलते हैं।) यह बिलकुल वस्तुनिष्ठ उत्तर है। मैं यहाँ तुम्हें एक तथ्य बता दूँ : परमेश्वर ने उद्धार के कार्य के दौरान, मनुष्य के लिए एक मानक निर्धारित किया है। और वो मानक यह है कि मनुष्य परमेश्वर के वचन का पालन करे और परमेश्वर के मार्ग में चले। लोगों का परिणाम इसी मानक की कसौटी पर कसा जाता है। यदि तुम परमेश्वर के इस मानक के अनुसार अभ्यास करते हो, तो तुम एक अच्छा परिणाम प्राप्त कर सकते हो; यदि नहीं करते, तो तुम अच्छा परिणाम नहीं प्राप्त कर सकते। अब तुम क्या कहोगे, यह परिणाम कौन निर्धारित करता है? इसे अकेला परमेश्वर निर्धारित नहीं करता, बल्कि परमेश्वर और मनुष्य मिलकर निर्धारित करते हैं। क्या यह सही है? (हाँ।) ऐसा क्यों है? क्योंकि परमेश्वर ही सक्रिय रूप से मनुष्य के उद्धार के कार्य में शामिल होकर मनुष्य के लिए एक खूबसूरत मंज़िल तैयार करना चाहता है; मनुष्य परमेश्वर के कार्य का लक्ष्य है, यही वो परिणाम, मंज़िल है जिसे परमेश्वर मनुष्य के लिए तैयार करता है। यदि उसके कार्य का कोई लक्ष्य न होता, तो परमेश्वर को यह कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती; यदि परमेश्वर ने यह कार्य न कर रहा होता, तो मनुष्य के पास उद्धार पाने का कोई अवसर ही न होता। मनुष्यों को बचाना है, और यद्यपि बचाया जाना इस प्रक्रिया

का निष्क्रिय पक्ष है, फिर भी इस पक्ष की भूमिका निभाने वाले की प्रवृत्ति ही निर्धारित करती है कि मनुष्य को बचाने के अपने कार्य में परमेश्वर सफल होगा या नहीं। यदि परमेश्वर तुम्हें मार्गदर्शन न देता, तो तुम उसके मानक को न जान पाते, और न ही तुम्हारा कोई उद्देश्य होता। यदि इस मानक और उद्देश्य के होते हुए भी, तुम सहयोग न करो, इसे अभ्यास में न लाओ, कीमत न चुकाओ, तो तुम्हें यह परिणाम प्राप्त न होगा। इसीलिए, मैं कहता हूँ कि किसी के परिणाम को परमेश्वर से अलग नहीं किया जा सकता, और इसे उस व्यक्ति से भी अलग नहीं किया जा सकता। अब तुम लोग जान गए हो कि मनुष्य के परिणाम को कौन निर्धारित करता है।

लोग अनुभव के आधार पर परमेश्वर को परिभाषित करने का प्रयास करते हैं

परमेश्वर को जानने के विषय पर वार्तालाप करते समय, क्या तुम लोगों ने एक बात पर ध्यान दिया है? क्या तुम लोगों ने ध्यान दिया है कि परमेश्वर की वर्तमान प्रवृत्ति में एक परिवर्तन हुआ है? क्या लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति अपरिवर्तनीय है? क्या परमेश्वर हमेशा इसी तरह से सहता रहेगा, अनिश्चित काल तक मनुष्य को अपना समस्त प्रेम और करुणा प्रदान करता रहेगा? इस मामले में परमेश्वर का सार भी शामिल है। चलो हम तथाकथित उड़ाऊ-पुत्र के प्रश्न की ओर लौटें जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। तुम लोगों ने उस प्रश्न का बहुत स्पष्ट उत्तर नहीं दिया था; दूसरे शब्दों में, तुम लोग अभी भी परमेश्वर के इरादों को अच्छी तरह से नहीं समझे हो। यह जानकर कि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है, लोग परमेश्वर को प्रेम के प्रतीक के रूप में परिभाषित करते हैं : उन्हें लगता है, चाहे लोग कुछ भी करें, कैसे भी पेश आएँ, चाहे परमेश्वर से कैसा ही व्यवहार करें, चाहे वे कितने ही अवज्ञाकारी क्यों न हों जाएँ, किसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि परमेश्वर में प्रेम है, परमेश्वर का प्रेम असीमित और अथाह है। परमेश्वर में प्रेम है, इसलिए वह लोगों के साथ सहिष्णु हो सकता है; परमेश्वर में प्रेम है, इसलिए वह लोगों के प्रति करुणाशील हो सकता है, उनकी अपरिपक्वता के प्रति करुणाशील हो सकता है, उनकी अज्ञानता के प्रति करुणाशील हो सकता है, और उनकी अवज्ञा के प्रति करुणाशील हो सकता है। क्या वास्तव में ऐसा ही है? कुछ लोग एक बार या कुछ बार परमेश्वर के धैर्य का अनुभव कर लेने पर, वे इन अनुभवों को परमेश्वर के बारे में अपनी समझ एक पूँजी मानने लगते हैं, यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनके प्रति हमेशा धैर्यवान और दयालु रहेगा, और फिर जीवन भर परमेश्वर के धैर्य को एक ऐसे मानक के रूप में मानते हैं जिससे परमेश्वर उनके साथ बर्ताव करता है। ऐसे भी लोग हैं जो, एक बार परमेश्वर की सहिष्णुता का अनुभव कर लेने पर,

हमेशा के लिए परमेश्वर को सहिष्णु के रूप में परिभाषित करते हैं, उनकी नज़र में यह सहिष्णुता अनिश्चित है, बिना किसी शर्त के है, यहाँ तक कि पूरी तरह से असैद्धांतिक है। क्या ऐसा विश्वास सही है? जब भी परमेश्वर के सार या परमेश्वर के स्वभाव के मामलों पर चर्चा की जाती है, तो तुम लोग उलझन में दिखाई देते हो। तुम लोगों को इस तरह देखना मुझे बहुत चिंतित करता है। तुम लोगों ने परमेश्वर के सार के बारे में बहुत से सत्य सुने हैं; तुम लोगों ने परमेश्वर के स्वभाव से संबंधित बहुत-सी चर्चाएँ भी सुनी हैं। लेकिन, तुम लोगों के मन में ये मामले और इन पहलुओं की सच्चाई, सिद्धांत और लिखित वचनों पर आधारित मात्र स्मृतियाँ हैं। तुममें से कोई भी अपने दैनिक जीवन में, यह अनुभव करने या देखने में सक्षम नहीं है कि वास्तव में परमेश्वर का स्वभाव क्या है। इसलिए, तुम सभी लोग अपने-अपने विश्वास में गड़बड़ा गए हो, तुम आँखें मूँदकर इस हद तक विश्वास करते हो कि परमेश्वर के प्रति तुम लोगों की प्रवृत्ति श्रद्धाहीन हो जाती है, बल्कि तुम लोग उसे एक ओर धकेल भी देते हो। परमेश्वर के प्रति तुम्हारी इस प्रकार की प्रवृत्ति किस ओर ले जाती है? यह उस ओर ले जाती है जहाँ तुम हमेशा परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष निकालते रहते हो। थोड़ा सा ज्ञान मिलते ही तुम एकदम संतुष्ट हो जाते हो, जैसे कि तुमने परमेश्वर को उसकी संपूर्णता में पा लिया हो। उसके बाद, तुम लोग निष्कर्ष निकालते हो कि परमेश्वर ऐसा ही है, और तुम उसे स्वतंत्र रूप से घूमने-फिरने नहीं देते। इसके अलावा, परमेश्वर जब कभी भी कुछ नया करता है, तो तुम स्वीकार नहीं करते कि वह परमेश्वर है। एक दिन, जब परमेश्वर कहेगा : "मैं मनुष्य से अब प्रेम नहीं करता; अब मैं मनुष्य पर दया नहीं करूँगा; अब मनुष्य के प्रति मेरे मन में सहिष्णुता या धैर्य नहीं है; मैं मनुष्य के प्रति अत्यंत घृणा एवं चिढ़ से भर गया हूँ", तो लोगों के दिल में द्वंद्व पैदा हो जाएगा। कुछ लोग तो यहाँ तक कहेंगे, "अब तुम हमारे परमेश्वर नहीं हो, ऐसे परमेश्वर नहीं हो जिसका मैं अनुसरण करना चाहता हूँ। यदि तुम ऐसा कहते हो, तो अब तुम मेरे परमेश्वर होने के योग्य नहीं हो, और मुझे तुम्हारा अनुसरण करते रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि तुम मुझे करुणा, प्रेम सहिष्णुता नहीं दोगे तो मैं तुम्हारा अनुसरण नहीं करूँगा। यदि तुम अनिश्चित काल तक मेरे प्रति सहिष्णु बने रहते हो, धैर्यवान बने रहते हो, और मुझे देखने देते हो कि तुम प्रेम हो, धैर्य हो, सहिष्णुता हो, तभी मैं तुम्हारा अनुसरण कर सकता हूँ, और तभी मेरे अंदर अंत तक तुम्हारा अनुसरण करने का आत्मविश्वास आ सकता है। चूँकि मेरे पास तुम्हारा धैर्य और करुणा है, तो मेरी अवज्ञा और अपराधों को अनिश्चित काल तक क्षमा किया जा सकता है, अनिश्चित काल तक माफ किया जा सकता है, मैं किसी भी समय और कहीं पर भी पाप कर सकता हूँ, किसी भी समय और कहीं पर

भी पाप स्वीकार कर माफी पा सकता हूँ, और किसी भी समय और कहीं पर भी मैं तुम्हें क्रोधित कर सकता हूँ। तुम मेरे बारे में कोई राय नहीं रख सकते और निष्कर्ष नहीं निकाल सकते।" यद्यपि तुममें से कोई भी ऐसे मसलों पर आत्मनिष्ठ या सचेतन रूप से न सोचे, फिर भी जब कभी परमेश्वर को तुम अपने पापों को क्षमा करने का कोई यंत्र या एक खूबसूरत मंज़िल पाने के लिए उपयोग की जाने वाली कोई वस्तु समझते हो, तो तुमने धीरे से जीवित परमेश्वर को अपने विरोधी, अपने शत्रु के स्थान पर रख लिया है। मैं तो यही देखता हूँ। भले ही तुम ऐसी बातें कहते रहो, "मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूँ"; "मैं सत्य की खोज करता हूँ"; "मैं अपने स्वभाव को बदलना चाहता हूँ"; "मैं अंधकार के प्रभाव से आज़ाद होना चाहता हूँ"; "मैं परमेश्वर को संतुष्ट करना चाहता हूँ"; "मैं परमेश्वर को समर्पित होना चाहता हूँ"; "मैं परमेश्वर के प्रति वफ़ादार होना चाहता हूँ, और अपना कर्तव्य अच्छी तरह निभाना चाहता हूँ"; इत्यादि। लेकिन, तुम्हारी बातें कितनी ही मधुर हों, चाहे तुम्हें कितने ही सिद्धांतों का ज्ञान हो, चाहे वह सिद्धांत कितना ही प्रभावशाली या गरिमापूर्ण हो, लेकिन सच्चाई यही है कि तुम लोगों में से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने पहले से ही जान लिया है कि किस प्रकार परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए उन नियमों, मतों और सिद्धांतों का उपयोग करना है जिन पर तुम लोगों ने महारत हासिल कर ली है, और स्वाभाविक है कि ऐसा करके तुमने परमेश्वर को अपने विरुद्ध कर लिया है। हालाँकि तुमने शब्दों और सिद्धांतों में महारत हासिल कर ली है, फिर भी तुमने असल में सत्य की वास्तविकता में प्रवेश नहीं किया है, इसलिए तुम्हारे लिए परमेश्वर के करीब होना, उसे जानना-समझना बहुत कठिन है। यह बेहद खेद योग्यहै!

मैंने एक वीडियो में यह दृश्य देखा था : कुछ बहनें वचन देह में प्रकट होता है की एक प्रति थामे हुए थीं, और वे उसे बहुत ऊँचा उठाए हुए थीं; वे उस पुस्तक को अपने बीच में सिर से ऊपर थामे हुए थीं। यद्यपि यह मात्र एक छवि थी, किन्तु इसने मेरे भीतर कोई छवि जागृत नहीं की बल्कि, इसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि हर इंसान अपने हृदय में परमेश्वर के वचन को नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन की पुस्तक को ऊँचा उठाकर रखता है। यह बहुत ही अफसोसनाक बात है। यह परमेश्वर को ऊँचा उठाने के समान बिल्कुल भी नहीं है, क्योंकि परमेश्वर के बारे में तुम्हारी नासमझी तुम्हें इस दर्जे तक ले आयी है कि तुम एक स्पष्ट प्रश्न, एक बहुत ही छोटे से मसले पर भी, अपनी धारणा बना लेते हो। जब मैं तुम लोगों से कुछ पूछता हूँ, तुम्हारे साथ गंभीर होता हूँ, तो तुम अपनी अटकलबाजी और कल्पनाओं से उत्तर देते हो; तुम लोगों में से कुछ तो संदेह भरे लहजे में पलट कर मुझसे ही प्रश्न करते हैं। इससे मुझे एकदम

साफ समझ आ जाता है कि जिस परमेश्वर पर तुम लोग विश्वास करते हो वह सच्चा परमेश्वर नहीं है। इतने सालों तक परमेश्वर के वचन पढ़ने के बाद, तुम लोग एक बार फिर से परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए परमेश्वर के वचनों का, उसके कार्य का, और अधिक सिद्धांतों का उपयोग करते हो। तुम कभी परमेश्वर को समझने का प्रयास भी नहीं करते; तुम लोग कभी परमेश्वर के इरादों को समझने की कोशिश नहीं करते; यह समझने का प्रयास नहीं करते कि मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या है, या वह कैसे सोचता है, वह दुःखी क्यों होता है, क्रोधित क्यों होता है, लोगों को क्यों ठुकराता है, और ऐसे ही अन्य प्रश्न। अधिकतर लोग मानते हैं कि परमेश्वर हमेशा इसलिए खामोश रहा है क्योंकि वह मनुष्य के कार्यकलापों को देख रहा है, उनके बारे में उसकी कोई प्रवृत्ति या विचार नहीं हैं। लेकिन एक अन्य समूह तो यह मानता है कि परमेश्वर कोई आवाज़ नहीं करता क्योंकि उसने मौन स्वीकृति दी है, परमेश्वर इसलिए शांत है क्योंकि वह इंतज़ार कर रहा है या इसलिए क्योंकि उसमें कोई प्रवृत्ति नहीं है; चूँकि परमेश्वर की प्रवृत्ति को पहले ही पुस्तक में विस्तार से समझाया जा चुका है, उसे संपूर्णता में मनुष्य के लिए अभिव्यक्त किया जा चुका है, इसलिए इसे बार-बार लोगों को बताने की आवश्यकता नहीं है। यद्यपि परमेश्वर खामोश है, तब भी उसमें प्रवृत्ति और दृष्टिकोण है, और एक मानक है जिसके अनुसार वह लोगों से जीने की अपेक्षा करता है। यद्यपि लोग उसे समझने और खोजने का प्रयास नहीं करते, फिर भी उसकी प्रवृत्ति बिलकुल साफ है। किसी ऐसे व्यक्ति का लो जिसने कभी पूरे जुनून से परमेश्वर का अनुसरण किया था, परन्तु फिर किसी मुकाम पर उसका परित्याग करके चला गया। यदि अब वही व्यक्ति वापस आना चाहे तो आश्चर्यजनक रूप से तुम लोग नहीं जानते कि परमेश्वर का दृष्टिकोण क्या होगा, या परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या होगी। क्या यह बेहद अफसोसनाक बात नहीं है? असल में यह एक सतही मामला है। यदि तुम लोग वास्तव में परमेश्वर के हृदय को समझते हो, तो तुम लोग इस प्रकार के व्यक्ति के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति को समझ जाओगे, और अस्पष्ट उत्तर नहीं दोगे। चूँकि तुम लोग नहीं जानते, इसलिए मैं तुम लोगों को बताता हूँ।

उन लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति जो उसके कार्य के दौरान भाग जाते हैं

ऐसे लोग हर जगह होते हैं : परमेश्वर के मार्ग के बारे में सुनिश्चित हो जाने के बाद, विभिन्न कारणों से, वे चुपचाप बिना अलविदा कहे चले जाते हैं और जो कुछ उनका दिल चाहता है वही करते हैं। फिलहाल, हम इस बात पर नहीं जाएँगे कि ऐसे लोग छोड़कर क्यों चले जाते हैं; पहले हम यह देखेंगे कि ऐसे लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति क्या होती है। यह बिलकुल स्पष्ट है! जिस समय ऐसे लोग छोड़कर चले जाते हैं,

परमेश्वर की नज़रों में, उनके विश्वास की अवधि समाप्त हो जाती है। इसे वो लोग नहीं, बल्कि परमेश्वर समाप्त करता है। ऐसे लोगों का परमेश्वर को छोड़कर जाने का अर्थ है कि उन्होंने पहले ही परमेश्वर को अस्वीकृत कर दिया है, यानी अब वे परमेश्वर को नहीं चाहते, अब उन्हें परमेश्वर का उद्धार स्वीकार्य नहीं है। चूँकि ऐसे लोग परमेश्वर को नहीं चाहते, तो क्या परमेश्वर तब भी उन्हें चाह सकता है? इसके अतिरिक्त, जब इस प्रकार के लोगों की प्रवृत्ति और दृष्टिकोण ऐसा है और वे परमेश्वर को छोड़ने पर अडिग हो चुके हैं, तो इसका अर्थ है कि उन्होंने पहले ही परमेश्वर के स्वभाव को क्रोधित कर दिया है। इस तथ्य के बावजूद कि शायद आवेश में आकर, उन्होंने परमेश्वर को न कोसा हो, उनके व्यवहार में कोई नीचता या ज़्यादती न रही हो, और इस तथ्य के बावजूद कि ऐसे लोग सोच रहे हों, "यदि कभी ऐसा दिन आया जब मुझे बाहर भरपूर खुशियाँ मिलीं, या जब किसी चीज़ के लिए मुझे अभी भी परमेश्वर की आवश्यकता हुई, तो मैं वापस आ जाऊँगा। या कभी परमेश्वर मुझे बुलाए, तो मैं वापस आ जाऊँगा," या वे कहते हैं, "अगर मैं कभी बाहर की दुनिया में चोट खाऊँ, या कभी यह देखूँ कि बाहरी दुनिया अत्यंत अंधकारमय और दुष्ट है और अब मैं उस प्रवाह के साथ नहीं बहना चाहता, तो मैं परमेश्वर के पास वापस आ जाऊँगा।" भले ही ऐसे लोग अपने मन में इस तरह का हिसाब-किताब लगाएँ कि कब उन्हें वापस आना है, भले ही वे अपनी वापसी के लिए द्वार खुला छोड़कर रखने की कोशिश करें, फिर भी उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि वे चाहे जो सोचें और कैसी भी योजना बनाएँ, यह सब उनकी खुशफहमी है। उनकी सबसे बड़ी गलती यह है कि वे इस बारे में अस्पष्ट होते हैं कि जब वे छोड़कर जाना चाहते हैं तो परमेश्वर को कैसा महसूस होता है। जिस पल वे परमेश्वर को छोड़ने का निश्चय करते हैं, परमेश्वर उसी पल उन्हें पूरी तरह से छोड़ चुका होता है; परमेश्वर पहले ही अपने हृदय में उनका परिणाम निर्धारित कर चुका होता है। वह परिणाम क्या है? ऐसा व्यक्ति चूहों में से ही एक चूहा होगा और उन्हीं के साथ नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार, लोग प्रायः इस प्रकार की स्थिति देखते हैं : कोई परमेश्वर का परित्याग कर देता है, लेकिन उसे दण्ड नहीं मिलता। परमेश्वर अपने सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता है; कुछ चीज़ें देखने में आती हैं, और कुछ चीज़ें परमेश्वर के हृदय में ही तय होती हैं, इसलिए लोग परिणाम नहीं देख पाते। जो हिस्सा लोग देख पाते हैं वह आवश्यक नहीं कि चीज़ों का सही पक्ष हो, परन्तु दूसरा पक्ष होता है, जिसे तुम देख नहीं पाते—उसी में परमेश्वर के हृदय के सच्चे विचार और निष्कर्ष निहित होते हैं।

परमेश्वर के कार्य के दौरान भाग जाने वाले लोग सच्चे मार्ग का परित्याग कर देते हैं

तो, परमेश्वर ऐसे लोगों को इतना कठोर दंड कैसे दे सकता है? परमेश्वर उन पर इतना क्रोधित क्यों है? पहली बात तो, हम जानते हैं कि परमेश्वर का स्वभाव प्रताप और कोप है; वह कोई भेड़ नहीं है, जिसका वध किया जाए; वह कठपुतली तो बिल्कुल नहीं है जिसे लोग जैसा चाहें, वैसा नचाएँ। उसका अस्तित्व निरर्थक भी नहीं है कि उसपर धौंस जमाई जाए। यदि तुम वास्तव में मानते हो कि परमेश्वर का अस्तित्व है, तो तुम्हें परमेश्वर का भय मानना चाहिए, और तुम्हें पता होना चाहिए कि परमेश्वर के सार को क्रोधित नहीं किया जा सकता। वह क्रोध किसी शब्द से पैदा हो सकता है या शायद किसी विचार से या शायद किसी अधम और हल्के व्यवहार से, किसी ऐसे व्यवहार से जो मनुष्य की नज़र में और नैतिकता की दृष्टि से महज़ कामचलाऊ हो; या वह किसी मत, सिद्धांत से भी भड़क सकता है। लेकिन, अगर एक बार तुमने परमेश्वर को क्रोधित कर दिया, तो समझो तुम्हारा अवसर गया, और तुम्हारे अंत के दिन आ गए। यह बेहद खराब बात है! यदि तुम इस बात को नहीं समझते कि परमेश्वर को अपमानित नहीं किया जाना चाहिए, तो शायद तुम परमेश्वर से नहीं डरते और शायद तुम उसे अक्सर अपमानित करते रहते हो। अगर तुम नहीं जानते कि परमेश्वर से कैसे डरना चाहिए, तो तुम परमेश्वर से नहीं डर पाओगे, और नहीं जान पाओगे कि परमेश्वर के सच्चे मार्ग पर कैसे चलना है—यानी परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर। एक बार जब तुम जान गए और सचेत हो गए कि परमेश्वर को अपमानित नहीं करना चाहिए, तो तुम समझ जाओगे कि परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना क्या होता है।

परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के सच्चे मार्ग पर चलने का अर्थ यह नहीं है कि तुम सत्य से कितने परिचित हो, तुमने कितने परीक्षणों का अनुभव किया है, या तुम कितने अनुशासित हो। बल्कि यह इस बात पर निर्भर है कि परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति क्या है, और तुम कौन-सा सार व्यक्त करते हो। लोगों का सार और उनकी आत्मनिष्ठ प्रवृत्तियाँ—ये अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रमुख बातें हैं। जहाँ तक उन लोगों की बात है जिन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया है और छोड़कर चले गए हैं, परमेश्वर के प्रति उनकी कुत्सित प्रवृत्ति ने और सत्य से घृणा करने वाले उनके हृदय ने परमेश्वर के स्वभाव को पहले ही भड़का दिया है, इसलिए जहाँ तक परमेश्वर की बात है, उन्हें कभी क्षमा नहीं किया जाएगा। उन्होंने परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में जान लिया है, उनके पास यह जानकारी है कि परमेश्वर का आगमन पहले ही हो चुका है, यहाँ तक कि उन्होंने परमेश्वर के नए कार्य का अनुभव भी कर लिया है। उनका चला जाना छले जाने या भ्रमित हो जाने का मामला नहीं था, ऐसा तो और भी नहीं कि उन्हें जाने के लिए बाध्य किया

गया हो। बल्कि उन्होंने होशोहवास में, सोच-समझ कर परमेश्वर को छोड़कर जाने का विकल्प चुना। उनका जाना अपने मार्ग को खोना नहीं था, न ही उन्हें दरकिनार किया गया। इसलिए, परमेश्वर की दृष्टि में, वे लोग कोई मेमने नहीं हैं, जो झुंड से भटक गए हों, भटके हुए फिज़ूलखर्च पुत्र होने की तो बात ही छोड़ दो। वे दंड से मुक्त हो कर गए हैं और ऐसी दशा, ऐसी स्थिति परमेश्वर के स्वभाव को क्रोधित करती है, और उसका यही क्रोध उन्हें निराशाजनक परिणाम देता है। क्या इस प्रकार का परिणाम भयावह नहीं है? इसलिए यदि लोग परमेश्वर को नहीं जानते, तो वे परमेश्वर को अपमानित कर सकते हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है! यदि लोग परमेश्वर की प्रवृत्ति को गंभीरता से नहीं लेते, और यह मानकर चलते हैं कि परमेश्वर उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा है—क्योंकि वे परमेश्वर की खोई हुई भेड़ हैं और परमेश्वर अभी भी उनके हृदय-परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहा है, तो फिर ऐसे लोग दंड के दिन से बहुत दूर नहीं हैं। परमेश्वर उन्हें केवल अस्वीकार ही नहीं करेगा—बल्कि चूँकि उन्होंने दूसरी बार उसके स्वभाव को क्रोधित किया है, इसलिए यह और भी अधिक भयानक बात है! ऐसे लोगों की श्रद्धाहीन प्रवृत्ति पहले ही परमेश्वर के प्रशासनिक आदेशों का उल्लंघन कर चुकी है। क्या वह अब भी उन्हें स्वीकार करेगा? इस मामले में परमेश्वर के सिद्धांत हैं कि यदि कोई व्यक्ति सत्य मार्ग के विषय में निश्चित है, फिर भी वह जानबूझकर और स्पष्ट मन से परमेश्वर को अस्वीकार करता है और उसे छोड़कर चला जाता है, तो परमेश्वर ऐसे व्यक्ति के उद्धार-मार्ग को अवरुद्ध कर देगा, उसके बाद राज्य के दरवाजे उस व्यक्ति के लिए बंद कर दिए जाएँगे। जब ऐसा व्यक्ति फिर से आकर द्वार खटखटाएगा, तो परमेश्वर द्वार नहीं खोलेगा; वह सदा के लिए बाहर ही रह जाएगा। शायद तुम में से किसी ने बाइबल में मूसा की कहानी पढ़ी हो। मूसा को परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त कर दिए जाने के बाद, 250 अगुआओं ने मूसा के कार्यकलापों और कई अन्य कारणों से उसके प्रति अपनी असहमति व्यक्त की। उन्होंने किसके आगे समर्पित होने से इनकार किया? वह मूसा नहीं था। उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्थाओं को मानने से इनकार किया; उन्होंने इस मामले में परमेश्वर के कार्य को मानने से इनकार किया था। उन्होंने निम्नलिखित बातें कहीं : "तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है...।" क्या इंसानी नज़रिए से, ये बातें बहुत गंभीर हैं? गंभीर नहीं हैं! कम-से-कम शाब्दिक अर्थ तो गंभीर नहीं है। कानूनी नज़रिए से भी, वे कोई नियम नहीं तोड़ते, क्योंकि देखने में यह कोई शत्रुतापूर्ण भाषा या शब्दावली नहीं है, इसमें ईश-निन्दा जैसी कोई बात तो बिल्कुल नहीं है। ये केवल साधारण से वाक्य हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। तो फिर,

ये शब्द परमेश्वर के क्रोध को इतना क्यों भड़का सकते हैं? उसकी वजह यह है कि ये शब्द लोगों के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के लिए बोले गए थे। उन शब्दों में व्यक्त प्रवृत्ति और स्वभाव परमेश्वर के स्वभाव को क्रोधित करते हैं और परमेश्वर के स्वभाव का अपमान करते हैं जिसे अपमानित नहीं किया जाना चाहिए। हम सब जानते हैं कि अंत में उन अगुआओं का परिणाम क्या हुआ था। ऐसे लोगों के बारे में जिन्होंने परमेश्वर का परित्याग कर दिया है, उनका दृष्टिकोण क्या है? उनकी प्रवृत्ति क्या है? और उनका दृष्टिकोण और प्रवृत्ति ऐसे कारण क्यों बनते हैं कि परमेश्वर उनके साथ इस तरह से निपटता है? कारण यह है कि हालाँकि वे साफ तौर पर जानते हैं कि वह परमेश्वर है, मगर फिर भी वे परमेश्वर के साथ विश्वासघात करते हैं, और इसीलिए उन्हें उद्धार के अवसर से पूरी तरह वंचित कर दिया जाता है। जैसा कि बाइबल में लिखा है, "क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।" क्या अब तुम लोग इस विषय को अच्छी तरह समझ गए हो?

मनुष्य का भाग्य परमेश्वर के प्रति उसकी प्रवृत्ति से निर्धारित होता है

परमेश्वर एक जीवित परमेश्वर है, और जैसे लोग भिन्न-भिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न तरीकों से बर्ताव करते हैं, वैसे ही इन बर्तावों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति भी भिन्न-भिन्न होती है क्योंकि वह न तो कोई कठपुतली है, और न ही वह शून्य है। परमेश्वर की प्रवृत्ति को जानना मनुष्य के लिए एक नेक खोज है। परमेश्वर की प्रवृत्ति को जानकर लोगों को सीखना चाहिए कि कैसे वे परमेश्वर के स्वभाव को जान सकते हैं और थोड़ा-थोड़ा करके उसके हृदय को समझ सकते हैं। जब तुम थोड़ा-थोड़ा करके परमेश्वर के हृदय को समझने लगोगे, तो तुम्हें नहीं लगेगा कि परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना कोई कठिन कार्य है। जब तुम परमेश्वर को समझ जाओगे, तो उसके बारे में निष्कर्ष नहीं निकालोगे। जब तुम परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष निकालना बन्द कर दोगे, तो उसे अपमानित करने की संभावना नहीं रहेगी और अनजाने में ही परमेश्वर तुम्हारी अगुवाई करेगा कि तुम उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करो; इससे तुम्हारे हृदय में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा पैदा होगी। तुम उन मतों, शब्दों एवं सिद्धांतों का उपयोग करके परमेश्वर को परिभाषित करना बंद कर दोगे जिनमें तुम महारत हासिल कर चुके हो। बल्कि, सभी चीज़ों में सदा परमेश्वर के इरादों को खोजकर, तुम अनजाने में ही परमेश्वर के हृदय के अनुरूप बन जाओगे।

इंसान परमेश्वर के कार्य को न तो देख सकता है, न ही छू सकता है, परन्तु जहाँ तक परमेश्वर की बात है, वह हर एक व्यक्ति के कार्यकलापों को, परमेश्वर के प्रति उसकी प्रवृत्ति को, न केवल समझ सकता है,

बल्कि देख भी सकता है। इसे हर किसी को पहचानना और इसके बारे में स्पष्ट होना चाहिए। हो सकता है कि तुम स्वयं से पूछते हो, "क्या परमेश्वर जानता है कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? क्या परमेश्वर जानता है कि मैं इस समय क्या सोच रहा हूँ? हो सकता है वह जानता हो, हो सकता है न भी जानता हो"। यदि तुम इस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाते हो, परमेश्वर का अनुसरण करते हो और उसमें विश्वास करते हो, मगर उसके कार्य और अस्तित्व पर सन्देह भी करते हो, तो देर-सवेर ऐसा दिन आएगा जब तुम परमेश्वर को क्रोधित करोगे, क्योंकि तुम पहले ही एक खतरनाक खड़ी चट्टान के कगार पर खड़े डगमगा रहे हो। मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिन्होंने बहुत वर्षों तक परमेश्वर पर विश्वास किया है, परंतु उन्होंने अभी तक सत्य-वास्तविकता प्राप्त नहीं की है, और वे परमेश्वर की इच्छा को तो और भी नहीं समझते। केवल अत्यंत छिछले मतों के मुताबिक चलते हुए, उनके जीवन और आध्यात्मिक कद में कोई प्रगति नहीं होती। क्योंकि ऐसे लोगों ने कभी भी परमेश्वर के वचन को जीवन नहीं माना, और न ही कभी परमेश्वर के अस्तित्व का सामना और उसे स्वीकार किया है। तुम्हें लगता है कि परमेश्वर ऐसे लोगों को देखकर आनंद से भर जाता है? क्या वे उसे आराम पहुँचाते हैं? यह है लोगों का परमेश्वर में विश्वास करने का तरीका जो उनका भाग्य तय करता है। जहाँ तक सवाल यह है कि लोग परमेश्वर की खोज कैसे करते हैं, कैसे परमेश्वर के समीप आते हैं, तो यहाँ लोगों की प्रवृत्ति प्राथमिक महत्व की हो जाती है। अपने सिर के पीछे तैरती खाली हवा समझ कर परमेश्वर की उपेक्षा मत करो; जिस परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास है उसे हमेशा एक जीवित परमेश्वर, एक वास्तविक परमेश्वर मानो। वह तीसरे स्वर्ग में हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा है। बल्कि, वह लगातार प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में देख रहा है, यह देख रहा है कि तुम क्या करते हो, वह हर छोटे वचन और हर छोटे कर्म को देख रहा है, वो यह देख रहा है कि तुम किस प्रकार व्यवहार करते हो और परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति क्या है। तुम स्वयं को परमेश्वर को अर्पित करने के लिए तैयार हो या नहीं, तुम्हारा संपूर्ण व्यवहार एवं तुम्हारे अंदर की सोच एवं विचार परमेश्वर के सामने खुले हैं, और परमेश्वर उन्हें देख रहा है। तुम्हारे व्यवहार, तुम्हारे कर्मों, और परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति के अनुसार ही तुम्हारे बारे में उसकी राय, और तुम्हारे प्रति उसकी प्रवृत्ति लगातार बदल रही है। मैं कुछ लोगों को कुछ सलाह देना चाहूँगा : अपने आपको परमेश्वर के हाथों में छोटे शिशु के समान मत रखो, जैसे कि उसे तुमसे लाड़-प्यार करना चाहिए, जैसे कि वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकता, और जैसे कि तुम्हारे प्रति उसकी प्रवृत्ति स्थायी हो जो कभी नहीं बदल सकती, और मैं तुम्हें सपने देखना छोड़ने की सलाह देता हूँ! परमेश्वर हर एक व्यक्ति के प्रति अपने

व्यवहार में धार्मिक है, और वह मनुष्य को जीतने और उसके उद्धार के कार्य के प्रति अपने दृष्टिकोण में ईमानदार है। यह उसका प्रबंधन है। वह हर एक व्यक्ति से गंभीरतापूर्वक व्यवहार करता है, पालतू जानवर के समान नहीं कि उसके साथ खेले। मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम बहुत लाड़-प्यार या बिगाड़ने वाला प्रेम नहीं है, न ही मनुष्य के प्रति उसकी करुणा और सहिष्णुता आसक्तिपूर्ण या बेपरवाह है। इसके विपरीत, मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम सँजोने, दया करने और जीवन का सम्मान करने के लिए है; उसकी करुणा और सहिष्णुता बताती हैं कि मनुष्य से उसकी अपेक्षाएँ क्या हैं, और यही वे चीज़ें हैं जो मनुष्य के जीने के लिए ज़रूरी हैं। परमेश्वर जीवित है, वास्तव में उसका अस्तित्व है; मनुष्य के प्रति उसकी प्रवृत्ति सैद्धांतिक है, कट्टर नियमों का समूह नहीं है, और यह बदल सकती है। मनुष्य के लिए उसके इरादे, परिस्थितियों और प्रत्येक व्यक्ति की प्रवृत्ति के साथ धीरे-धीरे परिवर्तित एवं रूपांतरित हो रहे हैं। इसलिए तुम्हें पूरी स्पष्टता के साथ जान लेना चाहिए कि परमेश्वर का सार अपरिवर्तनीय है, उसका स्वभाव अलग-अलग समय और संदर्भों के अनुसार प्रकट होता है। शायद तुम्हें यह कोई गंभीर मुद्दा न लगे, और तुम्हारी व्यक्तिगत अवधारणा हो कि परमेश्वर को कैसे कार्य करना चाहिए। परंतु कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि तुम्हारे दृष्टिकोण से बिल्कुल विपरीत नज़रिया सही हो, और अपनी अवधारणाओं से परमेश्वर को आंकने के पहले ही तुमने उसे क्रोधित कर दिया हो। क्योंकि परमेश्वर उस तरह कार्य नहीं करता जैसा तुम सोचते हो, और न ही वह उस मसले को उस नज़र से देखेगा जैसा तुम सोचते हो कि वो देखेगा। इसलिए मैं तुम्हें याद दिलाता हूँ कि तुम आसपास की हर एक चीज़ के प्रति अपने नज़रिए में सावधान एवं विवेकशील रहो, और सीखो कि किस प्रकार सभी चीज़ों में परमेश्वर के मार्ग में चलने के सिद्धांत का अनुसरण करना चाहिए, जो कि परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना है। तुम्हें परमेश्वर की इच्छा और उसकी प्रवृत्ति के मामलों पर एक दृढ़ समझ विकसित करनी चाहिए; तुम्हें ईमानदारी से प्रबुद्ध लोगों को खोजना चाहिए जो इस पर तुम्हारे साथ संवाद करें। अपने विश्वास में परमेश्वर को एक कठपुतली मत समझो—उसे मनमाने ढंग से मत परखो, उसके बारे में मनमाने निष्कर्षों पर मत पहुँचो, परमेश्वर के साथ सम्मान-योग्य व्यवहार करो। एक तरफ जहाँ परमेश्वर तुम्हारा उद्धार कर रहा है, तुम्हारा परिणाम निर्धारित कर रहा है, वहीं वह तुम्हें करुणा, सहिष्णुता, या न्याय और ताड़ना भी प्रदान कर सकता है, लेकिन किसी भी स्थिति में, तुम्हारे प्रति उसकी प्रवृत्ति स्थिर नहीं होती। यह परमेश्वर के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति पर, और परमेश्वर की तुम्हारी समझ पर निर्भर करता है। परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान या समझ के किसी अस्थायी पहलू के ज़रिए

परमेश्वर को सदा के लिए परिभाषित मत करो। किसी मृत परमेश्वर में विश्वास मत करो; जीवित परमेश्वर में विश्वास करो। यह बात याद रखो! यद्यपि मैंने यहाँ पर कुछ सत्यों पर चर्चा की है, ऐसे सत्य जिन्हें तुम लोगों को सुनना चाहिए, फिर भी तुम्हारी वर्तमान दशा और आध्यात्मिक कद के मद्देनज़र, मैं तुम्हारे उत्साह को ख़त्म करने के लिए कोई बड़ी माँग नहीं करूँगा। ऐसा करने से तुम लोगों का हृदय अत्यधिक उदासी से भर सकता है, और तुम्हें परमेश्वर के प्रति बहुत अधिक निराशा हो सकती है। इसके बजाय मुझे आशा है कि तुम लोग, परमेश्वर के प्रति तुम्हारे हृदय में जो प्रेम है, उसका उपयोग कर सकते हो, और मार्ग पर चलते समय परमेश्वर के प्रति सम्मानजनक प्रवृत्ति का उपयोग कर सकते हो। परमेश्वर में विश्वास करने को लेकर इस मामले में भ्रमित मत हो; इसे एक बड़ा मसला समझो। इसे अपने हृदय में रखो, अभ्यास में लाओ, और वास्तविक जीवन से जोड़ो; इसका केवल दिखावटी आदर मत करो। क्योंकि यह जीवन और मृत्यु का मामला है, जो तुम्हारी नियति को निर्धारित करेगा। इसके साथ कोई मजाक मत करो या इसे बच्चों का खेल मत समझो! आज तुम लोगों के साथ इन वचनों को साझा करने के बाद, मुझे नहीं पता कि तुम लोगों ने इन बातों को कितना आत्मसात किया है। आज जो कुछ मैंने यहाँ पर कहा है क्या उसके बारे में तुम्हारे मन में कोई प्रश्न है जो तुम पूछना चाहते हो?

हालाँकि ये विषय थोड़े नए हैं, और तुम लोगों के दृष्टिकोण से, तुम्हारी सामान्य खोज से, और जिसपर ध्यान देने की तुम्हारी प्रवृत्ति है, उससे थोड़ा हट कर हैं, फिर भी मेरा ख्याल है कि कुछ समय तक उनपर संवाद करके, जो कुछ मैंने यहाँ कहा है, उसके बारे में तुम लोग एक सामान्य समझ विकसित कर लोगे। ये सारे विषय नए हैं, और ऐसे विषय हैं जिनपर तुमने पहले कभी विचार नहीं किया, इसलिए मुझे आशा है कि ये तुम लोगों के बोझ को और नहीं बढ़ाएँगे। मैं आज ये बातें तुम्हें भयभीत करने के लिए नहीं बोल रहा, न ही मैं इनका उपयोग तुमसे निपटने के लिए कर रहा हूँ; बल्कि, मेरा लक्ष्य तथ्य की सच्चाई को समझने में तुम लोगों की सहायता करना है। चूँकि इंसान और परमेश्वर के बीच एक दूरी है : यद्यपि इंसान परमेश्वर में विश्वास करता है, फिर भी उसने परमेश्वर को कभी समझा नहीं है, उसकी प्रवृत्ति को कभी नहीं जाना है। मनुष्य ने कभी भी परमेश्वर की प्रवृत्ति के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया है। बल्कि उसने आँख मूँदकर विश्वास किया है, वह आँख मूँदकर आगे बढ़ा है, और वह परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान और समझ में लापरवाह रहा है। अतः मैं इन मामलों को तुम लोगों के लिए स्पष्ट करने, और यह समझने में तुम लोगों की सहायता करने को मजबूर हूँ कि वह परमेश्वर किस प्रकार का परमेश्वर है जिसपर तुम लोग विश्वास करते

हो; वह क्या सोच रहा है; विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ उसके व्यवहार में उसकी प्रवृत्ति क्या है; तुम लोग उसकी अपेक्षाओं को पूरा करने से कितनी दूर हो; और तुम्हारे कार्यकलापों और उस मानक के बीच कितनी असमानता है जिसकी वह तुमसे अपेक्षा करता है। तुम लोगों को ये बातें बताने का मकसद तुम्हें वह पैमाना देना है जिससे तुम खुद को माप सको, ताकि तुम जान सको कि जिस मार्ग पर तुम हो, उसमें तुम्हें कितनी प्राप्ति हुई है, तुम लोगों ने इस मार्ग पर क्या प्राप्त नहीं किया है, और तुम किन क्षेत्रों में शामिल नहीं हुए हो। तुम लोग आपस में संवाद करते समय, आमतौर पर कुछ सामान्य रूप से चर्चित विषयों पर ही बोलते हो जिनका दायरा संकरा होता है, और विषयवस्तु बहुत सतही होती है। तुम लोगों की चर्चा के विषय और परमेश्वर के इरादों में, तुम्हारी चर्चाओं और परमेश्वर की अपेक्षाओं के दायरे एवं मानक में एक दूरी, एक अंतर होता है। इस प्रकार चलते हुए कुछ समय बाद तुम लोग परमेश्वर के मार्ग से बहुत दूर होते चले जाओगे। तुम लोग बस परमेश्वर के मौजूदा कथनों को लेकर उन्हें आराधना की वस्तुओं में बदल रहे हो, और उन्हें रीति-रिवाजों और नियमों के तौर पर देख रहे हो। बस यही कर रहे हो! वास्तव में, तुम लोगों के हृदय में परमेश्वर का कोई स्थान नहीं है, दरअसल परमेश्वर ने तुम लोगों के हृदय को कभी प्राप्त ही नहीं किया। कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर को जानना बहुत कठिन है—यही सत्य है। यह कठिन है! यदि लोगों से अपने कर्तव्य निभाने के लिए कहा जाए और कार्यों को बाहरी तौर पर करने को कहा जाए, उनसे कठिन परिश्रम करने के लिए कहा जाए, तो लोग सोचेंगे कि परमेश्वर पर विश्वास करना बहुत आसान है, क्योंकि यह सब मनुष्य की योग्यताओं के दायरे में आता है। मगर जैसे ही यह विषय परमेश्वर के इरादों और मनुष्य के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति की ओर जाता है, तो सभी के नज़रिए से चीज़ें निश्चित रूप से थोड़ी कठिन हो जाती हैं। क्योंकि इसमें सत्य के बारे में लोगों की समझ और वास्तविकता में उनका प्रवेश शामिल है, तो निश्चित ही इसमें थोड़ी कठिनाई तो है! किन्तु जैसे ही तुम लोग पहले द्वार को पार कर जाते हो और प्रवेश करना शुरू कर देते हो तो धीरे-धीरे चीज़ें आसान होने लगती हैं।

परमेश्वर का भय मानने का आरंभिक बिन्दु उसके साथ परमेश्वर के समान व्यवहार करना है

अभी थोड़ी देर पहले, किसी ने एक प्रश्न उठाया था : ऐसा कैसे है कि हम परमेश्वर के बारे में अय्यूब से अधिक जानते हैं, फिर भी हम परमेश्वर का आदर नहीं कर पाते? हमने पहले ही इस मामले पर थोड़ी-बहुत चर्चा कर ली है, है न? वास्तव में इस प्रश्न के सार पर हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं, हालाँकि तब अय्यूब परमेश्वर को नहीं जानता था, फिर भी उसने उसके साथ परमेश्वर के समान व्यवहार किया था, और

उसे स्वर्ग, पृथ्वी और सभी चीज़ों का मालिक माना था। अय्यूब ने परमेश्वर को शत्रु नहीं माना था; बल्कि, उसने सभी चीज़ों के सृष्टिकर्ता के रूप में उसकी आराधना की थी। ऐसा क्यों है कि आजकल लोग परमेश्वर का इतना अधिक विरोध करते हैं? वे परमेश्वर का आदर क्यों नहीं कर पाते? एक कारण तो यह है कि उन्हें शैतान ने बुरी तरह भ्रष्ट कर दिया है। गहरी शैतानी प्रकृति के कारण, लोग परमेश्वर के शत्रु बन गए हैं। हालाँकि लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, उसे स्वीकार करते हैं, तब भी वे परमेश्वर का विरोध करते हैं और उसके विरोध में खड़े हो जाते हैं। यह मानव प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है। दूसरा कारण यह है कि लोग परमेश्वर में विश्वास तो करते हैं, पर वे उसके साथ परमेश्वर जैसा व्यवहार नहीं करते। वे सोचते हैं कि परमेश्वर मनुष्य का विरोधी है, उसे मनुष्य का शत्रु मानते हैं, और सोचते हैं कि परमेश्वर के साथ उनका कोई मेल नहीं है। बस इतनी-सी बात है। क्या इस मामले को पिछले सत्र में नहीं उठाया गया था? इसके बारे में सोचो : क्या यही कारण नहीं है? तुम्हें परमेश्वर का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो सकता है, फिर भी इस ज्ञान में क्या है? क्या हर कोई इसी के बारे में बात नहीं कर रहा है? क्या परमेश्वर ने तुम्हें इसी के बारे में नहीं बताया था? तुम केवल इसके सैद्धांतिक और मत-संबंधी पहलुओं को ही जानते हो; लेकिन क्या तुमने कभी परमेश्वर की सच्ची मुखाकृति को समझा है? क्या तुम्हारा ज्ञान आत्मनिष्ठ है? क्या तुम्हें व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव है? यदि परमेश्वर तुम्हें न बताता, तो क्या तुम जान पाते? तुम्हारा सैद्धांतिक ज्ञान वास्तविक ज्ञान नहीं दर्शाता। संक्षेप में, चाहे इसके बारे में तुमने कितना भी और कैसे भी जाना हो, जबतक तुम परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं करोगे, परमेश्वर तुम्हारा शत्रु ही बना रहेगा, और जबतक तुम परमेश्वर के साथ परमेश्वर जैसा व्यवहार नहीं करोगे, वह तुम्हारा विरोध करेगा, क्योंकि तुम शैतान के मूर्त रूप हो।

जब तुम मसीह के साथ होते हो, तो शायद तुम उसे दिन में तीन बार भोजन परोस सकते हो या उसे चाय पिला सकते हो और उसके जीवन की आवश्यकताओं का ध्यान रख सकते हो; ऐसा लगेगा जैसे तुमने मसीह के साथ परमेश्वर जैसा व्यवहार किया है। जब कभी कुछ होता है, तो लोगों का दृष्टिकोण हमेशा परमेश्वर के दृष्टिकोण से विपरीत होता है; लोग हमेशा परमेश्वर के दृष्टिकोण को समझने और स्वीकारने में असफल रहते हैं। जबकि हो सकता है कि लोग केवल ऊपरी तौर पर परमेश्वर के साथ हों, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे परमेश्वर के अनुरूप हैं। जैसे ही कुछ होता है, तो मनुष्य और परमेश्वर के बीच मौजूद शत्रुता की पुष्टि करते हुए, मुनुष्य की अवज्ञा की असलियत प्रकट हो जाती है। यह शत्रुता ऐसी नहीं है कि परमेश्वर

मनुष्य का विरोध करता है या परमेश्वर मनुष्य का शत्रु होना चाहता है, न ही ऐसा है कि परमेश्वर मनुष्य को अपने विरोध में रखकर उसके साथ ऐसा व्यवहार करता है। बल्कि, यह परमेश्वर के प्रति ऐसे विरोधात्मक सार का मामला है जो मनुष्य की आत्मनिष्ठ इच्छा में, और मनुष्य के अवचेतन मन में घात लगाता है। चूँकि मनुष्य उस सब को अपने अनुसंधान की वस्तु मानता है जो परमेश्वर से आता है, किन्तु जो कुछ परमेश्वर से आता है और जिस चीज़ में भी परमेश्वर शामिल है उसके प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया, सर्वोपरि, अंदाज़ा लगाने, संदेह करने और उसके बाद तुरंत ऐसी प्रवृत्ति को अपनाने वाली होती है जो परमेश्वर से टकराव रखती है, और परमेश्वर का विरोध करती है। उसके तुरंत बाद, मनुष्य एक नकारात्मक मनोदशा में परमेश्वर से विवाद या स्पर्धा करता है, वह यहाँ तक संदेह करता है कि ऐसा परमेश्वर उसके अनुसरण के योग्य है भी या नहीं। इस तथ्य के बावजूद कि मनुष्य की तर्कशक्ति उसे कहती है कि ऐसी हरकत नहीं करनी चाहिए, वह न चाहते हुए भी ऐसा ही करेगा, और वह अंत तक बेहिचक ऐसी ही हरकतें जारी रखेगा। उदाहरण के तौर पर, कुछ लोगों की पहली प्रतिक्रिया क्या होती है जब वे परमेश्वर के बारे में कोई अफवाह या अपयश की बात सुनते हैं? उनकी पहली प्रतिक्रिया यह होती है कि ये अफवाहें सही हैं या नहीं, इनका कोई अस्तित्व है या नहीं, और तब वे प्रतीक्षा करके देखने वाला रवैया अपनाते हैं। और फिर वे सोचने लगते हैं : इसे सत्यापित करने का कोई तरीका नहीं है, क्या वाकई ऐसा हुआ है? यह अफवाह सच है या नहीं? हालाँकि ऐसे लोग ऊपरी तौर पर नहीं दिखाते, मन ही मन संदेह करने लगते हैं, वे पहले ही परमेश्वर पर संदेह करना और परमेश्वर को नकारना शुरू कर चुके होते हैं। ऐसी प्रवृत्ति और दृष्टिकोण का सार क्या है? क्या यह विश्वासघात नहीं है? जबतक उनका सामना किसी समस्या से नहीं होता, तुम ऐसे लोगों का दृष्टिकोण नहीं जान पाते; ऐसा प्रतीत होता है जैसे परमेश्वर से उनका कोई टकराव नहीं है, मानो वे परमेश्वर को शत्रु नहीं मानते। हालाँकि, जैसे ही उनके सामने कोई समस्या आती है, वे तुरंत शैतान के साथ खड़े होकर परमेश्वर का विरोध करने लगते हैं। यह क्या बताता है? यह बताता है कि मनुष्य और परमेश्वर विरोधी हैं! ऐसा नहीं है कि परमेश्वर मनुष्य को अपना शत्रु मानता है, बल्कि मनुष्य का सार ही अपने आप में परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण है। चाहे कोई व्यक्ति कितने ही लम्बे समय से परमेश्वर का अनुसरण करता रहा हो, उसने कितनी ही कीमत चुकाई हो; वह कैसे भी परमेश्वर की स्तुति करता हो, कैसे भी परमेश्वर का प्रतिरोध करने से स्वयं को रोकता हो, यहाँ तक कि परमेश्वर से प्रेम करने के लिए वह अपने आपसे कितनी भी सख्ती करता हो, लेकिन वह कभी भी परमेश्वर के साथ परमेश्वर के रूप में

व्यवहार नहीं कर सकता। क्या यह मनुष्य के सार से निर्धारित नहीं होता? यदि तुम उसके साथ परमेश्वर जैसा व्यवहार करते हो, सचमुच मानते हो कि वह परमेश्वर है, तो क्या तब भी तुम उसपर संदेह कर सकते हो? क्या तब भी तुम्हारा हृदय उसपर कोई प्रश्नचिह्न लगा सकता है? नहीं लगा सकता, है न? इस संसार के चलन बहुत ही दुष्टतापूर्ण हैं, यह मनुष्यजाति भी बहुत बुरी है; तो ऐसा कैसे है कि उसके बारे में तुम्हारी कोई अवधारणा न हो? तुम स्वयं ही बहुत दुष्ट हो, तो ऐसा कैसे हो सकता है कि उसके बारे में तुम्हारी कोई अवधारणा न हो? फिर भी थोड़ी-सी अफवाहें और कुछ निंदा, परमेश्वर के बारे में इतनी बड़ी अवधारणाएँ उत्पन्न कर सकती हैं, और तुम्हारी कल्पना इतने सारे विचारों को उत्पन्न कर सकती हैं, जो दर्शाता है कि तुम्हारा आध्यात्मिक कद कितना अपरिपक्व है! क्या थोड़े से मच्छरों और कुछ घिनौनी मक्खियों की बस "भिनभिनाहट" ही काफी है तुम्हें धोखा देने के लिए? यह किस प्रकार का व्यक्ति है? तुम जानते हो परमेश्वर इस प्रकार के इंसान के बारे में क्या सोचता है? परमेश्वर इन लोगों से किस प्रकार व्यवहार करता है इस बारे में उसका दृष्टिकोण वास्तव में बिल्कुल स्पष्ट है। ऐसे लोगों के प्रति परमेश्वर ठंडा रुख अपनाता है—उसकी प्रवृत्ति उन पर कोई ध्यान न देना है, और इन अज्ञानी लोगों को गंभीरता से न लेना है। ऐसा क्यों है? क्योंकि अपने हृदय में उसने ऐसे लोगों को प्राप्त करने की योजना कभी नहीं बनाई जिन्होंने अंत तक उसके प्रति शत्रुतापूर्ण होने की शपथ खाई है, और जिन्होंने कभी भी परमेश्वर के अनुरूप होने का मार्ग खोजने की योजना नहीं बनाई है। शायद मेरी इन बातों से कुछ लोगों को ठेस पहुँचे। अच्छा, क्या तुम लोग इस बात के लिए तैयार हो कि मैं तुम्हें हमेशा इसी तरह ठेस पहुँचाता रहूँ? तुम लोग तैयार हो या न हो, लेकिन जो कुछ भी मैं कहता हूँ वह सत्य है! यदि मैं हमेशा इसी तरह से तुम लोगों को ठेस पहुँचाऊँ, तुम्हारे कलंक उजागर करूँ, तो क्या इससे तुम्हारे हृदय में बसी परमेश्वर की ऊँची छवि प्रभावित होगी? (नहीं होगी।) मैं मानता हूँ कि नहीं होगी। क्योंकि तुम्हारे हृदय में कोई ईश्वर है ही नहीं। वह ऊँचा परमेश्वर जो तुम्हारे हृदय में निवास करता है, जिसका तुम लोग दृढ़ता से समर्थन और बचाव करते हो, वह परमेश्वर है ही नहीं। बल्कि वह मनगढ़ंत इंसानी कल्पना है; उसका अस्तित्व ही नहीं है। अतः यह और भी अच्छा है कि मैं इस पहेली के उत्तर का खुलासा करूँ; क्या यह संपूर्ण सत्य को उजागर नहीं करता? वास्तविक परमेश्वर वो नहीं जिसके होने की कल्पना मनुष्य करता है। मुझे आशा है कि तुम लोग इस वास्तविकता का सामना कर सकते हो, और यह परमेश्वर के बारे में तुम लोगों के ज्ञान में सहायता करेगा।

परमेश्वर जिन्हें स्वीकार नहीं करता

कुछ लोगों के विश्वास को परमेश्वर के हृदय ने कभी स्वीकार नहीं किया है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर यह नहीं मानता कि ये लोग उसके अनुयायी हैं, क्योंकि परमेश्वर उनके विश्वास की प्रशंसा नहीं करता। क्योंकि ये लोग, भले ही कितने ही वर्षों से परमेश्वर का अनुसरण करते रहे हों, लेकिन इनकी सोच और इनके विचार कभी नहीं बदले हैं; वे अविश्वासियों के समान हैं, अविश्वासियों के सिद्धांतों और कार्य करने के तौर-तरीकों, और ज़िन्दा रहने के उनके नियमों एवं विश्वास के मुताबिक चलते हैं। उन्होंने परमेश्वर के वचन को कभी अपना जीवन नहीं माना, कभी नहीं माना कि परमेश्वर का वचन सत्य है, कभी परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार करने का इरादा ज़ाहिर नहीं किया, और परमेश्वर को कभी अपना परमेश्वर नहीं माना। वे परमेश्वर में विश्वास करने को एक किस्म का शगल मानते हैं, परमेश्वर को महज एक आध्यात्मिक सहारा समझते हैं, इसलिए वे नहीं मानते कि परमेश्वर का स्वभाव, या उसका सार इस लायक है कि उसे समझने की कोशिश की जाए। कहा जा सकता है कि वह सब जो सच्चे परमेश्वर से संबद्ध है उसका इन लोगों से कोई लेना-देना नहीं है; उनकी कोई रुचि नहीं है, और न ही वे ध्यान देने की परवाह करते हैं। क्योंकि उनके हृदय की गहराई में एक तीव्र आवाज़ है जो हमेशा उनसे कहती है : "परमेश्वर अदृश्य एवं अस्पर्शनीय है, उसका कोई अस्तित्व नहीं है।" वे मानते हैं कि इस प्रकार के परमेश्वर को समझने की कोशिश करना उनके प्रयासों के लायक नहीं है; ऐसा करना अपने आपको मूर्ख बनाना होगा। वे मानते हैं कि कोई वास्तविक कदम उठाए बिना अथवा किसी भी वास्तविक कार्यकलाप में स्वयं को लगाए बिना, सिर्फ शब्दों में परमेश्वर को स्वीकार करके, वे बहुत चालाक बन रहे हैं। परमेश्वर इन लोगों को किस दृष्टि से देखता है? वह उन्हें अविश्वासियों के रूप में देखता है। कुछ लोग पूछते हैं : "क्या अविश्वासी लोग परमेश्वर के वचन को पढ़ सकते हैं? क्या वे अपना कर्तव्य निभा सकते हैं? क्या वे ये शब्द कह सकते हैं : 'मैं परमेश्वर के लिए जिऊँगा'?" लोग प्रायः जो देखते हैं वह लोगों का सतही प्रदर्शन होता है; वे लोगों का सार नहीं देखते। लेकिन परमेश्वर इन सतही प्रदर्शनों को नहीं देखता; वह केवल उनके भीतरी सार को देखता है। इसलिए, इन लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति और परिभाषा ऐसी है। ये लोग कहते हैं : "परमेश्वर ऐसा क्यों करता है? परमेश्वर वैसा क्यों करता है? मैं ये नहीं समझ पाता; मैं वो नहीं समझ पाता; यह मनुष्य की अवधारणाओं के अनुरूप नहीं है; तुम मुझे यह बात अवश्य समझाओ...।" इसके उत्तर में मैं पूछता हूँ : क्या तुम्हें यह मामला समझाना सचमुच आवश्यक है? क्या इस मामले का तुमसे वास्तव में कुछ लेना-देना है? तुम कौन हो इस बारे में क्या सोचते हो? तुम कहाँ से आए हो? क्या तुम परमेश्वर को ये संकेत देने

योग्य हो? क्या तुम उसमें विश्वास करते हो? क्या वह तुम्हारे विश्वास को स्वीकार करता है? चूँकि तुम्हारे विश्वास का परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं है, तो उसके कार्य का तुमसे क्या सरोकार है? तुम नहीं जानते कि परमेश्वर के हृदय में तुम कहाँ ठहरते हो, तो तुम परमेश्वर से संवाद करने योग्य कैसे हो सकते हो?

चेतावनी के शब्द

क्या तुम लोग इन टिप्पणियों को सुनने के बाद असहज नहीं हो? हो सकता है कि तुम लोग इन वचनों को सुनना नहीं चाहते, या उन्हें स्वीकार करना नहीं चाहते, फिर भी वे सब तथ्य हैं। क्योंकि कार्य का यह चरण परमेश्वर के करने के लिए है, यदि परमेश्वर के इरादों से तुम्हारा कोई सरोकार नहीं है, परमेश्वर की प्रवृत्ति की तुम्हें कोई परवाह नहीं है, और तुम परमेश्वर के सार और स्वभाव को नहीं समझते हो, तो अंत में तुम्हारा ही विनाश होगा। मेरे शब्द सुनने में कठोर लगें तो उन्हें दोष मत देना, यदि तुम्हारा उत्साह ठंडा पड़ जाए तो उन्हें दोष मत देना। मैं सत्य बोलता हूँ; मेरा अभिप्राय तुम लोगों को हतोत्साहित करना नहीं है। चाहे मैं तुमसे कुछ भी माँगू, और चाहे इसे कैसे भी करने की तुमसे अपेक्षा की जाए, मैं चाहता हूँ कि तुम लोग सही पथ पर चलो, और परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करो और सही पथ से कभी विचलित न हो। यदि तुम परमेश्वर के वचन के अनुसार आगे नहीं बढ़ोगे, और उसके मार्ग का अनुसरण नहीं करोगे, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हो और सही पथ से भटक चुके हो। इसलिए मुझे लगता है कि कुछ ऐसे मामले हैं जो मुझे तुम लोगों के लिए स्पष्ट कर दिए जाने चाहिए, और मुझे तुम लोगों को साफ-साफ, और पूरी निश्चितता के साथ विश्वास करवा देना चाहिए, और परमेश्वर की प्रवृत्ति, परमेश्वर के इरादों, किस प्रकार परमेश्वर मनुष्य को पूर्ण करता है, और वह किस तरीके से मनुष्य के परिणाम को तय करता है, इसे स्पष्ट रूप से जानने में तुम लोगों की सहायता करनी चाहिए। यदि ऐसा दिन आता है जब तुम इस मार्ग पर नहीं चल पाते हो, तो मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, क्योंकि ये बातें तुम्हें पहले ही साफ-साफ बता दी गयी हैं। जहाँ तक यह बात है कि तुम अपने परिणाम से कैसे निपटोगे—तो यह मामला पूरी तरह से तुम पर है। भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों के परिणामों के बारे में परमेश्वर की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियाँ हैं। मनुष्य को तौलने के उसके अपने तरीके हैं, और उनसे अपेक्षाओं का उसका अपना मानक है। लोगों के परिणामों को तौलने का उसका मानक ऐसा है जो हर एक के लिए निष्पक्ष है—इसमें कोई संदेह नहीं! इसलिए, कुछ लोगों का भय अनावश्यक है। क्या अब तुम लोगों को तसल्ली मिल गयी? आज के लिए इतना ही। अलविदा!

17 अक्टूबर, 2013

परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर I

आज हम एक महत्वपूर्ण विषय पर संगति कर रहे हैं। यह ऐसा विषय है जिस पर परमेश्वर के कार्य की शुरुआत से लेकर अब तक चर्चा की गई है और जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्व रखता है। दूसरे शब्दों में, यह ऐसा मुद्दा है, जो परमेश्वर में अपने विश्वास के दौरान प्रत्येक व्यक्ति के सामने आएगा; यह ऐसा मुद्दा है, जिसका सामना किया जाना चाहिए। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण, अनिवार्य मुद्दा है, जिससे मानवजाति पीछा नहीं छुड़ा सकती। इसके महत्व के बारे में कहें, तो परमेश्वर के प्रत्येक विश्वासी के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात क्या है? कुछ लोगों को लगता है कि परमेश्वर की इच्छा को समझना सबसे महत्वपूर्ण बात है; कुछ लोगों का विश्वास है कि परमेश्वर के ज़्यादा से ज़्यादा वचनों को खाना-पीना सबसे महत्वपूर्ण है; कुछ महसूस करते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण बात स्वयं को जानना है; दूसरों की राय है कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह जानना है कि परमेश्वर के माध्यम से उद्धार किस प्रकार पाया जाए, परमेश्वर का अनुसरण किस प्रकार किया जाए और परमेश्वर की इच्छा को किस प्रकार पूरा किया जाए। हम इन सभी मुद्दों को आज के लिए एक तरफ रखेंगे। तो फिर हम किस पर चर्चा कर रहे हैं? विषय है, परमेश्वर। क्या यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण विषय है? इस विषय में क्या शामिल है? नि:संदेह, इसे परमेश्वर के स्वभाव, परमेश्वर के सार एवं परमेश्वर के कार्य से अलग नहीं किया जा सकता। अतः आज, आओ हम "परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर" पर चर्चा करें।

जब से मनुष्य ने परमेश्वर में विश्वास करना शुरू किया था, तब से उसका सामना परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर, जैसे विषयों से हुआ है। जब परमेश्वर के कार्य की बात आती है, तो कुछ लोग कहेंगे : "परमेश्वर का कार्य हम पर किया जाता है; हम इसे हर दिन अनुभव करते हैं, अतः हम इससे अनजान नहीं हैं।" परमेश्वर के स्वभाव के बारे में कहें तो, कुछ लोग कहेंगे : "परमेश्वर का स्वभाव ऐसा विषय है, जिसका अध्ययन, खोज हम जीवन भर करते हैं और जिस पर ध्यान भी केंद्रित करते हैं, अतः हमें इससे परिचित होना चाहिए।" जहाँ तक स्वयं परमेश्वर की बात है, कुछ लोग कहेंगे : "स्वयं परमेश्वर वह है, जिसका हम अनुसरण करते हैं, जिसमें हमारी आस्था है और जिसकी हम तलाश करते हैं, तो उसके बारे में हम बेख़बर नहीं हैं।" परमेश्वर ने सृष्टि के समय से ही अपने कार्य को कभी नहीं रोका है;

अपने कार्य के दौरान उसने निरंतर अपने स्वभाव को अभिव्यक्त किया है और अपने वचन को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग किया है। साथ ही, वह स्वयं तथा स्वयं के सार को मानवजाति पर अभिव्यक्त करने और मनुष्य पर अपनी इच्छा और मनुष्य से अपनी अपेक्षा को अभिव्यक्त करने से नहीं रुका है। अत:, शाब्दिक रूप से, इन विषयों से कोई अनजान नहीं है। फिर भी उन लोगों के लिए जो आज परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर, सभी वास्तव में बिलकुल अनजान बातें हैं। ऐसी स्थिति क्यों है? जब मनुष्य परमेश्वर के कार्य का अनुभव करते हैं, तो वे परमेश्वर के साथ संपर्क में भी आते हैं, जिससे उनको यह लगता है, मानो वे परमेश्वर के स्वभाव को समझते हैं या वह कैसा है, इसके बारे में कुछ जानते हैं। तदनुसार, मनुष्य को नहीं लगता कि वह परमेश्वर के कार्य या परमेश्वर के स्वभाव से अनजान है। इसके बजाय, मनुष्य सोचता है कि वह परमेश्वर से अच्छी तरह परिचित है और परमेश्वर के बारे में काफी कुछ समझता है। लेकिन वर्तमान में, परमेश्वर के बारे में यह समझ बहुत से लोगों में उनके द्वारा पुस्तकों में पढ़ी गई बातों तक, उनके व्यक्तिगत अनुभव तक सीमित होती है, उनकी कल्पना द्वारा नियंत्रित होती है और सबसे बढ़कर, उन तथ्यों तक सीमित होती है, जिन्हें वे अपनी आँखों से देख सकते हैं—यह सब कुछ स्वयं सच्चे परमेश्वर से बहुत दूर है। और यह "दूर" कितना दूर है? शायद मनुष्य खुद निश्चित नहीं है या शायद मनुष्य को थोड़ा सा अहसास है, हल्का-सा आभास है—लेकिन जब स्वयं परमेश्वर की बात आती है, तो उसके बारे में मनुष्य की समझ स्वयं सच्चे परमेश्वर के सार से बहुत परे है। इसीलिए "परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर" जैसे विषय पर हमारे लिए व्यवस्थित और ठोस ढंग से संगति में शामिल होना अनिवार्य है।

वास्तव में, परमेश्वर का स्वभाव सब के सामने है और वह छिपा हुआ नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने कभी किसी व्यक्ति को जान-बूझकर नज़रअंदाज़ नहीं किया है और उसने कभी भी लोगों को उसे जानने या समझने से रोकने के लिए जानबूझकर स्वयं को छिपाने का प्रयास नहीं किया है। परमेश्वर का स्वभाव हमेशा खुला रहना और खुलकर प्रत्येक व्यक्ति का सामना करना रहा है। अपने प्रबंधन में, परमेश्वर सबका सामना करते हुए अपना कार्य करता है और उसका कार्य हर व्यक्ति पर किया जाता है। यह कार्य करते हुए वह प्रत्येक व्यक्ति के मार्गदर्शन और भरण-पोषण के लिए लगातार अपने स्वभाव का प्रकटन और अपने सार का उपयोग कर रहा है कि उसके पास क्या है और वह कौन है। हर युग में और हर चरण पर, चाहे परिस्थितियाँ अच्छी हों या बुरी, परमेश्वर का स्वभाव प्रत्येक व्यक्ति के लिए हमेशा खुला होता है और

उसकी चीज़ें एवं अस्तित्व भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए हमेशा खुले होते हैं, वैसे ही जैसे उसका जीवन लगातार एवं बिना रुके मानवजाति का भरण-पोषण कर रहा है और उसे सहारा दे रहा है। इस सब के बावजूद, परमेश्वर का स्वभाव कुछ लोगों के लिए छिपा रहता है। क्यों? क्योंकि भले ही ये लोग परमेश्वर के कार्य के अंतर्गत रहते हैं और परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, फिर भी उन्होंने न तो कभी परमेश्वर को समझने का प्रयास किया, न ही परमेश्वर को जानना चाहा, परमेश्वर के निकट आने की तो बात ही छोड़ो। इन लोगों के लिए, परमेश्वर के स्वभाव को समझना इस बात की पूर्वसूचना देता है कि उनका अंत निकट है; इसका अर्थ है कि परमेश्वर के स्वभाव द्वारा उनका न्याय किया जाने वाला है और उन्हें दोषी ठहराया जाने वाला है। इसलिए, उन्होंने कभी भी परमेश्वर या उसके स्वभाव को समझने की इच्छा नहीं की है, न ही कभी उन्होंने परमेश्वर की इच्छा की गहरी समझ या उसके ज्ञान की अभिलाषा की है। वे सचेत सहयोग के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा समझने का प्रयास नहीं करते—वे तो बस जो करना चाहते हैं, हमेशा वही करने में आनंद लेते हैं और उसे करते हुए कभी नहीं थकते; वे ऐसे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, जिसमें वे विश्वास करना चाहते हैं; वे ऐसे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, जो केवल उनकी कल्पनाओं में ही मौजूद है, ऐसा परमेश्वर जो केवल उनकी धारणाओं में मौजूद है; और एक ऐसे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, जिसे उनके दैनिक जीवन में उनसे अलग नहीं किया जा सकता है। जब स्वयं सच्चे परमेश्वर की बात आती है, तो वे उसे पूरी तरह खारिज कर देते हैं और उसे समझने या उस पर ध्यान देने की उनमें कोई इच्छा नहीं होती और उसके करीब आने का इरादा तो बिलकुल भी नहीं होता। वे केवल परमेश्वर द्वारा व्यक्त शब्दों का प्रयोग स्वयं को सजाने, स्वयं को अच्छी तरह से प्रस्तुत करने के लिए कर रहे हैं। उनके विचार से, यह उनको पहले से ही सफल विश्वासी एवं अपने हृदय में परमेश्वर के प्रति आस्था रखने वाला व्यक्ति बना देता है। अपने हृदय में वे अपनी कल्पनाओं, अपनी धारणाओं और यहाँ तक कि परमेश्वर के बारे में अपनी व्यक्तिगत परिभाषाओं से निर्देशित होते हैं। दूसरी ओर, स्वयं सच्चे परमेश्वर का उनसे कोई लेना-देना नहीं है। क्योंकि, यदि वे सच्चे परमेश्वर को समझना चाहते, परमेश्वर के सच्चे स्वभाव और परमेशवर क्या है और उसके पास क्या है, उसे समझना चाहते तो इसका अर्थ होता कि उनके कार्यों, उनकी आस्था उनके अनुसरण की निंदा की जाएगी। इसीलिए वे परमेश्वर का सार समझने के अनिच्छुक रहते हैं और इसीलिए वे परमेश्वर को अच्छे से समझने, परमेश्वर की इच्छा को अच्छे से जानने और परमेश्वर के स्वभाव को अच्छे से समझने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करने या प्रार्थना करने के अनिच्छुक रहते हैं और उसके लिए

तैयार नहीं होते। इसके बजाय, वे चाहते हैं कि परमेश्वर कुछ ऐसा हो, जिसे गढ़ा गया हो, जो कुछ खोखला और अज्ञात हो। वे चाहते हैं कि परमेश्वर बिल्कुल ऐसा हो, जिसकी उन्होंने कल्पना की है, जो उनके इशारों और मांग पर चले, जिसका भंडार अक्षय हो और जो हमेशा उपलब्ध रहे। जब वे परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेना चाहते हैं, तो वे परमेश्वर से वह अनुग्रह बन जाने की माँग करते हैं। जब उन्हें परमेश्वर के आशीष की आवश्यकता होती है, तो वे परमेश्वर से वह आशीष बन जाने की माँग करते हैं। विपत्ति का सामना करने पर वे परमेश्वर से माँग करते हैं कि वह उन्हें मज़बूत बनाए और उनकी पीछे की ढाल बन जाए। परमेश्वर के बारे में इन लोगों का ज्ञान अनुग्रह एवं आशीष की परिधि के दायरे में ही अटका हुआ है। परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव और स्वयं परमेश्वर के विषय में उनकी समझ भी उनकी कल्पनाओं और शब्दों एवं सिद्धांतों तक ही सीमित होती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो परमेश्वर के स्वभाव को समझने के लिए उत्सुक हैं, वास्तव में परमेश्वर को देखना चाहते हैं और वास्तव में परमेश्वर के स्वभाव और जो वह स्वयं है और जो उसके पास हैं, उसे समझना चाहते हैं। ये लोग सत्य की वास्तविकता एवं परमेश्वर द्वारा उद्धार की खोज में रहते हैं और परमेश्वर से विजय, उद्धार एवं पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। वे परमेश्वर के वचन को पढ़ने के लिए अपने हृदय का उपयोग करते हैं, प्रत्येक परिस्थिति एवं प्रत्येक व्यक्ति, घटना या ऐसी प्रत्येक चीज़ को समझने के लिए अपने हृदय का उपयोग करते हैं, जिसकी व्यवस्था परमेश्वर ने उनके लिए की है और वे ईमानदारी से प्रार्थना और खोज करते हैं। वे सबसे अधिक परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं और परमेश्वर के सच्चे स्वभाव एवं सार को समझना चाहते हैं, ताकि वे आगे से परमेश्वर को और ठेस न पहुँचाएँ और अपने अनुभवों के माध्यम से परमेश्वर की सुंदरता और उसके सच्चे पहलू को और भी देख सकें। वे ऐसा इसलिए भी करते हैं ताकि उनके हृदय में वास्तव में एक सच्चा परमेश्वर विराजमान हो सके और ताकि उनके हृदय में परमेश्वर के लिए एक स्थान हो, जिससे अब उन्हें कल्पनाओं, धारणाओं या अस्पष्टता के बीच न जीना पड़े। इन लोगों में परमेश्वर के स्वभाव एवं सार को समझने की एक प्रबल इच्छा होने का कारण यह है कि मानवजाति को अपने अनुभवों के दौरान पल-पल परमेश्वर के स्वभाव एवं सार की आवश्यकता होती है; यह उसका स्वभाव और सार ही है, जो व्यक्ति के पूरे जीवनकाल के दौरान जीवन की आपूर्ति करता है। जब एक बार वे परमेश्वर के स्वभाव को समझ जाते हैं, तो वे और भी अच्छे से परमेश्वर का आदर करने, परमेश्वर के कार्य के साथ और अच्छे से सहयोग करने और परमेश्वर की इच्छा के प्रति और अधिक विचारशील बनने और अपनी पूरी योग्यता के साथ अपने

कर्तव्य को निभाने में सक्षम होंगे। परमेश्वर के स्वभाव के प्रति इस प्रकार के रुख दो प्रकार के लोग रखते हैं। प्रथम प्रकार के लोग परमेश्वर के स्वभाव को समझना नहीं चाहते। भले ही वे कहते हों कि वे परमेश्वर के स्वभाव को समझना चाहते हैं, स्वयं परमेश्वर को जानना चाहते हैं, देखना चाहते हैं जो उसके पास है और जो वह खुद है तथा ईमानदारी से परमेश्वर की इच्छा को समझना चाहते हैं, किंतु अपने हृदय की गहराई में वे मानते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस प्रकार के लोग निरंतर परमेश्वर की अवज्ञा और विरोध करते हैं; वे अपने हृदय में पद के लिए परमेश्वर से लड़ते हैं और अक्सर परमेश्वर के अस्तित्व पर संदेह करते हैं और यहाँ तक कि उससे इनकार कर देते हैं। वे परमेश्वर के स्वभाव या स्वयं वास्तविक परमेश्वर को अपने हृदय पर काबिज़ नहीं होने देना चाहते। वे सिर्फ अपनी ही इच्छाएँ, कल्पनाएँ एवं महत्वाकांक्षाएँ पूरी करना चाहते हैं। अतः हो सकता है ये लोग परमेश्वर में विश्वास करते हों, परमेश्वर का अनुसरण करते हों और उसके लिए अपने परिवार एवं नौकरियां भी त्याग सकते हों, लेकिन वे अपने बुरे तरीक़ों से बाज़ नहीं आते। यहाँ तक कि कुछ लोग भेंटों की चोरी भी करते हैं या उसे लुटा देते हैं या एकांत में परमेश्वर को कोसते हैं, जबकि अन्य लोग बार-बार अपने बारे में गवाही देने, अपनी शक्ति बढ़ाने और लोगों एवं हैसियत के लिए परमेश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा करने हेतु अपने पदों का उपयोग कर सकते हैं। वे लोगों से अपनी आराधना करवाने के लिए विभिन्न तरीकों एवं साधनों का उपयोग करते हैं और लोगों को जीतने एवं उनको नियंत्रित करने की लगातार कोशिश करते हैं। यहाँ तक कि कुछ लोग जानबूझकर लोगों को यह सोचने के लिए गुमराह करते हैं कि वे परमेश्वर हैं ताकि उनके साथ परमेश्वर की तरह व्यवहार किया जाए। वे किसी को कभी नहीं बताएँगे कि उन्हें भ्रष्ट कर दिया गया है-कि वे भी भ्रष्ट एवं अहंकारी हैं, उनकी आराधना नहीं करनी है और चाहे वे कितना भी अच्छा करते हों, यह सब परमेश्वर द्वारा उन्हें ऊँचा उठाने के कारण है और वे वही कर रहे हैं जो उन्हें वैसे भी करना ही चाहिए। वे ऐसी बातें क्यों नहीं कहते? क्योंकि वे लोगों के हृदय में अपना स्थान खोने से बहुत डरते हैं। इसीलिए ऐसे लोग परमेश्वर को कभी ऊँचा नहीं उठाते हैं और परमेश्वर के लिए कभी गवाही नहीं देते हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को समझने की कभी कोशिश नहीं की है। क्या वे परमेश्वर को समझे बिना ही उसे जान सकते हैं? असंभव! इस प्रकार, यद्यपि "परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर" विषय के शब्द साधारण हो सकते हैं, किंतु प्रत्येक व्यक्ति के लिए उनका अर्थ अलग हो सकता है। अक्सर परमेश्वर की अवज्ञा करने वाले, परमेश्वर का प्रतिरोध करने वाले, और परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने वाले व्यक्ति के लिए

ये वचन निंदा का पूर्वाभास हैं; जबकि सत्य वास्तविकता की खोज करने वाला और अक्सर परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए परमेश्वर के सम्मुख आने वाला व्यक्ति ऐसे वचनों को उस तरह लेगा, जैसे मछली जल को लेती है। अतः तुम लोगों के बीच ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें परमेश्वर के स्वभाव एवं परमेश्वर के कार्य की बात सुनकर सिरदर्द होने लगता है, जिनके हृदय प्रतिरोध से भर जाते हैं और वे अत्यधिक बेचैन हो जाते हैं। लेकिन तुम्हारे बीच कुछ ऐसे लोग हैं, जो सोचते हैं : यह विषय बिल्कुल वैसा है, जिसकी मुझे आवश्यकता है, क्योंकि यह विषय मेरे लिए बहुत लाभदायक है। यह ऐसी चीज़ है, जो मेरे जीवन के अनुभव से अनुपस्थित नहीं हो सकती है; यह निचोड़ का निचोड़ है, परमेश्वर में आस्था का आधार है और यह ऐसी चीज़ है, जिसका मानवजाति त्याग नहीं कर सकती है। तुम सबको यह विषय निकट एवं दूर दोनों लग सकता है, अपरिचित होते हुए भी परिचित महसूस हो सकता है। किंतु चाहे जो भी हो, यह ऐसा विषय है जिसे हर एक को सुनना चाहिए, जानना चाहिए और समझना चाहिए। चाहे तुम इससे कैसे भी निपटो, चाहे तुम इसे कैसे भी देखो या चाहे तुम इसे कैसे भी ग्रहण करो, इस विषय के महत्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

मानवजाति के सृजन के समय से ही परमेश्वर अपना कार्य करता रहा है। शुरुआत में, यह एक बहुत सरल कार्य था, लेकिन इसकी सरलता के बावजूद, यह परमेश्वर के सार एवं स्वभाव की अभिव्यक्ति से युक्त था। अब जबकि परमेश्वर का कार्य उन्नत हो गया है और परमेश्वर के वचन की महान अभिव्यक्ति के साथ उसका अनुसरण करने वाले हर व्यक्ति पर यह कार्य आश्चर्यजनक रूप से महान और मूर्त हो गया है, फिर भी इस दौरान परमेश्वर का व्यक्तित्व मानवजाति से पूर्णतया छिपा हुआ रहा है। बाइबल के लेखों के समय से लेकर हाल के दिनों तक हालाँकि वह दो बार देहधारण कर चुका है, फिर भी कभी भी किसी ने परमेश्वर के वास्तविक व्यक्तित्व को कभी देखा है? तुम लोगों की समझ के आधार पर क्या कभी किसी ने परमेश्वर के वास्तविक व्यक्तित्व को देखा है? नहीं। किसी ने परमेश्वर के वास्तविक व्यक्तित्व को नहीं देखा है, अर्थात किसी ने भी परमेश्वर के असल रूप को कभी नहीं देखा है। यह कुछ ऐसा है, जिससे हर कोई सहमत है। कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर का वास्तविक व्यक्तित्व या परमेश्वर का आत्मा सारी मानवता से छिपा हुआ है, जिसमें आदम और हव्वा भी शामिल हैं, जिन्हें उसने बनाया था और जिसमें धार्मिक अय्यूब शामिल है, जिसे उसने स्वीकार किया था। इनमें से किसी ने भी परमेश्वर के वास्तविक व्यक्तित्व को नहीं देखा था। लेकिन परमेश्वर क्यों जान-बूझकर अपने वास्तविक व्यक्तित्व को ढँकता है? कुछ लोग

कहते हैं : "परमेश्वर को डर है कि कहीं लोग डर न जाएँ।" दूसरे कहते हैं : "परमेश्वर अपने वास्तविक व्यक्तित्व को छिपाता है क्योंकि मनुष्य बहुत छोटा है और परमेश्वर बहुत बड़ा है; मनुष्य उसे नहीं देख पाएँगे, या फिर वे मर जाएँगे।" कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं : "परमेश्वर हर दिन अपने कार्य का प्रबंधन करने में व्यस्त रहता है, और शायद उसके पास प्रकट होने के लिए समय नहीं है कि लोग उसे देख पाएँ।" इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुमलोग किस पर विश्वास करते हो, यहाँ मेरा एक निष्कर्ष है। वह निष्कर्ष क्या है? वह निष्कर्ष यह है कि बस परमेश्वर चाहता ही नहीं कि लोग उसके वास्तविक व्यक्तित्व को देखें। मानव जाति से छिपे रहना कुछ ऐसा है, जिसे परमेश्वर जानबूझकर करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि लोग उसके वास्तविक व्यक्तित्व को न देखें। अब तक यह सबको स्पष्ट हो जाना चाहिए। यदि परमेश्वर ने अपने व्यक्तित्व को कभी किसी को नहीं दिखाया है, तो क्या तुम लोग सोचते हो कि परमेश्वर के व्यक्तित्व का अस्तित्वहै? (उसका अस्तित्व है।) निश्चय ही उसका अस्तित्व है। परमेश्वर के व्यक्तित्व का अस्तित्व सभी संदेह से परे है। किन्तु जहाँ तक इसकी बात है कि परमेश्वर का व्यक्तित्व कितना बड़ा है या वह कैसा दिखता है, क्या ये वे प्रश्न हैं जिनकी मानवजाति को छानबीन करनी चाहिए? नहीं। उत्तर नकारात्मक है। यदि परमेश्वर का व्यक्तित्व ऐसा विषय नहीं है, जिसकी हमें छानबीन करनी चाहिए, तो फिर किसकी करनी चाहिए? (परमेश्वर का स्वभाव।) (परमेश्वर का कार्य।) इससे पहले कि हम आधिकारिक विषय पर संगति शुरू करें, आओ हम उसी पर लौटें, जिस पर थोड़ी देर पहले चर्चा कर रहे थे : परमेश्वर ने मानवजाति को कभी अपना व्यक्तित्व क्यों नहीं दिखाया है? परमेश्वर क्यों जानबूझकर अपने व्यक्तित्व को मानवजाति से छिपाता है? इसका सिर्फ एक ही कारण है, और वह है : यद्यपि परमेश्वर द्वारा सृजित किए गए मनुष्य ने परमेश्वर के हज़ारों वर्षों के कार्य का अनुभव किया है, फिर भी ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जो परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव एवं परमेश्वर के सार को जानता हो। परमेश्वर की नज़रों में ऐसे लोग उसके विरुद्ध हैं और परमेश्वर अपने आप को ऐसे लोगों को नहीं दिखाएगा, जो उसके प्रति शत्रुतापूर्ण हैं। यही एकमात्र कारण है कि परमेश्वर ने अपने व्यक्तित्व को कभी मानवजाति को नहीं दिखाया है और क्यों वह जानबूझकर अपने व्यक्तित्व को मानवता से बचाकर रखता है। क्या अब तुम लोगों को परमेश्वर का स्वभाव जानने का महत्व स्पष्ट है?

परमेश्वर के प्रबंधन के अस्तित्व के समय से ही, वह अपना कार्य कार्यान्वित करने के लिए हमेशा ही पूरी तरह से समर्पित रहा है। मनुष्य से अपने व्यक्तित्व को छिपाने के बावजूद, वह हमेशा मनुष्य के

अगल-बगल ही रहा है, मनुष्य पर कार्य करता रहा है, अपने स्वभाव को व्यक्त करता रहा है, अपने सार से समूची मानवजाति का मार्गदर्शनकरता रहा है और अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और अपने अधिकार के माध्यम से हर एक व्यक्ति पर अपना कार्य करता रहा है, इस प्रकार वह व्यवस्था के युग, अनुग्रह के युग और आज के राज्य के युग को अस्तित्व में लाया है। यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से अपने व्यक्तित्व को छिपाता है, फिर भी उसका स्वभाव, उसका अस्तित्व और चीज़ें और मानवजाति के प्रति उसकी इच्छा खुलकर मनुष्य पर प्रकट हैं, ताकि मनुष्य उन्हें देख एवं अनुभव कर सके। दूसरे शब्दों में, यद्यपि मानव परमेश्वर को देख या स्पर्श नहीं कर सकते, फिर भी मानवता के सामने आने वाला परमेश्वर का स्वभाव एवं सार पूरी तरह स्वयं परमेश्वर की अभिव्यक्तियाँ हैं। क्या यह सत्य नहीं है? परमेश्वर अपने कार्य के लिए चाहे जिस रास्ते या कोण को चुने, वह हमेशा अपनी सच्ची पहचान के ज़रिए लोगों से बर्ताव करता है, वह कार्य करता है जिन्हें करना उसका फर्ज़ है और वे वचन कहता है, जो उसे कहने हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि परमेश्वर किस स्थान से बोलता है—वह तीसरे स्वर्ग में खड़ा हो सकता है या देह में खड़ा हो सकता है या यहाँ तक कि एक साधारण व्यक्ति हो सकता है—वह मनुष्य से बिना किसी छल या छिपाव के हमेशा अपने पूरे दिल और अपने पूरे मन के साथ बोलता है। जब वह अपने कार्य को क्रियान्वित करता है, परमेश्वर अपने वचन एवं अपने स्वभाव को अभिव्यक्त करता है और बिना किसी प्रकार के संदेह के जो वह स्वयं है और जो उसके पास है, उसे प्रकट करता है। वह अपने जीवन, अस्तित्व और अपनी चीज़ों के साथ मानवजाति का मार्गदर्शन करता है। इसी तरह से मनुष्य ने व्यवस्था के युग—मानवता के शैशव युग—के दौरान "अदृश्य एवं अस्पृश्य" परमेश्वर के मार्गदर्शन में जीवन बिताया था।

व्यवस्था के युग के बाद पहली बार परमेश्वर ने देहधारण किया था-ऐसा देहधारण जो साढ़े तैंतीस वर्षों तक रहा। एक मनुष्य के लिए, क्या साढ़े तैंतीस साल का समय लंबा समय है? (ज़्यादा लंबा नहीं है।) जबकि किसी मानव का जीवनकाल सामान्यत: तीस-एक सालों से कहीं ज़्यादा लंबा होता है, यह एक मनुष्य के लिए बहुत लंबा समय नहीं है। किंतु देहधारी परमेश्वर के लिए ये साढ़े तैंतीस साल वास्तव में बहुत ही लंबे थे। वह एक व्यक्ति बन गया—एक सामान्य व्यक्ति, जिसने परमेश्वर के कार्य और आदेश को अपने हाथ में लिया था। इसका अर्थ था कि उसे ऐसा कार्य करना था, जिसे एक सामान्य व्यक्ति नहीं संभाल सकता है, जबकि वह पीड़ा भी सहन कर रहा था, जिसका सामना सामान्य लोग नहीं कर सकते। अनुग्रह के युग के दौरान प्रभु यीशु द्वारा सहन की गई पीड़ा की मात्रा, उसके कार्य की शुरुआत से लेकर उसे

सलीब पर कीलों से जड़े जाने तक, शायद कुछ ऐसा नहीं है जिसे आज के लोग व्यक्तिगत रूप से देख सकते, किंतु क्या तुम लोग कम से कम बाइबल की कहानियों के ज़रिए इसका अंदाज़ा तक नहीं ले सकतेसकते? चाहे इन लिखित तथ्यों में कितने भी विवरण हों, कुल मिलाकर, इस समयावधि के दौरान परमेश्वर का कार्य कष्ट एवं पीड़ा से भरा था। एक भ्रष्ट मनुष्य के लिए, साढ़े तैंतीस साल का समय एक लंबा समय नहीं है; थोड़ी सी पीड़ा छोटी बात है। लेकिन पवित्र, निष्कलंक परमेश्वर के लिए, जिसे सारी मानवजाति के पापों को सहना था और जिसे पापियों के साथ खाना, सोना और रहना था, यह पीड़ा अविश्वसनीय तौर पर बहुत ही बड़ी थी। वह सृष्टिकर्ता है, सभी चीज़ों का स्वामी और हर चीज़ का शासक है, फिर भी जब वह संसार में आया, तो उसे भ्रष्ट मनुष्यों के दमन एवं क्रूरता को सहना पड़ा था। अपने कार्य को पूर्ण करने और मानवता को दुर्गति के समुद्र से निकालने के लिए, उसे मनुष्य द्वारा दोषी ठहराया जाना था और सारी मानवजाति के पापों को सहना था। वह जितनी पीड़ा से होकर वह गुज़रा था, उसकी थाह संभवतः सामान्य लोगों द्वारा नापी एवं आंकी नहीं जा सकती है। यह पीड़ा क्या दर्शाती है? यह मानवजाति के प्रति परमेश्वर के समर्पण को दर्शाती है। यह उस अपमान का प्रतीक है, जिसे उसने सहा था और उस कीमत का प्रतीक है, जिसे उसने मनुष्य के उद्धार के लिए, उनके पापों से छुटकारे के लिए और अपने कार्य के इस चरण को पूर्ण करने के लिए चुकाया था। इसका अर्थ यह भी है कि मनुष्य परमेश्वर के द्वारा सलीब से छुड़ाया जाएगा। यह एक ऐसी कीमत है जिसे लहू से एवं जीवन से चुकाया गया और एक ऐसी कीमत, जिसे चुका पाना सृजित किए गए किसी भी प्राणी के बस में नहीं है। उसके पास परमेश्वर का सार और वह है जोकि परमेश्वर के पास है, इसलिए वह ऐसी पीड़ा सह सका और इस प्रकार का कार्य कर सका। यह कुछ ऐसा है, जिसे उसकी जगह कोई भी अन्य सृजित किया गया प्राणी नहीं कर सकता था। यह अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर का कार्य है और उसके स्वभाव का एक प्रकाशन है। क्या इससे कुछ भी जो वह है या उसके पास है, प्रकट होता है? क्या यह मानवजाति के जानने योग्य है?

उस युग में, यद्यपि मनुष्य ने परमेश्वर के व्यक्तित्व को नहीं देखा था, फिर भी उन्होंने परमेश्वर की पाप बलि को प्राप्त किया और उन्हें परमेश्वर द्वारा सलीब से छुड़ाया गया। हो सकता है कि मानवजाति उस कार्य से अपरिचित न हो, जिसे अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर ने किया था, लेकिन क्या कोई उस स्वभाव एवं इच्छा से परिचित है, जिसे परमेश्वर द्वारा इस समयावधि के दौरान अभिव्यक्त किया गया था? विभिन्न युगों के दौरान विभिन्न माध्यमों से मनुष्य महज़ परमेश्वर के कार्य के विवरण ही जानता है या

परमेश्वर से संबंधित उन कहानियों को जानता है, जो उसी समय घटित हुई थीं जब परमेश्वर अपने कार्य को क्रियान्वित कर रहा था। ये विवरण एवं कहानियाँ ज़्यादा से ज़्यादा परमेश्वर के विषय में कुछ सूचनाएँ या प्राचीन किंवदंतियां हैं और इनका परमेश्वर के स्वभाव एवं सार के साथ कोई वास्ता नहीं है। अतः चाहे लोग परमेश्वर के बारे में कितनी भी कहानियाँ जानते हों, इसका यह मतलब नहीं कि उनके पास परमेश्वर के स्वभाव या उसके सार की गहरी समझ एवं ज्ञान है। व्यवस्था के युग के समान, यद्यपि लोगों ने अनुग्रह के युग में देहधारी परमेश्वर के साथ बहुत करीबी एवं घनिष्ठ संपर्क का अनुभव किया था, फिर भी परमेश्वर के स्वभाव एवं परमेश्वर के सार के विषय में उनका ज्ञान वस्तुतः न के बराबर था।

राज्य के युग में, परमेश्वर ने फिर से देहधारण किया, उसी प्रकार जैसे उसने पहली बार किया था। कार्य की इस समयावधि के दौरान, परमेश्वर अभी भी खुलकर अपने वचन को अभिव्यक्त करता है, वह कार्य करता है जो उसे करना है और वह अभिव्यक्त करता है, जो वह स्वयं है और जो उसके पास है। साथ ही, वह निरंतर मनुष्य की अवज्ञा एवं अज्ञानता को सहता एवं बर्दाश्त करता जाता है। क्या इस समयावधि के कार्य के दौरान भी परमेश्वर निरंतर अपने स्वभाव को प्रकट नहीं करता और अपनी इच्छा को अभिव्यक्त नहीं करता? इसलिए, मनुष्य के सृजन से लेकर अब तक, परमेश्वर का स्वभाव, उसका अस्तित्व और उसकी चीज़ें एवं उसकी इच्छा हमेशा से ही प्रत्येक व्यक्ति के सामने रहे हैं। परमेश्वर ने कभी भी जानबूझकर अपने सार, अपने स्वभाव या अपनी इच्छा को नहीं छिपाया है। बात बस इतनी है कि मानवजाति इसकी परवाह नहीं करती कि परमेश्वर क्या कर रहा है, उसकी इच्छा क्या है—इसीलिए परमेश्वर के बारे में मनुष्य की समझ इतनी दयनीय है। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर अपने व्यक्तित्व को छिपाता है, तो भी हर समय खुले तौर पर अपनी इच्छा, स्वभाव एवं सार को प्रकट करते हुए वह हर क्षण मानवजाति के साथ खड़ा होता है। एक अर्थ में, परमेश्वर का व्यक्तित्व भी सभी लोगों के सामने है लेकिन मनुष्य के अंधेपन एवं अवज्ञा के कारण वे कभी भी परमेश्वर का प्रकटन नहीं देख पाते। अतः यदि ऐसी स्थिति है, तो क्या प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर के स्वभाव और स्वयं परमेश्वर को समझना आसान नहीं होना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही कठिन है, है ना? तुम कह सकते हो कि यह आसान है, लेकिन जब कुछ लोग परमेश्वर को जानने का प्रयास करते हैं, वे वास्तव में उसे नहीं जान पाते या उसके विषय में एक स्पष्ट समझ प्राप्त नहीं कर पाते—वह हमेशा ही धुंधली और अस्पष्ट रहती है। किंतु यदि तुम कहो कि यह आसान नहीं है, तो वह भी सही नहीं है। इतने लंबे समय तक परमेश्वर के कार्य के अधीन

रहने के बाद, अपने अनुभवों के माध्यम से, प्रत्येक का परमेश्वर के साथ वास्तव में व्यवहार हो चुका होना चाहिए। उन्हें कम से कम कुछ हद तक अपने हृदय में परमेश्वर का अहसास करना चाहिए था या उन्हें पहले परमेश्वर के साथ आध्यात्मिक संस्पर्श करना चाहिए था और उनके पास कम से कम परमेश्वर के स्वभाव के विषय में थोड़ी बहुत अनुभव लायक जागरूकता होनी चाहिए थी या उन्हें उसकी कुछ समझ प्राप्त करनी चाहिए थी। जब से मनुष्य ने परमेश्वर का अनुसरण करना शुरू किया था, तब से अब तक मानवजाति ने बहुत कुछ प्राप्त किया है, लेकिन कई वजहों से-मनुष्य की नाकाबिलियत, अज्ञानता, विद्रोहीपन एवं विभिन्न प्रयोजनों के कारणवश—मानवजाति ने इसमें से बहुत कुछ खो भी दिया है। क्या परमेश्वर ने मानवजाति को पहले से ही काफी कुछ नहीं दिया है? यद्यपि परमेश्वर अपने व्यक्तित्व को मनुष्यों से छिपाता है, फिर भी जो वह स्वयं है, जो उसके पास है और अपने जीवन से वह मनुष्य को आपूर्ति करता है; परमेश्वर के विषय में मानव जाति का ज्ञान केवल उतना ही नहीं होना चाहिए जितना अभी है। इसीलिए मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर के विषय में तुम लोगों के साथ आगे संगति करना आवश्यक है। इसका उद्देश्य यह है कि हज़ारों साल की देखभाल एवं परवाह, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य पर न्योछावर किया है, व्यर्थ न हो जाएँ और मानवजाति अपने प्रति परमेश्वर की इच्छा को सचमुच में समझ सके और सराह सके। यह इसलिए है ताकि लोग परमेश्वर के विषय में अपने ज्ञान में एक नए चरण की ओर बढ़ सकें। साथ ही यह परमेश्वर को लोगों के हृदय में, अपने असली स्थान पर वापस लौटाएगा; अर्थात उसके साथ इंसाफ करेगा।

परमेश्वर के स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर को समझने के लिए तुम्हें बहुत थोड़े से आरंभ करना होगा। लेकिन थोड़े से कहां से शुरू करोगे? सबसे पहले, मैंने बाइबल के कुछ अध्यायों को चुना है। नीचे दी गई जानकारी में बाइबल के पद सम्मिलित हैं, उनमें से सब परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर के विषय से संबंधित हैं। मैंने विशेष रूप से इन अंशों को संदर्भ के रूप में खोजा है ताकि परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव एवं स्वयं परमेश्वर को समझने में तुम लोगों की सहायता करूँ। इन्हें साझा करने से हम यह देख पाएँगेकि परमेश्वर ने अपने अतीत के कार्य के ज़रिए किस प्रकार का स्वभाव प्रकट किया है और उसके सार के किन पहलुओं को लोग नहीं जानते हैं। हो सकता है कि ये अध्याय पुराने हों, लेकिन वह विषय जिसके बारे में हम संगति कर रहे हैं, वह कुछ नया है जो लोगों के पास नहीं है और जिसके बारे में उन्होंने कभी नहीं सुना है। हो सकता है कि तुम में से कुछ को यह कल्पनातीत लगे—क्या

आदम और हव्वा की चर्चा करना और नूह तक लौटना, उन्हीं चरणों की ओर लौटना नहीं है? चाहे तुम लोग कुछ भी सोचो, ये अध्याय इस विषय पर संगति के लिए अत्यंत लाभकारी हैं और आज की संगति के लिए ये शिक्षण सामाग्री या प्रत्यक्ष सामग्री के बतौर काम सकते हैं। जब तक मैं इस संगति को समाप्त करूँगा, तुम लोग इन अध्यायों को चुनने के पीछे मेरा उद्देश्य समझ जाओगे। जिन्होंने पहले बाइबल पढ़ी है, उन्होंने शायद इन कुछ पदों को पढ़ा हो, लेकिन शायद इन्हें सही मायने में न समझा हो। आओ, पहले इनकी संक्षिप्त समीक्षा करते हैं, फिर अपनी संगति में एक-एक करके इन पर विस्तार से जानेंगे।

आदम और हव्वा मानवजाति के पूर्वज हैं। यदि हमें बाइबल से पात्रों का उल्लेख करना है, तब हमें इन दोनों से शुरू करना होगा। अगला है नूह, मानवजाति का दूसरा पूर्वज। तीसरा पात्र कौन है? (अब्राहम।) क्या तुम सब लोग अब्राहम की कहानी के बारे में जानते हो? हो सकता है कि तुम लोगों में से कुछ जानते हों, लेकिन दूसरों के लिए शायद यह ज़्यादा स्पष्ट न हो। चौथा पात्र कौन है? सदोम के विनाश की कहानी में किसका उल्लेख है? (लूत।) लेकिन यहाँ लूत का संदर्भ नहीं दिया गया है। यह किसकी ओर संकेत करता है? (अब्राहम।) अब्राहम की कहानी में जो मुख्य बात है, वह है जो कुछ यहोवा परमेश्वर ने कहा था। क्या तुमने इसे देखा? पाँचवाँपात्र कौन है? (अय्यूब।) क्या परमेश्वर ने अपने कार्य के इस चरण के दौरान अय्यूब की कहानी के बारे में बहुत कुछ उल्लेख नहीं किया है? तो क्या तुम लोग इस कहानी के बारे में बहुत अधिक परवाह करते हो? यदि तुम लोग बहुत अधिक परवाह करते ही हो, तो क्या तुम लोगों ने बाइबल में अय्यूब की कहानी को ध्यान से पढ़ा है? क्या तुम्हें पता है कि अय्यूब ने कौन सी बातें कहीं, उसने कौन सी चीज़ें कीं? वे लोग जिन्होंने इसे सबसे अधिक पढ़ा है, तुम लोगों ने इसे कितनी बार पढ़ा है? क्या तुम इसे अक्सर पढ़ते हो? हाँगकाँग की बहनो, कृपया हमें बताओ। (जब हम अनुग्रह के युग में थे, तब मैंने इसे एक-दो बार पढ़ा था।) तुम लोगों ने तब से इसे दोबारा नहीं पढ़ा है? यदि ऐसा है, तो यह शोचनीय है। मैं तुम लोगों को बता दूँ: परमेश्वर के कार्य के इस चरण के दौरान उसने कई बार अय्यूब का उल्लेख किया, जो उसके इरादों का एक प्रतिबिंब है। यह बात कि उसने कई बार अय्यूब का उल्लेख किया लेकिन तुम लोगों का ध्यान उस पर नहीं गया, यह इस तथ्य का एक प्रमाण है : तुम लोगों की ऐसे लोग बनने में कोई रुचि नहीं जो अच्छे हैं और जो परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम लोग बस परमेश्वर द्वारा उद्धृत अय्यूब की कहानी के बारे में हल्के-फुल्के अंदाज़े से ही संतुष्ट हो। तुम लोग बस कहानी को समझने भर से ही संतुष्ट हो, लेकिन तुम लोग उन विवरणों की

परवाह नहीं करते या समझने की कोशिश नहीं करते कि अय्यूब कौन है और परमेश्वर का विविध अवसरों पर अय्यूब का ज़िक्र करने के पीछे उद्देश्य क्या है। यदि तुम लोगों को एक ऐसे व्यक्ति में रुचि नहीं है, जिसकी परमेश्वर ने प्रशंसा की है, तो तुम लोग असल में ध्यान किस बात पर दे रहे हो? यदि तुम लोग एक ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्ति की परवाह नहीं करते या समझने की कोशिश नहीं करते, जिसका परमेश्वर ने उल्लेख किया है तो यह परमेश्वर के वचन के प्रति तुम लोगों के रवैये के बारे में क्या कहता है? क्या यह एक दु:खद बात नहीं होगी? क्या इससे यह साबित नहीं होगा कि तुम लोगों में से अधिकतर व्यावहारिक चीज़ों में शामिल नहीं हो या सत्य की खोज में नहीं हो? यदि तुम सत्य को खोजते ही हो, तो तुम उन लोगों पर जिन्हें परमेश्वर स्वीकार करता है और उन पात्रों की कहानियों पर आवश्यक ध्यान दोगे, जिनके बारे में परमेश्वर ने बोला है। इसकी परवाह किए बगैर कि तुम उनके अनुरूप आचरण कर सकते हो या उनकी कहानियों को महसूस करने लायक पाते हो, तुम जल्दी से जाओगे और उनके बारे में पढ़ोगे, उन्हें समझने की कोशिश करोगे, उनके उदाहरण का अनुसरण करने के तरीके ढूँढोगे और वह करोगे, जिसे तुम अपनी सर्वोच्च योग्यता के साथ कर सकते हो। सत्य की लालसा रखने वाले किसी व्यक्ति को इस तरह व्यवहार करना चाहिए। लेकिन तथ्य यह है कि तुम लोगों में से अधिकांश लोग जो यहाँ बैठे हैं, उन्होंने अय्यूब की कहानी को कभी नहीं पढ़ा है। यह काफ़ी कुछ कहता है।

आओ, हम उस विषय पर वापस जाएँ जिस पर मैं अभी-अभी बात कर रहा था। पवित्र शास्त्रों के इस भाग में, जो पुराने नियम व्यवस्था के युग से संबंधित है, मैंने उन कुछ कहानियों को ध्यान केंद्रित करने के लिए चुना है, जिनके पात्र बेहद प्रतिनिधिक हैं, जिनसे बाइबल पढ़ने वाले ज़्यादातर लोग परिचित हैं। कोई भी जो इन पात्रों के बारे में कहानियाँ पढ़ता है, वह यह महसूस कर पाएगा कि वह कार्य जिसे परमेश्वर ने उन पर किया है और वे वचन जिन्हें परमेश्वर ने उनसे कहा है, वे आज के लोगों के लिए भी उतने ही मूर्त एवं सुगम हैं। बाइबल से इन कहानियों और अभिलेखों को पढ़ने पर तुम यह बेहतर ढंग से समझ पाओगे कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपना कार्य किया और किस प्रकार इतिहास के उन दिनों में लोगों के साथ व्यवहार किया। लेकिन आज इन अध्यायों पर चर्चा करने का मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि तुम इन कहानियों या उनके पात्रों पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करो। इसके बजाय उद्देश्य यह है कि तुम इन पात्रों की कहानियों के ज़रिए—परमेश्वर के कर्मों और उसके स्वभाव की सराहना कर सको। इससे तुम अधिक आसानी से परमेश्वर को जानने और समझने लायक बन पाओगे, उसका वास्तविक पक्ष देख पाओगे; यह

तुम्हारे अनुमानों और उसके बारे में धारणाओं को दूर करेगा और तुम्हें अस्पष्टता से घिरी निष्ठा से दूर जाने मेंमदद करेगा। जब तक तुम्हारे पास ठोस आधार न हो, परमेश्वर के स्वभाव का अर्थ निकालना और स्वयं परमेश्वर को जानने की कोशिश करना अक्सर असहायता, दुर्बलता और अनिश्चितता महसूस करा सकता है कि कहाँ से शुरू करें। इसने मुझे एक ऐसी पद्धति और दृष्टिकोण विकसित करने को प्रेरित किया, जो तुम्हें परमेश्वर को बेहतर समझने में मदद कर सकता है, अधिक प्रामाणिक रूप से परमेश्वर की इच्छा की सराहना करता है, परमेश्वर के स्वभाव और स्वयं परमेश्वर की जानकारी दे सकता है और तुमको वास्तव में परमेश्वर के अस्तित्व का अहसास करने देता है और मानव जाति के लिए उसकी इच्छा की सराहना करता है। क्या इस सबका तुम लोगों को लाभ नहीं होगा? अब जब तुम सब इन कहानियों और पवित्र शास्त्रों के हिस्सों को दोबारा देखते हो, तो तुम अपने हृदय के भीतर क्या महसूस करते हो? क्या तुम सोचते हो कि पवित्र शास्त्र के अंश जिन्हें मैंने चुना है, वे ज़रूरत से ज़्यादा हैं? जो कुछ मैंने तुम लोगों को अभी-अभी बताया था, उस पर मैं दोबारा ज़ोर दूँगा : इन पात्रों की कहानियों को तुम लोगों से पढ़वाने का लक्ष्य है कि यह समझने में तुम लोगों की सहायता की जाए कि परमेश्वर कैसे लोगों पर अपना कार्य करता है और मानवजाति के प्रति उसके रवैये को अच्छी तरह समझा जा सके। इस समझ तक पहुँचने में तुम्हें किससे मदद मिलेगी? परमेश्वर ने अतीत में जो कार्य किया है उसे समझकर और उस कार्य से जोड़कर जो परमेश्वर इस समय कर रहा है—इससे तुमको उसके असंख्य पहलुओं की सराहना में मदद मिलेगी। ये असंख्य पहलू वास्तविक हैं और उन सभी द्वारा जाने और सराहे जाने चाहिए, जो परमेश्वर को जानने की इच्छा रखते हैं।

अब हम पवित्र शास्त्र के एक उद्धरण से शुरू करते हुए आदम और हव्वा की कहानी से शुरुआत करेंगे

क. आदम और हव्वा

1) आदम के लिए परमेश्वर की आज्ञा

उत्पत्ति 2:15-17 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू

कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

तुम लोगों को इन पदों से क्या समझ आया? पवित्र शास्त्र का यह भाग तुम लोगों को कैसा महसूस कराता है? मैंने आदम के लिए परमेश्वर की आज्ञा के बारे में चर्चा का फ़ैसला क्यों किया? क्या अब तुम लोगों में से प्रत्येक के मन में परमेश्वर और आदम की एक तस्वीर है? तुम कल्पना करने की कोशिश कर सकते हो : यदि तुम लोग उस दृश्य में होते, तो तुम लोगों के हृदय में, कहीं गहरे, परमेश्वर किसके समान होता? इस बारे में सोचने से तुम लोगों को कैसा लगता है? यह एक द्रवित करने और दिल को छू लेने वाली तस्वीर है। यद्यपि इसमें केवल परमेश्वर एवं मनुष्य ही हैं, फिर भी उनके बीच की घनिष्ठता तुम्हें आदर से भर देती है : परमेश्वर का प्रचुर प्रेम मनुष्य को खुलकर प्रदान किया गया है और यह मनुष्य को घेरे रहता है; मनुष्य भोला-भाला एवं निर्दोष, भारमुक्त एवं लापरवाह है, आनंदपूर्वक परमेश्वर की दृष्टि के अधीन जीवन बिताता है; परमेश्वर मनुष्य के लिए चिंता करता है, जबकि मनुष्य परमेश्वर की सुरक्षा एवं आशीष के अधीन जीवन बिताता है; हर एक चीज़ जिसे मनुष्य करता एवं कहता है वह परमेश्वर से घनिष्ठता से जुड़ी है और अभिन्न है।

यह परमेश्वर की पहली आज्ञा कही जा सकती है, जो मनुष्य को बनाने के बाद उसे दी गई। यह आज्ञा क्या सूचित करती है? यह परमेश्वर की इच्छा दर्शाती है, परंतु साथ ही यह मानवजाति के लिए उसकी चिंताओं को भी बताती है। यह परमेश्वर की पहली आज्ञा है, और साथ ही यह भी पहली बार है, जब परमेश्वर मनुष्य के विषय में चिंता व्यक्त करता है। कहने का तात्पर्य है, जिस घड़ी परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तब से उसने उसके प्रति ज़िम्मेदारी महसूस की है। उसकी ज़िम्मेदारी क्या है? उसे मनुष्य की सुरक्षा करनी है और मनुष्य की देखभाल करनी है। वह आशा करता है कि मनुष्य उस पर भरोसा कर सकता है और उसके वचनों का पालन कर सकता है। यह मनुष्य से परमेश्वर की पहली अपेक्षा भी है। इसी अपेक्षा के साथ परमेश्वर निम्नलिखित वचन कहता है : "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" ये साधारण वचन परमेश्वर की इच्छा को दर्शाते हैं। वे यह भी प्रकट करते हैं कि परमेश्वर ने अपने हृदय में मनुष्य के लिए चिंता प्रकट करना शुरू कर दिया है। सब चीज़ों के मध्य, केवल आदम को ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था; आदम ही एकमात्र जीवित प्राणी था, जिसके पास परमेश्वर के जीवन की श्वास थी; वह परमेश्वर के साथ चल सकता था, परमेश्वर के

साथ बात कर सकता था। इसीलिए परमेश्वर ने उसे ऐसी आज्ञा दी। परमेश्वर ने इस आज्ञा में बिलकुल साफ कर दिया था कि मनुष्य क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता।

इन कुछ साधारण वचनों में, हम परमेश्वर का हृदय देखते हैं। लेकिन हम किस प्रकार का हृदय देखते हैं? क्या परमेश्वर के हृदय में प्रेम है? क्या इसमें कोई चिंता है? इन पदों में परमेश्वर के प्रेम एवं चिंता को न केवल सराहा जा सकता है, इसे घनिष्ठता से महसूस भी किया जा सकता है। क्या तुम इससे सहमत नहीं होंगे? मेरे यह कहने के बाद, क्या तुम लोग अब भी सोचते हो कि ये बस कुछ साधारण वचन हैं? ये इतने साधारण भी नहीं हैं, है ना? क्या तुम लोगों को पहले इसका पता था? यदि परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से तुम्हें इन थोड़े से वचनों को कहा होता, तो तुम भीतर से कैसा महसूस करते? यदि तुम एक दयालु व्यक्ति नहीं होते, यदि तुम्हारा हृदय बर्फ के समान ठंडा होता, तो तुम कुछ भी महसूस न करते, तुम परमेश्वर के प्रेम की सराहना नहीं करते और तुम परमेश्वर के हृदय को समझने की कोशिश नहीं करते। लेकिन एक विवेकशील और मानवता की समझ रखने वाले व्यक्ति के रूप में तुम कुछ अलग महसूस करोगे। तुम गर्मजोशी महसूस करोगे, तुम महसूस करोगे कि तुम्हारी परवाह की जाती है और तुम्हें प्रेम किया जाता है, और तुम खुशी महसूस करोगे। क्या यह सही नहीं है? जब तुम इन चीज़ों को महसूस करते हो, तो तुम परमेश्वर के प्रति कैसे पेश आओगे? क्या तुम परमेश्वर से जुड़ाव महसूस करोगे? क्या तुम अपने हृदय की गहराई से परमेश्वर से प्रेम और उसका सम्मान करोगे? क्या तुम्हारा हृदय परमेश्वर के और करीब जाएगा? तुम इससे देख सकते हो कि मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन जो और भी अधिक महत्वपूर्ण है, वह परमेश्वर के प्रेम के विषय में मनुष्य की सराहना एवं समझ है। असल में, क्या परमेश्वर अपने कार्य के इस चरण के दौरान ऐसी बहुत सी चीज़ें नहीं कहता? क्या आज ऐसे लोग हैं, जो परमेश्वर के हृदय की सराहना करते हैं? क्या तुम लोग परमेश्वर की इच्छा का आभास कर सकते हो, जिसके बारे में मैंने अभी-अभी कहा था? तुम लोग परमेश्वर की इच्छा की तब भी सराहना नहीं सकते, जब यह इतनी ठोस, साकार एवं असली होती है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि तुम लोगों के पास परमेश्वर के विषय में वास्तविक ज्ञान एवं समझ नहीं है। क्या यह सत्य नहीं है? लेकिन हमें इसे अभी यहीं छोड़ देना चाहिए।

2) परमेश्वर हव्वा को बनाता है

उत्पत्ति 2:18-20 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।" और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के

बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखे कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया। अत: आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके।

उत्पत्ति 2:22-23 और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। तब आदम ने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।"

पवित्र शास्त्र के इस भाग में एक मुख्य पंक्ति है: "जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया।" अतः किसने सभी जीवित प्राणियों को उनके नाम दिए थे? वह आदम था, परमेश्वर नहीं। यह पंक्ति मानवजाति को एक तथ्य बताती है : परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी, जब उसने उसकी सृष्टि की थी। कहने का तात्पर्य है, मनुष्य की बुद्धि परमेश्वर से आई थी। यह एक निश्चितता है। लेकिन क्यों? परमेश्वर ने आदम को बनाया, उसके बाद क्या आदम विद्यालय गया था? क्या वह जानता था कि कैसे पढ़ते हैं? परमेश्वर ने विभिन्न जीवित प्राणियों को बनाया, उसके बाद क्या आदम ने इन सभी प्राणियों को पहचाना था? क्या परमेश्वर ने उसे बताया कि उनके नाम क्या थे? निश्चित ही, परमेश्वर ने उसे यह भी नहीं सिखाया था कि इन प्राणियों के नाम कैसे रखने हैं। यही सत्य है! तो आदम ने कैसे जाना कि इन जीवित प्राणियों को उनके नाम कैसे देने थे और उन्हें किस प्रकार के नाम देने थे? यह उस प्रश्न से संबंधित है कि परमेश्वर ने आदम में क्या जोड़ा जब उसने उसकी सृष्टि की थी। तथ्य साबित करते हैं कि जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, तो उसने अपनी बुद्धि को उसमें जोड़ दिया था। यह एक मुख्य बिंदु है, तो ध्यानपूर्वक सुनो? एक अन्य मुख्य बिंदु भी है, जो तुम लोगों को समझना चाहिए : आदम ने जब इन जीवित प्राणियों को उनका नाम दिया, उसके बाद ये नाम परमेश्वर के शब्दकोश में निर्धारित हो गए। मैं इसका उल्लेख क्यों करता हूँ? क्योंकि इसमें भी परमेश्वर का स्वभाव शामिल है और यह एक बिंदु है, जिसे मुझे और समझाना होगा।

परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, उसमें जीवन श्वास फूंकी और उसे अपनी कुछ बुद्धि, अपनी योग्यताएँ और वह दिया जो वह स्वयं है और उसके पास है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को ये सब चीज़ें दीं, उसके बाद मनुष्य स्वतंत्र रूप से कुछ चीज़ों को करने और अपने आप सोचने के योग्य हो गया। यदि मनुष्य जो सोचता

है और जो करता है, वह परमेश्वर की नज़रों में अच्छा है, तो परमेश्वर उसे स्वीकार करता है और हस्तक्षेप नहीं करता। जो कुछ मनुष्य करता है यदि वह सही है, तो परमेश्वर उसे रहने देगा। अतः वह वाक्यांश "जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया" क्या दर्शाता है? यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने विभिन्न जीवित प्राणियों के नामों में कोई बदलाव करने की ज़रूरत नहीं समझी। आदम उनका जो भी नाम रखता, परमेश्वर कहता "ऐसा ही हो" और प्राणी के नाम की पुष्टि करता। क्या परमेश्वर ने कोई राय व्यक्त की? नहीं, निश्चित ही नहीं। तो तुम लोग इससे क्या नतीजा निकालते हो? परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी और मनुष्य ने कार्यों को अंजाम देने के लिए अपनी परमेश्वर-प्रदत्त बुद्धि का उपयोग किया। यदि जो कुछ मनुष्य करता है, वह परमेश्वर की नज़रों में सकारात्मक है, तो इसे बिना किसी मूल्यांकन या आलोचना के परमेश्वर के द्वारा पुष्ट, मान्य एवं स्वीकार किया जाता है। यह कुछ ऐसा है जिसे कोई व्यक्ति या दुष्ट आत्मा या शैतान नहीं कर सकता। क्या तुम लोग यहाँ परमेश्वर के स्वभाव का प्रकाशन देखते हो? क्या एक मानव, एक भ्रष्ट किया गया मानव या शैतान अपने नाम पर किसी को अपनी नाक के नीचे कुछ करने देगा? निश्चित ही नहीं! क्या वे इस पद के लिए उस अन्य व्यक्ति या अन्य शक्ति से लड़ेंगे, जो उनसे अलग है? निश्चित ही, वे लड़ेंगे! उस घड़ी, यदि वह एक भ्रष्ट किया गया व्यक्ति या शैतान आदम के साथ होता, तो जो कुछ आदम कर रहा था, उन्होंने निश्चित रूप से उसे ठुकरा दिया होता। यह साबित करने के लिए कि उनके पास स्वतंत्र रूप से सोचने की योग्यता है और उनके पास अपनी अनोखी अंतर्दृष्टि हैं, उन्होंने हर उस चीज़ को बिल्कुल नकार दिया होता, जो आदम ने किया था : "क्या तुम इसे यह कहकर बुलाना चाहते हो? ठीक है, मैं इसे यह कहकर नहीं बुलाने वाला, मैं इसे वह कहकर बुलाने वाला हूँ; तुमने इसे सीता कहा था लेकिन मैं इसे गीता कहकर बुलाने वाला हूँ। मुझे दिखाना है कि मैं कितना चतुर हूँ।" यह किस प्रकार का स्वभाव है? क्या यह अनियंत्रित रूप से अहंकारी होना नहीं है? और परमेश्वर का क्या? क्या उसका स्वभाव ऐसा है? जो आदम कर रहा था, क्या उसके प्रति परमेश्वर की कुछ असामान्य आपत्तियाँ थीं? स्पष्ट रूप से उत्तर है नहीं! उस स्वभाव को लेकर जिसे परमेश्वर प्रकाशित करता है, उसमें जरा भी वाद-विवाद, अहंकार या आत्म-तुष्टता का आभास नहीं है। इतना तो यहाँ स्पष्ट है। यह बस एक छोटी सी बात लग सकती है, लेकिन यदि तुम परमेश्वर के सार को नहीं समझते हो, यदि तुम्हारा हृदय यह पता लगाने की कोशिश नहीं करता कि परमेश्वर कैसे कार्य करता है और उसका रवैया क्या है, तो तुम परमेश्वर के स्वभाव को नहीं जानोगे या परमेश्वर के स्वभाव की अभिव्यक्ति एवं प्रकाशन को नहीं

जानोगे। क्या यह ऐसा नहीं है? क्या तुम लोग उससे सहमत हो, जो मैंने अभी-अभी तुम्हें समझाया? आदम के कार्यों के प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने दिखावटी घोषणा नहीं की, "तुमने अच्छा किया, तुमने सही किया और मैं सहमत हूँ!" जो भी हो, जो कुछ आदम ने किया, परमेश्वर ने अपने हृदय में उसे स्वीकृति दी, उसकी सराहना एवं तारीफ की। सृष्टि के समय से यह पहला कार्य था, जिसे मनुष्य ने परमेश्वर के निर्देशन पर उसके लिए किया था। यह कुछ ऐसा था, जिसे मनुष्य ने परमेश्वर के स्थान पर और परमेश्वर की ओर से किया था। परमेश्वर की नज़रों में, यह उस बुद्धिमत्ता से उदय हुआ था जो उसने मनुष्य को प्रदान की थी। परमेश्वर ने इसे एक अच्छी चीज़, एक सकारात्मक चीज़ के रूप में देखा था। जो कुछ आदम ने उस समय किया था, वह मनुष्य में परमेश्वर की बुद्धिमत्ता का पहला प्रकटीकरण था। परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह एक उत्तम प्रकटीकरण था। जो कुछ मैं यहाँ तुम लोगों को बताना चाहता हूँ, वह यह है कि उसकी बुद्धिमत्ता और जो वह स्वयं है और जो उसके पास है, उसे मनुष्य को देने का परमेश्वर का यह लक्ष्य था कि मानवजाति ऐसा जीवित प्राणी बन सके, जो उसे प्रकट करे। क्योंकि एक जीवित प्राणी का उसकी ओर से कार्य करना बिलकुल वैसा था, जिसे देखने की लालसा परमेश्वर को थी।

3) परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए चमड़े के अँगरखे बनाए

उत्पत्ति 3:20-21 आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा; क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता वही हुई। और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।

आओ, हम इस तीसरे अंश पर एक नज़र डालें, जो बताता है कि वास्तव में उस नाम के पीछे एक अर्थ है, जिसे आदम ने हव्वा को दिया था। यह दर्शाता है कि सृजन किए जाने के बाद, आदम के पास अपने स्वयं के विचार थे और वह बहुत सी चीज़ों को समझता था। लेकिन फिलहाल हम, जो कुछ वह समझता था या कितना कुछ वह समझता था, उसका अध्ययन या उसकी खोज करने नहीं जा रहे हैं क्योंकि तीसरे अंश में चर्चा का यह मेरा मुख्य उद्देश्य नहीं है। अतः तीसरे अंश का मुख्य बिंदु क्या है, जिसे मैं उजागर करना चाहता हूँ। आओ हम इस पंक्ति पर एक नज़र डालें, "और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।" यदि आज हम पवित्र शास्त्र की इस पंक्ति के बारे में चर्चा नहीं करें, तो हो सकता है कि तुम लोग इन वचनों के पीछे निहित अर्थों का कभी अहसास न कर पाओ। सबसे पहले, मैं कुछ सुराग देता हूँ। हो सके तो तुम लोग कल्पना करो, अदन की

वाटिका, जिसमें आदम और हव्वा रह रहे हैं। परमेश्वर उनसे मिलने जाता है, लेकिन वे छिप जाते हैं क्योंकि वे नग्न हैं। परमेश्वर उन्हें देख नहीं पाता और जब वह उन्हें पुकारता है, वे कहते हैं, "हममें तुझे देखने की हिम्मत नहीं है क्योंकि हमारे शरीर नग्न हैं।" वे परमेश्वर को देखने की हिम्मत नहीं करते क्योंकि वे नग्न हैं। तो यहोवा परमेश्वर उनके लिए क्या करता है? मूल पाठ कहता है: "और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।" इससे क्या तुम लोग समझते हो कि परमेश्वर ने उनके वस्त्र बनाने के लिए क्या उपयोग किया था? परमेश्वर ने उनके वस्त्रों को बनाने के लिए जानवर के चमड़े का उपयोग किया था। कहने का तात्पर्य है, जो वस्त्र परमेश्वर ने मनुष्य के लिए बनाया वह एक रोएँदार कोट था। यह वस्त्र के पहले टुकड़े थे, जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य के लिए बनाया था। आज के मानकों से एक रोएँदार कोट विलासिता की चीज़ है, ऐसी चीज़ नहीं, जिसे हर कोई पहन सके। यदि तुमसे कोई पूछे : तुम्हारे पूर्वजों द्वारा पहना गया वस्त्र का पहला टुकड़ा क्या था? तुम उत्तर दे सकते हो : वह एक रोएँदार कोट था। वह रोएँदार कोट किसने बनाया था? तुम आगे बता सकते हो : परमेश्वर ने इसे बनाया था! यहाँ यही मुख्य बिंदु है : इस वस्त्र को परमेश्वर द्वारा बनाया गया था। क्या यह ऐसी चीज़ नहीं है, जिस पर चर्चा की जानी चाहिए? मेरा वर्णन सुनने के बाद क्या तुम लोगों के मन में एक छवि उभरी है? तुम्हारे पास कम से कम एक मोटी रुपरेखा होनी चाहिए। आज तुम्हें बताने का बिंदु यह नहीं है कि तुम लोग जानो कि मनुष्य के वस्त्र का पहला टुकड़ा क्या था। तो फिर बिंदु क्या है? बिंदु रोएँदार कोट नहीं है बल्कि लोगों को कैसे पता चलता है—जैसा परमेश्वर द्वारा यहाँ यह करके प्रकट किया गया—उसका स्वभाव, जो उसके पास है एवं जो वह स्वयं है।

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए," इस दृश्य में परमेश्वर किस प्रकार की भूमिका निभाता है जब वह आदम और हव्वा के साथ होता है? मात्र दो मानवों के साथ इस संसार में परमेश्वर किस प्रकार की भूमिका में प्रकट होता है? क्या वह स्वयं को परमेश्वर की भूमिका में प्रकट करता है? हाँगकाँग के भाइयो एवं, बहनो कृपया उत्तर दीजिए। (एक अभिभावक की भूमिका में।) दक्षिण कोरिया के भाइयो एवं बहनो, तुम लोग क्या सोचते हो कि परमेश्वर किस भूमिका में प्रकट होता है? (परिवार के मुखिया की।) ताइवान के भाइयो एवं बहनो, तुम लोग क्या सोचते हो? (आदम और हव्वा के परिवार में किसी व्यक्ति की भूमिका में, परिवार के एक सदस्य की भूमिका में।) तुम लोगों में से कुछ सोचते हैं कि परमेश्वर आदम और हव्वा के परिवार के एक सदस्य के

रूप में प्रकट होता है, जबकि कुछ कहते हैं कि परमेश्वर परिवार के एक मुखिया के रूप में प्रकट होता है वहीं दूसरे कहते हैं, वह अभिभावक के रूप में है। इनमें से सब बिलकुल उपयुक्त हैं। लेकिन क्या तुम्हें पता है मैं किस ओर इशारा कर रहा हूँ? परमेश्वर ने इन दो लोगों की सृष्टि की और उनके साथ अपने साथियों के समान व्यवहार किया। उनके एकमात्र परिवार के समान, परमेश्वर ने उनके जीवन का ख्याल रखा और उनकी भोजन, कपड़े और घर जैसी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा। यहाँ, परमेश्वर आदम और हव्वा के माता-पिता के रूप में प्रकट होता है। जब परमेश्वर यह करता है, मनुष्य नहीं देखता कि परमेश्वर कितना ऊँचा है; वह परमेश्वर की सर्वोच्चता, उसकी रहस्यमयता और ख़ासकर उसके क्रोध या प्रताप को नहीं देखता। जो कुछ वह देखता है वह परमेश्वर की विनम्रता, उसका स्नेह, मनुष्य के लिए उसकी चिंता और उसके प्रति उसकी ज़िम्मेदारी एवं देखभाल है। जिस रवैये एवं तरीके से परमेश्वर ने आदम और हव्वा के साथ व्यवहार किया, वह वैसा है जैसे माता-पिता अपने बच्चों के लिए चिंता करते हैं। यह ऐसा है, जैसे माता-पिता अपने पुत्र एवं पुत्रियों से प्रेम करते हैं, उन पर ध्यान देते हैं और उनकी देखरेख करते हैं—वास्तविक, दृश्यमान और स्पर्शगम्य। खुद को एक उच्च और शक्तिमान पद पर रखने के बजाय, परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से मनुष्य के लिए पहरावा बनाने के लिए चमड़ों का उपयोग किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस रोएँदार कोट का उपयोग उनकी लज्जा छिपाने के लिए किया गया था या उन्हें ठंड से बचाने के लिए। जो मायने रखता है वह यह कि मनुष्य के शरीर को ढँकने वाला पहरावा, परमेश्वर द्वारा अपने हाथों से बनाया गया था। बस कपड़ों को सोचकर अस्तित्व में लाने या कुछ अन्य चमत्कारी साधनों का उपयोग करने के बजाय, जैसा लोग कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर करेगा, परमेश्वर ने वैध रूप से कुछ ऐसा किया, जो मनुष्य ने सोचा होगा कि परमेश्वर नहीं करेगा और उसे नहीं करना चाहिए। यह एक मामूली बात लग सकती है—कुछ लोग यहाँ तक भी सोच सकते हैं कि यह जिक्र करने लायक भी नहीं है—परंतु यह परमेश्वर का अनुसरण करने वाले किसी भी व्यक्ति को, जो उसके विषय में पहले अस्पष्ट विचारों से घिरा हुआ था, उसकी सच्चाई एवं मनोहरता में अन्तःदृष्टि प्राप्त करने और उसकी निष्ठा एवं विनम्रता को देखने की गुंजाइश भी देता है। यह असह्य रूप से अभिमानी लोगों को, जो सोचते हैं कि वे ऊँचे एवं शक्तिशाली हैं, परमेश्वर की सच्चाई एवं विनम्रता के सामने लज्जा से अपने अहंकारी सिरों को झुकाने के लिए मजबूर करता है। यहाँ, परमेश्वर की सच्चाई एवं विनम्रता लोगों को और यह देखने लायक बनाती है कि परमेश्वर कितना मनभावन है। इसके विपरीत, "असीम" परमेश्वर, "मनभावन" परमेश्वर और

"सर्वशक्तिमान" परमेश्वर लोगों के हृदय में कितना छोटा एवं नीरस हो गया है और हल्के स्पर्श से भी बिखर जाता है। जब तुम इस पद को देखते हो और इस कहानी को सुनते हो, तो क्या तुम परमेश्वर को नीचा समझते हो क्योंकि उसने ऐसा कार्य किया था? शायद कुछ लोग ऐसा सोचें, लेकिन दूसरे पूर्णत: विपरीत प्रतिक्रिया देंगे। वे सोचेंगे कि परमेश्वर सच्चा एवं मनभावन है और यह बिलकुल परमेश्वर की सच्चाई एवं विनम्रता ही है, जो उन्हें द्रवित करती है। जितना अधिक वे परमेश्वर के वास्तविक पहलू को देखते हैं, उतना ही अधिक वे परमेश्वर के प्रेम के सच्चे अस्तित्व की, अपने हृदय में परमेश्वर के महत्व की और वह किस प्रकार हर घड़ी उनके बगल में खड़ा होता है, उसकी सराहना कर सकते हैं।

अब हम अपनी चर्चा को वर्तमान से जोड़ते हैं। यदि परमेश्वर उन मनुष्यों के लिए ये विभिन्न छोटी-छोटी चीज़ें कर सकता था, जिनका सृजन उसने बिलकुल शुरुआत में किया था, यहाँ तक कि ऐसी चीज़ें भी जिनके विषय में लोग कभी सोचने या अपेक्षा करने की हिम्मत भी नहीं करेंगे, तो क्या परमेश्वर आज लोगों के लिए ऐसी चीज़ें कर सकता है? कुछ कहते हैं, "हाँ!" ऐसा क्यों है? क्योंकि परमेश्वर का सार झूठा नहीं है, उसकी मनोहरता झूठी नहीं है। परमेश्वर का सार सचमुच अस्तित्व में है और यह ऐसी चीज़ नहीं है, जिसमें दूसरों द्वारा कुछ जोड़ा गया हो और निश्चित रूप से ऐसी चीज़ नहीं है जो समय, स्थान एवं युगों में परिवर्तन के साथ बदलती हो। परमेश्वर की सच्चाई एवं मनोहरता को केवल कुछ ऐसा करने से सामने लाया जा सकता है, जिसे लोग मामूली एवं महत्वहीन मानते हैं-ऐसी चीज़ जो इतनी छोटी है कि लोग सोचते भी नहीं कि वह कभी करेगा। परमेश्वर ढोंगी नहीं है। उसके स्वभाव एवं सार में कोई अतिशयोक्ति, छद्मवेश, गर्व या अहंकार नहीं है। वह कभी डींगें नहीं मारता, बल्कि इसके बजाय निष्ठा एवं ईमानदारी से प्रेम करता है, चिंता करता है, ध्यान रखता है और मनुष्यों की अगुआई करता है, जिन्हें उसने बनाया है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग इसकी कितनी ही कम सराहना करते हैं, अहसास करते हैं या देखते हैं जो परमेश्वर करता है, वह निश्चय ही यह कर रहा है। क्या यह जानना कि परमेश्वर के पास ऐसा सार है, उसके लिए लोगों के प्रेम को प्रभावित करेगा? क्या यह परमेश्वर के लिए उनके भय को प्रभावित करेगा? मैं आशा करता हूँ कि जब तुम परमेश्वर के वास्तविक पहलू को समझ जाओगे, तो तुम उसके और करीब हो जाओगे और तुम मानवजाति के प्रति उसके प्रेम एवं देखभाल की सचमुच में और अधिक सराहना करने के योग्य हो जाओगे, अपना हृदय परमेश्वर को देने लायक हो जाओगे और उसके प्रति तुम्हें कोई संदेह और शंका नहीं रहेगी। परमेश्वर चुपचाप मनुष्य के लिए सब कुछ कर रहा है, वह यह सब अपनी ईमानदारी,

निष्ठा एवं प्रेम के ज़रिए खामोशी से कर रहा है। लेकिन वह जो भी करता है, उसे लेकर उसे कभी शंकाएँ या खेद नहीं होते, न ही उसे कभी आवश्यकता होती है कि कोई उसे किसी रीति से बदले में कुछ दे या कभी मानवजाति से कोई चीज़ प्राप्त करने के उसके इरादे हैं। वह सब कुछ जो उसने हमेशा किया है उसका एकमात्र उद्देश्य यह है कि वह मानवजाति के सच्चे विश्वास एवं प्रेम को प्राप्त कर सके। और इसके साथ, मैं यहाँ पहले विषय का समापन करूँगा।

क्या इन चर्चाओं ने तुम लोगों की सहायता की है? वे कितनी सहायक रही हैं? (हमें परमेश्वर के प्रेम की और अधिक समझ एवं ज्ञान है।) (संगति का यह तरीका भविष्य में हमारी सहायता कर सकता है कि हम परमेश्वर के वचन की बेहतर ढंग से सराहना करें, उन भावनाओं को समझें, जो उसमें थीं और उन चीज़ों के पीछे के अर्थ समझें, जिन्हें उसने कहा था जब उसने उन्हें बोला था और जो कुछ उसने उस समय महसूस किया था उसका अहसास करें।) क्या तुम में से कोई इन वचनों को पढ़ने के बाद परमेश्वर के वास्तविक अस्तित्व के प्रति अधिक सचेत है? क्या तुम्हें महसूस होता है कि अब परमेश्वर का अस्तित्व खोखला या अज्ञात नहीं रहा है? जब तुम्हें यह अहसास हो जाता है, तब क्या तुम समझ पाते हो कि परमेश्वर बिलकुल तुम्हारे बगल में है? कदाचित यह संवेदना अभी स्पष्ट नहीं है या तुम लोग इसे अभी तक महसूस करने योग्य नहीं हो पाए हो। लेकिन एक दिन, जब तुम लोगों के हृदय में परमेश्वर के स्वभाव एवं सार की सचमुच गहरी सराहना एवं वास्तविक ज्ञान होगा, तो तुम्हें समझ आएगा कि परमेश्वर बिलकुल तुम्हारे बगल में है—बात बस इतनी है कि तुमने अपने हृदय में असल में परमेश्वर को कभी स्वीकार नहीं किया था। और यही सत्य है!

संगति के इस तरीके के बारे में तुम लोग क्या सोचते हो? क्या तुम लोग सीख पाए? क्या तुम लोग सोचते हो कि परमेश्वर के कार्य और परमेश्वर के स्वभाव के विषय में इस प्रकार की संगति बहुत बोझिल है? तुम कैसा महसूस करते हो? (बहुत अच्छा, उत्साहित।) किस चीज़ ने तुम लोगों को अच्छा महसूस कराया? तुम लोग क्यों उत्साहित थे? (यह अदन की वाटिका में वापस लौटने, वापस परमेश्वर के पास लौटने के समान है।) "परमेश्वर का स्वभाव" वास्तव में लोगों के लिए अपेक्षाकृत अपरिचित विषय है, क्योंकि जो कुछ तुम लोग सामान्यतः सोचते हो और जो कुछ तुम पुस्तकों में पढ़ते या संगतियों में सुनते हो, वह तुम्हें एक नेत्रहीन मनुष्य के समान महसूस कराता है, जो एक हाथी को स्पर्श कर रहा है—तुम बस अपने हाथों से आसपास की चीज़ों को महसूस करते हो, लेकिन तुम असल में अपनी आँखों से कुछ नहीं देख

सकते। बिना देखे टटोलने से तुमको ईश्वर की धुँधली समझ भी नहीं आ सकती, एक स्पष्ट अवधारणा की तो बात ही छोड़ दो; यह बस तुम्हारी कल्पना को और उत्तेजित करता है, तुम्हें ठीक से परिभाषित करने से रोकता है कि परमेश्वर का स्वभाव एवं सार क्या है और तुम्हारी कल्पना से उपजी अनिश्चितताएँ निरपवाद रूप से तुम्हारे दिल को संदेहों से भर देंगी। जब तुम किसी चीज़ के विषय में निश्चित नहीं हो पाते और फिर भी उसे समझने की कोशिश करते हो, तो तुम्हारे हृदय में हमेशा विरोधाभास एवं संघर्ष होंगे और यहाँ तक कि अशांति का भाव होगा जिससे तुम गुमराह और भ्रमित महसूस करोगे। क्या यह एक अत्यंत दुखदायी बात नहीं कि तुम परमेश्वर को खोजना चाहते हो, परमेश्वर को जानना चाहते हो और उसे साफ-साफ देखना चाहते हो, लेकिन कभी भी उत्तर खोजने में सक्षम नहीं हो पाते? अवश्य ही, ये शब्द केवल उन लोगों पर लक्षित हैं जो भयवश परमेश्वर में श्रद्धा रखना चाहते हैं और उसे संतुष्ट करना चाहते हैं। ऐसी चीज़ों पर ध्यान न देने वालों के लिए, यह वास्तव में मायने नहीं रखता क्योंकि वे जो सबसे अधिक आशा करते हैं वह यह है कि परमेश्वर की यथार्थता और अस्तित्व केवल एक किंवदंती या कल्पना है, इसलिए वे जो चाहें कर सकते हैं, इसलिए वे सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण हो सकते हैं, इसलिए वे परिणामों की परवाह किए बिना बुरे कर्म कर सकते हैं, इसलिए उन्हें सज़ा का सामना नहीं करना पड़ेगा या कोई ज़िम्मेदारी नहीं उठानी पड़ेगी और यहाँ तक कि परमेश्वर जो कुछ भी कुकर्मियों के बारे में कहता है, वे चीज़ें उन पर लागू नहीं होंगी। ये लोग परमेश्वर के स्वभाव को समझने के इच्छुक नहीं हैं। ये लोग बीमार हैं और परमेश्वर और उसके बारे में सब कुछ जानने की कोशिश करते-करते थक चुके हैं। वे पसंद करेंगे कि परमेश्वर अस्तित्व में न हो। ये लोग परमेश्वर का विरोध करते हैं और ये ऐसे लोग हैं, जिन्हें त्याग दिया जाएगा।

इसके आगे, हम नूह की कहानी और यह किस प्रकार परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव और स्वयं परमेश्वर के विषय से संबंधित है, इस पर चर्चा करेंगे।

पवित्र शास्त्रों के इस भाग में तुम लोग परमेश्वर को नूह के साथ क्या करते हुए देखते हो? कदाचित यहाँ बैठा हुआ प्रत्येक जन पवित्र शास्त्र को पढ़ने से इसके बारे में कुछ न कुछ जानता है : परमेश्वर ने नूह से एक जहाज़ बनवाया, फिर परमेश्वर ने जलप्रलय से संसार को नष्ट किया। परमेश्वर ने नूह से अपने आठ लोगों के परिवार को बचाने के लिए जहाज़ का निर्माण कराया, जिससे वे मानव जाति की अगली पीढ़ी के लिए जीवित रह पाए और पूर्वज बन सके। आओ अब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ें।

ख. नूह

1) परमेश्वर संसार को जलप्रलय से नष्ट करने का इरादा करता है और नूह को एक जहाज बनाने का निर्देश देता है

उत्पत्ति 6:9-14 नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था; और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा। और नूह से शेम, और हाम, और येपेत नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी। और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था। तब परमेश्वर ने नूह से कहा, "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा। इसलिये तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले, उसमें कोठरियाँ बनाना, और भीतर-बाहर उस पर राल लगाना।"

उत्पत्ति 6:18-22 "परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ; इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना। और सब जीवित प्राणियों में से तू एक एक जाति के दो दो, अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज में ले जाकर, अपने साथ जीवित रखना। एक एक जाति के पक्षी, और एक एक जाति के पशु, और एक एक जाति के भूमि पर रेंगनेवाले, सब में से दो दो तेरे पास आएँगे, कि तू उनको जीवित रखे। और भाँति भाँति का भोज्य पदार्थ जो खाया जाता है, उनको तू लेकर अपने पास इकट्ठा कर रखना; जो तेरे और उनके भोजन के लिये होगा।" परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।

इन अंशों को पढ़ने के बाद क्या अब तुम लोगों को सामान्य समझ है कि नूह कौन था? नूह किस प्रकार का व्यक्ति था? मूल पाठ है : "नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था।" वर्तमान लोगों की समझ के अनुसार, उन दिनों, एक "धर्मी पुरुष" किस प्रकार का व्यक्ति होता था? एक धर्मी पुरुष को पूर्ण होना चाहिए। क्या तुम लोग जानते हो कि यह पूर्ण व्यक्ति मनुष्य की दृष्टि में पूर्ण था या परमेश्वर की दृष्टि में पूर्ण था? बिना किसी शंका के, यह पूर्ण व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में पूर्ण था और मनुष्य की दृष्टि में नहीं। यह तो निश्चित है! ऐसा इसलिए क्योंकि मनुष्य अंधा है और देख नहीं सकता, और सिर्फ परमेश्वर ही पूरी पृथ्वी और हर एक व्यक्ति को देखता है, सिर्फ परमेश्वर ही जानता था कि नूह एक पूर्ण व्यक्ति था। इसलिए, संसार को जलप्रलय से नष्ट करने की परमेश्वर की योजना उस क्षण शुरू हो गई थी, जब उसने नूह को बुलाया था।

उस युग में, परमेश्वर ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए नूह को बुलाने का इरादा किया। यह कार्य क्यों करना पड़ा? क्योंकि उस घड़ी परमेश्वर के हृदय में एक योजना थी। उसकी योजना जलप्रलय से संसार का नाश करने की थी। वह संसार का नाश क्यों करता? यहाँ कहा गया है : "उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी।" तुम लोग इस वाक्यांश से क्या समझते हो "पृथ्वी उपद्रव से भर गई थी"? यह पृथ्वी पर एक घटना थी, जब संसार और इसके लोग चरमावस्था तक भ्रष्ट हो गए थे; अत: "पृथ्वी उपद्रव से भर गई थी", आज की बोलचाल में, "उपद्रव से भर गई थी" का मतलब होगा कि सब कुछ अस्त-व्यस्त है। मनुष्य के लिए, इसका मतलब था कि जीवन के हर पहलू में व्यवस्था दिखनी बंद हो गई थी और सब कुछ अराजक और अनियंत्रित हो गया था। परमेश्वर की नज़रों में, इसका मतलब था कि संसार के लोग बहुत ही भ्रष्ट हो गए थे। लेकिन किस हद तक भ्रष्ट? उस हद तक भ्रष्ट कि परमेश्वर उन्हें अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता था या और अधिक धीरज नहीं धर सकता था। उस हद तक भ्रष्ट कि परमेश्वर ने उन्हें नष्ट करने का इरादा किया। जब परमेश्वर ने संसार को नष्ट करने की ठान ली, तो उसने जहाज़ बनाने के लिए किसी को ढूंढने की योजना बनाई। परमेश्वर ने इस कार्य को करने के लिए नूह को चुना; अर्थात नूह को जहाज़ बनाने दिया। उसने नूह को क्यों चुना? परमेश्वर की नज़रों में, नूह एक धार्मिक पुरुष था; और चाहे परमेश्वर ने उसे कुछ भी करने का निर्देश दिया, नूह ने वैसा ही किया। इसका मतलब है कि नूह वह सब करने को तैयार था, जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए कहा था। परमेश्वर अपने साथ कार्य करने के लिए ऐसा कोई चाहता था, कोई ऐसा जो कुछ उसने सौंपा था उसे पूर्ण कर सके—पृथ्वी पर उसके कार्य को पूर्ण कर सके। उस समय अतीत में, क्या नूह के अलावा कोई और व्यक्ति था, जो ऐसे कार्य को पूर्ण कर सकता था? निश्चित रूप से नहीं! नूह ही एकमात्र उम्मीदवार था, एकमात्र व्यक्ति जो उसे पूर्ण कर सकता था, जिसे परमेश्वर ने सौंपा था और इसलिए परमेश्वर ने उसे चुना। लेकिन क्या लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर का दायरा एवं मापदंड अब वैसे ही हैं, जैसे तब थे? उत्तर यह है कि इसमें निश्चित रूप से एक अंतर है! और मैं यह क्यों पूछता हूँ? उस समय परमेश्वर की नज़रों में केवल नूह ही एक धार्मिक पुरुष था, इसका तात्पर्य यह हुआ कि न तो उसकी पत्नी धार्मिक थी और न उसके बेटे और बहूएँ धार्मिक लोग थे, लेकिन परमेश्वर ने नूह के कारण इन लोगों को भी बख्श दिया। परमेश्वर ने उनसे उस तरह अपेक्षा नहीं की थी, जैसे वह आज करता है और इसके बजाय उसने नूह के परिवार के सभी आठ सदस्यों को जीवित रखा। उन्होंने नूह की धार्मिकता के कारण परमेश्वर के आशीष

को प्राप्त किया। नूह के बिना उनमें से कोई भी उस कार्य को पूर्ण नहीं कर सकता था जो परमेश्वर ने सौंपा था। इसलिए, नूह ही एकमात्र व्यक्ति था, जिसे संसार के उस विनाश में जीवित बचना था और अन्य लोग बस अतिरिक्त सहायक लाभार्थी थे। यह दर्शाता है कि परमेश्वर के प्रबंधकीय कार्य को आधिकारिक रूप से प्रारंभ करने से पहले के युग में, लोगों से व्यवहार करने और उनसे अपेक्षा करने के उसके सिद्धांत एवं मापदंड अपेक्षाकृत शिथिल थे। आज के लोगों के लिए, जिस तरह परमेश्वर ने नूह के परिवार के आठ सदस्यों से व्यवहार किया, उसमें "निष्पक्षता" का अभाव प्रतीत होता है। किंतु कार्य के उस परिमाण, जिसे वह अब लोगों पर करता है और उसके द्वारा दिये जाने वाले वचन की बड़ी मात्रा की तुलना में, परमेश्वर का नूह के परिवार के आठ लोगों से किया व्यवहार महज़ उस समय उसके कार्य की पृष्ठभूमि के मद्देनज़र एक कार्य सिद्धांत था। तुलनात्मक रूप से, क्या नूह के परिवार के आठ लोगों ने परमेश्वर से ज़्यादा प्राप्त किया था या आज के लोग ज़्यादा प्राप्त करते हैं?

नूह का बुलाया जाना एक साधारण तथ्य है, परंतु वह मुख्य बिंदु जिसके विषय में हम बात कर रहे हैं—परमेश्वर का स्वभाव, परमेश्वर की इच्छा एवं उसका सार—वह इतना साधारण नहीं है। परमेश्वर के इन विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए, हमें पहले समझना होगा कि परमेश्वर किस प्रकार के व्यक्ति को बुलाने की इच्छा करता है, और इसके माध्यम से, हमें उसके स्वभाव, इच्छा एवं सार को समझना होगा। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः परमेश्वर की नज़रों में, यह किस प्रकार का व्यक्ति होता है, जिसे वह बुलाता है? यह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जो उसके वचनों को सुन सके, जो उसके निर्देशों का अनुसरण कर सके। साथ ही, यह ऐसा व्यक्ति भी होना चाहिए, जिसमें ज़िम्मेदारी की भावना हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन को ऐसी ज़िम्मेदारी एवं कर्तव्य मानकर क्रियान्वित करेगा, जिसे निभाने के लिए वो बाध्य है। तब क्या इस व्यक्ति को ऐसा व्यक्ति होने की आवश्यकता है, जो परमेश्वर को जानता है? नहीं। उस समय अतीत में, नूह ने परमेश्वर की शिक्षाओं के बारे में बहुत कुछ नहीं सुना था या परमेश्वर के किसी कार्य का अनुभव नहीं किया था। इसलिए, परमेश्वर के बारे में नूह का ज्ञान बहुत ही कम था। हालाँकि यहाँ लिखा है कि नूह परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा, तो क्या उसने कभी परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखा था? उत्तर है, पक्के तौर पर नहीं! क्योंकि उन दिनों, सिर्फ परमेश्वर के दूत ही लोगों के बीच आते थे। जबकि वे चीज़ों की कथनी और करनी में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सकते थे, वे महज परमेश्वर की इच्छा एवं इरादों को सूचित कर रहे होते थे। परमेश्वर का व्यक्तित्व मनुष्य पर आमने-सामने प्रकट नहीं हुआ था। पवित्र शास्त्र

के इस भाग में, हम सब मूल रूप से यही देखते हैं कि नूह को क्या करना था और उसके लिए परमेश्वर के निर्देश क्या थे। अतः वह सार क्या था जिसे यहाँ परमेश्वर द्वारा व्यक्त किया गया था? सब कुछ जो परमेश्वर करता है, उसकी योजना सटीकता के साथ बनाई जाती है। जब वह किसी चीज़ या परिस्थिति को घटित होते देखता है, तो उसकी दृष्टि में इसे नापने के लिए एक मापदंड होता है और यह मापदंड निर्धारित करता है कि इससे निपटने के लिए वह किसी योजना की शुरुआत करता है या नहीं या उसे इस चीज़ एवं परिस्थिति के साथ किस प्रकार निपटना है। वह उदासीन नहीं है या उसमें सभी चीज़ों के प्रति भावनाओं की कमी नहीं है। असल में इसका पूर्णत: विपरीत है। यहाँ एक पद है, जिसे परमेश्वर ने नूह से कहा था : "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा।" जब परमेश्वर ने यह कहा तो क्या उसका मतलब था वह सिर्फ मनुष्यों का विनाश कर रहा था? नहीं! परमेश्वर ने कहा कि वह देह वाले सभी जीवित प्राणियों का विनाश करने जा रहा था। परमेश्वर ने विनाश क्यों चाहा? यहाँ परमेश्वर के स्वभाव का एक और प्रकाशन है; परमेश्वर की दृष्टि में, मनुष्य की भ्रष्टता के प्रति, सभी देहधारियों की अशुद्धता, उपद्रव एवं अवज्ञा के प्रति उसके धीरज की एक सीमा है। उसकी सीमा क्या है? यह ऐसा है जैसा परमेश्वर ने कहा था : "और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था।" इस वाक्यांश "क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कोई भी जीवित प्राणी, इनमें परमेश्वर का अनुसरण करने वाले, वे जो परमेश्वर का नाम पुकारते थे, ऐसे लोग जो किसी समय परमेश्वर को होमबलि चढ़ाते थे, ऐसे लोग जो मौखिक रूप से परमेश्वर को स्वीकार करते थे और यहाँ तक कि परमेश्वर की स्तुति भी करते थे—जब एक बार उनका व्यवहार भ्रष्टता से भर गया और परमेश्वर की दृष्टि में आ गया, तो उसे उनका नाश करना होगा। यह परमेश्वर की सीमा थी। अतः परमेश्वर किस हद तक मनुष्य एवं सभी देहधारियों की भ्रष्टता के प्रति सहनशील बना रहा? उस हद तक जब सभी लोग, चाहे वे परमेश्वर के अनुयायी हों या अविश्वासी, सही मार्ग पर नहीं चल रहे थे। उस हद तक जब मनुष्य केवल नैतिक रूप से भ्रष्ट और बुराई से भरा हुआ नहीं था, बल्कि जहाँ कोई व्यक्ति नहीं था, जो परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता था, किसी ऐसे व्यक्ति के होने की तो बात ही छोड़ दीजिए जो विश्वास करता हो कि परमेश्वर द्वारा इस संसार पर शासन किया जाता है और यह कि परमेश्वर लोगों के लिए प्रकाश का और सही मार्ग

ला सकता है। उस हद तक जहाँ मनुष्य ने परमेश्वर के अस्तित्व से घृणा की और परमेश्वर को अस्तित्व में रहने की अनुमति नहीं दी। जब एक बार मनुष्य का भ्रष्टाचार इस बिंदु पर पहुँच गया, तो परमेश्वर इसे और अधिक नहीं सह सका। उसका स्थान कौन लेता? परमेश्वर के क्रोध और परमेश्वर के दंड का आगमन। क्या यह परमेश्वर के स्वभाव का एक आंशिक प्रकाशन नहीं था? इस वर्तमान युग में, क्या ऐसे कोई मनुष्य नहीं हैं, जो परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक हों? क्या ऐसे कोई मनुष्य नहीं हैं, जो परमेश्वर की दृष्टि में पूर्ण हों? क्या यह युग ऐसा युग है, जिसके अंतर्गत परमेश्वर की दृष्टि में पृथ्वी पर सभी देहधारियों का व्यवहार भ्रष्ट हो गया है? आज के दिन और युग में, ऐसे लोगों को छोड़कर जिन्हें परमेश्वर पूर्ण करना चाहता है और जो परमेश्वर का अनुसरण और उसके उद्धार को स्वीकार कर सकते हैं, क्या सभी देहधारी लोग परमेश्वर के धीरज की सीमा को चुनौती नहीं दे रहे हैं? क्या सभी चीज़ें, जो तुम लोगों के आसपास घटित होती हैं, जिन्हें तुम लोग अपनी आँखों से देखते हो और अपने कानों से सुनते हो और इस संसार में व्यक्तिगत रूप से अनुभव करते हो, उपद्रव से भरी हुई नहीं हैं? परमेश्वर की दृष्टि में, क्या एक ऐसे संसार एवं ऐसे युग को समाप्त नहीं कर देना चाहिए? यद्यपि इस वर्तमान युग की पृष्ठभूमि नूह के समय की पृष्ठभूमि से पूर्णतः अलग है, फिर भी वे भावनाएँ एवं क्रोध जो मनुष्य की भ्रष्टता के प्रति परमेश्वर में है, वे वैसी ही बना रहता है। परमेश्वर अपने कार्य के कारण सहनशील होने में समर्थ है, किन्तु सब प्रकार की परिस्थितियों एवं हालात के अनुसार, परमेश्वर की दृष्टि में इस संसार को बहुत पहले ही नष्ट कर दिया जाना चाहिए था। जब जलप्रलय द्वारा संसार का विनाश किया गया था, उस लिहाज से तो परिस्थितियाँ कहीं ज़्यादा खराब हैं। किंतु अंतर क्या है? यह भी ऐसी चीज़ है, जो परमेश्वर के हृदय को अत्यंत दुःखी करती है, और कदाचित कुछ ऐसा है, जिसकी तुम लोगों में से कोई भी सराहना नहीं कर सकता।

जब उसने जलप्रलय द्वारा संसार का नाश किया, तब परमेश्वर नूह को जहाज़ बनाने और कुछ तैयारी के काम के लिए बुलाने में सक्षम था। परमेश्वर एक पुरुष—नूह—को बुला सकता था कि वह उसके लिए कार्यों की इन श्रृंखलाओं को अंजाम दे। किंतु इस वर्तमान युग में, परमेश्वर के पास कोई नहीं है, जिसे वो बुलाए। ऐसा क्यों है? हर एक व्यक्ति जो यहाँ बैठा है, वह शायद उस कारण को बहुत अच्छी तरह समझता और जानता है। क्या तुम चाहते हो कि मैं इसे बोलकर बताऊँ? ज़ोर से कहने से हो सकता है कि तुम लोगों के सम्मान को चोट पहुँचे या सब परेशान हो जाएँ। कुछ लोग कह सकते हैं : "हालाँकि परमेश्वर की दृष्टि में हम लोग धार्मिक और पूर्ण नहीं हैं, फिर भी यदि परमेश्वर हमें कुछ करने के लिए निर्देश देता है,

तो हम अभी भी इसे करने में समर्थ होंगे। इससे पहले, जब उसने कहा कि एक विनाशकारी तबाही आ रही थी, तो हमने भोजन एवं ऐसी चीज़ों को तैयार करना शुरू कर दिया था, जिनकी आवश्यकता किसी आपदा में होगी। क्या यह सब परमेश्वर की माँगों के अनुसार नहीं किया गया था? क्या हम सचमुच में परमेश्वर के कार्य के साथ सहयोग नहीं कर रहे थे? जो चीज़ें हमने कीं क्या उनकी तुलना जो कुछ नूह ने किया, उससे नहीं की जा सकती? हमने जो किया क्या वो सच्ची आज्ञाकारिता नहीं है? क्या हम परमेश्वर के निर्देशों का अनुसरण नहीं कर रहे थे? क्या जो परमेश्वर ने कहा हमने वो इसलिए नहीं किया क्योंकि हमें परमेश्वर के वचनों में विश्वास है? तो परमेश्वर अभी भी दुःखी क्यों है? परमेश्वर क्यों कहता है कि उसके पास बुलाने के लिए कोई भी नहीं है?" क्या तुम लोगों के कार्यों और नूह के कार्यों के बीच कोई अंतर है? अंतर क्या है? (आपदा के लिए आज भोजन तैयार करना हमारा अपना इरादा था।) (हमारे कार्य "धार्मिक" नहीं कहला सकते हैं, जबकि नूह परमेश्वर की दृष्टि में एक धार्मिक पुरुष था।) जो कुछ तुमने कहा वह बहुत गलत नहीं है। जो नूह ने किया वह आवश्यक रूप से उससे अलग है, जो लोग अब कर रहे हैं। जब नूह ने वैसा किया जैसा परमेश्वर ने निर्देश दिया था, तो वह नहीं जानता था कि परमेश्वर के इरादे क्या थे। उसे नहीं पता था कि परमेश्वर कौनसा कार्य पूरा करना चाहता था। परमेश्वर ने नूह को सिर्फ एक आज्ञा दी थी और अधिक स्पष्टीकरण के बिना उसे कुछ करने का निर्देश दिया था, नूह ने आगे बढ़कर इसे कर दिया। उसने गुप्त रूप से परमेश्वर के इरादों को जानने की कोशिश नहीं की, न ही उसने परमेश्वर का विरोध किया या निष्ठाहीनता दिखाई। वह बस गया और एक शुद्ध एवं सरल हृदय के साथ इसे तदनुसार कर डाला। परमेश्वर उससे जो कुछ भी करवाना चाहता था, उसने किया और कार्यों को करने के लिए परमेश्वर के वचनों को मानने एवं सुनने में विश्वास उसका सहारा बना। इस प्रकार जो कुछ परमेश्वर ने उसे सौंपा था, उसने ईमानदारी एवं सरलता से उसे निपटाया था। उसका सार—उसके कार्यों का सार आज्ञाकारिता थी, अपने अनुमान लगाना या प्रतिरोध नहीं था और इसके अतिरिक्त, अपनी व्यक्तिगत रुचियों और अपने लाभ एवं हानि के विषय में सोचना नहीं था। इसके आगे, जब परमेश्वर ने कहा कि वह जलप्रलय से संसार का नाश करेगा, तो नूह ने नहीं पूछा कब या उसने नहीं पूछा कि चीज़ों का क्या होगा और उसने निश्चित तौर पर परमेश्वर से नहीं पूछा कि वह किस प्रकार संसार को नष्ट करने जा रहा था। उसने बस वैसा ही किया, जैसा परमेश्वर ने निर्देश दिया था। हालाँकि परमेश्वर चाहता था कि इसे बनाया जाए और जिससे बनाया जाए, उसने बिलकुल वैसा ही किया, जैसा परमेश्वर ने उसे कहा था और तुरंत कार्रवाई भी शुरू कर

दी। उसने परमेश्वर को संतुष्ट करने की इच्छा के रवैये के साथ परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार काम किया। क्या वह आपदा से खुद को बचाने में सहायता करने के लिए यह कर रहा था? नहीं। क्या उसने परमेश्वर से पूछा कि संसार को नष्ट होने में कितना समय बाकी है? उसने नहीं पूछा। क्या उसने परमेश्वर से पूछा या क्या वह जानता था कि जहाज़ बनाने में कितना समय लगेगा? वह यह भी नहीं जानता था। उसने बस आज्ञा मानी, सुना और तदनुसार कार्य किया। अब के लोग वैसे नहीं हैं : जैसे ही परमेश्वर के वचन से हल्की सी जानकारी निकलती है, जैसे ही लोग परेशानी या समस्या के किसी चिह्न का आभास करते हैं, वे किसी भी चीज़ और कीमत की परवाह किए बगैर, आपदा के बाद क्या खाएँगे, क्या पियेंगे एवं क्या उपयोग करेंगे, इसकी तैयारी करने के लिए हरकत में आ जाते हैं, यहाँ तक कि विपत्ति से बच निकलने के अपने मार्गों की योजना बना लेते हैं। इससे भी अधिक दिलचस्प तो यह है कि इस अहम घड़ी में, मानवीय दिमाग "काम पूरा करने" में बहुत अच्छे होते हैं। उन परिस्थितियों में जहाँ परमेश्वर ने कोई निर्देश नहीं दिया है, मनुष्य बिलकुल उपयुक्त ढंग से हर चीज़ की योजना बना सकता है। तुम ऐसी योजनाओं का वर्णन करने के लिए "पूर्ण" शब्द का उपयोग कर सकते हो। जहाँ तक इसकी बात है कि परमेश्वर क्या कहता है, परमेश्वर के इरादे क्या हैं या परमेश्वर क्या चाहता है, कोई भी परवाह नहीं करता और न कोई इसकी सराहना करने की कोशिश करता है। क्या यह आज के लोगों और नूह के बीच में सबसे बड़ा अंतर नहीं है?

नूह की कहानी के इस अभिलेख में, क्या तुम लोग परमेश्वर के स्वभाव के एक भाग को देखते हो? मनुष्य की भ्रष्टता, गंदगी एवं उपद्रव के प्रति परमेश्वर के धीरज की एक सीमा है। जब वह उस सीमा तक पहुँच जाता है, तो वह और अधिक धीरज नहीं रखेगा और इसके बजाय वह अपने नए प्रबंधन और नई योजना को शुरू करेगा, जो उसे करना है उसे प्रारम्भ करेगा, अपने कर्मों और अपने स्वभाव के दूसरे पहलू को प्रकट करेगा। उसका यह कार्य यह दर्शाने के लिए नहीं है कि मनुष्य द्वारा कभी उसे नाराज़ नहीं किया जाना चाहिए या यह कि वह अधिकार एवं क्रोध से भरा हुआ है और यह इस बात को दर्शाने के लिए नहीं है कि वह मानवता का नाश कर सकता है। बात यह है कि उसका स्वभाव एवं उसका पवित्र सार इस प्रकार की मानवता को परमेश्वर के सामने जीवन बिताने हेतु और उसके प्रभुत्व के अधीन जीवन जीने हेतु न तो और अनुमति दे सकता है और न धीरज रख सकता है। कहने का तात्पर्य है, जब सारी मानवजाति उसके विरुद्ध है, जब सारी पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं है जिसे वह बचा सके, तो ऐसी मानवता के लिए उसके पास और अधिक धीरज नहीं होगा और वह बिना किसी संदेह के इस प्रकार की मानवता का नाश करने

के लिए अपनी योजना को कार्यान्वित करेगा। परमेश्वर के द्वारा ऐसा कार्य उसके स्वभाव से निर्धारित होता है। यह एक आवश्यक परिणाम है और ऐसा परिणाम है, जिसे परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन प्रत्येक सृजित प्राणी को सहना होगा। क्या यह नहीं दर्शाता है कि इस वर्तमान युग में, परमेश्वर अपनी योजना को पूर्ण करने और उन लोगों को बचाने के लिए जिन्हें वह बचाना चाहता है और इंतज़ार नहीं कर सकता? इन परिस्थितियों में, परमेश्वर किस बात की सबसे अधिक परवाह करता है? इसकी नहीं कि किस प्रकार वे जो उसका बिलकुल अनुसरण नहीं करते या वे जो हर तरह से उसका विरोध करते हैं, वे उससे कैसा व्यवहार करते हैं या उसका कैसे प्रतिरोध करते हैं, या मानवजाति किस प्रकार उस पर कलंक लगा रही है। वह केवल इसकी परवाह करता है कि वे लोग जो उसका अनुसरण करते हैं, वे जो उसकी प्रबंधन योजना में उसके उद्धार के विषय हैं, उन्हें उसके द्वारा पूरा किया गया है या नहीं, कि वे उसकी संतुष्टि के योग्य बन गए हैं या नहीं। जहाँ तक उसका अनुसरण करने वालों के अलावा अन्य लोगों की बात है, वह मात्र कभी-कभार ही अपने क्रोध को व्यक्त करने के लिए थोड़ा सा दंड देता है। उदाहरण के लिए: सुनामी, भूकंप, ज्वालामुखी का विस्फोट। ठीक उसी समय, वह उनको भी मजबूती से बचा रहा होता और देखरेख कर रहा होता है, जो उसका अनुसरण करते हैं और जिन्हें उसके द्वारा बचाया जाना है। परमेश्वर का स्वभाव यह है : एक ओर, वह उन लोगों के प्रति अधिकतम धीरज एवं सहनशीलता रख सकता है, जिन्हें वह पूर्ण बनाने का इरादा करता है और उनके लिए वह तब तक इंतज़ार कर सकता है, जब तक वह संभवत: कर सकता है; दूसरी ओर, परमेश्वर शैतान-जैसे लोगों से, जो उसका अनुसरण नहीं करते और उसका विरोध करते हैं, अत्यंत नफ़रत एवं घृणा करता है। यद्यपि वह इसकी परवाह नहीं करता कि ये शैतान-जैसे लोग उसका अनुसरण या उसकी आराधना करते हैं या नहीं, वह तब भी उनसे घृणा करता है, जबकि उसके हृदय में उनके लिए धीरज होता है और चूँकि वह इन शैतान-जैसे लोगों के अंत को निर्धारित करता है, इसलिए वह अपनी प्रबंधकीय योजना के चरणों के आगमन का भी इंतज़ार कर रहा होता है।

आओ, हम अगले अंश को देखें।

2) जलप्रलय के बाद नूह के लिए परमेश्वर की आशीष

उत्पत्ति 9:1-6 फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ। तुम्हारा डर और भय पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पक्षियों, और भूमि पर के सब रेंगनेवाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा: ये सब

तुम्हारे वश में कर दिए जाते हैं। सब चलनेवाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे; जैसा तुम को हरे हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सब कुछ देता हूँ। पर मांस को प्राण समेत अर्थात् लहू समेत तुम न खाना। और निश्चय ही मैं तुम्हारे लहू अर्थात् प्राण का बदला लूँगा: सब पशुओं और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लूँगा; मनुष्य के प्राण का बदला मैं एक एक के भाई बन्धु से लूँगा। जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है।"

तुम लोग इस अंश से क्या समझते हो? मैंने इन पदों को क्यों चुना? मैंने जहाज़ पर नूह और उसके परिवार के जीवन से उद्धरण क्यों नहीं लिया? क्योंकि उस जानकारी का उस विषय से ज़्यादा संबंध नहीं है जिस पर आज हम बातचीत कर रहे हैं। जिस पर हम ध्यान दे रहे हैं, वह है परमेश्वर का स्वभाव। यदि तुम लोग उन विवरणों के विषय में जानना चाहते हो, तो तुम लोग बाइबल उठाकर स्वयं पढ़ सकते हो। यहाँ हम उसके बारे में बात नहीं करेंगे। वह मुख्य चीज जिसके बारे में हम आज बात कर रहे हैं, वह है कि परमेश्वर के कार्यों को कैसे जानें।

जब नूह ने परमेश्वर के निर्देशों को स्वीकारा, जहाज़ बनाया और परमेश्वर द्वारा संसार का नाश करने के लिए जलप्रलय का उपयोग करने के दौरान जीवित रहा, उसके बाद आठ लोगों का उसका पूरा परिवार जीवित बच गया। नूह के परिवार के आठ लोगों को छोड़कर, सारी मानवजाति का नाश कर दिया गया था और पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों का नाश कर दिया गया था। नूह को परमेश्वर ने आशीषें दीं और उससे और उसके बेटों से कुछ बातें कहीं। ये बातें वे थीं, जिन्हें परमेश्वर उसे प्रदान कर रहा था और उसके लिए परमेश्वर की आशीष भी थीं। यह वह आशीष एवं प्रतिज्ञा है, जिसे परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को देता है, जो उसे सुन सकता है और उसके निर्देशों को स्वीकार कर सकता है और साथ ही ऐसा तरीका भी है, जिससे परमेश्वर लोगों को प्रतिफल देता है। कहने का तात्पर्य है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि नूह परमेश्वर की दृष्टि में एक पूर्ण पुरुष या एक धार्मिक पुरुष था या नहीं और इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह परमेश्वर के बारे में कितना जानता था, संक्षेप में, नूह और उसके सभी तीन पुत्रों ने परमेश्वर के वचनों को सुना था, परमेश्वर के कार्य में सहयोग किया था और वही किया था, जिसे परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार उनसे करने की अपेक्षा थी। परिणामस्वरूप, जलप्रलय के द्वारा संसार के विनाश के बाद उन्होंने परमेश्वर के लिए मनुष्यों एवं विभिन्न प्रकार के जीवित प्राणियों को संरक्षित किया था और परमेश्वर की प्रबंधकीय योजना के अगले चरण में बड़ा योगदान दिया था। वह सब कुछ जो उसने किया, उसके कारण परमेश्वर ने

उसे आशीष दी। शायद आज के लोगों के लिए, जो कुछ नूह ने किया था वह उल्लेख करने के भी लायक नहीं था। कुछ लोग सोच सकते हैं : नूह ने कुछ भी नहीं किया था; परमेश्वर ने उसे बचाने के लिए अपना मन बना लिया था, अतः उसे निश्चित रूप से बचाया ही जाना था। उसका जीवित बचना उसकी अपनी उपलब्धियों की वजह से नहीं था। यह वह है, जिसे परमेश्वर घटित करना चाहता था, क्योंकि मनुष्य निष्क्रिय है। लेकिन यह वह नहीं, जो परमेश्वर सोच रहा था। परमेश्वर को, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई व्यक्ति महान है या मामूली, जब तक वे उसे सुन सकते हैं, उसके निर्देशों और जो कुछ वह सौंपता है उसका पालन कर सकते हैं और उसके कार्य, उसकी इच्छा एवं उसकी योजना के साथ सहयोग कर सकते हैं, ताकि उसकी इच्छा एवं उसकी योजना निर्विघ्न से पूरी की जा सके, तो ऐसा आचरण उसके द्वारा स्मरण रखने और उसकी आशीष प्राप्त करने के योग्य है। परमेश्वर ऐसे लोगों को बहुमूल्य समझता है और वह उनके कार्यों एवं अपने लिए उनके प्रेम एवं उनके स्नेह को हृदय में संजोता है। यह परमेश्वर का रवैया है। तो परमेश्वर ने नूह को आशीष क्यों दी? क्योंकि परमेश्वर इसी तरह ऐसे कार्यों एवं मनुष्य की आज्ञाकारिता से पेश आता है।

नूह के विषय में परमेश्वर की आशीष के लिहाज से, कुछ लोग कहेंगे : "यदि मनुष्य परमेश्वर को सुनता है और परमेश्वर को संतुष्ट करता है, तो परमेश्वर को मनुष्य को आशीष देना चाहिए। क्या कहे बिना ही ऐसा नहीं होता?" क्या हम ऐसा कह सकते हैं? कुछ लोग कहते हैं : "नहीं।" हम ऐसा क्यों नहीं कह सकते? कुछ लोग कहते हैं : "मनुष्य परमेश्वर की आशीष का आनंद उठाने के लायक नहीं है।" यह पूर्णतः सही नहीं है। क्योंकि जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के सौंपे हुए को स्वीकार करता है, तो परमेश्वर के पास न्याय करने के लिए एक मापदंड होता है कि उस व्यक्ति के कार्य अच्छे हैं या बुरे और उस व्यक्ति ने आज्ञा का पालन किया है या नहीं और उस व्यक्ति ने परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट किया है या नहीं और वे मानक पूरे करते हैं या नहीं। परमेश्वर जिसकी परवाह करता है वह है व्यक्ति का हृदय, न कि ऊपरी तौर पर किए गए उसके कार्य। ऐसी बात नहीं है कि परमेश्वर को किसी व्यक्ति को तब तक आशीष देना चाहिए जब तक वे कुछ करते हैं, इसकी परवाह किए बिना कि वे इसे कैसे करते हैं। यह परमेश्वर के बारे में लोगों की ग़लतफ़हमी है। परमेश्वर सिर्फ चीज़ों का अंतिम परिणाम ही नहीं देखता, बल्कि इस पर अधिक ज़ोर देता है कि किसी व्यक्ति का हृदय कैसा है और चीज़ों के आगे बढ़ने के दौरान किसी व्यक्ति का रवैया कैसा रहता है और वह यह देखता है कि उसके हृदय में आज्ञाकारिता, विचार एवं परमेश्वर को संतुष्ट करने की

इच्छा है या नहीं। उस समय नूह परमेश्वर के बारे में कितना जानता था? क्या यह उतना था, जितना इन सिद्धांतों को अब तुम लोग जानते हो? परमेश्वर की अवधारणाएँ एवं उसका ज्ञान जैसे सत्य के पहलुओं के लिहाज से क्या उसने उतनी सिंचाई एवं चरवाही पाई थी, जितनी तुम लोगों ने पाई है? नहीं, उसने नहीं पाई थीं! लेकिन एक तथ्य है जिसे नकारा नहीं जा सकता : चेतना में, मन में और यहाँ तक कि आज के लोगों के हृदय की गहराई में भी, परमेश्वर के विषय में उनकी अवधारणाएँ और रवैया अज्ञात एवं अस्पष्ट हैं। तुम लोग यहाँ तक कह सकते हो कि लोगों का एक हिस्सा परमेश्वर के अस्तित्व के प्रति एक नकारात्मक रवैया रखता है। लेकिन नूह के हृदय एवं चेतना में, परमेश्वर का अस्तित्व परम एवं ज़रा भी संदेह के परे था, और इस प्रकार परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता मिलावट रहित थी और परीक्षा का सामना कर सकती थी। उसका हृदय शुद्ध एवं परमेश्वर के प्रति खुला हुआ था। उसे परमेश्वर के हर एक वचन का अनुसरण करने हेतु अपने आपको आश्वस्त करने के लिए सिद्धांतों के बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं थी, न ही उसे परमेश्वर के अस्तित्व को साबित करने के लिए बहुत सारे तथ्यों की आवश्यकता थी, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने सौंपा था, वह उसे स्वीकार कर सके और जो कुछ भी करने के लिए परमेश्वर ने उसे अनुमति दी थी, वह उसे करने के योग्य हो सके। यह नूह और आज के लोगों के बीच आवश्यक अंतर है। साथ ही यह बिलकुल सही परिभाषा भी है कि परमेश्वर की दृष्टि में एक पूर्ण मनुष्य कैसा होता है। परमेश्वर जो चाहता है, वे नूह जैसे लोग हैं। वह उस प्रकार का व्यक्ति है, जिसकी परमेश्वर प्रशंसा करता है और बिलकुल उसी प्रकार का व्यक्ति है, जिसे परमेश्वर आशीष देता है। क्या तुम लोगों ने इससे कोई प्रबोधन प्राप्त किया है? लोग लोगों को बाहर से देखते हैं, जबकि जो परमेश्वर देखता है वह लोगों के हृदय एवं उनके सार हैं। परमेश्वर किसी को भी अपने प्रति अधूरा-मन या शंका रखने की अनुमति नहीं देता, न ही वह लोगों को किसी तरीके से उस पर संदेह करने या उसकी परीक्षा लेने की इजाज़त देता है। इस प्रकार, हालाँकि आज लोग परमेश्वर के वचन के आमने-सामने हैं—तुम लोग यह भी कह सकते हो कि परमेश्वर के आमने-सामने हैं—फिर भी किसी चीज़ के कारण जो उनके हृदय की गहराई में है, उनके भ्रष्ट सार के अस्तित्व और परमेश्वर के प्रति उनके शत्रुतापूर्ण रवैये के कारण, लोगों को परमेश्वर में सच्चे विश्वास से अवरोधित किया गया है और उसके प्रति उनकी आज्ञाकारिता में उन्हें बाधित किया गया है। इस कारण, उनके लिए यह बहुत कठिन है कि वे वह आशीष हासिल कर पाएँ, जिसे परमेश्वर ने नूह को प्रदान किया था।

3) परमेश्वर मनुष्य के साथ अपनी वाचा के लिए इंद्रधनुष को प्रतीक के रूप में उपयोग करता है

उत्पत्ति 9:11-13 "और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बाँधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नष्ट न होंगे: और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा।" फिर परमेश्वर ने कहा, "जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग-युग की पीढ़ियों के लिये बाँधता हूँ, उसका यह चिह्न है: मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिह्न होगा।"

इसके आगे, आओ, हम पवित्र शास्त्रों के इस भाग पर एक नज़र डालें कि किस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य के साथ अपनी वाचा के लिए इंद्रधनुष को एक चिह्न के रूप में उपयोग किया।

अधिकांश लोग जानते हैं कि इंद्रधनुष क्या है और उन्होंने इंद्रधनुष से जुड़ी कुछ कहानियों को सुना है। जहाँ तक बाइबल में इंद्रधनुष के बारे में उस कहानी की बात है, कुछ लोग इसका विश्वास करते हैं, कुछ इसे किंवदंती की तरह मानते हैं, जबकि अन्य लोग इस पर बिलकुल भी विश्वास नहीं करते। चाहे जो हो, इंद्रधनुष के संबंध में घटित सभी घटनाएं परमेश्वर का कार्य थीं और मनुष्य के लिए परमेश्वर के प्रबंधन की प्रक्रिया के दौरान घटित हुई थीं। इन घटनाओं को बाइबल में हूबहू लिखा गया है। ये अभिलेख हमें यह नहीं बताते हैं कि उस समय परमेश्वर किस मनोदशा में था या इन वचनों के पीछे उसके क्या इरादे थे, जिन्हें परमेश्वर ने कहा था। इसके अतिरिक्त, कोई भी इसका आकलन नहीं कर सकता कि जब परमेश्वर ने उन्हें कहा तो वह कैसा महसूस कर रहा था। फिर भी, इस समूचे हालात के लिहाज से परमेश्वर के मन की दशा को पाठ की पंक्तियों के बीच प्रकट किया गया है। यह ऐसा है, मानो परमेश्वर के वचन के प्रत्येक शब्द एवं वाक्यांश के ज़रिये उस समय के उसके विचार पन्नों से निकल पड़ते हैं।

ये परमेश्वर के विचार हैं, जिनके बारे में लोगों को चिंतित होना चाहिए और जिन्हें जानने के लिए उन्हें सबसे अधिक कोशिश करनी चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर के विचार परमेश्वर के विषय में मनुष्य की समझ से जटिल ढंग से जुड़े हैं और परमेश्वर के बारे में मनुष्य की समझ जीवन में मनुष्य के प्रवेश की एक अनिवार्य कड़ी है। अतः परमेश्वर उस समय क्या सोच रहा था जब ये घटनाएं घटित हुई थीं?

मूल रूप से, परमेश्वर ने ऐसी मानवता की सृष्टि की थी जो उसकी दृष्टि में बहुत ही अच्छी और उसके बहुत ही निकट थी, किंतु उसके विरुद्ध विद्रोह करने के पश्चात जलप्रलय द्वारा उनका विनाश कर दिया गया। क्या इससे परमेश्वर को कष्ट पहुँचा कि एक ऐसी मानवता तुरंत ही इस तरह विलुप्त हो गई थी?

निश्चय ही इससे कष्ट पहुँचा! तो उसकी इस दर्द की अभिव्यक्ति क्या थी? बाइबल में इसे कैसे लिखा गया? इसे बाइबल में इस रूप से लिखा गया : "और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बाँधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नष्ट न होंगे: और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा।" यह साधारण वाक्य परमेश्वर के विचारों को प्रकट करता है। संसार के इस विनाश ने उसे बहुत अधिक दुःख पहुँचाया। मनुष्य के शब्दों में, वह बहुत ही दुःखी था। हम कल्पना कर सकते हैं : जलप्रलय के द्वारा नाश किए जाने के बाद पृथ्वी जो किसी समय जीवन से भरी हुई थी, वह कैसी दिखाई देती थी? वह पृथ्वी जो किसी समय मानवों से भरी हुई थी, अब कैसी दिखती थी? कोई मानवीय निवास नहीं, कोई जीवित प्राणी नहीं, हर जगह पानी ही पानी और जल की सतह पर पूरी तरह तबाही। जब परमेश्वर ने संसार को बनाया तो क्या उसकी मूल इच्छा ऐसा ही कोई दृश्य था? बिलकुल भी नहीं! परमेश्वर की मूल इच्छा थी कि वह समूची धरती पर जीवन देखे, जिन मानवों को उसने बनाया था उन्हें अपनी आराधना करते देखे, सिर्फ नूह ही उसकी आराधना करने वाला एकमात्र व्यक्ति न हो या ऐसा एकमात्र व्यक्ति जो उसकी पुकार का उत्तर दे सके और जो कुछ उसे सौंपा गया था, उसे पूर्ण करे। जब मानवता विलुप्त हो गई, तो परमेश्वर ने वह नहीं देखा, जिसकी उसने मूल रूप से इच्छा की थी बल्कि पूर्णतः विपरीत देखा। उसका हृदय तकलीफ में कैसे नहीं होता? अतः जब वह अपने स्वभाव को प्रकट कर रहा था और अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहा था, तब परमेश्वर ने एक निर्णय लिया। उसने किस प्रकार का निर्णय लिया? मनुष्य के साथ वाचा के रूप में बादल में एक धनुष बनाने का (यानी, वे इंद्रधनुष जो हम देखते हैं), एक प्रतिज्ञा कि परमेश्वर दोबारा मानवजाति का जलप्रलय से नाश नहीं करेगा। उसी समय, यह लोगों को बताने के लिए भी था कि परमेश्वर ने संसार को जलप्रलय से नाश किया था, ताकि मानवजाति हमेशा याद रखे कि परमेश्वर ने ऐसा कार्य क्यों किया था।

क्या उस समय संसार का विनाश कुछ ऐसा था जो परमेश्वर चाहता था? यह निश्चित रूप से वह नहीं था, जो परमेश्वर चाहता था। संसार के विनाश के बाद हम शायद पृथ्वी के दयनीय दृश्य के एक छोटे से भाग की कल्पना कर सकते हैं, परंतु हम सोच भी नहीं सकते कि उस समय परमेश्वर की निगाहों में वह दृश्य कैसा था। हम कह सकते हैं कि चाहे यह आज के लोग हों या उस समय के, कोई भी यह कल्पना या आकलन नहीं कर सकता कि परमेश्वर उस समय क्या महसूस कर रहा था, जब उसने वो दृश्य, संसार की वो तस्वीर देखी जो जलप्रलय के द्वारा विनाश के बाद की थी। मनुष्य की अवज्ञा की वजह से परमेश्वर इसे

करने के लिए मजबूर हुआ था, परंतु जलप्रलय द्वारा संसार के विनाश की वजह से परमेश्वर के हृदय के द्वारा सहा गया दर्द एक वास्तविकता है, जिसकी कोई थाह नहीं ले सकता या आँक नहीं सकता। इसीलिए परमेश्वर ने मानवजाति के साथ एक वाचा बाँधी, जो लोगों को यह बताने के लिए थी कि वे स्मरण रखें कि परमेश्वर ने किसी समय ऐसा कुछ किया था और उन्हें यह वचन देने के लिए था कि परमेश्वर कभी संसार का इस तरह दोबारा नाश नहीं करेगा। इस वाचा में हम परमेश्वर के हृदय को देखते हैं—हम देखते हैं कि परमेश्वर का हृदय पीड़ा में था, जब उसने मानवता का नाश किया। मनुष्य की भाषा में, जब परमेश्वर ने मानवजाति का नाश किया और मानवजाति को विलुप्त होते हुए देखा, तो उसका हृदय रो रहा था और उससे लहू बह रहा था। क्या उसके वर्णन का यह सबसे उत्तम तरीका नहीं है? मानवीय भावनाओं को दर्शाने के लिए इन शब्दों को मनुष्य द्वारा उपयोग किया जाता है, पर चूँकि मनुष्य की भाषा में बहुत कमी है, तो परमेश्वर के अहसास एवं भावनाओं का वर्णन करने के लिए उनका उपयोग करना मुझे बहुत बुरा नहीं लगता और न ही यह बहुत ज़्यादा है। कम से कम यह तुम लोगों को उस समय परमेश्वर की मनोदशा क्या थी, उसकी एक बहुत जीवंत एवं बहुत ही उपयुक्त समझ प्रदान करता है। जब तुम लोग इंद्रधनुष को दोबारा देखोगे, तो अब तुम क्या सोचोगे? कम से कम तुम लोग स्मरण करोगे कि किस प्रकार एक समय परमेश्वर जल-प्रलय के द्वारा संसार के विनाश पर दुःखी था। तुम लोग स्मरण करोगे कि कैसे, यद्यपि परमेश्वर ने इस संसार से नफ़रत की और इस मानवता को तुच्छ जाना था, जब उसने उन मनुष्यों का विनाश किया, जिन्हें उसने अपने हाथों से बनाया था तो उसका हृदय दुख रहा था, उसका हृदय उन्हें छोड़ने के लिए संघर्ष कर रहा था, उसका हृदय अनिच्छुक था और इसे सहना कठिन महसूस हो रहा था। उसका सुकून सिर्फ नूह के परिवार के आठ लोगों में ही था। यह नूह का सहयोग था, जिसने सभी चीज़ों की सृष्टि करने के परमेश्वर के श्रमसाध्य प्रयासों को व्यर्थ नहीं जाने दिया। एक समय जब परमेश्वर कष्ट में था, तब यह एकमात्र चीज़ थी जो उसकी पीड़ा की क्षतिपूर्ति कर सकती थी। उस बिंदु से, परमेश्वर ने मानवता की अपनी सारी अपेक्षाओं को नूह के परिवार के ऊपर डाल दिया, इस उम्मीद में कि वे उसके आशीषों के अधीन जीवन बिताएँगे और उसके शाप के अधीन नहीं, इस उम्मीद में कि वे परमेश्वर को फिर कभी संसार का जलप्रलय से नाश करते हुए नहीं देखेंगे, और इस उम्मीद में भी कि उनका विनाश नहीं किया जाएगा।

इससे हमको परमेश्वर के स्वभाव के किस भाग को समझना चाहिए? परमेश्वर ने मनुष्य से घृणा की थी क्योंकि मनुष्य उसके प्रति शत्रुतापूर्ण था, लेकिन उसके हृदय में, मानवता के लिए उसकी देखभाल,

चिंता एवं दया अपरिवर्तनीय बनी रही। यहाँ तक कि जब उसने मानवजाति का नाश किया, उसका हृदय अपरिवर्तनीय बना रहा। जब मानवता परमेश्वर के प्रति एक गंभीर हद तक भ्रष्टता एवं अवज्ञा से भर गई थी, परमेश्वर को अपने स्वभाव एवं अपने सार के कारण और अपने सिद्धांतों के अनुसार इस मानवता का विनाश करना पड़ा था। लेकिन परमेश्वर के सार के कारण, उसने तब भी मानवजाति पर दया की और यहाँ तक कि वह मानवजाति के छुटकारे के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करना चाहता था ताकि वे निरंतर जीवित रह सकें। लेकिन, मनुष्य ने परमेश्वर का विरोध किया, निरंतर परमेश्वर की अवज्ञा करता रहा और परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार करने से इनकार किया; अर्थात् उसके अच्छे इरादों को स्वीकार करने से इनकार किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे पुकारा, उन्हें कैसे स्मरण दिलाया, कैसे उनकी आपूर्ति की, कैसे उनकी सहायता की या कैसे उनको सहन किया, मनुष्य ने न तो इसे समझा, न सराहा, न ही उन्होंने कुछ ध्यान दिया। अपनी पीड़ा में, परमेश्वर अब भी मनुष्य के प्रति अधिकतम सहनशील बना रहा था, इस इंतज़ार में कि मनुष्य ढर्रा बदलेगा। अपनी सीमा पर पहुँचने के पश्चात, परमेश्वर ने बिना किसी हिचकिचाहट के वह किया, जो उसे करना था। दूसरे शब्दों में, उस घड़ी जब परमेश्वर ने मानवजाति का विनाश करने की योजना बनाई, तब से उसके मानवजाति के विनाश के अपने कार्य की आधिकारिक शुरुआत तक, एक विशेष समय अवधि एवं प्रक्रिया थी। यह प्रक्रिया मनुष्य को ढर्रा बदलने योग्य बनाने के उद्देश्य के लिए अस्तित्व में थी और यह वह आख़िरी मौका था, जो परमेश्वर ने मनुष्य को दिया था। अतः परमेश्वर ने मानवजाति का विनाश करने से पहले इस अवधि में क्या किया था? परमेश्वर ने प्रचुर मात्रा में स्मरण दिलाने एवं प्रोत्साहन देने का कार्य किया था। चाहे परमेश्वर का हृदय कितनी भी पीड़ा एवं दुःख में था, उसने मानवता पर अपनी देखभाल, चिंता और भरपूर दया को जारी रखा। हम इससे क्या देखते हैं? बेशक, हम देखते हैं कि मानवजाति के लिए परमेश्वर का प्रेम वास्तविक है और कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसके प्रति वह दिखावा कर रहा हो। यह वास्तविक, स्पर्शगम्य एवं प्रशंसनीय है, न कि जाली, मिलावटी, झूठा या कपटपूर्ण। परमेश्वर कभी किसी छल का उपयोग नहीं करता या झूठी छवियाँ नहीं बनाता कि लोगों को यह दिखाए कि वह कितना मनभावन है। वह लोगों को अपनी मनोहरता दिखाने के लिए या अपनी मनोहरता एवं पवित्रता के दिखावे के लिए झूठी गवाही का उपयोग कभी नहीं करता। क्या परमेश्वर के स्वभाव के ये पहलू मनुष्य के प्रेम के लायक नहीं हैं? क्या ये आराधना के योग्य नहीं हैं? क्या ये संजोकर रखने के योग्य नहीं हैं? इस बिंदु पर, मैं तुम लोगों से पूछना चाहता हूँ : इन शब्दों को

सुनने के बाद, क्या तुम लोग सोचते हो कि परमेश्वर की महानता कागज के टुकड़ों पर लिखे गए खोखले शब्द मात्र है? क्या परमेश्वर की मनोहरता केवल खोखले शब्द ही है? नहीं! निश्चित रूप से नहीं! परमेश्वर की सर्वोच्चता, महानता, पवित्रता, सहनशीलता, प्रेम, इत्यादि—परमेश्वर के स्वभाव एवं सार के इन सब विभिन्न पहलुओं के हर विवरण को हर उस समय व्यावहारिक अभिव्यक्ति मिलती है, जब वह अपना कार्य करता है, मनुष्य के प्रति उसकी इच्छा में मूर्त रूप दिया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति में पूर्ण एवं प्रतिबिंबित होते हैं। चाहे तुमने इसे पहले महसूस किया हो या नहीं, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति की हर संभव तरीके से देखभाल कर रहा है, वह प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को स्नेह देने और प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा को जगाने के लिए अपने निष्कपट हृदय, बुद्धि एवं विभिन्न तरीकों का उपयोग कर रहा है। यह एक निर्विवादित तथ्य है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि यहाँ कितने लोग बैठे हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के पास परमेश्वर की सहनशीलता, धीरज एवं मनोहरता के विषय में अलग-अलग अनुभव और उसके प्रति अलग-अलग भावनाएँ हैं। परमेश्वर के ये अनुभव और उसके प्रति ये भावनाएँ या अनुभूति-संक्षेप में, ये सभी सकरात्मक चीज़ें परमेश्वर की ओर से हैं। अतः परमेश्वर के विषय में प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव एवं ज्ञान को मिलकर और इन्हें आज बाइबल के इन अंशों के हमारे पठन से जोड़कर, क्या अब तुम लोगों के पास परमेश्वर की और अधिक वास्तविक एवं उचित समझ है?

इस कहानी को पढ़ने और इस घटना के ज़रिए प्रकट परमेश्वर के स्वभाव के कुछ भाग को समझने के पश्चात, तुम लोगों के पास परमेश्वर के बारे में कैसा नया मूल्यांकन है? क्या इसने तुम लोगों को परमेश्वर एवं उसके हृदय की एक गहरी समझ प्रदान की है? क्या अब तुम दोबारा नूह की कहानी को देखने पर अलग महसूस करते हो? तुम लोगों के विचारों के अनुसार, क्या बाइबल के इन पदों के बारे में संगति करना अनावश्यक था? अब जब हमने उन पर संगति कर ली है, क्या तुम लोग सोचते हो कि यह अनावश्यक था? निश्चित ही यह आवश्यक था! हालाँकि जो हमने पढ़ी, वह एक कहानी है, फिर भी यह उस कार्य का सच्चा अभिलेख है, जो परमेश्वर ने किया है। मेरा लक्ष्य यह नहीं था कि तुम लोगों को इन कहानियों के विवरणों या इस पात्र को समझाऊँ, न ही यह था कि तुम लोग जाकर इस पात्र का अध्ययन कर सको और निश्चित रूप से यह भी नहीं था कि तुम लोग वापस जाओ और फिर से बाइबल का अध्ययन करो। क्या तुम लोग समझ गए? तो क्या इन कहानियों ने परमेश्वर के विषय में तुम लोगों का ज्ञान बढ़ाया है? इस कहानी ने परमेश्वर के विषय में तुम लोगों की समझ में क्या जोड़ा है? हाँगकाँग के भाइयो एवं

बहनो, हमें बताओ। (हमने देखा कि परमेश्वर का प्रेम कुछ ऐसा है, जो हममें से किसी भ्रष्ट मानव में नहीं है।) दक्षिण कोरिया के भाइयो एवं बहनो, तुम लोग बताओ। (मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम वास्तविक है। मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम उसके स्वभाव को लिए हुए है और उसकी महानता, पवित्रता, सर्वोच्चता एवं उसकी सहनशीलता को लिए हुए है। यह इस योग्य है कि हम इसकी गहरी समझ प्राप्त करने की कोशिश करें।) (संगति के माध्यम से उस समय, एक ओर, मैं परमेश्वर के धार्मिक एवं पवित्र स्वभाव को देख सकता हूँ और साथ ही मैं उस चिंता को भी देख सकता हूँ जो मानवजाति के लिए परमेश्वर को है, मानवजाति के प्रति परमेश्वर की दया को देख सकता हूँ और हर चीज़ जो परमेश्वर करता है और उसका हर चिंतन एवं विचार, यह सब मानवता के लिए उसके प्रेम एवं चिंता को प्रकट करता है।) (अतीत में मेरी समझ यह थी कि परमेश्वर ने संसार का विनाश करने के लिए जलप्रलय का उपयोग किया था क्योंकि मानवजाति एक गंभीर हद तक बुरी हो गई थी, और यह ऐसा था मानो परमेश्वर ने इस मानवता का विनाश किया क्योंकि उसको उससे घृणा थी। आज जब परमेश्वर ने नूह की कहानी के बारे में बात की और कहा कि परमेश्वर के हृदय से लहू बह रहा था, उसके बाद ही मुझे लगा कि परमेश्वर असल में इस मानवता को छोड़ने का अनिच्छुक था। मानवजाति बहुत ही अवज्ञाकारी थी, इसलिए परमेश्वर के पास उनका नाश करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं था। असल में, परमेश्वर का हृदय उस समय बहुत दुःखी था। यहां से, मैं परमेश्वर के स्वभाव में मानवजाति के लिए उसकी देखभाल एवं चिंता को देख सकती हूँ। यह कुछ ऐसा है, जो मैं पहले नहीं जानती थी।) बहुत अच्छा! अब बाकी लोग बता सकते हैं। (सुनने के बाद मैं बहुत प्रभावित हुआ था। मैंने अतीत में बाइबल पढ़ी है, किंतु मैंने आज के समान कभी अनुभव नहीं किया, जहाँ परमेश्वर सीधे तौर पर इन चीज़ों का विश्लेषण करता है, जिससे हम उसे जान सकें। बाइबल को देखने के लिए परमेश्वर हमें इस तरह साथ ले चलता है, जो मुझे यह जानने का मौका देता है कि मनुष्य की भ्रष्टता से पहले परमेश्वर का सार मानवजाति के लिए प्रेम एवं परवाह था। मनुष्य के भ्रष्ट होने के समय से लेकर आज के अंतिम दिनों तक, भले ही परमेश्वर का स्वभाव धार्मिक है, फिर भी उसका प्रेम एवं परवाह अपरिवर्तनीय बना हुआ है। यह दिखाता है कि चाहे मनुष्य भ्रष्ट है या नहीं, सृष्टि से लेकर अब तक परमेश्वर के प्रेम का सार, कभी नहीं बदलता।) (आज मैंने देखा कि उसके कार्य के समय या स्थान में हुए परिवर्तन की वजह से परमेश्वर का सार नहीं बदलेगा। मैंने यह भी देखा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि परमेश्वर संसार को बना रहा है या मनुष्य के भ्रष्ट होने के पश्चात इसका नाश कर रहा है, वह जो कुछ करता है उसका अर्थ

होता है और इसमें उसका स्वभाव शामिल होता है। इसलिए मैंने देखा कि परमेश्वर का प्रेम असीमित एवं अगाध है, और साथ ही मैंने, जैसा अन्य भाईयों एवं बहनों ने जिक्र किया, मानवजाति के प्रति परमेश्वर की परवाह एवं दया को भी देखा, जब परमेश्वर ने संसार का विनाश किया था।) (ये ऐसी चीज़ें थीं जिन्हें मैं वास्तव में पहले से नहीं जानती थी। आज यह सब सुनने के बाद, मैं महसूस करती हूँ कि परमेश्वर सचमुच में विश्वसनीय है, सचमुच में भरोसे के लायक है, विश्वास करने योग्य है और उसका वास्तव में अस्तित्व है। मैं सही मायनों में अपने हृदय में सराहना कर सकती हूँ कि परमेश्वर का स्वभाव और प्रेम वास्तव में इतना ठोस है। आज की बातें सुनने के बाद मुझमें यह भावना है।) बहुत बढ़िया! ऐसा लगता है कि जो कुछ तुम लोगों ने सुना है, उसे तुम लोगों ने किया आत्मसात है।

क्या तुम लोगों ने बाइबल के सभी पदों में एक बात पर ध्यान दिया है, जिसमें बाइबल की वो कहानियां भी शामिल हैं, जिन पर हमने आज संगति की? क्या परमेश्वर ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए या मानवता के लिए अपने प्रेम एवं देखरेख का वर्णन करने के लिए कभी अपनी भाषा का उपयोग किया है? क्या उसका कोई अभिलेख है, जहाँ वह यह बताने के लिए साधारण भाषा का उपयोग करता है कि वह मानवजाति के लिए कितना चिंतित है या उससे कितना प्रेम करता है? नहीं! क्या यह सही नहीं है? तुम लोगों में से बहुत से हैं, जिन्होंने बाइबल या बाइबल के अलावा किताबें पढ़ी हैं। क्या तुम में से किसी ने ऐसे वचन देखे हैं? उत्तर निश्चित रूप से न है! अर्थात, बाइबल के अभिलेखों में, परमेश्वर के वचनों या उसके कार्य के दस्तावेज़ समेत, परमेश्वर ने मानवजाति के लिए अपनी भावनाओं का वर्णन करने के लिए या अपने प्रेम एवं परवाह को व्यक्त करने के लिए किसी युग में या किसी समयावधि में अपने स्वयं के तरीकों का उपयोग कभी नहीं किया है, न ही कभी परमेश्वर ने अपने अहसास एवं भावनाओं को बताने के लिए भाषण या किन्हीं तरीकों का उपयोग किया है—क्या यह एक तथ्य नहीं है? मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मुझे इसका ज़िक्र क्यों करना पड़ता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें भी परमेश्वर की मनोहरता एवं उसका स्वभाव समाविष्ट है।

परमेश्वर ने मानवजाति की सृष्टि की; इसकी परवाह किए बगैर कि उन्हें भ्रष्ट किया गया है या वे उसका अनुसरण करते हैं, परमेश्वर मनुष्य से अपने सबसे अधिक दुलारे प्रियजनों के समान व्यवहार करता है—या जैसा मानव कहेंगे, ऐसे लोग जो उसके लिए अतिप्रिय हैं—और उसके खिलौनों जैसा नहीं। हालाँकि परमेश्वर कहता है कि वह सृष्टिकर्ता है और मनुष्य उसकी सृष्टि है, जो सुनने में ऐसा लग सकता है कि यहाँ

पद में थोड़ा अंतर है, फिर भी वास्तविकता यह है कि जो कुछ भी परमेश्वर ने मानवजाति के लिए किया है, वह इस प्रकार के रिश्ते से कहीं बढ़कर है। परमेश्वर मानवजाति से प्रेम करता है, मानवजाति की देखभाल करता है, मानवजाति के लिए चिंता दिखाता है, इसके साथ ही साथ लगातार और बिना रुके मानवजाति के लिए आपूर्तियाँ करता है। वह कभी अपने हृदय में यह महसूस नहीं करता कि यह एक अतिरिक्त कार्य है या जिसे ढेर सारा श्रेय मिलना चाहिए। न ही वह यह महसूस करता है कि मानवता को बचाना, उनके लिए आपूर्तियाँ करना, और उन्हें सब कुछ देना, मानवजाति के लिए एक बहुत बड़ा योगदान है। वह मानवजाति को अपने तरीके से और स्वयं के सार और जो वह स्वयं है और जो उसके पास है, उसके माध्यम से बस खामोशी से एवं चुपचाप प्रदान करता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मानवजाति को उससे कितना भोजन प्रबंध एवं कितनी सहायता प्राप्त होती है, परमेश्वर इसके बारे में कभी नहीं सोचता या श्रेय लेने की कोशिश नहीं करता। यह परमेश्वर के सार द्वारा निर्धारित होता है और साथ ही यह परमेश्वर के स्वभाव की बिलकुल सही अभिव्यक्ति भी है। इसीलिए, चाहे यह बाइबल में हो या किसी अन्य पुस्तक में, हम परमेश्वर को कभी अपने विचार व्यक्त करते हुए नहीं पाते हैं और हम कभी परमेश्वर को मनुष्यों को यह वर्णन करते या घोषणा करते हुए नहीं पाते हैं कि वह इन कार्यों को क्यों करता है या वह मानवजाति की इतनी देखरेख क्यों करता है, जिससे वह मानवजाति को अपने प्रति आभारी बनाए या उससे अपनी स्तुति कराए। यहाँ तक कि जब उसे क़ष्ट भी होता है, जब उसका हृदय अत्यंत पीड़ा में होता है, तब भी वह मानवजाति के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी या मानवजाति के लिए अपनी चिंता को कभी नहीं भूलता; वह पूरे समय इस कष्ट एवं दर्द को चुपचाप अकेला सहता रहता है। इसके विपरीत, परमेश्वर निरंतर मानवजाति को प्रदान करता रहता है जैसा कि वह हमेशा से करता आया है। हालाँकि मानवजाति अक्सर परमेश्वर की स्तुति करती है या उसकी गवाही देती है, पर इसमें से किसी भी व्यवहार की माँग परमेश्वर द्वारा नहीं की जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर कभी ऐसा इरादा नहीं रखता कि मानवजाति के लिए किए गए उसके अच्छे कार्य के बदले उसे धन्यवाद दिया जाए या उसका मूल्य वापस किया जाए। दूसरी ओर, ऐसे लोग जो परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते हैं, जो सचमुच परमेश्वर का अनुसरण कर सकते हैं, उसको सुनते हैं और उसके प्रति वफादार हैं और जो उसकी आज्ञा का पालन कर सकते हैं—ये ऐसे लोग हैं, जो प्रायः परमेश्वर के आशीष प्राप्त करते हैं और परमेश्वर बिना किसी हिचकिचाहट के ऐसे आशीष प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, ऐसे आशीष जिन्हें लोग परमेश्वर से प्राप्त करते हैं, अक्सर उनकी कल्पना से परे होते हैं और

साथ ही किसी भी ऐसी चीज़ से परे होते हैं, जिसका औचित्य मानव उससे सिद्ध कर सकते हों जो उन्होंने किया है या जो कीमत उन्होंने चुकाई है। जब मानवजाति परमेश्वर के आशीष का आनंद ले रही होती है, तब क्या कोई परवाह करता है कि परमेश्वर क्या कर रहा है? क्या कोई किसी प्रकार की चिंता करता है कि परमेश्वर कैसा महसूस कर रहा होता है? क्या कोई परमेश्वर की पीड़ा के आकलन की कोशिश करता है? इन प्रश्नों का साफ उत्तर है, नहीं! क्या नूह समेत कोई मनुष्य उस दर्द का आकलन कर सकता है, जिसे परमेश्वर उस समय महसूस कर रहा था? क्या कोई समझ सकता है कि क्यों परमेश्वर एक ऐसी वाचा तैयार करेगा? वे नहीं समझ सकते! मानवजाति परमेश्वर की पीड़ा का आकलन नहीं करती है, इसलिए नहीं कि वो परमेश्वर की पीड़ा नहीं समझती और इसलिए नहीं कि परमेश्वर एवं मनुष्य के बीच अंतर है या उनकी हैसियत में अंतर है; बल्कि इसलिए क्योंकि मानवजाति परमेश्वर की किसी भावना की बिल्कुल परवाह नहीं करती। मानवजाति सोचती है कि परमेश्वर तो आत्मनिर्भर है—परमेश्वर को इसकी कोई आवश्यकता नहीं है कि लोग उसकी देखरेख करें, उसे समझें या उसके प्रति परवाह दिखाएं। परमेश्वर तो परमेश्वर है, अतः उसे कोई दर्द नहीं होता, उसकी कोई भावनाएँ नहीं हैं; वह दुःखी नहीं होगा, वह शोक महसूस नहीं करता है, यहाँ तक कि वह रोता भी नहीं है। परमेश्वर तो परमेश्वर है, इसलिए उसे किसी भावनात्मक अभिव्यक्ति की आवश्यकता नहीं है और उसे किसी भावनात्मक सुकून की आवश्यकता नहीं है। यदि उसे कुछ निश्चित परिस्थितियों में इनकी आवश्यकता होती भी है, तो वह अकेले ही इस सबसे निपट सकता है और उसे मानवजाति से किसी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इसके विपरीत, यह तो "कमज़ोर, अपरिपक्व" मनुष्य हैं, जिन्हें परमेश्वर की सांत्वना, भोजन-प्रबंध एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है और यहाँ तक कि उन्हें अपनी भावनाओं को किसी भी समय एवं स्थान पर सांत्वना देने के लिए भी परमेश्वर की आवश्यकता होती है। ऐसी चीज़ें मानवजाति के हृदय के भीतर गहराई में छिपी होती हैं : मनुष्य कमज़ोर प्राणी है; उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता होती है कि वह हर तरीके से उनकी देखरेख करे, वे परमेश्वर से मिलने वाली सब प्रकार की देखभाल के हकदार हैं और उन्हें परमेश्वर से किसी भी ऐसी चीज़ की माँग करनी चाहिए जिसे वे महसूस करते हैं कि वह उनकी होनी चाहिए। परमेश्वर बलवान है; उसके पास सब कुछ है और उसे मानवजाति का अभिभावक और आशीष प्रदान करने वाला होना चाहिए। चूँकि वह पहले से ही परमेश्वर है, वह सर्वशक्तिमान है और उसे मानवजाति से कभी किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं होती है।

चूँकि मनुष्य परमेश्वर के किसी भी प्रकाशन पर ध्यान नहीं देता है, इसलिए उसने कभी परमेश्वर के शोक, पीड़ा या आनंद को महसूस नहीं किया है। परंतु इसके विपरीत, परमेश्वर मनुष्य की सभी अभिव्यक्तियों को अंदर-बाहर अच्छी तरह जानता है। परमेश्वर सभी समय एवं सभी स्थानों पर प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है, प्रत्येक मनुष्य के बदलते विचारों का अवलोकन करता है और इस प्रकार उनको सांत्वना एवं प्रोत्साहन देता है और उन्हें मार्गदर्शन देता और रोशन करता है। उन सभी चीजों के संदर्भ में जो परमेश्वर ने मानवजाति पर की हैं और उनके कारण उसने जो कीमतें चुकाई हैं, क्या लोग बाइबल से या किसी ऐसी चीज़ से एक अंश भी ढूँढ़ सकते हैं, जो परमेश्वर ने अब तक कहा है, जो साफ़-साफ़ कहता हो कि परमेश्वर मनुष्य से किसी चीज़ की माँग करेगा? नहीं! इसके विपरीत, चाहे लोग परमेश्वर की सोच को कितना भी अनदेखा करें, वह फिर भी बार-बार मानवजाति की अगुआई करता है, बार-बार मानवजाति की आपूर्ति करता है और उनकी सहायता करता है कि वे परमेश्वर के मार्ग पर चल सकें ताकि वे उस खूबसूरत मंज़िल को प्राप्त कर सकें जो उसने उनके लिए तैयार की है। जब परमेश्वर की बात आती है, जो वह स्वयं है और जो उसके पास है, उसके अनुग्रह, उसकी दया और उसके सभी प्रतिफल बिना किसी हिचकिचाहट के उन लोगों को प्रदान किए जाएँगे, जो उससे प्रेम एवं उसका अनुसरण करते हैं। किंतु वह उस पीड़ा को, जो उसने सही है या अपनी मनोदशा को कभी किसी व्यक्ति पर प्रकट नहीं करता और वह किसी के बारे में कभी शिकायत नहीं करता कि वह उसके प्रति ध्यान नहीं देता या उसकी इच्छा को नहीं जानता है। वह खामोशी से यह सब सहता है, उस दिन का इंतज़ार करते हुए जब मानवजाति यह समझने के योग्य हो जाएगी।

मैं यहाँ ये बातें क्यों कहता हूँ? तुम लोग उन बातों में क्या देखते हो जिन्हें मैंने कहा है? परमेश्वर के सार एवं स्वभाव में कुछ ऐसा है जिसे बड़ी आसानी से नज़रअंदाज़ किया सकता है, कुछ ऐसा जो केवल परमेश्वर के ही पास है और किसी व्यक्ति के पास नहीं, इनमें वे लोग भी शामिल हैं, जिन्हें अन्य महान, अच्छे लोग या अपनी कल्पना में परमेश्वर मानते हैं। यह चीज़ क्या है? यह परमेश्वर की निःस्वार्थता है। निःस्वार्थता के बारे में बोलते समय, शायद तुम सोचोगे कि तुम भी बहुत निःस्वार्थ हो क्योंकि जब तुम्हारे बच्चों की बात आती है, तो तुम उनके साथ कभी सौदा या मोलभाव नहीं करते या तुम्हें लगता है कि तुम तब भी बहुत निःस्वार्थ होते हो, जब तुम्हारे माता-पिता की बात आती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि तुम क्या सोचते हो, कम से कम तुम्हारे पास "निःस्वार्थ" शब्द की एक अवधारणा तो है और तुम इसे एक

सकारात्मक शब्द और यह तो मानते हो निःस्वार्थ व्यक्ति होना बहुत ही श्रेष्ठ होना है। जब तुम निःस्वार्थ होते हो, तो तुम स्वयं को अत्यधिक सम्मान देते हो। परंतु ऐसा कोई नहीं है, जो सभी चीज़ों के मध्य, सभी लोगों, घटनाओं एवं वस्तुओं के मध्य और उसके कार्य में परमेश्वर की निःस्वार्थता को देख सके। ऐसी स्थिति क्यों है? क्योंकि मनुष्य बहुत स्वार्थी है! मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मानवजाति एक भौतिक संसार में रहती है। तुम परमेश्वर का अनुसरण तो करते हो, किंतु तुम कभी नहीं देखते या तारीफ नहीं करते कि किस प्रकार परमेश्वर तुम्हारे लिए आपूर्तियाँ करता है, तुम्हें प्रेम करता है और तुम्हारे लिए चिंता करता है। तो तुम क्या देखते हो? तुम अपने खून के रिश्तेदारों को देखते हो, जो तुम्हें प्रेम करते हैं या तुम्हें बहुत स्नेह करते हैं। तुम उन चीज़ों को देखते हो, जो तुम्हारी देह के लिए लाभकारी हैं, तुम उन लोगों एवं चीज़ों की परवाह करते हो, जिनसे तुम प्रेम करते हो। यह मनुष्य की तथाकथित निःस्वार्थता है। ऐसे "निःस्वार्थ" लोग कभी भी उस परमेश्वर की चिंता नहीं करते, जो उन्हें जीवन देता है। परमेश्वर के विपरीत, मनुष्य की निःस्वार्थता मतलबी एवं निंदनीय हो जाती है। वह निःस्वार्थता जिसमें मनुष्य विश्वास करता है, खोखली एवं अवास्तविक, मिलावटी, परमेश्वर से असंगत एवं परमेश्वर से असंबद्ध है। मनुष्य की निःस्वार्थता सिर्फ उसके लिए है, जबकि परमेश्वर की निःस्वार्थता उसके सार का सच्चा प्रकाशन है। यह बिलकुल परमेश्वर की निःस्वार्थता की वजह से है कि मनुष्य उससे निरंतर आपूर्ति प्राप्त करता रहता है। तुम लोग शायद इस विषय से, जिसके बारे में आज मैं बात कर रहा हूँ, अत्यंत गहराई से प्रभावित न हो और मात्र सहमति में सिर हिला रहे हो, परंतु जब तुम अपने हृदय में परमेश्वर के हृदय की सराहना करने की कोशिश करते हो, तो तुम अनजाने में ही इसे जान जाओगे: सभी लोगों, मामलों एवं चीज़ों के मध्य, जिन्हें तुम इस संसार में महसूस कर सकते हो, केवल परमेश्वर की निःस्वार्थता ही वास्तविक एवं ठोस है, क्योंकि सिर्फ परमेश्वर का प्रेम ही तुम्हारे लिए बिना किसी शर्त के है और बेदाग है। परमेश्वर के अतिरिक्त, किसी भी व्यक्ति की तथाकथित निःस्वार्थता झूठी, सतही एवं अप्रामाणिक है; उसका एक उद्देश्य होता है, निश्चित इरादे होते हैं, समझौते होते हैं और वह परीक्षा में नहीं ठहर सकती। तुम यह तक कह सकते हो कि यह गंदी एवं घिनौनी है। क्या तुम लोग इन वचनों से सहमत हो?

मैं जानता हूँ कि तुम लोग इन विषयों से बिलकुल अपरिचित हो और इससे पहले कि तुम सचमुच इन्हें समझ सको, इन्हें मन में उतारने के लिए तुम लोगों को थोड़ा समय चाहिए। जितना अधिक तुम लोग इन मुद्दों एवं विषयों से अपरिचित होते हो, उतना ही अधिक यह साबित करता है कि तुम लोगों के हृदय में ये

विषय अनुपस्थित हैं। यदि मैंने इन विषयों का कभी जिक्र नहीं किया होता, तो क्या तुम लोगों में से कोई भी उनके बारे में कुछ भी जान पाता? मैं मानता हूँ कि तुम लोग कभी उन्हें नहीं जान पाते। यह तो निश्चित है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम लोग इन विषयों के बारे में कितना कुछ समझ या बूझ सकते हो, संक्षेप में, जिनके बारे में मैं बोलता हूँ, ये ऐसे विषय हैं जिनकी लोगों में सबसे अधिक कमी है और जिनके बारे में उन्हें सबसे अधिक जानना चाहिए। ये विषय प्रत्येक के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं—ये बहुमूल्य हैं और यही जीवन हैं, और ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें आगे के मार्ग के लिए तुम लोगों के पास अवश्य ही होना चाहिए। मार्गदर्शन के रूप में इन वचनों के बिना, परमेश्वर के स्वभाव एवं सार के बारे में तुम्हारी समझ के बिना, परमेश्वर के मामले में तुम हमेशा एक प्रश्न चिह्न लेकर चलोगे। तुम परमेश्वर में अच्छी तरह कैसे विश्वास कर सकते हो, यदि तुम उसे समझते ही नहीं हो? तुम परमेश्वर की भावनाओं, उसकी इच्छा, उसकी मनोदशा, जो वह सोच रहा है, जो उसे उदास करता है और जो उसे खुश करता है, उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते, तो तुम परमेश्वर के हृदय की परवाह कैसे कर सकते हो?

जब कभी परमेश्वर परेशान होता है, उसके सामने एक ऐसी मानवजाति होती है, जो उसकी तरफ बिलकुल भी ध्यान नहीं देती है, ऐसी मानवजाति जो उसका अनुसरण करती है और उससे प्रेम करने का दावा तो करती है लेकिन उसकी भावनाओं की पूरी तरह से उपेक्षा करती है। कैसे परमेश्वर के हृदय को चोट नहीं पहुँचेगी? परमेश्वर के प्रबंधकीय कार्य में, वह ईमानदारी से अपने कार्य को क्रियान्वित करता रहता है और प्रत्येक व्यक्ति से बात करता है, और बिना किसी प्रकार कि हिचकिचाहट या छिपाव के उनका सामना करता है; किंतु इसके विपरीत, हर व्यक्ति जो उसका अनुसरण करता है वह उसके प्रति खुला दिल नहीं रखता और कोई भी सक्रिय रूप से उसके करीब आने, उसके हृदय को समझने, या उसकी भावनाओं पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं होता। यहाँ तक कि वे जो परमेश्वर के अंतरंग होना चाहते हैं, वे भी उसके निकट आना, उसके हृदय की परवाह करना, या उसे समझने की कोशिश नहीं करना चाहते। जब परमेश्वर आनंदित एवं प्रसन्न होता है, तो उसकी प्रसन्नता को बाँटने के लिए कोई भी नहीं होता। जब लोगों द्वारा परमेश्वर को गलत समझा जाता है, तो उसके ज़ख़्मी हृदय को सांत्वना देने के लिए कोई भी नहीं होता। जब उसका हृदय दुख रहा होता है, तो एक भी व्यक्ति नहीं होता है जो उसे सुनने के लिए तैयार हो कि वह उस पर भरोसा करके कुछ कह सके। परमेश्वर के प्रबंधकीय कार्य के इन हज़ारों सालों के दौरान, ऐसा कोई नहीं हुआ है जो परमेश्वर की भावनाओं को समझता हो, न ही कोई ऐसा है जो

उन्हें बूझता या सराहता रहा हो, किसी ऐसे व्यक्ति की तो बात ही छोड़ो जो परमेश्वर के आनंद एवं दुखों में सहभागी होने के लिए उसके बगल में खड़ा हो सके। परमेश्वर अकेला है। वह अकेला है! परमेश्वर सिर्फ़ इसलिए अकेला नहीं है क्योंकि भ्रष्ट मानवजाति उसका विरोध करती है, परंतु इससे भी अधिक वह इसलिए अकेला है क्योंकि वे जो आध्यात्मिक बनना चाहते हैं, वे जो परमेश्वर को जानने और उसे समझने का प्रयास करते हैं, और यहाँ तक कि वे भी जो उसके लिए अपने पूरे जीवन को खपाने के लिए तैयार हैं, वे भी उसके विचारों को नहीं जानते हैं और उसके स्वभाव एवं उसकी भावनाओं को नहीं समझते हैं।

नूह की कहानी के अंत में, हम देखते हैं कि उस समय परमेश्वर ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक असामान्य तरीके का उपयोग किया था। यह तरीका बहुत ही ख़ास था: मनुष्य के साथ एक वाचा बांधना, जिसने जलप्रलय से संसार के विनाश के अंत की घोषणा की। ऊपर से, एक वाचा बांधना बहुत ही साधारण सी बात लग सकती है। यह दो पक्षों को आबद्ध करने और अपने समझौते का उल्लंघन करने से रोकने के लिए शब्दों का उपयोग करने के अलावा और कुछ नहीं है, ताकि दोनों के हितों की रक्षा हो सके। देखने में, यह बहुत ही साधारण बात है, किंतु इसे करने के पीछे की प्रेरणा और परमेश्वर द्वारा इसे करने के इरादे से यह परमेश्वर के स्वभाव एवं मनोदशा का एक सच्चा प्रकाशन है। यदि तुम बस इन वचनों को एक तरफ रखते और उन्हें अनदेखा करते, यदि मैं तुम लोगों को इन चीज़ों की सच्चाई कभी न बताऊँ, तो मानवजाति परमेश्वर की सोच को वास्तव में कभी नहीं जान पाएगी। कदाचित तुम्हारी कल्पना में परमेश्वर मुस्कुरा रहा था जब उसने यह वाचा बाँधी, या कदाचित उसकी अभिव्यक्ति गंभीर थी, परंतु इसकी परवाह किए बगैर कि लोगों की कल्पनाओं में परमेश्वर के पास कौन सी सबसे सामान्य अभिव्यक्ति थी, कोई भी परमेश्वर के हृदय या उसकी पीड़ा को नहीं देख पाया था, उसके अकेलेपन की तो बात ही छोड़ो। कोई भी परमेश्वर से अपने ऊपर भरोसा नहीं करवा सकता या परमेश्वर के भरोसे के लायक नहीं हो सकता, या ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जिसके सामने परमेश्वर अपने विचारों को व्यक्त कर सके या जिसे अपनी पीड़ा बता सके। इसीलिए परमेश्वर के पास ऐसा कार्य करने के सिवाय कोई और विकल्प नहीं था। ऊपरी तौर पर, परमेश्वर ने मानवता को वैसे ही विदाई देकर एक आसान कार्य किया जैसी वह थी, भूतकाल के मुद्दे को व्यवस्थित किया और जलप्रलय द्वारा संसार के अपने विनाश का उपयुक्त निष्कर्ष निकाला। हालाँकि, परमेश्वर ने इसी क्षण से उस पीड़ा को अपने हृदय की गहराई में दफन कर दिया। ऐसे समय जब परमेश्वर के पास भरोसा करने लायक कोई नहीं था, उसने मानवजाति के साथ एक वाचा बाँधी,

उन्हें यह बताते हुए कि वह दोबारा संसार का जलप्रलय द्वारा नाश नहीं करेगा। जब इंद्रधनुष प्रकट हुआ तो यह लोगों को स्मरण दिलाने के लिए था कि किसी समय एक ऐसी घटना घटी थी और उन्हें चेतावनी देने के लिए था कि वे बुरे काम न करें। यहाँ तक कि ऐसी दुखदायी दशा में भी, परमेश्वर मानवजाति के बारे में नहीं भूला और तब भी उसने उनके लिए अत्यधिक चिंता दिखाई। क्या यह परमेश्वर का प्रेम एवं निःस्वार्थता नहीं है? किंतु लोग क्या सोचते हैं जब वे कष्ट सह रहे होते हैं? क्या यह वह समय नहीं, जब उन्हें परमेश्वर की सबसे अधिक ज़रूरत होती है? ऐसे समय, लोग हमेशा परमेश्वर को घसीट लाते हैं ताकि परमेश्वर उन्हें सांत्वना दे। चाहे कोई भी समय हो, परमेश्वर लोगों को कभी निराश होने नहीं देगा, और वह हमेशा लोगों को इस लायक बनाएगा कि वे अपनी दुर्दशा से बाहर निकलें और प्रकाश में जीवन बिताएँ। हालाँकि परमेश्वर मानवजाति के लिए इतना प्रदान करता है, फिर भी मनुष्य के हृदय में परमेश्वर एक आश्वासन की गोली और सांत्वना के स्फूर्तिदायक द्रव्य के अलावा और कुछ नहीं है। जब परमेश्वर दुख उठा रहा होता है, जब उसका हृदय ज़ख्मी होता है, तब उसका साथ देने या उसे सांत्वना देने के लिए किसी सृजित किए गए प्राणी या किसी व्यक्ति का होना निःसन्देह परमेश्वर के लिए एक असाधारण इच्छा ही होगी। मनुष्य कभी परमेश्वर की भावनाओं पर ध्यान नहीं देता है, अतः परमेश्वर कभी यह माँग या अपेक्षा नहीं करता है कि कोई हो जो उसे सांत्वना दे। अपनी मनोदशा व्यक्त करने के लिए वह महज अपने तरीकों का उपयोग करता है। लोग नहीं सोचते हैं कि थोड़े-बहुत दु:ख-दर्द से होकर गुज़रना परमेश्वर के लिए कोई बहुत बड़ी बात है, लेकिन जब तुम सचमुच में परमेश्वर को समझने की कोशिश करते हो, जब वह सब कुछ जो परमेश्वर करता है, उसमें तुम सचमुच उसके सच्चे इरादों की सराहना कर सकते हो, केवल तभी तुम परमेश्वर की महानता एवं उसकी निःस्वार्थता को महसूस कर सकते हो। यद्यपि परमेश्वर ने इंद्रधनुष का उपयोग करते हुए मानवजाति के साथ एक वाचा बाँधी, फिर भी उसने किसी को कभी नहीं बताया कि उसने ऐसा क्यों किया था-क्यों उसने इस वाचा को स्थापित किया था-मतलब उसने कभी किसी को अपने वास्तविक विचार नहीं बताए थे। ऐसा इसलिए क्योंकि ऐसा कोई नहीं है, जो उस प्रेम की गहराई को बूझ सके, जो अपने हाथों से बनाई मानवजाति के लिए परमेश्वर के पास है और साथ ही ऐसा भी कोई नहीं है जो इसकी सराहना कर सके कि मानवता का विनाश करते हुए उसके हृदय ने वास्तव में कितनी पीड़ा सहन की थी। इसलिए, भले ही परमेश्वर ने लोगों को बताया होता कि उसने कैसा महसूस किया था, फिर भी वे उस पर भरोसा नहीं कर पाते। पीड़ा में होने के बावजूद, वह अभी भी अपने कार्य के अगले चरण को

जारी रखे हुए है। परमेश्वर हमेशा मानवजाति को अपना सर्वोतम पहलू एवं बेहतरीन चीजें देता है जबकि स्वयं ही सारे दुखों को खामोशी से सहता रहता है। परमेश्वर कभी भी इन पीड़ाओं को खुले तौर पर प्रकट नहीं करता। इसके बजाय, वह उन्हें सहता है और खामोशी से इंतज़ार करता है। परमेश्वर की सहनशीलता शुष्क, सुन्न, या असहाय नहीं है, न ही यह कमज़ोरी का चिह्न है। बल्कि परमेश्वर का प्रेम एवं सार हमेशा से ही निःस्वार्थ रहा है। यह उसके सार एवं स्वभाव का एक प्राकृतिक प्रकाशन है और एक सच्चे सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की पहचान का एक सच्चा मूर्तरूप है।

यह कहने पर, कुछ लोग मेरी बात का गलत अर्थ निकाल सकते हैं। "क्या परमेश्वर की भावनाओं का इतने विस्तार से एवं इतनी सनसनी के साथ वर्णन करने का इरादा यह था कि लोग परमेश्वर पर तरस खाएँ?" क्या ऐसा कोई इरादा था? (नहीं!) इन बातों को कहने का मेरा एकमात्र उद्देश्य है कि तुम लोग परमेश्वर को बेहतर ढंग से जान सको, उसके असंख्य पहलुओं को समझो, उसकी भावनाओं को समझो, इसकी सराहना करो कि परमेश्वर के सार एवं स्वभाव को ठोस रूप से एवं थोड़ा-थोड़ा करके, उसके कार्य के जरिए व्यक्त किया गया है, न कि मनुष्य के खोखले शब्दों, उनके कथनों एवं सिद्धांतों या उनकी कल्पनाओं के माध्यम से दर्शाया गया है। कहने का तात्पर्य है, परमेश्वर एवं परमेश्वर के सार का वास्तव में अस्तित्व है—वे तस्वीरें नहीं हैं, काल्पनिक नहीं हैं, मनुष्य द्वारा निर्मित नहीं हैं और निश्चित रूप से उनके द्वारा गढ़ी हुई नहीं हैं। क्या अब तुम लोग इसे पहचान गए हो? यदि तुम लोग इसे पहचान गए हो, तो आज मेरे वचनों ने अपना लक्ष्य पा लिया है।

आज हमने तीन विषयों पर बातचीत की। मुझे भरोसा है कि इन तीन विषयों पर हमारी संगति से हर किसी ने बहुत कुछ प्राप्त किया है। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि इन तीन विषयों के माध्यम से, परमेश्वर के विचार जिनका मैंने वर्णन किया था या परमेश्वर का स्वभाव एवं सार जिनका मैंने उल्लेख किया था, उन्होंने परमेश्वर के बारे में लोगों की कल्पनाओं और समझ को रूपांतरित कर दिया है, यहाँ तक कि परमेश्वर में प्रत्येक के विश्वास को रूपांतरित कर दिया है, और इसके अतिरिक्त, उस परमेश्वर की छवि को रूपांतरित कर दिया है, जिसकी प्रशंसा प्रत्येक के द्वारा उनके हृदय में की जाती थी। चाहे कुछ भी हो, मैं आशा करता हूँ कि जो कुछ तुम लोगों ने बाइबल के इन दो खंडों से परमेश्वर के स्वभाव के बारे में सीखा है, वह तुम लोगों के लिए लाभदायक है और मैं आशा करता हूँ कि वापस जाने के बाद तुम लोग इस पर और अधिक विचार करने की कोशिश करोगे। आज की सभा यहीं समाप्त होती है। अलविदा!

4 नवंबर, 2013

परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर II

अपनी पिछली सभा के दौरान हमने एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय के बारे में संगति की थी। क्या तुम लोगों को याद है कि वह क्या था? मैं इसे दोहराता हूँ। हमारी पिछली संगति का विषय था : परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर। क्या यह तुम लोगों के लिए महत्वपूर्ण विषय है? इसका कौन-सा भाग तुम लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है? परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव, या स्वयं परमेश्वर? तुम लोगों को किस में सबसे ज्यादा रुचि है? तुम लोग किस भाग के बारे में सबसे अधिक सुनना चाहते हो? मैं जानता हूँ कि तुम लोगों के लिए इस प्रश्न का उत्तर दे पाना कठिन है, क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव उसके कार्य के हर एक पहलू में देखा जा सकता है, और उसका स्वभाव उसके कार्य में हमेशा और सभी स्थानों पर प्रकट होता है, और वस्तुतः स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है; परमेश्वर की समग्र प्रबंधन योजना में, परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव, और स्वयं परमेश्वर एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते हैं।

परमेश्वर के कार्य के बारे में हमारी पिछली संगति की विषयवस्तु बाइबल के वृत्तांत थे जो बहुत पहले घटित हुए थे। वे सभी परमेश्वर और मनुष्य के बारे में कहानियाँ थीं, और वे ऐसी चीज़ों के बारे में हैं जो मनुष्य के साथ घटित हुईं, जबकि उनमें परमेश्वर की भागीदारी और अभिव्यक्ति भी शामिल है, इसलिए परमेश्वर को जानने के लिए इन कहानियों का विशेष मूल्य और महत्व है। मनुष्यजाति का सृजन करने के तुरंत बाद, परमेश्वर ने मनुष्य के साथ जुड़ना और मनुष्य से बात करना शुरू कर दिया, और उसका स्वभाव मनुष्य के समक्ष व्यक्त होना आरंभ हो गया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर जब पहली बार मनुष्य के साथ जुड़ा, तभी से वह अपना सार और अपना स्वरूप, बिना किसी व्यवधान के, मनुष्य पर ज़ाहिर करने लगा। इस बात की परवाह किए बिना कि पहले के लोग या आज के लोग इसे देखने या समझने में समर्थ हैं या नहीं, परमेश्वर अपना स्वभाव प्रकट करते हुए और अपना सार व्यक्त करते हुए मनुष्य से बात करता है और मनुष्य के बीच कार्य करता है—यह तथ्य है, और कोई भी व्यक्ति इससे इनकार नहीं कर सकता है। इसका यह भी अर्थ है कि जब परमेश्वर मनुष्य के साथ कार्य करता और जुड़ता है, तब परमेश्वर का स्वभाव, परमेश्वर का सार और उसका स्वरूप निरंतर सामने आते और प्रकट होते रहते हैं। उसने मनुष्य से कभी

कुछ छिपाया या गुप्त नहीं रखा है, बल्कि इसके बजाय वह कुछ भी रोककर रखे बिना अपना स्वभाव सार्वजनिक और प्रकाशित कर देता है। इस प्रकार, परमेश्वर आशा करता है कि मनुष्य उसे जान सके और उसके स्वभाव और सार को समझ सके। वह नहीं चाहता है कि मनुष्य उसके स्वभाव और सार के साथ अनंत रहस्यों की तरह व्यवहार करे, न ही वह यह चाहता है कि मनुष्यजाति परमेश्वर को ऐसी पहेली माने जिसे कभी सुलझाया नहीं जा सकता है। जब मनुष्यजाति परमेश्वर को जान लेती है, केवल तभी मनुष्य आगे का मार्ग जान सकता है और परमेश्वर के मार्गदर्शन को स्वीकार कर सकता है, और केवल ऐसी मनुष्यजाति ही सच्चे अर्थ में परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन जीवन जी सकती है, और प्रकाश में, परमेश्वर के आशीषों के बीच, जीवन जी सकती है।

परमेश्वर से निकले और उसके द्वारा प्रकट किए गए वचन और स्वभाव उसकी इच्छा को दर्शाते हैं, और वे उसके सार को भी दर्शाते हैं। जब परमेश्वर मनुष्य के साथ जुड़ता है, तब वह चाहे जो कहे या करे, या वह चाहे जो स्वभाव प्रकट करे, और मनुष्य परमेश्वर के सार और उसके स्वरूप का चाहे जो देखे, वे सभी मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा को दर्शाते हैं। मनुष्य चाहे जितना एहसास कर पाए, बूझ या समझ पाए, यह सब परमेश्वर की इच्छा—मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा—को दर्शाता है! यह संदेह से परे है! मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा वह है जैसा वह लोगों से होने अपेक्षा करता है, जो वह उनसे करने की अपेक्षा करता है, जैसे वह उनसे जीने की अपेक्षा करता है, और जैसा वह उनसे परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति करने में समर्थ बनने की अपेक्षा करता है। क्या ये चीज़ें परमेश्वर के सार से अवियोज्य हैं? दूसरे शब्दों में, परमेश्वर अपना स्वभाव और अपना समूचा स्वरूप उसी समय सामने लाता है जब वह मनुष्य से माँगें कर रहा होता है। इसमें कोई झूठ, कोई बहाना, कोई दुराव-छिपाव, और कोई साज-श्रृंगार नहीं है। फिर भी मनुष्य परमेश्वर का स्वभाव जानने में असमर्थ क्यों है, और क्यों वह परमेश्वर के स्वभाव को कभी भी स्पष्ट रूप से महसूस करने में समर्थ नहीं रहा है? मनुष्य ने कभी परमेश्वर की इच्छा की अनुभूति क्यों नहीं की? परमेश्वर से जो निकलता और उसके द्वारा प्रकट किया जाता है, यही वह है जो स्वयं परमेश्वर का स्वरूप है; यह उसके सच्चे स्वभाव का एक-एक कतरा और फलक है—तो मनुष्य क्यों नहीं देख सकता है? क्यों मनुष्य पूरे ज्ञान के काबिल नहीं है? इसका एक महत्वपूर्ण कारण है। तो, यह कारण क्या है? सृजन के समय से ही, मनुष्य ने परमेश्वर के साथ कभी परमेश्वर जैसा बर्ताव नहीं किया। प्राचीनतम समयों में, मनुष्य के संबंध में—उस मनुष्य के संबंध में जिसे अभी बस सृजित किया गया था—परमेश्वर ने चाहे जो

किया हो, पर मनुष्य ने परमेश्वर को एक साथी से अधिक कुछ नहीं माना, कोई ऐसा जिस पर भरोसा किया जा सकता था, और मनुष्य को परमेश्वर का कोई ज्ञान या समझ नहीं थी। कहने का तात्पर्य यह है कि वह नहीं जानता था कि इस अस्तित्व—इस अस्तित्व जिस पर उसने भरोसा किया और जिसे अपने साथी के रूप में देखा—से जो निकला था, वही परमेश्वर का सार था, और न ही वह यह जानता था कि यह अस्तित्व वही एकमात्र परमेश्वर था जो सभी चीज़ों के ऊपर शासन करता है। सीधे-सादे ढंग से कहें, तो उस समय के लोग परमेश्वर को बिल्कुल नहीं पहचानते थे। वे नहीं जानते थे कि स्वर्ग और पृथ्वी तथा सभी चीज़ें उसी के द्वारा बनाई गई हैं, और वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि वह कहाँ से आया, और इस बात से भी कि वह क्या था। निस्संदेह, उस बीते समय में परमेश्वर मनुष्य से अपेक्षा नहीं करता था कि वह उसे जाने, या उसे बूझे, या वह सब कुछ समझे जो वह करता था, या उसकी इच्छा के बारे में जानकार हो, क्योंकि ये मनुष्यजाति के सृजन के बाद प्राचीनतम समय थे। जब परमेश्वर ने व्यवस्था के युग के कार्य की तैयारियाँ आरंभ कीं, तब परमेश्वर ने मनुष्य के लिए कुछ किया और मनुष्य से कुछ माँगें करनी भी शुरू कीं, मनुष्य को यह बताते हुए कि वह परमेश्वर को भेंट कैसे चढ़ाए और उसकी कैसे आराधना करे। केवल तभी मनुष्य ने परमेश्वर के बारे में थोड़ी-सी सीधी-सादी जानकारियाँ प्राप्त कीं, केवल तभी उसने मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच का अंतर जाना, और यह जाना कि परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है जिसने मनुष्यजाति का सृजन किया था। जब मनुष्य जान गया कि परमेश्वर परमेश्वर था और मनुष्य मनुष्य था, तो उसके और परमेश्वर के बीच में एक निश्चित दूरी बन गई, मगर तब भी परमेश्वर ने यह माँग नहीं की कि मनुष्य को उसके बारे में बहुत अधिक ज्ञान या गहरी समझ हो। इस प्रकार, परमेश्वर अपने कार्य के चरणों और परिस्थितियों के आधार पर मनुष्य से भिन्न-भिन्न अपेक्षाएँ करता है। इसमें तुम लोग क्या देखते हो? तुम लोग परमेश्वर के स्वभाव का कौन-सा पहलू महसूस करते हो? क्या परमेश्वर वास्तविक है? क्या मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाएँ उचित हैं? परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के सृजन के बाद प्राचीनतम समयों के दौरान, जब परमेश्वर ने मनुष्य पर विजय और पूर्णता का कार्य अभी नहीं किया था, और उससे कई सारे वचन नहीं कहे थे, तब उसने मनुष्य से बहुत थोड़ा चाहा। मनुष्य ने चाहे जो किया और उसने चाहे जैसा व्यवहार किया—यहाँ तक कि यदि उसने कुछ ऐसी चीज़ें भी कीं जिनसे परमेश्वर अप्रसन्न हुआ—किंतु परमेश्वर ने इस सबको क्षमा और अनदेखा कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर जानता था कि उसने मनुष्य को क्या दिया था और मनुष्य के भीतर क्या था, और इस प्रकार वह जानता था कि उसे मनुष्य से किस स्तर की

अपेक्षाएँ करनी चाहिए। उस समय उसकी अपेक्षाओं का स्तर भले ही बहुत कम था, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि उसका स्वभाव महान नहीं था, या उसकी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता खोखले शब्द मात्र थे। मनुष्य के लिए, परमेश्वर के स्वभाव और स्वयं परमेश्वर को जानने का केवल एक ही तरीक़ा है : परमेश्वर के प्रबंधन और मनुष्यजाति के उद्धार के कार्य के सोपानों का अनुसरण करना, और परमेश्वर मनुष्यजाति से जो वचन कहता है उन्हें स्वीकार करना। एक बार जब मनुष्य परमेश्वर का स्वरूप जान लेता है, और परमेश्वर का स्वभाव जान लेता भी, तब भी क्या मनुष्य परमेश्वर से अपना वास्तविक व्यक्तित्व उसे दिखाने को कहेगा? नहीं, मनुष्य ऐसा नहीं कहेगा, और ऐसा कहने की हिम्मत तक नहीं करेगा, क्योंकि परमेश्वर के स्वभाव और उसके स्वरूप को समझने-बूझने के बाद, मनुष्य सच्चे स्वयं परमेश्वर को, और उसके वास्तविक व्यक्तित्व को पहले ही देख चुका होगा। यह अवश्यंभावी परिणाम है।

परमेश्वर का कार्य और योजना ज्यों-ज्यों निरंतर आगे बढ़ते गए, और जब परमेश्वर ने मनुष्य के साथ एक चिह्न के रूप में बादल में इंद्रधनुष की वाचा स्थापित की कि वह जलप्रलय का उपयोग करके फिर कभी संसार को नष्ट नहीं करेगा, उसके पश्चात् परमेश्वर को उत्तरोत्तर बलवती इच्छा हुई कि वह ऐसे लोगों को प्राप्त करे जो उसके साथ एक मत हो सकते थे। इसलिए भी, उसे पहले से कहीं अधिक तीव्र चाह थी कि वह तत्काल ऐसे लोगों को प्राप्त करे जो पृथ्वी पर उसकी इच्छा पर चल सकें, और, इतना ही नहीं, ऐसे लोगों का एक समूह प्राप्त करे जो अंधकार की शक्तियों का शिकंजा तोड़कर मुक्त हो सकें और शैतान की बेड़ियों में न जकड़े हों, ऐसा समूह जो पृथ्वी पर उसकी गवाही देने में समर्थ होगा। ऐसे लोगों का एक समूह प्राप्त करना परमेश्वर की लंबे समय से इच्छा थी, सृजन के समय से ही वह इसे पाने की प्रतीक्षा कर रहा था। इस प्रकार, संसार का विनाश करने के लिए परमेश्वर द्वारा जलप्रलय के उपयोग, या मनुष्य के साथ उसकी वाचा के बावजूद, परमेश्वर की इच्छा, मनोदशा, योजना, और आशाएँ सभी वैसी की वैसी बनी रहीं। वह जो करना चाहता था, सृजन के समय के बहुत पहले से ही वह जिस चीज़ के लिए लालायित था, वह था मनुष्यजाति के बीच से उन लोगों को प्राप्त करना जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता था—लोगों का ऐसा समूह प्राप्त करना जो उसके स्वभाव को बूझ और जान पाए और उसकी इच्छा को समझ पाए, ऐसा समूह जो उसकी आराधना कर पाने में समर्थ होगा। लोगों का ऐसा समूह सच्चे अर्थ में उसकी गवाही दे पाएगा, और कहा जा सकता है कि वे उसके विश्वासपात्र होंगे।

आओ, आज हम परमेश्वर के पदचिह्नों और उसके कार्य के चरणों का अनुसरण करते रहें, ताकि हम

परमेश्वर के विचारों और मतों का, और परमेश्वर से वास्ता रखने वाले सारे नानाविध विवरणों का खुलासा कर सकें, जिन्हें बहुत लंबे समय से "मुहरबंद करके रखा" गया है। इन चीज़ों के माध्यम से हम परमेश्वर का स्वभाव जानने लगेंगे, परमेश्वर का सार समझने लगेंगे, परमेश्वर को अपने हृदयों में आने देंगे, और हममें से हर एक परमेश्वर से अपनी दूरी को कम करते हुए धीरे-धीरे परमेश्वर के और अधिक निकट आ जाएगा।

पिछली बार हमने जिस बारे में बात की थी, उसका एक भाग इस बात से संबंधित था कि परमेश्वर ने मनुष्य के साथ वाचा क्यों बाँधी। इस बार, हम पवित्र शास्त्र के नीचे दिए गए अंशों के बारे में संगति करेंगे। आओ हम पवित्र शास्त्र के अंश पढ़ने से आरंभ करें।

क. अब्राहम

1. परमेश्वर अब्राहम को एक पुत्र देने की प्रतिज्ञा करता है

उत्पत्ति 17:15-17 फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा। मैं उसको आशीष दूँगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूँगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूँगा कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य-राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।" तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, और मन ही मन कहने लगा, "क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगी और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?"

उत्पत्ति 17:21-22 परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूँगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा। तब परमेश्वर ने अब्राहम से बातें करनी बन्द की और उसके पास से ऊपर चढ़ गया।

2. अब्राहम इसहाक की बलि देता है

उत्पत्ति 22:2-3 उसने कहा, "अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।" अत: अब्राहम सबेरे तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली; तब निकल कर उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी।

उत्पत्ति 22:9-10 जब वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुँचे; तब अब्राहम ने वहाँ

वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बाँध कर वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। फिर अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे।

कोई भी उस कार्य को बाधित नहीं कर सकता जिसे करने का परमेश्वर संकल्प लेता है

तो, तुम सब लोगों ने अभी-अभी अब्राहम की कहानी सुनी। बाढ़ से संसार के नष्ट हो जाने के बाद उसे परमेश्वर द्वारा चुना गया था, उसका नाम अब्राहम था, और जब वह सौ वर्ष का था और उसकी पत्नी सारा नब्बे वर्ष की थी, तब परमेश्वर की प्रतिज्ञा उस तक आई। परमेश्वर ने उससे क्या प्रतिज्ञा की? परमेश्वर ने वह प्रतिज्ञा की जिसका संकेत हमें पवित्र शास्त्र में मिलता है : "मैं उसको आशीष दूँगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूँगा।" परमेश्वर द्वारा उसे पुत्र देने की प्रतिज्ञा के पीछे क्या पृष्ठभूमि थी? पवित्र शास्त्र यहाँ यह विवरण प्रदान करते हैं : "तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, और मन ही मन कहने लगा, 'क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगी और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?'" दूसरे शब्दों में, यह बुज़ुर्ग दंपति इतने वृद्ध थे कि संतान उत्पन्न नहीं कर सकते थे। जब परमेश्वर ने उससे अपनी प्रतिज्ञा की तो उसके बाद अब्राहम ने क्या किया? वह हँसता हुआ मुँह के बल गिर पड़ा, और उसने मन ही मन कहा, "क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगी?" अब्राहम मानता था कि यह असंभव था—जिसका अर्थ था कि वह मानता था कि उससे की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा मज़ाक से ज्यादा कुछ नहीं थी। मनुष्य की दृष्टि से, यह मनुष्य के द्वारा अप्राप्य है, और इसी तरह परमेश्वर के द्वारा अप्राप्य और उसके लिए असंभाव्य है। कदाचित्, अब्राहम के लिए, यह हँसी की बात थी : परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, फिर भी कि वह इस बात से थोड़ा अनभिज्ञ प्रतीत होता है कि इतना वृद्ध व्यक्ति संतान उत्पन्न करने में अक्षम होता है; उसे लगता है कि वह मुझे संतान उत्पन्न करने दे सकता है, वह कहता है कि वह मुझे एक पुत्र देगा—निश्चित रूप से यह असंभव है! इसलिए, अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, यह सोचते हुए: असंभव—परमेश्वर मेरे साथ मज़ाक कर रहा है, यह सत्य नहीं हो सकता! उसने परमेश्वर के वचनों को गंभीरता से नहीं लिया। इसलिए, परमेश्वर की नज़रों में, अब्राहम किस प्रकार का व्यक्ति था? (धार्मिक।) यह कहाँ कहा गया था कि वह एक धार्मिक मनुष्य था? तुम लोगों को लगता है कि परमेश्वर जिन्हें बुलाता है वे सब धार्मिक, और पूर्ण होते हैं, कि वे सब ऐसे लोग होते हैं जो परमेश्वर के साथ चलते हैं। तुम सिद्धान्त का पालन करते हो! तुम लोगों को स्पष्ट रूप से देखना ही चाहिए कि जब परमेश्वर किसी को परिभाषित करता है, तो वह ऐसा मनमाने ढंग से नहीं करता है। यहाँ, परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि अब्राहम धार्मिक था। अपने हृदय में, परमेश्वर के पास

प्रत्येक व्यक्ति को मापने के लिए मानक हैं। यद्यपि परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि अब्राहम किस प्रकार का व्यक्ति था, फिर भी उसके आचरण की दृष्टि से, अब्राहम को परमेश्वर में किस प्रकार का विश्वास था? क्या यह थोड़ा अमूर्त था? या उसे अत्यधिक विश्वास था? नहीं, उसे नहीं था! उसकी हँसी और विचार दर्शाते हैं कि वह कौन था, इसलिए तुम लोगों का यह विश्वास कि वह धार्मिक था, तुम्हारी कल्पना की उपज मात्र है, यह सिद्धान्त को आँख मूँदकर लागू करना है, यह गैरज़िम्मेदार मूल्यांकन है। क्या परमेश्वर ने अब्राहम की हँसी और उसके हाव-भाव देखे थे? क्या वह उनके बारे में जानता था? परमेश्वर जानता था। परंतु परमेश्वर ने जो करने का उसने संकल्प लिया था, क्या वह उसे बदल देता? नहीं! जब परमेश्वर ने योजना बनाई और संकल्प लिया कि वह इस मनुष्य को चुनेगा, तो यह संपन्न हो गया। मनुष्य के विचार और उसका आचरण परमेश्वर को रत्ती भर भी न तो प्रभावित करेगा, न ही कोई विघ्न डाल पायेगा; परमेश्वर अपनी योजना मनमाने ढंग से नहीं बदलेगा, वह मनुष्य के आचरण के कारण, यहाँ तक कि उस आचरण के कारण भी जो अज्ञानी हो सकता है, अपनी योजना को न ही बदलेगा न तो उलट-पलट करेगा। तो, उत्पत्ति 17:21-22 में क्या लिखा है? "परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूँगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा। तब परमेश्वर ने अब्राहम से बातें करनी बन्द की और उसके पास से ऊपर चढ़ गया।" अब्राहम जो सोचता और कहता था, परमेश्वर ने उस पर रत्ती भर ध्यान नहीं दिया। उसके द्वारा अवहेलना करने का क्या कारण था? कारण यह था कि उस समय परमेश्वर ने यह नहीं चाहा था कि मनुष्य को अत्यधिक विश्वास हो, या वह परमेश्वर के बारे में अत्यधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ हो, या, इतना ही नहीं, वह परमेश्वर द्वारा जो किया और कहा गया था, उसे समझ पाए। इस प्रकार, उसने यह नहीं माँगा कि उसने जो करने का संकल्प लिया था, या उसने जिन लोगों को चुनना निर्धारित किया था, या उसके कार्यों के सिद्धांतों को मनुष्य पूरी तरह समझे, क्योंकि मनुष्य की आध्यात्मिक कद-काठी निरी अपर्याप्त थी। उस समय, अब्राहम ने जो कुछ भी किया और जैसा भी उसका चाल-चलन था, उसे परमेश्वर ने सामान्य माना। उसने न निंदा की या न ही फटकार लगाई, बल्कि बस इतना कहा : "इसहाक सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा।" इन वचनों की उसकी घोषणा के बाद, परमेश्वर के लिए, यह विषय कदम-दर-कदम सत्य होता गया; परमेश्वर की नज़रों में, वह जिसे उसकी योजना के अनुसार संपन्न किया जाना था, वह पहले ही प्राप्त कर लिया गया था। इसकी व्यवस्थाएँ पूरी करने के बाद, परमेश्वर चला गया। मनुष्य जो करता या सोचता है, मनुष्य जो समझता है, मनुष्य की योजनाएँ—इनमें से किसी का भी परमेश्वर से

कोई संबंध नहीं है। सब कुछ परमेश्वर की योजना के अनुसार, परमेश्वर द्वारा नियत समयों और चरणों के अनुरूप आगे बढ़ता है। परमेश्वर के कार्य का सिद्धांत ऐसा ही है। मनुष्य जो कुछ भी सोचता या जानता है, परमेश्वर उसमें हस्तक्षेप नहीं करता है, तो भी महज़ इसलिए कि मनुष्य मानता या समझता नहीं है, वह न तो अपनी योजना को त्यागता या न ही अपने कार्य को तजता है। इस प्रकार तथ्यों को परमेश्वर की योजना और विचारों के अनुसार संपन्न किया जाता है। यह वही है जो हम बाइबल में देखते हैं : परमेश्वर ने इसहाक को उस समय जन्म लेने दिया जो उसने नियत किया था। क्या तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य के व्यवहार और आचरण ने परमेश्वर के कार्य में रुकावट डाली? उन्होंने परमेश्वर के कार्य में रुकावट नहीं डाली! क्या परमेश्वर में मनुष्य के थोड़े-से विश्वास ने, और परमेश्वर के बारे में उसकी धारणाओं और कल्पनाओं ने परमेश्वर के कार्य को प्रभावित किया? नहीं, उन्होंने नहीं किया! ज़रा-सा भी नहीं! परमेश्वर की प्रबंधन योजना किसी भी मनुष्य, विषय, या परिवेश से अप्रभावित रहती है। वह जो भी करने का संकल्प लेता है, वह सब समय पर तथा उसकी योजना के अनुसार पूर्ण और संपन्न किया जाएगा, और उसके कार्य में कोई भी मनुष्य दख़ल नहीं दे सकता है। परमेश्वर मनुष्य की नासमझी और अज्ञानता के कुछ निश्चित पहलुओं को, और यहाँ तक अपने प्रति मनुष्य के प्रतिरोध और धारणाओं के कुछ निश्चित पहलुओं को भी अनदेखा कर देता है; और चाहे कुछ भी हो वह कार्य करता है जो उसे करना ही है। यह परमेश्वर का स्वभाव है, और उसकी सर्वशक्तिमत्ता का प्रतिबिंब है।

परमेश्वर द्वारा मनुष्यजाति के प्रबंधन और उद्धार का कार्य अब्राहम द्वारा इसहाक की बलि के साथ आरंभ होता है

अब्राहम को एक पुत्र देने के बाद, परमेश्वर ने अब्राहम से जो वचन कहे थे, वे पूरे हो गए थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर की योजना यहीं रुक गई; इसके विपरीत, मनुष्यजाति के प्रबंधन और उद्धार के लिए परमेश्वर की महाप्रतापी योजना अभी बस आरंभ ही हुई थी, और अब्राहम को दी गई संतान की आशीष उसकी समग्र प्रबंधन योजना की प्रस्तावना मात्र थी। उस पल कौन जानता था कि जब अब्राहम ने इसहाक की बलि दी थी, तब शैतान के साथ परमेश्वर का युद्ध ख़ामोशी से आरंभ हो चुका है।

परमेश्वर को परवाह नहीं यदि मनुष्य नासमझ है—वह बस इतना चाहता है कि मनुष्य सच्चा हो

आओ आगे देखें कि परमेश्वर ने अब्राहम के साथ क्या किया। उत्पत्ति 22:2 में, परमेश्वर ने अब्राहम

को निम्न आज्ञा दी : "अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।" परमेश्वर का आशय बिल्कुल स्पष्ट था : वह अब्राहम से अपने इकलौते पुत्र को, जिससे वह प्रेम करता था, होमबलि के रूप में देने के लिए कह रहा था। आज इस पर नज़र डालें, तो क्या परमेश्वर की आज्ञा अभी भी मनुष्य की धारणाओं के विपरीत है? हाँ! उस समय परमेश्वर ने जो भी किया, वह सब मनुष्य की धारणाओं के बिलकुल विपरीत है; यह मनुष्य के लिए अबूझ है। अपनी धारणाओं में, लोग इन बातों पर विश्वास करते हैं : जब मनुष्य विश्वास नहीं करता था, इसे असंभाव्य मानता था, तब परमेश्वर ने उसे एक पुत्र दिया, और उसके पुत्र प्राप्त कर लेने के बाद, परमेश्वर ने उससे अपने पुत्र की बलि देने के लिए कहा। क्या यह सरासर अविश्वसनीय नहीं है! वास्तव में परमेश्वर का क्या करने का इरादा था? परमेश्वर का वास्तविक मंतव्य क्या था? उसने अब्राहम को बिना शर्त एक पुत्र दिया, मगर उसने यह भी कहा कि अब्राहम बेशर्त बलि चढ़ा दे। क्या यह बहुत अधिक था? तीसरे पक्ष के दृष्टिकोण से, यह न केवल बहुत अधिक था बल्कि कुछ-कुछ "बेवजह आफ़त पैदा करने" का मामला भी था। परंतु अब्राहम स्वयं यह नहीं मानता था कि परमेश्वर बहुत अधिक माँग रहा था। हालाँकि इसके बारे में उसकी अपनी कुछेक छोटी-मोटी राय थीं और वह परमेश्वर के प्रति थोड़ा शंकालु था, तब भी वह बलि देने के लिए तैयार था। इस बिंदु पर, तुम ऐसा क्या देखते हो जो यह सिद्ध करता हो कि अब्राहम अपने पुत्र की बलि देने के लिए तैयार था? इन वाक्यों में क्या कहा जा रहा है? मूल पाठ नीचे लिखे विवरण देता है: "अत: अब्राहम सबेरे तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली; तब निकल कर उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी" (उत्पत्ति 22:3)। "जब वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुँचे; तब अब्राहम ने वहाँ वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बाँध कर वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। फिर अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे" (उत्पत्ति 22:9-10)। जब अब्राहम ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अपने बेटे को मारने के लिए छुरी ली, तो क्या उसके कार्यकलाप परमेश्वर द्वारा देखे गए थे? वे देखे गए थे। समूची प्रक्रिया में—आरंभ से, जब परमेश्वर ने कहा कि अब्राहम इसहाक का बलिदान करे, उस समय तक जब अब्राहम ने अपने पुत्र का वध करने के लिए वास्तव में छुरी उठा ली—परमेश्वर ने अब्राहम का हृदय देखा, और पहले परमेश्वर के बारे में उसकी नासमझी, अज्ञानता और

ग़लतफ़हमी चाहे जो रही हो, किंतु उस समय अब्राहम का हृदय परमेश्वर के प्रति सच्चा, और ईमानदार था, और वह परमेश्वर के द्वारा दिए गए पुत्र, इसहाक को सचमुच परमेश्वर को लौटाने जा रहा था। परमेश्वर ने उसमें आज्ञाकारिता देखी—ठीक वही आज्ञाकारिता जो उसने चाही थी।

मनुष्य के लिए, परमेश्वर बहुत-से ऐसे काम करता है जो अबूझ और यहाँ तक कि अविश्वसनीय भी होते हैं। जब परमेश्वर किसी को आयोजित करना चाहता है, तो यह आयोजन प्रायः मनुष्य की धारणाओं के विपरीत और उसके लिए अबूझ होता है, फिर भी ठीक यही असंगति और अबूझता ही है जो परमेश्वर द्वारा मनुष्य का परीक्षण और परीक्षा हैं। इस बीच, अब्राहम अपने भीतर परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता प्रदर्शित कर पाया, जो परमेश्वर की अपेक्षा को संतुष्ट करने में उसके समर्थ होने की सबसे आधारभूत शर्त थी। जब अब्राहम परमेश्वर की अपेक्षा को पूरा कर पाया, जब उसने इसहाक को भेंट चढ़ाया, केवल तभी परमेश्वर ने मनुष्यजाति के प्रति—अब्राहम के प्रति, जिसे उसने चुना था—सच्चे अर्थ में आश्वस्ति और स्वीकृति महसूस की। केवल तभी परमेश्वर आश्वस्त हुआ कि यह व्यक्ति जिसे उसने चुना था अपरिहार्य अगुआ है जो उसकी प्रतिज्ञा और उसके बाद की उसकी प्रबंधन योजना का उत्तरदायित्व ले सकता था। यद्यपि यह सिर्फ एक परीक्षण और परीक्षा थी, फिर भी परमेश्वर ने कृतार्थ महसूस किया, उसने अपने प्रति मनुष्य का प्रेम महसूस किया, और उसने मनुष्य की ओर से इतना सुखद महसूस किया जैसा पहले कभी नहीं किया था। अब्राहम ने इसहाक को मारने के लिए जिस क्षण अपनी छुरी उठाई, क्या परमेश्वर ने उसे रोका? परमेश्वर ने अब्राहम को इसहाक की बलि नहीं देने दी, क्योंकि इसहाक का जीवन लेने का परमेश्वर का कोई इरादा ही नहीं था। इस प्रकार, परमेश्वर ने अब्राहम को बिलकुल सही समय पर रोक दिया। परमेश्वर के लिए, अब्राहम की आज्ञाकारिता ने पहले ही परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी, उसने जो किया वह पर्याप्त था, और जो करना परमेश्वर का अभीष्ट था उसका परिणाम वह पहले ही देख चुका था। क्या यह परिणाम परमेश्वर के लिए संतोषजनक था? कहा जा सकता है कि यह परिणाम परमेश्वर के लिए संतोषजनक था, कि यही वह था जो परमेश्वर चाहता था, और वह था जो परमेश्वर देखने को लालायित था। क्या यह सच है? यद्यपि, भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति की परीक्षा लेने के लिए भिन्न-भिन्न तरीक़ों का प्रयोग करता है, किंतु अब्राहम में परमेश्वर ने वह देखा जो वह चाहता था, उसने देखा कि अब्राहम का हृदय सच्चा था, और यह कि उसकी आज्ञाकारिता बेशर्त थी। ठीक यही "बेशर्त" ही था जिसकी परमेश्वर ने आकांक्षा की थी। लोग प्रायः कहते हैं, "मैंने पहले ही यह चढ़ा दिया है, मैंने पहले ही उसका त्याग कर दिया है—फिर भी

परमेश्वर मुझसे संतुष्ट क्यों नहीं है? वह मुझे परीक्षाओं के लिए विवश क्यों करता रहता है? वह मुझे परखता क्यों रहता है?" यह एक तथ्य दर्शाता है : परमेश्वर ने तुम्हारा हृदय नहीं देखा है, और तुम्हारा हृदय प्राप्त नहीं किया है। कहने का तात्पर्य है कि उसने ऐसी शुद्ध हृदयता नहीं देखी है जैसी तब देखी थी जब अब्राहम अपने ही हाथ से अपने पुत्र को मारने के लिए और परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए छुरी उठा पाया था। उसने तुम्हारी बेशर्त आज्ञाकारिता नहीं देखी है, और उसे तुम्हारे द्वारा आराम नहीं पहुँचाया गया है। ऐसे में, यह स्वाभाविक है कि परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा लेता रहे। क्या यह सच नहीं है? जहाँ तक इस विषय की बात है, इसे हम यहीं छोड़ देंगे। इसके बाद, हम "अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा" पढ़ेंगे।

3. अब्राहम को परमेश्वर की प्रतिज्ञा

उत्पत्ति 22:16-18 "यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा; और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।"

यह परमेश्वर के द्वारा अब्राहम को दिए गए आशीष का पूर्ण विवरण है। छोटा होते हुए भी इसकी विषयवस्तु समृद्ध है : इसमें अब्राहम को मिले परमेश्वर के उपहार का कारण और उसकी पृष्ठभूमि शामिल है, और साथ ही वह भी जो उसने अब्राहम को दिया था। यह उस आनंद और उत्साह से ओतप्रोत है जिसके साथ परमेश्वर ने ये वचन कहे, और साथ ही साथ उसके वचनों को ध्यानपूर्वक सुन पाने वालों को शीघ्र से शीघ्र प्राप्त करने की उसकी तीव्र लालसा भी इसमें है। परमेश्वर के वचनों का आज्ञापालन और उसकी आज्ञाओं का अनुसरण करने वालों के प्रति परमेश्वर का दुलार, और उसकी दयालुता भी हम इसमें देखते हैं। इसी तरह, हम यह भी देखते हैं कि लोगों को प्राप्त करने के लिए वह क्या क़ीमत चुकाता है, और उन्हें प्राप्त करने के लिए कितनी परवाह और सोच-विचार करता है। यही नहीं, यह अंश, जिसमें "मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ" वचन हैं, हमें उसकी प्रबंधन योजना के इस कार्य के परदे के पीछे, केवल और केवल परमेश्वर द्वारा सही गई कटुता और पीड़ा की शक्तिशाली समझ प्रदान करता है। यह विचारोत्तेजक अंश है, और ऐसा अंश जिसका बाद में आने वालों के लिए विशेष महत्व था, और इसने उन पर दूरगामी प्रभाव डाला था।

मनुष्य अपनी ईमानदारी और आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर के आशीष प्राप्त करता है

क्या परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दिया गया आशीष, जिसके बारे में हम यहाँ पढ़ते हैं, महान था? यह आखिर कितना महान था? यहाँ एक मुख्य वाक्य है : "और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी।" यह वाक्य दिखाता है कि अब्राहम को प्राप्त आशीष पहले या बाद में आने वालों में से किसी को भी नहीं दिए गए थे। परमेश्वर के द्वारा माँगे जाने पर, जब अब्राहम ने अपना इकलौता पुत्र—अपना प्रिय इकलौता पुत्र—परमेश्वर को लौटा दिया (टिप्पणी : यहाँ हम "भेंट चढ़ा दिया" शब्द का प्रयोग नहीं कर सकते; हमें कहना चाहिए कि उसने अपना पुत्र परमेश्वर को लौटा दिया), तब परमेश्वर ने न केवल अब्राहम को इसहाक को भेंट नहीं चढ़ाने दिया, बल्कि उसने उसे आशीष भी दी। उसने अब्राहम को किस प्रतिज्ञा से आशीष दी? उसने उसके वंश को कई गुना बढ़ाने की प्रतिज्ञा से आशीष दी। और उन्हें कितने गुना बढ़ाया जाना था? पवित्र शास्त्र में निम्न वर्णन दिया गया है : "...आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा: और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी।" वह क्या संदर्भ था जिसमें परमेश्वर ने ये वचन कहे? कहने का तात्पर्य है कि अब्राहम ने परमेश्वर के आशीष कैसे प्राप्त किए थे? उसने उन्हें ठीक वैसे ही प्राप्त किया जैसा परमेश्वर पवित्र शास्त्र में कहता है : "क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।" अर्थात्, चूँकि अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था, क्योंकि उसने, ज़रा-सी भी शिकायत के बिना, वह सब कुछ किया जो परमेश्वर ने कहा, माँगा और आदेश दिया था, इसलिए परमेश्वर ने उससे ऐसी प्रतिज्ञा की। इस प्रतिज्ञा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाक्य है जो उस समय परमेश्वर के विचारों का थोड़ा-सा उल्लेख करता है। क्या तुम लोगों ने यह देखा है? हो सकता है तुम लोगों ने परमेश्वर के इन वचनों पर कि "मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ" ज़्यादा ध्यान न दिया हो। उनका अर्थ यह है कि जब परमेश्वर ने ये वचन कहे, तब वह अपनी ही सौगंध खा रहा था। जब लोग शपथ लेते हैं तब वे किसकी सौगंध खाते हैं? वे स्वर्ग की सौगंध खाते हैं, कहने का अभिप्राय यह, वे परमेश्वर की शपथ लेते हैं और परमेश्वर की सौगंध खाते हैं। हो सकता है लोगों को उस परिघटना की ज़्यादा समझ न हो जिसमें परमेश्वर ने स्वयं अपनी शपथ ली थी, परंतु जब मैं तुम लोगों को सही व्याख्या प्रदान करूँगा तब तुम लोग समझ पाओगे। ऐसे मनुष्य से सामना होने पर, जो केवल उसके वचनों को सुन सकता था किंतु उसके हृदय को नहीं समझ सकता था, परमेश्वर ने एक बार फिर एकाकी और खोया हुआ महसूस किया। हताशा में—और, कहा जा सकता है, अवचेतनता में—

परमेश्वर ने कुछ बहुत ही स्वाभाविक किया : अब्राहम से यह प्रतिज्ञा करते समय परमेश्वर ने अपना हाथ अपने हृदय पर रखा और स्वयं को संबोधित किया, और इससे मनुष्य ने परमेश्वर को कहते सुना "मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ।" परमेश्वर के क्रियाकलापों के माध्यम से, तुम शायद स्वयं अपने बारे में सोचो। जब तुम अपना हाथ अपने हृदय पर रखते हो और अपने आप से कहते हो, तो क्या तुम्हें स्पष्ट पता होता है कि तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम्हारा मनोभाव सच्चा है? क्या तुम अपने हृदय से खुलकर बात करते हो? इस प्रकार, हम यहाँ देखते हैं कि जब परमेश्वर ने अब्राहम से बात की, तो वह सच्चा और शुद्ध हृदय था। अब्राहम से बात करते और उसे आशीष देते समय, परमेश्वर साथ ही साथ स्वयं से भी बोल रहा था। वह स्वयं से कह रहा था : मैं अब्राहम को धन्य करूँगा, और उसकी संतति को आकाश के तारों के समान अनगिनत और समुद्र तट पर रेत के समान प्रचुर कर दूँगा, क्योंकि उसने मेरे वचनों का पालन किया है और वह वही है जिसे मैंने चुना है। जब परमेश्वर ने कहा "मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ," तब परमेश्वर ने संकल्प किया कि वह अब्राहम में इस्राएल के चुने हुए लोगों को उत्पन्न करेगा, जिसके बाद वह इन लोगों को अपने कार्य के साथ तेज़ गति से आगे ले जाएगा। अर्थात्, परमेश्वर अब्राहम के वंशजों से परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य धारण करवाएगा, और परमेश्वर का कार्य और वह जो परमेश्वर के द्वारा व्यक्त किया गया है अब्राहम के साथ आरंभ होगा और अब्राहम के वंशजों में आगे बढ़ेगा, इस प्रकार मनुष्य को बचाने की परमेश्वर की इच्छा साकार होगी। क्या कहते हो तुम लोग, क्या यह धन्य चीज़ नहीं है? मनुष्य के लिए, इससे बड़ा कोई आशीष नहीं है; कहा जा सकता है कि यह सर्वाधिक धन्य चीज़ है। अब्राहम के द्वारा प्राप्त आशीष उसकी संतान का कई गुना बढ़ना नहीं था, बल्कि अब्राहम के वंशजों में परमेश्वर द्वारा अपने प्रबंधन, अपने आदेश, और अपने कार्य की प्राप्ति थी। इसका अर्थ है कि अब्राहम द्वारा प्राप्त आशीष अस्थायी नहीं थे, बल्कि परमेश्वर की प्रबंधन योजना की प्रगति के साथ आगे बढ़ते गए। जब परमेश्वर बोला, जब परमेश्वर ने अपनी ही शपथ खाई, तब वह पहले ही एक संकल्प कर चुका था। क्या इस संकल्प की प्रक्रिया सच्ची थी? क्या यह वास्तविक थी? परमेश्वर ने संकल्प किया कि उससे आगे के समय से, उसके प्रयास, वह क़ीमत जो उसने चुकाई, उसका स्वरूप, उसका सब कुछ, और यहाँ तक कि उसका जीवन भी, अब्राहम को और अब्राहम के वंशजों को दिया जाएगा। इस तरह परमेश्वर ने यह भी संकल्प किया कि लोगों के इस समूह से आरंभ करते हुए, वह अपने कर्मों को प्रत्यक्ष करेगा, और मनुष्य को अपनी बुद्धि, अधिकार और सामर्थ्य देखने देगा।

जो परमेश्वर को जानते हैं और उसकी गवाही दे पाते हैं उन्हें प्राप्त करना परमेश्वर की अपरिवर्ती इच्छा है

परमेश्वर जब स्वयं से बात कर रहा था, उसी समय उसने अब्राहम से भी बात की, परंतु परमेश्वर ने उसे जो आशीष दिए उन्हें सुनने के अलावा, क्या अब्राहम उस पल परमेश्वर के सभी वचनों में निहित उसकी सच्ची अभिलाषाओं को समझ पाया था? वह नहीं समझ पाया था! और इसलिए, उस पल, जब परमेश्वर ने अपनी ही शपथ खाई, तब भी परमेश्वर का हृदय एकाकी और दुःखी था। अभी भी एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो यह समझ या बूझ पाता कि उसका अभीष्ट और उसकी योजना क्या थी। उस क्षण, कोई भी व्यक्ति—अब्राहम सहित—विश्वासपूर्वक परमेश्वर से बात नहीं कर पाता था, उसे जो कार्य करना ही था उसमें उसके साथ सहयोग तो और भी कोई नहीं कर पाता था। सतह पर, परमेश्वर ने अब्राहम को प्राप्त कर लिया था, एक ऐसे व्यक्ति को जो उसके वचनों का पालन कर सकता था। परंतु वास्तव में, परमेश्वर के बारे में इस व्यक्ति का ज्ञान मुश्किल से ही शून्य से अधिक था। परमेश्वर ने अब्राहम को भले ही धन्य कर दिया था, किंतु परमेश्वर का हृदय अब भी संतुष्ट नहीं था। इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर संतुष्ट नहीं था? इसका अर्थ है कि उसका प्रबंधन अभी बस आरंभ ही हुआ था, इसका अर्थ है कि वे लोग जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता था, लोग जिन्हें वह देखने को लालायित था, लोग जिनसे वह प्रेम करता था, वे लोग अभी भी उससे दूर थे; उसे समय की आवश्यकता थी, उसे प्रतीक्षा करने की आवश्यकता थी, और उसे धैर्यवान होने की आवश्यकता थी। क्योंकि उस समय, स्वयं परमेश्वर के अलावा, कोई नहीं था जो जानता हो कि उसे क्या चाहिए था, या वह क्या प्राप्त करना चाहता था, या वह किसके लिए लालायित था। इसलिए, अत्यधिक उत्साहित महसूस करने के साथ-साथ, परमेश्वर ने हृदय में भारी बोझ भी महसूस किया। फिर भी उसने अपने क़दम नहीं रोके, और उसे जो करना ही था उसके अगले चरण की योजना बनाना उसने जारी रखा।

अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा में तुम लोग क्या देखते हो? परमेश्वर ने अब्राहम को महान आशीष सिर्फ इसलिए प्रदान किए क्योंकि उसने परमेश्वर के वचनों का पालन किया था। यद्यपि, ऊपर से, यह सामान्य और अपेक्षित प्रतीत होता है, फिर भी इसमें हम परमेश्वर का हृदय देखते हैं : परमेश्वर अपने प्रति मनुष्य की आज्ञाकारिता को विशेष रूप से सहेजकर रखता है, और अपने बारे में मनुष्य की समझ और अपने प्रति मनुष्य की शुद्ध हृदयता उसे अच्छी लगती है। यह शुद्ध हृदयता परमेश्वर को कितनी अच्छी

लगती है? तुम लोग शायद समझ न सको कि उसे यह कितनी अच्छी लगती है, और शायद ऐसा कोई भी न हो जिसे इसका अहसास हो। परमेश्वर ने अब्राहम को पुत्र दिया, और जब वह पुत्र बड़ा हो गया, तो परमेश्वर ने अब्राहम से अपना पुत्र परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए कहा। अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया, उसने परमेश्वर के वचन का पालन किया, और उसकी शुद्ध हृदयता ने परमेश्वर को द्रवित कर दिया और परमेश्वर ने उसे सहेजकर रखा। परमेश्वर ने इसे कितना सहेजकर रखा? और उसने इसे क्यों सहेजकर रखा? ऐसे समय जब किसी ने भी परमेश्वर के वचनों को बूझा या उसके हृदय को समझा नहीं था, अब्राहम ने कुछ ऐसा किया जिसने स्वर्ग को हिला दिया और पृथ्वी को कँपा दिया, तथा इसने परमेश्वर को अभूतपूर्व संतुष्टि का भाव महसूस कराया, और यह परमेश्वर के लिए ऐसे व्यक्ति को प्राप्त करने का आनंद लाया जो उसके वचनों का पालन करने में समर्थ था। यह संतुष्टि और आनंद परमेश्वर द्वारा अपने हाथ से सृजित किए गए प्राणी से आया, और जब से मनुष्य का सृजन किया गया था, तब से यह पहला "बलिदान" था जिसे मनुष्य ने परमेश्वर को चढ़ाया था और जिसे परमेश्वर ने सर्वाधिक सहेजकर रखा था। इस बलिदान की प्रतीक्षा करते हुए परमेश्वर ने बहुत कठिन समय गुज़ारा था, और उसने इसे उस मनुष्य की ओर से दिए गए पहले सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपहार के रूप में लिया जिसे उसने सृजित किया था। इसने परमेश्वर को उसके प्रयासों और उसकी चुकाई क़ीमत का पहला फल दिखाया, और उसे मनुष्यजाति में आशा देखने की गुंजाइश दी। इसके बाद, परमेश्वर को ऐसे लोगों के समूह की और अधिक लालसा हुई जो उसका साथ दें, उसके साथ शुद्ध हृदयता से व्यवहार करें, और शुद्ध हृदयता के साथ उसकी परवाह करें। परमेश्वर ने यह तक आशा की कि अब्राहम निरंतर जीवित रहेगा, क्योंकि वह चाहता था कि जब वह अपने प्रबंधन को आगे बढ़ाए तब अब्राहम जैसा एक हृदय उसका साथ दे और उसके साथ रहे। परमेश्वर चाहे जो भी चाहता था, यह मात्र एक इच्छा, मात्र एक विचार था—क्योंकि अब्राहम मात्र एक मनुष्य था जो उसका आज्ञापालन करने में समर्थ था और उसे परमेश्वर की थोड़ी-सी भी समझ या ज्ञान नहीं था। अब्राहम ऐसा व्यक्ति था जो मनुष्य के लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं के मानकों से बहुत कम पड़ता था, जो ये हैं : परमेश्वर को जानना, परमेश्वर की गवाही दे पाना, और परमेश्वर के साथ एक मन होना। इसलिए, अब्राहम परमेश्वर के साथ नहीं चल सकता था। अब्राहम द्वारा इसहाक की भेंट चढ़ाने में, परमेश्वर ने अब्राहम की शुद्ध हृदयता और आज्ञाकारिता देखी, और देखा कि उसने परमेश्वर द्वारा ली गई अपनी परीक्षा का सामना किया था। परमेश्वर ने उसकी आज्ञाकारिता और शुद्ध हृदयता को भले ही

स्वीकार कर लिया था, किंतु वह अब भी परमेश्वर का विश्वासपात्र बनने, ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर को जानता और समझता हो, और ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के स्वभाव के बारे में जानकार हो बनने के अयोग्य था; वह परमेश्वर के साथ एक मन होने और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से बहुत दूर था। इसलिए, परमेश्वर अपने हृदय में अब भी एकाकी और उद्विग्न था। परमेश्वर जितना अधिक एकाकी और उद्विग्न होता गया, उतना ही अधिक उसे अपने प्रबंधन को यथाशीघ्र आगे बढ़ाने की, और अपनी प्रबंधन योजना संपन्न करने और अपनी इच्छा पूरी करने के लिए यथाशीघ्र लोगों का एक समूह चुनने और प्राप्त करने की आवश्यकता थी। यह परमेश्वर की उत्कट अभिलाषा थी, और यह बिल्कुल आरंभ से लेकर आज तक अपरिवर्ती बनी रही है। आरंभ में जब से उसने मनुष्य का सृजन किया, तभी से परमेश्वर विजय पाने वालों के एक समूह के लिए तरसा है, ऐसा समूह जो उसके साथ चलेगा और जो उसका स्वभाव समझने, जानने और बूझने में समर्थ होगा। परमेश्वर की यह इच्छा कभी नहीं बदली है। उसे अब भी चाहे जितना लंबा इंतज़ार करना पड़े, आगे का रास्ता चाहे जितना कठिन हो, जिन उद्देश्यों के लिए वह तरसा है वे चाहे जितने दूर हों, परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपनी अपेक्षाओं को कभी बदला या त्यागा नहीं है। अब जब मैंने यह कहा है, तो क्या तुम लोगों को परमेश्वर की इच्छा का कुछ अहसास हुआ है? तुम्हें जो अहसास हुआ है, शायद वह बहुत गहरा नहीं है—किंतु धीरे-धीरे यह आएगा!

अब्राहम जब जिया उसी अवधि के दौरान, परमेश्वर ने एक शहर को भी नष्ट किया। यह शहर सदोम कहलाता था। निस्संदेह, बहुत से लोग सदोम की कहानी से परिचित हैं, किंतु कोई भी परमेश्वर के उन विचारों से अवगत नहीं है जिन्होंने उसके द्वारा इस नगर के विनाश की पृष्ठभूमि तैयार की थी।

तो आज, अब्राहम के साथ परमेश्वर के यहाँ नीचे दिए गए आदान-प्रदानों के माध्यम से, हम उस समय के उसके विचार जानेंगे, साथ ही उसके स्वभाव के बारे में भी जानेंगे। इसके बाद, आओ हम पवित्र शास्त्र के नीचे लिखे अंश पढ़ें।

ख. परमेश्वर को सदोम का विनाश करना ही होगा

उत्पत्ति 18:26 यहोवा ने कहा, "यदि मुझे सदोम में पचास धर्मी मिलें, तो उनके कारण उस सारे स्थान को छोड़ूँगा।"

उत्पत्ति 18:29 फिर उसने उससे यह भी कहा, "कदाचित् वहाँ चालीस मिलें।" उसने कहा, "तो भी मैं

ऐसा न करूँगा।"

उत्पत्ति 18:30 फिर उसने कहा, "कदाचित् वहाँ तीस मिलें।" उसने कहा, "तो भी मैं ऐसा न करूँगा।"

उत्पत्ति 18:31 फिर उसने कहा, "कदाचित् उसमें बीस मिलें।" उसने कहा, "मैं उसका नाश न करूँगा।"

उत्पत्ति 18:32 फिर उसने कहा, "कदाचित् उसमें दस मिलें।" उसने कहा, "तो भी मैं उसका नाश न करूँगा।"

ये कुछ उद्धरण हैं जो मैंने बाइबल से चुने हैं। वे पूर्ण, मूल संस्करण नहीं हैं। यदि तुम लोग उन्हें देखना चाहो, तो तुम लोग स्वयं उन्हें बाइबल में देख सकते हो; समय बचाने के लिए, मैंने मूल विषय-वस्तु का हिस्सा हटा दिया है। यहाँ मैंने कई मुख्य अंश और वाक्य भर चुने हैं, ऐसे कई वाक्य छोड़ दिए हैं जिनका हमारी आज की संगति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। हम जिन अंशों और विषय-वस्तु के बारे में संगति करते हैं, उन सभी में हम कहानियों और कहानियों में मनुष्य के आचरण के विवरण अपने ध्यान से हटा देते हैं; इसके बजाए, उस समय परमेश्वर के जो विचार और मत थे, हम केवल उनके बारे में बात करते हैं। परमेश्वर के विचारों और मतों में, हम परमेश्वर का स्वभाव देखेंगे, और परमेश्वर जो करता था उस सबसे, हम सच्चे स्वयं परमेश्वर को देखेंगे—इसमें हम अपना उद्देश्य प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर केवल उनकी परवाह करता है जो उसके वचनों का पालन और उसकी आज्ञाओं का अनुसरण कर पाते हैं

ऊपर दिए गए अंशों में अनेक मुख्य शब्द समाविष्ट हैं : संख्याएँ। पहला, यहोवा ने कहा कि यदि उसे नगर के भीतर पचास धार्मिक मिल गए, तो वह उस समस्त स्थान को छोड़ देगा, अर्थात्, वह नगर को नष्ट नहीं करेगा। तो क्या वहाँ, सदोम के भीतर, वास्तव में पचास धार्मिक थे? नहीं थे। इसके तुरंत बाद, अब्राहम ने परमेश्वर से क्या कहा? उसने कहा, कदाचित वहाँ चालीस मिले तो? और परमेश्वर ने कहा, मैं नष्ट नहीं करूँगा। इसके बाद, अब्राहम ने कहा, कदाचित वहाँ तीस मिले तो? परमेश्वर ने कहा, मैं नष्ट नहीं करूँगा। यदि वहाँ बीस मिले तो? मैं नष्ट नहीं करूँगा। दस मिले तो? मैं नष्ट नहीं करूँगा। क्या वहाँ नगर के भीतर, वास्तव में, दस धार्मिक थे? वहाँ दस भी नहीं थे—बल्कि एक ही था। और यह एक कौन था? यह लूत था। उस समय, सदोम में मात्र एक ही धार्मिक व्यक्ति था, परंतु जब बात इस संख्या की आई तो क्या

परमेश्वर बहुत कठोर था या बलपूर्वक ठीक इतने की ही माँग कर रहा था? नहीं, वह नहीं था। और इसलिए, जब मनुष्य पूछता रहा, "चालीस हों तो क्या?" "तीस हों तो क्या?" जब तक वह "दस हों तो क्या?" पर नहीं पहुँच गया, तब परमेश्वर ने कहा, "यदि वहाँ मात्र दस भी हुए तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा; मैं उसे छोड़ दूँगा, और इन दस के अलावा अन्य लोगों को भी माफ़ कर दूँगा"। यदि मात्र दस भी होते, तो यह भी काफी दयनीय रहा होता, परंतु पता यह चला कि, सदोम में, वास्तव में, उतनी संख्या में भी धार्मिक लोग नहीं थे। तो, तुम देखो, कि परमेश्वर की नज़रों में, नगर के लोगों का पाप और दुष्टता ऐसी थी कि परमेश्वर के पास उन्हें नष्ट करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। परमेश्वर ने जब कहा कि यदि पचास धार्मिक हुए तो वह नगर को नष्ट नहीं करेगा तब उसका क्या अभिप्राय था? परमेश्वर के लिए ये संख्याएँ महत्वपूर्ण नहीं थीं। महत्वपूर्ण यह था कि नगर में ऐसे धार्मिक थे या नहीं जैसे वह चाहता था। यदि नगर में मात्र एक धार्मिक व्यक्ति होता, तो परमेश्वर नगर के अपने विनाश के कारण उन्हें हानि नहीं पहुँचने देता। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर चाहे उस नगर को नष्ट करने जा रहा था या नहीं, और उसके भीतर चाहे जितने धार्मिक थे, परमेश्वर के लिए यह पापी नगर श्रापित और घृणित था, और इसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए था, इसे परमेश्वर की आँखों से ओझल हो जाना चाहिए था, जबकि धार्मिकों को बने रहना चाहिए था। युग चाहे जो भी हो, मनुष्यजाति के विकास की अवस्था चाहे जो हो, परमेश्वर की प्रवृत्ति नहीं बदलती है : वह बुराई से घृणा करता है, और उसकी नज़रों में जो धार्मिक हैं उनकी परवाह करता है। परमेश्वर की यह सुस्पष्ट प्रवृत्ति परमेश्वर के सार का सच्चा प्रकाशन भी है। चूँकि नगर के भीतर मात्र एक धार्मिक व्यक्ति था, इसलिए परमेश्वर अब और नहीं हिचकिचाया। अंतिम परिणाम यह था कि सदोम को अनिवार्यतः नष्ट कर दिया जाता। तुम लोग इसमें क्या देखते हो? उस युग में, यदि एक नगर में पचास धार्मिक होते तो परमेश्वर उसे नष्ट नहीं करता, यदि दस होते तब भी नहीं करता, जिसका अर्थ है कि कुछेक लोगों के कारण जो उसके प्रति श्रद्धा रख पाते और उसकी आराधना कर पाते हैं, परमेश्वर मनुष्यजाति को क्षमा करने और उसके प्रति सहिष्णु होने का निर्णय लेता, या मार्गदर्शन का कार्य करता। परमेश्वर मनुष्य के धार्मिक कर्मों में बड़ा विश्वास करता है, वह उन लोगों में बड़ा विश्वास करता है जो उसकी आराधना कर पाते हैं, और वह उन लोगों में बड़ा विश्वास करता है जो उसके समक्ष अच्छे कर्म कर पाते हैं।

प्राचीनतम काल से लेकर आज तक, क्या तुम लोगों ने बाइबल में कभी भी किसी भी व्यक्ति से सत्य का संवाद करते, या परमेश्वर के मार्ग के बारे में बात करते परमेश्वर के बारे में पढ़ा है? नहीं, कभी नहीं।

मनुष्य के लिए परमेश्वर के जिन वचनों के बारे में हम पढ़ते हैं, उन्होंने लोगों को केवल यह बताया कि क्या करना है। कुछ लोगों ने उसे किया, कुछ ने नहीं किया; कुछ ने विश्वास किया, और कुछ ने नहीं किया। बस कुल इतना ही था। इस प्रकार, उस युग के धार्मिक लोग—वे जो परमेश्वर की नज़रों में धार्मिक थे—मात्र वे लोग थे जो परमेश्वर के वचन सुन सकते थे और परमेश्वर की आज्ञाओं का अनुसरण कर सकते थे। वे सेवक थे जिन्होंने मनुष्यों के बीच परमेश्वर के वचन को कार्यान्वित किया था। क्या ऐसे लोगों को परमेश्वर को जानने वाला कहा जा सकता था? क्या उन्हें ऐसे लोग कहा जा सकता था जिन्हें परमेश्वर के द्वारा पूर्ण किया गया था? नहीं, उन्हें नहीं कहा जा सकता था। इसलिए, उनकी संख्या चाहे जितनी हो, परमेश्वर की नज़रों में ये धार्मिक लोग क्या परमेश्वर के विश्वासपात्र कहलाने योग्य थे? क्या उन्हें परमेश्वर के गवाह कहा जा सकता था? निश्चित रूप से नहीं! वे परमेश्वर के विश्वासपात्र और गवाह कहलाने के योग्य निश्चित रूप से नहीं थे। तो परमेश्वर ने ऐसे लोगों को क्या कहकर पुकारा? बाइबल में, पवित्र शास्त्र के उन अंशों तक जिन्हें हमने अभी-अभी पढ़ा है, परमेश्वर द्वारा उन्हें "मेरा सेवक" कहकर पुकारने के कई दृष्टांत हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय, परमेश्वर की नज़रों में ये धार्मिक लोग परमेश्वर के सेवक थे, ये वे लोग थे जो पृथ्वी पर उसकी सेवा करते थे। और परमेश्वर ने इस विशिष्ट पदवी के बारे में कैसे सोचा? उसने उन्हें ऐसे क्यों पुकारा? परमेश्वर लोगों को जिन विशिष्ट पदवियों से पुकारता है, उनके लिए क्या उसके पास अपने हृदय में कोई मानक हैं? उसके पास निश्चित रूप से हैं। वह लोगों को चाहे धार्मिक, पूर्ण, सच्चा, या सेवक कहे, परमेश्वर के पास मानक हैं। जब वह किसी को अपना सेवक कहकर पुकारता है, तब उसे दृढ़ विश्वास होता है कि यह व्यक्ति उसके संदेशवाहकों की अगवानी करने में समर्थ है, उसके आदेशों का पालन करने में समर्थ है, और उसे कार्यान्वित करने में समर्थ है जिसका आदेश संदेशवाहकों द्वारा दिया जाता है। यह व्यक्ति क्या कार्यान्वित करता है? वे वह कार्यान्वित करते हैं जो परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्य को करने और कार्यान्वित करने का आदेश देता है। उस समय, परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी पर जो करने और कार्यान्वित करने के लिए कहा, क्या उसे परमेश्वर का मार्ग कहा जा सकता था? नहीं, इसे नहीं कहा जा सकता था। क्योंकि उस समय, परमेश्वर ने उस मनुष्य से केवल कुछ सीधी-सरल चीज़ें करने के लिए कहा; उसने मनुष्य को यह या वह करने के लिए कहते हुए, कुछेक सीधे-सरल आदेश बोले, और इससे ज़्यादा कुछ नहीं। परमेश्वर अपनी योजना के अनुसार कार्य कर रहा था। चूँकि उस समय, बहुत-सी परिस्थितियाँ अभी विद्यमान नहीं थीं, समय अभी परिपक्व नहीं था, और मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के मार्ग को धारण

कर पाना कठिन था, इसलिए परमेश्वर के मार्ग को परमेश्वर के हृदय से बाहर निकलना अभी आरंभ करना था। परमेश्वर ने उन धार्मिक लोगों को देखा जिनके बारे में उसने बात की थी, जिन्हें हम यहाँ—चाहे तीस हों या बीस—उसके सेवकों के रूप में देखते हैं। जब परमेश्वर के संदेशवाहक इन सेवकों को अचानक मिल गए, तब वे उनकी अगवानी कर पाए, और उनके आदेशों का पालन कर पाए, और उनके वचनों के अनुसार कार्य कर पाए। यह ठीक वही था जिसे उनके द्वारा जो परमेश्वर की नज़रों में सेवक थे किया और प्राप्त किया जाना चाहिए था। लोगों को अपनी पदवियाँ देने में परमेश्वर न्यायसंगत है। उसने उन्हें अपना सेवक कहकर पुकारा तो इसलिए नहीं क्योंकि वे वैसे थे जैसे अब तुम लोग हो—क्योंकि उन्होंने काफी उपदेश सुने थे, जानते थे कि परमेश्वर को क्या करना था, परमेश्वर की बहुत-कुछ इच्छा समझते थे, और उसकी प्रबंधन योजना को बूझते थे—बल्कि इसलिए कि वे अपनी मानवता में ईमानदार थे और वे परमेश्वर के वचनों का अनुपालन करने में समर्थ थे; जब परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया, तब वे जो कर रहे थे उसे एक तरफ़ रखने और परमेश्वर ने जो आदेश दिया था उसे कार्यान्वित करने में समर्थ थे। तो, परमेश्वर के लिए, सेवक की उपाधि में अर्थ की दूसरी परत यह है कि उन्होंने पृथ्वी पर उसके कार्य के साथ सहयोग किया, और यद्यपि वे परमेश्वर के संदेशवाहक नहीं थे, फिर भी वे पृथ्वी पर परमेश्वर के वचनों के निर्वाहक और क्रियान्वयक थे। तो, तुम देखो कि ये सेवक या धार्मिक लोग परमेश्वर के हृदय में बहुत महत्व रखते थे। परमेश्वर को पृथ्वी पर जिस कार्य की शुरुआत करनी थी, वह उसके साथ लोगों के सहयोग के बिना पूरा नहीं हो सकता था, और परमेश्वर के सेवकों ने जो भूमिका अपने ऊपर ली थी, उसमें उनका स्थान परमेश्वर के संदेशवाहकों द्वारा ले पाना असंभव था। प्रत्येक कार्य जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने इन सेवकों को दी थी उसके लिए अत्यधिक महत्व का था, और इसलिए वह उन्हें गँवा नहीं सकता था। परमेश्वर के साथ इन सेवकों के सहयोग के बिना, मनुष्यजाति के बीच उसका कार्य ठप पड़ गया होता, जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर की प्रबंधन योजना और परमेश्वर की आशाएँ चूर-चूर हो गई होतीं।

परमेश्वर जिनकी परवाह करता है उनके प्रति अत्यधिक दयावान, और जिनसे घृणा करता और ठुकराता है उनके प्रति प्रचंड कोपपूर्ण होता है

बाइबल के वर्णनों में, क्या सदोम में परमेश्वर के दस सेवक थे? नहीं, नहीं थे! क्या वह नगर परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिए जाने योग्य था? नगर में केवल एक व्यक्ति—लूत—ने परमेश्वर के संदेशवाहकों की अगवानी की थी। इसका निहितार्थ यह है कि उस नगर में परमेश्वर का केवल एक ही सेवक था, और

इसलिए परमेश्वर के पास लूत को बचाने और सदोम नगर को नष्ट करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अब्राहम और परमेश्वर के बीच ऊपर उद्धृत संवाद सीधे-सादे लग सकते हैं, किंतु वे कुछ बहुत गहरी बात का चित्रण करते हैं : परमेश्वर के कार्यकलापों के अपने सिद्धांत हैं, और निर्णय लेने से पहले वह अवलोकन और सोच-विचार करते हुए लंबा समय बिताएगा; वह निश्चित रूप से सही समय आने से पहले कोई निर्णय नहीं लेगा या हड़बड़ी में किन्हीं निष्कर्षों पर नहीं पहुँचेगा। अब्राहम और परमेश्वर के बीच के संवाद हमें दिखाते हैं कि सदोम को नष्ट करने का परमेश्वर का निर्णय रत्ती भर भी ग़लत नहीं था, क्योंकि परमेश्वर पहले से जानता था कि उस नगर में चालीस धार्मिक नहीं थे, न तीस धार्मिक थे, न ही बीस थे। दस भी नहीं थे। उस नगर में एकमात्र धार्मिक व्यक्ति लूत था। परमेश्वर ने सदोम में जो हुआ उस सबका और उसकी परिस्थितियों का अवलोकन किया था, और वे परमेश्वर की उतनी ही जानी-पहचानी थीं जितनी उसके अपने हाथ की हथेली जानी-पहचानी थी। इस प्रकार, उसका निर्णय ग़लत नहीं हो सकता था। इसके विपरीत, परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की तुलना में, मनुष्य इतना अधिक संवेदनशून्य, इतना अधिक नासमझ और अज्ञानी, और इतना अधिक अदूरदर्शी है। यह वही बात है जो हम अब्राहम और परमेश्वर के बीच के संवादों में देखते हैं। परमेश्वर आरंभ से लेकर आज तक अपना स्वभाव प्रकट करता रहा है। उसी प्रकार, यहाँ भी परमेश्वर का स्वभाव है जिसे हमें देखना चाहिए। संख्याएँ तो सीधी-सरल होती हैं—वे कुछ प्रदर्शित नहीं करतीं—किंतु यहाँ परमेश्वर के स्वभाव की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। परमेश्वर पचास धार्मिकों की वजह से नगर को नष्ट नहीं करेगा। क्या यह परमेश्वर की अनुकंपा के कारण है? क्या यह उसके प्रेम और सहिष्णुता के कारण है? क्या तुम लोगों ने परमेश्वर के स्वभाव का यह पहलू देखा है? यदि वहाँ मात्र दस धार्मिक भी होते, इन दस धार्मिक लोगों के कारण, परमेश्वर ने नगर को नष्ट नहीं किया होता। यह परमेश्वर की सहिष्णुता और प्रेम है या नहीं है? उन धार्मिक लोगों के प्रति परमेश्वर की अनुकंपा, सहिष्णुता और सरोकार के कारण, उसने वह नगर नष्ट नहीं किया होता। यही परमेश्वर की सहिष्णुता है। और अंत में, क्या परिणाम हम देखते हैं? जब अब्राहम ने कहा, "कदाचित् उसमें दस मिलें," तब परमेश्वर ने कहा, "मैं उसका नाश न करूँगा।" उसके बाद, अब्राहम ने और कुछ नहीं कहा—क्योंकि सदोम के भीतर ऐसे दस धार्मिक नहीं थे जिनका उसने उल्लेख किया था, और उसके पास कहने के लिए और कुछ नहीं था, और उस समय उसने समझा कि परमेश्वर ने सदोम को नष्ट करने का संकल्प क्यों किया था। इसमें, तुम लोग परमेश्वर का क्या स्वभाव देखते हो? परमेश्वर ने किस प्रकार का संकल्प किया था? परमेश्वर ने संकल्प

किया था कि यदि इस नगर में दस धार्मिक नहीं हुए, तो वह इसके अस्तित्व की अनुमति नहीं देगा, और अनिवार्यतः उसे नष्ट कर देगा। क्या यह परमेश्वर का कोप नहीं है? क्या यह कोप परमेश्वर का स्वभाव निरूपित करता है? क्या यह स्वभाव परमेश्वर के पवित्र सार का प्रकाशन है? क्या यह परमेश्वर के धार्मिक सार का प्रकाशन है, जिसका मनुष्य को उल्लंघन नहीं ही करना चाहिए? पुष्टि हो जाने के बाद कि सदोम में दस धार्मिक नहीं थे, यह निश्चित था कि परमेश्वर नगर को नष्ट करेगा, और उस नगर के भीतर रह रहे लोगों को कठोरता से दण्ड देगा, क्योंकि वे परमेश्वर का विरोध करते थे, और क्योंकि वे बहुत ही गंदे और भ्रष्ट थे।

हमने इन अंशों का इस तरह विश्लेषण क्यों किया है? इसलिए कि ये कुछ सीधे-सादे वाक्य परमेश्वर के अतिशय दयावान और प्रचंड कोपपूर्ण स्वभाव को पूर्ण अभिव्यक्ति देते हैं। धार्मिकों को सँजोने, और उन पर अनुकंपा करने, उन्हें सहने, और उनकी देखभाल करने के साथ ही साथ, परमेश्वर के हृदय में सदोम के उन सभी लोगों के लिए प्रगाढ़ घृणा थी जो भ्रष्ट कर दिए गए थे। यह अतिशय दया और गहरा कोप था, या नहीं था? परमेश्वर ने किन साधनों से नगर को नष्ट किया? आग से। और उसने आग से उसे नष्ट क्यों किया? जब तुम किसी चीज़ को आग से जलाए जाते देखते हो, या जब तुम किसी चीज़ को बस जलाने ही वाले होते हो, तब उसके प्रति तुम्हारी भावनाएँ क्या होती हैं? तुम इसे क्यों जलाना चाहते हो? क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हें इसकी अब और आवश्यकता नहीं रही, कि तुम इसे अब और देखना नहीं चाहते हो? क्या तुम इसे तज देना चाहते हो? परमेश्वर के द्वारा आग के उपयोग का अर्थ है तज देना, और घृणा, और यह कि वह सदोम को अब और देखना नहीं चाहता था। यही वह भावना थी जिसने परमेश्वर से आग का उपयोग करके सदोम को मटियामेट करवाया। आग का उपयोग दर्शाता है कि परमेश्वर कितना अधिक क्रोधित था। परमेश्वर की अनुकंपा और सहिष्णुता तो सचमुच हैं ही, किंतु जब वह अपने कोप का बाँध खोलता है तब परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता मनुष्य को परमेश्वर का वह पहलू भी दिखाती है जो अपमान सहन नहीं करता। जब मनुष्य परमेश्वर के आदेशों का पालन करने में पूर्णतः सक्षम होता है, और परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करता है, तब मनुष्य के प्रति परमेश्वर अपनी अनुकंपा से भरपूर होता है; जब मनुष्य भ्रष्टता, उसके प्रति घृणा और शत्रुता से भर जाता है, तब परमेश्वर अत्यधिक क्रोधित होता है। किस सीमा तक वह अत्यधिक क्रोधित होता है? उसका कोप तब तक बना रहेगा जब तक वह मनुष्य का प्रतिरोध और दुष्ट कर्म अब और नहीं देखता है, जब तक वे उसकी नज़रों के सामने

अब और नहीं होते हैं। तब कहीं जाकर परमेश्वर का क्रोध ग़ायब होगा। दूसरे शब्दों में, चाहे जो व्यक्ति हो, यदि उसका हृदय परमेश्वर से दूर हो गया है और परमेश्वर से विमुख हो गया है, कभी न लौटने के लिए, तब फिर वे अपने शरीर में या अपनी सोच में, सभी प्रकटनों के लिए या अपनी व्यक्तिपरक अभिलाषाओं की दृष्टि से, परमेश्वर की चाहे जितनी आराधना, अनुसरण और आज्ञापालन करना चाहते हों, परमेश्वर के कोप का बाँध टूट जाएगा और रुकेगा नहीं। यह ऐसे होगा कि मनुष्य को प्रचुर अवसर देने के बाद, जब परमेश्वर प्रचंड वेग से अपने कोप का बाँध खोलता है, एक बार जब इसे खोल दिया जाएगा, तब इसे वापस लेने का कोई रास्ता न होगा, और ऐसी मनुष्यजाति के प्रति वह फिर कभी दयावान और सहिष्णु नहीं होगा। यह परमेश्वर के स्वभाव का एक पक्ष है जो अपमान सहन नहीं करता है। यहाँ, लोगों को यह सामान्य प्रतीत होता है कि परमेश्वर एक नगर को इसलिए नष्ट कर देता क्योंकि, परमेश्वर की नज़रों में, पाप से भरा हुआ एक नगर विद्यमान और अनवरत बना नहीं रह सकता था, और यह तर्कसंगत ही था कि इसे परमेश्वर द्वारा नष्ट कर दिया जाना चाहिए। फिर भी परमेश्वर के द्वारा सदोम के विनाश के पहले और उसके बाद जो घटित हुआ, उसमें हम परमेश्वर के स्वभाव की समग्रता देखते हैं। वह उन चीज़ों के प्रति सहिष्णु और दयावान है जो कृपालु, सुंदर और भली हैं; जो चीज़ें बुरी, पापमय और दुष्ट हैं, उनके प्रति वह प्रचंड रूप से कोपपूर्ण है, इतना कि उसका कोप रुकता नहीं है। ये परमेश्वर के स्वभाव के दो सर्वोपरि और सबसे प्रमुख पहलू हैं, और, इतना ही नहीं, इन्हें परमेश्वर ने आरंभ से लेकर अंत तक प्रकट किया है : प्रचुर दया और प्रचंड कोप। तुम लोगों में से अधिकतर परमेश्वर की दया का कुछ न कुछ अनुभव कर चुके हो, किंतु तुममें से बहुत कम लोगों ने परमेश्वर का कोप पूर्णतः पहचाना है। परमेश्वर की अनुकंपा और प्रेममय दयालुता प्रत्येक व्यक्ति में देखी जा सकती है; अर्थात्, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अतिशय दयावान रहा है। फिर भी परमेश्वर तुम लोगों के बीच किसी व्यक्ति पर या किसी जनसमूह के प्रति अत्यंत दुर्लभ ही—या, कहा जा सकता है, कभी नहीं—प्रचंड रूप से क्रोधित रहा है। इत्मीनान रखो! परमेश्वर का कोप कभी न कभी प्रत्येक व्यक्ति द्वारा देखा और अनुभव किया जाएगा, किंतु अभी वह समय नहीं है। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि जब परमेश्वर किसी से लगातार क्रोधित होता है, अर्थात्, जब वह उसके ऊपर अपने प्रचंड कोप का बाँध खोल देता है, तो इसका अर्थ है कि वह उस व्यक्ति से लंबे समय से घृणा करता और उसे ठुकराता आया है, कि वह उसके अस्तित्व से जुगुप्सा करता है, और वह उनके अस्तित्व को सहन नहीं कर सकता है; ज्यों ही उसका क्रोध उन पर टूटेगा, वे विलुप्त हो जाएँगे। आज, परमेश्वर का कार्य अभी उस

बिंदु पर नहीं पहुँचा है। एक बार परमेश्वर प्रचंड रूप से क्रोधित हो जाए तो तुम लोगों में से कोई भी उसे सहन नहीं कर पाएगा। तो, तुम देखो, इस समय परमेश्वर तुम सब लोगों के प्रति अतिशय दयावान है, और तुम लोगों ने अभी उसका प्रचंड क्रोध देखा नहीं है। यदि ऐसे लोग हैं जो मानने को तैयार नहीं हैं, तो तुम उनसे कह सकते हो कि परमेश्वर का कोप तुम्हारे ऊपर टूटे, ताकि तुम अनुभव कर सको कि परमेश्वर का क्रोध और उसका वह स्वभाव जो मनुष्य से कोई अपमान सहन नहीं करता वास्तव में अस्तित्वमान है या नहीं। करते हो तुम लोग हिम्मत?

अंत के दिनों के लोग परमेश्वर का कोप केवल उसके वचनों में देखते हैं, और सच में अनुभव नहीं करते परमेश्वर का कोप

क्या परमेश्वर के स्वभाव के ये दो पक्ष, जो पवित्र शास्त्र के इन अंशों में दिखाई देते हैं, संगति के योग्य हैं? यह कहानी सुनने के बाद, क्या तुम लोगों को परमेश्वर की एक नई समझ प्राप्त हुई है? तुम्हारी किस प्रकार की समझ है? कहा जा सकता है कि सृजन के समय से लेकर आज तक, किसी भी समूह ने परमेश्वर के अनुग्रह या दया और प्रेममय दयालुता का उतना आनंद नहीं लिया है जितना इस अंतिम समूह ने लिया है। यद्यपि, अंतिम चरण में, परमेश्वर ने न्याय और ताड़ना का कार्य किया है, और अपना कार्य प्रताप और कोप के साथ किया है, तो भी अधिकांश बार परमेश्वर अपना कार्य संपन्न करने के लिए केवल वचनों का उपयोग करता है; वह सिखाने और सींचने, भरण-पोषण और भोजन के लिए वचनों का उपयोग करता है। इस बीच, परमेश्वर के कोप को हमेशा छिपाकर रखा गया है, और परमेश्वर के वचनों में उसके कोपपूर्ण स्वभाव का अनुभव करने के अलावा, बहुत ही कम लोगों ने व्यक्तिगत रूप से उसके क्रोध का अनुभव किया है। कहने का तात्पर्य है, न्याय और ताड़ना के परमेश्वर के कार्य के दौरान, यद्यपि परमेश्वर के वचनों में प्रकट किया गया कोप लोगों को परमेश्वर की महिमा और अपमान के प्रति उसकी असहिष्णुता अनुभव करने देता है, फिर भी यह कोप उसके वचनों से आगे नहीं जाता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर मनुष्य को झिड़कने, मनुष्य को उजागर करने, मनुष्य का न्याय करने, मनुष्य को ताड़ना देने, और यहाँ तक कि मनुष्य की निंदा करने के लिए भी वचनों का उपयोग करता है—परंतु परमेश्वर अभी तक मनुष्य के प्रति प्रचंड रूप से क्रोधित नहीं हुआ है, और अपने वचनों के साथ के अलावा उसने अपने कोप का बाँध मनुष्य पर मुश्किल से ही खोला है। इस प्रकार, मनुष्य के द्वारा इस युग में अनुभव की गई परमेश्वर की अनुकंपा और प्रेममय दयालुता परमेश्वर के सच्चे स्वभाव का प्रकाशन है, जबकि मनुष्य के द्वारा अनुभव

किया गया परमेश्वर का कोप महज़ उसके कथनों के स्वर और भाव का प्रभाव है। बहुत-से लोग इस प्रभाव को ग़लत ढंग से परमेश्वर के कोप का सच्चा अनुभव करना और सच्चा ज्ञान मान लेते हैं। परिणामस्वरूप, अधिकतर लोग मानते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के वचनों में उसकी अनुकंपा और प्रेममय दयालुता को देखा है, कि उन्होंने मनुष्य द्वारा अपमान के प्रति परमेश्वर की असहिष्णुता को भी देखा है, और उनमें से अधिकांश लोग तो मनुष्य के प्रति परमेश्वर की करुणा और सहिष्णुता की सराहना भी करने लगे हैं। परंतु मनुष्य का व्यवहार चाहे जितना बुरा हो, या उसका स्वभाव चाहे जितना भ्रष्ट हो, परमेश्वर ने हमेशा सहन किया है। सहन करने में, उसका उद्देश्य इस बात की प्रतीक्षा करना है कि जो वचन उसने कहे हैं, जो प्रयास उसने किए हैं और जो क़ीमत उसने चुकाई है, वे उन लोगों में जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता है, सफलतापूर्वक निष्कर्ष पर पहुँच सकें। ऐसे एक परिणाम की प्रतीक्षा करने में समय लगता है, और मनुष्य के लिए भिन्न-भिन्न परिवेशों का सृजन करने की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार जैसे लोग जन्म लेते ही वयस्क नहीं हो जाते हैं; इसमें अट्ठारह या उन्नीस वर्ष लग जाते हैं, और कुछ लोगों को तो बीस या तीस वर्ष लग जाते हैं तब कहीं जाकर वे वास्तविक वयस्क के रूप में परिपक्व होते हैं। परमेश्वर इस प्रक्रिया के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करता है, वह ऐसा समय आने की प्रतीक्षा करता है, और वह इस परिणाम के आगमन की प्रतीक्षा करता है। और उस पूरे समय जब वह प्रतीक्षा करता है, परमेश्वर अतिशय रूप से दयावान होता है। हालाँकि, परमेश्वर के कार्य की अवधि के दौरान, परमेश्वर के प्रति घोर विरोध के कारण बहुत ही छोटी संख्या में लोगों को मार गिराया जाता है, और कुछ को दण्डित किया जाता है। ऐसे उदाहरण परमेश्वर के उस स्वभाव के और भी अधिक बड़े प्रमाण हैं जो मनुष्य के द्वारा अपमान बर्दाश्त नहीं करता है, और चुने हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की सहिष्णुता और सहनशीलता के वास्तविक अस्तित्व की पूर्णतः पुष्टि करते हैं। निस्संदेह, इन विशिष्ट उदाहरणों में, इन लोगों में परमेश्वर के स्वभाव के एक भाग का प्रकाशन परमेश्वर की समग्र प्रबंधन योजना को प्रभावित नहीं करता है। वास्तव में, परमेश्वर के कार्य के इस अंतिम चरण में, परमेश्वर ने प्रतीक्षा करते रहने की अपनी इस संपूर्ण अवधि के दौरान सहन किया है, और उसने अपनी सहनशीलता और अपने जीवन को अपना अनुसरण करने वाले लोगों के उद्धार के साथ अदल-बदल लिया है। क्या तुम लोग यह देखते हो? परमेश्वर अकारण अपनी योजना में उलट-फेर नहीं करता है। वह अपने कोप का बाँध खोल सकता है, और वह दयावान भी हो सकता है; यह परमेश्वर के स्वभाव के दो मुख्य भागों का प्रकाशन है। यह बिल्कुल स्पष्ट है, या नहीं है? दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर

की बात आती है, तो सही और ग़लत, न्यायसंगत और अन्यायपूर्ण, सकारात्मक और नकारात्मक—यह सब कुछ मनुष्य को स्पष्ट रूप से दिखाया जाता है। वह क्या करेगा, वह क्या पसंद करता है, वह किससे घृणा करता है—यह सब उसके स्वभाव में सीधे प्रतिबिंबित हो सकता है। ऐसी चीज़ें परमेश्वर के कार्य में भी प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं, और वे धुँधली या सामान्य नहीं हैं; इसके बजाय, वे सभी लोगों को विशेष रूप से मूर्त, सच्चे और व्यावहारिक ढँग से परमेश्वर का स्वभाव और उसका स्वरूप देखने देती हैं। यही स्वयं सच्चा परमेश्वर है।

परमेश्वर का स्वभाव कभी मनुष्य से छिपा नहीं रहा है—मनुष्य का हृदय परमेश्वर से भटक गया है

यदि मैं इन चीज़ों के बारे में संगति नहीं करता, तो तुम लोगों में से कोई भी बाइबल की कहानियों में परमेश्वर के सच्चे स्वभाव को नहीं देख पाता। यह तथ्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, यद्यपि बाइबल की इन कहानियों ने परमेश्वर द्वारा की गई कुछ चीज़ों को अंकित किया है, किंतु परमेश्वर ने मात्र कुछ वचन कहे थे, और उसने मनुष्य से न तो अपने स्वभाव का सीधे परिचय कराया था या न ही खुलकर अपनी इच्छा सामने रखी थी। बाद की पीढ़ियों ने इन अभिलेखों को कहानियों से अधिक कुछ और नहीं माना है, और इसलिए लोगों को लगता है कि परमेश्वर स्वयं को मनुष्य से छिपाता है, कि यह परमेश्वर का व्यक्तित्व नहीं, बल्कि उसका स्वभाव और इच्छा ही है जो मनुष्य से छिपे हुए हैं। आज की मेरी संगति के बाद, क्या तुम लोगों को अब भी लगता है कि परमेश्वर मनुष्य से पूरी तरह छिपा हुआ है? क्या तुम लोग अब भी मानते हो कि परमेश्वर का स्वभाव मनुष्य से छिपा हुआ है?

सृजन के समय से ही, परमेश्वर का स्वभाव उसके कार्य के साथ क़दम से क़दम मिलाता रहा है। यह मनुष्य से कभी भी छिपा हुआ नहीं रहा है, बल्कि मनुष्य के लिए पूरी तरह प्रचारित और स्पष्ट किया गया है। फिर भी, समय बीतने के साथ, मनुष्य का हृदय परमेश्वर से और भी अधिक दूर हो गया है, और जैसे-जैसे मनुष्य की भ्रष्टता अधिक गहरी होती गई है, वैसे-वैसे मनुष्य और परमेश्वर अधिकाधिक दूर होते गए हैं। धीरे-धीरे परंतु निश्चित रूप से, मनुष्य परमेश्वर की नज़रों से ओझल हो गया है। मनुष्य परमेश्वर को "देखने" में असमर्थ हो गया है, जिससे उसके पास परमेश्वर का कोई "समाचार" नहीं रह गया है; इस प्रकार, वह नहीं जानता कि परमेश्वर विद्यमान है या नहीं, और इस हद तक चला जाता है कि परमेश्वर के अस्तित्व को ही पूरी तरह नकार देता है। परिणामस्वरूप, परमेश्वर के स्वभाव, और स्वरूप, के बारे में मनुष्य की अबूझता इसलिए नहीं है क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से छिपा हुआ है, बल्कि इसलिए है क्योंकि

उसका हृदय परमेश्वर से विमुख हो गया है। हालाँकि मनुष्य परमेश्वर में विश्वास करता है, फिर भी उसका हृदय परमेश्वर से रहित है, और वह अनजान है कि परमेश्वर से कैसे प्रेम करे, न ही वह परमेश्वर से प्रेम करना चाहता है, क्योंकि उसका हृदय कभी भी परमेश्वर के नज़दीक नहीं आता है और वह हमेशा परमेश्वर से बचता है। परिणामस्वरूप, मनुष्य का हृदय परमेश्वर से दूर है। तो उसका हृदय कहाँ है? वास्तव में, मनुष्य का हृदय कहीं गया नहीं है : इसे परमेश्वर को देने के बजाय या इसे परमेश्वर के देखने के लिए प्रकट करने के बजाय, उसने इसे स्वयं के लिए रख लिया है। यह इस तथ्य के बावज़ूद है कि कुछ लोग प्रायः परमेश्वर से प्रार्थना करते और कहते हैं, "हे परमेश्वर, मेरे हृदय पर दृष्टि डाल—जो मैं सोचता हूँ तू वह सब कुछ जानता है," और कुछ लोग तो परमेश्वर को अपने ऊपर दृष्टि डालने देने की सौगंध खाते हैं, कि यदि वे अपनी सौगंध तोड़ें तो उन्हें दण्ड दिया जाए। यद्यपि मनुष्य परमेश्वर को अपने हृदय के भीतर झाँकने देता है, फिर भी इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य परमेश्वर के आयोजनों और व्यवस्थाओं को मानने में सक्षम है, न ही यह कि उसने अपना भाग्य और संभावनाएँ और अपना सर्वस्व परमेश्वर के नियंत्रण के अधीन छोड़ दिया है। इस प्रकार, तुम परमेश्वर के समक्ष चाहे जो सौगंधें खाओ या चाहे जो घोषणा करो, परमेश्वर की नज़रों में तुम्हारा हृदय अब भी उसके प्रति बंद है, क्योंकि तुम परमेश्वर को अपने हृदय के भीतर केवल झाँकने देते हो किंतु इसे नियंत्रित करने की अनुमति उसे नहीं देते हो। दूसरे शब्दों में, तुमने अपना हृदय परमेश्वर को थोड़ा भी दिया ही नहीं है, और केवल परमेश्वर को सुनाने के लिए अच्छे लगने वाले शब्द बोलते हो; इस बीच, तुम अपने षडयंत्रों, कुचक्रों और मनसूबों के साथ-साथ अपने छल-कपट से भरे नानाविध मंतव्य भी परमेश्वर से छिपा लेते हो, और तुम अपनी संभावनाओं और भाग्य को अपने हाथों में जकड़ लेते हो, इस गहरे डर से कि परमेश्वर उन्हें ले लेगा। इस प्रकार, परमेश्वर कभी अपने प्रति मनुष्य की शुद्ध हृदयता नहीं देखता है। यद्यपि परमेश्वर मनुष्य के हृदय की गहराइयों को ध्यान से देखता है, और देख सकता है कि मनुष्य अपने हृदय में क्या सोच रहा है और क्या करना चाहता है, और देख सकता है कि उसके हृदय के भीतर कौन-सी चीज़ें रखी हैं, किंतु मनुष्य का हृदय परमेश्वर का नहीं है, उसने उसे परमेश्वर के नियंत्रण में नहीं सौंपा है। कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर को अवलोकन का अधिकार है, किंतु उसे नियंत्रण का अधिकार नहीं है। मनुष्य की व्यक्तिपरक चेतना में, मनुष्य अपने आप को परमेश्वर की व्यवस्थाओं को सौंपना नहीं चाहता या न ही उसका ऐसा कोई इरादा है। मनुष्य ने न केवल स्वयं को परमेश्वर से बंद कर लिया है, बल्कि ऐसे भी लोग हैं जो एक मिथ्या धारणा बनाने और परमेश्वर का भरोसा

प्राप्त करने, और परमेश्वर की नज़रों से अपना असली चेहरा छिपाने के लिए चिकनी-चुपड़ी बातों और चापलूसी का उपयोग करके अपने हृदयों को ढँक लेने के तरीक़ों के बारे सोचते हैं। परमेश्वर को देखने नहीं देने में उनका उद्देश्य परमेश्वर को यह जानने-समझने नहीं देना है कि वे वास्तव में कैसे हैं। वे परमेश्वर को अपने हृदय देना नहीं चाहते, बल्कि उन्हें स्वयं के लिए रखना चाहते हैं। इसका निहितार्थ यह है कि मनुष्य जो करता है और वह जो चाहता है, उन सब का नियोजन, आकलन, और निर्णय स्वयं मनुष्य द्वारा किया जाता है; उसे परमेश्वर की भागीदारी या हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है, परमेश्वर के आयोजनों और व्यवस्थाओं की आवश्यकता तो और भी नहीं है। इस प्रकार, बात चाहे परमेश्वर की आज्ञाओं, उसके आदेश, या परमेश्वर द्वारा मनुष्य से की जाने वाली अपेक्षाओं से संबंधित हो, मनुष्य के निर्णय उसके अपने मंतव्यों और हितों पर, उस समय की उसकी अपनी अवस्था और परिस्थितियों पर आधारित होते हैं। मनुष्य को जो मार्ग अपनाना चाहिए उसे परखने और चुनने के लिए वह अपने चिर-परिचित ज्ञान और अंतर्दृष्टियों का, और अपनी विचार शक्ति का उपयोग करता है, और परमेश्वर को हस्तक्षेप या नियंत्रण नहीं करने देता है। यही वह मनुष्य का हृदय है जिसे परमेश्वर देखता है।

आरंभ से लेकर आज तक, केवल मनुष्य ही परमेश्वर के साथ बातचीत करने में समर्थ रहा है। अर्थात्, परमेश्वर के सभी जीवित जीव-जंतुओं और प्राणियों में, मनुष्य के अलावा कोई भी परमेश्वर से बातचीत करने में समर्थ नहीं रहा है। मनुष्य के पास कान हैं जो उसे सुनने में समर्थ बनाते हैं, और उसके पास आँखें हैं जो उसे देखने देती हैं; उसके पास भाषा, अपने स्वयं के विचार, और स्वतंत्र इच्छा है। वह उस सबसे युक्त है जो परमेश्वर को बोलते हुए सुनने, और परमेश्वर की इच्छा को समझने, और परमेश्वर के आदेश को स्वीकार करने के लिए आवश्यक है, और इसलिए परमेश्वर अपनी सारी इच्छाएँ मनुष्य को प्रदान करता है, मनुष्य को ऐसा साथी बनाना चाहता है जो उसके साथ एक मन हो और जो उसके साथ चल सके। जब से परमेश्वर ने प्रबंधन करना प्रारंभ किया है, तभी से वह प्रतीक्षा करता रहा है कि मनुष्य अपना हृदय उसे दे, परमेश्वर को उसे शुद्ध और सुसज्जित करने दे, उसे परमेश्वर के लिए संतोषप्रद और परमेश्वर द्वारा प्रेममय बनाने दे, उसे परमेश्वर का आदर करने और बुराई से दूर रहने वाला बनाने दे। परमेश्वर ने सदा ही इस परिणाम की प्रत्याशा और प्रतीक्षा की है। क्या बाइबल के अभिलेखों में कोई ऐसे लोग हैं? अर्थात्, क्या बाइबल में कोई हैं जो परमेश्वर को अपने हदय देने में सक्षम हों? क्या इस युग से पहले ऐसा कोई उदाहरण है? आज, आओ हम बाइबल के वृतांत आगे पढ़ें और एक नज़र डालें कि इस व्यक्ति—अय्यूब—ने जो

किया था, उसका कोई संबंध "अपना हृदय परमेश्वर को देना" विषय से है या नहीं, जिसके बारे में हम आज बात कर रहे हैं। आओ हम देखते हैं कि अय्यूब परमेश्वर के लिए संतोषप्रद और परमेश्वर द्वारा प्रेममय था या नहीं।

अय्यूब के बारे में तुम लोगों का क्या विचार है? मूल पवित्र शास्त्र से उद्धरण देते हुए, कुछ लोग कहते हैं कि अय्यूब "परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था।" "परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था" : बाइबल में दर्ज़ अय्यूब का मूल आँकलन ऐसा ही है। यदि तुम लोग अपने शब्दों का प्रयोग करते, तो तुम लोग अय्यूब का ठीक-ठीक वर्णन किस प्रकार करते? कुछ लोग कहते हैं कि अय्यूब अच्छा और तर्कसंगत मनुष्य था; कुछ कहते हैं कि उसे परमेश्वर में सच्चा विश्वास था; कुछ कहते हैं कि अय्यूब धार्मिक और दयालु मनुष्य था। तुम लोगों ने अय्यूब का विश्वास देखा है, कहने का तात्पर्य है, तुम लोग अपने हृदयों में अय्यूब के विश्वास को बड़ा महत्व देते हो और उसके विश्वास के प्रति ईर्ष्यालु हो। तो आओ, आज हम देखें कि अय्यूब ने ऐसा क्या धारण किया था कि परमेश्वर उससे बहुत प्रसन्न था। इसके बाद, आओ हम नीचे दिए गए पवित्र शास्त्रों को पढ़ें।

ग. अय्यूब

1. परमेश्वर के द्वारा और बाइबल में अय्यूब का आँकलन

अय्यूब 1:1 ऊज़ देश में अय्यूब नामक एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था।

अय्यूब 1:5 जब जब भोज के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़े भोर को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था; क्योंकि अय्यूब सोचता था, "कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।" इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था।

अय्यूब 1:8 यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।"

वह मुख्य बिंदु क्या है जो तुम लोग इन अंशों में देखते हो? पवित्र शास्त्र के ये तीनों संक्षिप्त अंश अय्यूब से संबंधित हैं। संक्षिप्त होते हुए भी वे स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वह किस प्रकार का व्यक्ति था। अय्यूब के प्रतिदिन के व्यवहार और उसके आचरण के बारे में अपने वर्णन के माध्यम से, वे हर एक को

बताते हैं कि अय्यूब के बारे में परमेश्वर का आँकलन, निराधार होने के बजाय, तथ्यों पर आधारित था। वे हमें बताते हैं कि चाहे यह अय्यूब के बारे में मनुष्य का मूल्याँकन हो (अय्यूब 1:1), या उसके बारे में परमेश्वर का मूल्याँकन हो (अय्यूब 1:8), दोनों परमेश्वर और मनुष्य के सामने अय्यूब के कर्मों के परिणाम हैं (अय्यूब 1:5)।

सबसे पहले, आओ हम प्रथम अंश को पढ़ें : "ऊज़ देश में अय्यूब नामक एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था।" यह बाइबल में अय्यूब के बारे में पहला आँकलन है, और यह वाक्य अय्यूब के बारे में लेखक का मूल्याँकन है। स्वाभाविक रूप से, यह अय्यूब के बारे में मनुष्य का आँकलन भी प्रस्तुत करता है, जो यह है, "वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था।" इसके बाद, आओ हम अय्यूब के बारे में परमेश्वर का आँकलन पढ़ें : "क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है" (अय्यूब 1:8)। इन दोनों आँकलनों में से, एक मनुष्य से आया, और एक परमेश्वर से उत्पन्न हुआ; ये दो आँकलन हैं जिनकी विषय-वस्तु समान है। तो, देखा जा सकता है कि अय्यूब के व्यवहार और आचरण मनुष्य को पता थे, और परमेश्वर ने भी उनकी प्रशंसा की थी। दूसरे शब्दों में, मनुष्य के सामने अय्यूब का आचरण और परमेश्वर के सामने उसका आचरण एक समान थे; उसने अपना व्यवहार और हेतु हर समय परमेश्वर के समक्ष रखा, ताकि परमेश्वर उनका अवलोकन कर सके, और वह एक ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था। इस प्रकार, परमेश्वर की नज़रों में, पृथ्वी पर लोगों में केवल अय्यूब ही पूर्ण और खरा था, ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था।

अपने दैनिक जीवन में अय्यूब द्वारा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने की सुनिश्चित अभिव्यंजनाएँ

इसके बाद, आओ हम परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने की अय्यूब की सुनिश्चित अभिव्यंजनाओं पर नज़र डालें। इससे पहले और बाद के अंशों के अतिरिक्त, आओ हम अय्यूब 1:5 भी पढ़ें, जो अय्यूब द्वारा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने की सुनिश्चित अभिव्यंजनाओं में से एक है। इसका संबंध इस बात से है कि अपने दैनिक जीवन में वह किस प्रकार परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था; सबसे प्रमुख बात यह है, उसने न केवल वह किया जो उसे परमेश्वर के प्रति अपने

भय और बुराई से दूर रहने के वास्ते करना ही होता, बल्कि उसने अपने पुत्रों की ओर से परमेश्वर के सामने नियमित रूप से होमबलि भी चढ़ाई। उसे भय था कि उन्होंने भोज करते हुए प्रायः "पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया" था। यह भय अय्यूब में कैसे अभिव्यंजित हुआ था? मूल पाठ नीचे लिखा वर्णन प्रस्तुत करता है : "जब जब भोज के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़े भोर को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था।" अय्यूब का आचरण हमें दिखाता है कि उसके बाहरी व्यवहार में प्रदर्शित होने के बजाए, परमेश्वर के प्रति उसका भय उसके हृदय के भीतर से आया था, और परमेश्वर के प्रति उसका भय उसके दैनिक जीवन के प्रत्येक पहलू में हर समय पाया जा सकता था, क्योंकि उसने न केवल अपने आपको बुराई से दूर रखा था बल्कि वह अपने पुत्रों की ओर से प्रायः होमबलि चढ़ाता था। दूसरे शब्दों में, अय्यूब न केवल परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने और अपने स्वयं के हृदय में परमेश्वर को खो देने के बारे में अत्यंत भयभीत था, बल्कि वह इस बात से भी चिंतित था कि उसके पुत्र परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकते थे और उसे अपने हृदयों में खो सकते थे। इससे यह देखा जा सकता है कि अय्यूब द्वारा परमेश्वर का भय मानने की सच्चाई जाँच-पड़ताल में खरी उतरती है, और किसी भी मनुष्य के संदेह से परे है। क्या वह ऐसा कभी-कभार ही करता था, या बार-बार करता था? पाठ का अंतिम वाक्य है "इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था।" इन वचनों का अर्थ है कि अय्यूब कभी-कभार ही, या जब उसे अच्छा लगता था तभी, अपने पुत्रों को देखने और मिलने नहीं जाता था, न ही वह प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करता था। इसके बजाय, वह अपने पुत्रों को पापमुक्त होने के लिए नियमित रूप से भेजता था, और पवित्र करता था, और उनके लिए होमबलि चढ़ाता था। यहाँ "सदैव" का अर्थ यह नहीं है कि उसने ऐसा एक या दो दिन, या पल भर के लिए, किया। यह कह रहा है कि परमेश्वर के प्रति अय्यूब के भय का आविर्भाव अस्थायी नहीं था, और ज्ञान या बोले गए वचनों पर नहीं रुकता था; इसके बजाय, परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग उसके हृदय को दिशा दिखलाता था, यह उसका व्यवहार तय करता था, और यह उसके हृदय में उसके अस्तित्व का मूल आधार था। वह सदैव ऐसा करता था, यह दिखाता है कि अपने हृदय में उसे अक्सर भय होता था कि वह स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर बैठेगा और यह डर भी था कि उसके पुत्र और पुत्रियाँ परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर बैठेंगे। यह दर्शाता है कि परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग उसके हृदय के भीतर कितना वज़न रखता था। उसने ऐसा सदैव इसलिए किया क्योंकि, अपने मन में, वह डरा हुआ और

भयभीत था—भयभीत कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध बुरा और पाप किए थे, और यह कि वह परमेश्वर के मार्ग से भटक गया था और इसलिए परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर पाया था। साथ ही, वह अपने पुत्र और पुत्रियों के बारे में भी चिंतित था, इस डर से कि उन्होंने परमेश्वर को नाराज़ कर दिया था। ऐसा था अय्यूब का सामान्य आचरण अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में। ठीक यही वह सामान्य आचरण है जो सिद्ध करता है कि अय्यूब द्वारा परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना खोखले वचन नहीं थे, कि अय्यूब ऐसी वास्तविकता को सचमुच जीता था। "इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था" : ये वचन हमें परमेश्वर के समक्ष अय्यूब के दिन-प्रतिदिन के कर्मों के बारे में बताते हैं। जब वह सदैव इस रीति करता था, तो क्या उसका व्यवहार और उसका हृदय परमेश्वर के समक्ष पहुँचते थे? दूसरे शब्दों में, क्या परमेश्वर प्रायः उसके हृदय और उसके व्यवहार से प्रसन्न होता था? फिर, किस अवस्था में, और किस संदर्भ में, अय्यूब सदैव इस रीति किया करता था? कुछ लोग कहते हैं कि उसने इस तरह कार्य इसलिए किया क्योंकि परमेश्वर अय्यूब के समक्ष प्रायः प्रकट होता था; कुछ कहते हैं कि उसने सदैव इस रीति किया क्योंकि उसमें बुराई से दूर रहने की इच्छाशक्ति थी; और कुछ कहते हैं कि कदाचित वह सोचता था कि उसका सौभाग्य आसानी से नहीं मिला था, और वह जानता था कि यह उसे परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया था, और इसलिए वह परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने और उसे नाराज़ करने के परिणामस्वरूप अपनी संपत्ति गँवा बैठने को लेकर अत्यंत भयभीत था। क्या इनमें से कोई भी दावा सच है? स्पष्ट रूप से नहीं। क्योंकि, परमेश्वर की नज़रों में, अय्यूब के बारे में जो बात परमेश्वर ने सर्वाधिक स्वीकार की और हृदय में सँजोई, वह मात्र यह नहीं थी कि वह सदैव इस रीति किया करता था; उससे अधिक, यह शैतान को सौंप दिए जाने और लुभाए जाने पर परमेश्वर, मनुष्य, और शैतान के सामने उसका आचरण था। नीचे दिए गए भाग सर्वाधिक विश्वास दिलाने वाला प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, प्रमाण जो हमें अय्यूब के बारे में परमेश्वर के आँकलन का सत्य दिखाता है। इसके बाद, आओ हम पवित्र शास्त्र के नीचे लिखे अंश पढ़ें।

2. शैतान पहली बार अय्यूब को लुभाता है (उसके मवेशी चुरा लिए जाते हैं और उसके बच्चों के ऊपर विपत्ति टूटती है)

क. परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन

अय्यूब 1:8 यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।"

अय्यूब 1:12 यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।" तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।

ख. शैतान का जवाब

अय्यूब 1:9-11 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।"

परमेश्वर शैतान को अय्यूब को लुभाने देता है जिससे अय्यूब के विश्वास को पूर्ण बनाया जाएगा

अय्यूब 1:8 यहोवा परमेश्वर और शैतान के बीच हुए संवाद का पहला अभिलेख है जो हम बाइबल में देखते हैं। तो, परमेश्वर ने क्या कहा? मूल पाठ नीचे लिखा वर्णन प्रस्तुत करता हैः "यहोवा ने शैतान से पूछा, 'क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।'" यह शैतान के सामने अय्यूब के बारे में परमेश्वर का आँकलन था; परमेश्वर ने कहा था कि वह पूर्ण और खरा मनुष्य था, ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था। परमेश्वर और शैतान के बीच इन वचनों से पहले, परमेश्वर ने संकल्प किया था कि वह अय्यूब को लुभाने के लिए शैतान का उपयोग करेगा—कि वह अय्यूब को शैतान के हाथों में सौंप देगा। एक दृष्टि से, यह सिद्ध करेगा कि अय्यूब के बारे में परमेश्वर का पर्यवेक्षण और मूल्याँकन सटीक और त्रुटिहीन था, और वह अय्यूब की गवाही के माध्यम से शैतान को लज्जित होने के लिए विवश करेगा; दूसरी दृष्टि से, यह अय्यूब के परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर के भय को पूर्ण बनाएगा। इस प्रकार, जब शैतान परमेश्वर के सामने आया, तो परमेश्वर ने गोल-मोल बात नहीं की। वह सीधे मुद्दे पर आया और शैतान से पूछा : "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।" परमेश्वर के प्रश्न का नीचे लिखा अर्थ है : परमेश्वर जानता था कि शैतान सभी स्थानों पर घूमा-फिरा था, और उसने प्रायः अय्यूब की, जो परमेश्वर का सेवक था, जासूसी की थी। उसने प्रायः अय्यूब को लुभाया और उस पर आक्रमण किए थे, इस कोशिश में कि उस पर तबाही बरपाने का कोई तरीक़ा खोजे, जिससे यह सिद्ध कर सके कि

अय्यूब का परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर का भय मज़बूती से टिका नहीं रह सकता है। शैतान ने तत्परता से अय्यूब को तबाह करने के अवसर भी खोजे, कि हो सकता है इससे अय्यूब परमेश्वर को त्याग दे, और कि हो सकता है इससे वह उसे परमेश्वर के हाथों से छीन ले। फिर भी परमेश्वर ने अय्यूब के हृदय में झाँका और देखा कि वह पूर्ण और खरा था, और वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था। परमेश्वर ने एक प्रश्न का उपयोग करके शैतान को बताया कि अय्यूब पूर्ण और खरा मनुष्य था जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था, कि अय्यूब परमेश्वर को तजकर शैतान का अनुसरण कभी नहीं करेगा। अय्यूब के बारे में परमेश्वर का मूल्याँकन सुनने के बाद, शैतान को क्रोध आ गया जो अपमान से उत्पन्न हुआ था, और इसलिए वह अय्यूब को छीनने के लिए और अधिक क्रोधित तथा और अधिक अधीर हो उठा, क्योंकि शैतान ने कभी भी विश्वास ही नहीं किया था कि कोई पूर्ण और खरा हो सकता है, कि कोई परमेश्वर का भय मान सकता और बुराई से दूर रह सकता है। साथ ही, शैतान मनुष्य में पूर्णता और खरापन अत्यंत नापसंद करता था, और वह उन लोगों से घृणा करता था जो परमेश्वर का भय मान सकते और दुष्टता से दूर रह सकते थे। और इसलिए अय्यूब 1:9-11 में लिखा है कि "शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, 'क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।'" परमेश्वर शैतान की विद्वेषपूर्ण प्रकृति से घनिष्ठ रूप से परिचित था, और बहुत अच्छी तरह जानता था कि शैतान ने अय्यूब पर तबाही बरपाने की योजना बहुत पहले ही बना ली थी, और इसलिए इसमें, शैतान को एक बार फिर यह बताने के माध्यम से, कि अय्यूब पूर्ण और खरा था और वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था, परमेश्वर शैतान को रास्ते पर लाना, शैतान से उसका असली चेहरा प्रकट करवाना और उससे अय्यूब पर आक्रमण करवाना और उसे प्रलोभित करवाना चाहता था। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने जान-बूझकर ज़ोर दिया था कि अय्यूब पूर्ण और खरा था, और कि वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था, और इस उपाय से उसने शैतान से अय्यूब पर हमला करवाया, इस बात के प्रति शैतान की घृणा और गुस्से के कारण कि अय्यूब पूर्ण और खरा मनुष्य भला कैसे था, ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था। परिणामस्वरूप, परमेश्वर शैतान को इस तथ्य के माध्यम से बेइज़्ज़त करता कि अय्यूब पूर्ण और खरा मनुष्य था, ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर का भय

मानता और बुराई से दूर रहता था, और शैतान सरासर अपमानित और पराजित रह जाता। उसके बाद, शैतान अय्यूब की पूर्णता, खरेपन, परमेश्वर का भय मानने, या बुराई से दूर रहने के बारे में अब और न तो संदेह करता या न ही दोषारोपण करता। इस तरह, परमेश्वर का परीक्षण और शैतान का प्रलोभन लगभग अवश्यंभावी थे। परमेश्वर के परीक्षण और शैतान के प्रलोभन का सामना कर पाने वाला एकमात्र व्यक्ति अय्यूब था। इस संवाद के बाद, शैतान को अय्यूब को लुभाने की अनुमति दे दी गई। इस प्रकार शैतान के हमलों का पहला दौर आरंभ हुआ। इन हमलों का लक्ष्य अय्यूब की संपत्ति थी, क्योंकि शैतान ने अय्यूब के विरुद्ध नीचे लिखा आरोप लगाया था : "क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? ... तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है।" परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने शैतान को अनुमति दी कि वह अय्यूब के पास जो भी था सब ले ले—यही वह उद्देश्य था जिससे परमेश्वर ने शैतान के साथ बात की थी। तथापि, परमेश्वर ने शैतान से एक माँग अवश्य की : "जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना" (अय्यूब 1:12)। यही वह शर्त थी जो परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को लुभाने की अनुमति देने और अय्यूब को शैतान के हाथों में सौंप देने के पश्चात रखी थी, और यह वह सीमा थी जो उसने शैतान के लिए निर्धारित की थी : उसने शैतान को आदेश दिया कि वह अय्यूब को हानि न पहुँचाए। चूँकि परमेश्वर पहचानता था कि अय्यूब पूर्ण और खरा था, और चूँकि उसे विश्वास था कि उसके समक्ष अय्यूब की पूर्णता और खरापन संदेह से परे थे और परीक्षा में डाले जाने का सामना कर सकते थे, इसलिए परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को लुभाने दिया, परंतु शैतान पर एक प्रतिबंध लगा दिया : शैतान को अय्यूब की सारी संपत्ति ले लेने की अनुमति थी, किंतु वह उसे एक अँगुली भी नहीं लगा सकता था। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने उस क्षण अय्यूब को पूरी तरह शैतान को नहीं दिया था। शैतान जिस किसी भी उपाय से चाहता अय्यूब को लुभा सकता था, परंतु वह स्वयं अय्यूब को—यहाँ तक कि उसके सिर के एक बाल को भी—हानि नहीं पहुँचा सकता था, क्योंकि मनुष्य का सब कुछ परमेश्वर द्वारा नियंत्रित होता है, और क्योंकि मनुष्य जिये या मरे इसका निर्णय भी परमेश्वर करता है। शैतान के पास यह अधिकार नहीं है। परमेश्वर द्वारा शैतान से ये वचन कहे जाने के उपरांत, शैतान आरंभ करने के लिए अधीर हो उठा। उसने अय्यूब को लुभाने के लिए हर उपाय इस्तेमाल किया, और अय्यूब देखते ही देखते पर्वत जितने ऊंचे मूल्य की भेड़-बकरियाँ और बैल और परमेश्वर द्वारा उसे दी गई सारी संपत्ति गँवा चुका था...। इस प्रकार परमेश्वर के परीक्षणों से वह गुज़रा।

यद्यपि बाइबल अय्यूब के प्रलोभन की उत्पत्तियों के बारे में हमें बताती है, फिर भी क्या स्वयं अय्यूब, जिसे इन प्रलोभनों से गुज़रना पड़ा था, जानता था कि क्या चल रहा था? अय्यूब मात्र एक नश्वर मनुष्य था; अपने चारों ओर घट रही इस कहानी के बारे में वह निस्संदेह कुछ भी नहीं जानता था। तथापि, परमेश्वर के उसके भय और उसकी पूर्णता और खरेपन ने उसे अहसास कराया कि परमेश्वर की परीक्षाएँ उस पर आ गई थीं। वह नहीं जानता था कि आध्यात्मिक क्षेत्र में क्या घटित हुआ था, न ही यह कि इन परीक्षाओं के पीछे परमेश्वर के अभिप्राय क्या थे। परंतु वह यह अवश्य जानता था कि उसके साथ चाहे जो हो, उसे अपनी पूर्णता और खरेपन के प्रति सच्चा बने रहना चाहिए, और उसे परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर चलते रहना चाहिए। इन विषयों के प्रति अय्यूब की प्रवृत्ति और प्रतिक्रिया परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से देखी थीं। परमेश्वर ने क्या देखा था? उसने अय्यूब का परमेश्वर का भय मानने वाला हृदय देखा, इसलिए कि आरंभ से ठीक उस पूरे समय तक जब अय्यूब की परीक्षा ली गई, अय्यूब का हृदय परमेश्वर के समक्ष खुला हुआ था, यह परमेश्वर के समक्ष बिछा था, और अय्यूब ने अपनी पूर्णता और खरापन तजा नहीं था, न ही वह परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग से भटका या विमुख हुआ था—परमेश्वर के लिए इससे अधिक सुखदायक कुछ नहीं था। इसके बाद, हम देखेंगे कि अय्यूब किन प्रलोभनों से होकर गुज़रा, और इन परीक्षणों से वह कैसे निपटा। आओ हम पवित्र शास्त्रों से पढ़ें।

ग. अय्यूब की प्रतिक्रिया

अय्यूब 1:20-21 तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुँड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् करके कहा, "मैं अपनी माँ के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।"

अय्यूब द्वारा अपना सब कुछ वापस करने का जिम्मा अपने ऊपर ले लेना परमेश्वर के प्रति उसके भय से उत्पन्न होता है

परमेश्वर द्वारा शैतान से यह कहने के बाद कि "जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना," शैतान चला गया, जिसके तुरंत बाद अय्यूब के ऊपर अचानक और भयंकर हमले होने लगे : पहले, उसके बैल और गधे लूट लिए गए और उसके कुछ सेवकों को मार दिया गया; फिर, उसकी भेड़-बकरियों और कुछ और सेवकों को आग में भस्म कर दिया गया; उसके पश्चात्,

उसके ऊँट ले लिए गए और उसके कुछ और सेवकों की हत्या कर दी गई; अंत में, उसके पुत्र और पुत्रियों की जानें ले ली गईं। हमलों की यह श्रृंखला अय्यूब द्वारा अपने पहले प्रलोभन के दौरान झेली गई यातना थी। जैसा कि परमेश्वर द्वारा आदेशित था, इन हमलों के दौरान शैतान ने केवल अय्यूब की संपत्ति और उसके बच्चों को लक्ष्य बनाया था, और स्वयं अय्यूब को हानि नहीं पहुँचाई थी। तथापि, अय्यूब विशाल संपदा से संपन्न धनवान मनुष्य से तत्क्षण ऐसे व्यक्ति में बदल गया जिसके पास कुछ भी नहीं था। कोई भी व्यक्ति यह विस्मयकारी अप्रत्याशित झटका सह नहीं कर सकता था या इसके प्रति समुचित प्रतिक्रिया नहीं कर सकता था, फिर भी अय्यूब ने अपने असाधारण पहलू का प्रदर्शन किया। पवित्र शास्त्र नीचे लिखा विवरण प्रदान करते हैं : "तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुँड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् किया।" यह सुनने के पश्चात् कि अय्यूब ने अपने बच्चे और अपनी सारी संपत्ति गँवा दी थी, यह अय्यूब की पहली प्रतिक्रिया थी। सबसे बढ़कर, वह आश्चर्यचकित, या घबराया हुआ नहीं दिखा, उसने क्रोध या नफ़रत तो और भी व्यक्त नहीं की। तो, तुम देखते हो कि वह अपने हृदय में पहले से ही पहचान गया था कि ये आपदाएँ आकस्मिक घटनाएँ नहीं थीं, या मनुष्य के हाथों से उत्पन्न नहीं हुई थीं, वे प्रतिफल या दण्ड का आगमन तो और भी नहीं थीं। इसके बजाय, यहोवा की परीक्षाएँ उसके ऊपर आ पड़ी थीं; वह यहोवा ही था जो उसकी संपत्ति और बच्चों को ले लेना चाहता था। उस समय अय्यूब बहुत शांत और सोच-विचार में स्पष्ट था। उसकी अचूक और खरी मानवता ने उसे अपने ऊपर आ पड़ी आपदाओं के बारे में तर्कसंगत और स्वाभाविक रूप से सटीक परख करने और निर्णय लेने में समर्थ बनाया, और इसके परिणामस्वरूप, उसने असामान्य शांत मन से व्यवहार किया : "तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुँड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् किया।" "बागा फाड़" का अर्थ है वह निर्वस्त्र था, और कुछ भी धारण नहीं किए था; "सिर मुँडाने" का अर्थ है वह नवजात शिशु के समान परमेश्वर के समक्ष लौट आया था; "भूमि पर गिरा, और दण्डवत् किया" का अर्थ है वह इस संसार में नग्न आया था, और आज भी उसके पास कुछ नहीं था, वह परमेश्वर के पास लौट आया था मानो नवजात शिशु हो। उस पर जो बीता था उस सबके प्रति अय्यूब की प्रवृत्ति परमेश्वर के किसी प्राणी द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती थी। यहोवा में उसका विश्वास, विश्वास के क्षेत्र से आगे चला गया था; यह परमेश्वर के प्रति उसका भय, परमेश्वर के प्रति उसका आज्ञापालन था; वह न केवल उसे देने के लिए, बल्कि उससे लेने के लिए भी परमेश्वर को धन्यवाद दे पाने में समर्थ था। इतना ही नहीं, वह स्वयं आगे बढ़कर वह सब करने में समर्थ था, जो अपना सब कुछ, अपने जीवन सहित, परमेश्वर

को लौटाने के लिए आवश्यक था।

परमेश्वर के प्रति अय्यूब का भय और आज्ञाकारिता मनुष्यजाति के लिए एक उदाहरण है, और उसकी पूर्णता और खरापन मानवता की पराकाष्ठा थी जो मनुष्य को धारण करना ही चाहिए। यद्यपि उसने परमेश्वर को नहीं देखा था, फिर भी उसे एहसास हुआ कि परमेश्वर सचमुच विद्यमान था, और इस एहसास के कारण वह परमेश्वर का भय मानता था, और परमेश्वर के अपने इसी भय के कारण, वह परमेश्वर का आज्ञापालन कर पाया था। उसने परमेश्वर को वह सब जो उसका था लेने की खुली छूट दे दी, फिर भी उसे कोई शिकायत नहीं थी, और वह परमेश्वर के समक्ष गिर गया और उसने उससे कहा कि, बिल्कुल इसी क्षण, यदि परमेश्वर उसकी देह भी ले ले, तो वह, शिकायत किए बिना, ख़ुशी-ख़ुशी उसे ऐसा करने देगा। उसका समूचा आचरण उसकी अचूक और खरी मानवता के कारण था। कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी निश्छलता, ईमानदारी, और दयालुता के फलस्वरूप, अय्यूब परमेश्वर के अस्तित्व के अपने अहसास और अनुभव में अटल था, और इस स्थापना के आधार पर उसने स्वयं अपने से भारी-भरकम अपेक्षाएँ की थीं और परमेश्वर के समक्ष अपनी सोच, व्यवहार, आचरण और क्रियाकलापों के सिद्धांतों को उसने अन्य बातों के अलावा परमेश्वर द्वारा अपने मार्गदर्शन और परमेश्वर के जो कर्म वह देख चुका था उनके अनुसार आदर्श ढँग से ढाला था। समय के साथ, उसके अनुभवों ने उसमें परमेश्वर का सच्चा और वास्तविक भय उत्पन्न किया और उसे बुराई से दूर रखा। यही उस अखंडता का स्रोत था जिसे अय्यूब ने दृढ़ता से थामे रखा था। अय्यूब सत्यनिष्ठ, निश्छल, और दयालु मानवता से युक्त था, और उसने परमेश्वर का भय मानने, परमेश्वर का आज्ञापालन करने, और बुराई से दूर रहने का, साथ ही इस ज्ञान का कि "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया" का वास्तविक अनुभव प्राप्त किया था। केवल इन्हीं चीज़ों के कारण वह शैतान के ऐसे शातिर हमलों के बीच अपनी गवाही पर डटा रह पाया, और जब परमेश्वर की परीक्षाएँ उसके ऊपर आ पड़ीं, तब केवल उन्हीं के कारण वह परमेश्वर को निराश नहीं करने और परमेश्वर को संतोषजनक उत्तर देने में समर्थ हो पाया। यद्यपि प्रथम प्रलोभन के दौरान अय्यूब का आचरण बिलकुल दोटूक था, किंतु यह दोटूकपन बाद की पीढ़ियों को जीवन भर के प्रयासों के बाद भी प्राप्त होना निश्चित नहीं था, न ही वे अय्यूब के ऊपर वर्णित आचरण से आवश्यक रूप से युक्त होंगी। आज, अय्यूब के दोटूक आचरण से दोचार होने पर, और इसकी तुलना परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर का अनुसरण करने का दावा करने वाले लोगों द्वारा परमेश्वर के समक्ष प्रदर्शित "परम आज्ञाकारिता और मृत्युपर्यंत निष्ठा" के क्रंदनों

और दृढ़संकल्पों से करने पर, तुम लोग अत्यंत लज्जित महसूस करते हो, या नहीं करते हो?

जब तुम पवित्र शास्त्रों में वह सब पढ़ते हो जो अय्यूब और उसके परिवार ने सहा था, तब तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होती है? क्या तुम अपने ही विचारों में खो जाते हो? क्या तुम अचंभित रह जाते हो? क्या अय्यूब पर आ पड़ी परीक्षाओं को "भयावह" कहा जा सकता है? दूसरे शब्दों में, पवित्र शास्त्रों में वर्णित अय्यूब की परीक्षाओं के बारे में पढ़ना इतना डरावना है कि वास्तविक जीवन में वे कैसी रही होंगी इसकी तो बात ही छोड़ दें। तो, तुम देखते हो कि अय्यूब पर जो घटित हुआ वह कोई "प्रशिक्षण अभ्यास" नहीं, बल्कि वास्तविक "संग्राम" था, जिसमें वास्तविक "बंदूकें" और "गोलियाँ" शामिल थीं। परंतु किसके हाथों उसे इन परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा था? निश्चित ही, वे शैतान के काम थे, और शैतान ने ये चीज़ें स्वयं अपने हाथों से की थीं। बावज़ूद इसके, ये चीज़ें परमेश्वर द्वारा अधिकृत थीं। क्या परमेश्वर ने शैतान को बताया कि उसे किन उपायों से अय्यूब को लुभाना है? उसने नहीं बताया। परमेश्वर ने बस एक शर्त रखी जिसका शैतान को पालन करना ही चाहिए था, और फिर प्रलोभन अय्यूब पर आ पड़े। जब प्रलोभन अय्यूब पर आ पड़े, तब इसने लोगों को शैतान की दुष्टता और कुरूपता का, मनुष्य के प्रति उसके द्वेष और घृणा का, परमेश्वर के प्रति उसकी शत्रुता का अहसास करवाया। इसमें हम देखते हैं कि शब्दों में वर्णन ही नहीं किया जा सकता कि यह प्रलोभन कितना क्रूर था। कहा जा सकता है कि वह द्वेषपूर्ण प्रकृति जिससे शैतान ने मनुष्य को हानि पहुँचाई थी, और उसका कुरूप चेहरा, इस क्षण पूरी तरह प्रकट हो गए थे। शैतान ने इस अवसर का उपयोग, अवसर जो परमेश्वर की अनुमति से दिया गया था, अय्यूब को अधीर और बेरहम हानि पहुँचाने के लिए किया, जिसकी क्रूरता का तरीक़ा और स्तर आज लोगों के लिए अकल्पनीय और पूर्णतः असहनीय दोनों हैं। बजाय यह कहने के कि अय्यूब शैतान द्वारा प्रलोभित किया गया था, और कि इस प्रलोभन के दौरान वह अपनी गवाही पर दृढ़ता से डटा रहा, यह कहना बेहतर है कि अय्यूब ने परमेश्वर द्वारा अपने लिए तय परीक्षाओं में अपनी पूर्णता और खरेपन की रक्षा करने के लिए, और परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के अपने मार्ग का बचाव करने के लिए शैतान के साथ एक प्रतियोगिता आरंभ की। इस प्रतियोगिता में, अय्यूब ने बहुत अधिक मूल्य की भेड़-बकरियाँ और पशु गँवा दिए, उसने अपनी सारी संपत्ति गँवा दी, और उसने अपने पुत्र और पुत्रियाँ गँवा दीं। परंतु उसने अपनी पूर्णता, खरापन, या परमेश्वर का भय नहीं तजा। दूसरे शब्दों में, शैतान के साथ इस प्रतियोगिता में, अय्यूब ने अपनी पूर्णता, खरापन, और परमेश्वर का भय गँवाने की अपेक्षा अपनी संपत्ति और बच्चों से वंचित किया जाना पसंद किया। मनुष्य

होने का जो अर्थ है उसकी जड़ को उसने थामे रखना पसंद किया। पवित्र शास्त्र अय्यूब द्वारा अपनी संपत्ति गँवाने की समूची प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण प्रदान करते हैं, और अय्यूब के आचरण और प्रवृत्ति का भी लिखित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। ये संक्षिप्त, सारगर्भित विवरण महसूस कराते हैं कि इस प्रलोभन का सामना करते समय अय्यूब लगभग निश्चिंत था, किंतु वास्तव में जो घटित हुआ था यदि उसे पुनर्रचित किया जाए—शैतान की द्वेषपूर्ण प्रकृति पर भी विचार करते हुए—तो चीज़ें इतनी सीधी-सादी और सहज नहीं होतीं जितनी इन वाक्यों में वर्णित की गई हैं। वास्तविकता कहीं अधिक क्रूर थी। ऐसा होता है उस तबाही और घृणा का स्तर जिससे शैतान मनुष्यजाति और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत सभी लोगों के साथ बर्ताव करता है। यदि परमेश्वर ने यह न कहा होता कि शैतान अय्यूब को हानि न पहुँचाए, तो शैतान ने बिना किसी पछतावे के निस्संदेह उसका वध कर दिया होता। शैतान नहीं चाहता है कि कोई भी परमेश्वर की आराधना करे, न ही वह यह चाहता है कि परमेश्वर की नज़रों में जो धार्मिक हैं और जो पूर्ण तथा खरे हैं वे निरंतर परमेश्वर का भय मान पाएँ तथा बुराई से दूर रह पाएँ। क्योंकि लोगों के लिए परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का अर्थ यह है कि वे शैतान से दूर रहें और उसे त्याग दें, और इसलिए शैतान ने दया किए बिना अय्यूब के ऊपर अपना सारा क्रोध और नफ़रत लादने के लिए परमेश्वर की अनुमति का फ़ायदा उठाया। तो, तुम देखो, वह यंत्रणा कितनी बड़ी थी जो अय्यूब ने मन से देह तक, बाहर से भीतर तक सही थी। आज, हमें दिखाई नहीं देता कि उस समय यह कैसा था, और हम केवल बाइबल के वृतांतों से ही उस समय जब उसे यंत्रणा गुज़ारा गया था अय्यूब की भावनाओं की एक छोटी-सी झलक प्राप्त कर सकते हैं।

अय्यूब की अटल सत्यनिष्ठा शैतान को शर्मिंदा करती है और उसे दहशत में डालकर भगा देती है

तो, जब अय्यूब को इस यंत्रणा के गुज़ारा गया था तब परमेश्वर ने क्या किया? परमेश्वर ने अवलोकन किया, और देखा, और परिणाम की प्रतीक्षा की। जब परमेश्वर ने अवलोकन किया और देखा, तो उसने कैसा महसूस किया? निस्संदेह उसने शोक में डूबा महसूस किया। परंतु क्या यह संभव है कि उसने जो व्यथा महसूस की मात्र उसके कारण, अय्यूब को लुभाने के लिए शैतान को दी गई अपनी अनुमति पर परमेश्वर को पछतावा हुआ हो सकता था? इसका उत्तर है, नहीं, उसे ऐसा पछतावा महसूस नहीं हो सकता था। क्योंकि वह दृढ़ता से मानता था कि अय्यूब पूर्ण और खरा था, कि वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था। परमेश्वर ने शैतान को बस इतना ही अवसर दिया था कि वह परमेश्वर के सामने अय्यूब की धार्मिकता को सत्यापित करे, और अपनी स्वयं की जुगुप्सा और घिनौनेपन को प्रकट करे।

इतना ही नहीं, यह अय्यूब के लिए एक अवसर था कि वह संसार के लोगों, शैतान, और यहाँ तक कि परमेश्वर का अनुसरण करने वालों के भी सामने अपनी धार्मिकता और अपना परमेश्वर के प्रति भय मानना और बुराई से दूर रहना प्रमाणित करे। क्या अंतिम परिणाम से यह साबित हुआ कि अय्यूब के बारे में परमेश्वर का आँकलन सही और त्रुटिहीन था? क्या अय्यूब ने वास्तव में शैतान पर विजय प्राप्त की? हम यहाँ अय्यूब द्वारा बोले गए ठेठ वचन पढ़ते हैं, वचन जो सिद्ध करते हैं कि उसने शैतान पर विजय पा ली थी। उसने कहा : "मैं अपनी माँ के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा।" यह परमेश्वर के प्रति अय्यूब की आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति है। फिर, उसने कहा : "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।" अय्यूब द्वारा कहे गए ये वचन साबित करते हैं कि परमेश्वर मनुष्य के हृदय की गहराई का अवलोकन करता है, कि वह मनुष्य के मन के भीतर झाँकने में समर्थ है, और वे साबित करते हैं कि अय्यूब की उसकी स्वीकृति त्रुटिहीन है, कि यह मनुष्य जिसे परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया था, धार्मिक था। "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।" ये वचन परमेश्वर के प्रति अय्यूब की गवाही हैं। ये साधारण वचन ही थे जिन्होंने शैतान को संत्रस्त कर दिया था, जिन्होंने उसे शर्मिंदा कर दिया था और उसे दहशत में डालकर भगा दिया था, और, इतना ही नहीं, जिन्होंने शैतान को जंज़ीरों में जकड़ लिया था और उसे संसाधन-हीन छोड़ दिया था। इसलिए भी इन वचनों ने शैतान को यहोवा परमेश्वर के कर्मों की चमत्कारिकता और ताक़त महसूस कराई, और जिसका हृदय परमेश्वर के मार्ग द्वारा शासित होता था उसका असाधारण आकर्षण महसूस करने दिया। इसके अलावा, उन्होंने एक छोटे-से और महत्वहीन मनुष्य द्वारा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का पालन करने में दिखाई गई सामर्थ्यवान जीवनशक्ति का शैतान को दर्शन कराया। इस प्रकार पहली प्रतियोगिता में शैतान पराजित हुआ था। "इससे सीख लेने" के बावजूद, शैतान का अय्यूब को छोड़ने का कोई इरादा नहीं था, न ही उसकी द्वेषपूर्ण प्रकृति में कोई बदलाव आया था। शैतान ने अय्यूब पर लगातार आक्रमण करते रहने की कोशिश की, और एक बार फिर परमेश्वर के सामने आया...

इसके बाद, आओ हम अय्यूब को दूसरी बार प्रलोभित किए जाने के बारे में पवित्र शास्त्र पढ़ें।

3. शैतान एक बार फिर अय्यूब को प्रलोभित करता है (अय्यूब के पूरे शरीर में दर्दनाक फोड़े निकल आते हैं)

क. परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन

अय्यूब 2:3 यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? यद्यपि तू ने मुझे बिना कारण उसका सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।"

अय्यूब 2:6 यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।"

ख. शैतान द्वारा कहे गए वचन

अय्यूब 2:4-5 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और मांस छू, तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।"

ग. अय्यूब परीक्षा से कैसे निपटता है

अय्यूब 2:9-10 तब उसकी स्त्री उससे कहने लगी, "क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।" उसने उससे कहा, "तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दु:ख न लें?" इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुँह से कोई पाप नहीं किया।

अय्यूब 3:3 वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, "बेटे का गर्भ रहा।"

परमेश्वर के मार्ग के प्रति अय्यूब का प्रेम अन्य सभी से बढ़कर है

पवित्र शास्त्र परमेश्वर और शैतान के बीच कहे गए वचन नीचे लिखे अनुसार अंकित करते हैं : "यहोवा ने शैतान से पूछा, 'क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? यद्यपि तू ने मुझे बिना कारण उसका सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है'" (अय्यूब 2:3)। इस संवाद में, परमेश्वर वही प्रश्न शैतान के सामने दोहराता है। यह ऐसा प्रश्न है जो हमें प्रथम परीक्षण के दौरान अय्यूब द्वारा जो प्रदर्शित किया और जिया गया था उसके बारे में यहोवा परमेश्वर का सकारात्मक आँकलन दिखाता है, और यह वह आँकलन है जो शैतान के प्रलोभन से होकर गुज़रने से पहले के अय्यूब

के बारे में परमेश्वर के आँकलन से भिन्न नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि उसके ऊपर प्रलोभन के आने से पहले, परमेश्वर की नज़रों में अय्यूब पूर्ण था, और इसलिए परमेश्वर ने उसकी और उसके परिवार की रक्षा की थी, और उसे धन्य किया था; वह परमेश्वर की नज़रों में धन्य किए जाने योग्य था। प्रलोभन के पश्चात्, अय्यूब ने अपने होठों से पाप नहीं किया क्योंकि उसने अपनी संपत्ति और अपने बच्चों को गँवा दिया था, बल्कि यहोवा के नाम की निरंतर स्तुति ही करता रहा। उसके वास्तविक आचरण ने परमेश्वर से उसकी वाहवाही करवाई, और इसके कारण, परमेश्वर ने उसे पूरे अंक दिए। क्योंकि अय्यूब की नज़रों में, उसकी संतान या उसकी संपत्ति उससे परमेश्वर का त्याग करवाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। दूसरे शब्दों में, उसके हृदय में परमेश्वर के स्थान को उसके बच्चों या संपत्ति के किसी टुकड़े से बदला नहीं जा सकता था। अय्यूब के प्रथम प्रलोभन के दौरान, उसने परमेश्वर को दिखाया कि उसके प्रति उसका प्रेम और परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग के प्रति उसका प्रेम अन्य सभी से बढ़कर था। यह मात्र इतना ही है कि इस परीक्षण ने अय्यूब को यहोवा परमेश्वर से पुरस्कार प्राप्त करने और उसके द्वारा उसकी संपत्ति तथा बच्चों को छीन लिए जाने का अनुभव प्रदान किया था।

अय्यूब के लिए, यह एक सच्चा अनुभव था जिसने उसकी आत्मा को धोकर स्वच्छ कर दिया था, यह जीवन का एक बपतिस्मा था जिसने उसके अस्तित्व को परिपूर्ण किया था, और, इससे भी अधिक, यह एक आलीशान भोज था जिसने परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता, और उसके भय को कसौटी पर कसा था। इस प्रलोभन ने अय्यूब की स्थिति एक धनवान पुरुष से ऐसे व्यक्ति में रूपांतरित कर दी जिसके पास कुछ भी नहीं था, और इसने उसे मनुष्यजाति के प्रति शैतान के दुर्व्यवहार का अनुभव भी प्राप्त करने दिया था। उसकी अभावग्रस्तता ने उसे शैतान से घृणा करने को नहीं उकसाया; बल्कि, शैतान की नीच करतूतों में उसने शैतान की कुरूपता और घिनौनापन, और साथ ही परमेश्वर के प्रति शैतान की शत्रुता और विद्रोह भी देखा, और इसने उसे परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर सदैव डटे रहने के लिए बेहतर ढंग से प्रोत्साहित किया। उसने शपथ ली कि वह संपत्ति, बच्चों या कुटुंबियों जैसे बाहरी कारकों की वजह से कभी परमेश्वर को नहीं त्यागेगा और परमेश्वर के मार्ग की तरफ़ पीठ नहीं फेरेगा, न ही वह कभी शैतान, संपत्ति, या किसी व्यक्ति का दास होगा; यहोवा परमेश्वर के अलावा, कोई भी उसका प्रभु, या उसका परमेश्वर नहीं हो सकता है। ऐसी थीं अय्यूब की आकांक्षाएँ। दूसरी ओर, अय्यूब ने कुछ अर्जित भी किया था : परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए परीक्षणों के बीच उसने प्रचुर धन-संपत्ति प्राप्त की थी।

पिछले कई दशकों के अपने जीवन के दौरान, अय्यूब ने यहोवा के कर्म देखे थे और अपने लिए यहोवा परमेश्वर के आशीष प्राप्त किए थे। वे ऐसे आशीष थे जिन्होंने उसे अत्यंत असहज और ऋणी महसूस करते छोड़ दिया था, क्योंकि वह मानता था कि उसने परमेश्वर के लिए कुछ भी नहीं किया था, फिर भी उसे इतने बड़े आशीष वसीयत में दिए गए थे और उसने इतने अधिक अनुग्रह का आनंद लिया था। इस कारण से, वह प्रायः अपने हृदय में प्रार्थना करता था, यह आशा करते हुए कि वह परमेश्वर का ऋण चुका पाएगा, यह आशा करते हुए कि उसे परमेश्वर के कर्मों और महानता की गवाही देने का अवसर मिलेगा, और यह आशा करते हुए कि परमेश्वर उसकी आज्ञाकारिता की परीक्षा लेगा, और, इससे बढ़कर, यह भी कि उसके विश्वास को शुद्ध किया जा सकता था, जब तक कि उसकी आज्ञाकारिता और उसका विश्वास परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त नहीं कर लेते हैं। फिर, जब परीक्षण अय्यूब के ऊपर आ पड़ा, तो उसने मान लिया कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाएँ सुन ली हैं। अय्यूब ने यह अवसर किसी भी अन्य चीज़ से बढ़कर सँजोया, और इस प्रकार उसने इसे हल्के ढंग से बरतने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि उसकी जीवन भर की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई हो सकती थी। इस अवसर के आगमन का अर्थ था कि उसकी आज्ञाकारिता और परमेश्वर के भय की परीक्षा ली जा सकती थी, और उन्हें शुद्ध किया जा सकता था। इतना ही नहीं, इसका अर्थ था कि अय्यूब के पास परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने का एक अवसर था, जो उसे इस प्रकार परमेश्वर के और क़रीब ला रहा था। परीक्षण के दौरान, ऐसे विश्वास और अनुसरण ने उसे और अधिक पूर्ण होने दिया, और परमेश्वर की इच्छा की और अधिक समझ प्राप्त करने दी। अय्यूब परमेश्वर के आशीषों और अनुग्रहों के लिए और अधिक कृतज्ञ हो गया, अपने हृदय में उसने परमेश्वर के कर्मों पर और अधिक स्तुति की झड़ी लगा दी, और वह परमेश्वर के प्रति और अधिक भयभीत और श्रद्धालु था, और परमेश्वर की सुंदरता, महानता तथा पवित्रता के लिए और अधिक लालायित था। इस समय, यद्यपि परमेश्वर की नज़रों में अय्यूब अब भी वह व्यक्ति था जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था, फिर भी उसके अनुभवों को मानते हुए, अय्यूब का विश्वास और ज्ञान बहुत तेज़ी से कई गुना बढ़ गया था : उसके विश्वास में बढ़ोतरी हुई थी, उसकी आज्ञाकारिता को पाँव रखने की जगह मिल गई थी, और परमेश्वर के प्रति उसका भय और अधिक गहरा हो चुका था। यद्यपि इस परीक्षण ने अय्यूब की आत्मा और जीवन को रूपांतरित कर दिया, फिर भी ऐसे रूपांतरण ने अय्यूब को संतुष्ट नहीं किया, न ही इसने उसकी आगे की प्रगति को धीमा किया। साथ ही साथ, इस परीक्षण से उसने जो प्राप्त किया था उसका हिसाब लगाते हुए,

और स्वयं अपनी कमियों पर विचार करते हुए, उसने ख़ामोशी से प्रार्थना की, अगले परीक्षण के अपने ऊपर आने की प्रतीक्षा करने लगा, क्योंकि वह अपने विश्वास, आज्ञाकारिता, और परमेश्वर के प्रति भय को परमेश्वर के अगले परीक्षण के दौरान ऊँचा उठाने के लिए लालायित था।

परमेश्वर मनुष्य के अंतर्तम विचारों और मनुष्य जो कहता और करता है उस सबका अवलोकन करता है। अय्यूब के विचार यहोवा परमेश्वर के कानों तक पहुँच गए, और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाएँ सुन लीं, और इस तरह, जैसा अपेक्षित था, अय्यूब के लिए परमेश्वर का अगला परीक्षण आ गया।

अत्यधिक पीड़ा के बीच, अय्यूब मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की परवाह का सच में अहसास करता है

शैतान से यहोवा परमेश्वर के प्रश्नों के उपरांत, शैतान गुपचुप खुश था। ऐसा इसलिए था क्योंकि शैतान जानता था कि उसे एक बार फिर उस मनुष्य पर हमला करने की अनुमति दी जाएगी जो परमेश्वर की नज़रों में पूर्ण था—शैतान के लिए, यह एक दुर्लभ अवसर था। शैतान अय्यूब के दृढ़ विश्वास को पूरी तरह कमज़ोर करने के लिए इस अवसर का उपयोग करना चाहता था, ताकि वह परमेश्वर में अपना विश्वास गँवा दे और इस प्रकार अब और परमेश्वर का भय न माने या यहोवा के नाम को धन्य न करे। यह शैतान को एक अवसर देता : स्थान या समय कोई भी हो, वह अय्यूब को अपनी आज्ञा के प्रति उपकृत खिलौना बना पाएगा। शैतान ने अपने दुष्ट इरादे तो कोई निशान छोड़े बिना छिपा लिए, परंतु वह अपनी बुरी प्रकृति को काबू में नहीं रख सका। इस सच्चाई का संकेत यहोवा परमेश्वर के वचनों के इसके उत्तर में दिया गया है, जैसा पवित्र शास्त्र में दर्ज है : "शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, 'खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और मांस छू, तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा" (अय्यूब 2:4-5)। यह असंभव है कि परमेश्वर और शैतान के बीच इस वार्तालाप से शैतान के विद्वेष का तात्विक ज्ञान और समझ प्राप्त न हो। शैतान की इन भ्रामक बातों को सुनने के बाद, वे सब जो सत्य से प्रेम और बुराई से घृणा करते हैं शैतान की नीचता और निर्लज्जता से निस्संदेह और अधिक नफ़रत करेंगे, शैतान की भ्रांतियों से संत्रस्त और जुगुप्सा महसूस करेंगे, और साथ ही, वे अय्यूब के लिए अथाह प्रार्थनाएँ और सच्ची कामनाएँ करेंगे, विनती करते हुए कि यह खरा मनुष्य पूर्णता प्राप्त कर सके, मन्नत मानते हुए कि परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने वाला यह मनुष्य सदा के लिए शैतान के प्रलोभनों पर विजय पाए, और परमेश्वर के मार्गदर्शन और उसकी आशीषों के बीच,

प्रकाश में जीवन बिताए; इस तरह, ऐसे लोग यह भी कामना करेंगे कि अय्यूब के धार्मिक कर्म सदैव उन लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकें जो परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण करते हैं। हालाँकि शैतान का द्वेषपूर्ण इरादा इस उद्घोषणा में देखा जा सकता है, किंतु फिर भी परमेश्वर ने शैतान की "विनती" प्रसन्नचित्त होकर मान ली—परंतु उसने एक शर्त भी रख दी : "सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना" (अय्यूब 2:6)। चूँकि, इस बार, शैतान ने अय्यूब के माँस और हड्डियों को नुक़सान पहुँचाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाने की माँग की थी, इसलिए परमेश्वर ने कहा, "केवल उसका प्राण छोड़ देना।" इन वचनों का अर्थ यह है कि उसने अय्यूब की देह शैतान को दे दी, परंतु अय्यूब का जीवन परमेश्वर ने रख लिया। शैतान अय्यूब का जीवन नहीं ले सकता था, परंतु इसके अलावा शैतान अय्यूब के विरुद्ध कोई भी उपाय या रीति उपयोग में ला सकता था।

परमेश्वर की अनुमति प्राप्त करने के बाद, शैतान अय्यूब पर झपटा और उसकी चमड़ी को पीड़ा पहुँचाने के लिए उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, उसके पूरे शरीर पर पीड़ादायक फोड़े पैदा कर दिए, और अय्यूब ने अपनी चमड़ी पर पीड़ा महसूस की। अय्यूब ने यहोवा परमेश्वर की चमत्कारिकता और पवित्रता की स्तुति की, जिसने शैतान को उसके ढीठपन में और भी अधिक जघन्य बना दिया। क्योंकि वह मनुष्य को पीड़ा पहुँचाने का आनंद महसूस कर चुका था, इसलिए शैतान ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अय्यूब का माँस खरोंच दिया, जिससे उसके पीड़ादायक फोड़े और तीखे हो गए। अय्यूब ने तत्काल अपनी देह पर ऐसी पीड़ा और यंत्रणा महसूस की जिसका कोई सानी नहीं था, और वह अपने हाथों से स्वयं को सिर से पाँव तक मसलने के सिवा और कुछ नहीं कर सका, मानो यह उसके शरीर की इस पीड़ा के द्वारा उसकी आत्मा को पहुँचाए गए इस आघात से उसे राहत दिलाएगा। उसे अहसास हुआ कि परमेश्वर उसकी बगल में खड़े होकर उसे देख रहा था, और उसने अपने को मज़बूत बनाने का भरसक प्रयत्न किया। वह एक बार फिर भूमि पर घुटनों के बल बैठ गया, और कहा : "तू मनुष्य के हृदय के भीतर झाँकता है, तू उसकी दुर्दशा देखता है; उसकी कमज़ोरी तुझे चिंतित क्यों करती है? यहोवा परमेश्वर के नाम की स्तुति हो।" शैतान ने अय्यूब का असहनीय दर्द देखा, परंतु उसने अय्यूब को यहोवा परमेश्वर का नाम त्यागते नहीं देखा। इसलिए उसके टुकड़े-टुकड़े करने को अधीर होकर उसने अय्यूब की हड्डियों में पीड़ा पहुँचाने के लिए जल्दी से अपना आगे हाथ बढाया। तत्क्षण, अय्यूब ने अभूतपूर्व यंत्रणा महसूस की; यह ऐसा था मानो उसका माँस हड्डियों से चीरकर अलग कर दिया गया था, और मानो उसकी हड्डियों को टुकड़े-टुकड़े करके

अलग किया जा रहा था। इस अत्यंत दुखदायी पीड़ा ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया कि इससे तो मर जाना बेहतर होता...। इस यंत्रणा को सहने की उसकी क्षमता अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई थी...। वह चीखना चाहता था, वह दर्द को कम करने की कोशिश में अपने शरीर की चमड़ी को चीरकर निकाल देना चाहता था—फिर भी उसने अपनी चीखें रोक लीं, और अपने शरीर की चमड़ी को नहीं चीरा, क्योंकि वह शैतान को अपनी कमज़ोरी देखने देना नहीं चाहता था। और इसलिए अय्यूब एक बार फिर घुटनों के बल बैठा, परंतु इस बार उसने यहोवा परमेश्वर की उपस्थिति महसूस नहीं की। वह जानता था कि यहोवा परमेश्वर अक़्सर उसके सामने, और उसके पीछे, और उसके दोनों तरफ होता था। परंतु उसकी पीड़ा के दौरान, परमेश्वर ने एक बार भी नहीं देखा; उसने अपना चेहरा ढँक लिया था और वह छिपा हुआ था, क्योंकि मनुष्य के उसके सृजन का उसका अभिप्राय मनुष्य के ऊपर पीड़ा बरपाना नहीं था। इस समय, अय्यूब रो रहा था, और इस शारीरिक यंत्रणा को सहने का भरसक प्रयास कर रहा था, फिर भी वह परमेश्वर को धन्यवाद देने से अपने आपको अब और रोक नहीं सका : "मनुष्य पहले धक्के में ही गिर जाता है, वह कमज़ोर और शक्तिहीन है, वह कच्चा और अज्ञानी है—तू उसके प्रति इतना चिंतित और नरमदिल होना क्यों चाहेगा? तू मुझे मारता है, पर ऐसा करने से तुझे तकलीफ़ होती है। मनुष्य में क्या है जो तेरी देखभाल और चिंता के लायक है?" अय्यूब की प्रार्थनाएँ परमेश्वर के कानों तक पहुँच गईं, और परमेश्वर ख़ामोश था, कोई भी आवाज़ किए बिना बस देख रहा था...। हर उपलब्ध चाल आज़माने और उसका कोई फायदा नहीं होने पर, शैतान चुपचाप चला गया, किंतु इससे परमेश्वर द्वारा अय्यूब की परीक्षाओं का अंत नहीं हुआ। चूँकि अय्यूब में प्रकट की गई परमेश्वर की सामर्थ्य सार्वजनिक नहीं की गई थी, इसलिए अय्यूब की कहानी शैतान के पीछे हटने के साथ समाप्त नहीं हुई। अन्य पात्रों के प्रवेश करने के साथ, अभी और भी दर्शनीय दृश्य आने बाकी थे।

अय्यूब द्वारा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का एक और आविर्भाव सभी चीजों में उसके द्वारा परमेश्ववर के नाम का गुणगान करना है

अय्यूब ने शैतान के विध्वंस झेले थे, किंतु फिर भी उसने यहोवा परमेश्वर का नाम नहीं तजा। उसकी पत्नी पहली थी जो बाहर आई और, मनुष्य की आँखों को दिखाई दे सकने वाले रूप में शैतान की भूमिका निभाते हुए, उसने अय्यूब पर आक्रमण किया। मूल पाठ इसका वर्णन इस प्रकार करता है : "तब उसकी स्त्री उससे कहने लगी, 'क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे

मर जाए तो मर जा'" (अय्यूब 2:9)। ये वे शब्द थे जो मनुष्य के छद्मभेष में शैतान के द्वारा कहे गए थे। वे एक आक्रमण, और एक आरोप, और साथ ही फुसलावा, एक प्रलोभन, और कलंक भी थे। अय्यूब की देह पर आक्रमण करने में विफल होने पर, फिर शैतान ने उसकी सत्यनिष्ठा पर सीधा हमला किया, वह इसका उपयोग अय्यूब से उसकी सत्यनिष्ठा छुड़वाने, परमेश्वर का त्याग करवाने, और जीते नहीं रहने देने के लिए करना चाहता था। इसलिए शैतान भी अय्यूब को प्रलोभित करने के लिए ऐसे वचनों का उपयोग करना चाहता था : यदि अय्यूब यहोवा का नाम त्याग देता, तो उसे ऐसी यंत्रणा सहने की आवश्यकता नहीं होती, वह अपने को देह की यंत्रणा से मुक्त कर सकता था। अपनी पत्नी की सलाह का सामना करने पर, अय्यूब ने यह कहकर उसे झिड़का, "तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" (अय्यूब 2:10)। अय्यूब लंबे समय से इन वचनों को जानता था, परंतु इस समय उनके बारे में अय्यूब के ज्ञान का सत्य सिद्ध हो गया था।

जब उसकी पत्नी ने उसे परमेश्वर को कोसने और मर जाने की सलाह दी, तो उसका आशय था : "तेरा परमेश्वर तुझसे ऐसा ही बर्ताव करता है, तो तू उसे कोसता क्यों नहीं? अभी भी जीवित रहकर तू क्या कर रहा है? तेरा परमेश्वर तेरे प्रति इतना अनुचित है, फिर भी तू कहता है कि 'यहोवा का नाम धन्य हो'। जब तू उसके नाम को धन्य कहता है तो वह तेरे ऊपर आपदा कैसे ला सकता है? जल्दी कर और उसका नाम त्याग दे, और अब से उसका अनुसरण मत करना। इसके बाद, तेरी परेशानियाँ समाप्त हो जाएँगी।" इसी पल, वह गवाही उत्पन्न हुई जो परमेश्वर अय्यूब में देखना चाहता था। कोई साधारण मनुष्य ऐसी गवाही नहीं दे सकता था, न ही हम इसके बारे में बाइबल की किसी अन्य कहानी में पढ़ते हैं—परंतु परमेश्वर ने अय्यूब द्वारा ये वचन कहे जाने के बहुत पहले ही यह देख लिया था। परमेश्वर ने तो इस अवसर का उपयोग बस अय्यूब को सबके सामने यह साबित करने देने के लिए करना चाहा था कि परमेश्वर सही था। अपनी पत्नी की सलाह का सामना करने पर, अय्यूब ने न केवल अपनी सत्यनिष्ठा को नहीं छोड़ा या परमेश्वर को नहीं त्यागा, बल्कि उसने अपनी पत्नी से यह भी कहा : "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" क्या ये वचन बहुत महत्व रखते हैं? यहाँ, केवल एक ही तथ्य इन वचनों का महत्व सिद्ध करने में सक्षम है। इन वचनों का महत्व यह है कि उन्हें परमेश्वर द्वारा अपने हृदय में स्वीकार किया गया है, ये वे वचन हैं जो परमेश्वर द्वारा वांछित थे, ये वे वचन हैं जिन्हें परमेश्वर सुनना चाहता था, और ये वे परिणाम हैं जिन्हें परमेश्वर देखने को लालायित था; ये वचन अय्यूब की गवाही का सार भी हैं। इसमें, अय्यूब की पूर्णता,

खरापन, परमेश्वर का भय, और बुराई से दूर रहना प्रमाणित हुए थे। अय्यूब की अनमोलता इसमें निहित है कि जब उसे प्रलोभित किया गया था, और यहाँ तक कि जब उसका पूरा शरीर दुःखदायी फोड़ों से ढँक गया था, जब उसने अत्यधिक यंत्रणा सही थी, और जब उसकी पत्नी और कुटुंबियों ने उसे सलाह दी थी, तब भी उसने ऐसे वचन कहे थे। इसे दूसरे ढँग से कहें, तो अपने हृदय में वह मानता था कि, चाहे जो भी प्रलोभन हों, या दारुण दुःख या यंत्रणा चाहे जितनी भी कष्टदायी हो, यहाँ तक कि उसके ऊपर यदि चाहे मृत्यु ही आनी हो, तब भी वह परमेश्वर को नहीं त्यागेगा या परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग नहीं ठुकराएगा। तो, तुम देखो, कि परमेश्वर उसके हृदय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता था, और उसके हृदय में केवल परमेश्वर ही था। यही कारण है कि हम पवित्र शास्त्र में उसके बारे में ऐसे विवरण पढ़ते हैं : इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुँह से कोई पाप नहीं किया। उसने न केवल अपने होंठों से पाप नहीं किया, बल्कि अपने हृदय में उसने परमेश्वर के बारे में कोई शिकायत भी नहीं की। उसने परमेश्वर के बारे में ठेस पहुँचाने वाले वचन नहीं कहे, न ही उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। न केवल उसके मुँह ने परमेश्वर के नाम को धन्य किया, बल्कि अपने हृदय में भी उसने परमेश्वर के नाम को धन्य किया; उसका मुँह और हृदय एक जैसे थे। यह परमेश्वर द्वारा देखा गया सच्चा अय्यूब था, और बिल्कुल यही वह कारण था कि क्यों परमेश्वर ने अय्यूब को सँजोकर रखा था।

अय्यूब के बारे में लोगों की अनेक ग़लतफ़हमियाँ

अय्यूब द्वारा झेली गई कठिनाईयाँ परमेश्वर द्वारा भेजे गए स्वर्गदूतों का कार्य नहीं थीं, न ही यह परमेश्वर द्वारा अपने हाथ से उत्पन्न था। इसके बजाय, यह परमेश्वर के शत्रु, शैतान, द्वारा व्यक्तिगत रूप से उत्पन्न किया गया था। परिणामस्वरूप, अय्यूब द्वारा झेली गई कठिनाईयों का स्तर अत्यधिक प्रगाढ़ था। फिर भी इस क्षण अय्यूब ने, बिना किसी संशय के, अपने हृदय में परमेश्वर के बारे में अपना प्रतिदिन का ज्ञान, अपने प्रतिदिन के कार्यकलापों के सिद्धांत, और परमेश्वर के प्रति अपनी प्रवृत्ति प्रदर्शित की थी—यही सत्य है। यदि अय्यूब को लुभाया नहीं गया होता, यदि परमेश्वर अय्यूब के ऊपर परीक्षण नहीं लाया होता, तो जब अय्यूब ने कहा, "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है," तब तुम कहते कि अय्यूब पाखंडी है; परमेश्वर ने उसे इतनी सारी संपत्तियाँ दी थीं, इसलिए सहज ही उसने यहोवा के नाम को धन्य कहा। यदि परीक्षाओं से गुज़ारे जाने से पहले, अय्यूब ने कहा होता, "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" तो तुम कहते कि अय्यूब बढ़ा-चढ़ा कर बातें कर रहा था, और वह परमेश्वर के

नाम को नहीं त्यागेगा क्योंकि उसे परमेश्वर के हाथ से प्रायः धन्य किया गया था। तुम कहते कि यदि परमेश्वर उसके ऊपर विपत्ति लाया होता, तो उसने निश्चित रूप से परमेश्वर के नाम को त्याग दिया होता। फिर भी जब अय्यूब ने अपने को ऐसी परिस्थितियों में पाया जिनकी कोई भी कामना नहीं करेगा या देखना नहीं चाहेगा, परिस्थितियाँ जो कोई नहीं चाहेगा कि उसके ऊपर टूटें, जिनके अपने ऊपर आने से वे डरेंगे, परिस्थितियाँ जिन्हें परमेश्वर भी देखना सहन नहीं कर सकता था, उन परिस्थतियों में भी अय्यूब अपनी सत्यनिष्ठा को थामे रख पाया था : "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है" और "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" इस समय के अय्यूब के आचरण से सामना होने पर, जो लोग ऊँची-ऊँची बातें करना पसंद करते हैं, और जो शब्द और सिद्धांत बोलना पसंद करते हैं, वे सब अवाक रह जाते हैं। जो केवल भाषण में ही परमेश्वर के नाम का गुणगान करते हैं, किंतु जिन्होंने कभी परमेश्वर की परीक्षाओं को स्वीकार नहीं किया, वे उसी सत्यनिष्ठा द्वारा निंदित किए जाते हैं जिसे अय्यूब ने दृढ़ता से थामे रखा था, और जिन्होंने कभी नहीं माना कि मनुष्य परमेश्वर के मार्ग को दृढ़ता से थामे रख पाता है वे अय्यूब की गवाही द्वारा परखे जाते हैं। इन परीक्षाओं के दौरान अय्यूब के आचरण और उसके द्वारा बोले गए वचनों से सामना होने पर, कुछ लोग भ्रमित महसूस करेंगे, कुछ लोग ईर्ष्यालु महसूस करेंगे, कुछ लोग संदेहग्रस्त महसूस करेंगे, और यहाँ तक कि कुछ उदासीन भी दिखाई देंगे, अय्यूब की गवाही स्वीकार करने से इनकार कर देंगे क्योंकि वे न केवल उस यंत्रणा को देखते हैं जो परीक्षाओं के दौरान अय्यूब के ऊपर आ पड़ी थी, और अय्यूब द्वारा बोले गए वचन पढ़ते हैं, बल्कि वे अय्यूब द्वारा उसके ऊपर परीक्षाएँ आने के समय दिखाई गई मानवीय "कमज़ोरी" को भी देखते हैं। इस "कमज़ोरी" को वे अय्यूब की पूर्णता में अपेक्षित अपूर्णता मानते हैं, उस मनुष्य में एक धब्बा जो परमेश्वर की नज़रों में पूर्ण था। कहने का तात्पर्य यह कि यह माना जाता है कि जो लोग पूर्ण होते हैं वे दाग़ या धब्बे से रहित, दोषहीन होते हैं, कि उनमें कोई कमज़ोरी नहीं होती है, उन्हें पीड़ा का ज्ञान नहीं होता है, कि वे कभी अप्रसन्न या उदास महसूस नहीं करते हैं, और वे घृणा या किसी भी बाह्य उग्र व्यवहार से रहित होते हैं; परिणामस्वरूप, लोगों का बड़ा बहुमत नहीं मानता कि अय्यूब सचमुच पूर्ण था। लोग परीक्षाओं के दौरान उसके बहुत-से व्यवहार का अनुमोदन नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, जब अय्यूब ने अपनी संपत्ति और बच्चों को गँवा दिया, तो वह फूट-फूट कर नहीं रोया, जैसा कि लोग कल्पना करते। उसमें "शिष्टचार का अभाव" लोगों को यह सोचने को विवश करता है कि वह भावशून्य था, क्योंकि अपने परिवार के प्रति वह आँसुओं, या लगाव से रहित

था। यह आरंभिक बुरी छाप है जो अय्यूब की लोगों पर पड़ती है। वे उसके बाद उसका व्यवहार और भी उलझाने वाला पाते हैं : "बागा फाड़" की व्याख्या लोगों ने परमेश्वर के प्रति उसके अनादर के रूप में की है, और "सिर मुँडाने" का अर्थ ग़लत ढँग से परमेश्वर के प्रति अय्यूब की निंदा और विरोध माना जाता है। अय्यूब के इन शब्दों के अलावा कि "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है," लोगों को अय्यूब में ऐसी कोई भी धार्मिकता अलग से दिखाई नहीं देती जिसकी प्रशंसा परमेश्वर द्वारा की गई थी, और इस प्रकार उनके एक बड़े बहुमत द्वारा किया गया अय्यूब का आँकलन अबूझता, ग़लतफ़हमी, संदेह, निंदा, और मात्र सैद्धांतिक स्वीकृति के अलावा कुछ नहीं है। उनमें से कोई भी यहोवा परमेश्वर के इन वचनों को सचमुच समझने और सराहने में समर्थ नहीं है कि अय्यूब पूर्ण और खरा मनुष्य था, ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था।

अय्यूब के बारे में उनकी उपरोक्त धारणा के आधार पर, लोगों में उसकी धार्मिकता को लेकर और भी संदेह हैं, क्योंकि पवित्र शास्त्र में दर्ज अय्यूब के कार्यकलाप और उसका आचरण उतने ज़ोरदार ढँग से मर्मस्पर्शी नहीं हैं जितनी लोगों ने कल्पना की थी। न केवल उसने कोई बड़ा साहसिक कार्य पूरा नहीं किया, बल्कि राख के बीच बैठकर उसने अपने को खुजाने के लिए मटके का एक टुकड़ा भी लिया। यह कार्य भी लोगों को आश्चर्यचकित करता है और उन्हें अय्यूब की धार्मिकता पर संदेह करने—और यहाँ तक कि उसे नकारने—का कारण बनता है, क्योंकि स्वयं को खुजाते समय अय्यूब ने परमेश्वर से न तो प्रार्थना या न ही प्रतिज्ञाएँ कीं; इतना ही नहीं, न ही वह दर्द के आँसू रोते देखा गया। इस समय, लोग अय्यूब की केवल कमज़ोरी ही देखते हैं और उसके सिवा कुछ नहीं देखते, और इसलिए यहाँ तक कि जब वे अय्यूब को यह कहते हुए सुनते हैं, "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" तब वे बिल्कुल भावशून्य रह जाते हैं, या अन्यथा दुविधा में पड़ जाते हैं, और अय्यूब के वचनों से उसकी धार्मिकता को अब भी पहचान नहीं पाते हैं। अपने परीक्षणों की यंत्रणा के दौरान अय्यूब लोगों पर जो मूल छाप छोड़ता है वह यह है कि वह न तो दब्बू था और न ही दंभी। लोग उसके व्यवहार के पीछे की उस कहानी को नहीं देखते जो उसके हृदय की गहराइयों में घटी थी, न ही वे उसके हृदय के भीतर परमेश्वर का भय या बुराई से दूर रहने के मार्ग के सिद्धांत का अनुपालन देखते हैं। उसकी स्थिरचित्तता लोगों को यह सोचने को विवश करती है कि उसकी पूर्णता और खरापन खोखले शब्द मात्र थे, कि परमेश्वर के प्रति उसका भय सुनी-सुनाई बात भर थी; इसी बीच, उसने बाह्य रूप से जो "कमज़ोरी" प्रकट की थी, वह उनके ऊपर गहरी छाप छोड़ती है,

परमेश्वर जिसे पूर्ण और खरे मनुष्य के रूप में परिभाषित करता है उसके बारे में एक "नया परिप्रेक्ष्य", और यहाँ तक कि उसके प्रति "एक नई समझ" भी देती है। ऐसा एक "नया परिप्रेक्ष्य" और "नई समझ" तब प्रमाणित होते हैं जब अय्यूब ने अपना मुँह खोला और उस दिन को कोसा जब वह पैदा हुआ था।

यद्यपि उसने जो यंत्रणा झेली उसका स्तर किसी भी मनुष्य के लिए अकल्पनीय और अबूझ है, फिर भी उसने कोई सुनी-सुनाई बात नहीं कही, बल्कि उसने तो स्वयं अपने उपायों से अपने शरीर का दर्द कम भर किया था। जैसा पवित्र शास्त्र में दर्ज है, उसने कहा : "वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'बेटे का गर्भ रहा'" (अय्यूब 3:3)। कदाचित, किसी ने भी इन वचनों को कभी महत्वपूर्ण नहीं माना है, और कदाचित ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने इन पर ध्यान दिया है। तुम लोगों के विचार से, क्या इनका अभिप्राय यह है कि अय्यूब परमेश्वर का विरोध करता था? क्या वे परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत हैं? मैं जानता हूँ कि अय्यूब के द्वारा कहे गए इन वचनों के बारे में तुम लोगों में से कइयों के कुछ निश्चित विचार हैं और वे मानते हैं कि यदि अय्यूब पूर्ण और खरा था, तो उसे कोई कमज़ोरी या वेदना नहीं दर्शानी चाहिए थी, और इसके बजाय शैतान के किसी भी आक्रमण का सकारात्मक ढँग से सामना करना ही चाहिए था, और यहाँ तक कि शैतान के प्रलोभनों के सामने मुस्कराना भी चाहिए था। उसे शैतान के द्वारा उसकी देह पर बरपाई गई किसी भी यंत्रणा के प्रति रत्ती भर भी प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए थी, न ही उसे अपने हृदय के भीतर की भावनाओं को ज़रा भी झलकने देना चाहिए था। उसे कहना चाहिए था कि परमेश्वर इन परीक्षाओं को और कठोर बना दे। यही वह है जो अविचल और सच्चे अर्थ में परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहे वाले किसी भी व्यक्ति को प्रदर्शित और धारण करना चाहिए। इस चरम यंत्रणा के बीच, अय्यूब ने अपने जन्म के दिन को कोसने के सिवा कुछ न किया। उसने परमेश्वर के बारे में शिकायत नहीं की, और परमेश्वर का विरोध करने का तो उसका और भी कोई इरादा नहीं था। यह कर पाना उतना आसान नहीं है जितना कहना, क्योंकि प्राचीन समयों से लेकर आज तक, किसी ने भी अब तक ऐसे प्रलोभन अनुभव नहीं किए या वह नहीं झेला जो अय्यूब पर टूटा था। तो, किसी को भी अब तक अय्यूब के समान प्रलोभनों से क्यों नहीं गुज़ारा गया है? ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि परमेश्वर इसे देखता है, कोई भी ऐसा उत्तरदायित्व या आदेश वहन करने में समर्थ नहीं है, कोई भी वैसा नहीं कर सकता है जैसा अय्यूब ने किया, और इतना ही नहीं, कोई भी, अपने जन्म के दिन को कोसने के अलावा, ऐसा नहीं कर सकता था कि इतने सब के बाद भी परमेश्वर के नाम को नहीं त्यागे और यहोवा परमेश्वर के नाम को धन्य

नहीं कहता रहे, जैसा अय्यूब ने उस समय किया था जब उस पर ऐसी यंत्रणा टूटी थी। क्या कोई यह कर सकता था? जब हम अय्यूब के बारे में ऐसा कहते हैं, तो क्या हम उसके व्यवहार की प्रशंसा कर रहे हैं? वह एक धार्मिक मनुष्य था, और परमेश्वर की ऐसी गवाही दे पाने में समर्थ था, और शैतान को अपना सिर अपने हाथों में लिए भागने को मजबूर करने में समर्थ था, ताकि वह उस पर दोष मढ़ने के लिए फिर कभी परमेश्वर के समक्ष न आए—तो उसकी प्रशंसा करने में क्या ग़लत है? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम लोगों के मानक परमेश्वर से भी ऊँचे हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि जब परीक्षाएँ तुम लोगों पर टूटें तब तुम अय्यूब से भी बेहतर करो? अय्यूब की प्रशंसा परमेश्वर द्वारा की गई थी—तुम लोगों को भला क्या आपत्तियाँ हो सकती हैं?

अय्यूब अपने जन्म के दिन को कोसता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि परमेश्वर को उसके द्वारा पीड़ा पहुँचे

मैं अक्सर कहता हूँ कि परमेश्वर मनुष्य के हृदय के भीतर देखता है, जबकि लोग लोगों का बाह्य स्वरूप देखते हैं। चूँकि परमेश्वर लोगों के हृदयों के भीतर देखता है, इसलिए वह उनका सार समझता है, जबकि लोग अन्य लोगों का सार उनके बाह्य स्वरूप के आधार पर परिभाषित करते हैं। जब अय्यूब ने अपना मुँह खोला और अपने जन्म के दिन को कोसा, तब इस कृत्य ने, अय्यूब के तीन मित्रों सहित, सभी आध्यात्मिक महानुभावों को अचंभित कर दिया। मनुष्य परमेश्वर से आया, और उसे जीवन तथा देह के लिए, और साथ ही अपने जन्म के दिन के लिए भी, जो परमेश्वर द्वारा उसे प्रदान किया गया है, आभारी होना चाहिए, और उन्हें कोसना नहीं चाहिए। यह कुछ ऐसा है जिसे साधारण लोग समझ सकते और इसकी परिकल्पना कर सकते हैं। परमेश्वर का अनुसरण करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, यह समझ पवित्र और अनुल्लंघनीय है, और यह ऐसा सत्य है जो कभी बदल नहीं सकता है। दूसरी ओर, अय्यूब ने नियम तोड़े : उसने अपने जन्म के दिन को कोसा। यह ऐसा कृत्य है जिसे साधारण लोग सीमा पार करके निषिद्ध क्षेत्र में जाना मानते हैं। अय्यूब न केवल लोगों की समझ और सहानुभूति का अधिकारी नहीं है, बल्कि वह परमेश्वर की क्षमा का भी अधिकारी नहीं है। साथ ही साथ, और भी अधिक लोग अय्यूब की धार्मिकता के प्रति शंकालु हो जाते हैं, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि अपने प्रति परमेश्वर की कृपा ने अय्यूब को आत्म-आसक्त बना दिया था; इसने उसे इतना निर्भीक और उतावला बना दिया था कि उसने न केवल अपने जीवनकाल के दौरान उसे आशीष देने के लिए और उसकी देखभाल करने के लिए परमेश्वर

को धन्यवाद नहीं दिया, बल्कि उसने अपने जन्म के दिन को भी विनाश के लिए शापित कर दिया। यदि यह परमेश्वर के प्रति विरोध नहीं तो क्या है? ऐसे उथलेपन लोगों को अय्यूब के इस कृत्य की निंदा करने के लिए प्रमाण उपलब्ध कराते हैं, परंतु कौन जान सकता है कि अय्यूब उस समय सचमुच क्या सोच रहा था? कौन वह कारण जान सकता है कि अय्यूब ने उस तरह क्यों किया? इसकी अंतर्कथा और कारण तो बस परमेश्वर और स्वयं अय्यूब ही जानते हैं।

जब शैतान ने अय्यूब की हड्डियों में पीड़ा पहुँचाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया, तो बचने के उपायों या प्रतिरोध करने की शक्ति के बिना, अय्यूब उसके चंगुल में फँस गया। उसके शरीर और उसकी आत्मा ने अत्यधिक पीड़ा झेली, और इस पीड़ा ने उसे देह में रह रहे मनुष्य की महत्वहीनता, निर्बलता, और शक्तिहीनता से गहराई से परिचित कराया। साथ ही साथ, उसने गहरी सराहना और समझ भी प्राप्त की कि परमेश्वर मनुष्यजाति की परवाह और देखभाल करने वाले मन का क्यों है। शैतान के चंगुल में, अय्यूब को एहसास हुआ कि मनुष्य, जो हाड़-माँस का है, वास्तव में बहुत ही निर्बल और कमज़ोर है। जब वह अपने घुटनों के बल गिरा और परमेश्वर से प्रार्थना की, तो उसने महसूस किया मानो परमेश्वर अपना चेहरा ढँक रहा और छिप रहा था, क्योंकि परमेश्वर ने उसे पूरी तरह शैतान के हाथ में रख दिया था। साथ ही साथ, परमेश्वर उसके लिए रोया भी, और इतना ही नहीं, वह उसके लिए व्यथित था; परमेश्वर उसकी पीड़ा से पीड़ित, और उसकी चोट से चोटिल था...। अय्यूब ने परमेश्वर की पीड़ा महसूस की, साथ ही यह भी कि परमेश्वर के लिए यह कितना असहनीय था...। अय्यूब परमेश्वर को और अधिक व्यथा पहुँचाना नहीं चाहता था, न ही वह यह चाहता था कि परमेश्वर उसके लिए रोए, परमेश्वर को अपने द्वारा पीड़ित होते देखना तो वह और भी नहीं चाहता था। इस क्षण, अय्यूब बस अपनी देह को उतार देना चाहता था, ताकि इस देह द्वारा पहुँचाई गई पीड़ा को अब और न सहना पड़े, क्योंकि यह उसकी पीड़ा से परमेश्वर का उत्पीड़ित होना रोक देगा—तो भी वह नहीं कर सका, और उसे न केवल देह की पीड़ा, बल्कि परमेश्वर को उद्विग्न नहीं करने की इच्छा की यंत्रणा भी सहनी पड़ी। इन दो पीड़ाओं ने—एक देह से, और एक आत्मा से—अय्यूब पर हृदयविदारक, अत्यंत दारूण पीड़ा बरपाई, और उसे महसूस कराया कि कैसे हाड़-माँस से बने मनुष्य की सीमाएँ उसे कुंठित और असहाय बना सकती हैं। इन परिस्थितियों में, परमेश्वर के लिए उसकी ललक और भी तीव्र हो गई थी, और शैतान के लिए उसकी घृणा और भी गहरी हो गई थी। इस समय, परमेश्वर को उसके वास्ते आँसू-आँसू रोते या दर्द सहते देखने की अपेक्षा, अय्यूब ने मनुष्यों के इस

संसार में कभी जन्म ही न लेना पसंद किया होता, बल्कि उसका अस्तित्व ही न होता। वह अपनी देह से गहरी घृणा करने लगा, और अपने आप से, अपने जन्म के दिन से, और यहाँ तक कि उस सबसे जो उससे जुड़ा था ऊबने और थकने लगा। वह अपने जन्म के दिन का और उसके साथ जुड़ी किसी भी चीज़ का अब और उल्लेख किया जाना नहीं चाहता था, और इसलिए उसने अपना मुँह खोला और अपने जन्म के दिन को कोसा : "वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'बेटे का गर्भ रहा।' वह दिन अन्धियारा हो जाए! ऊपर से ईश्वर उसकी सुधि न ले, और न उसमें प्रकाश हो" (अय्यूब 3:3-4)। अय्यूब के वचन स्वयं अपने प्रति उसकी घृणा वहन करते हैं, "वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'बेटे का गर्भ रहा'," और साथ ही उनमें स्वयं अपने प्रति जो दोष उसने महसूस किया वह और परमेश्वर को पीड़ा पहुँचाने के लिए ऋणी होने का बोध भी है, "वह दिन अन्धियारा हो जाए! ऊपर से ईश्वर उसकी सुधि न ले, और न उसमें प्रकाश हो।" ये दो अंश इस बात की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति हैं कि अय्यूब ने तब कैसा महसूस किया था, और सभी को उसकी पूर्णता और खरापन प्रदर्शित करते हैं। साथ ही साथ, बिल्कुल वैसे ही जैसे अय्यूब ने चाहा था, परमेश्वर के प्रति उसकी आस्था और आज्ञाकारिता, साथ ही परमेश्वर के प्रति उसका भय सचमुच ऊँचे उठ गए थे। निस्संदेह, यह ऊँचा उठना ठीक वही प्रभाव है जिसकी परमेश्वर ने अपेक्षा की थी।

अय्यूब शैतान को हराता है और परमेश्वर की नज़रों में सच्चा मनुष्य बन जाता है

जब अय्यूब पहले-पहल अपनी परीक्षाओं से गुज़रा, तब उसकी सारी संपत्ति और उसके सभी बच्चों को उससे छीन लिया गया था, परंतु इसके परिणामस्वरूप वह गिरा नहीं या उसने ऐसा कुछ नहीं कहा जो परमेश्वर के विरुद्ध पाप था। उसने शैतान के प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ली थी, और उसने अपनी भौतिक संपत्ति, अपनी संतान और अपनी समस्त सांसारिक संपत्तियों को गँवाने की परीक्षा पर विजय प्राप्त कर ली थी, जिसका तात्पर्य यह है कि वह उस समय परमेश्वर का आज्ञापालन करने में समर्थ था जब उसने चीज़ें उससे ली थीं, और परमेश्वर ने जो किया उसके लिए वह परमेश्वर को धन्यवाद देने और उसकी स्तुति करने में समर्थ था। ऐसा था अय्यूब का आचरण शैतान के प्रथम प्रलोभन के दौरान, और ऐसी ही थी अय्यूब की गवाही भी परमेश्वर के प्रथम परीक्षण के दौरान। दूसरी परीक्षा में, अय्यूब को पीड़ा पहुँचाने के लिए शैतान ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और हालाँकि अय्यूब ने इतनी अधिक पीड़ा अनुभव की जितनी उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी, तब भी उसकी गवाही लोगों को अचंभित कर देने के लिए काफी थी।

उसने एक बार फिर शैतान को हराने के लिए अपनी सहनशक्ति, दृढ़विश्वास, और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का, और साथ ही परमेश्वर के प्रति अपने भय का उपयोग किया, और उसका आचरण और उसकी गवाही एक बार फिर परमेश्वर द्वारा अनुमोदित और उपकृत की गई। इस प्रलोभन के दौरान, अय्यूब ने अपने वास्तविक आचरण का उपयोग करते हुए शैतान के समक्ष घोषणा की कि देह की पीड़ा परमेश्वर के प्रति उसकी आस्था और आज्ञाकारिता को पलट नहीं सकती है या परमेश्वर के प्रति उसकी निष्ठा और परमेश्वर के भय को छीन नहीं सकती है; इसलिए कि मृत्यु उसके सामने खड़ी है वह न तो परमेश्वर को त्यागेगा या न ही स्वयं अपनी पूर्णता और खरापन छोड़ेगा। अय्यूब के दृढ़संकल्प ने शैतान को कायर बना दिया, उसकी आस्था ने शैतान को भीतकातर और कँपकँपाता छोड़ दिया, जीवन और मरण की लड़ाई के दौरान वह शैतान के विरुद्ध जितनी उत्कटता से लड़ा था उसने शैतान के भीतर गहरी घृणा और रोष उत्पन्न कर दिया; उसकी पूर्णता और खरेपन ने शैतान की ऐसी हालत कर दी कि वह उसके साथ और कुछ नहीं कर सकता था, ऐसे कि शैतान ने उस पर अपने आक्रमण तज दिए और अपने वे आरोप छोड़ दिए जो उसने अय्यूब के विरुद्ध यहोवा परमेश्वर के समक्ष लगाए थे। इसका अर्थ था कि अय्यूब ने संसार पर विजय पा ली थी, उसने देह पर विजय पा ली थी, उसने शैतान पर विजय पा ली थी, और उसने मृत्यु पर विजय पा ली थी; वह पूर्णतः और सर्वथा ऐसा मनुष्य था जो परमेश्वर का था। इन दो परीक्षाओं के दौरान, अय्यूब अपनी गवाही पर डटा रहा, और उसने अपनी पूर्णता और खरेपन को सचमुच जिया, और परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के अपने जीवन जीने के सिद्धांतों का दायरा व्यापक कर लिया। इन दोनों परीक्षाओं से गुज़रने के पश्चात्, अय्यूब में एक अधिक समृद्ध अनुभव ने जन्म लिया, और इस अनुभव ने उसे और भी अधिक परिपक्व तथा तपा हुआ बना दिया, इसने उसे और मज़बूत, और अधिक दृढ़विश्वास वाला बना दिया, और इसने जिस सत्यनिष्ठा पर वह दृढ़ता से डटा रहा था उसकी सच्चाई और योग्यता के प्रति उसे अधिक आत्मविश्वासी बना दिया। यहोवा परमेश्वर द्वारा ली गई अय्यूब की परीक्षाओं ने उसे मनुष्य के प्रति परमेश्वर की चिंता की गहरी समझ और बोध प्रदान किया, और उसे परमेश्वर के प्रेम की अनमोलता को समझने दिया, जिस बिंदु से परमेश्वर के उसके भय में परमेश्वर के प्रति सोच-विचार और उसके लिए प्रेम भी जुड़ गए थे। यहोवा परमेश्वर की परीक्षाओं ने न केवल अय्यूब को उससे पराया नहीं किया, बल्कि वे उसके हृदय को परमेश्वर के और निकट ले आईं। जब अय्यूब द्वारा सही गई दैहिक पीड़ा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई, तब परमेश्वर यहोवा से जो सरोकार उसने महसूस किया

था उसने उसे अपने जन्म के दिन को कोसने के अलावा कोई विकल्प नहीं दिया। ऐसे आचरण की योजना बहुत पहले से नहीं बनाई गई थी, बल्कि यह उसके हृदय के भीतर से परमेश्वर के प्रति सोच-विचार का और उसके लिए प्रेम का स्वाभाविक प्रकाशन था, यह एक स्वाभाविक प्रकाशन था जो परमेश्वर के प्रति उसके सोच-विचार और उसके लिए उसके प्रेम से आया था। कहने का तात्पर्य यह है कि चूँकि वह स्वयं से घृणा करता था, और वह परमेश्वर को यंत्रणा देने का अनिच्छुक था, और यह सहन नहीं कर सकता था, इसलिए उसका सोच-विचार और प्रेम निःस्वार्थता के बिंदु पर पहुँच गए थे। इस समय, अय्यूब ने परमेश्वर के लिए अपनी लंबे समय से चली आती श्रृद्धा और ललक को और परमेश्वर के प्रति निष्ठा को सोच-विचार और प्रेम करने के स्तर तक ऊँचा उठा दिया था। साथ ही साथ, उसने परमेश्वर के प्रति अपनी आस्था और आज्ञाकारिता और परमेश्वर के भय को सोच-विचार और प्रेम करने के स्तर तक ऊँचा उठा दिया था। उसने स्वयं को ऐसा कोई कार्य नहीं करने दिया जो परमेश्वर को हानि पहुँचाता, उसने स्वयं को ऐसे किसी आचरण की अनुमति नहीं दी जो परमेश्वर को ठेस पहुँचाता, और उसने अपने को स्वयं अपने कारणों से परमेश्वर पर कोई दुःख, संताप, या यहाँ तक कि अप्रसन्नता लाने की अनुमति नहीं दी। परमेश्वर की नज़रों में, यद्यपि अय्यूब अब भी वह पहले वाला अय्यूब ही था, फिर भी अय्यूब की आस्था, आज्ञाकारिता, और परमेश्वर के भय ने परमेश्वर को पूर्ण संतुष्टि और आनन्द पहुँचाया था। इस समय, अय्यूब ने वह पूर्णता प्राप्त कर ली थी जिसे प्राप्त करने की अपेक्षा परमेश्वर ने उससे की थी; वह परमेश्वर की नज़रों में सचमुच "पूर्ण और खरा" कहलाने योग्य व्यक्ति बन गया था। उसके धार्मिक कर्मों ने उसे शैतान पर विजय प्राप्त करने दी और परमेश्वर की अपनी गवाही पर डटे रहने दिया। इसलिए, उसके धार्मिक कर्मों ने उसे पूर्ण भी बनाया, और उसके जीवन के मूल्य को पहले किसी भी समय से अधिक ऊँचा उठाने, और श्रेष्ठतर होने दिया, और उन्होंने उसे वह सबसे पहला व्यक्ति भी बना दिया जिस पर शैतान अब और न हमले करेगा और न लुभाएगा। चूँकि अय्यूब धार्मिक था, इसलिए शैतान द्वारा उस पर दोष मढ़े गए और उसे प्रलोभित किया गया था; चूँकि अय्यूब धार्मिक था, इसलिए उसे शैतान को सौंपा गया था; चूँकि अय्यूब धार्मिक था, इसलिए उसने शैतान पर विजय प्राप्त की और उसे हराया था, और वह अपनी गवाही पर डटा रहा था। अब से, अय्यूब ऐसा पहला व्यक्ति बन गया जिसे फिर कभी शैतान को नहीं सौंपा जाएगा, वह सचमुच परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख आ गया और उसने, शैतान की जासूसी या तबाही के बिना, परमेश्वर की आशीषों के अधीन प्रकाश में जीवन जिया...। वह परमेश्वर की नज़रों में सच्चा मनुष्य बन गया था, उसे स्वतंत्र कर दिया

गया था ...

अय्यूब के बारे में

अय्यूब परीक्षाओं से होकर कैसे गुज़रा इस बारे में जानने के बाद, तुममें से अधिकांश संभवतः स्वयं अय्यूब के बारे में और अधिक विवरण जानना चाहोगे, विशेष रूप से उस रहस्य के संबंध में जिसके द्वारा उसने परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त की थी। इसलिए आओ, आज हम अय्यूब के बारे में बात करें!

अय्यूब के दैनिक जीवन में हम उसकी पूर्णता, खरापन, परमेश्वर का भय, और बुराई से दूर रहना देखते हैं

यदि हमें अय्यूब की चर्चा करनी है, तो हमें उसके बारे में उस आँकलन से ही आरंभ करना चाहिए जो परमेश्वर के मुख से कहा गया था : "उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।"

आओ हम सबसे पहले अय्यूब की पूर्णता और खरेपन के बारे में जानें।

तुम लोग "पूर्ण" और "खरा" शब्दों से क्या समझते हो? क्या तुम मानते हो कि अय्यूब कलंक रहित था, कि वह सम्माननीय था? निस्संदेह, यह "पूर्ण" और "खरे" की शाब्दिक व्याख्या और समझ होगी। परंतु वास्तविक जीवन का परिप्रेक्ष्य अय्यूब की सच्ची समझ से अभिन्न है—वचन, किताबें, और सिद्धांत अकेले कोई उत्तर प्रदान नहीं करेंगे। हम अय्यूब के घरेलू जीवन पर नज़र डालते हुए आरंभ करेंगे, इस पर कि अपने जीवन के दौरान उसका सामान्य आचरण किस प्रकार का था। यह हमें जीवन में उसके सिद्धांतों और उद्देश्यों, और साथ ही उसके व्यक्तित्व और खोज के बारे में बताएगा। आओ अब हम अय्यूब 1:3 के अंतिम वचन पढ़ें : "पूर्वी देशों के लोगों में वह सबसे बड़ा था।" ये वचन जो कह रहे हैं वह यह है कि अय्यूब की हैसियत और प्रतिष्ठा बहुत ऊँची थी, और यद्यपि हमें कारण नहीं बताया गया है कि पूर्वी देशों के लोगों में वह अपनी प्रचुर धन-संपत्ति के कारण सबसे बड़ा था, या इसलिए कि वह पूर्ण और खरा था और परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था, कुल मिलाकर, हम इतना जानते हैं कि अय्यूब की हैसियत और प्रतिष्ठा बहुत ही मूल्यवान थी। जैसा कि बाइबल में अभिलिखित है, अय्यूब के बारे में लोगों की पहली धारणा यह थी कि अय्यूब पूर्ण था, कि वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था, और यह कि उसके पास बहुत धन-संपत्ति और सम्माननीय हैसियत थी। ऐसे परिवेश में और ऐसी परिस्थितियों

में रह रहे साधारण व्यक्ति के लिए, अय्यूब का आहार, जीवन की गुणवत्ता, और उसके व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलू अधिकांश लोगों के ध्यान के केंद्रबिंदु होंगे; इसलिए हमें पवित्र शास्त्र आगे पढ़ना होगा : "उसके बेटे बारी-बारी से एक दूसरे के घर में खाने-पीने को जाया करते थे; और अपनी तीनों बहिनों को अपने संग खाने-पीने के लिये बुलवा भेजते थे। जब जब भोज के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़े भोर को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था; क्योंकि अय्यूब सोचता था, 'कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।' इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था" (अय्यूब 1:4-5)। यह अंश हमें दो बातें बताता है : पहली यह कि अय्यूब के पुत्र और पुत्रियाँ, बहुत खाने और पीने के साथ, नियमित रूप से भोज करते थे; दूसरी यह है कि अय्यूब बहुधा होमबलियाँ चढ़ाता था क्योंकि वह अपने पुत्रों और पुत्रियों के लिए प्रायः चिंतित रहता था, इस डर से कि वे पाप कर रहे थे, कि उन्होंने अपने हृदय में परमेश्वर को त्याग दिया था। इसमें दो अलग-अलग प्रकार के लोगों के जीवन का वर्णन किया गया है। पहले, अय्यूब के पुत्र और पुत्रियाँ, जो अपनी संपन्नता के कारण अक़्सर भोज करते थे, ख़र्चीला जीवन जीते थे, वे अपने मन की संतुष्टि तक दाखरस पीते और दावत करते थे, और भौतिक संपदा से उत्पन्न उच्च जीवनशैली का आनंद उठाते थे। ऐसा जीवन जीते हुए, यह अवश्यंभावी ही था कि वे अक़्सर पाप करते होंगे और परमेश्वर को नाराज़ करते होंगे—फिर भी वे अपने को पवित्र नहीं करते थे या होमबलि नहीं चढ़ाते थे। तो, तुम देखो, कि परमेश्वर का उनके हृदय में कोई स्थान नहीं था, कि उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रहों का कोई विचार नहीं किया, न ही वे परमेश्वर को नाराज़ करने से भयभीत हुए, अपने हृदय में परमेश्वर को त्यागने से तो वे और भी भयभीत नहीं हुए थे। निस्संदेह, हमारा ध्यान अय्यूब के बच्चों पर नहीं है, बल्कि उस पर है जो अय्यूब ने ऐसी चीज़ों से सामना होने पर किया; यह अय्यूब के दैनिक जीवन और उसकी मानवता के सार से जुड़ा दूसरा मामला है, जिसका इस अंश में वर्णन किया गया है। बाइबल अय्यूब के पुत्र और पुत्रियों के भोज का उल्लेख तो करती है, किंतु अय्यूब का कोई उल्लेख नहीं है; केवल इतना कहा गया है कि उसके पुत्र और पुत्रियाँ अक़्सर एक साथ मिलकर खाते और पीते थे। दूसरे शब्दों में, उसने भोज आयोजित नहीं किए, न ही वह अपने पुत्र और पुत्रियों के साथ ख़र्चीले ढँग से खान-पान में शामिल हुआ। धनाढ्य और कई संपत्तियों और सेवकों से संपन्न होते हुए भी, अय्यूब का जीवन विलासी जीवन नहीं था। वह जीवन जीने के अपने सर्वोत्कृष्ट परिवेश से मोहित नहीं हुआ था, और उसने, अपनी संपदा के कारण, स्वयं को देह के आनंदों से ठूँस-ठूँसकर नहीं

भरा या होमबलि चढ़ाना नहीं भूला, और इसके कारण अपने हृदय में परमेश्वर से धीरे-धीरे दूर तो वह और भी नहीं हुआ। तो, स्पष्ट रूप से, अय्यूब अपनी जीवनशैली में अनुशासित था, और उसे मिले परमेश्वर के आशीषों के परिणामस्वरूप वह लोभी या सुखवादी नहीं था, और वह जीवन की गुणवत्ता में तल्लीन नहीं था। इसके बजाय, वह विनम्र और शालीन था, वह ठाठ-बाट का आदी नहीं था, और परमेश्वर के सामने वह सतर्क और सावधान था। वह परमेश्वर के अनुग्रहों और आशीषों पर बहुधा विचार करता था, और परमेश्वर से निरंतर भयभीत रहता था। अपने दैनिक जीवन में, अय्यूब अपने पुत्र और पुत्रियों के हेतु होमबलि चढ़ाने के लिए प्रायः जल्दी उठ जाता था। दूसरे शब्दों में, न केवल अय्यूब स्वयं परमेश्वर का भय मानता था, बल्कि वह यह आशा भी करता था कि उसके बच्चे भी उसी प्रकार परमेश्वर का भय मानेंगे और परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं करेंगे। अय्यूब की भौतिक संपदा का उसके हृदय में कोई स्थान नहीं था, न ही उसने परमेश्वर द्वारा ग्रहित स्थान लिया था; चाहे वे स्वयं अपने लिए हों या अपने बच्चों के लिए, अय्यूब के सभी दैनिक कार्यकलाप परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने से जुड़े थे। यहोवा परमेश्वर का उसका भय उसके मुँह तक ही नहीं रुका, बल्कि वह कुछ ऐसा था जिसे उसने क्रियान्वित किया था और जो उसके दैनिक जीवन के प्रत्येक और सभी भागों में प्रतिबिंबित होता था। अय्यूब का यह वास्तविक आचरण हमें दिखाता है कि वह ईमानदार था, और उस सार से युक्त था जो न्याय और उन चीज़ो से जो सकारात्मक थीं प्रेम करता था। अय्यूब अपने पुत्रों और पुत्रियों को प्रायः भेजता और पवित्र करता था, इसका अर्थ है कि उसने अपने बच्चों के व्यवहार को स्वीकृति नहीं दी थी या अनुमोदित नहीं किया था; इसके बजाय, अपने हृदय में वह उनके व्यवहार से असंतुष्ट था, और उनकी भर्त्सना करता था। उसने निष्कर्ष निकाला कि उसके पुत्र और पुत्रियों का व्यवहार यहोवा परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला नहीं था, और इसलिए वह प्रायः उनसे यहोवा परमेश्वर के सामने जाने और अपने पाप स्वीकार करने के लिए कहता था। अय्यूब के कार्यकलाप हमें उसकी मानवता का दूसरा पक्ष दिखाते हैं, वह पक्ष जिसमें वह कभी उनके साथ नहीं चलता था जो अक्सर पाप करते थे और परमेश्वर को नाराज़ करते थे, बल्कि इसके बजाय वह उनसे दूर रहता था और उनसे बचता था। यद्यपि ये लोग उसके पुत्र और पुत्रियाँ थे, फिर भी उसने अपने सिद्धांत इसलिए नहीं छोड़े कि वे उसके अपने सगे-संबंधी थे, न ही वह अपने मनोभावों के कारण उनके पापों में लिप्त हुआ। अपितु, उसने उनसे स्वीकार करने और यहोवा परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने का आग्रह किया, और उसने उन्हें चेताया कि वे अपने लोभी आनंद के वास्ते परमेश्वर को न तजें। दूसरों के साथ

अय्यूब के व्यवहार के सिद्धांत उसके परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के सिद्धांतों से अलग नहीं किए जा सकते हैं। वह उससे प्रेम करता था जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत था, और उनसे घृणा करता था जो परमेश्वर के लिए घृणास्पद थे; और वह उनसे प्रेम करता था जो अपने हृदय में परमेश्वर का भय मानते थे, और उनसे घृणा करता था जो परमेश्वर के विरुद्ध बुराई या पाप करते थे। ऐसा प्रेम और ऐसी घृणा उसके दैनिक जीवन में प्रदर्शित होती थी, और यह अय्यूब का वही खरापन था जिसे परमेश्वर की नज़रों से देखा गया था। स्वाभाविक रूप से, यह उसके दिन-प्रतिदिन के जीवन में दूसरों के साथ उसके रिश्तों में अय्यूब की सच्ची मानवता की अभिव्यक्ति और जीवन यापन भी है, जिसके बारे में हमें अवश्य सीखना चाहिए।

अय्यूब की परीक्षाओं के दौरान उसकी मानवता की अभिव्यंजनाएँ (अय्यूब की परीक्षाओं के दौरान उसकी पूर्णता, खरापन, परमेश्वर का भय, और बुराई से दूर रहने को समझना)

हमने ऊपर अय्यूब की मानवता के विभिन्न पहलू बताए हैं जो उसकी परीक्षाओं से पहले उसके दैनिक जीवन में दिखलाई दिए थे। बिना किसी संदेह के, ये विभिन्न अभिव्यंजनाएँ अय्यूब के खरेपन, परमेश्वर के भय, और बुराई से दूर रहने का आरंभिक परिचय और समझ प्रदान करती हैं, और स्वाभाविक रूप से आरंभिक अभिपुष्टि प्रदान करती हैं। मैं "आरंभिक" क्यों कहता हूँ इसका कारण यह है कि अधिकांश लोगों को अब भी अय्यूब के व्यक्तित्व की और जिस सीमा तक उसने परमेश्वर का आज्ञापालन करने और भय मानने के मार्ग का अनुसरण किया था उसकी सच्ची समझ नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि अय्यूब के बारे में अधिकांश लोगों की समझ उसके संबंध में उस किंचित अनुकूल धारणा से ज़रा भी गहरे नहीं जाती है जो बाइबल में उसके वचनों से युक्त दो अंशों द्वारा प्रदान की गई है, "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है" और "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" इस प्रकार, हमें यह समझने की अत्यंत आवश्यकता है कि अय्यूब ने परमेश्वर की परीक्षाओं का स्वागत करते समय अपनी मानवता को कैसे जिया; इस तरह, अय्यूब की सच्ची मानवता उसकी संपूर्णता में सभी को दिखाई जाएगी।

जब अय्यूब ने सुना कि उसकी संपत्ति चुरा ली गई है, कि उसके पुत्र और पुत्रियों ने अपने प्राण गँवा दिए हैं, और उसके सेवकों को मार दिया गया है, तब उसने नीचे लिखे अनुसार प्रतिक्रिया की : "तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुँड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् करके कहा" (अय्यूब 1:20)। ये वचन

हमें एक तथ्य बताते हैं : यह समाचार सुनने के बाद, अय्यूब घबराया नहीं, वह रोया नहीं या उन सेवकों को दोषी नहीं ठहराया जिन्होंने उसे यह समाचार दिया था, और उसने विवरणों की जाँच और सत्यापन करने तथा यह पता लगाने के लिए कि वास्तव में क्या हुआ था अपराध के दृश्य का मुआयना तो और भी नहीं किया। उसने अपनी संपत्तियों के नुक़्सान पर किसी पीड़ा या खेद का प्रदर्शन नहीं किया, न ही वह अपने बच्चों और अपने प्रियजनों को खो बैठने के कारण फूट-फूटकर रोया। इसके विपरीत, उसने अपना बागा फाड़ा, और अपना सिर मुँडाया, और भूमि पर गिर गया, और आराधना की। अय्यूब के कार्यकलाप किसी भी सामान्य मनुष्य के कार्यकलापों से भिन्न हैं। वे बहुत-से लोगों को भ्रमित करते हैं, और वे उन्हें अय्यूब की "नृशंसता" के कारण अपने हृदय में उसे धिक्कारने को विवश करते हैं। अचानक अपनी संपत्तियाँ गँवा बैठने पर, साधारण लोग हृदय विदीर्ण या हताश दिखाई देते हैं—या, कुछ लोग तो गहरे अवसाद में भी जा सकते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि लोगों के हृदय में उनकी संपत्ति जीवन भर के प्रयास की द्योतक होती है—यह वह है जिस पर उनका जीवित रहना निर्भर होता है, यह वह आशा है जो उन्हें जीवित रखती है; अपनी संपत्ति गँवा देने का अर्थ है कि उनके प्रयास व्यर्थ रहे हैं, कि वे आशा रहित है, और यहाँ तक कि उनका कोई भविष्य भी नहीं है। किसी भी सामान्य व्यक्ति की अपनी संपत्ति और उसके साथ उनका जो निकट संबंध होता है उसके प्रति यही प्रवृत्ति होती है, और यही लोगों की नज़रों में संपत्ति का महत्व भी है। ऐसे में, लोगों की बड़ी बहुसंख्या अपनी संपत्ति गँवा बैठने के प्रति उसकी उदासीन प्रवृत्ति से भ्रमित महसूस करती है। आज, हम इन सभी लोगों का भ्रम दूर करने जा रहे हैं, यह बताकर कि अय्यूब के हृदय में क्या चल रहा था।

सामान्य समझ कहती है कि परमेश्वर द्वारा इतनी प्रचुर संपत्ति दिए जाने के बाद, अय्यूब को परमेश्वर के सामने शर्मिंदा महसूस करना चाहिए, क्योंकि उसने ये संपत्तियाँ गँवा दी थीं, क्योंकि उसने उनकी देखरेख नहीं की थी या उनका ख्याल नहीं रखा था; उसने परमेश्वर द्वारा उसे दी गई संपत्तियाँ सँभालकर नहीं रखी थीं। इस प्रकार, जब उसने सुना कि उसकी संपत्ति चुरा ली गई है, तब उसकी पहली प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए थी कि वह अपराध के दृश्य पर जाता और जो गँवा बैठा था उन सब सामानों की सूची बनाता, और फिर परमेश्वर के सामने जाकर स्वीकार करता ताकि वह एक बार फिर परमेश्वर के आशीष प्राप्त कर सके। परंतु अय्यूब ने ऐसा नहीं किया, और उसके पास स्वाभाविक ही ऐसा न करने के अपने कारण थे। अपने हृदय में, अय्यूब गहराई से मानता था कि उसके पास जो कुछ भी था वह सब परमेश्वर

द्वारा उसे प्रदान किया गया था, और उसके अपने श्रम की उपज नहीं था। इस प्रकार, वह इन आशीषों को कोई ऐसी चीज़ के रूप में नहीं देखता था जिसका लाभ उठाया जाए, बल्कि इसके बजाय उसने अपने जीवित रहने के सिद्धांतों का सहारा लेकर उस मार्ग को अपनी पूरी शक्ति से थामे रखा जो उसे थामना ही चाहिए था। उसने परमेश्वर की आशीषों को सँजोकर रखा और उनके लिए धन्यवाद दिया, किंतु वह आशीषों से आसक्त नहीं था, न ही उसने और अधिक आशीषों की खोज की। ऐसी थी उसकी प्रवृत्ति संपत्ति के प्रति। उसने आशीष प्राप्त करने की ख़ातिर न तो कभी कुछ किया था, न ही वह परमेश्वर के आशीषों के अभाव या हानि से चिंतित या व्यथित था; वह परमेश्वर के आशीषों के कारण न तो ख़ुशी से पागल या उन्मत्त हुआ था, न ही उसने बारंबार आनंद लिए गए इन आशीषों के कारण परमेश्वर के मार्ग की उपेक्षा की या परमेश्वर का अनुग्रह विस्मृत किया था। अपनी संपत्ति के प्रति अय्यूब की प्रवृत्ति लोगों के समक्ष उसकी सच्ची मानवता को प्रकट करती है : सबसे पहले, अय्यूब लोभी मनुष्य नहीं था, और अपने भौतिक जीवन में संकोची था। दूसरे, अय्यूब को कभी यह चिंता या डर नहीं था कि परमेश्वर उसका सब कुछ ले लेगा, जो उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की उसकी प्रवृत्ति थी; अर्थात, उसकी कोई माँगें या शिकायतें नहीं थीं कि परमेश्वर उससे कब ले अथवा ले या नहीं, और उसने कारण नहीं पूछा कि क्यों ले, बल्कि परमेश्वर की व्यवस्थाओं का पालन भर करने की चेष्टा की। तीसरे, उसने कभी यह नहीं माना कि उसकी संपत्तियाँ उसकी अपनी मेहनत से आई थीं, बल्कि यह कि वे परमेश्वर द्वारा उसे प्रदान की गई थीं। यह परमेश्वर में अय्यूब की आस्था थी, और उसके दृढ़विश्वास का संकेत है। क्या अय्यूब की मानवता और उसका प्रतिदिन सच्चा अनुसरण उसके बारे में इस तीन-सूत्रीय सारांश में स्पष्ट कर दिया गया है? अय्यूब की मानवता और अनुसरण अपनी संपत्ति गँवा बैठने का सामना करते समय उसके शांत आचरण का अभिन्न भाग थे। यह निश्चित रूप से उसके प्रतिदिन के अनुसरण के कारण ही था कि परमेश्वर की परीक्षाओं के दौरान अय्यूब में यह कहने की कद-काठी और दृढ़विश्वास था, "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।" ये वचन रातों-रात प्राप्त नहीं किए गए थे, न ही वे बस यूँ ही अय्यूब के दिमाग़ में प्रकट हुए थे। ये वे थे जो उसने कई साल जीवन का अनुभव करने के दौरान देखे और अर्जित किए थे। उन सब लोगों की तुलना में जो परमेश्वर के आशीषों की तलाश भर करते हैं, और जो डरते हैं कि परमेश्वर उनसे ले लेगा, और जो इससे नफ़रत करते और इसकी शिकायत करते हैं, क्या अय्यूब की आज्ञाकारिता एकदम वास्तविक नहीं है? उन सब लोगों की तुलना में जो मानते हैं कि परमेश्वर है, किंतु

जिन्होंने कभी नहीं माना कि परमेश्वर सभी चीज़ों के ऊपर शासन करता है, क्या अय्यूब अत्यधिक ईमानदारी और खरेपन से युक्त नहीं है?

अय्यूब की तर्कशक्ति

अय्यूब के वास्तविक अनुभवों और उसकी खरी और सच्ची मानवता का अर्थ था कि उसने अपनी संपत्तियाँ और अपने बच्चे गँवा बैठने पर सर्वाधिक तर्कसंगत निर्णय और चुनाव किए थे। ऐसे तर्कसंगत चुनाव उसके दैनिक अनुसरणों और परमेश्वर के कर्मों से अवियोज्य थे जिन्हें वह अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन के दौरान जानने लगा था। अय्यूब की ईमानदारी ने उसे यह विश्वास कर पाने में समर्थ बनाया कि यहोवा का हाथ सभी चीज़ों पर शासन करता है; उसके विश्वास ने उसे सभी चीज़ों के ऊपर यहोवा परमेश्वर की संप्रभुता के तथ्य को जानने दिया; उसके ज्ञान ने उसे यहोवा परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं को मानने का इच्छुक और समर्थ बनाया; उसकी आज्ञाकारिता ने उसे यहोवा परमेश्वर के प्रति अपने भय में अधिकाधिक सच्चा होने में समर्थ बनाया; उसके भय ने उसे बुराई से दूर रहने में अधिकाधिक वास्तविक बनाया; अंततः, परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के कारण अय्यूब पूर्ण बन गया; उसकी पूर्णता ने उसे बुद्धिमान बनाया, और उसे उच्चतम तर्कशक्ति प्रदान की।

हमें इस "तर्कशक्ति" शब्द को कैसे समझना चाहिए? एक शाब्दिक व्याख्या यह है कि इसका अर्थ है अच्छी समझ का होना, अपनी सोच में तार्किक और समझदार होना, अच्छी वाणी, चाल-चलन, और परख का होना, और अच्छे तथा नियमित नैतिक मानदण्ड धारण करना। फिर भी अय्यूब की तर्कशीलता समझा पाना इतना आसान नहीं है। यहाँ जब कहा जाता है कि अय्यूब उच्चतम तर्कशक्ति से युक्त था, तो यह उसकी मानवता और परमेश्वर के समक्ष उसके आचरण के संबंध में कहा जाता है। चूँकि अय्यूब ईमानदार था, इसलिए वह परमेश्वर की संप्रभुता में विश्वास और उसका पालन कर पाता था, जिसने उसे ऐसा ज्ञान दिया जो दूसरों द्वारा अप्राप्य था, और इस ज्ञान ने उसे उस सबको जो उसके ऊपर बीता था अधिक सटीकता से पहचनाने, परखने, और परिभाषित करने में समर्थ बनाया, जिसने उसे अधिक सटीकता और चतुराई से यह चुनने में समर्थ बनाया कि उसे क्या करना है और किसे दृढ़ता से थामे रहना है। कहने का तात्पर्य यह है कि उसके वचन, व्यवहार, उसके कार्यकलापों के पीछे के सिद्धांत, और वह संहिता जिसके अनुसार उसने कार्य किया, सब नियमित, सुस्पष्ट और विनिर्दिष्ट थे, और अंधाधुंध, आवेगपूर्ण या भावनात्मक नहीं थे। वह जानता था कि उस पर जो भी बीते उससे कैसे पेश आना है, वह जानता था कि

जटिल घटनाओं के बीच संबंधों को कैसे संतुलित करना और सँभालना है, वह जानता था कि जिस मार्ग को दृढ़ता से थामे रखना चाहिए उसे कैसे थामे रखना है, और, इतना ही नहीं, वह जानता था कि यहोवा परमेश्वर के देने और ले लेने के साथ कैसे पेश आना है। यही अय्यूब की तर्कशक्ति थी। जब वह अपनी संपत्तियों और पुत्रों और पुत्रियों से हाथ धो बैठा, उस समय ठीक इसीलिए कि अय्यूब ऐसी तर्कशक्ति से सुसज्जित था उसने कहा, "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।"

जब अय्यूब ने शरीर की अत्यधिक पीड़ा का, और अपने कुटुंबियों और मित्रों के उलाहनों का सामना किया, और जब उसने मृत्यु का सामना किया, तो उसके वास्तविक आचरण ने एक बार फिर लोगों को उसका सच्चा चेहरा दिखाया।

अय्यूब का वास्तविक चेहरा : सच्चा, शुद्ध, और असत्यता से रहित

आओ हम अय्यूब 2:7-8 पढ़ें : "तब शैतान यहोवा के सामने से निकला, और अय्यूब को पाँव के तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया। तब अय्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया।" यह अय्यूब के उस समय के आचरण का वर्णन है जब उसके शरीर पर दर्दनाक़ फोड़े निकल आए थे। इस समय, अय्यूब राख पर बैठ गया और पीड़ा सहता रहा। किसी ने उसका उपचार नहीं किया, और उसके शरीर का दर्द कम करने में किसी ने उसकी सहायता नहीं की; इसके बजाय, उसने पीड़ादायक फोड़ों के ऊपरी भाग को खुजाने के लिए एक ठीकरे का उपयोग किया। सतही तौर पर, यह अय्यूब की यंत्रणा का एक चरण मात्र था, और इसका उसकी मानवता और परमेश्वर के भय से कोई नाता नहीं है, क्योंकि इस समय अय्यूब ने अपनी मनोदशा और विचार व्यक्त करने के लिए कोई वचन नहीं बोले थे। फिर भी, अय्यूब के कार्यकलाप और उसका आचरण अब भी उसकी मानवता की सच्ची अभिव्यक्ति है। पिछले अध्याय के अभिलेख में हमने पढ़ा था कि अय्यूब पूर्वी देशों के सभी मनुष्यों में सबसे बड़ा था। इस बीच, दूसरे अध्याय का यह अंश हमें दिखाता है कि पूर्व के इस महान मनुष्य ने वास्तव में राख में बैठकर अपने आपको खुजाने के लिए एक ठीकरा लिया। क्या इन दोनों वर्णनों के बीच स्पष्ट अंतर्विरोध नहीं है? यह ऐसा अंतर्विरोध है जो हमें अय्यूब के सच्चे आत्म का दर्शन कराता है : अपनी प्रतिष्ठापूर्ण हैसियत और रुतबे के बावज़ूद, उसने इन चीज़ों से न कभी प्रेम किया था और न ही कभी उन पर ध्यान दिया था; उसने परवाह नहीं की कि दूसरे उसकी प्रतिष्ठा को कैसे देखते हैं, न ही वह अपने कार्यकलापों और आचरण का अपनी प्रतिष्ठा पर कोई नकारात्मक प्रभाव पड़ने या न पड़ने के विषय में चिंतित था; वह

प्रतिष्ठा के आशीषों में लिप्त नहीं हुआ, न ही उसने हैसियत और प्रतिष्ठा के साथ आने वाली महिमा का आनंद उठाया। उसने केवल यहोवा परमेश्वर की नज़रों में अपने मूल्य और अपने जीवन जीने के महत्व की परवाह की। अय्यूब का सच्चा आत्म ही उसका सार था : वह प्रसिद्धि और सौभाग्य से प्रेम नहीं करता था, और वह प्रसिद्धि और सौभाग्य के लिए नहीं जीता था; वह सच्चा, और शुद्ध और असत्यता से रहित था।

अय्यूब द्वारा प्रेम और घृणा का विभाजन

अय्यूब की मानवता का एक और पहलू उसके और उसकी पत्नी के बीच इस संवाद में प्रदर्शित होता है : "तब उसकी स्त्री उससे कहने लगी, 'क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।' उसने उससे कहा, 'तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दु:ख न लें?'" (अय्यूब 2:9-10)। वह जो यंत्रणा भुगत रहा था उसे देखकर, अय्यूब की पत्नी ने उसे इस यंत्रणा से बच निकलने में सहायता करने के लिए सलाह देने की कोशिश की, तो भी उसके "भले इरादों" को अय्यूब की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई; इसके बजाय, उन्होंने उसका क्रोध भड़का दिया, क्योंकि उसने यहोवा परमेश्वर में उसके विश्वास और उसके प्रति उसकी आज्ञाकारिता को नकारा था, और यहोवा परमेश्वर के अस्तित्व को भी नकारा था। यह अय्यूब के लिए असहनीय था, क्योंकि उसने, दूसरों की तो बात ही छोड़ दें, स्वयं अपने को भी कभी ऐसा कुछ नहीं करने दिया था जो परमेश्वर का विरोध करता हो या उसे ठेस पहुँचाता हो। उस समय वह कैसे चुपचाप रह सकता था जब उसने दूसरों को ऐसे वचन बोलते देखा जो परमेश्वर की निंदा और उसका अपमान करते थे? इस प्रकार उसने अपनी पत्नी को "मूढ़ स्त्री" कहा। अपनी पत्नी के प्रति अय्यूब की प्रवृत्ति क्रोध और घृणा, और साथ ही भर्त्सना और फटकार की थी। यह अय्यूब की मानवता की—प्रेम और घृणा के बीच अंतर करने की—स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी, और उसकी खरी मानवता का सच्चा निरूपण था। अय्यूब में न्याय की एक समझ थी—ऐसी समझ जिसकी बदौलत वह दुष्टता की हवाओं और ज्वारों से नफ़रत करता था, और अनर्गल मतांतरों, बेतुके तर्कों, और हास्यास्पद दावों से घृणा, उनकी भर्त्सना और उन्हें अस्वीकार करता था, और वह स्वयं अपने, सही सिद्धांतों और रवैये को उस समय सच्चाई से थामे रह सका जब उसे भीड़ के द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था और उन लोगों द्वारा छोड़ दिया गया था जो उसके क़रीबी थे।

अय्यूब की उदार हृदयता और शुद्ध हृदयता

चूँकि, अय्यूब के आचरण से, हम उसकी मानवता के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त होते देख पाते हैं, तो जब उसने अपने जन्म के दिन को कोसने के लिए अपना मुँह खोला तब हम अय्यूब की मानवता का कौन-सा पहलू देखते हैं? यही वह विषय है जिसे हम नीचे साझा करेंगे।

ऊपर, मैंने अय्यूब द्वारा अपने जन्म के दिन को कोसने की उत्पत्तियों के बारे में बात की है। तुम लोग इसमें क्या देखते हो? यदि अय्यूब कठोर हृदय और प्रेम से रहित होता, यदि वह उत्साहहीन और भावनाहीन होता, और मानवता से वंचित होता, तो क्या वह परमेश्वर के हृदय की इच्छा की परवाह कर सकता था? चूँकि वह परमेश्वर के हृदय की परवाह करता था, क्या इसलिए स्वयं अपने जन्म के दिन का तिरस्कार कर सकता था? दूसरे शब्दों में, यदि अय्यूब कठोर हृदय और मानवता से पूर्णतया रहित होता, तो क्या वह परमेश्वर की पीड़ा से संतप्त हुआ हो सकता था? क्या वह अपने जन्म के दिन को इसलिए कोस सकता था क्योंकि परमेश्वर उसके द्वारा व्यथित हुआ था? उत्तर है, बिल्कुल नहीं! क्योंकि वह दयालु हृदय था, इसलिए अय्यूब ने परमेश्वर के हृदय की परवाह की थी; क्योंकि उसने परमेश्वर के हृदय की परवाह की थी, इसलिए अय्यूब ने परमेश्वर की पीड़ा समझ ली थी; क्योंकि वह दयालु हृदय था, इसलिए उसने परमेश्वर की पीड़ा को समझ लेने के परिणामस्वरूप और अधिक यंत्रणा भुगती; क्योंकि उसने परमेश्वर की पीड़ा समझ ली थी, इसलिए वह अपने जन्म के दिन से घृणा करने लगा, और इसलिए उसने अपने जन्म के दिन को कोसा। बाहरी लोगों के लिए, अय्यूब की परीक्षा के दौरान उसका समूचा आचरण अनुकरणीय है। उसका केवल अपने जन्म के दिन को कोसना ही उसकी पूर्णता और खरेपन पर प्रश्नचिन्ह लगाता है, या एक भिन्न आँकलन प्रस्तुत करता है। वास्तव में, यह अय्यूब की मानवता के सार की सबसे सच्ची अभिव्यक्ति थी। उसकी मानवता का सार छिपा या बंद नहीं था, या किसी अन्य के द्वारा संशोधित नहीं था। जब उसने अपने जन्म के दिन को कोसा, तो उसने अपने हृदय की गहराई में उदार हृदयता और शुद्ध हृदयता का प्रदर्शन किया; वह उस जलसोत के समान था जिसका पानी इतना साफ़ और पारदर्शी था कि उसका तल दिखाई देता था।

अय्यूब के बारे में यह सब जानने के बाद, निस्संदेह अधिकांश लोगों के पास अय्यूब की मानवता के सार का समुचित रूप से सटीक और वस्तुनिष्ठ आँकलन होगा। उनके पास अय्यूब की उस पूर्णता और खरेपन की गहरी, व्यावहारिक, और अधिक उन्नत समझ और सराहना भी होनी चाहिए जिसके बारे में परमेश्वर द्वारा कहा गया था। आशा करनी चाहिए कि यह समझ और सराहना परमेश्वर का भय मानने और

बुराई से दूर रहने के मार्ग पर चलने की शुरुआत करने में लोगों की सहायता करेगी।

परमेश्वर द्वारा अय्यूब को शैतान को सौंपने और परमेश्वर के कार्य के लक्ष्यों के बीच संबंध

यद्यपि अधिकांश लोग अब यह पहचानते हैं कि अय्यूब पूर्ण और खरा था, और वह परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था, किंतु यह पहचान उन्हें परमेश्वर के अभिप्राय की कहीं अधिक समझ प्रदान नहीं करती है। साथ ही अय्यूब की मानवता और अनुसरण से ईर्ष्या करते हुए, वे परमेश्वर के बारे में नीचे लिखा प्रश्न पूछते हैं : अय्यूब इतना पूर्ण और खरा था, लोग उससे इतना अधिक प्यार करते थे, तो परमेश्वर ने उसे शैतान को क्यों सौंप दिया और उसे इतनी अधिक यंत्रणा से क्यों गुज़ारा? ऐसे प्रश्नों का लोगों के हृदयों में उठना निश्चित है—या बल्कि, यह शंका वही प्रश्न है जो अनेक लोगों के हृदयों में है। चूँकि इसने इतने सारे लोगों को चकरा दिया है, इसलिए हमें इस प्रश्न को उठाना और इसे समुचित रूप से स्पष्ट अवश्य करना चाहिए।

वह सब जो परमेश्वर करता है आवश्यक है और असाधारण महत्व रखता है, क्योंकि वह मनुष्य में जो कुछ करता है उसका सरोकार उसके प्रबंधन और मनुष्यजाति के उद्धार से है। स्वाभाविक रूप से, परमेश्वर ने अय्यूब में जो कार्य किया वह भी कोई भिन्न नहीं है, फिर भले ही परमेश्वर की नज़रों में अय्यूब पूर्ण और खरा था। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर चाहे जो करता हो या वह जो करता है उसे चाहे जिन उपायों से करता हो, क़ीमत चाहे जो हो, उसका ध्येय चाहे जो हो, किंतु उसके कार्यकलापों का उद्देश्य नहीं बदलता है। उसका उद्देश्य है मनुष्य में परमेश्वर के वचनों, और साथ ही मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाओं और उसके लिए परमेश्वर की इच्छा को आकार देना; दूसरे शब्दों में, यह मनुष्य के भीतर उस सबको आकार देना है जिसे परमेश्वर अपने सोपानों के अनुसार सकारात्मक मानता है, जो मनुष्य को परमेश्वर का हृदय समझने और परमेश्वर का सार बूझने में समर्थ बनाता है, और मनुष्य को परमेश्वर की संप्रभुता को मानने और व्यवस्थाओं का पालन करने देता है, इस प्रकार मनुष्य को परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना प्राप्त करने देता है—यह सब परमेश्वर जो करता है उसमें निहित उसके उद्देश्य का एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि चूँकि शैतान परमेश्वर के कार्य में विषमता और सेवा की वस्तु है, इसलिए मनुष्य प्रायः शैतान को दिया जाता है; यह वह साधन है जिसका उपयोग परमेश्वर लोगों को शैतान के प्रलोभनों और हमलों में शैतान की दुष्टता, कुरूपता और घृणास्पदता को देखने देने के लिए करता है, इस प्रकार लोगों में शैतान के प्रति घृणा उपजाता है और उन्हें वह जानने और पहचानने में समर्थ बनाता जो

नकारात्मक है। यह प्रक्रिया उन्हें शैतान के नियंत्रण से और आरोपों, हस्तक्षेप और हमलों से धीरे-धीरे स्वयं को स्वतंत्र करने देती है—जब तक कि परमेश्वर के वचनों, परमेश्वर के बारे में उनके ज्ञान और आज्ञाकारिता, और परमेश्वर में उनके विश्वास और भय के कारण, वे शैतान के हमलों और आरोपों के ऊपर विजय नहीं पा लेते हैं; केवल तभी वे शैतान के अधिकार क्षेत्र से पूर्णतः मुक्त कर दिए गए होंगे। लोगों की मुक्ति का अर्थ है कि शैतान को हरा दिया गया है; इसका अर्थ है कि वे अब और शैतान के मुँह का भोजन नहीं हैं—उन्हें निगलने के बजाय, शैतान ने उन्हें छोड़ दिया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसे लोग खरे हैं, क्योंकि उनमें परमेश्वर के प्रति आस्था, आज्ञाकारिता और भय है, और क्योंकि उन्होंने शैतान के साथ पूरी तरह नाता तोड़ लिया है। वे शैतान को लज्जित करते हैं, वे शैतान को कायर बना देते हैं, और वे शैतान को पूरी तरह हरा देते हैं। परमेश्वर का अनुसरण करने में उनका दृढ़विश्वास, और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और उसका भय शैतान को हरा देता है, और उन्हें पूरी तरह छोड़ देने के लिए शैतान को विवश कर देता है। केवल इस जैसे लोग ही परमेश्वर द्वारा सच में प्राप्त किए गए हैं, और यही मनुष्य को बचाने में परमेश्वर का चरम उद्देश्य है। यदि वे बचाए जाना चाहते हैं, और परमेश्वर द्वारा पूरी तरह प्राप्त किए जाना चाहते हैं, तो उन सभी को जो परमेश्वर का अनुसरण करते हैं शैतान के बड़े और छोटे दोनों प्रलोभनों और हमलों का सामना करना ही चाहिए। जो लोग इन प्रलोभनों और हमलों से उभरकर निकलते हैं और शैतान को पूरी तरह परास्त कर पाते हैं ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा बचा लिया गया है। कहने का तात्पर्य यह, वे लोग जिन्हें परमेश्वर पर्यंत बचा लिया गया है ये वे लोग हैं जो परमेश्वर की परीक्षाओं से गुज़र चुके हैं, और अनगिनत बार शैतान द्वारा लुभाए और हमला किए जा चुके हैं। वे जिन्हें परमेश्वर पर्यंत बचा लिया गया है परमेश्वर की इच्छा और अपेक्षाओं को समझते हैं, और परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं को चुपचाप स्वीकार कर पाते हैं, और वे शैतान के प्रलोभनों के बीच परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग को नहीं छोड़ते हैं। वे जिन्हें परमेश्वर पर्यंत बचा लिया गया है वे ईमानदारी से युक्त हैं, वे उदार हृदय हैं, वे प्रेम और घृणा के बीच अंतर करते हैं, उनमें न्याय की समझ है और वे तर्कसंगत हैं, और वे परमेश्वर की परवाह कर पाते और वह सब जो परमेश्वर का है सँजोकर रख पाते हैं। ऐसे लोग शैतान की बाध्यता, जासूसी, दोषारोपण या दुर्व्यवहार के अधीन नहीं होते हैं, वे पूरी तरह स्वतंत्र हैं, उन्हें पूरी तरह मुक्त और रिहा कर दिया गया है। अय्यूब बिल्कुल ऐसा ही स्वतंत्र मनुष्य था, और ठीक यही परमेश्वर द्वारा उसे शैतान को सौंपे जाने का महत्व था।

अय्यूब शैतान द्वारा प्रताड़ित हुआ था, परंतु उसने चिरकालिक स्वतंत्रता और मुक्ति भी प्राप्त की थी, और उसने फिर कभी शैतान की भ्रष्टता, दुर्व्यवहार, और आरोपों से नहीं गुज़रने का, इसके बजाय परमेश्वर के हाव-भाव के प्रकाश में, और उसे दिए गए परमेश्वर के आशीषों के बीच, मुक्त और भारहीन जीवन जीने का अधिकार प्राप्त किया था। कोई भी इस अधिकार को छीन, या नष्ट, या झपट नहीं सकता है। यह अय्यूब को परमेश्वर के प्रति उसके विश्वास, दृढ़निश्चय, और आज्ञाकारिता और उसके भय के बदले दिया गया था; अय्यूब ने पृथ्वी पर आनंद और प्रसन्नता अर्जित करने के लिए और, जैसा कि स्वर्ग द्वारा नियत और पृथ्वी द्वारा स्वीकार किया गया था, पृथ्वी पर परमेश्वर का सच्चा सृष्ट प्राणी होने के नाते सृष्टिकर्ता की आराधना करने का हस्तक्षेप रहित अधिकार और पात्रता अर्जित करने के लिए अपने जीवन की क़ीमत चुकाई थी। ऐसा ही अय्यूब द्वारा सहन किए गए प्रलोभनों का सबसे बड़ा परिणाम भी था।

अभी जब लोगों को बचाया नहीं गया है, तब शैतान के द्वारा उनके जीवन में प्रायः हस्तक्षेप, और यहाँ तक कि उन्हें नियंत्रित भी किया जाता है। दूसरे शब्दों में, वे लोग जिन्हें बचाया नहीं गया है शैतान के क़ैदी होते हैं, उन्हें कोई स्वतंत्रता नहीं होती, उन्हें शैतान द्वारा छोड़ा नहीं गया है, वे परमेश्वर की आराधना करने के योग्य या पात्र नहीं हैं, शैतान द्वारा उनका क़रीब से पीछा और उन पर क्रूरतापूर्वक आक्रमण किया जाता है। ऐसे लोगों के पास कहने को भी कोई खुशी नहीं होती है, उनके पास कहने को भी सामान्य अस्तित्व का अधिकार नहीं होता, और इतना ही नहीं, उनके पास कहने को भी कोई गरिमा नहीं होती है। यदि तुम डटकर खड़े हो जाते हो और शैतान के साथ संग्राम करते हो, शैतान के साथ जीवन और मरण की लड़ाई लड़ने के लिए शस्त्रास्त्र के रूप में परमेश्वर में अपने विश्वास और अपनी आज्ञाकारिता, और परमेश्वर के भय का उपयोग करते हो, ऐसे कि तुम शैतान को पूरी तरह परास्त कर देते हो और उसे तुम्हें देखते ही दुम दबाने और भीतकातर बन जाने को मज़बूर कर देते हो, ताकि वह तुम्हारे विरुद्ध अपने आक्रमणों और आरोपों को पूरी तरह छोड़ दे—केवल तभी तुम बचाए जाओगे और स्वतंत्र हो पाओगे। यदि तुमने शैतान के साथ पूरी तरह नाता तोड़ने का ठान लिया है, किंतु यदि तुम शैतान को पराजित करने में तुम्हारी सहायता करने वाले शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित नहीं हो, तो तुम अब भी खतरे में होगे; समय बीतने के साथ, जब तुम शैतान द्वारा इतना प्रताड़ित कर दिए जाते हो कि तुममें रत्ती भर भी ताक़त नहीं बची है, तब भी तुम गवाही देने में असमर्थ हो, तुमने अब भी स्वयं को अपने विरुद्ध शैतान के आरोपों और हमलों से पूरी तरह मुक्त नहीं किया है, तो तुम्हारे उद्धार की कम ही कोई आशा होगी। अंत में, जब परमेश्वर के

कार्य के समापन की घोषणा की जाती है, तब भी तुम शैतान के शिकंजे में होगे, अपने आपको मुक्त करने में असमर्थ, और इस प्रकार तुम्हारे पास कभी कोई अवसर या आशा नहीं होगी। तो, निहितार्थ यह है कि ऐसे लोग पूरी तरह शैतान की दासता में होंगे।

परमेश्वर की परीक्षाओं को स्वीकार करो, शैतान के प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करो, और परमेश्वर को तुम्हारा संपूर्ण अस्तित्व प्राप्त करने दो

मनुष्य के चिरकालिक भरण-पोषण और सहारे के अपने कार्य के दौरान, परमेश्वर अपनी इच्छा और अपेक्षाएँ मनुष्य को संपूर्णता में बताता है, और मनुष्य को अपने कर्म, स्वभाव, और वह जो है और उसके पास जो है दिखाता है। उद्देश्य है मनुष्य को कद-काठी से सुसज्जित करना, और मनुष्य को परमेश्वर का अनुसरण करते हुए उससे विभिन्न सत्य प्राप्त करने देना—सत्य जो मनुष्य को परमेश्वर द्वारा शैतान से लड़ने के लिए दिए गए हथियार हैं। इस प्रकार सुसज्जित, मनुष्य को परमेश्वर की परीक्षाओं का सामना करना ही चाहिए। परमेश्वर के पास मनुष्य की परीक्षा लेने के लिए कई साधन और मार्ग हैं, किंतु उनमें से प्रत्येक को परमेश्वर के शत्रु, शैतान, के "सहयोग" की आवश्यकता होती है। कहने का तात्पर्य यह, शैतान से युद्ध करने के लिए मनुष्य को हथियार देने के बाद, परमेश्वर मनुष्य को शैतान को सौंप देता है और शैतान को मनुष्य की कद-काठी की "परीक्षा" लेने देता है। यदि मनुष्य शैतान की व्यूह रचनाओं को तोड़कर बाहर निकल सकता है, यदि वह शैतान की घेराबंदी से बचकर निकल सकता है और तब भी जीवित रह सकता है, तो मनुष्य ने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली होगी। परंतु यदि मनुष्य शैतान की व्यूह रचनाओं से छूटने में विफल हो जाता है, और शैतान के आगे समर्पण कर देता है, तो उसने परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की होगी। परमेश्वर मनुष्य के जिस किसी भी पहलू की जाँच करता है, उसकी कसौटी यही होती है कि मनुष्य शैतान द्वारा आक्रमण किए जाने पर अपनी गवाही पर डटा रहता है या नहीं, और उसने शैतान द्वारा फुसलाए जाने पर परमेश्वर को त्याग दिया है या नहीं और शैतान के आगे आत्मसमर्पण करके उसकी अधीनता स्वीकार की है या नहीं। कहा जा सकता है कि मनुष्य को बचाया जा सकता है या नहीं यह इस पर निर्भर करता है कि वह शैतान को परास्त करके उस पर विजय प्राप्त कर सकता है या नहीं, और वह स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है या नहीं यह इस पर निर्भर करता है कि वह शैतान की दासता पर विजय पाने के लिए परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए हथियार, अपने दम पर, उठा सकता है या नहीं, शैतान को पूरी तरह आस तजकर उसे अकेला छोड़ देने के लिए विवश कर पाता है या नहीं। यदि शैतान आस तजकर किसी को छोड़ देता है, तो इसका

अर्थ है कि शैतान फिर कभी इस व्यक्ति को परमेश्वर से लेने की कोशिश नहीं करेगा, फिर कभी इस व्यक्ति पर दोषारोपण और उसके साथ छेड़छाड़ नहीं करेगा, फिर कभी उन्हें निर्दतापूर्वक यातना नहीं देगा या आक्रमण नहीं करेगा; केवल इस जैसे किसी व्यक्ति को ही परमेश्वर द्वारा सचमुच प्राप्त किया गया होगा। यही वह संपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर लोगों को प्राप्त करता है।

अय्यूब की गवाही द्वारा बाद की पीढ़ियों को दी गई चेतावनी और प्रबुद्धता

परमेश्वर द्वारा किसी व्यक्ति को पूरी तरह प्राप्त करने की प्रक्रिया को समझने के साथ ही साथ, लोग परमेश्वर द्वारा अय्यूब को शैतान को सौंपे जाने के लक्ष्य और महत्व भी समझ लेंगे। लोग अय्यूब की यंत्रणा से अब और परेशान नहीं होते हैं, और उसके महत्व की एक नई समझ उनमें है। वे अब और चिंता नहीं करते हैं कि उन्हें भी अय्यूब जैसे ही प्रलोभन से गुज़ारा जाएगा या नहीं, और वे परमेश्वर के परीक्षणों के आने का अब और विरोध या उन्हें अस्वीकार नहीं करते हैं। अय्यूब की आस्था, आज्ञाकारिता, और शैतान पर विजय पाने की उसकी गवाही लोगों के लिए अत्यधिक सहायता और प्रोत्साहन का स्रोत रहे हैं। वे अय्यूब में अपने स्वयं के उद्धार की आशा देखते हैं, और देखते हैं कि परमेश्वर के प्रति आस्था, और आज्ञाकारिता और उसके भय के माध्यम से, शैतान को हराना, और शैतान के ऊपर हावी होना पूरी तरह संभव है। वे देखते हैं कि जब तक वे परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं को चुपचाप स्वीकार करते हैं, और जब तक सब कुछ खो देने के बाद भी परमेश्वर को न छोड़ने का दृढ़संकल्प और विश्वास उनमें हैं, तब तक वे शैतान को लज्जित और पराजित कर सकते हैं, और वे देखते हैं कि शैतान को भयभीत करने और हड़बड़ी में पीछे हटने को मजबूर करने के लिए, उन्हें केवल अपनी गवाही पर डटे रहने की धुन और लगन की आवश्यकता है—भले ही इसका अर्थ अपने प्राण गँवाना हो। अय्यूब की गवाही बाद की पीढ़ियों के लिए चेतावनी है, और यह चेतावनी उन्हें बताती है कि यदि वे शैतान को नहीं हराते हैं, तो वे शैतान के दोषारोपणों और छेड़छाड़ से कभी अपना पीछा नहीं छुड़ा पाएँगे, न ही वे कभी शैतान के दुर्व्यवहार और हमलों से बचकर निकल पाएँगे। अय्यूब की गवाही ने बाद की पीढ़ियों को प्रबुद्ध किया है। यह प्रबुद्धता लोगों को सिखाती है कि यदि वे पूर्ण और खरे हैं, केवल तभी वे परमेश्वर का भय मान पाएँगे और बुराई से दूर रह पाएँगे; यह उन्हें सिखाती है कि यदि वे परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते हैं, केवल तभी वे परमेश्वर के लिए ज़ोरदार और गूँजती हुई गवाही दे सकते हैं; यदि वे परमेश्वर के लिए ज़ोरदार और गूँजती हुई गवाही देते हैं, केवल तभी वे शैतान द्वारा कभी नियंत्रित नहीं किए जा सकते हैं और परमेश्वर के

मार्गदर्शन तथा सुरक्षा में रहते हैं—केवल तभी उन्हें सचमुच बचा लिया गया होगा। अय्यूब के व्यक्तित्व और जीवन के उसके अनुसरण की बराबरी हर उस व्यक्ति को करनी चाहिए जो उद्धार का अनुसरण करता है। अपने संपूर्ण जीवन के दौरान उसने जो जिया और अपनी परीक्षाओं के दौरान उसका आचरण उन सब लोगों के लिए अनमोल ख़ज़ाना है जो परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण करते हैं।

अय्यूब की गवाही परमेश्वर को आराम पहुँचाती है

यदि अब मैं तुम लोगों से कहूँ कि अय्यूब प्यारा मनुष्य है, तो हो सकता है कि तुम लोग इन शब्दों के भीतर निहित अर्थ न समझ सको, और हो सकता है कि मैंने ये सब बातें क्यों कही हैं उनके पीछे की भावना को न पकड़ सको; परंतु उस दिन तक प्रतीक्षा करो जब तुम लोगों को अय्यूब के सदृश या वैसी ही परीक्षाओं का अनुभव हो चुका होगा, जब तुम लोग विपत्ति से गुज़र चुके होगे, जब तुम लोग व्यक्तिगत रूप से तुम लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा आयोजित परीक्षाओं का अनुभव कर चुके होगे, जब तुम प्रलोभनों के बीच शैतान को जीतने और परमेश्वर की गवाही देने के लिए अपना सर्वस्व दे दोगे, और अपमान और कष्ट सहोगे—तब तुम इन वचनों का जो मैं बोलता हूँ अर्थ समझ पाओगे। उस समय, तुम महसूस करोगे कि तुम अय्यूब से बहुत हीनतर हो, तुम महसूस करोगे कि अय्यूब कितना प्यारा है, और अनुकरण करने के योग्य है; जब वह समय आएगा, तब तुम्हें अहसास होगा कि अय्यूब के द्वारा कहे गए वे उत्कृष्ट वचन उस व्यक्ति के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं जो भ्रष्ट है और जो इन समयों में रहता है, और तुम्हें अहसास होगा कि अय्यूब ने जो प्राप्त किया था वह आज के लोगों के लिए प्राप्त करना कितना कठिन है। जब तुम महसूस करोगे कि यह कठिन है, तब तुम समझोगे कि परमेश्वर का हृदय कितना व्याकुल और चिंतित है, तुम समझोगे कि ऐसे लोगों को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुकाई गई कीमत कितनी बड़ी है, और वह कितना बहुमूल्य है जो परमेश्वर मनुष्यजाति के लिए करता और खपाता है। अब जब तुम लोगों ने ये वचन सुन लिए हैं, तब क्या तुम लोगों के पास अय्यूब की सटीक समझ और सही आँकलन है? तुम लोगों की नज़रों में, क्या अय्यूब सचमुच पूर्ण और खरा मनुष्य था जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था? मैं विश्वास करता हूँ कि अधिकांश लोग बिल्कुल निश्चित रूप से हाँ कहेंगे। क्योंकि अय्यूब ने जो कुछ किया और प्रकट किया उनके तथ्य किसी भी मनुष्य या शैतान के द्वारा अकाट्य हैं। वे शैतान पर अय्यूब की विजय का सर्वाधिक शक्तिशाली प्रमाण हैं। यह प्रमाण अय्यूब में उत्पन्न हुआ था, और परमेश्वर द्वारा प्राप्त

प्रथम गवाही थी। इस प्रकार, जब अय्यूब ने शैतान के प्रलोभनों में विजय प्राप्त की और परमेश्वर के लिए गवाही दी, तब परमेश्वर ने अय्यूब में आशा देखी, और उसके हृदय को अय्यूब से आराम मिला था। सृष्टि के समय से लेकर अय्यूब के समय तक, यह पहली बार था जब परमेश्वर ने सच में अनुभव किया कि आराम क्या होता है, और मनुष्य द्वारा आराम पहुँचाए जाने का क्या अर्थ होता है। यह पहली बार था जब उसने सच्ची गवाही देखी, और प्राप्त की, जो उसके लिए दी गई थी।

मैं भरोसा करता हूँ कि अय्यूब की गवाही और अय्यूब के विभिन्न पहलुओं के वृतांत सुनने के बाद, बहुसंख्यक लोगों के पास अपने सम्मुख उपस्थित मार्ग के लिए योजनाएँ होंगी। इसलिए मैं यह भी भरोसा करता हूँ कि अधिकांश लोग जो व्यग्रता और भय से भरे हैं धीरे-धीरे शरीर और मन दोनों से शांत होने लगेंगे, और थोड़ा-थोड़ा करके राहत महसूस करने लगेंगे।

नीचे दिए गए अंश भी अय्यूब के बारे में वृतांत हैं। आओ हम आगे पढ़ें।

4. अय्यूब कान की श्रवणशक्ति से परमेश्वर के बारे में सुनता है

अय्यूब 9:11 देखो, वह मेरे सामने से होकर तो चलता है परन्तु मुझको नहीं दिखाई पड़ता; और आगे को बढ़ जाता है, परन्तु मुझे सूझ ही नहीं पड़ता है।

अय्यूब 23:8-9 देखो, मैं आगे जाता हूँ परन्तु वह नहीं मिलता; मैं पीछे हटता हूँ, परन्तु वह दिखाई नहीं पड़ता; जब वह बाईं ओर काम करता है, तब वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह दाहिनी ओर ऐसा छिप जाता है, कि मुझे वह दिखाई ही नहीं पड़ता।

अय्यूब 42:2-6 मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। तू ने पूछा, "तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?" परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था। तू ने कहा, "मैं निवेदन करता हूँ सुन, मैं कुछ कहूँगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, तू मुझे बता।" मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं; इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ।

यद्यपि परमेश्वर ने अय्यूब पर अपने को प्रकट नहीं किया है, फिर भी अय्यूब परमेश्वर की संप्रभुता में विश्वास करता है

इन वचनों का ज़ोर किस बात पर है? क्या तुम में से किसी ने अहसास किया कि यहाँ एक तथ्य है? पहला, अय्यूब कैसे जानता था कि परमेश्वर है? फिर, वह कैसे जानता था कि स्वर्ग और पृथ्वी तथा सभी चीज़ें परमेश्वर द्वारा शासित होती हैं? एक अंश है जो इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देता है : "मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं; इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ" (अय्यूब 42:5-6)। इन वचनों से हमें पता चलता है कि परमेश्वर को अपनी आँखों से देखा होने के बजाय, अय्यूब ने किंवदंती से परमेश्वर के बारे में जाना था। यह इन्हीं परिस्थितियों के अंतर्गत था कि उसने परमेश्वर का अनुसरण करने के मार्ग पर चलना आरंभ किया, जिसके बाद उसने अपने जीवन में, और सभी चीज़ों के बीच, परमेश्वर के अस्तित्व की पुष्टि की। यहाँ एक अकाट्य तथ्य है—वह तथ्य क्या है? परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण करने में समर्थ होने के बावज़ूद, अय्यूब ने परमेश्वर को कभी देखा नहीं था। इसमें, क्या वह आज के लोगों के समान नहीं था? अय्यूब ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा था, जिसका निहितार्थ है कि यद्यपि उसने परमेश्वर के बारे में सुना था, फिर भी वह नहीं जानता था कि परमेश्वर कहाँ है, या परमेश्वर किसके समान है, या परमेश्वर क्या कर रहा है। ये सब व्यक्तिपरक कारक हैं; तटस्थ भाव से कहें, तो यद्यपि वह परमेश्वर का अनुसरण करता था, फिर भी परमेश्वर कभी उसके सामने प्रकट नहीं हुआ या परमेश्वर ने उससे कभी बात नहीं की। क्या यह तथ्य नहीं है? यद्यपि परमेश्वर ने अय्यूब से बात नहीं की थी, या उसे कोई आदेश नहीं दिए थे, फिर भी अय्यूब ने सभी चीज़ों के बीच, और उन किंवदंतियों में जिनके माध्यम से अय्यूब ने अपने कान की श्रवणशक्ति से परमेश्वर के बारे में सुना था, परमेश्वर का अस्तित्व देखा था और उसकी संप्रभुता को निहारा था, जिसके पश्चात उसने परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का जीवन प्रारंभ किया था। ऐसे थे वे उद्गम और प्रक्रिया जिनके द्वारा अय्यूब ने परमेश्वर का अनुसरण किया था। परंतु वह चाहे जितना परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता हो, उसने अपनी सत्यनिष्ठा को चाहे जितनी दृढ़ता से थामे रखा हो, फिर भी परमेश्वर कभी उसके समक्ष प्रकट नहीं हुआ। आओ हम यह अंश पढ़ें। उसने कहा, "देखो, वह मेरे सामने से होकर तो चलता है परन्तु मुझको नहीं दिखाई पड़ता; और आगे को बढ़ जाता है, परन्तु मुझे सूझ ही नहीं पड़ता है" (अय्यूब 9:11)। ये वचन जो कह रहे हैं वह यह है कि अय्यूब ने परमेश्वर को अपने आसपास महसूस किया हो सकता है या नहीं किया हो सकता है—परंतु वह परमेश्वर को कभी देख नहीं पाया था। ऐसे भी समय थे जब वह परमेश्वर के अपने सामने से होकर गुज़रने, या कुछ करने, या

मनुष्य का मार्गदर्शन करने की कल्पना करता था, किंतु वह कभी जानता नहीं था। परमेश्वर मनुष्य पर तब आता है जब वह इसकी अपेक्षा नहीं कर रहा होता है; मनुष्य नहीं जानता है कि परमेश्वर कब उस पर आता है, या वह कहाँ उस पर आता है, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर को देख नहीं सकता है, और इस प्रकार, मनुष्य के लिए, परमेश्वर उससे छिपा हुआ है।

परमेश्वर में अय्यूब का विश्वास इस तथ्य से डोलता नहीं है कि परमेश्वर उससे छिपा हुआ है

पवित्र शास्त्र के नीचे लिखे अंश में, फिर अय्यूब कहता है, "देखो, मैं आगे जाता हूँ परन्तु वह नहीं मिलता; मैं पीछे हटता हूँ, परन्तु वह दिखाई नहीं पड़ता; जब वह बाईं ओर काम करता है, तब वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह दाहिनी ओर ऐसा छिप जाता है, कि मुझे वह दिखाई ही नहीं पड़ता" (अय्यूब 23:8-9)। इस वृतांत में, हमें पता चलता है कि अय्यूब के अनुभवों में, परमेश्वर पूरे समय उससे छिपा रहा था; परमेश्वर उसके सामने खुलकर प्रकट नहीं हुआ था, न ही उसने खुलकर उससे कोई वचन कहे थे, फिर भी अपने हृदय में, अय्यूब को परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में पूरा विश्वास था। वह हमेशा यही मानता था कि शायद परमेश्वर उसके आगे-आगे चल रहा है, या शायद उसके बगल में कुछ कर रहा है, और यह कि यद्यपि वह परमेश्वर को देख नहीं सकता था, किंतु परमेश्वर उसके बगल में था और उसकी सभी चीज़ों को शासित कर रहा था। अय्यूब ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा था, परंतु वह अपने विश्वास के प्रति सच्चा रह पाता था, जो कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर पाता था। दूसरे लोग ऐसा क्यों नहीं कर पाते थे? ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने अय्यूब से बात नहीं की या उसके सामने प्रकट नहीं हुआ, और यदि उसने सच्चे अर्थ में विश्वास नहीं किया होता, तो वह परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग पर न तो आगे बढ़ा सकता था, न ही उसे दृढ़ता से थामे रह सकता था। क्या यह सच नहीं है? जब तुम अय्यूब को ये वचन कहते पढ़ते हो तब तुम कैसा महसूस करते हो? क्या तुम्हें लगता है कि अय्यूब की पूर्णता और खरापन, और परमेश्वर के समक्ष उसकी धार्मिकता सच हैं, और परमेश्वर की ओर से की गई कोई अतिशयोक्ति नहीं हैं? परमेश्वर ने अय्यूब के साथ भले ही अन्य लोगों के समान ही व्यवहार किया था, और उसके सामने प्रकट नहीं हुआ या उससे बात नहीं की थी, तब भी अय्यूब अपनी सत्यनिष्ठा को दृढ़ता से थामे रहा था, तब भी परमेश्वर की संप्रभुता में विश्वास करता था, और इससे बढ़कर, वह परमेश्वर को नाराज़ करने के अपने भय के फलस्वरूप परमेश्वर के समक्ष बारंबार होमबलि चढ़ाता था और प्रार्थना करता था। परमेश्वर को देखे बिना परमेश्वर का भय मानने की अय्यूब की क्षमता में, हम देखते हैं कि वह सकारात्मक चीज़ों से कितना

प्रेम करता था, और उसका विश्वास कितना दृढ़ और वास्तविक था। इसलिए कि परमेश्वर उससे छिपा हुआ था उसने परमेश्वर के अस्तित्व को नकारा नहीं, न ही इसलिए कि उसने उसे कभी देखा नहीं था उसने अपना विश्वास खोया और परमेश्वर को त्यागा। इसके बजाय, सभी चीज़ों पर शासन करने के परमेश्वर के छिपे हुए कार्य के बीच, उसने परमेश्वर के अस्तित्व का अहसास किया था, और परमेश्वर की संप्रभुता और सामर्थ्य को महसूस किया था। इसलिए कि परमेश्वर उससे छिपा हुआ था उसने खरा होना नहीं छोड़ा, न ही इसलिए कि परमेश्वर उसके सामने प्रकट नहीं हुआ था उसने परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग त्यागा। अय्यूब ने कभी नहीं कहा कि अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए परमेश्वर उसके सामने खुलकर प्रकट हो, क्योंकि उसने सभी चीज़ों के बीच परमेश्वर की संप्रभुता के दर्शन पहले ही कर लिए थे, और वह विश्वास करता था कि उसने वे आशीष और अनुग्रह प्राप्त कर लिए थे जिन्हें अन्य लोगों ने प्राप्त नहीं किया था। यद्यपि परमेश्वर उससे छिपा रहा, फिर भी परमेश्वर में अय्यूब का विश्वास कभी डगमगाया नहीं था। इस प्रकार, उसने वह फसल काटी जो अन्य किसी ने नहीं काटी थी : परमेश्वर की स्वीकृति और परमेश्वर का आशीष।

अय्यूब परमेश्वर के नाम को धन्य करता है और आशीषों या आपदा के बारे में नहीं सोचता है

एक तथ्य है जिसका पवित्र शास्त्र की अय्यूब की कहानियों में कभी उल्लेख नहीं किया गया है, और यही तथ्य आज हमारे ध्यान का केंद्रबिंदु होगा। यद्यपि अय्यूब ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा था या स्वयं अपने कानों से परमेश्वर के वचन कभी नहीं सुने थे, फिर भी अय्यूब के हृदय में परमेश्वर का स्थान था। परमेश्वर के प्रति अय्यूब की प्रवृत्ति क्या थी? जैसा पहले उल्लेख किया गया है, यह थी, "यहोवा का नाम धन्य है।" उसके द्वारा परमेश्वर के नाम को धन्य कहना बेशर्त, संदर्भ से निरपेक्ष था, और किसी तर्क से बंधा नहीं था। हम देखते हैं कि अय्यूब ने अपना हृदय परमेश्वर को दे दिया था, उसे परमेश्वर द्वारा नियंत्रित होने दिया था; अपने हृदय में वह जो सोचता था, वह जो निर्णय लेता था, और वह जिसकी योजना बनाता था वह सब परमेश्वर के लिए खुला छोड़ दिया गया था और परमेश्वर से बंद नहीं रखा गया था। उसका हृदय परमेश्वर के विरोध में खड़ा नहीं हुआ था, और उसने परमेश्वर से कभी नहीं कहा कि वह उसके लिए कुछ करे या उसे कुछ दे, और उसने अंधाधुँध इच्छाएँ नहीं पालीं कि परमेश्वर की उसकी आराधना से उसे कुछ न कुछ प्राप्त जाए। उसने परमेश्वर से किन्हीं लेन-देनों की बात नहीं की, और परमेश्वर से कोई याचनाएँ या माँगें नहीं कीं। उसका परमेश्वर के नाम की स्तुति करना भी सभी चीज़ों पर शासन करने की परमेश्वर की

महान सामर्थ्य और अधिकार के कारण था, और वह इस पर निर्भर नहीं था कि उसे आशीषें प्राप्त हुईं या उस पर आपदा टूटी। वह मानता था कि परमेश्वर लोगों को चाहे आशीष दे या उन पर आपदा लाए, परमेश्वर की सामर्थ्य और उसका अधिकार नहीं बदलेगा, और इस प्रकार, व्यक्ति की परिस्थितियाँ चाहे जो हों, परमेश्वर के नाम की स्तुति की जानी चाहिए। मनुष्य को धन्य किया जाता है तो परमेश्वर की संप्रभुता के कारण किया जाता है, और इसलिए जब मनुष्य पर आपदा टूटती है, तो वह भी परमेश्वर की संप्रभुता के कारण ही टूटती है। परमेश्वर की सामर्थ्य और अधिकार मनुष्य से संबंधित सब कुछ पर शासन करते हैं और उसे व्यवस्थित करते हैं; मनुष्य के सौभाग्य के उतार-चढ़ाव परमेश्वर की सामर्थ्य और उसके अधिकार की अभिव्यंजना हैं, और जिसका चाहे जो दृष्टिकोण हो, परमेश्वर के नाम की स्तुति की जानी चाहिए। यही वह है जो अय्यूब ने अपने जीवन के वर्षों के दौरान अनुभव किया था और जानने लगा था। अय्यूब के सभी विचार और कार्यकलाप परमेश्वर के कानों तक पहुँचे थे, और परमेश्वर के सामने आए थे, और परमेश्वर द्वारा महत्वपूर्ण माने गए थे। परमेश्वर ने अय्यूब के बारे में इस ज्ञान को दुलारा, और ऐसा हृदय होने के लिए अय्यूब को सँजोया। यह हृदय सदैव, और सर्वत्र, परमेश्वर के आदेश की प्रतीक्षा करता था, और समय या स्थान चाहे जो हो, उस पर जो कुछ भी टूटता उसका स्वागत करता था। अय्यूब ने परमेश्वर से कोई माँगें नहीं कीं। उसने स्वयं अपने से जो माँगा वह यह था कि परमेश्वर से आई सभी व्यवस्थाओं की प्रतीक्षा करे, स्वीकार करे, सामना करे, और आज्ञापालन करे; अय्यूब इसे अपना कर्तव्य मानता था, और यह ठीक वही था जो परमेश्वर चाहता था। अय्यूब ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा था, न ही उसे कोई वचन बोलते, कोई आज्ञा देते, कोई शिक्षा देते, या उसे किसी चीज़ का निर्देश देते सुना था। आज के वचनों में, जब परमेश्वर ने उसे सत्य के संबंध में कोई प्रबुद्धता, मार्गदर्शन या पोषण नहीं दिया था, उसके लिए परमेश्वर के प्रति ऐसा ज्ञान और प्रवृत्ति रख पाना—यह बहुमूल्य था, और उसका ऐसी चीज़ें प्रदर्शित करना परमेश्वर के लिए पर्याप्त था, और उसकी गवाही परमेश्वर द्वारा सराही और सँजोई गई थी। अय्यूब ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा या व्यक्तिगत रूप से उसे कोई शिक्षा देते नहीं सुना था, परंतु परमेश्वर के लिए उसका हृदय और वह स्वयं उन लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक अनमोल थे जो परमेश्वर के सामने केवल गहन सिद्धांतों की शब्दावली में बोल सकते थे, जो केवल शेखी बघार सकते थे, और बलिदान चढ़ाने की बात कर सकते थे, परंतु जिनके पास परमेश्वर का सच्चा ज्ञान कभी नहीं था, और जिन्होंने कभी सच में परमेश्वर का भय नहीं माना था। क्योंकि अय्यूब का हृदय शुद्ध था, और परमेश्वर से छिपा हुआ नहीं था, और उसकी मानवता

ईमानदार और दयालु हृदय थी, और वह न्याय से और जो सकारात्मक था उससे प्रेम करता था। केवल इस प्रकार का व्यक्ति ही जो ऐसे हृदय और मानवता से युक्त था, परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण कर पाने में समर्थ था, और परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने में सक्षम था। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की संप्रभुता देख सकता था, उसका अधिकार और सामर्थ्य देख सकता था, और उसकी संप्रभुता और व्यवस्थाओं के प्रति आज्ञाकारिता प्राप्त करने में समर्थ था। केवल इस जैसा व्यक्ति ही परमेश्वर के नाम की सच्ची स्तुति कर सकता था। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह यह नहीं देखता था कि परमेश्वर उसे आशीष देगा या उसके ऊपर आपदा लाएगा, क्योंकि वह जानता था कि सब कुछ परमेश्वर के हाथ से नियंत्रित होता है, और यह कि मनुष्य का चिंता करना मूर्खता, अज्ञानता, या तर्कहीनता का, और सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर की संप्रभुता के तथ्य के प्रति संदेह का, और परमेश्वर का भय न मानने का संकेत है। अय्यूब का ज्ञान ठीक वही था जो परमेश्वर चाहता था। तो, क्या परमेश्वर के बारे में अय्यूब का सैद्धांतिक ज्ञान तुम लोगों से अधिक था? चूँकि उस समय परमेश्वर का कार्य और उसके कथन बहुत ही कम थे, इसलिए परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करना कोई आसान बात नहीं थी। अय्यूब के द्वारा ऐसी उपलब्धि बहुत कठिनाई से प्राप्त बड़ी उपलब्धि थी। उसने परमेश्वर के कार्य का अनुभव नहीं किया था, न ही कभी परमेश्वर को बोलते सुना था, न ही परमेश्वर का चेहरा देखा था। वह परमेश्वर के प्रति ऐसी प्रवृत्ति रख पाया था तो यह पूरी तरह उसकी मानवता और उसके व्यक्तिगत अनुसरण का परिणाम था, ऐसी मानवता और अनुसरण जो आज के लोगों में नहीं हैं। इस प्रकार, उस युग में, परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा मनुष्य और कोई नहीं है।" उस युग में, परमेश्वर ने पहले ही उसके बारे में ऐसा आँकलन कर लिया था, और ऐसे निष्कर्ष पर पहुँच चुका था। आज तो यह और भी कितना अधिक सत्य होता?

यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से छिपा हुआ है, किंतु मनुष्य के लिए उसे जानने हेतु सभी चीज़ों के बीच परमेश्वर के कर्म पर्याप्त हैं

अय्यूब ने परमेश्वर का चेहरा नहीं देखा था या परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन नहीं सुने थे, उसने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के कार्य का अनुभव तो और भी नहीं किया था, तो भी परमेश्वर के प्रति उसका भय और उसकी परीक्षाओं के दौरान उसकी गवाही सभी लोगों द्वारा देखी जाती है, और वे परमेश्वर द्वारा प्रेम की जाती, उसे आनंदित करती, और उसके द्वारा प्रशंसित होती हैं, और लोग उनसे ईर्ष्या, और उनकी प्रशंसा करते हैं, और उससे भी अधिक, उनकी स्तुति गाते हैं। उसके जीवन के बारे में कुछ भी महान या

असाधारण नहीं था : किसी भी साधारण मनुष्य के समान ही, उसने अनुल्लेखनीय जीवन जिया था, सूर्य उगने पर काम पर बाहर जाना और सूर्य अस्त होने पर विश्राम के लिए लौट आना। अंतर यह है कि अपने जीवन के अनेक अनुल्लेखनीय दशकों के दौरान, उसने परमेश्वर के मार्ग की अंतर्दृष्टि प्राप्त की थी, और परमेश्वर की महान सामर्थ्य और संप्रभुता का इस तरह अहसास किया और उसे समझ लिया था जैसा पहले कभी किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं किया था। वह किसी साधारण मनुष्य की अपेक्षा अधिक चतुर नहीं था, उसका जीवन विशेष रूप से सुदृढ़ नहीं था, इसके अतिरिक्त, न ही उसके पास अदृश्य विशेष कौशल थे। यद्यपि जो उसके पास था वह ऐसा व्यक्तित्व था जो ईमानदार, दयालु हृदय, और खरा था, ऐसा व्यक्तित्व जो निष्पक्षता, धार्मिकता और सकारात्मक चीज़ों से प्रेम करता था—इनमें से कुछ भी बहुसंख्यक साधारण लोगों के पास नहीं है। उसने प्रेम और घृणा के बीच भेद किया, उसमें न्याय का बोध था, वह अटल और दृढ़ था, और अपने सोच-विचार के विवरणों पर सूक्ष्मता से ध्यान देता था। इस प्रकार, पृथ्वी पर अपने अनुल्लेखनीय समय के दौरान उसने वे सब असाधारण चीज़ें देखीं जो परमेश्वर ने की थीं, और उसने परमेश्वर की महानता, पवित्रता और धार्मिकता देखी, उसने मनुष्य के लिए परमेश्वर का सरोकार, अनुग्रहशीलता, और संरक्षण देखा, और उसने सर्वोच्च परमेश्वर की माननीयता और अधिकार देखा। अय्यूब क्यों इन चीज़ों को प्राप्त कर पाया था जो किसी भी साधारण मनुष्य से परे थीं, इसका पहला कारण यह था कि उसके पास शुद्ध हृदय था, और उसका हृदय परमेश्वर का था, और सृष्टिकर्ता द्वारा मार्गदर्शित होता था। दूसरा कारण था उसका अनुसरण : अवगुणरहित और पूर्ण होने का अनुसरण, और ऐसा व्यक्ति होने का अनुसरण जो स्वर्ग की इच्छा का पालन करता हो, जिसे परमेश्वर द्वारा प्रेम किया जाता हो, और जो बुराई से दूर रहता हो। अय्यूब ने परमेश्वर को देखने या परमेश्वर के वचन सुनने में असमर्थ होते हुए भी इन चीज़ों को धारण और इनका अनुसरण किया; यद्यपि उसने परमेश्वर को कभी नहीं देखा था, फिर भी वह उन उपायों को जानने लगा था जिनसे परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है; और उसने उस बुद्धि को समझ लिया था जिससे परमेश्वर ऐसा करता है। यद्यपि उसने परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन कभी नहीं सुने थे, फिर भी अय्यूब जानता था कि मनुष्य को फल देने और मनुष्य से ले लेने के सारे कर्म परमेश्वर से आते हैं। हालाँकि उसके जीवन के वर्ष किसी भी साधारण व्यक्ति के वर्षों से भिन्न नहीं थे, फिर भी उसने अपने जीवन की अनुल्लेखनीयता से सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर की संप्रभुता के अपने ज्ञान को, या परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग के अपने अनुसरण को प्रभावित नहीं होने दिया। उसकी नज़रों

में, सभी चीज़ों के विधानों में परमेश्वर के कर्म समाए थे, और परमेश्वर की संप्रभुता व्यक्ति के जीवन के किसी भी भाग में देखी जा सकती थी। उसने परमेश्वर को नहीं देखा था, परंतु वह यह अहसास कर पाता था कि परमेश्वर के कर्म हर जगह हैं, और पृथ्वी पर अपने अनुल्लेखनीय समय के दौरान, अपने जीवन के प्रत्येक कोने में वह परमेश्वर के असाधारण और चमत्कारिक कर्म देख पाता और उनका अहसास कर पाता था, और वह परमेश्वर की चमत्कारिक व्यवस्थाओं को देख सकता था। परमेश्वर की अदृश्यता और मौन ने परमेश्वर के कर्मों के अय्यूब के बोध में रुकावट नहीं डाली, न ही उन्होंने सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर की संप्रभुता के उसके ज्ञान को प्रभावित किया। उसके दिन-प्रतिदिन के जीवन के दौरान, उसका जीवन हर चीज़ में छिपे परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं का बोध था। अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में उसने परमेश्वर के हृदय की आवाज़ और परमेश्वर के वचन सुने और समझे थे, उस परमेश्वर के जो सभी चीज़ों के बीच मौन रहकर भी अपने हृदय की आवाज़ और अपने वचन सभी चीज़ों के विधि-विधानों को शासित करने के द्वारा व्यक्त करता है। तो, तुम देखो, कि यदि लोगों के पास अय्यूब के समान ही मानवता और अनुसरण हो, तो वे अय्यूब के समान बोध और ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, और अय्यूब के समान ही सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर की संप्रभुता की समझ और ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। परमेश्वर अय्यूब के समक्ष प्रकट नहीं हुआ था या परमेश्वर ने उससे बात नहीं की थी, किंतु अय्यूब पूर्ण, और खरा होने, तथा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने में समर्थ था। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के मनुष्य के समक्ष प्रकट हुए या उससे बात किए बिना भी, सभी चीज़ों के बीच परमेश्वर के कर्म और सभी चीज़ों के ऊपर उसकी संप्रभुता मनुष्य को परमेश्वर के अस्तित्व, सामर्थ्य और अधिकार से अवगत होने के लिए पर्याप्त है, और परमेश्वर की सामर्थ्य और अधिकार मनुष्य से परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण करवाने के लिए पर्याप्त हैं। चूँकि अय्यूब जैसा साधारण मनुष्य परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का मार्ग अर्जित कर पाता था, इसलिए परमेश्वर का अनुसरण करने वाले प्रत्येक साधारण मनुष्य को भी ऐसा कर पाना चाहिए। हालाँकि ये शब्द तार्किक निष्कर्ष की तरह लग सकते हैं, फिर भी ये चीज़ों के विधि-विधानों की अवहेलना नहीं करते हैं। तो भी तथ्य अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रहे हैं : ऐसा प्रतीत होगा कि परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर रहना अय्यूब और केवल अय्यूब के लिए परिरक्षित नहीं है। "परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने" का उल्लेख होने पर लोग सोचते हैं कि यह केवल अय्यूब द्वारा ही किया जाना चाहिए, मानो परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने का

मार्ग अय्यूब के नाम के साथ चस्पा हो गया था और दूसरों के साथ इसका कोई लेना-देना नहीं था। इसका कारण स्पष्ट है : चूँकि केवल अय्यूब ही ऐसा व्यक्तित्व रखता था जो ईमानदार, दयालु हृदय, और खरा था, और जो निष्पक्षता और धार्मिकता तथा उन चीज़ों से जो सकारात्मक थीं प्रेम करता था, इस प्रकार केवल अय्यूब ही परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण कर सका था। तुम सबने इसके निहितार्थ अवश्य समझ लिए होंगे—चूँकि कोई भी उस मानवता से युक्त नहीं है जो ईमानदार, दयालु हृदय, और खरी है, और जो निष्पक्षता और धार्मिकता और उससे जो सकारात्मक है प्रेम करती है, इसलिए कोई भी न परमेश्वर का भय मान सकता है और न बुराई से दूर रह सकता है, और इस प्रकार लोग कभी परमेश्वर का आनंद प्राप्त नहीं कर सकते हैं या परीक्षाओं का सामना नहीं कर सकते हैं। इसका यह भी अर्थ है कि अय्यूब के अपवाद के साथ, सभी लोग अब भी शैतान द्वारा घेरे और फुसलाए जाते हैं; वे सब शैतान द्वारा उसके दोषारोपण, आक्रमण और दुर्व्यवहार के भागी बनाए जाते हैं। वे ही हैं जिन्हें शैतान निगलने की कोशिश करता है, और वे सब स्वतंत्रता से रहित, शैतान के द्वारा बंधक बनाए गए क़ैदी हैं।

यदि मनुष्य के हृदय में परमेश्वर के प्रति शत्रुता हो, तो वह कैसे परमेश्वर का भय मान सकता और बुराई से दूर रह सकता है?

चूँकि आज के लोगों में अय्यूब जैसी मानवता नहीं है, इसलिए उनकी प्रकृति का सार, और परमेश्वर के प्रति उनकी मनोवृत्ति क्या है? क्या वे परमेश्वर का भय मानते हैं? क्या वे बुराई से दूर रहते हैं? वे जो परमेश्वर का भय नहीं मानते और बुराई से दूर नहीं रहते हैं उनका सार केवल तीन शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है : "परमेश्वर के शत्रु।" तुम लोग ये तीन शब्द अक़्सर कहते हो, किंतु उनका वास्तविक अर्थ तुम लोगों ने कभी नहीं जाना है। "परमेश्वर के शत्रु" शब्दों का सार है : वे यह नहीं कह रहे हैं कि परमेश्वर मनुष्य को शत्रु के रूप में देखता है, बल्कि यह कि मनुष्य परमेश्वर को शत्रु के रूप में देखता है। पहला, जब लोग परमेश्वर में विश्वास करना आरंभ करते हैं, तब उनमें से किसके पास स्वयं अपने लक्ष्य, कारण, और महत्वकांक्षाएँ नहीं होती हैं? उनका एक भाग भले ही परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है और परमेश्वर के अस्तित्व को देख चुका होता है, फिर भी वे कारण परमेश्वर में उनके विश्वास में अब भी समाए होते हैं, और परमेश्वर में विश्वास करने में उनका अंतिम लक्ष्य उसके आशीष और अपनी मनचाही चीज़ें प्राप्त करना होता है। लोगों के जीवन अनुभवों में, वे प्रायः मन ही मन सोचते हैं, मैंने परमेश्वर के लिए अपने परिवार और जीविका का त्याग कर दिया है, और उसने मुझे क्या दिया है? मुझे इसमें अवश्य जोड़ना, और

इसकी पुष्टि करनी चाहिए—क्या मैंने हाल ही में कोई आशीष प्राप्त किया है? मैंने इस दौरान बहुत कुछ दिया है, मैं बहुत दौड़ा-भागा हूँ, मैंने बहुत अधिक सहा है—क्या परमेश्वर ने बदले में मुझे कोई प्रतिज्ञाएँ दी हैं? क्या उसने मेरे अच्छे कर्म याद रखे हैं? मेरा अंत क्या होगा? क्या मैं परमेश्वर के आशीष प्राप्त कर सकता हूँ? ... प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदय में निरंतर ऐसा गुणा-भाग करता है, और वे परमेश्वर से माँगें करते हैं जिनमें उनके कारण, महत्वाकांक्षाएँ, तथा लेन-देन की मानसिकता होती है। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य अपने हृदय में लगातार परमेश्वर की परीक्षा लेता रहता है, परमेश्वर के बारे में लगातार मनसूबे बनाता रहता है, और स्वयं अपने व्यक्तिगत मनोरथ के पक्ष में परमेश्वर के साथ तर्क-वितर्क करता रहता है, और परमेश्वर से कुछ न कुछ कहलवाने की कोशिश करता है, यह देखने के लिए कि परमेश्वर उसे वह दे सकता है या नहीं जो वह चाहता है। परमेश्वर का अनुसरण करने के साथ ही साथ, मनुष्य परमेश्वर से परमेश्वर के समान बर्ताव नहीं करता है। मनुष्य ने परमेश्वर के साथ हमेशा सौदेबाजी करने की कोशिश की है, उससे अनवरत माँगें की हैं, और यहाँ तक कि एक इंच देने के बाद एक मील लेने की कोशिश करते हुए, हर क़दम पर उस पर दबाव भी डाला है। परमेश्वर के साथ सौदबाजी करने की कोशिश करते हुए साथ ही साथ, मनुष्य उसके साथ तर्क-वितर्क भी करता है, और यहाँ तक कि ऐसे लोग भी हैं जो, जब परीक्षाएँ उन पर पड़ती हैं या जब वे अपने आप को किन्हीं निश्चित स्थितियों में पाते हैं, तो प्रायः कमज़ोर, निष्क्रिय और अपने कार्य में सुस्त पड़ जाते हैं, और परमेश्वर के बारे में शिकायतों से भरे होते हैं। मनुष्य ने जब पहले-पहल परमेश्वर में विश्वास करना आरंभ किया था, उसी समय से मनुष्य ने परमेश्वर को एक अक्षय पात्र, एक स्विस आर्मी चाकू माना है, और अपने आपको परमेश्वर का सबसे बड़ा साहूकार माना है, मानो परमेश्वर से आशीष और प्रतिज्ञाएँ प्राप्त करने की कोशिश करना उसका जन्मजात अधिकार और कर्तव्य है, जबकि परमेश्वर का दायित्व मनुष्य की रक्षा और देखभाल करना, और उसे भरण-पोषण देना है। ऐसी है "परमेश्वर में विश्वास" की मूलभूत समझ, उन सब लोगों की जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, और ऐसी है परमेश्वर में विश्वास की अवधारणा की उनकी गहनतम समझ। मनुष्य की प्रकृति के सार से लेकर उसके व्यक्तिपरक अनुसरण तक, ऐसा कुछ भी नहीं है जो परमेश्वर के भय से संबंधित हो। परमेश्वर में विश्वास करने में मनुष्य के लक्ष्य का परमेश्वर की आराधना के साथ कोई लेना-देना संभवतः नहीं हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह, मनुष्य ने न कभी यह विचार किया और न समझा कि परमेश्वर में विश्वास करने के लिए परमेश्वर का भय मानने और आराधना करने की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थितियों के आलोक में,

मनुष्य का सार स्पष्ट है। यह सार क्या है? यह सार यह है कि मनुष्य का हृदय द्वेषपूर्ण है, छल और कपट रखता है, निष्पक्षता और धार्मिकता और उससे जो सकारात्मक है प्रेम नहीं करता है, और यह तिरस्करणीय और लोभी है। मनुष्य का हृदय परमेश्वर के लिए और अधिक बंद नहीं हो सकता है; उसने इसे परमेश्वर को बिल्कुल भी नहीं दिया है। परमेश्वर ने मनुष्य का सच्चा हृदय कभी नहीं देखा है, न ही उसकी मनुष्य द्वारा कभी आराधना की गई है। परमेश्वर चाहे जितनी बड़ी कीमत चुकाए, या वह चाहे जितना अधिक कार्य करे, या वह मनुष्य का चाहे जितना भरण-पोषण करे, मनुष्य इस सबके प्रति अंधा, और सर्वथा उदासीन ही बना रहता है। मनुष्य ने कभी परमेश्वर को अपना हृदय नहीं दिया है, वह केवल स्वयं ही अपने हृदय का ध्यान रखना, स्वयं अपने निर्णय लेना चाहता है—जिसका निहितार्थ यह है कि मनुष्य परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण करना, या परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं का पालन करना नहीं चाहता है, न ही वह परमेश्वर के रूप में परमेश्वर की आराधना करना चाहता है। ऐसी है आज मनुष्य की दशा। अब आओ हम फिर अय्यूब को देखें। सबसे पहले, क्या उसने परमेश्वर के साथ कोई सौदा किया? क्या परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग को दृढ़ता से थामे रहने में उसकी कोई छिपी हुई मंशा थी? उस समय, क्या परमेश्वर ने आने वाले अंत के बारे में किसी से बात की थी? उस समय, परमेश्वर ने किसी से भी अंत के बारे में प्रतिज्ञाएँ नहीं की थीं, और यही वह पृष्ठभूमि थी जिसमें अय्यूब परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने में समर्थ था। क्या आज के लोग अय्यूब के साथ तुलना में कहीं टिकते हैं? उनमें बहुत ही अधिक असमानता है, वे अलग-अलग स्तरों पर हैं। यद्यपि अय्यूब को परमेश्वर का अधिक ज्ञान नहीं था, फिर भी उसने अपना हृदय परमेश्वर को दे दिया था और यह परमेश्वर का था। उसने परमेश्वर के साथ कभी सौदा नहीं किया, और उसकी परमेश्वर के प्रति कोई अनावश्यक इच्छाएँ या माँगें नहीं थीं; इसके बजाय, वह विश्वास करता था कि "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया।" यही वह था जो उसने जीवन के अनेक वर्षों के दौरान परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग को सच्चाई से थामे रहने से देखा और प्राप्त किया था। इसी प्रकार, उसने वह परिणाम भी प्राप्त किया जो इन वचनों में दर्शाया गया है : "क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" ये दो वाक्य वह थे जो उसने अपने जीवन के अनुभवों के दौरान परमेश्वर के प्रति अपनी आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप देखे और जानना आरंभ किए थे, और वे उसके सबसे ताक़तवर हथियार भी थे जिनसे उसने शैतान के प्रलोभनों के दौरान विजय प्राप्त की थी, और वे

परमेश्वर की गवाही पर उसके दृढ़ता से डटे रहने की नींव थे। इस बिंदु पर, क्या तुम लोग अय्यूब की एक प्यारे व्यक्ति के रूप में परिकल्पना करते हो? क्या तुम लोग ऐसा व्यक्ति बनने की आशा करते हो? क्या तुम लोग शैतान के प्रलोभनों से गुज़ारे जाने से डरते हो? क्या तुम लोग परमेश्वर से तुम लोगों को अय्यूब के समान ही परीक्षाओं से गुज़ारने की प्रार्थना करने का संकल्प लेते हो? बिना संदेह, अधिकांश लोग ऐसी चीज़ों के लिए प्रार्थना करने का साहस नहीं करेंगे। तो यह स्पष्ट है कि तुम लोगों की आस्था दयनीय रूप से तुच्छ है; अय्यूब की तुलना में, तुम लोगों की आस्था उल्लेख के योग्य भी नहीं है। तुम लोग परमेश्वर के शत्रु हो, तुम लोग परमेश्वर का भय नहीं मानते हो, तुम लोग परमेश्वर के लिए अपनी गवाही पर डटे रह पाने में असमर्थ हो, और तुम शैतान के हमलों, आरोपों और प्रलोभनों पर विजय पाने में असमर्थ हो। वह क्या है जो तुम लोगों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ प्राप्त करने के योग्य बनाता है? अय्यूब की कहानी सुनने और मनुष्य को बचाने में परमेश्वर का अभिप्राय और मनुष्य के उद्धार का अर्थ समझने के बाद, क्या अब तुम लोगों में अय्यूब के समान परीक्षण स्वीकार करने का विश्वास है? क्या तुममें स्वयं को परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने के मार्ग का अनुसरण करने देने का थोड़ा-सा संकल्प नहीं होना चाहिए?

परमेश्वर की परीक्षाओं के बारे में आशंकाएँ मत रखो

अय्यूब की परीक्षाएँ समाप्त होने पर उसकी गवाही मिलने के बाद, परमेश्वर ने संकल्प लिया कि वह अय्यूब के समान लोगों का एक समूह—या एक से अधिक समूह—प्राप्त करेगा, इसके अतिरिक्त उसने संकल्प लिया कि वह शैतान को फिर कभी, परमेश्वर से होड़ करते हुए, उन्हीं साधनों का उपयोग करके जिनके द्वारा उसने अय्यूब को लुभाया था, उस पर आक्रमण और उसके साथ दुर्व्यवहार किया था, किसी अन्य व्यक्ति पर आक्रमण या उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं करने देगा; परमेश्वर ने शैतान को फिर कभी मनुष्य के साथ, जो कमज़ोर, मूर्ख और अज्ञानी है, ऐसी चीज़ें नहीं करने दीं—बस इतना काफ़ी था कि शैतान ने अय्यूब को लुभाया था! शैतान को लोगों के साथ चाहे जैसा मनचाहा दुर्व्यवहार नहीं करने देना यह परमेश्वर की अनुकंपा है। परमेश्वर के लिए, इतना काफ़ी था कि अय्यूब ने शैतान के प्रलोभन और दुर्व्यवहार झेले थे। परमेश्वर ने शैतान को फिर कभी ऐसी चीज़ें करने की अनुमति नहीं दी, क्योंकि जो लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हैं उनका जीवन और सब कुछ परमेश्वर द्वारा शासित और आयोजित किया जाता है, और शैतान परमेश्वर के चुने हुए लोगों को इच्छानुसार बहकाने का अधिकारी नहीं है—तुम लोगों को यह बात स्पष्ट होनी चाहिए! परमेश्वर मनुष्य की कमज़ोरी का ध्यान रखता है, और उसकी मूर्खता तथा

अज्ञान को समझता है। यद्यपि, इसलिए कि मनुष्य को पूरी तरह बचाया जा सके, परमेश्वर को उसे शैतान के हाथों में सौंपना पड़ता है, परंतु परमेश्वर मनुष्य को कभी शैतान द्वारा मूर्ख मानकर छले जाते और प्रताड़ित होते देखने का इच्छुक नहीं है, और वह मनुष्य को हमेशा कष्ट भुगतते देखना नहीं चाहता है। मनुष्य परमेश्वर द्वारा सृजित किया गया था, और यह पूरी तरह न्यायोचित है कि परमेश्वर मनुष्य से संबंधित सब कुछ शासित और व्यवस्थित करे; यह परमेश्वर का उत्तरदायित्व है, और यह वह अधिकार है जिसके द्वारा परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है! परमेश्वर शैतान को मनुष्य के साथ मनमाने ढंग से दुर्व्यवहार और बुरा बर्ताव नहीं करने देता है, वह मनुष्य को भटकाने के लिए शैतान को नानाविध साधनों का प्रयोग नहीं करने देता है, और इससे भी बढ़कर, वह मनुष्य पर परमेश्वर की संप्रभुता में शैतान को हस्तक्षेप नहीं करने देता है, न ही वह शैतान को उन विधि-विधानों को कुचलने और नष्ट करने देता है जिनके द्वारा परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है, मनुष्यजाति का प्रबंधन करने और बचाने के परमेश्वर के महान कार्य की तो बात ही छोड़ दें! वे जिन्हें परमेश्वर बचाना चाहता है, और वे जो परमेश्वर की गवाही देने में समर्थ हैं, परमेश्वर की छह हज़ार वर्षीय प्रबंधन योजना का मर्म और साकार रूप हैं, साथ ही उसके छह हज़ार वर्षों के कार्य के उसके प्रयासों इनाम है। परमेश्वर इन लोगों को यूँ ही शैतान को कैसे दे सकता है?

लोग परमेश्वर के परीक्षणों को लेकर प्रायः चिंतित और भयभीत रहते हैं, तो भी वे हर समय शैतान के फंदे में रह रहे होते हैं, और ख़तरों से भरे क्षेत्र में रह रहे होते हैं जिसमें उन पर शैतान द्वारा आक्रमण और दुर्व्यवहार किया जाता है—मगर वे नहीं जानते भय क्या है, और अविचलित रहते हैं। चल क्या रहा है? परमेश्वर में मनुष्य का विश्वास केवल उन चीज़ों तक ही सीमित है जिन्हें वह देख सकता है। उसमें मनुष्य के लिए परमेश्वर के प्रेम और सरोकार की, या मनुष्य के प्रति उसकी सहृदयता और सोच-विचार की रत्ती भर भी सराहना नहीं है। यदि परमेश्वर की परीक्षाओं, न्याय और ताड़ना, तथा प्रताप और कोप के प्रति थोड़ी-सी घबराहट और डर को छोड़ दें, तो मनुष्य को परमेश्वर के अच्छे अभिप्रायों की रत्ती भर भी समझ नहीं है। परीक्षाओं का उल्लेख होने पर, लोगों को लगता है मानो परमेश्वर के छिपे हुए इरादे हैं, और कुछ तो यह तक मानते हैं कि परमेश्वर बुरे षडयंत्रों को प्रश्रय देता है, इस बात से अनभिज्ञ कि परमेश्वर वास्तव में उनके साथ क्या करेगा; इस प्रकार, परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्थाओं के प्रति आज्ञाकारिता के बारे में चीखने-चिल्लाने के साथ-साथ, वे मनुष्य के ऊपर परमेश्वर की संप्रभुता और मनुष्य के लिए उसकी व्यवस्थाओं को रोकने और उनका विरोध करने के लिए जो कुछ कर सकते हैं सब करते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि यदि वे

सावधान नहीं रहे तो उन्हें परमेश्वर द्वारा गुमराह कर दिया जाएगा, कि यदि वे अपने भाग्य पर पकड़ नहीं बनाए रखते हैं तो जो कुछ उनके पास है वह सब परमेश्वर द्वारा ले लिया जा सकता है, और यहाँ तक कि उनका जीवन भी समाप्त किया जा सकता है। मनुष्य शैतान के खेमे में है, परंतु वह शैतान द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने की कभी चिंता नहीं करता है, और उसके साथ शैतान द्वारा दुर्व्यवहार किया जाता है परंतु वह शैतान द्वारा बंधक बनाए जाने से भी कभी नहीं डरता है। वह कहता रहता है कि वह परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार करता है, मगर उसने परमेश्वर में कभी भरोसा नहीं किया है या विश्वास नहीं किया है कि परमेश्वर सचमुच मनुष्य को शैतान के पंजों से बचाएगा। यदि, अय्यूब के समान, मनुष्य परमेश्वर के आयोजनों और व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण कर पाता है, और अपना संपूर्ण अस्तित्व परमेश्वर के हाथों में सौंप सकता है, तो क्या मनुष्य का अंत अय्यूब के समान ही नहीं होगा—परमेश्वर के आशीषों की प्राप्ति? यदि मनुष्य परमेश्वर का शासन स्वीकार और उसके प्रति समर्पण कर पाता है, तो इसमें खोने के लिए क्या है? इस प्रकार, मैं सुझाव देता हूँ कि तुम लोग अपने कार्यकलापों में सावधान रहो, और उस सब के प्रति चौकन्ने रहो जो तुम लोगों पर आने ही वाला है। तुम लोग उतावले या आवेगी न बनो, और परमेश्वर तथा लोगों, विषयों, और वस्तुओं के साथ, जिनकी उसने तुम लोगों के लिए व्यवस्था की है, अपने गर्म खून या अपनी स्वाभाविकता पर निर्भर करते हुए, या अपनी कल्पनाओं और अवधारणाओं के अनुसार व्यवहार मत करो; परमेश्वर के कोप को भड़काने से बचने के लिए, तुम लोगों को अपने कार्यकलापों में सचेत होना ही चाहिए, और अधिक प्रार्थना तथा खोज करनी चाहिए। यह याद रखो!

इसके बाद, हम देखेंगे कि अपनी परीक्षाओं के पश्चात् अय्यूब कैसा था।

5. अपनी परीक्षाओं के पश्चात् अय्यूब

अय्यूब 42:7-9 ऐसा हुआ कि जब यहोवा ये बातें अय्यूब से कह चुका, तब उसने तेमानी एलीपज से कहा, "मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम लोगों ने नहीं कही। इसलिये अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छाँटकर मेरे दास अय्यूब के पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, क्योंकि उसी की प्रार्थना मैं ग्रहण करूँगा; और नहीं, तो मैं तुम से तुम्हारी मूढ़ता के योग्य बर्ताव करूँगा, क्योंकि तुम लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अय्यूब की सी ठीक बात नहीं कही।" यह सुन तेमानी एलीपज, शूही बिलदद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, और यहोवा ने अय्यूब की

प्रार्थना ग्रहण की।

अय्यूब 42:10 जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दु:ख दूर किया, और जितना अय्यूब के पास पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया।

अय्यूब 42:12 यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हज़ार भेड़ बकरियाँ, छ: हज़ार ऊँट, हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गदहियाँ हो गईं।

अय्यूब 42:17 अन्त में अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया।

वे जो परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते हैं परमेश्वर द्वारा दुलार से देखे जाते हैं, जबकि वे जो मूर्ख हैं परमेश्वर द्वारा दीन-हीन के रूप में देखे जाते हैं

अय्यूब 42:7-9 में, परमेश्वर कहता है कि अय्यूब उसका दास है। अय्यूब का उल्लेख करने के लिए उसके द्वारा "दास" शब्द का प्रयोग उसके हृदय में अय्यूब का महत्व दर्शाता है; यद्यपि परमेश्वर ने अय्यूब को कुछ ऐसा कहकर नहीं पुकारा था जो और अधिक सम्माननीय होता, फिर भी परमेश्वर के हृदय के भीतर अय्यूब के महत्व से इस उपाधि का कोई संबंध नहीं था। यहाँ "दास" अय्यूब के लिए परमेश्वर का दिया उपनाम है। परमेश्वर द्वारा "मेरे दास अय्यूब" का बहुत बार उल्लेख दिखाता है कि वह अय्यूब से कितना प्रसन्न था, और यद्यपि परमेश्वर ने "दास" शब्द के पीछे निहित अर्थ की बात नहीं की, फिर भी "दास" शब्द की परमेश्वर की परिभाषा पवित्र शास्त्र के इस अंश के उसके वचनों में देखी जा सकती है। परमेश्वर ने सबसे पहले तेमानी एलीपज से कहा : "मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम लोगों ने नहीं कही।" यह पहली बार है जब परमेश्वर ने ये वचन स्पष्ट रूप से लोगों से कहे थे कि उसने वह सब स्वीकार किया जो अय्यूब ने परमेश्वर द्वारा अपनी परीक्षाओं के बाद कहा और किया था, और यह पहली बार है जब उसने अय्यूब द्वारा कहे और किए गए सब कुछ की सटीकता और औचित्य की पुष्टि की थी। परमेश्वर एलीपज और दूसरों के ग़लत, और बेतुके वार्तालाप के कारण क्रोधित था, क्योंकि, अय्यूब के समान, वे परमेश्वर का प्रकटन नहीं देख सके थे या उन वचनों को नहीं सुन सके थे जो उसने उनके जीवन में कहे थे, इसके अतिरिक्त अय्यूब को परमेश्वर का ऐसा सटीक ज्ञान था, जबकि वे परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करते हुए और वे जो कुछ करते थे उनमें उसके धैर्य की परीक्षा लेते हुए, आँख मूँदकर परमेश्वर के बारे में केवल अनुमान ही लगा सके थे।

परिणामस्वरूप, अय्यूब के द्वारा जो किया और कहा गया था उसे स्वीकार करने के साथ ही साथ, परमेश्वर दूसरों के प्रति कुपित हो गया, क्योंकि उनमें वह न केवल परमेश्वर के भय की कोई वास्तविकता नहीं देख पाया था, बल्कि वे जो कुछ कहते थे उसमें भी उसने परमेश्वर के भय के बारे में कुछ नहीं सुना था। और इसलिए इसके बाद परमेश्वर ने उनसे नीचे लिखी माँगें कीं : "इसलिये अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छाँटकर मेरे दास अय्यूब के पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, क्योंकि उसी की प्रार्थना मैं ग्रहण करूँगा; और नहीं, तो मैं तुम से तुम्हारी मूढ़ता के योग्य बर्ताव करूँगा।" इस अंश में परमेश्वर एलीपज और दूसरों से कुछ ऐसा करने के लिए कह रहा है जो उन्हें उनके पापों से मुक्ति देगा, क्योंकि उनकी मूढ़ता यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध पाप थी, और इस प्रकार उन्हें अपनी ग़लतियों का सुधार करने के लिए होमबलि चढ़ानी पड़ी थी। होमबलियाँ प्रायः परमेश्वर को चढ़ाई जाती हैं, परंतु इन होमबलियों के बारे में असामान्य बात यह है कि वे अय्यूब को चढ़ाई गई थीं। अय्यूब को परमेश्वर द्वारा इसलिए स्वीकार किया गया था क्योंकि उसने अपनी परीक्षाओं के दौरान परमेश्वर के लिए गवाही दी थी। इस बीच, अय्यूब के इन मित्रों को उसकी परीक्षाओं के समय के दौरान उजागर किया गया था; उनकी मूर्खता के कारण, परमेश्वर द्वारा उनकी भर्त्सना की गई थी, और उन्होंने परमेश्वर का क्रोध भड़काया था, और परमेश्वर द्वारा दण्डित किए जाने चाहिए—अय्यूब के सामने होमबलि चढ़ाने के द्वारा दण्डित किए गए—जिसके बाद अय्यूब ने उनके लिए प्रार्थना की कि उनकी तरफ़ से परमेश्वर का दण्ड और कोप हट जाए। परमेश्वर का अभिप्राय उन्हें लज्जित करना था, क्योंकि वे ऐसे लोग नहीं थे जो परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते थे, और उन्होंने अय्यूब की सत्यनिष्ठा की भर्त्सना की थी। एक दृष्टि से, परमेश्वर उन्हें बता रहा था कि उसने उनके कार्यकलाप स्वीकार नहीं किए थे, किंतु अय्यूब को अत्यधिक स्वीकार किया और उससे प्रसन्न हुआ था; दूसरी दृष्टि से, परमेश्वर उन्हें बता रहा था कि परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया जाना मनुष्य को परमेश्वर के समक्ष ऊँचा उठा देता है, कि मनुष्य अपनी मूर्खता के कारण परमेश्वर की घृणा का भागी बनता है, और इसके कारण परमेश्वर को नाराज़ करता है, और वह परमेश्वर की नज़रों में दीन-हीन और नीच है। ये दो प्रकार के लोगों की परमेश्वर द्वारा दी गई परिभाषाएँ हैं, वे इन दो प्रकार के लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्तियाँ हैं, और वे इन दो प्रकार के लोगों के महत्व और प्रतिष्ठा के बारे में परमेश्वर की अभिव्यक्तियाँ हैं। परमेश्वर ने अय्यूब को भले ही अपना दास कहा था, फिर भी परमेश्वर की नज़रों में यह दास परमप्रिय था, और उसे दूसरों के लिए प्रार्थना करने और उनकी ग़लतियों को क्षमा

करने का अधिकार प्रदान किया गया था। यह दास परमेश्वर से सीधे बातचीत कर पाता और सीधे परमेश्वर के समक्ष आ पाता था, उसकी हैसियत दूसरों की तुलना में अधिक ऊँची और सम्माननीय थी। यही परमेश्वर द्वारा बोले गए "दास" शब्द का सच्चा अर्थ है। अय्यूब को उसके द्वारा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने की वजह से यह विशेष सम्मान दिया गया था, और दूसरों को परमेश्वर द्वारा दास नहीं कहा गया तो इसका कारण यह है कि वे परमेश्वर का भय नहीं मानते थे और बुराई से दूर नहीं रहते थे। परमेश्वर की ये दो स्पष्ट रूप से भिन्न प्रवृत्तियाँ ही दो प्रकार के लोगों के प्रति उसकी प्रवृत्तियाँ हैं : वे लोग जो परमेश्वर का भय मानते और बुराई से दूर रहते हैं परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाते हैं और उसकी नज़रों में अनमोल माने जाते हैं, जबकि वे लोग जो मूर्ख हैं परमेश्वर का भय नहीं मानते हैं, बुराई से दूर रहने में अक्षम हैं, और परमेश्वर की कृपा प्राप्त नहीं कर पाते हैं; वे प्रायः परमेश्वर की घृणा और भर्त्सना के भागी बनते हैं, और वे परमेश्वर की नज़रों में दीन-हीन हैं।

परमेश्वर अय्यूब को अधिकार प्रदान करता है

अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, और उसके बाद, अय्यूब की प्रार्थनाओं की वजह से, परमेश्वर उनसे उनकी मूर्खता के अनुसार नहीं निपटा—उसने उन्हें दण्ड नहीं दिया या उनसे कोई बदला नहीं लिया। ऐसा क्यों था? ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर के दास अय्यूब द्वारा उनके लिए की गई प्रार्थनाएँ परमेश्वर के कानों तक पहुँच गई थीं; परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया था क्योंकि उसने अय्यूब की प्रार्थनाओं को स्वीकार कर लिया था। तो, इसमें हम क्या देखते हैं? जब परमेश्वर किसी को धन्य करता है, तो वह उन्हें बहुत-से पुरस्कार देता है, और केवल भौतिक पुरस्कार ही नहीं : परमेश्वर उन्हें अधिकार भी देता है, और दूसरों के लिए प्रार्थना करने का अधिकारी बनाता है, और परमेश्वर उन लोगों के अपराधों को भूल जाता और अनदेखा कर देता है, क्योंकि वह इन प्रार्थनाओं को सुन लेता है। यह वही अधिकार है जो परमेश्वर ने अय्यूब को दिया। उनके तिरस्कार को रोकने के लिए अय्यूब की प्रार्थनाओं के माध्यम से, यहोवा परमेश्वर ने उन मूर्ख लोगों को लज्जित किया—जो, निश्चित ही, एलीपज और दूसरों के लिए उसका विशेष दण्ड था।

अय्यूब को एक बार फिर परमेश्वर द्वारा धन्य किया जाता है, और वह फिर कभी शैतान द्वारा दोषारोपित नहीं किया जाता है

यहोवा परमेश्वर के कथनों के बीच ऐसे वचन हैं कि "तुम लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अय्यूब की सी ठीक बात नहीं कही।" वह क्या था जो अय्यूब ने कहा था? यह वह था जिसके बारे में हमने पहले बात की थी, और साथ ही अय्यूब की पुस्तक में वचनों के अनेक पन्नों में बताया गया है जिनमें अय्यूब द्वारा बोला गया अंकित है। वचनों के इन अनेक पन्नों में से सभी में, अय्यूब को परमेश्वर के बारे में कभी एक बार भी कोई शिकायत या संदेह नहीं है। वह बस परिणाम की प्रतीक्षा करता है। यह वह प्रतीक्षा है जो आज्ञाकारिता की उसकी प्रवृत्ति है, जिसके परिणामस्वरूप, और परमेश्वर को कहे गए उसके वचनों के परिणामस्वरूप, अय्यूब को परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया था। जब उसने परीक्षाएँ भुगतीं और कष्ट झेला, तब परमेश्वर उसके बगल में था, और यद्यपि परमेश्वर की उपस्थिति से उसका कष्ट कम नहीं हुआ था, फिर भी परमेश्वर ने वह देखा जो वह देखना चाहता था, और वह सुना जो वह सुनना चाहता था। अय्यूब के कार्यकलापों और वचनों में से प्रत्येक परमेश्वर की आँखों और कानों तक पहुँचा; परमेश्वर ने सुना, और उसने देखा—यह तथ्य है। परमेश्वर के बारे में अय्यूब का ज्ञान, और उस समय, उस अवधि के दौरान उसके हृदय में परमेश्वर के बारे में उसके विचार, वास्तव में उतने विशिष्ट नहीं थे जितने आज के लोगों के हैं, परंतु उस समय के संदर्भ में, परमेश्वर ने तब भी वह सब पहचान लिया जो उसने कहा था, क्योंकि उसका व्यवहार और उसके हृदय के विचार, साथ ही वह जो उसने अभिव्यक्त और प्रकट किया था, उसकी अपेक्षाओं के लिए पर्याप्त थे। उस समय के दौरान जब अय्यूब को परीक्षाओं से गुज़ारा गया था, उसने अपने हृदय में जो सोचा और करने का ठान लिया था, उसने परमेश्वर को परिणाम दिखाया, वह परिणाम जो परमेश्वर के लिए संतोषजनक था, और उसके बाद परमेश्वर ने अय्यूब की परीक्षाएँ दूर कर दीं, अय्यूब अपने कष्टों से निकल गया, और उसकी परीक्षाएँ समाप्त हो गई थीं और फिर कभी दुबारा उस पर नहीं आईं। चूँकि अय्यूब इन परीक्षाओं से पहले ही गुज़ारा जा चुका था, और इन परीक्षाओं के दौरान वह डटा रहा था, और उसने शैतान पर पूरी तरह विजय प्राप्त कर ली थी, इसलिए परमेश्वर ने उसे वे आशीष प्रदान किए जिनका वह समुचित रूप से अधिकारी था। जैसा कि अय्यूब 42:10,12 में अभिलिखित है, अय्यूब एक बार फिर धन्य किया गया था, और उससे कहीं अधिक धन्य किया गया जितना पहले दृष्टांत में किया गया था। इस समय शैतान पीछे हट गया था, तथा उसने अब और न कुछ कहा या न कुछ किया, और उसके बाद से शैतान ने अब और न अय्यूब के साथ छेड़छाड़ की या न ही उस पर आक्रमण किया, और शैतान ने अय्यूब को दिए गए परमेश्वर के आशीषों के विरुद्ध अब और कोई दोषारोपण नहीं किया।

अय्यूब ने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध परमेश्वर के आशीषों के बीच बिताया

यद्यपि उस समय के उसके आशीष केवल भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, ऊँटों, भौतिक संपत्तियों, इत्यादि तक ही सीमित थे, फिर भी परमेश्वर अपने हृदय में अय्यूब को जो आशीष प्रदान करना चाहता था वे इनसे कहीं बढ़कर थे। क्या उस समय यह अंकित किया गया था कि परमेश्वर किस प्रकार की अनंत प्रतिज्ञाएँ अय्यूब को देना चाहता था? अय्यूब को अपने आशीषों में, परमेश्वर ने उसके अंत का उल्लेख नहीं किया या उसकी थोड़ी भी चर्चा नहीं की, और परमेश्वर के हृदय में अय्यूब चाहे जो महत्व और स्थान रखता था, कुल मिलाकर परमेश्वर अपने आशीषों में अत्यधिक नपा-तुला था। परमेश्वर ने अय्यूब के अंत की घोषणा नहीं की। इसका क्या अर्थ है? उस समय, जब परमेश्वर की योजना मनुष्य के अंत की घोषणा के बिंदु तक नहीं पहुँची थी, इस योजना को उसके कार्य के अंतिम चरण में अभी प्रवेश करना था, तब परमेश्वर ने मनुष्य को भौतिक आशीष मात्र ही प्रदान करते हुए, अंत का कोई उल्लेख नहीं किया था। इसका अर्थ यह है कि अय्यूब के जीवन का उत्तरार्द्ध परमेश्वर के आशीषों के बीच गुज़रा था, जो वही था जिसने उसे दूसरों से अलग बनाया था—किंतु उनके समान ही उसकी आयु बढ़ी, और किसी भी सामान्य व्यक्ति के समान ही वह दिन आया जब उसने संसार को अलविदा कह दिया। इस प्रकार यह अभिलिखित है कि "अन्त में अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया" (अय्यूब 42:17)। यहाँ "वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया" का क्या अर्थ है? परमेश्वर ने लोगों के अंत की घोषणा की उससे पहले के युग में, परमेश्वर ने अय्यूब के लिए एक जीवन काल निर्धारित किया था, और जब वह उस आयु तक पहुँच गया था तब उसने अय्यूब को स्वाभाविक रूप से इस संसार से जाने दिया। अय्यूब को दूसरे आशीष से उसकी मृत्यु तक, परमेश्वर ने और कोई कष्ट नहीं बढ़ाए। परमेश्वर के लिए, अय्यूब की मृत्यु स्वाभाविक, और आवश्यक भी थी; यह कुछ ऐसा था जो बहुत सामान्य था, और न तो न्याय था और न ही दण्डाज्ञा। जब वह जीवित था, तब अय्यूब परमेश्वर की आराधना करता और उसका भय मानता था; उसकी मृत्यु के बाद उसका अंत किस प्रकार हुआ, इस संबंध में परमेश्वर ने कुछ नहीं कहा, न ही इस बारे में कोई टिप्पणी की। परमेश्वर जो कहता और करता है उसमें उसके औचित्य का प्रबल बोध होता है, और उसके वचनों और कार्यों की विषयवस्तु और सिद्धांत उसके कार्य के चरण और उस अवधि के अनुसार होते हैं जिसमें वह कार्य कर रहा होता है। परमेश्वर के हृदय में अय्यूब जैसे किसी व्यक्ति का किस प्रकार का अंत हुआ? क्या परमेश्वर अपने हृदय में किसी भी प्रकार के निर्णय पर पहुँच गया था? निस्संदेह वह पहुँच गया था! बस इतना ही है कि मनुष्य को

यह अविदित था; परमेश्वर मनुष्य को बताना नहीं चाहता था, न ही मनुष्य को बताने का उसका कोई इरादा था। इस प्रकार, ऊपरी तौर पर कहें, तो अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मरा, और ऐसा था अय्यूब का जीवन।

अपने जीवनकाल के दौरान अय्यूब द्वारा जिए गए जीवन का मूल्य

क्या अय्यूब ने मूल्यवान जीवन जिया? वह मूल्य कहाँ था? ऐसा क्यों कहा जाता है कि उसने मूल्यवान जीवन जिया? मनुष्य के लिए उसका मूल्य क्या था? मनुष्य के दृष्टिकोण से, उसने शैतान और संसार के लोगों के सामने गूँजती हुई गवाही में उस मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व किया जिसे परमेश्वर बचाना चाहता था। उसने वह कर्तव्य निभाया जो परमेश्वर के सृजित प्राणी को निभाया ही चाहिए था, उन सभी लोगों के लिए जिन्हें परमेश्वर बचाना चाहता है, एक प्रतिमान स्थापित किया, और एक आदर्श के रूप में कार्य किया, लोगों को देखने दिया कि परमेश्वर पर भरोसा रखकर शैतान पर विजय प्राप्त करना पूरी तरह संभव है। परमेश्वर के लिए उसका मूल्य क्या था? परमेश्वर के लिए, अय्यूब के जीवन का मूल्य परमेश्वर का भय मानने, परमेश्वर की आराधना करने, परमेश्वर के कर्मों की गवाही देने, और परमेश्वर के कर्मों की स्तुति करने, परमेश्वर को आराम देने और उसके आनंद लेने के लिए कुछ करने की उसकी क्षमता में निहित था; परमेश्वर के लिए, अय्यूब के जीवन का मूल्य इसमें भी निहित था कि कैसे, उसकी मृत्यु से पहले, अय्यूब ने परीक्षाओं का अनुभव किया और शैतान पर विजय प्राप्त की, और शैतान के समक्ष परमेश्वर की गूँजती हुई गवाही दी, मनुष्यजाति के बीच परमेश्वर का महिमामंडन किया, परमेश्वर के हृदय को आराम पहुँचाया, और परमेश्वर के आतुर हृदय को एक परिणाम देखने दिया और आशा देखने दी। उसकी गवाही ने मनुष्यजाति के प्रबंधन के परमेश्वर के कार्य में, परमेश्वर की अपनी गवाही में डटे रहने की क्षमता का, और परमेश्वर की ओर से शैतान को लज्जित करने में सक्षम होने का दृष्टांत स्थापित किया। क्या यह अय्यूब के जीवन का मूल्य नहीं है? अय्यूब ने परमेश्वर के हृदय को आराम पहुँचाया, उसने परमेश्वर को महिमान्वित होने की खुशी का पूर्वस्वाद चखाया, और परमेश्वर की प्रबंधन योजना के लिए अद्‌भुत आरंभ प्रदान किया था। इस बिंदु से आगे, अय्यूब का नाम परमेश्वर की महिमा का प्रतीक, और शैतान पर मनुष्यजाति की विजय का चिन्ह बन गया। अपने जीवनकाल के दौरान अय्यूब ने जो जिया, वह और साथ ही शैतान के ऊपर उसकी उल्लेखनीय विजय परमेश्वर द्वारा हमेशा हृदय में सँजोकर रखी जाएगी, और आने वाली पीढ़ियों द्वारा उसकी पूर्णता, खरेपन, और परमेश्वर के भय का सम्मान और अनुकरण किया जाएगा।

परमेश्वर द्वारा उसे दोषरहित, चमकदार मोती के समान हमेशा सँजोया जाएगा, और इसलिए वह मनुष्य के द्वारा भी सहेजकर रखे जाने योग्य है!

इसके बाद, आओ हम व्यवस्था के युग के दौरान परमेश्वर के कार्य पर दृष्टि डालें।

घ. व्यवस्था के युग के नियम

दस आज्ञाएँ

वेदी बनाने के सिद्धांत

सेवकों के साथ व्यवहार के लिए नियम

चोरी और मुआवज़े के लिए नियम

सब्त के वर्ष और तीन पर्वों का पालन करना

सब्त के दिन के लिए नियम

बलि चढ़ाने के लिए नियम

होमबलि

अन्न बलि

मेल बलि

पाप बलि

दोषबलि

याजकों द्वारा बलियाँ चढ़ाने के नियम (हारून और उसके पुत्रों को पालन करने का आदेश दिया जाता है)

याजकों द्वारा होमबलि

याजकों द्वारा अन्नबलि

याजकों द्वारा पापबलि

याजकों द्वारा दोषबलि

याजकों द्वारा मेलबलि

याजकों द्वारा बलि खाने के लिए नियम

स्वच्छ और अस्वच्छ पशु (जिन्हें खाया जा सकता और नहीं खाया जा सकता है)

बच्चे के जन्म के बाद महिलाओं के शुद्धिकरण के लिए नियम

कुष्ठ रोग की जाँच करने के लिए मानक

जो कुष्ठ रोग से चंगे हो चुके हैं उनके लिए नियम

संक्रमित घरों की सफ़ाई करने के लिए नियम

असामान्य स्राव से पीड़ित लोगों के लिए नियम

प्रायश्चित का दिन जो वर्ष में एक बार अवश्य मनाया जाना चाहिए

मवेशी और भेड़-बकरी की बलि चढ़ाने के लिए नियम

अन्यजातियों के घृण्य अभ्यासों का अनुसरण करने का निषेध (कौटुम्बिक व्यभिचार, इत्यादि नहीं करना)

नियम जिनका लोगों द्वारा पालन अवश्य किया जाना चाहिए ("तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।")

उनका वध जो मोलेक को अपने बच्चों की बलि चढ़ाते हैं

व्यभिचार के अपराध के दण्ड के लिए नियम

नियम जिनका याजकों द्वारा पालन अवश्य किया जाना चाहिए (उनके प्रतिदिन के व्यवहार के लिए नियम, पवित्र वस्तुओं का उपभोग करने के लिए नियम, बलिदान चढ़ाने के लिए नियम, इत्यादि)

पर्व जिन्हें मनाया जाना चाहिए (सब्त का दिन, फसह, पिन्तेकुस्त, प्रायश्चित का दिन, इत्यादि)

अन्य नियम (दीपक जलाना, जुबली वर्ष, भूसंपत्ति छुड़ाना, मन्नत मानना, दसवें अंश की भेंटें, इत्यादि)

व्यवस्था के युग के नियम परमेश्वर द्वारा संपूर्ण मनुष्यजाति के निर्देशन के वास्तविक प्रमाण हैं

तो, तुम लोगों ने व्यवस्था के युग के ये नियम और सिद्धांत पढ़ लिए हैं, तुमने पढ़ लिए हैं न? क्या इन नियमों का दायरा व्यापक है? सबसे पहले, उनमें दस आज्ञाएँ शामिल हैं, जिसके बाद नियम हैं कि वेदियाँ कैसे बनाएँ, इत्यादि। इनके बाद सब्त का पालन करने और तीन पर्व मनाने के नियम हैं, जिसके बाद बलियाँ चढ़ाने के नियम हैं। क्या तुम लोगों ने देखा कि कितने प्रकार की बलियाँ हैं? होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, पापबलि, इत्यादि हैं। इनके बाद याजकों के लिए बलि के नियम आते हैं, जिसमें याजकों द्वारा होमबलि और अन्नबलि, और अन्य प्रकार की बलियाँ शामिल हैं। आठवां नियम याजकों द्वारा बलियों को खाने के लिए है। फिर इसके लिए नियम हैं कि लोगों के जीवन के दौरान किन चीज़ों का पालन किया जाना चाहिए। लोगों के जीवन के कई पहलुओं के लिए निर्धारित नियम हैं, जैसे इसके लिए नियम कि वे क्या खा सकते या क्या नहीं खा सकते हैं, बच्चे के जन्म के बाद महिलाओं के शुद्धिकरण के लिए नियम, और कोढ़ से चंगे हो गए लोगों के लिए नियम। इन नियमों में, परमेश्वर इस सीमा तक जाता है कि बीमारी के बारे में बात करता है, और इनमें भेड़-बकरी और मवेशी, इत्यादि का वध करने के लिए भी नियम हैं। भेड़-बकरी और मवेशी परमेश्वर द्वारा सृजित किए गए थे, और उनका वध तुम्हें उसी तरह करना चाहिए जिस तरह परमेश्वर तुमसे करने के लिए कहता है; बिना किसी संदेह, परमेश्वर के वचनों में तर्क है; परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञाओं के अनुसार कार्य करना निस्संदेह सही है, और निश्चित ही लोगों के लिए लाभदायक है! पर्व और उन्हें मनाने के नियम भी हैं, जैसे सब्त का दिन, फसह, और अन्य—परमेश्वर ने इन सबके बारे में बोला था। आओ हम अंतिम नियमों पर नज़र डालें : अन्य नियम—दीपक जलाना, जुबली वर्ष, भूसंपत्ति छुड़ाना, मन्नतें मानना, दशवाँ अंश चढ़ाना, इत्यादि। क्या इनका दायरा व्यापक है? सबसे पहले जिसकी बात की जाए वह है लोगों द्वारा बलियों का मुद्दा। फिर चोरी और मुआवज़े, और सब्त का दिन मनाने के लिए नियम हैं...; जीवन का एक-एक विवरण शामिल है। कहने का तात्पर्य यह, जब परमेश्वर ने अपनी प्रबंधन योजना का आधिकारिक कार्य आरंभ किया, तब उसने अनेक नियम निर्धारित किए जिनका पालन मनुष्य द्वारा किया जाना था। ये नियम मनुष्य को पृथ्वी पर मनुष्य का सामान्य जीवन जीने देने के लिए थे, मनुष्य का सामान्य जीवन जो परमेश्वर और उसके मार्गदर्शन से अवियोज्य है। परमेश्वर ने सबसे पहले मनुष्य को बताया कि वेदियाँ कैसे बनाएँ, वेदियाँ किस प्रकार स्थापित करें। उसके बाद, उसने मनुष्य को बताया कि बलि कैसे चढ़ाएँ, और स्थापित किया कि मनुष्य को किस प्रकार जीना था—उसे जीवन में किस

पर ध्यान देना था, उसे किसका पालन करना था, उसे क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए। परमेश्वर ने मनुष्य के लिए जो निर्दिष्ट किया वह सर्वव्यापी था, और इन रीति-रिवाज़ों, नियमों, और सिद्धांतों के साथ उसने लोगों के व्यवहार के मानक तय किए, उनके जीवन का मार्गदर्शन किया, परमेश्वर की व्यवस्थाओं में उनकी दीक्षा का मार्गदर्शन किया, परमेश्वर की वेदी के समक्ष आने के लिए उनका मार्गदर्शन किया, और उन सभी चीज़ों के बीच जीवन पाने के लिए उनका मार्गदर्शन किया जो परमेश्वर ने व्यवस्था, नियमितता, और संयम से युक्त मनुष्य के लिए बनाई थीं। परमेश्वर ने मनुष्य के लिए सीमाएँ निर्धारित करने के उद्देश्य से सबसे पहले इन सीधे-सादे नियमों और सिद्धांतों का उपयोग किया था, ताकि पृथ्वी पर मनुष्य के पास परमेश्वर की आराधना करने वाला सामान्य जीवन हो, और उसके पास मनुष्य का सामान्य जीवन हो; ऐसी है उसकी छह हज़ार वर्षीय प्रबंधन योजना के आरंभ की विशिष्ट विषयवस्तु। इन नियमों और व्यवस्थाओं में बहुत व्यापक विषयवस्तु समाहित है, वे व्यवस्था के युग के दौरान मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन के विशिष्ट विवरण हैं, इन्हें व्यवस्था के युग के लोगों द्वारा स्वीकार और इनका पालन किया जाना था, ये व्यवस्था के युग के दौरान परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य का अभिलेख हैं, और वे संपूर्ण मनुष्यजाति की परमेश्वर द्वारा अगुआई और मार्गदर्शन का वास्तविक प्रमाण हैं।

मनुष्यजाति परमेश्वर की शिक्षाओं और भरण-पोषण से सदा के लिए अवियोज्य है

इन नियमों में हम देखते हैं कि अपने कार्य के प्रति, अपने प्रबंधन के प्रति, और मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर की प्रवृत्ति गंभीर, कर्तव्यनिष्ठ, कठोर और दायित्वपूर्ण है। वह कार्य जो उसे मनुष्यजाति के बीच करना ही चाहिए, रत्ती भर भी विसंगति के बिना, वह अपने चरणों के अनुसार करता है, वे वचन जो मनुष्यजाति के बीच उसे बोलने ही चाहिए, रत्ती भर भी त्रुटि या चूक के बिना, वह बोल रहा है, मनुष्य को यह देखने दे रहा है कि वह परमेश्वर की अगुआई से अवियोज्य है, और उसे दिखा रहा है कि वह सब जो परमेश्वर करता और कहता है मनुष्यजाति के लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने बिलकुल आरंभ में—व्यवस्था के युग के दौरान—ये सीधी-सादी चीज़ें कीं, इस बात की परवाह किए बिना कि अगले युग में मनुष्य किस प्रकार का है। उस युग में परमेश्वर, संसार और मनुष्यजाति के बारे में लोगों की धारणाएँ परमेश्वर के लिए अमूर्त और अस्पष्ट थीं, और यद्यपि उनमें कुछ जाने-बूझे विचार और अभिप्राय थे, किंतु वे सब अस्पष्ट और ग़लत थे, और इस प्रकार मनुष्यजाति उनके लिए परमेश्वर की शिक्षाओं और भरण-पोषण से अवियोज्य थी। सबसे आरंभिक मनुष्यजाति बिल्कुल कुछ भी नहीं जानती थी, और इसलिए परमेश्वर को,

इन नियमों के माध्यम से, और इन व्यवस्थाओं के माध्यम से, जो वचनों की थीं, मनुष्य को जीवित बचने के सर्वाधिक सतही और मूलभूत सिद्धांत और जीवन जीने के लिए आवश्यक नियम सिखाने से, इन चीज़ों को थोड़ा-थोड़ा करके मनुष्य के हृदय में उतारने से, और मनुष्य को परमेश्वर की क्रमिक समझ, परमेश्वर की अगुआई की क्रमिक सराहना और समझ, और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच संबंध की मूलभूत अवधारणा देने से आरंभ करना पड़ा था। यह प्रभाव प्राप्त करने के बाद ही, परमेश्वर, थोड़ा-थोड़ा करके, वह कार्य कर पाया था जो वह बाद में करता, और इस प्रकार ये नियम और व्यवस्था के युग के दौरान परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य मनुष्यजाति को बचाने के उसके कार्य की आधारशिला, और परमेश्वर की प्रबंधन योजना के कार्य का पहला चरण हैं। यद्यपि, व्यवस्था के युग के कार्य से पहले, परमेश्वर ने आदम, हव्वा और उनके वंशजों से बात की थी, फिर भी वे आज्ञाएँ और शिक्षाएँ इतनी व्यवस्थित या विशिष्ट नहीं थीं कि एक-एक करके मनुष्य को दी जातीं, और उन्हें लिखा नहीं गया था, न ही वे नियम बनी थीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि, उस समय, परमेश्वर की योजना उतनी दूर तक नहीं गई थी; जब परमेश्वर मनुष्य को इस चरण तक ले आया, केवल तभी वह व्यवस्था के युग के ये नियम बोलना आरंभ कर सका, और मनुष्य से इन्हें कार्यान्वित करवाना आरंभ कर सका था। यह आवश्यक प्रक्रिया थी, और यह परिणाम अवश्यंभावी था। ये सीधे-सादे रीति-रिवाज़ और नियम मनुष्य को परमेश्वर के प्रबंधन कार्य के चरण और उसकी प्रबंधन योजना में प्रकट हुई परमेश्वर की बुद्धि दर्शाते हैं। परमेश्वर जानता है कि उसकी गवाही देने वाले लोगों का एक समूह प्राप्त कर सकने के उद्देश्य से, और उसके समान एक मन वाले लोगों का एक समूह प्राप्त कर सकने के उद्देश्य से, आरंभ करने के लिए किस विषयवस्तु और किन साधनों का उपयोग करना है, आगे बढ़ाने के लिए किन साधनों का उपयोग करना है, और समाप्त करने के लिए किन साधनों का उपयोग करना है। वह जानता है कि मनुष्य के भीतर क्या है, और जानता है कि मनुष्य में क्या कमी है। वह जानता है कि उसे क्या पोषण देना है, और उसे मनुष्य की अगुआई कैसे करनी चाहिए, और इसलिए वह यह भी जानता है कि मनुष्य को क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए। मनुष्य कठपुतली के समान है : उसे परमेश्वर की इच्छा की भले ही कोई समझ नहीं थी, किंतु उसके पास आज तक, चरण-दर-चरण, परमेश्वर के प्रबंधन के कार्य की अगुआई में चलने के सिवा और कोई चारा नहीं था। परमेश्वर को जो करना था उसके बारे में उसके हृदय में कोई धुँधलापन नहीं था; उसके हृदय में बहुत ही सुस्पष्ट और सजीव योजना थी, और वह जो कार्य करना चाहता था उसे उसने, सतही से गहराई की ओर आगे बढ़ते हुए, अपने चरणों और अपनी

योजना के अनुसार कार्यान्वित किया। यद्यपि उसने उस कार्य की ओर संकेत नहीं किया था जो उसे बाद में करना था, फिर भी उसका बाद का कार्य कड़ाई से उसकी योजना के अनुसार निरंतर कार्यान्वित होता और प्रगति करता रहा, जो परमेश्वर के स्वरूप का आविर्भाव है, और परमेश्वर का अधिकार भी है। वह अपनी प्रबंधन योजना के चाहे जिस चरण का कार्य कर रहा हो, उसका स्वभाव और उसका सार स्वयं उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। यह बिल्कुल सत्य है। युग, या कार्य का चरण चाहे जो हो, ऐसी भी चीज़ें हैं जो कभी नहीं बदलेंगी : परमेश्वर किस प्रकार के लोगों से प्रेम करता है, किस प्रकार के लोगों से वह घृणा करता है, उसका स्वभाव और वह सब जो वह है और उसका है। यद्यपि ये नियम और सिद्धांत जो परमेश्वर द्वारा व्यवस्था के युग के दौरान स्थापित किए गए थे आज के लोगों को बहुत ही सीधे-सादे और सतही प्रतीत होते हैं, और यद्यपि उन्हें समझना और प्राप्त करना आसान है, फिर भी उनमें परमेश्वर की बुद्धि है, और फिर भी उनमें परमेश्वर का स्वभाव और उसका स्वरूप है। क्योंकि प्रकट रूप से इन सीधे-सादे नियमों के भीतर मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर का उत्तरदायित्व और देखरेख, साथ ही उसके विचारों का उत्कृष्ट सार अभिव्यक्त हुए हैं, जो इस प्रकार मनुष्य को सच में इस तथ्य अहसास होने देते हैं कि परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है, और सभी चीज़ें उसके हाथ से नियंत्रित होती हैं। मनुष्यजाति चाहे जितना अधिक ज्ञान पर निपुणता प्राप्त कर ले, या वह चाहे जितने सिद्धांत और रहस्य समझ ले, परमेश्वर के लिए इनमें से कुछ भी मनुष्यजाति के लिए उसके भरण-पोषण का, और उसकी अगुवाई का स्थान लेने में सक्षम नहीं है; मनुष्यजाति परमेश्वर के मार्गदर्शन और परमेश्वर के व्यक्तिगत कार्य से हमेशा अवियोज्य रहेगी। ऐसा है मनुष्य और परमेश्वर के बीच अवियोज्य संबंध। परमेश्वर तुम्हें चाहे आज्ञा, या नियम दे, या उसकी इच्छा को समझने के लिए तुम्हें सत्य प्रदान करे, वह चाहे जो करे, परमेश्वर का लक्ष्य सुंदर कल की ओर मनुष्य का मार्गदर्शन करना है। परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन और वह जो कार्य करता है दोनों उसके सार के एक पहलू का प्रकाशन हैं, और उसके स्वभाव तथा उसकी बुद्धि के एक पहलू का प्रकाशन हैं; और वे उसकी प्रबंधन योजना का अपरिहार्य चरण हैं। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए! परमेश्वर जो कुछ करता है उसमें उसकी इच्छा होती है; परमेश्वर ग़लत टीका-टिप्पणियों से भयभीत नहीं होता है, न ही वह अपने बारे में मनुष्य की किन्हीं भी धारणाओं या विचारों से डरता है। वह किसी भी मनुष्य, विषय या वस्तु से अबाधित, बस अपना कार्य करता है और अपनी प्रबंधन योजना के अनुसार अपना प्रबंधन आगे बढ़ाता है।

अच्छा है। आज के लिए बस इतना ही है। अगली बार फिर मिलेंगे!

9 नवंबर, 2013

परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का स्वभाव और स्वयं परमेश्वर III

हमारी पिछली कुछ संगतियों का तुममें से हर एक पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। फ़िलहाल, अंततः लोग वास्तव में परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व को महसूस कर सकते हैं और यह भी कि परमेश्वर वास्तव में मनुष्य के बहुत निकट है। यद्यपि लोगों ने बहुत वर्षों तक परमेश्वर पर विश्वास किया हो सकता है, फिर भी उन्होंने उसके विचारों और मतों को वास्तव में उस तरह से कभी भी नहीं समझा था, जिस तरह से वे अब समझते हैं, और न ही उन्होंने उसके व्यावहारिक कर्मों को वास्तव में उस तरह से अनुभव किया था, जैसे वे अब करते हैं। चाहे वह ज्ञान हो या वास्तविक अभ्यास, अधिकतर लोगों ने कुछ नया सीखा है और एक ऊँची समझ प्राप्त की है, और उन्होंने अतीत की अपनी खोजों की त्रुटियों का एहसास किया है, अपने अनुभव के उथलेपन का एहसास किया है और यह एहसास किया है कि उनके अनुभव का अधिकांश परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं है, और यह एहसास किया कि जिस बात की मनुष्य में सबसे ज़्यादा कमी है, वह है परमेश्वर के स्वभाव का ज्ञान। लोगों में यह ज्ञान केवल एक प्रकार का धारणा-आधारित ज्ञान है; तर्कसंगत ज्ञान के स्तर तक ऊँचा उठने के लिए उसका व्यक्ति के अनुभवों के जरिये धीरे-धीरे गहरा और मज़बूत होना आवश्यक है। इससे पहले कि मनुष्य सचमुच परमेश्वर को समझें, व्यक्तिपरक ढंग से यह कहा जा सकता है कि वे अपने हृदय में परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास तो करते हैं, किंतु उन्हें विशिष्ट प्रश्नों की वास्तविक समझ नहीं है, जैसे कि वह वास्तव में किस प्रकार का परमेश्वर है, उसकी इच्छा क्या है, उसका स्वभाव क्या है, और मानवजाति के प्रति उसका वास्तविक रवैया क्या है। यह परमेश्वर पर लोगों के विश्वास को बहुत जोखिम में डाल देता है, और उसे शुद्धता और पूर्णता प्राप्त नहीं करने देता। भले ही तुम परमेश्वर के वचन के आमने-सामने हो जाओ, या यह महसूस करो कि तुमने अपने अनुभवों के माध्यम से परमेश्वर से भेंट की है, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि तुम उसे पूर्णतः समझते हो। चूँकि तुम परमेश्वर के विचारों को नहीं जानते, न यह जानते हो कि वह किससे प्रेम करता है और किससे नफ़रत, कौन-सी चीज़ उसे क्रोधित करती है और किससे उसे खुशी मिलती है, इसलिए तुम्हें उसकी सही समझ नहीं है। तुम्हारा विश्वास तुम्हारी व्यक्तिपरक इच्छाओं के आधार पर अस्पष्टता और कल्पना की नींव पर बना हुआ है। वह

अभी भी प्रामाणिक विश्वास होने से दूर है, और तुम अभी भी सच्चे अनुयायी बनने से दूर हो। बाइबल की इन कहानियों के उदाहरणों की व्याख्याओं ने मनुष्यों को परमेश्वर के हृदय को जानने में मदद की है, और यह जानने में भी कि अपने कार्य के हर कदम पर वह क्या सोच रहा था और उसने यह कार्य क्यों किया, ऐसा करते समय उसका मूल इरादा और योजना क्या थी, उसने अपने विचार कैसे हासिल किए, और उसने अपनी योजना कैसे तैयार की और उसे कैसे विकसित किया। इन कहानियों के माध्यम से हम परमेश्वर के छह हज़ार वर्षों के प्रबंधन के कार्य के दौरान उसके प्रत्येक विशिष्ट इरादे और प्रत्येक वास्तविक विचार, और विभिन्न समयों पर और विभिन्न युगों में मनुष्यों के प्रति उसके रवैये की एक विस्तृत और विशिष्ट समझ प्राप्त कर सकते हैं। अगर लोग यह समझ सकें कि परमेश्वर क्या सोच रहा था, उसका दृष्टिकोण क्या था, और हर परिस्थिति का सामना करते हुए उसने कैसा स्वभाव प्रकट किया था, तो इससे प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व का अधिक गहराई से एहसास करने में, तथा परमेश्वर की व्यावहारिकता और प्रामाणिकता को और अधिक गहराई से महसूस करने में मदद मिल सकती है। इन कहानियों को बताने का मेरा उद्देश्य लोगों को बाइबल का इतिहास समझाना नहीं है, न ही उन्हें बाइबल के पदों से या उसमें वर्णित लोगों से परिचित होने में उनकी सहायता करना है, और विशेष रूप से लोगों को परमेश्वर द्वारा व्यवस्था के युग में किए गए कार्य की पृष्ठभूमि समझने में सहायता करना तो बिलकुल भी नहीं है। बल्कि यह परमेश्वर की इच्छा, उसके स्वभाव, और उसके छोटे-से-छोटे भाग को समझने में, और परमेश्वर के बारे में और अधिक प्रामाणिक तथा सटीक समझ और ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करने के लिए है। इस तरह, लोगों का हृदय थोड़ा-थोड़ा करके परमेश्वर के प्रति खुल सकता है, परमेश्वर के निकट हो सकता है और वे उसे, उसके स्वभाव को, उसके सार को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, और सच्चे स्वयं परमेश्वर को बेहतर ढंग से जान सकते हैं।

परमेश्वर के स्वभाव और स्वरूप के ज्ञान का मनुष्यों के ऊपर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह परमेश्वर पर और अधिक विश्वास रखने और उसके प्रति सच्ची आज्ञाकारिता और भय प्राप्त करने में उनकी सहायता कर सकता है। तब वे आँख मूँदकर उसका अनुसरण या आराधना नहीं करते रहते। परमेश्वर को मूर्ख या आँख मूँदकर भीड़ का अनुसरण करने वाले नहीं चाहिए, बल्कि ऐसे लोगों का एक समूह चाहिए, जिनके हृदय में परमेश्वर के स्वभाव की एक स्पष्ट समझ और ज्ञान हो और जो परमेश्वर के गवाह के रूप में कार्य कर सकते हों, ऐसे लोग जो परमेश्वर की मनोहरता की वजह से, उसके स्वरूप की वजह से और

उसके धार्मिक स्वभाव की वजह से उसका कभी परित्याग नहीं करेंगे। परमेश्वर के अनुयायी के रूप में, यदि तुम्हारे हृदय में अभी भी स्पष्टता की कमी है, या परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व, उसके स्वभाव, उसके स्वरूप, और मानवजाति के उद्धार की उसकी योजना के बारे में अस्पष्टता या भ्रम है, तो तुम्हारा विश्वास परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकता। परमेश्वर नहीं चाहता कि इस प्रकार के लोग उसका अनुसरण करें, और वह इस प्रकार के लोगों का अपने सामने आना पसंद नहीं करता। चूँकि इस प्रकार के व्यक्ति परमेश्वर को नहीं समझते, इसलिए वे अपना हृदय परमेश्वर को देने में असमर्थ हैं—उनका हृदय उसके लिए बंद है, इसलिए परमेश्वर के प्रति उनका विश्वास अशुद्धताओं से भरा हुआ है। उनका परमेश्वर का अनुसरण केवल अंधानुसरण ही कहा जा सकता है। लोग केवल तभी सच्चा विश्वास प्राप्त कर सकते हैं और केवल तभी सच्चे अनुयायी बन सकते हैं, जब उन्हें परमेश्वर की सच्ची समझ और ज्ञान हो, जो उनके भीतर परमेश्वर के प्रति सच्ची आज्ञाकारिता और भय उत्पन्न करता हो। केवल इसी तरह से वे अपना हृदय परमेश्वर को दे सकते हैं और उसे उसके लिए खोल सकते हैं। परमेश्वर यही चाहता है, क्योंकि जो कुछ भी वे करते और सोचते हैं, वह परमेश्वर की परीक्षा का सामना कर सकता है और परमेश्वर की गवाही दे सकता है। परमेश्वर के स्वभाव या स्वरूप, या जो कुछ भी वह करता है उसमें उसकी इच्छा और उसके विचारों के बारे में जो कुछ भी मैं तुम लोगों से कहता हूँ, और जिस भी परिप्रेक्ष्य से, जिस भी कोण से मैं इसके बारे में बात करता हूँ, वह सब परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व के बारे में तुम लोगों को और अधिक निश्चित होने, मानवजाति के लिए उसके प्रेम को वास्तव में और अधिक समझने और सराहने, और मनुष्यों के लिए परमेश्वर की चिंता और मानवजाति को बचाने और उसका प्रबंधन करने की उसकी ईमानदार इच्छा को वास्तव में और अधिक समझने और सराहने में तुम लोगों की सहायता करने के लिए है।

आज हम पहले मानवजाति के सृजन के बाद से परमेश्वर के विचारों, मतों और उसकी प्रत्येक गतिविधि का सार सारांश प्रस्तुत करेंगे। हम इस पर एक नज़र डालेंगे कि उसने संसार की रचना करने से लेकर अनुग्रह के युग के आधिकारिक आरंभ तक कौन-सा कार्य किया है। तब हम यह पता लगा सकते हैं कि परमेश्वर के कौन-से विचार और मत मनुष्य के लिए अज्ञात हैं, और वहाँ से हम परमेश्वर की प्रबंधन योजना के क्रम को स्पष्ट कर सकते हैं, और उस संदर्भ को अच्छी तरह से समझ सकते हैं, जिसमें परमेश्वर ने अपने प्रबंधन के कार्य, उसके स्रोत और विकास की प्रक्रिया को बनाया था, और यह भी अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि वह अपने प्रबंधन-कार्य से कौन-से परिणाम चाहता है—अर्थात् उसके प्रबंधन-कार्य का

मर्म और उद्देश्य। इन चीज़ों को समझने के लिए हमें एक सुदूर, स्थिर और शांत समय में जाने की आवश्यकता है, जब मनुष्य नहीं थे ...

जब परमेश्वर अपनी सेज से उठा, तो पहला विचार जो उसके मन में आया, वह यह था : एक जीवित व्यक्ति—एक वास्तविक, जीवित मनुष्य को बनाना—ऐसा मनुष्य, जो उसके साथ रहे और उसका निरंतर साथी बने; वह व्यक्ति उसे सुन सके, और परमेश्वर उस पर भरोसा कर सके और उसके साथ बात कर सके। तब, पहली बार, परमेश्वर ने मुट्ठीभर धूल उठाई और अपने मन में की गई कल्पना के अनुसार सबसे पहला जीवित व्यक्ति बनाने के लिए उसका उपयोग किया, और फिर उसने उस जीवित प्राणी को एक नाम दिया—आदम। इस जीवित और साँस लेते हुए प्राणी को बना चुकने के बाद परमेश्वर ने कैसा महसूस किया? पहली बार उसने एक प्रियजन, एक साथी होने का आनंद महसूस किया। पहली बार उसने पिता होने के उत्तरदायित्व और उसके साथ आने वाली चिंता को भी महसूस किया। यह जीवित और साँस लेता हुआ प्राणी परमेश्वर के लिए प्रसन्नता और आनंद लेकर आया; उसने पहली बार चैन का अनुभव किया। यह वह पहला कार्य था, जो परमेश्वर ने कभी किया था, जो परमेश्वर के विचारों या वचनों से संपन्न नहीं हुआ था, बल्कि जो उसने अपने हाथों से किया था। जब इस प्रकार का प्राणी—एक जीवित और साँस लेता हुआ व्यक्ति—परमेश्वर के सामने खड़ा हुआ, जो शरीर और आकार के साथ मांस और लहू से बना था, और जो परमेश्वर से बातचीत करने में सक्षम था, तो उसने ऐसा आनंद महसूस किया, जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। परमेश्वर ने वास्तव में अपना उत्तरदायित्व महसूस किया और इस जीवित प्राणी ने न केवल उसके हृदय को आकर्षित कर लिया, बल्कि उसकी हर एक छोटी-सी चेष्टा ने भी उसे द्रवित कर दिया और उसके हृदय को उत्साह से भर दिया। जब यह जीवित प्राणी परमेश्वर के सामने खड़ा हुआ, तो पहली बार उसे उस तरह के और लोगों को प्राप्त करने का विचार आया। यही घटनाओं की वह शृंखला थी, जो परमेश्वर को आए इस पहले विचार के साथ आरंभ हुई। परमेश्वर के लिए ये सभी घटनाएँ पहली बार घटित हो रही थीं, किंतु इन पहली घटनाओं में, भले ही उसने उस समय कैसा भी महसूस किया हो—आनंद, उत्तरदायित्व, चिंता—उसे साझा करने के लिए उसके पास कोई नहीं था। उस पल से आरंभ करके, परमेश्वर ने सच में ऐसा एकाकीपन और उदासी महसूस की, जो उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी। उसे लगा कि मनुष्य उसके प्रेम और चिंता को, या मनुष्य के लिए उसके इरादों को स्वीकार नहीं कर सकता या समझ नहीं सकता, इसलिए उसे अभी भी अपने हृदय में दुःख और दर्द महसूस हुआ। यद्यपि

उसने ये चीज़ें मनुष्य के लिए की थीं, किंतु मनुष्य इससे अवगत नहीं था और उसने इसे समझा नहीं था। प्रसन्नता के अलावा जो आनंद और संतुष्टि मनुष्य उसके लिए लाया था, वह शीघ्रता से अपने साथ उसके लिए उदासी और एकाकीपन की प्रथम भावना भी साथ लेकर आया। उस समय परमेश्वर के ये ही विचार और भावनाएँ थीं। जब परमेश्वर ये सब चीज़ें कर रहा था, तो अपने हृदय में वह आनंद से दुःख की ओर, और दुःख से पीड़ा की ओर चला गया, और ये सब भावनाएँ चिंता से घुल-मिल गईं। जो कुछ वह करना चाहता था, वह था इस व्यक्ति, इस मनुष्य को यह ज्ञात करवाना कि परमेश्वर के हृदय में क्या है, और शीघ्रता से अपनी इच्छाओं को समझवाना। तब वे लोग उसके अनुयायी बन सकते हैं और उसकी इच्छा के अनुरूप हो सकते हैं। वे अब केवल परमेश्वर को बोलते हुए नहीं सुनेंगे और मूक नहीं बने रहेंगे; वे अब इस बात से अनजान नहीं रहेंगे कि परमेश्वर के साथ उसके कार्य में कैसे जुड़ें; इन सबसे ऊपर, वे अब परमेश्वर की अपेक्षाओं से उदासीन लोग नहीं रहेंगे। परमेश्वर द्वारा की गई ये पहली चीज़ें बहुत अर्थपूर्ण हैं और उसकी प्रबंधन-योजना के लिए और आज मनुष्यों के लिए बड़ा मूल्य रखती हैं।

सभी चीज़ों और मनुष्यों का सृजन करने के बाद परमेश्वर ने आराम नहीं किया। वह अपने प्रबंधन को कार्यान्वित करने के लिए और उन लोगों को प्राप्त करने के लिए बेचैन और उत्सुक था, जिन्हें उसने मानवजाति के बीच बहुत प्रेम किया था।

आगे, परमेश्वर द्वारा मनुष्यों को रचने के कुछ ही समय बाद, हम बाइबल में देखते हैं कि पूरे संसार में एक बड़ा जल-प्रलय आया। जल-प्रलय के अभिलेख में नूह का उल्लेख है, और ऐसा कहा जा सकता है कि नूह वह पहला व्यक्ति था, जिसने परमेश्वर का एक कार्य पूरा करने हेतु उसके साथ काम करने के लिए उसका बुलावा प्राप्त किया था। निस्संदेह, यह भी पहली बार ही था, जब परमेश्वर ने अपनी आज्ञानुसार कुछ करने के लिए पृथ्वी पर किसी इंसान का आह्वान किया था। जब नूह ने जहाज़ बनाने का काम पूरा कर लिया, तो परमेश्वर ने पहली बार पृथ्वी पर जल-प्रलय किया। जब परमेश्वर ने पृथ्वी को जल-प्रलय से नष्ट कर दिया, तो मनुष्यों का सृजन करने के समय से अब तक पहली बार ऐसा हुआ कि उसने अपने आप को उनके प्रति घृणा के वशीभूत महसूस किया था; इसी ने परमेश्वर को इस मानवजाति को जल-प्रलय द्वारा नष्ट करने का दर्दनाक निर्णय लेने के लिए मजबूर किया था। जल-प्रलय द्वारा पृथ्वी को नष्ट देने के बाद, परमेश्वर ने मनुष्यों के साथ अपनी पहली वाचा बाँधी, यह दर्शाने वाली वाचा कि वह दुनिया को फिर कभी जल-प्रलय से नष्ट नहीं करेगा। उस वाचा का चिह्न इंद्रधनुष था। यह मानवजाति के साथ परमेश्वर की पहली

वाचा थी, इसलिए इंद्रधनुष परमेश्वर द्वारा दी गई वाचा का पहला चिह्न था; इंद्रधनुष एक वास्तविक, भौतिक चीज़ है, जो मौजूद है। यह इंद्रधनुष की मौजूदगी ही है, जो परमेश्वर को पूर्ववर्ती मानवजाति के लिए, जिसे उसने खो दिया था, अकसर उदासी महसूस करवाता है, और उसके लिए एक निरंतर अनुस्मारक के रूप में काम करता है कि उनके साथ क्या हुआ था...। परमेश्वर अपनी गति धीमी नहीं करना चाहता था—वह अपने प्रबंधन में अगला कदम उठाने के लिए बेचैन और उत्सुक था। तत्पश्चात्, परमेश्वर ने संपूर्ण इस्राएल में अपने कार्य के लिए अपनी पहली पसंद के रूप में अब्राहम को चुना। यह भी पहली बार था कि परमेश्वर ने ऐसे किसी उम्मीदवार को चुना था। परमेश्वर ने इस व्यक्ति के माध्यम से मानवजाति को बचाने का अपना कार्य शुरू करने और इस व्यक्ति के वंशजों के बीच अपना कार्य जारी रखने का संकल्प लिया। हम बाइबल में देख सकते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम के साथ यही किया। तब परमेश्वर ने इस्राएल को अपनी प्रथम चुनी हुई भूमि बनाया, और अपने चुने हुए लोगों, इस्राएलियों, के माध्यम से व्यवस्था के युग का अपना कार्य आरंभ किया। एक बार फिर पहली बार, परमेश्वर ने इस्राएलियों को स्पष्ट नियम और व्यवस्थाएँ प्रदान कीं, जिनका पालन मानवजाति को करना चाहिए, और उसने उन्हें विस्तार से समझाया। यह पहली बार था कि परमेश्वर ने मनुष्यों को ऐसे विशिष्ट, मानकीकृत नियम प्रदान किए थे कि उन्हें किस प्रकार बलिदान करना चाहिए, उन्हें किस प्रकार जीना चाहिए, उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, उन्हें कौन-से त्योहार और दिन मनाने चाहिए, और अपने हर कार्य में उन्हें किन सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। यह पहली बार था कि परमेश्वर ने मनुष्यों को इस बारे में इतने विस्तृत, मानकीकृत विनियम और सिद्धांत दिए थे कि उन्हें अपना जीवन किस प्रकार जीना चाहिए।

हर बार जब मैं कहता हूँ "पहली बार", तो यह कार्य के उस प्रकार को संदर्भित करता है, जो परमेश्वर ने पहले कभी नहीं किया था। यह उस कार्य को संदर्भित करता है, जो पहले अस्तित्व में नहीं था, और यद्यपि परमेश्वर ने मानवजाति और सब प्रकार के जीवों और जीवित प्राणियों का सृजन किया था, फिर भी उसने इस प्रकार का कार्य पहले कभी नहीं किया था। इस समस्त कार्य में परमेश्वर द्वारा मनुष्यों का प्रबंधन शामिल था; यह सब मनुष्यों और परमेश्वर द्वारा उनके उद्धार और प्रबंधन से संबंधित था। अब्राहम के बाद, परमेश्वर ने एक बार फिर एक अन्य प्रथम कार्य किया—उसने अय्यूब को ऐसे व्यक्ति के रूप में चुना, जो व्यवस्था के अधीन रहता था और निरंतर परमेश्वर का भय मानते हुए और बुराई से दूर रहते हुए और परमेश्वर की गवाही देते हुए शैतान के प्रलोभनों का सामना कर सकता था। यह भी पहली बार ही था कि

परमेश्वर ने शैतान को किसी इंसान को प्रलोभित करने दिया था, और पहली बार उसने शैतान के साथ शर्त लगाई थी। अंततः, पहली बार उसने किसी ऐसे व्यक्ति को प्राप्त किया, जो शैतान का सामना करते हुए परमेश्वर की गवाही देने में सक्षम था, ऐसा व्यक्ति शैतान को पूर्णतः शर्मिंदा कर सकता था। जब से परमेश्वर ने मानवजाति को बनाया, तब से यह पहला व्यक्ति था, जिसे उसने प्राप्त किया था जो उसके लिए गवाही देने में सक्षम था। जब परमेश्वर ने इस व्यक्ति को प्राप्त कर लिया, तो अपने प्रबंधन को आगे बढ़ाने और अपने कार्य के अगले चरण के लिए स्थान और लोगों के चयन की तैयारी करते हुए वह अपने प्रबंधन को जारी रखने और अपने कार्य के अगले चरण को कार्यान्वित करने के लिए और भी अधिक उत्सुक हो गया।

इस सबके बारे में संगति करने के बाद, क्या तुम लोगों को परमेश्वर की इच्छा की सही समझ प्राप्त हुई है? परमेश्वर अपने मानवजाति के प्रबंधन और उद्धार की इस घटना को किसी भी अन्य चीज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण समझता है। वह इन चीज़ों को केवल अपने मस्तिष्क से नहीं करता, केवल अपने वचनों से नहीं करता, और निश्चित रूप से आकस्मिक रवैये के साथ नहीं करता—वह इन सभी चीज़ों को एक योजना के साथ, एक लक्ष्य के साथ, मानकों के साथ और अपनी इच्छा के साथ करता है। यह स्पष्ट है कि मानवजाति को बचाने का यह कार्य परमेश्वर और मनुष्य दोनों के लिए बड़ा महत्व रखता है। कार्य चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, बाधाएँ चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों, मनुष्य चाहे कितने भी कमज़ोर क्यों न हों, या मानवजाति की विद्रोहशीलता चाहे कितनी भी गहरी क्यों न हो, इनमें से कुछ भी परमेश्वर के लिए कठिन नहीं हैं। अपना श्रमसाध्य प्रयास करते हुए और जिस कार्य को वह स्वयं कार्यान्वित करना चाहता है, उसका प्रबंधन करते हुए परमेश्वर अपने आप को व्यस्त रखता है। वह सभी चीज़ों की व्यवस्था भी कर रहा है, और उन सभी लोगों पर, जिन पर वह कार्य करेगा, और उस कार्य पर, जिसे वह पूर्ण करना चाहता है, अपनी संप्रभुता लागू कर रहा है—इसमें से कुछ भी पहले नहीं किया गया है। यह पहली बार है, जब परमेश्वर ने इन पद्धतियों का उपयोग किया है और मानवजाति को बचाने और उसका प्रबंधन करने की इस बड़ी परियोजना के लिए एक बड़ी कीमत चुकाई है। कार्य करते हुए परमेश्वर थोड़ा-थोड़ा करके बिना किसी दुराव के मनुष्य के सामने अपने श्रमसाध्य प्रयास को, अपने स्वरूप को, अपनी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता को, और अपने स्वभाव के हर एक पहलू को व्यक्त और जारी कर रहा है। वह इन चीज़ों को उस तरह से जारी और व्यक्त करता है, जैसे उसने पहले कभी भी नहीं किया है। इसलिए, पूरे ब्रह्मांड में, उन लोगों को छोड़कर जिन्हें परमेश्वर बचाने और जिनका प्रबंधन करने का उद्देश्य रखता है, कोई प्राणी कभी परमेश्वर

के इतना करीब नहीं रहा है, जिसका उसके साथ इतना अंतरंग संबंध हो। उसके हृदय में मानवजाति, जिसका वह प्रबंधन और बचाव करना चाहता है, सबसे महत्वपूर्ण है; वह इस मानवजाति को अन्य सभी से अधिक मूल्य देता है; भले ही उसने उनके लिए एक बड़ी कीमत चुकाई है, और भले ही उनके द्वारा उसे लगातार ठेस पहुँचाई जाती है और उसकी अवज्ञा की जाती है, फिर भी वह कभी उनका त्याग नहीं करता और बिना किसी शिकायत या पछतावे के अनथक रूप से अपना कार्य जारी रखता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह जानता है कि देर-सबेर लोग उसके बुलावे के प्रति जागरूक हो जाएँगे और उसके वचनों से प्रेरित हो जाएँगे, पहचान जाएँगे कि वही सृष्टि का प्रभु है, और उसकी ओर लौट आएँगे ...

आज यह सब सुनने के बाद तुम लोग यह महसूस कर सकते हो कि हर चीज़, जो परमेश्वर करता है, बिलकुल सामान्य होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर के वचनों और उसके कार्य से मनुष्यों ने हमेशा उसके कुछ इरादे महसूस किए हैं, लेकिन उनकी भावनाओं या उनके ज्ञान, और परमेश्वर जो सोच रहा है, उनके बीच हमेशा एक निश्चित दूरी रही है। इसीलिए मैं सोचता हूँ कि सभी लोगों के साथ इस बारे में संवाद करना आवश्यक है कि परमेश्वर ने मानवजाति को क्यों बनाया, और उन लोगों को प्राप्त करने की उसकी इच्छा के पीछे की पृष्ठभूमि क्या थी, जिनकी उसने आशा की थी। इसे हर किसी के साथ साझा करना आवश्यक है, ताकि हर एक को अपने हृदय में स्पष्ट हो जाए। चूँकि परमेश्वर का हर एक विचार और मत, और उसके कार्य का हर एक चरण और हर अवधि उसके संपूर्ण प्रबंधन-कार्य से बँधे और निकटता से जुड़े हैं, इसलिए जब तुम परमेश्वर के कार्य के हर कदम में उसके विचारों, मतों और उसकी इच्छा को समझ लेते हो, तो यह इस बात को समझने के समान है कि उसकी प्रबंधन-योजना का कार्य किस प्रकार घटित हुआ। इसी बुनियाद पर परमेश्वर के बारे में तुम्हारी समझ गहरी होती है। यद्यपि वह सब-कुछ, जो परमेश्वर ने पहली बार संसार को बनाते हुए किया, जिसका जिक्र मैंने पहले किया था, अब सत्य की खोज के लिए अप्रासंगिक, "जानकारी" मात्र प्रतीत होता है, किंतु तुम्हारे अनुभव के दौरान एक ऐसा दिन आएगा, जब तुम नहीं सोचोगे कि यह जानकारी के कुछ टुकड़ों के समान इतना साधारण है और न ही यह मात्र किसी किस्म का रहस्य है। जैसे-जैसे तुम्हारा जीवन प्रगति करेगा, या जब परमेश्वर तुम्हारे हृदय में थोड़ी जगह ले लेगा, या जब तुम और अच्छी तरह से और गहराई से उसकी इच्छा को समझ जाओगे, तब तुम उसके महत्व और उसकी आवश्यकता को सच में समझ पाओगे, जिसके बारे में मैं आज कह रहा हूँ। चाहे तुम लोग जिस भी हद तक इसे स्वीकार करो; तुम लोगों का इन चीज़ों को समझना और जानना फिर भी

आवश्यक है। जब परमेश्वर कुछ करता है, जब वह अपना कार्य संपन्न करता है, चाहे वह उसे अपने विचारों से करे या अपने हाथों से, चाहे उसे उसने पहली बार किया हो या अंतिम बार, अंततः परमेश्वर की एक योजना है, और हर चीज़ जो वह करता है, उसमें उसके उद्देश्य और विचार होते हैं। ये उद्देश्य और विचार परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाते हैं और उसके स्वरूप को प्रकट करते हैं। ये दोनों चीज़ें—परमेश्वर का स्वभाव और उसका स्वरूप—हर एक व्यक्ति को समझनी चाहिए। जब व्यक्ति उसके स्वभाव और स्वरूप को समझ जाता है, तो वह धीरे-धीरे यह समझ सकता है कि परमेश्वर जो करता है, वह क्यों करता है और वह जो कहता है, वह क्यों कहता है। इससे उनमें तब परमेश्वर का अनुसरण करने, सत्य की खोज करने और अपने स्वभाव में परिवर्तन करने के लिए और अधिक विश्वास हो सकता है। अर्थात्, परमेश्वर के बारे में मनुष्य की समझ और परमेश्वर में उसका विश्वास एक-दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते।

यदि लोग जिसके बारे में जानते हैं या जिसकी समझ प्राप्त करते हैं, वह परमेश्वर का स्वभाव और उसका स्वरूप है, तो वे जो प्राप्त करते हैं, वह जीवन होगा जो परमेश्वर से आता है। जब यह जीवन तुम्हारे भीतर गढ़ दिया जाएगा, तो तुममें परमेश्वर का भय अधिक से अधिक होता जाएगा। यह एक ऐसा लाभ है, जो बहुत स्वाभाविक रूप से आता है। यदि तुम परमेश्वर के स्वभाव या उसके सार के बारे में समझना और जानना नहीं चाहते, यदि तुम इन चीज़ों के ऊपर मनन करना और ध्यान केंद्रित करना तक नहीं चाहते, तो मैं निश्चित रूप से तुम्हें बता सकता हूँ कि जिस तरह से तुम वर्तमान में परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास का अनुसरण कर रहे हो, वह तुम्हें कभी भी उसकी इच्छा पूरी करने या उसकी प्रशंसा प्राप्त करने नहीं दे सकता। इतना ही नहीं, तुम कभी वास्तव में उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते—ये अंतिम परिणाम हैं। जब लोग परमेश्वर को नहीं समझते और उसके स्वभाव को नहीं जानते, तो उनका हृदय परमेश्वर के लिए वास्तव में कभी नहीं खुल सकता। जब वे परमेश्वर को समझ जाते हैं, तो वे रुचि और विश्वास के साथ जो कुछ परमेश्वर के हृदय में है, उसकी सराहना करना और उसका स्वाद लेना आरंभ कर देते हैं। जब तुम जो परमेश्वर के हृदय में है, उसकी सराहना करने और उसका स्वाद लेने लगोगे, तो तुम्हारा हृदय धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, उसके लिए खुलता जाएगा। जब तुम्हारा हृदय उसके लिए खुल जाएगा, तो तुम्हें महसूस होगा कि परमेश्वर के साथ तुम्हारे लेन-देन, परमेश्वर से तुम्हारी माँगें और तुम्हारी अपनी अनावश्यक अभिलाषाएँ कितनी शर्मनाक और घृणित थीं। जब तुम्हारा हृदय वास्तव में परमेश्वर के लिए खुल जाएगा, तो तुम देखोगे कि उसका हृदय एक असीमित संसार है, और तुम एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश

करोगे, जिसे तुमने पहले कभी अनुभव नहीं किया है। इस क्षेत्र में कोई छल-कपट नहीं है, कोई धोखेबाज़ी नहीं है, कोई अंधकार नहीं है और कोई बुराई नहीं है। वहाँ केवल ईमानदारी और विश्वसनीयता है; केवल प्रकाश और सत्यपरायणता है; केवल धार्मिकता और दयालुता है। वह प्रेम और परवाह से भरा हुआ है, अनुकंपा और सहनशीलता से भरा हुआ है, और उसके माध्यम से तुम जीवित होने की प्रसन्नता और आनंद महसूस करोगे। ये वे चीज़ें हैं, जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे लिए तब प्रकट करेगा, जब तुम अपना हृदय उसके लिए खोलोगे। यह असीमित संसार परमेश्वर की बुद्धि से और उसकी सर्वशक्तिमत्ता से भरा हुआ है; यह उसके प्रेम और अधिकार से भी भरा हुआ है। यहाँ तुम परमेश्वर के स्वरूप के हर पहलू को देख सकते हो, कि किस बात से वह आनंदित होता है, क्यों वह चिंता करता है और क्यों उदास होता है, और क्यों वह क्रोधित होता है...। हर व्यक्ति, जो अपने हृदय को खोलता है और परमेश्वर को भीतर आने देता है, इसे अनुभव कर सकता है। परमेश्वर केवल तभी तुम्हारे हृदय में आ सकता है, जब तुम अपना हृदय उसके लिए खोल देते हो। तुम केवल तभी परमेश्वर के स्वरूप को देख सकते हो, केवल तभी अपने लिए उसके इरादे देख सकते हो, जब वह तुम्हारे हृदय के भीतर आ गया होता है। उस समय तुम्हें पता चलेगा कि परमेश्वर से संबंधित हर चीज़ कितनी बहुमूल्य है, कि उसका स्वरूप कितना सँजोकर रखने लायक है। उसकी तुलना में तुम्हें घेरे रहने वाले लोग, तुम्हारे जीवन की वस्तुएँ और घटनाएँ, यहाँ तक कि तुम्हारे प्रियजन, तुम्हारा जीवनसाथी, और वे चीज़ें जिनसे तुम प्रेम करते हो, वे शायद ही उल्लेखनीय हों। वे इतने छोटे हैं, और इतने निम्न हैं; तुम महसूस करोगे कि कोई भौतिक पदार्थ फिर कभी तुम्हें आकर्षित करने में सक्षम नहीं होगा, या कोई भौतिक पदार्थ तुम्हें फिर कभी अपने लिए कोई कीमत चुकाने हेतु फुसला नहीं सकेगा। परमेश्वर की विनम्रता में तुम उसकी महानता और उसकी सर्वोच्चता देखोगे। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के कुछ कर्मों में, जिन्हें तुम पहले काफी छोटा समझते थे, तुम उसकी असीमित बुद्धि और उसकी सहनशीलता देखोगे, और तुम उसका धैर्य, उसकी सहनशीलता और अपने बारे में उसकी समझ देखोगे। यह तुममें उसके लिए श्रद्धा उत्पन्न करेगा। उस दिन तुम्हें लगेगा कि मानवजाति कितने गंदे संसार में रह रही है, कि तुम्हारे आसपास रहने वाले लोग और तुम्हारे जीवन में घटित होने वाली घटनाएँ, यहाँ तक कि जिनसे तुम प्रेम करते हो, तुम्हारे प्रति उनका प्रेम और उनकी तथाकथित सुरक्षा या तुम्हारे लिए उनकी चिंता भी उल्लेखनीय तक नहीं हैं—केवल परमेश्वर ही तुम्हारा प्रिय है, और केवल परमेश्वर ही है जिसे तुम सबसे ज़्यादा सँजोते हो। जब वह दिन आएगा, तो मैं मानता हूँ कि कुछ लोग होंगे जो कहेंगे : परमेश्वर का

प्रेम बहुत महान है, और उसका सार बहुत पवित्र है—परमेश्वर में कोई धोखा नहीं है, कोई बुराई नहीं है, कोई ईर्ष्या नहीं है, और कोई कलह नहीं है, बल्कि केवल धार्मिकता और प्रामाणिकता है, और मनुष्यों को परमेश्वर के स्वरूप की हर चीज़ की लालसा करनी चाहिए। मनुष्यों को उसके लिए प्रयास करना चाहिए और उसकी आकांक्षा करनी चाहिए। किस आधार पर मानवजाति की इसे प्राप्त करने की योग्यता निर्मित होती है? वह मनुष्यों की परमेश्वर के स्वभाव की समझ, और उनकी परमेश्वर के सार की समझ के आधार पर निर्मित होती है। इसलिए परमेश्वर के स्वभाव और उसके स्वरूप को समझना प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवनभर की शिक्षा है; और यह हर उस व्यक्ति के द्वारा अनुसरण किया जाने वाला एक जीवनभर का लक्ष्य है, जो अपने स्वभाव को बदलने का प्रयास करता है, और परमेश्वर को जानने का प्रयास करता है।

हमने अभी-अभी परमेश्वर द्वारा किए गए समस्त कार्य, उसके द्वारा संपन्न की गई अभूतपूर्व कार्यों की शृंखला के बारे में बात की। इनमें से हर एक चीज़ परमेश्वर की प्रबंधन-योजना और परमेश्वर की इच्छा के लिए प्रासंगिक है। ये स्वयं परमेश्वर के स्वभाव और उसके सार के लिए भी प्रासंगिक हैं। यदि हम परमेश्वर के स्वरूप को और अधिक समझना चाहते हैं, तो हम पुराने नियम या व्यवस्था के युग पर नहीं रुक सकते—हमें परमेश्वर द्वारा अपने कार्य में उठाए गए कदमों का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ने की आवश्यकता है। इसलिए, जिस प्रकार परमेश्वर ने व्यवस्था के युग का अंत और अनुग्रह के युग का आरंभ किया था, उसी प्रकार हमारे अपने कदम भी उसी का अनुसरण करते हुए अनुग्रह के युग में आ जाएँ—एक ऐसा युग, जो अनुग्रह और छुटकारे से भरपूर है। इस युग में परमेश्वर ने पुन: एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया, जो पहले नहीं किया गया था। इस नए युग का कार्य परमेश्वर और मानवजाति दोनों के लिए एक नया प्रारंभिक बिंदु था—ऐसा प्रारंभिक बिंदु, जिसमें परमेश्वर द्वारा किया गया एक और नया कार्य शामिल था, जो पहले कभी नहीं किया गया था। यह नया कार्य अभूतपूर्व था, जो मनुष्यों और समस्त प्राणियों की कल्पना-शक्ति से परे था। यह ऐसा कार्य है, जिसे अब सभी लोग अच्छी तरह से जानते हैं—पहली बार परमेश्वर एक मनुष्य बना, और पहली बार उसने एक मनुष्य के रूप, मनुष्य की पहचान के साथ, नया कार्य आरंभ किया। इस नए कार्य ने प्रकट किया कि परमेश्वर ने व्यवस्था के युग में अपना कार्य पूरा कर लिया था, और कि वह व्यवस्था के अधीन अब और कुछ नहीं करेगा या बोलेगा। न ही वह व्यवस्था के रूप में या व्यवस्था के सिद्धांतों या नियमों के अनुसार कुछ बोलेगा या करेगा। अर्थात्, व्यवस्था पर आधारित उसका समस्त कार्य हमेशा के लिए रुक गया था और जारी नहीं रह गया था, क्योंकि परमेश्वर नया कार्य आरंभ

करना और नई चीज़ें करना चाहता था। उसकी योजना का एक बार फिर से एक नया प्रारंभिक बिंदु था, और इसलिए परमेश्वर को मानवजाति की एक नए युग में अगुआई करनी थी।

यह मनुष्य के लिए आनंददायक समाचार था या अशुभ, यह प्रत्येक व्यक्ति के सार पर निर्भर करता था। ऐसा कहा जा सकता है कि कुछ लोगों के लिए यह आनंददायक समाचार नहीं था, बल्कि अशुभ समाचार था, क्योंकि जब परमेश्वर ने अपना नया कार्य शुरू किया, तो जिन लोगों ने बस व्यवस्थाओं और नियमों का अनुसरण किया था, जिन्होंने बस सिद्धांतों का अनुसरण किया था किंतु परमेश्वर का भय नहीं माना था, वे परमेश्वर के पुराने कार्य का उपयोग उसके नए कार्य पर दोष लगाने के लिए करने की ओर प्रवृत्त होने लगे। इन लोगों के लिए यह एक अशुभ समाचार था; परंतु हर उस व्यक्ति के लिए, जो निर्दोष और साफ़दिल था, जो परमेश्वर के प्रति ईमानदार था और उसके द्वारा छुटकारा पाने का इच्छुक था, परमेश्वर का पहला देहधारण बहुत आनंददायक समाचार था। क्योंकि जबसे मनुष्य अस्तित्व में लाए गए हैं, यह पहली बार था जब परमेश्वर एक ऐसे रूप में मानवजाति के बीच प्रकट हुआ और रहा था; जो पवित्रात्मा का रूप नहीं था; इस बार वह मनुष्य से जन्मा था और मनुष्य के पुत्र के रूप में लोगों के बीच रहता था और काम करता था। इस "पहली बार" ने लोगों की धारणाओं को तोड़ डाला; यह सभी कल्पनाओं से परे था। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के सभी अनुयायियों को एक वास्तविक लाभ प्राप्त हुआ। परमेश्वर ने न केवल पुराने युग को समाप्त किया, बल्कि उसने काम करने की पुरानी पद्धतियों और कार्यशैली को भी समाप्त कर दिया। उसने अब अपने संदेशवाहकों को अपनी इच्छा संप्रेषित करने के लिए नहीं कहा, अब वह बादलों में छिपा हुआ नहीं रहा, और न ही अब वह गर्जना के माध्यम से आज्ञा देते हुए मनुष्यों के समक्ष प्रकट हुआ या उनसे बोला। पहले की किसी भी चीज़ के असदृश, एक ऐसी पद्धति के माध्यम से जो मनुष्यों के लिए अकल्पनीय थी और जिसे समझना और स्वीकार करना उनके लिए कठिन था—देह बनना—वह उस युग का कार्य शुरू करने के लिए मनुष्य का पुत्र बना। परमेश्वर के इस कार्य से मानवजाति हक्की-बक्की रह गई; इसने उन्हें शर्मिंदा कर दिया, क्योंकि परमेश्वर ने एक बार फिर एक नया कार्य शुरू किया, जिसे उसने पहले कभी नहीं किया था। आज हम इस पर एक नज़र डालेंगे कि परमेश्वर ने इस नए युग में कौन-सा नया कार्य शुरू किया, और हम इस पर विचार करेंगे कि परमेश्वर के स्वभाव और उसके स्वरूप की दृष्टि से इस नए कार्य में हमारे लिए सीखने को क्या है?

बाइबल के नए नियम में निम्नलिखित वचन दर्ज़ हैं :

1. मत्ती 12:1 उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेलों को भूख लगी तो वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे।

2. मत्ती 12:6-8 पर मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वह है जो मन्दिर से भी बड़ा है। यदि तुम इसका अर्थ जानते, "मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान से नहीं," तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।

आओ, पहले इस अंश पर नज़र डालें : "उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेलों को भूख लगी तो वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे।"

मैंने यह अंश क्यों चुना है? इसका परमेश्वर के स्वभाव से क्या संबंध है? इस पाठ में पहली चीज़ जो हम जानते हैं, वह है कि यह सब्त का दिन था, लेकिन प्रभु यीशु बाहर गया और अपने चेलों को मकई के खेतों में ले गया। इससे भी ज्यादा "विश्वासघाती" बात यह रही कि वे मकई की "बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे।" व्यवस्था के युग में यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था थी कि लोग सब्त के दिन यूँ ही बाहर नहीं जा सकते और गतिविधियों में भाग नहीं ले सकते—बहुत-सी चीज़ें थीं, जो सब्त के दिन नहीं की जा सकती थीं। प्रभु यीशु द्वारा किया गया यह कार्य उन लोगों के लिए पेचीदा था, जो एक लंबे समय से व्यवस्था के अधीन रहे थे, और इसने आलोचना भी भड़काई। जहाँ तक उनके भ्रम और इस बात का संबंध है कि यीशु ने जो किया, उसके बारे में उन्होंने किस प्रकार बात की, हम फिलहाल उसे एक ओर रखेंगे और पहले इस बात की चर्चा करेंगे कि प्रभु यीशु ने सभी दिनों में से सब्त के दिन ही ऐसा करना क्यों चुना, और इस कार्य के द्वारा वह उन लोगों से क्या कहना चाहता था, जो व्यवस्था के अधीन रह रहे थे। यह इस अंश और परमेश्वर के स्वभाव के बीच का संबंध है, जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ।

जब प्रभु यीशु आया, तो उसने लोगों को यह बताने के लिए अपने व्यावहारिक कार्यों का उपयोग किया कि परमेश्वर ने व्यवस्था के युग को अलविदा कह दिया है और नया कार्य शुरू किया है, और इस नए कार्य में सब्त का पालन करना आवश्यक नहीं है। परमेश्वर का सब्त के दिन की सीमाओं से बाहर आना उसके नए कार्य का बस एक पूर्वाभास था; वास्तविक और महान कार्य अभी आना बाकी था। जब प्रभु यीशु ने अपना कार्य प्रारंभ किया, तो उसने व्यवस्था की बेड़ियों को पहले ही पीछे छोड़ दिया था, और उस युग के विनियम और सिद्धांत तोड़ दिए थे। उसमें व्यवस्था से जुड़ी किसी भी बात का कोई निशान नहीं था;

उसने उसे पूरी तरह से छोड़ दिया था और अब उसका पालन नहीं करता था, और उसने मानवजाति से आगे उसका पालन करने की अपेक्षा नहीं की थी। इसलिए तुम यहाँ देखते हो कि प्रभु यीशु सब्त के दिन मकई के खेतों से होकर गुज़रा, और प्रभु ने आराम नहीं किया; वह बाहर काम कर रहा था और आराम नहीं कर रहा था। उसका यह कार्य लोगों की धारणाओं के लिए एक आघात था और इसने उन्हें सूचित किया कि वह अब व्यवस्था के अधीन नहीं रह रहा था, और उसने सब्त की सीमाओं को छोड़ दिया था और एक नई कार्यशैली के साथ वह मानवजाति के सामने और उनके बीच एक नई छवि में प्रकट हुआ था। उसके इस कार्य ने लोगों को बताया कि वह अपने साथ एक नया कार्य लाया है, जो व्यवस्था के अधीन रहने से उभरने और सब्त से अलग होने से आरंभ हुआ था। जब परमेश्वर ने अपना नया कार्य किया, तो वह अतीत से चिपका नहीं रहा, और वह अब व्यवस्था के युग की विधियों के बारे में चिंतित नहीं था, न ही वह पूर्ववर्ती युग के अपने कार्य से प्रभावित था, बल्कि उसने सब्त के दिन भी उसी तरह से कार्य किया, जैसे वह दूसरे दिनों में करता था, और सब्त के दिन जब उसके चेले भूखे थे, तो वे मकई की बालें तोड़कर खा सकते थे। यह सब परमेश्वर की निगाहों में बिलकुल सामान्य था। परमेश्वर अपना बहुत-सा नया कार्य करने के लिए, जिसे वह करना चाहता है, और नए वचन कहने के लिए, जिन्हें वह कहना चाहता है, एक नई शुरुआत कर सकता है। जब वह एक नई शुरुआत करता है, तो वह न तो अपने पिछले कार्य का उल्लेख करता है, न ही उसे जारी रखता है। क्योंकि परमेश्वर के पास उसके कार्य के अपने सिद्धांत हैं, जब वह नया कार्य शुरू करना चाहता है, तो यह तब होता है जब वह मानवजाति को अपने कार्य के एक नए चरण में ले जाना चाहता है, और जब उसका कार्य एक उच्चतर चरण में प्रवेश करता है। यदि लोग पुरानी कहावतों या नियमों के अनुसार काम करते रहते हैं या उनसे चिपटे रहते हैं, तो वह इसे याद नहीं रखेगा या इसका अनुमोदन नहीं करेगा। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह पहले ही एक नया कार्य ला चुका है, और अपने कार्य के एक नए चरण में प्रवेश कर चुका है। जब वह नया कार्य आरंभ करता है, तो वह मानवजाति के सामने पूर्णतः नई छवि में, पूर्णतः नए कोण से और पूर्णतः नए तरीके से प्रकट होता है, ताकि लोग उसके स्वभाव के विभिन्न पहलुओं और उसके स्वरूप को देख सकें। यह उसके नए कार्य में उसके लक्ष्यों में से एक है। परमेश्वर पुरानी चीज़ों से चिपका नहीं रहता या पुराने मार्ग पर नहीं चलता; जब वह कार्य करता और बोलता है, तो यह उतना निषेधात्मक नहीं होता, जितना लोग कल्पना करते हैं। परमेश्वर में सब-कुछ स्वतंत्र और मुक्त है, और कोई निषेध नहीं है, कोई बाधा नहीं है—वह मानवजाति के लिए आज़ादी और

मुक्ति लाता है। वह एक जीवित परमेश्वर है, ऐसा परमेश्वर, जो वास्तव में, सच में मौजूद है। वह कोई कठपुतली या मिट्टी की मूर्ति नहीं है, और वह उन मूर्तियों से बिलकुल भिन्न है, जिन्हें लोग प्रतिष्ठापित करते हैं और जिनकी आराधना करते हैं। वह जीवित और जीवंत है और उसके कार्य और वचन मनुष्यों के लिए संपूर्ण जीवन और ज्योति, संपूर्ण स्वतंत्रता और मुक्ति लेकर आते हैं, क्योंकि वह सत्य, जीवन और मार्ग धारण करता है—वह अपने किसी भी कार्य में किसी भी चीज़ के द्वारा विवश नहीं होता। लोग चाहे कुछ भी कहें और चाहे वे उसके नए कार्य को किसी भी प्रकार से देखें या कैसे भी उसका आकलन करें, वह बिना किसी आशंका के अपना कार्य पूरा करेगा। अपने कार्य और वचनों के संबंध में वह किसी की भी धारणाओं या उस पर उठी उँगलियों की, यहाँ तक कि अपने नए कार्य के प्रति उनके कठोर विरोध और प्रतिरोध की भी चिंता नहीं करेगा। परमेश्वर जो करता है, उसे मापने या परिभाषित करने, उसके कार्य को बदनाम करने, नष्ट-भ्रष्ट करने या उसे नुकसान पहुँचाने के लिए संपूर्ण सृष्टि में कोई भी मानवीय तर्क या मानवीय कल्पनाओं, ज्ञान या नैतिकता का उपयोग नहीं कर सकता। उसके कार्य में और जो वह करता है उसमें, कोई निषेध नहीं है, वह किसी मनुष्य, घटना या चीज़ द्वारा लाचार नहीं किया जाएगा, न ही उसे किसी विरोधी ताक़त द्वारा नष्ट-भ्रष्ट किया जाएगा। जहाँ तक उसके नए कार्य का संबंध है, वह एक सर्वदा विजयी राजा है, और सभी विरोधी ताक़तें और मानवजाति के सभी पाखंड और भ्रांतियाँ उसकी चरण-पीठ के नीचे कुचल दिए जाते हैं। वह अपने कार्य का चाहे जो भी नया चरण संपन्न कर रहा हो, उसे निश्चित रूप से मानवजाति के बीच विकसित और विस्तारित किया जाएगा, और उसे निश्चित रूप से संपूर्ण विश्व में तब तक अबाध रूप से कार्यान्वित किया जाएगा, जब तक कि उसका महान कार्य पूरा नहीं हो जाता। यह परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धि, उसका अधिकार और सामर्थ्य है। इस प्रकार, प्रभु यीशु सब्त के दिन खुले तौर पर बाहर जा सकता था और कार्य कर सकता था, क्योंकि उसके हृदय में मानवजाति से उत्पन्न कोई नियम, ज्ञान या सिद्धांत नहीं थे। उसके पास केवल परमेश्वर का नया कार्य और उसका मार्ग था। उसका कार्य मानवजाति को स्वतंत्र करने, लोगों को मुक्त करने, उन्हें प्रकाश में रहने देने और उन्हें जीने देने का मार्ग था। इस बीच, जो मूर्तियों या झूठे ईश्वरों की पूजा करते हैं, वे सभी प्रकार के नियमों और वर्जनाओं से नियंत्रित, हर दिन शैतान के बंधनों में जीते हैं—आज एक चीज़ निषिद्ध होती है, कल दूसरी—उनके जीवन में कोई स्वतंत्रता नहीं है। वे जंज़ीरों में जकड़े हुए कैदियों के समान हैं, जिनके जीवन में कहने को कोई खुशी नहीं है। "निषेध" क्या दर्शाता है? यह विवशता, बंधन और बुराई दर्शाता है। जैसे ही कोई व्यक्ति

किसी मूर्ति की आराधना करता है, तो वह एक झूठे ईश्वर और बुरी आत्मा की आराधना कर रहा होता है। इस तरह की गतिविधियाँ शामिल होने पर निषेध साथ आता है। तुम यह या वह नहीं खा सकते, आज तुम बाहर नहीं जा सकते, कल तुम अपना खाना नहीं बना सकते, परसों तुम नए घर में नहीं जा सकते, विवाह और अंत्येष्टि के लिए, यहाँ तक कि बच्चे को जन्म देने के लिए भी कुछ निश्चित दिन ही चुनने होंगे। इसे क्या कहा जाता हैं? इसे निषेध कहा जाता है; यह मानवजाति का बंधन है, और ये शैतान और बुरी आत्माओं की जंज़ीरें लोगों को नियंत्रित कर रही हैं, और उनके हृदय और शरीर को अवरुद्ध कर रही हैं। क्या ये प्रतिबंध परमेश्वर के साथ विद्यमान रहते हैं? परमेश्वर की पवित्रता की बात करते समय तुम्हें पहले यह सोचना चाहिए : परमेश्वर के साथ कोई निषेध नहीं है। परमेश्वर के वचनों और कार्य में सिद्धांत हैं, किंतु कोई निषेध नहीं हैं, क्योंकि स्वयं परमेश्वर सत्य, मार्ग और जीवन है।

आओ, अब पवित्रशास्त्र का निम्नलिखित अंश देखें : "पर मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वह है जो मन्दिर से भी बड़ा है। यदि तुम इसका अर्थ जानते, 'मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान से नहीं,' तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है" (मत्ती 12:6-8)। यहाँ "मंदिर" किसे संदर्भित करता है? आसान शब्दों में कहें तो, यह एक भव्य, ऊँची इमारत को संदर्भित करता है, और व्यवस्था के युग में मंदिर याजकों के लिए परमेश्वर की आराधना करने का स्थान था। जब प्रभु यीशु ने कहा, "कि यहाँ वह है जो मन्दिर से भी बड़ा है," तो "वह" किसे संदर्भित करता है? स्पष्ट रूप से "वह" देह में मौजूद प्रभु यीशु है, क्योंकि केवल वही मंदिर से बड़ा था। इन वचनों ने लोगों को क्या बताया? उन्होंने लोगों को मंदिर से बाहर आने के लिए कहा—परमेश्वर पहले ही मंदिर को छोड़ चुका है और अब उसमें कार्य नहीं कर रहा, इसलिए लोगों को मंदिर के बाहर परमेश्वर के पदचिह्न ढूँढ़ने चाहिए और उसके नए कार्य में उसके कदमों का अनुसरण करना चाहिए। जब प्रभु यीशु ने यह कहा, तो उसके वचनों के पीछे एक आधार था और वह यह कि व्यवस्था के अधीन लोग मंदिर को स्वयं परमेश्वर से भी बड़ा समझने लगे थे। अर्थात्, लोग परमेश्वर की आराधना करने के बजाय मंदिर की आराधना करते थे, इसलिए प्रभु यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि वे मूर्तियों की आराधना न करें, बल्कि उनके बजाय परमेश्वर की आराधना करें, क्योंकि वह सर्वोच्च है। इसलिए उसने कहा : "मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान से नहीं।" यह स्पष्ट है कि प्रभु यीशु की नज़रों में, व्यवस्था के अधीन अधिकतर लोग अब यहोवा की आराधना नहीं करते थे, बल्कि बेमन से केवल बलिदान करते थे, और प्रभु यीशु ने तय किया कि यह मूर्ति-पूजा है। इन मूर्ति-पूजकों ने मंदिर को परमेश्वर

से बड़ी और ऊँची चीज़ समझ लिया था। उनके हृदय में केवल मंदिर था, परमेश्वर नहीं, और यदि उन्हें मंदिर छोड़ना पड़ता, तो उनका निवास-स्थान भी छूट जाता। मंदिर के अतिरिक्त उनके पास आराधना के लिए कोई जगह नहीं थी, और वे अपने बलिदान नहीं कर सकते थे। उनका तथाकथित "निवास-स्थान" वह था, जहाँ वे यहोवा परमेश्वर की आराधना करने का झूठा दिखावा करते थे, ताकि वे मंदिर में रह सकें और अपने खुद के क्रियाकलाप कर सकें। उनका तथाकथित "बलिदान" मंदिर में सेवा करने की आड़ में अपने खुद के व्यक्तिगत शर्मनाक व्यवहार कार्यान्वित करना भर था। यही कारण था कि उस समय लोग मंदिर को परमेश्वर से भी बड़ा समझते थे। प्रभु यीशु ने ये वचन लोगों को चेतावनी देने के लिए बोले थे, क्योंकि वे मंदिर का उपयोग एक आड़ के रूप में, और बलिदानों का उपयोग लोगों और परमेश्वर को धोखा देने के एक आवरण के रूप में करते थे। यदि तुम इन वचनों को वर्तमान में लागू करो, तो ये अभी भी उतने ही वैध और प्रासंगिक हैं। यद्यपि आज लोगों ने व्यवस्था के युग के लोगों की तुलना में परमेश्वर के एक भिन्न कार्य का अनुभव किया है, किंतु उनकी प्रकृति का सार एक-समान है। आज के कार्य के संदर्भ में, लोग अभी भी उसी प्रकार की चीज़ें करेंगे, जो इन वचनों में दर्शाई गई हैं, "मंदिर परमेश्वर से बड़ा है।" उदाहरण के लिए, लोग अपना कर्तव्य निभाने को अपने कार्य के रूप में देखते हैं; वे परमेश्वर के लिए गवाही देने और बड़े लाल अजगर से युद्ध करने को प्रजातंत्र और स्वतंत्रता के लिए मानवाधिकारों की रक्षा हेतु किए जाने वाले राजनीतिक आंदोलनों के रूप में देखते हैं; वे अपने कर्तव्य को अपने कौशलों का उपयोग आजीविका में करने की ओर मोड़ देते हैं, और वे परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने को और कुछ नहीं, बल्कि धार्मिक सिद्धांत के एक अंश के पालन के रूप में लेते हैं; इत्यादि। क्या ये व्यवहार बिलकुल "मंदिर परमेश्वर से बड़ा है" के समान नहीं हैं? सिवाय इसके कि दो हज़ार वर्ष पहले लोग अपना व्यक्तिगत व्यवसाय भौतिक मंदिरों में कर रहे थे, जबकि आज लोग अपना व्यक्तिगत व्यवसाय अमूर्त मंदिरों में करते हैं। जो लोग नियमों को महत्व देते हैं, वे नियमों को परमेश्वर से बड़ा समझते हैं; जो लोग हैसियत से प्रेम करते हैं, वे हैसियत को परमेश्वर से बड़ी समझते हैं; जो लोग अपनी आजीविका से प्रेम करते हैं, वे आजीविका को परमेश्वर से बड़ी समझते हैं, इत्यादि—उनकी सभी अभिव्यक्तियाँ मुझे यह कहने के लिए बाध्य करती हैं : "लोग अपने वचनों से परमेश्वर को सबसे बड़ा कहकर उसकी स्तुति करते हैं, किंतु उनकी नज़रों में हर चीज़ परमेश्वर से बड़ी है।" ऐसा इसलिए है, क्योंकि जैसे ही लोगों को परमेश्वर का अनुसरण करने के अपने मार्ग के साथ-साथ अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने या अपना व्यवसाय या अपनी

आजीविका चलाने का अवसर मिलता है, वे परमेश्वर से दूरी बना लेते हैं और अपने आप को अपनी प्यारी आजीविका में झोंक देते हैं। जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है, उसे और उसकी इच्छा को बहुत पहले ही त्याग दिया गया है। इन लोगों की स्थिति और दो हज़ार वर्ष पहले मंदिर में अपना व्यवसाय करने वाले लोगों की स्थिति में क्या अंतर है?

आगे, आओ इस अंश के इस अंतिम वाक्य पर एक नज़र डालें : "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।" क्या इस वाक्य का कोई व्यावहारिक पक्ष है? क्या तुम लोग इसके व्यावहारिक पक्ष को देख सकते हो? हर एक बात जो परमेश्वर कहता है, उसके हृदय से आती है, तो उसने ऐसा क्यों कहा? तुम लोग इसे कैसे समझते हो? हो सकता है, तुम लोग अब इस वाक्य का अर्थ समझ पाओ, लेकिन जब यह कहा गया था, तब बहुत लोग नही समझे थे, क्योंकि मानवजाति बस व्यवस्था के युग से बाहर निकली ही थी। उनके लिए सब्त से अलग होना बहुत कठिन बात थी, सच्चा सब्त क्या होता है, इसे समझने की तो बात ही छोड़ो।

"मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है" वाक्य लोगों को बताता है कि परमेश्वर से संबंधित हर चीज़ भौतिक प्रकृति की नहीं है, और यद्यपि परमेश्वर तुम्हारी सारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है, लेकिन जब तुम्हारी सारी भौतिक आवश्यकताएँ पूरी कर दी जाती हैं, तो क्या इन चीज़ों से मिलने वाली संतुष्टि तुम्हारी सत्य की खोज का स्थान ले सकती है? यह स्पष्टत: संभव नहीं है! परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप, जिसके बारे में हमने संगति की है, दोनों सत्य हैं। इनका मूल्य भौतिक वस्तुओं से नहीं मापा जा सकता, चाहे वे कितनी भी मूल्यवान हों, न ही इनके मूल्य की गणना पैसों में की जा सकती है, क्योंकि ये कोई भौतिक वस्तुएँ नहीं है, और ये हर एक व्यक्ति के हृदय की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति के लिए इन अमूर्त सत्यों का मूल्य ऐसी किसी भी भौतिक चीज़ से बढ़कर होना चाहिए, जिसे तुम मूल्यवान समझते हो, या नहीं? यह कथन ऐसा है, जिस पर तुम लोगों को सोच-विचार करने की आवश्यकता है। जो कुछ मैंने कहा है, उसका मुख्य बिंदु यह है कि परमेश्वर का स्वरूप और उससे संबंधित हर चीज़ प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ें हैं और उन्हें किसी भौतिक चीज़ से बदला नहीं जा सकता। मैं तुम्हें एक उदाहरण दूँगा : जब तुम भूखे होते हो, तो तुम्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यह भोजन कमोबेश अच्छा हो सकता है, या कमोबेश असंतोषजनक हो सकता है, किंतु यदि उससे तुम्हारा पेट भर जाता है, तो भूखे होने का वह अप्रिय एहसास अब नहीं रहेगा—वह मिट जाएगा। तुम चैन

से बैठ सकते हो, और तुम्हारा शरीर आराम महसूस करेगा। लोगों की भूख का भोजन से समाधान किया जा सकता है, किंतु जब तुम परमेश्वर का अनुसरण करते हो, और तुम्हें यह एहसास होता है कि तुम्हें उसके बारे में कोई समझ नहीं है, तो तुम अपने हृदय के खालीपन का समाधान कैसे करोगे? क्या इसका समाधान भोजन से किया जा सकता है? या जब तुम परमेश्वर का अनुसरण कर रहे होते हो और उसकी इच्छा तुम्हारी समझ में नहीं आती, तो तुम अपने हृदय की उस भूख को मिटाने के लिए किस चीज़ का उपयोग कर सकते हो? परमेश्वर के माध्यम से उद्धार के अपने अनुभव की प्रक्रिया में, अपने स्वभाव में परिवर्तन की कोशिश करने के दौरान, यदि तुम उसकी इच्छा को नहीं समझते हो या यह नहीं जानते कि सत्य क्या है, यदि तुम परमेश्वर के स्वभाव को नहीं समझते, तो क्या तुम बहुत व्याकुल महसूस नहीं करोगे? क्या तुम अपने हृदय में ज़बरदस्त भूख और प्यास महसूस नहीं करोगे? क्या ये एहसास तुम्हें तुम्हारे हृदय में शांति महसूस करने से रोकेंगे नहीं? तो तुम अपने हृदय की उस भूख की भरपाई कैसे कर सकते हो—क्या इसके समाधान का कोई तरीका है? कुछ लोग खरीददारी करने चले जाते हैं, कुछ लोग मन की बात कहने के लिए मित्रों को खोजते हैं, कुछ लोग लंबी तानकर सो जाते हैं, अन्य लोग परमेश्वर के वचनों को और अधिक पढ़ते हैं, या वे अपने कर्तव्य निभाने के लिए और कड़ी मेहनत और प्रयास करते हैं। क्या ये चीज़ें तुम्हारी वास्तविक कठिनाइयों का समाधान कर सकती हैं? तुम सभी इस प्रकार के अभ्यासों को पूर्णत: समझते हो। जब तुम शक्तिहीन महसूस करते हो, जब तुम परमेश्वर से प्रबुद्धता पाने की दृढ़ इच्छा महसूस करते हो जो तुम्हें सत्य की वास्तविकता और उसकी इच्छा ज्ञात करा सके, तो तुम्हें सबसे ज़्यादा किस चीज़ की आवश्यकता होती है? तुम्हें जिस चीज़ की आवश्यकता होती है, वह भरपेट भोजन नहीं है, और वह कुछ उदार वचन नहीं हैं, देह का क्षणिक आराम और संतुष्टि का तो कहना ही क्या—तुम्हें जिस चीज़ की आवश्यकता है, वह यह है कि परमेश्वर तुम्हें सीधे और स्पष्ट रूप से बताए कि तुम्हें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए, तुम्हें स्पष्ट रूप से बताए कि सत्य क्या है। जब तुम इसे समझ लेते हो, चाहे थोड़ा-सा ही क्यों न समझो, तो क्या तुम अपने हृदय में उससे अधिक संतुष्ट महसूस नहीं करोगे, जितना कि अच्छा भोजन करने पर महसूस करते हो? जब तुम्हारा हृदय संतुष्ट होता है, तो क्या तुम्हारा हृदय और तुम्हारा संपूर्ण अस्तित्व सच्ची शांति प्राप्त नहीं करता? इस उपमा और विश्लेषण के द्वारा, क्या तुम लोग अब समझे कि क्यों मैं तुम लोगों के साथ इस वाक्य को साझा करना चाहता था, "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है"? इसका अर्थ है कि जो परमेश्वर से आता है, जो उसका स्वरूप है, और उसका सब-

कुछ किसी भी अन्य चीज़ से बढ़कर हैं, जिसमें वह चीज़ या वह व्यक्ति भी शामिल है, जिस पर तुम किसी समय विश्वास करते थे कि उसे तुमने सबसे अधिक सँजोया है। अर्थात्, यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के मुँह से वचन प्राप्त नहीं कर सकता या उसकी इच्छा को नहीं समझता, तो वह शांति प्राप्त नहीं कर सकता। अपने भविष्य के अनुभवों में तुम लोग समझोगे कि मैं क्यों चाहता था कि आज तुम लोग इस अंश को देखो—यह बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर जो कुछ करता है, वह सब सत्य और जीवन होता है। सत्य वह चीज़ है, जिसकी लोग अपने जीवन में कमी नहीं कर सकते, और यह वह चीज़ है, जिसके बिना उनका कभी काम नहीं चल सकता; तुम यह भी कह सकते हो कि यह सबसे बड़ी चीज़ है। यद्यपि तुम उसे देख या छू नहीं सकते, फिर भी तुम्हारे लिए उसके महत्व को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता; यही वह एकमात्र चीज़ है, जो तुम्हारे हृदय में शांति ला सकती है।

क्या तुम लोगों की सत्य की समझ तुम्हारी अपनी अवस्थाओं के साथ एकीकृत है? वास्तविक जीवन में तुम्हें पहले यह सोचना होगा कि कौन-से सत्य तुम्हारे सामने आए लोगों, घटनाओं और चीज़ों से संबंध रखते हैं; इन्हीं सत्यों के बीच तुम परमेश्वर की इच्छा तलाश सकते हो और अपने सामने आने वाली चीज़ों को उसकी इच्छा के साथ जोड़ सकते हो। यदि तुम नहीं जानते कि सत्य के कौन-से पहलू तुम्हारे सामने आई चीज़ों से संबंध रखते हैं, और सीधे परमेश्वर की इच्छा खोजने चल देते हो, तो यह एक अंधा दृष्टिकोण है और परिणाम हासिल नहीं कर सकता। यदि तुम सत्य की खोज करना और परमेश्वर की इच्छा समझना चाहते हो, तो पहले तुम्हें यह देखने की आवश्यकता है कि तुम्हारे साथ किस प्रकार की चीज़ें घटित हुई हैं, वे सत्य के किन पहलुओ से संबंध रखती हैं, और परमेश्वर के वचन में उस विशिष्ट सत्य को देखो, जो तुम्हारे अनुभव से संबंध रखता है। तब तुम उस सत्य में अभ्यास का वह मार्ग खोजो, जो तुम्हारे लिए सही है; इस तरह से तुम परमेश्वर की इच्छा की अप्रत्यक्ष समझ प्राप्त कर सकते हो। सत्य की खोज करना और उसका अभ्यास करना यांत्रिक रूप से किसी सिद्धांत को लागू करना या किसी सूत्र का अनुसरण करना नहीं है। सत्य सूत्रबद्ध नहीं होता, न ही वह कोई विधि है। वह मृत नहीं है—वह स्वयं जीवन है, वह एक जीवित चीज़ है, और वह वो नियम है, जिसका अनुसरण प्राणी को अपने जीवन में अवश्य करना चाहिए और वह वो नियम है, जो मनुष्य के पास अपने जीवन में अवश्य होना चाहिए। यह ऐसी चीज़ है, जिसे तुम्हें जितना संभव हो, अनुभव के माध्यम से समझना चाहिए। तुम अपने अनुभव की किसी भी अवस्था पर क्यों न पहुँच चुके हो, तुम परमेश्वर के वचन या सत्य से अविभाज्य हो, और जो कुछ तुम परमेश्वर के स्वभाव के

बारे में समझते हो और जो कुछ तुम परमेश्वर के स्वरूप के बारे में जानते हो, वह सब परमेश्वर के वचनों में व्यक्त होता है; वह सत्य से अटूट रूप से जुड़ा है। परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप अपने आप में सत्य हैं; सत्य परमेश्वर के स्वभाव और उसके स्वरूप की एक प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। वह परमेश्वर के स्वरूप को ठोस बनाता है और उसका स्पष्ट विवरण देता है; वह तुम्हें और अधिक सीधी तरह से बताता है कि परमेश्वर क्या पसंद करता है और वह क्या पसंद नहीं करता, वह तुमसे क्या कराना चाहता है और वह तुम्हें क्या करने की अनुमति नहीं देता, वह किन लोगों से घृणा करता है और वह किन लोगों से प्रसन्न होता है। परमेश्वर द्वारा व्यक्त सत्यों के पीछे लोग उसके आनंद, क्रोध, दुःख और खुशी, और साथ ही उसके सार को देख सकते हैं—यह उसके स्वभाव का प्रकट होना है। परमेश्वर के स्वरूप को जानने और उसके वचन से उसके स्वभाव को समझने के अतिरिक्त जो सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है, वह है व्यावहारिक अनुभव के द्वारा इस समझ तक पहुँचने की आवश्यकता। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को जानने के लिए अपने आप को वास्तविक जीवन से हटा लेता है, तो वह उसे प्राप्त नहीं कर पाएगा। भले ही कुछ लोग हों, जो परमेश्वर के वचन से कुछ समझ प्राप्त कर सकते हों, किंतु उनकी समझ सिद्धांतों और वचनों तक ही सीमित रहती है, और परमेश्वर वास्तव में जैसा है, वह उससे भिन्न रहती है।

हम अभी जिस बारे में संवाद कर रहे हैं, वह सब बाइबल में दर्ज कहानियों के दायरे में है। इन कहानियों के माध्यम से, और घटित हुई इन चीज़ों के विश्लेषण के माध्यम से, लोग उसके स्वभाव और उसके स्वरूप को, जो उसने प्रकट किया है, समझ सकते हैं, जो उन्हें परमेश्वर के हर पहलू को और अधिक व्यापकता से, अधिक गहराई से, अधिक विस्तार से और अधिक अच्छी तरह से समझने देता है। तो क्या परमेश्वर के स्वभाव के हर पहलू को जानने का एकमात्र तरीका इन कहानियों के माध्यम से जानना ही है? नहीं, यह एकमात्र तरीका नहीं है! क्योंकि राज्य के युग में परमेश्वर जो कहता है और जो कार्य वह करता है, वे परमेश्वर के स्वभाव को जानने में, और उसे पूरी तरह से जानने में लोगों की बेहतर सहायता कर सकते हैं। किंतु मुझे लगता है कि बाइबल में दर्ज कुछ उदाहरणों और कहानियों के माध्यम से, जिनसे लोग परिचित हैं, परमेश्वर के स्वभाव को जानना और उसके स्वरूप को समझना थोड़ा आसान है। यदि मैं तुम्हें परमेश्वर को जानने में सक्षम करने के लिए न्याय और ताड़ना के उन वचनों और सत्यों को, जिन्हें आज परमेश्वर प्रकट करता है, शब्दशः लेता हूँ, तो तुम इसे बहुत उबाऊ और थकाऊ महसूस करोगे, और कुछ लोग तो यहाँ तक महसूस करेंगे कि परमेश्वर के वचन सूत्रबद्ध प्रतीत होते हैं। परंतु यदि मैं बाइबल की इन

कहानियों को उदाहरणों के रूप में लेता हूँ, ताकि परमेश्वर के स्वभाव को जानने में लोगों को मदद मिल सके, तो वे इसे उबाऊ नहीं पाएँगे। तुम कह सकते हो कि इन उदाहरणों की व्याख्या करने के दौरान, उस समय जो परमेश्वर के हृदय में था, उसका विवरण—उसकी मनोदशा या मनोभाव, या उसके विचार और मत—लोगों को मनुष्य की भाषा में बताए गए हैं, और इस सबका उद्देश्य उन्हें यह समझाना और महसूस कराना है कि परमेश्वर का स्वरूप सूत्रबद्ध नहीं है। यह कोई पौराणिक या कुछ ऐसा नहीं है, जिसे लोग देख और छू नहीं सकते। यह कुछ ऐसा है, जो सचमुच मौजूद है, जिसे लोग महसूस कर सकते हैं और समझ सकते हैं। यह चरम लक्ष्य है। तुम कह सकते हो कि इस युग में रहने वाले लोग धन्य हैं। वे परमेश्वर के पिछले कार्य की विस्तृत समझ प्राप्त करने के लिए बाइबल की कहानियों का उपयोग कर सकते हैं; वे उसके द्वारा किए गए कार्य से उसके स्वभाव को देख सकते हैं; वे उसके द्वारा व्यक्त किए गए इन स्वभावों से मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा को समझ सकते हैं, और उसकी पवित्रता की ठोस अभिव्यक्तियों और मनुष्यों के लिए उसकी देखरेख को समझ सकते हैं, और इस प्रकार वे परमेश्वर के स्वभाव के अधिक विस्तृत और गहरे ज्ञान तक पहुँच सकते हैं। मुझे विश्वास है कि तुम सभी लोग अब इसे महसूस कर सकते हो!

प्रभु यीशु द्वारा अनुग्रह के युग में पूर्ण किए गए कार्य के दायरे में तुम परमेश्वर के स्वरूप का एक अन्य पहलू देख सकते हो। यह पहलू उसके देह के द्वारा व्यक्त किया गया था, और उसकी मानवता के कारण लोग उसे देखने और समझने में सक्षम थे। मनुष्य के पुत्र में लोगों ने देखा कि किस प्रकार देह में परमेश्वर ने अपनी मानवता को जीया, और उन्होंने देह के माध्यम से व्यक्त परमेश्वर की दिव्यता देखी। इन दो प्रकार की अभिव्यक्तियों ने लोगों को एक बिलकुल सच्चा परमेश्वर दिखाया, और इनसे वे परमेश्वर के बारे में एक भिन्न अवधारणा बना सके। किंतु संसार के सृजन और व्यवस्था के युग के अंत के बीच की समयावधि में, अर्थात् अनुग्रह के युग से पहले, लोगों द्वारा जो पहलू देखे, सुने और अनुभव किए गए, वे थे परमेश्वर की दिव्यता, परमेश्वर द्वारा अभौतिक क्षेत्र में की और कही गई चीज़ें, और वे चीज़ें, जो उसने अपने वास्तविक व्यक्तित्व से, जिसे देखा या छुआ नहीं जा सकता था, व्यक्त की थीं। प्रायः, ये चीजें लोगों को यह महसूस कराती थीं कि परमेश्वर अपनी महानता में इतना बुलंद है कि वे उसके नज़दीक नहीं जा सकते। परमेश्वर ने सामान्यतः लोगों पर जो प्रभाव छोड़ा, वह यह था कि वह स्वयं को समझने-बूझने की उनकी क्षमता के भीतर और बाहर झिलमिलाता था, और लोग यहाँ तक महसूस करते थे कि उसके हर एक

विचार और मत इतने रहस्यमय और मायावी हैं कि उन तक पहुँचने का कोई तरीका नहीं है, यहाँ तक कि वे उन्हें समझने-बूझने का प्रयास भी नहीं करते थे। लोगों के लिए, परमेश्वर से संबंधित हर चीज़ बहुत दूर थी, इतनी दूर कि लोग उसे देख नहीं सकते थे, उसे छू नहीं सकते थे। ऐसा लगता था कि वह ऊपर आकाश में है, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह बिलकुल भी अस्तित्व में नहीं है। अत: लोगों के लिए परमेश्वर के हृदय और मन को या उसकी किसी सोच को समझना अलभ्य था, यहाँ तक कि उनकी पहुँच से बाहर था। भले ही परमेश्वर ने व्यवस्था के युग में कुछ ठोस कार्य किए, और उसने कुछ विशेष वचन भी जारी किए और कुछ विशेष स्वभाव व्यक्त किए, ताकि लोग उसके बारे में कुछ सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकें और उसे समझ-बूझ सकें, फिर भी अंतत:, परमेश्वर के स्वरूप की ये अभिव्यक्तियाँ एक अभौतिक क्षेत्र से आई थीं, और लोगों ने जो समझा, जो उन्होंने जाना, वह फिर भी उसके स्वरूप का दिव्य पहलू ही था। इस अभिव्यक्ति से मानवजाति उसके स्वरूप की ठोस अवधारणा प्राप्त नहीं कर सकी, और परमेश्वर के बारे में उनकी धारणा अभी भी "एक आध्यात्मिक देह, जिसके करीब जाना कठिन है, जो अनुभूति के भीतर और बाहर झिलमिलाता है" के दायरे में ही अटकी हुई थी। चूँकि लोगों के सामने प्रकट होने के लिए परमेश्वर ने भौतिक क्षेत्र की किसी विशिष्ट वस्तु या छवि का उपयोग नहीं किया था, इसलिए वे अभी भी मानवीय भाषा का उपयोग करके उसे परिभाषित करने में असमर्थ थे। अपने हृदय और मस्तिष्क में लोग परमेश्वर के लिए एक मानक स्थापित करने, उसे मूर्त मानवीय बनाने के लिए हमेशा अपनी भाषा का उपयोग करना चाहते थे, जैसे कि वह कितना ऊँचा है, वह कितना बड़ा है, वह कैसा दिखाई देता है, वह ठीक-ठीक क्या पसंद करता है और उसका व्यक्तित्व कैसा है। वास्तव में, अपने हृदय में परमेश्वर जानता था कि लोग इस तरह से सोचते हैं। वह लोगों की आवश्यकताओं के बारे में बहुत स्पष्ट था, और निस्संदेह वह यह भी जानता था कि उसे क्या करना चाहिए, इसलिए अनुग्रह के युग में उसने एक अलग तरीके से अपने कार्य को अंजाम दिया। यह नया तरीका दिव्य और मानवीय दोनों था। जिस समयावधि में प्रभु यीशु काम कर रहा था, उसमें लोग देख सकते थे कि परमेश्वर की अनेक मानवीय अभिव्यक्तियाँ हैं। उदाहरण के लिए, वह नृत्य कर सकता था, वह विवाहों में शामिल हो सकता था, वह लोगों के साथ संगति कर सकता था, उनसे बात कर सकता था और उनके साथ विभिन्न मामलों में चर्चा कर सकता था। इसके अतिरिक्त, प्रभु यीशु ने बहुत-सा ऐसा कार्य भी पूरा किया, जो उसकी दिव्यता दर्शाता था, और निस्संदेह यह समस्त कार्य परमेश्वर के स्वभाव की अभिव्यक्ति और प्रकाशन था। इस दौरान, चूँकि परमेश्वर की दिव्यता एक साधारण देह में उस

रूप में साकार हुई थी, जिसे लोग देख और छू सकते थे, इसलिए अब उन्होंने यह महसूस नहीं किया कि वह अनुभूति के भीतर और बाहर झिलमिलाता है, या वे उसके करीब नहीं जा सकते। इसके विपरीत, वे मनुष्य के पुत्र की हर गतिविधि, उसके वचनों और कार्य के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा या उसकी दिव्यता को समझने की कोशिश कर सकते थे। मनुष्य के देहधारी पुत्र ने अपनी मानवता के माध्यम से परमेश्वर की दिव्यता व्यक्त की और परमेश्वर की इच्छा को मानवजाति तक पहुँचाया। और परमेश्वर की इच्छा और स्वभाव की अभिव्यक्ति के माध्यम से उसने लोगों के सामने उस परमेश्वर को भी प्रकट किया, जिसे देखा और छुआ नहीं जा सकता और जो आध्यात्मिक क्षेत्र में रहता है। लोगों ने स्वयं परमेश्वर को मूर्त रूप में, माँस और रक्त से निर्मित देखा। तो मनुष्य के देहधारी पुत्र ने स्वयं परमेश्वर की पहचान, हैसियत, छवि, स्वभाव और उसके स्वरूप जैसी चीज़ों को ठोस और मानवीय बना दिया। भले ही परमेश्वर की छवि के संबंध में मनुष्य के पुत्र के बाहरी रूप-रंग की कुछ सीमाएँ थीं, किंतु उसका सार और स्वरूप स्वयं परमेश्वर की पहचान और हैसियत दर्शाने में पूर्णतः समर्थ थे—केवल अभिव्यक्ति के रूप में कुछ भिन्नताएँ थीं। हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि मनुष्य के पुत्र ने अपनी मानवता और दिव्यता, दोनों रूपों में स्वयं परमेश्वर की पहचान और हैसियत दर्शाई। हालाँकि इस दौरान परमेश्वर ने देह के माध्यम से कार्य किया, देह के परिप्रेक्ष्य से बात की और मानवजाति के सामने मनुष्य के पुत्र की पहचान और हैसियत के साथ खड़ा हुआ, और इसने लोगों को मानवजाति के बीच परमेश्वर के सच्चे वचनों और कार्य को देखने-सुनने और अनुभव करने का अवसर दिया। इसने लोगों को विनम्रता के बीच उसकी दिव्यता और महानता के संबंध में अंतर्दृष्टि और साथ ही परमेश्वर की प्रामाणिकता और वास्तविकता की एक प्रारंभिक समझ और परिभाषा भी प्रदान की। भले ही प्रभु यीशु द्वारा पूर्ण किया गया कार्य, कार्य करने के उसके तरीके और उसके बोलने का परिप्रेक्ष्य आध्यात्मिक क्षेत्र में परमेश्वर के वास्तविक व्यक्तित्व से भिन्न थे, फिर भी उसकी हर चीज़ वास्तव में स्वयं परमेश्वर को दर्शाती थी, जिसे मानवजाति ने पहले कभी नहीं देखा था—इससे इनकार नहीं किया जा सकता! अर्थात्, परमेश्वर चाहे किसी भी रूप में प्रकट हो, वह चाहे किसी भी परिप्रेक्ष्य में बात करे, या किसी भी छवि में वह मानवजाति के सामने आए, वह अपने सिवाय किसी को नहीं दर्शाता। वह न तो किसी मनुष्य को दर्शा सकता है, न ही भ्रष्ट मानवजाति को दर्शा सकता है। परमेश्वर स्वयं परमेश्वर है, और इससे इनकार नहीं किया जा सकता।

आगे हम अनुग्रह के युग में प्रभु यीशु द्वारा दिए गए एक दृष्टांत पर नज़र डालेंगे।

3. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत

मत्ती 18:12-14 तुम क्या सोचते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्यानबे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूँढ़ेगा? और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह उन निन्यानबे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं, इतना आनन्द नहीं करेगा जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा। ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।

यह अंश एक दृष्टांत है—यह लोगों को किस प्रकार की भावना देता है? यहाँ उपयोग किया गया अभिव्यक्ति का यह तरीका—दृष्टांत—मानवीय भाषा में एक अलंकार है, और इस प्रकार यह मनुष्य के ज्ञान के दायरे के भीतर आता है। यदि परमेश्वर ने व्यवस्था के युग में ऐसा ही कुछ कहा होता, तो लोगों को लगता कि ये वचन वास्तव में परमेश्वर के अनुरूप नहीं हैं, लेकिन जब अनुग्रह के युग में मनुष्य के पुत्र ने ये वचन कहे, तब लोगों को ये सुकून देने वाले, गर्मजोशी से भरे और अंतरंग महसूस हुए। जब परमेश्वर देह बन गया, जब वह एक मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, तो उसने अपने हृदय की वाणी व्यक्त करने के लिए अपनी मानवता से आए एक बहुत ही उचित दृष्टांत का उपयोग किया। इस वाणी ने परमेश्वर की अपनी वाणी और उस कार्य का प्रतिनिधित्व किया, जो वह उस युग में करना चाहता था। इसने अनुग्रह के युग के लोगों के प्रति परमेश्वर के रवैये को भी दर्शाया। लोगों के प्रति परमेश्वर के रवैये के परिप्रेक्ष्य से देखें तो, उसने हर व्यक्ति की तुलना एक भेड़ से की। यदि एक भेड़ खो जाती है, तो उसे खोजने के लिए वह जो कुछ भी कर सकता है, सो करेगा। इसने उस समय मनुष्यों के बीच परमेश्वर के कार्य के सिद्धांत को दर्शाया, जब वह देह में था। परमेश्वर ने उस कार्य में अपने संकल्प और रवैये को दर्शाने के लिए इस दृष्टांत का उपयोग किया। यह परमेश्वर के देह बनने का लाभ था : वह मानवजाति के ज्ञान का लाभ उठा सकता था और लोगों से बात करने और अपनी इच्छा व्यक्त करने के लिए मानवीय भाषा का उपयोग कर सकता था। उसने मनुष्य को अपनी गहन, दिव्य भाषा, जिसे समझने में लोगों को संघर्ष करना पड़ता था, मानवीय भाषा में, मानवीय तरीके से समझाई या "अनुवादित" की। इससे लोगों को उसकी इच्छा को समझने और यह जानने में सहायता मिली कि वह क्या करना चाहता है। वह मानवीय भाषा का प्रयोग करके मानवीय परिप्रेक्ष्य से लोगों के साथ वार्तालाप कर सकता था, और लोगों के साथ उस तरीके से बातचीत कर सकता था, जिसे वे समझ सकते थे। यहाँ तक कि वह मानवीय भाषा और ज्ञान का उपयोग करके बोल और कार्य

कर सकता था, ताकि लोग परमेश्वर की दयालुता और घनिष्ठता महसूस कर सकें, ताकि वे उसके हृदय को देख सकें। तुम लोग इसमें क्या देखते हो? क्या परमेश्वर के वचनों और कार्यों में कोई निषेध है? लोग समझते हैं कि ऐसा कोई तरीका नहीं है, जिससे परमेश्वर यह बताने के लिए कि स्वयं परमेश्वर क्या कहना चाहता है, कौन-सा कार्य करना चाहता है, या अपनी स्वयं की इच्छा व्यक्त करने के लिए वह मनुष्यों के ज्ञान, भाषा या बोलने के तरीकों का उपयोग कर सके। किंतु यह गलत सोच है। परमेश्वर ने इस प्रकार के दृष्टांत का उपयोग इसलिए किया, ताकि लोग परमेश्वर की वास्तविकता और ईमानदारी महसूस कर सकें, और उस समयावधि के दौरान लोगों के प्रति उसके रवैये को देख सकें। इस दृष्टांत ने लंबे समय से व्यवस्था के अधीन जी रहे लोगों को स्वप्न से जगा दिया, और इसने अनुग्रह के युग में रहने वाले लोगों को भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रेरित किया। इस दृष्टांत वाले अंश को पढ़कर लोग मानवजाति को बचाने में परमेश्वर की ईमानदारी को जानते हैं और परमेश्वर के हृदय में मानवजाति को दिए गए वजन और महत्व को समझते हैं।

आओ, इस अंश के अंतिम वाक्य पर एक नज़र डालें : "ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।" क्या ये प्रभु यीशु के अपने वचन थे या उसके स्वर्गिक पिता के वचन थे? सतही तौर पर ऐसा लगता है कि यह प्रभु यीशु है जो बोल रहा है, किंतु उसकी इच्छा स्वयं परमेश्वर की इच्छा को दर्शाती है, इसीलिए उसने कहा : "ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।" उस समय लोग केवल स्वर्गिक पिता को ही परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते थे, और यह मानते थे कि यह व्यक्ति, जिसे वे अपनी आँखों के सामने देखते हैं, बस उसके द्वारा भेजा हुआ है और यह स्वर्गिक पिता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। इसीलिए प्रभु यीशु को इस दृष्टांत के अंत में यह वाक्य जोड़ना पड़ा, ताकि लोग वास्तव में मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा अनुभव कर सकें, और उसके कथन की प्रामाणिकता और सटीकता महसूस कर सकें। भले ही यह वाक्य कहना एक साधारण बात थी, किंतु यह बहुत परवाह और प्रेम के साथ बोला गया था और इसने प्रभु यीशु की विनम्रता और प्रच्छन्नता प्रकट की। चाहे परमेश्वर देह बना या उसने आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य किया, वह मनुष्य के हृदय को सर्वोत्तम ढंग से जानता था, और सर्वोत्तम ढंग से समझता था कि लोगों को किस चीज़ की आवश्यकता है, और जानता था कि लोग किस बात से चिंतित हैं और क्या चीज़ उन्हें भ्रमित करती है, इसीलिए उसने यह वाक्य जोड़ा। इस वाक्य ने मानवजाति में छिपी एक समस्या उजागर कर दी : मनुष्य के

पुत्र ने जो कुछ कहा, लोगों को उस पर संशय था, अर्थात्, जब प्रभु यीशु बोल रहा था, तो उसे यह जोड़ना पड़ा : "ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो," और केवल इस आधार पर ही उसके वचन लोगों को अपनी सटीकता का विश्वास दिलाने और उनकी विश्वसनीयता बढ़ाने में सफल हो सकते थे। यह दिखाता है कि जब परमेश्वर एक सामान्य मनुष्य का पुत्र बन गया, तब परमेश्वर और मानवजाति के बीच एक बड़ा असहज संबंध था, और कि मनुष्य के पुत्र की स्थिति बड़ी उलझनभरी थी। इससे यह भी पता चलता है कि उस समय मनुष्यों के बीच प्रभु यीशु की हैसियत कितनी मामूली थी। जब उसने यह कहा, तो यह वास्तव में लोगों को यह बताने के लिए था : तुम लोग निश्चिंत हो सकते हो—ये वचन मेरे अपने हृदय की बात नहीं दर्शाते, बल्कि ये उस परमेश्वर की इच्छा हैं, जो तुम लोगों के हृदय में है। मानवजाति के लिए, क्या यह एक विडंबना नहीं थी? भले ही देह में रहकर काम कर रहे परमेश्वर को अनेक ऐसे फायदे थे, जो उसके अपने व्यक्तित्व में नहीं थे, फिर भी उसे उनके संदेहों और अस्वीकृति को और साथ ही उनकी संवेदनशून्यता और मूढ़ता को भी सहन करना पड़ा। ऐसा कहा जा सकता है कि मनुष्य के पुत्र के कार्य की प्रक्रिया मनुष्य की अस्वीकृति और उसके द्वारा अपने साथ प्रतिस्पर्धा किए जाने का अनुभव करने की प्रक्रिया थी। इससे भी अधिक, यह मानवजाति के भरोसे को निरंतर जीतने और अपने स्वरूप और सार के माध्यम से मानवजाति पर विजय पाने के लिए कार्य करने की प्रक्रिया थी। यह इतना ही नहीं था कि देहधारी परमेश्वर शैतान के विरुद्ध जमीनी लड़ाई लड़ रहा था; इससे भी अधिक यह परमेश्वर का एक सामान्य मनुष्य बनकर अपने अनुयायियों के साथ संघर्ष शुरू करना था, और इस संघर्ष में मनुष्य के पुत्र ने अपनी विनम्रता के साथ, अपने स्वरूप के साथ और अपने प्रेम और बुद्धि के साथ अपना कार्य पूरा किया। उसने उन लोगों को प्राप्त किया जिन्हें वह चाहता था, वह पहचान और हैसियत प्राप्त की जिसका वह हकदार था, और अपने सिंहासन की ओर "लौट" गया।

आगे, आओ पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित दो अंश देखें।

4. सात बार के सत्तर गुने तक क्षमा करो

मत्ती 18:21-22 तब पतरस ने पास आकर उस से कहा, "हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?" यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक।"

5. प्रभु का प्रेम

मत्ती 22:37-39 उसने उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

इन दोनों अंशों में से एक क्षमा के बारे में बात करता है और दूसरा प्रेम के बारे में। ये दोनों विषय वास्तव में उस कार्य पर प्रकाश डालते हैं, जिसे प्रभु यीशु अनुग्रह के युग में करना चाहता था।

जब परमेश्वर देह बन गया, तो वह अपने साथ अपने कार्य का एक चरण, जो कि एक विशिष्ट कार्य था, और उस स्वभाव को लेकर आया, जिसे वह इस युग में व्यक्त करना चाहता था। उस अवधि में जो कुछ भी मनुष्य के पुत्र ने किया, वह सब उस कार्य के चारों ओर घूमता था, जिसे परमेश्वर इस युग में करना चाहता था। वह न तो उससे कुछ ज़्यादा करता, न कम। हर एक बात जो उसने कही और हर एक प्रकार का कार्य जो उसने किया, वह सब इस युग से संबंधित था। चाहे उसने इसे मानवीय तरीके से मानवीय भाषा में व्यक्त किया या दिव्य भाषा के माध्यम से, और चाहे उसने ऐसा किसी भी तरह से या किसी भी परिप्रेक्ष्य से किया हो, उसका उद्देश्य लोगों को यह समझने में मदद करना था कि वह क्या करना चाहता है, उसकी क्या इच्छा है और लोगों से उसकी क्या अपेक्षाएँ हैं। वह अपनी इच्छा समझने और जानने, और मानवजाति को बचाने के अपने कार्य को समझने में लोगों की सहायता करने के लिए विभिन्न साधनों और परिप्रेक्ष्यों का उपयोग कर सकता था। इसलिए अनुग्रह के युग में हम प्रभु यीशु को यह व्यक्त करने के लिए कि वह मानवजाति को क्या बताना चाहता है, अधिकांश समय मानवीय भाषा का उपयोग करते हुए देखते हैं। इससे भी अधिक, हम उसे एक साधारण मार्गदर्शक के परिप्रेक्ष्य से लोगों के साथ बात करते हुए, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए और उनके अनुरोध के अनुसार उनकी सहायता करते हुए देखते हैं। कार्य करने का यह तरीका व्यवस्था के युग में नहीं देखा गया था, जो अनुग्रह के युग से पहले आया था। वह मानवजाति के साथ अधिक अंतरंग और उनके प्रति अधिक करुणामय, और साथ ही रूप और तरीके दोनों में व्यावहारिक परिणाम प्राप्त करने में अधिक सक्षम हो गया था। सात बार के सत्तर गुने तक लोगों को क्षमा करने का रूपक इस बिंदु को वास्तव में स्पष्ट करता है। इस रूपक में प्रयुक्त संख्या द्वारा प्राप्त उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि प्रभु यीशु ने जब ऐसा कहा था, उस समय उसका क्या इरादा था। उसका इरादा था कि लोगों को दूसरों को क्षमा कर देना चाहिए—एक या दो बार नहीं, यहाँ तक

कि सात बार भी नहीं, बल्कि सात बार के सत्तर गुने तक। "सात बार के सत्तर गुने तक" के विचार के भीतर किस प्रकार का विचार निहित है? वह विचार यह है कि लोग क्षमा को अपना खुद का उत्तरदायित्व बना लें, ऐसी चीज़ जो उन्हें अवश्य सीखनी चाहिए, और ऐसा मार्ग जिस पर उन्हें अवश्य चलना चाहिए। हालाँकि यह मात्र एक रूपक था, किंतु इसने एक महत्त्वपूर्ण बिंदु को उजागर करने का काम किया। इसने उसका आशय गहराई से समझने और अभ्यास के उचित तरीके, सिद्धांत और मानक खोजने में लोगों की सहायता की। इस रूपक ने लोगों को यह स्पष्ट रूप से समझने में सहायता की और उन्हें एक सही धारणा दी—कि उन्हें क्षमा सीखनी चाहिए और बिना किसी शर्त के कितनी भी बार क्षमा करना चाहिए, किंतु दूसरों के प्रति सहनशीलता और समझदारी के रवैये के साथ। जब प्रभु यीशु ने यह कहा, तब उसके हृदय में क्या था? क्या वह वास्तव में "सात बार के सत्तर गुने" की संख्या के बारे में सोच रहा था? नहीं, वह उसके बारे में नहीं सोच रहा था। क्या परमेश्वर दवारा मनुष्य को क्षमा किए जाने की कोई संख्या है? ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो यहाँ उल्लिखित "बारियों की संख्या" में बहुत रुचि रखते हैं, जो वास्तव में इस संख्या का उद्गम और अर्थ समझना चाहते हैं। वे समझना चाहते हैं कि यह संख्या प्रभु यीशु के मुँह से क्यों निकली थी; वे मानते हैं कि इस संख्या का कोई अधिक गहरा निहितार्थ है। किंतु वास्तव में यह सिर्फ मनुष्य की बोली की एक संख्या थी, जिसका परमेश्वर ने उपयोग किया था। किसी भी अभिप्राय या अर्थ को मानवजाति से प्रभु यीशु की अपेक्षाओं के साथ लिया जाना चाहिए। जब परमेश्वर देह नहीं बना था, तब लोग उसके कथन को अधिक नहीं समझते थे, क्योंकि उसके वचन पूर्ण दिव्यता से आते थे। उसके कथन का परिप्रेक्ष्य और संदर्भ मानवजाति के लिए अदृश्य और अगम्य था; वह आध्यात्मिक क्षेत्र से व्यक्त होता था, जिसे लोग देख नहीं सकते थे। वे लोग जो देह में जीते थे, वे आध्यात्मिक क्षेत्र से होकर नहीं गुज़र सकते थे। परंतु देह बनने के बाद परमेश्वर ने मानवजाति से मानवीय परिप्रेक्ष्य से बात की, और वह आध्यात्मिक क्षेत्र के दायरे से बाहर आया और उसे पार कर गया। वह अपना स्वभाव, अपनी इच्छा और अपना रवैया उन चीज़ों के माध्यम से, जिनकी मनुष्य कल्पना कर सकते थे, जिन्हें उन्होंने अपने जीवन में देखा था और जो उनके सामने आई थीं, और ऐसी पद्धतियों के उपयोग द्वारा जिन्हें मनुष्य स्वीकार कर सकते थे, और ऐसी भाषा में जिसे वे समझ सकते थे, और ऐसे ज्ञान के द्वारा व्यक्त कर सका, जिसे वे ग्रहण कर सकते थे, ताकि मानवजाति अपनी क्षमता के दायरे के भीतर और अपनी योग्यता की सीमा तक परमेश्वर को समझ और जान सके, और उसके इरादे और अपेक्षित मानक समझ सके। यह मानवता में परमेश्वर के कार्य की पद्धति और सिद्धांत

था। यद्यपि देह में कार्य करने के परमेश्वर के तरीके और सिद्धांत मुख्यतः मानवता के द्वारा या उसके माध्यम से प्राप्त किए गए थे, फिर भी इसने सचमुच ऐसे परिणाम प्राप्त किए, जिन्हें सीधे दिव्यता में कार्य करने से प्राप्त नहीं किया जा सकता था। मानवता में परमेश्वर का कार्य ज़्यादा ठोस, प्रामाणिक और लक्षित था, उसकी पद्धतियाँ कहीं ज़्यादा लचीली थीं, तथा आकार में वह व्यवस्था के युग से आगे निकल गया।

आगे, आओ प्रभु से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने के बारे में बात करें। क्या यह सीधे दिव्यता में व्यक्त की गई चीज़ है? नहीं, स्पष्ट रूप से नहीं! ये सब वे चीज़ें थीं, जिन्हें मनुष्य के पुत्र ने मानवता में कहा था; केवल मनुष्य ही ऐसी बात कहेंगे, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर। दूसरों से उसी तरह प्रेम कर, जिस तरह तू अपने जीवन को सँजोता है।" बोलने का यह तरीका केवल मनुष्य का है। परमेश्वर ने कभी इस तरह बात नहीं की। कम से कम, परमेश्वर के पास अपनी दिव्यता में इस प्रकार की भाषा नहीं है, क्योंकि उसे मनुष्य के प्रति अपने प्रेम को विनियमित करने के लिए इस प्रकार के सिद्धांत की आवश्यकता नहीं होती, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर," क्योंकि मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम उसके स्वभाव का स्वाभाविक प्रकाशन है। तुम लोगों ने कभी परमेश्वर को ऐसा कुछ कहते हुए सुना है : "मैं मनुष्य से उसी तरह प्रेम करता हूँ, जिस तरह मैं अपने आप से प्रेम करता हूँ"? तुमने नहीं सुना होगा, क्योंकि प्रेम परमेश्वर के सार और स्वरूप में है। मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम, उसका रवैया और लोगों के साथ उसके व्यवहार का तरीका उसके स्वभाव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति और प्रकाशन हैं। उसे जानबूझकर किसी निश्चित तरीके से ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है, या अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने के लिए जानबूझकर किसी निश्चित पद्धति या किसी नैतिक संहिता का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है—उसके पास पहले से ही इस प्रकार का सार है। तुम इसमें क्या देखते हो? जब परमेश्वर ने मानवता में काम किया, तो उसकी बहुत-सी पद्धतियाँ, वचन और सत्य मानवीय तरीके से व्यक्त हुए थे। परंतु साथ ही परमेश्वर का स्वभाव, स्वरूप और उसकी इच्छा भी लोगों के जानने और समझने के लिए व्यक्त हुए थे। जो कुछ उन्होंने जाना और समझा, वह वास्तव में उसका सार और उसका स्वरूप था, जो स्वयं परमेश्वर की अंतर्निहित पहचान और हैसियत दर्शाते हैं। अर्थात्, देह में मनुष्य के पुत्र ने स्वयं परमेश्वर के अंतर्निहित स्वभाव और सार को अधिकतम संभव सीमा तक और यथासंभव सटीक तरीके से व्यक्त किया। न केवल मनुष्य के पुत्र की मानवता स्वर्गिक परमेश्वर के साथ मनुष्य के संवाद और

अंतःक्रिया में कोई व्यवधान या बाधा नहीं थी, बल्कि वास्तव में वह मानवजाति के लिए सृष्टि के प्रभु से जुड़ने का एकमात्र माध्यम और एकमात्र सेतु थी। अब, इस बिंदु पर, क्या तुम लोग यह महसूस नहीं करते कि अनुग्रह के युग में प्रभु यीशु द्वारा किए गए कार्य की प्रकृति और पद्धतियों और कार्य के वर्तमान चरण में अनेक समानताएँ हैं? कार्य का यह वर्तमान चरण भी परमेश्वर के स्वभाव को व्यक्त करने के लिए ढेर सारी मानवीय भाषा का उपयोग करता है, और यह स्वयं परमेश्वर की इच्छा व्यक्त करने के लिए मनुष्य के दैनिक जीवन और उसके ज्ञान में से ढेर सारी भाषा और पद्धतियों का प्रयोग करता है। जब परमेश्वर देह बन जाता है, तो फिर चाहे वह मानवीय परिप्रेक्ष्य से बात करे या दिव्य परिप्रेक्ष्य से, अभिव्यक्ति की उसकी ढेर सारी भाषा और पद्धतियाँ मनुष्य की भाषा और पद्धतियों के माध्यम से आती हैं। अर्थात्, जब परमेश्वर देह बनता है, तो यह तुम्हारे लिए परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धि को देखने और परमेश्वर के प्रत्येक सच्चे पहलू को जानने का बेहतरीन अवसर होता है। जब परमेश्वर देह बना, तो मानवता में बड़े होते हुए उसने मानवजाति के ज्ञान, सामान्य ज्ञान, भाषा और अभिव्यक्ति की पद्धतियों को समझा, सीखा और ग्रहण किया। देहधारी परमेश्वर में ये चीज़ें उन मनुष्यों से आई थीं, जिन्हें उसने सृजित किया था। वे देहधारी परमेश्वर के लिए अपने स्वभाव और दिव्यता को व्यक्त करने के साधन बन गए, जिससे वह मानवीय परिप्रेक्ष्य से और मानवीय भाषा के उपयोग द्वारा मानवजाति के बीच कार्य करते हुए अपने कार्य को अधिक प्रासंगिक, अधिक प्रामाणिक और अधिक सटीक बना पाया। इससे उसका कार्य लोगों के लिए अधिक सुगम और आसानी से समझने योग्य बन गया, और इस प्रकार उसने वे परिणाम प्राप्त किए, जो परमेश्वर चाहता था। क्या इस तरह देह में कार्य करना परमेश्वर के लिए अधिक व्यावहारिक नहीं है? क्या यह परमेश्वर की बुद्धि नहीं है? जब परमेश्वर देहधारी हुआ, और जब परमेश्वर का देह उस कार्य को सँभालने में सक्षम हुआ जिसे वह करना चाहता था, तो ऐसा तब हुआ जब वह व्यावहारिक रूप से अपने स्वभाव और अपने कार्य को व्यक्त कर सकता था, और यही वह समय भी था जब वह मनुष्य के पुत्र के रूप में आधिकारिक रूप से अपनी सेवकाई की शुरुआत कर सकता था। इसका मतलब था कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच अब कोई "पीढ़ी का अंतर" नहीं रहा था, कि परमेश्वर शीघ्र ही संदेशवाहकों के माध्यम से संवाद करने का अपना कार्य रोक देगा, और स्वयं परमेश्वर देह में वे सभी वचन और कार्य व्यक्तिगत रूप से व्यक्त कर सकेगा, जिन्हें वह व्यक्त करना चाहता है। इसका अर्थ यह भी था कि जिन लोगों को परमेश्वर बचाता है, वे उसके अधिक करीब थे, और उसके प्रबंधन-कार्य ने एक नए क्षेत्र में प्रवेश कर लिया

था, और संपूर्ण मानवजाति का सामना एक नए युग से होने वाला था।

जिस किसी ने भी बाइबल पढ़ी है, वह जानता है कि जब प्रभु यीशु का जन्म हुआ था, तो बहुत-सी चीज़ें घटित हुई थीं। उन घटनाओं में से सबसे बड़ी थी शैतानों के राजा द्वारा उसका शिकार किया जाना, जो इतनी चरम घटना थी कि उस क्षेत्र के दो वर्ष या उससे कम उम्र के सभी बच्चों की हत्या कर दी गई थी। यह स्पष्ट है कि मनुष्यों के बीच देह धारण कर परमेश्वर ने बड़ा जोखिम उठाया था; और मानवजाति को बचाने के अपने प्रबंधन को पूरा करने के लिए उसने जो बड़ी कीमत चुकाई, वह भी स्पष्ट है। परमेश्वर द्वारा देह में मानवजाति के बीच किए गए अपने कार्य से रखी गई बड़ी आशाएँ भी स्पष्ट हैं। जब परमेश्वर का देह मानवजाति के बीच अपना कार्य करने में सक्षम हुआ, तो उसे कैसा लगा? लोगों को इसे थोड़ा-बहुत समझने में सक्षम होना चाहिए, है न? कम से कम, परमेश्वर प्रसन्न था, क्योंकि वह मानवजाति के बीच अपना नया कार्य आरंभ कर सकता था। जब प्रभु यीशु का बपतिस्मा हुआ और उसने आधिकारिक रूप से अपनी सेवकाई पूरी करने का अपना कार्य आरंभ किया, तो परमेश्वर का हृदय आनंद से अभिभूत हो गया, क्योंकि इतने वर्षों की प्रतीक्षा और तैयारी के बाद वह अंततः एक सामान्य मनुष्य की देह धारण कर सका था और मांस और रक्त से बने मनुष्य के रूप में, जिसे लोग देख और छू सकते थे, अपना नया कार्य आरंभ कर सका था। अंततः वह मनुष्य की पहचान के माध्यम से लोगों के साथ आमने-सामने और खुलकर बात कर सकता था। अंततः परमेश्वर मानवीय भाषा में, मानवीय तरीके से, मानवजाति के साथ रूबरू हो सकता था; वह मानवजाति का भरण-पोषण कर सकता था, उन्हें प्रबुद्ध कर सकता था, और मानवीय भाषा का उपयोग कर उनकी सहायता कर सकता था; वह उनके साथ एक ही मेज़ पर बैठकर भोजन कर सकता था और उसी जगह पर उनके साथ रह सकता था। वह मनुष्यों को देख भी सकता था, चीज़ों को देख सकता था, और हर चीज़ को उसी तरह से देख सकता था जैसे मनुष्य देखते हैं, और वह भी अपनी आँखों से। परमेश्वर के लिए, यह पहले से ही देह में अपने कार्य की उसकी पहली विजय थी। यह भी कहा जा सकता है कि यह एक महान कार्य की पूर्णता थी—निस्संदेह परमेश्वर इससे सबसे अधिक प्रसन्न था। तबसे परमेश्वर ने मानवजाति के बीच अपने कार्य में पहली बार एक प्रकार का सुकून महसूस किया। घटित होने वाली ये सभी घटनाएँ बहुत व्यावहारिक और स्वाभाविक थीं, और जो सुकून परमेश्वर ने महसूस किया, वह भी बहुत ही वास्तविक था। मानवजाति के लिए, हर बार जब भी परमेश्वर के कार्य का एक नया चरण पूरा होता है, और हर बार जब परमेश्वर संतुष्ट महसूस करता है, तो ऐसा तब होता है, जब मनुष्य परमेश्वर

और उद्धार के निकट आ सकता है। परमेश्वर के लिए यह उसके नए कार्य की शुरुआत भी है, अपनी प्रबंधन-योजना में आगे बढ़ना भी है, और इसके अतिरिक्त, ये वे अवसर भी होते हैं, जब उसके इरादे पूर्णता की ओर अग्रसर होते हैं। मानवजाति के लिए, ऐसे अवसर का आगमन सौभाग्यशाली और बहुत अच्छा है; उन सबके लिए जो परमेश्वर के उद्धार की प्रतीक्षा करते हैं, यह सबसे महत्वपूर्ण और आनंदमय समाचार है। जब परमेश्वर कार्य का एक नया चरण कार्यान्वित करता है, तब वह एक नई शुरुआत करता है, और जब इस नए कार्य और नई शुरुआत का सूत्रपात और प्रस्तुति मानवजाति के बीच की जाती है, तो ऐसा तब होता है जब इस कार्य के चरण का परिणाम पहले से ही निर्धारित और पूरा कर लिया जाता है, और उसका अंतिम परिणाम और फल परमेश्वर द्वारा पहले ही देख लिया गया होता है। साथ ही, ऐसा तब होता है, जब ये परिणाम परमेश्वर को संतुष्टि महसूस कराते हैं, और निस्संदेह ऐसा तब होता है, जब उसका हृदय प्रसन्न होता है। परमेश्वर आश्वस्त महसूस करता है, क्योंकि अपनी नज़रों में उसने पहले ही उन लोगों को देख और निर्धारित कर लिया है जिनकी उसे तलाश है, और वह पहले ही इस समूह को प्राप्त कर चुका है, ऐसा समूह जो उसके कार्य को सफल करने और उसे संतुष्टि प्रदान करने में सक्षम है। इस प्रकार, वह अपनी चिंताएँ एक ओर रख देता है और प्रसन्नता महसूस करता है। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर का देह मनुष्यों के बीच एक नया कार्य आरंभ करने में समर्थ होता है, और वह उस कार्य को बिना किसी बाधा के करना आरंभ कर देता है जो उसे करना चाहिए, और जब उसे महसूस होता है कि सब-कुछ पूरा किया जा चुका है, तो अंत उसकी नज़र में पहले से ही होता है। इस कारण से वह संतुष्ट होता है और उसका हृदय प्रसन्न होता है। परमेश्वर की प्रसन्नता किस प्रकार व्यक्त होती है? क्या तुम लोग सोच सकते हो कि इसका क्या उत्तर हो सकता है? क्या परमेश्वर रो सकता है? क्या परमेश्वर ताली बजा सकता है? क्या परमेश्वर नृत्य कर सकता है? क्या परमेश्वर गाना गा सकता है? यदि हाँ, तो वह कौन-सा गीत गाएगा? निस्संदेह परमेश्वर एक सुंदर और द्रवित कर देने वाला गीत गा सकता है, ऐसा गीत जो उसके हृदय के आनंद और प्रसन्नता को व्यक्त कर सकता हो। वह उसे मनुष्य के लिए गा सकता है, अपने लिए गा सकता है, और सभी चीज़ों के लिए गा सकता है। परमेश्वर की प्रसन्नता किसी भी तरीके से व्यक्त हो सकती है—यह सब सामान्य है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनंद और दुःख हैं, और उसकी विभिन्न भावनाएँ विभिन्न तरीकों से व्यक्त हो सकती हैं। यह उसका अधिकार है, और इससे अधिक कुछ भी सामान्य और उचित नहीं हो सकता। लोगों को इस बारे में कुछ और नहीं सोचना चाहिए। तुम लोगों को परमेश्वर से यह कहते हुए कि उसे यह नहीं

करना चाहिए या वह नहीं करना चाहिए, उसे इस तरह से कार्य नहीं करना चाहिए या उस तरह से कार्य नहीं करना चाहिए, परमेश्वर पर "वशीकरण मंत्र"[क] का उपयोग करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, और इस प्रकार उसकी खुशी या कोई भी अन्य भावना सीमित नहीं करनी चाहिए। लोगों के विचार में परमेश्वर प्रसन्न नहीं हो सकता, आँसू नहीं बहा सकता, रो नहीं सकता—वह कोई मनोभाव व्यक्त नहीं कर सकता। इन दो संगतियों के दौरान हमने जो बातचीत की है, उससे मैं यह विश्वास करता हूँ कि तुम लोग परमेश्वर को अब इस तरह से नहीं देखोगे, बल्कि परमेश्वर को कुछ स्वतंत्रता और राहत लेने दोगे। यह एक बहुत अच्छी बात है। भविष्य में यदि तुम लोग परमेश्वर की उदासी के बारे में सुनकर सचमुच उसकी उदासी महसूस कर पाओ, और उसकी प्रसन्नता के बारे में सुनकर तुम लोग सचमुच उसकी प्रसन्नता महसूस कर पाओ, तो कम से कम तुम लोग स्पष्ट रूप से यह जानने और समझने में समर्थ होगे कि परमेश्वर को क्या चीज़ प्रसन्न करती है और क्या चीज़ उदास करती है। जब तुम परमेश्वर के उदास होने पर उदास महसूस कर पाओ और उसके प्रसन्न होने पर प्रसन्न महसूस कर पाओ, तो उसने तुम्हारे हृदय को पूरी तरह से प्राप्त कर लिया होगा और अब उसके और तुम्हारे बीच में कोई बाधा नहीं होगी। तुम परमेश्वर को अब मानवीय कल्पनाओं, धारणाओं और ज्ञान से विवश करने की कोशिश नहीं करोगे। उस समय परमेश्वर तुम्हारे हृदय में जीवित और जीवंत होगा। वह तुम्हारे जीवन का परमेश्वर होगा और तुम्हारी हर चीज़ का स्वामी होगा। क्या तुम लोगों की इस प्रकार की आकांक्षा है? क्या तुम आश्वस्त हो कि तुम इसे हासिल कर सकते हो?

आगे, आओ पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित अंश पढ़ें।

6. यीशु का पहाड़ी उपदेश

धन्य वचन (मत्ती 5:3-12)

नमक और ज्योति (मत्ती 5:13-16)

व्यवस्था की शिक्षा (मत्ती 5:17-20)

क्रोध और हत्या (मत्ती 5:21-26)

व्यभिचार (मत्ती 5:27-30)

तलाक (मत्ती 5:31-32)

शपथ (मत्ती 5:33-37)

प्रतिशोध (मत्ती 5:38-42)

शत्रुओं से प्रेम (मत्ती 5:43-48)

दान (मत्ती 6:1-4)

प्रार्थना (मत्ती 6:5-8)

7. प्रभु यीशु के दृष्टांत

बीज बोने वाले का दृष्टांत (मत्ती 13:1-9)

जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:24-30)

राई के बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:31-32)

खमीर का दृष्टांत (मत्ती 13:33)

जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (मत्ती 13:36-43)

छिपे हुए खजाने का दृष्टांत (मत्ती 13:44)

अनमोल मोती का दृष्टांत (मत्ती 13:45-46)

जाल का दृष्टांत (मत्ती 13:47-50)

8. आज्ञाएँ

मत्ती 22:37-39 उसने उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

आओ, पहले "यीशु का पहाड़ी उपदेश" के विभिन्न भागों में से प्रत्येक भाग को देखें। ये विभिन्न भाग किस चीज़ से संबंध रखते हैं? ऐसा निश्चितता के साथ कहा जा सकता है कि ये सभी विभिन्न भाग व्यवस्था के युग के नियमों की तुलना में अधिक उन्नत, अधिक ठोस और लोगों के जीवन के अधिक निकट हैं। आधुनिक शब्दों में कहें तो, ये चीज़ें लोगों के वास्तविक अभ्यास के लिए अधिक प्रासंगिक है।

आओ, निम्नलिखित विशिष्ट सामग्री को पढ़ें : तुम्हें धन्य वचनों को किस प्रकार समझना चाहिए? तुम्हें व्यवस्था के बारे में क्या जानना चाहिए? क्रोध को किस प्रकार परिभाषित किया जाना चाहिए? व्यभिचारियों से कैसे निपटा जाना चाहिए? तलाक के बारे में कैसे बोला जाता है, और उसके बारे में किस प्रकार के नियम हैं? कौन तलाक ले सकता है और कौन नहीं ले सकता? शपथ, प्रतिशोध, शत्रुओं से प्रेम, दान इत्यादि के बारे में क्या कहेंगे? आदि-आदि। ये सब चीज़ें मनुष्य द्वारा परमेश्वर पर विश्वास और उसका अनुसरण करने के अभ्यास के प्रत्येक पहलू से संबंध रखती हैं। इनमें से कुछ अभ्यास आज भी लागू हैं, हालाँकि वे लोगों से वर्तमान में जो अपेक्षित है, उसकी तुलना में उथले हैं—फिर भी वे काफी प्राथमिक सत्य हैं, जिनका सामना लोग परमेश्वर पर अपने विश्वास में करते हैं। जिस समय से प्रभु यीशु ने काम करना आरंभ किया, उससे पहले ही वह मनुष्यों के जीवन-स्वभाव पर काम शुरू करना कर चुका था, परंतु उसके कार्य के ये पहलू व्यवस्था की नींव पर आधारित थे। क्या इन विषयों पर बोलने के नियमों और तरीकों का सत्य के साथ कोई संबंध था? निस्संदेह था! पिछले सभी विनियम और सिद्धांत, और साथ ही अनुग्रह के युग के ये उपदेश भी, परमेश्वर के स्वभाव और स्वरूप से, और निस्संदेह सत्य से, संबंधित थे। परमेश्वर चाहे जो कुछ भी प्रकट करे, और चाहे वह अभिव्यक्ति का कोई भी तरीका या भाषा इस्तेमाल करे, उसके द्वारा अभिव्यक्त की जाने वाली सभी चीज़ों की नींव, उद्गम और प्रस्थान-बिंदु उसके स्वभाव और स्वरूप के सिद्धांतों में हैं। यह पूर्णत: सत्य है। इसलिए यद्यपि उसके द्वारा कही गई ये चीज़ें अब थोड़ी उथली दिखाई देती हैं, लेकिन तुम अभी भी यह नहीं कह सकते कि वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे ऐसी चीज़ें थीं जो अनुग्रह के युग में लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और अपने जीवन-स्वभाव में बदलाव लाने के लिए अपरिहार्य थीं। क्या तुम ऐसा कह सकते हो कि इनमें से कोई भी उपदेश सत्य के अनुरूप नहीं है? नहीं, तुम नहीं कह सकते! इनमें से प्रत्येक उपदेश सत्य है, क्योंकि ये सभी मानवजाति से परमेश्वर की अपेक्षाएँ थीं; ये सभी परमेश्वर द्वारा दिए गए सिद्धांत और गुंजाइश थी, जो यह दर्शाते थे कि व्यक्ति को कैसा आचरण करना चाहिए, और वे परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाते हैं। हालाँकि, उस समय जीवन में विकास के स्तर के आधार पर केवल ही चीज़ें थीं, जिन्हें वे स्वीकार करने और समझने में सक्षम थे। चूँकि अभी तक मानवजाति के पापों का समाधान नहीं हुआ था, इसलिए प्रभु यीशु केवल ये ही वचन जारी कर सकता था, और वह केवल इस प्रकार के दायरे के भीतर शामिल सरल शिक्षाओं का उपयोग करके ही उस समय के लोगों को यह बता सकता था कि उन्हें किस प्रकार कार्य करना चाहिए, उन्हें क्या करना

चाहिए, उन्हें किन सिद्धांतों और दायरे के भीतर चीज़ों को करना चाहिए, और उन्हें किस प्रकार परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए और उसकी अपेक्षाएँ पूरी करनी चाहिए। यह सब उस समय मानवजाति की कद-काठी के आधार पर निर्धारित किया गया था। व्यवस्था के अधीन जीने वाले लोगों के लिए ये शिक्षाएँ ग्रहण करना आसान नहीं था, इसलिए जो प्रभु यीशु ने सिखाया, उसका इसी दायरे में रहना आवश्यक था।

आगे, आओ "प्रभु यीशु के दृष्टांतों" की विभिन्न सामग्रियों पर एक नज़र डालें।

पहला बीज बोने वाले का दृष्टांत है। यह एक बहुत ही रोचक दृष्टांत है; बीज बोना लोगों के जीवन में एक सामान्य घटना है। दूसरा जंगली बीज का दृष्टांत है। जिसने भी फसलें लगाई हैं, और निश्चित ही सभी वयस्कों ने लगाई होंगी, वे जान जाएँगे कि "जंगली बीज" क्या होते हैं। तीसरा राई के बीज का दृष्टांत है। तुम सभी लोग जानते हो कि राई क्या होती है, है न? यदि तुम नहीं जानते, तो तुम लोग बाइबल में देख सकते हो। चौथा खमीर का दृष्टांत है। अब, अधिकतर लोग जानते हैं कि खमीर को किण्वन के लिए इस्तेमाल किया जाता है, और यह ऐसी चीज़ है, जिसका लोग अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। अगले दृष्टांत, जिनमें से छठा छिपे हुए खजाने का दृष्टांत, सातवाँ अनमोल मोती का दृष्टांत और आठवाँ जाल का दृष्टांत है, लोगों के वास्तविक जीवन से लिए गए हैं। ये दृष्टांत किस प्रकार की तसवीर चित्रित करते हैं? यह परमेश्वर के एक सामान्य व्यक्ति बनने और मनुष्यों के साथ रहने, मनुष्यों से बात करने और उन्हें उनकी आवश्यकता की चीज़ें प्रदान करने के लिए जीवन की भाषा, मनुष्य की भाषा का उपयोग करने की तसवीर है। जब परमेश्वर देहधारी हुआ और लंबे समय तक मनुष्यों के बीच रहा, तो लोगों की विभिन्न जीवन-शैलियों का अनुभव करने और उन्हें देखने के बाद, ये अनुभव उसकी शिक्षण-सामग्री बन गए, जिसके जरिये उसने अपनी दिव्य भाषा को मानवीय भाषा में रूपांतरित कर लिया। निस्संदेह, इन चीज़ों ने भी, जो उसने जीवन में देखीं और सुनीं, मनुष्य के पुत्र के मानवीय अनुभव को समृद्ध किया। जब वह लोगों को कुछ सत्य, परमेश्वर की कोई इच्छा समझाना चाहता था, तो वह लोगों को परमेश्वर की इच्छा और मानवजाति से उसकी अपेक्षाओं के बारे में बताने के लिए उपर्युक्त जैसे दृष्टांत इस्तेमाल कर सकता था। ये सभी दृष्टांत लोगों के जीवन से संबंधित थे; एक भी दृष्टांत ऐसा नहीं था जो मनुष्य के जीवन से अछूता था। जब प्रभु यीशु मनुष्यों के साथ रहता था, तो उसने किसानों को अपने खेतों की देखभाल करते हुए देखा था, और वह जानता था कि जंगली बीज कौन-से होते हैं और खमीर उठना क्या होता है; वह समझता था कि मनुष्य खजाने को पसंद करते हैं, इसलिए उसने खजाने और मोती दोनों रूपकों का उपयोग किया। जीवन

में उसने बार-बार मछुआरों को जाल फैलाते हुए देखा था; प्रभु यीशु ने इसे और मनुष्यों के जीवन से संबंधित अन्य गतिविधियों को देखा; और उसने उस प्रकार के जीवन का अनुभव भी किया। किसी भी अन्य सामान्य मनुष्य के समान ही उसने मनुष्यों की दिनचर्या और उनके तीन वक्त भोजन करने का अनुभव किया था। उसने व्यक्तिगत रूप से एक औसत व्यक्ति के जीवन का अनुभव किया और दूसरों की ज़िंदगी को भी देखा। जब उसने यह सब देखा और व्यक्तिगत रूप से इसका अनुभव किया, तो उसने यह नहीं सोचा कि किस प्रकार एक अच्छा जीवन पाया जाए या वह किस प्रकार से अधिक स्वतंत्रता और आराम से जी सकता है। इसके बजाय अपने प्रामाणिक मानव-जीवन के अनुभव से प्रभु यीशु ने लोगों के जीवन में कठिनाई देखी, उसने शैतान के अधिकार-क्षेत्र में और उसकी भ्रष्टता के अधीन पाप का जीवन जी रहे लोगों की कठिनाई, दुर्दशा और विषाद को देखा। जब वह व्यक्तिगत रूप से मानव-जीवन का अनुभव ले रहा था, तब उसने यह भी अनुभव किया कि भ्रष्टता के बीच जी रहे लोग कितने असहाय हैं, और उसने पाप में जीने वाले मनुष्यों की दुर्दशा को देखा और अनुभव किया, जो शैतान और बुराई द्वारा दी गई यातना में हर दिशा खो बैठे थे। जब प्रभु यीशु ने ये चीज़ें देखीं, तो क्या उसने उन्हें अपनी दिव्यता से देखा या अपनी मानवता से? उसकी मानवता सचमुच मौजूद थी और वह बहुत अधिक जीवित थी; वह इस सबका अनुभव कर सकता था और इसे देख सकता था। किंतु निस्संदेह, उसने इन चीज़ों को अपने सार में भी देखा, जो उसकी दिव्यता है। अर्थात्, स्वयं मसीह, प्रभु यीशु, जो एक मनुष्य था, ने इसे देखा, और उसके द्वारा देखी गई हर चीज़ ने उसे उस कार्य का महत्व और आवश्यकता महसूस कराई, जिसे उसने उस समय हाथ में लिया था, जब वह देह में रहा था। यद्यपि वह स्वयं जानता था कि जो उत्तरदायित्व उसे देह में लेना आवश्यक है, वह बहुत बड़ा है, और वह जानता था कि जिस पीड़ा का वह सामना करेगा, वह कितनी दारुण होगी, फिर भी जब उसने पाप में जी रहे मनुष्यों को असहाय देखा, जब उसने उनकी ज़िंदगी की दुर्दशा और व्यवस्था के अधीन उनके कमज़ोर संघर्ष को देखा, तो उसने अधिकाधिक पीड़ा का अनुभव किया, और वह मानवजाति को पाप से बचाने के लिए अधिकाधिक व्याकुल हो गया। चाहे उसे किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़े या किसी भी प्रकार की पीड़ा सहनी हो, वह पाप में जी रही मानवजाति को बचाने के लिए और अधिक कृतसंकल्प हो गया। इस प्रक्रिया के दौरान, तुम कह सकते हो कि प्रभु यीशु ने उस कार्य को और अधिक स्पष्टता से समझना आरंभ कर दिया था, जो उसे करने की आवश्यकता थी और जो उसे सौंपा गया था। वह उस कार्य को पूरा करने के लिए अधिकाधिक उत्सुक भी

हो गया, जो उसे करना था—मानवजाति के समस्त पाप ग्रहण करना, मनुष्यों के लिए प्रायश्चित करना ताकि वे अब पाप में न जीएँ, और साथ ही परमेश्वर पापबलि की वजह से मनुष्य के पाप क्षमा कर सके, जिससे उसे मानवजाति को बचाने का अपना कार्य आगे बढ़ाने की अनुमति मिले। ऐसा कहा जा सकता है कि अपने हृदय में प्रभु यीशु अपने आप को मानवजाति के लिए अर्पित करने, अपना बलिदान करने के लिए तैयार था। वह एक पापबलि के रूप में कार्य करने, सूली पर चढ़ाए जाने के लिए भी तैयार था, और निस्संदेह, वह इस कार्य को पूरा करने के लिए उत्सुक था। जब उसने मानव-जीवन की दयनीय दशा देखी, तो वह बिना एक भी क्षण या क्षणांश की देरी के, जल्दी से जल्दी अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए और अधिक इच्छुक हो गया। ऐसी अत्यावश्यकता महसूस करते हुए उसने यह भी नहीं सोचा कि उसका अपना दर्द कितना भयानक होगा, न ही उसने कोई और आशंका पाली कि उसे कितना अपमान सहना होगा। उसके हृदय में बस एक ही दृढ़ विश्वास था : यदि वह अपने को अर्पित करेगा, यदि वह पापबलि के रूप में सूली पर चढ़ जाएगा, तो परमेश्वर की इच्छा पूरी हो जाएगी और परमेश्वर अपना नया कार्य शुरू कर पाएगा। मनुष्य का जीवन और पाप में उसके अस्तित्व की स्थिति पूर्णत: रूपांतरित हो जाएगी। उसका दृढ़ विश्वास और जो कुछ करने के लिए वह कृतसंकल्प था, वे मनुष्य को बचाने से संबंध रखते थे, और उसका एक ही उद्देश्य था : परमेश्वर की इच्छा पर चलना, ताकि वह अपने कार्य के अगले चरण की सफलतापूर्वक शुरुआत कर सके। उस समय प्रभु यीशु के मन में बस यही था।

देह में रहते हुए देहधारी परमेश्वर में सामान्य मानवता थी; उसके अंदर एक सामान्य व्यक्ति की भावनाएँ और चेतना थी। वह जानता था कि खुशी क्या होती है, पीड़ा क्या होती है, और जब उसने मनुष्य को इस प्रकार का जीवन जीते देखा, तो उसने गहराई से महसूस किया कि लोगों को मात्र कुछ शिक्षाएँ देने, कुछ प्रदान करने या कुछ सिखाने से पाप से बाहर नही निकाला जा सकता। न ही उनसे कुछ आज्ञाओं का पालन करवाने से उन्हें पाप से छुटकारा दिया जा सकता था—केवल मानवजाति के पाप अपने ऊपर लेकर और पापमय देह के समान बनकर ही वह मानवजाति की स्वतंत्रता जीत सकता था और बदले में मानवजाति के लिए परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर सकता था। इसलिए जब प्रभु यीशु ने लोगों की पापमय ज़िंदगी का अनुभव कर लिया और उसे देख लिया, तो उसके हृदय में एक प्रबल इच्छा प्रकट हुई—मनुष्यों को उनकी पाप में संघर्ष करती ज़िंदगी से छुटकारा दिलाने की। इस इच्छा ने उसे अधिकाधिक यह महसूस करवाया कि उसे यथाशीघ्र सूली पर चढ़ना चाहिए और मानवजाति के पाप अपने ऊपर ले लेने

चाहिए। लोगों के साथ रहने और उनके पापमय जीवन की दुर्गति देखने, सुनने और महसूस करने के बाद उस समय प्रभु यीशु के ये विचार थे। देहधारी परमेश्वर द्वारा मानवजाति के लिए इस प्रकार की इच्छा करना, उसके द्वारा इस प्रकार का स्वभाव व्यक्त और प्रकट करना—क्या यह कोई औसत व्यक्ति कर सकता है? इस प्रकार के परिवेश में रहते हुए कोई औसत व्यक्ति क्या देखेगा? वह क्या सोचेगा? यदि किसी औसत व्यक्ति ने इस सबका सामना किया होता, तो क्या वह समस्याओं को उच्च परिप्रेक्ष्य से देख पाता? निश्चित रूप से नहीं! यद्यपि देहधारी परमेश्वर का बाहरी रूप-रंग ठीक मनुष्य के समान है, और यद्यपि वह मानवीय ज्ञान सीखता है और मानवीय भाषा बोलता है, और कभी-कभी अपने विचार मनुष्य की पद्धतियों या बोलने के तरीकों से भी व्यक्त करता है, फिर भी, जिस तरीके से वह मनुष्यों को और चीज़ों के सार को देखता है, वह भ्रष्ट लोगों द्वारा मनुष्यों को और चीज़ों के सार को देखने के तरीके के समान बिलकुल नहीं है। उसका परिप्रेक्ष्य और वह ऊँचाई, जिस पर वह खड़ा है, किसी भ्रष्ट व्यक्ति के द्वारा अप्राप्य है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर सत्य है, क्योंकि उसके द्वारा धारित देह में भी परमेश्वर का सार है, और उसके विचार तथा जो कुछ उसकी मानवता के द्वारा प्रकट किया जाता है, वे भी सत्य हैं। भ्रष्ट लोगों के लिए, जो कुछ वह देह में व्यक्त करता है, वह सत्य और जीवन के प्रावधान हैं। ये प्रावधान केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवजाति के लिए हैं। किसी भ्रष्ट व्यक्ति के हृदय में केवल वे थोड़े-से लोग ही होते हैं, जो उससे संबद्ध होते हैं। वह केवल उन मुट्ठीभर लोगों की ही परवाह करता है और उन्हीं के बारे में चिंता करता है। जब आपदा क्षितिज पर होती है, तो वह पहले अपने बच्चों, जीवनसाथी, या माता-पिता के बारे में सोचता है। अधिक से अधिक, कोई ज्यादा दयालु व्यक्ति किसी रिश्तेदार या अच्छे मित्र के बारे में कुछ सोच लेगा; पर क्या ऐसे दयालु व्यक्ति के विचार भी इससे आगे जाते हैं? नहीं, कभी नहीं! क्योंकि मनुष्य अंततः मनुष्य हैं, और वे सब-कुछ एक मनुष्य की ऊँचाई और परिप्रेक्ष्य से ही देख सकते हैं। किंतु देहधारी परमेश्वर भ्रष्ट व्यक्ति से पूर्णत: अलग है। देहधारी परमेश्वर का देह कितना ही साधारण, कितना ही सामान्य, कितना ही निम्न क्यों न हो, या लोग उसे कितनी ही नीची निगाह से क्यों न देखते हों, मानवजाति के प्रति उसके विचार और उसका रवैया ऐसी चीज़ें है, जो किसी भी मनुष्य में नहीं हैं, जिनका कोई मनुष्य अनुकरण नहीं कर सकता। वह मानवजाति का अवलोकन हमेशा दिव्यता के परिप्रेक्ष्य से, सृजनकर्ता के रूप में अपनी स्थिति की ऊँचाई से करेगा। वह मानवजाति को हमेशा परमेश्वर के सार और मानसिकता से देखेगा। वह मानवजाति को एक औसत व्यक्ति की निम्न ऊँचाई से, या एक भ्रष्ट व्यक्ति

के परिप्रेक्ष्य से बिलकुल नहीं देख सकता। जब लोग मानवजाति को देखते हैं, तो मनुष्य की दृष्टि से देखते हैं, और अपने पैमाने के रूप में वे मनुष्य के ज्ञान और मनुष्य के नियमों और सिद्धांतों जैसी चीज़ों का उपयोग करते हैं। यह उस दायरे के भीतर है, जिसे लोग अपनी आँखों से देख सकते हैं; उस दायरे के भीतर है, जो भ्रष्ट लोगों द्वारा प्राप्य है। जब परमेश्वर मानवजाति को देखता है, तो वह दिव्य दृष्टि से देखता है, और पैमाने के रूप में अपने सार और स्वरूप का उपयोग करता है। इस दायरे में वे चीज़ें शामिल हैं जिन्हें लोग नहीं देख सकते, और यहीं पर देहधारी परमेश्वर और भ्रष्ट मनुष्य पूरी तरह से भिन्न हैं। यह भिन्नता मनुष्यों और परमेश्वर के भिन्न-भिन्न सार से निर्धारित होती है—ये भिन्न-भिन्न सार ही उनकी पहचान और स्थिति को और साथ ही उस परिप्रेक्ष्य और ऊँचाई को निर्धारित करते हैं, जिससे वे चीज़ों को देखते हैं। क्या तुम लोग प्रभु यीशु में स्वयं परमेश्वर की अभिव्यक्ति और प्रकाशन देखते हो? तुम कह सकते हो कि प्रभु यीशु ने जो किया और कहा, वह उसकी सेवकाई से और परमेश्वर के अपने प्रबंधन-कार्य से संबंधित था, कि वह सब परमेश्वर के सार की अभिव्यक्ति और प्रकाशन था। यद्यपि उसकी अभिव्यक्ति मानवीय थी, किंतु उसके दिव्य सार और उसकी दिव्यता के प्रकाशन को नकारा नहीं जा सकता। क्या यह मानवीय अभिव्यक्ति वास्तव में मानवता की ही अभिव्यक्ति थी? उसकी मानवीय अभिव्यक्ति अपने मूल सार में, भ्रष्ट लोगों की मानवीय अभिव्यक्ति से पूर्णत: भिन्न थी। प्रभु यीशु देहधारी परमेश्वर था। यदि वह वास्तव में एक सामान्य, भ्रष्ट मनुष्य रहा होता, तो क्या वह पापमय मानवजाति के जीवन को दिव्य परिप्रेक्ष्य से देख सकता था? बिलकुल नहीं! मनुष्य के पुत्र और एक सामान्य मनुष्य के बीच यही अंतर है। सभी भ्रष्ट लोग पाप में जीते हैं, और जब कोई पाप को देखता है, तो उसमें उसके बारे में कोई विशेष भावना उत्पन्न नहीं होती; वे सब एकसमान होते हैं, ठीक कीचड़ में रहने वाले सूअर के समान, जो बिलकुल भी असहज या गंदा महसूस नहीं करता—इसके विपरीत, वह अच्छी तरह से खाता है और गहरी नींद में सोता है। यदि कोई सूअरों के बाड़े को साफ करता है, तो सूअर वास्तव में बेचैनी महसूस करेगा, और वह साफ-सुथरा नहीं रहेगा। जल्दी ही वह दोबारा पूरी सहजता से कीचड़ में लोट लगा रहा होगा, क्योंकि वह एक गंदा जीव है। मनुष्य सूअर को गंदा समझते हैं, किंतु यदि तुम सूअर के रहने की जगह को साफ करो, तो उसे अच्छा नहीं लगता—इसीलिए कोई भी सूअर को अपने घर में नहीं रखता। मनुष्य सूअरों को जिस तरह से देखते हैं, वह हमेशा उससे भिन्न होगा, जैसा सूअर खुद महसूस करते हैं, क्योंकि मनुष्य और सूअर एक ही तरह के नहीं होते। और चूँकि देहधारी मनुष्य का पुत्र उसी तरह का नहीं है जैसे भ्रष्ट मनुष्य हैं, इसलिए केवल

देहधारी परमेश्वर ही दिव्य परिप्रेक्ष्य में, परमेश्वर की ऊँचाई पर खड़ा हो सकता है, जहाँ से वह मानवजाति और सभी चीज़ों को देखता है।

जब परमेश्वर देह बनता है और मानवजाति के बीच रहता है, तो वह किस प्रकार की पीड़ा अनुभव करता है? क्या कोई सचमुच इस बात को समझता है? कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर बड़ी पीड़ा सहता है, और यद्यपि वह स्वयं परमेश्वर है, फिर भी लोग उसके सार को नहीं समझते और हमेशा उसके साथ एक मनुष्य के समान व्यवहार करते हैं, जिससे उसे दुःख और अन्याय महसूस होता है—वे कहते हैं कि इन कारणों से परमेश्वर की पीड़ा सचमुच बहुत बड़ी है। अन्य लोग कहते हैं कि परमेश्वर निर्दोष और निष्पाप है, परंतु वह मनुष्य के समान पीड़ा भुगतता है और मानवजाति के साथ रहकर उत्पीड़न, बदनामी और अपमान का सामना करता है; वे कहते हैं कि वह अपने अनुयायियों की ग़लतफहमियाँ और अवज्ञा भी सहता है—इस तरह, वे कहते हैं कि परमेश्वर की पीड़ा को सचमुच मापा नहीं जा सकता। अब, ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोग वास्तव में परमेश्वर को नहीं समझते। वास्तव में यह पीड़ा, जिसके बारे में तुम लोग बात करते हो, परमेश्वर के लिए वास्तविक पीड़ा नहीं है, उसकी पीड़ा इससे कहीं बड़ी है। तो स्वयं परमेश्वर के लिए सच्ची पीड़ा क्या है? देहधारी परमेश्वर के देह के लिए सच्ची पीड़ा क्या है? परमेश्वर के लिए, मानवजाति का उसे नहीं समझना पीड़ा नहीं गिनी जाता, और न ही लोगों में परमेश्वर के बारे में कुछ ग़लतफहमियाँ होना और उनका उसे परमेश्वर के रूप में नहीं देखना पीड़ा गिना जाता है। हालाँकि, लोग प्रायः महसूस करते हैं कि परमेश्वर ने अवश्य ही बहुत बड़ा अन्याय सहा है, कि जितने समय तक परमेश्वर देह में रहता है, वह अपना व्यक्तित्व मानवजाति को नहीं दिखा सकता और लोगों को अपनी महानता नहीं देखने दे सकता, और कि परमेश्वर विनम्रता से एक मामूली देह में छिपा रहता है, जो उसके लिए बहुत बड़ी यातना होनी चाहिए। लोग परमेश्वर की पीड़ा के बारे में जो कुछ समझ सकते हैं और जो कुछ देख सकते हैं, उसे गंभीरता से ले लेते हैं, और परमेश्वर पर हर प्रकार की सहानुभूति प्रक्षेपित कर देते हैं, यहाँ तक कि उसकी पीड़ा के लिए उसकी थोड़ी स्तुति भी प्रस्तुत कर देते हैं। वास्तव में, इसमें एक अंतर है; लोग परमेश्वर की पीड़ा के बारे में जो कुछ समझते हैं और वह वास्तव में जो महसूस करता है, उसके बीच एक अंतर है। मैं तुम लोगों को सच बता रहा हूँ—परमेश्वर के लिए, चाहे वह परमेश्वर का आत्मा हो या देहधारी परमेश्वर का देह, ऊपर वर्णित पीड़ा सच्ची पीड़ा नहीं है। तो फिर वह क्या है, जिसे परमेश्वर वास्तव में भुगतता है? आओ, केवल देहधारी परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से परमेश्वर की पीड़ा के बारे में बात करें।

जब परमेश्वर देहधारी बनता है, तो एक औसत, सामान्य व्यक्ति बनकर, मानवजाति के बीच लोगों के साथ-साथ रहकर क्या वह लोगों के जीने के तरीकों, व्यवस्थाओं और फ़लसफ़ों को देख और महसूस नहीं कर सकता? जीने के ये तरीके और व्यवस्थाएँ उसे कैसा महसूस कराते हैं? क्या वह अपने हृदय में घृणा महसूस करता है? वह घृणा क्यों महसूस करेगा? मानवजाति के जीने की क्या पद्धतियाँ और व्यवस्थाएँ हैं? वे किन सिद्धांतों में समाहित हैं? वे किस चीज़ पर आधारित हैं? मानवजाति की पद्धतियाँ, नियम इत्यादि, जिन्हें वे जीवन के तरीके से जोड़ते हैं—वे सब शैतान के तर्क, ज्ञान और फ़लसफ़े पर निर्मित हैं। इस प्रकार की व्यवस्थाओं के अधीन जीने वाले मनुष्यों में कोई मानवता, कोई सत्य नहीं होता—वे सभी सत्य की उपेक्षा करते हैं और परमेश्वर से शत्रुता रखते हैं। यदि हम परमेश्वर के सार पर एक नज़र डालें, तो हम देखते हैं कि उसका सार शैतान के तर्क, ज्ञान और फ़लसफ़े के ठीक विपरीत है। उसका सार धार्मिकता, सत्य और पवित्रता, और सभी सकारात्मक चीज़ों की अन्य वास्तविकताओं से भरा हुआ है। ऐसे सार वाले और ऐसी मानवजाति के बीच रहने वाले परमेश्वर को कैसा महसूस होता है? वह अपने हृदय में क्या महसूस करता है? क्या वह दर्द से भरा हुआ नहीं है? उसके हृदय में दर्द है, ऐसा दर्द जिसे कोई व्यक्ति समझ या महसूस नहीं कर सकता। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जिसका भी वह सामना या मुक़ाबला करता है या जो भी वह सुनता, देखता और अनुभव करता है, वह सब मानवजाति की भ्रष्टता, दुष्टता और सत्य के प्रति उनका विद्रोह और प्रतिरोध है। जो कुछ भी मनुष्यों से आता है, वह सब उसकी पीड़ा का स्रोत है। अर्थात्, चूँकि उसका सार भ्रष्ट मनुष्यों के सार के समान नहीं है, इसलिए मनुष्यों की भ्रष्टता उसकी सबसे बड़ी पीड़ा का स्रोत बन जाती है। जब परमेश्वर देह बनता है, तो क्या उसे कोई ऐसा व्यक्ति मिल पाता है, जिसकी भाषा उसके समान हो? ऐसा व्यक्ति मानवजाति में नहीं पाया जा सकता। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता, जो परमेश्वर के साथ संवाद या विचार-विनिमय कर सकता हो—तो तुम क्या कहोगे कि परमेश्वर को कैसा महसूस होता है? जिन चीज़ों के बारे में लोग चर्चा करते हैं, जिनसे वे प्रेम करते हैं, जिनके पीछे भागते हैं और जिनकी लालसा करते हैं, वे सभी पाप और दुष्ट प्रवृत्तियों से जुड़ी हुई हैं। परमेश्वर जब इन सबका सामना करता है, तो क्या यह उसके हृदय में कटार जैसा नहीं लगता? इन चीज़ों का सामना करके क्या उसे अपने हृदय में आनंद मिल सकता है? क्या वह सांत्वना पा सकता है? उसके साथ जो रह रहे हैं, वे विद्रोहशीलता और दुष्टता से भरे हुए मनुष्य हैं—उसका हृदय पीड़ित कैसे नहीं हो सकता? वास्तव में कितनी बड़ी है यह पीड़ा, और कौन इस बारे में परवाह करता है? कौन ध्यान देता है?

और कौन इसे समझ पाने में सक्षम है? लोगों के पास परमेश्वर के हृदय को समझने का कोई तरीका नहीं है। उसकी पीड़ा ऐसी है, जिसे समझ पाने में लोग विशेष रूप से असमर्थ हैं, और मानवजाति की उदासीनता और संवेदनशून्यता परमेश्वर की पीड़ा को और अधिक गहरा कर देती है।

कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो मसीह की दुर्दशा पर अकसर सहानुभूति दिखाते हैं, क्योंकि बाइबल में एक पद है जिसमें कहा गया है : "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।" जब लोग इसे सुनते हैं, तो वे इसे गंभीरता से ले लेते हैं और मान लेते हैं कि यही सबसे बड़ी पीड़ा है जिसे परमेश्वर सहता है, और यही सबसे बड़ी पीड़ा है जिसे मसीह सहन करता है। अब, इसे तथ्यों के परिप्रेक्ष्य से देखने पर, क्या मामला ऐसा ही है? नहीं; परमेश्वर इन कठिनाइयों को पीड़ा नहीं मानता। उसने कभी देह की पीड़ाओं के कारण अन्याय के विरुद्ध चीख-पुकार नहीं की है, और उसने कभी मनुष्यों को प्रतिफल या पुरस्कारस्वरूप कोई चीज़ देने के लिए बाध्य नहीं किया है। किंतु जब वह मानवजाति की हर चीज़ और मनुष्यों का भ्रष्ट जीवन और उनकी बुराई देखता है, जब वह देखता है कि मानवजाति शैतान के चंगुल में है और शैतान द्वारा क़ैद कर ली गई है और बचकर नहीं निकल सकती, कि पाप में रहने वाले लोग नहीं जानते कि सत्य क्या है, तो वह ये सब पाप सहन नहीं कर सकता। मनुष्यों के प्रति उसकी घृणा हर दिन बढ़ती जाती है, किंतु उसे यह सब सहना पड़ता है। यह परमेश्वर की सबसे बड़ी पीड़ा है। परमेश्वर अपने अनुयायियों के बीच खुलकर अपने हृदय की आवाज़ या अपनी भावनाएँ व्यक्त तक नहीं कर सकता, और उसके अनुयायियों में से कोई भी उसकी पीड़ा को वास्तव में समझ नहीं सकता। कोई भी उसके हृदय को समझने या दिलासा देने की कोशिश तक नहीं करता, जो दिन-प्रतिदिन, साल-दर-साल, बार-बार इस पीड़ा को सहता है। तुम लोग इस सब में क्या देखते हो? परमेश्वर ने मनुष्यों को जो कुछ दिया है, उसके बदले में वह उनसे कुछ नहीं चाहता, किंतु अपने सार की वजह से वह मानवजाति की दुष्टता, भ्रष्टता और पाप बिलकुल भी सहन नहीं कर सकता, बल्कि अत्यधिक नफ़रत और अरुचि महसूस करता है, जो परमेश्वर के हृदय और उसके देह को अनंत पीड़ा की ओर ले जाती हैं। क्या तुम लोगों ने इसे देखा है? ज़्यादा संभावना इस बात की है कि तुम लोगों में से कोई भी इसे नहीं देख सकता, क्योंकि तुम लोगों में से कोई भी वास्तव में परमेश्वर को नहीं समझ सकता। समय के साथ तुम लोगों को धीरे-धीरे इसे अपने आप समझना चाहिए।

आगे, आओ पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित अंशों को देखें।

9. यीशु चमत्कार करता है

1) यीशु पाँच हज़ार लोगों को खिलाता है

यूहन्ना 6:8-13 उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उससे कहा, "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं; परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?" यीशु ने कहा, "लोगों को बैठा दो।" उस जगह बहुत घास थी: तब लोग जिनमें पुरुषों की संख्या लगभग पाँच हज़ार की थी, बैठ गए। तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बाँट दीं; और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बाँट दिया। जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, "बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न जाए।" अत: उन्होंने बटोरा, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे, बारह टोकरियाँ भरीं।

2) लाज़र का पुनरुत्थान परमेश्वर को महिमामंडित करता है

यूहन्ना 11:43-44 यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, "हे लाज़र, निकल आ!" जो मर गया था वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया, और उसका मुँह अँगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसे खोल दो और जाने दो।"

प्रभु यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों में से हमने सिर्फ इन दो को ही चुना है, क्योंकि ये उस चीज़ को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त हैं, जिसके बारे में मैं यहाँ बात करना चाहता हूँ। ये दोनों चमत्कार वास्तव में आश्चर्यजनक हैं और अनुग्रह के युग में प्रभु यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों के सच्चे प्रतिनिधि हैं।

पहले, आओ प्रथम अंश पर एक नज़र डालें : यीशु पाँच हज़ार लोगों को खिलाता है।

"पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ" का क्या विचार है? पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ आम तौर पर कितने लोगों के लिए पर्याप्त होंगी? यदि तुम एक औसत व्यक्ति की भूख के आधार पर मापो, तो ये केवल दो व्यक्तियों के लिए ही पर्याप्त होंगी। "पाँच रोटियों और दो मछलियों" का मूलत: यही विचार है। किंतु इस अंश में, पाँच रोटियों और दो मछलियों से कितने लोगों को खिलाया गया? पवित्रशास्त्र में यह दर्ज है : "उस जगह बहुत घास थी: तब लोग जिनमें पुरुषों की संख्या लगभग पाँच हज़ार की थी, बैठ गए।" पाँच रोटियों और दो मछलियों की तुलना में क्या पाँच हज़ार एक बड़ी संख्या है? इतनी बड़ी संख्या क्या दर्शाती है? मानवीय परिप्रेक्ष्य से पाँच हज़ार लोगों में पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ बाँटना असंभव होगा, क्योंकि लोगों

और भोजन के बीच का अंतर बहुत बड़ा है। यदि प्रत्येक व्यक्ति को केवल एक छोटा-सा टुकड़ा भी मिलता, तब भी यह पाँच हज़ार लोगों के लिए काफी न होता। परंतु यहाँ प्रभु यीशु ने एक चमत्कार किया—उसने न केवल यह सुनिश्चित किया कि पाँच हज़ार लोग भरपेट खा लें, बल्कि कुछ भोजन बच भी गया। पवित्रशास्त्र में लिखा है : "जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, 'बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न जाए।' अत: उन्होंने बटोरा, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे, बारह टोकरियाँ भरीं।" इस चमत्कार ने लोगों को प्रभु यीशु की पहचान और हैसियत देखने में सक्षम बनाया, और यह भी कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है—इस तरह उन्होंने परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की सच्चाई को देखा। पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ पाँच हज़ार लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त थीं, परंतु यदि वहाँ कोई भोजन न होता, तो क्या परमेश्वर पाँच हज़ार लोगों को खिला सकता था? निस्संदेह वह खिला सकता था! यह एक चमत्कार था, इसलिए अनिवार्य रूप से लोगों को लगा कि यह समझ से बाहर, अविश्वसनीय और रहस्यमय है, परंतु परमेश्वर के लिए ऐसा करना कोई बड़ी बात नहीं थी। जब परमेश्वर के लिए यह एक सामान्य चीज़ थी, तो इसे अब व्याख्या करने के क्यों चुना है? क्योंकि इस चमत्कार के पीछे प्रभु यीशु की इच्छा निहित है, जिसे मानवजाति द्वारा कभी देखा नहीं गया है।

पहले, आओ यह समझने का प्रयास करें कि ये पाँच हज़ार लोग किस प्रकार के थे। क्या वे प्रभु यीशु के अनुयायी थे? पवित्रशास्त्र से हम जानते हैं कि वे उसके अनुयायी नहीं थे। क्या वे जानते थे कि प्रभु यीशु कौन है? निश्चित रूप से नहीं! कम से कम, वे यह नहीं जानते थे कि जो व्यक्ति उनके सामने खड़ा है वह प्रभु यीशु है, या हो सकता है कि कुछ लोग केवल इतना जानते हों कि उसका नाम क्या है, और वे उसके द्वारा की गई चीज़ों के बारे कुछ जानते हों या उनके बारे में उन्होंने कुछ सुना हो। प्रभु यीशु के बारे में उनकी उत्सुकता केवल तभी जाग्रत हुई थी, जब उन्होंने उसके बारे में कहानियाँ सुनी थीं, पर तुम लोग निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि वे उसका अनुसरण करते थे, और यह तो बिलकुल भी नहीं कह सकते कि वे उसे समझते थे। जब प्रभु यीशु ने इन पाँच हज़ार लोगों को देखा, तो वे भूखे थे और केवल अपना पेट भरने के बारे में ही सोच सकते थे, इसलिए यह इस संदर्भ में था कि प्रभु यीशु ने उनकी इच्छा पूरी की। जब उसने उनकी इच्छा पूरी की, तो उसके हृदय में क्या था? इन लोगों के प्रति उसका रवैया क्या था, जो केवल अपना पेट भरना चाहते थे? इस समय प्रभु यीशु के विचार और उसका रवैया परमेश्वर के स्वभाव और सार से संबंधित थे। इन लोगों का सामना करने पर, जो खाली पेट थे और केवल भरपेट भोजन

करना चाहते थे, और जो उसके प्रति उत्सुकता और आशा से भरे थे, प्रभु यीशु ने केवल उन पर अनुग्रह करने के लिए इस चमत्कार का उपयोग करने के बारे में सोचा। किंतु उसने यह आशा नहीं की कि वे उसके अनुयायी बन जाएँगे, क्योंकि वह जानता था कि वे केवल मौज-मस्ती करना और पेट भरकर खाना चाहते थे, इसलिए उसने वहाँ जो कुछ उसके पास था, उसका सर्वोत्तम उपयोग किया, और पाँच हज़ार लोगों को खिलाने के लिए पाँच रोटियों और दो मछलियों का उपयोग किया। उसने उन लोगों की आँखें खोल दीं, जिन्हें रोमांचक चीज़ें देखने में मज़ा आता था, जो चमत्कार देखना चाहते थे, और उन्होंने अपनी आँखों से उन चीज़ों को देखा, जिन्हें देहधारी परमेश्वर पूरी कर सकता था। यद्यपि प्रभु यीशु ने उनकी उत्सुकता शांत करने के लिए कुछ मूर्त चीज़ों का उपयोग किया, किंतु वह अपने हृदय में पहले से जानता था कि ये पाँच हज़ार लोग बस अच्छा भोजन करना चाहते हैं, इसलिए उसने उन्हें उपदेश नहीं दिया, बल्कि उनसे कुछ भी नहीं कहा—उसने बस उन्हें वह चमत्कार घटित होता देखने दिया। वह इन लोगों के साथ ठीक उसी तरह से व्यवहार नहीं कर सकता था, जिस तरह से वह अपने उन शिष्यों के साथ करता था जो वास्तव में उसका अनुसरण करते थे, परंतु परमेश्वर के हृदय में सभी प्राणी उसके शासन के अधीन हैं, और आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी दृष्टि में सभी प्राणियों को परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद उठाने देता है। भले ही ये लोग नहीं जानते थे कि वह कौन है या वे उसे समझते नहीं थे या रोटियाँ और मछली खाने के बाद भी उनके ऊपर उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था या उसके प्रति उनमें कोई कृतज्ञता नहीं थी, यह ऐसा कुछ नहीं था जिसका परमेश्वर ने मुद्दा बनाया हो—उसने उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद उठाने का एक अद्भुत अवसर दिया था। कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर जो कुछ भी करता है, उसमें उसके सिद्धांत होते हैं, कि वह अविश्वासियों पर नज़र नहीं रखता या उनकी सुरक्षा नहीं करता, और कि, विशेष रूप से, वह उन्हें अपने अनुग्रह का आनंद नहीं उठाने नहीं देता। क्या मामला वास्तव में ऐसा ही है? परमेश्वर की नज़रों में, जब तक वे ऐसे जीवित प्राणी हैं जिन्हें उसने स्वयं बनाया है, वह उनका प्रबंधन और उनकी परवाह करेगा; और अनेक तरीकों से वह उनके साथ व्यवहार करेगा, उनके लिए योजना बनाएगा और उन पर शासन करेगा। सभी चीज़ों के प्रति परमेश्वर के यही विचार और यही रवैया है।

यद्यपि रोटी और मछली खाने वाले पाँच हज़ार लोगों ने प्रभु यीशु का अनुसरण करने की योजना नहीं बनाई, फिर भी उसने उनसे कोई कठोर माँग नहीं की; जब उन्होंने भरपेट खा लिया, तो क्या तुम लोग जानते हो कि प्रभु यीशु ने क्या किया? क्या उसने उन्हें ज़रा भी उपदेश दिया? ऐसा करने के बाद वह कहाँ

गया? पवित्रशास्त्र में दर्ज नहीं है कि प्रभु यीशु ने उनसे कुछ कहा था; बस अपना चमत्कार पूरा करके वह चुपके से चला गया। तो क्या उसने इन लोगों से कोई अपेक्षा की? क्या उसके मन में उनके प्रति कोई नफ़रत थी? नहीं, ऐसा कुछ नहीं था। वह बस इन लोगों पर अब और ध्यान देना नहीं चाहता था, जो उसका अनुसरण नहीं कर सकते थे, और इस समय उसके हृदय में दर्द था। क्योंकि उसने मानवजाति की भ्रष्टता को देखा था और उसके द्वारा नकारे जाने का अनुभव किया था, जब उसने इन लोगों को देखा और जब वह उनके साथ था, तो मनुष्य की मूढ़ता और अज्ञानता से वह बहुत दुःखी हुआ और उसके हृदय को पीड़ा पहुँची, वह बस इन लोगों को जल्दी से जल्दी छोड़कर चला जाना चाहता था। प्रभु ने अपने हृदय में उनसे कोई अपेक्षाएँ नहीं कीं, वह उन पर कोई ध्यान देना नहीं चाहता था, और इससे भी अधिक, वह अपनी ऊर्जा उन पर व्यय नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि वे उसका अनुसरण नहीं कर सकते, किंतु इस सबके बावजूद, उनके प्रति उसका रवैया अभी भी बिलकुल स्पष्ट था। वह बस उनके साथ दयालुता का बरताव करना चाहता था, उन्हें अनुग्रह प्रदान करना चाहता था, और निस्संदेह, यह अपने शासन के अधीन प्रत्येक प्राणी के प्रति परमेश्वर का रवैया था—प्रत्येक प्राणी के साथ दयालुता का व्यवहार करना, उनका भरण-पोषण करना, उनका पालन-पोषण करना। जिस मुख्य कारण से प्रभु यीशु देहधारी परमेश्वर था, उस कारण से उसने बहुत ही प्राकृतिक ढंग से स्वयं परमेश्वर के सार को प्रकट किया और इन लोगों के साथ दयालुता का बरताव किया। उसने उनके साथ परोपकार और सहनशीलता वाले हृदय से व्यवहार किया, और ऐसे हृदय से उसने उन पर दया दिखाई। चाहे इन लोगों ने प्रभु यीशु को जैसे भी देखा, और चाहे इसका जैसा भी परिणाम होता, उसने हर प्राणी के साथ समस्त सृष्टि के प्रभु की अपनी स्थिति के आधार पर व्यवहार किया। उसने जो कुछ भी प्रकट किया, वह बिना किसी अपवाद के परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप था। प्रभु यीशु ने चुपचाप यह काम किया, और फिर चुपचाप चला गया—परमेश्वर के स्वभाव का यह कौन-सा पहलू है? क्या तुम कह सकते हो कि यह परमेश्वर की प्रेममय करुणा है? क्या तुम कह सकते हो कि यह परमेश्वर की निस्स्वार्थता है? क्या कोई सामान्य व्यक्ति ऐसा कर सकता है? निश्चित रूप से नहीं! सार रूप में, ये पाँच हज़ार लोग कौन थे, जिन्हें प्रभु यीशु ने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ खिलाईं? क्या तुम कह सकते हो कि वे ऐसे लोग थे, जो उसके अनुकूल थे? क्या तुम कह सकते हो कि वे सभी परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण थे? ऐसा निश्चितता के साथ कहा जा सकता है कि वे प्रभु यीशु के बिलकुल भी अनुरूप नहीं थे, और उनका सार परमेश्वर के प्रति एकदम शत्रुतापूर्ण था। परंतु परमेश्वर ने उनके साथ कैसा बरताव

किया? उसने परमेश्वर के प्रति लोगों का विरोध शांत करने के लिए एक तरीके का उपयोग किया था—इस तरीके को "दयालुता" कहते हैं। अर्थात्, यद्यपि प्रभु यीशु ने उन्हें पापियों के रूप में देखा, किंतु परमेश्वर की नज़रों में वे फिर भी उसकी रचना थे, इसलिए उसने इन पापियों के साथ फिर भी दयालुता का व्यवहार किया। यह परमेश्वर की सहनशीलता है, और यह सहनशीलता परमेश्वर की अपनी पहचान और सार से निर्धारित होती है। इसलिए, यह ऐसी चीज़ है, जिसे करने में परमेश्वर द्वारा सृजित कोई भी मनुष्य सक्षम नहीं है—केवल परमेश्वर ही इसे कर सकता है।

जब तुम परमेश्वर के विचारों और मानवजाति के प्रति उसके रवैये को समझने में वास्तव में समर्थ होते हो, जब तुम प्रत्येक प्राणी के प्रति परमेश्वर की भावनाओं और चिंता को वास्तव में समझ सकते हो, तब तुम सृजनकर्ता द्वारा सृजित हर एक मनुष्य पर व्यय की गई उसकी लगन और प्रेम को समझने में भी समर्थ हो जाओगे। जब ऐसा होगा, तब तुम परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए दो शब्दों का उपयोग करोगे। वे कौन-से दो शब्द हैं? कुछ लोग कहते हैं "निस्स्वार्थ," और कुछ लोग कहते हैं "परोपकारी।" इन दोनों में से "परोपकारी" शब्द परमेश्वर के प्रेम की व्याख्या करने के लिए सबसे कम उपयुक्त है। इस शब्द का उपयोग लोग किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने के लिए करते हैं, जो उदारमना या व्यापक सोच वाला हो। मैं इस शब्द से घृणा करता हूँ, क्योंकि यह यूँ ही, विवेकहीनता से, बिना सिद्धांतों की परवाह किए दान देने को संदर्भित करता है। यह एक अत्यधिक भावुकतापूर्ण झुकाव है, जो मूर्ख और भ्रमित लोगों के लिए आम है। जब इस शब्द का उपयोग परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए किया जाता है, तो इसमें अपरिहार्य रूप से ईशनिंदा का संकेतार्थ होता है। मेरे पास यहाँ दो शब्द हैं, जो अधिक उचित रूप से परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करते हैं। वे दो शब्द कौन-से हैं? पहला शब्द है "विशाल।" क्या यह शब्द बहुत उद्बोधक नहीं है? दूसरा शब्द है "अनंत।" इन दोनों शब्दों के पीछे वास्तविक अर्थ है, जिसका मैं परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए उपयोग करता हूँ। शब्दशः लेने पर, "विशाल" शब्द किसी चीज़ की मात्रा और क्षमता का वर्णन करता है, पर वह चीज़ कितनी ही बड़ी क्यों न हो, वह ऐसी होती है जिसे लोग छू और देख सकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह मौजूद है—वह कोई अमूर्त चीज़ नहीं है, बल्कि ऐसी चीज़ है, जो लोगों को अपेक्षाकृत सटीक और व्यावहारिक रूप में विचार दे सकती है। चाहे तुम इसे द्विआयामी दृष्टिकोण से देखो या त्रिआयामी दृष्टिकोण से; तुम्हें इसकी मौजूदगी की कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह एक ऐसी चीज़ है जो वास्तव में मौजूद है। यद्यपि परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए "विशाल" शब्द

का उपयोग करना उसके प्रेम का परिमाण निर्धारित करने का प्रयास लग सकता है, किंतु यह इस बात का एहसास भी देता है कि उसके प्रेम का परिमाण निर्धारित नहीं किया जा सकता। मैं कहता हूँ कि परमेश्वर के प्रेम का परिमाण निर्धारित किया जा सकता, क्योंकि उसका प्रेम खोखला नहीं है, और न ही वह कोई किंवदंती है। बल्कि वह एक ऐसी चीज़ है, जिसे परमेश्वर द्वारा शासित सभी प्राणियों द्वारा साझा किया जाता है, ऐसी चीज़, जिसका सभी प्राणियों द्वारा विभिन्न मात्राओं में और विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से आनंद लिया जाता है। यद्यपि लोग उसे देख या छू नहीं सकते, फिर भी यह प्रेम सभी के जीवन में थोड़ा-थोड़ा प्रकट होकर उनके लिए पोषण और जीवन लाता है, और वे परमेश्वर के उस प्रेम का मान करते और उसकी गवाही देते हैं, जिसका वे हर क्षण आनंद लेते हैं। मैं कहता हूँ कि परमेश्वर के प्रेम का परिमाण निर्धारित नहीं किया जा सकता, क्योंकि परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों का भरण-पोषण और पालन-पोषण करने का रहस्य ऐसी चीज़ है, जिसकी थाह पाना मनुष्यों के लिए कठिन है, और ऐसे ही सभी चीज़ों के लिए, और विशेष रूप से मानवजाति के लिए, परमेश्वर के विचार हैं। अर्थात्, परमेश्वर द्वारा मानवजाति के लिए बहाए गए लहू और आसूँओं को कोई नहीं जानता। उस मानवजाति के लिए सृजनकर्ता के प्रेम की गहराई और वज़न को कोई नहीं बूझ सकता, कोई नहीं समझ सकता, जिसे उसने अपने हाथों से बनाया है। परमेश्वर के प्रेम को विशाल बताना उसके अस्तित्व के विस्तार और सच्चाई को समझने-बूझने में लोगों की सहायता करना है। यह इसलिए भी है, ताकि लोग "सृजनकर्ता" शब्द के वास्तविक अर्थ को अधिक गहराई से समझ सकें, और ताकि लोग "सृष्टि" नाम के सच्चे अर्थ की एक गहरी समझ प्राप्त कर सकें। "अनंत" शब्द आम तौर पर किस चीज़ का वर्णन करता है? यह सामान्यतः महासागर या ब्रहांड के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे "अनंत ब्रहांड", या "अनंत महासागर"। ब्रहांड की व्यापकता और शांत गहराई मनुष्य की समझ से परे है; वह ऐसी चीज़ है, जो मनुष्य की कल्पना को पकड़ लेती है, जिसके प्रति वे बहुत प्रशंसा महसूस करते हैं। उसका रहस्य और गहराई दृष्टि के भीतर हैं, किंतु पहुँच से बाहर हैं। जब तुम महासागर के बारे में सोचते हो, तो तुम उसके विस्तार के बारे में सोचते हो—वह असीम दिखाई देता है, और तुम उसकी रहस्यमयता और चीज़ों को धारण करने की उसकी महान क्षमता महसूस कर सकते हो। इसीलिए मैंने परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए "अनंत" शब्द का उपयोग किया है, ताकि लोगों को यह महसूस करने में मदद मिल सके कि उसके प्रेम की अगाध सुंदरता महसूस करना कितना बहुमूल्य है, और कि परमेश्वर के प्रेम की ताक़त अनंत और व्यापक है। मैंने इस शब्द का प्रयोग लोगों को परमेश्वर के प्रेम की पवित्रता, और उसके

प्रेम के माध्यम से प्रकट होने वाली उसकी गरिमा और अनुल्लंघनीयता महसूस करने में सहायता करने के लिए किया। अब क्या तुम लोगों को लगता है कि परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए "अनंत" एक उपयुक्त शब्द है? क्या परमेश्वर के प्रेम का मापन इन दो शब्दों "विशाल" और "अनंत" से हो जाता है? पूर्ण रूप से! मानवीय भाषा में केवल ये दो शब्द ही कुछ उपयुक्त, और परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के अपेक्षाकृत करीब हैं। क्या तुम लोगों को ऐसा नहीं लगता? यदि मैं तुम लोगों से परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करवाता, तो क्या तुम लोग इन दो शब्दों का उपयोग करते? बहुत संभव है कि तुम लोग न करते, क्योंकि परमेश्वर के प्रेम की तुम लोगों की समझ-बूझ एक द्विआयामी परिप्रेक्ष्य तक ही सीमित है, और वह त्रिआयामी स्तर की ऊँचाई तक नहीं पहुँची है। इसलिए यदि मैं तुम लोगों से परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करवाता, तो तुम लोगों को लगता कि तुम्हारे पास शब्दों का अभाव है या शायद तुम लोग अवाक् भी रह जाते। आज जिन दो शब्दों के बारे में मैंने बात की है, उन्हें समझना तुम लोगों के लिए कठिन हो सकता है, या शायद तुम लोग उनसे सहमत ही न हों। यह केवल यही दर्शाता है कि परमेश्वर के प्रेम के बारे में तुम लोगों की समझ-बूझ सतही और एक संकीर्ण दायरे तक सीमित है। मैंने पहले कहा है कि परमेश्वर निस्स्वार्थ है; तुम लोगों को यह शब्द "निस्स्वार्थ" याद है। क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर के प्रेम का केवल निस्स्वार्थ के रूप में वर्णन किया जा सकता हो? क्या यह बहुत संकीर्ण दायरा नहीं है? तुम लोगों को इस मुद्दे पर और अधिक चिंतन करना चाहिए, ताकि तुम इससे कुछ प्राप्त कर सको।

ऊपर हमने प्रथम चमत्कार से परमेश्वर के स्वभाव और सार को देखा। भले ही यह एक कहानी है, जिसे लोग कई हज़ार वर्षों से पढ़ते आ रहे हैं, इसका एक सरल कथानक है, और यह लोगों को एक साधारण घटना दिखाती है, फिर भी इस सरल कथानक में हम कुछ अधिक मूल्यवान चीज़ देख सकते हैं, जो कि परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप है। ये चीज़ें, जो उसका स्वरूप हैं, स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करती हैं और स्वयं परमेश्वर के विचारों की एक अभिव्यक्ति हैं। जब परमेश्वर अपने विचार व्यक्त करता है, तो यह उसके हृदय की आवाज़ की अभिव्यक्ति होती है। वह आशा करता है कि ऐसे लोग होंगे, जो उसे समझ सकते हैं, उसे जान सकते हैं, और उसकी इच्छा को समझ सकते हैं, और जो उसके हृदय की आवाज़ सुन सकते हैं और जो उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सक्रियता से सहयोग करेंगे। प्रभु यीशु द्वारा की गई ये चीज़ें परमेश्वर की मूक अभिव्यक्ति थीं।

आगे, आओ हम इस अंश पर नज़र डालें : लाज़र का पुनरूत्थान परमेश्वर को महिमामंडित करता है।

इस अंश को पढ़ने के बाद इसका तुम लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा? प्रभु यीशु द्वारा किए गए इस चमत्कार का महत्व पहले वाले चमत्कार से बहुत अधिक था, क्योंकि कोई भी चमत्कार किसी मरे हुए व्यक्ति को क़ब्र से बाहर लाने से ज्यादा आश्चर्यजनक नहीं हो सकता। उस युग में प्रभु यीशु का ऐसा कुछ करना अत्यंत महत्वपूर्ण था। चूँकि परमेश्वर देहधारी हो गया था, इसलिए लोग केवल उसके शारीरिक रूप-रंग, उसके व्यावहारिक पक्ष, और उसके महत्वहीन पक्ष को ही देख सकते थे। यदि कुछ लोगों ने उसके चरित्र की कोई चीज़ या कुछ विशेष योग्यताएँ देखी और समझी भी थीं, जो उसमें दिखाई देती थीं, तो भी यह कोई नहीं जानता था कि प्रभु यीशु कहाँ से आया है, अपने सार में वह वास्तव में कौन है, और वह वास्तव में और क्या कर सकता है। यह सब मानवजाति को अज्ञात था। इसलिए बहुत-से लोग प्रभु यीशु से संबंधित इन प्रश्नों का उत्तर देने और सत्य जानने के लिए प्रमाण ढूँढ़ना चाहते थे। क्या अपनी पहचान साबित करने के लिए परमेश्वर कुछ कर सकता था? परमेश्वर के लिए यह एक आसान बात थी—बच्चों का खेल था। वह अपनी पहचान और सार साबित करने के लिए कहीं भी, किसी भी समय कुछ कर सकता था, परंतु चीज़ों को करने का परमेश्वर का अपना तरीका था—वह हर चीज़ एक योजना के साथ और चरणों में करता था। उसने चीज़ों को विवेकहीनता से नहीं किया; मनुष्य को दिखाने हेतु कुछ करने के लिए सही समय और सही अवसर का इंतज़ार किया, कुछ ऐसा जो अर्थपूर्ण हो। इस तरह उसने अपना अधिकार और अपनी पहचान प्रमाणित की। तो क्या तब लाज़र का फिर से जी उठना प्रभु यीशु की पहचान प्रमाणित कर पाया? आओ, पवित्रशास्त्र के इस अंश को देखें : "और यह कहकर, उसने बड़े शब्द से पुकारा, हे लाज़र, निकल आ! जो मर गया था निकल आया...।" जब प्रभु यीशु ने ऐसा किया, तो उसने बस एक बात कही : "हे लाज़र, निकल आ!" तब लाजर अपनी क़ब्र से बाहर निकल आया—यह प्रभु द्वारा बोले गए कुछ वचनों के कारण संपन्न हुआ था। इस दौरान प्रभु यीशु ने न तो कोई वेदी स्थापित की, न ही उसने कोई अन्य गतिविधि की। उसने बस यह एक बात कही। इसे कोई चमत्कार कहा जाना चाहिए या आज्ञा? या यह किसी प्रकार की जादूगरी थी? सतही तौर पर, ऐसा प्रतीत होता है कि इसे एक चमत्कार कहा जा सकता है, और यदि तुम इसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य से देखो, तो निस्संदेह तुम तब भी इसे एक चमत्कार ही कह सकते हो। किंतु इसे किसी मृत आत्मा को वापस बुलाने का जादू निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, और यह किसी तरह की जादूगरी तो बिलकुल भी नहीं थी। यह कहना सही है कि यह चमत्कार सृजनकर्ता के अधिकार का अत्यधिक सामान्य, छोटा-सा प्रदर्शन था। यह परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य है। परमेश्वर

के पास किसी व्यक्ति को मारने, उसकी आत्मा उसके शरीर से निकालने और अधोलोक में या जहाँ भी उसे जाना चाहिए, भेजने का अधिकार है। कोई कब मरता है और मृत्यु के बाद कहाँ जाता है—यह परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया जाता है। वह ये निर्णय किसी भी समय और कहीं भी कर सकता है, वह मनुष्यों, घटनाओं, वस्तुओं, स्थान या भूगोल द्वारा विवश नहीं होता। यदि वह इसे करना चाहता है, तो वह इसे कर सकता है, क्योंकि सभी चीज़ें और जीवित प्राणी उसके शासन के अधीन हैं, और सभी चीज़ें उसके वचन और अधिकार द्वारा उत्पन्न होती हैं, अस्तित्व में रहती हैं और नष्ट हो जाती हैं। वह किसी मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित कर सकता है, और यह भी वह किसी भी समय, कहीं भी कर सकता है। यह वह अधिकार है, जो केवल सृजनकर्ता के पास है।

जब प्रभु यीशु ने मृत लाज़र को पुनर्जीवित करने जैसी चीज़ें कीं, तो उसका उद्देश्य मनुष्यों और शैतान के देखने के लिए प्रमाण देना, और मनुष्य और शैतान को यह ज्ञात करवाना था कि मानवजाति से संबंधित सभी चीज़ें, मानवजाति का जीवन और उसकी मृत्यु परमेश्वर द्वारा निर्धारित की जाती हैं, और कि भले ही वह देहधारी हो गया था, फिर भी इस भौतिक संसार का, जिसे देखा जा सकता है, और साथ ही आध्यात्मिक संसार का भी, जिसे मनुष्य नहीं देख सकते, वही नियंत्रक था। यह इसलिए था, ताकि मनुष्य और शैतान जान लें कि मानवजाति से संबंधित कुछ भी शैतान के नियंत्रण में नहीं है। यह परमेश्वर के अधिकार का प्रकाशन और प्रदर्शन था, और यह सभी चीज़ों को यह संदेश देने का परमेश्वर का एक तरीका भी था कि मानवजाति का जीवन और मृत्यु परमेश्वर के हाथों में है। प्रभु यीशु द्वारा लाज़र को पुनर्जीवित किया जाना मानवजाति को शिक्षा और निर्देश देने का सृजनकर्ता का एक तरीका था। यह एक ठोस कार्य था, जिसमें उसने मानवजाति को निर्देश और पोषण प्रदान करने के लिए अपने सामर्थ्य और अधिकार का उपयोग किया था। यह सृजनकर्ता द्वारा बिना वचनों का इस्तेमाल किए मानवजाति को यह सच्चाई दिखाने का एक तरीका था कि वह सभी चीज़ों का नियंत्रक है। यह उसके द्वारा व्यावहारिक कार्यों के माध्यम से मानवजाति को यह बताने का एक तरीका था कि उसके माध्यम से मिलने वाले उद्धार के अलावा कोई उद्धार नहीं है। मानवजाति को निर्देश देने के लिए उसके द्वारा प्रयुक्त यह मूक उपाय चिरस्थायी, अमिट और मनुष्य के हृदय को एक ऐसा आघात और प्रबुद्धता देने वाला है, जो कभी फीके नहीं पड़ सकते। लाज़र को पुनर्जीवित करने के कार्य ने परमेश्वर को महिमामंडित किया—इसका परमेश्वर के प्रत्येक अनुयायी पर एक गहरा प्रभाव पड़ा है। यह हर उस व्यक्ति में, जो इस घटना को गहराई से

समझता है, यह समझ और दर्शन मज़बूती से जमा देता है कि केवल परमेश्वर ही मानवजाति के जीवन और मृत्यु पर नियंत्रण कर सकता है। यद्यपि परमेश्वर के पास इस प्रकार का अधिकार है, और यद्यपि उसने लाज़र को पुनर्जीवित करने के माध्यम से मानवजाति के जीवन और मृत्यु के ऊपर अपनी संप्रभुता के बारे में एक संदेश भेजा, फिर भी यह उसका प्राथमिक कार्य नहीं था। परमेश्वर बिना किसी अर्थ के कभी कोई कार्य नहीं करता। हर एक चीज़ जो वह करता है, उसका बड़ा मूल्य होता है और वह खजानों के भंडार में एक नायाब नगीना होती है। वह "किसी व्यक्ति को क़ब्र से बाहर लाने" को अपने कार्य का प्राथमिक या एकमात्र उद्देश्य या मद बिलकुल नहीं बनाएगा। परमेश्वर ऐसी कोई चीज़ नहीं करता, जिसका कोई अर्थ न हो। एक विलक्षण घटना के रूप में लाज़र को पुनर्जीवित करना परमेश्वर का अधिकार प्रदर्शित करने और प्रभु यीशु की पहचान साबित करने के लिए पर्याप्त था। इसीलिए प्रभु यीशु ने इस प्रकार का चमत्कार दोहराया नहीं। परमेश्वर चीज़ों को अपने सिद्धांतों के अनुसार करता है। मनुष्य की भाषा में यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर अपना मस्तिष्क केवल गंभीर कार्यों में व्यस्त रखता है। अर्थात्, जब परमेश्वर चीज़ों को करता है, तब वह अपने कार्य के उद्देश्य से भटकता नहीं। वह जानता है कि इस चरण में वह कौन-सा कार्य करना चाहता है, वह क्या संपन्न करना चाहता है, और वह एकदम अपनी योजना के अनुसार कार्य करेगा। यदि किसी भ्रष्ट व्यक्ति के पास इस प्रकार की क्षमता होती, तो वह बस अपनी योग्यता प्रदर्शित करने के तरीकों के बारे में ही सोचता रहता, ताकि अन्य लोगों को पता चल जाए कि वह कितना दुर्जेय है, जिससे वे उसके सामने झुक जाएँ, ताकि वह उन्हें नियंत्रित कर सके और उन्हें निगल सके। यह बुराई शैतान से आती है—इसे भ्रष्टता कहते हैं। परमेश्वर का इस प्रकार का स्वभाव नहीं है, और उसका इस प्रकार का सार नहीं है। चीज़ों को करने के पीछे उसका उद्देश्य अपना दिखावा करना नहीं है, बल्कि मानवजाति को और अधिक प्रकाशन और मार्गदर्शन प्रदान करना है, और यही कारण है कि लोगों को बाइबल में इस तरह की घटनाओं के बहुत कम उदाहरण देखने को मिलते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि प्रभु यीशु का सामर्थ्य सीमित था, या वह इस प्रकार की चीज़ें नहीं कर सकता था। इसका कारण केवल था कि परमेश्वर ऐसा करना नहीं चाहता था, क्योंकि प्रभु यीशु द्वारा लाज़र को पुनर्जीवित करने का बहुत व्यावहारिक महत्व था, और परमेश्वर के देहधारी होने का प्राथमिक कार्य चमत्कार करना नहीं था, मुर्दों को जीवित करना नहीं था, बल्कि मानवजाति के छुटकारे का कार्य करना था। इसलिए प्रभु यीशु ने जो कार्य पूरा किया, उसमें अधिकांशत: लोगों को शिक्षा देना, उन्हें पोषण प्रदान करना और उनकी सहायता

करना था, और लाज़र को पुनर्जीवित करने जैसी घटनाएँ प्रभु यीशु द्वारा की गई सेवकाई का मात्र एक छोटा-सा हिस्सा था। इससे भी अधिक, तुम लोग कह सकते हो कि "दिखावा करना" परमेश्वर के सार का अंग नहीं है, इसलिए अधिक चमत्कार न दिखाकर प्रभु यीशु जानबूझकर संयम नहीं बरत रहा था, न ही यह पर्यावरणीय सीमाओं के कारण था, और यह सामर्थ्य की कमी के कारण तो बिलकुल भी नहीं था।

जब प्रभु यीशु ने लाज़र को पुनर्जीवित किया, तो उसने इन वचनों का उपयोग किया : "हे लाज़र, निकल आ!" उसने इसके अलावा कुछ नहीं कहा। तो ये वचन क्या दर्शाते हैं? ये दर्शाते हैं कि परमेश्वर बोलने के द्वारा कुछ भी कर सकता है, जिसमें एक मरे हुए व्यक्ति को पुनर्जीवित करना भी शामिल है। जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों का सृजन किया, जब उसने संसार बनाया, तो उसने ऐसा अपने वचनों—मौखिक आज्ञाओं, अधिकार-युक्त वचनों का उपयोग करके ही किया था, और सभी चीज़ों का सृजन इसी तरह हुआ था, और यह कार्य इसी तरह संपन्न हुआ था। प्रभु यीशु द्वारा कहे गए ये कुछ वचन परमेश्वर द्वारा उस समय कहे गए वचनों के समान थे, जब उसने आकाश और पृथ्वी और सभी चीज़ों का सृजन किया था; वे उसी तरह से परमेश्वर का अधिकार और सृजनकर्ता का सामर्थ्य रखते थे। परमेश्वर के मुँह से निकले वचनों की वजह से सभी चीज़ें बनीं और कायम रहीं, और बिलकुल वैसे ही प्रभु यीशु के मुँह से निकले वचनों के करण लाज़र अपनी क़ब्र से बाहर आ गया। यह परमेश्वर का अधिकार था, जो उसके द्वारा धारित देह में प्रदर्शित और साकार हुआ था। इस प्रकार का अधिकार और क्षमता सृजनकर्ता की और मनुष्य के उस पुत्र की है, जिसमें सृजनकर्ता साकार हुआ था। लाज़र को पुनर्जीवित करके परमेश्वर द्वारा मानवजाति को यही समझ सिखाई गई है। अब हम इस विषय पर अपनी चर्चा यहीं समाप्त करेंगे। इसके बाद, आओ पवित्रशास्त्र से कुछ और पढ़ें।

10. फरीसियों द्वारा यीशु की आलोचना

मरकुस 3:21-22 जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो वे उसे पकड़ने के लिए निकले; क्योंकि वे कहते थे कि उसका चित ठिकाने नहीं है। शास्त्री भी जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे, "उसमें शैतान है," और "वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।"

11. प्रभु यीशु की फरीसियों को डाँट

मत्ती 12:31-32 इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की

जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।

मत्ती 23:13-15 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो स्वयं ही उसमें प्रवेश करते हो और न उस में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो। हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम विधवाओं के घरों को खा जाते हो, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हो: इसलिये तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा। हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।

उपर्युक्त दो अंशों की विषयवस्तु अलग-अलग है। आओ, पहले हम पहले वाले अंश पर नज़र डालें : फरीसियों द्वारा यीशु की आलोचना।

बाइबल में फरीसियों द्वारा स्वयं यीशु और उसके द्वारा की गई चीज़ों का मूल्यांकन इस प्रकार था : "वे कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है। ... उसमें शैतान है, और वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है" (मरकुस 3:21-22)। शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा यीशु की आलोचना उनके द्वारा दूसरे लोगों के शब्दों को दोहराना भर नहीं था, न ही वह कोई निराधार अनुमान था—वह तो उनके द्वारा प्रभु यीशु के बारे में उसके कार्यों को देख-सुनकर निकाला गया निष्कर्ष था। यद्यपि उनका निष्कर्ष प्रकट रूप में न्याय के नाम पर निकाला गया था और लोगों को ऐसा दिखता था, मानो वह तथ्यों पर आधारित हो, किंतु जिस हेकड़ी के साथ उन्होंने प्रभु यीशु की आलोचना की थी, उस पर काबू रखना स्वयं उनके लिए भी कठिन था। प्रभु यीशु के प्रति उनकी घृणा की उन्मत्त ऊर्जा ने उनकी अपनी खतरनाक महत्वाकांक्षाओं और उनके दुष्ट शैतानी चेहरे, और साथ ही परमेश्वर का विरोध करने वाली उनकी द्वेषपूर्ण प्रकृति को भी उजागर कर दिया था। उनके द्वारा प्रभु यीशु की आलोचना करते हुए कही गई ये बातें उनकी जंगली महत्वाकांक्षाओं, ईर्ष्या, और परमेश्वर तथा सत्य के प्रति उनकी शत्रुता की कुरूप और द्वेषपूर्ण प्रकृति से प्रेरित थीं। उन्होंने प्रभु यीशु के कार्यों के स्रोत की खोज नहीं की, न ही उन्होंने उसके द्वारा कही या की गई चीज़ों के सार की खोज की। बल्कि उन्होंने उसके कार्य पर आँख मूँदकर, सनकभरे आवेश में और सोचे-समझे द्वेष के साथ आक्रमण किया और उसे बदनाम किया। वे यहाँ तक चले गए कि

उसके आत्मा, अर्थात् पवित्र आत्मा, जो कि परमेश्वर का आत्मा है, को भी जानबूझकर बदनाम कर दिया। "उसका चित ठिकाने नहीं है," "शैतान" और "दुष्टात्माओं का सरदार" कहने से उनका यही आशय था। अर्थात्, उन्होंने कहा कि परमेश्वर का आत्मा शैतान और दुष्टात्माओं का सरदार है। उन्होंने देह का वस्त्र पहने परमेश्वर के देहधारी आत्मा के कार्य को पागलपन कहा। उन्होंने न केवल शैतान और दुष्टात्माओं का सरदार कहकर परमेश्वर के आत्मा की ईशनिंदा की, बल्कि परमेश्वर के कार्य की भी निंदा की और प्रभु यीशु मसीह पर दोष लगाया और उसकी ईशनिंदा की। उनके द्वारा परमेश्वर के प्रतिरोध और ईशनिंदा का सार पूरी तरह से शैतान और दुष्टात्माओं द्वारा किए गए परमेश्वर के प्रतिरोध और ईशनिंदा के समान था। वे केवल भ्रष्ट मनुष्यों का प्रतिनिधित्व ही नहीं करते थे, बल्कि इससे भी बढ़कर, वे शैतान के मूर्त रूप थे। वे मानवजाति के बीच शैतान के लिए एक माध्यम थे, और वे शैतान के सह-अपराधी और अनुचर थे। उनकी ईशनिंदा और उनके द्वारा प्रभु यीशु मसीह की अवमानना का सार हैसियत के लिए परमेश्वर के साथ उनका संघर्ष, परमेश्वर के साथ उनकी प्रतिस्पर्धा और उनके द्वारा परमेश्वर की कभी न खत्म होने वाली परीक्षा था। उनके द्वारा परमेश्वर के प्रतिरोध और उसके प्रति उनके शत्रुतापूर्ण रवैये के सार ने, और साथ ही उनके वचनों और उनके विचारों ने सीधे-सीधे परमेश्वर के आत्मा की ईशनिंदा की और उसे क्रोधित किया। इसलिए, जो कुछ उन्होंने कहा और किया था, उसके आधार पर परमेश्वर ने एक उचित न्याय का निर्धारण किया, और परमेश्वर ने उनके कर्मों को पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप ठहराया। यह पाप इस लोक और परलोक, दोनों में अक्षम्य है, जैसा कि पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित अंश से प्रमाणित होता है : "मनुष्य द्वारा की गई पवित्र आत्मा की निंदा क्षमा न की जाएगी" और "जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।" आज, आओ हम परमेश्वर के इन वचनों के सच्चे अर्थ के बारे में बात करें : "उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।" अर्थात्, आओ इस पर से रहस्य हटाएँ कि परमेश्वर किस प्रकार इन वचनों को पूरा करता है : "उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।"

हमने जो कुछ भी बात की है, वह परमेश्वर के स्वभाव से, और लोगों, घटनाओं और चीज़ों के प्रति उसके रवैये से संबंधित है। स्वाभाविक रूप से, ऊपर दिए गए दो अंश भी इसके अपवाद नहीं हैं। क्या तुम लोगों ने पवित्रशास्त्र के इन दो अंशों में किसी चीज़ पर ध्यान दिया? कुछ लोग कहते हैं कि वे इनमें परमेश्वर का क्रोध देखते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वे इनमें परमेश्वर के स्वभाव के उस पक्ष को देखते हैं,

जो मानवजाति से अपमान सहन नहीं कर सकता, और यदि लोग ऐसा कुछ करते हैं जिससे परमेश्वर की ईशनिंदा होती है, तो वे उसकी क्षमा प्राप्त नहीं करेंगे। इस तथ्य के बावजूद कि लोग इन दो अंशों में परमेश्वर का क्रोध और मानवजाति द्वारा किए जाने वाले अपमान के प्रति उसकी असहनशीलता देखते और महसूस करते हैं, वे वास्तव में उसके रवैये को नहीं समझते। इन दो अंशों में परमेश्वर की निंदा करने वाले और उसे क्रोध दिलाने वाले लोगों के प्रति उसके सच्चे रवैये और दृष्टिकोण के छिपे संदर्भ निहित हैं। उसका रवैया और दृष्टिकोण इस अंश के सच्चे अर्थ को प्रदर्शित करते हैं : "जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।" जब लोग परमेश्वर की ईशनिंदा करते हैं और जब वे उसे क्रोधित करते हैं, तो वह एक निर्णय जारी करता है, और यह निर्णय उसके द्वारा जारी किया गया एक परिणाम होता है। यह बाइबल में इस प्रकार से वर्णित है : "इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी" (मत्ती 12:31), और "हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय!" (मत्ती 23:13)। किंतु, क्या बाइबल में यह दर्ज है कि उन शास्त्रियों और फरीसियों का, और साथ ही उन लोगों का क्या परिणाम था, जिन्होंने प्रभु यीशु द्वारा ये चीज़ें कहे जाने के बाद कहा था कि वह पागल है? क्या यह दर्ज है कि उन्होंने किसी प्रकार का दंड सहा था? नहीं—यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है। यहाँ " नहीं" कने का यह अर्थ नहीं है कि उसमें ऐसा कुछ भी दर्ज नहीं है, बल्कि वास्तव में वह कोई ऐसा परिणाम नहीं था, जिसे मनुष्य की आँखों से देखा जा सकता हो। "यह दर्ज नहीं था" कहना कुछ चीज़ों को सँभालने के संबंध में परमेश्वर के रवैये और सिद्धांत को स्पष्ट करता है। जो लोग परमेश्वर की निंदा करते हैं या उसका प्रतिरोध करते हैं, यहाँ तक कि जो उसकी बदनामी करते हैं—वे लोग, जो जानबूझकर उस पर हमला करते हैं, उसे बदनाम करते हैं और उसे कोसते हैं—परमेश्वर उनकी ओर आँख या कान बंद नहीं कर लेता, बल्कि उनके प्रति उसका एक स्पष्ट रवैया होता है। वह इन लोगों से घृणा करता है और अपने हृदय में उनकी निंदा करता है। यहाँ तक कि वह यह भी खुलकर घोषित कर देता है कि उनका परिणाम क्या होगा, ताकि लोग जान जाएँ कि जो लोग उसकी निंदा करते हैं, उनके प्रति उसका एक स्पष्ट रवैया है, और ताकि वे जान जाएँ कि वह उनका परिणाम कैसे निर्धारित करेगा। हालाँकि, परमेश्वर के इन बातों को कहने के बाद, अभी भी लोग शायद ही उस सच्चाई को देख सकते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार ऐसे लोगों को सँभालेगा, और वे परमेश्वर द्वारा उनके लिए जारी किए जाने वाले परिणाम और निर्णय के

पीछे के सिद्धांतों को नहीं समझ सकते। अर्थात्, मानवजाति परमेश्वर द्वारा उन्हें सँभालने के विशेष रवैये और पद्धतियों को नहीं देख सकती। इसका संबंध चीज़ों को करने के परमेश्वर के सिद्धांतों से है। कुछ लोगों के दुष्ट व्यवहार से निपटने के लिए परमेश्वर तथ्यों के घटित होने का उपयोग करता है। अर्थात्, वह उनके पाप की घोषणा नहीं करता और उनके परिणाम निर्धारित नहीं करता, बल्कि उनका दंड और उचित प्रतिफल प्रदान करने के लिए वह सीधे तथ्यों के घटित होने का उपयोग करता है। जब ये तथ्य घटित होते हैं, तो लोगों की देह कष्ट भुगतती है; अर्थात् दंड ऐसा होता है, जिसे मनुष्य की आँखें देख सकती हैं। कुछ लोगों के दुष्ट व्यवहार से निपटते हुए परमेश्वर बस वचनों से शाप देता है और उसका क्रोध भी उनके ऊपर पड़ता है, किंतु उन्हें मिलने वाला दंड ऐसा हो सकता है, जिसे लोग देख नहीं सकते। फिर भी, इस प्रकार का परिणाम उन परिणामों से कहीं ज़्यादा गंभीर हो सकता है, जिन्हें लोग देख सकते हैं, जैसे कि दंडित किया जाना या मार दिया जाना। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जिन परिस्थितियों में परमेश्वर ने इस प्रकार के व्यक्तियों को न बचाने या उन पर अब और दया अथवा सहनशीलता न दिखाने और उन्हें अब और अवसर न देने का निश्चय किया है, उनमें उनके प्रति उसका रवैया उन्हें अलग कर देने का होता है। "अलग कर देने" का यहाँ क्या अर्थ है? इन शब्दों का मूल अर्थ है "किसी चीज़ को एक तरफ रखना, उस पर अब और ध्यान न देना।" किंतु यहाँ, जब परमेश्वर "किसी को अलग कर देता है", तो इसके अर्थ की दो भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ होती हैं : पहली व्याख्या है कि उसने उस व्यक्ति का जीवन और उसकी हर चीज़ शैतान को दे दी है, ताकि वह उसके साथ निपटे, और परमेश्वर अब उस व्यक्ति के लिए उत्तरदायी नहीं होगा और अब वह उसका प्रबंधन नहीं करेगा। चाहे वह व्यक्ति पागल या मूर्ख हो जाए, और चाहे जीवित रहे या मर जाए, या भले ही वह अपना दंड भोगने के लिए नरक में उतर जाए, इनमें से किसी का भी परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं होगा। इसका मतलब होगा कि इस तरह के प्राणी का सृष्टिकर्ता के साथ कोई संबंध नहीं होगा। दूसरी व्याख्या है कि परमेश्वर ने यह निर्धारित किया है कि वह स्वयं इस व्यक्ति के साथ, अपने ही हाथों से, कुछ करना चाहता है। संभव है, वह इस व्यक्ति की सेवा का उपयोग करे, या वह उसका एक विषमता के रूप में उपयोग करे। संभव है, इस प्रकार के व्यक्ति से निपटने के लिए उसके पास कोई विशेष तरीका हो, उसके साथ व्यवहार करने का कोई विशेष तरीका हो, उदाहरण के लिए, पौलुस के समान। यह परमेश्वर के हृदय का सिद्धांत और उसका रवैया है, जिससे उसने इस प्रकार के व्यक्ति से निपटना तय किया है। इसलिए जब लोग परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं, उसे बदनाम करते हैं

और उसकी ईशनिंदा करते हैं, यदि वे उसके स्वभाव को भड़काते हैं, अथवा यदि वे परमेश्वर को उसकी सहनशीलता की सीमा से परे धकेल देते हैं, तो परिणाम अकल्पनीय होते हैं। सबसे गंभीर परिणाम यह होता है कि परमेश्वर हमेशा के लिए उनकी ज़िंदगी और उनकी हर चीज़ शैतान को सौंप देता है। उन्हें अनंत काल तक क्षमा नहीं किया जाएगा। इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति शैतान के मुँह का निवाला, उसके हाथ का खिलौना बन गया है, और तब से परमेश्वर का उसके साथ कुछ लेना-देना नहीं है। क्या तुम लोग कल्पना कर सकते हो कि जब शैतान ने अय्यूब को प्रलोभन दिया था, तो यह किस प्रकार की दुर्गति थी? उस स्थिति में भी, जबकि शैतान को अय्यूब के जीवन को नुकसान पहुँचाने की अनुमति नहीं थी, अय्यूब ने बड़ी कठिन पीड़ा सही थी। और क्या उस विनाश की कल्पना करना और भी अधिक कठिन नहीं है, जिसे शैतान उस व्यक्ति पर ढाएगा, जिसे पूरी तरह से शैतान को सौंपा जा चुका है, जो पूरी तरह से शैतान के चंगुल में है, जिसने परमेश्वर की देखरेख और करुणा पूरी तरह से गँवा दी है, जो अब सृष्टिकर्ता के शासन के अधीन नहीं है, जिससे परमेश्वर की आराधना करने का अधिकार और परमेश्वर के शासन के अधीन एक प्राणी होने का अधिकार छीना जा चुका है और जिसका सृष्टि के प्रभु के साथ पूरे तरह से संबंध-विच्छेद कर दिया गया है? शैतान द्वारा अय्यूब की प्रताड़ना ऐसी ही थी, जिसे मनुष्य की आँखों से देखा जा सकता था, परंतु यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति का जीवन शैतान को सौंप देता है, तो इसके परिणाम मनुष्य की कल्पना से परे होते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों का गाय या गधे के रूप में पुनर्जन्म हो सकता है, जबकि कुछ लोगों पर अशुद्ध, दुष्ट आत्माओं द्वारा कब्जा किया जा सकता है, इत्यादि। ऐसे परिणाम होते हैं उन लोगों में से कुछ के, जिन्हें परमेश्वर द्वारा शैतान को सौंप दिया जाता है। बाहर से ऐसा दिखाई देता है, जैसे कि प्रभु यीशु का उपहास करने वाले, उसे बदनाम करने वाले, उसकी भर्त्सना करने वाले और उसकी ईशनिंदा करने वाले लोगों ने कोई परिणाम नहीं भुगता। किंतु सच्चाई यह है कि परमेश्वर का हर एक चीज़ से निपटने का एक दृष्टिकोण है। हो सकता है कि वह लोगों को यह बताने के लिए स्पष्ट भाषा का उपयोग न करे कि जिस प्रकार वह हर तरह के लोगों से निपटता है, उसका क्या परिणाम होता है। कभी-कभी वह सीधे बात नहीं करता, बल्कि सीधे कार्रवाई करता है। वह परिणाम के बारे में बात नहीं करता, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई परिणाम ही नहीं है—वस्तुतः, ऐसे मामले में संभव है कि परिणाम बहुत ज़्यादा गंभीर हो। बाहर से ऐसा लग सकता है, मानो कुछ लोग ऐसे हैं, जिनसे परमेश्वर अपने रवैये के बारे में बात नहीं करता, लेकिन वास्तव में परमेश्वर ने लंबे समय तक उन पर कोई ध्यान देना नहीं चाहा है। वह उन्हें अब

और देखना नहीं चाहता। उनके द्वारा की गई चीज़ों और उनके व्यवहार की वजह से, उनकी प्रकृति और उनके सार की वजह से परमेश्वर केवल उन्हें अपनी नज़रों से गायब देखना चाहता है, उन्हें सीधे शैतान को सौंप देना चाहता है, उनकी आत्मा, प्राण और शरीर शैतान को दे देना चाहता है, शैतान को उनके साथ जो चाहे वह करने देना चाहता है। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर किस हद तक उनसे नफ़रत करता है, वह किस हद तक उनसे उकता गया है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को इस हद तक क्रोधित कर देता है कि परमेश्वर उन्हें दोबारा देखना तक नहीं चाहता और उन्हें पूर्णत: छोड़ देना चाहता है, इस हद तक क्रोधित कर देता है कि परमेश्वर स्वयं उससे निपटना भी नहीं चाहता—यदि वह उस स्थिति तक पहुँच जाता है कि परमेश्वर उसे उसके साथ जो चाहे वह करने और उसे मनचाहे तरीके से नियंत्रित करने, उसका मनचाहे तरीके से उपभोग करने और उसके साथ मनचाहा व्यवहार करने के लिए शैतान को सौंप देगा—तो ऐसा व्यक्ति पूरी तरह से समाप्त है। मनुष्य होने का उसका अधिकार स्थायी रूप से रद्द कर दिया गया है, और परमेश्वर की सृष्टि का एक प्राणी होने का उसका अधिकार समाप्त हो गया है। क्या यह सबसे गंभीर किस्म का दंड नहीं है?

उपर्युक्त सब इन वचनों की पूर्ण व्याख्या है : "उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा," और यह पवित्रशास्त्र के इन अंशों पर एक सरल टीका भी है। मेरा मानना है कि अब तुम सबको इसकी समझ है।

अब आओ, पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित अंश पढ़ें।

12. अपने पुनरुत्थान के बाद अपने चेलों के लिए यीशु के वचन

यूहन्ना 20:26-29 आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था; और द्वार बन्द थे, तब यीशु आया और उनके बीच में खड़े होकर कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" तब उसने थोमा से कहा, "अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।" यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" यीशु ने उससे कहा, "तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिये विश्वास किया है? धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।"

यूहन्ना 21:16-17 उसने फिर दूसरी बार उससे कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम

रखता है?" उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" उसने उससे कहा, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" उसने तीसरी बार उससे कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है?" पतरस उदास हुआ कि उसने उससे तीसरी बार ऐसा कहा, "क्या तू मुझ से प्रीति रखता है?" और उससे कहा, "हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है; तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।"

ये अंश कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बताते हैं, जो प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद कीं और अपने चेलों से कहीं। पहले, आओ पुनरुत्थान से पहले और बाद में प्रभु यीशु में आए किसी अंतर पर नज़र डालें। क्या वह अभी भी वही पुराने दिनों वाला प्रभु यीशु था? पवित्रशास्त्र में पुनरुत्थान के बाद के प्रभु यीशु का वर्णन करने वाली निम्नलिखित पंक्ति है : "और द्वार बन्द थे, तब यीशु आया और उनके बीच में खड़े होकर कहा, 'तुम्हें शान्ति मिले।'" यह बहुत स्पष्ट है कि उस समय प्रभु यीशु देह में अवस्थित नहीं था, बल्कि अब वह एक आध्यात्मिक देह में था। ऐसा इसलिए था, क्योंकि उसने देह की सीमाओं का अतिक्रमण कर लिया था; यद्यपि द्वार बंद था, फिर भी वह लोगों के बीच आ सकता था और उन्हें अपने आपको देखने दे सकता था। पुनरुत्थान के बाद के प्रभु यीशु और पुनरुत्थान के पहले के देह में रहने वाले प्रभु यीशु के बीच यह सबसे बड़ा अंतर है। यद्यपि उस समय के आध्यात्मिक देह के रूप-रंग और उससे पहले के प्रभु यीशु के रूप-रंग में कोई अंतर नहीं था, फिर भी उस पल प्रभु यीशु ऐसा बन गया था, जो लोगों को एक अजनबी के समान लगता था, क्योंकि मरकर जी उठने के बाद वह एक आध्यात्मिक देह बन गया था, और उसके पिछले देह की तुलना में यह आध्यात्मिक देह लोगों के लिए कहीं ज़्यादा रहस्यमय और भ्रमित करने वाला था। इसने प्रभु यीशु और लोगों के बीच की दूरी और अधिक बढ़ा दी, और लोगों ने अपने हृदय में महसूस किया कि उस समय प्रभु यीशु कहीं ज़्यादा रहस्यमय बन गया था। लोगों की ये अनुभूतियाँ और भावनाएँ अचानक उन्हें वापस उस परमेश्वर पर विश्वास करने के युग में ले गईं, जिसे देखा और छुआ नहीं जा सकता था। तो, प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद पहली चीज़ यह की, कि उसने इस बात की पुष्टि करने के लिए कि वह मौजूद है, और अपने पुनरुत्थान के तथ्य की पुष्टि करने के लिए अपने को सबको देखने दिया। इसके अतिरिक्त, इस कार्य ने लोगों के साथ उसका संबंध उसी रूप में बहाल कर दिया, जैसा वह तब था जब वह देह में कार्य कर रहा था, वह वो मसीह था जिसे वे देख और छू सकते थे। इसका एक परिणाम यह है कि लोगों को इस बात में कोई संदेह नहीं रहा कि सूली पर चढ़ाए जाने के बाद प्रभु यीशु मरकर पुन: जी

उठा है, और उन्हें मानवजाति को छुड़ाने के प्रभु यीशु के कार्य में भी कोई संदेह नहीं रहा था। दूसरा परिणाम यह है कि पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु के लोगों के सामने प्रकट होने और लोगों को अपने को देखने और छूने देने के तथ्य ने मानवजाति को अनुग्रह के युग में दृढ़ता से सुरक्षित किया, और यह सुनिश्चित किया कि अब से, इस कल्पित तथ्य के आधार पर कि प्रभु यीशु "गायब" हो गया है या "बिना कुछ कहे छोड़कर चला गया है", लोग व्यवस्था के पिछले युग में नहीं लौटेंगे। इस प्रकार उसने सुनिश्चित किया वे प्रभु यीशु की शिक्षाओं और उसके द्वारा किए गए कार्य का अनुसरण करते हुए लगातार आगे बढ़ते रहेंगे। इस प्रकार, अनुग्रह के युग के कार्य में औपचारिक रूप से एक नया चरण खुल गया था, और उस क्षण से व्यवस्था के अधीन रह रहे लोग औपचारिक रूप से व्यवस्था से बाहर आ गए और उन्होंने एक नए युग में, एक नई शुरुआत में प्रवेश किया। पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु के मानवजाति के सामने प्रकट होने के ये बहुआयामी अर्थ हैं।

चूँकि प्रभु यीशु अब एक आध्यात्मिक देह में था, तो लोग उसे कैसे छू और देख सकते थे? इस प्रश्न का प्रभु यीशु के मानवजाति के सामने प्रकट होने के महत्व से संबंध है। क्या तुम लोगों ने पवित्रशास्त्र के इन अंशों में, जो हमने अभी पढ़े, किसी चीज़ पर ध्यान दिया? सामान्यतः आध्यात्मिक देहों को देखा या छुआ नहीं जा सकता, और पुनरुत्थान के बाद जो कार्य प्रभु यीशु ने हाथ में लिया था, वह पहले ही पूर्ण हो चुका था। इसलिए सिद्धांततः, उसे लोगों के बीच उनसे मिलने के लिए अपनी मूल छवि में वापस आने की बिलकुल भी आवश्यकता नहीं थी, किंतु थोमा जैसे लोगों के सामने प्रभु यीशु की आध्यात्मिक देह के प्रकटन ने उसके प्रकटन के महत्व को और भी ज़्यादा दृढ़ कर दिया, जिससे वह लोगों के हृदय में अधिक गहराई तक प्रवेश कर गया। जब वह थोमा के पास आया, तो उसने संदेह करने वाले थोमा को अपने हाथों को छूने दिया, और उससे कहा : "अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।" ये वचन और ये कार्य ऐसी चीज़ें नहीं थीं जिन्हें प्रभु यीशु केवल अपने पुनरुत्थान के बाद कहना या करना चाहता था; वस्तुतः, ये वे चीज़ें थीं जिन्हें वह सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले करना चाहता था। यह स्पष्ट है कि सूली पर चढ़ाए जाने से पहले ही उसे थोमा जैसे लोगों की समझ थी। तो हम इससे क्या देख सकते हैं? अपने पुनरुत्थान के बाद भी वह वही प्रभु यीशु था। उसका सार नहीं बदला था। थोमा के संदेह केवल तभी शुरू नहीं हुए थे, बल्कि जब से वह प्रभु यीशु का अनुसरण कर रहा था, तब से पूरे समय उसके साथ थे। परंतु यह प्रभु यीशु था, जो मरकर जी

उठा था और आध्यात्मिक संसार से अपनी मूल छवि के साथ, अपने मूल स्वभाव के साथ, और अपने देह में रहने के समय से मानवजाति की अपनी समझ के साथ लौटा था, इसलिए वह पहले थोमा के पास गया और उससे अपने पंजर पर हाथ रखवाया, पुनरुत्थान के बाद उसने थोमा को अपनी आध्यात्मिक देह ही नहीं दिखाई, बल्कि अपनी आध्यात्मिक देह के अस्तित्व को स्पर्श और महसूस भी कराया, और उसके संदेह पूरी तरह से मिटा दिए। प्रभु यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने से पहले थोमा ने हमेशा उसके मसीह होने पर संदेह किया था, और वह विश्वास करने में असमर्थ था। परमेश्वर पर उसका विश्वास जो कुछ वह अपनी आँखों से देख सका था, जो कुछ वह अपने हाथों से छू सका था, केवल उसके आधार पर ही स्थापित हुआ था। प्रभु यीशु को इस प्रकार के व्यक्तियों के विश्वास के बारे में अच्छी समझ थी। वे मात्र स्वर्गिक परमेश्वर पर विश्वास करते थे, और जिसे परमेश्वर ने भेजा था, उस पर या देहधारी मसीह पर बिलकुल भी विश्वास नहीं करते थे, न ही वे उसे स्वीकार करते थे। थोमा को प्रभु यीशु का अस्तित्व स्वीकार करवाने और उसका विश्वास दिलाने के लिए, और यह भी कि वह सचमुच देहधारी परमेश्वर है, उसने थोमा को अपना हाथ बढ़ाकर अपने पंजर को छूने दिया। क्या प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के पहले और बाद में थोमा के संदेह करने में कुछ अंतर था? वह हमेशा संदेह करता था, और सिवाय प्रभु यीशु के आध्यात्मिक देह के व्यक्तिगत रूप से उसके सामने प्रकट होने और उसे अपने देह में कीलों के निशान छूने देने के, कोई उपाय नहीं था कि कोई उसके संदेहों का समाधान कर सके और उन्हें मिटा सके। इसलिए प्रभु यीशु द्वारा उसे अपने पंजर को छूने देने और कीलों के निशानों की मौज़ूदगी को वास्तव में महसूस करने देने के बाद से थोमा के संदेह गायब हो गए, और उसने सच में जान लिया कि प्रभु यीशु मरकर जी उठा है, और उसने स्वीकार किया और माना कि प्रभु यीशु सच्चा मसीह और देहधारी परमेश्वर है। यद्यपि इस समय थोमा ने अब और संदेह नहीं किया, किंतु उसने मसीह से मिलने का अवसर हमेशा के लिए गँवा दिया था। उसने उसके साथ रहने, उसका अनुसरण करने और उसे जानने का अवसर हमेशा के लिए गँवा दिया था। उसने स्वयं को प्रभु यीशु द्वारा पूर्ण बनाए जाने का अवसर गँवा दिया था। प्रभु यीशु के प्रकटन और उसके वचनों ने उन लोगों के विश्वास पर एक निष्कर्ष और एक निर्णय दे दिया, जो संदेहों से भरे हुए थे। उसने संदेह करने वालों को, उन लोगों को जो केवल स्वर्गिक परमेश्वर पर विश्वास करते थे और मसीह पर विश्वास नहीं करते थे, यह बताने के लिए अपने मूल वचनों और कार्यों का उपयोग किया : परमेश्वर ने उनके विश्वास की प्रशंसा नहीं की, न ही उसने उनके द्वारा संदेह करते हुए अनुसरण करने की प्रशंसा की। उनके द्वारा परमेश्वर और

मसीह पर पूरी तरह से विश्वास करने का दिन ही परमेश्वर द्वारा अपना महान कार्य पूरा करने का दिन हो सकता था। निस्संदेह, यही वह दिन भी था, जब उनके संदेहों पर निर्णय दिया गया। मसीह के प्रति उनके रवैये ने उनका भाग्य निर्धारित कर दिया, और उनके अड़ियल संदेह का मतलब था कि उनके विश्वास ने उन्हें कोई फल प्रदान नहीं किया, और उनकी कठोरता का तात्पर्य था कि उनकी आशाएँ व्यर्थ थीं। चूँकि स्वर्गिक परमेश्वर पर उनका विश्वास भ्रांतियों पर पला था, और मसीह के प्रति उनका संदेह वास्तव में परमेश्वर के प्रति उनका वास्तविक रवैया था, इसलिए भले ही उन्होंने प्रभु यीशु के देह की कीलों के निशानों को छुआ था, फिर भी उनका विश्वास बेकार ही था और उनके परिणाम को बाँस की टोकरी से पानी खींचने के रूप में वर्णित किया जा सकता था—वह सब व्यर्थ था। जो कुछ प्रभु यीशु ने थोमा से कहा, वह उसका हर एक व्यक्ति से स्पष्ट रूप से कहने का भी तरीका था : पुनरुत्थित प्रभु यीशु ही वह प्रभु यीशु है, जिसने साढ़े तैंतीस वर्ष मानवजाति के बीच काम करते हुए बिताए थे। यद्यपि उसे सूली पर चढ़ा दिया गया था और उसने मृत्यु की छाया की घाटी का अनुभव किया था, और यद्यपि उसने पुनरुत्थान का अनुभव किया था, फिर भी उसमें किसी भी पहलू से कोई बदलाव नहीं हुआ था। यद्यपि अब उसके शरीर पर कीलों के निशान थे, और यद्यपि वह पुनरुत्थित हो गया था और क़ब्र से बाहर आ गया था, फिर भी उसका स्वभाव, मानवजाति की उसकी समझ, और मानवजाति के प्रति उसके इरादे ज़रा भी नहीं बदले थे। साथ ही, वह लोगों से कह रहा था कि वह सूली से नीचे उतर आया है, उसने पाप पर विजय पाई है, कठिनाइयों पर काबू पाया है, और मृत्यु पर जीत हासिल की है। कीलों के निशान शैतान पर उसके विजय के प्रमाण मात्र थे, संपूर्ण मानवजाति को सफलतापूर्वक छुड़ाने के लिए एक पापबलि होने के प्रमाण थे। वह लोगों से कह रहा था कि उसने पहले ही मानवजाति के पापों को अपने ऊपर ले लिया है और छुटकारे का अपना कार्य पूरा कर लिया है। जब वह अपने चेलों को देखने के लिए लौटा, तो उसने अपने प्रकटन के माध्यम से यह संदेश दिया : "मैं अभी भी जीवित हूँ, मैं अभी भी मौजूद हूँ; आज मैं वास्तव में तुम लोगों के सामने खड़ा हूँ, ताकि तुम लोग मुझे देख और छू सको। मैं हमेशा तुम लोगों के साथ रहूँगा।" प्रभु यीशु थोमा के मामले का उपयोग भविष्य के लोगों को यह चेतावनी देने के लिए भी करना चाहता था : यद्यपि तुम प्रभु यीशु पर अपने विश्वास में उसे न तो देख सकते हो और न ही छू सकते हो, फिर भी तुम अपने सच्चे विश्वास के कारण धन्य हो, और तुम अपने सच्चे विश्वास के कारण प्रभु यीशु को देख सकते हो, और इस प्रकार का व्यक्ति धन्य है।

बाइबल में दर्ज ये वचन, जिन्हें प्रभु यीशु ने तब कहा था जब वह थोमा के सामने प्रकट हुआ था, अनुग्रह के युग में सभी लोगों के लिए बड़े सहायक हैं। थोमा के सामने उसका प्रकटन और उससे कहे गए उसके वचनों का भविष्य की पीढ़ियों के ऊपर एक गहरा प्रभाव पड़ा है; उनका सार्वकालिक महत्व है। थोमा उस प्रकार के व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो परमेश्वर पर विश्वास तो करते हैं, मगर उस पर संदेह भी करते हैं। वे शंकालु प्रकृति के होते हैं, उनका हृदय कुटिल होता है, वे विश्वासघाती होते हैं, और उन चीज़ों पर विश्वास नहीं करते, जिन्हें परमेश्वर संपन्न कर सकता है। वे परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और उसकी संप्रभुता पर विश्वास नहीं करते, न ही वे देहधारी परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। किंतु प्रभु यीशु का पुनरुत्थान उनके इन लक्षणों के लिए एक चुनौती था, और इसने उन्हें अपने संदेह की खोज करने, अपने संदेह को पहचानने और अपने विश्वासघात को स्वीकार करने, और इस प्रकार प्रभु यीशु के अस्तित्व और पुनरुत्थान पर सचमुच विश्वास करने का एक अवसर भी प्रदान किया। थोमा के साथ जो कुछ हुआ, वह बाद की पीढ़ियों के लिए एक चेतावनी और सावधानी थी, ताकि अधिक लोग अपने आपको थोमा के समान शंकालु न होने के लिए सचेत कर सकें, और यदि वे खुद को संदेह से भरेंगे, तो वे अंधकार में डूब जाएँगे। यदि तुम परमेश्वर का अनुसरण करते हो, किंतु बिलकुल थोमा के समान इस बात की पुष्टि, सत्यापन और अनुमान करने के लिए कि परमेश्वर का अस्तित्व है या नहीं, हमेशा प्रभु के पंजर को छूना और उसके कीलों के निशानों को महसूस करना चाहते हो, तो परमेश्वर तुम्हें त्याग देगा। इसलिए प्रभु यीशु लोगों से अपेक्षा करता है कि वे थोमा के समान न बनें, जो केवल उसी बात पर विश्वास करते हैं जिसे वे अपनी आँखों से देख सकते हैं, बल्कि शुद्ध और ईमानदार व्यक्ति बनें, परमेश्वर के प्रति संदेहों को आश्रय न दें, बल्कि केवल उस पर विश्वास करें और उसका अनुसरण करें। इस प्रकार के लोग धन्य हैं। यह लोगों से प्रभु यीशु की एक बहुत छोटी अपेक्षा है, और यह उसके अनुयायियों के लिए एक चेतावनी है।

संदेहों से भरे लोगों के प्रति प्रभु यीशु का उपर्युक्त रवैया है। तो प्रभु यीशु ने उन लोगों से क्या कहा और उनके लिए क्या किया, जो उस पर ईमानदारी से विश्वास करने और उसका अनुसरण करने में समर्थ हैं? प्रभु यीशु और पतरस के बीच के एक संवाद के माध्यम से आगे हम यही आगे देखने जा रहे हैं।

इस वार्तालाप में प्रभु यीशु ने बार-बार पतरस से एक बात पूछी : "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है?" यह वह उच्चतर मानक है, जिसकी प्रभु यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद पतरस जैसे लोगों से अपेक्षा करता है, जो वास्तव में मसीह पर विश्वास करते हैं और प्रभु से प्रेम करने का प्रयत्न करते हैं। यह

प्रश्न एक प्रकार की जाँच और पूछताछ थी, परंतु इससे भी अधिक, यह पतरस जैसे लोगों से एक माँग और एक अपेक्षा थी। प्रभु यीशु ने पूछताछ करने के इस तरीके का उपयोग किया, ताकि लोग अपने बारे में विचार करें और अपने भीतर झाँकें और पूछें : प्रभु यीशु की लोगों से क्या अपेक्षाएँ हैं? क्या मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ? क्या मैं ऐसा व्यक्ति हूँ, जो प्रभु से प्रेम करता है? मुझे प्रभु से कैसे प्रेम करना चाहिए? भले ही प्रभु यीशु ने यह प्रश्न केवल पतरस से पूछा हो, परंतु सच्चाई यह है कि अपने हृदय में वह पतरस से पूछने के इस अवसर का उपयोग इसी प्रकार का प्रश्न परमेश्वर से प्रेम करने के इच्छुक अधिक लोगों से पूछने के लिए करना चाहता था। बस, पतरस धन्य था, जो इस प्रकार के व्यक्तियों के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर पाया, जिससे स्वयं प्रभु यीशु द्वारा अपने मुँह से यह पूछताछ की गई।

निम्नलिखित वचनों की तुलना में, जो अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने थोमा से कहे थे : "अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो," उसका पतरस से तीन बार यह पूछना : "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है?" लोगों को प्रभु यीशु के रवैये की कठोरता और पूछताछ करने के दौरान उसके द्वारा महसूस की गई अत्यावश्यकता को बेहतर ढंग से महसूस कराता है। जहाँ तक शंकालु, धोखेबाज प्रकृति के थोमा की बात है, प्रभु यीशु ने उसे अपना हाथ बढ़ाकर अपने शरीर पर कीलों के निशान छूने दिए, जिसने उसे विश्वास दिलाया कि प्रभु यीशु मनुष्य का पुत्र है जो पुनरुत्थित हुआ है, और उससे मसीह के रूप में प्रभु यीशु की पहचान स्वीकार कराई। और यद्यपि प्रभु यीशु ने थोमा को सख्ती से डाँटा नहीं, न ही उसने मौखिक रूप से उसके बारे में स्पष्ट रूप से कोई न्याय व्यक्त किया था, फिर भी उसने उसे जताने के लिए कि वह उसे समझता है, व्यावहारिक कार्यकलापों का उपयोग किया, साथ ही उसने उस प्रकार के व्यक्ति के प्रति अपने रवैये और निश्चय को भी प्रदर्शित किया। उस प्रकार के व्यक्ति से प्रभु यीशु की माँगों और अपेक्षाओं को, जो कुछ उसने कहा था, उसके आधार पर देखा नहीं जा सकता, क्योंकि थोमा जैसे लोगों में सच्चे विश्वास का एक टुकड़ा भी नहीं होता। उनके लिए प्रभु यीशु की माँगें केवल इतनी ही होती हैं, लेकिन पतरस जैसे लोगों के प्रति उसके द्वारा प्रकट किया गया रवैया बिलकुल भिन्न था। उसने पतरस से यह अपेक्षा नहीं की कि वह अपना हाथ बढ़ाए और उसके कीलों के निशानों को छुए, न ही उसने पतरस से यह कहा : "अविश्वासी नहीं परन्तु, विश्वासी हो।" इसके बजाय, उसने बार-बार पतरस से एक ही प्रश्न पूछा। वह प्रश्न विचारोत्तेजक और अर्थपूर्ण था, ऐसा प्रश्न, जो मसीह के प्रत्येक अनुयायी को ग्लानि और भय

ही महसूस नहीं कराएगा, बल्कि प्रभु यीशु की चिंतित, दुःखित मनोदशा भी महसूस कराए बिना नहीं रहेगा। और जब वे अत्यधिक पीड़ा और कष्ट में होते हैं, तब वे प्रभु यीशु की चिंता और परवाह को और अधिक समझ पाते है; वे उसकी ईमानदार शिक्षाओं और शुद्ध, ईमानदार लोगों से उसकी कड़ी अपेक्षाओं को समझते हैं। प्रभु यीशु का प्रश्न लोगों को यह एहसास कराता है कि इन सरल वचनों में प्रकट प्रभु की लोगों से अपेक्षाएँ मात्र उसमें विश्वास करने और उसका अनुसरण करने के लिए नहीं हैं, बल्कि अपने प्रभु और अपने परमेश्वर से प्रेम करते हुए प्रेम प्राप्त करने के लिए हैं। इस प्रकार का प्रेम परवाह करना और आज्ञापालन करना होता है। यह मनुष्यों का परमेश्वर के लिए जीना, परमेश्वर के लिए मरना, सर्वस्व परमेश्वर को समर्पित करना है, और सब-कुछ परमेश्वर के लिए व्यय करना और उसे दे देना है। इस प्रकार का प्रेम परमेश्वर को आराम देना, उसे गवाही का आनंद लेने देना, और उसे चैन से रहने देना भी है। यह मानवजाति की परमेश्वर को चुकौती, उसकी जिम्मेदारी, दायित्व और कर्तव्य है, और यह वह मार्ग है, जिसका अनुसरण मानवजाति को जीवन भर करना चाहिए। ये तीन प्रश्न एक अपेक्षा और प्रोत्साहन थे, जो प्रभु यीशु ने पतरस और उन सभी लोगों से किए थे, जो पूर्ण बनाए जाना चाहते थे। ये वे तीन प्रश्न थे, जो पतरस को जीवन में अपने मार्ग पर ले गए और उसका अनुसरण करने की प्रेरणा दी, और प्रभु यीशु के जाने पर ये तीन प्रश्न ही थे, जिन्होंने पूर्ण बनाए जाने के अपने मार्ग पर चलने की शुरुआत करने में पतरस की अगुआई की, जिन्होंने प्रभु के प्रति उसके प्रेम की वजह से प्रभु के हृदय का ख़्याल रखने, प्रभु का आज्ञापालन करने, प्रभु को आराम प्रदान करने और इस प्रेम की वजह से अपना संपूर्ण जीवन और अपना संपूर्ण अस्तित्व अर्पित करने में उसकी अगुआई की।

अनुग्रह के युग के दौरान परमेश्वर का कार्य मुख्यत: दो प्रकार के लोगों के लिए था। पहला प्रकार उन लोगों का था, जो उस पर विश्वास करते थे और उसका अनुसरण करते थे, जो उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकते थे, जो सूली सहन कर सकते थे और अनुग्रह के युग के मार्ग को थामे रह सकते थे। इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर का आशीष प्राप्त करता है और परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद उठाता है। दूसरे प्रकार का व्यक्ति पतरस जैसा था, जिसे पूर्ण बनाया जा सकता था। इसलिए अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने सबसे पहले ये दो सर्वाधिक अर्थपूर्ण चीज़ें कीं। एक थोमा के साथ की गई और दूसरी पतरस के साथ। ये दो चीज़ें क्या दर्शाती हैं? क्या ये मानवजाति को बचाने के परमेश्वर के सच्चे इरादे दर्शाती हैं? क्या ये मानवजाति के प्रति परमेश्वर की ईमानदारी दर्शाती हैं? उसके द्वारा थोमा के साथ किया गया कार्य लोगों

को चेतावनी देने के लिए था कि वे शंकालु न बनें, बल्कि केवल विश्वास करें। पतरस के साथ किया गया उसका कार्य पतरस जैसे लोगों का विश्वास दृढ़ करने और इस प्रकार के लोगों से अपनी अपेक्षाएँ स्पष्ट करने और यह दिखाने के लिए था कि उन्हें किन लक्ष्यों का अनुसरण करना चाहिए।

अपने पुनरुत्थित होने के बाद प्रभु यीशु उन लोगों के सामने प्रकट हुआ जिन्हें वह आवश्यक समझता था, उनसे बातें कीं, और उनसे अपेक्षाएँ कीं, और लोगों के बारे में अपने इरादे और उनसे अपनी अपेक्षाएँ पीछे छोड़ गया। कहने का अर्थ है कि देहधारी परमेश्वर के रूप में मानवजाति के लिए उसकी चिंता और लोगों से उसकी अपेक्षाएँ कभी नहीं बदलीँ; जब वह देह में था तब, और सलीब पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थित होने के बाद जब वह आध्यात्मिक देह में था तब भी, वे एक-जैसी रहीं। सलीब पर चढ़ाए जाने से पहले वह इन चेलों के बारे में चिंतित था, और अपने हृदय में वह हर एक व्यक्ति की स्थिति को लेकर स्पष्ट था और वह प्रत्येक व्यक्ति की कमियाँ समझता था, और निस्संदेह, अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और आध्यात्मिक शरीर बन जाने के बाद भी प्रत्येक व्यक्ति के बारे में उसकी समझ वैसी थी, जैसी तब थी जब वह देह में था। वह जानता था कि लोग मसीह के रूप में उसकी पहचान को लेकर पूर्णत: निश्चित नहीं थे, किंतु देह में रहने के दौरान उसने लोगों से कठोर माँगें नहीं कीं। परंतु पुनरुत्थित हो जाने के बाद वह उनके सामने प्रकट हुआ, और उसने उन्हें पूर्णत: निश्चित किया कि प्रभु यीशु परमेश्वर से आया है और वह देहधारी परमेश्वर है, और उसने अपने प्रकटन और पुनरुत्थान के तथ्य का उपयोग मानवजाति द्वारा जीवन भर अनुसरण करने हेतु सबसे बड़े दर्शन और अभिप्रेरणा के रूप में किया। मृत्यु से उसके पुनरुत्थान ने न केवल उन सभी को मज़बूत किया जो उसका अनुसरण करते थे, बल्कि उसने अनुग्रह के युग के उसके कार्य को मानवजाति के बीच अच्छी तरह से कार्यान्वित कर दिया, और इस प्रकार अनुग्रह के युग में प्रभु यीशु द्वारा किए जाने वाले उद्धार का सुसमाचार धीरे-धीरे मानवजाति के हर छोर तक पहुँच गया। क्या तुम कहोगे कि पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु के प्रकटन का कोई महत्व था? उस समय यदि तुम थोमा या पतरस होते, और तुमने अपने जीवन में इस एक चीज़ का सामना किया होता जो इतनी अर्थपूर्ण थी, तो इसका तुम्हारे ऊपर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता? क्या तुमने इसे परमेश्वर पर विश्वास करने के अपने जीवन के सबसे बेहतरीन और सबसे बड़े दर्शन के रूप में देखा होता? क्या तुमने परमेश्वर को संतुष्ट करने का प्रयत्न करते हुए और अपने जीवन में परमेश्वर से प्रेम करने का प्रयास करते हुए इसे परमेश्वर का अनुसरण करने की एक प्रेरक शक्ति के रूप में देखा होता? क्या तुमने इस सबसे बड़े दर्शन को फैलाने के

लिए जीवन भर का प्रयास व्यय किया होता? क्या तुमने प्रभु यीशु द्वारा उद्धार का सुसमाचार फैलाने को परमेश्वर की आज्ञा के रूप में लिया होता? भले ही तुम लोगों ने इसका अनुभव नहीं किया है, फिर भी आधुनिक लोगों द्वारा परमेश्वर और उसकी इच्छा की एक स्पष्ट समझ प्राप्त करने के लिए थोमा और पतरस के दो उदाहरण काफी हैं। यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर के देहधारी हो जाने के बाद, जब उसने मानवजाति के बीच रहकर जीवन का अनुभव प्राप्त कर लिया और मानव-जीवन का व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर लिया, और जब उसने उस समय मानवजाति की भ्रष्टता और मानव-जीवन की दशा देख ली, तो देहधारी परमेश्वर ने ज्यादा गहराई से यह महसूस किया कि मानवजाति कितनी असहाय, शोचनीय और दयनीय है। देह में रहते हुए परमेश्वर में जो मानवता थी, उसकी वजह से, अपनी दैहिक अंत:प्रेरणाओं की वजह से, परमेश्वर ने मनुष्य की स्थिति के प्रति और अधिक समवेदना हासिल की। इससे वह अपने अनुयायियों को लेकर और अधिक चिंतित हो गया। ये शायद ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें तुम लोग नहीं समझ सकते, परंतु मैं देहधारी परमेश्वर द्वारा अपने हर एक अनुयायी के लिए अनुभव की गई इस चिंता और परवाह का केवल इन दो शब्दों में वर्णन कर सकता हूँ : "गहन चिंता"। यद्यपि ये शब्द मानवीय भाषा से आते हैं, और यद्यपि ये बहुत मानवीय हैं, फिर भी ये अपने अनुयायियों के लिए परमेश्वर की भावनाओं को वास्तव में व्यक्त और वर्णित करते हैं। जहाँ तक मनुष्यों के लिए परमेश्वर की गहन चिंता की बात है, अपने अनुभवों के दौरान तुम लोग धीरे-धीरे इसे महसूस करोगे और इसका स्वाद लोगे। किंतु इसे केवल अपने स्वभाव में परिवर्तन का प्रयास करने के आधार पर परमेश्वर के स्वभाव को धीरे-धीरे समझकर ही प्राप्त किया जा सकता है। जब प्रभु यीशु प्रकट हुआ, तो इसने मानवजाति में उसके अनुयायियों के लिए उसकी गहन चिंता को मूर्त रूप दिया और उसे उसकी आध्यात्मिक देह को, या तुम यह कह सकते हो कि उसकी दिव्यता को, सौंप दिया। उसके प्रकटन ने लोगों को परमेश्वर की चिंता और परवाह का एक बार और अनुभव और एहसास कराया, साथ ही सशक्त रूप से यह भी प्रमाणित किया कि वह परमेश्वर ही है, जो युग का सूत्रपात करता है, युग का विकास करता है, और युग का समापन भी करता है। अपने प्रकटन के माध्यम से उसने सभी लोगों का विश्वास मज़बूत किया, और संसार के सामने इस तथ्य को साबित किया कि वह स्वयं परमेश्वर है। इससे उसके अनुयायियों को अनंत पुष्टि मिली, और अपने प्रकटन के माध्यम से उसने नए युग में अपने कार्य के एक चरण का सूत्रपात किया।

13. अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु रोटी खाता है और पवित्रशास्त्र समझाता है

लूका 24:30-32 जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया और उसे तोड़कर उनको देने लगा। तब उनकी आँखें खुल गईं; और उन्होंने उसे पहचान लिया, और वह उनकी आँखों से छिप गया। उन्होंने आपस में कहा, "जब वह मार्ग में हम से बातें करता था और पवित्रशा स्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?"

14. चेलों ने यीशु को खाने के लिए भुनी हुई मछली दी

लूका 24:36-43 वे ये बातें कह ही रहे थे कि वह आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ, और उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" परन्तु वे घबरा गए और डर गए, और समझे कि हम किसी भूत को देख रहे हैं। उसने उनसे कहा, "क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह उठते हैं? मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो कि मैं वही हूँ। मुझे छूकर देखो, क्योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो।" यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ पाँव दिखाए। जब आनन्द के मारे उनको प्रतीति न हुई, और वे आश्चर्य करते थे, तो उसने उनसे पूछा, "क्या यहाँ तुम्हारे पास कुछ भोजन है?" उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का टुकड़ा दिया। उसने लेकर उनके सामने खाया।

आगे हम पवित्रशास्त्र के उपर्युक्त अंशों पर नज़र डालेंगे। पहला अंश पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु के रोटी खाने और पवित्रशास्त्र को समझाने का वर्णन करता है, और दूसरे अंश में प्रभु यीशु के भुनी हुई मछली खाने का वर्णन है। ये दो अंश परमेश्वर के स्वभाव को जानने में तुम्हारी किस प्रकार सहायता करते हैं? क्या तुम लोग प्रभु यीशु के रोटी और फिर भुनी हुई मछली खाने के इन विवरणों से प्राप्त तसवीर के प्रकार की कल्पना कर सकते हो? क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि यदि प्रभु यीशु तुम लोगों के सामने रोटी खाता हुआ खड़ा होता, तो तुम लोगों को कैसा महसूस होता? अथवा यदि वह तुम लोगों के साथ एक ही मेज पर भोजन कर रहा होता, लोगों के साथ मछली और रोटी खा रहा होता, तो उस क्षण तुम्हारे मन में किस प्रकार की भावना आती? यदि तुम महसूस करते कि तुम प्रभु के बेहद करीब हो, कि वह तुम्हारे साथ बहुत अंतरंग है, तो यह भावना सही है। यह बिलकुल वही परिणाम है, जो अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु इकट्ठे हुए लोगों के सामने रोटी और मछली खाकर लाना चाहता था। यदि प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद लोगों से सिर्फ बात की होती, यदि वे उसकी देह और हड्डियों को महसूस न कर पाते, बल्कि यह महसूस करते कि वह एक अगम्य पवित्रात्मा है, तो वे कैसा महसूस करते? क्या वे निराश नहीं हो जाते? निराशा अनुभव करके क्या लोग परित्यक्त महसूस न करते? क्या वे अपने और प्रभु यीशु मसीह

के बीच एक दूरी महसूस न करते? परमेश्वर के साथ लोगों के संबंध पर यह दूरी किस प्रकार का नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती? लोग निश्चित रूप से भयभीत हो जाते, वे उसके करीब आने की हिम्मत न करते, और उनका उसे एक सम्मानित दूरी पर रखने का रवैया होता। तब से वे प्रभु यीशु मसीह के साथ अपने अंतरंग संबंध को तोड़ देते, और वापस मानवजाति और ऊपर स्वर्ग के परमेश्वर के बीच के संबंध की ओर लौट जाते, जैसा कि अनुग्रह के युग के पहले था। वह आध्यात्मिक देह, जिसे लोग छू या महसूस न कर पाते, परमेश्वर के साथ उनकी अंतरंगता का उन्मूलन कर देती, और वह उस अंतरंगता के अस्तित्व को भी, जो प्रभु यीशु मसीह के देह में रहने के समय स्थापित हुई थी, जिसमें मानवजाति और उसके बीच कोई दूरी नहीं थी, खत्म कर देती। आध्यात्मिक देह से लोगों में केवल डरने, बचने और निःशब्द टकटकी लगाकर देखने की भावनाएँ उभरी थीं। वे उसके करीब आने या उससे बात करने की हिम्मत न करते, उसका अनुसरण करने, उसका विश्वास करने या उसका आदर करने की तो बात ही छोड़ दो। परमेश्वर मनुष्यों के मन में अपने लिए इस प्रकार की भावना देखने का इच्छुक नहीं था। वह यह नहीं देखना चाहता था कि लोग उससे बचकर निकलें या अपने आप को उससे दूर हटा लें; वह केवल इतना चाहता था कि लोग उसे समझें, उसके करीब आएँ और उसका परिवार बन जाएँ। यदि तुम्हारा अपना परिवार, तुम्हारे बच्चे तुम्हें देखें लेकिन तुम्हें पहचानें नहीं, और तुम्हारे करीब आने की हिम्मत न करें बल्कि हमेशा तुमसे बचते रहें, और जो कुछ तुमने उनके लिए किया, वे उसे समझ न पाएँ, तो इससे तुम्हें कैसा महसूस होगा? क्या यह दर्दनाक नहीं होगा? क्या इससे तुम्हारा हृदय टूट नहीं जाएगा? बिलकुल ऐसा ही परमेश्वर महसूस करता है, जब लोग उससे बचते हैं। इसलिए, अपने पुनरुत्थान के बाद भी प्रभु यीशु लोगों के सामने मांस और लहू के अपने रूप में ही प्रकट हुआ, और तब भी उसने उनके साथ खाया और पीया। परमेश्वर लोगों को एक परिवार के रूप में देखता है और वह मनुष्यों से भी यही चाहता है कि वे उसे अपने सबसे प्रिय व्यक्ति के रूप में देखें; केवल इसी तरह से परमेश्वर वास्तव में लोगों को प्राप्त कर सकता है, और केवल इसी तरह से लोग वास्तव में परमेश्वर से प्रेम और उसकी आराधना कर सकते हैं। अब क्या तुम लोग पवित्रशास्त्र के इन दो अंशों का उद्धरण देने के मेरे इरादे को समझ सकते हो, जिनमें प्रभु यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद रोटी खाता है और पवित्रशास्त्र को समझाता है, और चेले उसे खाने के लिए भुनी हुई मछली देते हैं?

ऐसा कहा जा सकता है कि कार्यों की जो शृंखलाएँ प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद कहीं और

कीं, उनमें एक गंभीर विचार रखा गया था। वे उस दयालुता और स्नेह से भरी हुई थीं, जो परमेश्वर मानवजाति के प्रति रखता है, और वे दुलार और सूक्ष्म परवाह से भी भरी हुई थीं, जो वह उस अंतरंग संबंध के प्रति रखता था, जिसे उसने देह में रहने के दौरान मानवजाति के साथ स्थापित किया था। इससे भी अधिक, वे अतीत की उस ललक और लालसा से भी भरी हुई थीं, जो उसने देह में रहने के दौरान अपने अनुयायियों के साथ खाने-पीने के अपने जीवन के लिए महसूस की थी। इसलिए, परमेश्वर नहीं चाहता था कि लोग परमेश्वर और मनुष्य के बीच दूरी महसूस करें, न ही वह यह चाहता था कि मानवजाति स्वयं को परमेश्वर से दूर रखे। इससे भी बढ़कर, वह नहीं चाहता था कि मानवजाति यह महसूस करे कि प्रभु यीशु पुनरुत्थान के बाद वह प्रभु नहीं रहा जो लोगों से बहुत अंतरंग था, कि वह अब मानवजाति के साथ नहीं है क्योंकि वह आध्यात्मिक संसार में लौट गया है, उस पिता के पास लौट गया है जिसे लोग कभी देख नहीं सकते या जिस तक वे कभी पहुँच नहीं सकते। वह नहीं चाहता था कि लोग यह महसूस करें कि उसके और मानवजाति के बीच हैसियत का कोई अंतर पैदा हो गया है। जब परमेश्वर उन लोगों को देखता है, जो उसका अनुसरण करना चाहते हैं परंतु उसे एक सम्मानित दूरी पर रखते हैं, तो उसके हृदय में पीड़ा होती है, क्योंकि इसका मतलब यह है कि उनका हृदय उससे बहुत दूर है और उसके लिए उनके हृदय को पाना बहुत कठिन होगा। इसलिए यदि वह लोगों के सामने एक आध्यात्मिक देह में प्रकट हुआ होता जिसे वे देख या छू न सकते, तो इसने एक बार फिर मनुष्य को परमेश्वर से दूर कर दिया होता, और इससे मानवजाति गलती से यह समझ बैठती कि पुनरुत्थान के बाद मसीह अभिमानी, मनुष्यों से भिन्न प्रकार का और ऐसा बन गया है, जो अब मनुष्यों के साथ मेज पर नहीं बैठ सकता और उनके साथ खा नहीं सकता, क्योंकि मनुष्य पापी और गंदे हैं, और कभी परमेश्वर के करीब नहीं आ सकते। मानवजाति की इन ग़लतफहमियों को दूर करने के लिए प्रभु यीशु ने कई चीज़ें कीं, जिन्हें वह देह में रहते हुए किया करता था, जैसा कि बाइबल में दर्ज है : "उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया और उसे तोड़कर उनको देने लगा।" उसने उन्हें पवित्रशास्त्र भी समझाया, जैसा कि वह अतीत में किया करता था। प्रभु यीशु द्वारा की गई इन सब चीज़ों ने हर उस व्यक्ति को, जिसने उसे देखा था, यह महसूस कराया कि प्रभु बदला नहीं है, वह अभी भी वही प्रभु यीशु है। भले ही उसे सूली पर चढ़ा दिया गया था और उसने मृत्यु का अनुभव किया था, किंतु वह पुनर्जीवित हो गया है और उसने मानवजाति को छोड़ा नहीं है। वह मनुष्यों के बीच रहने के लिए लौट आया था, और उसमें कुछ भी नहीं बदला था। लोगों के सामने खड़ा मनुष्य का पुत्र अभी भी वही प्रभु यीशु था।

लोगों के साथ उसका व्यवहार और बातचीत का उसका तरीका बहुत परिचित लगता था। वह अभी भी प्रेममय करुणा, अनुग्रह और सहनशीलता से उतना ही भरपूर था—वह तब भी वही प्रभु यीशु था, जो लोगों से वैसे ही प्रेम करता था जैसे वह अपने आप से करता था, जो मानवजाति को सात बार के सत्तर गुने तक क्षमा कर सकता था। उसने हमेशा की तरह लोगों के साथ खाया, उनके साथ पवित्रशास्त्र पर चर्चा की, और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, वह पहले के समान ही माँस और लहू से बना था और उसे छुआ और देखा जा सकता था। पहले की तरह के मनुष्य के पुत्र के रूप में उसने लोगों को अंतरंगता महसूस कराई, सहजता महसूस कराई, और किसी खोई हुई चीज़ को पुनः प्राप्त करने का आनंद दिलाया। बड़ी आसानी से उन्होंने बहादुरी और आत्मविश्वास के साथ इस मनुष्य के पुत्र के ऊपर भरोसा और उसका आदर करना आरंभ कर दिया, जो मानवजाति को उनके पापों के लिए क्षमा कर सकता था। वे बिना किसी हिचकिचाहट के प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना भी करने लगे, वे उसका अनुग्रह, उसका आशीष प्राप्त करने के लिए, और उससे शांति और आनंद प्राप्त करने के लिए, उससे देखरेख और सुरक्षा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करने लगे, और प्रभु यीशु के नाम से चंगाई करने लगे और दुष्टात्माओं को निकालने लगे।

जिस दौरान प्रभु यीशु ने देह में रहकर काम किया, उसके अधिकतर अनुयायी उसकी पहचान और उसके द्वारा कही गई चीज़ों को पूरी तरह से सत्यापित नहीं कर सके। जब वह सूली की ओर बढ़ रहा था, तो उसके चेलों का रवैया पर्यवेक्षण का था। फिर, उसे सूली पर चढ़ाए जाने से लेकर क़ब्र में डाले जाने के समय तक उसके प्रति लोगों का रवैया निराशा का था। इस दौरान लोगों ने पहले ही अपने हृदय में उन चीज़ों के बारे में संदेह करने से एकदम नकारने की ओर जाना आरंभ कर दिया था, जिन्हें प्रभु यीशु ने अपने देह में रहने के समय कहा था। फिर जब वह क़ब्र से बाहर आया और एक-एक करके लोगों के सामने प्रकट हुआ, तो उन लोगों में से अधिकांश, जिन्होंने उसे अपनी आँखों से देखा था या उसके पुनरुत्थान का समाचार सुना था, धीरे-धीरे नकारने से संशय करने की ओर आने लगे। केवल जब अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने थोमा से उसका हाथ अपने पंजर में डलवाया, और जब प्रभु यीशु ने भीड़ के सामने रोटी तोड़ी और खाई, और फिर उनके सामने भुनी हुई मछली खाने के लिए बढ़ा, तभी उन्होंने वास्तव में इस तथ्य को स्वीकार किया कि प्रभु यीशु ही देहधारी मसीह है। तुम कह सकते हो कि यह ऐसा था, मानो माँस और रक्त वाला यह आध्यात्मिक शरीर उन लोगों के सामने खड़ा उन्हें स्वप्न से जगा रहा था : उनके सामने खड़ा मनुष्य का पुत्र वह था, जो अनादि काल से अस्तित्व में था। उसका एक रूप, माँस

और हड्डियाँ थीं, और वह पहले ही लंबे समय मानवजाति के साथ तक रह और खा चुका था...। इस समय लोगों ने महसूस किया कि उसका अस्तित्व बहुत यथार्थ और बहुत अद्भुत था। साथ ही, वे भी बहुत आनंदित और प्रसन्न थे और भावनाओं से भरे थे। उसके पुनः प्रकटन ने लोगों को वास्तव में उसकी विनम्रता दिखाई, मानवजाति के प्रति उसकी नज़दीकी और अनुरक्ति अनुभव कराई, और यह महसूस कराया कि वह उनके बारे में कितना सोचता है। इस संक्षिप्त पुनर्मिलन ने उन लोगों को, जिन्होंने प्रभु यीशु को देखा था, यह महसूस कराया मानो एक पूरा जीवन-काल गुज़र चुका हो। उनके खोए हुए, भ्रमित, भयभीत, चिंतित, लालायित और संवेदनशून्य हृदय को आराम मिला। वे अब शंकालु या निराश नहीं रहे, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि अब आशा और भरोसा करने के लिए कुछ है। उनके सामने खड़ा मनुष्य का पुत्र अब हर समय उनका पृष्ठरक्षक रहेगा; वह उनका दृढ़ दुर्ग, अनंत काल के लिए उनका आश्रय होगा।

यद्यपि प्रभु यीशु पुनरुत्थित हो चुका था, फिर भी उसके हृदय और उसके कार्य ने मानवजाति को नहीं छोड़ा था। लोगों के सामने प्रकट होकर उसने उन्हें बताया कि वह किसी भी रूप में मौजूद क्यों न हो, वह हर समय और हर जगह लोगों का साथ देगा, उनके साथ चलेगा, और उनके साथ रहेगा। उसने उन्हें बताया कि वह हर समय और हर जगह मनुष्यों का भरण-पोषण और उनकी चरवाही करेगा, उन्हें अपने को देखने और छूने देगा, और यह सुनिश्चित करेगा कि वे फिर कभी असहाय महसूस न करें। प्रभु यीशु यह भी चाहता था कि लोग यह जानें कि इस संसार में वे अकेले नहीं रहते। मानवजाति के पास परमेश्वर की देखरेख है; परमेश्वर उनके साथ है। वे हमेशा परमेश्वर पर आश्रित हो सकते हैं, और वह अपने प्रत्येक अनुयायी का परिवार है। परमेश्वर पर आश्रित होकर मानवजाति अब और एकाकी या असहाय नहीं रहेगी, और जो उसे अपनी पापबलि के रूप में स्वीकार करते हैं, वे अब और पाप में बँधे नहीं रहेंगे। मनुष्य की नज़रों में, प्रभु यीशु द्वारा अपने पुनरुत्थान के बाद किए गए उसके कार्य के ये भाग बहुत छोटी चीज़ें थीं, परंतु जिस तरह से मैं उन्हें देखता हूँ, उसके द्वारा की गई छोटी से छोटी चीज़ भी बहुत अर्थपूर्ण, बहुत मूल्यवान, बहुत प्रभावशाली और भारी महत्व रखने वाली थी।

यद्यपि देह में काम करने का प्रभु यीशु का समय कठिनाइयों और पीड़ा से भरा हुआ था, फिर भी मांस और रक्त की अपनी आध्यात्मिक देह के प्रकटन के माध्यम से, उसने उस समय के मानवजाति को छुड़ाने के देह के अपने कार्य को पूर्णता और कुशलता से संपन्न किया था। उसने देह बनकर अपनी

सेवकाई की शुरुआत की और मनुष्यों के सामने अपने दैहिक रूप में प्रकट होकर उसने अपनी सेवकाई का समापन किया। मसीह के रूप में अपनी पहचान के माध्यम से नए युग की शुरुआत करते हुए उसने अनुग्रह के युग की उद्घोषणा की। मसीह के रूप में अपनी पहचान के माध्यम से उसने अनुग्रह के युग में अपना कार्य किया और अनुग्रह के युग में अपने सभी अनुयायियों को मज़बूत किया और उनकी अगुआई की। परमेश्वर के कार्य के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह जो आरंभ करता है, उसे वास्तव में पूरा करता है। इस कार्य में कदम और योजना होती है, और वह परमेश्वर की बुद्धि, उसकी सर्वशक्तिमत्ता, उसके अद्भुत कर्मों, उसके प्रेम और दया से भी भरपूर होता है। निस्संदेह, परमेश्वर के समस्त कार्य का मुख्य सूत्र मानवजाति के लिए उसकी देखभाल है; यह उसकी परवाह की भावनाओं से ओतप्रोत है, जिसे वह कभी अलग नहीं रख सकता। बाइबल के इन पदों में, अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु द्वारा की गई एक-एक चीज़ में मानवजाति के लिए परमेश्वर की अपरिवर्तनीय आशाएँ और चिंता प्रकट हुई, और साथ ही प्रकट हुई मनुष्यों के लिए परमेश्वर की कुशल देखरेख और दुलार। शुरू से लेकर आज तक इसमें से कुछ भी नहीं बदला है—क्या तुम लोग इसे देख सकते हो? जब तुम लोग इसे देखते हो, तो क्या तुम लोगों का हृदय अनजाने ही परमेश्वर के करीब नहीं आ जाता? यदि तुम लोग उस युग में रह रहे होते और प्रभु यीशु पुनरुत्थान के बाद तुम लोगों के सामने मूर्त रूप में प्रकट होता जिसे तुम लोग देख सकते, और यदि वह तुम लोगों के सामने बैठ जाता, रोटी और मछली खाता और तुम लोगों को पवित्रशास्त्र समझाता, तुम लोगों से बातचीत करता, तो तुम लोग कैसा महसूस करते? क्या तुम खुशी महसूस करते? या तुम दोषी महसूस करते? परमेश्वर के बारे में पिछली ग़लतफहमियाँ और उससे बचना, परमेश्वर के साथ टकराव और उसके बारे में संदेह—क्या ये सब ग़ायब नहीं हो जाते? क्या परमेश्वर और मनुष्य के बीच का रिश्ता और अधिक सामान्य और उचित न हो जाता?

बाइबल के इन सीमित अध्यायों की व्याख्या से, क्या तुम लोगों को परमेश्वर के स्वभाव में किसी खामी का पता चलता है? क्या तुम लोगों को परमेश्वर के प्रेम में कोई मिलावट मिलती है? क्या तुम लोगों को परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और बुद्धि में कोई धोखा या बुराई दिखती है? निश्चित रूप से नहीं! अब क्या तुम लोग निश्चितता के साथ कह सकते हो कि परमेश्वर पवित्र है? क्या तुम निश्चितता के साथ कह सकते हो कि परमेश्वर की प्रत्येक भावना उसके सार और उसके स्वभाव का प्रकाशन है? मैं आशा करता हूँ कि इन वचनों को पढ़ लेने के बाद तुम लोगों को इनसे प्राप्त होने वाली समझ से सहायता मिलेगी और वे अपने

स्वभाव में परिवर्तन और परमेश्वर से भय मानने के तुम्हारे प्रयास में तुम लोगों को लाभ पहुँचाएँगे, और वे तुम लोगों के लिए ऐसे फल लाएँगे जो दिन प्रति दिन बढ़ते ही जाएँगे, जिससे खोज की यह प्रक्रिया तुम लोगों को परमेश्वर के और करीब ले आएगी, उस मानक के अधिकाधिक करीब ले आएगी जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है। तुम लोग सत्य की खोज करने में अब और ऊबा हुआ महसूस नहीं करोगे और तुम लोग अब और ऐसा महसूस नहीं करोगे कि सत्य की और स्वभाव में परिवर्तन की खोज एक कष्टप्रद या निरर्थक चीज़ है। इसके बजाय, परमेश्वर के सच्चे स्वभाव और उसके पवित्र सार की अभिव्यक्ति से प्रेरित होकर तुम लोग ज्योति की लालसा करोगे, न्याय की लालसा करोगे, और सत्य की खोज करने, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का प्रयास करने की आकांक्षा करोगे, और तुम परमेश्वर द्वारा प्राप्त किए गए व्यक्ति बन जाओगे, एक वास्तविक व्यक्ति बन जाओगे।

आज हमने उन कुछ चीज़ों के बारे में बात की है, जो परमेश्वर ने अनुग्रह के युग में की थीं, जब उसे पहली बार देहधारी बनाया गया था। इन चीज़ों से हमने उसके द्वारा देह में व्यक्त और प्रकट किए गए स्वभाव को और साथ ही उसके स्वरूप के प्रत्येक पहलू को देखा है। उसके स्वरूप के ये सभी पहलू बहुत ही मानवीय प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि उसके द्वारा प्रकट और व्यक्त की गई हर चीज़ का सार उसके अपने स्वभाव से अलग नहीं किया जा सकता। देहधारी परमेश्वर की हर पद्धति और उसका हर पहलू, जो मानवता में उसके स्वभाव को व्यक्त करता है, उसके अपने सार से मजबूती से जुड़ा है। इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर मनुष्य के पास देहधारण के तरीके का उपयोग करके आया। जो कार्य उसने देह में किया, वह भी बहुत महत्वपूर्ण है, किंतु देह में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए, भ्रष्टता में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए इससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं उसके द्वारा प्रकट किया गया स्वभाव और उसके द्वारा व्यक्त की गई इच्छा। क्या तुम लोग इसे समझने में सक्षम हो? परमेश्वर के स्वभाव और स्वरूप को समझने के बाद क्या तुम लोगों ने कोई निष्कर्ष निकाला है कि तुम लोगों को परमेश्वर के साथ कैसा बरताव करना चाहिए? अंत में, इस प्रश्न के उत्तर में, मैं तुम लोगों को तीन सलाहें देना चाहूँगा : पहली, परमेश्वर की परीक्षा मत लो। चाहे तुम परमेश्वर के बारे में कितना भी क्यों न समझते हो, चाहे तुम उसके स्वभाव के बारे में कितना भी क्यों न जानते हो, उसकी परीक्षा बिलकुल मत लो। दूसरी, हैसियत के लिए परमेश्वर के साथ संघर्ष मत करो। चाहे परमेश्वर तुम्हें किसी भी प्रकार की हैसियत दे या वह तुम्हें किसी भी प्रकार का कार्य सौंपे, चाहे वह तुम्हें किसी भी प्रकार का कर्तव्य करने के लिए बड़ा करे, और

चाहे तुमने परमेश्वर के लिए कितना भी व्यय और बलिदान किया हो, उसके साथ हैसियत के लिए प्रतिस्पर्धा बिलकुल मत करो। तीसरी, परमेश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा मत करो। परमेश्वर तुम्हारे साथ जो कुछ भी करता है, जो भी वह तुम्हारे लिए व्यवस्था करता है, और जो चीज़ें वह तुम पर लाता है, तुम उन्हें समझते या उनके प्रति समर्पित होते हो या नहीं, किंतु परमेश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा बिलकुल मत करो। यदि तुम इन सलाहों पर चल सकते हो, तो तुम काफी सुरक्षित रहोगे, और तुम परमेश्वर को क्रोधित करने की ओर प्रवृत्त नहीं होगे। हम अपनी आज की संगति यहीं समाप्त करेंगे।

23 नवंबर, 2013

फुटनोट :

क. "वशीकरण मंत्र" एक मंत्र है, जिसे भिक्षु तांग सानज़ैंग ने चीनी उपन्यास 'जर्नी टु द वेस्ट' (पश्चिम की यात्रा) में इस्तेमाल किया है। वह इस मंत्र का उपयोग सन वूकोंग (वानर राजा) को नियंत्रित करने के लिए उसके सिर के चारों ओर एक धातु का छल्ला कसकर करता है, जिससे उसे तेज सिरदर्द हो जाता है और वह काबू में आ जाता है। यह व्यक्ति को बाँधने वाली किसी चीज़ का वर्णन करने के लिए एक रूपक बन गया है।

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है।

परमेश्वर का अधिकार (I)

मेरी पिछली अनेक संगतियाँ परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के स्वभाव, और स्वयं परमेश्वर के विषय में थीं। इन संगतियों को सुनने के बाद, क्या तुम लोगों को लगता है कि तुम सबने परमेश्वर के स्वभाव की समझ और ज्ञान प्राप्त कर लिया है? तुमने किस हद तक समझ और ज्ञान प्राप्त किया है? क्या तुम लोग उसे संख्या में बता सकते हो? क्या इन संगतियों ने तुम लोगों को परमेश्वर की और गहरी समझ दी है? क्या यह कहा जा सकता है कि यह समझ परमेश्वर का सच्चा ज्ञान है? क्या यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर का यह ज्ञान और समझ परमेश्वर के संपूर्ण सार-तत्त्व और स्वरूप का ज्ञान है? नहीं, बिलकुल नहीं! क्योंकि ये संगतियाँ केवल परमेश्वर के स्वभाव और उसके सार तथा स्वरूप के एक भाग की ही समझ प्रदान करती हैं—संपूर्ण रूप में उसके समस्त अस्तित्व की नहीं। इन संगतियों ने तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा अतीत में किए गए कार्य के एक भाग को समझने में सक्षम बनाया; इन संगतियों के माध्यम से तुमने

परमेश्वर के स्वभाव और उसके सार तथा स्वरूप को देखा और उसके साथ-साथ यह भी देखा कि जो कुछ उसने किया है, उस के पीछे उसका क्या नज़रिया और सोच है। परंतु यह केवल परमेश्वर की शाब्दिक एवं मौखिक समझ है, और तुम सब अपने हृदय में अनिश्चित बने रहते हो कि यह कितनी वास्तविक है। वह कौन सी चीज़ है, जो मुख्य रूप से यह निर्धारित करती है कि ऐसी चीज़ों के प्रति लोगों की समझ में कोई वास्तविकता है या नहीं? यह इससे निर्धारित होता है कि उन सबने अपने वास्तविक अनुभवों के दौरान परमेश्वर के वचनों और स्वभाव का वास्तव में कितना अनुभव किया है, और वे लोग इन वास्तविक अनुभवों के दौरान उसे कितना देख या समझ पाए हैं। क्या किसी ने ऐसे शब्द कहे हैं : "पिछली कई संगतियों से हमने परमेश्वर द्वारा किए गए कामों और उसके विचारों अतिरिक्त मनुष्य के प्रति परमेश्वर के रवैये, और उसके कार्यों के आधार, और साथ ही उसके कार्यों के सिद्धांतों को भी समझने की अनुमति दी है; और इसलिए हम परमेश्वर के स्वभाव को समझ गए हैं, और हमने परमेश्वर की संपूर्णता को जान लिया है।" क्या यह कहना सही है? स्पष्ट रूप से, यह कहना सही नहीं है। मैं क्यों कहता हूँ कि यह कहना सही नहीं है? परमेश्वर का स्वभाव और उसके सार तथा स्वरूप उसके द्वारा किए गए कार्यों और उसके द्वारा बोले गए वचनों में व्यक्त होते हैं। परमेश्वर द्वारा किए गए कार्यों और उसके द्वारा बोले गए वचनों के माध्यम से मनुष्य परमेश्वर के सार और उसके स्वरूप के दर्शन कर सकता है, परंतु इससे बस यही कहा जा सकता है कि उसके द्वारा किए गए कार्यों और उसके वचनों से मनुष्य परमेश्वर के स्वभाव और उसके सार तथा स्वरूप के एक अंश को ही समझने में सक्षम हो सकता है। यदि मनुष्य परमेश्वर की और अधिक तथा और गहरी समझ प्राप्त करना चाहता है, तो उसे परमेश्वर के वचनों और कार्य का और अधिक अनुभव करना होगा। यद्यपि परमेश्वर के वचनों और कार्य के अंश का अनुभव करते हुए मनुष्य परमेश्वर की आंशिक समझ ही प्राप्त करता है, परंतु क्या यह आंशिक समझ परमेश्वर के सच्चे स्वभाव का प्रतिनिधित्व करती है? क्या यह परमेश्वर के सार-तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती है? बेशक, यह परमेश्वर के सच्चे स्वभाव और उसके सार-तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती है; इसमें कोई संदेह नहीं है। समय या स्थान या इस बात की परवाह किए बिना कि परमेश्वर किस तरीके से अपना काम करता है, या वह किस रूप में मनुष्य के सामने प्रगट होता है, या किस प्रकार से वह अपनी इच्छा व्यक्त करता है, वह सब जो वह प्रकट और व्यक्त करता है, वह स्वयं परमेश्वर, परमेश्वर के सार-तत्त्व और उसके सार तथा स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। परमेश्वर अपना कार्य अपने सार तथा स्वरूप और अपनी सच्ची पहचान के साथ करता है; यह बिलकुल सच है। फिर भी,

आज लोगों को परमेश्वर की आंशिक समझ ही है, जो उन्होंने उसके वचनों के माध्यम से और प्रवचन सुनकर आई है, और उसे केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही कहा जा सकता है। अपनी वास्तविक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए तुम परमेश्वर की समझ या ज्ञान को, जिसे तुमने सुना, देखा या जाना और अपने हृदय में समझा है, केवल तभी सत्यापित कर सकते हो, जब तुममें से हर एक अपने वास्तविक अनुभवों में इससे होकर गुज़रो और इसे थोड़ा-थोड़ा करके जानो। यदि मैं संगति में तुम लोगों को ये वचन न कहता, तो क्या तुम मात्र अपने अनुभवों के माध्यम से परमेश्वर का सच्चा ज्ञान हासिल कर पाते? नहीं, ऐसा करना बहुत कठिन होता। क्योंकि यह जानने के लिए कि अनुभव कैसे करें, लोगों के पास पहले परमेश्वर के वचन होने चाहिए। बहरहाल, परमेश्वर के जितने वचनों को लोग खाते हैं, उतनी ही मात्रा का वे वास्तव में अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर के वचन आगे के पथ पर अगुआई करते हैं और मनुष्य को उसके अनुभव में मार्गदर्शन देते हैं। संक्षेप में, जिन लोगों को थोड़ा-बहुत सच्चा अनुभव है, उन्हें ये पिछली कई संगतियाँ सत्य की और अधिक गहरी समझ और परमेश्वर का और अधिक वास्तविक ज्ञान हासिल करने में सहायता करेंगी। परंतु जिन्हें कुछ भी वास्तविक अनुभव नहीं है, या जिन्होंने अभी अपना अनुभव प्रारंभ ही किया, या जिन्होंने अभी वास्तविकता को स्पर्श करना प्रारंभ ही किया है, उनके लिये यह एक बड़ी परीक्षा है।

पिछली कई संगतियों की मुख्य विषयवस्तु "परमेश्वर के स्वभाव, परमेश्वर के कार्य, और स्वयं परमेश्वर" से संबंधित थी। जो कुछ भी मैंने कहा था, तुम सबने उसके मुख्य और केंद्रीय भागों में क्या देखा? इन संगतियों माध्यम से क्या तुम लोग यह पहचानने में सक्षम हो कि जिसने यह काम किया, और जिसने इन स्वभावों को प्रकट किया, वह स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है, जो सभी चीज़ों के ऊपर संप्रभुता रखता है? यदि तुम सबका उत्तर हाँ है, तो किस बात ने तुम लोगों को इस निष्कर्ष पर पहुँचाया? इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए तुमने कितने पहलुओं पर विचार किया? क्या कोई मुझे बता सकता है? मैं जानता हूँ कि पिछली कुछ संगतियों ने तुम सबको गहराई से प्रभावित किया, और परमेश्वर के तुम्हारे के लिए तुम लोगों के हृदय में एक नई शुरुआत उपलब्ध कराई थी, जो उत्कृष्ट है। लेकिन, यद्यपि तुम लोगों ने पहले की तुलना में परमेश्वर की अपनी समझ में एक बड़ी छलाँग लगाई है, फिर भी परमेश्वर की पहचान की तुम लोगों की परिभाषा अभी भी व्यवस्था के युग के परमेश्वर यहोवा, अनुग्रह के युग के प्रभु यीशु, और राज्य के युग के सर्वशक्तिमान परमेश्वर जैसे नामों से से परे उन्नत होनी है। दूसरे शब्दों में, यद्यपि "परमेश्वर के स्वभाव, परमेश्वर के कार्य, और स्वयं परमेश्वर" के बारे में इन संगतियों ने तुम लोगों को परमेश्वर द्वारा किसी

समय बोले गए वचनों और उसके द्वारा किसी समय किए गए कार्य तथा परमेश्वर द्वारा किसी समय प्रकट किए गए उसके अस्तित्व और व्यावहारिक गुणों की कुछ समझ दी है, फिर भी तुम लोग "परमेश्वर" शब्द की सही परिभाषा और सटीक अभिमुखता प्रदान करने में असमर्थ हो। न तुम लोगों के पास स्वयं परमेश्वर की हैसियत और पहचान की, अर्थात् सभी चीज़ों के बीच और संपूर्ण ब्रह्मांड के मध्य परमेश्वर की हैसियत की सच्ची और सटीक अभिमुखता तथा ज्ञान ही है। यह इसलिए है, क्योंकि स्वयं परमेश्वर और उसके स्वभाव से संबंधित पिछली संगतियों में समस्त विषयवस्तु परमेश्वर की पूर्व अभिव्यक्तियों और प्रकटीकरण पर आधारित थीं, जो बाइबल में दर्ज़ हैं। अभी मनुष्य के लिए उसके अस्तित्व और उसके व्यावहारिक गुणों की खोज करना कठिन है, जो परमेश्वर द्वारा मानव-जाति के प्रबंध और उद्धार के दौरान, या उसके बाहर, प्रकट और व्यक्त किए गए हैं। अतः, भले ही तुम लोग परमेश्वर के अस्तित्व और उसके व्यावहारिक गुणों को समझते हो, जो उसके द्वारा अतीत में किए गए कार्य में प्रकट हुए थे, फिर भी परमेश्वर की पहचान और हैसियत की तुम लोगों की परिभाषा अभी भी "अद्वितीय परमेश्वर, जो सभी चीज़ों के ऊपर संप्रभुता रखता है," से बहुत दूर और "रचयिता" से अलग है। पिछली कई संगतियों ने सबको एक ही तरह से महसूस करायामनुष्य परमेश्वर के विचारों को कैसे जान सकता है? यदि कोई वास्तव में जानता था, तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से परमेश्वर ही होगा, क्योंकि केवल परमेश्वर ही अपने विचारों को जानता है, और केवल स्वयं परमेश्वर ही अपने हर कार्य के आधार और दृष्टिकोण को जानता है। इस रीति से परमेश्वर की पहचान को जानना तुम लोगों को उचित और तर्कसंगत लगता है, परंतु परमेश्वर के स्वभाव और कार्य से कौन यह बता सकता है कि यह वास्तव में स्वयं परमेश्वर का कार्य है, मनुष्य का नहीं, ऐसा कार्य जो परमेश्वर की ओर से मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता? कौन यह देख सकता है कि यह कार्य उसकी संप्रभुता में आता है, जिसके पास परमेश्वर का सार-तत्त्व और सामर्थ्य है? दूसरे शब्दों में, किन विशेषताओं या सार के जरिये तुम लोग यह पहचानते हो कि वह स्वयं परमेश्वर है, जिसके पास परमेश्वर की पहचान है, और जो सब चीज़ों के ऊपर संप्रभुता रखता है? क्या तुम लोगो ने कभी इसके बारे में सोचा है? यदि तुम लोगों ने नहीं सोचा है तो इससे एक बात साबित होती है : पिछली कई संगतियों ने तुम लोगों को बस इतिहास के एक हिस्से की, जिसमें परमेश्वर ने अपना कार्य किया था, और उस कार्य के दौरान परमेश्वर के नज़रिये, उसकी अभिव्यक्ति और उसके प्रकटीकरण की कुछ समझ दी है। हालाँकि ऐसी समझ तुममें से प्रत्येक को निस्संदेह यह पहचान करवाती है कि कार्य के इन दोनों चरणों को पूरा करने वाला स्वयं परमेश्वर है, जिसमें

तुम लोग विश्वास करते हो और जिसका अनुसरण करते हो और जिसका तुम सबको हमेशा अनुसरण करना चाहिए, फिर भी तुम लोग अब भी यह पहचानने में असमर्थ हो कि यह वही परमेश्वर है, जो विश्व के सृजन के समय से अस्तित्व में है, और जो अनंत काल तक अस्तित्व में बना रहेगा, और न तुम यह पहचानने में समर्थ हो कि यही समस्त मानव-जाति की अगुआई करता है और उस पर प्रभुत्व रखता है। तुम लोगों ने निश्चित रूप से इस समस्या के बारे में कभी नहीं सोचा था। वह यहोवा हो या प्रभु यीशु, सार और अभिव्यक्ति के किन पहलुओं के माध्यम से तुम यह पहचानने में सक्षम कते हो कि वह न केवल वह परमेश्वर है, जिसका तुम्हें अनुसरण करना चाहिए, बल्कि वही मानव-जाति को आज्ञा देता है और मनुष्यों की नियति के ऊपर संप्रभुता रखता है, इसके अतिरिक्त जो स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है, जो स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीज़ों के ऊपर संप्रभुता रखता है? किन माध्यमों से तुम यह विश्वास करते हो कि जिसमें तुम विश्वास करते हो और जिसका अनुसरण करते हो, वह स्वयं परमेश्वर है जो सब चीज़ों के ऊपर संप्रभुता रखता है? किन माध्यमों से तुम लोग उस परमेश्वर को, जिस पर तुम विश्वास करते हो, उस परमेश्वर से जोड़ सकते हो, जो मानव-जाति के भाग्य के ऊपर संप्रभुता रखता है? तुम यह कैसे पहचानते हो कि जिस परमेश्वर पर तुम विश्वास करते हो, वही वह स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है, जो स्वर्ग और पृथ्वी, और सभी चीज़ों में है? यह वह समस्या है, जिसका मैं अगले खंड में समाधान करूँगा।

जिन समस्याओं के बारे में तुम लोगों ने कभी नहीं सोचा है जिनके बारे में तुम सोच भी नहीं सकते हो, वे हो सकती हैं जो परमेश्वर को जानने की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं, और जिनमें मनुष्य के लिए अथाह सत्य खोजे जा सकते हैं। जब ये समस्याएँ तुम लोगों पर आती हैं और तुम्हें उनका सामना करना चुनाव करना आवश्यक होता है, और यदि तुम लोग अपनी मूर्खता और अज्ञानता के कारण उनका पूरी तरह से उनका समाधान करने में असमर्थ रहते हो, या इसलिए कि तुम्हारे अनुभव बहुत सतही हैं और तुम लोगों में परमेश्वर के सच्चे ज्ञान की कमी है, तो वे परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास की राह में सबसे बड़ा अवरोध और सबसे बड़ी बाधा बन जाएँगे। और इसलिए मुझे लगता है कि इस विषय में तुम लोगों के साथ संगति करना बहुत ज़रूरी है। क्या अब तुम लोग जानते हो कि तुम्हारी समस्या क्या है? क्या तुम लोग उन समस्याओं के बारे में स्पष्ट हो, जिनके बारे में मैंने बताया? क्या ये वे समस्याएँ हैं, जिनका तुम लोग सामना करोगे? क्या ये वे समस्याएँ हैं, जिन्हें तुम लोग नहीं समझते हो? क्या ये समस्याएँ तुम्हारे साथ कभी घटित नहीं हुईं? क्या ये समस्याएँ तुम लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं? क्या ये वास्तव में समस्याएँ हैं? यह मामला तुम लोगों को बहुत

भ्रमित करता है, जिससे पता चलता है कि तुम्हारे अंदर उस परमेश्वर की सच्ची समझ नहीं है, जिस पर तुम लोग विश्वास करते हो, और यह कि तुम लोग उसे गम्भीरता से नहीं लेते। कुछ लोग कहते हैं, "मैं जानता हूँ कि वह परमेश्वर है, और इसलिए मैं उसका अनुसरण करता हूँ, क्योंकि उसके वचन परमेश्वर की अभिव्यक्ति हैं। बस, इतना काफी है। और कितने सबूत चाहिए? क्या वाकई हमें परमेश्वर के बारे में संदेह खड़े करने की आवश्यकता नहीं है? क्या वाकई हमें परमेश्वर की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए? क्या वाकई हमें परमेश्वर के सार और स्वयं परमेश्वर की पहचान पर प्रश्न नहीं करना चाहिए?" भले ही तुम लोग इस तरह से सोचते हो या नहीं, पर मैं ये प्रश्न परमेश्वर के बारे में तुम लोगों को भ्रमित करने के लिए या तुम लोगों को उसकी परीक्षा लेने हेतु प्रेरित करने के लिए नहीं रख रहा, परमेश्वर की पहचान और उसके सार के बारे में तुम्हारे भीतर संदेह उत्पन्न करने के लिए तो बिलकुल भी नहीं। बल्कि मैं ऐसा इसलिए करता हूँ, ताकि मैं तुम लोगों में परमेश्वर के सार के बारे में बेहतर समझ और परमेश्वर की हैसियत के बारे में एक बड़ी निश्चितता और विश्वास का उत्साह भर सकूँ, जिससे कि परमेश्वर उन सभी के हृदय में निवास करने वाला एकमात्र परमेश्वर हो सके, और जिससे कि परमेश्वर की मूल हैसियत—सृष्टिकर्ता, सभी चीज़ों के शासक और स्वयं अद्वितीय परमेश्वर की—हर प्राणी के हृदय में बहाल हो जा सके। यह भी एक मुख्य विषय है, जिसके बारे में मैं संगति करने वाला हूँ।

आओ, अब हम बाइबल से निम्नलिखित अंश पढना शुरू करें।

1. परमेश्वर सभी चीज़ों की सृष्टि करने के लिए वचनों को प्रयोग करता है

उत्पत्ति 1:3-5 जब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो," तो उजियाला हो गया। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया।

उत्पत्ति 1:6-7 फिर परमेश्वर ने कहा, "जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए।" तब परमेश्वर ने एक अन्तर बनाकर उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही हो गया।

उत्पत्ति 1:9-11 फिर परमेश्वर ने कहा, "आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए

और सूखी भूमि दिखाई दे," और वैसा ही हो गया। परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा, तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार हैं, पृथ्वी पर उगें," और वैसा ही हो गया।

उत्पत्ति 1:14-15 फिर परमेश्वर ने कहा, "दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों; और वे चिह्नों, और नियत समयों और दिनों, और वर्षों के कारण हों; और वे ज्योतियाँ आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें," और वैसा ही हो गया।

उत्पत्ति 1:20-21 फिर परमेश्वर ने कहा, "जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें।" इसलिये परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया, और एक एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

उत्पत्ति 1:24-25 फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात् घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों," और वैसा ही हो गया। इस प्रकार परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन-पशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं को, और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

पहले दिन, परमेश्वर के अधिकार के कारण, मानव-जाति के दिन और रात उत्पन्न हुए और स्थिर बने हुए हैं

आओ, हम पहले अंश को देखें : "जब परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला हो,' तो उजियाला हो गया। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया" (उत्पत्ति 1:3-5)। यह अंश सृष्टि की शुरुआत में परमेश्वर के पहले कार्य का विवरण देता है, और पहला दिन जिसे परमेश्वर ने गुज़ारा, उसमें एक शाम और एक सुबह थी। पर वह एक असाधारण दिन था : परमेश्वर ने सभी चीज़ों के लिए उजाला तैयार करना शुरू किया, और इतना ही नहीं, उजाले को अँधेरे से अलग किया। इस दिन, परमेश्वर ने बोलना शुरू किया, और उसके वचन और

अधिकार साथ-साथ मौजूद रहे। उसका अधिकार सभी चीज़ों के बीच दिखाई देने लगा, और उसके वचनों के परिणामस्वरूप उसका सामर्थ्य सभी चीज़ों में फैल गया। इस दिन से परमेश्वर के वचनों, परमेश्वर के अधिकार, और परमेश्वर के सामर्थ्य के कारण सभी चीज़ें बन गई और स्थिर हो गईं, और उन्होंने परमेश्वर के वचनों, परमेश्वर के अधिकार, और परमेश्वर के सामर्थ्य की वजह से काम करना शुरू कर दिया। जब परमेश्वर ने ये वचन कहे "उजियाला हो," तो उजियाला हो गया। परमेश्वर कार्यों के किसी क्रम में शामिल नहीं हुआ; उजाला उसके वचनों के परिणामस्वरूप प्रकट हुआ था। इस उजाले को परमेश्वर ने दिन कहा, जिस पर आज भी मनुष्य अपने अस्तित्व के लिए निर्भर रहता है। परमेश्वर की आज्ञा से उसका सार और मूल्य कभी नहीं बदले, और वह कभी ग़ायब नहीं हुआ। उसका अस्तित्व परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य को दर्शाता है, और सृष्टिकर्ता के अस्तित्व की घोषणा करता हैकरता है। यह सृष्टिकर्ता की पहचान और हैसियत की बारंबार पुष्टि करता है। यह अमूर्त या आभासी नहीं, बल्कि वास्तविक प्रकाश है, जिसे मनुष्य द्वारा देखा जा सकता है। उस समय के बाद से इस खाली संसार में, जिसमें "पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था," पहली भौतिक चीज़ पैदा हुई। यह चीज़ परमेश्वर के मुँह से निकले वचनों से आई, और परमेश्वर के अधिकार और कथनों के कारण सभी चीज़ों की सृष्टि के पहले कार्य में दिखाई दी। इसके तुरंत बाद, परमेश्वर ने उजाले और अँधेरे को अलग-अलग-अलग होने की आज्ञा दी...। परमेश्वर के वचनों के कारण हर चीज़ बदल गई और पूर्ण हो गई...। परमेश्वर ने उजाले को "दिन" कहा और अंअँधेरे को उसने "रात" कहा। उस समय, संसार में, जिसे परमेश्वर सृजित करना चाहता था, पहली शाम और पहली सुबह उत्पन्न की गईं, और परमेश्वर ने कहा कि यह पहला दिन है। सृष्टिकर्ता द्वारा सभी चीज़ों की सृष्टि का यह पहला दिन था, और यह सभी चीज़ों की सृष्टि का प्रारंभ था, और यह पहली बार था, जब सृष्टिकर्ता का अधिकार और सामर्थ्य उसके द्वारा सृजित इस इस संसार में दिखाया गया था।

इन वचनों के माध्यम से मनुष्य परमेश्वर और उसके वचनों के अधिकार, और साथ ही परमेश्वर के सामर्थ्य को देखने में सक्षम हुआ। चूँकि केवल परमेश्वर के पास ही ऐसा सामर्थ्य है, अत: केवल परमेश्वर के पास ही ऐसा अधिकार है; चूँकि परमेश्वर के पास ही ऐसा अधिकार है, अत: केवल परमेश्वर के पास ही ऐसा सामर्थ्य है। क्या किसी मनुष्य या वस्तु के पास ऐसा अधिकार और सामर्थ्य हो सकता है? क्या तुम लोगों के दिल में इसका कोई उत्तर है? परमेश्वर को छोड़, क्या किसी सृजित या गैर-सृजित प्राणी

के पास ऐसा अधिकार है? क्या तुम लोगों ने किसी पुस्तक या प्रकाशन में कभी ऐसी चीज़ का उदाहरण देखा है? क्या ऐसा कोई अभिलेख है कि किसी ने स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीज़ों की सृष्टि की हो? यह किसी अन्य पुस्तक या अभिलेखों में नहीं पाया नहीं जाता; निस्संदेह, ये परमेश्वर द्वारा दुनिया की भव्य सृष्टि के बारे में एकमात्र आधिकारिक और शक्तिशाली वचन हैं, जो बाइबल में दर्ज हैं; ये वचन परमेश्वर के अद्वितीय अधिकार और पहचान के बारे में बताते हैं। क्या इस तरह के अधिकार और सामर्थ्य को वे परमेश्वर की अद्वितीय पहचान का प्रतीक कहा जा सकता है? क्या यह कहा जा सकता है कि उन्हें सिर्फ और सिर्फ परमेश्वर ही धारण करता है? निस्संदेह, सिर्फ परमेश्वर ही ऐसा अधिकार और सामर्थ्य धारण करता है! यह अधिकार और सामर्थ्य किसी अन्य सृजित या गैर-सृजित प्राणी द्वारा धारण या प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता! क्या तुम लोगों ने इसे देखा है? इन वचनों से लोग शीघ्रता और स्पष्टता से इस तथ्य को समझ जाते हैं कि परमेश्वर अद्वितीय अधिकार, अद्वितीय सामर्थ्य, सर्वोच्च पहचान और हैसियत धारण करता है। उपर्युक्त बातों की संगति से, क्या तुम लोग कह सकते हो कि वह परमेश्वर, जिस पर तुम लोग विश्वास करते हो, अद्वितीय परमेश्वर है?

दूसरे दिन परमेश्वर के अधिकार ने जल का प्रबंध किया और आसमान बनाया तथा मनुष्य के जीवित रहने के लिए जगह बनाई

आओ, हम बाइबल के दूसरे अंश को पढ़ें : "फिर परमेश्वर ने कहा, 'जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए।' तब परमेश्वर ने एक अन्तर बनाकर उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही हो गया" (उत्पत्ति 1:6-7)। कौन-से परिवर्तन हुए, जब परमेश्वर ने कहा "जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए"? पवित्र शास्त्र में कहा गया है : "तब परमेश्वर ने एक अन्तर बनाकर उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया।" जब परमेश्वर ने ऐसा कहा और किया, तो क्या परिणाम हुआ? इसका उत्तर अंश के आखिरी भाग में हैं : "और वैसा ही हो गया।"

इन दोनों छोटे वाक्यों में एक भव्य घटना दर्ज है, और ये वाक्य एक अद्भुत दृश्य का वर्णन करते हैं—एक जबरदस्त उपक्रम, जिसमें परमेश्वर ने जल को नियंत्रित किया और एक जगह बनाई, जिसमें मनुष्य जीवित रह सके ...

इस तसवीर में, जल और आकाश परमेश्वर की आँखों के सामने तत्क्षण प्रकट होते हैं, और वे परमेश्वर के वचनों के अधिकार द्वारा विभाजित हो जाते हैं, और परमेश्वर द्वारा निर्धारित तरीके से "ऊपर" और "नीचे" के रूप में अलग हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वारा बनाए गए आकाश ने न केवल नीचे के जल को ढक लिया, बल्कि ऊपर के जल को भी सँभाला...। इसमें मनुष्य कुछ नहीं कर सकता, सिवाय टकटकी लगाकर देखने, भौचक्का होने, और उसके अधिकार की शक्ति और उस दृश्य की भव्यता की तारीफ में ठिठककर रह जाने के, जिसमें सृष्टिकर्ता ने जल को स्थानांतरित किया और उसे आज्ञा दी, और आकाश को बनाया। अपने वचनों और सामर्थ्य तथा अधिकार द्वारा परमेश्वर ने एक और महान उपलब्धि हासिल की। क्या यह सृष्टिकर्ता की शक्ति नहीं है? आओ, हम परमेश्वर के कर्मों को स्पष्ट करने के लिए पवित्र शास्त्र का प्रयोग करें : परमेश्वर ने अपने वचन कहे, और परमेश्वर के इन वचनों के कारण जल के मध्य में आकाश बन गया। और उसी समय परमेश्वर के इन वचनों के कारण इस स्थान में एक ज़बरदस्त परिवर्तन हुआ, और यह कोई सामान्य अर्थों में परिवर्तन नहीं था, बल्कि एक प्रकार का प्रतिस्थापन था, जिसमें कुछ नहीं बदलकर कुछ बन गया। यह सृष्टिकर्ता के विचारों से उत्पन्न हुआ था और सृष्टिकर्ता द्वारा बोले गए वचनों के कारण कुछ नहीं से कुछ बन गया, और, इतना ही नहीं, इस बिंदु से आगे यह सृष्टिकर्ता की ख़ातिर अस्तित्व में रहेगा और स्थिर बना रहेगा, और सृष्टिकर्ता के विचारों के अनुसार स्थानांतारित, परिवर्तित और नवीकृत होगा। यह अंश संपूर्ण संसार की सृष्टि में सृष्टिकर्ता के दूसरे कार्य का वर्णन करता है। यह सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य की दूसरी अभिव्यक्ति और सृष्टिकर्ता का एक और अग्रणी उपक्रम था। यह दिन जगत की नींव रखने के सृष्टिकर्ता द्वारा बिताया गया दूसरा दिन था, और यह उसके लिए एक और अद्भुत दिन थाः वह उजाले के बीच में चला, आकाश को लाया, उसने जल का प्रबंध और नियंत्रण किया और उसके कार्य, उसका अधिकार और उसका सामर्थ्य एक नए दिन के काम में लग गए ...

क्या परमेश्वर के द्वारा अपने वचन कहे जाने से पहले जल के मध्य में आकाश था? बिलकुल नहीं! और परमेश्वर के यह कहने के बाद क्या हुआ "जल के बीच एक अन्तर हो जाए"? परमेश्वर द्वारा इच्छित चीज़ें प्रकट हो गईं; जल के मध्य में आकाश उत्पन्न हो गया, और जल विभाजित हो गया, क्योंकि परमेश्वर ने कहा "इस अंतर के कारण जल दो भाग हो जाए।" इस तरह से, परमेश्वर के वचनों का अनुसरण करके, परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य के परिणामस्वरूप दो नए पदार्थ, दो नई जन्मी चीज़ें सभी चीज़ों के

मध्य प्रकटहो गईं। इन दो नई चीज़ों के प्रकटीकरण से तुम लोग कैसा महसूस करते हो? क्या तुम लोग सृष्टिकर्ता के सामर्थ्य की महानता महसूस करते हो? क्या तुम लोग सृष्टिकर्ता का अद्वितीय और असाधारण बल महसूस करते हो? इस बल और सामर्थ्य की महानता परमेश्वर के अधिकार के कारण है, और यह अधिकार स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है और स्वयं परमेश्वर की एक अद्वितीय विशेषता है।

क्या यह अंश तुम लोगों को एक बार और परमेश्वर की अद्वितीयता का गहरा बोध कराता है? वास्तव में यह पर्याप्त से बहुत कम है; सृष्टिकर्ता का अधिकार और सामर्थ्य इससे कहीं परे है। उसकी अद्वितीयता मात्र इसलिए नहीं है, क्योंकि वह किसी अन्य प्राणी से अलग सार धारण करता है, बल्कि इसलिए भी है कि उसका अधिकार और सामर्थ्य असाधारण, असीमित, सर्वोत्कृष्ट है, और इससे भी बढ़कर, उसका अधिकार और उसके सार स्वरूप जीवन की सृष्टि कर सकता है, चमत्कार कर सकता है, और प्रत्येक भव्य और असाधारण मिनट और सेकंड की सृष्टि कर सकता है। साथ ही वह स्वयं द्वारा सृजित जीवन पर शासन करने में सक्षम है और स्वयं द्वारा सृजित चमत्कारों और हर मिनट और सेकंड पर संप्रभुता रखता है।

तीसरे दिन परमेश्वर के वचनों ने पृथ्वी और समुद्रों की उत्पत्ति की, और परमेश्वर के अधिकार ने संसार को जीवन से लबालब भर दिया

आओ, हम उत्पत्ति 1:9–11 का पहला वाक्य पढ़ें : "फिर परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे।'" परमेश्वर बस इतना कहने के बाद कि, "आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे।" क्या परिवर्तन हुए? और उजाले और आकाश के अलावा इस जगह पर क्या था? पवित्र शास्त्र में लिखा है : "परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा, तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।" दूसरे शब्दों में, अब इस जगह में भूमि और समुद्र थे, और भूमि और समुद्र विभाजित हो गए थे। इन नई चीज़ों का प्रकटीकरण परमेश्वर के मुँह से निकली आज्ञा के अनुसरण में हुआ था, "और वैसा ही हो गया।" क्या पवित्र शास्त्र यह वर्णन करता है कि परमेश्वर जब यह सब कर रहा था, तो बहुत व्यस्त था? क्या वह उसके शारीरिक श्रम में संलग्न होने का वर्णन करता है? तो फिर परमेश्वर ने यह कैसे किया गया? परमेश्वर ने इन नई चीज़ों को कैसे उत्पन्न किया? स्वतः स्पष्ट है कि परमेश्वर ने यह सब हासिल करने के

लिए, इसकी संपूर्णता सृजित करने के लिए वचनों का प्रयोग किया।

उपर्युक्त तीन अंशों में, हमने तीन बड़ी घटनाओं के घटित होने के बारे में जाना। ये तीन घटनाएँ परमेश्वर के वचनों द्वारा प्रकट हुईं और अस्तित्व में लाई गईं, और उसके वचनों के कारण एक के बाद एक ये घटनाएँ परमेश्वर की आँखों के सामने घटित हो गईं। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि "परमेश्वर कहेगा, और वह पूरा हो जाएगा; वह आज्ञा देगा, और वह बना रहेगा" खोखले वचन नहीं हैं। परमेश्वर के इस सार की पुष्टि तत्क्षण हो जाती है जब वह विचार धारण करता है, और जब परमेश्वर बोलने के लिए अपना मुँह खोलता है, तो उसका सार पूर्णत: प्रतिबिंबित हो जाता है।

आओ, हम इस अंश का अंतिम वाक्य पढ़ें : "फिर परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार हैं, पृथ्वी पर उगें,' और वैसा ही हो गया।" जब परमेश्वर बोल रहा था, तो ये सभी चीज़ें परमेश्वर के विचारों का अनुसरण करके अस्तित्व में आ गईं, और एक क्षण में ही, विभिन्न प्रकार के नाजुक छोटे जीवन-रूप डगमगाते हुए मिट्टी से अपने सिर बाहर निकालने लगे, और अपने शरीर से मिट्टी के कण झाड़ने से पहले ही वे एक-दूसरे का अभिनंदन करने लगे तथा सिर हिला-हिलाकर ससार के प्रति मुस्कराने लगे। उन्होंने सृष्टिकर्ता द्वारा स्वयं को प्रदान किए गए जीवन के लिए उसे धन्यवाद दिया, और संसार के सामने घोषणा की कि वे सभी चीज़ों का अंग हैं और उनमें से प्रत्येक प्राणी सृष्टिकर्ता के अधिकार को दर्शाने के लिए अपना जीवन समर्पित करेगा। जैसे ही परमेश्वर ने वचन कहे, भूमि हरी-भरी, हो गई, मनुष्य के काम आ सकने वाला समस्त प्रकार के साग-पात अंकुरित हो गए और जमीन फोड़कर निकल आए, और पर्वत और मैदान वृक्षों एवं जंगलों से पूरी तरह से भर गए...। यह बंजर संसार, जिसमें जीवन का कोई निशान नहीं था, तेजी से प्रचुर घास, साग-पात वृक्षों एवं उमड़ती हुई हरियाली से भर गया...। तथा घास की सुगंध और मिट्टी की महक हवा के माध्यम से फैल गई, और पौधों की कतार हवा के चक्र के साथ मिलकर साँस लेने लगी और उनके बढ़ने की प्रक्रिया शुरू हो गई। उसी समय, परमेश्वर के वचनों के कारण और परमेश्वर के विचारों का अनुसरण करके, सभी पौधों ने अपने शाश्वत जीवन-चक्र शुरू कर दिए, जिनमें वे बढ़ते हैं, खिलते हैं, फलते हैं और अपनी वंश-वृद्धि करते हैं। उन्होंने सख्ती से अपने-अपने जीवन-चक्रों का पालन करना शुरू कर दिया और सभी चीज़ों के मध्य अपनी-अपनी भूमिका निभानी प्रारंभ कर दी...। वे सब सृष्टिकर्ता के शब्दों के कारण पैदा हुए थे और जी रहे थे। वे सृष्टिकर्ता की अनंत आपूर्ति और पोषण प्राप्त

करेंगे, और परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य को दर्शाने के लिए हमेशा भूमि के हर कोने में दृढ़ता से जीवित रहेंगे और वे हमेशा सृष्टिकर्ता द्वारा स्वयं को प्रदान की गई जीवन-शक्ति को दर्शाते रहेंगे ...

सृष्टिकर्ता का जीवन असाधारण है, उसके विचार असाधारण हैं, और उसका अधिकार असाधारण है और इसलिए, जब उसके वचन उच्चरित हुए, तो उसका अंतिम परिणाम था "और वैसा ही हो गया।" स्पष्ट रूप से, जब परमेश्वर कार्य करता है, तो उसे अपने हाथों से काम करने की आवश्यकता नहीं होती; वह बस आज्ञा देने के लिए अपने विचारों का और आदेश देने के लिए अपने वचनों का प्रयोग करता है, और इस तरह काम पूरे हो जाते हैं। इस दिन, परमेश्वर ने जल को एक साथ एक जगह पर इकट्ठा किया और सूखी भूमि प्रकट होने दी, जिसके बाद परमेश्वर ने भूमि से घास को उगाया, और बीज उत्पन्न करने वाले पौधे साग-पात और फल देने वाले पेड़ उग गए, और परमेश्वर ने उनकि किस्म के अनुसार वर्गीकृत किया तथा प्रत्येक को अपने खुद के बीज धारण करने के लिए कहा। यह सब परमेश्वर के विचारों और उसके वचनों की आज्ञा के अनुसार साकार हुआ और इस नए संसार में हर चीज़ एक के बाद एक प्रकट होती गई।

अपना काम शुरू करने से पहले ही परमेश्वर के मस्तिष्क में तस्वीर थी, जिसे वह अपने हासिल करना चाहता था, और जब परमेश्वर ने इन चीज़ों को हासिल करना शुरू किया, ऐसा तभी हुआ जब परमेश्वर ने इस तसवीर की विषयवस्तु के बारे में बोलने के लिए अपना मुँह खोला था, तो परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य के कारण सभी चीज़ों में बदलाव आना प्रारंभ हो गया। इस पर ध्यान न देते हुए कि परमेश्वर ने इसे कैसे किया या किस प्रकार अपने अधिकार का इस्तेमाल किया, सब-कुछ परमेश्वर की योजना और उसके वचनों की बदौलत क्रमिक रूप से हासिल होता गया परमेश्वर के वचनों और अधिकार की बदौलत स्वर्ग और पृथ्वी में क्रमिक रूप से बदलाव आते गए। इन सभी बदलावों और घटनाओं ने सृष्टिकर्ता के अधिकार और उसकी जीवन-शक्ति की असाधारणता और महानता को दर्शाया। उसके विचार कोई मामूली विचार या खाली तसवीर नहीं हैं, बल्कि जीवन-शक्ति और असाधारण ऊर्जा से भरे हुए अधिकार हैं, वे ऐसे सामर्थ्य हैं जो सभी चीज़ों को परिवर्तित कर सकते हैं, पुनर्जीवित कर सकते हैं, फिर से नया बना सकते हैं और नष्ट कर सकते हैं। इसकी वजह से, उसके विचारों के कारण सभी चीज़ें कार्य करती हैं और उसके मुँह से निकले वचनों के कारण, उसी समय हासिल हो जाती हैं ...

सभी चीजों के प्रकट होने से पहले, परमेश्वर के विचारों में एक संपूर्ण योजना बहुत पहले से ही बन

चुकी थी, और एक नया संसार बहुत पहले ही आकार ले चुका था। यद्यपि तीसरे दिन भूमि पर हर प्रकार के पौधे प्रकट हुए, किंतु परमेश्वर के पास इस संसार की सृष्टि के चरणों को रोकने का कोई कारण नहीं था; वह लगातार अपने वचनों को बोलने का इरादा रखता था, ताकि वह हर नई चीज़ की सृष्टि करना जारी रख सके सके। वह बोलता गया, अपनी आज्ञाएँ जारी करता गया, और अपने अधिकार का इस्तेमाल करता गया तथा अपना सामर्थ्य दिखाता गया, और उसने सभी चीज़ों और मानव-जाति के लिए, जिनके निर्माण का उसका इरादा था, वह सब-कुछ बनाया, जिनका निर्माण करने की उसने योजना बनाई थी ...

चौथे दिन, जब परमेश्वर एक बार फिर से अपने अधिकार का उपयोग करता है तो मानवजाति के लिए मौसम, दिन, और वर्ष अस्तित्व में आते हैं

सृष्टिकर्ता ने अपनी योजना को पूरा करने के लिए अपने वचनों का इस्तेमाल किया और इस तरह से उसने अपनी योजना के पहले तीन दिन गुज़ारे। इन तीन दिनों के दौरान, परमेश्वर व्यस्त, या खुद को थकाता हुआ दिखाई नहीं दिया; बल्कि इसके विपरीत, उसने अपनी योजना के बेहतरीन तीन पहले दिन गुज़ारे और संसार के विलक्षण रूपान्तरण के महान कार्य को पूरा किया। एक बिलकुल नया संसार उसकी आँखों के सामने प्रकट हुआ और अंश-अंश करके वह ख़ूबसूरत तस्वीर जो उसके विचारों में मुहरबन्द थी, अंततः परमेश्वर के वचनों में प्रगट हो गई। हर नयी चीज़ का प्रकटीकरण एक नवजात बच्चे के जन्म के समान था और सृष्टिकर्ता उस तस्वीर से आनंदित हुआ जो एक समय उसके विचारों में थी लेकिन जिसे अब जीवन्त कर दिया गया था। इस वक्त, उसके दिल को यह देखकर बहुत संतुष्टि मिली, परन्तु उसकी योजना अभी शुरू ही हुई थी। पलक झपकते ही एक नया दिन आ गया था—और सृष्टिकर्ता की योजना में अगला पृष्ठ क्या था? उसने क्या कहा? उसने अपने अधिकार का इस्तेमाल कैसे किया? उस दौरान इस नए संसार में कौन सी नई चीज़ें आईं? सृष्टिकर्ता के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए, हमारी निगाहें परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों की सृष्टि के चौथे दिन पर आ टिकतीं हैं, एक ऐसा दिन जिसमें एक और नई शुरूआत होने वाली थी। सृष्टिकर्ता के लिए यह निःसन्देह एक और बेहतरीन दिन था, और आज की मानवजाति के लिए यह एक और अति महत्वपूर्ण दिन था। यह निश्चय ही एक बहुमूल्य दिन था। वह इतना बेहतरीन कैसे था, वह इतना महत्वपूर्ण कैसे था और वह इतना बहुमूल्य कैसे था? आओ पहले सृष्टिकर्ता के द्वारा बोले गए वचनों को सुनें ...

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों;

और वे चिह्नों, और नियत समयों और दिनों, और वर्षों के कारण हों; और वे ज्योतियाँ आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें" (उत्पत्ति 1:14-15)। सूखी भूमि और उस पर के पौधों की सृष्टि के बाद यह परमेश्वर के अधिकार का एक बार फिर से उपयोग था जो प्राणियों के द्वारा दिखाया गया था। परमेश्वर के लिए ऐसा कार्य उतना ही सरल था जितना कि उसके द्वारा पहले किए गए कार्य थे, क्योंकि परमेश्वर के पास बड़ी सामर्थ्य है; परमेश्वर अपने वचन का पक्का है, और उसके वचन पूरे होंगे। परमेश्वर ने ज्योतियों को आज्ञा दी कि वे आकाश में प्रगट हों, और ये ज्योतियाँ न केवल पृथ्वी के ऊपर आकाश में रोशनी देती थीं, बल्कि दिन और रात और ऋतुओं, दिनों और वर्षों के लिए भी चिह्न के रूप में कार्य करती थीं। इस प्रकार, जब परमेश्वर ने अपने वचनों को कहा, हर एक कार्य जिसे परमेश्वर पूरा करना चाहता था वह परमेश्वर के अभिप्राय और जिस रीति से परमेश्वर ने उन्हें नियुक्त किया था, उसके अनुसार पूरा हो गया।

आकाश में जो ज्योतियाँ हैं, वे आसमान के तत्व हैं जो प्रकाश को बिखेर सकती हैं; वे आकाश, भूमि और समुद्र को प्रकाशमय कर सकती हैं। वे परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार तय की गयी लय एवं तीव्रता में परिक्रमा करती हैं और विभिन्न समयकाल में भूमि पर प्रकाश देती हैं और इस रीति से, ज्योतियों की परिक्रमा के चक्र के कारण भूमि के पूर्व और पश्चिम में दिन और रात होते हैं, वे न केवल दिन और रात के चिह्न हैं, बल्कि ये विभिन्न चक्र मानवजाति के लिए त्योहारों और विशेष दिनों को भी चिन्हित करते हैं। वे चारों ऋतुओं—बसंत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, शरद ऋतु, और शीत ऋतु—की पूर्ण पूरक और सहायक हैं, जिन्हें परमेश्वर के द्वारा भेजा जाता है, जिनके साथ ज्योतियाँ एकरूपता से मानवजाति के लिए चन्द्रमा की स्थितियों, दिनों, और सालों के लिए एक निरन्तर और सटीक चिह्न के रूप में कार्य करती हैं। यद्यपि यह केवल कृषि के आगमन के बाद ही हुआ कि मानवजाति ने परमेश्वर द्वारा बनाई गई ज्योतियों द्वारा चन्द्रमा की स्थितियों, दिनों और वर्षों के विभाजन को देखा और समझा, लेकिन वास्तव में चन्द्रमा की स्थितियों, दिनों और वर्षों को जिन्हें मनुष्य आज समझता है, वे बहुत पहले ही, परमेश्वर द्वारा सभी वस्तुओं की सृष्टि के चौथे दिन से प्रारम्भ हो चुके थे और इसी प्रकार परस्पर बदलने वाले बसंत, ग्रीष्म, शरद, और शीत ऋतु के चक्र भी जिन्हें मनुष्य के द्वारा अनुभव किया जाता है, वे बहुत पहले ही, परमेश्वर द्वारा सभी वस्तुओं की सृष्टि के चौथे दिन प्रारम्भ हो चुके थे। परमेश्वर के द्वारा बनाई गई ज्योतियों ने मनुष्य को इस योग्य बनाया कि वे लगातार, सटीक ढंग से और साफ-साफ दिन और रात के बीच अन्तर कर सकें, दिनों को गिन सकें,

साफ-साफ चन्द्रमा की स्थितियों और वर्षों का हिसाब रख सकें। (पूर्ण चन्द्रमा का दिन एक महीने की समाप्ति को दर्शाता था और इससे मनुष्य जान गया कि ज्योतियों का प्रकाशन एक नए चक्र की शुरूआत करता है; अर्द्ध-चन्द्रमा का दिन आधे महीने की समाप्ति को दर्शाता था, जिसने मनुष्य को यह बताया कि चन्द्रमा की एक नई स्थिति शुरू हो रही है, इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि चन्द्रमा की एक स्थिति में कितने दिन और रात होते हैं और एक ऋतु में चन्द्रमा की कितनी स्थितियाँ होती हैं, एक साल में कितनी ऋतुएँ होती हैं, यह सब कुछ बड़ी नियमितता के साथ प्रदर्शित होता था।) इस प्रकार, मनुष्य ज्योतियों की परिक्रमाओं के चिन्हांकन से आसानी से चन्द्रमा की स्थितियों, दिनों, और सालों का पता लगा सकता था। यहाँ से, मानवजाति और सभी चीज़ें अनजाने ही दिन-रात के क्रमानुसार परस्पर परिवर्तन और ज्योतियों की परिक्रमाओं से उत्पन्न ऋतुओं के बदलाव के मध्य जीवन बिताने लगे। यह सृष्टिकर्ता द्वारा चौथे दिन ज्योतियों की सृष्टि का महत्व था। उसी प्रकार, सृष्टिकर्ता के इस कार्य के उद्देश्य और महत्व अभी भी उसके अधिकार और सामर्थ्य से अविभाजित थे। इस प्रकार, परमेश्वर के द्वारा बनाई गई ज्योतियाँ और वह मूल्य जो वे शीघ्र ही मनुष्य तक लाने वाले थे, सृष्टिकर्ता के अधिकार के इस्तेमाल में एक और महानतम कार्य था।

इस नए संसार में, जिसमें मानवजाति अभी तक प्रकट नहीं हुई थी, सृष्टिकर्ता ने साँझ और सवेरे, आकाश, भूमि और समुद्र, घास, सागपात और विभिन्न प्रकार के वृक्षों, और ज्योतियों, ऋतुओं, दिनों, और वर्षों को उस नए जीवन के लिए बनाया जिसका वह शीघ्र सृजन करने वाला था। सृष्टिकर्ता का अधिकार और सामर्थ्य, हर उस नई चीज़ में प्रगट हुआ जिसे उसने बनाया था और उसके वचन और उपलब्धियाँ लेश-मात्र भी बिना किसी असंगति या अन्तराल के एक साथ घटित हुए। इन सभी नई चीज़ों का प्रकटीकरण और जन्म सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य के प्रमाण थे वह अपने वचन का पक्का है और उसका वचन पूरा होगा और जो पूर्ण हुआ है वो हमेशा बना रहेगा। यह सच्चाई कभी नहीं बदली है : भूतकाल में भी ऐसा था, वर्तमान में भी ऐसा है और पूरे अनंतकाल के लिए ऐसा ही बना रहेगा। जब तुम लोग पवित्र-शास्त्र के उन वचनों को एक बार फिर देखते हो, तो क्या वे तुम्हें तरोताज़ा दिखाई देते हो? क्या तुम लोगों ने नई विषय-वस्तु देखी है और नई नई खोज की है? यह इसलिए है क्योंकि सृष्टिकर्ता के कार्यों ने तुम लोगों के हृदय को द्रवित कर दिया है, और उसके अधिकार और सामर्थ्य के बारे में तुम सबके ज्ञान की दिशा का मार्गदर्शन किया है और सृष्टिकर्ता की तुम्हारी समझ के लिए द्वार खोल दिया है

और उसके कार्य और अधिकार ने इन वचनों को जीवन दे दिया है। इस प्रकार इन वचनों में मनुष्य ने सृष्टिकर्ता के अधिकार का एक वास्तविक, सुस्पष्ट प्रकटीकरण देखा और सचमुच में सृष्टिकर्ता की सर्वोच्चता को देखा है, और उसने सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य की असाधारणता को देखा है।

सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य चमत्कार पर चमत्कार करते हैं; वह मनुष्य के ध्यान को आकर्षित करता है। मनुष्य उसके अधिकार के उपयोग से पैदा हुए आश्चर्यजनक कर्मों को टकटकी लगाकर देखने के सिवाए कुछ नहीं कर सकता है। उसका असीमित सामर्थ्य अत्यंत प्रसन्नता लेकर आता है और मनुष्य भौंचक्का हो जाता है। वह अतिउत्साह से भर जाता है और प्रशंसा में हक्का-बक्का-सा देखता है। वह विस्मयाभिभूत और हर्षित हो जाता है; और इससे अधिक, मनुष्य ज़ाहिर तौर पर द्रवित हो जाता है, और उसमें आदर, सम्मान, और लगाव उत्पन्न होने लग जाते हैं। सृष्टिकर्ता के अधिकार और कर्मों का मनुष्य की आत्मा पर एक बड़ा अपमार्जक प्रभाव होता है और इसके अलावा यह मनुष्य की आत्मा को संतुष्ट कर देता है। परमेश्वर के हर एक विचार, हर एक बोल, उसके अधिकार का हर एक प्रकाशन, सभी चीज़ों में अति उत्तम रचना हैं। यह एक महान कार्य है जो सृजी गई मानवजाति की गहरी समझ और ज्ञान के बहुत ही योग्य है। जब हम सृष्टिकर्ता के वचनों से सृजित किए गए हर एक जीवधारी की गणना करते हैं तो हमारी आत्मा परमेश्वर की सामर्थ्य की अद्‌भुतता की ओर खिंची चली जाती है और हम खुद को सृष्टिकर्ता के कदमों के निशानों के पीछे-पीछे चलते हुए अगले दिन की ओर जाता हुआ पाते हैं : परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों की सृष्टि का पाँचवा दिन।

आओ, सृष्टिकर्ता के और अधिक कर्मों को देखने के साथ हम एक-एक अंश करके पवित्र शास्त्र को पढ़ना जारी रखें।

पाँचवे दिन, जीवन के विविध और विभिन्न रूप अलग-अलग तरीकों से सृष्टिकर्ता के अधिकार को प्रदर्शित करते हैं

पवित्र-शास्त्र कहता है, "फिर परमेश्वर ने कहा, 'जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें।' इसलिये परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया, और एक एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की: और परमेश्वर ने देखा कि

अच्छा है" (उत्पत्ति 1:20-21)। पवित्र-शास्त्र साफ-साफ कहता है कि इस दिन, परमेश्वर ने जल के जन्तुओं और आकाश के पक्षियों को बनाया, कहने का तात्पर्य है कि उसने विभिन्न प्रकार की मछलियों और पक्षियों को बनाया और उनकी प्रजाति के अनुसार उन्हें वर्गीकृत किया। इस तरह, परमेश्वर की सृष्टि से पृथ्वी, आकाश और जल समृद्ध हो गए ...

जैसे ही परमेश्वर के वचन कहे गए, बिलकुल नई ज़िन्दगियाँ, हर एक अलग आकार में, सृष्टिकर्ता के वचनों के मध्य तत्काल जीवित हो गईं। वे इस संसार में अपने स्थान के लिए एक-दूसरे को धकेलते, कूदते और आनंद से खेलते हुए आ गईं...। हर रूप एवं आकार की मछलियाँ जल के एक छोर से दूसरे छोर को तैरने लगीं; और सभी किस्मों की सीपियाँ रेत में उत्पन्न होने लगीं, शल्क वाली, कवचधारी, और बिना रीढ़ वाले जीव-जन्तु, चाहे बड़े हों या छोटे, लम्बे हों या ठिगने, विभिन्न रूपों में जल्दी से विकसित हो गए। विभिन्न प्रकार के समुद्री पौधे शीघ्रता से उगना शुरू हो गए, विविध प्रकार के समुद्री जीवन के बहाव में बहने लगे, लहराते हुए, स्थिर जल को उत्तेजित करते हुए, मानो उनसे कह रहे हों : "नाचो! अपने मित्रों को लेकर आओ! क्योंकि अब तुम लोग कभी अकेले नहीं रहोगे!" उस घड़ी जब परमेश्वर के द्वारा बनाए गए जीवित प्राणी जल में प्रगट हुए, प्रत्येक नए जीवन ने उस जल में जीवन-शक्ति डाल दी जो इतने लम्बे समय से शांत था और एक नए युग का सूत्रपात किया...। और तब से, वे एक-दूसरे के आस-पास रहते हुए एक-दूसरे का साथ देने लगे और वे आपस में कोई दूरी नहीं रखते थे। जल के भीतर जो भी जीवधारी थे, जल उनका पोषण करने के लिए मौजूद था, और प्रत्येक जीवन, जल और उसके पोषण के कारण अस्तित्व में बना रहा। प्रत्येक जीव, दूसरे को जीवन देता था, और साथ ही, हर एक, उसी रीति से, सृष्टिकर्ता की सृष्टि की अद्भुतता, महानता और सृष्टिकर्ता के अधिकार के सर्वोत्कृष्ट सामर्थ्य की गवाही दी ...

अब जबकि समुद्र शांत न रहा, उसी प्रकार जीवन ने आकाश को भरना प्रारम्भ कर दिया। एक के बाद एक, छोटे-बड़े पक्षी, भूमि से आकाश में उड़ने लगे। समुद्र के जीवों से भिन्न, उनके पास पंख और पर थे, जो उनके दुबले और आकर्षक रूप को ढंके हुए थे। वे अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए, गर्व और अभिमान से अपने परों के आकर्षक आवरण को और अपनी विशेष क्रियाओं और कुशलताओं को प्रदर्शित करने लगे जिन्हें सृष्टिकर्ता के द्वारा उन्हें प्रदान किया गया था। वे स्वतन्त्रता के साथ हवा में लहराने लगे और कुशलता से आकाश और पृथ्वी के बीच, घास के मैदानों और जंगलों के आर-पार यहाँ वहाँ उड़ने लगे...। वे हवा के प्रिय थे, वे हर चीज़ के प्रिय थे। वे जल्द ही स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में एक सेतु बनकर सभी

चीज़ों तक संदेश पहुँचाने वाले बनने को थे...। वे गीत गाते, आनंद के साथ यहाँ-वहाँ झपट्टा मारते, उन्होंने कभी ख़ाली पड़े संसार में हर्ष, हँसी व कम्पन पैदा कर दिया...। उन्होंने अपने स्पष्ट एवं मधुर गीतों से और अपने हृदय के भीतर के शब्दों से उस जीवन के लिए सृष्टिकर्ता की प्रशंसा की जो उसने उन्हें दिया था। उन्होंने सृष्टिकर्ता की पूर्णता और अद्‌भुतता को प्रदर्शित करने के लिए हर्षोल्लास के साथ नृत्य किया, और वे उस विशेष जीवन के द्वारा जो सृष्टिकर्ता ने उन्हें दिया था, उसके अधिकार की गवाही देने में अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर देंगे ...

जीवित प्राणी चाहे जल में थे या आकाश में, सृष्टिकर्ता की आज्ञा के द्वारा, जीवित प्राणियों की यह अधिकता जीवन के विभिन्न रूपों में मौजूद थी, और सृष्टिकर्ता की आज्ञा के द्वारा, वे अपनी-अपनी प्रजाति के अनुसार इकट्ठे हो गए—और यह व्यवस्था, यह नियम किसी भी जीवधारी के लिए अपरिवर्तनीय था। सृष्टिकर्ता के द्वारा जो भी सीमाएँ बनाई गई थीं, उसके पार जाने की हिम्मत उन्होंने कभी नहीं की और न ही वे ऐसा करने में समर्थ थे। सृष्टिकर्ता के द्वारा आदेश के अनुसार वे जीते और बहुगुणित होते रहे और सृष्टिकर्ता के द्वारा बनाए गए जीवन-क्रम और व्यवस्था का कड़ाई से पालन करते रहे और सजगता से उसकी अनकही आज्ञाओं, स्वर्गीय आदेशों और नियमों में बने रहे जो उसने उन्हें तब से लेकर आज तक दिये थे। वे सृष्टिकर्ता से अपने एक विशेष अन्दाज़ में बात करते थे और सृष्टिकर्ता के अर्थ की प्रशंसा करने लगे और वे उसकी आज्ञा मानते थे। किसी ने कभी भी सृष्टिकर्ता के अधिकार का उल्लंघन नहीं किया और उनके ऊपर उसकी संप्रभुता और आज्ञाओं का उपयोग उसके विचारों के तहत हुआ था; कोई वचन जारी नहीं किए गए थे, परन्तु सृष्टिकर्ता का अद्वितीय अधिकार ख़ामोशी से सभी चीज़ों का नियन्त्रण करता था जिसमें भाषा की कोई क्रिया नहीं थी और जो मानवजाति से भिन्न था। इस विशेष रीति से उसके अधिकार के इस्तेमाल ने मनुष्य को नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए बाध्य किया और सृष्टिकर्ता के अद्वितीय अधिकार की एक नई व्याख्या करने को मजबूर किया। यहाँ मैं तुम्हें एक बात बता दूँ कि इस नए दिन में, सृष्टिकर्ता के अधिकार के इस्तेमाल ने एक बार और सृष्टिकर्ता की अद्वितीयता का प्रदर्शन किया।

आगे, आओ हम पवित्र-शास्त्र के इस अंश के अंतिम वाक्य पर एक नज़र डालें : "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।" तुम लोगों को क्या लगता है कि इसका क्या है? इन वचनों में परमेश्वर की भावनाएं निहित हैं। परमेश्वर ने उन सभी चीज़ों को देखा जिन्हें उसने बनाया था जो उसके वचनों के कारण अस्तित्व में आईं और मजबूत बनी रहीं और धीरे-धीरे परिवर्तित होने लगीं। उस समय, परमेश्वर ने अपने वचनों के

द्वारा जो विभिन्न चीज़ें बनाई थीं, और जिन विभिन्न कार्यों को पूरा किया था, क्या वह उनसे सन्तुष्ट था? उत्तर है कि "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।" तुम लोग यहाँ क्या देखते हो? "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है" इससे क्या प्रकट होता है? यह किसका प्रतीक है? इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने जो योजना बनाई थी और जो निर्देश दिये थे, उन्हें और उन उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिएपरमेश्वर के पास सामर्थ्य और बुद्धि थी, जिन्हें पूरा करने का उसने मन बनाया था। जब परमेश्वर ने हर एक कार्य को पूरा कर लिया, तो क्या उसे पछतावा हुआ? उत्तर अभी भी यही है "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।" दूसरे शब्दों में, उसने कोई खेद महसूस नहीं किया, बल्कि वह सन्तुष्ट था। इसका मतलब क्या है कि उसे कोई खेद महसूस नहीं हुआ? इसका मतलब है कि परमेश्वर की योजना पूर्ण है, उसकी सामर्थ्य और बुद्धि पूर्ण है, और यह कि सिर्फ उसकी सामर्थ्य के द्वारा ही ऐसी पूर्णता को प्राप्त किया जा सकता है। जब मुनष्य कोई कार्य करता है, तो क्या वह परमेश्वर के समान देख सकता है कि सब अच्छा है? क्या हर काम जो मनुष्य करता है वो पूर्णता पा सकता है? क्या मनुष्य किसी काम को एक ही बार में पूरी अनंतता के लिए पूरा कर सकता है? जैसा कि मनुष्य कहता है, "कुछ भी पूर्ण नहीं होता, बस बेहतर होता है," ऐसा कुछ भी नहीं है जो मनुष्य करे और वह पूर्णता को प्राप्त कर ले। परमेश्वर ने देखा कि जो कुछ उसने बनाया और पूरा किया वह अच्छा है, परमेश्वर के द्वारा बनाई गई हर वस्तु उसके वचन के द्वारा स्थिर हुई, कहने का तात्पर्य है कि, जब "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है," तब जो कुछ भी उसने बनाया, उसने एक चिरस्थायी रूप ले लिया, उसकी किस्म के अनुसार उसे वर्गीकृत किया गया, और उसे पूरी अनंतता के लिए एक नियत स्थिति, उद्देश्य, और कार्यप्रणाली दी गई। इसके अतिरिक्त, सब वस्तुओं के बीच उनकी भूमिका, और वह यात्रा जिनसे उन्हें परमेश्वर की सभी वस्तुओं के प्रबन्धन के दौरान गुज़रना था, उन्हें परमेश्वर के द्वारा पहले से ही नियुक्त कर दिया गया था और वे अपरिवर्तनीय थे। यह सृष्टिकर्ता द्वारा सभी वस्तुओं को दिया गया स्वर्गीय नियम था।

"परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है," ये सरल, कम समझे गए वचन, जिनकी कई बार उपेक्षा की जाती है, ये स्वर्गीय नियम और स्वर्गीय आदेश हैं जिन्हें सभी प्राणियों को परमेश्वर के द्वारा दिया गया है। यह सृष्टिकर्ता के अधिकार का एक और मूर्त रूप है, जो अधिक व्यावहारिक और अधिक गंभीर है। अपने वचनों के जरिए, सृष्टिकर्ता न केवल वह सब-कुछ हासिल करने में सक्षम हुआ जिसे उसने हासिल करने का बीड़ा उठाया था, और वह सब-कुछ प्राप्त किया जिसे वह प्राप्त करने निकला था, बल्कि जो कुछ भी

उसने सृजित किया था, वह उसका नियन्त्रण कर सकता था, और जो कुछ उसने अपने अधिकार के अधीन बनाया था उस पर शासन कर सकता था और इसके अतिरिक्त, सब-कुछ व्यवस्थित और नियमित था। सभी वस्तुएँ उसके वचन के द्वारा बढ़ती, अस्तित्व में रहती और नष्ट होती थीं और उसके अतिरिक्त उसके अधिकार के कारण वे उसके द्वारा बनाई गई व्यवस्था के मध्य अस्तित्व में बनी रहती थींऔर कोई भी वस्तु इससे छूटी नहीं थी! यह व्यवस्था बिलकुल उसी घड़ी शुरू हो गई थी जब "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है," और वह बना रहेगा और जारी रहेगा और परमेश्वर की प्रबंधकीय योजना के लिए उस दिन तक कार्य करता रहेगा जब तक वह सृष्टिकर्ता के द्वारा रद्द न कर दिया जाए! सृष्टिकर्ता का अद्वितीय अधिकार न केवल सब वस्तुओं को बनाने और सब वस्तुओं को अस्तित्व में आने की आज्ञा देने की काबिलियत में प्रकट हुआ, बल्कि सब वस्तुओं पर शासन करने और सब वस्तुओं पर संप्रभुता रखने और सब वस्तुओं में चेतना और जीवन देने और इसके अतिरिक्त, उन सब वस्तुओं को जिन्हें वो अपनी योजना में सृजित करेगा, उन्हें पूरी अनंतता के लिए उसके द्वारा बनाए गए संसार में एक उत्तम आकार, उत्तम संरचना, उत्तम भूमिका में प्रकट और मौजूद होने के लिए बनाने की उसकी योग्यता में भी प्रकट हुआ था। यह इस बात से प्रकट हुआ कि सृष्टिकर्ता के विचार किसी विवशता के अधीन नहीं थे और समय, अंतरिक्ष और भूगोल के द्वारा सीमित नहीं थे। उसके अधिकार के समान, सृष्टिकर्ता की अद्वितीय पहचान सदा-सर्वदा तक अपरिवर्तनीय बनी रहेगी। उसका अधिकार सर्वदा उसकी अद्वितीय पहचान का एक निरूपण और प्रतीक बना रहेगा और उसका अधिकार हमेशा उसकी पहचान के साथ-साथ बना रहेगा!

छठे दिन, सृष्टिकर्ता ने बोला और हर प्रकार के जीवित प्राणी जो उसके मस्तिष्क में थे एक के बाद एक प्रगट होने लगे

अलक्षित रूप से, सब वस्तुओं को बनाने का सृष्टिकर्ता का कार्य लगातार पाँचवे दिन तक चलता रहा, उसके तुरन्त बाद सृष्टिकर्ता ने सब वस्तुओं की सृष्टि के छठे दिन का स्वागत किया। यह दिन एक और नई शुरूआत थी तथा एक और असाधारण दिन था। इस नए दिन की शाम को सृष्टिकर्ता की क्या योजना थी? कौन से नए जीव जन्तुओं को वह उत्पन्न करेगा, उनकी सृष्टि करेगा? ध्यान से सुनो, यह सृष्टिकर्ता की वाणी है ...

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात् घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों,' और वैसा ही हो गया। इस प्रकार

परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन-पशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं को, और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है" (उत्पत्ति 1:24-25)। इन में कौन-कौन से जीवित प्राणी शामिल हैं? पवित्र-शास्त्र कहता हैः मवेशी और रेंगने वाले जन्तु और पृथ्वी के जाति-जाति के जंगली पशु। कहने का तात्पर्य है कि उस दिन वहाँ पृथ्वी के सब प्रकार के जीवित प्राणी ही नहीं थे, बल्कि उन सभी को प्रजाति के अनुसार वर्गीकृत किया गया था और उसी प्रकार, "परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।"

पिछले पाँच दिनों की तरह, उसी सुर में, सृष्टिकर्ता ने अपने इच्छित प्राणियों के जन्म का आदेश दिया और हर एक अपनी-अपनी प्रजाति के अनुसार पृथ्वी पर प्रकट हुआ। जब सृष्टिकर्ता अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है तो उसके कोई भी वचन व्यर्थ में नहीं बोले जाते और इस प्रकार, छ्ठे दिन हर जीवित प्राणी, जिसको उसने बनाने की इच्छा की थी, नियत समय पर प्रकट हो गया। जैसे ही सृष्टिकर्ता ने कहा "पृथ्वी से एक-एक जाति के प्राणी, उत्पन्न हों," पृथ्वी तुरन्त जीवन से भर गई और पृथ्वी के ऊपर अचानक ही हर प्रकार के प्राणियों की श्वास प्रकट हुई...। हरे-भरे घास के जंगली मैदानों में, हृष्ट-पुष्ट गाएँ अपनी पूंछों को इधर-उधर हिलाते हुए, एक के बाद एक प्रगट होने लगीं, मिमियाती हुई भेड़ें झुण्डों में इकट्ठी होने लगीं, और हिनहिनाते हुए घोड़े सरपट दौड़ने लगे...। एक पल में ही, शांत घास के मैदानों की विशालता में जीवन का विस्फोट हुआ...। निश्चल घास के मैदान पर पशुओं के इन विभिन्न झुण्डों का प्रकटीकरण एक सुन्दर दृश्य था जो अपने साथ असीमित जीवन शक्ति लेकर आया था...। वे घास के मैदानों के साथी और स्वामी होंगे और प्रत्येक दूसरे पर निर्भर होगा; वे इन घास के मैदानों के संरक्षक और रखवाले भी होंगे, जो उनका स्थायी निवास होगा, जो उन्हें उनकी सारी ज़रूरतों को प्रदान करेगा और उनके अस्तित्व के लिए अनंत पोषण का स्रोत होगा ...

उसी दिन जब ये विभिन्न मवेशी सृष्टिकर्ता के वचनों द्वारा अस्तित्व में आए थे, ढेर सारे कीड़े-मकौड़े भी एक के बाद एक प्रगट हुए। भले ही वे सभी जीवधारियों में सबसे छोटे थे, परन्तु उनकी जीवन-शक्ति सृष्टिकर्ता की अद्भुत सृष्टि थी और वे बहुत देरी से नहीं आए थे...। कुछ ने अपने पंखों को फड़फड़ाते थे, जबकि कुछ अन्य धीरे-धीरे रेंगते थे; कुछ उछलते और कूदते थे और कुछ अन्य लड़खड़ाते थे, कुछ आगे बढ़ गए, जबकि अन्य जल्दी से पीछे लौट गए; कुछ दूसरी ओर चले गए, कुछ अन्य ऊँची-नीची छलांग लगाने लगे...। वे सभी अपने लिए घर ढूँढ़ने के प्रयास में व्यस्त हो गए : कुछ ने घास में घुसकर अपना

रास्ता बनाया, कुछ ने भूमि खोदकर छेद बनाना शुरू कर दिया, कुछ उड़कर पेड़ों पर चढ़ गए और जंगल में छिप गए...। यद्यपि वे आकार में छोटे थे, परन्तु वे खाली पेट की तकलीफ को सहना नहीं चाहते थे और अपने घरों को बनाने के बाद, वे अपना पोषण करने के लिए भोजन की तलाश में दौड़ पड़े। कुछ घास के कोमल तिनकों को खाने के लिए उस पर चढ़ गए, कुछ ने धूल से अपना मुँह भर लिया और अपना पेट भरा और स्वाद और आनंद के साथ खाने लगे (उनके लिए, धूल भी एक स्वादिष्ट भोजन है); कुछ जंगल में छिप गए, परन्तु आराम करने के लिए नहीं रूके, क्योंकि चमकीले गहरे हरे पत्तों के भीतर के रस ने उनके लिये रसीला भोजन प्रदान किया...। सन्तुष्ट होने के बाद भी कीड़े-मकौड़ों ने अपनी गतिविधियों को नहीं रोका, भले ही वे आकार में छोटे थे, फिर भी वे भरपूर ऊर्जा और असीमित उत्साह से भरे हुए थे और उसी प्रकार सभी जीवधारियों में, वे सबसे अधिक सक्रिय और सबसे अधिक परिश्रमी होते हैं। वे कभी आलसी न हुए और न कभी आराम से पड़े रहे। एक बार संतृप्त होने के बाद, उन्होंने फिर से अपने भविष्य के लिए परिश्रम करना प्रारम्भ कर दिया, अपने आने वाले कल के लिए अपने आपको व्यस्त रखा और जीवित बने रहने के लिए भाग-दौड़ करते रहे...। उन्होंने मधुरता से विभिन्न प्रकार की धुनों और सुरों को गुनगुनाकर अपने आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने घास, वृक्षों और ज़मीन के हर इन्च में आनंद का समावेश किया और हर दिन और हर वर्ष को अद्वितीय बना दिया...। अपनी भाषा और अपने तरीकों से, उन्होंने भूमि के सभी प्राणियों तक जानकारी पहुँचायी। और अपने विशेष जीवन पथक्रम का उपयोग करते हुए, उन्होंने सब वस्तुओं को जिनके ऊपर उन्होंने निशान छोड़े थे, चिन्हित किया...। उनका मिट्टी, घास और जंगलों के साथ घनिष्ठ संबंध था और वे मिट्टी, घास और वनों में शक्ति और जीवन चेतना लेकर आए, उन्होंने सभी प्राणियों तक सृष्टिकर्ता का प्रोत्साहन और अभिनंदन पहुँचाया ...

सृष्टिकर्ता की निगाहें उन सब वस्तुओं पर पड़ीं जिन्हें उसने बनाया था और इस पल उसकी निगाहें जंगलों और पर्वतों पर आकर ठहर गईं और उसका मस्तिष्क में कई विचार घूम रहे थे। जैसे ही उसके वचन बोले गए, घने जंगलों में और पहाड़ों के ऊपर, इस प्रकार के पशु प्रकट हुए जो पहले कभी नहीं आए थे : वे "जंगली जानवर" थे जो परमेश्वर के वचन के द्वारा बोले गए थे। लम्बे समय से प्रतीक्षारत, उन्होंने अपने अनोखे चेहरों के साथ अपने-अपने सिरों को हिलाया और हर एक ने अपनी-अपनी पूँछ को लहराया। कुछ के पास रोंएदार लबादे थे, कुछ कवचधारी थे, कुछ के खुले हुए ज़हरीले दाँत थे, कुछ के पास घातक मुस्कान थी, कुछ लम्बी गर्दन वाले थे, कुछ के पास छोटी पूँछ थी, कुछ के पास ख़तरनाक

आँखें थीं, कुछ डर के साथ देखते थे, कुछ घास खाने के लिए झुके हुए थे, कुछ के मुँह में ख़ून लगा हुआ था, कुछ दो पाँव से उछलते थे, कुछ चार खुरों से धीरे-धीरे चलते थे, कुछ पेड़ों के ऊपर लटके दूर तक देखते थे, कुछ जंगलों में इन्तज़ार में लेटे हुए थे, कुछ आराम करने के लिए गुफाओं की खोज में थे, कुछ मैदानों में दौड़ते और उछलते थे, कुछ शिकार के लिए जंगलों में गश्त लगा रहे थे...; कुछ गरज रहे थे, कुछ हुँकार भर रहे थे, कुछ भौंक रहे थे, कुछ रो रहे थे...; कुछ ऊँचे सुर, कुछ नीचे सुर वाले, कुछ खुले गले वाले, कुछ साफ-साफ और मधुर स्वर वाले थे...; कुछ भयानक थे, कुछ सुन्दर थे, कुछ बड़े अजीब से थे और कुछ प्यारे-से थे, कुछ डरावने थे, कुछ बहुत ही आकर्षक भोले-भाले थे...। सब एक-एक कर आने लगे। देखो कि वे गर्व से कितने फूले हुए थे, उन्मुक्त-जीव थे, एक-दूसरे से बिलकुल उदासीन थे, एक-दूसरे को एक झलक देखने की भी परवाह नहीं करते थे...। सभी उस विशेष जीवन को जो सृष्टिकर्ता के द्वारा उन्हें दिया गया था, और अपने जंगलीपन और क्रूरता को धारण किए हुए, जंगलों में और पहाड़ियों के ऊपर प्रकट हो गए। सबसे घृणित, पूरी तरह ढीठ—किसने उन्हें पहाड़ियों और जंगलों का सच्चा स्वामी बना दिया था? उस घड़ी से जब से सृष्टिकर्ता ने उनके प्रकटन को स्वीकृति दी थी, उन्होंने जंगलों और पहाड़ों पर "दावा किया," क्योंकि सृष्टिकर्ता ने पहले से ही उनकी सीमाओं को कस दिया था और उनके अस्तित्व के दायरे को निश्चित कर दिया था। केवल वे ही जंगलों और पहाड़ों के सच्चे स्वामी थे, इसलिए वे इतने प्रचण्ड और ढीठ थे। उन्हें "जंगली जानवर" सिर्फ इसीलिए कहा जाता था क्योंकि, सभी प्राणियों में वे ही थे जो वास्तव में इतने जंगली, क्रूर और वश में न आने वाले थे। उन्हें पालतू नहीं बनाया जा सकता था, इस प्रकार उनका पालन-पोषण नहीं किया जा सकता था और वे मानवजाति के साथ एकता से नहीं रह सकते थे या मानवजाति के लिए परिश्रम नहीं कर सकते थे। चूँकि उनका पालन-पोषण नहीं किया जा सकता था, और वे मानवजाति के लिए काम नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्हें मानवजाति से दूर रहकर जीवन बिताना था। मनुष्य उनके पास नहीं आ सकते थे। चूँकि उन्हें मानवजाति से दूर रहकर जीवन बिताना था और मनुष्य उनके पास नहीं आ सकते थे इसलिए बदले में, वे उन ज़िम्मेदारियों को निभा सकते थे जो सृष्टिकर्ता के द्वारा उन्हें दी गई थी : पर्वतों और जंगलों की सुरक्षा करना। उनके जंगलीपन ने पर्वतों की सुरक्षा की और जंगलों की हिफाज़त की और उनका वही स्वभाव उनके अस्तित्व और बढ़ोत्तरी के लिए सबसे बेहतरीन सुरक्षा और आश्वासन था। साथ ही, उनके जंगलीपन ने सब वस्तुओं के मध्य सन्तुलन को कायम रखा और सुनिश्चित किया। उनका आगमन पर्वतों और जंगलों के लिए सहयोग और मजबूत सहारा

लेकर आया; उनके आगमन ने शांत तथा रिक्त पर्वतों और जंगलों में शक्ति और जीवन चेतना का संचार किया। उसके बाद से, पर्वत और जंगल उनके स्थायी निवास बन गए, और वे अपने घरों से कभी वंचित नहीं रहेंगे, क्योंकि पर्वत और पहाड़ उनके लिए प्रकट हुए और अस्तित्व में आए थे; जंगली जानवर अपने कर्तव्य को पूरा करेंगे और उनकी हिफाज़त करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। साथ ही, जंगली जानवर सृष्टिकर्ता के प्रोत्साहन के साथ दृढ़ता से रहेंगे ताकि अपने सीमा क्षेत्र को थामे रह सकें और सृष्टिकर्ता के द्वारा स्थापित की गयी सब वस्तुओं के सन्तुलन को कायम रखने के लिए अपने जंगली स्वभाव का निरन्तर उपयोग कर सकें और सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य को प्रकट कर सकें!

सृष्टिकर्ता के अधिकार के अधीन, सभी चीज़ें पूर्ण हैं

परमेश्वर के द्वारा सचल और अचल समेत सब वस्तुओं की सृष्टि की गई, जैसे पक्षी और मछलियाँ, जैसे वृक्ष और फूल, जिसमें मवेशी, कीड़े-मकौड़े, और छठे दिन बनाए गए जंगली जानवर भी शामिल थे—वे सभी परमेश्वर की निगाह में अच्छे थे और इसके अतिरिक्त, परमेश्वर की निगाहों में ये वस्तुएँ उसकी योजना के अनुरूप, पूर्णता के शिखर को प्राप्त कर चुकी थीं और एक ऐसे स्तर तक पहुँच गई थीं जहाँ परमेश्वर उन्हें पहुँचाना चाहता था। कदम-दर-कदम, सृष्टिकर्ता ने उन कार्यों को किया जो वह अपनी योजना के अनुसार करने का इरादा रखता था। जिन चीज़ों की वह रचना करना चाहता था, वे एक-के-बाद-एक प्रकट होती गईं और प्रत्येक का प्रकटीकरण सृष्टिकर्ता के अधिकार का प्रतिबिम्ब था और उसके अधिकार का ठोस रूप था, इन ठोस रूपों के कारण, सभी जीवधारी सृष्टिकर्ता के अनुग्रह और प्रावधान के प्रति नत-मस्तक थे। जैसे ही परमेश्वर के चमत्कारी कर्मों ने अपने आपको प्रकट किया, यह संसार परमेश्वर के द्वारा सृजी गई सब वस्तुओं से, अंश-अंश करके फैल गया और सब अव्यवस्था और अँधकार से स्पष्टता और उजाले में बदल गया, मृत्युपरक स्थिरता से जीवन्त और असीमित जीवन चेतना में बदल गया। सृष्टि की सब वस्तुओं के मध्य, बड़े से लेकर छोटे तक और छोटे से लेकर सूक्ष्म तक, ऐसा कोई भी नहीं था जो सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य के द्वारा सृजित किया नहीं गया था और हर एक जीवधारी के अस्तित्व की एक अद्वितीय और अंतर्निहित आवश्यकता और मूल्य था। उनके आकार और ढांचे के अन्तर के बावजूद, उन्हें सृष्टिकर्ता के द्वारा ही बनाया जाना था ताकि सृष्टिकर्ता के अधिकार के अधीन अस्तित्व में बने रहें। कई बार लोग किसी बड़े बदसूरत कीड़े को देखकर कहते हैं, "यह कीड़ा बहुत ही भद्दा है, ऐसा हो ही नहीं सकता कि ऐसे कुरूप जीव को परमेश्वर बना सकता है—ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह इतनी

भद्दी चीज़ को बनाए।" कितना मूर्खतापूर्ण नज़रिया है यह! इसके बजाय उन्हें यह कहना चाहिए, "भले ही यह कीड़ा इतना भद्दा है, उसे परमेश्वर के द्वारा बनाया गया है और इस लिए उसके पास उसका अपना अनोखा उद्देश्य ज़रूर होगा।" परमेश्वर के विचारों में, विभिन्न जीवित प्राणी जिन्हें उसने बनाया है, वह उन्हें हर प्रकार का और हर तरह का रूप और हर प्रकार की कार्य प्रणालियाँ और उपयोगिताएँ देना चाहता था और इस प्रकार परमेश्वर के द्वारा बनाई गई किसी भी वस्तु को एक ही साँचे में नहीं ढाला गया है। उनकी बाहरी संरचना से लेकर भीतरी संरचना तक, उनके जीने की आदतों से लेकर उनके निवास तक—हर एक चीज़ अलग है। गायों के पास गायों का रूप है, गधों के पास गधों का रूप है, हिरनों के पास हिरनों का रूप है, हाथियों के पास हाथियों का रूप है। क्या तुम कह सकते हो कि कौन सबसे अच्छा दिखता है और कौन सबसे भद्दा दिखता है? क्या तुम कह सकते हो कि कौन सबसे अधिक उपयोगी है और किसकी अस्तित्व की आवश्यकता सबसे कम है? कुछ लोगों को हाथियों का रूप अच्छा लगता है, परन्तु कोई भी खेती के लिए हाथियों का इस्तेमाल नहीं करता है; कुछ लोग शेरों और बाघों के रूप को पसंद करते हैं, क्योंकि उनका रूप सब जीवों में सबसे अधिक प्रभावकारी है, परन्तु क्या तुम उन्हें पालतू जानवर की तरह रख सकते हो? संक्षेप में, जब तमाम जीवों की बात आती है, तो मनुष्य को सृष्टिकर्ता के अधिकार को स्वीकार कर लेना चाहिये, अर्थात्, सब जीवों के लिए सृष्टिकर्ता के द्वारा नियुक्त किए गए क्रम को मान लेना चाहिये; यह सबसे बुद्धिमत्तापूर्ण रवैया है। सृष्टिकर्ता के मूल अभिप्रायों को खोजने और उसके प्रति आज्ञाकारी होने का रवैया ही सृष्टिकर्ता के अधिकार की सच्ची स्वीकार्यता और निश्चितता है। यह परमेश्वर की निगाह में अच्छा है तो मनुष्य के पास दोष ढूँढ़ने का कौन-सा कारण है?

अतः, सृष्टिकर्ता के अधिकार के अधीन सब वस्तुओं को सृष्टिकर्ता की संप्रभुता के लिए सुर में सुर मिलाकर गाना है और उसके नए दिन के कार्य के लिए एक बेहतरीन भूमिका की शुरूआत करनी है और इस समय सृष्टिकर्ता भी अपने प्रबन्ध के कार्य में एक नया पृष्ठ खोलेगा! सृष्टिकर्ता के द्वारा नियुक्त बसंत ऋतु के अँकुरों, ग्रीष्म ऋतु में परिपक्वता, शरद ऋतु में कटनी, और शीत ऋतु में भण्डारण की व्यवस्था के अनुसार, सब वस्तुएँ सृष्टिकर्ता की प्रबंधकीय योजना के साथ प्रतिध्वनित होंगी और वे अपने नए दिन, नई शुरूआत और नए जीवन पथक्रम का स्वागत करेंगी और वे सृष्टिकर्ता के अधिकार की संप्रभुता के अधीन हर दिन का अभिनन्दन करने के लिए कभी न खत्म होने वाले अनुक्रम के अनुसार जीवित रहेंगी और प्रजनन करेंगी ...

कोई भी सृजित और गैर-सृजित प्राणी सृष्टिकर्ता की पहचान का स्थान नहीं ले सकता है

जब से उसने सब वस्तुओं की सृष्टि की शुरूआत की, परमेश्वर की सामर्थ्य प्रकट और प्रकाशित होने लगी थी, क्योंकि सब वस्तुओं को बनाने के लिए परमेश्वर ने अपने वचनों का इस्तेमाल किया था। चाहे उसने जिस भी रीति से उनका सृजन किया, जिस कारण से भी उनका सृजन किया, परमेश्वर के वचनों के कारण ही सभी चीज़ें अस्तित्व में आईं थीं और मजबूत बनी रहीं; यह सृष्टिकर्ता का अद्वितीय अधिकार है। इस संसार में मानवजाति के प्रकट होने के समय से पहले, सृष्टिकर्ता ने मानवजाति के वास्ते सब वस्तुओं को बनाने के लिए अपने अधिकार और सामर्थ्य का इस्तेमाल किया और मानवजाति के लिए जीने का उपयुक्त वातावरण तैयार करने के लिए अपनी अद्वितीय विधियों का उपयोग किया था। जो कुछ भी उसने किया वह मानवजाति की तैयारी के लिए था, जो जल्द ही उसका श्वास प्राप्त करने वाली थी। अर्थात, मानवजाति की सृष्टि से पहले के समय में, मानवजाति से भिन्न सभी जीवधारियों में परमेश्वर का अधिकार प्रकट हुआ, ऐसी वस्तुओं में प्रकट हुआ जो स्वर्ग, ज्योतियों, समुद्रों, और भूमि के समान ही विशाल थीं और छोटे से छोटे पशु-पक्षियों में, हर प्रकार के कीड़े-मकौड़ों और सूक्ष्म जीवों में प्रकट हुआ, जिनमें विभिन्न प्रकार के जीवाणु भी शामिल थे, जो नंगी आँखों से देखे नहीं जा सकते थे। प्रत्येक को सृष्टिकर्ता के वचनों के द्वारा जीवन दिया गया था, हर एक की वंशवृद्धि सृष्टिकर्ता के वचनों के कारण हुई और प्रत्येक सृष्टिकर्ता के वचनों के कारण सृष्टिकर्ता की संप्रभुता के अधीन जीवन बिताता था। यद्यपि उन्होंने सृष्टिकर्ता की श्वास को प्राप्त नहीं किया था, फिर भी वे अपने अलग-अलग रूपों और संरचना के द्वारा उस जीवन व चेतना को दर्शाते थे जो सृष्टिकर्ता द्वारा उन्हें दिया गया था; भले ही उन्हें बोलने की काबिलियत नहीं दी गई थी जैसा सृष्टिकर्ता के द्वारा मनुष्यों को दी गयी थी, फिर भी उन में से प्रत्येक ने अपने उस जीवन की अभिव्यक्ति का एक अन्दाज़ प्राप्त किया जिसे सृष्टिकर्ता के द्वारा उन्हें दिया गया था और वो मनुष्यों की भाषा से अलग था। सृष्टिकर्ता के अधिकार ने न केवल अचल पदार्थ प्रतीत होने वाली वस्तुओं को जीवन की चेतना दी, जिससे वे कभी भी विलुप्त न हों, बल्कि इसके अतिरिक्त, प्रजनन करने और बहुगुणित होने के लिए हर जीवित प्राणियों को अंतःज्ञान भी दिया, ताकि वे कभी भी विलुप्त न हों और वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रहने के नियमों और सिद्धांतों को आगे बढ़ाते जाएँ जो सृष्टिकर्ता के द्वारा उन्हें दिये गए हैं। जिस रीति से सृष्टिकर्ता अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है, वह अतिसूक्ष्म और अतिविशाल दृष्टिकोण से कड़ाई से चिपका नहीं रहता है और किसी आकार में सीमित नहीं होता; वह विश्व के परिचालन को नियंत्रित करने और सभी

चीज़ों के जीवन और मृत्यु के ऊपर प्रभुता रखने में समर्थ है और इसके अतिरिक्त सब वस्तुओं को भली-भाँति सँभाल सकता है जिससे वे उसकी सेवा करें; वह पर्वतों, नदियों, और झीलों के सब कार्यों का प्रबन्ध कर सकता है, और उनके भीतर की सब वस्तुओं पर शासन कर सकता है और इसके अलावा, वह सब वस्तुओं के लिए जो आवश्यक है उसे प्रदान कर सकता है। यह मानवजाति के अलावा सब वस्तुओं के मध्य सृष्टिकर्ता के अद्वितीय अधिकार का प्रकटीकरण है। ऐसा प्रकटीकरण मात्र एक जीवनकाल के लिए नहीं है; यह कभी नहीं रूकेगा, न थमेगा और किसी व्यक्ति या चीज़ के द्वारा बदला या बिगाड़ानहीं जा सकता है और न ही उसमें किसी व्यक्ति या चीज़ के द्वारा कुछ जोड़ा या घटाया जा सकता है—क्योंकि कोई भी सृष्टिकर्ता की पहचान की जगह नहीं ले सकता और इसलिए सृष्टिकर्ता के अधिकार को किसी सृजित किए गए प्राणी के द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है; यह किसी गैर-सृजित प्राणी के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के सन्देशवाहकों और स्वर्गदूतों को लो। उनके पास परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं है और सृष्टिकर्ता का अधिकार तो उनके पास बिलकुल भी नहीं है और उनके पास परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य क्यों नहीं है उसका कारण यह है कि उनमें सृष्टिकर्ता का सार नहीं है। गैर-सृजित प्राणी, जैसे परमेश्वर के सन्देशवाहक और स्वर्गदूत, भले ही हालाँकिपरमेश्वर की तरफ से कुछ कर सकते हैं, परन्तु वे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। यद्यपि वे कुछ सामर्थ्य धारण किए हुए हैं जो मनुष्य के पास नहीं है, फिर भी उनके पास परमेश्वर का अधिकार नहीं है, सब वस्तुओं को बनाने, सब वस्तुओं को आज्ञा देने और सब वस्तुओं के ऊपर संप्रभुता रखने के लिए उनके पास परमेश्वर का अधिकार नहीं है। इस प्रकार परमेश्वर की अद्वितीयता की जगह कोई गैर-सृजित प्राणी नहीं ले सकता है और उसी प्रकार कोई गैर-सृजित प्राणी परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य का स्थान नहीं ले सकता। क्या तुमने बाइबल में, परमेश्वर के किसी सन्देशवाहक के बारे में पढ़ा है जिसने सभी चीज़ों की सृष्टि की हो? परमेश्वर ने सभी चीज़ों के सृजन के लिए किसी संदेशवाहक या स्वर्गदूत को क्यों नहीं भेजा? क्योंकि उनके पास परमेश्वर का अधिकार नहीं था और इसलिए उनके पास परमेश्वर के अधिकार का इस्तेमाल करने की योग्यता भी नहीं थी। सभी जीवधारियों के समान, वे सभी सृष्टिकर्ता की प्रभुता के अधीन हैं और सृष्टिकर्ता के अधिकार के अधीन हैं और इसी रीति से, सृष्टिकर्ता उनका परमेश्वर भी है और उनका सम्राट भी। उन में से हर एक के बीच—चाहे वे उच्च श्रेणी के हों या निम्न, बड़ी सामर्थ्य के हों या छोटी—ऐसा कोई भी नहीं है जो परमेश्वर के अधिकार से बढ़कर हो सके और इस प्रकार उनके बीच में,

ऐसा कोई भी नहीं है जो सृष्टिकर्ता की पहचान का स्थान ले सके। उन्हें कभी भी परमेश्वर नहीं कहा जाएगा और वे कभी भी सृष्टिकर्ता नहीं बन पाएँगे। ये न बदलने वाले सत्य और तथ्य हैं!

उपरोक्त सहभागिता के जरिए, क्या हम दृढ़तापूर्वक निम्नलिखित बातों को कह सकते हैं : केवल सब वस्तुओं के सृष्टिकर्ता और शासक, वह जिसके पास अद्वितीय अधिकार और अद्वितीय सामर्थ्य है, क्या उसे स्वयं अद्वितीय परमेश्वर कहा जा सकता है? इस समय, शायद तुम लोग महसूस करो कि ऐसा प्रश्न बहुत ही गंभीर है। तुम लोग, कुछ पल के लिए, उसे समझने में असमर्थ हो और उसके भीतर के सार-तत्व को नहीं समझ सकते और इसलिए इस पल तुम लोगों को लगेगा कि उसका उत्तर देना कठिन है। ऐसी स्थिति में, मैं अपनी सहभागिता को जारी रखूँगा। आगे, मैं चाहूँगा कि तुम लोग उस सामर्थ्य और अधिकार के बहुत-से पहलुओं के वास्तविक कर्मों को देखो जो केवल परमेश्वर के पास है और इस प्रकार मैं तुम लोगों को सचमुच परमेश्वर की अद्वितीयता को समझने, प्रशंसा करने और परमेश्वर के अद्वितीय अधिकार के अर्थ को जानने दूँगा।

2. परमेश्वर मनुष्य के साथ एक वाचा बाँधने के लिए अपने वचनों को उपयोग करता है

उत्पत्ति 9:11-13 "और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बाँधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नष्ट न होंगे: और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा।" फिर परमेश्वर ने कहा, "जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग-युग की पीढ़ियों के लिये बाँधता हूँ, उसका यह चिह्न है: मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिह्न होगा।"

सभी चीज़ों को बनाने के पश्चात्, सृष्टिकर्ता का अधिकार एक बार फिर इंद्रधनुष की वाचा में दिखाया और पुष्ट किया जाता है

सृष्टिकर्ता का अधिकार हमेशा सभी जीवधारियों पर प्रकट और इस्तेमाल किया जाता है और वह न केवल सब वस्तुओं की नियति पर शासन करता है, बल्कि मनुष्य पर भी शासन करता है, एक विशेष जीवधारी जिसे उसने स्वयं अपने हाथों से बनाया है और जिसकी एक अलग जीवन संरचना है और जो जीवन के एक अलग रूप में अस्तित्व में बना हुआ है। सब वस्तुओं को बनाने के बाद, सृष्टिकर्ता अपने अधिकार और सामर्थ्य को प्रकट करने से नहीं रूका; उसके लिए, वह अधिकार जिस के तहत वह सभी

चीज़ों पर और सम्पूर्ण मानवजाति की नियति के ऊपर संप्रभुता रखता था, वह केवल तब औपचारिक रूप से शुरू हुआ जब मानवजाति ने सच में उसके हाथों से जन्म लिया। वह मानवजाति का प्रबन्ध और उन पर शासन करना चाहता था; वह मानवजाति को बचाना चाहता था, मानवजाति को सचमुच में पाना चाहता था, वह ऐसी मानवजाति को पाना चाहता था जो सभी चीज़ों का संचालन कर सके; उसका इरादा ऐसी मानवजाति को अपने अधिकार की अधीनता में रखने का था, उनसे अपने अधिकार को जानने और उसका पालन करवाने का था। इस प्रकार, परमेश्वर ने अपने वचनों का इस्तेमाल करके अपने अधिकार को मनुष्य के बीच में अधिकारिक रूप से प्रकट करना प्रारम्भ किया और अपने वचनों को साकार करने के लिए अपने अधिकार का उपयोग करना प्रारम्भ किया। बेशक, इस प्रक्रिया के दौरान परमेश्वर का अधिकार सभी स्थानों में दिखाई देने लगा; मैंने बस कुछ विशेष, जाने-माने उदाहरणों को लिया है जिससे तुम सब परमेश्वर की अद्वितीयता और उसके अद्वितीय अधिकार को समझ और जान सको।

उत्पत्ति 9:11-13 के अंश और परमेश्वर द्वारा संसार की सृष्टि के लेखे-जोखे से संबंधित उपर्युक्त अंश में एक समानता है, लेकिन उनमें एक अन्तर भी है। समानता क्या है? समानता परमेश्वर के द्वारा वचनों के इस्तेमाल में निहित है ताकि वह उन कामों को कर सके जिसकी उसने इच्छा की थी और अन्तर यह है कि जिनअंशों को यहाँ उद्धृत किया गया है, वे मनुष्य के साथ परमेश्वर के वार्तालाप को दर्शाते हैं, जिसमें वह मनुष्य के साथ एक वाचा बाँधता है और मनुष्य को उस बारे में बताता है जो वाचा में समाहित है। मनुष्य के साथ हुए उसके संवाद के दौरान परमेश्वर के अधिकार का उपयोग किया गया, कहने का तात्पर्य है कि मानवजाति की सृष्टि से पहले, परमेश्वर का वचन निर्देश और आदेश थे, जिन्हें उन जीवधारियों के लिए जारी किया गया था जिन्हें वह बनाना चाहता था। परन्तु अब यहाँ कोई परमेश्वर के वचनों को सुनने वाला था और इस प्रकार उसके वचन मनुष्यों के साथ एक संवाद थे और साथ ही मनुष्य के लिए एक प्रोत्साहन एवं चेतावनी भी थे। इसके अतिरिक्त परमेश्वर के वचन सभी चीज़ों को सौंपी गई वो आज्ञाएँ थीं जो उसका अधिकार वहाँ किए हुए थीं।

इस अंश में परमेश्वर की कौन-सी गतिविधि दर्ज है? इसमें वह वाचा दर्ज है जिसे परमेश्वर ने जल प्रलय से संसार के विनाश के बाद मनुष्य के साथ बाँधा था; यह वाचा मनुष्य को बताती है कि परमेश्वर ऐसी तबाही को फिर से संसार पर नहीं लाएगा औरइस कारण, परमेश्वर ने इसके लिए एक चिह्न ठहराया। यह चिह्न क्या था? पवित्र-शास्त्र में कहा गया है कि "मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के

बीच में वाचा का चिह्न होगा।" ये सृष्टिकर्ता के द्वारा मनुष्यजाति को बोले गए मूल वचन हैं। जैसे ही उसने इन वचनों को कहा, एक इंद्रधनुष मनुष्य की आँखों के सामने प्रकट हो गया, जहाँ वो आज तक मौजूद है। हर किसी ने ऐसे इंद्रधनुष को देखा है और जब तुम उसे देखते हो तो क्या तुम जानते हो कि यह कैसे प्रकट होता है? विज्ञान इसे साबित करने में या उसके स्रोत को ढूँढ़ने में या उसके उद्गम स्थान को पहचानने में नाकाम है। क्योंकि इंद्रधनुष उस वाचा का चिह्न है जो सृष्टिकर्ता और मनुष्य के बीच में बांधी गयी थी; इसके लिए किसी वैज्ञानिक आधार की आवश्यकता नहीं है, यह मनुष्य के द्वारा नहीं बनाया गया था, न ही मनुष्य इसे बदलने में सक्षम है। अपने वचनों को कहने के बाद यह सृष्टिकर्ता के अधिकार की निरन्तरता है। अपनी प्रतिज्ञा और मनुष्य के साथ अपनी वाचा में बने रहने के लिए सृष्टिकर्ता ने अपनी विशिष्ट विधि का उपयोग किया और इस प्रकार उसने जो वाचा स्थापित की थी उसके चिह्न के रूप में उसके द्वारा इंद्रधनुष का उपयोग, एक स्वर्गीय आदेश और व्यवस्था है जो हमेशा अपरिवर्तनीय बना रहेगा, भले ही वह सृष्टिकर्ता के संबंध में हो या सृजित मानवजाति के संबंध में। ये कहना ही होगा कि यह अपरिवर्तनीय व्यवस्था, सभी चीज़ों की सृष्टि के बाद सृष्टिकर्ता के अधिकार का एक और सच्चा प्रकटीकरण है और यह भी कहना होगा कि सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य असीमित हैं; उसके द्वारा इंद्रधनुष को एक चिह्न के रूप में इस्तेमाल करना सृष्टिकर्ता के अधिकार की निरन्तरता और विस्तार है। अपने वचनों को इस्तेमाल करते हुए यह परमेश्वर द्वारा किया गया एक और कार्य था और अपने वचनों को इस्तेमाल करते हुए परमेश्वर ने मनुष्य के साथ जो वाचा बाँधी थी, उसका एक चिह्न था। उसने मनुष्य को बताया कि उसने क्या करने का संकल्प लिया है और वह किस रीति से पूर्ण और प्राप्त किया जाएगा। इस तरह से परमेश्वर के मुख के वचनों से वह विषय पूरा हो गया। केवल परमेश्वर के पास ही ऐसी सामर्थ्य है और आज उसके द्वारा इन वचनों के बोले जाने के कई हज़ार साल बाद भी मनुष्य परमेश्वर के मुख से बोले गए इंद्रधनुष को देख सकता है। परमेश्वर के द्वारा बोले गए वचनों के कारण, इंद्रधनुष बिना किसी बदलाव और परिवर्तन के आज तक ऊपर आकाश में अस्तित्व में बना हुआ है। इस इंद्रधनुष को कोई भी हटा नहीं सकता है, कोई भी इसके नियमों को बदल नहीं सकता है। यह सिर्फ परमेश्वर के वचनों के कारण ही अस्तित्व में बना हुआ है। बिलकुल सही अर्थ में यह परमेश्वर का अधिकार है। "परमेश्वर अपने वचन का पक्का है और उसका वचन पूरा होगा और जो कुछ वो पूरा करेगा वह सर्वदा बना रहेगा।" ऐसे वचन यहाँ पर साफ-साफ अभिव्यक्त किए गए हैं और यह परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य का स्पष्ट चिह्न और गुण हैं। ऐसा चिह्न या गुण सृजित किए

गए प्राणियों में से किसी के भी पास नहीं है और न ही उनमें देखे जाते हैं और न ही इसे गैर-सृजित प्राणियों में से किसी के भी पास देखा जाता है। यह केवल अद्वितीय परमेश्वर का है और मात्र सृष्टिकर्ता के द्वारा धारण की गई पहचान और सार को अन्य जीवधारियों से पृथक करता है। साथ ही, यह ऐसा चिह्न और गुण भी है जिससे श्रेष्ठ स्वयं परमेश्वर को छोड़, कोई भी भी सृजित या गैर-सृजित प्राणी नहीं हो सकताचिह्न।

परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के साथ वाचा बाँधना एक अति महत्वपूर्ण कार्य था। एक ऐसा कार्य था जिसका उपयोग वह मनुष्य तक एक सच पहुँचाने और मनुष्य को अपनी इच्छा बताने के लिए करना चाहता था। इस कारण उसने एक अद्वितीय विधि का इस्तेमाल करते हुए, मनुष्य के साथ वाचा बाँधने के लिए एक विशिष्ट चिह्न का उपयोग किया, जो मनुष्य के साथ बांधी गयी वाचा का एक चिह्न था। अतः क्या इस वाचा का ठहराया जाना एक बड़ी घटना थी? वह घटना आखिर कितनी बड़ी थी? यही वह बात है जो इस वाचा को विशेष बनाती है : यह एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य के बीच या एक समूह और दूसरे समूह के बीच या एक देश और दूसरे देश के बीच ठहराई गई वाचा नहीं है, बल्कि सृष्टिकर्ता और सम्पूर्ण मानवजाति के बीच ठहराई गई वाचा है और यह तब तक प्रमाणित बनी रहेगी जब तक सृष्टिकर्ता सब वस्तुओं का उन्मूलन न कर दे। इस वाचा का प्रतिपादन करने वाला सृष्टिकर्ता है और इसको बनाए रखने वाला भी सृष्टिकर्ता ही है। संक्षेप में, मानवजाति के साथ ठहराई गई इंद्रधनुष की वाचा की सम्पूर्णता, सृष्टिकर्ता और मानवजाति के मध्य हुए संवाद के अनुसार पूर्ण और प्राप्त हुई थी और आज तक ऊपर आकाश में अस्तित्व में वैसी ही बनी हुई है। सृजित जीवधारी समर्पण करने, आज्ञा मानने, विश्वास करने, प्रशंसा करने, गवाही देने और सृष्टिकर्ता के अधिकार की स्तुति करने के सिवा और क्या कर सकते हैं? क्योंकि अद्वितीय परमेश्वर के अलावा किसी और के पास ऐसी वाचा को ठहराने का सामर्थ्य नहीं है। इंद्रधनुष का प्रकटीकरण बार-बार, मानवजाति के लिए घोषणा करता है और उसके ध्यान को सृष्टिकर्ता और मानवजाति के मध्य बांधी गयी वाचा की ओर खींचता है। सृष्टिकर्ता और मानवजाति के मध्य ठहराई गयी वाचा के निरन्तर प्रकटीकरण में, मनुष्य को, इंद्रधनुष या वाचा नहीं दिखलाए जाते, वरन सृष्टिकर्ता के अपरिर्वतनशील अधिकार को दिखाया जाता है। बार-बार इंद्रधनुष का प्रकटीकरण छिपे हुए स्थानों में सृष्टिकर्ता के ज़बर्दस्त और अद्‌भुत कर्मों को दर्शाता है और साथ ही यह सृष्टिकर्ता के अधिकार का अतिआवश्यक प्रतिबिम्ब है जो कभी धूमिल नहीं होगा, कभी नहीं बदलेगा। क्या यह सृष्टिकर्ता के अद्वितीय अधिकार के एक और पहलू का प्रकटीकरण नहीं है?

3. परमेश्वर की आशीषें

उत्पत्ति 17:4-6 देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। इसलिये अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। मैं तुझे अत्यन्त फलवन्त करूँगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूँगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।

उत्पत्ति 18:18-19 अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी। क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें; ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करे।

उत्पत्ति 22:16-18 यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा; और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।

अय्यूब 42:12 यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हज़ार भेड़ बकरियाँ, छ: हज़ार ऊँट, हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गदहियाँ हो गईं।

सृष्टिकर्ता के कथनों का अद्वितीय अंदाज़ और लहज़ा सृष्टिकर्ता के अद्वितीय अधिकार और पहचान का एक प्रतीक हैं

बहुत से लोग परमेश्वर की आशीषों को खोजना और पाना चाहते हैं, परन्तु हर कोई इन आशीषों को प्राप्त नहीं कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर के अपने ही सिद्धांत हैं, और वह अपने ही तरीके से मनुष्यों को आशीष देता है। वे प्रतिज्ञाएँ जो परमेश्वर मनुष्य से करता है और जितना अनुग्रह वह मनुष्य को देता है, वे मनुष्यों के विचारों और कार्यों के आधार पर बाँटे जाते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर की आशीषों के द्वारा क्या प्रदर्शित होता है? लोग उनमें क्या देख सकते हैं? इस बिन्दु पर, हम इस वाद-विवाद को दरकिनार करें कि परमेश्वर किस प्रकार के लोगों को आशीष देता है या मनुष्यों को आशीष देने के लिए परमेश्वर के सिद्धांत

क्या हैं। उसके बजाए, आओहम परमेश्वर के अधिकार को जानने के उद्देश्य के साथ और परमेश्वर के अधिकार को जानने के दृष्टिकोण से मनुष्य को परमेश्वर द्वारा दी गयी आशीष पर नज़र डालें।

बाइबल के ऊपर दिए गए सभी चार अंश मनुष्य को परमेश्वर के द्वारा दी गयी आशीष का अभिलेख हैं। वे परमेश्वर कीआशीष पाने वालों, जैसे अब्राहम और अय्यूब का विस्तृत विवरण देते हैं। साथ ही साथ, उन कारणों का भी विवरण देते हैं कि परमेश्वर ने क्यों अपनी आशीषों को बरसाया और इन आशीषों में क्या निहित था। परमेश्वर के कथनों का अंदाज़ और ढंग और वह दृष्टिकोण और स्थिति जिसके तहत उसने वचन बोले, लोगों को यह समझने देता है कि आशीषों को देने वाला और ऐसी आशीषों को पाने वाले बिलकुल ही अलग पहचान, हैसियत और सार के होते हैं। इन बोले गए वचनों का अंदाज़ और ढंग और जिस हैसियत से वे बोले गए थे, परमेश्वर के लिए अद्वितीय हैं, जो सृष्टिकर्ता की पहचान को धारण करता है। उसके पास अधिकार और सामर्थ्य है, साथ ही साथ, सृष्टिकर्ता का सम्मान और प्रताप भी, जो किसी मनुष्य के संदेह को बर्दाश्त नहीं कर सकता है।

पहले, आओ हम उत्पत्ति 17:4-6 को देखें : "देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। इसलिये अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। मैं तुझे अत्यन्त फलवन्त करूँगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूँगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।" ये वचन वह वाचा थी जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधी थी, साथ ही साथ, परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दी गयी आशीष भी थी: परमेश्वर अब्राहम को जातियों का पिता बनाएगा और उसे बहुत ही अधिक फलवंत करेगा और उससे अनेक जातियों का मूल बनाएगा और उसके वंश में राजा पैदा होंगे। क्या तुम इन वचनों में परमेश्वर के अधिकार को देखते हो? ऐसे अधिकार को तुम कैसे देखते हो? तुम परमेश्वर के अधिकार के सार के किस पहलू को देखते हो? इन वचनों को ध्यान से पढ़ने से, यह पता करना कठिन नहीं है कि परमेश्वर का अधिकार और पहचान परमेश्वर के वचनों में स्पष्टता से प्रकाशित हैं। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर ने कहा "मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू ... हो जाएगा। ... मैं ने तुझे ठहरा दिया ... मैं तुझे बनाऊँगा...," इसमें "तू बनेगा" और "मैं करूँगा," जैसे वाक्यांश जिनके वचन परमेश्वर की पहचान और अधिकार की पुष्टि करते हैं, वे एक मायने में, सृष्टिकर्ता की विश्वसनीयता का संकेत हैं; दूसरे मायने में, वे परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए विशिष्ट वचन हैं, जो सृष्टिकर्ता की पहचान धारण किए हुए है—साथ ही साथ, पारंपरिक शब्दावली का

एक भाग भी है। यदि कोई कहता है कि वे आशा करते हैं कि एक फलाना व्यक्ति बहुतायत से फलवंत होगा और उससे जातियाँ उत्पन्न होंगी और उसके वंश में राजा पैदा होंगे, तब निःसन्देह यह एक प्रकार की अभिलाषा है, यह आशीष या प्रतिज्ञा नहीं है। इसलिए, यह कहने की लोगों की हिम्मत नहीं होगी, "कि मैं तुम्हें ऐसा बनाऊँगा, और तुम ऐसा ऐसा करोगे...," क्योंकि वे जानते हैं कि उनके पास ऐसी सामर्थ्य नहीं है; यह उन पर निर्भर नहीं है, अगर वे ऐसी बातें कहें भी तो, उनके शब्द खोखले और बेतुके होंगे, जो उनकी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं से निकले होंगे। यदि किसी को लगे कि वह अपनी अभिलाषा पूरी नहीं कर सकता, तो क्या वह ऐसे बड़बोलेपन वाले अंदाज़ में बात करने की हिम्मत करेगा? हर कोई अपने वंशजों के लिए अभिलाषा करता है और यह आशा करता है कि वे दूसरों से आगे बढ़ेंगे और बड़ी सफलता हासिल करेंगे। "उन में से कोई महाराजा बन जाए तो कितने सौभाग्य की बात होगी! यदि कोई गवर्नर बन जाए तो भी अच्छा होगा, वह बस महत्वपूर्ण व्यक्ति बनना चाहिये!" ये सब लोगों की अभिलाषाएँ हैं, परन्तु लोग अपने वंशजों के लिये केवल आशीषों की अभिलाषा कर सकते हैं, लेकिन अपनी किसी भी प्रतिज्ञा को पूरा या साकार नहीं कर सकते। अपने हृदय में, हर कोई स्पष्ट रूप से जानता है कि उसके पास ऐसी चीज़ों को प्राप्त करने के लिए सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि उन चीज़ों की हर बात उनके नियंत्रण से बाहर है, तो वे कैसे दूसरों की तक़दीर का फैसला कर सकते हैं? परमेश्वर ऐसे वचनों को इसलिए बोलता है क्योंकि परमेश्वर के पास ऐसा अधिकार है और वह जो भी प्रतिज्ञाएँ मनुष्य से करता है उन्हें पूर्ण और साकार करने के काबिल है और उन आशीषों को फलीभूत करने के योग्य है जिन्हें वह मनुष्य को देता है। मनुष्य परमेश्वर के द्वारा सृजित किया गया था, और किसी को बहुतायत से फलवंत करना परमेश्वर के लिए बच्चों का खेल है; किसी के वंशजों को समृद्ध करने के लिए सिर्फ उसके एक वचन की आवश्यकता होगी। उसे ऐसे कार्य करने के लिए पसीना बहाने, माथापच्ची करने या खुद को उलझन में डालने की कभी आवश्यकता नहीं होगी; यही परमेश्वर का सामर्थ्य और परमेश्वर का अधिकार है।

उत्पत्ति 18:18 में "अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी" को पढ़ने के बाद, क्या तुम लोग परमेश्वर के अधिकार को महसूस कर सकते हो? क्या तुम सब सृष्टिकर्ता की असाधारणता का एहसास कर सकते हो? क्या तुम सब सृष्टिकर्ता की सर्वोच्चता का एहसास कर सकते हो? परमेश्वर के वचन निश्चित हैं। परमेश्वर सफलता में अपने आत्मविश्वास के कारण या इसके निरूपण के लिए इन वचनों को नहीं कहता है; बल्कि, उसका इन्हें

कहना परमेश्वर के कथनों के अधिकार के प्रमाण हैं और एक आज्ञा है जो परमेश्वर के वचन को पूरा करती है। यहाँ पर दो अभिव्यक्तियाँ हैं जिन पर तुम लोगों को ध्यान देना चाहिए। जब परमेश्वर कहता है, "अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी," तो क्या इन वचनों में अस्पष्टता का कोई तत्व है? क्या चिंता की कोई बात है? क्या इस में भय की कोई बात है? परमेश्वर के द्वारा बोले गए कथनों में "निश्चय होगा" और "होगा" जैसे वचनों के कारण, इन तत्वों का, जो खास तौर से मनुष्यों के गुण हैं और अक्सर उन में प्रदर्शित होते हैं, सृष्टिकर्ता से कभी कोई संबंध नहीं रहा है। किसी को शुभकामना देते समय कोई इन शब्दों का इस्तेमाल करने की हिम्मत नहीं करेगा, किसी में यह हिम्मत नहीं होगी कि ऐसी निश्चितता के साथ किसी दूसरे को एक महान और सामर्थी जाति बनने की आशीष दे या प्रतिज्ञा करे कि पृथ्वी की सारी जातियाँ उसमें आशीष पाएँगी। परमेश्वर के वचन जितने अधिक निश्चितहोते हैं, उतना ही अधिक वे किसी चीज़ को साबित करते हैं—और वह चीज़ क्या है? वे साबित करते हैं कि परमेश्वर के पास ऐसा अधिकार है, कि उसका अधिकार इन कामों को पूरा कर सकता है और उनका पूरा होना अनिवार्य है। परमेश्वर, उन सब बातों के विषय में अपने हृदय में निश्चित था जिनके द्वारा उसने अब्राहम को आशीष दी थी, उसे लेकर उसमें ज़रा-भी संदेह नहीं था। इसके अलावा, ये सारी बातें उसके वचन के अनुसार पूरी हो जाएंगी और कोई भी ताकत उनके पूरा होने को बदलने, बाधित करने, कमज़ोर करने या उलट-पुलट करने में सक्षम नहीं होगी। चाहे जो कुछ भी हो जाए, परमेश्वर के वचनों को पूरा होने से और उनकी कार्यसिद्धि को कोई भी निष्फल नहीं कर सकता है। यही सृष्टिकर्ता के मुँह से बोले गए वचनों की सामर्थ्य है और सृष्टिकर्ता का अधिकार है जो मनुष्य के इनकार को सह नहीं सकता है! इन वचनों को पढ़ने के बाद भी, क्या तुम लोगों के मन में संदेह है? इन वचनों को परमेश्वर के मुँह से कहा गया था और परमेश्वर के वचनों में सामर्थ्य, प्रताप और अधिकार है। ऐसी शक्ति और अधिकार को और तथ्यों के पूरा होने की अनिवार्यता को, किसी भी सृजित प्राणी और गैर-सृजित प्राणी द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है, और न ही कोई सृजित प्राणी और गैर-सृजित प्राणी उससे बढ़कर उत्कृष्ट हो सकता है। केवल सृष्टिकर्ता ही मानवजाति के साथ ऐसे अंदाज़ और लहज़े में बात कर सकता है और तथ्यों ने साबित किया है कि उसकी प्रतिज्ञाएँ खोखले वचन या बेकार की डींगें नहीं हैं, बल्कि अद्वितीय अधिकार का प्रदर्शन हैं जिससे कोई व्यक्ति, घटना, या वस्तु बढ़कर नहीं हो सकती है।

परमेश्वर द्वारा बोले गए वचनों और मनुष्य द्वारा बोले गए शब्दों में क्या अंतर है? जब तुम परमेश्वर के

द्वारा बोले गए वचनों को पढ़ते हो तो तुम परमेश्वर के वचनों की शक्ति और परमेश्वर के वचनों के अधिकार को महसूस करते हो। जब तुम लोगों को ऐसे शब्द बोलते हुए सुनते हो तो तुमको कैसा लगता है? क्या तुम्हें महसूस होता है कि वे बहुत अधिक अभिमानी और डींगें हाँकने वाले हैं, और दिखावा करते हैं? क्योंकि उनके पास ऐसी सामर्थ्य नहीं होती, उनके पास ऐसा अधिकार भी नहीं होता, और इस प्रकार वे ऐसी चीज़ों को प्राप्त करने में पूरी तरह असमर्थ होते हैं। उनका अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति बहुत निश्चित होना केवल उनकी टिप्पणियों की लापरवाही को दर्शाता है। यदि कोई ऐसे शब्दों को कहता है तो वे निःसन्देह अभिमानी और अति-आत्मविश्वासी होंगे और अपने आपको प्रधान स्वर्गदूत के स्वभाव के आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहे होंगे। ये वचन परमेश्वर के मुँह से बोले गये हैं; क्या तुम इनमें अभिमान की कोई बात पाते हो? क्या तुम्हें लगता है कि परमेश्वर के वचन महज़ एक मज़ाक हैं? परमेश्वर के वचन अधिकार हैं, परमेश्वर के वचन तथ्य हैं और उसके मुँह से वचन के निकलने से पहले ही, अर्थात, जब परमेश्वर कुछ करने का निर्णय ले रहा होता है तो वह काम पहले ही पूरा किया जा चुका होता है। ऐसा कहा जा सकता है कि जो कुछ परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था, वह एक वाचा थी जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधा था और परमेश्वर के द्वारा अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा थी। यह प्रतिज्ञा एक प्रमाणित तथ्य था, और ये तथ्य परमेश्वर की योजना के अनुसार, परमेश्वर के विचारों में धीरे-धीरे पूरा किये गए। अतः, परमेश्वर द्वारा ऐसी बातों को कहने का यह मतलब नहीं है कि उसका स्वभाव अभिमानी है, क्योंकि परमेश्वर ऐसी चीज़ों को पूरा करने में सक्षम है। उसके पास ऐसी सामर्थ्य और अधिकार है, और ऐसे कार्यों को पूरा करने में पूर्णतया सक्षम है और उनका पूर्ण होना पूरी तरह उसकी योग्यता के दायरे में है। जब परमेश्वर के मुख से ऐसे वचन बोले जाते हैं तो वे परमेश्वर के सच्चे स्वभाव का प्रकाशन एवं प्रकटीकरण होते हैं, वे परमेश्वर के सार एवं अधिकार का पूर्ण प्रकाशन एवं अभिव्यक्ति होते हैं और ऐसा कुछ भी नहीं है जो सृष्टिकर्ता की पहचान के प्रमाण के रूप में अधिक सही और उचित होता हो। ऐसे कथनों का ढंग, लहज़ा और वचन सृष्टिकर्ता की पहचान के ही चिह्न हैं और वे परमेश्वर की अपनी पहचान के प्रकटीकरण से पूरी तरह से मेल खाते हैं; उनमें कोई झूठा दिखावा या अशुद्धता नहीं है; वे पूरी तरह से और सर्वथा सृष्टिकर्ता के अधिकार और सार का पूर्ण प्रदर्शन हैं। जहाँ तक जीवधारियों की बात है, उनके पास न तो यह अधिकार है और न ही यह सार और परमेश्वर के द्वारा दी गयी शक्ति तो उनके पास बिलकुल भी नहीं है। यदि मनुष्य ऐसा आचरण नहीं करता है तो यह निश्चित रूप से उसके दूषित स्वभाव का प्रदर्शन होगा और यह मनुष्य के

अभिमान और अनियंत्रित महत्वाकांक्षाओं का हस्तक्षेप करने वाला प्रभाव होगा तथा उस दुष्ट, शैतान की नीच इच्छाओं का खुलासा होगा, जो लोगों को धोखा देना और बहकाना चाहता है जिससे कि वे परमेश्वर को धोखा दे बैठें। ऐसी भाषा के द्वारा जो प्रकट किया जाता है, उसे परमेश्वर किस ढंग से देखता है? परमेश्वर कहेगा कि तुम उसका स्थान हड़पना चाहते हो और तुम उसका रूप धारण करना और उसका स्थान लेना चाहते हो। जब तुम परमेश्वर के बोले गए वचनों के लहज़े का अनुकरण करते हो, तो तुम्हारा इरादा होता है कि लोगों के हृदयों से परमेश्वर के स्थान को हटा दो और मानवजाति के जीवन के उस स्थान पर अवैध कब्ज़ा कर लो जो न्यायसंगत रूप से परमेश्वर का है। सीधे और सरल रूप में, यह शैतान है; यह प्रधान स्वर्गदूत के वंशजों के कार्य हैं; जो स्वर्ग के लिए असहनीय है! तुम लोगों के बीच में, क्या कोई है जिसने कभी लोगों को गुमराह करने और धोखा देने के इरादे से, किसी निश्चित तरीके से, कुछ बातों को कहने में परमेश्वर का अनुकरण किया हो और उन्हें यह एहसास दिलाया हो मानो इस व्यक्ति के शब्दों और कार्यों में परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य है, मानो इस व्यक्ति का सार एवं पहचान अद्वितीय हो और यहाँ तक कि मानो इस व्यक्ति के बोलने का लहज़ा भी परमेश्वर के समान हो? क्या तुम लोगों ने कभी ऐसा कुछ किया है? क्या तुम लोगों ने कभी अपनी बातों में, ऐसी भाव-भंगिमाओं के साथ परमेश्वर के लहज़े का अनुकरण किया है जो शायद परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाते हों, जो तुम्हारे अनुमान से शक्ति और अधिकार हो? क्या तुम में से अधिकतर लोग अक्सर इस तरह से काम करते हैं या काम करने की योजना बनाते हैं? अब, जब तुम लोग सचमुच में सृष्टिकर्ता के अधिकार को देखते, एहसास करते और जानते हो और पीछे मुड़कर देखते हो कि तुम लोग क्या किया करते थे और खुद की किस बात को उजागर करते थे, तो क्या तुम लोग घृणा महसूस करते हो? क्या तुम लोग अपनी नीचता और निर्लज्जता का एहसास करते हो? ऐसे लोगों के स्वभाव और सार का विश्लेषण करने के बाद, क्या ऐसा कहा जा सकता है कि वे नरक की शापित संतानें हैं। क्या ऐसा कहा जा सकता है कि हर कोई जो ऐसा करता है वह अपने आपको लज्जित करता है? क्या तुम लोग इस प्रकृति की गम्भीरता को पहचानते हो? यह आखिर कितना गम्भीर है? इस प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का इरादा परमेश्वर का अनुकरण करना होता है। वे परमेश्वर बनना चाहते हैं और लोगों से परमेश्वर के रूप में अपनी आराधना करवाना चाहते हैं। वे लोगों के हृदयों से परमेश्वर के स्थान को हटा देना चाहते हैं और ऐसे परमेश्वर से छुटकारा पाना चाहते हैं जो लोगों के बीच कार्य करता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि लोगों को नियंत्रित करने, लोगों को निगलने, और

उनकी संपत्ति को हड़पने के मकसद को पूरा कर सकें। हर किसी के पास ऐसी अवचेतन इच्छा और महत्वाकांक्षा होती है और हर कोई ऐसे दूषित शैतानी सार में और ऐसी शैतानी प्रकृति में जीवन बिताता है जिसमें वे परमेश्वर के शत्रु होते हैं, परमेश्वर को धोखा देते हैं और खुद परमेश्वर बनना चाहते हैं। परमेश्वर के अधिकार के विषय पर मेरी सहभागिता के बाद, क्या तुम लोग अभी भी परमेश्वर का रूप धारण करने की इच्छा और आकांक्षा करते हो या परमेश्वर की नकल करना चाहते हो? क्या तुम लोग अभी भी परमेश्वर होने की इच्छा रखते हो? क्या तुम सब अभी भी परमेश्वर बनना चाहते हो? मनुष्य के द्वारा परमेश्वर के अधिकार की नकल नहीं की जा सकती है और मनुष्य के द्वारा परमेश्वर की पहचान और हैसियत का जाली रूप धारण नहीं किया जा सकता है। यद्यपि तुम परमेश्वर के बोलने के अंदाज़ की नकल करने में सक्षम हो, किन्तु तुम परमेश्वर के सार की नकल नहीं कर सकते। भले ही तुम परमेश्वर के स्थान पर खड़े होने और उसका जाली रूप लेने में सक्षम हो, किन्तु तुम कभी वह सब कुछ नहीं कर पाओगे जो परमेश्वर करने की इच्छा रखता है, तुम कभी सभी चीज़ों पर शासन नहीं कर पाओगे और न ही उनको आज्ञा दे पाओगे। परमेश्वर की नज़रों में, तुम हमेशा एक छोटे से जीव बने रहोगे, तुम्हारी क्षमताएं और योग्ताएँ कितनी भी बड़ी क्यों न हों, तुम्हारे पास कितनी भी प्रतिभाएं क्यों न हों, तो भी तुम पूरी तरह से सृष्टिकर्ता के शासन के अधीन हो। यद्यपि तुम कुछ बड़बोलेपन के शब्द बोलने में सक्षम हो, लेकिन इससे न तो यह पता चलता है कि तुम्हारे पास सृष्टिकर्ता का सार है और न ही यह दर्शाता है कि तुम्हारे पास सृष्टिकर्ता का अधिकार है। परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य स्वयं परमेश्वर का सार है। उन्हें सीखा, या बाहर से जोड़ा नहीं गया था, बल्कि वे स्वयं परमेश्वर का अंतर्निहित सार हैं। इस प्रकार सृष्टिकर्ता और जीवधारियों के मध्य के संबंध को कभी भी पलटा नहीं जा सकता है। जीवधारियों में से एक होने के नाते, मनुष्य को अपनी स्थिति को बना कर रखना होगा और शुद्ध अंतःकरण से व्यवहार करना होगा। सृष्टिकर्ता के द्वारा तुम्हें जो कुछ सौंपा गया है, कर्तव्यनिष्ठा के साथ उसकी सुरक्षा करो। अनुचित ढंग से आचरण मत करो, या ऐसे काम न करो जो तुम्हारी क्षमता के दायरे से बाहर हों या जो परमेश्वर के लिए घृणित हों। महान या अद्‌भुत व्यक्ति बनने की चेष्टा मत करो, दूसरों से श्रेष्ठ होने की कोशिश मत करो, न ही परमेश्वर बनने की कोशिश करो। लोगों को ऐसा बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। महान या अद्‌भुत व्यक्ति बनने की कोशिश करना बेतुका है। परमेश्वर बनने की कोशिश करना और भी अधिक लज्जाजनक है; यह घृणित है और नीचता भरा है। जो काम तारीफ़ के काबिल है और जिसे प्राणियों को सब चीज़ों से ऊपर मानना चाहिए, वह है एक सच्चा

जीवधारी बनना; यही वह एकमात्र लक्ष्य है जिसे पूरा करने का निरंतर प्रयास सब लोगों को करना चाहिए।

सृष्टिकर्ता का अधिकार समय, स्थान, या भूगोल के बंधन में नहीं है और उसका अधिकार गणना के परे है

आओ हम उत्पत्ति 22:17-18 को देखें। यह यहोवा परमेश्वर के द्वारा बोला गया एक और अंश है, जिसमें उसने अब्राहम से कहा, "इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा; और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।" यहोवा परमेश्वर ने अब्राहम को कई बार आशीष दी कि उसके वंश के लोग बहुगुणित होंगे—परंतु वे किस सीमा तक बहुगुणित होंगे? उस सीमा तक जितना पवित्र-शास्त्र में लिखा है : "आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान।" कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर अब्राहम को आकाश के तारों के समान अनगिनत और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुसंख्यक वंशज देना चाहता था। परमेश्वर ने अलंकृत भाषा का इस्तेमाल करते हुए बात कीऔर इस अलंकृत भाषा से यह देखना कठिन नहीं है कि परमेश्वर अब्राहम को मात्र एक, दो, या हज़ारों वंशज नहीं देगा, बल्कि असंख्य तादाद देगा, इतना कि वे जातियों का एक समूह बन जाएँगे, क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि वो बहुत-सी जातियों का पिता होगा। और क्या उस संख्या का निर्धारण मनुष्य द्वारा किया गया था या परमेश्वर के द्वारा? क्या मनुष्य यह तय कर सकता है कि उसके पास कितने वंशज हों? क्या यह उस पर निर्भर है? यह मनुष्य के बस की बात नहीं है कि वह इस बात का निर्धारण कर सके कि उसके पास अनेक वंशज होंगे या नहीं, "आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान" वंशज होने की तो बात ही छोड़ो। कौन ऐसी इच्छा न करेगा कि उसके संतान तारों के समान अनगिनत हों? दुर्भाग्यवश, चीज़ें वैसी घटित नहीं होती हैं जैसा तुम चाहते हो। चाहे मनुष्य कितना भी कुशल और योग्य हो, यह उस पर निर्भर नहीं करता है; कोई भी उस सीमा से बाहर खड़ा नहीं हो सकता है जिसे परमेश्वर द्वारा ठहरा दिया गया है। जितना वह तुम्हें अनुमति देता है, उतना ही तुम्हारे पास होगा : यदि परमेश्वर तुम्हें थोड़ा देता है, तब तुम्हारे पास कभी भी बहुत ज़्यादा नहीं होगा और यदि परमेश्वर तुम्हें बहुत ज़्यादा देता है तो तुम्हारे पास कितना अधिक है, इससे चिढ़ने का कोई फायदा नहीं। क्या ऐसा ही नहीं है? यह सब कुछ परमेश्वर पर है, मनुष्य पर नहीं! मनुष्य पर परमेश्वर द्वारा शासन किया

जाता है और इससे कोई छूटा नहीं है।

जब परमेश्वर ने कहा, "मैं तेरे वंश को अनगिनत करूँगा" तो यह वह वाचा थी जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधी थी और इंद्रधनुष की वाचा के समान, इसे अनंतकाल के लिए पूरा किया जाएगा और यह परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा भी थी। केवल परमेश्वर ही ऐसी प्रतिज्ञा को पूरा करने में योग्य और सक्षम है। मनुष्य इस पर विश्वास करे या न करे, मनुष्य इसे स्वीकार करे या न करे, मनुष्य चाहे इसे किसी भी नज़रिए से देखे और इसे कैसे भी समझे, यह सब कुछ परमेश्वर के द्वारा बोले गए वचनों के अनुसार अक्षरशः पूरा हो जाएगा। मनुष्य की इच्छा और शरणा में हुए परिवर्तन के कारण परमेश्वर के वचन नहीं बदलेंगेऔर न ही किसी व्यक्ति, घटना, या वस्तु में हुए बदलाव के कारण ये बदलेंगे। सभी चीज़ें विलुप्त हो सकती हैं, परन्तु परमेश्वर के वचन सर्वदा बने रहेंगे। इसके विपरीत, जिस दिन सभी चीज़ें विलुप्त हो जाएँगी यह बिलकुल वही दिन होगा जब परमेश्वर के वचन सम्पूर्ण रीति से पूरे हो जाएँगे, क्योंकि वह सृष्टिकर्ता है, उसके पास सृष्टिकर्ता का अधिकार है, सृष्टिकर्ता की सामर्थ्य है, वह सब वस्तुओं और सम्पूर्ण जीवन शक्ति को नियन्त्रित करता है; वह शून्य से कुछ भी बना सकता है या किसी को भी शून्य बना सकता है और वह जीवित वस्तुओं से लेकर मृत वस्तुओं तक, सभी चीज़ों के रूपान्तरण को नियन्त्रित करता है; परमेश्वर के लिए, किसी व्यक्ति के वंश को बहुगुणित करने से अधिक आसान कुछ भी नहीं हो सकता है। यह सुनने में मनुष्य को परियों की कहानी के समान काल्पनिक लगता है, परन्तु जब परमेश्वर किसी कार्य को करने का निर्णय ले लेता है और उसे करने की प्रतिज्ञा करता है, तो यह काल्पनिक नहीं है और न ही यह परियों की कहानी है। बल्कि यह एक तथ्य है जिसे परमेश्वर ने पहले से ही देख लिया है और वह निश्चय घटित होगा। क्या तुम लोग इसे सराहते हो? क्या तथ्य प्रमाणित करते हैं कि अब्राहम के वंशज अनगिनत थे? और कितने अनगिनत थे? "आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान" अनगिनत थे, जैसा कि परमेश्वर के द्वारा कहा गया था? क्या वे संसार में सब जातियों और प्रदेशों में फैल गए थे? और इस तथ्य को किसके द्वारा पूरा किया था? क्या यह परमेश्वर के वचनों के अधिकार के द्वारा पूरा किया गया था? परमेश्वर के वचनों के कहे जाने के सैकड़ों और हज़ारों सालों बाद भी परमेश्वर के वचन लगातार पूरे होते गए और निरन्तर तथ्य बनते रहे; यह परमेश्वर के वचनों की शक्ति और परमेश्वर के अधिकार की पहचान है। जब परमेश्वर ने आरंभ में सब वस्तुओं की सृष्टि की, परमेश्वर ने कहा उजियाला हो और उजियाला हो गया। यह बहुत जल्द हो गया और बहुत कम समय में ही पूरा हो गया और उसकी

प्राप्ति और पूरे होने में कोई देरी नहीं हुई थी; परमेश्वर के वचन के प्रभाव तात्कालिक थे। दोनों ही परमेश्वर के अधिकार का प्रदर्शन थे, परन्तु जब परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष दी तो उसने मनुष्य को परमेश्वर के अधिकार के सार के अन्य पहलू को देखने की मंजूरी दी और उसने मनुष्य को यह तथ्य देखने की अनुमति दी कि सृष्टिकर्ता का अधिकार गणना के परे है, और इसके अतिरिक्त, मनुष्य को सृष्टिकर्ता के अधिकार का एक अधिक वास्तविक, अत्युत्तम पहलू देखने का अवसर प्रदान किया।

जब एक बार परमेश्वर के वचन बोल दिए जाते हैं तो परमेश्वर का अधिकार इस कार्य की कमान अपने हाथ में ले लेता है और वह तथ्य जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर के मुँह से की गई थी धीरे-धीरे वास्तविक होने लगता है। परिणामस्वरूप सभी चीज़ों में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है, जैसे बसंत के आगमन पर घास हरी हो जाती है, फूल खिलने लग जाते हैं, पेड़ों में कोपलें फूटने लग जाती हैं, पक्षी गाना शुरू कर देते हैं, कलहँस लौट आते हैं, मैदान लोगों से भर जाते हैं...। बसंत के आगमन के साथ ही सभी चीज़ें नई हो जाती हैं और यह सृष्टिकर्ता का आश्चर्यकर्म है। जब परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है तो स्वर्ग और पृथ्वी में सब वस्तुएँ परमेश्वर के वचन के अनुसार नई हो जाती हैं और बदल जाती हैं—कोई भी इससे अछूता नहीं रहता है। जब परमेश्वर के मुँह से प्रतिबद्धता या प्रतिज्ञा के वचनों को बोल दिया जाता है, तो सभी चीज़ें उसे पूरा करने के लिए कार्य करती हैं, और उसकी पूर्णता के लिए कुशलता से कार्य करती हैं; सभी जीवधारियों को सृष्टिकर्ता के शासन के अधीन सावधानी से आयोजित और व्यवस्थित किया जाता है और वे अपनी-अपनी भूमिकाओं को निभाते हैं और अपने-अपने कार्य को करते हैं। यह सृष्टिकर्ता के अधिकार का प्रकटीकरण है। तुम इसमें क्या देखते हो? तुम परमेश्वर के अधिकार को कैसे जानते हो? क्या परमेश्वर के अधिकार का एक दायरा है? क्या कोई समय सीमा है? क्या इसे एक निश्चित ऊँचाई या एक निश्चित लम्बाई तक कहा जा सकता है? क्या इसे किसी कहा जा सकता है कि इसका कोई निश्चित आकार या शक्ति है? क्या इसे मनुष्य के आयामों के द्वारा नापा जा सकता है? परमेश्वर का अधिकार जलता-बुझता नहीं, ना ही वह आता-जाता है और कोई नहीं माप सकता कि उसका अधिकार कितना विशाल है। चाहे कितना भी समय बीत जाए, जब परमेश्वर किसी मनुष्य को आशीष देता है, तो यह आशीष बनी रहती है और इसकी निरन्तरता परमेश्वर के अपरिमेय अधिकार की गवाही देगीऔर मानवजाति को परमेश्वर के पुनः प्रकट होने वाले और कभी न बुझने वाली जीवन शक्ति को बार-बार देखने की अनुमति देगी। उसके अधिकार का प्रत्येक प्रकटीकरण उसके मुँह से निकले वचनों का पूर्ण प्रदर्शन है और इसे सब वस्तुओं और

मानवजाति के सामने प्रदर्शित किया गया है। इससे अधिक, उसके अधिकार के द्वारा हासिल किया गया सब कुछ तुलना से परे उत्कृष्ट है और उस में कुछ भी दोष नहीं है। यह कहा जा सकता है कि उसके विचार, उसके वचन, उसका अधिकार और सभी कार्य जो वो पूरा करता है, वे अतुल्य रूप से एक सुन्दर तस्वीर हैं, जहाँ तक जीवधारियों की बात है, मानवजाति की भाषा उसके महत्व और मूल्य को बताने में असमर्थ है। जब परमेश्वर एक व्यक्ति से प्रतिज्ञा करता है तो चाहे वे जहाँ भी रहते हों या जो भी करते हों, प्रतिज्ञा को पूरा करने के पहले या उसके बाद की उनकी पृष्ठभूमि या उनके रहने के वातावरण में चाहे जितने बड़े उतार-चढ़ाव आए हों, यह सब कुछ परमेश्वर के लिए उतने ही चिरपरिचित हैं जितना उसके हाथ का पिछला भाग। परमेश्वर के वचनों को कहने के बाद कितना ही समय क्यों न बीत जाए, उसके लिए यह ऐसा है मानो उन्हें अभी-अभी बोला गया है। कहने का तात्पर्य है कि, परमेश्वर के पास सामर्थ्य है और उसके पास ऐसा अधिकार है, जिससे वह हर एक प्रतिज्ञा की जो वह मानवजाति से करता है, उनकी लगातार सुधि ले सकता है, उन पर नियन्त्रण कर सकता है और उन्हें पूरा कर सकता है, इससे निरपेक्ष कि प्रतिज्ञा क्या है, इसे सम्पूर्ण रीति से पूरा होने में कितना समय लगेगा, उसका वो दायरा कितना व्यापक है जिस पर उसकी परिपूर्णता असर डालती है—उदाहरण के लिए, समय, भूगोल, जाति, इत्यादि—इस प्रतिज्ञा को पूरा किया जाएगा और इसे साकार किया जाएगा और उसके पूरा होने या साकार होने में उसे ज़रा-सी भी कोशिश करने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे क्या साबित होता है? यह साबित करता है कि परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य की व्यापकता सम्पूर्ण विश्व और सम्पूर्ण मानवजाति को नियन्त्रित करने के लिए काफी है। परमेश्वर ने उजियाले को बनाया, इसका मतलब यह नहीं कि वह केवल उजियाले का ही प्रबन्धन करता है या यह कि वह जल का प्रबन्धन सिर्फ इसलिए करता है क्योंकि उसने जल बनाया और बाकी सब कुछ परमेश्वर से संबंधित नहीं है। क्या यह ग़लतफहमी नहीं होगी? यद्यपि सैकड़ों सालों बाद अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें धीरे-धीरे मनुष्य की यादों में धूमिल हो चुकी थीं, फिर भी परमेश्वर के लिए वह प्रतिज्ञा जस-की-तस बनी रही। यह तब भी पूरा होने की प्रक्रिया में था और कभी रूका नहीं था। मनुष्य ने न तो कभी जाना और न सुना कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपने अधिकार का इस्तेमाल किया था और किस प्रकार सभी चीज़ों को आयोजित और व्यवस्थित किया था और इस दौरान परमेश्वर द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि के बीच कितनी ढेर सारी कहानियाँ घटित हुईं थीं, किन्तु परमेश्वर के अधिकार के प्रकटीकरण और उसके कार्यों के प्रकाशन के प्रत्येक बेहतरीन अंश को सभी चीज़ों तक

पहुँचाया गया और उनके बीच गौरवान्वित किया गया था, सब वस्तुएँ सृष्टिकर्ता के अद्भुत कर्मों को दिखाती और उनके बारे में बात करती थी और सभी चीज़ों के ऊपर सृष्टिकर्ता की संप्रभुता की प्रत्येक लोकप्रिय कहानी को सभी चीज़ों के द्वारा सदा-सर्वदा घोषित किया जाएगा। जिस अधिकार के तहत परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है और परमेश्वर की सामर्थ्य , सभी चीज़ों को दिखाते हैं कि परमेश्वर हर काल में हर जगह उपस्थित है। जब तुम परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य की सर्वउपस्थिति के साक्षी बन जाते हो तो तुम देखोगे कि परमेश्वर हर काल में, हर जगह उपस्थित होता है। परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य समय, भूगोल, स्थान, या किसी व्यक्ति, घटना या वस्तु के बंधन से परे है। परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य की व्यापकता मनुष्य की कल्पनाओं से परे हैः मनुष्य इसकी थाह नहीं पा सकता, यह मनुष्य के लिए अकल्पनीय है और मनुष्य इसे कभी भी पूरी तरह से नहीं जानेगा।

कुछ लोग अनुमान लगाना और कल्पना करना पसंद करते हैं, परन्तु एक मनुष्य की कल्पनाएँ कहाँ तक जा सकती हैं? क्या वह इस संसार के परे जा सकती है? क्या मनुष्य परमेश्वर के अधिकार की प्रामाणिकता और सटीकता का अनुमान लगाने और कल्पना करने में सक्षम है? क्या मनुष्य के अनुमान और कल्पना उसे परमेश्वर के अधिकार के ज्ञान को प्राप्त करने की अनुमति दे सकते हैं? क्या उनके ज़रिये मनुष्य परमेश्वर के अधिकार को समझकर सचमुच उसके प्रति समर्पण कर सकता है? तथ्य इस बात को साबित करते हैं कि मनुष्य के अनुमान और कल्पना मात्र मनुष्य की बुद्धिमत्ता की उपज हैं और मनुष्य को परमेश्वर के अधिकार को जानने में ज़रा-सी भी मदद या लाभ नहीं पहुँचाते। विज्ञान की कल्पनाओं को पढ़ने के बाद, कुछ लोग चन्द्रमा और तारे किस प्रकार दिखते हैं उसकी कल्पना कर सकते हैं। फिर भी इसका मतलब यह नहीं है कि मनुष्य के पास परमेश्वर के अधिकार की कोई समझ है। मनुष्य की कल्पना बस ऐसी ही है : कोरी कल्पना। इन वस्तुओं के तथ्यों के विषय में, अर्थात, परमेश्वर के अधिकार से उनके संबंध के विषय में, उसके पास बिलकुल भी कोई समझ़ नहीं है। क्या हुआ यदि तुम चन्द्रमा तक गए भी हो तो? क्या इससे यह साबित हो जाता है कि तुम्हारे पास परमेश्वर के अधिकार की बहुआयामी समझ है? क्या यह दिखाता है कि तुम परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य की व्यापकता की कल्पना करने में सक्षम हो? चूँकि मनुष्य का अनुमान और कल्पना उसे परमेश्वर के अधिकार को जानने देने में असमर्थ है तो मनुष्य को क्या करना चाहिए? अनुमान और कल्पना न करना ही सबसे उत्तम विकल्प होगा, कहने का तात्पर्य है कि जब परमेश्वर के अधिकार को जानने की बात आती है तो मनुष्य को कभी भी कल्पना पर

भरोसा और अनुमान पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। मैं असल में यहाँ पर तुम सब से क्या कहना चाहता हूँ? परमेश्वर के अधिकार का ज्ञान, परमेश्वर की सामर्थ्य, परमेश्वर की पहचान और परमेश्वर के सार को अपनी कल्पनाओं पर भरोसा करके प्राप्त नहीं किया जा सकता है। जबकि तुम परमेश्वर के अधिकार को जानने के लिए कल्पनाओं पर भरोसा नहीं कर सकते हो, तो तुम किस रीति से परमेश्वर के अधिकार के सच्चे ज्ञान को प्राप्त कर सकते हो? परमेश्वर के वचनों को खाने और पीने से, संगति से और परमेश्वर के वचनों के अनुभवों से यह किया जा सकता है। इस प्रकार, तुम्हारे पास परमेश्वर के अधिकार का एक क्रमिक अनुभव और प्रमाणीकरण होगा और इस प्रकार तुम उसकी एक क्रमानुसार समझ और निरन्तर बढ़ने वाले ज्ञान को प्राप्त करोगे। यह परमेश्वर के अधिकार के ज्ञान को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है; और कोई छोटा रास्ता नहीं है। तुम लोग कल्पना न करो कहने का अर्थ यह नहीं है कि तुम सबको शिथिलता से विनाश के इन्तज़ार में बैठा दिया गया है या तुम सबको कुछ करने से रोका गया है। सोचने और कल्पना करने के लिए अपने मस्तिष्क का इस्तेमाल न करने का मतलब अनुमान लगाने के लिए अपने तर्क का इस्तेमाल न करना, विश्लेषण करने के लिए ज्ञान का इस्तेमाल न करना, विज्ञान को आधार के रूप में इस्तेमाल न करना, बल्कि समझना, जाँच करना और प्रमाणित करना है कि जिस परमेश्वर में तुम विश्वास करते हो उसके पास अधिकार है और प्रमाणित करना है कि वह तुम्हारी नियति के ऊपर प्रभुता रखता है और उसकी सामर्थ्य हर समय यह साबित करती है कि परमेश्वर के वचनों के द्वारा, सत्य के द्वारा, उन सबके द्वारा जिसका तुम अपने जीवन में सामना करते हो, वह स्वयं सच्चा परमेश्वर है। यही एकमात्र तरीका है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की समझ को प्राप्त कर सकता है। कुछ लोग कहते हैं कि वे इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक सरल तरीके की खोज करना चाहते हैं, किन्तु क्या तुम लोग ऐसे किसी तरीके के बारे में सोच सकते हो? मैं तुम्हें बताता हूँ, सोचने की आवश्यकता ही नहीं है : और कोई तरीके नहीं हैं! एकमात्र तरीका है कि हर एक वचन जिसे वह प्रकट करता है और हर एक चीज़ जिसे वह करता है उसके जरिए सचेतता और स्थिरता से जो परमेश्वर के पास है और जो वह है उसे जानो और प्रमाणित करो। यह परमेश्वर को जानने का एकमात्र तरीका है। क्योंकि जो परमेश्वर के पास है और जो वह है और परमेश्वर का सब कुछ, वह सब खोखला या खाली नहीं है, बल्कि वास्तविक है।

सभी चीज़ों व प्राणियों पर सृष्टिकर्ता के नियन्त्रण और प्रभुत्व का तथ्य सृष्टिकर्ता के अधिकार के सच्चे अस्तित्व के विषय में बोलता है

उसी प्रकार से, अय्यूब के ऊपर यहोवा की आशीष अय्यूब की पुस्तक में दर्ज है। परमेश्वर ने अय्यूब को क्या दिया था? "यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हज़ार भेड़ बकरियाँ, छ: हज़ार ऊँट, हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गदहियाँ हो गईं" (अय्यूब 42:12)। मनुष्य के नज़रिए से, अय्यूब को दी गई ये चीज़ें क्या थीं? क्या वे मनुष्य की सम्पत्ति थी? इन सम्पत्तियों के द्वारा क्या अय्यूब उस युग में बहुत अधिक धनी नहीं रहा होगा? उसे ऐसी सम्पत्तियाँ कैसे प्राप्त हुईं थीं? उसे धन कैसे मिला? कहने की आवश्यकता नहीं कि अय्यूब को ये सम्पत्ति परमेश्वर के आशीष से प्राप्त हुई थी। अय्यूब इन सम्पत्तियों को किस नज़रिए से देखता था और वह परमेश्वर की आशीषों को किस प्रकार महत्व देता था, हम इन सब बातों पर यहाँ चर्चा नहीं करेंगे। जब भी परमेश्वर की आशीषों की बात होती है, सभी लोग दिन और रात परमेश्वर से आशीषित होने की लालसा करते हैं, फिर भी मनुष्य का नियन्त्रण इन बातों पर नहीं होता है कि वह अपने जीवनकाल में कितनी सम्पत्ति प्राप्त कर सकता है या वह परमेश्वर से आशीषों को प्राप्त करेगा भी कि नहीं—यह एक निर्विवादित सत्य है! परमेश्वर के पास अधिकार है और उसके पास मनुष्य को किसी भी प्रकार की सम्पत्ति देने की सामर्थ्य है, जिससे वह मनुष्य को किसी भी प्रकार के लाभ को प्राप्त करने की स्वीकृति दे सके, फिर भी परमेश्वर की आशीषों का एक सिद्धांत है। परमेश्वर किस प्रकार के लोगों को आशीष देता है? निश्चय ही ऐसे लोगों को जिनको वह पसंद करता है! अब्राहम और अय्यूब दोनों को परमेश्वर के द्वारा आशीषित किया गया था, फिर भी वे आशीषें जिन्हें उन्होंने प्राप्त किया था एक समान नहीं थी। परमेश्वर ने अब्राहम को रेत और तारों के समान अनगिनत वंशजों से आशीषित किया था। जब परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष दी तो उसने एक मनुष्य के वंशजों, एक जाति को सामर्थी और समृद्ध किया। इसमें, परमेश्वर के अधिकार ने मानवजाति पर शासन किया, जो सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों में परमेश्वर की श्वास से श्वसन करती थी। परमेश्वर के अधिकार की संप्रभुता के अधीन, यह मानवजाति परमेश्वर के द्वारा निर्धारित दायरे के अंतर्गत उस गति से तेजी से बढ़ी और अस्तित्व में आ गई जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया था। विशेष रूप से, इस जाति की जीवन योग्यता, फैलाव की गति और जीवन-प्रत्याशा सब कुछ परमेश्वर के इन्तज़ामों के भाग थे और इन सब का सिद्धांत पूर्णतया उस प्रतिज्ञा पर आधारित था जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था। कहने का तात्पर्य है कि परिस्थितियों से परे, परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ बिना किसी बाधा के आगे बढेंगी और परमेश्वर के अधिकार की दूरदर्शिता के अधीन वे साकार होंगी। उस प्रतिज्ञा में जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, संसार की

उथल-पुथल से निरपेक्ष, उस युग से निरपेक्ष, मानवजाति के द्वारा झेली गई महाविपत्तियों से निरपेक्ष, अब्राहम का वंश सम्पूर्ण विनाश के जोखिम का सामना नहीं करेगा और उनकी जाति कभी खत्म नहीं होगी। लेकिन अय्यूब के ऊपर परमेश्वर की आशीषों ने उसे बहुत ज़्यादा धनी बना दिया था। जो परमेश्वर ने उसे जो दिया वह जीवित और साँस लेते हुए जीवधारियों का संग्रह था—उनकी संख्या, विस्तार की उनकी गति, जीवित रहने की दशाएँ, उनके ऊपर चर्बी की मात्रा, इत्यादि—भी परमेश्वर के द्वारा नियन्त्रित था। यद्यपि इन जीवित प्राणियों के पास बोलने की योग्यता नहीं थी, परन्तु वे भी सृष्टिकर्ता के प्रबन्धन के भाग थे और परमेश्वर के प्रबन्धन का सिद्धांत उस आशीष के अनुसार था जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अय्यूब से की थी। उन आशीषों के अंतर्गत जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम और अय्यूब को दिया था, हालाँकि जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी वह अलग थी, फिर भी वह अधिकार जिसके द्वारा सृष्टिकर्ता सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों पर शासन करता है वह एक समान था। परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य का प्रत्येक विवरण, अब्राहम और अय्यूब को दी गई उसकी अलग-अलग प्रतिज्ञाओं और आशीषों में प्रकट है, और यह एक बार फिर से मानवजाति को दिखाता है कि परमेश्वर का अधिकार मनुष्य की कल्पनाओं से अत्यधिक परे है। ये विवरण एक बार फिर मानवजाति को बताते हैं कि यदि वह परमेश्वर के अधिकार को जानना चाहता है तो यह केवल परमेश्वर के वचनों के द्वारा और परमेश्वर के कार्यों को अनुभव करने के द्वारा ही हो सकता है।

सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर के अधिकार की संप्रभुता मनुष्य को एक तथ्य देखने की अनुमति देती है : परमेश्वर का अधिकार, "परमेश्वर ने कहा कि उजियाला हो और उजियाला हो गया और आकाश बन जाए और आकाश बन गया और भूमि दिखाई दे और भूमि दिखाई देने लगी," न केवल इन वचनों में समाविष्ट है बल्कि, इसके अतिरिक्त, वह इस बात से भी प्रकट होता है कि उसने किस प्रकार उजियाले को कायम रखा, आकाश को विलुप्त होने से बचाए रखा और भूमि को हमेशा जल से अलग रखा, साथ ही साथ उस विवरण में भी है कि उसने किस प्रकार सृजित की गई चीज़ों : उजियाला, आकाश और भूमि के ऊपर शासन किया और उनका प्रबन्ध किया। परमेश्वर के द्वारा मानवजाति को दी गई आशीषों में तुम सब और क्या देखते हो? स्पष्ट रीति से, परमेश्वर के द्वारा अब्राहम और अय्यूब को आशीष दिए जाने के बाद परमेश्वर के कदम नहीं रुके, क्योंकि उसने तो बस अपने अधिकार का उपयोग करना प्रारम्भ ही किया था और वह अपने हर एक वचन को वास्तविकता बनाना चाहता था और इस प्रकार, आने वाले सालों में अपने हर एक विवरण को जिसे उसने कहा था साकार करने के लिए, वह लगातार सब कुछ करता रहा जिसकी

उसने इच्छा की थी। क्योंकि परमेश्वर के पास अधिकार है, कदाचित् मनुष्य को ऐसा प्रतीत हो कि परमेश्वर को तो केवल बोलने की आवश्यकता है और बिना एक उंगली तक उठाए सब बातें और चीज़ें पूरी हो जाती हैं। इस प्रकार कल्पना करना काफी बकवास है! यदि तुम वचनों के इस्तेमाल से परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के साथ ठहराई गई वाचा और वचनों के उपयोग से परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों की पूर्णता का केवल एक पक्षीय दृष्टिकोण लेते हो और तुम विभिन्न चिह्नों और तथ्यों को देखने में असमर्थ हो कि परमेश्वर का अधिकार सभी चीज़ों के अस्तित्व के ऊपर प्रभुता रखता है तो परमेश्वर के अधिकार की तुम्हारी समझ कहीं ज़्यादा खोखली और हास्यास्पद है! यदि मनुष्य परमेश्वर की इस प्रकार कल्पना करता है तो ऐसा कहना होगा कि परमेश्वर के विषय में मनुष्य का ज्ञान आखिरी पड़ाव में चला गया है और अंतिम छोर तक पहुँच चुका है, क्योंकि वह परमेश्वर जिसकी मनुष्य कल्पना करता है वह एक मशीन के सिवाए और कुछ नहीं है जो बस आदेश देता है और ऐसा परमेश्वर नहीं है जिस के पास अधिकार है। तुमने अब्राहम और अय्यूब के उदाहरणों के द्वारा क्या देखा है? क्या तुमने परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य का सच्चा पहलू देखा है? परमेश्वर के द्वारा अब्राहम और अय्यूब को आशीष देने के बाद, परमेश्वर वहाँ खड़ा न रहा जहाँ पर वह था, न ही उसने अपने सन्देशवाहकों को काम पर लगाकर यह देखने के लिए इन्तज़ार किया कि इसका परिणाम क्या होगा। इसके विपरीत, जैसे ही परमेश्वर ने अपने वचनों को कहा, तो परमेश्वर के अधिकार के मार्गदर्शन के अधीन, सभी चीज़ें उस कार्य के साथ मेल खाने लगीं जिसे परमेश्वर करना चाहता था और लोगों, चीज़ों और तत्वों को तैयार किया गया जिनकी परमेश्वर को आवश्यकता थी। कहने का तात्पर्य है कि जैसे ही परमेश्वर के मुख से वचन बोले गए, परमेश्वर के अधिकार पूरी भूमि पर इस्तेमाल होने लगा और उसने अब्राहम और अय्यूब से की गई प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने और उन्हें पूरा करने के लिए एक क्रम ठहरा दिया, इसी बीच उसने सब के लिए हर प्रकार की उचित योजना बनाई और तैयारियाँ की जिसे पूरा करने की उसने योजना बनाई थी जो हर एक कदम और हर एक मुख्य चरण के लिए जरूरी था। इस दौरान, परमेश्वर ने न केवल अपने दूतों को कुशलता से इस्तेमाल किया, बल्कि सभी चीज़ों को भी कुशलता से इस्तेमाल किया जिन्हें उसके द्वारा बनाया गया था। कहने का तात्पर्य है कि वह दायरा जिसके भीतर परमेश्वर के अधिकार को इस्तेमाल किया गया था उसमें न केवल दूत शामिल थे, वरन, वे सभी चीज़ें भी शामिल थीं, जिन्हें उस कार्य से अनुपालन करने के लिए कुशलता से उपयोग किया गया था जिसे वह पूरा करना चाहता था; ये वे विशेष रीतियाँ थीं जिनके तहत परमेश्वर के अधिकार का इस्तेमाल किया गया था।

तुम लोगों की कल्पनाओं में, कुछ लोगों के पास परमेश्वर के अधिकार की निम्नलिखित समझ हो सकती है : परमेश्वर के पास अधिकार है, सामर्थ्य है और इस प्रकार परमेश्वर को केवल तीसरे स्वर्ग में रहने की ज़रूरत है या एक ही स्थिर जगह में रहने की जरूरत है और किसी विशेष कार्य को करने की जरूरत नहीं है, परमेश्वर का सम्पूर्ण कार्य उसके विचारों के भीतर ही पूरा होता है। कुछ लोग यह भी विश्वास कर सकते हैं कि यद्यपि परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष दी थी, फिर भी परमेश्वर को और कुछ करने की जरूरत नहीं थी, और उसके लिए मात्र अपने वचनों को कहना ही काफी था। क्या ऐसा वास्तव में हुआ था? साफ तौर पर ऐसा नहीं हुआ था! यद्यपि परमेश्वर के पास अधिकार और सामर्थ्य है, फिर भी उसका अधिकार सच्चा और वास्तविक है, खोखला नहीं। परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य की प्रामाणिकता और वास्तविकता धीरे-धीरे उसकी बनाई सभी चीज़ों कि उसके द्वारा सृष्टि, सभी चीज़ों पर उसके नियन्त्रण और उस प्रक्रिया में प्रकाशित और साकार हो रहे हैं, जिनके द्वारा वह मानवजाति की अगुवाई और उनका प्रबंधन करता है। हर पद्धति, हर दृष्टिकोण और मानवजाति और सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर की संप्रभुता का हर विवरण और वह सब कार्य जो उसने पूरा किया है, साथ ही सभी चीज़ों की उसकी समझ—उन सभी ने अक्षरश: यह साबित किया है कि परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य खोखले शब्द नहीं हैं। उसका अधिकार और सामर्थ्य निरन्तर और सभी चीज़ों में प्रदर्शित और प्रकाशित होते हैं। ये प्रकटीकरण और प्रकाशन परमेश्वर के अधिकार के वास्तविक अस्तित्व के बारे में बात करते हैं, क्योंकि वह अपने कार्य को जारी रखने और सभी चीज़ों को आज्ञा देने, हर घड़ी सभी चीज़ों पर शासन करने के लिए अपने अधिकार और सामर्थ्य का इस्तेमाल कर रहा है; उसके अधिकार और सामर्थ्य का स्थान स्वर्गदूत या परमेश्वर के दूत नहीं ले सकते। परमेश्वर ने निर्णय लिया कि वह किस प्रकार की आशीषों को अब्राहम और अय्यूब को देगा—यह परमेश्वर पर निर्भर निर्णय था। भले ही परमेश्वर के दूतों ने व्यक्तिगत रूप से अब्राहम और अय्यूब से मुलाकात की, फिर भी उनकी गतिविधियाँ परमेश्वर के आदेश अपर आधारित थीं, परमेश्वर के अधिकार के अधीन थीं और इसके समान ही दूत भी परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन थे। यद्यपि मनुष्य परमेश्वर के दूतों को अब्राहम से मिलते हुए देखता है, यहोवा परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से बाइबल के लेखों में कुछ करते हुए नहीं देखता है, वास्तव में, यह परमेश्वर स्वयं ही है जो अधिकार और सामर्थ्य का सचमुच में उपयोग करता है और यह किसी मनुष्य से कोई सन्देह बर्दाश्त नहीं करता! यद्यपि तुम देख चुके हो कि स्वर्गदूतों और दूतों के पास बड़ी सामर्थ्य होती है, उन्होंने

चमत्कार किए हैं या परमेश्वर के आदेशानुसार कुछ चीज़ों को किया है, उनके कार्य मात्र परमेश्वर के आदेशों को पूरा करने के लिए होते हैं, किसी भी अर्थ में परमेश्वर के अधिकार का प्रदर्शन नहीं हैं—क्योंकि किसी भी मनुष्य या वस्तु के पास सभी चीज़ों को बनाने और सभी चीज़ों पर शासन करने के लिए सृष्टिकर्ता का अधिकार नहीं है, न ही वे उन्हें धारण करते हैं। इस प्रकार कोई मनुष्य और वस्तु सृष्टिकर्ता के अधिकार का इस्तेमाल या उसे प्रकट नहीं कर सकता है।

सृष्टिकर्ता का अधिकार अपरिवर्तनीय है और उसका अपमान नहीं किया जा सकता है

तुम सबने पवित्र-शास्त्र के इन तीन अंशों में क्या देखा है? क्या तुम लोगों ने देखा कि परमेश्वर एक सिद्धांत के तहत अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है? उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने मनुष्य के साथ वाचा बाँधने के लिए इंद्रधनुष का इस्तेमाल किया—उसने बादलों में एक इंद्रधनुष रखा जिससे मनुष्य को बता सके कि वह संसार को नाश करने के लिए फिर से जलप्रलय का इस्तेमाल कभी नहीं करेगा। जिस इंद्रधनुष को लोग आज देखते हैं क्या वह वही इंद्रधनुष है जो परमेश्वर के मुँह से निकला था? क्या उसका स्वभाव और अर्थ बदल चुका है? बिना किसी सन्देह के, यह नहीं बदला है। परमेश्वर ने इस कार्य को करने के लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल किया था, वह वाचा जिसे उसने मनुष्य के साथ ठहराया था वह आज तक जारी है और इस वाचा को बदलने का समय निश्चय ही सिर्फ परमेश्वर के ऊपर निर्भर है। परमेश्वर के ऐसा कहने के बाद, "बादल में अपना धनुष रखा है," परमेश्वर ने आज तक इस वाचा को निभाया है। तुम इस में क्या देखते हो? यद्यपि परमेश्वर के पास अधिकार और सामर्थ्य है, फिर भी वह अपने कार्यों में बहुत अधिक कठोर और सैद्धांतिक है और अपने वचनों का पक्का बना रहता है। उसकी कड़ाई और उसके कार्यों के सिद्धांत, सृष्टिकर्ता के अधिकार का अपमान न किए जाने की क्षमता को और सृष्टिकर्ता के अधिकार की अजेयता को दर्शाता है। यद्यपि उसके पास सर्वोच्च अधिकार है, सब कुछ उसके प्रभुत्व के अधीन है और यद्यपि उसके पास सभी चीज़ों पर शासन करने का अधिकार है, फिर भी परमेश्वर ने कभी भी अपनी योजना को नुकसान नहीं पहुँचाया है और न ही बाधा पहुँचाई है, जब भी वह अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है तो यह कड़ाई से उसके अपने सिद्धांतों के अनुसार होता है, ठीक उसके अनुसार होता है जो कुछ उसके मुँह से निकला था, वह अपनी योजना के चरणों और उद्देश्य का अनुसरण करता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जिन चीज़ों पर परमेश्वर शासन करता है वे भी सिद्धांतों का पालन करती हैं, उसके अधिकार के प्रबंधों से कोई मनुष्य या चीज़ छूटी नहीं है, न ही वे उन सिद्धांतों को बदल सकते हैं

जिनके द्वारा उसके अधिकार का इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर की निगाहों में, जिन्हें आशीषित किया जाता है वे उसके अधिकार द्वारा लाए गए अच्छे सौभाग्य को प्राप्त करते हैं और जो शापित हैं वे परमेश्वर के अधिकार के कारण दण्ड भुगतते हैं। परमेश्वर के अधिकार की संप्रभुता के अधीन, कोई मनुष्य या चीज़ उसके अधिकार के इस्तेमाल से बच नहीं सकती है, न ही वे उन सिद्धांतों को बदल सकते हैं जिनके द्वारा उसके अधिकार का इस्तेमाल किया जाता है। किसी भी कारक में परिवर्तन की वजह से सृष्टिकर्ता का अधिकार बदलता नहीं है और उसी प्रकार वे सिद्धांत जिनके द्वारा उसके अधिकार का इस्तेमाल लिया जाता है किसी भी वजह से परिवर्तित नहीं होते हैं। भले ही स्वर्ग और पृथ्वी किसी बड़े उथल-पुथल से गुज़रें, परन्तु सृष्टिकर्ता का अधिकार नहीं बदलेगा; सभी चीज़ें विलुप्त हो सकती हैं, परन्तु सृष्टिकर्ता का अधिकार कभी गायब नहीं होगा। यह सृष्टिकर्ता के अपरिवर्तनीय और अपमान न किए जा सकने वाले अधिकार का सार है और यही सृष्टिकर्ता की अद्वितीयता है!

नीचे दिए गए वचन परमेश्वर के अधिकार को जानने के लिए अति आवश्यक हैं और उनका अर्थ नीचे सहभागिता में दिया गया है। आओ हम पवित्र-शास्त्र को पढ़ना जारी रखें।

4. शैतान को परमेश्वर की आज्ञा

अय्यूब 2:6 यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।"

शैतान ने कभी सृष्टिकर्ता के अधिकार का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं की है और इसी वजह से, सभी चीज़ें व्यवस्था के अनुसार रहती हैं

यह अय्यूब की पुस्तक में से एक लघु अंश है, इन वचनों में "वह" शब्द अय्यूब की ओर संकेत करता है। हालाँकि यह वाक्य छोटा-सा है, फिर भी यह वाक्य बहुत सारे विषयों पर प्रकाश डालता है। यह आत्मिक संसार में परमेश्वर और शैतान के बीच वार्तालाप का विवरण देता है, हमें यह बताता है कि परमेश्वर के वचनों का लक्ष्य शैतान था। यह परमेश्वर ने जो कहा उसे भी विशेष रूप से बताता है। परमेश्वर के वचन शैतान के लिए एक आज्ञा और आदेश थे। इस आदेश के विशेष विवरण अय्यूब के प्राण को छोड़ देने से संबंधित हैं जहाँ परमेश्वर अय्यूब के प्रति शैतान के बर्ताव में एक रेखा खींच देता है—शैतान को अय्यूब के प्राणों को छोड़ देना पड़ा। पहली बात जो हम इस वाक्य से सीखते हैं वह यह है कि ये परमेश्वर के द्वारा शैतान को कहे गए वचन थे। अय्यूब की पुस्तक के मूल पाठ के अनुसार, यह हमें निम्नलिखित

बातों एवं ऐसे वचनों की पृष्ठभूमि के बारे में बताता है : शैतान अय्यूब पर दोष लगाना चाहता था और इसलिए उसकी परीक्षा लेने से पहले उसे परमेश्वर से सहमति लेनी थी। अय्यूब की परीक्षा लेने हेतु शैतान के अनुरोध पर सहमति देते समय परमेश्वर ने शैतान के सामने निम्नलिखित शर्तें रखीं : "अय्यूब तेरे हाथ में है; केवल उसका प्राण छोड़ देना।" इन वचनों की प्रकृति क्या है? वे स्पष्ट रीति से एक आज्ञा हैं, एक आदेश हैं। इन वचनों की प्रकृति को समझने के बाद, तुम्हें निश्चय ही यह भी समझ लेना चाहिए कि आज्ञा देने वाला परमेश्वर है, आज्ञा को पाने वाला और उसका पालन करने वाला शैतान है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस आदेश में परमेश्वर और शैतान के बीच का रिश्ता हर उस व्यक्ति के सामने प्रकट है जो इन वचनों को पढ़ता है। निश्चय ही, यह आत्मिक संसार में परमेश्वर और शैतान के बीच का रिश्ता भी है, परमेश्वर और शैतान की पहचान और स्थिति के बीच का अन्तर भी है, जिन्हें पवित्र-शास्त्र में परमेश्वर और शैतान के बीच हुए वार्तालाप के लेखों में प्रदान किया गया है, और यह अब तक के लिए विशिष्ट उदाहरण और पुस्तकीय लेखा-जोखा है जिसमें मनुष्य परमेश्वर और शैतान की पहचान और हैसियत के मध्य के निश्चित अन्तर को समझ सकता है। इस बिन्दु पर, मुझे कहना होगा कि इन वचनों का लेखा-जोखा मानवजाति के लिए परमेश्वर की पहचान व हैसियत को जानने के वास्ते एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, यह मानवजाति को परमेश्वर के ज्ञान की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। आत्मिक संसार में सृष्टिकर्ता और शैतान के मध्य हुए वार्तालाप से, मनुष्य सृष्टिकर्ता के अधिकार के एक और विशिष्ट पहलू को समझने में सक्षम हो जाता है। ये वचन सृष्टिकर्ता के अद्वितीय अधिकार की एक और गवाही हैं।

बाहरी रूप से, यहोवा परमेश्वर शैतान से वार्तालाप कर रहा है। जहाँ तक सार का सवाल है, जिस रवैये से यहोवा परमेश्वर बात करता है, वह जिस पद पर खड़ा है, वे शैतान से श्रेष्ठ हैं। अर्थात् यहोवा परमेश्वर आदेश देने के अन्दाज़ में शैतान को आज्ञा दे रहा है, शैतान को बता रहा है कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है, अय्यूब पहले से ही उसके हाथ में है, जैसा वह चाहता है अय्यूब के साथ वैसा बर्ताव कर सकता है—परन्तु उसके प्राण नहीं ले सकता। सहायक पाठ यह है, यद्यपि अय्यूब को शैतान के हाथों में सौंप दिया गया है, परन्तु उसका जीवन शैतान को सौंपा नहीं गया; परमेश्वर के हाथों से अय्यूब के प्राण को कोई नहीं ले सकता है जब तक परमेश्वर इस की अनुमति नहीं देता है। शैतान को दी गई इस आज्ञा में परमेश्वर की मनोवृत्ति को स्पष्ट रीति से व्यक्त किया गया है, यह आज्ञा उस पद को भी प्रकट और प्रकाशित करता है जिससे यहोवा परमेश्वर शैतान से बातचीत करता है। इसमें यहोवा परमेश्वर ने न केवल

उस परमेश्वर के दर्जे को थामे हुए है जिसने उजियाला, हवा, सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों को बनाया है, जो सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों के ऊपर प्रधान है, बल्कि उस परमेश्वर का भी दर्जा थामे हुए है जो मानवजाति को आज्ञा देता है, अधोलोक को आज्ञा देता है और उस परमेश्वर का जो सभी जीवित प्राणियों के जीवन और मरण को नियन्त्रित करता है। आत्मिक संसार में, परमेश्वर के अलावा किसके पास हिम्मत है कि शैतान को ऐसा आदेश दे? और परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से शैतान को आदेश क्यों दिया? क्योंकि मनुष्य का जीवन, जिसमें अय्यूब भी शामिल है, परमेश्वर के द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को नुकसान पहुँचाने या उसके प्राण लेने की अनुमति नहीं दी थी, अर्थात् जब परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब की परीक्षा लेने की अनुमति दे दी, तब भी, परमेश्वर को विशेष तौर पर यह आज्ञा देना स्मरण रहा और एक बार फिर से उसने शैतान को आज्ञा दी कि वह अय्यूब का प्राण नहीं ले सकता है। शैतान की कभी भी यह हिम्मत नहीं हुई है कि वह परमेश्वर के अधिकार का उल्लंघन करे, इसके अतिरिक्त, उसने हमेशा परमेश्वर के आदेशों और विशेष आज्ञाओं को सावधानीपूर्वक सुना है, उनका पालन किया है, उनको चुनौती देने की कभी हिम्मत नहीं की है, और निश्चय ही, परमेश्वर की किसी आज्ञा को कभी खुल्लमखुल्ला पलटने की हिम्मत नहीं की है। वे सीमाएँ ऐसी ही हैं जिन्हें परमेश्वर ने शैतान के लिए निर्धारित किया, और शैतान ने कभी इन सीमाओं को लाँघने की हिम्मत नहीं की है। क्या यह परमेश्वर के अधिकार की शक्ति नहीं है? क्या यह परमेश्वर के अधिकार की गवाही नहीं है? शैतान के पास मानवजाति से कहीं अधिक स्पष्ट समझ है कि परमेश्वर के प्रति कैसा आचरण करना है, उसे किस नज़र से देखना है, इस प्रकार, आत्मिक संसार में, शैतान परमेश्वर के अधिकार व उसके स्थान को बिलकुल साफ-साफ देखता है, उसके पास परमेश्वर के अधिकार की शक्ति और उसके अधिकार के इस्तेमाल के पीछे के सिद्धांतों की गहरी समझ है। उन्हें नज़रअन्दाज़ करने की हिम्मत वह बिलकुल भी नहीं करता है, न ही वह उन्हें किसी भी तरीके से तोड़ने की हिम्मत करता है, न ही वह ऐसा कुछ करता है जिससे परमेश्वर के अधिकार का उल्लंघन हो, वह किसी भी रीति से परमेश्वर के क्रोध को चुनौती देने की हिम्मत नहीं करता है। यद्यपि वह स्वभाव से बुरा और घमण्डी है, फिर भी उसने परमेश्वर के द्वारा उसके लिए निर्धारित की गयी सीमाओं को लाँघने की कभी हिम्मत नहीं की है। लाखों सालों से, वह कड़ाई से इन सीमाओं पालन करता रहा है, परमेश्वर के द्वारा उसे दिए गए हर आज्ञा और आदेश का पालन करता रहा और कभी उस सीमा के बाहर पैर रखने की हिम्मत नहीं की। यद्यपि वह डाह करने वाला है, तो भी शैतान पतित

मानवजाति से कहीं ज़्यादा "चतुर" है; वह सृष्टिकर्ता की पहचान को जानता है, अपनी सीमाओं को भी जानता है। शैतान के "आज्ञाकारी" कार्यों से यह देखा जा सकता है कि परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य , स्वर्गीय आदेश हैं जिनका उल्लंघन शैतान के द्वारा नहीं किया जा सकता है, परमेश्वर के अधिकार और अद्वितीयता के कारण सभी चीज़ें क्रमागत रीति से बदलती और बढ़ती हैं, और मनुष्य परमेश्वर द्वारा निर्धारित जीवन-क्रम के भीतर रह सकते हैं और बहुगुणित हो सकते हैं, कोई व्यक्ति या वस्तु इस व्यवस्था में उथल-पुथल नहीं कर सकती है, कोई व्यक्ति या वस्तु इस नियम को बदलने में सक्षम नहीं है—क्योंकि वे सभी सृष्टिकर्ता के हाथों, सृष्टिकर्ता के आदेश और अधिकार से आते हैं।

केवल परमेश्वर के पास ही सृष्टिकर्ता की पहचान है, वही अद्वितीय अधिकार रखता है

शैतान की विशिष्ट पहचान ने बहुत से लोगों से उसके विभिन्न पहलुओं के प्रकटीकरण में गहरी रूचि का प्रदर्शन करवाया है। यहाँ तक कि बहुत से मूर्ख लोग हैं जो यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के साथ-साथ, शैतान भी अधिकार रखता है, क्योंकि शैतान चमत्कार करने में सक्षम है, ऐसे काम करने में सक्षम है जो मानवजाति के लिए असंभव हैं। इस प्रकार, परमेश्वर की आराधना करने के अतिरिक्त, मानवजाति अपने हृदय में शैतान के लिए भी एक स्थान रखती है, यहाँ तक कि परमेश्वर के रूप में शैतान की आराधना भी करती है। ऐसे लोग दयनीय और घृणित हैं। अपनी अज्ञानता के कारण वे दयनीय हैं, अपने पाखंड और अंतर्निहित बुराई के सार के कारण घृणित हैं। इस बिन्दु पर, मैं महसूस करता हूँ कि तुम लोगों को बता दूँ कि अधिकार क्या है और यह किसका प्रतीक है, यह किसे दर्शाता है। व्यापक रूप से कहें तो परमेश्वर स्वयं ही अधिकार है, उसका अधिकार उसकी श्रेष्ठता और सार की ओर संकेत करते हैं, स्वयं परमेश्वर का अधिकार परमेश्वर के स्थान और पहचान को दर्शाता है। जब बात यह है तो, क्या शैतान यह कहने की हिम्मत करता है कि वह स्वयं परमेश्वर है? क्या शैतान यह कहने की हिम्मत करता है कि उसने सभी चीज़ों को बनाया है; सभी चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है? बिलकुल नहीं करता! क्योंकि वह किसी भी चीज़ को बनाने में असमर्थ है; अब तक उसने परमेश्वर के द्वारा सृजित की गई वस्तुओं में से कुछ भी नहीं बनाया है, कभी ऐसा कुछ नहीं बनाया है जिसमें जीवन हो। क्योंकि उसके पास परमेश्वर का अधिकार नहीं है, इसलिए वह संभवत: कभी भी परमेश्वर की हैसियत और पहचान प्राप्त नहीं कर पाएगा, यह उसके सार से तय होता है। क्या उसके पास परमेश्वर के समान सामर्थ्य है? बिलकुल नहीं है! हम शैतान के कार्यों को और शैतान द्वारा प्रदर्शित चमत्कारों को क्या कहते हैं? क्या यह सामर्थ्य है? क्या इसे अधिकार कहा जा

सकता है? बिलकुल नहीं! शैतान बुराई की लहर को दिशा देता है, परमेश्वर के कार्य के हर एक पहलू में अस्थिरता पैदा करता है, बाधा और रूकावट डालता है। पिछले कई हज़ार सालों से, मानवजाति को बिगाड़ने, शोषित करने, भ्रष्ट करने हेतु लुभाने, धोखा देकर पतित करने और परमेश्वर का तिरस्कार करने के अलावा, जिससे कि मनुष्य मृत्यु की छाया की घाटी की ओर चला जाये, क्या शैतान ने ऐसा कुछ किया है जो मनुष्य के द्वारा उत्सव मनाने, तारीफ करने या दुलार पाने के ज़रा-सा भी योग्य हो? यदि शैतान के पास अधिकार और सामर्थ्य होता तो क्या उससे मानवजाति भ्रष्ट हो जाती? यदि शैतान के पास अधिकार और सामर्थ्य होता तो क्या उसने मानवजाति को नुकसान पहुँचाया होता? यदि शैतान के पास अधिकार और सामर्थ्य होता तो क्या मनुष्य परमेश्वर को छोड़कर मृत्यु की ओर मुड़ जाता? चूँकि शैतान के पास कोई अधिकार और सामर्थ्य नहीं है, इसलिये जो कुछ वह करता है उससे उसके सार के विषय में हमें क्या निष्कर्ष निकालना चाहिए? ऐसे लोग भी हैं जो शैतान के हर कार्य को महज एक छल के रूप में परिभाषित करते है, फिर भी मैं विश्वास करता हूँ कि ऐसी परिभाषा उतनी उचित नहीं है। क्या मानवजाति को भ्रष्ट करने के लिए उसके बुरे कार्य महज एक छल हैं? वह बुरी शक्ति जिसके द्वारा शैतान ने अय्यूब का शोषण किया, उसका शोषण करने और उसे नष्ट करने की उसकी प्रचण्ड इच्छा, संभवतः महज छल के द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती। अगर हम विचार करें तो यह देखते हैं कि पहाड़ों और पर्वतों में दूर-दूर तक फैले हुए अय्यूब के पशुओं का झुण्ड और समूह, एक पल में सब कुछ चला गया; अय्यूब की अत्यधिक धन-संपत्ति, एक क्षण में ग़ायब हो गयी। क्या इसे महज छल के द्वारा प्राप्त किया जा सकता था? शैतान के हर कार्य की प्रकृति नकारात्मक शब्दों जैसे अड़चन डालना, रूकावट डालना, नष्ट करना, नुकसान पहुँचाना, बुराई, ईर्ष्या और अँधकार के साथ मेल खाती है और बिलकुल सही बैठती है, इस प्रकार उन सबका घटित होना जो अधर्मी और बुरा है, वह पूरी तरह शैतान के कार्यों के साथ जुड़ा हुआ है, इसे शैतान के बुरे सार से जुदा नहीं किया जा सकता है। इसके बावजूद कि शैतान कितना "सामर्थी" है, इसके बावजूद कि वह कितना ढीठ और महत्वाकांक्षी है, इसके बावजूद कि नुकसान पहुँचाने की उसकी क्षमता कितनी बड़ी है, इसके बावजूद कि उसकी तकनीक का दायरा कितना व्यापक है जिससे वह मनुष्य को भ्रष्ट करता और लुभाता है, इसके बावजूद कि उसके छल और प्रपंच कितने चतुर हैं जिससे वह मनुष्य को डराता है, इसके बावजूद कि वह रूप जिसमें वह अस्तित्व में रहता है कितना परिवर्तनशील है, वह एक भी जीवित प्राणी को बनाने में कभी सक्षम नहीं हुआ है, सभी चीज़ों के अस्तित्व के लिए व्यवस्थाओं और नियमों को

निर्धारित करने में कभी सक्षम नहीं हुआ है, किसी भी जीवित या निर्जीव वस्तु पर शासन और नियन्त्रण करने में कभी सक्षम नहीं हुआ है। ब्रह्मांड और नभमंडल के भीतर, एक भी व्यक्ति या वस्तु नहीं है जो उससे उत्पन्न हुआ हो या उसके द्वारा अस्तित्व में बना हुआ हो; एक भी व्यक्ति या वस्तु नहीं है जिस पर उसके द्वारा शासन किया जाता हो या उसके द्वारा नियन्त्रण किया जाता हो। इसके विपरीत, उसे न केवल परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन जीना है, बल्कि, उसे परमेश्वर के सारे आदेशों और आज्ञाओं को भी मानना होगा। परमेश्वर की अनुमति के बिना शैतान के लिए भूमि की सतह पर पानी की एक बूँद या रेत के एक कण को भी छूना कठिन है; परमेश्वर की अनुमति के बिना, शैतान के पास इतनी भी आज़ादी नहीं है कि वह भूमि की सतह पर से एक चींटी को हटा सके, परमेश्वर द्वारा सृजित इंसान को हटाने की तो बात ही क्या है। परमेश्वर की नज़रों में शैतान पहाड़ों के सोसन फूलों, हवा में उड़ते हुए पक्षियों, समुद्र की मछलियों और पृथ्वी के कीड़े-मकौड़ों से भी कमतर है। सभी चीज़ों के बीच में उसकी भूमिका यह है कि वह सभी चीज़ों की सेवा करे, मानवजाति के लिए कार्य करे, परमेश्वर और उसकी प्रबंधकीय योजना के कार्य करे। इसके बावजूद कि उसका स्वभाव कितना ईर्ष्यालु है, उसका सार कितना बुरा है, एकमात्र कार्य जो वो कर सकता है वह है आज्ञाकारिता से अपने कार्यों को करना : परमेश्वर की सेवाके योग्य होना, परमेश्वर के कार्यों में पूरक होना। शैतान का सार-तत्व और हैसियत ऐसे ही हैं। उसका सार जीवन से जुड़ा हुआ नहीं है, सामर्थ्य से जुड़ा हुआ नहीं है, अधिकार से जुड़ा हुआ नहीं है; वह परमेश्वर के हाथों में मात्र एक खिलौना है, परमेश्वर की सेवा में लगा मात्र एक मशीन है!

शैतान के वास्तविक चेहरे को समझने के बाद भी, बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि अधिकार क्या है, तो मैं तुम्हें बताता हूँ! स्वयं अधिकार का वर्णन परमेश्वर की सामर्थ्य के रूप में किया जा सकता है। पहले, यह निश्चितता के साथ कहा जा सकता है कि अधिकार और सामर्थ्य दोनों सकारात्मक हैं। उनका किसी नकारात्मक चीज़ से कोई संबंध नहीं है, वे किसी भी सृजित और गैर-सृजित प्राणी से जुड़े हुए नहीं हैं। परमेश्वर की सामर्थ्य किसी भी तरह की चीज़ की सृष्टि करने में सक्षम है जिनके पास जीवन और चेतना हो, यह परमेश्वर के जीवन के द्वारा निर्धारित होता है। परमेश्वर जीवन है, इस प्रकार वह सभी जीवित प्राणियों का स्रोत है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर का अधिकार सभी जीवित प्राणियों को परमेश्वर के हर एक वचन का पालन करवा सकता है, अर्थात् परमेश्वर के मुँह के वचनों के अनुसार अस्तित्व में आना, परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार जीना और प्रजनन करना, उसके बाद परमेश्वर सभी जीवित प्राणियों पर शासन

करता और आज्ञा देता है और उसमें, सदा-सर्वदा के लिए कभी भी कोई भटकाव नहीं होगा। किसी व्यक्ति या वस्तु में ये चीज़ें नहीं हैं; केवल सृष्टिकर्ता ही ऐसी सामर्थ्य को धारण करता और रखता है, इसलिए इसे अधिकार कहा जाता है। यह सृष्टिकर्ता की अद्वितीयता है। इस प्रकार, चाहे वह शब्द स्वयं "अधिकार" हो या इस अधिकार का सार, प्रत्येक को सिर्फ सृष्टिकर्ता के साथ ही जोड़ा जा सकता है, क्योंकि यह सृष्टिकर्ता की अद्वितीय पहचान व सार का एक प्रतीक है, यह सृष्टिकर्ता की पहचान और हैसियत को दर्शाता है; सृष्टिकर्ता के अलावा, किसी भी व्यक्ति या वस्तु को "अधिकार" शब्द के साथ जोड़ा नहीं जा सकता है। यह सृष्टिकर्ता के अद्वितीय अधिकार की एक व्याख्या है।

यद्यपि शैतान अय्यूब को लालच भरी नज़रों से देख रहा था, परन्तु बिना परमेश्वर की इजाज़त के वह अय्यूब के शरीर के एक बाल को भी छूने की हिम्मत नहीं कर सकता था। यद्यपि वह स्वाभाविक रूप से बुरा और निर्दयी है, किन्तु परमेश्वर के द्वारा उसे आज्ञा दिये जाने के बाद, शैतान के पास उसकी आज्ञा में बने रहने के सिवाए और कोई विकल्प नहीं था। इस प्रकार, जब शैतान अय्यूब के पास आया तो भले ही वह भेड़ों के बीच में एक भेड़िए के समान उन्माद में था, परन्तु उसने परमेश्वर द्वारा तय की गई सीमाओं को भूलने की हिम्मत नहीं की, जो कुछ भी उसने किया उसमें उसने परमेश्वर के आदेशों को तोड़ने की हिम्मत नहीं की, शैतान को परमेश्वर के वचनों के सिद्धांतों और सीमाओं से भटकने की हिम्मत नहीं हुई—क्या यह तथ्य नहीं है? इससे यह देखा जा सकता है कि शैतान यहोवा परमेश्वर के किसी भी वचन का विरोध करने की हिम्मत नहीं करता। शैतान के लिए, परमेश्वर के मुँह से निकला हर एक वचन एक आदेश है, एक स्वर्गीय नियम है, परमेश्वर के अधिकार का प्रकटीकरण है—क्योंकि परमेश्वर के हर एक वचन के पीछे, परमेश्वर के आदेशों को तोड़ने वालों, स्वर्गीय व्यवस्थाओं की आज्ञा का पालन नहीं करने और विरोध करने वालों के लिए, परमेश्वर का दण्ड निहित है। शैतान स्पष्ट रीति से जानता है कि यदि उसने परमेश्वर के आदेशों को तोड़ा तो उसे परमेश्वर के अधिकार के उल्लंघन करने, और स्वर्गीय व्यवस्थाओं का विरोध करने का परिणाम स्वीकार करना होगा। ये परिणाम आखिर क्या हैं? कहने की आवश्यकता नहीं है, ये परमेश्वर के द्वारा उसे दिए जाने वाले दण्ड हैं। अय्यूब के खिलाफ शैतान के कार्य उसके द्वारा मनुष्य की भ्रष्टता का एक छोटा-सा दृश्य था, जब शैतान इन कार्यों को अन्जाम दे रहा था, तब वे सीमाएँ जिन्हें परमेश्वर ने ठहराया था और वे आदेश जिन्हें उसने शैतान को दिया था, वह शैतान के हर कार्य के पीछे के सिद्धांतों की महज एक छोटी-सी झलक थी। इसके अतिरिक्त, इस मामले में शैतान की भूमिका और पद

परमेश्वर के प्रबन्धन कार्य में उसकी भूमिका और पद का मात्र एक छोटा-सा दृश्य था, शैतान के द्वारा अय्यूब की परीक्षा में परमेश्वर के प्रति उसकी सम्पूर्ण आज्ञाकारिता की महज एक छोटी-सी तस्वीर थी कि किस प्रकार शैतान ने परमेश्वर के प्रबन्धन कार्य में परमेश्वर के विरूद्ध ज़रा-सा भी विरोध करने का साहस नहीं किया। ये सूक्ष्म दर्शन तुम लोगों को क्या चेतावनी देते हैं? शैतान समेत सभी चीजों में ऐसा कोई व्यक्ति या चीज़ नहीं है जो सृष्टिकर्ता द्वारा निर्धारित स्वर्गीय कानूनों और आदेशों का उल्लंघन कर सके, और किसी व्यक्ति या वस्तु की इतनी हिम्मत नहीं है जो सृष्टिकर्ता द्वारा स्थापित की गयी इन स्वर्गीय व्यवस्थाओं और आदेशों को तोड़ सके, क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति या वस्तु नहीं है जो उस दण्ड को पलट सके या उससे बच सके जिसे सृष्टिकर्ता उसकी आज्ञा न मानने वाले लोगों को देता है। केवल सृष्टिकर्ता ही स्वर्गीय व्यवस्थाओं और आदेशों को बना सकता है, केवल सृष्टिकर्ता के पास ही उन्हें प्रभाव में लाने की सामर्थ्य है, किसी व्यक्ति या वस्तु के द्वारा मात्र सृष्टिकर्ता की सामर्थ्य का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है। यह सृष्टिकर्ता का अद्वितीय अधिकार है, यह अधिकार सभी चीज़ों में सर्वोपरि है, इस प्रकार, यह कहना नामुमकिन है कि "परमेश्वर सबसे महान है और शैतान दूसरे नम्बर पर है।" उस सृष्टिकर्ता को छोड़ जिसके पास अद्वितीय अधिकार है, और कोई परमेश्वर नहीं है!

क्या अब तुम लोगों के पास परमेश्वर के अधिकार का एक नया ज्ञान है? सबसे पहले, क्या परमेश्वर का अधिकार जिसका अभी जिक्र किया गया, और मनुष्य की सामर्थ्य में कोई अन्तर है? वह अन्तर क्या है? कुछ लोग कहते हैं कि दोनों के बीच कोई तुलना नहीं की जा सकती है। यह सही है! यद्यपि लोग कहते हैं कि दोनों के बीच में कोई तुलना नहीं की जा सकती है, फिर भी मनुष्य के विचारों और धारणाओं में कई बार उन दोनों की तुलना करते समय, मनुष्य की सामर्थ्य को अकसर गलती से अधिकार समझ लिया जाता है, और दोनों को अगल-बगल रखकर तुलना की जाती है। यहाँ क्या चल रहा है? क्या लोग अनजाने में एक स्थान पर दूसरे को रखने की ग़लती नहीं कर रहे हैं? ये दोनों जुड़े हुए नहीं हैं, उनके बीच में कोई तुलना नहीं है, फिर भी लोग ऐसा करने से खुद को रोकने में असमर्थ हैं। इस का समाधान कैसे किया जाना चाहिए? यदि तुम सचमुच में कोई समाधान चाहते हो तो उसका एकमात्र तरीका परमेश्वर के अधिकार को समझना और जानना है। सृष्टिकर्ता के अधिकार और सामर्थ्य को समझने और जानने के बाद, तुम एक ही साँस में मनुष्य की सामर्थ्य और परमेश्वर के अधिकार का ज़िक्र नहीं करोगे।

मनुष्य की सामर्थ्य किस की ओर संकेत करती है? सरल रीति से कहें तो यह एक योग्यता या

कुशलता है जो मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव, उसकी इच्छा और महत्वाकांक्षा को अतिविशाल मात्रा में फैलाने या पूरा करने में सक्षम बनाती है। क्या इसे अधिकार माना जा सकता है? मनुष्य की महत्वाकांक्षाएँ और इच्छाएँ कितनी भी बड़ी या हितकारी हों, उस व्यक्ति के विषय में यह नहीं कहा जा सकता है कि उसके पास अधिकार है; अधिक से अधिक, इस प्रकार का फूलना और सफलता मनुष्यों के बीच शैतान के हँसी-ठट्ठे का महज एक प्रदर्शन है; ज़्यादा से ज़्यादा यह एक हँसी-ठिठोली है जिसमें शैतान अपने स्वयं के पूर्वज के समान कार्य करता है जिससे परमेश्वर बनने की अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा कर सके।

अब तुम परमेश्वर के अधिकार को किस तरह से देखते हो? अब चूँकि इन वचनों पर सहभागिता की जा चुकी है, तुम्हारे पास में परमेश्वर के अधिकार का एक नया ज्ञान होना चाहिए। अतः मैं तुम लोगों से पूछता हूँ : परमेश्वर का अधिकार किस का प्रतीक है? क्या वह स्वयं परमेश्वर की पहचान का प्रतीक है? क्या वह स्वयं परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रतीक है? क्या वह स्वयं परमेश्वर की अद्वितीय हैसियत का प्रतीक है? सभी चीज़ों के मध्य, तुमने किस में परमेश्वर के अधिकार को देखा है? तुमने उसे कैसे देखा है? मनुष्यों के द्वारा अनुभव किए जाने वाली चार ऋतुओं के सन्दर्भ में, क्या कोई बसंत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, शरद ऋतु, शीत ऋतु के मध्य आपस में परिवर्तन के नियमों को बदल सकता है? बसंत ऋतु में वृक्ष फलते-फूलते हैं; ग्रीष्म ऋतु में वे पत्तों से भर जाते हैं; शरद ऋतु में वे फल उत्पन्न करते हैं और शीत ऋतु में पत्ते झड़ते हैं। क्या कोई इन नियमों को पलट सकता है? क्या यह परमेश्वर के एक पहलू को प्रतिबिम्बित करता है? परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो," और उजियाला हो गया। क्या यह उजियाला अभी भी है? वह किस वजह से अस्तित्व में बना हुआ है? यह वास्तव में परमेश्वर के वचन के कारण, परमेश्वर के अधिकार के कारण अस्तित्व में बना हुआ है। जिस वायु को परमेश्वर ने बनाया था क्या वह अब भी अस्तित्व में बनी हुई है? क्या वह वायु जिसमें मनुष्य साँस लेता है परमेश्वर से आयी है? क्या कोई उन चीज़ों को दूर कर सकता है जो परमेश्वर से आती हैं? क्या कोई उनके सार और कार्य को पलट सकता है? क्या कोई परमेश्वर के द्वारा नियुक्त रात और दिन को, परमेश्वर के द्वारा आदेशित रात व दिन के नियम में गड़बड़ी कर सकता है? क्या शैतान ऐसा कुछ कर सकता है? भले ही तुम रात में न सोओ, रात को दिन के समान लो, तो भी यह रात का समय ही है; तुम अपनी दिनचर्या बदल सकते हो, लेकिन तुम रात और दिन के परिवर्तन के नियम को बदलने में असमर्थ हो—और इस तथ्य को किसी भी व्यक्ति के द्वारा पलटा नहीं जा सकता है, क्या ऐसा नहीं है? क्या कोई बैल की तरह शेर से भूमि जुतवा सकता है? क्या कोई हाथी को गधे में बदलने में सक्षम

हो सकता है? क्या कोई मुर्गी को बाज के समान आकाश में हवा में लहराने में सक्षम हो सकता है? क्या कोई भेड़िऐ को भेड़ के समान घास खिलाने में सक्षम हो सकता है? (नहीं।) क्या कोई मछली को सूखी भूमि पर रहने के योग्य बनाने में सक्षम हो सकता है? यह मनुष्यों द्वारा नहीं किया जा सकता है। क्यों नहीं किया जा सकता? क्योंकि परमेश्वर ने मछलियों को पानी में रहने की आज्ञा दी है, इसलिए वे पानी में रहती हैं। वे भूमि पर जीवित रहने में सक्षम नहीं हैं, वे मर जाएँगीं; वे परमेश्वर की आज्ञाओं की सीमाओं का उल्लंघन करने में असमर्थ हैं। सभी चीज़ों के पास उनके अस्तित्व के लिए नियम और सीमा है, हर एक के पास उनका स्वयं का अंतःज्ञान है। इन्हें सृष्टिकर्ता के द्वारा नियुक्त किया गया है, किसी मनुष्य के द्वारा उन्हें पलटा और उनका अतिक्रमण नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शेर हमेशा मनुष्य के समुदायों से दूर जंगल में ही रहेगा, वह बैल के समान, जो मनुष्य के साथ रहता है और मनुष्य के लिए काम करता है, कभी भी पालतू और वफादार नहीं हो सकता। यद्यपि हाथी और गधे दोनों जानवर हैं और दोनों के पास चार पैर हैं, वे ऐसे जीव हैं जो साँस लेते हैं, फिर भी वे अलग-अलग प्रजातियाँ हैं, क्योंकि उन्हें दो भिन्न प्रकारों में बाँटा गया है, उनमें से प्रत्येक के पास उनका अपना सहज ज्ञान है, इस प्रकार उन्हें कभी भी आपस में बदला नहीं जाएगा। यद्यपि मुर्गी के पास दो पैर है और बाज के समान पंख भी हैं, फिर भी वह कभी हवा में उड़ नहीं पाएगी। वह ज़्यादा से ज़्यादा एक पेड़ पर उड़ सकती है—और यह उसके सहज ज्ञान के द्वारा निर्धारित किया गया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सब कुछ परमेश्वर के अधिकार और आज्ञाओं के कारण है।

आज मानवजाति के विकास में, मानवजाति के विज्ञान को प्रगतिशील कहा जा सकता है, मनुष्य के वैज्ञानिक अनुसन्धानों की उपलब्धियों को प्रभावशील कहा जा सकता है। मनुष्य की काबिलियत लगातार बढ़ती जा रही है, परन्तु एक अति-महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसे मानवजाति हासिल करने में असमर्थ है : मानवजाति ने हवाई जहाज़, मालवाहक विमान और परमाणु बम बनाया है, मानवजाति अंतरिक्ष में जा चुकी है, चन्द्रमा पर चल चुकी है, इंटरनेट का अविष्कार किया है, ऊँची तकनीक युक्त जीवन-शैली जीने लगी है, फिर भी, मानवजाति किसी प्राणी को बनाने में असमर्थ है। प्रत्येक जीवित प्राणी का सहज ज्ञान और वे नियम जिनके द्वारा वे जीते हैं, और हर प्रकार के जीवित प्राणी के जीवन और मृत्यु का जीवन चक्र—यह सब कुछ मनुष्य के विज्ञान के द्वारा असम्भव और नियन्त्रण के बाहर है। इस बिन्दु पर, ऐसा कहना होगा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मानवजाति कितनी ऊँचाइयों को छूती है, उसकी तुलना

सृष्टिकर्ता के किसी भी विचार से नहीं की जा सकती, वे सृष्टिकर्ता की सृष्टि की अद्भुतता और उसके अधिकार की शक्ति को परखने में असमर्थ हैं। पृथ्वी के ऊपर कितने सारे महासागर हैं, फिर भी उन्होंने कभी भी अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया, अपनी इच्छा से भूमि पर नहीं आए, ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उनमें से प्रत्येक के लिए सीमाएँ तय कर दी हैं; वे वहीं ठहर गए जहाँ उसने उन्हें ठहरने की आज्ञा दी थी, बिना परमेश्वर की आज्ञा के वे यहाँ-वहाँ स्वतन्त्रता से जा नहीं सकते हैं। बिना परमेश्वर की आज्ञा के, वे एक-दूसरे की सरहदों का अतिक्रमण नहीं सकते, वे तभी आगे बढ़ सकते हैं जब परमेश्वर ऐसा करने लिए कहेगा, वे कहाँ जाएँगे और कहाँ ठहरेंगे यह परमेश्वर के अधिकार के द्वारा निर्धारित होता है।

इसे साफ तौर पर कहें तो, "परमेश्वर के अधिकार" का अर्थ है कि यह परमेश्वर पर निर्भर है। परमेश्वर के पास यह निर्णय लेने का अधिकार है कि वह किसी कार्य को कैसे करे, और जैसा वह चाहता है उसे उसी रीति से किया जाता है। सभी चीज़ों का नियम परमेश्वर पर निर्भर है, मनुष्य पर निर्भर नहीं है; न ही उसे मनुष्य के द्वारा पलटा जा सकता है। उसे मनुष्य की इच्छा के द्वारा हिलाया नहीं जा सकता है, बल्कि उसे परमेश्वर के विचारों, परमेश्वर की बुद्धि, परमेश्वर के आदेशों द्वारा बदला जा सकता है। यह तथ्य है जिसे मनुष्य नकार नहीं सकता। स्वर्ग, पृथ्वी और सभी चीज़ें, ब्रह्मांड, सितारों से जगमगाता हुआ आसमान, साल की चार ऋतुएँ, वह जो मनुष्य के लिए दृश्य और अदृश्य हैं—वे सभी परमेश्वर के अधिकार की अधीनता में, परमेश्वर के आदेशों के अनुसार, परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार और सृष्टि के आरंभ के नियमों के अनुसार बिना किसी ग़लती के अस्तित्व में बने रहते हैं, कार्य करते हैं और परिवर्तित होते हैं। कोई वस्तु या व्यक्ति अपने नियमों को नहीं बदल सकता, न ही अपने स्वाभाविक क्रम जिस के तहत वह कार्य करता है उन्हें बदल सकता है; वे परमेश्वर के अधिकार के कारण अस्तित्व में आए और परमेश्वर के अधिकार के कारण ही नष्ट होते हैं। यही परमेश्वर का अधिकार है। अब जबकि इतना सब कुछ कहा जा चुका है, क्या तुम महसूस कर सकते हो कि परमेश्वर का अधिकार परमेश्वर की पहचान और परमेश्वर की हैसियत का प्रतीक है? क्या किसी सृजित या गैर-सृजित प्राणी द्वारा परमेश्वर के अधिकार को धारण किया जा सकता है? क्या किसी व्यक्ति, वस्तु या चीज़ द्वारा उसका अनुकरण, रूप धारण या उसका स्थान लिया जा सकता है?

सृष्टिकर्ता की पहचान अद्वितीय है और तुम्हें बहु-ईश्वरवाद के विचार का पालन नहीं करना चाहिए

यद्यपि मनुष्य की अपेक्षा शैतान की कुशलताएँ और योग्यताएँ कहीं बढ़कर हैं, यद्यपि वह ऐसे काम

कर सकता है जिन्हें मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता है, तुम चाहे शैतान से ईर्ष्या करो या वह जो करता है उसकी आकांक्षा करो, इन चीजों से नफरत करो या घृणा से भर जाओ, चाहे तुम उसे देख पाओ या नहीं, चाहे शैतान कितना भी हासिल कर पाए या वह कितने भी लोगों को धोखा देखर उनसे अपनी आराधना करवाये में और खुद को पवित्र मनवाए, चाहे तुम इसे कैसे भी परिभाषित करो, तुम यह नहीं कह सकते कि उसके पास परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य है। तुम्हें जानना चाहिए कि परमेश्वर ही परमेश्वर है, सिर्फ एक ही परमेश्वर है, इसके अतिरिक्त, तुम्हें यह जानना चाहिए कि सिर्फ परमेश्वर के पास ही अधिकार है, सभी चीज़ों पर शासन करने और उन पर नियन्त्रण करने की सामर्थ्य उसी के पास है। सिर्फ इसलिए कि शैतान के पास लोगों को धोखा देने की क्षमता है, वह परमेश्वर का रूप धारण कर सकता है, परमेश्वर द्वारा किए गए चिन्हों और चमत्कारों की नकल कर सकता है, उसने परमेश्वर के समान ही कुछ समान काम किये हैं, तो तुम भूलवश विश्वास करने लग जाते हो कि परमेश्वर अद्वितीय नहीं है, बल्कि बहुत सारे ईश्वर हैं, बस उनके पास कुछ कम या कुछ ज़्यादा कुशलताएँ हैं और उस सामर्थ्य का विस्तार अलग-अलग है जिसे वे काम में लाते हैं। उनके आगमन के क्रम, उनके युग के अनुसार तुम उनकी महानता को आँकते हो, तुम यह विश्वास करने में गलती करते हो कि परमेश्वर से अलग कुछ अन्य देवता हैं, तुम यह सोचते हो कि परमेश्वर की सामर्थ्य और उसका अधिकार अद्वितीय नहीं हैं। यदि तुम्हारे विचार ऐसे हैं, यदि तुम परमेश्वर की अद्वितीयता को पहचान नहीं पाते हो, यह विश्वास नहीं करते हो कि सिर्फ परमेश्वर के पास ही ऐसा अधिकार है, यदि तुम बहु-ईश्वरवाद को महत्व देते हो तो मैं कहूँगा कि तुम जीवधारियों में सबसे निकृष्ट हो, तुम शैतान का साकार रूप हो और तुम निश्चित तौर पर एक बुरे इंसान हो! क्या तुम समझ रहे हो कि मैं इन वचनों के द्वारा तुम्हें क्या सिखाने की कोशिश कर रहा हूँ? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि समय, स्थान या तुम्हारी पृष्ठभूमि क्या है, तुम परमेश्वर और किसी अन्य व्यक्ति, वस्तु, या चीज़ के बीच भ्रमित मत हो। भले ही तुम्हें स्वयं-परमेश्वर का अधिकार और परमेश्वर का सार कितना ही अज्ञात और अगम्य लगे, शैतान के कार्य और शब्द तुम्हारी धारणा और कल्पना से कितना ही मेल खाते हों, वे तुम्हें कितनी ही संतुष्टि प्रदान करते हों, मूर्ख न बनो, इन धारणाओं में भ्रमित मत हो, परमेश्वर के अस्तित्व को नकारो मत, परमेश्वर की पहचान और हैसियत को नकारो मत, परमेश्वर को दरवाज़े के बाहर मत धकेलो और परमेश्वर को हटाकर शैतान को अपना परमेश्वर बनाने के लिए उसे अपने हृदय के भीतर मत लाओ। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि तुम ऐसा करने के परिणामों की कल्पना करने में समर्थ हो!

यद्यपि मानवजाति को भ्रष्ट किया जा चुका है, फिर भी वह सृष्टिकर्ता के अधिकार की संप्रभुता के अधीन रहती है

शैतान हज़ारों सालों से मानवजाति को भ्रष्ट करता आया है। उसने बेहिसाब मात्रा में बुराइयाँ की हैं, पीढ़ी-दर-पीढ़ी धोखा दिया है और संसार में जघन्य अपराध किए हैं। उसने मनुष्य का ग़लत इस्तेमाल किया है, मनुष्य को धोखा दिया है, परमेश्वर का विरोध करने के लिए मनुष्य को बहकाया है और ऐसे-ऐसे बुरे कार्य किए हैं जिन्होंने बार-बार परमेश्वर की प्रबंधकीय योजना को भ्रमित और बाधित किया है। फिर भी, परमेश्वर के अधिकार के अधीन सभी चीज़ें और जीवित प्राणी परमेश्वर के द्वारा व्यवस्थित नियमों और व्यवस्थाओं के अनुसार निरन्तर बने हुए हैं। परमेश्वर के अधिकार की तुलना में, शैतान का बुरा स्वभाव और अनियन्त्रित विस्तार बहुत ही गन्दा है, बहुत ही घिनौना और नीच है और बहुत ही छोटा और दुर्बल है। यद्यपि शैतान उन सभी चीज़ों के बीच चलता है जिन्हें परमेश्वर द्वारा बनाया गया है, फिर भी वह परमेश्वर की आज्ञा के द्वारा ठहराए गए लोगों, वस्तुओं या पदार्थों में ज़रा-सा भी परिवर्तन नहीं कर सकता है। कई हज़ार साल बीत गए हैं, अभी भी मनुष्य परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए उजियाले और वायु का आनन्द उठाता है, स्वयं परमेश्वर के द्वारा फूँके गए श्वास के द्वारा साँस लेता है, अभी भी परमेश्वर के द्वारा सृजित किए गए फूलों, पक्षियों, मछलियों और कीड़े-मकौड़ों का आनन्द उठाता है और परमेश्वर के द्वारा प्रदान की गई सभी चीज़ों का मज़ा लेता है; दिन और रात अभी भी लगातार एक-दूसरे का स्थान ले रहे हैं; चार ऋतुएँ हमेशा की तरह बदल रही हैं; आसमान में उड़ने वाले कलहँस इस शीत ऋतु मे उड़ जाएँगे और अगले बसंत में फिर वापस भी आएँगे; जल की मछलियाँ नदियों और झीलों को—जो उनका घर है कभी भी नहीं छोड़तीं; ज़मीन के कीटपतंगे (शलभ) गर्मी के दिनों में दिल खोलकर गाते हैं; घास के झींगुर शरद ऋतु के दौरान हवा के साथ समय-समय पर धीमे स्वर में गुनगुनाते हैं; कलहँस समूहों में इकट्ठे हो जाते हैं, जबकि बाज एकान्त में अकेले ही रहते हैं, शेरों के कुनबे शिकार करके अपने आपको बनाए रखते हैं; बारहसिंघा घास और फूलों से दूर नहीं जाते...। सभी चीज़ों के मध्य हर प्रकार के जीवधारी चले जाते हैं फिर आ जाते हैं और फिर चले जाते हैं, पलक झपकते ही लाखों परिवर्तन होते हैं—परन्तु जो बदलता नहीं है वह है उनका सहज ज्ञान और ज़िन्दा रहने के नियम। वे परमेश्वर के प्रयोजन और परमेश्वर के पालन-पोषण के अधीन जीते हैं, कोई उनके सहज ज्ञान को बदल नहीं सकता है, न ही कोई उनके ज़िन्दा रहने के नियमों को बिगाड़ सकता है। यद्यपि मानवजाति को, जो सभी चीज़ों के बीच में जीवन बिताती है, शैतान के

द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है उसके द्वारा धोखा दिया गया है, फिर भी मनुष्य परमेश्वर के द्वारा बनाए गए जल, परमेश्वर द्वारा बनाई गई वायु, परमेश्वर द्वारा बनाई गई सभी चीज़ों को त्याग नहीं सकता है, मनुष्य फिर भी जीवित रहता है और परमेश्वर द्वारा बनाए गए इस स्थान में फलता-फूलता है। मनुष्य का सहज ज्ञान नहीं बदला है। मनुष्य अभी भी देखने के लिए आँखों पर, सुनने के लिए कानों पर, सोचने के लिए अपने मस्तिष्क पर, समझने के लिए अपने हृदय पर, चलने के लिए अपने पैरों पर, काम करने के लिए अपने हाथों पर निर्भर है, आदि; परमेश्वर ने सब प्रकार का सहज ज्ञान मनुष्य को दिया है जिससे वह इस बात को स्वीकार कर सके कि परमेश्वर का प्रयोजन अपरिवर्तनीय बना रहता है, वे योग्यताएँ जिनके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के साथ सहयोग करता है कभी भी नहीं बदली हैं, एक सृजित प्राणी का कर्तव्य निभाने की मानवजाति की योग्यता नहीं बदली है, मानवजाति की आध्यात्मिक ज़रूरतें नहीं बदली है, अपनी उत्पत्ति का पता लगाने की मानवजाति की इच्छा नहीं बदली है, सृष्टिकर्ता द्वारा बचाए जाने की मानवजाति की इच्छा नहीं बदली है। उस मनुष्य की वर्तमान परिस्थितियाँ ऐसी ही हैं, जो परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहता है और जिसने शैतान के द्वारा किए गए रक्तरंजित विध्वंस को सहा है। यद्यपि शैतान ने मनुष्य पर अत्याचार किये हैं, और वह अब सृष्टि के प्रारम्भ के आदम और हव्वा नहीं रहे, बल्कि ऐसी चीज़ों से भर गये हैं जो परमेश्वर के विरूद्ध हैं, जैसे ज्ञान, कल्पनाएँ, विचार, इत्यादि और भ्रष्ट शैतानी स्वभाव से भर गए हैं, इस कारण परमेश्वर की दृष्टि में मानवजाति अभी भी वही मानवजाति है जिसे उसने सृजित किया था। परमेश्वर अभी भी मानवजाति पर शासन करता और उसका आयोजन करता है, मानवजाति परमेश्वर के द्वारा व्यवस्थित पथक्रम के अनुसार अभी भी जीवन बिताती है, इस प्रकार परमेश्वर की दृष्टि में, मानवजाति, जिसे शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया गया है, गुड़गुड़ाते हुए पेट के साथ, महज गंद में लिपटी हुई, ऐसी प्रतिक्रियाओं के साथ जो थोड़ी धीमी हैं, ऐसी याद्दाश्त के साथ जो उतनी अच्छी नहीं है जितना हुआ करती थी और थोड़ी पुरानी हो गयी है—परन्तु मनुष्य के सारे कार्य और सहज ज्ञान पूरी तरह सुरक्षित है। यह वह मनुष्य है जिसे परमेश्वर बचाने की इच्छा करता है। इस मनुष्य को बस सृष्टिकर्ता की पुकार सुननी है, सृष्टिकर्ता की आवाज़ को सुनना है, वह खड़ा होकर इस आवाज़ के स्रोत का पता लगाने के लिए दौड़ेगा। इस मनुष्य को सृष्टिकर्ता के रूप को देखना है और वह अन्य सभी चीज़ों से बेपरवाह हो जाएगा, सब कुछ छोड़ देगा, जिससे अपने आपको परमेश्वर के प्रति समर्पित कर सके और अपने जीवन को भी उसके लिए दे देगा। जब मनुष्य का हृदय सृष्टिकर्ता के हृदय से निकले वचनों को समझेगा तो वह शैतान को ठुकराकर

सृष्टिकर्ता की ओर आ जाएगा; जब मनुष्य अपने शरीर से गन्दगी को पूरी तरह धो देगा, एक बार फिर से सृष्टिकर्ता के प्रयोजन और पालन पोषण को प्राप्त करेगा, तब मनुष्य की स्मरण शक्ति पुनः वापस आ जाएगी और इस बार वह सचमुच में सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व में वापस आ चुका होगा।

14 दिसंबर, 2013

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है II

परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव

अब जबकि तुम लोग पिछली सहभागिता में परमेश्वर के अधिकार के बारे में सुन चुके हो, मैं आश्वस्त हूँ कि तुम लोग इस मुद्दे पर काफ़ी वचनों से लैस हो गए हो। तुम लोग कितना स्वीकार कर सकते हो, कितना समझ-बूझ सकते हो, यह सब इस पर निर्भर करता है कि तुम लोग इसके लिए कितना प्रयास करते हो। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग इस मुद्दे को ईमानदारी से समझ सकते हो; किसी भी हालत में तुम लोगों को इसमें आधे-अधूरे मन से संलग्न नहीं होना चाहिए। अब, परमेश्वर के अधिकार को जानना क्या परमेश्वर की संपूर्णता को जानने के बराबर है? कहा जा सकता है कि परमेश्वर के अधिकार को जानना स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है, को जानने की शुरुआत है, और यह भी कहा जा सकता है कि परमेश्वर के अधिकार को जानने का अर्थ है कि व्यक्ति पहले ही स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है, के सार को जानने के द्वार के भीतर प्रवेश कर चुका है। यह समझ परमेश्वर को जानने का एक भाग है। तो फिर, दूसरा भाग क्या है? परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव—यह वह विषय है, जिस पर मैं आज सहभागिता करना चाहूँगा।

आज के विषय पर सहभागिता करने के लिए मैंने बाइबल से दो खंडों का चयन किया है : पहला खंड परमेश्वर द्वारा सदोम के विनाश से संबंधित है, जिसे उत्पत्ति 19:1-11 और उत्पत्ति 19:24-25 में पाया जा सकता है; दूसरा खंड परमेश्वर द्वारा नीनवे के छुटकारे से संबंधित है, जिसे योना की पुस्तक के तीसरे और चौथे अध्यायों के अतिरिक्त योना 1:1-2 में पाया जा सकता है। मुझे महसूस हो रहा है कि तुम लोग यह सुनने का इंतज़ार कर रहे हो कि मुझे इन दो खंडों के बारे में क्या कहना है। जो कुछ मैं कहता हूँ, स्वभावत: वह स्वयं परमेश्वर और उसके सार को जानने के दायरे से बाहर नहीं जा सकता, किंतु आज की सहभागिता का केंद्रीय मुद्दा क्या होगा? क्या तुम लोगों में से कोई जानता है? परमेश्वर के अधिकार के बारे

में मेरी सहभागिता के किन भागों ने तुम लोगों का ध्यान खींचा है? मैंने क्यों कहा था कि केवल वही स्वयं परमेश्वर है, जो ऐसा अधिकार और सामर्थ्य रखता है? यह कहकर मैं क्या समझाना चाहता था? मैं तुम लोगों को क्या बताना चाहता था? क्या परमेश्वर का अधिकार और सामर्थ्य उसके सार की अभिव्यक्ति के ढंग का एक पहलू हैं? क्या वे उसके सार का एक हिस्सा हैं, वह हिस्सा, जो उसकी पहचान और स्थिति को प्रमाणित करता है? क्या इन प्रश्नों से आकलन करके तुम लोग बता सकते हो कि मैं क्या कहने जा रहा हूँ? मैं तुम लोगों को क्या समझाना चाहता हूँ? इस पर ध्यानपूर्वक विचार करो।

हठधर्मी से परमेश्वर का विरोध करने से मनुष्य परमेश्वर के कोप से नष्ट हो जाता है

पहले, आओ हम पवित्रशास्त्र के वे अंश देखें, जो परमेश्वर द्वारा सदोम के विनाश का वर्णन करते हैं।

उत्पत्ति 19:1-11 साँझ को वे दो दूत सदोम के पास आए; और लूत सदोम के फाटक के पास बैठा था। उन को देखकर वह उनसे भेंट करने के लिये उठा, और मुँह के बल झुककर दण्डवत् कर कहा, "हे मेरे प्रभुओ, अपने दास के घर में पधारिए, और रात भर विश्राम कीजिए, और अपने पाँव धोइये, फिर भोर को उठकर अपने मार्ग पर जाइए।" उन्होंने कहा, "नहीं, हम चौक ही में रात बिताएँगे।" पर उसने उनसे बहुत विनती करके उन्हें मनाया; इसलिये वे उसके साथ चलकर उसके घर में आए; और उसने उनके लिये भोजन तैयार किया, और बिना खमीर की रोटियाँ बनाकर उनको खिलाईं। उनके सो जाने से पहले, सदोम नगर के पुरुषों ने, जवानों से लेकर बूढ़ों तक, वरन् चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया; और लूत को पुकारकर कहने लगे, "जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं वे कहाँ हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ कि हम उनसे भोग करें।" तब लूत उनके पास द्वार के बाहर गया, और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा, "हे मेरे भाइयो, ऐसी बुराई न करो। सुनो, मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होंने अब तक पुरुष का मुँह नहीं देखा; इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊँ, और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो; पर इन पुरुषों से कुछ न करो; क्योंकि ये मेरी छत तले आए हैं।" उन्होंने कहा, "हट जा!" फिर वे कहने लगे, "तू एक परदेशी होकर यहाँ रहने के लिये आया, पर अब न्यायी भी बन बैठा है; इसलिये अब हम उनसे भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे।" और वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आए। तब उन अतिथियों ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने पास घर में खींच लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया। और उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे, अन्धा कर दिया, अत: वे द्वार को टटोलते टटोलते थक गए।

उत्पत्ति 19:24-25 तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई; और उन नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत नष्ट कर दिया।

इन अंशों से यह देखना कठिन नहीं है कि सदोम का अधर्म और भ्रष्टता पहले ही उस मात्रा तक पहुँच चुकी थी, जो मनुष्य और परमेश्वर दोनों के लिए घृणास्पद थी, और इसलिए परमेश्वर की दृष्टि में नगर नष्ट किए जाने के लायक था। परंतु नगर को नष्ट किए जाने से पहले उसके भीतर क्या हुआ था? लोग इन घटनाओं से क्या प्रेरणा ले सकते हैं? इन घटनाओं के प्रति परमेश्वर का रवैया उसके स्वभाव के संबंध में लोगों को क्या दिखाता है? पूरी कहानी समझने के लिए, आओ हम ध्यान से पढ़ें कि पवित्रशास्त्र में क्या दर्ज किया गया था ...

सदोम की भ्रष्टता : मनुष्य को क्रोधित करने वाली, परमेश्वर का कोप भड़काने वाली

उस रात लूत ने परमेश्वर के दो दूतों का स्वागत किया और उनके लिए एक भोज तैयार किया। रात्रि-भोजन के बाद, उनके लेटने से पहले, नगर भर के लोगों ने लूत के घर को घेर लिया और उसे बाहर बुलाने लगे। पवित्रशास्त्र में उनका यह कथन दर्ज है, "जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं वे कहाँ हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ कि हम उनसे भोग करें।" ये शब्द किसने कहे थे? ये किनसे कहे गए थे? ये सदोम के लोगों के शब्द थे, जो लूत के घर के बाहर चिल्ला रहे थे, और ये लूत से कहे गए थे। इन शब्दों को सुनकर कैसा महसूस होता है? क्या तुम क्रोधित हो? क्या इन शब्दों से तुम्हें घिन आती है? क्या तुम क्रोध के मारे आगबबूला हो रहे हो? क्या इन शब्दों से शैतान की दुर्गंध नहीं आती? इनके जरिये, क्या तुम इस नगर की बुराई और अंधकार का एहसास कर सकते हो? क्या तुम इन लोगों के शब्दों के जरिये उनके व्यवहार की क्रूरता और बर्बरता का एहसास कर सकते हो? क्या तुम उनके आचरण के जरिये उनकी भ्रष्टता की गहराई का एहसास कर सकते हो? उन्होंने जो कहा, उसके जरिये यह समझना कठिन नहीं है कि उनकी दुष्ट प्रकृति और बर्बर स्वभाव उस स्तर तक पहुँच गया था, जो उनके खुद के नियंत्रण से परे था। लूत को छोड़कर नगर का हर एक व्यक्ति शैतान से अलग नहीं था; दूसरे व्यक्ति की झलक पाते ही ये लोग उसे नुकसान पहुँचाना और निगल जाना चाहते थे...। ये चीज़ें व्यक्ति को नगर की विकराल और डरावनी प्रकृति के साथ ही उसके चारों ओर मौजूद मौत के वातावरण का ही एहसास नहीं करातीं, बल्कि उसकी दुष्टता और ख़ूनी प्रकृति का भी एहसास कराती हैं।

जब लूत ने स्वयं को अमानवीय ठगों के गिरोह के आमने-सामने पाया, जो मानव-आत्माओं को निगल जाने की जंगली लालसा से भरे हुए थे, तो उसने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की? पवित्रशास्त्र के अनुसार : "हे मेरे भाइयो, ऐसी बुराई न करो। सुनो, मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होंने अब तक पुरुष का मुँह नहीं देखा; इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊँ, और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो; पर इन पुरुषों से कुछ न करो; क्योंकि ये मेरी छत तले आए हैं।" इन शब्दों से लूत का अभिप्राय यह था : वह दूतों को बचाने के लिए अपनी दो बेटियों को भी त्यागने के लिए तैयार था। किसी भी हिसाब से इन लोगों को लूत की शर्तों से सहमत हो जाना चाहिए था और दोनों दूतों को छोड़ देना चाहिए था; आख़िरकार, वे दूत उनके लिए पूरी तरह से अजनबी थे, ऐसे लोग जिनका उनसे कोई लेना-देना नहीं था और जिन्होंने उनके हितों को कभी नुकसान नहीं पहुँचाया था। फिर भी, अपनी बुरी प्रकृति से प्रेरित होकर उन्होंने मामला खत्म नहीं किया, बल्कि इसके बजाय, उन्होंने अपने प्रयास और तेज कर दिए। यहाँ उनकी बातचीत का दूसरा भाग लोगों को निस्संदेह इन लोगों की असली, शातिर प्रकृति की और अधिक जानकारी दे सकता है, साथ ही वह उन्हें परमेश्वर द्वारा इस नगर को नष्ट किए जाने का कारण समझने-बूझने में सक्षम भी बनाता है।

तो उन्होंने आगे क्या कहा? जैसा कि बाइबल में लिखा है : "'हट जा!' फिर वे कहने लगे, 'तू एक परदेशी होकर यहाँ रहने के लिये आया, पर अब न्यायी भी बन बैठा है; इसलिये अब हम उनसे भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे।' और वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आए।" वे लूत का किवाड़ को क्यों तोड़ना चाहते थे? कारण यह है कि वे उन दोनों दूतों को नुकसान पहुँचाने के लिए उत्सुक थे। वे दूत सदोम में किसलिए आए थे? उनका वहाँ आने का उद्देश्य लूत एवं उसके परिवार को बचाना था, लेकिन नगर के लोगों ने ग़लती से सोचा कि वे आधिकारिक पदों पर क़ब्ज़ा जमाने के लिए आए हैं। दूतों का उद्देश्य पूछे बिना नगर के लोगों ने केवल अनुमान के आधार पर असभ्यतापूर्वक उन दो दूतों को नुकसान पहुँचाना चाहा; उन्होंने उन दो लोगों को नुकसान पहुँचाना चाहा, जिनका उनके साथ कोई लेना-देना नहीं था। यह स्पष्ट है कि उस नगर के लोगों ने पूरी तरह से अपनी मानवता और विवेक गँवा दिए थे। उनके पागलपन और जंगलीपन का स्तर पहले से ही मनुष्यों को नुकसान पहुँचाने वाले और उन्हें निगल जाने वाले शैतान के शातिर स्वभाव से अलग नहीं था।

जब उन्होंने लूत से इन लोगों को सौंपने की माँग की, तब लूत ने क्या किया? पाठ से हमें ज्ञात होता है कि लूत ने उन्हें नहीं सौंपा। क्या लूत परमेश्वर के इन दो दूतों को जानता था? बेशक, नहीं! फिर भी वह इन

दो लोगों को बचाने में समर्थ क्यों था? क्या वह जानता था कि वे क्या करने आए हैं? यद्यपि वह उनके आने के कारण से अनजान था, किंतु वह जानता था कि वे परमेश्वर के सेवक हैं, इसलिए वह उन्हें अपने घर में ले गया। उसका परमेश्वर के इन सेवकों को "प्रभु" कहकर पुकारना यह दिखाता है कि सदोम के अन्य लोगों के विपरीत लूत परमेश्वर का स्वाभाविक अनुयायी था। इसलिए जब परमेश्वर के दूत उसके पास आए, तो उसने इन दोनों सेवकों को अपने घर में ले जाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी; इतना ही नहीं, उसने इन दोनों सेवकों की रक्षा करने के लिए बदले में अपनी दो बेटियाँ देने की भी पेशकश की। यह लूत का धार्मिक कार्य था; यह लूत के स्वभाव और सार की एक ठोस अभिव्यक्ति थी, और यह परमेश्वर द्वारा लूत को बचाने के लिए अपने सेवकों को भेजने का कारण भी था। संकट से सामना होने पर लूत ने अन्य किसी भी चीज़ की परवाह किए बिना इन दोनों सेवकों की रक्षा की; यहाँ तक कि उसने सेवकों की सुरक्षा के बदले में अपनी दो बेटियों का सौदा करने का भी प्रयास किया। लूत के अतिरिक्त क्या नगर में कोई और ऐसा था, जिसने ऐसा कुछ किया होता? जैसा कि तथ्य साबित करते हैं—नहीं, ऐसा कोई नहीं था! इसलिए, कहने की आवश्यकता नहीं कि लूत को छोड़कर सदोम के भीतर हर कोई विनाश का लक्ष्य था, और ठीक भी है—वे इसके पात्र थे।

परमेश्वर को नाराज़ करने के कारण सदोम को पूरी तरह से तबाह कर दिया गया

जब सदोम के लोगों ने इन दो सेवकों को देखा, तो उन्होंने उनके आने का कारण नहीं पूछा, न ही किसी ने यह पूछा कि क्या वे परमेश्वर की इच्छा का प्रचार करने के लिए आए हैं। इसके विपरीत, उन्होंने एक भीड़ इकट्ठी की और स्पष्टीकरण का इंतज़ार किए बिना, जंगली कुत्तों या दुष्ट भेड़ियों के समान उन दोनों सेवकों को पकड़ने के लिए आ गए। क्या परमेश्वर ने इन चीज़ों को होते हुए देखा था? इस प्रकार के मानवीय व्यवहार, इस प्रकार की घटना को लेकर परमेश्वर अपने हृदय में क्या सोच रहा था? परमेश्वर ने इस नगर को नष्ट करने का मन बनाया; वह न तो हिचकिचाया और न ही उसने इंतज़ार किया, न ही उसने और अधिक धीरज दिखाया। उसका दिन आ चुका था, अतः उसने वह कार्य कर दिया, जिसे वह करना चाहता था। इस प्रकार, उत्पत्ति 19:24-25 कहती है, "तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई; और उन नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत नष्ट कर दिया।" ये दो पद परमेश्वर द्वारा उस नगर को नष्ट करने के तरीके और साथ ही उसके द्वारा नष्ट की गई चीज़ों के बारे में बताते हैं। प्रथम, बाइबल वर्णन

करती है कि परमेश्वर ने उस नगर को आग से जला दिया, और आग की मात्रा समस्त लोगों और जो कुछ भूमि पर उगता था उसे, नष्ट करने के लिए पर्याप्त थी। कहने का तात्पर्य है कि स्वर्ग से गिरने वाली उस आग ने न केवल उस नगर को नष्ट कर दिया; बल्कि उसने उसके भीतर के समस्त लोगों और जीवित प्राणियों को भी नष्ट कर दिया, और उनका कोई नामोनिशान नहीं रहा। जब नगर नष्ट हो गया, तो वह भूमि जीवित प्राणियों से विहीन हो गई; वहाँ कोई जीवन नहीं रहा, और न ही जीवन के कोई निशान रहे। नगर एक बंजर भूमि बन गया, एक खाली जगह, जो मौत के सन्नाटे से भरी हुई थी। इस स्थान पर परमेश्वर के विरुद्ध अब और कोई बुरा कार्य नहीं होगा; अब और कोई हत्या या ख़ून-ख़राबा नहीं होगा।

परमेश्वर क्यों इस नगर को पूरी तरह से जलाना चाहता था? तुम लोग यहाँ क्या देख सकते हो? क्या परमेश्वर वाकई मनुष्य और प्रकृति, अपनी स्वयं की सृष्टि को इस तरह नष्ट होते हुए सहन कर सकता था? यदि तुम उस आग से, जिसे स्वर्ग से बरसाया गया था, यहोवा परमेश्वर के कोप को समझ सको, तो उसके विनाश के लक्ष्यों को और जिस हद तक इस नगर को नष्ट किया गया, उसे देखते हुए यह समझना कठिन नहीं है कि उसका कोप कितना बड़ा था। जब परमेश्वर किसी नगर से घृणा करता है, तो वह उस पर अपना दंड बरसाएगा। जब परमेश्वर किसी नगर से अप्रसन्न होता है, तो वह लोगों को अपने क्रोध से अवगत कराते हुए बार-बार चेतावनियाँ जारी करेगा। किंतु जब परमेश्वर किसी नगर का खात्मा और विनाश करने का निर्णय लेता है—अर्थात् जब उसके कोप और वैभव को ठेस पहुँचती है—तो वह आगे कोई दंड और चेतावनी नहीं देगा। इसके बजाय, वह सीधे उसे नष्ट कर देगा। वह उसे पूरी तरह से मिटा देगा। यह परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव है।

अपने प्रति सदोम की बार-बार की शत्रुता और प्रतिरोध के बाद परमेश्वर ने उसे पूरी तरह से मिटा दिया

अब जबकि हमें परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की एक सामान्य समझ हो गई है, तो हम अपना ध्यान वापस सदोम नगर की ओर मोड़ सकते हैं—एक ऐसी जगह, जिसे परमेश्वर ने पाप की नगरी के रूप में देखा था। इस नगर के सार को समझकर हम यह समझ सकते हैं कि परमेश्वर इसे क्यों नष्ट करना चाहता था और उसने इसे क्यों पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इससे हम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को जान सकते हैं।

मनुष्य के दृष्टिकोण से सदोम एक ऐसा नगर था, जो मनुष्य की कामना और दुष्टता को पूरी तरह से संतुष्ट कर सकता था। उस आकर्षक और मनमोहक नगर की संपन्नता ने हर रात चलने वाले संगीत और नृत्य के साथ मनुष्यों को सम्मोहन और उन्माद की ओर धकेल दिया। उसकी बुराई ने लोगों के हृदय कलुषित कर दिए और उन्हें अनैतिकता में फँसा दिया। वह एक ऐसा नगर था, जहाँ अशुद्ध और दुष्ट आत्माएँ बेधड़क मँडराया करती थीं; वह पाप और हत्या से सराबोर था और उसकी हवा में ख़ूनी एवं सड़ी हुई दुर्गंध समाई हुई थी। वह एक ऐसा नगर था, जिसने लोगों को आतंकित कर दिया था, ऐसा नगर जिससे कोई भी भय से सिकुड़ जाएगा। उस नगर में कोई भी व्यक्ति—पुरुष हो या स्त्री, जवान हो या बुजुर्ग—सच्चे मार्ग की खोज नहीं करता था; कोई भी प्रकाश की लालसा नहीं करता था या पाप से दूर नहीं जाना चाहता था। वे शैतान के नियंत्रण, भ्रष्टता और छल-कपट में जीवन बिताते थे। उन्होंने अपनी मानवता खो दी थी; उन्होंने अपनी संवेदनाएँ गँवा दी थीं, और उन्होंने मनुष्य के अस्तित्व का मूल उद्देश्य खो दिया था। उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध प्रतिरोध के असंख्य दुष्ट कर्मों को अंजाम दिया था; उन्होंने उसका मार्गदर्शन अस्वीकार किया था और उसकी इच्छा का विरोध किया था। ये उनके बुरे कार्य थे, जिन्होंने इन लोगों को, नगर को और उसके भीतर के हर एक जीवित प्राणी को कदम-दर-कदम विनाश के पथ पर पहुँचा दिया था।

यद्यपि ये दो अंश सदोम के लोगों की भ्रष्टता की सीमा का समस्त विवरण दर्ज नहीं करते, इसके बजाय वे नगर में परमेश्वर के दो सेवकों के आगमन के बाद उनके प्रति लोगों के आचरण को दर्ज करते हैं, तथापि एक साधारण-सा सत्य है जो प्रकट करता है कि सदोम के लोग किस हद तक भ्रष्ट एवं दुष्ट थे और वे किस हद तक परमेश्वर का प्रतिरोध करते थे। इससे नगर के लोगों के असली चेहरे और सार का भी खुलासा हो जाता है। इन लोगों ने न केवल परमेश्वर की चेतावनियों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था, बल्कि वे उसके दंड से भी नहीं डरते थे। इसके विपरीत, उन्होंने परमेश्वर के कोप का उपहास किया। उन्होंने आँख मूँदकर परमेश्वर का प्रतिरोध किया। परमेश्वर ने चाहे जो भी किया या जैसे भी किया, उनका दुष्ट स्वभाव सघन ही हुआ, और उन्होंने बार-बार परमेश्वर का विरोध किया। सदोम के लोग परमेश्वर के अस्तित्व, उसके आगमन, उसके दंड, और उससे भी बढ़कर, उसकी चेतावनियों से विमुख थे। उन्होंने उन सभी लोगों को निगल लिया और नुकसान पहुँचाया, जिन्हें निगला और नुकसान पहुँचाया जा सकता था, और उन्होंने परमेश्वर के सेवकों के साथ भी कोई अलग बरताव नहीं किया। सदोम के लोगों द्वारा किए गए तमाम दुष्कर्मों के लिहाज से, परमेश्वर के सेवकों को नुकसान पहुँचाना तो बस उनकी दुष्टता का एक

छोटा-सा अंश था, और इससे जो उनकी दुष्ट प्रकृति प्रकट हुई, वह वास्तव में विशाल समुद्र में पानी की एक बूँद से बढ़कर नहीं थी। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें आग से नष्ट करने का फैसला किया। परमेश्वर ने नगर को नष्ट करने के लिए बाढ़ का इस्तेमाल नहीं किया, न ही उसने चक्रवात, भूकंप, सुनामी या किसी और तरीके का इस्तेमाल किया। इस नगर का विनाश करने के लिए परमेश्वर द्वारा आग का इस्तेमाल क्या सूचित करता है? इसका अर्थ था नगर का संपूर्ण विनाश, इसका अर्थ था कि नगर पृथ्वी और अस्तित्व से पूरी तरह से लुप्त हो गया था। यहाँ "विनाश" न केवल नगर के आकार और ढाँचे या बाहरी रूप के लुप्त हो जाने को संदर्भित करता है; बल्कि इसका अर्थ यह भी है कि पूरी तरह से मिटा दिए जाने के कारण नगर के भीतर के लोगों की आत्माएँ भी अस्तित्व में नहीं बचीं। सरल शब्दों में कहें तो, नगर से जुड़े सभी लोग, घटनाएँ और चीज़ें नष्ट कर दी गईं। उस नगर के लोगों के लिए कोई अगला जीवन या पुनर्जन्म नहीं होगा; परमेश्वर ने उन्हें अपनी सृष्टि की मानवजाति से हमेशा-हमेशा के लिए मिटा दिया। आग का इस्तेमाल इस स्थान पर पाप के अंत को सूचित करता है, और कि वहाँ पाप पर अंकुश लग गया; यह पाप अस्तित्व में नहीं रहेगा और न ही फैलेगा। इसका अर्थ था कि शैतान की दुष्टता ने अपनी उपजाऊ मिट्टी के साथ-साथ उस कब्रिस्तान को भी खो दिया था, जिसने उसे रहने और जीने के लिए एक स्थान दिया था। परमेश्वर और शैतान के बीच होने वाले युद्ध में परमेश्वर द्वारा आग का इस्तेमाल उसकी विजय की छाप है, जो शैतान पर अंकित की जाती है। मनुष्यों को भ्रष्ट करके और उन्हें निगलकर परमेश्वर का विरोध करने की शैतान की महत्वाकांक्षा में सदोम का विनाश एक बहुत भारी आघात है, और इसी प्रकार यह एक समय पर मानवता के विकास में एक अपमानजनक चिह्न है, जब मनुष्य ने परमेश्वर का मार्गदर्शन ठुकरा दिया था और अपने आपको बुराई के हवाले कर दिया था। इसके अतिरिक्त, यह परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के सच्चे प्रकाशन का एक अभिलेख है।

जब परमेश्वर द्वारा स्वर्ग से भेजी गई आग ने सदोम को राख में तब्दील कर दिया, तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसके बाद "सदोम" नामक नगर और उस नगर के भीतर की हर चीज़ अस्तित्व में नहीं रही। उसे परमेश्वर के क्रोध द्वारा नष्ट किया गया था, जो परमेश्वर के कोप और प्रताप के भीतर विलुप्त हो गया। परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के कारण सदोम को उसका न्यायोचित दंड मिला और उसका न्यायोचित अंत हुआ। सदोम के अस्तित्व का अंत उसकी बुराई के कारण हुआ, और वह इस कारण से भी हुआ, क्योंकि परमेश्वर दोबारा इस नगर को या उसमें रहने वाले किसी व्यक्ति को या उस नगर में उत्पन्न किसी भी

जीवित वस्तु को देखना नहीं चाहता था। परमेश्वर की "दोबारा उस नगर को कभी न देखने की इच्छा" उसके कोप के साथ-साथ उसका प्रताप भी है। परमेश्वर ने नगर को जला दिया, क्योंकि उसकी बुराई और पाप ने परमेश्वर को उसके प्रति क्रोध, घृणा और द्वेष का एहसास कराया था और वह उसको या वहाँ के किसी निवासी या जीवों को दोबारा कभी नहीं देखना चाहता था। जब एक बार नगर का जलना समाप्त हो गया और केवल राख ही बाकी रह गई, तो परमेश्वर की नज़रों में सचमुच उसका अस्तित्व नहीं रहा; यहाँ तक कि उसकी यादें भी परमेश्वर की स्मृति से चली गईं, मिट गईं। इसका अर्थ है कि स्वर्ग से भेजी गई आग ने न केवल संपूर्ण सदोम नगर को जला दिया, उसने न केवल नगर के अधर्म से अत्यधिक भरे हुए लोगों को नष्ट कर दिया, उसने न केवल नगर के भीतर की पाप से दूषित सभी चीज़ों को नष्ट कर दिया; बल्कि उससे भी बढ़कर, उस आग ने मनुष्यों की दुष्टता की याद और परमेश्वर के प्रति उनके प्रतिरोध को भी नष्ट कर दिया। उस नगर को जलाकर राख कर देने के पीछे परमेश्वर का यही उद्देश्य था।

मनुष्य चरम सीमा तक पतित हो चुके थे। वे नहीं जानते थे कि परमेश्वर कौन है या वे स्वयं कहाँ से आए हैं। यदि तुम परमेश्वर का ज़िक्र भी करते, तो वे हमला कर देते, कलंक लगाते और ईश-निंदा करते। यहाँ तक कि जब परमेश्वर के सेवक उसकी चेतावनी का प्रचार करने आए थे, तब भी इन दुष्ट लोगों ने न केवल पश्चात्ताप का कोई चिह्न नहीं दिखाया और अपना दुष्ट आचरण नहीं त्यागा, बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने ढिठाई से परमेश्वर के सेवकों को नुकसान पहुँचाया। जो कुछ उन्होंने व्यक्त और प्रकट किया, वह उनकी प्रकृति का और परमेश्वर के प्रति उनकी चरम शत्रुता का सार था। हम देख सकते हैं कि परमेश्वर के विरुद्ध इन भ्रष्ट लोगों का प्रतिरोध उनके भ्रष्ट स्वभाव के प्रकाशन से कहीं अधिक था, बिलकुल वैसे ही, जैसे यह सत्य की समझ की कमी के कारण की जाने वाली निंदा और उपहास की एक घटना से कहीं अधिक था। उनके दुष्ट आचरण का कारण न तो मूर्खता थी, न ही अज्ञानता; उन्होंने ऐसा कार्य इसलिए नहीं किया कि उन्हें धोखा दिया गया था, और इसलिए तो निश्चित रूप से नहीं कि उन्हें गुमराह किया गया था। उनका आचरण परमेश्वर के विरुद्ध खुले तौर पर निर्लज्ज शत्रुता, विरोध और उपद्रव के स्तर तक पहुँच चुका था। निस्संदेह, इस प्रकार का मानव-व्यवहार परमेश्वर को क्रोधित करेगा, और यह उसके स्वभाव को क्रोधित करेगा—ऐसा स्वभाव, जिसे ठेस नहीं पहुँचाई जानी चाहिए। इसलिए परमेश्वर ने सीधे और खुले तौर पर अपना कोप और प्रताप दिखाया; यह उसके धार्मिक स्वभाव का सच्चा प्रकाशन था। एक ऐसे नगर को सामने देख, जहाँ पाप उमड़ रहा था, परमेश्वर ने उसे यथासंभव तीव्रतम तरीके से नष्ट कर देना चाहा,

ताकि उसके भीतर रहने वाले लोगों और उनके संपूर्ण पापों को पूरी तरह से मिटाया जा सके, ताकि उस नगर के लोगों का अस्तित्व समाप्त किया जा सके और उस स्थान के भीतर पाप को द्विगुणित होने से रोका जा सके। ऐसा करने का सबसे तेज और सबसे मुकम्मल तरीका था उसे आग से जलाकर नष्ट कर देना। सदोम के लोगों के प्रति परमेश्वर का रवैया परित्याग या उपेक्षा का नहीं था। इसके बजाय, उसने इन लोगों को दंड देने, मार डालने और पूरी तरह से नष्ट कर देने के लिए अपने कोप, प्रताप और अधिकार का प्रयोग किया। उनके प्रति उसका रवैया न केवल उनके शारीरिक विनाश का था, बल्कि उनकी आत्माओं के विनाश का, एक शाश्वत उन्मूलन का भी था। यह "अस्तित्व की समाप्ति" वचनों से परमेश्वर के आशय का वास्तविक निहितार्थ है।

हालाँकि परमेश्वर का कोप मनुष्य से छिपा हुआ और अज्ञात है, फिर भी वह कोई अपमान सहन नहीं करता

समस्त मानवजाति के प्रति, उस मानवजाति के प्रति जो कि मूर्ख और जाहिल है, परमेश्वर का व्यवहार मुख्य रूप से दया और सहनशीलता पर आधारित है। दूसरी ओर, उसका कोप अधिकांश समय और अधिकांश घटनाओं में छिपा रहता है, और मनुष्य उससे अनजान है। परिणामस्वरूप, परमेश्वर को अपना कोप व्यक्त करते हुए देखना मनुष्य के लिए कठिन है, और उसके कोप को समझना भी उसके लिए कठिन है। इसलिए मनुष्य परमेश्वर के कोप को हलके में लेता है। मनुष्य जब परमेश्वर के अंतिम कार्य और मनुष्य के लिए उसकी क्षमा और सहिष्णुता के कदम का सामना करता है—अर्थात्, जब परमेश्वर की दया की अंतिम घटना और अंतिम चेतावनी मनुष्य पर आती है—यदि लोग फिर भी उसी तरह से परमेश्वर का विरोध करते रहते हैं और पश्चाताप करने, अपने तौर-तरीके सुधारने या उसकी दया स्वीकार करने का कोई प्रयास नहीं करते, तो परमेश्वर आगे उन्हें अपनी सहनशीलता और धैर्य नहीं दिखाएगा। इसके विपरीत, उस समय परमेश्वर अपनी दया वापस ले लेगा। इसके बाद वह केवल अपना कोप ही भेजेगा। वह विभिन्न तरीकों से अपना कोप व्यक्त कर सकता है, वैसे ही, जैसे वह लोगों को दंड देने और नष्ट करने के लिए विभिन्न पद्धतियाँ इस्तेमाल करता है।

सदोम नगर का विनाश करने के लिए परमेश्वर द्वारा आग का इस्तेमाल करना मनुष्य या किसी अन्य चीज़ को पूरी तरह से नष्ट करने की उसकी तीव्रतम पद्धति है। सदोम के लोगों को जलाना उनके शरीर नष्ट करने से कहीं अधिक था; इसने पूरी तरह से उनकी आत्माएँ, उनके प्राण और उनके शरीर नष्ट कर दिए,

और यह सुनिश्चित किया कि उस नगर के लोग न तो भौतिक संसार में अस्तित्व में रहें और न ही उस संसार में, जो मनुष्य के लिए अदृश्य है। यह परमेश्वर द्वारा अपना कोप प्रकाशित और अभिव्यक्त करने का एक तरीका है। इस तरह का प्रकाशन और अभिव्यक्ति परमेश्वर के कोप के सार का एक पहलू है, ठीक वैसे ही, जैसे यह स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के सार का प्रकाशन भी है। जब परमेश्वर अपना कोप भेजता है, तो वह कोई दया या प्रेममय करुणा प्रकट करना बंद कर देता है, न ही वह आगे कोई सहनशीलता या धैर्य प्रदर्शित करता है; कोई ऐसा व्यक्ति, वस्तु या कारण नहीं है, जो उसे धैर्य धारण किए रहने, फिर से दया करने, एक बार फिर अपनी सहनशीलता दिखाने के लिए राज़ी कर सके। इन चीज़ों के स्थान पर, एक पल के लिए भी हिचकिचाए बिना, परमेश्वर अपना कोप और प्रताप भेजता है, और जो कुछ चाहता है, वह करता है। इन चीज़ों को वह अपनी इच्छाओं के अनुरूप एक तीव्र और साफ़-सुथरे तरीके से करता है। यह वह तरीका है, जिससे परमेश्वर अपना वह कोप और प्रताप प्रकट करता है, जिसे मनुष्य द्वारा ठेस नहीं पहुँचाई जानी चाहिए, और यह उसके धार्मिक स्वभाव के एक पहलू की अभिव्यक्ति भी है। जब लोग परमेश्वर को मनुष्य के प्रति चिंता और प्रेम दिखाते हुए देखते हैं, तो वे उसके कोप को भाँपने में, उसके प्रताप को देखने में या अपमान के प्रति उसकी असहनशीलता अनुभव करने में असमर्थ होते हैं। इन चीज़ों ने हमेशा लोगों को विश्वास दिलाया है कि परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव केवल दया, सहनशीलता और प्रेम का है। किंतु जब कोई परमेश्वर को किसी नगर का विनाश करते हुए या मनुष्य से घृणा करते हुए देखता है, तो मनुष्य के विनाश में उसका कोप और प्रताप लोगों को उसके धार्मिक स्वभाव के अन्य पक्ष की झलक देखने देता है। यह अपमान के प्रति परमेश्वर की असहिष्णुता है। परमेश्वर का कोई अपमान सहन न करने वाला स्वभाव किसी भी सृजित प्राणी की कल्पना से परे है, और ग़ैर-सृजित प्राणियों में से कोई उसके साथ दखलंदाज़ी करने या उसको प्रभावित करने में सक्षम नहीं है; और इसका प्रतिरूपण या अनुकरण तो किया ही नहीं जा सकता। इस प्रकार, परमेश्वर के स्वभाव का यह ऐसा पहलू है, जिसे मनुष्य को सबसे अधिक जानना चाहिए। केवल स्वयं परमेश्वर का ही ऐसा स्वभाव है, और केवल स्वयं परमेश्वर ही ऐसे स्वभाव से युक्त है। परमेश्वर का ऐसा धार्मिक स्वभाव इसलिए है, क्योंकि वह दुष्टता, अंधकार, विद्रोहशीलता और शैतान के बुरे कार्यों—जैसे कि मानवजाति को भ्रष्ट करना और निगल जाना—से घृणा करता है, क्योंकि वह अपने विरुद्ध पाप के सारे कार्यों से घृणा करता है और इसलिए भी, क्योंकि उसका सार पवित्र और निर्मल है। यही कारण है कि वह किसी भी सृजित या ग़ैर-सृजित प्राणी द्वारा खुला

विरोध या स्वयं से मुकाबला सहन नहीं करेगा। यहाँ तक कि कोई ऐसा व्यक्ति भी, जिसके प्रति उसने किसी समय दया दिखाई हो या जिसका चुनाव किया हो, उसके स्वभाव को ललकार दे या उसके धीरज और सहनशीलता के सिद्धांत का उल्लंघन कर दे, तो वह थोड़ी-सी भी दया या संकोच दिखाए बिना, अपमान बरदाश्त न करने वाला अपना धार्मिक स्वभाव प्रकट और प्रकाशित कर देगा।

परमेश्वर का कोप न्याय की समस्त शक्तियों और समस्त सकारात्मक चीज़ों के लिए सुरक्षा-उपाय है

परमेश्वर के संभाषण, विचारों और कार्यों के इन उदाहरणों को समझने से, क्या तुम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को समझने में समर्थ हो, ऐसा स्वभाव, जो मनुष्य द्वारा ठेस पहुँचाए जाने को बरदाश्त नहीं करेगा? संक्षेप में, इस पर ध्यान दिए बिना कि मनुष्य इसे कितना समझ सकता है, यह स्वयं परमेश्वर के स्वभाव का एक पहलू है, और यह अद्वितीय है। अपमान के प्रति परमेश्वर की असहिष्णुता उसका अद्वितीय सार है; परमेश्वर का कोप उसका अद्वितीय स्वभाव है; परमेश्वर का प्रताप उसका अद्वितीय सार है। परमेश्वर के क्रोध के पीछे का सिद्धांत उस पहचान और हैसियत का प्रदर्शन है, जिसे सिर्फ वही धारण करता है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह अद्वितीय स्वयं परमेश्वर के सार का एक प्रतीक भी है। परमेश्वर का स्वभाव उसका अपना अंतर्निहित सार है, जो समय के साथ बिलकुल नहीं बदलता, और न यह भौगोलिक स्थान के बदलने से ही बदलता है। उसका अंतर्निहित स्वभाव उसका स्वाभाविक सार है। वह चाहे जिस किसी पर भी अपना कार्य क्यों न करे, उसका सार नहीं बदलता, और न ही उसका धार्मिक स्वभाव बदलता है। जब कोई परमेश्वर को क्रोधित करता है, तो वह अपना अंतर्निहित स्वभाव प्रस्फुटित करता है; इस समय उसके क्रोध के पीछे का सिद्धांत नहीं बदलता, और न ही उसकी अद्वितीय पहचान और हैसियत बदलती है। वह अपने सार में परिवर्तन के कारण या अपने स्वभाव से विभिन्न तत्त्वों के उत्पन्न होने के कारण क्रोधित नहीं होता, बल्कि इसलिए होता है क्योंकि उसके विरुद्ध मनुष्य का विरोध उसके स्वभाव को ठेस पहुँचाता है। मनुष्य द्वारा परमेश्वर को खुले तौर पर पर उकसाना परमेश्वर की अपनी पहचान और हैसियत के लिए एक गंभीर चुनौती है। परमेश्वर की नज़र में, जब मनुष्य उसे चुनौती देता है, तब मनुष्य उससे मुकाबला कर रहा होता है और उसके क्रोध की परीक्षा ले रहा होता है। जब मुनष्य परमेश्वर का विरोध करता है, जब मनुष्य परमेश्वर से मुकाबला करता है, जब मनुष्य लगातार उसके क्रोध की परीक्षा लेता है—और यह उस समय होता है, जब पाप अनियंत्रित हो जाता है—तब परमेश्वर का कोप स्वाभाविक रूप से अपने आपको प्रकट और प्रस्तुत करेगा। इसलिए, परमेश्वर के कोप की अभिव्यक्ति

इस बात की प्रतीक है कि समस्त बुरी ताकतें अस्तित्व में नहीं रहेंगी, और यह इस बात की प्रतीक है कि सभी विरोधी शक्तियाँ नष्ट कर दी जाएँगी। यह परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव और उसके कोप की अद्वितीयता है। जब परमेश्वर की गरिमा और पवित्रता को चुनौती दी जाती है, जब मनुष्य द्वारा न्याय की ताकतों को रोका जाता है और उनकी अनदेखी की जाती है, तब परमेश्वर अपने कोप को भेजता है। परमेश्वर के सार के कारण पृथ्वी की वे सारी ताकतें, जो परमेश्वर का मुकाबला करती हैं, उसका विरोध करती हैं और उसके साथ संघर्ष करती हैं, बुरी, भ्रष्ट और अन्यायी हैं; वे शैतान से आती हैं और उसी से संबंधित हैं। चूँकि परमेश्वर न्यायी है, प्रकाशमय है, दोषरहित और पवित्र है, इसलिए समस्त बुरी, भ्रष्ट और शैतान से संबंध रखने वाली चीज़ें परमेश्वर का कोप प्रकट होने पर नष्ट हो जाएँगी।

यद्यपि परमेश्वर के कोप का उफान उसके धार्मिक स्वभाव की अभिव्यक्ति का एक पहलू है, किंतु परमेश्वर का क्रोध अपने लक्ष्य के प्रति किसी भी तरह से विवेकशून्य नहीं है, और न ही वह सिद्धांतविहीन है। इसके विपरीत, परमेश्वर क्रोध करने में बिलकुल भी उतावलापन नहीं दिखाता, और न ही वह अपने कोप और प्रताप को हलकेपन से प्रकट करता है। इतना ही नहीं, परमेश्वर का कोप पूरी तरह से नियंत्रित और नपा-तुला होता है; उसकी तुलना मनुष्य के क्रोध से आगबबूला होने या अपना गुस्सा प्रकट करने से बिलकुल नहीं की जा सकती। मनुष्य और परमेश्वर के बीच हुए अनेक वार्तालाप बाइबल में दर्ज हैं। इनमें से कुछ लोगों के कथन सतही, अज्ञानता से भरे और बचकाने थे, किंतु परमेश्वर ने उन्हें मार नहीं गिराया, और न ही उनकी भर्त्सना की। विशेष रूप से, अय्यूब के परीक्षण के दौरान, यहोवा परमेश्वर ने अय्यूब के तीन मित्रों और दूसरे लोगों द्वारा अय्यूब से कही गई बातें सुनने के बाद उनके साथ कैसा बरताव किया था? क्या उसने उनकी भर्त्सना की थी? क्या वह उन पर आगबबूला हो गया था? उसने ऐसा कुछ नहीं किया था! इसके बजाय उसने अय्यूब को उनकी ओर से विनती करने और उनके लिए प्रार्थना करने के लिए कहा, और स्वयं परमेश्वर ने उनकी गलतियों को गंभीरता से नहीं लिया। ये सभी उदाहरण भ्रष्ट एवं अबोध मानवजाति के साथ परमेश्वर के मौलिक रवैये को दर्शाते हैं। इसलिए, परमेश्वर के कोप का प्रस्फुटन किसी भी तरह से उसकी मन:स्थिति की अभिव्यक्ति नहीं है, न ही वह उसके द्वारा अपनी भावनाएँ जाहिर करने का तरीका है। मनुष्य की गलतफहमी के विपरीत, परमेश्वर का कोप गुस्से का ज़बरदस्त विस्फोट नहीं है। परमेश्वर अपने कोप को इसलिए नहीं प्रकट करता कि वह अपनी मन:स्थिति पर काबू पाने में असमर्थ है या कि उसका क्रोध चरम पर पहुँच गया है और उसे बाहर निकालना आवश्यक है। इसके विपरीत,

उसका कोप उसके धार्मिक स्वभाव का प्रदर्शन और उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति है, और यह उसके पवित्र सार का सांकेतिक प्रकटन है। परमेश्वर कोप है, और वह अपमानित किया जाना सहन नहीं करता—इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परमेश्वर का क्रोध कारणों के बीच अंतर नहीं करता या वह सिद्धांतविहीन है; क्रोध के सिद्धांतविहीन, बेतरतीब विस्फोट पर तो एकमात्र अधिकार भ्रष्ट मनुष्य का है, उस प्रकार का क्रोध, कारणों के बीच अंतर नहीं करता। एक बार जब मनुष्य को हैसियत मिल जाती है, तो उसे अकसर अपनी मन:स्थिति पर नियंत्रण पाने में कठिनाई महसूस होगी, और इसलिए वह अपना असंतोष व्यक्त करने और अपनी भावनाएँ प्रकट करने के लिए अवसरों का इस्तेमाल करने में आनंद लेता है; वह अकसर बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के क्रोध से आगबबूला हो जाता है, ताकि वह अपनी योग्यता दिखा सके और दूसरे जान सकें कि उसकी हैसियत और पहचान साधारण लोगों से अलग है। निस्संदेह, बिना किसी हैसियत वाले भ्रष्ट लोग भी अकसर नियंत्रण खो देते हैं। उनका क्रोध अकसर उनके निजी हितों को नुकसान पहुँचने के कारण होता है। अपनी हैसियत और प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए भ्रष्ट मनुष्य बार-बार अपनी भावनाएँ जाहिर करता है और अपना अहंकारी स्वभाव दिखाता है। मनुष्य पाप के अस्तित्व का बचाव और समर्थन करने के लिए क्रोध से आगबबूला हो जाता है, अपनी भावनाएँ जाहिर करता है, और इन्हीं तरीकों से मनुष्य अपना असंतोष व्यक्त करता है; वे अशुद्धताओं, कुचक्रों और साजिशों से, मनुष्य की भ्रष्टता और बुराई से, और अन्य किसी भी चीज़ से बढ़कर, मनुष्य की निरंकुश महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं से लबालब भरे हैं। जब न्याय दुष्टता से टकराता है, तो मनुष्य न्याय के अस्तित्व का बचाव या समर्थन करने के लिए क्रोध से आगबबूला नहीं होता; इसके विपरीत, जब न्याय की शक्तियों को धमकाया, सताया और उन पर आक्रमण किया जाता है, तब मनुष्य का स्वभाव नज़रअंदाज़ करने, टालने या मुँह फेरने वाला होता है। लेकिन दुष्ट शक्तियों से सामना होने पर मनुष्य का रवैया समझौतापरक, झुकने और मक्खन लगाने वाला होता है। इसलिए, मनुष्य का क्रोध निकालना दुष्ट शक्तियों के लिए बच निकलने का मार्ग है, और देहयुक्त मनुष्य के अनियंत्रित और रोके न जा सकने वाले बुरे आचरण की अभियक्ति है। किंतु जब परमेश्वर अपने कोप को भेजता है, तो सारी बुरी शक्तियों को रोका जाएगा, मनुष्य को हानि पहुँचाने वाले सारे पापों पर अंकुश लगाया जाएगा, परमेश्वर के कार्य में बाधा डालने वाली सभी विरोधी ताकतों को प्रकट, अलग और शापित किया जाएगा, परमेश्वर का विरोध करने वाले शैतान के सभी सहयोगियों को दंडित किया जाएगा और उन्हें जड़ से उखाड़ दिया जाएगा। उनके स्थान पर, परमेश्वर का

कार्य बाधाओं से मुक्त होकर आगे बढ़ेगा, परमेश्वर की प्रबंधन योजना निर्धारित समय के अनुसार कदम-दर-कदम विकसित होती रहेगी, और परमेश्वर के चुने हुए लोग शैतान की बाधा और छल से मुक्त होंगे, और परमेश्वर का अनुसरण करने वाले लोग स्वस्थ और शांतिपूर्ण माहौल के बीच परमेश्वर की अगुआई और आपूर्ति का आनंद लेंगे। परमेश्वर का कोप एक सुरक्षा-उपाय है, जो सभी दुष्ट ताकतों को बहुगुणित होने और अनियंत्रित होकर बढ़ने से रोकता है, और यह ऐसा सुरक्षा-उपाय भी है, जो समस्त न्यायोचित और सकारात्मक चीज़ों के अस्तित्व और प्रसार की रक्षा करता है, और शाश्वत रूप से उन्हें दमन और विनाश से बचाता है।

क्या तुम लोग सदोम के विनाश में परमेश्वर के कोप का सार देख सकते हो? क्या उसके क्रोध में कोई और चीज़ मिली हुई है? क्या परमेश्वर का क्रोध पवित्र है? मनुष्य के शब्दों का प्रयोग करें तो, क्या परमेश्वर का कोप बिना किसी मिलावट के है? क्या उसके कोप के पीछे कोई छल है? क्या उसमें कोई षड्यंत्र है? क्या उसमें कोई अकथनीय रहस्य हैं? मैं कठोरता और गंभीरता से तुम्हें बता सकता हूँ : परमेश्वर के कोप का कोई अंश ऐसा नहीं है, जिस पर कोई संदेह कर सकता हो। उसका क्रोध पवित्र और मिलावट-रहित है, जिसमें कोई अन्य इरादे या लक्ष्य नहीं रहते। उसके क्रोध के पीछे के कारण पवित्र, निर्दोष और आलोचना से परे हैं। यह उसके पवित्र सार का एक स्वाभाविक प्रकाशन और प्रदर्शन है; यह कुछ ऐसा है, जो पूरी सृष्टि में किसी के पास नहीं है। यह परमेश्वर के अद्वितीय धार्मिक स्वभाव का एक अंग है, और यह सृष्टिकर्ता और उसकी सृष्टि के संबंधित सारों के बीच एक महत्त्वपूर्ण अंतर भी है।

चाहे कोई दूसरों के सामने क्रोध करे या उनके पीठ-पीछे, प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने क्रोध का एक अलग इरादा और उद्देश्य होता है। शायद वे अपनी प्रतिष्ठा का निर्माण कर रहे होते हैं, या शायद वे अपने हितों का बचाव कर रहे होते हैं, अपनी छवि बना रहे होते हैं या अपनी लाज बचा रहे होते हैं। कुछ लोग अपने क्रोध में संयम बरतते हैं, जबकि अन्य लोग बहुत उतावले होते हैं और ज़रा भी संयम बरते बिना, जब चाहते हैं भड़क जाते हैं। संक्षेप में, मनुष्य का क्रोध उसके भ्रष्ट स्वभाव से निकलता है। उसका उद्देश्य कुछ भी हो, वह देह और प्रकृति का अंग है; उसका न्याय और अन्याय से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि मनुष्य की प्रकृति और सार में कुछ भी सत्य के अनुरूप नहीं है। इसलिए, भ्रष्ट मनुष्य के क्रोध और परमेश्वर के कोप की तुलना नहीं की जानी चाहिए। बिना किसी अपवाद के, शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए मनुष्य का व्यवहार भ्रष्टता की रक्षा की इच्छा से शुरू होता है, और निस्संदेह यह भ्रष्टता पर आधारित होता है;

इसलिए, मनुष्य के क्रोध की तुलना परमेश्वर के कोप से नहीं की जा सकती, चाहे मनुष्य का क्रोध सैद्धांतिक रूप से कितना भी उचित क्यों लगे। जब परमेश्वर अपना कोप भेजता है, तो दुष्ट शक्तियों को रोका जाता है, बुरी चीज़ों को नष्ट किया जाता है, जबकि न्यायोचित और सकारात्मक चीज़ें परमेश्वर की देखरेख और सुरक्षा प्राप्त करती हैं और उन्हें जारी रहने दिया जाता है। परमेश्वर अपना कोप इसलिए भेजता है, क्योंकि अन्यायपूर्ण, नकारात्मक और बुरी चीज़ें न्यायोचित और सकारात्मक चीज़ों की सामान्य गतिविधि और विकास को बाधित, अवरुद्ध या नष्ट करती हैं। परमेश्वर के क्रोध का लक्ष्य अपनी हैसियत और पहचान की रक्षा करना नहीं है, बल्कि न्यायोचित, सकारात्मक, सुंदर और अच्छी चीज़ों के अस्तित्व की रक्षा करना, मनुष्य के सामान्य अस्तित्व की विधियों और व्यवस्था की रक्षा करना है। यह परमेश्वर के कोप का मूल कारण है। परमेश्वर का कोप उसके स्वभाव का बिलकुल उचित, स्वाभाविक और वास्तविक प्रकाशन है। उसके कोप के कोई गुप्त अभिप्राय नहीं हैं, न ही उसमें छल या षड्यंत्र हैं; इच्छाएँ, चतुराई, द्वेष, हिंसा, बुराई या भ्रष्ट मनुष्य में पाई जाने वाले अन्य लक्षणों होने की तो बात ही छोड़ दो। अपना कोप भेजने से पहले परमेश्वर हर मामले के सार को पहले ही पर्याप्त स्पष्टता और पूर्णता के साथ जान चुका होता है, और उसने पहले ही सटीक, स्पष्ट परिभाषाएँ और निष्कर्ष निरूपित कर लिए होते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले हर कार्य में उसका उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट होता है, जैसे कि उसका रवैया स्पष्ट होता है। वह नासमझ, अंधा, आवेशपूर्ण या लापरवाह नहीं है, और वह निश्चित रूप से सिद्धांतहीन नहीं है। यह परमेश्वर के कोप का व्यावहारिक पहलू है, और परमेश्वर के कोप के इस व्यावहारिक पहलू के कारण ही मनुष्य ने अपना सामान्य अस्तित्व हासिल किया है। परमेश्वर के कोप के बिना मनुष्य असामान्य जीवन-स्थितियों में पतित हो जाता और सभी न्यायोचित, सुंदर और अच्छी चीज़ों को नष्ट कर दिया जाता और वे अस्तित्व में न रहतीं। परमेश्वर के कोप के बिना सृजित प्राणियों के अस्तित्व के नियम और विधियाँ तोड़ दी जातीं या पूरी तरह से उलट दी जातीं। मनुष्य के सृजन के समय से ही परमेश्वर ने मनुष्य के सामान्य अस्तित्व की रक्षा करने और उसे कायम रखने के लिए अपने धार्मिक स्वभाव का निरंतर इस्तेमाल किया है। चूँकि उसके धार्मिक स्वभाव में कोप और प्रताप का समावेश है, इसलिए सभी बुरे लोग, चीज़ें और पदार्थ, और मनुष्य के सामान्य अस्तित्व को परेशान करने और उसे क्षति पहुँचाने वाली सभी चीज़ें उसके कोप के परिणामस्वरूप दंडित, नियंत्रित और नष्ट कर दी जाती हैं। पिछली कई सहस्राब्दियों से परमेश्वर ने सभी प्रकार की अशुद्ध और बुरी आत्माओं को, जो परमेश्वर का विरोध करती हैं और मनुष्य का

प्रबंधन करने के परमेश्वर के कार्य में शैतान के सहयोगियों और अनुचरों के रूप में कार्य करती हैं, मार गिराने और नष्ट करने के लिए अपने धार्मिक स्वभाव का लगातार इस्तेमाल किया है। इस प्रकार, मुनष्य के उद्धार का परमेश्वर का कार्य उसकी योजना के अनुसार सदैव आगे बढ़ता गया है। कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर के कोप के अस्तित्व के कारण मनुष्यों के सर्वाधिक नेक कार्य कभी नष्ट नहीं किए गए हैं।

अब जबकि तुम लोगों को परमेश्वर के कोप के सार की समझ हो गई है, तो तुम लोगों को निश्चित रूप से इस बात की और भी बेहतर समझ होनी चाहिए कि शैतान की बुराई को कैसे पहचाना जाए!

यद्यपि शैतान दयालु, न्यासंगत और सदाचारी प्रतीत होता है, फिर भी शैतान का सार निर्दयी और बुरा है

शैतान लोगों को धोखा देकर अपनी प्रतिष्ठा बनाता है और अकसर खुद को धार्मिकता के अगुआ और आदर्श के रूप में स्थापित करता है। धार्मिकता की रक्षा की आड़ में वह लोगों को हानि पहुँचाता है, उनकी आत्माओं को निगल जाता है, और मनुष्य को स्तब्ध करने, धोखा देने और भड़काने के लिए हर प्रकार के साधनों का उपयोग करता है। उसका लक्ष्य मनुष्य से अपने बुरे आचरण का अनुमोदन और अनुसरण करवाना और उसे परमेश्वर के अधिकार और संप्रभुता का विरोध करने में अपने साथ मिलाना है। किंतु जब कोई उसकी चालों, षड्यंत्रों और नीच हरकतों को समझ जाता है और नहीं चाहता कि शैतान द्वारा उसे लगातार कुचला और मूर्ख बनाया जाए या वह निरंतर शैतान की गुलामी करे या उसके साथ दंडित और नष्ट किया जाए, तो शैतान अपने पिछले संतनुमा लक्षण बदल लेता है और अपना झूठा नकाब फाड़कर अपना असली चेहरा प्रकट कर देता है, जो दुष्ट, शातिर, भद्दा और वहशी है। वह उन सभी का विनाश करने से ज्यादा कुछ पसंद नहीं करता, जो उसका अनुसरण करने से इनकार करते हैं और उसकी बुरी शक्तियों का विरोध करते हैं। इस बिंदु पर शैतान अब और भरोसेमंद और सज्जन व्यक्ति का रूप धारण किए नहीं रह सकता; इसके बजाय, भेड़ की खाल में भेड़िए की तरह के उसके असली बुरे और शैतानी लक्षण प्रकट हो जाते हैं। एक बार जब शैतान के षड्यंत्र प्रकट हो जाते हैं और उसके असली लक्षणों का खुलासा हो जाता है, तो वह क्रोध से आगबबूला हो जाता है और अपनी बर्बरता जाहिर कर देता है। इसके बाद तो लोगों को नुकसान पहुँचाने और निगल जाने की उसकी इच्छा और भी तीव्र हो जाती है। क्योंकि वह मनुष्य के वस्तुस्थिति के प्रति जाग्रत हो जाने से क्रोधित हो जाता है, और उसकी स्वतंत्रता और प्रकाश की लालसा और अपनी कैद तोड़कर आज़ाद होने की आकांक्षा के कारण उसके अंदर मनुष्य के प्रति

बदले की एक प्रबल भावना पैदा हो जाती है। उसके क्रोध का प्रयोजन अपनी बुराई का बचाव करना और उसे बनाए रखना है, और यह उसकी जंगली प्रकृति का असली प्रकाशन भी है।

हर मामले में शैतान का व्यवहार उसकी बुरी प्रकृति को उजागर करता है। शैतान द्वारा मनुष्य पर किए गए सभी बुरे कार्यों—अपना अनुसरण करने के लिए मनुष्य को बहकाने के उसके आरंभिक प्रयासों से लेकर उसके द्वारा मनुष्य के शोषण तक, जिसके अंतर्गत वह मनुष्य को अपने बुरे कार्यों में खींचता है, और उसके असली लक्षणों का खुलासा हो जाने और मनुष्य द्वारा उसे पहचानने और छोड़ देने के बाद मनुष्य के प्रति उसकी बदले की भावना तक—इनमें से कोई भी कार्य शैतान के बुरे सार को उजागर करने से नहीं चूकता, न ही इस तथ्य को प्रमाणित करने से कि शैतान का सकारात्मक चीज़ों से कोई नाता नहीं है और शैतान समस्त बुरी चीज़ों का स्रोत है। उसका हर एक कार्य उसकी बुराई का बचाव करता है, उसके बुरे कार्यों की निरंतरता बनाए रखता है, न्यायोचित और सकारात्मक चीज़ों के विरुद्ध जाता है, और मनुष्य के सामान्य अस्तित्व के नियमों और विधियों को बरबाद कर देता है। शैतान के ये कार्य परमेश्वर के विरोधी हैं, और वे परमेश्वर के कोप द्वारा नष्ट कर दिए जाएँगे। हालाँकि शैतान के पास उसका अपना कोप है, किंतु उसका कोप उसकी बुरी प्रकृति को प्रकट करने का एक माध्यम भर है। शैतान के भड़कने और उग्र होने का कारण यह है : उसके अकथनीय षड्यंत्र उजागर कर दिए गए हैं; उसके कुचक्र आसानी से छिपाए नहीं छिपते; परमेश्वर का स्थान लेने और परमेश्वर के समान कार्य करने की उसकी वहशी महत्वाकांक्षा और इच्छा नष्ट और अवरुद्ध कर दी गई है; और समूची मानवजाति को नियंत्रित करने का उसका उद्देश्य अब शून्य हो गया है और उसे कभी हासिल नहीं किया जा सकता। यह परमेश्वर द्वारा बार-बार बुलाया जाने वाला उसका कोप है, जिसने शैतान के षड्यंत्र सफल होने से रोक दिए हैं और उसकी दुष्टता के फैलाव और निरंकुशता का समय से पहले ही अंत कर दिया है। इसीलिए शैतान परमेश्वर के कोप से घृणा भी करता है और उससे डरता भी है। जब भी परमेश्वर का कोप उतरता है, तो वह न केवल शैतान के असली बुरे रूप को बेनकाब करता है, बल्कि शैतान की बुरी इच्छाओं को उजागर भी करता है, और इस प्रक्रिया में मनुष्य के प्रति शैतान के कोप के कारणों का पर्दाफाश हो जाता है। शैतान के कोप का विस्फोट उसकी दुष्ट प्रकृति का असली प्रकाशन और उसके षड्यंत्रों का खुलासा है। निस्संदेह, शैतान जब भी क्रोधित होता है, तो यह बुरी चीज़ों के विनाश और सकारात्मक चीज़ों की सुरक्षा और निरंतरता की घोषणा करता है; यह इस तथ्य की घोषणा करता है कि परमेश्वर के कोप को ठेस नहीं पहुँचाई जा सकती।

परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को जानने के लिए व्यक्ति को अनुभव और कल्पना पर भरोसा नहीं करना चाहिए

जब तुम स्वयं को परमेश्वर के न्याय और उसकी ताड़ना का सामना करते हुए पाते हो, तो क्या तुम कहोगे कि परमेश्वर का वचन मिलावटी है? क्या तुम कहोगे कि परमेश्वर के कोप के पीछे कोई कहानी है और वह मिलावटी है? क्या तुम परमेश्वर को यह कहते हुए बदनाम करोगे कि उसका स्वभाव पूर्णत: धार्मिक होना आवश्यक नहीं है? परमेश्वर के प्रत्येक कार्य के साथ व्यवहार करते समय, तुम्हें पहले निश्चित होना चाहिए कि परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव किसी भी अन्य तत्त्व से मुक्त है और वह पवित्र और निर्दोष है। इन कार्यों में परमेश्वर द्वारा मनुष्य को मार गिराना, दंड देना और नष्ट करना शामिल है। बिना किसी अपवाद के, परमेश्वर का हर कार्य एकदम उसके अंतर्निहित स्वभाव और उसकी योजना के अनुसार किया जाता है, और उसमें मनुष्य के ज्ञान, परंपरा और दर्शन का कोई अंश शामिल नहीं होता। परमेश्वर का हर कार्य उसके स्वभाव और सार की अभिव्यक्ति है, जिसका ऐसी किसी चीज़ से संबंध नहीं है, जो भ्रष्ट मनुष्य से संबंधित हो। मनुष्य की धारणा है कि केवल मानवजाति के प्रति परमेश्वर का प्रेम, दया और सहनशीलता ही दोषरहित, मिलावटरहित और पवित्र है, और कोई नहीं जानता कि परमेश्वर का क्रोध और कोप भी इसी तरह से मिलावटरहित हैं; इतना ही नहीं, किसी ने भी इन प्रश्नों पर विचार नहीं किया है कि परमेश्वर कोई अपमान क्यों नहीं सहता या उसका कोप इतना विराट क्यों है? इसके विपरीत, कुछ लोग गलती से परमेश्वर के कोप को बुरा स्वभाव समझ लेते हैं, जैसा कि भ्रष्ट मनुष्य का होता है, और परमेश्वर के क्रोध को भ्रष्ट मनुष्य के क्रोध के समान ही समझने की गलती करते हैं। यहाँ तक कि वे गलती से यह मान लेते हैं कि परमेश्वर का कोप मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव के स्वाभाविक प्रकटन के समान ही है और परमेश्वर के कोप का जारी होना भ्रष्ट लोगों के उस समय प्रकट होने वाले क्रोध के समान ही है, जब वे किसी अप्रिय स्थिति का सामना करते हैं, और वे यह मानते हैं कि परमेश्वर के कोप का प्रस्फुटन उसकी मन:स्थिति का प्रदर्शन है। इस सहभागिता के बाद, मैं आशा करता हूँ कि अब से तुम लोगों में से कोई भी परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के संबंध में किसी प्रकार की गलत धारणा, कल्पना या अनुमान नहीं रखेगा। मैं आशा करता हूँ कि मेरे वचनों को सुनने के बाद तुम अपने हृदय में परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के कोप की सच्ची पहचान रख सकते हो, उससे जुड़ी कोई पिछली गलत समझ अलग हटा सकते हो, तुम परमेश्वर के कोप के सार के संबंध में अपने गलत विश्वास और दृष्टिकोण बदल सकते हो। इतना ही नहीं, मैं आशा करता हूँ कि तुम

लोगों के हृदय में परमेश्वर के स्वभाव की कोई सटीक परिभाषा हो सकती है, तुम्हारे मन में अब से परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को लेकर कोई संदेह नहीं होगा, और तुम परमेश्वर के सच्चे स्वभाव पर कोई मानवीय तर्क या अनुमान नहीं थोपोगे। परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव परमेश्वर का अपना सच्चा सार है। यह कोई मनुष्य द्वारा लिखी या रची गई चीज़ नहीं है। उसका धार्मिक स्वभाव उसका धार्मिक स्वभाव है और उसका सृष्टि की किसी चीज़ से कोई संबंध या वास्ता नहीं है। स्वयं परमेश्वर स्वयं परमेश्वर है। वह कभी सृष्टि का भाग नहीं बन सकता, और यदि वह सृजित प्राणियों का सदस्य बनता भी है, तो भी उसका अंतर्निहित स्वभाव और सार नहीं बदलेगा। इसलिए, परमेश्वर को जानना किसी वस्तु को जानने के समान नहीं है; परमेश्वर को जानना किसी चीज़ की चीर-फाड़ करना नहीं है, न ही यह किसी व्यक्ति को समझने के समान है। यदि परमेश्वर को जानने के लिए मनुष्य किसी वस्तु को जानने या किसी व्यक्ति को समझने की अपनी धारणा या पद्धति का इस्तेमाल करता है, तो तुम परमेश्वर का ज्ञान हासिल करने में कभी सक्षम नहीं होगे। परमेश्वर को जानना अनुभव या कल्पना पर निर्भर नहीं है, इसलिए तुम्हें अपने अनुभव या कल्पना को परमेश्वर पर नहीं थोपना चाहिए; तुम्हारा अनुभव और कल्पना कितने भी समृद्ध क्यों न हों, फिर भी वे सीमित हैं। और तो और, तुम्हारी कल्पना तथ्यों से मेल नहीं खाती, और सत्य से तो बिलकुल भी मेल नहीं खाती, वह परमेश्वर के सच्चे स्वभाव और सार सेअसंगत है। यदि तुम परमेश्वर के सार को समझने के लिए अपनी कल्पना पर भरोसा करते हो, तो तुम कभी सफल नहीं होगे। एकमात्र रास्ता यह है : वह सब स्वीकार करो, जो परमेश्वर से आता है, फिर धीरे-धीरे उसे अनुभव करो और समझो। एक दिन ऐसा आएगा, जब परमेश्वर तुम्हारे सहयोग के कारण और सत्य के लिए तुम्हारी भूख और प्यास के कारण तुम्हें प्रबुद्ध करेगा, ताकि तुम सच में उसे समझ और जान सको। और इसके साथ ही, हम अपने वार्तालाप के इस भाग को समाप्त करते हैं।

सच्चे पश्चात्ताप के जरिये मनुष्य परमेश्वर की दया और सहनशीलता प्राप्त करता है

आगे बाइबल की "परमेश्वर द्वारा नीनवे के उद्धार" की कहानी दी गई है।

योना 1:1-2 यहोवा का यह वचन अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुँचा: "उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरुद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है।"

योना 3 तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुँचा: "उठकर उस बड़े नगर नीनवे को

जा, और जो बात मैं तुझ से कहूँगा, उसका उस में प्रचार कर।" तब योना यहोवा के वचन के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था, वह तीन दिन की यात्रा का था। योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, "अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।" तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा। तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुँचा; और उसने सिंहासन पर से उठ, अपने राजकीय वस्त्र उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया। राजा ने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया: "क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या अन्य पशु, कोई कुछ भी न खाए; वे न खाएँ और न पानी पीएँ। मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपने कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चाताप करें। सम्भव है, परमेश्वर दया करे और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नष्ट होने से बच जाएँ।" जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।

योना 4 यह बात योना को बहुत ही बुरी लगी, और उसका क्रोध भड़का। उसने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की, "हे यहोवा, जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग जाने के लिये फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दु:ख देने से प्रसन्न नहीं होता। इसलिये अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही भला है।" यहोवा ने कहा, "तेरा जो क्रोध भड़का है, क्या वह उचित है?" इस पर योना उस नगर से निकलकर, उसकी पूरब ओर बैठ गया; और वहाँ एक छप्पर बनाकर उसकी छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर का क्या होगा? तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो, जिससे उसका दु:ख दूर हो। योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ। सबेरे जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, जिस ने रेंड़ का पेड़ ऐसा काटा कि वह सूख गया। जब सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, और धूप योना के सिर पर ऐसी लगी कि वह मूर्च्छित होने लगा; और उसने यह कहकर मृत्यु माँगी, "मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही अच्छा है।" परमेश्वर

ने योना से कहा, "तेरा क्रोध, जो रेंड़ के पेड़ के कारण भड़का है, क्या वह उचित है?" उसने कहा, "हाँ, मेरा जो क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है, वरन् क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता।" तब यहोवा ने कहा, "जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नष्ट भी हुआ; उस पर तू ने तरस खाई है। फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हज़ार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने बाएँ हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत से घरेलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?"

नीनवे की कहानी का सारांश

यद्यपि "परमेश्वर द्वारा नीनवे के उद्धार" की कहानी बहुत छोटी है, फिर भी यह व्यक्ति को परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के दूसरे पहलू की झलक दिखाती है। यह समझने के लिए कि उस दूसरे पहलू में वास्तव में क्या है, हमें पवित्रशास्त्र की ओर लौटना होगा और परमेश्वर के एक कृत्य की समीक्षा करनी होगी, जो उसने अपने कार्य की प्रक्रिया में किया था।

पहले हम इस कहानी की शुरुआत पर गौर करते हैं : "यहोवा का यह वचन अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुँचा: 'उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरुद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है'" (योना 1:1-2)। पवित्रशास्त्र के इस अंश में, हम जानते हैं कि यहोवा परमेश्वर ने योना को नीनवे शहर जाने का आदेश दिया था। उसने योना को इस नगर में जाने का आदेश क्यों दिया था? बाइबल इसके विषय में बहुत स्पष्ट है : इस नगर के लोगों की दुष्टता यहोवा परमेश्वर की नज़रों में आ गई थी, और इसलिए उसने उस बात की घोषणा करने के लिए योना को उनके पास भेजा था, जो वह करना चाहता था। हालाँकि उसमें ऐसा कुछ भी दर्ज नहीं है, जो हमें यह बता सके कि योना कौन था, किंतु वास्तव में इसका संबंध परमेश्वर को जानने से नहीं है, और इसलिए तुम लोगों को इस मनुष्य, योना को समझने की आवश्यकता नहीं है। तुम लोगों को केवल यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने योना को क्या करने का आदेश दिया था और ऐसा करने के पीछे परमेश्वर के क्या कारण थे।

यहोवा परमेश्वर की चेतावनी नीनवे के लोगों तक पहुँचती है

हम दूसरे अंश, योना की पुस्तक के तीसरे अध्याय पर चलते हैं : "योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, 'अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया

जाएगा।'" ये वे वचन हैं, जो परमेश्वर ने नीनवे के लोगों को बताने के लिए सीधे योना को दिए थे, इसलिए निस्संदेह, ये वे वचन हैं, जिन्हें यहोवा नीनवे के लोगों से कहना चाहता था। ये वचन लोगों को बताते हैं कि परमेश्वर ने नगर के लोगों से घृणा करनी शुरू कर दी थी, क्योंकि उनकी दुष्टता उसकी नज़रों में आ गई थी, और इसलिए वह इस नगर को नष्ट करना चाहता था। किंतु नगर को नष्ट करने से पहले परमेश्वर नीनवे के नागरिकों के लिए एक घोषणा करेगा, और साथ ही वह उन्हें अपनी दुष्टता के लिए पश्चात्ताप करने और नए सिरे से शुरुआत करने का एक अवसर देगा। यह अवसर चालीस दिन तक रहेगा, इससे ज्यादा नहीं। दूसरे शब्दों में, यदि नगर में रहने वाले लोगों ने चालीस दिनों के भीतर पश्चात्ताप न किया, अपने पाप स्वीकार न किए या यहोवा परमेश्वर के सामने दंडवत न किया, तो परमेश्वर इस नगर को वैसे ही नष्ट कर देगा, जैसे उसने सदोम को नष्ट किया था। यहोवा परमेश्वर यही बात नीनवे के लोगों से कहना चाहता था। साफ बात है, यह कोई सामान्य घोषणा नहीं थी। इस बात ने लोगों को न केवल यहोवा परमेश्वर के क्रोध से अवगत कराया, बल्कि इससे नीनवे के लोगों के प्रति उसका रवैया भी ज़ाहिर हो गया, और साथ ही नगर के भीतर रहने वाले लोगों के लिए एक गंभीर चेतावनी के रूप में भी काम किया। इस चेतावनी ने उन्हें बताया कि अपने बुरे कार्यों से उन्होंने यहोवा परमेश्वर की घृणा को न्योता दिया है, और उनके दुष्कर्म उन्हें शीघ्र ही तबाही के कगार पर पहुँचा देंगे। इसलिए नीनवे के हर निवासी का जीवन आसन्न संकट में था।

यहोवा परमेश्वर की चेतावनी के प्रति नीनवे और सदोम की प्रतिक्रिया में स्पष्ट अंतर

उखाड़ फेंकने का क्या अर्थ है? बोलचाल की भाषा में इसका अर्थ है मौजूद न रहना। लेकिन किस तरह? कौन एक पूरे नगर को उखाड़कर फेंक सकता है? निस्संदेह मनुष्य के लिए ऐसा काम करना असंभव है। नीनवे के लोग मूर्ख नहीं थे; ज्यों ही उन्होंने इस घोषणा को सुना, त्यों ही वे इसके अभिप्राय को समझ गए। वे जानते थे कि घोषणा परमेश्वर की ओर से आई है, वे जानते थे कि परमेश्वर अपना कार्य करने जा रहा है, और वे जानते थे कि उनकी दुष्टता ने यहोवा परमेश्वर को क्रोधित कर दिया है, इसीलिए उसका क्रोध उन पर बरस रहा है, जिससे वे शीघ्र ही अपने नगर के साथ नष्ट हो जाने वाले हैं। यहोवा परमेश्वर की चेतावनी सुनने के बाद नगर के लोगों ने कैसा व्यवहार किया? बाइबल राजा से लेकर आम आदमी तक, सभी लोगों की प्रतिक्रिया का बहुत विस्तार से वर्णन करती है। पवित्रशास्त्र में ये वचन दर्ज हैं : "तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा। तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुँचा; और उसने सिंहासन पर

से उठ, अपने राजकीय वस्त्र उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया। राजा ने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया: 'क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या अन्य पशु, कोई कुछ भी न खाए; वे न खाएँ और न पानी पीएँ। मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपने कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चाताप करें। ...'"

यहोवा परमेश्वर की घोषणा सुनने के बाद नीनवे के लोगों ने सदोम के लोगों के रवैये से ठीक विपरीत रवैया दिखाया—जहाँ सदोम के लोगों ने खुले तौर पर परमेश्वर का विरोध किया और बुरे से बुरा कार्य करते चले गए, वहीं नीनवे के लोगों ने इन वचनों को सुनने के बाद इस मामले को नज़रअंदाज़ नहीं किया, और न ही उन्होंने प्रतिरोध किया। इसके बजाय उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और उपवास की घोषणा कर दी। "विश्वास किया" शब्दों का यहाँ क्या अर्थ है? ये शब्द विश्वास और समर्पण की ओर संकेत करते हैं। यदि हम इन शब्दों की व्याख्या करने के लिए नीनवे के लोगों के वास्तविक व्यवहार का उपयोग करें, तो इनका अर्थ यह है कि उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर ने जैसा कहा है, वह वैसा कर सकता है और करेगा, और कि वे पश्चात्ताप करने के लिए तैयार थे। क्या नीनवे के लोग से आसन्न आपदा से डर गए? यह उनका विश्वास था, जिसने उनके हृदय में भय पैदा कर दिया था। तो नीनवे के लोगों के विश्वास और भय को प्रमाणित करने के लिए हम किस चीज़ का उपयोग कर सकते है? जैसा कि बाइबल कहती है : "और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा।" कहने का तात्पर्य है कि नीनवे के लोगों ने सच में विश्वास किया, और इस विश्वास से भय उत्पन्न हुआ, जिसने तब उन्हें उपवास करने और टाट ओढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार उन्होंने दिखाया कि वे पश्चात्ताप करना शुरू कर रहे हैं। सदोम के लोगों के बिलकुल विपरीत, नीनवे के लोगों ने न केवल परमेश्वर का विरोध नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने व्यवहार और कार्यों के जरिये स्पष्ट रूप से अपना पश्चात्ताप भी दिखाया। निस्संदेह, ऐसा नीनवे के सभी लोगों ने किया, केवल आम लोगों ने नहीं—राजा भी इसका अपवाद नहीं था।

नीनवे के राजा का पश्चात्ताप यहोवा परमेश्वर की प्रशंसा पाता है

जब नीनवे के राजा ने यह समाचार सुना, तो वह अपने सिंहासन से उठा खड़ा हुआ, उसने अपने वस्त्र उतार डाले और टाट पहनकर राख में बैठ गया। तब उसने घोषणा की कि नगर में किसी को भी कुछ भी चखने की अनुमति नहीं दी जाएगी, और किसी भेड़, बैल या अन्य मवेशी को घास-पानी नहीं दिया जाएगा।

मनुष्य और पशु दोनों को एक-समान टाट ओढ़ना था, और लोगों को बड़ी लगन से परमेश्वर से विनती करनी थी। राजा ने यह घोषणा भी की कि उनमें से प्रत्येक अपने बुरे मार्ग को छोड़ देगा और हिंसा का त्याग कर देगा। उसके द्वारा लगातार किए गए इन कार्यों को देखते हुए, नीनवे के राजा के हृदय में सच्चा पश्चात्ताप था। उसके द्वारा किए गए ये कार्य—अपने सिंहासन से उठ खड़ा होना, अपने राजकीय वस्त्र उतार देना, टाट ओढ़ना और राख में बैठ जाना—लोगों को बताता है कि नीनवे का राजा अपने शाही रुतबे को छोड़ रहा था और आम लोगों के साथ टाट ओढ़ रहा था। कहने का तात्पर्य है कि नीनवे का राजा यहोवा परमेश्वर से आई घोषणा सुनने के बाद अपने बुरे मार्ग पर चलते रहने या अपने हाथों से हिंसा जारी रखने के लिए अपने शाही पद पर जमा नहीं रहा; बल्कि उसने अपने अधिकार को दरकिनार कर यहोवा परमेश्वर के सामने पश्चात्ताप किया। इस समय नीनवे का राजा एक राजा के रूप में पश्चात्ताप नहीं कर रहा था; बल्कि वह परमेश्वर की एक सामान्य प्रजा के रूप में अपने पाप स्वीकार करने और पश्चात्ताप करने के लिए परमेश्वर के सामने आया था। इतना ही नहीं, उसने पूरे शहर से भी उसी तरह यहोवा परमेश्वर के सामने पश्चात्ताप करने और अपने पाप स्वीकार करने के लिए कहा, जिस तरह उसने किया था; इसके अलावा, उसके पास एक विशिष्ट योजना भी थी कि ऐसा कैसे किया जाए, जैसा कि पवित्रशास्त्र में देखने को मिलता है : "क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या अन्य पशु, कोई कुछ भी न खाए; वे न खाएँ और न पानी पीएँ। ...और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपने कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चाताप करें।" नगर का शासक होने के नाते, नीनवे का राजा उच्चतम हैसियत और सामर्थ्य रखता था और जो चाहता, कर सकता था। यहोवा परमेश्वर की घोषणा सामने आने पर वह उस मामले को नज़रअंदाज़ कर सकता था या बस यों ही अकेले अपने पापों का प्रायश्चित कर सकता था और उन्हें स्वीकार कर सकता था; नगर के लोग पश्चात्ताप करें या न करे, वह इस मामले को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर सकता था। किंतु नीनवे के राजा ने ऐसा बिलकुल नहीं किया। उसने न केवल अपने सिंहासन से उठकर टाट ओढ़कर और रख मलकर यहोवा परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार किए और पश्चात्ताप किया, बल्कि उसने अपने नगर के सभी लोगों और पशुओं को भी ऐसा करने का आदेश दिया। यहाँ तक कि उसने लोगों को आदेश दिया कि "परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दो।" कार्यों की इस शृंखला के जरिये नीनवे के राजा ने सच में वह किया, जो एक शासक को करना चाहिए। उसके द्वारा किए गए कार्यों की शृंखला ऐसी है, जिसे करना मानव-इतिहास में किसी भी

राजा के लिए कठिन था, और निस्संदेह, कोई अन्य राजा ये कार्य नहीं कर पाया। ये कार्य मानव-इतिहास में अभूतपूर्व कहे जा सकते हैं, और ये मानवजाति द्वारा स्मरण और अनुकरण दोनों के योग्य हैं। मनुष्य की उत्पत्ति के समय से ही, प्रत्येक राजा ने परमेश्वर का प्रतिरोध और विरोध करने में अपनी प्रजा की अगुआई की है। किसी ने भी कभी अपनी दुष्टता से छुटकारा पाने, यहोवा परमेश्वर से क्षमा पाने और आने वाले दंड से बचने के लिए परमेश्वर से विनती करने हेतु अपनी प्रजा की अगुआई नहीं की। किंतु नीनवे का राजा परमेश्वर की ओर मुड़ने, कुमार्ग त्यागने और अपने हाथों के उपद्रव का त्याग करने में अपनी प्रजा की अगुआई कर पाया। इतना ही नहीं, वह अपने सिंहासन को भी छोड़ पाया, और बदले में, यहोवा परमेश्वर का मन बदल गया और उसे अफ़सोस हुआ, उसने अपना कोप त्याग दिया, नगर के लोगों को जीवित रहने दिया और उन्हें सर्वनाश से बचा लिया। राजा के कार्यों को मानव-इतिहास में केवल एक दुर्लभ चमत्कार ही कहा जा सकता है, यहाँ तक कि उन्हें भ्रष्ट मनुष्यों का आदर्श भी कहा जा सकता है, जो परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करते हैं और पश्चात्ताप करते हैं।

परमेश्वर नीनवे के लोगों के हृदय की गहराइयों में सच्चा पश्चात्ताप देखता है

परमेश्वर की घोषणा सुनने के बाद, नीनवे के राजा और उसकी प्रजा ने अनेक कार्यों को अंजाम दिया। उनके इन कार्यों और व्यवहार की प्रकृति क्या थी? दूसरे शब्दों में, उनके समग्र व्यवहार का सार क्या था? उन्होंने जो किया, वह क्यों किया? परमेश्वर की नज़रों में उन्होंने ईमानदारी से पश्चात्ताप किया था, न केवल इसलिए कि उन्होंने पूरी लगन से परमेश्वर से विनती की थी और उसके सम्मुख अपने पाप स्वीकार किए थे, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने अपना दुष्ट आचरण छोड़ दिया था। उन्होंने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि परमेश्वर के वचनों को सुनने के बाद वे बेहद डर गए थे और यह मानते थे कि वह वैसा ही करेगा, जैसा उसने कहा है। उपवास करके, टाट पहनकर और राख में बैठकर वे अपने तौर-तरीके सुधारने और बुराई से दूर रहने की इच्छा व्यक्त करना चाहते थे, और उन्होंने यहोवा परमेश्वर से अपना निर्णय और उन पर पड़ी विपत्ति वापस लेने के लिए विनती करते हुए अपना कोप रोकने की प्रार्थना की। यदि हम पूरे व्यवहार की जाँच करें, तो हम देख सकते हैं कि वे पहले ही समझ गए थे कि उनके पिछले बुरे काम यहोवा परमेश्वर के लिए घृणास्पद थे, और हम यह भी देख सकते हैं कि वे यह समझ गए थे कि वह किस कारण से उन्हें शीघ्र ही नष्ट कर देगा। इसीलिए वे सभी पूरा पश्चात्ताप करना, अपने बुरे मार्गों से हटना और अपने हाथों के उपद्रव को त्याग देना चाहते थे। दूसरे शब्दों में, एक बार जब वे यहोवा परमेश्वर

की घोषणा से अवगत हो गए, तो उनमें से प्रत्येक ने अपने हृदय में भय महसूस किया; उन्होंने अपना बुरा आचरण बंद कर दिया और फिर वे कार्य नहीं किए, जो यहोवा परमेश्वर के लिए इतने घृणास्पद थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यहोवा परमेश्वर से उनके पिछले पाप क्षमा करने और उनसे उनके पिछले कार्यों के अनुसार व्यवहार न करने की विनती की। वे फिर कभी दुष्टता में लिप्त न होने और यहोवा परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार कार्य करने के लिए तैयार थे, ताकि यहोवा परमेश्वर यथासंभव फिर कभी कुपित न हो। उनका पश्चात्ताप सच्चा और संपूर्ण था। वह उनके हृदय की गहराई से आया था और वास्तविक और स्थायी था।

एक बार जब नीनवे के लोग, राजा से लेकर प्रजा तक, यह जान गए कि यहोवा परमेश्वर उनसे क्रोधित है, तो परमेश्वर उनका अगला हर कार्य, उनका समग्र आचरण, उनका हर एक निर्णय और चुनाव स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप से देख सकता था। परमेश्वर का हृदय उनके व्यवहार के अनुसार बदल गया। उस क्षण परमेश्वर की मनःस्थिति क्या थी? बाइबल तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर दे सकती है। पवित्रशास्त्र में ये वचन दर्ज हैं: "जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।" यद्यपि परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया था, फिर भी उसकी मनःस्थिति बिलकुल भी जटिल नहीं थी। उसने अपना क्रोध व्यक्त करने के उसे शांत किया, और फिर नीनवे शहर पर विपत्ति न लाने का निर्णय लिया। परमेश्वर का निर्णय—विपत्ति से नीनवे के लोगों को बख्श देना—इतना शीघ्र होने का कारण यह है कि परमेश्वर ने नीनवे के हर व्यक्ति के हृदय का अवलोकन कर लिया था। उसने देखा कि उनके हृदय की गहराइयों में क्या है : अपने पापों के लिए उनका सच्चा पश्चात्ताप और स्वीकृति, परमेश्वर में उनका सच्चा विश्वास, उनका गहरा बोध कि कैसे उनके बुरे कार्यों ने परमेश्वर के स्वभाव को क्रोधित कर दिया, और इस वजह से यहोवा परमेश्वर से तुरंत मिलने वाले दंड से पैदा हुआ भय। साथ ही, यहोवा परमेश्वर ने उनके हृदय की गहराइयों से निकली उनकी प्रार्थनाएँ भी सुनीं, जिनमें उससे विनती की गई थी कि वह अब उन पर क्रोधित न हो, ताकि वे इस विपत्ति से बच सकें। जब परमेश्वर ने इन सभी तथ्यों का अवलोकन किया, तो धीरे-धीरे उसका क्रोध जाता रहा। चाहे उसका क्रोध पहले कितना भी विराट क्यों न रहा हो, लेकिन जब उसने इन लोगों के हृदय की गहराइयों में सच्चा पश्चात्ताप देखा, तो उसका हृदय पिघल गया, और इसलिए वह उन पर विपत्ति लाना सहन नहीं कर पाया, और उसने उन पर क्रोध करना बंद कर दिया। इसके बजाय उसने उन्हें अपनी दया

और सहनशीलता प्रदान करना जारी रखा और वह उनका मार्गदर्शन और आपूर्ति करता रहा।

यदि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सच्चा है, तो तुम अकसर उसकी देखरेख प्राप्त करोगे

नीनवे के लोगों के प्रति परमेश्वर द्वारा अपने इरादे बदलने में कोई झिझक या ऐसी चीज़ शामिल नहीं थी, जो अस्पष्ट या अज्ञात हो। बल्कि, यह शुद्ध क्रोध से शुद्ध सहनशीलता में हुआ एक रूपांतरण था। यह परमेश्वर के सार का एक सच्चा प्रकटन है। परमेश्वर अपने कार्यों में कभी अस्थिर या संकोची नहीं होता; उसके कार्यों के पीछे के सिद्धांत और उद्देश्य स्पष्ट और पारदर्शी, शुद्ध और दोषरहित होते हैं, जिनमें कोई धोखा या षड्यंत्र बिलकुल भी मिला नहीं होता। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के सार में कोई अंधकार या बुराई शामिल नहीं होती। परमेश्वर नीनवे के नागरिकों से इसलिए क्रोधित हुआ, क्योंकि उनकी दुष्टता के कार्य उसकी नज़रों में आ गए थे; उस समय उसका क्रोध उसके सार से निकला था। किंतु जब परमेश्वर का कोप जाता रहा और उसने नीनवे के लोगों पर एक बार फिर से सहनशीलता दिखाई, तो वह सब जो उसने प्रकट किया, वह भी उसका अपना सार ही था। यह संपूर्ण परिवर्तन परमेश्वर के प्रति मनुष्य के रवैये में हुए बदलाव के कारण था। इस पूरी अवधि के दौरान परमेश्वर का अनुल्लंघनीय स्वभाव नहीं बदला, परमेश्वर का सहनशील सार नहीं बदला, परमेश्वर का प्रेममय और दयालु सार नहीं बदला। जब लोग दुष्टता के काम करते हैं और परमेश्वर को ठेस पहुँचाते हैं, तो वह उन पर क्रोध करता है। जब लोग सच में पश्चात्ताप करते हैं, तो परमेश्वर का हृदय बदलता है, और उसका क्रोध थम जाता है। जब लोग हठपूर्वक परमेश्वर का विरोध करते हैं, तो उसका कोप निरंतर बना रहता है और धीरे-धीरे उन्हें तब तक दबाता रहता है, जब तक वे नष्ट नहीं हो जाते। यह परमेश्वर के स्वभाव का सार है। परमेश्वर चाहे कोप प्रकट कर रहा हो या दया और प्रेममय करुणा, यह मनुष्य के हृदय की गहराइयों में परमेश्वर के प्रति उसका आचरण, व्यवहार और रवैया ही होता है, जो यह तय करता है कि परमेश्वर के स्वभाव के प्रकाशन के माध्यम से क्या व्यक्त होगा। यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति परनिरंतर अपना क्रोध बनाए रखता है, तो निस्संदेह ऐसे व्यक्ति का हृदय परमेश्वर का विरोध करता है। चूँकि इस व्यक्ति ने कभी सच में पश्चात्ताप नहीं किया है, परमेश्वर के सम्मुख अपना सिर नहीं झुकाया है या परमेश्वर में सच्चा विश्वास नहीं रखा है, इसलिए उसने कभी परमेश्वर की दया और सहनशीलता प्राप्त नहीं की है। यदि कोई व्यक्ति अकसर परमेश्वर की देखरेख, उसकी दया और उसकी सहनशीलता प्राप्त करता है, तो निस्संदेह ऐसे व्यक्ति के हृदय में परमेश्वर के प्रति सच्चा विश्वास है, और उसका हृदय परमेश्वर के विरुद्ध नहीं है। यह व्यक्ति अकसर सच में परमेश्वर के सम्मुख पश्चात्ताप

करता है; इसलिए, भले ही परमेश्वर का अनुशासन अकसर इस व्यक्ति के ऊपर आए, पर उसका कोप नहीं आएगा।

इस संक्षिप्त विवरण से लोग परमेश्वर के हृदय को देख सकते हैं, उसके सार की वास्तविकता को देख सकते हैं, और यह देख सकते हैं कि परमेश्वर का क्रोध और उसके हृदय के बदलाव बेवजह नहीं हैं। परमेश्वर द्वारा कुपित होने और अपना मन बदल लेने पर दिखाई गई स्पष्ट विषमता के बावजूद, जिससे लोग यह मानते हैं कि परमेश्वर के सार के इन दोनों पहलुओं—उसके क्रोध और उसकी सहनशीलता—के बीच एक बड़ा अलगाव या अंतर है, नीनवे के लोगों के पश्चात्ताप के प्रति परमेश्वर का रवैया एक बार फिर से लोगों को परमेश्वर के सच्चे स्वभाव का दूसरा पहलू दिखाता है। परमेश्वर के हृदय का बदलाव मनुष्य को सच में एक बार फिर से परमेश्वर की दया और प्रेममय करुणा की सच्चाई दिखाता है, और परमेश्वर के सार का सच्चा प्रकाशन दिखाता है। मनुष्य को मानना पड़ेगा कि परमेश्वर की दया और प्रेममय करुणा मिथक नहीं हैं, न ही वे मनगढ़ंत हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उस क्षण परमेश्वर की भावना सच्ची थी, और परमेश्वर के हृदय का बदलाव सच्चा था—परमेश्वर ने वास्तव में एक बार फिर मनुष्य के ऊपर अपनी दया और सहनशीलता बरसाई थी।

नीनवे के लोगों ने अपने हृदय के सच्चे पश्चात्ताप से परमेश्वर की दया प्राप्त की और अपना परिणाम बदल लिया

क्या परमेश्वर के हृदय के बदलाव और उसके कोप में कोई विरोध था? बिलकुल नहीं! ऐसा इसलिए है, क्योंकि उस समय-विशेष पर परमेश्वर की सहनशीलता का अपना कारण था। वह कारण क्या हो सकता है? वह कारण बाइबल में दिया गया है : "प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कुमार्ग से फिर गया," और "अपने हाथों के उपद्रवी कार्यों को तज दिया।"

यह "कुमार्ग" मुट्ठीभर बुरे कार्यों को संदर्भित नहीं करता, बल्कि उस बुरे स्रोत को संदर्भित करता है, जिससे लोगों का व्यवहार उत्पन्न होता है। "अपने कुमार्ग से फिर जाने" का अर्थ है कि ऐसे लोग ये कार्य दोबारा कभी नहीं करेंगे। दूसरे शब्दों में, वे दोबारा कभी इस बुरे तरीके से व्यवहार नहीं करेंगे; उनके कार्यों का तरीका, स्रोत, उद्देश्य, इरादा और सिद्धांत सब बदल चुके हैं; वे अपने मन को आनंदित और प्रसन्न करने के लिए दोबारा कभी उन तरीकों और सिद्धांतों का उपयोग नहीं करेंगे। "हाथों के उपद्रव को

त्याग देना" में "त्याग देना" का अर्थ है छोड़ देना या दूर करना, अतीत से पूरी तरह से नाता तोड़ लेना और कभी वापस न मुड़ना। जब नीनवे के लोगों ने हिंसा त्याग दी, तो इससे उनका सच्चा पश्चात्ताप सिद्ध हो गया। परमेश्वर लोगों के बाहरी रूप के साथ-साथ उनका हृदय भी देखता है। जब परमेश्वर ने नीनवे के लोगों का हृदय सच्चा पश्चात्ताप देखा जिसमें कोई सवाल नहीं थे, और यह भी देखा कि वे अपने कुमार्गों से फिर गए हैं और उन्होंने हिंसा त्याग दी है, तो उसने अपना मन बदल लिया। कहने का तात्पर्य है कि इन लोगों के आचरण, व्यवहार और कार्य करने के विभिन्न तरीकों ने, और साथ ही उनके हृदय में पापों की सच्ची स्वीकृति और पश्चात्ताप ने परमेश्वर को अपना मन बदलने, अपने इरादे बदलने, अपना निर्णय वापस लेने, और उन्हें दंड न देने या नष्ट न करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, नीनवे के लोगों ने अपने लिए एक अलग परिणाम प्राप्त किया। उन्होंने अपने जीवन को छुड़ाया और साथ ही परमेश्वर की दया और सहनशीलता प्राप्त कर ली, और इस मुकाम पर परमेश्वर ने भी अपना कोप वापस ले लिया।

परमेश्वर की करुणा और सहनशीलता दुर्लभ नहीं है—बल्कि मनुष्य का सच्चा पश्चात्ताप दुर्लभ है

परमेश्वर नीनवे के लोगों से चाहे जितना भी क्रोधित रहा हो, लेकिन जैसे ही उन्होंने उपवास की घोषणा की और टाट ओढ़कर राख पर बैठ गए, वैसे ही उसका हृदय नरम होने लगा, और उसने अपना मन बदलना शुरू कर दिया। जब उसने घोषणा की कि वह उनके नगर को नष्ट कर देगा—उनके द्वारा अपने पाप स्वीकार करने और पश्चात्ताप करने से पहले के क्षण तक भी—परमेश्वर उनसे क्रोधित था। लेकिन जब वो लोग लगातार पश्चात्ताप के कार्य करते रहे, तो नीनवे के लोगों के प्रति परमेश्वर का कोप धीरे-धीरे उनके प्रति दया और सहनशीलता में बदल गया। एक ही घटना में परमेश्वर के स्वभाव के इन दो पहलुओं के एक-साथ प्रकाशन में कोई विरोध नहीं है। तो विरोध के न होने को कैसे समझना और जानना चाहिए? नीनवे के लोगों द्वारा पश्चात्ताप करने पर परमेश्वर ने एक के बाद एक ये दो एकदम विपरीत सार व्यक्त और प्रकाशित किए, जिससे लोगों को परमेश्वर के सार की वास्तविकता और अनुल्लंघनीयता देखी। परमेश्वर ने लोगों को निम्नलिखित बातें बताने के लिए अपने रवैये का उपयोग किया : ऐसा नहीं है कि परमेश्वर लोगों को बरदाश्त नहीं करता, या वह उन पर दया नहीं दिखाना चाहता; बल्कि वे कभी परमेश्वर के सामने सच्चा पश्चात्ताप नहीं करते, और उनका सच में अपने कुमार्ग को छोड़ना और हिंसा त्यागना बहुत मुश्किल है। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर मनुष्य से क्रोधित होता है, तो वह आशा करता है कि मनुष्य सच में पश्चात्ताप करेगा, दरअसल वह मनुष्य का सच्चा पश्चात्ताप देखना चाहता है, और उस दशा में वह मनुष्य

पर उदारता से अपनी दया और सहनशीलता बरसाता रहेगा। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य का बुरा आचरण परमेश्वर के कोप को जन्म देता है, जबकि परमेश्वर की दया और सहनशीलता उन लोगों पर बरसती है, जो परमेश्वर की बात सुनते हैं और उसके सम्मुख वास्तव में पश्चात्ताप करते हैं, जो कुमार्ग छोड़कर हिंसा त्याग देते हैं। नीनवे के लोगों के प्रति परमेश्वर के व्यवहार में उसका रवैया बहुत साफ तौर पर प्रकट हुआ था : परमेश्वर की दया और सहनशीलता प्राप्त करना बिलकुल भी कठिन नहीं है; और वह इंसान से सच्चा पश्चात्ताप चाहता है। यदि लोग कुमार्ग छोड़कर हैं हिंसा त्याग देते हैं, तो परमेश्वर उनके प्रति अपना हृदय और रवैया बदल लेता है।

सृष्टिकर्ता का धार्मिक स्वभाव वास्तविक और स्पष्ट है

जब नीनवे के लोगों के प्रति परमेश्वर का हृदय-परिवर्तन हुआ, तो क्या उसकी दया और सहनशीलता एक दिखावा थी? बिलकुल नहीं! तो फिर परमेश्वर द्वारा इस एक स्थिति से निपटने के दौरान उसके स्वभाव के इन दो पहलुओं के बीच बदलाव से क्या दिखाया गया है? परमेश्वर का स्वभाव पूरी तरह से संपूर्ण है—वह बिलकुल भी विभाजित नहीं है। चाहे वह लोगों पर कोप प्रकट कर रहा हो या दया और सहनशीलता दिखा रहा हो, ये सब उसके धार्मिक स्वभाव की अभिव्यक्तियाँ हैं। परमेश्वर का स्वभाव महत्त्वपूर्ण और एकदम स्पष्ट है, वह अपने विचार और रवैये चीज़ों के विकसित होने के हिसाब से बदलता है। नीनवे के लोगों के प्रति उसके रवैये का रूपांतरण मनुष्य को बताता है कि उसके अपने विचार और युक्तियाँ हैं; वह कोई मशीन या मिट्टी का पुतला नहीं है, बल्कि स्वयं जीवित परमेश्वर है। वह नीनवे के लोगों से क्रोधित हो सकता था, वैसे ही जैसे उनके रवैये के कारण उसने उनके अतीत को क्षमा किया था। वह नीनवे के लोगों के ऊपर दुर्भाग्य लाने का निर्णय ले सकता था, और उनके पश्चात्ताप के कारण वह अपना निर्णय बदल भी सकता था। लोग नियमों को कठोरता से लागू करना, और ऐसे नियमों का परमेश्वर को सीमांकित और परिभाषित करने के लिए उपयोग करना पसंद करते हैं, वैसे ही जैसे वे परमेश्वर के स्वभाव को समझने के लिए सूत्रों का उपयोग करना पसंद करते हैं। इसलिए, जहाँ तक मानवीय विचारों के दायरे का संबंध है, परमेश्वर न तो सोचता है, न ही उसके पास कोई ठोस विचार हैं। वास्तव में परमेश्वर के विचार चीज़ों और वातावरण में परिवर्तन के अनुसार निरंतर रूपांतरण की स्थिति में रहते हैं। जब ये विचार रूपांतरित हो रहे होते हैं, तब परमेश्वर के सार के विभिन्न पहलू प्रकट हो रहे होते हैं। रूपांतरण की इस प्रक्रिया के दौरान, ठीक उसी क्षण, जब परमेश्वर अपना मन बदलता है, तब वह मानवजाति को अपने जीवन का वास्तविक

अस्तित्व दिखाता है और यह भी दिखाता है कि उसका धार्मिक स्वभाव गतिशील जीवन-शक्ति से भरा है। उसी समय, परमेश्वर मानवजाति के सामने अपने कोप, अपनी दया, अपनी प्रेममय करुणा और अपनी सहनशीलता के अस्तित्व की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए अपने सच्चे प्रकाशनों का उपयोग करता है। उसका सार चीज़ों के विकसित होने के ढंग के अनुसार किसी भी समय और स्थान पर प्रकट हो सकता। उसमें एक सिंह का कोप और एक माता की ममता और सहनशीलता है। उसका धार्मिक स्वभाव किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रश्न किए जाने, उल्लंघन किए जाने, बदले जाने या तोड़े-मरोड़े जाने की अनुमति नहीं देता। समस्त मामलों और सभी चीज़ों में परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव, अर्थात् परमेश्वर का कोप और उसकी दया, किसी भी समय और स्थान पर प्रकट हो सकती है। वह समस्त सृष्टि के प्रत्येक कोने में इन पहलुओं को मार्मिक अभिव्यक्ति देता है, और हर गुज़रते पल में उन्हें जीवंतता के साथ लागू करता है। परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव समय या स्थान द्वारा सीमित नहीं है; दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव समय या स्थान की बाधाओं के अनुसार यांत्रिक रूप से व्यक्त या प्रकाशित नहीं होता, बल्कि, किसी भी समय और स्थान पर बिल्कुल आसानी से व्यक्त और प्रकाशित होता है। जब तुम परमेश्वर को अपना मन बदलते और अपने कोप को थामते और नीनवे के लोगों का नाश करने से पीछे हटते हुए देखते हो, तो क्या तुम कह सकते हो कि परमेश्वर केवल दयालु और प्रेमपूर्ण है? क्या तुम कह सकते हो कि परमेश्वर का कोप खोखले वचनों से युक्त है? जब परमेश्वर प्रचंड कोप प्रकट करता है और अपनी दया वापस ले लेता है, तो क्या तुम कह सकते हो कि वह मनुष्यों के प्रति सच्चा प्रेम महसूस नहीं करता? यह प्रचंड कोप परमेश्वर द्वारा लोगों के बुरे कार्यों के प्रत्युतर में व्यक्त किया जाता है; उसका कोप दोषपूर्ण नहीं है। परमेश्वर का हृदय लोगों के पश्चात्ताप से द्रवित हो जाता है, और यह पश्चात्ताप ही उसका हृदय-परिवर्तन करवाता है। जब वह द्रवित महसूस करता है, जब उसका हृदय-परिवर्तन होता है, और जब वह मनुष्य के प्रति अपनी दया और सहनशीलता दिखाता है, तो ये सब पूरी तरह से दोषमुक्त होते हैं; ये स्वच्छ, शुद्ध, निष्कलंक और मिलावट-रहित हैं। परमेश्वर की सहनशीलता ठीक वही है : सहनशीलता, जैसे कि उसकी दया सिवाय दया के कुछ नहीं है। उसका स्वभाव मनुष्य के पश्चात्ताप और उसके आचरण में भिन्नता के अनुसार कोप या दया और सहनशीलता प्रकाशित करता है। चाहे वह कुछ भी प्रकाशित या व्यक्त करता हो, वह सब पवित्र और प्रत्यक्ष है; उसका सार सृष्टि की किसी भी चीज़ से अलग है। जब परमेश्वर अपने कार्यों में निहित सिद्धांतों को व्यक्त करता है, तो वे किसी भी त्रुटि या दोष से मुक्त होते हैं, और ऐसे ही उसके विचार, उसकी

योजनाएँ और उसके द्वारा लिया जाने वाला हर निर्णय और उसके द्वारा किया जाने वाला हर कार्य है। चूँकि परमेश्वर ने ऐसा निर्णय लिया है और चूँकि उसने इस तरह कार्य किया है, इसलिए इसी तरह से वह अपने उपक्रम भी पूरे करता है। उसके उपक्रमों के परिणाम सही और दोषरहित इसलिए होते हैं, क्योंकि उनका स्रोत दोषरहित और निष्कलंक है। परमेश्वर का कोप दोषरहित है। इसी प्रकार, परमेश्वर की दया और सहनशीलता—जो पूरी सृष्टि में किसी के पास नहीं हैं—पवित्र एवं निर्दोष हैं और विचारपूर्ण विवेचना और अनुभव पर खरी उतर सकती हैं।

नीनवे की कहानी की अपनी समझ के माध्यम से, क्या तुम लोग अब परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के सार का दूसरा पक्ष देखते हो? क्या तुम परमेश्वर के अद्वितीय धार्मिक स्वभाव का दूसरा पक्ष देखते हो? क्या मनुष्यों में से किसी का इस प्रकार का स्वभाव है? क्या किसी में इस प्रकार का कोप, परमेश्वर का कोप, है? क्या किसी में वैसी दया और सहनशीलता है, जैसी परमेश्वर में है? सृष्टि में ऐसा कौन है, जो इतना बड़ा कोप कर सकता है और मानवजाति को नष्ट करने या उस पर विपत्ति लाने का निर्णय ले सकता है? मनुष्य पर दया करने, उसे सहन करने, क्षमा करने, और परिणामस्वरूप मनुष्य को नष्ट करने का अपना पिछला निर्णय बदलने योग्य कौन है? सृष्टिकर्ता अपना धार्मिक स्वभाव अपनी अनोखी पद्धतियों और सिद्धांतों के माध्यम से प्रकट करता है; वह किन्हीं लोगों, घटनाओं या चीज़ों द्वारा थोपे गए नियंत्रण या प्रतिबंधों के अधीन नहीं है। उसके अद्वितीय स्वभाव के कारण कोई उसके विचारों और युक्तियों को बदलने में सक्षम नहीं है, न ही कोई उसे मनाने और उसका कोई निर्णय बदलने में सक्षम है। समस्त सृष्टि में विद्यमान व्यवहार और विचारों की संपूर्णता उसके धार्मिक स्वभाव के न्याय के अधीन रहती है। वह कोप करे या दया, इसे कोई भी नियंत्रित नहीं कर सकता; केवल सृष्टिकर्ता का सार—या दूसरे शब्दों में, सृष्टिकर्ता का धार्मिक स्वभाव—ही यह तय कर सकता है। ऐसी है सृष्टिकर्ता के धार्मिक स्वभाव की अद्वितीय प्रकृति!

नीनवे के लोगों के प्रति परमेश्वर के रवैये में हुए रूपांतरण का विश्लेषण करने और उसे समझने से क्या तुम लोग परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव में पाई जाने वाली दया का वर्णन करने के लिए "अद्वितीय" शब्द का उपयोग कर सकते हो? हमने पहले कहा कि परमेश्वर का कोप उसके अद्वितीय धार्मिक स्वभाव के सार का एक पहलू है। अब मैं दो पहलुओं—परमेश्वर का कोप और परमेश्वर की दया—को उसके धार्मिक स्वभाव के रूप में परिभाषित करूँगा। परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव पवित्र है; वह उल्लंघन या प्रश्न किया जाना सहन नहीं करता; वह चीज़ किसी भी सृजित या गैर-सृजित प्राणी के पास नहीं है। वह परमेश्वर के

लिए अद्वितीय और अनन्य दोनों है। कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर का कोप पवित्र और अनुल्लंघनीय है। इसी प्रकार, परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का दूसरा पहलू—परमेश्वर की दया—भी पवित्र है और उसका भी उल्लंघन नहीं किया जा सकता। सृजित या गैर-सृजित प्राणियों में से कोई भी परमेश्वर के कार्यों में उसका स्थान नहीं ले सकता या उसका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, और न ही कोई सदोम के विनाश या नीनवे के उद्धार में परमेश्वर का स्थान ले सकता था या उसका प्रतिनिधित्व कर सकता था। यह परमेश्वर के अद्वितीय धार्मिक स्वभाव की सच्ची अभिव्यक्ति है।

मानवजाति के प्रति सृष्टिकर्ता की सच्ची भावनाएँ

लोग अक्ससर कहते हैं कि परमेश्वर को जानना आसान बात नहीं है। किंतु मैं कहता हूँ कि परमेश्वर को जानना बिल्कुकुल भी कठिन बात नहीं है, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य को बार-बार अपने कर्म दिखाता है। परमेश्वर ने कभी भी मनुष्य के साथ संवाद करना बंद नहीं किया है, और न ही उसने कभी अपने आपको मनुष्य से गुप्त रखा है, न उसने स्वयं को छिपाया है। उसके विचार, उसकी युक्तियाँ, उसके वचन और उसके कर्म सब मानवजाति के सामने हैं। इसलिए, यदि मनुष्य परमेश्वर को जानना चाहता है, तो वह सभी प्रकार के साधनों और पद्धतियों के जरिये उसे समझ और जान सकता है। मनुष्य के आँख मूँदकर यह सोचने की वजह कि परमेश्वर ने जानबूझकर खुद को मनुष्य से छिपाया है, कि उसका कोई इरादा नहीं है कि मनुष्य परमेश्वर को समझे या जाने, यह है कि मनुष्य नहीं जानता कि परमेश्वर कौन है, और न ही वह परमेश्वर को समझना चाहता है। इससे भी बढ़कर, मनुष्य सृष्टिकर्ता के विचारों, वचनों या कर्मों की परवाह नहीं करता...। सच कहूँ तो, यदि कोई व्यक्ति सृष्टिकर्ता के वचनों या कर्मों पर ध्यान केंद्रित करने और उन्हें समझने के लिए सिर्फ अपने खाली समय का उपयोग करे, और यदि वह सृष्टिकर्ता के विचारों और उसके हृदय की वाणी पर थोड़ा-सा ध्यान दे, तो उसे यह महसूस करने में कठिनाई नहीं होगी कि सृष्टिकर्ता के विचार, वचन और कर्म दृष्टिगोचर और पारदर्शी हैं। इसी प्रकार, यह महसूस करने में बस थोड़ा-सा प्रयास लगेगा कि सृष्टिकर्ता हर समय मनुष्य के मध्य है, कि वह हमेशा मनुष्य और संपूर्ण सृष्टि के साथ वार्तालाप करता रहता है, वह प्रतिदिन नए कर्म कर रहा है। उसका सार और स्वभाव मनुष्य के साथ उसके संवाद में व्यक्त होते हैं; उसके विचार और युक्तियाँ पूरी तरह से उसके कर्मों में प्रकट होते हैं; वह हर समय मनुष्य के साथ रहता है और उसका अवलोकन करता है। वह ख़ामोशी से अपने मौन वचनों के साथ मानवजाति और समूची सृष्टि से बोलता है : मैं स्वर्ग में हूँ, और मैं अपनी सृष्टि के मध्य हूँ। मैं रखवाली कर

रहा हूँ, मैं इंतज़ार कर रहा हूँ; मैं तुम्हारे साथ हूँ...। उसके हाथों में गर्मजोशी है और वे मजबूत हैं, उसके कदम हलके हैं, उसकी आवाज़ कोमल और शिष्ट है; उसका स्वरूप समूची मानवजाति को आगोश में भरता हुआ हमारे पास से होकर गुज़र जाता है और मुड़ जाता है; उसका मुख सुंदर और सौम्य है। वह कभी हमें छोड़कर नहीं गया, कभी विलुप्त नहीं हुआ। रात-दिन, वह मानवजाति का निरंतर साथी है, उसका साथ कभी नहीं छोड़ता। मनुष्यों के लिए उसकी समर्पित देखभाल, विशेष स्नेह, मनुष्य के लिए उसकी सच्ची चिंता और प्रेम उस समय धीरे-धीरे प्रकट हुआ, जब उसने नीनवे के नगर को बचाया। विशेष रूप से, यहोवा परमेश्वर और योना के बीच के संवाद ने उस मानवजाति के लिए सृष्टिकर्ता की दया खुलकर प्रकट की, जिसे स्वयं उसने रचा था। इन वचनों से, तुम मनुष्यों के प्रति परमेश्वर की सच्ची भावनाओं की एक गहरी समझ हासिल कर सकते हो...

योना की पुस्तक 4:10-11 में निम्नलिखित अंश दर्ज किया गया है : "तब यहोवा ने कहा, 'जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नष्ट भी हुआ; उस पर तू ने तरस खाई है। फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हज़ार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने बाएँ हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत से घरेलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?'" ये यहोवा परमेश्वर के वास्तविक वचन हैं, जो उसके और योना के बीच हुए वार्तालाप से दर्ज किए गए हैं। यद्यपि यह संवाद संक्षिप्त है, फिर भी यह मानवजाति के प्रति सृष्टिकर्ता की परवाह और उसे त्यागने की उसकी अनिच्छा से भरा हुआ है। ये वचन उस सच्चे रवैये और भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जो परमेश्वर अपनी सृष्टि के लिए अपने हृदय में रखता है। इन वचनों के जरिये, जो इतने स्पष्ट और सटीक हैं कि मनुष्य ने शायद ही कभी ऐसे स्पष्ट और सटीक वचन सुने हों, परमेश्वर मनुष्यों के प्रति अपने सच्चे इरादे बताता है। यह संवाद नीनवे के लोगों के प्रति परमेश्वर के रवैये को दर्शाता है—किंतु यह किस प्रकार का रवैया है? यह वह रवैया है, जिसे परमेश्वर ने नीनवे के लोगों के प्रति उनके पश्चात्ताप से पहले और बाद में अपनाया, और वह रवैया, जिससे वह मानवजाति के साथ व्यवहार करता है। इन वचनों में उसके विचार और उसका स्वभाव है।

इन वचनों में परमेश्वर के कौन-से विचार प्रकट हुए हैं? यदि पढ़ते समय तुम विवरण पर ध्यान दो, तो तुम्हारे लिए यह समझना मुश्किल नहीं होगा कि वह "तरस" शब्द का प्रयोग करता है; इस शब्द का उपयोग मानवजाति के प्रति परमेश्वर के सच्चे रवैये को दर्शाता है।

शाब्दिक अर्थ के स्तर पर लोग "तरस" शब्द की व्याख्या विभिन्न प्रकार से कर सकते हैं : पहले, इसका अर्थ है "प्रेम करना और रक्षा करना, किसी चीज़ के प्रति नरमी महसूस करना"; दूसरे, इसका अर्थ है "अत्यधिक प्रेम करना"; और अंत में, इसका अर्थ है "किसी को चोट पहुँचाने का इच्छुक न होना और कैसा करके सहन न पाना।" संक्षेप में, इस शब्द का अर्थ है कोमल स्नेह और प्रेम, और साथ ही साथ किसी व्यक्ति या वस्तु को छोड़ने की अनिच्छा; इसका अर्थ है मनुष्य के प्रति परमेश्वर की दया और सहनशीलता। परमेश्वर ने इस शब्द का उपयोग किया, जो मनुष्यों द्वारा आम तौर पर बोला जाने वाला शब्द है, किंतु यह मानवजाति के प्रति परमेश्वर के हृदय की वाणी और उसके रवैये को प्रकट करने में भी सक्षम है।

यद्यपि नीनवे का नगर ऐसे लोगों से भरा हुआ था, जो सदोम के लोगों के समान ही भ्रष्ट, बुरे और हिंसक थे, किंतु उनके पश्चात्ताप के कारण परमेश्वर का मन बदल गया और उसने उन्हें नष्ट न करने का निर्णय लिया। चूँकि परमेश्वर के वचनों और निर्देशों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया ने एक ऐसे रवैये का प्रदर्शन किया, जो सदोम के नागरिकों के रवैये के बिलकुल विपरीत था, और परमेश्वर के प्रति उनके सच्चे समर्पण और अपने पापों के लिए उनके सच्चे पश्चात्ताप, और साथ ही साथ हर लिहाज से उनके सच्चे और हार्दिक व्यवहार के कारण, परमेश्वर ने एक बार फिर उन पर अपनी हार्दिक करुणा दिखाई और उन्हें अपनी करुणा प्रदान की। परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दी जाने वाली चीज़ें और उसकी करुणा की नकल कर पाना किसी के लिए भी संभव नहीं है, और परमेश्वर की दया, उसकी सहनशीलता, या किसी भी व्यक्ति में मनुष्य के प्रति परमेश्वर की सच्ची भावनाएँ होना असंभव है। क्या कोई है, जिसे तुम महान पुरुष या स्त्री मानते हो, या कोई अतिमानव मानते हो, जो एक ऊँचे मुकाम से, एक महान पुरुष या स्त्री के रूप में, या सबसे ऊँचे मुकाम पर बोलते हुए, मानवजाति या सृष्टि के लिए इस प्रकार का कथन कहेगा? मनुष्यों में से कौन मानव-जीवन की स्थितियों को भली-भाँति जान सकता है? कौन मनुष्य के अस्तित्व का दायित्व और ज़िम्मेदारी उठा सकता है? कौन किसी नगर के विनाश की घोषणा करने के योग्य है? और कौन किसी नगर को क्षमा करने के योग्य है? कौन कह सकता है कि वह अपनी सृष्टि को सँजोता है? केवल सृष्टिकर्ता! केवल सृष्टिकर्ता में ही इस मानवजाति के लिए कोमलता है। केवल सृष्टिकर्ता ही इस मानवजाति के लिए करुणा और स्नेह दिखाता है। केवल सृष्टिकर्ता ही इस मानवजाति के प्रति सच्चा, अटूट स्नेह रखता है। इसी प्रकार, केवल सृष्टिकर्ता ही इस मानवजाति पर दया कर सकता है और अपनी संपूर्ण सृष्टि को सँजो सकता है। उसका हृदय मनुष्य के हर कार्य पर उछलता और पीड़ित होता है : वह मनुष्य की दुष्टता और भ्रष्टता पर

क्रोधित, परेशान और दुखी होता है; वह मनुष्य के पश्चात्ताप और विश्वास से प्रसन्न, आनंदित, क्षमाशील और उल्लसित होता है; उसका हर एक विचार और अभिप्राय मानवजाति के अस्तित्व के लिए है और उसी के इर्द-गिर्द घूमता है; उसका स्वरूप पूरी तरह से मानवजाति के वास्ते प्रकट होता है; उसकी संपूर्ण भावनाएँ मानवजाति के अस्तित्व के साथ गुथी हैं। मनुष्य के वास्ते वह भ्रमण करता है और यहाँ-वहाँ भागता है; वह खामोशी से अपने जीवन का कतरा-कतरा दे देता है; वह अपने जीवन का हर पल-पल अर्पित कर देता है...। उसने कभी नहीं जाना कि अपने ही जीवन पर किस प्रकार दया करे है, किंतु उसने हमेशा उस मानवजाति को सँजोया है, जिसकी रचना जिसे उसने स्वयं की है ...। वह अपना सब-कुछ इस मानवजाति को दे देता है...। वह बिना किसी शर्त के और बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा के अपनी दया और सहनशीलता प्रदान करता है। वह ऐसा सिर्फ इसलिए करता है, ताकि मानवजाति उससे जीवन का पोषण प्राप्त करते हुए उसकी नज़रों के सामने निरंतर जीवित रह सके; वह ऐसा सिर्फ इसलिए करता है, ताकि मानवजाति एक दिन उसके सम्मुख समर्पित हो जाए और यह जान जाए कि वही मुनष्य के अस्तित्व का पोषण करता है और समूची सृष्टि के जीवन की आपूर्ति करता है।

सृष्टिकर्ता मनुष्य के लिए अपनी सच्ची भावनाएँ प्रकट करता है

यहोवा परमेश्वर और योना के बीच का यह वार्तालाप निस्संदेह मनुष्य के लिए सृष्टिकर्ता की सच्ची भावनाओं की एक अभिव्यक्ति है। एक ओर यह लोगों को सृष्टिकर्ता की संप्रभुता के अधीन विद्यमान संपूर्ण सृष्टि के संबंध में उसकी समझ के बारे में सूचित करता है; जैसा कि यहोवा परमेश्वर ने कहा था : "फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हज़ार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने बाएँ हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत से घरेलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?" दूसरे शब्दों में, नीनवे के संबंध में परमेश्वर की समझ सतही बिल्कुल नहीं थी। वह न केवल नगर में रहने वाले जीवित प्राणियों (लोगों और मवेशियों समेत) की संख्या जानता था, बल्कि यह भी जानता था कि कितने लोग अपने दाहिने-बाएँ हाथों का भेद नहीं पहचानते—अर्थात् कितने बच्चे और युवा वहाँ मौजूद थे। यह मानवजाति के संबंध में परमेश्वर की व्यापक समझ का एक ठोस प्रमाण है। दूसरी ओर, यह वार्तालाप लोगों को मनुष्य के प्रति परमेश्वर के रवैये, अर्थात् सृष्टिकर्ता के हृदय में मनुष्य के महत्त्व के संबंध में सूचित करता है। यह वैसा ही है, जैसा यहोवा परमेश्वर ने कहा था : "जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नष्ट भी हुआ; उस पर तू ने तरस खाई है। फिर यह

बड़ा नगर नीनवे ... तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?" ये योना के प्रति यहोवा परमेश्वर की भर्त्सना के वचन हैं, किंतु ये सब सत्य हैं।

यद्यपि योना को नीनवे के लोगों के लिए यहोवा परमेश्वर के वचनों की घोषणा का काम सौंपा गया था, किंतु उसने यहोवा परमेश्वर के इरादों को नहीं समझा, न ही उसने नगर के लोगों के लिए उसकी चिंताओं और अपेक्षाओं को समझा। इस फटकार से परमेश्वर उसे यह बताना चाहता था कि मनुष्य उसके अपने हाथों की रचना है, और उसने प्रत्येक व्यक्ति के लिए कठिन प्रयास किया है, प्रत्येक व्यक्ति अपने कंधों पर परमेश्वर की अपेक्षाएँ लिए हुए है, और प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के जीवन की आपूर्ति का आनंद लेता है; प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर ने भारी कीमत चुकाई है। इस फटकार ने योना को यह भी बताया कि परमेश्वर मनुष्य को सँजोता है, जो उसके हाथों की रचना है, वैसे ही जैसे योना स्वयं कद्दू को सँजोता था। परमेश्वर किसी भी कीमत पर, या अंतिम क्षण तक, मनुष्य को आसानी से नहीं त्यागेगा; खासकर इसलिए, क्योंकि नगर में बहुत सारे बच्चे और निरीह मवेशी थे। परमेश्वर की सृष्टि के इन युवा और मासूम प्राणियों से व्यवहार करते समय, जो अपने दाएँ-बाएँ हाथों का भेद भी नहीं पहचानते थे, यह और भी कम समझ में आने वाला था कि परमेश्वर इतनी जल्दबाज़ी में उनका जीवन समाप्त कर देगा और उनका परिणाम निर्धारित कर देगा। परमेश्वर उन्हें बढ़ते हुए देखना चाहता था; उसे आशा थी कि वे उन्हीं मार्गों पर नहीं चलेंगे जिन पर उनके पूर्वज चले थे, उन्हें दोबारा यहोवा परमेश्वर की चेतावनी नहीं सुननी पड़ेगी, और वे नीनवे के अतीत की गवाही देंगे। और तो और, परमेश्वर ने नीनवे द्वारा पश्चात्ताप किए जाने के बाद उसे देखने, नीनवे के पश्चात्ताप के बाद उसके भविष्य को देखने, और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से, नीनवे को एक बार फिर अपनी दया के अधीन जीते हुए देखने की आशा की थी। इसलिए, परमेश्वर की नज़र में सृष्टि के वे प्राणी, जो अपने दाएँ-बाएँ हाथों का भेद भी नहीं जान सकते थे, नीनवे का भविष्य थे। वे नीनवे के घृणित अतीत की ज़िम्मेदारी लेंगे, वैसे ही जैसे वे नीनवे के अतीत और यहोवा परमेश्वर के मार्गदर्शन के अधीन उसके भविष्य, दोनों की गवाही देने के महत्वपूर्ण कर्तव्य की ज़िम्मेदारी लेंगे। अपनी सच्ची भावनाओं की इस घोषणा में यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य के लिए सृष्टिकर्ता की दया को उसकी संपूर्णता में प्रस्तुत किया। इसने मनुष्य को दिखाया कि "सृष्टिकर्ता की दया" कोई खोखला वाक्यांश नहीं है, न ही यह कोई खोखला वादा है; इसमें ठोस सिद्धांत, पद्धतियाँ और उद्देश्य हैं। परमेश्वर सच्चा और वास्तविक है, और वह किसी झूठ या स्वाँग का उपयोग नहीं करता, और इसी तरह उसकी दया मनुष्य को हर समय

और हर युग में निरंतर प्रदान की जाती है। फिर भी, आज तक, योना के साथ सृष्टिकर्ता का संवाद इस बारे में उसका एकमात्र, अनन्य मौखिक कथन है कि वह मनुष्य पर दया क्यों करता है, वह मनुष्य पर दया कैसे करता है, वह मनुष्य के प्रति कितना सहनशील है और मनुष्य के प्रति उसकी सच्ची भावनाएँ क्या हैं। इस वार्तालाप के दौरान यहोवा परमेश्वर के संक्षिप्त वचन संपूर्ण मानवजाति के प्रति उसके विचारों को अभिव्यक्त करते हैं; वे मानवजाति के प्रति परमेश्वर के हृदय के रवैये की सच्ची अभिव्यक्ति हैं, और वे मानवजाति पर प्रचुर मात्रा में दया करने का ठोस सबूत भी हैं। उसकी दया न केवल मनुष्य की वृद्ध पीढ़ियों को प्रदान की जाती है; बल्कि वह मानवजाति के युवा सदस्यों को भी दी जाती है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, जैसा हमेशा से होता आया है। यद्यपि परमेश्वर का कोप कुछ निश्चित जगहों पर और कुछ निश्चित युगों में मानवजाति पर बार-बार उतरता है, किंतु उसकी दया कभी खत्म नहीं हुई है। अपनी दया से वह अपनी सृष्टि की एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी का मार्गदर्शन और अगुआई करता है, वह सृष्टि की एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी की आपूर्ति एवं पालन-पोषण करता है, क्योंकि मनुष्य के प्रति उसकी सच्ची भावनाएँ कभी नहीं बदलेंगी। जैसा कि यहोवा परमेश्वर ने कहा : "तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?" उसने सदैव अपनी सृष्टि को सँजोया है। यह सृष्टिकर्ता के धार्मिक स्वभाव की दया है, और यह सृष्टिकर्ता की पूर्ण अद्वितीयता भी है।

पाँच प्रकार के लोग

फिलहाल मैं परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के संबंध में हमारी सहभागिता को यहीं छोड़ता हूँ। आगे मैं परमेश्वर के संबंध में उसके अनुयायियों की समझ और उसके धार्मिक स्वभाव के संबंध में उनकी समझ और अनुभव के अनुसार उनका विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण करूँगा, ताकि तुम लोग उस अवस्था को जान सको, जिसमें तुम लोग वर्तमान में हो, और साथ ही तुम लोग अपने वर्तमान आध्यात्मिक कद को भी जान सको। लोगों के परमेश्वर संबंधी ज्ञान और उसके धार्मिक स्वभाव की उनकी समझ के अनुसार लोगों की विभिन्न अवस्थाओं और उनके आध्यात्मिक कद को सामान्यत: पाँच प्रकारों में बाँटा जा सकता है। इस विषय को अद्वितीय परमेश्वर और उसके धार्मिक स्वभाव को जानने के आधार पर प्रतिपादित किया गया है। इसलिए, निम्नलिखित विषयवस्तु को पढ़ते हुए तुम लोगों को ध्यानपूर्वक यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि तुम्हारे अंदर परमेश्वर की अद्वितीयता और उसके धार्मिक स्वभाव के संबंध में वास्तव में कितनी समझ और ज्ञान है, और फिर तुम्हें इसका उपयोग यह आँकने के लिए करना चाहिए कि तुम लोग

वास्तव में किस अवस्था में हो, तुम लोगों का आध्यात्मिक कद वास्तव में कितना बड़ा है, और तुम लोग वास्तव में किस प्रकार के व्यक्ति हो।

पहला प्रकार : कपड़े में लिपटे हुए नवजात शिशु की अवस्था

"कपड़े में लिपटे हुए नवजात शिशु" से क्या तात्पर्य है? कपड़े में लिपटा हुआ नवजात शिशु एक ऐसा शिशु है, जो संसार में अभी आया ही है, एक नया जन्मा बच्चा होता है। यह तब होता है, जब लोग बिलकुल अपरिपक्व होते हैं।

इस अवस्था के लोगों में परमेश्वर में विश्वास के मामलों को लेकर मूलत: कोई जागरूकता और चेतना नहीं होती। वे हर चीज़ के बारे में भ्रमित और अनजान होते हैं। हो सकता है, इन लोगों ने लंबे समय से परमेश्वर पर विश्वास किया हो, या हो सकता है, बहुत लंबे समय से बिलकुल भी न किया हो, किंतु उनकी भ्रम और अज्ञानता की स्थिति और उनका वास्तविक आध्यात्मिक कद उन्हें कपड़े में लिपटे हुए एक नवजात शिशु की अवस्था के अंतर्गत रखता हो। कपड़े में लिपटे हुए एक नवजात शिशु की स्थितियों की सटीक परिभाषा इस प्रकार है : इस प्रकार के लोगों ने चाहे कितने भी लंबे समय से परमेश्वर में विश्वास किया हो, वे हमेशा नासमझ, भ्रमित और सरलचित्त होंगे; वे नहीं जानते कि वे परमेश्वर में क्यों विश्वास करते हैं, न ही वे यह जानते हैं कि परमेश्वर कौन है या कौन परमेश्वर है? यद्यपि वे परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, फिर भी उनके हृदय में परमेश्वर की कोई सटीक परिभाषा नहीं होती, और वे यह तय नहीं कर पाते कि वे जिसका अनुसरण करते हैं, वह परमेश्वर है या नहीं, और इसकी तो बात ही छोड़ दो कि उन्हें सच में परमेश्वर पर विश्वास और उसका अनुसरण करना चाहिए या नहीं। इस प्रकार के व्यक्तियों की यही वास्तविक स्थिति है। इन लोगों के विचार धुँधले होते हैं, और सरल शब्दों में कहूँ तो, उनका विश्वास गड़बड़ होता है। वे हमेशा संभ्रम और शून्यता की स्थिति में रहते हैं; "नासमझी, भ्रम और सीधापन" उनकी अवस्था का सारांश प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने न तो कभी परमेश्वर के अस्तित्व को देखा होता है, न ही महसूस किया होता है, और इसलिए, उनसे परमेश्वर को जानने के बारे में बात करना भैंस के आगे बीन बजाने जैसा होता है—वे न तो उसे समझेंगे और न ही उसे स्वीकार करेंगे। उनके लिए परमेश्वर को जानना एक अति काल्पनिक कहानी सुनने जैसा होता है। हो सकता है कि उनके विचार धुँधले हों, लेकिन उन्हें पक्का यकीन होता है कि परमेश्वर को जानना पूरी तरह से समय और श्रम की बरबादी है। यह पहले प्रकार का व्यक्ति है : कपड़े में लिपटा हुआ नवजात शिशु।

दूसरा प्रकार : दुधमुँहे शिशु की अवस्था

कपड़े में लिपटे हुए नवजात शिशु की तुलना में, इस प्रकार के व्यक्ति ने कुछ प्रगति कर ली होती है। लेकिन अफ़सोस, उनमें भी परमेश्वर की कुछ भी समझ नहीं होती। उनमें भी परमेश्वर के संबंध में स्पष्ट समझ और अंतर्दृष्टि का अभाव होता है, वे बहुत स्पष्ट नहीं होते कि उन्हें परमेश्वर पर विश्वास क्यों करना चाहिए, लेकिन उनके हृदय में उनके अपने उद्देश्य और स्पष्ट युक्तियाँ होती हैं। वे इस बात से वास्ता नहीं रखते कि परमेश्वर में विश्वास करना सही है या नहीं। परमेश्वर में विश्वास करने के ज़रिए वे उसके अनुग्रह का आनंद उठाने, ख़ुशी और शांति प्राप्त करने, आरामदेह ज़िंदगी बिताने, परमेश्वर की देखभाल एवं सुरक्षा का आनंद लेने और परमेश्वर के आशीषों के अधीन जीवन बिताने के उद्देश्य और प्रयोजन पूरे करना चाहते हैं। वे इस बात से मतलब नहीं रखते कि वे किस हद तक परमेश्वर को जानते हैं; उनमें परमेश्वर की समझ प्राप्त करने की कोई उत्सुकता नहीं होती, और न ही वे इस बात से वास्ता रखते हैं कि परमेश्वर क्या कर रहा है या वह क्या करना चाहता है। वे केवल आँख मूँदकर उसके अनुग्रह का आनंद उठाने तथा ज़्यादा से ज़्यादा उसके आशीष प्राप्त करने का प्रयास करते हैं; वे वर्तमान युग में सौ गुना और आने वाले युग में शाश्वत जीवन प्राप्त करना चाहते हैं। उनके विचार, वे स्वयं को कितना खपा सकते हैं, उनकी भक्ति, और साथ ही उनका कष्ट उठाना, सभी के पीछे एक ही उद्देश्य है : परमेश्वर का अनुग्रह और उसके आशीष प्राप्त करना। उन्हें अन्य किसी भी चीज़ की कोई चिंता नहीं होती। इस प्रकार का व्यक्ति केवल इस बारे में निश्चित होता है कि परमेश्वर लोगों को सुरक्षित रख सकता है और उन्हें अपना अनुग्रह प्रदान कर सकता है। कहा जा सकता है कि वे इस बात में रुचि नहीं रखते और न ही इस बारे में बहुत स्पष्ट होते हैं कि परमेश्वर मनुष्य को क्यों बचाना चाहता है या परमेश्वर अपने वचनों और कार्य से क्या परिणाम हासिल करना चाहता है। उन्होंने परमेश्वर के सार और उसके धार्मिक स्वभाव को जानने का कभी कोई प्रयास नहीं किया होता, न ही वे ऐसा करने के लिए रुचि पैदा कर पाते हैं। उनमें इन चीज़ों पर ध्यान देने की इच्छा का अभाव होता है, और न ही वे इन्हें जानना चाहते हैं। वे परमेश्वर के कार्य, मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाओं, परमेश्वर की इच्छा या परमेश्वर से संबंधित किसी भी अन्य चीज़ के बारे में पूछना नहीं चाहते, और उनमें इन चीज़ों के बारे में पूछने की इच्छा का भी अभाव है। क्योंकि उन्हें लगता है कि ये मामले उनके द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने से संबंध नहीं रहते, और वे केवल एक ऐसे परमेश्वर से मतलब रखते हैं, जो उनकी व्यक्तिगत रुचियों के साथ सीधे संबंध रखता हो, और जो मनुष्य पर अनुग्रह करता हो। उनकी

किसी और चीज़ में कोई रुचि नहीं होती, इसलिए वे सत्य की वास्तविकता में प्रवेश नहीं कर पाते, चाहे वे कितने भी वर्षों से परमेश्वर में विश्वास रखते रहे हों। बिना किसी ऐसे व्यक्ति के, जो उन्हें बार-बार खिलाता-पिलाता रहे, उनके लिए परमेश्वर में विश्वास करने के मार्ग पर बढ़ते जाना कठिन होता है। यदि वे अपनी पिछली ख़ुशी और शांति या परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद न उठा पाएँ, तो उनके पीछे हटने की बहुत संभावना रहती है। यह दूसरे प्रकार का व्यक्ति है : वह व्यक्ति, जो दुधमुँहे शिशु की अवस्था में रहता है।

तीसरा प्रकार : दूध छुड़ाए हुए बच्चे या छोटे बच्चे की अवस्था

लोगों के इस समूह में एक निश्चित मात्रा में स्पष्ट जागरूकता रहती है। वे जानते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने का अर्थ यह नहीं है कि वे अपने आप में सच्चा अनुभव रखते हैं, और वे जानते हैं कि भले ही वे आनंद और शांति की माँग करते न थकें, अनुग्रह की माँग करते न थकें, या भले ही वे परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने के अनुभव बाँटने या परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए आशीषों के लिए परमेश्वर की स्तुति करके गवाही देने में समर्थ हों, इन चीज़ों का यह अर्थ नहीं है कि उनमें जीवन है, न ही इनका यह अर्थ है कि उनमें सत्य की वास्तविकता है। अपनी चेतना की शुरुआत से ही वे ऐसी निरर्थक आशाएँ रखना छोड़ देते हैं कि केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही उनके साथ रहेगा; इसके बजाय, परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद उठाने के साथ ही वे परमेश्वर के लिए कुछ करना भी चाहते हैं। वे अपना कर्तव्य निभाने, थोड़ी-बहुत कठिनाई और थकान सहने, और परमेश्वर के साथ कुछ हद तक सहयोग करने के लिए तैयार रहते हैं। किंतु, चूँकि परमेश्वर के प्रति विश्वास में उनका अनुसरण बहुत अधिक मिलावटी होता है, चूँकि उनके मन के व्यक्तिगत इरादे और इच्छाएँ बहुत ताकतवर होती हैं, चूँकि उनका स्वभाव बेतहाशा दंभी होता है, इसलिए परमेश्वर की इच्छा पूरी करना या परमेश्वर के प्रति वफ़ादार होना उनके लिए बहुत कठिन होता है। इसलिए वे अकसर अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का एहसास या परमेश्वर से की गई प्रतिज्ञाएँ पूरी नहीं कर पाते। वे अकसर अपने आपको परस्पर विरोधी स्थितियों में पाते हैं : वे परमेश्वर को अधिक से अधिक संतुष्ट करने की उत्कट इच्छा रखते हैं, लेकिन वे अपनी सारी शक्ति का उपयोग उसका विरोध करने के लिए करते हैं, और वे अकसर परमेश्वर से वादे करते हैं, लेकिन फिर तुरंत ही अपने वादे तोड़ भी देते हैं। बल्कि अकसर वे अपने आपको अन्य परस्पर विरोधी स्थितियों में पाते हैं : वे ईमानदारी से परमेश्वर में विश्वास करते हैं, फिर भी उसे और उससे आने वाली हर चीज़ को नकारते हैं; वे उत्सुकता से आशा करते हैं कि परमेश्वर उन्हें प्रबुद्ध करेगा, उनकी अगुआई करेगा, उनकी आपूर्ति करेगा और उनकी

सहायता करेगा, किंतु वे अपना अलग मार्ग भी खोजते रहते हैं। वे परमेश्वर को समझना और जानना चाहते हैं, किंतु वे उसके करीब आने के लिए तैयार नहीं होते। इसके बजाय, वे हमेशा परमेश्वर से बचते हैं और उनके हृदय उसके लिए बंद होते हैं। एक तरफ तो उनमें परमेश्वर के वचनों और सत्य के शाब्दिक अर्थ की सतही समझ और अनुभव होता है, परमेश्वर और सत्य की सतही अवधारणा होती है, दूसरी ओर, वे अवचेतन रूप से अभी भी इस बात की पुष्टि या निर्धारण नहीं कर पाते कि परमेश्वर सत्य है या नहीं, न ही वे इसकी पुष्टि कर पाते हैं कि परमेश्वर वास्तव में धार्मिक है या नहीं। वे परमेश्वर के स्वभाव और उसके सार की वास्तविकता भी निर्धारित नहीं कर पाते, उसके सच्चे अस्तित्व की तो बात ही छोड़ दो। परमेश्वर के प्रति उनके विश्वास में सदैव संदेह और गलतफहमियाँ होती हैं, और उसमें कल्पनाएँ और अवधारणाएँ भी होती हैं। जब वे परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेते हैं, तो अनिच्छा से कुछ ऐसे सत्यों का अनुभव या अभ्यास भी करते हैं, जिन्हें वे अपने विश्वास को समृद्ध करने, परमेश्वर में विश्वास करने का अपना अनुभव बढ़ाने, परमेश्वर में विश्वास की अपनी समझ का सत्यापन करने, और खुद ही स्थापित जीवन-पथ पर चलने के अपने घमंड को संतुष्ट करने और मानवजाति का धार्मिक उपक्रम पूरा करने के लिए व्यवहार्य समझते हैं। साथ ही, वे ये चीज़ें आशीष हासिल करने की अपनी इच्छा पूरी करने, जो एक शर्त का हिस्सा है जिसे वे मानवजाति के लिए अधिक आशीष प्राप्त करने की आशा में लगाते हैं, और अपनी यह महत्वाकांक्षी आकांक्षा और जीवनभर की इच्छा पूरी करने के लिए भी करते हैं कि वे तब तक विश्राम नहीं करेंगे, जब तक परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर लेंगे। ये लोग परमेश्वर की प्रबुद्धता प्राप्त करने में शायद ही कभी सक्षम होते हैं, क्योंकि आशीष पाने की उनकी इच्छा और इरादा उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। उनमें इन्हें छोड़ने की कोई इच्छा नहीं होती, और निस्संदेह वे ऐसा करना सहन नहीं कर पाते। वे डरते हैं कि आशीष पाने की इच्छा के बिना, लंबे समय से सँजोई इस महत्वाकांक्षा के बिना कि वे तब तक विश्राम नहीं करेंगे जब तक वे परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर लेंगे, वे परमेश्वर पर विश्वास करने की प्रेरणा खो देंगे। इसलिए वे वास्तविकता का सामना नहीं करना चाहते। वे परमेश्वर के वचनों या परमेश्वर के कार्य का सामना नहीं करना चाहते। वे परमेश्वर के स्वभाव या सार तक का सामना नहीं करना चाहते, परमेश्वर को जानने के विषय का उल्लेख करने की तो बात ही छोड़ दो। क्योंकि जब परमेश्वर, उसका सार और उसका धार्मिक स्वभाव उनकी कल्पनाओं का स्थान लेगा, तो उनके सपने धुएँ में उड़ जाएँगे; और उनका तथाकथित विश्वास और "योग्यताएँ", जिन्हें वर्षों के कठिन कार्य के जरिये इकट्ठा किया गया है, लुप्त और शून्य हो

जाएँगे। इसी प्रकार, उनका "इलाका", जिसे उन्होंने वर्षों के खून-पसीने से जीता है, धराशायी हो जाएगा। यह सब चीज़ें इस बात का संकेत होंगी कि उनका अनेक वर्षों का कठिन परिश्रम और प्रयास व्यर्थ हो गए हैं, और उन्हें शून्य से शुरुआत करनी होगी। यह उनके लिए सबसे पीड़ादायक स्थिति है, और यही परिणाम वे देखना नहीं चाहते, इसीलिए वे हमेशा इस प्रकार के गतिरोध में बंद रहते हैं और लौटना नहीं चाहते। यह तीसरे प्रकार का व्यक्ति है : ऐसा व्यक्ति, जो दूध छुड़ाए हुए बच्चे की अवस्था में रहता है।

ऊपर वर्णित तीन प्रकार के लोग—अर्थात् इन तीन अवस्थाओं में रहने वाले लोग—परमेश्वर की पहचान और हैसियत में या उसके धार्मिक स्वभाव में कोई सच्चा विश्वास नहीं रखते, और न ही उनके पास इन चीज़ों की कोई स्पष्ट, सटीक पहचान या पुष्टि होती है। इसलिए, इन तीनों अवस्थाओं के लोगों के लिए सत्य की वास्तविकता में प्रवेश करना बहुत कठिन होता है, और उनके लिए परमेश्वर की दया, प्रबुद्धता या रोशनी प्राप्त करना भी कठिन होता है, क्योंकि जिस तरह से वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वह और परमेश्वर के प्रति उनका गलत रवैया परमेश्वर के लिए उनके हृदय में कार्य करना असंभव बना देता है। परमेश्वर के संबंध में उनके संदेह, गलतफहमियाँ और कल्पनाएँ परमेश्वर संबंधी उनके विश्वास और ज्ञान से अधिक होती हैं। ये तीन प्रकार के लोग बहुत अधिक जोखिम में होते हैं, और ये तीनों ही चरण बहुत ख़तरनाक होते हैं। जब कोई परमेश्वर, परमेश्वर के सार, परमेश्वर की पहचान, परमेश्वर की सत्यता और उसके अस्तित्व की वास्तविकता के संबंध में संदेह का रवैया रखता है, और जब कोई इन चीज़ों के संबंध में निश्चित नहीं हो पाता, तो वह परमेश्वर से आने वाली हर चीज़ कैसे स्वीकार कर सकता है? वह कैसे इस तथ्य को स्वीकार कर सकता है कि परमेश्वर सत्य, मार्ग और जीवन है? वह कैसे परमेश्वर की ताड़ना और उसके न्याय को स्वीकार कर सकता है? कोई कैसे परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार कर सकता है? इस प्रकार का व्यक्ति परमेश्वर का सच्चा मार्गदर्शन और आपूर्ति कैसे प्राप्त कर सकता है? जो लोग इन तीन अवस्थाओं में हैं, वे परमेश्वर का विरोध कर सकते हैं, परमेश्वर की आलोचना कर सकते हैं, परमेश्वर की निंदा कर सकते हैं या किसी भी समय परमेश्वर को धोखा दे सकते हैं। वे किसी भी समय सत्य के मार्ग को त्याग सकते हैं और परमेश्वर को छोड़ सकते हैं। कहा जा सकता है कि इन तीनों अवस्थाओं के लोग विकट स्थिति में रहते हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर में विश्वास के सही मार्ग में प्रवेश नहीं किया होता है।

चौथा प्रकार : परिपक्व होते हुए बालक की अवस्था या बचपन

किसी व्यक्ति का दूध पीना छुड़ाए जाने के बाद—अर्थात् उसके द्वारा प्रचुर मात्रा में अनुग्रह का आनंद

लिए जाने के बाद—वह यह जानना शुरू करता है कि परमेश्वर में विश्वास करने का क्या अर्थ है, वह विभिन्न प्रश्नों को समझने की इच्छा करना शुरू कर देता है, जैसे कि मनुष्य क्यों जीता है, मनुष्य को कैसे जीना चाहिए, और परमेश्वर मनुष्य पर अपना कार्य क्यों करता है। जब ये अस्पष्ट विचार और भ्रमित विचार-प्रतिरूप लोगों भीतर उभरते और मौजूद रहते हैं, तो वे लगातार सिंचन प्राप्त करते हैं, और वे अपना कर्तव्य भी निभा पाते हैं। इस दौरान उनमें परमेश्वर के सत्य को लेकर कोई संदेह नहीं रह जाते, और उनमें इस बात की सटीक समझ होती है कि परमेश्वर में विश्वास करने का क्या अर्थ है। इस नींव पर उन्हें धीरे-धीरे परमेश्वर का ज्ञान होने लगता है, और वे आहिस्ता-आहिस्ता परमेश्वर के स्वभाव और सार के संबंध में अपने अस्पष्ट विचारों और भ्रमित विचार-प्रतिरूपों के कुछ उत्तर प्राप्त करने लगते हैं। अपने स्वभाव और परमेश्वर संबंधी अपने ज्ञान में हुए परिवर्तनों के अनुसार, इस अवस्था के लोग सही मार्ग पर चलना शुरू कर देते हैं, और वे एक बदलाव के दौर में प्रवेश करते हैं। इसी अवस्था में लोग जीवन पाना शुरू करते हैं। उनमें जीवन होने का स्पष्ट संकेत परमेश्वर को जानने से संबंधित उन विभिन्न प्रश्नों का क्रमिक समाधान है, जो लोगों के मन में होते हैं—जैसे कि गलतफहमियाँ, कल्पनाएँ, अवधारणाएँ और परमेश्वर की अस्पष्ट परिभाषाएँ—और वे न केवल परमेश्वर के अस्तित्व की वास्तविकता पर विश्वास करने और उसे जानने लगते हैं, बल्कि उनके पास परमेश्वर की एक सटीक परिभाषा होती है और उनके मन में परमेश्वर का सही स्थान भी होता है, और परमेश्वर का वास्तविक अनुसरण उनके अस्पष्ट विश्वास का स्थान ले लेता है। इस दौरान लोग धीरे-धीरे परमेश्वर के प्रति अपनी मिथ्या अवधारणाएँ और अनुसरण तथा विश्वास के अपने गलत लक्ष्य और तरीके जान जाते हैं। वे सत्य के लिए लालायित होना, परमेश्वर के न्याय, ताड़ना और अनुशासन के अनुभव के लिए लालायित होना, और अपने स्वभाव में परिवर्तन के लिए लालायित होना शुरू कर देते हैं। इस अवस्था के दौरान वे धीरे-धीरे परमेश्वर के संबंध में सभी प्रकार की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ त्याग देते हैं, और साथ ही वे परमेश्वर के संबंध में अपने गलत ज्ञान को बदलते और सुधारते हैं और उसके संबंध में सही आधारभूत ज्ञान हासिल करते हैं। यद्यपि इस अवस्था में लोगों में मौजूद ज्ञान का एक अंश बहुत विशिष्ट या सटीक नहीं होता, फिर भी कम से कम वे परमेश्वर के संबंध में अपनी अवधारणाएँ, गलत ज्ञान और गलतफ़हमियाँ त्यागना आरंभ कर देते हैं; अब वे परमेश्वर के प्रति अपनी अवधारणाएँ और कल्पनाएँ नहीं रखते। वे यह सीखना शुरू करते हैं कि अपनी अवधारणाओं में पाई जाने वाली चीज़ों को, ज्ञान से प्राप्त चीज़ों को, और शैतान से प्राप्त चीज़ों को कैसे छोड़ा जाए; वे सही और सकारात्मक चीज़ों के प्रति

समर्पित होने के लिए तैयार होना शुरू कर देते हैं, यहाँ तक कि उन चीज़ों के प्रति भी, जो परमेश्वर के वचनों से आती हैं और जो सत्य के अनुरूप होती हैं। वे परमेश्वर के वचनों का अनुभव करने का प्रयास करना, उसके वचनों को व्यक्तिगत रूप से जानना और उन्हें क्रियान्वित करना, उसके वचनों को अपने कार्यों के सिद्धांतों के रूप में और अपने स्वभाव को परिवर्तित करने के एक आधार के रूप में स्वीकार करना आरंभ कर देते हैं। इस दौरान लोग अनजाने ही परमेश्वर का न्याय और ताड़ना स्वीकार कर लेते हैं, और अनजाने ही परमेश्वर के वचनों को अपने जीवन के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। परमेश्वर के न्याय, ताड़ना और वचनों को स्वीकार करते हुए वे अधिकाधिक सचेत हो जाते हैं और यह महसूस करने लगते हैं कि जिस परमेश्वर पर वे दिल से विश्वास करते हैं, वह वास्तव में मौजूद है। परमेश्वर के वचनों में, अपने अनुभवों और अपनी ज़िंदगी में वे अधिकाधिक यह महसूस करने लगते हैं कि परमेश्वर ने हमेशा मनुष्य की नियति पर शासन किया है और उसकी अगुआई और आपूर्ति की है। परमेश्वर के साथ अपने जुड़ाव के जरिये वे धीरे-धीरे परमेश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करने लगते हैं। इसलिए, इससे पहले कि वे इसे महसूस कर पाएँ, वे अवचेतन मन में पहले ही परमेश्वर के कार्य को स्वीकार कर लेते हैं, उस पर दृढ़ता से विश्वास करना शुरू कर देते हैं, और वे परमेश्वर के वचनों को मंज़ूर कर लिया है। जब लोग परमेश्वर के वचनों और कार्य को स्वीकार कर लेते हैं, तो वे निरंतर स्वयं को नकारते हैं, अपनी ही अवधारणाओं को नकारते हैं, अपने ज्ञान को नकारते हैं, अपनी ही कल्पनाओं को नकारते हैं, और निरंतर खोज करने लगते हैं कि सत्य क्या है और परमेश्वर की इच्छा क्या है। विकास की इस अवधि में परमेश्वर के संबंध में लोगों का ज्ञान बहुत ही सतही होता है—वे इस ज्ञान को शब्दों में स्पष्ट रूप से बताने तक में असमर्थ होते हैं, न ही वे इसे विशिष्ट विवरणों के संदर्भ में व्यक्त कर सकते हैं—और उनमें केवल एक अनुभूति-आधारित समझ होती है; फिर भी, पिछली तीन अवस्थाओं के साथ तुलना करने पर, इस अवधि के लोगों की अपरिपक्व ज़िंदगी ने पहले ही परमेश्वर के वचनों की सिंचाई और आपूर्ति प्राप्त कर ली होती है, और इस प्रकार उन्होंने पहले ही अंकुरित होना आरंभ कर दिया होता है। उनकी ज़िंदगी भूमि में दबे एक बीज के समान होती है; नमी और पोषक तत्त्व पाने के बाद यह मिट्टी से फूटती है, और उसका अंकुरण एक नए जीवन की उत्पत्ति को दर्शाता है। इस उत्पत्ति से व्यक्ति जीवन के चिह्नों की झलक देखने लगता है। जब लोगों में जीवन होता है, तो वे बढ़ते हैं। इसलिए—परमेश्वर में विश्वास करने के सही मार्ग पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने, अपनी अवधारणाओं को त्यागने और परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करने की—इन नीवों पर लोगों की ज़िंदगी

अनिवार्य रूप से थोड़ी-थोड़ी आगे बढ़ती है। इस प्रगति को किस आधार पर मापा जाता है? इसे व्यक्तियों द्वारा परमेश्वर के वचनों के अनुभव और उनकी परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की वास्तविक समझ के अनुसार नापा जाता है। यद्यपि प्रगति की इस अवधि में उन्हें परमेश्वर और उसके सार के संबंध में अपने ज्ञान का अपने ही शब्दों में सटीकता से वर्णन करना बहुत कठिन जान पड़ता है, फिर भी लोगों का यह समूह अब परमेश्वर के अनुग्रह के आनंद के जरिये प्रसन्नता प्राप्त करने या परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने का अपना प्रयोजन पूरा करने हेतु उसमें विश्वास करने के लिए व्यक्तिपरक ढंग से तैयार नहीं होता। इसके बजाय, वे परमेश्वर के वचन के द्वारा जीवन जीने और परमेश्वर के उद्धार का पात्र बनने के लिए इच्छुक होते हैं। इतना ही नहीं, वे आश्वस्त होते हैं और परमेश्वर का न्याय और ताड़ना स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं। यह प्रगति की अवस्था में मौजूद व्यक्ति का चिह्न है।

यद्यपि इस अवस्था के लोगों को परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव का कुछ ज्ञान होता है, किंतु यह ज्ञान बहुत धुँधला और अस्पष्ट होता है। हालाँकि वे इसका स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं पाते, फिर भी उन्हें लगता है कि उन्होंने पहले ही अंतर्मन में कुछ हासिल कर लिया है, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की ताड़ना एवं न्याय के जरिये परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के संबंध में कुछ मात्रा में ज्ञान और समझ हासिल कर ली होती है; किंतु यह सब सतही होता है, और यह अभी भी प्रारंभिक अवस्था में ही होता है। लोगों के इस समूह का एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है, जिससे वे परमेश्वर के अनुग्रह के साथ व्यवहार करते हैं, जो उनके द्वारा अपनाए जाने वाले उद्देश्यों और उनकी पूर्ति के तरीकों में होने वाले परिवर्तनों में व्यक्त होता है। उन्होंने परमेश्वर के वचनों और कार्यों में, मनुष्य से उसकी सभी प्रकार की अपेक्षाओं में और मनुष्य को दिए जाने वाले उसके प्रकाशनों में पहले ही देख लिया होता है कि यदि वे अभी भी सत्य का अनुसरण नहीं करेंगे, यदि वे अभी भी वास्तविकता में प्रवेश करने का प्रयास नहीं करेंगे, यदि वे अभी भी परमेश्वर के वचनों का अनुभव करते हुए उसे संतुष्ट करने और जानने का प्रयास नहीं करेंगे, तो वे परमेश्वर में विश्वास करने का अर्थ खो देंगे। वे देखते हैं कि चाहे वे परमेश्वर के अनुग्रह का कितना भी आनंद उठाते हों, वे अपने स्वभाव को नहीं बदल सकते, परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर सकते या परमेश्वर को नहीं जान सकते, और यदि लोग लगातार परमेश्वर के अनुग्रह के तहत जीवन बिताते हैं, तो वे कभी प्रगति हासिल नहीं कर पाएँगे, जीवन हासिल नहीं कर पाएँगे या उद्धार पाने योग्य नहीं हो पाएँगेर। संक्षेप में, यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचनों का वास्तव में अनुभव नहीं कर पाता और परमेश्वर के वचनों के माध्यम से उसे जानने में असमर्थ रहता है, तो वह

अनंतकाल तक एक नवजात शिशु की अवस्था में बना रहेगा और अपने जीवन की प्रगति में कभी एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाएगा। यदि तुम सदैव एक नवजात शिशु की अवस्था में बने रहते हो, यदि तुम कभी परमेश्वर के वचन की वास्तविकता में प्रवेश नहीं करते, यदि तुम्हारे पास कभी अपने जीवन के रूप में परमेश्वर का वचन नहीं है, यदि तुम्हारे पास परमेश्वर में सच्चा विश्वास और उसका ज्ञान नहीं है, तो क्या परमेश्वर द्वारा तुम्हें पूर्ण किए जाने की कोई संभावना है? इसलिए, जो कोई परमेश्वर के वचन की वास्तविकता में प्रवेश करता है, जो कोई परमेश्वर के वचन को अपने जीवन के रूप में स्वीकार करता है, जो कोई परमेश्वर की ताड़ना और न्याय स्वीकार करना शुरू करता है, जिस किसी का भ्रष्ट स्वभाव बदलना शुरू हो जाता है, और जिस किसी के पास सत्य के लिए लालायित रहने वाला हृदय है, जिसके पास परमेश्वर को जानने और उसका उद्धार स्वीकार करने की इच्छा है, तो यही वे लोग हैं जिनके पास वास्तव में जीवन है। यह वास्तव में चौथे प्रकार का व्यक्ति है, परिपक्व हो रहे बच्चे के प्रकार का, वह व्यक्ति जो बचपन की अवस्था में है।

पाँचवाँ प्रकार : जीवन की परिपक्वता की अवस्था या वयस्क अवस्था

बार-बार के उतार-चढ़ावों से भरी प्रगति वाली बचपन की अवस्था का अनुभव करने और उसमें लड़खड़ाते हुए चलने के बाद लोगों का जीवन स्थिर हो जाता है, उनके बढ़ते कदम अब रुकते नहीं, और कोई उन्हें रोक पाने में समर्थ नहीं होता। यद्यपि आगे का मार्ग अभी भी ऊबड़-खाबड़ और खुरदरा होता है, लेकिन वे अब कमज़ोर या भयभीत नहीं होते, वे आगे लड़खड़ाते नहीं चलते या अपनी दिशा नहीं खोते। उनकी नींव परमेश्वर के वचन के वास्तविक अनुभव में गहरे जमी होती है, और उनके हृदय परमेश्वर की गरिमा और महानता द्वारा आकर्षित चुके होते हैं। वे परमेश्वर के पदचिह्नों पर चलने के लिए, परमेश्वर के सार को जानने के लिए, परमेश्वर के संबंध में सब-कुछ जानने के लिए लालायित रहते हैं।

इस अवस्था के लोग पहले से ही स्पष्ट रूप से जानते हैं कि वे किसमें विश्वास करते हैं, और वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि उन्हें परमेश्वर में विश्वास क्यों करना चाहिए और उनके जीवन का क्या अर्थ है, और वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि वह हर चीज़, जिसे परमेश्वर व्यक्त करता है, सत्य है। अपने अनेक वर्षों के अनुभव में वे महसूस करते हैं कि परमेश्वर के न्याय और ताड़ना के बिना व्यक्ति कभी परमेश्वर को संतुष्ट करने या परमेश्वर को जानने में सक्षम नहीं होगा, और वास्तव में कभी परमेश्वर के सम्मुख आने में समर्थ नहीं होगा। इन लोगों के हृदय में परमेश्वर द्वारा परखे जाने की तीव्र इच्छा होती है, जिससे परखे जाते समय

वे परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को देख सकें, और अधिक शुद्ध प्रेम हासिल कर सकें, और साथ ही परमेश्वर को और अधिक सच्चाई से समझने और जानने में समर्थ हो सकें। इस अवस्था के लोग नवजात शिशु वाली अवस्था को, और परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने और रोटी खाकर तृप्त होने की अवस्था को पहले ही अलविदा कह चुके होते हैं। वे अब परमेश्वर को सहनशील बनाने और उन पर दया दिखाने के लिए असाधारण आशाएँ नहीं रखते; बल्कि वे परमेश्वर की सतत ताड़ना और न्याय पाने के लिए आश्वस्त और आशान्वित रहते हैं, ताकि अपने भ्रष्ट स्वभाव से अपने आपको अलग कर सकें और परमेश्वर को संतुष्ट कर सकें। परमेश्वर के संबंध में उनका ज्ञान और उनकी खोज, या उनकी खोज के अंतिम लक्ष्य उनके हृदय में बहुत स्पष्ट होते हैं। इसलिए, अपनी वयस्क अवस्था में लोग अस्पष्ट विश्वास की अवस्था को, उद्धार के लिए अनुग्रह पर आश्रित रहने की अवस्था को, परीक्षणों का सामना न कर सकने वाले अपरिपक्व जीवन की अवस्था को, धुँधलेपन की अवस्था को, लड़खड़ाकरआगे बढ़ने की अवस्था को, उस अवस्था को जिसमें अक्सर चलने के लिए कोई मार्ग नहीं होता, अचानक गर्मजोशी से भर उठने और अचानक ही ठंडे पड़ जाने के बीच डोलने की अस्थिर अवधि को, और उस अवस्था को, जिसमें व्यक्ति आँख मूँदकर परमेश्वर का अनुसरण करता है, पहले ही पूरी तरह से अलविदा कह चुके होते हैं। इस प्रकार के लोग अक्सर परमेश्वर की प्रबुद्धता और रोशनी प्राप्त करते हैं, और अक्सर परमेश्वर के साथ सच्ची संगति और संवाद में संलग्न रहते हैं। कहा जा सकता है कि इस अवस्था में रह रहे लोग पहले ही परमेश्वर की इच्छा का अंश समझ चुके होते हैं, वे जो कुछ भी करते हैं, उसमें सत्य के सिद्धांत ढूँढ़ पाने में समर्थ होते हैं, और वे जानते हैं परमेश्वर की इच्छा कैसे पूरी करनी है। इतना ही नहीं, उन्होंने परमेश्वर को जानने का मार्ग भी पा लिया होता है और परमेश्वर के संबंध में अपने ज्ञान की गवाही देनी शुरू कर दी होती है। क्रमिक प्रगति की प्रक्रिया के दौरान वे परमेश्वर की इच्छा : मनुष्य की सृष्टि करने में परमेश्वर की इच्छा, और मनुष्य का प्रबंधन करने में परमेश्वर की इच्छा की क्रमिक समझ और ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। वे धीरे-धीरे सार की दृष्टि से परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की समझ और ज्ञान भी प्राप्त कर लेते हैं। कोई मानवीय अवधारणा या कल्पना इस ज्ञान का स्थान नहीं ले सकती। हालाँकि यह नहीं कहा जा सकता कि पाँचवीं अवस्था में व्यक्ति का जीवन पूरी तरह से परिपक्व हो जाता है या यह व्यक्ति धार्मिक या पूर्ण है, लेकिन फिर भी इस प्रकार के व्यक्ति ने जीवन में परिपक्वता की अवस्था की ओर पहले ही एक कदम बढ़ा लिया है और वह परमेश्वर के सामने आने, परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आमने-सामने खड़े होने में पहले से ही समर्थ है। चूँकि इस

प्रकार के व्यक्तियों ने परमेश्वर के वचनों का बहुत अधिक अनुभव कर लिया है, अनगिनत परीक्षणों का अनुभव कर लिया है और परमेश्वर से अनुशासन, न्याय और ताड़ना की असंख्य घटनाओं का अनुभव कर लिया है, इसलिए परमेश्वर के प्रति उनका समर्पण सापेक्ष नहीं, बल्कि संपूर्ण है। परमेश्वर के संबंध में उनका ज्ञान अवचेतन ज्ञान से स्पष्ट एवं सटीक ज्ञान में, सतही ज्ञान से गहरे ज्ञान में, धुँधले और अस्पष्ट ज्ञान से सूक्ष्म और मूर्त ज्ञान में रूपांतरित हो गया है। वे श्रमसाध्य लड़खड़ाहट और निष्क्रिय प्रयास करने की स्थिति से सहज ज्ञान और सक्रिय गवाही की स्थिति तक आ गए हैं। यह कहा जा सकता है कि इस अवस्था के लोगों में परमेश्वर के वचन की वास्तविकता विद्यमान है, और उन्होंने पूर्णता के उस मार्ग पर कदम रख दिया है, जिस पर पतरस चला था। यह पाँचवें प्रकार का व्यक्ति है, ऐसा व्यक्ति परिपक्वता की अवस्था यानी वयस्क अवस्था में जीता है।

14 दिसंबर, 2013

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है III

परमेश्वर का अधिकार (II)

आज हम "स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है" के विषय पर अपनी संगति को जारी रखेंगे। हम पहले ही इस विषय पर दो संगतियाँ कर चुके हैं। इसमें पहली परमेश्वर के अधिकार से संबंधित थी, और दूसरी परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव से। इन दोनों संगतियों को सुनने के पश्चात्, क्या तुमने परमेश्वर की पहचान, हैसियत और सार की नई समझ प्राप्त की है? क्या इन अंतर्दृष्टियों ने परमेश्वर के अस्तित्व की सच्चाई का और अधिक ठोस ज्ञान और निश्चितता प्राप्त करने में तुम्हारी सहायता की है? आज मैं "परमेश्वर के अधिकार" विषय पर विस्तार से बात करना चाहता हूं।

वृहत् और सूक्ष्म-परिप्रेक्ष्य से परमेश्वर के अधिकार को समझना

परमेश्वर का अधिकार अद्वितीय है। यह स्वयं परमेश्वर की विलक्षणता की अभिव्यक्ति है, उसका विशिष्ट सार है, स्वयं परमेश्वर की पहचान है, जो उसके द्वारा रचित या अरचित प्राणी के अधिकार में नहीं है; अर्थात्, केवल सृजनकर्त्ता के पास ही यह अधिकार है। यानी, केवल सृजनकर्त्ता—परमेश्वर जो अद्वितीय है—इस तरह से अभिव्यक्त होता है और उसका यही सार है। इसलिए, परमेश्वर के अधिकार के बारे में

बात क्यों करें? स्वयं परमेश्वर का अधिकार मनुष्य के अधिकार से भिन्न कैसे है जिसका विचार मनुष्य अपने मन में करता है? इसमें विशेष क्या है? इसके बारे में यहाँ बात करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्यों है? तुम सबको इस मुद्दे पर बहुत सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। क्योंकि अधिकांश लोगों के लिए, "परमेश्वर का अधिकार" एक अस्पष्ट सोच है, एक ऐसी सोच है जिसे समझना आसान नहीं है, और इसके बारे में की जाने वाली कोई भी चर्चा कदाचित गूढ़ हो सकती है। इसलिए परमेश्वर के अधिकार के ज्ञान को मनुष्य समझने में समर्थ है और परमेश्वर के अधिकार के सार के बीच हमेशा एक दूरी रहेगी ही। इस दूरी को भरने के लिए, हर किसी को धीरे-धीरे लोगों, घटनाओं, चीज़ों, या उन घटनाओं के माध्यम से जो मनुष्य की पहुँच के भीतर हैं, और जिन्हें वे अपने वास्तविक जीवन में समझने में समर्थ हैं, परमेश्वर के अधिकार के बारे में जान लेना चाहिए। यद्यपि यह वाक्यांश "परमेश्वर का अधिकार" बहुत गहन प्रतीत हो सकता है, फिर भी परमेश्वर का अधिकार बिल्कुल भी गूढ़ नहीं है। वह मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षण में उसके साथ विद्यमान है, और प्रतिदिन उसका मार्गदर्शन करता है। इसलिए, प्रत्येक मनुष्य वास्तविक जीवन में अनिवार्य रूप से परमेश्वर के अधिकार के अत्यंत साकार स्वरूप को देखेगा और अनुभव करेगा। यह साकार स्वरूप इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि परमेश्वर का अधिकार वास्तव में विद्यमान है, और यह बात किसी भी व्यक्ति को इस तथ्य को पहचानने और समझने में मदद करती है कि परमेश्वर के पास ऐसा अधिकार है।

परमेश्वर ने हर चीज़ की रचना की है और रचना करने के बाद, सभी चीज़ों पर उसका प्रभुत्व है। सभी चीज़ों के ऊपर प्रभुत्व रखने के अतिरिक्त, हर चीज़ पर उसका नियन्त्रण भी है। यह विचार कि "परमेश्वर का हर चीज़ पर नियन्त्रण है," इसका अर्थ क्या है? इसकी व्याख्या कैसे की जा सकती है? यह वास्तविक जीवन में किस प्रकार लागू होता है? इस सत्य को समझते हुए कि "परमेश्वर का हर चीज़ पर नियन्त्रण है" उसके अधिकार के बारे में कैसे समझा जा सकता है? "परमेश्वर का हर चीज़ पर नियन्त्रण है," इस वाक्यांश का आशय यह है कि परमेश्वर जो नियंत्रित करता है वह ग्रहों का एक भाग नहीं है, न ही सृष्टि का एक भाग है, वह मानवजाति का एक भाग भी नहीं है, बल्कि सब-कुछ है: अति विशालकाय से लेकर अतिसूक्ष्म तक, प्रत्यक्ष से लेकर अदृश्य तक, ब्रह्माण्ड के सितारों से लेकर पृथ्वी के जीवित प्राणियों तक, और अति सूक्ष्मजीवों तक, जिन्हें आँखों से नहीं देखा जा सकता और ऐसे प्राणियों तक जो अन्य रूपों में विद्यमान हैं। यह "सब-कुछ" की सही परिभाषा है जिस पर परमेश्वर का "नियन्त्रण है," और यह उसके

अधिकार का दायरा है, उसकी संप्रभुता और शासन का विस्तार है।

मानवजाति के अस्तित्व में आने से पहले, ब्रह्माण्ड—आकाश के समस्त ग्रह, सभी सितारे—पहले से ही अस्तित्व में थे। बृहद स्तर पर, ये खगोलीय पिंड, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के लिए, परमेश्वर के नियन्त्रण में नियमित रूप से अपने कक्ष में परिक्रमा करते रहे हैं, चाहे ऐसा करने में कितने ही वर्ष लगते हों। कौन-सा ग्रह किस समय में कहाँ जाता है; कौन-सा ग्रह कौन-सा कार्य करता है, और कब करता है; कौन-सा ग्रह किस कक्ष में चक्कर लगाता है, और वह कब अदृश्य हो जाता है या बदल दिया जाता है—ये सभी चीज़ें बिना कोई त्रुटि के होती रहती हैं। ग्रहों की स्थितियाँ और उनके बीच की दूरियाँ सभी कठोर प्रतिमानों का पालन करती हैं, उन सभी को सटीक आँकड़ों द्वारा वर्णित किया जा सकता है; वे जिस ग्रहपथ पर घूमते हैं, उनके कक्षों की गति और स्वरूप, वह समय जब वे विभिन्न स्थितियों में होते हैं, इन सभी को सटीक ढंग से निर्धारित व विशेष नियमों द्वारा परिमाणित किया जा सकता है। बिना चूके युगों से ग्रह इन नियमों का पालन कर रहे हैं। कोई भी शक्ति उनके कक्षों या तरीकों को, जिनका वे पालन करते हैं, नहीं बदल सकती, न ही कोई रुकावट पैदा कर सकती है। क्योंकि वे विशेष नियम जो उनकी गति को संचालित करते हैं और वे सटीक आँकड़े जो उनका वर्णन करते हैं, सृजनकर्त्ता के अधिकार द्वारा पूर्वनियत हैं, वे सृजनकर्त्ता की संप्रभुता और नियन्त्रण के अधीन इन नियमों का पालन अपनी इच्छा से करते हैं। बृहत स्तर पर, कुछ प्रतिमानों, कुछ आँकड़ों, और कुछ अजीब और समझाए न जा सकने वाले नियमों या घटनाओं के बारे में जानना मनुष्य के लिए कठिन नहीं है। यद्यपि मानवजाति यह नहीं स्वीकारती कि परमेश्वर है, न ही इस तथ्य को स्वीकार करती है कि सृजनकर्त्ता ने ही हर चीज़ को बनायी है और हर चीज़ उसी के नियन्त्रण में है, और यही नहीं सृजनकर्त्ता के अधिकार के अस्तित्व को भी नहीं स्वीकारती, फिर भी मानव-विज्ञानी, खगोलशास्त्री और भौतिक-विज्ञानी इसी खोज में लगे हुए हैं कि इस सार्वभौम में सभी चीज़ों का अस्तित्व, और वे सिद्धान्त और प्रतिमान जो उनकी गति को निर्धारित करते हैं, वे सभी एक व्यापक और अदृश्य गूढ़ ऊर्जा द्वारा शासित और नियन्त्रित होते हैं। यह तथ्य मनुष्य को बाध्य करता है कि वह इस बात का सामना करे और स्वीकार करे कि इन गतियों के स्वरूपों के बीच एकमात्र शक्तिशाली परमेश्वर ही है, जो हर एक चीज़ का आयोजन करता है। उसका सामर्थ्य असाधारण है, और यद्यपि कोई भी उसके असली स्वरूप को नहीं देख पाता, फिर भी वह हर क्षण हर एक चीज़ को संचालित और नियन्त्रित करता है। कोई भी व्यक्ति या ताकत उसकी संप्रभुता से परे नहीं जा सकती। इस सत्य का सामना करते हुए, मनुष्य को

यह अवश्य पहचानना चाहिए कि वे नियम जो सभी चीज़ों के अस्तित्व को संचालित करते हैं उन्हें मनुष्यों द्वारा नियन्त्रित नहीं किया जा सकता, किसी के भी द्वारा बदला नहीं जा सकता; साथ ही उसे यह भी स्वीकार करना चाहिए कि मानवजाति इन नियमों को पूरी तरह से नहीं समझ सकती, और वे प्राकृतिक रूप से घटित नहीं हो रही हैं, बल्कि एक परम सत्ता उनका निर्धारण कर रही है। ये सब परमेश्वर के अधिकार की अभिव्यक्तियाँ हैं जिन्हें मनुष्य जाति बृहत स्तर पर समझ व महसूस कर सकती है।

सूक्ष्म स्तर पर, सभी पहाड़, नदियाँ, झीलें, समुद्र और भू-भाग जिन्हें मनुष्य पृथ्वी पर देखता है, सारे मौसम जिनका वह अनुभव करता है, पेड़-पौधे, जानवर, सूक्ष्मजीव और मनुष्य सहित, सारी चीज़ें जो पृथ्वी पर निवास करती हैं, सभी परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन हैं, और परमेश्वर द्वारा नियन्त्रित की जाती हैं। परमेश्वर की संप्रभुता और नियन्त्रण के अंतर्गत, सभी चीज़ें उसके विचारों के अनुरूप अस्तित्व में आती हैं या अदृश्य हो जाती हैं; नियम बनते हैं जो उनके जीवन को संचालित करते हैं, और वे उनके अनुसार चलते हुए विकास करते हैं और निरंतर अपनी संख्या बढ़ाते हैं। कोई भी मनुष्य या चीज़ इन नियमों के ऊपर नहीं है। ऐसा क्यों है? इसका एकमात्र उत्तर हैः ऐसा परमेश्वर के अधिकार की वजह से है। दूसरे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर के विचारों और परमेश्वर के वचनों के कारण है; स्वयं परमेश्वर के कार्यों की वजह से है। अर्थात्, यह परमेश्वर का अधिकार और परमेश्वर की इच्छा है जो इन नियमों को बनाती है; जो उसके विचार के अनुसार परिवर्तित होंगे एवं बदलेंगे, ये सभी परिवर्तन और बदलाव उसकी योजना की खातिर घटित होंगे या मिट जाएंगे। उदाहरण के लिए, महामारियों को ही लें। वे बिना चेतावनी दिए ही अचानक फैल जाती हैं। वे कैसे फैलीं या क्यों हुईं, इसके सही कारणों के बारे में किसी को नहीं पता, और जब कभी भी कोई महामारी किसी स्थान पर फैलती है, तो अभिशप्त लोग ऐसी विपत्ति से बच नहीं पाते हैं। मानव-विज्ञान का मानना है कि महामारियाँ ख़तरनाक या हानिकारक सूक्ष्म रोगाणुओं के फैलने से उत्पन्न होती हैं, और उनकी रफ्तार, पहुंच और एक से दूसरे तक संचारण के तरीके का पूर्वानुमान या नियन्त्रण मानव-विज्ञान द्वारा करना संभव नहीं है। हालांकि, मनुष्य हर सम्भव तरीके से महामारी को रोकने का प्रयत्न करता है, लेकिन जब महामारियां फैलती हैं तो कौन-सा व्यक्ति या पशु अपरिहार्य रूप से इसकी चपेट में आ जाएगा, इसे वह नियंत्रित नहीं कर पाता। मनुष्य केवल उनको रोकने का और उनसे बचाव करने का और उन पर शोध करने का प्रयास कर सकता है। परन्तु कोई भी उस मूल वजह को नहीं जानता जो यह बता सके कि किसी महामारी की शुरुआत और अंत कैसे होता है, और न ही कोई उन्हें नियन्त्रित कर सकता

है। किसी महामारी के शुरू होने और फैलने पर, सबसे पहले मनुष्य जो कदम उठाता है वह होता है उसका टीका विकसित करना, परन्तु अक्सर टीका तैयार होने से पहले ही वह महामारी अपने आप ही ख़त्म हो जाती है। आखिर क्यों महामारियाँ खत्म हो जाती हैं? कुछ लोग कहते हैं कि रोगाणुओं को नियन्त्रित कर लिया जाता है, कुछ का कहना है कि मौसम के बदलने से वे खत्म हो जाती हैं। ये अनुमान तर्कसंगत हैं या नहीं, विज्ञान इसके बारे में न तो कोई स्पष्टीकरण दे सकता है, न ही कोई सटीक उत्तर। मानवजाति को न केवल इन अटकलबाज़ियों का सामना करना है, वरन महामारियों के बारे में अपनी समझ की कमी और भय से भी निपटना है। अंततः कोई नहीं जानता कि महामारियाँ क्यों शुरू होती हैं या वे क्यों खत्म हो जाती हैं। क्योंकि मानवजाति का विश्वास केवल विज्ञान में है, वह पूरी तरह से उसी पर आश्रित है, वह सृजनकर्ता के अधिकार को नहीं पहचानती या उसकी संप्रभुता को स्वीकार नहीं करती, इसलिए उसे कभी भी इसका कोई उत्तर नहीं मिल पाएगा।

परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन, उसके अधिकार, उसके प्रबन्धन के कारण, सभी चीज़ें उत्पन्न होती हैं, अस्तित्व में रहती हैं और नष्ट हो जाती हैं। कुछ चीज़ें धीरे से आती और चली जाती हैं, और मनुष्य नहीं बता पाता कि वे कहाँ से आई थीं या वे चीज़ें जिस तरीके से घटती हैं, उन्हें समझ नहीं पाता है, और वह उन कारणों को तो बिलकुल नहीं समझ पाता कि क्यों वे क्यों आती हैं और क्यों चली जाती हैं। यद्यपि मनुष्य अपनी आँखों से वह सब देख सकता है जो अन्य चीजों के बीच घटित होता है, वह अपने कानों से उन्हें सुन सकता है, और अपने शरीर से अनुभव कर सकता है; हालाँकि मनुष्य पर इन सब का असर पड़ता है, यद्यपि मनुष्य अवचेतन रूप से सापेक्ष असाधारणता, नियमितता, यहां तक कि विभिन्न घटनाओं की विचित्रता को भी समझ लेता है, फिर भी उसे पता नहीं होता कि उन घटनाओं के पीछे कौन है, जबकि उनके पीछे सृजनकर्ता की इच्छा और उसका दिमाग है। इन घटनाओं के पीछे अनेक कहानियाँ हैं, कई छिपे हुए सच हैं। क्योंकि मनुष्य भटककर सृजनकर्ता से बहुत दूर चला गया है, क्योंकि वह इस सच को नहीं स्वीकार करता कि सृजनकर्ता का अधिकार सभी चीज़ों को संचालित करता है, इसलिए वह उन तमाम घटनाओं को कभी नहीं जान और समझ पाएगा जो सृजनकर्ता की संप्रभुता के अन्तर्गत घटती हैं। क्योंकि अधिकांश भागों में, परमेश्वर का नियन्त्रण और संप्रभुता मानव की कल्पना, मानव के ज्ञान, मानव की समझ, और जो कुछ भी मानव-विज्ञान की उपलब्धियां हैं, उन सीमाओं से कहीं ज्यादा है, यह सृजित मानवजाति के ज्ञान की सीमाओं से परे है। कुछ लोग कहते हैं, "चूँकि तुमने खुद परमेश्वर की संप्रभुता नहीं

देखी है, तो तुम कैसे विश्वास कर सकते हो कि हर एक चीज़ उसके अधिकार के अधीन है?" हमेशा देखकर ही विश्वास किया जाए ऐसा जरूरी नहीं है; और न ही हमेशा देखकर पहचानना या समझा जाता है। तो विश्वास कहाँ से आता है? मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि, "विश्वास लोगों के संशय की सीमा और गहराई से, उनके अनुभव से और चीज़ों की वास्तविकता और मूल कारणों से आता है।" यदि तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर का अस्तित्व है, किन्तु तुम पहचान नहीं पाते, और सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर के नियन्त्रण और परमेश्वर की संप्रभुता को तो बिलकुल भी समझ नहीं पाते, तो तुम अपने हृदय में यह कभी स्वीकार नहीं कर पाओगे कि परमेश्वर के पास ऐसा अधिकार है और परमेश्वर का अधिकार अद्वितीय है। तुम सृष्टिकर्ता को कभी भी अपना प्रभु, अपना परमेश्वर स्वीकार नहीं कर पाओगे।

सृष्टिकर्ता की संप्रभुता से मानवजाति का भाग्य और विश्व का भाग्य अविभाज्य हैं

तुम सब वयस्क हो। तुम लोगों में से कुछ अधेड़-उम्र के हैं; कुछ लोग वृद्धावस्था में कदम रख चुके हैं। तुम लोग परमेश्वर पर विश्वास न करने से लेकर, उस पर विश्वास करने और परमेश्वर पर विश्वास करना शुरू करने से लेकर परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने और उसके कार्यों का अनुभव करने तक के दौर से गुजरे हो। तुम्हें परमेश्वर की संप्रभुता का कितना ज्ञान है? मनुष्य के भाग्य में तुम्हें कौन-सी अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त हुई हैं? क्या कोई व्यक्ति हर इच्छित चीज़ को प्राप्त कर सकता है? अपने अस्तित्व में आने के कुछ दशकों के दौरान कितनी चीज़ें हैं जिन्हें जैसा तुम चाहते थे उन्हें उसी तरह से पूरा करने में सक्षम रहे हो? जैसी तुमने कभी उम्मीद नहीं की थी, वैसी कितनी चीज़ें हैं जो हुई हैं? कितनी चीज़ें सुखद आश्चर्यों के रूप में आई हैं? ऐसी कितनी चीज़ें हैं जिनकी इस उम्मीद में लोग अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके परिणाम सुखद होंगे—अवचेतन रूप में सही पल की प्रतीक्षा कर रहे हैं, स्वर्ग की इच्छा की प्रतीक्षा कर रहे हैं? कितनी चीज़ें लोगों को असहाय और कुंठित महसूस कराती हैं? सभी यही सोचकर कि उनकी ज़िन्दगी में हर एक चीज़ वैसी ही होगी जैसा वे चाहते हैं, कि उनके पास भोजन या वस्त्रों का अभाव नहीं होगा, और उनका भाग्य असाधारण ढंग से उदित होगा, अपने भाग्य को लेकर आशाओं से भरे हैं। कोई भी ऐसा जीवन नहीं चाहता जिसमें दरिद्रता हो, जो दबा-कुचला हो, कठिनाइयों से भरा हो, आपदाओं से घिरा हो। परन्तु लोग इन चीज़ों का न तो पूर्वानुमान लगा सकते हैं, न ही उन्हें नियन्त्रित कर सकते हैं। शायद कुछ लोगों के लिए, अतीत बस अनुभवों का घालमेल है; वे कभी नहीं सीखते कि स्वर्ग की इच्छा क्या है, और न ही वे इसकी कोई परवाह ही करते हैं कि वह क्या है। वे बिना सोचे समझे, जानवरों की तरह, दिन-रात

जीते हुए, इस बारे में परवाह किए बिना कि मानवजाति का भाग्य क्या है, या मानव क्यों जीवित है या उसे किस प्रकार जीना चाहिए, अपना जीवन बिताते हैं। ऐसे लोग मनुष्य के भाग्य के बारे में कोई समझ प्राप्त किए बिना ही वृद्धावस्था तक पहुँच जाते हैं, और मरने की घड़ी तक उन्हें पता ही नहीं होता है कि जीवन वास्तव में क्या है। ऐसे लोग मरे हुए हैं; वे ऐसे प्राणी है जिनमें आत्मा नहीं है; वे जानवर हैं। यद्यपि लोग सृष्टि के अंदर रहते हैं और अनेक तरीकों से आनन्द प्राप्त करते हैं जिनसे संसार अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, यद्यपि वे इस भौतिक संसार को निरन्तर आगे बढ़ते हुए देखते हैं, फिर भी उनके स्वयं के अनुभव का—जो उनका हृदय और उनकी आत्मा महसूस और अनुभव करती है—भौतिक चीज़ों के साथ कोई लेना-देना नहीं होता, और कोई भी भौतिक चीज़ अनुभव का पर्याय नहीं बन सकती। अनुभव किसी व्यक्ति के हृदय की गहराई में निहित एक अभिज्ञान है, ऐसी चीज़ है जिसे खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता। यह अभिज्ञान मनुष्य के जीवन और उसके भाग्य के बारे में उसकी समझ, और उसकी अनुभूति में निहित होता है। यह प्रायः किसी को भी इस आशंका से ग्रस्त कर देता है कि एक अनदेखा स्वामी इन सभी चीज़ों को व्यवस्थित कर रहा है, मनुष्य के लिए हर एक चीज़ का आयोजन कर रहा है। इन सबके बीच, व्यक्ति भाग्य की व्यवस्थाओं और आयोजनों को स्वीकार करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता; और इंसान सृजनकर्ता द्वारा उसके लिए बनाए गए मार्ग को स्वीकारने और अपनी नियति पर सृजनकर्ता की संप्रभुता को स्वीकारने के अलावा कुछ नहीं कर पाता। यह एक निर्विवाद सत्य है। इंसान अपने भाग्य के बारे में कोई भी अन्तर्दृष्टि और दृष्टिकोण रखे, लेकिन वह इस सच्चाई को बदल नहीं सकता।

तुम प्रतिदिन कहाँ जाओगे, क्या करोगे, किस व्यक्ति या चीज़ का सामना करोगे, क्या कहोगे, तुम्हारे साथ क्या होगा—क्या इनमें से किसी के बारे में भी भविष्यवाणी की जा सकती है? लोग इन सभी घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं लगा सकते, और वे स्थितियां क्या रूप लेंगी, उस पर तो उनका बिलकुल भी नियन्त्रण नहीं है। जीवन में, ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ हर समय घटती हैं, और ऐसा प्रतिदिन होता है। ये रोज़ होने वाले उतार-चढ़ाव, और जिस तरीके से वे प्रकट होते हैं, या जिस ढंग से वे सामने आते हैं, मनुष्य को निरन्तर याद दिलाते हैं कि कुछ भी एकाएक नहीं होता, प्रत्येक घटना के घटने की प्रक्रिया, प्रत्येक घटना की अनिवार्यता का स्वरूप, मनुष्य की इच्छा से बदला नहीं जा सकता। हर घटना सृजनकर्ता की ओर से मनुष्यजाति को दी गई एक चेतावनी होती है, और वह यह सन्देश भी देती है कि मनुष्य अपने भाग्य को

नियन्त्रित नहीं कर सकता। प्रत्येक घटना मानवजाति की अनियन्त्रित, व्यर्थ महत्वाकांक्षा और अपने भाग्य को अपने हाथों में लेने की इच्छा का खण्डन है। ये मानवजाति के चेहरे पर एक के बाद एक मारे गए जोरदार थप्पड़ों की तरह हैं, जो लोगों को इस बात पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य करती हैं कि अंततः कौन है जो उनके भाग्य को संचालित और नियन्त्रित करता है। और जब मनुष्य की महत्वाकांक्षाएँ और इच्छाएँ लगातार नाकाम और ध्वस्त होती हैं, तो मनुष्य स्वाभाविक रूप से जो उसके भाग्य में है, उसे अवचेतन मन में स्वीकार कर लेता है—वास्तविकता की स्वीकृति, स्वर्ग की इच्छा और सृजनकर्ता की संप्रभुता की स्वीकृति। इन दैनिक उतार-चढ़ावों से लेकर, समस्त मानव-जीवन के भाग्य तक, ऐसा कुछ भी नहीं है जो सृजनकर्ता की योजना और उसकी संप्रभुता को प्रकट नहीं करता हो; ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सन्देश नहीं देता हो कि "सृजनकर्ता के अधिकार से परे नहीं जाया जा सकता," जो इस शाश्वत सत्य को व्यक्त न करता हो कि "सृजनकर्ता का अधिकार ही सर्वोच्च है।"

मानवजाति और विश्व के भाग्य सृजनकर्ता की संप्रभुता के साथ घनिष्ठता से गुँथे हुए हैं, और सृजनकर्ता के आयोजनों के साथ अविभाज्य रूप से बँधे हुए हैं; अंत में, वे सृजनकर्ता के अधिकार से अलग नहीं हो सकते। सभी चीज़ों के नियमों के माध्यम से मनुष्य सृजनकर्ता के आयोजन और उसकी संप्रभुता को समझ जाता है; सभी चीज़ों के जीने के नियमों के माध्यम से वह सृजनकर्ता के संचालन को समझ जाता है, सभी चीज़ों की नियति से वह उन तरीकों के बारे में अनुमान लगा लेता है जिनके द्वारा सृजनकर्ता अपनी संप्रभुता का उपयोग करता है और उन पर नियन्त्रण करता है; मानवजाति के जीवन चक्रों और सभी चीज़ों में, मनुष्य वास्तव में सभी चीज़ों और जीवित प्राणियों के लिए सृजनकर्ता के आयोजनों और व्यवस्थाओं का अनुभव करता है, वह देखता है कि किस प्रकार वे आयोजन और व्यवस्थाएँ सभी सांसारिक कानूनों, नियमों, संस्थानों और अन्य सभी शक्तियों और ताक़तों की जगह ले लेती हैं। ऐसा होने पर, मानवजाति यह मानने को बाध्य हो जाती है कि कोई भी सृजित प्राणी सृजनकर्ता की संप्रभुता का उल्लंघन नहीं कर सकता, सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित घटनाओं और चीज़ों को कोई भी शक्ति छीन या बदल नहीं सकती। मनुष्य इन अलौकिक कानूनों और नियमों के अधीन जीता है, सभी चीज़ें कायम रहती हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी वंश बढ़ाती हैं और फैलती हैं। क्या यह सृजनकर्ता के अधिकार का असली मूर्तरूप नहीं है? यद्यपि मनुष्य, वस्तुगत नियमों में, सभी घटनाओं और सभी चीज़ों के लिए सृजनकर्ता की संप्रभुता और उसके विधान को देखता है, फिर भी कितने लोग सृजनकर्ता द्वारा विश्व के लिए बनाए गए संप्रभुता के सिद्धान्तों

को समझ पाते हैं? कितने लोग वास्तव में अपने भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता और व्यवस्था को जान, पहचान, और स्वीकार कर पाते हैं, और उसके प्रति समर्पण कर पाते हैं? कौन, सभी चीज़ों पर सृजनकर्ता की संप्रभुता के सत्य पर विश्वास करने के बाद, वास्तव में विश्वास करेगा और पहचानेगा कि सृजनकर्ता मानव जीवन के भाग्य को भी निर्धारित करता है? कौन वास्तव में इस सच को समझ सकता है कि मनुष्य का भाग्य सृजनकर्ता की हथेली पर टिका हुआ है? इस सच्चाई को जानकर कि वह मानवजाति के भाग्य को संचालित और नियन्त्रित करता है, सृजनकर्ता की संप्रभुता के प्रति मानवजाति को किस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए? जो कोई भी इस सच्चाई से रूबरू हो चुका है, उसे अपने जीवन में इस बारे में निर्णय ले लेना चाहिए।

मानव जीवन में छह मोड़

जीवन पथ पर चलते हुए, प्रत्येक व्यक्ति कई महत्वपूर्ण मोड़ों पर पहुँचता है। ये अत्यधिक बुनियादी, और बेहद महत्वपूर्ण कदम होते हैं जो जीवन में व्यक्ति के भाग्य को निर्धारित करते हैं। आगे जो कुछ बताया गया है वे इन दिशासूचकों का एक संक्षिप्त विवरण है जिनसे अपने जीवन पथ पर प्रत्येक व्यक्ति को गुज़रना चाहिए।

पहला मोड़: जन्म

किसी व्यक्ति का कहाँ जन्म होता है, वह किस परिवार में जन्म लेता या लेती है, उसका लिंग, रंग-रूप, और जन्म का समय: ये किसी व्यक्ति के जीवन के प्रथम मोड़ के विवरण हैं।

इस मोड़ के विवरण कोई चुन नहीं सकता; ये सभी बहुत पहले ही सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित कर दिए जाते हैं। ये किसी भी तरह से बाहरी वातावरण द्वारा प्रभावित नहीं होते, और कोई भी मानव-निर्मित कारक उन तथ्यों को बदल नहीं सकते जो सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित हैं। किसी व्यक्ति के पैदा होने का अर्थ है कि सृजनकर्ता ने पहले से ही उसके भाग्य के पहले कदम को पूरा कर लिया है जो उसने उस व्यक्ति के लिए निर्धारित किया है। क्योंकि उसने इन सभी विवरणों को बहुत पहले से ही पूर्वनिर्धारित कर दिया है, इसलिए किसी में भी उनमें से किसी भी चीज़ को बदलने की ताक़त नहीं होती। किसी व्यक्ति का भाग्य चाहे जो भी हो, उसके जन्म की स्थितियाँ पूर्वनिर्धारित होती हैं, और जैसी हैं वैसी ही बनी रहती हैं; वे जीवन में उसके भाग्य द्वारा किसी भी तरह से प्रभावित नहीं होतीं, और न ही वे किसी भी तरह से किसी के

जीवन में उसके भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता को प्रभावित करती हैं।

1. सृजनकर्ता की योजनाओं से एक नए जीवन का जन्म होता है

कोई इंसान पहले मोड़ का कौन-सा विवरण चुन सकता—अपना जन्म स्थान, अपना परिवार, अपना लिंग, अपना रंग-रूप, अपने जन्म का समय? स्पष्ट रूप से, किसी व्यक्ति का जन्म एक निष्क्रिय घटना है। कोई व्यक्ति किसी स्थान-विशेष में, किसी समय-विशेष में, किसी परिवार-विशेष में, और किसी विशिष्ट रंग-रूप के साथ अनायास जन्म लेता है; कोई व्यक्ति अनायास ही किसी परिवार-विशेष का सदस्य बनता है, किसी एक वंश-वृक्ष की शाखा बन जाता है। जीवन के इस प्रथम मोड़ पर किसी व्यक्ति के पास सिवाय एक ऐसे परिवेश में जन्म लेने के, कोई विकल्प नहीं होता, जो सृजनकर्ता की योजना के अनुसार नियत होता है। उसके पास एक विशेष परिवार में, एक विशेष लिंग एवं रंग-रूप के साथ, एक विशेष समय पर जन्म लेने के, और कोई विकल्प नहीं होता, जो बहुत अंतरंगता से उसके जीवन-पथ से जुड़ा होता है। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर कोई व्यक्ति क्या कर सकता है? कुलमिलाकर, किसी मनुष्य के पास उसके जन्म से सम्बन्धित इन विवरणों में से किसी एक के बारे में भी कोई विकल्प नहीं होता। यदि यह सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित और उसका मार्गदर्शन न होता, तो इस संसार में जन्मा प्राणी कभी न जान पाता कि कहाँ जाना है या कहाँ रहना है, किसी से उसका कोई रिश्ता न होता, वह किसी का अपना न होता, और उसका कोई असली घर न होता। किन्तु सृजनकर्ता की अत्यंत कुशल व्यवस्थाओं की वजह से, इस नवजीवन के पास रहने के लिए एक जगह, माता-पिता, एक स्थान जो उसका अपना होता है, और रिश्तेदार मिलते हैं, और इसलिए वह नवजीवन अपनी ज़िंदगी की यात्रा शुरू करता है। इस पूरी प्रक्रिया में, इस नवजीवन को कैसे मूर्त रूप देना है, यह सृजनकर्ता की योजनाओं द्वारा निर्धारित किया जाता है, हर एक चीज़ जो उसे प्राप्त होती है, वह उसे सृजनकर्ता द्वारा प्रदान की जाती है। मुक्त ढंग से बहती एक देह, जिसका कोई अस्तित्व न था, धीरे-धीरे मांस-और-रक्त का रूप ले लेती है, एक दृश्यमान, साकार मनुष्य का रूप धारण कर लेती है, परमेश्वर की एक रचना बन जाती है, जो सोचती है, साँस लेती है, जिसे सर्दी-गर्मी का एहसास होता है, जो भौतिक संसार में सृजित प्राणियों के सभी सामान्य क्रियाकलापों में शामिल हो सकती है; और जो उन सभी स्थितियों का सामना करती है जिनका अनुभव उन सभी लोगों को करना होता है जिनका जन्म हुआ है। सृजनकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति के जन्म के पूर्व निर्धारण का अर्थ है कि वह उस व्यक्ति को वो सभी आवश्यक चीज़ें प्रदान करेगा जो जीवित रहने के लिए चाहिए; और उसी प्रकार किसी व्यक्ति के जन्म

लेने का अर्थ है कि जीवित रहने के लिए आवश्यक उसे सभी चीज़ें सृजनकर्ता द्वारा प्राप्त होंगी, और उसके बाद से, वह सृजनकर्ता द्वारा प्रदान किए गए और उसकी संप्रभुता के अधीन, किसी अन्य रूप में जीवन बिताएगा।

2. अलग-अलग मनुष्य अलग-अलग परिस्थितियों में जन्म क्यों लेते हैं

लोग प्रायः यह सोचना पसंद करते हैं कि यदि उनका जन्म फिर से हुआ, तो किसी शानदार परिवार में जन्म होगा; यदि उनका जन्म महिला के रूप में हुआ तो उनका रंग दूध जैसा सफेद होगा, हर कोई उन्हें प्यार करेगा, और यदि वे पुरुष के रूप में जन्मे, तो वे सुन्दर राजकुमार बनेंगे, उन्हें किसी चीज़ की कमी न होगी, और पूरा संसार उनके आदेशों का पालन करने के लिए सदा तत्पर रहेगा। प्रायः ऐसे लोग भी होते हैं जो अपने जन्म को लेकर बहुत से भ्रमों से ग्रस्त रहते हैं और वे अक्सर इससे असंतुष्ट रहते हैं, यहाँ तक कि उन्हें अपने परिवार, अपने रंग-रूप, अपने लिंग, और अपने जन्म के समय से भी असंतोष होता है। फिर भी लोग कभी समझ नहीं पाते कि उनका जन्म इसी परिवार में क्यों हुआ है या वे किसी विशेष प्रकार के क्यों दिखते हैं। वे नहीं जानते कि उन्होंने कहाँ जन्म लिया है या वे कैसे दिखाई देते हैं, इससे परे, उन्हें सृजनकर्ता के प्रबंधन में अनेक भूमिकाएँ निभानी हैं और और भिन्न-भिन्न ध्येय पूरे करने हैं—और यह उद्देश्य कभी नहीं बदलेगा। सृजनकर्ता की दृष्टि में, वह स्थान जहाँ किसी व्यक्ति का जन्म होता है, उसका लिंग, उसका रंग-रूप, ये सभी अस्थायी चीज़ें हैं। ये संपूर्ण मनुष्यजाति के उसके प्रबंधन की प्रत्येक अवस्था में अतिसूक्ष्म बिन्दुओं, और छोटे-छोटे प्रतीकों की एक श्रृंखला है। किसी व्यक्ति की वास्तविक मंज़िल और उसका परिणाम किसी विशेष अवस्था में उसके जन्म से निर्धारित नहीं होते, बल्कि उस ध्येय से निर्धारित होते हैं जिसे वह अपने जीवन में पूरा करता है, और सृजनकर्ता की प्रबंधन योजना पूरी हो जाने के बाद, उस पर किए न्याय द्वारा निर्धारित होते।

कहा जाता है कि प्रत्येक परिणाम का एक कारण होता है, कोई भी परिणाम बिना कारण के नहीं होता। इसलिए, किसी व्यक्ति का जीवन मूलत: उसके वर्तमान जीवन और उसके पिछले जीवन दोनों से जुड़ा हुआ होता है। यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु उसके जीवन की वर्तमान अवधि को समाप्त कर देती है, तो व्यक्ति का जन्म एक नए चक्र की शुरुआत है; यदि पुराना चक्र किसी व्यक्ति के पिछले जीवन को दर्शाता है, तो नया चक्र स्वाभाविक रूप से उसका वर्तमान जीवन है। चूँकि व्यक्ति का जन्म उसके पिछले जीवन और उसके वर्तमान जीवन से जुड़ा है, तो माना जाता है कि स्थान, परिवार, लिंग, रंग-रूप, और

इसी तरह के अन्य कारक जो उसके जन्म के साथ जुड़े हुए हैं, वे सभी अनिवार्यत: उसके पिछले और वर्तमान जीवन से जुड़े होते हैं। इसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति के जन्म के कारण न केवल उसके पिछले जीवन के द्वारा प्रभावित होते हैं, बल्कि वर्तमान जीवन में उसकी नियति द्वारा भी निर्धारित होते हैं, जिसकी वजह से भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में लोगों का जन्म होता है: कुछ लोग गरीब परिवारों में जन्म लेते हैं, कुछ का जन्म अमीर परिवारों होता है। इसलिए कुछ लोग सामान्य परिवार से होते हैं, और अन्य लोग शानदार और प्रसिद्ध वंशों के उत्तराधिकारी होते हैं। कुछ लोग दक्षिण में जन्म लेते हैं, और कुछ का जन्म उत्तर दिशा में होता है। कुछ लोग रेगिस्तान में जन्म लेते हैं, तो कुछ हरी-भरी भूमि में जन्म लेते हैं। कुछ लोगों के जन्म के साथ-साथ उल्लास, हँसी और उत्सव मनाया जाता है, और कुछ अपने साथ आँसू, आपदा और दुःख लेकर आते हैं। कुछ लोगों का जन्म इसलिए होता है ताकि उन्हें एक धरोहर की तरह संभाल कर रखा जा सके, कुछ लोगों को जंगली खरपतवार की तरह एक तरफ फेंक दिया जाता है। कुछ लोग सुन्दर मुखाकृति के साथ जन्म लेते हैं, और कुछ कुरूपता के साथ। कुछ लोग दिखने में सुन्दर होते हैं, और कुछ भद्दे दिखते हैं। कुछ लोग अर्धरात्रि में जन्म लेते हैं, और कुछ लोग दोपहर के सूर्य की चिलचिलाती धूप में पैदा होते हैं। ... सभी तबकों के लोगों का जन्म उस भाग्य से निर्धारित होता है जो सृजनकर्ता ने उनके लिए लिखा है; उनके जन्म, वर्तमान जीवन में उनके भाग्य और साथ ही उन भूमिकाओं को जिन्हें वे निभाएँगे और उन ध्येयों को जिन्हें वे पूरा करेंगे, को निर्धारित करते हैं। यह सब कुछ सृजनकर्ता की संप्रभुता के अधीन है, उसके द्वारा पूर्व निर्धारित है; कोई भी अपने पूर्वनिर्धारित भाग्य से बच नहीं सकता, अपने जन्म की परिस्थितियों को बदल नहीं सकता, और अपने भाग्य को चुन नहीं सकता।

दूसरा मोड़: बड़ा होना

लोगों ने किस प्रकार के परिवार में जन्म लिया है, इस आधार पर वे भिन्न-भिन्न पारिवारिक परिवेशों में बड़े होते हैं और अपने माता-पिता से भिन्न-भिन्न पाठ सीखते हैं। ये कारण उन स्थितियों को निर्धारित करते हैं जिसमें कोई व्यक्ति वयस्क होता है, और बड़ा होना व्यक्ति के जीवन के दूसरे मोड़ को दर्शाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस मोड़ पर भी लोगों के पास कोई विकल्प नहीं होता। यह भी नियत और पूर्वनियोजित है।

1. सृष्टिकर्ता ने इंसान के बड़े होने की परिस्थितियों को नियोजित और नियत कर दिया है

इंसान बड़ा होने के दौरान खुद उन लोगों, घटनाओं या चीज़ों का चुनाव नहीं कर सकता जिनसे वह सीखता और प्रभावित होता है। कोई यह नहीं चुन सकता कि उसे कौन-सा ज्ञान या कौशल हासिल करना है, कौन-सी आदतें उसे निर्मित करनी हैं। इस पर किसी का कोई वश नहीं है कि कौन उसके माता-पिता और सगे-सम्बन्धी होंगे, वह किस प्रकार के परिवेश में बड़ा होगा; लोगों, घटनाओं, और अपने आसपास की चीज़ों के साथ उसके रिश्ते कैसे होंगे, और वे किस प्रकार उसके विकास को प्रभावित करेंगे, ये सब उसके नियन्त्रण से परे है। तो फिर, इन चीज़ों तो कौन तय करता है? कौन इनको निर्धारित करता है? चूँकि इस मामले में लोगों के पास कोई विकल्प नहीं होता, चूँकि वे अपने लिए इन चीज़ों का निर्णय नहीं ले सकते, और चूँकि वे स्पष्टतया स्वाभविक रूप से आकार नहीं लेतीं, तो कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सभी लोगों, घटनाओं, और चीज़ों की रचना सृजनकर्ता के हाथों में है: निस्संदेह, ठीक जैसे सृजनकर्ता हर एक व्यक्ति के जन्म की विशेष परिस्थितियों की व्यवस्था करता है, वैसे ही वह उन विशिष्ट परिस्थितियों की व्यवस्था भी करता है जिनमें कोई व्यक्ति बड़ा होता है। यदि किसी व्यक्ति का जन्म लोगों, घटनाओं, और उस के आसपास की चीज़ों में परिवर्तन लाता है, तो उस व्यक्ति का बड़ा होना और उसका विकास भी उन्हें अवश्य प्रभवित करेगा। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों का जन्म गरीब परिवारों में होता है, किन्तु वे धन-सम्पत्ति के माहौल में बड़े होते हैं; कुछ लोग समृद्ध परिवारों में जन्म लेते हैं किन्तु अपने परिवारों के सौभाग्य के पतन का कारण बनकर, गरीबी में बड़े होते हैं। किसी का भी जन्म नियत नियमों द्वारा संचालित नहीं होता, और कोई भी व्यक्ति परिस्थतियों के अनिवार्य निर्धारित नियमों के अधीन बड़ा नहीं होता। ये ऐसी चीजें नहीं हैं जिनका कोई व्यक्ति अनुमान लगा सके या उन पर नियन्त्रण कर सके; ये उसके भाग्य के परिणाम हैं, और उसके भाग्य से निर्धारित होते हैं। निस्संदेह, बुनियादी तौर पर, ये चीजें उस भाग्य द्वारा निर्धारित होती हैं जिसे सृजनकर्ता प्रत्येक व्यक्ति के लिए पूर्व निर्धारित करता है, वे उस व्यक्ति के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता द्वारा और उसके लिए उसकी योजनाओं द्वारा निर्धारित किए जाते हैं।

2. जिन परिस्थितियों के अधीन लोग बड़े होते हैं, वे भिन्न-भिन्न भूमिकाओं का कारण बनती हैं

किसी व्यक्ति के जन्म की परिस्थितियाँ उस परिवेश और उन परिस्थितियों के बुनियादी स्तर पर स्थापित होती हैं जिसमें वे बड़े होते हैं, और उसी तरह से जिन परिस्थितियों में कोई व्यक्ति बड़ा होता है वे उसके जन्म की परिस्थितियों का परिणाम होती हैं। इस दौरान व्यक्ति भाषा सीखना आरम्भ करता है, और उसका मस्तिष्क कई नई चीज़ों का सामना और उन्हें आत्मसात करना आरम्भ करता है, यह एक ऐसी

प्रक्रिया है जिसमें वह लगातार बड़ा होता है। जिन चीज़ों को इंसान अपने कानों से सुनता है, अपनी आँखों से देखता है, और अपने मस्तिष्क से ग्रहण करता है, वे धीरे-धीरे उसके भीतरी संसार को समृद्ध और जीवंत करती हैं। जिन लोगों, घटनाओं, और चीज़ों के सम्पर्क में कोई व्यक्ति आता है; जिस सामान्य ज्ञान, विद्याओं, और कौशल को वह सीखता है, और सोचने के जिन तरीकों से वह प्रभावित होता है, जो उसके मन में बैठाए जाते हैं, या उसे सिखाए जाते हैं, वे सब जीवन में उसके भाग्य का मार्गदर्शन और उसे प्रभावित करेंगे। बड़े होने के दौरान कोई व्यक्ति जिस भाषा को सीखता है और उसके सोचने के तरीके को, उस परिवेश से अलग नहीं किया जा सकता, जिसमें वह अपनी युवावस्था गुजारता है, और वह परिवेश माता-पिता, भाई-बहनों, और अन्य लोगों, घटनाओं, और उस के आसपास की चीज़ों से मिलकर बनता है। इसलिए, किसी व्यक्ति के विकास का मार्ग उस परिवेश द्वारा निर्धारित होता है जिसमें वह बड़ा होता है, और उन लोगों, घटनाओं, और चीज़ों पर भी निर्भर करता है जिनके सम्पर्क में इस समयावधि के दौरान वह आता है। चूँकि ऐसी स्थितियाँ जिनके अधीन कोई व्यक्ति बड़ा होता है बहुत पहले ही पूर्व निर्धारित की जा चुकी होती हैं, इसलिए वह परिवेश जिसमें कोई व्यक्ति इस प्रक्रिया के दौरान जीवन बिताता है, वे भी स्वाभाविक रूप से पूर्वनिर्धारित होता है। इसे किसी व्यक्ति की पसंद और प्राथमिकताओं द्वारा तय नहीं किया जाता, बल्कि इसे सृजनकर्ता की योजनाओं के अनुसार तय किया जाता है, सृजनकर्ता द्वारा सावधानी से की गई व्यवस्थाओं द्वारा, जीवन में व्यक्ति के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता द्वारा निर्धारित किया जाता है। इसलिए बड़ा होने की प्रक्रिया के दौरान जब किसी व्यक्ति का लोगों से सामना होता है, और जिन चीजों के सम्पर्क में वह आता है, वे सभी अनिवार्य रूप से सृजनकर्ता के आयोजन और उसकी व्यवस्था से जुड़ी होती हैं। लोग इस प्रकार के जटिल पारस्परिक सम्बन्धों का पूर्वानुमान नहीं लगा सकते, और न ही वे उन्हें नियन्त्रित कर सकते हैं या उनकी थाह पा सकते हैं। बहुत-सी अलग-अलग चीज़ों और बहुत से अलग-अलग लोगों का उस परिवेश पर प्रभाव पड़ता है जिसमें कोई व्यक्ति बड़ा होता है, और कोई भी मनुष्य सम्बन्धों के इतने विशाल जाल की व्यवस्था और आयोजन करने में समर्थ नहीं है। सृजनकर्ता को छोड़कर कोई भी व्यक्ति या चीज़ अनेक प्रकार के अलग-अलग लोगों, घटनाओं, और चीज़ों के रंग-रूप, उपस्थिति तथा उनके लुप्त होने को नियन्त्रित नहीं कर सकती, और यह केवल सम्बन्धों का इतना विशाल जाल ही है जो किसी व्यक्ति के विकास को सृजनकर्ता द्वारा पूर्व निर्धारित आकार देता है, और अनेक प्रकार के परिवेशों का निर्माण करता है जिनमें लोग बड़े होते हैं। यही सृजनकर्ता के प्रबंधन के

कार्य के लिए आवश्यक अनेक भूमिकाओं की रचना करता है, और इसके लिए ठोस और मज़बूत बुनियाद की नींव रखता है, ताकि लोग सफलतापूर्वक अपने ध्येय को पूरा कर सकें।

तीसरा मोड़: स्वावलंबन

बचपन और किशोरावस्था पार करने के बाद जब कोई व्यक्ति धीरे-धीरे तथा परिपक्वता प्राप्त करता है, तो उसके लिए अगला कदम अपनी किशोरावस्था को पूरी तरह से अलविदा कहना, अपने माता-पिता को अलविदा कहना, और आगे के मार्ग का एक स्वावलंबी वयस्क के रूप में सामना करना होता है। इस मुकाम पर उसे सभी लोगों, घटनाओं, और चीज़ों का मुकाबला करना है जिनका एक वयस्क को सामना करना चाहिए, उसे अपने भाग्य के सभी अंगों का सामना करना चाहिए जो जल्द ही स्वयं उसके सामने आएंगे। यह तीसरा मोड़ है जिससे होकर व्यक्ति को गुज़रना होता है।

1. स्वावलंबी बनने के पश्चात्, व्यक्ति सृजनकर्ता की संप्रभुता का अनुभव करना आरम्भ करता है

यदि किसी व्यक्ति का जन्म और बड़ा होना उसके जीवन की यात्रा के लिए, व्यक्ति के भाग्य की आधारशिला रखने हेतु "तैयारी की अवधि" है, तो उसका स्वावलंबन जीवन में उसके भाग्य का प्रारम्भिक स्वभाषण है। यदि किसी व्यक्ति का जन्म और बड़ा होना धन-समृद्धि है जो उसने जीवन में अपने भाग्य के लिए संचित की है, तो किसी व्यक्ति का स्वावलंबन तब होता है जब वह अपनी धन-समृद्धि को खर्च करना और उसे बढ़ाना आरम्भ करता है। जब कोई अपने माता-पिता को छोड़कर स्वावलंबी हो जाता है, तो जिन सामाजिक स्थितियों का वह सामना करता है, और उसके लिए उपलब्ध कार्य व जीवनवृत्ति का प्रकार, दोनों भाग्य द्वारा आदेशित होते हैं और उनका उसके माता-पिता से कोई लेना देना नहीं होता। कुछ लोग महाविद्यालय में अच्छे मुख्य विषय चुनते हैं और अंत में स्नातक की पढ़ाई पूरी करके एक संतोषजनक नौकरी पाते हैं, और अपने जीवन की यात्रा में पहली विजयी छलांग लगाते हैं। कुछ लोग कई प्रकार के कौशल सीखकर उनमें महारत हासिल कर लेते हैं, लेकिन फिर भी कोई अनुकूल नौकरी और पद नहीं ढूँढ़ पाते, करियर की तो बात ही छोड़ दो; अपनी जीवन यात्रा के आरम्भ में ही वे अपने आपको हर एक मोड़ पर कुंठित, परेशानियों से घिरा, अपने भविष्य को निराशाजनक और अपने जीवन को अनिश्चित पाते हैं। कुछ लोग बहुत लगन से अध्ययन करने में जुट जाते हैं, फिर भी उच्च शिक्षा पाने के अपने सभी

अवसरों से बाल-बाल चूक जाते हैं; उन्हें लगता है कि उनके भाग्य में सफलता पाना लिखा ही नहीं है, उन्हें अपनी जीवन यात्रा में सबसे पहली आकांक्षा ही शून्य में विलीन होती लगती है। ये न जानते हुए कि आगे का मार्ग निर्बाध है या पथरीला, उन्हें पहली बार महसूस होता कि मनुष्य की नियति कितने उतार-चढ़ावों से भरी हुई है, इसलिए वे जीवन को आशा और भय से देखते हैं। कुछ लोग, बहुत अधिक शिक्षित न होने के बावजूद, पुस्तकें लिखते हैं और बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं; कुछ, यद्यपि पूरी तरह से अशिक्षित होते हैं, फिर भी व्यवसाय में पैसा कमाकर सुखी जीवन गुज़ारते हैं...। कोई व्यक्ति कौन-सा व्यवसाय चुनता है, कोई व्यक्ति कैसे जीविका अर्जित करता है: क्या लोगों का इस पर कोई नियन्त्रण है कि वे अच्छा चुनाव करते हैं या बुरा चुनाव? क्या वो उनकी इच्छाओं एवं निर्णयों के अनुरूप होता है? अधिकांश लोगों की ये इच्छाएं होती हैं—कम काम करना और अधिक कमाना, बहुत अधिक परिश्रम न करना, अच्छे कपड़े पहनना, हर जगह नाम और प्रसिद्धि हासिल करना, दूसरों से आगे निकलना, और अपने पूर्वजों का सम्मान बढ़ाना। लोग सब कुछ बेहतरीन होने की इच्छा रखते हैं, किन्तु जब वे अपनी जीवन-यात्रा में पहला कदम रखते हैं, तो उन्हें धीरे-धीरे समझ में आने लगता है कि मनुष्य का भाग्य कितना अपूर्ण है, और पहली बार उन्हें समझ में आता है कि भले ही इंसान अपने भविष्य के लिए स्पष्ट योजना बना ले, भले ही वो महत्वाकांक्षी कल्पनाएँ पाल ले, लेकिन किसी में अपने सपनों को साकार करने की योग्यता या सामर्थ्य नहीं होता, कोई अपने भविष्य को नियन्त्रित नहीं कर सकता। सपनों और हकीकत में हमेशा कुछ दूरी रहेगी; चीज़ें वैसी कभी नहीं होतीं जैसी इंसान चाहता है, और इन सच्चाइयों का सामना करके लोग कभी संतुष्टि या तृप्ति प्राप्त नहीं कर पाते। कुछ लोग तो अपनी जीविका और भविष्य के लिए, अपने भाग्य को बदलने के लिए, किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं, हर संभव प्रयास करते हैं और बड़े से बड़ा त्याग कर देते हैं। किन्तु अंततः, भले ही वे कठिन परिश्रम से अपने सपनों और इच्छाओं को साकार कर पाएं, फिर भी वे अपने भाग्य को कभी बदल नहीं सकते, भले ही वे कितने ही दृढ़ निश्चय के साथ कोशिश क्यों न करें, वे कभी भी उससे ज्यादा नहीं पा सकते जो नियति ने उनके लिए तय किया है। योग्यता, बौद्धिक स्तर, और संकल्प-शक्ति में भिन्नताओं के बावजूद, भाग्य के सामने सभी लोग एक समान हैं, जो महान और तुच्छ, ऊँचे और नीचे, तथा उत्कृष्ट और निकृष्ट के बीच कोई भेद नहीं करता। कोई किस व्यवसाय को अपनाता है, कोई आजीविका के लिए क्या करता है, और कोई जीवन में कितनी धन-सम्पत्ति संचित करता है, यह उसके माता-पिता, उसकी प्रतिभा, उसके प्रयासों या उसकी महत्वाकांक्षाओं से तय नहीं होता, बल्कि

सृजनकर्ता द्वारा पूर्व निर्धारित होता है।

2. अपने माता-पिता को छोड़ना और जीवन के रंगमंच पर अपनी भूमिका निभाने के लिए ईमानदारी से शुरुआत करना

परिपक्व होने के बाद, व्यक्ति अपने माता-पिता को छोड़ने और अपने बलबूते पर कुछ करने में सक्षम हो जाता है, और इसी मोड़ पर वह सही मायने में अपनी भूमिका निभाना शुरू करता है, धुंध छंटने लगती है और उसके जीवन का ध्येय धीरे-धीरे स्पष्ट होता जाता है। नाममात्र के लिए वह अभी भी अपने माता-पिता के साथ घनिष्ठता से जुड़ा रहता है, किन्तु जो ध्येय और भूमिका वह अपने जीवन में निभाता है, उसका उसके माता-पिता के साथ कोई लेना-देना नहीं होता, इसलिए इंसान धीरे-धीरे स्वावलंबी होता जाता है, यह घनिष्ठ बन्धन टूटता जाता है। जैविक परिप्रेक्ष्य में, लोग तब भी अवचेतन रूप में माता-पिता पर ही निर्भर होते हैं, लेकिन सच कहें, तो बड़े होने पर उनका जीवन अपने माता-पिता से बिलकुल भिन्न होता है, और वे उन भूमिकाओं को निभाते हैं जो उन्होंने स्वतंत्र रूप से अपनायी है। जन्म देने और बच्चे के पालन-पोषण के अलावा, बच्चे के जीवन में माता-पिता का उत्तरदायित्व उसके बड़ा होने के लिए बस एक औपचारिक परिवेश प्रदान करना है, क्योंकि सृजनकर्ता के पूर्वनिर्धारण के अलावा किसी भी चीज़ का उस व्यक्ति के भाग्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता। किसी व्यक्ति का भविष्य कैसा होगा, इसे कोई नियन्त्रित नहीं कर सकता; इसे बहुत पहले ही पूर्व निर्धारित किया जा चुका होता है, किसी के माता-पिता भी उसके भाग्य को नहीं बदल सकते। जहाँ तक भाग्य की बात है, हर कोई स्वतन्त्र है, और हर किसी का अपना भाग्य है। इसलिए किसी के भी माता-पिता जीवन में उसके भाग्य को नहीं रोक सकते या उस भूमिका पर जरा-सा भी प्रभाव नहीं डाल सकते जिसे वह जीवन में निभाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि वह परिवार जिसमें किसी व्यक्ति का जन्म लेना नियत होता है, और वह परिवेश जिसमें वह बड़ा होता है, वे जीवन में उसके ध्येय को पूरा करने के लिए मात्र पूर्वशर्तें होती हैं। वे किसी भी तरह से किसी व्यक्ति के भाग्य को या उस प्रकार की नियति को निर्धारित नहीं करते जिसमें रहकर कोई व्यक्ति अपने ध्येय को पूरा करता है। और इसलिए, किसी के भी माता-पिता जीवन में उसके ध्येय को पूरा करने में उसकी सहायता नहीं कर सकते, किसी के भी रिश्तेदार जीवन में उसकी भूमिका निभाने में उसकी सहायता नहीं कर सकते। कोई किस प्रकार अपने ध्येय को पूरा करता है और वह किस प्रकार के परिवेश में रहते हुए अपनी भूमिका निभाता है, यह पूरी तरह से जीवन में उसके भाग्य द्वारा निर्धारित होता है। दूसरे शब्दों में, कोई भी अन्य निष्पक्ष

स्थितियाँ किसी व्यक्ति के ध्येय को, जो सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित किया जाता है, प्रभावित नहीं कर सकतीं। सभी लोग अपने-अपने परिवेश में जिसमें वे बड़े होते हैं, परिपक्व होते हैं; तब क्रमशः धीरे-धीरे, अपने रास्तों पर चल पड़ते हैं, और सृजनकर्ता द्वारा नियोजित उस नियति को पूरा करते हैं। वे स्वाभाविक रूप से, अनायास ही लोगों के विशाल समुद्र में प्रवेश करते हैं और जीवन में भूमिका ग्रहण करते हैं, जहाँ वे सृजनकर्ता के पूर्वनिर्धारण के लिए, उसकी संप्रभुता के लिए, सृजित प्राणियों के रूप में अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करना शुरू करते हैं।

चौथा मोड़ः विवाह

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है और परिपक्वता आती है, तो व्यक्ति अपने माता-पिता से एवं उस परिवेश से और भी अधिक दूर हो जाता है जिसमें वह जन्मा और पला-बढ़ा था। इसके बजाय वह जीवन में एक दिशा खोजने और अपने माता-पिता से भिन्न तरीके से अपने जीवन के लक्ष्यों को पाने का प्रयास शुरू कर देता है। इस दौरान उसे अपने माता-पिता की आवश्यकता नहीं रहती, बल्कि एक साथी की आवश्यकता होती है जिसके साथ वह अपना जीवन बिता सके, यानी कि एक जीवनसाथी, एक ऐसा व्यक्ति जिसके साथ उसका भाग्य घनिष्ठता से जुड़ा हुआ होता है। इस तरह, आत्मनिर्भर बनने के बाद, उसके जीवन की पहली बड़ी घटना विवाह होती है, यह एक चौथा मोड़ है जिससे उसे गुज़रना होता है।

1. विवाह व्यक्तिगत पसंद से नहीं होता

किसी भी व्यक्ति के जीवन में विवाह एक महत्वपूर्ण घटना होती है; यह वह समय होता है जब कोई विभिन्न प्रकार के उत्तरदायित्वों को वहन करना और धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के ध्येयों को पूरा करना आरम्भ करता है। स्वयं अनुभव करने से पहले, लोगों के मन में विवाह के बारे में बहुत से भ्रम होते हैं, और ये सभी भ्रम बहुत ही खूबसूरत होते हैं। महिलाएँ कल्पना करती हैं कि उनका होने वाला पति सुन्दर राजकुमार होगा, और पुरुष कल्पना करते हैं कि वे दूध जैसी सफेद, गोरी कन्या से विवाह करेंगे। इन कल्पनाओं से पता चलता है कि विवाह को लेकर प्रत्येक व्यक्ति की कुछ निश्चित अपेक्षाएँ होती हैं, उनकी स्वयं की माँगें और मानक होते हैं। यद्यपि इस बुराई से भरे युग में लोगों के पास विवाह के बारे में विकृत संदेशों की भरमार हो जाती है, जो और भी अधिक अतिरिक्त अपेक्षाओं को जन्म देते हैं और लोगों को तमाम तरह के बोझ एवं अजीब-सी सोच से लाद देते हैं। जिसने विवाह किया है, वह जानता है कि कोई

इसे किसी भी तरह से क्यों न समझे, उसका दृष्टिकोण इसके प्रति कुछ भी क्यों न हो, विवाह व्यक्तिगत पसंद का मामला नहीं है।

व्यक्ति अपने जीवन में कई लोगों के संपर्क में आता है, किन्तु कोई नहीं जानता है कि उसका जीवनसाथी कौन बनेगा। हालाँकि विवाह के बारे में प्रत्येक की अपनी सोच और अपने व्यक्तिगत उद्देश्य होते हैं, फिर भी कोई पूर्वानुमान नहीं लगा सकता कि अंततः कौन उसका सच्चा जीवनसाथी बनेगा, इस विषय पर उसकी अपनी अवधारणाएँ ज्यादा मायने नहीं रखतीं। तुम जिस व्यक्ति को पसंद करते हो उससे मिलने के बाद, उसे पाने का प्रयास कर सकते हो; किन्तु वह तुममें रुचि रखता है या नहीं, वह तुम्हारा जीवन साथी बनने योग्य है या नहीं, यह तय करना तुम्हारा काम नहीं है। तुम जिसे चाहते हो ज़रूरी नहीं कि वह वही व्यक्ति हो जिसके साथ तुम अपना जीवन साझा कर पाओगे; और इसी बीच कोई ऐसा व्यक्ति जिसकी तुमने कभी अपेक्षा भी नहीं की थी, वह चुपके से तुम्हारे जीवन में प्रवेश कर जाता है और तुम्हारा साथी बन जाता है, तुम्हारा जीवनसाथी तुम्हारे भाग्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग बन जाता है, जिसके साथ तुम्हारा भाग्य अभिन्न रूप से बँधा हुआ है। इसलिए, यद्यपि संसार में लाखों विवाह होते हैं, फिर भी हर एक भिन्न है: कितने विवाह असंतोषजनक होते हैं, कितने सुखद होते हैं; कितने परिपूर्ण जोड़े होते हैं, कितने समकक्ष श्रेणी के होते हैं; कितने सुखद और सामंजस्यपूर्ण होते हैं, कितने दुःखदाई और कष्टपूर्ण होते हैं; कितने दूसरों के मन में ईर्ष्या जगाते हैं, कितनों को गलत समझा जाता है और उन पर नाक-भौं सिकोड़ी जाती है; कितने आनन्द से भरे होते हैं, कितने आँसूओं से भरे हैं और मायूसी पैदा करते हैं...। इन अनगिनत तरह के विवाहों में, मनुष्य विवाह के प्रति वफादारी और आजीवन प्रतिबद्धता दर्शाता है, प्रेम, आसक्ति, एवं कभी अलग न होने, या परित्याग और न समझ पाने की भावना को प्रकट करता है। कुछ लोग विवाह में अपने साथी के साथ विश्वासघात करते हैं, यहाँ तक कि घृणा करते हैं। चाहे विवाह से खुशी मिले या पीड़ा, विवाह में हर एक व्यक्ति का ध्येय सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित होता है और यह कभी बदलता नहीं; यह ध्येय ऐसा है जिसे हर एक को पूरा करना होता है। प्रत्येक विवाह के पीछे निहित हर व्यक्ति का भाग्य अपरिवर्तनीय होता है; इसे बहुत पहले ही सृजनकर्ता द्वारा निर्धारित किया जा चुका होता है।

2. विवाह दोनों साथियों के भाग्य से होता है

विवाह किसी व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह व्यक्ति के भाग्य का परिणाम है, और

किसी के भाग्य में एक महत्वपूर्ण कड़ी है; यह किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा या प्राथमिकताओं पर आधारित नहीं होता है, और किसी भी बाहरी कारक द्वारा प्रभावित नहीं होता है, बल्कि यह पूर्णतः दो पक्षों के भाग्य, युगल के दोनों सदस्यों के भाग्य के लिए सृजनकर्ता की व्यवस्थाओं और उसके पूर्वनिर्धारणों द्वारा निर्धारित होता है। सतही तौर पर, विवाह का उद्देश्य मानवजाति को कायम रखना है, लेकिन वास्तव में, विवाह केवल एक रस्म है जिससे व्यक्ति अपने ध्येय को पूरा करने की प्रक्रिया में गुज़रता है। विवाह में, लोग मात्र अगली पीढ़ी का पालन-पोषण करने की भूमिका नहीं निभाते हैं; वे ऐसी अनेक भूमिकाएँ अपनाते हैं जो विवाह को कायम रखने के लिए ज़रूरी होती हैं और उन उद्देश्यों को अपनाते हैं जिनकी पूर्ति की अपेक्षा ये भूमिकाएँ उनसे करती है। चूँकि व्यक्ति का जन्म आसपास की चीज़ों, घटनाओं, और उन परिवर्तनों को प्रभावित करता है जिनसे लोग गुज़रते हैं, इसलिए उसका विवाह भी अनिवार्य रूप से इन लोगों, घटनाओं और चीज़ों को प्रभावित करेगा, यही नहीं, कई तरीकों से उन सब को रूपान्तरित भी करेगा।

जब कोई व्यक्ति स्वावलंबी बन जाता है, तो वह अपनी स्वयं की जीवन यात्रा आरंभ करता है, जो उसे धीरे-धीरे उन लोगों, घटनाओं, और चीज़ों की ओर ले जाती है, जिनका उसके विवाह से संबंध होता है। साथ ही, वह दूसरा व्यक्ति जो उस विवाह में होगा, धीरे-धीरे उन्हीं लोगों, घटनाओं एवं चीज़ों की ओर आ रहा होता है। सृजनकर्ता की संप्रभुता के अधीन, दो असंबंधित लोग जिनके भाग्य जुड़े हैं, धीरे-धीरे एक विवाह में प्रवेश करते हैं और, चमत्कारपूर्ण ढ़ंग से, एक परिवार बन जाते हैं : "एक ही रस्सी पर लटकी हुई दो टिड्डियाँ।" इसलिए जब कोई विवाह करता है, तो उसकी जीवन-यात्रा उसके जीवनसाथी को प्रभावित करेगी, और उसी तरह उसके साथी की जीवन-यात्रा भी जीवन में उसके भाग्य को प्रभावित और स्पर्श करेगी। दूसरे शब्दों में, मनुष्यों के भाग्य परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और कोई भी दूसरों से पूरी तरह से अलग होकर जीवन में अपना ध्येय पूरा नहीं कर सकता है या अपनी भूमिका नहीं निभा सकता है। व्यक्ति का जन्म संबंधों की एक बड़ी श्रृंखला पर प्रभाव डालता है; बड़े होने की प्रक्रिया में भी संबंधों की एक जटिल श्रृंखला शामिल होती है; और उसी प्रकार, विवाह अनिवार्य रूप से मानवीय संबंधों के एक विशाल और जटिल जाल के बीच विद्यमान होता आता है और इसी में कायम रहता है, विवाह में उस जाल का प्रत्येक सदस्य शामिल होता है और यह हर उस व्यक्ति के भाग्य को प्रभावित करता है जो उसका भाग है। विवाह दोनों सदस्यों के परिवारों का, उन परिस्थितियों का जिनमें वे बड़े हुए थे, उनके रंग-रूप, उनकी

आयु, उनके गुणों, उनकी प्रतिभाओं, या अन्य कारकों का परिणाम नहीं है; बल्कि, यह साझा ध्येय और संबंधित भाग्य से उत्पन्न होता है। यह विवाह का मूल है, सृजनकर्ता द्वारा आयोजित और व्यवस्थित मनुष्य के भाग्य का एक परिणाम है।

पाँचवाँ मोड़ः संतान

विवाह करने के पश्चात्, व्यक्ति अगली पीढ़ी को बड़ा करना आरंभ करता है। इस पर किसी का वश नहीं चलता कि उसकी कितनी और किस प्रकार की संतानें होंगी; यह भी, व्यक्ति के भाग्य द्वारा निर्धारित होता है जो सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनियत है। यह पाँचवाँ मोड़ है जिससे किसी व्यक्ति को गुज़रना होता है।

यदि किसी का जन्म किसी के बच्चे की भूमिका निभाने के लिए हुआ है, तो वह किसी और के माता-पिता की भूमिका निभाने के लिए अगली पीढ़ी का पालन-पोषण करता है। भूमिकाओं में होने वाला यह बदलाव व्यक्ति को भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्यों से जीवन की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का अनुभव कराता है। यह व्यक्ति को जीवन के अनुभवों की भिन्न-भिन्न स्थितियों से भी परिचित कराता है, जिनके माध्यम से सृजनकर्ता की संप्रभुता के बारे में उसे पता चलता है, जो हमेशा एक ही तरह से अभिनीत होती है, और जिसके द्वारा उसका इस सच से सामना होता है कि कोई भी सृजनकर्ता की पूर्वनियति का उल्लंघन या उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता है।

1. किसी की संतान का क्या होगा इस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता

जन्म, बड़ा होना और विवाह, ये सभी विभिन्न मात्राओं में, विभिन्न प्रकार की निराशा लाते हैं। कुछ लोग अपने परिवारों या अपने शारीरिक रंग-रूप से असंतुष्ट होते हैं; कुछ अपने माता-पिता को नापसंद करते हैं; कुछ लोगों को उस परिवेश से शिकायतें होती हैं जिसमें वे बड़े हुए हैं, या वे उससे अप्रसन्न होते हैं। और अधिकांश लोगों के लिए, इन सभी निराशाओं में विवाह सबसे अधिक असंतोषजनक होता है। कोई व्यक्ति अपने जन्म, परिवक्व होने, या अपने विवाह से चाहे कितना ही असंतुष्ट क्यों न हो, हर एक व्यक्ति जो इनसे होकर गुज़र चुका है, जानता है कि वह यह चुनाव नहीं कर सकता कि उसे कहाँ और कब जन्म लेना है, उसका रूप-रंग कैसा होगा, उसके माता-पिता कौन हैं, और कौन उसका जीवनसाथी है, वरन उसे केवल परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करना होगा। फिर भी जब लोगों द्वारा अगली पीढ़ी का पालन-पोषण करने का समय आता है, तो वे अपने जीवन के प्रथम हिस्से की समस्त इच्छाओं को जिन्हें वे

पूरा करने में असफल रहे थे, अपने वंशजों पर थोप देते हैं। ऐसा वे इस उम्मीद में करते हैं कि उनकी संतान उनके जीवन के प्रथम हिस्से की समस्त निराशाओं की भरपाई कर देगी। इसलिए, लोग अपने बच्चों को लेकर सभी प्रकार की कल्पनाओं में डूबे रहते हैं : उनकी बेटियाँ बड़ी होकर बहुत ही खूबसूरत युवतियाँ बन जाएँगी, उनके बेटे बहुत ही आकर्षक पुरुष बन जाएँगे; उनकी बेटियाँ सुसंस्कृत और प्रतिभाशाली होंगी और उनके बेटे प्रतिभावान छात्र और सुप्रसिद्ध खिलाड़ी होंगे; उनकी बेटियाँ सभ्य, गुणी, और समझदार होंगी, और उनके बेटे बुद्धिमान, सक्षम और संवेदनशील होंगे। वे उम्मीद करते हैं कि उनकी संतान, चाहे बेटे हों या बेटियाँ, अपने बुज़ुर्गों का आदर करेगी, अपने माता-पिता का ध्यान रखेगी, और हर कोई उनसे प्यार और उनकी प्रशंसा करेगा...। इस मोड़ पर जीवन के लिए आशा नए सिरे से अंकुरित होती है, और लोगों के दिल में नई उमंगें पैदा होने लगती हैं। लोग जानते हैं कि वे इस जीवन में शक्तिहीन और आशाहीन हैं, और उनके पास औरों से अलग दिखने का न तो दूसरा अवसर होगा, न फिर ऐसी कोई आशा होगी, और यह भी कि उनके पास अपने भाग्य को स्वीकार करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। और इसलिए, वे अगली पीढ़ी पर, इस उम्मीद से अपनी समस्त आशाओं, अपनी अतृप्त इच्छाओं, और आदर्शों को थोप देते हैं, कि उनकी संतान उनके सपनों को पूरा करने और उनकी इच्छाओं को साकार करने में उनकी सहायता कर सकती है; कि उनकी बेटे-बेटियाँ परिवार के नाम को गौरवान्वित करेंगे, महत्वपूर्ण, समृद्ध, या प्रसिद्ध बनेंगे। संक्षेप में, वे अपने बच्चों के भाग्य को बहुत ऊँचाई पर देखना चाहते हैं। लोगों की योजनाएँ और कल्पनाएँ उत्तम होती हैं; क्या वे नहीं जानते कि यह तय करना उनका काम नहीं है कि उनके कितने बच्चे हैं, उनके बच्चों का रंग-रूप, योग्यताएँ कैसी हैं, इत्यादि बच्चों का थोड़ा-सा भी भाग्य उनके हाथ में नहीं है? मनुष्य अपने भाग्य के स्वामी नहीं हैं, फिर भी वे युवा पीढ़ी के भाग्य को बदलने की आशा करते हैं; वे अपने भाग्य से बचकर नहीं निकल सकते, फिर भी वे अपने बेटे-बेटियों के भाग्य को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं। क्या वे अपने आप को अपनी क्षमता से बढ़कर नहीं आंक रहे हैं? क्या यह मनुष्य की मूर्खता और अज्ञानता नहीं है? लोग अपनी संतान के लिए किसी भी हद तक जाते हैं, किन्तु अंत में, किसी व्यक्ति की योजनाएँ और इच्छाएं इसका निर्धारण नहीं कर सकतीं कि उसके कितने बच्चे हों, या उसके बच्चे कैसे हों। कुछ लोग दरिद्र होते हैं परन्तु उनके कई बच्चे होते हैं; कुछ लोग धनी होते हैं फिर भी उनकी एक भी संतान नहीं होती है। कुछ लोग एक बेटी चाहते हैं परन्तु उनकी यह इच्छा पूरी नहीं होती है; कुछ लोग एक बेटा चाहते हैं परन्तु एक लड़के को जन्म देने में

असफल रहते हैं। कुछ लोगों के लिए, बच्चे एक आशीर्वाद होते हैं; अन्य लोगों के लिए, वे एक श्राप होते हैं। कुछ दंपति बुद्धिमान होते हैं, फिर भी मंदबुद्धि बच्चों को जन्म देते हैं; कुछ माता-पिता मेहनती और ईमानदार होते हैं, फिर भी जिन बच्चों का वे पालन-पोषण करते हैं वे आलसी होते हैं। कुछ माता-पिता दयालु और सच्चे होते हैं परन्तु उनके बच्चे कुटिल और शातिर बन जाते हैं। कुछ माता-पिता दिमाग और शरीर से स्वस्थ्य होते हैं किन्तु अपाहिज बच्चों को जन्म देते हैं। कुछ माता-पिता साधारण और असफल होते हैं, फिर भी उनके बच्चे महान उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं। कुछ माता-पिता की हैसियत निम्न होती है फिर भी उनके ऐसे बच्चे होते हैं जो श्रेष्ठता हासिल करते हैं। ...

2. आगामी पीढ़ी को बड़ा करने के बाद, लोग भाग्य के बारे में एक नई समझ प्राप्त करते हैं

विवाह करने वाले अधिकांश लोग लगभग तीस वर्ष की आयु में विवाह करते हैं, यह जीवन का ऐसा समय होता है जब एक व्यक्ति के पास मानवीय भाग्य कोई समझ नहीं होती है। किन्तु जब लोग बच्चों की परवरिश करना आरंभ करते हैं और उनकी संतान बड़ी होने लगती है, वे नई पीढ़ी को पिछली पीढ़ी के जीवन और सभी अनुभवों को दोहराते हुए देखते हैं, और वे अपने अतीत को उनमें प्रतिबिंबत होते हुए देखकर उन्हें एहसास होता है कि, युवा पीढ़ी जिस मार्ग पर चल रही है, उसे उनके मार्ग के समान ही न तो नियोजित किया जा सकता है और न ही चुना नहीं जा सकता है। इस सच का सामना होने पर, उनके पास यह स्वीकार करने के सिवाए और कोई विकल्प नहीं होता है कि हर एक व्यक्ति का भाग्य पूर्वनियत है; और इसे पूरी तरह से समझे बिना ही वे धीरे-धीरे अपनी इच्छाओं को दरकिनार कर देते हैं, और उनके दिल का जोश डगमगा जाता है और खत्म हो जाता है...। इस समयावधि के दौरान लोग अधिकांशतः जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों को पार कर चुके होते हैं और उन्होंने जीवन की एक नई समझ प्राप्त कर ली होती है, एक नया दृष्टिकोण अपना लिया होता है। इस आयु वाला व्यक्ति भविष्य से कितनी अपेक्षा कर सकता है और उम्मीद करने के लिए उनके पास कौन सी संभावनाएँ हैं? ऐसी कौन सी पचास साल की बूढ़ी स्त्री है जो अभी भी एक सुन्दर राजकुमार का सपना देख रही है? ऐसा कौन सा पचास साल का बूढ़ा पुरुष है जो अभी भी अपनी परी की खोज कर रहा है? ऐसी कौन सी अधेड़ उम्र की स्त्री है जो अभी भी एक भद्दी बतख़ से एक हंस में बदलने की आशा कर रही है? क्या अधिकांश बूढ़े पुरुषों में जवान पुरुषों के समान कार्यक्षेत्र में बहुत अधिक पाने की प्रबल प्रेरणा होती है? संक्षेप में, चाहे कोई पुरुष हो या स्त्री, जो कोई भी इस उम्र तक पहुँच चुका है, उसकी विवाह, परिवार, और बच्चों के प्रति अपेक्षाकृत कहीं अधिक

तर्कसंगत, व्यावहारिक सोच होने की संभावना होती है। ऐसे व्यक्ति के पास अनिवार्य रूप से कोई विकल्प नहीं बचता, भाग्य को चुनौती देने की कोई इच्छा नहीं बचती है। जहाँ तक मनुष्य के अनुभव की बात है, जैसे ही कोई व्यक्ति इस आयु में पहुँचता है तो उसमें स्वाभाविक रूप से एक दृष्टिकोण विकसित हो जाता है : "व्यक्ति को अपने भाग्य को स्वीकार कर लेना चाहिए; किसी के बच्चों का अपना भाग्य होता है; मनुष्य का भाग्य स्वर्ग द्वारा निर्धारित किया जाता है।" अधिकांश लोग जो सत्य को नहीं समझते हैं, इस संसार के सभी उतार-चढ़ावों, कुंठाओं, और कठिनाइयों को झेलने के बाद, मानव जीवन में अपनी अंतर्दृष्टि को तीन शब्दों में सारांशित करते हैं : "यह भाग्य है!" यद्यपि यह वाक्यांश मनुष्य के भाग्य के बारे में सांसारिक लोगों के निष्कर्ष और समझ को सारगर्भित ढंग से बताता है, और यद्यपि यह मानवजाति के असहाय होने को अभिव्यक्ति करता है और इसे तीक्ष्ण और सटीक कहा जा सकता है, फिर भी यह सृजनकर्ता की संप्रभुता को समझने से एकदम अलग है, और सृजनकर्ता के अधिकार के ज्ञान की जगह तो बिलकुल भी नहीं ले सकता है।

3. भाग्य पर विश्वास करना सृजनकर्ता की संप्रभुता के ज्ञान की जगह नहीं ले सकता है

इतने वर्षों तक परमेश्वर का अनुयायी रहने के पश्चात्, क्या भाग्य के बारे में तुम लोगों के ज्ञान और सांसारिक लोगों के ज्ञान के बीच कोई आधारभूत अंतर है? क्या तुम लोग सही मायनों में सृजनकर्ता की पूर्वनियति को समझ गए हो, और सही मायनों में सृजनकर्ता की संप्रभुता को जान गए हो? कुछ लोगों में, "यह भाग्य है" इस वाक्यांश की गहन, एवं गहराई से महसूस गई समझ होती है, फिर भी वे परमेश्वर की संप्रभुता पर जरा-सा भी विश्वास नहीं करते हैं, वे यह नहीं मानते हैं कि मनुष्य का भाग्य परमेश्वर द्वारा व्यवस्थित और आयोजित किया जाता है, और वे परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति समर्पण करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। इस प्रकार के लोग मानो महासागर में इधर-उधर भटकते रहते हैं, लहरों के द्वारा उछाले जाते हैं, जलधारा के साथ-साथ बहते रहते हैं। उनके पास निष्क्रियता से इंतज़ार करने और अपने आप को भाग्य पर छोड़ देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता है। फिर भी वे नहीं पहचानते हैं कि मनुष्य का भाग्य परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन है; वे स्वयं की पहल से परमेश्वर की संप्रभुता को नहीं समझ सकते हैं, और इसके फलस्वरूप परमेश्वर के अधिकार के ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते हैं, परमेश्वर के आयोजनों और व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण नहीं कर सकते हैं, भाग्य का प्रतिरोध करना बन्द नहीं कर सकते हैं, और परमेश्वर की देखभाल, सुरक्षा और मार्गदर्शन के अधीन जी नहीं सकते हैं। दूसरे शब्दों में, भाग्य को

स्वीकार करना और सृजनकर्ता की संप्रभुता के अधीन होना एक ही बात नहीं है; भाग्य में विश्वास करने का अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति सृजनकर्ता की संप्रभुता को स्वीकार करता है, पहचानता और जानता है; भाग्य में विश्वास करना मात्र उसकी सच्चाई और उसकी सतही प्रकटीकरण की पहचान है। यह इस बात को जानने से भिन्न है कि किस प्रकार सृजनकर्ता मनुष्य के भाग्य पर शासन करता है, और सभी चीज़ों के भाग्य पर प्रभुत्व का स्रोत सृजनकर्ता ही है, और निश्चित रूप से मानवजाति के भाग्य के लिए सृजनकर्ता के आयोजनों और व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण से एकदम अलग है। यदि कोई व्यक्ति केवल भाग्य पर ही विश्वास करता है—यदि इसके बारे में गहराई से महसूस भी करता है—किन्तु फलस्वरूप मानवजाति के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानने, पहचानने, उसके प्रति समर्पण करने, और उसे स्वीकार करने में समर्थ नहीं है, तो उसका जीवन एक त्रासदी, व्यर्थ में बिताया गया जीवन, एक खालीपन के सिवाय कुछ नहीं होगा; वह तब भी सृजनकर्ता के प्रभुत्व के अधीन नहीं आ पायेगा, सच्चे अर्थ में सृजित किया गया मनुष्य नहीं बन पायेगा, और सृजनकर्ता के अनुमोदन का आनन्द उठाने में असमर्थ होगा। जो व्यक्ति वास्तव में सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानता और अनुभव करता है उसे एक क्रियाशील स्थिति में होना चाहिए, न कि ऐसी स्थिति में जो निष्क्रिय या असहाय हो। जबकि ऐसा व्यक्ति यह स्वीकार कर लेगा कि सभी चीज़ें भाग्य के द्वारा निर्धारित होती हैं, लेकिन जीवन और भाग्य के बारे में उसकी एक सटीक परिभाषा होनी चाहिए : प्रत्येक जीवन सृजनकर्ता की संप्रभुता के अधीन है। जब कोई व्यक्ति पीछे मुड़कर उस मार्ग को देखता है जिस पर वह चला था, जब कोई व्यक्ति अपनी यात्रा की हर अवस्था को याद करता है, तो वह देखता है कि हर कदम पर, चाहे उसकी यात्रा कठिन रही हो या आसान, परमेश्वर उसका मार्गदर्शन कर रहा था, योजना बना रहा था। ये परमेश्वर की कुशल व्यवस्थाएँ थीं, और उसकी सावधानीपूर्वक की गयी योजनाएँ थीं, जिन्होंने आज तक, व्यक्ति की जानकारी के बिना उसकी अगुवाई की है। सृजनकर्ता की संप्रभुता को स्वीकार करने, उसके उद्धार को प्राप्त करने में समर्थ होना—कितना बड़ा सौभाग्य है! यदि भाग्य के प्रति किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण नकारात्मक है, तो इससे साबित होता है कि वह हर उस चीज़ का विरोध कर रहा है जो परमेश्वर ने उसके लिए व्यवस्थित की है, और उसमें समर्पित होने की प्रवृत्ति नहीं है। यदि मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक है, तो जब वह पीछे मुड़कर अपनी जीवनयात्रा को देखता है, जब वह सही मायनों में परमेश्वर की संप्रभुता को आत्मसात करने लगता है, तो वह और भी अधिक ईमानदारी से हर उस चीज़ के प्रति

समर्पण करना चाहेगा जिसकी परमेश्वर ने व्यवस्था की है, परमेश्वर को उसके भाग्य का आयोजन करने देने और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह न करने के लिए उसमें अधिक दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास होगा। क्योंकि जब कोई यह देखता है कि जब वह भाग्य नहीं समझ पाता है, जब वह परमेश्वर की संप्रभुता को नहीं समझ पाता है, जब वह जानबूझकर अँधेरे में टटोलते हुए आगे बढ़ता है, कोहरे के बीच लड़खड़ाता और डगमगाता है, तो यात्रा बहुत ही कठिन, और बहुत ही हृदयविदारक होती है। इसलिए जब लोग मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता को पहचान जाते हैं, तो चतुर मनुष्य परमेश्वर की संप्रभुता को जानना और स्वीकार करना चुनते हैं, उन दर्द भरे दिनों को अलविदा कहते हैं जब उन्होंने अपने दोनों हाथों से एक अच्छा जीवन निर्मित करने की कोशिश की थी, और वे स्वयं के तरीके से भाग्य के विरुद्ध लगातार संघर्ष करने और जीवन के अपने "तथाकथित लक्ष्यों" की खोज करना बंद कर देते हैं। जब किसी व्यक्ति का कोई परमेश्वर नहीं होता है, जब वह उसे नहीं देख सकता है, जब वह स्पष्टता से परमेश्वर की संप्रभुता को समझ नहीं सकता है, तो उसका हर दिन निरर्थक, बेकार, और हताशा से भरा होगा। कोई व्यक्ति जहाँ कहीं भी हो, उसका कार्य जो कुछ भी हो, उसके आजीविका के साधन और उसके लक्ष्यों की खोज उसके लिए बिना किसी राहत के, अंतहीन निराशा और असहनीय पीड़ा के सिवाय और कुछ लेकर नहीं आती है, ऐसी पीड़ा कि वह पीछे अपने अतीत को मुड़कर देखना भी बर्दाश्त नहीं कर पाता है। केवल तभी जब वह सृजनकर्ता की संप्रभुता को स्वीकार करेगा, उसके आयोजनों और उसकी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण करेगा, और एक सच्चे मानव जीवन को खोजेगा, केवल तभी वह धीरे-धीरे सभी निराशाओं और पीड़ाओं मुक्त होगा, और जीवन की सम्पूर्ण रिक्तता से छुटकारा पाएगा।

4. केवल वही लोग सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं जो सृजनकर्ता की संप्रभुता के प्रति समर्पण करते हैं

क्योंकि लोग परमेश्वर के आयोजनों और परमेश्वर की संप्रभुता को नहीं पहचानते हैं, इसलिए वे हमेशा अवज्ञापूर्ण ढंग से, और एक विद्रोही दृष्टिकोण के साथ भाग्य का सामना करते हैं, और इस निरर्थक उम्मीद में कि वे अपनी वर्तमान परिस्थितियों के बदल देंगे और अपने भाग्य को पलट देंगे, हमेशा परमेश्वर के अधिकार और उसकी संप्रभुता तथा उन चीज़ों को छोड़ देना चाहते हैं जो उनके भाग्य में होती हैं। परन्तु वे कभी भी सफल नहीं हो सकते हैं; वे हर मोड़ पर नाकाम रहते हैं। यह संघर्ष, जो किसी व्यक्ति की आत्मा की गहराई में चलता है, ऐसी गहन पीड़ा देता है जो किसी को अंदर तक छलनी कर देती है, इस बीच

व्यक्ति अपना जीवन व्यर्थ में नष्ट कर देता है। इस पीड़ा का कारण क्या है? क्या यह परमेश्वर की संप्रभुता के कारण है, या इसलिए है क्योंकि वह व्यक्ति अभागा ही जन्मा था? स्पष्ट है कि दोनों में कोई भी बात सही नहीं है। वास्तव में, लोग जिस मार्ग पर चलते हैं, जिस तरह से वे अपना जीवन बिताते हैं, उसी कारण से यह पीड़ा होती है। हो सकता है कि कुछ लोगों ने इन चीज़ों को समझा ही न हो। किन्तु जब तुम सही मायनों में जान जाते हो, जब तुम्हें सही मायनों में एहसास हो जाता है कि मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता है, जब तुम सही मायनों में समझ जाते हो कि वह हर चीज़ जिसकी परमेश्वर ने तुम्हारे लिए योजना बनाई और जो तुम्हारे लिए निश्चित की है, वह बहुत फायदेमंद और बहुत बड़ी सुरक्षा है, तब तुम्हें महसूस होता है कि तुम्हारी पीड़ा धीरे-धीरे कम हो रही है, और तुम्हारा सम्पूर्ण अस्तित्व शांत, स्वतंत्र, एवं बंधनमुक्त हो जाता है। अधिकांश लोगों की स्थितियों का आकलन करने से पता चलता है कि वे तटस्थ भाव से मनुष्य के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता के व्यावहारिक मूल्य एवं अर्थ को स्वीकार नहीं पाते हैं, यद्यपि व्यक्तिपरक स्तर पर वे उसी तरह से जीवन जीते रहना नहीं चाहते हैं, जैसा वे पहले जीते थे, और अपनी पीड़ा से राहत चाहते हैं; फिर भी तटस्थ भाव से वे सृजनकर्ता की संप्रभुता को सही मायनों में समझ नहीं ते और उसके अधीन नहीं हो सकते हैं, और वे यह तो बिलकुल भी नहीं जानते हैं कि सृजनकर्ता के आयोजनों और उसकी व्यवस्थाओं को किस प्रकार खोजें एवं स्वीकार करें। इसलिए, यदि लोग वास्तव में इस तथ्य को पहचान नहीं सकते हैं कि सृजनकर्ता की मनुष्य के भाग्य और मनुष्य की सभी स्थितियों पर संप्रभुता है, यदि वे सही मायनों में सृजनकर्ता के प्रभुत्व के प्रति समर्पण नहीं कर सकते हैं, तो उनके लिए "किसी का भाग्य उसके अपने हाथों में होता है," इस अवधारणा द्वारा प्रेरित न होना, और इसे न मानने को विवश न होना कठिन होगा। उनके लिए भाग्य और सृजनकर्ता के अधिकार के विरुद्ध अपने तीव्र संघर्ष की पीड़ा से छुटकारा पाना कठिन होगा, और कहने की आवश्यकता नहीं कि उनके लिए सच में बंधनमुक्त और स्वतंत्र होना, और ऐसा व्यक्ति बनना कठिन होगा जो परमेश्वर की आराधना करते हैं। अपने आपको इस स्थिति से मुक्त करने का एक बहुत ही आसान तरीका है जो है जीवन जीने के अपने पुराने तरीके को विदा कहना; जीवन में अपने पुराने लक्ष्यों को अलविदा कहना; अपनी पुरानी जीवनशैली, जीवन को देखने के दृष्टिकोण, लक्ष्यों, इच्छाओं एवं आदर्शों को सारांशित करना, उनका विश्लेषण करना, और उसके बाद मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा और माँग के साथ उनकी तुलना करना, और देखना कि उनमें से कोई परमेश्वर की इच्छा और माँग के अनुकूल है या नहीं, उनमें से कोई जीवन के सही मूल्य प्रदान करता है या

नहीं, यह व्यक्ति को सत्य को अच्छी तरह से समझने की दिशा में ले जाता है या नहीं, और उसे मानवता और मनुष्य की सदृशता के साथ जीवन जीने देता है या नहीं। जब तुम जीवन के उन विभिन्न लक्ष्यों की, जिनकी लोग खोज करते हैं और जीवन जीने के उनके अनेक अलग-अलग तरीकों की बार-बार जाँच-पड़ताल करोगे और सावधानीपूर्वक उनका विश्लेषण करोगे, तो तुम यह पाओगे कि उनमें से एक भी सृजनकर्ता के उस मूल इरादे के अनुरूप नहीं है जिसके साथ उसने मानवजाति का सृजन किया था। वे सभी, लोगों को सृजनकर्ता की संप्रभुता और उसकी देखभाल से दूर करते हैं; ये सभी ऐसे जाल हैं जो लोगों को भ्रष्ट बनने पर मजबूर करते हैं, और जो उन्हें नरक की ओर ले जाते हैं। जब तुम इस बात को समझ लेते हो, उसके पश्चात्, तुम्हारा काम है जीवन के अपने पुराने दृष्टिकोण को अपने से अलग करना, अलग-अलग तरह के जालों से दूर रहना, परमेश्वर को तुम्हारे जीवन को अपने हाथ में लेने देना और तुम्हारे लिए व्यवस्थाएं करने देना; तुम्हारा काम है केवल परमेश्वर के आयोजनों और मार्गदर्शन के प्रति समर्पण करने का प्रयास करना, अपनी कोई निजी पसंद मत रखना, और एक ऐसा इंसान बनना जो परमेश्वर की आराधना करता है। यह सुनने में आसान लगता है, परन्तु इसे करना बहुत कठिन है। कुछ लोग इसकी तकलीफ सहन कर सकते हैं, कुछ नहीं कर सकते हैं। कुछ लोग पालन करने के इच्छुक होते हैं, कुछ लोग अनिच्छुक होते हैं। जो लोग अनिच्छुक होते हैं उनमें ऐसा करने की इच्छा और दृढ़ संकल्प की कमी होती है; वे एकदम स्पष्ट रूप से परमेश्वर की संप्रभुता के बारे में अवगत हैं, बहुत अच्छी तरह से जानते हैं कि यह परमेश्वर ही है जो मनुष्य के भाग्य की योजना बनाता है और उसकी व्यवस्था करता है, और फिर भी वे हाथ-पैर मारते और संघर्ष करते हैं, और अपने भाग्य को परमेश्वर के हाथों में सौंपने और परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति समर्पित होने के लिए सहमत नहीं होते हैं; यही नहीं, वे परमेश्वर के आयोजनों और उसकी व्यवस्थाओं से नाराज़ रहते हैं। अतः हमेशा कुछ ऐसे लोग होंगे जो स्वयं देखना चाहते हैं कि वे क्या करने में सक्षम हैं; वे अपने दोनों हाथों से अपने भाग्य को बदलना चाहते हैं, या अपनी ताकत से खुशियाँ प्राप्त करना चाहते हैं, यह देखना चाहते हैं कि वे परमेश्वर के अधिकार की सीमाओं का अतिक्रमण कर सकते हैं या नहीं और परमेश्वर की संप्रभुता से ऊपर उठ सकते हैं या नहीं। मनुष्य की त्रासदी यह नहीं है कि वह एक सुखी जीवन की चाह करता है, यह नहीं है कि वह प्रसिद्धि एवं सौभाग्य के पीछे भागता है या कोहरे के बीच अपने स्वयं के भाग्य के विरुद्ध संघर्ष करता है, परन्तु यह है कि सृजनकर्ता के अस्तित्व को देखने के पश्चात्, इस तथ्य को जानने के पश्चात् भी कि मनुष्य के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता है, वह अपने मार्ग

में सुधार नहीं कर पाता है, अपने पैरों को दलदल से बाहर नहीं निकाल सकता है, बल्कि अपने हृदय को कठोर बना देता है और निरंतर ग़लतियाँ करता रहता है। लेशमात्र पछतावे के बिना, वह कीचड़ में लगातार हाथ पैर मारना, सृजनकर्ता की संप्रभुता के विरोध में अवज्ञतापूर्ण ढंग से निरन्तर स्पर्धा करना अधिक पसंद करता है, और दुखद अंत तक विरोध करता रहता है। जब वह टूट कर बिखर जाता है और उसका रक्त बह रहा होता है केवल तभी वह अंततः हार मान लेने और पीछे हटने का निर्णय लेता है। यह असली मानवीय दुःख है। इसलिए मैं कहता हूँ, ऐसे लोग जो समर्पण करना चुनते हैं वे बुद्धिमान हैं, और जो संघर्ष करने और बचकर भागने का चुनाव करते हैं, वे वस्तुतः महामूर्ख हैं।

छठा मोड़ः मृत्यु

इतनी हलचल, भाग-दौड़, इतनी कुंठाओं और निराशाओं के पश्चात्, इतने सारे सुख-दुःख और उतार-चढ़ावों के पश्चात्, इतने सारे अविस्मरणीय वर्षों के पश्चात्, बार-बार ऋतुओं को परिवर्तित होते हुए देखने के पश्चात्, व्यक्ति बिना ध्यान दिए ही जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों को पार कर जाता है, और पलक झपकते ही वह स्वयं को अपने जीवन के ढलते हुए वर्षों में पाता है। समय के निशान उसके पूरे शरीर पर छपे होते हैं : वह अब सीधा खड़ा नहीं हो सकता है, उसके काले बाल सफेद हो चुके होते हैं, जो आँखें कभी चमकदार थीं, साफ देख सकती थीं, वे आँखें धुँधली हो गई हैं, और चिकनी तथा कोमल त्वचा पर झुर्रियाँ और धब्बे पड़ गए हैं। उसकी सुनने की शक्ति कमज़ोर हो गई है, उसके दाँत ढीले हो कर गिर गए हैं, उसकी प्रतिक्रियाएँ धीमी हो गई हैं, वह तेज़ गति से नहीं चल पाता है...। इस मोड़ पर, उसने अपनी जवानी के जोशीले दिनों को अंतिम विदाई दे दी है और अपने जीवन की संध्या में प्रवेश कर लिया है : बुढ़ापा। अब, वह मृत्यु का सामना करेगा, जो किसी मनुष्य के जीवन का अंतिम मोड़ है।

1. मनुष्य के जीवन और मृत्यु पर केवल सृजनकर्ता का ही सामर्थ्य है

यदि किसी व्यक्ति का जन्म उसके पिछले जीवन पर नियत था, तो उसकी मृत्यु उस नियति के अंत को चिह्नित करती है। यदि किसी का जन्म इस जीवन में उसके ध्येय की शुरुआत है, तो उसकी मृत्यु उसके उस ध्येय के अंत को चिह्नित करती है। चूँकि सृजनकर्ता ने किसी व्यक्ति के जन्म के लिए परिस्थितियों का एक निश्चित समुच्चय निर्धारित किया है, इसलिए स्पष्ट है कि उसने उसकी मृत्यु के लिए भी परिस्थितियों के एक निश्चित समुच्चय की व्यवस्था की है। दूसरे शब्दों में, कोई भी व्यक्ति संयोग से पैदा

नहीं होता है, किसी भी व्यक्ति की मृत्यु अकस्मात नहीं होती है, और जन्म और मृत्यु दोनों ही अनिवार्य रूप से उसके पिछले और वर्तमान जीवन से जुड़े हैं। किसी व्यक्ति की जन्म और मृत्यु की परिस्थितियाँ दोनों ही सृजनकर्ता द्वारा पूर्वनिर्धारित की जाती हैं; यह व्यक्ति की नियति है, और व्यक्ति का भाग्य है। चूँकि किसी व्यक्ति के जन्म के बारे में बहुत सारे स्पष्टीकरण होते हैं, वैसे ही यह भी सच है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु भी विशेष परिस्थितियों के एक भिन्न समुच्चय में होगी। लोगों के अलग-अलग जीवनकाल और उनकी मृत्यु होने के अलग-अलग तरीके और समय होने का यही कारण है। कुछ लोग ताकतवर और स्वस्थ होते हैं, फिर भी जल्दी मर जाते हैं; कुछ लोग कमज़ोर और बीमार होते हैं, फिर भी बूढ़े होने तक जीवित रहते हैं, और बिना कोई कष्ट पाए मर जाते हैं। कुछ की मृत्यु अस्वाभाविक कारणों से होती है, और कुछ की मृत्यु स्वाभाविक कारणों से होती है। कुछ का जीवन उनके घर से दूर समाप्त होता है, कुछ अपने प्रियजनों के साथ उनके सानिध्य में आखिरी साँस लेते हैं। कुछ आसमान में मरते हैं, कुछ धरती के नीचे। कुछ पानी के अन्दर डूब जाते हैं, कुछ आपदाओं में अपनी जान गँवा देते हैं। कुछ सुबह मरते हैं, कुछ रात्रि में। ... हर कोई एक शानदार जन्म, एक बहुत बढ़िया ज़िन्दगी, और एक गौरवशाली मृत्यु की कामना करता है, परन्तु कोई भी व्यक्ति अपनी नियति से परे नहीं जा सकता है, कोई भी सृजनकर्ता की संप्रभुता से बचकर नहीं निकल सकता है। यह मनुष्य का भाग्य है। मनुष्य अपने भविष्य के लिए अनगिनत योजनाएँ बना सकता है, परन्तु कोई भी अपने जन्म के तरीके और समय की और संसार से अपने प्रस्थान की योजना नहीं बना सकता है। यद्यपि लोग मृत्यु को टालने और उसको रोकने की भरसक कोशिश करते हैं, फिर भी, उनके जाने बिना, मृत्यु चुपचाप पास आ जाती है। कोई नहीं जानता है कि वह कब मरेगा या वह कैसे मरेगा, और यह तो बिलकुल भी नहीं जानता कि वह कहाँ मरेगा। स्पष्ट रूप से, न तो मानवजाति के पास जीवन और मृत्यु की सामर्थ्य है, न ही प्राकृतिक संसार में किसी प्राणी के पास, केवल अद्वितीय अधिकार वाले सृजनकर्ता के पास ही यह सामर्थ्य है। मनुष्य का जीवन और उसकी मृत्यु प्राकृतिक संसार के किन्हीं नियमों का परिणाम नहीं है, बल्कि सृजनकर्ता के अधिकार की संप्रभुता का परिणाम है।

2. जो सृजनकर्ता की संप्रभुता को नहीं जानता है वह मृत्यु के भय से त्रस्त रहेगा

वृद्धावस्था में पहुँचने के बाद व्यक्ति परिवार का भरण-पोषण करने या जीवन में अपनी उच्च महत्वाकांक्षाओं को पूरा न कर पाने की चुनौती का सामना नहीं करता है, बल्कि उसके सामने चुनौती होती है कि वह किस प्रकार अपने जीवन को अलविदा कहे, किस प्रकार अपने जीवन के अंत का सामना करे,

किस प्रकार अपने जीवन की सज़ा को खत्म करने के लिए विराम लगाए। हालाँकि ऊपरी तौर पर ऐसा प्रतीत होता है कि लोग मृत्यु पर कम ही ध्यान देते हैं, फिर भी कोई इस विषय के बारे में जानने से बच नहीं सकता, क्योंकि किसी को भी नहीं पता कि मृत्यु के पार कोई और संसार है भी या नहीं, एक ऐसा संसार जिसके बारे में मनुष्य सोच नहीं सकता, या जिसका एहसास नहीं कर सकता, एक ऐसा संसार जिसके बारे में कोई कुछ भी नहीं जानता है। इसी कारण आमने-सामने मृत्यु का सामना करने से लोग डरते हैं, वे इसका उस तरह से सामना करने से डरते हैं जैसा उनको करना चाहिए; बल्कि वे इस विषय को टालने की भरसक कोशिश करते हैं। और इसलिए यह प्रत्येक व्यक्ति में मृत्यु का भय भर देता है, और जीवन के इस अनिवार्य सच पर रहस्य का परदा डालते हुए प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर लगातार बने रहने वाली छाया डाल देता है।

जब किसी व्यक्ति को लगता है कि उसके शरीर का क्षय हो रहा है, जब उसे आभास होता है कि वह मृत्यु के करीब पहुँच रहा है, तो उसे एक अस्पष्ट ख़ौफ़, एक अवर्णनीय भय जकड़ लेता है। मृत्यु के भय से वह और भी अधिक अकेला और असहाय महसूस करने लगता है, और इस मोड़ पर वह स्वयं से पूछता है : मनुष्य कहाँ से आया था? मनुष्य कहाँ जा रहा है? क्या मनुष्य जब मरता है तो उसका पूरा जीवन तेज़ी से उसके सामने से गुज़र जाता है? क्या यही वह समय है जो मनुष्य के जीवन के अंत को चिह्नित करता है? अंत में, जीवन का क्या अर्थ है? आख़िरकार, जीवन का मूल्य क्या है? क्या यह प्रसिद्धि और सौभाग्य पाना है? क्या यह परिवार को बढ़ाना है? ... चाहे इन विशेष प्रश्नों के बारे में किसी ने सोचा हो या नहीं, चाहे कोई मृत्यु से कितना भी डरता हो, प्रत्येक व्यक्ति के हृदय की गहराई में हमेशा से इन रहस्यों के बारे में जानने की इच्छा रही है, जीवन को न समझ पाने का एहसास रहा है, और इनके साथ, संसार के बारे में भावुकता, उसे छोड़कर जाने की अनिच्छा समाहित होती है। कदाचित् कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता है कि वह क्या है जिससे मनुष्य भयभीत होता है, वह क्या है जिसकी मनुष्य तलाश करना चाहता है, वह क्या है जिसके बारे में वह भावुक होता है और वह किसे पीछे छोड़ने को अनिच्छुक होता है ...

क्योंकि लोगों को मृत्यु से डर लगता है, इसलिए वे बहुत ज्यादा चिंता करते है; क्योंकि वे मृत्यु से डरते हैं, इसलिए ऐसा बहुत कुछ है जिसे वे छोड़ नहीं पाते। जब वे मरने वाले होते हैं, तो कुछ लोग किसी न किसी बात को लेकर झल्लाते रहते हैं; वे अपने बच्चों, अपने प्रियजनों, और धन-सम्पत्ति के बारे में चिंता करते हैं, मानो चिंता करके वे उस पीड़ा और भय को मिटा सकते हैं जो मृत्यु लेकर आती है, मानो कि

जीवित प्राणियों के साथ एक प्रकार की घनिष्ठता बनाए रखकर, अपनी उस लाचारी और एकाकीपन से बच सकते हैं जो मृत्यु के साथ आती है। मनुष्य के हृदय की गहराई में एक अस्पष्ट-सा भय होता है, अपने प्रियजनों से बिछुड़ने का भय, कभी नीले आसमान को न देख पाने का भय, कभी इस भौतिक संसार को न देख पाने का भय। अपने प्रियजनों के साथ की अभ्यस्त, एक एकाकी आत्मा, अपनी पकड़ को ढीला करने और नितांत अकेले, एक अनजान और अपरिचित संसार में प्रस्थान नहीं करना चाहती है।

3. प्रसिद्धि और सौभाग्य की तलाश में बिताया गया जीवन व्यक्ति को मृत्यु के समय घबराहट में डाल देता है

सृजनकर्ता की संप्रभुता और उसके द्वारा पूर्वनियति के कारण, एक एकाकी आत्मा को, जिसने शून्य से जीवन आरंभ किया था, माता-पिता और परिवार मिलता है, मानव जाति का एक सदस्य बनने का अवसर मिलता है, मानव जीवन का अनुभव करने और दुनिया को देखने का अवसर मिलता है। इस आत्मा को सृजनकर्ता की संप्रभुता का अनुभव करने, सृजनकर्ता के सृजन की अद्‌भुतता को जानने, और सबसे बढ़कर, सृजनकर्ता के अधिकार को जानने और उसके अधीन होने का अवसर भी मिलता है। फिर भी, अधिकांश लोग वास्तव में इस दुर्लभ और क्षण में गुज़र जाने वाले अवसर को नहीं पकड़ते हैं। व्यक्ति भाग्य के विरुद्ध लड़ते हुए अपने पूरे जीवन भर की ऊर्जा को खत्म कर देता है, अपने परिवार का भरण-पोषण करने की कोशिश में दौड़-भाग करते हुए और धन-सम्पत्ति और हैसियत के बीच भागते हुए अपना सारा समय बिता देता है। जिन चीज़ों को लोग सँजो कर रखते हैं, वे हैं परिवार, पैसा और प्रसिद्धि; वे इन्हें जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों के रूप में देखते हैं। सभी लोग अपने भाग्य के बारे में शिकायत करते हैं, फिर भी वे अपने दिमाग में उन प्रश्नों को पीछे धकेल देते हैं जिनके बारे में जानना और समझना बहुत ज़रूरी है : मनुष्य जीवित क्यों है, मनुष्य को कैसे जीना चाहिए, जीवन का मूल्य और अर्थ क्या है। जब तक कि उनकी युवावस्था उनका साथ नहीं छोड़ देती, उनके बाल सफेद नहीं हो जाते और उनकी त्वचा पर झुर्रियाँ नहीं पड़ जातीं, वे अपना सारा जीवन शोहरत और दौलत के पीछे भागने में ही लगा देते हैं। वे इस तरह तब तक जीते रहते हैं जब तक वे यह नहीं देख लेते कि प्रसिद्धि व सौभाग्य किसी का बुढ़ापा आने से रोक नहीं सकते हैं, धन हृदय के खालीपन को नहीं भर सकता है; जब तक वे यह नहीं समझ लेते हैं कि कोई भी व्यक्ति जन्म, उम्र के बढ़ने, बीमारी और मृत्यु के नियम से बच नहीं सकता है, और नियति ने उनके लिए जो तय किया है, कोई भी उससे बच कर भाग नहीं सकता है। केवल जब उन्हें जीवन के अंतिम मोड़ का

सामना करने को बाध्य होना पड़ता है, तभी सही मायने में उन्हें समझ आता है कि चाहे किसी के पास करोड़ों रुपयों की संपत्ति हो, उसके पास विशाल संपदा हो, भले ही उसे विशेषाधिकार प्राप्त हों और वह ऊँचे पद पर हो, फिर भी वह मृत्यु से नहीं बच सकता है, और उसे अपनी मूल स्थिति में वापस लौटना ही पड़ेगा : एक एकाकी आत्मा, जिसके पास अपना कुछ भी नहीं है। जब लोगों के पास माता-पिता होते हैं, तो उन्हें लगता है कि उनके माता-पिता ही सब कुछ हैं; जब लोगों के पास संपत्ति होती है, तो वे सोचते हैं कि पैसा ही उनका मुख्य आधार है, यही वह साधन है जिसके द्वारा जीवन जिया सकता है; जब लोगों के पास हैसियत होती है, तो वे उससे कसकर चिपक रहते हैं और उसकी खातिर अपने जीवन को जोखिम में डाल देते हैं। केवल जब लोग इस संसार को छोड़कर जाने वाले होते हैं तभी वे एहसास करते हैं कि जिन चीज़ों का पीछा करते हुए उन्होंने अपने जीवन बिताया है वे पल भर में गायब हो जाने वाले बादलों के अलावा कुछ नहीं हैं, उनमें से किसी को भी वे थामे नहीं रह सकते हैं, उनमें से किसी को भी वे अपने साथ नहीं ले जा सकते हैं, उनमें से कोई भी उन्हें मृत्यु से छुटकारा नहीं दिला सकता है, उनमें से कोई भी उस एकाकी आत्मा का उसकी वापसी यात्रा में साथ या उसे सांत्वना नहीं दे सकता है; और यही नहीं, उनमें से कोई भी चीज़ किसी व्यक्ति को बचा नहीं सकती है और मृत्यु को हराने में मदद नहीं कर सकती है। प्रसिद्धि और सौभाग्य जिन्हें कोई व्यक्ति इस भौतिक संसार में अर्जित करता है, उसे अस्थायी संतुष्टि, थोड़े समय का आनंद, सुख-सुविधाओं का एक झूठा एहसास प्रदान करते हैं, और इस प्रक्रिया में उसे उसके मार्ग से भटका देते हैं। और इसलिए लोग, जब सुकून, आराम, और हृदय की शान्ति की लालसा करते हुए, मानवता के इस विशाल समुद्र में छटपटाते हैं, एक के बाद एक आती लहरें उन्हें निगल जाती हैं। जब लोगों को अब भी ऐसे प्रश्नों के जवाब ढूंढने हैं, जो बहुत महत्वपूर्ण हैं जैसे—वे कहाँ से आए हैं, वे जीवित क्यों हैं, वे कहाँ जा रहे हैं, इत्यादि—तभी प्रसिद्धि और सौभाग्य उन्हें बहका देते हैं, वे उनके द्वारा गुमराह और नियन्त्रित हो जाते हैं, और हमेशा के लिए खो जाते हैं। समय पंख लगाए उड़ जाता है; पलक झपकते ही अनेक वर्ष बीत जाते हैं, इससे पहले कि एक व्यक्ति को एहसास हो, वह अपने जीवन के उत्तम वर्षों को अलविदा कह चुका होता है। जब किसी व्यक्ति के संसार से जाने का समय आ जाता है, तो धीरे-धीरे उसे इस बात का एहसास होता है कि संसार की हर चीज़ दूर हो रही है, वह अब उन चीज़ों को थामे नहीं रह सकता है जो मूल रूप से उसकी थीं; केवल तभी वह सही मायनों में यह महसूस करता है कि वह एक रोते हुए शिशु की तरह है, जो अभी-अभी संसार में आया है, जिसके पास अपना कहने को कुछ नहीं है। इस

मोड़ पर, व्यक्ति इस बात पर विचार करने के लिए बाध्य हो जाता है कि उसने जीवन में क्या किया है, जीवित रहने का क्या मोल है, इसका अर्थ क्या है, वह इस संसार में क्यों आया है। और इस मोड़ पर, वह और भी अधिक जानना चाहता है कि वास्तव में कोई अगला जन्म है भी या नहीं, वास्तव में स्वर्ग है भी या नहीं, वास्तव में कठोर दंड मिलता भी है या नहीं...। व्यक्ति जितना मृत्यु के नज़दीक पहुँचने लगता है, वह उतना ही अधिक यह समझना चाहता है कि वास्तव में जीवन किस बारे में है; व्यक्ति जितना मृत्यु के नज़दीक पहुँचने लगता है, उसे उतना ही अधिक अपना हृदय खाली महसूस होने लगता है; व्यक्ति जितना मृत्यु के नज़दीक पहुँचने लगता है, वह उतना ही अधिक असहाय महसूस करने लगता है; और इस प्रकार मृत्यु के बारे में उसका भय दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है। जब मनुष्य मृत्यु के नज़दीक पहुँचता है तो उसके अंदर इस तरह की भावनाएँ प्रदर्शित होने के दो कारण होते हैं : पहला, वह अपनी प्रसिद्धि और संपत्ति को खोने ही वाले होते हैं जिन पर उसका जीवन आधारित था, वह हर चीज़ जो वे इस संसार में देखते हैं, उसे पीछे छोड़ने वाले होते हैं; और दूसरा, वे नितांत अकेले एक अनजान संसार, का सामना करने वाले होते हैं, एक रहस्यमयी, अज्ञात दुनिया का सामना करने वाले होते हैं जहाँ वे कदम रखने से भी डरते हैं, जहाँ उनका कोई प्रियजन नहीं होता है और सहारे का किसी प्रकार का साधन नहीं होता है। इन दो कारणों की वजह से, मृत्यु का सामना करने वाला हर एक व्यक्ति बेचैनी महसूस करता है, अत्यंत घबराहट और लाचारी के एहसास का अनुभव करता है, ऐसा एहसास जिसे उसने पहले कभी नहीं महसूस किया था। जब लोग वास्तव में इस मोड़ पर पहुँचते हैं केवल तभी उन्हें समझ आता है कि जब कोई इस पृथ्वी पर कदम रखता है, तो सबसे पहली बात जो उसे अवश्य समझनी चाहिए, वह है कि मानव कहाँ से आता है, लोग जीवित क्यों हैं, कौन मनुष्य के भाग्य का निर्धारण करता है, कौन मानव का भरण-पोषण करता है और किसके पास उसके अस्तित्व के ऊपर संप्रभुता है। यह ज्ञान ही वह सच्चा माध्यम है जिसके द्वारा कोई जीवन जीता है, मानव के जीवित बचे रहने के लिए आवश्यक आधार है—न कि यह सीखना कि किस प्रकार अपने परिवार का भरण-पोषण करें या किस प्रकार प्रसिद्धि और धन-संपत्ति प्राप्त करें, किस प्रकार सबसे विशिष्ट लगें या किस प्रकार और अधिक समृद्ध जीवन बिताएँ, और यह तो बिलकुल नहीं कि किस प्रकार दूसरों से आगे बढ़ें और उनके विरुद्ध सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा करें। यद्यपि जीवित बचे रहने के जिन विभिन्न कौशल पर महारत हासिल करने के लिए लोग अपना जीवन गुज़ार देते हैं वे भरपूर भौतिक सुख दे सकते हैं, लेकिन वे किसी मनुष्य के हृदय में कभी भी सच्ची शान्ति और तसल्ली नहीं ला सकते हैं,

बल्कि इसके बदले वे लोगों को निरंतर उनकी दिशा से भटकाते हैं, लोगों के लिए स्वयं पर नियंत्रण रखना कठिन बनाते हैं, और उन्हें जीवन का अर्थ सीखने के हर अवसर से वंचित कर देते हैं; उत्तरजीविता के ये कौशल इस बारे में उत्कंठा का एक अंतर्प्रवाह पैदा करते हैं कि किस प्रकार सही ढंग से मृत्यु का सामना करें। इस तरह से, लोगों के जीवन बर्बाद हो जाते हैं। सृजनकर्ता सभी के साथ निष्पक्ष ढंग से व्यवहार करता है, सभी को उसकी संप्रभुता का अनुभव करने और उसे जानने का जीवनभर का अवसर प्रदान करता है, फिर भी, जब मृत्यु नज़दीक आती है, जब मौत का साया उस पर मंडराता है, केवल तभी मनुष्य उस रोशनी को देखना आरंभ करता है—और तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

लोग अपना जीवन धन-दौलत और प्रसिद्धि का पीछा करते हुए बिता देते हैं; वे इन तिनकों को यह सोचकर कसकर पकड़े रहते हैं, कि केवल ये ही उनके जीवन का सहारा हैं, मानो कि उनके होने से वे निरंतर जीवित रह सकते हैं, और मृत्यु से बच सकते हैं। परन्तु जब मृत्यु उनके सामने खड़ी होती है, केवल तभी उन्हें समझ आता है कि ये चीज़ें उनकी पहुँच से कितनी दूर हैं, मृत्यु के सामने वे कितने कमज़ोर हैं, वे कितनी आसानी से बिखर जाते हैं, वे कितने एकाकी और असहाय हैं, और वे कहीं से सहायता नही माँग सकते हैं। उन्हें समझ आ जाता है कि जीवन को धन-दौलत और प्रसिद्धि से नहीं खरीदा जा सकता है, कि कोई व्यक्ति चाहे कितना ही धनी क्यों न हो, उसका पद कितना ही ऊँचा क्यों न हो, मृत्यु के सामने सभी समान रूप से कंगाल और महत्वहीन हैं। उन्हें समझ आ जाता है कि धन-दौलत से जीवन नहीं खरीदा जा सकता है, प्रसिद्धि मृत्यु को नहीं मिटा सकती है, न तो धन-दौलत और न ही प्रसिद्धि किसी व्यक्ति के जीवन को एक मिनट, या एक पल के लिए भी बढ़ा सकती है। लोग जितना अधिक इस प्रकार महसूस करते हैं, उतनी ही अधिक उनकी जीवित रहने की लालसा बढ़ जाती है; लोग जितना अधिक इस प्रकार महसूस करते हैं, उतना ही अधिक वे मृत्यु के पास आने से भयभीत होते हैं। केवल इसी मोड़ पर उन्हें वास्तव में समझ में आता है कि उनका जीवन उनका नहीं है, और उनके नियंत्रण में नहीं हैं, और किसी का इस पर वश नहीं है कि वह जीवित रहेगा या मर जाएगा—यह सब उसके नियंत्रण से बाहर है।

4. सृजनकर्ता के प्रभुत्व के अधीन आओ और शान्ति से मृत्यु का सामना करो

जिस क्षण किसी व्यक्ति का जन्म होता है, तब एक एकाकी आत्मा पृथ्वी पर जीवन का अपना अनुभव आरंभ करती है, सृजनकर्ता के अधिकार का अपना अनुभव आरंभ करती है, जिसे सृजनकर्ता ने उसके लिए व्यवस्थित किया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि, यह उस व्यक्ति—उस आत्मा—के लिए

सृजनकर्ता की संप्रभुता का ज्ञान अर्जित करने का, और उसके अधिकार को जानने का और उसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने का सर्वोत्तम अवसर है। लोग सृजनकर्ता द्वारा उनके लिए लागू किए गए भाग्य के नियमों के अनुसार अपना जीवन जीते हैं जिसे, और किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए जिसके पास विवेक है, पृथ्वी पर कई दशकों तक जीवन गुज़ारने के बाद, सृजनकर्ता की संप्रभुता को स्वीकार करना और उसके अधिकार को जान जाना कोई कठिन कार्य नहीं है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति के लिए, कई दशकों के अपने जीवन-अनुभवों के द्वारा, यह समझना बहुत आसान है कि सभी मनुष्यों के भाग्य पूर्वनियत होते हैं, और यह समझना या इस बात का सार निकालना बहुत सरल होना चाहिए कि जीवित होने का अर्थ क्या है। जब कोई व्यक्ति जीवन की इन सीखों को आत्मसात करता है, तो धीरे-धीरे उसकी समझ में आने लगता है कि जीवन कहाँ से आता है, यह समझने लगता है कि हृदय को सचमुच किसकी आवश्यकता है, कौन उसे जीवन के सही मार्ग पर ले जाएगा, मनुष्य के जीवन का ध्येय और लक्ष्य क्या होना चाहिए। धीरे-धीरे वह समझने लगेगा कि यदि वह सृजनकर्ता की आराधना नहीं करता है, यदि वह उसके प्रभुत्व के अधीन नहीं आता है, तो जब मृत्यु का सामना करने का समय आएगा—जब उसकी आत्मा एक बार फिर से सृजनकर्ता का सामना करने वाली होगी—तब उसका हृदय असीमित भय और बेचैनी से भर जाएगा। यदि कोई व्यक्ति इस संसार में कई दशकों तक जीवित रहा है और फिर भी नहीं जान पाया है कि मानव जीवन कहाँ से आता है, न ही यह समझ पाया है कि किसकी हथेली में मनुष्य का भाग्य निहित है, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह शान्ति से मृत्यु का सामना नहीं कर पाएगा। जिस व्यक्ति ने जीवन के कई दशकों का अनुभव करने के बाद सृजनकर्ता की संप्रभुता का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, वह ऐसा व्यक्ति है जिसके पास जीवन के अर्थ और मूल्य की सही समझ है। ऐसे व्यक्ति के पास सृजनकर्ता की संप्रभुता का वास्तविक अनुभव और समझ के साथ जीवन के उद्देश्य का गहन ज्ञान है, और उससे भी बढ़कर, वह सृजनकर्ता के अधिकार के समक्ष समर्पण कर सकता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा मानवजाति के सृजन का अर्थ समझता है, वह समझता है कि मनुष्य को सृजनकर्ता की आराधना करनी चाहिए, कि जो कुछ भी मनुष्य के पास है, वह सृजनकर्ता से आता है और वह निकट भविष्य में ही किसी दिन उसके पास लौट जाएगा। ऐसा व्यक्ति समझता है कि सृजनकर्ता मनुष्य के जन्म की व्यवस्था करता है और मनुष्य की मृत्यु पर उसकी संप्रभुता है, और जीवन व मृत्यु दोनों सृजनकर्ता के अधिकार द्वारा पूर्वनियत हैं। इसलिए, जब कोई व्यक्ति वास्तव में इन बातों को समझ लेता है, तो वह शांति से मृत्यु का सामना करने, अपनी

सारी संसारिक संपत्तियों को शांतिपूर्वक छोड़ने, और जो होने वाला है, उसे खुशी से स्वीकार व समर्पण करने, और सृजनकर्ता द्वारा व्यवस्थित जीवन के अंतिम मोड़ का स्वागत करने में सक्षम होगा न कि आँखें मूँदकर उससे डरेगा और संघर्ष करेगा। यदि कोई जीवन को सृजनकर्ता की संप्रभुता का अनुभव करने के एक अवसर के रूप में देखता है और उसके अधिकार को जानने लगता है, यदि कोई अपने जीवन को सृजित किए गए प्राणी के रूप में अपने कर्तव्य को निभाने और अपने ध्येय को पूरा करने के एक दुर्लभ अवसर के रूप में देखता है, तो जीवन के बारे में उसके पास निश्चित ही सही दृष्टिकोण होगा, और वह ऐसा जीवन बिताएगा जिसमें सृजनकर्ता का आशीष और मार्गदर्शन होगा, वह निश्चित रूप से सृजनकर्ता की रोशनी में चलेगा, वह निश्चित रूप से सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानेगा, वह निश्चित रूप से उसके प्रभुत्व में आएगा, और निश्चित रूप से उसके अद्‌भुत कर्मों और उसके अधिकार का गवाह बनेगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि, निश्चित रूप से, ऐसे व्यक्ति को सृजनकर्ता के द्वारा प्रेम पाएगा और स्वीकार किया जाएगा, और केवल ऐसा व्यक्ति ही मृत्यु के प्रति एक शांत दृष्टिकोण रख सकता है, और जीवन के अंतिम मोड़ का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक कर सकता है। एक ऐसा व्यक्ति जो स्पष्ट रूप से मृत्यु के प्रति इस प्रकार का दृष्टिकोण रखता था, वह अय्यूब था। अय्यूब जीवन के अंतिम मोड़ को प्रसन्नता से स्वीकार करने की स्थिति में था, और अपनी जीवन यात्रा को एक सहज अंत तक पहुँचाने के बाद, जीवन में अपने ध्येय को पूरा करने के बाद, वह सृजनकर्ता के पास लौट गया।

5. अय्यूब के जीवन के लक्ष्य और उसके द्वारा हासिल की गयी वस्तुएँउसे शान्तिपूर्वक मृत्यु का सामना करने देती हैं

धर्मग्रंथ में अय्यूब के बारे में लिखा गया है कि: "अन्त में अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया" (अय्यूब 42:17)। इसका अर्थ है कि जब अय्यूब की मृत्यु हुई, तो उसे कोई पछतावा नहीं था और उसने कोई पीड़ा महसूस नहीं की, बल्कि स्वाभाविक रूप से इस संसार से चला गया। जैसे कि हर किसी को पता है, अय्यूब ऐसा मनुष्य था जो अपने जीवन में परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था। परमेश्वर ने उसके धार्मिकता के कार्यों की सराहना की थी, लोगों ने उन्हें स्मरण रखा, और कहा जा सकता है कि उसका जीवन किसी भी अन्य इंसान से बढ़कर मूल्यवान और महत्वपूर्ण था। अय्यूब ने परमेश्वर के आशीषों का आनंद लिया और परमेश्वर के द्वारा उसे पृथ्वी पर धार्मिक कहा गया था, और परमेश्वर ने उसकी परीक्षा ली और शैतान ने भी। वह परमेश्वर का गवाह बना और उसके द्वारा वह धार्मिक पुरुष

कहलाने के योग्य था। परमेश्वर के द्वारा परीक्षा लिए जाने के बाद कई दशकों तक, उसने ऐसा जीवन बिताया जो पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण, अर्थपूर्ण, स्थिर, और शान्तिपूर्ण था। उसके धार्मिक कर्मों की वजह से, परमेश्वर ने उसकी परीक्षा ली, उसके धार्मिकता के कर्मों की वजह से ही, परमेश्वर उसके सामने प्रकट हुआ और सीधे उससे बात की। इसलिए, उसकी परीक्षा लिए जाने के बाद के वर्षों के दौरान अय्यूब ने अधिक यथार्थपूर्ण ढंग से जीवन के मूल्यों को समझा और उनको सराहा, सृजनकर्ता की संप्रभुता की और अधिक गहन समझ प्राप्त की, और किस तरह सृजनकर्ता अपने आशीष देता है और वापस ले लेता है, इस बारे में और अधिक सटीक और निश्चित ज्ञान प्राप्त किया। अय्यूब की पुस्तक में दर्ज है कि यहोवा परमेश्वर ने अय्यूब को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक आशीषें प्रदान कीं, सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानने के लिए और मृत्यु का शान्ति से सामना करने के लिए उसने अय्यूब को और भी बेहतर स्थिति में रखा था। इसलिए अय्यूब, जब वृद्ध हुआ और उसका सामना मृत्यु से हुआ, तो वह निश्चित रूप से अपनी संपत्ति के बारे में चिंतित नहीं हुआ होगा। उसे कोई चिन्ता नहीं थी, पछताने के लिए कुछ नहीं था, और निस्संदेह वह मृत्यु से भयभीत नहीं था, क्योंकि उसने अपना संपूर्ण जीवन परमेश्वर का भय मानते हुए और बुराई से दूर रहते हुए बिताया था। उसके पास अपने स्वयं के अंत के बारे में चिंता करने का कोई कारण नहीं था। आज कितने लोग हैं जो वैसे व्यवहार कर सकते हैं जैसे अय्यूब ने किया था जब उसने अपनी मृत्यु का सामना किया? क्यों कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के सरल बाह्य आचरण को बनाए रखने में सक्षम नहीं है? केवल एक ही कारण है : अय्यूब ने अपना जीवन विश्वास का अनुसरण करने, परमेश्वर की संप्रभुता को स्वीकारने, एवं समर्पण करने की आत्मपरक खोज में बिताया था, और इसी विश्वास, स्वीकृति और समर्पण के साथ उसने अपने जीवन के महत्वपूर्ण मोड़ों को पार किया था, अपने जीवन के अंतिम वर्षों को जिया था, और अपने जीवन के अंतिम मोड़ का स्वागत किया था। अय्यूब ने चाहे जो भी अनुभव किया हो जीवन में उसकी खोज और लक्ष्य पीड़ादायक नहीं थे, वरन सुखद थे। वह केवल उन आशीषों या प्रशंसाओं की वजह से खुश नहीं था जो सृजनकर्ता के द्वारा उसे प्रदान की गईं थीं, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण रूप से, अपनी खोजों और जीवन के लक्ष्यों की वजह से, परमेश्वर से भय रखने और बुराई से दूर रहने के कारण अर्जित सृजनकर्ता की संप्रभुता के लगातार बढ़ने वाले ज्ञान और उसकी वास्तविक समझ की वजह से वह खुश था, और यही नहीं, सृजनकर्ता की संप्रभुता के अधीन होने के व्यक्तिगत अनुभवों की वजह से, परमेश्वर के अद्भुत कर्मों की वजह से, और मनुष्य और परमेश्वर के सह-अस्तित्व, परिचय, और पारस्परिक समझ के

नाजुक, फिर भी, अविस्मरणीय अनुभवों और स्मृतियों की वजह से वह खुश था। अय्यूब उस आराम और प्रसन्नता की वजह से खुश था जो सृजनकर्ता की इच्छा को जानने से आई थी; उस सम्मान की वजह से जो यह देखने से बाद उभरा था कि परमेश्वर कितना महान, अद्‌भुत, प्यारा एवं विश्वसनीय है। अय्यूब बिना किसी कष्ट के अपनी मृत्यु का सामना इसलिए कर पाया, क्योंकि वह जानता था कि मरने के बाद वह सृजनकर्ता के पास लौट जाएगा। जीवन में उसके लक्ष्यों और जो उसने हासिल किया था, उनकी वजह से ही सृजनकर्ता द्वारा उसके जीवन को वापस लेने के समय वह शान्ति से मृत्यु का सामना कर पाया, और इतना ही नहीं, शुद्ध और चिंतामुक्त होकर, वह सृजनकर्ता के सामने खड़ा हो पाया था। क्या आजकल लोग उस प्रकार की प्रसन्नता को प्राप्त कर सकते हैं जो अय्यूब के पास थी? क्या तुम लोगों के पास वैसी परिस्थितियाँ हैं जो ऐसा करने के लिए आवश्यक हैं? चूँकि लोग आजकल ऐसा करने की स्थिति में हैं, तो वे अय्यूब के समान खुशी से जीवन बिताने में असमर्थ क्यों हैं? वे मृत्यु के भय के कष्ट से बच निकलने में असमर्थ क्यों हैं? मृत्यु का सामना करते समय, कुछ लोगों का पेशाब निकल जाता है; कुछ काँपते हैं, मूर्छित हो जाते हैं, स्वर्ग और मनुष्य के विरुद्ध समान रूप से घोर निंदा करते हैं, यहाँ तक कि कुछ रोते और विलाप करते हैं। ये किसी भी तरह से स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं जो अचानक तब घटित होती हैं जब मृत्यु नज़दीक आने लगती है। लोग मुख्यत: ऐसे शर्मनाक तरीकों से इसलिए व्यवहार करते हैं क्योंकि भीतर ही भीतर, अपने हृदय की गहराई में, वे मृत्यु से डरते हैं, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं के बारे में स्पष्ट ज्ञान और समझ नहीं है, और सही मायने में वे उनके प्रति समर्पण तो बिलकुल नहीं करते हैं। लोग इस तरह व्यवहार इसलिए करते हैं, क्योंकि वे केवल स्वयं ही हर चीज़ की व्यवस्था और उसे संचालित करना चाहते हैं, अपने भाग्य, अपने जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करना चाहते हैं। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि लोग कभी भी मृत्यु के भय से बच नहीं पाते हैं।

6. केवल सृजनकर्ता की संप्रभुता को स्वीकार करके ही कोई व्यक्ति उसकी ओर लौट सकता है

जब किसी के पास सृजनकर्ता की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं का स्पष्ट ज्ञान और अनुभव नहीं होगा, तो भाग्य और मृत्यु के बारे में उसका ज्ञान आवश्यक रूप से असंगत होगा। लोग स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते हैं कि हर चीज़ परमेश्वर के हाथ में है, वे यह नहीं समझ सकते कि हर चीज़ परमेश्वर के नियंत्रण और संप्रभुता के अधीन है, यह नहीं समझ सकते हैं कि मनुष्य ऐसी संप्रभुता को फेंक नहीं सकता है या

उससे बच नहीं सकता है। और इसी कारण, जब उनका मृत्यु का सामना करने का समय आता है, उनके आखिरी शब्दों, चिंताओं एवं पछतावों का कोई अन्त नहीं होता है। वे अत्यधिक बोझ, अत्यधिक अनिच्छा, अत्यधिक भ्रम से दबे होते हैं। इसी वजह से वे मृत्यु से डरते हैं। क्योंकि कोई भी व्यक्ति जिसने इस संसार में जन्म लिया है, उनका जन्म आवश्यक है और उसकी मृत्यु अनिवार्य है; जो कुछ घटित होता है, उससे परे कोई नहीं जा सकता है। यदि कोई इस संसार से बिना किसी पीड़ा के जाना चाहता है, यदि कोई जीवन के इस अंतिम मोड़ का बिना किसी अनिच्छा या चिंता के सामना करना चाहता है, तो इसका एक ही रास्ता है कि वो कोई पछतावा न रखे। और बिना किसी पछतावे के संसार से जाने का एकमात्र मार्ग है सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानना, उसके अधिकार को जानना, और उनके प्रति समर्पण करना। केवल इसी तरह से कोई व्यक्ति मानवीय लड़ाई-झगड़ों, बुराइयों, और शैतान के बंधन से दूर रह सकता है; और केवल इसी तरह से ही कोई व्यक्ति अय्यूब के समान, सृजनकर्ता के द्वारा निर्देशित और आशीष-प्राप्त जीवन जी सकता है, ऐसा जीवन जो स्वतंत्र और मुक्त हो, ऐसा जीवन जिसका मूल्य और अर्थ हो, ऐसा जीवन जो सत्यनिष्ठ और खुले हृदय का हो। केवल इसी तरह कोई अय्यूब के समान, सृजनकर्ता के द्वारा परीक्षा लिए जाने और वंचित किए जाने के प्रति, सृजनकर्ता के आयोजनों और उसकी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण कर सकता है; केवल इसी तरह से ही कोई व्यक्ति जीवन भर सृजनकर्ता की आराधना कर सकता है और उसकी प्रशंसा अर्जित कर सकता है, जैसा कि अय्यूब ने किया था, और उसकी आवाज़ को सुन सकता है, और उसे अपने समक्ष प्रकट होते हुए देख सकता है। केवल इसी तरह से ही कोई व्यक्ति, अय्यूब के समान, बिना किसी पीड़ा, चिंता और पछतावे के प्रसन्नता के साथ जी और मर सकता है। केवल इसी तरह से कोई व्यक्ति, अय्यूब के समान प्रकाश में जीवन बिता सकता है और अपने जीवन के हर मोड़ में प्रकाश से होकर गुज़र सकता है, अपनी यात्रा को प्रकाश में बिना किसी व्यवधान के पूरा कर सकता है, और अनुभव करने, सीखने, और एक सृजित प्राणी के रूप में सृजनकर्ता की संप्रभुता के बारे में जानने के अपने ध्येय को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है—और प्रकाश में मृत्यु को प्राप्त कर सकता है, और उसके पश्चात् एक सृजित किए गए प्राणी के रूप में हमेशा सृजनकर्ता की तरफ़ खड़ा हो सकता है, और उसकी सराहना पा सकता है।

सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानने के अवसर को मत छोड़ो

ऊपर वर्णन किए गए छह मोड़ सृजनकर्ता के द्वारा निर्धारित किए गए ऐसे महत्वपूर्ण चरण हैं जिनसे

होकर प्रत्येक सामान्य व्यक्ति को अपने जीवन में गुज़रना ही होगा। मानव परिप्रेक्ष्य से, इनमें से हर एक मोड़ वास्तविक है, किसी से भी बचकर निकला नहीं जा सकता है, और सभी सृजनकर्ता की पूर्वयति और उसकी संप्रभुता से संबंध रखते हैं। इसलिए, एक मनुष्य के लिए, इनमें से प्रत्येक मोड़ एक महत्वपूर्ण जाँच-चौकी है, और इनमें से प्रत्येक से आसानी से किस प्रकार गुज़रा जाए, यह एक गंभीर प्रश्न है जिसका अब तुम लोग को सामना करते हो।

अनेक दशक जो किसी मानव जीवन को बनाते हैं वे न तो लंबे होते हैं और न ही छोटे। जन्म और वयस्क होने के बीच के लगभग बीस वर्ष पलक झपकते ही बीत जाते हैं, और यद्यपि जीवन के इस मोड़ पर किसी व्यक्ति को वयस्क माना जाता है, फिर भी इस आयु वर्ग के लोग मानव जीवन और मानव के भाग्य के बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानते हैं। जैसे-जैसे वे और अधिक अनुभव प्राप्त करते हैं, वे धीरे-धीरे अधेड़ अवस्था की ओर कदम रखते हैं। तीस-चालीस की उम्र में लोग जीवन और भाग्य के बारे में आरंभिक अनुभव अर्जित करते हैं, किन्तु इन चीजों के बारे में उनके विचार अभी भी बिलकुल अस्पष्ट होते हैं। कुछ लोग चालीस वर्ष की उम्र के बाद ही मनुष्यजाति और सृजनकर्ता को समझना आरंभ करते हैं, जिनका सृजन परमेश्वर ने किया था, और यह समझने लगते हैं कि वास्तव में मानव जीवन क्या है, मनुष्य का भाग्य क्या है। कुछ लोगों के पास, काफी लंबे समय से परमेश्वर के अनुयायी रहने और अधेड़ अवस्था में पहुँचने के बाद भी परमेश्वर की संप्रभुता का सटीक ज्ञान और उसकी परिभाषा नहीं होती, सच्चा समर्पण होने का तो बिलकुल ही सवाल नहीं उठता है। कुछ लोग आशीषों को पाने की चाह करने के अलावा किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते हैं, और यद्यपि वे लम्बी उम्र जी चुके हैं, फिर भी वे मनुष्य के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता के तथ्य को बिलकुल नहीं जानते और समझते हैं, और इसलिए उन्होंने परमेश्वर के आयोजनों और उसकी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण के व्यावहारिक सबक में एक छोटा-सा कदम तक नहीं रखा है। ऐसे लोग पूरी तरह से मूर्ख है, और उनका जीवन व्यर्थ है।

यदि मानव जीवन की समयावधियों को लोगों के जीवन के अनुभवों के स्तर और मनुष्य के भाग्य के उनके ज्ञान के अनुसार विभाजित किया जाए, तो मोटे तौर पर उन्हें तीन अवस्थाओं में बांटा जा सकता है। पहली अवस्था है युवावस्था, जो जन्म से लेकर मध्यवय के बीच के वर्ष होते हैं, या जन्म से लेकर तीस वर्ष की आयु तक। दूसरी अवस्था है परिपक्वता, जो मध्यवय से लेकर वृद्धावस्था तक होती है, या तीस से लेकर साठ वर्ष की आयु तक। और तीसरी अवस्था है किसी व्यक्ति की परिपक्व अवधि, जो वृद्धावस्था से शुरू

होती है, साठ वर्ष सेशु रू होकर, उसके इस संसार से जाने तक रहती है। दूसरे शब्दों में, जन्म से लेकर मध्यवय तक, भाग्य और जीवन के बारे में अधिकतर लोगों का ज्ञान दूसरों के विचारों की नकल करते रहने तक सीमित होता है, और इसमें लगभग कोई वास्तविक, व्यावहारिक सार नहीं होता है। इस अवधि के दौरान, जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण और किस प्रकार वह इस संसार में अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ता है, बहुत ही सतही और सरल होता है। यह उसके किशोरवय की अवधि है। जीवन के सभी आनंद और दुःखों का स्वाद चखने के बाद ही, उसे भाग्य के बारे में वास्तविक समझ प्राप्त होती है, और वह—अवचेतन रूप से, अपने हृदय की गहराई में—धीरे-धीरे भाग्य की अपरिवर्तनीयता की सराहना करने लगता है, और धीरे-धीरे उसे एहसास होता है कि मनुष्य के भाग्य पर सृजनकर्ता की संप्रभुता वास्तव में मौजूद है। यह किसी व्यक्ति की परिपक्वता की अवधि है। जब वह भाग्य के विरुद्ध संघर्ष करना समाप्त कर देता है, और जब वह संघर्षों में अब और पड़ने को इच्छुक नहीं होता है, और इसके बजाय, जीवन में अपने भाग्य को जानता है, स्वर्ग की इच्छा के प्रति समर्पण करता है, अपनी उपलब्धियों और जीवन में हुई ग़लतियों का सार निकलता है, और अपने जीवन में सृजनकर्ता के न्याय का इंतज़ार करता है, तब वह परिपक्वता की अवधि में प्रवेश करता है। इन तीन अवस्थाओं के दौरान, लोगों के द्वारा अर्जित विभिन्न प्रकार के अनुभवों और उपलब्धियों पर विचार करते हुए, सामान्य परिस्थितियों में, एक व्यक्ति के लिए सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानने की अवधि बहुत बड़ी नहीं होती है। यदि कोई व्यक्ति साठ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है, तो उसके पास परमेश्वर की संप्रभुता को जानने के लिए केवल लगभग तीस वर्ष का समय ही है; यदि वह और अधिक लंबी समयावधि चाहता है, तो ऐसा तभी संभव है जब वह काफी लंबे समय तक जीवित रहे, जब वह सौ वर्ष तक जीवित रह सके। इसलिए मैं कहता हूँ, मानव अस्तित्व के सामान्य नियमों के अनुसार, किसी व्यक्ति द्वारा पहली बार सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानने के विषय का सामना करने से लेकर उस समय तक जब वह सृजनकर्ता की संप्रभुता के तथ्य को पहचानने में समर्थ हो जाता है, और वहाँ से लेकर उस बिन्दु तक जब वह उसके प्रति समर्पण करने में समर्थ हो जाता है, यद्यपि यह पूरी प्रक्रिया बहुत ही लम्बी है, परंतु यदि वास्तव में कोई उन वर्षों को गिने, तो वे तीस या चालीस से अधिक नहीं होंगे जिनके दौरान उसके पास इन प्रतिफलों को प्राप्त करने का अवसर होता है। और प्रायः, लोग आशीषों को पाने के लिए अपनी इच्छाओं और अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण अपना विवेक खो देते हैं; इसलिए, वे नहीं पहचान सकते हैं कि मानव जीवन का सार कहाँ है, परमेश्वर की संप्रभुता को जानने के

महत्व को नहीं समझते हैं। ऐसे लोग मानव जीवन और सृजनकर्ता की संप्रभुता का अनुभव करने के लिए मानव संसार में प्रवेश करने का यह मूल्यवान अवसर सँजोकर नहीं रख पाते हैं, और वे यह समझ नहीं पाते हैं कि एक सृजित किए गए प्राणी के लिए सृजनकर्ता का व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त करना कितना बहुमूल्य है। इसलिए मैं कहता हूँ, कि जो लोग जो चाहते हैं कि परमेश्वर का कार्य जल्दी से समाप्त हो जाए, जो इच्छा करते हैं कि जितनी जल्दी हो सके परमेश्वर मनुष्य के अंत की व्यवस्था करे, ताकि वे तुरंत ही उसके वास्तविक व्यक्तित्व को निहार सकें और जितनी जल्दी हो सके, आशीषें प्राप्त कर सकें—वे निकृष्टतम प्रकार की अवज्ञा के दोषी हैं और वे अत्यधिक मूर्ख हैं। इस दौरान, जो लोग बुद्धिमान हैं, जिनके पास अत्यंत बौद्धिक तीक्ष्णता है, वे ऐसे लोग हैं जो अपने सीमित समय के दौरान सृजनकर्ता की संप्रभुता को जानने के इस अनोखे अवसर को समझने की इच्छा रखते हैं। ये दो अलग-अलग इच्छाएँ, दो अत्यंत भिन्न दृष्टिकोणों और खोजों को उजागर करती हैं : जो लोग आशीषों की खोज करते हैं वे स्वार्थी और नीच हैं; वे परमेश्वर की इच्छा के बारे में नहीं सोचते हैं, कभी परमेश्वर की संप्रभुता को जानने की खोज नहीं करते हैं, कभी उसके प्रति समर्पण करने की इच्छा नहीं करते हैं, बल्कि जैसा उनको अच्छा लगता है बस वैसा ही जीवन बिताना चाहते हैं। वे आनंदित रहने वाले भ्रष्ट लोग हैं; वे ऐसी श्रेणी के लोग हैं जिन्हें नष्ट किया जाएगा। जो लोग परमेश्वर को जानने की खोज करने का प्रयास करते हैं वे अपनी इच्छाओं की उपेक्षा करने में समर्थ हैं, वे परमेश्वर की संप्रभुता और परमेश्वर की व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण करने के लिए तैयार हैं, और वे इस प्रकार के लोग बनने की कोशिश करते हैं जो परमेश्वर के अधिकार के प्रति समर्पित हैं और परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। ऐसे लोग प्रकाश में रहते हैं, परमेश्वर की आशीषों के बीच जीवन जीते हैं, और निश्चित रूप से परमेश्वर के द्वारा उनकी प्रशंसा की जाएगी। चाहे कुछ भी हो, मानव पसंद बेकार है, और मनुष्य का इस बात पर कोई वश नहीं है कि परमेश्वर का कार्य कितना समय लेगा। लोगों के लिए यही अच्छा है कि वे अपने आपको परमेश्वर के आयोजनों पर छोड़ दें, और उसकी संप्रभुता के प्रति समर्पण कर दें। यदि तुम अपने आपको उसके आयोजनों पर नहीं छोड़ते हो, तो तुम क्या कर सकते हो? क्या परमेश्वर को इसकी वजह से कोई नुकसान उठाना पड़ेगा? यदि तुम अपने आपको उसके आयोजनों पर नहीं छोड़ते हो, इसके बजाय हर चीज़ अपने हाथ में लेने की कोशिश करते हो, तो तुम एक मूर्खतापूर्ण चुनाव कर रहे हो, और अंततः, केवल तुम ही जिसे नुकसान उठाना पड़ेगा। यदि लोग यथाशीघ्र परमेश्वर के साथ सहयोग करेंगे, यदि वे उसके आयोजनों को स्वीकार करने में, उसके अधिकार को जानने में, और वह

सब जो उसने उनके लिए किया है उसे समझने में शीघ्रता करेंगे, केवल तभी उनके पास आशा होगी। केवल इसी तरह से वे अपने जीवन को व्यर्थ में नहीं बिताएँगे, केवल तभी वे उद्धार प्राप्त करेंगे।

कोई भी इस सच्चाई को नहीं बदल सकता है कि परमेश्वर मनुष्य के भाग्य पर संप्रभुता रखता है

जो कुछ मैंने अभी-अभी कहा है उसे सुनने के बाद, क्या भाग्य के बारे में तुम लोगों का विचार बदला है? तुम लोग मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता के तथ्य को किस प्रकार समझते हो? इसे साधारण शब्दों में कहें तो, परमेश्वर के अधिकार के अधीन, प्रत्येक व्यक्ति सक्रिय या निष्क्रिय रूप से उसकी संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं को स्वीकार करता है, और चाहे कोई व्यक्ति अपने जीवन के दौरान कैसे भी संघर्ष क्यों न करता हो, भले ही वह कितने ही टेढ़े-मेढ़े पथों पर क्यों न चलता हो, अंत में वह सृजनकर्ता के द्वारा उसके लिए निर्धारित भाग्य के परिक्रमा-पथ पर वापस लौट आएगा। यह सृजनकर्ता के अधिकार की अजेयता है, और इसी तरह उसका अधिकार ब्रह्मांड पर नियंत्रण करता और उसे संचालित करता है। यही अजेयता, इस तरह का नियंत्रण और संचालन उन नियमों के लिए उत्तरदायी है जो सभी चीज़ों के जीवन का निर्धारण करते हैं, जो मनुष्यों को बिना किसी हस्तक्षेप के बार-बार पुनर्जन्म लेने देते हैं, जो इस संसार को नियमित रूप से चलाते और दिन प्रतिदिन, साल दर साल, आगे बढ़ाते रहते हैं। तुम लोगों ने इन सभी तथ्यों को देखा है और, चाहे सतही तौर पर समझो या गहराई से, तुम लोग उन्हें समझते हो; तुम लोगों की समझ की गहराई सत्य के बारे में तुम लोगों के अनुभव और ज्ञान पर, और परमेश्वर के बारे में तुम लोगों के ज्ञान पर निर्भर करती है। तुम सत्य की वास्तविकता को कितनी अच्छी तरह से जानते हो, तुम्हारे पास परमेश्वर के वचनों का कितना अनुभव है, तुम परमेश्वर के सार और उसके स्वभाव को कितनी अच्छी तरह से जानते हो—ये सब चीज़ें परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं के बारे में तुम्हारी समझ की गहराई को प्रदर्शित करती हैं। क्या परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाएँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि मनुष्य उसके प्रति समर्पण करता है या नहीं? क्या यह तथ्य कि परमेश्वर इस अधिकार को धारण करता है, इस बात के द्वारा निर्धारित होता है कि मानवजाति उसके प्रति समर्पण करती है या नहीं? परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों परमेश्वर का अधिकार अस्तित्व में रहता है। समस्त परिस्थितियों में परमेश्वर अपने विचारों, और अपनी इच्छाओं के अनुरूप प्रत्येक मनुष्य के भाग्य और सभी चीज़ों पर नियंत्रण और उनकी व्यवस्था करता है। यह मनुष्यों के बदलने की वजह से नहीं बदलेगा; और यह मनुष्य की इच्छा से स्वतंत्र है, और समय, स्थान, और भूगोल में होने वाले किन्ही भी परिवर्तनों द्वारा इसे नहीं बदला जा सकता

है, क्योंकि परमेश्वर का अधिकार उसका सार ही है। चाहे मनुष्य परमेश्वर की संप्रभुता को जानने और स्वीकार करने में समर्थ हो या न हो, और चाहे मनुष्य इसके प्रति समर्पण करने में समर्थ हो या न हो, यह मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता के सच को ज़रा-सा भी नहीं बदलता है। अर्थात्, परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति मनुष्य भले ही कोई भी दृष्टिकोण क्यों न रखे, यह इस सच को नहीं बदल सकता है कि परमेश्वर मनुष्य के भाग्य और सभी चीज़ों पर संप्रभुता रखता है। चाहे तुम परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति समर्पण न भी करो, तब भी वह तुम्हारे भाग्य को नियंत्रित करता है; चाहे तुम उसकी संप्रभुता को न भी जान सको, फिर भी उसका अधिकार अस्तित्व में रहता है। परमेश्वर का अधिकार और मनुष्य के भाग्य पर उसकी संप्रभुता मनुष्य की इच्छा से स्वतंत्र हैं, और मनुष्य की प्राथमिकताओं और पसंद के अनुसार बदलते नहीं हैं। परमेश्वर का अधिकार हर घण्टे, और हर एक क्षण पर हर जगह है। स्वर्ग और पृथ्वी समाप्त हो जाएँगे, पर उसका अधिकार कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर है, उसके पास अद्वितीय अधिकार है, और उसका अधिकार लोगों, घटनाओं या चीज़ों के द्वारा, समय या भूगोल के द्वारा प्रतिबन्धित या सीमित नहीं होता है। परमेश्वर हमेशा अपने अधिकार को काम में लाता है, अपनी ताक़त दिखाता है, हमेशा की तरह अपने प्रबंधन-कार्य को करता रहता है; वह हमेशा सभी चीज़ों पर शासन करता है, सभी चीज़ों का भरण-पोषण करता है, और सभी चीज़ों का आयोजन करता है—ठीक वैसे ही जैसे उसने हमेशा से किया है। इसे कोई नहीं बदल सकता है। यह एक सच्चाई है; यह चिरकाल से अपरिवर्तनीय सत्य है!

उस व्यक्ति के लिए उचित दृष्टिकोण और अभ्यास जो परमेश्वर के अधिकार के प्रति समर्पण करने की इच्छा रखता है

किस दृष्टिकोण के साथ अब मनुष्य को परमेश्वर के अधिकार, और मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता के तथ्य को जानना और मानना चाहिए? यह एक वास्तविक समस्या है जो हर व्यक्ति के सामने खड़ी है। जीवन की वास्तविक समस्याओं का सामना करते समय, तुम्हें किस प्रकार परमेश्वर के अधिकार और उसकी संप्रभुता को जानना और समझना चाहिए? जब तुम्हारे सामने ये समस्याएँ आती हैं और तुम्हें पता नहीं होता कि किस प्रकार इन समस्याओं को समझें, सँभालें और अनुभव करें, तो तुम्हें समर्पण करने की नीयत, समर्पण करने की तुम्हारी इच्छा, और परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण करने की तुम्हारी सच्चाई को दर्शाने के लिए तुम्हें किस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए?

पहले तुम्हें प्रतीक्षा करना सीखना होगा; फिर तुम्हें खोजना सीखना होगा; फिर तुम्हें समर्पण करना सीखना होगा। "प्रतीक्षा" का अर्थ है परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करना, उन लोगों, घटनाओं एवं चीज़ों की प्रतीक्षा करना जो उसने तुम्हारे लिए व्यवस्थित की हैं, और उसकी इच्छा स्वयं को धीरे-धीरे तुम्हारे सामने प्रकट करे, इसकी प्रतीक्षा करना। "खोजने" का अर्थ है परमेश्वर द्वारा निर्धारित लोगों, घटनाओं और चीज़ों के माध्यम से, तुम्हारे लिए परमेश्वर के जो विचारशील इरादें हैं उनका अवलोकन करना और उन्हें समझना, उनके माध्यम से सत्य को समझना, जो मनुष्यों को अवश्य पूरा करना चाहिए, उसे समझना और उन सच्चे मार्गों को समझना जिनका उन्हें पालन अवश्य करना चाहिए, यह समझना कि परमेश्वर मनुष्यों में किन परिणामों को प्राप्त करने का अभिप्राय रखता है और उनमें किन उपलब्धियों को पाना चाहता है। निस्सन्देह, "समर्पण करने", का अर्थ उन लोगों, घटनाओं, और चीज़ों को स्वीकार करना है जो परमेश्वर ने आयोजित की हैं, उसकी संप्रभुता को स्वीकार करना और उसके माध्यम से यह जान लेना है कि किस प्रकार सृजनकर्ता मनुष्य के भाग्य पर नियंत्रण करता है, वह किस प्रकार अपना जीवन मनुष्य को प्रदान करता है, वह किस प्रकार मनुष्यों के भीतर सत्य गढ़ता है। परमेश्वर की व्यवस्थाओं और संप्रभुता के अधीन सभी चीज़ें प्राकृतिक नियमों का पालन करती हैं, और यदि तुम परमेश्वर को अपने लिए सभी चीज़ों की व्यवस्था करने और उन पर नियंत्रण करने देने का संकल्प करते हो, तो तुम्हें प्रतीक्षा करना सीखना चाहिए, तुम्हें खोज करना सीखना चाहिए, और तुम्हें समर्पण करना सीखना चाहिए। हर उस व्यक्ति को जो परमेश्वर में अधिकार के प्रति समर्पण करना चाहता है, यह दृष्टिकोण अवश्य अपनाना चाहिए, और हर वह व्यक्ति जो परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं को स्वीकार करना चाहता है, उसे यह मूलभूत गुण अवश्य रखना चाहिए। इस प्रकार का दृष्टिकोण रखने के लिए, इस प्रकार की योग्यता धारण करने के लिए, तुम लोगों को और अधिक कठिन परिश्रम करना होगा; और सच्ची वास्तविकता में प्रवेश करने का तुम्हारे लिए यही एकमात्र तरीका है।

परमेश्वर को अपने अद्वितीय स्वामी के रूप में स्वीकार करना उद्धार पाने का पहला कदम है

परमेश्वर के अधिकार से संबंधित सत्य ऐसे सत्य हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को गंभीरता से लेना चाहिए, अपने हृदय से अनुभव करना और समझना चाहिए; क्योंकि ये सत्य प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं; प्रत्येक व्यक्ति के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर इनका प्रभाव पड़ता है, उन महत्वपूर्ण मोड़ों को प्रभावित करते हैं जिनसे प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में अवश्य गुज़रना है, परमेश्वर की संप्रभुता के मनुष्य

के ज्ञान पर और उस दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ता है, जिसके साथ उसे परमेश्वर के अधिकार का सामना करना चाहिए, और स्वाभाविक ही है कि प्रत्येक व्यक्ति के अंतिम गंतव्य पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए उन्हें जानने और समझने के लिए जीवन भर की ऊर्जा लगती है। जब तुम परमेश्वर के अधिकार को पूरे विश्वास से देखोगे, जब तुम परमेश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करोगे, तब तुम परमेश्वर के अधिकार के अस्तित्व के सत्य को धीरे-धीरे जानने और समझने लगोगे। किन्तु यदि तुम परमेश्वर के अधिकार को कभी नहीं पहचान पाते हो, और कभी भी उसकी संप्रभुता को स्वीकार नहीं करते हो, तब चाहे तुम कितने ही वर्ष क्यों न जीवित रहो, तुम परमेश्वर की संप्रभुता का थोड़ा-सा भी ज्ञान प्राप्त नहीं करोगे। यदि तुम सचमुच परमेश्वर के अधिकार को जानते और समझते नहीं हो, तो जब तुम मार्ग के अंत में पहुँचोगे, तो भले ही तुमने वर्षों तक परमेश्वर में विश्वास किया हो, तुम्हारे पास अपने जीवन में दिखाने के लिए कुछ नहीं होगा, और स्वाभाविक रूप से मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता के बारे में तुम्हारे पास थोड़ा-भी ज्ञान नहीं होगा। क्या यह बहुत ही दुःखदायी बात नहीं है? इसलिए, तुम जीवन में चाहे कितनी ही दूर तक क्यों न चले हो, तुम अब चाहे कितने ही वृद्ध क्यों न हो गए हो, तुम्हारी शेष यात्रा चाहे कितनी ही लंबी क्यों न हो, पहले तुम्हें परमेश्वर के अधिकार को पहचानना होगा और उसे गंभीरतापूर्वक लेना होगा, और इस सच को स्वीकार करना होगा कि परमेश्वर तुम्हारा अद्वितीय स्वामी है। मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता से संबंधित इन सत्यों का स्पष्ट और सटीक ज्ञान और समझ प्राप्त करना सभी के लिए एक अनिवार्य सबक है; मानव जीवन को जानने और सत्य को प्राप्त करने की एक कुंजी है, परमेश्वर को जानने वाला जीवन, इसके अध्ययन का मूल क्रम ऐसा ही है, इसका सभी को हर दिन सामना करना होगा, और इससे कोई बच नहीं सकता है। यदि तुममें से कोई इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए छोटा मार्ग लेना चाहता है, तो मैं अब तुमसे कहता हूँ, कि यह असंभव है! यदि तुम परमेश्वर की संप्रभुता से बच निकलना चाहते हो, तो यह और भी अधिक असंभव है! परमेश्वर ही मनुष्य का एकमात्र प्रभु है, परमेश्वर ही मनुष्य के भाग्य का एकमात्र स्वामी है, और इसलिए मनुष्य के लिए अपने भाग्य पर नियंत्रण करना असंभव है, और उससे बाहर निकलना असंभव है। किसी व्यक्ति की योग्यताएँ चाहे कितनी ही असाधारण क्यों न हों, वह दूसरों के भाग्य को प्रभावित नहीं कर सकता है, दूसरों के भाग्य को आयोजित, व्यवस्थित, नियंत्रित, या परिवर्तित तो बिलकुल नहीं कर सकता है। केवल स्वयं अद्वितीय परमेश्वर ही मनुष्य के लिए सभी चीज़ों को निर्धारित करता है, क्योंकि केवल वही अद्वितीय अधिकार धारण करता है जो मनुष्य के भाग्य पर संप्रभुता रखता है; और

इसलिए केवल सृजनकर्ता ही मनुष्य का अद्वितीय स्वामी है। परमेश्वर का अधिकार न केवल सृजित की गई मानवजाति के ऊपर, बल्कि मनुष्यों को दिखाई न देने वाले अनसृजे प्राणियों, के ऊपर तारों के ऊपर, और ब्रह्माण्ड के ऊपर संप्रभुता रखता है। यह एक निर्विवाद सच है, ऐसा सच जो वास्तव में विद्यमान है, जिसे कोई मनुष्य या चीज़ बदल नहीं सकती है। यह मानते हुए कि तुम्हारे पास कुछ विशेष कौशल या योग्यता है, और अभी भी यह सोचते हुए कि आकस्मिक भाग्योदय से तुम अपनी वर्तमान परिस्थितियों को बदल सकते हो या उनसे बच निकल सकते हो; चीज़ें जैसी हैं, उनसे तुममें से कोई अभी भी असंतुष्ट है; यदि तुम मानवीय प्रयासों के माध्यम से अपने भाग्य को बदलने का, और उसके द्वारा दूसरों से विशिष्ट दिखाई देने, और परिणामस्वरूप प्रसिद्धि और सौभाग्य अर्जित करने का प्रयास करते हो; तो मैं तुमसे कहता हूँ, कि तुम अपने लिए चीज़ों को कठिन बना रहे हो, तुम केवल समस्याओं को आमंत्रित कर रहे हो, तुम अपनी ही कब्र खोद रहे हो! देर-सवेर, एक दिन, तुम यह जान जाओगे कि तुमने ग़लत चुनाव किया है, और तुम्हारे प्रयास व्यर्थ हो गए हैं। तुम्हारी महत्वाकांक्षाएँ, भाग्य के विरुद्ध लड़ने की तुम्हारी इच्छाएँ, और तुम्हारा स्वयं का बेहद खराब आचरण, तुम्हें ऐसे मार्ग में ले जाएगा जहाँ से कोई वापसी नहीं है, और इसके लिए तुम्हें एक भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। हालाँकि, इस समय तुम्हें परिणाम की गंभीरता दिखाई नहीं देती, किन्तु जैसे-जैसे तुम और भी अधिक गहराई से उस सत्य का अनुभव और सराहना करोगे कि परमेश्वर मनुष्य के भाग्य का स्वामी है, तो जिसके बारे में आज मैं बात कर रहा हूँ उसके बारे में और उसके वास्तविक निहितार्थों को तुम धीरे-धीरे समझने लगोगे। तुम्हारे पास सचमुच में हृदय और आत्मा है या नहीं, तुम सत्य से प्रेम करने वाले व्यक्ति हो या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति और सत्य के प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाते हो। स्वाभाविक रूप से, यह निर्धारित करता है कि तुम वास्तव में परमेश्वर के अधिकार को जान और समझ सकते हो या नहीं। यदि तुमने अपने जीवन में परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्थाओं को कभी-भी महसूस नहीं किया है, और परमेश्वर के अधिकार को तो बिलकुल नहीं पहचाते और स्वीकार करते हो, तो उस मार्ग के कारण जिसे तुमने अपनाया है और अपने चुनावों के कारण, तुम बिलकुल बेकार हो जाओगे, और बिना किसी संशय के परमेश्वर की घृणा और तिरस्कार के पात्र बन जाओगे। परन्तु वे लोग जो, परमेश्वर के कार्य में, उसके परीक्षणों को स्वीकार कर सकते हैं, उसकी संप्रभुता को स्वीकार कर सकते हैं, उसके अधिकार के प्रति समर्पण कर सकते हैं, और धीरे-धीरे उसके वचनों का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, वे परमेश्वर के अधिकार

के वास्तविक ज्ञान को, उसकी संप्रभुता की वास्तविक समझ को प्राप्त कर चुके होंगे, और वे सचमुच में सृजनकर्ता के अधीन आ गए होंगे। केवल ऐसे लोगों को ही सचमुच में बचाया गया होगा। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की संप्रभुता को जान लिया है, क्योंकि उन्होंने इसे स्वीकार लिया है, इसलिए मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर की संप्रभुता के तथ्य की उनकी समझ और उसके प्रति उनका समर्पण वास्तविक और परिशुद्ध है। जब वे मृत्यु का सामना करेंगे, तो अय्यूब के समान, उनका मन भी मृत्यु के द्वारा विचलित नहीं होगा, और बिना किसी व्यक्तिगत पसंद के, बिना किसी व्यक्तिगत इच्छा के, सभी चीज़ों में परमेश्वर के आयोजनों और उसकी व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण करने में समर्थ होंगे। केवल ऐसा व्यक्ति ही एक सृजित किए गए सच्चे मनुष्य के रूप सृजनकर्ता की तरफ़ लौटने में समर्थ होगा।

17 दिसंबर, 2013

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है IV

परमेश्वर की पवित्रता (I)

अपनी पिछली सभा में हमने परमेश्वर के अधिकार के बारे में कुछ और संगति की थी। फिलहाल हम परमेश्वर की धार्मिकता के विषय पर चर्चा नहीं करेंगे। आज हम एक बिलकुल नए विषय—परमेश्वर की पवित्रता—पर बात करेंगे। परमेश्वर की पवित्रता परमेश्वर के अद्वितीय सार का एक और पहलू है, अतः हमारा इस विषय पर संगति करना महत्त्वपूर्ण है। मैंने पहले परमेश्वर के सार के दो अन्य पहलुओं के बारे में संगति की थी—परमेश्वर का धर्मी स्वभाव और परमेश्वर का अधिकार; क्या वे पहलू, और जिस पहलू पर मैं आज संगति करूँगा, सब अद्वितीय हैं? (हाँ।) परमेश्वर की पवित्रता भी अद्वितीय है, अतः हमारी आज की संगति का कथ्य इस अद्वितीयता का आधार और मूल ही होगा। आज हम परमेश्वर के अद्वितीय सार—उसकी पवित्रता पर संगति करने जा रहे हैं। शायद तुममें से कुछ लोगों को कुछ संदेह हैं, और वे पूछ रहे हैं, "हमें परमेश्वर की पवित्रता पर संगति क्यों करनी चाहिए?" चिंता मत करो, मैं इसके माध्यम से तुम लोगों से धीरे-धीरे बात करूँगा। जब तुम लोग मेरी बात सुन लोगे, तो तुम जान जाओगे कि इस विषय पर संगति करना मेरे लिए इतना आवश्यक क्यों है।

आओ, पहले "पवित्र" शब्द को परिभाषित करें। अपनी समझ और उस समस्त ज्ञान का उपयोग

करते हुए, जो तुम लोगों ने पाया है, तुम्हें क्या लगता है, "पवित्र" की परिभाषा क्या होनी चाहिए? ("पवित्र" का अर्थ है बेदाग, किसी इनसानी भ्रष्टता या दोषों से पूर्णत: रहित। पवित्रता सभी चीज़ों को सकारात्मक रूप से विकीर्ण करती है, चाहे विचार हों या भाषण या फिर कार्य।) बहुत अच्छा। ("पवित्र" दिव्य, निष्कलंक और मनुष्य द्वारा अनुल्लंघनीय है। यह अद्वितीय है, केवल परमेश्वर की है और उसकी प्रतीक है।) यह तुम लोगों की परिभाषा है। हर एक व्यक्ति के हृदय में इस "पवित्र" शब्द का एक विस्तार, एक परिभाषा और एक व्याख्या है। कम से कम, जब तुम लोग "पवित्र" शब्द को देखते हो, तो तुम्हारा दिमाग खाली नहीं होता। तुम्हारे पास इस शब्द की परिभाषा का एक निश्चित विस्तार है और कुछ लोगों की बातें उन बातों के करीब आती हैं जो परमेश्वर के स्वभाव के सार को परिभाषित करती हैं। यह बहुत अच्छा है। ज्यादातर लोग विश्वास करते हैं कि "पवित्र" शब्द एक सकारात्मक शब्द है, और यह निश्चित रूप से सच है। परंतु आज परमेश्वर की पवित्रता के बारे में संगति करते हुए मैं केवल परिभाषाओं और व्याख्याओं के बारे में ही बात नहीं करूँगा। इसके बजाय, मैं तुम्हें यह दिखाने के लिए सबूत के रूप में तथ्य पेश करूँगा कि मैं क्यों कहता हूँ कि परमेश्वर पवित्र है, और मैं क्यों परमेश्वर के सार को दर्शाने के लिए "पवित्र" शब्द का प्रयोग करता हूँ। जब हमारी संगति पूरी होगी, तो तुम लोग महसूस करोगे कि परमेश्वर के सार को परिभाषित करने के लिए और परमेश्वर के संदर्भ में "पवित्र" शब्द का प्रयोग बिलकुल उचित और सर्वाधिक उपयुक्त है। कम से कम, वर्तमान मानव-भाषा के प्रसंग में, परमेश्वर का उल्लेख करने के लिए इस शब्द का प्रयोग करना विशेष रूप से उपयुक्त है—परमेश्वर का उल्लेख करने के लिए यह मानव-भाषा के समस्त शब्दों में से एकमात्र शब्द है, जो सबसे उपयुक्त है। परमेश्वर के संदर्भ में यह शब्द खोखला नहीं है, न ही यह निराधार प्रशंसा या खाली चापलूसी का शब्द है। हमारी संगति का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति की परमेश्वर के सार के इस पहलू की सच्चाई से पहचान करवाना है। परमेश्वर मनुष्य की समझ से नहीं डरता, लेकिन वह उसकी ग़लतफहमी से डरता है। परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति उसके सार और उसके अस्तित्व तथा सत्ता को जाने। इसलिए हर बार जब भी हम परमेश्वर के सार के एक पहलू का जिक्र करते हैं, तो हम कई तथ्यों की दुहाई दे सकते हैं, ताकि लोग यह देख सकें कि परमेश्वर के सार का यह पहलू वास्तव में मौजूद है।

अब जबकि हमारे पास "पवित्र" शब्द की एक परिभाषा है, तो आओ, कुछ उदाहरणों पर चर्चा करें। लोग अपनी धारणाओं में कई चीज़ों और लोगों के "पवित्र" होने की कल्पना करते हैं। उदाहरण के लिए,

मानव-जाति के शब्दकोशों में कुँआरे लड़के और लड़कियाँ पवित्र परिभाषित किए जाते हैं। लेकिन क्या वे वास्तव में पवित्र हैं? क्या यह तथाकथित "पवित्र", और वह "पवित्र" जिस पर हम आज संगति करेंगे, वे एक-समान हैं? (नहीं।) मनुष्यों के मध्य ऐसे लोग, जिनमें ऊँची नैतिकता है, जिनकी बोलचाल परिष्कृत और सुसंस्कृत है, जो कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाते, जो अपने शब्दों से दूसरों को सुकून पहुँचाते हैं और उन्हें सहमत कर लेते हैं—क्या वे पवित्र हैं? जो लोग अकसर अच्छा कार्य करते हैं, दानशील हैं और दूसरों की बड़ी सहायता करते हैं, जो लोगों की ज़िंदगी में बहुत खुशियाँ लेकर आते हैं—क्या वे पवित्र हैं? जो लोग किन्हीं स्वार्थपूर्ण विचारों को आश्रय नहीं देते, जो किसी के सामने कठोर माँग नहीं रखते, जो सबके प्रति सहिष्णु हैं—क्या वे पवित्र हैं? जिन्होंने कभी किसी के साथ झगड़ा नहीं किया या किसी का फायदा नहीं उठाया—क्या वे पवित्र हैं? और उनका क्या, जो दूसरों की भलाई के लिए काम करते हैं, दूसरों को फायदा पहुँचाते हैं और हर प्रकार से दूसरों के लिए उन्नति लेकर आते हैं—क्या वे पवित्र हैं? जो लोग अपने जीवन की सारी जमा-पूँजी दूसरों को दे देते हैं और साधारण जीवन जीते हैं, जो अपने साथ तो सख्त होते हैं पर दूसरों के साथ उदारता का व्यवहार करते हैं—क्या वे पवित्र हैं? (नहीं।) तुम लोगों को याद है कि तुम लोगों की माताओं ने तुम्हारा ध्यान रखा और हर संभव तरीके से तुम्हारी देखभाल की—क्या वे पवित्र हैं? जिन आदर्श विभूतियों को तुम लोग प्रिय मानते हो, चाहे वे प्रसिद्ध व्यक्ति हों, सितारे हों या महापुरुष हों—क्या वे पवित्र हैं? (नहीं।) आओ, अब बाइबल के उन नबियों को देखें, जो भविष्य के बारे में ऐसी बातें बताने में सक्षम थे, जिनसे बहुत लोग अनजान थे—क्या वे लोग पवित्र थे? जो लोग बाइबल में परमेश्वर के वचनों और उसके कार्य के तथ्यों को लिखने में सक्षम थे—क्या वे पवित्र थे? क्या मूसा पवित्र था? क्या अब्राहम पवित्र था? (नहीं।) और अय्यूब? क्या वह पवित्र था? (नहीं।) अय्यूब को परमेश्वर द्वारा धर्मी व्यक्ति कहा गया था, फिर उसे भी पवित्र क्यों नहीं कहा जाता? क्या वे लोग, जो परमेश्वर से डरते हैं और बुराई से दूर रहते हैं, वास्तव में पवित्र नहीं हैं? हैं या नहीं? (नहीं।) तुम लोग थोड़े अनिश्चित हो, तुम उत्तर के बारे में आश्वस्त नहीं हो, और "नहीं" कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहे, और न "हाँ" कहने की हिम्मत ही जुटा पा रहे हो, इसलिए अंत में तुम आधे-अधूरे मन से "नहीं" कह रहे हो। मैं एक दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। परमेश्वर के संदेशवाहक—वे संदेशवाहक, जिन्हें परमेश्वर पृथ्वी पर भेजता है—क्या वे पवित्र हैं? क्या देवदूत पवित्र हैं? (नहीं।) शैतान द्वारा भ्रष्ट न किए गए मनुष्य—क्या वे पवित्र हैं? (नहीं।) तुम हर सवाल का जवाब "नहीं" दिए चले जाते हो। किस आधार पर? तुम उलझन में पड़ गए हो, है न? तो देवदूतों को भी

पवित्र क्यों नहीं कहा जाता? तुम अनिश्चित महसूस कर रहे हो, है न? तब क्या तुम लोग अनुमान लगा सकते हो कि किस आधार पर वे लोग, चीज़ें या गैर-सृजित प्राणी, जिनका हमने पहले जिक्र किया था, पवित्र नहीं हैं? मुझे यकीन है कि तुम लोग ऐसा करने में असमर्थ हो? तो क्या फिर तुम लोगों का "नहीं" कहना थोड़ा गैरज़िम्मेदाराना नहीं है? क्या तुम बिना सोचे-समझे उत्तर नहीं दे रहे हो? कुछ लोग सोच रहे हैं : "चूँकि तुमने अपना प्रश्न इस तरह से पूछा है, इसलिए उसका उत्तर निश्चित रूप से 'नहीं' ही होगा।" मुझे सतही उत्तर मत दो। ध्यान से सोचो कि उत्तर "हाँ" है या "ना"। इस विषय पर संगति कर लेने के बाद तुम लोग जान जाओगे, कि उतर "नहीं" क्यों है। मैं तुम लोगों को जल्दी ही इसका उत्तर दूँगा। आओ, पहले पवित्र शास्त्र के कुछ अंश पढ़ें।

मनुष्य के लिए यहोवा परमेश्वर की आज्ञा

उत्पत्ति 2:15-17 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

सर्प के द्वारा स्त्री को बहकाया जाना

उत्पत्ति 3:1-5 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; उसने स्त्री से कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना'?" स्त्री ने सर्प से कहा, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।" तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।"

ये दोनों अंश बाइबल की 'उत्पत्ति' नामक पुस्तक के अंश हैं। क्या तुम सभी इन दोनों अंशों से परिचित हो? ये सृष्टि के आरंभ में हुई घटनाओं से संबंधित हैं, जब पहली बार मानव-जाति का सृजन किया गया था; ये घटनाएँ वास्तविक थीं। पहले हम यह देखें कि यहोवा परमेश्वर ने आदम और हव्वा को किस

प्रकार की आज्ञा दी थी; इस आज्ञा की विषयवस्तु आज हमारे विषय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। "और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, 'तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।'" इस अंश में मनुष्य को दी गई परमेश्वर की आज्ञा का क्या तात्पर्य है? पहला, परमेश्वर मनुष्य को बताता है कि वह क्या खा सकता है, अर्थात् अनेक प्रकार के पेड़ों के फल। इसमें कोई खतरा या ज़हर नहीं है, सब-कुछ खाया जा सकता है और बिना किसी संदेह के मनुष्य की इच्छा के अनुसार स्वतंत्रतापूर्वक खाया जा सकता है। यह परमेश्वर की आज्ञा का एक भाग है। दूसरा भाग एक चेतावनी है। इस चेतावनी में परमेश्वर मनुष्य को बताता है कि उसे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना चाहिए। इस वृक्ष का फल खाने पर क्या होगा? परमेश्वर ने मनुष्य से कहा : यदि तुम इस वृक्ष का फल खाओगे, तो तुम निश्चित ही मर जाओगे। क्या ये वचन सीधे-स्पष्ट नहीं हैं? यदि परमेश्वर ने तुमसे यह कहा होता, पर तुम लोग यह न समझ पाते कि ऐसा क्यों कहा, तो क्या तुम उसके वचनों को एक नियम या आज्ञा के रूप में मानते, जिसका पालन किया जाना चाहिए? ऐसे वचनों का पालन किया जाना चाहिए, है न? परंतु मनुष्य इनका पालन करने योग्य हो या नहीं, परमेश्वर के वचन पूरी तरह से स्पष्ट हैं। परमेश्वर ने मनुष्य से बिलकुल साफ़-साफ़ कहा कि वह क्या खा सकता है और क्या नहीं खा सकता, और अगर वह उसे खा लेता है, जिसे नहीं खाना चाहिए, तो क्या होगा। क्या तुम परमेश्वर द्वारा कहे गए इन संक्षिप्त वचनों में परमेश्वर के स्वभाव की कोई चीज़ देख सकते हो? क्या परमेश्वर के ये वचन सत्य हैं? क्या इनमें कोई छलावा है? क्या इनमें कोई झूठ है? क्या इनमें कोई धमकी है? (नहीं।) परमेश्वर ने ईमानदारी से, सच्चाई से और निष्कपटता से मनुष्य को बताया कि वह क्या खा सकता है और क्या नहीं खा सकता। परमेश्वर ने स्पष्टता से और सीधे-सीधे कहा। क्या इन वचनों में कोई छिपा हुआ अर्थ है? क्या ये वचन सीधे-स्पष्ट नहीं हैं? क्या किसी अटकलबाज़ी की ज़रूरत है? (नहीं।) अटकलबाज़ी की कोई ज़रूरत नहीं है। एक नज़र में उनका अर्थ स्पष्ट है। इन्हें पढ़ने पर आदमी इनके अर्थ के बारे में बिलकुल स्पष्ट महसूस करता है। यानी परमेश्वर जो कुछ कहना चाहता है और जो कुछ वह व्यक्त करना चाहता है, वह उसके हृदय से आता है। परमेश्वर द्वारा व्यक्त चीज़ें स्वच्छ, सीधी और स्पष्ट हैं। उनमें कोई गुप्त उद्देश्य या कोई छिपा हुआ अर्थ नहीं है। उसने सीधे मनुष्य से बात की और बताया कि वह क्या खा सकता है और क्या नहीं खा सकता। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के इन वचनों से मनुष्य देख सकता है कि परमेश्वर का हृदय पारदर्शी

और सच्चा है। उसमें ज़रा भी झूठ नहीं है; यह ऐसा मामला नहीं है, जिसमें तुमसे कहा जाए कि तुम उसे नहीं खा सकते जो खाने योग्य है, या न खा सकने योग्य चीज़ों के बारे में तुमसे कहा जाए कि "खाकर देखो, क्या होता है"। परमेश्वर के कहने का यह अभिप्राय नहीं है। परमेश्वर जो कुछ अपने हृदय में सोचता है, वही कहता है। यदि मैं कहूँ कि परमेश्वर पवित्र है, क्योंकि वह इस प्रकार से इन वचनों में स्वयं को दिखाता और प्रकट करता है, तो हो सकता है कि तुम यह महसूस करो कि मैंने राई का पहाड़ बना दिया है या मैं दूर की कौड़ी ले आया हूँ। यदि ऐसा है, तो चिंता मत करो, हमारी बात अभी पूरी नहीं हुई है।

आओ, अब "सर्प के द्वारा स्त्री को बहकाए जाने" के बारे में बात करें। सर्प कौन है? (शैतान।) शैतान परमेश्वर के छह हज़ार वर्षों की प्रबंधन योजना में विरोधी की भूमिका निभाता है, और यह वह भूमिका है, जिसका जिक्र हमें परमेश्वर की पवित्रता के बारे में संगति करते समय करना होगा। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? अगर तुम शैतान की बुराई और भ्रष्टता को नहीं जानते, अगर तुम शैतान के स्वभाव को नहीं जानते, तो तुम्हारे पास पवित्रता को पहचानने का कोई उपाय नहीं है, न ही तुम यह जान सकते हो कि पवित्रता वास्तव में क्या है। भ्रम की स्थिति में लोग यह विश्वास करते हैं कि शैतान जो कुछ करता है, वह सही है, क्योंकि वे इस प्रकार के भ्रष्ट स्वभाव के अंतर्गत जीते हैं। बिना विरोधी के, बिना तुलना के किसी बिंदु के, तुम नहीं जान सकते कि पवित्रता क्या है। अतः यहाँ पर शैतान का उल्लेख करना होगा। यह उल्लेख कोई निरर्थक बातचीत नहीं है। शैतान के शब्दों और कार्यों से हम देखेंगे कि शैतान कैसे काम करता है, वह किस तरह मनुष्य को भ्रष्ट करता है, और उसका स्वभाव और चेहरा कैसा है। तो स्त्री ने सर्प से क्या कहा था? स्त्री ने सर्प को वह बात बताई, जो यहोवा परमेश्वर ने उससे कही थी। जब उसने शैतान को यह बात बताई, तो क्या वह निश्चित थी कि जो कुछ परमेश्वर ने उससे कहा है, वह सच है? वह आश्वस्त नहीं हो सकती थी, या हो सकती थी? एक ऐसे प्राणी के रूप में, जिसका नया-नया सृजन किया गया था, उसके पास भले और बुरे को परखने की कोई योग्यता नहीं थी, न ही उसे अपने आसपास की किसी चीज़ का कोई संज्ञान था। सर्प से कहे गए उसके शब्दों को देखते हुए, वह अपने हृदय में आश्वस्त नहीं थी कि परमेश्वर के वचन सही हैं; ऐसा उसका रवैया था। अतः जब सर्प ने परमेश्वर के वचनों के प्रति स्त्री का अनिश्चित रवैया देखा, तो उसने कहा : "तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" क्या इन शब्दों में कोई समस्या है? जब तुम लोग इस वाक्य को पढ़ते

हो, तो तुम्हें सर्प के इरादों का कोई आभास होता है? क्या हैं वे इरादे? (मनुष्य को ललचाना, उसे पाप करने के लिए प्रेरित करना।) वह उस स्त्री को परमेश्वर के वचनों पर ध्यान देने से रोकने के लिए उसे ललचाना चाहता था। लेकिन उसने इसे सीधे तौर पर नहीं कहा। अतः हम कह सकते हैं कि वह बहुत चालाक है। वह अपने इच्छित उद्देश्य तक पहुँचने के लिए अपने अर्थ को शातिर और कपटपूर्ण तरीके से व्यक्त करता है, जिसे वह मनुष्य से छिपाकर अपने मन के भीतर गुप्त रखता है—यह सर्प की चालाकी है। शैतान का बोलने और कार्य करने का हमेशा यही तरीका रहा है। वह किसी तरह से पुष्टि न करते हुए "निश्चित रूप से नहीं" कहता। लेकिन यह सुनकर इस अबोध स्त्री का हृदय द्रवित हो गया। सर्प प्रसन्न हो गया, क्योंकि उसके शब्दों ने इच्छित प्रभाव पैदा कर दिया था—ऐसा धूर्त इरादा था सर्प का। इतना ही नहीं, मनुष्यों को वांछित लगने वाले परिणाम का वादा करके उसने यह कहकर उसे बहका दिया था, कि "जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी।" इसलिए वह सोचती है, "मेरी आँखों का खुलना तो एक अच्छी बात है!" और फिर उसने कुछ और भी मोहक बात कही, ऐसे शब्द जिनसे मनुष्य अब तक अनजान था, ऐसे शब्द जो सुनने वाले को लुभाने की बड़ी ताकत रखते हैं : "तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" क्या ये शब्द मनुष्य को सशक्त रूप से लुभाने वाले नहीं हैं? जैसे कोई तुमसे कहे : "तुम्हारे चेहरे का आकार तो बहुत सुंदर है, बस नाक का ऊपरी हिस्सा थोड़ा छोटा है। अगर तुम इसे ठीक करवा लो, तो तुम विश्वस्तरीय सुंदरी बन जाओगी!" क्या ये शब्द ऐसे व्यक्ति के हृदय को द्रवित नहीं कर देंगे, जिसने पहले कभी कॉस्मेटिक सर्जरी करवाने की इच्छा नहीं पाली होगी? क्या ये शब्द प्रलोभन देने वाले नहीं हैं? क्या यह प्रलोभन तुम्हें लुभा नहीं रहा है? और क्या यह एक प्रलोभन नहीं है? (हाँ।) क्या परमेश्वर ऐसी बातें कहता है? क्या परमेश्वर के वचनों में, जिन्हें हमने अभी पढ़ा, इसका कोई संकेत था? (नहीं।) क्या परमेश्वर वही कहता है, जो उसके दिल में होता है? क्या मनुष्य परमेश्वर के वचनों के माध्यम से उसके हृदय को देख सकता है? (हाँ।) परंतु जब सर्प ने स्त्री से वे शब्द कहे, तब क्या तुम उसके हृदय को देख सके? (नहीं।) और अपनी अज्ञानता के कारण मनुष्य सर्प के शब्दों से आसानी से बहक गया और ठगा गया। तो क्या तुम शैतान के इरादों को देख सके? क्या तुम जो कुछ शैतान ने कहा, उसके पीछे के उद्देश्य को देख सके? क्या तुम उसकी साज़िश और चालों को देख सके? (नहीं।) शैतान के बोलने का तरीका किस तरह के स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है? इन शब्दों के माध्यम से तुमने शैतान में किस प्रकार का सार देखा है? क्या वह कपटी नहीं है? शायद ऊपर से वह तुम पर

मुसकराता है या शायद वह किसी भी प्रकार की भाव-भंगिमा प्रकट न करता हो। परंतु अपने हृदय में वह गणना कर रहा है कि किस प्रकार अपना उद्देश्य हासिल किया जाए, और इस उद्देश्य को ही देखने में तुम असमर्थ हो। सभी वादे जो वह तुमसे करता है, सभी फायदे जो वह तुम्हें बताता है, उसके प्रलोभन की आड़ हैं। ये चीज़ें तुम्हें अच्छी दिखाई देती हैं, इसलिए तुम्हें लगता है कि जो कुछ वह कहता है, वह परमेश्वर की बातों से अधिक उपयोगी और ठोस है। जब यह होता है, तब क्या मनुष्य एक विनीत कैदी नहीं बन जाता? क्या शैतान द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली यह रणनीति दुष्टतापूर्ण नहीं है? तुम स्वयं को पतन में गर्त होने देते हो। शैतान के बिना एक उँगली भी हिलाए, केवल ये दो वाक्य कहने भर से तुम खुश होकर उसका अनुसरण और अनुपालन करने लगते हो। इस प्रकार उसने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया। क्या यह इरादा भयंकर नहीं है? क्या यह शैतान का असली चेहरा नहीं है? शैतान के शब्दों से मनुष्य उसके भयंकर इरादों, उसके घिनौने चेहरे और उसके सार को देख सकता है। क्या ऐसा नहीं है? इन वाक्यों की तुलना करने पर, बिना विश्लेषण किए तुम शायद सोच सकते हो कि यहोवा परमेश्वर के वचन नीरस, साधारण और घिसे-पिटे हैं, और वे परमेश्वर की ईमानदारी की प्रशंसा में बढ़-चढ़कर बताए जाने लायक नहीं हैं। लेकिन जब हम तुलना के रूप में शैतान के शब्दों और उसके घिनौने चेहरे को लेते हैं, तो क्या परमेश्वर के ये वचन आज के लोगों के लिए ज्यादा वजन नहीं रखते? (रखते हैं।) इस तुलना के माध्यम से मनुष्य परमेश्वर की पवित्र निर्दोषता का आभास कर सकता है। शैतान का हर एक शब्द, और साथ ही उसके प्रयोजन, उसके इरादे और उसके बोलने का तरीका—सभी अशुद्ध हैं। शैतान के बोलने के तरीके की मुख्य विशेषता क्या है? तुम्हें अपने दोरंगेपन को देखने का मौका न देते हुए वह तुम्हें बहकाने के लिए वाक्छल का प्रयोग करता है, न ही वह तुम्हें अपने उद्देश्य को पहचानने देता है; वह तुम्हें चारा लेने देता है और तुमसे अपनी स्तुति और गुणगान करवाता है। क्या यह चाल शैतान की पसंद का अभ्यस्त तरीका नहीं है? (है।) आओ, अब देखें कि शैतान के किन अन्य शब्दों और अभिव्यक्तियों से मनुष्य को उसका घिनौना चेहरा दिखाई देता है। आओ, पवित्र शास्त्र के कुछ और अंश पढ़ें।

शैतान और यहोवा परमेश्वर के मध्य वार्तालाप

अय्यूब 1:6-11 एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ से आता है?" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।" यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास

अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।"

अय्यूब 2:1-5 फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी उसके सामने उपस्थित हुआ। यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ से आता है?" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।" यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? यद्यपि तू ने मुझे बिना कारण उसका सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और मांस छू, तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।"

इन दो अंशों में पूरी तरह से परमेश्वर और शैतान के मध्य एक वार्तालाप है; ये अंश इस बात को दर्ज करते हैं कि परमेश्वर ने क्या कहा और शैतान ने क्या कहा। परमेश्वर ने बहुत अधिक नहीं बोला, और बड़ी सरलता से बोला। क्या हम परमेश्वर के सरल वचनों में उसकी पवित्रता देख सकते हैं? कुछ लोग कहेंगे कि ऐसा करना आसान नहीं है। तो क्या हम शैतान के प्रत्युत्तरों में उसका घिनौनापन देख सकते हैं? (हाँ।) आओ, पहले देखें कि यहोवा परमेश्वर ने शैतान से किस प्रकार के प्रश्न पूछे। "तू कहाँ से आता है?" क्या यह एक सीधा प्रश्न नहीं है? क्या इसमें कोई छिपा हुआ अर्थ है? (नहीं।) यह केवल एक शुद्ध प्रश्न है, जिसमें किसी गुप्त उद्देश्य की मिलावट नहीं है। यदि मुझे तुम लोगों से पूछना होता : "तुम कहाँ से आए हो?" तब तुम लोग किस प्रकार उत्तर देते? क्या इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है? क्या तुम लोग यह कहते : "इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ"? (नहीं।) तुम लोग इस प्रकार उत्तर न देते। तो फिर शैतान को इस तरीके से उत्तर देते देख तुम लोगों को कैसा लगता है? (हमें लगता है कि शैतान बेतुका है, लेकिन धूर्त भी है।) क्या तुम लोग बता सकते हो कि मुझे कैसा लग रहा है? हर बार जब मैं शैतान के इन शब्दों को देखता हूँ, तो मुझे घृणा महसूस होती है, क्योंकि वह बोलता तो है, पर उसके शब्दों में कोई सार नहीं

होता। क्या शैतान ने परमेश्वर के प्रश्न का उत्तर दिया? नहीं, शैतान ने जो शब्द कहे, वे कोई उत्तर नहीं थे, उनसे कुछ हासिल नहीं हुआ। वे परमेश्वर के प्रश्न के उत्तर नहीं थे। "पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।" तुम इन शब्दों से क्या समझते हो? आखिर शैतान कहाँ से आया था? क्या तुम लोगों को इस प्रश्न का कोई उत्तर मिला? (नहीं।) यह शैतान की धूर्त योजनाओं की "प्रतिभा" है—किसी को पता लगने न देना कि वह वास्तव में क्या कह रहा है। ये शब्द सुनकर भी तुम लोग यह नहीं जान सकते कि उसने क्या कहा है, हालाँकि उसने उत्तर देना समाप्त कर लिया है। फिर भी वह मानता है कि उसने उत्तम तरीके से उत्तर दिया है। तो तुम कैसा महसूस करते हो? घृणा महसूस करते हो ना? (हाँ।) अब तुमने इन शब्दों की प्रतिक्रिया में घृणा महसूस करना शुरू कर दिया है। शैतान सीधे तौर पर बात नहीं करता, और तुम्हें अपना सिर खुजलाता छोड़ देता है, और तुम उसके शब्दों के स्रोत को समझने में असमर्थ रहते हो। कभी-कभी वह जान-बूझकर ऐसा बोलता है, और कभी-कभी जब वह बोलता है तो उसके शब्द उसके सार और स्वभाव द्वारा नियंत्रित होते हैं। ये शब्द सीधे शैतान के मुँह से बाहर आए। शैतान ने इन शब्दों को लंबे समय तक नहीं तोला; या उन्हें इस तरह नहीं बोला कि उसे चतुर समझा जाए, बल्कि उसने इन्हें स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त किया। जैसे ही तुम शैतान से पूछते हो कि वह कहाँ से आया है, वह तुम्हें इस प्रकार, इन शब्दों में जवाब देता है। तुम बिलकुल उलझन में पड़ जाते हो, और नहीं जान पाते कि आखिर वह कहाँ से आया है। क्या तुम लोगों के बीच में कोई ऐसा है, जो इस प्रकार से बोलता है? (हाँ।) यह बोलने का कैसा तरीका है? (यह अस्पष्ट है और निश्चित उत्तर नहीं देता।) बोलने के इस तरीके का वर्णन करने के लिए हमें किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए? यह ध्यान भटकाने वाला और गुमराह करने वाला है, है कि नहीं? मान लो, कोई व्यक्ति नहीं चाहता कि दूसरे यह जानें कि वह कल कहाँ गया था। तुम उससे पूछते हो : "मैंने तुम्हें कल देखा था। तुम कहाँ जा रहे थे?" वह तुम्हें सीधे यह नहीं बताता कि वह कल कहाँ गया था। इसके बजाय वह कहता है "कल क्या दिन था। बहुत थकाने वाला दिन था!" क्या उसने तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दिया? दिया, लेकिन वह उत्तर नहीं दिया, जो तुम चाहते थे। यह मनुष्य के बोलने की चालाकी की "प्रतिभा" है। तुम कभी पता नहीं लगा सकते कि उसका क्या मतलब है, न तुम उसके शब्दों के पीछे के स्रोत या इरादे को ही समझ सकते हो। तुम नहीं जानते कि वह क्या टालने की कोशिश रहा है, क्योंकि उसके हृदय में उसकी अपनी कहानी है—वह कपटी है। क्या तुम लोग भी अकसर इस तरह से बोलते हो? (हाँ।) तो तुम लोगों का क्या उद्देश्य होता है? क्या यह कभी-कभी तुम्हारे

अपने हितों की रक्षा के लिए होता है, और कभी-कभी अपनी स्थिति, अपनी छवि बनाए रखने के लिए, अपने निजी जीवन के रहस्य गुप्त रखने के लिए, अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए? उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, यह तुम्हारे हितों से अलग नहीं है, यह तुम्हारे हितों से जुड़ा हुआ है। क्या यह मनुष्य का स्वभाव नहीं है? क्या इस प्रकार के स्वभाव वाला हर व्यक्ति शैतान के समान नहीं है? हम ऐसा कह सकते हैं, है न? सामान्य रूप से कहें, तो यह अभिव्यक्ति घृणित और वीभत्स है। तुम लोग भी अब घृणा़ महसूस करते हो, हैं न? (हाँ।)

पहले अंश को फिर से देखें तो, शैतान फिर से यहोवा के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है : "क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है?" शैतान अय्यूब के संबंध में यहोवा के आकलन पर हमला कर रहा है, और यह हमला दुश्मनी के रंग में रँगा है। "क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा?" यह अय्यूब पर किए गए यहोवा के कार्य के संबंध में शैतान की समझ और उसका आकलन है। शैतान उसका इस तरह आकलन करता है, और कहता है : "तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।" शैतान सदा अस्पष्टता से बात करता है, पर यहाँ वह निश्चय के साथ बोल रहा है। लेकिन निश्चय के साथ बोले जाने के बावजूद ये शब्द एक हमला हैं, ईश-निंदा हैं और यहोवा परमेश्वर की, स्वयं परमेश्वर की अवज्ञा हैं। जब तुम लोग ये शब्द सुनते हो, तो तुम्हें कैसा लगता है? क्या तुम्हें घृणा महसूस होती है? क्या तुम लोग शैतान के इरादों को देख पा रहे हो? सर्वप्रथम, शैतान अय्यूब के संबंध में—जो परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य है, यहोवा के आकलन को नकारता है। फिर वह हर उस चीज़ को नकारता है, जिसे अय्यूब कहता और करता है, अर्थात् वह उसके मन में मौजूद यहोवा के भय को नकारता है। क्या यह आरोप लगाना नहीं है? शैतान यहोवा की हर कथनी और करनी पर दोषारोपण करता है, उसे नकारता है और उस पर संदेह करता है। वह यह कहते हुए विश्वास नहीं करता कि "अगर तुम कहते हो कि चीज़ें ऐसी हैं, तो फिर मैंने उन्हें क्यों नहीं देखा? तुमने उसे बहुत सारे आशीष दिए हैं, तो वह तुम्हारा भय क्यों नहीं मानेगा?" क्या यह परमेश्वर के हर कार्य को खंडन नहीं है? दोषारोपण, खंडन, ईश-निंदा—क्या शैतान के शब्द हमला नहीं हैं? क्या ये शब्द, शैतान जो कुछ अपने हृदय में सोचता है, उसकी सच्ची अभिव्यक्ति नहीं हैं? ये वचन निश्चित रूप से वैसे नहीं हैं, जैसे हमने अभी पढ़े थे : "पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते

आया हूँ।" वे पूरी तरह से भिन्न हैं। इन शब्दों के माध्यम से शैतान अपने दिल की बात पूरी तरह से अनावृत कर देता है—परमेश्वर के प्रति अपना रवैया और अय्यूब के परमेश्वर का भय मानने से घृणा। जब ऐसा होता है, तो उसकी दुर्भावना और बुरी प्रकृति पूरी तरह से उजागर हो जाती हैं। वह उनसे घृणा करता है, जो परमेश्वर का भय मानते हैं; वह उनसे घृणा करता है, जो बुराई से दूर रहते हैं; और इनसे भी बढ़कर, वह मनुष्य को आशीष प्रदान करने के लिए यहोवा से घृणा करता है। वह इस अवसर का उपयोग अय्यूब को नष्ट करने के लिए करना चाहता है; जिस अय्यूब को परमेश्वर ने अपने हाथों से बड़ा किया है, उसे बरबाद करने के लिए वह कहता है : "तुम कहते हो, अय्यूब तुम्हारा भय मानता है और बुराई से दूर रहता है। मैं इसे अलग तरह से देखता हूँ।" वह यहोवा को उकसाने और प्रलोभन देने के लिए कई तरीकों का इस्तेमाल करता है और कई हथकंडे अपनाता है, ताकि यहोवा परमेश्वर अय्यूब को शैतान को सौंप दे, जिससे कि वह उसके बेहूदगी से पेश आ सके, उसे नुकसान पहुँचा सके और उसके साथ दुर्व्यवहार कर सके। वह इस अवसर का लाभ इस मनुष्य को नष्ट करने के लिए करना चाहता है, जो परमेश्वर की नज़रों में धार्मिक और पूर्ण है। क्या शैतान के पास इस प्रकार का हृदय होना केवल एक क्षणिक आवेग का परिणाम है? नहीं, ऐसा नहीं है। इसे बनने में लंबा समय लगा है। परमेश्वर अपना कार्य करता है, वह एक व्यक्ति की देखभाल करता है, उस पर नज़र रखता है, और शैतान इस पूरे समय के दौरान उसके हर कदम का पीछा करता है। परमेश्वर जिस किसी पर भी अनुग्रह करता है, शैतान भी पीछे-पीछे चलते हुए उस पर नज़र रखता है। यदि परमेश्वर इस व्यक्ति को चाहता है, तो शैतान परमेश्वर को रोकने के लिए अपने सामर्थ्य में सब-कुछ करता है, वह परमेश्वर के कार्य को भ्रमित, बाधित और नष्ट करने के लिए विभिन्न बुरे हथकंडों का इस्तेमाल करता है, ताकि वह अपना छिपा हुआ उद्देश्य हासिल कर सके। क्या है वह उद्देश्य? वह नहीं चाहता कि परमेश्वर किसी भी मनुष्य को प्राप्त कर सके; उसे वे सभी लोग अपने लिए चाहिए जिन्हें परमेश्वर चाहता है, ताकि वह उन पर कब्ज़ा कर सके, उन पर नियंत्रण कर सके, उनको अपने अधिकार में ले सके, ताकि वे उसकी आराधना करें, ताकि वे बुरे कार्य करने में उसका साथ दें। क्या यह शैतान का भयानक उद्देश्य नहीं है? तुम लोग अकसर कहते हो कि शैतान कितना बुरा, कितना खराब है, परंतु क्या तुमने उसे देखा है? तुम सिर्फ यह देख सकते हो कि मनुष्य कितना बुरा है। तुमने असल में नहीं देखा है कि शैतान वास्तव में कितना बुरा है। पर क्या तुम लोगों ने अय्यूब से संबंधित इस मामले में शैतान की बुराई देखी है? (हाँ।) इस मामले ने शैतान के भयंकर चेहरे और उसके सार को बिलकुल स्पष्ट कर दिया है।

परमेश्वर के साथ युद्ध करने और उसके पीछे-पीछे चलने में शैतान का उद्देश्य उस समस्त कार्य को नष्ट करना है, जिसे परमेश्वर करना चाहता है; उन लोगों पर कब्ज़ा और नियंत्रण करना है, जिन्हें परमेश्वर प्राप्त करना चाहता है; उन लोगों को पूरी तरह से मिटा देना है, जिन्हें परमेश्वर प्राप्त करना चाहता है। यदि वे मिटाए नहीं जाते, तो वे शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाने के लिए उसके कब्ज़े में आ जाते हैं—यह उसका उद्देश्य है। और परमेश्वर क्या करता है? परमेश्वर इस अंश में केवल एक सरल वाक्य कहता है; परमेश्वर के इससे कुछ भी अधिक करने का कोई अभिलेख नहीं है, परंतु शैतान के कहने और करने के और भी कई अभिलेख हम देखते हैं। पवित्र शास्त्र के नीचे दिए गए अंश में यहोवा ने शैतान से पूछता है, "तू कहाँ से आता है?" शैतान क्या उत्तर देता है? (उसका उत्तर अभी भी यही है "इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।") यह अभी भी वही वाक्य है। यह शैतान का आदर्श वाक्य, उसका कॉलिंग कार्ड बन गया है। ऐसा कैसे है? क्या शैतान घृणास्पद नहीं है? निश्चित रूप से इस घिनौने वाक्य को एक बार कहना ही काफी है। शैतान बार-बार इसे दोहराए क्यों जाता है। इससे एक बात साबित होती है : शैतान का स्वभाव अपरिवर्तनीय है। शैतान अपना बदसूरत चेहरा छिपाने के लिए दिखावे का इस्तेमाल नहीं कर सकता है। परमेश्वर उससे एक प्रश्न पूछता है और वह इस तरह प्रत्युतर देता है। ऐसा है, तो सोचो, मनुष्यों के साथ वह कैसा व्यवहार करता होगा! वह परमेश्वर से नहीं डरता, परमेश्वर का भय नहीं मानता, और परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करता। अतः वह बेहूदगी से परमेश्वर के सम्मुख ढीठ होने की, परमेश्वर के प्रश्न पर लीपापोती करने के लिए उन्हीं शब्दों का प्रयोग करने की, परमेश्वर के प्रश्न का वही उत्तर दोहराने और इस उतर से परमेश्वर को उलझाने की कोशिश करता है—यह शैतान का कुरूप चेहरा है। वह परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता पर विश्वास नहीं करता, वह परमेश्वर के अधिकार पर विश्वास नहीं करता, और वह निश्चित रूप से परमेश्वर के प्रभुत्व के आगे समर्पण करने के लिए तैयार नहीं होता। वह लगातार परमेश्वर के विरोध में रहता है, लगातार परमेश्वर के हर कार्य पर हमला कर उसे बरबाद करने की कोशिश करता है—यह उसका दुष्ट उद्देश्य है।

जैसा कि अय्यूब की पुस्तक में दर्ज है, शैतान द्वारा बोले गए ये दो अंश और शैतान द्वारा किए गए कार्य परमेश्वर की छह हज़ार वर्षीय प्रबंधन योजना में उसके प्रतिरोध का प्रतिनिधित्व करते हैं—यहाँ शैतान का असली रंग प्रकट हो जाता है। क्या तुमने असली जीवन में शैतान के शब्दों और कार्यों को देखा है? जब तुम उन्हें देखते हो, तो हो सकता है, तुम उन्हें शैतान द्वारा बोली गई बातें न समझो, बल्कि मनुष्य द्वारा

बोली गई बातें समझो। जब मनुष्य द्वारा ऐसी बातें बोली जाती हैं, तो किसका प्रतिनिधित्व होता है? शैतान का प्रतिनिधित्व होता है। भले ही तुम इसे पहचान लो, फिर भी तुम यह नहीं समझ सकते कि वास्तव में इसे शैतान द्वारा बोला जा रहा है। पर यहाँ और अभी तुमने सुस्पष्ट ढंग से देखा है कि शैतान ने स्वयं क्या कहा है। अब तुम्हारे पास शैतान के भयानक चेहरे और उसकी दुष्टता की स्पष्ट और बिलकुल साफ समझ है। तो क्या शैतान द्वारा बोले गए ये दो अंश आज लोगों को शैतान के स्वभाव के बारे में जानकारी पाने में मदद करने की दृष्टि से मूल्यवान हैं? क्या ये दो अंश आज मानव-जाति के लिए शैतान के भयंकर चेहरे को, उसके मूल, असली चेहरे को पहचानने में सक्षम होने के लिए सावधानी से संगृहीत किए जाने योग्य हैं? यद्यपि ऐसा कहना शायद उचित प्रतीत न हो, फिर भी इस तरह कहे गए ये शब्द ठीक लग सकते हैं। निस्संदेह, मैं इस विचार को केवल इसी रूप में व्यक्त कर सकता हूँ, और यदि तुम लोग इसे समझ सको, तो यह काफी है। शैतान यहोवा द्वारा किए गए कार्यों पर बार-बार हमला करता है और यहोवा परमेश्वर के प्रति अय्यूब के भय के संबंध में अनेक इलज़ाम लगाता है। वह यहोवा को उकसाने का प्रयास करता है और यहोवा को अय्यूब का लालच छोड़ने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करता है। इसलिए उसके शब्द बहुत भड़काने वाले हैं। तो मुझे बताओ, जब एक बार शैतान ये शब्द बोल देता है, तो क्या परमेश्वर साफ-साफ देख सकता है कि शैतान क्या करना चाहता है? (हाँ।) परमेश्वर के हृदय में यह मनुष्य अय्यूब, जिस पर परमेश्वर दृष्टि रखता है—परमेश्वर का यह सेवक, जिसे परमेश्वर धर्मी मनुष्य, एक पूर्ण मनुष्य मानता है—क्या वह इस तरह के प्रलोभन का सामना कर सकता है? (हाँ।) परमेश्वर उसके बारे में इतना निश्चित क्यों है? क्या परमेश्वर हमेशा मनुष्य के हृदय की जाँच करता रहता है? (हाँ।) तो क्या शैतान मनुष्य के हृदय की जाँच करने में सक्षम है? शैतान जाँच नहीं कर सकता। यहाँ तक कि यदि शैतान तुम्हारा हृदय देख भी सकता हो, तो भी उसका दुष्ट स्वभाव उसे कभी विश्वास नहीं करने देगा कि पवित्रता, पवित्रता है, या गंदगी, गंदगी है। दुष्ट शैतान कभी किसी ऐसी चीज़ को सँजोकर नहीं रख सकता, जो पवित्र, धर्मी और उज्ज्वल है। शैतान अपने स्वभाव, अपनी दुष्टता के अनुसार और उन तरीकों के माध्यम से, जिनका वह आदी है, कार्य किए बिना नहीं कर सकता है। यहाँ तक कि परमेश्वर द्वारा स्वयं को दंडित या नष्ट किए जाने की कीमत पर भी वह ढिठाई से परमेश्वर का विरोध करने से नहीं हिचकिचाता—यह दुष्टता है, यह शैतान का स्वभाव है। तो इस अंश में शैतान कहता है : "खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और मांस छू, तब वह तेरे मुँह पर

तेरी निन्दा करेगा।" शैतान सोचता है कि परमेश्वर के प्रति मनुष्य का भय इस कारण है, क्योंकि मनुष्य ने परमेश्वर से बहुत सारे लाभ प्राप्त किए हैं। मनुष्य परमेश्वर से अनेक लाभ उठाता है, इसलिए वह कहता है कि परमेश्वर अच्छा है। वह इस तरह से परमेश्वर का भय इसलिए नहीं मानता, क्योंकि परमेश्वर अच्छा है, बल्कि सिर्फ इसलिए मानता है, क्योंकि वह उससे इतने सारे लाभ प्राप्त करता है। एक बार यदि परमेश्वर उसे इन लाभों से वंचित कर दे, तो वह परमेश्वर को त्याग देगा। अपने दुष्ट स्वभाव के कारण शैतान यह नहीं मानता है कि मनुष्य का हृदय सच में परमेश्वर का भय मान सकता है। अपने दुष्ट स्वभाव के कारण वह नहीं जानता कि पवित्रता क्या है, और वह भयपूर्ण श्रद्धा को तो बिलकुल भी नहीं जानता। वह नहीं जानता कि परमेश्वर की आज्ञा मानना क्या है, या परमेश्वर का भय मानना क्या है। चूँकि वह इन चीज़ों को नहीं जानता, इसलिए वह सोचता है, मनुष्य भी परमेश्वर का भय नहीं मान सकता। मुझे बताओ, क्या शैतान दुष्ट नहीं है? हमारी कलीसिया को छोड़कर, विभिन्न धर्मों और संप्रदायों या धार्मिक और सामाजिक समूहों में से कोई भी परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता, इस बात में तो वे बहुत कम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर देह बन गया है और न्याय का कार्य कर रहा है। दुराचारी व्यक्ति चारों ओर देखता है, तो उसे हर कोई दुराचारी नज़र आता है, जैसा वह खुद है। झूठे आदमी को चारों ओर बेईमानी और झूठ ही दिखाई देता है। दुष्ट व्यक्ति हर एक को दुष्ट समझता है और उससे लड़ना चाहता है। तुलनात्मक रूप से ईमानदार लोग हर किसी को ईमानदार समझते हैं, अतः वे हमेशा झाँसे में आ जाते हैं, हमेशा धोखा खाते हैं, और इस बारे में कुछ नहीं कर सकते। तुम लोगों को अपने विश्वास में दृढ़ करने के लिए मैं ये कुछ उदाहरण देता हूँ : शैतान का बुरा स्वभाव क्षणिक मजबूरी या परिस्थितियों से निर्धारित नहीं है, न ही वह किसी कारण या संदर्भगत कारकों से उत्पन्न कोई अस्थायी अभिव्यक्ति है। बिलकुल नहीं! शैतान इसके अलावा कुछ हो ही नहीं सकता! वह कुछ भी अच्छा नहीं कर सकता। यहाँ तक कि जब वह कुछ कर्णप्रिय बात भी कहता है, तो वह केवल तुम्हें बहकाने के लिए होती है। जितनी ज्यादा कर्णप्रिय, उतनी ज्यादा चतुराई से भरी; जितने ज्यादा कोमल शब्द, उनके पीछे उतने ही ज्यादा दुष्ट और भयानक इरादे। इन दो अंशों में शैतान किस तरह का चेहरा, किस तरह का स्वभाव दिखाता है? (कपटी, दुर्भावनापूर्ण और दुष्ट।) शैतान का प्रमुख लक्षण दुष्टता है; अन्य सबसे बढ़कर, शैतान दुष्ट और दुर्भावनापूर्ण है।

अब जबकि हमने शैतान की चर्चा पूरी कर ली है, तो आओ, वापस अपने परमेश्वर की चर्चा पर लौटें। परमेश्वर की छह हज़ार वर्षीय प्रबंधन योजना के दौरान, बाइबल में परमेश्वर की प्रत्यक्ष वाणी बहुत कम

दर्ज की गई है, और जो दर्ज की गई है, वह बहुत ही सरल है। तो आओ, शुरुआत से शुरू करते हैं। परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की और तब से उसने हमेशा मानव-जाति के जीवन का मार्गदर्शन किया है। चाहे मानव-जाति को आशीष देना हो, मनुष्य के लिए व्यवस्थाएँ और आज्ञाएँ जारी करना हो, या जीवन के लिए विभिन्न नियम निर्धारित करना हो, क्या तुम लोग जानते हो कि इन चीज़ों को करने में परमेश्वर का अभिप्रेत उद्देश्य क्या है? पहला, क्या तुम निश्चित रूप से कह सकते हो कि परमेश्वर जो कुछ करता है, वह सब मानव-जाति की भलाई के लिए है? तुम लोगों को ये भव्य, खोखले शब्दों की तरह लग सकते हैं, किंतु भीतर के विवरण की जाँच करने पर क्या वह सब जो परमेश्वर करता है, एक सामान्य जीवन जीने की दिशा में मनुष्य की अगुआई और मार्गदर्शन करने के लिए नहीं है? चाहे वह मनुष्य से अपने नियमों का पालन करवाना हो या अपनी व्यवस्थाओं का पालन करवाना, परमेश्वर का उद्देश्य है कि मनुष्य शैतान की आराधना न करने लगे और उसके कारण हानि न उठाए; यह सबसे मूलभूत बात है, और यही वह काम है जिसे बिलकुल शुरुआत में किया गया था। बिलकुल शुरुआत में, जब मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझता था, तब उसने कुछ सरल व्यवस्थाएँ और नियम बनाए और ऐसे विनियम बनाए, जिनमें हर ऐसे पहलू का समावेश था, जिसकी कल्पना की जा सकती थी। ये विनियम सरल हैं, फिर भी उनमें परमेश्वर की इच्छा शामिल है। परमेश्वर मानव-जाति को सँजोता है, उसका पोषण करता है और उससे बहुत प्रेम करता है। क्या ऐसा नहीं है? (हाँ।) तो क्या हम कह सकते हैं कि उसका हृदय पवित्र है? क्या हम कह सकते हैं कि उसका हृदय साफ है? (हाँ।) क्या परमेश्वर के कोई अतिरिक्त इरादे हैं? (नहीं।) तो क्या उसका यह उद्देश्य सही और सकारात्मक है? (हाँ।) अपने कार्य के दौरान परमेश्वर ने जो भी विनियम बनाए हैं, उन सबका प्रभाव मनुष्य के लिए सकारात्मक है, और वे उसका मार्ग प्रशस्त करते हैं। तो क्या परमेश्वर के मन में कोई स्वार्थपूर्ण विचार हैं? जहाँ तक मनुष्य का संबंध है, क्या परमेश्वर के कोई अतिरिक्त उद्देश्य हैं? क्या परमेश्वर किसी तरह से मनुष्य का उपयोग करना चाहता है? (नहीं।) जरा भी नहीं। परमेश्वर वही करता है, जो वह कहता है और उसके वचन और कार्य उसके हृदय के विचारों से मेल खाते हैं। इसमें कोई दूषित उद्देश्य नहीं है, कोई स्वार्थपूर्ण विचार नहीं हैं। वह अपने लिए कुछ नहीं करता, जो कुछ भी वह करता है, मनुष्य के लिए करता है, बिना किसी व्यक्तिगत उद्देश्य के। हालाँकि उसकी अपनी योजनाएँ और इरादे हैं, जिन्हें वह मनुष्य पर लागू करता है, पर उनमें से कुछ भी उसके अपने लिए नहीं है। वह जो कुछ भी करता है, विशुद्ध रूप से मानव-जाति के लिए करता है, मानव-जाति को बचाने के लिए, उसे गुमराह न होने देने

के लिए करता है। तो क्या उसका यह हृदय बहुमूल्य नहीं है? क्या तुम इस बहुमूल्य हृदय का लेशमात्र संकेत भी शैतान में देख सकते हो? तुम इसका लेशमात्र संकेत भी शैतान में नहीं देख सकते। परमेश्वर जो कुछ करता है, वह सहज रूप से प्रकट होता है। आओ, अब परमेश्वर के कार्य करने के तरीके को देखें; वह अपना काम कैसे करता है? क्या परमेश्वर इन व्यवस्थाओं और अपने वचनों को लेकर वशीकरण मंत्र[क] की तरह हर आदमी के सिर पर कसकर बाँध देता है और इस प्रकार उन्हें प्रत्येक मनुष्य पर थोपता है? क्या वह इस तरह से कार्य करता है? (नहीं।) तो फिर परमेश्वर किस तरह से अपना कार्य करता है? (वह हमारा मार्गदर्शन करता है। वह हमें सलाह और प्रोत्साहन देता है।) क्या वह धमकाता है? क्या वह तुमसे गोल-मोल बात करता है? (नहीं।) जब तुम सत्य को नहीं समझते, तो परमेश्वर तुम्हारा मार्गदर्शन कैसे करता है? (वह ज्योति चमकाता है।) वह तुम पर एक ज्योति चमकाकर तुम्हें स्पष्ट रूप से बताता है कि यह चीज़ सत्य के अनुरूप नहीं है, और फिर वह तुम्हें बताता है कि तुम्हें क्या करना चाहिए। परमेश्वर के कार्य करने के इन तरीकों से तुम्हें क्या लगता है, परमेश्वर के साथ तुम्हारा रिश्ता कैसा है? क्या तुम्हें लगता है कि परमेश्वर तुम्हारी समझ से परे है? (नहीं।) तो परमेश्वर के कार्य करने के इन तरीकों को देखकर तुम्हें कैसा महसूस होता है? परमेश्वर विशेष रूप से तुम्हारे बहुत करीब है; तुम्हारे और परमेश्वर के बीच में कोई दूरी नहीं है। जब परमेश्वर तुम्हारा मार्गदर्शन करता है, जब वह तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करता है, तुम्हारी सहायता करता है और तुम्हें सहारा देता है, तो तुम्हें महसूस होता है कि परमेश्वर कितना सौम्य है, तुम्हारे मन में उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है, तुम महसूस करते हो कि वह कितना प्यारा है, तुम उसकी गर्मजोशी महसूस करते हो। लेकिन जब परमेश्वर तुम्हारी भ्रष्टता के लिए तुम्हारी भर्त्सना करता है, या जब वह अपने विरुद्ध विद्रोह करने के लिए तुम्हारा न्याय करता है और तुम्हें अनुशासित करता है, तो परमेश्वर किन तरीकों का इस्तेमाल करता है? क्या वह वचनों से तुम्हारी भर्त्सना करता है? क्या वह तुम्हारे वातावरण और लोगों, मामलों और चीज़ों के माध्यम से तुम्हें अनुशासित करता है? (हाँ।) परमेश्वर किस सीमा तक तुम्हें अनुशासन करता है? क्या परमेश्वर मनुष्य को उतनी ही मात्रा में अनुशासित करता है, जितनी मात्रा में शैतान मनुष्य को नुकसान पहुँचाता है? (नहीं, परमेश्वर मनुष्य को केवल उसी सीमा तक अनुशासित करता है, जिस सीमा तक वह सह सकता है।) परमेश्वर सौम्य, कोमल, प्यारे और परवाह करने के तरीके से कार्य करता है, जो असाधारण रूप से नपा-तुला और उचित होता है। उसका तरीका तुम्हारे भीतर तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न नहीं करता, जैसे कि : "परमेश्वर को मुझे यह करने देना चाहिए"

या "परमेश्वर को मुझे वह करने देना चाहिए चाहिए।" परमेश्वर कभी तुम्हें उस किस्म की मानसिक या भावनात्मक तीव्रता नहीं देता, जो चीज़ों को असहनीय बना देती है। क्या ऐसा नहीं है? यहाँ तक कि जब तुम परमेश्वर के न्याय और ताड़ना के वचनों को स्वीकार करते हो, तब तुम कैसा महसूस करते हो? जब तुम परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य को समझते हो, तब तुम कैसा महसूस करते हो? क्या तुम महसूस करते हो कि परमेश्वर दिव्य और अलंघनीय है? (हाँ।) क्या उस समय तुम अपने और परमेश्वर के बीच दूरी महसूस करते हो? क्या तुम्हें परमेश्वर से डर लगता है? नहीं—बल्कि तुम परमेश्वर के लिए भयपूर्ण श्रद्धा महसूस करते हो। क्या लोग ये चीज़ें परमेश्वर के कार्य के कारण महसूस नहीं करते? यदि शैतान मनुष्य पर काम करता, तो क्या तब भी उनमें ये भावनाएँ होतीं? (नहीं।) परमेश्वर अपने वचनों, अपने सत्य और अपने जीवन का प्रयोग मनुष्य की निरंतर आपूर्ति के लिए और उसे सहारा देने के लिए करता है। जब मनुष्य कमज़ोर होता है, जब मनुष्य मायूसी महसूस करता है, तब निश्चित रूप से परमेश्वर यह कहते हुए कठोरता से बात नहीं करता कि, "मायूस मत हो! इसमें मायूस होने की क्या बात है? तुम कमज़ोर क्यों हो? इसमें कमज़ोर होने का क्या कारण है? तुम हमेशा कितने कमज़ोर हो, और तुम हमेशा कितने नकारात्मक रहते हो! तुम्हारे जिंदा रहने का क्या फायदा है? मर जाओ और किस्सा खत्म करो!" क्या परमेश्वर इस तरह से कार्य करता है? (नहीं।) क्या परमेश्वर के पास इस तरह से कार्य करने का अधिकार है? (हाँ।) फिर भी परमेश्वर इस तरह से कार्य नहीं करता। परमेश्वर के इस तरह से कार्य नहीं करने की वजह है उसका सार, परमेश्वर की पवित्रता का सार। मनुष्य के लिए उसके प्रेम को, उसके द्वारा मनुष्य को सँजोकर रखने और उसका पोषण करने को, स्पष्ट रूप से एक-दो वाक्यों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो मनुष्य की डींगों में घटित होती हो, बल्कि परमेश्वर इसे वास्तविक रूप से अमल में लाता है; यह परमेश्वर के सार का प्रकटीकरण है। क्या ये सभी तरीके, जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है, मनुष्य को परमेश्वर की पवित्रता दिखा सकते हैं? इन सभी तरीकों से, जिनके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है, जिनमें परमेश्वर के अच्छे इरादे शामिल हैं, जिनमें वे प्रभाव शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर मनुष्य पर लागू करना चाहता है, जिनमें वे विभिन्न तरीके शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर मनुष्य पर कार्य करने के लिए अपनाता है, जिनमें उस प्रकार का कार्य शामिल है जिसे वह करता है, वह मनुष्य को क्या समझाना चाहता है—क्या तुमने परमेश्वर के अच्छे इरादों में कोई बुराई या धोखा देखा है? (नहीं।) तो जो कुछ परमेश्वर करता है, जो कुछ परमेश्वर कहता है, जो कुछ वह अपने हृदय में सोचता है, उसमें और साथ ही परमेश्वर के समस्त सार

में, जिसे वह प्रकट करता है—क्या हम परमेश्वर को पवित्र कह सकते हैं? (हाँ।) क्या किसी मनुष्य ने संसार में, या अपने अंदर कभी ऐसी पवित्रता देखी है? परमेश्वर को छोड़कर, क्या तुमने इसे कभी किसी मनुष्य या शैतान में देखा है? (नहीं।) अपनी अब तक की चर्चा के आधार पर, क्या हम परमेश्वर को अद्वितीय, स्वयं पवित्र परमेश्वर कह सकते है? (हाँ।) परमेश्वर के वचनों सहित वह सब-कुछ, जो परमेश्वर मनुष्य को देता है, वे विभिन्न तरीके जिनके द्वारा परमेश्वर मनुष्य पर कार्य करता है, जो परमेश्वर मनुष्य से कहता है, जिसकी परमेश्वर मनुष्य को याद दिलाता है, वह जो सलाह और प्रोत्साहन देता है—यह सब एक सार से उत्पन्न होता है : परमेश्वर की पवित्रता से। यदि कोई ऐसा पवित्र परमेश्वर न होता, तो कोई मनुष्य उसके कार्य को करने के लिए उसका स्थान न ले पाता। यदि परमेश्वर ने इन लोगों को पूरी तरह से शैतान को सौंप दिया होता, तो क्या तुम लोगों ने कभी सोचा है कि तुम किस हालत में होते? क्या तुम सब यहाँ सही-सलामत बैठे होते? क्या तुम भी यह कहोगे : "इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ"? क्या तुम इतने बेशरम, ढीठ और अकड़ू होगे कि ऐसे शब्द बोलो और परमेश्वर के सामने निर्लज्जता से डींग हाँको? (हाँ।) बेशक, तुम बिलकुल ऐसा ही करोगे! मनुष्य के प्रति शैतान का रवैया उसे यह देखने का मौका देता है कि शैतान का स्वभाव और सार परमेश्वर से पूर्णतः अलग है। शैतान के सार की वह कौन-सी बात है, जो परमेश्वर की पवित्रता के विपरीत है? (शैतान की दुष्टता।) शैतान का दुष्ट स्वभाव परमेश्वर की पवित्रता के विपरीत है। अधिकतर लोगों द्वारा परमेश्वर के इस प्रकटीकरण और परमेश्वर की पवित्रता के इस सार को न पहचान पाने का कारण यह है कि वे शैतान के प्रभुत्व के अधीन, शैतान की भ्रष्टता के अंतर्गत और शैतान के जीवन जीने के दायरे के भीतर रहते हैं। वे नहीं जानते कि पवित्रता क्या है या पवित्रता को कैसे परिभाषित किया जाए। यहाँ तक कि परमेश्वर की पवित्रता को समझ लेने के बाद भी तुम किसी निश्चय के साथ उसे परमेश्वर की पवित्रता के रूप में इसे परिभाषित नहीं कर सकते। यह परमेश्वर की पवित्रता के संबंध में मनुष्य के ज्ञान की विषमता है।

कौन-सा प्रतिनिधि लक्षण मनुष्य पर शैतान के कार्य को चिह्नित करता है? तुम लोगों को अपने खुद के अनुभवों के माध्यम से इसे जानने में समर्थ होना चाहिए—यह शैतान का सबसे प्रतिनिधि लक्षण है, वह चीज़ जिसे वह सबसे ज्यादा करता है, वह चीज़ जिसे वह हर एक व्यक्ति के साथ करने की कोशिश करता है। शायद तुम लोग इस लक्षण को नहीं देख पाते, इसलिए तुम यह महसूस नहीं करते कि शैतान कितना भयावह और घृणित है। क्या कोई जानता है कि वह लक्षण क्या है? (वह जो कुछ भी करता है, मनुष्य को

नुकसान पहुँचाने के लिए करता है।) वह मनुष्य को कैसे नुकसान पहुँचाता है? क्या तुम लोग मुझे और अधिक विशेष रूप से और विस्तार से बता सकते हो? (वह मनुष्य को बहकाता, फुसलाता और ललचाता है।) यह सही है; ये विभिन्न तरीके हैं, जिनमें वह लक्षण प्रकट होता है। शैतान मनुष्य को भ्रमित भी करता है, उस पर हमला भी करता है और आरोप भी लगाता है—ये सब अभिव्यक्तियाँ हैं। और कुछ? (वह झूठ बोलता है।) धोखा देना और झूठ बोलना शैतान को सबसे ज्यादा स्वाभाविक रूप से आते हैं। वह ऐसा इतनी बार करता है कि झूठ उसके मुँह से इस तरह निकलता है कि इसके लिए उसे सोचने की भी जरूरत नहीं पड़ती। और कुछ? (वह कलह के बीज बोता है।) यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। अब मैं तुम लोगों को एक ऐसी बात बताऊँगा, जो तुम्हारे रोंगटे खड़े कर देगी, लेकिन मैं ऐसा तुम लोगों को डराने के लिए नहीं कर रहा। परमेश्वर मनुष्य पर कार्य करता है और उसे अपने दृष्टिकोण और हृदय दोनों में पोषित करता है। इसके विपरीत, क्या शैतान मनुष्य को पोषित करता है? नहीं, वह मनुष्य को पोषित नहीं करता। उलटे वह मनुष्य को हानि पहुँचाने के बारे में सोचने में बहुत समय बिताता है। क्या ऐसा नहीं है? जब वह मनुष्य को हानि पहुँचाने के बारे में सोच रहा होता है, तो क्या उसकी मनस्थिति अत्यावश्यकता की होती है? (हाँ।) तो जहाँ तक मनुष्य पर शैतान के कार्य का संबंध है, तो मेरे पास दो वाक्यांश हैं, जो शैतान की दुर्भावना और दुष्ट प्रकृति की व्याख्या अच्छी तरह से कर सकते हैं, जिससे सच में तुम लोग शैतान की घृणा को जान सकते हो : मनुष्य के प्रति अपने नज़रिये में शैतान हमेशा हर मनुष्य पर इस सीमा तक बलपूर्वक कब्ज़ा करना और उस पर काबू करना चाहता है, जहाँ वह मनुष्य पर पूरा नियंत्रण हासिल कर ले और उसे कष्टप्रद तरीके से नुकसान पहुँचाए, ताकि वह अपना उद्देश्य और वहशी महत्वाकांक्षा पूरी कर सके। "बलपूर्वक कब्जा" करने का क्या अर्थ है? क्या यह तुम्हारी सहमति से होता है, या बिना तुम्हारी सहमति के? क्या यह तुम्हारी जानकारी से होता है, या बिना तुम्हारी जानकारी के? उत्तर है कि यह पूरी तरह से बिना तुम्हारी जानकारी के होता है! यह ऐसी स्थितियों में होता है, जब तुम अनजान रहते हो, संभवतः उसके तुमसे बिना कुछ कहे या तुम्हारे साथ बिना कुछ किए, बिना किसी प्रस्तावना के, बिना प्रसंग के—शैतान वहाँ होता है, तुम्हारे इर्द-गिर्द, तुम्हें घेरे हुए। वह तुम्हारा शोषण करने के लिए एक अवसर तलाशता है और फिर बलपूर्वक तुम पर कब्ज़ा कर लेता है, तुम पर काबू कर लेता है और तुम पर पूरा नियंत्रण प्राप्त करने और तुम्हें नुकसान पहुँचाने के अपने उद्देश्य को हासिल कर लेता है। मानव-जाति को परमेश्वर से छीनने की लड़ाई में शैतान का यह एक सबसे विशिष्ट इरादा और व्यवहार है। इसे सुनकर तुम्हें कैसा

लगता है? (हम दिल में आतंकित और भयभीत महसूस करते हैं।) क्या तुम लोग घृणा महसूस करते हो? (हाँ।) जब तुम लोग घृणा महसूस करते हो, तो क्या तुम्हें लगता है कि शैतान निर्लज्ज है? जब तुम्हें लगता है कि शैतान निर्लज्ज है, तो क्या तुम अपने आसपास के उन लोगों के प्रति घृणा महसूस करते हो, जो हमेशा तुम्हें नियंत्रित करना चाहते हैं, जो हैसियत और रुचियों के लिए प्रचंड महत्वाकांक्षाएँ रखते हैं? (हाँ।) तो शैतान मनुष्य पर बलपूर्वक कब्ज़ा करने और उसे काबू में करने के लिए कौन-से तरीके इस्तेमाल करता है? क्या तुम लोग इस बारे में स्पष्ट हो? जब तुम लोग ये दो शब्द "बलपूर्वक कब्ज़ा" और "काबू" सुनते हो, तो तुम घृणा महसूस करते हो और तुम्हें इन शब्दों के बारे में बुरा एहसास हो सकता है बिना तुम्हारी सहमति या जानकारी के शैतान तुम पर कब्ज़ा करता है, तुम्हें काबू में करता है और भ्रष्ट करता है। तुम्हें अपने हृदय में क्या महसूस होता है? क्या तुम्हें घृणा और नाराजगी का अनुभव होता है? (हाँ।) जब तुम्हें शैतान के इन तरीकों से घृणा और नाराजगी का अनुभव होता है, तो परमेश्वर के लिए किस तरह का एहसास होता है? (कृतज्ञता का।) तुम्हें बचाने के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता का। तो अब, इस क्षण, क्या तुम्हारे अंदर यह अभिलाषा या इच्छा है कि परमेश्वर तुम्हें और जो कुछ तुम्हारे पास है, वह सब अपने अधिकार में ले ले और उस पर नियंत्रण करे? (हाँ।) किस संदर्भ में तुम ऐसा उत्तर दे रहे हो? क्या तुम इसलिए "हाँ" कहते हो, क्योंकि तुम्हें शैतान द्वारा खुद पर बलपूर्वक कब्ज़ा किए जाने और काबू में किए जाने का डर है? (हाँ।) तुम्हारी मानसिकता इस तरह की नहीं होनी चाहिए; यह सही नहीं है। डरो मत, क्योंकि परमेश्वर यहाँ है। डरने की कोई बात नहीं है। एक बार जब तुमने शैतान के बुरे सार को समझ लिया है, तो, तुम्हारे अंदर परमेश्वर के प्रेम, परमेश्वर के अच्छे इरादों, मनुष्य के लिए परमेश्वर की करुणा और उसकी सहिष्णुता तथा उसके धार्मिक स्वभाव की अधिक सटीक समझ या उन्हें गहराई से सँजोने का भाव होना चाहिए। शैतान इतना घृणित है, फिर भी यदि यह अभी भी परमेश्वर के संबंध में तुम्हारे प्रेम और परमेश्वर पर तुम्हारी निर्भरता और परमेश्वर में तुम्हारे भरोसे को प्रेरित नहीं करता, तो तुम किस प्रकार के व्यक्ति हो? क्या तुम इस प्रकार शैतान द्वारा खुद को नुकसान पहुँचाए जाने के इच्छुक हो? शैतान की दुष्टता और भयंकरता को देखने के बाद हम पलटते हैं और तब परमेश्वर को देखते हैं। क्या परमेश्वर के संबंध में तुम्हारी जानकारी में कुछ बदलाव आया है? क्या हम कह सकते हैं परमेश्वर पवित्र है? क्या हम कह सकते हैं कि परमेश्वर दोष-रहित है? "परमेश्वर अद्वितीय पवित्रता है"—क्या परमेश्वर इस उपाधि पर खरा उतरता है? (हाँ।) तो इस संसार में और सब चीजों के मध्य, क्या केवल स्वयं परमेश्वर ही मनुष्य की

परमेश्वर की इस समझ पर खरा नहीं उतरता? क्या कोई और है? (नहीं।) तो परमेश्वर मनुष्य को वास्तव में क्या देता है? क्या वह केवल तुम्हारे जाने बिना ही तुम्हें थोड़ी देखभाल, परवाह और ध्यान देता है? परमेश्वर ने मनुष्य को क्या दिया है? परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन दिया है, और उसने मनुष्य को सब-कुछ दिया है, और वह मनुष्य को यह सब बिना किसी शर्त के, बिना कोई चीज़ माँगे, बिना किसी गूढ़ प्रयोजन के प्रदान करता है। वह मनुष्य की अगुआई और मार्गदर्शन करने के लिए सत्य, अपने वचनों और अपने जीवन का प्रयोग करते हुए मनुष्य को शैतान के नुकसान से दूर ले जाता है, शैतान के प्रलोभन और बहकावे से दूर ले जाता है और वह मनुष्य को शैतान का दुष्ट स्वभाव और उसका भयंकर चेहरा दिखाता है। क्या मानव-जाति के लिए परमेश्वर का प्रेम और चिंता सच्ची है? क्या तुम सभी लोग इसे अनुभव कर सकते हो? (हाँ।)

पीछे मुड़कर अपने अब तक के जीवन में उन सब कार्यों को देखो, जिन्हें परमेश्वर ने तुम्हारे विश्वास के इन सभी वर्षों में किया है। यह तुम्हारे भीतर गहरी या उथली कैसी भी भावनाएँ उभारे, पर क्या यह चीज़ तुम्हारे लिए सर्वाधिक आवश्यक नहीं थी? क्या यह वह चीज़ नहीं थी, जिसे प्राप्त करना तुम्हारे लिए सबसे जरूरी था? (हाँ।) क्या यह सत्य नहीं है? क्या यह जीवन नहीं है? (हाँ।) क्या कभी परमेश्वर ने तुम्हें प्रबोधन दिया और फिर तुमसे, जो कुछ उसने तुम्हें दिया है, उसके बदले में कोई चीज़ देने के लिए कहा? (नहीं।) तो परमेश्वर का क्या उद्देश्य है? परमेश्वर ऐसा क्यों करता है? क्या परमेश्वर का उद्देश्य तुम पर कब्ज़ा करना है? (नहीं।) क्या परमेश्वर मनुष्य के हृदय में अपने सिंहासन पर चढ़ना चाहता है? (हाँ।) तो परमेश्वर द्वारा अपने सिंहासन पर चढ़ने और शैतान द्वारा बलपूर्वक कब्ज़ा करने में क्या अंतर है? परमेश्वर मनुष्य के हृदय को पाना चाहता है, वह मनुष्य के हृदय पर कब्ज़ा करना चाहता है—इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह है कि परमेश्वर मनुष्य को अपनी कठपुतली, अपनी मशीन बनाना चाहता है? (नहीं।) तो परमेश्वर का क्या उद्देश्य है? क्या परमेश्वर द्वारा मनुष्य के हृदय पर कब्ज़ा करने की इच्छा करने और शैतान द्वारा बलपूर्वक कब्ज़ा और काबू करने में कोई अंतर है? (हाँ।) क्या अंतर है? क्या तुम लोग मुझे स्पष्ट रूप से बता सकते हो? (शैतान इसे बल के माध्यम से करता है जबकि परमेश्वर मनुष्य को स्वेच्छा से करने देता है)। क्या यही अंतर है? तुम्हारे हृदय का परमेश्वर के लिए क्या उपयोग है? और तुम पर कब्ज़ा करने का परमेश्वर के लिए क्या उपयोग है? तुम लोग अपने दिल में "परमेश्वर मनुष्य के हृदय पर कब्ज़ा करता है" से क्या समझते हो? हमें यहाँ परमेश्वर के बारे में बात करने में ईमानदार होना चाहिए, वरना लोग हमेशा ग़लत समझेंगे और सोचेंगे कि : "परमेश्वर हमेशा मुझ पर कब्ज़ा करना चाहता है। वह मुझ पर

कब्ज़ा क्यों करना चाहता है? मैं नहीं चाहता कि कोई मुझ पर कब्ज़ा करे, मैं बस अपना मालिक आप रहना चाहता हूँ। तुम कहते हो, शैतान लोगों पर कब्ज़ा करता है, किंतु परमेश्वर भी तो लोगों पर कब्ज़ा करता है। क्या ये दोनों चीज़ें एक जैसी नहीं हैं? मैं किसी को भी खुद पर कब्ज़ा नहीं करने देना चाहता। मैं, मैं हूँ।" यहाँ अंतर क्या है? इस पर ज़रा सोचो। मैं तुम लोगों से पूछता हूँ, कि क्या "परमेश्वर मनुष्य पर कब्ज़ा करता है" एक खोखला वाक्यांश है? क्या परमेश्वर के मनुष्य पर कब्ज़े का अर्थ है कि परमेश्वर तुम्हारे हृदय में रहता है और तुम्हारे प्रत्येक शब्द और प्रत्येक गतिविधि को नियंत्रित करता है? यदि वह तुमसे बैठने के लिए कहता है, तो क्या तुम खड़े होने की हिम्मत नहीं कर सकते? यदि वह तुमसे पूर्व दिशा में जाने के लिए कहता है, तो क्या तुम पश्चिम दिशा में जाने की हिम्मत नहीं कर सकते? क्या यह कब्ज़ा कुछ ऐसा ही अर्थ रखता है? (नहीं, ऐसा नहीं है। परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य परमेश्वर की सत्ता और अस्तित्व में जिए।) वर्षों से परमेश्वर द्वारा किए गए गए मनुष्य के प्रबंध में, और इस अंतिम चरण में अब तक मनुष्य पर किए गए उसके कार्य में, उसके द्वारा बोले गए समस्त वचनों का मनुष्य पर क्या वांछित प्रभाव रहा है? क्या मनुष्य परमेश्वर की सत्ता और अस्तित्व में जीता है? "परमेश्वर मनुष्य के हृदय पर कब्ज़ा करता है" के शाब्दिक अर्थ को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो परमेश्वर मनुष्य के हृदय को लेता है और उस पर कब्ज़ा कर लेता है, उसमें रहता है और फिर बाहर नहीं आता; वह मनुष्य के हृदय का स्वामी बन जाता है और उस पर हावी होकर मनमरजी से उसमें फेरबदल कर देता है, ताकि मनुष्य वही करे, जो परमेश्वर उसे करने के लिए कहे। इस अर्थ में ऐसा प्रतीत होता है, मानो हर व्यक्ति परमेश्वर बन सकता है और उसके सार और स्वभाव को धारण कर सकता है। तो क्या इस स्थिति में मनुष्य भी परमेश्वर के कार्यों को अंजाम दे सकता है? क्या "कब्ज़े" को इस तरीके से समझाया जा सकता है? (नहीं।) तो फिर यह क्या है? मैं तुम लोगों से पूछता हूँ : क्या वे सारे वचन और सत्य, जिनकी परमेश्वर मनुष्य को आपूर्ति करता है, परमेश्वर के सार और उसकी सत्ता तथा अस्तित्व के प्रकटीकरण हैं? (हाँ।) यह निश्चित रूप से सच है। किंतु क्या यह अनिवार्य है कि परमेश्वर खुद भी उन सभी वचनों का अभ्यास करे और उन्हें धारण करे, जिनकी वह मनुष्य को आपूर्ति करता है? इस पर थोड़ा विचार करो। जब परमेश्वर मनुष्य का न्याय करता है, तो वह किस कारण से ऐसा करता है? ये वचन कैसे अस्तित्व में आए? इन वचनों की विषय-वस्तु क्या होती है, जब परमेश्वर मनुष्य का न्याय करते समय इन्हें बोलता है? वे किस पर आधारित होते हैं? क्या वे मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव पर आधारित होते हैं? (हाँ।) तो क्या परमेश्वर द्वारा मनुष्य के न्याय से हासिल होने

वाला प्रभाव परमेश्वर के सार पर आधारित होता है? (हाँ।) तो क्या परमेश्वर द्वारा "मनुष्य पर कब्ज़ा करना" एक खोखला वाक्यांश है? निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। तो परमेश्वर मनुष्य से ये वचन क्यों कहता है? इन वचनों को कहने का उसका क्या उद्देश्य है? क्या वह मनुष्य के जीवन के लिए इन वचनों का उपयोग करना चाहता है? (हाँ।) परमेश्वर इन वचनों में कहे अपने समस्त सत्य का उपयोग मनुष्य के जीवन के लिए करना चाहता है। जब मनुष्य इस समस्त सत्य और परमेश्वर के वचन को लेकर उन्हें अपने जीवन में रूपांतरित करता है, तब क्या मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा मान सकता है? तब क्या मनुष्य परमेश्वर का भय मान सकता है? तब क्या मनुष्य बुराई से दूर रह सकता है? जब मनुष्य इस बिंदु पर पहुँच जाता है, तब क्या वह परमेश्वर की संप्रभुता और व्यवस्था को मान सकता है? तब क्या मनुष्य परमेश्वर के अधिकार के अधीन होने की स्थिति में होता है? जब अय्यूब या पतरस जैसे लोग अपने मार्ग के अंतिम छोर पर पहुँच जाते हैं, जब यह माना जाता है कि उनका जीवन परिपक्व हो चुका है, जब उनके पास परमेश्वर की वास्तविक समझ होती है—तो क्या शैतान उन्हें तब भी भटका सकता है? क्या शैतान उन पर अभी भी कब्ज़ा कर सकता है? क्या शैतान उन पर अभी भी बलपूर्वक काबू कर सकता है? (नहीं।) तो यह किस प्रकार का व्यक्ति है? क्या यह कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसे परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से प्राप्त कर लिया गया है। (हाँ।) अर्थ के इस स्तर पर तुम लोग ऐसे व्यक्ति को किस प्रकार देखते हो, जिसे परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से प्राप्त कर लिया गया है? परमेश्वर के दृष्टिकोण से, इन परिस्थितियों के अंतर्गत वह इस व्यक्ति के हृदय पर पहले ही कब्ज़ा कर चुका है। किंतु यह व्यक्ति कैसा महसूस करता है? क्या परमेश्वर का वचन, परमेश्वर का अधिकार और परमेश्वर का मार्ग मनुष्य के भीतर उसका जीवन बन जाता है, फिर यह जीवन मनुष्य के संपूर्ण अस्तित्व पर काबिज़ हो जाता है और फिर यह उसके जीवन और उसके सार को ऐसा बना देता है, जो परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त होता है? क्या परमेश्वर के दृष्टिकोण से इस क्षण मनुष्य के हृदय पर उसके द्वारा कब्ज़ा कर लिया जाता है? (हाँ।) अब तुम लोग इस स्तर के अर्थ को कैसा समझते हो? क्या यह परमेश्वर का आत्मा है, जो तुम पर कब्ज़ा करता है? (नहीं, वह परमेश्वर का वचन है, जो हम पर कब्ज़ा करता है।) यह परमेश्वर का मार्ग और परमेश्वर का वचन है, जो तुम्हारा जीवन बन गए हैं, और यह सत्य है, जो तुम्हारा जीवन बन गया है। इस समय मनुष्य के पास वह जीवन होता है, जो परमेश्वर से आता है, किंतु हम यह नहीं कह सकते कि यह जीवन परमेश्वर का जीवन है। दूसरे शब्दों में, हम यह नहीं कह सकते कि मनुष्य द्वारा परमेश्वर के वचन से प्राप्त किया जाने वाला जीवन परमेश्वर का

जीवन है। अतः चाहे मनुष्य कितने ही लंबे समय तक परमेश्वर का अनुसरण कर ले, चाहे मनुष्य परमेश्वर से कितने ही वचन प्राप्त कर ले, मनुष्य कभी परमेश्वर नहीं बन सकता। यहाँ तक कि यदि परमेश्वर किसी दिन यह कहे, "मैंने तेरे हृदय पर कब्ज़ा कर लिया है, अब तू मेरे जीवन को धारण करता है," तो क्या तुम्हें यह लगेगा कि तुम परमेश्वर हो? (नहीं।) तब तुम क्या बन जाओगे? क्या तुम्हारे अंदर परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता नहीं होगी? क्या तुम्हारा हृदय उस जीवन से नहीं भर जाएगा, जिसे परमेश्वर ने तुम्हें प्रदान किया है? यह इस बात की एक सामान्य अभिव्यक्ति होगी कि जब परमेश्वर मनुष्य के हृदय पर कब्ज़ा करता है, तो क्या होता है। यह तथ्य है। तो इसे इस पहलू से देखने पर, क्या मनुष्य परमेश्वर बन सकता है? जब मनुष्य परमेश्वर के सारे वचनों को प्राप्त कर लेता है, जब मनुष्य परमेश्वर का भय मान सकता है और बुराई से दूर हो जाता है, तो क्या मनुष्य परमेश्वर की पहचान और सार धारण कर सकता है? (नहीं।) चाहे कुछ भी हो जाए, सब-कुछ कहे और किए जाने के बाद, मनुष्य अभी भी मनुष्य ही रहता है। तुम सृष्टि के एक प्राणी हो; जब तुम परमेश्वर से उसका मार्ग प्राप्त कर लेते हो, तो तुम केवल उस जीवन को धारण करते हो, जो परमेश्वर के वचन से आता है, और तुम कभी परमेश्वर नहीं बन सकते।

अब हम उस विषय पर लौटेंगे, जिस पर अभी हमने चर्चा की है। चर्चा के दौरान मैंने तुम लोगों से एक प्रश्न पूछा था—क्या अब्राहम पवित्र है? (नहीं।) क्या अय्यूब पवित्र है? (नहीं।) इस "पवित्रता" के भीतर परमेश्वर का सार निहित है। मनुष्य में परमेश्वर का सार या परमेश्वर का स्वभाव नहीं है। यहाँ तक कि जब मनुष्य परमेश्वर के समस्त वचनों का अनुभव कर लेता है और वास्तविकता से लैस हो जाता है, तब भी मनुष्य कभी परमेश्वर के पवित्र सार को धारण नहीं कर सकता; मनुष्य, मनुष्य है। तुम समझ गए न? तो अब इस वाक्यांश की तुम्हारी समझ कैसी है : "परमेश्वर मनुष्य के हृदय पर कब्ज़ा करता है।" (यह परमेश्वर का वचन, परमेश्वर का मार्ग और उसका सत्य है, जो मनुष्य का जीवन बन जाता है।) तुमने इन शब्दों को याद कर लिया है। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोगों की समझ अधिक गहरी हो गई होगी। कुछ लोग पूछ सकते हैं, "तो ऐसा क्यों कहते हैं कि परमेश्वर के संदेशवाहक और देवदूत पवित्र नहीं हैं?" तुम लोग इस प्रश्न के बारे में क्या सोचते हो? शायद तुम लोगों ने पहले इस पर विचार नहीं किया। मैं एक सरल-सा उदाहरण दूँगा : जब तुम किसी रोबोट को चालू करते हो, तो वह नृत्य और बातचीत दोनों कर सकता है, और तुम उसे समझ सकते हो कि वह क्या कहता है। तुम उसे प्यारा और सजीव कह सकते हो, परंतु रोबोट इसे नहीं समझेगा, क्योंकि उसमें जीवन नहीं है। जब तुम उसकी विद्युत-आपूर्ति बंद कर देते हो,

तो क्या वह तब भी चल-फिर सकता है? जब इस रोबोट को सक्रिय किया जाता है, तो तुम देख सकते हो कि यह सजीव और प्यारा है। तुम इसका मूल्यांकन कर सकते हो, चाहे वह ठोस हो या सतही, लेकिन जो भी हो, तुम इसे चलते हुए देख सकती है। परंतु जब तुम उसकी विद्युत-आपूर्ति बंद कर देते हो, तो क्या तुम्हें उसमें किसी प्रकार का व्यक्तित्व दिखाई देता है? क्या उसमें तुम्हें कोई सार दिखाई देता है? तुम मेरे कहने का मतलब समझ रहे हो? अर्थात्, यद्यपि यह रोबोट चल और रुक सकता है, फिर भी तुम यह कभी नहीं कह सकते कि इसमें किसी प्रकार का सार है। क्या यह तथ्य नहीं है? अब, हम इस पर और अधिक बात नहीं करेंगे। तुम लोगों के लिए अर्थ की सामान्य समझ होना काफी है। आओ, अपनी संगति यहीं समाप्त करें। अलविदा!

17 दिसंबर, 2013

फुटनोट :

क. "वशीकरण मंत्र" एक मंत्र है, जिसे भिक्षु तांग सानज़ैंग ने चीनी उपन्यास 'जर्नी टु द वेस्ट' (पश्चिम की यात्रा) में इस्तेमाल किया है। वह इस मंत्र का उपयोग सन वूकोंग (वानर राजा) को नियंत्रित करने के लिए उसके सिर के चारों ओर एक धातु का छल्ला कसकर करता है, जिससे उसे तेज सिरदर्द हो जाता है और वह काबू में आ जाता है। यह व्यक्ति को बाँधने वाली किसी चीज़ का वर्णन करने के लिए एक रूपक बन गया है।

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है V

परमेश्वर की पवित्रता (II)

आज, भाइयो और बहनो, आओ हम एक भजन गाएँ। जो तुम लोगों को पसंद हो और जिसे तुम लोग नियमित रूप से गाते हो, उसे चुन लो। (हम परमेश्वर के वचन का भजन : "शुद्ध निर्दोष प्रेम" गाना चाहेंगे।)

1. "प्रेम" उस भावना को संदर्भित करता है, जो शुद्ध और निर्दोष होती है, जहाँ तुम प्रेम करने, महसूस करने और विचारशील होने के लिए अपने हृदय का उपयोग करते हो। प्रेम में कोई शर्त, कोई अवरोध या कोई दूरी नहीं होती। प्रेम में कोई संदेह, कोई धोखा और कोई चालाकी नहीं होती। प्रेम में व्यापार और कुछ भी अशुद्ध नहीं होता। यदि तुम प्रेम करते हो, तो तुम धोखा नहीं दोगे, शिकायत, विश्वासघात, विद्रोह नहीं करोगे, कुछ छीनने या हासिल करने या कोई निश्चित राशि प्राप्त करने की कोशिश

नहीं करोगे।

2. "प्रेम" उस भावना को संदर्भित करता है, जो शुद्ध और निर्दोष होती है, जहाँ तुम प्रेम करने, महसूस करने और विचारशील होने के लिए अपने हृदय का उपयोग करते हो। प्रेम में कोई शर्त, कोई अवरोध और कोई दूरी नहीं होती। प्रेम में कोई संदेह, कोई धोखा और कोई चालाकी नहीं होती। प्रेम में कोई व्यापार और कुछ भी अशुद्ध नहीं होता। यदि तुम प्रेम करते हो, तो तुम ख़ुशी से अपने आपको समर्पित करोगे, ख़ुशी से कष्ट सहन करोगे, तुम मेरे अनुकूल हो जाओगे, तुम अपना वह सब-कुछ त्याग दोगे जो मेरे लिए तुम्हारे पास है, तुम अपना परिवार, अपना भविष्य, अपनी जवानी और अपना विवाह, सब त्याग दोगे। अगर नहीं, तो तुम्हारा प्रेम बिलकुल भी प्रेम नहीं होगा, बल्कि केवल धोखा और विश्वासघात होगा!

यह भजन एक अच्छा चुनाव था। क्या तुम सबको इसे गाने में मज़ा आता है? (हाँ।) इसे गाने के बाद तुम्हें कैसा लगता है? क्या तुम इस तरह के प्रेम को अपने भीतर महसूस कर पाते हो? (अभी तक नहीं।) इसके कौन-से शब्द तुम्हें सबसे ज्यादा गहराई तक प्रेरित करते हैं? (प्रेम में कोई शर्त, कोई अवरोध और कोई दूरी नहीं होती। प्रेम में कोई संदेह, कोई धोखा, कोई सौदेबाजी और कोई चालाकी नहीं होती। प्रेम में कोई विकल्प और कुछ अशुद्ध नहीं होता। लेकिन अपने अंदर मैं अभी भी कई अशुद्धताएँ देखता हूँ, और मेरे कई अंग परमेश्वर से सौदेबाजी करने की कोशिश करते हैं। मुझे वास्तव में वैसा प्रेम नहीं हुआ, जो शुद्ध और निर्दोष हो।) अगर तुम्हें वैसा प्रेम नहीं हुआ, जो शुद्ध और निर्दोष हो, तब तुम्हारे प्रेम की मात्रा क्या है? (मैं मात्र उस चरण पर हूँ, जहाँ मैं खोजने की अभिलाषा रखता हूँ, जहाँ मैं तड़प रहा हूँ।) अपने आध्यात्मिक कद के आधार पर और अपने स्वयं के अनुभव से बोलते हुए, तुमने प्रेम की कितनी मात्रा प्राप्त की है? क्या तुम्हारे पास धोखा है? क्या तुम्हारे पास शिकायतें हैं? (हाँ।) क्या तुम्हारे हृदय में माँगें हैं? क्या कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें तुम परमेश्वर से चाहते और माँगते हो? (हाँ, मेरे भीतर ये ख़राब चीज़ें हैं।) वे किन परिस्थितियों में बाहर आती हैं? (जब परमेश्वर द्वारा मेरे लिए व्यवस्थित की गई स्थिति मेरे विचारों से मेल नहीं खाती, या जब मेरी इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं : ऐसे क्षणों में मेरा इस प्रकार का भ्रष्ट स्वभाव प्रकट होता है।) तुम भाई-बहनें, जो ताइवान से आते हो, क्या तुम लोग भी अकसर इस भजन को गाते हो? क्या तुम थोड़ा बता सकते हो कि तुम लोग "शुद्ध निर्दोष प्रेम" से क्या समझते हो? परमेश्वर क्यों प्रेम को इस तरह परिभाषित करता है? (यह भजन मुझे बहुत ज्यादा पसंद है, क्योंकि मैं इससे देख सकता हूँ कि यह

प्रेम एक पूर्ण प्रेम है। हालाँकि मैं उस मानक से पूरा करने के लिए मेरे पास अभी भी कई रास्ते हैं, और मैं सच्चा प्रेम करने से अभी भी बहुत दूर हूँ। कुछ चीज़ें हैं, जिनमें मैं उस शक्ति के माध्यम से जो उसके वचन मुझे देते हैं, और प्रार्थना के माध्यम से प्रगति और सहयोग करने में सक्षम रहा हूँ। हालाँकि, जब कुछ परीक्षणों और प्रकटनों का सामना किया जाता है, तो मुझे लगता है कि मेरा कोई भविष्य या भाग्य नहीं है, कि मेरे पास कोई गंतव्य नहीं है। ऐसे क्षणों में मैं बहुत कमजोर महसूस करता हूँ और यह मुद्दा मुझे प्रायः परेशान करता है।) जब तुम "भविष्य और नियति" की बात करते हो, तब तुम अंततः किस चीज़ का उल्लेख करते हो? क्या तुम किसी ख़ास चीज़ का उल्लेख करते हो? क्या यह कोई तसवीर है या कोई ऐसी चीज़ है, जिसकी तुमने कल्पना की है या क्या तुम्हारा भविष्य और नियति कोई ऐसी चीज़ है, जिसे तुम वास्तव में देख सकते हो? क्या यह कोई वास्तविक चीज़ है? मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों में से प्रत्येक इस बारे में विचार करे : तुम्हारे भविष्य और नियति को लेकर तुम लोगों के हृदय में जो चिंताएँ हैं, वे किसे संदर्भित करती हैं? (यह बचाए जाने योग्य होना है, ताकि मैं जीवित रह सकूँ।) अन्य भाई-बहनो, तुम भी थोड़ा बताओ कि तुम "शुद्ध निर्दोष प्रेम" से क्या समझते हो? (जब यह किसी व्यक्ति के पास होता है, तो उसके व्यक्तिगत स्व से कोई अशुद्धि नहीं आती, और वे अपने भविष्य और भाग्य द्वारा नियंत्रित नहीं होते। भले ही परमेश्वर उनके साथ कैसा भी बर्ताव करता हो, वे परमेश्वर के कार्य और आयोजनों का पूर्णतः पालन करने और अंत तक उसका अनुसरण में सक्षम होते हैं। परमेश्वर के लिए केवल इस प्रकार का प्रेम ही शुद्ध निर्दोष प्रेम होता है। अपने को इसकी तुलना में मापने पर मैंने पाया है कि, हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में परमेश्वर पर विश्वास करते हुए मैंने अपने को खपाया है और कुछ चीज़ों का त्याग किया है, पर मैं वास्तव में परमेश्वर को अपना हृदय देने में सक्षम नहीं रहा हूँ। जब परमेश्वर मुझे उजागर करता है, तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि मुझे बचाया नहीं जा सकता, और मैं एक नकारात्मक अवस्था में रहता हूँ। मैं स्वयं को अपना कर्तव्य करते हुए देखता हूँ, किंतु साथ ही मैं परमेश्वर के साथ सौदेबाज़ी करने की कोशिश भी कर रहा होता हूँ, और मैं अपने संपूर्ण हृदय से परमेश्वर से प्रेम करने में असमर्थ हूँ, और मेरा गंतव्य, मेरा भविष्य और मेरी नियति हमेशा मेरे मन में रहते हैं।)

ऐसा लगता है कि तुम लोगों ने इस भजन की कुछ समझ प्राप्त कर ली है, और इसके तथा तुम्हारे वास्तविक अनुभवों के बीच कुछ संबंध बना लिये हैं। हालाँकि इस "शुद्ध निर्दोष प्रेम" नामक भजन के प्रत्येक पद तुम भिन्न-भिन्न मात्रा में स्वीकार करते हो। कुछ लोग सोचते हैं कि यह स्वेच्छा के बारे में है, कुछ

लोग अपना भविष्य एक तरफ रख देने के इच्छुक हैं, कुछ लोग अपने परिवार को अलग करना चाहते हैं, कुछ लोग कुछ भी प्राप्त करना नहीं चाहते। कुछ अन्य लोग परमेश्वर को धोखा नहीं देना, कोई शिकायत न करना और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह नहीं करना स्वयं के लिए आवश्यक मानते हैं। परमेश्वर क्यों इस प्रकार का प्रेम करने की सलाह देना चाहेगा, और यह चाहेगा कि लोग उसे इस तरह से प्रेम करें? क्या यह इस प्रकार का प्रेम है, जिसे लोग प्राप्त कर सकते हैं? अर्थात्, क्या लोग इस प्रकार से प्रेम करने में समर्थ हैं? लोग देख सकते हैं कि वे ऐसा प्रेम नहीं कर सकते, क्योंकि उनके पास इस प्रकार के प्रेम का कोई संकेत नहीं है। जब लोगों के पास यह नहीं है, और वे प्रेम के बारे में बुनियादी रूप से नहीं जानते, तो परमेश्वर इन वचनों को कहता है, और ये वचन उनके लिए अनजाने हैं। चूँकि लोग इस दुनिया में रहते हैं और एक भ्रष्ट स्वभाव में जीते हैं, इसलिए अगर लोगों के पास इस प्रकार का प्रेम होता या अगर कोई व्यक्ति इस प्रकार का प्रेम कर सकता, ऐसा प्रेम जो कोई अनुरोध और माँग नहीं करता, ऐसा प्रेम जिसके साथ वे अपने आपको समर्पित करने, कष्ट सहने और अपना सब-कुछ त्यागने के लिए तैयार हैं, तो इस प्रकार का प्रेम करने वाले के बारे में अन्य लोग क्या सोचेंगे? क्या ऐसा व्यक्ति पूर्ण नहीं होगा? (हाँ, होगा।) क्या इस तरह का कोई पूर्ण व्यक्ति इस जगत में विद्यमान है? नहीं, इस तरह का कोई व्यक्ति विद्यमान नहीं है, है ना? इस तरह का कोई व्यक्ति दुनिया में बिलकुल विद्यमान नहीं है, जब तक कि वह निर्वात में न जीता हो। क्या ऐसा नहीं है? इसलिए, कुछ लोग अपने अनुभवों के द्वारा, इन वचनों पर खुद को मापने का बहुत प्रयास करते हैं। वे स्वयं से निपटते हैं, स्वयं को संयमित करते हैं और यहाँ तक कि वे स्वयं को भी लगातार त्यागते रहते हैं : वे कष्ट सहते हैं और अपनी धारणाओं का त्याग कर देते हैं। वे अपनी विद्रोहशीलता छोड़ देते हैं, और अपनी इच्छाओं तथा अभिलाषाओं का त्याग कर देते हैं। किंतु अंतत: वे फिर भी माप नहीं पाते। ऐसा क्यों होता है? परमेश्वर लोगों द्वारा पालन किए जाने के लिए एक मानक प्रदान करने हेतु इन बातों को कहता है, ताकि लोग परमेश्वर द्वारा उनसे माँगे गए मानक को जानें। पर क्या परमेश्वर कभी कहता है कि लोगों को इसे तुरंत प्राप्त करना चाहिए? क्या कभी परमेश्वर कहता है कि कितने समय में लोगों को इसे प्राप्त करना है? (नहीं।) क्या कभी परमेश्वर कहता है कि लोगों को उसे इस तरह से प्रेम करना है? क्या भजन के इस अंश में ऐसा कहा गया है? नहीं, इसमें ऐसा नहीं कहा गया है। परमेश्वर लोगों को बस उस प्रेम के बारे में बता रहा है, जिसका वह उल्लेख कर रहा था। जहाँ तक लोगों के परमेश्वर को इस तरह से प्रेम करने और परमेश्वर से इस तरह से व्यवहार करने में सक्षम होने की बात

है, तो मनुष्य से परमेश्वर की अपेक्षाएँ क्या हैं? उन्हें तत्क्षण पूरा करना आवश्यक नहीं है, क्योंकि यह लोगों के सामर्थ्य से परे होगा। क्या तुम लोगों ने कभी इस बारे में सोचा है कि इस प्रकार से प्रेम करने के लिए लोगों को किन शर्तों को पूरा करने की आवश्यकता है? अगर लोग बार-बार इन वचनों को पढ़ेंगे, तो क्या वे धीरे-धीरे इस प्रेम को पा लेंगे? (नहीं।) तब क्या शर्तें हैं? पहली बात, लोग परमेश्वर के प्रति संशय से कैसे मुक्त हो सकते हैं? (केवल ईमानदार लोग ही इसे प्राप्त कर सकते हैं।) धोखे से मुक्त होने के बारे में क्या कहेंगे? (यह भी ईमानदार लोग ही कर सकते हैं।) ऐसा व्यक्ति होने के बारे में क्या ख़याल है, जो परमेश्वर से सौदेबाज़ी नहीं करता? यह भी ईमानदार व्यक्ति होने का एक हिस्सा है। चालाकी से रहित होने के बारे में क्या कहोगे? प्रेम में कोई चुनाव न होने का क्या अर्थ है? क्या ये सब चीज़ें ईमानदार व्यक्ति होने से संबंध रखती हैं? यहाँ इसका बहुत सारा विवरण है। इससे क्या साबित होता है कि परमेश्वर इस प्रकार के प्रेम को इस तरह से बताने और परिभाषित करने में सक्षम है? क्या हम कह सकते हैं कि परमेश्वर के पास ऐसा प्रेम है? (हाँ।) तुम लोग इसे कहाँ देखते हैं? (मनुष्य के लिए परमेश्वर के प्रेम में।) क्या मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रेम सशर्त है? (नहीं।) क्या परमेश्वर और मनुष्य के बीच में अवरोध या दूरी है? (नहीं।) क्या परमेश्वर को मनुष्यों के बारे में संदेह हैं? (नहीं।) परमेश्वर मनुष्य को देखता है और उसे समझता है; वह मनुष्य को सचमुच समझता है। क्या परमेश्वर मनुष्य के प्रति कपटपूर्ण है? (नहीं।) चूँकि परमेश्वर इस प्रेम के बारे में इतनी पूर्णता से कहता है, तो क्या उसका हृदय या उसका सार भी इतना ही पूर्ण हो सकता है? (हाँ।) क्या लोगों ने कभी प्रेम को इस तरह से परिभाषित किया है? मनुष्य ने किन परिस्थितियों में प्रेम को परिभाषित किया है? मनुष्य प्रेम के बारे में कैसे बात करता है? क्या मनुष्य प्रेम के बारे में देने या अर्पित करने के रूप में बात नहीं करता? (हाँ।) प्रेम की यह परिभाषा सरलीकृत है, और इसमें सार का अभाव है।

परमेश्वर की प्रेम की परिभाषा और जिस तरह से परमेश्वर प्रेम के बारे में बोलता है, वे उसके सार के एक पहलू से संबंधित हैं, किंतु वह कौन-सा पहलू है? पिछली बार हमने एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय के बारे में संगति की थी, एक यह ऐसा विषय, जिस पर लोगों ने अकसर पहले चर्चा की है। उस विषय में एक शब्द है, जो परमेश्वर पर विश्वास करने के दौरान अकसर बोला जाता है, लेकिन फिर भी जो ऐसा शब्द है, जिससे हर कोई परिचित और अपरिचित दोनों महसूस करता है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? यह एक ऐसा शब्द है, जो मनुष्य की भाषाओं से आता है; हालाँकि लोगों के बीच इसकी परिभाषा स्पष्ट और अस्पष्ट दोनों है। यह शब्द क्या है? ("पवित्रता"।) पवित्रता : यह पिछली बार संगति का हमारा विषय था। हमने इस

विषय के एक भाग के बारे में संगति की थी। अपनी पिछली संगति के माध्यम से क्या हर किसी ने परमेश्वर की पवित्रता के सार के बारे में कोई नई समझ प्राप्त की? इस समझ के कौन-से पहलू तुम लोगों को पूरी तरह से नए लगते हैं? अर्थात्, इस समझ या उन वचनों के भीतर ऐसा क्या है, जिससे तुम लोगों को महसूस हुआ कि परमेश्वर की पवित्रता की तुम्हारी समझ मेरे द्वारा संगति के दौरान बताई गई परमेश्वर की पवित्रता से भिन्न या अलग थी? क्या तुम पर उसका कोई प्रभाव है? (परमेश्वर वह कहता है, जो वह अपने हृदय में महसूस करता है; उसके वचन निष्कलंक हैं। यह पवित्रता के एक पहलू की अभिव्यक्ति है।) (पवित्रता तब भी होती है, जब परमेश्वर मनुष्य के प्रति कुपित होता है; उसका कोप दोष-रहित होता है।) (जहाँ तक परमेश्वर की पवित्रता की बात है, मैं समझता हूँ कि परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव में उसका कोप और दया दोनों शामिल हैं। इसने मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला है। हमारी पिछली संगति में यह भी उल्लेख किया गया था कि ईश्वर का धार्मिक स्वभाव अद्वितीय है—मुझे अतीत में यह समझ नहीं आया था। परमेश्वर ने जो संगति की थी उसे सुन कर ही केवल मेरी समझ में आया कि परमेश्वर का कोप मनुष्य के क्रोध से अलग है। परमेश्वर का कोप एक सकारात्मक चीज़ है और यह सिद्धांत पर आधारित है; यह ईश्वर के अंतर्निहित सार के कारण किया जाता है। यह कुछ ऐसी चीज़ है जो किसी सृजित प्राणी के द्वारा धारण नहीं की जाती है।) आज का हमारा विषय परमेश्वर की पवित्रता है। सभी लोगों ने परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के बारे में कुछ न कुछ सुना और जाना है। इतना ही नहीं, कई लोग प्रायः एक ही साँस में परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के बारे में बात करते हैं; वे कहते हैं कि परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव पवित्र है। "पवित्र" शब्द निश्चित रूप से किसी के लिए अपरिचित नहीं है—यह एक आम तौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। लेकिन शब्द के भीतर के अर्थों के संबंध में, परमेश्वर की पवित्रता की कौन-सी अभिव्यक्ति देखने में लोग सक्षम हैं? परमेश्वर ने क्या प्रकट किया है, जिसे लोग पहचान सकते हैं? मेरा ख़याल है कि यह कुछ ऐसा है, जिसे कोई नहीं जानता। परमेश्वर का स्वभाव धार्मिक है, किंतु अगर तुम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को लो और कहो कि यह पवित्र है, तो यह थोड़ा अस्पष्ट, थोड़ा भ्रामक प्रतीत होता है; ऐसा क्यों है? तुम कहते हो, परमेश्वर का स्वभाव धार्मिक है, या तुम कहते हो, उसका धार्मिक स्वभाव पवित्र है, तो अपने हृदयों में तुम लोग परमेश्वर की पवित्रता का कैसे चित्रण करते हो, तुम लोग उसे कैसे समझते हो? अर्थात्, परमेश्वर ने जो प्रकट किया, उसके बारे में क्या ख़याल है, या परमेश्वर की सत्ता और स्वरूप के बारे में, क्या उन्हें लोग पवित्र मानेंगे? क्या तुमने इसके बारे में पहले सोचा है? मैंने जो देखा

है, वह यह है कि लोग प्रायः सामान्य रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के साथ सामने आते हैं या उनके पास ऐसे मुहावरे होते हैं, जो बार-बार कहे जा चुके हैं, पर वे यह तक नहीं जानते कि वे क्या कह रहे हैं। वह ठीक वैसा ही होता है, जैसा हर कोई कहता है, और वे इसे आदतन कहते हैं, इसलिए यह उनके लिए एक निश्चित शब्द बन जाता है। लेकिन अगर वे जाँच करें और वास्तव में विवरणों का अध्ययन करें, तो वे यह पाएँगे कि उन्हें नहीं पता कि उसका वास्तविक अर्थ क्या है या यह किसका उल्लेख करता है। ठीक "पवित्र" शब्द की तरह, कोई ठीक-ठीक नहीं जानता कि परमेश्वर की जिस पवित्रता के बारे में वे बात करते हैं, उसके संबंध में परमेश्वर के सार के किस पहलू का उल्लेख किया जा रहा है, और कोई नहीं जानता कि परमेश्वर के साथ "पवित्र" शब्द का सामंजस्य कैसे बैठाना है। लोग अपने हृदयों में भ्रमित हैं, और परमेश्वर की पवित्रता की उनकी पहचान अनिश्चित और अस्पष्ट है। परमेश्वर पवित्र कैसे है, इस बारे में कोई पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। आज हम परमेश्वर के साथ "पवित्र" शब्द का सामंजस्य स्थापित करने के लिए इस विषय पर संगति करेंगे, ताकि लोग परमेश्वर की पवित्रता के सार की वास्तविक अंतर्वस्तु को देख सकें। यह कुछ लोगों को इस शब्द के आदतन और लापरवाही के साथ इस्तेमाल करने और चीज़ों को जैसे चाहे, वैसे कहने से रोकेगा, जबकि वे नहीं जानते कि उनका क्या अर्थ है या वे सही और सटीक हैं या नहीं। लोगों ने हमेशा इसी तरह कहा है; तुमने कहा है, उसने कहा है, और इस प्रकार यह बोलने की एक आदत बन गई है। यह अनजाने ही ऐसे शब्द को दूषित कर देता है।

सतह पर "पवित्र" शब्द समझने में बहुत आसान लगता है, है न? कम से कम, लोग "पवित्र" शब्द का अर्थ स्वच्छ, निर्मल, पवित्र और शुद्ध मानते हैं। ऐसे लोग भी हैं, जो "शुद्ध निर्दोष प्रेम" भजन में, जिसे हमने अभी गाया है, "पवित्रता" को "प्रेम" के साथ जोड़ते हैं। यह सही है; यह इसका एक भाग है। परमेश्वर का प्रेम उसके सार का भाग है, किंतु यह उसकी समग्रता नहीं है। हालाँकि लोग अपनी धारणाओं में शब्द को देखते हैं और उसे उन चीज़ों के साथ जोड़ने में प्रवृत्त हो जाते हैं, जिन्हें वे स्वयं शुद्ध और साफ़ समझते हैं या उन चीज़ों के साथ, जिनके बारे में वे व्यक्तिगत रूप से सोचते हैं कि वे निर्मल और और निष्कलंक हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने कहा कि कमल का फूल स्वच्छ है, और कि वह कीचड़ में भी निष्कलंक खिलता है। इसलिए लोग कमल के फूल के लिए "पवित्र" शब्द का प्रयोग करने लगे। कुछ लोग मनगढ़ंत प्रेम-कथाओं को पवित्र समझते हैं, या वे कुछ कल्पित, विस्मयकारी चरित्रों को पवित्र समझ सकते हैं। इसके अलावा, कुछ लोग बाइबल या अन्य आध्यात्मिक पुस्तकों में दर्ज लोगों को—जैसे कि संत, प्रेरित या

अन्य, जिन्होंने कभी परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य के दौरान उसका अनुसरण किया था—आध्यात्मिक अनुभव पाए हुए लोग मानते हैं। ये सब चीज़ें लोगों द्वारा कल्पित की गई हैं और ये सब उनकी धारणाएँ हैं। लोग इस तरह की धारणाएँ क्यों रखते हैं? इसका कारण बहुत सरल है : ऐसा इसलिए है, क्योंकि लोग भ्रष्ट स्वभाव के बीच जीते हैं और बुराई तथा गंदगी की दुनिया में रहते हैं। वे जो कुछ भी देखते हैं, वे जो कुछ भी छूते हैं, वे जो कुछ भी अनुभव करते हैं, वह शैतान की दुष्टता और शैतान की भ्रष्टता है और साथ ही ऐसे कुचक्र, अंतर्कलह और युद्ध हैं, जो शैतान के प्रभाव में लोगों के बीच होते हैं। इसलिए, जब परमेश्वर लोगों में अपना कार्य करता है, या जब वह उनसे बात करता है और अपना स्वभाव और सार प्रकट करता है, तब भी वे परमेश्वर की पवित्रता और सार को देखने या जानने में सक्षम नहीं होते। लोग प्रायः कहते हैं कि परमेश्वर पवित्र है, किंतु उनमें सच्ची समझ का अभाव है; वे बस खोखले शब्द कहते हैं। चूँकि लोग गंदगी और भ्रष्टता में रहते हैं और शैतान के अधिकार-क्षेत्र में हैं, और वे प्रकाश को नहीं देखते, सकारात्मक मामलों के बारे में कुछ नहीं जानते, और इसके अलावा, सत्य को नहीं जानते, इसलिए कोई भी वास्तव में नहीं जानता कि "पवित्र" का क्या अर्थ है। तो क्या इस भ्रष्ट मानवजाति के बीच कोई पवित्र वस्तुएँ या पवित्र लोग हैं? हम निश्चित रूप से कह सकते हैं : नहीं, कोई नहीं है, क्योंकि केवल परमेश्वर का सार ही पवित्र है।

पिछली बार हमने, परमेश्वर का सार किस तरह पवित्र है, इसके एक पहलू के बारे में संगति की थी। उसने लोगों को परमेश्वर की पवित्रता का ज्ञान प्राप्त करने की कुछ प्रेरणा प्रदान की थी, लेकिन यह काफी नहीं है। यह पर्याप्त रूप से लोगों को परमेश्वर की पवित्रता को पूरी तरह से जानने में सक्षम नहीं कर सकता, और न ही यह समझने में उन्हें सक्षम कर सकता है कि परमेश्वर की पवित्रता अद्वितीय है। इतना ही नहीं, यह पर्याप्त रूप से लोगों को पवित्रता का सही अर्थ समझने में भी पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं बना सकता, जो कि परमेश्वर में पूरी तरह से सन्निहित है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम इस विषय पर अपनी संगति जारी रखें। पिछली बार हमारी संगति में तीन मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया था, इसलिए अब हमें चौथे मुद्दे पर विचार-विमर्श करना चाहिए। हम धर्मग्रंथ को पढ़ने से शुरुआत करेंगे।

शैतान का प्रलोभन

मत्ती 4:1-4 तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो। वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा,

"यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।" यीशु ने उत्तर दिया: "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'"

ये वे वचन हैं, जिनसे शैतान ने पहली बार प्रभु यीशु को प्रलोभित करने का प्रयास किया था। इब्लीस ने जो कहा था, उसकी विषयवस्तु क्या है? ("यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।") इब्लीस द्वारा कहे गए ये शब्द काफी साधारण हैं, किंतु क्या इनके सार के साथ कोई समस्या है? इब्लीस ने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है," लेकिन अपने दिल में क्या वह जानता था या नहीं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है? क्या वह जानता था या नहीं कि वह मसीह है? (वह जानता था।) तो उसने ऐसा क्यों कहा "यदि तू है"? (वह परमेश्वर को प्रलोभित करने का प्रयास कर रहा था।) किंतु ऐसा करने में उसका उद्देश्य क्या था? उसने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है।" अपने दिल में वह जानता था कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, यह उसके दिल में बहुत स्पष्ट था, किंतु यह जानने के बावजूद, क्या उसने उसके सामने समर्पण किया या उसकी आराधना की? (नहीं।) वह क्या करना चाहता था? वह मसीह को क्रोध दिलाने और फिर अपने इरादों के अनुसार कार्य करवाने में प्रभु यीशु को मूर्ख बनाने के लिए इस पद्धति और इन वचनों का उपयोग करना चाहता था। क्या इब्लीस के शब्दों के पीछे यही अर्थ नहीं था? अपने दिल में शैतान स्पष्ट रूप से जानता था कि यह प्रभु यीशु मसीह है, किंतु उसने फिर भी ये शब्द कहे। क्या यह शैतान की प्रकृति नहीं है? शैतान की प्रकृति क्या है? (धूर्त, दुष्ट होना और परमेश्वर के प्रति श्रद्धा न रखना।) परमेश्वर के प्रति उसकी कोई श्रद्धा नहीं होने का क्या परिणाम होगा। क्या वह परमेश्वर पर हमला नहीं करना चाहता था? वह इस पद्धति का उपयोग परमेश्वर पर हमला करने के लिए करना चाहता था, और इसलिए उसने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ"; क्या यह शैतान की बुरी नीयत नहीं है? वह वास्तव में क्या करने का प्रयास कर रहा था? उसका उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है : वह इस पद्धति का उपयोग प्रभु यीशु मसीह के पद और पहचान को नकारने के लिए करने की कोशिश कर रहा था। उन शब्दों से शैतान का आशय यह था कि, "अगर तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों को रोटियों में बदल दे। अगर तू ऐसा नहीं कर सकता, तो तू परमेश्वर का पुत्र नहीं है, इसलिए तुझे अपना काम अब और नहीं करना चाहिए।" क्या ऐसा नहीं है? वह इस पद्धति का उपयोग परमेश्वर पर हमला करने के लिए करना चाहता था, और वह परमेश्वर के काम को खंडित और नष्ट करना चाहता था; यह शैतान का द्वेष है। उसका द्वेष उसकी प्रकृति की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यद्यपि वह जानता था कि प्रभु यीशु मसीह

परमेश्वर का पुत्र, स्वयं परमेश्वर का ही देहधारण है, फिर भी वह परमेश्वर का पीछा करते हुए, उस पर लगातार आक्रमण करते हुए और उसके कार्य को अस्तव्यस्त और नष्ट करने का भरसक प्रयास करते हुए इस प्रकार का काम करने से बाज नहीं आता।

अब, आओ शैतान द्वारा बोले गए इस वाक्यांश का विश्लेषण करें : "तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।" पत्थरों को रोटी में बदलना—क्या इसका कुछ अर्थ है? अगर वहाँ भोजन है, तो क्यों न उसे खाया जाए? पत्थरों को भोजन में बदलना क्यों आवश्यक है? क्या यह कहा जा सकता है कि यहाँ कोई अर्थ नहीं है? यद्यपि वह उस समय उपवास कर रहा था, फिर भी निश्चित रूप से प्रभु यीशु के पास खाने को भोजन था? (उसके पास भोजन था।) तो हम यहाँ शैतान के शब्दों की असंगति देख सकते हैं। शैतान की सारी दुष्टता और कपट के बावजूद हम उसकी असंगति और बेतुकापन देख सकते हैं। शैतान बहुत सारी चीज़ें करता है, जिसके माध्यम से तुम उसकी द्वेषपूर्ण प्रकृति को देख सकते हो; तुम उसे वैसी चीज़ें करते देख सकते हो, जो परमेश्वर के कार्य को खंडित करती हैं, और यह देखकर तुम अनुभव करते हो कि वह घृणित और कुपित करने वाला है। किंतु दूसरी ओर, क्या तुम उसके शब्दों और कार्यों के पीछे एक बचकानी और बेहूदी प्रकृति नहीं देखते? यह शैतान की प्रकृति के बारे में एक प्रकाशन है; चूँकि उसकी ऐसी प्रकृति है, इसलिए वह ऐसे ही काम करेगा। आज लोगों के लिए शैतान के ये शब्द असंगत और हास्यास्पद हैं। किंतु शैतान बेशक ऐसे शब्द कहने में सक्षम है। क्या हम कह सकते हैं कि वह अज्ञानी और बेतुका है? शैतान की दुष्टता हर जगह है और लगातार प्रकट हो रही है। और प्रभु यीशु ने उसे कैसे उत्तर दिया? ("मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।") क्या इन वचनों में कोई सामर्थ्य है? (उनमें सामर्थ्य है।) हम क्यों कहते हैं कि उनमें सामर्थ्य है? वह इसलिए, क्योंकि ये वचन सत्य हैं। अब, क्या मनुष्य केवल रोटी से जीवित रहता है? प्रभु यीशु ने चालीस दिन और रात उपवास किया। क्या वह भूख से मर गया? (नहीं।) वह भूख से नहीं मरा, इसलिए शैतान उसके पास गया और उसे इस तरह की बातें कहते हुए पत्थरों को भोजन में बदलने के लिए उकसाया : "अगर तू पत्थरों को खाने में बदल देगा, तो क्या तब तेरे पास खाने की चीज़ें नहीं होंगी? तब तुझे उपवास नहीं करना पड़ेगा, भूखा नहीं रहना पड़ेगा!" किंतु प्रभु यीशु ने कहा, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहेगा," जिसका अर्थ है कि, यद्यपि मनुष्य भौतिक शरीर में रहता है, किंतु उसका भौतिक शरीर भोजन से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले प्रत्येक वचन से जीवित रहता और साँस लेता है। एक ओर, ये वचन

सत्य हैं; ये विश्वास देते हैं, उन्हें यह महसूस कराते हैं कि वे परमेश्वर पर निर्भर रह सकते हैं और कि वह सत्य है। दूसरी ओर, क्या इन वचनों का कोई व्यावहारिक पहलू है? क्या प्रभु यीशु चालीस दिन और रात उपवास करने के बाद भी खड़ा नहीं था, जीवित नहीं था? क्या यह एक वास्तविक उदाहरण नहीं है? उसने चालीस दिन और रात कोई भोजन नहीं किया था, और वह फिर भी ज़िंदा था। यह सशक्त गवाही है, जो उसके वचनों की सच्चाई की पुष्टि करती है। ये वचन सरल है, किंतु प्रभु यीशु के लिए, क्या उसने इन्हें केवल तभी बोला जब शैतान ने उसे प्रलोभित किया, अथवा क्या ये पहले से ही प्राकृतिक रूप से उसका एक हिस्सा थे? इसे दूसरी तरह से कहें तो, परमेश्वर सत्य है, और परमेश्वर जीवन है, लेकिन क्या परमेश्वर का सत्य और जीवन बाद के जोड़ थे? क्या वे बाद के अनुभव से उत्पन्न हुए थे? नहीं—वे परमेश्वर में जन्मजात थे। कहने का तात्पर्य यह है कि सत्य और जीवन परमेश्वर के सार हैं। उस पर चाहे जो भी बीते, वह सब सत्य ही प्रकट करता है। यह सत्य, ये वचन—चाहे उसकी वाणी की अंतर्वस्तु लंबी हो या छोटी—वे मनुष्य को जीने में सक्षम बना सकते हैं और उसे जीवन दे सकते हैं; वे लोगों को मानव-जीवन के मार्ग के बारे में सत्य और स्पष्टता हासिल करने में सक्षम बना सकते हैं, और उन्हें परमेश्वर पर विश्वास करने में सक्षम बना सकते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वारा इन वचनों के प्रयोग का स्रोत सकारात्मक है। तो क्या हम कह सकते हैं कि यह सकारात्मक चीज़ पवित्र है? (हाँ।) शैतान के वे शब्द शैतान की प्रकृति से आते हैं। शैतान हर जगह लगातार अपनी दुष्ट और द्वेषपूर्ण प्रकृति प्रकट करता रहता है। अब, क्या शैतान ये प्रकाशन स्वाभाविक रूप से करता है? क्या कोई उसे ऐसा करने का निर्देश देता है? क्या कोई उसकी सहायता करता है? क्या कोई उसे विवश करता है? (नहीं।) ये सब प्रकाशन वह स्वत: करता है। यह शैतान की दुष्ट प्रकृति है। जो कुछ भी परमेश्वर करता है और जैसे भी करता है, शैतान उसके पीछे-पीछे चलता है। शैतान द्वारा कही और की जाने वाली इन चीज़ों का सार और उनकी वास्तविक प्रकृति शैतान का सार है—ऐसा सार, जो दुष्ट और द्वेषपूर्ण है। अब, जब हम आगे पढ़ते हैं, तो शैतान और क्या कहता है? आओ, पढ़ें।

मत्ती 4:5-7 तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया, और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है: 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे।'" यीशु ने उससे कहा, "यह भी लिखा है: 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।'"

आओ, पहले शैतान द्वारा यहाँ कहे गए शब्दों को देखें। शैतान ने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे," और तब उसने धर्मग्रंथों से उद्‌धृत किया, "वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे।" शैतान के शब्द सुनकर तुम्हें कैसा लगता है? क्या वे बहुत बचकाने नहीं हैं? वे बचकाने, असंगत और और घृणास्पद हैं। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? शैतान अकसर मूर्खतापूर्ण बातें करता रहता है, और वह स्वयं को बहुत चतुर मानता है। वह प्रायः धर्मग्रंथों के उद्धरण—यहाँ तक कि परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन भी—उद्‌धृत करता है—वह परमेश्वर पर आक्रमण करने और उसे प्रलोभित करने के लिए इन वचनों का उपयोग परमेश्वर के विरुद्ध करने का प्रयास करता है, ताकि उसकी कार्य-योजना को खंडित करने का अपना उद्देश्य पूरा कर सके। क्या तुम शैतान द्वारा कहे गए इन शब्दों में कुछ देख पाते हो? (शैतान बुरे इरादे रखता है।) शैतान ने अपने समस्त कार्यों में हमेशा मानवजाति को प्रलोभित करने की कोशिश की है। वह सीधे तौर पर नहीं बोलता, बल्कि प्रलोभन, छल और फरेब का उपयोग करते हुए गोल-मोल तरीके से बोलता है। शैतान परमेश्वर को भी प्रलोभन देने की कोशिश करता है, मानो वह कोई साधारण मनुष्य हो, और वह यह मानता है कि परमेश्वर भी मनुष्य की ही तरह अज्ञानी, मूर्ख और चीज़ों के सही रूप को स्पष्ट रूप से पहचानने में असमर्थ है। शैतान सोचता है कि परमेश्वर और मनुष्य समान रूप से उसके सार, उसकी चालाकी और उसके कुटिल इरादे को आर-पार देख पाने में असमर्थ हैं। क्या यह शैतान की मूर्खता नहीं है? इतना ही नहीं, शैतान खुल्लम-खुल्ला धर्मग्रंथों को उद्‌धृत करता है, और यह विश्वास करता है कि ऐसा करने से उसे विश्वसनीयता मिलती है, और तुम उसके शब्दों में कोई गलती नहीं पकड़ पाओगे या मूर्ख बनाए जाने से नहीं बच पाओगे। क्या यह शैतान की मूर्खता और बचकानापन नहीं है? यह ठीक वैसा ही है, जैसा जब लोग सुसमाचार को फैलाते हैं और परमेश्वर की गवाही देते हैं : तो क्या अविश्वासी कुछ ऐसा ही नहीं कहते, जैसा शैतान ने कहा था? क्या तुम लोगों ने लोगों को वैसा ही कुछ कहते हुए सुना है? ऐसी बातें सुनकर तुम्हें कैसा लगता है? क्या तुम घृणा महसूस करते हो? (हाँ।) जब तुम घृणा महसूस करते हो, तो क्या तुम अरुचि और विरक्ति भी महसूस करते हो? जब तुम्हारे भीतर ऐसी भावनाएँ होती हैं, तो क्या तुम यह पहचान पाते हो कि शैतान और मनुष्य के भीतर काम करने वाला उसका स्वभाव दुष्ट हैं? क्या अपने दिलों में तुमने कभी ऐसा महसूस किया है : "जब शैतान बोलता है, तो वह ऐसा हमले और प्रलोभन के रूप में करता है; शैतान के शब्द बेतुके, हास्यास्पद, बचकाने और घृणास्पद होते हैं; लेकिन परमेश्वर

कभी इस तरह से नहीं बोलता या कार्य करता और वास्तव में उसने कभी ऐसा नहीं किया है"? निस्संदेह, इस स्थिति में लोग इसे बहुत कम समझ पाते हैं और परमेश्वर की पवित्रता को समझने में असमर्थ रहते हैं। क्या ऐसा नहीं है? अपने वर्तमान आध्यात्मिक कद के साथ तुम लोग मात्र यही महसूस करते हो : "परमेश्वर जो कुछ भी कहता कहता है, सच कहता है, वह हमारे लिए लाभदायक है, और हमें उसे स्वीकार करना चाहिए।" चाहे तुम इसे स्वीकार करने में सक्षम हो या नहीं, बिना अपवाद के तुम कहते हो कि परमेश्वर का वचन सत्य है और यह कि परमेश्वर सत्य है, किंतु तुम यह नहीं जानते कि सत्य स्वयं पवित्र है और यह कि परमेश्वर पवित्र है।

तो शैतान के इन शब्दों पर यीशु की क्या प्रतिक्रिया थी? यीशु ने उससे कहा, "यह भी लिखा है: 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।'" क्या यीशु द्वारा कहे गए इन वचनों में सत्य है? (हाँ।) इनमें सत्य है। ऊपरी तौर पर ये वचन लोगों द्वारा अनुसरण किए जाने के लिए एक आज्ञा हैं, एक सरल वाक्यांश, परंतु फिर भी, मनुष्य और शैतान दोनों ने अकसर इन शब्दों का उल्लंघन किया है। तो, प्रभु यीशु ने शैतान से कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर," क्योंकि शैतान ने प्रायः ऐसा किया था और इसके लिए पूरा प्रयास किया था। यह कहा जा सकता है कि शैतान ने बेशर्मी और ढिठाई से ऐसा किया था। परमेश्वर से न डरना और अपने हृदय में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा न रखना यह शैतान की अनिवार्य प्रकृति है। यहाँ तक कि जब शैतान परमेश्वर के पास खड़ा था और उसे देख सकता था, तब भी वह परमेश्वर को प्रलोभन देने से बाज़ नहीं आया। इसलिए प्रभु यीशु ने शैतान से कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।" ये वे वचन हैं, जो परमेश्वर ने शैतान से प्रायः कहे हैं। तो क्या इस वाक्यांश को वर्तमान समय में लागू किया जाना उपयुक्त है? (हाँ, क्योंकि हम भी अकसर परमेश्वर को प्रलोभन देते हैं।) लोग अकसर परमेश्वर को प्रलोभन क्यों देते हैं? क्या इसका कारण यह है कि लोग भ्रष्ट शैतानी स्वभावों से भरे हुए हैं? (हाँ।) तो क्या शैतान के उपर्युक्त शब्द ऐसे हैं, जिन्हें लोग प्रायः कहते हैं? और किन परिस्थितियों में? कोई यह कह सकता है कि लोग समय और स्थान की परवाह किए बिना ऐसा कहते आ रहे हैं। यह सिद्ध करता है कि लोगों का स्वभाव शैतान के भ्रष्ट स्वभाव से अलग नहीं है। प्रभु यीशु ने कुछ सरल वचन कहे; वचन, जो सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं; वचन, जिनकी लोगों को आवश्यकता है। लेकिन इस स्थिति में क्या प्रभु यीशु इस तरह बोल रहा था, जैसे शैतान से बहस कर रहा हो? क्या जो कुछ उसने शैतान से कहा, उसमें टकराव की कोई बात थी? (नहीं।) प्रभु यीशु ने शैतान के प्रलोभन के संबंध में अपने दिल में कैसा महसूस किया?

क्या उसने तिरस्कार और घृणा महसूस की? (हाँ।) प्रभु यीशु ने तिरस्कार और घृणा महसूस की, फिर भी उसने शैतान से बहस नहीं की, किन्हीं महान सिद्धांतों के बारे में तो उसने बिलकुल भी बात नहीं की। ऐसा क्यों है? (क्योंकि शैतान हमेशा से ऐसा ही है; वह कभी बदल नहीं सकता।) क्या यह कहा जा सकता है कि शैतान विवेकहीन है? (हाँ।) क्या शैतान मान सकता है कि परमेश्वर सत्य है? शैतान कभी नहीं मानेगा कि परमेश्वर सत्य है और कभी स्वीकार नहीं करेगा कि परमेश्वर सत्य है; यह उसकी प्रकृति है। शैतान के स्वभाव का एक और पहलू है, जो घृणास्पद है। वह क्या है? प्रभु यीशु को प्रलोभित करने के अपने प्रयासों में, शैतान ने सोचा कि भले ही वह असफल हो गया हो, फिर भी वह ऐसा करने का प्रयास करेगा। भले ही उसे दंडित किया जाएगा, फिर भी उसने किसी न किसी प्रकार से कोशिश करने का चयन किया। भले ही ऐसा करने से कुछ लाभ नहीं होगा, फिर भी वह कोशिश करेगा, और अपने प्रयासों में दृढ़ रहते हुए बिलकुल अंत तक परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा रहेगा। यह किस तरह की प्रकृति है? क्या यह दुष्टता नहीं है? अगर कोई व्यक्ति परमेश्वर के नाम का उल्लेख किए जाने पर कुपित हो जाता है और क्रोध से फनफना उठता है, क्या उसने परमेश्वर को देखा है? क्या वह जानता है, परमेश्वर कौन है? वह नहीं जानता कि परमेश्वर कौन है, उस पर विश्वास नहीं करता और परमेश्वर ने उससे बात नहीं की है। परमेश्वर ने उसे कभी परेशान नहीं किया है, तो फिर वह गुस्सा क्यों होता है? क्या हम कह सकते हैं कि यह व्यक्ति दुष्ट है? दुनिया के रुझान, भोजन करना, पीना और सुख की खोज, और मशहूर हस्तियाँ का पीछा करना—इनमें से कोई भी चीज़ उन्हें परेशान नहीं करेगी। हालाँकि "परमेश्वर" शब्द के उल्लेख मात्र, अथवा परमेश्वर के वचनों के सत्य पर ही वह आक्रोश से भर जाता है। क्या यह दुष्ट प्रकृति होने का गठन नहीं करती है? यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि इस मनुष्य की प्रकृति दुष्ट है। अब, तुम लोगों की बात करें, क्या ऐसे अवसर आए हैं, जब सत्य का उल्लेख होता है या परमेश्वर द्वारा मानवजाति के परीक्षणों अथवा मनुष्य के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय का उल्लेख किया जाता है, और तुम अरुचि महसूस करते हो; तिरस्कार महसूस करते हो, और ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते? तुम मन में सोचते हो : "क्या सभी लोग नहीं कहते कि परमेश्वर सत्य है? इनमें से कुछ शब्द सत्य नहीं हैं! ये स्पष्ट रूप से सिर्फ परमेश्वर द्वारा मनुष्य की भर्त्सना के वचन हैं!" कुछ लोग अपने दिलों में अरुचि भी महसूस कर सकते हैं और सोच सकते हैं : "यह हर दिन बोला जाता है—उसके परीक्षण, उसका न्याय, यह कब ख़त्म होगा? हमें अच्छी मंज़िल कब मिलेगी?" पता नहीं, यह अनुचित क्रोध कहाँ से आता है। यह किस प्रकार की प्रकृति है? (दुष्ट प्रकृति।) यह शैतान की दुष्ट

प्रकृति से निर्देशित और मार्गदर्शित होती है। परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से, शैतान की दुष्ट प्रकृति और मनुष्य के भ्रष्ट स्वभाव के संबंध में वह कभी बहस नहीं करता या लोगों के प्रति द्वेष नहीं रखता, और जब मनुष्य मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं, तो वह कभी बात का बतंगड़ नहीं बनाता। तुम परमेश्वर को चीज़ों के संबंध में मनुष्यों जैसे विचार रखते नहीं देखोगे, और इतना ही नहीं, उसे तुम चीज़ों को सँभालने के लिए मनुष्य के दृष्टिकोणों, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन या कल्पना का उपयोग करते हुए नहीं देखोगे। इसके बजाय, परमेश्वर जो कुछ भी करता है और जो कुछ भी वह प्रकट करता है, वह सत्य से जुड़ा है। अर्थात्, उसका कहा हर वचन और उसका किया हर कार्य सच से संबंधित है। यह सत्य किसी आधारहीन कल्पना की उपज नहीं है; यह सत्य और ये वचन परमेश्वर द्वारा अपने सार और अपने जीवन के आधार पर व्यक्त किए जाते हैं। चूँकि ये वचन और परमेश्वर द्वारा की गई हर चीज़ का सार सत्य हैं, इसलिए हम कह सकते हैं कि परमेश्वर का सार पवित्र है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक बात जो परमेश्वर कहता और करता है, वह लोगों के लिए जीवन-शक्ति और प्रकाश लाती है; वह लोगों को सकारात्मक चीजें और उन सकारात्मक चीज़ों की वास्तविकता देखने में सक्षम बनाती है, और मनुष्यों को राह दिखाती है, ताकि वे सही मार्ग पर चलें। ये सब चीज़ें परमेश्वर के सार और उसकी पवित्रता के सार द्वारा निर्धारित की जाती हैं। तुम लोग अब इसे देखते हो, है न? अब हम धर्मग्रंथ का एक और अंश पढ़ेंगे।

मत्ती 4:8-11 फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा।" तब यीशु ने उससे कहा, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

शैतान इब्लीस ने अपनी पिछली दो चालों में असफल होने के बाद एक और कोशिश की : उसने प्रभु यीशु को दुनिया के समस्त राज्य और उनका वैभव दिखाया और उससे अपनी आराधना करने के लिए कहा। इस स्थिति से तुम शैतान के वास्तविक लक्षणों के बारे में क्या देख सकते हो? क्या इब्लीस शैतान पूरी तरह से बेशर्म नहीं है? (हाँ, है।) वह कैसे बेशर्म है? सभी चीज़ें परमेश्वर द्वारा रची गई थीं, फिर भी शैतान ने पलटकर परमेश्वर को सारी चीज़ें दिखाईं और कहा, "इन सभी राज्यों की संपत्ति और वैभव देख। अगर तू मेरी उपासना करे, तो मैं यह सब तुझे दे दूँगा।" क्या यह पूरी तरह से भूमिका उलटना नहीं है?

क्या शैतान बेशर्म नहीं है? परमेश्वर ने सारी चीज़ें बनाईं, पर क्या उसने सारी चीज़ें अपने उपभोग के लिए बनाईं? परमेश्वर ने हर चीज़ मनुष्य को दे दी, लेकिन शैतान उन सबको अपने कब्ज़े में करना चाहता था और उन्हें अपने कब्ज़े में करने के बाद उसने पमेश्वर से कहा, "मेरी आराधना कर! मेरी आराधना कर और मैं यह सब तुझे दे दूँगा।" यह शैतान का बदसूरत चेहरा है; यह पूर्णतः बेशर्म है? यहाँ तक कि शैतान "शर्म" शब्द का मतलब भी नहीं जानता। यह उसकी दुष्टता का सिर्फ एक और उदाहरण है। वह यह भी नहीं जानता कि "शर्म" क्या होती है। शैतान स्पष्ट रूप से जानता है कि परमेश्वर ने सारी चीज़ें बनाईं और कि वह सभी चीज़ों का प्रबंधन करता है और उन पर उसकी प्रभुता है। सारी चीज़ें मनुष्य की नहीं हैं, शैतान की तो बिलकुल भी नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर की हैं, और फिर भी इब्लीस शैतान ने ढिठाई से कहा कि वह सारी चीज़ें परमेश्वर को दे देगा। क्या यह शैतान के एक बार फिर बेतुकेपन और बेशर्मी से कार्य करने का एक और उदाहरण नहीं है? यह परमेश्वर के शैतान से और अधिक घृणा करने का कारण बनता है, है न? फिर भी, शैतान ने चाहे जो भी कोशिश की, पर क्या प्रभु यीशु उसके झाँसे में आया? प्रभु यीशु ने क्या कहा? ("तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।") क्या इन वचनों का कोई व्यावहारिक अर्थ है? (हाँ, है।) किस प्रकार का व्यवहारिक अर्थ? हम शैतान की वाणी में उसकी दुष्टता और बेशर्मी देखते हैं। तो अगर मनुष्य शैतान की उपासना करेंगे, तो क्या परिणाम होगा? क्या उन्हें सभी राज्यों का धन और वैभव मिल जाएगा? (नहीं।) उन्हें क्या मिलेगा? क्या मनुष्य शैतान जितने ही बेशर्म और हास्यास्पद बन जाएँगे? (हाँ।) तब वे शैतान से भिन्न नहीं होंगे। इसलिए, प्रभु यीशु ने ये वचन कहे, जो हर एक इंसान के लिए महत्वपूर्ण हैं : "तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" इसका अर्थ है कि प्रभु के अलावा, स्वयं परमेश्वर के अलावा, अगर तुम किसी दूसरे की उपासना करते हो, अगर तुम इब्लीस शैतान की उपासना करते हो, तो तुम उसी गंदगी में लोट लगाओगे, जिसमें शैतान लगाता है। तब तुम शैतान की बेशर्मी और उसकी दुष्टता साझा करोगे, और ठीक शैतान की ही तरह तुम परमेश्वर को प्रलोभित करोगे और उस पर हमला करोगे। तब तुम्हारा क्या अंत होगा? परमेश्वर तुमसे घृणा करेगा, परमेश्वर तुम्हें मार गिराएगा, परमेश्वर तुम्हें नष्ट कर देगा। प्रभु यीशु को कई बार प्रलोभन देने में असफल होने के बाद क्या शैतान ने फिर कोशिश की? शैतान ने फिर कोशिश नहीं की और फिर वह चला गया। इससे क्या साबित होता है? इससे यह साबित होता है कि शैतान की दुष्ट प्रकृति, उसकी दुर्भावना, उसकी बेहूदगी और उसकी असंगतता परमेश्वर के सामने उल्लेख करने योग्य भी नहीं है। प्रभु

यीशु ने शैतान को केवल तीन वाक्यों से परास्त कर दिया, जिसके बाद वह दुम दबाकर खिसक गया, और इतना शर्मिंदा हुआ कि चेहरा दिखाने लायक भी नहीं रहा, और उसने फिर कभी प्रभु को प्रलोभन नहीं दिया। चूँकि प्रभु यीशु ने शैतान के इस प्रलोभन को परास्त दिया, इसलिए अब वह आसानी से अपने उस कार्य को जारी रख सकता था, जो उसे करना था और जो कार्य उसके सामने पड़े थे। क्या इस परिस्थिति में जो कुछ प्रभु यीशु ने कहा और किया, अगर उसे वर्तमान समय में प्रयोग में लाया जाए, तो क्या प्रत्येक मनुष्य के लिए उसका कोई व्यावहारिक अर्थ है? (हाँ, है।) किस प्रकार का व्यावहारिक अर्थ? क्या शैतान को हराना आसान बात है? क्या लोगों को शैतान की दुष्ट प्रकृति की स्पष्ट समझ होनी चाहिए? क्या लोगों को शैतान के प्रलोभनों की सही समझ होनी चाहिए? (हाँ।) जब तुम अपने जीवन में शैतान के प्रलोभनों का अनुभव करते हो, अगर तुम शैतान की दुष्ट प्रकृति को आर-पार देखने में समर्थ हो, तो क्या तुम उसे हराने में सक्षम नहीं होगे? अगर तुम शैतान की बेहूदगी और असंगतता के बारे में जानते हो, तो क्या फिर भी तुम शैतान के साथ खड़े होगे और परमेश्वर पर हमला करोगे? अगर तुम समझ जाओ कि कैसे शैतान की दुर्भावना और बेशर्मी तुम्हारे माध्यम से प्रकट होती हैं—अगर तुम इन चीज़ों को स्पष्ट रूप से पहचान और समझ जाओ—तो क्या तुम फिर भी परमेश्वर पर इस प्रकार हमला करोगे और उसे प्रलोभित करोगे? (नहीं, हम नहीं करेंगे।) तुम क्या करोगे? (हम शैतान के विरुद्ध विद्रोह करेंगे और उसका परित्याग कर देंगे।) क्या यह आसान कार्य है? यह आसान नहीं है। ऐसा करने के लिए लोगों को लगातार प्रार्थना करनी चाहिए, उन्हें अपने को बार-बार परमेश्वर के सामने रखना चाहिए और स्वयं को जाँचना चाहिए। और उन्हें परमेश्वर के अनुशासन और उसके न्याय तथा ताड़ना को अपने ऊपर आने देना चाहिए। केवल इसी तरह से लोग धीरे-धीरे अपने आपको शैतान के धोखे और नियंत्रण से मुक्त करेंगे।

अब, शैतान द्वारा बोले गए इन सभी शब्दों को देखकर हम उन चीज़ों को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे, जो शैतान के सार का निर्माण करती हैं। पहली बात, शैतान के सार को सामान्यतया दुष्टता कहा जा सकता है, जो परमेश्वर की पवित्रता के विपरीत है। मैं क्यों कहता हूँ कि शैतान का सार दुष्टता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए व्यक्ति को, जो कुछ शैतान लोगों के साथ करता है, उसके परिणामों की जाँच करनी चाहिए। शैतान मनुष्य को भ्रष्ट और नियंत्रित करता है, और मनुष्य शैतान के भ्रष्ट स्वभाव के तहत काम करता है, और वह शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए लोगों की दुनिया में रहता है। मानवजाति अनजाने ही शैतान द्वारा अधिकृत और आत्मसात कर ली जाती है; इसलिए मनुष्य में शैतान का भ्रष्ट स्वभाव है, जो कि शैतान की

प्रकृति है। शैतान द्वारा कही और की गई हर चीज़ से, क्या तुमने उसका अंहकार देखा है? क्या तुमने उसका छल और द्वेष देखा है। शैतान का अंहकार मुख्य रूप से कैसे प्रदर्शित होता है? क्या शैतान सदैव परमेश्वर का स्थान लेने की इच्छा रखता है? शैतान हमेशा परमेश्वर के कार्य और पद को खंडित करने और उसे खुद हथियाने की चाह रखता है, ताकि लोग शैतान का अनुसरण, समर्थन और उसकी आराधना करें; यह शैतान की अंहकारी प्रकृति है। जब शैतान लोगों को भ्रष्ट करता है, तो क्या वह उनसे सीधे कहता है कि उन्हें क्या करना चाहिए? जब शैतान परमेश्वर को प्रलोभित करता है, तो क्या वह सामने आकर कहता है कि, "मैं तुझे प्रलोभित कर रहा हूँ, मैं तुझ पर हमला करने जा रहा हूँ"? वह ऐसा बिलकुल नहीं करता। शैतान कौन-सा तरीका इस्तेमाल करता है? वह बहकाता है, प्रलोभित करता है, हमला करता है, और अपना जाल बिछाता है, और यहाँ तक कि धर्मग्रंथों को भी उद्‌धृत करता है। अपने कुटिल उद्देश्य हासिल करने और अपने इरादे पूरे करने के लिए शैतान कई तरीकों से बोलता और कार्य करता है। शैतान के ऐसा कर लेने के बाद मनुष्य में जो अभिव्यक्त होता है, उससे क्या देखा जा सकता है? क्या लोग भी अंहकारी़ नहीं हो जाते? हजारों सालों से मनुष्य शैतान की भ्रष्टता से पीड़ित रहा है, इसलिए मनुष्य अहंकारी, धोखेबाज, दुर्भावनाग्रस्त और विवेकहीन हो गया है। ये सभी चीज़ें शैतान की प्रकृति के कारण उत्पन्न हुई हैं। चूँकि शैतान की प्रकृति दुष्ट है, इसलिए इसने मनुष्य को यह दुष्ट प्रकृति दी है और उसे यह दुष्ट, भ्रष्ट स्वभाव प्रदान किया है। इसलिए मनुष्य भ्रष्ट शैतानी स्वभाव के तहत जीता है और शैतान की ही तरह, परमेश्वर का विरोध करता है, परमेश्वर पर हमला करता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकता, उसके प्रति श्रद्धा रखने वाला हृदय नहीं रखता।

जहाँ तक परमेश्वर की पवित्रता का संबंध है, भले ही यह एक परिचित विषय हो, किंतु यह एक ऐसा विषय है, जिसके बारे में बात करने पर कुछ लोगों के लिए यह थोड़ा अमूर्त हो सकता है, और कुछ गहन और उनकी पहुँच से परे हो सकता है। लेकिन चिंता करने की ज़रूरत नहीं। मैं तुम लोगों की यह समझने में सहायता करूँगा कि परमेश्वर की पवित्रता क्या है? यह समझने के लिए कि कोई किस तरह का व्यक्ति है, यह देखो कि वह क्या करता है और उसके कार्यों के परिणाम देखो, और फिर तुम उस व्यक्ति का सार देखने में समर्थ हो जाओगे। क्या इसे इस तरह से कहा जा सकता है? (हाँ।) तो फिर, आओ पहले हम इस परिप्रेक्ष्य से परमेश्वर की पवित्रता पर संगति करें। यह कहा जा सकता है कि शैतान का सार दुष्टता है, और इसलिए मनुष्य के प्रति शैतान के कार्यकलाप उसे अनवरत रूप से भ्रष्ट करते रहे हैं। शैतान दुष्ट है,

इसलिए जिन लोगों को उसने भ्रष्ट किया है, वे भी निश्चित रूप से दुष्ट हैं, है न? क्या कोई कहेगा, "शैतान दुष्ट है, लेकिन शायद कोई, जिसे इसने भ्रष्ट किया है, पवित्र हो?" यह एक मज़ाक होगा, है न? क्या यह संभव है? (नहीं।) शैतान दुष्ट है, और उसकी दुष्टता के भीतर एक आवश्यक और एक व्यावहारिक दोनों पक्ष निहित हैं। यह कोई खोखली बात नहीं है। हम शैतान को बदनाम करने का प्रयत्न नहीं कर रहे; हम सत्य और वास्तविकता के बारे में संगति मात्र कर रहे हैं। इस विषय की वास्तविकता पर संगति करने से कुछ लोगों को या लोगों के किसी खास उप-वर्ग को ठेस पहुँच सकती है, परंतु इसमें कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं है; शायद तुम लोग इसे आज सुनोगे और थोड़ा असहज अनुभव करोगे, किंतु शीघ्र ही किसी दिन, जब तुम उसे पहचानने में समर्थ हो जाओगे, तो तुम लोग अपने आपसे घृणा करोगे, और महसूस करोगे कि आज मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ, वह तुम लोगों के लिए बहुत उपयोगी है और बहुत मूल्यवान है। शैतान का सार दुष्टता है, इसलिए क्या हम यह कह सकते हैं कि शैतान के कार्यों के परिणाम भी अपरिहार्य रूप से दुष्ट हैं, या कम से कम, उसकी दुष्टता से जुड़े हैं? (हाँ।) तो शैतान लोगों को किस तरह भ्रष्ट करता है? दुनिया में और लोगों के बीच शैतान जो दुष्टता करता है, उसके कौन-से विशिष्ट पहलू लोगों को प्रत्यक्ष और दृष्टिगोचर होते हैं? क्या तुम लोगों ने पहले कभी इस बारे में सोचा है? शायद तुम लोगों ने इस पर ज्यादा विचार नहीं किया होगा, इसलिए मैं कुछ मुख्य बिंदुओं का उल्लेख कर देता हूँ। हर कोई शैतान द्वारा प्रस्तावित विकास के सिद्धांत को जानता है, है न? यह मनुष्य द्वारा अध्ययन किया गया ज्ञान का एक क्षेत्र है, है न? (हाँ, है।) इसलिए शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए पहले ज्ञान का उपयोग करता है, और उन्हें ज्ञान प्रदान करने के लिए अपने खुद के शैतानी तरीकों का इस्तेमाल करता है। फिर वह उन्हें भ्रष्ट करने के लिए विज्ञान का इस्तेमाल करता है और ज्ञान, विज्ञान, रहस्यमयी मामलों या उन मामलों में, जिनकी लोग खोज करना चाहते हैं, उनकी रुचि जगाता है। मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली अन्य चीज़ें हैं पारंपरिक संस्कृति और अंधविश्वास, और उसके बाद, सामाजिक प्रवृत्तियाँ। ये वे चीज़ें हैं, जिनसे लोगों का उनके दैनिक जीवन में सामना होता है, और ये सब लोगों के बिलकुल आसपास मौजूद हैं; ये सभी उन चीज़ों से जुड़ी हैं, जिन्हें वे देखते हैं, सुनते हैं, स्पर्श करते हैं और जिनका वे अनुभव करते हैं। कोई यह कह सकता है कि प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन इन्हीं चीज़ों से घिरा हुआ जीता है और चाहकर भी इनसे बच नहीं सकता या मुक्त नहीं हो सकता। इन चीज़ों के सामने मनुष्यजाति असहाय है, और मनुष्य सिर्फ उनसे प्रभावित, संक्रमित, नियंत्रित और बाध्य होने के सिवा कुछ

नहीं कर सकता; मनुष्य के पास खुद को इनसे छुड़ाने की ताकत नहीं है।

1. शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग कैसे करता है

पहले हम ज्ञान के बारे में बात करेंगे। क्या ज्ञान ऐसी चीज़ है, जिसे हर कोई सकारात्मक चीज़ मानता है? लोग कम से कम यह तो सोचते ही हैं कि "ज्ञान" शब्द का संकेतार्थ नकारात्मक के बजाय सकारात्मक है। तो हम यहाँ क्यों उल्लेख कर रहे हैं कि शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग करता है? क्या विकास का सिद्धांत ज्ञान का एक पहलू नहीं है? क्या न्यूटन के वैज्ञानिक नियम ज्ञान का भाग नहीं हैं? पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण भी ज्ञान का ही एक भाग है, है न? (हाँ।) तो फिर ज्ञान क्यों उन चीज़ों में सूचीबद्ध है, जिन्हें शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए इस्तेमाल करता है? तुम लोगों का इस बारे में क्या विचार है? क्या ज्ञान में सत्य का लेश मात्र भी होता है? (नहीं।) तो ज्ञान का सार क्या है? मनुष्य द्वारा प्राप्त किए जाने वाले समस्त ज्ञान का आधार क्या है? क्या यह विकास के सिद्धांत पर आधारित है? क्या मनुष्य द्वारा खोज और संकलन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान नास्तिकता पर आधारित नहीं है? क्या ऐसे किसी ज्ञान का परमेश्वर के साथ कोई संबंध है? क्या यह परमेश्वर की उपासना करने के साथ जुड़ा है? क्या यह सत्य के साथ जुड़ा है? (नहीं।) तो शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग कैसे करता है? मैंने अभी-अभी कहा कि इसमें से कोई भी ज्ञान परमेश्वर की उपासना करने या सत्य के साथ नहीं जुड़ा है। कुछ लोग इस बारे में इस तरह सोचते हैं : "हो सकता है, ज्ञान का सत्य से कोई लेना-देना न हो, किंतु फिर भी, यह लोगों को भ्रष्ट नहीं करता।" तुम लोगों का इस बारे में क्या विचार है? क्या तुम्हें ज्ञान के द्वारा यह सिखाया गया है कि व्यक्ति की खुशी उसके अपने दो हाथों द्वारा सृजित होनी चाहिए? क्या ज्ञान ने तुम्हें यह सिखाया कि मनुष्य का भाग्य उसके अपने हाथों में है? (हाँ।) यह कैसी बात है? (यह शैतानी बात है।) बिलकुल सही! यह शैतानी बात है! ज्ञान चर्चा का एक जटिल विषय है। तुम बस यह कह सकते हो कि ज्ञान का क्षेत्र ज्ञान से अधिक कुछ नहीं है। ज्ञान का यह क्षेत्र ऐसा है, जिसे परमेश्वर की उपासना न करने और परमेश्वर द्वारा सब चीज़ों का निर्माण किए जाने की बात न समझने के आधार पर सीखा जाता है। जब लोग इस प्रकार के ज्ञान का अध्ययन करते हैं, तो वे यह नहीं देखते कि सभी चीज़ों पर परमेश्वर का प्रभुत्व है; वे नहीं देखते कि परमेश्वर सभी चीज़ों का प्रभारी है या सभी चीज़ों का प्रबंधन करता है। इसके बजाय, वे जो कुछ भी करते हैं, वह है ज्ञान के क्षेत्र का अंतहीन अनुसंधान और खोज, और वे ज्ञान के आधार पर उत्तर खोजते हैं। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि अगर लोग परमेश्वर पर विश्वास नहीं करेंगे और इसके बजाय केवल

अनुसंधान करेंगे, तो वे कभी भी सही उत्तर नहीं पाएँगे? वह सब ज्ञान तुम्हें केवल जीविकोपार्जन, एक नौकरी, आमदनी दे सकता है, ताकि तुम भूखे न रहो; किंतु वह तुम्हें कभी भी परमेश्वर की आराधना नहीं करने देगा, और वह कभी भी तुम्हें बुराई से दूर नहीं रखेगा। जितना अधिक तुम ज्ञान का अध्ययन करोगे, उतना ही अधिक तुम परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने, परमेश्वर को अपने अध्ययन के अधीन करने, परमेश्वर को प्रलोभित करने और परमेश्वर का विरोध करने की इच्छा करोगे। तो अब हम क्या देखते हैं कि ज्ञान लोगों को क्या सिखा रहा है? यह सब शैतान का फ़लसफ़ा है। क्या शैतान द्वारा भ्रष्ट मनुष्यों के बीच फैलाए गए फ़लसफ़ों और जीवित रहने के नियमों का सत्य से कोई संबंध है? उनका सत्य से कोई लेना-देना नहीं है, और वास्तव में, वे सत्य के विपरीत हैं। लोग प्रायः कहते हैं, "जीवन गति है" और "मनुष्य लोहा है, चावल इस्पात है, अगर मनुष्य एक बार का भोजन छोड़ता है, तो वह भूख से बेज़ार महसूस करता है"; ये क्या कहावतें हैं? ये भुलावे हैं और इन्हें सुनने से घृणा की भावना पैदा होती है। मनुष्य के तथाकथित ज्ञान में शैतान ने अपने जीवन का फ़लसफ़ा और अपनी सोच काफी कुछ भर दी है। और जब शैतान ऐसा करता है, तो वह मनुष्य को अपनी सोच, फ़लसफ़ा और दृष्टिकोण अपनाने देता है, ताकि मनुष्य परमेश्वर के अस्तित्व को नकार सके, सभी चीज़ों और मनुष्य के भाग्य पर परमेश्वर के प्रभुत्व को नकार सके। तो जब मनुष्य का अध्ययन आगे बढ़ता है और वह अधिक ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह परमेश्वर के अस्तित्व को धुँधला होता महसूस करता है, और फिर वह यह भी महसूस कर सकता है कि परमेश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। चूँकि शैतान ने अपने दृष्टिकोण, अवधारणाएँ और विचार मनुष्य के मन में भर दिए हैं, तो क्या इस प्रक्रिया में मनुष्य भ्रष्ट नहीं होता? (हाँ।) अब मनुष्य अपना जीवन किस पर आधारित कर लेता है? क्या वह सचमुच इस ज्ञान पर जी रहा है? नहीं; मनुष्य अपने जीवन को शैतान के उन विचारों, दृष्टिकोणों और फ़लसफ़ों पर आधारित कर रहा है, जो इस ज्ञान के भीतर छिपे हैं। यहीं पर शैतान द्वारा मनुष्य की भ्रष्टता का अनिवार्य अंश घटित होता है; यह शैतान का लक्ष्य और मनुष्य को भ्रष्ट करने की विधि दोनों है।

हम ज्ञान के सबसे सतही पहलू पर चर्चा से शुरुआत करेंगे। क्या भाषाओं का व्याकरण और शब्द लोगों को भ्रष्ट करने में समर्थ हैं? क्या शब्द लोगों को भ्रष्ट कर सकते हैं? (नहीं।) शब्द लोगों को भ्रष्ट नहीं करते; वे एक उपकरण हैं, जिसका लोग बोलने के लिए इस्तेमाल करते हैं, और वे वह उपकरण भी हैं, जिसका लोग परमेश्वर के साथ संवाद करने के लिए इस्तेमाल करते हैं, और इतना ही नहीं, वर्तमान समय में भाषा और शब्द ही हैं, जिनसे परमेश्वर लोगों के साथ संवाद करता है। वे उपकरण हैं, और वे एक

आवश्यकता हैं। एक और एक दो होते हैं, और दो गुणा दो चार होते हैं; क्या यह ज्ञान नहीं है? पर क्या यह तुम्हें भ्रष्ट कर सकता है? यह सामान्य ज्ञान है—यह एक निश्चित प्रतिमान है—और इसलिए यह लोगों को भ्रष्ट नहीं कर सकता। तो किस तरह का ज्ञान लोगों को भ्रष्ट करता है? भ्रष्ट करने वाला ज्ञान वह ज्ञान होता है, जिसमें शैतान के दृष्टिकोणों और विचारों की मिलावट होती है। शैतान इन दृष्टिकोणों और विचारों को ज्ञान के माध्यम से मानवजाति में भरने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, किसी लेख में, लिखित शब्दों में अपने आपमें कुछ ग़लत नहीं होता। समस्या लेखक के दृष्टिकोण और अभिप्राय में होती है, जब वह लेख लिखता है, और साथ ही उसके विचारों की अंतर्वस्तु में। ये आत्मा की चीज़ें हैं, और वे लोगों को भ्रष्ट करने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, अगर तुम टेलीविज़न पर कोई कार्यक्रम देख रहे हो, तो उसमें किस प्रकार की चीज़ें लोगों का दृष्टिकोण बदल सकती हैं? क्या कलाकारों द्वारा कहे गए शब्द खुद लोगों को भ्रष्ट करने में सक्षम होगे? (नहीं।) किस प्रकार की चीज़ें लोगों को भ्रष्ट करेंगी? ये कार्यक्रम के मुख्य विचार और विषय-वस्तु होंगे, जो निर्देशक के विचारों का प्रतिनिधित्व करेंगे। इन विचारों द्वारा वहन की गई सूचना लोगों के मन और मस्तिष्क को प्रभावित कर सकती है। क्या ऐसा नहीं है? अब तुम लोग जानते हो कि मैं अपनी चर्चा में शैतान द्वारा लोगों को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग करने के संदर्भ में क्या कह रहा हूँ। तुम ग़लत नहीं समझोगे, है न? तो अगली बार जब तुम कोई उपन्यास या लेख पढ़ोगे, तो क्या तुम आकलन कर सकोगे कि लिखित शब्दों में व्यक्त किए गए विचार मनुष्य को भ्रष्ट करते हैं या मानवजाति के लिए योगदान करते हैं? (हाँ, कुछ हद तक।) यह ऐसी चीज़ है, जिसे धीमी गति से पढ़ा और अनुभव किया जाना चाहिए, और यह ऐसी चीज़ नहीं है, जिसे तुरंत आसानी से समझ लिया जाए। उदाहरण के लिए, ज्ञान के किसी क्षेत्र में शोध या अध्ययन करते समय, उस ज्ञान के कुछ सकारात्मक पहलू उस क्षेत्र के बारे में कुछ सामान्य ज्ञान समझने में सहायता कर सकते हैं, साथ ही यह जानने में भी सक्षम बना सकते हैं कि किन चीज़ों से लोगों को बचना चाहिए। उदाहरण के लिए "बिजली" को लो—यह ज्ञान का एक क्षेत्र है, है न? अगर तुम्हें यह पता न होता कि बिजली लोगों को झटका मार सकती है और चोट पहुँचा सकती है, तो क्या तुम अनभिज्ञ न होते? किंतु एक बार ज्ञान के इस क्षेत्र को समझ लेने पर तुम बिजली के करेंट वाली चीज़ों को छूने में लापरवाही नहीं बरतोगे, और तुम जान जाओगे कि बिजली का उपयोग कैसे करना है। ये दोनों सकारात्मक बातें हैं। क्या अब तुम लोगों को स्पष्ट हो गया है कि ज्ञान लोगों को किस तरह भ्रष्ट करता है, इस बारे में हम क्या चर्चा कर रहे हैं? दुनिया में कई प्रकार के ज्ञान का अध्ययन किया जाता है और तुम

लोगों को स्वयं उनमें अंतर करने के लिए अपना समय देना चाहिए।

2. शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए विज्ञान का उपयोग कैसे करता है

विज्ञान क्या है? क्या विज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के मन में बड़ी प्रतिष्ठा नहीं रखता और अगाध नहीं माना जाता? जब विज्ञान का उल्लेख किया जाता है, तो क्या लोग ऐसा महसूस नहीं करते : "यह एक ऐसी चीज़ है, जो सामान्य लोगों की पहुँच से परे है; यह ऐसा विषय है, जिसे केवल वैज्ञानिक शोधकर्ता या विशेषज्ञ ही स्पर्श कर सकते हैं; इसका हम जैसे आम लोगों से कुछ लेना-देना नहीं है"? क्या इसका आम लोगों के साथ कोई संबंध है? (हाँ।) शैतान लोगों को भ्रष्ट करने के लिए विज्ञान का उपयोग कैसे करता है? हम यहाँ अपनी चर्चा में केवल उन चीज़ों के बारे में बात करेंगे, जिनसे लोगों का अपने जीवन में बार-बार सामना होता है, और अन्य मामलों को नज़रअंदाज़ कर देंगे। एक शब्द है "जींस।" क्या तुमने यह शब्द सुना है? तुम सब इस शब्द से परिचित हो, है न? क्या जींस विज्ञान के माध्यम से नहीं खोजे गए थे? लोगों के लिए जींस ठीक-ठीक क्या मायने रखते हैं? क्या ये लोगों को यह महसूस नहीं कराते कि शरीर एक रहस्यमयी चीज़ है? जब लोगों को इस विषय से परिचित कराया जाएगा, तो क्या कुछ लोग ऐसे नहीं होंगे—विशेषकर जिज्ञासु—जो और अधिक जानना चाहेंगे या और अधिक विवरण पाना चाहेंगे? ये जिज्ञासु लोग अपनी ऊर्जा इस विषय पर केंद्रित करेंगे और जब उनके पास कोई और चीज़ करने को नहीं होगी, तो वे इसके बारे में और अधिक विवरण पाने के लिए पुस्तकों में और इंटरनेट पर जानकारी खोजेंगे। विज्ञान क्या है? स्पष्ट रूप से कहूँ तो, विज्ञान उन चीज़ों से संबंधित विचार और सिद्धांत हैं, जिनके बारे में मनुष्य जिज्ञासु है, जो अज्ञात चीज़ें हैं, और जो उन्हें परमेश्वर द्वारा नहीं बताई गई हैं; विज्ञान उन रहस्यों से संबंधित विचार और सिद्धांत हैं, जिन्हें मनुष्य खोजना चाहता है। विज्ञान का दायरा क्या है? तुम कह सकते हो कि बल्कि यह बृहद है; उस हल चीज़ में शोध और अध्ययन करता है जिसमें उसकी रुचि होती है। विज्ञान में इन चीज़ों के विवरण और नियमों का शोध करना और फिर वे संभावित सिद्धांत सामने लाना शामिल है, जो हर किसी को सोचने पर मजबूर कर देते हैं : "ये वैज्ञानिक सचमुच ज़बर्दस्त हैं। वे इतना अधिक जानते हैं, इन चीज़ों को समझने के लिए इनमें बहुत ज्ञान है!" उनके मन में वैज्ञानिकों के लिए बहुत सराहना होती है, है न? जो लोग विज्ञान संबंधी शोध करते हैं, वे किस तरह के विचार रखते हैं? क्या वे ब्रहमांड का शोध नहीं करना चाहते, अपनी रुचि के क्षेत्र में रहस्यमयी चीज़ों पर शोध नहीं करना चाहते? इसका अंतिम परिणाम क्या है? कुछ विज्ञानों में लोग अनुमानों के आधार पर अपने निष्कर्ष निकालते हैं, और अन्य विज्ञानों में वे निष्कर्ष निकालने के

लिए मानव-अनुभव पर भरोसा करते हैं। विज्ञान के दूसरे क्षेत्रों में लोग ऐतिहासिक और पृष्ठभूमिगत अवलोकनों के आधार पर अपने निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। क्या ऐसा नहीं है? तो विज्ञान लोगों के लिए क्या करता है? विज्ञान सिर्फ इतना करता है कि लोगों को भौतिक जगत में चीज़ों को देखने देता है और मनुष्य की जिज्ञासा शांत करता है, पर यह मनुष्य को उन नियमों को देखने में सक्षम नहीं बनाता, जिनके द्वारा परमेश्वर सब चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है। मनुष्य विज्ञान में उत्तर पाता प्रतीत होता है, किंतु वे उत्तर उलझन में डालने वाले होते हैं और केवल अस्थायी संतुष्टि लाते हैं, ऐसी संतुष्टि, जो मनुष्य के मन को केवल भौतिक संसार तक सीमित रखने का काम करती है। मनुष्यों को महसूस होता है कि उन्हें विज्ञान से उत्तर मिले हैं, इसलिए जो कोई भी मामला उठता है, वे उस मामले को साबित या स्वीकृत करने के लिए आधार के रूप में अपने वैज्ञानिक विचारों का ही इस्तेमाल करते हैं। मनुष्य का मन विज्ञान से आविष्ट हो जाता है और उससे इस हद तक बहक जाता है कि वह परमेश्वर को जानने, परमेश्वर की उपासना करने और यह मानने को तैयार नहीं होता कि सभी चीज़ें परमेश्वर से आती हैं, और उत्तर पाने के लिए मनुष्य को उसकी ओर देखना चाहिए। क्या यह सच नहीं है? लोग जितना अधिक विज्ञान में विश्वास करते हैं, उतने ही अधिक बेतुके हो जाते हैं और यह मानने लगते हैं कि हर चीज़ का एक वैज्ञानिक समाधान होता है, कि शोध किसी भी चीज़ का समाधान कर सकता है। वे परमेश्वर को नहीं खोजते और वे यह विश्वास नहीं करते कि उसका अस्तित्व है, यहाँ तक कि कई सालों तक परमेश्वर का अनुसरण करने वाले कुछ लोग भी सनक में आकर बैक्टीरिया की खोज करने चले जाते हैं या किसी मुद्दे के जवाब के लिए जानकारी खोजने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति मुद्दों को सत्य के परिप्रेक्ष्य से नहीं देखते और अधिकांश मामलों में वे समस्याओं का समाधान करने के लिए वैज्ञानिक विचारों या ज्ञान या वैज्ञानिक समाधानों पर भरोसा करना चाहते हैं; वे परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते, और वे परमेश्वर की खोज नहीं करते। क्या ऐसे लोगों के हृदय में परमेश्वर होता है? (नहीं।) कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जो परमेश्वर की खोज भी उसी तरह से करना चाहते हैं, जैसे वे विज्ञान का अध्ययन करते हैं। उदाहरण के लिए, कई धर्म-विशेषज्ञ हैं, जो उस स्थान पर गए हैं, जहाँ महान जल-प्रलय के बाद जहाज़ रुका था, और इस प्रकार उन्होंने जहाज़ के अस्तित्व को प्रमाणित कर दिया है। किंतु जहाज के प्रकटन में वे परमेश्वर के अस्तित्व को नहीं देखते। वे केवल कहानियों और इतिहास पर विश्वास करते हैं; यह उनके वैज्ञानिक शोध और भौतिक संसार के अध्ययन का परिणाम है। अगर तुम भौतिक चीजों पर शोध करोगे, चाहे वह सूक्ष्म जीवविज्ञान हो, खगोलशास्त्र हो या भूगोल हो, तो तुम कभी ऐसा परिणाम नहीं

पाओगे, जो यह निर्धारित करता हो कि परमेश्वर का अस्तित्व है या यह कि वह सभी चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है। तो विज्ञान मनुष्य के लिए क्या करता है? क्या वह मनुष्य को परमेश्वर से दूर नहीं करता? क्या वह लोगों को परमेश्वर को अध्ययन के अधीन करने के लिए प्रेरित नहीं करता? क्या वह लोगों को परमेश्वर के अस्तित्व के बारे अधिक संशयात्मक नहीं बनाता? (हाँ।) तो शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए विज्ञान का उपयोग कैसे करना चाहता है? क्या शैतान लोगों को धोखा देने और संज्ञाहीन करने के लिए वैज्ञानिक निष्कर्षों का उपयोग नहीं करना चाहता, और उनके हृदयों पर पकड़ बनाने के लिए अस्पष्ट उत्तरों का उपयोग नहीं करता, ताकि वे परमेश्वर के अस्तित्व की खोज या उस पर विश्वास न करें? (हाँ।) इसीलिए मैं कहता हूँ कि विज्ञान उन तरीकों में से एक है, जिनसे शैतान लोगों को भ्रष्ट करता है।

3. शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए पारंपरिक संस्कृति का उपयोग कैसे करता है

क्या ऐसी कई चीज़ें हैं, या क्या ऐसी कई चीज़ें नहीं हैं, जो पारंपरिक संस्कृति का अंग मानी जाती हैं? (हाँ, हैं।) इस "पारंपरिक संस्कृति" का अर्थ क्या है? कुछ लोग कहते हैं कि यह पूर्वजों से चली आती है—यह एक पहलू है। आरंभ से ही परिवारों, जातीय समूहों, यहाँ तक कि पूरी मानवजाति में जीवन के तरीके, रीति-रिवाज, कहावतें और नियम आगे बढ़ाए गए हैं, और वे लोगों के विचारों में बैठ गए हैं। लोग उन्हें अपने जीवन का अविभाज्य अंग समझते हैं और उन्हें नियमों की तरह मानते हैं, और उनका इस तरह पालन करते हैं, जैसे वे स्वयं जीवन हों। दरअसल, वे कभी भी इन चीज़ों को बदलना या इनका परित्याग करना नहीं चाहते, क्योंकि ये उनके पूर्वजों से आई हैं। पारंपरिक संस्कृति के अन्य पहलू भी हैं, जो लोगों की हड्डियों तक में जम गए हैं, जैसे कि वे चीज़ें, जो कन्फ्यूशियस या मेंसियस से आई हैं, और वे चीज़ें, जो चीनी ताओवाद और कन्फ्यूशीवाद द्वारा लोगों को सिखाई गई हैं। क्या यह सही नहीं है? पारंपरिक संस्कृति में क्या चीज़ें शामिल हैं? क्या इसमें वे त्योहार शामिल हैं, जिन्हें लोग मनाते हैं? उदाहरण के लिए : वसंत महोत्सव, दीप-महोत्सव, चिंगमिंग दिवस, ड्रैगन नौका महोत्सव, और साथ ही, भूत महोत्सव और मध्य-हेमंत महोत्सव। कुछ परिवार तब भी उत्सव मनाते हैं, जब वरिष्ठ लोग एक निश्चित उम्र पर पहुँच जाते हैं, या जब बच्चे एक माह या सौ दिन की उम्र के हो जाते हैं। और इसी तरह चलता रहता है। ये सब पारंपरिक त्योहार हैं। क्या इन त्योहारों में पारंपरिक संस्कृति अंतर्निहित नहीं है? पारंपरिक संस्कृति का मूल क्या है? क्या इनका परमेश्वर की उपासना से कुछ लेना-देना है? क्या इनका लोगों को सत्य का अभ्यास करने के लिए कहने से कुछ लेना-देना है? क्या परमेश्वर को भेंट चढ़ाने, परमेश्वर की वेदी पर जाने और उसकी

शिक्षाएँ प्राप्त करने के लिए भी लोगों के कोई त्योहार हैं? क्या इस तरह के कोई त्योहार हैं? (नहीं।) इन सभी त्योहारों में लोग क्या करते हैं? आधुनिक युग में इन्हें खाने, पीने और मज़े करने के अवसरों के रूप में देखा जाता है। पारंपरिक संस्कृति का अंतर्निहित स्रोत क्या है? पारंपरिक संस्कृति किससे आती है? (शैतान से।) यह शैतान से आती है। इन पारंपरिक त्योहारों के दृश्यों के पीछे शैतान मनुष्यों में कुछ खास चीजें भर देता है। वे चीज़ें क्या हैं? यह सुनिश्चित करना कि लोग अपने पूर्वजों को याद रखें—क्या यह उनमें से एक है? उदाहरण के लिए, चिंगमिंग महोत्सव के दौरान लोग कब्रों की सफ़ाई करते हैं और अपने पूर्वजों को भेंट चढ़ाते हैं, ताकि वे अपने पूर्वजों को भूलें नहीं। साथ ही, शैतान सुनिश्चित करता है कि लोग देशभक्त होना याद रखें, जिसका एक उदाहरण ड्रैगन नौका महोत्सव है। मध्य-हेमंत उत्सव किसलिए मनाया जाता है? (पारिवारिक पुनर्मिलन के लिए।) पारिवारिक पुनर्मिलनों की पृष्ठभूमि क्या है? इसका क्या कारण है? यह भावनात्मक रूप से संवाद करने और जुड़ने के लिए है। निस्संदेह, चाहे वह चांद्र नववर्ष की पूर्व संध्या मनाना हो या दीप-महोत्सव, उन्हें मनाने के पीछे के कारणों का वर्णन करने के कई तरीके हैं। लेकिन कोई उन कारणों का वर्णन कैसे भी करे, उनमें से प्रत्येक कारण शैतान द्वारा लोगों में अपना फ़लसफ़ा और सोच भरने का तरीका है, ताकि वे परमेश्वर से भटक जाएँ और यह न जानें कि परमेश्वर है, और वे भेंटें या तो अपने पूर्वजों को चढ़ाएँ या फिर शैतान को, या देह-सुख की इच्छाओं के वास्ते खाएँ, पीएँ और मज़ा करें। जब भी ये त्योहार मनाए जाते हैं, तो इनमें से हर त्योहार में लोगों के जाने बिना ही उनके मन में शैतान के विचार और दृष्टिकोण गहरे जम जाते हैं। जब लोग अपनी उम्र के पचासवें या साठवें दशक में या उससे भी बड़ी उम्र में पहुँचते हैं, तो शैतान के ये विचार और दृष्टिकोण पहले से ही उनके मन में गहरे जम चुके होते हैं। इतना ही नहीं, लोग इन विचारों को, चाहे वे सही हों या गलत, अविवेकपूर्ण ढंग से और बिना दुराव-छिपाव के, अगली पीढ़ी में संचारित करने का भरसक प्रयास करते हैं। क्या ऐसा नहीं है? (है।) पारंपरिक संस्कृति और ये त्योहार लोगों को कैसे भ्रष्ट करते हैं? क्या तुम जानते हो? (लोग इन परंपराओं के नियमों से इतना विवश और बाध्य हो जाते हैं कि उनमें परमेश्वर को खोजने का समय और ऊर्जा नहीं बचती।) यह एक पहलू है। उदाहरण के लिए, चांद्र नव वर्ष के दौरान हर कोई उत्सव मनाता है—अगर तुमने नहीं मनाया, तो क्या तुम दुःखी महसूस नहीं करोगे? क्या तुम अपने दिल में कोई अंधविश्वास रखते हो? शायद तुम ऐसा महसूस करो : "मैंने नववर्ष का उत्सव नहीं मनाया, और चूँकि चांद्र नव वर्ष का दिन एक खराब दिन था; तो कहीं बाकी पूरा वर्ष भी खराब ही न बीते"? क्या तुम बुरा और थोड़ा डरा हुआ

महसूस नहीं करोगे? ऐसे भी कुछ लोग हैं, जिन्होंने वर्षों से अपने पुरखों को भेंट नहीं चढ़ाई है और वे अचानक स्वप्न देखते हैं, जिसमें कोई मृत व्यक्ति उनसे पैसा माँगता है। वे कैसा महसूस करेंगे? "कितने दुःख की बात है कि इस मृत व्यक्ति को खर्च करने के लिए पैसा चाहिए! मैं उसके लिए कुछ कागज़ी मुद्रा जला दूँगा। अगर मैं ऐसा नहीं करता हूँ, तो यह बिलकुल भी सही नहीं होगा। इससे हम जीवित लोग किसी मुसीबत में पड़ सकते हैं—कौन कह सकता है, दुर्भाग्य कब आ पड़ेगा?" उनके मन में डर और चिंता का यह छोटा-सा बादल हमेशा मँडराता रहेगा। उन्हें यह चिंता कौन देता है? (शैतान।) शैतान इस चिंता का स्रोत है। क्या यह शैतान द्वारा मनुष्य को भ्रष्ट करने का एक तरीका नहीं है? वह तुम्हें भ्रष्ट करने, तुम्हें धमकाने और तुम्हें बाँधने के लिए विभिन्न तरीके और बहाने इस्तेमाल करता है, ताकि तुम स्तब्ध रह जाओ और झुक जाओ और उसके सामने समर्पण कर दो; शैतान इसी तरह मनुष्य को भ्रष्ट करता है। प्रायः जब लोग कमज़ोर होते हैं या परिस्थितियों से पूर्णतः अवगत नहीं होते, तब वे असावधानीवश, भ्रमित तरीके से कुछ कर सकते हैं; अर्थात्, वे अनजाने में शैतान के चंगुल में फँस जाते हैं और वे बेइरादा कुछ कर सकते हैं, कुछ ऐसी चीज़ें कर सकते हैं, जिनके बारे में वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। शैतान इसी तरह से मनुष्य को भ्रष्ट करता है। यहाँ तक कि अब कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो गहरे जड़ जमाई हुई पारंपरिक संस्कृति से अलग होने के अनिच्छुक हैं, और उसे नहीं छोड़ सकते हैं। विशेष रूप से जब वे कमज़ोर और निष्क्रिय होते हैं, तब वे इस प्रकार के उत्सव मनाना चाहते हैं और वे फिर से शैतान से मिलना और उसे संतुष्ट करना चाहते हैं, ताकि उनके दिलों को सुकून मिल जाए। पारंपरिक संस्कृति की पृष्ठभूमि क्या है? क्या पर्दे के पीछे से शैतान का काला हाथ डोर खींच रहा है? क्या शैतान की दुष्ट प्रकृति जोड़-तोड़ और नियंत्रण कर रही है? क्या शैतान इन सभी चीज़ों को नियंत्रित कर रहा है? (हाँ।) जब लोग इस पारंपरिक संस्कृति में जीते हैं और इस प्रकार के पारंपरिक त्योहार मनाते हैं, तो क्या हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसा परिवेश है, जिसमें वे शैतान द्वारा मूर्ख बनाए और भ्रष्ट किए जा रहे हैं, और इतना ही नहीं, वे शैतान द्वारा मूर्ख बनाए जाने और भ्रष्ट किए जाने से खुश हैं? (हाँ।) यह एक ऐसी चीज़ है, जिसे तुम सब स्वीकार करते हो, जिसके बारे में तुम जानते हो।

4. शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए अंधविश्वास का उपयोग कैसे करता है

तुम "अंधविश्वास" शब्द से परिचित हो, है न? अंधविश्वास और पारंपरिक संस्कृति में संबंध हैं, किंतु आज हम उनके बारे में बात नहीं करेंगे। इसके बजाय मैं अंधविश्वास के सबसे ज्यादा सामने आने वाले

रूपों की चर्चा करूँगा : भविष्य-कथन, ज्योतिष, धूप जलाना और बुद्ध की आराधना करना। कुछ लोग भविष्य-कथन करते हैं, दूसरे लोग बुद्ध की आराधना करते हैं और धूप जलाते हैं, जबकि अन्य लोग अपना भाग्य पढ़वाते हैं या किसी को अपना चेहरा दिखाकर अपना भाग्य ज्ञात करवाते हैं। तुम लोगों में से कितनों ने अपना भाग्य ज्ञात करवाया या चेहरे को पढ़वाया है? यह चीज़ ऐसी है, जिसमें अधिकांश लोग रुचि रखते हैं, है न? (हाँ।) क्यों? भविष्य-कथन और ज्योतिष से लोगों को क्या फायदा होता है? इससे उन्हें किस प्रकार की संतुष्टि मिलती है? (जिज्ञासा।) क्या यह सिर्फ जिज्ञासा है? जहाँ तक मैं देखता हूँ, जरूरी नहीं है कि यह सिर्फ जिज्ञासा हो। अटकल और भविष्य-कथन का क्या लक्ष्य है? यह क्यों किया जाता है? क्या यह भविष्य जानने के लिए नहीं है? कुछ लोग भविष्य का पूर्वानुमान लगाने के लिए अपना चेहरा पढ़वाते हैं, अन्य लोग ऐसा यह देखने के लिए करते हैं कि उनका भाग्य अच्छा होगा या नहीं। कुछ लोग यह देखने के लिए ऐसा करते हैं कि उनकी शादी कैसी रहेगी, और कुछ अन्य लोग यह देखने के लिए ऐसा करते हैं कि आने वाला वर्ष कैसा भाग्य लाएगा? कुछ लोग यह देखने के लिए अपना चेहरा पढ़वाते हैं कि उनका और उनके पुत्र-पुत्रियों का भविष्य कैसा रहेगा, और कुछ व्यापारी लोग यह देखने के लिए ऐसा करते हैं कि वे कितना पैसा कमाएँगे और चेहरा पढ़ने वाले से मार्गदर्शन माँगते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए? तो क्या यह सिर्फ जिज्ञासा शांत करने के लिए है? जब लोग अपना चेहरा पढ़वाते हैं या इस प्रकार की चीज़ें करते हैं, तो यह केवल उनके अपने भविष्य के व्यक्तिगत लाभ के लिए होता है; वे विश्वास करते है कि यह सब उनके भाग्य के साथ निकटता से जुड़ा है। क्या इनमें से कुछ भी उपयोगी है? (नहीं।) यह उपयोगी क्यों नहीं हैं? क्या इन चीज़ों के माध्यम से कुछ जानकारी प्राप्त करना अच्छी बात नहीं है? ये प्रथाएँ तुम्हें यह जानने में सहायता कर सकती हैं कि मुसीबत कब आ सकती है, और अगर तुम मुसीबतों के बारे में उनके आने से पहले जान लो, तो क्या तुम उनसे बच नहीं सकते? अगर तुम अपना भविष्य पढ़वा लेते हो, तो वह तुम्हें यह दिखा सकता है कि भूलभुलैया से निकलने का सही मार्ग कैसे खोजा जाए, ताकि तुम आने वाले वर्ष में सौभाग्य प्राप्त कर सको और अपने व्यवसाय के माध्यम से खूब धन-दौलत प्राप्त कर सको। तो यह उपयोगी है या नहीं? लेकिन यह उपयोगी है या नहीं, इसका हमसे कोई संबंध नहीं है, और हमारी आज की संगति में यह मुद्दा शामिल नहीं होगा। शैतान लोगों को भ्रष्ट करने के लिए अंधविश्वास का उपयोग कैसे करता है? सभी लोग अपना भाग्य जानना चाहते हैं, इसलिए शैतान उनकी उत्सुकता का उन्हें लालच देने के लिए फायदा उठाता है। लोग अटकल, भविष्य-कथन, और चेहरा पढ़वाने में संलग्न हो जाते हैं ताकि

जान सकें कि भविष्य में उनके साथ क्या होगा और आगे किस प्रकार का मार्ग है। अंत में, यद्यपि, वह भाग्य या संभावनाएँ किसके हाथ में हैं जिनसे लोग इतने चिंतित हैं? (परमेश्वर के हाथ।) ये सभी चीज़ें परमेश्वर के हाथों में हैं। इन विधियों का उपयोग करके शैतान लोगों को क्या ज्ञात करवाना चाहता है? शैतान चेहरा पढ़ने और भविष्य-कथन का उपयोग लोगों को यह बताने के लिए करना चाहता है कि वह उनका भविष्य और भाग्य जानता है, और न केवल वह इन चीज़ों को जानता है, बल्कि ये उसके नियंत्रण में भी हैं। शैतान इस अवसर का लाभ उठाना चाहता है और इन विधियों का उपयोग लोगों को नियंत्रित करने के लिए करना चाहता है, ताकि लोग उस पर अंधे होकर विश्वास करें और उसके हर शब्द का पालन करें। उदाहरण के लिए, अगर तुम अपना चेहरा पढ़वाओ, और अगर भाग्य बताने वाला व्यक्ति अपनी आँखें बंद करके पूर्ण स्पष्टता के साथ तुम्हें बता दे कि पिछले कुछ दशकों में तुम्हारे साथ क्या-क्या घटित हुआ है, तो तुम भीतर कैसा महसूस करोगे? तुम तुरंत महसूस करोगे, "यह कितना सटीक है! मैंने अपना अतीत पहले कभी किसी को नहीं बताया है, इसने उसके बारे में कैसे जाना? मैं सच में इस भविष्यवक्ता की सराहना करता हूँ!" क्या शैतान के लिए तुम्हारे अतीत के बारे में जानना बहुत आसान नहीं है? परमेश्वर तुम्हें वहाँ तक लेकर आया है, जहाँ आज तुम हो, और इस पूरे समय के दौरान शैतान लोगों को भ्रष्ट करता रहा है और तुम्हारा पीछा करता रहा है। तुम्हारे जीवन के दशकों का समय शैतान के लिए कुछ भी नहीं है और इन चीज़ों को जानना उसके लिए कठिन नहीं है। जब तुम जानते हो कि शैतान जो कहता है, वह सटीक है, तो क्या तुम अपना हृदय उसे नहीं दे देते? क्या तुम अपना भविष्य और भाग्य उसके नियंत्रण पर नहीं छोड़ देते? एक पल में तुम्हारा हृदय उसके लिए कुछ आदर या श्रद्धा महसूस करेगा, और कुछ लोगों के लिए, इस बिंदु पर उनकी आत्माएँ उसके द्वारा पहले ही छीन ली गई होंगी। और तुम तुरंत भाग्यवक्ता से पूछोगे, "मैं आगे क्या करूँ? आने वाले साल में मुझे किससे बचना चाहिए? मुझे क्या नहीं करना चाहिए?" और फिर, वह कहेगा, "तुम्हें वहाँ नहीं जाना चाहिए, तुम्हें यह नहीं करना चाहिए, फ़लाँ रंग के कपड़े मत पहनो, तुम्हें अमुक-अमुक स्थानों पर नहीं जाना चाहिए, और तुम्हें फ़लाँ चीज़ें अधिक करनी चाहिए...।" क्या तुम उसकी हर बात तुरंत दिल से स्वीकार नहीं कर लोगे? तुम उसके वचन परमेश्वर के वचनों से भी अधिक तेजी से याद कर लोगे। तुम उन्हें इतनी शीघ्रता से क्यों याद कर लोगे? क्योंकि तुम अच्छे भाग्य के लिए शैतान पर भरोसा करना चाहोगे। क्या तभी वह तुम्हारे दिल पर कब्ज़ा नहीं कर लेता? जब उसकी भविष्यवाणियाँ एक के बाद एक सच हो जाती हैं, तब क्या तुम यह जानने के लिए वापस उसके पास नहीं

जाना चाहोगे, कि अगला साल कैसा भाग्य लेकर आएगा? (हाँ।) तुम वही करोगे, जो शैतान तुमसे करने के लिए कहेगा, और उन चीज़ों से बचोगे, जिनसे वह बचने के लिए कहेगा। इस तरह से, क्या तुम उसकी कही हर बात का पालन नहीं कर रहे होते? बहुत जल्दी तुम उसकी गोद में जा गिरोगे, धोखा खाओगे और उसके नियंत्रण में चले जाओगे। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि तुम विश्वास करते हो कि वह जो कहता है, वह सत्य है, और क्योंकि तुम मानते हो कि वह तुम्हारी पिछली ज़िंदगियों, तुम्हारी वर्तमान ज़िंदगी और तुम्हारे भविष्य में घटित होने वाली चीज़ों के बारे में जानता है। यही वह विधि है, जिससे शैतान लोगों को नियंत्रित करता है। किंतु वास्तव में कौन नियंत्रण करता है? स्वयं परमेश्वर नियंत्रण करता है, शैतान नहीं। शैतान इस मामले में अपनी चालाकियों का उपयोग केवल अज्ञानी लोगों को चकमा देने के लिए करता है, उन लोगों को बरगलाने के लिए करता है, जो उस पर विश्वास और भरोसा करने में केवल भौतिक जगत को देखते हैं। फिर वे शैतान के चंगुल में फँस जाते हैं और उसकी हर बात मानते हैं। किंतु क्या जब लोग परमेश्वर पर विश्वास करना और उसका अनुसरण करना चाहते हैं, तब शैतान अपनी पकड़ ढीली करता है? शैतान अपनी पकड़ ढीली नहीं करता। इस स्थिति में, क्या लोग वास्तव में शैतान के चंगुल में फँस रहे हैं? (हाँ।) क्या हम कह सकते हैं कि इस संदर्भ में शैतान का व्यवहार सचमुच निर्लज्जतापूर्ण है? (हाँ।) हम ऐसा क्यों कहेंगे? क्योंकि ये धोखा देने वाली और छल से भरी हुई चालबाजियाँ हैं। शैतान बेशर्म है और लोगों को गुमराह करता है कि वह उनसे संबंधित सभी चीज़ों को नियंत्रित करता है और वह उनके भाग्य को भी नियंत्रित करता है। इससे अज्ञानी लोग उसे पूरी तरह से मानने लगते हैं। वे केवल कुछ शब्दों से मूर्ख बना दिए जाते हैं। हतप्रभ होकर लोग उसके आगे झुक जाते हैं। तो शैतान किस तरह के तरीके इस्तेमाल करता है, खुद पर विश्वास करवाने के लिए वह क्या कहता है? उदाहरण के लिए, तुमने शैतान को नहीं बताया होगा कि तुम्हारे परिवार में कितने सदस्य हैं, किंतु शायद वह बता दे कि तुम्हारे परिवार में कितने सदस्य हैं, और साथ ही तुम्हारे माता-पिता और बच्चों की उम्र बता भी दे। इससे पहले अगर तुम्हें शैतान पर कुछ शक या संदेह रहा भी हो, तो क्या ऐसी बातें सुनने के बाद तुम यह महसूस नहीं करोगे कि यह थोड़ा अधिक विश्वसनीय है? तब शैतान कह सकता है कि हाल ही में तुम्हारा कार्य कितना कठिन रहा है, कि तुम्हारे वरिष्ठ तुम्हें उतना महत्व नहीं देते, जितना तुम्हें मिलना चाहिए और वे हमेशा तुम्हारे विरुद्ध कार्य करते हैं, इत्यादि। यह सुनने के बाद तुम सोचोगे, "यह बिलकुल सही है! कार्यालय में सब चीज़ें सुचारु रूप से नहीं चल रही हैं।" तो तुम शैतान पर थोड़ा और विश्वास करोगे। फिर वह तुम्हें धोखा देने के लिए

कुछ और कहेगा, जिससे तुम उस पर और भी अधिक विश्वास करोगे। थोड़ा-थोड़ा करके तुम अब खुद को उसका और प्रतिरोध करने या उस पर संदेह करने में असमर्थ पाओगे। शैतान सिर्फ कुछ मामूली चालाकियाँ, यहाँ तक कि छोटी-छोटी तुच्छ चालाकियाँ इस्तेमाल करता है और इस तरह तुम्हें भ्रमित कर देता है। जब तुम भ्रमित हो जाते हो, तो तुम अपना व्यवहार स्थिर नहीं रख पाते, तुम्हारी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ, और तुम वही करना आरंभ कर देते हो, जो शैतान कहता है। यह वह शानदार तरीका है, जिसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए इस्तेमाल करता है, जिससे तुम अनजाने ही उसके जाल में फँस जाते हो और इसके द्वारा बहकाए जाते हो। शैतान तुमसे कुछ बातें कहता है, जिन्हें लोग अच्छी बातें मानते हैं, और तब वह तुम्हें कहता है कि क्या करना है और क्या नहीं करना। इस तरह तुम अनजाने ही छले जाते हो। एक बार जब तुम इसमें पड़ जाते हो, तो तुम्हारे लिए चीज़ें परेशानी देने वाली हो जाती हैं; तुम लगातार इसी बारे में सोचते रहते हो कि शैतान ने क्या कहा और उसने तुमसे क्या करने को कहा, और तुम अनजाने ही उसके कब्ज़े में आ जाते हो। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि मनुष्यों में सत्य का अभाव है और इसलिए वे शैतान के प्रलोभन और बहकावे के विरुद्ध मजबूती से खड़े होने और उसका विरोध करने में असमर्थ हैं। शैतान की दुष्टता और उसके धोखे, विश्वासघात और दुर्भावना का सामना करने में मानवजाति बहुत अज्ञानी, अपरिपक्व और कमज़ोर है, है न? क्या यह उन तरीकों में से एक नहीं है, जिनसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है? (हाँ, है।) मनुष्य अनजाने में, थोड़ा-थोड़ा करके, शैतान के विभिन्न तरीकों द्वारा धोखा खाते और छले जाते हैं, क्योंकि उनमें सकारात्मक और नकारात्मक के बीच अंतर करने की योग्यता का अभाव है। शैतान पर विजय पाने के लिए उनमें इस आध्यात्मिक कद और योग्यता का अभाव है।

5. शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए सामाजिक रुझानों का उपयोग कैसे करता है

सामाजिक रुझान कब अस्तित्व में आए? क्या वे केवल वर्तमान समय में अस्तित्व में आए? कोई यह कह सकता है कि सामाजिक रुझान तब अस्तित्व में आए, जब शैतान ने मनुष्य को भ्रष्ट करना आरंभ किया। सामाजिक रुझानों में क्या शामिल है? (कपड़ों और श्रृंगार की शैलियाँ।) ये ऐसी चीजें हैं, जिनके संपर्क में लोग अकसर आते हैं। कपड़ों की शैलियाँ, फैशन, रुझान—ये चीज़ें एक छोटा पहलू निर्मित करती हैं। क्या और भी कुछ है? क्या वे लोकप्रिय वाक्यांश भी इसमें शामिल हैं, जिन्हें लोग अकसर बोलते हैं? क्या वे जीवन-शैलियाँ इसमें शामिल हैं, जिनकी लोग कामना करते हैं? क्या संगीत के सितारे, मशहूर

हस्तियाँ, पत्रिकाएँ और उपन्यास, जिन्हें लोग पसंद करते हैं, इसमें शामिल होते हैं? (हाँ।) तुम लोगों के विचार में, सामाजिक रुझानों का कौन-सा पहलू मनुष्य को भ्रष्ट करने में सक्षम है? इनमें से कौन-सा रुझान तुम लोगों को सबसे लुभावना लगता है? कुछ लोग कहते हैं : "हम सब एक खास उम्र में पहुँच गए हैं, हम अपनी उम्र के साठवें, सत्तरवें, अस्सीवें या नब्बेवें दशक में हैं, और हम अब और इन रुझानों के अनुकूल नहीं हो सकते और वे वास्तव में हमारा ध्यान आकर्षित नहीं करते।" क्या यह सही है? दूसरे कहते हैं : "हम मशहूर हस्तियों का अनुसरण नहीं करते, वह तो बीसेक साल के युवा लोग किया करते हैं; हम फैशनवाले कपड़े भी नहीं पहनते, वह तो अपनी छवि के बारे में सतर्क लोग किया करते हैं।" तो इनमें से क्या तुम लोगों को भ्रष्ट करने में सक्षम है? (लोकप्रिय कहावतें।) क्या ये कहावतें लोगों को भ्रष्ट कर सकती हैं? मैं एक उदाहरण दूँगा, और तुम लोग देख सकते हो कि वे लोगों को भ्रष्ट करती हैं या नहीं : "पैसा दुनिया को नचाता है"; क्या यह एक रुझान है? क्या यह तुम लोगों द्वारा उल्लिखित फैशन और स्वादिष्ट भोजन के रुझानों की तुलना में अधिक खराब नहीं है? "पैसा दुनिया को नचाता है" यह शैतान का एक फ़लसफ़ा है और यह संपूर्ण मानवजाति में, हर मानव-समाज में प्रचलित है। तुम कह सकते हो कि यह एक रुझान है, क्योंकि यह हर एक व्यक्ति के हृदय में बैठा दिया गया है। बिल्कुल शुरू से ही, लोगों ने इस कहावत को स्वीकार नहीं किया, किन्तु फिर जब वे जीवन की वास्तविकताओं के संपर्क में आए, तो उन्होंने इसे मूक सहमति दी, और महसूस करना शुरू किया कि वे वचन वास्तव में सत्य हैं। क्या यह शैतान द्वारा मनुष्य को भ्रष्ट करने की प्रक्रिया नहीं है? शायद लोग इस कहावत को समान मात्रा में नहीं समझते, बल्कि हर एक आदमी अपने आसपास घटित घटनाओं और अपने निजी अनुभवों के आधार पर इस कहावत की अलग-अलग मात्रा में व्याख्या करता है और इसे अलग-अलग मात्रा में स्वीकार करता है। क्या ऐसा नहीं है? इस बात पर ध्यान दिए बिना कि इस कहावत के संबंध में किसी के पास कितना अनुभव है, इसका किसी के हृदय पर कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है? तुम लोगों में से प्रत्येक के सहित दुनिया के लोगों के स्वभाव के माध्यम से कोई चीज़ प्रकट होती हैं। इस तरह प्रकट होने वाली इस चीज़ की व्याख्या कैसे की जाती है? यह पैसे की उपासना है। क्या इसे किसी के हृदय में से निकालना कठिन है? यह बहुत कठिन है! ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान का मनुष्य को भ्रष्ट करना सचमुच गहन है! तो शैतान द्वारा मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए इस रुझान का उपयोग किए जाने के बाद, यह उनमें कैसे अभिव्यक्त होता है? क्या तुम लोगों को लगता है कि बिना पैसे के तुम लोग इस दुनिया में जीवित नहीं रह सकते, कि पैसे के बिना एक

दिन जीना भी असंभव होगा? लोगों की हैसियत इस बात पर निर्भर करती है कि उनके पास कितना पैसा है, और वे उतना ही सम्मान पाते हैं। गरीबों की कमर शर्म से झुक जाती है, जबकि धनी अपनी ऊँची हैसियत का मज़ा लेते हैं। वे ऊँचे और गर्व से खड़े होते हैं, ज़ोर से बोलते हैं और अंहकार से जीते हैं। यह कहावत और रुझान लोगों के लिए क्या लाता है? क्या यह सच नहीं है कि पैसे की खोज में लोग कुछ भी बलिदान कर सकते हैं? क्या अधिक पैसे की खोज में कई लोग अपनी गरिमा और ईमान का बलिदान नहीं कर देते? इतना ही नहीं, क्या कई लोग पैसे की खातिर अपना कर्तव्य निभाने और परमेश्वर का अनुसरण करने का अवसर नहीं गँवा देते? क्या यह लोगों का नुकसान नहीं है? (हाँ, है।) क्या मनुष्य को इस हद तक भ्रष्ट करने के लिए इस विधि और इस कहावत का उपयोग करने के कारण शैतान कुटिल नहीं है? क्या यह दुर्भावनापूर्ण चाल नहीं है? जैसे-जैसे तुम इस लोकप्रिय कहावत का विरोध करने से लेकर अंततः इसे सत्य के रूप में स्वीकार करने तक की प्रगति करते हो, तुम्हारा हृदय पूरी तरह से शैतान के चंगुल में फँस जाता है, और इस तरह तुम अनजाने में इस कहावत के अनुसार जीने लगते हो। इस कहावत ने तुम्हें किस हद तक प्रभावित किया है? हो सकता है कि तुम सच्चे मार्ग को जानते हो, और हो सकता है कि तुम सत्य को जानते हो, किंतु उसकी खोज करने में तुम सामर्थ्यहीन हो। हो सकता है कि तुम स्पष्ट रूप से जानते हो कि परमेश्वर के वचन सत्य हैं, किन्तु तुम सत्य को पाने के लिए क़ीमत चुकाने का कष्ट उठाने को तैयार नहीं हो। इसके बजाय, तुम बिलकुल अंत तक परमेश्वर का विरोध करने में अपने भविष्य और नियति को त्याग दोगे। चाहे परमेश्वर कुछ भी क्यों न कहे, चाहे परमेश्वर कुछ भी क्यों न करे, चाहे तुम्हें इस बात का एहसास क्यों न हो कि तुम्हारे लिए परमेश्वर का प्रेम कितना गहरा और कितना महान है, तुम फिर भी हठपूर्वक अपने रास्ते पर ही चलते रहने का आग्रह करोगे और इस कहावत की कीमत चुकाओगे। अर्थात्, यह कहावत पहले से ही तुम्हारे व्यवहार और तुम्हारे विचारों को नियंत्रित करती है, और बजाय इस सबको त्यागने के, तुम अपने भाग्य को इस कहावत से नियंत्रित करवाओगे। क्या यह तथ्य कि लोग ऐसा करते हैं, कि वे इस कहावत द्वारा नियंत्रित और प्रभावित होते हैं, यह नहीं दर्शाता कि शैतान का मनुष्यों को भ्रष्ट करना कारगर है? क्या यह शैतान के फ़लसफ़े और भ्रष्ट स्वभाव का तुम्हारे हृदय में जड़ जमाना नहीं है? अगर तुम ऐसा करते हो, तो क्या शैतान ने अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिया है? (हाँ।) क्या तुम देखते हो कि कैसे इस तरह से शैतान ने मनुष्य को भ्रष्ट कर दिया है? क्या तुम इसे महसूस कर सकते हो? (नहीं।) तुमने इसे न तो देखा है, न महसूस किया है। क्या तुम यहाँ शैतान की दुष्टता को देखते हो? शैतान हर

समय और हर जगह मनुष्य को भ्रष्ट करता है। शैतान मनुष्य के लिए इस भ्रष्टता से बचना असंभव बना देता है और वह इसके सामने मनुष्य को असहाय बना देता है। शैतान अपने विचारों, अपने दृष्टिकोणों और उससे आने वाली दुष्ट चीज़ों को तुमसे ऐसी परिस्थितियों में स्वीकार करवाता है, जहाँ तुम अज्ञानता में होते हो, और जब तुम्हें इस बात का पता नहीं चलता कि तुम्हारे साथ क्या हो रहा है। लोग इन चीज़ों को स्वीकार कर लेते हैं और उन पर कोई आपत्ति नहीं करते। वे इन चीज़ों को सँजोते हैं और एक खजाने की तरह सँभाले रखते हैं, वे इन चीज़ों को अपने साथ जोड़-तोड़ करने देते हैं और उन्हें अपने साथ खिलवाड़ करने देते हैं; और इस तरह शैतान का मनुष्य को भ्रष्ट करना और अधिक गहरा होता जाता है।

शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए इन अनेक विधियों का उपयोग करता है। मनुष्य को कुछ वैज्ञानिक सिद्धांतों का ज्ञान और समझ है, मनुष्य पारंपरिक संस्कृति के प्रभाव में जीता है, और प्रत्येक मनुष्य पारंपरिक संस्कृति का उत्तराधिकारी और हस्तांतरणकर्ता है। मनुष्य शैतान द्वारा स्वयं को दी गई पारंपरिक संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए बाध्य है, और वह शैतान द्वारा मानवजाति को प्रदान किए जाने वाले सामाजिक रुझानों का पालन भी करता है। मनुष्य शैतान से अविभाज्य है, वह हर समय शैतान का अनुसरण करता है, उसकी दुष्टता, धोख़े, दुर्भावना और अहंकार को स्वीकार करता है। शैतान के इन स्वभावों को धारण कर लेने पर, क्या मनुष्य इस भ्रष्ट मनुष्यजाति के बीच रहते हुए खुश रहा है या दुःखी? (दुःखी।) तुम ऐसा क्यों कहते हो? (चूँकि मनुष्य इन चीज़ों से बँधा है और इन भ्रष्ट चीज़ों से नियंत्रित है, वह पाप में रहता है और एक कठिन संघर्ष में डूबा हुआ है।) कुछ लोग बहुत बौद्धिक दिखाई देने के लिए चश्मा पहनते हैं; वे वाक्पटुता और तर्क के साथ बहुत आदर पूर्वक बोल सकते हैं, और क्योंकि वे कई चीज़ों से होकर गुज़रे होंगे, वे बहुत अनुभवी और परिष्कृत हो सकते हैं। वे छोटे-बड़े मामलों के बारे में विस्तार से बोलने में समर्थ हो सकते हैं; वे चीज़ों की प्रामाणिकता और तर्क का आँकलन करने में भी समर्थ हो सकते हैं। कुछ लोग इन लोगों के व्यवहार और रूप-रंग, और साथ ही इनके चरित्र, इनकी ईमानदारी, और आचरण इत्यादि को देख सकते हैं, और उन्हें उनमें कोई दोष नहीं मिलता होगा। ऐसे व्यक्ति मौजूदा सामाजिक रुझानों के अनुकूल होने में ख़ास तौर से सक्षम होते हैं। भले ही ये लोग अधिक उम्र के हों, पर वे कभी समकालीन रुझानों से पीछे नहीं रहते और कभी इतने बूढ़े नहीं होते कि सीखना बंद कर दें। सतह पर, कोई भी ऐसे व्यक्ति में दोष नहीं निकाल सकता, लेकिन अंदर से वे शैतान द्वारा सरासर और पूरी तरह से भ्रष्ट किए जा चुके होते हैं। हालाँकि इन लोगों में कोई बाहरी दोष नहीं ढूँढ़ा जा सकता, और हालाँकि

सतह पर वे सौम्य, परिष्कृत होते हैं और ज्ञान और एक खास नैतिकता रखते हैं, और उनमें ईमानदारी होती है, और हालाँकि ज्ञान के मामले में वे किसी भी तरह से युवा लोगों से कम नहीं होते, फिर भी जहाँ तक उनकी प्रकृति और सार का संबंध होता है, ऐसे लोग शैतान के पूर्ण और जीवित प्रतिमान होते हैं। वे शैतान के पूर्ण प्रतिबिंब होते हैं। यह शैतान द्वारा मनुष्य को भ्रष्ट करने का "फल" है। मैंने जो कहा है, उससे तुम्हें ठेस पहुँच सकती है, पर यह सब सत्य है। जिस ज्ञान का मनुष्य अध्ययन करता है, जिस विज्ञान को वह समझता है और सामाजिक रुझानों में तालमेल बिठाने के लिए जिन साधनों का वह चयन करता है, वे निरपवाद रूप से शैतान द्वारा मनुष्य को भ्रष्ट करने के उपकरण हैं। यह बिलकुल सत्य है। इसलिए, मनुष्य एक ऐसे स्वभाव के भीतर जीता है, जिसे शैतान द्वारा पूरी तरह से भ्रष्ट कर दिया गया होता है, और मनुष्य के पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि परमेश्वर की पवित्रता क्या है या परमेश्वर का सार क्या है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के तरीकों में सतही तौर पर कोई दोष नहीं ढूँढ़ सकता; किसी के व्यवहार से कोई यह नहीं कह सकता कि कुछ अनुचित है। प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य सामान्य रूप से करता है और सामान्य जीवन जीता है; वह सामान्य रूप से पुस्तकें और समाचारपत्र पढ़ता है, सामान्य रूप से अध्ययन करता और बोलता है। कुछ लोगों ने कुछ नीति शास्त्र सीख लिये हैं, और बोलने में अच्छे, दूसरों को समझने वाले और मित्रतापूर्ण होते हैं, मददगार और उदार होते हैं, और छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा नहीं करते या लोगों का फायदा नहीं उठाते। लेकिन उनका भ्रष्ट शैतानी स्वभाव उनमें गहरी जड़ें जमाए होता है और यह सार बाहरी प्रयासों पर भरोसा करके नहीं बदला जा सकता। इस सार के कारण मनुष्य परमेश्वर की पवित्रता को समझने में समर्थ नहीं है, और परमेश्वर की पवित्रता के सार को मनुष्य पर प्रकट किए जाने के बावजूद मनुष्य इसे गंभीरता से नहीं लेता। ऐसा इसलिए है, क्योंकि विभिन्न साधनों के जरिये शैतान पहले ही मनुष्य की भावनाओं, मतों, दृष्टिकोणों और विचारों को अपने कब्जे में करने के लिए आ चुका होता है। यह कब्ज़ा और भ्रष्टता अस्थायी या आकस्मिक नहीं होते; बल्कि हर जगह और हर समय विद्यमान रहते हैं। इस प्रकार, तीन या चार साल से—अथवा यहाँ तक कि पाँच या छह साल से भी—परमेश्वर पर विश्वास करते आ रहे बहुत से लोग अभी भी इन दुष्ट विचारों, दृष्टिकोणों, तर्क और फ़लसफ़ों को खज़ाने के रूप में लेते हैं जो शैतान ने उनमें भर दिए हैं, और उन्हें छोड देने में असमर्थ हैं। चूँकि मनुष्य ने शैतान की प्रकृति से आने वाली दुष्ट, अहंकारी और दुर्भावनापूर्ण चीज़ों को स्वीकार किया है, इसलिए उनके अंतर्वैयक्तिक संबंधों में अपरिहार्य रूप से प्रायः संघर्ष, बहसबाजी और और

असामंजस्य रहता है, जो शैतान की अहंकारी प्रकृति के परिणामस्वरूप आता है। अगर शैतान ने मानवजाति को सकारात्मक चीज़ें दी होतीं—उदाहरण के लिए, अगर मनुष्य द्वारा स्वीकृत पारंपरिक संस्कृति के कन्फ्यूशीवाद और ताओवाद अच्छी चीज़ें होतीं—तो उन चीज़ों को स्वीकार करने के बाद समान मानसिकता वाले व्यक्तियों को आपस में मिलजुलकर रहने में समर्थ होना चाहिए था। तो समान चीजें स्वीकार करने वालों के बीच इतनी बड़ी फूट क्यों है? क्यों है इतनी बड़ी फूट? ऐसा इसलिए है, क्योंकि ये चीज़ें शैतान से आती हैं और शैतान लोगों में दरार पैदा करता है। शैतान से आने वाली चीज़ें, चाहे वे सतही तौर पर कितनी ही गरिमापूर्ण और महान क्यों न दिखाई पड़ें, मनुष्यों के लिए और उनके जीवन में केवल अहंकार और शैतान की दुष्ट प्रकृति के धोखे के अलावा और कुछ नहीं लातीं। क्या यह सही नहीं है? कोई ऐसा व्यक्ति, जो अपने को छिपाने में सक्षम हो, जिसके पास ज्ञान की संपदा हो या जिसकी अच्छी परवरिश हुई हो, उसे भी अपने भ्रष्ट शैतानी स्वभाव को छिपाने में कठिनाई होगी। अर्थात्, इस व्यक्ति ने भले ही अपने आपको कितने ही तरीकों से छिपाया हो, चाहे तुम उसे संत समझते थे या सोचते थे कि वह पूर्ण है, या तुम सोचते थे कि वह एक फ़रिश्ता है, चाहे तुमने उसे कितना भी शुद्ध क्यों न समझा हो, पर्दे के पीछे उसका जीवन किस तरह का है? उसके स्वभाव के प्रकाशन में तुम क्या सार देखोगे? निस्संदेह तुम शैतान की दुष्ट प्रकृति देखोगे। क्या ऐसा कहना स्वीकार्य है? (हाँ।) उदाहरण के लिए, मान लो कि तुम लोग अपने करीबी किसी व्यक्ति को जानते हो, जिसके बारे में तुम सोचते थे कि वह अच्छा व्यक्ति है, शायद कोई ऐसा व्यक्ति, जिसे तुम एक आदर्श मानते हो। अपने वर्तमान आध्यात्मिक कद के अनुसार तुम उसके बारे में क्या सोचते हो? पहले, तुम यह आकलन करते हो कि इस प्रकार के व्यक्ति में मानवता है या नहीं, क्या वह ईमानदार है, क्या उसमें लोगों के लिए सच्चा प्रेम है, क्या उसके वचन और कार्य दूसरों को लाभ और सहायता पहुँचाते हैं। (नहीं पहुँचाते।) इन लोगों द्वारा दिखाई जाने वाली तथाकथित दयालुता, प्रेम या अच्छाई क्या है? यह सब झूठ है, मुखौटा है। इस मुखौटे के पीछे एक गुप्त बुरा उद्देश्य है : उस व्यक्ति को इष्ट और पूजनीय बनाना। क्या तुम लोग इसे स्पष्ट रूप से देखते हो? (हाँ।)

शैतान लोगों को भ्रष्ट करने के लिए जिन विधियों का उपयोग करता है, वे मानवजाति के लिए क्या लेकर आती हैं? क्या वे कुछ सकारात्मक लाती हैं? पहली बात, क्या मनुष्य अच्छे और बुरे के बीच अंतर कर सकता है? क्या तुम कहोगे कि इस संसार का कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कोई प्रसिद्ध या महान व्यक्ति हो, या कोई पत्रिका, या अन्य प्रकाशन हो, ऐसे मानक हैं जिनका वे यह निर्णय करने के लिए उपयोग करते

हैं कि कोई चीज़ अच्छी या बुरी, और सही या ग़लत, परिशुद्ध है? क्या घटनाओं और लोगों के बारे में उनके आकलन निष्पक्ष हैं? क्या उनमें सच्चाई है? क्या यह संसार, यह मानवजाति, सकारात्मक और नकारात्मक चीजों का आकलन सत्य के मानक के आधार पर करती है? (नहीं।) लोगों में वह क्षमता क्यों नहीं है? लोगों ने ज्ञान का इतना अधिक अध्ययन किया है और विज्ञान के विषय में इतना अधिक जानते हैं, इसलिए वे महान क्षमताओं से युक्त हैं, है न? तो फिर वे सकारात्मक और नकारात्मक चीज़ों के बीच अंतर करने में क्यों असमर्थ हैं? ऐसा क्यों है? (क्योंकि लोगों के पास सत्य नहीं है, विज्ञान और ज्ञान सत्य नहीं हैं।) शैतान मानवजाति के लिए जो भी चीज़ लेकर आता है, वह दुष्ट और भ्रष्ट होती है, और उसमें सत्य, जीवन और मार्ग का अभाव होता है। शैतान द्वारा मनुष्य के लिए लाई जाने वाली दुष्टता और भ्रष्टता को देखते हुए क्या तुम कह सकते हो कि शैतान के पास प्रेम है? क्या तुम कह सकते हो कि मनुष्य के पास प्रेम है? कुछ लोग कह सकते हैं : "तुम ग़लत हो, दुनिया में बहुत लोग हैं, जो गरीबों और बेघर लोगों की सहायता करते हैं। क्या वे अच्छे लोग नहीं हैं? यहाँ धर्मार्थ संगठन भी हैं, जो अच्छे कार्य करते हैं; क्या उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य अच्छे नहीं हैं?" तुम उसे क्या कहोगे? शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए कई अलग-अलग विधियों और सिद्धांतों का उपयोग करता है; क्या मनुष्य की यह भ्रष्टता एक अस्पष्ट धारणा है? नहीं, यह अस्पष्ट नहीं है। शैतान कुछ व्यावहारिक चीज़ें भी करता है, और वह इस दुनिया और समाज में एक दृष्टिकोण या एक सिद्धांत को भी बढ़ावा देता है। प्रत्येक राजवंश और प्रत्येक काल-खंड में वह एक सिद्धांत को बढ़ावा देता है और मनुष्यों के मन में विचार भरता है। ये विचार और सिद्धांत धीरे-धीरे लोगों के हृदयों में जड़ जमा लेते हैं, और तब वे उन विचारों और सिद्धांतों के अनुसार जीना आरंभ कर देते हैं। एक बार जब वे इन चीज़ों के अनुसार जीने लगते हैं, तो क्या वे अनजाने ही शैतान नहीं बन जाते? क्या तब लोग शैतान के साथ एक नहीं हो जाते? जब लोग शैतान के साथ एक हो जाते हैं, तो अंत में परमेश्वर के प्रति उनका क्या रवैया होता है? क्या यह वही रवैया नहीं होता, जो शैतान परमेश्वर के प्रति रखता है? कोई भी यह स्वीकार करने का साहस नहीं करता, है न? यह कितना भयावह है। मैं क्यों कहता हूँ कि शैतान की प्रकृति दुष्ट है? मैं ऐसा अकारण नहीं कहता; बल्कि, शैतान की प्रकृति का निर्धारण और विश्लेषण इस आधार पर किया जाता है कि उसने क्या किया है और किन चीज़ों को प्रकट किया है। अगर मैंने केवल यह कहा होता कि शैतान दुष्ट है, तो तुम लोग क्या सोचते? तुम लोग सोचते : "स्पष्टतः शैतान दुष्ट है।" इसलिए मैं तुमसे पूछता हूँ : "शैतान के कौन-से पहलू दुष्टता हैं?" अगर तुम कहते हो : "शैतान द्वारा परमेश्वर का

विरोध करना दुष्टता है," तो तुम अभी भी स्पष्टता के साथ नहीं बोल रहे होगे। अब जबकि मैंने इस प्रकार विशिष्ट रूप से कहा है; तो क्या तुम्हें शैतान की दुष्टता के सार की विशिष्ट अंतर्वस्तु के बारे समझ है? (हाँ।) अगर तुम शैतान की दुष्ट प्रकृति स्पष्ट रूप से देखने में सक्षम हो, तो तुम अपनी खुद की स्थितियाँ देखोगे। क्या इन दोनों चीज़ों के बीच में कोई संबंध है? यह तुम लोगों के लिए मददगार है या नहीं? (हाँ, है।) जब मैं परमेश्वर की पवित्रता के सार के बारे में संगति करता हूँ, तो क्या यह आवश्यक है कि मैं शैतान के दुष्ट सार के बारे में भी संगति करूँ? इस बारे में तुम्हारी क्या राय है? (हाँ, यह आवश्यक है।) क्यों? (शैतान की दुष्टता परमेश्वर की पवित्रता को स्पष्टता से उभार देती है।) क्या यह ऐसा ही है? यह आंशिक रूप से सही है, इस अर्थ में कि शैतान की दुष्टता के बिना लोग परमेश्वर की पवित्रता को नहीं जानेंगे; यह कहना सही है। लेकिन अगर तुम कहते हो कि परमेश्वर की पवित्रता केवल शैतान की दुष्टता के विपरीत होने के कारण विद्यमान है, तो क्या यह सही है? सोचने का यह द्वंद्वात्मक तरीका ग़लत है। परमेश्वर की पवित्रता परमेश्वर का अंतर्निहित सार है; यहाँ तक कि जब परमेश्वर इसे अपने कर्मों के माध्यम से प्रकट करता है, तब भी वह परमेश्वर के सार की एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति है और यह तब भी परमेश्वर का अंतर्निहित सार है; यह हमेशा विद्यमान रही है और स्वयं परमेश्वर के लिए अंतर्भूत और सहज है, यद्यपि मनुष्य इसे नहीं देख सकता। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मनुष्य शैतान के भ्रष्ट स्वभाव के बीच और शैतान के प्रभाव के अधीन रहता है, और वह पवित्रता के बारे में ही नहीं जानता, परमेश्वर की पवित्रता की विशिष्ट अंतर्वस्तु के बारे में तो कैसे जानेगा। तो क्या यह आवश्यक है कि हम पहले शैतान के दुष्ट सार के बारे में संगति करें? (हाँ, यह आवश्यक है।) कुछ लोग कुछ संदेह व्यक्त कर सकते हैं : "तुम स्वयं परमेश्वर के बारे में संगति कर रहे हो, तो फिर तुम हर समय इस बारे में बात क्यों करते रहते हो कि शैतान लोगों को भ्रष्ट कैसे करता है और शैतान की प्रकृति दुष्ट कैसे है?" अब तुमने इन संदेहों का समाधान कर लिया है, है ना? जब लोगों को शैतान की दुष्टता का बोध हो जाता है और जब उनके पास उसकी एक सही परिभाषा होती है, जब लोग दुष्टता की विशिष्ट अंतर्वस्तु और अभिव्यक्ति को, दुष्टता के स्रोत और सार को स्पष्ट रूप से देख लेते हैं, केवल तभी, परमेश्वर की पवित्रता की चर्चा के माध्यम से, लोग स्पष्ट रूप से समझ और पहचान पाते हैं कि परमेश्वर की पवित्रता क्या है, पवित्रता मात्र क्या है। अगर मैं शैतान की दुष्टता की चर्चा न करूँ, तो कुछ लोग ग़लती से यह विश्वास कर लेंगे कि कुछ चीज़ें, जिन्हें लोग समाज में या लोगों के बीच करते हैं—या कुछ खास चीजें, जो इस संसार में विद्यमान हैं—पवित्रता से संबंधित हो सकती हैं। क्या यह दृष्टिकोण ग़लत

नहीं है? (हाँ, है।)

अब जबकि मैंने इस रूप में शैतान के सार पर संगति कर ली है, तुम लोगों ने अपने पिछले कुछ वर्षों के अनुभवों, परमेश्वर के वचनों के अपने अध्ययन और उसके कार्य का अनुभव प्राप्त करने के माध्यम से परमेश्वर की पवित्रता की किस प्रकार की समझ प्राप्त की है? आगे बढ़ो और इस बारे में बोलो। तुम्हें कानों को अच्छे लगने वाले शब्दों का प्रयोग नहीं करना है, बस अपने स्वयं के अनुभवों से बोलो। क्या परमेश्वर की पवित्रता में केवल उसका प्रेम शामिल है? क्या यह परमेश्वर का प्रेम मात्र है, जिसका हम पवित्रता के रूप में वर्णन करते हैं? यह कुछ ज़्यादा ही एकतरफा होगा, है न? परमेश्वर के प्रेम के अलावा, क्या परमेश्वर के सार के अन्य पहलू भी हैं? क्या तुमने उन्हें देखा है? (हाँ। परमेश्वर त्योहारों और अवकाशों, प्रथाओं और अंधविश्वासों से घृणा करता है; यह भी परमेश्वर की पवित्रता है।) परमेश्वर पवित्र है, इसलिए वह चीज़ों से घृणा करता है, क्या तुम्हारा यह मतलब है? जब बात परमेश्वर की पवित्रता की होती है, तो वह क्या है? क्या ऐसा है कि परमेश्वर की पवित्रता में कोई तात्विक अंतर्वस्तु नहीं है, केवल घृणा है? क्या तुम अपने मन में यह सोच रहे हो : "चूँकि परमेश्वर इन बुरी चीज़ों से घृणा करता है, इसलिए कहा जा सकता है कि परमेश्वर पवित्र है"? क्या यह मात्र अटकलबाज़ी नहीं है? क्या यह अतिशयोक्ति और निर्णय का एक रूप नहीं है? जब परमेश्वर के सार को समझने की बात आती है, तब वह सबसे बड़ी चूक क्या है, जिससे पूर्णत: बचा जाना चाहिए? (जब हम वास्तविकता को पीछे छोड़ देते हैं और उसके बजाय सिद्धांतों की बात करते हैं।) यह एक बहुत बड़ी चूक है। क्या कोई और चीज़ भी है? (अटकलबाज़ी और कल्पना।) ये भी बहुत गंभीर चूकें हैं। अटकलबाज़ी और कल्पना उपयोगी क्यों नहीं हैं? क्या जिन चीजों के बारे में तुम अटकलबाज़ी और कल्पना करते हो, उन्हें तुम वास्तव में देख सकते हो? क्या वे परमेश्वर का सच्चा सार हैं? (नहीं।) और किस चीज़ से बचना चाहिए? क्या बस परमेश्वर के सार का वर्णन करने के लिए अच्छे लगने वाले वचनों की कड़ी को दोहराना चूक है? (हाँ।) क्या यह आडंबरपूर्ण और बेतुका नहीं है? जिस तरह निर्णय और अटकलबाज़ी बेतुके हैं, उसी तरह अच्छे लगने वाले वचनों का चयन भी बेतुका है। खोखली स्तुति भी बेतुकी है, है न? क्या परमेश्वर लोगों को ऐसी बेतुकी बातें कहते सुनकर आनंदित होता है? (नहीं, आनंदित नहीं होता।) इन्हें सुनकर वह असहज महसूस करता है! जब परमेश्वर लोगों के एक समूह की अगुआई करता है और उसे बचाता है, और लोगों का यह समूह जब उसके वचन सुनता है, तो फिर भी उनकी समझ में कभी नहीं आता कि उसका क्या अर्थ है? कोई पूछ सकता है : "क्या परमेश्वर

अच्छा है?" और वे उत्तर देंगे "हाँ!" "कितना अच्छा?" "बहुत, बहुत अच्छा!" "क्या परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है?" "हाँ!" "कितना? क्या तुम इसका वर्णन कर सकते हो?" "बहुत, बहुत अधिक! परमेश्वर का प्रेम समुद्र से भी गहरा है, आसमान से भी ऊँचा है!" क्या ये शब्द बकवास नहीं हैं? और क्या यह बकवास उसी के समान नहीं है, जो तुम लोगों ने अभी कहा : "परमेश्वर शैतान के भ्रष्ट स्वभाव से घृणा करता है, इसलिए परमेश्वर पवित्र है"? (हाँ।) क्या अभी तुम लोगों ने जो कहा, वह बकवास नहीं है? और ज्यादातर कही जाने वाली बकवास बातें कहाँ से आती हैं? (शैतान से।) ज्यादातर कही जाने वाली बकवास बातें मुख्य रूप से परमेश्वर के प्रति लोगों के अनुत्तरदायित्व और अश्रद्धा के कारण कही जाती हैं। क्या हम ऐसा कह सकते हैं? तुम्हें कोई समझ नहीं थी, और फिर भी तुमने बकवास बातें कीं। क्या यह अनुत्तरदायी होना नहीं है? क्या यह परमेश्वर के प्रति अशिष्ट होना नहीं है? तुमने कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया है, थोड़े विचार और तर्क समझ लिए हैं, तुमने इन चीज़ों का इस्तेमाल किया है और इतना ही नहीं, परमेश्वर को जानने के एक तरीके के रूप में ऐसा किया है। क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हें उस तरह कहते सुनकर परमेश्वर परेशान महसूस करता है? तुम लोग इन विधियों का प्रयोग करके परमेश्वर को जानने का प्रयास कैसे कर सकते हो? जब तुम उस तरह बोलते हो, तो क्या वह विचित्र नहीं लगता? इसलिए, जब परमेश्वर के ज्ञान की बात आती है, व्यक्ति को बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए; उसे उसी सीमा तक बोलना चाहिए, जिस सीमा तक वह परमेश्वर को जानता हो। ईमानदारी से और व्यावहारिक रूप से बोलो और अपने वचनों को अरुचिकर सराहनाओं से न सजाओ और चापलूसी का उपयोग न करो; परमेश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं है; इस तरह की चीज़ें शैतान से आती हैं। शैतान का स्वभाव अंहकारी है; शैतान चापलूसी किया जाना और अच्छे शब्द सुनना पसंद करता है। शैतान खुश और आनंदित होगा, अगर लोग अपने सीखे हुए तमाम सुखद शब्द दोहराएँ और उन्हें शैतान के लिए इस्तेमाल करें। किंतु परमेश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं है; परमेश्वर को चाटुकारिता या चापलूसी की आवश्यकता नहीं है और वह नहीं चाहता कि लोग बेकार की बातें करें और अंधे होकर उसकी स्तुति करें। परमेश्वर ऐसी स्तुति और चाटुकारिता से घृणा करता है, जो वास्तविकता से मेल न खाती हो। इसलिए, जब कुछ लोग झूठे मन से परमेश्वर की स्तुति करते हैं, झूठी शपथ खाते हैं और झूठी प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर बिलकुल नहीं सुनता। तुम जो कहते हो, तुम्हें उसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। अगर तुम कोई चीज़ नहीं जानते, तो बस वैसा कह दो; अगर तुम कोई चीज़ जानते हो, तो उसे व्यावहारिक रूप से व्यक्त कर दो। इसलिए, जहाँ तक परमेश्वर की पवित्रता किस चीज़ को

विशिष्ट रूप से और वास्तव में आवश्यक बनाती है की बात है, क्या तुम लोगों को इसकी सच्ची समझ है? (जब मैंने विद्रोहशीलता व्यक्त की, जब मैंने आज्ञा का उल्लंघन किया, तो मुझे परमेश्वर से न्याय और ताड़ना मिली, और उसमें मैंने परमेश्वर की पवित्रता देखी। और जब मैंने उन परिवेशों का सामना किया, जो मेरी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं थे, तब मैंने इन चीज़ों के बारे में प्रार्थना की और परमेश्वर के इरादे जानने चाहे, और जब परमेश्वर ने अपने वचनों से मुझे प्रबुद्ध किया और मेरी अगुआई की, तो मैंने परमेश्वर की पवित्रता देखी।) यह तुम्हारे अपने अनुभव से है? (जो परमेश्वर ने इसके बारे में बोला है, उससे मैंने देखा है कि मनुष्य शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जाने और क्षति पहुँचाए जाने के बाद क्या बन गया है। फिर भी, परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए सब-कुछ दिया है और इससे मैं परमेश्वर की पवित्रता देखता हूँ।) यह बोलने का यथार्थवादी ढंग है; यह सच्चा ज्ञान है। क्या इसे समझने के कोई अलग तरीके हैं? (मैं शैतान की दुष्टता उसके द्वारा हव्वा को पाप करने के लिए बहकाने हेतु कहे कहे गए उसके शब्दों और प्रभु यीशु को दिए गए उसके प्रलोभन में देखता हूँ। परमेश्वर ने उन वचनों से, जिनसे उसने आदम और हव्वा को कहा था कि वे क्या खा सकते हैं और क्या नहीं खा सकते, मैं देखता हूँ कि परमेश्वर के वचन सीधे, स्पष्ट और भरोसेमंद होते हैं; इससे मैं परमेश्वर की पवित्रता देखता हूँ।) उपर्युक्त टिप्पणियाँ सुनने के बाद तुम लोगों को किसके वचन "आमीन" कहने के लिए प्रेरित करते हैं? किसकी संगति आज की हमारी संगति के विषय के सबसे निकट थी? किसके शब्द सर्वाधिक यथार्थवादी थे? पिछली बहन की संगति कैसी थी? (अच्छी थी।) उसने जो कहा, तुम लोगों ने उस पर आमीन कहा। उसने क्या कहा, जो सीधे लक्ष्य पर था? (उस बहन द्वारा अभी-अभी कहे गए वचनों में मैंने सुना कि परमेश्वर के वचन सीधे और बहुत स्पष्ट होते हैं, और शैतान की गोलमोल बातों की तरह बिलकुल नहीं होते। मैंने इसमें परमेश्वर की पवित्रता देखी।) यह इसका भाग है। क्या यह सही था? (हाँ।) बहुत अच्छा। मैं देखता हूँ कि तुम लोगों ने इन दो पिछली संगतियों में कुछ प्राप्त किया है, परंतु तुम्हें लगातार कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए। तुम्हारे कठिन परिश्रम करते रहने का कारण यह है कि परमेश्वर के सार को समझना एक बहुत गंभीर सबक है; यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो रातोंरात किसी की समझ में आ जाए, या जिसे कोई केवल कुछ ही शब्दों में स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सके।

लोगों के भ्रष्ट शैतानी स्वभाव, ज्ञान और दर्शन का प्रत्येक पहलू, लोगों के विचार और दृष्टिकोण, और अलग-अलग व्यक्ति के खास व्यक्तिगत पहलू उन्हें परमेश्वर के सार को जानने में सबसे अधिक रुकावट डालते हैं; इसलिए जब तुम इन विषयों को सुनते हो, तो उनमें से कुछ विषय तुम्हारी पहुँच से बाहर हो

सकते हैं, कुछ को हो सकता है, तुम समझ न पाओ, जबकि कुछ को हो सकता है, तुम मूलभूत रूप से वास्तविकता के साथ न जोड़ पाओ। बहरहाल, मैंने तुम लोगों की परमेश्वर की पवित्रता की समझ के बारे में सुना है और मैं जानता हूँ कि अपने हृदयों में तुम लोग उसे स्वीकार करना आरंभ कर रहे हो, जो मैंने परमेश्वर की पवित्रता के बारे में कहा है और संगति की है। मैं जानता हूँ कि तुम लोगों के हृदयों में परमेश्वर की पवित्रता के सार को समझने की तुम्हारी इच्छा अंकुरित होना शुरू कर रही है। पर मुझे जो बात और भी अधिक आनंदित करती है, वह यह है कि तुममें से कुछ लोग परमेश्वर की पवित्रता के अपने ज्ञान का सरलतम शब्दों में वर्णन करने में पहले से ही सक्षम हो। भले ही कहने के लिए यह एक सरल बात है और मैंने इसे पहले भी कहा है, फिर भी तुममें से अधिकांश के हृदयों में इन वचनों को अभी भी स्वीकृति मिलनी बाकी है, और वास्तव में उन्होंने तुम्हारे मन पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ा है। फिर भी, तुममें से कुछ ने इन वचनों को अपने हृदय में ग्रहण कर लिया है। यह बहुत अच्छा है और यह एक बहुत आशाजनक शुरुआत है। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग उन विषयों पर, जो तुम्हें गंभीर लगते हैं—या जो विषय तुम्हारी पहुँच से बाहर हैं—मनन करते रहोगे, और ज्यादा से ज्यादा संगति करोगे। जो विषय तुम्हारी पहुँच से बाहर हैं, उनके लिए कोई न कोई तुम लोगों का और अधिक मार्गदर्शन करने के लिए रहेगा। अगर तुम उन क्षेत्रों के बारे में और अधिक संगति करने में संलग्न रहते हो, जो अभी तुम लोगों की पहुँच में हैं, तो पवित्र आत्मा अपना कार्य करेगा और तुम्हें अधिक समझ आ जाएगी। परमेश्वर के सार को समझना और परमेश्वर के सार को जानना लोगों के जीवन में प्रवेश के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग इसकी उपेक्षा नहीं करोगे या इसे एक खेल की तरह नहीं लोगे, क्योंकि परमेश्वर को जानना मनुष्य के विश्वास का आधार और उसके लिए सत्य का अनुसरण करने और उद्धार पाने की कुंजी है। अगर लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं मगर उसे जानते नहीं, अगर वे केवल शब्दों और सिद्धांतों में जीते रहते हैं, तो उनके लिए उद्धार प्राप्त करना कभी संभव नहीं होगा, भले ही वे सत्य के सतही अर्थ के अनुसार कार्य करते और जीते रहें। अर्थात्, अगर तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो लेकिन उसे जानते नहीं, तो तुम्हारा विश्वास बिलकुल बेकार है और उसमें वास्तविकता का कोई अंश नहीं है। तुम समझते हो, है न? (हाँ, हम समझते हैं।) आज की हमारी संगति यहीं समाप्त होती है। (परमेश्वर का धन्यवाद!)

4 जनवरी, 2014

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है VI

परमेश्वर की पवित्रता (III)

हमने पिछली बार जिस विषय पर संगति की थी, वो था परमेश्वर की पवित्रता। स्वयं परमेश्वर के किस पहलू से परमेश्वर की पवित्रता सम्बन्धित है? क्या यह परमेश्वर के सार से सम्बन्धित है? (हाँ।) तो परमेश्वर के सार का वह मुख्य पहलू क्या है जिसे हमने अपनी संगति में संबोधित किया? क्या यह परमेश्वर की पवित्रता है? परमेश्वर की पवित्रता परमेश्वर का अद्वितीय सार है। पिछली बार हमारी संगति की मुख्य विषयवस्तु क्या थी? (शैतान की दुष्टता की परख। अर्थात, शैतान ज्ञान, विज्ञान, पारम्परिक संस्कृति, अंधविश्वास एवं सामाजिक प्रवृत्तियों का उपयोग करके मनुष्यजाति को किस प्रकार भ्रष्ट करता है।) यह वह मुख्य विषय था जिस पर हमने पिछली बार चर्चा की थी। शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान, विज्ञान, अंधविश्वास, पारम्परिक संस्कृति एवं सामाजिक प्रवृत्तियों का उपयोग करता है; ये वे तरीके हैं जिनसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है। कुल मिलाकर पाँच तरीके हैं। तुम लोगों की सोच के अनुसार शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए इनमें से किस तरीके को सबसे ज़्यादा उपयोग में लाता है? वह कौन सा तरीका है जिसका उपयोग लोगों को सबसे गहराई से भ्रष्ट करने के लिए किया जाता है? (पारम्परिक संस्कृति। ऐसा इसलिए है कि शैतानी फलसफे जैसे कि कन्फ्यूशियस और मेनसियस के सिद्धांत हमारे मन में गहराई से जड़ पकड़े हुए हैं।) इसलिए, कुछ भाई-बहन सोचते हैं कि जवाब है "पारम्परिक संस्कृति"। क्या किसी और के पास कोई अलग जवाब है? (ज्ञान। ज्ञान हमें कभी परमेश्वर की आराधना नहीं करने देगा। यह परमेश्वर के अस्तित्व को नकारता है, और परमेश्वर के शासन को नकारता है। अर्थात्, शैतान हमें कम उम्र से ही अध्ययन शुरू करने के लिए कहता है, और कहता है कि केवल अध्ययन करने और ज्ञान अर्जित करने से ही हमारे भविष्य की संभावनाएं उज्ज्वल होंगी एवं हमारी तकदीर सुखी होगी।) शैतान तुम्हारे भविष्य एवं तुम्हारी तकदीर को नियन्त्रित करने के लिए ज्ञान का उपयोग करता है, फिर वह तुम्हारी नाक में नकेल डाल कर तुम्हें चलाता है, और तुम सोचते हो कि इसी तरह से शैतान सर्वाधिक गहराई से मनुष्य को भ्रष्ट करता है। तो तुम लोगों में से अधिकांश यह सोचते हैं कि शैतान मनुष्य को सर्वाधिक गहराई से भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग करता है। क्या किसी के पास कोई अन्य जवाब है? उदाहरण के लिए, विज्ञान या सामाजिक प्रवृत्तियों के बारे में क्या कहेंगे? क्या कोई इन बातों को जवाब मानेगा? (हाँ।) आज मैं फिर से उन पाँच तरीकों के बारे में संगति करूँगा जिनसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है और, जब एक

बार मैं समाप्त कर दूँ, तब मैं तुम लोगों से कुछ और प्रश्न पूछूँगा ताकि हम देख सकें कि शैतान इनमें कौन सी चीज से मनुष्य को सर्वाधिक गहराई से भ्रष्ट करता है।

उन पाँच तरीकों में, जिनसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है, उनमें से पहला तरीका जिसका हमने जिक्र किया था वो ज्ञान है, तो आओ हम सबसे पहले ज्ञान को अपनी संगति के लिए अपने पहले विषय के रूप में लें। शैतान ज्ञान को एक चारे के रूप में उपयोग करता है। ध्यान से सुनें: ज्ञान बस एक प्रकार का चारा है। लोगों को लुभाया जाता है कि "कठिन अध्ययन करें और दिन प्रति दिन खुद को बेहतर बनाएं," ज्ञान को हथियार के रूप में उपयोग करें और स्वयं को उससे हथियारबंद करें, और फिर विज्ञान के द्वार को खोलने के लिए ज्ञान का उपयोग करें; दूसरे शब्दों में, जितना अधिक ज्ञान तुम अर्जित करोगे, उतना ही अधिक तुम समझोगे। शैतान लोगों को यह सब कुछ बताता है; यह लोगों को ज्ञान सीखने के समय ही ऊँचे आदर्शों को बढ़ावा देने के लिए भी कहता है, वह उन्हें बताता है कि उन्हें महत्वाकांक्षाएँ एवं आकांक्षाएं पैदा करनी चाहिए। मनुष्य की जानकारी के बिना, शैतान इस प्रकार के अनेक सन्देश देता है, लोगों को अवचेतन रूप से यह महसूस करवाता है कि ये चीज़ें सही हैं, या लाभप्रद हैं। अनजाने में, लोग इस मार्ग पर कदम रखते हैं, अनजाने में ही अपने स्वयं के आदर्शों एवं महत्वाकांक्षाओं के द्वारा आगे बढ़ने को बाध्य किए जाते हैं। कदम दर कदम, वे बिना इरादे के ही शैतान के द्वारा दिए गए ज्ञान से सीखते हैं कि महान या प्रसिद्ध लोगों के सोचने के तरीके क्या हैं। वे कुछ ऐसे लोगों के कर्मों से भी कुछ चीज़ें सीखते हैं जिन्हें नायक माना जाता है। शैतान इन नायकों के कर्मों के सन्दर्भ में मनुष्य के लिए किस बात का समर्थन कर रहा है? वह मनुष्य के मन के भीतर क्या बिठाना चाहता है? यह कि मनुष्य को देशभक्त अवश्य होना चाहिए, उसके पास राष्ट्रीय अखण्डता अवश्य होनी चाहिए, और उसमें वीरोचित भावना अवश्य होनी चाहिए। मनुष्य ऐतिहासिक कहानियों से या प्रसिद्ध वीरोचित व्यक्तियों की जीवनियों से क्या सीखता है? व्यक्तिगत वफादारी के एहसास का होना, अपने दोस्तों और भाइयों के लिए, कुछ भी कर गुज़रने को तैयार होना। शैतान के इस ज्ञान के अंतर्गत, मनुष्य अनजाने में कई ऐसी चीज़ों को सीखता है जो बिल्कुल सकारात्मक नहीं हैं। अनभिज्ञता के बीच, शैतान के द्वारा उनके लिए तैयार किए गए बीजों को लोगों के अपरिपक्व मनों में बो दिया जाता है। ये बीज उन्हें यह महसूस करवाते हैं कि उन्हें महान मनुष्य होना चाहिए, प्रसिद्ध होना चाहिए, नायक होना चहिए, देशभक्त होना चाहिए, ऐसे लोग होना चाहिए जो अपने परिवार से प्रेम करते हैं, और ऐसे लोग होना चाहिए जो एक मित्र के लिए कुछ भी करेंगे और

व्यक्तिगत वफादारी का एहसास रखेंगे। शैतान के द्वारा बहकाए जाने के द्वारा, वे अनजाने में ही उस रास्ते पर चल पड़ते हैं जिसे उसने उनके लिए तैयार किया था। जब वे इस रास्ते पर चलते हैं, तो उन्हें शैतान के जीवन जीने के नियमों को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाता है। पूरी तरह अनजाने में, वे जीवन जीने के अपने स्वयं के नियम विकसित कर लेते हैं, जबकि ये शैतान के उन नियमों के अलावा और कुछ भी नहीं होते हैं जिन्हें जबरदस्ती उनके भीतर बैठा दिया गया है। सीखने की प्रक्रिया के दौरान, शैतान उन्हें अपने स्वयं के लक्ष्यों को बढ़ावा देने, अपने स्वयं के जीवन के लक्ष्यों को, जीवन जीने के सिद्धान्तों को, और जीवन की दिशा को निर्धारित करने के लिए उकसाने का कारण बनता है, इसी बीच कहानियों का उपयोग करके, जीवनियों का उपयोग करके, और सभी संभावित माध्यमों का उपयोग करके उनमें शैतान की चीज़ों को भरता है, ताकि वे थोड़ा-थोड़ा करके उसके चारे को निगल लें। इस तरह से, अपने सीखने के दौरान कुछ लोग साहित्य, कुछ लोग अर्थशास्त्र, कुछ लोग खगोल विज्ञान या भूगोल पसन्द करने लगते हैं। फिर कुछ ऐसे लोग हैं जो राजनीति को पसन्द करने लगते हैं, कुछ लोग हैं जो भौतिक विज्ञान, कुछ रसायन विज्ञान, और यहाँ तक कि कुछ अन्य लोग धर्मशास्त्र को पसन्द करते हैं। ये सब एक बड़ी चीज का एक भाग है जिसे ज्ञान कहते हैं। अपने हृदयों में, तुम लोगों में से प्रत्येक जानता है कि ये चीजें वास्तव में क्या हैं, तुममें से हर कोई पहले से ही उनके सम्पर्क में है। तुममें से हर कोई ज्ञान की किसी न किसी शाखा के सम्बन्ध में निरन्तर बिना रुके बात कर सकता है। और इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यह ज्ञान मनुष्य के मनों में कितनी गहराई से प्रवेश कर चुका है, यह आसानी से देखा जा सकता है कि इस ज्ञान ने लोगों के मनों में क्या स्थान बना लिया है और इसका उन पर कितना गहरा प्रभाव है। जब एक बार कोई व्यक्ति ज्ञान के किसी पहलू को पसन्द करने लगता है, जब कोई व्यक्ति अपने हृदय में इसके साथ गहराई से प्रेम करने लगता है, तब वह अनजाने में ही महत्वाकांक्षाओं को विकसित कर लेता है: कुछ लोग ग्रंथकार बनना चाहते हैं, कुछ लोग साहित्यिक लेखक बनना चाहते हैं, कुछ लोग राजनीति में अपनी जीवनवृत्ति बनाना चाहते हैं, और कुछ अर्थशास्त्र में संलग्न होना और व्यवसायी बनना चाहते हैं। फिर लोगों का ऐसा समूह है जो नायक बनना चाहते हैं, महान या प्रसिद्ध बनना चाहते हैं। इस बात की परवाह किए बिना कि कोई किस प्रकार का व्यक्ति बनना चाहता है, उनका लक्ष्य ज्ञान को सीखने के इस तरीके को अपनाना और अपने उद्देश्यों के लिए और अपनी स्वयं की इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को साकार करने के लिए इसका उपयोग करना है। चाहे यह कितना ही अच्छा क्यों न

सुनाई देता हो—चाहे वे अपने स्वप्नों को हासिल करना चाहते हैं, इस जीवन को व्यर्थ में नहीं जीना चाहते हैं, या वे किसी जीवनवृत्ति में लगे रहना चाहते हैं—वे अपने ऊँचे आदर्शों एवं महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देते हैं परन्तु, दरअसल, यह सब किसलिए है? क्या तुम लोगों ने इसके बारे में पहले कभी सोचा है? शैतान यह सब क्यों करना चाहता है? इन चीज़ों को मनुष्य के भीतर बिठाने का शैतान का क्या उद्देश्य है? तुम लोगों के हृदय इस प्रश्न के प्रति स्पष्ट अवश्य होने चाहिए।

आओ अब हम इस विषय में बात करें कि किस प्रकार शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग करता है। सबसे पहले, हमें इन चीज़ों की स्पष्ट समझ रखनी होगी : ज्ञान के साथ, शैतान मनुष्य को क्या देना चाहता है? वह मनुष्य को किस प्रकार के मार्ग पर ले जाना चाहता है? (परमेश्वर का विरोध करने का मार्ग।) यह निश्चित रूप से परमेश्वर का विरोध करना ही है। तुम देख सकते हो कि लोगों के ज्ञान ग्रहण करने का यह एक परिणाम है—वे परमेश्वर का प्रतिरोध करने लगते हैं। अतः शैतान की भयावह मंशाएँ क्या हैं? तुम इसके बारे में स्पष्ट नहीं हो, क्या तुम स्पष्ट हो? मनुष्य के द्वारा ज्ञान सीखने की प्रक्रिया के दौरान, शैतान किसी भी तरीके का उपयोग कर सकता है, चाहे यह कहानियों की व्याख्या करना हो, ज्ञान का मात्र एक अंश देना हो, या उन्हें अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करने देना हो या अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने देना हो। शैतान तुम्हें किस मार्ग पर ले जाना चाहता है? लोग सोचते हैं कि ज्ञान को सीखने में कुछ भी ग़लत नहीं है, कि यह तो पूरी तरह स्वाभाविक है। इसे आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करना, ऊँचे आदर्शों को बढ़ावा देना और महत्वाकांक्षाओं का होना कर्मों की प्रेरणा को रखना है, और यही जीवन में सही मार्ग होना चाहिए। यदि लोग अपने स्वयं के आदर्शों को साकार कर सकें, या सफलतापूर्वक करियर बना सकें—तो क्या इस तरह से जीवन बिताना और भी अधिक गौरवशाली नहीं है? उस प्रकार से न केवल कोई व्यक्ति अपने पूर्वजों का सम्मान कर सकता है बल्कि संभवतः इतिहास पर अपनी छाप छोड़ सकता है—क्या यह एक अच्छी बात नहीं है? यह सांसारिक लोगों की दृष्टि में एक अच्छी बात है, और उनके लिए यह उचित और सकारात्मक होनी चाहिए। हालाँकि, क्या शैतान अपनी भयावह मंशाओं के साथ, लोगों को इस प्रकार के मार्ग पर ले चलता है और बस इतना ही होता है? कदापि नहीं। वास्तव में, मनुष्य के आदर्श चाहे कितने ही ऊँचे क्यों न हों, चाहे मनुष्य की इच्छाएँ कितनी ही वास्तविक क्यों न हों या वे कितनी ही उचित क्यों न हों, वह सब जो मनुष्य हासिल करना चाहता है, और वह सब जिसे मनुष्य खोजता है वह जटिल रूप से दो शब्दों से जुड़ा हुआ है। ये दो शब्द हर व्यक्ति के जीवन के

लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, और ये ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें शैतान मनुष्य के भीतर बिठाने का इरादा करता है। ये दो शब्द कौन से हैं? वे हैं "प्रसिद्धि" और "लाभ"। शैतान बहुत ही धूर्त किस्म का तरीका चुनता है, ऐसा तरीका जो मनुष्य की धारणाओं से बहुत अधिक मिलता जुलता है; यह किसी प्रकार का अतिवादी मार्ग नहीं है, जिसके जरिए वह लोगों से अनजाने में जीवन जीने के उसके रास्ते को, जीने के उसके नियमों को स्वीकार करवाता है, और जीवन के लक्ष्यों और जीवन में अपनी दिशा को स्थापित करवाता है, और ऐसा करने से वे अनजाने में ही जीवन में महत्वाकांक्षाएं पालने लगते हैं। चाहे जीवन में ये महत्वाकांक्षाएं कितनी ही ऊँची प्रतीत क्यों न होती हों, वे "प्रसिद्धि" और "लाभ" से अविभाज्य रूप से जुडी होती हैं। कोई भी महान या प्रसिद्ध व्यक्ति, वास्तव में सभी लोग, वे जीवन में जिस किसी चीज़ का अनुसरण करते हैं वह केवल इन दो शब्दों से ही जुड़ा होता हैः "प्रसिद्धि" एवं "लाभ"। लोग सोचते हैं कि जब एक बार उनके पास प्रसिद्धि एवं लाभ आ जाए, तो वे ऊँचे रुतबे एवं अपार धन-सम्पत्ति का आनन्द लेने के लिए, और जीवन का आनन्द लेने के लिए इन चीजों का लाभ उठा सकते हैं। वे सोचते हैं कि प्रसिद्धि एवं लाभ एक प्रकार की पूंजी है, जिसका उपयोग करके वे मौजमस्ती और देहसुख का आनंद लेने का जीवन हासिल कर सकते हैं। इस प्रसिद्धि और लाभ, जो मनुष्य को इतना प्यारा है, के लिए लोग स्वेच्छा से, यद्यपि अनजाने में, अपने शरीरों, मनों, वह सब जो उनके पास है, अपने भविष्य एवं अपनी नियतियों को ले जा कर शैतान के हाथों में सौंप देते हैं। लोग वास्तव में इसे एक पल की हिचकिचाहट के बगैर सदैव करते हैं, और इस सब कुछ को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता के प्रति सदैव अनजान होकर ऐसा करते हैं। क्या लोगों के पास तब भी स्वयं पर कोई नियन्त्रण हो सकता है जब एक बार वे इस प्रकार से शैतान की शरण ले लेते हैं और उसके प्रति वफादार हो जाते हैं? कदापि नहीं। उन्हें पूरी तरह से और सर्वथा शैतान के द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। साथ ही वे पूरी तरह से और सर्वथा दलदल में धंस गए हैं और अपने आप को मुक्त कराने में असमर्थ हैं। एक बार जब कोई प्रसिद्धि एवं लाभ के दलदल में पड़ जाता है, तो वह आगे से उसकी खोज नहीं करता है जो उजला है, जो धार्मिक है या उन चीज़ों को नहीं खोजता है जो खूबसूरत एवं अच्छी हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रसिद्धि एवं लाभ की जो मोहक शक्ति लोगों के ऊपर है वह बहुत बड़ी है, वे लोगों के लिए उनके पूरे जीवन भर और यहाँ तक कि पूरे अनंतकाल तक अनवरत अनुसरण करने की चीज़ें बन जाती हैं। क्या यह सत्य नहीं है? कुछ लोग कहेंगे कि ज्ञान को सीखना पुस्तकों को पढ़ने या कुछ चीज़ों को सीखने से अधिक और कुछ नहीं है जिन्हें वे पहले से नहीं

जानते हैं, ताकि समय से पीछे न रह जाएँ या संसार के द्वारा पीछे न छोड़ दिए जाएँ। ज्ञान को सिर्फ इसलिए सीखा जाता है ताकि वे अपने स्वयं के भविष्य के लिए या मूलभूत आवश्यकताओं हेतु बुनियादी आवश्यकताएं प्रदान करने के लिए पर्याप्त धन कमा सकें। क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो मात्र मूलभूत आवश्यकताओं के लिए, और मात्र भोजन के मुद्दे का समाधान करने के लिए एक दशक के कठिन अध्ययन को सहेगा? नहीं, ऐसा कोई नहीं है। तो कोई व्यक्ति इतने वर्षों तक इन कठिनाइयों एवं कष्टों को क्यों सहन करता है? प्रसिद्धि और लाभ के लिए। प्रसिद्धि एवं लाभ आगे उसका इंतज़ार कर रहे हैं, उसे पुकार रहे हैं, और वह विश्वास करता है कि केवल उसके स्वयं के परिश्रम, कठिनाइयों और संघर्ष के माध्यम से ही वह उस मार्ग का अनुसरण कर सकता है और इसके द्वारा प्रसिद्धि एवं लाभ प्राप्त कर सकता है। उसे अपने स्वयं के भविष्य के पथ के लिए, अपने भविष्य के आनन्द और एक बेहतर ज़िन्दगी के लिए इन कठिनाइयों को सहना ही होगा। क्या तुम लोग मुझे बता सकते हो कि इस पृथ्वी पर यह ज्ञान क्या है? क्या यह जीवन जीने के नियम नहीं हैं जिन्हें शैतान के द्वारा लोगों के भीतर डाला गया है, जिन्हें उनके ज्ञान सीखने के दौरान शैतान के द्वारा उन्हें सिखाया गया है? क्या यह जीवन के "ऊँचे आदर्श" नहीं हैं जिन्हें शैतान के द्वारा मनुष्य के भीतर डाला गया था? उदाहरण के लिए, महान लोगों के विचारों, प्रसिद्ध लोगों की ईमानदारी या वीरोचित लोगों की बहादुरी के जोश को लें, या नायकों और सामरिक उपन्यासों में तलवारबाज़ों के शौर्य एवं उदारता को लें—क्या इन रास्तों से शैतान इन आदर्शों को नहीं बैठाता है? (हाँ, ऐसा है।) ये विचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी पर अपना प्रभाव डाल रहे हैं, और प्रत्येक पीढ़ी के लोगों को इन विचारों को स्वीकार करने, इन विचारों के लिए जीने और इनका अनवरत अनुसरण के लिए तैयार किया जाता है। यही वह मार्ग है, वह माध्यम है, जिसके जरिए शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग करता है। तो जब शैतान ने इस मार्ग पर लोगों की अगुवाई की उसके पश्चात्, क्या तब भी उनके लिए परमेश्वर की आराधना करना सम्भव है? क्या ज्ञान एवं नियम जिन्हें शैतान के द्वारा मनुष्य के भीतर डाला गया है उनमें परमेश्वर की आराधना का कोई अंया भी है? क्या वे ऐसी कोई चीज़ रखते हैं जो सत्य से सम्बन्धित है? क्या वे परमेश्वर से डरने और बुराई से दूर रहने की किसी चीज़ से युक्त हैं? (नहीं, वे नहीं हैं।) तुम लोग थोड़ी अनिश्चितता की बातें करते हुए प्रतीत होते हो, परन्तु कोई बात नहीं। यदि तुम लोग यह स्वीकार करते हो कि "प्रसिद्धि" और "लाभ" ऐसे दो प्रमुख शब्द हैं जिन्हें शैतान लोगों को बुराई के मार्ग पर लुभाने के लिए उपयोग करता है, तो यह पर्याप्त है।

आओ हमने अब तक जितना विचार-विमर्श किया है, उसका संक्षेप में पुनरावलोकन करें : शैतान मनुष्य को मजबूती से अपने नियन्त्रण में रखने के लिए किस का उपयोग करता है? (प्रसिद्धि एवं लाभ का।) तो, शैतान मनुष्य के विचारों को नियन्त्रित करने के लिए प्रसिद्धि एवं लाभ का तब तक उपयोग करता है जब तक लोग केवल और केवल प्रसिद्धि एवं लाभ के बारे में सोचने नहीं लगते। वे प्रसिद्धि एवं लाभ के लिए संघर्ष करते हैं, प्रसिद्धि एवं लाभ के लिए कठिनाइयों को सहते हैं, प्रसिद्धि एवं लाभ के लिए अपमान सहते हैं, प्रसिद्धि एवं लाभ के लिए जो कुछ उनके पास है उसका बलिदान करते हैं, और प्रसिद्धि एवं लाभ के वास्ते वे किसी भी प्रकार की धारणा बना लेंगे या निर्णय ले लेंगे। इस तरह से, शैतान लोगों को अदृश्य बेड़ियों से बाँध देता है और उनके पास इन्हें उतार फेंकने की न तो सामर्थ्य होती है न ही साहस होता है। वे अनजाने में इन बेड़ियों को ढोते हैं और बड़ी कठिनाई से पाँव घसीटते हुए आगे बढ़ते हैं। इस प्रसिद्धि एवं लाभ के वास्ते, मनुष्यजाति परमेश्वर को दूर कर देती है और उसके साथ विश्वासघात करती है, तथा निरंतर और दुष्ट बनती जाती है। इसलिए, इस प्रकार से एक के बाद दूसरी पीढ़ी शैतान के प्रसिद्धि एवं लाभ के बीच नष्ट हो जाती है। अब शैतान की करतूतों को देखने पर, क्या उसकी भयानक मंशाएँ बिलकुल ही घिनौनी नहीं हैं? हो सकता है कि आज तुम लोग अब तक शैतान की भयानक मंशाओं की वास्तविक प्रकृति को नहीं देख पा रहे हो क्योंकि तुम लोग सोचते हो कि प्रसिद्धि एवं लाभ के बिना कोई जी नहीं सकता है। तुम सोचते हो कि यदि लोग प्रसिद्धि एवं लाभ को पीछे छोड़ देते हैं, तो वे आगे के मार्ग को देखने में समर्थ नहीं रहेंगे, अपने लक्ष्यों को देखने में समर्थ नहीं रह जायेँगे, उनका भविष्य अंधकारमय, मद्धिम एवं विषादपूर्ण हो जाएगा। परन्तु, धीरे-धीरे तुम सभी लोग यह समझ जाओगे कि प्रसिद्धि एवं लाभ ऐसी भयानक बेड़ियाँ हैं जिनका उपयोग शैतान मनुष्य को बाँधने के लिए करता है। जब वो दिन आएगा, तुम पूरी तरह से शैतान के नियन्त्रण का विरोध करोगे और उन बेड़ियों का पूरी तरह से विरोध करोगे जिनका उपयोग शैतान तुम्हें बाँधने के लिए करता है। जब वह समय आएगा कि तुम उन सभी चीज़ों को फेंकने की इच्छा करोगे जिन्हें शैतान ने तुम्हारे भीतर डाला है, तब तुम शैतान से अपने आपको पूरी तरह से अलग कर लोगे और तुम सच में उन सब से घृणा करोगे जिन्हें शैतान तुम तक लाया है। केवल तभी मानवजाति के पास परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम और लालसा होगी।

हमने अभी-अभी इस बारे में बात की है कि किस प्रकार शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए ज्ञान का उपयोग करता है, तो आओ इसके आगे हम इस बारे में संगति करें कि किस प्रकार शैतान मनुष्य को भ्रष्ट

करने के लिए विज्ञान का उपयोग करता है। पहली बात, विज्ञान का अनुसंधान करने और रहस्यों की छानबीन करने की इंसानी जिज्ञासा और इच्छा को संतुष्ट करने के लिए, शैतान विज्ञान के नाम का उपयोग करता है। विज्ञान के नाम पर, शैतान, मनुष्य की उन भौतिक आवश्यकताओं और माँगों को संतुष्ट करता है जिनका उपयोग मनुष्य अपने जीवन की गुणवत्ता को निरन्तर बेहतर बनाने के लिए करता रहता है। इस तरह शैतान, इस बहाने से, मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए विज्ञान का उपयोग करता है। क्या यह सिर्फ मनुष्य की सोच है या मनुष्य का दिमाग है जिसे शैतान विज्ञान का इस तरीके से उपयोग करके भ्रष्ट करता है? हमारे पास-पड़ोस के लोगों, घटनाओं, एवं चीज़ों में, जिन्हें हम देख सकते हैं और जिनके सम्पर्क में हम आते हैं, और ऐसा क्या है जिसे शैतान विज्ञान से भ्रष्ट करता है? (प्राकृतिक पर्यावरण।) सही कहा। ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोगों ने इसके कारण भारी नुकसान झेला है, और तुम लोग बहुत अधिक प्रभावित हुए हो। मनुष्य को धोखा देने के लिए विज्ञान की सब प्रकार की विभिन्न खोजों एवं निष्कर्षों का उपयोग करने के अलावा, शैतान विज्ञान का उपयोग एक ऐसे साधन के रूप में भी करता है जिससे जीवित रहने के उस पर्यावरण का मनमाने ढंग से विनाश एवं दोहन करे जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को प्रदान किया था। वह इसे इस बहाने से करता है कि यदि मनुष्य वैज्ञानिक अनुसंधान को क्रियान्वित करता है, तो मनुष्य का रहने का वातावरण तथा जीवन की गुणवत्ता में निरन्तर सुधार होगा, और इसके अतिरिक्त वह यह बहाना करता है कि वैज्ञानिक विकास, लोगों की बढ़ती हुई दैनिक भौतिक आवश्यकताओं और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करने की उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए है। यह शैतान का विज्ञान के विकास का सैद्धान्तिक आधार है। हालाँकि, विज्ञान ने मानवजाति को क्या दिया है? हम जिस पर्यावरण से जुड़े हैं वह किन चीज़ों से मिलकर बना हुआ है? क्या जिस वायु में मनुष्यजाति साँस लेती है, वह प्रदूषित नहीं हो गयी है? क्या वह जल जिसे हम पीते हैं, अभी भी सचमुच शुद्ध है? (नहीं।) जो भोजन हम खाते हैं, क्या वो प्राकृतिक है? उसका अधिकांश भाग रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके उगाया जाता है और आनुवांशिक संशोधन का उपयोग करके इसकी खेती की जाती है, और साथ ही विभिन्न वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग करने के कारण हुए उत्परिवर्तन भी हैं। यहाँ तक कि सब्जियाँ और फल जिन्हें हम खाते हैं, वे भी अब प्राकृतिक नहीं रह गए हैं। प्राकृतिक अण्डे पाना भी अब आसान नहीं है और शैतान के तथाकथित विज्ञान के द्वारा पहले से ही संसाधित कर दिए जाने के कारण अण्डों का वैसा स्वाद भी नहीं रहा जैसा पहले हुआ करता था। पूरे मामले को समझें तो, समूचे वातावरण को नष्ट और प्रदूषित कर दिया गया है;

पहाड़ों, झीलों, जंगलों, नदियों, महासागरों, और भूमि के ऊपर और नीचे की हर चीज़ को तथाकथित वैज्ञानिक उपलब्धियों के द्वारा नष्ट कर दिया गया है। संक्षेप में, सम्पूर्ण प्राकृतिक पर्यावरण एवं जीवन जीने के लिए परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति को प्रदान किया गया सम्पूर्ण पर्यावरण, तथाकथित विज्ञान के द्वारा नष्ट एवं बर्बाद कर दिया गया है। यद्यपि ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने, अपनी इच्छाओं और अपने शरीर दोनों को संतुष्ट करते हुए, जीवन की गुणवत्ता के सन्दर्भ में वह प्राप्त कर लिया है जिसकी उन्होंने सदैव आशा की थी, लेकिन जिस पर्यावरण में मनुष्य रहता है, उसे विज्ञान द्वारा लाई गई विभिन्न "उपलब्धियों" के द्वारा मूल रूप से नष्ट एवं बर्बाद कर दिया गया है। अब हमें स्वच्छ हवा की एक साँस लेने का भी अधिकार नहीं रह गया है। क्या यह मनुष्यजाति का दुःख नहीं है? क्या मनुष्य के लिए अभी भी खुशी की कोई बात रह गयी है जबकि उसे ऐसी जगह में रहना पड़ रहा है? शुरुआत से ही, मनुष्य जिस जगह और जिस पर्यावरण में रहता है वह परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के लिए सृजित किया गया था। वह जल जिसे लोग पीते हैं, वह वायु जिसमें लोग साँस लेते हैं, वह भोजन जिसे लोग खाते हैं, पौधे, पेड़, और महासागर—रहने के इस पर्यावरण का हर हिस्सा, परमेश्वर के द्वारा मनुष्य को प्रदान किया गया था; यह प्राकृतिक है, और परमेश्वर के द्वारा स्थापित प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार संचालित हो रहा है। यदि विज्ञान नहीं होता, तो लोग खुश होते और परमेश्वर के तरीके से हर चीज़ का उसके असल रूप में आनन्द उठा सकते थे और परमेश्वर ने उनके सुख के लिए उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उसका आनन्द उठा सकते थे। लेकिन, अब यह सब-कुछ शैतान के द्वारा नष्ट और बर्बाद कर दिया गया है; मनुष्य के रहने की मूलभूत जगह अब अपने मूल स्वरूप में नहीं रह गयी है। परन्तु कोई भी यह समझ नहीं पाता कि यह किस कारण हुआ या यह कैसे हुआ है, अधिक से अधिक लोग शैतान के द्वारा उनमें डाले गए उन विचारों का उपयोग करके विज्ञान को समझते हैं और विज्ञान के नज़दीक आते हैं। क्या यह अत्यंत घृणास्पद एवं दयनीय नहीं है? अब जबकि शैतान ने उस जगह को ले लिया है जिसमें लोग जीते हैं, साथ ही उनके रहने के पर्यावरण को भी ले लिया है और उन्हें इस स्थिति तक भ्रष्ट कर दिया, और मानवजाति के निरन्तर इस तरह से विकसित होते रहने से, क्या परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से इन लोगों को नष्ट करने की कोई आवश्यकता है? यदि लोग निरन्तर इसी रीति से विकसित होते रहे, तो वे कौन-सी दिशा में जायेंगे? (वे पूर्णतया विनष्ट कर दिए जाएँगे।) वे कैसे पूर्णतया विनष्ट कर दिए जाएँगे? प्रसिद्धि एवं लाभ के लिए लोग अपनी लालच-भरी खोज के अलावा, निरन्तर वैज्ञानिक अन्वेषण करते हैं एवं अनुसंधान की गहराई में उतरते रहते हैं, फिर वे लगातार अपनी

भौतिक आवश्यकताओं और इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए कार्य करते रहते हैं; तो फिर मनुष्य के लिए इसके क्या नतीजे होते हैं? सबसे पहले, पर्यावरणीय संतुलन टूट जाता है, जब ये होता है, तो लोगों के शरीर, उनके आंतरिक अंग इस असंतुलित पर्यावरण से दूषित एवं क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, और दुनिया भर में विभिन्न संक्रामक रोग और महामारियाँ फैल जाती हैं। क्या यह सच नहीं है कि अब ऐसी स्थिति है जिस पर मनुष्य का कोई नियन्त्रण नहीं है? अब जबकि तुम लोग इसे समझते हो, यदि मनुष्यजाति परमेश्वर का अनुसरण न करे, बल्कि इस तरह से हमेशा शैतान का अनुसरण करे—अपने आपको लगातार समृद्ध करने के लिए ज्ञान का उपयोग करे, बिना रुके मानवीय जीवन के भविष्य की खोज करने के लिए विज्ञान का उपयोग करे, जीवन बिताते रहने के लिए इस प्रकार की पद्धति का उपयोग करे—तो क्या तुम समझ सकते हो कि मानवजाति के लिए इसका अन्त क्या होगा? (इसका अर्थ होगा विलोपन।) हाँ, इसका अंत विलोपन के रूप में होगा : एक-एक कदम बढ़ाते हुए, मानवजाति विलुप्त होने के कगार पर आ रही है! अब ऐसा लग रहा है मानो विज्ञान एक प्रकार का जादुई पेय है जिसे शैतान ने मनुष्य के लिए तैयार किया है, ताकि जब तुम लोग चीज़ों को समझने की कोशिश करो तो तुम लोग अस्पष्ट धुंध में ऐसा करो; चाहे तुम कितने ही ध्यान से क्यों न देखो, तुम चीज़ों को साफ-साफ नहीं देख सकते, और चाहे तुम लोग कितना ही प्रयास क्यों न करो, तुम उन्हें समझ नहीं सकते। क्योंकि, तुम्हारी भूख को बढ़ाने और कदम-कदम बढ़ाते हुए तुम्हें रसातल तथा मृत्यु की ओर ज़बरदस्ती ले जाने के लिए, शैतान विज्ञान के नाम का उपयोग करता है। क्या ऐसा ही नहीं है? (हाँ, ऐसा है।) यह दूसरा तरीका है जिससे शैतान मानवजाति को भ्रष्ट करता है।

पारम्परिक संस्कृति वह तीसरा तरीका है जिससे कि शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है। पारम्परिक संस्कृति एवं अंधविश्वास के बीच अनेक समानताएँ हैं, लेकिन अंतर यह है कि पारम्परिक संस्कृति में कुछ निश्चित कहानियाँ, संकेत, एवं स्रोत होते हैं। शैतान ने, लोगों पर पारम्परिक संस्कृति या मिथ्याधर्मी प्रसिद्ध व्यक्तियों के बारे में गहरा प्रभाव डालते हुए, कई लोक कथाओं या कहानियों को गढ़ा और बनाया है जो इतिहास की पुस्तकों में मिलती हैं। उदाहरण के लिए, चीन में, "आठ अमर हस्तियों का समुद्र पार करना," "पश्चिम की ओर यात्रा," जेड सम्राट, "नेज़्हा की अजगर राजा पर विजय," और "ईश्वरों का अधिष्ठापन।" क्या ये मनुष्य के मनों में गहराई से जड़ नहीं पकड़ चुकी हैं? भले ही तुम में से कुछ लोग पूरी कहानी विस्तार से न जानें, फिर भी तुम मोटे तौर पर कहानियों को तो जानते ही हो, और मोटे तौर की यही जानकारी है जो तुम्हारे हृदय और मन में बैठ जाती है, ताकि तुम इसे भुला न सको। ये ही वे विभिन्न विचार या किंवदंतियाँ

हैं जिन्हें शैतान ने बहुत समय पहले मनुष्य के लिए तैयार किया था जिन्हें विभिन्न समयों पर को फैलाया गया है। ये चीज़ें प्रत्यक्ष रूप से लोगों की आत्माओं को हानि पहुँचाती हैं और नष्ट करती हैं और लोगों को एक के बाद एक मायाजाल में डालती हैं। कहने का तात्पर्य है कि जब एक बार तुम ऐसी पारम्परिक संस्कृति, कथाओं या अंधविश्वासी चीज़ों को स्वीकार कर लेते हो, जब एक बार ये तुम्हारे मन में बैठ जाती हैं, और जब एक बार वे तुम्हारे हृदय में अटक जाती हैं, तो यह तुम्हारे सम्मोहित हो जाने जैसा है—तुम इन सांस्कृतिक जालों में, इन विचारों एवं पारम्परिक कथाओं में उलझ जाते हो और प्रभावित हो जाते हो। वे तुम्हारे जीवन, जीवन को देखने के तुम्हारे नज़रिये, चीज़ों के बारे में तुम्हारे फैसले को प्रभावित करती हैं। इससे भी बढ़कर, वे जीवन के सच्चे मार्ग के तुम्हारे अनुसरण को भी प्रभावित करती हैं : यह वास्तव में एक दुष्टतापूर्ण मायाजाल है। तुम जितनी भी कोशिश कर लो, परन्तु उन्हें झटक कर दूर नहीं कर सकते; तुम उन पर चोट तो करते हो किन्तु उन्हें काटकर नीचे नहीं गिरा सकते हो; तुम उन पर प्रहार तो करते हो किन्तु उन पर प्रहार करके उन्हें दूर नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त, जब लोगों की जानकारी के बिना उन पर इस प्रकार का मायाजाल डाल दिया जाता है, तो वे अनजाने में, अपने हृदय में शैतान की छवि को बढ़ावा देते हुए, शैतान की आराधना करना आरम्भ कर देते हैं। दूसरे शब्दों में, वे शैतान को अपने आदर्श के रूप में, अपने लिए एक आराधना करने और आदर करने की वस्तु के रूप में स्थापित कर लेते हैं, यहाँ तक कि वे उसे परमेश्वर मानने की हद तक भी चले जाते हैं। अनजाने में ही, ये चीज़ें लोगों के हृदय में हैं, उनके वचनों एवं कर्मों को नियन्त्रित कर रही हैं। इसके अलावा, तुम पहले तो इन कहानियों और किंवदंतियों को झूठा मानते हो, और फिर तुम अनजाने में इनके अस्तित्व को मान लेते हो, उन्हें वास्तविक व्यक्ति, वास्तविक, विद्यमान वस्तु बना देते हो। अपनी अनभिज्ञता में, तुम अवचेतन रूप से इन विचारों को और इन चीज़ों के अस्तित्व को ग्रहण कर लेते हो। तुम अवचेतन रूप से दुष्टात्माओं, शैतान एवं मूर्तियों को भी अपने घर में और अपने हृदय में ग्रहण कर लेते हो—यह वास्तव में एक मायाजाल है। क्या तुम लोग इन बातों से खुद को जोड़ पा रहे हो? (हाँ।) क्या तुम लोगों के बीच में ऐसे लोग हैं जिन्होंने बुद्ध के सामने धूप जलायी है और उसकी आराधना की है? (हाँ।) तो धूप जलाने और बुद्ध की आराधना करने का उद्देश्य क्या था? (शान्ति के लिए प्रार्थना करना।) इसके बारे में अब सोचो तो, क्या शांति के लिए शैतान से प्रार्थना करना बेतुका नहीं है? क्या शैतान शान्ति लाता है? (नहीं।) क्या तुम लोग नहीं देख पा रहे कि पहले तुम कितने अज्ञानी थे? इस प्रकार का आचरण बहुत ही बेतुका, अज्ञानता एवं बेवकूफी भरा है, है कि नहीं?

शैतान सिर्फ इससे मतलब रखता है कि किस प्रकार तुम्हें भ्रष्ट किया जाए। शैतान तुम्हें शान्ति नहीं दे सकता, वह तुम्हें केवल अस्थायी राहत ही दे सकता है। परन्तु यह राहत पाने के लिए तुम्हें अवश्य एक प्रतिज्ञा लेनी होगी और यदि तुम अपने वादे या उस प्रतिज्ञा को तोड़ते हो जो तुमने शैतान से किया है, तो तुम देखोगे कि वह तुम्हें किस प्रकार कष्ट देता है। तुमसे एक प्रतिज्ञा दिलवा कर, वह वास्तव में तुम्हें नियंत्रित करना चाहता है। जब तुम लोगों ने शान्ति के लिए प्रार्थना की थी, तो क्या तुम लोगों ने शान्ति पाई? (नहीं।) तुम लोगों ने शान्ति नहीं पाई, इसके विपरीत तुम्हारे प्रयास केवल दुर्भाग्य, अंतहीन आपदाएँ लाये, सच में कड़वाहट का असीम महासागर लाये। शान्ति शैतान के अधिकार क्षेत्र में नहीं है, और यह सत्य है। यह वह परिणाम है जो सामंती अन्धविश्वास और पारम्परिक संस्कृति मानवजाति के लिए लाये हैं।

सामाजिक प्रवृत्तियां वो अंतिम तरीका है जिससे कि शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है। "सामाजिक प्रवृत्तियों" में अनेक बातें शामिल हैं। कुछ लोग कहते हैं : "क्या इसका अर्थ नवीतनम फैशन, सौन्दर्य प्रसाधन, बालों की शैली और स्वादिष्ट भोजन है?" क्या ये चीज़ें सामाजिक प्रवृत्तियाँ मानी जाती हैं? ये सामाजिक प्रवृतियों का एक भाग हैं, परन्तु हम यहाँ उनके बारे में बात नहीं करेंगे। हम बस ऐसे विचारों के बारे में बात करना चाहते हैं जिन्हें सामाजिक प्रवृत्तियाँ लोगों में उत्पन्न करती हैं, जिस तरह से वे संसार में लोगों से आचरण करवाती हैं, और लोगों में जीवन के लक्ष्यों एवं जीवन को देखने का जो नज़रिया उत्पन्न करती हैं उन पर बात करना चाहते हैं। ये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं; वे मनुष्य के मन की अवस्था को नियन्त्रित और प्रभावित कर सकती हैं। ये सभी प्रवृत्तियाँ एक के बाद एक उठती हैं, और उन सभी का दुष्ट प्रभाव होता है जो निरन्तर मनुष्य को पतित करता रहता है, जिसके कारण लोग लगातार विवेक, मानवता और तर्कशीलता को गँवा देते हैं, और जो उनकी नैतिकता एवं उनके चरित्र की गुणवत्ता को और अधिक कमजोर कर देता है, इस हद तक कि हम यह भी कह सकते हैं कि अब अधिकांश लोगों में कोई ईमानदारी नहीं है, कोई मानवता नहीं है, न ही उनमें कोई विवेक है, और तर्क तो बिलकुल भी नहीं है। तो ये प्रवृत्तियाँ क्या हैं? ये वो प्रवृत्तियाँ हैं जिन्हें तुम खुली आँखों से नहीं देख सकते। जब कोई नयी प्रवृत्ति दुनिया पर छा जाती है, तो कदाचित् सिर्फ कुछ ही लोग अग्रणी स्थान पर होते हैं, जो प्रवृत्ति स्थापित करने वालों के तौर पर काम करते हैं। वे कुछ नया काम करते हुए शुरुआत करते हैं, फिर कुछ नए विचार या कुछ नए दृष्टिकोण स्वीकार करते हैं। लेकिन, अनभिज्ञता की दशा में, अधिकांश लोग इस किस्म की प्रवृत्ति के द्वारा अभी भी लगातार संक्रमित, सम्मिलित एवं आकर्षित होंगे, जब तक वे सब अनजाने में एवं

अनिच्छा से इसे स्वीकार नहीं कर लेते हैं, इसमें डूब नहीं जाते हैं और इसके द्वारा नियन्त्रित नहीं कर लिए जाते हैं। एक के बाद एक, ऐसी प्रवृत्तियाँ लोगों से, जो स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन के नहीं हैं; जो नहीं जानते हैं कि सत्य क्या है, और जो सकारात्मक एवं नकारात्मक चीज़ों के बीच अन्तर नहीं कर सकते हैं, इन्हें और साथ ही जीवन के दृष्टिकोण एवं मूल्यों को जो शैतान से आते हैं खुशी से स्वीकार करवाती हैं। शैतान उन्हें जीवन के प्रति नज़रिया रखने के बारे में जो बताता है वे उसे और जीवन जीने के उस तरीके को स्वीकार कर लेता है जो शैतान उन्हें "प्रदान" करता है, और उसने पास न तो सामर्थ्य है, न ही योग्यता है, प्रतिरोध करने की जागरूकता तो बिलकुल भी नहीं है। तो, ये प्रवृत्तियाँ आखिर क्या हैं? मैंने एक साधारण-सा उदाहरण चुना है जो तुम लोगों को धीरे-धीरे समझ में आ सकता है। उदाहरण के लिए, अतीत में लोग अपने व्यवसाय को इस प्रकार चलाते थे जिससे कोई भी धोखा न खाये; वे वस्तुओं को एक ही दाम में बेचते थे, इस बात की परवाह किए बिना कि कौन खरीद रहा है। क्या यहाँ अच्छे विवेक एवं मानवता के कुछ तत्व व्यक्त नहीं हो रहे हैं? जब लोग अपने व्यवसाय को ऐसे, अच्छे विश्वास के साथ संचालित करते थे, तो यह देखा जा सकता है कि उस समय भी उनमें कुछ विवेक, कुछ मानवता बाकी थी। परन्तु मनुष्य की धन की लगातार बढ़ती हुई माँग के कारण, लोग अनजाने में धन, लाभ, मनोरंजन और अन्य कई चीजों से प्रेम करने लगे थे। संक्षेप में, लोग धन को अधिक महत्वपूर्ण चीज़ के रुप में देखने लगे थे। जब लोग धन को अधिक महत्वपूर्ण चीज़ के रूप में देखते हैं, तो वे अनजाने में ही अपनी प्रसिद्धि, अपनी प्रतिष्ठा, अपने नाम, और अपनी ईमानदारी को कम महत्व देने लगते हैं; क्या वे ऐसा नहीं करते? जब तुम व्यवसाय करते हो, तो तुम लोगों को ठगने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करते और धनी बनते हुए देखते हो। यद्यपि जो धन कमाया गया है वह बेईमानी से प्राप्त हुआ है, फिर भी वे और भी अधिक धनी बनते जाते हैं। भले ही तुम्हारा और उनका व्यवसाय एक हो, परन्तु तुम्हारी अपेक्षा उनका परिवार कहीं अधिक जीवन का आनन्द उठाता है, और तुम बुरा महसूस करते हुए खुद से यह कहते हो कि : "मैं वैसा क्यों नहीं कर सकता? मैं उतना क्यों नहीं कमा पाता हूँ जितना वे कमाते हैं? मुझे और अधिक धन प्राप्त करने के लिए, और अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए कोई तरीका सोचना होगा।" तब तुम इस बारे में अपना भरसक विचार करते हो कि कैसे बहुत सा पैसा बनाया जाए। धन कमाने के सामान्य तरीके के अनुसार—सभी ग्राहकों को एक ही कीमत पर वस्तुओं को बेच कर—जो धन तुम कमाते हो वह अच्छे विवेक से कमाया गया है। परन्तु यह जल्दी अमीर बनने का तरीका नहीं है। लाभ कमाने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर,

तुम्हारी सोच धीरे-धीरे बदलती है। इस रुपान्तरण के दौरान, तुम्हारे आचरण के सिद्धान्त भी बदलने शुरू हो जाते हैं। जब तुम पहली बार किसी को धोखा देते हो, तो तुम्हारे मन में संदेह होता है, तुम कहते हो, "यह आख़िरी बार है कि मैंने किसी को धोखा दिया है| मैं ऐसा दोबारा नहीं करूँगा। मैं लोगों को धोखा नहीं दे सकता। लोगों को धोखा देने के गंभीर परिणाम होते हैं। इससे मैं बड़ी मुश्किलों में पड़ जाऊँगा!" जब तुम पहली बार किसी को धोखा देते हो, तो तुम्हारे हृदय में कुछ नैतिक संकोच होते हैं; यह मनुष्य के विवेक का कार्य है—तुम्हें नैतिक संकोच का एहसास कराना और तुम्हें धिक्कारना, ताकि जब तुम किसी को धोखा दो तो असहज महसूस करो। परन्तु जब तुम किसी को सफलतापूर्वक धोखा दे देते हो, तो तुम देखते हो कि अब तुम्हारे पास पहले की अपेक्षा अधिक धन है, और तुम सोचते हो कि यह तरीका तुम्हारे लिए अत्यंत फायदेमंद हो सकता है। तुम्हारे हृदय में हल्के से दर्द के बावजूद, तुम्हारा मन करता है कि तुम अपनी सफलता पर स्वयं को बधाई दो, और तुम स्वयं से थोड़ा खुश महसूस करते हो। पहली बार, तुम अपने व्यवहार को, अपने धोखे को मंजूरी देते हो। इसके बाद, जब एक बार मनुष्य ऐसे धोखे से दूषित हो जाता है, तो यह उस व्यक्ति के समान हो जाता है जो जुआ खेलता है और फिर एक जुआरी बन जाता है। अपनी अनभिज्ञता में, तुम अपने स्वयं के धोखाधड़ी के व्यवहार को मंजूरी दे देते हो और उसे स्वीकार कर लेते हो। अनभिज्ञता में, तुम धोखाधड़ी को जायज़ वाणिज्यिक व्यवहार मान लेते हो और अपने जीने के लिए और अपनी रोज़ी-रोटी के लिए तुम धोखाधड़ी को अत्यंत उपयोगी साधन मान लेते हो; तुम सोचते हैं कि ऐसा करके तुम जल्दी से पैसे बना सकते हो। यह एक प्रक्रिया है : शुरुआत में, लोग इस प्रकार के व्यवहार को स्वीकार नहीं कर पाते, वे इस व्यवहार और अभ्यास को नीची दृष्टि से देखते हैं, फिर वे स्वयं ऐसे व्यवहार से प्रयोग करने लगते हैं, अपने तरीके से इसे आजमाते हैं, और उनका हृदय धीरे-धीरे रूपान्तरित होना शुरू हो जाता है। यह किस तरह का रूपान्तरण है? यह इस प्रवृत्ति की, इस प्रकार के विचार की स्वीकृति और मंजूरी है जिसे सामाजिक प्रवृत्ति के द्वारा तुम्हारे भीतर डाला गया है। इसका एहसास किए बिना, यदि तुम लोगों के साथ व्यवसाय करते समय उन्हें धोखा नहीं देते हो, तो तुम महसूस करते हो कि तुम दुष्टतर हो; यदि तुम लोगों को धोखा नहीं देते हो तो तुम महसूस करते हो कि तुमने किसी चीज़ को खो दिया है। अनजाने में, यह धोखाधड़ी तुम्हारी आत्मा, तुम्हारी रीढ़ की हड्डी बन जाती है, और एक प्रकार का अत्यावश्यक व्यवहार बन जाती है जो तुम्हारे जीवन में एक सिद्धान्त है। जब मनुष्य इस प्रकार के व्यवहार और ऐसी सोच को स्वीकार कर लेता है, तो क्या यह उसके हृदय में परिवर्तन नहीं लाता

है? तुम्हारा हृदय परिवर्तित हो गया है, तो क्या तुम्हारी ईमानदारी भी बदल गयी है? क्या तुम्हारी मानवता बदल गयी है? क्या तुम्हारा विवेक बदल गया है? (हाँ।) हाँ, ऐसे मनुष्यों का हर हिस्सा, उसके हृदय से लेकर उसके विचारों तक, इस हद तक एक गुणात्मक परिवर्तन से गुज़रता है कि वह भीतर से लेकर बाहर तक रूपांतरित हो जाता है। यह परिवर्तन तुम्हें परमेश्वर से दूर करता चला जाता है तथा तुम अधिक से अधिक शैतान के अनुरूप बनते चले जाते हो; तुम अधिक से अधिक शैतान के समान बन जाते हो।

जब इन सामाजिक प्रवृत्तियों को देखते हो, तो क्या तुम कहोगे कि उनका लोगों पर बहुत बड़ा प्रभाव है? क्या इनका लोगों पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव होता है? (हाँ।) उनका लोगों पर बहुत ही गहरा हानिकारक प्रभाव होता है। शैतान इन सामाजिक प्रवृत्तियों का एक के बाद एक उपयोग करते हुए मनुष्य में किन चीजों को भ्रष्ट करता? (मनुष्य का विवेक, तर्क, मानवता, नैतिकता और जीवन के प्रति दृष्टिकोण।) वे मनुष्य में क्रमिक पतन का कारण बनते हैं, है न? शैतान इन सामाजिक प्रवृत्तियों का उपयोग करता है ताकि एक-एक कदम करके लोगों को दुष्टात्माओं के घोंसले में आने के लिए लुभा सके, ताकि सामाजिक प्रवृत्तियों में फँसे लोग अनजाने में ही धन, भौतिक इच्छाओं, दुष्टता एवं हिंसा का समर्थन करें। जब एक बार ये चीज़ें मनुष्य के हृदय में प्रवेश कर जाती हैं, तो मनुष्य क्या बन जाता है? मनुष्य दुष्टात्मा, शैतान बन जाता है! क्यों? मनुष्य के हृदय में कौन से मनोवैज्ञानिक झुकाव हैं? मनुष्य किस बात का सम्मान करता है? मनुष्य दुष्टता और हिंसा में आनंद लेना शुरू कर देता है, वो खूबसूरती या अच्छाई के प्रति प्रेमभाव नहीं दिखाता, शांति के प्रति तो बिलकुल भी नहीं। लोग सामान्य मानवता के साधारण जीवन को जीने की इच्छा नहीं करते हैं, बल्कि इसके बजाए ऊँची हैसियत एवं अपार धन समृद्धि का आनन्द उठाने की, देह के सुखविलासों में मौज करने की इच्छा करते हैं, और उन्हें रोकने के लिए प्रतिबंधों और बन्धनों के बिना, अपनी स्वयं की देह को संतुष्ट करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते हैं; दूसरे शब्दों में जो कुछ भी वे चाहते हैं, करते हैं। तो जब मनुष्य इस किस्म की प्रवृत्तियों में डूब जाता है, तो क्या वह ज्ञान जो तुमने सीखा है वह खुद को छुड़ाने में तुम्हारी सहायता कर सकता है? पारम्परिक संस्कृति एवं अंधविश्वास की तुम्हारी समझ क्या इस भयानक दुर्दशा से बचने में तुम्हारी सहायता कर सकती है? क्या पारम्परिक नैतिकता एवं अनुष्ठान जिन्हें मनुष्य जानता है, संयम बरतने में लोगों की सहायता कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, तीन उत्कृष्ट चरित्र (थ्री करेक्टर क्लासिक) को लो। क्या यह इन प्रवृत्तियों के दलदल में से अपने पाँवों को बाहर निकालने में लोगों की सहायता कर सकता है? (नहीं, नहीं कर सकता है।) इस तरह, मनुष्य और भी

अधिक दुष्ट, अभिमानी, दूसरों को नीचा दिखाने वाला, स्वार्थी एवं दुर्भावनापूर्ण बन जाता है। लोगों के बीच अब और कोई स्नेह नहीं रह जाता है, परिवार के सदस्यों के बीच अब और कोई प्रेम नहीं रह जाता है, रिश्तेदारों एवं मित्रों के बीच में अब और कोई तालमेल नहीं रह जाता है; हिंसा मानवीय रिश्तों की विशेषता बन जाती है। हर एक व्यक्ति अपने साथी मनुष्यों के बीच रहने के लिए हिंसक तरीकों का उपयोग करना चाहता है; वे हिंसा का उपयोग करके अपनी दैनिक रोटी झपट लेते हैं; वे हिंसा का उपयोग करके अपने पद को प्राप्त कर लेते हैं और अपने लाभों को प्राप्त करते हैं और वे अपनी मनमर्ज़ी करने के लिए हिंसा एवं बुरे तरीकों का उपयोग करते हैं। क्या ऐसी मानवता भयावह नहीं है? (हाँ।) अभी-अभी मैंने जिन चीज़ों के बारे में बात की है उसे सुनने के बाद, क्या तुम लोगों को इस परिवेश में, इस संसार में, इस प्रकार के लोगों के बीच में रहना भयावह नहीं लगता है, जिनके बीच शैतान मानवजाति को भ्रष्ट करता है? (हाँ।) तो, क्या तुम लोगों ने कभी अपने आपको दयनीय महसूस किया है? इस पल में तुम्हें ऐसा थोड़ा महसूस हो रहा होगा, है न? (हाँ।) तुम लोगों के स्वर को सुनकर, ऐसा प्रतीत होता है मानो कि तुम लोग सोच रहे हो, "शैतान के पास मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए बहुत सारे भिन्न-भिन्न तरीके हैं। वह प्रत्येक अवसर को झपट लेता है और जहाँ कहीं हम जाते हैं वह वहाँ होता है। क्या तब भी मनुष्य को बचाया जा सकता है?" क्या तब भी मनुष्य को बचाया जा सकता है? क्या मनुष्य अपने आपको बचा सकता है? (नहीं।) क्या जेड सम्राट मनुष्य को बचा सकता है? क्या कन्फयूशियस मनुष्य को बचा सकता है? क्या गुआनयिन बोधिसत्व मनुष्य को बचा सकता है? (नहीं।) तो कौन मनुष्य को बचा सकता है? (परमेश्वर।) हालाँकि, कुछ लोग अपने हृदय में ऐसे प्रश्नों को उठाएँगे : "शैतान हमें इतनी बुरी तरह से, इतने पागलपन भरे उन्माद में हानि पहुँचाता है कि हमारे पास जीयन्न जीने की कोई उम्मीद नहीं रहती है, न ही जीवन जीने का कोई आत्मविश्वास रहता है। हम सभी भ्रष्टता के बीच जीते हैं और हर एक व्यक्ति किसी न किसी तरीके से परमेश्वर का प्रतिरोध करता है, और अब हमारे हृदय इतना नीचे डूब गए हैं जितना संभव था। तो जब शैतान हमें भ्रष्ट कर रहा है, तो परमेश्वर कहाँ है? परमेश्वर क्या कर रहा है? जो कुछ भी परमेश्वर हमारे लिए कर रहा है, हम उसे कभी महसूस नहीं करते हैं!" कुछ लोग अपरिहार्य रूप से निरुत्साहित और कुछ निराशा का अनुभव करते हैं, है ना? तुम लोगों के लिए, यह अनुभूति बहुत गहरी है क्योंकि वह सब जो मैं कहता रहा हूँ वह इसलिए है कि लोगों को धीरे-धीरे समझ में आ जाए, वे और भी अधिक यह महसूस करें कि वे आशारहित हैं, कि वे और भी अधिक यह महसूस करें कि उन्हें परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया गया है।

परन्तु चिंता न करो। आज हमारी संगति का विषय, "शैतान की दुष्टता," हमारी वास्तविक विषयवस्तु नहीं है। हालाँकि, परमेश्वर की पवित्रता के सार के बारे में बातचीत करने के लिए, हमें सबसे पहले किस प्रकार शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है, और शैतान की दुष्टता पर विचार-विमर्श करना चाहिए ताकि इसे लोगों के लिए और अधिक स्पष्ट किया जा सके कि मनुष्य इस समय किस प्रकार की स्थिति में है। इस बारे में बात करने का एक लक्ष्य, लोगों को शैतान की दुष्टता के बारे में जानने देना है, जबकि दूसरा लक्ष्य लोगों को और गहराई से यह समझने देना है कि सच्ची पवित्रता क्या है।

जिन चीज़ों के बारे में हमने अभी-अभी चर्चा की है, उनके बारे में क्या मैंने पिछली बार की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तार से बात नहीं की है? (हाँ।) तो क्या अब तुम लोगों की समझ थोड़ी गहरी हुई है? (हाँ।) मैं जानता हूँ कि बहुत सारे लोग अब अपेक्षा कर रहे हैं कि मैं कहूँ कि वास्तव में परमेश्वर की पवित्रता क्या है, परन्तु जब मैं परमेश्वर की पवित्रता के बारे में बात करूँगा तो मैं सबसे पहले उन कर्मों के बारे में बात करूँगा जिन्हें परमेश्वर करता है। तुम सभी लोगों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। उसके बाद मैं तुम लोगों से पूछूँगा कि परमेश्वर की पवित्रता वास्तव में क्या है। मैं तुम लोगों को सीधे नहीं बताऊँगा, बल्कि इसके बजाए तुम लोगों को ही इसे समझने दूँगा; इसे समझने के लिए तुम लोगों को अवसर दूँगा। तुम लोग इस तरीके के बारे में क्या सोचते हो? (अच्छा है।) तो मेरी बातों को ध्यान से सुनो।

जब कभी भी शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है या उसे निरंकुश क्षति पहुँचाता है, तो परमेश्वर बेपरवाही से चुपचाप देखता नहीं रहता है, ना ही वह अपने चुने हुओं की उपेक्षा करता है या उन्हें अनदेखा करता है। परमेश्वर वह सब कुछ जो शैतान जो करता है उसे बिलकुल स्पष्ट रूप से समझता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि शैतान क्या करता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वह किस प्रवृत्ति को उत्पन्न करता है, परमेश्वर वह सब जानता है जिसे शैतान करने का प्रयास कर रहा है, और परमेश्वर उन लोगों को नहीं छोड़ता है जिन्हें उसने चुना है। इसके बजाए, कोई ध्यान आकर्षित किए बिना—गुप्त रूप से, चुपचाप —परमेश्वर वह सब करता है जो आवश्यक है। जब परमेश्वर किसी पर कार्य करना आरम्भ करता है, जब वह किसी को चुन लेता है, तो वह इस समाचार की घोषणा किसी को नहीं करता है, न ही वह इसकी घोषणा शैतान को करता है, कोई भव्य भाव प्रदर्शन तो बिलकुल नहीं करता है। वह बस बहुत शान्ति से, बहुत स्वाभाविक रूप से, जो ज़रूरी है उसे करता है। सबसे पहले, वह तुम्हारे लिए एक परिवार चुनता है; तुम्हारे परिवार की पृष्ठभूमि, तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे पूर्वज—यह सब परमेश्वर पहले से ही तय कर

देता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ये निर्णय किसी सनक के चलते नहीं लेता; बल्कि इसके बजाए उसने यह कार्यलम्बे समय पहले शुरू कर दिया था। जब एक बार परमेश्वर तुम्हारे लिए किसी परिवार का चुन लेता है, फिर वह उस तिथि को चुनता है जब तुम्हारा जन्म होगा। फिर, जब तुम जन्म लेते हो और रोते हुए इस संसार में आते हो तो परमेश्वर देखता है। वो तुम्हारे जन्म को देखता है, तुम्हें देखता है जब तुम अपने पहले शब्दों को बोलते हो, तुम्हें देखता है जब तुम चलना सीखते हुए लड़खड़ाते हो और डगमगाते हुए अपने पहले कदमों को उठाते हो। पहले तुम एक कदम लेते हो फिर दूसरा कदम लेते हो ... अब तुम दौड़ सकते हो, कूद सकते हो, बात कर सकते हो, अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हो। जैसे-जैसे लोग बड़े होते हैं, शैतान की निगाह उनमें से प्रत्येक पर जम जाती है, जैसे कोई बाघ अपने शिकार को देख रहा हो। परन्तु अपने कार्य को करने में, परमेश्वर कभी भी लोगों, घटनाओं या चीज़ों, अन्तराल या समय की सीमाओं के अधीन नहीं रहा है; वह वही करता है जो उसे करना चाहिए और वही करता है जो उसे करना चाहिए। बड़े होने की प्रक्रिया में, हो सकता है कि तुम कई चीज़ों का सामना कर सकते हो जो तुम्हारी पसन्द की न हों, जैसे कि बीमारी एवं कुंठा। परन्तु जैसे-जैसे तुम इस मार्ग पर चलते हो, तो तुम्हारा जीवन और तुम्हारा भविष्य पूरी तह से परमेश्वर की देखरेख के अधीन होता है। परमेश्वर तुम्हें एक विशुद्ध गारंटी देता है जो सम्पूर्ण जीवन भर बनी रहती है, क्योंकि वह, तुम्हारी रक्षा करते हुए और तुम्हारी देखभाल करते हुए, बिलकुल तुम्हारे बगल में ही है। तुम इस बात से अनजान रहते हुए बड़े होते हो। तुम नई-नई चीज़ों के सम्पर्क में आने लगते हो और इस संसार को और इस मानवजाति को जानना आरम्भ करते हो। तुम्हारे लिए हर एक चीज़ ताज़ी और नयी होती है। कुछ बातें हैं जो तुम्हें करनी अच्छी लगती हैं। तुम अपनी मानवता के भीतर रहते हो, अपने दायरे के भीतर जीते हो, और तुम्हारे पास परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में जरा-सी भी अनुभूति नहीं होती है। परन्तु जैसे-जैसे तुम बड़े होते हो परमेश्वर मार्ग के हर कदम पर तुम्हें देखता है, और तुम्हें देखता है जब तुम आगे की ओर हर कदम उठाते हो। यहाँ तक कि जब तुम ज्ञान की बातें सीखते हो, या विज्ञान का अध्ययन करते हो, तब एक कदम के लिए भी परमेश्वर ने तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ा है। इस मामले में तुम भी अन्य लोगों के ही समान हो, इस संसार को जानने और उसके जुडने के दौरान, तुमने अपने स्वयं के आदर्शों को स्थापित कर लिया है, तुम्हारे अपने शौक, तुम्हारी स्वयं की रूचियाँ हैं, और तुम ऊँची महत्वाकांक्षाओं को भी मन में रखते हो। तुम प्रायः अपने स्वयं के भविष्य पर विचार करते हो, प्राय: रूपरेखा खींचते हो कि तुम्हारा भविष्य कैसा दिखना चाहिए। परन्तु मार्ग पर जो भी

होता है, परमेश्वर स्पष्टता से सब कुछ होते हुए देखता है। हो सकता है कि तुम स्वयं अपने अतीत को भूल गए हो, परन्तु परमेश्वर के लिए, ऐसा कोई नहीं है जो उससे बेहतर तुम्हें समझ सकता है। तुम बड़े होते हुए, परिपक्व होते हुए, परमेश्वर की दृष्टि के अधीन जीते हो। इस अवधि के दौरान, परमेश्वर का सबसे महत्वपूर्ण कार्य कुछ ऐसा है जिसका कोई कभी एहसास नहीं करता है, कुछ ऐसा है जिसे कोई नहीं जानता है। परमेश्वर निश्चित रूप से किसी को इसके बारे में नहीं बताता है। तो, सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है? कहा जा सकता है कि यह एक गारंटी है कि परमेश्वर एक व्यक्ति को बचाएगा। इसका अर्थ है कि अगर परमेश्वर इस व्यक्ति को बचाना चाहता है, तो उसे यह करना ही होगा। यह कार्य मनुष्य एवं परमेश्वर दोनों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। क्या तुम जानते हो ये क्या है? क्या तुम लोग यह जानते हो? ऐसा लगता है कि तुम लोगों के पास इसके बारे में कोई अनुभूति नहीं है, या इसके बारे में कोई धारणा नहीं है, इसलिए मैं तुम लोगों को बताऊँगा। जब तुम्हारा जन्म हुआ उस समय से लेकर अब तक, परमेश्वर ने तुम पर बहुत सा कार्य सम्पन्न किया है, परन्तु हर चीज़ जो उसने की है वह उसका तुम्हें विस्तृत विवरण नहीं देता है। परमेश्वर ने यह जानने की तुम्हें अनुमति नहीं दी, न ही उसने तुम्हें बताया। हालाँकि, मानवजाति के लिए, हर चीज़ जो परमेश्वर करता है वह महत्वपूर्ण है। जहाँ तक परमेश्वर की बात है, यह कुछ ऐसी चीज़ है जो उसे अवश्य करनी चाहिए। उसके हृदय में ऐसी कोई महत्वपूर्ण चीज़ है जो उसे करनी है, जो इन चीज़ों में से किसी से भी कहीं बढ़कर है। अर्थात, जब एक व्यक्ति पैदा होता है, उस समय से लेकर वर्तमान दिन तक, परमेश्वर को उसकी सुरक्षा की गारंटी अवश्य देनी चाहिए। इन वचनों को सुनने के बाद, हो सकता है कि तुम लोग ऐसा महसूस करो मानो कि तुम लोगों को पूरी तरह समझ नहीं आ रहा है। तुम पूछ सकते हो, "क्या यह सुरक्षा इतनी महत्वपूर्ण है?" "सुरक्षा" का शाब्दिक अर्थ क्या है? हो सकता है कि तुम लोग इसका अर्थ शांति समझते हो या हो सकता है कि तुम लोग इसका अर्थ कभी भी विपत्ति या आपदा का अनुभव न करना, अच्छी तरह से जीवन बिताना, एक सामान्य जीवन बिताना समझते हो। परन्तु अपने हृदय में, तुम लोगों को जानना चाहिए कि यह इतना सरल नहीं है। तो आखिर यह क्या चीज़ है जिसके बारे में मैं बात करता रहा हूँ, जिसे परमेश्वर को करना है? परमेश्वर के लिए सुरक्षा का क्या अर्थ है? क्या यह वास्तव में "सुरक्षा" के सामान्य अर्थ की गारंटी है? नहीं। तो वह क्या है जो परमेश्वर करता है? इस "सुरक्षा" का अर्थ यह है कि तुम शैतान के द्वारा निगले नहीं जाओगे। क्या यह महत्वपूर्ण है? शैतान के द्वारा निगला नहीं जाना, यह तुम्हारी सुरक्षा से सम्बन्धित है या नहीं? हाँ, यह तुम्हारी व्यक्तिगत सुरक्षा से सम्बन्धित है,

और इससे अधिक महत्वपूर्ण और कुछ नहीं हो सकता है। जब एक बार तुम शैतान के द्वारा निगल लिए जाते हो, तो तुम्हारी आत्मा और तुम्हारा शरीर परमेश्वर से संबंधित नहीं रह जाता है। परमेश्वर तुम्हें अब और नहीं बचाएगा। परमेश्वर इस तरह की आत्माओं और लोगों को त्याग देता है जो शैतान द्वारा निगले जा चुके हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जो परमेश्वर को करनी है वह है तुम्हारी इस सुरक्षा की गारंटी देना, यह गारंटी देना कि तुम शैतान के द्वारा निगले नहीं जाओगे। यह बहुत महत्वपूर्ण है, है न? तो तुम लोग उत्तर क्यों नहीं दे पा रहे हो? लगता है कि तुम लोग परमेश्वर की महान दया को महसूस नहीं कर पा रहे हो!

परमेश्वर लोगों की सुरक्षा की गारंटी देने, और यह गारंटी देने कि वे शैतान के द्वारा निगले नहीं जाएँगे, के अतिरिक्त बहुत कुछ करता है। वह किसी को चुनने और उसे बचाने से पहले, बहुत-से तैयारी के कार्य करता है। सबसे पहले, परमेश्वर इसके संबंध में अतिसावधानी से तैयारी करता है कि तुम्हारा चरित्र किस प्रकार का होगा, किस प्रकार के परिवार में तुम पैदा होगे, कौन तुम्हारे माता-पिता होंगे, तुम्हारे कितने भाई-बहन होंगे, जिस परिवार में तुम्हारा जन्म हुआ है उसकी स्थिति, आर्थिक दशा और परिस्थितियाँ क्या होंगी। क्या तुम लोग जानते हो कि परमेश्वर के चुने हुए अधिकतर लोग किस प्रकार के परिवार में पैदा होते हैं? क्या वे प्रमुख परिवार होते हैं? हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते हैं कि ऐसा कोई नहीं है जो नामी-गिरामी परिवार में पैदा हुआ हो। कुछ हो सकते हैं, परन्तु वे बहुत कम होते हैं। क्या वे असाधारण धन-सम्पत्ति वाले परिवार में पैदा होते हैं, जैसे कि अरबपति या खरबपति? नहीं, वे लगभग कभी भी इस प्रकार के परिवार में पैदा नहीं होते हैं। तो परमेश्वर इन लोगों में से अधिकांश के लिए किस प्रकार के परिवार की व्यवस्था करता है? (साधारण परिवार।) तो कौन से परिवार साधारण परिवार माने जा सकते हैं? उनमें कामकाजी परिवार शामिल होते हैं, अर्थात्, एक बार जब वे जीवित बचे रहने के लिए मजदूरी पर निर्भर हो जाते हैं, तो आधारभूत आवश्यकताओं को जुटा सकता है। और अत्यधिक धनी नहीं होते हैं; इनमें किसानी परिवार भी शामिल हैं। किसान अपने भोजन के लिए फसल उगाने पर आश्रित होते हैं, उनके पास खाने के लिए अनाज होता है और पहनने के लिए कपड़े होते हैं, औरवे भूखे नहीं रहते हैं। फिर कुछ ऐसे परिवार हैं जो छोटे व्यवसाय चलाते हैं, और कुछ जहाँ माता-पिता बुद्धिजीवी हैं, इन्हें भी साधारण परिवार के रूप में ही गिना जा सकता है। कुछ ऐसे माता-पिता भी होते हैं जो कार्यालय कर्मचारी या मामूली सरकारी अधिकारी होते हैं, उन्हें भी प्रमुख परिवारों के रुप में नहीं गिना जा सकता है। अधिकतर लोग

साधारण परिवारों में पैदा होते हैं, और यह सब परमेश्वर के द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। अर्थात्, सबसे पहले तो यह परिवेश जिसमें तुम रहते हो वह सम्पन्न साधनों वाला परिवार नहीं होता जिसकी शायद लोग कल्पना करें, और यह ऐसा परिवार है जिसे परमेश्वर के द्वारा तुम्हारे लिए तय किया गया है, और अधिकांश लोग इस प्रकार के परिवार की सीमाओं के भीतर जीवन बिताएँगे। तो सामाजिक हैसियत के विषय में क्या कहें? अधिकांश माता-पिता की आर्थिक स्थितियाँ औसत दर्जे की होती हैं और उनके पास ऊँची सामाजिक हैसियत नहीं होती है—उनके लिए बस किसी नौकरी का होना ही अच्छा है। क्या इसमें राज्यपाल शामिल हैं? या राष्ट्रपति हैं? (नहीं।) अधिक से अधिक छोटे कारोबार के प्रबंधक या छोटे-मोटे कारोबार के मालिक होते हैं। उनकी सामाजिक हैसियत साधारण होती है, और उनकी आर्थिक स्थितियाँ औसत दर्जे की होती हैं। अन्य कारक है परिवार का जीवन निर्वाह का परिवेश। सबसे पहले, इन परिवारों में ऐसे कोई माता-पिता नहीं होते हैं जो स्पष्ट रूप से अपने बच्चों को भविष्यवाणी और भविष्य कथन के पथ पर चलने के लिए प्रभावित करें; इन चीज़ों से जुड़ने वाले भी बहुत ही कम होते हैं। अधिकांश माता-पिता काफ़ी सामान्य होते हैं। जिस समय परमेश्वर लोगों को चुनता है, वह उनके लिए इस प्रकार का परिवेश निर्धारित करता है, जो कि लोगों को बचाने के उसके कार्य के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। ऊपर से, ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए ऐसा कुछ विशेष नहीं किया है जो पृथ्वी को ही हिला दे; वह बस सब-कुछ गुप्त रीति से, चुपचाप अपना काम करने के लिए आगे बढ़ता है, विनम्रता से और खामोशी में। परन्तु वास्तव में, वह सब जो परमेश्वर करता है, वह तुम्हारे उद्धार हेतु एक नींव डालने के लिए, आगे का मार्ग तैयार करने के लिए और तुम्हारे उद्धार के लिए सभी आवश्यक स्थितियाँ तैयार करने के लिए करता है। फिर, परमेश्वर हर व्यक्ति को निर्धारित समय पर वापस अपने सामने लाता है : तभी तुम परमेश्वर की वाणी सुनते हो; तभी तुम उसके सामने आते हो। जब यह घटित होता है उस समय तक, कुछ लोग पहले ही माता-पिता बन चुके होते हैं, जबकि अन्य लोग अब तक किसी के बच्चे होते हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ लोगों ने विवाह कर लिया होता है और उनके बच्चे हो जाते हैं जबकि कुछ अभी भी अकेले ही होते हैं, उन्होंने अभी तक अपने परिवार शुरू नहीं किये होते हैं। परन्तु किसी की स्थितियों की परवाह किए बिना, परमेश्वर ने पहले से ही तुम्हें चुनने और जब उसका सुसमाचार और वचन तुम तक पहुँचेगा, उसका समय निर्धारित कर दिया है। परमेश्वर ने परिस्थितियों को निर्धारित कर दिया है, किसी निश्चित व्यक्ति या किसी निश्चित सन्दर्भ को निर्धारित कर दिया है जिसके माध्यम से तुम तक सुसमाचार पहुँचाया जाएगा, ताकि तुम परमेश्वर के वचनों

को सुन सको। परमेश्वर ने तुम्हारे लिए पहले से ही सभी आवश्यक परिस्थितियों को तैयार कर दिया है। इस तरह से, भले ही मनुष्य अनजान है कि यह सब हो रहा है, मनुष्य उसके सामने आ जाता है और परमेश्वर के परिवार में वापस लौट जाता है। परमेश्वर के कार्य करने के तरीके के प्रत्येक कदम में प्रवेश करते हुए जिसे उसने मनुष्य के लिए तैयार किया है, मनुष्यअनजाने में परमेश्वर का अनुसरण करता है और उसके कार्य करने के तरीके के प्रत्येक कदम में प्रवेश करता है। जब इस समय परमेश्वर मनुष्य के लिए चीज़ों को करता है तो वह किन तरीकों का उपयोग करता है? सबसे पहले, सबसे न्यूनतम कार्य है वह देखभाल एवं सुरक्षा जिसका मनुष्य आनंद लेता है। इसके अलावा, परमेश्वर विभिन्न लोगों, घटनाओं, एवं चीज़ों को व्यवस्थित करता है ताकि उनके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के अस्तित्व एवं उसके कर्मों को देख सके। उदाहरण के लिए, कुछ लोग हैं जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं क्योंकि उनके परिवार में कोई बीमार है। जब दूसरे उन्हें सुसमाचार सुनाते हैं तो वे परमेश्वर पर विश्वास करना आरम्भ कर देते हैं, और परमेश्वर में यह विश्वास परिस्थिति के कारण होता है। तो किसने इस परिस्थिति की व्यवस्था की? (परमेश्वर ने।) इस बीमारी के माध्यम से, कुछ ऐसे परिवार हैं जहाँ सभी विश्वासी हैं, जबकि कुछ ऐसे परिवार हैं जहाँ परिवार के कुछ ही लोग विश्वास करते हैं। बाहर से, ऐसा लग सकता है कि तुम्हारे परिवार में किसी को बीमारी है, परन्तु वास्तव में यह तुम्हें प्रदान की गई एक परिस्थिति है ताकि तुम परमेश्वर के सामने आ सको—यह परमेश्वर की दयालुता है। क्योंकि कुछ लोगों के लिए पारिवारिक जीवन कठिन होता है और उन्हें कोई शान्ति नहीं मिलती है, इसलिए एक आकस्मिक अवसर सामने आ सकता है—कोई सुसमाचार देगा और कहेगा, "प्रभु यीशु में विश्वास करो और तुम्हें शान्ति मिलेगी।" इस तरह, न जानते हुए, वे अत्यंत स्वाभाविक परिस्थितियों के अंतर्गत परमेश्वर में विश्वास करने लगते हैं, तो क्या यह एक प्रकार की स्थिति नहीं है? और क्या यह तथ्य कि उनके परिवार में शांति नहीं है, क्या परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया एक अनुग्रह नहीं है? क्या यह एक अनुग्रह है जिसे परमेश्वर के द्वारा प्रदान किया गया है? कुछ ऐसे लोग भी हैं जो कुछ अन्य कारणों से परमेश्वर पर विश्वास करने लगते हैं। विश्वास करने के भिन्न-भिन्न कारण और भिन्न-भिन्न तरीके हैं, परन्तु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि किस कारण से तुम उसमें विश्वास करने लगते हो, यह सब वास्तव में परमेश्वर के द्वारा व्यवस्थित और मार्गदर्शित होता है। सबसे पहले परमेश्वर अपने परिवार में तुम्हें लाने के लिए और तुम्हारा चयन करने के लिए विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करता है। यह वह अनुग्रह है जो परमेश्वर हर एक व्यक्ति को प्रदान करता है।

अंत के दिनों में, इन दिनों में परमेश्वर के कार्य के वर्तमान चरण में, वह मनुष्य को पहले की तरह अनुग्रह एवं आशीषें प्रदान नहीं करता है, न ही वह लोगों को आगे बढ़ने के लिए फुसलाता है। कार्य के इस चरण के दौरान, परमेश्वर के कार्य के सभी पहलुओं से मनुष्य ने क्या देखा जिसका उसने अनुभव किया है? मनुष्य ने परमेश्वर के प्रेम को, परमेश्वर के न्याय और उसकी ताड़ना को देखा है। इस समयावधि के दौरान, परमेश्वर मनुष्य का भरण पोषण करता है, उसे सहारा देता है, प्रबुद्ध करता है और उसका मार्गदर्शन करता है, ताकि मनुष्य उसके बोले वचनों को और उसके द्वारा मनुष्य को प्रदत्त सत्य को जानने के लिए धीरे-धीरे उसके इरादों को जानने लगे। जब मनुष्य कमज़ोर होता है, जब वो हतोत्साहित होता है, जब उसके पास कहीं और जाने के लिए कोई स्थान नहीं होता, तब परमेश्वर मनुष्य को सान्त्वना, सलाह, एवं प्रोत्साहन देने के लिए अपने वचनों का उपयोग करेगा, ताकि मनुष्य की छोटी कद-काठी धीरे-धीरे मजबूत हो सके, सकारात्मकता में उठ सके और परमेश्वर के साथ सहयोग करने के लिए तैयार हो सके। परन्तु जब मनुष्य परमेश्वर की अवज्ञा करता है या उसका विरोध करता है, या अपनी भ्रष्टता को प्रकट करता है, तो परमेश्वर मनुष्य को ताड़ना देने में और उसे अनुशासित करने में कोई दया नहीं दिखाएगा। हालाँकि, मनुष्य की मूर्खता, अज्ञानता, दुर्बलता, एवं अपरिपक्वता के प्रति, परमेश्वर सहिष्णुता एवं धैर्य दिखाएगा। इस तरीके से, उस समस्त कार्य के माध्यम से जिसे परमेश्वर मनुष्य के लिए करता है, मनुष्य धीरे-धीरे परिपक्व होता है, बड़ा होता है, और परमेश्वर के इरादों को जानने लगता है, कुछ निश्चित सत्यों को जानने लगता है, कौन सी चीज़ें सकारात्मक हैं और कौन सी नकारात्मक हैं, यह जानने लगता है, यह जानने लगता है कि बुराई और अंधकार क्या हैं। परमेश्वर सदैव मनुष्य को ताड़ित एवं अनुशासित करने का ही एकमात्र दृष्टिकोण नहीं रखता है, लेकिन वह हमेशा सहिष्णुता एवं धैर्य भी नहीं दिखाता है। बल्कि वह प्रत्येक व्यक्ति का, भिन्न-भिन्न तरीकों से, उनके विभिन्न चरणों में और उनके भिन्न-भिन्न स्तरों और क्षमता के अनुसार, भरण-पोषण करता है। वह मनुष्य के लिए अनेक चीज़ें करता है और बड़ी क़ीमत पर करता है; मनुष्य इस कीमत या इन चीज़ों के बारे में कुछ भी महसूस नहीं करता है, फिर भी व्यवहार में, वह जो कुछ करता है उसे सच में हर एक व्यक्ति पर कार्यान्वित किया जाता है। परमेश्वर का प्रेम व्यवहारिक है : परमेश्वर के अनुग्रह के माध्यम से मनुष्य एक के बाद एक आपदा से बचता है, और इस पूरे समय मनुष्य की दुर्बलता के प्रति, परमेश्वर बार-बार अपनी सहिष्णुता दिखाता है। परमेश्वर का न्याय और उसकी ताड़ना लोगों को मानवजाति की भ्रष्टता और भ्रष्ट शैतानी सार को धीरे-धीरे जानने देते हैं। जो कुछ परमेश्वर प्रदान करता है,

परमेश्वर का मनुष्य को प्रबुद्ध करना एवं उसका मार्गदर्शन, ये सब मानवजाति को सत्य के सार को और भी अधिक जानने देते हैं, और उत्तरोत्तर यह जानने देते हैं कि लोगों को किस चीज़ की आवश्यकता है, उन्हें कौन-सा मार्ग लेना चाहिए, वे किसके लिए जीते हैं, उनकी ज़िंदगी का मूल्य एवं अर्थ क्या है, और कैसे आगे के मार्ग पर चलना है। ये सभी कार्य जो परमेश्वर करता है, वे उसके एकमात्र मूल उद्देश्य से अभिन्न हैं। तो, यह उद्देश्य क्या है? क्यों परमेश्वर मनुष्य पर अपने कार्य को क्रियान्वित करने के लिए इन विधियों का उपयोग करता है? वह क्या परिणाम प्राप्त करना चाहता है? दूसरे शब्दों में, वह मनुष्य में क्या देखना चाहता है? वह उनसे क्या प्राप्त करना चाहता है? परमेश्वर जो देखना चाहता है वह है कि मनुष्य के हृदय को पुनर्जीवित किया जा सके। ये विधियाँ जिन्हें वह मनुष्य पर कार्य करने के लिए उपयोग करता है, निरंतर प्रयास हैं, मनुष्य के हृदय को जागृत करने के लिए, मनुष्य की आत्मा को जागृत करने के लिए, मनुष्य को यह जानने में समर्थ बनाने के लिए कि वह कहाँ से आया है, कौन उसका मार्गदर्शन, उसकी सहायता, उसका भरण-पोषण कर रहा है, और किसने मनुष्य को वर्तमान दिन तक जीवित रहने दिया है; वे मनुष्य को यह जानने देने का साधन है कि सृष्टिकर्ता कौन है, उसे किसकी आराधना करनी चाहिए, उसे किस प्रकार के मार्ग पर चलना चाहिए, और मनुष्य को किस तरह से परमेश्वर के सामने आना चाहिए; वे मनुष्य के हृदय को धीरे-धीरे पुनर्जीवित करने का साधन है, ताकि मनुष्य परमेश्वर के हृदय को जान ले, परमेश्वर के हृदय को समझ ले, और मनुष्य को बचाने के उसके कार्य के पीछे की बड़ी देखभाल एवं विचार को समझ ले। जब मनुष्य के हृदय को पुनर्जीवित किया जाता है, तब मनुष्य एक पतित एवं भ्रष्ट स्वभाव के साथऔर जीने की इच्छा नहीं करता, बल्कि इसके बजाय परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए सत्य का अनुसरण करने की इच्छा करता है। जब मनुष्य के हृदय को जागृत कर दिया जाता है, तो मनुष्य खुद को शैतान से पूरी तरह अलग करने में सक्षम हो जाता है। अब उसे शैतान के द्वारा हानि नहीं पहुँचेगी, उसके द्वारा वो अब और नियंत्रित या मूर्ख नहीं बनेगा। इसके बजाय, मनुष्य परमेश्वर के हृदय को संतुष्ट करने के लिए, परमेश्वर के कार्य और उसके वचनों में सक्रियात्मक रूप से सहयोग कर सकता है, इस प्रकार परमेश्वर के भय और बुराई को त्यागने को प्राप्त करता है। यह परमेश्वर के कार्य का मूल उद्देश्य है।

शैतान की दुष्टता के बारे में हमने अभी-अभी जो चर्चा की, वह हर एक को ऐसा महसूस करवाती है मानो कि मनुष्य बड़ी अप्रसन्नता के बीच जीवन जीता है और मनुष्य का जीवन दुर्भाग्य से घिरा हुआ है। परन्तु अब जबकि मैं परमेश्वर की पवित्रता और उस कार्य के बारे में बात कर रहा हूँ जिसे वह मनुष्य पर

करता है, वह तुम्हें कैसा अनुभव करा रहा है? (अत्यधिक प्रसन्न।) हम अब देख सकते हैं कि जो कुछ भी परमेश्वर करता है, जिसे वह अत्यंत परिश्रम से मनुष्य के लिए व्यवस्थित करता है, वह सब बेदाग होता है। हर चीज़ जो परमेश्वर करता है, वह बिना किसी ग़लती के होती है, जिसका अर्थ है कि यह दोषरहित होती है, सुधारने, सलाह देने या इसमें कोई बदलाव करने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं होती है। परमेश्वर प्रत्येक प्राणी के लिए जो कुछ करता है, वह सन्देह से परे होता है; वह हाथ पकड़कर हर किसी की अगुवाई करता है, हर बीतते क्षण तुम्हारी देखरेख करता है और उसने तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ा है। जब लोग इस प्रकार के वातावरण में और इस प्रकार की पृष्ठभूमि में बढ़ते हैं, तो क्या हम कह सकते हैं कि लोग वास्तव में परमेश्वर की हथेली में बढ़ते हैं? (हाँ।) तो क्या तब भी तुम लोगों को कुछ खोने का एहसास होता है? क्या कोई अभी भी हतोत्साहित महसूस करता है? क्या कोई ऐसा महसूस करता है कि परमेश्वर ने मानवजाति को त्याग दिया है? (नहीं।) तो फिर परमेश्वर ने वास्तव में किया क्या है? (उसने मानवजाति पर नज़र राखी है।) जो कुछ परमेश्वर करता है उसके पीछे जो महान विचार एवं देखभाल परमेश्वर करता है, वो सवालों से परे है। इसके अलावा, परमेश्वर ने हमेशा अपना कार्य बेशर्त किया है। उसने तुममें से किसी से कभी भी ये अपेक्षा नहीं रखी है कि तुम उस कीमत को जानो जो वह तुम्हारे लिए चुकाता है जिससे कि तुम उसके प्रति गहराई से आभारी महसूस करो। क्या परमेश्वर ने कभी तुमसे ये अपेक्षा की है? (नहीं।) अपने लम्बे मानवीय जीवन में, लगभग प्रत्येक व्यक्ति ने अनेक ख़तरनाक परिस्थितियों और वह अनेक प्रलोभनों का सामना किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान तुम्हारे बगल में खड़ा है, उसकी आँखें लगातार तुम्हारे ऊपर जमी हैं। जब तुम पर आपदा आती है, शैतान इसमें आनंद मनाता है; जब तुम पर विपदाएँ पड़ती हैं, जब तुम्हारे लिए कुछ भी सही नहीं होता है, जब तुम शैतान के जाल में फँस जाते हो, इन बातों से शैतान को बड़ा मज़ा आता है। जहाँ तक परमेश्वर क्या कर रहा है इसकी बात है, वह हर बीतते क्षण के साथ तुम्हारी सुरक्षा कर रहा है, एक के बाद एक दुर्भाग्य से और एक के बाद एक आपदा से तुम्हें बचा रहा है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि जो कुछ मनुष्य के पास है—शान्ति और आनन्द, आशीषें एवं व्यक्तिगत सुरक्षा—सब-कुछ वास्तव में परमेश्वर के नियंत्रण के अधीन है; वह हर प्राणी के भाग्य का मार्गदर्शन एवं निर्धारण करता है। परन्तु क्या परमेश्वर के पास अपने पद की कोई बढ़ी हुई अवधारणा है, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं? क्या परमेश्वर तुम्हारे सामने घोषणा करता है, "मैं सबसे महान हूँ। वह मैं हूँ जो तुम लोगों की ज़िम्मेदारी लेता है। तुम लोगों को मुझ से अवश्य दया की भीख माँगनी चाहिए और अवज्ञा

के लिए मृत्युदंड दिया जाएगा"? क्या परमेश्वर ने कभी मानवजाति को इस प्रकार से धमकी दी है? (नहीं।) क्या उसने कभी कहा है, "मानवजाति भ्रष्ट है इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि मैं उससे कैसा व्यवहार करता हूँ, उनके साथ कसे भी व्यवहार किया जा सकता है; मुझे उनके लिए बहुत अच्छे ढंग से व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है"? क्या परमेश्वर इस तरह से सोचता है? क्या परमेश्वर ने इस तरीके से कार्य किया है? (नहीं।) इसके विपरीत, प्रत्येक व्यक्ति के साथ परमेश्वर का बर्ताव सच्चा एवं ज़िम्मेदारीपूर्ण है। यहाँ तक कि वह तुमसे उससे भी अधिक ज़िम्मेदारी से व्यवहार करता है जितना तुम स्वयं के प्रति करते हो। क्या ऐसा नहीं है? परमेश्वर व्यर्थ में नहीं बोलता है, न ही वह ऊँचे पद का दिखावा करता है और न ही ढिठाई से लोगों को धोखा देता है। इसके बजाय वह ईमानदारी एवं खामोशी से उन चीज़ों को करता है जो उसे स्वयं करने की आवश्यकता है। ये चीज़ें मनुष्य के लिए आशीषें, शान्ति एवं आनन्द लाती हैं। ये मनुष्य को शांति एवं प्रसन्नता से परमेश्वर की दृष्टि के सामने और उसके परिवार में लाती हैं; और सामान्य विवेक और विचार के साथ वे परमेश्वर के सामने रहते हैं और परमेश्वर के उद्धार को स्वीकारते हैं। तो क्या परमेश्वर अपने कार्य में कभी भी मनुष्य के साथ धोखेबाज़ रहा है? क्या उसने कभी उदारता का झूठा प्रदर्शन किया है, पहले कुछ हँसी-मजाक के साथ मनुष्य को मूर्ख बनाया, फिर मनुष्य की ओर पीठ कर ली है? (नहीं।) क्या परमेश्वर ने कभी कहा कुछ है और फिर किया कुछ और है? क्या परमेश्वर ने लोगों से यह कहते हुए कभी खोखले वादे किए हैं और शेखी बघारी है कि वह उनके लिए ऐसा कर सकता है या वैसा करने के लिए उनकी सहायता कर सकता है, लेकिन फिर गायब हो गया है? (नहीं।) परमेश्वर में कोई छल नहीं है, और कोई झूठ नहीं है। परमेश्वर विश्वासयोग्य है और जो कुछ वह करता है उसमें सच्चा है। वही एकमात्र है जिस पर लोग भरोसा कर सकते हैं; एकमात्र परमेश्वर है जिसे लोग अपना जीवन एवं उनके पास जो है वो सबकुछ सौंप सकते हैं। चूँकि परमेश्वर में कोई छल नहीं है, तो क्या हम ऐसा कह सकते हैं कि परमेश्वर ही सबसे अधिक ईमानदार है? (हाँ।) निश्चित रूप से हम कह सकते हैं! यद्यपि, "ईमानदार" शब्द जब परमेश्वर पर लागू किया जाता है तो यह अत्यंत कमज़ोर, बहुत मानवीय है, हमारे लिए और क्या शब्द हैं जिन्हें हम इस्तेमाल कर सकते हैं? मानवीय भाषा की सीमाएँ ऐसी ही हैं। भले ही परमेश्वर को "ईमानदार" कहना थोड़ा अनुचित है, परन्तु फिर भी फिलहाल हम इसी शब्द का उपयोग करेंगे। परमेश्वर विश्वासयोग्य एवं ईमानदार है। तो जब हम इन पहलुओं के बारे में बात करते हैं तो हमारा आशय क्या है, हम किसे संदर्भित कर रहे हैं? क्या हमारा संदर्भ परमेश्वर और मनुष्य के

बीच भिन्नताओं और परमेश्वर और शैतान के बीच भिन्नताओं से है? हाँ, हम ऐसा कह सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य परमेश्वर में शैतान के भ्रष्ट स्वभाव का एक भी नामोनिशान नहीं देख सकता है। क्या ऐसा कहने में मैं सही हूँ? आमीन? (आमीन!) हम शैतान की किसी भी बुराई को परमेश्वर में प्रकट होते हुए नहीं देखते हैं। वह सब जो परमेश्वर करता है और प्रकट करता है वह पूरी तरह से मनुष्य के लिए लाभप्रद एवं मनुष्य की सहायता करता है, वह पूरी तरह से मनुष्य का भरण-पोषण करने के लिए किया जाता है, वह जीवन से भरपूर है और मनुष्य को अनुसरण करने के लिए एक मार्ग और चलने के लिए एक दिशा देता है। परमेश्वर भ्रष्ट नहीं है और इसके अलावा, इस वक्त हर एक चीज़ जिसे परमेश्वर करता है उसे देखते हुए, क्या हम कह सकते हैं कि परमेश्वर पवित्र है? (हाँ।) चूँकि परमेश्वर में मानवजाति की कोई भ्रष्टता नहीं है और न ही मानवजाति के जैसा कोई भ्रष्ट स्वभाव या शैतान का सार है, और परमेश्वर के वारे में कुछ भी ऐसा नहीं है जो इन चीज़ों से समानता रखता हो, तो इस दृष्टिकोण से हम कह सकते हैं कि परमेश्वर पवित्र है। परमेश्वर किसी भ्रष्टता का प्रदर्शन नहीं करता है, और उसके कार्य में उसके स्वयं के सार का प्रकाशन ही इस बात की पूरी पुष्टि है कि स्वयं परमेश्वर पवित्र है। क्या तुम लोग इसे देखते हो? परमेश्वर के पवित्र सार को जानने के लिए, फिलहाल आओ हम इन दो पहलुओं पर नज़र डालें: 1) परमेश्वर में भ्रष्ट स्वभाव की झलक भी नहीं है; 2) मनुष्य पर परमेश्वर के कार्य का सार मनुष्य को स्वयं परमेश्वर के सार को देखने देता है और यह सार पूरी तरह से सकारात्मक है। क्योंकि वे चीज़ें जिन्हें परमेश्वर के कार्य का हर हिस्सा मनुष्य के लिए लाता है सभी सकारात्मक हैं। सबसे पहले, परमेश्वर अपेक्षा करता है कि मनुष्य ईमानदार हो—क्या यह सकारात्मक चीज़ नहीं है? परमेश्वर मनुष्य को बुद्धि देता है—क्या यह सकारात्मक नहीं है? परमेश्वर मनुष्य को भले एवं बुरे के बीच पहचान करने में सक्षम बनाता है—क्या यह सकारात्मक नहीं है? वह मनुष्य को मानवीय जीवन का अर्थ एवं मूल्य समझने देता है—क्या यह सकारात्मक नहीं है? वह मनुष्य को सत्य के अनुसार लोगों, घटनाओं, एवं चीज़ों के सार के भीतर देखने देता है—क्या यह सकारात्मक नहीं है? (हाँ, यह है।) और इन सब का परिणाम यह है कि मनुष्य शैतान के द्वारा अब और धोखा नहीं खाता है, शैतान के द्वारा अब और उसे नुकसान नहीं पहुँचाया जायेगा या शैतान के द्वारा नियन्त्रित नहीं किया जायेगा। दूसरे शब्दों में, ये चीज़ें लोगों को शैतान की भ्रष्टता से अपने आप को पूरी तरह से स्वतन्त्र होने देती हैं, और इस तरह वे धीरे-धीरे परमेश्वर का भय मानने एवं बुराई से दूर रहने के मार्ग पर चलते हैं। अब तक तुम लोग इस मार्ग पर कितनी दूर तक चल चुके हो? यह कहना कठिन है,

है न? परन्तु कम से कम अब क्या तुम लोगों को इस बात की आरम्भिक समझ है कि कैसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है, कौन-सी चीज़ें बुरी हैं और कौन-सी चीज़ें नकारात्मक हैं? तुम लोग कम से कम अब सही मार्ग पर तो चल रहे हो। क्या हम ऐसा कह सकते हैं? (हाँ।)

यहीं पर हम परमेश्वर की पवित्रता की अपनी चर्चा को समाप्त करेंगे। तुम लोगों ने जितना सुना और प्राप्त किया है उसके आधार पर, तुम लोगों के बीच ऐसा कौन है जो यह कह सकता है कि परमेश्वर की पवित्रता क्या है? परमेश्वर की पवित्रता जिसके बारे में मैं बोलता हूँ वह किसे संदर्भित करता है? एक पल के लिए इस बारे में सोचो। क्या परमेश्वर की पवित्रता उसकी सत्यता है? क्या परमेश्वर की पवित्रता उसकी विश्वसनीयता है? क्या परमेश्वर की पवित्रता उसकी निःस्वार्थता है? क्या यह उसकी विनम्रता है? क्या यह मनुष्य के लिए उसका प्रेम है? परमेश्वर मनुष्य को मुक्त रूप से सत्य और जीवन प्रदान करता है—क्या यही उसकी पवित्रता है? (हाँ।) यह सब कुछ जिसे परमेश्वर प्रकट करता है वह अद्वितीय है और यह भ्रष्ट मानवजाति के भीतर मौजूद नहीं होता है, न ही इसे मानवजाति में देखा जा सकता है। इसका ज़रा-सा भी नामोनिशान शैतान द्वारा मनुष्य की भ्रष्टता की प्रक्रिया के दौरान देखा नहीं जा सकता है, न ही शैतान के भ्रष्ट स्वभाव में और न ही शैतान के सार या उसकी प्रकृति में देखा जा सकता है। परमेश्वर का स्वरूप अद्वितीय है; केवल स्वयं परमेश्वर का स्वरूप ही इस प्रकार का सार है धारण करता है। हमारी चर्चा के इस बिन्दु पर, क्या तुम लोगों में से किसी ने मनुष्यजाति में किसी को उतना पवित्र देखा है जैसा कि मैंने अभी वर्णन किया है? (नहीं।) तो क्या प्रसिद्ध, महान या मानवजाति के उन आदर्शों के बीच कोई इतना पवित्र है जिसकी तुम लोग आराधना करते हो? (नहीं।) इसलिए जब अब हम कहते हैं कि केवल परमेश्वर की पवित्रता अद्वितीय है, तो क्या यक एक अतिशयोक्ति है? (नहीं।) बिलकुल नहीं है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर की अद्वितीय पवित्रता का एक व्यावहारिक पक्ष भी है। क्या जिस पवित्रता की मैं अब बात करता हूँ और जिस पवित्रता के बारे में तुम लोगों ने पहले सोचा था, और कल्पना की थी उसके बीच में कोई अंतर है? (हाँ।) यह अन्तर कितना अधिक है? (बहुत ज़्यादा बड़ा!) जब लोग पवित्रता के बारे में बात करते हैं तो प्रायः लोगों का क्या आशय होता है? (कुछ बाहरी व्यवहार।) जब लोग कहते हैं कि कोई व्यवहार, या कोई अन्य चीज़ पवित्र है, वे ऐसा सीरह इसलिए कहते हैं क्योंकि वे उसे शुद्ध या इंद्रियों को मनभावन लगने के रूप में देखते हैं। लेकिन इन चीजों में हमेशापवित्रता के वास्तविक सार का अभाव होता है—यह सिद्धान्त का पहलू है। इसके अलावा, "पवित्रता" के व्यावहारिक से क्या संबंधित होता है जिसे लोग अपने दिमाग में

उत्पन्न करते हैं? क्या यह अधिकांशतः वही है जिसकी वे कल्पना या आँकलन करते हैं? उदाहरण के लिए, अभ्यास करते समय कुछ बौद्ध लोगों का निधन हो जाता है, आसन लगाकर सोते हुए वे गुज़र जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वे पवित्र हो गए हैं और उड़कर स्वर्ग चले गए हैं। यह भी कल्पना की उपज है। फिर कुछ अन्य लोग हैं जो यह सोचते हैं कि स्वर्ग से नीचे उतरती हुई परी पवित्र है। वास्तव में, "पवित्र" शब्द के बारे में लोगों की धारणा हमेशा से ही सिर्फ एक प्रकार की खोखली कोरी कल्पना एवं सिद्धान्त रही है, जिसमें मूलरूप से कोई वास्तविक सार नहीं है, और इसके अतिरिक्त इसका पवित्रता के सार के साथ कोई लेना देना नहीं है। पवित्रता का सार सच्चा प्रेम है, परन्तु इससे भी अधिक यह सत्य, धार्मिकता और प्रकाश का सार है। "पवित्र" शब्द केवल तभी उपयुक्त है जब इसे परमेश्वर के लिए लागू किया जाता है; सृष्टि में कुछ भी "पवित्र" कहलाने के योग्य नहीं है। मनुष्य को यह अवश्य समझना चाहिए। अब से, हम केवल परमेश्वर के लिए "पवित्र" शब्द का उपयोग करेंगे। क्या यह उचित है? (हाँ, यह उचित है।)

आओ अब हम वापस इस बारे में बात करें कि शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए कौन-से साधनों को काम में लाता है। हमने अभी-अभी उन विभिन्न तरीकों के बारे में बात की है जिनसे परमेश्वर मनुष्य पर कार्य करता है, और जिन्हें तुम लोगों में से हर एक स्वयं अनुभव कर सकता है, इसलिए मैं बहुत अधिक विस्तार से नह बोलूँगा। परन्तु तुम्हारे हृदयों में कदाचित् यह अस्पष्ट है कि शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए किन चालों और युक्तियों को काम में लाता है, या कम से कम तुम्हें इनकी विशिष्ट समझ नहीं है। क्या मेरा इस पर फिर से बोलना लाभप्रद होगा? (हाँ।) क्या तुम लोग इसके बारे में जानना चाहते हो? हो सकता है कि तुम लोगों में से कुछ लोग पूछें : "शैतान के बारे में फिर से बात क्यों करें? जिस क्षण शैतान का उल्लेख होता है, हम नाराज़ हो जाते हैं, और जब हम इसका नाम सुनते हैं तो हम पूरी तरह व्याकुल हो जाते हैं।" चाहे यह तुम्हें कितना ही असहज क्यों न करता हो। तुम्हें तथ्यों का सामना करना ही चाहिए। मनुष्य की समझ के लिए ये चीज़ें स्पष्ट रूप से बोली और स्पष्ट की जानी चाहिए; अन्यथा मनुष्य वास्तव में शैतान के प्रभाव से अलग नहीं हो सकता है।

हमने पहले उन पाँच तरीकों के बारे में चर्चा की है जिनसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है, इनमें शैतान की चालें शामिल हैं। जिन तरीकों से शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करता है वे मात्र सतही परत हैं; अधिक घातक वे चालें हैं जो इस सतह के नीचे छिपी हैं, जिनके द्वारा शैतान अपने लक्ष्यों को हासिल ता है। ये चालें क्या हैं? उन्हें संक्षेप में कहो। (वह धोखा देता है, लुभाता एवं फुसलाता है।) चालों की जितनी लम्बी सूची

तुम बनाते हो, उतना ही करीब तुम लोग आते हो। ऐसा लगता है मानो कि शैतान द्वारा तुम लोगों को भारी नुकसान पहुँचाया गया है और इस विषय पर तुम्हारी भावनाएँ बहुत प्रबल हैं। (वह ऊपर से अच्छी लग्ने वाली वाक्पटुता का भी उपयोग करता है। वह लोगों को प्रभावित करता है, और बलपूर्वक कब्ज़ा करता है।) बलपूर्वक कब्ज़ा—यह खासकर एक बहुत ही गहरा प्रभाव छोड़ता है। लोग शैतान के बलपूर्वक कब्ज़े से डरते हैं, है ना? क्या कोई अन्य चालें हैं? (वह हिंसक रूप से लोगों को हानि पहुँचाता है, धमकियाँ देता और और लुभावने प्रस्तावदोनों का उपयोग करता है, और वह झूठ बोलता है।) झूठ उसकी करतूतों के सार हैं। शैतान तुम्हें धोखा देने के लिए झूठ बोलता है। झूठ बोलने की प्रकृति क्या है? क्या झूठ बोलना धोखा देने के समान नहीं है? झूठ बोलने का लक्ष्य वास्तव में तुम्हें धोखा देना है। क्या कोई अन्य चालें हैं? शैतान उन सभी चालों को मुझे बताओ जिसके बारे में तुम लोग जानते हो। (वह लालच देता है, हानि पहुँचाता हैं, अंधा करता है और धोखा देता है।) तुम में से अधिकांश इस धोखे के बारे में एक ही तरह से महसूस करते हो, है ना? (वह मनुष्य को नियन्त्रित करता है, मनुष्य को जकड़ लेता है, मनुष्य को आतंकित करता है और मनुष्य को परमेश्वर पर विश्वास करने से रोकता है।) तुम लोग मुझे जो बता रहे हो उसका कुल मिलकर जो आशय है वो मैं जानता हूँ और ये अच्छा है। तुम सभी लोग इसके विषय में कुछ जानते हो, तो आओ अब हम इन चालों सारांश निकालें।

छः प्राथमिक चालें हैं जिन्हें शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए काम में लाता है।

पहला है नियन्त्रण और जोर जबरदस्ती। अर्थात्, तुम्हारे हृदय को नियन्त्रित करने के लिए शैतान हर सभंव कार्य करेगा। "जोर जबरदस्ती" का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है अपनी बात मानने पर विवश करने के लिए धमकी और ज़ोर-ज़बरदस्ती के पैतरों का इस्तेमाल करना, यदि तुम बात नहीं मानते हो तो उसके परिणामों के बारे में विचार करने पर मजबूर करना। तुम भयभीत होते हो और उसकी अवहेलना करने की हिम्मत नहीं करते हो, इसलिए तब तुम उसके प्रति समर्पण कर देते हो।

दूसरा है धोखाधड़ी और छल कपट। "धोखाधड़ी और छल कपट" में क्या अपरिहार्य होता है? शैतान कुछ कहानियों एवं झूठी बातों को बनाता है, तुम्हें छल कपट से उन पर विश्वास करवाता है। वह तुम्हें कभी नहीं बताता है कि मनुष्य को परमेश्वर के द्वारा सृजित किया गया था, न ही वह प्रत्यक्ष रूप से यह कहता है कि तुम्हें परमेश्वर के द्वारा सृजित नहीं गया था। वह "परमेश्वर" शब्द का उपयोग बिलकुल नहीं करता है, बल्कि इसके बजाए एक विकल्प के रूप में किसी और चीज़ का उपयोग करता है, तुम्हें

धोखा देने के लिए इस चीज़ का उपयोग करता है ताकि तुममें परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में मूल रूप से कोई विचार न हो। निश्चित रूप से इस "छल कपट" में बस ये एक नहीं बल्कि कई पहलू शामिल हैं।

तीसरा है ज़बरदस्ती दिमाग में भरना। किस चीज़ को लोगों में ज़बरदस्ती भरा जाता है? क्या ज़बरदस्ती दिमाग में भरना मनुष्य की स्वयं की पसंद से होता है? क्या इसे मनुष्य की सहमति से किया जाता है? (नहीं।) तुम इससे सहमत न भी हो तो तुम इस बारे में कुछ नहीं कर सकते। तुम्हारी अनभिज्ञता में, शैतान तुम्हारे दिमाग में ज़बरदस्ती चीज़ें भरता है, शैतान अपनी सोच, जीवन के अपने नियमों और अपने सार को तुम्हारे भीतर डालता है।

चौथा है धमकाना और भुलावा देना। अर्थात्, शैतान विभिन्न चालों को काम में लाता है ताकि तुम्हें उसे स्वीकार करने उसका अनुसरण करने, उसकी सेवा में कार्य करने को मजबूर कर सके। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वो कुछ भी करेगा। वह कभी-कभी तुम पर छोटे-छोटे अनुग्रह करता है, और इस पूरे समय तुम्हें पाप करने के लिए लुभाता है। यदि तुम उसका अनुसरण नहीं करते हो, तो वह तुम्हें कष्ट भुगतवाएगा और तुम्हें दण्ड देगा और तुम पर आक्रमण करने और तुम्हें जाल में फँसाने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करेगा।

पाँचवा है धोखा और असमर्थता। "धोखा और असमर्थता" वह है जब शैतान कुछ मधुर सुनाई देने वाले शब्दों एवं विचारों को बनाता है जो लोगों की अवधारणाओं से मेल खाते हैं ताकि ऐसा लगे मानो कि वह लोगों के दैहिक स्थिति या उनके जीवन एवं भविष्य के प्रति विचारशील हो रहा है, जबकि वास्तव में उसका एकमात्र लक्ष्य तुम्हें बेवकूफ़ बनाना है। तब वह तुम्हें असमर्थ कर देता है ताकि तुम यह न जान पाओ कि क्या सही है और क्या ग़लत है, ताकि तुम अनजाने में ही छले जाओ और फलस्वरूप उसके नियन्त्रण के अधीन आ जाओ।

छठा है शरीर और मन का विनाश। शैतान मनुष्यों के किस हिस्से को नष्ट करता है? (मनुष्य के मन को, और पूरे अस्तित्व को।) शैतान तुम्हारे मन को नष्ट करता है, तुम्हें विरोध करने में शक्तिहीन बना देता है, इसका अर्थ है कि धीरे-धीरे, तुम्हारे न चाहने के बावजूद तुम्हारा हृदय शैतान की ओर मुड़ने लगता है। वह हर दिन इन चीज़ों को तुम्हारे भीतर डालता है, तुम्हें प्रभावित करने और तैयार करने के लिए प्रतिदिन इन विचारों एवं संस्कृतियों का उपयोग करता है, धीरे-धीरे तुम्हारी इच्छा शक्ति को खोखला कर देता है,

जिसके कारण अंतत: तुम एक अच्छा इंसान नहीं बने रहना चाहते हो, तुम उस चीज़ के पक्ष में अब और डटे नहीं रहना चाहते हो जिसे तुम "धार्मिकता" कहते हो। अनजाने में, तुम्हारे पास प्रवाह के विरुद्ध तैरने की इच्छा शक्ति नहीं जाती है, बल्कि इसके बजाए तुम प्रवाह के साथ बहने लगते हो। "विनाश" का अर्थ है शैतान का लोगों को इतना अधिक कष्ट देना कि वे अपनी छायामात्र बन जाते हैं, वे अब मनुष्य नहीं रह जाते हैं। इसी वक्त शैतान प्रहार करता है, उन्हें पकड़कर निगल लेता है।

इन में से प्रत्येक चाल जिसे शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए काम में लाता है, मनुष्य को विरोध करने में निर्बल कर देता है; उनमें से कोई भी मनुष्य के लिए घातक हो सकता है। दूसरे शब्दों में, शैतान जो कुछ भी करता है और वह जिस भी चाल को काम में लाता है, वह तुम्हें पतित करने का कारण बन सकता है, तुम्हें शैतान के नियन्त्रण के अधीन ला सकता है और तुम्हें दुष्टता और पाप के दलदल में धँसा सकता है। ये वे चालें हैं जिन्हें शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए काम में लाता है।

हम कह सकते हैं कि शैतान दुष्ट है, परन्तु इसकी पुष्टि करने के लिए, हमें फिर भी यह देखना ही चाहिए कि मनुष्य को शैतान के द्वारा भ्रष्ट करने के क्या परिणाम होते हैं और वह मनुष्य तक कौन से स्वभाव और सार लाता है। तुम सभी लोग इसके बारे में कुछ जानते हो, तो इसके बारे में बताओ। शैतान द्वारा लोगों को भ्रष्ट करने के क्या परिणाम होते हैं? वे कौन से शैतानी स्वभावों को व्यक्त और प्रकट करते हैं? (अहंकार और दंभ, स्वार्थ और घिनौनापन, कुटिलता और धोखेबाज़ी, कपट और द्वेषपूर्णता, तथा मानवता का पूर्ण अभाव।) कुल मिलाकर, हम कह सकते हैं कि उनके पास कोई मानवता नहीं होती है। अब, अन्य भाइयों एवं बहनों को बोलने दो। (जब एक बार मनुष्यों को शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिया जाता है, तो वे आम तौर पर अत्यधिक अहंकारी एवं आत्मतुष्ट, अभिमानी, और घमंडी, लालची एवं स्वार्थी हो जाते हैं। मुझे लगता है कि ये सबसे गंभीर समस्याएँ हैं।) (शैतान के द्वारा लोगों को भ्रष्ट किए जाने के बाद, वे भौतिक चीज़ों और धन को पाने के लिए सब कुछ कर जाते हैं। और वे यहाँ तक कि परमेश्वर के प्रति शत्रुतापूर्ण भी हो जाते हैं, परमेश्वर का प्रतिरोध करते हैं, परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, और वे उस विवेक और तर्कशीलता को गँवा देते हैं जो मनुष्य के पास होना चाहिए।) जो कुछ भी तुम लोगों ने कहा है वह सब मूल रूप से समान है, यद्यपि उनमें कुछ मामूली अन्तर हैं; तुम में से कुछ लोगों ने बस मामूली विवरणों शामिल किया है। संक्षेप में कहें, भ्रष्ट मानवता के बारे में जो बातें सबसे विशिष्ट हैं, वे हैं अहंकार, धोखेबाज़ी, द्वेषपूर्णता एवं स्वार्थ। हालाँकि तुम सभी लोगों ने एक ही चीज़ को अनदेखा किया है। लोगों के

पास कोई विवेक नहीं है, उन्होंने अपनी तर्कशीलता को गँवा दिया है और उनमें कोई मानवता नहीं है—फिर भी एक अन्य अति महत्वपूर्ण चीज़ है जिसका तुम लोगों ने उल्लेख नहीं किया है, जो है "विश्वासघात"। एक बार मनुष्य को शैतान के द्वारा भ्रष्ट कर दिये जाने के बाद ये स्वभाव जो किसी मनुष्य में मौजूद होते हैं, उनका अंतिम परिणाम उनका परमेश्वर से विश्वासघात होता है। चाहे परमेश्वर लोगों को कुछ भी क्यों न कहे या वह उन पर कोई भी कार्य क्यों न करे, वे उस पर ध्यान नहीं देते हैं जो वे जानते हैं कि सत्य है। अर्थात्, वे परमेश्वर को अब और नहीं स्वीकारते और वे उससे विश्वासघात करते हैं; शैतान द्वारा मनुष्य की भ्रष्टता का यही परिणाम है। मनुष्य के समस्त भ्रष्ट स्वभावों के लिए यह एक समान है। उन तरीकों के बीच जिन्हें शैतान मनुष्य को भ्रष्ट करने के लिए उपयोग करता है—ज्ञान जिसे लोग सीखते हैं, विज्ञान जिसे वे जानते हैं, अंधविश्वास, पारम्परिक संस्कृतियों और साथ ही सामाजिक प्रवृत्तियों की उनकी समझ—इनमें क्या कोई ऐसी चीज़ है जिसे मनुष्य यह बताने के लिए उपयोग कर सकता है कि धार्मिक क्या है और अधार्मिक क्या है? क्या कोई ऐसी चीज़ है जो मनुष्य की यह जानने में सहायता कर सकती है कि क्या पवित्र है और क्या दुष्ट है? क्या कोई मानक हैं जिनसे इन चीजों को मापा जा सकता है? (नहीं।) ऐसे कोई मापदण्ड और कोई आधार नहीं हैं जो मनुष्य की सहायता कर सकते हैं। भले ही लोग "पवित्र" शब्द को जानते हों, फिर भी ऐसा कोई नहीं है जो वास्तव में जानता हो कि पवित्र क्या है। इसलिए क्या ये चीज़ें जिन्हें शैतान मनुष्य के लिए लेकर आता है उन्हें सत्य को जानने में मदद कर सकती हैं? क्या वे मनुष्य को अधिक मानवता के साथ जीने में मदद कर सकती हैं? क्या वे मनुष्य को इस तरह जीवन जीने में मदद कर सकती हैं जिसमें वे परमेश्वर की आराधना करने में और अधिक सक्षम हों? (नहीं।) यह स्पष्ट है कि वे मनुष्य को परमेश्वर की आराधना करने या सत्य को समझने में मदद नहीं कर सकती हैं, न ही वे मनुष्य को यह जानने में मदद कर सकती हैं कि पवित्रता एवं दुष्टता क्या हैं। इसके विपरीत, मनुष्य अधिकाधिक रूप से पतित हो जाता है, परमेश्वर से और अधिक दूर होता जाता है। यही कारण है कि हम शैतान को दुष्ट कहते हैं। शैतान के इतने सारे अवगुणों का विश्लेषण करने के बाद, क्या तुम लोगों ने देखा है कि शैतान के अवगुणों में या उसके सार की तुम्हारी समझ में पवित्रता का कोई तत्व देखा है? (नहीं।) इतना तो निश्चित है। तो क्या तुम लोगों ने शैतान के किसी सार के किसी पहलू को देखा है जो परमेश्वर के साथ किसी समानता को साझा करता हो? (नहीं।) क्या शैतान की कोई अभिव्यक्ति परमेश्वर के साथ किसी समानता को साझा करती है? (नहीं।) तो अब मैं तुम लोगों से पूछना चाहता हूँ : अपने शब्दों में बताओ कि परमेश्वर की पवित्रता वास्तव

में क्या है? सबसे पहले, "परमेश्वर की पवित्रता" ये शब्द किसके सम्बन्ध में कहे जाते हैं? क्या इन्हें परमेश्वर के सार के संबंध में कहा जाता है? या इन्हें उसके स्वभाव के किसी पहलू के संबंध में कहा जाता है? (इन्हें परमेश्वर के सार के संबंध में कहा जाता है।) हमें अपने इच्छित विषय को किसे समझना है इसके लिए हमें एक आधार को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना चाहिए। इन शब्दों को परमेश्वर के सार के संबंध में कहा जाता है। सबसे पहले, हमने शैतान की दुष्टता को परमेश्वर के सार के प्रति एक विषमता के रूप में उपयोग किया है, तो क्या तुमने परमेश्वर में शैतान के किसी सार को देखा है? मनुष्यजाति के किसी भी सार के विषय में क्या कहोगे? (नहीं, हमने नहीं। परमेश्वर अभिमानी नहीं है, स्वार्थी नहीं है और विश्वासघात नहीं करता है, और इससे हम देखते हैं कि परमेश्वर का पवित्र सार प्रकट होता है।) क्या जोड़ने के लिए कुछ और? (परमेश्वर में शैतान के भ्रष्ट स्वभाव का कोई नामोनिशान नहीं है। जो कुछ शैतान के पास है वह पूरी तरह से नकारात्मक है, जबकि जो कुछ परमेश्वर के पास है वह सकारात्मक के अलावा और कुछ भी नहीं है। हम देख सकते हैं कि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ रहा है, और हमें सुरक्षित रखते हुए हम पर नज़र रखी है, जब हम बहुत छोटे से थे, उस समय से लेकर जीवन भर और वर्तमान दिन तक, और खासतौर पर जब हम भ्रांत रहे हैं और हमने अपना मार्ग गँवा दिया था। परमेश्वर में कोई धोखा नहीं है, कोई कपट नहीं है। वह स्पष्ट रूप से और सादगी से बोलता है, और यह भी परमेश्वर का सच्चा सार है।) बहुत अच्छा! (हम परमेश्वर में शैतान के किसी भी भ्रष्ट स्वभाव को नहीं देख सकते हैं, कोई दोगलापन नहीं है, कोई शेखी बघारना नहीं, कोई खोखली प्रतिज्ञाएँ और कोई धोखा नहीं। परमेश्वर ही वो एकमात्र है जिसमें मनुष्य विश्वास कर सकता है। परमेश्वर विश्वसनीय एवं ईमानदार है। परमेश्वर के कार्य से, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर लोगों को ईमानदार बनने के लिए कहता है, बुद्धिदेता है, भले और बुरे में अन्तर करने में, और विभिन्न लोगों, घटनाओं, और चीज़ों की समझ पाने में सक्षम बनाता है। इसमें हम परमेश्वर की पवित्रता को देख सकते हैं।) क्या तुम लोगों ने अपनी बातें कह लीं? जो कुछ तुम लोगों ने कहा है क्या तुम लोग उससे संतुष्ट हो? तुम लोगों के हृदयों में परमेश्वर की वास्तव में कितनी समझ है? और तुम लोग परमेश्वर की पवित्रता को कितना समझते हो? मैं जानता हूँ कि तुम लोगों में से हर एक के हृदय में कुछ स्तर की बोधात्मक समझ है, क्योंकि हर व्यक्ति अपने पर परमेश्वर के कार्य को महसूस कर सकता है और, विभिन्न अंशों में, वे परमेश्वर से बहुत सी चीज़ों को प्राप्त करते हैं : अनुग्रह एवं आशीषें, प्रबोधन और प्रकाशन और परमेश्वर का न्याय और उसकी ताड़ना, और इन चीजों के कारण मनुष्य परमेश्वर के सार की कुछ साधारण

समझ प्राप्त करता है।

यद्यपि परमेश्वर की पवित्रता, जिसकी आज हम चर्चा कर रहे हैं वह शायद अधिकांश लोगों को अजीब लगे, इसके बावजूद, अब हमने इस विषय को आरम्भ कर दिया है, और जैसे-जैसे तुम लोग आगे के मार्ग पर बढ़ोगे तुम्हारी समझ गहरी होती जाएगी। यह तुमसे अपेक्षा करता है कि अपने अनुभव करने के दौरान तुम धीरे-धीरे महसूस करो और समझो। अभी के लिए, परमेश्वर के सार की तुम लोगों की बोध आधारित समझ को अभी भी सीखने, इसकी पुष्टि करने, इसे महसूस करने और इसका अनुभव करने के लिए एक लम्बी समयावधि की आवश्यकता है, जब एक दिन तुम लोग अपने हृदय के अंतर्तम भाग से जान लोगे कि "परमेश्वर की पवित्रता" का अर्थ है कि परमेश्वर का सार दोषरहित है और परमेश्वर का प्रेम निःस्वार्थ है, जो कुछ परमेश्वर मनुष्य को प्रदान करता है वह निःस्वार्थ है, और तुम लोग यह जान लोगे कि परमेश्वर की पवित्रता निष्कलंक और दोषरहित है। परमेश्वर के ये सार के ये पहलू मात्र ऐसे शब्द नहीं हैं जिसे वह अपनी हैसियत का दिखावा करने के लिए उपयोग करता है, बल्कि इसके बजाए परमेश्वर हर एक व्यक्ति के साथ खामोश ईमानदारी से व्यवहार करने के लिए अपने सार का उपयोग करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का सार खोखला नहीं है, न ही यह सैद्धान्तिक या मत-संबंधी है और यह निश्चित रूप से एक प्रकार का ज्ञान नहीं है। यह मनुष्य के लिए एक प्रकार की शिक्षा नहीं है; बल्कि इसके बजाए यह परमेश्वर के स्वयं के कार्यकलापों का सच्चा प्रकाशन है और परमेश्वर के स्वरूप का प्रकटित सार है। मनुष्य को इस सार को जानना और इसे समझना चाहिए, क्योंकि हर चीज़ जो परमेश्वर करता है और हर वचन जो वह कहता है उसका हर एक व्यक्ति के लिए बड़ा मूल्य एवं बड़ा महत्व होता है। जब तुम परमेश्वर की पवित्रता को समझने लगते हो, तब तुम वास्तव में परमेश्वर में विश्वास कर सकते हो; जब तुम परमेश्वर की पवित्रता को समझने लगते हो, तब तुम वास्तव में इन शब्दों "स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है" के सच्चे अर्थ को समझ सकते हो। तुम अब यह सोचते हुए कोरी कल्पना नहीं करोगे कि चलने के लिए इसके अलावा भी मार्ग हैं जिन्हें तुम चुन सकते हो, और तुम उस हर एक चीज़ के साथ विश्वासघात करने की इच्छा नहीं करोगे जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे लिए व्यवस्थित किया है। क्योंकि परमेश्वर का सार पवित्र है; इसका अर्थ है कि केवल परमेश्वर के माध्यम से ही तुम जीवन के माध्यम से प्रकाश के धर्मी मार्ग पर चल सकते हो; केवल परमेश्वर के माध्यम से ही तुम जीवन के अर्थ को जान सकते हो; केवल परमेश्वर के माध्यम से ही तुम वास्तविक मानवता को जी सकते हो और सत्य को धारण भी कर सकते हो और उसे

जान भी सकते हो। केवल परमेश्वर के माध्यम से ही तुम सत्य से जीवन को प्राप्त कर सकते हो। केवल स्वयं परमेश्वर ही तुम्हें बुराई से दूर रहने में सहायता कर सकता है और तुम्हें शैतान की क्षति और नियन्त्रण से मुक्त कर सकता है। परमेश्वर के अलावा, कोई भी व्यक्ति और कोई भी चीज़ तुम्हें कष्ट के सागर से नहीं बचा सकती है ताकि तुम और कष्ट न सहो। यह परमेश्वर के सार के द्वारा निर्धारित किया जाता है। केवल स्वयं परमेश्वर ही इतने निःस्वार्थ रूप से तुम्हें बचाता है; केवल परमेश्वर ही अंततः तुम्हारे भविष्य के लिए, तुम्हारी नियति के लिए और तुम्हारे जीवन के लिए ज़िम्मेदार है, और वही तुम्हारे लिए सभी चीज़ों को व्यवस्थित करता है। यह कुछ ऐसा है जिसे कोई सृजित या अनसृजित प्राणी प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि कोई भी सृजित या अनसृजित प्राणी परमेश्वर के सार के समान सार को धारण नहीं कर सकता है, किसी भी व्यक्ति या प्राणी में तुम्हें बचाने या तुम्हारी अगुवाई करने की क्षमता नहीं है। मनुष्य के लिए परमेश्वर के सार का यही महत्व है। कदाचित् तुम लोगों को यह महसूस होता हो कि मेरे द्वारा कहे गए ये वचन सिद्धान्ततः थोड़ी सहायता कर सकते हैं, परन्तु यदि तुम सत्य की खोज करते हो, यदि तुम सत्य से प्रेम करते हो, तो तुम ये अनुभव करोगे कि कैसे ये वचन न केवल तुम्हारी नियति को बदल देंगे, बल्कि इसके अलावा वे तुम्हें मानव जीवन के सही मार्ग पर ले आएँगे। तुम यह समझते हो, है ना? तो क्या अब परमेश्वर के सार को जानने में तुम लोगों की कोई रुचि है? (हाँ।) यह जानकर अच्छा लगा कि तुम्हें रुचि है। आज के लिए, हम परमेश्वर की पवित्रता को जानने के अपने संगति के विषय को यहीं समाप्त करेंगे।

मैं तुम लोगों से किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात करना चाहता हूँ जो तुम लोगों ने आज हमारी सभा के आरम्भ में की थी, जिसने मुझे आश्चर्य में डाल दिया था। कदाचित् तुम लोगों में से कुछ लोग कृतज्ञता का बोध पले बैठे थे, शायद तुम आभारी महसूस कर रहे थे, और इसलिए तुम्हारी भावनाओं के कारण तद्नुरूप क्रियाएँ हो गयीं। जो कुछ तुम लोगों ने किया उसे झिड़की की आवश्यकता नहीं है, यह न तो सही और न ही ग़लत है। किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम लोग कुछ समझो। यह क्या है जो मैं चाहता हूँ कि तुम समझो? सबसे पहले, मैं तुम लोगों से उसके बारे में पूछना चाहूँगा जो तुम लोगों ने अभी-अभी किया। क्या यह आराधना करने के लिए दण्डवत् करना था या घुटने टेकना था? क्या कोई मुझे बता सकता है? (हम मानते हैं कि यह दण्डवत् करना था।) तुम लोग मानते हो कि यह दण्डवत् करना था, तो फिर दण्डवत् करने का क्या अर्थ है? (आराधना।) तो फिर, आराधना करने के लिए घुटने टेकना क्या है? मैंने तुम लोगों के साथ पहले इसके बारे में संगति नहीं की, किन्तु आज मुझे लगता है कि ऐसा करना आवश्यक है। क्या

तुम लोग अपनी सामान्य सभाओं में दण्डवत् करते हो? (नहीं।) क्या जब तुम लोग अपनी प्रार्थनाएँ करते हो तब तुम लोग दण्डवत् करते हो? (हाँ।) हर बार जब तुम प्रार्थना करते हो, अगर परिस्थितियाँ अनुमति दें, तब क्या तुम दण्डवत् करते हो, जब ती हैं? (हाँ।) अच्छा है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि आज तुम लोग ये समझो कि परमेश्वर दो प्रकार के लोगों के आदर में घुटने टेकने को स्वीकार करता है। हमें बाइबल से या किसी आध्यात्मिक हस्तियों के कर्मों या आचरण से सीख लेने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, मैं अभी और यहीं पर तुम लोगों को कुछ सत्य बताऊँगा। पहला, आराधना करने के लिए दण्डवत् करना और घुटने टेकना एक ही चीज़ नहीं है। क्यों परमेश्वर उन लोगों के घुटने टेकने को स्वीकार करता है जो दण्डवत् करते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर किसी व्यक्ति को अपने पास बुलाता है और इस व्यक्ति को परमेश्वर के आदेश को स्वीकार करने के लिए आह्वान करता है, इसलिए परमेश्वर उस व्यक्ति को अपने सामने दण्डवत् करने देगा। यह पहले प्रकार का व्यक्ति है। दूसरे प्रकार का व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति की आराधना करने के लिए घुटने टेकता है जो परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता है। लोगों के सिर्फ यही दो प्रकार हैं। तो तुम लोग किस प्रकार के लोगों से सम्बन्धित हो? क्या तुम लोग कहने में सक्षम हो? यह एक सत्य है, यद्यपि यह तुम्हारी भावनाओं को थोड़ी चोट पहुँचा सकता है। प्रार्थना के दौरान लोगों के घुटने टेकने के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं है—यह उचित है और वैसा ही है जैसा इसे होना चाहिए, क्योंकि जब लोग प्रार्थना करते हैं तो अधिकांशतः किसी चीज़ के लिए प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर के लिए अपने हृदय को खोलते हैं और उसके आमने-सामने आते हैं। यह परमेश्वर के साथ दिल से बातचीत और विनिमय है। घुटनों के बल आराधना करना मात्र एक औपचारिकता नहीं होनी चाहिए। आज जो कुछ तुम लोगों ने किया है उसके लिए तुम लोगों की निन्दा करने का मेरा आशय यह नहीं है। मैं बस इसे तुम लोगों के लिए स्पष्ट करना चाहता हूँ ताकि तुम लोग इस सिद्धान्त को समझो—तुम लोग इसे समझते हो, है ना? (हाँ, हम जानते हैं।) मैं तुम लोगों को यह इसलिए बता रहा हूँ कि ताकि यह दुबारा न हो। तो, क्या लोगों के पास परमेश्वर के चेहरे के सामने दण्डवत् करने और घुटने टेकने का कोई अवसर होता है? ऐसा नहीं है कि ऐसा अवसर कभी नहीं आएगा। आज नहीं तो कल ऐसा दिन आएगा, परन्तु अभी वह समय नहीं है। क्या तुम लोग देखते हो? क्या यह तुम लोगों को परेशान करता है? (नहीं।) यह अच्छा है। हो सकता है कि ये वचन तुम लोगों को प्रेरित करेंगे या प्रेरणा देंगे जिससे तुम लोग अपने हृदय में परमेश्वर और मनुष्य के बीच की वर्तमान दशा को और अब मनुष्य और परमेश्वर के बीच में किस प्रकार का सम्बन्ध विद्यमान है

उसे जान सको। यद्यपि हमने हाल ही में थोड़ी-और बातचीत और संवाद किया है, फिर भी परमेश्वर के बारे में मनुष्य की समझ अभी भी पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर को समझने का प्रयास करने के मार्ग पर मनुष्य को अभी भी बहुत दूर तक जाना है। मेरा इरादा यह नहीं है कि तुम लोगों से इस कार्य को अत्यावश्यक कार्य के रूप में करवाऊँ, या इस प्रकार की आकांक्षाओं या भावनाओं को व्यक्त करने के लिए तुम लोगों से जल्दबाज़ी करवाऊँ। आज जो कुछ तुम लोगों ने किया था वह तुम लोगों की सच्ची भावनाओं को प्रकट और व्यक्त कर सकता है, और मैंने उन्हें महसूस किया है। तो जब तुम लोग इसे कर रहे थे, तब मैं बस खड़ा होना और तुम लोगों को अपनी शुभकामनाएँ देना चाहता था, क्योंकि मैं तुम लोगों के भले की कामना करता हूँ। अतः मेरे हर वचन और हर कार्यकलाप में, मैं तुम लोगों की सहायता करने, तुम लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए अपना भरसक प्रयास करता हूँ, ताकि तुम लोगों के पास सभी चीज़ों की सही समझ एवं सही दृष्टिकोण हो सके। तुम इसे समझ सकते हो, है न? (हाँ।) यह बहुत अच्छा है। यद्यपि लोगों को परमेश्वर के विभिन्न स्वभावों, परमेश्वर के स्वरूप के पहलुओं की और जो कार्य परमेश्वर करता है, उसकी कुछ समझ है, फिर भी इस समझ का अधिकांश भाग किसी पृष्ठ पर वचनों को पढ़ने, या उन्हें सिद्धान्त रूप से समझने, या सिर्फ उनके बारे में सोचने से अधिक नहीं है। लोगों में जिस चीज़ का अत्यंत अभाव है वो है वास्तविक समझ एवं दृष्टिकोण जो वास्तविक अनुभव से आते हैं। भले ही परमेश्वर लोगों के हृदय को जागृत करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करता है, फिर भी इससे पहले कि इसे संपन्न किया जा सके, एक लम्बा मार्ग तय करना होगा। मैं किसी को ऐसा महसूस करते हुए नहीं देखना चाहता हूँ मानो कि परमेश्वर ने उन्हें बाहर ठण्ड में छोड़ दिया हो, या परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया हो या उनसे मुँह फेर लिया हो। मैं बस हर एक व्यक्ति को बिना किसी ग़लतफ़हमी या बोझके, केवल सत्य की खोज करने और परमेश्वर को समझने की खोज करने के मार्ग पर अटल इच्छा के साथ दृढ़ता से आगे बढ़ते हुए देखना चाहता हूँ। चाहे तुमने कोई भी ग़लतियाँ क्यों न की हो, चाहे तुम कितनी दूर तक भटक क्यों न गए हो या तुमने कितने गंभीर अपराध क्यों न किए हों, इन्हें अपना बोझ या अतिरिक्त सामान मत बनने दो जिन्हें तुम्हें परमेश्वर को समझने की अपनी खोज में ढोना पड़ता है। निरन्तर आगे बढ़ते जाओ। हर वक्त, परमेश्वर मनुष्य के उद्धार को अपने हृदय में रखता है; यह कभी नहीं बदलता है। यह परमेश्वर के सार का सबसे अधिक मूल्यवान हिस्सा है। क्या अब तुम लोग कुछ अच्छा महसूस कर रहे हो? (हाँ।) मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग सभी चीज़ों और उन वचनों के प्रति सही दृष्टिकोण अपना सकते हो जो मैंने बोले है। आओ

हम यहाँ पर इस संगति को समाप्त करें। सभी को नमस्ते! (नमस्ते!)

11 जनवरी, 2014

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है VII

परमेश्वर के अधिकार, परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव और परमेश्वर की पवित्रता का अवलोकन

जब तुम लोग अपनी प्रार्थनाएँ समाप्त करते हो, तो क्या तुम लोगों के हृदय परमेश्वर की उपस्थिति में शांति महसूस करते हैं? (हाँ।) जिन लोगों का हृदय शांत हो सकता है, वे परमेश्वर के वचन को सुनने एवं समझने में सक्षम होंगे और वे सत्य को सुनने एवं समझने में भी सक्षम होंगे। यदि तुम्हारा हृदय शांत नहीं हो पाता, यदि तुम्हारा हृदय हमेशा भटकता रहता है, या हमेशा अन्य चीज़ों के बारे में सोचता रहता है, तो इससे तुम्हारे सभाओं में उपस्थित होकर परमेश्वर के वचन सुनने पर असर पड़ेगा। जिन मामलों पर हम इस समय चर्चा कर रहे हैं, उनके केंद्र में क्या है? आओ, हम सब मुख्य बिंदुओं पर थोड़ा पुन: विचार करें। स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है, को जानने के संबंध में, पहले भाग में हमने परमेश्वर के अधिकार पर चर्चा की थी। दूसरे भाग में हमने परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव पर चर्चा की, और तीसरे भाग में हमने परमेश्वर की पवित्रता पर चर्चा की। क्या उस विशिष्ट विषयवस्तु ने, जिस पर हमने हर बार चर्चा की, तुम लोगों पर कोई प्रभाव छोड़ा है? पहले भाग "परमेश्वर का अधिकार" में किस बात ने तुम लोगों पर सबसे गहरी छाप छोड़ी? किस भाग ने तुम लोगों पर सबसे सशक्त प्रभाव छोड़ा था? (परमेश्वर ने पहले परमेश्वर के वचन के अधिकार एवं सामर्थ्य के बारे में बताया; परमेश्वर उतना ही अच्छा है, जितना उसका वचन और उसका वचन सच्चा साबित होगा। यह परमेश्वर का अंतर्निहित सार है।) (शैतान के लिए परमेश्वर की आज्ञा थी कि वह सिर्फ़ अय्यूब को ललचा सकता है, लेकिन उसके प्राण नहीं ले सकता। इससे हम परमेश्वर के वचन के अधिकार को देखते हैं।) क्या इसमें जोड़ने के लिए कोई और बात है? (परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी और उनके भीतर सब-कुछ बनाने के लिए वचनों का प्रयोग किया और उसने मनुष्य के साथ एक वाचा बनाने और उस पर अपनी आशीषें रखने के लिए वचन बोले। ये सभी परमेश्वर के वचन के अधिकार के उदाहरण हैं। फिर, हमने देखा कि किस तरह प्रभु यीशु ने लाज़र को आज्ञा दी कि वह अपनी कब्र से बाहर निकल आए—इससे पता चलता है कि ज़िंदगी और मौत परमेश्वर के नियंत्रण में है, कि शैतान के पास ज़िंदगी और

मौत को नियंत्रित करने की शक्ति नहीं है, और यह कि चाहे परमेश्वर का कार्य देह में किया गया हो या आत्मा में, उसका अधिकार अद्वितीय है।) यह समझ तुमने संगति सुनने के बाद पाई, है ना? जब हम परमेश्वर के अधिकार के बारे में बात करते हैं, तो "अधिकार" शब्द के विषय में तुम लोगों की समझ क्या है? परमेश्वर के अधिकार के दायरे के भीतर जो कुछ परमेश्वर अंजाम देता है और प्रकट करता है, उसमें लोग क्या देखते हैं? (हम परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता एवं बुद्धिमत्ता देखते हैं।) (हम देखते हैं कि परमेश्वर का अधिकार हमेशा मौजूद है और सचमुच मौजूद है। हम सभी चीज़ों पर उसकी प्रभुता में बड़े पैमाने पर परमेश्वर के अधिकार को देखते हैं, और जिस तरह वह प्रत्येक मनुष्य के जीवन को नियंत्रण में लेता है, हम इसे छोटे पैमाने पर देखते हैं। परमेश्वर वास्तव में मानव-जीवन के छः महत्वपूर्ण पड़ावों को नियोजित और नियंत्रित करता है। इसके अतिरिक्त, हम देखते हैं कि परमेश्वर का अधिकार स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है, का प्रतिनिधित्व करता है, और कोई भी सृजित या गैर-सृजित प्राणी इसे धारण नहीं कर सकता। परमेश्वर का अधिकार उसकी हैसियत का प्रतीक है।) "परमेश्वर की हैसियत और परमेश्वर की स्थिति के प्रतीकों" की तुम्हारी समझ कुछ हद तक सैद्धांतिक लगती है। क्या तुम्हें परमेश्वर के अधिकार का कोई ठोस ज्ञान है? (जब हम छोटे थे, तब से परमेश्वर ने हम पर नज़र रखी है और हमारी सुरक्षा की है, और हम इसमें परमेश्वर के अधिकार को देखते हैं। हम उन खतरों के बारे में नहीं जानते थे, जो हमारे लिए घात लगाए बैठे थे, लेकिन परमेश्वर हमेशा परदे के पीछे हमारी सुरक्षा कर रहा था। यह भी परमेश्वर का अधिकार है।) बहुत अच्छा। सही कहा!

जब हम परमेश्वर के अधिकार के बारे में बात करते हैं, तो हमारा फोकस क्या होता है, हमारा मुख्य बिंदु क्या होता है? हमें इस पर चर्चा करने की आवश्यकता क्यों है? इस पर चर्चा करने का पहला प्रयोजन लोगों के हृदय में एक सृष्टिकर्ता के तौर पर परमेश्वर की हैसियत और सभी चीज़ों में उसकी स्थिति स्थापित करना है। पहले-पहल लोगों को यह चीज़ जताई, दिखाई और महसूस कराई जा सकती है। जो कुछ तुम देखते हो और जो कुछ तुम महसूस करते हो, वह परमेश्वर के कार्यों, वचनों और सब चीज़ों पर उसके नियंत्रण से आता है। अतः, जो कुछ लोग परमेश्वर के अधिकार के माध्यम से देखते, सीखते और जानते हैं, उससे उन्हें कौन-सी सच्ची समझ प्राप्त होती है? पहले प्रयोजन पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। दूसरा प्रयोजन है, परमेश्वर ने अपने अधिकार के साथ जो कुछ किया, कहा और नियंत्रित किया है, उसके माध्यम से लोगों को परमेश्वर के सामर्थ्य और बुद्धिमत्ता को देखने देना। इससे तुम यह समझ सकते हो कि हर एक

चीज़ के नियंत्रण में परमेश्वर कितना सामर्थ्यवान और बुद्धिमान है। क्या यह परमेश्वर के अद्वितीय अधिकार की हमारी पहले की चर्चा का फोकस और मुख्य बिंदु नहीं था? उस चर्चा को हुए ज़्यादा समय नहीं बीता है और फिर भी तुममें से कुछ लोगों ने इसे भुला दिया है, जो यह साबित करता है कि तुम लोगों ने परमेश्वर के अधिकार की गहरी समझ हासिल नहीं की है। यह भी कहा जा सकता है कि मनुष्य ने परमेश्वर के अधिकार को नहीं देखा है। क्या अब तुम लोग इसे थोड़ा-बहुत समझते हो? जब तुम परमेश्वर को अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए देखते हो, तो तुम्हें वास्तव में कैसा महसूस होता है? क्या तुमने वास्तव में परमेश्वर के सामर्थ्य को महसूस किया है? (हाँ।) जब तुम उसके वचनों को पढ़ते हो कि किस तरह उसने सारी चीज़ों को बनाया, तो तुम उसके सामर्थ्य और उसकी सर्वशक्तिमत्ता को महसूस करते हो। जब तुम मनुष्यों की नियति के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व को देखते हो, तो तुम क्या महसूस करते हो? क्या तुम उसके सामर्थ्य एवं उसकी बुद्धिमत्ता को महसूस करते हो? यदि परमेश्वर के पास यह सामर्थ्य नहीं होता, यदि उसके पास यह बुद्धिमत्ता नहीं होती, तो क्या वह सभी चीज़ों और मनुष्यों की नियति के ऊपर प्रभुता रखने के योग्य होता? परमेश्वर के पास सामर्थ्य और बुद्धिमत्ता है, इसलिए उसके पास अधिकार है। यह अद्वितीय है। समस्त सृष्टि में क्या तुमने कोई ऐसा व्यक्ति या प्राणी देखा है, जिसके पास परमेश्वर जैसा सामर्थ्य हो? क्या कोई ऐसा व्यक्ति या वस्तु है, जिसके पास स्वर्ग एवं पृथ्वी और सभी चीज़ों का सृजन करने, उन्हें नियंत्रित करने और उन पर प्रभुत्व रखने का सामर्थ्य हो? क्या कोई ऐसा व्यक्ति या वस्तु है, जो पूरी मानवता पर शासन और उसका नेतृत्व कर सकता हो, जो हर समय हर जगह मौजूद रह सकता हो? (नहीं, ऐसा कोई नहीं है।) क्या अब तुम लोग परमेश्वर के अद्वितीय अधिकार का वास्तविक अर्थ समझे? क्या अब तुम लोगों के पास इसकी कुछ समझ है? (हाँ।) यहाँ परमेश्वर के अद्वितीय अधिकार के प्रकरण के बारे में हमारा पुन: अवलोकन समाप्त होता है।

दूसरे भाग में, हमने परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के बारे में बात की थी। इस विषय में हमने ज्यादा चर्चा नहीं की थी, क्योंकि इस चरण में परमेश्वर के कार्य में मुख्य रूप से न्याय एवं ताड़ना शामिल हैं। राज्य के युग में, परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को स्पष्ट रूप से और बहुत विस्तार से प्रकट किया गया है। उसने ऐसे वचन कहे हैं, जिन्हें उसने सृष्टि के आरंभ के समय से कभी नहीं कहा था; और उसके वचनों में उन सभी लोगों ने, जिन्होंने उन्हें पढ़ा और अनुभव किया है, उसके धार्मिक स्वभाव को प्रकट होते हुए देखा है। तो परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव के बारे में हमारी चर्चा का मुख्य बिंदु क्या है? क्या तुम इसे गहराई से

समझते हो? क्या तुम इसे अनुभव से समझते हो? (परमेश्वर ने सदोम को जला दिया था, क्योंकि उस समय के लोग बहुत भ्रष्ट थे और उन्होंने परमेश्वर के क्रोध को भड़का दिया था। इससे हम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को देखते हैं।) पहले, आओ एक नज़र डालें : यदि परमेश्वर ने सदोम का नाश नहीं किया होता, तो क्या तुम उसके धार्मिक स्वभाव के बारे में जानने में सक्षम होते? तुम तब भी उसे जानने में सक्षम होते, है ना? तुम इसे परमेश्वर द्वारा राज्य के युग में व्यक्त किए गए वचनों में, और उसके न्याय, ताड़ना एवं अभिशापों में भी देख सकते हो, जो उसने मनुष्य को दिए थे। क्या तुम परमेश्वर द्वारा नीनवे को बख्श देने में उसके धार्मिक स्वभाव को देख सकते हो? (हाँ।) वर्तमान युग में लोग परमेश्वर की कुछ दया, प्रेम एवं सहनशीलता देख सकते हैं, और वे इसे मनुष्य के पश्चात्ताप के कारण होने वाले परमेश्वर के हृदय-परिवर्तन में भी देख सकते हैं। परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की हमारी चर्चा शुरू करने के लिए ये दो उदाहरण प्रस्तुत करने के बाद, यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि उसका धार्मिक स्वभाव प्रकट हो गया है, फिर भी वास्तव में उसके धार्मिक स्वभाव का सार जो कुछ बाइबल की इन दो कहानियों से स्पष्ट होता है, उस तक सीमित नहीं है। जो कुछ तुमने परमेश्वर के वचन एवं उसके कार्य से सीखा, देखा और अनुभव किया है, उससे परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को तुम कैसा देखते हो? अपने ख़ुद के अनुभवों से बताओ। (परमेश्वर द्वारा लोगों के लिए सृजित वातावरण में, जब लोग सत्य की खोज करने में सक्षम होते हैं और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं, तो परमेश्वर उनका मार्गदर्शन करता है, उन्हें प्रबुद्ध करता है, और उन्हें अपने हृदय में उजाला महसूस करने में सक्षम बनता है। जब लोग परमेश्वर के विरूद्ध हो जाते हैं और उसका प्रतिरोध करते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करते, तो उनके भीतर बहुत अँधेरा होता है, मानो परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया हो। यहाँ तक कि जब वे प्रार्थना करते हैं, तो भी वे नहीं जानते कि उससे कहना क्या है। लेकिन जब वे अपनी धारणाओं एवं कल्पनाओं को एक तरफ रख देते हैं और परमेश्वर के साथ सहयोग करने को तैयार हो जाते हैं और खुद को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं, तब वे धीरे-धीरे परमेश्वर का मुसकराता हुआ चेहरा देखने में समर्थ हो जाते हैं। इससे हम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव की पवित्रता का अनुभव करते हैं। परमेश्वर पवित्र राज्य में प्रकट होता है, लेकिन वह खुद को अशुद्ध स्थानों में छिपाता है।) (मैं परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव लोगों के साथ उसके व्यवहार के तरीके में देखता हूँ। हमारे भाई-बहन अपने कद एवं क्षमता में अलग-अलग हैं, और हममें से प्रत्येक व्यक्ति से परमेश्वर की अपेक्षाएँ भी अलग-अलग हैं। हम सभी विभिन्न मात्राओं में परमेश्वर की प्रबुद्धता को प्राप्त करने

में सक्षम हैं, और इसमें मैं परमेश्वर की धार्मिकता देखता हूँ, क्योंकि हम मनुष्य, लोगों से ऐसा व्यवहार करने में अक्षम हैं, जबकि परमेश्वर इसमें सक्षम हैं।) अब तुम सभी के पास कुछ व्यावहारिक ज्ञान है, जिसे तुम व्यक्त कर सकते हो।

क्या तुम लोग जानते हो कि परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को समझने के लिए कौन-सा ज्ञान महत्त्वपूर्ण है? इस विषय पर अनुभव से बहुत-कुछ कहा जा सकता है, लेकिन पहले कुछ मुख्य बिंदु मुझे तुम लोगों को बताने चाहिए। परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को समझने के लिए व्यक्ति को पहले परमेश्वर की भावनाओं को समझना होगा : वह किससे घृणा करता है, किसे नापसंद करता है और किससे प्यार करता है; वह किसको बरदाश्त करता है, किसके प्रति दयालु है, और किस प्रकार के व्यक्ति पर वह दया करता है। यह एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। व्यक्ति को यह भी समझना होगा कि परमेश्वर कितना भी स्नेही क्यों न हो, उसमें लोगों के लिए कितनी भी दया एवं प्रेम क्यों न हो, परमेश्वर अपनी हैसियत और स्थिति को ठेस पहुँचाने वाले किसी भी व्यक्ति को बरदाश्त नहीं करता, न ही वह यह बरदाश्त करता है कि कोई उसकी गरिमा को ठेस पहुँचाए। यद्यपि परमेश्वर लोगों से प्यार करता है, फिर भी वह उन्हें लाड़-प्यार से बिगाड़ता नहीं। वह लोगों को अपना प्यार, अपनी दया एवं अपनी सहनशीलता देता है, लेकिन वह कभी उनसे लाड़ नहीं करता; परमेश्वर के अपने सिद्धांत और सीमाएँ हैं। भले ही तुमने परमेश्वर के प्रेम को कितना भी महसूस किया हो, वह प्रेम कितना भी गहरा क्यों न हो, तुम्हें कभी भी परमेश्वर से ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए, जैसा तुम किसी अन्य व्यक्ति से करते हो। यह सच है कि परमेश्वर लोगों से बहुत आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करता है, फिर भी यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को मात्र किसी अन्य व्यक्ति के रूप में देखता है, मानो वह मात्र कोई अन्य सृजित प्राणी हो, जैसे कोई मित्र या आराधना की कोई वस्तु, तो परमेश्वर उससे अपना चेहरा छिपा लेगा और उसे त्याग देगा। यह उसका स्वभाव है और लोगों को इस मुद्दे को बिना सोचे-समझे नहीं लेना चाहिए। अतः, हम अकसर परमेश्वर द्वारा अपने स्वभाव के बारे में कहे गए ऐसे वचन देखते हैं : चाहे तुमने कितने भी मार्गों पर यात्रा की हो, तुमने कितना भी अधिक काम किया हो या तुमने कितना भी अधिक कष्ट सहन किया हो, जैसे ही तुम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को ठेस पहुँचाते हो, वह तुम्हारे कृत्य के आधार पर तुममें से प्रत्येक को उसका प्रतिफल देगा। इसका अर्थ यह है कि हालाँकि परमेश्वर लोगों के साथ बहुत आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करता है, फिर भी लोगों को परमेश्वर से किसी मित्र या रिश्तेदार की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। परमेश्वर को अपना "यार" मत कहो। चाहे तुमने उससे कितना ही प्रेम

क्यों न प्राप्त किया हो, चाहे उसने तुम्हें कितनी ही सहनशीलता क्यों न दी हो, तुम्हें कभी भी परमेश्वर से अपने मित्र के रूप में व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव है। क्या तुम समझे? क्या मुझे इस बारे में और अधिक कहने की ज़रूरत है? क्या तुम्हें इस मामले की पहले से कोई समझ है? सामान्य रूप से कहें, तो यह एक ऐसी गलती है, जिसे लोग सबसे आसानी से इस बात की परवाह किए बगैर करते हैं कि क्या वे सिद्धांतों को समझते हैं या फिर उन्होंने इसके विषय में पहले कभी नहीं सोचा। जब लोग परमेश्वर को ठेस पहुँचाते हैं, तो हो सकता है, ऐसा किसी एक घटना या किसी एक बात की वजह से न होकर उनके रवैये और उस स्थिति के कारण हो, जिसमें वे हैं। यह एक बहुत ही भयावह बात है। कुछ लोगों का मानना है कि उन्हें परमेश्वर की समझ है, कि उन्हें उसका कुछ ज्ञान है, और वे शायद कुछ ऐसी चीज़ें भी कर सकते हैं, जो परमेश्वर को संतुष्ट करेंगी। वे परमेश्वर के बराबर महसूस करना शुरू कर देते हैं और यह भी कि वे चतुराई से परमेश्वर के मित्र हो गए हैं। इस प्रकार की भावनाएँ भयावह रूप से गलत हैं। यदि तुम्हें इसकी गहरी समझ नहीं है—यदि तुम इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझते—तो तुम बहुत आसानी से परमेश्वर और उसके स्वभाव को ठेस पहुँचा दोगे और उसके धार्मिक स्वभाव की अवमानना कर दोगे। अब तुम इसे समझ गए न? क्या परमेश्वर का धार्मिक स्वभाव अद्वितीय नहीं है? क्या यह कभी किसी मनुष्य के चरित्र या नैतिक दृष्टिकोण के बराबर हो सकता है? ऐसा कभी नहीं हो सकता। अतः, तुम्हें नहीं भूलना चाहिए कि चाहे परमेश्वर लोगों से कैसा भी व्यवहार करे, चाहे वह लोगों के बारे में किसी भी प्रकार सोचता हो, परमेश्वर की स्थिति, अधिकार और हैसियत कभी नहीं बदलती। मानव-जाति के लिए परमेश्वर हमेशा सभी चीज़ों का प्रभु और सृष्टिकर्ता है।

तुम लोगों ने परमेश्वर की पवित्रता के बारे में क्या सीखा है? "परमेश्वर की पवित्रता" से संबंधित भाग में, शैतान की बुराई एक विषमता के रूप में इस्तेमाल की जाती है इस तथ्य के अलावा, परमेश्वर की पवित्रता के बारे में हमारी चर्चा की मुख्य विषयवस्तु क्या थी? क्या यह परमेश्वर का अधिकार और स्वरूप नहीं है? क्या परमेश्वर का अधिकार और स्वरूप अद्वितीय है? (हाँ।) यह सृजित प्राणियों में से किसी के पास नहीं है। इसीलिए हम कहते हैं कि परमेश्वर की पवित्रता अद्वितीय है। यह एक ऐसी बात है, जिसे तुम लोग समझ सकते हो। हमने परमेश्वर की पवित्रता के विषय पर तीन सभाएँ की थीं। क्या तुम लोग अपने वचनों में, अपनी समझ से इसका वर्णन कर सकते हो, कि तुम लोग परमेश्वर की पवित्रता को क्या मानते हो? (पिछली बार जब परमेश्वर ने हमसे संवाद किया था, तब हम उसके सामने नीचे झुक गए थे। परमेश्वर

ने हमसे अपनी आराधना के लिए साष्टांग दंडवत् करने और झुकने से संबंधित सच्चाई पर सहभागिता की थी। हमने देखा था कि परमेश्वर की अपेक्षाएँ पूरी करने से पहले उसके सामने हमारा झुकना उसकी इच्छा के अनुरूप नहीं है, और इससे हमने परमेश्वर की पवित्रता को देखा।) बिलकुल सही। और कोई बात? (मानव-जाति के लिए बोले गए परमेश्वर के वचनों में हम देखते हैं कि वह सीधे और स्पष्ट रूप से बोलता है, वह सीधा एवं सटीक है। शैतान गोलमोल तरीके से बोलता है और वह झूठ से भरा हुआ है। पिछली बार जब हम परमेश्वर के सामने दंडवत् करते हुए लेटे थे, तब जो कुछ हुआ था, उससे हमने देखा था कि उसके वचन एवं कार्य हमेशा सिद्धांत पर आधारित होते हैं। जब वह हमें बताता है कि हमें कैसे कार्य करना चाहिए, हमें कैसे देखना चाहिए और हमें कैसे अभ्यास करना चाहिए, तो वह हमेशा स्पष्ट और संक्षिप्त होता है। लेकिन लोग इस तरह के नहीं होते। शैतान द्वारा मानव-जाति को भ्रष्ट किए जाने के बाद से लोगों ने अपने व्यक्तिगत इरादों और उद्देश्यों से और अपनी इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए कार्य किया और बोला है। जिस तरह से परमेश्वर मानव-जाति की देखभाल करता है, उसका ध्यान रखता है और उसकी रक्षा करता है, उससे हम देखते हैं कि वह जो कुछ करता है, वह बहुत ही सकारात्मक और स्पष्ट होता है। इसी रूप में हम परमेश्वर की पवित्रता के सार को प्रकट हुआ देखते हैं।) बढ़िया कहा! क्या किसी के पास कोई और बात है इसमें जोड़ने के लिए? (परमेश्वर द्वारा शैतान के दुष्ट सार के उजागरण के माध्यम से हम परमेश्वर की पवित्रता को देखते हैं, हम शैतान की बुराई के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं और हम मनुष्य के कष्टों का स्रोत जान जाते हैं। अतीत में हम शैतान के अधिकार-क्षेत्र में मनुष्य की पीड़ा से अनजान थे। परमेश्वर द्वारा इसे प्रकट किए जाने के बाद ही हमें पता चला कि प्रसिद्धि एवं संपत्ति के पीछे भागने से जो कष्ट आते हैं, वे सब शैतान के काम हैं। केवल तभी हमने महसूस किया कि परमेश्वर की पवित्रता मानव-जाति का सच्चा उद्धार है।) क्या इसमें जोड़ने के लिए कोई और बात है? (भ्रष्ट मनुष्य में परमेश्वर के सच्चे ज्ञान और उसके लिए प्रेम का अभाव है। चूँकि हम परमेश्वर की पवित्रता के सार को नहीं समझते, और चूँकि हम आराधना में उसके सामने झुकते और दंडवत् होते हैं, तो हम ऐसा अशुद्ध विचारों और गूढ़ इरादों तथा प्रयोजनों से करते हैं, अत: परमेश्वर नाराज हो जाता। हम देख सकते हैं कि परमेश्वर शैतान से अलग है; शैतान चाहता है कि लोग उससे अत्यधिक प्यार करें, उसकी चापलूसी करें और दंडवत् होकर तथा झुककर उसकी आराधना करें। शैतान का कोई सिद्धांत नहीं है। इससे भी मुझे परमेश्वर की पवित्रता का पता चलता है।) बहुत अच्छा! अब जबकि हमने परमेश्वर की पवित्रता के बारे में संगति कर ली

है, क्या तुम लोग परमेश्वर की पूर्णता को देखते हो? (हम देखते हैं।) क्या तुम देखते हो कि किस तरह परमेश्वर सभी सकारात्मक चीज़ों का स्रोत है? क्या तुम यह देखने में सक्षम हो कि किस प्रकार परमेश्वर सत्य एवं न्याय का मूर्त रूप है? क्या तुम देखते हो कि किस प्रकार परमेश्वर प्रेम का स्रोत है? क्या तुम देखते हो कि किस प्रकार परमेश्वर जो कुछ भी करता है, वह जो कुछ भी व्यक्त करता है, और जो कुछ भी वह प्रकट करता है, वह सब त्रुटिहीन है? (हम देखते हैं।) परमेश्वर की पवित्रता के बारे में मैंने जो कुछ कहा है, ये उसके मुख्य बिंदु हैं। आज ये वचन तुम लोगों को महज सिद्धांत की तरह लग सकते हैं, लेकिन एक दिन जब तुम उसके वचन एवं कार्य से स्वयं सच्चे परमेश्वर का अनुभव करोगे और उसके गवाह बनोगे, तब तुम अपने दिल की गहराई से कहोगे कि परमेश्वर पवित्र है, परमेश्वर मानव-जाति से भिन्न है, उसका हृदय, स्वभाव और सार सब पवित्र हैं। इस पवित्रता से मनुष्य परमेश्वर की पूर्णता देख सकता है, और यह भी देख सकता है कि परमेश्वर की पवित्रता का सार निष्कलंक है। उसकी पवित्रता का सार यह निर्धारित करता है कि वह स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है, और यह मनुष्य को दिखाता और साबित करता है कि वह स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है। क्या यह मुख्य बिंदु नहीं है? (है।)

आज हमने पिछली संगतियों से कई विषयों का अवलोकन किया है। इससे आज के अवलोकन का समापन होता है। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग प्रत्येक मद और विषय के मुख्य बिंदुओं को आत्मसात करोगे। इन्हें सिर्फ सिद्धांत न समझना; जब भी तुम लोगों के पास खाली समय हो, तो इन्हें गंभीरता से पढ़ना और इन पर विचार करना। इन्हें याद रखना और अमल में लाना—और तुम वास्तव में उस सबका अनुभव करोगे, जो मैंने परमेश्वर द्वारा अपने स्वभाव और स्वरूप के प्रकटीकरण की सच्चाई के बारे में कहा है। लेकिन यदि तुम इन्हें केवल अपनी किताब में लिख लोगे और इन्हें गंभीरता से पढ़ोगे नहीं या इन पर विचार नहीं करोगे, तो तुम कभी इन्हें अपने लिए हासिल नहीं कर पाओगे। अब तुम समझ गए न? इन तीन विषयों पर वार्तालाप करने के बाद, लोगों के परमेश्वर की हैसियत, उसके सार और उसके स्वभाव के बारे में एक सामान्य—या विशिष्ट भी—समझ प्राप्त कर लेने पर, क्या परमेश्वर के बारे में उनकी समझ पूरी हो जाएगी? (नहीं।) अब, परमेश्वर के बारे में तुम लोगों की अपनी समझ में, क्या कोई ऐसे अन्य क्षेत्र हैं, जहाँ तुम लोग महसूस करते हो कि तुम्हें गहरी समझ की आवश्यकता है? दूसरे वचनों में, अब जबकि तुमने परमेश्वर के अधिकार, उसके धार्मिक स्वभाव और उसकी पवित्रता की समझ प्राप्त कर ली है, तो शायद उसकी अद्वितीय हैसियत और स्थिति तुम्हारे मन में स्थापित हो गई होगी; फिर भी, अपने अनुभव से

उसके कार्यों, उसके सामर्थ्य एवं उसके सार को देखना, समझना और उनके बारे में अपनी जानकारी बढ़ाना तुम्हारे लिए बाकी है। अब जबकि तुम लोगों ने इन संगतियों को सुन लिया है, तुम्हारे हृदय में विश्वास का एक लेख कमोबेश स्थापित हो गया है : परमेश्वर सच में मौजूद है, और यह एक तथ्य है कि वह सभी चीज़ों का प्रबंध करता है। कोई उसके धार्मिक स्वभाव को ठेस नहीं पहुँचा सकता; और उसकी पवित्रता एक हकीकत है, जिस पर कोई प्रश्न खड़ा नहीं कर सकता। ये तथ्य हैं। इन संगतियों से लोगों के हृदय में परमेश्वर की हैसियत एवं स्थिति की आधारशिला है। एक बार जब यह आधारशिला बन जाए, तो लोगों को और अधिक समझने का प्रयास करना चाहिए।

परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है (I)

आज मैं तुम लोगों के साथ एक नए विषय पर संगति करूँगा। वह विषय क्या है? उसका शीर्षक है : "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है।" क्या यह विषय कुछ ज्यादा बड़ा लगता है? क्या यह तुम लोगों की पहुँच से थोड़ा बाहर है? "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है"—यह विषय लोगों को कुछ हद तक असंबद्ध लग सकता है, परंतु परमेश्वर का अनुसरण करने वाले सभी लोगों को इसे अवश्य समझना चाहिए, क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति के परमेश्वर के ज्ञान और उसके परमेश्वर को संतुष्ट करने और उसका आदर करने में सक्षम होने से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि मैं इस विषय पर संगति करने जा रहा हूँ। बहुत संभव है कि लोगों को इस विषय की पहले से साधारण समझ हो, या शायद वे किसी स्तर पर इसके बारे में जानते हों। यह ज्ञान या जानकारी कुछ लोगों के मस्तिष्क में समझ की साधारण या उथली मात्रा के साथ हो सकती है। दूसरों के दिलों में कुछ विशेष अनुभव हुए हो सकते हैं, जो उन्हें इस विषय की एक गहरे, व्यक्तिगत संपर्क में ले गए होंगे। लेकिन इस तरह का पूर्व ज्ञान, चाहे वह गहरा हो या सतही, एकतरफा है और पर्याप्त रूप से विशिष्ट नहीं है। तो, यही कारण है कि मैंने इस विषय को संगति के लिए चुना है : तुम लोगों को एक गहरी और ज्यादा विशिष्ट समझ हासिल करने में मदद करने के लिए। इस विषय पर तुम लोगों के साथ संगति करने के लिए मैं एक विशेष पद्धति का इस्तेमाल करूँगा, ऐसी पद्धति जिसे हमने पहले इस्तेमाल नहीं किया है और जो तुम लोगों को थोड़ी असामान्य या असहज लग सकती है। इससे मेरा क्या तात्पर्य है, इसका तुम्हें बाद में पता चल जाएगा। क्या तुम्हें कहानियाँ सुनना पसंद है? (हाँ, पसंद है।) खैर, कहानियाँ सुनाने का मेरा चुनाव अच्छा है, क्योंकि तुम सबको वे बहुत पसंद हैं। तो आओ, अब हम शुरू करते हैं! तुम्हें नोट्स लेने की ज़रूरत नहीं है। मैं कहता हूँ कि तुम लोग शांत

हो जाओ, और बेचैन न होओ। यदि तुम्हें लगता हो कि अपने परिवेश या आसपास के लोगों के कारण तुम्हारा ध्यान भटक जाएगा, तो तुम अपनी आँखें बंद कर सकते हो। मेरे पास तुम लोगों को सुनाने के लिए एक अद्‌भुत कहानी है। यह कहानी एक बीज, धरती, एक पेड़, धूप, चिड़ियों एवं मनुष्य के बारे में है। इसके मुख्य पात्र कौन हैं? (एक बीज, धरती, एक पेड़, धूप, चिड़ियाँ और मनुष्य।) क्या इनमें परमेश्वर है? (नहीं।) फिर भी, मुझे यकीन है कि इस कहानी को सुनने के बाद तुम लोग तरोताज़ा और संतुष्ट महसूस करोगे। तो ठीक है, शांति से सुनो।

कहानी 1. एक बीज, धरती, एक पेड़, धूप, चिड़ियाँ और मनुष्य

छोटा-सा बीज धरती पर गिरा। भारी बारिश हुई और उस बीज से एक कोमल अंकुर फूटा, जबकि उसकी जड़ें धीरे-धीरे नीचे मिट्टी में विलीन हो गईं। समय के साथ वह प्रचंड हवाओं और कठोर बारिश का सामना करते हुए चंद्रमा के बढ़ने और घटने के साथ ऋतुओं के परिवर्तन को देखते हुए लंबा हो गया। गर्मियों में धरती पानी का उपहार लेकर आई, ताकि अंकुर मौसम की चिलचिलाती गर्मी को सहन कर सके। और धरती के कारण अंकुर गर्मी से विह्वल नहीं हुआ, और इस प्रकार गर्मियों की सबसे खराब तपन बीत गई। जब जाड़ा आया, तो धरती ने उस अंकुर को अपने गर्म आगोश में लपेट लिया और धरती और अंकुर ने एक-दूसरे को कसकर जकड़े रखा। धरती ने अंकुर को गर्माहट दी, और इस प्रकार वह मौसम की सबसे कड़कड़ाती ठंड से जीवित बच गया, और उसे शीतकालीन आँधियों और बर्फीले तूफानों से कोई नुकसान नहीं हुआ। धरती का आश्रय पाकर अंकुर बहादुरी और ख़ुशी से बढ़ा। धरती का निःस्वार्थ पोषण पाकर वह स्वस्थ और सशक्त बना। बारिश में गाते हुए और हवा में नाचते-झूमते हुए वह आनंद से बढ़ा। अंकुर एवं धरती एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं ...

कई साल बीत गए, और वह अंकुर एक विशाल पेड़ में बदल गया। अनगिनत पत्तों वाली मोटी शाखाओं के साथ वह धरती पर मज़बूती से खड़ा था। उसकी जड़ें पहले की तरह धरती में धँसी थीं और अब मिट्टी में और गहरे चली गई थीं। धरती, जिसने कभी नन्हे अंकुर की सुरक्षा की थी, अब एक शक्तिशाली पेड़ की आधारशिला थी।

पेड़ पर सूरज की रोशनी की एक किरण चमक उठी। पेड़ ने अपने शरीर को लहराया, बाँहें बाहर की ओर तानकर फैलाईं और सूरज की रोशनी से भरी हवा में गहरी साँस ली। नीचे ज़मीन ने भी पेड़ के

साथ साँस ली, और धरती ने महसूस किया जैसे वह फिर से नई हो गई हो। तभी शाखाओं के बीच से एक ताज़ी हवा का झोंका आया, और पेड़ ऊर्जा से लहराते हुए खुशी से सिहर उठा। पेड़ और सूरज की रोशनी एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं ...

लोग पेड़ की ठंडी छांव में बैठकर स्फूर्तिदायक एवं सुगंधित हवा का आनंद लेने लगे। उस हवा ने उनके दिलों एवं फेफड़ों को साफ़ किया, और इससे उनके भीतर का खून साफ़ हो गया, और उनके शरीर अब सुस्त और बेबस नहीं रहे। लोग और पेड़ एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं ...

चहकती नन्ही चिड़ियों का एक समूह पेड़ की शाखाओं पर उतरा। शायद वे किसी शत्रु से बचने के लिए या प्रजनन अथवा अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए वहाँ उतरे थे, या शायद वे सिर्फ थोड़ा आराम कर रहे थे। चिड़ियाँ और पेड़ एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं ...

पेड़ की मुड़ी और उलझी हुई जड़ें धरती में गहरी धँस गईं। अपने तने से उसने हवा और वर्षा से धरती को आश्रय दिया, और अपने पैरों के नीचे धरती की रक्षा करने के लिए उसने अपने विशाल अंग फैला लिए। पेड़ ने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि धरती उसकी माँ है। वे एक-दूसरे को मजबूत करते हैं और एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं, और वे कभी अलग नहीं होंगे ...

और इस तरह, यह कहानी समाप्त होती है। मैंने जो कहानी सुनाई, वह एक बीज, धरती, एक पेड़, धूप, चिड़ियों और मनुष्य के बारे में थी। इसमें केवल कुछ ही दृश्य थे। इसने तुम लोगों के पास कौन-सी भावनाएँ छोड़ीं? जब मैं इस तरह से बोलता हूँ, तो क्या तुम लोग समझते हो कि मैं क्या कह रहा हूँ? (हम समझते हैं।) कृपया अपनी भावनाओं के बारे में बताओ। इस कहानी को सुनने के बाद तुम लोगों ने क्या महसूस किया? मैं पहले तुम लोगों को बताऊँगा कि कहानी के सभी पात्रों को देखा और छुआ जा सकता है; ये वास्तविक चीज़ें हैं, कोई रूपक नहीं हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग मेरी बात पर विचार करो। मेरी कहानी में कुछ भी गूढ़ नहीं था, और इसके मुख्य बिंदु कहानी के कुछ वाक्यों में व्यक्त किए जा सकते हैं। (हमने जो कहानी सुनी, वह एक सुंदर तसवीर चित्रित करती है : एक बीज में जीवन आता है और जैसे-जैसे वह बढ़ता है, साल की चार ऋतुओं का अनुभव करता है : बसंत, ग्रीष्म, पतझड़ और शीत। धरती अंकुरित बीज का एक माँ की तरह पालन-पोषण करती है। शीत ऋतु में वह अंकुर को गर्माहट देती है, ताकि वह ठंड से बच सके। जब अंकुर बड़ा होकर पेड़ बन जाता है, तो धूप की एक किरण उसकी शाखाओं को

स्पर्श करती है जिससे उसे बहुत आनंद मिलता है। मैं देखता हूँ कि परमेश्वर की सृष्टि की सभी चीज़ों के मध्य धरती भी जीवित है और वह तथा पेड़ एक-दूसरे पर निर्भर हैं। मैं उस गर्माहट को भी देखता हूँ, जो सूरज की रोशनी पेड़ को प्रदान करती है, और मैं एक पूर्ण सामंजस्य की तसवीर में चिड़िया जैसे सामान्य जीवों को भी पेड़ और मनुष्यों के साथ आते देखता हूँ। कहानी सुनकर मेरे दिल में ये भावनाएँ आईं; मुझे एहसास होता है कि ये सभी चीज़ें वास्तव में जीवित हैं।) बढ़िया कहा! क्या किसी के पास इसमें जोड़ने को कुछ है? (एक बीज के अंकुरित होने और बड़ा होकर विशाल पेड़ बनने की इस कहानी में मुझे परमेश्वर की सृष्टि का आश्चर्य दिखाई देता है। मैं देखता हूँ कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों को एक-दूसरे के कारण सुदृढ़ और परस्पर निर्भर बनाया है, और सभी चीज़ें एक-दूसरे से जुड़ी हैं तथा एक-दूसरे की सेवा करती हैं। मैं परमेश्वर की बुद्धिमत्ता, उसका चमत्कार देखता हूँ और यह भी देखता हूँ कि परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है।)

मैंने अभी जिन चीज़ों की बात की, उन्हें तुम लोग पहले देख चुके हो। जैसे बीज—वे उगकर पेड़ बन जाते हैं, और भले ही तुम इसकी प्रक्रिया का हर विवरण देखने में सक्षम न हो पाओ, फिर भी तुम जानते हो कि ऐसा होता है, है ना? तुम धरती एवं सूरज की रोशनी के बारे में भी जानते हो? पेड़ पर बैठे पक्षियों की तसवीर हर किसी ने देखी है, है ना? और पेड़ की छाया में खुद को ठंडक पहुँचाते लोगों की तसवीर—इसे भी तुम सबने देखा है, है ना? (हाँ, देखा है।) तो, ये सभी चीज़ें एक ही तसवीर में होने पर वह तसवीर किस चीज़ का एहसास देती है? (सामंजस्य का।) क्या उस छवि की प्रत्येक चीज़ परमेश्वर से आती है? (हाँ।) चूँकि वे परमेश्वर से आती हैं, इसलिए परमेश्वर इन सब विभिन्न चीज़ों के सांसारिक अस्तित्व का मूल्य एवं महत्व जानता है। जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की सृष्टि की थी, जब उसने हर चीज़ की योजना बनाई और उसकी सृष्टि की, तो उसने इरादे के साथ ऐसा किया; और जब उसने उन चीज़ों को बनाया, तो हर चीज़ में प्राण डाले। जो वातावरण उसने मानव-जाति के अस्तित्व के लिए बनाया, जिसका वर्णन अभी हमारी कहानी में हुआ, वह ऐसा है, जिसमें बीज और धरती एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं, जिसमें धरती बीजों का पोषण कर सकती है और बीज धरती से बँधे हैं। यह संबंध परमेश्वर ने एकदम शुरू में ही निर्धारित कर दिया था। पेड़, सूरज की रोशनी, चिड़ियों और मनुष्यों का दृश्य परमेश्वर द्वारा मानव-जाति के लिए बनाए गए जीवंत वातावरण का चित्रण है। पहली बात, पेड़ धरती को नहीं छोड़ सकते, न वे सूरज की रोशनी के बिना रह सकते हैं। तो पेड़ को बनाने में परमेश्वर का क्या मकसद था? क्या हम कह सकते हैं कि यह

सिर्फ़ धरती के लिए था? क्या हम कह सकते हैं कि यह सिर्फ़ चिड़ियों के लिए है? क्या हम कह सकते हैं कि यह सिर्फ़ लोगों के लिए है? (नहीं।) उनके बीच में क्या संबंध है? उनके बीच पारस्परिक सुदृढ़ीकरण, अन्योन्याश्रय और अविभाज्यता का संबंध है। दूसरे वचनों में, धरती, पेड़, सूरज की रोशनी, चिड़ियाँ और मनुष्य अपने अस्तित्व के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे का पोषण करते हैं। पेड़ धरती की रक्षा करता है और धरती पेड़ का पोषण करती है; सूरज की रोशनी पेड़ के लिए आपूर्ति करती है, जबकि पेड़ सूरज की रोशनी से ताजी हवा प्राप्त करता है और धरती पर चिलचिलाती धूप की तपन कम करता है। अंत में इससे कौन लाभान्वित होता है? मानव-जाति, है कि नहीं? परमेश्वर द्वारा निर्मित जिस वातावरण में मानव-जाति रहती है, यह उसके अंतर्निहित सिद्धांतों में से एक है; यह दर्शाता है कि परमेश्वर का शुरू से क्या इरादा रहा था। हालाँकि यह एक साधारण-सी तसवीर है, फिर भी हम इसमें परमेश्वर की बुद्धिमत्ता और उसके इरादे को देख सकते हैं। मनुष्य धरती या पेड़ों के बिना नहीं रह सकता, चिड़ियों एवं सूर्य के प्रकाश के बिना तो बिलकुल भी नहीं रह सकता। ठीक है ना? हालाँकि यह सिर्फ एक कहानी है, फिर भी यह परमेश्वर द्वारा स्वर्ग, धरती और सभी चीज़ों की रचना और वातावरण के उसके उपहार, जिसमें मनुष्य रह सकता है, के सूक्ष्म दर्शन का चित्रण करती है।

परमेश्वर ने मानव-जाति के लिए स्वर्ग एवं धरती और सभी चीज़ों की सृष्टि की, और साथ ही रहने के लिए वातावरण का भी निर्माण किया। पहली बात, हमारी कहानी का मुख्य बिंदु है सभी चीज़ों का पारस्परिक सुदृढ़ीकरण, अन्योयाश्रय और सह-अस्तित्व। इस सिद्धांत के अंतर्गत मानव-जाति के अस्तित्व का वातावरण सुरक्षित किया गया है; वह अस्तित्व में रह सकता है और निरंतर बना रह सकता है। इसके कारण मानव-जाति फल-फूल सकती है और प्रजनन कर सकती है। हमने जो तसवीर देखी थी, उसमें एक पेड़, धरती, सूरज की रोशनी, चिड़ियाँ और लोग एक-साथ थे। क्या उस तसवीर में परमेश्वर था? किसी ने उसे नहीं देखा, है ना? पर उसने दृश्य में चीज़ों के बीच पारस्परिक सुदृढ़ीकरण और अन्योन्याश्रय का नियम अवश्य देखा; इस नियम में व्यक्ति परमेश्वर के अस्तित्व और संप्रभुता को देख सकता है। परमेश्वर सभी चीज़ों का जीवन और अस्तित्व बनाए रखने के लिए ऐसे सिद्धांत और ऐसे नियम का प्रयोग करता है। इस तरह से वह सभी चीज़ों और मानव-जाति के लिए आपूर्ति करता है। क्या यह कहानी हमारे मुख्य विषय से जुड़ी है? सतही तौर पर ऐसा नहीं लगता, पर वास्तव में, वह नियम, जिसके द्वारा परमेश्वर ने सभी चीजों को बनाया, और उन पर उसकी प्रभुता उसके सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत होने से घनिष्ठता से जुड़े

हैं। ये तथ्य अविभाज्य हैं। अब तुम लोग कुछ सीखने लगे हो!

परमेश्वर उन नियमों का स्वामी है, जो सभी चीज़ों के संचालन को नियंत्रित करते हैं; वह उन नियमों का स्वामी है, जो सभी प्राणियों के अस्तित्व को नियंत्रित करते हैं; वह सभी चीज़ों को नियंत्रित करता है और उन्हें इस तरह रखता है कि वे एक-दूसरे को मजबूत और परस्पर निर्भर दोनों बनाएँ, ताकि वे नष्ट या विलुप्त न हों। केवल इसी तरह मनुष्य जीवित रह सकते हैं; केवल इसी तरह वे परमेश्वर के मार्गदर्शन में ऐसे वातावरण में रह सकते हैं। परमेश्वर संचालन के इन नियमों का स्वामी है, और कोई भी इनमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता, न कोई इन्हें बदल ही सकता है। केवल स्वयं परमेश्वर ही इन नियमों को जानता है और केवल वही इनका प्रबंध करता है। पेड़ कब अंकुरित होंगे; बारिश कब होगी; धरती कितना जल एवं कितने पोषक तत्त्व पौधों को देगी; किस मौसम में पत्ते गिरेंगे; किस मौसम में पेड़ों पर फल लगेंगे; कितने पोषक तत्त्व सूर्य का प्रकाश पेड़ों को देगा; सूर्य के प्रकाश द्वारा पोषित किए जाने के बाद पेड़ उच्छ्वास के रूप में क्या छोड़ेंगे—इन सभी चीज़ों को परमेश्वर ने पहले ही तब निश्चित कर दिया था, जब उसने सभी चीज़ों को बनाया था, उन नियमों के रूप में जिन्हें कोई नहीं तोड़ सकता। परमेश्वर द्वारा बनाई हुई चीज़ें—चाहे वे जीवित हों या मनुष्य की दृष्टि में निर्जीव, उसके हाथ में रहती हैं, जहाँ वह उन्हें नियंत्रित करता है और उन पर शासन करता है। इन नियमों को कोई बदल या तोड़ नहीं सकता। दूसरे वचनों में, जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों का निर्माण किया था, तब उसने पूर्वनिर्धारित किया कि धरती के बिना पेड़ अपनी जड़ें नीचे नहीं फैला सकता, अंकुरित नहीं हो सकता और बढ़ नहीं सकता; कि यदि धरती पर कोई पेड़ न होता, तो वह सूख जाती; कि पेड़ को चिड़ियों का आशियाना भी होना चाहिए, और एक ऐसी जगह, जहाँ वे हवाओं से बचने के लिए आश्रय ले सकें। क्या कोई पेड़ सूरज की रोशनी के बिना जी सकता है? (नहीं।) न ही वह केवल धरती के साथ रह सकता है। ये सब चीज़ें मानव-जाति के लिए, उसके अस्तित्व के लिए हैं। पेड़ से मनुष्य ताजी हवा प्राप्त करता है, और वह धरती पर रहता है, जिसकी पेड़ों द्वारा रक्षा की जाती है। मनुष्य सूर्य की रोशनी और विभिन्न प्राणियों के बिना नहीं रह सकता। हालाँकि ये संबंध जटिल हैं, फिर भी तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने उन नियमों को बनाया है, जो सभी चीज़ों का नियंत्रण करते हैं, ताकि वे एक-दूसरे को मजबूत करें, एक-दूसरे पर निर्भर रहें, और एक-साथ मौजूद रहें। दूसरे वचनों में, उसके द्वारा बनाई गई हर-एक चीज़ का मूल्य और महत्व है। यदि परमेश्वर ने कोई चीज़ बिना किसी महत्व के बनाई होती, तो परमेश्वर उसे लुप्त होने देता। यह उन तरीकों में से एक है, जिसे परमेश्वर सभी चीज़ों के

लिए आपूर्ति करने में इस्तेमाल करता है। इस कहानी में "आपूर्ति करता है" वचन क्या बताते हैं? क्या परमेश्वर प्रतिदिन पेड़ को पानी देता है? क्या पेड़ को साँस लेने के लिए परमेश्वर की मदद की आवश्यकता पड़ती है? (नहीं।) यहाँ "आपूर्ति करता है" से तात्पर्य परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों के निर्माण के बाद उनके प्रबंधन से है; उनका नियंत्रण करने वाले नियम स्थापित करने के बाद परमेश्वर द्वारा उनका प्रबंधन करना पर्याप्त है। धरती में बोए जाने के बाद बीज अपने आप उगता है। उसके उगने की सभी स्थितियाँ परमेश्वर द्वारा रची गई थीं। परमेश्वर ने धूप, जल, मिट्टी, हवा और आस-पास का वातावरण बनाया; उसने वायु, ठंड, बर्फ, वर्षा एवं चार ऋतुओं को बनाया। ये वे स्थितियाँ हैं, जो पेड़ के उगने के लिए आवश्यक हैं और उन्हें परमेश्वर ने तैयार किया। तो, क्या परमेश्वर इस जीवनदायी वातावरण का स्रोत है? (हाँ।) क्या परमेश्वर को प्रतिदिन पेड़ों के हर एक पत्ते को गिनना पड़ता है? नहीं! न परमेश्वर को साँस लेने में पेड़ की मदद करने या यह कहकर सूर्य की रोशनी को जगाने की ज़रूरत पड़ती है कि "यह पेड़ों पर चमकने का समय है।" उसे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। नियमानुसार चमकने का समय होने पर सूर्य की रोशनी अपने आप चमकती है; वह पेड़ पर प्रकट होकर चमकने लगती है और पेड़ को जब ज़रूरत होती है, वह उसे सोख लेता है, और जब आवश्यकता नहीं होती, तो भी वह नियमों के अंतर्गत जीता है। शायद तुम लोग इस घटना का स्पष्ट रूप से वर्णन न कर पाओ, लेकिन फिर भी यह एक तथ्य है, जिसे हर कोई देख सकता है और स्वीकार कर सकता है। तुम्हें बस यह पहचानना है कि हर चीज़ के अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले नियम परमेश्वर से आते हैं, और यह जानना है कि उनकी वृद्धि और उनका जीवन परमेश्वर के प्रभुत्व में है।

अब, क्या इस कहानी में उस चीज़ का इस्तेमाल किया गया है, जिसे लोग "रूपक" कहते हैं? क्या यह मानवीकरण है? (नहीं।) मैंने एक सच्ची कहानी सुनाई है। हर तरह की जीवित चीज़, हर चीज़ जिसमें जीवन है, परमेश्वर द्वारा शासित है; निर्माण के समय हर चीज़ में परमेश्वर द्वारा प्राण डाले गए थे; हर जीवित चीज़ का जीवन परमेश्वर से आता है और वह उस क्रम और कानूनों का अनुसरण करता है, जो उसे निर्देशित करते हैं। मनुष्य को इसे बदलने की ज़रूरत नहीं, न इसे मनुष्य की मदद की ज़रूरत है; यह उन तरीकों में से एक है, जिससे परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति करता है। तुम लोग समझे, या नहीं? क्या तुम्हें लगता है कि लोगों को इसे पहचानना ज़रूरी है? (हाँ।) तो, क्या इस कहानी का जीवविज्ञान से कुछ लेना-देना है? क्या यह किसी रूप में ज्ञान के किसी क्षेत्र या ज्ञानार्जन की किसी शाखा से संबंधित है? हम जीवविज्ञान पर चर्चा नहीं कर रहे हैं, और हम निश्चित रूप से जैविक अनुसंधान नहीं कर रहे हैं। हमारी

बात का मुख्य विचार क्या है? (परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है।) तुम लोगों ने सृष्टि के भीतर क्या देखा है? क्या तुमने पेड़ देखे हैं? क्या तुमने धरती देखी है? (हाँ।) तुम लोगों ने सूर्य की रोशनी देखी है, है न? क्या तुमने पेड़ों पर बैठी चिड़ियाँ देखी हैं? (देखी हैं।) क्या मानव-जाति ऐसे वातावरण में रहते हुए प्रसन्न है? (प्रसन्न है।) कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर मनुष्यों के घर, उनके जीवन के वातावरण की रक्षा करने के लिए सभी चीज़ों का—स्वयं द्वारा रचित चीज़ों का—इस्तेमाल करता है। तरह से परमेश्वर मनुष्य और सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति करता है।

तुम लोगों को इस बातचीत की शैली, संगति करने का मेरा ढंग कैसा लगा? (यह समझने में सरल है और इसमें वास्तविक जीवन के कई उदाहरण हैं।) ये कोई खाली वचन नहीं हैं, जो मैं बोल रहा हूँ, ठीक है ना? क्या लोगों को यह समझने के लिए इस कहानी की ज़रूरत है कि परमेश्वर सभी प्राणियों के लिए जीवन का स्रोत है? (हाँ।) अगर ऐसा है, तो हम अपनी अगली कहानी पर चलते हैं। अगली कहानी विषयवस्तु में थोड़ी भिन्न हैं और और उसका फोकस भी थोड़ा भिन्न है। इस कहानी में आने वाली हर चीज़ ऐसी है, जिसे लोग परमेश्वर की सृष्टि में अपनी आँखों से देख सकते हैं। अब मैं अपना अगला वृत्तांत शुरू करूंगा। कृपया चुपचाप सुनना और देखना कि तुम मेरा मतलब निकाल पाते हो या नहीं। कहानी सुनाने के बाद मैं तुम लोगों से यह जानने के लिए कुछ प्रश्न पूछूँगा कि तुम लोगों ने कितना कुछ सीखा है? इस कहानी के पात्र हैं एक बड़ा पर्वत, एक छोटी जलधारा, एक प्रचंड हवा और एक विशाल लहर।

कहानी 2. एक बड़ा पर्वत, एक छोटी जलधारा, एक प्रचंड हवा और एक विशाल लहर

एक छोटी जलधारा थी, जो यहाँ-वहाँ घूमती हुई बहती थी और अंततः एक बड़े पर्वत के निचले सिरे पर पहुँचती थी। पर्वत उस छोटी जलधारा के मार्ग को रोक रहा था, अतः उस जलधारा ने अपनी कमज़ोर एवं धीमी आवाज़ में पर्वत से कहा, "कृपया मुझे गुज़रने दो। तुम मेरे मार्ग में खड़े हो और मेरा आगे का मार्ग रोक रहे हो।" पर्वत ने पूछा, "तुम कहाँ जा रही हो?" जलधारा ने जवाब दिया, "मैं अपना घर ढूँढ़ रही हूँ।" पर्वत ने कहा, "ठीक है, आगे बढ़ो और सीधे मेरे ऊपर से बहकर निकल जाओ!" परंतु वह नन्ही जलधारा बहुत ही कमज़ोर और छोटी थी, अत: उसके लिए उस विशाल पर्वत के ऊपर से बहना संभव नहीं था। वह केवल पर्वत के निचले सिरे पर ही बहती रह सकती थी ...

एक प्रचंड हवा रेत और कंकड़ लेकर वहाँ आई, जहाँ पहाड़ खड़ा था। हवा पर्वत के ऊपर जोर से

चीखी, "मुझे जाने दो!" पर्वत ने पूछा, "तुम कहाँ जा रही हो?" जवाब में हवा चिल्लाई, "मैं पर्वत के उस पार जाना चाहती हूँ।" पर्वत ने कहा, "ठीक है, अगर तुम मेरे सीने को चीर सकती हो, तो तुम जा सकती हो!" प्रचंड हवा ज़ोर-ज़ोर से गरजने लगी, लेकिन प्रचंडता से बहने के बावजूद वह पर्वत के सीने को चीरकर नहीं निकल सकी। हवा थक गई और आराम करने के लिए रुक गई—और पर्वत के दूसरी ओर एक मंद हवा बहने लगी, जिससे वहाँ के लोग प्रसन्न हो गए। यह लोगों को पर्वत का अभिवादन था ...

समुद्र के तट पर सागर की फुहार चट्टान के किनारे आहिस्ता-आहिस्ता लुढ़कने लगी। अचानक एक विशाल लहर ऊपर आई और गरजती हुई पर्वत की ओर अपना मार्ग बनाने लगी। "हट जाओ!" विशाल लहर चिल्लाई। पर्वत ने पूछा, "तुम कहाँ जा रही हो?" अपना वेग रोकने में असमर्थ लहर गरजी, "मैं अपने क्षेत्र का विस्तार कर रही हूँ! मैं अपनी बाँहें फैलाना चाहती हूँ।" पर्वत ने कहा, "ठीक है, यदि तुम मेरी चोटी से गुज़र सकती हो, तो मैं तुम्हें रास्ता दे दूँगा।" विशाल लहर थोड़ा पीछे हटी, और दोबारा फिर से पर्वत की ओर उमड़ने लगी। लेकिन पूरी कोशिश करके भी वह पर्वत के ऊपर से नहीं जा सकी। लहर धीरे-धीरे वापस समुद्र में ही लौट सकती थी ...

हजारों साल तक छोटी जलधारा आहिस्ता-आहिस्ता पर्वत के निचले सिरे के चारों ओर रिसती रही। पर्वत के निर्देशों का पालन करते हुए अपना रास्ता बनाकर छोटी जलधारा वापस अपने घर पहुँच गई, जहाँ जाकर वह एक नदी में मिल गई, और नदी समुद्र में। पर्वत की देखरेख में छोटी जलधारा ने कभी अपना रास्ता नहीं खोया। जलधारा और पर्वत ने एक-दूसरे को पुष्ट किया और एक-दूसरे पर निर्भर रहे; उन्होंने एक-दूसरे को मजबूत बनाया, एक-दूसरे का प्रतिकार किया और एक-दूसरे के साथ मौजूद रहे।

हजारों साल तक प्रचंड हवा गरजती रही, जैसी कि उसकी आदत थी। वह फिर भी हवा के झोंकों के साथ रेत के बड़े-बड़े बगूले उड़ाती हुई अकसर पर्वत से "मिलने" आती। वह पर्वत को डराती, लेकिन उसके सीने को कभी नहीं चीर पाई। हवा और पर्वत एक-दूसरे को पुष्ट करते रहे और एक-दूसरे पर निर्भर रहे; उन्होंने एक-दूसरे को मजबूत बनाया, एक-दूसरे का प्रतिकार किया और एक-दूसरे के साथ मौजूद रहे।

हजारों साल तक विशाल लहर कभी आराम करने के लिए नहीं रुकी, और लगातार अपने क्षेत्र का विस्तार करते हुए वह निर्ममता से आगे बढ़ी। वह बार-बार पर्वत की ओर गरजती और उमड़ती, लेकिन

पर्वत कभी एक इंच भी नहीं हिला। पर्वत ने समुद्र की निगरानी की, और इस तरह से, समुद्री जीव कई गुना बढ़े और फले-फूले। लहर और पर्वत एक-दूसरे को पुष्ट करते रहे और एक-दूसरे पर निर्भर रहे; उन्होंने एक-दूसरे को मजबूत बनाया, एक-दूसरे का प्रतिकार किया और एक-दूसरे के साथ मौजूद रहे।

तो हमारी कहानी समाप्त होती है। पहले, मुझे बताओ, कहानी किस बारे में थी? शुरू करने के लिए, एक बड़ा पर्वत, एक छोटी जलधारा, एक प्रचंड हवा और एक विशाल लहर थी। पहले अंश में छोटी जलधारा और बड़े पर्वत के साथ क्या हुआ? मैंने एक जलधारा और एक पर्वत के बारे में बात करने के लिए क्यों चुना? (पर्वत की देखरेख में जलधारा ने कभी अपना रास्ता नहीं खोया। वे एक-दूसरे पर भरोसा करते थे।) तुम क्या कहोगे, पर्वत ने छोटी जलधारा की सुरक्षा की या उसे बाधित किया? (उसकी सुरक्षा की।) पर क्या उसने उसे बाधित नहीं किया? उसने और जलधारा ने एक-दूसरे का ध्यान रखा; पर्वत ने जलधारा की सुरक्षा की और उसे बाधित भी किया। जलधारा जब नदी में मिल गई, तो पर्वत ने उसकी सुरक्षा की, लेकिन साथ ही उसे उन जगहों पर बहने से भी रोका, जहाँ वह बह सकती थी और बाढ़ लाकर लोगों के लिए विनाशकारी हो सकती थी। क्या पहले अंश में यही सब नहीं था? जलधारा की सुरक्षा करके और उसे रोककर पर्वत ने लोगों के घरों की हिफ़ाज़त की। फिर छोटी जलधारा पर्वत के निचले सिरे पर नदी में मिल गई और बहकर समुद्र में चली गई। क्या यह जलधारा के अस्तित्व को नियंत्रित करने वाला नियम नहीं है? जलधारा को नदी और समुद्र में मिलने योग्य किसने बनाया? क्या वह पर्वत नहीं था? जलधारा ने पर्वत की सुरक्षा और बाधा पर भरोसा किया। तो क्या यह मुख्य बिंदु नहीं है? क्या तुम इसमें जल के लिए पर्वतों के महत्व को देखते हो? क्या छोटे-बड़े हर पर्वत को बनाने में परमेश्वर का कोई उद्देश्य था? (हाँ।) यह छोटा-सा अंश, जिसमें सिर्फ एक छोटी जलधारा और एक बड़ा पर्वत है, हमें परमेश्वर द्वारा उन दो चीज़ों के सृजन का मूल्य एवं महत्व दिखाता है; यह हमें उन पर उसके शासन की बुद्धिमत्ता और प्रयोजन भी दिखाता है। हम इस बात में भी उसकी बुद्धिमत्ता और उद्देश्य देख सकते हैं कि वह किस प्रकार इन दोनों चीज़ों पर शासन करता है। क्या ऐसा नहीं है?

कहानी का दूसरा अंश किस बारे में था? (एक प्रचंड हवा और एक बड़े पर्वत के बारे में।) क्या हवा एक अच्छी चीज़ है? (हाँ।) यह ज़रूरी नहीं है—कभी-कभी हवा बहुत तेज होती है और आपदा का कारण बन जाती है। यदि तुम्हें प्रचंड हवा में खड़ा कर दिया जाए, तो तुम्हें कैसा लगेगा? यह उसकी ताकत पर निर्भर करता है, नहीं? अगर तीसरे या चौथे स्तर की ताकत वाली हवा होगी, तो यह सहनीय होगी। अधिक

से अधिक व्यक्ति को अपनी आँखें खुली रखने में तकलीफ होगी। लेकिन अगर हवा प्रचंड हो जाए और बवंडर बन जाए, तो क्या तुम उसे झेल पाओगे? तुम नहीं झेल पाओगे। अतः लोगों का यह कहना गलत है कि हवा हमेशा अच्छी होती है, या यह कि वह हमेशा खराब होती है, क्योंकि यह उसकी ताकत पर निर्भर करता है। अब, यहाँ पर्वत का क्या काम है? क्या उसका काम हवा को शुद्ध करना नहीं है? पर्वत प्रचंड हवा को घटाकर किसमें बदल देता है? (हवा के हलके झोंके में।) अब जिस वातावरण में लोग रहते हैं, उसमें ज्यादातर लोग प्रचंड हवा महसूस करते हैं या हवा का हलका झोंका? (हवा का हलका झोंका।) क्या यह परमेश्वर के प्रयोजनों में से एक नहीं था, पहाड़ बनाने के उसके इरादों में से एक नहीं था? लोगों के लिए ऐसे वातावरण में रहना कैसा होगा, जहाँ रेत हवा में बेतरतीब ढंग से उड़ती हो, बेरोकटोक और बिना छने? क्या ऐसा हो सकता है कि जहाँ चारों तरफ रेत और पत्थर उड़ते हों, वह भूमि लोगों के रहने लायक न रह जाए? पत्थरों से लोगों को चोट लग सकती है और रेत उन्हें अंधा कर सकती है। हवा लोगों के पैर उखाड़ सकती है या उन्हें आसमान में बहाकर ले जा सकती है। घर तबाह हो सकते हैं और हर तरह की आपदाएँ आ सकती हैं। फिर भी क्या प्रचंड हवा के अस्तित्व का कोई मूल्य है? मैंने कहा यह बुरी है, तो किसी को लग सकता है कि इसका कोई मूल्य नहीं है, लेकिन क्या ऐसा ही है? हवा के हलके झोंके में बदलने के बाद क्या उसका कोई मूल्य नहीं है? जब मौसम नम या उमस से भरा होता है, तो लोगों को सबसे अधिक किस चीज़ की आवश्यकता होती है? उन्हें हवा के हलके झोंके की जरूरत होती है, जो उन पर धीरे से बहे, उन्हें तरोताजा कर दे और उनका दिमाग साफ़ कर दे, उनकी सोच तेज कर दे और उनकी मनोदशा सुधार दे। अब, उदाहरण के लिए, तुम लोग एक कमरे में बैठे हुए हो, जहाँ बहुत सारे लोग हैं और हवा घुटन भरी है—तुम्हें सबसे अधिक किस चीज़ की आवश्यकता होगी? (हवा के हलके झोंके की।) ऐसी जगह जाना, जहाँ हवा गंदी और धूल से भरी हो, आदमी की सोच धीमी कर सकता है, उसका रक्त-प्रवाह कम कर सकता है, और उसके मस्तिष्क की स्पष्टता घटा सकता है। लेकिन, थोड़ी-सी हलचल और संचरण हवा को तरोताजा कर देता है, और लोग ताजी हवा में अलग तरह से महसूस करते हैं। हालाँकि प्रचंड हवा आपदा बन सकती है, लेकिन जब तक पर्वत है, वह उस खतरे को लोगों को फायदा पहुँचाने वाली ताकत में बदल देगा। क्या ऐसा नहीं है?

कहानी का तीसरा अंश किसके बारे में था? (बड़े पर्वत और विशाल लहर के बारे में।) यह अंश पर्वत के निचले हिस्से में समुद्र-तट पर स्थित है। हम पर्वत, समुद्री फुहार और एक विशाल लहर देखते हैं। इस

उदाहरण में पर्वत लहर के लिए क्या है? (एक रक्षक और एक अवरोधक।) यह एक रक्षक और अवरोधक दोनों है। एक रक्षक के रूप में यह समुद्र को अदृश्य होने से बचाता है, ताकि उसमें रहने वाले प्राणी कई गुना बढ़ सकें और फल-फूल सकें। एक अवरोधक के रूप में पर्वत समुद्री जल को उमड़कर बहने और आपदा उत्पन्न करने, लोगों के घरों को नुकसान पहुँचाने और उन्हें नष्ट करने से रोकता है। अतः हम कह सकते हैं कि पर्वत रक्षक और अवरोधक दोनों है।

यह बड़े पर्वत और छोटी जलधारा, बड़े पर्वत और प्रचंड हवा, और बड़े पर्वत और विशाल लहर के बीच अंतर्संबंध का महत्व है; यह उनके द्वारा एक-दूसरे को मजबूत बनाने, एक-दूसरे का प्रतिकार करने तथा उनके सह-अस्तित्व का महत्व है। परमेश्वर द्वारा बनाई गई ये चीज़ें अपने अस्तित्व में एक नियम और कानून द्वारा नियंत्रित होती हैं। तो, इस कहानी में तुमने परमेश्वर के कौन-से कार्य देखे? क्या परमेश्वर सभी चीज़ों को बनाने के बाद से उन्हें अनदेखा करता आ रहा है? क्या उसने सभी चीज़ों के कार्य करने के नियम और डिजाइन केवल बाद में उनकी उपेक्षा करने के लिए बनाए? क्या ऐसा हुआ है? (नहीं।) तो फिर क्या हुआ? परमेश्वर अभी भी नियंत्रण करता है। वह जल, हवा और लहरों का नियंत्रण करता है। वह उन्हें उच्छृंखल रूप से नहीं चलने देता और न वह उन्हें उन घरों को नुकसान पहुँचाने या उन्हें बरबाद करने देता है, जिनमें लोग रहते हैं। इस कारण से लोग धरती पर रह सकते हैं, कई गुना बढ़ सकते हैं और फल-फूल सकते हैं। इसका मतलब है कि जब परमेश्वर ने सभी चीजें बनाईं, तो उसने उनके अस्तित्व के लिए नियमों की योजना पहले ही बना ली थी। जब परमेश्वर ने प्रत्येक चीज़ बनाई, तो उसने सुनिश्चित किया कि वह मनुष्य को लाभ पहुँचाएगी, और उसने उस पर नियंत्रण कर लिया, ताकि वह मानव-जाति को परेशान न करे या उसे संकट में न डाले। यदि परमेश्वर का प्रबंधन न होता, तो क्या जल अनियंत्रित रूप से न बह रहा होता? क्या हवा बिना किसी नियंत्रण के न बह रही होती? क्या पानी और हवा किसी नियम का पालन करते हैं? यदि परमेश्वर ने उनका प्रबंधन न किया होता, तो कोई नियम उन्हें नियंत्रित न करता, हवा गरजा करती और जल निरंकुश होता तथा बाढ़ का कारण बनता। यदि लहर पर्वत से अधिक ऊँची होती, तो क्या समुद्र का अस्तित्व रह पाता? नहीं रह पाता। यदि पर्वत लहर के समान ही ऊँचा नहीं होता, तो समुद्र का अस्तित्व न रहता और पर्वत अपना मूल्य एवं महत्व खो देता।

क्या तुम लोग इन दो कहानियों में परमेश्वर की बुद्धिमत्ता देखते हो? परमेश्वर ने वह सब-कुछ बनाया जिसका अस्तित्व है, और वह हर उस चीज का संप्रभु है जो मौजूद है; वह इन सबका प्रबंधन करता है और

इन सबके लिए आपूर्ति करता है, और सभी चीजों के भीतर वह हर मौजूद चीज के हर वचन और कार्रवाई को देखता और जाँचता है। इसी तरह परमेश्वर मानव-जीवन के हर कोने को भी देखता और जाँचता है। अतः परमेश्वर अपनी सृष्टि के अंतर्गत मौजूद हर चीज़ का हर विवरण अंतरंग रूप से जानता है; हर चीज़ की कार्यप्रणाली, उसकी प्रकृति और उसके जीवित रहने के नियमों से लेकर उसके जीवन के महत्त्व और उसके अस्तित्व के मूल्य तक, परमेश्वर को यह सब समग्र रूप से ज्ञात है। परमेश्वर ने सब चीज़ों को बनाया—तुम लोग क्या सोचते हो कि उसे उन नियमों का अध्ययन करने की ज़रूरत है, जो उन्हें नियंत्रित करते हैं? क्या उनके बारे में जानने-समझने के लिए परमेश्वर को मानवीय ज्ञान या विज्ञान को पढ़ने की ज़रूरत है? (नहीं।) क्या मनुष्यों में कोई ऐसा है, जिसके पास सभी चीज़ों को समझने की वैसी विद्वत्ता और ज्ञान है, जैसा परमेश्वर के पास है? नहीं है ना? क्या कोई खगोलशास्त्री या जीव-विज्ञानी है, जो वास्तव में उन नियमों को समझता है, जिनके द्वारा सभी चीज़ें जीवित रहती और बढ़ती हैं? क्या वे वास्तव में हर चीज़ के अस्तित्व के मूल्य को समझ सकते हैं? (नहीं, वे नहीं समझ सकते।) ऐसा इसलिए है, क्योंकि सभी चीज़ों को परमेश्वर द्वारा बनाया गया था, और मनुष्य चाहे जितना भी ज्यादा और जितनी भी गहराई से इस ज्ञान का अध्ययन कर लें, या जितने भी लंबे समय तक वे इसे जानने का प्रयास कर लें, वे कभी भी परमेश्वर के द्वारा बनाई गई सभी चीज़ों के रहस्य या उद्देश्य की थाह नहीं ले पाएँगे। क्या यह सही नहीं है? अब, हमारी अब तक की चर्चा से क्या तुम लोगों को लगता है कि तुमने "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" उक्ति के सही अर्थ की आंशिक समझ हासिल कर ली है? (हाँ।) मैं जानता था कि जब मैंने इस विषय—परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है—की चर्चा की थी, अनेक लोग तुरंत इस दूसरी उक्ति के बारे में सोचने लगेंगे, "परमेश्वर सत्य है, और परमेश्वर अपने वचन का प्रयोग हमारी आपूर्ति के लिए करता है," लेकिन वे इससे बढ़कर कुछ नहीं सोचेंगे। कुछ लोगों को तो यह भी लग सकता है कि परमेश्वर द्वारा मनुष्य के जीवन की आपूर्ति, प्रतिदिन के भोजन और पेय पदार्थ एवं तमाम दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति मनुष्य के लिए उसकी आपूर्ति के रूप नहीं गिनी जाती। क्या कुछ लोग ऐसे नहीं हैं, जो इस तरह से महसूस करते हैं? फिर भी, क्या परमेश्वर के सृजन में उसका अभिप्राय स्पष्ट नहीं है—कि मानव-जाति का अस्तित्व बना रहे और वह सामान्य रूप से जीवित रहे? परमेश्वर उस वातावरण को बनाए रखता है, जिसमें लोग रहते हैं और वह उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है। इसके अतिरिक्त, वह सभी चीज़ों का प्रबंध करता है और उनके ऊपर प्रभुत्व रखता है। इस सबसे मानव-जाति

सामान्य रूप से जीवित रह पाती है, फल-फूल पाती है और बढ़ पाती है; इस तरह परमेश्वर अपनी बनाई सभी चीज़ों और मानव-जाति के लिए आपूर्ति करता है। क्या यह सच नहीं है कि लोगों को इन चीज़ों को पहचानने एवं समझने की आवश्यकता है? शायद कुछ लोग कह सकते हैं, "यह विषय स्वयं सच्चे परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान से बहुत दूर है, और हम इसे नहीं जानना चाहते, क्योंकि हम केवल रोटी के सहारे नहीं जीते, बल्कि परमेश्वर के वचन के सहारे जीते हैं।" क्या यह समझ सही है? (नहीं।) यह गलत क्यों है? क्या तुम लोगों को परमेश्वर की पूर्ण समझ हो सकती है, यदि तुम्हें केवल परमेश्वर की कही हुई बातों का ही ज्ञान है? यदि तुम केवल परमेश्वर के कार्य एवं उसके न्याय और ताड़ना को ही स्वीकार करते हो, तो क्या तुम्हें परमेश्वर की पूर्ण समझ हो सकती है? यदि तुम लोग परमेश्वर के स्वभाव एवं परमेश्वर के अधिकार के एक छोटे-से भाग को ही जानते हो; तो क्या तुम इसे परमेश्वर की समझ हासिल करने के लिए काफी समझोगे? (नहीं।) परमेश्वर के कार्य उसके द्वारा सभी चीजों के सृजन के साथ शुरू हुए और वे आज तक जारी हैं—परमेश्वर के कार्य हर समय और हर क्षण प्रकट हैं। अगर कोई यह विश्वास करता है कि परमेश्वर सिर्फ इसलिए अस्तित्व में है, क्योंकि उसने लोगों के एक समूह को बचाने और उस पर अपना कार्य करने के लिए चुना है, और कि किसी अन्य चीज़ का परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं है, और न ही उसके अधिकार, उसकी हैसियत, और उसके क्रियाकलापों से कोई लेना-देना है, तो क्या यह समझा सकता है कि उसे परमेश्वर का सच्चा ज्ञान है? जिन लोगों को यह तथाकथित "परमेश्वर का ज्ञान" है, उन्हें केवल एकतरफा समझ है, जिसके अनुसार वे परमेश्वर के कर्मों को लोगों के एक समूह तक सीमित कर देते हैं। क्या यह परमेश्वर का सच्चा ज्ञान है? क्या इस तरह का ज्ञान रखने वाले लोग परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों की सृष्टि और उनके ऊपर उसके प्रभुत्व को नकारते नहीं हैं? कुछ लोग इस पर ध्यान नहीं देना चाहते, इसके बजाय वे सोचते हैं : "मैंने सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर का प्रभुत्व नहीं देखा है। इसका मुझसे कोई वास्ता नहीं और मैं इसे समझने की परवाह भी नहीं करता। परमेश्वर जो कुछ चाहता है वह करता है, और इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। मैं केवल परमेश्वर की अगुवाई और उसके वचन को स्वीकार करता हूँ ताकि मुझे परमेश्वर द्वारा बचाया और परिपूर्ण बनाया जा सके। मेरे लिए और कुछ मायने नहीं रखता। जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की सृष्टि की थी, तब जो भी नियम उसने बनाए या सभी चीज़ों एवं मानव-जाति को आपूर्ति करने के लिए जो कुछ वह करता है, उसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है।" यह कैसी बात है? क्या यह विद्रोह का कार्य नहीं है? क्या तुम लोगों में इस तरह की समझ रखने वाला कोई है? मैं जानता हूँ कि

तुममें बहुत लोग ऐसे हैं, भले ही तुम लोग ऐसा न कहो। ऐसे लकीर के फकीर लोग हर चीज़ अपने स्वयं के "आध्यात्मिक" दृष्टिकोण से देखते हैं। वे परमेश्वर को बाइबल तक सीमित कर देना चाहते हैं, उसके द्वारा कहे गए वचनों तक सीमित कर देना चाहते हैं, अक्षरश: लिखित वचन से निकाले गए अर्थ तक सीमित कर देना चाहते हैं। वे परमेश्वर को और अधिक जानने की इच्छा नहीं करते और वे नहीं चाहते कि परमेश्वर अन्य कार्य करने पर ध्यान दे। इस प्रकार की सोच बचकानी है और हद से ज्यादा धार्मिक भी है। क्या इस तरह के विचार रखने वाले लोग परमेश्वर को जान सकते हैं? उनके लिए परमेश्वर को जानना बहुत कठिन होगा। आज मैंने दो कहानियाँ सुनाई हैं, प्रत्येक दो भिन्न पहलुओं की ओर ध्यान खींचती है। इनके संपर्क में अभी-अभी आने पर, तुम लोगों को लग सकता है कि ये गहन या कुछ अमूर्त हैं और इन्हें जानना-समझना कठिन है। इन्हें परमेश्वर के कार्यों और स्वयं परमेश्वर से जोड़ना कठिन हो सकता है। फिर भी, परमेश्वर के सभी कार्य और वह सब, जो उसने सभी चीज़ों एवं संपूर्ण मानव-जाति के मध्य किया है, प्रत्येक व्यक्ति को, हर उस व्यक्ति को जो परमेश्वर को जानना चाहता है, स्पष्ट एवं सटीक रूप से जानना चाहिए। यह ज्ञान तुम्हें परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व में तुम्हारे विश्वास को निश्चित करेगा। यह तुम्हें परमेश्वर की बुद्धिमत्ता, उसके सामर्थ्य, और उसके द्वारा सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति करने के तरीके का सटीक ज्ञान भी देगा। इससे तुम लोग परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व को स्पष्ट रूप से समझ पाओगे और यह देख सकोगे कि उसका अस्तित्व काल्पनिक नहीं है, मिथक नहीं है, अस्पष्ट नहीं है, सिद्धांत नहीं है, और निश्चित रूप से एक तरह की आध्यात्मिक सांत्वना नहीं है, बल्कि एक वास्तविक अस्तित्व है। इसके अतिरिक्त, इससे लोग यह जान पाएँगे कि परमेश्वर ने हमेशा समस्त सृष्टि और मानव-जाति के लिए आपूर्ति की है; परमेश्वर इसे अपने तरीके से और अपनी लय के अनुसार करता है। तो, ऐसा इसलिए है, क्योंकि परमेश्वर ने सभी चीज़ें बनाईं और उन्हें नियम दिए कि वे सभी, उसके पूर्व-निर्धारण के अनुसार, अपने आवंटित कार्य करने, अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने, और अपनी भूमिका निभाने में सक्षम हैं; उसके पूर्व-निर्धारण में हर चीज़ का मानव-जाति की सेवा में और मनुष्य के रहने के स्थान और वातावरण में अपना उपयोग है। यदि परमेश्वर ऐसा न करता और मानव-जाति के पास अपने रहने के लिए वातावरण न होता, तो उसके लिए परमेश्वर में विश्वास करना या उसका अनुसरण करना असंभव होता; यह महज एक खोखली बात होती। क्या ऐसा नहीं है?

आओ, हम बड़े पर्वत और छोटी जलधारा की कहानी पर फिर से नज़र डालें। पर्वत का काम क्या है?

जीवित चीज़ें पर्वत पर फलती-फूलती हैं, अतः इसके अस्तित्व का एक अंतर्निहित मूल्य है, और वह छोटी जलधारा को अपनी इच्छा से बहने और लोगों के लिए आपदा लाने से रोकते हुए उसे बाधित भी करता है। क्या यह सही नहीं है? पर्वत अपने तरीके से अस्तित्व में है, जिससे असंख्य जीवित चीज़ों—पेड़ और घास और अन्य सभी पौधे और जानवर—को पर्वत पर फलने-फूलने का अवसर मिलता है। वह छोटी जलधारा के प्रवाह के क्रम को भी निर्देशित करता है—पर्वत जलधारा के जल को एकत्र करता है और स्वाभाविक रूप से अपने निचले सिरे पर उसका मार्गदर्शन करता है, जहाँ वह नदी में और अंततः समुद्र में जाकर मिल सकती है। ये नियम प्राकृतिक रूप से घटित नहीं हुए, बल्कि परमेश्वर द्वारा सृष्टि के समय खास तौर से लागू किए गए थे। जहाँ तक बड़े पर्वत और प्रचंड हवा की बात है, पर्वत को भी हवा की आवश्यकता होती है। पर्वत को हवा की आवश्यकता अपने ऊपर रहने वाले जीवित प्राणियों को प्रेम से स्पर्श करवाने के साथ-साथ प्रचंड हवा के बल को रोकने के लिए भी होती है, ताकि वह अनियंत्रित रूप से न बहे। यह नियम, एक तरह से, बड़े पर्वत के कर्तव्य का प्रतीक है; तो क्या पर्वत के कर्तव्य से संबंधित इस नियम ने अपने आप ही आकार ले लिया? (नहीं।) इसे परमेश्वर द्वारा बनाया गया था। बड़े पर्वत का अपना कर्तव्य है और प्रचंड हवा का भी अपना कर्तव्य है। अब हम बड़े पर्वत और विशाल लहर की ओर मुड़ते हैं। पर्वत के न होने पर क्या जल अपने आप ही बहने की दिशा ढूँढ़ पाता? (नहीं।) पर्वत के रूप में पर्वत का अपना अस्तित्वगत मूल्य है, और समुद्र के रूप में समुद्र का अपना अस्तित्वगत मूल्य है; लेकिन जिन परिस्थितियों के अंतर्गत वे एक-साथ सामान्य रूप से मौजूद रहने में सक्षम हैं और एक-दूसरे के काम में हस्तक्षेप नहीं करते, वे एक-दूसरे को रोकते भी हैं—बड़ा पर्वत समुद्र को रोकता है ताकि वह बाढ़ न लाए, और ऐसा करके वह लोगों के घरों की सुरक्षा करता है, और समुद्र को रोककर वह उसे अपने भीतर रहने वाले जीव-जंतुओं का पोषण करने का अवसर भी देता है। क्या इस भूदृश्य ने अपने आप ही आकार ले लिया? (नहीं।) इसे भी परमेश्वर द्वारा ही रचा गया था। इस तसवीर से हम देखते हैं कि जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों को बनाया, तो उसने पहले से ही निर्धारित कर दिया कि पर्वत कहाँ स्थित होगा, जलधारा कहाँ बहेगी, किस दिशा से प्रचंड हवा बहनी शुरू होगी और वह कहाँ जाएगी, और लहरें कितनी विशाल और ऊँची होंगी। इन सब चीज़ों में परमेश्वर के इरादे एवं उद्देश्य शामिल हैं—ये परमेश्वर के कर्म हैं। अब, क्या तुम लोग देख सकते हो कि परमेश्वर के कर्म सभी चीज़ों में मौजूद हैं? (हाँ।)

इन चीज़ों की चर्चा करने में हमारा क्या उद्देश्य है? क्या इसका उद्देश्य लोगों को उन नियमों का

अध्ययन करवाना है, जिनके द्वारा उसने सभी चीज़ों की सृष्टि की? क्या इसका उद्देश्य लोगों को खगोलविज्ञान एवं भौतिकी में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करना है? (नहीं।) तो फिर इसका क्या उद्देश्य है? इसका उद्देश्य लोगों को परमेश्वर के कर्म समझने के लिए प्रेरित करना है। परमेश्वर के कार्यों में लोग इस बात की पुष्टि और सत्यापन कर सकते हैं कि परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है। यदि तुम इसे समझ सको, तो तुम वाकई अपने हृदय में परमेश्वर के स्थान की पुष्टि कर सकोगे, और तुम इस बात की भी पुष्टि करने में सक्षम होगे कि परमेश्वर ही स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है, और स्वर्ग एवं धरती तथा सभी चीज़ों का सर्जक है। तो क्या सभी चीजों के नियमों और ईश्वर के कर्मों को जानना परमेश्वर की तुम्हारी समझ के लिए उपयोगी है? (हाँ।) यह कितना उपयोगी है? सबसे पहले, जब तुम परमेश्वर के कर्मों को समझ गए हो, तो क्या तुम अब भी खगोलविज्ञान एवं भूगोल में रुचि लोगे? क्या अब भी तुम्हारे पास एक संशयात्मा का हृदय हो सकता है और तुम परमेश्वर के सभी चीज़ों का सर्जक होने पर संदेह कर सकते हो? क्या अब भी तुम्हारे पास एक शोधकर्ता का हृदय होगा और तुम परमेश्वर के सभी चीज़ों का सर्जक होने पर संदेह कर सकते हो? (नहीं।) जब तुमने इस बात की पुष्टि कर दी है कि परमेश्वर सभी चीजों का सर्जक है और तुम परमेश्वर की सृष्टि के कुछ नियम समझ गए हो, तो क्या तुम सचमुच विश्वास करोगे कि परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति करता है? (हाँ।) क्या "आपूर्ति" का यहाँ कोई विशेष महत्व है, या क्या इसका प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति के संदर्भ में किया गया है? "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति करता है" बहुत व्यापक महत्व और विस्तार वाली उक्ति है। परमेश्वर सिर्फ लोगों को उनके दैनिक भोजन एवं पेय की ही आपूर्ति नहीं करता, बल्कि वह मनुष्यों को उनकी ज़रूरत की हर चीज़ की आपूर्ति करता है, जिनमें हर वह चीज़ तो शामिल है ही, जिसे लोग देख सकते हैं, साथ ही वे चीज़ें भी शामिल हैं, जिन्हें देखा नहीं जा सकता। परमेश्वर मानव-जाति के लिए अनिवार्य इस वातावरण को कायम रखता है, इसका प्रबंध करता है और इस पर शासन करता है। दूसरे वचनों में, मानव-जाति को हर मौसम में जिस भी वातावरण की ज़रूरत होती है, परमेश्वर ने उसे तैयार किया है। परमेश्वर हवा और तापमान के प्रकार का भी प्रबंध करता है, ताकि वे मनुष्य के अस्तित्व के लिए उपयुक्त हो सकें। इन चीजों को नियंत्रित करने वाले नियम अपने आप या यों ही बिना सोचे-विचारे घटित नहीं होते; वे परमेश्वर की संप्रभुता एवं उसके कर्मों का परिणाम हैं। स्वयं परमेश्वर इन सभी नियमों का स्रोत है और सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है। भले ही तुम इस पर विश्वास करो या न करो, भले ही तुम इसे देख पाओ या न देख पाओ, या भले ही तुम इसे समझ

पाओ या न समझ पाओ, यह एक स्थापित और अकाट्य सत्य है।

मैं जानता हूँ कि एक बड़ी संख्या में लोग परमेश्वर के उन्हीं वचनों और कार्यों पर विश्वास करते हैं, जो बाइबल में शामिल हैं, परमेश्वर ने अपने कर्मों को प्रकट किया है, और लोगों को उसके अस्तित्व के महत्व को जानने दिया है। उसने उन्हें उसकी हैसियत की कुछ समझ को हासिल करने दिया है और अपने अस्तित्व के तथ्य की पुष्टि की है। हालांकि, कई और लोगों को यह तथ्य अस्पष्ट एवं अनिर्दिष्ट प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की और वह सभी चीज़ों का प्रबंधन और उनकी आपूर्ति करता है; यहाँ तक कि ऐसे लोग संदेह की मनोवृत्ति भी रखते हैं। इस मनोवृत्ति के कारण वे निरंतर यह मानते हैं कि प्राकृतिक संसार के नियम अनायास बने हैं, कि प्रकृति के परिवर्तन, रूपांतरण, घटनाएँ और उसे संचालित करने वाले नियम प्रकृति से ही उत्पन्न हुए हैं। लोग अपने दिलों में यह अनुमान नहीं लगा सकते कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों को कैसे बनाया और वह कैसे उन पर शासन करता है; वे नहीं समझ सकते कि परमेश्वर सभी चीज़ों का प्रबंधन और उनके लिए आपूर्ति किस तरह करता है। इस प्रस्तावना की सीमाओं के अंतर्गत, लोग विश्वास नहीं कर सकते कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों को बनाया, वह उन पर शासन करता है और उनके लिए आपूर्ति करता है; यहाँ तक कि विश्वासी भी व्यवस्था के युग, अनुग्रह के युग और राज्य के युग पर अपने विश्वास तक ही सीमित हैं, वे मानते हैं कि परमेश्वर के कर्म और मानव-जाति के लिए उसकी आपूर्ति केवल उसके चुने हुए लोगों के लिए ही हैं। यह देखकर मुझे सबसे ज्यादा अप्रसन्नता होती है, क्योंकि भले ही मनुष्य उन सभी चीज़ों का आनंद उठाते हैं, जो परमेश्वर लेकर आता है, फिर भी वे उन सभी चीज़ों को नकारते हैं, जो वह करता और उन्हें देता है। लोग यही विश्वास करते हैं कि स्वर्ग, धरती और सभी चीज़ें अपने स्वयं के प्राकृतिक नियमों और अपने स्वयं के अस्तित्व के प्राकृतिक विधानों से संचालित होते हैं, उनका प्रबंधन करने वाला कोई शासक या उन्हें आपूर्ति करने वाला और उनका पालन करने वाला कोई संप्रभु नहीं है। भले ही तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, फिर भी तुम शायद यह विश्वास नहीं करते कि ये सब उसके कर्म हैं; वास्तव में यह उन चीजों में से एक है, जिनकी परमेश्वर के हर विश्वासी, परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने वाले हर व्यक्ति और परमेश्वर का अनुसरण करने वाले हर आदमी द्वारा अवहेलना की जाती है। अतः, जैसे ही मैं ऐसी किसी चीज़ के बारे में चर्चा करना शुरू करता हूँ, जो बाइबल या तथाकथित आध्यात्मिक शब्दावली से संबंधित नहीं होती, कुछ लोग ऊब जाते हैं या थक जाते हैं, यहाँ तक कि असहज हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि मेरी बातें आध्यात्मिक लोगों एवं आध्यात्मिक चीज़ों से

अलग लगती हैं। यह एक भयानक बात है। जब परमेश्वर के कर्मों को जानने की बात आती है, तो हालाँकि हम खगोल विज्ञान का उल्लेख नहीं करते, न ही हम भूगोल या जीवविज्ञान पर शोध करते हैं, फिर भी हमें सभी चीज़ों पर परमेश्वर की प्रभुता को समझना चाहिए, हमें सभी चीज़ों के लिए उसकी आपूर्ति को जानना चाहिए, और यह कि वह सभी चीज़ों का स्रोत है। यह एक आवश्यक पाठ है और इसका अध्ययन अवश्य किया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि तुम मेरी बात समझ गए हो!

जो दो कहानियाँ मैंने अभी सुनाईं, हालाँकि उनकी विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति का तरीका थोड़ा असामान्य था, फिर भी मैंने उन्हें कुछ खास तरीके से सुनाया, जिसमें मेरा प्रयास सीधी भाषा एवं सरल दृष्टिकोण का इस्तेमाल करने का रहा, ताकि तुम लोग कुछ गहरी बात समझ एवं स्वीकार कर सको। यही मेरा एकमात्र लक्ष्य था। मैं चाहता था कि तुम लोग इन छोटी कहानियों और इनमें चित्रित दृश्यों से यह देखो और विश्वास करो कि परमेश्वर समस्त सृष्टि का संप्रभु है। इन कहानियों को सुनाने का लक्ष्य यही है कि तुम लोगों को कहानी के सीमित दायरे में परमेश्वर के असीमित कार्यों को देखने एवं जानने का मौका मिले। इस परिणाम को तुम लोग अपने भीतर कब पूरी तरह से महसूस और हासिल करोगे—यह तुम्हारे व्यक्तिगत अनुभवों एवं कोशिश पर निर्भर करता है। यदि तुम सत्य की तलाश करते हो और परमेश्वर को जानने की कोशिश करते हो, तो ये चीज़ें सबसे अधिक प्रबल तरीके से तुम्हें याद दिलाने का काम करेंगी; इनसे तुम्हारे अंदर एक गहरी जागरूकता पैदा होगी, तुम्हारी समझ स्पष्ट होगी, तुम धीरे-धीरे परमेश्वर के वास्तविक कर्मों के नज़दीक आते जाओगे, उस नज़दीकी में कोई दूरी और त्रुटि नहीं होगी। हालांकि, यदि तुम परमेश्वर को जानने का प्रयास करने वाले व्यक्ति नहीं हो, तो भी ये कहानियाँ तुम लोगों का कोई नुकसान नहीं कर सकतीं। बस इन्हें सच्ची कहानियाँ समझो।

क्या तुम लोगों ने इन दो कहानियों से कुछ समझ हासिल की है? पहली बात, क्या ये दो कहानियाँ मानव-जाति के लिए परमेश्वर की चिंता पर की गई हमारी पिछली चर्चा से अलग हैं? क्या इनमें कोई अंतर्निहित संबंध है? क्या यह सच है कि इन दोनों कहानियों में हम परमेश्वर के कर्मों और उस व्यापक विचार को देखते हैं, जो वह मानव-जाति के लिए बनाई गई अपनी हर योजना पर करता है? क्या यह सच है कि परमेश्वर के सारे कार्य और उसके सभी विचार मानव-जाति के अस्तित्व के लिए होते हैं? (हाँ।) क्या मानव-जाति के लिए परमेश्वर के सतर्क विचार एवं सोच बिलकुल स्पष्ट नहीं है? मानव-जाति को कुछ नहीं करना है। परमेश्वर ने लोगों के लिए हवा बनाई है—उन्हें बस उसमें साँस लेना है। जो सब्जियाँ एवं फल वे

खाते हैं, वे आसानी से उपलब्ध हैं। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक, प्रत्येक क्षेत्र के पास अपने प्राकृतिक संसाधन हैं। विभिन्न क्षेत्रीय फसलें और फल एवं सब्जियाँ, सब परमेश्वर द्वारा तैयार की गई हैं। अधिक विशाल परिवेश में परमेश्वर ने सभी चीज़ों को एक-दूसरे को सुदृढ़ करने वाली, एक दूसरे पर निर्भर, एक-दूसरे को मजबूत बनाने वाली, एक-दूसरे पर प्रतिक्रिया करने वाली और साथ मिलकर रहने वाली बनाया है। यह सभी चीज़ों के जीवन और अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उसकी पद्धति और नियम है; इस तरह, मानव-जाति इस सजीव परिवेश में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, यहाँ तक कि आज के दिन तक कई गुना बढ़ते हुए सुरक्षित और स्थिरता से विकसित होने में सक्षम रही है। कहने का मतलब यह है कि परमेश्वर प्राकृतिक परिवेश को संतुलित करता है। यदि परमेश्वर संप्रभु एवं नियंत्रक न होता, तो परमेश्वर द्वारा सृजित किए जाने के बावजूद इस परिवेश को कायम एवं संतुलित रखना किसी के भी वश में न होता। कुछ स्थानों में हवा नहीं है, इसलिए मनुष्य वहाँ जीवित नहीं रह सकते। परमेश्वर तुम्हें वहाँ जाने की अनुमति नहीं देगा। इसलिए, उपयुक्त सीमाओं के बाहर मत जाओ। यह मानव-जाति की सुरक्षा के लिए है—इसके भीतर रहस्य हैं। इस परिवेश के हर एक पहलू, धरती की लंबाई और चौड़ाई, धरती के हर एक प्राणी—जीवित और मृत दोनों—की परमेश्वर ने अग्रिम कल्पना और तैयारी कर ली थी। यह चीज़ क्यों आवश्यक है? वह चीज़ क्यों अनावश्यक है? इस चीज़ के यहाँ होने का क्या उद्देश्य है और उस चीज़ को वहाँ क्यों होना चाहिए? परमेश्वर ने पहले ही इन सभी प्रश्नों के बारे में सोच लिया था और लोगों को इनके बारे में सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है। कुछ मूर्ख लोग हमेशा पहाड़ों को हिलाने के विषय में सोचते रहते हैं, लेकिन ऐसा करने की अपेक्षा, वे मैदानों की ओर क्यों नहीं चले जाते? यदि तुम पहाड़ों को पसंद नहीं करते हो, तो तुम उनके पास रहते क्यों हो? क्या यह मूर्खता नहीं है? क्या होगा, अगर तुम उस पहाड़ को हटा दोगे? तूफान और विशाल लहरें आएँगी और लोगों के घर नष्ट हो जाएँगे। क्या यह मूर्खता नहीं होगी? लोग केवल नाश कर सकते हैं। लोग उस स्थान को भी बनाए नहीं रख सकते, जहाँ उन्हें रहना है, और फिर भी वे सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति करना चाहते हैं। यह असंभव है।

परमेश्वर मनुष्य को सभी चीज़ों का प्रबंधन करने और उन पर आधिपत्य रखने की अनुमति देता है, पर क्या मनुष्य अच्छा काम करता है? मनुष्य वह सब-कुछ नष्ट कर देता है, जिसे वह नष्ट कर सकता है। वह परमेश्वर द्वारा अपने लिए बनाई हर चीज़ को उसकी मूल स्थिति में रखने में एकदम असमर्थ है—उसने इसका उलटा किया है और परमेश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ों को नष्ट कर दिया है। मनुष्य ने पर्वतों को हटा

दिया है, समुद्रों को पाटकर जमीन में तब्दील कर दिया है, और मैदानों को रेगिस्तानों में बदल दिया है, जहाँ कोई मनुष्य नहीं रह सकता। फिर भी रेगिस्तानों में मनुष्य ने उद्योग स्थापित कर दिए हैं और परमाणु ठिकाने बनाकर हर तरफ विनाश के बीज बो दिए हैं। नदियाँ अब नदियाँ नहीं रहीं, समुद्र अब समुद्र नहीं रहे...। एक बार जब मानव-जाति ने प्राकृतिक परिवेश के संतुलन और उसके नियमों को तोड़ दिया है, तो उसके विनाश एवं मृत्यु का दिन अधिक दूर नहीं है; यह अवश्यंभावी है। जब विनाश आएगा, तब मनुष्य को पता चलेगा कि परमेश्वर द्वारा उसके लिए बनाई गई हर चीज़ कितनी बहुमूल्य है और मानव-जाति के लिए वह कितनी महत्वपूर्ण है। मनुष्य का ऐसे परिवेश में रहना, जिसमें हवा और बारिश अपने समय पर आती है, स्वर्ग में रहने जैसा है। लोगों को एहसास नहीं है कि यह एक आशीष है, परंतु जिस क्षण वे यह सब खो देंगे, तब वे समझेंगे कि यह कितना दुर्लभ और कीमती है। और एक बार यह चला गया, तो कोई इसे कैसे वापस पाएगा? यदि परमेश्वर इसे फिर से बनाने के लिए तैयार न हुआ, तो लोग क्या कर सकेंगे? क्या तुम लोग कुछ कर सकते हो? (नहीं, कुछ नहीं कर सकते।) वास्तव में, तुम लोग कुछ तो कर सकते हो। यह बहुत सरल है—जब मैं तुम लोगों को बताऊँगा कि वह क्या है, तो तुम लोग तुरंत जान जाओगे कि यह संभव है। मनुष्य ने स्वयं को अपने अस्तित्व की वर्तमान स्थिति में कैसे पाया है? क्या यह उसके लालच और विनाश के कारण है? यदि मनुष्य इस विनाश का अंत कर दे, तो क्या यह सजीव परिवेश अपने आप ही धीरे-धीरे ठीक नहीं हो जाएगा? यदि परमेश्वर कुछ नहीं करता, यदि परमेश्वर आगे से मानव-जाति के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं होता—कहने का मतलब कि वह इस मामले में हस्तक्षेप नहीं करता—तो इस विनाश को रोकने और सजीव परिवेश को पुनः उसकी प्राकृतिक स्थिति में वापस लाने के लिए मानव-जाति के पास सर्वोत्तम तरीका यही होगा कि वह समस्त विनाश को रोक दे। समस्त विनाश को रोकने का अर्थ है उन चीज़ों की लूट एवं बरबादी को रोकना, जिन्हें परमेश्वर ने रचा है। ऐसा करने से वह परिवेश धीरे-धीरे सुधरने लगेगा जिसमें मनुष्य रहता है, जबकि इसमें असफल होने का परिणाम जीवन के लिए और अधिक प्रतिकूल परिवेश के रूप में सामने आएगा, जिसका विनाश समय के साथ और तेज होता जाएगा। क्या मेरा समाधान सरल है? यह सरल एवं संभव है, है न? वास्तव में यह सरल है, और कुछ लोगों के लिए संभव भी है—परंतु क्या यह धरती के अधिकतर लोगों के लिए संभव है? (नहीं है।) कम से कम, क्या तुम लोगों के लिए यह संभव है? (हाँ।) तुम्हारे "हाँ" कहने का क्या कारण है? क्या यह कहा जा सकता है कि यह परमेश्वर के कर्मों को समझने की बुनियाद से आती है? क्या यह कहा जा सकता है कि इसकी

शर्त परमेश्वर की संप्रभुता एवं योजना का पालन करना है? (हाँ।) चीज़ों को बदलने का एक तरीका है, परंतु वह हमारी इस चर्चा का विषय नहीं है। परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य के जीवन के लिए ज़िम्मेदार है और वह बिलकुल अंत तक ज़िम्मेदार है। परमेश्वर तुम्हारे लिए आपूर्ति करता है, यहाँ तक कि अगर शैतान द्वारा नष्ट किए गए इस परिवेश में तुम बीमार या प्रदूषित या संकटग्रस्त हो जाते हो, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; परमेश्वर तुम्हारे लिए आपूर्ति करेगा और तुम्हें जीवित रखेगा। क्या तुम्हें इस पर विश्वास है? (हाँ।) परमेश्वर मनुष्य को ऐसे ही मरने नहीं देता।

क्या तुम लोग अब परमेश्वर को समस्त चीज़ों के लिये जीवन के स्रोत के रूप में पहचानने के महत्व को महसूस करने लगे हो? (हाँ, बिल्कुल।) तुम लोगों की क्या भावनाएँ हैं? मुझे बताओ। (अतीत में हमने कभी पर्वतों, समुद्रों एवं झीलों को परमेश्वर के कार्यों के साथ जोड़ने के बारे में नहीं सोचा था। आज परमेश्वर की संगति सुनने से पहले तक हम नहीं समझे थे कि इन चीज़ों के भीतर परमेश्वर के कर्म और बुद्धिमत्ता है; हम देखते हैं कि जब परमेश्वर ने सभी चीज़ें बनानी शुरू की थीं, तो उसने हर चीज़ में उसकी नियति और अपना सद्भाव पहले ही शामिल कर दिया था। सभी चीज़ें एक-दूसरे को सुदृढ़ बनाने वाली और एक दूसरे पर निर्भर हैं और मानव-जाति उनकी अंतिम लाभार्थी है। आज हमने जो कुछ सुना, वह बिलकुल ताज़ा और नया महसूस होता है—हमने महसूस किया है कि परमेश्वर के कार्य कितने वास्तविक हैं। वास्तविक दुनिया में, हमारे दैनिक जीवन में, और सभी चीज़ों के साथ अपने संपर्क में हम देखते हैं कि ऐसा ही है।) तुमने सच में देखा है, है ना? परमेश्वर मानव-जाति के लिए मजबूत बुनियाद के बिना आपूर्ति नहीं करता; उसकी आपूर्ति कुछ संक्षिप्त वचन मात्र नहीं है। परमेश्वर ने इतना सब कुछ किया है, यहाँ तक कि वे सब चीज़ें भी तुम्हारे लाभ के लिए हैं, जिन्हें तुम नहीं देखते। मनुष्य इस परिवेश में उन सब चीज़ों के बीच रहता है, जो परमेश्वर ने उसके लिए बनाई हैं, जहाँ लोग एवं सभी चीज़ें एक-दूसरे पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, पौधे ऐसी गैसें छोड़ते हैं, जो हवा को शुद्ध करती हैं और लोग उस शुद्ध हवा में साँस लेते हैं और उससे लाभान्वित होते हैं; फिर भी, कुछ पौधे लोगों के लिए जहरीले होते हैं, जबकि अन्य पौधे उन जहरीले पौधों का प्रतिकार करते हैं। यह परमेश्वर की सृष्टि का एक आश्चर्य है! लेकिन आज अभी हम इस विषय को छोड़ दें; आज हमारी चर्चा मुख्य रूप से मनुष्य और शेष सृष्टि के सह-अस्तित्व के बारे में थी, जिसके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों के सृजन का क्या महत्व है? मनुष्य अन्य चीज़ों के बिना नहीं रह सकता, जैसे कि मनुष्य को जीने के लिए हवा की ज़रूरत होती है—यदि तुम्हें निर्वात में रख

दिया जाए, तो तुम जल्दी ही मर जाओगे। यह एक बहुत ही सरल सिद्धांत है, जो दिखाता है कि मनुष्य शेष सृष्टि से अलग नहीं रह सकता। तो, मनुष्य को सभी चीजों के प्रति कैसा रवैया रखना चाहिए? एक जो उन्हें सँजोकर रखता है, उनकी रक्षा करता है, उनका कुशल उपयोग करता है, उन्हें नष्ट नहीं करता, उन्हें बरबाद नहीं करता, और उन्हें एक सनक में नहीं बदलता, क्योंकि सभी चीजें परमेश्वर से आयी हैं, सभी चीजें मानव-जाति के लिए उसकी आपूर्ति हैं, और मानव-जाति को उनके साथ निष्ठा से व्यवहार करना चाहिए। आज हमने इन दो विषयों पर चर्चा की है। इन पर ध्यान से चिंतन-मनन करो। अगली बार हम कुछ चीज़ों पर और अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। आज की सभा यहाँ समाप्त होती है। शुक्रिया! (फिर मिलेंगे!)

18 जनवरी, 2014

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है VIII

परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है (II)

आओ, पिछली बार के संवाद के विषय को जारी रखें। क्या तुम याद कर सकते हो कि पिछली बार हमने किस विषय पर संवाद किया था? (परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है।) क्या "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" ऐसा विषय है, जो तुम लोगों को बहुत रूखा महसूस होता है? या क्या तुम लोगों के दिलों में पहले से इसकी कोई कच्ची अवधारणा है? क्या कोई एक क्षण के लिए इस विषय पर हमारी पिछली संगति का मुख्य बिंदु बता सकता है? (परमेश्वर के सभी चीज़ों के सृजन के माध्यम से, मैं देखता हूँ कि परमेश्वर सभी चीज़ों का पालन-पोषण करता है और मनुष्यजाति का पालन-पोषण करता है। पहले, मैं हमेशा सोचता था कि जब परमेश्वर मनुष्यजाति को आपूर्ति करता है, तो वह केवल अपने चुने हुए लोगों को ही अपने वचन की आपूर्ति करता है, परन्तु मैंने कभी नहीं देखा, सभी चीज़ों की व्यवस्थाओं के माध्यम से, कि परमेश्वर मनुष्यजाति का पालन-पोषण कर रहा है। यह केवल सत्य के इस पहलू के परमेश्वर के संवाद के माध्यम से है कि अब मैंने महसूस किया है कि परमेश्वर सभी चीज़ों का स्रोत है और सभी चीज़ों का जीवन परमेश्वर के द्वारा आपूर्तित किया जाता है, यह कि परमेश्वर इन नियमों का कुशलता से उपयोग करता है, और यह कि वह सभी चीज़ों का पालन-पोषण करता है। सभी चीज़ों के उसके सृजन से मैं परमेश्वर के प्रेम को देखता हूँ।) पिछली बार, हमने प्राथमिक रूप से सभी चीज़ों के

परमेश्वर के सृजन के बारे में और कैसे उसने उनके लिए व्यवस्थाओं एवं सिद्धांतों की स्थापना की थी इस बारे में संवाद किया था। ऐसी व्यवस्थाओं और ऐसे सिद्धांतों के अधीन, सभी चीज़ें मनुष्यजाति के साथ जीती और मरती हैं और परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन और परमेश्वर की नज़रों में मनुष्यजाति के साथ मिलकर अस्तित्व में रहती हैं। हमने सबसे पहले परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों के सृजन और विकास के नियम, और साथ ही उनकी प्रगति के प्रक्षेप-पथ और प्रतिमानों की व्यवस्थाओं को निर्धारित करने के लिए अपनी पद्धतियों का उपयोग करने के बारे में बात की थी। उसने उन तरीकों को भी निर्धारित किया जिसके अनुसार सभी चीज़ें धरती पर जियेंगी, ताकि वे निरन्तर विकसित होती रहें, प्रजनन करती रहें और उत्तरजीविता के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहें। ऐसी पद्धतियों और व्यवस्थाओं के साथ, सभी चीज़ें इस भूमि पर सफलतापूर्वक एवं शांतिपूर्वक अस्तित्व में रहने और विकसित होने में समर्थ हैं। केवल ऐसे पर्यावरण को पा कर ही मनुष्यजाति एक स्थिर निवास एवं सजीव वातावरण पाने में समर्थ हुई है, और परमेश्वर के मार्गदर्शन के अधीन, वह निरन्तर विकसित होती है और आगे बढ़ती है, विकसित होती है और आगे बढ़ती है।

पिछली बार हमने परमेश्वर सभी चीज़ों की आपूर्ति कर रहा है के मूल विचार पर चर्चा की थी: परमेश्वर सबसे पहले इस तरह से सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है कि सभी चीज़ें मनुष्यजाति के लिए अस्तित्व में रहें और जीवित रहें। दूसरे शब्दों में, ऐसा पर्यावरण परमेश्वर के द्वारा निर्धारित व्यवस्थाओं की वजह से अस्तित्व में है। यह केवल परमेश्वर के द्वारा ऐसी व्यवस्थाओं को बनाए रखने एवं प्रशासित किए जाने के कारण है कि मनुष्यजाति के पास मौजूदा सजीव पर्यावरण है। जिसके बारे में हमने पिछली बार बात की थी वह परमेश्वर के उस ज्ञान से एक बड़ी वृद्धि है जिसके विषय में हमने पहले बात की थी। ऐसी वृद्धि क्यों मौजूद है? क्योंकि जब हमने अतीत में परमेश्वर को जानने के बारे में बात की थी, तो हम परमेश्वर के मनुष्यजाति को बचाने एवं उसका प्रबन्धन करने की सीमा के भीतर—अर्थात्, परमेश्वर के चुने हुए लोगों का उद्धार एवं प्रबन्धन—परमेश्वर, परमेश्वर के कर्मों, उसके स्वभाव, उसके स्वरूप, उसके इरादों, और वह किस प्रकार मनुष्यजाति को सत्य एवं जीवन की आपूर्ति करता है, इन सबको जानने के बारे में, चर्चा कर रहे थे। किन्तु वह शीर्षक जिसके बारे में हमने पिछली बार बात की थी वह मात्र बाइबल तक और परमेश्वर के अपने चुने हुए लोगों को बचाने के दायरे के भीतर अब और सीमित नहीं था। इसके बजाए, यह इस दायरे के बाहर, बाइबल के बाहर और कार्य की उन तीन अवस्थाओं की सीमाओं के बाहर निकल गया

है जिन्हें परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों के बीच स्वयं परमेश्वर के बारे में चर्चा करने के लिए करता है। इसलिए जब तुम लोग मेरे संवाद के इस भाग को सुनते हो, तो तुम लोगों को परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान को बाइबल और परमेश्वर के कार्य की तीन अवस्थाओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। उसके बजाए, तुम्हें अपने दृष्टिकोण को खुला रखना है और सभी चीज़ों के मध्य परमेश्वर के कार्यों और उसके स्वरूप को देखना है; और तुम्हें परमेश्वर के कर्मों को और सभी चीजों के बीच उसके स्वरूप को देखना है, और यह देखना है कि किस तरह परमेश्वर सभी चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है और उनका प्रबन्धन करता है। इस विधि के माध्यम से और इस बुनियाद पर, तुम देख सकते हो कि परमेश्वर किस प्रकार सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है। यह मनुष्यजाति को इस बात को समझने में समर्थ बनाता है कि परमेश्वर ही सभी चीज़ों के लिए जीवन का सच्चा स्रोत है और यह कि यही स्वयं परमेश्वर की सच्ची पहचान है। अर्थात्, परमेश्वर की पहचान, हैसियत और अधिकार और उसका सब कुछ केवल उन्हीं लोगों पर लक्षित नहीं है जो वर्तमान में उसका अनुसरण करते हैं—केवल इस समूह के लोगों, तुम लोगों पर लक्षित नहीं है—बल्कि सभी चीज़ों पर है। तो सभी चीज़ों का दायरा बहुत व्यापक है। मैं हर चीज़ पर परमेश्वर के शासन के दायरे का वर्णन करने के लिए "सभी चीज़ों" का उपयोग करता हूँ क्योंकि मैं तुम लोगों को बताना चाहता हूँ कि परमेश्वर के प्रभुत्व वाली चीज़ें केवल वे नहीं हैं जिन्हें तुम लोग अपनी आँखों से देख सकते हो, बल्कि इसमें भौतिक जगत जिसे सभी लोग देख सकते हैं, और साथ ही दूसरा जगत शामिल है जिसे मनुष्यजाति की आँखों के द्वारा भौतिक संसार के बाहर नहीं देखा जा सकता है, और इसके अतिरिक्त मनुष्यजाति जहाँ वर्तमान में अस्तित्व में है, उससे भी बाहर के अंतरिक्ष और नक्षत्र भी इसमें शामिल हैं। यह सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व का दायरा है। सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व का दायरा बहुत व्यापक है। जहाँ तक तुम लोगों बात है, जो तुम लोगों को समझना चाहिए, जो तुम लोगों को देखना चाहिए, और जिन चीज़ों से तुम लोगों को ज्ञान हासिल करना चाहिए—ये सब वही हैं जिन्हें तुम लोगों में से प्रत्येक को समझने, देखने और उसके बारे में स्पष्ट होने की आवश्यकता है और अवश्य होना चाहिए। यद्यपि यह "सभी चीज़ों" का दायरा बहुत व्यापक है, फिर भी मैं तुम लोगों को उस दायरे के बारे में नहीं बताऊँगा जिसे तुम लोग बिल्कुल नहीं देख सकते हो या तुम लोग जिसके सम्पर्क में नहीं आ सकते हो। मैं तुम लोगों को केवल उस दायरे के बारे में बताऊँगा मनुष्यजाति जिसके सम्पर्क में आ सकती है, जिसे समझ सकती है और उसे बूझ सकती है, ताकि हर कोई इस वाक्यांश "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" के सच्चे अर्थ को महसूस कर

सके। इस तरह से, हर चीज़ जो मैं तुम लोगों के लिए संवाद करता हूँ वे खोखले वचन नहीं होंगे।

पिछली बार, हमने "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" के शीर्षक पर एक सामान्य झलक प्रदान करने के लिए कहानी बताने के तरीके का इस्तेमाल किया था, ताकि तुम लोगों के पास इस बात की बुनियादी समझ हो सके कि परमेश्वर किस प्रकार सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है। इस बुनियादी धारणा को तुम लोगों के भीतर थोड़ा-थोड़ा करके डालने का उद्देश्य क्या है? यह तुम लोगों को इस बात की जानकारी देने के लिए है कि, बाइबल और उसके कार्य की तीन अवस्थाओं के बाहर, परमेश्वर और भी अधिक कार्य कर रहा है जिन्हें मनुष्य नहीं देख सकते हैं या जिनके सम्पर्क में नहीं आ सकते हैं। ऐसा कार्य परमेश्वर के द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जा रहा हैं। यदि परमेश्वर, अपने प्रबन्धन कार्य के बाहर इस कार्य के बिना, केवल अकेले ही अपने लोगों की आगे बढ़ने के लिए अगुवाई कर रहा होता, तो तुम लोगों सहित इस मानवजाति के लिए लगातार आगे बढ़ते रहना कठिन होता, और यह मानवजाति और यह संसार निरन्तर विकसित होने में समर्थ नहीं होता। यही इस वाक्यांश "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" का महत्व है जिसके बारे में मैं आज तुम लोगों के साथ संवाद कर रहा हूँ।

परमेश्वर द्वारा मनुष्यजाति के लिए बनाया जाने वाला बुनियादी जीवित रहने का पर्यावरण

हमने इस वाक्यांश "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" के सम्बन्ध में बहुत से विषयों और विषयवस्तु पर बातचीत की है, किन्तु क्या तुम लोग अपने हृदय के भीतर जानते हो कि परमेश्वर तुम लोगों को अपने वचन की आपूर्ति करने और तुम लोगों पर अपनी ताड़ना एवं अपने न्याय के कार्य को क्रियान्वित करने के अलावा मनुष्यजाति को कौन सी चीज़ें प्रदान करता है? कुछ लोग कह सकते हैं, "परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह और आशीष प्रदान करता है; वह मुझे अनुशासन और राहत देता है, वह मुझे हर संभावित तरीके से देखरेख और सुरक्षा देता है।" अन्य लोग कहेंगे, "परमेश्वर मुझे प्रतिदिन भोजन और पेय प्रदान करता है," जबकि कुछ अन्य लोग यहाँ तक कहेंगे कि, "परमेश्वर मुझे सब कुछ देता है।" इन चीज़ों के बारे में जिनके सम्पर्क में लोग अपने दैनिक जीवन के दौरान आ सकते हैं, तुम सभी लोगों के पास कुछ उत्तर हो सकते हैं जो तुम लोगों के स्वयं के भौतिक जीवन अनुभव से सम्बन्धित हैं। परमेश्वर हर एक इंसान को बहुत सी चीज़ें देता है, यद्यपि जिसकी हम यहाँ पर चर्चा कर रहे हैं वह सिर्फ लोगों की दैनिक आवश्यकताओं के दायरे तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के देखने के क्षेत्र को बढ़ाने और

तुम लोगों को चीज़ों को एक बृहत् परिप्रेक्ष्य से देखने देने के आशय से है। चूँकि परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है, तो वह कैसे सभी चीज़ों के जीवन को बनाए रखता है? ताकि सभी चीज़ें लगातार अस्तित्व में बनी रह सकें, तो उनके अस्तित्व को बनाए रखने और उनके अस्तित्व की व्यवस्थाओं को बनाए रखने के लिए परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए क्या लाता है? यही वह मुख्य बिन्दु है जिसके बारे में हम आज चर्चा कर रहे हैं। जो कुछ मैंने कहा है क्या तुम लोग उसे समझे? हो सकता है कि इस विषय से तुम लोग बिल्कुल अपरिचित हो, परन्तु मैं ऐसे किसी सिद्धांत के बारे में बात नहीं करूँगा जो बहुत अधिक गहन हो। सुनने के बाद मैं तुम सभी लोगों को समझाने का प्रयास करूँगा। तुम लोगों को किसी बोझ को महसूस करने की आवश्यकता नहीं है—तुम लोगों को केवल सावधानी से सुनना है। हालाँकि, मुझे अभी भी इस पर थोड़ा और जोर देना हैः मैं जिस विषय के बारे में बोल रहा हूँ वह क्या है? मुझे बताओ। (परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है।) तो परमेश्वर कैसे सभी चीज़ें प्रदान करता है? परमेश्वर सभी चीज़ों को क्या प्रदान करता है जिसकी वजह से ऐसा कहा जा सकता है कि "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है"? क्या तुम लोगों की इस बारे में कोई धारणा या विचार हैं? ऐसा प्रतीत होता है कि यह विषय जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ उसे मूल रूप से तुम लोग अपने हृदय एवं अपने मन में बिल्कुल भी नहीं समझ रहे हो। परन्तु मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग उस विषय को और उन चीज़ों को जिनके बारे में मैं बात करने जा रहा हूँ परमेश्वर के कर्मों से जोड़ सकते हो, और उन्हें किसी ज्ञान के साथ जोड़ या किसी मानवीय संस्कृति या अनुसन्धान से बाँध नहीं सकते हो। मैं सिर्फ परमेश्वर और स्वयं परमेश्वर के बारे में बात कर रहा हूँ। तुम लोगों के लिए यही मेरा सुझाव है। तुम लोग समझे?

परमेश्वर ने मानवजाति को बहुत सी चीज़ें प्रदान की हैं। लोग जो कुछ देख सकते हैं, अर्थात्, जो वे महसूस कर सकते हैं, उसके बारे में बात करके मैं शुरूआत करने जा रहा हूँ। ये ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें लोग अपने भीतर समझ सकते हैं और स्वीकार कर सकते हैं। अतः परमेश्वर ने मनुष्यजाति को क्या आपूर्ति किया है इस पर चर्चा करने के लिए आओ हम पहले भौतिक जगत के साथ शुरूआत करें।

1. वायु

सबसे पहले, परमेश्वर ने वायु को बनाया ताकि मनुष्य साँस ले सके। "वायु" एक पदार्थ है जिसके साथ मनुष्यगण रोज संपर्क कर सकते हैं और यह एक ऐसी चीज़ है जिसके ऊपर मनुष्य हर पल निर्भर रहते हैं, यहाँ तक कि उस समय भी जब वह सोता है? वह वायु जिसका परमेश्वर ने सृजन किया है वह मनुष्यजाति

के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैः यह उनकी प्रत्येक श्वास एवं स्वयं उनके जीवन के लिए अति आवश्यक तत्व है। यह सार, जिसे केवल महसूस किया जा सकता है किन्तु देखा नहीं जा सकता है, सभी चीज़ों के लिए परमेश्वर की प्रथम भेंट थी। वायु का सृजन करने के बाद, क्या परमेश्वर ने बस दुकान बन्द कर दी थी? वायु का सृजन करने के बाद, क्या परमेश्वर ने वायु के घनत्व पर विचार किया? क्या परमेश्वर ने वायु के तत्वों का विचार किया? (हाँ।) जब परमेश्वर ने वायु को बनाया तो वह क्या सोच रहा था? परमेश्वर ने वायु को क्यों बनाया, और उसका तर्क क्या था? मनुष्यों को वायु की आवश्यकता होती है, और उन्हें श्वास लेने की आवश्यकता होती है। सबसे पहले, वायु का घनत्व मनुष्यों के फेफड़ों के लिए माकूल होना चाहिए। क्या कोई वायु के घनत्व को जानता है? यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे लोगों को जानने की आवश्यकता है; इसे जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमें वायु के घनत्व के सम्बन्ध में किसी सटीक संख्या की आवश्यकता नहीं है और एक साधारण अंदाजा होना ही अच्छा है। परमेश्वर ने ऐसे घनत्व के साथ वायु को बनाया जो साँस लेने हेतु मानवीय फेफड़ों के लिए बिल्कुल उपयुक्त होगी, अर्थात्, मनुष्य जब साँस अन्दर लें, तो वे सहज महसूस करें यह उनके शरीर को नुकसान नहीं पहुँचाएगी। वायु के घनत्व के पीछे यही अवधारणा है। तब हम वायु के तत्वों के बारे में बात करेंगे। पहली बात, वायु के तत्व मनुष्यों को नुकसान पहुँचाने वाले विषैले नहीं होते हैं और उससे फेफड़े और शरीर को नुकसान नहीं पहुँचेगा। परमेश्वर को इस सब के बारे में विचार करना था। परमेश्वर को विचार करना था कि वह वायु जो मनुष्य साँस से ले रहा है वह आसानी से भीतर और बाहर आनी-जानी चाहिए, और यह कि, भीतर श्वास लेने के बाद, वायु का तत्व और मात्रा ऐसी होनी चाहिए जिससे रक्त और साथ ही फेफड़ों और शरीर की बेकार हवा सही ढंग से चयापचय हो जाए, और साथ ही यह भी कि उस हवा में कोई ज़हरीले अवयव नहीं होने चाहिए। इन दो मानकों के सम्बन्ध में, मैं तुम लोगों में ज्ञान का ढेर नहीं भरना चाहता हूँ, बल्कि इसके बजाए बस तुम लोगों को यह जानने देना चाहता हूँ कि परमेश्वर के मस्तिष्क में एक विशेष वैचारिक प्रक्रिया थी जब उसने हर एक चीज़ को बनाया था—सर्वश्रेष्ठ। इसके अलावा, जहाँ तक वायु में धूल की मात्रा, पृथ्वी पर धूल, रेत एवं मिट्टी की मात्रा, और साथ ही वह धूल जो आकाश से नीचे आती है उसकी मात्रा की बात है—परमेश्वर के पास इन चीज़ों का प्रबंधन करने के लिए भी परमेश्वर के तरीके हैं, उन्हें दूर करने या उन्हें विघटित करने के तरीके। जबकि धूल की कुछ मात्रा है, किन्तु परमेश्वर ने इसे ऐसा बनाया कि धूल मनुष्य के शरीर एवं श्वसन को नुकसान नहीं पहुँचाए, और कि धूल के कण ऐसे आकार के हों जो शरीर के लिए नुकसानदेह न हों।

क्या परमेश्वर का वायु की रचना करना रहस्यमयी नहीं है? क्या यह उसके मुँह से हवा फूँकने के समान ही सरल था? (नहीं।) यहाँ तक कि उसके सरल चीज़ों के सृजन में भी, परमेश्वर का रहस्य, उसका मन, उसके विचार और उसकी बुद्धि सब कुछ स्पष्ट हैं। क्या परमेश्वर यथार्थवादी नहीं है? (हाँ, वह यथार्थवादी है।) अर्थात्, यहाँ तक कि किसी सरल चीज़ का सृजन करने में भी, परमेश्वर मनुष्यजाति के बारे में सोच रहा था। पहली बात, वह वायु जिसे मनुष्य साँस के साथ अंदर लेते हैं वह साफ है, उसके तत्व मनुष्य के श्वास लेने के लिए उपयुक्त हैं और, वे विषैले नहीं हैं और मनुष्य को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते हैं, और उसका घनत्व मनुष्य के श्वास लेने के लिए उपयुक्त है। यह वायु, जिसे मनुष्य श्वास के साथ अन्दर एवं बाहर लेते-निकालते हैं, उनके शरीर और उनकी देह के लिए जरूरी है। अतः मनुष्य मुक्त रूप से बिना किसी रूकावट या चिंता के साँस ले सकते हैं। वे सामान्य रूप से साँस ले सकते हैं। वायु वह है जिसका परमेश्वर ने आदि में सृजन किया था और जो मनुष्य के श्वास लेने के लिए अपरिहार्य है।

2. तापमान

दूसरी चीज़ है तापमान। हर कोई जानता है कि तापमान क्या होता है। तापमान एक ऐसी चीज़ हैं जिससे मनुष्य के जीवित रहने के लिए उपयुक्त वातावरण को अवश्य सुसज्जित होना चाहिए। यदि तापमान बहुत ही अधिक है, मान लीजिए यदि तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर है, तो क्या मनुष्यों के लिए बहुत क्षीण करने वाला नहीं होगा? क्या उनके जीने के लिए ये बेहद थकाऊ नहीं होगा? क्या होगा यदि तापमान बहुत नीचे है, और शून्य से 40 डिग्री सेल्सियस कम हो जाता है? मनुष्य तब भी इसे सहन नहीं कर पाएँगे। इसलिए, परमेश्वर ने तापमान के इस क्रम को निर्धारित करने में वास्तव में विशेष रूप से ध्यान दिया था। तापमान की जो सीमा मनुष्य के शरीर के अनुकूल है वह मूल रूप से -30 डिग्री सेल्सियस से 40 डिग्री सेल्सियस तक है। यह उत्तर से दक्षिण तक तापमान की बुनियादी सीमा है। ठण्डे प्रदेशों में, तापमान संभवतः -50 से -60 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। ऐसा प्रदेश एक ऐसा स्थान नहीं हैं जहाँ रहने के लिए परमेश्वर मनुष्य को अनुमति देता है। ऐसे ठण्डे प्रदेश क्यों हैं? इसके बीच परमेश्वर की बुद्धि और उसके इरादे निहित हैं। वह तुम्हें उन स्थानों के निकट जाने की अनुमति नहीं देता है। परमेश्वर उन स्थानों को सुरक्षित रखता है जो बहुत अधिक गर्म और बहुत अधिक ठण्डे हैं, अर्थात् वह मनुष्य को वहाँ रहने की अनुमति देने को तैयार नहीं है। ये मनुष्यजाति के लिए नहीं है। वह पृथ्वी पर ऐसे स्थानों का अस्तित्व क्यों रहने देता है? यदि परमेश्वर मनुष्यजाति को वहाँ रहने या वहाँ अस्तित्व में बने रहने की अनुमति नहीं देता

है, तो परमेश्वर उन्हें क्यों बनाता है? इसमें परमेश्वर की बुद्धि निहित है। अर्थात्, मनुष्यों के जीवित रहने के लिए वातावरण के बुनियादी तापमान को भी परमेश्वर के द्वारा न्यायसंगत रूप से समायोजित किया गया है। इसमें भी एक नियम है। परमेश्वर ने इस तापमान को बनाए रखने में सहायता करने, इस तापमान को नियन्त्रित करने के लिए कुछ चीज़ों को बनाया है। इस तापमान को बनाए रखने में कौन सी चीज़ों का उपयोग किया जाता है? सर्वप्रथम, सूर्य लोगों के लिए गर्माहट ला सकता है, किन्तु यदि यह बहुत अधिक गर्म हो तो क्या लोग इसे ले पाएँगे। क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो सूर्य के निकट जाने का साहस करता है? क्या पृथ्वी पर कोई उपकरण है जो सूर्य के करीब जा सकता है? (नहीं।) क्यों नहीं? यह अत्यधिक गर्म है। यह सूर्य के पास जाने से पिघल जाएगा। इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्यजाति से सूर्य की दूरी के विशिष्ट उपाय को कार्यान्वित किया है; उसने विशेष कार्य किया है। परमेश्वर के पास इस दूरी के लिए एक मानक है। साथ ही पृथ्वी में उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव भी हैं। वहाँ पूरी की पूरी हिमनद हैं। क्या मानवजाति हिमनदों पर रह सकती है? क्या यह मनुष्यों के रहने के लिए उपयुक्त है? (नहीं।) नहीं, अतः लोग वहाँ नहीं जायेंगे। चूँकि लोग उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव पर नहीं जाते, इसलिए हिमनद सुरक्षित रहेंगे, और वे अपनी भूमिका निभाने में समर्थ होंगे, जो तापमान को नियन्त्रित करने के लिए है। समझे? यदि उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव न हों और सूर्य हमेशा पृथ्वी पर चमकता रहे, तो पृथ्वी के सभी लोग गर्मी से मर जाएँगे। क्या परमेश्वर मनुष्यों के जीवित बचे रहने हेतु उपयुक्त तापमान को नियन्त्रित करने के लिए मात्र इन दो चीज़ों का ही उपयोग करता है? नहीं, सभी किस्म की जीवित चीज़ें भी हैं, जैसे मैदानों पर घास, जंगलों में विभिन्न प्रकार के वृक्ष और सब प्रकार के पौधे जो सूर्य की गर्मी को सोख लेते हैं और ऐसा करने में, सूर्य की ताप ऊर्जा को इस तरह से तटस्थ कर देते हैं जो उस पर्यावरण के तापमान को विनियमित कर देता है जिसमें मनुष्यजाति रहती है। जल के स्रोत भी हैं, जैसे नदियाँ एवं झीलें। नदियों एवं झीलों की सतह का क्षेत्रफल कुछ ऐसा नहीं है जिसे किसी के द्वारा निर्धारित किया जा सकता है। पृथ्वी पर कितना जल है, कहाँ जल प्रवाहित होता है, जिस दिशा में यह प्रवाहित होता है, जल की मात्रा या प्रवाह की गति को कोई नियन्त्रित नहीं कर सकता है? केवल परमेश्वर ही जानता है। जल के ये विभिन्न स्रोत, जिसमें भूमिगत जल और भूमि के ऊपर की नदियाँ और झीलें शामिल हैं जिन्हें लोग देख सकते हैं, भी उस तापमान को नियन्त्रित कर सकते हैं जिसमें मनुष्य रहते हैं। इसके सबसे ऊपर, हर प्रकार की भौगोलिक संरचनाएँ हैं, जैसे पहाड़, मैदान, घाटियाँ और आर्द्र भूमियाँ है; ये विभिन्न भौगोलिक संरचनाएँ और उनके सतही क्षेत्रफल और आकार सभी तापमान को

नियन्त्रित करने में भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि इस पर्वत की परिधि 100 किलोमीटर है, तो इन 100 किलोमीटर का 100-किलोमीटर का प्रभाव होगा। जहाँ तक केवल इसकी बात है कि परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर कितनी पर्वत मालाएँ और घाटियाँ बनायी हैं, तो यह ऐसा कुछ है जिसके विषय में परमेश्वर ने पूर्ण रूप से विचार किया है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के द्वारा रचना की गई प्रत्येक चीज़ के अस्तित्व के पीछे एक कहानी है, और ये परमेश्वर की बुद्धि एवं योजनाएँ से युक्त हैं। उदाहरण के लिए, वनों और सभी प्रकार की विभिन्न वनस्पतियों पर विचार करो—जिस विस्तार-क्षेत्र और सीमा-क्षेत्र में वे मौजूद हैं और उगते हैं, वह किसी भी मनुष्य के नियंत्रण से परे है, और इन चीज़ों पर किसी का भी प्रभाव नहीं है। इसी प्रकार, किसी मनुष्य का इस पर भी नियंत्रण नहीं है कि वे कितना जल सोखते हैं, न इस पर कि वे सूर्य से कितनी ताप-ऊर्जा सोखते हैं। ये सभी चीज़ें उस योजना के दायरे के भीतर आती हैं, जिसे परमेश्वर ने तब बनाया था, जब उसने सभी चीज़ों का सृजन किया था।

यह केवल परमेश्वर की सावधानीपूर्वक योजना, विचार और सभी पहलुओं में व्यवस्थाओं के कारण है कि मनुष्य एक वातावरण में एक ऐसे उपयुक्त तापमान के साथ रह सकता है। इसलिए, हर एक चीज़ जिसे मनुष्य अपनी आँखों से देखता है, जैसे कि सूर्य, उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव जिनके बारे में लोग अक्सर सुनते हैं, और साथ ही भूमि के ऊपर और नीचे तथा जल के विभिन्न जीवित प्राणी, और जंगलों का सतही क्षेत्रफल एवं अन्य प्रकार की वनस्पतियाँ, और जल के स्रोत, विभिन्न जलाशय, कितना समुद्री जल एवं मीठा पानी है, और विभिन्न भौगोलिक वातावरण—परमेश्वर मनुष्य के जीवित बचे रहने के लिए सामान्य तापमान को बरकरार रखने हेतु इन चीज़ों का उपयोग करता है। यह परम सिद्धांत है। यह केवल इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के पास ऐसे विचार हैं जिससे मनुष्य एक वातावरण में ऐसे उपयुक्त तापमान के साथ रहने में समर्थ होता है। यह न तो बहुत अधिक ठण्डा हो सकता है और न ही बहुत अधिक गर्म हो सकता हैः जो स्थान बहुत अधिक गर्म होते हैं और जहाँ तापमान उस सीमा से अधिक होता है जिसे मानव शरीर अनुकूलित कर सकता है वे निश्चित रूप से परमेश्वर के द्वारा तुम्हारे लिए नहीं बनाए गए हैं। जो स्थान बहुत अधिक ठण्डे हैं और जहाँ तापमान बहुत कम हैं; ऐसे स्थान जो, जैसे ही मनुष्य पहुँचेंगे, उन्हें कुछ ही मिनट में इतना जमा देंगे कि वे बोलने के काबिल भी नहीं रहेंगे, उनके दिमाग़ जम जाएँगे, वे सोचने के काबिल नहीं रहेंगे, और बहुत ही जल्द उनका दम घुट जाएगा—ऐसे स्थानों को भी परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के लिए नहीं बनाया जाता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि मनुष्य किस प्रकार का अनुसन्धान करना

चाहते हैं, या चाहे वे नई खोज करना चाहते हैं या ऐसी सीमाओं को तोड़ना चाहते हैं—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि लोग क्या सोचते हैं, वे कभी भी उन सीमाओं से पार जाने में समर्थ नहीं होंगे जो मानव शरीर अनुकूलित कर सकता है। वे कभी भी परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के लिए बनाई गई सीमाओं से छुटकारा पाने में समर्थ नहीं होंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने मानवजाति को बनाया है, परमेश्वर बहुत अच्छी तरह से जानता है कि किस तापमान तक मानव शरीर अनुकूलित कर सकता है। लेकिन मनुष्य स्वयं नहीं जानते हैं। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि मनुष्य नहीं जानते हैं? मनुष्यों ने किस प्रकार की मूर्खता भरी चीज़ें की हैं? क्या कुछ ऐसे लोग नहीं हैं जो हमेशा उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों को चुनौती देना चाहते हैं? वे उस भूमि पर कब्ज़ा करने के लिए हमेशा वहाँ जाना चाहते हैं, ताकि वे वहाँ जड़ जमा सकें और उसका विकास कर सकें। यह एक बेतुकेपन का कृत्य होगा। भले ही तुमने पूरी तरह से ध्रुवों का अनुसन्धान कर लिया हो, तो क्या? भले ही तुम ऐसे तापमानों पर स्वयं को अनुकूलित कर सकते हो, तुम वहाँ रह सकते हो, और तुम उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों के सजीव वातावरण को "सुधार" देते हो, तब भी क्या इससे मानवजाति को किसी तरह का लाभ पहुँच सकता है? मनुष्यजाति के पास एक ऐसा वातावरण है जिसमें वे जीवित रह सकते हैं, परन्तु वे बस शांतिपूर्ण ढंग से और विनम्रता से यहाँ नहीं रह सकते हैं, और उन्हें वहाँ जाना है जहाँ वे जीवित बचे नहीं रह सकते हैं। ऐसा मामला क्यों है? वे इस उपयुक्त तापमान में रहते हुए उकता गए हैं। उन्होंने बहुत से आशीषों का आनन्द उठाया है। इसके अतिरिक्त, इस सामान्य जीवित रहने के वातावरण को मानवजाति के द्वारा काफी हद तक नष्ट कर दिया गया है, इसलिए वे थोड़ा और नुकसान करने या किसी "मनोरथ" में संलग्न होने के लिए उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव पर भी जा सकते हैं, ताकि वे एक प्रकार के "प्रवर्तक" बन सकें। क्या यह मूर्खता नहीं है? अर्थात्, अपने पूर्वज शैतान की अगुवाई में, यह मनुष्यजाति, बेधड़क और निर्दयतापूर्वक उस सुन्दर आवास को नष्ट करते हुए जिसे परमेश्वर ने मानवजाति के लिए बनाया था, लगातार एक के बाद एक बेतुकी चीज़ें करती है। शैतान ने यही किया था। इसके अलावा, यह देखते हुए कि पृथ्वी पर मनुष्यजाति का जीवन थोड़ा खतरे में है, बहुत से लोग चाँद पर जा कर बसने के तरीके ढूँढ़ते हैं, वे बच निकलने के लिए एक मार्ग खोजने के लिए यह देखते हैं कि वे वहाँ रह सकते हैं या नहीं। अंत में, चाँद पर ऑक्सीजन नहीं है। क्या मानवजाति ऑक्सीजन के बिना जीवित बची रह सकती है? चूँकि चाँद में ऑक्सीजन का अभाव है, तो यह ऐसी जगह नहीं है जिस पर मनुष्य ठहर सकता है, और फिर भी मनुष्य वहाँ जाने की लगातार इच्छा बनाए रखता है। यह क्या है? यह

आत्म-विनाश है, है ना? यह ऐसा स्थान है जो वायु विहीन है, और तापमान मनुष्य के जीवित बचे रहने के लिए उपयुक्त नहीं है, इसलिए परमेश्वर के द्वारा इसे मनुष्य के लिए नहीं बनाया गया है।

अभी का हमारा विषय, तापमान, ऐसा विषय है, जिससे लोगों का अपने दैनिक जीवन में सामना होता रहता है। तापमान एक ऐसी चीज़ है, जिसे सभी मानव-शरीर महसूस कर सकते हैं, परंतु कोई इस बारे में नहीं सोचता कि तापमान आया कैसे, या कौन इसका प्रभारी है या कौन इसे इस तरह नियंत्रित करता है कि यह मनुष्य के अस्तित्व के लिए उपयुक्त रहता है। अभी हम इसी के बारे में जान रहे हैं। क्या इसके भीतर परमेश्वर की बुद्धि है? क्या इसके भीतर परमेश्वर की क्रिया है? (हाँ।) इस बात पर विचार करते हुए कि परमेश्वर ने मनुष्य के अस्तित्व के लिए एक उपयुक्त तापमान वाला वातावरण बनाया, क्या यह उन तरीकों में से एक है, जिनसे परमेश्वर सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है? (हाँ।) ऐसा है।

3. आवाज़

तीसरी चीज़ क्या है? यह कुछ ऐसी भी चीज़ है जिसे मानवजाति के लिए एक सामान्य जीवित रहने के वातावरण में अवश्य होना चाहिए। यह कुछ ऐसी चीज़ भी है जिसके साथ परमेश्वर को निपटना पड़ता था जब उसने सभी चीज़ों की रचना की थी। यह कुछ ऐसा है जो परमेश्वर के लिए और हर एक के लिए भी अति महत्वपूर्ण है। यदि परमेश्वर ने इसे सँभाला न होता, तो यह मानवजाति के जीवित बचे रहने के लिए एक बहुत बड़ी बाधा बन जाता। कहने का अर्थ है कि इसका मनुष्य के शरीर और जीवन पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता, इस हद तक कि मनुष्यजाति ऐसे वातावरण में जीवित रहने में समर्थ नहीं होती। ऐसा भी कहा जा सकता है कि सभी जीवित प्राणी ऐसे वातावरण में जीवित बचे नहीं रह सकते हैं। तो यह चीज़ क्या है? यह आवाज़ है। परमेश्वर ने हर एक चीज़ को बनाया, और हर चीज़ परमेश्वर के हाथों में जीवित रहती है। परमेश्वर की नज़रों में, सभी चीज़ें गतिमान और जीवित हैं। दूसरे शब्दों में परमेश्वर द्वारा सृजित प्रत्येक चीज़ के अस्तित्व का मूल्य एवं अर्थ है। अर्थात्, उन सभी के अस्तित्व के पीछे उन सभी की एक आवश्यकता है। परमेश्वर की नज़रों में हर चीज़ का एक जीवन है; प्रत्येक चीज़ के पास एक जीवन है; चूँकि वे सभी जीवित हैं, इसलिए वे आवाज़ उत्पन्न करेंगे। उदाहरण के लिए, पृथ्वी लगातार घूम रही है, सूर्य लगातार घूम रहा है, और चाँद भी लगातार घूम रहा है। सभी चीज़ों के बढ़ने और विकास और गति में निरन्तर आवाज़ उत्पन्न हो रही है। पृथ्वी की चीज़ें निरन्तर बढ़ रही हैं, विकसित हो रही हैं और गतिमान हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ों के आधार गतिमान हैं और स्थानांतरित हो रहे हैं, जबकि समुद्र की गहराईयों में

सभी जीवित चीज़ें गतिमान हैं और तैर रही हैं। इसका अर्थ है कि ये जीवित चीज़ें और परमेश्वर की नज़रों में सभी चीज़ें, लगातार, सामान्य रूप से, और नियमित रूप से गतिमान हैं। तो इन चीज़ों की गुप्त बढ़ोतरी और विकास और गति क्या लाती है? शक्तिशाली आवाज़ें। पृथ्वी के अलावा, सभी प्रकार के ग्रह भी लगातार गतिमान हैं, और इन ग्रहों की जीवित चीज़ें और इनके जीवधारी निरन्तर बढ़ रहे हैं, और विकसित हो रहे हैं और गतिमान हैं। अर्थात्, सभी चीज़ें जिनमें जीवन है और जिनमें जीवन नहीं है परमेश्वर की निगाहों में वे निरन्तर आगे बढ़ रही हैं, और साथ ही वे आवाज़ भी उत्पन्न कर रही हैं। परमेश्वर भी इन आवाज़ों से निपटा है। तुम लोगों को यह कारण पता होना कि चाहिए कि क्यों इन आवाज़ों से निपटा जाता है, है न? जब तुम किसी हवाई जहाज़ के करीब जाते हो, तो हवाई जहाज़ की गरज़ती हुई आवाज़ तुम्हारे साथ क्या करती है? तुम्हारे कान समय के साथ बहरे हो जायेंगे। क्या तुम्हारा हृदय उसे सह पाएगा? कुछ कमज़ोर हृदय वाले लोग उसे सहन नहीं कर पाएँगे। वास्तव में, यहाँ तक कि जिनके हृदय मज़बूत है वे भी इसे सहन नहीं कर पाएँगे यदि यह लंबे समय तक चलती है। अर्थात्, मनुष्य के शरीर पर आवाज़ का असर, चाहे यह कानों पर हो या हृदय पर, हर एक व्यक्ति के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है, और ऐसी आवाजें जो बहुत ही ऊँची होती हैं वे लोगों को नुकसान पहुँचाएँगी। इसलिए, जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की और उसके बाद जब उन्होंने सामान्य ढंग से कार्य करना शुरू कर दिया, तो परमेश्वर ने इन आवाज़ों को—सभी गतिमान चीज़ों की आवाज़ों को—उचित उपचार के जरिए स्थापित कर दिया। यह भी आवश्यक विचारों में से एक है जो परमेश्वर के पास तब था जब वह मनुष्यजाति के लिए एक वातावरण का सृजन कर रहा था।

सबसे पहले, पृथ्वी की सतह से वायुमण्डल की ऊँचाई आवाज़ों को प्रभावित करेगी। साथ ही, भूमि के बीच खालीपन का आकार भी आवाज़ में हेरफेर करेगा और उसे प्रभावित करेगा। फिर विभिन्न भौगोलिक पर्यावरणों का संगम है, वह भी आवाज़ को प्रभावित करेगा। अर्थात्, परमेश्वर कुछ आवाज़ों से छुटकारा पाने के लिए कुछ निश्चित पद्धतियों का उपयोग करता है, ताकि मनुष्य एक ऐसे वातावरण में ज़िन्दा रह सकें जिसे उनके कान और हृदय सह सकें। अन्यथा आवाज़ें मनुष्यजाति के जीवित रहने में एक बड़ी रूकावट लाएँगी; ये उनके जीवन में एक बड़ी परेशानी पैदा करेंगी। यह उनके लिए एक बड़ी समस्या होगी। अर्थात्, परमेश्वर ने भूमि, वायुमण्डल और विभिन्न प्रकार के भौगोलिक वातावरण को बनाते समय विशेष ध्यान रखा था। इन सभी चीज़ों में परमेश्वर की बुद्धि निहित है। इसके विषय में मनुष्यजाति की समझ

को बहुत अधिक विस्तृत होने की आवश्यकता नहीं है। उनको बस यह जानने की आवश्यकता है कि इसमें परमेश्वर का कार्य निहित है। अब तुम लोग मुझे बताओ, परमेश्वर ने जो कार्य किया क्या वो जरूरी था? जो कार्य परमेश्वर ने किया अर्थात, मनुष्यजाति के रहने के वातावरण और उसके सामान्य जीवन को बनाए रखने के लिए बहुत सटीकता से आवाज़ को हेरफेर करना, क्या ये जरूरी था? (हाँ।) यदि यह कार्य आवश्यक था, तो इस दृष्टिकोण से, क्या ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों की आपूर्ति के लिए ऐसी पद्धति का उपयोग किया था। परमेश्वर ने मानवजाति को ऐसा शांत वातावरण प्रदान किया था और उसके लिए ऐसा शांत वातावरण सृजित किया, ताकि मानव शरीर ऐसे वातावरण में बिना किसी व्यवधान के बहुत सामान्य तरह से रह सके, और ताकि वह अस्तित्व में बना रहने और सामान्य रूप से जीवन बिताने में समर्थ हो सके। क्या यह एक तरीका है जिससे परमेश्वर मनुष्यजाति के लिए आपूर्ति करता है? क्या यह कार्य जो परमेश्वर ने किया अति महत्वपूर्ण था? (हाँ।) यह बहुत आवश्यक था। तो कैसे तुम लोग इसकी सराहना करते हो? भले ही तुम लोग महसूस नहीं कर सकते हो कि यह परमेश्वर का कार्य था, और न ही तुम लोग जानते हो कि उस समय परमेश्वर ने इसे कैसे किया, तब भी क्या तुम लोग परमेश्वर के द्वारा इस कार्य को करने की आवश्यकता को महसूस कर सकते हो? क्या तुम लोग परमेश्वर की बुद्धि या उस देखरेख और उस विचार को महसूस कर सकते हो जिसे उसने इसमें डाला है? (हाँ।) बस उसे महसूस करने में समर्थ होना ही काफी है। यह पर्याप्त है। बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें परमेश्वर ने सभी चीज़ों के बीच किया है जिन्हें लोग महसूस नहीं कर सकते हैं। मेरा इसका यहाँ उल्लेख करने का उद्देश्य बस तुम लोगों को परमेश्वर के कार्यों के बारे में जानकारी देना है और यह इसलिए है ताकि तुम लोग परमेश्वर को जान सको। ये संकेत तुम लोगों को परमेश्वर को बेहतर ढंग से जानने एवं समझने दे सकते हैं।

4. प्रकाश

चौथी चीज़ लोगों की आँखों से संबंध रखती है : प्रकाश। यह भी बहुत महत्वपूर्ण है। जब तुम चमकता हुआ प्रकाश देखते हो, और उसकी यह चमक एक निश्चित क्षमता तक पहुँचती है, तो वह मनुष्य की आँखों को अंधा कर सकती है। आखिरकार, मनुष्य की आँखें देह की आँखें हैं। वे जलन को नहीं सह सकती हैं। क्या कोई सूर्य को सीधे घूरकर देखने की हिम्मत करता है? कुछ लोगों ने इसकी कोशिश की है, और अगर वे धूप का चश्मा पहने हों, तो वह ठीक काम करता है—लेकिन उसके लिए एक उपकरण के इस्तेमाल की आवश्यकता होती है। बिना उपकरणों के, मनुष्य की नंगी आँखों में सूर्य का सामना करने

और उसे सीधे घूरकर देखने का सामर्थ्य नहीं है। हालाँकि, परमेश्वर ने मानवजाति तक प्रकाश पहुँचाने के लिए ही सूर्य को सृजित किया, पर इस प्रकाश का भी उसने ध्यान रखा। सूर्य को सृजित करने के बाद परमेश्वर ने उसे ऐसे ही कहीं रखकर उपेक्षित नहीं छोड़ दिया; परमेश्वर ऐसे काम नहीं करता। वह अपनी क्रियाओं में बहुत सावधान रहता है और उनके बारे में गहराई से विचार करता है। परमेश्वर ने मनुष्यों के लिए आँखें सृजित कीं, ताकि वे देख सकें, और उसने अग्रिम रूप से प्रकाश के पैमाने भी तय कर दिए, जिनसे वे चीज़ों को देख सकते हैं। यदि पर्याप्त प्रकाश नहीं है तो यह काम नहीं करेंगी। यदि इतना अंधकार है कि लोग अपने सामने अपने हाथ को नहीं देख सकते हैं, तो उनकी आँखें अपनी कार्य प्रणाली को गँवा देंगी और किसी काम की नहीं होंगी। अत्यधिक चमक वाली कोई जगह मानवीय आँखों के लिए असहनीय होगी और वे कुछ भी देखने में समर्थ नहीं होंगे। अतः उस वातावरण में जहाँ मनुष्यजाति रहती है, परमेश्वर ने उन्हें प्रकाश की वह मात्रा दी है जो मानवीय आँखों के लिए उचित है। यह प्रकाश लोगों की आँखों को घायल नहीं करेगा या क्षति नहीं पहुँचाएगा। इसके अतिरिक्त, इसमें लोगों की आँखें काम करना बन्द नहीं करेंगी। इसीलिए परमेश्वर ने पृथ्वी और सूर्य के चारों ओर बादलों को फैला दिया, और हवा का घनत्व भी सामान्य रूप से उस प्रकाश को छानने में समर्थ है जो लोगों की आँखों या त्वचा को घायल कर सकता है। यह आपस में जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के द्वारा सृजित पृथ्वी का रंग भी सूर्य की रोशनी और हर प्रकार की रोशनी को परावर्तित करता है और प्रकाश की चमक के उस भाग से छुटकारा दिलाता है जो मनुष्य की आँखों को असहज कर देता है। उस तरह से, लोगों को बाहर घूमने और अपने जीवन को बिताने में समर्थ होने के लिए हमेशा अत्यंत काले धूप के चश्मे पहनने की आवश्यकता नहीं है। सामान्य परिस्थितियों के अन्तर्गत, मनुष्य की आँखें अपनी दृष्टि के दायरे के भीतर चीज़ों को देख सकती हैं और प्रकाश के द्वारा विघ्न नहीं डाला जाएगा। अर्थात्, यह प्रकाश न तो बहुत अधिक चुभने वाला और न ही बहुत अधिक धुँधला हो सकता हैः अगर यह बहुत धुँधला होगा, तो लोगों की आँखों को क्षति पहुँचेगी और थोड़े-से इस्तेमाल के बाद वे नष्ट हो जाएँगी; अगर यह बहुत चमकीला होगा, तो लोगों की आँखें उसे झेल नहीं पाएँगी। यह प्रकाश जो लोगों को मिलता हैं मनुष्य की आँखों के देखने के लिए उपयुक्त अवश्य होना चाहिए, और परमेश्वर ने विभिन्न तरीकों से प्रकाश से मनुष्य की आँखों को होने वाली क्षति को न्यूनतम कर दिया गया है; और हालाँकि यह प्रकाश मनुष्य की आँखों को लाभ या हानि पहुँचा सकता है, फिर भी यह लोगों को अपनी आँखों का इस्तेमाल जारी रखते हुए उन्हें उनके जीवन के अंत तक पहुँचने देने देने के

लिए पर्याप्त है। क्या परमेश्वर ने पूरी तरह से इस पर विचार नहीं किया था? फिर भी दुष्ट शैतान अपने मन में हमेशा ऐसे विचारों को लाए बिना काम करता है। शैतान के साथ प्रकाश हमेशा या तो बहुत चमकीला होता है या बहुत धुँधला। शैतान ऐसे ही काम करता है।

परमेश्वर ने मनुष्यजाति के जीवित रहने की अनुकूलता को बढ़ाने के लिए मानव शरीर के सभी पहलुओं के लिए इन चीज़ों को किया—देखना, सुनना, चखना, साँस लेना, महसूस करना ... ताकि वे सामान्य रूप से जी सकें और निरन्तर ऐसा करते रहे। अर्थात्, परमेश्वर के द्वारा बनाया गया ऐसा मौजूदा रहने का पर्यावरण ही वह रहने का पर्यावरण है जो मनुष्यजाति के जीवित बचे रहने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त और हितकारी है। कुछ लोग सोच सकते हैं कि यह बहुत ज़्यादा नहीं है और यह सब कुछ बहुत ही सामान्य है। आवाज़, प्रकाश और वायु ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में लोग सोचते हैं कि वे उनके साथ पैदा हुए हैं, ऐसी चीज़ें हैं जिनका आनन्द वे पैदा होने के क्षण से ही उठा सकते हैं। परन्तु इन चीजों के तुम्हारे आनंद के पीछे जो कुछ परमेश्वर ने किया वह कुछ ऐसा है जिसे जानने एवं समझने की उन्हें आवश्यकता है। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम्हें यह महसूस होता है या नहीं कि इन चीज़ों को समझने या जानने की कोई आवश्यकता है, संक्षेप में, जब परमेश्वर ने इन चीज़ों की रचना की, तब उसने बहुत सोच विचार किया था, उसकी एक योजना थी, उसकी कुछ अवधारणाएँ थीं। उसने ऐसे ही, अकस्मात, या बिना सोचे-विचारे मनुष्यजाति को ऐसे रहने के वातावरण में नहीं रखा। तुम लोग सोच सकते हो कि मैंने इनमें से प्रत्येक चीज़ के बारे में बहुत भव्य रूप से बोला है, किन्तु मेरे दृष्टिकोण से, प्रत्येक चीज़ जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति को प्रदान की है वह मानवजाति के ज़िन्दा रहने के लिए आवश्यक है। इसमें परमेश्वर का कार्य है।

5. वायु का प्रवाह

पाँचवीं चीज़ क्या है? यह चीज़ प्रत्येक मनुष्य के दैनिक जीवन से बहुत ज़्यादा जुड़ी हुई है, और यह संबंध मज़बूत है। यह कुछ ऐसा है जिसके बिना मानव शरीर इस भौतिक जगत में जीवित नहीं रह सकता है। यह चीज़ वायु का प्रवाह है। "वायु का प्रवाह" ऐसा शब्द है जिसे शायद सभी लोग समझते हैं। तो वायु का प्रवाह क्या है? तुम ऐसा कह सकते हो कि हवा के बहने को "वायु का प्रवाह" कहते हैं। वायु का प्रवाह वह हवा है जिसे मानवीय आँखें नहीं देख सकती हैं। यह एक ऐसा तरीका भी है जिससे गैस बहती है। किन्तु वायु का प्रवाह क्या है जिसके बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं? जैसे ही मैं कहूँगा तुम लोग समझ

जाओगे। पृथ्वी घूमती हुई पहाड़ों, महासागरों और सभी चीज़ों को उठाए रहती है, और जब यह घूमती है तो उसमें गति होती है। यद्यपि तुम किसी घूर्णन को महसूस नहीं कर सकते हो, फिर भी उसका घूर्णन वास्तव में विद्यमान है। उसका घूर्णन क्या लाता है? जब तुम दौड़ते हो तो तुम्हारे कानों के आस पास हवा होती है? यदि जब तुम दौड़ते हो तो हवा पैदा हो सकती है, तो जब पृथ्वी घूर्णन करती है हवा की शक्ति क्यों नहीं हो सकती है? जब पृथ्वी घूर्णन करती है, तब सभी चीज़ें गतिमान होती हैं। यह गतिवान होती है और एक निश्चित गति से घूर्णन करती है, जबकि पृथ्वी पर सभी चीज़ें निरन्तर आगे बढ़ रही और विकसित हो रही होती हैं। इसलिए, एक निश्चित गति से गतिमान होने से स्वाभाविक रूप से वायु का प्रवाह उत्पन्न होगा। वायु का प्रवाह ऐसा ही है। क्या यह वायु का प्रवाह कुछ निश्चित हद तक मानव शरीर को प्रभावित करेगा? सामान्य तूफ़ान उतने प्रबल नहीं होते हैं, किन्तु जब वे टकराते हैं, तो लोग स्थिर खड़े नहीं रह सकते हैं और उन्हें हवा में चलने में कठिनाई होती है। यहाँ तक कि एक कदम लेना भी कठिन होता है। यह इतना प्रबल होता है, कि कुछ लोगों को हवा के द्वारा किसी चीज़ के विरुद्ध धकेल दिया जाता है और वे हिल नहीं सकते हैं। यह एक तरीका है जिससे वायु का प्रवाह मानवजाति को प्रभावित कर सकता है। यदि सारी पृथ्वी मैदान से भरी होती, तो मानव शरीर के लिए वायु के उस प्रवाह के सामने टिकना अत्यंत कठिन होता जो पृथ्वी के घूर्णन और सभी चीज़ों के एक निश्चित गति से चलने के द्वारा उत्पन्न होता इसे सँभालना बहुत कठिन होता। यदि मामला ऐसा होता, तो वायु का यह प्रवाह न केवल मानवजाति के लिए क्षति लेकर आता, बल्कि विध्वंस भी लेकर आता। ऐसे पर्यावरण में कोई भी ज़िन्दा बचने में समर्थ नहीं होता। यही कारण है कि विभिन्न पर्यावरणों में ऐसे वायु के प्रवाहों का समाधान करने के लिए परमेश्वर विभिन्न भौगोलिक पर्यावरणों का उपयोग करता है, वायु के प्रवाह कमज़ोर पड़ जाते हैं, अपनी दिशाएँ बदल लेते हैं, अपनी गति बदल लेते हैं, और अपने बल को बदल लेते हैं। इसीलिए लोग पहाड़ों, पर्वत मालाओं, मैदानों, पहाड़ियों, घाटियों, तराईयों, पठारों एवं नदियों जैसे विभिन्न भौगोलिक पर्यावरणों को देख सकते हैं। परमेश्वर वायु के प्रवाह की गति, दिशा और बल को परिवर्तित करने के लिए इन विभिन्न भौगोलिक पर्यावरणों का उपयोग करता है, उसे एक उचित वायु गति, वायु दिशा और वायु बल में घटाने और हेरफेर करने के लिए वह ऐसी पद्धतियों का उपयोग करता है, ताकि मनुष्य के पास एक सामान्य रहने का वातावरण हो सके। क्या ऐसा करना आवश्यक है? (हाँ।) इस तरह का कुछ करना मनुष्य के लिए कठिन प्रतीत होता है, किन्तु यह परमेश्वर के लिए आसान है क्योंकि वह सभी चीज़ों का अवलोकन करता

है। उसके लिए मनुष्यजाति के लिए उपयुक्त वायु के प्रवाह वाला एक पर्यावरण बनाना बहुत सरल है, बहुत आसान है। इसलिए, परमेश्वर के द्वारा बनाए गए एक ऐसे पर्यावरण में, सभी चीज़ों के बीच हर एक चीज़ अपरिहार्य है। उन सभी के अस्तित्व का महत्व और आवश्यकता है। हालाँकि, यह दर्शन शैतान और भ्रष्ट कर दी गयी मनुष्यजाति की समझ में नहीं आता है। वे पहाड़ों को समतल भूमि बनाने, घाटियों को भरने, और कंक्रीट के जंगल बनाने के लिए समतल भूमि पर गगनचुम्बी इमारतें बनाने के व्यर्थ स्वप्न देखते हुए, लगातार ढहाते और निर्माण करते रहते हैं। यह परमेश्वर की आशा है कि मनुष्यजाति प्रसन्नता से रह सके, प्रसन्नता से प्रगति कर सके, और प्रत्येक दिन को उस उपयुक्त वातावरण में प्रसन्नता से बिता सके जिसे उसने उनके लिए बनाया है। इसीलिए जब मनुष्यजाति के रहने के लिए वातावरण से निपटने की बात आती है तो परमेश्वर कभी भी असावधान नहीं रहा है। तापमान से लेकर वायु तक, आवाज़ से लेकर प्रकाश तक, परमेश्वर ने जटिल योजनाएँ बनाई हैं और जटिल व्यवस्थाएँ की हैं, ताकि मनुष्यजाति के शरीर और उनके रहने का पर्यावरण प्राकृतिक स्थितियों से किसी व्यवधान के अधीन नहीं होगा, और उसके बजाए मनुष्यजाति जीवित रहने और बहुगुणित होने और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में सभी चीज़ों के साथ सामान्य रूप से जीने में समर्थ होगी। यह सब परमेश्वर के द्वारा सभी चीज़ों और मनुष्यजाति को प्रदान किया जाता है।

जिस तरह से वह मनुष्यजाति के जीवित बचे रहने के लिए इन पाँच बुनियादी स्थितियों से निपटा था, उससे क्या तुम, मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की आपूर्ति को देख सकते हो? (हाँ।) अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्यजाति के जीवित बचे रहने के लिए सबसे बुनियादी स्थितियों का सृजन किया। साथ ही, परमेश्वर इन चीज़ों को प्रबंधित और नियन्त्रित भी कर रहा है, और यहाँ तक कि अब भी, मानवजाति के हज़ारों सालों से अस्तित्व में रहने के बाद, परमेश्वर निरन्तर उनके रहने के पर्यावरण को बदल रहा है, और मनुष्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक उपयुक्त पर्यावरण प्रदान कर रहा है ताकि उनके जीवन को सामान्य रूप से बनाए रखा जा सके। इसे कब तक बनाए रखा जाएगा? दूसरे शब्दों में, परमेश्वर कितने समय तक ऐसा पर्यावरण प्रदान करता रहेगा? जब तक परमेश्वर अपने प्रबन्धन कार्य को पूर्ण नहीं कर लेता है। तब, परमेश्वर मनुष्यजाति के रहने के पर्यावरण को बदल देगा। यह उन्हीं पद्धतियों के द्वारा हो सकता है, या यह भिन्न-भिन्न पद्धतियों के माध्यम से हो सकता है, परन्तु अब लोगों को जिस चीज़ को वास्तव में जानने की आवश्यकता है वह है कि परमेश्वर लगातार मनुष्यजाति की आवश्यकताओं की आपूर्ति कर रहा है,

मनुष्यजाति के रहने के पर्यावरण को प्रबंधित कर रहा है, और मनुष्यजाति के रहने के पर्यावरण को बचा रहा है, उसकी सुरक्षा कर रहा है और उसे अनुरक्षित कर रहा है। यह ऐसे पर्यावरण के कारण ही है कि परमेश्वर के चुने हुए लोग इस तरह से सामान्य रूप से रहने में और परमेश्वर के उद्धार एवं उसकी ताड़ना और उसके न्याय को स्वीकार कर पाते हैं। परमेश्वर के शासन के कारण सभी चीज़ें निरन्तर अस्तित्व में बनी हुई हैं, जबकि इस तरह से परमेश्वर की आपूर्ति के कारण संपूर्ण मनुष्यजाति लगातार आगे बढ़ रही है।

क्या यह भाग जिसके बारे में मैंने अभी-अभी चर्चा की है तुम लोगों के लिए कुछ नए विचार लाया है? क्या अब तुम लोगों को परमेश्वर ओर मनुष्यजाति के बीच के बड़े अन्तर का आभास होता है? बस सभी चीज़ों का स्वामी कौन है? क्या मनुष्य है? (नहीं।) तो जिस प्रकार परमेश्वर और मनुष्य सभी चीज़ों के साथ निपटते हैं उसके बीच क्या अन्तर है? (परमेश्वर सभी चीज़ों के ऊपर शासन करता है और उनकी व्यवस्था करता है, जबकि मनुष्य उन सबका आनन्द लेता है।) क्या तुम लोग उन वचनों से सहमत हो? परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच में सबसे बड़ा अन्तर है कि परमेश्वर सभी चीज़ों के ऊपर शासन करता है और सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है। परमेश्वर प्रत्येक चीज़ का स्रोत है, और मनुष्यजाति सभी चीज़ों का आनन्द लेती है जबकि परमेश्वर उनकी आपूर्ति करता है। अर्थात्, मनुष्य तब सभी चीज़ों का आनन्द उठाता है जब वह उस जीवन को स्वीकार कर लेता है जिसे परमेश्वर सभी चीज़ों को प्रदान करता है। मनुष्यजाति परमेश्वर के द्वारा सभी चीज़ों के सृजन के परिणामों का आनन्द उठाती है, जबकि परमेश्वर स्वामी है। तो सभी चीज़ों के दृष्टिकोण से, परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच क्या अन्तर है? परमेश्वर सभी चीज़ों के विकास के तरीके को साफ-साफ देख सकता है, और सभी चीज़ों के विकास के तरीके को नियन्त्रित करता है और उस पर वर्चस्व रखता है। अर्थात्, सभी चीज़ें परमेश्वर की दृष्टि में हैं और उसके निरीक्षण के दायरे के भीतर हैं। क्या मनुष्यजाति सभी चीज़ों को देख सकती है? मनुष्यजाति जो देखती है वह सीमित है, ये केवल वही हैं जिन्हें वे अपनी आँखों के सामने देखते हैं। यदि तुम इस पर्वत पर चढ़ते हो, तो जो तुम देखते हो वह यह पर्वत है। पर्वत के उस पार क्या है तुम उसे नहीं देख सकते हो। यदि तुम समुद्र तट पर जाते हो, तो तुम महासागर के इस भाग को देखते हो, परन्तु तुम नहीं जानते हो कि महासागर का दूसरा भाग किसके समान है। यदि तुम इस जंगल में आते हो, तो तुम उन पेड़ पौधों को देख सकते हो जो तुम्हारी आँखों के सामने और तुम्हारे चारों ओर हैं, किन्तु जो कुछ और आगे है उसे तुम नहीं देख सकते हो। मनुष्य उन स्थानों को नहीं देख

सकते हैं जो अधिक ऊँचे, अधिक दूर और अधिक गहरे हैं। वे उस सब को ही देख सकते हैं जो उनकी आँखों के सामने हैं और उनकी दृष्टि के क्षेत्र के भीतर है। भले ही मनुष्य एक वर्ष की चार ऋतुओं के तरीके और सभी चीज़ों के विकास के तरीके को जानते हों, फिर भी वे सभी चीज़ों को प्रबंधित करने या उन पर वर्चस्व रखने में असमर्थ हैं। दूसरी ओर, जिस तरह से परमेश्वर सभी चीज़ों को देखता है वह ऐसा है जैसे परमेश्वर किसी मशीन को देखता है जिसे उसने व्यक्तिगत रूप से बनाया है। वह हर एक अवयव को बहुत ही अच्छी तरह से जानेगा। इसके सिद्धांत क्या हैं, इसके तरीके क्या हैं, और इसका उद्देश्य क्या है—परमेश्वर इन सभी चीज़ों को सीधे-सीधे और स्पष्टता से जानता है। इसलिए परमेश्वर परमेश्वर है, और मनुष्य मनुष्य है! भले ही मनुष्य विज्ञान और सभी चीज़ों के नियमों पर अनुसन्धान करता रहे, फिर भी यह एक सीमित दायरे में होता है, जबकि परमेश्वर सभी चीज़ों को नियन्त्रित करता है। मनुष्य के लिए, यह असीमित है। यदि मनुष्य किसी छोटी सी चीज़ पर अनुसन्धान करते हैं जिसे परमेश्वर ने किया था, तो वे उस पर अनुसन्धान करते हुए बिना किसी सच्चे परिणाम को हासिल किए अपना पूरा जीवन बिता सकते हैं। इसीलिए यदि ज्ञान का और परमेश्वर का अध्ययन करने के लिए जो कुछ भी तुमने सीखा है उसका उपयोग करते हो, तो तुम कभी भी परमेश्वर को जानने या समझने में समर्थ नहीं होगे। किन्तु यदि तुम सत्य को खोजने और परमेश्वर को खोजने के मार्ग का उपयोग करते हो, और परमेश्वर को जानने के दृष्टिकोण से परमेश्वर की ओर देखते हो, तो एक दिन तुम स्वीकार करोगे कि परमेश्वर के कार्य और उसकी बुद्धि हर जगह है, और तुम यह भी जान जाओगे कि बस क्यों परमेश्वर को सभी चीज़ों का स्वामी और सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत कहा जाता है। तुम्हारे पास जितना अधिक ऐसा ज्ञान होगा, तुम उतना ही अधिक समझोगे कि क्यों परमेश्वर को सभी चीज़ों का स्वामी कहा जाता है। सभी चीज़ें और प्रत्येक चीज़, जिसमें तुम भी शामिल हो, निरन्तर परमेश्वर की आपूर्ति के नियमित प्रवाह को प्राप्त कर रही हैं। तुम भी स्पष्ट रूप से आभास करने में समर्थ हो जाओगे कि इस संसार में, और इस मनुष्यजाति के बीच, परमेश्वर के पृथक और कोई नहीं है जिसके पास सभी चीज़ों के ऊपर शासन करने, उनका प्रबन्धन करने, और उन्हें अस्तित्व में बनाए रखने की ऐसी सामर्थ्य और ऐसा सार हो सकता है। जब तुम ऐसी समझ प्राप्त कर लोगे, तब तुम सच में स्वीकार करोगे कि परमेश्वर तुम्हारा परमेश्वर है। जब तुम इस स्थिति तक पहुँच जाते हो, तब तुमने सचमुच में परमेश्वर को स्वीकार कर लिया है और तुमने उसे अपना परमेश्वर एवं अपना स्वामी बनने दिया है। जब तुम्हारे पास ऐसी समझ होगी और तुम्हारा जीवन ऐसी स्थिति पर पहुँच जाएगा, तो परमेश्वर अब

और तुम्हारी परीक्षा नहीं लेगा और तुम्हारा न्याय नहीं करेगा, और न ही वह तुमसे कोई माँग करेगा, क्योंकि तुम परमेश्वर को समझते हो, उसके हृदय को जानते हो, और तुमने परमेश्वर को सच में अपने हृदय में स्वीकार कर लिया है। सभी चीज़ों पर परमेश्वर के वर्चस्व और प्रबंधन के बारे में इन विषयों पर बातचीत करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कारण है। यह लोगों को और अधिक ज्ञान एवं समझ देने के लिए है; मात्र तुमसे स्वीकार करवाने के लिए नहीं, बल्कि तुम्हें परमेश्वर के कार्यकलापों का और अधिक व्यावहारिक ज्ञान एवं समझ देने के लिए है।

दैनिक भोजन एवं पेय जो परमेश्वर मनुष्यजाति के लिए तैयार करता है

हमने अभी-अभी समग्र पर्यावरण के एक भाग के बारे में बात की थी, अर्थात्, मनुष्य के जीवित बचे रहने के लिए उन ज़रूरी स्थितियों की जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए तैयार किया था जबसे उसने संसार को बनाया था। हमने बस पाँच चीज़ों के बारे में बात की, और ये पाँच चीज़ें समग्र पर्यावरण हैं। आगे हम जिसके बारे में बात करने जा रहे हैं वह देह वाले प्रत्येक मनुष्य के जीवन से करीब से संबंधित है। यह एक आवश्यक स्थिति है जो शरीर वाले किसी व्यक्ति के जीवन के अधिक अनुरूप और उससे अधिक मेल खाती है। यह चीज़ भोजन है। परमेश्वर ने मनुष्य का सृजन किया और उसे एक उपयुक्त रहने के पर्यावरण में रख दिया। तत्पश्चात, मनुष्यों को भोजन और जल की आवश्यकता पड़ी। मनुष्य को ऐसी आवश्यकता थी, इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य के लिए ऐसी सामग्रियों को बनाया। इसलिए, परमेश्वर के कार्य का हर कदम और उसके द्वारा की जाने वाली हर चीज़ मात्र खोखले वचन नहीं हैं, बल्कि वास्तव में कार्यान्वित किए जा रहे हैं। क्या भोजन कुछ ऐसा है जिसके बिना लोग अपने दैनिक जीवन में नहीं रह सकते हैं? क्या भोजन वायु से अधिक महत्वपूर्ण है? वे समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। ये मनुष्यजाति के जीवित रहने और मानव जीवन की निरंतरता का संरक्षण करने के लिए आवश्यक स्थितियाँ और चीज़ें दोनों हैं। क्या वायु अधिक महत्वपूर्ण है या जल अधिक महत्वपूर्ण है? क्या तापमान अधिक महत्वपूर्ण है या भोजन अधिक महत्वपूर्ण है? ये सभी महत्वपूर्ण हैं। लोग चुनाव नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे उनमें से किसी के बिना नहीं रह सकते हैं। यह एक वास्तविक समस्या है, यह कुछ ऐसा नहीं है जिसका तुम चुनाव कर सकते हो। तुम नहीं जानते हो, किन्तु परमेश्वर जानता है। जब तुम भोजन को देखोगे, तो तुम महसूस करोगे, "मैं भोजन के बिना नहीं रह सकता हूँ!" किन्तु यदि तुम्हारा सृजन करने के तुरन्त बाद, क्या तुम जानते थे कि तुम्हें भोजन की आवश्यकता है? तुम नहीं जानते, परन्तु परमेश्वर जानता है। यह केवल तब होता है जब तुम्हें भूख लगती है

और तुम देखते हो कि तुम्हारे खाने के लिए पेड़ों पर फल हैं और भूमि पर अनाज है कि तुम महसूस करते हो कि तुम्हें भोजन की आवश्यकता है। जब तुम प्यासे होते हो, सामने पानी का झरना देखते हो, और जब तुम पानी पीते हो तभी तुम महसूस करते हो कि तुम्हें पानी की आवश्यकता है। जल को परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के लिए बनाया गया है। जहाँ तक भोजन की बात है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि तुम एक दिन में तीन बार, एक दिन में दो बार, या उससे अधिक बार भोजन करते हो; संक्षेप में, भोजन कुछ ऐसा है जिसके बिना मनुष्य अपने दैनिक जीवन में नहीं रह सकते हैं। यह उन चीज़ों में से एक है जो मानव शरीर को सामान्य रूप से जीवित रखने और उसे बनाए रखने के लिए आवश्यक है। तो भोजन मुख्यतः कहाँ से आता है? पहले, वह मिट्टी से आता है। मिट्टी को परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के लिए बनाया गया था। मिट्टी सिर्फ पेड़ों और घास के लिए ही नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के पौधों के जीवित रहने के लिए उपयुक्त है। परमेश्वर ने सभी किस्म के अनाजों और विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों के बीजों को, और उसने बोने के लिए मनुष्यजाति को उपयुक्त मिट्टी एवं भूमि दी, और इस चीज़ों के साथ, मनुष्यजाति खाद्य पदार्थ प्राप्त करती है। यहाँ किस प्रकार के खाद्य पदार्थ हैं? तुम लोगों को इस विषय में स्पष्ट होना चाहिए, है न? पहला, विभिन्न प्रकार के अनाज हैं। अनाजों में क्या शामिल हैं? गेहूँ, जुवार, बाजरा, चावल..., वे चीज़ें जो छिलके के साथ आती हैं। अनाज की फसलों को भी अनेक भिन्न-भिन्न किस्मों में बाँटा जाता है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक अनेक प्रकार के अनाज की फसलें हैं, जैसे कि जौ, गेहूँ, जई और कुट्टू। भिन्न-भिन्न किस्में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उगाने के लिए उपयुक्त हैं। विभिन्न किस्म के चावल भी हैं। दक्षिण में उसकी अपनी किस्में हैं, जो लम्बे होते हैं और दक्षिण के लोगों के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि वे बहुत अधिक चिपचिपे नहीं होते हैं। चूँकि दक्षिण में पर्यावरण अधिक गर्म होता है, इसलिए उन्हें विभिन्न किस्म के चावल खाने पड़ते हैं जैसे इण्डिका चावल। यह बहुत चिपचिपा नहीं हो सकता है अन्यथा वे उसे खा नहीं पाएँगे और वे अपनी भूख गँवा देंगे। उत्तर के लोगों के द्वारा खाया जाने वाला चावल अधिक चिपचिपा होता है। चूँकि उत्तर हमेशा अधिक ठण्डा होता है, इसलिए उन्हें चिपचिपा चावल खाना पड़ता है। उसके अतिरिक्त, विभिन्न किस्मों की फलियाँ हैं। इन्हें ज़मीन के ऊपर उगाया जाता है। ऐसी भी चीज़ें हैं जिन्हें ज़मीन के नीचे उगाया जाता है, जैसे कि आलू, शकरकंद, अरबी, इत्यादि। आलू उत्तर में पैदा होते हैं। उत्तर में आलुओं की गुणवत्ता बहुत अच्छी होती है। जब लोगों के पास खाने के लिए अनाज नहीं होता है, तो आलू उनके आहार का मुख्य हिस्सा हो सकते हैं ताकि वे दिन में तीन भोजन करना बनाए रख सकें। आलू भी एक खाद्य

आपूर्ति हो सकते हैं। गुणवत्ता के मामले में शकरकंद उतने अच्छे नहीं होते हैं जितने आलू होते हैं, किन्तु तब भी एक दिन में अपने तीन भोजन करना बनाए रखने के लिए मुख्य भोजन के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। जब अनाज अभी तक उपलब्ध नहीं होता है, तो लोग अपने पेट भरने के लिए शकरकंद का उपयोग कर सकते हैं। अरबी, जिसे प्रायः दक्षिण के लोगों द्वारा खाया जाता है, का उसी तरह से उपयोग किया जा सकता है, और यह भी एक मुख्य भोजन हो सकती है। ये विभिन्न अनाज हैं, लोगों के प्रतिदिन के भोजन एवं पेय के लिए एक आवश्यकता। लोग नूडल्स, भाप में पकी हुई पाव रोटियाँ, और चावल के नूडल्स बनाने के लिए विभिन्न अनाजों का उपयोग करते हैं। परमेश्वर ने इन विभिन्न किस्मों के अनाज प्रचुरता के साथ मनुष्यजाति को प्रदान किए हैं। इतनी सारी किस्में क्यों हैं? इसमें परमेश्वर के इरादे को पाया जा सकता हैः एक ओर, यह उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की भिन्न-भिन्न मिट्टियों और जलवायु के लिए उपयुक्त हैं; दूसरी ओर, इन अनाजों के विभिन्न अवयव और तत्व मानव शरीर के विभिन्न अवयवों एवं तत्वों के अनुरूप हैं। लोग केवल इन अनाजों को खा कर ही अपने शरीर के लिए आवश्यक विभिन्न पोषक तत्वो और अवयवों को बनाए रख सकते हैं। भले ही उत्तरी भोजन और दक्षिणी भोजन भिन्न-भिन्न हैं, फिर भी उनमें भिन्नताओं की तुलना में समानताएँ बहुत अधिक हैं। ये सभी भोजन मानव शरीर की सामान्य आवश्यकताओं को पूरी तरह से सन्तुष्ट कर सकते हैं और मानव शरीर की सामान्य उत्तर-जीविता को बनाए रख सकते हैं। अतः, विभिन्न क्षेत्रों में पैदा हुई प्रजातियाँ बहुत प्रचुरता में क्यों होती हैं इसका कारण है कि ऐसे भोजन के द्वारा जो प्रदान किया जाता है उसकी मानव शरीर को आवश्यकता होती है। उन्हें उसकी जरूरत है जो विभिन्न खाद्य पदार्थों के द्वारा प्रदान किया जाता है जिन्हें मानव शरीर की सामान्य उत्तर-जीविता को बनाए रखने और एक सामान्य मानवीय जीवन प्राप्त करने के लिए मिट्टी से उगाया जाता है। संक्षेप में, परमेश्वर मनुष्यजाति के प्रति बहुत विचारशील था—परमेश्वर के द्वारा लोगों को प्रदान किए गए विभिन्न खाद्य पदार्थ नीरस नहीं हैं—वे बहुत व्यापक हैं। यदि लोग अनाज खाना चाहते हैं तो वे अनाज खा सकते हैं। कुछ लोगों को नूडल्स खाना पसंद नहीं है, वे चावल खाना चाहते हैं तो वे चावल खा सकते हैं। सभी किस्मों के चावल हैं—लम्बे चावल, छोटे चावल, और वे सभी लोगों के स्वाद को सन्तुष्ट कर सकते हैं। इसलिए, यदि लोग इन अनाजों को खाते हैं—यदि वे अपने भोजन में बहुत अधिक मीन मेख निकालने वाले नहीं हैं—तो उन्हें पोषक तत्वों का अभाव नहीं होगा और बुढ़ापे तक उनका स्वस्थ रहना निश्चित है। यही मूल अवधारणा परमेश्वर के मस्तिष्क में थी जब उसने मनुष्यजाति को भोजन प्रदान किया था। मानव शरीर

इन चीज़ों के बिना नहीं रह सकता है—क्या यह वास्तविकता नहीं है? मनुष्यजाति इन वास्तविक समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती है, किन्तु परमेश्वर ने पहले से ही इसे पूरी तरह से तैयार कर लिया था और सोच लिया था। परमेश्वर ने चीज़ों को पहले से ही मनुष्यजाति के लिए तैयार करवा लिया था।

परमेश्वर ने मनुष्यजाति को इन चीज़ों से कहीं बढ़कर दिया है—यहाँ सब्जियाँ भी हैं। जब तुम चावल खाते हो, यदि तुम सिर्फ चावल ही खाते हो, तो हो सकता है कि तुम में पोषक तत्वों की कमी हो जाए। तब यदि तुम कुछ छोटे-छोटे व्यंजनों को हिलाकर-तलोगे या भोजन के साथ सलाद मिलाओगे, तो सब्जियों के विटामिन और विभिन्न सूक्ष्म तत्व या अन्य पोषक तत्व बहुत ही समान्य तरीके से मानव शरीर की आवश्यकताओं की आपूर्ति करने में समर्थ होंगे। जब लोग मुख्य भोजन नहीं खा रहे होते हैं तो वे कुछ फल भी खा सकते हैं, है न? कभी-कभी, जब लोगों को और अधिक तरल पदार्थ या अन्य पोषक तत्वों या विभिन्न स्वादों की आवश्यकता होती है, तो उनकी आपूर्ति के लिए सब्जियाँ और फल भी हैं। चूँकि उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की मिट्टी और जलवायु भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए उनकी सब्जियों और फलों की भी भिन्न-भिन्न किस्में हैं। चूँकि दक्षिण में जलवायु बहुत गर्म होती है, अधिकांश फल और सब्जियाँ ठण्डे-प्रकार की होती हैं जो लोगों के शरीरों की ठण्डक और गर्मी को सन्तुलित कर सकती हैं जब वे उन्हें खाते हैं। दूसरी ओर, उत्तर में सब्जियों और फलों की कम किस्में हैं, किन्तु फिर भी वे उत्तर के लोगों के आनन्द उठाने के लिए पर्याप्त हैं। हालाँकि, हाल ही के वर्षों में सामाजिक विकास के कारण, तथाकथित सामाजिक प्रगतियों, और साथ ही उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाले परिवहन और संचारों में सुधारों के कारण, उत्तर के लोग भी दक्षिण के कुछ फलों और सब्जियों, अथवा क्षेत्रीय उत्पादों को खा पाते हैं और वे ऐसा वर्ष के चारों मौसमों में कर सकते हैं। उस तरह से, यद्यपि लोग अपनी भूख और अपनी भौतिक इच्छाओं को पूरा करने में समर्थ हैं, फिर भी उनके शरीर अनजाने में विभिन्न स्तरों के नुकसान के अधीन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के लिए तैयार किए गए खाद्य पदार्थों के बीच, ऐसे खाद्य पदार्थ और फल और सब्जियाँ हैं जो दक्षिण के लोगों के लिए उपयुक्त हैं, और साथ ही ऐसे खाद्य पदार्थ और फल एवं सब्जियाँ है जो उत्तर के लोगों के लिए उपयुक्त हैं। अर्थात्, यदि तुम दक्षिण में पैदा हुए थे, तो दक्षिण की चीज़ों को खाना तुम्हारे लिए बहुत उपयुक्त है। परमेश्वर ने इन खाद्य पदार्थों और फलों और सब्जियों को तैयार किया है क्योंकि दक्षिण की एक विशेष जलवायु है। उत्तर के खाद्य पदार्थ हैं जो उत्तर के लोगों के शरीर के लिए आवश्यक हैं। किन्तु क्योंकि लोगों की पेटूपन की हद तक भोजनेच्छा होती है, इसलिए,

उनसे अनजाने में ऐसे नियमों का उल्लंघन करवाते हुए, उन्हें अनजाने में ही सामाजिक विकास की लहर में बहा दिया गया है। यद्यपि लोग महसूस करते हैं कि उनका जीवन अब बेहतर है, फिर भी ऐसी सामाजिक प्रगति और अधिक लोगों के शरीरों के लिए छुपे हुए नुकसान लाती है। यह वह नहीं है जो परमेश्वर देखना चाहता है, और यह वह नहीं था जिसका परमेश्वर ने तब इरादा किया था जब जब उसने मनुष्यजाति को ये खाद्य पदार्थ, फल एवं सब्जियाँ प्रदान की थी। यह मनुष्यजाति के द्वारा उन नियमों का उल्लंघन करने के कारण हुआ था जो परमेश्वर ने स्थापित किए थे।

इसके अतिरिक्त, जो कुछ परमेश्वर ने मनुष्यजाति को दिया है वह समृद्ध एवं भरपूर है, और हर एक स्थान की अपनी स्वयं की स्थानीय विशिष्टताएँ हैं। उदाहरण के लिए, कुछ स्थान लाल खजूर से समृद्ध हैं (जिसे सामान्य रूप से बेर के रूप में जाना जाता है), जबकि अन्य स्थान अखरोट, मूंगफली, और अन्य विभिन्न प्रकार के मेवों से समृद्ध हैं। ये सभी भौतिक चीज़ें मानव शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करती हैं। परन्तु परमेश्वर मनुष्यजाति के लिए मौसम एवं समय के अनुसार चीज़ों की आपूर्ति करता है, और सही समय पर सही मात्रा में चीज़ों को प्रदान भी करता है। जबसे उसने मनुष्यजाति को बनाया था तभी से मनुष्यजाति शारीरिक आनन्द का लालच करती है और वह पेटू है, और इस बात से मानवजाति की प्रगति के सामान्य नियमों का उल्लंघन करना और नुकसान पहुँचाना आसान हो गया है। आओ, उदाहरण के रूप में चेरी को लें। ये जून के आसपास पक जाती हैं। सामान्य परिस्थितियों के अन्तर्गत, ये अगस्त तक समाप्त हो जाती हैं? चेरी केवल दो महीनों तक ही ताज़ा रहती हैं, किन्तु वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से लोग इसे 12 महीनों तक, यहाँ तक कि चेरी के अगले मौसम तक भी, बढ़ाने में समर्थ हैं। इसका मतलब है पूरे साल भर चेरी मिल सकती हैं। क्या यह घटना सामान्य है? (नहीं।) तो चेरी खाने का सबसे बढ़िया मौसम कब है? यह जून से लेकर अगस्त तक की अवधि है। इस सीमा से परे, चाहे तुम उन्हें कितना भी ताज़ा क्यों न रखो, उनका स्वाद वैसा नहीं होता है, और न ही वे वैसी रहती हैं जिसकी आवश्यकता मानव शरीर को होती है। एक बार उनकी अवधि समाप्त हो जाने पर, चाहे तुम कैसी भी रासायनिक चीज़ों का उपयोग क्यों न करो, तुम कभी भी उसे उस तरह का नहीं पा सकोगे जैसी वह प्राकृतिक रूप से उगने के समय थी। इसके अतिरिक्त, रसायन मनुष्य को जो नुकसान पहुँचाते हैं वह कुछ ऐसा है जिसे हटाने या बदलने के लिए कोई कुछ नहीं कर सकता है। तो वर्तमान बाज़ार की अर्थव्यवस्था लोगों के लिए क्या लेकर आती है? लोगों के जीवन बेहतर दिखाई देते हैं, चारों दिशाओं का परिवहन वास्तव में सुविधाजनक हो गया

है, और लोग साल के चारों मौसमों में सभी प्रकार के फल खा सकते हैं। उत्तर के लोग प्रायः दक्षिण के केले तथा कोई भी खाद्य पदार्थ, स्थानीय विशिष्टताएँ या फल खा सकते हैं। किन्तु यह वह जीवन नहीं है जो परमेश्वर मनुष्यजाति को देना चाहता है। इस प्रकार की बाज़ार अर्थव्यस्था लोगों के जीवन में कुछ लाभ तो ले कर आती है किन्तु यह कुछ नुकसान भी ला सकती है। बाज़ार में बहुतायत की वजह से, बहुत से लोग किसी भी चीज़ को खाते हैं, वे बिना विचार किए खाते हैं। इससे प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन होता है, और यह उनके स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है। इसलिए बाज़ार की अर्थव्यवस्था लोगों के लिए सच्ची खुशी नहीं ला सकती है। एक नज़र डालो। क्या साल के चारों मौसमों में बाज़ार में अंगूर बेचे नहीं जाते है? अंगूर तोड़े जाने के बाद वास्तव में केवल थोड़े समय के लिए ही ताज़े रह सकते हैं। यदि तुम उन्हें अगले जून तक बचाकर रखते हो, तो क्या तब भी उन्हें अंगूर कहा जा सकता है? क्या तुम उन्हें कचरा कह सकते हो? उनमें न केवल अंगूर के मूल संघटक अब और नहीं रहते हैं, बल्कि अब उनमें रसायन अधिक रहते हैं। एक साल के बाद, वे न केवल ताज़े नहीं रहते हैं, बल्कि उनके पोषक तत्व भी बहुत पहले जा चुके होते हैं। जब लोग अंगूर खाते हैं, तो उन्हें महसूस होता हैः "कितना अच्छा है! क्या हम 30 साल पहले इस मौसम के दौरान अंगूर खा पाते थे? तुम इन्हें नहीं खा सकते थे भले ही तुम खाना चाहते थे। अब जीवन कितना उत्तम हो गया है!" क्या यह वास्तव में खुशी है? यदि तुम्हारी रूचि है, तो तुम जाकर अंगूर का अध्ययन कर सकते हो जिन्हें रसायनों के द्वारा संरक्षित किया गया है और देख सकते हो कि बस उनके संघटक क्या हैं और ये संघटक मनुष्यजाति के लिए क्या लाभ ला सकते हैं। व्यवस्था के युग में, जब मिस्र को छोड़ने के बाद इस्राएली सड़क पर थे, परमेश्वर ने उन्हें बटेर और मन्ना दिया। क्या परमेश्वर ने लोगों को उन्हें सुरक्षित रखने की अनुमति दी थी? उनमें से कुछ लोग अल्प-दृष्टा थे और डरते थे कि अगले दिन और अधिक नहीं होगा, इसलिए उन्होंने कुछ अलग रख दिया कि कहीं बाद में उन्हें इसकी आवश्यकता पड़े। तब क्या हुआ? अगले दिन तक वह सड़ गया था। परमेश्वर ने उन्हें पूर्तिकर के रूप में कुछ भी पीछे नहीं छोड़ने दिया था क्योंकि परमेश्वर ने कुछ सामग्रियाँ बनायी थीं, जो आश्वस्त करती थी कि वे भूखे नहीं मरेंगे। मनुष्यजाति के पास वह आत्म विश्वास नहीं है, न ही उनकी परमेश्वर में सच्ची आस्था है। वे हमेशा बाद के लिए कुछ बचाकर अलग रखते हैं और जो कुछ परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए तैयार किया है वे उसके पीछे की सारी चिंता और विचार को कभी नहीं देख पाते हैं। वे बस हमेशा उसे महसूस नहीं कर पाते हैं, हमेशा परमेश्वर पर अविश्वास करते हैं, हमेशा सोचते हैं: "परमेश्वर के कार्यकलाप भरोसे के लायक नहीं हैं!

कौन जाने कि क्या परमेश्वर इसे मनुष्यजाति को देगा भी या वह इसे कब देगा! यदि मैं वास्तव में भूखा हूँ और परमेश्वर इसे मुझे नहीं देता है, तो क्या मैं भूखा नहीं मर जाऊँगा? क्या मुझमें पोषक तत्वों की कमी नहीं हो जाएगी?" देखो मनुष्य का आत्मविश्वास कितना छोटा सा है!

अनाज, फल और सब्जियाँ, सभी प्रकार के मेवे सभी शाकाहारी खाद्य पदार्थ हैं। भले ही वे शाकाहारी खाद्य पदार्थ हैं, फिर भी उनमें मानव शरीर की आवश्यकताओं को तृप्त करने के लिए पर्याप्त पोषक तत्व हैं। हालाँकि, परमेश्वर ने नहीं कहाः "मनुष्यजाति को इन चीज़ों को देना पर्याप्त है। मनुष्यजाति बस इन चीज़ों को ही खा सकती है।" परमेश्वर यहीं नहीं रूका और इसके बजाए उसने ऐसी चीज़ें तैयार की जो मनुष्यजाति को और भी अधिक स्वादिष्ट लगीं। ये चीज़ें कौन सी हैं? ये विभिन्न किस्मों के माँस और मछलियाँ हैं जिन्हें तुम लोग देख और खा सकते हो। अनेक किस्मों के माँस और मछलियाँ हैं जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए तैयार किया है। सारी मछलियाँ जल में रहती हैं; उनके मांस का स्वाद उस मांस से भिन्न है जिन्हें भूमि पर उपजाया जाता है और वे मनुष्यजाति को भिन्न-भिन्न पोषक तत्व प्रदान कर सकती हैं। मछलियों के गुण मानव शरीर की ठण्डक एवं गर्मी के साथ भी समायोजित हो सकते हैं, इसलिए वे मनुष्यजाति के लिए अत्यंत लाभदायक हैं। परन्तु जो स्वादिष्ट लगता है उसका अतिभोग नहीं किया जा सकता है। अभी भी वही कहावत हैः परमेश्वर मानवजाति को सही समय पर सही मात्रा देता है, ताकि लोग मौसम एवं समय के अनुरूप सामान्य और उचित तरीके से इन चीज़ों का आनन्द उठा सकें। मुर्गी पालन में क्या शामिल है? मुर्गी, बटेर, कबूतर, इत्यादि। बहुत से लोग बत्तख और कलहंस भी खाते हैं। यद्यपि परमेश्वर ने इस प्रकार के मांस बनाये लेकिन, परमेश्वर की अपने चुने हुए लोगों के लिए, कुछ अपेक्षाएँ थी और उसने अनुग्रह के युग के दौरान उनके आहार पर विशिष्ट सीमाएँ लगा दी। अब यह सीमा व्यक्तिगत स्वाद और व्यक्तिगत समझ पर आधारित है। ये विभिन्न किस्मों के मांस मनुष्य के शरीर को भिन्न-भिन्न पोषक तत्व प्रदान करते हैं, जो प्रोटीन एवं लौह की पुनः-पूर्ति कर सकते हैं, रक्त को समृद्ध कर सकते हैं, मांसपेशियों एवं हड्डियों को मज़बूत कर सकते हैं और अधिक ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं। इस बात की परवाह किए बिना कि लोग उन्हें पकाने और खाने के लिए लोग कौन सी विधियों का उपयोग करते हैं, संक्षेप में, एक ओर ये चीज़ें स्वाद और भूख को सुधारने में लोगों की सहायता कर सकती हैं, और दूसरी ओर उनके पेट को तृप्त कर सकती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे मानव शरीरों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। ये ही वे विचार हैं जो परमेश्वर के पास थे जब उसने मनुष्यजाति के

लिए भोजन बनाया था। शाकाहारी भोजन और साथ ही मांस है—क्या यह समृद्ध और भरपूर नहीं है? किन्तु लोगों को समझना चाहिए कि परमेश्वर के मूल इरादे क्या थे जब उसने मनुष्यजाति के लिए सभी खाद्य पदार्थों को बनाया था। क्या यह मनुष्यजाति को इन खाद्य पदार्थों का अतिभोग करने देने के लिए था? क्या होगा यदि लोग अपने आप को इस भौतिक सन्तुष्टि में लिप्त करते हैं? क्या वे अतिपोषित नहीं हो जाते हैं? क्या अतिपोषण मानव शरीर में सभी प्रकार की बीमारियाँ नहीं लाता? (हाँ।) इसीलिए परमेश्वर सही समय पर सही मात्रा को विभाजित करता है और विभिन्न अवधियों और मौसम के अनुसार लोगों को भिन्न-भिन्न खाद्य पदार्थों का आनन्द लेने देता है। उदाहरण के लिए, बहुत गर्म ग्रीष्म ऋतु में रहने के बाद, लोग अपने शरीरों में काफ़ी गर्मी, रोगजनक शुष्कता या नमी जमाकर लेंगे। जब शरद ऋतु आएगी, तो बहुत किस्मों के फल पक जाएँगे, और जब लोग कुछ फलों को खाएँगे तो उनकी नमी हट जाएगी। साथ ही साथ, पशु एवं भेड़ें हृष्ट पुष्ठ हो जाएँगे, तो लोगों को पोषण के लिए कुछ मांस खाना चाहिए। विभिन्न किस्मों के मांस खाने के बाद, लोगों के शरीर में शीत ऋतु की ठण्ड का सामना करने में सहायता करने के लिए ऊर्जा और गर्मी होगी, और उसके परिणामस्वरूपः वे शीत ऋतु को शांतिपूर्वक गुज़ार पाएँगे। मनुष्यजाति के लिए किस समय पर कौन सी चीज़ तैयार करनी है, और किस समय पर कौन सी चीज़ें उगने देनी हैं, कौन से फल लगने देने हैं और पकने देने हैं—इन सबको परमेश्वर के द्वारा बहुत सोचसमझ कर नियन्त्रित और पूरा किया जाता है। यह इस बारे में विषय है कि "परमेश्वर ने किस प्रकार मनुष्यजाति के दैनिक जीवन के लिए आवश्यक भोजन तैयार किया था।" हर प्रकार के भोजन के अलावा, परमेश्वर मनुष्यजाति को जल के स्रोतों की आपूर्ति भी करता है। भोजन के बाद लोगों को कुछ जल पीना पड़ता है। क्या मात्र फल खाना पर्याप्त है? लोग केवल फल खा कर ही खड़े होने में समर्थ नहीं होंगे, और इसके अतिरिक्त, कुछ मौसमों में कोई फल नहीं होते हैं। तो मनुष्यजाति की पानी की समस्या का समाधान कैसे किया जा सकता है? परमेश्वर के द्वारा झीलों, नदियों और सोतों सहित भूमि के ऊपर और भूमि के नीचे जल के अनेक स्रोतों को तैयार करने के द्वारा। जल के इन स्रोतों से ऐसी स्थितियों में पानी पीया जा सकता है जहाँ कोई संदूषण, या मानव प्रसंस्करण या क्षति नहीं हो। अर्थात्, मनुष्यजाति के भौतिक शरीरों के जीवन के लिए खाद्य पदार्थ के स्रोतों के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने बिल्कुल सटीक, बिल्कुल परिशुद्ध और बिल्कुल उपयुक्त सामग्रियाँ बनायी हैं, ताकि लोगों के जीवन समृद्ध और भरपूर हो जाएँ और किसी चीज़ का अभाव न हो। यह कुछ ऐसा है जिसे लोग महसूस कर सकते हैं और देख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, सभी चीज़ों में, जो परमेश्वर ने कुछ पौधों, पशुओं और विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों को बनाया जो विशेष रूप से मानव देह में होने वाली चोटों या बिमारियों को चंगा करने के लिए हैं। उदाहरण के लिए, यदि तुम जल जाते हो या दुर्घटनावश तुम गर्म पानी से झुलस जाते हो, तो तुम क्या करोगे? क्या तुम इसे पानी से साफ़ कर सकते हो? क्या तुम बस कहीं से कपड़े का एक टुकड़ा पा सकते हो और इसे लपेट सकते हो? हो सकता है कि उस तरह से यह मवाद से भर जाए या संक्रमित हो जाए। उदाहरण के लिए, यदि तुम्हें बुखार हो जाता है, सर्दी लग जाती है, किसी शारीरिक काम से कोई चोट लग जाती है, ग़लत चीज़ खाने से पेट की कोई बीमारी हो जाती है, या रहने की आदतों या भावनात्मक मामलों के कारण कुछ बीमारियाँ पनप जाती हैं, जैसे कि वाहिका सम्बन्धी बीमारियाँ, मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ या अन्दरूनी अंगों की बीमारियाँ—इन सब का उपचार करने के लिए उनके अनुरूप कुछ पौधे हैं। ऐसे पौधे हैं जो रूकावट को दूर कर रक्त के संचार को सुधारते हैं, दर्द को दूर करते हैं, रक्तस्राव को रोकते हैं, संज्ञाहीनता प्रदान करते हैं, सामान्य त्वचा पुनः-प्राप्त करने में लोगों की सहायता करते हैं, शरीर में रक्त की गतिहीनता को दूर करते हैं, और शरीर के विषों को निकालते हैं। संक्षेप में, इन सभी को दैनिक जीवन में उपयोग किया जा सकता है। वे लोगों के लिए उपयोगी हैं और उन्हें परमेश्वर के द्वारा मानव शरीर हेतु आवश्यकता होने की स्थिति में बनाया गया है। इनमें से कुछ को मनुष्य के द्वारा अनजाने में खोज लिए जाने की परमेश्वर के द्वारा अनुमति दी गयी है, जबकि जबकि अन्यों को उन लोगों द्वारा जिन्हें परमेश्वर ने ऐसा करने के लिए चुना था, या उस विशेष घटना के परिणामस्वरूप जो परमेश्वर ने आयोजित की थी, खोजा गया था। उनकी खोज के बाद, मनुष्यजाति उन्हें आनेवाली पीढ़ियों को सोंपेगी, और बहुत से लोग उनके बारे में जानेंगे। इस तरह, इन पौधों के परमेश्वर के सृजन का मूल्य और अर्थ है। संक्षेप में, ये सभी चीज़ें परमेश्वर की ओर से हैं और इन्हें उस समय तैयार किया गया और रोपा गया था जब उसने मनुष्यजाति के लिए एक रहने का पर्यावरण बनाया था। ये सभी चीज़ें अत्यंत आवश्यक हैं। क्या मनुष्यजाति की तुलना में परमेश्वर के विचार बेहतर तरीके से सोचे गए थे? जब तुम वह सब देखते हो जो परमेश्वर ने बनाया है, तो क्या तुम परमेश्वर के व्यावहारिक पक्ष को महसूस कर पाते हो? परमेश्वर ने गुप्तरूप से कार्य किया था। जब मनुष्य अभी तक इस पृथ्वी पर नहीं आया था, तब इस मनुष्यजाति के सम्पर्क में आने से पहले, परमेश्वर ने इन सभी को पहले से ही बना लिया था। जो कुछ भी उसने किया था वह मनुष्यजाति के वास्ते था, उनके जीवित बचे रहने के वास्ते था और मनुष्यजाति के अस्तित्व के विचार के वास्ते था, ताकि

मनुष्यजाति इस समृद्ध और भरपूर भौतिक संसार में खुशी से रह सके जिसे परमेश्वर ने उनके लिए बनाया है, उन्हें भोजन एवं वस्त्रों की चिन्ता नहीं करनी पड़े, और उन्हें किसी चीज़ का अभाव न हो। मनुष्यजाति ऐसे पर्यावरण में निरन्तर सन्तान उत्पन्न करती और जीवित बची रहती है।

क्या कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर करता हो, चाहे वह कोई बड़ी चीज़ हो या कोई छोटी चीज़, जिसका कोई अर्थ या मूल्य न हो? हर चीज़ जो वह करता है उसका मूल्य और अर्थ होता है। आओ हम इस पर एक प्रश्न से चर्चा करें जिसके बारे में लोग प्रायः बात करते हैं। बहुत से लोग हमेशा पूछते हैं पहले क्या आया था : मुर्गी या अण्डा? (मुर्गी।) मुर्गी पहले आई थी, यह बिल्कुल निश्चित है! मुर्गी पहले क्यों आई? पहले अण्डा क्यों नहीं आ सकता था? क्या मुर्गी अण्डे से नहीं निकलती है? अण्डों को 21 दिन तक सेने के बाद, मुर्गी के बच्चे निकलते हैं। वह मुर्गी अंडे देती है, और अंडों से फिर से मुर्गी के बच्चे निकलते हैं। तो मुर्गी पहले आई थी या अण्डा पहले आया था? तुम लोग निश्चितता के साथ उत्तर देते हो "मुर्गी।" ऐसा क्यों है? (बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने पक्षियों और पशुओं का सृजन किया था।) यह बाइबल पर आधारित है। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग यह देखने के लिए अपने स्वयं के ज्ञान के बारे में बात करो कि तुम लोगों को परमेश्वर के कार्यकलापों के बारे में कोई वास्तविक ज्ञान है या नहीं। तुम लोग अपने उत्तर के बारे में आश्वस्त हो या नहीं? (परमेश्वर ने मुर्गी का सृजन किया, फिर उसे प्रजनन करने की सामर्थ्य दी, जिसका अर्थ है अण्डों को सेने की सामर्थ्य)। यह व्याख्या लगभग सही है। क्या किसी अन्य भाईयों या बहनों की कोई राय है? खुलकर संवाद करो। यह परमेश्वर का घर है। यह कलीसिया है। यदि तुम लोगों के पास कहने को कुछ है, तो उसे कह दो। (यह वह है जो मैं सोचता हूँ: परमेश्वर ने सभी चीज़ों का सृजन किया, और हर चीज़ जिसका उसने सृजन किया वह अच्छी और परिपूर्ण है। मुर्गी एक चेतन प्राणी है और उसके पास प्रजनन करने और अण्डों को सेने की कार्यशीलता है। यह परिपूर्ण है। इसलिए, मुर्गी पहले आई, और उसके बाद अण्डा आया। यही क्रम है।) मुर्गी पहले आई, और फिर अंडा। यह निश्चित है। यह एक बहुत गम्भीर रहस्य नहीं है, किन्तु संसार के लोग इसे बहुत ही गम्भीर के रूप में देखते हैं और अपने तर्क के लिए फ़लसफ़े का उपयोग करते हैं। अंत में, उनके पास तब भी कोई निष्कर्ष नहीं होता है। यह बस ऐसे है जैसे कि जब लोग नहीं जानते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें सृजित किया गया है। लोग इस सिद्धांत को नहीं जानते हैं, और वे इस पर स्पष्ट नहीं हैं कि अण्डे को पहले आना चाहिए या मुर्गी को। वे नहीं जानते हैं कि किसे पहले आना चाहिए, अतः वे हमेशा उत्तर पाने में असमर्थ रहते हैं। यह बहुत सामान्य बात है कि मुर्गी पहले

आई। यदि अण्डा मुर्गी के पहले आता, तो यह असामान्य होता! मुर्गी निश्चित रूप से पहले आई। यह कितनी सरल सी बात है। इसके लिए तुम लोगों को बहुत ज़्यादा ज्ञानी होने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर ने इस सब का सृजन किया। परमेश्वर का प्रारम्भिक इरादा था कि मनुष्य इसका आनन्द ले। एक बार जब मुर्गी मौजूद है, तो अंडों का आना स्वाभाविक है। क्या यह एक त्वरित समाधान नहीं है? यदि अंडे का सृजन पहले हुआ होता, तो क्या तब भी उसे सेने के लिए मुर्गी की आवश्यकता न होती? सीधे मुर्गी का सृजन करना ज्यादा त्वरित समाधान है। इस तरह मुर्गी अंडे दे सकती है और उनके अंदर चूजों को से सकती है, और लोगों को खाने के लिए मुर्गी मिल सकती है। क्या यह इतना सुविधाजनक नहीं है। परमेश्वर जिस तरह से चीज़ों को करता है वह सारगर्भित होता है और बोझिल नहीं होता है। अण्डा कहाँ से आता है? यह मुर्गी से आता है। मुर्गी के बिना कोई अण्डा नहीं होता है। परमेश्वर ने जिसका सृजन किया वह एक जीवित प्राणी था! मनुष्यजाति बेतुकी और हास्यास्पद है, हमेशा इन सरल चीज़ों में उलझी रहती है, और अंत में बेतुके झूठ के पूरे ढेर के साथ उभर कर आती है। कितना बचकाना है! अण्डे ओर मुर्गी के बीच का रिश्ता स्पष्ट हैः मुर्गी पहले आई। यही सबसे सही व्याख्या है, इसे समझने का सबसे सही रास्ता है, और सबसे सही उत्तर है। यह सही है।

हमने अभी-अभी किस बारे में बात की? शुरूआत में, हमने मनुष्यजाति के रहने के पर्यावरण के बारे में और जो कुछ परमेश्वर ने किया, तैयार किया, और इस पर्यावरण के लिए वह निपटा उस बारे में, और साथ ही परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के लिए तैयार की गई सभी चीज़ों के बीच सम्बन्धों के बारे में और कैसे सभी चीज़ों के द्वारा मनुष्यजाति को नुकसान पहँचाने से रोकने के लिए परमेश्वर इन सम्बन्धों से निपटा उस बारे में बात की थी। परमेश्वर ने मनुष्यजाति के पर्यावरण पर उन विभिन्न तत्वों द्वारा उत्पन्न किए गए नकारात्मक प्रभावों का भी समाधान किया जो सभी चीज़ों के द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं, उसने सभी चीज़ों को उनकी कार्यशीलता को अधिकतम करने दिया, और मनुष्यजाति के लिए एक अनुकूल पर्यावरण, और सभी लाभदायक तत्व लाया ताकि वह ऐसे पर्यावरण के अनुरूप बनने तथा प्रजनन चक्र को और जीवन को सामान्य तरीके से निरंतर जारी रखने में सक्षम बन सके। अगली चीज़ मानव शरीर के लिए आवश्यक भोजन थी—दैनिक खाद्य और पेय पदार्थ। मनुष्यजाति के जीवित बचे रहने के लिए यह भी एक आवश्यक शर्त है। अर्थात्, मानव शरीर मात्र साँस ले कर, बस धूप या वायु के साथ, या मात्र उपयुक्त तापमानों के साथ ही जीवित नहीं रह सकता है। उन्हें अपना पेट भरने की भी आवश्यकता होती है। उनके पेट को भरने

के लिए इन चीज़ों को भी पूरी तरह परमेश्वर के द्वारा मनुष्यजाति के लिए तैयार किया गया था—यह मनुष्यजाति के भोजन का स्रोत है। इन समृद्ध और भरपूर पैदावार—मनुष्यजाति के खाद्य एवं पेय पदार्थ के स्रोत—को देखने के पश्चात्, क्या तुम कह सकते हो कि परमेश्वर ही मनुष्यजाति और सभी चीज़ों के लिए आपूर्ति का स्रोत है? यदि जब उसने सभी चीज़ों का सृजन किया था तब परमेश्वर ने केवल पेड़ों एवं घास को या सिर्फ विभिन्न जीवित प्राणियों को ही बनाया होता, यदि उन विभिन्न जीवित प्राणी और पौधों में सभी पशुओं और भेड़ों के खाने के लिए होते, या ज़ेब्रा, हिरन एवं विभिन्न प्रकार के पशु होते, उदाहरण के लिए, सिंह, ज़िराफ़ तथा हिरन जैसी चीज़ों को खाते हैं, बाघ मेम्नों एंव सुअरों जैसी चीज़ों को खाते हैं—किन्तु मनुष्य के खाने के लिए एक भी उपयुक्त चीज़ नहीं होती, तो क्या उससे काम चलता? उससे काम नहीं चलता। मनुष्यजाति निरन्तर जीवित बचे रहने में समर्थ नहीं होती। क्या होता यदि मनुष्य केवल पेड़ों के पत्ते ही खाते? क्या उससे काम चलता? क्या मनुष्य उस घास को खा सकते थे जिसे भेड़ों के लिए बनाया गया है? यदि वे थोड़ी सी खाने की कोशिश करते तो ठीक रहता, किन्तु यदि वे लम्बे समय तक इसे खाते रहते, तो वे ज़्यादा समय तक ज़िन्दा नहीं रहते। और यहाँ कुछ चीज़ें भी हैं जो पशुओं के द्वारा खायी जा सकती हैं, परन्तु यदि मनुष्य उन्हें खाएँगे तो वे विषाक्त हो जाएँगी। ऐसी कुछ विषैली चीज़ें हैं जिन्हें पशु बिना प्रभावित हुए खा सकते हैं, परन्तु मनुष्य ऐसा नहीं कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने मनुष्यों का सृजन किया, इसलिए परमेश्वर मानव शरीर के सिद्धांतों और संरचना को और मनुष्यों को किस चीज़ की आवश्यकता है इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता है। परमेश्वर इसकी बनावट और इसके तत्वों के बारे में, और इसे किस चीज़ की आवश्यकता है, और साथ ही मानव शरीर के भीतरी अंग किस प्रकार कार्य करते हैं, वे कैसे अवशोषित करते है, निकालते हैं और चयापचय करते हैं, इस बारे में पूर्णतः स्पष्ट है। लोग इस पर स्पष्ट नहीं हैं और कई बार आँख बंदकर खाते और अनुपूरक लेते हैं। वे अत्यधिक अनूपूरक लेते हैं और अंत में असन्तुलन उत्पन्न करते हैं। यदि तुम सामान्य रूप से इन चीज़ों को खाते और इनका आनंद लेते हो जिन्हें परमेश्वर ने तुम्हारे लिए तैयार किया है, तो तुम्हारे साथ कुछ ग़लत नहीं होगा। भले ही कभी-कभी तुम ख़राब मनोदशा में होते हो और तुम्हें रक्त की गतिहीनता होती है, फिर भी इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। तुम्हें बस एक खास प्रकार के पौधे को खाने की आवश्यकता है और रक्त की गतिहीनता ठीक हो जाएगी। परमेश्वर ने इन सभी चीज़ों को तैयार किया है। इसलिए, परमेश्वर की नज़रों में, मनुष्यजाति किसी भी अन्य जीवधारी से कहीं ऊँची है। परमेश्वर ने सभी प्रकार के पौधों के लिए जीवित

रहने के पर्यावरण तैयार किए हैं और सभी प्रकार के पशुओं के लिए भोजन एवं जीवित रहने के पर्यावरण तैयार किए हैं, किन्तु केवल मनुष्यजाति की अपेक्षाएँ ही उनके स्वयं के रहने के पर्यावरण के प्रति बहुत अधिक कठोर हैं और उपेक्षा किए जाने में सबसे अधिक असहनीय हैं। अन्यथा, मनुष्यजाति निरन्तर विकसित होने और प्रजनन करने और सामान्य रूप से जीने में समर्थ नहीं होती। परमेश्वर अपने हृदय में इसे अच्छी तरह से जानता है। जब परमेश्वर ने इस चीज़ को किया, तब उसने किसी भी अन्य चीज़ की अपेक्षा इस पर अधिक ध्यान दिया था। शायद तुम अपने जीवन में कुछ मामूली चीज़ों के, जिन्हें तुम देख सकते हो और उनका आनंद उठा सकते हो, महत्व को महसूस नहीं कर पा रहे, या कोई ऐसी चीज़, जिसे तुम अपने जीवन में देख सकते हो और जिसका आनंद उठा सकते हो और जो तुम्हारे पास जन्म से है, लेकिन परमेश्वर ने बहुत पहले से या गुप्त रूप से तुम्हारे लिए तैयारी कर रखी है। परमेश्वर ने उन सभी नकारात्मक कारकों को अधिकतम संभव सीमा तक हटा दिया है और उनका समाधान कर दिया है जो मनुष्यजाति के लिए प्रतिकूल हैं और मानव शरीर को नुकसान पहुँचा सकते हैं। इससे क्या स्पष्ट होता है? क्या इससे मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर का रवैया स्पष्ट होता है जब उसने इस बार उनका सृजन किया था? यह रवैया क्या था? परमेश्वर का रवैया सख़्त और गम्भीर था, और उसने परमेश्वर के अलावा किन्हीं भी कारकों या स्थितियों या शत्रुओं के बल के किसी हस्तक्षेप को सहन नहीं किया था। इससे, तुम जब उसने मनुष्यजाति का सृजन किया था तब और इस बार मनुष्यजाति के उसके प्रबन्धन में परमेश्वर के रवैये को देख सकते हो। परमेश्वर का रवैया क्या है? रहने और जीवित बचे रहने के पर्यावरण से जिसका मनुष्यजाति आनन्द उठाती है और साथ ही उनके दैनिक खाद्य और पेय पदार्थ और दैनिक आवश्यकताओं के माध्यम से, हम मनुष्यजाति के प्रति उत्तरदायित्व की परमेश्वर के रवैये को जो उसके पास तब से है जबसे उसने उनका सृजन किया था, और साथ ही इस बार मनुष्यजाति को बचाने के परमेश्वर के दृढ़ निश्चय को देख सकते हैं। क्या हम इन चीज़ों के माध्यम से परमेश्वर की प्रमाणिकता को देख सकते हैं? क्या हम परमेश्वर की अद्‌भुतता को देख सकते हैं? क्या हम परमेश्वर की अगाधता को देख सकते हैं? क्या हम परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता को देख सकते हैं? परमेश्वर संपूर्ण, मनुष्यजाति को आपूर्ति करने के लिए, और साथ ही सभी चीज़ों की आपूर्ति करने के लिए केवल अपने सर्वशक्तिमान और विवेकी मार्गों का उपयोग करता है। जिसके बारे में बोलते हुए, मेरे इतना कुछ कहने के बाद, क्या तुम लोग यह कह सकते हो कि परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है? (हाँ।) यह निश्चित है। क्या तुम्हें कोई संदेह हैं? (नहीं।)

परमेश्वर के द्वारा सभी चीज़ों की आपूर्ति यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि वह सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है, क्योंकि वह उस आपूर्ति का स्रोत है, जिसने सभी चीज़ों को अस्तित्व में बने रहने, जीवित रहने, प्रजनन करने और जारी रहने में सक्षम किया है, और स्वयं परमेश्वर के अलावा और कोई स्रोत नहीं है। परमेश्वर सभी चीज़ों की सभी आवश्यकताओं की और मनुष्यजाति की भी सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है, चाहे वे लोगों की सर्वाधिक बुनियादी पर्यावरणीय आवश्यकताएँ हों, उनके दैनिक जीवन की आवश्यकताएँ हों, या सत्य संबंधी आवश्यकताएँ हों, जिसकी वह लोगों की आत्माओं के लिए आपूर्ति करता है। सभी दृष्टिकोणों से, जब परमेश्वर की पहचान और मनुष्यजाति के लिए उसकी हैसियत की बात आती है, तो केवल स्वयं परमेश्वर ही सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है। क्या यह सही है? (हाँ।) अर्थात, परमेश्वर इस भौतिक संसार का शासक, स्वामी और आपूर्तिकर्ता है जिसे लोग अपनी आँखों से देख सकते हैं और महसूस कर सकते हैं। मनुष्यजाति के लिए, क्या यह परमेश्वर की पहचान नहीं है? यह पूरी तरह सत्य है। इसलिए जब तुम आकाश में पक्षियों को उड़ते हुए देखते हो, तो तुम्हें जानना चाहिए कि परमेश्वर ने उन चीज़ों को बनाया जो उड़ सकती हैं। परन्तु ऐसी जीवित चीज़ें हैं जो पानी में तैर सकती हैं, और वे भिन्न-भिन्न तरीकों से भी जीवित रह कर बची रहती हैं। पेड़ और पौधे जो मिट्टी में रहते हैं वे बसंत ऋतु में अंकुरित होते हैं और उनमें फल लगते हैं और शरद ऋतु में पत्ते झाड़ देते हैं, और पतझड़ की ऋतु में अपनी पत्तियों को छोड़ देते हैं, और शीत ऋतु तक सभी पत्तियाँ गिर जाती हैं और वे शीत ऋतु से गुज़रते हैं। यह उनके जीवित बचे रहने का तरीका है। परमेश्वर ने सभी चीज़ों का सृजन किया, जिनमें से हर एक विभिन्न रूपों और विभिन्न तरीकों के माध्यम से जीता है और अपनी सामर्थ्य और जीवन के रूप को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न पद्धतियों का उपयोग करता है। चाहे कोई सी भी पद्धति क्यों न हो, यह सब परमेश्वर के शासन के अधीन है। जीवन के सभी रूपों और जीवित प्राणियों के ऊपर परमेश्वर के शासन का क्या उद्देश्य है? क्या यह मनुष्यजाति के जीवित बचे रहने के वास्ते है? (हाँ।) वह मनुष्यजाति के जीवित बचे रहने के वास्ते जीवन की सभी व्यवस्थाओं को नियन्त्रित करता है। यह दिखाता है कि परमेश्वर के लिए बस मनुष्यजाति का जीवित बचे रहना कितना महत्वपूर्ण है।

मनुष्यजाति का सामान्य रूप से जीवित रहना और प्रजनन करने के योग्य होना परमेश्वर के लिए सर्वाधिक महत्व का है। इसलिए, परमेश्वर मनुष्यजाति और सभी चीज़ों को निरंतर आपूर्ति करता है। वह भिन्न-भिन्न तरीकों से, और सभी चीज़ों के जीवित बचा रहना बनाए रखने की परिस्थितियों के अन्तर्गत सभी

चीज़ों की आपूर्ति करता है, वह मानवजाति के सामान्य अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मनुष्यजाति को निरंतर आगे बढ़ने में सक्षम बनाता है। ये वे दो पहलू हैं जिसके विषय में आज हम संवाद कर रहे हैं। ये दो पहलू कौन से हैं? (बृहद् दृष्टिकोण से, परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए रहने के पर्यावरण का सृजन किया। यह पहला पहलू है। साथ ही, परमेश्वर ने इन भौतिक चीज़ों का सृजन किया जिसकी मनुष्यजाति को आवश्यकता है और जिन्हें वह देख और छू सकता है।) हमने इन दो पहलुओं के माध्यम से अपने मुख्य विषय पर संवाद किया है। हमारा मुख्य विषय क्या है? (परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है।) अब तुम्हें कुछ-कुछ समझ आ जाना चाहिए कि क्यों मैंने इस विषय के अन्तर्गत ऐसी विषय-वस्तु का संवाद किया। क्या मुख्य विषय से असंबंधित कोई चर्चा हुई है? कोई नहीं, सही है? कदाचित् इन चीज़ों को सुनने के बाद, तुम लोगों में से कुछ थोड़ी समझ प्राप्त करते हो और यह महसूस करते हैं कि ये वचन बहुत महत्वपूर्ण हैं, किन्तु शायद अन्य लोगों को थोड़ी सी शाब्दिक समझ ही मिले और वे महसूस करें कि इन वचनों से कोई फर्क नहीं पड़ता है। इस बात की परवाह किए बिना कि अभी तुम लोग इसे किस तरह से समझते हो, अपने अनुभव के क्रम के दौरान एक दिन आएगा जब तुम लोगों की समझ एक निश्चित स्थिति तक पहुँच जाएगी, अर्थात्, जब परमेश्वर के कार्यकलापों की और स्वयं परमेश्वर की तुम लोगों की समझ एक निश्चित स्थिति तक पहुँच जाएगी, तब तुम लोग परमेश्वर के कार्यकलापों की एक गहरी और सच्ची गवाही देने के लिए अपने व्यावहारिक वचनों का उपयोग करोगे।

मुझे लगता है कि तुम लोगों की समझ अभी भी बहुत सरल और शाब्दिक है, किन्तु क्या तुम लोग, मुझे इन दो पहलुओं पर संवाद करते हुए सुनने के बाद, कम से कम यह पहचान सकते हो कि मनुष्यजाति को आपूर्ति करने के लिए परमेश्वर किन पद्धतियों का उपयोग करता है या परमेश्वर मनुष्यजाति को किन चीज़ों की आपूर्ति करता है? क्या तुम लोगों के पास कोई बुनियादी विचार और साथ ही कोई बुनियादी समझ है? (हाँ।) लेकिन क्या ये दोनों पहलू जिन पर मैंने संवाद किया था बाइबल से सम्बन्धित हैं? (नहीं।) क्या वे राज्य के युग में परमेश्वर के न्याय और उसकी ताड़ना से सम्बन्धित हैं? (नहीं।) तो मैंने क्यों इन दोनों पहलुओं पर संवाद किया? क्या यह इसलिए है क्योंकि लोगों को परमेश्वर को जानने के लिए इन्हें अवश्य समझना चाहिए? (हाँ।) इन्हें जानना बहुत आवश्यक है और इन्हें समझना भी बहुत ही आवश्यक है। केवल बाइबल तक ही सीमित मत रहो, और परमेश्वर के बारे में सबकुछ समझने के लिए केवल मनुष्य के परमेश्वर के न्याय और उसकी ताड़ना तक ही सीमित मत रहो। मेरे ऐसा कहने के पीछे क्या उद्देश्य है? यह

लोगों को इस बात को जानने देने के लिए है कि परमेश्वर मात्र उसके चुने हुए लोगों का ही परमेश्वर नहीं है। तुम वर्तमान में परमेश्वर का अनुसरण करते हो, और वह तुम्हारा परमेश्वर है, किन्तु परमेश्वर का अनुसरण करने वाले लोगों से बाहर के लोगों के लिए, क्या परमेश्वर उनका परमेश्वर है? क्या परमेश्वर अपने अनुयाइयों को छोड़ अन्य लोगों का भी परमेश्वर है? क्या परमेश्वर सभी चीज़ों का परमेश्वर है? (हाँ।) तो क्या परमेश्वर केवल उन्हीं लोगों पर अपना कार्य और अपने क्रियाकलापों को करता है जो उसका अनुसरण करते हैं? (नहीं।) उसका उद्देश्य क्या है? लघुतम स्तर पर, उसके कार्य का दायरा पूरी मनुष्यजाति और सभी चीज़ों को घेरता है। उच्चतम स्तर पर, यह समस्त ब्रह्माण्ड को घेरता है जिसे लोग नहीं देख सकते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि परमेश्वर सम्पूर्ण मनुष्यजाति के बीच में अपना कार्य करता है और अपनी कार्यकलापों को कार्यान्वित करता है। यह लोगों को स्वयं परमेश्वर के बारे में जानने देने के लिए पर्याप्त है। यदि तुम परमेश्वर को जानना चाहते हो और सचमुच में उसे जानते और समझते हो, तो परमेश्वर के कार्य की केवल तीन अवस्थाओं तक ही सीमित मत रहो, और मात्र उस कार्य की कहानियों तक ही सीमित मत रहो जिसे परमेश्वर ने एक बार किया था। यदि तुम उसे उस तरह से जानने की कोशिश करते हो, तो तुम परमेश्वर को एक निश्चित सीमा तक सीमित कर रहे हो। तुम परमेश्वर को अत्यंत महत्वहीन के रूप में देख रहे हो। ऐसा करना लोगों को कैसे प्रभावित करता है? तुम कभी भी परमेश्वर की अद्‌भुतता और उसकी सर्वोच्चता को नहीं जान पाओगे, और तुम कभी भी परमेश्वर की सामर्थ्य और सर्वशक्तिमत्ता और उसके अधिकार के दायरे को नहीं जान पाओगे। ऐसी समझ इस सत्य को स्वीकार करने की तुम्हारी योग्यता को कि परमेश्वर सभी चीज़ों का शासक है, और साथ ही परमेश्वर की सच्ची पहचान एवं हैसियत के बारे में तुम्हारे ज्ञान को प्रभावित करेगी। दूसरे शब्दों में, यदि परमेश्वर के बारे में तुम्हारी समझ का दायरा सीमित है, तो जो तुम प्राप्त कर सकते हो वह भी सीमित होता है। इसीलिए तुम्हें अवश्य दायरे को बढ़ाना और अपने क्षितिज़ को खोलना चाहिए। चाहे यह परमेश्वर के कार्य, परमेश्वर के प्रबन्धन और परमेश्वर के शासन का, या परमेश्वर के द्वारा शासित और प्रबंधित सभी चीज़ों का दायरा हो, तुम्हें इसे पूरी तरह जानना चाहिए और उसमें परमेश्वर के कार्यकलापों को जानना चाहिए। समझ के ऐसे मार्ग के माध्यम से, तुम अचेतन रूप में महसूस करोगे कि परमेश्वर उनके बीच सभी चीज़ों पर शासन कर रहा है, उनका प्रबन्धन कर रहा है और उनकी आपूर्ति कर रहा है। इसके साथ-साथ, तुम सच में महसूस करोगे कि तुम सभी चीज़ों के एक भाग हो और सभी चीज़ों के एक सदस्य हो। चूँकि परमेश्वर सभी चीज़ों की आपूर्ति करता है, इसलिए तुम

भी परमेश्वर के शासन और आपूर्ति को स्वीकार करते हो। यह एक तथ्य है जिससे कोई इनकार नहीं कर सकता है। सभी चीज़ें अपने स्वयं के नियमों के अधीन हैं, जो परमेश्वर के शासन के अधीन है, और सभी चीज़ों के पास जीवित बचे रहने के अपने स्वयं के नियम हैं, जो परमेश्वर के शासन के भी अधीन है, जबकि मनुष्यजाति का भाग्य और जो उनकी आवश्यकता है वे भी परमेश्वर के शासन और उसकी आपूर्ति से नज़दीकी से संबंधित हैं। इसीलिए, परमेश्वर के प्रभुत्व और शासन के अधीन, मनुष्यजाति और सभी चीज़ें परस्पर संबंधित हैं, एक दूसरे पर निर्भर हैं, और परस्पर गुंथे हुए हैं। यह सभी चीज़ों के सृजन का परमेश्वर का प्रयोजन और मूल्य है। अब तुम इसे समझ गए, है ना? तो इसके साथ, आओ हम आज की संगति समाप्त करें। नमस्कार! (परमेश्वर का धन्यवाद!)

2 फरवरी, 2014

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है IX

परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है (III)

इस अवधि के दौरान, हमने परमेश्वर को जानने से संबंधित बहुत सारी चीज़ों के बारे में बात की है, और हाल ही में हमने इससे जुड़े एक अति महत्वपूर्ण विषय पर बात की है। वह विषय क्या है? (परमेश्वर सभी वस्तुओं के लिए जीवन का स्रोत है।) लगता है जिन चीज़ों और विषयों के बारे में मैंने बात की थी, उनका सभी लोगों पर साफ़ प्रभाव पड़ा। पिछली बार हमने जीवित रहने के लिए वातावरण के कुछ पहलुओं के बारे में बात की थी जिन्हें परमेश्वर ने मानवजाति के लिए सृजित किया था, साथ ही परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए तमाम प्रकार के जीवनाधारों के बारे में भी बात की थी जो लोगों के ज़िंदा रहने के लिए आवश्यक हैं। वास्तव में, जो परमेश्वर करता है वह लोगों के जीवित रहने के लिए सिर्फ एक वातावरण तैयार करने तक सीमित नहीं है, न ही यह उनके दैनिक जीवनाधार को तैयार करने तक सीमित है, बल्कि यह लोगों के जीवित रहने और मानवजाति की ज़िंदगी के लिए बहुत सारे रहस्यमय और आवश्यक कार्य के विभिन्न पहलुओं को पूरा करने के लिए है। ये सब परमेश्वर के कर्म हैं। परमेश्वर के ये कर्म, सिर्फ लोगों के जीवित रहने और उनके दैनिक जीवन आधार के लिए एक वातावरण की तैयारी तक ही सीमित नहीं हैं—उनका दायरा अपेक्षाकृत कहीं अधिक व्यापक है। इन दो प्रकार के कार्यों के अलावा, वह जीते रहने के लिए अनेक वातावरण और स्थितियां भी तैयार करता है जो मनुष्य की ज़िंदगी के लिए आवश्यक हैं। यही

वह विषय है जिस पर हम आज चर्चा करने जा रहे हैं। यह भी परमेश्वर के कर्मों से संबंधित है; अन्यथा, इसके बारे में यहाँ बात करना निरर्थक होगा। यदि लोग परमेश्वर को जानना चाहते हैं किन्तु उनके पास "परमेश्वर" की या परमेश्वर के स्वरूप के विभिन्न पहलुओं की सिर्फ शाब्दिक समझ है, तो यह सच्ची समझ नहीं है। अतः परमेश्वर को जानने का मार्ग क्या है? यह परमेश्वर को उसके कर्मों के माध्यम से जानना और उसे उसके सभी पहलुओं में जानना है। अतः, आगे हम परमेश्वर के उस समय के कर्मों के विषय पर संगति करेंगे जब उसने सभी चीज़ों की रचना की थी।

जब से परमेश्वर ने सभी चीज़ों को बनाया है, वे व्यवस्थित रूप से उसके बनाए नियमों के अनुसार संचालित और निरन्तर विकसित हो रही हैं। उसकी निगाहों और शासन के अधीन, मानवजाति का अस्तित्व बरकरार है और सभी चीज़ें नियमित रूप से विकसित हो रही हैं। कोई भी चीज़ इन नियमों को बदलने या नष्ट करने में सक्षम नहीं है। परमेश्वर के शासन के कारण ही सभी प्राणी वंश-वृद्धि कर सकते हैं, और उसके शासन और प्रबंधन के कारण सभी प्राणी जीवित रह सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के शासन के अधीन, सभी प्राणी जन्म लेते हैं, फलते-फूलते हैं, गायब हो जाते हैं, और एक सुव्यवस्थित विधि से पुनः शरीर धारण करते हैं। जब बसंत का आगमन होता है, हल्की-हल्की बारिश ताज़े मौसम का एहसास लेकर आती है और पृथ्वी को नम कर देती है। ज़मीन नर्म पड़ने लगती है, मिट्टी के भीतर से घास निकल आती है और अंकुरित होना शुरू करती है, और वृक्ष धीरे-धीरे हरे हो जाते हैं। ये सभी जीवित चीज़ें पृथ्वी पर नई जीवन-शक्ति लेकर आती हैं। यही सभी प्राणियों के अस्तित्व में आने और फलने-फूलने का दृश्य है। सभी प्रकार के पशु बसंत की गर्माहट को महसूस करने के लिए अपनी मांदों से बाहर निकल आते हैं और एक नए वर्ष की शुरुआत करते हैं। सभी प्राणी गर्मियों की धूप सेंकते हैं और मौसम के द्वारा लाई गई गर्माहट का आनंद लेते हैं। वे तीव्रता से बढ़ते हैं। पेड़, घास, और सभी प्रकार के पौधे खिलने और फल धारण करने तक बहुत तेजी से बढ़ते हैं। ग्रीष्म ऋतु के दौरान मनुष्य समेत सभी प्राणी बहुत व्यस्त रहते हैं। पतझड़ में, बारिश शरद ऋतु की ठंडक लेकर लाती है, और सभी प्रकार के जीव फसलों की कटाई के मौसम के आगमन को महसूस करने लगते हैं। सभी जीव फल उत्पन्न करते हैं, और मनुष्य शीत ऋतु की तैयारी में भोजन की व्यवस्था करने के लिए विभिन्न प्रकार के फल इकट्ठा करना शुरू कर देते हैं। शीत ऋतु में ठंड के आने साथ सभी जीव धीरे-धीरे आराम करना एवं शांत होना प्रारंभ कर देते हैं, और साथ ही लोग भी इस मौसम के दौरान विराम ले लेते हैं। बसंत का ग्रीष्म में, ग्रीष्म का शरद, फिर शरद का

शीत में बदलना—ऋतुओं के ये सभी परिवर्तन परमेश्वर द्वारा स्थापित नियमों के अनुसार होते हैं। वह इन नियमों का उपयोग करके सभी चीज़ों और मानवजाति की अगुवाई करता है और उसने मानवजाति के लिए एक समृद्ध और खुशनुमा जीवन-शैली निर्मित की है, जीवित रहने के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार किया है जिसमें अलग-अलग तापमान और ऋतुएँ हैं। जीवित रहने हेतु इन सुव्यवस्थित वातावरण के अंतर्गत, मनुष्य भी सुव्यवस्थित तरीके से जीवित रह सकता है और वंश-वृद्धि कर सकता है। मनुष्य इन नियमों को नहीं बदल सकता और न ही कोई व्यक्ति या प्राणी इन्हें तोड़ सकता है। यद्यपि असंख्य परिवर्तन हो चुके हैं—समुद्र खेत बन गए हैं, जबकि खेत समुद्र बन गए हैं—फिर भी ये नियम लगातार अस्तित्व में बने हुए हैं। ये अस्तित्व में हैं क्योंकि परमेश्वर अस्तित्व में है। यह परमेश्वर के शासन और उसके प्रबंधन की वजह से है। इस प्रकार के सुव्यवस्थित, एवं बड़े पैमाने के वातावरण के साथ, इन नियमों और विधियों के अंतर्गत लोगों की ज़िन्दगी आगे बढ़ती है। इन नियमों के अंतर्गत पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोग विकसित हुए, और लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी इन नियमों के भीतर जीवित रहे हैं। लोगों ने जीवित बचे रहने के लिए इस सुव्यवस्थित वातावरण का और साथ ही परमेश्वर के द्वारा सृजित बहुत सारी चीज़ों का पीढ़ी-दर-पीढ़ी आनन्द लिया है। भले ही लोगों को महसूस होता है कि इस प्रकार के नियम स्वाभाविक हैं, और वे उनका सम्मान न करते हुए उनका मोल नहीं समझते हैं, और भले ही उन्हें महसूस न हो कि परमेश्वर इन नियमों का आयोजन कर रहा है, इन पर शासन कर रहा है, फिर भी हर परिस्थिति में, परमेश्वर इस अपरिवर्तनीय कार्य में हमेशा से लगा हुआ है। इस अपरिवर्तनीय कार्य में उसका उद्देश्य मानवजाति को अस्तित्व में बनाए रखना है, ताकि वह निरन्तर जीवित रहे।

परमेश्वर समस्त मानवजाति का पालन-पोषण करने हेतु सभी चीज़ों के लिये सीमाएँ तय करता है

आज मैं इस विषय के बारे में बात करने जा रहा हूँ कि परमेश्वर द्वारा समस्त चीज़ों के लिए लाए गए इस तरह के नियम कैसे पूरी मानवजाति का पालन-पोषण करते हैं। यह एक बहुत बड़ा विषय है, अतः हम इसे कई हिस्सों में विभाजित कर सकते हैं और एक-एक कर उन पर चर्चा करेंगे ताकि तुम्हारे लिए उन्हें स्पष्ट रूप से चित्रित किया जा सके। इस तरह से तुम्हारे लिए यह समझना आसान हो जाएगा और तुम इसे धीरे-धीरे समझ सकते हो।

तो, पहले भाग से शुरु करते हैं। जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों का सृजन किया, तो उसने पहाड़ों,

मैदानों, रेगिस्तानों, पहाड़ियों, नदियों और झीलों के लिए सीमाएँ खींचीं। पृथ्वी पर पर्वत, मैदान, मरूस्थल, और पहाड़ियों के साथ ही जल के विभिन्न स्रोत हैं। क्या ये विभिन्न प्रकार के भूभाग नहीं हैं? परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार के इन भूभागों के बीच सीमाएँ खींची थी। जब हम सीमाओं के निर्माण की बात करते हैं, तो इसका अर्थ है कि पर्वतों की अपनी सीमा-रेखाएँ हैं, मैदानों की अपनी स्वयं की सीमा-रेखाएँ हैं, मरुस्थलों की कुछ सीमाएँ हैं, पहाड़ों का अपना एक निश्चित क्षेत्र है। साथ ही जल के स्रोतों, जैसे नदियों और झीलों की भी एक निश्चित संख्या है। अर्थात्, जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की सृष्टि की तब उसने हर चीज़ को पूरी स्पष्टता से विभाजित किया। परमेश्वर ने पहले ही निर्धारित कर दिया है कि एक पहाड़ की त्रिज्या कितने किलोमीटर की होनी चाहिए, इसका दायरा क्या है। साथ ही उसने यह भी निर्धारित कर दिया कि एक मैदान की त्रिज्या कितने किलोमीटर की होनी चाहिए, और इसका दायरा क्या है। सभी चीज़ों की रचना करते समय उसने मरुस्थल के दायरे और साथ ही पहाड़ियों के विस्तार और उनके परिमाण और वे किनके द्वारा घिरे हुए हैं, उन सारी चीजों को निर्धारित कर दिया था। उसने नदियों और झीलों के दायरे को निर्धारित कर दिया था जब वह उनकी रचना कर रहा था—उन सभी की अपनी सीमाएँ हैं। जब हम "सीमाओं" की बात करते हैं तो इसका क्या अर्थ है? हमने अभी इस बारे में बात की थी कि कैसे सभी चीज़ों के लिए व्यवस्था स्थापित कर परमेश्वर उनपर शासन करता है। यानी, पहाड़ों के विस्तार और दायरे पृथ्वी की परिक्रमा या समय के गुज़रने के कारण बढ़ेंगे या घटेंगे नहीं। वे स्थिर और अपरिवर्तनीय हैं और उनकी यह अपरिवर्तनीयता परमेश्वर द्वारा निर्धारित है। जहाँ तक मैदानी क्षेत्रों की बात है, उनका दायरा कितना है, वे किन चीजों से सीमाबद्ध हैं—इसे परमेश्वर द्वारा तय किया गया है। उनकी अपनी सीमाएँ हैं, और मैदान के बीचोंबीच अचानक किसी पहाड़ी का उभर आना संभव नहीं है। मैदान अचानक पर्वत में परिवर्तित नहीं होगा—ऐसा होना असंभव है। जिन नियमों और सीमाओं की अभी हम बात कर रहे थे, उनका अर्थ यही है। जहाँ तक मरुस्थल की बात है, हम यहाँ मरुस्थल या किसी अन्य भूभाग या भौगोलिक स्थिति की विशिष्ट भूमिकाओं का जिक्र नहीं करेंगे, केवल उनकी सीमाओं की चर्चा करेंगे। परमेश्वर के शासन के अधीन, मरुस्थल का भी दायरा नहीं बढ़ेगा। क्योंकि परमेश्वर ने इसे इसका नियम और दायरा दिया हुआ है। इसका क्षेत्रफल कितना बड़ा है और इसकी भूमिका क्या है, वह किन चीजों से घिरा हुआ है, और इसकी जगह—इसे पहले से ही परमेश्वर द्वारा तय कर दिया गया है। वह अपने दायरे से आगे नहीं बढ़ेगा, न अपनी जगह बदलेगा, और न ही मनमाने ढंग से अपना क्षेत्रफल बढ़ाएगा। हालांकि, सभी नदियों और झीलों के प्रवाह

सुव्यवस्थित और निरन्तर बने हुए हैं, वे कभी अपने दायरे या अपनी सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करेंगे। वे सभी एक सुव्यवस्थित तरीके से अपनी एक स्वाभाविक निर्धारित दिशा में बहती हैं। अतः परमेश्वर के शासन के नियमों के अंतर्गत, कोई भी नदी या झील अपने से सूख नहीं जाएगी, या अपनी दिशा या अपने बहाव की मात्रा को पृथ्वी की परिक्रमा या समय के गुज़रने के साथ बदल नहीं देगी । यह सब परमेश्वर के नियंत्रण में है। कहने का तात्पर्य है कि, परमेश्वर द्वारा मानवजाति के मध्य सृजित सभी चीज़ों के अपने निर्धारित स्थान, क्षेत्र और दायरे हैं। अर्थात्, जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की, तब उनकी सीमाओं को तय कर दिया गया था और उन्हें स्वेच्छा से पलटा, नवीनीकृत किया, या बदला नहीं जा सकता। "स्वेच्छा से" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि वे मौसम, तापमान, या पृथ्वी के घूमने के कारण बेतरतीब ढंग से अपना स्थान नहीं बदलेंगे, अपना विस्तार नहीं करेंगे, या अपने मूल स्वरूप में परिवर्तन नहीं लाएँगे। उदाहरण के लिए, किसी पर्वत की एक निश्चित ऊँचाई है, इसके आधार का एक निश्चित क्षेत्रफल है, समुद्रतल से इसकी ऊँचाई निश्चित है, और यहाँ निश्चित मात्रा में वनस्पतियाँ हैं। इस सब की योजना और गणना परमेश्वर द्वारा की गई है और इसे मनमाने ढंग से बदला नहीं जाएगा। जहाँ तक मैदानों की बात है, अधिकांश मनुष्य मैदानों में निवास करते हैं, और मौसम में हुआ कोई परिवर्तन उनके क्षेत्र या उनके अस्तित्व की मूल्यवत्ता को प्रभावित नहीं करेगा। यहाँ तक कि इन विभिन्न भूभागों और भौगोलिक वातावरण में समाविष्ट हर चीज़ जिसे परमेश्वर द्वारा रचा गया था, उसे भी स्वेच्छा से बदला नहीं जाएगा। उदाहरण के लिए, मरुस्थल की संरचना, भूमिगत खनिज सम्पदाओं के प्रकार, मरुस्थल में पाई जाने वाली रेत की मात्रा, उसका रंग, उसकी मोटाई—ये स्वेच्छा से नहीं बदलेंगे। ऐसा क्यों है कि वे स्वेच्छा से नहीं बदलेंगे? यह परमेश्वर के शासन और उसके प्रबंधन के कारण है। परमेश्वर अपने द्वारा सृजित इन सभी विभिन्न भूभागों और भौगोलिक वातावरण के भीतर, सारी चीजों का प्रबंधन, एक योजनाबद्ध और सुव्यवस्थित तरीके से कर रहा है। अतः परमेश्वर द्वारा सृजे जाने के पश्चात कई हज़ार वर्षों से, दसियों हज़ार वर्षों से ये सभी भौगोलिक पर्यावरण अभी भी अस्तित्व में हैं और अपनी भूमिकाएँ निभा रहे हैं। हालांकि ऐसे समय आते हैं जब ज्वालामुखी फटते हैं, भूकंप आते हैं, और बड़े पैमाने पर भूमि की जगह बदल जाती है, फिर भी परमेश्वर किसी भी प्रकार के भू-भाग को अपने मूल कार्य को छोड़ने की अनुमति बिलकुल नहीं देगा। केवल परमेश्वर के इस प्रबंधन, उसके शासन और इन नियमों पर उसके नियंत्रण के कारण ये सारी चीजें—जिन्हें मानवजाति देखती और जिनका आनन्द लेती है—सुव्यवस्थित तरीके से पृथ्वी पर बरकरार रहने में

सक्षम हैं। अतः परमेश्वर पृथ्वी पर मौजूद इन सभी अलग-अलग भूभागों का प्रबंधन इस तरह क्यों करता है? उसका उद्देश्य है कि विभिन्न भौगोलिक वातावरणों में जो प्राणी रहते हैं उन सभी के पास एक स्थायी वातावरण हो, और वे उस स्थायी वातावरण में निरन्तर जीवित रहने और वंश की वृद्धि करने में सक्षम हों। ये सभी चीज़ें—चल या अचल, वे जो अपने नथुनों से सांस लेते हैं और वे जो सांस नहीं लेते—मानवजाति के जीवित रहने के लिए एक अद्वितीय वातावरण का निर्माण करती हैं। केवल इस प्रकार का वातावरण ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनुष्यों का पालन-पोषण करने में सक्षम है, और केवल इस प्रकार का वातावरण ही मनुष्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरंतर शांतिपूर्वक जीवित रहने की अनुमति दे सकता है।

मैंने जिस विषय पर अभी-अभी बात की है वह काफी बड़ा है, तो यह शायद तुम्हारे जीवन से थोड़ा अलग-थलग लग सकता है, लेकिन मुझे विश्वास है कि तुम सब इसे समझ सकते हो, है न? कहने का तात्पर्य यह है कि सभी चीज़ों पर परमेश्वर के प्रभुत्व के नियम बहुत महत्वपूर्ण हैं—सचमुच बहुत महत्वपूर्ण! इन नियमों के अंतर्गत सभी प्राणियों के विकास की पूर्वशर्त क्या है? यह परमेश्वर के नियम के कारण है। यह उसके नियम के कारण है कि सभी चीज़ें उसके नियम के अंतर्गत अपने कार्यों को अंजाम देती हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ जंगलों का पोषण करते हैं, फिर जंगल उसके बदले में अपने भीतर रहने वाले विभिन्न पक्षियों और पशुओं का पोषण और संरक्षण करते हैं। मैदान एक समतल भूमि है जिसे मनुष्यों के लिए फ़सल उगाने के लिए और साथ ही विभिन्न पशु-पक्षियों के लिए तैयार किया गया है। वे मानवजाति के अधिकांश लोगों को समतल भूमि पर रहने की अनुमति देते हैं और लोगों के जीवन को सहूलियत प्रदान करते हैं। और मैदानों में घास के मैदान भी शामिल हैं—घास के मैदान की विशाल पट्टियाँ। घास के मैदान पृथ्वी की सतह को ढकने वाली वनस्पतियाँ हैं। वे मिट्टी का संरक्षण करते हैं और मैदानों में रहने वाले मवेशी, भेड़ और घोड़ों का पालन-पोषण करते हैं। मरुस्थल भी अपना कार्य करता है। यह मनुष्यों के रहने की जगह नहीं है; इसकी भूमिका नम जलवायु को शुष्क बनाना है। नदियों और झीलों का बहाव लोगों को सरल ढंग से पेयजल उपलब्ध कराता है। जहाँ कहीं वे बहेंगी, वहाँ लोगों के पास पीने के लिए जल होगा, और सभी चीज़ों की पानी की आवश्यकताएँ सरलता से पूरी होंगी। ये वे सीमाएँ हैं जिन्हें परमेश्वर के द्वारा विभिन्न भूभागों के लिए बनाया गया है।

परमेश्वर द्वारा निर्मित इन सीमाओं के कारण, विभिन्न भूभागों ने जीवित रहने के लिए अलग-अलग वातावरण उत्पन्न किए हैं, और जीवित रहने के लिए ये वातावरण विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों के लिए

सुविधाजनक रहे हैं, साथ ही ये जीवित रहने के लिए उन्हें एक स्थान भी उपलब्ध कराते हैं। इस तरह विभिन्न जीवों के जीवित रहने के लिए वातावरण की सीमाओं को विकसित किया गया है। यह दूसरा भाग है जिस पर हम आगे बात करने जा रहे हैं। सर्वप्रथम, पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े कहाँ रहते हैं? क्या वे वन-उपवन में रहते हैं? ये उनके निवास-स्थान हैं। इसलिए, विभिन्न भौगोलिक वातावरण के लिए सीमाएँ स्थापित करने के अलावा, परमेश्वर ने विभिन्न पशु-पक्षियों, मछलियों, कीड़े-मकोड़ों, और सभी पेड़-पौधों के लिए सीमाएँ खींचीं। उसने नियम भी स्थापित किये। विभिन्न भौगोलिक वातावरण के मध्य भिन्नताओं के कारण और विभिन्न भौगोलिक वातावरण की मौजूदगी के कारण, विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों, मछलियों, कीड़े-मकोड़ों, और पेड़-पौधों के पास जीवित रहने के लिए अलग-अलग वातावरण हैं। पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े विभिन्न पेड़-पौधों के बीच रहते हैं, मछलियां पानी में रहती हैं, और पेड़-पौधे भूमि पर उगते हैं। भूमि में विभिन्न क्षेत्र जैसे पर्वत, मैदान और पहाड़ियां शामिल हैं। एक बार पशु-पक्षियों के पास उनके अपने नियत घर हो जाएँ, तो वे इधर-उधर नहीं भटकेंगे। उनके निवास-स्थान जंगल और पहाड़ हैं। अगर कभी उनके निवास-स्थान नष्ट हो जाएँ, तो यह सारी व्यवस्था अराजकता में बदल जाएगी। इस व्यवस्था के अराजक होने के परिणाम क्या होंगे? सबसे पहले किसे नुकसान पहुँचेगा? (मानवजाति को।) मानवजाति को! परमेश्वर द्वारा स्थापित इन नियमों और सीमाओं के अंतर्गत, क्या तुम लोगों ने कोई अजीब-सी घटना देखी है? उदाहरण के लिए, हाथी का मरुस्थल में घूमना। क्या ऐसा तुम लोगों ने ऐसा कुछ देखा है? यदि ऐसा हुआ, तो यह एक बहुत ही अजीब-सी घटना होगी, क्योंकि हाथी जंगल में रहते हैं, और परमेश्वर ने उनके जीने के लिए यही वातावरण बनाया है। जीने के लिए उनके पास अपना वातावरण है, अपना स्थायी घर है, तो वे इधर-उधर क्यों भागते फिरेंगे? क्या किसी ने शेरों या बाघों को महासागर के तट पर टहलते हुए देखा है? नहीं, तुमने नहीं देखा है। शेरों और बाघों का निवास-स्थान जंगल और पर्वत हैं। क्या किसी ने महासागर की व्हेल या शार्क मछलियों को मरुस्थल में तैरते हुए देखा है? नहीं, तुमने नहीं देखा है। व्हेल और शार्क मछलियां अपना घर महासागर में बनाती हैं। मनुष्य के जीने के वातावरण में, क्या ऐसे लोग हैं जो भूरे भालुओं के साथ रहते हैं? क्या ऐसे लोग हैं जो अपने घरों के भीतर और बाहर हमेशा मोर, या अन्य पक्षियों से घिरे रहते हैं? क्या किसी ने चीलों और जंगली कलहंसों को बन्दरों के साथ खेलते देखा है? (नहीं।) ये सब बहुत ही अजीब घटनाएँ होंगी। तुम लोगों की नज़रों में इन अजीब घटनाओं के विषय में मेरी बात करने की वजह यही है कि मैं तुम लोगों को समझाना चाहता हूँ कि परमेश्वर के द्वारा रची गयी सभी

चीज़ों के जीवित रहने के लिए अपने नियम हैं—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे एक ही स्थान में स्थायी रूप से रहते हैं या वे अपने नथुनों से साँस ले सकते हैं या नहीं। परमेश्वर ने इन प्राणियों क सृजित करने के बहुत पहले ही उनके लिये निवास-स्थान, और जीवित रहने के लिए उनके अनुकूल वातावरण बना दिया था। इन प्राणियों के पास जीवित रहने के लिए उनका अपना स्थायी वातावरण, अपना भोजन, अपना निवास-स्थान था और उनके जीवित रहने के लिए उपयुक्त तापमानों से युक्त निर्धारित जगहें थीं। इस तरह वे इधर-उधर भटकते नहीं थे या मानवजाति के जीवन को कमज़ोर या प्रभावित नहीं करते थे। परमेश्वर सभी चीज़ों का प्रबंधन इसी तरह से करता है। वह मानवजाति के जीवित रहने हेतु उत्तम वातावरण प्रदान करता है। सभी चीज़ों के अंतर्गत जीवित प्राणियों में से प्रत्येक के पास जीवित रहने हेतु वातावरण के भीतर जीवन को बनाए रखने वाला भोजन है। उस भोजन के साथ, वे जीवित रहने के लिए अपने पैदाइशी वातावरण से जुड़े रहते हैं; उस प्रकार के वातावरण में, वे परमेश्वर द्वारा स्थापित नियमों के अनुसार निरंतर जीवन-यापन कर रहे हैं, वंश-वृद्धि कर रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रकार के नियमों के कारण, और परमेश्वर के पूर्वनिर्धारण के कारण, सभी चीज़ें मनुष्यजाति के साथ सामंजस्य में रहती हैं और मनुष्यजाति सभी चीज़ों के साथ परस्पर निर्भरता और सह-अस्तित्व में एक साथ रहती है।

परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की और उनके लिए सीमाएँ निर्धारित कीं; उनके मध्य उसने सभी प्रकार के जीवित प्राणियों का पालन-पोषण किया। इसी दौरान उसने मनुष्यों के जीवित रहने के लिए विभिन्न साधन भी तैयार किए, अतः तुम देख सकते हो कि मनुष्यों के पास जीवित रहने के लिये बस एक तरीका नहीं है, न ही उनके पास जीवित रहने के लिए एक ही प्रकार का वातावरण है। हमने पहले परमेश्वर के द्वारा मनुष्यों के लिए विभिन्न प्रकार के आहार और जल स्रोतों को तैयार करने के विषय में बात की थी, ये चीज़ें मानवजाति के जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। बहरहाल, इस मानवजाति के सभी लोग अनाज पर ही नहीं जीते। भौगोलिक वातावरण और भूभागों की भिन्नताओं के कारण लोगों के पास ज़िन्दा रहने के लिए अलग-अलग साधन हैं। ज़िन्दा रहने के इन सभी साधनों को परमेश्वर ने तैयार किया है। अतः सभी मनुष्य मुख्य तौर पर खेती में नहीं लगे हुए हैं। अर्थात्, सभी लोग फसल पैदा कर अपना भोजन प्राप्त नहीं करते हैं। यह तीसरा भाग है जिसके बारे में हम बात करने जा रहे हैं : मानवजाति की विभिन्न जीवनशैलियों के कारण सीमाएँ विकसित हुई हैं। तो मनुष्यों के पास और कौन-कौन से प्रकार की जीवनशैलियां हैं? भोजन के विभिन्न स्रोतों के आधार पर और कौन से प्रकार के लोग हैं? कई प्राथमिक प्रकार हैं।

पहला है शिकारी जीवनशैली। इसके बारे में हर कोई जानता है। जो लोग शिकार करके ज़िन्दा रहते हैं वे क्या खाते हैं? (गेम।) वे जंगल के पशु-पक्षियों को खाते हैं। "गेम" या शिकार एक आधुनिक शब्द है। शिकारी इसे शिकार के रूप में नहीं देखते; वे इसे भोजन के रूप में, और अपने दैनिक जीवन आहार के रूप में देखते हैं। उदाहरण के लिए, मानो उन्हें एक हिरण मिल जाता है। उनके लिये हिरण का मिलना बिलकुल वैसा ही है जैसा किसी किसान को मिट्टी से फसलें मिल जाती हैं। एक किसान मिट्टी से फसल प्राप्त करता है, और जब वह अपनी फसल को देखता है, तो वह खुश होता है और सुकून महसूस करता है। खाने के लिए अनाज के होने से परिवार भूखा नहीं होगा। उसका हृदय सुकून और सन्तुष्टि महसूस करता है। एक शिकारी भी अपनी पकड़ में आए शिकार को देखकर सुकून और संतुष्टि का एहसास करता है, क्योंकि उसे भोजन के विषय में अब कोई चिन्ता नहीं करनी है। अगली बार के भोजन के लिए कुछ तो है, भूखे रहने की ज़रूरत नहीं है। यह ऐसा व्यक्ति है जो जीवन-यापन के लिए शिकार करता है। शिकार पर निर्भर रहने वाले अधिकांश लोग पहाड़ी जंगलों में रहते हैं। वे खेती नहीं करते। वहाँ कृषि योग्य भूमि पाना आसान नहीं है, अतः वे विभिन्न प्रकार के जीवों और शिकार पर ज़िन्दा रहते हैं। यह पहली प्रकार की जीवनशैली है जो सामान्य लोगों से अलग है।

दूसरे प्रकार की जीवनशैली चरवाही है। जो लोग जीविका के लिए मवेशी चराते हैं, क्या वे खेती भी करते हैं? (नहीं।) तो वे क्या करते हैं? वे कैसे जीते हैं? (अधिकांशतः, वे जीवन-यापन के लिए मवेशियों और भेड़ों के झुण्ड चराते हैं, और शीत ऋतु में वे अपने पालतू पशुओं को मार कर और खाते हैं। उनका प्रमुख भोजन गाय और भेड़ का मांस होता है, और वे दूध की चाय पीते हैं। यद्यपि चरवाहे, चारों ऋतुओं में व्यस्त रहते हैं, वे अच्छी तरह खाते हैं। उनके पास प्रचुर मात्रा में दूध, दुग्ध-उत्पाद और मांस होता है।) जो लोग जीवन-यापन के लिए पशु चराते हैं वे मुख्य रूप से बीफ और मटन खाते हैं, भेड़ और गाय का दूध पीते हैं, और हवा में लहराते बालों और धूप में चमचमाते चेहरों के साथ खेतों में अपने पशुओं को चराते हुए गाय-बैलों और घोड़ों की सवारी करते हैं। उनके जीवन में आधुनिक जीवन का कोई तनाव नहीं होता। पूरे दिन वे नीले आसमान और घास के मैदानों के व्यापक विस्तार क निहारते हैं। मवेशी चराने वाले लोग घास के मैदानों में रहते हैं और वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी खानाबदोश जीवनशैली को बरकरार रख पाये हैं। हालांकि घास के मैदानों पर जीवन थोड़ा एकाकी होता है, फिर भी यह एक बहुत खुशहाल जीवन है। यह कोई बुरी जीवनशैली नहीं है!

तीसरे प्रकार की जीवनशैली मछली पकड़ने की है। मनुष्यों का एक छोटा-सा समूह ऐसा भी है जो महासागर के समीप या छोटे द्वीपों पर रहता है। वे चारों ओर पानी से घिरे हुए हैं, समुद्र के सामने हैं। ये लोग आजीविका के लिए मछली पकड़ते हैं। जो लोग जीविका के लिए मछली पकड़ते हैं, उनके भोजन का स्रोत क्या है? उनके भोजन के स्रोतों में सब प्रकार की मछलियाँ, समुद्री भोजन, और समुद्र के अन्य उत्पाद शामिल हैं। जो लोग जीविका के लिए मछली पकड़ते हैं वे जमीन में खेती-बाड़ी नहीं करते, बल्कि इसके बजाय हर दिन मछली पकड़ने में बिताते हैं। उनके प्रमुख भोजन में विभिन्न प्रकार की मछलियां और समुद्र के उत्पाद शामिल हैं। वे कभी-कभार चावल, आटा और दैनिक ज़रूरतों के लिए इन चीज़ों का व्यापार करते हैं। यह उन लोगों की एक अलग प्रकार की जीवनशैली है, जो पानी के समीप रहते हैं। जो लोग पानी के समीप रहते हैं वे अपने आहार के लिये पानी पर निर्भर रहते हैं और मछली उनकी जीविका होती है। मछली पकड़ना उनके भोजन का स्रोत ही नहीं, बल्कि उनकी जीविका का भी स्रोत है।

जीविका के लिए खेती-बाड़ी के अलावा, मानवजाति मुख्य रूप से तीन अलग-अलग जीवनशैलियों पर निर्भर है, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। मवेशी चराने, मछली पकड़ने, और शिकार से जीवन निर्वाह करने वाले केवल कुछ समूहों को छोड़कर, अधिकतर लोग जीविका के लिए खेती-बाड़ी करते हैं। और ऐसे लोग जो जीविका के लिए खेती-बाड़ी करते हैं, उन्हें किस चीज की आवश्यकता है? उन्हें खेत की आवश्यकता है। ऐसे लोग जीविका के लिये पीढ़ियों से फसल उगाते रहे हैं। चाहे वे सब्ज़ियाँ , फल या अनाज उगाएँ, किन्तु वे सभी पृथ्वी से भोजन और अपनी दैनिक ज़रुरतों को प्राप्त करते हैं।

इन अलग-अलग मानवीय जीवनशैलियों से जुड़ी मूल शर्तें क्या हैं? जिस वातावरण ने उनका जीवित रहना संभव बनाया है, क्या उसे मूलभूत रूप से संरक्षित करने की आवश्यकता नहीं है? अर्थात, यदि शिकार के भरोसे रहने वालों को पहाड़ी जंगलों या पशु-पक्षियों को खोना पड़े, तो उनकी जीविका का स्रोत ख़त्म हो जाएगा। इस जाति और प्रकार के लोग किस दिशा में जाएँगे, यह अनिश्चित हो जाएगा और वे लुप्त भी हो सकते हैं। और ऐसे लोग जो अपनी जीविका के लिए मवेशी चराते हैं, वे किस चीज पर आश्रित हैं? वास्तव में वे जिस पर निर्भर हैं वह उनके पालतू पशुओं का झुण्ड नहीं है, बल्कि वह वातावरण है, जिसमें उनके पालतू पशुओं का झुण्ड जीवित रहता है—घास के मैदान। यदि कहीं कोई घास के मैदान नहीं होते, तो वे अपने पालतू पशुओं के झुण्ड को कहाँ चराते? मवेशी और भेड़ क्या खाते? पालतू पशुओं के झुण्ड के बिना, इन खानाबदोश लोगों के पास कोई जीविका नहीं होती। अपनी जीविका के स्रोत के बिना, ऐसे

लोग कहाँ जाते? उनके लिए ज़िन्दा रहना बहुत ही कठिन हो जाता; उनके पास कोई भविष्य नहीं होता। अगर पानी के स्रोत नहीं होते, और नदियां और झीलें सूख जातीं, तो क्या वे सभी मछलियां, जो अपनी जिंदगी के लिए पानी पर निर्भर हैं, तब भी जीवित रहतीं? वे मछलियां जीवित नहीं रहतीं। वे लोग जो अपनी जीविका के लिए उस जल और उन मछलियों पर आश्रित हैं, क्या वे जीवित रह पाते? यदि उनके पास भोजन नही होता, यदि उनके पास अपनी जीविका का स्रोत नहीं होता, तो क्या वे लोग जीवित रह पाते? यदि उनकी जीविका या उनके जीवित रहने में कोई समस्या आती है, तो वे जातियाँ आगे अपना वंश नहीं चला पातीं। वे लुप्त हो सकती थीं, पृथ्वी से मिट गई होतीं। और जो लोग अपनी जीविका के लिए खेती-बाड़ी करते हैं यदि वे अपनी भूमि खो देते, फसलें नहीं उगा पाते, और विभिन्न पेड़-पौधों से अपना भोजन प्राप्त नहीं कर पाते तो इसका परिणाम क्या होता? भोजन के बिना, क्या लोग भूख से मर नहीं जाते? यदि लोग भूख से मर रहे हों, तो क्या मानवजाति की उस नस्ल का सफाया नहीं हो जाएगा? अतः विभिन्न वातावरण को बनाए रखने के पीछे यही परमेश्वर का उद्देश्य है। विभिन्न वातावरण और पारिस्थितिक तंत्र को बनाए रखने, और प्रत्येक वातावरण के अंतर्गत विभिन्न जीवित प्राणियों को बनाए रखने में परमेश्वर का सिर्फ एक ही उद्देश्य है—और वह है हर तरह के लोगों का पालन-पोषण करना, विभिन्न भौगोलिक वातावरण में जीने वाले लोगों का पालन-पोषण करना।

यदि सृष्टि की सभी चीज़ें अपने नियमों को गँवा दें, तो उनका अस्तित्व न रहे; यदि सभी चीज़ों के नियम लुप्त हो जाएँ, तो सभी चीज़ों के बीच जीवित प्राणी क़ायम नहीं रह पाएँगे। मनुष्यजाति अपने उस वातावरण को भी गँवा देगी जिस पर वह जीवित रहने के लिए निर्भर है। यदि मनुष्य वह सब कुछ गँवा देता, तो वह आगे जीवित नहीं रह पाएगा और पीढ़ी-दर-पीढ़ी वंश-वृद्धि नहीं कर पाएगा। मनुष्य आज तक ज़िन्दा बचा हुआ है तो उसका कारण है कि परमेश्वर ने मनुष्य का पोषण करने और, विभिन्न तरीकों से मानवजाति का पोषण करने के लिए उन्हें सृष्टि की सभी चीज़ें प्रदान की हैं। चूँकि परमेश्वर विभिन्न तरीकों से मानवजाति का पालन-पोषण करता है, इसीलिये वह आज तक, जीवित बची हुई है। जीवित रहने के ऐसे अनुकूल और स्वाभाविक नियमों से सुव्यवस्थित वातावरण के साथ में पृथ्वी पर सभी प्रकार के लोग, और सभी प्रकार की नस्लें अपने निर्दिष्ट दायरों के भीतर जीवित रह सकती हैं। कोई भी इन दायरों या इन सीमाओं से बाहर नहीं जा सकता है क्योंकि परमेश्वर ने सबकी सीमा-रेखाएँ खींच दी हैं। परमेश्वर ने सीमा-रेखाओं को इस तरह क्यों खींचा? यह सचमुच पूरी मानवजाति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है—सचमुच बेहद

महत्वपूर्ण! परमेश्वर ने हर किस्म के जीव के लिए एक दायरा बनाया और हर प्रकार के मानव के लिए जीवित रहने के साधन तय किए हैं। साथ ही उसने इस पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के लोगों और विभिन्न नस्लों को भी विभाजित किया है और उनके दायरों को तय किया है। इसी पर हम आगे चर्चा करेंगे।

चौथा, परमेश्वर ने विभिन्न नस्लों के बीच सीमाएँ खींची। पृथ्वी पर गोरे लोग, काले लोग, भूरे लोग, और पीले लोग हैं। ये लोगों के विभिन्न प्रकार हैं। साथ ही परमेश्वर ने इन विभिन्न प्रकार के लोगों की ज़िन्दगियों के लिए दायरा भी तय किया है। लोग इससे अनजान रहते हुए, परमेश्वर के प्रबंधन के अधीन जीवित रहने के लिए अपने अनुकूल वातावरण के भीतर रहते हैं। कोई भी इसके बाहर कदम नहीं रख सकता। उदाहरण के लिए, गोरे लोगों की बात करते हैं। इनमें से अधिकांश लोग किस भौगोलिक इलाके में रहते हैं? वे अधिकांशतः यूरोप और अमेरिका में रहते हैं। काले लोग मुख्यतः जिस भौगोलिक सीमा में रहते हैं, वह अफ्रीका है। भूरे लोग मुख्य रूप से दक्षिणी-पूर्वी एशिया और दक्षिणी एशिया में, थाइलैण्ड, भारत, म्यांमार, वियतनाम और लाओस जैसे देशों में रहते हैं। पीले लोग मुख्य रूप से एशिया में, अर्थात् चीन, जापान, दक्षिण कोरिया जैसे देशों में रहते हैं। परमेश्वर ने इन अलग-अलग प्रकार की सभी नस्लों को उचित रूप से विभाजित किया है ताकि ये अलग-अलग नस्लें संसार के विभिन्न भागों में वितरित हो जाएँ। संसार के इन अलग-अलग भागों में, परमेश्वर ने बहुत पहले से ही मनुष्यों की प्रत्येक नस्ल के जीवित रहने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया है। जीवित रहने के लिए इस प्रकार के वातावरण के अंतर्गत, परमेश्वर ने उनके लिए मिट्टी के विविध रंग और तत्वों की रचना की। दूसरे शब्दों में, गोरे लोगों के शरीर के तत्व और काले लोगों के शरीर के तत्व समान नहीं हैं, और साथ ही वे अन्य नस्ल के लोगों के शरीर के तत्वों से भी भिन्न हैं। जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की, तब उसने पहले से ही उस नस्ल के अस्तित्व के लिए एक वातावरण तैयार कर लिया था। ऐसा करने का उसका उद्देश्य यह था कि जब उस प्रकार के लोग अपने वंश की वृद्धि शुरू करें, जब उनकी संख्या बढ़ने लगे, तो उन्हें एक दायरे के भीतर सीमित किया जा सके। मनुष्य की रचना करने से पहले ही परमेश्वर ने इन सारी बातों पर विचार कर लिया था—वह गोरे लोगों को विकसित होने और जीवित रहने के लिये यूरोप और अमेरिका देगा। अतः जब परमेश्वर पृथ्वी की सृष्टि कर रहा था तब उसके पास पहले से ही एक योजना थी, भूमि के एक हिस्से में वह जो कुछ रख रहा था, वहाँ जिसका पालन-पोषण कर रहा था, इन सबके पीछे उसका एक लक्ष्य और उद्देश्य था। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने बहुत पहले से ही तैयारी कर ली थी कि उस भूमि पर कौन-से पर्वत, कितने मैदान,

कितने जल-स्रोत, किस प्रकार के पशु-पक्षी, कौन-सी मछलियाँ, और कौन-से पेड़-पौधे होंगे। किसी एक प्रकार के मानव, एक नस्ल के जीवित रहने के लिए वातावरण तैयार करते समय, परमेश्वर ने अनेक मुद्दों पर हर दृष्टिकोण से विचार किया था : भौगोलिक वातावरण, मिट्टी के तत्व, पशु-पक्षी की विभिन्न प्रजातियां, विभिन्न प्रकार की मछलियों के आकार, मछलियों के तत्व, पानी की गुणवत्ता में असमानताएँ, साथ ही विभिन्न प्रकार के सभी पेड़-पौधे...। परमेश्वर ने इन सारी चीजों को बहुत पहले ही तैयार कर लिया था। उस प्रकार का वातावरण जीवित बचे रहने के लिए एक ऐसा वातावरण है जिसे परमेश्वर ने गोरे लोगों के लिए सृजित और तैयार किया और जो प्राकृतिक रूप से उनका है। क्या तुम लोगों ने देखा है कि जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की, तो उसने उसमें बहुत ज़्यादा सोच-विचार किया और एक योजना के तहत कार्य किया? (हाँ, हमने देखा है कि विभिन्न प्रकार के लोगों के प्रति परमेश्वर बहुत ही विचारशील था। विभिन्न प्रकार के मनुष्यों के जीवित रहने के लिए जो वातावरण उसने निर्मित किया उसमें किस प्रकार के पशु-पक्षी और किस प्रकार की मछलियां रहेंगी, वहाँ कितने सारे पर्वत और मैदान होंगे—इन सभी पर उसने बहुत सूक्ष्मता से सोच-समझ कर विचार किया था।) उदाहरण के लिए, गोरे लोग मुख्य रूप से कौन-सा आहार खाते हैं? जो आहार गोरे लोग खाते हैं वह उन आहारों से बिलकुल अलग है जो एशिया के लोग खाते हैं। जो खाद्य पदार्थ गोरे लोग खाते हैं वे मुख्यतः मांस, अण्डे, दूध और मुर्गीपालन के पदार्थ हैं। अनाज जैसे रोटी और चावल सामान्यतः मुख्य आहार नहीं हैं, उन्हें थाली पर किनारे रखा जाता है। सलाद में भी कुछ भुना हुआ माँस या चिकन डालते हैं। गेहूँ पर आधारित आहार में भी वे चीज़, अण्डे, और मांस डाल देते हैं। यानी, उनके मुख्य भोज्य पदार्थ गेहूँ पर आधारित आहार या चावल नहीं हैं; वे लोग माँस और चीज़ बहुत खाते हैं। वे प्रायः बर्फीला पानी पीते हैं क्योंकि वे लोग उच्च कैलोरी युक्त आहार खाते हैं। अतः गोरे लोग असाधारण रूप से तगड़े होते हैं। ये उनकी आजीविका के स्रोत हैं, जीने के लिए उनके वातावरण हैं जिन्हें परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया था, ताकि वे उस तरह की जीवनशैली में रह सकें। यह जीवनशैली अन्य नस्लों के लोगों की जीवनशैलियों से अलग है। इस जीवनशैली में कुछ सही या ग़लत नहीं है—यह जन्मजात, परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित और परमेश्वर के शासन और उसकी व्यवस्था के कारण है। इस प्रकार की नस्ल के पास इस तरह की जीवनशैली और आजीविका के ऐसे साधन, उनकी नस्ल के कारण हैं, और साथ ही जीवित रहने के लिए उस वातावरण के कारण हैं जिसे परमेश्वर द्वारा उनके लिए तैयार किया गया था। तुम कह सकते हो कि जीवित रहने के लिए जो वातावरण परमेश्वर ने गोरे लोगों के

लिए तैयार किया और जो दैनिक आहार वे उस वातावरण से प्राप्त करते हैं, वह समृद्ध और प्रचुर है।

परमेश्वर ने दूसरी नस्लों के जीवित रहने के लिए भी आवश्यक वातावरण तैयार किया। काले लोग भी हैं—काले लोग किस जगह अवस्थित हैं? वे मुख्य रूप से मध्य और दक्षिणी अफ्रीका में अवस्थित हैं। उस प्रकार के वातावरण में जीने के लिए परमेश्वर ने उनके लिए क्या तैयार किया? उष्णकटिबन्धीय वर्षा वन, सभी प्रकार के पशु-पक्षी, साथ ही मरुस्थल, और सभी प्रकार के पेड़-पौधे जो उनके आस-पास रहते हैं। उनके पास जल के स्रोत, अपनी आजीविका, और भोजन हैं। परमेश्वर उनके प्रति पक्षपातपूर्ण नहीं था। चाहे उन्होंने हमेशा से जो भी किया हो, उनका ज़िन्दा रहना कभी कोई मुद्दा नहीं रहा है। वे भी संसार के एक निश्चित स्थान और क्षेत्र में बसे हुए हैं।

अब हम पीले लोगों के बारे में कुछ बात करते हैं। पीले लोग मुख्य रूप से पूर्व में अवस्थित हैं। पूरब और पश्चिम के वातावरण और भौगोलिक स्थितियों के बीच क्या भिन्नताएँ हैं? पूरब में अधिकांश भूमि उपजाऊ है, और यह पदार्थों और खनिज भण्डारों से समृद्ध है। अर्थात्, भूमि के ऊपर और भूमि के नीचे की सब प्रकार की संपदाएँ बहुतायत में उपलब्ध हैं। और इस समूह के लोगों के लिए, अर्थात् इस नस्ल के लिए, परमेश्वर ने अनुकूल मिट्टी, जलवायु, और विभिन्न भौगोलिक वातावरण को भी तैयार किया जो उनके लिए उपयुक्त हैं। हालांकि यहाँ के भौगोलिक वातावरण और पश्चिम के वातावरण के बीच बहुत भिन्नताएँ हैं, फिर भी लोगों के लिए आवश्यक भोजन, उनकी जीविका, और जीवित रहने के लिए उनके साधन परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए। पश्चिम में गोरे लोगों के पास जो वातावरण है, उसकी तुलना में यह बस एक अलग वातावरण है। लेकिन वह कौन-सी एक चीज़ है, जिसे मुझे तुम लोगों को बताने की आवश्यकता है? पूर्वी नस्ल के लोगों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, इसलिए परमेश्वर ने बहुत सारे ऐसे तत्वों को पृथ्वी के उस हिस्से में जोड़ दिया जो पश्चिम से भिन्न हैं। उस भाग में, उसने बहुत सारे अलग अलग भूदृश्यों और सब प्रकार की भरपूर सामग्रियों को जोड़ दिया। वहाँ प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं; साथ ही भूभाग भी विभिन्न एवं विविध प्रकार के हैं, जो पूर्वी नस्ल के लोगों की विशाल संख्या का पालन-पोषण करने के लिए पर्याप्त हैं। जो चीज़ पूर्व को पश्चिम से अलग करती है वह है—दक्षिण से उत्तर तक, और पूर्व से पश्चिम तक—जलवायु पश्चिम से बेहतर है। चारों ऋतु स्पष्ट रूप से भिन्न हैं, तापमान अनुकूल हैं, प्राकृतिक संपदाएँ प्रचुर मात्रा में हैं, और प्राकृतिक दृश्य और भूभाग के प्रकार पश्चिम से बहुत बेहतर हैं। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? परमेश्वर ने गोरे और पीले लोगों के बीच एक बहुत ही तर्कसंगत सन्तुलन बनाया था। इसका क्या

अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि गोरे लोगों के खान-पान के हर पहलू, उनके उपयोग में आने वाली हर चीज, और मनोरंजन के लिये उन्हें उपलब्ध कराए गए साधन—ये सारी चीजें पीले लोगों को उपलब्ध सुविधाओं से कहीं बेहतर हैं। फिर भी, परमेश्वर किसी भी नस्ल के प्रति पक्षपातपूर्ण नहीं है। परमेश्वर ने जीवित रहने के लिए पीले लोगों को कहीं अधिक ख़ूबसूरत और बेहतर वातावरण दिया। यही संतुलन है।

परमेश्वर ने पूर्व-नियत कर दिया है कि किस प्रकार के लोग दुनिया के किस भाग में रहने चाहिए; क्या मनुष्य इन सीमाओं के बाहर जा सकते हैं? (नहीं, वे नहीं जा सकते।) यह कितनी अद्‌भुत चीज़ है! यदि विभिन्न युगों या विशेष समय के दौरान युद्ध या अतिक्रमण हुए हों, तो भी ये युद्ध, और ये अतिक्रमण जीवित रहने के लिए उन वातावरणों को बिल्कुल नष्ट नहीं कर सकते जिन्हें परमेश्वर ने प्रत्येक नस्ल के लिए पूर्वनिर्धारित किया हुआ है। अर्थात्, परमेश्वर ने संसार के एक निश्चित भाग में किसी एक प्रकार के लोगों को बसाया है और वे उस दायरे के बाहर नहीं जा सकते। भले ही लोगों में अपने सीमा-क्षेत्रों को बदलने या फैलाने की किसी प्रकार की महत्वाकांक्षा हो, फिर भी परमेश्वर की अनुमति के बिना, इसे हासिल कर पाना बहुत मुश्किल होगा। उनके लिए इसमें सफलता प्राप्त करना बहुत ही कठिन होगा। उदाहरण के लिए, गोरे लोग अपने सीमा-क्षेत्र का विस्तार करना चाहते थे और उन्होंने अन्य देशों में उपनिवेश बनाए। जर्मनी ने कुछ देशों पर आक्रमण किया, और इंग्लैण्ड ने कभी भारत पर कब्ज़ा कर लिया था। परिणाम क्या हुआ? अंत में वे विफल हो गए। हम उनकी इस असफलता में क्या देखते हैं? जो कुछ परमेश्वर ने पूर्व-निर्धारित कर रखा है उसे नष्ट करने की अनुमति नहीं दी गई है। अतः, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह गति कितनी तेज थी जो शायद तुमने ब्रिटेन के विस्तार में देखी होगी, अंततः उन्हें तब भी भारत की भूमि को छोड़ कर, पीछे लौटना पड़ा। वे लोग जो उस भूमि में रहते हैं अभी भी भारतीय हैं, अंग्रेज़ नहीं, क्योंकि परमेश्वर ऐसा करने नहीं देगा। इतिहास या राजनीति पर शोध करने वालों में से कुछ लोगों ने इस विषय पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत किए हैं। वे इंगलैंड की असफलता के कारण बताते हुए यह कहते हैं कि हो सकता है कि किसी जातीय समूह विशेष पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती हो, या इसका कोई अन्य मानवीय कारण हो सकता है...। ये वास्तविक कारण नहीं हैं। वास्तविक कारण है परमेश्वर—वह इसकी अनुमति नहीं देता! परमेश्वर किसी जातीय समूह को एक निश्चित भूभाग में रहने की अनुमति देता है और वह उन्हें वहाँ बसाता है और यदि परमेश्वर उन्हें स्थान बदलने की अनुमति न दे तो वे कभी भी स्थान नहीं बदल पाएँगे। यदि परमेश्वर उनके लिए एक दायरा निर्धारित करता है, तो वे उस दायरे के भीतर ही रहेंगे।

मानवजाति इन दायरों को तोड़ कर मुक्त नहीं हो सकती या इन निर्धारित दायरों को तोड़ कर बाहर नहीं जा सकती है। यह निश्चित है। आक्रमणकारियों की ताकत कितनी भी ज़्यादा क्यों न हो या जिन पर आक्रमण किया जा रहा है वे कितने भी कमज़ोर क्यों न हों, आक्रमणकारियों की सफलता का निर्णय अंततः परमेश्वर पर ही निर्भर है। उसने पहले से ही इसे पूर्वनिर्धारित कर दिया है और कोई भी इसे बदल नहीं सकता।

परमेश्वर ने उपर्युक्त वर्णित तरीके से विभिन्न नस्लों का विभाजन किया है। परमेश्वर ने नस्लों के विभाजन के लिए कौन-सा कार्य किया है? पहले तो, उसने लोगों के लिए अलग-अलग भूभाग आवंटित करते हुए व्यापक भौगोलिक वातावरण तैयार किया, और फिर पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोग वहाँ रहे। यह तय हो चुका है—उनके जीवित रहने के लिए दायरा तय हो चुका है। और उनकी ज़िन्दगियां, उनका खाना-पीना, उनकी आजीविका—परमेश्वर ने यह सब बहुत पहले ही तय कर दिया था। और जब परमेश्वर सभी चीज़ों की रचना कर रहा था, उसने अलग-अलग प्रकार के लोगों के लिए अलग-अलग तैयारियां कीं : मिट्टी के अलग-अलग घटक, विभिन्न जलवायु, विभिन्न पेड़-पौधे, और विभिन्न भौगोलिक वातावरण हैं। अलग-अलग स्थानों में पशु-पक्षी भी अलग-अलग हैं, जल के अलग-अलग स्रोतों में उनकी अपनी विशेष प्रकार की मछलियां और जलोत्पाद हैं। कीड़े-मकोड़ों की किस्में भी परमेश्वर द्वारा निर्धारित की गई हैं। उदाहरण के लिए, जो चीज़ें अमेरिकी महाद्वीप में उगती हैं वे सब बहुत विशाल, बहुत ऊँची, और बहुत मज़बूत होती हैं। पहाड़ के जंगल में पेड़ों की जड़ें बहुत छिछली होती हैं, किन्तु वे बहुत ऊँचाई तक बढ़ते हैं। वे सौ मीटर या उससे भी अधिक ऊँचे हो सकते हैं, लेकिन एशिया के जंगलों में पेड़ बहुधा उतने ऊँचे नहीं होते। उदाहरण के लिए मुसब्बर पौधों को लें। जापान में वे बहुत कम चौड़े, एवं बहुत पतले होते हैं, किन्तु अमेरीका में यही पौधे बहुत बड़े होते हैं। यहाँ एक अंतर है। दोनों पौधे एक ही हैं, नाम भी समान है, परन्तु अमेरिकी महाद्वीप में यह विशेष रूप से बड़ा होता है। विभिन्न पहलुओं की इन भिन्नताओं को शायद लोग देख या महसूस न कर सकें, किन्तु जब परमेश्वर सभी चीज़ों की रचना कर रहा था, तब उसने उनकी रूपरेखा निरुपित की और विभिन्न नस्लों के लिए विभिन्न भौगोलिक वातावरण, विभिन्न भूभागों, और विभिन्न जीवित प्राणियों को तैयार किया। ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार के लोगों का सृजन किया है, और वह जानता है कि उनमें से प्रत्येक की जरूरतें और जीवनशैलियां क्या हैं।

इन चीज़ों में से कुछ के विषय में बात करने के बाद, अभी हमने जिस मुख्य विषय पर चर्चा की है,

क्या उसे तुम लोग थोड़ा भी समझ पाए हो? क्या तुम्हें लगता है कि तुम इसे समझने लगे हो ? मुझे विश्वास है मोटे तौर पर तुम अब समझ गए होगे कि मैंने उस बड़े विषय के अंतर्गत इन चीज़ों के बारे में क्यों बात की। है ना? शायद तुम लोग मुझे बता सको, कि तुम सबने इसे कितना समझा है। (सम्पूर्ण मानवजाति का पालन-पोषण उन नियमों द्वारा किया गया है जिन्हें परमेश्वर ने सभी चीज़ों के लिए निर्धारित किया है। जब परमेश्वर इन नियमों को निर्धारित कर रहा था, तब उसने विभिन्न नस्लों को विभिन्न वातावरण, विभिन्न जीवनशैलियाँ, विभिन्न आहार, विभिन्न जलवायु और तापमान प्रदान किये थे। ऐसा इसलिए था कि पूरी मानवजाति पृथ्वी पर बस सके और जीवित रहे। इससे मैं देख सकता हूँ कि मनुष्य की उत्तरजीविता के लिए परमेश्वर की योजना बहुत सटीक है और इससे उसकी बुद्धि, और पूर्णता को और मनुष्यों के लिए उसके प्यार को भी देख सकता हूँ।) (परमेश्वर द्वारा निर्धारित नियमों और दायरों को किसी भी व्यक्ति, घटना, और प्राणी के द्वारा बदला नहीं जा सकता है। यह सब उसके शासन के अधीन है।) सभी चीज़ों के विकास के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित नियमों के दृष्टिकोण से देखने पर, क्या संपूर्ण मानवजाति, अपनी तमाम भिन्नताओं में, परमेश्वर द्वारा प्रदत्त जीविका और उसके भरण-पोषण के अंतर्गत नहीं जी रही है? यदि ये नियम नष्ट हो गए होते या यदि परमेश्वर मानवजाति के लिए इस प्रकार के नियम निर्धारित नहीं करता, तो उसके भविष्य की संभावनाएँ क्या होतीं? मनुष्य यदि जीवित रहने के लिए अपने मूल वातावरण को खो देते, तो क्या उनके पास भोजन का कोई स्रोत होता? संभव है कि भोजन के स्रोत एक समस्या बन जाते। यदि लोगों ने अपने भोजन के स्रोत को खो दिया होता, अर्थात्, उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं मिलता, तो वे कितने दिनों तक जीवित रह पाते? संभवतः वे एक माह भी नहीं जी पाते और उनका जीवित बचे रहना एक समस्या बन जाता। अतः हर एक चीज़ जिसे परमेश्वर लोगों के जीवित रहने के लिए, उनके लगातार अस्तित्व में बने रहने के लिए और बहुगुणित होने और उनके जीवन निर्वाह के लिए करता है वह अति महत्वपूर्ण है। हर एक चीज़ जिसे परमेश्वर अपने सभी सृजित चीज़ों के मध्य करता है उसका लोगों के जीवित रहने से क़रीबी और अभिन्‍न संबंध है। यदि मानवजाति का जीवित रहना एक समस्या बन जाता, तो क्या परमेश्वर का प्रबंधन जारी रह पाता? क्या परमेश्वर का प्रबंधन तब भी अस्तित्व में बना रहता? परमेश्वर के प्रबंधन का सह-अस्तित्व उस सम्पूर्ण मानवजाति के जीवन के साथ है जिसका वह पालन-पोषण करता है, और जो भी तैयारियाँ परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए करता है और जो कुछ वह मनुष्यों के लिए करता है, वह सब परमेश्वर के लिए जरूरी है, और मानवजाति के अस्तित्व में बने रहने के लिए बेहद

महत्वपूर्ण है। यदि परमेश्वर द्वारा सभी चीज़ों के लिए निर्धारित नियमों का उल्लंघन किया जाता, उन्हें तोड़ा या बाधित किया जाता तो कोई भी चीज़ अस्तित्व में नहीं रह पाती, जीवित रहने के लिए मानवजाति का वातावरण समाप्त हो जाता, और न ही उनका दैनिक जीवन आधार, और न ही वे स्वयं अस्तित्व में बने रहते। इस कारण से, मानवजाति के उद्धार हेतु परमेश्वर का प्रबंधन भी अस्तित्व में नहीं रहता।

हर चीज़ जिसकी हमने चर्चा की, हर एक चीज़, और हर एक वस्तु प्रत्येक व्यक्ति के जीवित रहने से घनिष्टता से जुड़ी हुई है। तुम लोग कह सकते हो, "तुम जो बात कह रहे हो वह बहुत ही बड़ी है, हम इसे नहीं देख पाते," और कदाचित् ऐसे लोग हैं जो कहेंगे "जो कुछ तुम कह रहे हो उसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है।" फिर भी, यह न भूलो कि तुम लोग सभी चीज़ों के मात्र एक हिस्से के रूप में जी रहे हो; तुम परमेश्वर के शासन के अंतर्गत सभी सृजित चीज़ों के बीच एक सदस्य हो। परमेश्वर द्वारा सृजित सभी चीज़ों को उसके शासन से अलग नहीं किया जा सकता, और न ही कोई व्यक्ति स्वयं को उसके शासन से अलग कर सकता है। उसके नियम को खोने और उसके संपोषण को खोने का अर्थ होगा कि लोगों का जीवन, लोगों का दैहिक जीवन लुप्त हो जाएगा। यह मानवजाति के जीवित रहने के लिए परमेश्वर द्वारा स्थापित विभिन्न वातावरण का महत्व है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि तुम किस नस्ल के हो या किस भूभाग पर रहते हो, चाहे पश्चिम में हो या पूर्व में—तुम जीवित रहने के लिए उस वातावरण से अपने आपको अलग नहीं कर सकते जिसे परमेश्वर ने मानवजाति के लिए स्थापित किया है, और तुम जीवित रहने के लिए उस वातावरण के संपोषण और प्रयोजनों से अपने आपको अलग नहीं कर सकते जिसे उसने मनुष्यों के लिए स्थापित किया है। चाहे तुम्हारी आजीविका कुछ भी हो, तुम जीने के लिए जिन चीजों पर भी आश्रित हो, और अपने दैहिक जीवन को बनाए रखने के लिए तुम जिन चीजों पर भी निर्भर हो, परंतु तुम स्वयं को परमेश्वर के शासन और प्रबंधन से अलग नहीं कर सकते। कुछ लोग कहते हैं: "मैं तो किसान नहीं हूं, मैं जीने के लिए फसल नहीं उगाता हूँ। मैं अपने भोजन के लिए आसमानों पर आश्रित नहीं हूँ, अतः मैं जीवित रहने के लिए परमेश्वर के द्वारा स्थापित उस वातावरण में नहीं जी रहा हूँ। उस प्रकार के वातावरण ने मुझे कुछ नहीं दिया है।" क्या यह सही है? तुम कहते हो कि तुम अपने जीने के लिए फसल नहीं उगाते, लेकिन क्या तुम अनाज नहीं खाते हो? क्या तुम मांस और अण्डे नहीं खाते हो? क्या तुम सब्ज़ियां और फल नहीं खाते हो? हर चीज़ जो तुम खाते हो, वे सभी चीज़ें जिनकी तुम्हें ज़रूरत है, वे जीवित रहने के लिए उस वातावरण से अविभाज्य हैं जिसे परमेश्वर के द्वारा मानवजाति के लिए स्थापित किया गया था। मानवजाति की

आवश्यकताओं से जुड़ी सारी चीजों के स्रोत को परमेश्वर द्वारा सृजित सभी चीज़ों से अलग नहीं किया जा सकता। ये सारी चीजें अपनी संपूर्णता में तुम्हारे जीवन के लिए जरूरी वातावरण का निर्माण करती हैं। वह जल जो तुम पीते हो, वे कपड़े जो तुम पहनते हो, और वे सभी चीज़ें जिन्हें तुम इस्तेमाल करते हो—इनमें से ऐसी कौन-सी चीज़ है जो परमेश्वर द्वारा सृजित चीज़ों से प्राप्त नहीं होती? कुछ लोग कहते हैं: "कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो इनसे प्राप्त नहीं होतीं। देखो, प्लास्टिक उन वस्तुओं में से एक है। यह एक रासायनिक चीज़ है, यह मानव-निर्मित चीज़ है।" क्या यह सही है? प्लास्टिक बिल्कुल मानव-निर्मित है, यह एक रासायनिक चीज़ है, किन्तु प्लास्टिक के मूल तत्व कहाँ से आए? मूल-तत्वों को परमेश्वर द्वारा सृजित सामग्री से प्राप्त किया गया। वे चीज़ें जिन्हें तुम देखते और जिनका तुम आनन्द उठाते हो, हर एक चीज़ जिसका तुम उपयोग करते हो, उन सब को परमेश्वर द्वारा सृजित चीज़ों से प्राप्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में, कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी व्यक्ति की नस्ल क्या है, उसकी जीविका क्या है, या वे किस प्रकार के वातावरण में रहते हैं, वे अपने आपको परमेश्वर द्वारा प्रदत्त चीज़ों से अलग नहीं कर सकते। अतः क्या जिन चीजों पर हमने आज चर्चा की है, वे हमारे विषय "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है" से संबंधित हैं? क्या ये चीज़ें जिन पर हमने आज चर्चा की है इस बड़े विषय के अंतर्गत आती हैं? (हाँ।) आज मैंने जिन चीजों पर बात की है शायद उनमें से कुछ चीजें थोड़ी अमूर्त हैं और उनपर चर्चा करना थोड़ा कठिन है। फिर भी, मुझे लगता है कि शायद तुम लोग इसे अब बेहतर ढंग से समझते हो।

पिछली कुछ बार की संगति में, जिन विषयों पर हमने बातचीत की उनकी सीमा और उनका दायरा कहीं व्यापक है, अतः उन सभी को पूरी तरह समझने में तुम लोगों को कुछ प्रयास करने पड़ेंगे। क्योंकि ये विषय परमेश्वर के प्रति लोगों के विश्वास से जुड़ी ऐसी चीज़ें हैं जिनपर पहले कभी चर्चा नहीं की गई है। कुछ लोग इन्हें एक रहस्य के रूप सुनते हैं और कुछ लोग एक कहानी के रूप में सुनते हैं—कौन-सा दृष्टिकोण सही है? तुम लोग ये सब किस दृष्टिकोण से सुनते हो? (हमने देखा है कि कैसे परमेश्वर ने व्यवस्थित तरीके से अपनी सभी सृजित चीज़ों को व्यवस्थित किया है और यह कि सभी चीज़ों के नियम हैं, और इन वचनों के ज़रिए हम परमेश्वर के कर्मों और मानवजाति के उद्धार के लिए इतनी दक्षतापूर्वक की गई उसकी व्यवस्थाओं को और भी अधिक समझ सकते हैं।) संगति के इन समयों के दौरान, क्या तुम लोगों ने देखा कि सभी चीज़ों में परमेश्वर के प्रबंधन का दायरा कितना विस्तृत है? (इसमें पूरी मानवजाति, हर एक चीज़ शामिल है।) क्या परमेश्वर एक ही नस्ल का परमेश्वर है? क्या वह एक ही तरह के लोगों का परमेश्वर है?

क्या वह मानवजाति के एक छोटे से भाग का परमेश्वर है? (नहीं, ऐसा नहीं है।) चूँकि मामला ऐसा नहीं है, तो, यदि परमेश्वर के विषय में तुम्हारी जानकारी के अनुसार, वह सिर्फ मानवजाति के एक छोटे से भाग का परमेश्वर है, या यदि वह केवल तुम सबका परमेश्वर है, तो क्या यह दृष्टिकोण सही है? चूँकि परमेश्वर सभी चीज़ों का प्रबन्ध और उनपर शासन करता है, इसलिए लोगों को उसके कर्मों, उसकी बुद्धि, और उसकी सर्वशक्तिमत्ता को देखना चहिए जो सभी चीज़ों पर उसके शासन में प्रकट होते हैं। यह ऐसी बात है जिसे लोगों को जानना चाहिये। यदि तुम कहते हो कि परमेश्वर सभी चीज़ों का प्रबंध करता है, सभी चीज़ों और समस्त मानवजाति पर शासन करता है, किन्तु यदि तुम्हारे पास मानवजाति पर उसके शासन की कोई समझ या अन्तःदृष्टि नहीं है, तो क्या तुम वास्तव में यह स्वीकार कर सकते हो कि वह सब वस्तुओं पर शासन करता है? शायद तुम अपने मन में सोचो, "मैं विश्वास कर सकता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि मेरे जीवन पर पूरी तरह परमेश्वर का शासन है।" लेकिन क्या परमेश्वर वाकई में इतना छोटा है? नहीं, वह ऐसा नहीं है! तुम सिर्फ अपने लिए परमेश्वर के उद्धार और स्वयं में उसके कार्य को देखते हो, और केवल इन चीज़ों में ही तुम उसके शासन को देखते हो। यह एक बहुत ही छोटा दायरा है, और परमेश्वर के विषय में तुम्हारे वास्तविक ज्ञान की संभावनाओं पर इसका प्रभाव हानिकारक है। यह सभी चीज़ों पर परमेश्वर के शासन के बारे में तुम्हारी वास्तविक जानकारी को भी सीमित करता है। यदि तुम परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान को, जो कुछ परमेश्वर तुम्हें प्रदान करता है और तुम्हारे लिए उसके उद्धार के दायरे तक सीमित करते हो तो, तुम कभी भी यह समझने में सक्षम नहीं होगे कि वह हर चीज़ पर शासन करता है, वह सभी चीज़ों पर शासन करता है, और सारी मानवजाति पर शासन करता है। जब तुम यह सब समझने में असफल हो जाते हो, तब क्या तुम सचमुच इस तथ्य को समझ सकते हो कि परमेश्वर तुम्हारे भाग्य पर शासन करता है? तुम नहीं समझ सकते। तुम अपने हृदय में उस पहलू को समझने में कभी सक्षम नहीं होगे—तुम समझ के इस उच्च स्तर को पाने में कभी सक्षम नहीं होगे। तुम समझ रहे हो न मैं क्या कह रहा हूँ? वास्तव में, मैं जानता हूँ कि जिन विषयों पर मैं बात कर रहा हूँ, तुम लोग उन्हें किस हद तक समझने में सक्षम हो। तो क्यों मैं लगातार इसके बारे में बात कर रहा हूँ? इसलिए क्योंकि ये विषय ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें परमेश्वर के प्रत्येक अनुयायी, और हर ऐसे व्यक्ति को समझना आवश्यक है, जो परमेश्वर द्वारा बचाया जाना चाहता है। भले ही इस घड़ी तुम उन्हें नहीं समझते हो, किन्तु किसी दिन, जब तुम्हारा जीवन और सत्य के विषय में तुम्हारा अनुभव एक निश्चित स्तर तक पहुंच जाएगा, जब तुम्हारे जीवन- स्वभाव में परिवर्तन एक निश्चित

स्तर तक पहुँच जाएगा और तुम एक खास आध्यात्मिक कद प्राप्त कर लोगे, केवल तभी ये विषय जिन्हें मैं इस संगति में तुम्हें बता रहा हूँ,- सचमुच परमेश्वर को जानने की तुम्हारे अनुसरण की आपूर्ति करेंगे और उसे संतुष्ट करेंगे। अतः ये वचन एक नींव डालने के लिए, और तुम लोगों के भविष्य की समझ के लिए तुम सबको तैयार करने के लिए हैं कि परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है और परमेश्वर स्वयं के विषय में तुम्हारी समझ के लिए हैं।

लोगों के हृदय में परमेश्वर की समझ जितनी अधिक होती है, उतनी ही उनके हृदय में उसके लिए जगह होती है। उनके हृदय में परमेश्वर का ज्ञान जितना विशाल होता है उनके हृदय में परमेश्वर की हैसियत उतनी ही बड़ी होती है। यदि जिस परमेश्वर को तुम जानते हो वह खोखला और अस्पष्ट है, तो जिस परमेश्वर में तुम विश्वास करते हो वह भी खोखला और अस्पष्ट होगा। जिस परमेश्वर को तुम जानते हो वह तुम्हारी स्वयं की व्यक्तिगत ज़िंदगी के दायरे तक ही सीमित है, और उसका सच्चे परमेश्वर स्वयं से कुछ लेना-देना नहीं है। इस तरह, परमेश्वर के व्यावहारिक कार्यों को जानना, परमेश्वर की वास्तविकता और उसकी सर्वशक्तिमत्ता को जानना, परमेश्वर स्वयं की सच्ची पहचान को जानना, जो उसके पास है और जो वह है उसे जानना, सभी सृजित चीज़ों के बीच प्रदर्शित उसके कार्य-कलाप को जानना—ये चीजें हर उस व्यक्ति के लिए अति महत्वपूर्ण हैं जो परमेश्वर को जानने की कोशिश में लगा है। इनका सीधा संबंध इस बात से है कि लोग सत्य की वास्तविकता में प्रवेश कर सकते हैं या नहीं। यदि तुम परमेश्वर के विषय में अपनी समझ को केवल शब्दों तक ही सीमित रखते हो, यदि तुम इसे अपने छोटे-छोटे अनुभवों, परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में अपनी समझ तक, या परमेश्वर के लिए अपनी छोटी-छोटी गवाहियों तक ही सीमित रखते हो, तब मैं कहता हूँ कि जिस परमेश्वर पर तुम विश्वास करते हो वह सच्चा परमेश्वर स्वयं बिलकुल नहीं है। इतना ही नहीं, यह भी कहा जा सकता है कि जिस परमेश्वर पर तुम विश्वास करते हो वह एक काल्पनिक परमेश्वर है, न कि सच्चा परमेश्वर। क्योंकि सच्चा परमेश्वर हर चीज़ पर शासन करता है, जो हर चीज़ के मध्य चलता है, और हर चीज़ का प्रबंध करता है। सारी मानवजाति और सारी चीजों की नियति उसकी मुट्ठी में है। जिस परमेश्वर के बारे में मैं बात कर रहा हूँ उसके कार्य और कृत्य , मात्र लोगों के एक छोटे से भाग तक ही सीमित नहीं हैं। अर्थात्, वे केवल उन लोगों तक ही सीमित नहीं हैं जो वर्तमान में उसका अनुसरण करते हैं। उसके कर्म सभी चीज़ों में, सभी चीज़ों के अस्तित्व में, और सभी वस्तुओं के परिवर्तन के नियमों में नज़र आते हैं।

यदि तुम परमेश्वर द्वारा रची गयी सभी चीज़ों में परमेश्वर के किसी भी कर्म की पहचान नहीं कर सकते, तो तुम उसके किसी भी कर्म की गवाही नहीं दे सकते। यदि तुम परमेश्वर के लिए कोई गवाही नहीं दे सकते, यदि तुम निरन्तर उस छोटे तथाकथित परमेश्वर की बात करते रहे जिसे तुम जानते हो, वह परमेश्वर जो तुम्हारे स्वयं के विचारों तक ही सीमित है, और तुम्हारे मस्तिष्क के संकीर्ण दायरे में रहता है, यदि तुम उसी किस्म के परमेश्वर के बारे में बोलते रहे, तो परमेश्वर कभी तुम्हारी आस्था की प्रशंसा नहीं करेगा। जब तुम परमेश्वर के लिए गवाही देते हो, और यदि तुम ऐसा सिर्फ इस संदर्भ में करते हो कि तुम परमेश्वर के अनुग्रह का कितना आनन्द लेते हो, परमेश्वर के अनुशासन और उसकी ताड़ना को कैसे स्वीकार करते हो, और उसके लिए अपनी गवाही में उसके आशीषों का आनन्द कैसे लेते हो, तो यह बिलकुल ही अपर्याप्त है, और यह उसको कतई संतुष्ट नहीं कर सकता। यदि तुम परमेश्वर के लिए इस तरह गवाही देना चाहते हो जो उसकी इच्छा के अनुरूप हो, और सच्चे परमेश्वर स्वयं के लिए गवाही देना चाहते हो, तो तुम्हें परमेश्वर के कार्यों से उसके स्वरूप को समझना होगा। हर चीज़ पर उसके नियंत्रण से तुम्हें उसका अधिकार देखना चाहिये, और उस सत्य को देखना चाहिये कि कैसे वह समस्त मानवजाति का पालन-पोषण करता है। यदि तुम केवल यह स्वीकार करते हो कि तुम्हारा दैनिक भोजन और पेय और जीवन की तुम्हारी ज़रूरत की चीज़ें परमेश्वर से आती हैं, लेकिन तुम उस सत्य को नहीं देख पाते कि परमेश्वर अपनी रचना की सभी चीज़ों के माध्यम से संपूर्ण मानवजाति का संपोषण करता है, कि सभी चीज़ों पर अपने शासन के माध्यम से, वह संपूर्ण मानवजाति की अगुवाई करता है, तो तुम परमेश्वर के लिए गवाही देने में कभी भी सक्षम नहीं होगे। यह सब कहने का मेरा क्या उद्देश्य है? उद्देश्य यह है कि तुम सब इसे हल्के में न लो, कि तुम ऐसा न समझो कि ये विषय जिनके बारे में मैंने बात की है, वे जीवन में तुम लोगों के व्यक्तिगत प्रवेश से असंबद्ध हैं, कि तुम लोग इन विषयों को मात्र एक प्रकार के ज्ञान या सिद्धांत के रूप में न लो। यदि मैं जो कह रहा हूँ उसे तुम उस तरह के रवैये से सुनते हो, तो तुम्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। तुम लोग परमेश्वर को जानने के इस महान अवसर को खो दोगे।

इन सब चीज़ों के बारे में बात करने के पीछे मेरा लक्ष्य क्या है? मेरा लक्ष्य है कि लोग परमेश्वर को जानें, और लोग परमेश्वर के व्यावहारिक कार्यों को समझें। जब एक बार तुम परमेश्वर को समझ जाते हो और उसके कार्यों को जान जाते हो, केवल तभी तुम्हारे पास उसे जानने का अवसर या संभावना होती है। उदाहरण के लिए, यदि तुम किसी व्यक्ति को समझना चाहते हो, तो तुम उसे कैसे समझोगे? क्या उसके

बाहरी रूप को देखकर उसे समझोगे? क्या वह जो पहनता है और जैसे तैयार होता है, यह देखकर उसे समझोगे? या उसके चलने के ढंग से समझोगे? क्या यह उसके ज्ञान के दायरे को देखकर समझोगे? (नहीं।) तो तुम किसी व्यक्ति को कैसे समझते हो? तुम उस व्यक्ति का आकलन उसकी बातचीत उसके व्यवहार, उसके विचार, वह स्वयं के बारे में जो कुछ व्यक्त और प्रकट करता है, उसके आधार पर करते हो। इस तरह से तुम किसी व्यक्ति को जानते हो, समझते हो। उसी प्रकार, यदि तुम लोग परमेश्वर को जानना चाहते हो, यदि तुम उसके व्यावहारिक पक्ष, उसके सच्चे पक्ष को समझना चाहते हो, तो तुम्हें उसे, उसके कर्मों से और उसके हर एक व्यावहारिक कृत्य के माध्यम से जानना होगा। यह सबसे अच्छा तरीका है, और यही एकमात्र तरीका है।

परमेश्वर मनुष्य को जीवित रहने के लिए एक स्थायी वातावरण देने हेतु सभी चीज़ों के मध्य संबंधों को संतुलित करता है

परमेश्वर सभी चीज़ों में अपने कर्मों को प्रकट करता है और सभी वस्तुओं पर वह शासन करता है और सभी चीज़ों के नियमों को नियंत्रित करता है। हमने अभी-अभी बात की कि किस प्रकार परमेश्वर सभी चीज़ों के नियमों पर शासन करता है साथ ही वह किस प्रकार उन नियमों के तहत संपूर्ण मानवजाति के जीवन-निर्वाह की व्यवस्था और उनका पालन-पोषण करता है। यह एक पहलू है। आगे, हम दूसरे पहलू पर बात करने जा रहे हैं, जो सभी चीजों पर परमेश्वर के नियंत्रण का एक तरीका है। मैं बता रहा हूं कि सभी चीज़ों की सृष्टि करने के बाद, परमेश्वर ने किस तरह उन चीजों के बीच संबंधों को संतुलित किया। यह भी तुम्हारे लिए एक बहुत बड़ा विषय है। सभी चीज़ों के मध्य संबंधों को संतुलित करना—क्या ऐसा करना लोगों के लिए संभव है? नहीं, मनुष्य ऐसा अद्‌भुत कार्य करने में समर्थ नहीं हैं। लोग केवल विध्वंस ही कर सकते हैं। वे सभी चीज़ों के मध्य संबंधों को संतुलित नहीं कर सकते; यह उनके वश में नहीं है, इतनी बड़ी सत्ता और शक्ति मानवजाति की समझ के परे है। केवल परमेश्वर स्वयं के पास ही इस प्रकार के कार्य करने की सामर्थ्य है। लेकिन इस प्रकार का कार्य करने में परमेश्वर का उद्देश्य क्या है—यह किसलिए है? यह भी मानवजाति के जीवित रहने से करीब से जुड़ा हुआ है। हर एक चीज़ जो परमेश्वर करना चाहता है वह ज़रूरी है—ऐसा कुछ नहीं है जो वह कर सकता है या नहीं कर सकता है। मानवजाति के अस्तित्व की सुरक्षा और उसके जीवित रहने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए, कुछ अपरिहार्य और बेहद महत्वपूर्ण चीज़ें हैं जो उसे करनी चाहिए।

इस वाक्यांश "परमेश्वर सभी चीज़ों को संतुलित करता है," के शाब्दिक अर्थ से यह पता चलता है कि यह एक अत्यंत व्यापक विषय है; यह सबसे पहले लोगों को यह धारणा प्रदान करता है कि "सभी चीज़ों को संतुलित करने" का अर्थ सभी चीज़ों पर उसकी श्रेष्ठता प्रभुता भी है। "संतुलन" शब्द का क्या अर्थ है? प्रथम, "संतुलन" का अर्थ यह है कि किसी चीज़ को डगमगाने नहीं देना। यह चीज़ों को तोलने के लिए तराज़ू का इस्तेमाल करने जैसा है। तराजू को संतुलित करने के लिए, दोनों पलड़ों पर वज़न समान होना चाहिए। परमेश्वर ने बहुत सारी अलग-अलग प्रकार की चीज़ों का सृजन किया: उसने ऐसी चीज़ों की सृष्टि की जो स्थिर हैं, ऐसी चीज़ें जो गतिमान हैं, जो जीवित हैं, और जो सांस लेती हैं, साथ ही जो सांस नहीं लेती हैं। क्या इन सभी चीज़ों के बीच परस्पर निर्भरता, सहयोग, और जुड़ाव का ऐसा संबंध स्थापित करना आसान है जिसमें वे एक-दूसरे को समृद्ध और नियंत्रित कर सकें? इन सब में निश्चित रूप से कुछ सिद्धांत हैं लेकिन जो बहुत जटिल हैं, है ना? परमेश्वर के लिए यह कठिन नहीं है, लेकिन लोगों के अध्ययन के लिए यह एक बहुत ही जटिल मामला है। यह बहुत ही साधारण शब्द है—"संतुलन।" लेकिन यदि लोगों ने इसका अध्ययन किया होता, यदि लोगों को स्वयं संतुलन बनाने की आवश्यकता होती, तो यदि वे सभी प्रकार के शिक्षाविद—मानव जीवविज्ञानी, खगोलशास्त्री, भौतिकशास्त्री, रसायनशास्त्री और यहां तक कि इतिहासकार भी इसपर कार्य कर रहे होते, तो उस शोध का अंतिम परिणाम क्या होता? इसका परिणाम कुछ नहीं होता। ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर की समस्त सृष्टि अविश्वसनीय है और मनुष्य कभी भी इसके रहस्य को नहीं खोल सकेगा। जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की, उसने उनके बीच सिद्धांतों को स्थापित किया, उसने पारस्परिक संयम, अनुपूरकता, और संपोषण के लिए, जीवित रहने की विभिन्न पद्धतियां स्थापित कीं। ये विभिन्न पद्धतियाँ बहुत पेचीदा हैं; वे निस्संदेह आसान और एकसमान दिशा में नहीं हैं। सभी चीज़ों पर परमेश्वर के नियन्त्रण के पीछे के सिद्धान्तों की पुष्टि या खोज करने के लिए जब लोग अपने मस्तिष्क, अपने अर्जित ज्ञान और जिन घटनाओं का उन्होंने अवलोकन किया है, इन सबका इस्तेमाल करते हैं, तो इन चीजों को खोज पाना अत्यंत कठिन होता है, साथ ही किसी परिणाम तक पहूंचना भी बहुत मुश्किल होता है। लोगों के लिए किन्हीं भी परिणामों को प्राप्त करना कठिन है; परमेश्वर की सृष्टि की सभी चीजों को नियंत्रित करने के लिए मानवीय सोच और ज्ञान पर भरोसा करते हुए अपना संतुलन बनाए रखना लोगों के लिए बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि अगर लोगों को सभी चीज़ों के जीवित बचे रहने के सिद्धान्तों की जानकारी नहीं है तो वे यह नहीं जान पाएंगे कि इस प्रकार के संतुलन का बचाव कैसे करें।

अतः, यदि लोगों को सभी चीज़ों का प्रबंधन और नियंत्रण करना पड़ता, तो ज़्यादा संभावना होती कि वे इस संतुलन को नष्ट कर देते। जैसे ही संतुलन नष्ट होता, मानवजाति के जीवित रहने के लिए वातावरण नष्ट हो जाते, और जब ऐसा होता, तो मानवजाति के जीवित बचे रहने पर संकट आ जाता। यह एक आपदा की स्थिति होती। जब मानवजाति आपदा के बीच जी रही हो, तो उसका भविष्य क्या होगा? इसके परिणाम का अनुमान लगाना बहुत कठिन होता, और इस बारे में निश्चितता के साथ भविष्यवाणी करना असंभव होता।

इसलिए, परमेश्वर कैसे सभी चीज़ों के मध्य संबंधों का संतुलन करता है? प्रथम, संसार में कुछ स्थान ऐसे हैं जो सालों भर बर्फ और हिम से ढके होते हैं, जबकि कुछ अन्य स्थानों में, सभी चारों मौसम बसंत के समान होते हैं, और शीत ऋतु कभी नहीं आती है, और इस तरह के स्थानों में, तुम कभी भी बर्फ की बड़ी परत जैसी चीज या हिमकण नहीं देखोगे। यहाँ, हम अधिक बड़ी जलवायु के बारे में बात कर रहे, और यह उदाहरण उन तरीकों में से एक है जिससे परमेश्वर सभी चीज़ों के बीच संबंधों को संतुलित करता है। दूसरा तरीका यह हैः पर्वतों की एक श्रृंखला हरी-भरी वनस्पतियों से ढकी हुई है, जहाँ धरती पर सभी प्रकार के पौधों का गलीचा बिछा हुआ है, और जंगलों का ऐसा घना सिलसिला है कि जब तुम उनके बीच से गुजरते हो तो तुम ऊपर सूरज भी नहीं देख सकते। किन्तु पर्वतों की एक अन्य श्रृंखला को देखा जाए, तो वहाँ घास की एक पत्ती तक नहीं उगती है, बस परत-दर-परत बंजर, बिखरे हुए पर्वत हैं। बाहर से दिखने में, ये दोनों ही प्रकार मूल रूप से पर्वतों में परिणत धूल की परतों के विशाल अंबार हैं, किन्तु एक घने जंगल से ढका है, जबकि दूसरा विकास से विहीन है, यहाँ तक कि घास की एक पत्ती तक नहीं है। यह दूसरा तरीका है जिससे परमेश्वर सभी चीज़ों के बीच संबंधों को संतुलित करता है। तीसरे प्रकार में, तुम एक ओर अंतहीन घास के मैदानों को देख सकते हो, लहराते हरे रंग का मैदान। दूसरी तरफ, जहाँ तक तुम्हारी दृष्टि जाती है तुम्हें एक मरुस्थल दिखाई देगा; जहां कोई जीवित प्राणी नहीं दिखता, जल का कोई स्रोत तो बिलकुल ही नहीं, बस रेत के साथ बहती हुई हवा की सांय-सांय सुन सकते हो। चौथे प्रकार में, एक तरफ सबकुछ उस महाजलराशि, समुद्र से ढका हुआ है, जबकि दूसरी तरफ, तुम्हें किसी ताजे जल-स्रोत की एक बूंद भी बहुत मुश्किल से दिखाई पड़ती है। पांचवें प्रकार में, एक स्थान में अक्सर बारिश होती रहती है, कोहरा और नमी भरी रहती है, जबकि दूसरे स्थान में प्रचंड धूप का खिलना बहुत ही सामान्य है, और जहां वर्षा की एक बूँद का भी गिरना एक विरल घटना है। छठे प्रकार में, एक तरफ पठार है जहां हवा दुर्लभ है और मनुष्य के लिए सांस लेना मुश्किल, और दूसरी तरफ वह स्थान है जहां दलदल और तराइयाँ हैं, जो विभिन्न

प्रकार के प्रवासी पक्षियों के ठिकाने के रूप में काम आते हैं। ये विभिन्न प्रकार की जलवायु हैं, या ऐसी जलवायु या वातावरण हैं जो विभिन्न भौगोलिक वातावरण के अनुरूप हैं। कहने का तात्पर्य यह कि परमेश्वर मानवजाति के आधारभूत वातावरण को बड़े पैमाने पर पर्यावरण, जलवायु से लेकर भौगोलिक पर्यावरण और मिट्टी के विभिन्न घटकों से लेकर उन जलस्रोतों की संख्या तक जीवित रहने के लिए संतुलित करता है, ताकि उन सभी वातावरण में हवा, तापमान और आद्रता संतुलन रहे, जिससे लोग जीवित रहते हैं। इन विषम भौगोलिक वातावरण के कारण लोगों के पास स्थिर वायु होती है और विभिन्न मौसमों में तापमान और आर्द्रता स्थिर बनी रहती है। यह लोगों को जीने के लिए जरूरी उस तरह के वातवरण में हमेशा की तरह जीना संभव बनाता है। पहले, उस बृहत वातावरण को संतुलित किया जाना चाहिए। यह विभिन्न भौगोलिक स्थानों और संरचनाओं के उपयोग के माध्यम से और साथ ही विभिन्न जलवायु के बीच परिवर्तन के माध्यम से किया जाता है जो उन्हें एक-दूसरे को सीमित करने और नियंत्रित करने की अनुमति देता है, जो परमेश्वर चाहता है और जो मानवजाति की आवश्यकता है। ये बातें बृहत वातावरण के परिप्रेक्ष्य में है।

अब हम पेड़-पौधों जैसी बारीकियों के बारे में बात करेंगे। उनके बीच संतुलन कैसे बनाया जाता है? अर्थात्, पेड़-पौधों को संतुलित वातावरण के भीतर जीवित बचे रहने में कैसे सक्षम बनाया जा सकता है? इसका उत्तर है, विभिन्न प्रकार के पौधों के जीवित रहने हेतु आवश्यक वातावरण की रक्षा करने के लिए उनके जीवनकाल, वृद्धि दर, और प्रजनन दर का प्रबंध करने के द्वारा संतुलन बनाया जा सकता है। छोटी घास को एक उदाहरण के रूप में लेते हैं—बसंत ऋतु में कोपलें हैं, ग्रीष्म ऋतु में फूल हैं, और शरद ऋतु में फल हैं। फल भूमि पर गिर जाता है। अगले वर्ष, उस फल से बीज अंकुरित होता है और उन्हीं नियमों के अनुसार आगे बढ़ता रहता है। घास का जीवनकाल बहुत छोटा होता है; हर बीज ज़मीन में गिरता है, जड़ें फूटती हैं और वह अंकुरित होता है, खिलता है और फल उत्पन्न करता है, और यह प्रक्रिया केवल बसंत, ग्रीष्म, और शरद में होती है। सभी प्रकार के वृक्षों का भी अपना जीवनकाल और अंकुरित होने और फलने का अलग-अलग समय होता है। कुछ वृक्ष 30 से 50 सालों के बाद ही मर जाते हैं—यह उनका जीवनकाल है, किन्तु उनका फल ज़मीन पर गिरता है, जो उसके बाद जड़ पकड़ता और अंकुरित होता है, खिलता है और फल उत्पन्न करता है, और अगले 30 से 50 सालों तक जीवित रहता है। यह इसकी पुनरावृत्ति की दर है। एक पुराना पेड़ मरता है और नया पेड़ उगता है; इसी लिए तुम जंगल में हमेशा पेड़ों को बढ़ते हुए देखते हो। परन्तु उनका भी जन्म और मृत्यु का अपना सामान्य चक्र और प्रक्रियाएँ हैं। कुछ वृक्ष हज़ार वर्ष

से भी अधिक जी सकते हैं, और कुछ तीन हज़ार वर्ष तक भी जी सकते हैं। सामान्य रूप से कहें तो, चाहे पौधा किस भी प्रकार का हो या इसका जीवनकाल कितना भी लम्बा हो, परमेश्वर इस आधार पर उसके संतुलन का प्रबंध करता है कि वह कितने लम्बे समय तक जीवित रहता है, प्रजनन करने की उसकी क्षमता, प्रजनन की उसकी गति, आवृत्ति और संततियों की मात्रा कितनी है। यह घास से लेकर वृक्ष तक के वनस्पतियों को, निरन्तर फलते रहने में सक्षम होने, और एक संतुलित पारिस्थितिक वातावरण के भीतर फलने-फूलने देता है। अतः जब पृथ्वी पर तुम एक जंगल देखते हो, तो इसके भीतर विकसित होने वाले वृक्ष और घास, दोनों ही अपने नियमों के अनुसार निरन्तर प्रजनन कर रहे और बढ़ रहे हैं। इसे मानवजाति से किसी अतिरिक्त श्रम या सहायता की ज़रुरत नहीं है। चूँकि उनके पास इस प्रकार का संतुलन है, इसी लिए वे जीवित रहने के अपने वातावरण को बनाए रखने में सक्षम हैं। चूँकि उनके पास ज़िंदा बचे रहने के लिए एक उपयुक्त वातावरण है, संसार के जंगल, और घास के मैदान पृथ्वी पर निरन्तर जीवित रह पाते हैं। उनका अस्तित्व पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों का पालन-पोषण करता है, साथ ही साथ जंगलों और घास के मैदानों में मौजूद प्राकृतिक वास-स्थान द्वारा सभी प्रकार के जीवित प्राणियों—पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों, और सभी प्रकार के अति सूक्ष्म जीवों का पीढ़ी-दर-पीढ़ी पालन-पोषण करता है।

परमेश्वर सभी प्रकार के पशुओं के बीच के संतुलन का भी नियन्त्रण करता है। इस संतुलन का नियंत्रण वो कैसे करता है? यह पौधों के समान ही है—वह उनके संतुलन का प्रबन्ध करता है और उनकी संख्याओं को, प्रजनन की उनकी क्षमता, प्रजनन की उनकी मात्रा और दर और उनके द्वारा पशुओं के बीच अदा की जाने वाली भूमिकाओं के आधार पर निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, शेर ज़ेबरों को खाते हैं, अतः यदि शेरों की संख्या ज़ेबरों की संख्या से ज़्यादा हो जाए, तो ज़ेबरों की नियति क्या होगी? वे विलुप्त हो जाएँगे। और यदि ज़ेबरों के प्रजनन की मात्रा शेरों की अपेक्षा बहुत कम हो जाए, तो उनकी नियति क्या होगी? तब भी वे विलुप्त हो जाएँगे। अतः, ज़ेबरों की संख्या शेरों की संख्या से कहीं अधिक होनी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज़ेबरे सिर्फ स्वयं के लिए ही अस्तित्व में नहीं है; बल्कि वे शेरों के लिए भी अस्तित्व में हैं। तुम यह भी कह सकते हो कि प्रत्येक ज़ेबरा सारे ज़ेबरों का एक भाग है, किन्तु यह एक शेरों का आहार भी है। शेरों के प्रजनन की गति ज़ेबरों से आगे कभी नहीं बढ़ सकती है, अतः उनकी संख्या ज़ेबरों की संख्या से बढ़कर कभी नहीं हो सकती है। सिर्फ इसी तरह से शेरों के आहार के स्रोत की गारंटी दी जा सकती है। तो इस तरह, शेर ज़ेबरों का प्राकृतिक शत्रु है, फिर भी लोग अक्सर उन्हें एक ही इलाके में

फ़ुरसत से आराम करते हुए देखते हैं। शेर उनका शिकार करते हैं और खाते हैं उसके कारण ज़ेबरे संख्या में कभी कम नहीं होंगे या वे कभी विलुप्त नहीं होंगे, और शेर "राजा" की अपनी पदवी के कारण कभी भी अपनी संख्या नहीं बढ़ाएँगे। यह संतुलन परमेश्वर ने बहुत पहले स्थापित कर दिया था। अर्थात्, परमेश्वर ने सभी जानवरों के मध्य संतुलन के नियमों को स्थापित कर दिया था ताकि वे इस प्रकार का संतुलन प्राप्त कर सकें, और लोग अक्सर ही ऐसा होते देखते हैं। क्या सिर्फ शेर ही ज़ेबरों के प्राकृतिक शत्रु हैं? नहीं, मगरमच्छ भी ज़ेबरों को खाते हैं। ऐसा लगता है कि ज़ेबरे वास्तव में एक प्रकार के असहाय पशु हैं। उनमें शेरों की क्रूरता नहीं है, और जब वे एक शेर, एक भयंकर शत्रु का सामना करते हैं, तो वे केवल भाग सकते हैं। वे तो उसका प्रतिरोध भी नहीं कर सकते। जब वे शेर से तेज भाग नहीं सकते हैं, तो वे शेर के सामने आहार के रूप में अपने आपको समर्पित ही कर सकते हैं। ऐसा पशु जगत में अक्सर देखा जा सकता है। जब तुम लोग इस प्रकार की चीज़ों को देखते हो तो तुम लोगों के मन में कौन से विचार और भावनाएँ आती हैं? क्या तुम ज़ेबरे के लिए दुखी होते हो? क्या तुम्हें शेरों के लिए घृणा का एहसास होता है? ज़ेबरे कितने सुन्दर दिखाई देते हैं! लेकिन शेर, वे हमेशा उन्हें लालच से देखते रहते हैं। और मूर्खतापूर्वक, ज़ेबरे दूर नहीं भागते हैं। वे शेरों को पेड़ की ठंडी छाया में अपना इन्तजार करते हुए देखते रहते हैं। वह कभी भी आकर उन्हें खा सकता है। वे इस बात को अपने मन में जानते हैं, लेकिन तब भी उस जगह को छोड़कर नहीं भागते। यह एक अद्भुत बात है, एक अद्भुत बात जो परमेश्वर की पूर्वनियति, और उसका शासन को दर्शाती है। तुम उस ज़ेबरे के लिए दुखी होते हो लेकिन तुम उसे बचाने में असमर्थ हो, और तुम्हें लगता है कि शेर घृणा के योग्य है किन्तु तुम उसे नष्ट नहीं कर सकते। ज़ेबरा वह भोजन है जिसे परमेश्वर ने शेर के लिए तैयार किया है, लेकिन शेर चाहे जितनों को भी खा लें, ज़ेबरों का सफाया नहीं होगा। शेर द्वारा पैदा किए गए बच्चों की संख्या काफी कम होती है, और वे बहुत धीरे-धीरे प्रजनन करते हैं, इसलिए वे कितने भी ज़ेबरों को खा लें, उनकी संख्या ज़ेबरों से अधिक नहीं होगी। इसमें, संतुलन है।

इस प्रकार के संतुलन को बनाए रखने में परमेश्वर का लक्ष्य क्या है? यह जीवित रहने के लिए लोगों के वातावरण साथ ही साथ मानवजाति के जीवित रहने से संबंधित है। यदि ज़ेबरा, या शेर का कोई ऐसा ही शिकार जैसे हिरन या अन्य पशु बहुत धीमे प्रजनन करते हैं और शेरों की संख्या तेजी से बढ़ती है, तो मानव को किस प्रकार के खतरे का सामना करना पड़ेगा? शेरों का अपने शिकार को खाना एक सामान्य घटना है, लेकिन शेर का किसी व्यक्ति को खाना त्रासदी है। यह त्रासदी ऐसी चीज़ नहीं है जिसे परमेश्वर ने

पूर्वनियत किया हो, यह उसके शासन के अंतर्गत होने वाली घटना नहीं है, और इसे उसके द्वारा मानवजाति पर बिलकुल भी नहीं डाला गया है। बल्कि यह ऐसी त्रासदी है जिसे लोग स्वयं अपने ऊपर लाते हैं। अतः परमेश्वर की नज़रों में, सभी प्राणियों के मध्य संतुलन मानवजाति के जीवित रहने के लिए अति महत्वपूर्ण है। चाहे पौधे हों या पशु, कोई भी अपना उचित संतुलन नहीं खो सकता। पौधों, पशुओं, पर्वतों, और झीलों में परमेश्वर ने मानवजाति के लिए एक सुव्यवस्थित पारिस्थितिक वातावरण तैयार किया है। जब लोगों के पास इस प्रकार का पारिस्थितिक वातावरण होता है—एक संतुलित वातावरण—केवल तभी उनका जीवन सुरक्षित होता है? यदि वृक्ष या घास की प्रजनन करने की क्षमता खराब होती या उनकी प्रजनन की गति बहुत धीमी होती, तो क्या मिट्टी अपनी नमी नहीं खो देती? यदि मिट्टी अपनी नमी खो देती, तो क्या यह तब भी उर्वर होती? यदि मिट्टी अपनी वनस्पतियों और नमी को खो देती, तो इसका अपक्षरण बहुत जल्दी हो जाता, और इसके स्थान पर रेत बन जाती। जब मिट्टी और ख़राब हो जाती है, तो जीवित रहने के लिए लोगों का वातावरण भी नष्ट हो जाता। और तब इस तबाही के साथ और कई विपत्तियाँ भी आती हैं। इस प्रकार के पारिस्थितिक संतुलन के बिना, और इस प्रकार के पारिस्थितिक वातावरण के बिना, सभी चीज़ों के मध्य इन असंतुलन के कारण लोगों को बार-बार विपत्तियाँ सहनी पड़ती। उदाहरण के लिए, जब वातावरण संबंधी असंतुलन के कारण मेंढकों के पारिस्थितिक वातावरण का विनाश होने लगता है तो, वे सभी एक साथ इकट्ठे हो जाते हैं, उनकी संख्या में तेज़ी से वृद्धि होने लगती है। लोग ढेर सारे मेंढकों को शहरों की गलियां पार करते हुए भी देखते हैं। यदि मेंढकों की बड़ी संख्या जीवित रहने के लिए लोगों के वातावरण पर कब्जा कर ले, तो इसे क्या कहा जायेगा? एक विपत्ति। इसे विपत्ति क्यों कहा जायेगा? ये छोटे जानवर जो मानवजाति के लिए फायदेमंद और लोगों के लिए तब उपयोगी होते हैं, जब वे उस स्थान में रहते हैं जो उनके लिए उपयुक्त है; वे जीवित रहने के लिए लोगों के वातावरण को संतुलित बनाए रखते हैं। पर अगर वे एक विपत्ति बन जाते हैं, तो वे लोगों के जीवन की सुव्यवस्था को प्रभावित करेंगे। सभी चीज़ें और सभी तत्व जो मेंढक अपने शरीर के साथ लाते हैं, वे लोगों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। यहाँ तक कि लोगों के शारीरिक अंगों पर भी वार कर सकते हैं—यह विपत्तियों का एक प्रकार है। अन्य प्रकार की विपत्ति, जो कुछ ऐसी है जिसका मनुष्यों ने अक्सर अनुभव किया है, वह है भारी संख्या में टिड्डियों का प्रगट होना। क्या यह एक विपत्ति नहीं है? हाँ, यह वास्तव में एक भयावह विपत्ति है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि मनुष्य कितना समर्थ है—लोग हवाई जहाज़, तोप, और परमाणु बम बना

सकते हैं—लेकिन जब टिड्डियाँ मनुष्य पर आक्रमण करती हैं, तो उनके पास क्या समाधान होता है? क्या वे उन पर तोप का उपयोग कर सकते हैं? क्या वे उन्हें मशीन गनों से मार सकते हैं? नहीं मार सकते। तब क्या वे उन्हें भगाने के लिए उन पर कीटनाशकों का छिड़काव कर सकते हैं। यह भी कोई आसान काम नहीं। वे छोटी-छोटी टिड्डियाँ किसलिये आती हैं? वे खासतौर से फसलें और अनाज खाती हैं। जहाँ कहीं टिड्डियाँ जाती हैं वहाँ की फसलें पूर्णतया ख़त्म हो जाती हैं। टिड्डी के आक्रमण के समय, वह अनाज जिस पर किसान पूरे साल के लिए निर्भर होते हैं, उसे पूरी तरह टिड्डियों के द्वारा पलक झपकते ही खाया जा सकता है। और मनुष्य के लिए टिड्डियों का आगमन बस चिढ़चिढ़ाहट का कारण नहीं है—यह एक विपत्ति है। तो हम जानते हैं कि बड़ी संख्या में टिड्डियों की उपस्थिति एक प्रकार की विपत्ति है, तो चूहों का क्या? यदि चूहों को खाने के लिए उल्लू या बाज जैसे शिकारी पक्षी न हों, तो वे बहुत तेजी से बढ़ेंगे, तुम्हारी सोच से भी कहीं ज़्यादा तेजी से। और यदि चूहे बिना किसी रूकावट के बढ़ते जाएँ, तो क्या मनुष्य अच्छा जीवन जी सकते हैं? मनुष्य को किस प्रकार की स्थिति का सामना करना पड़ेगा? (महामारी का।) क्या तुम्हें लगता है महामारी इसका इकलौता परिणाम होगा? चूहे कुछ भी खाएँगे! यहाँ तक कि वे लकड़ी को भी कुतर देंगे। यदि एक घर में दो ही चूहे हों, तो भी पूरे घर में हर व्यक्ति परेशान हो जाएगा। कभी-कभी वे तेल चुरा लेते और उसे पी जाते हैं, कभी वे रोटी या अनाज खा जाते हैं। और जो चीज़ें वे नहीं खाते, उन्हें कुतर कर बर्बाद कर देते हैं। वे कपड़े, जूते, फर्निचर—सब कुछ कुतर जाते हैं। कभी-कभी वे अलमारी पर चढ़ जाते हैं—क्या थालियों पर चूहों के चढ़ जाने के बाद, उन्हें फिर से प्रयोग में लाया जा सकता है? उन्हें कीटाणुमुक्त करने के बाद भी तुम्हें तसल्ली नहीं होती, तुम उन्हें फेंक ही देते हो। चूहे लोगों के लिए इस तरह की मुसीबत खड़ी कर देते हैं। हैं तो वे छोटे चूहे, लेकिन लोगों के पास उनसे निपटने का कोई तरीका नहीं है और वे बस उनके द्वारा मचाए गए उत्पात को सहते रहते हैं। चूहों के पूरे दल की क्या बात करें, गड़बड़ी फैलाने के लिए चूहे का केवल एक जोड़ा ही पर्याप्त है। यदि उनकी संख्या बढ़ जाये और वे विपत्ति बन जाएँ, तो नतीजे सोच भी नहीं सकते। चींटियों जैसे नन्हें प्राणी भी विपत्ति बन सकते हैं। अगर ऐसा हो जाए तो उनके द्वारा मानवजाति को होने वाले नुकसान की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। चीटियाँ घरों को इतनी अधिक क्षति पहुँचा सकती हैं कि वे ढह जाएँ। उनकी ताक़त को अवश्य अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। यदि विभिन्न प्रकार के पक्षी विपत्ति पैदा कर दें तो क्या यह भयावह नहीं होगा? (हाँ।) इस बात को यदि दूसरे तरीके से कहें तो, किसी भी प्रकार के पशु या प्राणी हों, जैसे ही वे अपना संतुलन

खोते हैं, वे बढ़ेंगे, प्रजनन करेंगे, और एक असामान्य और अनियमित दायरे के भीतर रहेंगे। यह मनुष्य के लिए अकल्पनीय परिणामों को लेकर आएगा। यह न केवल लोगों के जीवित रहने और जीवन को प्रभावित करेगा, बल्कि यह मानवजाति के लिए विपत्ति भी लाएगा, उस हद तक जहाँ लोग संपूर्ण विनाश और विलुप्त होने की नियति भोगते हैं।

जब परमेश्वर ने सभी चीज़ों की सृष्टि की, तब उसने उन्हें संतुलित करने के लिए, पहाड़ों और झीलों के वास की स्थितियों को संतुलित करने के लिए, पौधों और सभी प्रकार के पशुओं, पक्षियों, कीड़ों-मकोड़ों के वास की स्थितियों को संतुलित करने के लिए सभी प्रकार की पद्धतियों और तरीकों का उपयोग किया। उसका लक्ष्य था कि सभी प्रकार के प्राणियों को उन नियमों के अंतर्गत जीने और बहुगुणित होने की अनुमति दे जिन्हें उसने स्थापित किया था। सृष्टि की कोई भी चीज़ इन नियमों के बाहर नहीं जा सकती है, और उन्हें तोड़ा नहीं जा सकता है। केवल इस प्रकार के आधारभूत वातावरण के अंतर्गत ही मनुष्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी सकुशल जीवित रह सकते हैं और वंश-वृद्धि कर सकते हैं। यदि कोई प्राणी परमेश्वर के द्वारा स्थापित मात्रा या दायरे से बाहर चला जाता है, या वह उसके शासन के अधीन उस वृद्धि दर, प्रजनन आवृत्ति, या संख्या से अधिक बढ़ जाता है, तो जीवित रहने के लिए मानवजाति का वातावरण विनाश की भिन्न-भिन्न मात्राओं को सहेगा। और साथ ही, मानवजाति का जीवित रहना भी खतरे में पड़ जाएगा। यदि एक प्रकार का प्राणी संख्या में बहुत अधिक है, तो यह लोगों के भोजन को छीन लेगा, लोगों के जल-स्रोत को नष्ट कर देगा, और उनके निवासस्थान को बर्बाद कर देगा। उस तरह से, मनुष्य का प्रजनन या जीवित रहने की स्थिति तुरन्त प्रभावित होगी। उदाहरण के लिए, पानी सभी चीज़ों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यदि बहुत सारे चूहे, चींटियाँ, टिड्डियाँ और मेंढक या दूसरी तरह के बहुत से जानवर हों, तो वे बहुत सारा पानी पी जाएँगे। वे जो जल पीते हैं उसकी मात्रा बढ़ती जाती है, तो लोगों के पीने का पानी और पेयजल के स्त्रोतों के निश्चित दायरे में जल-स्रोत कम हो जाएँगे, जलीय क्षेत्र कम हो जाएँगे और उन्हें जल की कमी होगी। यदि लोगों के पीने का पानी नष्ट, दूषित, या खत्म हो जाता है क्योंकि सभी प्रकार के जानवर संख्या में बढ़ गए हैं, तो जीवित रहने के लिए उस प्रकार के कठोर वातावरण के अधीन, मानवजाति का जीवित रहना गंभीर रूप से खतरे में पड़ जाएगा। यदि एक प्रकार के या अनेक प्रकार के प्राणी अपनी उपयुक्त संख्या से आगे बढ़ जाते हैं, तो हवा, तापमान, आर्द्रता, और यहाँ तक कि मानवजाति के जीवित रहने के स्थान के भीतर की हवा के तत्व भी भिन्न-भिन्न मात्रा में ज़हरीले और नष्ट हो जाएँगे। इन परिस्थितियों के अधीन,

मनुष्य का जीवित रहना और उसकी नियति भी उस प्रकार के वातावरण के खतरे में होगी। अतः, यदि ये संतुलन बिगड़ जाते हैं, तो वह हवा जिसमें लोग सांस लेते हैं, ख़राब हो जाएगी, वह जल जो वे पीते हैं, दूषित हो जाएगा, और वह तापमान जिसकी उन्हें ज़रुरत है वह भी बदल जाएगा, और भिन्न-भिन्न मात्रा से प्रभावित होगा। यदि ऐसा होता है, तो जीवित बचे रहने के लिए वातावरण जो स्वाभाविक रूप से मनुष्यजाति के हैं, बहुत बड़े प्रभावों और चुनौतियों के अधीन हो जाएँगे। इस परिस्थिति में जहाँ जीवित रहने के लिए मनुष्यों के आधारभूत वातावरण को नष्ट कर दिया गया है, मानवजाति की नियति और भविष्य की संभावनाएँ क्या होंगी? यह एक बहुत गंभीर समस्या है! क्योंकि परमेश्वर जानता है कि किस कारण से सृष्टि की प्रत्येक चीज़ मनुष्यजाति के वास्ते मौज़ूद है, हर एक प्रकार की चीज़ जिसे उसने बनाया है, उसकी भूमिका क्या है, इसका लोगों पर कैसा प्रभाव होता है, और यह मानवजाति के लिए कितना लाभ पहुँचाता है, परमेश्वर के हृदय में इन सब के लिए एक योजना है और वह सभी चीज़ों के हर एक पहलू का प्रबन्ध करता है जिसका उसने सृजन किया है, अतः हर एक कार्य जो वह करता है, मनुष्यों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और ज़रूरी है। तो अब से जब तुम सभी परमेश्वर द्वारा सृजी गयी चीज़ों के मध्य कोई पारिस्थितिक घटना या प्राकृतिक नियम देखोगे, तो परमेश्वर द्वारा रची गयी किसी चीज़ की अनिवार्यता के विषय में फ़िर कभी संदेह नहीं रखोगे। तुम सभी चीज़ों के विषय में परमेश्वर की व्यवस्थाओं पर और मानवजाति की आपूर्ति करने के लिए उसके विभिन्न तरीकों पर मनमाने ढंग से फैसले लेने के लिए अज्ञानता भरे शब्दों का उपयोग नहीं करोगे। साथ ही तुम परमेश्वर की सृष्टि के सभी चीज़ों के लिए उसके नियमों पर मनमाने ढंग से निष्कर्ष नहीं निकालोगे। क्या बात ऐसी ही नहीं है?

यह सब क्या है जिसके विषय में हमने अभी बात की है? इसके बारे में सोचो। हर उस चीज़ में, जो परमेश्वर करता है, उसका अपना इरादा होता है। भले ही मनुष्य के लिए उसके इरादे गूढ़ होते हैं, फिर भी यह हमेशा मानवजाति के जीवन से जटिलता और प्रबलता के साथ संबंधित होते हैं। यह पूरी तरह अपरिहार्य है। यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने कभी ऐसा काम नहीं किया जो व्यर्थ हो। क्योंकि हर चीज़ जो वह करता है, उसके पीछे के सिद्धांतों में उसकी योजना और बुद्धि होती है। उस योजना के पीछे के इरादे और लक्ष्य मनुष्य की सुरक्षा के लिए हैं, और किसी आपदा, किसी प्राणी द्वारा उत्पात और परमेश्वर की सृष्टि की किसी भी चीज़ के द्वारा मनुष्यों के किसी प्रकार के नुकसान को टालने हेतु मानवजाति की सहायता करने के लिए हैं। अतः क्या हम कह सकते हैं कि परमेश्वर के जिन कर्मों को हमने इस विषय के

अंतर्गत देखा है, वह एक अन्य तरीका है जिससे परमेश्वर मनुष्य की आपूर्ति करता है? क्या हम कह सकते हैं कि इन कर्मों द्वारा परमेश्वर मानवजाति को खिला रहा है और उसकी चरवाही कर रहा है? (हाँ।) क्या इस विषय और हमारी संगति के शीर्षक : "परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है," के बीच एक मज़बूत संबंध है? (हाँ।) एक मज़बूत संबंध है, और यह विषय उसका एक पहलू है। इन विषयों के बारे में बात करने से पहले, लोगों के पास परमेश्वर, स्वयं परमेश्वर और उसके कर्मों की कुछ अस्पष्ट कल्पनाएँ थीं—उनके पास इन चीज़ों की सच्ची समझ नहीं थी। हालाँकि, जब लोगों को उसके कर्मों और उन चीज़ों के बारे में बताया जाता है जिन्हें उसने किया है, तो वे जो कुछ परमेश्वर करता है उसके सिद्धांतों को समझ-बूझ सकते हैं और वे उनकी समझ हासिल कर सकते हैं और उनकी पहुँच के भीतर आ सकते हैं—क्या ऐसी बात नहीं है? भले ही परमेश्वर जब भी सभी चीज़ों की सृष्टि करने, और उन पर शासन करने जैसा कुछ करता है तो उसके हृदय में, अत्यंत जटिल सिद्धांत, उसूल और नियम होते हैं, लेकिन यदि तुम लोगों को संगति में बस उनके एक भाग के बारे में जानने दिया जाये, तो क्या तुम सब अपने हृदय में यह समझने में सक्षम नहीं होगे कि ये परमेश्वर के कर्म हैं, और जितना हो सकता है उतने वास्तविक हैं? (हाँ।) तो फिर परमेश्वर के विषय में तुम सबकी वर्तमान सोच पहले से अलग कैसे है? यह अपने सार में भिन्न है। जो कुछ तुम सभी पहले समझते थे वह बहुत खोखला एवं अस्पष्ट था, परंतु अब तुम्हारी समझ में, परमेश्वर के कर्मों और परमेश्वर की स्वरूप से मिलान करने के लिए बहुत सारे ठोस प्रमाण शामिल हैं। अतः, वह सब कुछ जो मैंने कहा है वह परमेश्वर के विषय में तुम लोगों की समझ के लिए विशाल शैक्षिक सामग्री है।

आज की सभा के लिए बस इतना ही। अलविदा! शुभ संध्या! (अलविदा, परमेश्वर!)

9 फरवरी, 2014

स्वयं परमेश्वर, जो अद्वितीय है X

परमेश्वर सभी चीज़ों के लिए जीवन का स्रोत है (IV)

आज, हम एक खास विषय पर संवाद कर रहे हैं। प्रत्येक विश्वासी के लिए, केवल दो ही मुख्य बातें हैं जिन्हें जानने, अनुभव करने और समझने की आवश्यकता है। ये दो बातें क्या हैं? पहली बात है, किसी व्यक्ति का जीवन में व्यक्तिगत प्रवेश, और दूसरी बात परमेश्वर को जानने से संबंधित है। क्या तुम लोगों

को लगता है कि हाल ही में हम जिस विषय, परमेश्वर को जानना, पर संवाद कर रहे हैं, वह प्राप्य है? यह कहना उचित होगा कि यह वास्तव में अधिकांश लोगों की समझ से परे है। तुम लोग शायद मेरी बातों से आश्वस्त न हुए हो लेकिन मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मैं ऐसा कहता हूँ क्योंकि जब तुम लोग उन बातों को सुन रहे थे जिन्हें मैं पहले कह रहा था, चाहे मैंने उसे किसी भी प्रकार से कहा हो, या किन्हीं शब्दों में कहा हो, तो तुम लोग, शाब्दिक और सैद्धांतिक, दोनों ही रूपों में यह जानने में समर्थ थे कि ये शब्द किस बारे में थे। फिर भी, तुम सभी के साथ एक अत्यन्त गंभीर समस्या यह थी कि तुम यह नहीं समझे कि मैंने ऐसी बातें क्यों कहीं या मैंने ऐसे विषयों पर क्यों बोला। यह इस मामले का मर्म है। इस प्रकार, यद्यपि इन बातों को सुनने से परमेश्वर और उसके कर्मों के बारे में तुम्हारी समझ में थोड़ी-सी वृद्धि और बढ़ोत्तरी हुई है, फिर भी तुम लोगों को लगता है कि परमेश्वर को जानने के लिए अत्यंत कष्टसाध्य प्रयास ज़रूरी हैं। इसका अर्थ यह है कि मैं जो कहता हूँ, उसे सुनने के बाद, तुममें से अधिकांश लोग यह नहीं समझते कि मैंने ऐसा क्यों कहा, और परमेश्वर को जानने से इसका क्या संबंध है। परमेश्वर को जानने से इसके संबंध को समझने में तुम इसलिए असमर्थ हो क्योंकि तुम लोगों के जीवन अनुभव अत्यधिक सतही हैं। यदि परमेश्वर के वचन के बारे में लोगों का ज्ञान और अनुभव बहुत ही उथले स्तर का बना रहता है, तो उसके संबंध में उनका अधिकतर ज्ञान अस्पष्ट और अमूर्त होगा; वह पूरी तरह से आम, सिद्धांतवादी और सैद्धान्तिक होगा। सैद्धांतिक रूप में, यह देखने-सुनने में तर्कसंगत और विवेकसम्मत प्रतीत हो सकता है, परन्तु अधिकांश लोगों के मुख से निकलने वाला परमेश्वर का ज्ञान वस्तुतः खोखला होता है। और मैं ऐसा क्यों कहता हूँ कि यह खोखला होता है? क्योंकि, परमेश्वर को जानने के बारे में जो तुम खुद कहते हो, उसकी सत्यपरकता और सटीकता को लेकर वास्तव में तुम्हें स्पष्ट समझ नहीं है। जैसे कि, यद्यपि अधिकांश लोगों ने परमेश्वर को जानने के बारे में बहुत सी जानकारियों और विषयों को सुना है, फिर भी परमेश्वर के उनके ज्ञान को अभी भी परिकल्पना और उस सिद्धान्त से परे जाना है जो अस्पष्ट और अमूर्त है। तो इस समस्या को किस प्रकार सुलझाया जा सकता है? क्या तुम लोगों ने इस बारे में कभी सोचा है? यदि कोई सत्य की खोज नहीं करता है तो क्या वह वास्तविकता को पा सकता है? यदि कोई सत्य की खोज नहीं करता है, तो निर्विवादित रूप से वह वास्तविकता रहित है और इसलिए निश्चित रूप से ऐसे लोगों को परमेश्वर के वचन का ज्ञान या अनुभव नहीं है। और जिन लोगों को परमेश्वर के वचनों की समझ नहीं होती, क्या वे परमेश्वर को जान सकते है? बिल्कुल नहीं; दोनों आपस में जुड़े हैं। इसलिए, अधिकांश लोग कहते हैं, "परमेश्वर को जानना

इतना कठिन क्यों है? जब मैं स्वयं को जानने की बात करता हूँ तो मैं घण्टों तक बोल सकता हूँ, परन्तु जब परमेश्वर को जानने की बात आती है तो मेरे पास शब्दों का अभाव हो जाता है। यहाँ तक कि जब मैं इस विषय पर थोड़ा-सा भी बोल पाता हूँ, तो मेरे शब्द जबरन होते हैं और सुनने में नीरस लगते हैं। जब मैं स्वयं को उन्हें बोलते हुए सुनता हूँ तो यह सुनने में बेढंगा लगता है।" यही स्रोत है। यदि तुम्हें लगता है कि परमेश्वर को जानना अत्यन्त कठिन, अत्यन्त श्रमसाध्य है, या तुम्हारे पास बोलने के लिए विषय ही नहीं हैं और बातचीत के लिए और दूसरों तथा स्वयं को देने के लिए तुम कुछ भी वास्तविक नहीं सोच सकते तो यह प्रमाणित करता है कि तुम कोई ऐसे व्यक्ति नहीं हो जिसने परमेश्वर के वचनों का अनुभव कर लिया है। परमेश्वर के वचन क्या हैं? क्या उसके वचन, परमेश्वर जो स्वयं है और जो कुछ उसके पास है, उसकी अभिव्यक्ति नहीं हैं? यदि तुमने परमेश्वर के वचनों का अनुभव नहीं किया है तो क्या तुम्हें इसका ज़रा भी ज्ञान हो सकता है कि उसके पास क्या है और वह स्वयं क्या है? निश्चित रूप से नहीं। ये सभी बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। यदि तुम्हें परमेश्वर के वचनों का कोई भी अनुभव नहीं है तो तुम परमेश्वर की इच्छा को ग्रहण नहीं कर सकते हो, और न ही तुम यह जानते हो कि उसका स्वभाव क्या है, उसे क्या पसंद है, वह किस बात से घृणा करता है, मनुष्य से उसकी क्या अपेक्षाएँ हैं, अच्छे लोगों के प्रति उसका रवैया क्या है और दुष्ट लोगों के प्रति उसका रवैया क्या है; यह सब निश्चित रूप से तुम्हारे लिए अस्पष्ट और धुँधला होगा। यदि इस तरह की अस्पष्टता के बीच तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो, तो जब तुम उनमें से एक होने का दावा करते हो जो सत्य की खोज करते हैं और परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, तो क्या ऐसे दावे वास्तविक हैं? वे नहीं हैं! इसलिए आओ हम परमेश्वर को जानने के बारे में बातचीत जारी रखें।

तुम सब आज की संगति के विषय को जानने के उत्सुक हो, है न? यह विषय इससे भी संबन्धित है, "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है" जिस पर हम हाल ही में बात करते रहे हैं। हमने इस बारे में काफी बात की है कि कैसे "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है," लोगों को यह बताने के लिए विभिन्न साधनों और परिप्रेक्ष्यों का उपयोग किया है कि किस प्रकार परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है, किन साधनों के द्वारा वह ऐसा करता है, और किन सिद्धान्तों के द्वारा वह सभी चीज़ों का प्रबंधन करता है, ताकि वे इस ग्रह पर बनी रहें जिसकी रचना परमेश्वर ने की है। हमने इस बारे में भी काफ़ी बातें की हैं कि कैसे परमेश्वर मानवजाति का भरण-पोषण करता है: किन साधनों के द्वारा वह ऐसा भरण-पोषण करता है, वह मानवजाति को जीने के लिए कैसा पर्यावरण प्रदान करता है, और किन साधनों द्वारा और किन आरंभ

बिंदुओं से वह मनुष्य के जीवन के लिए स्थिर पर्यावरण देता है। यद्यपि मैंने सभी चीज़ों पर परमेश्वर के प्रभुत्व और सभी चीज़ों के उसके प्रशासन, और उसके प्रबंधन के बीच संबंध के बारे में प्रत्यक्ष रूप से नहीं बोला है, फिर भी मैंने परोक्ष रूप से बोला है कि किन कारणों से वह सभी चीज़ों को इस प्रकार से प्रशासित करता है, और किन कारणों से वह मानवजाति का इस प्रकार से भरण-पोषण और पालन-पोषण करता है। यह सभी उसके प्रबंधन से संबंधित है। जिसकी हमने बात की है, उसकी विषय-वस्तु बहुत विस्तृत रही है: बृहत् पर्यावरण से लेकर लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं और भोजन जैसी बहुत छोटी बातों तक, कैसे परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है और उन्हें व्यवस्थित रूप से परिचालित करवाता है, से लेकर सही और उचित जीने के पर्यावरण तक जो उसने संसार की हर प्रजाति के लिए बनाया, इत्यादि। यह समस्त विस्तृत विषय-वस्तु इन बातों से जुड़ी है कि मनुष्य देह में कैसे रहते हैं—यानि यह सब कुछ भौतिक संसार की चीज़ों से जुड़ा है जो कि नग्न आँखों को दिखाई देती हैं, और जिन्हें लोग महसूस कर सकते हैं, जैसे कि, पर्वत, नदियाँ, समुद्र, मैदान इत्यादि। ये सभी वे वस्तुएँ हैं जिन्हें देखा और स्पर्श किया जा सकता है। जब मैं वायु और तापमान की बात करता हूँ, तो तुम लोग सीधे वायु का अस्तित्व महसूस करने के लिए अपनी श्वास का, और यह अनुभव करने के लिए कि तापमान उच्च है अथवा निम्न, अपने शरीर का उपयोग कर सकते हो। वृक्ष, घास और वन के पशु-पक्षी, आकाश में उड़ने और धरती पर चलने वाली चीज़ें, और विभिन्न छोटे-छोटे जानवर जो बिलों से निकलते हैं, इन सभी को लोगों की स्वयं की आँखों से देखा और उनके स्वयं के कानों से सुना जा सकता है। यद्यपि ऐसी सभी वस्तुओं का दायरा काफ़ी विस्तृत है, फिर भी परमेश्वर द्वारा रची गई सभी चीज़ों में से ये केवल भौतिक संसार का प्रतिनिधित्व करती हैं। भौतिक वस्तुएँ वे हैं जिन्हें लोग देख और महसूस कर सकते हैं, कहने का आशय है, कि जब तुम इन्हें स्पर्श करते हो तो तुम्हें उनका ज्ञान होता है, और जब तुम्हारे नेत्र उन्हें देखते हैं, तो तुम्हारा मस्तिष्क एक छवि, एक चित्र तुम्हारे समक्ष रखता है। ये वे वस्तुएँ हैं जो वास्तविक और सच्ची हैं; तुम्हारे लिये वे अमूर्त नहीं है, अपितु उनके आकार हैं। वे वर्गाकार, या वृत्ताकार, या बड़ी या छोटी हो सकती हैं और प्रत्येक तुम पर एक भिन्न छाप छोड़ती है। ये सभी चीज़ें सृष्टि के भौतिक पहलू को दर्शाती हैं। और इसलिए "सभी चीज़ों पर परमेश्वर का प्रभुत्व" वाक्यांश में कौन सी "सभी चीज़ें" परमेश्वर के लिए शामिल हैं? उनमें केवल वे ही चीज़ें शामिल नहीं हैं जिन्हें मनुष्य देख और स्पर्श कर सकते हैं; इसके अलावा, इनमें वे सभी भी शामिल हैं जो अदृश्य और अस्पृश्य हैं। यह सभी चीज़ों पर परमेश्वर के प्रभुत्व के असली अर्थों में से एक है। यद्यपि ऐसी चीज़ें मनुष्यों

के लिए अदृश्य और अस्पृश्य हैं, फिर भी परमेश्वर के लिए—जब तक ये परमेश्वर की आँखों से देखी जा सकती हैं और उसकी संप्रभुता के भीतर हैं, तब तक वे वास्तव में अस्तित्व में हैं। इस तथ्य के बावजूद कि मनुष्यों के लिए वे अमूर्त और अकल्पनीय, और बल्कि अदृश्य और अस्पृश्य हैं, परमेश्वर के लिए वे वास्तव में और सच में अस्तित्व में है। सभी चीज़ों जिन पर परमेश्वर शासन करता है, उनके बीच यह एक अलग ही दुनिया है और उसके प्रभुत्व वाली सभी चीजों के दायरे का एक अन्य हिस्सा है। यह आज की संगति का विषय है: किस प्रकार परमेश्वर आध्यात्मिक दुनिया पर शासन करता है और उसे चलाता है। चूँकि इस विषय में सम्मिलित है कि किस प्रकार परमेश्वर समस्त वस्तुओं पर शासन और उनका प्रबंधन करता है, इसलिए यह उस संसार—आध्यात्मिक संसार—से संबंधित है जो भौतिक संसार से बाहर है और इसलिए इसे समझना हमारे लिए परम आवश्यक है। इस विषय-वस्तु के बारे में बताए जाने और इसे समझ लेने के बाद ही लोग असलियत में "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है", इन शब्दों के सही अर्थ को समझ सकते हैं। यही कारण है कि क्यों हम इस विषय के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं; इसका उद्देश्य "परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है, और परमेश्वर सब चीज़ों का प्रबंधन करता है", विषय को पूर्ण करना है। शायद जब तुम लोग इस विषय को सुनो, तो यह तुम लोगों को अजीब और अथाह लगे,—किन्तु इस बात की परवाह किए बिना कि तुम लोग कैसा अनुभव करते हो, चूँकि आध्यात्मिक दुनिया उन सभी चीज़ों का एक भाग है जो परमेश्वर द्वारा शासित हैं, इसलिए तुम लोगों को इस विषय की थोड़ी समझ तो बनानी ही चाहिए। इसकी समझ पा लेने के पश्चात्, तुम लोगों को इस वाक्यांश, "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है" की और भी गहरी सराहना, समझ और ज्ञान होगा।

परमेश्वर आध्यात्मिक संसार पर किस प्रकार शासन करता है और उसे चलाता है

भौतिक संसार के विषय में, जब भी कुछ बातें या घटनाएँ लोगों की समझ में नहीं आती हैं, तो वे प्रासंगिक जानकारी को खोज सकते हैं, या उनके मूल और पृष्ठभूमि का पता लगाने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग कर सकते हैं। परन्तु जब दूसरे संसार की बात आती है जिसके बारे में हम आज बात कर रहे हैं—आध्यात्मिक संसार, जिसका अस्तित्व भौतिक संसार के बाहर है—तो लोगों के पास ऐसा भी कोई साधन या माध्यम बिलकुल नहीं है जिसके द्वारा इसके बारे में कुछ भी जाना जा सके। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मैं ऐसा कहता हूँ क्योंकि, मानवजाति की दुनिया में, भौतिक संसार की हर चीज़ मनुष्य के भौतिक अस्तित्व से अवियोज्य है, और क्योंकि लोगों को ऐसा महसूस होता है कि भौतिक संसार की हर चीज़

उनकी भौतिक जीवन शैली और भौतिक जीवन से अवियोज्य है, इसलिए अधिकांश लोग केवल उन भौतिक चीज़ों से ही अवगत हैं, या उन्हें ही देखते हैं, जो उनकी आँखों के सामने होती हैं, जो चीज़ें उन्हें दिखाई पड़ती हैं। फिर भी, जब आध्यात्मिक दुनिया की बात आती है—कहने का तात्पर्य है कि हर चीज़ जो दूसरी दुनिया की है—तो यह कहना उचित होगा कि अधिकांश लोग विश्वास नहीं करते हैं। चूँकि लोग इसे देख नहीं सकते हैं, और वे मानते हैं कि इसे समझने की, या इसके बारे में कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं है, साथ ही आध्यात्मिक दुनिया भौतिक संसार से पूरी तरह से भिन्न है, और, परमेश्वर के दृष्टिकोण से तो यह खुली है—लेकिन मनुष्यों के लिए, यह रहस्य और गुप्त है—इसलिए लोगों को एक ऐसा मार्ग खोजने में अत्यंत कठिनाई होती है जिसके माध्यम से वे इस दुनिया के विभिन्न पहलुओं को समझ सकें। आध्यात्मिक दुनिया के विभिन्न पहलुओं, जिनके बारे में मैं बोलने जा रहा हूँ, उनका संबंध केवल परमेश्वर के प्रशासन और उसकी संप्रभुता से है: मैं किन्हीं रहस्यों का प्रकाशन नहीं कर रहा हूँ, न ही मैं तुम लोगों को उन रहस्यों में से कोई भी बता रहा हूँ, जिन्हें तुम लोग जानना चाहते हो। चूँकि यह परमेश्वर की संप्रभुता, परमेश्वर के प्रशासन, और परमेश्वर के भरण-पोषण से संबंधित है, इसलिए मैं केवल उस अंश के बारे में बोलूँगा जिसे जानना तुम लोगों के लिए आवश्यक है।

सबसे पहले, मैं तुम लोगों से एक प्रश्न पूछता हूँ : तुम लोगों के मन में आध्यात्मिक दुनिया क्या है? मोटे तौर पर बोला जाए, तो यह वह दुनिया है जो भौतिक संसार से बाहर की है, एक ऐसी दुनिया जो लोगों के लिए अदृश्य और अमूर्त दोनों है। फिर भी, तुम्हारी कल्पना में, आध्यात्मिक दुनिया को किस प्रकार का होना चाहिए? इसे न देख पाने के परिणामस्वरूप, शायद तुम लोग इसके बारे में सोच पाने में सक्षम नहीं हो। फिर भी, जब तुम लोग कुछ दन्तकथाएँ सुनते हो, तब तुम लोग इसके बारे में सोच रहे होते हो, और इसके बारे में सोचने से स्वयं को रोक नहीं पाते हो। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? कुछ ऐसी बात है जो बहुत से लोगों के साथ तब होती है जब वे छोटे होते हैं : जब कोई उन्हें कोई डरावनी कहानी—भूतों या आत्माओं के बारे में—सुनाता है तो वे अत्यंत भयभीत हो जाते हैं। आखिर वे क्यों भयभीत हो जाते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे उन चीज़ों की कल्पना कर रहे होते हैं; यद्यपि वे उन्हें नहीं देख सकते हैं, उन्हें महसूस होता है कि वे उनके कमरों में चारों ओर हैं, किसी छिपे हुए या अंधेरे कोने में, और वे इतने डर जाते हैं कि उनकी सोने की हिम्मत नहीं होती है। विशेष रूप से, रात के समय वे अपने कमरे में अकेले रहने या अपने आँगन में अकेले जाने की हिम्मत नहीं करते हैं। यह तुम्हारी कल्पना की आध्यात्मिक दुनिया है, और लोगों को

लगता है कि यह एक भयावह दुनिया है। सच्चाई तो यह है कि हर कोई इसके बारे में कुछ हद तक कल्पना करता है, और हर कोई इसे थोड़ा बहुत अनुभव कर सकता है।

आओ, हम आध्यात्मिक दुनिया के बारे में बात करने से आरंभ करें। यह क्या है? मैं तुम्हें एक छोटा-सा और सरल स्पष्टीकरण देता हूँ : आध्यात्मिक दुनिया एक महत्वपूर्ण स्थान है, एक ऐसा स्थान जो भौतिक संसार से भिन्न है। मैं क्यों कहता हूँ कि यह महत्वपूर्ण है? हम इसके बारे में विस्तार से बात करने जा रहे हैं। आध्यात्मिक दुनिया का अस्तित्व मानवजाति के भौतिक संसार से अभिन्न रूप से जुड़ा है। सभी चीज़ों के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व में यह मानव के जीवन और मृत्यु के चक्र में एक बड़ी भूमिका निभाता है; यह इसकी भूमिका है, और यह उन कारणों में से एक है जिनकी वजह से इसका अस्तित्व महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह एक ऐसा स्थान है जो पाँच इंद्रियों के लिये अगोचर है, इसलिए कोई भी इस बात का सही-सही अनुमान नहीं लगा सकता कि इसका अस्तित्व है अथवा नहीं। इसके विभिन्न गत्यात्मक पहलू मानवीय अस्तित्व के साथ अंतरंगता से जुड़े हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानवजाति के जीवन की व्यवस्था भी आध्यात्मिक दुनिया से बेहद प्रभावित होती है। इसमें परमेश्वर की संप्रभुता शामिल है या फिर नहीं? शामिल है। जब मैं ऐसा कहता हूँ, तो तुम लोग समझ जाते हो कि क्यों मैं इस विषय पर चर्चा कर रहा हूँ : ऐसा इसलिए है क्योंकि यह परमेश्वर की संप्रभुता से और साथ ही उसके प्रशासन से संबंधित है। इस तरह के एक संसार में—जो लोगों के लिए अदृश्य है—इसकी हर स्वर्गिक आज्ञा, आदेश और प्रशासनिक प्रणाली भौतिक संसार के किसी भी देश की व्यवस्थाओं और प्रणालियों से बहुत उच्च है, और इस संसार में रहने वाला कोई भी प्राणी उनकी अवहेलना या उल्लंघन करने का साहस नहीं करेगा। क्या यह परमेश्वर की संप्रभुता और प्रशासन से संबंधित है? आध्यात्मिक संसार में, स्पष्ट प्रशासनिक आदेश, स्पष्ट स्वर्गिक आज्ञाएँ और स्पष्ट विधान हैं। विभिन्न स्तरों पर और विभिन्न क्षेत्रों में, सेवक सख्ती से अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हैं, और नियमों और विनियमों का पालन करते है, क्योंकि वे जानते हैं कि स्वर्गिक आज्ञा के उल्लंघन का परिणाम क्या होता है; वे स्पष्ट रूप से अवगत हैं कि किस प्रकार परमेश्वर दुष्टों को दण्ड और भले लोगों को इनाम देता है, और वह किस प्रकार सभी चीज़ों को चलाता है, और उन पर शासन करता है। इसके अतिरिक्त, वे स्पष्ट रूप से देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर अपने स्वर्गिक आदेशों और विधानों को कार्यान्वित करता है। क्या ये उस भौतिक संसार से भिन्न हैं, जिसमें मानवजाति रहती है? वे दरअसल व्यापक रूप से भिन्न हैं। आध्यात्मिक संसार एक ऐसा संसार है जो भौतिक संसार से पूर्णतया भिन्न है। चूँकि

यहाँ स्वर्गिक आदेश और विधान हैं, इसलिए यह परमेश्वर की संप्रभुता, प्रशासन, और इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के स्वभाव तथा साथ ही उसके स्वरूप से संबंधित है। इसे सुनने के पश्चात्, क्या तुम लोगों को यह महसूस नहीं होता है कि इस विषय पर बोलना मेरे लिये अति आवश्यक है? क्या तुम लोग इसमें अंतर्निहित रहस्यों को जानना नहीं चाहते हो? (हाँ, हम चाहते हैं।) आध्यात्मिक दुनिया की अवधारणा ऐसी है। यद्यपि यह भौतिक संसार के साथ सहअस्तित्व में है, और साथ-साथ परमेश्वर के प्रशासन और उसकी संप्रभुता के अधीन है, फिर भी इस दुनिया का परमेश्वर का प्रशासन और उसकी संप्रभुता भौतिक संसार की अपेक्षा बहुत सख्त है। जब विस्तार की बात आती है, तो हमें इस बात से आरंभ करना चाहिए कि किस प्रकार आध्यात्मिक दुनिया मनुष्य के जीवन और मृत्यु के चक्र के कार्य के लिए उत्तरदायी है, क्योंकि यह कार्य आध्यात्मिक दुनिया के प्राणियों के कार्य का एक बड़ा भाग है।

मानवजाति में, मैं सभी लोगों को तीन प्रकारों में वर्गीकृत करता हूँ। पहले प्रकार के लोग अविश्वासी हैं, ये वे हैं जो धार्मिक विश्वासों से रहित हैं। ये अविश्वासी कहलाते हैं। अविश्वासियों की बहुत बड़ी संख्या केवल धन में विश्वास रखती है; वे केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, वे भौतिकवादी हैं और केवल भौतिक संसार में विश्वास करते है—वे जीवन और मृत्यु के चक्र में और देवताओं और प्रेतों के बारे में कही गई बातों में विश्वास नहीं रखते हैं। मैं इन लोगों को अविश्वासियों के रूप में वर्गीकृत करता हूँ, और ये पहले प्रकार के हैं। दूसरा प्रकार अविश्वासियों से अलग विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों का है। मानवजाति में, मैं इन मतों के लोगों को अनेक मुख्य समूहों में विभाजित करता हूँ : पहले यहूदी हैं, दूसरे कैथोलिक हैं, तीसरे ईसाई हैं, चौथे मुस्लिम और पाँचवें बौद्ध हैं; ये पाँच प्रकार हैं। ये विभिन्न प्रकार के मतों वाले लोग हैं। तीसरा प्रकार उन लोगों का है जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, और इसमें तुम लोग शामिल हो। ऐसे विश्वासी वे लोग हैं जो आज परमेश्वर का अनुसरण करते हैं। इन लोगों को दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है : परमेश्वर के चुने हुए लोग और सेवाकर्ता। इन प्रमुख प्रकारों को स्पष्ट रूप से विभेदित किया गया है। तो अब, अपने मन में तुम लोग मनुष्यों के प्रकारों और क्रमों को स्पष्ट रूप से विभेदित करने में सक्षम हो, हो न? पहला प्रकार अविश्वासियों का है और मैं कह चुका हूँ कि अविश्वासी कौन हैं। क्या वे लोग जो आकाश में वृद्ध मनुष्य में विश्वास करते हैं, अविश्वासी हैं? कई अविश्वासी केवल आकाश में वृद्ध मनुष्य में विश्वास करते हैं; वे मानते हैं कि वायु, वर्षा, आकाशीय बिजली इत्यादि आकाश में इस वृद्ध मनुष्य द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं, जिस पर वे फसल बोने और काटने के लिए निर्भर रहते हैं—फिर भी जब परमेश्वर पर विश्वास करने का उल्लेख

किया जाता है, तब वे उसमें विश्वास करने के अनिच्छुक हो जाते हैं। क्या इसे परमेश्वर में विश्वास कहा जा सकता है? ऐसे लोगों को अविश्वासियों में सम्मिलित किया जाता है। तुम इसे समझ गए, है न? इन श्रेणियों को समझने में ग़लती मत करना। दूसरे प्रकार में आस्था वाले लोग हैं और तीसरा प्रकार वे लोग हैं जो इस समय परमेश्वर का अनुसरण कर रहे हैं। क्यों मैंने सभी मनुष्यों को इन प्रकारों में विभाजित किया है? (क्योंकि विभिन्न प्रकार के लोगों के अंत और गंतव्य भिन्न-भिन्न हैं।) यह इसका एक पहलू है। जब इन विभिन्न प्रजातियों और प्रकारों के लोग आध्यात्मिक दुनिया में लौटते हैं, तो उनमें से प्रत्येक का जाने का भिन्न स्थान होगा और वे जीवन और मृत्यु के चक्र की भिन्न—भिन्न व्यवस्थाओं के अधीन किए जाएँगे, और यही कारण है कि क्यों मैंने मनुष्यों को इन मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया है।

1. अविश्वासियों का जीवन और मृत्यु चक्र

आओ, हम अविश्वासियों के जीवन और मृत्यु के चक्र से आरम्भ करें। मृत्यु के पश्चात् किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक दुनिया के एक नाज़िर द्वारा ले जाया जाता है। किसी व्यक्ति का ठीक-ठीक कौन—सा भाग ले जाया जाता है? उसकी देह नहीं, बल्कि उसकी आत्मा। जब उसकी आत्मा ले जायी जाती है, तब वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचता है जो आध्यात्मिक दुनिया का एक अभिकरण है, एक ऐसा स्थान जो विशेष रूप से अभी-अभी मरे हुए लोगों की आत्मा को ग्रहण करता है। (ध्यान दें: किसी के भी मरने के बाद पहला स्थान जहाँ वे जाते हैं, आत्मा के लिए अजनबी होता है।) जब उन्हें इस स्थान पर ले जाया जाता है, तो एक अधिकारी पहली जाँचें करता है, उनका नाम, पता, आयु और उनके समस्त अनुभव की पुष्टि करता है। जब वे जीवित थे तो उन्होंने जो भी किया वह एक पुस्तक में लिखा जाता है और सटीकता के लिए उसका सत्यापन किया जाता है। इस सब की जाँच हो जाने के पश्चात्, उन मनुष्यों के पूरे जीवन के व्यवहार और कार्यकलापों का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि उन्हें दण्ड दिया जाएगा या वे फिर से मनुष्य के रूप में जन्म लेना जारी रखेंगे, जो कि पहला चरण है। क्या यह पहला चरण भयावह है? यह अत्यधिक भयावह नहीं है, क्योंकि इसमें केवल इतना ही हुआ है कि मनुष्य एक अन्धकारमय और अपरिचित स्थान में पहुँचा है।

दूसरे चरण में, यदि इस मनुष्य ने जीवनभर बहुत से बुरे कार्य किये हैं और अनेक कुकर्म किये हैं, तब उससे निपटने के लिए उसे दण्ड के स्थान पर ले जाया जाएगा। यह वह स्थान होगा जो स्पष्ट रूप से लोगों के दण्ड के लिए उपयोग किया जाता है। उन्हें किस प्रकार के दण्ड दिया जाता है इसका वर्णन उनके द्वारा

किये गए पापों पर, और इस बात पर निर्भर करता है कि मृत्यु से पूर्व उन्होंने कितने दुष्टतापूर्ण कार्य किए—यह इस द्वितीय चरण में होने वाली पहली स्थिति है। उनकी मृत्यु से पूर्व उनके द्वारा किये गये बुरे कार्यों और उनकी दुष्टताओं की वजह से, दण्ड के पश्चात् जब वे पुनः जन्म लेते हैं—जब वे एक बार फिर से भौतिक संसार में जन्म लेते हैं—तो कुछ लोग मनुष्य बनते रहेंगे, और कुछ पशु बन जाएँगे। कहने का अर्थ है कि, आध्यात्मिक दुनिया में किसी व्यक्ति के लौटने के पश्चात् उनके द्वारा किए गए दुष्टता के कार्यों की वजह से उन्हें दण्डित किया जाता है; इसके अतिरिक्त, उनके द्वारा किए गए दुष्टता के कार्य की वजह से, अपने अगले जन्म में वे सम्भवत: मनुष्य नहीं, बल्कि पशु बनकर लौटेंगे। जो पशु वे बन सकते हैं उनमें गाय, घोड़े, सूअर, और कुत्ते शामिल हैं। कुछ लोग पक्षी या बत्तख या कलहंस के रूप में पुनर्जन्म ले सकते हैं... पशुओं के रूप में पुनर्जन्म लेने के बाद, जब वे फिर से मरेंगे तो आध्यात्मिक दुनिया में लौट जाएँगे। वहाँ जैसा कि पहले हुआ, मरने से पहले उनके व्यवहार के आधार पर, आध्यात्मिक दुनिया तय करेगी कि वे मनुष्य के रुप में पुनर्जन्म लेंगे या नहीं। अधिकांश लोग बहुत अधिक दुष्टता करते हैं, और उनके पाप अत्यन्त गंभीर होते हैं, इसलिए उन्हें सात से बारह बार तक पशु के रूप में पुनर्जन्म लेना पड़ता है। सात से बारह बार—क्या यह भयावह है? (यह भयावह है।) तुम लोगों को क्या डराता है? किसी मनुष्य का पशु बनना—यह भयावह है। और एक मनुष्य के लिए, एक पशु बनने में सर्वाधिक पीड़ादायक बातें क्या हैं? किसी भाषा का न होना, केवल कुछ साधारण विचार होना, केवल उन्हीं चीज़ों को कर पाना जो पशु करते हैं और पशुओं वाला भोजन ही खा पाना, पशु के समान साधारण मानसिकता और हाव-भाव होना, सीधे खड़े हो कर चलने में समर्थ न होना, मनुष्यों के साथ संवाद न कर पाना, और यह तथ्य की मनुष्यों के किसी भी व्यवहार और गतिविधियों का पशुओं से कोई सम्बन्ध न होना। कहने का आशय है कि, सब चीज़ों के बीच, पशु होना सभी जीवित प्राणियों में तुम्हें निम्नतम कोटि का बना देता है, और यह मनुष्य होने से कहीं अत्यधिक दुःखदायी है। यह उन लोगों के लिए आध्यात्मिक दुनिया के दण्ड का एक पहलू है जिन्होंने बहुत अधिक दुष्टता के कार्य और बड़े पाप किए हैं। जब उनके दण्ड की प्रचण्डता की बात आती है, तो इसका निर्णय इस आधार पर लिया जाता है कि वे किस प्रकार के पशु बनते हैं। उदाहरण के लिए, क्या एक कुत्ता बनने की तुलना में एक सूअर बनना अधिक अच्छा है? कुत्ते की तुलना में सूअर अधिक अच्छा जीवन जीता है या बुरा? बदतर, है न? यदि लोग गाय या घोड़ा बनते हैं, तो वे एक सूअर की तुलना में अधिक बेहतर जीवन जिएंगे या बदतर? (बेहतर।) यदि कोई व्यक्ति बिल्ली के रूप में पुनर्जन्म लेता है

तो क्या यह अधिक आरामदायक होगा? वह बिल्कुल वैसा ही पशु होगा, और एक बिल्ली होना एक गाय या घोड़ा होने की तुलना में अधिक आसान है क्योंकि बिल्लियाँ अपना अधिकांश समय नींद की सुस्ती में गुज़ारती हैं। गाय या घोड़ा बनना अधिक मेहनत वाला काम है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति गाय या घोड़े के रुप में पुनर्जन्म लेता है, तो उन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता है जो एक कष्टप्रद दण्ड के समान है। गाय या घोड़ा बनने की तुलना में कुत्ता बनना कुछ अधिक बेहतर होगा, क्योंकि कुत्ते का अपने स्वामी के साथ निकट संबंध होता है। कुछ कुत्ते, कई वर्षों तक पालतू होने के बाद, अपने मालिक की कही हुई कई बातें समझने में समर्थ हो जाते हैं। कभी-कभी, कोई कुत्ता अपने मालिक की मनःस्थिति और अपेक्षाओं के अनुरूप बन सकता है और मालिक कुत्ते के साथ ज्यादा अच्छा व्यवहार करता है, और कुत्ता ज्यादा अच्छा खाता और पीता है, और जब वह पीड़ा में होता है तो इसकी अधिक देखभाल की जाती है। तो क्या कुत्ता एक अधिक सुखी जीवन व्यतीत नहीं करता है? इसलिये एक गाय या घोड़ा होने की तुलना में कुत्ता होना बेहतर है। इसमें, किसी व्यक्ति के दण्ड की प्रचण्डता यह निर्धारित करती है कि वह कितनी बार, और साथ ही किस प्रकार के पशु के रूप में जन्म लेता है।

चूँकि अपने जीवित रहने के समय उन्होनें बहुत से पाप किये थे, इसलिए कुछ लोगों को सात से बारह जन्म पशु के रूप में पुनर्जन्म लेने का दण्ड दिया जाता है। पर्याप्त बार दण्डित होने के पश्चात्, आध्यात्मिक दुनिया में लौटने पर उन्हें अन्यत्र ले जाया जाता है—एक ऐसे स्थान पर जहाँ विभिन्न आत्माएँ पहले ही दण्ड पा चुकी होती हैं, और उस प्रकार की होती हैं जो मनुष्य के रूप में जन्म लेने के लिये तैयार हो रही होती हैं। यह स्थान प्रत्येक आत्मा को उस प्रकार के परिवार जिसमें वे उत्पन्न होंगे, एक बार पुनर्जन्म लेने के बाद उनकी क्या भूमिका होगी, आदि के अनुसार श्रेणीबद्ध करता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग जब इस संसार में आएँगे तो गायक बनेंगे, इसलिए उन्हें गायकों के बीच रखा जाता है; कुछ लोग इस संसार में आएँगे तो व्यापारी बनेंगे और इसलिए उन्हें व्यापारी लोगों के बीच रखा जाता है; और यदि किसी को मनुष्य रूप में आने के बाद विज्ञान अनुसंधानकर्ता बनना है तो उसे अनुसंधानकर्ताओं के बीच रखा जाता है। उन्हें वर्गीकृत कर दिए जाने के पश्चात्, प्रत्येक को एक भिन्न समय और नियत तिथि के अनुसार भेजा जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कि आजकल लोग ई-मेल भेजते हैं। इसमें जीवन और मृत्यु का एक चक्र पूरा हो जाएगा। जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक दुनिया में पहुँचता है उस दिन से ले कर जब तक उसका दण्ड समाप्त नहीं हो जाता है तब तक, या जब तक उसका एक पशु के रुप में अनेक बार पुनर्जन्म नहीं हो जाता है तथा वह

मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लेने की तैयारी कर रहा होता है तब यह प्रक्रिया पूर्ण होती है।

जहाँ तक उनकी बात है जिन्होंने दण्ड भोग लिया है और जो अब पशु के रूप में जन्म नहीं लेंगे, क्या उन्हें मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लेने के लिए भौतिक संसार में तुरंत भेजा जाएगा? या उन्हें मनुष्यों के बीच आने से पहले कितना समय लगेगा? वह आवृत्ति क्या है जिसके साथ यह हो सकता है? इसके कुछ लौकिक प्रतिबंध हैं। आध्यात्मिक दुनिया में होने वाली हर चीज़ कुछ उचित लौकिक प्रतिबंधों और नियमों के अधीन है—जिसे, यदि मैं संख्याओं के साथ समझाऊँ, तो तुम लोग समझ जाओगे। उनके लिये जो अल्पावधि में पुनर्जन्म लेते हैं, जब वे मरते हैं तो मनुष्य के रूप में उनके पुनर्जन्म की तैयारियाँ पहले ही की जा चुकी होंगी। यह हो सकने का अल्पतम समय तीन दिन है। कुछ लोगों के लिए, इसमें तीन माह लगते हैं, कुछ के लिए इसमें तीन वर्ष लगते हैं, कुछ के लिए इसमें तीस वर्ष लगते हैं, कुछ के लिए इसमें तीन सौ वर्ष लगते हैं, इत्यादि। तो इन लौकिक नियमों के बारे में क्या कहा जा सकता है, और उनकी विशिष्टताएँ क्या हैं? यह भौतिक संसार—मनुष्यों के संसार—किसी आत्मा से क्या चाहता है, इस पर और उस भूमिका पर आधारित होता है जिसे इस आत्मा को इस संसार में निभाना है। जब लोग साधारण व्यक्ति के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं, तो उनमें से अधिकांश अतिशीघ्र पुनर्जन्म लेते हैं, क्योंकि मनुष्य के संसार को ऐसे साधारण लोगों की महती आवश्यकता होती है और इसलिए तीन दिन के पश्चात् वे एक ऐसे परिवार में भेज दिए जाते हैं जो उनके मरने से पहले के परिवार से सर्वथा भिन्न होता है। परन्तु कुछ ऐसे होते हैं जो इस संसार में विशेष भूमिका निभाते हैं। "विशेष" का अर्थ है कि मनुष्यों के संसार में उनकी कोई बड़ी माँग नहीं होती है; न ही ऐसी भूमिका के लिये अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, इसलिए इसमें तीन सौ वर्ष लग सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यह आत्मा हर तीन सौ वर्ष में एक बार अथवा यहाँ तक कि तीन हजार वर्ष में भी एक केवल बार आएगी। ऐसा क्यों है? ऐसा इस तथ्य के कारण है कि तीन सौ वर्ष या तीन हज़ार वर्ष तक संसार में ऐसी भूमिका की आवश्यकता नहीं है, इसलिए उन्हें आध्यात्मिक दुनिया में कहीं पर रखा जाता है। उदाहरण के लिए, कनफ्यूशियस को लें, पारंपरिक चीनी संस्कृति पर उसका गहरा प्रभाव था और उसके आगमन ने उस समय की संस्कृति, ज्ञान, परम्परा और उस समय के लोगों की विचारधारा पर गहरा प्रभाव डाला था। परन्तु इस तरह के मनुष्य की हर एक युग में आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए उसे पुनर्जन्म लेने से पहले, तीन सौ या तीन हजार वर्ष तक प्रतीक्षा करते हुए, आध्यात्मिक दुनिया में ही रहना पड़ा था। क्योंकि मनुष्यों के संसार को ऐसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए उसे निष्क्रिय

रुप से प्रतीक्षा करनी पड़ी, क्योंकि इस तरह की बहुत कम भूमिकाएँ थी, उसके करने के लिए बहुत कम था, इसलिए उसे, निष्क्रिय, और मनुष्य के संसार में उसकी आवश्यकता पड़ने पर भेजे जाने के लिए, अधिकांश समय आध्यात्मिक दुनिया में कहीं पर रखना पड़ा था। जिस बारम्बारता के साथ अधिकतर लोग पुनर्जन्म लेते हैं उसके लिए इस प्रकार के आध्यात्मिक दुनिया के लौकिक नियम हैं। लोग चाहे कोई साधारण या विशेष हों, आध्यात्मिक दुनिया में लोगों के पुनर्जन्म लेने की प्रक्रिया के लिये उचित नियम और सही अभ्यास हैं, और ये नियम और अभ्यास परमेश्वर द्वारा भेजे जाते हैं, उनका निर्णय या नियन्त्रण आध्यात्मिक दुनिया के किसी नाज़िर या प्राणी के द्वारा नहीं किया जाता है। अब तुम समझ गए, है ना?

किसी आत्मा के लिए उसका पुनर्जन्म, इस जीवन में उसकी भूमिका क्या है, किस परिवार में वह जन्म लेती है और उसका जीवन किस प्रकार का होता है, इन सबका उस आत्मा के पिछले जीवन से गहरा संबंध होता है। मनुष्य के संसार में हर प्रकार के लोग आते हैं, और उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाएँ भिन्न—भिन्न होती हैं, उसी तरह से उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य भिन्न-भिन्न होते हैं। ये कौन से कार्य हैं? कुछ लोग अपना कर्ज़ चुकाने आते हैं: यदि उन्होंने पिछली ज़िंदगी में किसी से बहुत सा पैसा उधार लिया था, तो वे इस ज़िंदगी में उस कर्ज़ को चुकाने के लिए आते हैं। कुछ लोग, इस बीच, अपना ऋण उगाहने के लिए आए हैं: विगत जीवन में उनके साथ बहुत सी चीज़ों में, और अत्यधिक पैसों का घोटाला किया गया था, और इसलिए उनके आध्यात्मिक दुनिया में आने के बाद, आध्यात्मिक दुनिया उन्हें न्याय देगी और उन्हें इस जीवन में अपना कर्ज़ा उगाहने देगी। कुछ लोग एहसान का कर्ज़ चुकाने के लिए आते हैं: उनके पिछले जीवन के दौरान—यानि उनके पिछले पुनर्जन्म में—कोई उनके प्रति दयावान था, और इस जीवन में उन्हें पुनर्जन्म लेने के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान किया गया है और इसलिए वे उस कृतज्ञता का बदला चुकाने के लिए पुनर्जन्म लेते हैं। इस बीच, दूसरे किसी का जीवन लेने के लिए इस जीवन में पैदा हुए हैं। और वे किसका जीवन लेते हैं? उन व्यक्तियों का जिन्होंने पिछले जन्मों में उनके प्राण लिये थे। सारांश में, प्रत्येक व्यक्ति का वर्तमान जीवन अपने विगत जीवनों के साथ प्रगाढ़ रुप से संबंध रखता है, यह संबंध तोड़ा नहीं जा सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का वर्तमान जीवन उसके पिछले जीवन से बहुत अधिक प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, हम कहते हैं कि झांग ने अपनी मृत्यु से पहले ली को एक बड़ी मात्रा में पैसों का धोखा दिया था। तो क्या झांग ली का ऋणी बन गया? वह ऋणी है, तो क्या यह स्वाभाविक है कि ली को झांग से अपना ऋण वसूल करना चाहिए? नतीजतन, उनकी मृत्यु के उपरान्त,

उनके बीच एक ऋण है जिसका निपटान अवश्य ही किया जाना चाहिए। जब वे पुनर्जन्म लेते हैं और झांग मनुष्य बनता है, तो किस प्रकार से ली उससे अपना ऋण वसूल करता है? एक तरीका है झांग के पुत्र के रुप में पुनर्जन्म लेकर; झांग खूब धन अर्जित करता है जिसे ली द्वारा उड़ा दिया जाता है। चाहे झांग कितना ही धन क्यों न कमाये, उसका पुत्र ली, उसे लुटा देता है। चाहे झांग कितना ही धन क्यों न अर्जित करे, वह कभी पर्याप्त नहीं होता है; और इस बीच उसका पुत्र किसी न किसी कारण से पिता के धन को विभिन्न तरीकों से उड़ा देता है। झांग हैरान रह जाता है, वह सोचता है, "मेरा यह पुत्र हमेशा अपशकुन ही क्यों लाता है? ऐसा क्यों है कि दूसरों के पुत्र इतने शिष्ट हैं? क्यों मेरा ही पुत्र महत्वकांक्षी नहीं है, वह इतना निकम्मा और धन अर्जित करने के अयोग्य क्यों है, और क्यों मुझे सदा उसकी सहायता करनी पड़ती है? चूँकि मुझे उसे सहारा देना है तो मैं सहारा दूँगा—किन्तु ऐसा क्यों है कि चाहे मैं कितना ही धन उसे क्यों न दूँ, वह सदा और अधिक चाहता है? क्यों वह दिनभर में कोई ईमानदारी का काम करने के योग्य नहीं है, और उसके बजाय बाकी सब चीजों जैसे कि आवारागर्दी, खान-पीना, वेश्यावृत्ति और जुएबाजी करने में ही लगा रहता है? आखिर ये हो क्या रहा है?" फिर झांग कुछ समय तक विचार करता है: "ऐसा हो सकता है कि विगत जीवन में मैं उसका ऋणी रहा हूँ? तो ठीक है, मैं वह कर्ज उतार दूँगा! जब तक मैं पूरा चुकता नहीं कर दूँगा, यह मामला समाप्त नहीं होगा!" वह दिन आ सकता है जब ली अपना ऋण वसूल कर लेता है, और जब वह चालीस या पचास के दशक में चल रहा होता है, तो हो सकता है कि एक दिन अचानक उसे चेतना आए और वह महसूस करे कि, "अपने जीवन के पूरे पूर्वार्द्ध में मैंने एक भी भला काम नहीं किया है! मैंने अपने पिता के कमाये हुए सारे धन को उड़ा दिया, इसलिए मुझे एक अच्छा इन्सान बनने की शुरुआत करनी चाहिए! मैं स्वयं को मज़बूत बनाऊँगा; मैं एक ऐसा व्यक्ति बनूँगा जो ईमानदार हो, और उचित रूप से जीवन जीता हो, और मैं अपने पिता को फिर कभी दुःख नहीं पहुँचाऊँगा!" वह ऐसा क्यों सोचता है? वह अचानक अच्छे में कैसे बदल गया? क्या इसका कोई कारण है? क्या कारण है? (ऐसा इसलिए है क्योंकि ली ने अपना ऋण वसूल कर लिया है, झांग ने अपना कर्ज़ चुका दिया है।) इसमें, कार्य-कारण है। कहानी बहुत-बहूत पहले आरम्भ हुई थी, उनके मौजूदा जीवन से पहले, उनके विगत जीवन की यह कहानी उनके वर्तमान जीवन तक लायी गई है, और दोनों में से कोई भी अन्य को दोष नहीं दे सकता है। चाहे झांग ने अपने पुत्र को कुछ भी क्यों न सिखाया हो, उसके पुत्र ने कभी नहीं सुना, और न ही एक दिन भी ईमानदारी से कार्य किया। परन्तु जिस दिन कर्ज चुका दिया गया, उसके पुत्र को सिखाने की कोई

आवश्यकता नहीं रही—वह स्वाभाविक रुप से समझ गया। यह एक साधारण सा उदाहरण है। क्या ऐसे अनेक उदाहरण हैं? (हाँ, हैं।) यह लोगों को क्या बताता है? (कि उन्हें अच्छा बनना चाहिए और दुष्टता नहीं करनी चाहिए।) उन्हें कोई दुष्टता नहीं करनी चाहिए, और उनके कुकर्मों का प्रतिफल मिलेगा! अधिकांश अविश्वासी बहुत दुष्टता करते हैं, और उन्हें उनके कुकर्मों का प्रतिफल मिलता है, ठीक है ना? परन्तु क्या यह प्रतिफल मनमाना है? हर कार्य कि पृष्ठभूमि होती है और उसके प्रतिफल का एक कारण होता है। क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारे किसी के साथ पैसे की धोखाधड़ी करने के बाद तुम्हें कुछ नहीं होगा? क्या तुम्हें लगता है कि उस पैसे की ठगी करने के पश्चात्, तुम्हें कोई परिणाम नहीं भुगतना पड़ेगा? यह तो असंभव होगा; और निश्चित रूप से इसके परिणाम होंगे! इस बात की परवाह किए बिना कि वे कौन हैं, या वे यह विश्वास करते हैं अथवा नहीं कि परमेश्वर है, सभी व्यक्तियों को अपने व्यवहार का उत्तरदायित्व लेना होगा और अपनी करतूतों के परिणामों को भुगतना होगा। इस साधारण से उदाहरण के संबंध में—झांग को दण्डित किया जाना और ली का ऋण चुकाया जाना—क्या यह उचित नहीं है? जब लोग इस प्रकार के कार्य करते हैं तो इसी प्रकार का परिणाम होता है। यह आध्यात्मिक दुनिया के प्रशासन से अवियोज्य है। अविश्वासी होने के बावजूद, जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, उनका अस्तित्व ऐसी स्वर्गिक आज्ञाओं और आदेशों के अधीन होता है, इससे कोई बच कर नहीं भाग सकता है और इस सच्चाई से कोई नहीं बच सकता है।

वे लोग जिन्हें परमेश्वर में विश्वास नहीं है, वे प्रायः मानते हैं कि मनुष्य को दृश्यमान प्रत्येक चीज़ अस्तित्व में है, जबकि प्रत्येक चीज जिसे देखा नहीं जा सकता, या जो लोगों से बहुत दूर है, वह अस्तित्व में नहीं है। वे यह मानना पंसद करते हैं कि "जीवन और मृत्यु का चक्र" नहीं होता है, और कोई "दण्ड" नहीं होता है; इसलिए, वे बिना किसी मलाल के पाप और दुष्टता करते हैं। बाद में वे दण्डित किये जाते हैं, या पशु के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं। अविश्वासियों में से अधिकतर प्रकार के लोग इस दुष्चक्र में फँस जाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि आध्यात्मिक दुनिया समस्त जीवित प्राणियों के अपने प्रशासन में सख्त है। चाहे तुम विश्वास करो अथवा नहीं, वह तथ्य अस्तित्व में रहता है, क्योंकि एक भी व्यक्ति या वस्तु उस दायरे से बच नहीं सकती है जो परमेश्वर अपनी आँखों से देखता है, और एक भी व्यक्ति या वस्तु उसकी स्वर्गिक आज्ञाओं और आदेशों के नियमों और उनकी सीमाओं से बच नहीं सकती है। इस प्रकार, यह साधारण सा उदाहरण हर एक को बताता है कि इस बात की परवाह किए बिना कि

तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो अथवा नहीं, पाप करना और दुष्टता करना अस्वीकार्य है और हर कार्य के परिणाम होते हैं। जब कोई, जिसने किसी को धन का धोखा दिया है, इस प्रकार से दण्डित किया जाता है, तो ऐसा दण्ड उचित है। इस तरह के आम तौर पर देखे जाने वाले व्यवहार को आध्यात्मिक दुनिया में दण्डित किया जाता है और ऐसा दण्ड परमेश्वर के आदेशों और स्वर्गिक आज्ञाओं द्वारा दिया जाता है। इसलिए गंभीर आपराधिक और दुष्टतापूर्ण व्यवहार—बलात्कार और लूटपाट, धोखाधड़ी और कपट, चोरी और डकैती, हत्या और आगजनी, इत्यादि—और भी अधिक भिन्न-भिन्न उग्रता वाले दण्ड की श्रृंखला के अधीन किए जाते हैं। और इन भिन्न-भिन्न उग्रता वाले दंडों की श्रृंखला में क्या शामिल हैं? उनमें से कुछ उग्रता के स्तर का निर्धारण करने के लिये समय का प्रयोग करते हैं, जबकि कुछ विभिन्न तरीकों का उपयोग करके ऐसा करते हैं; और अन्य इस निर्धारण के माध्यम से करते हैं कि लोग पुनर्जन्म के बाद कहाँ जाते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग गालियाँ बकने वाले होते हैं। "गालियाँ बकने वाले" किसे संदर्भित करता है? इसका अर्थ होता है प्रायः दूसरों को गाली देना और द्वेषपूर्ण भाषा का, ऐसी भाषा का उपयोग करना जो दूसरों को कोसती है। द्वेषपूर्ण भाषा क्या प्रकट करती है? यह प्रकट करती है कि उस व्यक्ति का हृदय कलुषित है। द्वेषपूर्ण भाषा जो लोगों को कोसती है, प्रायः ऐसे ही लोगों के मुख से निकलती है, और ऐसी द्वेषपूर्ण भाषा कठोर परिणाम लाती है। इन लोगों के मरने और उचित दण्ड भोग लेने के पश्चात्, उनका गूंगे के रूप में पुनर्जन्म हो सकता है। कुछ लोग, जब वे जीवित रहते हैं, तो बडे चौकस रहते हैं, वे प्रायः दूसरों का लाभ उठाते हैं, उनकी छोटी-छोटी योजनाएँ विशेषरूप से सुनियोजित होती हैं, और वे लोगों को बहुत नुकसान पहुँचती हैं। जब उनका पुनर्जन्म होता है, तो वे मूर्ख या मानसिक रूप से विकलांग हो सकते हैं। कुछ लोग दूसरों के निजी जीवन में अक्सर ताक-झाँक करते हैं; उनकी आँखें बहुत सा वह भी देखती हैं जिसकी जानकारी उन्हेंहें नहीं होना चाहिए, और वे ऐसा बहुत कुछ जान लेते हैं जो उन्हें नहीं जानना चाहिए। नतीजतन, जब उनका पुनर्जन्म होता है, तो वे अन्धे हो सकते हैं। कुछ लोग जब जीवित होते हैं तो बहुत फुर्तीले होते हैं, वे प्रायः झगड़ते हैं और बहुत दुष्टता करते हैं। इसलिए वे विकलांग, लंगड़े, एक बाँह विहीन के रूप में पुनर्जन्म ले सकते हैं; या वे कुबड़े, या टेढ़ी गर्दन वाले, लचक कर चलने वाले के रूप में पुनर्जन्म ले सकते हैं या उनका एक पैर दूसरे की अपेक्षा छोटा हो सकता है, इत्यादि। इसमें, उन्हें अपने जीवित रहने के दौरान की गई दुष्टता के स्तर के आधार पर विभिन्न दण्डों के अधीन किया गया है। तुम लोगों को क्या लगता है कि कुछ लोग भेंगे क्यों होते हैं? क्या ऐसे काफी लोग हैं? आजकल ऐसे बहुत

से लोग हैं। कुछ लोग इसलिए भेंगे होते हैं क्योंकि अपने विगत जीवन में उन्होंने अपनी आँखों का बहुत अधिक उपयोग किया था और बहुत से बुरे कार्य किए थे, और इसलिए इस जीवन में उनका जन्म भेंगे के रूप में होता है और गंभीर मामलों में वे अन्धे भी जन्मे हैं। यह प्रतिफल है! कुछ लोग अपनी मृत्यु से पूर्व दूसरों के साथ बहुत अच्छी तरह से निभाते हैं; वे अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, साथियों, या उनसे जुड़ें लोगों के लिए कई अच्छे कार्य करते हैं। वे दूसरों को दान देते हैं और उनकी सहायता करते हैं, या आर्थिक रुप से उनकी सहायता करते हैं, लोग उनके बारे में बहुत अच्छी राय रखते हैं। जब ऐसे लोग आध्यात्मिक दुनिया में वापस आते है तब उन्हें दंडित नहीं किया जाता है। किसी अविश्वासी को किसी भी प्रकार से दण्डित नहीं किए जाने का अर्थ है कि वह बहुत अच्छा इन्सान था। परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने के बजाय, वे केवल आकाश में वृद्ध व्यक्ति पर विश्वास करते हैं। ऐसा व्यक्ति केवल इतना ही विश्वास करता है कि उससे ऊपर कोई आत्मा है जो हर उस चीज़ को देखती है जो वह करता है—बस यही है जिसमें यह व्यक्ति विश्वास रखता है। इसका परिणाम होता है कि यह व्यक्ति कहीं बेहतर व्यवहार वाला होता। ये लोग दयालु और परोपकारी होते हैं और जब अन्ततः वे आध्यात्मिक दुनिया में लौटते हैं, तो वह उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करेगी और शीघ्र ही उनका पुनर्जन्म होगा। जब वे पुनः पैदा होंगे, तो वे किस प्रकार के परिवारों में आएँगे? यद्यपि वे परिवार धनी नहीं होंगे, किन्तु वे किसी नुकसान से मुक्त होंगी, इसके सदस्यों के बीच समरसता होगी; पुनर्जन्म पाए ये लोग अपने दिन सुरक्षा, खुशहाली में गुज़रेंगे और हर कोई आनंदमय होगा, और अच्छा जीवन जिएगा। जब ये लोग प्रौढ़ावस्था में पहुँचेंगे, तो उनके बड़े, भरे-पूरे परिवार होंगे, उनकी संतानें बुद्धिमान होंगी और सफलता का आनंद लेंगी, और उनके परिवार सौभाग्य का आनन्द लेंगे—और इस तरह का परिणाम बहुत हद तक इन लोगों के विगत जीवन से जुड़ा होता है। कहने का आशय है कि, कोई व्यक्ति मरने के बाद कहाँ जाता है और कहाँ उसका पुनर्जन्म होता है, वह पुरुष होगा अथवा स्त्री, उसका ध्येय क्या है, जीवन में वह किन परिस्थितियों से गुज़रेगा, उसे कौनसी असफलताएँ मिलेंगी, वह किन आशीषों का सुख भोगेगा, वह किनसे मिलेगा और उसके साथ क्या होगा—कोई भी इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता है, इससे बच नहीं सकता है, या इससे छुप नहीं सकता है। कहने का अर्थ है कि, तुम्हारा जीवन निश्चित कर दिए जाने के पश्चात्, तुम्हारे साथ जो भी होता है उसमें—तुम इससे बचने का कैसा भी, किसी भी साधन से प्रयास करो—आध्यात्मिक दुनिया में परमेश्वर ने तुम्हारे लिये जो जीवन पथ निर्धारित कर दिया है उसके उल्लंघन का तुम्हारे पास कोई उपाय नहीं है। क्योंकि जब तुम पुनर्जन्म लेते

हो, तो तुम्हारे जीवन का भाग्य पहले ही निश्चित किया जा चुका होता है। चाहे वह अच्छा हो अथवा बुरा, प्रत्येक को इसका सामना करना चाहिए, और आगे बढते रहना चाहिए। यह एक ऐसा मुद्दा है जिससे इस संसार में रहने वाला कोई भी बच नहीं सकता है, और कोई भी मुद्दा इससे अधिक वास्तविक नहीं है। मैं जो भी कहता रहा हूँ, तुम सब वह सब समझ गए हो, ठीक है न?

इन बातों को समझ लेने के बाद, क्या अब तुम लोगों ने देखा कि परमेश्वर के पास अविश्वासियों के जीवन और मृत्यु के चक्र के लिए बिल्कुल सटीक और कठोर जाँच और व्यवस्था है? सबसे पहले, उसने आध्यात्मिक राज्य में विभिन्न स्वर्गिक आज्ञाएँ, आदेश और प्रणालियाँ स्थापित की हैं, और एक बार इनकी घोषणा हो जाने के बाद, आध्यात्मिक दुनिया के विभिन्न आधिकारिक पदों के प्राणियों के द्वारा, परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किए गए अनुसार, उन्हें बहुत कड़ाई से कार्यान्वित किया जाता है, और कोई भी उनका उल्लंघन करने का साहस नहीं करता है। और इसलिए, मनुष्य के संसार में मानवजाति के जीवन और मृत्यु के चक्र में, चाहे कोई पशु के रूप में पुनर्जन्म ले या इंसान के रूप में, दोनों के लिए नियम हैं। क्योंकि ये नियम परमेश्वर की ओर से आते हैं, इसलिए उन्हें तोड़ने का कोई साहस नहीं करता है, न ही कोई उन्हें तोडने में समर्थ है। यह केवल परमेश्वर की इस संप्रभुता की वजह से है, और चूंकि ऐसे नियम अस्तित्व में हैं, इसलिए यह भौतिक संसार, जिसे लोग देखते हैं नियमित और व्यवस्थित है; यह केवल परमेश्वर की इस संप्रभुता के कारण ही है कि मनुष्य उस दूसरे संसार के साथ शान्ति से रहने में समर्थ है जो मानवजाति के लिए पूर्णरूप से अदृश्य है और इसके साथ समरसता से रहने में सक्षम है—जो पूर्ण रूप से परमेश्वर की संप्रभुता से अभिन्न है। व्यक्ति के दैहिक जीवन की मृत्यु के पश्चात्, आत्मा में अभी भी जीवन रहता है, और इसलिए यदि वह परमेश्वर के प्रशासन के अधीन नहीं होती तो क्या होता? आत्मा हर स्थान पर भटकती रहती, हर स्थान में हस्तक्षेप करती, और यहाँ तक कि मनुष्य के संसार में जीवित प्राणियों को भी हानि पहुँचाती। ऐसी हानि केवल मानवजाति को ही नहीं पहुँचाई जाती, बल्कि वनस्पति और पशुओं की ओर भी पहुँचाई जा सकती थी—लेकिन सबसे पहले हानि लोगों को पहुँचती। यदि ऐसा होता—यदि ऐसी आत्मा प्रशासनरहित होती, वाकई लोगों को हानि पहुँचाती, और वाकई दुष्टता के कार्य करती—तो ऐसी आत्मा का भी आध्यात्मिक दुनिया में ठीक से निपटान किया जाता: यदि चीज़ें गंभीर होती तो शीघ्र ही आत्मा का अस्तित्व समाप्त हो जाता और उसे नष्ट कर दिया जाता। यदि संभव हुआ तो, उसे कहीं रख दिया जाएगा और फिर उसका पुनर्जन्म होगा। कहने का आशय है कि, आध्यात्मिक दुनिया में विभिन्न

आत्माओं का प्रशासन व्यवस्थित होता है, और उसे चरणबद्ध तरीके से तथा नियमों के अनुसार किया जाता है। यह केवल ऐसे प्रशासन के कारण ही है कि मनुष्य का भौतिक संसार अराजकता में नहीं पड़ा है, कि भौतिक संसार के मनुष्य एक सामान्य मानसिकता, साधारण तर्कशक्ति और एक व्यवस्थित दैहिक जीवन धारण करते हैं। मानवजाति के केवल ऐसे सामान्य जीवन के बाद ही वे जो देह में रहते हैं, वे पनपते रहना और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संतान उत्पन्न करना जारी रखने में समर्थ हो सकते हैं।

अभी-अभी तुमने जिन वचनों को सुना है, उनके बारे में तुम क्या सोचते हो? क्या वे तुम्हारे लिए नये हैं? आज के संगति के विषयों ने तुम पर कैसी छाप छोड़ी है? उनकी नवीनता के अतिरिक्त क्या तुम कुछ और महसूस करते हो? (लोगों को अच्छे व्यवहार वाला होना चाहिए, और हम देख सकते हैं कि परमेश्वर महान है और उस पर श्रद्धा रखी जानी चाहिए।) (विभिन्न प्रकार के लोगों के अंत की व्यवस्था परमेश्वर कैसे करता है इस बारे में अभी-अभी परमेश्वर की संगति सुनने के बाद, एक तरह से मुझे लगता है कि उसका स्वभाव किसी अपराध की अनुमति नहीं देता, और यह कि मुझे उस पर श्रद्धा रखनी चाहिए; और दूसरी तरह से, मैं जानता हूँ कि परमेश्वर किस प्रकार के लोगों को पसंद करता है, और किस प्रकार के लोगों को पसंद नहीं करता है, और इसलिए मैं उनमें से एक बनना चाहूँगा जिन्हें वह पसंद करता है।) क्या तुम लोग देखते हो कि परमेश्वर इस क्षेत्र में अपने कार्यों में उच्च सिद्धान्तों वाला है? वे कौन से सिद्धांत हैं जिनके द्वारा वह कार्य करता है? (लोग जो कार्य करते हैं उन्हीं के अनुसार वह लोगों का अन्त तय करता है।) यह अविश्वासियों के विभिन्न अंतों के बारे में है जिनकी हमने अभी-अभी बात की है। जब अविश्वासियों की बात आती है, तो क्या परमेश्वर की कार्रवाइयों के पीछे अच्छों को पुरस्कृत करने और दुष्टों को दण्ड देने का सिद्धांत है? क्या कोई अपवाद हैं? (नहीं।) क्या तुम लोग देखते हो कि परमेश्वर की कार्यवाइयों के पीछे एक सिद्धांत है? अविश्वासी वास्तव में परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, न ही वे परमेश्वर के आयोजनों का पालन करते हैं। इसके अलावा वे उसकी संप्रभुता से अनभिज्ञ हैं, उसे स्वीकार तो बिल्कुल नहीं करते हैं। अधिक गंभीर बात यह है कि वे परमेश्वर की निन्दा करते हैं और उसे कोसते हैं, और उन लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण होते हैं जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं। परमेश्वर के प्रति उनके ऐसे रवैये के बावजूद, उनके प्रति परमेश्वर का प्रशासन अपने सिद्धांतो से विचलित नहीं होता है; वह अपने सिद्धांतों और अपने स्वभाव के अनुसार व्यवस्थित रूप से उन्हें प्रशासित करता है। उनकी शत्रुता को वह किस प्रकार लेता है? अज्ञानता के रूप में! नतीजतन, उसने इन लोगों का—अविश्वासियों में से अधिकतर का—अतीत में एक बार पशु के

रूप में पुनर्जन्म करवाया है। तो परमेश्वर की नज़रों में अविश्वासी सही मायने में हैं क्या? वे सब जंगली जानवर हैं। परमेश्वर जंगली जानवरों और साथ ही मानवजाति को प्रशासित करता है, और इस प्रकार के लोगों के लिए उसके सिद्धांत एक समान हैं। यहाँ तक कि इन लोगों के उसके प्रशासन में उसके स्वभाव को अभी भी देखा जा सकता है, जैसा कि सभी चीज़ों पर उसके प्रभुत्व के पीछे उसकी व्यवस्थाओं को देखा जा सकता है। और इसलिए, क्या तुम उन सिद्धांतों में परमेश्वर की संप्रभुता को देखते हो जिनके द्वारा वह उन अविश्वासियों को प्रशासित करता है जिसका मैंने अभी-अभी उल्लेख किया है? क्या तुम परमेश्वर के धार्मिक स्वभाव को देखते हो? (हम देखते हैं।) दूसरे शब्दों में, चाहे वह किसी भी चीज़ से क्यों न निपटे, परमेश्वर अपने सिद्धांतों और स्वभाव के अनुसार कार्य करता है। यही परमेश्वर का सार है; वह उन आदेशों या स्वर्गिक आज्ञाओं को यूँ ही कभी नहीं तोड़ेगा जो उसने स्थापित किए हैं सिर्फ इसलिए कि वह ऐसे लोगों को जंगली जानवर मानता है। परमेश्वर ज़रा भी लापरवाही के बिना, सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता है और उसकी कार्रवाइयाँ किसी भी कारक से अप्रभावित रहती हैं। वह जो भी करता है, वह सब उसके स्वयं के सिद्धांतों के अनुपालन में होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के पास स्वयं परमेश्वर का सार है; यह उसके सार का एक पहलू है, जो किसी सृजित किए गए प्राणी के पास नहीं होता है। परमेश्वर हर वस्तु, हर व्यक्ति, और सभी जीवित चीज़ों के बीच जो उसने सृजित की हैं, अपनी सँभाल में, उनके प्रति अपने दृष्टिकोण में, प्रबंधन में, प्रशासन में, और उन पर शासन में न्यायपरायण और उत्तरदायी है, और इसमें वह कभी भी लापरवाह नहीं रहा है। जो अच्छे हैं, वह उनके प्रति कृपापूर्ण और दयावान है; जो दुष्ट हैं, उन्हें वह निर्दयता से दंड देता है; और विभिन्न जीवित प्राणियों के लिए, वह समयबद्ध और नियमित तरीके से, विभिन्न समयों पर मनुष्य संसार की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार उचित व्यवस्थाएँ करता है, इस तरह से कि ये विभिन्न जीवित प्राणी उन भूमिकाओं के अनुसार जो वे निभाते हैं व्यवस्थित रूप से जन्म लेते रहें, और एक विधिवत तरीके से भौतिक जगत और आध्यात्मिक दुनिया के बीच चलते रहें।

एक जीवित प्राणी की मृत्यु—दैहिक जीवन का अंत—यह दर्शाता है कि एक जीवित प्राणी भौतिक संसार से आध्यात्मिक दुनिया में चला गया है, जबकि एक नए दैहिक जीवन का जन्म यह दर्शाता है कि एक जीवित प्राणी आध्यात्मिक दुनिया से भौतिक संसार में आया है और उसने अपनी भूमिका ग्रहण करना और उसे निभाना आरम्भ कर दिया है। चाहे एक जीवित प्राणी का प्रस्थान हो या आगमन, दोनों आध्यात्मिक दुनिया के कार्य से अवियोज्य हैं। जब तक कोई व्यक्ति भौतिक संसार में आता है, तब तक

परमेश्वर द्वारा आध्यात्मिक दुनिया में उस परिवार, जिसमें वह जाता है, उस युग में जिसमें उसे आना है, उस समय जब उसे आना है, और उस भूमिका की, जो उसे निभानी है, की उचित व्यवस्थाएँ और विशेषताएँ पहले ही तैयार की जा चुकी होती हैं। इसलिए इस व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन—जो काम वह करता है, और जो मार्ग वह चुनता है—जरा से भी विचलन के बिना, आध्यात्मिक दुनिया में की गई व्यवस्थाओं के अनुसार चलेगा। इसके अतिरिक्त, जिस समय दैहिक जीवन समाप्त होता है और जिस तरह और जिस स्थान पर यह समाप्त होता है, आध्यात्मिक दुनिया के सामने वह स्पष्ट और प्रत्यक्ष होता है। परमेश्वर भौतिक संसार पर शासन करता है, और वह आध्यात्मिक दुनिया पर भी शासन करता है, और वह किसी आत्मा के जीवन और मृत्यु के साधारण चक्र को विलंबित नहीं करेगा, न ही वह किसी आत्मा के जीवन और मृत्यु के चक्र के प्रबंधन में कभी भी कोई त्रुटि कर सकता है। आध्यात्मिक दुनिया के आधिकारिक पदों के सभी नाज़िर अपने व्यक्तिगत कार्यों को कार्यान्वित करते हैं, और परमेश्वर के निर्देशों और नियमों के अनुसार वह करते हैं जो उन्हें करना चाहिए। इस प्रकार, मानवजाति के संसार में, मनुष्य द्वारा देखी गई कोई भी भौतिक घटना व्यवस्थित होती है, और उसमें कोई अराजकता नहीं होती है। यह सब कुछ सभी चीज़ों पर परमेश्वर के व्यवस्थित शासन की वजह से है, और साथ ही इस तथ्य के कारण है कि उसका अधिकार प्रत्येक वस्तु पर शासन करता है। उसके प्रभुत्व में वह भौतिक संसार जिसमें मनुष्य रहता है, और, इसके अलावा, मनुष्य के पीछे की वह अदृश्य आध्यात्मिक दुनिया शामिल है। इसलिए, यदि मनुष्य अच्छा जीवन चाहते हैं, और अच्छे परिवेश में रहने की आशा रखते हैं, तो सम्पूर्ण दृश्य भौतिक जगत प्रदान किए जाने के अलावा, मनुष्य को वह आध्यात्मिक दुनिया भी अवश्य प्रदान की जानी चाहिए, जिसे कोई देख नहीं सकता है, जो मानवजाति की ओर से प्रत्येक जीवित प्राणी को संचालित करती है और जो व्यवस्थित है। इस प्रकार, यह कहने के बाद कि परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है, क्या हमने "सभी चीज़ों" के अर्थ की अपनी जानकारी और समझ को नहीं बढ़ाया है? (हाँ।)

2. विभिन्न आस्था वाले लोगों का जीवन और मृत्यु का चक्र

हमने अभी-अभी पहली श्रेणी के लोगों, यानी अविश्वासियों के जीवन और मृत्यु के चक्र के बारे में चर्चा की। अब आओ हम द्वितीय श्रेणी के, यानी विभिन्न आस्था वाले लोगों के बारे में चर्चा करें। "विभिन्न आस्था वाले लोगों का जीवन और मृत्यु चक्र" एक अन्य महत्वपूर्ण विषय है, और यह अत्यंत आवश्यक है कि तुम लोग इस बारे में कुछ समझो। पहले, आओ हम इस बारे में बात करें कि "आस्था वाले लोगों" में "आस्था"

यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, कैथोलिक धर्म, इस्लाम और बौद्ध धर्म, इन पाँच प्रमुख धर्मों को संदर्भित करती है। अविश्वासियों के अतिरिक्त, जो लोग इन पाँच धर्मों में विश्वास करते हैं, उनका विश्व की जनसंख्या में एक बड़ा अनुपात है। इन पाँच धर्मों के बीच, जिन्होंने अपने विश्वास से आजीविका बनाई है, वे बहुत थोड़े-से हैं, फिर भी इन धर्मों के बहुत अनुयायी हैं। जब वे मरते हैं, तो भिन्न स्थान पर जाते हैं। किससे "भिन्न"? अविश्वासियों से, यानी उन लोगों से, जिनकी कोई आस्था नहीं है, जिनके बारे में हम अभी-अभी बात कर रहे थे। मरने के बाद, इन पाँचों धर्मों के विश्वासी किसी अन्य स्थान पर जाते हैं, अविश्वासियों के स्थान से भिन्न किसी स्थान पर। किंतु प्रक्रिया एकसमान होती है; आध्यात्मिक दुनिया उनके बारे में उस सबके आधार पर निर्णय करेगी, जो उन्होंने मरने से पहले किया था, उसके पश्चात् तदनुसार उनकी प्रक्रिया की जाएगी। परंतु प्रक्रिया करने के लिए इन लोगों को किसी अन्य स्थान पर क्यों भेजा जाता है? इसका एक महत्वपूर्ण कारण है। क्या है वह कारण? मैं तुम लोगों को इसे एक उदाहरण से समझाऊँगा। किंतु इससे पहले कि मैं बताऊँ, तुम स्वयं सोच रहे होगे : "ऐसा शायद इसलिए होगा, क्योंकि परमेश्वर में उनका कम विश्वास होगा! वे पूर्ण विश्वासी नहीं होंगे।" किंतु यह कारण नहीं है। उन्हें दूसरों से अलग रखने का एक महत्वपूर्ण कारण है।

उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म को लो : मैं तुम्हें एक तथ्य बताता हूँ। एक बौद्ध, सबसे पहले, वह व्यक्ति है, जो बौद्ध धर्म में धर्मांतरित हो गया है, और वह ऐसा व्यक्ति है, जो जानता है कि उसका विश्वास क्या है। जब बौद्ध अपने बाल कटवाते हैं और भिक्षु या भिक्षुणी बनते हैं, तो इसका अर्थ है कि उन्होंने अपने आपको लौकिक संसार से पृथक कर लिया है और मानव-जगत के कोलाहल को बहुत पीछे छोड़ दिया है। प्रतिदिन वे सूत्रों का उच्चारण करते हैं और बुद्ध के नामों का जाप करते हैं, केवल शाकाहारी भोजन करते हैं, तपस्वी का जीवन व्यतीत करते हैं, और अपने दिन तेल के दीये की ठंडी, क्षीण रोशनी में गुजारते हैं। वे अपना सारा जीवन इसी प्रकार व्यतीत करते हैं। जब उनका भौतिक जीवन समाप्त होता है, वे अपने जीवन का सारांश बनाते हैं, परंतु अपने हृदय में उन्हें पता नहीं होता कि मरने के बाद वे कहाँ जाएँगे, किससे मिलेंगे, या उनका अंत क्या होगा—अपने हृदय की गहराई में उन्हें इन चीज़ों के बारे स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। उन्होंने अपने पूरे जीवन में आँख मूँदकर एक प्रकार का विश्वास करने से अधिक कुछ नहीं किया होता, जिसके पश्चात् वे अपनी अंधी इच्छाओं और आदर्शों के साथ इस संसार से चले जाते हैं। ऐसा होता है एक बौद्ध के भौतिक जीवन का अंत, जब वह जीवित संसार को छोड़ता है; उसके बाद वह आध्यात्मिक दुनिया

में अपने मूल स्थान पर वापस लौट जाता है। पृथ्वी पर वापस लौटने और अपनी स्व-साधना करते रहने के लिए इस व्यक्ति का पुनर्जन्म होगा या नहीं, यह मृत्यु से पहले के उसके आचरण और अभ्यास पर निर्भर करता है। यदि अपने जीवन-काल में उन्होंने कुछ ग़लत नहीं किया, तो शीघ्र ही उनका पुनर्जन्म हो जाएगा और उन्हें पृथ्वी पर वापस भेज दिया जाएगा, जहाँ वे एक बार फिर भिक्षु या भिक्षुणी बनेंगे। अर्थात्, वे स्वयं द्वारा अपने भौतिक जीवन में पहली बार की गई स्व-साधना के अनुरूप स्व-साधना का अभ्यास करते हैं, और अपने भौतिक जीवन की समाप्ति के बाद वे फिर आध्यात्मिक दुनिया में लौट जाते हैं, जहाँ उनकी जाँच की जाती है। इसके बाद यदि कोई समस्या नहीं पाई जाती, तो वे एक बार फिर मनुष्यों के संसार में लौट सकते हैं, और फिर से बौद्ध धर्म में धर्मांतरित हो सकते हैं और इस प्रकार अपना अभ्यास जारी रख सकते हैं। तीन से सात बार तक पुनर्जन्म लेने के बाद वे एक बार फिर से आध्यात्मिक दुनिया में लौटते हैं, जहाँ अपने भौतिक जीवन की समाप्ति पर वे हर बार जाते हैं। यदि मानव-जगत में उनकी विभिन्न योग्यताएँ और उनके व्यवहार आध्यात्मिक दुनिया की स्वर्गिक आज्ञाओं के मुताबिक होते हैं, तो इसके बाद वे वहीं रहेंगे; उनका फिर मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म नहीं होगा, न ही उन्हें पृथ्वी पर बुरे कार्यों के लिए दंडित किए जाने का कोई जोखिम होगा। उन्हें फिर कभी इस प्रक्रिया से नहीं गुजरना होगा। इसके बजाय, अपनी परिस्थितियों के अनुसार, वे आध्यात्मिक राज्य में कोई पद ग्रहण करेंगे। इसे ही बौद्ध लोग "बुद्धत्व की प्राप्ति" कहते हैं। बुद्धत्व की प्राप्ति का मुख्य रूप से अर्थ है आध्यात्मिक दुनिया के एक पदाधिकारी के रूप में कर्मफल प्राप्त करना, और उसके बाद पुनर्जन्म लेने या दंड भोगने का कोई जोखिम न होना। इसके अतिरिक्त, इसका अर्थ है कि पुनर्जन्म के बाद मनुष्य होने के कष्ट अब और न भोगना। तो क्या अभी भी उनका पशु के रूप में पुनर्जन्म होने की कोई संभावना है? (नहीं।) इसका मतलब है कि वे कोई भूमिका ग्रहण करने के लिए आध्यात्मिक दुनिया में ही बने रहेंगे और उनका पुनर्जन्म नहीं होगा। बौद्ध धर्म में बुद्धत्व के कर्मफल की प्राप्ति का यह एक उदाहरण है। जहाँ तक यह कर्मफल प्राप्त न करने वालों की बात है, आध्यात्मिक दुनिया में उनके लौटने पर वे संबंधित पदाधिकारी द्वारा जाँच और सत्यापन के भागी होते हैं, जो यह पता लगाता है कि जीवित रहते हुए उन्होंने परिश्रमपूर्वक स्व-साधना का अभ्यास नहीं किया था या ईमानदारी से बौद्ध धर्म द्वारा निर्धारित सूत्रों का पाठ और बुद्ध के नामों का जाप नहीं किया था; इसके बजाय, उन्होंने कई दुष्कर्म किए थे, और वे बहुत सारे दुष्ट आचरणों में संलग्न रहे थे। तब आध्यात्मिक दुनिया में उनके बुरे कार्यों के बारे में निर्णय लिया जाता है, जिसके बाद उन्हें दंडित किया

जाना निश्चित होता है। इसमें कोई अपवाद नहीं होता। तो इस प्रकार का व्यक्ति कब कर्मफल प्राप्त कर सकता है? उस जीवन-काल में, जब वे कोई बुरा कार्य नहीं करते—जब आध्यात्मिक दुनिया में लौटने के पश्चात् यह देखा जाता है कि उन्होंने मृत्यु से पूर्व कुछ ग़लत नहीं किया था। तब वे पुनर्जन्म लेते रहते हैं, सूत्रों का पाठ और बुद्ध के नामों का जाप करते रहते हैं, अपने दिन तेल के दीये के ठंडे और क्षीण प्रकाश में गुज़ारते रहते हैं, किसी जीव की हत्या नहीं करते या मांस नहीं खाते। वे मनुष्य के संसार में हिस्सा नहीं लेते, उसकी समस्याओं को बहुत पीछे छोड़ देते हैं, और दूसरों के साथ कोई विवाद नहीं करते। इस प्रक्रिया में, यदि उन्होंने कोई बुरा कार्य नहीं किया होता, तो आध्यात्मिक दुनिया में उनके लौटकर आने और उनके समस्त क्रियाकलापों और व्यवहार की जाँच हो चुकने के बाद उन्हें तीन से सात बार तक चलने वाले जीवन-चक्र के लिए एक बार पुनः मनुष्य के संसार में भेजा जाता है। यदि इस दौरान कोई कदाचार नहीं किया गया होता, तो बुद्धत्व की उनकी प्राप्ति अप्रभावित रहेगी, और विलंबित नहीं होगी। यह समस्त आस्था वाले लोगों के जीवन और मृत्यु के चक्र का एक लक्षण है : वे "कर्मफल प्राप्त" करने और आध्यात्मिक संसार में कोई पद प्राप्त करने में समर्थ होते हैं; यही बात है, जो उन्हें अविश्वासियों से अलग बनाती है। पहली बात, जब वे अभी भी पृथ्वी पर जी रहे होते हैं, तो आध्यात्मिक दुनिया में पद ग्रहण करने में सक्षम रहने वाले लोग कैसा आचरण करते हैं? उन्हें निश्चित करना चाहिए कि वे कोई भी बुरा कार्य बिल्कुल न करें : उन्हें हत्या, आगजनी, बलात्कार या लूटपाट नहीं करनी चाहिए; यदि वे कपट, धोखाधड़ी, चोरी या डकैती में संलग्न होते हैं, तो वे कर्मफल प्राप्त नहीं कर सकते। कहने का अर्थ है कि, यदि कुकर्म से उनका कोई भी संबंध या संबद्धता है, तो वे आध्यात्मिक दुनिया द्वारा उन्हें दिए जाने वाले दंड से बच नहीं पाएँगे। आध्यात्मिक दुनिया उन बौद्धों के लिए उचित प्रबंध करती है, जो बुद्धत्व प्राप्त करते हैं : उन्हें उन लोगों को प्रशासित करने के लिए नियुक्त किया जा सकता है, जो बौद्ध धर्म में और आकाश के वृद्ध मनुष्य पर विश्वास करते प्रतीत होते हैं—उन्हें एक अधिकार-क्षेत्र आबंटित किया जा सकता है। वे केवल अविश्वासियों के प्रभारी भी हो सकते हैं, या बहुत गौण कर्तव्यों वाले पदों पर भी हो सकते हैं। ऐसा आबंटन उनकी आत्माओं की विभिन्न प्रकृतियों के अनुसार होता है। यह बौद्ध धर्म का एक उदाहरण है।

हमने जिन पाँच धर्मों की बात की है, उनमें ईसाई धर्म अपेक्षाकृत विशेष है। ईसाइयों को विशेष क्या बनाता है? ये वे लोग हैं, जो सच्चे परमेश्वर में विश्वास करते हैं। जो लोग सच्चे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, उन्हें यहाँ कैसे सूचीबद्ध किया जा सकता है? यह कहने पर कि ईसाइयत एक प्रकार की आस्था है,

निःसंदेह यह केवल आस्था से करनी होगी; वह केवल एक प्रकार का अनुष्ठान, एक प्रकार का धर्म होगी, और उन लोगों की आस्था से बिलकुल अलग चीज़ होगी, जो ईमानदारी से परमेश्वर का अनुसरण करते हैं। मेरे द्वारा ईसाइयत को पाँच प्रमुख "धर्मों" के बीच सूचीबद्ध किए जाने का कारण यह है, कि इसे भी यहूदी, बौद्ध और इस्लाम धर्मों के स्तर तक घटा दिया गया है। यहाँ अधिकतर लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते कि कोई परमेश्वर है, या यह कि वह सभी चीज़ों पर शासन करता है, उसके अस्तित्व पर तो वे बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते। इसके बजाय, वे मात्र धर्मशास्त्र की चर्चा करने के लिए केवल धर्मग्रंथों का उपयोग करते हैं, और लोगों को दयालु बनना, कष्ट सहना और अच्छे कार्य करना सिखाने के लिए धर्मशास्त्र का उपयोग करते हैं। ईसाइयत इसी प्रकार का धर्म बन गया है : यह केवल धर्मशास्त्र संबंधी सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करता है, मनुष्य का प्रबंधन करने या उसे बचाने के परमेश्वर के कार्य से इसका बिल्कुल भी कोई संबंध नहीं है। यह उन लोगों का धर्म बन गया है, जो परमेश्वर का अनुसरण तो करते हैं, पर जिन्हें वास्तव में परमेश्वर द्वारा अंगीकार नहीं किया जाता। ऐसे लोगों के प्रति अपने दृष्टिकोण में परमेश्वर के पास भी एक सिद्धांत है। वह उन्हें अपनी मर्जी से उसी तरह बेमन से नहीं सँभालता या उनसे उसी तरह बेमन से नहीं निपटता, जैसा कि वह अविश्वासियों के साथ करता है। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा कि वह बौद्धों के साथ करता है : यदि जीवित रहते हुए कोई ईसाई आत्मानुशासन का पालन कर पाता है, कठोरता से दस आज्ञाओं का पालन करता है और व्यवस्थाओं और आज्ञाओं के अनुसार परिश्रमपूर्वक व्यवहार करता है, और जीवन भर इन पर दृढ़ रह सकता है, तो उन्हें भी वास्तव में तथाकथित "स्वर्गारोहण" प्राप्त कर पाने से पहले उतना ही समय जीवन और मृत्यु के चक्र से गुज़ारना होगा। इस स्वर्गारोहण को प्राप्त करने के पश्चात्, वे आध्यात्मिक दुनिया में बने रहते हैं, जहाँ वे कोई पद लेते हैं और उसके एक पदाधिकारी बन जाते हैं। इसी प्रकार, यदि वे पृथ्वी पर बुराई करते हैं, यदि वे बहुत पापी हैं और बहुत पाप करते हैं, तब वे भिन्न-भिन्न तीव्रता से दंडित और अनुशासित किए जाएँगे। बौद्ध धर्म में कर्मफल की प्राप्ति का अर्थ है परमानंद की शुद्ध भूमि पर से गुज़रना, किंतु ईसाइयत में इसे क्या कहा जाता है? इसे "स्वर्ग में प्रवेश करना" और "स्वर्गारोहण करवाया जाना" कहते हैं। जिन्हें वास्तव में स्वर्गारोहण करवाया जाता है, वे भी जीवन और मृत्यु के चक्र से तीन से सात बार तक गुज़रते हैं, जिसके पश्चात्, मर जाने पर, वे आध्यात्मिक दुनिया में आते हैं, मानो वे सो गए थे। यदि वे मानक के अनुरूप होते हैं, तो वे कोई पद ग्रहण करने के लिए वहाँ बने रह सकते हैं, और पृथ्वी पर मौजूद लोगों के विपरीत,

साधारण तरीके से, या परिपाटी के अनुसार, उनका पुनर्जन्म नहीं होगा।

इन सब धर्मों में, जिस अंत के बारे में लोग बात करते हैं और जिसके लिए वे प्रयास करते हैं, वह वैसा ही है जैसा कि बौद्ध धर्म में कर्मफल प्राप्त करना; फर्क सिर्फ यह है कि इसे भिन्न-भिन्न साधनों के द्वारा प्राप्त किया जाता है। वे सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इन धर्मों के अनुयायियों के इस भाग के लिए, जो अपने आचरण में धार्मिक नियमों का कड़ाई से पालन करने में समर्थ होते हैं, परमेश्वर एक उचित गंतव्य, जाने के लिए एक उचित स्थान उपलब्ध कराता है, और उन्हें उचित प्रकार से सँभालता है। यह सब तर्कसंगत है, किंतु यह वैसा नहीं है, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं, है न? अब, ईसाइयत में लोगों का क्या होता है, इस बारे में सुनने के बाद, तुम लोग कैसा अनुभव करते हो? क्या तुम्हें लगता है कि उनकी दुर्दशा उचित है? क्या तुम उनके साथ सहानुभूति रखते हो? (थोड़ी-सी।) उनके मामले में कुछ नहीं किया सकता; वे केवल स्वयं को ही दोष दे सकते हैं। मै ऐसा क्यों कहता हूँ? परमेश्वर का कार्य सच्चा है; वह जीवित और वास्तविक है, और उसका कार्य संपूर्ण मानवजाति और प्रत्येक व्यक्ति पर लक्षित है। तो फिर वे इसे स्वीकार क्यों नहीं करते? क्यों वे पागलों की तरह परमेश्वर का विरोध करते हैं और उसे यातना देते हैं? इस तरह का परिणाम पाकर भी उन्हें स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिए, तो तुम उनके लिए खेद क्यों महसूस करते हो? उन्हें इस प्रकार से सँभाला जाना बड़ी सहिष्णुता दर्शाता है। जिस हद तक वे परमेश्वर का विरोध करते हैं, उसके हिसाब से तो उन्हें नष्ट कर दिया जाना चाहिए, फिर भी परमेश्वर ऐसा नहीं करता, वह बस ईसाइयत को किसी साधारण धर्म की तरह ही सँभालता है। तो क्या अन्य धर्मों के बारे में विस्तार से जाने की कोई आवश्यकता है? इन सभी धर्मों की प्रकृति है कि लोग अधिक कठिनाइयाँ सहन करें, कोई बुराई न करें, अच्छे कर्म करें, दूसरों को गाली न दें, दूसरों के बारे में निर्णय न दें, विवादों से दूर रहें, और सज्जन बनें—अधिकांश धार्मिक शिक्षाएँ इसी प्रकार की हैं। और इसलिए, यदि ये आस्था वाले लोग।—ये विभिन्न धर्मों और पंथों वाले लोग—यदि अपने धार्मिक नियमों का कडाई से पालन कर पाते हैं, तो वे पृथ्वी पर अपने समय के दौरान बड़ी त्रुटियाँ या पाप नहीं करेंगे, और तीन से सात बार तक पुनर्जन्म लेने के बाद, सामान्यत: ये लोग—जो धार्मिक नीतियों का कड़ाई से पालन करने में सक्षम रहते हैं—आम तौर पर, आध्यात्मिक दुनिया में कोई पद लेने के लिए बने रहेंगे। क्या ऐसे बहुत लोग हैं? (नहीं, अधिक नहीं हैं।) तुम्हारा उत्तर किस बात पर आधारित है? भलाई करना या धार्मिक नियमों और व्यवस्थाओं का पालन करना आसान नहीं है। बौद्ध धर्म लोगों को मांस खाने की अनुमति नहीं देता—क्या तुम ऐसा कर सकते

हो? यदि तुम्हें भूरे वस्त्र पहनकर किसी बौद्ध मंदिर में पूरे दिन मंत्रों का उच्चारण और बुद्ध के नामों का जाप करना पड़े, तो क्या तुम ऐसा कर सकोगे? यह आसान नहीं होगा। ईसाइयत में दस आज्ञाएँ, आज्ञाएँ और व्यवस्थाएँ हैं, क्या उनका पालन करना आसान है? वह आसान नहीं है। उदाहरण के लिए, दूसरों को गाली न देने को लो : लोग इस नियम का पालन करने में एकदम अक्षम हैं। स्वयं को रोक पाने में असमर्थ होकर वे गाली देते हैं—और गाली देने के बाद वे उन शब्दों को वापस नहीं ले सकते, तो वे क्या करते हैं? रात्रि में वे अपने पाप स्वीकार करते हैं! कभी-कभी दूसरों को गाली देने के बाद भी वे अपने दिल में घृणा को आश्रय दिए रहते हैं, और वे इतना आगे बढ़ जाते हैं कि वे उन लोगों को किसी समय और ज्यादा नुकसान पहुँचाने की योजना बना लेते हैं। संक्षेप में, जो लोग इस जड़ धर्मांधता के बीच जीते हैं, उनके लिए पाप करने से बचना या बुराई करने से दूर रहना आसान नहीं है। इसलिए, हर धर्म में केवल कुछ लोग ही कर्मफल प्राप्त कर पाते हैं। तुम्हें लगता है कि चूँकि इतने अधिक लोग इन धर्मों का अनुसरण करते हैं, इसलिए उनका एक बड़ा भाग आध्यात्मिक राज्य में कोई भूमिका ग्रहण करने के लिए बने रहने में सक्षम रहता होगा। लेकिन ऐसे लोग उतने अधिक नहीं हैं; वास्तव में केवल कुछ ही इसे प्राप्त कर पाते हैं। आस्था वाले लोगों के जीवन और मृत्यु के चक्र में सामान्यतः ऐसा ही होता है। जो चीज उन्हें अलग करती है, वह यह है कि वे कर्मफल प्राप्त कर सकते हैं, और यही बात उन्हें अविश्वासियों से अलग करती है।

3. परमेश्वर के अनुयायियों का जीवन और मृत्यु चक्र

इसके बाद, आओ, अब हम उन लोगों के जीवन और मृत्यु के चक्र के बारे में बात करें जो परमेश्वर के अनुयायी हैं। इसका संबंध तुम लोगों से है, इसलिए ध्यान दो: सबसे पहले, इस बारे में विचार करो कि परमेश्वर के अनुयायियों को कैसे श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। (परमेश्वर के चुने हुए लोग और सेवाकर्ता।) इसमें दरअसल दो हैं: परमेश्वर के चुने हुए लोग और सेवाकर्ता। आओ, पहले हम परमेश्वर के चुने हुए लोगों के बारे में बात करते हैं, जिसमें बहुत कम लोग हैं। "परमेश्वर के चुने हुए लोग" किसे संदर्भित करता है? परमेश्वर ने जब सारी चीज़ों की रचना कर दी और मानवजाति अस्तित्व में आ गई, तो परमेश्वर ने उन लोगों के एक समूह को चुना जो उसका अनुसरण करते थे; बस इन्हें ही "परमेश्वर के चुने हुए लोग" के तौर पर संदर्भित किया जाता है। परमेश्वर द्वारा इन लोगों को चुनने का एक विशेष दायरा और महत्व था। वह दायरा इसलिए विशेष है क्योंकि वह कुछ चयनित लोगों तक ही सीमित था, जिन्हें तब आना ही होगा जब वह कोई महत्वपूर्ण कार्य करता है। और महत्व क्या है? चूँकि वह परमेश्वर द्वारा चयनित समूह था, इसका

अत्यधिक महत्व है। कहने का तात्पर्य है कि, परमेश्वर इन लोगों को बनाना चाहता है और इन्हें पूर्ण करना चाहता है, और प्रबंधन का उसका कार्य पूर्ण हो जाने के पश्चात् वह इन लोगों को प्राप्त कर लेगा। क्या यह महत्व अत्यधिक नहीं है? इस प्रकार, ये चुने हुए लोग परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर प्राप्त करने का इरादा रखता है। जहाँ तक सेवाकर्ताओं की बात है, अच्छा, आओ एक पल के लिए हम हम परमेश्वर के पूर्व-निर्धारण के विषय को छोडकर पहले उनके उद्गमों के बारे में बात करें। "सेवाकर्ता" का शाब्दिक अर्थ है वह जो सेवा करता है। वे जो सेवा करते हैं, वे अस्थायी हैं, वे लम्बे समय तक, या हमेशा के लिए ऐसा नहीं करते हैं, बल्कि उन्हें अस्थायी रुप से भाड़े पर लिया जाता है या नियुक्त किया जाता है। इनमें से अधिकांश का उद्गम यह है की इन्हें अविश्वासियों में से चुना गया था। जब यह आदेश दिया गया था कि वे परमेश्वर के कार्य में सेवाकर्ता की भूमिका ग्रहण करेंगे, तब वे पृथ्वी पर आए। हो सकता है कि वे अपने पिछले जीवन में पशु रहे हों, किन्तु वे अविश्वासी भी रह चुके होंगे। सेवाकर्ताओं के ये उद्गम हैं।

आओ, अब आगे हम परमेश्वर के चुने हुए लोगों की बात करें। जब वे मरते हैं, तो वे अविश्वासियों से और विभिन्न आस्थावान लोगों से बिल्कुल भिन्न किसी स्थान पर जाते हैं। यह वह स्थान है जहाँ उनके साथ स्वर्गदूत और परमेश्वर के दूत होते हैं; यह एक ऐसा स्थान है जिसका प्रशासन परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से करता है। यद्यपि, इस स्थान पर, परमेश्वर के चुने हुए लोग परमेश्वर को अपनी आंखों से नहीं देख पाते हैं, यह आध्यात्मिक राज्य में किसी भी अन्य स्थान के असदृश होता है; यह एक अलग ही जगह है जहाँ इस हिस्से के लोग मरने के बाद जाते हैं। जब वे मरते हैं तो उन्हें भी परमेश्वर के दूतों की कड़ी छानबीन के अधीन किया जाता है। और क्या छानबीन की जाती है? परमेश्वर के दूत इन लोगों के द्वारा अपने संपूर्ण जीवन में परमेश्वर की आस्था में लिए गए मार्ग की छानबीन करते हैं, उस दौरान क्या कभी उन्होंने परमेश्वर का विरोध किया था या उसे कोसा था, और क्या उन्होंने कोई गंभीर पाप या दुष्टता की थी। यह छानबीन इस प्रश्न का निपटान करती है कि वह व्यक्ति विशेष वहाँ ठहरने की अनुमति पाएगा या उसे जाना ही होगा। "जाना" का क्या अर्थ है? और "ठहरना" का क्या अर्थ है? "जाना" का अर्थ है कि क्या, अपने व्यवहार के आधार पर, वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों की श्रेणी में रहेंगे; "ठहरने" की अनुमति मिलने का अर्थ है कि वे उन लोगों के बीच रह सकते हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा अंत के दिनों के दौरान पूर्ण बनाया जाएगा। जो ठहरते हैं, उनके लिए परमेश्वर के पास विशेष व्यवस्थाएँ है। अपने कार्य की प्रत्येक अवधि के दौरान, वह

ऐसे लोगों को प्रेरितों के रूप में कार्य करने या कलीसियाओं को पुनर्जीवित करने, या उनकी देखभाल करने का कार्य करने के लिए भेजेगा। परन्तु जो लोग इस कार्य को करने में सक्षम हैं वे पृथ्वी पर बार-बार उस तरह से पुनर्जन्म नहीं लेते हैं जिस तरह से अविश्वासी जन्म लेते हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुनर्जन्म लेते हैं; इसके बजाय, वे परमेश्वर के कार्य की आवश्यकताओं और चरणों के अनुसार पृथ्वी पर लौटाए जाते हैं और उन्हें बार-बार पुनर्जन्म नहीं दिया जाता है। तो क्या इस बारे में कोई नियम हैं कि उनका पुनर्जन्म कब होगा? क्या वे हर कुछ वर्षों में एक बार आते हैं? क्या वे ऐसी बारम्बारता में आते हैं? वे ऐसे नहीं आते हैं। यह सब परमेश्वर के कार्य पर, उसके कार्य के चरणों पर और उसकी आवश्यकताओं पर आधारित है, और इसके कोई तय नियम नहीं हैं। एकमात्र नियम यही है कि जब परमेश्वर अंत के दिनों में अपने कार्य के अन्तिम चरण को करता है, तो ये सभी चुने हुए लोग आएँगे और यह आगमन उनका अंतिम पुनर्जन्म होगा। और ऐसा क्यों है? यह परमेश्वर के कार्य के अन्तिम चरण के दौरान प्राप्त किये जाने वाले परिणामों पर आधारित होता है—क्योंकि कार्य के इस अंतिम चरण के दौरान, परमेश्वर इन चुने हुए लोगों को पूरी तरह से पूर्ण करेगा। इसका क्या अर्थ है? यदि, इस अन्तिम चरण के दौरान, इन लोगों को पूरा बनाया और पूर्ण किया जाता है, तब उनका पहले की तरह पुनर्जन्म नहीं होगा; उनके मनुष्य बनने की प्रक्रिया और इसी प्रकार पुनर्जन्म की प्रक्रिया भी पूर्णतया समाप्त हो जाएगी। यह उनसे संबंधित है जो ठहरेंगे। तो जो ठहर नहीं सकते, वे कहाँ जाते हैं? जिन्हें ठहरने की अनुमति नहीं मिलती है, उनका अपना उपयुक्त गंतव्य होता है। सबसे पहले, उनके दुष्ट कार्यों के, उन्होंने जो त्रुटियाँ की हैं, और जो पाप उन्होंने किए हैं, उनके परिणामस्वरूप वे भी दण्डित किए जाएँगे। दण्डित किये जाने के पश्चात, जैसा परिस्थितियों के अनुसार अनुकूल होगा, परमेश्वर उन्हें अविश्वासियों के बीच या विभिन्न आस्था वाले लोगों के बीच भेजने की व्यवस्था करेगा। दूसरे शब्दों में, उनके लिए दो सम्भावित परिणाम हो सकते हैं: एक है दण्डित होना और पुनर्जन्म के बाद शायद एक विशेष धर्म के लोगों के बीच रहना, और दूसरा है अविश्वासी बन जाना। यदि वे अविश्वासी बनते हैं, तो वे सारे अवसर गँवा देंगे; जबकि यदि वे आस्था वाला व्यक्ति बनते हैं—उदाहरण के लिए, यदि वे ईसाई बनते हैं—तो उनके पास अभी भी परमेश्वर के चुने हुए लोगों की श्रेणियों में लौटने का अवसर होगा; इसके बहुत जटिल संबंध हैं। संक्षेप में, यदि परमेश्वर का चुना हुआ कोई व्यक्ति कोई ऐसा काम करता है जो परमेश्वर के प्रति अपमानजनक हो, तो उसे अन्य किसी भी व्यक्ति के समान ही दण्ड दिया जाएगा। उदाहरण के लिये, पौलुस को लें, जिसके बारे में हमने पहले बात की थी। पौलुस एक ऐसे

व्यक्ति का उदाहरण जिसे दण्ड दिया जा रहा है। क्या तुम लोगों को अंदाज़ा हो रहा है कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ? क्या परमेश्वर के चुने हुए लोगों का दायरा निर्धारित है? (अधिकांशत: निर्धारित है।) इसमें से अधिकतर निर्धारित है, परन्तु उसका एक छोटा हिस्सा निर्धारित नहीं है। ऐसा क्यों है? यहाँ मैंने सबसे स्पष्ट कारण को संदर्भित किया है: दुष्टता करना। जब लोग दुष्टता करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें नहीं चाहता, और जब परमेश्वर उन्हें नहीं चाहता, तो वह उन्हें विभिन्न जातियों और प्रकार के लोगों के बीच फेंक देता है। इससे वे निराश हो जाते हैं और उनके लिए वापस लौटना कठिन हो जाता है। यह सब परमेश्वर के चुने हुए लोगों के जीवन और मृत्यु चक्र से संबंधित है।

यह अगला विषय सेवाकर्ताओं के जीवन और मृत्यु के चक्र से संबन्धित है। हमने अभी-अभी सेवाकर्ताओं के उद्गम के बारे में बात की है; यानि यह तथ्य कि अपने पिछले जन्मों में अविश्वासी और पशु रहने के बाद उनका पुनर्जन्म हुआ। कार्य का अंतिम चरण आने के साथ ही, परमेश्वर ने अविश्वासियों में से ऐसे लोगों के एक समूह को चुना है और यह समूह बहुत खास है। इन लोगों को चुनने का परमेश्वर का उद्देश्य अपने कार्य के लिए उनकी सेवा लेना है। "सेवा" सुनने में कोई बहुत मनोहर शब्द नहीं है, न ही यह ऐसा कुछ है जिसे कोई चाहेगा, किन्तु हमें यह देखना चाहिए कि यह किसकी ओर लक्षित है। परमेश्वर के सेवाकर्ताओं के अस्तित्व का एक विशेष महत्व है। कोई अन्य उनकी भूमिका नहीं निभा सकता है, क्योंकि उन्हें परमेश्वर द्वारा चुना गया था। और इन सेवाकर्ताओं की भूमिका क्या है? यह परमेश्वर के चुने हुए लोगों की सेवा करना है। मुख्य रूप से, उनकी भूमिका परमेश्वर के कार्य में अपनी सेवा प्रदान करना, उसमें सहयोग करना, और परमेश्वर के चुने हुए लोगों की पूर्णता में समायोजन करना है। इस बात की परवाह किए बिना कि वे मेहनत कर रहे हैं, कार्य के किसी पहलू पर काम कर रहे हैं, या कुछ कार्य कर रहे हैं, परमेश्वर की इन सेवाकर्ताओं से क्या अपेक्षा है? क्या वह इनसे बहुत अधिक की माँग कर रहा है? (नहीं, वह बस उनसे निष्ठावान रहने को कहता है।) है। सेवाकर्ताओं को भी निष्ठावान होना ही चाहिए। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम्हारा उद्गम कहाँ से है, या परमेश्वर ने तुम्हें क्यों चुना, तुम्हें परमेश्वर के प्रति, परमेश्वर के तुम्हारे लिए आदेशों के प्रति, और साथ ही उस कार्य के प्रति जिसके लिए तुम उत्तरदायी हो और अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान अवश्य ही होना चाहिए। जो सेवाकर्ता निष्ठावान और परमेश्वर को संतुष्ट करने में समर्थ हैं, उनके लिए परिणाम क्या होगा? वे शेष रह पाएँगे। क्या ऐसा सेवाकर्ता होना जो शेष रह जाता है, एक आशीष है? शेष रहने का क्या अर्थ है? इस आशीष का क्या महत्व है? हैसियत में, वे

परमेश्वर के चुने हुए लोगों के असदृश दिखाई देते हैं, वे भिन्न दिखाई देते हैं। लेकिन, वास्तव में, क्या इस जीवन में वे जिसका आनंद लेते हैं, क्या यह वही नहीं है जिसका आनंद परमेश्वर के चुने हुए लोग लेते हैं? कम से कम, इस जीवन में तो यह वैसा ही है। तुम लोग इससे इनकार नहीं करते, है ना? परमेश्वर के कथन, परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर द्वारा भरण-पोषण, परमेश्वर के आशीष—कौन इन चीज़ों का आनन्द नहीं उठाता है? हर कोई ऐसी बहुतायत का आनन्द उठाता है। एक सेवाकर्ता की पहचान है, वह जोकि सेवा करता है, किन्तु परमेश्वर के लिए, वह उन चीज़ों में से एक ही है जिनकी उसने रचना की है; यह मात्र इतना ही है कि उनकी भूमिका सेवाकर्ता की है। उन दोनों के ही परमेश्वर के प्राणी होने के नाते, क्या एक सेवाकर्ता और परमेश्वर के चुने हुए व्यक्ति के बीच कोई अन्तर है? वस्तुतः, अंतर नहीं है। नाममात्र के लिए कहें तो, एक अंतर है; सार का और उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के लिहाज से एक अंतर है—किन्तु परमेश्वर लोगों के इस समूह से कोई भेदभाव नहीं करता है। तो क्यों इन लोगों को सेवाकर्ता के रूप में परिभाषित किया जाता है? तुम लोगों को इस बात की कुछ समझ तो होनी ही चाहिए! सेवाकर्ता अविश्वासियों में से आते हैं। जैसे ही हम यह उल्लेख करते हैं कि वे अविश्वासियों में से आते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका अतीत बुरा है: वे सब नास्तिक हैं और अतीत में भी ऐसे ही थे; वे परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे, और उसके, सत्य के, और सभी सकारात्मक चीजों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे। वे परमेश्वर या उसके अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। तो क्या वे परमेश्वर के वचनों को समझने में सक्षम हैं? यह कहना उचित होगा कि, काफी हद तक, वे सक्षम नहीं हैं। ठीक जैसे कि पशु मनुष्य के शब्दों को समझने में सक्षम नहीं हैं, वैसे ही सेवाकर्ता भी यह नहीं समझ सकते कि परमेश्वर क्या कह रहा है, वह क्या चाहता है या वह ऐसी माँगें क्यों करता है। वे नहीं समझते; ये बातें उनकी समझ से बाहर हैं, और वे अप्रबुद्ध रहते हैं। इस कारण से, वे लोग उस जीवन को धारण नहीं करते हैं जिसके बारे में हमने बात की थी। बिना जीवन के, क्या लोग सत्य को समझ सकते हैं? क्या वे सत्य से सुसज्जित हैं? क्या उनके पास परमेश्वर के वचनों का अनुभव और ज्ञान है? (नहीं।) सेवाकर्ताओं के उद्गम ऐसे ही हैं। किन्तु, चूँकि परमेश्वर इन लोगों को सेवाकर्ता बनाता है, इसलिए उनसे उसकी अपेक्षाओं के भी मानक हैं; वह उन्हें तुच्छ दृष्टि से नहीं देखता है, न ही वह उनके प्रति बेपरवाह है। यद्यपि वे उसके वचनों को नहीं समझते हैं, और उनके पास जीवन नहीं है, फिर भी परमेश्वर उनके प्रति दयावान है, और तब भी उनसे उसकी अपेक्षाओं के मानक हैं। तुम लोगों ने अभी-अभी इन मानकों के बारे में बोला: परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होना और वह करना जो वह कहता

है। अपनी सेवा में तुम्हें अवश्य वहीं सेवा करनी चाहिए जहाँ आवश्यकता है, और बिल्कुल अंत तक सेवा करनी चाहिए। यदि तुम एक निष्ठावान सेवाकर्ता बन सकते हो, बिल्कुल अंत तक सेवा करने में सक्षम हो, और परमेश्वर द्वारा तुम्हें दिए सौंपे आदेश को पूर्ण कर सकते हो, तो तुम एक मूल्यों वाला जीवन जियोगे। यदि तुम इसे कर सकते हो, तो तुम शेष रह पाओगे। यदि तुम थोड़ा अधिक प्रयास करते हो, यदि तुम थोड़ा अधिक परिश्रम से प्रयास करते हो, परमेश्वर को जानने के अपने प्रयासों को दोगुना कर पाते हो, परमेश्वर को जानने को लेकर थोड़ा भी बोल पाते हो, उसकी गवाही दे सकते हो, और इसके अतिरिक्त, यदि तुम परमेश्वर की इच्छा में से कुछ समझ सकते हो, परमेश्वर के कार्य में सहयोग कर सकते हो, और परमेश्वर के इरादों के प्रति कुछ-कुछ सचेत हो सकते हो, तब एक सेवाकर्ता के तौर पर तुम अपने भाग्य में बदलाव महसूस करोगे। और भाग्य में यह परिवर्तन क्या होगा? अब तुम शेष नहीं रह पाओगे। तुम्हारे आचरण और तुम्हारी व्यक्तिगत आकांक्षाओं और खोज के आधार पर, परमेश्वर तुम्हें चुने हुओं में से एक बनाएगा। यह तुम्हारे भाग्य में परिवर्तन होगा। सेवाकर्ताओं के लिए इसमें सर्वोत्तम बात क्या है? वह यह है कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों में से एक बन सकते हैं। यदि वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों में से एक बन जाते हैं तो इसका अर्थ है कि उनका अब अविश्वासियों के समान पशु के रूप में पुनर्जन्म नहीं होगा। क्या यह अच्छा है? हाँ, है, और यह भी एक अच्छा समाचार है: इसका अर्थ है कि सेवाकर्ताओं को ढाला जा सकता है। ऐसी बात नहीं है कि सेवा करने वाले के लिए, जब परमेश्वर उसे सेवा के लिए पूर्वनिर्धारित करता है, तो वह हमेशा ऐसा ही करेगा; ऐसा होना आवश्यक नहीं है। परमेश्वर उसे उसके व्यक्तिगत आचरण के आधार पर सबसे उपयुक्त तरीके से संभालेगा और उसे उत्तर देगा।

परन्तु, ऐसे सेवाकर्ता भी हैं जो बिल्कुल अन्त तक सेवा नहीं कर पाते हैं; ऐसे भी हैं जो अपनी सेवा के दौरान, आधे रास्ते ही हार मान जाते हैं और परमेश्वर को त्याग देते हैं, साथ ही ऐसे लोग भी हैं जो अनेक बुरे कार्य करते हैं। यहाँ तक कि ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के कार्य को बड़ा नुकसान करते हैं और बड़ी क्षति पहुँचाते हैं, और ऐसे सेवा करने वाले भी हैं जो परमेश्वर को कोसते हैं, इत्यादि। ये असाध्य परिणाम क्या संकेतित करते हैं? ऐसे किसी भी दुष्टता पूर्ण कार्यों का अर्थ उनकी सेवाओं की समाप्ति होगा। क्योंकि तुम्हारे सेवा काल के दौरान तुम्हारा आचरण बहुत ख़राब रहा है, और क्योंकि तुमने अपनी हदें पार की हैं, जब परमेश्वर देखता है कि तुम्हारी सेवा अपेक्षित स्तर तक नहीं है, वह तुम्हें सेवा करने की तुम्हारी पात्रता से वंचित कर देगा। वह तुम्हें और सेवा करने की अनुमति नहीं देगा; वह तुम्हें अपनी आँखों के सामने से,

और परमेश्वर के घर से हटा देगा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम सेवा नहीं करना चाहते हो? क्या तुम हमेशा दुष्टता करना नहीं चाहते हो? क्या तुम लगातार विश्वासघाती नहीं रहे हो? तब ठीक है, एक सरल उपाय है: तुम्हें सेवा करने की तुम्हारी पात्रता से वंचित कर दिया जाएगा। परमेश्वर की दृष्टि में, किसी सेवाकर्ता को उसकी सेवा करने की पात्रता से वंचित करने का अर्थ है कि उस सेवाकर्ता के अन्त की घोषणा की जा चुकी है, और ऐसे लोग परमेश्वर की अब और सेवा करने पात्र नहीं होंगे। परमेश्वर को इस व्यक्ति की सेवा की अब और आवश्यकता नहीं है, और चाहे वह कितनी ही अच्छी बातें क्यों न करें, वे बातें व्यर्थ होंगी। जब हालात इस स्थिति तक पहुँच जाएँगे, तो यह परिस्थिति असाध्य बन गई होगी; इस तरह के सेवाकर्ताओं के पास लौटने का कोई मार्ग नहीं होगा। और परमेश्वर इस प्रकार के सेवाकर्ताओं के साथ किस प्रकार से निपटता है? क्या वह केवल उन्हें सेवा करने से रोक देता है? नहीं। क्या वह उन्हें केवल बने रहने से रोकता है? या वह उन्हें एक तरफ कर देता है, और उनके सुधरने की प्रतीक्षा करता है? वह ऐसा नहीं करता है। सचमुच, परमेश्वर सेवाकर्ताओं के प्रति इतना प्रेममय नहीं है। यदि परमेश्वर की सेवा के प्रति किसी व्यक्ति की इस प्रकार की प्रवृत्ति है, तो इस प्रवृत्ति के कारण, परमेश्वर उसे सेवा करने की उसकी पात्रता से वंचित कर देगा, और उसे एक बार फिर से अविश्वासियों के बीच फेंक देगा। और जिस सेवा करने वाले को अविश्वासियों में फेंक दिया गया हो, उसका क्या भाग्य होता है? वह अविश्वासियों के समान ही होता है: उन्हें एक पशु के रूप में पुनर्जन्म दिया जाएगा और आध्यात्मिक दुनिया में अविश्वासियों वाला दण्ड दिया जाएगा। इसके अलावा, इस व्यक्ति के दण्ड में परमेश्वर किसी तरह की व्यक्तिगत रुचि नहीं लेगा, क्योंकि परमेश्वर के कार्य से अब ऐसे व्यक्ति का कोई लेना-देना नहीं है। यह न केवल परमेश्वर में उनकी आस्था के जीवन का अन्त है, बल्कि उनके स्वयं के भाग्य का भी अन्त है, साथ ही यह उनके भाग्य की उद्घोषणा है। इस प्रकार, यदि सेवाकर्ता ख़राब ढंग से सेवा करते हैं, तो उन्हें स्वयं परिणाम भुगतने पड़ेंगे। यदि कोई सेवाकर्ता बिल्कुल अन्त तक सेवा करने में असमर्थ है, या उसे बीच में ही सेवा करने की उसकी पात्रता से वंचित कर दिया जाता है, तो उसे अविश्वासियों के बीच फेंक दिया जाएगा—और यदि ऐसा होता है तो उसके साथ मवेशियों के समान ही, उसी प्रकार से निपटा जाएगा जैसे कि अज्ञानियों और तर्कहीन व्यक्तियों के साथ निपटा जाता है। जब इसे मैं इस प्रकार से कहता हूँ, तो तुम्हारी समझ में आता है, है न?

परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों और सेवाकर्ताओं के जीवन और मृत्यु चक्र को कैसे सँभालता है, यह ऊपर उल्लिखित है। यह सुनने के बाद तुम लोग कैसा महसूस करते हो? क्या मैंने पहले कभी इस विषय

पर बोला है? क्या मैंने परमेश्वर के चुने हुए लोगों और सेवाकर्ताओं के विषय पर कभी बोला है? दरअसल मैंने बोला है, लेकिन तुम लोगों को याद नहीं। परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों और सेवाकर्ताओं के प्रति धार्मिक है। हर तरह से, वह धार्मिक है। क्या मैंने सही कहा? क्या तुम इसमें कहीं दोष ढूँढ सकते हो? क्या ऐसे लोग नहीं हैं जो कहेंगे: "क्यों परमेश्वर चुने हुओं के प्रति इतना सहिष्णु है? और क्यों वह सेवाकर्ताओं के प्रति केवल थोड़ा सा ही सहिष्णु है?" क्या कोई सेवाकर्ताओं के लिये खड़े होने की इच्छा रखता है? "क्या परमेश्वर सेवाकर्ताओं को और समय दे सकता है, तथा उनके प्रति और अधिक धैर्यवान और सहिष्णु हो सकता है?" क्या ऐसा प्रश्न पूछना सही है? (नहीं, ये सही नहीं हैं।) और सही क्यों नहीं है? (क्योंकि हमें सेवाकर्ता बनाकर वास्तव में हम पर उपकार दर्शाया गया है।) सेवाकर्ताओं को केवल सेवा की अनुमति देकर ही उन पर उपकार दर्शाया गया है! "सेवाकर्ता" की पदवी के और उस कार्य के बिना जो वे करते हैं, ये सेवा करने वाले कहाँ होते? ये अविश्वासियों के बीच होते, मवेशियों के साथ जीते और मरते हुए। आज वे, परमेश्वर के सामने और परमेश्वर के घर में आने की अनुमति पाकर, कितने अनुग्रह का आनंद लेते हैं! यह एक ज़बरदस्त अनुग्रह है! यदि परमेश्वर ने तुम्हें सेवा करने का अवसर न दिया होता, तो तुम्हें कभी भी उसके सामने आने का अवसर न मिलता। और क्या कहें, यहाँ तक कि यदि तुम कोई ऐसे हो जो बौद्ध धर्म को मानता है और जिसने परिपक्वता को पा लिया है, तो ज़्यादा से ज़्यादा तुम आध्यात्मिक दुनिया में छोटा-मोटा प्रशासनिक कार्य करने वाले हो; तुम कभी भी परमेश्वर से नहीं मिलोगे, उसकी आवाज़ नहीं सुनोगे, उसके वचनों को नहीं सुनोगे, या उसके प्रेम और आशीषों को महसूस नहीं करोगे, और न ही तुम संभवतः कभी उसके आमने-सामने ही हो सकोगे। बौद्धों के सामने केवल साधारण काम होते हैं। वे संभवतः परमेश्वर को नहीं जान सकते हैं, और वे केवल अनुपालन और आज्ञापालन करते हैं, जबकि सेवाकर्ता कार्य के इस चरण में बहुत अधिक प्राप्त करते हैं! सर्वप्रथम, वे परमेश्वर के आमने-सामने आने, उसकी आवाज़ को सुनने, उसके वचनों को सुनने, और उन अनुग्रहों और आशीषों का अनुभव करने में समर्थ होते हैं जो वह लोगों को देता है। इसके अलावा, वे परमेश्वर के द्वारा दिये गए वचनों और सत्यों का आनंद उठा पाते हैं। सेवाकर्ताओं को वास्तव में बहुत ज्यादा प्राप्त होता है! इस प्रकार यदि एक सेवाकर्ता के रूप में, तुम सही प्रयत्न नहीं भी कर सकते हो, तो क्या परमेश्वर तब भी तुम्हें रखेगा? वह तुम्हें नहीं रख सकता है। वह तुमसे ज्यादा माँग नहीं करता है, बल्कि तुम वह कुछ भी सही ढंग से नहीं करते हो जो वह तुमसे चाहता है; तुम अपने कर्तव्य के मुताबिक नहीं चले हो। इसलिए, निस्संदेह, परमेश्वर तुम्हें नहीं रख सकता है। परमेश्वर

का धार्मिक स्वभाव ऐसा ही है। परमेश्वर तुम्हारे नख़रे नहीं उठाता है, किन्तु वह तुम्हारे साथ किसी तरह का भेदभाव भी नहीं करता है। इन्हीं सिद्धांतों के अनुसार परमेश्वर कार्य करता है। सभी लोगों और प्राणियों के प्रति परमेश्वर इसी तरह से कार्य करता है।

जब आध्यात्मिक दुनिया की बात आती है, तो यदि इसके विभिन्न जीव कुछ ग़लत करते हैं, या अपने कार्य को ठीक ढंग से नहीं करते हैं, तो परमेश्वर के पास उनसे निपटने के लिए उसी के अनुरूप स्वर्गिक अध्यादेश और निर्णय हैं; यह परम सिद्धांत है। इसलिए, परमेश्वर के कई-हजारों-वर्षों के प्रबंधन कार्य के दौरान, कुछ कर्तव्यपालकों जिन्होंने ग़लत कार्य किया था, उन्हें पूर्णतया विनष्ट कर दिया गया है, जबकि कुछ आज भी हिरासत में हैं और दंडित किए जा रहे हैं। आध्यात्मिक दुनिया में हर प्राणी को इसका सामना अवश्य करना पड़ता है। यदि वे कुछ ग़लत करते हैं या कोई दुष्टता करते हैं, तो वे दंडित किए जाते हैं—और यह वैसा ही है जैसा कि परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों और सेवाकर्ताओं के साथ करता है। इस प्रकार, चाहे आध्यात्मिक दुनिया हो या भौतिक संसार, परमेश्वर जिन सिद्धांतों पर काम करता है, वे बदलते नहीं हैं। इस बात की परवाह किए बिना कि तुम परमेश्वर के कार्यकलापों को देख सकते हो या नहीं, उसके सिद्धांत नहीं बदलते हैं। हमेशा से ही, सभी चीजों के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण और सभी चीज़ों को सँभालने के उसके सिद्धांत एक ही रहे हैं। यह अपरिवर्तनशील है। परमेश्वर अविश्वासियों में से उन लोगों के प्रति दयालु रहेगा जो अपेक्षाकृत सही तरीके से जीते हैं, और हर धर्म में से उन लोगों के लिये अवसर बचाकर रखेगा जो सद्व्यवहार करते हैं और दुष्टता नहीं करते हैं, उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रबंधन की गई सभी चीज़ों में एक भूमिका निभाने देगा, और वह करने देगा जो उन्हें करना चाहिए। इसी प्रकार, उन लोगों के बीच जो परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, उन लोगों के बीच जो उसके चुने हुए हैं, परमेश्वर इन सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव नहीं करता है। जो कोई भी ईमानदारी से उसका अनुसरण कर पाता है, वह उसके प्रति दयालु है, और उस हर एक को प्रेम करता है जो ईमानदारी से उसका अनुसरण करता है। केवल इतना ही है कि इन विभिन्न प्रकार के लोगों—अविश्वासियों, विभिन्न आस्थाओं वाले लोगों और परमेश्वर के चुने हुए लोगों—के लिए वह जो उन्हें प्रदान करता है, वह भिन्न होता है। उदाहरण के लिए अविश्वासियों को ही लो: यद्यपि वे परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं, और परमेश्वर उन्हें जंगली जानवरों के रूप में देखता है, फिर भी सब बातों के बीच उनमें से हर एक के पास खाने के लिए भोजन होता है, उनका अपना एक स्थान होता है, और जीवन और मृत्यु का सामान्य चक्र होता है। जो दुष्टता करते हैं वे दण्ड पाते

हैं और जो भला करते हैं वे आशीष पाते हैं और परमेश्वर की दया प्राप्त करते हैं। क्या ऐसा नहीं है? आस्थावान लोगों के लिए, यदि वे पुनर्जन्म-दर-पुनर्जन्म अपने धार्मिक नियमों का सख्ती से पालन कर पाते हैं, तो इन सभी पुनर्जन्मों के बाद परमेश्वर अंततः उनके लिए अपनी उद्घोषणा करेगा। इसी प्रकार, आज तुम लोगों के लिए, चाहे तुम परमेश्वर के चुने हुए लोगों में से एक हो या कोई सेवाकर्ता हो, परमेश्वर समान रूप से तुम्हें राह पर लाएगा और अपने द्वारा नियत किए गए विनियमों और प्रशासनिक आदेशों के अनुसार तुम लोगों का अंत निर्धारित करेगा। इस तरह के लोगों के बीच, विविध प्रकार की आस्था के लोगों के बीच – यानि जो विविध धर्मों से संबंधित हैं—क्या परमेश्वर ने उन्हें रहने का स्थान दिया है? यहूदी कहाँ हैं? क्या परमेश्वर ने उनकी आस्था में हस्तक्षेप किया है? उसने नहीं किया है, है न? और ईसाइयों का क्या? उसने उनमें में भी हस्तक्षेप नहीं किया है। वह उन्हें उनकी स्वयं की पद्धतियों का पालन करने देता है। वह उनसे बात नहीं करता है, या उन्हें कोई प्रबुद्धता नहीं देता है, और, इसके अलावा, वह उन पर कुछ भी प्रकट नहीं करता है। यदि तुम्हें लगता है कि यह सही है, तो इसी तरह से विश्वास करो। कैथोलिक मरियम पर विश्वास करते हैं, और इस पर कि यह मरियम के माध्यम से था कि समाचार यीशु तक पहुँचाया गया था; उनकी आस्था ऐसा ही रूप है। क्या कभी परमेश्वर ने उनके विश्वास को सुधारा है? परमेश्वर उन्हें स्वतंत्र छोड़ देता है; वह उन पर कोई ध्यान नहीं देता है, और उन्हें जीवित रहने के लिए एक निश्चित स्थान देता है। क्या मुसलमानों और बौद्धों के प्रति भी वह वैसा ही नहीं है? उसने उनके लिए भी सीमाएं तय कर दी हैं, और, उनकी संबंधित आस्थाओं में हस्तक्षेप किए बिना, उन्हें स्वयं का जीवित रहने का स्थान लेने देता है। सब कुछ सुव्यवस्थित है। और इस सब में तुम लोग क्या देखते हो? यही कि परमेश्वर अधिकार धारण करता है, किन्तु वह अपने अधिकार का दुरुपयोग नहीं करता है। परमेश्वर सभी चीजों को अचूक क्रम में व्यवस्थित करता है और रीतिबद्ध तरीके से ऐसा करता है, और इसमें उसकी बुद्धि और सर्वशक्तिमत्ता निहित है।

आज हमने एक नये और खास विषय पर बात की है, जिसका संबंध आध्यात्मिक दुनिया से है, जो कि आध्यात्मिक दुनिया के परमेश्वर के प्रबंधन के एक पहलू और उस साम्राज्य पर उसके प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इन बातों को समझने से पहले हो सकता है कि तुमने कहा हो: "इससे संबंधित हर चीज़ एक रहस्य है, और इसका हमारे जीवन में प्रवेश से कुछ लेना देना नहीं है; ये चीज़ें उन बातों से अलग हैं कि लोग कैसे जीते हैं, और हमें उन्हें समझने की आवश्यकता नहीं है और न ही हम उनके बारे में सुनना

चाहते हैं। परमेश्वर को जानने से उनका बिल्कुल भी कोई संबंध नहीं है"। अब, क्या तुम लोगों को लगता है कि ऐसी सोच के साथ कोई समस्या है? क्या यह सही है? (नहीं।) ऐसी सोच सही नहीं है, और इसमें गंभीर समस्याएँ है। इसका कारण यह है कि यदि तुम यह समझने की इच्छा रखते हो कि कैसे परमेश्वर सभी चीज़ों पर शासन करता है, तो तुम मात्र और केवल यह नहीं समझ सकते कि तुम क्या देख सकते हो और तुम्हारी सोच कहाँ तक जा सकती है; तुम्हें उस दूसरी दुनिया को भी थोड़ा अवश्य ही समझना होगा जो तुम्हारे लिए अदृश्य हो सकती है, किन्तु इस जगत से जटिलता से जुड़ी हुई है जिसे तुम देख सकते हो। यह परमेश्वर की संप्रभुता से संबंधित है, और इसका संबंध "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है" विषय से है। यह उसके बारे में जानकारी है। इस जानकारी के बिना, इस बारे में लोगों के ज्ञान में दोष और कमियाँ होंगी कि कैसे परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है। इस प्रकार, आज हमने जिस बारे में बात की है, उसे हमारे पिछले विषयों और साथ ही "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है" की विषय-वस्तु का समापन किया जाना कहा जा सकता है। इसे समझ लेने के बाद, क्या तुम लोग इस विषय-वस्तु के माध्यम से परमेश्वर को जानने में समर्थ हो? इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण यह है कि आज, मैंने सेवाकर्ताओं से संबंधित एक बहुत महत्वपूर्ण सूचना तुम लोगों को दी है। मैं जानता हूँ कि तुम लोग इस तरह के विषयों को सुनना वास्तव में पसंद करते हो और तुम लोग वास्तव में इन बातों की परवाह करते हो। तो इसलिए मैंने आज जो चर्चा की है, क्या तुम लोग उससे संतुष्ट हो? (हाँ, हम हैं।) तुम लोगों पर शायद अन्य कुछ बातों का ज़बरदस्त प्रभाव न हुआ हो, परन्तु सेवाकर्ताओं के बारे में मैंने जो कुछ कहा है, उसका विशेष रूप से ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा है, क्योंकि यह विषय तुममें से हरेक की आत्मा को स्पर्श करता है।

मानवजाति से परमेश्वर की अपेक्षाएँ

1. स्वयं परमेश्वर की पहचान और प्रतिष्ठा

हम "परमेश्वर सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है" और साथ ही "परमेश्वर स्वयं अद्वितीय परमेश्वर है" विषय के अंत में आ गए हैं। ऐसा करने के बाद, हमें एक सारांश तैयार करने की आवश्यकता है। हुमें किस प्रकार का सारांश तैयार करना चाहिए? यह स्वयं परमेश्वर के बारे में निष्कर्ष है। ऐसा होने के कारण इसका परमेश्वर के हर पहलू से, और साथ ही लोग परमेश्वर में कैसे विश्वास करते हैं, इससे अनिवार्य संबंध अवश्य होना चाहिए। और इसलिए, पहले मुझे तुम लोगों से पूछना है: इन धर्मोपदेशों को सुनने के बाद, तुम लोगों के मन की आँखों में परमेश्वर कौन है? (सृष्टिकर्ता।) तुम लोगों के मन की आँखों में परमेश्वर

सृष्टिकर्ता है। क्या कुछ और है? परमेश्वर सभी चीज़ों का प्रभु है। क्या ये शब्द उचित हैं? (उचित हैं।) परमेश्वर ही एकमात्र है जो सभी चीज़ों पर शासन करता है, और सभी चीज़ों को चलाता है। जो कुछ है वह उसी ने रचा है, जो कुछ है वही उसे चलाता है, जो कुछ है उस सब पर वही शासन करता है और जो कुछ है उस सब का वही भरण-पोषण करता है। यह परमेश्वर की प्रतिष्ठा और यही उसकी पहचान है। सभी चीजों के लिए और जो कुछ भी है उस सब के लिए, परमेश्वर की असली पहचान, सृजनकर्ता, और सम्पूर्ण सृष्टि के शासक की है। परमेश्वर की ऐसी पहचान है और वह सभी चीज़ों में अद्वितीय है। परमेश्वर का कोई भी प्राणी—चाहे वह मनुष्य के बीच हो या आध्यात्मिक दुनिया में हो—परमेश्वर की पहचान और प्रतिष्ठा का का रूप लेने या उसका स्थान लेने के लिए किसी भी साधन या बहाने का उपयोग नहीं कर सकता है, क्योंकि सभी चीज़ों में वही एक है जो इस पहचान, सामर्थ्य, अधिकार, और सृष्टि पर शासन करने की क्षमता से सम्पन्न है: हमारा अद्वितीय परमेश्वर स्वयं। वह सभी चीज़ों के बीच रहता और चलता है; वह सभी चीज़ों से ऊपर, सर्वोच्च स्थान तक उठ सकता है। वह मनुष्य बनकर, जो मांस और लहू के हैं, उनमें से एक बन कर, लोगों के साथ आमने-सामने होकर और उनके सुख—दुःख बाँट कर, अपने आप को विनम्र बना सकता है, जबकि वहीं दूसरी तरफ, जो कुछ भी है वह सब को नियंत्रित करता है, और जो कुछ भी है उस का भाग्य और उसे किस दिशा में जाना है यह तय करता है। इसके अलावा, वह संपूर्ण मानवजाति के भाग्य और मानवजाति की दिशा का पथप्रदर्शन करता है। इस तरह के परमेश्वर की सभी जीवित प्राणियों के द्वारा आराधना की जानी चाहिए, उसका आज्ञापालन किया जाना चाहिए और उसे जानना चाहिए। इस प्रकार, इस बात की परवाह किए बिना कि तुम मानवजाति में से किस समूह या किस प्रकार सम्बन्धित हो, परमेश्वर में विश्वास करना, परमेश्वर का अनुसरण करना, परमेश्वर का आदर करना, उसके शासन को स्वीकार करना, और अपने भाग्य के लिए उसकी व्यवस्थाओं को स्वीकार करना ही किसी भी व्यक्ति के लिए, किसी जीवित प्राणी के लिए एकमात्र विकल्प—आवश्यक विकल्प—है। परमेश्वर की अद्वितीयता में, लोग देखते हैं कि उसका अधिकार, उसका धार्मिक स्वभाव, उसका सार, और वे साधन जिनके द्वारा वह सभी चीज़ों का भरण-पोषण करता है, सभी अद्वितीय हैं; यह अद्वितीयता, स्वयं परमेश्वर की असली पहचान को निर्धारित करती है, और यह उसकी प्रतिष्ठा को भी निर्धारित करती है। इसलिए, सभी प्राणियों के बीच, यदि आध्यात्मिक दुनिया में या मनुष्यों के बीच कोई जीवित प्राणी परमेश्वर की जगह खड़ा होने की इच्छा करता है, तो सफलता वैसे ही असंभव होगी, जैसे कि परमेश्वर का रूप धरने का कोई प्रयास। यह तथ्य है।

इस तरह के सृजनकर्ता और शासक की, जो स्वयं परमेश्वर की पहचान, सामर्थ्य और प्रतिष्ठा को धारण करता है, मानवजाति के बारे में क्या अपेक्षाएँ हैं? यह हर एक को स्पष्ट हो जाना चाहिए, और हर एक द्वारा याद रखा जाना चाहिए; यह परमेश्वर और मनुष्य दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है!

2. परमेश्वर के प्रति मानवजाति की विभिन्न प्रवृत्तियाँ

लोग परमेश्वर के प्रति कैसा बर्ताव करते हैं यह उनका भविष्य निर्धारित करता है, और यह निर्धारित करता है कि कैसे परमेश्वर उनके साथ बर्ताव करेगा और उनसे निपटेगा। यहाँ पर मैं कुछ उदाहरण देने जा रहा हूँ कि कैसे लोग परमेश्वर के प्रति बर्ताव करते हैं। आओ, इस बारे में सुनते और देखते हैं कि उनका ढंग और रवैया, जिससे वे परमेश्वर के सामने आचरण करते हैं, सही है या नहीं। आओ, हम निम्नलिखित सात प्रकार के लोगों के आचरण पर विचार करें:

1) एक प्रकार के ऐसे लोग होते हैं जिनका व्यवहार परमेश्वर के प्रति विशेष रूप से बेतुका होता है। ये लोग सोचते हैं कि परमेश्वर एक बोधिसत्व या मानव बुद्धि वाला पवित्र प्राणी जैसा है, और चाहता है कि जब भी वे लोग आपस में मिलें तो मनुष्य तीन बार उसके सामने झुकें और हर बार के खाने के बाद अगरबत्ती जलाएँ। नतीजतन, जब भी वे उसके अनुग्रह के प्रति अत्यधिक कृतज्ञ होते हैं और उसके प्रति आभार महसूस करते हैं तो अक्सर उनके अंदर इस तरह का संवेग आता है। वे ऐसी कामना करते हैं कि जिस परमेश्वर में वे आज विश्वास करते हैं वह, उस पवित्र प्राणी की तरह जिसकी वे अपने मन में लालसा रखते हैं, अपने प्रति उनके उस व्यवहार को स्वीकार कर सके जिसमें वे मिलने पर तीन बार उसके सामने झुकते हैं हर बार के भोजन के बाद अगरबत्ती जलाते हैं।

2) कुछ लोग परमेश्वर को जीवित बुद्ध के रूप में देखते हैं जो सभी जीवितों के कष्टों को हटाने और उन्हें बचाने में सक्षम है; वे उसे जीवित बुद्ध के रूप में देखते हैं जो उन्हें दुःख के सागर से दूर ले जाने में सक्षम है। परमेश्वर में इन लोगों का विश्वास बुद्ध के रूप में उसकी आराधना करना है। यद्यपि वे अगरबत्ती नहीं जलाते हैं, दण्डवत् नहीं करते हैं, या अर्पण नहीं करते हैं, लेकिन हृदय की गहराई में यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर केवल इस तरह का एक बुद्ध है जो केवल यह चाहता है कि वे बहुत दयालु और धर्मार्थ हों, कि वे किसी जीवित प्राणी को नहीं मारें, दूसरों को गाली देने से बचें, ऐसा जीवन जीएँ जो ईमानदार दिखायी दे, और कुछ बुरा नहीं करें। वे मानते हैं कि केवल यही बातें उसके द्वारा उनसे अपेक्षित

हैं; उनके हृदय में यही परमेश्वर है।

3) कुछ लोग परमेश्वर की आराधना ऐसे करते हैं मानो कि वह कोई महान या प्रसिद्ध व्यक्ति हो। उदाहरण के लिए, यह महान व्यक्ति चाहे किसी भी माध्यम से बोलना पसंद करता हो, किसी भी लय में बोलता हो, वह जिन शब्दों और शब्दावली का उपयोग करता है, उसका लहजा, उसके हाथ के संकेत, उसरी राय और कार्यकलाप, उसका आचरण—वे उस सब की नक़ल करते हैं, और ये ऐसी चीज़ें हैं जो परमेश्वर में अपने विश्वास के दौरान उनमें पूरी तरह से अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए।

4) कुछ लोग परमेश्वर को एक सम्राट के रूप में देखते हैं, वे महसूस हैं कि वह सबसे ऊपर है, और यह कि कोई भी उसका अपमान करने का साहस नहीं करता है—और यदि कोई ऐसा करता है, तो उस व्यक्ति को दण्डित किया जाएगा। वे ऐसे सम्राट की आराधना इसलिए करते हैं क्योंकि उनके हृदय में सम्राट के लिए एक खास जगह है। उनके विचार, तौर तरीके, अधिकार और स्वभाव—यहाँ तक कि उनकी रुचियाँ और व्यक्तिगत जीवन—यह सब कुछ ऐसा बन जाता है जिसे इन लोगों को अवश्य समझना चाहिए; वे ऐसे मुद्दे और मामले बन जाते हैं जिनके बारे में वे चिंतित होते हैं। परिणामस्वरूप, वे परमेश्वर की आराधना एक सम्राट के रूप में करते हैं। इस तरह का विश्वास हास्यास्पद है।

5) कुछ लोगों की परमेश्वर के अस्तित्व में एक विशेष आस्था होती है और यह आस्था गहन और अटल होती है। क्योंकि उनका परमेश्वर के बारे में ज्ञान बहुत उथला होता है और उन्हें उसके वचनों का ज्यादा अनुभव नहीं होता है, इसलिए वे उसकी आराधना एक प्रतिमा के रूप में करते हैं। यह प्रतिमा उनके हृदय में परमेश्वर है; यह कुछ ऐसा है जिससे उन्हें लगता है कि उन्हें अवश्य ही डरना चाहिए और उसके सामने झुकना चाहिए, और जिसका उन्हें अनुसरण और अनुकरण अवश्य करना चाहिए। वे परमेश्वर को एक ऐसी प्रतिमा के रूप में देखते हैं, जिसका उन्हें जीवनभर अनुसरण अवश्य करना चाहिए। वे उस लहज़े की नकल करते हैं जिसमें ईश्वर बोलता है, और बाहरी रूप में वे उनकी नक़ल करते हैं जिन्हें परमेश्वर पसंद करता है। वे अक्सर ऐसे काम करते हैं जो भोले-भाले, शुद्ध, और ईमानदार प्रतीत होते हैं, और यहाँ तक कि वे इस प्रतिमा का एक ऐसे सहभागी या साथी के रूप में अनुसरण करते हैं जिससे वे कभी अलग नहीं हो सकते हैं। यह उनके विश्वास का ऐसा ही रूप है।

6) एक प्रकार के लोग ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के बहुत से वचनों को पढ़ने और बहुत से उपदेशों को

सुनने के बावजूद, अपने हृदय की गहराई से यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर के प्रति उनके व्यवहार के पीछे उनका एकमात्र सिद्धांत यह है कि उन्हें हमेशा चापलूस और खुशामदी होना चाहिए, या उस तरह से उसकी स्तुति और सराहना करनी चाहिए जो अवास्तविक हो। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो चाहता है कि वे इस तरह से व्यवहार करें। इसके अलावा, वे मानते हैं कि यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे किसी भी समय उसके क्रोध को भड़का सकते हैं, या गलती से उसके विरुद्ध पाप कर सकते हैं, और इस तरह पाप करने के परिणामस्वरुप परमेश्वर उन्हें दण्डित करेगा। उनके हृदय में इसी तरह का परमेश्वर है।

7) और फिर ऐसे लोगों की बहुतायत है जो परमेश्वर में आध्यात्मिक सहारा ढूँढते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे इस जगत में रहते हैं, वे शांति या आनंद से रहित हैं, और उन्हें कहीं आराम नहीं मिलता है; परमेश्वर को प्राप्त करने के बाद, उसके वचनों को देख और सुन लेने के बाद, वे अपने हृदयों में वे गुपचुप रूप से आनंदित और प्रफुल्लित होने लगते हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि उनका मानना है कि उन्होंने आख़िरकार एक ऐसी जगह खोज ली है जो उनकी आत्मा को आनंदित करेगी, और उन्होंने आख़िरकार ऐसा परमेश्वर प्राप्त कर लिया है जो उन्हें आध्यात्मिक सहारा देगा। उनके परमेश्वर को स्वीकार कर लेने और उसका अनुसरण शुरू करने के बाद, वे खुश हो जाते हैं, और उनके जीवन संतुष्ट हो जाते हैं। इसके बाद वे अविश्वासियों की तरह व्यवहार नहीं करते जो जीवन में जानवरों की तरह नींद में चलते हैं, और अब वे महसूस करते हैं कि उनके पास जीवन में आगे देखने के लिए कुछ है। इस प्रकार, उन्हें लगता है कि यह परमेश्वर उनकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं को बहुत हद तक पूरा कर सकता है और उनके मन और आत्मा, दोनों में एक बड़ा आनंद ला सकता है। इसका अहसास किए बिना, वे इस परमेश्वर को छोड़ने में असमर्थ हो जाते हैं जो उन्हें ऐसा आध्यात्मिक सहारा देता है, और जो उनकी आत्मा और पूरे परिवार के लिए आनंद लाता है। वे मानते हैं कि ईश्वर में विश्वास को उनके जीवन में आध्यात्मिक सहारा लाने से ज्यादा कुछ और करने की ज़रूरत नहीं है।

क्या तुममें से किसी का परमेश्वर के प्रति ऊपर उल्लिखित इन विभिन्न रवैयों में से कोई है? (हाँ, हैं।) यदि, परमेश्वर के प्रति अपने विश्वास में, किसी व्यक्ति के हृदय में इस प्रकार का कोई भी रवैया हो, तो क्या वह सच में परमेश्वर के सम्मुख आने में समर्थ है? यदि किसी के हृदय में इसमें से कोई भी रवैया हो, तो क्या वह परमेश्वर में विश्वास करता है? क्या ऐसा व्यक्ति स्वयं अद्वितीय परमेश्वर में विश्वास करता है?

(नहीं।) चूँकि तुम स्वयं अद्वितीय परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हो, तो तुम किसमें विश्वास करते हो? यदि तुम जिसमें विश्वास करते हो वह स्वयं अद्वितीय परमेश्वर नहीं है, तो यह संभव है कि तुम किसी प्रतिमा में, या किसी महान आदमी में, या किसी बोधिसत्व में विश्वास करते हो, या कि तुम अपने हृदय में स्थित बुद्ध की आराधना करते हो। इसके अलावा, यह भी संभव है कि तुम किसी साधारण व्यक्ति में विश्वास करते हो। संक्षेप में, परमेश्वर के प्रति लोगों के विभिन्न प्रकारों के विश्वास और प्रवृत्तियों की वजह से, लोग अपनी अनुभूति के परमेश्वर को अपने हृदयों में जगह देते हैं, वे परमेश्वर के ऊपर अपनी कल्पनाएँ थोप देते हैं, वे परमेश्वर के बारे में अपने रवैयों और कल्पनाओं को स्वयं अद्वितीय परमेश्वर के साथ-साथ रखते हैं, और इसके बाद वे प्रतिष्ठापित करने के लिए उन्हें पकड़कर रखते हैं। जब लोग परमेश्वर के प्रति इस प्रकार के अनुचित रवैये रखते हैं तो इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि उन्होंने स्वयं सच्चे परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया है और एक झूठे ईश्वर की आराधना कर रहे हैं; यह संकेत देता है कि परमेश्वर में विश्वास करते हुए ही वे उसे अस्वीकार कर रहे हैं और उसका विरोध कर रहे हैं और यह कि वे सच्चे परमेश्वर के अस्तित्व से इनकार करते हैं। यदि लोग इस प्रकार के विश्वास बनाए रखेंगे, तो उन्हें किन परिणामों का सामना करना पड़ेगा? इस प्रकार के विश्वासों के साथ, क्या वे कभी परमेश्वर की अपेक्षा को पूरा करने के निकट आ पाएँगे? (नहीं, वे नहीं आ पाएँगे।) इसके विपरीत, अपनी धारणाओं और कल्पनाओं के कारण, ये लोग परमेश्वर के पथ से और भी दूर भटक जाएँगे, क्योंकि वे जिस दिशा की खोज करते हैं, वह उससे ठीक विपरीत है जिसकी परमेश्वर उनसे अपेक्षा करता है। क्या कभी तुम लोगों ने वह कहानी सुनी है कि "रथ को उत्तर की ओर चलाकर दक्षिण की ओर जाना?" यह ठीक उत्तर की ओर रथ चला कर दक्षिण की ओर जाने का मामला हो सकता है। यदि लोग परमेश्वर में इस बेढंगे तरीके से विश्वास करेंगे, तो तुम जितनी अधिक कोशिश करोगे, उतना ही परमेश्वर से अधिक दूर हो जाओगे। और इसलिए मैं तुम लोगों को यह चेतावनी देता हूँ: इससे पहले कि तुम आगे बढ़ो, तुम्हें पहले यह ज़रूर देखना चाहिए कि तुम सही दिशा में जा रहे हो या नहीं? अपने प्रयासों को लक्षित करो, और स्वयं से यह पूछना निश्चित करो, "क्या जिस परमेश्वर पर मैं विश्वास करता हूँ वह सभी चीज़ों का शासक है? क्या वह परमेश्वर जिस पर मैं विश्वास करता हूँ मात्र कोई ऐसा है जो मुझे आध्यात्मिक सहारा देता है? क्या वह मेरा आदर्श मात्र है? जिस परमेश्वर में मैं विश्वास करता हूँ, वह मुझसे क्या चाहता है? क्या परमेश्वर उस सब को अनुमोदित करता है जो मैं करता हूँ? क्या मेरे सभी कार्य और तलाशें परमेश्वर को जानने की खोज के क्रम में हैं? क्या यह मुझसे परमेश्वर

की अपेक्षाओं के अनुकूल है? क्या जिस पथ पर मैं चलता हूँ वह परमेश्वर के द्वारा मान्य और अनुमोदित है? क्या वह मेरी आस्था से संतुष्ट है?" तुम्हें अक्सर और बार-बार अपने आप से ये प्रश्न पूछने चाहिए। यदि तुम परमेश्वर के ज्ञान की खोज करना चाहते हो, तो इससे पहले कि तुम परमेश्वर को संतुष्ट करने में सफल हो सको, तुम्हारे पास एक स्पष्ट चेतना और स्पष्ट उद्देश्य अवश्य होने चाहिए।

क्या यह संभव है कि अपनी सहिष्णुता के परिणामस्वरूप, परमेश्वर अनिच्छा से इन अनुचित प्रवृत्तियों को स्वीकार कर ले जिनके बारे में मैंने अभी-अभी बात की है? क्या परमेश्वर इन लोगों के रवैयों की सराहना कर सकेगा? (नहीं।) परमेश्वर की मनुष्यों से और जो उसका अनुकरण करते हैं उनसे, क्या अपेक्षाएँ है? क्या तुम्हें यह स्पष्ट अंदाज़ा है कि वह लोगों से किस प्रकार की प्रवृत्ति की अपेक्षा करता है? अब तक मैं बहुत कह चुका हूँ: मैं स्वयं परमेश्वर के विषय पर और साथ ही उसके कर्मों और उसके स्वरूप के बारे में, बहुत बोल चुका हूँ। क्या अब तुम लोग जानते हो कि परमेश्वर लोगों से क्या प्राप्त करना चाहता है? क्या तुम जानते हो कि वह तुमसे क्या चाहता है? बोलो। यदि अनुभवों और अभ्यास से तुम्हारे ज्ञान में अभी भी कमी है या यह बहुत सतही है, तो तुम लोग इन वचनों के अपने ज्ञान के बारे में कुछ कह सकते हो। क्या तुम्हारे पास ज्ञान का सार है? परमेश्वर मनुष्य से क्या चाहता है? (इन कुछ संगतियों के दौरान, परमेश्वर ने इस बात की आवश्यकता को महत्व दिया है कि हम उसे जानें, उसके कर्मों को जानें, यह जानें कि वही सभी चीज़ों के जीवन का स्रोत है और उसकी हैसियत और पहचान से परिचित हों।) और जब परमेश्वर कहता है कि लोग उसे जानें, तो उसका अंतिम परिणाम क्या होता है? (वे जानते हैं कि परमेश्वर सृजनकर्ता है, और मनुष्य सृजित प्राणी हैं।) जब लोग इस प्रकार का ज्ञान पा लेते हैं, तो परमेश्वर के प्रति उनके रवैयों में, उनके कर्तव्य निष्पादन में, या उनके जीवन स्वभाव में क्या बदलाव आते हैं? क्या तुम लोगों ने कभी इस बारे में सोचा है? क्या यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर को जानने, और उसे समझने के बाद, वे भले व्यक्ति बन जाते हैं? (परमेश्वर पर विश्वास करना एक भला आदमी बनने की कोशिश करना नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर का प्राणी बनने के लिए अनुसरण करना है, जो कि मानकों पर खरा उतरता है और ईमानदार व्यक्ति है।) क्या कुछ और भी है? (परमेश्वर को सच में और सही ढंग से जानने के बाद, हम उसके साथ परमेश्वर के रूप में व्यवहार कर पाते हैं; हम जानते हैं कि परमेश्वर सदैव ही परमेश्वर है, कि हम सृजित किए गए प्राणी हैं, हमें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए और हमें अपने सही स्थानों पर टिके रहना चाहिए।) बहुत अच्छा! आओ, कुछ अन्य लोगों से भी सुनें। (हम परमेश्वर को जानते

हैं, और अंततः हम ऐसे व्यक्ति बनने में समर्थ हुए हैं जो सच में परमेश्वर को समर्पित होते हैं, परमेश्वर का आदर करते हैं और बुराई से दूर रहते हैं।) यह सही है!

3. वह दृष्टिकोण जो परमेश्वर अपेक्षा करता है कि उसके प्रति मानवजाति का होना चाहिए

वास्तव में, परमेश्वर लोगों से ज्यादा अपेक्षा नहीं करता है—या कम से कम, वह उतनी अपेक्षा नहीं करता है जितनी लोग कल्पना करते हैं। अगर परमेश्वर ने किन्हीं वचनों को नहीं कहा होता, या यदि उसने अपने स्वभाव या किन्हीं कर्मों को व्यक्त नहीं किया होता तो परमेश्वर को जानना तुम लोगों के लिए बहुत कठिन होता, क्योंकि लोगों को उसके इरादों और उसकी इच्छा का अनुमान लगाना पड़ता; यह करना उनके लिए बहुत कठिन होता। किन्तु, उसके कार्य के अंतिम चरण में, परमेश्वर ने बहुत से वचन कहे हैं, बहुत सा कार्य किया है, और मनुष्य से बहुत सी अपेक्षाएँ की हैं। उसने अपने वचनों में, और अपने कार्य की विशाल मात्रा में लोगों को बता दिया है कि उसे क्या पसंद है, उसे किससे घृणा है, और उन्हें किस प्रकार का मनुष्य बनना चाहिए। इन बातों को समझने के बाद, लोगों के अपने हृदयों में परमेश्वर की अपेक्षाओं की सटीक परिभाषा होनी चाहिए, क्योंकि वे अस्पष्टता के बीच परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं, और अस्पष्ट परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, न ही वे अस्पष्टता और शून्यता के बीच परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। इसके बजाय, वे उसके कथनों को सुनने में समर्थ हैं, वे उसकी अपेक्षाओं के मानकों को समझने में, और उन्हें प्राप्त करने में समर्थ हैं, और परमेश्वर लोगों को वह सब बताने में मनुष्य की भाषा का उपयोग करता है जो उन्हें जानना और समझना चाहिए। आज, यदि लोग अभी भी नहीं जानते कि परमेश्वर क्या है और उसकी उनसे क्या अपेक्षाएँ हैं; अगर वे नहीं जानते कि परमेश्वर में विश्वास क्यों करना चाहिए न ही ये कि परमेश्वर में विश्वास या उससे व्यवहार कैसे करना चाहिए, तो फिर इसमें एक समस्या है। अभी-अभी तुम में से प्रत्येक ने एक क्षेत्र विशेष के बारे में बोला; तुम लोग कुछ बातों से परिचित हो, चाहे वे बातें विशिष्ट हों या सामान्य। लेकिन मैं तुम लोगों को परमेश्वर की मनुष्य से सही, पूर्ण और विशिष्ट अपेक्षाएँ बताना चाहता हूँ। वे केवल कुछ वचन हैं, और बहुत साधारण हैं; हो सकता है कि तुम लोग पहले से ही उन्हें जानते हों। परमेश्वर की मनुष्य से, और जो उसका अनुसरण करते हैं उनसे, सही अपेक्षाएँ निम्नानुसार हैं। परमेश्वर की उनसे पाँच अपेक्षाएँ हैं जो उसका अनुसरण करते हैं: सच्चा विश्वास, निष्ठापूर्ण अनुकरण, पूर्ण समर्पण, सच्चा ज्ञान और हार्दिक आदर।

इन पाँच बातों में, परमेश्वर चाहता है कि लोग उससे अब और प्रश्न न करें, और न ही अपनी कल्पना

या अस्पष्ट और अमूर्त दृष्टिकोण का उपयोग करके उसका अनुसरण करें; उन्हें किन्हीं भी कल्पनाओं या धारणाओं के साथ परमेश्वर का अनुसरण कतई नहीं करना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि जो उसका अनुसरण करते हैं, वे सभी ऐसा पूरी वफादारी से करें, आधे-अधूरे मन से या बिना किसी प्रतिबद्धता के नहीं करें। जब परमेश्वर तुमसे कोई अपेक्षा करता है, या तुम्हारा परीक्षण करता है, तुमसे निपटता या तुम्हें तराशता है, या तुम्हें अनुशासित करता और दंड देता है, तो तुम्हें पूर्ण रूप से उसके प्रति समर्पण कर देना चाहिए। तुम्हें कारण नहीं पूछना चाहिए, या शर्तें नहीं रखनी चाहिए, और तुम्हें तर्क तो बिल्कुल नहीं करना चाहिए। तुम्हारी आज्ञाकारिता चरम होनी चाहिए। परमेश्वर का ज्ञान एक ऐसा क्षेत्र है जिसका लोगों में सबसे ज़्यादा अभाव है। वे अक्सर परमेश्वर पर ऐसी कहावतों, कथनों, और वचनों को थोपते हैं जो उससे संबंधित नहीं होते, ऐसा विश्वास करते हैं कि ये वचन परमेश्वर के ज्ञान की सबसे सही परिभाषा हैं। उन्हें बहुत थोड़ा सा पता है कि ये कहावतें, जो लोगों की कल्पनाओं से आती हैं, उनके अपने तर्क, और अपने ज्ञान से आती हैं, उनका परमेश्वर के सार से ज़रा सा भी सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार, मैं तुम लोगों को बताना चाहता हूँ कि जब उस ज्ञान की बात आती है जो परमेश्वर चाहता है कि लोगों में हो, वह मात्र यह नहीं कहता कि तुम उसे और उसके वचनों को पहचानो, बल्कि यह कि परमेश्वर का तुम्हारा ज्ञान सही हो। भले ही तुम केवल एक वाक्य बोल सको, या केवल थोड़ा सा ही जानते हो, तो यह थोड़ा सा जानना सही और सच्चा हो, और स्वयं परमेश्वर के सार के अनुकूल हो। ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर लोगों की अवास्तविक और अविवेकी स्तुति और सराहना से घृणा करता है। उससे भी अधिक, जब लोग उससे हवा की तरह बर्ताव करते हैं तो वह इससे घृणा करता है। जब परमेश्वर के बारे में विषयों की चर्चा के दौरान, लोग तथ्यों की परवाह न करते हुए बात करते हैं, जैसा चाहे वैसा और बेझिझक बोलते हैं, जैसा उन्हें ठीक लगे वैसा बोलते हैं तो वह इससे घृणा करता है; इसके अलावा, वह उनसे नफ़रत करता है जो यह मानते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, और उससे संबन्धित अपने ज्ञान के बारे में डींगे मारते हैं, उससे संबन्धित विषयों पर बिना किसी रुकावट या विचार किए चर्चा करते हैं। ऊपर उल्लिखित पाँच अपेक्षाओं में से अंतिम अपेक्षा हार्दिक आदर करना थी: यह परमेश्वर की उनसे परम अपेक्षा है जो उसका अनुसरण करते हैं। जब किसी को परमेश्वर का सही और सच्चा ज्ञान होता है, तो वह परमेश्वर का सच में आदर करने और बुराई से दूर रहने में सक्षम होता है। यह आदर उसके हृदय की गहराई से आता है; यह आदर स्वैच्छिक दिया जाता है, और परमेश्वर द्वारा डाले गए दबाव के परिणामस्वरूप नहीं। परमेश्वर यह नहीं कहता कि तुम उसे किसी अच्छी प्रवृत्ति, या आचरण,

या बाहरी व्यवहार का कोई उपहार दो; उसके बजाय, वह कहता है कि तुम अपने हृदय की गहराई से उसका आदर करो और उससे डरो। यह आदर तुम्हारे जीवन स्वभाव में बदलाव, परमेश्वर का ज्ञान और परमेश्वर के कर्मों की समझ प्राप्त करने, परमेश्वर का सार समझने और तुम्हारे द्वारा इस तथ्य को स्वीकार करने के परिणामस्वरूप आता है कि तुम परमेश्वर के प्राणियों में से एक हो। इसलिए, आदर को समझाने के लिए "हार्दिक" शब्द का उपयोग करने का मेरा लक्ष्य यह है कि मनुष्य समझे कि परमेश्वर के लिए उनका आदर उनके हृदय की गहराई से आना चाहिए।

अब उन पाँच अपेक्षाओं पर विचार करें: क्या तुम लोगों में ऐसे लोग हैं जो प्रथम तीन को प्राप्त करने में सक्षम हैं? इससे मैं सच्चे विश्वास, निष्ठापूर्ण अनुसरण, और पूर्ण समर्पण को संदर्भित कर रहा हूँ। क्या तुम लोगों में से कोई ऐसे हैं जो इन चीजों में सक्षम हैं? मैं जानता हूँ कि यदि मैंने सभी पाँच कहे होते, तो निश्चित रूप से तुम लोगों में से कोई नहीं होता जो सक्षम हो, किन्तु मैंने इस संख्या को तीन तक कर दिया है। इस बारे में सोचो कि तुम लोग इन चीजों को प्राप्त कर चुके हो या नहीं। क्या "सच्चा विश्वास" प्राप्त करना आसान है? (नहीं, आसान नहीं है।) यह आसान नहीं है, क्योंकि लोग प्रायः परमेश्वर पर प्रश्न उठाते हैं। और "निष्ठापूर्ण अनुसरण" के बारे में क्या? यह "निष्ठापूर्ण" किसे संदर्भित करता है? (आधे-अधूरे मन से नहीं बल्कि पूरे मन से होना।) आधे-अधूरे मन से नहीं, बल्कि पूरे मन से। एकदम सटीक बात कही! तो क्या तुम लोग इस अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम हो? तुम्हें अधिक कड़ी मेहनत करनी होगी, है न? अभी तुम्हें इस अपेक्षा को पूरा पूरा करने में सफल होना बाकी है! "पूर्ण समर्पण" के बारे में क्या कहोगे—क्या तुमने इसे पा लिया है? (नहीं।) तुमने इसे भी नहीं पाया है। तुम बार-बार अवज्ञाकारी, विद्रोहशील हो जाते हो; तुम प्रायः नहीं सुनते हो, या आज्ञापान करना नहीं चाहते हो, या सुनना नहीं चाहते हो। ये तीन मूलभूत अपेक्षाएँ हैं जिन्हें जीवन में प्रवेश करने के बाद लोगों द्वारा पूरा किया जाता है लेकिन तुम लोगों को अभी उन्हें पूरा करना बाकी है। तो, इस वक्त, क्या तुममें बहुत अधिक क्षमता है? आज, मुझे इन वचनों को कहता हुआ सुनने के बाद, क्या तुम चिंतित महसूस करते हो? (हाँ!) यह सही है कि तुम्हें चिंतित महसूस करना चाहिए। चिंतित होने को मत टालो। तुम लोगों की ओर से मैं चिंतित महसूस करता हूँ! मैं अन्य दो अपेक्षाओं पर नहीं जाऊँगा; निस्संदेह, यहाँ कोई भी इन्हें पूरा करने में सक्षम नहीं है। तुम चिंतित हो। तो क्या तुम लोगों ने अपने लक्ष्य निर्धारित कर लिए हैं? तुम्हें कौन से लक्ष्यों के साथ, किस दिशा में खोज करनी चाहिए, और अपने प्रयासों को समर्पित करना चाहिए? क्या तुम्हारा कोई लक्ष्य है? मैं स्पष्ट रूप से

कहता हूँ: जब तुम इन पाँच अपेक्षाओं को प्राप्त कर लोगे, तो तुमने परमेश्वर को संतुष्ट कर लिया होगा। उनमें से प्रत्येक एक संकेतक है, और साथ ही किसी व्यक्ति के जीवन में प्रवेश की परिपक्वता का अंतिम लक्ष्य भी। में पहुँचने के बाद लोगों का जीवन में प्रवेश का और इसके अंतिम लक्ष्य का संकेतक। भले ही मैं इन अपेक्षाओं में से एक के बारे में ही विस्तार से बोलना चुनूँ और तुमसे उसे पूरा करने की अपेक्षा करूँ, तब भी इसे प्राप्त करना आसान नहीं होगा; तुम्हें कुछ हद तक कठिनाई झेलनी होगी और विशेष प्रयास करने होंगे। तुम लोगों की मानसिकता कैसी होनी चाहिए? यह वैसी ही होनी चाहिए जैसी एक कैंसर के मरीज़ की होती है जो ऑपरेशन की टेबल पर जाने की प्रतीक्षा कर रहा होता है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? यदि तुम परमेश्वर में विश्वास करना चाहते हो और यदि तुम परमेश्वर और उसकी संतुष्टि को प्राप्त करना चाहते हो, तो जब तक तुम कुछ हद तक कष्ट सहन नहीं करते हो और विशेष प्रयास नहीं करते हो, तुम इन चीज़ों को प्राप्त करने में समर्थ नहीं होगे। तुम लोगों ने बहुत उपदेश सुन लिया है, किन्तु इसे सुन लेने मात्र का यह मतलब नहीं कि यह उपदेश तुम्हारा हो गया है; तुम्हें इसे अवश्य आत्मसात करना चाहिए और इसे किसी ऐसी वस्तु में रूपांतरित करना चाहिए जो तुमसे सम्बंधित हो। तुम्हें इसे अपने जीवन में आत्मसात कर लेना चाहिए, और इसे अपने अस्तित्व में ले आना चाहिए, इन वचनों और उपदेश को तुम्हारी जीवनशैली का मार्गदर्शन करने देना चाहिए, और तुम्हारे जीवन में अस्तित्व संबंधी मूल्य और अर्थ लाने देना चाहिए। जब ऐसा होगा, तब तुम्हारे लिए इन वचनों को सुनने का महत्व होगा। यदि मेरे द्वारा कहे जा रहे वचन तुम्हारे जीवन में कोई सुधार, या तुम्हारे अस्तित्व का मोल नहीं बढ़ाते हैं, तो तुम्हारा इन्हें सुनना कोई अर्थ नहीं रखता है। तुम लोग इसे समझते हो, है न? इसे समझने के बाद, आगे क्या होता है, यह तुम लोगों पर है। तुम लोगों को काम पर अवश्य लग जाना चाहिए! तुम्हें सभी बातों में ईमानदार अवश्य होना चाहिए! भ्रम में मत रहो; समय तेज़ी से गुज़र रहा है! तुम लोगों में से अधिकांश लोग पहले ही दस साल से भी ज्यादा समय से परमेश्वर में विश्वास करते आ रहे हैं। इन दस सालों को मुड़कर देखो: तुम लोगों ने कितना पाया है? इस जीवन के कितने दशक तुम्हारे पास शेष हैं? और इस जन्म में जीने के लिए तुम्हारे पास और कितने दशक बचे हैं? तुम्हारे पास बहुत समय नहीं बचा है। इस बारे में भूल जाओ कि परमेश्वर का कार्य तुम्हारी प्रतीक्षा करता है या नहीं, उसने तुम्हारे लिए कोई अवसर छोड़ा है या नहीं, या वह उसी कार्य को पुनः करेगा या नहीं—इन चीजों के बारे में बात मत करो। क्या तुम अपने जीवन के पिछले दस वर्षों को पलट सकते हो? हर गुज़रते हुए दिन और तुम्हारे उठाए हर कदम के साथ तुम्हारे

पास एक दिन कम होता जाता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है! तुम परमेश्वर में अपनी आस्था से केवल तभी प्राप्त करोगे, यदि तुम इसे अपने जीवन की सबसे बड़ी चीज, भोजन, कपडे, या किसी भी अन्य चीज की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण चीज़ के रूप में देखोगे! यदि तुम केवल तभी विश्वास करते हो जब तुम्हारे पास समय होता है, और अपनी आस्था के प्रति अपना पूरा ध्यान समर्पित करने में असमर्थ रहते हो, और यदि तुम हमेशा भ्रम में फँसे रहते हो, तो तुम कुछ भी प्राप्त नहीं करोगे। तुम लोग इसे समझते हो, है न? आज के लिए हम यहीं रुक जाएँगे। फिर मिलेंगे! (परमेश्वर का धन्यवाद!)

15 फरवरी, 2014

परिशिष्ट :
परमेश्वर के प्रकटन को उसके न्याय और ताड़ना में देखना

प्रभु यीशु मसीह के करोड़ों अन्य अनुयायियों के समान हम बाइबल की व्यवस्थाओं और आज्ञाओं का पालन करते हैं, प्रभु यीशु मसीह के विपुल अनुग्रह का आनंद लेते हैं, और प्रभु यीशु मसीह के नाम पर एक-साथ इकट्ठे होते हैं, प्रार्थना, गुणगान और सेवा करते हैं—और यह सब हम प्रभु की देखभाल और सुरक्षा के अधीन करते हैं। हम कई बार निर्बल होते हैं और कई बार बलवान। हम विश्वास करते हैं कि हमारे सभी कार्य प्रभु की शिक्षाओं के अनुसार हैं। अत: कहने की आवश्यकता नहीं कि हम यह भी विश्वास करते हैं कि हम स्वर्ग के पिता की इच्छा पूरी करने के मार्ग पर हैं। हम प्रभु यीशु के लौटने की, उसके महिमामय अवरोहण की, पृथ्वी पर अपने जीवन के अंत की, राज्य के प्रकट होने की, और उन सब बातों की अभिलाषा करते हैं, जिनकी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भविष्यवाणी की गई थी : प्रभु आता है, आपदा लाता है, भलों को पुरस्कार और दुष्टों को दंड देता है, और उन सभी को, जो उसका अनुसरण करते हैं और उसकी वापसी का स्वागत करते हैं, स्वयं से मिलने के लिए हवा में ले जाता है। जब भी हम इस बारे में सोचते हैं, तो भावाभिभूत हुए बिना और कृतज्ञता से भरे बिना नहीं रह पाते कि हम अंत के दिनों में जन्मे हैं, और हमें प्रभु का आगमन देखने का सौभाग्य मिला है। यद्यपि हमने उत्पीड़न सहा है, परंतु बदले में हमने "बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा" पाई है। क्या आशीष है! यह समस्त अभिलाषा और प्रभु द्वारा प्रदान किया गया अनुग्रह हमें प्रार्थना में निरंतर शांत बनाता है, और एक-साथ इकट्ठे होने में हमें अधिक कर्मठ बनाता है। शायद अगले वर्ष, शायद कल, या शायद लोगों की कल्पना से भी कम समय के

अंतराल में प्रभु अचानक उतरेगा और लोगों के उस समूह के बीच प्रकट होगा, जो उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करता आ रहा है। प्रभु के प्रकटन को देखने वाला प्रथम समूह बनने और उन लोगों में शामिल होने के लिए, जिन्हें स्वर्गारोहण कराया जाएगा, हम एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए एक-साथ दौड़ रहे हैं और कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता। इस दिन के आगमन के लिए हमने, लागत की परवाह किए बिना, सब-कुछ दे दिया है; कुछ ने अपनी नौकरियाँ छोड़ दी हैं, कुछ ने अपने परिवार त्याग दिए हैं, कुछ ने विवाह नहीं किया है, यहाँ तक कि कुछ लोगों ने अपनी सारी बचत दान कर दी है। कैसी निस्स्वार्थ भक्ति है! ऐसी ईमानदारी और निष्ठा तो निश्चित रूप से बीते युगों के संतों से भी बढ़कर है! प्रभु जिससे प्रसन्न होता है, उसे अनुग्रह प्रदान करता है, और जिस पर प्रसन्न होता है, उस पर दया दिखाता है, इससे हम विश्वास करते हैं कि हमारी भक्ति और हमारा खपना बहुत पहले ही प्रभु की आँखों द्वारा देखे जा चुके हैं। इसी प्रकार, हमारे हृदय से निकली प्रार्थनाएँ भी उसके कानों तक पहुँच चुकी हैं, और हमें भरोसा है कि प्रभु हमारी भक्ति के लिए हमें पुरस्कार देगा। इतना ही नहीं, परमेश्वर सृष्टि की रचना करने से पहले से ही हमारे प्रति अनुग्रहशील रहा है। परमेश्वर ने हमें जो आशीष और वादे दिए हैं, उन्हें हमसे कोई नहीं छीन सकता। हम सब भविष्य की योजना बना रहे हैं, और स्वाभाविक रूप से हमने अपनी भक्ति और ख़ुद को खपाने को हवा में प्रभु से मिलने हेतु अपना स्वर्गारोहण किए जाने के लिए मोलभाव की वस्तु या विनिमय-पूँजी बना लिया है। इतना ही नहीं, हमने ख़ुद को बेहिचक सभी राष्ट्रों और सभी लोगों की अध्यक्षता करने या राजाओं के रूप में शासन करने के लिए स्वयं को भविष्य के सिंहासन पर आसीन कर लिया है। यह सब हम दिया हुआ मानकर चलते हैं, कुछ ऐसा जिसकी अपेक्षा की जानी चाहिए।

हम उन सबसे घृणा करते हैं, जो प्रभु यीशु के विरुद्ध हैं, उन सबका अंत सर्वनाश के रूप में होगा। प्रभु यीशु के उद्धारकर्ता होने पर विश्वास न करने के लिए उनसे किसने कहा? निस्संदेह, कई बार हम संसार के लोगों के प्रति करुणावान होने में प्रभु यीशु का अनुकरण करते हैं, क्योंकि वे समझते नहीं, और हमारा उनके प्रति सहिष्णु और क्षमावान होना उचित है। हम हर काम बाइबल के वचनों के अनुसार करते हैं, क्योंकि हर वह चीज जो बाइबल के अनुरूप नहीं है, विधर्म और पाखंड है। इस तरह का विश्वास हम सबके मन में गहरे जमा हुआ है। हमारा प्रभु बाइबल में है, और यदि हम बाइबल से अलग नहीं होते, तो हम प्रभु से भी अलग नहीं होंगे; यदि हम इस सिद्धांत का पालन करते हैं, तो हमें उद्धार प्राप्त होगा। हम एक-दूसरे को प्रेरित करते, समर्थन देते हैं और जब भी हम इकट्ठे होते हैं, तो हम आशा करते हैं कि हम

जो भी कहते और करते हैं, वह प्रभु की इच्छा के अनुसार है, और उसे प्रभु द्वारा स्वीकार किया जाएगा। हमारे विद्वेषपूर्ण माहौल के बावजूद हमारे हृदय आनंद से भरे हुए हैं। जब हम उन आशीषों के बारे में सोचते हैं जो इतनी आसानी से हमारी पहुँच में हैं, तो क्या ऐसा कुछ है जिसका हम त्याग न कर सकें? क्या ऐसा कुछ है, जिससे अलग होने के हम अनिच्छुक हैं? यह सब स्पष्ट है, और यह सब प्रभु की चौकस निगाहों के नीचे रहता है। हम मुट्ठी भर जरूरतमंद, जिन्हें घूरे से उठाया गया है, प्रभु यीशु के सभी सामान्य अनुयायियों की ही तरह हैं, जो स्वर्गारोहण करने, धन्य होने और सभी राष्ट्रों पर शासन करने का स्वप्न देखते हैं। हमारी भ्रष्टता का परमेश्वर की दृष्टि में पर्दाफाश हो गया है, और हमारी इच्छाओं और लालच का परमेश्वर की दृष्टि में तिरस्कार किया गया है। परंतु फिर भी यह सब इतने सामान्य ढंग से और इतने तार्किक रूप से होता है कि हममें से कोई भी यह नहीं सोचता कि क्या हमारी लालसा सही है, और वह सब जिसे हम पकड़े रहते हैं, उसकी सटीकता पर तो हममें से कोई संदेह करता ही नहीं। परमेश्वर की इच्छा कौन जान सकता है? वास्तव में यह किस तरह का मार्ग है, जिस पर मनुष्य चलता है, हम यह खोजना या पता लगाना नहीं जानते, उसके बारे में पूछताछ करने में रुचि तो हम बिलकुल नहीं रखते। क्योंकि हम केवल इस बात की परवाह करते हैं कि क्या हमारा स्वर्गारोहण कराया जा सकता है, क्या हम आशीष पा सकते हैं, क्या स्वर्ग के राज्य में हमारे लिए कोई स्थान है, और क्या जीवन की नदी के जल में और जीवन के वृक्ष के फल में हमारा कोई हिस्सा होगा या नहीं। क्या हम इन्हीं चीजों को प्राप्त करने के लिए प्रभु में विश्वास नहीं करते और उसके अनुयायी नहीं बने हैं? हमारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं, हमने पश्चात्ताप किया है, हमने मदिरा का कड़वा प्याला पिया है, और हमने अपनी पीठ पर सलीब रखा है। कौन कह सकता है कि प्रभु हमारे द्वारा चुकाई गई कीमत स्वीकार नहीं करेगा? कौन कह सकता है कि हमने पर्याप्त तेल तैयार नहीं किया है? हम वे मूर्ख कुँवारियाँ, या उनमें से एक नहीं बनना चाहते जिन्हें त्याग दिया जाता है। इतना ही नहीं, हम निरंतर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें झूठे मसीहों के धोखे से बचाए, क्योंकि बाइबल में यह कहा गया है : "उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है!' या 'वहाँ है!' तो विश्वास न करना। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न, और अद्‌भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें" (मत्ती 24:23-24)। हम सभी ने बाइबल के ये पद कंठस्थ कर लिए हैं, हमने उन्हें रट लिया है, और हम उन्हें एक अमूल्य ख़ज़ाने की तरह, जीवन की तरह और एक साख-पत्र की तरह देखते हैं, जो यह तय करता है कि हमें बचाया या

स्वर्गारोहण कराया जा सकता है या नहीं...

हजारों वर्षों से, जो जीवित थे, वे अपनी अभिलाषाएँ और स्वप्न अपने साथ लेकर मर चुके हैं, लेकिन वे स्वर्ग के राज्य में गए या नहीं, यह वास्तव में कोई नहीं जानता। मृतक लौटते हैं, परंतु वे उन सभी कहानियों को भूल चुके होते हैं जो कभी घटित हुई थीं, और वे अब भी अपने पूर्वजों की शिक्षाओं और मार्गों का अनुसरण करते हैं। और इस प्रकार, जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं और दिन गुजरते हैं, कोई नहीं जानता कि हमारा प्रभु यीशु, हमारा परमेश्वर, वास्तव में वह सब स्वीकार करता है या नहीं, जो हम करते हैं। हम बस इतना कर सकते हैं कि एक परिणाम प्राप्त करने की आशा करें और हर उस चीज़ के बारे में अटकल लगाएँ, जो होने वाली है। किंतु परमेश्वर ने आरंभ से अब तक मौन रखा हुआ है, वह कभी भी हमारे सामने प्रकट नहीं हुआ, हमसे कभी बात नहीं की। इसलिए, बाइबल का अनुसरण करते हुए और चिह्नों के अनुसार हम जानबूझकर परमेश्वर की इच्छा और स्वभाव के बारे में निर्णय देते हैं। हम परमेश्वर के मौन के आदी हो गए हैं; हम सोचने के अपने तरीके से अपने आचरण के सही और गलत होने को मापने के आदी हो गए हैं; हम परमेश्वर द्वारा हमसे की जाने वाली माँगों के स्थान पर अपने ज्ञान, धारणाओं और नैतिक आचरणों पर भरोसा करने के आदी हो गए हैं; हम परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेने के आदी हो गए हैं; हम इस बात के आदी हो गए हैं कि जब भी हमें आवश्यकता हो, परमेश्वर हमें सहायता प्रदान करे; हम सभी चीज़ों के लिए परमेश्वर के सामने हाथ फैलाने और उनके बारे में परमेश्वर को आज्ञा देने के आदी हो गए हैं; पवित्र आत्मा हमारी किस प्रकार से अगुआई करता है, इस बात पर ध्यान न देते हुए हम विनियमों के अनुरूप होने के आदी हो गए हैं; और इससे भी अधिक, हम उन दिनों के आदी हो गए हैं, जिनमें हम अपने मालिक ख़ुद हैं। हम उस तरह के किसी परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, जिससे हम कभी आमने-सामने नहीं मिले हैं। इस प्रकार के प्रश्न कि उसका स्वभाव कैसा है, उसका स्वरूप कैसा है, उसकी छवि कैसी है, जब वह आएगा तब हम उसे जानेंगे या नहीं, इत्यादि—इनमें से कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि वह हमारे हृदयों में है और हम सब उसकी प्रतीक्षा करते हैं, और इतना पर्याप्त है कि हम कल्पना कर पाते हैं कि वह ऐसा या वैसा है। हम अपनी आस्था को सराहते हैं और अपनी आध्यात्मिकता को सँजोकर रखते हैं। हम सभी चीज़ों को गोबर समझते हैं, और सभी चीज़ों को अपने पाँवों से कुचलते हैं। चूँकि हम महिमामय प्रभु के अनुयायी हैं, इसलिए यात्रा चाहे कितनी भी लंबी और कठिन हो, कितनी भी कठिनाइयाँ और खतरे हम पर आ पड़ें, हमारे कदमों को कोई चीज नहीं रोक सकती,

क्योंकि हम प्रभु का अनुसरण करते हैं। "बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की अवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे" (प्रकाशितवाक्य 22:1-5)। हर बार जब हम इन वचनों को गाते हैं, हमारे हृदय असीमित आनंद और संतुष्टि से लबालब भर जाते हैं, और हमारी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। हमें चुनने के लिए प्रभु का धन्यवाद, प्रभु के अनुग्रह के लिए उसका धन्यवाद। उसने इस जीवन में हमें सौ गुना दिया है, और आने वाले जगत में हमें शाश्वत जीवन दिया है। यदि वह आज हमसे मरने के लिए कहे, तो हम लेशमात्र शिकायत के बिना ऐसा कर देंगे। हे प्रभु! शीघ्र आओ! यह देखते हुए कि हम तुम्हारे लिए कितने आतुर हैं, और किस तरह हमने तुम्हारे लिए सब-कुछ छोड़ दिया है, अब एक क्षण की, एक क्षणांश की भी देरी न करो।

परमेश्वर मौन है, और हमारे सामने कभी प्रकट नहीं हुआ, फिर भी उसका कार्य कभी नहीं रुका है। वह पूरी पृथ्वी का सर्वेक्षण करता है, हर चीज़ पर नियंत्रण रखता है, और मनुष्य के सभी वचनों और कर्मों को देखता है। वह अपना प्रबंधन नपे-तुले कदमों के साथ और अपनी योजना के अनुसार, चुपचाप और नाटकीय प्रभाव के बिना करता है, फिर भी उसके कदम, एक-एक करके, हमेशा मनुष्यों के निकट बढ़ते जाते हैं, और उसका न्याय का आसन बिजली की रफ्तार से ब्रह्मांड में स्थापित होता है, जिसके बाद हमारे बीच उसके सिंहासन का तुरंत अवरोहण होता है। वह कैसा आलीशान दृश्य है, कितनी भव्य और गंभीर झाँकी! एक कपोत के समान, और एक गरजते हुए सिंह के समान, पवित्र आत्मा हम सबके बीच आता है। वह बुद्धि है, वह धार्मिकता और प्रताप है, और अधिकार से संपन्न और प्रेम और करुणा से भरा हुआ वह चुपके से हमारे बीच आता है। कोई उसके आगमन के बारे में नही जानता, कोई उसके आगमन का स्वागत नहीं करता, और इतना ही नहीं, कोई नहीं जानता है कि वह क्या करने वाला है। मनुष्य का जीवन पहले जैसा चलता रहता है; उसका हृदय नहीं बदलता, और दिन हमेशा की तरह बीतते जाते हैं। परमेश्वर

अन्य मनुष्यों की तरह एक मनुष्य के रूप में, एक सबसे महत्वहीन अनुयायी की तरह और एक साधारण विश्वासी के समान रहता है। उसके पास अपने काम-काज हैं, अपने लक्ष्य हैं, और इससे भी बढ़कर, उसमें दिव्यता है, जो साधारण मनुष्यों में नहीं है। किसी ने भी उसकी दिव्यता की मौजूदगी पर ध्यान नहीं दिया है, और किसी ने भी उसके सार और मनुष्य के सार के बीच का अंतर नहीं समझा है। हम उसके साथ, बिना किसी बंधन और भय के, मिलकर रहते हैं, क्योंकि हमारी दृष्टि में वह एक महत्वहीन विश्वासी से अधिक कुछ नही है। वह हमारी हर चाल देखता है, और हमारे सभी विचार और अवधारणाएँ उसके सामने बेपर्दा हैं। कोई भी उसके अस्तित्व में रुचि नहीं लेता, कोई भी उसके कार्य के बारे में कोई कल्पना नहीं करता, और इससे भी बढ़कर, किसी को उसकी पहचान के बारे में रत्ती भर भी संदेह नहीं है। हम बस अपने-अपने काम में लगे रहते हैं, मानो उसका हमसे कुछ लेना-देना न हो ...

संयोगवश, पवित्र आत्मा उसके "माध्यम से" वचनों का एक अंश व्यक्त करता है, और भले ही यह बहुत अनपेक्षित महसूस होता हो, फिर भी हम इसे परमेश्वर से आने वाला कथन समझते हैं, और परमेश्वर की ओर से आया मानकर तुरंत उसे स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि चाहे इन वचनों को कोई भी व्यक्त करता हो, यदि ये पवित्र आत्मा से आते हैं, तो हमें उन्हें स्वीकार करना चाहिए, नकारना नहीं चाहिए। अगला कथन मेरे माध्यम से आ सकता है, या तुम्हारे माध्यम से, या किसी अन्य के माध्यम से। वह कोई भी हो, सब परमेश्वर का अनुग्रह है। परंतु यह व्यक्ति चाहे जो भी हो, हमें इसकी आराधना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि चाहे कुछ भी हो, यह संभवतः परमेश्वर नहीं हो सकता; न ही हम किसी भी तरह से ऐसे किसी साधारण व्यक्ति को अपने परमेश्वर के रूप में चुन सकते हैं। हमारा परमेश्वर बहुत महान और सम्माननीय है; ऐसा कोई महत्वहीन व्यक्ति उसकी जगह कैसे ले सकता है? और तो और, हम सब परमेश्वर के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, ताकि वह आकर हमें वापस स्वर्ग के राज्य में ले जाए, इसलिए कोई इतना महत्वहीन व्यक्ति कैसे इतना महत्वपूर्ण और कठिन कार्य करने में सक्षम हो सकता है? यदि प्रभु दोबारा आता है, तो उसे सफ़ेद बादल पर आना चाहिए, ताकि सभी लोग उसे देख सकें। वह कितना महिमामय होगा! यह कैसे संभव है कि वह चुपके से साधारण मनुष्यों के एक समूह में छिप जाए?

और फिर भी, लोगों के बीच छिपा हुआ यही वह साधारण मनुष्य है, जो हमें बचाने का नया काम कर रहा है। वह हमें कोई सफाई नहीं देता, न ही वह हमें यह बताता है कि वह क्यों आया है, वह केवल नपे-तुले कदमों से और अपनी योजना के अनुसार उस कार्य को करता है, जिसे करने का वह इरादा रखता है।

उसके वचन और कथन अब ज्यादा बार सुनाई देते हैं। सांत्वना देने, उत्साह बढ़ाने, स्मरण कराने और चेतावनी देने से लेकर डाँटने-फटकारने और अनुशासित करने तक; दयालु और नरम स्वर से लेकर प्रचंड और प्रतापी वचनों तक—यह सब मनुष्य पर दया करता है और उसमें कँपकँपी भरता है। जो कुछ भी वह कहता है, वह हमारे अंदर गहरे छिपे रहस्यों पर सीधे चोट करता है; उसके वचन हमारे हृदयों में डंक मारते हैं, हमारी आत्माओं में डंक मारते हैं, और हमें असहनीय शर्म से भर देते हैं, हम समझ नहीं पाते कि कहाँ मुँह छिपाएँ। हम सोचने लगते हैं कि इस व्यक्ति के हृदय का परमेश्वर हमसे वास्तव में प्रेम करता भी है या नहीं, और वास्तव में उसका इरादा क्या है। शायद ये पीड़ाएँ सहने के बाद ही हमें स्वर्गारोहण कराया जा सकता हो? अपने मस्तिष्क में हम गणना कर रहे हैं ... आने वाली मंजिल के बारे में और अपनी भावी नियति के बारे में। फिर भी, पहले की तरह, हममें से कोई विश्वास नहीं करता कि हमारे बीच कार्य करने के लिए परमेश्वर पहले ही देहधारण कर चुका है। भले ही वह इतने लंबे समय तक हमारे साथ रहा हो, भले ही वह हमसे आमने-सामने पहले ही इतने सारे वचन बोल चुका हो, फिर भी हम इतने साधारण व्यक्ति को अपने भविष्य का परमेश्वर स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, और इस मामूली व्यक्ति को अपने भविष्य और नियति का नियंत्रण सौंपने को तो हम बिलकुल भी तैयार नहीं हैं। उससे हम जीवन के जल की अंतहीन आपूर्ति का आनंद लेते हैं, और उसके माध्यम से हम परमेश्वर के आमने-सामने रहते हैं। फिर भी हम केवल स्वर्ग में मौजूद प्रभु यीशु के अनुग्रह के लिए धन्यवाद देते हैं, और हमने कभी इस साधारण व्यक्ति की भावनाओं पर ध्यान नहीं दिया, जो दिव्यता से युक्त है। फिर भी वह पहले की तरह विनम्रता से देह में छिपे रहकर अपना कार्य करता है, अपने अंतर्मन की वाणी व्यक्त करता है, मानो वह इंसान की अस्वीकृति से बेख़बर हो, मानो वह इंसान के बचकानेपन और अज्ञानता को हमेशा के लिए क्षमा कर रहा हो, और अपने प्रति इंसान के अपमानजनक रवैये के प्रति हमेशा के लिए सहिष्णु हो।

हमारे बिना जाने ही यह मामूली व्यक्ति हमें परमेश्वर के कार्य के एक कदम के बाद दूसरे कदम में ले गया है। हम अनगिनत परीक्षणों से गुजरते हैं, अनगिनत ताड़नाएँ सहते हैं और मृत्यु द्वारा परखे जाते हैं। हम परमेश्वर के धार्मिक और प्रतापी स्वभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, उसके प्रेम और करुणा का आनंद भी लेते हैं; परमेश्वर के महान सामर्थ्य और बुद्धि की समझ हासिल करते हैं, परमेश्वर की सुंदरता निहारते हैं, और मनुष्य को बचाने की परमेश्वर की उत्कट इच्छा देखते हैं। इस साधारण मनुष्य के वचनों में हम परमेश्वर के स्वभाव और सार को जान जाते है; परमेश्वर की इच्छा समझ जाते हैं, मनुष्य की प्रकृति

और उसका सार जान जाते हैं, और हम उद्धार और पूर्णता का मार्ग देख लेते हैं। उसके वचन हमारी "मृत्यु" का कारण बनते हैं, और वे हमारे "पुनर्जन्म" का कारण भी बनते हैं; उसके वचन हमें दिलासा देते हैं, लेकिन हमें ग्लानि और कृतज्ञता की भावना के साथ मिटा भी देते हैं; उसके वचन हमें आनंद और शांति देते हैं, परंतु अपार पीड़ा भी देते हैं। कभी-कभी हम उसके हाथों में वध हेतु मेमनों के समान होते हैं; कभी-कभी हम उसकी आँख के तारे के समान होते हैं और उसके कोमल प्रेम का आनंद उठाते हैं; कभी-कभी हम उसके शत्रु के समान होते हैं और उसकी आँखों के सामने उसके कोप द्वारा भस्म कर दिए जाते हैं। हम उसके द्वारा बचाई गई मानवजाति हैं, हम उसकी दृष्टि में भुनगे हैं, और हम वे खोए हुए मेमने हैं, जिन्हें ढूँढ़ने में वह दिन-रात लगा रहता है। वह हम पर दया करता है, वह हमसे नफ़रत करता है, वह हमें ऊपर उठाता है, वह हमें दिलासा देता है और प्रोत्साहित करता है, वह हमारा मार्गदर्शन करता है, वह हमें प्रबुद्ध करता है, वह हमें ताड़ना देता है और हमें अनुशासित करता है, यहाँ तक कि वह हमें शाप भी देता है। रात हो या दिन, वह कभी हमारी चिंता करना बंद नहीं करता, वह रात-दिन हमारी सुरक्षा और परवाह करता है, कभी हमारा साथ नहीं छोड़ता, बल्कि हमारे लिए अपने हृदय का रक्त बहाता है और हमारे लिए हर कीमत चुकाता है। इस छोटी और साधारण-सी देह के वचनों में हमने परमेश्वर की संपूर्णता का आनंद लिया है और उस मंजिल को देखा है, जो परमेश्वर ने हमें प्रदान की है। इसके बावजूद, थोथा घमंड अभी भी हमारे हृदय को परेशान करता है, और हम अभी भी ऐसे किसी व्यक्ति को अपने परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने के लिए सक्रिय रूप से तैयार नहीं हैं। यद्यपि उसने हमें बहुत अधिक मन्ना, बहुत अधिक आनंद दिया है, किंतु इनमें से कुछ भी हमारे हृदय में प्रभु का स्थान नहीं ले सकता। हम इस व्यक्ति की विशिष्ट पहचान और हैसियत को बड़ी अनिच्छा से ही स्वीकार करते हैं। जब तक वह हमसे यह स्वीकार करने के लिए कहने हेतु अपना मुँह नहीं खोलता कि वह परमेश्वर है, तब तक हम स्वयं उसे शीघ्र आने वाले परमेश्वर के रूप में कभी स्वीकार नहीं करेंगे, जबकि वह हमारे बीच बहुत लंबे समय से काम करता आ रहा है।

विभिन्न तरीकों और परिप्रेक्ष्यों के उपयोग द्वारा हमें इस बारे में सचेत करते हुए कि हमें क्या करना चाहिए, और साथ ही अपने हृदय को वाणी प्रदान करते हुए, परमेश्वर अपने कथन लगातार रखता है। उसके वचनों में जीवन-सामर्थ्य है, वे हमें वह मार्ग दिखाते हैं जिस पर हमें चलना चाहिए, और हमें यह समझने में सक्षम बनाते हैं कि सत्य क्या है। हम उसके वचनों से आकर्षित होने लगते हैं, हम उसके बोलने

के लहजे और तरीके पर ध्यान केंद्रित करने लगते हैं, और अवचेतन रूप में इस साधारण व्यक्ति की अंतरतम भावनाओं में रुचि लेना आरंभ कर देते हैं। वह हमारी ओर से काम करने में अपने हृदय का रक्त बहाता है, हमारे लिए नींद और भूख त्याग देता है, हमारे लिए रोता है, हमारे लिए आहें भरता है, हमारे लिए बीमारी में कराहता है, हमारी मंज़िल और उद्धार के लिए अपमान सहता है, और हमारी संवेदनहीनता और विद्रोहशीलता के कारण उसका हृदय आँसू बहाता है औ लहूलुहान हो जाता है। ऐसा स्वरूप किसी साधारण व्यक्ति का नहीं हो सकता, न ही यह किसी भ्रष्ट मनुष्य में हो सकता है या उसके द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। वह जो सहनशीलता और धैर्य दिखाता है, वह किसी साधारण मनुष्य में नहीं पाया जाता, और उसके जैसा प्रेम भी किसी सृजित प्राणी में नहीं है। उसके अलावा कोई भी हमारे समस्त विचारों को नहीं जान सकता, या हमारी प्रकृति और सार को स्पष्ट और पूर्ण रूप से नहीं समझ सकता, या मानवजाति की विद्रोहशीलता और भ्रष्टता का न्याय नहीं कर सकता, या इस तरह से स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से हमसे बातचीत या हमारे बीच कार्य नहीं कर सकता। उसके अलावा किसी में परमेश्वर का अधिकार, बुद्धि और गरिमा नहीं है; उसमें परमेश्वर का स्वभाव और स्वरूप अपनी संपूर्णता में प्रकट होते हैं। उसके अलावा कोई हमें मार्ग नहीं दिखा सकता या हमारे लिए प्रकाश नहीं ला सकता। उसके अलावा कोई भी परमेश्वर के उन रहस्यों को प्रकट नहीं कर सकता, जिन्हें परमेश्वर ने सृष्टि के आरंभ से अब तक प्रकट नहीं किया है। उसके अलावा कोई हमें शैतान के बंधन और हमारे भ्रष्ट स्वभाव से नहीं बचा सकता। वह परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। वह संपूर्ण मानवजाति के प्रति परमेश्वर के अंतर्तम, परमेश्वर के प्रोत्साहनों और परमेश्वर के न्याय के सभी वचनों को व्यक्त करता है। उसने एक नया युग, एक नया काल आरंभ किया है, और एक नए स्वर्ग और पृथ्वी और नए कार्य में ले गया है, और हमारे द्वारा अस्पष्टता में बिताए जा रहे जीवन का अंत करते हुए और हमारे पूरे अस्तित्व को उद्धार के मार्ग को पूरी स्पष्टता से देखने में सक्षम बनाते हुए हमारे लिए आशा लेकर आया है। उसने हमारे संपूर्ण अस्तित्व को जीत लिया है और हमारे हृदय प्राप्त कर लिए हैं। उस क्षण से हमारे मन सचेत हो गए हैं, और हमारी आत्माएँ पुर्नजीवित होती लगती हैं : क्या यह साधारण, महत्वहीन व्यक्ति, जो हमारे बीच रहता है और जिसे हमने लंबे समय से तिरस्कृत किया है—ही प्रभु यीशु नहीं है; जो सोते-जागते हमेशा हमारे विचारों में रहता है और जिसके लिए हम रात-दिन लालायित रहते हैं? यह वही है! यह वास्तव में वही है! यह हमारा परमेश्वर है! यह सत्य, मार्ग और जीवन है! इसने हमें फिर से जीने और ज्योति देखने लायक बनाया है, और हमारे हृदयों को भटकने

से रोका है। हम परमेश्वर के घर लौट आए हैं, हम उसके सिंहासन के सामने लौट आए हैं, हम उसके आमने-सामने हैं, हमने उसका मुखमंडल देखा है, और हमने आगे का मार्ग देखा है। इस समय हमारे हृदय परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से जीत लिए गए हैं; अब हमें संदेह नहीं है कि वह कौन है, अब हम उसके कार्य और वचन का विरोध नहीं करते, और अब हम उसके सामने पूरी तरह से दंडवत हैं। हम अपने शेष जीवन में परमेश्वर के पदचिह्नों का अनुसरण करने, और उसके द्वारा पूर्ण किए जाने, और उसके अनुग्रह का बदला चुकाने, और हमारे प्रति उसके प्रेम का बदला चुकाने, और उसके आयोजनों और व्यवस्थाओं का पालन करने, और उसके कार्य में सहयोग करने, और उसके द्वारा सौंपे जाने वाला हर कार्य पूरा करने के लिए सब-कुछ करने से अधिक कुछ नहीं चाहते।

परमेश्वर द्वारा जीता जाना मार्शल आर्ट की प्रतिस्पर्धा के समान है।

परमेश्वर का प्रत्येक वचन हमारे किसी मर्मस्थल पर चोट करता है और हमें घायल और भयभीत कर डालता है। वह हमारी धारणाओं, कल्पनाओं और हमारे भ्रष्ट स्वभावों को उजागर करता है। हम जो कुछ भी कहते और करते हैं, उससे लेकर हमारे प्रत्येक विचारों और मतों तक, हमारा स्वभाव और सार उसके वचनों में प्रकट होता है, जो हमें भय और सिहरन की स्थिति में डाल देता है और हम कहीं मुँह छिपाने लायक नहीं रहते। वह एक-एक करके हमें हमारे समस्त कार्यों, लक्ष्यों और इरादों, यहाँ तक कि हमारे उन भ्रष्ट स्वभावों के बारे में भी बताता है, जिन्हें हम ख़ुद भी कभी नहीं जान पाए थे, और हमें हमारी संपूर्ण अधम अपूर्णता में उजागर होने, यहाँ तक कि पूर्णत: जीत लिए जाने का एहसास कराता है। वह अपना विरोध करने के लिए हमारा न्याय करता है, अपनी निंदा और तिरस्कार करने के लिए हमें ताड़ना देता है, और हमें यह एहसास कराता है कि उसकी नज़र में हमारे अंदर छुटकारा पाने का एक भी लक्षण नहीं है, और हम जीते-जागते शैतान हैं। हमारी आशाएँ चूर-चूर हो जाती हैं, हम उससे अब कोई अविवेकपूर्ण माँग करने या कोई उम्मीद रखने का साहस नहीं करते, यहाँ तक कि हमारे स्वप्न भी रातोंरात नष्ट हो जाते हैं। यह वह तथ्य है, जिसकी हममें से कोई कल्पना नहीं कर सकता और जिसे हममें से कोई स्वीकार नहीं कर सकता। पल भर के अंतराल में हम अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं और समझ नहीं पाते कि मार्ग पर आगे कैसे बढ़ें, या अपने विश्वास को कैसे जारी रखें। ऐसा लगता है कि हमारा विश्वास वापस प्रारंभिक बिंदु पर पहुँच गया है, और मानो हम कभी प्रभु यीशु से मिले ही नहीं या उसे जानते ही नहीं। हमारी आँखों के सामने हर चीज़ हमें परेशानी से भर देती है और अनिर्णय से डगमगा देती है। हम बेचैन हो जाते हैं, हम

निराश हो जाते हैं, और हमारे हृदय की गहराई में अदम्य क्रोध और अपमान पैदा हो जाता है। हम उसे बाहर निकालने का प्रयास करते हैं, कोई तरीका ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं और, इससे भी अधिक, हम अपने उद्धारकर्ता यीशु की प्रतीक्षा जारी रखने का प्रयास करते हैं, ताकि उसके सामने अपने हृदय उड़ेल सकें। यद्यपि कई बार हम बाहर से संतुलित दिखाई देते हैं, न तो घमंडी, न ही विनम्र, फिर भी अपने हृदयों में हम नाकामी की ऐसी भावना से व्यथित होते हैं, जिसका अनुभव हमने पहले कभी नहीं किया होता। यद्यपि कभी-कभी हम बाहरी तौर पर असामान्य रूप से शांत दिखाई दे सकते हैं, किंतु हमारा मन किसी तूफ़ानी समुद्र की तरह पीड़ा से क्षुब्ध होता है। उसके न्याय और ताड़ना ने हमें हमारी सभी आशाओं और स्वप्नों से वंचित कर दिया है, और हमारी अनावश्यक इच्छाओं का अंत कर दिया है, और हम यह मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि वह हमारा उद्धारकर्ता है और हमें बचाने में सक्षम है। उसके न्याय और ताड़ना ने हमारे और उसके बीच एक खाई पैदा कर दी है, जो इतनी गहरी है कि कोई उसे पार करने को तैयार नहीं है। उसके न्याय और ताड़ना के कारण हमने अपने जीवन में पहली बार इतना बड़ा आघात, इतना बड़ा अपमान झेला है। उसके न्याय और ताड़ना ने हमें परमेश्वर के आदर और मनुष्य के अपराध के प्रति उसकी असहिष्णुता को वास्तव में समझने के लिए प्रेरित किया है, जिनकी तुलना में हम अत्यधिक अधम, अत्यधिक अशुद्ध हैं। उसके न्याय और ताड़ना ने पहली बार हमें अनुभव कराया है कि हम कितने अभिमानी और आडंबरपूर्ण हैं, और कैसे मनुष्य कभी परमेश्वर की बराबरी नहीं कर सकता, उसके समान नहीं हो सकता। उसके न्याय और ताड़ना ने हमारे भीतर यह उत्कंठा उत्पन्न की है कि हम अब और ऐसे भ्रष्ट स्वभाव में न रहें, जल्दी से जल्दी इस प्रकृति और सार से पीछा छुड़ाएँ, और आगे उसके द्वारा तिरस्कृत और घृणित होना बंद करें। उसके न्याय और ताड़ना ने हमें ख़ुशी-ख़ुशी उसके वचनों का पालन करने और उसके आयोजनों और व्यवस्थाओं के विरुद्ध विद्रोह न करने लायक बनाया है। उसके न्याय और ताड़ना ने हमें एक बार फिर जीवित रहने की इच्छा दी है और उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने की प्रसन्नता दी है...। हम विजय के कार्य से, नरक से, मृत्यु की छाया की घाटी से बाहर आ गए हैं...। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें, लोगों के इस समूह को, प्राप्त कर लिया है! उसने शैतान पर विजय पाई है, और अपने असंख्य शत्रुओं को पराजित कर दिया है!

हम भ्रष्ट शैतानी स्वभाव वाले बहुत साधारण लोगों का समूह हैं, हम वे हैं जिनकी नियति युगों पहले परमेश्वर द्वारा पूर्वनियत की जा चुकी है, और हम वे जरूरतमंद लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने घूरे पर से उठाया

है। हमने कभी परमेश्वर का तिरस्कार और उसकी भर्त्सना की थी, किंतु अब हम उसके द्वारा जीते जा चुके हैं। हमें परमेश्वर से जीवन प्राप्त हुआ है, शाश्वत जीवन का मार्ग प्राप्त हुआ है। हम पृथ्वी पर कहीं भी हों, कितना भी कष्ट और क्लेश झेलें, हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उद्धार से अलग नहीं हो सकते। क्योंकि वह हमारा स्रष्टा है, और हमारा एकमात्र छुटकारा है!

परमेश्वर का प्रेम किसी झरने के जल के समान फैलता है, और तुम्हें, मुझे और अन्य लोगों को, और उन सबको दिया जाता है, जो वास्तव में सत्य को खोजते और परमेश्वर के प्रकटन की प्रतीक्षा करते हैं।

जिस प्रकार सूर्य के बाद चंद्रमा कभी निकले बिना नहीं रहता, उसी प्रकार परमेश्वर का कार्य भी कभी नहीं रुकता, और तुम पर, मुझ पर, अन्य लोगों पर, और उन सभी पर किया जाता है, जो परमेश्वर के पदचिह्नों का अनुसरण करते हैं और उसके न्याय और ताड़ना को स्वीकार करते हैं।

23 मार्च, 2010

इसे परमेश्वर द्वारा "सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कलीसिया का उद्भव और विकास" के आमुख के रूप में लिखा था।

अंतभाषण

यद्यपि ये सारे वचन परमेश्वर की अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, फिर भी लोगों द्वारा परमेश्वर को जानने और स्वभाव में बदलाव लाने के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए वे पर्याप्त हैं। शायद कुछ ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि चूंकि चीनी मुख्य भूभाग में परमेश्वर का कार्य समाप्त हो चुका है, यह साबित करता है कि उसे जो वचन कहने चाहिए, उन्हें कहना वह पूरा कर चुका है, और वह संभवत: कोई नई उक्तियाँ नहीं बोल सकता क्योंकि बस ये सब ही वे वचन हैं जिन्हें परमेश्वर कह सकता है। इसके अलावा, ऐसे लोग भी हैं जो विश्वास करते हैं कि 'वचन देह में प्रकट होता है' पुस्तक में, राज्य के युग के सम्बन्ध में परमेश्वर की सभी अभिव्यक्तियाँ शामिल हैं, और यह पुस्तक प्राप्त करना परमेश्वर का सब कुछ प्राप्त कर लेने के बराबर है, या यह पुस्तक भविष्य में मानव जाति का उसी तरह नेतृत्व करेगी जैसा कि बाइबिल ने किया। मुझे विश्वास है कि जो लोग इन विचारों को धारण करते हैं वे अल्पसंख्या में नहीं, क्योंकि लोग हमेशा परमेश्वर पर सीमाएं थोपना पसंद करते हैं। यद्यपि वे सभी घोषणा करते हैं कि परमेश्वर सर्व-शक्तिमान एवं सर्वव्यापी है, लोगों की प्रकृति अभी भी उनके लिए परमेश्वर को एक निश्चित दायरे के भीतर सीमांकित करना आसान

बनाती है। ज्यों-ज्यों प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर को जानने लगा है, लोग साथ-साथ उसका विरोध कर उसे सीमांकित भी कर रहे हैं।

राज्य के युग में परमेश्वर का कार्य अभी केवल प्रारंभ ही हुआ है। इस पुस्तक में परमेश्वर के सभी वचन केवल उन्हीं लोगों के प्रति लक्षित थे, जो उस समय उनका अनुसरण कर रहे थे, और वे वचन परमेश्वर के वर्तमान देह-धारण में उसकी अभिव्यक्ति का एक अंश मात्र हैं, और वे परमेश्वर के सब कुछ का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इसके अलावा, यह नहीं कहा जा सकता है कि इस उस समस्त कार्य को शामिल करता है जो परमेश्वर इस देह-धारण को करने के दौरान करेगा। परमेश्वर अपने वचनों को विभिन्न जाति और पृष्ठभूमि के लोगों के प्रति लक्षित करेगा, और वह समस्त मानव जाति पर विजय पाएगा और पुराने युग को समाप्त करेगा, तो वह अपने वचनों के एक ऐसे छोटे-से अंश मात्र को व्यक्त करने के बाद कार्य को बंद कैसे कर सकता है? बात सिर्फ इतनी है कि परमेश्वर का कार्य अलग-अलग कालावधियों और विभिन्न चरणों में विभाजित है। वह अपनी योजना के अनुसार कार्य कर रहा है और अपने चरणों के अनुसार अपने वचनों को व्यक्त कर रहा है। मनुष्य आखिर कैसे परमेश्वर के सर्व-सामर्थ्य और ज्ञान को नाप सकता है? मैं जिसे यहाँ समझा रहा हूँ वह तथ्य यह है: परमेश्वर जो है और उसके पास जो है, वह सदैव अक्षय और असीम है। परमेश्वर जीवन का और सभी वस्तुओं का स्रोत है। परमेश्वर की थाह किसी भी रचित जीव के द्वारा नहीं पाई जा सकती। अन्त में, मुझे अभी भी सब को याद दिलाना होगा: पुस्तकों, वचनों या उनकी अतीत की उक्तियों में परमेश्वर को सीमांकित न करो। परमेश्वर के कार्य की विशेषता के लिए केवल एक ही शब्द है—नवीन। वह पुराने रास्ते लेना या अपने कार्य को दोहराना पसंद नहीं करता, और इसके अलावा, वह नहीं चाहता कि लोग उसे एक निश्चित दायरे के भीतर सीमांकित करके उसकी आराधना करें। यह परमेश्वर का स्वभाव है।

साभार

A portion of the Bible verses in this book are from Hindi OV and the copyright to the Bible verses from Hindi OV belongs to Bible Society India. With due legal permission, they are used in this publication.